SANSKRIT-WÖRTERBUCH

Otto Böhtlingk

Digitized by Google

Digitized by Google

BIBLIOTHÈQUE S.J.
60 - CHANTILLY
S.J. JERSEIENS

Digitized by Google

Digitized by Google

R 118/4

SANSKRIT-WÖRTERBUCH

HERAUSGEGEBEN

VON DER

KAISERLICHEN AKADEMIE DER WISSENSCHAFTEN,

BEARBEITET

VON

Otto Böhtlingk und **Rudolph Roth.**

SECHSTER THEIL.

(1868 — 1871)

प — व.

BIBLIOTHÈQUE S.A.
60 - CHANTILLY

ST. PETERSBURG.

Buchdruckerei der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften.

(Wass.-Ostr. 9. L. No. 12.)

1871.

Zu beziehen durch Eggers & Comp. in St. Petersburg und durch Leopold Voss in Leipzig.

Preis des sechsten Theils: 8 Rbl. 45 Cop. Silb. = 9 Thlr. 12 Ngr.

Digitized by Google

Gedruckt auf Verfügung der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften.
Den 8. December 1871.

K. Vesselofsky, beständiger Secretair.

Digitized by Google

य

1. य pron. relat. nom. m. यस्, f. या, nom. acc. n. यद्; die übrigen Casus regelmässig nach der pronom. Declination, gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Vop. 3,9. 56. Am Anfange eines comp. यद्, z. B. यत्कण्ठे, यन्माया Spr. 2277. यच्छत्रे Kathâs. 18,71. यत्सदृशी 54,166. यद्वीर्य, यत्पराक्रम adjj. MBu. 1,3691. 8302. यत्सेन, यच्छील, यत्स्वभाव, यद्बल adjj. 5,2724. यद्वार्येषी यज्ञमान: Ind. St. 10,90. यज्ञामन् Hariv. 9970. Einfluss auf den Ton des verbi finiti VS. Pair. 6,14. P. 8,1,66. 1) wer, welcher: य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जन: । तेषां सं हन्मो अक्षाणि RV. 7,55,6. 2,12,9. 7,6,6. 49,3. 4. 8,3,23. AV. 6,84,1. 12,1,5. मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन so v. a. *pro robore vestro* RV. 1,37,12. मृयतां येन दोषेण मृत्युर्विप्रान् जिघांसति M. 5,3. R. 1,8,5. आचक्ष्व यद्धतं द्रव्यमवशिष्टं च यद्वसु MBu. 3,2276. ज्ञायतामस्य यद्दु:खम् Bâlarâm. 1,10. एक एव सुहृद्धर्मो निधने ऽप्यनुयाति य: M. 8,17. ये — सर्वे ते 2,86. सा भार्या या प्रजिर्दत्ता सा भार्या या पतिव्रता Spr. 5223. M. 2,467. 234. यस्ते गुडमयं दर्पं कामं च व्यसनाशयेत् । सो ऽर्के ज्ञात: MBu. 3,7090. य: — असौ M. 4,170. Spr. 2438. H. 344. Sin. D. 216,2. यद् — अस्य Spr. 3417. यस्य — एतम् MBu. 3, 15700. यद् — एतद् R. 1,60,5. Spr. 2337. य: — स एष: MBu. 3,15707. यम् — अयं स: 2430. fg. यद् — इदं तद् Çiç. 186. यद् — तदिदम् 27. य: — तादृश: Spr. 4908. 4186. यद्ब्रवीमि तथा कुरु MBu. 1,3965. एष एव — य: Taitt. Up. 2,3. एते — ये M. 9,257. इदं तद् — यद् Çiç. 67,23. ईदृग्विज्ञानम् — येन Kathâs. 96,31. mit Fehlen des erwarteten demonstr.: सूर्येण सभिनिर्मुक्त: शयानो ऽभ्युदितश्च य:। प्रायश्चित्तमकुर्वाणो युक्त: स्यान्मरुतैनसा ॥ M. 2,221. 3,191. 4,158. 8,313. 10, 8. MBu. 3,2656. 2778. 3,7079. R. 1,55,17. Spr. 1696. 2416. 2692. 2975. 3699. 4617. अन्ध: शत्रुकुलं गच्छेत्य: साक्ष्यमनृतं वदेत् M. 8,93. 94. 9,91. öfters fehlt auch das erwartete relat.: अन्धकं कुब्जकं चैव कुष्ठाढ्यं व्याधिपीडितम् । आपद्गतं च भर्तारं न त्यजेत्सा महासती ॥ Spr. 3494. 4071. 4333. 4353. MBu. 11, 49. Bhâg. P. 1,5,38. Zwei und mehr Rell. in demselben Satze: यस्मिन्मरुति यदक्ष: प्रदिश्यते Çâṅkh. Çr. 14,1,2. य: कोऽपि वृतो यस्य स तस्य-र्त्विगित्युच्यते M. 2,142. 149. 174. 3,22. 193. यो यज्ञयति तस्य तत् 7,96. 8,158. यदेव रोचते यस्मै भवेत्तस्य सुन्दरम् Spr. 683. 2392. 2442. यस्य यावांश विश्वासस्तस्य सिद्धिश तावती 2444. 2541. 2559. येन यावान्यथा धर्मो धर्मो वेह समीकित: । स एव तत्फलं भुङ्क्ते तथा तावदमुत्र वै ॥ 2503. यो ऽत्ति यस्य यदा मांसमुभयो: पश्यतान्तरम् 2532. यो यथा निर्तिपेद्धस्ते यमर्थं यस्य मानव: । स तथैव ग्रहीतव्य: M. 8,180. Ein oder mehrere Subjecte durch das Rel. zu einem Satze erweitert und dadurch hervorgehoben: यस्त्वं कर्म वेत्थ ब्रह्मबन्धविति *wie weisst du Etwas?* Âit. Br. 7, 27. यो रामस्तमचिन्तयत् WebER, Râmat. Up. 298. तस्मादेतत्परं मन्ये यज्ञस्तोरस्य साधनम् M. 12,99. क्षत्रियस्य तु धर्मो ऽयं यद्युद्धम् MBu. 3,7300. रेत:शोणितयोरिष्टं परिणतिर्यद्धर्म्य Spr. 2641. यन्मरणं सो ऽस्य विश्वास: 2646. Kathâs. 17,46. मा भूत्स कालो यत्कष्टम् R. 2,85,9. यच्च कामसुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम् । एते Spr. 4759. Bhâg. 6,21. पृच्छामीत्सादनं तस्यत्योक्ते दोषकीर्तनम् H. 268. 149. आत्मपरित्यागेण यदाश्रितानां रक्षणं तन्नीतिविदो न संमतम् Hit. 15,12. fg. 30,17. fg. 31,8. neutr. sg. auch in Verbindung mit Wörtern andern Geschlechts und anderer Zahl: पोतमिवैष ब्रह्मणो रूपमुपनिगच्छति यत्क्षत्रिय: Âit. Br. 7,31. तत्रं वा एतद्वनस्पतीनां पत्न्यधोधि: ebend. यच्च उ क्व वा एष प्रत्यतं यद्वस्रा 26. प्रज्ञापतेर्वा एषा क्षेत्रा यद्वास्तोष्पतीया 6,2. Çat. Br. 1,2,2,5. 8,4,11. 3,3,4, 25. यमिधाराव्रतमिदं मन्ये यदरिणा सकृ संवासः Paṇâr. 196,15. Spr. 2183. Bhâg. P. 6,1,1. प्रकाशमेतत्तास्कर्यं यद्देवनममाकृषी M. 9,222. एतावानेव पुरुषो यज्ञायात्मा प्रजेति ह 15. यत्क्षान्तिः समये श्रुतिः शिव शिवेत्युक्तिः u. s. w. यमी सन्मुक्तिमार्गे स्थितिः Spr. 2279. यदेतत्स्वाध्यायाद्विहरणमकार्यायमशनं सकृत्पैः संवासः u. s. w. न ज्ञाने कस्यैषा परिणतिरुदारस्य तपसः Spr. 4821. Ein solches यद् lässt sich durch *was — betrifft* wiedergeben; eben so in den folgenden Stellen: पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मन सांप्रतम् । एवं त्वं पुत्रशोकेन रुदन्कालं करिष्यसि ॥ Dâç. 2, 52. तत्यद्दक्षो न तद्दक्षत्यते Âit. Br. 6,2. Bisweilen wird ein auf diese Weise erweitertes Subject andern Subjecten angereiht, ohne dass ein besonderer Nachdruck auf ihm läge, aus rein metrischen Rücksichten: अन्धो बट: पीठसर्पी सप्ततया स्वविरश्च य: । श्रोत्रियेषूपकुर्वीश न दाप्या: केनचित्कर्म ॥ M. 8,394. तीव्रः खेदश्च दाहश्च तदा ग्लानिश्च या परा । समाविवेश मोहश्च R. 4,60,14. Auffallender ist, dass sogar ein Object in einen solchen relativen Satz aufgelöst und andern Objecten ohne Weiteres angereiht wird. सर्वाबमानयोक्तेन कृतान्नं च तिलैः सकृ । अश्मनो लवणं चैव पशवो ये च मानुषाः ॥ M. 10,86. आशाव्याशास्वप्यथात्मानम् u. s. w. अर्चयेत् तस्य तिलु मायाविष्णे ये कलापारतन्त्रे Weber, Râmat. Up. 323. इन्द्रियाणां पृथग्भावमुदयास्तमयौ च यत् । पृथगुत्पद्यमानानाम् Kaṭhop. 6, 6. ohne च so v. a. *nämlich:* ततो देवा एतं वज्रं ददृशुः । यदप: Çat. Br. 1,1, 4,17. Das Rel. in Verbindung mit andern Pronomm.: यस्य ते RV. 7, 3,4. यं त्वा 8,43,27. यो ऽयम् Çat. Br. 1,7,4,3. MBu. 3,2568. fg. यमिमम् RV. 10,86,4. यं त्विमं धर्मम् Spr. 4833. येषम् Kathâs. 18,69. P. 3,3,125, Sch. यदिदम् — अनेन R. 1,59,4. एष मे हृदि संकल्पो यदिदं कवितं मया MBu. 5,7374. यानिमान् 1,5980. यो ऽसौ M. 1,7. MBu. 3,2906. 16812. R. Gorr. 2,49,26. Ver. in LA. (III) 7,14. असौ तु यस्तिष्ठति MBu. 3, 15593. fg. 15595. fg. ये ऽमी Spr. 2317. स य: Çat. Br. 14,9,2,1. स य एष: 3,9,4,7. 11,7,3,1. य: स: — स: Sin. D. 216,8. यत्तद् M. 1,11. Spr. 4769. य एष: Çat. Br. 11,7,3,1. MBu. 3,15701. 15711. fg. येतद् M. 1, 71. 6,82. MBu. 1,6011. Spr. 2379. य एते M. 3,200. Bhag. 1,23. Besondere Beachtung verdienen folgende Verbindungen: *a*) mit dem relat. य *wer —, welcher —, was immer:* यथा यद्यद्वदति तत्तद्भवति Çat. Br. 14,4,2,27. Kâṭy. Çr. 24,4,26. Lâṭy. 3,1,9. 5,11,13. यं यं क्रतुमधीते Âçv. Gṛhy. 3,4,6. 1,14,8. M. 2,236. 3,231. 275. 8,48. उप्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्ररोक्षति 9,40. MBu. 3,2202. 11499. 13,126. Bhag. 10,41. कामान्यस्य यस्येप्सितान्यथा R. 1,53,1 (34,1 Gorr.). Spr. 2318. 2387. 2518. 4769. 4829. 4893. 5026. Çiç. 141. 130. Kathâs. 18,247. Çiç. 3,16. Sin. D. 217,10. Hit. 40,9. यो यो यावतिथश्चैषां स स तावद्गुणः स्मृतः M. 1,20. येन येन तु भावेन यद्यद्दानं प्रयच्छति । तत्तत्तेनैव भावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः ॥ 4,234. 12,53. MBu. 13,346. Bhag. 7,21. — *b*) mit dem demonstr. त *beliebig, gleichviel wer, — welcher:* यस्मात्तस्मात्प्रतिग्रहात् M. 4,191. यस्य तस्य (यस्यां तस्यां v. l.) प्रसूतः: Spr. 2429. कर्मणा येन तेनैव 3878.

यस्मिंस्तस्मिन् Mārk. P. 125,32. यद्वा तद्वा परद्रव्यम् M. 12,68. यद्वा तद्वा — साधु वा गर्हितं वा — कर्म Spr. 2396. यद्वा तद्वा भाषताम् als Erkl. von प्रलपतु Schol. zu Çiç. 23,14. यद्वा तद्वास्तु Dudrās. in LA. 75,9. — c) mit dem interrog. क und einer nachfolgenden Partikel: α) यः कश्च wer —, welcher immer, der erste beste, gleichviel wer, — welcher, beliebig: एवा दक्षं यो धर्मणुर्दुर्मन्मा कश्च वेनति RV. 8,49,7. यस्मै कस्मै च देवताये Çat. Br. 1,6,2,19. य एव कश्च 1,4,13. 4,6,6,3. याम् — काम् च 1,8,1,9. ये के च भ्रातरः स्व Çāṅkh. Çr. 15,26,1. इदं सर्वं यदिदं किं च Çat. Br. 14,4,2,25. 3,3,2,3. यत्किं चेदम् RV. 7,89,5 (vgl. M. 11,252, wo eben so zu lesen ist). यानि कानि च मित्राणि कर्तव्यानि शतानि च Spr. 2472. अतः परं न दातव्यं यस्मै कस्मै च Pāṇ. 2,1,16. याश्च काश्च कुदृष्टयः M. 12,95. यत्किं च Āçv. Gṛhy. 1,22,13. — β) यः को ऽपि dass.: येन केनाप्युपायेन MBh. 3,3038. Spr. 2301. — γ) यः कश्चित् dass. M. 2,7. 8,69. 193. ये कोचित् 2,123. 8,62. 9,271. ये च केचिन्निरिन्द्रियाः 201. ये तु तत्र विनिर्मुक्ताः सार्वात्मेकाग्रचेतसः MBh. 3,2552. कर्मणा येन केनचित् Spr. 4893. M. 8,279. तुष्येस्त्वं येन केनचित् R. Gorr. 2,100,3. प्राणिनो यस्य कस्यचित् Kathās. 96,31. यस्मै कस्मैचित् Hit. 11,5. यत्किंचित् Çāṅkh. Çr. 16,20,2. M. 1,100. 3,273. 4,117. 8,405. 9,115. R. 1,3,38. यदुच्यते किंचित् — तत्सर्वम् M. 3,191. 7,94. fg. यच्च सातिशयं किंचित् 9,114. यद्या यच्छिष्यते किंचित्सत्यं संपद्यते हि तत् Kathās. 3,50. यच्चान्यत्किंचिदीदृशम् M. 1,45. यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्तत्कामस्य चेष्टितम् 2,4. — δ) यः कश्चिदपि dass. Spr. 4734. यानि कानिचिदपि R. 3,55,18. यत्किंचिदपि दातव्यं याचितेनानसूयया Spr. 4766. M. 7,137. im comp.: यत्किंचिदपिसंकल्पात् gegenüber नकिंदपिसंकल्पात् Verz. d. Oxf. H. 232,b,32. — ε) यः कश्चन dass.: ज्ञना ये तत्र केचन MBh. 3,2522. im comp.: यत्किंचनप्रलापिन् R. 4,17,4. — ζ) यः को वा dass.: शूद्रस्तु यस्मिन्कस्मिन्वा देशे निवसेत् M. 2,24. संतुष्टा येन केन वा Bhāg. P. 4,31,19. — d) mit त्वद् (vgl. u. 3. त्व): शूद्रोस्त्वद्यास्त्वत् oder sonst wen Çat. Br. 5,3,2,2. क्षेमकृद्यं वन्यव्रत् 4,3,4,6. 13,8,1,5. 2,1. — 2) यो ऽहम् (वम् u. s. w.) der ich (du u. s. w.) so v. a. da ich: किं नु दुःखतरं शक्यं मया द्रष्टुमतः परम्। यो ऽहमद्य नरव्याघ्रान्सुहृदोन्यश्यामि भूतले ॥ MBh. 1,5909. 3,2570. कस्तप्राप्तमकं मन्ये स्वर्गं तव — यस्त्वं कौशिकमागम्य शरण्यः शरणं गतः R. 1,59,5. अद्यैव क्षिप्र मां — यः शरणागतपुत्रं मां त्वमकार्षीरिपुत्रकम् Daç. 2,50. जीव वर्षायुतं सुखी। यो मे वितरसि प्राणानधिष्ठानं च MBh. 3,3037. यस्साधुदर्शी खलु तत्रभवान्काश्यपः। य (यद् v. l.) इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते Çiç. 9,12. fg. सफलः कृत्र संकल्पः सिद्धिश्च नियता मम। यस्य मे त्वं हृषीकेश यवेप्सितमुपस्थितः ॥ MBh. 2,1229. R. 1,47,22. Vikr. 35. Hit. 99,12. परित्यक्ता वसिष्ठेन किमहम् — याकं राक्षसैर्दीना क्रियेय dass ich 54,2. — 3) wenn Jemand: यो नो वृकतातिं मर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिषः RV. 2,34,9. स्त्रियं स्पृशेद्देशे यः स्पृष्टो वा मर्मयेतया। परस्परस्यानुमते सर्वं संग्रहणं स्मृतम् ॥ M. 8,358. यश्च यद्वचनं ब्रूयात् — तत्सर्वम् — ममाप्येयम् R. 1,59,8. यः कामानाप्नुयात्सर्वान्यश्चैतान्केवलांस्त्यजेत्। प्रायणात्सर्वकामानां परित्यागो विशिष्यते ॥ Spr. 4756. यस्तु सूर्येण निष्टप्तं गाङ्गेयं पिबते जलम्। गवां निर्द्धारनिर्मुक्ताच्चावकात्तद्विशिष्यते ॥ 4845. यस्य so v. a. si cujus, याम् so v. a. si quam: श्रोत्रवाताहतं वीक्ष्य यस्य नेत्रे प्रशेकृति। तेत्रिकस्यैव तद्दोषम् M. 9,54. यो (अक्षाम्) प्रसह्य वृको हन्यात्पाले तत्किल्बिषं भवेत् 8,235. fg. Dass यः in Wirklichkeit nicht wenn Jmd bedeutet, dass vielmehr in allen angeführten Beispielen eine Anakoluthie anzunehmen ist, braucht wohl kaum bemerkt zu werden. — 4) m. Synonym von पुरुष Tattvas. 19. — Vgl. यतम, यतर, यतस्, 1. यति, यत्र, यथा, यद्, यदा, यदि, यर्हि, यस्मात्, 1. यात्, याभिस्, यावत्त्, येन.

2. य 1) m. = गन्तर्, वायु, यमन Med. j. 1. = वायु, पशस्, योग, यान, यातर् Çabdar. im ÇKDr. *fame, celebrity; barley; light, lustre; abandoning;* Jama (vgl. Verz. d. Oxf. H. 189, *a*, No. 431) Anekārthak. bei Wilson. — 2) f. या यात्रातिधूमितत्यागेषु, वारणयोगसमज्ञायानेषु Med. *going, proceeding; a car, carriage; prohibiting, restraining, checking; religious meditation; getting, obtaining* Wilson nach ders. Aut.; *pudendum muliebre* ders. nach Anekārthak.

यकं pron. rel. so v. a. 1. य. चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु RV. 8,21,18. यकः VS. 23,23. यका 22. P. 7,3,45. Vop. 4,6.

यकन् s. यकृत्.

यकार m. *der Buchstabe* य: यकारादिपद n. *ein mit* य *anlautendes Wort* euphemistisch für *eine Form von* यभ् Kāvād. 1,65.

यकृत् n. Uṇ. zu Uṇādis. 4,58. Siddh. K. 231,*a*,8. Taik. 3,5,8. यकन् neben यकृत् in einigen Casus P. 6,1,63. Vop. 3,39. 165. *Leber* AK. 2,6,2,17. H. 604. Hall. 3,13. यक्नम् RV. 10,163,3. यक्ना VS. 39,8. यकृत् (nom. sg. und am Anf. eines comp.) 19,85. AV. 9,7,11. 10,9,16. Çat. Br. 10,6,2,1. 12,9,1,3. 15. Kāty. Çr. 6,7,6. Suçr. 1,43,12. 77,15. शोणितस्य स्थानं यकृत्प्लीहानौ 79,9. 2,313,16. Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,3. यकृद्रक्तकपित्तस्य स्थानं रक्तकसंश्रयम् Çāṅkh. Sāṁh. 1,5,21. यकृन्मेदस् n. sg. *Leber und Fett* गवाश्वादि zu P. 2,4,11. यकृद्दर्श Suçr. 1,41,2. 239,6. यकृति 276,9. यकृतस् 2,340,2. यकृत्तस् Nir. 4,3. — Vgl. याकृत्क.

यकृदात्मिका (von यकृत् + आत्मन्) f. *eine Art Schabe* (तैलपायिका) Çabdar. im ÇKDr.

यकृदुदर (यकृत् + उ°) n. *Leberanschwellung* Wise 337.

यकृदाल्य n. dass. Suçr. 1,360,17. 2,89,19.

यकृदाल्युदर (यकृत्-दालिन् + उ°) n. dass. Suçr. 1,276,9. 360,17 nach der Berliner Hdschr.

यकृद्वैरिन् (यकृत् + वै°) m. *Andersonia Rohitaka Roxb.* Çabdar. im ÇKDr.

यकृल्लोम (यकृत् + लोमन्) gaṇa पलक्ष्यादि zu P. 4,2,110. m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 4,144. °लोमन् 6,353 (VP. 188; vgl. II, 166). — Vgl. याकृल्लोम.

यत्, यतति wohl mit der Grundbedeutung *sich regen, sich rühren;* auf diese Wurzel gehen zurück यत्त, यत्तु, इयत्त्; vgl. 1. यत्. Das simpl. यतामस् R. 7,4,12. fg. zur Erklärung des Namens यत्त; nach dem Schol. *ehren*, welche Bed. Dhātup. 33,19 der Form यत्तयते ertheilt wird.

— प्र *vorwärts eilen, — streben:* धनं क्षिते तरुषत्त अवस्यवः प्र यत्तस्त अवस्यवः RV. 1,132,5. *nachstreben einer Sache, erstreben, erreichen* (mit acc.): प्रयतं त्रेन्यं वसु 2,5,1. प्रऽयत्तन् Pada-p., प्रयतं प्रकर्षेण पूज्यम् Sāy. दीर्घमायुः प्रयतै 3,7,1. मरुत्सुत्रा मरुत्सखा प्रयतै 31,3. — Vgl. प्रयत्त.

1. यत्तै (von यत्) 1) n. *ein lebendes oder übernatürliches Wesen; eine unkörperliche, geisterhafte Erscheinung, Ding, Spukgestalt:* न यासु चित्रं ददृशे न यत्तम् *unter denen nicht Gestalt und Wesen sichtbar ist* d. h. *welche unsichtbar sind* RV. 7,61,3. तस्मिन्हिरण्यये कोशे यत्तमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः *das lebendige Ding* AV. 10,2,32. 8,43. मरुत्वतं भुवनस्य मध्ये 7,38. 8,15. 8,9,25. 11,6,10. यदूर्ध्वं यत्तमत्तः प्रजानाम् VS.

Digitized by Google

34,2. तयो रु पत्नं प्रथमं मे वकूव TBr. 3,12,8,1. Çat. Br. 11,2,3,3. 14, 3,3,1. पत्नमिव चतुरः प्रियो वो भूयासम् Gobh. 3,4,24. पत्नाणि दृश्यते तथवैतन्मर्कटः शापदो वायसः पुरुषवद्भयमिति Kauç. 93. तत्र व्यजानत्त किमिदं पत्नमिति Kenop. 15. fg. मा कस्यं पत्नं सदमिद्धरो गा मा वेशस्यं प्रमिनतो मापेः *Gespenst eines Verstorbenen* RV. 4,3,13. मा कस्यादुतकत् पत्नं भुजेमा तनूभिः 5,70,4. sg. coll. *die Wesen u. s. w.*: यस्यो व्रते प्रसवे पत्नमेजति AV. 3,9,5. तवं पत्नं पशुपते ग्रप्स्वन्तः 11,2,24. पत्नस्यार्ध्यतः Agni Vaiçvânara RV. 10,88,13. विश्वं पत्नं विश्वं भूतं सुभूतम् TS. 3, 11,4,1. Die Commentatoren erklären das Wort durch पक्ष, पक्षा, पूजित, पूज्य und ähnlich. — 2) m. *a)* Bez. *besonderer Genien im Gefolge Kubera's* AK. 1,1,4,6. H. 194. an. 2,369. Med. sh. 22. Halâj. 1,87. Âçv. Gṛhj. 3,4,1. Çâṅkh. Gṛhj. 4,9. Maitrâj. Up. 1,4. M. 1,37. 3,196. 11,93. 12,47. Inscr. 5,35. Sund. 2,7. Hit. 2,26. न देवेषु न पत्नेषु तादृग्रूपवती क्वचित् N. 1,13. MBh. 5,7476. विनेशो पत्नरत्नानाम् (sagt Kṛshṇa von sich) Bhâg. 10,23. 11,33. 17,4. पत्नोत्तमा पत्नपतिं धनेशं रतिं वै प्राप्नुवन्तीमरुस्ताः Harîv. 13132. Mṛcch. 1. 67. Varâh. Bṛh. S. 13,3. 46, 92. 48,23. 34,111. Kathâs. 2,16. Râjâ-Tar. 1,159. वटवृक्षाधिरूढेन पत्नेण (vgl. पत्नतरु, पत्नावास) Verz. in LA. (II) 21,11. °लोक R. 3,47,11. °देवगृह Kathâs. 13,170. पत्नायतन 173. °भवन 177. °बलि Uṇâdis. zu Unâdis. 4,122. ग्राविशसि च पं पत्नाः (vgl. पत्नग्रह) MBh. 3,14507. पत्नाङ्गना Mṛcch. 69. °कन्यकासाधन Verz. d. Oxf. H. 88,a,17. सर्वपत्नेशधनेश्वर Kubera, R. 4,11,12. Söhne Pulastja's MBh. 1,3571. Pulaha's 3572. *der Khaçâ (Khasâ)* Harîv. 234. VP. 150 (nach dem Viṣṇu-P. ebend. ist Jaksha ein Sohn der Khasâ und Urvater der Jaksha). *der Krodhâ* Harîv. 11333 (wo die neuere Ausg. पत्नगणाश्च st. पत्तिगणाश्च liest). Kaçjapa's 11830. entstehen aus Brahman's Füssen 11794. im Dienste Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 18,b,35. bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 8,20. 75,11 (°सेनापत्नयः). 81,9. Burn. Intr. 600. Lot. de la b. l. 54. Wassiljew 164. bei den Gaina eine Unterabtheilung der Vjantara H. 91. Herleitung des Namens von पत् R. 7,4,12. ग्रहाम इति ये चोचुस्ते पत्ता पतणात् (= त्रतणात्?) Mân. P. 48,20. — *b)* Bein. Kubera's AK. 1,1,4,65. H. 189. H. an. Med. Halâj. 1,79. — *c)* N. pr. eines Muni R. 6,82,102. — *d)* Indra's *Palast* Sabhâ im ÇKDr. — 3) f. ई *a) ein weiblicher Jaksha* MBh. 1,3395. 3,2519. R. 1,27,8 (28,8. 11 Gorr.). 3,38,13. 52,28. 7,3,41. Kathâs. 26,220. 49,166. 169. 121,20. 216. 227. पतीणां (so die neuere Ausg.) प्रथमा पती (= कुबेरमाता Schol.) wird Durgâ genannt Harîv. 3282. Vgl. पतिणी. — *b)* Kubera's *Gattin* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. पूर्व°, मरु°.

2. पत्त am Ende eines comp. aus पत्तृ (aor. von 1. पत्): क्षेतापत्तं च क्षेतापत्तं च Çâṅkh. Çr. 7,1,3. 8,4.

पत्तक m. = 1. पत्त 2) *a)* R. 7,14,20.

पत्तकर्दम (1. पत्त + क°) m. *eine aus Kampher, Agallochum, Moschus und Kakkola zusammengesetzte Salbe* AK. 2,6,2,34. nach H. 639 auch *Sandel* enthaltend, so auch nach Dhanvantari im ÇKDr., aber *Safran* st. Kakkola. Schol. zu Kâṭj. Çr. 25,8,2.

पत्तकूप m. *der Jaksha-Teich*, N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,b,41.

पत्तग्रह m. *das Besessensein durch Jaksha*, Bez. *einer best. Todsucht* MBh. 3,14507. °परिपीडित Suçr. 2,332,18. Verz. d. B. H. No. 935.

पत्तण n. Mânav. P. 48,20 wohl = त्रतण. पत्तणी in संभोग° Verz. d. Oxf. H. 109,a,10 fehlerhaft für पत्तिणी.

पत्ततरु m. *der Baum der Jaksha, Ficus indica* Râjân. im ÇKDr.; vgl. Ver. in LA. (II) 21,11.

पत्तता f. *der Zustand eines Jaksha* Kathâs. 63,88.

पत्तत्व n. dass. R. 3,17,32.

पत्तदर (1. पत्त + दर) N. pr. einer Gegend Râjâ-Tar. 3,87.

पत्तदासी (1. पत्त + दा°) f. N. pr. einer Gattin Çûdraka's Daçak. 118,3.

पत्तदृश् (1. पत्त + दृश्) adj. *wie eine lebende Erscheinung aussehend, wesenhaft, leibhaftig* RV. 7,56,16. = उत्सवस्य द्रष्टा Sây.

पत्तधूप (1. पत्त + धूप) m. *das Harz der Shorea robusta* AK. 2,6,3, 29. H. 647.

पत्तन् Mânav. P. 31,121 wohl fehlerhaft für पद्मन्.

पत्तनायक (1. पत्त + ना°) m. N. pr. des Dieners des 4ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi H. 41.

पत्तपति m. *ein Jaksha-Fürst* Kathâs. 26,213. Bein. Kubera's Harîv. 13132. Bhâg. P. 4,1,37.

पत्तपाल (1. पत्त + पाल) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

पत्तभृत् (1. पत्त + भृत्) adj. *die Wesen tragend, — erhaltend* (?): यत्यो न पंसपत्तभृद्दिवेदाः RV. 1,190,1.

पत्तमल्ल (1. पत्त + मल्ल) m. bei den Buddhisten N. pr. eines der fünf Lokeçvara Wilson, Sel. Works 2,23.

पत्तरस (1. पत्त + रस) m. *ein best. berauschendes Getränk* Taik. 2,10,15.

पत्तराज् m. 1) *der Fürst der Jaksha*, Bein. Kubera's AK. 1,1,4,63. Med. ġ. 35. R. 4,44,30. Bhâg. P. 8,18,17. Maṇibhadra's MBh. 3,2529. पत्तराजपुरी f. Kubera's *Stadt* Alakâ Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) *eine Palaestra* Med.

पत्तरात्र m. *der Fürst der Jaksha*, Bein. Kubera's Çabdar. im ÇKDr. MBh. 3,7538.

पत्तरात्रि f. *die Nacht der Jaksha*, Bez. *eines best. Festtages* (= दीपाली) Taik. 1,1,108.

पत्तवर्मन् (1. पत्त + व°) m. N. pr. eines Commentators des Çâkalâjana Or. und Occ. 2,692,8.

पत्तवित adj. *dessen Besitz dem der Jaksha gleicht* so v. a. *eine Habe bloss hütend, nicht benutzend* Bhâg. P. 11,23,9. 24.

पत्तसेन (1. पत्त + सेना) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

पत्तस्थल (पत्त + स्थल) m. (sic) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,b,41.

पत्ताङ्गी (von 1. पत्त + 3. ग्रङ्ग) f. N. pr. eines Flusses Çatr. 1,54.

पत्ताधिप (1. पत्त + ग्र°) m. *der Fürst der Jaksha*, Bein. Vaiçravaṇa's (Kubera's) MBh. 3,2554.

पत्ताधिपति (1. पत्त + ग्र°) m. dass. Snâpy. Bh. 5,6.

पत्तामलक (1. पत्त + ग्रा°) n. *die Frucht der Piṇḍakharjûra genannten Dattelart* Çabdar. im ÇKDr.

पत्तावास (1. पत्त + ग्रा°) m. *der Aufenthaltsort der Jaksha* d. i. *Ficus indica* Râjân. im ÇKDr.; vgl. LA. (II) 21,11.

पत्तिणीत्व n. *der Zustand einer Jakshiṇî* Kathâs. 73,430.

पतिन् (von 1. पत) 1) adj. *lebendig, wesenhaft:* Varuṇa ṚV. 7,88,6. = पत्तनीय Sis. — 2) f. पतिणी *ein weiblicher Jaksha* (= पत्नी) MBu. 3,5093. 5083. fg. R. 1,26,25 (27,24 Gorr.). Kathâs. 10,178. 28,68. 34, 79. 37,55. fgg. 49,164. fgg. 66,27. 73,25. fgg. Gaṇap. zu Siddhânj. 4. Verz. d. B. H. No. 904. Kubera's *Gattin* Çaṇḍar. im ÇKDa.

पतीत्व n. *der Zustand einer Jakshi* Kathâs. 26,223.

पैतु (von पत्) m. N. pr. eines Volksstammes, sg. ṚV. 7,18,6. pl. 19.

पतेन्द्र (1. पत + इन्द्र) m. *ein Fürst der Jaksha* R. 7,14,20. Mâlav. P. 53,9. Bein. Kubera's MBu. 5,7526. R. 5,5,6.

पतेश्वर (1. पत + 2. ईश्वर) m. N. pr. der Diener des 11ten und 18ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 42. fg.

पतेश्वर (1. पत + ई°) m. *ein Fürst der Jaksha* Manu. 7. Trik. 3,3, 297. Bein. Kubera's H. 190. Her. 101,6.

पतोडुम्बरक (1. पत + उ°) n. *die Frucht der Ficus religiosa* Trik. 2,4,6.

पैदम Uṇâdis. 1,139. m. *Krankheit* überh. oder Bez. *einer ganzen Klasse von Krankheiten, etwa der mit Abmagerung verbundenen:* स्वयं स पत्मे हृदये मि धत्ते ṚV. 1,122,9. 10,85,21. 97,11. 12. 137,4. 163, 1—6. AV. 2,10,5. 6. 3,31,1. 5,4,9. 30,8. यक्षात 6,127,3. 8,7,2. 9,8,3. 7. यत्मणा सवैधा विषं निरोचमहे त्वत् 10. यो गोषु पत्मः पुरुषेषु पर्व्ण: 12,2,1. 2. 4,5. 19,36,1. 38,1. शतस्य पत्मणो पाकारोरसि नाड्यो VS. 12,97. fg. Später *Auszehrung* TS. 2,3,5,2. 5,6,5. Kâṭh. 11,3. 13,6. Çat. Br. 4,1,2,9. Mâlav. P. 34,101. — Vgl. य°, यक्षात°, पाप°, रात्र° und पत्मन्.

पत्मगृहीत (पत्मन् + ग्र°) adj. von *der Auszehrung heimgesucht* Âçv. Gṛhy. 1,23,20. 3,6,2.

पत्मयक्ष (पत्मन् + यक्ष) m. *Auszehrung:* °ग्रहार्दित (इन्दु) Bâlar. P. 6,6,22.

पत्मघ्री (पत्मन् + घ्री) f. *Weintraube* Çaṇḍar. im ÇKDa.

पैत्मन् m. *Auszehrung* (welche gewöhnlich शोष und तय heisst) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,139. 4,150. AK. 2,6,2,2. H. 463. Sûçr. 1,121,6. 139,20. 2,449,5. Verz. d. B. H. No. 929. 966. 996. गृहीतो पत्मणा Ṛgvidh. 4,16 (nach Aufrecht). Kathâs. 73,250. Bâlar. P. 9,22,23. Schol. zu Kâṭh. Ça. 206,16. पत्मणा सनगृह्यत MBu. 1,4142. 9,2011. पत्मणा समयुक्त 1, 4696. 5,4981 nach der Lesart der ed. Bomb. (पत्मणा स° ed. Calc.). पत्मणा क्षिप्यमानः उडुराट् 9,2009. पत्मणा परिपीडितः Mâlav. P. 13, 28. पत्मणापि परिक्षीणः Râgat. 19,80 (पत्मणाङ्गपरि° ed. Calc.). पत्माकृत MBu. 13,1581. पत्माभिभूत Harîv. 1358. पत्मयस्त Bâlar. P. 6,13,12. प° adj. *die Auszehrung habend* MBu. 3,10721. — Vgl. पाप°, रात्र°.

पत्मनाशन (पत्म + ना°) 1) adj. *Krankheit vertreibend* AV. 3,12,9. — 2) m. angeblicher Verfasser von ṚV. 10,161, mit dem patron. Prâjâpatja.

पत्मिन् (von पत्मन्) adj. *die Auszehrung habend* M. 3,154. MBu. 13,4272.

पत्मोर्ध्वा (पत्मः ऊर्ध्वा Padap.) f. *eine best. Krankheit* AV. 3,8,9.

पैत्य adj. so v. a. षष्टव्य nach Sis.: यो कविर्विश्वा धामि रोहन् पावक पत्यः ṚV. 3,49,3. Könnte zu पत् gezogen werden und *rührig* bedeuten.

पद् in der Gramm. Bez. *der Silbe* प *als Charakter des Intensivum,* पदुक् *der Ausfall dieser Silbe* प; vgl. P. 2,4,74. पदुगन्तशिरोमणि Titel einer Abhandlung über das *Intensivum ohne* प Colebr. Misc. Ess. II, 43.

पच्छन्दस् (1. पद् + छन्दस्) adj. *weiches* (rel.) *Metrum habend* Çiñkn. Gṛhy. 2,7.

पछ् s. पस्.

1. पद्, पैद्यति, °ते Dâtuv. 23,33 (देवपूजासंगतिकरणदानेषु). Vop. 8, 133 (देवार्चादानसङ्गतौ). पद्यधैनम् = पद्यधमेनम् P. 7,1,48. इयाद, इषिय, इषद्, येषिय, ईषितुम् Schol. zu P. 6,1,17. 7,2,62. fg. Vop. 8,124. 133. fg. ईषे, ईषिरे; पद्यति, °ते; अपद्यत; पष्टा Schol. zu P. 7,2,62. 8,2,36. Kâr. 2 aus Sudhâk. K. zu P. 7,2,10. पष्टा स्मके TBa. अपष्ट Schol. zu P. 1,2,11. पैति 2. sg., पत्तम्, पत्तम् 3. du., पत्तताम् 3. du., पति 1. sg. ṚV. 3,53,2. 10,52,5. अपत्तत, अपद्माहि. (आ)पत्तते, पैत्व, अपाम् 2. sg. ṚV. 3, 29,16. 9,82,5. पाट् 2. sg. 10,61,21. अपाट् 3. sg. VS. 7,15. 21,17. अपात्म; पत्ताने ṚV. 3,23,1 wohl 1. sg., nach Sis. 2. sg. इष्यात्, इष्यास्ताम्, इष्यासुम्, पत्तीष्ट, पत्तीषम् Schol. zu P. 3,4,104. 1,2,11. 8,3,78. pass. इष्यते, इष्यत्, पद्यमान neben इष्यमाण Pat. zu P. 6,1,192. इष्टः पैषुम्, पैष्टवे, पैषध्यै, ईषितुम् MBu. 2,1330. इष्ट्वी, इष्ट्वीनम् P. 7,1,48. 1) *einen Gott verehren, huldigen,* auch *mit Gebet und Darbringung,* daher *weihen, opfern.* In der alten Sprache in der Regel act., wenn Agni oder ein anderer Mittler handelt, und med., wenn der Mensch für sich verehrt und darbringt; später act. vom Opferpriester, med. vom Veranstalter des Opfers (पत्ति याजकाः, पत्तमानो पत्तेत Schol. zu P. 1,3,72. Vop. 23,58). Ausnahmen sind jedoch häufig. *a)* mit acc. des Gottes, dat. der Person oder des Zweckes, für welchen, und instr. der Sache oder des Werkzeuges, womit die Handlung vollzogen wird. यो वीरि कविया पति देवान् ṚV. 7,17,3. सूनं रोदसी न इषितो पंक्षति 39,1. देवान्देवयते पंक्ष 5, 21,1. अर्वाञ्चं दैव्यं जनमग्ने पत्व महूतिभिः 1,45,10. 73,5. पत्वा मरुद्भि सोमपमनसाय रुद्रम् 5,42,11. पत्तस्व मु पूर्वणीक देवान् 7,42,3. देवं देवं पत्तामहे 1,26,6. स चा बोधाति मनमा पत्ताति 77,2. सचा पंक्षाते 84,18. अग्निं पंक्षाय कविया तनी गिरा 2,2,1. 4,24,5. 5,3,8. 77,2. 7,73,2. 8,23,1. सखा सखीन्मुमनो पद्यो 3,4,1. 7,2,10. यो पक्षाति पक्षात इत् *wer für Andere oder für sich einen Gott ehrt* 8,31,1. पक्षायंत्र सनुभिर्देव देवानेवा पंक्षस्व तन्वं सुजात 10,7,6. मरुतां रणवर्वसे पत्तधम् 6,29,1. AV. 1,31,3. 3,10,9. 7,5,3. 4. 18,3,25. Âit. Br. 4,27. तेन त्वा पक्षा इति 7,14. 8,22. पाकपत्तेनेत्ते Çat. Br. 1,8,1,7. 10,2,2,1. Pañkav. Br. 14,6,8. Âçv. Gṛhy. 1,7,13. 4, 8,10. Çâṅkh. Br. 23,5. Lâṭy. 2,1,19. 27. 3,7. 13. पैक्षत् ṚV. 4,16,11. पैक्षमान (s. auch bes.) ṚV. 1,51,8. 7,16,6. 8,86,2. AV. 2,31,1. 2. 4, 14,5. VS. 6,6. ईक्षानै ṚV. 1,125,4. 7,59,2. AV. 9,5,8. 18,4,1. Kaṭhop. 3,2. Çat. Br. 4,4,4,4. मनोज्ञान 2,4,2,13. Âit. Br. 1,4. पत्यमाण ṚV. 1,113,9. 125,4. TS. 1,6,2,2. Kâṭh. Ça. 23,4,4. Kaush. Up. 1,1. इष्ट *derjenige, welchem geopfert worden ist,* und *geopfert* Kâṭh. Ça. 25,10,22. Çâṅkh. Ça. 4,9,7. जीवतेव पशुनेष्ट भवति Çat. Br. 13,2,8,2. यद्धि चकर्व विद्वये पत्यध्यै ṚV. 3,1,1. 4,3. 6,12,1. 2. 7,2,7. 8,39,1. पैष्टवे 1,13,6. 4,37,7. इष्ट्वी AV. 9,6,10. Mit gen. partit. der Sache P. 2,3,63. सोमस्य त्वा पति ṚV. 3,53,2. आज्यस्यैव पत्तेत् Çat. Br. 2,4,2,10. पृतस्य 4,4,2,4. Kâṭh. Ça. 10,1,24. — वाजिमेधैस्त्रिभिः — पत्तेशमपत्तहरिम् Bâlar. P. 1, 12,35. 3,13,11. 10,70,41. Mâlav. P. 16,39. Vaṇîs. Bhg. S. 46,59. पद्मना रुद्रं पत्तते Schol. zu P. 1,4,32, Vârtt. सुराघटसहस्रेण मांसभूतोदनेन च । पत्ये त्वाम् R. 2,52,83. 55,20. M. 8,105. 11,118. पस्तिलैर्पत्तते पितॄन् MBu. 13,2217. Bâlar. P. 1,5,38. पत्तते क्रतुभिर्देवान्पितॄंश्च 3,32,2. 4,12,

10. मौ कर्मभिर्विप्रा यज्ञध्रम् 14,29. पुण्येन कृयमेधेन मामिष्ट्वा R. 7,85,21. यज्ञैरिष्ट्वात्मसोद्यम् MBu. 2,1325. Harıv. 2806. तानि सर्वाणि दैवतानि) यज्यामि तीर्थान्यायतनानि च 52,81. 5,33,18. Bhāg. P. 3,32,17. इन्द्रुर्देवान्युराहिता: Bhaṭṭ. 14,90. यज्ञत इक् देवता: Bhāg. 4,12. 9,23. MBu. 3, 8390. R. 2,52,79 (19 Gorr.). 7,85,20. Bhāg. P. 5,3,1. Bhaṭṭ. 1,2. ऐणेयं मीमनाक्रत्य शालां (= पर्णशालाधिष्ठातृदेवताम् Schol.) यज्यामके वयम् R. 2,56,18. 21. इष्ट्वा देवान्यितॄन् Kathās. 27,118. शक्रस्य यदर्थं धत्ते इज्यते Harıv. 3790. गिरिरस्माभिरिज्यताम् 3830. ज्ञानेनैवापरे विप्रा यज्ञैर्ज्ञानैर्मखैः सदा M. 4,24. यजन्ति च नरव्याघ्राः — राजसूयाश्वमेधाद्यैः क्रतुभिः MBu. 1,6098. 7664. मुनार्थं वाजिमेधेन किमर्थं न यजाम्यहम् R. 1,8,2. 11, 8. Miṣr. P. 36,2. इयाज च मरुत्सख्यैः 37,2. यज्ञैर्बहुभिरीजिवान् R. Gorr. 1,44,6. यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैः M. 7,79. 5,33. 8,306. 11,74. MBu. 9,2885. 13,3331. 14,22. Miṣr. P. 20,39. यज्ये 22,9. Harıv. 11088. यज्यमाण Bhāg. P. 1, 12,33. 7,15,10. ईजिरे च मरुत्पत्नैः तत्रिणा: MBu. 1, 2173. 2120. 3,2225. 2057. 8285. 8323. 11000 (S. 369). 12745. 14864. R. Gorr. 1,1,92. मरुद्भिः क्रतुभिरीजानो भूतः MBu. 1,3712. 3,10526. ईजितुं राजसूयेन 2,1220. इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः M. 6,36. 37. 4,27. MBu. 3, 2414. 13,328. R. 1,1,91. Bhāg. P. 4,3,3. इष्टवानश्वमेधेन R. 1,14,7. इष्टं स्यात्क्रतुभिस्तेन Jāḍ. 1,288. AK. 2,8,8,3. तस्माद्बाल्यधनो यजेत् M. 11, 40. तत्रियो धनुराश्रित्य यजेच्चैव न याजयेत् MBu. 4, 1338. R. 1, 37, 11. 39,3. 2,32,41. 36,8. Bhāg. P. 10,72,14. यज्वा तु विधिनेष्टवान् AK. 2, 7,8. यजीत्य ब्राह्मणो वेदान् याजयेत यजेत च MBu. 4,1338. 12,234. यत्रा-यजन्त धर्मो ऽपि 3,10098. यदर्थं यजसे R. 1,15,14. 2,56,24. तस्मिंश्च यज्ञ-माने MBu. 1,4687. 3,2238. 8321. R. 1,61,6. R. Gorr. 1,15,3. M. 11,34. Çiç. 31,1. यज्ये Bhāg. 16,13. R. 1,11,20. यज्यमाण M. 11,1. ईजान 87. यष्टुं समुपचक्रमे R. 1,39,25. 61,3. इष्ट्वा M. 4,236. R. 2,72,25. — *b*) mit dem acc. des Opfers, Liedes u. s. w., worin sich die Cultushandlung vollzieht: नेमं नो अध्वरं यज RV. 1,26,1. 6,32,12. यज्ञं नो यक्षतामिमम् 1, 142,8. 188,7. 10,130,6. यथायजो होत्रमृषे पृथिव्याः 3,17,2. शतयाजं स यजते AV. 9,4,18. ऋचं साम यजामहे 7,54,1. इष्टो यज्ञो भृगुभिः VS. 18,56. दर्शपूर्णमासौ TS. 2,5,8,1. Kāty. Çr. 4,6,10. सोमयागौ 19,4,3. प्रयाजान् Çāṅkh. Çr. 5,13,13. यज्ञस्यौष्मिते यज्ञम् MBu. 2,1228. R. Gorr. 1,41,7. 2,74,28. दर्शं पौर्णमासं च MBu. 9,2884. पुत्रियामिष्टिम् R. 1,13,3 (2 Gorr.). राजसूयम् H. 691. सर्वस्वदक्षिणं यज्ञमिष्टवान् 819. मा यजेथा: क्रतुम् Harıv. 11111. बली तदा यज्ञे यजमाने R. 1,31,5 (32,5 Gorr.). 40,7. ईजिरे यज्ञम् MBu. 13,3338. R. 2,72,27. 7,90,13. यष्टुकामो मरुत्सत्रम् 1,57,17. यज्ञो विधिदृष्टो न इज्यते Bhāg. 17,11. अश्वमेधादयो यज्ञास्तत्रेष्टा: Miṣr. P. 13, 54. सर्ववेदा: स यज्ञेषु यागा: सर्वस्वदक्षिणा: AK. 2,7,9. — *c*) mit dat. der Person und acc. der Sache: मह्यं यजन्तु (AV. यजन्ताम्) मम यानि हव्या RV. 10,128,4. mit loc. der Person Maitrāṣ. 6,9. die Person im acc. mit प्रति R. 2, 107, 11. — *d*) *opfern* so v. a. *hingeben:* यज्ञस्तोभिः स्वविष्कृतान् Bhaṭṭ. 8,49. — *e*) med. *verehren, opfern um Etwas* (acc.): मघम् RV. 7,36,5. — 2) im Ritual *durch die Jājñā-Strophe zum Opfer einladen:* चतस्रो देवता यजति Çat. Br. 1,9,2,6. 4,4,5,16. Çāṅkh. Çr. 7,4,3. 10,7,9. — Vgl. 2. यनिष्ट und 2. इष्ट.

— caus. याजयति, अयीयजत् *Jmd* (acc.) *zum Opfer verhelfen, für Jmd als Opferpriester thätig sein*, mit instr. der Feier TS. 2,2,10,2. 5,2,6, 2. याजयत मा द्वादशाहेन Ait. Br. 4,25. 8,11. याभिर्गोभिरुदमयं प्रत्यमेधा अयाजयन् 22. Çat. Br. 13,5,4,1. अयाजयं याजयित्वा Âçv. Gṛhy. 3,6,8. 1, 23,4. 19. एते ऽकीनेकाहैर्यायजन्ति Âçv. Çr. 4,1,7. Kauç. 46. Kaṭh. Up. 1,1. Ind. St. 3,461. 4,330. संवत्सरे ऽस्थानि याजयेयु: *sie sollen den* Asthi-jagûa *anstellen* Kāty. Çr. 25,13,36. Çāṅkh. Çr. 13,11,9. यज्ञैर्यजन्ति ये केचिद्याजयन्ति च ये द्विजा: MBu. 1,7664. 4,1558 (act. und med.). 12,234. याजयन्ति च ये पूगान् M. 3,151. वृषलम् P. 3,3,145, Sch. याजयामास तं कण्वः MBu. 1,3121. 6377. 14,125. 127. R. 1, 10, 26 (27 Gorr.). 57,19 (39,17 Gorr.). Verz. d. Oxf. H. 59,b,22. स्वयं मौ देवदेवेश याजयस्व MBu. 1,8123. 14,127. यमादिं ध्रुवकर्माणं देवैर्यो याजित: स्वयम् 1,222 (S. 9). ततः स याजयामास सोमकं तेन क्रतुना 3,10492. सोमेन याजयन्वीरम् Bhāg. P. 9,3,24. याजयित्वाश्वमेधैस्तम् 1,8,6. 8,13,6. 10,74,16. 79,30. अयाजय-द्दासवेन गोपहारं द्विजोत्तमैः *er hiess ihn opfern vermittelst ausgezeich-neter Brahmanen* 3,2,32. 1,12,36. mit zwei acc.: तं च ते याजयामासुर्य-ज्ञदीक्षाम् R. 7,57,10.

— desid. यियक्षति *zu opfern verlangen* Schol. zu P. 1,2,10. चाण्डा-लस्य यियक्षत: R. Gorr. 1,61,14. यियक्षमाण MBu. 2,59.

— intens. यायज्यते, यायज्मीति Schol. zu P. 7,4,83.

— अति *mit dem Opfer übergehen:* य: स्वां देवतामतियजते TS. 2,5,4,1.

— अनु *nachher verehren:* तमग्निष्टोमेनानुयजन्ति Schol. zu Kāty. Çr. 15, 1,4 (ungedr.). Paṇḍar. 3,7,17 ist तदनु यजेच्च zu schreiben. — Vgl. अनु याग, अनुयाज.

— अप *mit einem Opfer vertreiben, wegopfern:* तांस्ते यज्ञस्य मायया सर्वानपयजामसि Kauç. 97.

— अभि *mit Opfer ehren:* देवता अभियजेत् Gorr. 4,7,16. सामावास्येन हविषा पूर्वपक्षमभियजते 1,5,6. Paṇḍar. 3,7,12. Hierher zieht Sāy. भृ-होत्रान्मार्ज्मयो अभ्ययष्ट (= अयजयत् RV. 6,47,25. *ein Opfer* (acc.) *darbringen:* अश्वमेधं यज्ञं वैष्णवं शक्रो ऽभियजताम् MBu. 12,13217.

— अव *durch Opfer oder Gebete abwenden, vertreiben, durch Gaben abfinden:* मुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषः RV. 1,133,7. अवं यज्ञ नो वरुणो रराणः 4,1,5. 7,60,9. अवं देवानां यज क्रेडो अधो AV. 19,3,4. TBr. 1,4,8,3. यज्ञस्य मायया सर्वानवयजामहे (वरुणस्य पाशान्) 3,10,8,2. TS. 2,3,11,1. निर्ऋतिम् 5,2,4,3. 6,2,1. एनः 6,6,3,1. Çat. Br. 12,9,2,4. 13, 3,6,5. Kāṭh. 21,6. 36,6. — Vgl. अवयजन, अवयाज, अवेष्टि.

— निरव *abfinden gegenüber von* (abl.): मनुष्य एव रुद्रं निरवयजते Kāṭh. 21,6.

— आ 1) *huldigend darbringen, weihen:* येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे (vgl. zu P. 6,4,120) मनुः RV. 10, 63, 7. 61,11. 1, 121, 3. आकूतिम् AV. 19,4,1. Partic. ईट्ट. Die unter 3. इष् mit आ aufgeführten Stellen sind vielleicht hierher zu ziehen, da इष् sonst mit dieser Praep. nicht vor-kommt; und zwar RV. 1, 184, 2 so v. a. *Huldigungen* (अन्वेष्टारो Sāy.), Ait. Br. 1,26 und VS. 3,7 so v. a. *eropfert, durch Verehrung gewonnen;* s. unten 3). Mah. zu VS. theilt diese Auffassung, während Sāy. zu Ait. Br. ईट्टृ und ईट्टा als nom. ag. zu इष् annimmt, ähnlich auch im Comm. zu TS. 1,2,14,1. — 2) *verehren*, mit acc.: आ यं होता यजति विश्ववा-रम् RV. 7,7,3. यं देवासस्त्रिरह्नायजन्ते 3,4,3. येषु विष्टुत्रिषु पदेषेष्टः VS. 23,49. — 3) *eropfern;* überh. *verschaffen* (dem Menschen von den Göttern), *zuwenden;* med. auch *sich verschaffen:* आ हि ष्मा सूनवे पिता यजति RV. 1,26,3. 40,4. आ मे मखि द्रविणमा यजस्व 3,1,22. यस्मै त-

मायजसे स साधति 1,94,2. स घा यजस्व नवनीरनु ता स्पार्हा इषः 10,2,6. 70,7. 80,7. मर्पि देवा इविणमा यजत्तात् 128,3. तेषां न स्फातिमा यज 1, 188,9. 8,11,10. घयामा मुग्रं यजते 19,4. घा वो यज्ञमृतत्वम् 10,32,5. 4, 42,6. उरुष्य राण इषो यजस्व VS. 7,4. 14,4. Çat. Br. 1,7,3,14. — Vgl. घायजि fgg. und घायाग.

— समा *verschaffen:* त घायजस्त इविषा समस्मै RV. 10,82,4.

— उप *dazu opfern:* उपयजेः TS. 6,4,4,4. Çat. Br. 3,8,4,9. 10. Kâṭ. Çr. 6,9,10. त्रियशोपयजेरन् Pân. Gṛhj. 2,17. — Vgl. उपयज्, उपयष्टर्, उपयाज.

— घत्युप *weiter dazu opfern* Çat. Br. 3,8,4,18. 5,1.

— परि 1) *ersopfern, erlangen, verschaffen:* यया पूर्वेभ्यः पर्यया वाजमिन्दो RV. 9,82,5. — 2) im Ritual *vor und nach Jmd opfern, — versöhnen, eine Opferhandlung durch andere gleichsam unterstützen:* घातारमेव सवनाभो पुरस्तात्पुरस्तादाख्येन परियजेत् Âit. Br. 3,47. यद्वयं मिथोभयतः परियजेति TBr. 3,9,10,1. Çat. Br. 4,4,2,6. 13,2,11,3. Kâṭ. Çr. 10,6,8. Âçv. Çr. 5,19,2. Liṭ. 2,11,12. 3,4,1. 2.

— प्र 1) *verehren, huldigen, Jmd* (acc.) *Opfer bringen:* देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा RV. 6,15,13. प्र देवा अग्निं गृणते यजध्यै 6,11,3. प्र यः सत्राचा मनसा यजाते 7,100,1. प्र ते यजि प्र ते इयर्मि मन्मं 10,4,1. तव प्र यजि संदृशम् 6,16,8. क्रतुः तस्यानु धर्मं प्र यज 3,17, 3. TS. 3,2,3,1. Pâṇ. 3,6,13. 15,8,3. 10,9. mod. 8,1. — 2) *ein best. Opfer* (प्रयाज) *darbringen:* यावानेव पशुस्तं प्रयजति TS. 6,3,2,3. — Vgl. प्रयज्, fg., प्रयाग, प्रयाज.

— प्रति *dagegen opfern:* घाख्येनेतरे प्रतियजन्त घासते Çat. Br. 4,6,8,19.

— सम् *zusammen* (den Göttern) *huldigen, — opfern:* देवानाग सुजु यजतः समृचा RV. 2,3,7. गङ्गाह्रयाणाः संयजन्ते सखायः 10,71,8. विश्वे देवाः समयजन्त TBr. 1,4,10,3. Çat. Br. 4,2,4,23. Çâṅkh. Çr. 14,29,6. 39,7. *opfern:* संयष्टु (यष्टु स die neuere Ausg.) वाजिमेधेन सेभानुपचक्रमे Harîv. 11087. क्रतुभिः समीजे Bhâg. P. 9,24,65. *Jmd huldigen:* पूर्व्याभा संयजेत् Spr. 4114, v. l. *zusammen darbringen:* यत्प्रयो विप्रुषो संयजामि TBr. 3,7,6,21. *weihen:* समयष्टात्रमण्डलम् Bhaṭṭ. 15,95. — caus. *zusammen opfern lassen, die* Patnîsaṃjâja *machen* Âit. Br. 1,11. 3,45. TBr. 1,1,10,5. Çat. Br. 1,3,4,21. 9,2,1. 3,1,2,6. 2,2,23. 4,2,2,31. Kâṭ. 23,9. *für Jmd* (acc.) *als Opferpriester thätig sein* MBh. 1,6375. 12,12372. — Vgl. संयाज, संयाज्य, समिष्टयजुस्.

2. यज् (= 1. यज्) nom. ag. (nom. यट् nach P. 8,2,36) am Ende eines comp. *huldigend, opfernd;* s. दिवि°, देव°.

यज्ञ (von 1. यज्) m. zur Etymologie gebildet: यज्ञो व वै नमितयज्ञतुः Çat. Br. 4,6,7,13. Am Ende eines comp.: क्रतायज्ञदक्षायज्ञपोः (aus dem imperat. यज्ञ) स्थाने Âçv. Çr. 5,4,5. — यज्ञा s. bes.

यजत्र (von 1. यज्) Uṇâdis. 3,110. 1) adj. *verehrungswürdig, dem man huldigen muss* so v. a. *heilig, göttlich* (vgl. jaxata im Zend) Nir. 12, 17. देवो देवेभिर्यजता यजत्रैः RV. 7,75,7. 4,50,2. यथा विधो घो कद्रुद्रेभ्यो यजतेभ्यः 2,5,8. Agni 3,3,3. 4,1,2. 5,8,1. Indra 2,14,10. 16,4. 21,1. Savitar 1,35,2. 6,50,6. 71,4. von andern Göttern 5,67,7. 8, 30,2. AV. 2,2,2. vom Wagen der Açvin RV. 1,181,3. घा वो धियं यजित्रीं वर्त ऊतये देवी देवो यजता यजियोभिः 10,101,9. Ueberh. *was Ehrfurcht oder Stimmen einflösst, hehr:* कृधी RV. 4,15,8. निष्का 2,33, 10. मद 9,69,3. 10,11,8. 99,11. तत्र 5,67,1. प्रुक्षं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्धिरण्यरूपं यज्ञियासो अक्रन् यो देवासि 6,58,1. धूम 7,8,1. — 2) m. a) = सवितृ Uṇâdis. — b) *der Mond* H. ç. 10. — c) Bein. Çiva's H. ç. 45. — d) N. pr. eines Ṛshi mit dem patron. Âtreja, Liedverfassers von RV. 5,67.68.

यजति (3. sg. praes. von 1. यज्) m. *die mit* यज् (nicht जु; vgl. जुहोति) *ausgedrückte Handlung* Kâṭ. Çr. 1,2,1. fgg. 4,3,1. Schol. zu 23,2,2. Z. d. d. m. G. 9, LXI. जुहोतियजतिक्रियाः M. 2,84. °देश und °स्थान *der Stand südlich von der* Vedi Schol. zu Kâṭ. Çr. 3,3,6. 13. 4,4,16.

यैजत्र (von 1. यज्) Uṇâdis. 3,105. adj. *dem göttliche Verehrung und Opfer gebühren:* ये यजत्रा य ईड्यास्ते ते पिबन्तु जिह्वया RV. 1,14,8. 65, 2. 3,31,17. देवी देवेभिर्यजते यजत्रैः 4,36,2. 6,21,11. 50,15. ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृताः 7,35,15. पिता मरुत्यजत्रः 52,2. 10, 70,11. Agni 1,76,4. 3,22,2. VS. 11,76. Varuṇa und die Âditja RV. 2,27,16. 29,6. 7,88,4. AV. 6,114,3. Himmel und Erde RV. 7,53,4. सं ते प्राणो वातेन गच्छतां समङ्गानि यजत्रैः (= पार्थैः Mahîdh.) VS. 6,10. AV. 13,2,44. पश्येदमन्यद्दभ्यं यजत्रम् RV. 10,149,3. n. = यज्ञियक्षेत्र Uṇâdis. m. = यज्ञियक्षेत्रिन् ÇKDa. nach Uṇâdis.

यजैव (wie eben) *Verehrung* (der Götter), *das Huldigen, Opfern;* nur im dat. und construirt wie ein infin. RV. 2,28,4. घा देव देवान्यजथाय वक्षि 3,4,4. नृषदो यज्ञियैर्यजथाय देवान् 17,4. 19,5. 5,1,2. 11,2. 7,10,5. 10,7,4. 12,4.

यजन (wie eben) n. 1) *das Opfern* M. 1,88. 10,75. MBh. 12,6722. (चक्रुः) यजनं यज्ञशास्त्रेषु 13,7774. Mân. P. 99,66. fg. यजनासे MBh. 7,2172. Harîv. 3873. °समता Spr. 2057. तव यजनाय *um dir zu opfern* Bhâg. P. 4,7,33. — 2) *Opferplatz* R. Gorr. 1,64,23. Bhâg. P. 4,4,6. — 3) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,5048. — Vgl. देव°.

यजनीय (von यजम) adj. mit und ohne घहन् *Weihetag, Opfertag* d. i. *der erste eines Monats:* माघीफल्गुयजनीये so v. a. *am ersten des* Phâlguna Kâṭ. Çr. 15,1,6. 3,19. 24,6,3. 26. Liṭ. 2,8,15. 3,3,7. Gobh. 4, 5,8. 6,3. 8,16.

यजप्रेष्य adj. *wobei die Aufforderung* (प्रेष्य) *mit dem Worte* यज्ञ *geschieht* Kâṭ. Çr. 15,4,4. 18,6,20.

यज्ञमान (von 1. यज्ञ् P. 3,2,128. 1) adj. s. u. 1. यज्ञ्. — 2) m. a) *der Opferer* d. h. *derjenige, welcher ein Opfer für sich veranstaltet und bestreitet* AK. 2,7,7. H. 817. Halâj. 2,265. Çat. Br. 1,6,4,20. 2,3,2,6. 3,7,4,10. Kâṭ. Çr. 1,10,12. 3,1,6. 2,7. 4,30. Âçv. Gṛhj. 1,11,9. यज्ञमानो क्रीतेनात्मानं निष्क्रीणीते Âit. Br. 2,3. Ânanda. Up. 1,11,1. B. Gorr. 1,41,8. Vaitân. Bṛh. S. 10,5. Bhâg. P. 4,3,7. 24. 13,26. Vṛddha-Kâç. 8,22. P. 1,3,72, Sch. °भाग Çat. Br. 2,4,2,24. 11,4,4,11. °चमस Âit. Br. 7,33. fg. Liṭ. 9,2,4. °शिष्य *der Schüler eines auf seine Kosten ein Opfer bestreitenden Brahmanen* Çiç. 31,1, v. l. °क्रविस् Bhâg. P. 3,16,8. °लोक TS. 5,2,2,3. Ragh. 18,11. यज्ञमानी f. *die Frau des* Jagamâna Bhâg. P. 4,7,36. — b) *ein Mann, der auf seine Kosten Opfer zu veranstalten im Stande ist, ein wohlhabender Mann* Pañkat. 169,7. 8. 182,12. — Vgl. याज्ञमान.

यज्ञमानक m. = यज्ञमान 2) a) Vṛddha-Kâç. 2,18.

यज्ञमानत्व n. nom. abstr. von यज्ञमान 2) a) Çiṅk. zu Ânanda. Up. S. 84.

यज्ञमानब्राह्मण n. *das Brâhmaṇa des Darbringenden* AV. 9,6,18.

यज्ञम् (von 1. यज्ञ) n. *Verehrung:* घृण्यर्चे नभाकवदिन्द्राग्नी यज्ञमा गिरा RV. 8,40,4. = याग Sāy.

यज्ञा (wie eben) f. N. pr. einer neben Sītā, Çamā, Bhūti genannten Genie Pān. Gaṇ. 2,17.

यज्ञाक (wie eben) adj. = दानकर्तृ *Spender* Uṇādik. im ÇKDa.

यज्ञि (wie eben) Uṇādis. zu Uṇādi. 4,117. 1) *das Opfern:* दानमध्ययनं यज्ञिः M. 10,79. — 2) *die Wurzel* यज्ञ् Çiṇ. 66. Schol. zu Kāç. Ça. 101, 8, v. l. — 3) nom. ag. *verehrend, opfernd* in देव°.

यज्ञिन् (wie eben) nom. ag. *Verehrer, Opferer* MBh. 12,10280.

यज्ञिष्ठ (wie eben mit dem suff. des superl.) adj. *am besten —, am meisten verehrend oder opfernd* RV. 1,36,10. क्रतू Agni 38,7. 127, 2. 140,4. 3,10,7. यज्ञिष्ठेन मनसा यजेति देवान् 14,5. 4,2,1. 5,14,2. देवानेमुच यो मर्त्यानां यज्ञिष्ठः स प्र यंसतामृतावा 6,13,12. — Vgl. यज्ञीयंस्.

यज्ञिय (von 1. यज्ञ) adj. *der den Göttern huldigt, — opfert* MBh. 13,5143.

यज्ञीयंस् (wie eben mit dem suff. des compar.) adj. *besser —, mehr verehrend oder opfernd, ausgezeichnet verehrend:* घृणे यजस्व कृविधा यजीयान् RV. 2,9,4. 3,4,2. 13,5. 19,1. 5,1,5. न वेदाता पूर्वो घृणे यजीयान् 3,5. 5,11,1. मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान् 10,12,2.

यज्ञु (von 1. यज्ञ) m. N. eines der zehn Rosse des Mondes Viṣṇu beim Schol. zu H. 104.

यज्ञुमय adj. *aus Jaǵus bestehend* Ait. Br. 1,22. Çat. Br. 4,3,4,5. 10, 5,4,5. Kauṣ. Up. 2,6. MBh. 13,1035 (ed. Bomb. besser यजुर्भिर्यत्). st. यजुर्मयं). Mārk. P. 78,12. 102,10. 19.

यज्ञुर्लक्ष्मी (यजुस् + ल°) f. Bez. *einer best. Sprache* Ind. St. 13,78. 101. 104. — Vgl. लक्ष्मीयजुस्.

यज्ञुर्विद् (यजुस् + विद्) adj. H. 819. *der Opfersprüche —, Weihesprüche kundig* AV. 12,1,38. M. 12,112.

यज्ञुर्विधान (यजुस् + वि°) n. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1173.

यज्ञुर्वेद m. *der Veda der Jaǵus* TBr. 3,12,9,1. Ait. Br. 5, 28. Çat. Br. 14,5,5,2. fgg. 12,3,4,9. Āçv. Çr. 10,7,2. Çāṅkh. Çr. 3,21,3. Gaṇ. 1,25. Ind. St. 3,266. M. 4,124. VP. 276. 279. fgg. Kathās. 49,157. Verz. d. Oxf. H. 54,b,3. 8. 13. 55,a,6. 88,b,20. 265,b,25. H. 249. Weber, Lit. 83. fgg. °भाष्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 384,b, No. 476.

यज्ञुर्वेदिन् adj. *mit dem Jaǵurveda vertraut* Kull. zu M. 3,145. यजुर्वेदिवयोत्मर्गतन्त्र Verz. d. Oxf. H. 290,a, No. 697. यजुर्वेदिभाष्यतन्त्र 291,b, No. 706.

यज्ञुःशाखिन् adj. *mit einer Çākhā des Jaǵurveda vertraut* Verz. d. B. H. No. 1278.

यज्ञुष in ऋग्यजुष n. sg. *der Ṛg- und der Jaǵurveda* P. 5,4,77.

यज्ञुष्क am Ende eines adj. comp. von यजुस् in ग्र°.

यज्ञुष्कृत (यजुस् + कृत) adj. *mit einem Opferspruch gewirkt* TS. 5,2,8, 2. Çat. Br. 1,2,4,6. 3,8,2,18. 5,3,3,6. 7. दी° ebend. und Liṭ. 9,12,12.

यज्ञुष्कृति (यजुस् + कृ°) f. *Weihe mit einem Spruch* TBr. 3,8,2,2. TS. 5,1,2,1. Çat. Br. 13,1,2,1.

यज्ञुष्क्रिया (यजुस् + क्रि°) f. *eine mit Jaǵus verbundene Handlung* Kāṭh. Çr. 1,10,13.

यज्ञुष्टम n. superl. von यजुस् Kāç. zu P. 5,3,101.

यज्ञुष्टर n. compar. von यजुस् Schol. zu AV. Paipp. 2,83 und zu P. 5,3,101.

यज्ञुष्टस् (von यजुस्) adv. von *Seiten des Jaǵus, in Beziehung auf das J., im Gebiete des J.* Çat. Br. 4,1,1,7. 4,1,11. 6,2,1. 5,1,1,10. यदि न सक्तो वा यजुष्टो वा सामतो वा यज्ञो द्रुलेत् 11,5,2,3. 6. Āçv. Çr. 1,12, 32. Kaṭh. Up. 4,17,5.

यज्ञुष्टा f. nom. abstr. von यजुस् Kāç. zu P. 5,3,101. यजुष्ट्व n. dass. ebend. Vop. 7,25.

यज्ञुष्पति (यजुस् + प°) m. *der Herr der Opfersprüche*, Bez. Vishṇu's Bhāg. P. 4,19,11.

यज्ञुष्पात्र (यजुस् + पात्र) n. gaṇa कस्कादि zu P. 8,3,48.

यज्ञुष्मत् (von यजुस्) adj. von *einem Weihespruch begleitet:* पयस् Nir. 11,43. इष्टका: Bez. *gewisser Backsteine beim* Agnikajana Ait. Br. 5,28. Çat. Br. 6,1,2,25. 7,3,1,25. 8,7,2,8. 10,4,2,5. 11.

यज्ञुर्य (wie eben) adj. *zum Cult gehörig* AV. 10,5,15.

यज्ञुस् (von 1. यज्ञ) Uṇādis. 2,118. 1) n. a) *heilige Scheu, Verehrung:* बर्हिरिव यजुषा रक्षमाणा RV. 5,62,3. नि यदीमु यजुर्दधे 8,41,3. विश्वे देवा मनु तत्ते यजुर्गृ: 10,12,3. — b) *Verehrung* so v. a. *Opferhandlung:* यजुषा समिष्टम् RV. 10,106,3. यजुःसुत (= यजुस्सुत nach Durga) Nir. 11,4. — c) *Weihespruch, Opferspruch*, als technische Bez. *der von den Hymnen* (ऋच्) *und Gesängen* (सामन्) *unterschiedenen liturgischen Worte.* RV. 10,90,9. यजूंषि यज्ञे समिध: स्वाहा AV. 5,26,1. 8,6,2. VS. 1,30. 4, 1. 19,28. Ait. Br. 1,29. 8,13. fg. TS. 5,5,2,1. गार्वीधुकं चरुमेतेन यजुषा चरमाणामिष्टकायां निर्दध्यात् 9,4. यजुरेतान् यजुषान्यतूंश्चमन्यन् TBr. 2,1,2,3. 3,9. येन मन्त्रेण जुहोति तन्मयजु: Çat. Br. 2,3,3,17. अक्षरी वै यजुष्पाशी: 1,2,2,7. 6,5,4,2. अचारिषुर्यजुर्भि: 4,6,9,20. त्रेधा विहिता वाग्यो यजूंषि सामानि 5,3,2,4. 10,2,4,6. शुक्लानि 14,9,4,33. Liṭ. 1,1,5. 23. 8,4. Kāṭh. Çr. 1,3,1. यजुर्युक्त *unter Aufsagung eines Spruchs geschirrt* 14,3,16. Kātj. 68. Kauṣ. Up. 1,5. VS. Prāt. 1,122. 4,76. RV. Prāt. 11,37. 16,6. 8. अक्सामं यजुरेव च Bhāg. 9,17. ऋग्यजुषी M. 4,123. सामयजुषी AK. 1,1,2,4. यजुषि P. 6,1,117. यजुषि काठके 7,1,36. ऋग्भिर्यजुर्भि: सामभिरथर्वाङ्गिरसैरपि Harīv. 1323. M. 11, 264. Śiṅās. 12, 17. Vaiṣṇ. Dh. S. 48,31. यजुषां शतरुद्रियम् MBh. 13,915. Verz. d. Oxf. H. 54,b,9. 16. 56,a,11. संहिता यजुषाम् 55,a,7. M. 11,262. Bhāg. P. 1,4,21. यजुषां पति: 3,14,3. 4,1,6. यजुःसाह Verz. d. Oxf. H. 289,b, No. 693. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathās. 73,103. — Vgl. इष्ट°, हि°, समिष्ट°, स्तम्ब°.

यज्ञुस्मात् (von यजुस्) adv. Schol. zu AV. Paipp. 2,83.

यज्ञूदर (यजुस् + उदर) adj. *die Jaǵus zum Bauche habend* Kauṣ. Up. 1,7.

यज्ञे (von 1. यज्ञ) m. P. 3,3,90. Vop. 26,180. *Gottesverehrung* im weitesten Sinne; sowohl a) *Verehrung in Worten der Andacht, Preis, Huldigung* (so in der alten Sprache gebraucht, vgl. jaçna im Zend), als b) *Gottesdienst, Weihehandlung, Opfer;* diese Bed. wird herrschend. Naigh. 3,17. AK. 2,7,12. H. 820. am. 2,78. Halāy. 2,339. a) उप स्तोषाम यज्ञै: RV. 7,2,2. ब्रह्मन्, यज्ञ 1,10,4. यज्ञ, वचस् 91,10. 131,2. 156,1. 2,33,12. 5,12,6. यज्ञं गिरो नसितु: मन्दुतिं च 43,10. प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो धर्मा मरुद्भ्य: 52,5. नसितु: मधो यज्ञो त्रिगाति चेतन: 3,12,3. 6,2,2. 3,2. 6,1. उक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञै: 18,15. 20,10. 21,4. 34,2. 48,1. 8,60,10. 78,6. सोम, कविम्, यज्ञ 10,14,13. यज्ञेन यज्ञमव यज्ञिय: सन् 3, 32,12. VS. 6,26. — b) सं यज्ञेषु पिबध्यै RV. 7,37,2. 70,6. 1,13,12. 34,

2,9. 84,2. तेन यज्ञेन वक्षणा आ पृणाधम् 102,5. हूयमानाः सोतृभिर्नः यज्ञम् 4,29,2. इमं यज्ञं चनो धा अग्न उशन्यं ते आमानो वृक्तबर्हिषम् 6,10,6. 14,2. AV. 1,13,1. 4,23,2. 7,20,1. 4. 5. 12,1,22. VS. 2,6. 4,9. Çat. Br. 1,1,4,3. 3,8,2. यज्ञाः संकल्पसंभवाः M. 2,3. यज्ञाध्ययननित्य R. 1,6,14. यज्ञाश्चैवाप्तदक्षिणाः 33,24. श्लो यज्ञस्त्वदक्षिणः Spr. 809. Rāgn. 1,26. Varāh. Bṛh. S. 13,11. 43,3. यज्ञं यज्ञ् RV. 1,142,3. 13,3. R. 2,72,27. इज्ञे यज्ञेषु यज्ञियम् RV. 6,16,4. VS. 17,33. यज्ञेन यज् Çāṅkh. Çr. 16,10,15. M. 6,26. fg. 8,206. 11,39. MBh. 13,328. Bhāg. 9,20. R. 1,58,20. Bhāg. P. 3,13,11. यज्ञेन चर् Kāty. Çr. 25,14,29. यज्ञं भर् RV. 1,122,1. 2,5,3. यज्ञं तन् 7,10,2. AV. 4,14,4. Ait. Br. 2,11. M. 4,205. यज्ञं वितन् 3,28. Çiç. 193. Bhāg. P. 3,24,24. °वितान 1,23. °संतति 4,7,17. यज्ञं कर् RV. 4,34,3. प्र यंसि यज्ञम् 7,21,2. 44,2. 4,39,3. यज्ञं गच्छेव वावृतः M. 4,37. यज्ञमेव देवा उपायन् Çat. Br. 3,2,4,18. परि यज्ञं नि षेदुः RV. 4,36,7. यज्ञमधीयानाः Çat. Br. 14,6,8,1. प्रयति यज्ञे RV. 3,29,16. 6,10,1. मध्यः संतिष्ठते यज्ञः M. 5,98. सर्वथा वर्तते यज्ञः 2,15. °निर्वृति 4,23. °सिद्धि 1,23. 11,13. °संस्तर MBh. 12,791. °प्रयान Verz. d. Oxf. H. 365, b,21. °समृद्धि ebend. °भङ्ग 138, b, No. 272. दिवं देवास्ततीर्घं यज्ञो ऽगात् Çāṅkh. Çr. 3,20,4. यज्ञस्य क्षत्विक् RV. 1,1,1. 44,11. यज्ञस्य केतुः s. u. केतु. ब्राह्मण° Kāty. Çr. 19,1,1. राज्ञ° 20,1,1. वैश्य° 22,11,7. गण° 12. शूद्र° 25,13,30. हि° 22,11,14. द्विदेवयज्ञयोगप्रसक्तयो Vaijn. Bṛh. S. 69,28. गिरि° *ein zu Ehren eines Berges veranstaltetes Opfer* Harīv. 3830. युद्ध° *eine als Opfer gedachte Schlacht* 13213. fg. विवाह्ययज्ञे वितते Kumāras. 7,47. स्नान° Bhāg. 9,13. प्रस्ताव° Spr. 3273. तूष्णीमयज्ञे दक्षिणाः Lāṭy. 2,8,30. वेदिर्यज्ञस्याग्नेरुत्तरवेदिः Kauç. 127. °काण्ड Pāṅkav. Br. 11,11,2. 13,6,2. °रूप Çat. Br. 5,3,5,20. 12,8,2,15. Kāty. Çr. 15,3,11. Mudr. Up. 1,2,7. °रूपधृक् Paṅkar. 4,8,36. °लिङ्ग Bhāg. P. 2,13,13. °कीर्ति Ind. St. 3,459,9. °संभाराः Bhāg. P. 2,6,22. °गोप्तृ: (°गोप्ता: ed. Bomb.) R. 2,71,37. °शिष्टाशन M. 3,118. fünf Opfer: देव°, भूत°, पितृ°, ब्रह्म°, मनुष्य° Âçv. Gṛhy. 2,1,1—4. M. 3,70. 73. 5,169. MBh. 3,5025. 10662. चतुर्दद्यान्मनो दद्याद्दद्याच्च सूनृताम्। अनुव्रज्योदुपासीत स यज्ञः पञ्चदक्षिणः॥ 249. fg. Personificirt Harīv. 11674. 14187. VP. 67. fg. Bhāg. P. 2,16,31. mit dem patron. Prâgâpatja, angeblicher Verfasser von RV. 10,130. गाथा यज्ञगीता (vgl. यज्ञगाथा) MBh. 12,791. 2316. *eine Form* Vishṇu's 1510. Bhāg. P. 3,13,22. 8,1,18. 14,3. Paṅkar. 4,3,119. H. an. ein Sohn Ruki's von der Âkûti VP. 34. Indra unter Manu Svâjambhuva Bhāg. P. 4,1,3. Nach H. an. noch ein Name des *Feuers* und = आत्मन्. — Vgl. अ°, अधि°, ऋषि°, गो°, ग्रह°, ज्ञप°, देव°, नाम°, नृ°, परि°, पशु°, पाक°, पितृ°, पुनर्यज्ञ, प्रथम°, बीज°, ब्रह्म°, ब्राह्मण°, भर्तृ°, भूत°, मनुष्य°, मख°, मातृ°, मित्र°, राज्ञ°, विधि°, वेद°, याज्ञायनि, याज्ञिक.

यज्ञक MBh. 13,1818 fehlerhaft für याज्ञक, wie die ed. Bomb. liest.

1. यज्ञकर्मन् (यज्ञ + क°) n. *Opferhandlung* Kāty. Çr. 1,8,19. Weber, Çat. 94. M. 2,208. 3,120. 5,116. P. 1,2,34. R. 1,12,8. 39,25. R. Gorr. 1,12,8. 39,29. Vgl. यज्ञानां कर्म Verz. d. Oxf. H. 30,b,3.

2. यज्ञकर्मन् (wie oben) adj. *mit einem Opfer beschäftigt:* ब्राह्मण R. Gorr. 1,13,26. 28.

यज्ञकल्प (यज्ञ + क°) adj. *opferähnlich* Bhāg. P. 5,8,13. यज्ञैरयवयवैः कल्प्यते निरूप्यते Comm.

यज्ञका f. Hypokoristikon von यज्ञदत्ता P. 7,3,45, Vârtt. 5, Schol.

यज्ञकाम (यज्ञ + काम) adj. *nach Gottesdienst begierig* RV. 10,51,8. TS. 3,2,8,3. AV. 7,28,1. 103,1. Ait. Br. 1,8. Çāṅkh. Çr. 5,2,3. 16,29,7.

यज्ञकार (यज्ञ + 1. कार) adj. *mit einem Opfer beschäftigt* MBh. 13,1874.

यज्ञकाल (यज्ञ + 2. काल) m. 1) *Opferzeit* Lāṭy. 8,1,1. — 2) Bez. *des letzten Tages in einem Halbmonate* H. 148.

यज्ञकीलक (यज्ञ + की°) m. *Opferpfosten* H. 824.

यज्ञकृत् (यज्ञ + कृत्) 1) adj. *Gottesdienst verrichtend, mit einem Opfer beschäftigt* TS. 3,2,4,1. 8,3. Bhāg. P. 4,4,7. *Opfer veranlassend*, Beiw. Vishṇu's MBh. 13,7054. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 412.

यज्ञकृतत्र s. u. कृतत्र und die Nachträge u. d. W.

यज्ञकेतु (यज्ञ + केतु) m. 1) *Kenntniss des Gottesdienstes habend* (etwa so v.a. यज्ञधीर्) RV. 4,31,11. = यज्ञः प्रज्ञापको यस्य Sāy. — 2) N. pr. eines Râkshasa R. 5,18,14. wohl fehlerhaft für यज्ञकोप.

यज्ञकोप (यज्ञ + कोप) m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,80,1. 6,69,11. 7,5,36.

यज्ञक्रतु (यज्ञ + क्रतु) m. 1) *eine gottesdienstliche Handlung, Ritus; das Ganze einer Feier, Haupthandlung* Ait. Br. 1,23. अग्निष्टोमं यथा समुद्रं स्रोत्या एवं सर्वे यज्ञक्रतवोऽपियन्ति 3,39. इळादधो नाम यज्ञक्रतुः 40. 43. 6,31. राजसूय 7,15. TBr. 1,3,4,1. 4,6,2. 5,9,1. 7,8,2. 2,2,4,1. अग्निहोत्र 3,6,1. 3,8,10,1. 10,9,2. TS. 3,1,2,3. 6,4,8,1. Çat. Br. 2,3,8,10. 3,9,3,33. 5,2,3,9. 10,4,3,4. सौत्रामणी 12,8,3,1. अश्वमेध 13,4,2,1. Çāṅkh. Çr. 15,1,3. 16,23,6. 29,5. Bhāg. P. 3,20,11. Personif. *eine Form* Vishṇu's 4,7,46. 5,18,33. — 2) pl. *die Jaǵña und Kratu genannten Opfer* Ind. St. 2,96. fg. Weber, Rāmây. Up. 334. — Vgl. याक्रतु°.

यज्ञक्रिया (यज्ञ + क्रि°) f. *Opferhandlung* Kathās. 82,9. P. 1,2,34, Sch. Verz. d. Oxf. H. 339,b,4.

यज्ञगाथा (यज्ञ + गा°) f. *ritueller Gedenkvers* Ait. Br. 3,43. Âçv. Çr. 2,12,6. Gṛhy. 1,3,10. Çāṅkh. Çr. 16,8,26. 9,6. Vgl. गाथा यज्ञगीता MBh. 12,791. 2316.

यज्ञगिरि (यज्ञ + गि°) m. N. pr. eines *Berges* Harīv. 3327.

यज्ञघ्न (यज्ञ + घ्न) adj. *Opfer störend;* m. *ein Opfer störender Dämon* R. 1,11,16 (21 Gorr.). 12,3. Bhāg. P. 3,22,30. 4,4,32. 5,6,24.

यज्ञज्ञ (यज्ञ + ज्ञ) adj. *des Gottesdienstes kundig* Nir. 11,18.

यज्ञतति (यज्ञ + 2. त°) f. *Opferdarbringung* AV. Paipp. 4,104.

यज्ञतनू (यज्ञ + तनू) f. *eine Form —, Species des Gottesdienstes* Kauç. 138. Bez. gewisser Vjâhṛti Çat. Br. 4,5,2,3. gewisser Ishṭaka TS. 5,4,4,2.

यज्ञतत्त्वसुधानिधि m. Titel eines Werkes Ind. St. 1,470. Colebr. Misc. Ess. 1,81.

यज्ञतन्त्रसूत्र n. Titel eines Sûtra Ind. St. 1,470.

यज्ञत्रातृ (यज्ञ + त्रा°) m. *Beschützer des Opfers*, Beim. Vishṇu's Paṅkar. 4,3,36 (S. 248).

यज्ञदक्षिणा (यज्ञ + द°) f. *ein den dienstthuenden Priestern verabfolgtes Opfergeschenk* R. 2,75,24.

यज्ञदत्त (यज्ञ + दत्त) m. ein häufig vorkommender Mannsname R. Gorr. 2,66,6. Kathās. 21,109. 28,162. Paṅkat. 199,8. ed. orn. 63,17. beispielsweise gebraucht wie *Gajus* Kaṇ. 3,2,6. 10. Weber, Nax. 2,319.

Mitr, ST. 3,70. — °वध Gild. Bibl. 118. fgg. — Vgl. याज्ञदत्ति.

यज्ञदत्तक m. Hypokoristikon von यज्ञदत्त P. 5,3,78, Sch.

यज्ञदत्तशर्मन् m. N. pr. beispielsweise gebraucht wie *Gajus* Schol. zu Kâç. Ça. 138,3. 286,17. 396,20.

यज्ञदीक्षा (यज्ञ + दी°) f. *Weihe zu einem Opfer* M. 2,169. R. Gorr. 1,22,7. 7,37,10.

यज्ञदेव यज्ञ + देव) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 114,91.

यज्ञद्रव्य (यज्ञ + द्रव्य) n. *ein zum Opfer erforderlicher Gegenstand* R. Gorr. 1,61,7. = पात्रीय Trik. 2,7,9.

यज्ञद्रुह् (यज्ञ + द्रुह्) m. *ein Feind der Opfer, ein* Râkshasa Wilson.

यज्ञधर यज्ञ + धर) adj. *das Opfer tragend;* m. Bein. Vishṇu's H. ç. 67.

यज्ञधीर (यज्ञ + 2. धीर) adj. *der Götterverehrung kundig* RV. 7,87,3.

यज्ञनारायण (यज्ञ + ना°) m. N. pr. eines Mannes Colebr. Misc. Ess. 2,49. °दीक्षित Hall 172.

यज्ञनिर्वृत् (यज्ञ + नि°) adj. *den Gottesdienst ordnend* RV. 10,66,8.

यज्ञनेता (यज्ञ + 2. नी) adj. *den Gottesdienst leitend* RV. 1,15,12. 10, 88,17. 107,6. VS. 2,6.

यज्ञनेमि (यज्ञ + ने°) adj. *von Opfern rings umgeben*, Beiw. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4,8,26.

यज्ञपति (यज्ञ + प°) m. 1) *Herr des Gottesdienstes*, so heisst *derjenige, welcher eine Cerimonie anstellen lässt und bestreitet*, RV. 10,170,1. AV. 2,35,2. 4,11,5. VS. 1,2. 12. 2,6. 12. 3,3. 6,10. 11. 18,59. Ait. Br. 3,27. TS. 3,1,4,1. 6,6,2,2. Çat. Br. 1,8,1,28. Çâṅkh. Ça. 10,15,13. VP. bei Mitr, ST. 1,62. *derjenige, welchem zu Ehren ein Opfer dargebracht wird*, Bein. Soma's (nach Manum.) VS. 8,25. Vishṇu's Bhâg. P. 2,4, 20. 9,14. 4,19,3. 20,1. 21,26. 8,17,7. Verz. d. Oxf. H. 9,b,1. — 2) N. pr. eines Autors Hall 30. — Vgl. याज्ञपति.

यज्ञपत्नी (यज्ञ + प°) f. *die am Opfer theilnehmende Gattin des Veranstalters eines Opfers* MBh. 1,7352. 12,9816 (die ed. Bomb. °पत्नी-वनानीता). Bhâg. P. 11,12,6.

यज्ञपथ (यज्ञ + पथ) m. *Pfad der Verehrung oder des Opfers* Çat. Br. 1,1,2,6. 3,2,5. 7,3,4,22. 12,4,4,1.

यज्ञपद् oder °पाद्, adj. f. °पदी etwa *im Opfer fussend* AV. 18,10,6.

यज्ञपरिभाषा f. Titel eines Sûtra des Âpastamba Mitr, ST. 2,181, 1 v. u. 3,41,7. °सूत्राणि Z. d. d. m. G. 9,xliii.

यज्ञपर्वन् (यज्ञ + प°) n. *Fuge des Opfers:* यत्र इध्मार्थशमूलरज्जुवेदिर्यात् TBr. 3,7,6,5. 12,6,12. 1,1,9,5. TS. 5,2,8,1. 6. 6,1,6,5.

यज्ञपशु (यज्ञ + 1. पशु) m. *Opferthier* Bhâg. P. 4,19,11. 28,26. *Pferd* Çaṇḍam. im ÇKDa.

यज्ञपात्र (यज्ञ + पात्र) n. *Opfergeräth* Çat. Br. 1,1,2,12. 4,17. 12,5, 2,7. Âçv. Gṛhj. 4,2,1. Kauç. 81. Kâṭh. Ça. 25,7,31. AV. Paric. in Verz. d. B. H. 90. M. 5,116. 167. R. Gorr. 2,83,22. 24. 3,76,23. Bhâg. P. 4, 5,13. P. 1,3,61. 8,1,15. Vop. 23,51.

यज्ञपात्रीय (von यज्ञपात्र) adj. *zu einem Opfergeräth geeignet* Çat. Br. 2,2,2,10.

यज्ञपार्श्व (यज्ञ + पार्श्व) n. Titel einer Schrift Ind. St. 3,269. Weber, Gjot. 49. Müller, SL. 236. Hall 102. Verz. d. B. H. No. 261. Verz. d. Oxf. H. 270,b,32. 277,a,12. 279,a,21. 292,a,31. Nach Aufrecht m. N. pr. eines Autors.

यज्ञपुच्छ (यज्ञ + पुच्छ) n. *Schwanz d. h. Endstück des Opfers* Âçv. Ça. 5,11,2. Lâṭj. 9,5,4. Çat. Br. 11,5,5,11.

यज्ञपुंस् (यज्ञ + पु°) m. *die Seele des Opfers*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 4,25,29. Paṇḍar. 4,3,36 (S. 248).

यज्ञपुरश्चरण (यज्ञ + पु°) n. Titel einer Schrift Ind. St. 1,170.

यज्ञपुरुष (यज्ञ + पु°) m. = यज्ञपुंस् H. 214. Verz. d. Oxf. H. 183,b, 26. VP. bei Mitr, ST. 1,63. Bhâg. P. 1,3,28. 2,7,11. 3,13,23. 22,31. 4,14,25. 5,3,1. 8,17,8. 9,16,18. °पूरुष 4,13,1. 14,18.

यज्ञप्रेप्सु (यज्ञ + 2. प्रेप्सु) adj. *am Opfer sich vergnügend:* इयं दुरुन्मुदुधौ विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो RV. 10,122,6. VS. 27,31.

यज्ञफलद (यज्ञ - फल + 1. द) adj. *Opfer belohnend*, Bein. Vishṇu's Paṇḍar. 4,3,35 (S. 248).

यज्ञबन्धु (यज्ञ + ब°) m. *Opfergenosse* RV. 4,1,9.

यज्ञबाहु (यज्ञ + बाहु) m. *des Opfers Arm*, ein N. des *Feuers* und zugleich N. pr. eines Sohnes des Priyavrata Bhâg. P. 5,1,25.34. 20,9.

1. यज्ञभाग (यज्ञ + भाग) m. *Antheil am Opfer* Harîv. 8002. 8006. Kumâras. 1,17. Bhâg. P. 9,17,13. Mârk. P. 103,4. °क्षानहीन् 103,20. °भुज् *einen Opferantheil geniessend;* m. *ein Gott* Bhâg. P. 8,14,6. Mârk. P. 103,6. Kumâras. 6,72.

2. यज्ञभाग (wie eben) adj. *einen Antheil am Opfer habend:* सुरा: Mârk. P. 118,7. m. *ein Gott:* यज्ञभागेश्वर m. Bein. Indra's Çiv. 186.

यज्ञभाजन (यज्ञ + भा°) n. *Opfergeräth* Gaṇiṇ. im ÇKDa.

यज्ञभाण्ड (यज्ञ + भा°) n. dass. R. 1,4,21.

यज्ञभावन (यज्ञ + भा°) adj. *Opfer fördernd*, Beiw. Vishṇu's Bhâg. P. 3,13,33. 4,7,48. Paṇḍar. 4,3,35 (S. 248). यज्ञैर्भाव्यत आक्रियते Comm. zu Bhâg. P.

यज्ञभुज् (यज्ञ + 4. भुज्) adj. *Opfer geniessend;* m. *ein Gott*, insbes. Vishṇu MBh. 13,7034. Bhâg. P. 4,13,32. 9,17,4. Mârk. P. 73,6. 104, 12. Paṇḍar. 4,3,35 (S. 248).

यज्ञभूमि (यज्ञ + भू°) f. *Opferstätte* R. 1,11,14 (19 Gorr.). 73,14 (75, 15 Gorr.). R. Gorr. 1,13,1. Kathâs. 51,105.

यज्ञभूषण (यज्ञ + भू°) m. *weisses* Darbha-*Gras* Râǵân. im ÇKDa.

यज्ञभृत् (यज्ञ + भृत्) m. *der Veranstalter eines Opfers* Vaṇîn. Bhp. S. 13,11. Beiw. Vishṇu's MBh. 13,7034.

यज्ञभोक्तृ (यज्ञ + भो°) m. *Geniesser der Opfer*, Beiw. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4,1,34.

यज्ञमण्डल (यज्ञ + म°) n. *Opferrund, Opferstätte* R. 3,4,12.

यज्ञमनस् (यज्ञ + म°) adj. *auf das Opfer merkend* Âçv. Ça. 1,12,20.

यज्ञमन्यु (यज्ञ + म°) adj. *opferwillig* RV. 7,61,4.

यज्ञमय (von यज्ञ) adj. *das Opfer in sich enthaltend* Harîv. 11365. — Vgl. वेदयज्ञमय.

यज्ञमहोत्सव (यज्ञ + म°) m. *eine grosse Opferfeier* Bhâg. P. 4,19,2.

यज्ञमालि (यज्ञ + मा°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 11,a, 6. Verz. d. B. H. 130.

यज्ञमुख (यज्ञ + मुख) n. *Mund und Eingang des Opfers* Ait. Br. 1, 2. fgg. TBr. 1,1,9,1. 2,2,3. अग्नेर्वै यज्ञमुखम् 6,1,3. 11. यज्ञमुखं वा अग्नि-होत्रं ब्रह्मौदना व्याकृतयो यज्ञमुख एव ब्रह्म कुरुते TS. 1,6,10,2. 3,1,2,1.

Çat. Br. 1,1,2,3. 2,3,4,10. 12,7,2,12.

यज्ञमुष् (यज्ञ + 2. मुष्) adj. *das Opfer raubend*; m. *ein dem Opfer nachstellender Dämon* TS. 3, 5, 4, 1. Kâṭh. 32, 6. MBh. 3,14165. fg. Vaṛâh. Bṛh. S. 19, 13. — Vgl. इष्टिमुष्.

यज्ञमुख् in der Stelle पुरा यज्ञमुखा रक्षांसि तीर्थेधपो गोपायन्ति Çâṅkh. Br. 12, 1.

यज्ञमूर्ति (यज्ञ + मू°) m. N. pr. eines Mannes Hall 34.

यज्ञमनि s. u. मेनि.

यज्ञयशस् (यज्ञ + यशस्) n. *Anmuth des Opfers* TS. 5,1,4,3. 6,5,4,4.

यज्ञयोग्य (यज्ञ + योग्य) adj. *zum Opfer geeignet*; m. *Ficus glomerata* Râǵân. im ÇKDa.

यज्ञरस (यज्ञ + रस) m. *Opfernass d. i. der Soma* Harîv. 2589. — Vgl. यज्ञरेतस्.

यज्ञराज् (यज्ञ + राज्) m. *König des Opfers, der Mond* H. ç. 11. wohl fehlerhaft für यज्ञराज्ञ्; vgl. यज्ञनां पतिः u. यज्ञन्.

यज्ञरुचि (यज्ञ + रु°) m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,25.

यज्ञरेतस् (यज्ञ + रे°) n. *der Same des Opfers d. i. der Soma* Bhâg. P. 4,24,38. — Vgl. यज्ञरस.

यज्ञर्त (यज्ञ + ऋत) adj. etwa *opfergerecht* AV. 8,10,4.

1. यज्ञवर्चस् (यज्ञ + व°) n. *Opferwort* AV. 11,3,19.

2. यज्ञवर्चस् (wie eben) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Râǵastambâjana Çat. Br. 10,6,5,9. pl. Pravaṛâkhjâ. in Verz. d. B. H. 55,13.

यज्ञवनस् (यज्ञ + व°) adj. *Opfer liebend* RV. 10,50,5.

यज्ञवत् (von यज्ञ) adj. *verehrend* RV. 3,27,6.

यज्ञवराह (यज्ञ + व°) m. Vishṇu *als Eber* Wilson. — Vgl. यज्ञसूकर.

यज्ञवर्धन (यज्ञ + व°) adj. *Opfer fördernd* AV. 10,6,34.

यज्ञवर्मन् (यज्ञ + व°) m. N. pr. eines Fürsten Z. f. d. K. d. M. 3,168.

यज्ञवल्क m. N. pr. eines Mannes: यज्ञस्य वल्को वक्ता यज्ञवल्कः तस्यापत्यं याज्ञवल्क्यः Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. 1,4,3.

यज्ञवल्ली (यज्ञ + व°) f. = सोमवल्ली *Cocculus cordifolius DC.* Râǵân. im ÇKDa.

यज्ञवाट (यज्ञ + वाट) m. *Opferstätte* Hir. 123. Çaunaka bei Müller, SL. 236, 5. MBh. 3, 9910. 15290. 7, 2172. 12, 9468. 14, 90. 282. Harîv. 1418. 8010. R. 1, 44, 35. 50, 1 (51, 1 Gorr.). 62, 22. R. Gorr. 1, 4, 23. 7, 91, 15. Mṛkkh. 174, 19. Bhâg. P. 10, 23, 32.

यज्ञवाम (यज्ञ + वाम) m. N. pr. eines Mannes Viṣṇ-P. in VP. I, 133.

यज्ञवास्तु (यज्ञ + वा°) n. *Stätte des Gottesdienstes, Opferplatz* Ait. Br. 2, 1. 12. TS. 2,6,2,2. 3,1,9,5. 4,10,2. Çat. Br. 12,3,4,1. Çâṅkh. Br. 10,2. Kauç. 67. Kurzer Ausdruck für यज्ञवास्तुक्रिया (vgl. Gṛhyâsaṅgr. 2,12) Gobh. 1,8,26. 31.

यज्ञवाह् (यज्ञ + वाह्) 1) adj. *das Opfer geleitend, — zu den Göttern befördernd* MBh. 1,8354. 2, 304. 13, 625. Verz. d. Oxf. H. 54, b, 12. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2572.

यज्ञवाहन (यज्ञ + वा°) adj. 1) *das Opfer geleitend so v. a. vollführend:* विप्राः MBh. 12,9721. — 2) *dessen Vehikel das Opfer ist*, Bein. Vishṇu's MBh. 13,7052. Çiva's Çiv.

यज्ञवाहस् (यज्ञ + वा°) adj. 1) *Verehrung bringend:* वयं धा यज्ञवाहसे RV. 3,8,2. 24,1. देवीं धियं मनामहे वर्धोधां यज्ञवाहसम् VS. 4,14. — 2) *Verehrung empfangend*, von Göttern: यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम् । क्रत्वाभिरिन्द्रं वावृधुः RV. 8,12,20. 1,3,11. 86,2. 4,47,4. AV. 6,114,2. TS. 1,8,2,1.

यज्ञवाहिन् (यज्ञ + वा°) adj. *das Opfer geleitend, — zu den Göttern befördernd:* घ° MBh. 13,1218.

यज्ञविद् (यज्ञ + विद्) adj. *opferkundig* Çat. Br. 14,6,2,4. Vaṛâh. Bṛh. S. 16,2.

यज्ञविद्या (यज्ञ + वि°) f. *Opferkunde* Prân. 107,2. 108,11.

यज्ञविष्ट s. u. 1. धंस् mit वि 3).

यज्ञवीर्य (यज्ञ + वीर्य) adj. *dessen Macht auf dem Opfer beruht*, Beiw. Vishṇu's Bhâg. P. 6,9,30.

यज्ञवृक्ष (यज्ञ + वृक्ष) m. *Opferbaum d. i. Ficus indica* Râǵân. im ÇKDa.

यज्ञवृद्ध (यज्ञ + वृद्ध) adj. *durch Opfer ergötzt:* Indra RV. 6,21,2.

यज्ञवृध् (यज्ञ + वृध्) adj. *opferfroh oder opferreich* AV. 4,23,2.

यज्ञवेशस (यज्ञ + वे°) n. *Einbruch in den Gottesdienst, Opferstörung, Entweihung* Ait. Br. 2,11. 31. 3,46. देवा वै यज्ञमतन्वत तोस्तन्वानानसुरा अभ्यायन्यज्ञवेशसमेषां करिष्याम इति 6,4. स यज्ञवेशसं कृत्वा प्रानक्ष सामसमिवत् TS. 2,4,12,1. 3,2,1. 3,4,2,2. 10,4. 5,1,2,2. 6,3,4,2. Çat. Br. 1,6,2,2. 12,7,1,1. 8,2,1. 13,2,2,3. Çâṅkh. Br. 7,2.

यज्ञवोढव (यज्ञ + वो°, dat. von वोढु und infin. zu वह्) *um die Opfer zu geleiten, — zu den Göttern zu befördern* Nirukta. 1,6,14 in Ind. St. 3,114.

यज्ञव्रत (यज्ञ + व्रत) adj. *in der Observanz des Opfers stehend* TS. 5,1,2,4.

यज्ञशत्रु (यज्ञ + शत्रु) m. *Feind des Opfers*; N. pr. eines Râkshasa R. 3,29,30. 6,19,22.

यज्ञशमल s. शमल.

यज्ञशरण (यज्ञ + श°) n. *Opferschuppen* Milav. 70,21.

यज्ञशाला (यज्ञ + शा°) f. *Opferhalle* Bhâg. P. 4,4,21. Sâj. zu RV. 1,1, 8. 13,6 (bei Rosen यज्ञशालाद्वाराणि, bei Müller यज्ञस्य शा°). 3,53,17. = अग्निशरण Schol. zu Çiç. 68,4.

यज्ञशास्त्र (यज्ञ + शास्त्र) n. *die Lehre vom Opfer* M. 4,22.

यज्ञशील (यज्ञ + शील) 1) adj. *an Opfer gewöhnt, häufig Opfer vollbringend* M. 11, 20. Spr. 4420. Bhâg. P. 3, 4, 12. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Verz. d. Oxf. H. 76,b,23.

यज्ञशेष (यज्ञ + शेष) *Ueberbleibsel von einem Opfer* H. 834. M. 3,285.

यज्ञश्मैो (यज्ञ + श्मन्, ī) adj. *das Opfer fördernd* RV. 1,4,7. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 473. Bhâg. P. 12,1,23.

यज्ञश्रेष्ठा (यज्ञ + श्रे°) f. *Cocculus cordifolius DC.* Râǵân. im ÇKDa.

यज्ञसंशित (यज्ञ + सं°) adj. *vom Opfer getrieben* AV. 10,3,24.

यज्ञसंस्था (यज्ञ + सं°) f. *Opfergrundform* Çâṅkh. Grhj. 1,1. 21.

यज्ञसदन (यज्ञ + स°) n. *Opferhalle* MBh. 2,1856. Bhâg. P. 3,6,27.

यज्ञसदस् (यज्ञ + स°) n. *Opferversammlung* Bhâg. P. 4,4,9.

यज्ञसाध् (यज्ञ + साध्) adj. *Gottesdienst vollführend* RV. 1,96,2. 114,4.

यज्ञसाधन (यज्ञ + सा°) adj. dass. RV. 1,145,2. 9,72,4. als Beiw. Vishṇu's *Opfer zu Wege bringend, — veranlassend* MBh. 13,7054.

यज्ञसार (यज्ञ + सार) m. 1) *das Beste beim Opfer*, als Bein. Vishṇu's Paṛâr. 4,3,30. — 2) *Ficus glomerata* Çabdar. in Verz. d. Oxf. H. 195, b, 15. Râǵân. im ÇKDa.

यज्ञसारथि (यज्ञ + सा°) N. eines Sâman Ind. St. 3,230, a. Lâṭy. 1,6,10.

यज्ञसूकर (यज्ञ + सू°) m. = यज्ञवराह Bhâg. P. 3,19,9.

यज्ञसूत्र (यज्ञ + सूत्र) n. *die beim Opfer über die linke Schulter hängende heilige Schnur* Gaṇiṅa., Vṛṣotsargapaddhati und Kalki-P. 4 im ÇKDa. R. 1,4,19. AK. 2,7,49. H. 845.

यज्ञसेन (यज्ञ + सेना) m. N. pr. eines Mannes TS. 5,3,8,1. Kâṭh. 21, 4. Bein. Drupada's MBh. 1,5176. 6251. 2,126. 5,7661. ein Fürst von Vidarbha Mâlav. 69,17. ein Dânava Kathâs. 47,17. unter den Beinamen Vishṇu's MBh. 12,1310. — Vgl. यज्ञसेनि, याज्ञसेनि.

यज्ञसोम (यज्ञ + सोम) m. N. pr. verschiedener Brahmanen Kathâs. 10, 6. 61,200. 97,8. 114,63. Verz. d. Oxf. H. 153,*a*,9.

यज्ञस्थल (यज्ञ + स्थल) n. 1) *Opferstätte* Verz. d. Oxf. H. 138,*b*,18. — 2) N. pr. eines Agrahâra Kathâs. 28,136. 97,7. 114,63. eines Grâma 96,8. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 153,*a*,8.

यज्ञस्थाणु s. स्थाणु.

यज्ञस्थान (यज्ञ + स्थान) n. *Opferstätte* Hit. 125. Gaṇiṅa. im ÇKDa.

यज्ञस्वामिन् (यज्ञ + स्वा°) m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 123,239.

यज्ञहन् (यज्ञ + हन्) adj. *Gottesdienst —, Opfer störend, — verderbend* TS. 3,5,4,1. Kâṭh. 32,6. Pañcav. Br. 13,6,9. Bhâg. P. 4,19,15. Çiva 6,32. MBh. 3,13853.

यज्ञघ्न (यज्ञ + हन्) adj. dass.; m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,79,12.

यज्ञहृदय (यज्ञ + हृ°) adj. *bei dem das Opfer das Herz ist, der das Opfer über Alles gern hat* Bhâg. P. 4,9,24.

यज्ञहोतर् (यज्ञ + हो°) m. 1) *Opferer im Gottesdienst* ṚV. 2,9,17. — 2) N. pr. eines Sohnes des Manu Uttama: °होत्रादय: Bhâg. P. 8,1,23. °होत्र Brahmâṇḍ.

यज्ञांश (यज्ञ + अंश) m. *Opferantheil:* °भुज् *ein Gott* Kumâras. 3,14.

यज्ञागार (यज्ञ + अ° oder आ°) n. *Opferschuppen* Çâṅkh. Çr. 5,14,1. 18,24,14. MBh. 2,832.

यज्ञाङ्ग (यज्ञ + अङ्ग) 1) n. *Glied — d. h. Theil, Mittel, Werkzeug des Opfers* Liṭ. 1,2,15. Kâṭh. Çr. 24,6,1. Kauç. 1. 2. Nir. 7,4. 14,1. Kumâras. 1, 17. — 2) m. *a) Ficus glomerata* AK. 2,4,2,2. *Acacia Catechu Willd.* Râǵân. im ÇKDa. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Çabdar. ebend. — *b)* Bein. Vishṇu's oder Kṛishṇa's MBh. 13,7053. Pañcar. 4,3,59. 8,26. Çiva's Çiv. — 3) f. आ *Cocculus cordifolius DC.* Râǵân. im ÇKDa.

यज्ञात्मन् (यज्ञ + आ°) m. *die Seele des Opfers*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 4,7,23.

यज्ञात्ममिश्र (यज्ञात्मन् + मिश्र) m. N. pr. eines Mannes Hall 171. fgg.

यज्ञानुकाङ्क्षिन् (यज्ञ + अ°) adj. *Opfer beschauend* TBr. 1,1,4,4. = यज्ञतत्त्वप्रकाशनसमर्थ Comm.

यज्ञान्त (यज्ञ + अन्त) m. *Beschluss eines Opfers* H. 834. Hall's. 2,262. °कृत् unter den Beinamen Vishṇu's MBh. 13,7054.

यज्ञाय् (von यज्ञ), partic. °यंस् *im Gottesdienst thätig* ṚV. 3,41,1.

यज्ञायज्ञीय n. N. eines nach dem Verse यज्ञा यज्ञा° (ṚV. 1,108,1) benannten Sâman, welches als letztes Glied des Agnishṭoma auch Agnishṭoma-Sâman heisst, AV. 8,10,13. 15. 17. 15,2,2. 3, 5. 4, 2. VS. 12,4. TS. 5,4,10,2. 5,8,1. TBr. 2,2,8,2. Çat. Br. 9,1,2,29. 4,4, 10. 13. Pañcav. Br. 15,9,12. Kâṭh. Çr. 4,10,1. 22,6,3. Liṭ. 6,12,6. Âçv. Çr. 5,8,12. 7,5,7. 8,6,4. Kaṭh. Up. 2,19,1. 2. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,230,*a*. अग्नेर्वैश्वानरस्य य° 201,*a*. अनुष्टा° 202,*b*. बृहतस्य य° 227,*a*.

यज्ञायतन (यज्ञ + आ°) n. *Opferstätte* MBh. 1,861. 3,10376. R. 1,12, 35. 4,37,38.

यज्ञायुध (यज्ञ + आ°) n. *Opfergeräthe* AV. 12,3,23. 18,4,2. Ait. Br. 7,19. zehn sind aufgezählt TS. 1,6,8,2. 3. TBr. 3,2,5,9. Çat. Br. 1,6, 3,2. Kâṭh. 32,7. die Bez. scheint übertragen zu sein auf eine gewisse, mit य से endigende Litanei TS. 5,4,8,3.

यज्ञायुधिन् (von यज्ञायुध) adj. *mit den Opfergeräthen versehen* Çat. Br. 12,5,2,3.

यज्ञारुकेशपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Rorn in der Einl. zu Nir. 1. wohl fehlerhaft für यज्ञार°.

यज्ञारि (यज्ञ + अ°) m. *Feind des Opfers*, Bein. Çiva's Dhanañǵaja im ÇKDa.

यज्ञार्ह (यज्ञ + अर्ह) 1) adj. *Opfer verdienend, zum Opfer geeignet* H. 830. — 2) m. du. Bez. der Açvin H. ç. 35, wo wohl यज्ञार्हौ zu lesen ist.

यज्ञावयव (यज्ञ + अ°) adj. *dessen Glieder aus Opfern bestehen*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 3,18,20.

यज्ञाशन (यज्ञ + 2. अ°) m. *Opferverzehrer, ein Gott* H. 88, Sch.

यज्ञासोढ् (यज्ञ + सोढ्) adj. *des Opfers mächtig:* °सादम् acc. ṚV. 10,20,7.

यज्ञिक m. 1) (von यज्ञ) *Butea frondosa* Gaṇiṅa. im ÇKDa. — 2) oxyt. = यज्ञदत्तक P. 5,3,78, Sch. — Vgl. वेत्°.

यज्ञिन् (von यज्ञ) adj. *opferreich:* Vishṇu MBh. 13,7054. दाक्षायणयज्ञिन् s. u. दाक्षायणयज्ञ.

यज्ञिय (wie eben), partic. °यत् zur Erkl. von अघर्यत् Çat. Br. 9,2,3,10.

यज्ञिय (wie eben) 1) adj. P. 5,1,71 nebst Vârtt. Vop. 7,15. *a) verehrungswürdig, opferwürdig, am Opfer Theil habend, heilig, göttlich;* gew. Beiw. der Götter und dessen was ihnen gehört; m. *Gott.* Nir. 7, 27. 29. यज्ञिया:, मानुषा: ṚV. 4,1,20. 43,1. शृण्वन्तु नो दिव्या: पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियास: 7,35,14. ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा: 15. ये स्था मनोर्यज्ञिया: 10,36,10. सार्कं देवैर्यज्ञियासो भविष्यथ 1,161,2. 6. इन्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् 8,41,1. देवा: 1,139,7. 188,2. 2,41,21. 3,6,3. 10,53,2. प्र यक्षे यज्ञियेभ्यो दिवो यर्वी मरुद्भ्य: 5,52,5. पितरो नमस्या देवा यज्ञिया: TS. 2,5,8,6. Bhâg. P. 4,7,41. Harîv. 1528. यज्ञियान्कृतवान्देत्यान्देवांश्चाप्ययज्ञियान् 2266. 12639. भाग ṚV. 2,23,2. 3,60,1. 10,124,3. Harîv. 2803 (यज्ञीय die neuere Ausg.). नामन् ṚV. 1,72,3. 6. 48,21. 1,6. Ait. Br. 5,23. AV. 2,12,2. Wagen der Açvin ṚV. 1,119,1. Flüsse 3,33,11. भुवो विश्वेषु सवनेषु यज्ञिय: 10,30,5. AV. 6,108,1. 7, 80,4. गाव: MBh. 13,3543. — *b) im Gottesdienst thätig, — kundig, dazu fähig* u. s. w.; *andächtig, fromm:* प्र यज्ञियेषु शवसा मदन्ति ṚV. 7,37,1. 1,148,2. 6,5,3. अग्निर्देवेषु संवसु: स वितु यज्ञियास्त्वा 8,39,7. 10,11,1. 18,2. AV. 7,28,1. सोम यज्ञिया: सुता: 12,2,13. TS. 3,2,4,1. Çat. Br. 3,1,4,9. Harîv. 11363. — *c) zur Verehrung —, zum Gottesdienst —, zum Opfer gehörig, — passend* u. s. w.; *heilig* AK. 2,7,27. H. 830. स्तोम ṚV. 3,60,7. सुमति 7,42,3. 10,44,6. व्रत 66,9. घी 101,9. स यज्ञियो पातु यज्ञियाँ अनून् 10,11,1. कर्मन् *Opferhandlung* Jiṭ. 3,28. यत्र AV. 6,110,1. 122,5. 10,9,3. वह् 11,1,16. द्यावापृथिव्योरेव यज्ञिये अग्निमाधत्ते TBr. 1,1,3,3. 2,1,2. अग्नेस्तनू: 8. केतवं: 9. TS. 2,6,7,1. वृत्त Çat. Br. 1,

3,2,20. 10,2,2,1. Âçv. Gṛhj. 3,8,3. MBh. 13,4700. Mânav. P. 40,70. AK. 3,4,22,99. यागः Âçv. Gṛhj. 4,7,15. द्रव्य Harîv. 2161. पशु, यज्ञ, गो R. 1,40,7. 61,14. R. Gorr. 1,41,7. 8. MBh. 13,3843. 14,2224. — R. Gorr. 1,12,28. = मेध्य Çâṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 57. दिग् Âçv. Gṛhj. 4,8,11. Gorr. 1,9,15. देश M. 2,22. तस्माद्धिंसा न पत्नीया MBh. 12,9826. पत्नीयतम Çat. Br. 1,1,2,12. — 2) m. Bez. *des dritten Zeitalters* Taitt. 1,1, 113. — Vgl. ज्ञ°, पूग° (unter पूगयज्ञ) und पैतृ°.

पत्नीयशाला (प° + शा°) f. *Opferhalle* Gaṇiṣṭh. im ÇKDa.

पत्नीय (von पत्न) 1) adj. *zum Opfer passend:* चरुस् MBh. 3,10376. यज्ञपत्नीयदुमे देशे 13,1320. 4700. भाग *Opferantheil* Harîv. 2803 (die ältere Ausg. पात्नीय). = मेध्य Çâṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 18. An den drei ersten Stellen durch das Metrum bedingt. — 2) m. *Ficus glomerata* Râǵân. im ÇKDa.

पत्नीयवृक्षसम्भव (प° + व्र°) m. *eine best. Pflanze*, = विकङ्कत Râǵân. im ÇKDa.

पत्नेश (पत्न + ईश) m. *Herr der Verehrung, — des Opfers*, Bein. Vishṇu's Buǵ. P. 1,3,7. 12,35. 4,7,47. 12,10. 23,35. 5,4,7. 6,6,22. 8, 17,8. 9,14,47. Paṅkân. 4,3,35 (S. 248). der Sonne Mârk. P. 104,38. 111,2.

पत्नेश्वर 1) m. (पत्न + ई°) *a) Herr der Verehrung, — des Opfers*, Bein. Vishṇu's VP. bei Mcln, ST. 1,62. Buǵ. P. 1,17,33. 3,13,29. 4,7,25. 20,36. 8,15,2. — *b)* N. pr. eines Autors Ind. St. 1,467. — 2) f. ई (पत्न + ई°) Bez. *eines best. Zauberspruches:* °विद्यामाहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 45,*a*,29.

पत्नेश्वरार्य (पत्नेश्वर + आ°) m. N. pr. eines Mannes Rotn in der Einl. zu Nîn. 1.

पत्नेषु (पत्न + इषु) m. N. pr. eines Mannes TBa. 1,5,2,1.

पत्नेष्ट (पत्न + इष्ट) n. *ein best. wohlriechendes Gras*, = दीर्घरोहिषक Râǵân. im ÇKDa.

पत्नोदुम्बर m. = उदुम्बर *Ficus glomerata* Çabdar. im ÇKDa.

पत्नोपकरण (पत्न + उ°) n. *Opferzubehör* Ind. St. 1,32. MBh. 7,2366.

पत्नोपवीत (पत्न + उ°) n. *die für das Opfer übliche Behängung mit der heiligen Schnur über die linke Schulter; später auch Bez. der heiligen Schnur selbst.* Taitt. 2,7,12. Stenzler zu Âçv. Gṛhj. S. 117. TBa. 3, 10,8,12. Lâṭy. 1,2,14. 5,2,1. Çâṅkh. Gṛhj. 2,2. 13. 4,12. °वीतं कृत्वा Kaush. Up. 2,7. — Ind. St. 2,174. 178. Mṛicch. 48,1. Vaǵas. Dhn. S. 48, 33. Verz. d. B. H. No. 1021. fg. Verz. d. Oxf. H. 269,*a*,1 v. u. 281,*b*,1 v. u. 286,*a*, No. 670. केशपत्नोपवीतभृत् Kathâs. 94,69. 99,11. नाग° adj. MBh. 7,9456. Harîv. 10592. — Vgl. unter उपवीत und बालपत्नोपवीतक.

पत्नोपवीतवत् (von पत्नोपवीत) adj. *mit der heiligen Schnur behängt:* हेम° *mit einer goldenen Opferschnur beh.* Harîv. 3048. शुक्ल° MBh. 1,5330.

पत्नोपवीतिन् (wie eben) adj. dass. Gorr. 1,1,2. 2,2. 2,1,19. Çâṅkh. Gṛhj. 4,9. Harîv. 14205. Verz. d. Oxf. H. 148,*a*,31. नित्य° MBh. 5,1557. नाग° 10,219. रज्जु° Harîv. 3479. — Vgl. unter उपवीतिन्.

पत्नोपासक (पत्न + उ°) m. *ein Verehrer der Opfer* Kap. 4,21.

पत्य partic. fut. pass. von 1. यत् Vop. 26,12. n. und f. या nom. abstr.; s. देव°. — Vgl. इत्य, याज्य.

पत्यु (von 1. यत्) ved., पत्युं Uṇâdis. 3,20. adj. 1) *verehrend, huldigend, fromm* ṚV. 1,31,13. 55,6. इन्द्राय सोमं पत्यवो सुनोत 2,14,8. देवस्य त्वष्टुर्जनासः 3,19,4. 4,23,2. 5,31,13. 41,2. 8,52,3. विश्वानि कृणवन्पत्यानि पत्नये 9,86,26. = अगर्यु Uṇâdis. = यजमान Uṇâdis. im Sarvadarç. ÇKDa. — 2) *der Verehrung theilhaftig* ṚV. 3,61,12. चित्तु पत्यू 10,61,15. — Vgl. सु°.

पत्यन् (wie eben) adj. P. 3,2,103. f. ved. पत्यती (angeblich auch पत्नी P. 4,1,7, Vârtt. 2, Schol.) *Verehrer, Gläubiger, Frommer; Opferer* AK. 2,7,8. H. 818. Hall. 2,265. स्वाहा यत्तं कृणोतनेन्द्राय पत्नीव गृहे ṚV. 1,13,12. 33,5. पत्नेर्दर्यो वि भजाति भोजनम् 2,26,1. 3,14,1. इन्द्रो पत्नीव पृणते चिदश्वति 6,28,2. 4. विशः 10,41,2. 96,5. 151,2. Agni 6,15,14. — M. 11,11. 12,49. MBh. 1,8092. 3,1729. Harîv. 11067. R. 1,6,2. Râǵat. 1,44. 3,39. 6,46. 18,11. Kumârâs. 2,46. Vaǵas. Dhn. S. 68,16. 17. Spr. 1433. 4418. 5363. Buǵ. P. 1,12,20. 5,15,7. Mârk. P. 121,2. Kathâs. 82,3. Vop. 5,6. पत्नीवती पतिः Bez. *des Mondes* Taitt. 1,1,86. *sacrificalis:* इयः ṚV. 1,3,1. — Vgl. सु°, यज्ञार्थ°, यज्ञत्न°, देवयान°, पशु°, वज्र°.

पत्न्वित् adj. = पत्यन् MBh. 7,2466. VP. bei Mcln, ST. 1,188. Buǵ. P. 5,14,39. Mârk. P. 111,2. 16. 130,10. 133,8. 15. — Vgl. कु°.

पण्व n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*a*. Paṅkav. Br. 13,3,6. Liṭ. 7,3,11. 13. 10,5,7. पण्वावत्य n. desgl. Ind. St. 3,230,*a*. पण्वावत्योत्तर n. desgl. ebend.

पत्, पतति und पतते (nur dieses nach Dhâtup. 2,29), पतमान, पतानं und पतान; पेतिरे, पतिष्यते, प्रपतिष्ट; 1) act. *anschliessen, aneinanderfügen; verbinden:* स्रजं न मित्रो पतति प्रयाणः ṚV. 7,36,2. कृतं च शत्रून्यतते च मित्रिणः 8,33,12. युवं मित्रेभिः स्रजं पतथः सं च नयथः 5,63,6. 48,3. — 2) med. *sich anschliessen, — anreihen; in Reihen stehen:* रेभा इव प्रेषिणो पतानाः ṚV. 3,8,9 (vgl. 1,163,10). अवस्यवो न पृतनासु पेतिरे 1,85,8. 5,33,10. 59,2. विशो न युक्ता उषसो पतन्ते 7,79,2. 10,13,2. 5. अनुपूर्वं पतमानाः 18,6. 77,2. 8,43,1. Auch act. etwa so v. a. *in einer Reihe —, auf einer Stufe stehen:* नाकिर्देवेभिर्यतथो महित्वा 6,67,10. — 3) med. *sich verbinden, — vereinigen, zusammentreffen mit* (instr.): वैश्वानरो पतते मूर्धभिः ṚV. 1,98,1. (उषासः) पतमाना रुशद्भिः सूर्यस्य 123, 12. 5,4,4. 10,62,11. परि वामिभिः पृक्षवीरयुगैर्भिर्यतमानाः 3,58,8. 10, 113,7. तत्रेणाग्ने स्वगुः सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधिये यतस्व (P. 5,4,36, Vârtt. 3, Sch.) VS. 27,5. 7,45. 10,29. पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यतानः *wie ein Sohn des Vaters Willen sich fügend* ṚV. 9,97,30. — 4) med. *sich zu vereinigen suchen mit* (loc.), *zu erreichen suchen* (einen Ort), *zustreben, auf Etwas zuhalten:* दिवि स्वनो यतते ṚV. 10,75,3. मरुः पार्थिवे सदने यतस्व 1,169,6. TBa. 1,4,8,2. TS. 2,2,8,1. अन्तरिक्षे यतस्व 5,6,8,4. Çat. Br. 12,2,3,1. — 5) med. (aus metrischen Rücksichten auch act.) *streben nach, sich bemühen um, bedacht sein auf, sich ganz einer Sache hingeben:* a) mit loc.: यतध्वं नलमार्गणे MBh. 3,2727. क्षितानुद्दर्शने R. 5, 76,22. Buǵ. P. 3,25,26. जीवितक्षतौ Spr. 1140. हिंसनं वधे R. 3,71, 16. पितुर्विनियोगे R. Gorr. 2,20,46. Bhaṭṭ. 5,29. सिसिद्धौ Bhâg. 6,42. अर्थसिद्धौ धर्मे यतितुमर्हसि R. Gorr. 2,20,11. MBh. 4,680. सिद्धे अन्यार्थे न यतेत Buǵ. P. 2,2,3. नलस्यानयने यत MBh. 3,2722. Mârk. P. 69,26. 126,3. 132,10. यतिष्यति मरुभये R. 4,14,29. स्वादवे न तु यत्यताम् (impers.) Spr. 795. — *b)* mit dat.: यतेत तत्प्राप्त्यै Jâṭ. 1,351. यतिष्ये वः सखीप्रत्यानयनाय Vikr. 3,16. Mâlav. 9,3. तस्य नाशाय Spr. 93. परमार्थसिद्धौ 1901. Bhâg. 7,3. Harîv. 13636. ब्रह्मसंस्थामोक्षाय Bhâg. 7,29.

MBh. 5,3937. Kathâs. 27,10. उदयाय Râgat. 9,7. अपुनर्मरणाय Bhâg. P. 5, 19,25. भूत्यै (Conj.) Spr. 3413. सर्वाय 4121. लाभाय Kâm. Nîtis. 1,17. मेयसे Çiç. 113,3. — c) mit gen.: तस्याऽन्नस्य (Nîlak. ergänzt दाने) MBh. 1,8085. — d) mit सर्वे, सर्वाय, सर्वम्, देहेभ्य: प्रति: मित्रार्थे बान्धवार्थे च बुद्धिमान्यतते सदा Spr. 2203. ममार्थे नूनमर्थाय यतमान: R. 3,73,2. तदर्थम् Spr. 2582. मोक्षार्थम् MBh. 1,1591. स्वर्गार्थे न यतिष्यन्ति Harîv. 7273. मो ऽहं यातिष्ये (lies यतिष्ये) पुत्रार्थम् Mârk. P. 121,39. धर्मार्थं यतताम् (gen. pl.) Spr. 4238. शापात्तस्तोस्तस्या न किं यते Kathâs. 121,133. कथं यतिष्ये भोजने प्रति 92,29. — e) mit acc.: यतते प्राणिपीडनम् Harîv. 14603. रात्तसा दुष्टभावा हि यतन्ते विक्रियां वने R. 3,49,36. यतस्वान्यतमं रणम् so v. a. *mache dich gefasst auf* 35,60. Vgl. u. *h*) α) am Ende. — *f*) mit infin. M. 9,6. MBh. 1,6360. 3,2637. R. Gorr. 2,13,14. 3,23,22. Râgat. 5,17. 25. Kumâras. 2,39. Kathâs. 5,128. 19,51. Râga-Tar. 1,159. 3,282. 6,334. Bhâg. P. 3,24,28. Bhaṭṭ. 13,58. — *g*) ohne Ergänzung *sich anstrengen, alle seine Kräfte anwenden, Sorge tragen, auf seiner Hut sein, sich vorsehen:* यतमाना वनं रात्तसगणं प्रतिषेदिरे MBh. 1, 5877. 3,8314. R. 1,63,22. 3,34,21. 26. 44,27. Sucr. 2,23,8. तथा नित्यं यतेयाताम् — यद्या न M. 9,102. Daçak. in Benf. Chr. 183,12. Prab. 91,4. Bhaṭṭ. 12,4. act.: यततो ऽपि — पुरुषस्य — इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मन: Bhag. 2,60. 7,3. 9,14. MBh. 5,3313. Harîv. 13637. Bhâg. P. 1,6,21. 4,8,32. 23,10. 5,18,27. 6,2,35. 10,30,20. Kâraṇ. 30. — *h*) partic. α) यत्त *bedacht auf:* यतनामु so v. a. *kampfbereit* MBh. 3,4010. रणे 5,7139. 6,1738. संयुगे R. 7,29,13. चित्तविप्लवे Bhâg. P. 7,15,30. प्रज्ञाविवृद्धये 6,5,5. यत्तो (यत्नो die neuere Ausg.) भूद्भूतां प्रति Harîv. 9118. mit infin. MBh. 3,14944. *zu Allem vorbereitet, der seine Maassregeln getroffen hat, auf seiner Hut seiend, sich vorsehend:* यत्तो ऽसि मम पुत्रेण यत्तो भव महीपते MBh. 1,1976. 3,790. 4,1282. 1291. R. 1, 32,6. 7. 2,55,18. 93,24 (102,26 Gorr.). 97,13 (106,9 Gorr.). Bhâg. P. 4,10,22. 8,7,2. 10,1. 9,2,3. mit pass. Bed. *besorgt* —, *gelenkt von:* रुद्र MBh. 2,2011. 3,1702. रुद्रय: 3,12111. Westergaard stellt dieses यत्त zu यम्; an der ersten und dritten Stelle würde यत nicht zum Metrum passen; vgl. unter — अभियम्. — β) यतित mit einem infin. *derjenige, der zu — sich bemüht hat* (vgl. शकित): समकृष्यतितो क्षेप कर्तुं व्याघ्र वने त्वया MBh. 1,5370. अपनेतुं च यतितो न चैत्र शकितो मया 6015. impers.: यतितं वै मया पूर्वं वेत्थ ब्राह्मणि तत्त्वत: । तेभ्य यतस्ततो गन्तुम् *ich war darauf bedacht* 6128. — 6) med. *feindlich zusammengerathen:* न उग्रासो वृषण उग्रबाह्वो नकिष्टनूषु येतिरे *greifen sich nicht unter einander selbst an* RV. 8,20,12. सं जानते न यतन्ते मिथस्ते 7,76,5. *im Kampfe liegen* Ait. Br. 1,14. 8,10. देवासुरा यत्ता आसन् Kâṭh. 37,11.

— caus. यातयति Dhâtup. 33,62 (निकारोपस्कारयो:, nach Andern निराकार und क्षेप st. निकार). 1) *verbünden, vereinigen:* हा जनी यातयन्तरिषते RV. 2,30,12. मित्रो जनान्यातयति ब्रुवाण: 3,59,1; vgl. यातयज्जन. med. *sich verbünden:* सुयातयस्त्तितयो नवग्वा: RV. 1,33,6. — 2) *anfügen, anbringen:* सायतने पृष्ठानि यातयति Pâṇâv. Br. 13,10, 16; vgl. वि caus. — 3) *Jmd* (gen.) *Etwas* (acc.) *an's Herz legen:* महीयेवेव लेखेषु तत्रभवतस्त्वामुद्दिश्य सभाजनानि यातयिष्याम: Mâlav. 74,10. — 4) *vergelten* (*lohnen oder strafen*): एवा हि त्वामृतुथा यातयन्ते मघा विप्रेभ्यो ददतं सूनृतानि RV. 5,32,12. जनाय यातयन्नियर्ष: । वृष्टिं दिव: परि स्रव 9,39,2. कदाँ सनन्नियातयासे 5,3,9. उर्वं सृणोर्वं यातय 10,127,7; vgl. सृणयात्. यो ऽस्मद्यातं यतेनं यातयात् (= क्षेपयेत् Comm.) TS. 2,6,10,2. किल्बिषं नु मा यातयन्निति *damit man es nicht als Fehler rüge* Ait. Br. 1,13. यो न यातयते वैरम् *vergelten, erwiedern* MBh. 3,1382. घातयित्वा वैराणि 1382. वैरं ते यातितं (यातितं ed. Bomb.) मया 13,567. यत्रावत्ता बलिनं यातयन्ति 4858. med. *den Lohn für Etwas empfangen:* तत्र त्वाहं दास्तिनं यातयिष्ये so v. a. *dort werde ich dir den Elephanten abtreten* 4856. 4858. 4860 u. s. w. तत्राहं ते भवने भूरितेजसो रात्रन्निमं दास्तिनं यातयिष्ये 4860. — 5) *sich bemühen lassen* (nach Sây.) Ait. Br. 1,14. — — 6) *kämpfen lassen* TBr. 1,3,9,4, wo mit dem Comm. यातयेत् (= प्रयत्नं कारयेत्) st. पातयेत् zu lesen ist. — 7) *Jmd peinigen, quälen* (vgl. यातना), act. Bhâg. P. 5,26,31. fg. 6,1,22. med.: यात्मानं यातयते 5,26, 18. यात्यमान pass. 8.

— अधि *aufreihen:* वर्तास्नु हरी अधि येतिरे प्रभे RV. 1,61,4. — caus. med. *sich vereinigen mit:* अधं धमस्त ऊर्वया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नि: *erreichend* RV. 6,6,4.

— अनु med. *zustreben, reichen zu* (acc.): अनु ज्ञनान्यतते पप्रथे धी: RV. 9,92,3.

— आ *anlangen, erreichen, Fuss fassen, wohnen in* (loc.): कस्मिन्ना यंतयो ज्ञनें RV. 5,47,2. आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम 6,1,10. आ यद्दो यतेमाहे स्वस्तये 5,66,6. आस्मे यतस्ते सख्याय पूर्वी: 10,29,8. 91,7. सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम् AV. 17,1,30. आ देवेषु यतते आ सुवीर्य आ शंस उत नृणाम् *bleiben* RV. 3,16,4. partic.: स्वायौ दिश्यायत्तम् Çat. Br. 9,3,4,12. यत्तमायत्ता 14,4,3. 10. Das partic. आयत्त hat noch folgende Bedd. 1) *abhängig von, beruhend auf, zu Jmdes Verfügung stehend* (die Ergänzung im loc., gen. oder im comp. vorangehend) AK. 3,1,16. समात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया । नृपतौ कोशराष्ट्रे च हूते संधिविपर्ययौ ॥ M. 7,63. 203. Spr. 5274. MBh. 14,2084. 2351. Harîv. 5021. R. 1,53,14. fg. (54,15. fg. Gorr.). 2,45,28. Megh. 16. Kathâs. 46,180. तत्रायत्ता: प्रजाक्षेमा: R. Gorr. 2,2,26. प्रावृट्कालस्य चात्रमायत्तम् Varâh. Bṛh. S. 21,1. Kathâs. 46,19. Mârk. P. 72,21. 126,3. 4. 7. Hit. 84,8. विदधे तस्यायत्तं निखं धनम् *stellte es zu seiner Verfügung* Râga-Tar. 5,52. चतुरायत्ता Maitrâjop. 6,6. R. 1,4,29. 5,86,12. Çiç. 92. Spr. 1431. 2263. 5384. Vaidya-Kîn. 13,14. Kâm. Nîtis. 5,77. 18,20 (मित्रायत्ते zu lesen). Daçak. 2,40. Mârk. P. 126,5. LA. (H) 90,12. Kathâs. 18,126. 20,151. 52,211. 53,7. Râga-Tar. 4,491. Ind. St. 2,305,1. Pañkat. 85,17. Hit. 52,9. 130,3. ed. Johns. 1086. Daçak. in Benf. Chr. 197,19. H. 918. Vop. 7,85. मदेकायत्ततां गता Kathâs. 32,171. ईश्वरेच्छायत्तत्व Sarvadarçanas. 79,14. ohne Ergänzung R. 7,38,9. Daçak. 2,22. आयत्तीकृत Râga-Tar. 4,680. Vgl. अनायत्त, पराधत्त, स्वायत्त. — 2) *sich anstrengend, sich bemühend:* परमायत्ता: Bhâg. P. 8,7,5. *auf seiner Hut seiend, sich vorsehend* R. 7,19,10. धनुरायत्तमुत्तमम् so v. a. *bereit stehend* 109,7. — Vgl. आयतन, आयाति. — caus. act. *anlangen machen in:* स्वर्गे लोके Çat. Br. 11,5,2,10. Ait. Br. 2, 34. irrig als Erklärung von यातयति Nir. 10,22. = कर्मसु प्रवर्तयति Durga.

— अभि med. *sich sehr* (अति adv.) *bemühen um* (loc.), *sehr bedacht sein auf* Daçak. 64,7.

— अन्वा partic. °यत्त *betheiligt bei, verbunden mit, in Beziehung stehend zu, abhängig von, beruhend auf, sich erstreckend auf, vorhanden*

in oder *bei*; mit loc. oder acc.: यज्ञे वै सर्वा देवता घन्वायत्ताः TBa. 3,8, 2,2. सर्वेषु लोकेषु मृत्यवो ऽन्वायत्ताः 9,18,1. TS. 1,6,11,1. Çat. Ba. 1,6, 2,11. 7,2,7. 13,1,2,9. संवत्सरं वा यज्ञायज्ञमन्वायत्तम् 12,7,2,19. 14,3,2, 3. दर्व्यां पितरो ऽन्वायत्ताः 6,2,9. Kâṭh. Up. 1,10,9. fgg. 11,4. fgg. 2,9, 2. एता एव (दिशः) क्षत्रिका घन्वायत्ताः Âçv. Çr. 10,10,10. — caus. *anreihen, folgen lassen; in Verbindung bringen, sich betheiligen lassen*; mit loc. oder acc.: देवता एवास्मिन्घन्वायातयति TBa. 3,8,2,3. Çat. Ba. 13,1,2,9. छन्दांसि यज्ञमन्वायातयति 3,4,1,23. Çâṅkh. Ba. 12,7. 24,3. Âçv. Çr. 4,11,5. पुरोळाशेषु स्त्रीर्ण्यन्वायातयेयुः 9,2,22. Çâṅkh. Çr. 12,9, 8. 13,20,9. 14,3,1. 5,5.

— समा, partic. °यत्त *beruhend auf, abhängig von* (loc.): यासां प्राणाः समायत्ता मम चात्रिकपुत्रके MBu. 3,10494. 7,5458. R. 7,35,30.

— उप med. *betreffen*: इदं न्विनं स पाप्मा नोपयतते Çat. Ba. 3,5,1,7.

— नि med. *anlangen bei*: नि या देवेषु यतते वसूयुः ṚV. 1,186,11.

— निस् caus. 1) *fortreissen, fortschaffen, wegführen*: संयुज्यमानानि निशम्य लोके निर्यात्यमानानि (= निर्यीअमानानि Nîlak.) च सात्त्विकानि MBu. 12,13789. पुत्रो निर्यातितः क्रोधात् (so die neuere Ausg., es ist aber wohl क्रोडात् zu lesen) Hariv. 4857. निर्यातयत मे सेनाम् MBu. 15, 610. यस्तौ वपुष्मां चैव निर्यातयत मे गृहात् Hariv. 11245. यमो वैवस्वतस्य निर्यातयति दुष्कृतम्। हृदि स्थितः कर्मसाक्षी क्षेत्रज्ञो यस्य तुष्यति॥ Spr. 2404. *herausholen, herbeischaffen*: गृहात् R. 6,96,5. — 2) *herausgeben, schenken, ausliefern, zurückgeben*: निवृत्तेषु च मेघेषु निर्यात्य जगतो जलम् Hariv. 4013. निर्यात्य मणिं तस्य Kathâs. 62,224. Sadoh. P. 4,25,b. M. 11,164. न्यासम् MBu. 3,16896. 5,3979. fg. 4021. fg. Hariv. 2770. 4061. 6778. R. Gorr. 1,71,23. 2,117,7. 5,37,8. 66,24. 26. 89,56. 5,16,69. 94,21. 7,30,25. 98,6. 8. med. 5,76,18. 7,59,10. Mṛicch. 25,9. वैरम् *eine Feindschaft erwiedern, Rache nehmen*: रामलक्ष्मणयोर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै R. 6,33,4. 3,60,32. MBu. 2,2660. — 3) *verbringen, verleben*: चतुर्दश समा वीर वने निर्यातितास्त्वया R. 6,104,26. — Vgl. निर्यातक fg. und निर्यात्य.

— प्रतिनिस् caus. *wieder ausliefern, zurückgeben* MBu. 3,13183. — Vgl. प्रतिनिर्यातन.

— परि med. *umstellen, umringen* Pârâv. Ba. 7,5,6. 15,3,7. दाशराज्ञे परियत्ताय विशतः ṚV. 7,83,8. Âit. Ba. 2,31. वृद्धो वा परियत्तो वेन्द्रं त्रातारमुपधावति TS. 2,2,2,5.

— प्र med. *einwirken*: प्र रश्मिभिर्यतमानाः TBa. 2,8,8,2. *sich bestreben, sich bemühen um, bedacht sein auf, sich befleissigen*; med. und act. (aus metrischen Rücksichten) mit loc. Âçv. Çr. 4,12,3. Liṭ. 3,8,1. धर्मे Hariv. 2870. R. 1,58,21 (60,24 Gorr.). 2,82,10 (88,10 Gorr.). Suçr. 1,127,14. Çiç. 113,3, v. l. प्रयतेतस्य रक्षणे MBu. 14,1186. 3,2726. 14617 (wo mit der ed. Bomb. भेदे प्रयतिष्यन्ति zu lesen ist). Hariv. 5284. मया — तदाप्याप्तयो प्रयत्यते Verz. d. Oxf. H. 264,a,20. यतः प्रयतितं राज्ये — मया तव MBu. 1,5308. mit dat.: प्रयतेतार्थसिद्धये M. 7,215. राज्याय MBu. 1,3734. मोक्षाय 3,14944. mit धर्मे, धर्मम्, क्षेत्रेषु R. 2,39,7. 3,57, 31. MBu. 4,1205. Hariv. 1503 (act.). Prab. 19,9. Bhâg. P. 1,5,18. mit acc.: धर्मार्थयोगान्प्रयतन्ति (so die ed. Bomb.) MBu. 5,649. मोक्षक्रियाम्। प्रयतसे 14,46. तस्मात्तत् (युद्धं) प्रयतास्यहम् Hariv. 8022. mit infin.: विक्षेतुं प्रयतेतारीन् Spr. 3242. MBu. 14,348. fgg. Râgn. 8,2. Daçak. in Benr. Chr. 196,13. Bhatt. 19,15. तत्कर्तुं प्रयतास्यहम् R. 3,68,35. ohne Ergänzung Vaṭṭ. Bhâs. S. 106,2. प्रयतस्व यथाविधि MBu. 1,4754. यथाशक्ति R. 3,33,17. प्रयतिष्ये तथा राजन्यथा मेषो भविष्यति MBu. 1,2085. Suçr. 2,32,18. Çiç. 18,14. प्रयतमन्विच्छति प्रलिनं मनः *sich bestrebend, ganz bei der Sache seiend* Spr. 4391. — Vgl. प्रयतितव्य fgg.

— संप्र med. *sich bemühen um, bedacht sein auf*: सिद्धये Kâm. Nîtis. 10,41.

— प्रति med. 1) *entgegenwirken*: रक्षांसि Çat. Ba. 3,2,2,3. यावन्मयीडा यथा न भविष्यति तथा प्रतियतिष्यामहे (v. l. für प्रयति°) Çiç. 18,14. — caus. *zurückgeben, erwiedern*: वैराणि, वैरम् *so v. a. Rache nehmen* MBu. 3,14738. 9,3256. — Vgl. प्रतियातन.

— वि med. etwa *in verschiedene Reihen bringen* AV. 18,1,17. — caus. 1) *anreihen, anbringen*: त्रिवृतमेव यज्ञमुखे वियातयति TS. 5,1,1, 2. 3,2,2. 3. — 2) *büssen*: तदात्मनो प्रज्ञयो पिशाचा वि यातयन्ताम् AV. 5,29,6. — 3) *peinigen, quälen*: तं यमः पापकर्माणं वियातयति Spr. 2405.

— अधिवि caus. *anreihen, anbringen* Kâṭy. 24,3. 26,10. 29,9. 37,16.

— सम् 1) act. *vereinigen*: सं मुधीयतश्चियतो मरिष्णू ṚV. 5,67,3. — 2) med. *sich aneinander reihen*: सं प्रयाणात्रो दिव्यासो घर्याः। कृमा इव सेपिशो यतन्ते ṚV. 1,163,10. सं दानुचित्रा उषसो यतन्ते 5,39,3. — 3) med. *sich vereinigen, zusammentreffen, sich verbinden mit*: सं भानुना यतते सूर्यस्य ṚV. 5,37,1. सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथः 9,111,3. — 4) med. *an einander gerathen, in Streit kommen*: सं यन्मुष्टी मिथतौ स्पर्धमाने तनूरुचा प्रसितौ यतेते ṚV. 7,93,5. Âit. Ba. 1,14,23. TBa. 1, 5,2,3. देवासुराः संयत्ता आसन् TS. 1,5,1,1. समयतन्त Çâṅkh. Çr. 14,23,1. Çat. Ba. 1,3,2,17. 3,3,1,21. Kâṭy. 24,10. 25,6. Kâṭh. Up. 1,2,1. संयानं संयतिष्यमाणः Âit. Ba. 8,10. संग्रामे संयते TS. 2,2,8,2. — 5) संयत्त *vorbereitet, ganz bei der Sache seiend, der seine Maassregeln getroffen hat, auf der Hut seiend, sich vorsehend*: समरे MBu. 7,5179. तथा युध्येत संयत्तो (v. l. für संयत्नो) विजयेत रिपून्यथा M. 7,200. Hariv. 8067. Bhâg. P. 10,14,41. सु° Hariv. 13389 *(सुसंयत्त die neuere Ausg.)*. Bhâg. P. 8,7,2 (nach der Lesart der ed. Bomb.). सं° 6,28. — Vgl. समेयत्त.

— अभिसम्, partic. °यत्त *besorgt, gelenkt von*: रूपोत्तमाः MBu. 7,5173. अभिसंयत्त ed. Bomb.; °संयत *würde nicht zum Metrum passen*; vgl. simpl. 5) *b*) α) am Ende.

— प्रतिसम् med. *bekämpfen* Çat. Ba. 11,4,1,3. partic. °यत्त *vollkommen vorbereitet, — gerüstet* MBu. 7,3324.

यत 1) partic. adj. s. u. यम्. — 2) n. *die Fussbewegungen des Führers beim Lenken eines Elephanten* H. 1231. Hall. 2,67.

यतकृत् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 55,b,23. falsche, gegen das Metrum verstossende Form.

यतगिर् (यत + गिर्) adj. = यतवाच् Rasn. 9,17.

यतंकार m. nach Sây. = यमनकर्तर्; wenn zu यत् gehörig, etwa *Vergelter*: वेतीर्हविष्मः प्रयता यतंकारः ṚV. 5,34,4.

यतनीय n. partic. fut. pass. impers. von यत्, सह्देव यतनीयम्। *Mucho man soll bedacht sein auf* Sarvadarçanas. 98,7.

यतर्म (superl. zu 1. यद्) pron. rel.; acc. sg. neutr. °मद्, nom. pl. m. °मे; *welcher von Mehreren* P. 5,3,93. Vop. 7,96. इन्द्र प्र ब्रूहि यतमः सो अङ्गे यो यातुधानः ṚV. 10,87,8. AV. 4,11,8. 5,29,2. 8. (यद्याम्) तेषामञ्जानिं यतमो वरीयान् 5,55,1. 8,9,17. त्रयो वरा यतमास्तं वृणीये तास्ते

सम्दोहिरु रोधयामि 11,1,10. 12. 26. 2,12. Çat. Br. 1,6,2,26. 6,2,2,15. 13,4,2,4. यतमो भवतो कठः। ततम यागच्छतु P., Sch. यतमदेव कतमच welches immer Çat. Br. 3,4,4,12. Sharv. Br. 1,8.

यतमेवा (von यतम) adv. rel. *auf welche unter mehreren Weisen:* यतमवा कामयेत तथा कुर्यात् Çat. Br. 2,1,4,27. 5,1,2,11. यतमवा कतमवा wie immer Sharv. Br. 3,1.

यतर (compar. von 1. य) prom. rel. *welcher von Zweien* P. 5,3,92. Vop. 7,96. नयोर्यत्सत्यं यतरद्दवीयः RV. 7,104,12. AV. 10,7,43. Ait. Br. 3,9. 43. यतरान्वा एषमुपावर्त्स्यति त इदं भविष्यन्तीति TS. 6,2,7,1. Çat. Br. 1,3,3,6. यतरा नो जयति 3,6,3,6. 11,2,3,33. यतरो नो ब्रह्मीयान् Pâraçav. Br. 14,6,6. यतरे nom. pl. m. Kaushb. Up. 3,8,4, wo यतर st. यत zu lesen ist.

यतरेवा (von यतर) adv. rel. *auf welche von zwei Weisen* Çat. Br. 1,7,3,27. 2,5,2,17. 13,4,2,4. यतरया कतरवा Sharv. Br. 3,1.

यतरोद्म (यत + र°) adj. *mit angespannten Strängen oder Zügeln:* यज्ञाः RV. 5,62,4.

यतवाच् (यत + वाच्) adj. *die Rede hemmend, schweigend* Maitrâjan. 6,9. Bhâg. P. 4,8,36. 23,7. 28,19. 10,84,8. Davon nom. abstr. °वाक्य n. Schol. zu Kâty. Ça. 334,14. — Vgl. वाग्यत.

यतव्य (von यतु) adj.: तनू TS. 2,3,12,1. = प्रयत्नवत् Comm. यातव्य (von यातु) st. dessen Kâṭh. 11,11.

यतव्रत (यत + व्रत) adj. f. या *an seinem Vornehmen fest haltend* MBh. 1,6936. 3,9996. 13,2038. Mârk. P. 74,7.

यतस् (von 1. य) adv. rel. und conj. P. 5,3,7. 8. H. an. 7,49. fg. 1) *aus welchem, woher, woraus, wovor, von wo an, in Folge wovon* RV. 1,22, 16. 3,4,9. 13,1. 29,10. यतो उ यायत्तदुदीपुराविशम् 2,24,6. पन्था यतो देवा उदजायन्त 4,18,1. 5,48,5. यतो इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि 8, 50,12. 6,19. यतो यतो पविवो निष्टतनुः 10,31,7. 87,2. VS. 11,19. TBr. 2,7,7,6. Lâṭ. 9,2,7. Kauç. 34. AV. 2,2,3. 10,1,19. 8,16. Kaṭhop. 4,9. Taitt. Up. 3,1. Çvetâçv. Up. 4,4. चक्रेभ्यो वा यतो वा *oder von irgend einem Andern* Çat. Br. 4,2,4,1. — = यस्मात् M. 2,117. R. Gorr. 2,15, 20. 119,25. यश्च यतश्चाहम् 3,53,27. Çiç. 62. Vârtt. Bhâṣ. S. 48,1. Spr. 2387. Bhâg. P. 1,1,1. 3,8. 15,11. 3,26,24. 4,2,3. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Çl. 2. Vop. 5,20. = यस्याम् R. 6,108,34. = येभ्यम् Bhâg. P. 1,15,21. = पेन 2,5,2. 6,4,22. Prab. 93,17. यतश्च भयमाशङ्केत् woher, *von welcher Seite her* M. 7,188. fg. 11,17. यतश्चैव समुत्थितम् (दुःखम्) MBh. 1,6118. Spr. 2276. Vârtt. Bhâṣ. S. 33,20. Bhâg. P. 1,15,44. *aus welchem Grunde, in Folge wovon* 8,5,11. R. 4,8,25. *von wann an, seitdem* MBh. 13,2231. यतः प्रभृति dass. Spr. 1780. Kathâs. 23,2. यतो जाता so v. a. *von ihrer Geburt an* MBh. 4,76. R. 2,7,1. यतो यतः *je von welchem, je woher, je woraus* Spr. 4762. Çat. Br. 14,5,4,12. Kâṭy. 4. — यतस्ततः *vom ersten Besten, von diesem oder jenem* M. 4, 15. 10,104. 11,261. Kathâs. 124,206. *woher es auch sei, woher immer, irgendwoher* M. 10,112. मम दुःखं भगवता व्यपनेयं यतस्ततः MBh. 5,7029. Spr. 227. Kathâs. 43,130. — यत एव कुतश्च *von diesem oder jenem, woher immer* Ait. Br. 7,2. — 2) *wo:* यतो यतेनाक्षं स्यात्ततः पुरोळाशस्य प्राश्नीयात् Ait. Br. 2,23. 7,30. यतो दृष्टे यतो धौते ततस्ते निर्द्धावयामसि विषम् AV. 7,56,3. Çat. Br. 1,1,2,3. यतः पुच्छे ततः स्थिताः MBh. 1,1126. 1148. N. 2,28. तेभे यतस्ततो गन्तुम् MBh. 1,6128. 3,16776. Daç. 1,42. R. 1,26,28. 2,21,57. 113,10. प्रदुद्राव यतो मृगः 3,30,1. 5,73,8. Spr. 4761. Râgat. 11,69. Vârâh. Bṛh. S. 11,62. 47,16. 54,100. Kathâs. 25, 176. 28,147. Bhâg. P. 3,22,31. — 3) *wohin* R. 1,44,24 (45,20 Gorr.). 4,27,8. Vârâh. Bṛh. S. 39,5. Bhâg. P. 4,30,20. यतो यतः *wohin immer* Bhag. 6,26. Çiç. 23. Çântiç. in Çârârîr. S. 40. यतस्ततः *wohin es auch sei, irgendwohin* Kathâs. 44,155. 106,98. — 4) *sobald als:* यत्रि वर्धसु नो गिरो यतो जायते RV. 3,10,6. — 5) *da, weil* AK. 3,5,3. H. 1537. AV. 1,13,2. Jiân. 1,81. 212. R. 2,44,22. 5,14,66. Spr. 35. 149. 1637. 1650. 3051. Râgat. 8,75. 16,74. od. Calc. 3,44. त्वं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम् Kumârâs. 5,75. Kathâs. 11,40. 15,65. 20,19. 25,210. 32,21. 52,255. Râga-Tar. 4,240. Bhâg. P. 4,3,20. Mârk. P. 14,55. 37,36. fg. Hit. 27, 5. 127,10. Daçak. in Benf. Chr. 194,4. Prab. 22,3. 59,13. Sâh. D. 44, 10. Häufig wird mit यतस् ein Vers angeknüpft, der einen ausgesprochenen Gedanken begründen soll, z. B. Çiç. 37,5. Hit. 6,1. 10. 7,16. 8,1. LA. (II) 13,7. 33,16. — 6) *dass:* कमपराधं मम पश्यसि त्यजसि मानिनि दासजनं यतः Vikr. 118. किं नु दुःखमतः परम्। इच्छासंपद्यतो नास्ति यच्चेच्छा न निवर्तते॥ Spr. 935. Bhâg. P. 3,15,33. wie ὅτι vor einer oratio directa: पुनः पुनश्चैव समादिदेश यतस्त्वया वीर न खेदितव्यम् R. 3, 49,57. — 7) *auf dass* mit folg. potent. Bhâg. P. 2,1,12. 2,34.

यतस्रुच् (यत + स्रुच्) adj. *der die Opferschale ausstreckt, — bereit hält, — darbietet* Naigh. 3,18. RV. 1,83,2. 108,4. या वेरु देवी यज्ञ यतस्रुचे 142,1.5. 2,34,11. 3,2,5. 8,7. 27,6. 4,2,9. 12,1. 8,23,20. — Vgl. उद्यतस्रुच्.

यतात्मन् (यत + आ°) adj. *sich zügelnd, — beherrschend* M. 11,215. R. 1,3,21. R. Gorr. 1,44,11. Kâm. Nîtis. 2,44. Kumârân. 1,35. 3,16.

1. यैति (von 1. य) prom. rel. *quot, wie viele* Vop. 7,94. nom. und acc. flexionslos, यतिभिस्, यतिभ्यस्, यतीनाम्, यतिषु 3,54. P. 1,1,23. 25. 4,1,10. 7,1,22. 55. 5,1,179 — 181. त्वं वेत्थ यति ते RV. 10,15,12. अनुपूर्वं यतमाना यति स्म 18,6. 63,6. *wie oft* AV. 18,3,6, wofern hier nicht vielmehr यदि zu lesen ist.

2. यैति (von यत्) m. 1) N. eines mit den Bhṛgu zusammenhangenden alten Geschlechts; pl. RV. 8,3,9. 6,18. Ind. St. 3,465, N. Çvetâçv. Up. 5,3. Es scheint ihnen eine Thätigkeit bei der Bildung der Welt zugeschrieben zu werden: यदेवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत RV. 10, 72,7. Die Brâhmaṇa haben eine Legende, nach der Indra die Jati dem Wilde zum Fraß hinwirft, was als Frevel bezeichnet wird. Ait. Br. 7,28. TS. 2,4,9,2. 5,2,7,5. Çâṅkh. Çr. 14,50,2. Kâṭh. 8,8. 11,10. 25,6. 36,7. Pâraçav. Br. 3,1,4. 13,4,16. Kaush. Up. 3,1. Die Commentatoren sehen darin entweder wirkliche *Asketen* oder in solche verwandelte Asura. sg.: यतिर्न, भृगुर्न Âçv. Çr. 6,3,1; vgl. AV. 2,5,3. ein Sohn Brahman's Bhâg. P. 4,8,1. Nahusha's MBh. 1,3155. Harîv. 1600. fgg. VP. 413. Bhâg. P. 9,18,1. 2. Viçvâmitra's MBh. 13,257. — 2) *ein Asket, ein Mann, der der Welt entsagt hat* (zur Fortsetzung dieser Bedeutung mag ein mit यम् angenommener Zusammenhang beigetragen haben) AK. 2,7,43. Trik. 3,3,178. H. 75. 909. an. 2,188. Med. t. 47. Hall. 2,189. 238. fg. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,117. यतयः तीर्णदोषाः Mudg. Up. 3,1,5. Prâkṛtas bei Colebr. Misc. Ess. 1,117. गृहस्थ, ब्रह्मचारिन्, वनस्थ, यति M. 3,137. 6,54. fgg. 58. 69. 86. fg. 12,10. Bhag.

in oder bei; mit loc. oder acc.: अग्ने वै सर्वा देवता अन्वायत्ताः TBa. 3,8, 9,3. सर्वेषु लोकेषु मृत्यवो ऽन्वायत्ताः 9,45,1. TS. 1,6,11,1. Çat. Ba. 1,6, 3,11. 7,3,7. 13,1,3,9. संवत्सरं वा यज्ञायज्ञमन्वायत्तम् 12,7,3,19. 14,3,2, 3. दर्व्यां पितरो ऽन्वायत्ताः 6,3,9. Kaṭhân. Up. 1,10,9. fgg. 11,4. fgg. 2,9, 2. इतो एव दिशः क्षेत्रिका अन्वायत्ताः Âçv. Çr. 10,10,10. — caus. *anreihen, folgen lassen; in Verbindung bringen, sich betheiligen lassen;* mit loc. oder acc.: देवतां एवास्मिन्नन्वायातयति TBa. 3,8,3,3. Çat. Ba. 13,1,3,9. छन्दांसि यज्ञमन्वायातयति 3,4,3,23. Çâṅkh. Ba. 12,7. 24,8. Âçv. Çr. 4,11,3. पुरोळाशेषु रुचीष्यन्वायातयेयुः 3,2,22. Çâṅkh. Çr. 12,9, 8. 13,20,9. 14,3,1. 5,3.

— समा, partic. °यत्त *beruhend auf, abhängig von* (loc.): यासौ प्राणाः समायत्ता मम चात्रिकपुत्रके MBu. 3,10434. 7,5458. R. 7,33,20.

— उप med. *betreffen:* इदं त्विषं स पाप्मा नोपयतते Çat. Ba. 3,5,3,7.

— नि med. *anlangen bei:* नि या देवेषु यतते वसूयुः RV. 1,186,11.

— निस् caus. 1) *fortreissen, fortschaffen, wegführen:* नीयमानानि निशम्य लोके निर्यात्यमानानि (= निर्णीयमानानि Nîlak.) च सात्त्विकानि MBu. 12,13789. पुत्रो निर्यातितः क्रोधात् (so die neuere Ausg., es ist aber wohl क्रोडात् zu lesen) Harîv. 4857. निर्यातयत मे सेनाम् MBu. 15, 610. यस्तौ वपुष्मौ चैव निर्यातयत मे गृहात् Harîv. 11245. यमो वैवस्वतस्य निर्यातयति दुष्कृतम्। कृदि स्थितः कर्मसाक्षी लेखस्रो यस्य तुष्यति॥ Spr. 2404. *herausholen, herbeischaffen:* गृहात् R. 6,96,5. — 2) *herausgeben, schenken, ausliefern, zurückgeben:* निवृत्तेषु च मेघेषु निर्यात्य जगतो जलम् Harîv. 4013. निर्यात्य मणिं तस्य Kathâs. 62,224. Sadoh. P. 4,25,b. M. 11,164. न्यासम् MBu. 3,16396. 5,3979. fg. 4021. fg. Harîv. 2770. 4061. 6778. R. Gorr. 1,71,23. 2,117,7. 5,37,8. 66,24. 26. 89,36. 6,16,69. 94,21. 7,30,26. 98,6. 8. med. 5,76,18. 7,59,10. Mahâk. 25,9. वैरम् *eine Feindschaft erwiedern, Rache nehmen:* रामलक्ष्मणयोर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै R. 6,33,4. 3,60,33. MBu. 2,2660. — 3) *verbringen, verleben:* चतुर्दश समा वीर वने निर्यातितास्त्वया R. 6,104,26. — Vgl. निर्यातक fg. und निर्यात्य.

— प्रतिनिस् caus. *wieder ausliefern, zurückgeben* MBu. 3,12183. — Vgl. प्रतिनिर्यातन.

— परि med. *umstellen, umringen* Pañkav. Ba. 7,5,6. 15,3,7. दाशराज्ञे परियत्ताय विशतः RV. 7,83,8. Ait. Ba. 2,31. वृद्धो वा परियत्तो वेन्द्रं ज्ञातारमृच्छति TS. 3,2,3,5.

— प्र med. *einwirken:* प्र रश्मिभिर्यतमाना: TBa. 2,8,3,2. *sich bestreben, sich bemühen um, bedacht sein auf, sich befleissigen;* med. und act. (aus metrischen Rücksichten) mit loc. Âçv. Çr. 4,12,3. Lâṭj. 2,8,1. धर्मे Harîv. 2870. R. 1,38,21 (60,24 Gorr.). 2,82,10 (88,10 Gorr.). Suçr. 1,127,14. Çiç. 113,3, v. l. प्रयतेतस्य रक्षणे MBu. 14,1186. 3,2726. 14417 (wo mit der ed. Bomb. भेदे प्रयतिष्यन्ति zu lesen ist). Harîv. 3284. मया — तद्याज्ञायां प्रयत्यते Verz. d. Oxf. H. 264, a, 30. यतः प्रयतितं राज्ये — मया तव MBu. 1,5508. mit dat.: प्रयतेतार्थसिद्धये M. 7,215. राज्याय MBu. 1,3734. मोक्षाय 3,14944. mit सर्वे, सर्वम्, कृत्स्नम् R. 2,39,7. 3,57, 21. MBu. 4,1205. Harîv. 1503 (act.). Pârâ. 19,9. Bhâg. P. 1,5,13. mit acc.: धर्मार्थयोगान्प्रयतसि (so die ed. Bomb.) MBu. 3,649. मक्षक्रियाम्। प्रयतसे 14,46. तस्मात्तत् (युद्धं) प्रयताम्यहम् Harîv. 8022. mit infin.: विजेतुं प्रयतेतारीन् Spr. 3242. MBu. 14,248. fgg. Raom. 8,2. Daçak. in Benr. Chr. 106,13. Bhatt. 19,15. तत्कर्तुं प्रयतामि अहम् R. 3,68,35. ohne Ergänzung Vaṇiç. Bâs. 8.106,1. प्रयतस्व यथाविधि MBu. 1,4754. यथाशक्ति R. 3,35,17. प्रयतिष्ये तथा राजन्यथा मेषो भविष्यति MBu. 1,2085. Sçça. 2,32,18. Çiç. 18,14. प्रयतमन्विच्छति मूलिनं मनः *sich bestrebend, ganz bei der Sache seiend* Spr. 4591. — Vgl. प्रयतितव्य fgg.

— सम् med. *sich bemühen um, bedacht sein auf:* सिद्धये Kir. Nîtis. 10,41.

— प्रति med. 1) *entgegenwirken:* रक्षांसि Çat. Ba. 3,2,3,3. यथानयोर्वा यथा न भविष्यति तथा प्रतियतिष्यामहे (v. l. für प्रयति°) Çiç. 18,14. — caus. *zurückgeben, erwiedern:* वैराणि, वैरम् so v. a. *Rache nehmen* MBu. 3,14728. 9,3256. — Vgl. प्रतियातन.

— वि med. etwa *in verschiedene Reihen bringen* AV. 18,1,17. — caus. 1) *anreihen, anbringen:* त्रिवृतमिव पञ्चमुखे वियातयति TS. 5,1,6, 3. 3,3,2. 3. — 2) *büssen:* तदात्मनो प्रत्नया पित्र्याया वि यातयन्ताम् AV. 5,29,6. — 3) *peinigen, quälen:* तं यमः पापकर्माणं वियातयति Spr. 2405.

— व्यधिवि caus. *anreihen, anbringen* Kâṭy. 24,3. 26,10. 29,9. 37,16.

— सम् 1) act. *vereinigen:* सं मुधीयतद्विषतयो मरुत्वो RV. 6.67,3. — 2) med. *sich aneinander reihen:* सं प्रूणासो दिव्यासो यत्वीः। कृसा इव श्रेणिशो यतन्ते RV. 1,163,10. सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम् 5,30,8. — 3) med. *sich vereinigen, zusammentreffen, sich verbinden mit:* सं भानुना यतते सूर्यस्य RV. 5,37,1. सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथः 9,111,3. — 4) med. *an einander gerathen, in Streit kommen:* सं पन्यसो मिथतो स्पर्धमाने तनूरुचा प्रूणसाता यतेते RV. 7,93,5. Ait. Ba. 1,14.23. TBa. 1, 5,3,3. देवासुराः संयत्ता आसन् TS. 1,5,1,1. समयतत्त Çâṅkh. Çr. 14,23,1. Çat. Ba. 1,5,3,17. 3,5,1,21. Kâṭy. 24,10. 25,6. Kauṣ. Up. 1,2,1. संग्रामं संयतिष्यमाणाः Ait. Ba. 8,10. सैन्यामे संयते TS. 2,2,8,2. — 5) संयत्त *vorbereitet, ganz bei der Sache seiend, der seine Maassregeln getroffen hat, auf der Hut seiend, sich vorsehend:* समरे MBu. 7,3179. तथा युध्येत संयत्तो (v. l. für संयत्नो) विजयेत रिपूंस्तथा M. 7,200. Harîv. 8067. Bhâg. P. 10,44,41. सु° Harîv. 13389 (सुसंयत्त die neuere Ausg.). Bhâg. P. 8,7,2 (nach der Lesart der ed. Bomb.). सं° 6,28. — Vgl. सुसंयत्त.

— अभिसम्, partic. °यत्त *besorgt, gelenkt von:* कृपात्मनः MBu. 7,3173. अभिसंयत्त ed. Bomb.; °संयत würde nicht zum Metrum passen; vgl. simpl. 5) A) α) am Ende.

— प्रतिसम् med. *bekämpfen* Çat. Ba. 11,4,3,3. partic. °यत्त *vollkommen vorbereitet, — gerüstet* MBu. 7,3334.

यत 1) partic. adj. s. u. यम्. — 2) n. *die Fussbewegungen des Führers beim Lenken eines Elephanten* H. 1231. Hall. 2,67.

यतकृत् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 55,b,22. falsche, gegen das Metrum verstossende Form.

यतगिर् (यत + गिर्) adj. = यतवाच् Raom. 9,17.

यतंकर m. nach Sâj. = यमनकर्तर्; wenn zu यत् gehörig, etwa *Vergelter:* वेतोर्हेस्य प्रयंता यतंकरः RV. 5,34,4.

यतनीय n. partic. fut. pass. impers. von यत्: सदैव यतनीयम्। मुक्तो *man soll bedacht sein auf* Sarvadarçanas. 98,7.

यतमं (superl. zu 1. यद्) pron. rel.; acc. sg. neutr. °मद्, nom. pl. m. °मे; *welcher von Mehreren* P. 5,3,93. Vop. 7,96. इह प्र ब्रूहि यतमः सो अङ्गे यो यातुधानः RV. 10,87,8. AV. 4,11,8. 5,29,3. 8. (यासाम्) नेयमञ्जिं यतमो वहति 6,38,1. 8,9,17. त्रयो वा यतमास्त्वं वृणीषे तास्ते

समृद्धोरिक् राधयामि 11,1,10. 13. 26. 2,12. Çat. Br. 1,6,2,26. 6,2,2,15. 13,4,2,4. यतमो भवतां कठः। ततम यागच्छतु P., Sch. यतमदेव कतमच्च welches immer Çat. Br. 2,4,4,12. Sharv. Br. 1,5.

यतमँवा (von यतम) adv. rel. *auf welche unter mehreren Weisen:* यतमवा कामयेत तथा कुर्यात् Çat. Br. 2,1,4,27. 6,1,2,11. यतमवा कतमवा wie immer Sharv. Br. 3,1.

यतर (compar. von 1. यँ) pron. rel. *welcher von Zweien* P. 5, 3, 92. Vop. 7,96. नयोर्यत्सत्यं यँतरद्दधीयः ṚV. 7,104,12. AV. 10,7,43. Ait. Br. 3,9. 43. यतरान्वा इमंपावत्स्यति त इदं भविष्यन्तीति TS. 6, 2, 8, 1. Çat. Br. 1,3,3,6. यतरा नो ऽयति 3,6,3,6. 11, 2, 3, 33. यतरो नो ब्रह्मीयान् Pañcav. Br. 14,6,6. यतरे nom. pl. m. Kaṭhân. Up. 3,8,4, wo यतर st. यत zu lesen ist.

यतरँवा (von यतर) adv. rel. *auf welche von zwei Weisen* Çat. Br. 1,7, 3,27. 2,5,3,17. 13,4,2,4. यतरवा कतरवा Sharv. Br. 3,1.

यतरँश्मि (यत + र°) adj. *mit angespannten Strängen oder Zügeln:* यज्ञाः ṚV. 5,62,4.

यतवाच् (यत + वाच्) adj. *die Rede hemmend, schweigend* Maitrâyaṇ. 6,9. Bhâg. P. 4,8,36. 23,7. 28,19. 10, 84, 8. Davon nom. abstr. °वाक्य n. Schol. zu Kâṭj. Çr. 334,14. — Vgl. वाग्यत.

यतव्य (von यतु) adj.: तनू TS. 2,3,13,1. = प्रयत्नवत् Comm. यातव्य (von यातु) st. dessen Kâṭj. 11,11.

यतव्रत (यत + व्रत) adj. f. या *an seinem Vornehmen fest haltend* MBh. 1,6936. 3,9996. 13,2038. Mârk. P. 74,7.

यँतम् (von 1. यँ) adv. rel. und conj. P. 5,3,7. 8. H. an. 7,49. fg. 1) *aus welchem, woher, woraus, wovor, von wo an, in Folge wovon* ṚV. 1, 22, 16. 3,4,9. 13,4. 29,10. यतं उ यायत्तदुदीयुराविशम् 2,24,6. पन्था यतो देवा उदजायत 4,18,1. 5,48,3. यतं इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि 8, 50,12. 6,29. यतो यावा पृथिवी निष्टतक्षुः 10,31,7. 87,2. VS. 11,19. TBr. 2,7,7,6. Lâṭj. 9, 2, 7. Kauç. 34. AV. 2,2,3. 10,1,19. 8,16. Kaṭhop. 4,9. Taitt. Up. 3,1. Çvetâçv. Up. 4,4. यतकेभ्यो वा यतो वा *oder von irgend einem Andern* Çat. Br. 4,2,4,1. — = यस्मात् M. 2,117. R. Gorr. 2,15, 20. 119,25. यश्च यतश्चाकम् 3,33,27. Çiç. 62. Vaṛâh. Bṛh. S. 48,1. Spr. 2387. Bhâg. P. 1,1,1. 3,3. 15,11. 3,26,24. 4,2,2. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 4, Çl. 2. Vop. 3, 20. = यस्याम् R. 6, 108, 24. = येभ्यम् Bhâg. P. 1,15,21. = येन 2,5,2. 6,4,22. Prab. 93,17. यतश्च भगमाजगृहे woher, von *welcher Seite her* M. 7, 188. fg. 11, 17. यतश्चैव समुत्थितम् (दुःखम्) MBh. 1,6118. Spr. 2276. Vaṛâh. Bṛh. S. 33,20. Bhâg. P. 1,15,44. *aus welchem Grunde, in Folge wovon* 8, 5, 11. R. 4, 8, 25. *von wann an, seitdem* MBh. 13,2231. यतः प्रभृति dass. Spr. 1790. Kathâs. 23,2. यतो जाता so v. a. von *ihrer Geburt an* MBh. 4,76. R. 2,7,1. यतो यतः *je von welchem, je woher, je woraus* Spr. 4762. Çat. Br. 14,3,4,12. Kauç. 4. — यतस्ततः *vom ersten Besten, von diesem oder jenem* M. 4, 15. 10,104. 11,261. Kathâs. 124,206. *woher es auch sei, woher immer, irgendwoher* M. 10,112. मम दुःखं भगवता व्यपनेयं यतस्ततः MBh. 5,7029. Spr. 227. Kathâs. 43,130. — यत एव कुतश्च *von diesem oder jenem, woher immer* Ait. Br. 7,2. — 2) *wo:* यतो घृतेनाक्तं स्यात्ततः पुरोळाशस्य प्राप्नोयात् Ait. Br. 2,23. 7,30. यतो दृष्टे यतो घृतं ततस्ते निर्क्रीयमसि विषम् AV. 7,56,3. Çat. Br. 1,1,2,3. यतः पुच्छं ततः स्थिता: MBh. 1,1126. 1148. N. 2,25. तेभे यतस्ततो गन्तुम् MBh. 1, 6128. 3,16776. Daç. 1,43. R. 1,26,28. 2,21,37. 115,10. प्रदुद्राव यतो मृगः 3,50,1. 5,75,6. Spr. 4761. Râgat. 11, 69. Vaṛâh. Bṛh. S. 11, 62. 47, 16. 54, 100. Kathâs. 23, 176. 28, 147. Bhâg. P. 3, 22, 21. — 3) *wohin* R. 1, 44, 24 (45, 20 Gorr.). 4,27,8. Vaṛâh. Bṛh. S. 39,5. Bhâg. P. 4,30,20. यतो यतः *wohin immer* Bhag. 6,26. Çiç. 23. Çântiç. in Çârṅgîv. S. 40. यतस्ततः *wohin es auch sei, irgendwohin* Kathâs. 44, 155. 106, 95. — 4) *sobald als:* यतो वर्धस्व नो गिरा यतो जायते ṚV. 3,10,6. — 5) *da, weil* AK. 3,3,3. H. 1537. AV. 1,13,2. Jîân. 1,21. 212. R. 2,44,22. 5,14,66. Spr. 33. 149. 1637. 1650. 3031. Râgat. 8,75. 16,74. ed. Calc. 3,14. क्वं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम् Kumâras. 5,75. Kathâs. 11,40. 15,65. 20,19. 25,210. 32,21. 52,255. Riâa-Tar. 4,240. Bhâg. P. 4,3,20. Mârk. P. 14, 33. 37, 36. fg. Hit. 27, 5. 127,10. Daçak. in Benr. Chr. 194,4. Prab. 22, 3. 59,12. Sâh. D. 44, 10. Häufig wird mit यतम् ein Vers angeknüpft, der einen ausgesprochenen Gedanken begründen soll, z. B. Çiç. 37, 5. Hit. 6, 1. 10. 7, 16. 8, 1. LA. (II) 13, 7. 33, 10. — 6) *dass:* कमपराधं मम पश्यसि त्यजसि मानिनि दासजनं यतः Vikr. 118. किं नु दुःखमतः परम्। इच्छासंयच्छतो नास्ति यच्चेच्छा न निवर्तते॥ Spr. 935. Bhâg. P. 3,15,33. wie ὅτι vor einer oratio directa: पुनः पुनश्चैव समादिदेश यतस्तया वीर न खेदितव्यम् R. 3, 49,37. — 7) *auf dass* mit folg. potent. Bhâg. P. 2,1,12. 2,34.

यतँस्रुच् (यत + स्रुच्) adj. *der die Opferschale ausstreckt, — bereit hält, — darbietet* Naigh. 3,18. ṚV. 1,83,3. 108,4. या वरू देवी यज्ञे यतस्रुचे 142,1.3. 2,34,11. 3,2,3.8,7. 27,6. 4,2,9. 12,1. 8,23,20. — Vgl. उद्यतस्रुच्.

यतात्मन् (यत + आ°) adj. *sich zügelnd, — beherrschend* M. 11,215. R. 1,3,21. R. Gorr. 1,44,11. Kâm. Nîtis. 2,44. Kumâras. 1,55. 3,16.

1. यँति (von 1. यँ) pron. rel. *quot, wie viele* Vop. 7,94. nom. und acc. flexionslos, यतिभिस्, यतिभ्यस्, यतीनाम्, यतिषु 3,54. P. 1,1,23. 25. 4,1,10. 7,1,22. 55. 8,1,178 — 181. तँ वेत्थ यति ते ṚV. 10,13,13. अनुपूर्वं यतमाना यति ष्ठ 18,6. 63,6. *wie oft* AV. 10,3,6, wofern hier nicht vielmehr यदि zu lesen ist.

2. यँति (von यत्) m. 1) N. eines mit den Bhṛgu zusammenhängenden alten Geschlechts; pl. ṚV. 8,3,9. 6,18. Ind. St. 3,465, N. Çvetâçv. Up. 5,2. Es scheint ihnen eine Thätigkeit bei der Bildung der Welt zugeschrieben zu werden: यँदेवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत ṚV. 10, 72,7. Die Brâhmaṇa haben eine Legende, nach der Indra die Jati dem Wilde zum Frass hinwirft, was als Frevel bezeichnet wird. Ait. Br. 7,28. TS. 2,4,9,2. 6,2,9,5. Çâṅkh. Çr. 14,30,2. Kâṭj. 8,5. 11,10. 25,6. 36,7. Pañcav. Br. 3,1,4. 13,4,16. Kausn. Up. 3,1. Die Commentatoren sehen darin entweder wirkliche *Asketen* oder in solche verwandelte Asura. sg.: यतिर्न, भृगुर्न Âçv. Çr. 6,3,1; vgl. AV. 2,5,3. ein Sohn Brahman's Bhâg. P. 4, 8, 1. Nahusha's MBh. 1, 3155. Harîv. 1600. fgg. VP. 413. Bhâg. P. 9,18,1. 2. Vigvâmitra's MBh. 13,257. — 2) *ein Asket, ein Mann, der der Welt entsagt hat* (zur Festsetzung dieser Bedeutung mag ein mit यम् angenommener Zusammenhang beigetragen haben) AK. 2,7,43. Taik. 3,3,178. H. 75. 809. an. 2,185. Med. t. 47. Hall. 2,169. 238. fg. Uśôval. zu Unâdis. 4,117. यतयः सौम्यादेयाः Mudg. Up. 3,1,3. Paraśaras bei Colebr. Misc. Ess. 1,117. गृहस्थ, ब्रह्मचारिन्, वनस्थ, यति M. 3,137. 6,34. fgg. 38. 69. 88. fg. 12,48. Bhag.

4,28. 5,26. R. 1,5,21. R. Gorr. 2,16,45. 53,2. 3,53,26. Ind. St. 2,10. 172. 9,121. Çik. 179. Ragh. 8,16. Mâlav. 13. Spr. 782. 2064. 4265. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 51,5. Bhâg. P. 2,2,15. 7,48. Verz. d. Oxf. H. 8,a,39. 282, b, 41. Weber, Rikrat. Up. 302. Dhûrtas. in LA. 76, 12. 85, 2. Pâṇkat. 34, 4. मक्ष° Mârk. P. 41, 22. यतीन्द्र LA. (II) 87, 19. यतीन्दु Verz. d. Oxf. H. 210, b, No. 497. यायति Bhâg. 6, 37. Jati bei den Gaina Colebr. Misc. Ess. 2,195. Wilson, Sel. Works 1,317. fgg. 342. fg. Bein. Çiva's MBh. 14,196. यतिपञ्चक n. *fünf über die* Jati *handelnde Strophen* Hall. Anth. 487. fg. — 3) = निकार H. an. Med.

3. यति (von यम्) f. P. 6,4,37, Sch. 1) *Festhaltung, Leitung* TBr. 3, 2,9,1. 4,6. विशो यत्ये स्थ इत्याह । विशो यत्यै 3,6,10. यज्ञस्य TS. 5,4, 12,3. Pâṇkat. Br. 12,10,1. — 2) *Pause* (in der Musik); *Cäsur* (im Verse) Taitt. 3,3,178. H. an. 2,186. Med. t. 47. ṚV. 9,71,7 (?). °त्रय Mârk. P. 23,54. Pâṇkat. V,44. Çrut. 18. 35. 39. Ind. St. 8,303. 303. 363. fg. 464. Kâṣik. 3,152. Nigh. 8,8. = राग und संधि Çabdar. im ÇKDa. — 3) यति und यती *Wittwe* ebend.; vgl. यतिनी. — Vgl. परायति.

यतिचान्द्रायण (2. यति + चा°) n. Bez. *einer best. Busse* M. 5,20. यष्टावष्टौ समश्नीयात्पिण्डान्मध्यंदिने स्थिते । नियतात्मा हविष्याशी यतिचान्द्रायणं चरन् ॥ 11,218. — Vgl. यतिसांतपन.

यतितव्य (von यत्) partic. fut. pass. impers. *connittendum, laborandum;* mit loc.: यथाबलं ने Pâṇkat. 240,4. तत्तदुःखोच्छेदे Comm. zu Kap. 1,5. मया — यथा ते न विनाशः स्यात् R. 3,46,2.

यतित्व (von 2. यति) n. *der Stand eines Asketen, eines Mannes, der der Welt entsagt hat,* Verz. d. Oxf. H. 129, a, 30.

यतिर्यं (von 1. यति) adj. f. ई *der wiederholte:* समा Çat. Br. 1,8,1,5. 14,9,1,3.

यतिधर्म (2. य° + धर्म) m. *die Pflichten eines Asketen* MBh. 12,11821. Verz. d. Oxf. H. 83, a, 32. 85, b, 37. Wilson, Sel. Works 1,311. °समुच्चय m. Titel einer Schrift Hall 141.

यतिधर्मन् (2. य° + ध°) m. N. pr. eines Sohnes des Çvaphalka Harîv. 1918. °धर्मिन् die neuere Ausg. 2084 haben beide Ausgg. st. dessen einfach धर्मिन्.

यतिधा (von 1. यति) adv. *in wie vielen* (rel.) *Theilen,* — *Arten* AV. 8, 9,7. विश्वा ते कृत्ये यतिधा पराँपि 10,1,20.

यतिन् 1) m. = यति *ein Asket* AK. 2,7,43. H. 76. Pâṇkat. 1,10,80. — 2) यतिनी f. *Wittwe* Çabdar. im ÇKDa.

यतिमैथुन (2. य° + मै°) n. *das unkeusche Leben der Asketen* Taitt. 2,7,28.

यतियष्ट (3. य° + यष्ट) adj. *der geforderten Cäsur ermangelnd* Kâṣik. 3,152. Prâtiçâkh. 64, a, 8. Verz. d. Oxf. H. 207, a, 15.

यतिवर्य (2. य° + वर्य) m. N. pr. eines Autors Hall 34.

यतिविलास (2. य° + वि°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 231, a, 18.

यतिसांतपन (2. य° + सां°) n. Bez. *einer best. Busse, dreitägiges* Pañkagavja Prâjâpatyaçârîrab. 9, b, 1. — Vgl. यतिचान्द्रायण.

यतीपस (?) n. *Silber* H. ç. 161.

यतु s. यतव्य.

यतुका und यतूका f. *eine best. Pflanze,* = रत्नी und ज्ञननी Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. ज्ञतुका und ज्ञतूका.

यतुन adj. ṚV. 5,44,8 nach den Comm. von यत्, = गन्तरि Sây., = यतनशील Durga zu Nir. 6,15.

यतोयुज् (यतस् + युज्) adj. *woraus* (rel.) *entstanden* VS. 23,60.

यतोद्भव (यतस् + उद्भव) adj. dass. Harîv. 11335.

यतोमूल (यतस् + मूल) adj. *worin* (rel.) *wurzelnd* R. 2, 18, 16. 92, 26. Spr. 2400.

यत्कर (यद् + 1. कर) adj. *was* (rel.) *thuend, — vornehmend* P. 3,2,21. f. या VArtt.

यत्काम (यद् + काम) adj. *was* (rel.) *wünschend:* यत्कामास्ते सुकृमस्तन्नो अस्तु ṚV. 10,121,10. VS. 4,4. Çat. Br. 1,6,3,7. 4,6,9,22.

यत्कामी (यद् + का°) adv. *in welcher* (rel.) *Absicht* Çat. Br. 1,1,3,19. 3,9,3,1. 4,6,5,3.

यत्कारणम् (von यद् + 1. कारण) adv. 1) *aus welchem* (rel.) *Grunde, in Folge wovon, weshalb* Mârk. P. 71,25. 119,4. — 2) *da, weil* Pâṇkat. 30,25. 34,3. ed. orn. 44,23; vgl. यत्कारणात् Pâṇkat. 235,16. यत्कारणाम् ed. orn. 46,13 ist यत् कारणम् *welcher Grund.*

यत्कारिन् (यत् + का°) adj. *was* (rel.) *vornehmend* TBr. 1,5,3,1.

यत्कार्यम् (von यद् + कार्य) adv. *in welcher* (rel.) *Absicht* Mârk. P. 125,33.

यत्कृते (यद् + कृते) adv. rel. *wessentwegen* MBh. 3,2487. 2622. 5,7373. Kathâs. 71,121.

यत्क्रतु (यद् + क्रतु) adj. *welchen Entschluss fassend* Bṛh. Âr. Up. 4,4,5. यथाक्रतु Çat. Br.

यत्न (von यत्) m. P. 3,3,90. Vop. 26,180. *Willensthätigkeit, Bestrebung* Kâm. 5,13. Colebr. Misc. Ess. 1,283. Bhâsâp. 4. 33. Kusum. 5,8. Jâén. 3,173 (wo wohl चेतना यत्नः zu lesen ist). *Verrichtung, Arbeit* Bhar. Nâṭ. 34,42. *Bemühung, Mühe, Anstrengung* AK. 3,4,2,27. MBh. 3,2607. Jogas. 1,13. तस्य यत्नः यम एव केवलम् Bhâg. P. 5,19,14. व्यर्थ° Spr. 65. विनापि यत्नेन 1509. Vaṣiṣṭh. Bṛh. S. 44,16. mit loc.: यदि परोपकृतौ न यत्नः *wenn man sich nicht bemüht Andern Gefälligkeiten zu erweisen* Spr. 2791. दोषेषु यत्नः सुमहान्खलस्य *der Bösewicht kümmert sich gar sehr um Fehler* 3872. Ragh. 2,56. यत्नन्ध्ययत्नाय बभूवुरर्भके 3,29. Bhâg. P. 3, 15,21. Die Ergänzung im comp. vorangehend: निष्फलारम्भयत्नाः Mṛkkh. 55. क्रूरविधान° Kumâras. 7,66. Kathâs. 55,43. परार्थघटनायत्नैर्विना Spr. 2958. यत्नं कर् *sich Mühe geben, Mühe auf Etwas* (loc.) *wenden, sich Etwas angelegen sein lassen:* यत्नं कृते यदि न सिध्यति 471. मा विषादं गमो वीर कुरु यत्नं मया सह R. 3,68,8. Schol. zu ṚV. Prât. 3,15. क्रियतां च तथा यत्नः — यथा R. 1,60,7. कुर्याद्ध्ययने यत्नमाचार्यस्य स्थितेषु च M. 2,191. MBh. 1,1116. 5,7409. Harîv. 4428. R. 1,9,12. 3,68,9. 4, 6,19. 41,34. 5,77,9. Spr. 4023. 4193. 5061. Prab. 93,7. न प्रत्नार्वे परं यत्नमकरोत् MBh. 3,2077. मन्यूर् मोचयितुं यत्नः क्रियताम् Hit. 43,12. यत्नमास्था dass. R. 1,44,11. Spr. 3353. यत्नात्तरमास्थेयम् Kiç. zu P. 8,1, 26. इन्द्रियाणां संयमे यत्नमातिष्ठेत् M. 2,88. 8,302. 9,252. 333. R. Gorr. 1,69,12. परमं यत्नमातिष्ठेत्पुरुषो रत्नपरीक्षणं प्रति M. 9,16. परं यत्नं समास्थितः MBh. 3,2823. प्रतिपात्रमाघोषितो यत्नः Çik. 3,12. परार्थे यत्नमास्थाय MBh. 3,2173. यत्नेन *sorgfältig, eifrig:* यत्नेन भोजयेच्छ्राद्धे वटुमं वेदपारगम् *so v. a. er lasse es sich angelegen sein zu speisen* M. 3,145. 224. तत्यत्नेन वर्जयेत् 4,159. 7,49. 10,53. R. 2,75,26. Spr. 439. Pâṇkat. 192,12. यत्नेनाप्यनिवार्यम् *trotz aller Anstrengung* Kathâs. 51,26. यत्नेन (s. auch u. यत्न) *ohne Mühe* R. 4,44,78. Vaṣiṣṭh. Bṛh. S. 75,6. Pâṇkat. 201,14.

यत्नेन् = यत्नेन MBu. 13,186. उपसेवेत तं नित्यं सर्वयत्नैर्गुरुं यथा M. 7, 173. न वियमनृतं कर्तुं शक्यं यत्नशतैरपि Spr. 1470. यत्नात् *bei aller Anstrengung* 2281. 2905. *sorgfältig, eifrig* Suçr. 1, 102, 12. Varāh. Bṛh. S. 33, 66. Sarvadarçanas. 39, 13. महता यत्नात् *mit grosser Anstrengung* R. 6, 84, 26. अयत्नात् (s. auch u. अयत्न) *ohne Anstrengung* Pañcat. 176, 8, wo अयत्नादेव zu lesen ist. यत्नतस् *sorgfältig, eifrig* M. 3, 125. 9, 15. R. 1, 8, 19. 2, 91, 7. 4, 8, 53. 6, 1, 15. Spr. 379. 843. 1897. 2661. Kathās. 26, 1. 32, 376. 33, 7. Sarvadarçanas. 39, 10. अयत्नतस् (s. auch u. अयत्न) *ohne Mühe* Vik. 282. Vedāntas. (Allah.) No. 148. H. 1481. यत्नप्रतिपाद्य *mit Mühe, nicht leicht* Kāç. zu P. 1, 2, 53. — Vgl. अ°, निर्यत्न, प्र°, प्रति°, स°.

यत्नवत् (von यत्न) adj. *sich Mühe gebend, sich Etwas angelegen sein lassend* MBu. 1, 1042. 13, 1932. Spr. 3353. Harīv. 4694. R. Gorr. 1, 79, 47. 2, 31, 28. die Ergänzung im loc.: दोषस्यैतस्य विघाते MBu. 3, 12804. M. 9, 222. 12, 92. R. 1, 67, 14 (69, 15 Gorr.). Kathās. 61, 117. Kusum. 1, 6. राघवार्थे R. 4, 47, 18. *Willensthätigkeit besitzend;* davon nom. abstr. यत्नवत्त्व Schol. zu Kusum. 3, 4.

यत्नातिशय (यत्न + अ°) m. in der Rhetorik *eine Erklärung, dass man mit Etwas nicht einverstanden sei, trotz des Bestrebens es sein zu wollen,* Kuval. 2, 148. Beispiel Spr. 3003.

यत्नित्य partic. fut. pass. impers. von यत्न् Pat. zu P. 3, 1, 97. Vop. 26, 12.

यत्नानुष्ठानपद्धति (2. पति - अनु° + प°) f. Titel einer Abhandlung Ball. 141.

यत्र (von 1. य) adv. rel. und conj. VS. Prāt. 6, 27. P. 5, 3, 10. Einfluss *auf den Ton des verbi finiti* 8, 1, 30. यत्रा VS. Prāt. 3, 120. 1) wo, *wohin;* häufig auch = यस्मिन्, यस्याम् u. s. w. RV. 1, 83, 6. 115, 2. यत्र यावा वदंति तत्र गच्छतम् 135, 7. 7, 1, 4. 14. 63, 5. यत्ते यत्रं देवयवो मदंति 97, 1. VS. 4, 1. 32. AV. 9, 3, 5. चतुष्पथे यत्र वा *oder sonst* wo Āçv. Gṛhy. 4, 6, 3. — यत्र (= यस्मिन्) वास्य रमेन्मनः M. 2, 223. 5, 47. R. 1, 4, 5. 2, 35, 27. Çiç. 22, 21. Spr. 746. 1039. 2292. 2294. Mṛcch. 13. Bālār. P. 1, 18, 22. यत्र काले Bhāg. 8, 23. यत्र देशे R. 1, 40, 4 (41, 4 Gorr.). Spr. 2287. यत्र काष्ठे AK. 3, 3, 35. = येषु Spr. 2773. यत्र ते कीर्तिताः सर्वे तान्वरान्समवाप्स्यसि Mārk. P. 19, 19. यत्र in einem Conditionalsatze: यद्यचतुर्थं पञ्चमं चेत्। यत्र गुरुः स्यात्लघुपङ्क्तिः ॥ Çrut. 7. wo M. 2, 28. 3, 103. MBu. 1, 5941. 3, 2181. 2251. 2689. 2956. प्रयाता यत्र वै मुनिः (*dahin*) wo R. 1, 9, 11. 52. 2, 32, 31. 4, 3, 29. 5, 28. Çiç. 170. Mṛcch. 49. Spr. 1788. 2291. Vik. 5. Mārk. P. 50, 78. 86. LA. (II) 7, 3. *wohin:* यत्र मे नीयते भर्ता स्वयं वा यत्र गच्छति MBu. 3, 16767. R. 2, 35, 10. क्षिप्रं तौ प्रापयिष्यामि यत्र मां राम वक्ष्यसे 40, 11. गम्यतां यत्र वाञ्छितम् Mārk. P. 106, 9. Spr. 2289. Bemerkenswerth sind folgende Verbindungen: a) यत्र यत्र *wo immer, wo es auch sei:* यत्स्कन्देद्धविषो यत्र यत्र Kātj. 6. MBu. 3, 12163 (यत्र तत्र ed. Calc.). 12, 8198. Spr. 2286, v. l. 4305. Bālār. P. 5, 16, 1. *wohin immer, wohin es auch sei* MBu. 5, 2396. Harīv. 13056. R. 2, 96, 46. Bālār. P. 4, 17, 15. — b) यत्र तत्र *wo es sich gerade trifft, an jedem beliebigen Orte, am ersten besten Orte* MBu. 12, 13092. 13, 2518. Spr. 2286. Kathās. 64, 99. 107, 26. गमिष्यामि यत्र तत्र *an den ersten besten Ort, weiss Gott wohin* MBu. 5, 5997. यत्र तत्राश्रमे वसन् *in welchem Lebensstadium es auch sei* M. 3, 60. 12, 103. Spr. 1225. यत्र तत्र दिने *an einem beliebigen Tage* Pañcat. 2, 7, 33. — c) यत्र कुत्राश्रमे रतः *in welchem Lebensstadium es auch sei, in jedem beliebigen* L. Tattvas. 19. Spr. 1223, v. l. यत्र कुत्र *überall* R. 7, 20, 10. यत्र कुत्रापि *wo es sich gerade trifft* Prasannar. 16, b. यत्र कुत्रापि जन्मनि *in welcher Geburt es auch sei* Kathās. 80, 41. — d) यत्र वा तत्र वा *wo —, wohin immer* RV. 6, 16, 17 (P. 8, 1, 30, Sch.). Āçv. Gṛhy. 1, 3, 1. Liṅg. 18, 5, 11. *so oft, jedesmal wenn* Kaṭh. Up. 6, 2, 3. — e) यत्र क्वचन *an einem beliebigen Orte* P. 8, 1, 66, Vārtt., Sch. *weiss Gott wohin:* °गामिन् MBu. 1, 6192. 12, 13023. *irgendwann, wann es auch sei* M. 9, 233. — f) यत्र क्वापि *irgendwohin, hierhin oder dorthin* Bālār. P. 10, 47, 68. — g) यत्र क्व वा *wo es auch sei* Bālār. P. 1, 5, 17. 17, 36. 10, 4, 12. — 2) *wann, als; wenn* RV. 1, 113, 16. 121, 9. 7, 65, 2. यत्र प्र मुदासमावतम् 83, 6. यत्र गा अमुंचत AV. 3, 28, 1. यत्र पशुं संज्ञपयंति Çat. Br. 13, 5, 2, 2. यत्र समा नानु चन स्मरेयुः 8, 8, 2. 1, 1, 1, 21. 4. 13. 16. 4, 8, 19. 14, 1, 1, 30. 5, 8, 16. Kaṭh. Up. 6, 8, 1. Çāṅkh. Ça. 10, 1, 20. 14, 62, 2. यत्राब्राह्मणामधिगच्छेयुः Liṅg. 9, 2, 6. श्रुतिर्द्वैधं तु यत्र स्यात् M. 2, 14. 8, 104. 336. MBu. 3, 1356. Spr. 2288. 4773. मुमूर्षा मर्त्ता प्रमर्त्ता वा रक्षो यत्रोपगच्छति M. 3, 34. 131. 4, 206. 8, 12. 14. 19. 348. 9, 34. MBu. 3, 2227. fg. 13238. R. 5, 77, 14. Spr. 63. 104. 4773. ad Çiç. 8, 20. 51, 16. Kāç. zu P. 1, 1, 50. P. 1, 1, 3, Sch. ohne verbum finitum Jāṭ. 2, 83. MBu. 3, 2188. Spr. 2293. 2298. 2377. 2740. — 3) *damit:* निदो यत्रं मुमुच्महे ṚV. 9, 29, 5. neben यथा. धर्ष्टासो यत्र पीपरन्यथा नः 3, 32, 14. — 4) *da, quum* N. 8, 17 (beide Ausgg. des MBu. यतु st. dessen). नाकाले विद्म्रियो मृत्युर्मर्त्यानाम् — यत्र कामा ह्यवेक्षन्ते पुरुषेण स्वयंभुवा MBu. 3, 2368. R. 2, 57, 20. 6, 82, 9. Spr. 1352. 3240. Kathās. 78, 76. — 5) mit potent. *dass* nach *nicht glauben, nicht zugeben, tadeln, sich wundern* P. 3, 3, 148. fgg. न मृष्ये न मर्षये यत्र तत्रभवान्वृषलं याजयेत्, यत्र तत्रभवान्वृद्धः सन्वृषलं पाठयेदध्यापयेत्, यत्र तत्रभवान्वृषलं याजयेदाचार्यमेतत् Schol. Vop. 23, 14. *dass* mit praes.: किं नु दुःखतः परम्। इच्छासंपन्नतो नास्ति यत्रेच्छा (v. l. für यत्रेच्छा) न निवर्तते ॥ Spr. 935. Sadoh. P. 4, 14, a.

यत्रकामम् (von यत्र + काम) adv. *wohin das Verlangen geht* AV. 9, 3, 24. Çat. Br. 14, 7, 2, 13.

यत्रकामावसायं (यत्र - काम + अ°) m. *die Zauberkraft sich dahin zu versetzen, wohin man gerade Lust hat,* Verz. d. Oxf. H. 231, b, 13.

यत्रकामावसायिन् (यत्र - काम + अ°) adj. *die Zauberkraft besitzend sich dahin zu versetzen, wohin man gerade Lust hat;* davon nom. abstr. °सायिता f. und °सायित्व n. = यत्रकामावसाय Verz. d. Oxf. H. 51, a, 19. Gaupar. zu Siṅhās. 23. Mārk. P. 40, 30 (°शायित्व). 33 (°शायिता). H. 202. Vgl. कामावसायिता Pāṇ. 2, 3, 2. कामावशायिता 1, 1, 49 mit vorangehendem तथा, wofür vielleicht यथा (यथाकामा°) zu lesen ist.

यत्रतत्रशय (यत्र - तत्र + शय) adj. *sich hinlegend, wo es sich gerade trifft, dem es einerlei ist wo er schläft* MBu. 5, 3560.

यत्रत्य (von यत्र) adj. wo (rel.) *seiend,* wo wohnend Milatin. 144, 17. Bālār. P. 5, 2, 12. 6, 14.

यत्रसायंगृह (यत्र - सायम् + गृह) adj. *dort seine Wohnung aufschlagend,* wo *Einen der Abend ereilt,* MBu. 1, 1031. 1312. 3, 471. Spr. 4410. — Vgl. सायंगृह.

यत्रसायंप्रतिश्रय (यत्र - सायम् + प्र°) adj. f. या dass. MBu. 3, 2587.

यत्रस्थ (यत्र + स्थ) adj. wo (rel.) *sich aufhaltend* MBu. 9, 2252.

यत्राकूतं (यत्र + घा°) n. *das beobsichtigte Ziel* TS. 5,4,10,1.

यथर्षि (यथा + ऋषि) adv. *je nach dem Ṛshi* Ait. Br. 2,4.4,26. Âçv. Çr. 3,2,7. — Vgl. यथर्षि.

यथर्चम् (von यथा + ऋच्) adv. *je nach der Ṛk* Liṭ. 7,11,9. Daiva. 7,10,26.

यथर्तु (यथा + ऋतु) adv. *der jedesmaligen Zeit entsprechend* Ait. Br. 5,9. Kâṭ. Çr. 22,7,18. Kauç. 74. Pân. Gaṇ. 1,11. Taitt. Âr. 1,9,2. °पुष्पिता द्रुमाः R. 5,73,59.

यथर्तुक (wie eben) adj. *der Jahreszeit entsprechend* MBh. 1,5005.

यथर्षि adv. = यथऋषि Kâṭ. Çr. 4,9,1.

यँवा (von 1. य) rel. adv. und conj. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,66. fgg. Kâç. zu 66. 1) *wie* (einem तथा, एवम्, इव, तद्वत् entsprechend); tonios nachgesetzt am Ende eines Pâda Çâṅkh. 4,17. z. B. विशो यथा ṚV. 1,25,1. 50,2. 2,43,2. 3,45,3. 8,29,6. 64,3. Çat. Br. 11,5,5,13. AV. 8,14,2. 3. doch auch betont: पिता पुत्रेभ्यो यथा ṚV. 7, 32,26. 8,46,14. — नष्टं यथा पशुम् ṚV. 1,23,13. तया तदस्तु — यथा 30, 12. नूनं यथा पुरा 39,7. यथेदं कुर्म्य तथा 7,55,6. विद्मा हि ते यथा मनः 1, 170,3. यथा देवानां जनिमानि वेद 3,4,10. 7,3,7. कृत्वा यथा वर्शत् 8,53, 4. नेतावदन्ये मरुतो यथेमे धारत्ते 7,57,3. पर्यूर्णुया वनम् 104,21. AV. 1, 11,6. 3,9,1. Ait. Br. 1,23. Çat. Br. 1,5,1,26. तदु किल तथैवास यथैवेनं प्रोवाच Çâṅkh. Ça. 15, 16, 13. यत्परःपुंसा वा पत्या स्याद्यथा वा *oder wie sonst* Çat. Br. 1,3,1,21. यथा मे पुत्रो जायेत Çâṅkh. Ça. 15,18,1. यथा हि ṚV. 8,24,9. यथा चित् 5,25. 46,21. 49,7. 5,56,2. यथा दृ 4,12,6. — यथर्तुलिङ्गान्यृतवः स्वयमेवर्तुपर्यये । स्वानि स्वान्यभिपद्यन्ते तथा कर्माणि देहिनः ॥ M. 1,30. 119. यथा शूद्रस्तथैवेह सः 2,126. यथा कृतयुगे तथा R. 1,1,90. एतत्सर्वं यथा वृत्तं तथा (so die ed. Bomb.) गावल्गणे मम । यावद्य MBh. 8,47. यथा भवितव्यं तथा भवतु Hit. 18,18. यथा तव तथा मम Kathâs. 4,33. (विलासवत्यः) मनङ्गसंदीपनमाशु कुर्वते यथा प्रदोषाः शशिचारुभूषणाः Ṛt. 1,12. यथा पुरा प्रकृतिभिर्न प्रत्यक्षं सेव्यते Çiç. 132. यदि यथा वदति तितिपस्तथा त्वमसि 123. घर्मार्तं न तथा सुशीतलजलैः स्नानम् — सुखयति — प्रीत्यै सज्जनभाषितं प्रभवति प्रायो यथा चेतसः Spr. 886. यथा — एवम् 2318. R. 1,6,19. यथा — तद्वत् Siṅhâs. 41. 58. Spr. 2301. fg. 2316. fg. 2326. यथा वक्ष्यसि धर्मज्ञ तत्करिष्यामहे वयम् R. 1, 60,14. एतदिच्छाम्यहं ज्ञातुं यथा यास्यामि तत्र वै MBh. 5,6052. ब्रूयाद्येनं कथाते तं पर्णाद्रवचनं यथा *wie Parṇâda's Worte waren* 3,2892. शृणु राजन्निहोत्पत्तिं जैनेयस्य यथा पुरा । यथा च भूरिश्रवसः 7,6027. राज्ञ यावेदयद्यथा (= यथावत् Comm.) *wie es sich verhielt* Bhâg. P. 7,8,2. मंस्यन्ते मां यथा नृपम् MBh. 4,32. नवपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनुं विभावसौ Kumâras. 4,34. विदधे कामान्यस्य यस्येप्सितान्यथा (vgl. यथेप्सत) R. 1,53,1. Bisweilen zum Ueberfluss mit इव verbunden: तत्र मेधाविनः केचिद्धर्मन्यैरुदीरितम् । विचिन्तिपुर्यथा श्येना नोगतमिवामिषम् ॥ MBh. 2,1811. द्वेष्यो ऽपि संमतः शिष्ट वार्तास्येव यथौषधम् Spr. 4234. सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु कक्षैर्यथा तीर्थमिवाम्बुमध्यात् 85. यथा — तथा oder यथा — तेन सत्येन bei Betheuerungen und festen Behauptungen *so gewiss — so wahr* N. 11,36 (MBh. 2,2399 यदि st. यथा). MBh. 3,16867. 16871. fg. 2207. fgg. 2981. Daç. 2,39. R. Gorr. 2,71,23 (wo यथा ध्रुवं zu trennen ist). mit Verstellung der beiden advv.: यथा शाल्वपते नान्यं वरं ध्यायामि कं च न । सत्यमेते नरव्याघ्र तथा मूर्धानमालभे ॥ MBh. 5, 5991. *quam, wie* als Ausruf der Verwunderung: यथा पचति शोभनम् P. 8,1,37, Sch. *wie, zum Beispiel* Nir. 1,14. 7,7. Çâṅkh. Ça. 12,13,8. Gobh. 4,4,18. यथो एतत् *was das betrifft (dass)* Nir. 1,14. 7,7. यथैवेतत् Ait. Br. 7,28. Bemerkenswerth sind folgende Verbindungen: *a*) यथा यथा (einem एवेव, तथा तथा entsprechend) *je nachdem, in welchem Maasse, je mehr:* यथो यथा पतयन्ति विपेमिरे एवेव तस्युः सवितः सवाय ते ṚV. 4, 54,5. यथो यथा कृपण्यति 8,39,1. यथो यथा मतयः सन्ति नृणाम् 10,111, 1. 100,4. यथो यथास्य अर्षणी तथो तथा TBr. 3,6,6,4. M. 4,20. 8,285. यथा यथा मरुद्दुःखं दण्डं कुर्यात्तथा तथा 286. 10,128. 11,228. fg. 12,73. MBh. 3,2285. 16798. Spr. 2319. fg. 4788. fg. 5397. Sûçr. 2,442,1. Varâh. Bṛh. S. 11,33. Kathâs. 14,63. Bhâg. P. 2,2,13. यथा यथा भर्ता तथा सकलेरूपवचनानि वदति तथा तथाधिकं दुःखं भवति Ver. in LA. (II) 20,2. Vgl. यथायथम्. — *b*) यथा तथा *wie immer, wie es auch sei, auf irgend eine Weise, auf beliebige Weise* M. 4,17. MBh. 2,2139. 3,2028. 13,2748. Harîv. 4238. R. Gorr. 2,116,18. 4, 17,38. 5,90,30. Varâh. Bṛh. S. 24, 28. 77,25. Kathâs. 54,150. 62,36. 117,26. Râjat. 5,276. यथा तथा न तप्येयुः *auf keine Weise* R. Gorr. 2,21,10. Kathâs. 43,108. 61,169. अस्ति त्वेको ऽत्र नस्तत्तुः सो ऽपि नास्ति यथा तथा so v. a. *oder auch der ist genau genommen nicht da* MBh. 1,1830. यथा तथा MBh. 3,1168 so v. a. यद्यातथम्, wie Indr. 3,52 gelesen wird. — *c*) यथा कथंचित् *auf irgend eine Weise, wie es sich gerade macht* M. 11,230. MBh. 11,772. Mâlav. 41,3. Daçak. in Bunp. Chr. 182,5. Sarvadarçanas. 167,18. fg. — *d*) तथ्यथा *dieses wie* so v. a. *nämlich, so zum Beispiel* Kaṭh. Up. 3,3. Çiç. 21,7. Bhâg. P. 5,3,9. Pañcat. 3,10.7,15. 156,16. भवति च पुनर्भूयान्नेहः फलं प्रति तथ्यथा प्रभवति मुधिर्विम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदां चयः Uttarar. 27,7 (35,17). Sarvadarçanas. 125,3. 166,17. — 2) = यथावत् *wie es sich gehört, richtig* Bhâg. P. 6,1,1. स्व° 3,31,14. 5,5,7. 18,3. 8,5,19. 10, 87,15. Vgl. यथाकृत. — 3) *ut, auf dass, damit, (so) dass;* mit opt. und conj., später auch fut., praes., imperf., perf. und aor.; gern dem ersten Worte des Satzes nachgestellt in der älteren Sprache. देवा नो यथा सदमिद्धृधे असन् ṚV. 1,89,1. 173,9. सुभगो यथासिस 2,26,3. यथो नो मित्रो वरुणोपत् 3,4,6. यथा भवेम 7,97,3. पर्णा यथा नः 100,3. VS. 2,33. AV. 2,28,4. 3,8,3. न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य तथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति ṚV. 4,54, 4. Çat. Br. 1,7,4,5. 6,4,7. TBr. 3,1,1,2. 11. यथा न रोदात् Pân. Gaṇ. 1,5. यथा भूमिमार्त्यं प्राप्स्यतीति Liṭ. 1,7,9. Gobh. 3,7,12. यथा भवाम्युत्तमः Âçv. Gṛh. 2,10,6. — तथा प्रयत्नमातिष्ठेद्यात्मानं न पीडयेत् M. 7, 68.128.177.180.206.9,102. MBh. 1,7699. 3,1911.2212.2306.2733. 2739. 2759. 4,319. 5,6035. R. 1,2,8. 8,14. 57,19. 69,5. 2,38,16. fg. 46.21. 3, 60,23. 24. 4,43,67. 53,26. Spr. 2113. Kathâs. 13,55. Bhâg. P. 6,1,64. Pât. zu P. 1,1,62. Kâç. zu P. 1,1,50. 56. यथा यथैव ब्रीहिवृद्धि तत्कर्तव्यमहेलया Spr. 4790. मा भूत्कालात्ययो यथा R. 7,107,3. इमयस्तोमकाण्डे तां कवयिष्यामि नैयघ । यथा त्वदन्यं पुरुषं न मां मंस्यति कश्चित् ॥ MBh. 3,2092. ग्राम्यमयीडा यथा न भविष्यति भवति v. l.) तथा प्रयतिष्यामहे Çiç. 18,18. अथ तान् (तवैतान् ed. Bomb.) पातयिष्यामि यथा यास्यन्ति न लयम् MBh. 4,35. R. 1,60,3. 4,6,4. 5. यथा न विद्मः क्रियते R. 1,12,3. 2,93,19. R. Gorr. 2,6,28. 5,37,13. 76,22. Jîv. 1,242. Çiç. 24,7. Raghu. 1,72. 3,66. Kathâs. 18,243. Prab. 91,3. क्रमेण च यथो तत्र प्रकर्षं स तथा यथा । बभौषत न केनापि प्रतिमल्लेन भूतले ॥ Kathâs. 25,120. 52,267. 348. 54,222. 55,23. ततस्तथा दत्ते तस्मै रत्नानि मगधाधिपः । निर्डुग्धर-

त्रिरिक्षेव पृथिवी वृत्रुधे यथा ॥ 16,82. 18,81. 54,241. Rîśa-Tan. 6,277. तेनो वनु त्वार्विभ्यो भृत्येभ्यश्च ववर्ष सः । एको दरिद्रशब्दो ऽत्र यथाभूद्-र्ववर्जितः ॥ Kathâs. 52,220. ohne verbum finitum Râgn. 14,66. — 4) *dass nach* wissen, glauben, meinen, sagen, melden, anweisen, hören, bekannt werden, zweifeln u. s. w. vor einer oratio directa mit oder ohne nachfolgendem इति. वेद यथा मा वो मृत्युः परिव्यथा इति Prâçnop. 6,6. एकथितो ऽपि ज्ञापत एव यथायमभोगस्तपोवनस्येति Çiç. 7,28. उवाच यथा Kâṭh. Up. 5,3,7. Mudrâs. 18,9. 21,2. 112,8. 113,4. Pañcât. ed. orn. 4,18. ज्ञानीथे तं यथा राज्ञा सम्यग्वृत्तः सदा त्वयि MBh. 3,2284. विद्धि यथाप्य कृष्णा पुनरेष्यतीति 13681. विदितं ते यथा R. Gorr. 1,72, 14. 4,9,10. Kumâras. 4,36. Pañcât. ed. orn. 4,23. यथेयः u. s. w. तथा तर्कयामि Prasannar. 20,3. fgg. त्वयोक्तं मे यथा Kathâs. 31,81. ग्रावेदय यथा Çiç. 112,15. ग्रादिष्टो ऽस्मि यथा Vikr. 37,7. Ratnâv. 103,16. Kathâs. 36,48. Prasannar. 19,4. 67,16. 91,2. ग्राज्ञापितो ऽस्मि परियदा यथा Mudrâs. 1,3 v. u. 141,6. वृद्धेभ्यः श्रूयते यथा Kathâs. 6,76. कथं प्रकाशतां गतो ऽसमर्थः पौरुषे यथा Mudrâs. 3,10. रामो मे संशयो नास्ति यथा वो मत्कृ-ष्यति R. 3,53,28. — 5) *da:* निःसंशयं तत्रियपुंगवास्ते यथा हि पुष्टं कथयन्ति MBh. 1,7185. fg. यथासौ रूपनिर्घोषः पूरयन्निव मेदिनीम् । ममा-ह्लादयते चेतो नल एष महीपतिः ॥ 3,2859. fg. 6,2880. R. 3,30,8. नूनं न तपसः किंचित्फलं मन्ये श्रुतस्य वा । यथा मां नाभिजानाति पिता मूढ तपा हतम् ॥ Jaiminîyan. 1,35. Çiç. 85. Spr. 4794. — 6) *wie wenn, mit potent.:* तदिदं मे ऽनुसंप्राप्तं देवि दुःखं स्वयंकृतम् । संमोहादिव बालेन यथा स्याद्भक्षितं विषम् ॥ Dâç. 1,11. Çiç. 190. — 7) *sobald* Mrkṇd. 9. — Zum Schluss verzeichnen wir die von den vedischen Lexicographen angegebenen Bedeutungen: यथा साम्ये AK. 3,3,9. यथा निदर्शने वीप्सा तू-द्देशे निर्देशसाम्ययोः । हेतूपपत्तौ च H. an. 7,29. यथा तुल्यार्थनानयोः ॥ प्रयोगयान् Mrkṇd. avj. 36. fg. यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वार्थानतिक्रमे Jîvânanda bei Mallin. zu Megh. 9. योग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तिसादृश्यानि यथार्थाः Schol. zu P. 2,1,6.

यथाकनिष्ठम् (य° + कनिष्ठ) adv. *dem Alter nach vom Jüngsten zum Aeltesten hinauf* Pân. Gaṇ. 3,2. — Vgl. यथाज्येष्ठम्.

यथाकर्तव्य (य° + क°) adj. *was in einem betreffenden Falle zu thun ist:* तदयमेव यथाकर्तव्यो (so ist zu schreiben) पृच्छ्यताम् Hit. 87,16. 114, 4. — Vgl. यथाकार्य.

यथाकर्म (य° + कर्मन्) adv. *je nach der betreffenden Thätigkeit, je nach den Handlungen* Çat. Br. 14,4,3,20. यथाकर्म तादेशाः Âçv. Çr. 1,12,13. Çâṅkh. Çr. 4,6,17. 5,10,13. Kâṭhop. 5,7. Kaush. Up. 1,3. M. 1,41. Bhâg. P. 4,29,27. 5,25,14. 26,6. 11,14,9.

यथाकर्मगुणम् (य° + कर्मन् - गुण) adv. *je nach den Handlungen und je nach den (drei) Qualitäten* Bhâg. P. 4,29,29.

यथाकल्पम् (य° + कल्प) adv. *dem Ritus gemäss* R. 1,11,14. 60,9.

यथाकाण्डम् (य° + काण्ड) adv. *je nach den Abschnitten* Ind. St. 3,391.

यंयाकाम (य° + काम) adj. *je welches Verlangen haben* Çat. Br. 14,7,2,7.

यथाकामम् (wie oben) adv. *nach Wunsch, nach Belieben* RV. 10,146, 5. Çat. Br. 14,5,4,20. Kâṭy. Çr. 22,5,1. Kâuç. 57. 60. MBh. 3,1816. 2291. 2333. 2903. उपागमत् so v. a. *gemächlich* 4,735. 5,7472. R. 1,52, 23. 2,58,25. 97,20. R. Gorr. 1,48,9. Râgn. 4,31. 16,72. Çiç. 60,23. Kathâs. 16,29. 17,146. 27,125. 29,35. 52,199. 54,177. 55,44. Rîśa-Tan. 3,499. Bhâg. P. 4,18,13. Brahma-P. in LA. (II) 57,9. Am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen: °प्रयाप्य, °ग्रेय, °वध्य Ait. Br. 7, 29. °चार Kâṭh. Up. 7,1,5. °विचारिणी MBh. 5,7352. R. 3,25,3. यथा-कामार्चितार्थिन् Râgn. 1,6.

यथाकामिन् (य° + का°) adj. *nach Belieben verfahrend* H. 335. Hall. 2,224. Çiṅkn. Çr. 1,3,7. 6,6,40. Pân. Gaṇ. 1,11. Jîś. 1,81.

यथाकाम्य (von यथाकामम्) n. *Belieben* P. 8,1,66, Vârtt. wohl fehlerhaft für या°.

यथाकायम् (य° + काय) adv. *je nach dem Umfange* (des Rumpfes) Kâṭy. Çr. 8,1,32.

यथाकारम् (von य° + 1. कर्) adv. *auf welche* (rel.) *Weise* P. 3,4,38.

यथाकारिन् (य° + का°) adj. *wie* (rel.) *handelnd* Çat. Br. 14,7,2,6.

यथाकार्य (य° + कार्य) adj. = यथाकर्तव्य Hit. 132,13. ed. Jones. 1843. 2320. Vet. in LA. (II) 22,11.

यथाकाल (य° + 2. काल) m. *ein entsprechender Zeitpunkt:* एवं हि-तीये संप्राप्ते यथाकाले so v. a. *Essenszeit* MBh. 3,15422. °कालम् adv. *je zur Zeit, zur richtigen Zeit* Kâṭy. Çr. 4,12,16. 16,7,7. 25,2,4. 6,7. Mṛcch. Up. 1,2,5. M. 2,39. 66. 4,147. 7,221. 225. 8,406. MBh. 1,1894. 3,15425. 5,7401. 6,4402 (°काले ed. Calc.). Harîv. 6817. R. 2,58,15. 65,8. R. Gorr. 1,13,4. 3,12,2. Suçr. 1,128,5. Râgn. 17,81. Kâm. Nîtiś. 5,17. Vaṇîn. Bhn. S. 2, S. 6,8. Bhâg. P. 4,22,30. 7,14,3. 9,11,36. यथा-कालप्रबोधिन् Râgn. 1,6. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,16.

यथाकुलधर्मम् (य° + कुल - धर्म) adv. *je nach Familienbrauch* Âçv. Gṛhy. 1,17,1. 18. Kâtç. 82. Verz. d. Oxf. H. 263,b,30.

यथाकृत (य° + कृत) adj. *verabredet* Jîś. 2,200. अ° *nicht regelrecht —, falsch gemacht, — vollbracht* Spr. 892. MBh. 5,1226. Vaṇîn. Bhn. S. 104,89; vgl. यथा 2). यथाकृतम् adv. etwa *wie gewöhnlich, wie herkömmlich:* दुर्गुगावो न यवसादगोपा यथाकृतमपि मित्रं चितासः RV. 7,18, 10. *je nach der Anfertigung* Kâṭy. Çr. 16,4,10. *in verabredeter Weise* M. 8,182. *in der Weise, wie es geschah:* यथाकृतं शर्मसेतन्माधवाय Kathâs. 24,159. 46,152. 49,83. 51,151. 64,52. 73,161. 79,26.

यथाकृष्टम् (य° + कृष्ट) adj. *Furche um Furche* Kâṭy. Çr. 17,3,3.

यथाकृषि s. u. कृषि 1).

यंयाकृतु (य° + कृतु) adj. *welchen Entschluss fassend* Çat. Br. 14,7, 2,7. यत्कृतु Bhn. Âr. Up. 4,4,5.

यथाक्रमम् (य° + क्रम) adv. *der Reihe nach, successive, respective* M. 2,66. 3,2. 7,30. 9,295. R. 1,4,22. 17,41. 34,49. 70,17 (72,15 Gorr.). Suçr. 1,134,7. 2,60,12. Vikr. 66,21. Râgn. 3,10. 9,26. Vaṇîn. Bhn. S. 9,9. 86,58. Kathâs. 28,187. AK. 2,1,12. 7,54. H. 169. 595. Am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen Kathâs. 23,17. 45,226.

यथाक्रमेण adv. dass. Maitrâyaṇ. 6,26. 31. Vaṇîn. Bhn. S. 8,31. 96,11. 103,7. Çaṇḍilîyas. im ÇKDr.

यथाक्रोशम् (य° + क्रोश) adv. *nach der Zahl der* Kroça Kâṭy. Çr. 22,3,35.

यथाक्षमम् (य° + क्षम) adv. *nach Möglichkeit, so viel als möglich* Kathâs. 28,165. 62,11.

यथाक्षेमेण (instr. von य° + क्षेम) adv. *in aller Ruhe, — Behaglichkeit* R. 2,54,4.

यथाखातम् (य° + खात) adv. *je nachdem gegraben ist* Çat. Br. 3,5,4,

10. Kâtj. Çr. 8,5,8. 13. 8,18.

यथाज्यम् (यथा + आज्य) adv. *den Benennungen entsprechend* Kâtj. Çr. 1,7,23.

यथाज्यात (यथा + आ°) adj. *früher erzählt, — erwähnt, — angegeben* R. 3,8,24. 15,40. Daç. 2,12. Mâlav. P. 113,17. Ueber die Bed. des Wortes bei den Gaina s. Wilson, Sel. Works 1,312.

यथाज्ञानम् (यथा + आज्ञान) adv. *dem Bericht —, der Angabe gemäss* Kathâs. 29,33.

यथागत (यथा + आ°) adj. 1) *auf dem man vorher gekommen ist:* यथागतेनैव मार्गेण — अयोध्यामागमन् *des Weges, auf welchem sie gekommen waren,* R. 2,47,15. R. Gorr. 1,29,22. Harîv. 14137. Kathâs. 58, 131. 77,31. 81,15. यथागतम् adv. *des Weges, auf dem man gekommen ist:* गता: MBh. 1,1187. 3,2230. 5,5447. 12,4261. R. 1,17,1. 23,3. 60, 33. 65,24. 2,91,75. Ragh. 3,67. Kathâs. 8,16. 12,103. 34,20. 51,225. 52,167. 56,168. यथागतेन dass. MBh. 3,1712. Vgl. ब्रह्मर्षयागता: Brahma-P. in L.A. (II) 53,18. ततो यथागता: सर्वे यथावासं ययुस्तथा R. 6,112,107. — 2) *wie zur Welt gekommen, dumm, einfältig* H. 352, Sch.; vgl. यथाजात, यथोक्त.

यथागमम् (यथा + आगम) adv. *der Ueberlieferung gemäss* MBh. 14,2699. R. 7,88,4. Pañkat. 1,2,26. 30.

यथागात्रम् (य° + गात्र) adv. *Glied um Glied* Kaṇḍ. 81.

यथागुणम् (य° + गुण) adv. *den Qualitäten —, den Vorzügen gemäss* Çañk. zu Kenop. Up. S. 53. Râga-Tar. 3,137.

यथागृहम् (य° + गृह) adv. *in sein respectives Haus:* रात्रौ पान्ति यथागृहम् MBh. 4,696.

यथागृहीतम् (य° + गृहीत) adv. *je nach der Reihe des Fassens:* समिधो ऽन्वाधधति य° *wer gerade ein Scheit in die Hand bekömmt* Âçv. Çr. 3,6,27. °गृहीतमाज्यं गृहीत्वा Çat. Br. 12,4,4,7. Kâtj. Çr. 9,7,9. *nach der Reihe des Aufführens* RV. Prât. 2,39.

यथागोत्रकुलकल्पम् (य° + [गोत्र - कुल] - कल्प) adv. *je nach dem Brauch der Familie oder des Geschlechts* Gobh. 2,9,20.

यथाग्नि (यथा + अ°) adv. *nach der Grösse des Feuers* Kâtj. Çr. 16,9,26.

यथायथम् (य° + यथन) adv. *der Angabe gemäss* Âçv. Çr. 5,10,20.

यथाङ्गम् (यथा + अङ्ग) adv. *Glied um Glied:* यथाङ्गं वर्धतां शेष: AV. 6, 101,1. Çat. Br. 13,8,2,5. Kâtj. Çr. 21,4,5. Çâṅkh. Çr. 17,12,7. Âçv. Gṛhj. 4,3,25.

यथाचमसम् (य° + चमस) adv. *Kamasa um Kamasa* Çat. Br. 4,4,2, 10. Çâṅkh. Çr. 8,2,14. 9,3.

यथाचारम् (यथा + आचार) adv. *dem Brauche gemäss, wie üblich* R. 4, 40,8. Prasoçar. 2,b,6. 3,a,1. Saṅgîn. K. 221,a,8.

यथाचारिन् (य° + चा°) adj. *wie* (rel.) *zu Werke gehend, wie verfahrend* Çat. Br. 14,7,2,6.

यथाचित्तित (य° + चि°) adj. *vorher bedacht, beabsichtigt* Varâh. Bṛh. S. 89,41. Kathâs. 19,2.

यथाचोदितम् (य° + चोदित) adj. *je nach der Aufforderung* Âçv. Çr. 1,5,24. Çâṅkh. Çr. 2,5,18.

यथाछन्दसम् (य° + छन्दस्) adv. *ein Metrum um's andere* Ait. Br. 2, 12. 4,29. 6,12. Çâṅkh. Çr. 9,20,6.

यथाजात (य° + जात) adj. *wie ein zur Welt Gekommener, dumm, einfältig* AK. 3,1,48. H. 352. — Vgl. यथागत 2) und यथोक्त.

यथाजातम् (wie eben) adv. *Geschlecht um Geschlecht* Çat. Br. 9,1,1,19.

यथाजाति (य° + जा°) adv. *Art um Art* Lâṭj. 2,7,13. 8,5,23. 8,2,17.

यथाजोषम् (य° + जोष) adv. *nach Herzenslust* MBh. 3, 11034 (S. 571, °योषम् ed. Calc.). 12,1320. 14,112.

यथाज्ञप्त (यथा + आ°) adj. *vorhin befohlen, anbefohlen* R. Gorr. 1,11, 24. 2,87,18.

यथाज्ञानम् (य° + ज्ञान) adv. *nach Wissen, so gut man es weiss* Gobh. 3,9,18. Pañkat. 1,2,26. 45. 4,5,32.

यथाज्येष्ठम् (य° + ज्येष्ठ) adv. *dem Alter nach, vom Aeltesten zum Jüngsten hinab* Lâṭj. 1,3,19. 2,11,3. Gobh. 2,8,23. 3,9,13. Pañkat. 198,10. — Vgl. यथाकनिष्ठम्.

यथातत्त्वम् (य° + तत्त्व) adv. *der Wahrheit gemäss, wie es sich wirklich verhält, genau* MBh. 3,2891. 5,7004. R. 2,72,35. 41. 97,11. 3,38,4. 4, 51,28. 5,32,4. 6,109,4. Kathâs. 3,104. 11,30. 31,52. 42,96. 49,42. 52, 166. 110,40. 123,114. यथातत्त्वार्थदर्शिन् MBh. 12,11608.

यथातथम् (य° + तथा) adv. *wie es sich in Wirklichkeit verhält, genau* (Etwas berichten), *wie es sich gebührt, wie es sich gehört* AK. 3,5,15. H. 264. Hit. 199. Hall. 1,144. MBh. 1,286. 3566. 3,2136. 2693. 2879. 5,5444. 13,464. 3628. 14,757. 986. Inscr. 5,52. R. 2,72,46. 3,7,19. Kathâs. 57,28. 70,93. Bhâg. P. 5,1,41. Mârk. P. 56,19. 100,25. 135,12. Verz. d. Oxf. H. 36,a, No. 78. — Vgl. य°, यावतथ्य.

यथातथ्यम् (य° + तथ्य) adv. *der Wahrheit gemäss* MBh. 13,3205. R. 3,75,22. 4,61,38. 7,83,3.

यथातथ्येन (wie eben, instr.) adv. dass. Harîv. 9104. R. 6,13,11.

यथात्मक (von यथा + आत्मन्) adj. *welche* (rel.) *Natur immer habend* Pañkat. 2,1,30.

यथादत्त (य° + दत्त) adj. *wie immer gegeben:* उपभोक्ष्ये यथादत्तं भागं पित्रा R. Gorr. 2,110,22.

यथादर्शनम् (य° + दर्शन) adv. *bei jedem Vorkommen, in jedem einzelnen Falle* Sin. D. 36,16. व्याख्या यथादर्शनप्रवृत्तया Kusum. 49,13.

यथादायम् (य° + 2. दाय) adv. *je nach dem Erbtheil* Bhâg. P. 5,1,39. 7,6.

यथादिक् (य° + 2. दिश्) adv. *nach den verschiedenen Himmelsgegenden, nach der entsprechenden H.* Âçv. Gṛhj. 2,8,9. Varâh. Bṛh. S. 55,6.

यथादिशम् (wie eben) adv. dass. MBh. 3,1753. Varâh. Bṛh. S. 39,7. Bhâg. P. 5,16,30.

यथादिष्ट (यथा + आ°) adj. *der Angabe —, der Anweisung entsprechend* R. 2,100,32. Kathâs. 40,88. 71,10. यथादिष्टम् adv. *der Angabe —, der Anweisung gemäss* Çat. Br. 1,3,2,21. Kâtj. 1. RV. Prât. 4,14. 7,1. Kathâs. 49,30. यथादिष्ट: 36,20 ist यथा आदिष्ट:.

यथादीक्षम् (य° + दीक्षा) adv. *den übernommenen religiösen Observanzen gemäss* MBh. 14,1270.

यथादृष्टम् (य° + दृष्ट) adv. *wie man Etwas gesehen hat* M. 8,76. 191. Kathâs. 12,119. 33,179. 35,89. 56,211.

यथादृष्टि (य° + दृ°) adv. dass. Verz. d. Oxf. H. 155,b,16.

यथादेवतम् (य° + देवता) adv. *Gottheit um Gottheit* Ait. Br. 4,29. TS. 2,2,11,3. 3,1,6,1. TBr. 1,1,4,3. 3,3,10,1. Çat. Br. 1,4,2,17. 4,2,3,11.

यथादेशकालदेहावस्थानविशेषम् adv. *je nach der Verschiedenheit* (विशेष) *des Ortes* (देश), *der Zeit* (काल) *und der Körpergestalt* (देहाव°) Bhāg. P. 6,9,41.

1. यथादेशम् (य° + देश) adv. *je nach dem Platze, — Orte* Śāṅkh. Ça. 13,24,16. Kāty. Ça. 20,5,15. Lāṭy. 10,15,10. M. 8,406. Bhāg. P. 4,22, 30. 7,14,10.

2. यथादेशम् (यथा + आदेश) adv. *je nach der Weisung, nach Vorschrift* Āçv. Gṛhy. 1,23,18. Kāty. Ça. 4,13,3. Bhāg. P. 4,31,4.

यथाद्रव्य (य° + द्र°) adj.: °द्रव्ये ज्ञानपदे पशौ *je nachdem die Besitzgegenstände des Stammes sind, bei welchem er opfert,* Kāty. Ça. 22,2,23.

यथाधर्मम् (य° + धर्म) adv. *in richtiger Ordnung, nach Recht und Gesetz* Çāt. Br. 11,1,6,24. R. 1,70,17 (72,15 Gorr.). Bhāg. P. 9,20,16. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,18.

यथाधिकारम् (यथा + अधिकार) adv. *der Berechtigung gemäss;* am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen Bhāg. P. 4,21,32.

यथाधिष्ण्यम् adv. *nach der Reihe der* Dhishṇja Çāt. Br. 4,6,6,7.17.6,16.

यथाधीत (यथा + अ°) adj. und °तम् adv. *wie gelernt, wie der Text lautet,* d. h. *in der Grundform ohne wesentliche Abänderung* Lāṭy. 2, 9,13. 11,11. 3,7,4. 5,12,16.17. 7,6,26. Bhāg. P. 1,3,44.

यथाध्यायकम् (यथा + अध्यायक) adv. *in Uebereinstimmung mit dem Lehrer* P. 2,1,7, Sch.

यथानाम (य° + नामन्) adv. *Name um Name* AV. 4,30,7.

यथानारदभाषित (य° + ना° - भा°) adj. *genau so seiend wie es* Nārada *verkündet hat:* विद्या Bhāg. P. 6,16,27. der Comm. zieht यथा, welches er durch यथावत् umschreibt, zum verbum finitum des Satzes.

यथानिरुक्तम् (य° + निरुक्त) adv. *wie hingeworfen* Āçv. Gṛhy. 1,10,7. Kātç. 88.

यथानिर्दिष्ट (य° + नि°) adj. *vorhin angegeben* Çāṅkh. 21,2. 102,1. Prab. 19,11. Dhūrtas. in LA. 71,1.

यथानिलयम् (य° + निलय) adv. *in sein entsprechendes Nest, in seine entsprechende Wohnstätte* R. 2,46,2.

यथानिवासिन् (य° + नि°) adj. *wo gerade wohnend* R. 7,40,31.

यथानिःसृतम् (य° + निःसृत) adv. *wie hinausgegangen* Çāṅkh. Ça. 7,14,12.

यथानुपूर्वम् (यथा + आनुपूर्व) adv. *der Reihe nach, respective* Bhāg. P. 5,1,34.

यथानुपूर्व्यम् (यथा + आनुपूर्व्य) adv. dass.: °पूर्व्यकरण Kāty. Ça. 25, 5,18. 10,20.

यथानुपूर्व्या (instr. von यथा + आनुपूर्वी) adv. dass. Vaitān. Bṛh. S. 68,94.

यथानुभूतम् (यथा + अनुभूत) adv. *wie man es erfahren hat, wie man es erlebt hat* R. 3,4,4. Bhāg. P. 1,13,11. 5,1,16.

यथानुरूपम् (यथा + अनुरूप) adv. *regelrecht, genau entsprechend* Vaitān. Bṛh. S. 24,27. 53,69. Kauṣīt. 46,104.

यथान्यस्तम् (य° + न्यस्त) adv. *in der Weise, wie es deponirt war,* M. 8,183.

यथान्यायम् (य° + न्याय) adv. *nach der Regel, nach Gebühr* Āçv. Gṛhy. 3,5,16. Kāty. Ça. 14,2,22. M. 1,1. 3,135. 190. 5,35. 7,2. MBh. 1,6134. 3,1734. 2668. 2896. R. 1,52,2. 2,56,13,g. 58,18. 82,2. Bhāg. P. 6,9,7. Mālav. P. 16,90.

यथान्युप्त (य° + न्युप्त) adj. *wie je hingeworfen* M. 3,218. यथान्युप्तम् adv. *Wurf um Wurf* TBr. 3,11,6,3. Kāty. Ça. 9,7,6. 10,6,14.

यथापण्यम् (य° + 1. पण्य) adv. *je nach der Waare, für jede Waare* M. 8,398.

यथापदम् (य° + पद) adv. *wie das Wort ist* RV. Prāt. 11,12.

यथापराधम् (यथा + अपराध) adv. *je nach dem Vergehen* Bhāg. P. 6, 9,39. यथापराधदण्ड *je nach dem Vergehen strafend* Ragh. 1,6.

यथापर्व (य° + पर्व) adv. *Gelenk um Gelenk, Glied um Glied* AV. 9, 5,4. 19,4,32. Kauç. 64. 83. fg.

यथापुरम् (य° + पुरस्) adv. *wie ehemals* R. 2,114,9. Verz. d. Oxf. H. 256,a,20. — Vgl. य°.

यथापूर्व (य° + पूर्व) 1) adj. *wie ehemals seiend:* वाणीर्यथापूर्वं विसृष्टिभिः Ragh. 12,48. अघयापूर्वः 88. Bhāg. P. 1,14,23. यथापूर्वम् adv. *wie ehemals, wie sonst* R. 4,18,31. Pañcat. 23,11. 36,18. ed. orn. 55,5. Bhāg. P. 3,9,43. 32,14. Getrennt zu schreiben MBh. 3,1754. Vaitān. Bṛh. S. 43, 11. — 2) °पूर्वम् adv. *nach einander, der Reihe nach* RV. 10,190,3. Ait. Br. 2,33. TS. 1,7,5,4. 5,2,4,1. 7,2,3,1. TBr. 1,1,6,2. Çāt. Br. 1,1,3,19. 3,5,4,3. 6,2,4,18. Kāty. Ça. 3,3,24. 5,9,2. M. 11,187. Jāṅ. 1,35.

यथाप्रज्ञम् (य° + प्रज्ञा) adv. *nach bester Einsicht, so gut man es versteht* Verz. d. Oxf. H. 170,a,6.

यथाप्रतिगुणम् (य° + प्र° - गुण) m. instr. pl. *je nach den Eigenschaften, — Vorzügen so v. a. so gut man es vermag* Harīv. 11029.

यथाप्रतिज्ञाभिस् (य° + प्रतिज्ञा) f. instr. pl. *wie man übereingekommen war* MBh. 4,177. 334.

यथाप्रतिरूपम् (य° + प्रतिरूप) adv. *wie es passend ist* Çāt. Br. 3,5,4,24.

यथाप्रत्यर्हम् s. u. प्रत्यर्हम्.

यथाप्रदिष्टम् (य° + प्रदिष्ट) adv. *der Vorschrift gemäss, wie es sich gehört* R. Gorr. 2,116,49.

यथाप्रदेशम् (य° + प्रदेश) adv. 1) *an der entsprechenden, richtigen Stelle, an die richtige Stelle* Ragh. 6,14, v. l. 83. Kumāras. 1,30. 7,34. *nach allen Seiten hin* R. 2,36,32. — 2) *der Vorschrift gemäss, wie es sich gehört:* यो ब्रह्म जानाति यथाप्रदेशम् MBh. 3,12719. यथाप्रदेशमप्यापि धर्मेण परिपात्यते (पृथिवी) Harīv. 278 = 1620.

यथाप्रधानतस् adv. = यथाप्रधानम् Harīv. 9983.

यथाप्रधानम् (य° + प्रधान) adv. *je nach dem Vorzug, — Vorrang* Çāṅkh. Gṛhy. 6,3. Kumāras. 7,46. Rāja-Tar. 3,233.

यथाप्रयोगम् (य° + प्रयोग) adv. *je nach dem Gebrauch* Taitt. Prāt. 2,6 in Ind. St. 4,167.

यथाप्रश्नम् (य° + प्रश्न) adv. *den Fragen gemäss* Bhāg. P. 3,23,15.

यथाप्राणम् (य° + 1. प्राण) adv. *aus Leibeskräften* MBh. 4,761.

यथाप्राप्त (य° + प्राप्त) adj. *aus den Verhältnissen —, aus den Umständen sich ergebend, den Verhältnissen entsprechend, angemessen:* ये तु सन्याः — यथाप्राप्तं न वृत्वते R. 7,59,8,34. यथाप्राप्तमकल्पा 4,53,3. अन्यवाक्ं यथाप्राप्तीं (°प्राप्तिं ed. Schl. und Lass. 100,5) गतिं गच्छामि Hit. ed. Jonas. 2115. °स्वर *ein Accent, wie er sich aus einer Regel ergiebt,* Ind. St. 10,427. °प्राप्तम् adv. *der Regel gemäss, regelmässig* P. 3, 3,110, Sch.

यथाप्राप्ति s. u. यथाप्राप्त.

यथाप्रार्थितम् (य° + प्रार्थित) adv. *nach Wunsch* Ragh. 14,23.

यथाप्रीति (य° + प्री°) adj. *nach Herzenslust* MBh. 15,864.

यथाबलम् (य° + बल) adv. 1) *nach Kräften* AV. 3,20,9. MBh. 1,7023. R. 3,47,5. 5,29,21. Suçr. 2,51,2. Kim. Nitis. 13,17. Bhâg. P. 4,22,48. 7,2,12. नूनं न बुध्यसे रामं यथावीर्यं यथाबलम् *in Bezug auf seine Kraft* R. 3,51,2. R. ed. Scrr. 1,51,16 ist यथा बलं zu schreiben. — 2) *je nach dem Bestande des Heeres* M. 7,183. Kim. Nitis. 15,39.

यथाबीजम् (य° + बीज) adv. *je nach dem Samen* M. 9,39. Bhâg. P. 6,1,24.

यथाबुद्धि (य° + बु°) adv. *nach bestem Wissen* R. 4,32,5. Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92.

यथाभक्त्या (instr. von य° + भक्ति) adv. *mit voller Hingebung* Bhâg. P. 7,1,29.

यथाभक्षितम् (य° + भक्षित) adj. *wie gegessen* Kâtj. Çr. 19,3,14.

यथाभव scheinbar adj. Bhâg. P. 4,27,11, wo aber यथा भवान् *wie du* zu lesen ist.

यथाभवनम् (य° + भवन) adv. *Haus für Haus* Varâh. Bṛh. S. 53,70.

यथाभागम् (य° + भाग) adv. 1) *je nach dem Antheil:* य° दव्यादातिं जुषाणाः AV. 7,109,2. VS. 2,21. TS. 1,8,8,1. Ait. Br. 3,38. य° वरुनु दव्यमग्निः Kauç. 6. R. 2,101,26 (110,41 Gorr.). R. Gorr. 1,13,38. 4,23,27. Bhâg. P. 4,16,5. 5,2,20. 20,14. In der Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,19 ist यथा भागा इति zu schreiben. — 2) *je an ihrem Platze* MBh. 4,1771. Bhag. 1,11. *am rechten Platze* Ragh. 6,19.

यथाभाजनम् (य° + भाजन) adv. *je an richtiger Stelle* (यथास्थानम् Sây.) Ait. Br. 1,2.

1. यथाभाव (य° + भाव) m. *das Schicksal* Spr. 4388.

2. यथाभाव (wie oben) adj. *welche* (rel.) *Natur habend* Bhâg. P. 2,9,31.

यथाभिकामम् (यथा + अभिकाम) adv. *nach Wunsch* Bhâg. P. 10,88,20.

यथाभिज्ञातम् (यथा + अभि° absol.) adv. *je wie man erkannte* TBr. 1,3,1,2.

यथाभिप्रेत (यथा + अ°) adj. *erwünscht:* अपयाभिप्रेताध्याने P. 3,4,69. °प्रेतम् adv. *nach eigenem Gefallen, wie man es will* Pañkat. 37,24. Hit. 21,7, v. l. 54,17. 129,13. यथाभिप्रेतमात्मनः Mârk. P. 21,73.

यथाभिमत (यथा + अ°) adj. *erwünscht, wonach man Verlangen trägt:* यथाभिमतभोगभुज् Kathâs. 44,186. अथ प्रातः सर्वे यथाभिमतदेशं गताः *jeder an den Platz, der ihm behagte,* Hit. 21,7. *beliebig:* °ध्यान Jogas. 1, 39. °मतम् adv. *nach eigenem Gefallen, wohin Einen das Verlangen zieht, nach Lust* Kathâs. 37,51. Pañkat. 167,24. Hit. 36,17.

यथाभिरुचित (यथा + अ°) adj. *woran man Gefallen hat, beliebt* Kathâs. 99,30.

यथाभिरूपम् adv. = अभिरूपस्य योग्यम् P. 2,1,7, Sch.

यथाभिलषित (यथा + अ°) adj. *erwünscht* R. 2,115,7 (126,7 Gorr.). R. Gorr. 1,13,47. Kim. Nitis. 17,24. Bhâg. P. 5,4,4. Mârk. P. 110,31. Pañkat. ed. orn. 4,20.

यथाभिलिखित (यथा + अ°) adj. *auf die angegebene Weise gemahlt* Varâh. Bṛh. S. 48,29.

यथाभिवृष्टम् (यथा + अभिवृष्ट) adv. *nach der Menge des gefallenen Regens* Varâh. Bṛh. S. 23,4.

यथाभीष्ट (यथा + अ°) adj. *erwünscht* Kathâs. 34,233. 90,88. °दिशं गमुः *wohin es Jedem von ihnen beliebte* Pañkat. 63,2.

यथाभूतम् (य° + भूत) adv. *der Wahrheit gemäss* MBh. 3,12070.

यथाभूयसोवाद (य° - भूयसम्, gen. von भूयस्, + वाद) m. *eine allgemeine Regel* Liṭ. 4,10,15. 16,7,7. 10,2. 4.

यथाभ्यर्थित (यथा + अ°) adj. *worum man vorher gebeten hat* Çiç. 103,19.

यथामङ्गलम् (य° + मङ्गल) adv. *nach der Sitte* Pâr. Gṛhj. 2,1.

यथामति (य° + म°) adv. 1) *nach Gutdünken:* तस्याः कुरु य° R. 2,78, 9. तत्रिवोध य° *wenn es dir gut dünkt* 5,90,29. — 2) *nach bestem Verstande* Bhâg. P. 1,3,44. 3,6,36. 4,7,24. Vedântas. (Allah.) No. 2. Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, No. 235. 136,*a*, No. 239. 151,*a*, 32. 238,*a*, No. 374. 239,*b*, No. 380.

यथामनीषितम् (य° + मनीषित) adv. *nach Wunsch* Harîv. 14138.

यथामात्रम् (य° + मात्र) adv. *nach Quantität:* अ° ṚV. Prât. 14,4.

यथामानम् (य° + 2. मान) adv. *je nach dem Maasse, je nach dem Umfange* MBh. 4,1771 nach der Lesart der ed. Bomb. st. यथाभागम् der ed. Calc.

यथामुखम् (य° + मुख) adv. von *Angesicht zu Angesicht* P. 5,2,6.

यथामुखीन (vom vorherg.) adj. *Jmd* (gen.) *in's Gesicht sehend, mit dem Gesicht gerichtet auf* P. 5,2,6. (मृगः) यथामुखीनः सीतायाः पुप्लुवे *sprang gerade auf Sîtâ los* Bhaṭṭ. 5,48.

यथामुख्यम् (य° + मुख्य) adv. *was die Hauptpersonen betrifft, soweit von diesen die Rede ist* MBh. 15,672.

यथामुख्येन (instr. von य° + मुख्य) adv. *vorzugsweise, vor Allem* MBh. 13,233.

यथाम्नातम् (यथा + आम्नात) adv. *nach dem Wortlaut des Textes* Kâtj. Çr. 1,8,16. 6,7,24. 19,5,6. *der heiligen Ueberlieferung gemäss* Bhâg. P. 10,84,32.

यथाम्नायम् (यथा + आम्नाय) adv. *den heiligen Ueberlieferungen gemäss, nach dem Wortlaut des Textes* Liṭ. 2,1,3. 5,26. 11,7. Bhâg. P. 10,74,12.

यथायजुस् (य° + य°) adv. *je nach dem* Jagus TS. 1,7,6,4. 5. 2,3,11, 3. 3,3,4,2. TBr. 3,3,6,2.

यथायतनम् (यथा + आयतन) adv. *je auf der Stelle, je an seiner Stelle* TS. 7,5,6,4. Çat. Br. 11,5,5,11. 13,5,2,16. Kaush. Up. 3,3. 4,20. °नात् *je von der Stelle aus* TS. 7,5,6,4. TBr. 1,2,5,2.

यथायथम् (य° + यथा) adv. *wie es sich gebührt, richtig, in der Ordnung, nach und nach, allmählich* P. 8,1,14. AK. 3,5,14. AV. 19,8,33. सर्वे यत्ति य° 9,4. Ait. Br. 2,26. 5,9. 23. TS. 1,5,10,1. 2,2,11,3. TBr. 1,7,3,1. Âçv. Çr. 2,5,10. Çat. Br. 1,9,3,27. 4,2,5,14. Kauç. 119. R. 5, 10,20. 11,12. 12,41. Bd. IV, S. XVIII. Sûçr. 1,364,6. Daçak. 1,44 (Sin. D. 337). Tarkas. 50. Kathâs. 26,59. 50,169. Bhâg. P. 10,18,19. Mârk. P. 26,2. Pañkar. 4,3,2. Sidd. K. zu P. 4,4,110. — Vgl. अ°.

यथायुक्तम् (य° + युक्त) adj. *den Umständen entsprechend* Kathâs. 32,8.

यथायुक्ति (य° + यु°) adv. *nach Umständen, nach Bewandtniss* Varâh. Bṛh. S. 44,18. °तम् dass. 84,3.

यथायूथम् (य° + यूथ) adv. *je nach den Heerden* Harîv. 3949.

यथायोगम् (य° + योग) adv. *nach Umständen, nach Bewandtniss, nach Bedürfniss* Kâtj. Çr. 17,6,3 (= समवियोगेन Comm.). M. 5,92. MBh. 4, 157. 6,28. Harîv. 15632. R. Gorr. 1,9,6. 51,9. 2,67,7. 7,93,9. Sûçr. 1, 24,17. 25,14. Kim. Nitis. 11,71. Varâh. Bṛh. S. 48,17. Sin. D. 359. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*, 42. Schol. zu Kâç. 1,98. Ind. St. 10,290.

यथायोगेन (instr. von य° + योग) adv. dass. Kir. Nitis. 17, 50.

यथायोग्यम् (य° + योग्य) adv. *nach Gebühr, wie es sich schickt* Spr. 443. Verz. d. Oxf. H. 82, a, 31.

यथायोनि (य° + यो°) adj. *je nach dem Mutterleibe* Bulg. P. 6, 1, 54.

यथारब्ध (यथा + आ°) adj. *früher begonnen* Visu-P. bei Mudr. ST. 1, 31.

यथारम्भम् (यथा + आरम्भ) adv. *der Reihe nach* Kir. Ça. 10, 2, 28.

यथारुचम् (य° + 2. रुच्) adv. *nach Gefallen* Bulg. P. 2, 4, 21.

यथारुचि (य° + रु°) adv. dass. Kathâs. 49, 167. 56, 291. 89, 33. 98, 26. Bulg. P. 3, 24, 15. 11, 14, 9. Verz. d. Oxf. H. 122, a, 8. 154, b, N. 1. 231, a, 46. *je nach Geschmack* Sin. D. 286, 1.

यथारूप (य° + रूप) adj. f. आ *wie beschaffen:* यथारूपाः पञ्चशारदीये पञ्च बालभ्यस्ते Lâṭ. 3, 10, 6. 9, 4, 26. *ein entsprechendes Aussehen habend, überaus schön:* सीता R. 7, 98, 9. MBh. 4, 882. *ausserordentlich gross:* प्रीति R. 2, 91, 4.

यथारूपम् (wie oben) adv. 1) *in passender Weise, angemessen, richtig:* य° पश्यन्ती रशनाः कोरति Çat. Br. 6, 2, 1, 9. योनौ गर्भ न य° पश्यति 7, 1, 1, 10. 12, 8, 2, 11. 26. 13, 6, 2, 10. Çâṅkh. Gṛhj. 2, 14. Bulg. P. 5, 16, 30. — 2) *dem Aussehen nach, demselben Aussehens* Bulg. P. 10, 89, 62.

यथार्ह (यथा + अर्ह) adj. f. आ *entsprechend, angemessen, richtig, wahr:* यथार्हेषु त्रिविधेषेव कर्मसु Spr. 2066. अनुभव *richtig* Tarkas. 19. Sarvadarçanas. 114, 1. Kuṭṭan. 34, 19. 43, 8. वाक्य R. 3, 60, 39. 5, 90, 24. Kumâras. 2, 16. Kathâs. 17, 49. स्वप्न *ein Traum, der in Erfüllung geht,* 46, 147. यथार्थस्य वाचकः (द्रुतः) Spr. 467. °वादिन् Pañcat. 161, 19. °भाषिन् Ragh. 14, 44. °वक्तृ Tarkas. 49. °कथन im Gegens. zu परिहास *ironisch* P. 1, 4, 106, Sch. यस्य जन्म यथार्थं ते भविष्यति *ein Leben im wahren Sinne des Wortes* R. 6, 92, 27. नामन् *ein zutreffender Name* Ragh. 15, 6. Kathâs. 6, 69. 29, 69. 78, 60. अभिधान 36, 10. °नामन् adj. Ragh. 6, 21. Milav. 47, 22. Daçak. in Benf. Chr. 184, 13. 186, 22. Kathâs. 54, 220. यथार्थाख्य adj. 53, 140. 60, 233. यथार्थाक्षर adj. Vikr. 1. °नामकल्प Mallin. zu Kir. 8, 19. इयं यथार्थं नाम यथार्थं नगोत्तमम् *so v. a. einen zutreffenden Namen führend* Kathâs. 24, 32. 52, 92. यथार्थः क्षितिपतिः *ein Fürst, der seinen Namen (»Herr des Landes«) mit Unrecht führt,* Spr. 4313. य° *unrichtig, falsch* MBh. 12, 11904. Çik. 54.

यथार्थक (von यथार्थ) adj. *richtig, wahr:* स्वप्न *ein Traum, der in Erfüllung geht,* Kathâs. 46, 148.

यथार्थतत्त्वम् (यथा + अर्थ - तत्त्व) adv. *der Wahrheit gemäss, so wie es sich in Wirklichkeit verhält* MBh. 12, 11497.

यथार्थतस् (von यथा + अर्थ) adv. *der Wahrheit gemäss* Harîv. 4579. R. 7, 37, 8, 59. Aṣṭâv. 1, 15.

यथार्थता (von यथार्थ) f. *das Zutreffen:* नाम्नः Kathâs. 35, 49. 55, 185. 102, 70. so v. a. यथार्थनामकत्व Kir. 8, 49.

यथार्थम् (यथा + अर्थ) adv. *je nach Ziel, — Geschäft, — Zweck, — Bedürfniss, passend; nach Belieben* Nir. 2, 1. 7. विसृज्यते Çat. Br. 2, 3, 4, 6. Kâṭy. Ça. 22, 6, 17. 24, 6, 13. Âçv. Gṛhj. 1, 23, 24. ऊहः Kâṭy. Ça. 4, 3, 20. 5, 3, 32. 11, 1, 11. Âçv. Ça. 1, 9, 8. 3, 2, 11. प्राप्नुयात् Lâṭ. 5, 1, 11. इच्छो य° स्यात् Gobh. 1, 5, 18. कृत्वा यथार्थं स्युः *sind sie fertig, so mögen sie machen was sie wollen,* Lâṭ. 4, 3, 22. 1, 2, 22. 3, 14. in diesem Sinne häufig ohne Beifügung von अस् oder einem andern Zeitworte, z. B. प्राप्ता यथार्थम् Kâṭy. Ça. 16, 6, 15. Gobh. 1, 3, 14. 2, 3, 20. 4, 10. आदाय यथार्थमन्येधुरुस्सु Âçv. Ça. 5, 12, 12. घृतमृष्टा य° ṚV. Prât. 15, 12. यथार्थप्रत्यासत्ति Lâṭ. 9, 7, 6. यथार्थस्तोमान्वयात् Daiv. 9, 13, 2. यथार्थम् = यथातथम् *wie es sich in Wirklichkeit verhält, genau, gehörig* AK. 3, 5, 15. Hir. 199. MBh. 13, 332. R. 4, 39, 43. Verz. in LA. (III) 23, 11. यथार्थकृतनामन् *zutreffend benannt* R. 3, 22, 9.

यथार्थित (यथा + अ°) adj. *vorher erbeten* Kathâs. 73, 247.

यथार्थित्वम् (यथा + अर्थित्व) adv. *je nach der Absicht* Sin. D. 286, 1.

यथार्पित (यथा + अ°) adj. *wie übergeben* Jâtâ. 2, 164.

यथार्ह (यथा + अर्ह) 1) adj. *je welche Würde habend:* ब्राह्मणेभ्यो यथार्हेभ्यो देहि वित्तान्यनेकशः so v. a. *je nach ihrem Verdienst* MBh. 13, 35. *dem Verdienst entsprechend, angemessen:* स्वागतेन यथार्हेण R. 6, 111, 31. आसनेषु यथार्हेषु Kathâs. 80, 108. यथार्हैः पानभोजनैः 80, 21. — 2) यथार्हम् adv. *nach Werth, nach Würde, nach Verdienst, nach Gebühr* Kâvç. 111. 127. Pâṇ. Gaṇ. 2, 9. M. 3, 114. 8, 291. 11, 4. MBh. 3, 2115. 3011. 11924. 16706. 4, 220. R. 1, 12, 34 (32 Gorr.). 20, 13. 52, 13. 2, 50, 5. 76, 19. 103, 57 (111, 53 Gorr.). Ragh. 16, 40. Verz. d. Oxf. H. 9, b, 26. यथार्हकृतपूजा Kathâs. 45, 5. 51, 215.

यथार्हतस् (यथा + अर्हतस्) adv. *nach Verdienst, nach Gebühr* Bulg. P. 3, 21, 47. nach dem Comm. *wie einen kostbaren Edelstein* (2 Worte).

यथार्हत्व (abl. von यथार्ह) adv. *nach Würde, nach Verdienst, nach Gebühr, wie es sich gehört* M. 7, 16. 9, 193. 10, 134. MBh. 2, 193. 2031. 3, 3020. 13, 6445. 15, 674. R. 1, 13, 9 (19 Gorr.). 36, 10. 20, 14. Spr. 473. Varâh. Bṛh. S. 48, 30. Bulg. P. 4, 18, 30. 21, 14. 7, 11, 10.

यथार्हवर्ण (य° + वर्ण) m. *Späher (ein den Umständen entsprechendes Aeusseres annehmend)* AK. 2, 8, 4, 13. H. 733. Halâ. 2, 270.

यथालब्ध (य° + ल°) adj. *was man gerade findet* R. 2, 28, 17. Kathâs. 74, 18.

यथालाभम् (य + लाभ) adv. *wie man es gerade hat, wie es sich gerade trifft* Jâtâ. 1, 304. Varâh. Bṛh. S. 12, 18. 48, 41. Daçar. 3, 24. 61. Sin. D. 294. 433.

यथालिङ्गम् (य° + लिङ्ग) adv. *nach den unterscheidenden Zeichen* Kâṭy. Ça. 3, 3, 7. 5, 4, 11. 9, 8, 8. 10, 6. 11, 22. Kâvç. 16. 60. 63.

यथालोकम् (य° + लोक) adv. *je nach Raum, — Platz* AV. 11, 9, 26. Ait. Br. 3, 42. Kâvç. 88. Lâṭ. 10, 4, 9.

यथावकाशम् (यथा + अवकाश) adv. 1) *wie oben Raum ist* TBr. 3, 12, 8, 5. Âçv. Gṛhj. 2, 3, 8. Çâṅkh. Gṛhj. 4, 8. ṚV. Prât. 15, 2. — 2) *an seinen Ort, an die richtige Stelle* Ragh. 6, 14. — 3) *bei erster Gelegenheit* Hit. 102, 11.

यथावचस् scheinbar R. 4, 63, 6, wo aber wohl प्रभावधे यथा वचः zu lesen ist.

यथावत् (von यथा) adv. *wie es sich gebührt, regelmässig, gehörig, richtig, genau* ṚV. Prât. 11, 31. M. 1, 2. 2, 89. 5, 57. 6, 1. 8, 216. Jâtâ. 1, 346. MBh. 1, 7162. 3, 2246. 2287. 11914. 16729. 5, 7549. 7, 1887. R. 1, 3, 4. 8, 28. 62, 25. 2, 21, 39. Suçr. 1, 60, 14. 126, 14. 180, 19. Ragh. 3, 28. 5, 19. Spr. 657. Kathâs. 51, 134. 54, 163. 188. 215. Râǵa-Tar. 1, 118. 3, 149. Sarvadarçanas. 176, 21. यथावद्वर्णन *richtige Auffassung* 63, 10. यथावत्तत्त्वनिश्चय 80, 1. fg. अयथावत्प्रजानाति Bhag. 18, 31. यथावत् = यथा *wie* Mâlav.

P. 37,4.

यथावयस् (य° + व°) adv. *dem Alter nach* MBh. 2,2031. 3,1806. fg. 15,870. Harıv. 6917. R. 2,35,9. Bhâg. P. 10,65,4. so v. a. *desselben Alters* 89,62.

यथावयसम् (wie eben) adv. *dem Alter nach* Lâṭ. 8,12,3. Gobh. 2,4,10.

यथावर्णम् (य° + वर्ण) adv. *nach den Kasten* Bhâg. P. 1,9,26.

यथावर्णविधानम् (य° + वर्ण-विधान) adv. *nach den Regeln der Kasten* Bhâg. P. 5,19,19.

यथावर्शम् (य° + वश) adv. *nach Belieben* ṚV. 2,24,14. य° तन्वं चक्र ṛṣiḥ 3,48,4. य° नयति दासमार्यः 5,34,6. 7,101,3. 10,15,14. 168,4. AV. 3,13,4. 7,104,1.

यथावसरम् (यथा + अवसर) adv. *bei jeder Gelegenheit* Hit. 62,9.

यथावस्तु (य° + व°) adj. *nach dem Sachverhalt, genau* Kathâs. 16,57. 18,367. 27,194. 29,64. 181. 34,72. 44,122. 45,98. 56, 286. 333. 60,68. Prab. 70,18.

यथावस्थम् (यथा + अवस्था) adv. *dem Zustande —, der Lage gemäss* Kathâs. 87,26. *je unter denselben Verhältnissen* Sin. D. 637.

यथावासम् (यथा + आवास) adv. *je zu ihrer Wohnung:* ततो यथागताः सर्वे यथावासं ययुस्तथा R. 6,112,107. 7,6,22.

यथावास्तु (य° + वा°) adv. *dem Boden —, dem Platze gemäss* Bhâg. P. 10,50,51.

यथावित्तम् (य° + वित्त) adv. 1) *kraft des Rechts der Erwerbung* Âpast. Ba. 3,28. — 2) *nach dem Vermögen, im Verhältniss zum Besitz* Bhâg. P. 4,22,30. 7,14,19. 10,53,35.

यथाविद्यम् (य° + विद्या) adv. *je nach dem Wissen* Kaush. Up. 1,2.

यथाविध (य° + विधा) adj. *qualis* MBh. 8,1962. 2987. 9,1289. Ragh. 13,19.

यथाविधानम् (य° + विधान) adv. *nach Vorschrift* Pañkat. 3,11,7.

यथाविधानेन adv. dass. Jâṭâ. 3,112.

यथाविधि (य° + वि°) adv. 1) *nach Vorschrift* Kauç. 68. M. 2,48. 142. 222. 3,6. 67. 81. 4,95 u. s. w. MBh. 3,1734. 3012. R. 1,2,33. 60,9. 2, 25,44. 56,38. 65,8. Pañkat. III, 162. Ragh. 1,6. 3,70. 15,21. Varâh. Bṛh. S. 43,16. Kathâs. 14,6. 31,70. 52,287. 408. Hâlâ. 2,243. — 2) *entsprechend, übereinstimmend* P. 3,4,44. कुरुघास्या य° *verfahre mit ihr, wie sie es verdient hat,* R. Gorr. 2,77,9.

यथाविधिम् (aus metrischen Rücksichten) adv. = यथाविधि 1) Harıv. 7138.

यथाविभवम् (य° + विभव) adv. *nach dem Vermögen, im Verhältniss zum Besitz* Mârk. P. 28,22. ग्रात्मनः 29,37. यथाविभवकृतालंकार Pañkat. ed. orn. 49,19.

यथावीर्यम् (य° + वीर्य) adv. *im Verhältniss zur Mannheit, in Betreff des Heldenmuthes* Bhâg. P. 10,53,35. R. 3,41,2.

यथावृत्त (य° + वृत्त) 1) adj. *a) wie sich benehmend, — betragend:* ज्ञास्यधर्मान्प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः M. 7,1. MBh. 5,112. fg. — *b) wie geschehen, wie erfolgt* R. 7,71,16. n. *eine frühere —, vorangegangene Begebenheit:* तस्मिन्गीते यथावृत्तं वर्तमानमिवाप्नुयात् R. 7,71,18. शृणु — यथावृत्तं वने निवसतः पुरा । जम्बुकस्य MBh. 1,3567. ततः सर्वं यथावृत्तं दमयन्त्या नलस्य च । भीमायाकथयत् 3,3002. ज्ञाते यथावृत्ते मरुद्गुते Kathâs. 101,359. यथावृत्तम् in Verbindung mit einem Verbum des Erzählens, Fragens oder Hörens so v. a. *die näheren Umstände einer Begebenheit* (nom. oder acc.) *oder wie Etwas sich ereignet, — begeben hat* (adv.) MBh. 1,7619. 3,1869. 2190. 2393. 2927. 5,6013. 6043. 7117. 7340. 7426. 7497. R. 1,42,21. 48,6 (49,7 Gorr.). 51,16. 70,7. R. Gorr. 1,52,6. 2,6,6. 3,56,6. Kathâs. 7,67. 8,16. 12,186. 13,140. 192. 18,195. 198. 25,111. 29,26. 32,151. 46,4. 51,91. 148. 54,112. Prab. 83,8. — 2) °वृत्तम् adv. *je nach dem Metrum:* यथावृत्तसमाप्ति Ind. St. 8,286.

यथावृत्तान्त (य° + वृ°) *Erlebnisse, Abenteuer:* सन्योऽन्योदितस्वस्व-यथावृत्तान्ततोषिणः Kathâs. 80,49.

यथावृत्ति (य° + वृ°) adv. *in Bezug auf die Art und Weise des Lebensunterhaltes* MBh. 13,2593.

यथावृद्धम् (य° + वृद्ध) adv. *dem Alter nach, so dass der Aeltere stets vorangeht,* R. 5,60,6. यथावृद्धपुरःसरा (मुनिपरंपरा) Kumâras. 6,49.

यथावृद्धि (य° + वृ°) adv. *dem Wachsthum* (des Mondes) *gemäss* R. 5,16,10.

यथाव्यवहारम् (य° + व्यवहार) adv. *dem Brauche gemäss* Hit. 87,15.

यथाव्याधि (य° + व्या°) adv. *der Krankheit gemäss:* चिकित्सितः *richtig behandelt* Malâmâsat. im ÇKDa. u. यथाशास्त्रम्.

यथाव्युत्पत्ति (य° + व्यु°) adv. *je nach der Denkungsart, — Anschauungsweise* Sin. D. 286,1.

यथाशक्ति (य° + श°) adv. *nach Vermögen, nach Kräften* P. 2,1,6, Sch. Vop. 6,61. Kâṭy. Ça. 22,10,8. 24,3,13. Gobh. 1,1,6. Âçv. Gṛhy. 1, 21,6. Kaṭh. 139. Jâṭâ. 1,115. MBh. 5,7334. Spr. 2531. 3801. 4793. R. 2, 111,10. 3,35,17. 5,90,33. Çiç. 113,3. Kathâs. 31,208. Bhâg. P. 6,12,16. Brahma P. in LA. (II) 57,18. Pañkat. 117,5. ed. orn. 63,30, wo °शक्ति कम° zu trennen ist.

यथाशक्त्या (instr.) adv. dass. MBh. 5,828. 7228. 13,6237. Harıv. 7330. Spr. 745 (der Comm. zu Kir. Nîtiç. liest यथाशास्त्रविध°). Mârk. P. 8. 639, Çl. 9. Verz. d. Oxf. H. 31,a,13.

यथाशयम् (यथा + आशय) adv. 1) *wie es Jmd am Herzen liegt* Râǵa-Tar. 4,66. Bhâg. P. 6,4,34. — 2) *je nach den Bedingungen, Voraussetzungen* (= यथोपाधि Comm.) Bhâg. P. 10,83,35.

यथाशरीरम् (य° + शरीर) adv. *Leib für Leib* TBr. 1,2,1,9.

यथाशास्त्रम् (य° + शास्त्र) adv. *nach Vorschrift, nach den vorgeschriebenen Regeln* AV. Paiṭ. 4,122. M. 2,70. 4,97. 6,88. 10,36. R. 1,12,3 (3 Gorr.). 2,52,73. 76,18. Kâm. Nîtiç. 2,18. Bhâg. P. 1,17,16. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen M. 7,31. Çaṅk. zu Ḳânḍ. Up. S. 8.

यथाशीलम् (य° + शील) adv. *dem Charakter gemäss* Bhâg. P. 3,24,15.

यथाश्रद्धम् (य° + श्रद्धा) adv. *nach Neigung* TBr. 3,12,8,11. Çat. Br. 2,2,2,5. 13,8,2,10. Kâṭy. Ça. 4,10,13. MBh. 3,2150.

यथाश्रमम् (यथा + आश्रम) adv. *nach dem Lebensstadium* Bhâg. P. 1,9,26.

यथाश्रयम् (यथा + आश्रय) adv. *in Bezug auf die Art und Weise des Anschlusses, — der Verbindung* MBh. 13,2593. Kathâs. 70,90.

यथाश्रुत (य° + श्रुत) 1) adj. *übereinstimmend mit dem, was man davon gehört hat:* नैष मार्गारः प्राप्तो ऽस्माभिर्यथाश्रुतः Kathâs. 65,168. n. *eine bezügliche Ueberlieferung* Çaṅk. zu Ḳânḍ. Up. S. 36. °श्रुतम् adv. *wie man es gehört hat* M. 8,76. 101. Kathâs. 9,82. 117,121. Bhâg. P. 1,6,16. 3,6,36. 7,13,22. Mârk. P. 116,29. — 2) adv. °श्रुतम् *a)* den

Kenntnissen gemäss Kaṭhop. 3,7. Bhâg. P. 6,1,62. — *b) nach den Vorschriften der heiligen Bücher* Çiv. 132, v. l.

यथाश्रुति (य° + श्रु°) adv. *nach den Vorschriften der heiligen Bücher* Çiv. 132. Verz. d. Oxf. H. 31,*b*, N. 3.

यथाश्रेष्ठम् (य° + श्रेष्ठ) adv. *in der Weise, dass der Beste vorangeht,* Çat. Br. 5,2,4,18. Hariv. 3940.

यथासंख्यम् (य° + संख्या) adv. *nach Umständen* Bhâg. P. 11,5,11.

यथासंहितम् (य° + संहिता) adv. *der Saṁhitâ gemäss* ṚV. Prâr. 10,5.

यथासख्यम् (य° + सख्य) adv. *im Verhältniss zur Freundschaft* Bhâg. P. 10,63,4.

यथासंकल्पित (य° + सं°) adj. *den Wünschen entsprechend* Prâçnop. 3,10. M. 2.5.

यथासंख्यम् (य° + संख्या) adv. *Zahl für Zahl* d. i. *in der Weise, dass in zwei Reihen mit Gliedern von gleicher Anzahl die einzelnen Glieder der Reihe nach sich entsprechen,* VS. Prâr. 1,143. AV. Prâr. 1,99. P. 1,3,10. Kâty. Çr. 1,3,23. 2,3,5. 3,3,3. Jâḍ. 1,21. Sûçr. 1,135,13. 169, 14. 311,1. AK. 2,9,3. Vaṁç. Bṛn. S. 68,24. 79,9. 97,16. 104,42. 105, 15. Bhâg. P. 3,5,36. 5,1,33. 16,9. Paṡkar. 2,8,11. Sin. D. 27,10.

यथासंख्येन (instr.) adv. dass. Bhâg. P. 5,1,24. P. 8,3,32, Sch.

यथासङ्गम् (य° + सङ्ग) adv. *nach Bedarf, entsprechend* MBh. 3,2930.

यथासत्यम् (य° + सत्य) adv. *der Wahrheit gemäss* MBh. 3,2990. R. 3,56,24. 5,3,11.

यथासनम् (यथा + 1. आसन) adv. *je auf dem gehörigen Platze* Çiṡkṛ. Ça. 6,13,7. 7,14,12. Liṭ. 2,4,8. 7,6. 8,16.

यथासंदिष्टम् (य° + संदिष्ट) adv. *dem Auftrage gemäss* R. Gorr. 2,89,4. Kathâs. 16,65.

यथासंधि (य° + सं°) adv. *je nach dem* Saṁdhi ṚV. Prâr. 3,10.

यथासमयम् (य° + समय) adv. *der Zeit gemäss, zu rechter Zeit* MBh. 1,5332. Prab. 68,2.

यथासमाम्नातम् (य° + समाम्नात) adv. *der Aufführung —, der Erwähnung gemäss* VS. Prâr. 4,194. AV. Prâr. 4,103 ist यथा समा° zu schreiben.

यथासंपद् (य° + सं°) adv. *wie es sich trifft* Kâç. 111. 127.

यथासंप्रत्ययम् (य° + संप्रत्यय) adv. *nach der Uebereinkunft* MBh. 1,5841.

यथासंप्रदायम् (य° + संप्रदाय) adv. *nach der Ueberlieferung* Siddh. K. zu P. 1,2,36.

यथासंबन्धम् (य° + संबन्ध) adv. *nach der Verwandtschaft* Bhâg. P. 10,63,4.

यथासंभव (य° + सं°) 1) adj. *nach Möglichkeit entsprechend* Sin. D. 96. — 2) °संभवम् adj. *wie sich Etwas zu etwas Anderem fügt, je nach der vorkommenden Verbindung* Schol. zu VS. Prâr. in Ind. St. 4,168. 256. Sin. D. 239,17. Schol. zu P. 3,2,46. 6,2,72. 8,4,2. *respective* Vaṁç. Bṛn. S. 18,1. 93,14. Çaṁk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 22. Sarvadarçanas. 78,20.

यथासंभविन् (य° + सं°) adj. *entsprechend* Kathâs. 24,171. 94,131.

यथासंभावित (य° + सं°) adj. dass. Mâṇ. P. 33,6.

यथासवनम् (य° + सवन) adv. *nach der Folge der* Savana Kâty. Çr. 9,9,8. 24,3,13. Liṭ. 1,11,10. 2,5,5. *der Zeit gemäss* (= यथाकालम् Comm.) Bhâg. P. 5,21,3.

यथासाम (य° + साम॰) adv. *nach der Folge der* Sâman Ârṣ. Br. 4,29.

यथासारम् (य° + सार) adv. *je nach der Qualität* Hariv. 3949.

यथासिद्ध (य° + सिद्ध) adj. *wie gerade fertig:* भोजन R. 7,105,13. fg.

यथासुखम् (य° + सुख) adv. *nach Bequemlichkeit, nach Behagen, nach Lust, nach Belieben* Çâṁkh. Gṛhj. 4,18. M. 4,43. N. 23,26. MBh. 1,5997. 3,2930. 3052. 4,602. 5,5629. Hariv. 3948. fg. R. 1,65,19. 2,25,38. 38,6. 40,7. R. Gorr. 1,37,6. 2,39,12. 100,56. 3,7,22. 15,18. 24,17. 44,18. 5,100,22. Sûçr. 2,334,5. Kâm. Nîtis. 13,40. Çiç. 69. Ragh. 9,48. Kathâs. 12,90. 194. 17,122. 28,151. 184. 49,215. 52,344. 56,137. 58,23. Bhâg. P. 6,18,22. Paṡkar. 1,3,7. Paṡkat. 57,18. Hit. 44,6. 78,2. Dhûrtas. in LA. 84,16. यथासुखमुख M. 4,51.

यथास्तुत् (य° + स्तुत्) adv. Stut *für* Stut Kâty. Çr. 22,5,3.

यथास्तुतम् (य° + स्तुत) adv. *nach der Folge der* Stoma Âçv. Çr. 5, 13,14. 6,5,9. Çâṁkh. Çr. 11,3,2.

यथास्तोमम् (य° + स्तोम) adv. dass. Ârṣ. Br. 4,29. Çâṁkh. Çr. 12,8,11. 14,19,2. Liṭ. 10,14,7.

1. यथास्थान (य° + स्थान) n. *die betreffende Stelle, die richtige —:* °स्थाने *an seinem Platze* Paṡkar. 1,14,38. °स्थानेषु R. Gorr. 2,83,33.

2. यथास्थान (wie eben) adj. *je an seiner Stelle befindlich* Çâṁkh. Çr. 14,10,12.

यथास्थानम् (wie eben) adv. *je an der (die) betreffenden (betreffende) Stelle, am gehörigen Platze, an den gehörigen Platz* TS. 5,2,2,6. 6,4, 4,4. प्राणानेव यथास्थानं कल्पयित्वा TBr. 1,3,2,4. Çat. Br. 14,9,4,5. Kâty. Çr. 15,4,15. Âçv. Çr. 3,8,8. 4,15,7. 11,6,9. MBh. 3,12005. R. 2, 103,36 (= यथोचितम् Comm.). 6,96,11. 14. Çiç. od. Cu. 61,7. Vaṁç. Bṛn. S. 48,25. Kathâs. 20,146. Bhâg. P. 4,23,16. 5,23,2. 7,12,27. Paṡkat. in Ind. St. 3,373,4. ed. orn. 57,15.

यथास्थामं (य° + स्थामन्) adv. dass. AV. 7,67,1.

यथास्थितम् (य° + स्थित) adv. 1) *je nach dem Standorte* Kâty. Çr. 24, 6,1. — 2) *sicher, gewiss* H. 263. Kathâs. 15,36. Bhâg. P. 1,12,17.

यथास्थिति (य° + स्थि°) adv. *der Gewohnheit gemäss, wie sonst* Kathâs. 53,43.

यथास्मृति (य° + स्मृ°) adv. 1) *nach dem Gedächtniss, wie man sich einer Sache erinnert* MBh. 6,345. — 2) *nach den Vorschriften der Gesetzbücher* Çiv. 132, v. l.

यथास्मृतिमय (von यथास्मृति) adj. *wie dem Gedächtniss eingeprägt* Hariv. 12944.

यथास्व (य° + स्व) 1) adj. f. आ *je sein, je ihr, je der gehörige:* गतिं प्राप्स्यसि — यथास्वाम् MBh. 3,1687. 4,1696. ऋग्मुर्यथास्वान्पुनरालयान् 3,1550. 12,1516. यथास्वान्स्वान्व्यधुर्गृहान् 3,17474. यथास्वैरायधैर्लेपं प्रत्येकं कारयेत् Sûçr. 2,4,19; vgl. 6,15. — 2) °स्वम् adv. *jede —, jeden —, jedem für sich, — besonders, je auf seine Weise* P. 8,1,14. AK. 3,5,15. यथास्वमासने Âçv. Çr. 2,3,16. Liṭ. 2,9,17. Kâty. Çr. 6,3,18. 10,5,11. यथास्वं चमसानवमृशति 8,7. 25,14,28. यथास्वधिष्ण्यो Âçv. Çr. 4,11,3; vgl. 5,3,28. यथास्वं शोधयेद्विप्रकृ Sûçr. 2,60,11. 289,4. 336,3. 1,127, 13. 191,6. MBh. 4,1015. 1019. Ragu. 13,22. 17,63. Kir. 14,43. Vaṁç. Bṛn. S. 48,27. Kathâs. 30,85. 34,218. 45,241. 264. 70,111.

यथास्वैरम् (य° + स्वै°) adv. *frei, ungehemmt, nach Herzenslust* MBh.

13,3466. यथास्वैरप्रचारिन् 12,1782.

यथाहार् (यथा + हा°) adj. *die erste beste Nahrung zu sich nehmend, essend was sich eben trifft* R. ed. Bomb. 2,28,17. यताहार् ed. Scrr.

यथेक्षितम् (यथा + ईक्षित) adv. *wie man es mit eigenen Augen sah* Kathâs. 117,20.

यथेच्छ (यथा + इच्छा) adj. *den Wünschen entsprechend* Pañkat. 4,8,53.

यथेच्छम् adv. *nach Wunsch, nach Belieben, nach Herzenslust* MBh. 6, 4867. Kathâs. 20,229. 51,187. Râga-Tar. 2,106. Daçak. in Benr. Chr. 189,21. Pañkat. 192,13.

यथेच्छकम् (von यथेच्छम्) adv. *nach Wunsch, nach Belieben, nach Herzenslust* MBh. 5,5825. 8,50. 11,311. 15,216.

यथेच्छा (यथा + इ°) f. *ein entsprechender Wunsch;* instr. यथेच्छया *nach Wunsch, nach Belieben, nach Herzenslust* Kathâs. 54,131. Pañkat. 38,3. 116,25. 169,23. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen: यथेच्छाचार, यथेच्छालाभ Pañkat. 4,8,52.

यथेतम् (यथा + इत) adv. *wie gekommen:* यथेतं प्रत्येत्य Âçv. Çr. 2,3, 3. 5,20,1. Lâṭj. 1,7,19. 2,6,13. 3,2,11. Çat. Br. 13,3,2,9. 14,9,2,1. Kâtj. Çr. 2,2,23. यथेतम् Çâṅkh. Çr. 17,17,9.

यथेप्सया (instr. von यथा + ईप्सा) adv. *nach Wunsch, nach Belieben* MBh. 3,116. 7,2147.

यथेप्सित (यथा + ईप्सित) adj. *den Wünschen entsprechend, gewünscht:* कामान् R. Gorr. 1,13,43. कामान्मनसा यथेप्सितान् MBh. 3,161. देशेषु 1,7715. दिनु Pañkat. 168,3. Varâh. Bṛh. S. 95,29. 41. Verz. d. Oxf. H. 251,b,41. यथेप्सितम् adv. *nach Wunsch, nach Herzenslust* AK. 2,9,57. H. 1505. MBh. 1,5588. R. 2,96,57. 4,44,129. Kathâs. 16,60. 33,84. 33, 71. Pañkar. 1,4,26. Bhaṭṭ. 2,38.

यथेष्ट (यथा + 1. इष्ट) adj. *den Wünschen entsprechend, gewünscht, beliebig:* यथेष्टं प्राप्नुयाद्गतिम् M. 12,126. Varâh. Bṛh. S. 85,8. Râga-Tar. 1,132. यथेष्टम् adv. *nach Wunsch, nach Belieben* Kâtj. Çr. 14,4,18. Pâr. Gṛhj. 3,2. MBh. 3,8984. 7330. R. 1,30,12. Spr. 1381. 3675. Kathâs. 32, 181. 93,61. Kâraṇḍ. 3. Vop. 24,12. Sarvadarçanas. 136,17. Am Anfange eines comp. adj. und adv. (ohne Flexionszeichen) Varâh. Bṛh. S. 11,20. 61,19. 81,36. न यथेष्टासनो भवेत् *er sitze nicht, wie es ihm gerade beliebt (bequem ist)*, M. 2,198. °गति Râgat. 17,20. °चारिन् Spr. 844. Kathâs. 24,186. 25,296. 37,52. Pañkat. 126,11. Zwei getrennte Wörter bildend in यथेष्टं नृपतेस्तथा M. 9,228.

यथेष्टचारिन् (1. यथेष्टम् + चा°) adj. *nach Belieben sich bewegend, gehend wohin man will;* m. *Vogel* Çabdak. im ÇKDr.

यथेष्टतस् (von यथेष्ट) adv. *nach Wunsch, nach Herzenslust* MBh. 1, 5938. R. 2,43,5 (42,5 Gorr.). Nilak. 27.

1. यथेष्टम् (यथा + 1. इष्ट) adv. s. u. यथेष्ट.

2. यथेष्टम् (यथा + 2. इष्ट) adv. = यागक्रमेण Kâtj. Çr. 5,12,16.

यथेतम् s. u. यथेतम्.

यथोक्त (यथा + उक्त) adj. *wie angegeben, oben angegeben, früher erwähnt, — genannt, — besprochen:* यथोक्ता दक्षिणा Kauç. 68. M. 5, 2. 72. 8,217. 10,31. 11,71. 12,92. MBh. 1,7643. 3,2214. Ragh. 2,70. Çiç. 9,5. 33,3. Varâh. Bṛh. S. 9,23. 48,28. 56,19. 67,2. Sin. D. 403. Bhâg. P. 7,10,22. 8,16,45. Mârk. P. 126,9. Pañkat. 5,12. यथोक्तम् adv. *nach Angabe* Kâtj. Çr. 2,6,20. 6,8,9. 10,4. 8,3,19. 10,1,21. R. 2,34,42. 56, 20. 57,23. R. Gorr. 1,12,16. 4,27,22. Kâm. Nîtis. 12,8. Çiç. 7,3. 37, 12. 66,7. 86,21. 108,5. Kathâs. 12,171. यथोक्तकारिन् M. 6,88. यथोक्तवादिन् (दूत) Spr. 3953. R. Gorr. 2,109,44. यथोक्तेन *auf die angegebene, vorgeschriebene Weise* M. 8,357.

यथोचित (यथा + उ°) adj. *angemessen, entsprechend, geziemend* R. Gorr. 2,60,3. 109,41. Kathâs. 17,61. 25,69. Mârk. P. 16,38. Hit. 27,2. 42,3. अथो यथोचितात् AK. 2,8,4,23. H. 1517. अयथोचितजल्पन Spr. 2898. यथोचितम् adv. *wie es sich geziemt* R. 4,39,41. Spr. 1029, v. l. Kathâs. 12,63. 14,31. 29,27. 51,198. 212. Bhâg. P. 4,22,50. Pañkar. 1,2, 45. H. 12. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen Kathâs. 43,249.

यथोत्तर (यथा + उ°) adj. *je der Reihe nach folgend* Varâh. Bṛh. S. 8, 29. यथोत्तरम् adv. *Eins ums Andere, der Reihe nach* 86,13. 18. 102,7. M. 12,38, v. l. für यथाक्रमम्. Sucr. 1,125,14. 169,6. 184,12. AK. 2,8, 2,48. H. 661. 873. Râga-Tar. 6,70. Sin. D. 729. Verz. d. Oxf. H. 200, b,3. SidDh. K. zu P. 7,3,59.

यथोत्साहम् (यथा + उत्साह) adv. *nach Kräften* Kâtj. Çr. 6,10,13. 22, 2,22. 3,5. Lâṭj. 4,9,7. 8,4,13. 9,8. 11,6. M. 3,86. MBh. 3,7334.

यथोदय (यथा + उ°) 1) adj. *wie gerade folgend* ṚV. Prât. 8,8. — 2) °यम् adv. *nach den Vermögensverhältnissen* Bhâg. P. 11,17,49.

यथोदित (यथा + उदित von वद्) adj. *wie angegeben, wie angeführt, früher besprochen* ṚV. Prât. 16,21. M. 3,187. 4,100. 5,1. 7,203. 8,215. 9,180. 240. 12,107. Bhâg. P. 6,13,21. यथोदितम् adv. *wie angegeben, nach der Angabe* M. 9,113. Kathâs. 43,92. 56,269. Bhâg. P. 3,24,24. 7,12,4. Mârk. P. 114,5.

यथोदृत (यथा + उ°) adj. *wie zur Welt gekommen, dumm, einfältig* Halâj. 2,181. — Vgl. यथागत 2) und यथाजात.

यथोद्दिष्ट (यथा + उ°) adj. *wie angegeben* M. 3,182. R. Gorr. 2,108, 30. 4,17,21. 49,5. 20. 7,52,8. Çiç. 49,7. सुग्रीवेण यथोद्दिष्टो दक्षिणामगमद्दिशम् *wie angewiesen von* Sugr. R. 4,48,1. यथोद्दिष्टम् *auf die angegebene Weise* R. Gorr. 2,81,32. 4,41,74.

यथोद्देशम् (यथा + उद्देश) adv. *der Anweisung gemäss* Hariv. 9020. fg. (die neuere Ausg. liest 9026 यथोदा च st. यथोद्देशम्). R. 2,99,1.

यथोद्भवम् (यथा + उद्भव) adv. *je nach der Entstehung* Bhâg. P. 4,23, 17. 7,12,25.

यथोपक्रोपम् (यथा + उपक्रोप) adv. *nach Gefallen, nach Behagen* MBh. 1,7332. 3,10036. 11394. 14855. 17054. R. 2,89,23 (98,24 Gorr.). Bhâg. P. 3,23,21. 5,22,3. 7,4,19. 8,9,15. 9,18,46. 10,23,30.

यथोपदिष्ट (यथा + उ°) adj. *wie —, vorher angegeben:* °दिष्टेन पथा R. 3,17,3. 19,27. °दिष्टम् adv. *auf die angegebene, vorgeschriebene Weise* 1,4,12.

यथोपदेशम् (यथा + उपदेश) adv. *der Anweisung —, der Angabe —, der Lehre —, der Vorschrift gemäss* Kâtj. Çr. 24,1,3. MBh. 3,8710. Bhâm. P. 3,23,11. 4,16,3. 5,4,16. 5,14. 9,4. 19,31. 25,14. 11,18,13.

यथोपपत्ति (यथा + उ°) adv. *wie es sich trifft* Âçv. Çr. 3,20,2. 4,1,2.

यथोपपन्न (यथा + उ°) adj. *wie gerade sich machend, ungesucht, ungezwungen:* सपर्या Bhâg. P. 10,86,41.

यथोपपादम् (यथा + उ° absol.) adv. *wie es sich trifft* Çâṅkh. Br. 16,4.

25,10. Gobh. 1,4,22. Çiṅkh. Gṛhy. 4,19. Verz. d. Oxf. H. 216,a,21.

यथोपयोगम् (यथा + उपयोग) adv. *je nach dem Gebrauch, je nach Bedarf, je nach den Umständen* Rāǵa-Tar. 4, 306. Mārk. P. 23,115. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen Kathās. 49,180.

यथोपस्मारम् (यथा + उ° absol.) adv. *wie es Einem beifällt* Çat. Br. 5,2,2,3.

यथोपाधि (यथा + उ°) adv. *je nach den Bedingungen, — Voraussetzungen* Comm. zu Bhāg. P. 10,83,25.

यथोप्त (यथा + उप्त) adj. *wie gesäet, der Saat entsprechend* M. 9, 247.

यथोकसम् (यथा + ओकस्) adv. *je an seinem besondern Wohnsitz* AV. 12, 1,45.

यथौचित्य (यथा + औ°) n. *eine entsprechende Weise:* यथौचित्यात् *in entsprechender Weise* Sāh. D. 138. यथौचित्यम् adv. *nach Gebühr* Spr. 1420. Kathās. 110,119.

यद् (von 1. य) 1) nom. und acc. sg. neutr. von यँ und als Thema am Anf. von compp.; s. u. 1. यँ. — 2) indecl. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,30. 56. *a) dass:* विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्राय तिरः RV. 1,131,4. 7,61,2. एतत्तु न परे चक्रुर्नापरे ज्ञातु साधवः। यदन्यस्य प्रतिज्ञाय पुनरन्यस्य दीयते॥ M. 9,99. यत्सा तेन परित्यक्ता तत्र न क्रोद्धुमर्हसि MBh. 3,2753. Rāgh. 1,63. त्वया हि मे वरः कृतम् — यद्रामं समेष्यामि शीघ्रमेव MBh. 3,2763. 2935. 2937. 2967. fg. Pat. zu P. 7,4,77. Spr. 455. 1811. 2338. 2346. 4676. Çiç. 35. 38. 99. 130. 163. 65,3. Rāgh. 1,27. 2,40. 12,43. Kathās. 3,64. Hit. 12,10. 19,4. 24,11. LA. (III) 6,19. *fgg.* नृशंसं यत् MBh. 3,2371. इदमत्यद्भुतं चात्र चकार — त्रधान यत् 15768. एष मे प्रथमः कल्पो यत् mit folg. potent. R. 2,32,38. एष मे परमः कामो यत् mit folg. potent. 6,97,12. eben so nach काल, समय, वेला P. 3,3,168. युक्तम् und युक्तं यत् R. 4,16,19. आश्चर्यं यत् Kathās. 17,20. दृष्टेयं मरुतो लक्ष्मा यत् Rāǵa-Tar. 4, 84. चित्तं मे पुत्र यद्यायं सदृशो नास्ति ते क्वचित् Kathās. 3,57. डुक्रां क्रियते त्वया — यद्यासि विस्मृतं वनम् R. 2,34,35. MBh. 3,2672. किं तवापकृतं मया यदहं ताडितस्त्वया Daç. 1,36. यत्तु किं दुःखतरं यदहं जीवितत्यजे। नहि पश्यामि धर्मज्ञ रामम् 2,61. MBh. 1,5875. 5903. 6196. fg. स्थानानि किं क्लिश्यतः प्रत्यं गतानि यत्सामानपरायणस्य मनुष्याः Spr. 807. विषमे को भेदस्त्यजति न स्नेहं यत्स्वयमम्बु 243. किं यत्र वेत्सि तत् *wie kommt es, dass du es nicht weisst?* Kathās. 52,231. न किल सुतं पुत्रार्थी यत् Çiç. 78, 18. अनास्वलनत्यत्सं स्वयं पाठमवातरत् Rāǵa-Tar. 3,458. अभिज्ञानानि देवदत्त यत्काणभौरेयवनाम P. 3,2,118, Sch. स्मरसि देवदत्त यत्काश्मीरेषु वत्स्यामस्तत्रैदं भोक्ष्यामहे 114, Sch. तद्यथः। यदहं पुत्रशोकेन मंत्यक्ष्यामि जीवितम् Daç. 2,38. वक्तव्यं यदिह मया कृता प्रियेति Mālāv. 167,12. एते पतिष्ण एवं वदन्ति। यदस्माकं राजा किं करिष्यति। न कस्याप्यावां दृष्टः Pañcat. 175,13. 227,7. Hit. 110,3. 120,12, v. l. LA. (III) 8, 3. 36, 2. *so dass* Bhāg. P. 1, 1, 1. — *b) was das betrifft, dass:* एको ऽहमस्मीत्यात्मानं यन्न कल्याण मन्यसे। नित्यं स्थितस्ते हृदयेष पुण्यपापेक्षिता मुनिः॥ Spr. 363. बलिनं मन्यसे यस्माच्चात्मानम् — ज्ञास्यस्यग्र समागम्य मयात्मानं बलाधिकम् MBh. 1,5996. तत्तदप उपस्पृशत्यन्नमेध्यो वै पुरुषः Çat. Br. 1,1,4,1. 6. 2,2,22. यद्विजृम्भते तर्हि ग्लायते 10,6, 4,1. — *c) weshalb:* किमार्य यान् पत्स्तोतारं त्रिधासिसि RV. 7,86,4. भूयतां यदस्मि करिणा भवत्सकाशं प्रेषितः Çiç. 95,1. *wessentwegen* MBh. 3,2371. fg. — *d) wann, als:* पत्सानोः सानमारुहत् RV. 1,10,2. यद्ध यास्ति मरुतः सर्वं ब्रुवते ऽघ्न्या 37,12. 39,3. 7,3,6. 5,2. 19, 2. 23,1. 30, 2. 55,2. यदीमामुर्वशीर्कात 66,14. 103,2. 4. यदत्र शिष्टं रुशिमः सुतस्य यदिन्द्रो अपिबत् *was übrig blieb, als* Indra *getrunken hatte,* Ait. Br. 7,22. — — *e) wenn, wofern:* यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय RV. 7, 32, 18. 40,1. 1,38, 1. 8,10,1. 5,6. तस्य हावनध्यायो यदात्माशुचिर्यद्देशः Āçv. Gṛhy. 3,4,7. AV. 5,120,1. 12,4,9. स यदिदं पुरा मानुषीं वाचं व्याहरेत् Çat. Br. 1,1,4,9. 14,5,4,2. Kaush. Up. 3,8. त्यस्य राज्ञो मूर्धानं विपातयतात्यादेतो ऽयास्य यद्वारसो ऽन्येनोद्गायत् Çat. Br. 14,6,1,26. मूर्धा ते विपतिष्यन्नो नागमिष्यः Kaṭh. Up. 5,12,2. 13,2. — *f) weil, da* AK. 3,5,3. H. 1537. Man. avj. 39. M. 1,10. 17. 2,147. Spr. 4492. MBh. 1,5569. 3, 2221. 2244. 15784. R. 1,33,27. 39,17. 61,12. 2,55,11. 68,3. 74,25. Daç. 1,39. 2,7. 51. Spr. 2336. 2398. Rāgh. 1,87. Çiç. 21. 138. 182. 9,13, v. l. 107,2. Kathās. 18,173. 32,76. Hit. 6,2. 40,22. Naish. 22, 46. — *g) auf dass, damit:* लङ्कायां यतु पश्येयमभियिक्तं विभीषणम्। वृतस्ततो हरिश्रेष्ठैराजगाम सलक्ष्मणः॥ R. 6,97,10. किं नु शक्यं मया कर्तुं यत्ते न क्रुध्यते नृपः MBh. 1,3921. — *h)* यद्यपि *obgleich* Megh. 28. — *i)* यदु *wie* — एवम् *so* Çvetâç. Up. 5,5. — *k)* यच्च *dass* mit potent. nach *nicht für möglich halten, nicht glauben (hoffen), nicht leiden, tadeln, Wunder* P. 3,3,147. fgg. Vop. 25,14. न अद्धे (न मर्षये, गर्हामहे, आश्चर्यमेतत्) यच्च तत्रभवान्बृयलं याचयेत् P., Sch. Vgl. Man. avj. 39. — *l)* यद्वा *oder* Taitt. 3, 4,4. Spr. 289. Rāǵa-Tar. 4,59. 5,441 und überaus häufig bei den Commentatoren. — *β) entweder dass:* न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः Bhag. 2,6.

यदँ am Ende eines adv. comp. (°यदम् = यद् = 1. य gaṇa शरदादि zu P. 5,4,107. Vop. 6,62.

यदर्थ (यद् + अर्थ) adj. *welches (rel.) Ziel vor Augen habend, was bezweckend* Bhāg. P. 3,6,14.

यदर्थम् (wie eben) adv. 1) *weshalb, weswegen, wessentwillen* (rel.) u. s. w. MBh. 1,6149. 5,5944. Harîv. 3790. R. 1,15,14. 66,7. 2,32,35. 3, 48,10. 4,16,47. fg. Çiç. 93,1, v. l. Rāǵa-Tar. 6,107. Bhāg. P. 4,7,27. 23,2. 8,5,11. 24,2. 29. Mārk. P. 18,3. — 2) *da, zumal:* नूनं दैवं न शक्यं हि पौरुषेणातिवर्तितुम्। यदर्थे यत्नवानेव (so die ed. Bomb.) न लभे विप्रतां विभो॥ MBh. 13,1932.

यदर्थे adv. = यदर्थम् 1) Spr. 2343. fg.

यदा (von 1. य) adv. *wann, als* (P. 5,3,15. Vop. 7,101); *wenn;* folgt तदा, ततस्, सद्य, आदित्, तर्हि (Bhāg. P. 5,8,11) oder einfacher Nachsatz. RV. 1,82,1. वृत्रमिन्द्र यदावधीः 103,8. 115,4. 163,7. 4,33,3. 24,8. यदा मरुद्भिर्वरणाद्यस्त्वात् 7, 3, 2. 42,4. 8,12,26. 10,23,3. 68,6. AV. 3, 13,6. यदानुन्मादितो ऽसति 6,111,1. 11,4,5. 8,11. 12,4,29. 14,2,20. Ait. Br. 7,14. 29. 8,5. Çat. Br. 1,1,1,22. 4,22. 8,1,3. 13,1,5,4. 14,1,1,24. 3,1. 4,3,25. 6,9,22. Kaṭh. Up. 6,15,2. Taitt. Up. 2,7. यदा सरूपं संपद्यते ऽथात्मानम् Çiṅkh. Ç. 13,29,21. यदाधिगच्छेत् Gobh. 1,9,20. यदास्मै कुमार्यं ज्ञातमावहतीरन् 2,7,17. Āçv. Gṛhy. 1,14,2. Kauç. 51. — यदा स देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते जगत् M. 1,52. 54. 56. यदा भावेन भवति सर्वभावेषु निःस्पृहः। तदा सुखमवाप्नोति प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥ 6,80. MBh. 3,15612. R. 1,41,15. Çiç. 132. Spr. 405. 2334. fg. 2338. 3902. 4805—4809. Hit. 98,18. LA. (III) 7,2. 24,8. यदाहं शब्दं करोमि (= करिष्यामि) तदा त्वमुत्थाय सत्वरमपसरिष्यसि Hit. 23,3. यदा न प्रतियेद्धारस्तयोः स-

तीव् (statt des praet.) के च न। निरुद्योगो तदा भूत्वा विलक्षाते ऽमरा-विव ॥ MBh. 1,7712. 7634. 3,11964. R. 1,34,1. 2,115,25. 4,9,21. Kathâs. 18,264. Mârk. P. 17,22. इन्द्रसेनस्य जननी कुपिता मां शपत्युरा। यदा MBh. 3,2842. यदाकिंचिन्नो ऽकृ द्वि इव मदान्धः सनभवम् Spr. 2347. 2350. fg. 2357. Kathâs. 18,138. 24,76. Râga-Tar. 6,217. नाप्य-गमन्यदा तत्र भागार्वे सर्वदेवताः R. 1,60,11. Kathâs. 20,72. Râga-Tar. 3,23. कामधेनु वसिष्ठो ऽमौ न तत्याज यदा मुनिः R. Gorr. 1,53,1. Kathâs. 18,295. Hit. 58,12. यदा ते नोरुकालिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति Bhag. 2,52. fg. MBh. 3,2629. 13656 (यदा द्रष्टास्यर्जुनं ed. Bomb.). R. 1,8,18. 48,32. 2,70,15. R. Gorr. 2,10,6. R. ed. Bomb. 3,4,17. Kathâs. 1,61. 18,241. 22,141. 34,37. Hit. 1,32. यदा शरानर्पयिता तवोरसि तदा मनस्ते किमियमविष्यत् MBh. 3,15657. Kathâs. 1,60. इतीत्थम्भूतान्विद्यायदा प्रादुष्कृताग्निषु M. 4,104. 6,2. 7,169. fgg. 181. 183. 8,9. 130. MBh. 3, 2631. 5,1832 (nach der Lesart der ed. Bomb., तदा mit condit. im Nachsatz). R. Gorr. 1,64,19. 2,8,16. Çaut. 30. Bhâg. P. 5,8,11. यदा भवद्विधः तत्रियं याचयेन्नावकल्पयामि न सर्पयामि P. 3,3,147, Vârtt., Sch. Vop. 23,13. यदा मे मरणं भूयात्तदा मा भूत्स्मृतिभ्रमः Harîv. 14673. Häufig ist die Copula zu ergänzen, insbes. nach einem partic. praet. auf त R. 1, 4,8. यदा त्वयं गतं सर्वं तदा विद्युः — अरक्षत् 45,17. 3,66,2. स्मरसि ननु यदा पैरर्हृतः स च धृतराष्ट्रसुतो ऽपि मोक्षितः MBh. 8,1743 (vgl. dagegen स्मरसि ननु यदा — त्रिताः स्म गोग्रहे 1745). Spr. 2332. यदा तु पूर्ववत्त-मन्यसङ्गाढिस्मृतो भवान्। तदा कामधर्मभीरुः Çik. 71,3. Kathâs. 31,139. तथाप्यप्रत्ययस्तेषां यदा सीता तदाभ्यधात् 51,76. पत्रं नैव यदा करीर-विटपे दोषो वसन्तस्य किम् Spr. 1688. 2349. 2353. 4810. Naish. 22,55. यदा घोकारस्तदा सर्वादेशो यथा स्यात् Pat. zu P. 8,2,89. Schol. zu P. 6, 1,196. Siddh.-K. zu P. 7,1,68. Çaut. 14. यदा in Verbindung mit andern Relativen: यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते M. 12,25. यो ऽस्य यदा मांसकृतोः पश्यत्यन्तरम् Spr. 2532. यदा mit इदं: एतैर्दशैर्वीरसै-क्लिष्ट माया यदाभवत्केवलः सोमो अस्य RV. 7,98,5. 10,88,11. यदैव — तदैव Çik. 111,3. यदैव खलु — तदा प्रभृत्येव 79,14. यदा प्रभृति — तदा प्रभृति R. 3,1,20. यदा यदा *quandocunque, so oft* — तदा तदा oder einfach तदा Bhag. 4,7. Kathâs. 25,216. 54,154. Hit. 58,9. das einfache यदा mit verdoppeltem verbum finitum dass. Spr. 2336. यदा कदा चं सुनवाम सोमम् *so oft* RV. 3,53,4. यदा कदा चित् *jederzeit* Kauç. 94. — यदा MBh. 1,3593 in beiden Ausgg. fehlerhaft für यदा.

यदात्मक (यद् + आत्मन्) adj. *wessen (rel.) Wesen habend* Bhâg. P. 3, 6,36. Çaṃk. zu Kâṭhop. Up. S. 72.

यदावाक्षदावर्य m. N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*a*. — Vgl. वाक्षदावर्य.

यदि (von 1. य; conj. oft gedehnt im Veda; vgl. VS. Pâṭ. 3,128. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,30. 1) wenn AK. 3,3,12. H. 1342. mit ind., conj., pot. und fut. in der älteren Sprache; gewöhnlich einfacher Nachsatz ohne Partikel: यद्याम देवान्यदि शक्रवाम RV. 1,27,13. धा धी गमद्यदि अर्वत् 30,8. 178,3. 3,31,6. यदि च तिष्ठासि यदि च शयासे Ait. Br. 2,2. AV. 10,3,6. यदि तप्तेव दर्भैव RV. 1,161,8. यदि स्तुतस्य मरुतो अधोव 7,56,15. 104,14. अया मुरोष यदि यातुधानो अस्मि 15. Çat. Br. 1,1,4,9. 6,4,15. AV. 1,16,4. 5,8,6. 6,124,2. Kâṭhop. Up. 6,16,1. 2. यद्यनुस्मरेयुः Çat. Br. 13,8,4,2. यदीच्छेत् Kâty. Çr. 2,6, 24. यदि मन्येत Çâṅkh. Çr. 14,14,4. Âçv. Gṛhy. 1,9,3. यदि न विन्देत 3, 8,2. Taitt. Up. 1,11,3. यदि विवदिष्येते Çâṅkh. Çr. 14,29,2. 40,4. 50,5. यदि चित् AV. 5,2,4. यदि क्व वै Ait. Br. 2,2. यदीत् AV. 4,27,6. यद्यु वै Gobh. 1,8,3. 4,1,13. In den nachvedischen Schriften *α*) mit praes.; im Nachsatz *α*) praes. M. 5,102. 8,233. 12,20. fg. R. 1,61,13. 63,11. Çik. 67. Spr. 1673, v. l. 2366. 2368. Kathâs. 34,96. mit अथ RV. Pâṭ. 11,23. mit तदा MBh. 3,2328. Kathâs. 22,111. 30,9. mit ततस् Spr. 2363. mit तदा 2367. LA. (H) 6,5. 7,18. mit तर्हि 27,12. — *β*) fut. MBh. 3,2661. fgg. 13713. 5,7362. R. 2,63,4. 78,23. 5,9,43. mit ततस् R. Gorr. 3,63. mit तदा Hit. 40,17. mit तर्हि LA. (H) 4,3. — *γ*) Participialfut. MBh. 7,2606. — *δ*) imperat. MBh. 3,2171. 2435. 2683. 2714. 2982. fg. 4812. 5,7125. R. 1,9,33. R. Gorr. 1,22,16. Spr. 2373. 4819. mit तद् Kathâs. 11,58. 18,161. mit तर्हि Çik. 113,5, v. l. — *ε*) potent.: पुत्रिकायां कृ-तायां तु यदि पुत्रो ऽनुजायते। समस्तत्र विभागः स्यात् M. 9,134. इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्। यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते (= दीप्येत) ॥ Spr. 3743. 3891. 4816. Kathâs. 16,72. 18,189. Gîv. 4,19. यदि वेद न याचेत Bhâg. P. 6,10,6. mit तस्मात् Spr. 1397. — *ζ*) kein verbum finitum: आख्यातव्यं तु तत्तस्मै पृच्छते यदि पृच्छति M. 11,17. Spr. 4811. Râga-Tar. 4,538. तस्य तत्किल्बिषं लुब्ध विद्यते यदि किल्बिषम् MBh. 13,36. यदि दुरत्ययनलो ऽत्र किमद्भुतम् Spr. 2360. 3713. Çik. 123. Çaṃk. 18 (भवति यदि या — सा). mit ततस् Pat. zu P. 6,4,159. mit तर्हि Schol. zu P. 6,4,11. Prab. 18,4. Sarvadarçanas. 92,20. mit तदा 133,2. Hit. 21,22. mit तदानीम् Çaṃk. 22. — *b*) mit fut.; im Nachsatz *α*) fut. MBh. 3,2163. 2488. 2845. 5,7362. R. Gorr. 2,10,7. Bhâg. P. 4,14,12. mit ततस् Harîv. 7294. 9978. mit तद् Pâṇâv. 229,13. — *β*) praes. R. 2,61,11. mit ततस् Pâṇâv. 5,6. — *γ*) kein verbum finitum: तदुःखं यदि कौसल्या वीरसूर्विनशिष्यति R. 2,31,15. यदि — ततः परम् Spr. 4833. — *c*) mit dem Participialfut., im Nachsatz das andere fut. MBh. 3,2827. — *d*) mit potent.; im Nachsatz *α*) potent. M. 2,233. 243. 3,61. 108. 111. 7,108. 8,90. 124. MBh. 3,2099. 2559. 5,7034. fg. 6,3825. 12,430. 13,43. 14,244. Harîv. 9714. Bhag. 1,46. 11,12. Daç. 2,60. R. 2,78,22. 4,46,13. 57,17. 5,1,67. 31,39. 45,17. 6,23,29. 7,35,10. Megh. 62. 93. Spr. 2656. 2853. 3026. 3234. 4820. Kathâs. 103,166. Bhâg. P. 4,26,15. mit ततस् R. 4, 9,99. Spr. 2361. 2840. Kathâs. 18,18. 22,83. 31,121. mit तद् 4,15. 5, 89. Spr. 2372. 2393. mit तदा 2364. Schol. zu P. 7,1,24. mit अथ Spr. 2760. mit तर्हि Sarvadarçanas. 66,6. 120,11. — *β*) condit. mit potent. abwechselnd Spr. 4813. fg. — *γ*) praes. R. 4,20,9. 7,94,14. Spr. 1364. Kathâs. 52,101. Bhâg. P. 10,77,18. Prab. 89,3. mit तद् Spr. 2371. — *δ*) imperat. Megh. 61. — *ε*) fut. R. 3,65,9. — *ζ*) Participialfut. MBh. 7, 2005. — *η*) kein verbum finitum MBh. 3,2787. R. 1,11,15. Çaṃk. 13. Spr. 135, v. l. 2586. 3082. Kathâs. 39,125. H. 1240. fg. mit तद् Kathâs. 22,81. 30,5. 53,131. mit तदा R. 4,62,7. mit ततस् Mârk. P. 18,43. mit तर्हि Sarvadarçanas. 79,8. fg. — *e*) mit condit.; im Nachsatz *α*) condit. MBh. 7,6579. R. 4,12,37. Kathâs. 7,13. 34,26. 35,75. mit न च MBh. 13,4797. mit तद् Kathâs. 49,120. 63,77. mit ततस् P. 3,3,140, Sch. — *β*) potent. MBh. 7,3069. mit तद् Kathâs. 63,62. mit ततस् Mârk. P. 119,11. — *γ*) aor. MBh. 13,12. — *f*) mit imperf.; im Nachsatz *α*) condit. MBh. 8,3384. — *β*) potent.: यद्येतदशुभं कर्म न स्म मे ऽकथयः स्वयम्। पलेन्मूर्धा स्म ते राजन्सप्तधा शतसकृधा ॥ Daç. 2,21. — *g*) mit aor.; im

Nachsatz α) condit. Prāçnop. 6, 1. — β) potent. Spr. 3662. — γ) im perf. (आस्) im Nachsatz ततस् ohne verbum finitum R. 1, 63, 21. — δ) ohne verbum finitum; im Nachsatz α) praes. MBh. 3, 2331. R. 7, 94, 14. Spr. 2363. 2370. 4112. किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्कलेखामनुवर्तते ते Çiç. 33, 21. mit तदा Kathās. 63, 80. mit तदा Pat. zu P. 7, 1, 30. — β) fut. MBh. 3, 13757. 16735. mit तदा Kathās. 55, 20. — γ) imperat. MBh. 3, 2434. 2765. 16847. R. 1, 55, 16. 65, 21. Rāgn. 3 51. Spr. 855. 3713. 4818. Kathās. 17, 22. mit तदा (v. l. ततस्) Çiç. 3, 6. Kathās. 24, 122. mit तदा Gir. 1, 3. मा स्म कृथाः (= imperat.) im Nachsatz Kathās. 18, 272. — δ) potent. Spr. 4032. 5213. Bāic. P. 6, 10, 32. चित्रम् — पश्येयदीदृशम् Vop. 25, 15. — ε) perf. (आस्) Bāic. P. 6, 10, 6. — ζ) kein verbum finitum M. 9, 149. 204. Çiç. 16. Spr. 1139. 2339. 2362. 2369. 4817. Kathās. 40, 22. Kāç. zu P. 1, 2, 35. mit तदा Kathās. 26, 97. mit ततस् Spr. 2360. mit तदा Hit. 18, 19. mit तर्हि Pañcat. 24, 9. mit तदा ṚV. Paṭ. 11, 35. — 2) wenn so v. a. *so wahr* bei Betheuerungen: यद्यकं (यद्येकं N. 11, 36) नैयधादन्यं मनसापि न चिन्तये। तथापि पततां चुद्रः परामुर्गृह्णतोवनः ॥ MBh. 3, 2399. fg. यदि मे ऽस्ति तपस्तप्तं यदि दत्तं कृतं यदि । मम भूयात्पुनर्भर्तृर्मम पुण्यास्तु शर्वरी ॥ 16844. यद्यार्यपुत्रादन्यत्र न स्वप्ने ऽपि मनो मम। तदुत्तरयं सरसः पारम् Kathās. 31, 81. — 3) *ob:* तं च पापं न जानीमो यदि दग्धः पुरोचनः MBh. 1, 5879. कृच्छ्रेणानेध्यमध्ये वदत यदि मुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् Spr. 711. Kumāras. 3, 44. तां समाचक्ष्व कल्याणीं यदि स्याच्छ्रेय्य नानुयो MBh. 3, 15615. विचार्यतां यदि — स्यात् Çiç. 90, 21. जानीहि यदि केनापि दृष्टा सा नगरी न वा Kathās. 24, 51. यद्येको यदि बह्वयः किमनेन फलं तु सर्वथा वाच्यम् Vaṛāh. Bṛh. S. 11, 6. Zum Ueberfluss noch किम् hinzugefügt: कृष्णे पश्यत तन्नतो यदि पुनश्चिक्षादतो धर्म्यणो दृष्टः किं परिणामदर्पितविचित्रश्रीभिः पृथक्षैरपि Prāṇ. 27, 11. fg. — 4) wenn so v. a. *dass* nach *nicht glauben, nicht für möglich halten, nicht dulden:* नाशंसे यदि जीवति सर्वे ते शर्वरीनिमाम् R. 2, 51, 14. नाशंसे यदि ते सर्वे जीवेयुः शर्वरीनिमाम् 86, 15. यदि भवद्विधः लक्ष्मियं पालयेत् नाकलय्यामि, न मर्षयामि P. 3, 3, 147, Vārtt., Sch. Vop. 25, 13. दुष्करं यदि mit praes. oder potent. so v. a. *schwerlich* MBh. 3, 2650. fg. R. 2, 73, 7. R. Gorr. 2, 75, 20. मन्दप्राणो ह्ययं पत्नी कथंचिद्यदि जीवति *lebt nur kaum* 3, 73, 3. — 5) *ob nicht vielleicht, vielleicht dass:* ममाप्येष सदा ब्रह्मन्कदि कामो ऽभिवर्तते। पालयेयं यदि रणे भीष्ममित्येव नित्यदा ॥ MBh. 3, 6095. भोजनं च समानाय्य यत्तदादीपितं मया । कुप्येया यदि मात्सर्यादिति 13, 2888. रामं दर्शय धर्मज्ञ यदि किंचिद्वाप्स्यसि (°से ed. Bomb.) R. 2, 32, 20. आशया यदि मे रामः पुनः शब्दाप्येदिति 39, 7. तस्य बुद्धिरभूद्दियम्। स्वरमेतं यदि श्रुत्वा लक्ष्मणं प्रेरयेदिह ॥ सीता ग्रन्थेन मनसा भर्तृस्नेहसमुत्सुका। ततो लक्ष्मणशीलां तां रावणो वै रुरोदिति ॥ 3, 50, 23. fg. उत्तरीयं वरारोहा शुभान्याभरणानि च। मुमोच यदि रामस्य शोकेनुरिति ज्ञानकी ॥ 60, 6. fg. दृष्ट्वा वरुथः पुत्रा यद्येको ऽपि (so die ed. Bomb. st. यद्यप्येको der ed. Calc.) गयां व्रजेत् MBh. 3, 8075 = 8305 = 13, 4253; vgl. R. 2, 107, 13 (115, 13 Gorr.). Mṛcch. 106. यद्यप्येको (= यद्येको ऽपि) ऽनुवेदैयं भावानां चेव संस्थितिम् Jāṭ. 3, 104. एतस्य गुणास्तुतिं त्रिरुक्तामक्षरेण द्वितीयेन (so zu lesen) यदि (so die Hdschrr.) कदाचित्कर्तुं समर्थः स्यात् Hit. 27, 7. यदि तावदेवं क्रियताम् so v. a. *wie, wenn man nun etwa so thäte?* Çiç. 71, 8. यदि तावदस्य शिशोर्नामत मातरं पृच्छामि 104, 21. — 6) zum Ueberfluss mit चेद् verbunden: कैकेय्या यदि चेद्राज्यं स्याद्धर्म्यम-

नाववत्। नहि नो जीवितेनार्थः R. 2, 48, 19. — 7) überflüssig nach पुरा *bevor, ehe:* पुरा मातुः पितुर्वापि यदि पश्यामि विप्रियम्। न जीविष्ये MBh. 3, 16846. fg. — 8) यद्यपि *auch wenn, obgleich, etsi* Çat. Br. 14, 4, 3, 23. M. 8, 164. 9, 154. 319. MBh. 1, 6118. Bhag. 1, 38. R. 2, 37, 30. 61, 2. Çiç. 30. Spr. 1931. 2390. 4832. Çiç. 16, 82. तथापि im Nachsatze R. 2, 23, 16. 3, 3, 3. Rāgn. 4, 7. Spr. 2389. 4830. Kathās. 52, 373. Hit. 69, 22. 73, 16. 92, 16. 120, 5. Dhūrtas. 76, 17. Prab. 97, 3. Sāh. zu ṚV. 1, 123, 1. Sarvadarçanas. 90, 3. 172, 22. तदपि Spr. 2388. 4831. Kathās. 56, 80. 114. Hit. 55, 8. यदि — यदि च — यद्यपि Spr. 4817. अपि यदि — तथापि Prab. 7, 13. fg. Ueber यद्यप्येकः s. यद्येको ऽपि s. u. 5). — 9) यदि — यदि वा, यदि वा — यदि वा, यदि वा — यदि, यदि वा — वा, वा — यदि वा *wenn — oder wenn, ob — oder:* यद्यार्चिर्यदि वासि शोचिः AV. 1, 25, 3. 2, 14, 5. 4, 12, 7. यदि धर्मं यशोलाभमभिवाञ्छसि पार्थिव । ततो रामं प्रयच्छेकं यदि वा मद्दधासि मे ॥ R. Gorr. 1, 22, 16. यदि — वा — यदि वा Spr. 2372. यदि वा दृशे यदि वा न ṚV. 10, 129, 7. AV. 7, 38, 5. यदि वास्य वनस्य त्वं (v. l. वनस्यासि) देवता यदि वाप्सराः । याचस्व MBh. 1, 6010. यदि व्रीही समृद्धः स्याद्यदि वाप्यधनो भवेत् । यदि वाप्यसमर्थः स्याच्छ्रेयसस्य चिकीर्षितम् ॥ 3, 2740. यदि वानि त्रैककृदं यदि यामुनगुप्यनै AV. 4, 9, 10. यदि वा बुद्धिपूर्वाणि यद्ययुद्धापि कानिचित् । मया कृतान्यकार्याणि तानि त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥ MBh. 3, 2021. पातालं यदि वा नीता वर्तते वा नभस्तले R. 4, 5, 5. को हि तद्वेद यद्यमुष्मिं लोके ऽस्ति वा न वा TS. 6, 1, 4, 1. तत्र जानामि वार्ष्णेय यदि जीवति वा न वा MBh. 7, 4217. R. 3, 65, 10. 4, 40, 9. 5, 9, 20. यत्तर्मकों वा यदि वोर्वमुत्पतेः । सनुद्रपारं यदि वा प्रधावसि । तथापि MBh. 4, 428. R. 2, 30, 10. M. 3, 242. 4, 117. MBh. 3, 3036. 5, 7080. R. Gorr. 2, 30, 17. 3, 46, 21. 4, 43, 9. 50, 18. Spr. 2181. 2348. 3001. fg. Brahma-P. in L.A. (II) 52, 14. न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः Bhag. 2, 6. यदि वा allein *oder wenn, oder* (Taitt. 3, 4, 4) R. Gorr. 2, 7, 28. 20, 12. Hit. 19, 7. सो यद्व वेद यदि वा न वेद ṚV. 10, 129, 7. यं ते वहन्ति क्रुरितो वितृष्णाः शतमश्वा यदि वा सप्त बह्वीः AV. 13, 2, 6. Çat. Br. 1, 1, 4, 2. Kāṭh. Up. 7, 24, 1. शतमनो यदि वान्येषाम् M. 11, 114. यज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात् Spr. 3396. R. 1, 2, 37. 40, 13. सुवृत्ता यदि वावृत्ता (so ist zu lesen) 3, 65, 8. Dāç. 2, 8. निन्दतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु Spr. 1581. 5268. Vaṛāh. Bṛh. S. 18, 1. 43, 34. 54, 91. यत्कोत्यशुभे कर्म शुभे वा यदि (= यदि वा) Spr. 4733. यदि वा = अथ वा (s. u. अथ 7, b, β) Kathās. 26, 24. 90. 232. — Nach Mṛcch. avj. 39 wird यदि गर्हाविकत्थ्येषोः gebraucht, nach Taitt. 3, 4, 5 ist यदि शेषगौः (?). Ausführlich hat über यदि gehandelt Lassen in seiner Ausg. des Gir. S. 106. fgg.

यदिच्छा in °मात्रतस् Kathās. 121, 100 wohl fehlerhaft für यदृच्छा.

यदीय (von 1. य) adj. *cujus* (relat.) P. 1, 4, 74, Sch. Khandom. 42. Rāṭṭar. 4, 48. Bāic. P. 10, 59, 44. 61, 3. Kull. zu M. 5, 15. 9, 170. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Çl. 34. 7, 12. Çl. 44.

यदु m. N. pr. eines Stammes und Stammhelden, gewöhnlich neben Turvaça (Turvasu) genannt; auf einem Zuge aus der Ferne her und beim Uebergange über einen Strom von Indra beschützt ṚV. 1, 54, 6. पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति 174, 9. उत त्या तुर्वशायदू यज्ञातामा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वा अधारयत् 4, 30, 17. 5, 31, 8. य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् 6, 45, 1. 8, 4, 7. 7, 18. 10, 49, 8. 1, 36, 18. 8, 9, 14. 10, 8. 43, 27. 9, 61, 2. pl. 1, 108, 8. MBh. 1, 46. Bāic. P. 1, 12, 37. 3, 2, 8. 12, 1, 34. Çiç. 9, 38.

सीद् (statt des praet.) के च न । निरुद्योगो तदा भूत्वा विलक्षाते ऽमरा-विव ॥ MBh. 1,7713. 7634. 3,11964. R. 1,54,1. 2,115,25. 4,9,21. Kathās. 18,264. Mārk. P. 17,22. इन्द्रसेनस्य जननी कुपिता मा शपत्पुरा । यदा MBh. 3,2842. यदाकिंचित्तो ऽकै हिप इव मदान्धः समभवम् Spr. 2347. 2350. fg. 2357. Kathās. 18,138. 24,76. Rāja-Tar. 6,217. नाभ्य-गमन्यदा तत्र भागार्थं सर्वदेवताः R. 1,60,11. Kathās. 20,73. Rāja-Tar. 3,23. कामधेनुं वसिष्ठो ऽसौ न तत्याज यदा मुनिः R. Gorr. 1,55,1. Kathās. 18,295. Hit. 58,12. यदा ते मोक्षकालिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति Bhag. 2,52. fg. MBh. 3, 2629. 15036 (यदा द्रष्टास्यर्जुनं ed. Bomb.). R. 1,8,18. 48,32. 2,70,15. R. Gorr. 2,10,6. R. ed. Bomb. 3,4,17. Kathās. 1,61. 18,341. 22,141. 31,37. Hit. 1,32. यदा शरानर्पयिता तवोरसि तदा मनस्ते किमिवाभविष्यत् MBh. 3,13687. Kathās. 1,60. एतांस्त्वन्यदितान्विद्यायदा प्रादुष्कृताग्निषु M. 4,104. 6,2. 7,169. fgg. 181. 183. 8,9. 130. MBh. 3, 2631. 5,1832 (nach der Lesart der ed. Bomb., तदा mit condit. im Nachsatz). R. Gorr. 1,64,19. 2,8,16. Çaṃv. 30. Bhāg. P. 5,8,11. यदा भवद्विधः तत्रियं पात्रयेन्नावकल्पयामि न गर्हयामि P. 3,3,147, Vārtt., Sch. Vop. 25,13. यदा मे मरणं भूयात्तदा मा भूत्स्मृतिभ्रमः Harīv. 14673. Häufig ist die Copula zu ergänzen, indes. nach einem partic. praet. auf त R. 1, 4,6. यदा त्वयं गतं सर्वं तदा विष्णुः — अस्मरत् 45,17. 3,66,2. स्मरसि ननु यदा परैर्हृतः स च धृतराष्ट्रसुतो ऽपि मोचितः MBh. 8,1743 (vgl. dagegen स्मरसि ननु यदा — क्षिताः स्थ गोग्रहे 1748). Spr. 2352. यदा तु पूर्ववत्त-मन्यनङ्गाद्विस्मृतो भवान् । तदा कथमधर्मभीरुः Çiç. 71,3. Kathās. 51,139. तयाप्यप्रत्ययस्तेषां यदा सीता तदाग्रधात् 34,76. पत्रं नैव यदा करीर-विटपे दोषो वसन्तस्य किम् Spr. 1688. 2349. 2353. 4810. Naish. 22,55. यदा घोकारस्तदा सर्वादेशो यथा स्यात् Pat. zu P. 8,2,89. Schol. zu P. 6, 1,196. Siddh.-K. zu P. 7,1,68. Çaṃv. 14. यदा in Verbindung mit andern Relativen: यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते M. 12,35. यो ऽत्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् Spr. 2332. यदा mit इदं: यदेदंवीरमे-क्षिष्ट मघा मघवत्केवलः सोमो अस्य RV. 7,98,5. 10,88,11. यदैव — तदैव Çiç. 111,3. यदैव खलु — तदा प्रभृत्येव 79,14. यदा प्रभृति — तदा प्रभृति R. 3,1,20. यदा यदा *quandocunque, so oft* — तदा तदा oder einfach तदा Bhag. 4,7. Kathās. 25,216. 34,154. Hit. 58,9. das einfache यदा mit verdoppeltem verbum finitum dass. Spr. 2336. यदा कदा च सुनवाम सोमम् *so oft* RV. 3,33,4. यदा कदा चित् *jederzeit* Kaçy. 94. — यदा MBh. 1,5598 in beiden Ausgg. fehlerhaft für पदा.

यदात्मक (यद् + आत्मन्) adj. *wessen (rel.) Wesen habend* Bhāg. P. 3, 6,26. Çaṅk. zu Kāṭhaka Up. S. 72.

यदावाक्षदावर्ष m. N. eines Sāman Ind. St. 3,230,a. — Vgl. वाक्षदावर्ष.

यँदि (von 1. यद्) conj. oft gedehnt im Veda; vgl. VS. Pair. 3,128. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,30. 1) wenn AK. 3,5,12. H. 1342. mit ind., conj., pot. und fut. in der älteren Sprache; gewöhnlich einfacher Nachsatz ohne Partikel: यद्वीम देवान्यदि शक्नवाम RV. 1,27,13. सा धी गमद्यदि अवत् 30,8. 178,3. 3,31,6. यदि च तिष्ठासि यदि च शयासे Ait. Br. 2,3. AV. 10,3,6. यदि तत्रैव रुर्यंव RV. 1,161,8. यदि स्तुतस्य मरुतो अधोव 7,56,15. 104,14. अया मुरीय यदि यातुधानो अस्मि 15. Çat. Br. 1,1,4,9. 6,4,15. AV. 1,16,4. 5,8,6. 6,124,2. Kāṭhaka Up. 6,16,1. 2. यद्यनुस्मरेयुः Çat. Br. 13,8,4,2. यदीच्छेत् Kāty. Çr. 2,6, 34. यदि मन्येत Çāṅkh. Çr. 14,14,4. Āçv. Gṛhy. 1,9,3. यदि न विन्देत 3, 8,2. Taitt. Up. 1,11,3. यदि विवदिष्येते Çāṅkh. Çr. 14,29,2. 40,4. 80,3. यदि चित् AV. 5,2,4. यदि ह वै Ait. Br. 2,3. यदीत् AV. 4,27,6. यद्यु वै Gobh. 1,8,3. 4,1,13. In den nachvedischen Schriften α) mit praes.; im Nachsatz α) praes. M. 5,102. 8,223. 12,20. fg. R. 1,61,13. 65,11. Çiç. 67. Spr. 1673, v. l. 2366. 2368. Kathās. 34,96. mit अथ RV. Pair. 11,22. mit तद् MBh. 3,2328. Kathās. 22,111. 30,9. mit ततम् Spr. 2365. mit तदा 2367. LA. (H) 6,5. 7,18. mit तर्हि 27,12. — β) fut. MBh. 3,2861. fgg. 15715. 5,7362. R. 2,63,4. 78,23. 5,9,43. mit ततम् Rāgat. 3,65. mit तदा Hit. 40,17. mit तर्हि LA. (H) 4,3. — γ) Participialfut. MBh. 7,2606. — δ) imperat. MBh. 3,2171. 2435. 2688. 2714. 2982. fg. 4812. 5,7123. R. 1,9,33. R. Gorr. 1,22,19. Spr. 2373. 4819. mit तद् Kathās. 11,58. 18,161. mit तर्हि Çiç. 113,3. v. l. — ε) potent.: पुत्रिकायां कृ-तायां तु यदि पुत्रो ऽनुजायते । समस्तत्र विभागः स्यात् M. 9,134. इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् । यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते (= दीप्येत) ॥ Spr. 3743. 3891. 4816. Kathās. 16,72. 18,189. Gīt. 4,19. यदि वेद न याचेत Bhāg. P. 6,10,6. mit तस्मात् Spr. 1397. — ζ) kein verbum finitum: आख्यातव्यं तु तत्तस्मै पृच्छते यदि पृच्छति M. 11,17. Spr. 4811. Rāja-Tar. 4,538. तस्य तत्किल्बिषं लुब्ध विद्यते यदि किल्बिषम् MBh. 13,36. यदि दरुत्यनलो ऽत्र किमद्भुतम् Spr. 2360. 3713. Çiç. 123. Çaṃv. 18 भवति यदि या — सा. mit ततम् Pat. zu P. 6,4,159. mit तर्हि Schol. zu P. 6,4,11. Prab. 18,4. Sarvadarçanas. 92,20. mit तदा 133,2. Hit. 21,22. mit तदानीम् Çaṃv. 22. — b) mit fut.; im Nachsatz α) fut. MBh. 3,2163. 2488. 2845. 5,7362. R. Gorr. 2,10,7. Bhāg. P. 4,14,12. mit ततम् Harīv. 7294. 9978. mit तद् Pañcat. 229,13. — β) praes. R. 2,61,11. mit ततम् Pañcat. 5,6. — γ) kein verbum finitum: तदुःखं यदि कौमल्या वीरमर्चिर्नाशयिष्यति R. 2,51,15. यदि — ततः परम् Spr. 4833. — c) mit dem Participialfut., im Nachsatz das andere fut. MBh. 3,2827. — d) mit potent.; im Nachsatz α) potent. M. 2,223. 243. 3,61. 105. 111. 7,169. 8,90. 184. MBh. 3,3099. 3559. 5,7034. fg. 6,3825. 12,430. 13,43. 14,244. Harīv. 9714. Bhāg. 1,46. 11,12. Daç. 2,60. R. 2,78,22. 4,46,15. 57,17. 5,1,67. 31,39. 43,17. 6,23,29. 7,35,10. Mṛcch. 62. 93. Spr. 2656. 2853. 3026. 3234. 4820. Kathās. 103,166. Bhāg. P. 4,26,15. mit ततम् R. 4, 9,99. Spr. 2361. 2840. Kathās. 18,18. 22,83. 51,121. mit तद् 4,15. 5, 89. Spr. 2372. 2393. mit तदा 2364. Schol. zu P. 7,1,24. mit अथ Spr. 2760. mit तर्हि Sarvadarçanas. 66,6. 120,11. — β) condit. mit potent. abwechselnd Spr. 4813. fg. — γ) praes. R. 4,20,9. 7,94,14. Spr. 1364. Kathās. 52,101. Bhāg. P. 10,77,15. Prab. 89,3. mit तद् Spr. 2371. — δ) imperat. Mṛcch. 61. — ε) fut. R. 3,65,9. — ζ) Participialfut. MBh. 7, 2605. — η) kein verbum finitum MBh. 3,2737. R. 1,11,15. Çaṃv. 13. Spr. 155, v. l. 2586. 3082. Kathās. 39,135. H. 1240. fg. mit तद् Kathās. 22,81. 30,5. 33,131. mit तदा R. 4,62,7. mit ततम् Mārk. P. 18,43. mit तर्हि Sarvadarçanas. 79,8. fg. — ϑ) mit condit.; im Nachsatz α) condit. MBh. 7,6579. R. 4,12,27. Kathās. 7,13. 34,26. 35,75. mit न च MBh. 13,4797. mit तद् Kathās. 49,120. 63,77. mit ततम् P. 3,3,140, Sch. — β) potent. MBh. 7,2089. mit तद् Kathās. 63,63. mit ततम् Mārk. P. 119,11. — γ) aor. MBh. 13,12. — ι) mit imperf.; im Nachsatz α) condit. MBh. 8,3284. — β) potent.: यद्येतदशुभं कर्म न स्म मे ऽकार्षीः स्वयम् । फलेन्मूर्धा स्म ते राजन्सद्यः शतसहस्रधा ॥ Daç. 2,31. — g) mit aor.; im

Nachsatz α) condit. Prāçnop. 6, 1. — β) potent. Spr. 3662. — δ) im perf. (धाक्); im Nachsatz ततस् ohne verbum finitum R. 1, 63, 21. — ε) ohne verbum finitum; im Nachsatz α) praes. MBn. 3, 2231. R. 7, 94, 14. Spr. 2363. 2370. 4112. किमत्र चित्रं यदि विशाले शशाङ्कलेखामनुवर्तते Çix. 33, 21. mit तद् Kathās. 63, 80. mit तदा Pat. zu P. 7, 1, 20. — β) fut. MBn. 3, 15757. 16735. mit तद् Kathās. 55, 20. — γ) imperat. MBn. 3, 2434. 2768. 16847. R. 1, 55, 16. 65, 21. Rāgn. 3 51. Spr. 855. 3713. 4818. Kathās. 17, 23. mit तद् (v. l. ततस्) Çix. 3, 6. Kathās. 24, 193. mit तदा Gir. 1, 3. मा स्म कृथा: (= imperat.) im Nachsatz Kathās. 18, 272. — δ) potent. Spr. 4032. 5213. Bhāg. P. 6, 10, 32. चित्रम् — पश्येयदीशम् Vop. 25, 15. — ε) perf. (धाक्) Bhāg. P. 6, 10, 6. — ζ) kein verbum finitum M. 9, 149. 204. Çix. 16. Spr. 1139. 2339. 2362. 2369. 4817. Kathās. 40, 22. Kāç. zu P. 1, 2, 35. mit तद् Kathās. 26, 97. mit ततस् Spr. 2360. mit तदा Hit. 18, 19. mit तर्हि Pañcat. 24, 9. mit तथा ṚV. Prāt. 11, 35. — 2) wenn so v. a. *so wahr* bei Betheuerungen: यद्यहं (यद्यहं N. 11, 36) नैषमादन्यं मनसापि न चिन्तये। तथायं पतितो नृद्रः परामुर्गृह्णीयात्। MBn. 3, 2399. fg. यदि मे ऽस्ति तपस्तप्तं यदि दत्तं हुतं यदि। अमृक्षयुरमर्त्यानां मम पुण्यास्तु शर्वरी॥ 16844. यद्यार्यपुत्रादन्यत्र न स्वप्ने ऽपि मनो मम। तदुत्तरेण सहस: पारम् Kathās. 31, 81. — 3) *ob:* तं च यामं न जानीमो यदि दग्ध: पुरोचन: MBn. 1, 5879. कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये वदत यदि मुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् Spr. 711. Kumāras. 5, 44. तां समाचक्ष्व कल्याणीं यदि स्याद्दैव्य मानुषी MBn. 3, 15615. विचार्यतां यदि — स्यात् Çix. 90, 21. जानीहि यदि केनापि दृष्टा सा नगरी न वा Kathās. 24, 51. पश्येको यदि वरूथ: किमनेन यतो तु सर्वथा वाच्यम् Vaitān. Bhn. S. 11, 6. Zum Ueberfluss noch किम् hinzugefügt: कृष्णो पश्यत तत्रतो यदि पुनश्चिक्षादतो वर्णेण दृष्ट: किं परिणामवृषितचितिवृत्तिवि: पृथक्कोरपि Prab. 27, 11. fg. — 4) wenn so v. a. *dass* nach *nicht glauben, nicht für möglich halten, nicht dulden:* नाशंसे यदि जीवन्ति सर्वे ते शर्वरीमिमाम् R. 2, 51, 14. नाशंसे यदि ते सर्वे जीवेयु: शर्वरीमिमाम् 86, 15. यदि भवद्विध: तत्रिपं याचयेत् नाकल्प्यामि, न मर्षयामि P. 3, 3, 147, Vārtt., Sch. Vop. 25, 13. दुष्करं यदि mit praes. oder potent. so v. a. *schwerlich* MBn. 3, 2630. fg. R. 2, 73, 7. R. Gorr. 2, 75, 20. मन्दप्राणो ह्ययं पत्नी कथंचिद्यदि जीवति *lebt nur kaum* 3, 73, 3. — 5) *ob nicht vielleicht, vielleicht dass:* ममाप्येष सदा ह्यस्मन्हृदि कामो ऽभिवर्तते। घातयेयं यदि रणे भीष्ममित्येव नित्यदा॥ MBn. 5, 6095. भोजनं च समानाय्य पत्तदादीपितं मया। क्रुध्येत् यदि मात्सर्यादिति 13, 2888. रामं दर्शय धर्मज्ञ यदि किंचिद्वाप्स्यसि (°से ed. Bomb.) R. 2, 32, 20. आशया यदि मे रामः पुनः शब्दापयेदिति 39, 7. तस्य बुद्धिरभूदियम्। स्वरमेतं यदि श्रुत्वा लक्ष्मणं प्रेषयेदिह॥ सीता प्रत्यूनेन मनसा भर्तृस्नेहसमुत्सुका। ततो लक्ष्मणहीनां तां रावणो वै हरेदिति॥ 3, 50, 28. fg. उत्तरीयं वरारोहा शुभान्याभरणानि च। मुमोच यदि रामस्य शंसेयुरिति ज्ञानकी॥ 60, 6. fg. दृष्ट्वा वरूथ: पुत्रा पश्येको ऽपि (so die ed. Bomb. st. पश्यप्येको der ed. Calc.) गयां व्रजेत् MBn. 3, 8075 = 8305 = 13, 4253; vgl. R. 2, 107, 13 (115, 13 Gorr.). Mucc. 106. पश्यप्येको (= पश्येको ऽपि) ऽनुवेदैयं भावानां चैव संस्थितिम् Jāān. 3, 104. एतस्य गुणास्तुतिं शिक्षासक्ष्मण हितीयेन (so zu lesen) यदि (so die Hdschrr.) कदाचित्कर्तुं समर्थ: स्यात् Hit. 27, 7. यदि तावदेवं क्रियताम् so v. a. *wie, wenn man nun etwa so thäte?* Çix. 71, 8. यदि तावदस्य शिशोर्नामत मातरं पृच्छामि 104, 21. — 6) zum Ueberfluss mit चेद् verbunden: कैकेय्या यदि चेद्राज्यं स्याद्धर्म्यम-नाघवत्। नहि नो जीवितेनार्थ: R. 2, 48, 19. — 7) überflüssig nach पुरा *bevor, ehe:* पुरा मातुः पितुर्वापि यदि पश्यामि विप्रियम्। न जीविष्ये MBn. 3, 16846. fg. — 8) यद्यपि *auch wenn, obgleich, etsi* Çat. Bn. 14, 4, 3, 23. M. 8, 164. 9, 154. 319. MBn. 1, 6118. Bhag. 1, 36. R. 2, 37, 30. 61, 2. Çix. 30. Spr. 1931. 2390. 4832. Çiç. 16, 82. तथापि im Nachsatze R. 2, 23, 16. 3, 3, 3. Rāgn. 4, 7. Spr. 2389. 4830. Kathās. 32, 273. Hit. 69, 22. 73, 16. 92, 16. 120, 3. Daçak. 76, 17. Prab. 97, 3. Sāy. zu ṚV. 1, 125, 1. Sarvadarçanas. 90, 3. 172, 22. तदपि Spr. 2388. 4831. Kathās. 56, 80. 114. Hit. 55, 8. यदि — यदि च — यद्यपि Spr. 4817. यद्यपि यदि — तथापि Prab. 7, 13. fg. Ueber पश्यप्येक: s. पश्येको ऽपि s. u. 3). — 9) यदि — यदि वा, यदि वा — यदि वा, यदि वा — यदि, यदि वा — वा, वा — यदि वा *wenn — oder wenn, ob — oder:* यद्यर्चिर्यदि वासि शोचि: AV. 1, 25, 2. 2, 14, 5. 4, 12, 7. यदि धर्मं यशोलाभमसिवाऽऽकाङ्क्षसि पार्थिव। ततो रामं प्रयच्छैनं यदि वा मद्धयासि मे॥ R. Gorr. 1, 22, 16. यदि — वा — यदि वा Spr. 2372. यदि वा दूरे यदि वा न ṚV. 10, 129, 7. AV. 7, 38, 5. यदि वास्य वनस्य त्वं (v. l. वनस्यासि) देवता यदि वाप्सरा:। याचस्व MBn. 1, 6010. यदि वायो नगद्द: स्याद्यदि वाप्यधनो भवेत्। यदि वाप्यसमर्थ: स्याज्ज्ञेयमस्य चिकीर्षितम्॥ 3, 2750. यदि वानि त्रैककुदं यदि यामुनमुष्ट्रमं AV. 4, 9, 10. यदि वा बुद्धिपूर्वाणि यद्यबुद्धापि कानिचित्। मया कृतान्यकार्याणि तानि त्वं क्षन्तुमर्हसि॥ MBn. 3, 3021. पातालं यदि वा नीता वर्तते वा नभस्तले R. 4, 5, 5. को हि तद्वेद यद्यस्मिन्लोके ऽस्ति वा न वा TS. 5, 1, 8, 1. तत्र जानामि वार्ष्णेय यदि जीवति वा न वा MBn. 7, 4217. R. 3, 65, 10. 4, 40, 9. 5, 9, 30. यत्तर्मर्हो वा यदि वार्यमुत्पतेः। सनुद्रपारं यदि वा प्रधावसि। तथापि MBn. 4, 428. R. 2, 30, 10. M. 3, 242. 4, 117. MBn. 3, 3036. 5, 7080. R. Gorr. 2, 30, 17. 3, 46, 21. 4, 43, 9. 50, 18. Spr. 2181. 2348. 3001. fg. Brahma-P. in L.A. (II) 32, 14. न चेतद्विद्म: कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयु: Bhag. 2, 6. यदि वा allein *oder wenn, oder* (Taitt. 3, 4, 4) R. Gorr. 2, 7, 28. 20, 12. Hit. 19, 7. सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ṚV. 10, 129, 7. यं ते वकैत्ति कुरितो वाकैत्ता: शतमघा यदि वा सत्त वक्रो: AV. 13, 2, 6. Çat. Bn. 1, 1, 4, 2. Kāṭh. Up. 7, 24, 1. यात्मनो यदि वान्येषाम् M. 11, 114. अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात् Spr. 3396. R. 1, 2, 37. 40, 13. सुवृत्ता यदि वावृत्ता (so ist zu lesen) 3, 65, 8. Daç. 2, 8. निन्दतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु Spr. 1581. 5268. Vaitān. Bhn. S. 18, 1. 43, 34. 54, 91. पत्कोरत्यशुभे कर्मं शुभे वा यदि (= यदि वा) Spr. 4733. यदि वा = अथ वा (s. u. अथ 7, b, β) Kathās. 26, 24. 90. 233. — Nach Mnd. avj. 39 wird यदि गर्हाविकल्पयोः gebraucht, nach Taitt. 3, 4, 5 ist यदि शेषगौः (?). Ausführlich hat über यदि gehandelt Lassen in seiner Ausg. des Gir. S. 106. fgg.

यदिच्छा in °मात्रतस् Kathās. 121, 100 wohl fehlerhaft für यदृच्छा.

यदीय (von 1. य) adj. *cujus* (relat.) P. 1, 4, 74, Sch. Khandom. 42. Rāja-Tar. 4, 48. Bhāg. P. 10, 59, 44. 61, 5. Kull. zu M. 5, 15. 9, 170. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 308, Çl. 34. 7, 12, Çl. 44.

यदु m. N. pr. eines Stammes und Stammheldes, gewöhnlich neben Turvaça (Turvasu) genannt; auf einem Zuge aus der Ferne her und beim Uebergange über einen Strom von Indra beschützt ṚV. 1, 54, 6. पारयो तुर्वशे यदौ स्वस्ति 174, 9. उत वा तुर्वशायदू यज्ञातारा शचीपतिः। इन्द्रो विद्वाँ अपारयत् 4, 30, 17. 5, 31, 8. य यानवत्यरावतः सुनीती तुर्वशे यदौ 6, 45, 1. 8, 4, 7. 7, 18. 10, 49, 8. 1, 36, 18. 8, 9, 14. 10, 5. 43, 27. 9, 61, 2. pl. 1, 108, 8. MBn. 1, 46. Bhāg. P. 1, 12, 37. 3, 2, 8. 12, 1, 34. Çiç. 9, 38.

°पुंगवा: MBh. 1, 7012. यदव: = दशार्हा: Taṇḍ. 2, 1, 10. °वंश Verz. d. Oxf. H. 8, a, 27. 12, b, 17. sg. 40, a, 37. ein Sohn Jajāti's und Bruder Turvasu's MBh. 1, 3162. 3432. 5, 3043. 7, 6036. Harīv. 1604. 1618. fgg. 1829. 1842. fg. VP. 413. fgg. Bhāg. P. 1, 10, 26. 9, 18, 33. ein Sohn Vasu's, Fürsten der Kedi, MBh. 1, 2364. Harīv. 1806. ein Sohn Harjaçva's 5175. fgg. In Jadu's Familie wird Kṛshṇa geboren und heisst demzufolge यदुवीरमुख्य MBh. 1, 7013. यदुपति Vṛddha-Kāç. 10, 7. यदुनाथ H. 249. यदुश्रेष्ठ Paṇḍar. 3, 8, 7. यदूद्वह 4, 1, 24. यदुकुलोद्वह 3, 180. यादव: wie auch andere Stammnamen unter den Namen für *Nachkommenschaft* aufgeführt Naigh. 2, 3. — Vgl. यादव, याद्व.

यदुध (यद् + धा) m. N. pr. eines Ṛshi Harīv. 435. 14152.

यदृच्छा (यद् + ऋ° von 1. ऋच्) f. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2, 1, 72. = स्वैरिता, स्वाच्छन्द्य, निर्निमित्त AK. 3, 3, 2 (vgl. v. l.). H. 350. Hall. 4, 89. *Zufall* Çvetāçv. Up. 1, 2. Suçr. 1, 311, 20. यदृच्छया instr. *zufällig, von ungefähr, ganz von selbst, ohne besondere Veranlassung, unerwartetor Weise* M. 7, 165. Bhag. 2, 32. MBh. 1, 5930. fg. 3, 17135. 10, 32. 12, 6676. 13, 2659. R. 1, 1, 74 (79 Gorr.). 48, 4. 2, 7, 1. 59, 22. 3, 23, 12. 4, 50, 25. 5, 16, 50. Suçr. 2, 299, 1. Kumāras. 1, 14. Raghu. 3, 40. Vikr. 10. Spr. 2260. Kathās. 14, 76. 21, 76. 28, 33. 29, 20. 37, 204. 38, 93. Rāgat. Taṇḍ. 3, 122. Bhāg. P. 1, 19, 25. 2, 8, 7. 3, 4, 9. 26, 5. 4, 25, 20. 5, 3, 35. 9, 15, 23. 18, 18. यदृच्छातस् dass. 11, 7, 62. Kull. zu M. 2, 245. Am Anf. eines comp. यदृच्छा in adv. Bed.: यदृच्छोपनत Ṛv. Prāt. 11, 13. Bhāg. P. 7, 13, 36. °प्रोद्गत Kathās. 26, 9. °संवाद Uttarar. 97, 6 (127, 11). °लाभसंतुष्ट Bhag. 4, 22. यदृच्छामात्रतस् (so ist zu lesen) *nur ganz zufällig* Kathās. 121, 100. °शब्द *das erste beste Wort* Spr. 281. mit Kürzung des Auslauts: यदृच्छ Kauç. 133.

यद्देवत (यद् + देवता) adj. *welche* (rel.) *Gottheit habend* Çāṅkh. Ça. 13, 20, 3. यद्देवत्य dass. Çat. Br. 3, 8, 2, 1. Liṭ. 6, 9, 4.

यद्बृह (यद् + बृह) m. N. eines Sāman Liṭ. 3, 9, 18.

यद्धेतोस् (यद् + हेतोस्, abl. von हेतु) adv. *weshalb, wessentwegen* (rel.) Bhāg. P. 3, 29, 4.

यद्वादिन् (यद् + वा° adj. *der da sagt etwas kommt das kommts*, m. *Fatalist* H. 383. Hall. 2, 222. zugleich N. pr. eines Fisches Kathās. 60, 180. 184. Spr. 92, v. l. Paṇḍar. 77, 9. Hit. 110, 16.

यद्विषय (यद् + वि°) adj. *der da sagt etwas kommt das kommts*, m. *Fatalist* H. 383. Hall. 2, 222. zugleich N. pr. eines Fisches Kathās. 60, 180. 184. Spr. 92, v. l. Paṇḍar. 77, 9. Hit. 110, 16.

यद्विषय (von 1. यद्) adj. *in welcher* (rel.) *Richtung sich bewegend:* यद्विषयद्वागुर्वाति TS. 5, 5, 2, 1. यद्वाच् Schol. zu P. 6, 3, 92. 8, 1, 66. fälschlich यद्वाच्, यद्वाच्. Kiṭ. 19, 8. 26, 9.

यद्वाच् s. यद्विषय.

यद्वत् (von यद्) adv. *wie* (rel.; es entsprechen तद्वत् und एवम्) MBh. 7, 3941. Spr. 362. 1937. 2140. 2465. 3312. 3986. Vārāh. Bṛh. S. 75, 2. Kathās. 45, 36. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 24. 38. Bhāg. P. 1, 15, 23. 7, 8, 26. Mārk. P. 11, 6. Paṇḍar. II, 62. Nach H. an. 7, 25 und Med. avj. 31 प्रभे und वितर्के.

यद्वद् (यद् + वद्) adj. *in's Blaue schwatzend, Ungereimtes redend* H. 347. Hall. 2, 222.

यद्धा f. = बुद्धि ÇKDr. nach Uṇādivṛtti im Saṅkshiptas.

यद्वाक्षिष्ठीय (von यद्वाक्षिष्ठम्, womit Ṛv. 5, 25, 7 beginnt) n. N. eines Sāman Paṇḍav. Br. 15, 5, 25. Liṭ. 6, 1, 3. यद्वैर्यद्वाक्षिष्ठीयम् Ind. St. 2, 201, a. यद्वाक्षिष्ठोपोत्तरम् 230, a.

यद्विध (यद् + विधा) adj. *qualis* (rel.) R. 2, 87, 14.

यद्वृत्त (यद् + वृत्त) n. 1) *Begebenheit, Ereigniss, Erlebniss, Abenteuer* (vgl. यद्वावृत्त) Harīv. 1181. R. 1, 31, 6. Kathās. 5, 108. — 2) *eine Form von* 1. यद् VS. Prāt. 6, 14. P. 8, 1, 66.

यत् (partic. praes. von 3. इ) adj. *laufend:* यद्वे यति *im laufenden Jahre, heuer* AK. 3, 5, 20.

यत्तृ (von यम्, nom. ag. 1) *Lenker* (der Rosse, des Wagens): यत्तास्य Ṛv. 1, 162, 19. 10, 22, 5. Kāṭ. Ça. 15, 6, 29. 27 (सयत्तृक). *Wagenlenker* AK. 2, 8, 2, 27. 3, 4, 14, 62. H. 760. an. 2, 188. Med. t. 47. MBh. 3, 761. 2825. 4, 1173. 1183. 7, 6282 (सु° adj.). Harīv. 6573. R. 6, 69, 40. fg. 7, 7, 29. Spr. 2433. 3746. 3823. Rāgat. 1, 54. 12, 103. Bhāg. P. 8, 11, 17. Brahma-P. in LA. (II) 32, 12. *Elephantentreiber* AK. 3, 4, 14, 62. H. 762. H. an. Med. Spr. 3143. Rāgat. 4, 39. 7, 34. Kathās. 115, 65. *Lenker, Regierer:* यत्तो: (der Wind) Harīv. 2480. घीनाम् Ṛv. 3, 3, 6. 13, 3. 2, 23, 19. यत्तारो ये मघवानो जनानाम् 7, 16, 7. — 2) *befestigend, aufrichtend:* उरु यत्तारम् वरूथम् Ṛv. 3, 68, 3. AV. 5, 81, 1. VS. 9, 22. 30. 18, 7. 37. 22, 3. TS. 2, 2, 12, 4. यत्री f. VS. 14, 22; vgl. VS. Prāt. 2, 37. — 3) *gebend:* स यत्ता शश्वतोरिषः Ṛv. 1, 27, 7. यत्ता वार्याणि 10, 46, 1. — यत्तार: wird Naigh. 3, 19 unter den याच्ञाकर्मणा: aufgeführt.

यत्तव्य (wie eben) adj. *zu lenken, im Zaum zu halten:* प्रज्ञा: (राज्ञा) MBh. 12, 2446.

यत्ति f. nom. act. von यम् P. 6, 4, 39, Sch.

यत्तृ m. Bez. des Agni Ṛv. 3, 27, 11. 8, 19, 2. scheint eine Nebenform von यत्तृ zu sein, = निगत्तृ Sāj.

यत्त्र von यम् Uṇādis. 4, 166. n. (scheinbar f. MBh. 6, 2639, wo aber mit der ed. Bomb. सान्तरबन्धुरे यत्ते zu lesen ist) Sūrjas. K. 249, b, 2. 1) *Mittel zum Halten, Stütze, Befestigung; Schranke:* सविता यत्त्रै: पृथिवीमरम्णात् Ṛv. 1, 149, 1. तन्व: VS. 4, 18. यत्तुर्यत्त्रेण 18, 37 (st. dessen यत्त्रिण 9, 20). पुरोर्हि यत्त्रं हिंस्येव वासस: *Mittel zu halten* Ṛv. 1, 34, 1. विश: TS. 1, 1, 11, 2. वातानाम्, स्रजाम् u. s. w. 6, 4, 2. TBr. 3, 7, 6, 7. यत्तुयो यत्र धर्मस्य यत्तं वे यत्तवे ed. Bomb., in der Bed. eines infin. = यत्तवार्थम् Nilak.) MBh. 3, 3764. दृढ° *mit zehn Bändern oder Streifen versehen:* सोमो दाधार दशयत्त्रमुत्तमम् Ṛv. 6, 44, 24. *schnfach eingespannt:* यद्रेय: 10, 94, 8. *Stränge am Wagen* u. s. w. M. 8, 292. MBh. 7, 3204. 6283. — 2) *Werkzeug zum Halten*, so heissen in der Chirurgie *alle stumpfen Instrumente, wie Zangen, Haken, Röhren* und dergl. im Gegensatz zu den *Messern* (शस्त्र); die Lehre davon यत्त्रविधि Suçr. 1, 23, 12. fgg. °कर्मन् 25, 15. 100, 17. 358, 19. 359, 5. 2, 16, 7. 343, 4. Vīgan. 25, 1. fgg. Verz. d. Oxf. H. 305, a, 9. fg. 311, b, 18. 321, b, 1 v. u. *Zange, Zwinge* u. s. w.: सोऽप्येव यत्त्रपीडाभि: पीड्यते यमकिंकरै: Mārk. P. 14, 71. यत्त्रावपीडन 88. MBh. 1, 1123. भुजयत्त्रनिपीडित R. 4, 10, 31. — 3) *eine zusammengesetzte oder künstliche Vorrichtung* überh., *Maschine* AK. 3, 4, 9, 29. यत्त्रपूतं वारि Gobhil. 1, 100. यत्त्रमुक्तं शरादिकम् Hall. 2, 308. 307. H. 774. Mahāvīra in Ind. St. 1, 21, 16. 18. MBh. 1, 1498. 6956. 6978 (vgl. Jiñ. 3, 83). 3, 905. 16128. 16359. 14, 3246. Harīv. 2656. 4515. 12338. R. 2, 80, 2. R. Gorr. 2, 101, 39. 5, 9, 51. 6, 38, 35. 72, 24. 7, 23, 8, 8. यत्त्रेणेवेरित: शर: Kathās. 18, 92. यत्त्राणां धनुरेव (ist Çiva) MBh. 12, 10404. कोदण्ड° Rā-

śa-Tar. 5,101. यन्त्रोत्क्षिप्तोदकेव इव R. 5,64,21. Rāśa-Tar. 1,368. क्रिंयन्त्रविधान Jāśv. 3,240. ईश्वरः सर्वभूतानाम् भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया Bhag. 18,61. यन्त्रैरुद्घाट्यमाम (मञ्जूषाम्) MBh. 3,17158. H. 1006. यन्त्रमुक्त इव घ्नन्: (vgl. घ्नन्यन्त्र) MBh. 7,2382. R. Gorr. 2,84,8. यन्त्रयन्त्र R. Schl. 2,77,9. गृह्यन्त्रपताका Kumāras. 6,41. °दृढे कपाटे so v. l. Schloss Mālāv. 48,5. नावं यन्त्रयुक्ताम् *mit Rudern, Segeln u. s. w.* MBh. 1,3689. कूप° *Brunnenrad* Rāśa-Tar. 1,284. कूपयन्त्रघटिका Mālāv. 178, 7. Mārk. P. 39,42. यन्त्रैश्च परिपूर्णानि (दुर्गाणि) MBh. 2,170. 1,5003. 3, 640. 12,2640. M. 7,75. Harīv. 8936. R. 1,5,17. R. Gorr. 2,87,22. 109, 32. 4,33,5. 5,9,19. 72,8. 13. fg. Spr. 4194. Kām. Nītis. 4,60. 13,65. यन्त्रयन्त्राणि Harīv. 5008. गरुड° *ein künstlicher* Garuḍa, *der sich bewegt.* Pāśup. ed. orn. 52,18. यन्त्रगरुड dass. 53,14. °व्योम Kathās. 43, 32. °व्योमन् 12,4. °विमान *ein Wagen, der von selbst geht,* 43,134. 38. °विमानक 201. मायायन्त्रस्त्री 79,16. स्त्री° *die Kunstpuppe Weib* Spr. 392. — Śārad. 13,19. 20. 23. Vaśiṣ. Bṛh. S. 43,29. 33. Kathās. 29,42. fgg. 19. 62. 30,19. 35. 31,5. 43,14. 26. 60,28. 61,104. Rāśa-Tar. 3,350. 554. Pāśup. ed. orn. 3,6. Schol. zu Kir. Ça. 363,14. मोघ्यन्ती यन्त्रमार्गाः Prab. 26,6. मरु° M. 11,63. MBh. 5,5184. — 4) *Amulet, ein dazu dienendes Diagramm* Wilson, Sel. Works 2,33. Weber, Rāmat. Up. 288. 320. 329. Kathās. 22,12. Pāśup. 1,1,76. Verz. d. Oxf. H. 94,*a*,17. *b*,8. fgg. 15. 93, *b*,10. 98 *b*,12. 100,*a*,20. 102,*a*,22. 105,*b*,22. 106,*a*,38. — Nach H. an. 2,448 hat यन्त्र die Bedd. देवाग्र्यधिष्ठान, पात्रभेद und नियन्त्रण. — Vgl. घ°, कूट°, केश°, गृह°, गोल° (auch Śārad. 13,17), घटि° (u. घटिक 2) *a*), घटी°, शल°, ताल°, तैल°, तोय°, दारु°, द्वार°, धारण°, धारा°, घ्न°, नर°, नाडी°, नित्यपूजा°, पद्म°, मन्त्र°, मेरु°, वारि°, श्लोक°, सूत्र°.

यन्त्रक (von यन्त्र und यन्त्रय) 1) m. *a*) *Bändiger,* f. यन्त्रिका Pāśup. Bh. 16,1,7. — 2) m. *Maschinist* R. 2,80,1 (87,1 Gorr.). — 3) f. यन्त्रिका schlechte Lesart für यन्त्रणा H. 533. — 4) n. *a*) *Bandage* Suçr. 2,23,11. — *b*) *Drehscheibe* H. 909. — Vgl. शल°.

यन्त्रकरण्डिका (यन्त्र + क°) f. *Zauberkorb* Kathās. 29,21.

यन्त्रकर्मकृत् (य° + कर्मन् + कृत्) m. *Maschinist* R. Gorr. 2,90,12.

यन्त्रगृह (य° + गृह) n. *Oelmühle* H. 997.

यन्त्रगोल (य° + गोल) m. *eine Art Erbsen* Çabdār. im ÇKDr.

यन्त्रचेष्टित (य° + चे°) n. *Zauberwerk* Kathās. 29,41.

यन्त्रण (von यन्त्रय) 1) n. *das Anlegen eines Verbandes* Suçr. 1,66,5. °शल्क 338,15. °विधि 10. f. या dass. 67,21. यन्त्रणा 2,229,6. यन्त्रण n. = बन्धन H. an. 3,320. Med. p. 72. — 2) n. *Beschränkung:* द्वारा° Suçr. 2,447,1 (°यन्त्रणात् zu lesen). f. या *Zwang* R. Gorr. 1,1,79. वलवती Daçār. in Benf. Chr. 185,5. विगतयन्त्रणार्गल Kathās. 47,120. in comp. mit dem, wobei *der Zwang, die Gêne* berührt: मल्त्या रज्ज्वादियन्त्रणया (so ist zu lesen, wie schon Benfey bemerkt hat) Ind. St. 3, 372,4 v. u. क्रो° Rāgat. 7,20 (= Kumāras. 7,75). Śiç. D. 40,10. उपचार° Milav. 46,3. स्नानादि° Kathās. 27,19. प्रादुर्भवद्यन्त्रणा Spr. 3146. Am Ende eines adj. comp. (f. या): निचिडपीनकुचद्वयगन्त्रणा Naish. 4,10. कृतयन्त्रणाः (स्त्रियः) *sich Zwang anlegend* Kathās. 61,294. तं मे मित्रं स्वायन्त्रणम् *der sich keinen Zwang anzulegen braucht* 49,18. कथालापानयन्त्रणान् *ungezwungen* 54,81. यन्त्रणा n. = नियम, नियमन H. an. Med. यन्त्रणा = नियम Tāṇḍ. 3,3,299. — 3) n. *das Schützen, Hüten* (त्राण, रक्षण) H. an. Med. — 4) f. यन्त्रणी *der Frau jüngere Schwester* H. 855. — Vgl. उदरयन्त्रणा, निर्यन्त्रणा, मुखयन्त्रणा.

यन्त्रतन्त्र (य° + त°) m. *Maschinenbauer, Verfertiger von Zauberwerken* Kathās. 43,223.

यन्त्रधारागृह n. = धारागृह *eine Badstube mit Wasserwerk;* davon nom. abstr. °त्व n. Mṛcch. 62.

यन्त्रपुत्रक (य° + पु°) m. *Gliederpuppe* Rāśa-Tar. 6,160. °पुत्रिका f. Kathās. 29,1. 18.

यन्त्रपेषणी (य° + पे°) f. *Handmühle* Gaṭṭīdr. im ÇKDr.

यन्त्रप्रकाश (य° + प्र°) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 270,*a*,21.

यन्त्रप्रवाह (य° + प्र°) m. *ein künstlicher Wasserstrom, Wasserwerk* Ragh. 16,49.

यन्त्रमय (von यन्त्र) adj. *künstlich nachgebildet:* मृग Bhāg. P. 6,12,10. गज Kathās. 12,5. 20. पत्र 29,38. शून 43,58. काष्ठ° *aus Holz* 10.

यन्त्रमातृका f. Bez. einer der 64 Kalā Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,16 (vgl. u. कला 11). Comm. zu Bhāg. P. 10,45,36 fasst यन्त्रमातृका धारणामातृका als eine Kalā.

यन्त्रमार्ग (य° + मार्ग) m. *Wasserleitung* Prab. 26,6.

यन्त्रय (von यन्त्र), यन्त्रयति Dhātup. 32,3 (संयोजने). *in Binden —, Schienen u. s. w. legen* Suçr. 1,13,7. 358,5. 2,38,7. 343,14. यन्त्रित 20,6. 337, 10. यन्त्रित *gebunden, gefesselt; in der Gewalt stehend* von H. 438. an. 3,282. अयन्त्रितत्वद्विषा (राजधानी) R. 2,88,19. वृक्षमूले मकरानागो यथा पाशेन यन्त्रितः 4,10,22. बाणासन्न° MBh. 8,4082. °सायक *ein Selbstgeschoss befestigt habend* (vgl. यन्त्रशर) Kathās. 61,101. शकुन्ता इव सूत्रयन्त्रिताः Bhāg. P. 5,17,22. वरुणपाश° 8,22,14. गावो यथा वै नसि दामयन्त्रिताः 4,11,27. यस्य वाचा प्रजाः सर्वा गावस्तन्त्र्येव यन्त्रिताः 3,13,5. यन्त्रितो नियमैरुग्रैः R. 7,3,11. वाक्षया यन्त्रितः प्रभोः Kathās. 72,335. Bhāg. P. 6,5,5. गौरवाग्र्यन्त्रितः 4,22,4. गौरवाग्र्यन्त्रितकवः R. Gorr. 1,77,33. Bhāg. P. 10,29,23. पितृगौरव° MBh. 1,5420. 7,6490. R. 1,76,1. R. Gorr. 2,75,19. 4,8,36. क्षेत्रकारुण्य° MBh. 3,33. पितृवचन° R. 1,40, 17. R. Gorr. 1,22,6. 80,10. 2,15,36. 50,19. शाप° Ragh. 10,48. Kathās. 32,51. Bhāg. P. 4,20,16. 5,4,18. 6,1,26. 11,20. 7,2,52. 13,19. 9,7,14. 17,12. घ° *ungebunden, frei, sich keinen Zwang anthuend* Kathās. 66, 43. M. 2,118. मु° *der sich Zügel anlegt, sich ganz in der Gewalt hat* ebend. Bhāg. P. 7,12,3. 10,84,28. यन्त्रित *der sich anspannt, — zusammennimmt, — eifrig bemüht:* त्वत्कृते च वयं सर्वे यन्त्रिताः R. 7,9,9. परम° 1,77,22. सुयन्त्रितत्व n. *das Festgebundensein* Pāśup. 140,25.

— उप, °यन्त्रिता M. 11,177 fehlerhaft für °मन्त्रिता.

— नि *zügeln, im Zaum halten:* निसर्गतरला नारीः को नियन्त्रयितुं क्षमः Spr. 1621. नियन्त्रित *gebunden, gefesselt* Uttarar. 82, 9 (106, 1). पाश° Pāśup. 142,13. Verz. d. Oxf. H. 91, *a*, 2. *eingedämmt* Rāśa-Tar. 5,103. *beschränkt, abhängig von, in der Gewalt stehend von* Vaināyak. (Allah.) No. 74. Śiç. D. 25. Rāśa-Tar. 4,34. ईर्ष्या° Kathās. 61, 167. शास्त्र° Spr. 129. घ° Śiç. D. 18,10. — Vgl. नियन्त्रण.

— सम् *anhalten:* संयन्त्रितो मया रथः Çiç. 100,21.

यन्त्रवत् (von यन्त्र) adj. *mit einer künstlichen Vorrichtung versehen* Kād. Nītis. 16,13.

यन्त्रवे s. oben u. यन्त्र 1).

पत्रशर (प° + शर) m. *Selbstgeschoss* Kathâs. 61,104.

पत्रसूत्र (प° + सूत्र) n. 1) *die Schnur einer Gliederpuppe* Râja-Tar. 5,223. — 2) *ein über* (Kriegs-) *Maschinen handelndes* Sûtra MBu. 2, 236. — Vgl. सूत्रपत्र.

पत्राकार (पत्र + आ°) Titel einer Schrift Ind. St. 2,232.

पत्रिन् (von पत्र und पत्रय्) 1) adj. *mit Geschirr versehen:* ein Ross Kâṭ. Çr. 14,3,9. — 2) adj. *mit einem Amulet versehen* Verz. d. Oxf. H. 98, b, 23. — 3) nom. ag. *Peiniger, Quäler* R. 1, 1, 74. — 4) f. पत्रिणी = पत्रणी H. 555, Sch.

पत्रिय s. u. पत्र 1).

पत्रोद्धार (पत्र + उ°) m. Titel einer Schrift Macn. Coll. 1. 137.

पत्रोपल (पत्र + उ°) pl. *Mühle* LA. (III) 91,19. पत्रोपलोपमाः R. 5,64,24 sind *mit einer Schleuder geworfene Steine.*

पत्रिमित्तम् (यद् + निमित्त) adv. *weswegen* (rel.), *in Folge wovon* R. 2,69,7. 97,23. Spr. 2400. Mahân. P. 119,7.

पन्नक्षिप्रीय n. यद्येपन्नक्षिप्रीयम् N. eines Sâman Ind. St. 3, 201, *a.*

पन्नय (von यद्) adj. *aus welchem* (rel.) *hervorgegangen, — gebildet, — bestehend u. s. w.* Bhâg. P. 3,10,16. 7,14,34. 10,23,10. 47. Mahân. P. 103,2. Kâvjâd. 1,34.

पन्मात्र (यद् + मात्रा) adj. *welches* (rel.) *Maass habend, von welchem Umfange u. s. w.* MBu. 11,114. Varâh. Bhn. S. 69,28.

पप्य (?) Bhar. Nâṭjaç. 20,22.

पभ्, पँभति Dhâtup. 23,11. पप्स्यति (vgl. Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10); *futuere* (die entsprechende slavische Wurzel verzeichnet bei Miklosich, Vgl. Gr. III, S. VIII und Wurzeln des Altslov. S. 15): पभ् माम् *spricht ein Weib* AV. 20,136,11. न मौ पभति कश्चन TS. 7,4,10,2. कँ (= प्रजापतिं) ब्रह्मन्नुर्वित्र्य सुतौ पभितुमुद्यतम् Bhâg. P. 10,85,47. Vgl. Kâvjâd. 1,65 und पाभ्. — desid.: पिपप्सत इव ते मनः Çâṅku. Ça. 16, 4,6. पिपप्स्यमाना *quae futui cupit* 12,23,16.

— प्र *futuere:* प्रपप्स्यन्तीव सक्थ्यौ TBa. 2,4,6,5. Âçv. Çr. 2,10,14.

— प्रति dass.: प्रतिपब्धमुद्युक्तः Comm. zu TBa. 2,568,10.

पभन (von पभ्) n. *fututio* Vop. zu Dhâtup. 23,11.

पभ्य (wie eben) adj. यँपभ्या *non futuenda* AV. 20,128,8. सुँपभ्या *bene futuenda* 9.

यम्, यँच्छति Dhâtup. 23,15 (उपरमे). P. 7,3,77. fg. Vop. 8,70. यँच्छते, ved. यँमति, यमते, यमत्, यंसि, यमुन्; यन्धि (P. 6,4,103, Sch.), यत्त, यत्तम् 2. du.; यम्यास् 3. sg.; ययाम, यमुँम्, येने, येमिरे, येमानँ; aor. अयंसीत् P. 7,2,73. ved. यँसत्, यँसन्, अयंसम्, अयान् 3. sg., अयंसि, अयंस्त, यँसि 1. sg., यँसते, अयंसत; यँस्यति (vgl. Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10); pass. यम्यते, अयामि; absol. यत्वा, °यत्य und °यम्य P. 6,4,37. fg.; infin. यँमम्, यँन्तवे, यँमितवँ, यन्तुम्, यमितुम् (Râja-Tar. 1,251); partic. praet. pass. यत. 1) *halten, festhalten; tragen, sustentare:* स्थूणेव जनाँ उपमिद्ययन्थ RV. 1, 59,1. 3,38,2. अयाम् 10,134,6. अत्यो न यँसदभि वाजसातये 1,190,4. 119,5. सत्यं वा एतं यन्नुर्कृति Çat. Br. 6,7,4,1. 1,1,2,16. तं वृक्त्यास्तभ्नुवन्सायच्छन् Pañkav. Br. 25,10,11. Kâṭhân. Up. 2,3,5. med. *sich stützen auf, sustentari:* इन्द्रे कृ विश्वा भुवनानि येमिरे RV. 8,3,6; vgl. 9,86,30. — 2) *erheben, schwingen* (in der Hand): वज्रम् RV. 1,52,8. वधम् 5,34,2. 10,49,2. आयुधैर्यच्छमानाः *mit den Waffen ausholend* 7,56,12. *in die Höhe treiben* (die andere Wagschale): यतरद्यंस्यति so v. a. *welches von beiden ziehen wird* Çat. Br. 11,2,2,23. साधुकृत्या देवास्य पच्छ्रुति ebend. — 3) *aufrichten, errichten, über Jmd halten* (ein Obdach, einen Schirm u. s. w.): शर्म RV. 1,46,15. 4,25,4. 7,3,9. 101,2. AV. 1,26,2. छर्दिः RV. 4,53,1. 6,15,3. 46,9. मुलीतिम् 2,33,15. वज्रहस्तम् 7,30,4. 88,6. शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत् 1,114,3. स्वसराणि 3,60,6. *ausbreiten:* ज्योतिः 7,78,3. 79, 2. ऊरू णो यन्धि ग्रीवसे 8,57,12. *aufstellen, zu Stande bringen:* सुतम् 4,2,14. 23,10. 44,3. विद्वांसि 7,66,10. — 4) *zusammenhalten, cohibere; zügeln, bändigen; anhalten:* स मध्येनं यमति ब्राध्नतश्चित् RV. 1,100,9. यत्र मन्यौ विवक्षतो रुशन्नियमितवा इव 28,4. रुशन्नेव यो यमति जन्मनी 141,11. मुहूर्तमपि वार्त्रघ्नो रुशन्न्यच्छतु वाजिनाम् *anziehen* MBu. 3, 2822. शकेन वाजिनो यमम् RV. 2,3,1. 1,73,10. कृष्यन्येमे च रुशमिभिः MBu. 3,1732. 751. रथम् — यत (यत्त MBu. 3,12023) मातलिना *gelenkt* Anâ. 4,22. चक्रं रथस्य RV. 5,73,3. दामभिर्यम्यमानेषु (रथ्यमानेषु die neuere Ausg.) यत्सेषु तरुणेषु च Harîv. 4423. वृषा दशभिर्नामभिर्मृतः RV. 9,28,4. 107,16. 109,8. 18. 8,13,3. 24,22. रुशमना वा यद्यो यतः TS. 5,4,12,3. Çat. Br. 7,2,4,10. यँयत 3,2,4,18. 13,3,2,3. *zurückhalten:* गा येनानं परि यन्नदिम् RV. 4,1,15. 8,21,4. *an sich halten* (den Athem, die Stimme): प्राणम् Âit. Br. 2,21. वाचम् ebend. 23. 5,24. Çat. Br. 1,1,2,2. 4,5. 2,4,4,6. 3,2,4,36. Pâr. Grhj. 2,3. पच्छेत्राक्षनसी *zugeln* Kâṭjây. 3,13. नियच्छ यच्छ संयच्छ इन्द्रियाणि मनो गिरम् MBu. 12, 3894. मनो यच्छेत् Bhâg. P. 2,1,17. 20. कोपं यच्छत दीपितम् 8,4,11. मन्युम् 14. यतमन्यु 7,9,51. यतचित्तेन्द्रियानल 6,2,25. यतात्मानुनोवुद्धि 10,12. कूर्मक्रोधो यतो यस्य Spr. 5394. यतमानस Mahân. P. 31,35. यतचित्तात्मन् Bhag. 4,21. यतमेधुन R. Gorr. 1,44,11. यताकार (v. l. यथाकार ed. Bomb.) so v. a. *beschränkt, massig, wenig* R. Schl. 2,28,17. Vgl. यतगिर्, यतवाच्, यतात्मन्, वाग्यत. — 5) med. *stille halten, sich fügen, gehorchen, treu bleiben:* तुर्य हि पूर्वयंतेषु देवा देवायं येमिरे RV. 1,135, 1. मित्राय पन्थं येमिरे जनाः 3,59,8. 8,43,18. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे 78,2. 87,2. 9,86,30. *sich darbieten:* इन्द्राय गातुरुशतीव येमे 5,32,10. *Stand halten:* निःपरुमाणो यमते नायते 1,127,3. — 6) med. *festhalten* so v. a. *Feuer fangen* (Comm.): निर्दिग्धो यूपो यच्छते। रुद्रास्तर्ह्यग्निः TBa. 2, 1,10,1. — 7) *Jmd* (loc. oder dat.) *darreichen, darbieten, verleihen, gewähren, hergeben:* स नो यन्धि मरुतामियं मे RV. 4,32,7. रयिं यच्छतमास्यु 51,10. शं यो: 12,8. अग्ने प्रत्नो यंयामि ते 2,41,2. यत्तं देवेषु 20. सुम्नम् 5,67,2. बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् 10,98,7. AV. 7,54,1. 10,5,37. TBa. 1,4,2,1. वर्णं मे यच्छ Çâṅku. Ça. 7, 10, 15. सोमो अघ्न्याभिर्माणा अयंसत (pass.) RV. 1,135,6. सर्व ह्यस्मा इदं श्रेष्ठाय यम्यते Kaush. Up. 4,15. ज्ञात्यन्धाय — यच्छतोपु मनोज्ञं निधत्तपु: — पण्यस्त्रीषु Spr. 967. ब्राह्मणः सिद्धमप्यर्थं कृच्छ्रेणापि न यच्छति 1996. Pañkat. IV, 27. अघ्न्यम् Varâh. Bhn. S. 12,11. अपः (die Wolken) 28,14. 43,12. फलम् 55,12. 88,28. पूजितं ब्राह्मणं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति M. 2, 55. Bhâg. P. 3,3,4. 24,22. 5,12,12. 8,14,20. 9,10,22. Mahân. P. 18, 52. अभयवाचम् Hit. 59,2 (प्रयच्छ ed. Jonas.). मार्गाईस्य च ये मार्गं न यच्छन्ति (ददति ed. Calc.) so v. a. *aus dem Wege gehen* MBu. 13, 6700. *hinstrecken:* यद्दतो यच्छसे wenn du *die Zähne zeigst* RV. 7,55,2. *Jmd beschenken mit* (instr.): स नः पूर्णेन यच्छतु AV. 7,17,1 (jedoch TS. v. l.). — 8) (*darbringend*) *erheben* (einen Ruf, Gesang u. s. w.): अयामि घोषं RV. 7,23,2. स्तोमं 64,5. य-

ष्कंबर्कम् 39,7.

— caus. यमयति (nach Andern यामयति) Daśkp. 19,71. 32,81 (परिवेषणे und अपरिवेषणे). *in Schranken halten* Çat. Br. 14,1,2,4. 6,7,3. 8. Rāǵa-Tar. 4,670. *in Ordnung bringen:* परिवृत्तं किरीटं तमयमयन् (so die ed. Bomb.) MBu. 7,1269. मूर्धजान्यमयस्व MBu. 9,1876. यमयन्मूर्धजान् 2883. बन्धे ग्रंसिनि चैकहस्तयमिताः पर्याकुला मूर्धजाः Çiç. 29. अयमितनख *nicht in Ordnung gehalten, vernachlässigt* Mucch. 89. *einhalten* (die Stimme) Liṭ. 5,5,5. 12,5.

— intens. यंयम्यते, यंयमीति P. 7,4,85, Vārtt. Schol. zu 83.

— अधि 1) *aufrichten, ausbreiten über:* या वः शर्म सप्तिं दात्रुषे यच्छताधि RV. 1,85,12. — 2) *erheben zu:* देवेषु मे अधि कामा अयंसत (pass.) RV. 10,64,2.

— धनु *lenken, richten:* मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः RV. 5,75,6. सूतस्य रश्मिमनुयच्छमाना 1,123,12. सीतां पूषानु यच्छतु 4,57,7. मर्तमनुयतं यच्छेः *auf welchen die Geschosse gezielt sind* 5,41,13. प्रत्रा ते इन्द्र मुत्यानुं येमुः etwa *anordnen, aneinanderreihen* 8,21,6. med. *sich richten nach, nachfolgen:* पितॄणां शक्तीरनुयच्छमानाः 1,109,2. अनु कृत्ते वसुधितौ येमाते 4,48,2.

— यत्तर् *anhalten, Einhalt thun; drinnen halten:* यत्तर्यच्छ त्रिधातो वर्म् RV. 10,102,2. यत्तर्यच्छ मघवन्पाहि सोमम् VS. 7,6. TS. 2,2,12,4. यत्तर्यच्छतु मे मनः Āçv. Gṛhj. 3,6,2.

— या 1) *anspannen, aufziehen* (ein Gewebe u. dgl.), *dehnen, ziehen* (eine Linie u. s. w.), *verlängern* RV. 10,130,1. दुन्दुभिम् AV. 5,38,4. बाहू 65,1. 137,3. 9,3,3. मेखलाम् Kāṭu. 24,9. die Zügel Liṭ. 2,8,12. Kāṭ. Çr. 8,3,12. 16,8,7. fgg. — Sūrya 1,286,19. परशिर आयच्छति *ausstrecken* Vop. 23,19. आयच्छति कूपादुद्धुम् *hinaufziehen* P. 1,3,28, Sch. (Bogen und Pfeil) *spannen und anlegen, zielen:* आयच्छेत्तः AV. 5,66,2. प्रतिस्तोमायतां शुभम् 11,1,1. Kāṭu. 34,18. यद्येपुरायतानस्ता Çat. Br. 3,7,3,2. Mṛcch. Up. 2,2,3. धनुरायम्य MBu. 1,148. 6460. 7040. 3,2665. R. 1,66,9. 3,50,9. आयतमुक्तेन शरेण *so v. a. von einem gespannten Bogen abgeschossen* R. 5,31,30. शरैः पूर्णायतोत्सृष्टैः 7,7,7. Harīv. 13413. तां तु शक्तिम् — दोर्भ्यामायम्य — क्षिप्तेप *so v. a. zusammenhaltend* MBu. 7,4038. आयम्योत्तमार्यसीत् *so v. a. zog zurück* (उपसंहृतवान्, संहृतवान् Comm.) Bhaṭṭ. 6,119. *hinziehen*, den Ton Sāṅkhây. Br. 2,2. *anhalten*, den Athem Gobh. 4,3,5. Kauç. 47. M. 3,217. 11,149. Jiǵñ. 1,24. Bhāg. P. 3,14,31. *zügeln:* आत्मनात्मानम् 10,49,28. med. *eingespannt sein* (am Wagen) RV. 3,6,8. *sich strecken* P. 1,3,28. Vop. 23,17. Spr. 3759. *ausstrecken* (ein Glied des eigenen Körpers) P. 1,3,28, Vārtt. Vop. 23,17. आयच्छते पाणिम् P., Sch. पश्चाद्धावति रुरिणः स्वाङ्गमायच्छमानः ad Çiç. 78. पदान्यायच्छते *macht grosse Schritte* Spr. 3762. वस्त्रमायच्छते *wohl lang herabhängen lassen* P. 1,3,78, Sch. *ausbreiten, an den Tag legen* (सूचने) Vop. 23,19. दिव्यनारीभिः — अभिमायच्छमानाभिः — यनुत्तमाम् Bhaṭṭ. 8,46. = स्वीकुर्वाणाभिः Comm. दक्षिणापूर्वमयतीं कर्षूं खात्वा *nach Südost gezogen, — sich ausdehnend* Kāṭ. Çr. 25,8,3. वेदिं विद्ध्यात्यरूमो प्राङायताम् Kauç. 137. उदगायता, प्रागायता (लेखा) Āçv. Gṛhj. 1,3,1. Bhāg. P. 5,16,5. सव्यायतं कृत्वा वेषं विपरिवर्त्य च *nach links geschoben* (Nīlak. trennt स व्या° und erklärt व्यायतं व्यापारं यत्नं कृत्वा) MBu. 4,809. आयत *gestreckt, gedehnt, lang* AK. 3,2,18. H. 784. 1428. Hālā. 4,66. आयतलोचना MBu. 3,2217. 2288. 2466. 2674. 3000. R. 1,9,21. 2,24,29. 59,16. Spr. 568. 1231. Brahma-P. in LA. (II) 55,3. °पोत्रमण्डलैः Ṛt. 1,17. — MBu. 1,1779. R. 1,3,7. 2,80,9. R. Gorr. 2,8,42. 4,40,55. Suçr. 1,13,10. 123,1. Ragh. 9,39. Colebr. Alg. 74. Spr. 997. Kim. Nītis. 16,4. 16. Kathās. 26,259. 54,32. Bhāg. P. 4,6,32. °चतुरस्र *länglich viereckig* Āçv. Gṛhj. 2,8,10. Colebr. Alg. 271. °ननचतुरस्र 293. °दीर्घचतुरस्र, °समलम्ब 58. आयतार्घ 308. *lang* (in der Zeit) Suçr. 1,242,7. 8. °क्षेत्र Spr. 4609. तृष्णा AK. 3,4,26,218. Ragh. 19,20. Bhāg. P. 2,7,33. मर्त्य कुर्यादनायतम् Kathās. 34,199. अटवीवासविधेगविधमायतम् (वृत्तान्तम्) 103,129. आयतम् *angespannt* so v. a. *gewaltsam, plötzlich* Çat. Br. 14,7,1,15. — 2) *herbeiziehen, — bringen; hinbringen:* या वो यच्छतु कृतिं न सूर्यम् RV. 1,130,2. 8,4,2. या ते वत्सो मनो यमत् 11,7. 21,4. 32,23. 34,2. 4,22,8. 32,15. 6,23,5. स नः सोमो देवेषु यमत् 9,44,5. अभित्त्वा यमत् 8,81,3. गीर्भायतम् *hingezogen zu, gerichtet auf* 7. — 3) so v. a. यम् 3): शर्मवदास्मा अयांसि (v. l. आयांसि) *ich habe mich wie ein Schirm vor ihn ausgebreitet, stehe wie ein Schild vor ihm* Ait. Br. 2,16. — 4) आयत m. v. l. für आयति *Zukunft* AK. 2,8,4,29. — Vgl. अनायत, आयति, आयत्तर् fgg., आयाम, कृत्स्नायत, पदायत, पदायता. — caus. 1) *hinbringen zu, versetzen in:* या नः सुम्नेषु यामय (यमय Padap.) RV. 8,3,2. प्रिया देवेषु यामयति (यम° Padap.) 162,16. — 2) *strecken* Suçr. 2,28,16. — 3) *entfalten, an den Tag legen:* आयामितमत्यवीर्य (नारायण) MBu. 12,2402. — 4) med. caus. zu आयच्छते P. 1,3,89. Vop. 23,58.

— उद्या 1) *dehnen, hinziehen*, den Ton Ait. Br. 3,3. *ziehen*, beim Saugen: ऊधः Kāṭu. 10,11. — 2) med. *anziehen, an sich nehmen:* अर्वे सप्राडुभि युध्यमभि सत्र या यच्छस्व (*verliehe* Comm.) VS. 3,36. — 3) *zielen auf:* मा नं इन्द्राभ्याङ् दिशः सूरो अक्रुधा यमन् RV. 8,81,21. तमभ्यायत्याविध्यत् *er zielte auf ihn und traf* Ait. Br. 3,33. Çat. Br. 1,7,4,1. 4,3. 3,3,4,10. — 4) verwechselt mit अभ्यागम् in der Stelle: स प्रत्रापतिं पितरमभ्यायच्छत् (= प्रत्यागतवान् Comm.) तमब्रवीत् कया माभ्यायच्छसीति Çāṅkh. Br. 6,2. — Vgl. अभ्यायमेन्य.

— उद्या 1) *heraushehen, — holen:* सूर्यस्त्वा मृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः AV. 5,30,15. — 2) med. in der Bed. von गन्धन P. 1,2,15, Sch.

— उपा *zeigen, an den Tag legen:* नोपायच्छे (oder zu उप) भयम् Bhaṭṭ. 7,101.

— निया 1) *ausstrecken:* निरायतपूर्वकाय Çiç. 8. — 2) *herauskriegen:* निरायत्याश्वस्य शिश्नम् Çat. Br. 13,5,2,2. AV. 20,133,3.

— पर्या, पर्यायत (= परि + या°) adj. *überaus lang* R. 5,28,14.

— व्या 1) act. *auseinanderziehen, — zerren:* चर्म Liṭ. 4,3,7. med. *sich um Etwas* (loc.) *zerren, — abmühen, — streiten, kämpfen* TBr. 1,2,6,6. चर्मकर्ते व्यायच्छेते 7,5,6,3. 2,1,6,2. TS. 3,1,2,2. राष्ट्रे व्यायच्छन्ते ये सैषामं संगत्ति 4,6,3. 7,5,6,2. 1,5,5. Çat. Br. 13,1,6,3. Kāṭ. Çr. 13,3,7. MBu. 1,7018. इदं मेयः परमं मन्यमाना व्यायच्छन्ते मुनयः 3,12740. 5,825. अन्योऽन्यस्पर्धया — व्यायच्छन्त महारथाः 6,1661. व्यायच्छमाने गदया दितुं सर्वासु 6,2773. 16,90. R. 6,91,23. Spr. 3058. Bhaṭṭ. 6,119. Saddh. P. 4,27, *a. b* (°यमित्वा). auch act. MBu. 4,1960 (wo mit der ed. Bomb. व्यायच्छतस्तव zu lesen ist). Harīv. 8112. वां व्यायच्छतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धनम् (so ist zu lesen) Mṛcch. 102,7. स्तोपु व्यायच्छन्नः *schützern* Suçr. 1,328,7. — 2) व्यायत *a) auseinandergerissen, getrennt:*

ग्र° RV. Prāt. 14, 19. = अग्रयणभूत Comm. — b) *lang* AK. 3, 2, 62. H. an. 3, 294. Med. t. 151. पुगव्यायतबाहु Raghuv. 3, 34. वातव्यायतपातिनः (तुरगाः) *weit laufend* Spr. 3155. °पातम् adv. Kumāras. 5, 54. गदाव्यायतसंप्रहारी *aus der Entfernung kämpfend* Raghuv. 7, 49. — c) *kräftig*, von Personen R. 1, 67, 4 (69, 4 Gorr.). Kām. Nītis. 18, 31. व्यायतत्व (गात्रस्य) Çiç. 37. व्यायत = दृढ Trik. 3, 3, 186. H. an. Med. = अतिशय *über das gewöhnliche Maass hinausgehend, gesteigert* H. an. Med. व्यायतोत्थम Harīv. 4211. व्यायतम् *überaus, in hohem Grade* R. 5, 5, 27. — d) = व्याप्त *beschäftigt* H. an. Med. — Vgl. व्यायाम. — caus. *sich abmühen:* व्यायाम्य (व्यायम्य?) M. 7, 216.

— समा *anziehen* (die Stränge): उप्या इव प्रवक्ल्तः समायमुः RV. 10, 94, 6. *zusammenziehen:* संतरो मेखलां समायच्छते TS. 6, 2, 2, 7. समयनीव वा एतन्मेतत्समायच्छन् Çat. Br. 3, 3, 2, 19. समायत in der Stelle द्वियोत्रसमायता: MBu. 1, 2164 ist wohl in सम + आ° *gleich lang, so lang wie* zu zerlegen.

— अभिसमा *befestigen an:* यथा शालायै पर्तसौ मध्यमं वंशमभि समायच्छति TBr. 1, 2, 2, 1.

— उद् 1) *erheben, in die Höhe strecken* (die Arme, Waffen u. s. w.) RV. 5, 32, 7. 6, 71, 1. 5. AV. 4, 24, 6. 12, 3, 18. वज्रमसुरेभ्य उदयच्छत् Ait. Br. 2, 31. 4, 2. 18. 2, 1. वज्रमुद्यंस्तं नाशक्नोत् TS. 2, 4, 12, 2. Kāṭh. 36, 8. Çat. Br. 1, 1, 4, 17. Bhāg. P. 8, 11, 2. 27. परस्य दण्डं नोद्यच्छेत् M. 4, 164. 8, 280. दण्डकाष्ठमुद्यम्य Çiç. 81, 15. धनुरुद्यम्य Bhāg. 1, 20. R. Gorr. 1, 29, 5. 68, 17. 69, 8. चक्रम् MBu. 1, 8225. खड्गम् Spr. 1348. Prab. 55, 8. असिम् Bhatt. 4, 31. मरुत्शक्तिम् 17, 92. लगुडम् Pañcat. 249, 7. वृत्तम् R. 4, 9, 26. स्रुक्म् Çat. Br. 1, 2, 5, 20. सुवम् R. 1, 60, 12 (62, 12 Gorr.). शूलभाजनम् 3, 4, 69. पाणी: Lāṭ. 1, 9, 11. 10, 15, 15. बाहू, बाहून् R. 1, 28, 12. 2, 47, 12. Çiç. 7, 7. भुजौ, भुजम् R. 2, 42, 30 (41, 26 Gorr.). 50, 4. Rāǵa-Tar. 4, 296. कुन्तम् Çiç. 6, 18. पाणिम् M. 8, 2. 230. दक्षिणं दोः Raghuv. 15, 23. लाङ्गूलम् Bhāg. P. 4, 16, 23. med. (कर्त्रभिप्राये क्रियाफले) P. 1, 3, 75. Vop. 23, 58. भारमुद्यच्छते P., Sch. उद्यत *erhoben* AK. 3, 2, 39. वज्र Kaṭhop. 6, 2. शस्त्र M. 5, 98. Spr. 467. ब्रह्मदण्ड: कोद्यत: R. 1, 56, 19. °दण्ड M. 7, 102. fg. Daçak. in Buhv. Chr. 193, 16. उद्यतास्त्र MBu. 7, 8210 (नक्षुद्यतास्त्रं ed. Bomb. st. न मुद्यतास्त्रं der ed. Calc.). R. 1, 56, 3. उद्यतायुध MBu. 3, 15777. R. 2, 97, 21. Kathās. 29, 117. 52, 119. उद्यतायुधनिस्त्रिंश Harīv. 12572. देवान्प्रत्युद्यतायुधा: Bhāg. P. 8, 10, 3. उद्यतासि 1, 17, 25. Kathās. 23, 107. °गद 50, 82. उद्यतेषु MBu. 5, 5042. 7077. 7359. उद्यतैकनुन्नयष्टि Raghuv. 11, 17. उद्यताञ्जलि R. 2, 13, 14. 3, 44, 9. Bhāg. P. 3, 14, 1. प्रोत्तुङ्गपीनस्तनदेहनोद्यतचक्रवाकमिथुना (नदी) Spr. 477. Häufig ist उद्यत im comp. verstellt: दीप्तप्रकरणोद्यत (सैन्य) = उद्यतदीप्तप्रकरण Harīv. 10485. दैत्यै: सर्वायुधोद्यतै: 12573. R. 7, 27, 25. 28, 34. नानायुधोद्यत Kathās. 46, 199. युद्धं नानाप्रकरणोद्यतम् R. 7, 27, 26. शङ्खचक्रोद्यतकर so v. a. *eine Muschel und einen Discus in der Hand haltend* Harīv. 12570. 5814. 10804. नानायुधोद्यतकर 13111. नानाशस्त्रोद्यतकर 11009 (S. 790). पाशोद्यतकर 14293. पद्मोद्यतकर 14028. घर्घोद्यतकर 6300. वज्रोद्यतकर Çāṅk. zu Kaṭhop. 6, 2. विविधोद्यतायुध = उद्यतविविधायुध Bhāg. P. 4, 5, 2. Vgl. शस्त्युद्यत, पाशागृहीतकस्त Harīv. 12744 und मांसपिण्डगृहीतवदना Pañcat. 226, 20. — 2) *aufrichten, aufstellen; erhöhen, höherlegen; hinaufbringen:* कूर्दि: RV. 4, 53, 1. शालदण्डम् AV. 8, 8, 12. स प्र पस्पुर्वीनात्प्र साम् तमुद्गुर्दयच्छत् TS. 6, 1, 2, 4. स्रुवमाग्नीध्रमुद्यच्छति Çat. Br. 5, 4, 3, 6. 9. *durch eine Unterlage erhöhen und stützen*, von den Vorgängen des Heraufhebens auf dem Opferheerde, namentlich dem Anbringen der sog. उद्यमनी (s. u. d. W.) und dgl. TBr. 1, 2, 1, 21. 3, 8, 11, 1. TS. 5, 1, 10, 5. Çāṅkh. Çr. 5, 10, 12. इध्मम् Çat. Br. 3, 5, 2, 2. 4, 6, 8, 7. 11, 6, 2, 4. 14, 9, 3, 10. Kāṭy. Çr. 12, 2, 1. 18, 3, 16. पश्चादुद्यततर *hinten höher* Kaṭy. 137. — 3) *Jmd Etwas hinhalten, entragen, darbieten, anbieten:* उद्यम्य MBu. 1, 1033. Bhāg. P. 10, 56, 43. Mārk. P. 16, 77. उद्यत *dargeboten, angeboten* MBu. 1, 1054. 1333. R. 1, 52, 14 (53, 14 Gorr.). 73, 38. R. Gorr. 1, 13, 14. 30, 8. 10. 3, 63, 18. 4, 9, 2. Spr. 3788. Bhāg. P. 3, 22, 13. ततो ऽहं तत्र रामाय पित्रा — भार्यार्थमुद्यता दातुम् R. 3, 4, 49. — 4) Opfergaben, Anrufungen u. s. w. *erheben, darbringen:* घृताचीं: RV. 7, 43, 2. 10, 8, 2. AV. 5, 11, 9. ब्रह्म RV. 1, 80, 9. कव्यानि 8, 63, 2. 6, 68, 1. 9, 86, 46. 10, 30, 6. सवनम् TS. 6, 5, 2, 2. — 5) die Stimme *erheben* RV. 8, 90, 7. *in die Höhe tragen, hinaufbefördern:* (घण्टा:) उद्वं नो यंसते गिरम् 1, 143, 7. *erheben* so v. a. *aufgehen lassen* (Strahlen, Licht): उद्व्य शोचिषो दिवो ज्योतिरयंस्त सूर्य: 8, 23, 19. 7, 38, 1. 10, 139, 1. — 6) *Etwas* (acc.) *auf sich nehmen, sich aufladen, unternehmen, beginnen:* वोढ्योः भवता चैव (चैव ed. Bomb. und Gorr.) भारो यश्चार्थमुद्यत: (यच्चस्य चोद्यत: ed. Bomb.) R. 1, 12, 4 (13, 4 ed. Bomb.). 2, 22, 4. घटिषेके नृपोद्यते 26, 22. कार्यं हि मरुदुद्यतम् R. Gorr. 1, 10, 22. उद्यच्छति वेदम् *er macht sich an das Studium des* Veda P. 1, 3, 78, Sch. Vop. 23, 58. med. intrans. *sich anschicken, sich rüsten, an Etwas gehen:* उद्यच्छमाना गमनाय Raghuv. 16, 29. नित्यमुद्यच्छमानाभि: स्त्रीभि: सेवितकर्मसु Bhatt. 8, 47. auch act.: स्वर्गार्घं नोद्यमिष्यन्ति दृष्ट्वा स्वर्गफलं नृपा: *werden sich nicht bemühen um* Harīv. 7271. त्यक्त्वा भयं विषादं च उद्यच्छेदुडुपानाम: *gehe an's Werk* Vorz. d. Oxf. H. 51, b, 38. उद्यम्योद्यम्य (उद्म्योद्म्य ed. Calc., उद्यम्य = उत्प्लुत्य Nīlak.) मे दम्यो विषमेणैव गच्छत: so v. a. *mit der grössten Anstrengung* MBu. 12, 6396. उद्यत (वर्तमाने) Kāç. zu P. 3, 2, 188. *sich anschickend, gerüstet zu, im Begriff stehend zu, begriffen in, bedacht auf, entschlossen zu, bereit zu, beschäftigt mit, sich befleissigend;* die Ergänzung a) im infin. Bhāg. 1, 43. MBu. 1, 1274. 5, 2848. R. Gorr. 2, 27, 7. 3, 56, 24. 4, 17, 37. Mālav. 10, 19. Raghuv. 3, 48. 9, 29. 11, 74. Spr. 4689. Kathās. 3, 40. 12, 139. 20, 158. 24, 147. 60, 171. fg. Rāǵa-Tar. 1, 61. 290. 3, 180. 333. 4, 593. 5, 246. 429. 6, 201. Prab. 10, 7. Bhāg. P. 4, 17, 31. Mārk. P. 15, 47. Pañcat. 1, 3, 58. 5, 33. Pañcat. 108, 10. Hit. 19, 4. 81, 4. — b) im dat.: तस्यैव त्वमनर्थाय किमर्थं चैवमुद्यता R. Gorr. 2, 9, 39. युद्धाय 2, 30, 9. अग्निप्रवेशाय Kathās. 92, 70. लिखितलोद्धरणाय Bhāg. P. 2, 7, 1. मृतये 4, 4, 30. सङ्गरक्षिताय Prāçnottarān. 2 (Monatsber. der Berl. Ak. 1868, S. 98). स्वयंरक्षितायोद्यतं जन्म 5. — c) im loc.: सर्वास्त्रेषु MBu. 1, 4405. कर्मसु AK. 2, 1, 18. H. 353. यायकर्मास्तव्ययकर्मसु Jāṭ. 1, 221. क्रूरकर्मणि Suçr. 1, 106, 1. सर्गकर्मणि Bhāg. P. 6, 4, 49. ज्ञानतत्त्वार्थवेदने R. Gorr. 1, 80, 16. — d) mit घर्मम् verbunden: राज्यप्राप्त्यर्थम् R. Gorr. 2, 18, 11. Rāǵa-Tar. 2, 17. पुत्रदारार्थम् Spr. 4748. — e) im comp. vorangehend: त्रिविक्रमोद्यत Kumāras. 6, 71. पक्षच्छेदोद्यत Raghuv. 4, 40. सुरकार्योद्यत 10, 30. निर्देशकरणोद्यत 11, 4. Spr. 794. 2954, v. l. Kathās. 4, 63. 19, 5. 56. 28, 70. 161. 47, 92. Rāǵa-Tar. 1, 139. 3, 93. 393. 5, 237. 6, 237. Mārk. P. 64, 12. H.

372. — Ohne Ergänzung *frisch an's Werk gehend, ganz bei einer Sache seiend, Etwas angelegentlich betreibend, gerüstet, zu handeln bereit:* कलिनापकृतज्ञानो नलः प्रातिष्ठदुद्यतः MBh. 3,2357. Harîv. 11091 (S. 792). R. 2,27,15. R. Gorr. 1,65,21. 2,16,22. Spr. 471, v. l. Kathâs. 12, 39. 45,39. Râga-Tar. 3,11. Bhâg. P. 3,3,15. 23,3. — 7) *aufrütteln, aufschütteln; auftreiben:* प्र वातो इव दोधत उन्मा पीता यवयंसत ṚV. 10, 119, 2. ब्राह्मणास्त्वा शतक्रत उद्दंशमिव येमिरे 1, 10, 1. यत्यो न योयानुदेयंस्त भुर्वणिः 36,1. AV. 14,1,59. — 8) *zügeln, lenken:* उद्यम्य क्ष्यान् MBh. 5,7235. उद्यम्यात्मानमात्मना 3,302. = उत्तिष्य देक्ष्म् Nîlak. — 9) *droben halten, aufhalten:* वृष्टिम् TBr. 3,3,1,2. TS. 1,3,1,6. — 10) verwechselt mit उद्यम् (vgl. u. यभ्युद्, प्रत्युद्, समुद्, उप und नि): रूप. लोकविनाशाय रविरुद्यन्समुद्यतः (lies उद्गतु°) MBh. 1,1274. उद्यच्छत्तं (d. i. उद्गच्छत्तं) पूर्णचन्द्रम् (उद्यतं पूर्णचन्द्रं mit der neuere Ausg.) Harîv. 8719. उद्यतक्रुध् d. i. उद्गतक्रुध् Râga-Tar. 4, 380. — Vgl. उद्यति, उद्यत्तर् fgg. und उद्याम. — intens. *ausstrecken:* उर्व्यंयमीति सवितेव बाहू ṚV. 1,95,7.

— यभ्युद् partic. यभ्युद्यत 1) *erhoben:* चक्र Harîv. 10804. °बाहुद्वयः 12744. यभ्युद्यतायुध R. 6,36,104. शस्त्र Mṛicch. 171,21. °स्रुच R. Gorr. 2,83,23. कराः *Hände* 3,77,23. प्रसादार्थं मया ते ऽयं शिरस्यभ्युद्यतो ऽञ्जलिः MBh. 1,4764. — 2) *dargeboten, angeboten* M. 4, 247. fg. — 3) *im Begriff stehend zu, gerüstet, bereit, beschäftigt mit, begriffen in;* die Ergänzung im infin. Harîv. 14386. Kumâras. 3,70. Mâlav. 56. Varâh. Bṛ. S. 24,3. im dat.: दिनकारस्वमार्गविचिक्रमिषे 12,6. im loc.: कर्मसु M. 9,302. यभ्युद्यतो (यभ्युद्यातो ed. Calc.) रणे MBh. 6,5217. इलाभ्युद्यतमानसः *dessen Geist mit dem Hier beschäftigt ist, — sich hierher sehnt* R. 5,56,108. im comp. vorangehend: बलिनियमनाभ्युद्यतस्येव विष्णोः Mṛicch. 58. — 4) fehlerhaft für यभ्युद्यत (vgl. u. उद्, प्रत्युद्, समुद्, उप und नि): यभ्युद्यतः (यभिमुखमागत्य सत्कृतः Comm.) *ehrfurchtsvoll bewillkommnet* Bhâg. P. 10,63,31. प्रशमस्थितपूर्वपार्थिवं कुलमभ्युद्यतनूतनेश्वरम् (ऊर्ज्जस्वल st. यभ्युद्यत od. Calc.) *aufgetreten, erschienen* Ragh. 8,15. यभ्युद्यत = विस्मित Taik. 3,3,185.

— उपोद् *aufstellen* mittelst einer Unterlage oder dgl. Âçv. Çr. 5,6, 12. क्षमान् 13. Çâṅkh. Çr. 7,5,9.

— प्रोद् 1) *erheben:* प्रोद्यंसीच्च मुद्गरम् Bhaṭṭ. 13,66. प्रोद्यतयष्टि Pâṇ. Kât. 105,19. die Stimme *erheben:* प्र सोमाय वचो उद्यतम् ṚV. 9,103,1. — 2) प्रोद्यत *im Begriff stehend zu* (infin.) Harîv. 7305. = उत्थित AK. 3,4,24,88.

— प्रत्युद् 1) *darbieten, anbieten:* प्रत्युद्यतार्घेण Bhâg. P. 1,10,26. — 2) *Jmd* (acc.) *das Gleichgewicht halten, auflegen:* तमेकादशिन्या पुरस्तात्प्रत्युद्यच्छति Pâraṇ. Br. 20,2,4. — 3) प्रत्युद्यत fehlerhaft für प्रत्युद्यत (vgl. u. उद्, यभ्युद्, समुद्, उप und नि): पादुके शिरसि न्यस्य राज्ञः प्रत्युद्यतो ऽयत्नम् Bhâg. P. 9,10,35. — Vgl. प्रत्युद्यम fgg. und प्रत्युद्यामिन्.

— समुद् 1) *erheben, aufheben:* समुद्यम्य करावुभौ MBh. 1,6278. 2, 2164. 3,15779. 4,148. 732. 10,624. R. 1,56,2. 2,73,14. 3,8,21. 4,13,2. 15,21. Mâlav. 57. Mârk. P. 77,27. 118,48. 133,20. — 2) *darbieten, anbieten* R. Gorr. 2,37,9. त्वया समुद्यतो दातुम् Mârk. P. 69,31. — 3) *sich zu Etwas* (acc.) *anschicken, beabsichtigen:* गिरं समुद्यतो (= उपस्थितो Nîlak.) मयोच्यमानां शृणु भूय एव च MBh. 3,16787. यस्ते समुद्यतः शापो हितीयः so v. a. *die zweite Verwünschung, welche ich auszusprechen beabsichtigte,* Mârk. P. 112,24. समुद्यत *im Begriff stehend, sich anschickend;* mit infin. R. 1,14,8. R. Gorr. 2,39,34. Kathâs. 65,152. Râga-Tar. 2,89. 97. 152. 3,50. Hit. 113,14, v. l. Bhâg. P. 9,9,23. Pañkat. 1,4,41. 12,66. 15,30. mit dat.: मैथुनाय Bhâg. P. 9,9,37. mit यर्थम्: उद्वाहार्थम् 3,22,14. mit loc. *begriffen in:* रणेश्वरप्रतिष्ठायाम् Râga-Tar. 3,452. mit प्रति *im Begriff stehend auf Jmd loszugehen:* विराटद्रुपदौ वीरौ भीष्मं प्रति समुद्यतौ MBh. 6,5166. ohne Ergänzung *gerüstet, zu handeln bereit* R. 3,1,32. Bhâg. P. 7,8,23. — 4) *zügeln, lenken:* रश्मिभिर्हयान् MBh. 3,756. 2793. 4,1443. — 5) समुद्यत wohl fehlerhaft für समुद्गत (vgl. u. उद्, यभ्युद्, प्रत्युद्, उप, नि) in der Stelle: तस्य तौ तस्मा सर्वौ बाणवृष्टि समुद्यताम् । — वारयामास Harîv. 10764.

— उप 1) *aufstellen* oder *darbieten:* उपो ते अन्धो मद्यमयामि ṚV. 7, 92,1. — 2) *ergreifen, fassen* ṚV. 8,33,21. Çat. Br. 14,4,3,21. Çâṅkh. Çr. 16,17,10. उपं यच्छ प्रूर्वम् AV. 12,3,19. परस्य भार्यामुपयच्छति P. 1, 3,56, Sch. med.: उपायंस्त महात्राणि Bhaṭṭ. 13,21. *annehmen:* कोपात्काशिप्रियैः प्रत्तमुपायंसत नासवम् 8,33. *sich aneignen, sich vertraut machen mit:* शस्त्राण्युपायंसत (pass.) 1,16. — 3) *stützen, als Unterlage einschieben, unterfussen, unterlegen* Çat. Br. 3,5,3,2. 6,3,9. 14,2,3,17. Kâtj. Çr. 4,9,10. 5,4,2. 18,3,16. Karç. 14. 42. fg. — 4) *zum Weibe nehmen, heirathen;* med. P. 1,3,56. उपायत oder उपायंस्त 2,16. Vop. 23,19. 48. नाधात्रोमुपयच्छेत Nir. 3,5. Âçv. Gṛ. 1,5,2. 6,4. fgg. M. 3, 11. MBh. 1,1047. 3765. 3791. 5181. 2,692. 3,13134. Ragh. 14,87. Kumâras. 1,18. Çiç. 65,2. 110,15. Kathâs. 14,69. 15,44. 33,161. 36,49. 42,142. 49,249. 51,52. 156. 67,51. 87. 69,121. 108,117. Bhâg. P. 1,16, 2. 4,1,47. 10,1. 24,11. 30,48. 9,15,7. Mârk. P. 52,14. 63,61. 69,6. 76, 47. Daçak. in Benr. Chr. 188,7. 193,23. Bhaṭṭ. 4,20. 28. 7,101. act. Gorr. 2,1,3. Kathâs. 14,67. — 5) *zeigen, an den Tag legen:* नोपायधं (kann auch zu उपा gezogen werden) भयम् Bhaṭṭ. 7,101. — 6) *freien* (feminam) fälschlich für उपयम् (vgl. u. उद्, यभ्युद्, प्रत्युद्, समुद्, नि): एतास्तिस्रस्तु भार्यार्थे नोपयच्छेत (v. l. नोपयच्छेत) बुद्धिमान् M. 11,172. — Vgl. उपयत्तर्, उपयम fg. und उपयाम.

— नि 1) *anhalten* (den Wagen u. s. w.) *bei Jmd* (loc.), *festhalten; zum Stehen bringen:* रथम् ṚV. 7,74,2. चक्रम् 1,30,19. 4,47,4. 8,35,22. सुते नि यच्छ तुर्वशम् 3,51,11. 10,19,2. मा त्वा केचिन्नि यमन्विं न पाशिनः *einfangen* 3,43,1. 7,69,6. यत्पर्णा न्यधां यविष्याम् 2,38,2. वाचस्पतिर्नि यच्छतु मयि AV. 1,1,2. गोष्ठे 2,26,1. 2. क ईं नि येमे *wer hat sie bei sich festgehalten* ṚV. 10,40,14. med. *sich aufhalten* ṚV. 8,2,26. *bleiben:* तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे 10,56,5. In der klassischen Sprache *zurückhalten, zügeln, bändigen, lenken:* क्ष्योतमान् MBh. 4,1933. Harîv. 6640. रश्मीन् *die Zügel anziehen* MBh. 4,1647. सुतां शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात् *abhalten von* Kumâras. 5,5. धावन्तमुन्मत्तमत्तःकारणवारणम् । बलान्नियमितुम् *gewaltsam zurückhalten* Râga-Tar. 1,251. ये त्वामुत्पथमारूढं न नियच्छन्ति शास्त्रतः R. 3,43,6. 4,17,37. Spr. 4070. यथा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते काले नियच्छति, तथा राज्ञा नियन्तव्याः प्रजाः 2321. वरुणो नियच्छेत् R. 3,43,42. निषेमिरे pass. Bhaṭṭ. 14,89. प्रकृत्या नियताः स्वयं Bhag. 7,20. *die Sinne, den Geist u. s. w. zügeln:* इन्द्रियाणि मनसा

नियम्य 3,7. MBh. 12,3894. शरीरं चैव वाचं च बुद्धीन्द्रियमनांसि च । नियम्य M. 2,193. Maitrâyaṇ. 6,19. Bhâg. P. 2,2,16. नियतेन्द्रिय M. 6,4. 11, 75. 106. 109. MBh. 12,4256. R. 1,7,4. Raghu. 9,18. नियतात्मन् M. 3,188. 6,86. 11,218. R. 1,1,10. 2,28,12. Bhâg. P. 8,16,59. अनियतात्मन् Spr. 1291. — 2) *befestigen —, festbinden an* (loc.): वृत्ते निर्यता गौः ṚV. 10, 27,22. पञ्चनां त्रिंशतं त्वासीन्मूरेषु नियते तदा R. 1,13,33. नियम्य पृष्ठे — इयुधी 2,87,23 (93,27). गले पावत्सा तं पाशं नियच्छति Kathâs. 90,75. केशान्नियम्य (so die ed. Bomb.) *die Haare aufbindend* MBh. 9,3586. नियताञ्जलि (vgl. बद्धाञ्जलि) *die Hände zusammengelegt habend* R. 3,18, 15. वाच्यर्था नियताः सर्वे *verbunden mit, abhängend von* M. 4,256. चन्द्रे लक्ष्मीः प्रभा सूर्ये गतिर्वायौ भुवि क्षमा । इतस्तु नियतं सर्वं त्वयि चानुत्तमं यशः ॥ *alles dieses ist in dir verbunden* R. 2,70,5. Mîrâ. P. 41,22. — 3) *anhalten, unterdrücken, hemmen:* धूमम् Kauç. 18. प्राणौ नियच्छेन्मनसा Bhâg. P. 2,2,15. वाचम् M. 2,185. 4,49. MBh. 3,15689. P. 1,4,76, Sch. नियच्छ क्रोधमात्मनः MBh. 1,6333. न्यगच्छत्कोपमात्मनः 3,2845. नियच्छ मन्युम् Bhâg. P. 7,5,28. तद्दर्शनतोषं नियम्य Kathâs. 33,60. Kâṭhop. 3,13. न कथं च न दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति *unterdrücken so v. a. verläugnen* M. 10,59. MBh. 13,3604. स्वमायया यं मृतो नियच्छतः *schaffend und unterdrückend* d. i. *zu Nichte machend* Bhâg. P. 10,70, 28; vgl. 2,4,6. 6,36. 10,43. सक् वैदेह्या भूत्वा नियतमैथुनः *den fleischlichen Umgang einstellend* R. Gorr. 2,5,4. नियम्यतां विनिर्माणम् Râǵa-Tar. 4,59. *bei sich behalten, versagen:* न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः ṚV. 6,45,23. 7,27,4. 37,3. नाकं दामानं मघवा नि यंसत् 10,42, 8. न ते वज्रो नि यंसते *dein Donnerkeil versage nicht* 1,80,8. *beschränken:* नियताहार *seine Nahrung beschränkend* M. 11,77. Bhag. 4,30. R. 2,24,27. Mîrâ. P. 23,29. नियतभोजन R. 2,109,26. नियताशिन् *mässig essend* Jâtâ. 3,249. श्वमांसनियताहार *seine Nahrung auf Hundefleisch beschränkend, nur Hundefleisch geniessend* R. 1,59,19. नियत *sich beschränkend, ein einziges bestimmtes Ziel verfolgend, nur mit einer Sache beschäftigt, ganz bei einer Sache seiend* M. 2,104. 107. 115. 3,238. 4, 98. 5,158. 6,1. 52. 95. 7,218. 11,111. 128. 217. Jâtâ. 3,12. 249. MBh. 3, 2462. 16695. 16724. 3,7397. 12,4256. R. 2,21,24. 24,27. 56,25. 74,10. 3,13,27. 5,18,11. Spr. 4419. Bhâg. P. 1,17,37. नियतेन मनसा 4,8,51. die Ergänzung im loc.: सत्ये च नियतः सदा MBh. 1,5267. — 4) *festsetzen, bestimmen* Sarvadarçanas. 123,7. इति नियम्यते *so steht es fest* Bhâg. P. 4,26,6. एवं नियम्य Kathâs. 119,64. वचसा नियम्यागमनं पुनः 25,213. नियत *bestimmt, festgestellt, sicher —, fest stehend, constant, regelmässig, unveränderlich* Kâṭy. Ça. 1,1,10. 2,14. 4,2. 5,14. 7,1,27. 10,9,24. 12,1,20. Çâṅkh. Ça. 3,4,2. Gṛihj. 1,3. Kauç. 55. नियतवाचो युक्तयोगे नियतानुपूर्व्या भवति Nir. 1,15. M. 5,44. 8,164. 237. 419. MBh. 5,1159. 1548. Bhag. 3,8. 18,7. 9. Suçr. 1,312,8. Çiç. 179. Megh. 44. Spr. 1297. 1372. Varâh. Bṛih. S. 8,4. Uttararâmâ. 38,19 (52,12). Kap. 1,37. Siddh. 39. fg. Kumârila bei Müller, SL. 227. Bhâsh. 15. Çaṅk. zu Bṛih. Âr. Up. 8. 35. Bhâg. P. 2,2,6. 4,20,7. Matsja-P. bei Muir, ST. 1, 55, N. 49. Schol. zu P. 1,2,54. 4,44. 3,21. Vârtt. 5 und zu Kap. 1,25. आचार° P. 6,2,65, Sch. निसर्ग° Kathâs. 19,28. स्वभाव° Spr. 3093. अष्टषष्युत्तमस्थाननियतैर्नामभिः (क्रूरस्य) Kathâs. 54,215. 55,166. युगान्तनियते काले *so v. a. zur Zeit des Weltendes* R. 4,60,16. °व्रत MBh. 3, 16636. R. 1,62,28. Kathâs. 35,26. नियतानि als Synonym von इन्द्रियाणि Tattvas. 15. अनियत *nicht bestimmt u. s. w.* Varâh. Bṛih. S. 3,5. 11, 15. Schol. zu P. 4,1,131. विधज्ञानियतं वेषमुन्मत्त इव *so v. a. absonderlich, ungewöhnlich* MBh. 3,15416. नियतम् adv. *bestimmt, gewiss, ganz sicher, constant, regelmässig* Hall. 4,25. Bhag. 1,44. R. Gorr. 1,11,15. 32,7. 2,18,15. 3,3,3. 4,23,6. 5,1,83. Ṛit. 6,20. Spr. 1801. 2032. 2380, v. l. 5173. Varâh. Bṛih. S. 103,2. Pâṇḍav. II, 199. Kâm. Nîtis. 3,37. 10, 28. 14,68. 15,38. 18,69. Kathâs. 25,32. Râǵa-Tar. 1,109. 4,270. 5,200. Prab. 8,10. 84,4. Daçak. in Benf. Chr. 189,20. 193,3. Z. d. d. m. G. 14, 574,4. 575,7. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 17. Schol. zu P. 4,4,66. — 5) *festhalten, herbeiziehen; dauernd verleihen, einpflanzen:* वृष्टिम् Çat. Br. 1,8,3,14. TBr. 3,3,6,3. TS. 6,4,6,4. Âpast. Br. 5, 24. अस्मे रयिं नि यंसतम् ṚV. 4,50,10. 7,82,8. न्यस्मिन रुद्रासु कामा यमंसत 10,40,12. मिमित इन्द्रे न्यायमि सोमः 6,34,4. VS. 9,24. AV. 3, 20,8. 4,25,6. 7,24,1. संज्ञानमिन्द्रास्मासु नि यंसतम् 52,1. 115,3. 10,3, 17. Çat. Br. 4,6,9,2. न एवास्मै प्रजा नंस्यता नियंसति TS. 2,1,8,2. 4,3,11,5. को नः कुले निवपनानि नियंसति *regelmässig darbringen* Çiç. 152. — 6) *über Jmd halten* (vgl. u. simpl. 3): शर्म AV. 7,6,4. 12,3,8. — 7) *nach unten kehren* (die Hand) TS. 2,6,8,4. — 8) in der Gramm. *niedrig halten im Ton so v. a. mit dem* Anudâtta *sprechen* ṚV. Prâtiç. 3,9. 12. 11,25. — 9) नियत heisst *der* Samâdhi von यम् *vor Tönenden* ṚV. Prâtiç. 4,8. 9. — 10) नियच्छति fehlerhaft für निगच्छति (vgl. u. उद्, सम्युद्, प्रत्युद्, समुद् und उप): मोक्षमार्गं नियच्छति Jâtâ. 3, 115. भावो भावं नियच्छति MBh. 13,1878; vgl. u. भाव 3). Eine Menge anderer Belege findet man in den Nachträgen u. गम् mit नि, woselbst aber die Stelle MBh. 13,2604 zu streichen ist, da hier नियच्छति richtig ist; vgl. oben u. 2). — Vgl. अनियत, नियति fgg., नियम fg., नियम्य, नियामक fgg. — caus. 1) *zurückhalten, festhalten, anhalten, zügeln, bändigen, fesseln:* नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्मदण्डः Çiç. 105. Kâm. Nîtis. 2,44. Spr. 440. Çaṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 243. तेन हि नियम्यसे सर्वे 241. 253. Çiç. 77. यथा बलिर्नियमितः Harîv. 9898. माद्यं जन्म ध्रुवस्य धमति नियमितं यत्र तेजस्वि चक्रम् *an den gekettet* Spr. 936. 641. 711. 1994. भगवान् — धर्मार्थयशःप्रज्ञानन्दामृतावरोधेन गृहेषु लोकं न्यायमयत् *fesselte sie an's Haus* Bhâg. P. 5,4,13. क्रियानियमित *durch Geschäfte zurückgehalten* MBh. 13,3014. दीर्घघसी (वाहाः) नियमिताः पटमण्डपेषु *angebunden* Raghu. 5,73. श्रवणनियमित *am Ohr befestigt, an's Ohr gebunden* Çiç. 7,56. अस्तर्नाडीनियमितमरुत् *eingeschlossen in* Prab. 1,10. — 2) *hemmen, unterdrücken:* नियमितप्राण Vikr. 1. Spr. 784. *lindern:* क्षणादुमैर्नियमितार्कमयूखतापः (पन्थाः) Çiç. 86. नियमितगेहेहेकवृत्तिर्गमः Raghu. 17,61. नियमितपरिखेदा तच्छिरश्चन्द्रपादैः Kumâras. 1,61. — 3) *bestimmen:* वाल्याणदेव्यसौ । तस्मै नियमिता दातुं निष्पुत्रेण सता मया Râǵa-Tar. 4,461. गते नियमिते काले Pâṇḍav. 1,13,1. *beschränken:* पूर्वोक्तं फलाभिलाषनिषेधं नियमयति Kull. zu M. 2,6.

— परिणि P. 3,4,17, Sch. — प्रणि ebend. und 1,1,20, Sch.

— प्रतिनि, partic. °यत *für jeden einzelnen Fall besonders bestimmt, je anders bestimmt, je ein anderer* Spr. 1431. Daçak. in Benf. Chr. 187, 22. Kull. zu M. 1,118. 2,237. 3,41. 11,39. fgg. S. 359. Z. 13. fg. Kusum. 9,16. 18,20. Sarvadarçanas. 131,14. fg. 146,16. 177,4. Müller, SL.

170. — Vgl. प्रतिनियम.

— विनि 1) *zügeln, bändigen, im Zaum halten* M. 9,219. मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य Bhag. 6,24. विनियतं चित्तम् 18. विनियतचेतस् Mārk. P. 104,35. — 2) *zurückziehen, einziehen:* यदा कूर्म इवाङ्गानि प्रत्याहार्ये विनियच्छति । एवमेवेन्द्रियग्रामं बुद्धिः सम्पन्ना निगच्छति ॥ MBh. 12,8987. — 3) *hemmen, unterdrücken, von sich fern halten:* प्रमोदं विनियच्छति MBh. 13,1012; vgl. jedoch 14,1086. — 4) *beschränken:* विनियताहार *mässige Nahrung zu sich nehmend* R. 3,6,7. — 5) विनियतम् Bhāg. P. 1,15,28 bei Burnouf wohl nur Druckfehler für विनयिनम्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. विनियम.

— संनि *festhalten, anziehen:* संयोक्तुम् *die Zügel* MBh. 7,8130. *Jmd zurückhalten* 14,225. *zügeln, bändigen, im Zaum halten:* इन्द्रियाणि Spr. 3748. M. 2,96. 175. Bhag. 12,4. MBh. 13,535. धैर्यान्मनः संनियम्य Hariv. 6742. संनियम्यात्मनात्मानम् Bhāg. P. 4,8,24. *unterdrücken:* रोगान् Suçr. 2,371,13. वेगं कूर्मक्रोधयोः Spr. 3160. क्रोधम् R. 5,24,3. 6,7,14. मन्युम् Bhāg. P. 4,18,3. वेदनाम् MBh. 6,3816. चिरसंनियतं वाष्पम् R. 2,30,23. *unterdrücken* so v. a. *zu Nichte machen* (Gegens. सृज्) Bhāg. P. 2,10,43; vgl. 2,4,6. 6,28. 10,70,38. — Vgl. संनियच्छन् fgg.

— परि *zielen, schiessen:* परि यद्वज्रेण सीमयच्छत् *nachdem er mit dem Donnerkeile geschossen hat* RV. 1,61,11. — caus. *ministrare:* परियमयति (परिगमयति?) ब्राह्मणम् Sāyaṇa nach West.

— प्र 1) *strecken, vorstrecken:* प्रयता शफ्यैः RV. 1,166,1. बाहू 190,3. हस्त Ait. Br. 3,31. प्रयताञ्जलि R. 3,68,22. प्रयत *langgestreckt:* इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थम् RV. 1,154,3. *weitreichend:* दुन्दुभेर्वाक् AV. 5,20,5. 13,2,31. — 2) *über Jmd halten:* प्र नो यच्छतादृवृकं कुदिः RV. 1,48,15. 8,9,1; vgl. u. simpl. 3). — 3) *darreichen, anbieten; darbringen, geben, übergeben, dahingeben, verleihen;* mit acc. der Sache und dat., gen. oder loc. der Person. शग्धि पूर्धि प्र यंसि च RV. 1,42,9. 61,2. शतमश्वान्प्रयतान्सुभ्य आदम् 126,2. 3,1,22. प्रयतं हस्तादोतुर्युवम् 3,35,10. स्वधाभिर्यत्तं प्रयतं जुषेताम् TBr. 3,1,4,6. RV. 3,36,2. 9. 10. रायः 4,2,20. मघानि 5,30,12. 36,4. 8,17,10. घृता कुवीपि प्रयतानि वर्धिषे *auf die Streu gesetzt* 10,13,11. AV. 8,8,10. 12,3,21. 5,57. Ait. Br. 1,4. व्रतम् 3,40. Çat. Br. 1,3,3,2. स्तनम् 14,9,4,28. इन्द्रो यतीन्सालावृकेभ्यः प्रायच्छत् Çāṅkh. Çr. 14,50,2. Kaush. Up. 3,1. सन्नतान् TS. 2,2,11,3. यस्मिन् Kāṭy. Çr. 6,4,13. Çāṅkh. Gṛhj. 2,12. Maitrâyaṇ. 6,33. P. 4,4,30. fg. M. 3,249. 4,192. 234. 11,15. 25. MBh. 1,5704. 2,1336 (करान् *Tribut darbringen*). 3,8544. 12018. 12277. 5,633. 13,6699 (mit der ed. Bomb. आसनार्हस्य zu lesen). Bhag. 9,26. R. 2,20,29. 30,43. 32,8. 39,16. 55, 27. 98,18. 112,22. R. Gorr. 2,124,13. 3,63,7. 4,24,23. 31,20. Mṛicch. 103,10. Çiç. 75,14. Vikr. 96. Spr. 1112. 3970. 4046. Varāh. Bṛh. S. 12, 13. Kām. Nītis. 17,21. fg. Kathās. 13,185. 19,88. 23,18. 35,25. 39,112. 54,158. Rāja-Tar. 4,191. 257. Daçak. in Benf. Chr. 196,11. Bhāg. P. 4, 1,20. Mārk. P. 32,18. 63,24. Pañcat. 96,20. Hit. 63,15. mod. M. 3,222. Hariv. 10263. R. Gorr. 2,123,21. Pañcat. IV, 27. मधुसर्पिर्युतं लेहं प्रयच्छेत् Suçr. 1,101,18. गृहीतमूल्यं यः पण्यं क्रेतुर्नैव प्रयच्छति *abliefern* Jāgñ. 2,254. स्वशिरो मे प्रयच्छ *hergeben* Kathās. 41,37. शरीरम् Pañcat. 88,14. आत्मनो जीवितम् 70,3. तस्मान्धर्वविवाहेनात्मानं प्रयच्छ 45,6. वेदम् *übergeben* so v. a. *lehren* Jāgñ. 1,34. विषम् *Jmd Gift geben* Pañcat. 34,16. यम्: *geben, bringen* (vom Regenbogen) Varāh. Bṛh. S. 35,2. फलम् *verleihen, bringen* Bhāg. P. 5,6,9. Mārk. P. 18,48. द्विगुणं लाभम् Varāh. Bṛh. S. 42,9. निद्राम् Sin. D. 57,7. कामान् MBh. 1,6657. तृप्तिम् 8084. R. 1,62,11. भोगं मोक्षं च Kathās. 52,16. पीडाम् Varāh. Bṛh. S. 53,58. भयम् Spr. 802. MBh. 5,1226 (wo die ed. Bomb. richtig प्रयच्छसि liest). अभयम् Bhāg. P. 3,5,42. अभयवाचम् Hit. ed. Jones. 1234. सत्क्रियाम् Spr. 2513. मानमात्रम् 2612. पुष्टिम् 4748. पराभवम् 2425. अनिष्टम् Kathās. 32,92. अनुज्ञाम् 53,154. MBh. 1,5919. आज्ञाम् Bhaṭṭ. 17,27. शापम् *einen Fluch über Jmd* (gen.) *aussprechen* Kathās. 41,23. Mārk. P. 74,30. मम युद्धं प्रयच्छ so v. a. *kämpfe mit mir* R. 4,9,38. 7,18,7. Hariv. 8364 (mod.). *wiedergeben* M. 8,181. MBh. 3,15131. Bhāg. P. 9,14,3. सुकृतं न (so ist wohl zu lesen) प्रयच्छन्ति यावज्जन्म कृतं नराः *eine Wohlthat erwidern* Mārk. P. 14,72. ऋणम् *eine Schuld bezahlen* M. 8,138. विक्रयेण *verkaufen* Rāja-Tar. 4,397. कैकेयेषु च दूतान्स मातुलाय प्रयच्छति *absenden* R. 6,82,110. कृत्वा पुरुषसारार्थं प्रकाश्य वृद्धौ प्रयच्छति so v. a. *vorführen* Siṃhās. 36. सख्या वक्त्रमनिं प्रयच्छति परं पर्यमुणो लोचने *richten auf* Spr. 1425. — 4) *in die Ehe geben*, vom Vater, der die Tochter verheirathet: प्रजापतिः सोमाय दुहितरं प्रायच्छत् Ait. Br. 4,7. Âçv. Gṛhj. 1,5,2. Çāṅkha in Z. f. vgl. Spr. 1,442. M. 8,224. 9,71. 89. R. 1,8,16. Kathās. 43,196. Bhāg. P. 4,1,11. Mārk. P. 14,68. — 5) प्रयत *eine dem Ernst des Augenblicks entsprechende Stimmung und Haltung zeigend, innerlich und äusserlich zu einer ernsten Handlung gehörig vorbereitet;* = पवित्र, पूत AK. 2,7,44. = अनुच्छिष्ट Halāy. 2,247. = शुचि, यतिनम्, पत्नीवत्, प्रयतयुक्त, धीर, नियमतत्पर Comm. य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद्ब्राह्मणेषु हि । प्रयतः Kāṭhop. 3,17. VS. Prāt. 1,20. M. 2,183. 185. 232. 3,216. 226. 228. 4,49. 5,86. 145. 8,238. 11,238. MBh. 3,3010. 11931. 5,426 (प्रयता च mit der ed. Bomb. zu lesen). 12,9058. 13,382 (प्रयताः mit der ed. Bomb. zu lesen). 3669. 7101. R. 1,2,27. 50,16. 2, 31,19. 52,83. 104,28. R. Gorr. 1,12,27. 27,9. 35,39. 2,17,6. 98,21. 4, 27,11. 5,93,2. 7,83,8. Kumāras. 1,59. 3,16. Raghu. 1,35. 90. 95. 5,28. 8,11. 13,70. Varāh. Bṛh. S. 46,64. 48,19. 88,40. Bhāg. P. 1,3,29. 2,2, 14. 5,7. 4,7,25. 8,71. 12,47. 5,23,3. 6,15,27. 8,4,24. 16,62. Mārk. P. 51,31. 96,12. सर्वकर्मसु MBh. 13,7100. ऋणे 3,12237. यज्ञदीक्षा° Raghu. 3,44. 65. यज्ञभृथ° 9,18. यज्ञियेक° 14,82. याचार° Vikr. 43. यत्प्रपत M. 5,142. 11,153. R. 3,42,3. Spr. 4216. Varāh. Bṛh. S. 50,6. Kathās. 33, 68. Bhāg. P. 6,18,49. प्रयतेनान्तरात्मना MBh. 2,428. प्रयतात्मन् M. 4, 145. fg. R. 4,8,39. Spr. 3323. Bhāg. P. 7,10,23. प्रयतात्मवत् R. ed. Bomb. 6,106,28. 7,3,22. प्रयतमानस MBh. 3,3001. प्रयते देशे *an einem reinen, einer heiligen Handlung entsprechenden Orte* R. 6,96,7. st. प्रयतवाग्भूत्वा Hariv. 12285 liest die neuere Ausg. प्रयतवान्भूत्वा. — Vgl. प्रयत, प्रयति, प्रयतृ, प्रयान.

— अतिप्र *hinüberreichen, weitergeben* TS. 2,4,12,7. TBr. 1,1,3,9. 2,3,5.

— अनुप्र *reichen, geben* TS. 2,2,4,3.

— आप्र *darreichen:* आप्रयच्छ (आ प्र यच्छ VS. und TS.) दक्षिणादोत सव्यात् AV. 7,26,3.

— उपप्र *dazu reichen* Çat. Br. 5,4,5,13.

— प्रतिप्र *wieder ausliefern, zurückgeben; weitergeben* TS. 6,5,6,3. 6,4. Âçv. Çr. 5,12,13. Gṛhj. 1,8,9. Liṭ. 5,2,7. Daçak. in Benf. Chr. 193,14.

— संप्र (zusammen) übergeben, hingeben, darbringen, geben, verleihen RV. 10,98,11. AV. 10,5,45. Kaush. Up. 2,13. Ait. Br. 2,7.41. प्रजापतिर्यज्ञं देवेभ्यः संप्रायच्छत् 5,32. Çat. Br. 1,5,2,10. Çiñkh. Gṛhy. 2,10. Nir. 2,4. प्रातःसवनम् Kaush. Up. 2,24,6. श्राद्धम् Jiḱ. 1,366. यो ऽसाधुभ्यो ऽर्थमादाय साधुभ्यः संप्रयच्छति M. 11,29. MBh. 1,8087. 3,14024. 4,132. 12,4010. (घमृतं st. यनृतं mit der ed. Bomb. zu lesen). 13,676. R. 2,7,7. R. Gorr. 2,109,23. Spr. 4895. Varāh. Bṛh. S. 90,11. Mārk. P. 18,49. घर्धुदेन गवा ब्रह्मन्मम राज्ञेन वा पुनः । नन्दिनीं संप्रयच्छस्व abtreten für MBh. 1,6664. (eine Tochter) in die Ehe geben 3,16661 (= Siv. 2,4 mit falscher Lesart). R. Gorr. 1,74,6. wiedergeben 6,6,13. med. sich gegenseitig darreichen Çat. Br. 5,4,4,19. कुमारं मातापितरौ त्रिः संप्रयच्छेते Kātj. 54. mit instr. der Person (st. dat. oder gen.) und acc. der Sache Jmd Etwas geben Bhaṭṭ. 8,32; vgl. P. 1,3,55.

— प्रति 1) Jmd das Gleichgewicht halten, aufwiegen: सहस्रं वै प्रति पुरुषः पशूनां पंच्छति TS. 5,2,9,2; vgl. u. प्रत्यृच्. — 2) dauernd verleihen: यथा द्यौः प्रत्यस्मभ्यं पयसि त्मनमूर्जं न विश्वध तार्ष्ट्ये RV. 1,63,8. wiedergeben Bhāg. P. 3,1,11. 9,6,19.

— वि 1) aufrichten, ausbreiten: शर्म RV. 8,31,5. 1,83,12. 5,55,9. 8,47,3. AV. 1,20,3. छर्दिः RV. 8,27,20. 42,2. वज्रम् 1,189,6. — 2) ausspreizen: वि सक्थानि नेरा यमुः RV. 5,61,3. ausgreifen (von Rossen im Lauf) 9. auseinanderhalten: यत्संयमो न वि यंमः AV. 4,3,7. यथा यथा पतयंतो वियेमिरे RV. 4,54,5. विपत ausgestreckt, ausgebreitet: सकृत्साङ्यं विपतावस्य पत्नी AV. 10,8,18. 13,3,14. RV. 4,19,3. TS. 4,4,5,1. विपतम् adv. auseinandergehalten, in Absätzen: विपतं पच्को निविदः शंसति Çiñkh. Çr. 7,19,23. 8,7,19. Āçv. Çr. 5,20,6. — caus. ausdehnen: वि मध्यं वामयोयधे AV. 6,137,3; vgl. AV. Prāt. 4,93.

— सम् 1) zusammenhalten, — ziehen, anziehen, festhalten, zügeln, in der Gewalt haben RV. 9,69,3. वोळ्हुर्न रश्मीन्समयंस्त सारथिः 1,114,3. सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्टा दा ज्ञां घर्समा वाकुभिः स्वैः 6,67,1. AV. 4,3,7. संयतरश्मि Nir. 5,8. संयच्छ वाजिनो रश्मीन् R. 2,40,22. संयतप्रग्रहं रथं कृत्वा Çic. 100,15. संयच्छ मामकान्प्राणान् lenken MBh. 4, 1212. यस्तान्संयमते (so beide Ausgg.) 11,177. कृपाः सुसंयता मातलिना 3,12110. संयच्छ वाजिनः सूत शनैर्याहि R. Gorr. 2,39,26. 44,12 (46,11 Schl.). यमः संयमतामग्रम् Bhāg. 10,29. Bhāg. P. 11,16,18. सर्वेन्द्रियाणि संयम्य Spr. 3218. Bhāg. 2,61. Mārk. P. 43,61. संयतेन्द्रिय MBh. 3,2075. 2462. 16676. Brahma-P. in LA. (III) 48,18. संयताक्ष Bhāg. P. 9,2,12. संयतप्राण (= संयतेन्द्रिय) 8,16,16. प्राणा इव सुसंयताः 10,68,1. संयम्यात्मानमात्मना Kām. Nītis. 1,36. घात्मा संयतो मनीषिणः Spr. 641. संयतात्मन् M. 11,235. R. Gorr. 1,1,12. Bhāg. P. 7,4,23. घसंयतात्मन् Bhāg. 6,36. संयम्य चितानि MBh. 4,133. धृतिसंयतचेतस् R. Gorr. 2,16,42. संयम्य च मनः M. 2,100. Bhāg. P. 4,1,19. मानसमसंयतम् Prāçnottarāh. 14 in Monatsb. d. B. Akad. 1868, S. 99. यस्य रुस्तो च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम् Prāh. 26,1. कवामेदं शरीरं संयम्यते Nir. 14,6. सं या दानूनि पेमथुः RV. 8,25,6. — TBr. 2,1,2,5. 5,2,10,6. Çat. Br. 14,1,1,6. संयत (वर्तमाने) Kāç. zu P. 3,2,188. der sich zügelt, — beherrscht, — in der Gewalt hat Hālā. 2,189. MBh. 11,177. Spr. 3100. 3152. Bhāg. P. 3, 21,49. 4,24,18. Pāṇ. 1,2,4. सु° 7,94. Kathās. 49,234. Mārk. P. 34, 115. घ° Spr. 4979. संयतो मनोवाक्कायकर्मभिः Jiḱ. 1,225. स्त्रीषु Sūçr. 2,147,9. मनोवाग्देहसंयता M. 3,165. fg. 9,29. मनोवाक्कायसंयत R. 2, 94,19. वाग्बाहूदरसंयत M. 4,175. संयतवस् dass. Harīv. 13456. Kommen, unterdrücken: गिरम् MBh. 12,3894. कामक्रोधौ Spr. 3899. M. 12,11. कोपम् MBh. 3,2841. रोषम् R. Gorr. 2,77,28.30. Bhāg. P. 4,11,31. मन्युसंरम्भम् 8,11,43. संयतं क्रोधम् R. 2,97,28 (106,23 Gorr.). व्यसनानि 3, 13,5. संयतमैथुन MBh. 13,3231. unterdrücken so v. a. aufheben, zu Nichte machen (Gegens. सृज्) Bhāg. P. 2,4,6 (med.). 6,38; vgl. 2,10,42. 10,70, 28. पन्थां सुतस्य समयंस्त रश्मिभिः war eingeschränkt RV. 1,136,2. zusammenbinden, aufbinden, binden, anbinden, fassen: केशान्संयम्य MBh. 3,16848. केशाः संयताः AK. 3,4,26,198. H. 570. संयताः कचाः AK. 2, 6,2,18. संयतवस्त्र Spr. 637. संयम्यैनं (मुनिं) ततो राज्ञे दर्शयंश्च न्यवेदयत् MBh. 1,4215. R. 4,8,22. मत्तान्वनद्विपान् Kathās. 11,1. 12,156. 27,204. 37,40. 42,42. 54,141. 88,22. 123,130. वानां मा न संयसीः Bhaṭṭ. 9,50. संयम्यमान Kathās. 71,142. संयत gebunden, angebunden, gefesselt, gefangen AK. 3,1,42. H. 439. Hālā. 2,185. M. 8,368. MBh. 3,1694. 12786. Harīv. 9390. 10868. 14370. R. 1,1,23 (26 Gorr.). Rāgn. 3,20.42. Milav. 7. Kathās. 14,6. 51,5. 56,25. 61,126. 65,51. 118,146. 149. zusammenthun, aufhäufen; med. für sich: व्रीहीन्संयच्छते P. 1,3,75, Sch. schliessen: सर्वद्वाराणि संयम्य Bhāg. 3,12. घसंयतकवाट R. 2,71,34. संयत im Gegens. zu व्याप्त AV. 6,56,1. 10,4,8. वस्तिं संयम्य धारयेत् andrückend Sūçr. 2,352,6. — 2) zusammenhalten so v. a. in Ordnung halten: संयतोपस्कर Jiḱ. 1,83. — 3) Jmd beschenken; med. und instr. der Person, wenn es eine unerlaubte, act. und dat. der Person, wenn es eine erlaubte Handlung ist, P. 1,3,55 und Sidd. K. zu P. 2,3,37. दास्या संयच्छते कामुकः, भार्यायै संयच्छति. — 4) संयत = उद्यत im Begriff stehend, gerüstet, bereit; mit infin. Harīv. 14645. fg. — Vgl. घसंयत, संयम fgg. — caus. bezwingen: संयमितारि Rāgn. ed. Calc. 1,62. aufbinden: संयमयामि तावत् — पाणिना पाशहस्तया दुःशासनावकृष्टे केशकलापम् Veṇīs. in Sitz. B. 161,19. संयमित gebunden, gefesselt Mṛicch. 98,12. Kathās. 64,55. दोर्भ्यां संयमितः umfangen, umschlossen Gīt. 12, 11. केलासंयमित (स्वरसंक्रम) wohl unterbrochen Mṛicch. 44,15. संयमित gesammelt, fromm gesinnt R. Gorr. 2,3,34.

— उपसम्, partic. °यत eingezwängt in (loc.) Sūçr. 1,101,7.

1. यंम (von यम्) m. Vop. 26,170. 1) Zügel: पृष्ठे सदो नसोर्यमः RV. 5, 61,2. — 2) Lenker: रथीनाम् RV. 8,92,10. — 3) das Hemmen, Unterdrücken: वाचाम् Schweigsamkeit Bhāg. P. 5,5,12. = संयम AK. 3,3,18. Trik. 3,3,302. H. an. 2,232. fg. Med. m. 23. = यमन H. an. — 4) in der Phil. Selbstbezwingung, das Verbot der Beschädigung Anderer durch Wort oder That und der Ueppigkeit, ein allgemeines Sittengesetz AK. 2, 7,45. Med. Jogas. 2,29. घहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमः 30. Nilak. 28. Tattvas. 19. Sarvadarçanas. 155,10. 161,2. 173,16. fgg. Madhus. in Ind. St. 1,22,22. Vedântas. (Allah.) No. 128. VP. 288. 653. Bhāg. P. 1,6,36. 4,22,24. H. 81. H. an. यमान्सेवेत सततं न नित्यं नियमान्बुधः M. 4,204. MBh. 12,5913. राज्ञो विवेकस्य बलवतो यमादीनमात्यान् Prāh. 8,9. fg. यमश्च दशधा प्रोक्तः Verz. d. Oxf. H. 233,b,6. ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं (st. dessen fälschlich ध्यानं Gaṇapa-P. 105 im ÇKDn.) सत्यमकल्कता । घहिंसास्तेयमाधुर्यमार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ Jiḱ. 3,213. धानृशंस्यं तमा सत्यमहिंसा दम घार्जवम् । प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश ॥

Spr. 330. *Observanz* überh. Pân. Gaṇ. 2, 7. — 3) *festgesetzte Ordnung*, s. याम°. — Vgl. प्राण°, वाचं°, सु°.

2. यमँ 1) adj. (f. या und ई) *geminus*, von *Geburt doppelt, gepaart*; m. *Zwilling* Taitt. 3, 3, 302. H. 1424. H. an. 2, 232. fg. Med. m. 23. Halâj. 4, 15. समर्थमाकूरेकलं पञ्चियमाः RV. 1, 164, 18 (vgl. AV. 10, 8, 5). 2, 39, 2. यमा चिद्रत्रं यमसूरसूत 3, 39, 3. यमा इव मुमदृशः सुमेधसः 5, 57, 4. 6, 39, 2. 10, 117, 9. 1, 66, 4. यमे इव यतमाने यदैतम् 10, 13, 2. यस्य भार्या गौर्वा यमौ जनयेत् Âçv. Gṛ. 7, 9. यमिर्वाव एष इयं यमी TS. 3, 3, 8, 3. यमी वशा 2, 1, 9, 3. यष्टौ यमा वादित्याः Nirukta 10, 2. यमौ मिथुनौ *Zwillinge verschiedenen Geschlechts* Kâṭy. 13, 4. Nir. 12, 10. — Pâraśav. Gṛ. 16, 4, 10. Kâṭj. Çr. 25, 1, 33. यमौ द्विगुणामिव श्रियमिच्छतः Âçv. Çr. 11, 5, 4. Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. पुत्रौ प्रसुषुवे यमौ Bhâg. P. 2, 17, 2. 9, 11, 11. यमौ *Zwillinge* M. 9, 126. MBh. 1, 124. 3818. 13691. 7, 63. Sûçr. 1, 318, 7. Varâh. Bṛh. S. 78, 24. Kâtuk. 21, 49. Bhâg. P. 1, 10, 9. 3, 16, 35. यमाभ्यां सुप्रवृद्धाभ्यामर्बुदाभ्याम् Harîv. 3431 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Bhâg. P. 10, 10, 26. m. *Paar* Varâh. Bṛh. S. 77, 33. यमौ heissen die Açvin H. 182. उप उषो हि वसो यद्यमेषि त्वं यमयोरभवो विभावरि *du Agni gehst voran jeder Morgenröthe, du strahltest für die Zwillinge* (nämlich, wenn sie zum Frühopfer kommen) RV. 10, 8, 4. *thou wast the divider of the two twins i. e. of day and night* M. Müller, Lect. II, 511. यम als Bez. *der Zahl zwei* Sâmav. 1, 32. fg. 2, 19. — 2) m. N. des Gottes, der im Himmel über die Seligen (पितरः) herrscht, deshalb auch König heisst, ein Sohn Vivasvant's. Die nachvedische Zeit sieht in ihm den Beherrscher der Todten in der Unterwelt und fasst seinen Namen als *Bändiger* (schon Çat. Br. 7, 2, 4, 10. auch von यु abgeleitet TS. 2, 1, 4, 3). Die wirkliche Bed. ist *Zwilling:* Jama und Jamî sind das erste Menschenpaar. Wie diese nach der Legende Nr. 12, 10 von Vivasvant mit der Saraṇjû erzeugt sind, so zeugt derselbe mit dem Abbilde der Saraṇjû den Manu, eine andere Form des Erstlings der Menschheit. Ueber den ganzen Mythus vgl. Roth in Z. d. d. m. G. 4, 423. fgg. und J. Muir in Journ. R. As. S. new ser. 1, 287. — AK. 1, 1, 1, 34. 3, 4, 7, 23. Taitt. 1, 1, 71. 3, 3, 302. H. 169. 184. H. an. Med. Hir. 37. Halâj. 1, 72. 100. 5, 70. 83. RV. 10, 14, 1. fgg. 15, 3. 18, 13. यमौ यमं वैवस्वतं मनोर्ज्ञगामं दूरङ्गम् 57, 7. 60, 10. यस्मिन्वृते सुपलाशे देवैः संपिबते यमः 135, 1. तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे 165, 4. यास्ते यम उषं यांति देवान् AV. 4, 34, 3. 4. यमस्य ज्ञातमसते पञ्चमके RV. 1, 83, 5. यो ममार प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयाय प्रथमो लोकमेतम् । वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत ॥ AV. 18, 3, 13. 6, 28, 3. यमस्य भवनम् RV. 1, 35, 6. षष्टीशम् 10, 97, 16. योनिः 123, 6. लोकः AV. 6, 118, 2. 19, 56, 1. सादनम् 2, 12, 7. 18, 2, 56. 3, 70. गृहम् 6, 29, 3. राज्ञम् 18, 4, 31. fg. Roth 5, 5, 8. Boten 30, 6. यानौ 8, 1, 9. Mutter RV. 10, 17, 1. König Jama AV. 8, 10, 22. 15, 14, 7. 18, 3, 69. 1, 14, 2. Âçv. Gṛ. 2, 3, 2, 1. Kâuṣ. Up. 4, 15. यावत्तो वै मृत्युर्व्यथवस्तेषां यम आधिपत्यं पर्यायाय TS. 5, 1, 8, 2. — Jama und Jamî (Jamunâ) Harîv. 532. VP. 266. Bhâg. P. 6, 6, 38. 8, 13, 9. Mârk. P. 77, 7. 106, 4. Verz. d. Oxf. H. 82, *b*, 41. fg. ein jüngerer Bruder Manu's MBh. 1, 3136. fg. Harîv. 552. Mârk. P. 108, 15. fgg. माण्डव्यशापाद्भगवान्प्रजासंयमनो यमः । भ्रातुः क्षेत्रे भुवि व्यायी जातः सत्यव्रतोमुतात् ॥ Bhâg. P. 3, 3, 20. यमः संयमतामहम् sagt Kṛishṇa Bhag. 10, 29. पितृणामधिपः MBh. 14, 1176. Harîv. 260. VP. 153. — 207. 286. Verz. d. Oxf. H. 61, *a*, 1. fgg. einer der 8 Welthüter M. 5, 96. im Süden MBh. 8, 2102. R. 4, 51, 32. यदा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते काले नियच्छति Spr. 2321. शरीरान्तकरो नृणाम् MBh. 3, 2128. यमो वैवस्वतो देवो यस्तवैष हृदि स्थितः Spr. 2406. सनतया — अनुययौ यमम् Bhâg. 9, 6. यमस्त्वत्रसं प्रादाद्धर्मे च परमां स्थितिम् MBh. 3, 2228. रक्तान्तं यमभ्रमं व्याधुन् Çiç. in LA. (III) 34, 17. सहजपद् Spr. 803; vgl. Harîv. 565. fgg. und शीर्णपाद्. यमाय नी Bhâg. P. 9, 6, 17. यमस्य सदनम् Dâç. 2, 35. दण्डो यमो मखिषगः Varâh. Bṛh. S. 58, 37. °मतनिवर्कण Verz. d. Oxf. H. 230, *b*, 27. als Gottheit (Beherrscher) des Nakshatra Apabharaṇî (Bharaṇî) Weber Gjot. 94. fg. Nax. 2, 300. 376. Varâh. Bṛh. S. 98, 4. der 4ten Tithi 99, 1. eines Karaṇa 4. Liedverfasser von RV. 10, 10. 14. Verfasser einer Hymne auf Vishṇu Verz. d. Oxf. H. 82, *b*, 39. eines Gesetzbuchs Jâśñ. 1, 4. Verz. d. B. H. No. 140. 322. 1017. 1160. Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, N. 1. 266, *a*, 41. 268, *a*, 6. 12. 270, *b*, 32. 279, *a*, 22. Madhus. in Ind. St. 1, 20, 21. °संहिता Gild. Bibl. 450. Vgl. कालान्तक°, वृकोदर, मद्रा°, लघु°, स्वल्प°. — 3) m. *der Planet Saturn* H. ç. 14. Med. Varâh. Bṛh. S. 4, 21. 20, 7. 28, 21. 98, 13. Ind. St. 2, 278. fg. 283. Verz. d. B. H. No. 1249. auch Saturn gilt für einen Sohn Vivasvant's, aber von der Khâjâ: vgl. Harîv. 364. Bhâg. P. 8, 13, 10. — 4) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's (neben Atijama) MBh. 9, 2547. — 5) m. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 58, 4. fehlerhaft für याम. — 6) m. *Frühe* H. an. Med. Vgl. यमदूतक. — 7) n. in der Gramm. *a*) *Zwillingslaut;* so heissen gewisse von den Grammatikern angenommene *nasale Zwischenlaute zwischen Mutis und folgenden Nasalen;* vgl. Whitney in AV. Prât. S. 63. Weber in Ind. St. 4, 123. RV. Prât. 1, 10. 49. 6, 8. fgg. 14, 10. 22. VS. Prât. 1, 41. 74. 82. 103. 4, 111. 161. 8, 29. AV. Prât. 1, 99. TS. Prât. 21, 8. 22, 13. Pat. zu P. 1, 1, 8. — *b*) *Tonlage:* समान° AV. Prât. 1, 14. एक° (= एकश्रुति Comm.) TS. Prât. 15, 9. द्वि° (= स्वरित Comm.) 19, 3. 22, 16. चतुर्थम 16. सप्त° RV. Prât. 13, 17. — 8) f. यमी N. pr. der Zwillingsschwester Jama's, die in der nachvedischen Zeit der Jamunâ gleichgesetzt wird, Naigh. 5, 5. Nir. 11, 33. Taitt. 1, 2, 31. H. 1083. RV. 10, 10, 7. 9. Çat. Br. 7, 2, 4, 10. VS. 12, 63. Kâṭy. 7, 10. Pâraśav. Gṛ. 11, 10, 23. Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. Harîv. 609. fg. VP. 266. Bhâg. P. 6, 6, 38. 8, 13, 9. Mârk. P. 106, 4. Verz. d. Oxf. H. 82, *b*, 41. fg.

1. यमक (von यम) *Hemmung u. s. w.;* = संयम, m. Med. k. 141. n. Taitt. 3, 3, 38. m. = व्रत H. an. 3, 84.

2. यमक (von 2. यम) 1) adj. *doppelt, zweifach:* षण्डलानि विचित्राणि यमकानीतराणि च (यमकानि = सदृशानि Nîlak.) । सव्यानि च विचित्राणि दक्षिणानि च सर्वशः ॥ — व्यचरंस्ते क्ष्योत्तमाः MBh. 3, 737. 7, 4926. 9, 3267. यमकं (= शत्रूणां निरोधकं Nîlak.) कृत्वा तान्योधान्प्रत्यवारयत् 4, 1821. यमक = यमज von *Geburt doppelt* Taitt. 3, 3, 38. H. an. 3, 84. Med. k. 141. — 2) m. (sc. क्षेप्) *zwei verbundene Fettstoffe: Oel und* Ghṛta Çânkh. Śr. 3, 1, 3. Sûçr. 2, 440, 8. — 3) n. *a*) *Doppelverband* Sûçr. 1, 65, 17. 66, 1. — *b*) *Wiederkehr gleichlautender Silben, Agnominatio, Paronomasie* Taitt. H. an. Med. Kâvjâd. 1, 61. 3, 1. fgg. Sâh. D. 640. Prâtiśâkh. 72, *b*, 2. Verz. d. Oxf. H. 207, *a*, 32. 208, *a*, No. 489. 210, *a*,

N. 1. Gaut. 22. Arten derselben: युक्पाद् ° Bhatt. 10, 2. द्व्यनुक्पाद् ° (द्व्यनुष्पाद् °) 10. पाद्यत्त ° 21. पादादि ° 6. पादमध्य ° 5. पादान्त ° 3. पादादिमध्य ° 15. पादाद्यन्त ° 11. मध्यान्त ° 17. काञ्ची ° 8. गर्भ ° 18. चक्रवाल ° 6. पुष्प ° 14. मुरज ° 20. मिथुन ° 12. वृत्त ° 13. विषम ° 16. समुद्ग ° 7. सर्व ° 19. यमकावली 9. °काव्य heisst das dem Ghaṭakarpara zugeschriebene künstliche Gedicht Harr. Anth. S. 124. यमकत्व n. nom. abstr. Schol. zu Kâvyâd. 1, 61. — c) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. II, 188 (V, 5).

यमकालिन्दी (2. यम + का°) f. Bein. der Samjñâ, der Mutter Jama's, Taik. 1, 1, 100.

यमकिङ्कर m. Jama's *Scherge* (किं °) Mârk. P. 14, 70. Paśśâr. 104, 15. 247, 8.

यमकीट (2. यम + कीट) m. *Holzwurm* Taik. 2, 5, 28.

यमकील (2. यम + कील) m. Bein. Vishṇu's H. ç. 74.

यमकेतु (2. यम + केतु) m. *eine Fahne* Jama's so v. a. *ein Todeszeichen* Bâlar. P. 11, 30, 3.

यमकोटि und °कोटी (2. यम + को °) f. N. pr. einer mythischen Stadt, die nach den Astronomen 90° östlich von Laṅkâ liegen soll, Sûrjas. 12, 38. Siddhântaçir. 3, 38. 44. 46. Verz. d. B. H. No. 1240. Reinaud, Mém. sur l'Inde 341. fg. 347. 350.

यमक्षय m. Jama's *Behausung* MBh. 12, 11128. R. Gorr. 2, 18, 13. Bâlar. P. 2, 8, 6. 9, 20, 22. — Vgl. u. 1. क्षय.

यमगाथा f. *ein über* Jama *handelnder Vers* oder *ein solches Lied* TS. 5, 1, 6, 2. Kâṭh. 20, 8. Pân. Gaṇ. 3, 10; vgl. Jiâd. 3, 2, wo zu गाथा aus यमसत्र यम zu ergänzen ist.

यमगीत n. *der über* Jama *handelnde Gesang*, Bez. des 7ten Kapitels im 3ten Buche des VP.

यमघण्ट m. Bez. eines astr. Joga Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 41.

यमघ्न adj. Jama (*den Tod*) *vernichtend*, Beiw. Vishṇu's Prâçnottar. in Monatsb. d. Berl. Ak. 1868, S. 110.

यमज (2. यम + 1. ज) adj. von *Geburt doppelt*, m. du. *Zwillinge* MBh. 1, 5271. 3, 10858. 15608. Harîv. 332. Kathâs. 23, 91. 63, 7. Uttarabâlar. 87, 7 (112, 3).

यमजात dass. R. 7, 97, 5. °जातक dass. 66, 9. 96, 17.

यमजित् m. Jama's *Besieger*, Bein. Çiva's H. 200, Sch.

यमजिह्वा f. Jama's *Zunge*, N. pr. einer Kupplerin Kathâs. 57, 59.

यमतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 73, *b*, 17.

यमत्व n. *das* Jama-*Sein* TS. 2, 1, 4, 1. MBh. 3, 16781. Paśśâr. 1, 8, 22.

यमदंष्ट्र (2. यम + दंष्ट्रा) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 9, 16. eines Râkshasa 18, 336. 42, 125. eines Kriegers auf Seiten der Götter 48, 17.

यमदंष्ट्रा (wie oben) f. Jama's *Spitzzahn*: यमदंष्ट्रान्तरं गतः so v. a. *dem Tode verfallen* MBh. 7, 4152.

यमदग्नि falsche Schreibart für जमदग्नि Buhâr., Dvitîjâv. nach ÇKDa.

यमदण्ड m. Jama's *Keule* R. 1, 56, 19. R. Gorr. 1, 56, 23. Kathâs. 18, 281.

यमदूत 1) m. Jama's *Bote* AV. 9, 2, 11. 8, 11. Pân. Gaṇ. 3, 15. Spr. 1261. Paśśâr. 1, 3, 32. Kâurâp. 31. — 2) f. ई N. einer der neun Samidh Gobhar. 1, 28.

यमदूतक 1) m. *a*) Jama's *Bote*. — *b*) *Krähe* Cardan. im ÇKDa. — 2) f. °दूतिका *die indische Tamarinde* Wilson nach Cardan., ÇKDa. angeblich nach AK.

यमदेवता f. Bez. *des unter* Jama *stehenden* Nakshatra Bharaṇî H. 109.

यमदैवत adj. Jama *zum Beherrscher habend* Varâh. Bṛh. S. 81, 3.

यमद्रुम m. Jama's *Baum*, *Bombax heptaphyllum* Râgân. im ÇKDa.

यमद्वितीया (2. यम *Zwilling* + द्वि °) f. Bez. *des 2ten Tages in der lichten Hälfte des* Kârttika Verz. d. Oxf. H. 284, *a*, 45. °व्रत 34, *a*, 22.

यमद्वीप m. N. pr. einer *Insel* VP. 175, N. 3. — Vgl. यवद्वीप.

यमधानी f. Jama's *Behausung* Spr. 779.

यमधार (2. यम + 2. धारा) m. *eine best. zweischneidige Waffe* ÇKDa.

यमन (von यम् 1) adj. f. ई *bändigend, lenkend* VS. 9, 22. 14, 22. — 2) m. *der Gott* Jama Mân. n. 109. — 3) n. *das Bändigen, Zügeln* H. an. 3, 101. यमनाद्यतिरुध्यसे Harîv. 14953. कालियस्य Râgâ-Tar. 5, 114. *das Binden* H. an. Mân. *das Aufhören* Mân.

यमनक्षत्र n. Jama's *Sternbild* TBr. 1, 5, 2, 7. Weber, Nax. 1, 323. 2, 309. fg. 384.

यमनिका f. falsche Schreibart für यवनिका ÇKDa. nach Râmâçrama zu AK. 2, 6, 3, 22.

यमनेत्र adj. Jama *zum Führer habend* VS. 9, 35. TS. 1, 8, 9, 1.

यमन्वन् m. oder यमन्या f. *eine durch* Vṛddhi *gesteigerte Nominalform* Çiks. 2, 13.

यमपुरुष m. Jama's *Scherge* Âçv. Gṛhj. 1, 2, 5. Verz. d. B. H. No. 324. Bâlar. P. 5, 26, 3.

यमप्रस्थपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 230, *b*, 37.

यमप्रिय adj. *dem* Jama *lieb*; m. *Ficus indica* Cardan. im ÇKDa.

यमभगिनी f. Jama's *Schwester* d. i. *der Fluss* Jamunâ H. 1083.

यममार्ग m. Jama's *Pfad*: °गमन *das Betreten dieses Pfades* so v. a. *das Empfangen des Lohnes für seine Thaten* Verz. d. Oxf. H. 10, *b*, 17.

यमयन als Beiw. Çiva's Harîv. 14894 fehlerhaft für ऽज्ञमथन (= ब्रह्मशिरश्छेत्तृ Nîlak.), wie die neuere Ausg. liest.

यमया N. der 4ten Constellation (योग) Ind. St. 2, 269.

यमयित्नु adj. fehlerhafte Lesart des SV. (1, 5, 1, 2, 3) für नमयित्नु des RV.

यमरज्ज m. Jama's *Vehikel* d. i. *ein Büffel* H. 1281, Sch.

यमराज् m. (nom. °राट्) *König* Jama AK. 1, 1, 1, 54. H. 185, Sch.

यमराज m. dass. H. 185. N. pr. eines Arztes Verz. d. Oxf. H. 22, *b*, 6.

1. यमराजन् m. *König* Jama Bâlar. P. 6, 2, 21.

2. यमराजन् adj. Jama *zum König habend*, Jama's *Unterthan* RV. 10, 16, 9. AV. 18, 2, 25. 46. TS. 5, 5, 9, 4. Çâṅkh. Çr. 4, 21, 9. Kauç. 62.

यमराज्य n. Jama's *Herrschaft* AV. 12, 3, 1. 3. 4, 36. VS. 19, 45. Çat. Br. 12, 8, 4, 19. Çâṅkh. Gṛhj. 5, 9. Maitrâjp. 6, 26.

यमराष्ट्र n. Jama's *Reich* Suçr. 1, 116, 15. Râgâ-Tar. 4, 292.

यमर्क्ष n. *ein unter* Jama (*Saturn*) *stehendes Sternbild*, — *astrol. Haus* (रक्ष = गृह) Varâh. Bṛh. S. 96, 6.

यमल (von 2. यम) 1) adj. *verzwillingt, gepaart, doppelt* (n. *Paar* Taik. 2, 5, 28. H. 1425. Mân. l. 125. Hall. 4, 15) Suçr. 1, 66, 1. छिद्रा: 2, 247, 11. यमलैर्वेगै: 495, 1. यमला भद्रपदा: Varâh. Bṛh. S. 103, 2. यमलै ज्ञातं च कुसुमफलम् 46, 33. यमलोद्भव *Geburt von Zwillingen* 46, 32. °ज्ञान्ति

eine Sühnungshandlung nach der Geburt von Zwillingen Sāṁk. K. 91, *a.* यमलौ *Zwillinge* Mārk. P. 106,4. यमलाभ्यामर्जुनाभ्याम् *ein Paar Arǵuna-Bäume* (die Kṛshṇa im Wege standen und von ihm entwurzelt wurden) Harīv. 3451 (यमाभ्याम् die neuere Ausg.). यमलार्जुनौ personificirt als Feinde Kṛshṇa's und später als Verwandlungen Nalakubara's und Maṇigrīva's, zweier Söhne des Kubera, angesehen, H. 219. R. 7,6,35. 7,23,4,42. Bhāg. P. 10,10,23. fgg. यमलार्जुनको Harīv. 5876. यमलार्जुनभञ्जन Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's H. 221, Sch. Paṇḍār. 4,1,22. 3,132. यमल m. als Bez. *der Zahl zwei* Sūrjas. 8,5. 7. — 2) f. या *a) eine best. Form des Schluchzens* (हिक्का) Suçr. 2,494,15. 495,2. — *b)* N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 109, *a*, 27. Vgl. यामल. — *c)* N. pr. eines Flusses Çāṭy. 1,34. — 3) f. ई *ein Paar Stöcke* Mān.

यमलोक m. Jama's *Welt* Paṇḍār. Bā. 9,8,4. MBh. 7,3002. Spr. 2093. Paṇḍār. 1,3,21. Verz. d. B. H. 146, *a*, 9.

यमवत्स (2. यम + वत्स) adj. *Zwillingskälber werfend* Kauç. 93.

यमवत्त् (von 1. यम) adj. *der sich bändigt, seine Leidenschaften in der Gewalt hat* Rāǵān. 9,1. *modestus* Stenzler.

यमवाहन m. Jama's *Reitthier* d. i. *ein Büffel* Trik. 2,3,4. H. 1281.

यमविषय m. Jama's *Reich* Maitrāyaṇ. 4,2. R. 3,54,28.

यमव्रत n. *eine dem* Jama *geltende Observanz* Kauç. 82. Jama's *Verfahren*. — *Weise* Spr. 2321. N. eines Sāman Ind. St. 3,230, *a*.

यमशिख (2. यम + शिखा) m. N. pr. eines Vetāla Kathās. 121,29.

यमश्रेष्ठ adj. *deren Erster* Jama *ist:* पितर: AV. 11,6,11.

यमश्व m. Jama's *Hund* (श्वन्) Kiṭn. 37,14.

यमसदन n. Jama's *Sitz*, — *Behausung* Spr. 743. 1923. Bhāg. P. 5, 26,31. — Vgl. यमसादन.

यमसभा n. Jama's *Gericht* (सभा) P. 4,3,88. °सभा f. dass. Kathās. 72, 349. Davon adj. °सभीय *darüber handelnd* P. 4,3,88.

यमसात् (von 2. यम) adv. in Verbindung mit कृ *dem Todesgotte übergeben*, — *aufführen* Bhaṭṭ. 5,3.

यमसादन n. = यमसदन AV. 12,3,64. Taitt. Ār. 6,7,6. MBh. 1,3990. 5276. R. Gorr. 2,37,24. 77,12. 3,28,4. Mārk. P. 8. 637, Z. 11. Ver. in LA. (III) 13,18.

यमसारथि (von यम) adj. *Zügel* —, *Gebiss führend:* भसद्वो न यमसाना या RV. 6,3,4.

यमल 1) adj. *Zwillinge* (2. यम) *gebärend* RV. 3,39,3. VS. 30,15. Çāṅkh. Gṛhj. 3,10. ख° Kauç. 109. — 2) m. Jama's *Erzeuger* d. i. *der Sonnengott* H. 93, Sch.

यमसूक्त n. *die Jama-Hymne* Pār. Gṛhj. 3,10. Jāṭ. 3,2.

यममूर्य n. *ein Gebäude mit zwei Hallen, von denen die eine nach Westen, die andere nach Norden gerichtet ist,* Varāh. Bṛh. S. 53,39. fg.

यमस्तोम m. N. eines Ekāha Çāṅkh. Çr. 15,9,1. 2.

यमस्वसृ f. Jama's *Schwester*, Bez. 1) der Jamunā Mbh. 3. 59. Harīv. 6784. — 2) der Durgā Trik. 1,1,53. H. ç. 55. Mbh.; vgl. श्येता यमस्य भगिनी Harīv. 3271.

यमकार्दिका f. N. pr. eines Wesens im Gefolge der Devī Wilson, Sel. Works 2,39.

यमकासेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tīrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,8.

यमातिरात्र (2. यम + ख°) m. N. eines 49tägigen Sattra Paṇḍār. Bā. 24,12,3. Āçv. Çr. 11,3,4. Māç. 9,10.

यमादर्शनत्रयोदशी f. Bez. *eines best. 13ten Tages:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,21 (Verz. d. B. H. 135,*b*,28).

यमादित्य m. *eine best. Form der Sonne* (आदित्य) Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,8. 35.

यमानिका f. *Ptychotis Ajowan Dec.* Rāṭnām. 97. — Vgl. क्षेत्र° und यवानिका.

यमानी f. dass. Rāṭnām. 97. Çārṅgār. im ÇKDr. Suçr. 2,220,12. 224, 12. 306,8. — Vgl. यवानी.

यमानुग (2. यम + ख°) adj. *in* Jama's *Gefolge seiend:* पुरुष *ein Scherge* Jama's Mārk. P. 14,76.

यमानुचर (2. यम + ख°) m. *ein Scherge* Jama's Bhāg. P. 5,26,13.

यमान्तक (2. यम + ख°) m. Jama *als Todesgott:* °सम: क्रोधे MBh. 2, 690. 5,4664. R. 6,79,55. Buan. Intr. 331. Wassiljew 186. Bein. Çiva's Çārṅgār. im ÇKDr. du. Jama *und der Todesgott* Mārk. P. 43,34. — Vgl. कालान्तक und कालान्तकयम.

यमाय्, °यते *den Todesgott* Jama *darstellen* Gīt. 4,10.

यमारि m. Jama's *Feind* (अरि), Beiw. Vishṇu's Paṇḍār. 4,3,70.

यमालय m. Jama's *Behausung* (आलय) Bhāg. P. 5,26,37.

यमिक n.: अगस्त्यस्य यमिके N. eines Sāman Ind. St. 3,237,*b*.

1. यमिन् (von 1. यम) adj. *der sich zügelt* Çik. 47, v. l. Spr. 3143. 4089. Prāb. 1,13.

2. यमिन् (von 2. यम) adj. °नी *Zwillinge werfend* AV. 3,28,1.

यमिष्ठ (von यम् mit der Endung des superl.) adj. *am besten zügelnd* RV. 1,35,7. 6,67,1.

यमुना (यमुनी Uṇādis. 3,61) f. 1) N. pr. eines Flusses AK. 1,2,3,31. Trik. 1,2,31. H. 1083. Halāy. 3,52. LIA. I, 47. fg. RV. 5,52,17. यातु-हिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च 7,18,19. 19,73,5. Ait. Br. 8,23 (vgl. Çat. Br. 13, 5,4,11). Çāṅkh. Çr. 12,29,25. 33. Paṇḍār. Bā. 1,4,11. 25,10,24. 13,4. Kāṭy. Çr. 24,6,10. 39. Lāṭy. 10,19,9. 10. Āçv. Çr. 12,6,28. MBh. 3,8217. 5,7346. 6,333. Harīv. 3620. 5768. fgg. 9506. R. 2,71,6. Mṛcch. 52. Varāh. Bṛh. S. 5,37. 16,2. 69,26. VP. 372. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*, N. 3. °तीर्थमाहात्म्य Verz. d. B. H. 144,14. mit यमी, der Zwillingsschwester Jama's, identificirt Harīv. 552. 6784. Mārk. P. 77,7. 78,30. 106,3. 108, 19. °पति Bein. Vishṇu's Paṇḍār. 4,3,147. — 2) N. pr. einer Tochter des Muni Mataṅga Kathās. 67,74. fgg. 101,151.

यमुनाजनक m. *der Vater* (जनक) *der* Jamunā, Bein. *des Sonnengottes* H. 93.

यमुनादत्त (य° + दत्त) m. N. pr. eines Frosches Paṇḍāt. 212,23.

यमुनाद्वीप m. N. pr. einer Oertlichkeit Schiefner, Lebensb. 306 (78).

यमुनाप्रभव (य° + प्र°) m. *die Quelle der* Jamunā (ein Wallfahrtsort) MBh. 3,8022.

यमुनाभिद् (य° + भिद्) m. Bein. Baladeva's H. 224.

यमुनाभ्रातृ m. *der Bruder der* Jamunā d. i. Jama AK. 1,1,4,54.

यमुनाष्टक (यमुना + ख°) n. *acht Strophen zu Ehren der* Jamunā, Titel eines Gedichtes Hall 147.

यमुनाष्टपदी (यमुना + ख°) f. Titel einer Schrift Hall 152.

यमुन्द m. N. pr. eines Mannes P. 4,1,119, Sch. — Vgl. यामुन्दायनि.

यमुपेदव Bez. *einer Art Zeug* Rāja-Tar. 1,299.

यमेकका f. *eine Art Pauke, auf der die Stunden angeschlagen werden,* Tait. 1,1,121.

यमेश (2. यम + ईश) adj. Jama *zum Beherrscher habend;* n. *das Nakshatra Bharaṇi* Varāh. Bṛh. S. 7,3.

यमेश्वर (2. यम + ई°) n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,13.

1. यंम्य partic. fut. pass. von यम् P. 3,1,100. Vop. 26,15.

2. यम्य (von 2. यम) adj. *verwittingt:* नानी चक्राते यम्याई वर्पांसि RV. 3,55,11. Dagegen scheint zu यमी (f. von यम) zu gehören यम्यः RV. 5, 44,4 und यम्या संयती 9,69,3 und auf die letztere Stelle dürfte die Aufnahme von यंम्या (sollte wohl यम्यो betont sein) unter den Namen für *Nacht* Naigh. 1,7 (vgl. Çat. Br. 8,5,3,5) zu beziehen sein.

यर्याति (vielleicht von यत्; m. N. pr. eines Stammhaupts der Vorzeit, eines Sohnes des Nahusha, Tait. 2,8,8. LIA. 1,713. 726. यर्यातेर्ये नेकुष्यस्य बर्हिषि देवा वासते RV.10,63,1. यर्यातिवत् 1,31,17. — RV.Anukr. Maitrāyaṇ. 1,4. MBh. 1,47. 222 (S. 9). 3155. 2,319. 3,2235. 16675. 4,1763. 5,3903. 3918. 7,3293. 6029. 12,987. fgg. 13,324. Harīv. 1599. fgg. R. 1, 70,41 (72,30 Gorr.). 2,21,46. 61. 77,10 (84,9 Gorr.). R. Gorr. 2,116,32. 3,71,8. 4,16,8. Çiç. 82. Kathās. 27,67. Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,4. 40,*a*,35. 73,*b*,11. 343,*b*,16. fg. VP. 413. Bhāg. P. 1,12,24. 6,6,31. 9,18,1. 23,18.

यर्यातिचरित n. Jajāti's *Geschichte* Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,2. 44,*b*,30. Titel eines Schauspiels 144,*b*, No. 301. fg.

यर्यातिपतन n. Jajāti's *Fall* (पतन), N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,4089.

यर्यातिविजय m. Jajāti's *Sieg,* Titel eines Werkes Sin. D. 176,1.

यर्यावर्ं (v. l. या°) m.: तस्मान्यर्यावरः तेम्यस्पेशे तस्मान्यर्यावरः तेम्यमव्यवस्यति TS. 5,2,8,7.

यर्यिं und यर्यी (von 1. या) Uṇādis. 3,159. adj. *laufend, eilend:* उप्रो यर्यिं निरपः स्रोतसामृजत् die Wolke RV. 1,51,11. उपस्तरेषु यदाचिधं यर्यिम् 87,3. उप्रो वां ककुहो यर्यिः प्रुषे यामेषु संतनिः 5,73,7. प्र रुद्रेषो यर्यिणी यन्ति सिन्धवः 10,92,8. सिन्धवो न यर्यियः 78,7. यर्वाङ्मघ्र यर्य्यो नृवाहणा रथं युञ्जाथाम् 2,37,3. यर्यीरसः Uṇādis. यर्यी (यर्यिन् ÇKDr.) Çiva Uṇādis. bei Wilson.

यंयु (wie oben) Pat. zu P. 6,1,12. adj. dass. Bez. des *Rosses* VS. 22,19. यर्यु (Uṇādis. 1,22) steht AV. 4,24,2, die Stelle ist aber verdorben. Nach AK. 2,8,2,13. Tait. 3,3,318. H. 1263. an. 2,377 und Med. j. 48 *ein zum Rossopfer bestimmtes (frei umherlaufendes) Ross;* nach Tait. H. an. und Med. auch *Pferd* überh.

यर्हि (von 1. य) conj. wenn P. 5,3,21. Vop. 7,101. H. ç. 203. mit ind. und potent., es entsprechen तर्हि und इतर्हि. इतीमे वा एनं तर्ह्यालभते यर्हि न ज्ञायते यर्हि चिह्ने ज्ञायते Ait. Br. 1,16.27. TS. 1,7,8,2. यर्हि क्षेता पशूनस्य नाम गृह्णीयात्तर्हि ब्रूयात् 8,3. 3,1,8,3. 8,1. 5,1, 3,4. 4,8,1. 7,2,8,1. 3,5. Das Wort erscheint erst wieder im Bhāg. P. und zwar in der Bed. wenn, *als,* wenn (es entsprechen तत्र, तदा, यद्य, तत्प्रभृति, gewöhnlich fehlt aber das correl.); mit perf. 1,11,9. 18,6. imperf. 5,1,6. 3,10. aor. 10,29,36. praes. 3,27,2. 32,9. 7,9,20. potent. 2,7,38. 9,2. ohne verbum finitum 1,8,38. 3,13,46. 4,23,55. 28,15. 5,5,32. 6,2,42. 10,8,24. *da, weil* 3,21,20. 4,20,5. 5,18,3.

1. यव m. 1) *Getraide,* in frühester Zeit vermuthlich *mehlgebende Körnerfrucht* überh., *Korn;* in der Folge *Gerste,* pl. *Gerstenkörner* (AK. 2,9,15. 24. H. 401. 1170. 1181. an. 2,534. Halāy. 2,430. P. 4,3,166, Vārtt. 1, Sch.). Im AV. und namentlich in den Brāhmaṇa sind यव und व्रीहि die Hauptarten der Körner, während im RV. der Reis nicht genannt wird. RV. 1,23,15. 66,3. यवं वर्धेता 117,21. पच्यते यवः *es reift die Frucht* 133,8. यवं न चर्कृषद्वयौ 176,2. यवो वृष्टोव मोदते 2,5,6. 14, 11. 5,85,3. 7,3,4. 8,2,3. 22,6. 52,9. 67,10. 9,55,1. 68,4. 10,27,8. यवेन तुथं तोम 42,10. 68,3. 131,2. AV. 2,8,3. 6,30,1. 50,1. 2. 91,1. व्रीहि, यव, माष, तिल 140,2. 142,1. 2. 8,7,20. 9,1,22. 6,14. व्रीव्रियवो 12,1,42. VS. 5,26. 18,12. 23,30. TS. 6,2,10,3. 4,10,5. 7,2,10,2. TBr. 1,8,8,1. Çat. Br. 1,1,4,20. 2,5,2,1. 3,6,1,9. 10. 4,2,1,11. 12,7,2,9. व्रीव्रियवाः 14,9,3,22. Kāṭy. Ça. 1,4,14. 9,1. व्रीव्रीन्यवान्वा पक्वानध्यवस्यति *reife Fruchtfelder* 22,3,42. Āçv. Ça. 5,9,1. Kauç. 8. 24. 34. 69. मयव 28. 86. °कलापि Çāṅkh. Ça. 14,40,17. °क्षेत्र 15. °वेला Lāṭy. 8, 3,7. °मुष्टि Gobh. 3,7,5. Kāṭhās. 71,266. °चूर्ण Çāṅkh. Ça. 4,15,21. °लोद्र H. 402. — M. 3,267. 5,29. 9,39. यवान्पिबेत् 11,108. 152. 198. Jāṭ. 1,230. पञ्चशीर्षा यवाश्चापि शतशीर्षास्तथा शालयः MBh. 6,87. ओषधीनां यवा उत्तमाः 14,1220. Bhāg. P. 11,16,21. R. 3,22,7. 16. Suçr. 1,73,6. 145,18. 164,2. 189,9. 198,19. यवाग्र 2,131,4. 133,5. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,38. यवाङ्कुर Bādar. 9,42. °प्रोक्ष Kumāras. 7,17. 82. यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयः Spr. 1416. 1713. 1908. व्रीव्रियवम् 2282. fgg. Varāh. Bṛh. S. 8,30. 15,6. 16,7. 19,6. 29,4. 41,2. 46,33. 53,16. °क्षेत्र Kathās. 33,111. Pāṇ. Gaṇ. 224,4. Mālav. P. 13,7. 49,67. P. 1,4,27, Sch. 4,2,16, Sch. 1,4,52, Vārtt. 7, Sch. यार्गो हि यवशब्दादीर्घशूकविशेषं प्रतिपत्तिं मेच्छास्तु कङ्गुम् Schol. zu Nyāyas. 2,56 (ed. Calc. 1828). Am Ende eines adj. comp. f. या P. 4,1, 54, Sch. Vgl. इन्द्र°, काक°, कु°, तिलकयवा, पूतयवम्, पूयमानयवम्, भद्रयव. — 2) *ein Gerstenkorn* als Maass = $\frac{1}{6}$ Aṅgula Kāṭy. Paddh. 356, 16. 20. 357,10. Tait. 2,2,2. = $\frac{1}{8}$ Aṅgula Varāh. Bṛh. S. 58,2. 79,3. als Gewicht = 6 Senfkörner M. 8,134. Jāṭ. 1,362. Wise 125. = 12 Senfkörner = $\frac{1}{2}$ Guñjā Çāṅkh. Śr. 1,1,30. यवाः सप्त विषस्य Jāṭ. 2,98. Vgl. त्रि°. — 3) in der Chiromantie *eine dem Gerstenkorn ähnliche Figur an der Hand* Varāh. Bṛh. S. 68,12. 70,2. Sīmantinī im ÇKDr. — 4) Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich die günstigen Planeten in den Häusern 4 und 10, die ungünstigen in 1 und 7 stehen,* Varāh. Bṛh. 12,5. 14.

2. यव m. pl. nach den Comm. so v. a. पूर्वपक्षाः *die ersten Monatshälften* VS. 14,26. 31. Çat. Br. 8,4,2,1. मास वै यवाः Kāṭy. 21,2. Mahī. zu VS. 12,74. यवान्तर Schol. zu Lāṭy. 1,11,27. 2,2,6. Andere Texte haben die Form याव.

3. यव (von यु) P. 3,3,87, Sch. 88, Sch. nach gaṇa उच्चादि zu P. 6, 1,160 im Veda यवं; adj. *fernhaltend, abwehrend:* घर्मिर्यव इन्दो यवः सोमो यवः। यवयावानो देवा यावयत्तेनम् AV. 9,2,12. यवो ऽसि (Anfang eines Mantra) Jāṭ. 1,230.

यवक (von 1. यव) m. Tait. 3,3,3. P. 5,2,2. *Gerste* Rāmāç. zu AK. ÇKDr. Varāh. Bṛh. S. 29,3. Vishn. 6,5. 25. यवक = यवप्रकार gaṇa स्थूलादि zu P. 5,4,3.

यवकी adj. *mit Javaka besäet* P. 5,2,2. AK. 2,9,7. H. 967.

यवक्रिन् m. = यवकी, यवक्रीत MBh. 3,10722. यवक्रीस् st. यवक्रिन् ed. Bomb.

यवक्री m. = यवक्रीत MBh. 3,10704. 10706. 10758. gen. °क्रेस् 10759. Decl. Vop. 3,58. fg.

यवक्रीत (1. यव + क्रीत) m. *N. pr. eines Sohnes des Bharadvâga (für Gerste gekauft)* MBh. 3,10700. fgg. 5,3789. 12,7592. 13,1763. 7108. 7663. Harîv. 9571. R. 7,1,2. Varâh. Bṛh. S. 48,65.

यवता f. *N. pr. eines Flusses* MBh. 6,338 (VP. 184).

यवक्षार m. *Aetzkali* (क्षार), *aus der Asche von Gerstenstroh* (1. यव) *bereitet*, AK. 2,9,109. Trik. 2,9,36. H. 943. Ratnam. 86. Sucr. 1,132,16. 227,10. 2,89,11. 125,15. 508,11. Çiâm. Saṃh. 2,6,18. The Vytians know how to prepare an alkaline salt from the ashes of burnt vegetables, which they usually distinguish by the name of the plant from which it is obtained, Ainslie 1,327.

यवक्षद् (1. यव + क्षद्) gaṇa व्रीह्यादि zu P. 5,2,116. Davon adj. (सर्वे) यवक्षादक ebend.

यवगण्ड m. = यवगण्ड Çabdar. im ÇKDr.

यवग्रीव adj. *dessen Hals* (ग्रीवा) *einem Gerstenkorne* (1. यव) *gleicht*, von einem Hahne Varâh. Bṛh. S. 63,2. nach dem Comm. wird ein solcher Hahn gewöhnlich यवशिरस् genannt.

यवचतुर्थी f. Bez. *eines best. Spiels am 4ten Tage* (चतुर्थी) *in der lichten Hälfte des* Vaiçâkha, *bei dem man sich gegenseitig mit Gerstenmehl* (1. यव) *bestreut*, Verz. d. Oxf. H. 217,b,43.

यवज्ञ (1. यव + 1. ज्ञ) m. 1) = यवक्षार Ratnam. 86. — 2) = यवानी Rigân. im ÇKDr.

यवतिक्ता f. *eine best. Pflanze*, = शङ्खिनी, vulgo यवेची (nach Nigh. Pr. यवेचो) Rigân. im ÇKDr. Sucr. 1,183,20.

यवद्वीप m. *die Insel* Java R. ed. Bomb. 4,40,30. fg. जवद्वीप ed. Gorr. — Vgl. यमद्वीप und Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 40.

यवन् m. so v. a. 2. यव. स यो देवानामासीत्स यवायुवत कि तेन देवा यो ऽसुराणामासीत्सो ऽयवा नकि तेनासुरा ययुवत Çat. Br. 1,7,3,23. fg.

1. यवन Unâdis. 2,74. m. 1) *ein Grieche, ein Fürst der Griechen* (gaṇa कम्बोजादि zu P. 4,1,175, Vârtt.); pl. *die Griechen, die griechischen Astrologen* Med. n. 109. AV. Par. in Verz. d. B. H. 93. P. 4,1,49. M. 10,44. पदेष्वन्तु यादृवा ज्ञातास्तुर्वसोर्यवनाः स्मृताः MBh. 1,3538. 3535. योनिदेशाच्च (der Kuh Vasishṭha's) यवनान् (ससृजात्) 6682. 2,578. 6,373 (VP. 194). 7,399. सर्वज्ञा यवनाः — प्रायशेव विशेषतः 8,2107. 12,2429. 13,2102. 2159. Harîv. 760. 768. 776. यवनानां शिरः सर्वम् (मुण्डयित्वा) 780. 2362. 4969. R. 1,54,20 (55,20 Gorr.). 55,3 (56,3 Gorr.). 4,43,20. 44,12. धरुणाश्चवनो माध्यमिकान् Pat. bei Goldst. Mân. 230,a. यवनपाण्यमस्मश्रुपोतनादीनि लेत्राणि Sucr. 1,41,6. Varâh. Bṛh. S. 2,15 (Cit. aus Garga). 4,22. 5,78. 80. 9,21. 35. 10,6. 15. 18. 13,9. 14,18. 16,1. 18,6. Bṛh. 7,1. 8,9. 11,1. 12,1. 21,3. 27,2. 19. 21. Bhaṭṭotp. zu 7,9. सर्वाचारविहीनश्च म्लेच्छ इत्यभिधीयते । स एव यवनदेशोद्भवो यावनः Pârâçârîyam. 20,a,2. यवनम्लेच्छयावनानामक्रोधने 57,a,1. VP. 173. 374. Buâs. P. 2,4,18. 4,27,23. fg. 9,8,5. 12,1,26. Mârk. P. 58,52. Daçar. 111,8. 148,15. 149,1. 2. Verz. d. B. H. 287. No. 857. 862. 865. 1403. Verz. d. Oxf. H. 74,b,15. 154,b,9. 329,a, No. 780. 338,a,14. Ind. St. 2,251. fg. चाणटालानां सङ्गमेन (lies सङ्गमे च) सूरिभिस्तद्वदर्शिभिः । दृष्टो हि यवनः प्रोक्तो न नीचो यवनात्परः ॥ Vṛddha-Kâç. 8,3. यवनानी लिपिः P. 4,1,49, Sch. यवनाचार्य Colebr. Misc. Ess. 2,365. 367. 411. Ind. St. 1,467. 2,247. 238. Verz. d. B. H. No. 881. यवनेश्वर Verfasser eines Gâtaka Bhaṭṭotp. zu Varâh. Bṛh. 7,9. zu Bṛh. S. 104. Verz. d. Oxf. H. 329,a, No. 781. 336,b,16. 338,a,15. Z. f. d. K. d. M. 4,342. fgg. °जातक Ind. St. 2,247. बृहद्यवनजातक 1,467. यवनप्रयुक्तपुराण Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. यवनाः eine Dynastie VP. 474. 477, N. 66. Buâs. P. 12,1,28. यवनी f. *eine Griechin* Raghu. 4,61. Çiç. 93,17. Vikr. 77,5. किराती चामरधारिण्यवनी शस्त्रधारिणी Cit. beim Schol. zu Çiç. 20,16. यवनो युद्धकाले राज्ञे ऽस्त्रं ददाति ebend. यवन्यः als Erklärung von वानवासिकाः स्त्रियः Verz. d. Oxf. H. 217,b,20. fg. Heutigen Tages bezeichnet यवन nach Mohsew. *einen Muhammedaner* und überh. *einen Mann fremden Stammes*. Vgl. काल°. — 2) *Weizen*. — 3) *Möhre*. — 4) *Olibanum* (तुरुष्क) Rigân. im ÇKDr.

2. यवन nom. ag. von यु gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134.

3. यवन adj. falsche Schreibart für 1. जवन *rasch, schnell* Med. n. 109. यवानीक Mâlav. 71,3. *eine* Javana-*Ritterschaar* nach Wilson. m. *ein schnell laufendes Pferd, Renner* Med.

4. यवन M. 7,41 und Kâm. Nitis. 1,14 fehlerhaft für पेलवन.

यवनक 1) m. *eine best. Getraideart* (= वोरगड्डु d. i. स्थविरगोधूम) Ratnâk. in Nigh. Pr. — 2) यवनिका f. = यवनी (s. u. 1. यवन 1) Çiç. 93,17, v.l.

यवनदेशज *Styrax* oder *Benzoin* (*im Lande der* Javana *wachsend*) Bhâvapr. in Nigh. Pr.

यवनदिष्ट m. *Bdellion* (*den* Javana *verhasst*) Rigân. im ÇKDr.

यवनपुर n. *die Stadt der* Javana, wohl *Alexandrien* Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 34.

यवनप्रिय n. *Pfeffer* (*den* Javana *lieb*) H. 420.

यवनमुण्ड m. *ein kahl geschorener* Javana gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72; vgl. Harîv. 780 oben u. 1. यवन 1).

यवनसेन (1. य° + सेना) m. *N. pr. eines Mannes* Kathâs. 36,78.

यवनानी (von 1. यवन) f. P. 4,1,49. Vop. 4,26. *die Schrift der* Javana P., Schol.

यवनारि m. *der Feind* (अरि) *der* Javana: 1) Beim Kṛshṇa's oder Vishṇu's Trik. 1,1,31. H. ç. 73. — 2) N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 121,b,2 v. u. 122,a,3.

यवनाल m. *Andropogon bicolor* Roxb. H. 1178. Sucr. 2,279,3. 335,9. — Vgl. यावनाल.

यवनालज m. *Aetzkali aus der Asche von* Javanâla H. 944.

1. यवनिका s. u. यवनक.

2. यवनिका f. = जवनिका *Vorhang* Schol. zu AK. 2,6,3,22. Trik. 2,6,25. Daçar. 1,55. Spr. 779. Çiç. 4,54. Buâs. P. 1,8,19 (ed. Bomb. ज°). Schol. zu Çiç. 46,18.

1. यवनी s. u. 1. यवन 1).

2. यवनी f. = जवनी *Vorhang* H. 680 (fälschlich यमनी).

यवनेष्ट adj. *den* Javana *lieb* (1. इष्ट); 1) m. *a*) *eine Art Zwiebel oder Knoblauch* (लशुन, पलाण्डु, राजपलाण्डु). — *b*) *Azadirachta indica Juss.*

— 2) f. या *der wilde Dattelbaum* Râǵan. im ÇKDa. — 3) n. *a) Blei* H. 1041. — *b) Zwiebel, Knoblauch.* — *c) Pfeffer* Râǵan. im ÇKDa.

यवयाल (यव + पाल) m. P. 6,2,75.

यवपिष्ट (1. यव + पिष्ट) n. *Gerstenmehl* Gobh. 3,5,4. Sâṅkh. 2,348,11.

यवप्रख्य (1. यव + प्रख्या) adj. *gerstenähnlich;* f. या Bez. *eines best. Ausschlages* Bhâvapr. im ÇKDa.

यवफल (1. यव + फल) m. 1) *Bambusrohr* AK. 2, 4, 3, 26. H. 1153. an. 4, 297. Med. l. 162. Hit. 176. — 2) *Nardostachys Jatamansi* (जटामांसी) Dec. — 3) *Wrightia antidysenterica R. Br.* H. an. Med. — 4) *Ficus infectoria Willd.* (प्रक्ष) Çabdar. im ÇKDa. *Zwiebel* Wilson nach ders. Aut.

यवबुस (1. यव + बुस) *Gerstenspreu* P. 4,3,48. Davon adj. यवबुसक *zur Zeit der Gerstenspreu abzutragen:* शाला ebend.

यवमध्य (1. यव + म°) 1) adj. f. या *dessen Mitte der eines Gerstenkorns gleicht* d. i. *in der Mitte am stärksten und nach den Enden abnehmend* Çat. Ba. 13,6,1,9. Sâṅkh. 1,295,7. 2,17,13. eine Kuh Varâh. Bṛh. S. 61,2. गायत्री (7 + 10 + 7 Silben) ṚV. Pâṛ. 16,17. त्रिष्टुभ् (8 + 8 + 12 + 8 + 8) 47. Verz. d. B. H. 100,16. Ind. St. 3,254. — 2) m. *eine Art Tamburin* H. 293, Sch. — 3) n. *eine Art* Kâṇḍrâjaṇa Paṇḍaçeityat. im ÇKDa. Kull. zu M. 11,217. — 4) n. *ein best. Längenmaass* Mit. P. 49,38.

यवमध्यम n. = यवमध्य 3) M. 11,217.

यवमत् (von 1. यव) P. 3,2,9. 1) adj. *getraidereich;* n. *Kornreichthum:* यत्रौषधीरमृग्वमत् ṚV. 3, 32, 2. 9, 69, 3. 10, 42, 7. कुविद्ङ्ग यवमन्तो यवं चिग्वया दात्यनुपूर्वं वियूय *Kornbauer* 131, 2. *Gerste enthaltend, mit Gerste vermengt* TS. 5,2,10,3. 11,2. Kâṭh. 25,10. 26,5. Çat. Ba. 3,6, 1, 7. 7,1,3. Âçv. Gṛhj. 1, 11, 3. 2, 8, 15. 4, 8, 7. — 2) m. N. pr. eines Gandharva Çat. Ba. 11,2,3,9. Verfassers von VS. 2,19 VS. Anukr. — 3) °मती f. *ein best. Metrum, 2 Mal* —⏑—⏑—⏑—⏑—⏑—, ⏑—⏑—⏑ —⏑—⏑—⏑— Colebr. Misc. Ess. II, 165 (VI, 11). Ind. St. 3, 362.

यवमय (wie oben) adj. *aus Gerste bestehend, — bereitet* P. 4, 3, 149. Vârtt. TS. 1,8,7,1. 2,4,11,3. Çat. Ba. 3,2,3,13. 5,2,16. 5,2,4,11. 5,3,9.

यवमात्र (1. यव + मात्रा) adj. *so gross wie ein Gerstenkorn* Kâṭh. Çr. 3,4,1.

यवयू, यवयति denom. von युवन् West.

यवयस n. N. pr. eines Varsha im Plakshadvipa Bhâg. P. 5,20,3.

यवयावन् (von यु) adj. *abwechselnd:* यवयावानो देवा यावयद्वेषम् AV. 9,2,13.

यवयु (von 1. यव) adj. *Korn wünschend* ṚV. 8,67,9.

यववक्त्र (1. यव + वक्त्र) adj. *mit einer dem Gerstenkorne ähnlichen Spitze versehen:* सूची Sâṅkh. 2,103,13. शलाका 343,14.

यवशिरस् adj. *dessen Kopf die Gestalt eines Gerstenkorns hat;* s. u. यवग्रीव.

यवशूक m. = यवत्तार Taitt. 2,9,36. Ratnam. 86.

यवशूकज m. dass. Râǵan. im ÇKDa.

यवस n. (m. AK. 2,4,3,33. Halâ. 2,36, die v. l. aber n.) *Gras, Futter, Weide* H. 1193. ṚV. 1,38,3. 3,45,2. 4,41,5. 42,10. ईयुर्गाव इव यवसादगोपाः 7,18,10. 67,2. तर्पतो रपो यवसस्य भूरेः 93,2. स नो यवसमिच्छतु 102,1. धेनुर्यवसस्य पिप्युषी 2,16,3. सदांसि रण्वो यवसेव पुष्यते 10,11,3. 23,1. 99,3. 100,10. 113,2. गावो न यवसेषा 1,91,12. °भुष्टि Çâṅkh. Çr. 3,20,1. Âçv. Gṛhj. 2,4,3. यवोदके *Futter und Wasser* Kâṭh. Çr. 26,6, 23. Pâr. Gṛhj. 3,14. M. 7,78. 193. 11,196. Jâǵ. 3,300. देशे सुयवसोदके MBh. 3,2584. 13043. 12,8393. Harîv. 4429. R. 2,46,12 (44, 12 Gorr.). 91, 72. R. Gorr. 2, 47, 14. Sâṅkh. 1, 122, 7. Kâm. Nîtis. 11, 16 (lies °यवसेन्धनं). 15, 41. 19, 6. Ratnâk. 18, 114. 75, 92. Varâh. Bṛh. S. 93, 5. Bhâg. P. 1, 17, 3. 4, 17, 23. 18, 23. Paṇḍat. 47, 10. 182, 13. ed. orn. 4, 18. — Vgl. या°, सु°, सू°.

यवसप्रथम adj. VS. 21,43 nach Mahîdh. *unter den Speisen* (प्र°) *die erste* (प्र°) *Stelle einnehmend;* oder *mit der Weide beginnend* d. h. *auf guter Weide beruhend, wohlgenährt.*

यवसाद् (यवस + 2. घद्) adj. *Gras verzehrend* ṚV. 1, 94, 11. *weidend* 10, 27, 9.

यवसिन् und यवस्यु s. सु°.

यवसुर n. *ein aus Gerste* (1. यव) *bereitetes berauschendes Getränk* (सुरा) ÇKDa. nach Sidh. K.

यवागू Uṇâdis. 3, 81. f. Sidh. K. 248, *a*, 8. *Reisbrühe* (Wasser mit wenigen Reiskörnern gekocht; nach einigen Angaben 6 Theile Wasser auf einen Theil Reis); auch *dünne Abkochungen von andern Körnern und Stoffen.* AK. 2,9,50. H. 397. Halâ. 2,165. TS. 6,2,3,2. Taitt. Âr. 2,8,8. अर्तिल°, गवीधुक° TS. 5,4,3,2. TBr. 2,1,3,6. Çat. Ba. 1,7,4,10. 2,3,3,16. Kâṭh. Çr. 4,2,17. 15,22. 5,11,10. 7,4,27. Schol. 308,21. Gobh. 1,3,9. Çâṅkh. Çr. 2,7,9. 3,12,15. Âçv. Çr. 2,3,2. M. 6,20. 11,106. तिलतण्डुल° Sâṅkh. 1,138,13. तीर° 139,13. दम° 128,3. सिक्थैर्विरहितो मण्डः पेया सिक्थसमन्विता। विलेपी बहुसिक्था स्याद्यवागूर्विरलद्रवा॥ 229,15. 2,22,3. 30,16. स्वल्पतण्डुला 229,13. Çâṅkh. Sâṃ. 2,2,112. 3, 1,20. Varâh. Bṛh. S. 31,31. Mâlav. P. 39,54. fg. P. 7,3,69, Vârtt., Sch. तैरेयी P. 4,2,20, Sch. Nach Çâṅkh. Sâṃ. 2,2,101. fg. *ein Decoct, für welches 4 Theile eines Stoffes in 64 Theilen Wasser gesotten und der Abguss auf die Hälfte eingekocht wird.*

यवागूमय adj. (f. ई) von यवागू P. 5,4,21, Sch.

यवाग्रज (1. यव - अग्र + 1. ज) m. 1) = यवत्तार AK. 2,9,109. H. 943. Med. p. 13 (जवाग्रज). Ratnam. 86. — 2) = यवानी Râǵan. im ÇKDa.

यवाग्रयण (1. यव + ग्रा°) n. *Gerstenerstlinge* Schol. zu Kâṭh. Çr. 1, 8, 6. 4, 6, 1.

यवाचित (1. यव + या°) adj. *mit Gerste* (*Korn*) *beladen* TS. 1,8,18,1. Çat. Ba. 5,4,3,23. Paṇḍav. Ba. 12,9,17. Kâṭh. Çr. 15,8,27. Âçv. Çr. 9,4,18.

यवाद् (1. यव + 2. घद्) adj. *Gerste essend* ṚV. 10,27,9.

यवान adj. *rasch, schnell* Med. n. 110 fehlerhafte Schreibart für जवान, partic. von 1. जू; vgl. 1. जवन.

यवानिका f. = यवानी AK. 2,4,3,10.

यवानी (von 1. यव) f. P. 4,1,49. Vop. 4, 26. *Ptychotis Ajowan Dec.* AK. 2,4,3,11. Med. n. 110. Suçr. 2,50,2. 222,12. 410,3. 453,12. 459, 13. Çâṅkh. Sâṃ. 2, 6, 12. Schol. zu Kâṭh. Çr. 946,1 v. u. = डुण्ढो यवः P., Sch. — Vgl. यमानी.

यवापत्य (1. यव + ग°) n. = यवत्तार Râǵan. im ÇKDa.

यवाम्ल (1. यव - अम्ल + 1. ज) n. *saurer Gerstenbrei* (सौवीरक) Râǵan. im ÇKDa.

यवाशिर (1. यव + या°) adj. *mit Getraide vermengt, gemalst:* Soma ṚV. 1,187,9. 2,22,1. 3,42,7. 8,81,4.

यवाष s. पेवाष.

यवाषिकै adj. von यवाष gaṇa 1. कुमुदादि zu P. 4,2,80.

यवाषिन् desgl. gaṇa प्रेक्षादि zu P. 4,2,80.

यवास Uṇâdis. 4, 2. 1) m. *Alhagi Maurorum Tourn., Mannapflanze* AK. 2,4,2,10. Ratnam. 119. *eine Art* Khadira Çabdam. im ÇKDr. = पास, त्रिकण्टिका u. s. w. Riâân. ebend. — gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2, 135. — 2) f. या *ein best. Gras*, = गुण्डासिनी Riâân. im ÇKDr. — Vgl. धन्व°.

यवासक m. *Alhagi Maurorum Tournef.* Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 1, 165,8. 2,418,1.

यवासशर्करा (य°+श°) f. *Mannazucker* Riâân. im ÇKDr. Suçr. 1,188,6.

यवासिनी f. *eine mit Javâsa bestandene Gegend* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135.

यवाह्न (1. यव + धाह्न) m. = यवनाल Raâân. im ÇKDr. Suçr. 2,119,6.

यविक, यविन् und यविल adjj. (मत्वर्थ) von 1. यव gaṇa तुन्दादि zu P. 5,2,117.

यविष्ठ (superl. zu युवन्) 1) adj. *der jüngste* (m. *ein jüngerer Bruder* H. 332) P. 5,3,64. 6,4,156. Vop. 7,56. किमु श्रेष्ठः किं यविष्ठो न आस ईगन् ṚV. 1,161,1. 10,143,2. Bhâg. P. 3,1,6. 6,7,33. 9,4,1. 10,82,16. Pâraân. 4,8,68. Sehr häufig heisst so *das jüngste* d. h. *eben aus den Hölzern geborene* oder *auf den Altar gesetzte Feuer*, ṚV. 1,22,10. 147, 2. 189, 1. 2,6,6. 3,15,3. 19,4. 4,2,10. 12. 4,6. 11. दधाति रत्नं विधते यविष्ठः 12,3. 4. तुभ्ये वयः सूनुं सहसो युवानमङ्गिरावाच मतिभिर्यविष्ठम् 6, 8,1. 6,2. 7,3,3. यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः 4,2. 7,3. 12,1. 10,20,2. Çat. Br. 7,5,2,38. Daher Bein. Agni's TS. 2,2,2,1. Agni Jâvishṭha angeblicher Liedverfasser zu ṚV. 8,91 und Kâṭy. 16,16. fg. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 10. pl. *seine Nachkommen* 19, *a*, 26. — Vgl. यवीयस्.

यविष्ठवस् adj. *das Wort* यविष्ठ *enthaltend* Çat. Br. 7,5,2,38. 10,1,2,11.

यविष्ठा adj. = यविष्ठ VS. Prâtiç. 4, 153. stets am Ende eines Pâda als Dijambus ṚV. 5,26,7. 1,36,6. 3,9,6. 28,2. 5,8,6. यविष्ठो nach P. 5, 4,36, Vârtt. und Kâç. zu P. 5,4,30.

यवीनर m. N. pr. eines Sohnes des Aǵamîḍha Harîv. 1075. des Dṛiḍhâyu VP. 433. Bhâg. P. 9,21,27. des Bharmjâçva 32. des Vâhjâçva Harîv. 1779.

यवीयस् (compar. zu युवन्) adj. *jünger;* m. *ein jüngerer Bruder*, f. °सी *eine jüngere Schwester* P. 5,3,64. 6,4,150. Vop. 7, 56. AK. 2,6, 1,13. H. 332. Mân. 3. 60. Kâtç. 82. 84. M. 2,128. 130. 8,116. 9,87. fg. 11,185. Jâân. 1,32. MBh. 3,5044. यवीयसः nom. pl. Harîv. 6481. R. 1, 31,15. 70,2. यवीयसं भ्रातरम् 103,29. 3,24,10. 4,3,12. 17,31. 56,24. fg. Bhâg. P. 4,13,11. 24,1. 5,9,1. 9,15,13. 10,54,52. Mârk. P. 50,22. मातर्, यवनी, अम्बा *eine jüngere Stiefmutter* R. 2, 22, 30 (19, 22 Gorr.). 32,36. 38 (31,23. 25 Gorr.). der Çûdra im Gegensatz zu den drei übrigen Kasten MBh. 1,6187 (nom. pl. यवीयसः). in Verbindung mit भूत im Gegens. zu महाभूत 12,8977. — Vgl. यविष्ठ.

यवीयस (von यवीयस्) m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 33,*b*,24.

यवीयुध् (vom intens. von 1. युध्) adj. *kriegerisch, streitbar* ṚV. 8,4,6. 10,61,9. यव्युध् Çaṅk. in Ind. St. 2,47.

यवोत्थ (1. यव + उत्थ) n. = यवागू Raâân. im ÇKDr.

यवोदर (1. यव + उ°) n. *der Leib* —, *die dicke Stelle eines Gerstenhorns* als *best. Längenmaass* Ind. St. 2,437. Mârk. P. 49,37.

यवोर्वरा (1. यव + उ°) f. *Gerstenacker* Çâṅkh. Çr. 14,40,14. Liṭ. 8,3,4.

1. यव्य (von 1. यव) 1) adj. zu *Gerste geeignet* P. 5, 1, 7. *mit Gerste besäet*, — *bestanden* 2,3. AK. 2,9,7. H. 967. Halâ. 2,8. — 2) m. nach Mân. *Gersten-, Fruchtvorrath* VS. 23,8; vgl. VS. Paṭ. 2, 20. — 3) m. pl. Bez. eines Ṛshi-Geschlechts: सोमपा यव्याः (सोमवायव्याः ed. Bomb.) MBh. 12,6148.

2. यव्य (wie eben) n. Bez. gewisser Homamantra (neben गव्य) TBr. 3,8,22,3.

3. यव्य (von 2. यव) adj. etwa *die Java enthaltend;* m. *Monat* Çat. Br. 1,7,2,16. Gaṅgâdh. im Paâaçâitvat. im ÇKDr.

यव्या nach Naigh. f. so v. a. *Fluss;* wohl aus der Stelle वार्णा सो यव्याभिर्वर्धन्ति पूरू ब्रह्माणि ṚV. 8,87,8 gefolgert. Hier wie in den folgenden Stellen könnte der adverbial gebrauchte instr. sg. *in Menge* (also etwa auch *in Strömen*) bedeuten. परो ग्रन्था यवसो यव्या सीधाण्णेवं मरुतो मिमिक्षुः ṚV. 1, 167, 4. मरुद्भिरग्न ओजसेमं यव्या सुवित्र्यमा मरुतो वन्दते गीः 173,12. Die Comm. leiten das Wort bald von 1. यव, bald von यु ab; das Metrum erfordert यवीया zu sprechen.

यव्यावती f. N. pr. eines Flusses oder einer Oertlichkeit ṚV. 8,27,6. Pâraâv. Br. 25,7,2. Im ersten Fall zu यव्या, im andern etwa zu यव्य = 1. यव्य mit Dehnung des Auslauts.

यव्युध् s. यवीयुध्.

यश am Ende eines adj. comp. = यशस् in अति° und सु°. n. यशस् (Benfey vermuthet यशस्) N. eines Sâman Ind. St. 3, 230, *a*; vgl. कार्त°.

यशःकर्ण (यशस्+कर्ण) m. N. pr. zweier Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5,504, Çl. 14. 7,3, Çl. 7.

यशःकेतु (यशस्+केतु) m. N. pr. verschiedener Fürsten Verz. d. Oxf. H. 152, *b*, 25. Kathâs. 80,4. 86,4. 89,2.

यशःपटक (यशस्+प°) m. *Pauke* AK. 1,1,2,6. H. 393.

यशःपाल (यशस्+पाल) m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. 2,278.

यशद n. *ein best. Mineral*, vulgo दस्ता ÇKDr. nach Bhâvapr. दस्ता ist nach Haughton *zinc, lapis calaminaris, pewter, tutenag.*

यशश्चन्द्र (यशस्+चन्द्र) m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,3, Çl. 7.

यशःशेष (यशस्+शेष) adj. *von dem nur der Ruhm übriggeblieben ist* d. i. *todt* H. 374. °शेषीभू *verstorben* Ind. St. 3, 393. °शेषता प्रया so v. a. *sterben* Kathâs. 91,44. °शेषतां नी *tödten* Riâ-Tan. 4,112.

1. यँशस् 1) n. Uṇâdis. 4, 190. *a*) *Ansehen, schöne* oder *stattliche Erscheinung; Schönheit, Würde, Herrlichkeit:* यादिर्भुवद्दृणीर्यशसा गोः ṚV. 4, 1, 16. 1, 25, 13. प्रातिं ग्रभ्णतु यशो अस्य 7, 104, 11. 5, 4, 10. 6, 2, 1. 79, 7. 9, 20, 4. वीरवत् 4, 32, 12. 7, 15, 12. 8, 23, 21. 9, 61, 26. घृत 7, 74, 5. सुशिप्रम 8, 19, 6. सुमत् 9, 32, 6. AV. 3, 22, 1. 6, 39, 1. 2. किरणे गोषु यशाः 69, 1. (पुरं) यशसा संपरीवृताम् 10, 2, 32. यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च 3, 15. विश्वव्रय 8, 9. चतुः श्रोत्रे यशो अस्मासु धेहि 11, 5, 25. 12, 5, 9. 19, 37, 1. 38, 2. VS. 18, 8. 20, 3. 32, 3. यशस्, श्री Çat. Br. 11, 6, 2, 2. 13, 1, 2, 3. 14, 9, 4, 6. 7. TS. 5, 7, 6, 4. यशसस्साम् Pâr. Gṛhy. 2, 6. Kâtç. 70. — *b*) *Ansehen, Ehre, Lob, Ruhm* AK. 1, 1, 3, 12. H. 273. Halâ. 1, 133. AV. 9, 6,

38. 10,6,27. 13,6,14. ईश्वरो वै यशस्व्यस्यो यतेताव क्षेतारं यशो ऽर्तोः Ait. Br. 2,20. उद्गातरि यशो ऽधात् 22. यं ब्राह्मणमनूचानं यशो नर्छेत् 5,23. 6, 34. 7,18. 32. यागुर्विद्या यशो बलम् M. 2,121. यशोमेधासमन्वित 3,263. यशो ऽस्य प्रथते 11,15. Harıv. 8391. विस्तीर्यते यशो लोके M. 7,22. सँनिप्यते यशो लोके 31. कर्यत्ति च मनुष्यशः 3,66. यशः प्राप् 8,242. पुण्यैर्यशो लभ्यते Vedânta-Kân. 15,19. Spr. 2364. वर्धनं यशसः R. 2,74, 26. लोकानाविशते यशः Bhâg. P. 3,14,11. यशः स्फीतं निधाय 4,21,7. यशः पालय Spr. 2160. यशः रक्षणम् Raghu. 3,48. यशःशरीर 2,57. Kathâs. 34,11. यशःकाय Spr. 940. यशोराशि Vikr. 11,17. यशोयुत *angesehen, berühmt* Vârân. Bhn. S. 16,3. यशः कुमुदषण्डस्य Spr. 3070. Hanm. Anth. 483, Çl. 1. उद्दाम° Bhâg. P. 4,12,43. भाव्य° Kathâs. 18,205. — MBh. 3,2051. 2410. Sucar. 1,123,3. Raghu. 1,3.7.27. Megh. 58. Spr. 2627. Vârân. Bhn. S. 13,16. 48,52. 63,3. 65,11. Bhâg. P. 3,28,18. pl. Raghu. 2,3.4,19. यशांसि कवयो दितु प्रतन्वति नः Spr. 1078. 2157. 5282. Prab. 3,14. यशस् neben कीर्ति M. 4,94. 11,40. Spr. 3108. Der personificirte *Ruhm* als Sohn Kâma's von der Rati Harıv. 12482. Dharma's von der Kirti VP. 35. Mârk. P. 50,58. — *c) Gegenstand der Ehre, Respectsperson:* यशो भवति य एवं विद्वानाधत्ते Çat. Br. 2,2,2,1. 4,2,4,9. 5,3,2,3. ब्राह्मणं राजानमनु यशः करोति तस्माद्ब्राह्मणो राजानमनु यशः 4,2,7. 5,3,16. यशः स्याम 14,1,2,3. — *d) gefälliges oder angenehmes Wesen, Gunst:* देवेषु यशो मर्ताय भूषन् RV. 9,94,2. मित्रो न यो जनेषा यशायते यशस्यया 10,22,2. 1,25,19. धर्तुं त्यशो वो येन स्मा मित्रं भरथः सजोषसः 3,62,1. — *e)* N. eines Sâman Pañcav. Br. 15,3,32. 13,8,4. 9,2. Lâṭy. 3,4,8. Ind. St. 3,230,*a*. यशस्त्यस्य 200,*a*. इन्द्रस्य 208,*b*. — *f)* = उदक Nigh. 1,12. = अन्न 2,7. = धन 10. — 2) m. N. pr. eines Mannes Brah. Intr. 373. fg. 397. Wassiljew 28. 47. 36. Schiefner, Lebensb. 247 (17). 308 (78). — Vgl. घ°, घति°, घप°, दीर्घ°, दुर्यशस्, निर्यशस्, पुण्य°, पशु°, ब्रह्म°, भट्ट°, मक्ष°, यज्ञ°, स्व°.

2. यशस् adj. 1) *ansehnlich, schön, würdig, herrlich:* भाग RV. 3,1,19. 10,39,2. पोष 1,1,3. 31,3. 60,1. वर्ण 2,3,3. 3,1,11. रयि 6,8,3. 7,75,2. त्वमिन्द्र यशा असि 8,79,3. Agni 5,15,1. 32,11. — 2,8,1. 7,16,4 (यशस्तम). 8,2,22. 10,76,6. AV. 3,21,5. 6,39,2. 3. 13,1,38. VS. 20,44. — 2) *angesehen, geehrt:* भग RV. 8,60,3. यशसामनुष्टिः 6,3,3. गोभिः श्याम यशसो जनेषा 10,64,11. सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन 71,10. 9,97,3. ब्रह्मणास्ते यशसः सन्तु मान्ये AV. 2,6,2. — 3) *angenehm, werth:* वयं स्याम यशसो जनेषु RV. 4,51,11. मघवन्निन्द्रे यशसं कृधी नः 7,42,3. 8,48,3. 23,10. 9, 61,28. दधि *beliebt* 10,81,1. AV. 5,38,2. — RV. 5,8,4 scheint यशसो irrig für यशसा (Bed. 1,*c*) betont zu sein.

यशस am Ende eines comp. = 1. यशस् in ओयशसानि Çat. Br. 12, 8,2,1. — Vgl. ब्रह्म°, यज्ञ°, स्वस्ति°.

यशस्कर (1. य° + 1. कर) 2) adj. f. ई *Ruhm verleihend, ruhmvoll* P. 3,2,20, Sch. Vop. 26,47. M. 8,337. MBh. 1,6147. 6296. R. 1,2,45. 3, 10,25. 5,35,47. Spr. 760. Mârk. P. 77,19. पितृमातृ° Bhâg. P. 4,27,7. 3,28,18. 4,17,36. सु° Pañcat. 1,1,25. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 104,19. Râja-Tar. 5,472. 6,53. 84. 119. 138. 8,2698. °स्वामिन् Bez. eines von einem Jaçaskara errichteten Heiligthums 6,140.

यशस्काम (1. य° + काम) 1) adj. *ehrbegierig* TS. 2,3,2,1. Ait. Br. 1,8. Kâty. Ça. 4,4,1. 11,2. 15,8. Liṭ. 3,3,22. — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 14.

यशस्काम्य s. u. काम्य.

यशस्कृत् (1. य° + कृत्) adj. *Ansehen verleihend* TS. 1,5,2,4 (सत्कृत् VS.).

यशस्य (von 1. यशस्) 1) adj. gaṇa स्वर्गादि P. 5,1,111, Vârtt. 2. Schol. zu P. 5,1,39. *Ansehen gebend, ruhmvoll:* सूनृतमिनो मनवे यशस्ये (दृशस्ये VS.) Himmel und Erde TS. 1,2,12,2. शूलगव Âçv. Gṛhy. 4,8, 35. VS. Pâr. 8,28. M. 1,106. 2,52. 3,106. 4,13. MBh. 1,2309. 2,286. R. 1,44,63. Sucar. 1,3,15. *geehrt:* सर्वं यशस्या धन्या च यस्यास्त्वं समुपस्थिता R. Gorr. 2,38,23. Vgl. सु° (auch R. 2,27,2). — 2) f. या N. zweier Pflanzen: = जीवन्ती und सहि Râgân. im ÇKDr.

यशस्यु (wie oben) adj. *Gunst suchend* AV. 4,11,6.

यँशस्वत् (wie oben) 1) adj. Schol. zu P. 5,2,121. 8,2,9. Vop. 7,28. a) *ansehnlich, schön, herrlich, würdig* RV. 1,9,6. यशस्वतीरपस्युवो न सत्या: 79,1. रया 3,16,2. 8,23,27. Agni 91,2. 10,11,2. 20,9. TS. 1,5, 8,4. 4,4,12,2. — *b) rühmlich, ehrenvoll:* पूरुमुति RV. 10,38,1. — *c) angenehm, werth:* यशेन्द्रो द्यावापृथिव्योर्यशस्वान्यशाप् सोमधीषु यशस्वतीः AV. 6,58,2. — 2) f. °वती N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 73,257.

यशस्विन् (wie oben) adj. Sch. zu P. 5,2,121 und 1,4,19. 1) *ansehnlich, schön, herrlich, würdig* AV. 6,39,2. 19,56,6. Agni TS. 5,7,4,2. यशः: पशूनां यशस्वितमः TBr. 3,8,2,2. वृत Âçv. Gṛhy. 2,6,9. Çat. Br. 4,2,4, 10. 10,4,4,11. 11,2,2,11. 14,9,4,7. तेजस् Çâṅkh. Gṛhy. 2,2. ओषधयः Kauç. 135. अयोध्या R. 2,71,19. गङ्गा 1,44,34 (45,30 Gorr.). मर्यादां तां मनुष्यस्य वेत्ता गत्वा यशस्विनीम् 4,41,26. — *b) hoch angesehen, berühmt;* von Personen Kâṭh. Up. 3,13,2. M. 3,40. 9,334. MBh. 1,5888. 3,2346. 2471. 2513. 2719. 15378. 5,7085. R. 1,2,45. 4,3. 8,10. 2,25,24. 29,17. 74,16. R. Gorr. 2,38,22. Spr. 1791. Kathâs. 16,22. 21,108. 51,70. यशस्वितम von einem Bogen und einer Person Kâṭh. Up. 2,6. — 2) f. °विनी *a) Bez. einer best. Arterie* Verz. d. Oxf. H. 236,*a*,2 v. u. *b*,8. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: = वनकार्पासी Çabdar., = यवतिक्ता und महाज्योतिष्मती Râgân. im ÇKDr. — *c)* N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2628.

यशोगोपि m. N. pr. eines Scholiasten des Kâç. Ça.; s. Einl. S. VII.

यशोग Weber, Lit. 137.

यशोघ्न (1. यशस् + घ्न) adj. f. ई *das Ansehen —, die Schönheit vernichtend* Pân. Gaṇ. 1,11,1. *den Ruhm vernichtend* M. 8,127. Bhâg. P. 4,2,10.

यशोद् (1. यशस् + 1. द) 1) adj. *Ansehen —, Ruhm verleihend.* — 2) m. *Quecksilber* Râgân. im ÇKDr. — 3) f. या N. pr. *a)* der geistigen Tochter einer Klasse von Manen Harıv. 989. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,1 v. u. — *b)* der Frau des Kuhhirten Nanda, der Kṛshṇa gleich nach seiner Geburt als Kind untergeschoben wurde, und die daher als seine Mutter angesehen wird (यशोदानन्द u. s. w. Bez. Kṛshṇa's), Harıv. 3316. fgg. 8391. Spr. 4897. VP. 503. Pañcar. 1,7,78. 3,7,33. 4,1,18. 3,115. 8,14. Verz. d. B. H. No. 576. 1194. Verz. d. Oxf. H. 25,*a*,14. 27,*a*,45. 68,*b*,21. °गर्भसंभूता als Beiw. der Durgâ MBh. 4,179. — *c)* der Gattin Mahâvîra's und Tochter Samaravîra's Wilson, Sel. Works 1,293.

यशोदत्त (1. यशस् + दत्त) m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 201,13.

यशोदा (1. यशस् + 2. दा) adj. *Ansehen gebend* TS. 4, 4, 6, 2. Bez. gewisser Ishṭakâ 5, 3, 10, 4.

यशोदेव 1) m. (1. यशस् + देव) N. pr. eines buddhistischen Bhikshu Lalit. ed. Calc. 1, 9. eines Sohnes des Râmakandra Verz. d. Oxf. H. 280, b, 12. — 2) f. ई (1. यशस् + देवी) N. pr. einer Tochter Vainateja's und Gattin des Bṛhanmanas Hariv. 1706. fg.

यशोधन (1. यशस् + धन) 1) adj. *dessen Reichthum im Ruhm besteht, reich an Ruhm, berühmt;* von Personen Raghuv. 2, 1. 3, 48. 14, 25. Bulanvi bei Uévál. zu Unâdis. 4, 190. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 8, Çl. 27. लोके यशोधनौ किंचित् MBu. 1, 6486. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 91, 4. Verz. d. Oxf. H. 152, b, 38.

यशोधर (1. यशस् + धर) 1) adj. *Jmdes Ruhm erhaltend* Bhâg. P. 1, 17, 21. 3, 2, 26. — 2) m. a) Bez. *des 31sten Tages im bürgerlichen Monat* Ind. St. 10, 296. — b) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 63, 7. Râga-Tar. 6, 219. 228. 250. 252. 8, 2458. des 18ten Arhant's der vergangenen und des 19ten der zukünftigen Utsarpiṇî H. 52. 53. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Rukmiṇî MBu. 13, 621 nach der Lesart der ed. Bomb. (यशोवर ed. Calc.). — 3) f. धा a) Bez. *der 31sten Nacht im bürgerlichen Monat* Ind. St. 10, 296. — b) N. pr. verschiedener Frauen MBu. 1, 2788. VP. 83, N. 6. Kathâs. 55, 28. der Mutter Râhula's Burn. Intr. 278. Lot. de la b. l. 2. 164. Schiefner, Lebensb. 236 (6).

यशोधेय m. Taitt. 1, 1, 13 fehlerhaft für याशो°.

यशोधौ (1. यशस् + 2. धा) adj. *Ansehen —, Ruhm verleihend* TBr. 3, 6, 2, 2. Bhâg. P. 3, 1, 38.

यशोधामन् (1. यशस् + 1. धा°) n. *eine Stätte des Ruhmes* Bhâg. P. 3, 4, 1.

यशोनन्दि (1. यशस् + न°) m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12, 1, 31.

यशोभर्गिन् (von 1. यशस् + भग) adj. *ruhmreich* VS. 2, 20.

यशोभर्गिन und यशोभग्य ved. adjj. von 1. यशस् + भग P. 4, 4, 131. fg.

यशोभद्र (1. यशस् + भद्र) m. N. pr. eines der 6 Çrutakevalin bei den Gaina H. 33. Wilson, Sel. Works 1, 336. 338. — Vgl. याशोभद्र.

यशोभृत् (1. यशस् + भृत्) adj. *Ruhm besitzend, berühmt* oder *Ruhm bringend* MBu. 1, 561.

यशोमती (f. von यशोमत्त् und dieses von 1. यशस्) f. N. *der 31sten lunaren Nacht* Ind. St. 10, 297. — Vgl. यशोवती.

यशोमत्य m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 46.

यशोमाधव (1. यशस् + मा°) m. *eine Form* Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 148, b, 29.

यशोमित्र (1. यशस् + मित्र) m. N. pr. eines buddh. Autors Burn. Intr. 512. 563. fg. 566. 571. 574. Schiefner, Lebensb. 310 (80).

यशोराज (1. यशस् + राजन्) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8, 536. 561. 1119. 2843. 2846. 2905.

यशोलेखा (1. यशस् + ले°) f. N. pr. einer Fürstin Kathâs. 34, 232. 234.

यशोवति s. u. यशोवती 2).

यशोवती (f. von यशोवत् und dieses von 1. यशस्) f. N. pr. 1) verschiedener Frauen Râga-Tar. 1, 70. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. = यशोधरा Lalit. ed. Calc. 109, 2. यशवती 270, 17. — b) einer Gegend (urspr. eines Flusses) Vârâh. Bṛh. S. 14, 28 (verkürzt °वति). — 3) einer mythischen Stadt auf dem Meru Comm. zu Bhâg. P. 5, 16, 30. — Vgl. यशोमती.

यशोवर (1. यशस् + वर) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Rukmiṇî MBu. 13, 621. यशोधर ed. Bomb.

यशोवर्मन् (1. यशस् + व°) m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 54, 152. fgg. Râga-Tar. 4, 134. 137. fg. 705. Colebr. Misc. Ess. 2, 299. 307. 309. 312. 314. Journ. of the Am. Or. S. 7, 26, Çl. 11; vgl. S. 36. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124, b, 11. Am Ende eines adj. comp. °वर्मक Kathâs. 54, 198.

यशोहन् (1. यशस् + हन्) adj. *Jmdes Ruhm vernichtend* Bhâg. P. 6, 5, 38.

यशोहर (1. यशस् + हर) 1) adj. *den Ruhm raubend, Schande bereitend, schändend* MBu. 1, 5987. R. Gorr. 2, 110, 3. आत्म° R. Schr. 2, 101, 7. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Kshîrîç. 17, 10. 50, 15. 17. °जित् Bein. Kakuṭsha's 17, 11.

यष्टर् und यैष्टर् (von 1. यज्) nom. ag. *Verehrer, Opferer* (= यजमान AK. 2, 7, 7. H. 817. Halâj. 2, 265): यष्टा देवान् RV. 2, 9, 6. अतियाजस्य यष्टा 6, 52, 1. 10, 61, 17. TS. 1, 1, 11, 1. अग्निर्वै देवानां यष्टा TBr. 3, 3, 7, 6. ohne Object MBu. 3, 511. 2451. Hariv. 298. Verz. d. Oxf. H. 33, b, 12. 59, b, 21. क्रतुसहस्राणाम् MBu. 5, 2918. Hariv. 13060. Mârk. P. 120, 2. 127, 33. क्रतुशतैः Hariv. 12990. 13768. यष्टृतर Nir. 8, 8.

यष्टव्य (wie oben) adj. P. 8, 2, 36, Sch. *derjenige, welchem geopfert werden muss,* Maitrâjop. 6, 34. MBu. 3, 511. 7, 9438. Kathâs. 41, 18. n. impers. *zu opfern* Nir. 8, 12. Maitrâjop. 6, 36. Bhag. 17, 11. MBu. 13, 5107. Hariv. 297. 9003. Bhâg. P. 3, 29, 10. 4, 14, 6. Mârk. P. 35, 56. 123, 58. Pañkat. 167, 1. Bhâg. P. 10, 71, 3. सुनिश्चितां मतिं कृत्वा यष्टव्ये *zu opfern* R. 1, 8, 2. — Vgl. सु°.

1. यष्टि (von यम्, यच्छ् Uévál. zu Unâdis. 4, 179. m. (dieses nicht zu belegen) und f. AK. 3, 6, 8, 38. Sidd. K. 251, a, 12. auch यष्टी f. gaṇa वल्गादि zu P. 4, 1, 45. 1) *Stab, Stock, Keule, Flaggenstock* AK. 2, 8, 9, 33. H. 783. 774. an. 2, 96. Med. t. 25. Halâj. 4, 41. 2, 208. 321. Çat. Br. 14, 9, 4, 7. Kaush. Up. 4, 19. वेणु° Çat. Br. 2, 6, 2, 17. Kâty. Çr. 5, 10, 21. पलाश° Kauç. 18. 39. 47. वेत्र° Çiç. 100. वैणवी M. 4, 36. MBu. 1, 2350. 14, 1252. M. 5, 99. MBu. 1, 5461. 3, 16836. 5, 572. 5134. 6, 2776. 7, 6432. शनैर्यष्टयुत्थानम् Spr. 1615. गतिरपि तव यष्टिकरणा 4065. Sâmav. 13, 20. Schol. zu 7, 10. Varâh. Bṛh. S. 103, 12. Kathâs. 3, 47. 60, 173. fg. Çiç. 9. 39. Daçak. in Bunv. Chr. 187, 4. Pañkat. III, 179. 103, 19. 261, 12. Verz. d. Oxf. H. 129, b, 4. ध्वजाकारासु यष्टिषु Hariv. 4019. Varâh. Bṛh. S. 43, 8. 21. 24. 28. 72, 4. — 2) *Stengel:* मधुयष्टिर्लता यथा Hariv. 4495. R. 7, 37, 8, 28. कर्णिकार° 3, 79, 30. Vikr. 44. चूत° Kumâras. 6, 2. कदम्ब° Uttararâmâ. 63, 7 (81, 5). — 3) भुज° (यष्टि m. = भुजदण्डक Med.) *ein schlanker Arm* Ragh. 11, 17. अङ्ग° *ein schlanker Leib* MBu. 2, 2228. Hariv. 8387. Ragh. 14, 27. Kumâras. 1, 31. Spr. 991. 1654. Kâraṇd. 6. गात्र° (s. auch bes.) dass. Hariv. 8432. शरीर° dass. Ragh. 6, 55. — 4) ग्रसि° *Klinge eines Schwertes* Varâh. Bṛh. S. 50, 6. — 5) *Perlenschnur* H. 661. H. an. = हारलता (woraus Wilson zwei Bedd. macht) Med. = तन्तु *Schnur* Çârṅgad. im ÇKDr. मुक्तामयी Ragh. 13, 34. मणि° Vikr. 51. Kumâras. 3, 3. Halâj. 2, 402. Vgl. हार°. — 6) *ein bes. Perlenschmuck* Varâh. Bṛh. S. 81, 36. — 7) = यष्टीमधुक, मधुका *Süssholz* Med. Rathnam. 57. Suçr. 2, 21, 14. = मधुयष्टि H. an. = भार्गी *Clerodendrum Siphonan-*

thus R. Br. H. an. Med. यष्टी = यष्टिमधु Bhâvapr. im ÇKDa. — Vgl. केतु°, को°, गात्र°, चाप°, तुला°, त्रि°, ध्रुव°, यज्ञ°, नाग°, ब्रह्म°, ब्राह्मणयष्टी (u. ब्राह्मणयष्टिका), भारयष्टि, वास°, हार°.

2. यष्टि *f. nom. act. von* 1. यस् P. 3,3,116, Sch. *wohl fehlerhaft für* इष्टि.

यष्टिक (von 1. यष्टि) 1) m. *ein best. Wasservogel, =* शलकुक्कुर Çabdar. im ÇKDa.; vgl. कोयष्टि. — 2) f. यष्टिका *a) Stab* Çabdar. im ÇKDa. Sûçr. 1,171,21. ममान्धस्यान्धयष्टिका R. Gorr. 2,66,23. — *b) ein best. Perlenschmuck* Gaṇiṅ. im ÇKDa. — *c) ein länglicher Teich* Trik. 1, 2, 28. — *d) Süssholz* Çabdar. im ÇKDa. Ratnam. 57. Sûçr. 2,47,10. 54,16. 324,8. — Vgl. एकयष्टिका, नील°, ब्राह्मण°.

यष्टिगृह (1. य° + गृह) n. N. pr. einer Oertlichkeit Hall in der Einl. zu Vâsavad. 13.

यष्टिग्रह (1. य° + ग्रह) adj. *einen Stab tragend* P. 3,2,9, Vârtt. 1.

यष्टिनिवास (1. य° + नि°) m. *ein aus aufgerichteten Stangen bestehendes Taubenhaus* Ragh. 16,14. — Vgl. वासयष्टि.

यष्टिप्राण (1. य° + प्राण) adj. *dessen Kraft im Stabe liegt, ohne Stab Nichts vermögend* MBh. 1,5419.

यष्टिमधु (1. य° + मधु) n. *Süssholz* Hall. 2,460.

यष्टिमधुका f. dass. AK. 2,4,3,28.

यष्टिमत् (von 1. यष्टि) adj. *mit einem Stocke (Flaggenstocke) versehen:* शक्रीकनक° (das suff. gehört zum ganzen comp.) von einem Wagen gesagt MBh. 13,2784.

यष्टियन्त्र (1. य° + यन्त्र) n. *ein best. astronomisches Instrument* Schol. zu Sûrjas. 13,20. Weber, Nax. 1,314.

यष्टी s. u. 1. यष्टि.

यष्टीक n. = यष्टिमधु *Süssholz* Rîâm. im ÇKDa.

यष्टीपुष्प (य° + पुष्प) m. *Putranjiva* (पुत्रंजीव) *Roxburghii Wall.* Bhâvapr. im ÇKDa.

यष्टीमधु und °मधुक n. = यष्टिमधु *Süssholz* Ratnam. 57. Sûçr. 1,18, 16. 60,15. 158,7. 2,137,13.

यष्ट्याह्व (1. यष्टि + आह्वा) und **यष्ट्याह्वय** (1. यष्टि + आ°) m. dass. Ratnam. 57. Sûçr. 1,58,1. 94,7. 2,126,9. 222,6.

यष्ट्यस्क (?) m. pl. N. pr. eines Volkes Trik. 2,1,9.

यस्, यँस्यति (प्रयस्ये Dhâtup. 26,101) und यँसति P. 3,1,71. Vop. 8,67. 11,3. 1) *sprudeln* (von siedender Flüssigkeit), *Schaum auswerfen* (vgl. येषुः तर्पुर्यस्तु चुरारिग्निवौ इव RV. 7,104,2. — 2) *sich's heiss werden lassen, sich abmühen;* mit dat. eines nom. act.: वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायैव यस्यति (v. l. für कल्पते) Spr. 4330.

— अव, davon अवयासँ m. etwa *Abspannung* TS. 1,4,33,1.

— आ, आयस्यति *sich's heiss werden lassen, sich anstrengen:* रामाभिषेकार्थमिहायस्यसि (अभिषेकार्थे ed. Bomb.) R. 2,14,62. पिण्डार्थमायस्यतः (Conj. für आयास्यतः) Spr. 4075. आत्मार्थमायस्य Mârk. P. 34,12. *ermüden:* नायस्यसि तपस्यन्तो Bhatt. 6,69. नायपास हियो देहैः 14,104. न चायसत् 15,54. — आयस्त = तेजित, क्षिप्त Trik. 3,3,149. H. an. 3, 248. Med. t. 93. = क्रोधित, क्रुद्ध (कुपित), कृत H. an. Med. 1) *angefacht:* अनलः पवनायस्तः Harîv. 3522. — 2) *angestrengt, sich anstrengend* MBh. 7,1360 (ed. Bomb. आसाद्य st. आयस्तो). Mârk. P. 109,52. परमायस्त R. Gorr. 1,55,19. आयस्तनयन (= क्रोधप्रसारितनेत्र Nîlak.) *so v. a. die Augen aufreissend* Harîv. 4736. अनायस्तानना *so v. a. das Gesicht nicht verziehend* Mârk. P. 82,49. अनायस्त *wobei man sich nicht anstrengt* Bhâg. P. 11,25,28. अनायस्तम् adv. *ruhig* (= अकर्कशात्तरम् Nîlak.) Harîv. 16160. — 3) *ermüdet, erschlafft; niedergeschlagen:* मयनायस्तैर्बाहुभिः Spr. 767. Kâṭhân. Up. 5,3,4. Harîv. 4761. 13218. R. 2,20,3. 30,22. परमायस्त 37,16 (परमायत्त ed. Bomb.). 3,40,11. 6,19,65. 87,28. 7,99,4. आयस्तमनस् 2,114,34. नित्यायस्त *für immer erschlafft* so v. a. *todt* MBh. 13,36. — Vgl. आयास, आयासिन्. — caus. angeblich stets med. P. 1,3, 89. Vop. 23,38. *anstrengen, ermüden, quälen, peinigen:* न चायासयेच्छरीरम् Sûçr. 1,367,3. नायासयामि भर्तारं कुरुष्वार्ये MBh. 13,3876. येनातिमात्रमात्मानमायासयसि Harîv. 7084. Kathâs. 117,93. im Prâkrit Vikr. 16,16. Milav. 32,7. कार्येणायासितौ भृशम् R. 2,96,29 (105,38 Gorr.). pass. *sich abhärmen, sich quälen:* मन्निमित्तं च — कश्चिद्राघवः । अल्पमायास्यते रामो विदेशे R. 3,33,36. einen Bogen *anstrengen* so v. a. *kräftig in Bewegung setzen:* अनायासितकार्मुक Spr. 912. so v. a. *verkümmern, schmälern:* नायासयत (= नोपपीडयति स्म) शतवो ऽन्योऽन्यसंघट्टः Bhatt. 8,61.

— समा, partic. °यस्त *hart bedrängt:* शोघ° R. 5,36,48.

— उद् s. उद्यास.

— नि, नियस्य MBh. 9,3886 *fehlerhaft für* नियम्य (so die ed. Bomb.).

— निस् s. निर्यास.

— प्र, °यस्यति P. 3,1,71, Sch. Vop. 8,67. 11,3. 1) partic. प्रयँस्त *überwallend:* उक्षा चिदिन्द्र येषंसो प्रयस्ता फेनमस्यति RV. 3,53,22. प्रयँस्यसी, प्रयँस्ता *in's Wallen gerathend, im Wallen befindlich* AV. 12,5,21. प्रयस्त = सुसंस्कृत *schmackhaft zubereitet (gut gekocht)* AK. 2,9,43. H. 411. — 2) *sich bemühen:* पुनः पुनः प्रायसदुत्तरवाय सः Naish. 1,125. प्रयस्त *sich bemühend, eifrig* Çiç. 75. — Vgl. प्रयास, प्रायास. — caus. partic. प्रयासित n. *Anstrengung, Bemühung* Milârtn. 133,6.

— वि s. वियास.

— सम्, संयस्यति und संयसति P. 3,1,72. Vop. 8,67. 11,3. — Vgl. संयास.

यस्क (von यस्) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* P. 2, 4,63. Vop. 7,14. Âçv. Çr. 12,10. Sâṅkh. K. 183,*a*,10. यस्का गौरितिताः N. einer Schule Kâṭh. in Ind. St. 3,453. 475. fg. 3,245. fg.

यस्मात् (abl. von 1. यद्) conj. *weil, da;* mit entsprechendem तस्मात् M. 3,78. 102. 7,5. 199. 9,138. 10,72. Spr. 1372. 2418. R. Gorr. 1,46,22. Daç. 2,53. Siṁhâs. 35. ततम् Mârk. P. 16,67. तद् Dhûrtas. in LA. 77,4. तेन MBh. 3,6093. Daç. 2,24. यतम् R. Gorr. 1,1,22. Raghu. 1,77. 16,74. Kathâs. 55,178. ohne correlative Partikel Jâtâ. 1,334. R. 1,20, 19. 48,27. 66,10. Siṁhâs. 37. Spr. 1491. 3328. Kathâs. 34,28. 53,33. 56,7. 61,312. Râjat. 4,363. Vet. in LA. (III) 3,15. *da* so v. a. *dass:* किं परित्यक्ता त्वयाकम् — यस्माद्राक्षसभृत्या मां किं नयसि R. 4,54,3. इच्छसि त्वं विनश्यन्तं रामं लक्ष्मण मत्कृते । न मे शुश्रूषसे वाक्यं यस्मादभिहितं मया ॥ R. 3,31,11.

यस्य (von यस्) adj. = वध्य (Schol.) *zu tödten, dem Tode verfallen;* davon nom. abstr. °त्व n. Bhatt. 6,49.

यँस् m. oder यँस्स् n. *Wasser* Naigh. 1,12. *Kraft* 2,9.

यड्ढ adj. = महत् *gross* nach Sây.: विशँ न इन्द्र पृतनायवो यड्ढो नि वृता ईव येमिरे RV. 8,4,8. m. = यक्ष्म *Rind* Naigh. 2,3. Agni heisst

मर्क्सो पर्कृः RV. 8,49,13. sonst stets im voc. 1,26,10. 74,5. 79,4. 8,73,5.

पर्कृ adj. (f. ई) nach Naigh. 3, 3 so v. a. मरुत् *gross;* etwa *in fortwährender Bewegung* oder *Thätigkeit befindlich, rastlos; continuus, beständig;* von Gewässern u. dgl. *beständig fliessend, jugis.* So heisst Agni RV. 1,36,1. 3,1,12. 2,9. 3,6. पाति पर्कृ अरणा सूर्यस्य 5,5. 28,4. 4,3,2. 7,11. 5,16,4. 7,6,5. 8,2. 10,92,2. 110,3. Rudra 8,13,24. Soma: अभि त्रिपाणि पवते चनोहितो नामानि पर्कृो अधि येषु वर्धते 9,75,1. वृषो द्रुडुके पयसि पर्कृो अदितेरदाभ्यः 10,11,1. पर्कृा इव प्र वयामुज्जिहाना: प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ 5,1,1. मनस् 8,13,20. 4,3,6. गिर: 1,59,4. सूर्ये रुरितः सप्त पर्कृीर्वहन्ति 4,13,2. आपः 5,29,2. अवनीः 10,99,4. सप्त स्रवतः 1,71,7. ऊर्मयः 4,58,7. नद्यः 9,92,4. — f. pl. *fliessendes Wasser* Naigh. 1,12. पर्कृीघोर्वधीषु विन्दु 7,36,22. 70,3. सप्त 1,72,8. 3,1,4. दिवः 6,9. 2,33,9. 14; vgl. 9,33,5. — du.: पर्कृो सूनृतस्य मातरा Bez. von *Tag und Nacht, Himmel und Erde* RV. 1,142,7. 5,5,6. 41,7. — 6,17,7. 10,39,8 (vgl. 93,1); vielleicht *die beiden Hände* 9,102,7. — पर्कृ Uṇâdis. 1,154. m. = यजमान Uǵǵvaḷ.

पर्कृत् adj. f. पर्कृती so v. a. पर्कृ. द्यावः RV. 1,103,11. 9,113,8.

1. पा. पाति Dhâtup. 24,11. partic. पात्, gen. पातंस्; पात्सि: अयुस् und अयान् P. 3,4,111, Sch.; पयौ, पयाथ, पयिम 6,1,196, Sch. 7,2,61, Sch., ved. पर्यं 2. pl.; पयिवँस्; अपानीत् P. 7,2,73. अपासुस्, पासत्, पासिषुँस्, पासीष्ट 2. pl.; पास्यति, पाता P. 7,2,61, Sch.; aus metrischen Rücksichten auch med.; inf. पातुम्, पातवे, पातवै (P. 3,4,9). 1) *fahren* (in weiterem Sinne), *gehen, ziehen, marschiren;* überh. *sich in Bewegung setzen, reisen; fortgehen:* यद्ध पाति मरुतः RV. 1,37,13. अयं वातो अनुवर्तिनेव याति 161,14. आसुर्भिरिष्टिभान् 2,38,3. रथेन 6,62,10. अधयै ते चक्रे पाय्याः 10,85,13. नहि स्वपूंतुषा पातमस्ति *einspännig ist nicht ordentlich gefahren* 131,3. नावेव पात्तम् 3,32,14. 33,2. इन्द्रेण याथ सरथम् 60,4. पाहि रात्रेषामहो श्वेन 4,1,1. इन्द्रो याता ऽवसितस्य राजा *des Reisigen und des Rastenden* 1,32,13. 4,25,3. त्रिपस्त्यो पातो अघुष्या 8,72,6. ओको न पाताम् 10,12,5. अरिष्टा याति प्रथमः सिषासन् 5,31,1. 61,2. मित्रस्य यामं पथा 64,3. पन्थां सूर्यस्य पातवे 8,7,3. AV. 13,1,21. 2,28. 12,1,17. रुरिता पातवे रथे वहन्तीरयुक्त 13,2,6. Âit. Br. 4,27. पथैकतयेषो वायातादृक्तम् 5,30. Çat. Br. 13,3,2,9. प्राञ्चे पात्तस्तायमानो यात् 1,3,6,12. 5,5,2,3. Kâṭy. Çr. 7,9,18. 15,6,16. — पात्तो दृढप्रुरायात्तं द्वारम् MBh. 3,2239. R. 1,5,3. 2,33,6. 58,6. वेगवाबाधवो यथो 3,50,3. अन्वायथो Naigh. 2,16. fg. 3,25. अयतो लक्ष्मणः पातः R. 2,59,4. पतो पास्ये सानुगा पातु मामनु Bhâg. P. 9,18,28. तस्यानुपदं यथो Vet. in LA. (III) 23,3. तया पातं (impers.) यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मन्दम् Çiç. 35. येनास्य पितरो याता येन याताः पितामहाः। तेन यायात्सतां मार्गम् M. 4,178. उत्पत्य नभसा यथो Kathâs. 18,165. रथेन P. 3,1,60, Sch. यानेन स्वयुक्तेन R. 2,69,13. येन (विमानेन) यासि विहायसा 3,54,6. संयच्छ वाजिनो रश्मीन्मुच याहि शनैः शनैः 2,40,22. 32. 70,29. वक्ष्यसि शिविकामन्ये पास्यन्ये शिविकागताः Spr. 4699. प्रवमानो ययावब्धौ Kathâs. 52,329. नोदके शकटं याति Spr. 2345. एष याति शिवः पन्थाः MBh. 3,2234. शिरा यान्ति *die Adern laufen* Varâh. Bṛh. S. 54,62. von der *Bewegung* der Gestirne (यात *gegangen, stehend*) 4,5. 18,1. 2. 24,29. कुटिलं याता (उल्का) 33,29. *hingehen* Harîv. 10067 (med.). *kommen:* नो यान्ति मित्राणि च Spr. 3381. *marschiren, gegen den Feind ziehen* M. 7,183. *gehen, aufbrechen, fortgehen, sich entfernen* MBh. 3,2760. 2793. 5,7237. R. 1,17, 32. Çiç. 81. भूय अयाहि याहि Spr. 1579. याताः किं न मिलन्ति 2463. यातु यातु किमनेन तिष्ठता 2464. Mṛicch. 33,10. Ragh. 3,67. Kathâs. 11, 28. 18,38. Bhâg. P. 3,1,16. 16,29. आश्रममण्डलात् R. 3,48,6. कर्म्यतः Spr. 403. Kathâs. 52,229. विमुखो ऽयौ न याति मे 41,19. अर्थिनाम् u. s. w. पराङ्मुखः। यो न याति Spr. 3601. मृतं शरीरमुत्सृज्य — विमुखा बान्धवा यान्ति M. 4,241. यात *gegangen, fortgegangen* MBh. 3,2297. R. 4, 54,21. 5,89,16. Bhâg. P. 9,20,38. पलाय्य या *fliehen* Kathâs. 12,114. 48,87. 90. तेनैव यातः पद्मा *entschlüpfte* (eine Schlange) Spr. 2012. जीवन्नेव न यास्यसि *lebendig entkommen* R. 3,36,11. 6,85,11 (med.). यतस्ता मानवाः सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च *zu Grunde gehen* Spr. 1303. 2070. स वै देवस्तु पापको भङ्गुरो यात्युपैति च Bhâg. P. 7,7,43. पाप्येतस्य कि नामयः *entfliehen* Kathâs. 23,143. तेन प्राणा न यान्ति मे 36,156. Pañkat. 70,6. अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः *von dannen gehen* Spr. 243. धनानि भवन्ति यान्ति 3129. 1399. शशिना सह याति कौमुदी 2970. (यथैः) अन्यथास्माकं प्राणैः सह यास्यति Pañkat. 97,14. भयं मरुन्मरुद्यान्ति यान्ति वै R. 2,69,21. यथो तेनास्त्यती देव्या मनसश्च महाध्वरः Kathâs. 18, 120. 29,167. यातविवेक Sarvadarçanas. 101,1. बहिस् *hinausgehen* Kathâs. 28,143. Spr. 3337. Bhâg. P. 4,29,3. अधस् *hinuntergehen, sinken* 3,30, 11. Spr. 2465. स्वस्ति *mit heiler Haut davonkommen* Bhâg. P. 3,18,3. तेमेण dass. Spr. 734. खण्डशस् *in Stücke gehen, entzweigehen* Kathâs. 57,46. 77,92. दलशस् dass. 19,109. शतधा *in hundert Stücke gehen* 61,315. सहस्रधा *in tausend Stucke gehen* MBh. 7,2334. यात्राम् *einen Marsch unternehmen, aufbrechen* M. 7,182. R. 2,72,27. गतिम् *einen Weg gehen, — einschlagen:* यो शूरा गतिं याति so v. a. *wohin sie gelangen* Daç. 2, 40. गतिं मुनेर्यामि Bhâg. P. 6,11,21. यामः स्वपुण्यविहितां गतिम् Bhaṭṭ. 4,6. परमां गतिम् M. 6,93. परां गतिम् R. Einl. 2. अधोगतिम् M. 3,17.52. दण्डव्यूहेन तं मार्गं यायात् *marschire* M. 7,187. रथेन यथो मार्गम् Ragh. 2,72. अध्वानम् R. 2,49,16. पन्थानम् 36,4. स पन्थाश्चित्रकूटस्य यातः सुखकुशो मया 53,9. मरुद्गिर्यातो पथि *gewandelt* 60,22. पूर्वैरयमानुपूर्व्येण यातं वर्त्मानुयामके MBh. 1,7246. पद्वोम् Bhâg. P. 7,14,1. अग्रे याति रथस्य रेणुपदवीं चूर्णीभवन्तो घनाः Vikr. 4. यात n. *Gang, incessus:* मर्म यातमनुवर्त्मान् ऋतं AV. 3,8,6. 10,8,8. Varâh. Bṛh. S. 68,115. 80,6 (oft mit यान verwechselt). *der Ort, wo Jmd gegangen ist:* इदं यातं रमापतेः Vop. 26,130. — 2) *verstreichen, vergehen, verlaufen, verfliessen* (von der Zeit): चतुर्दश हि वर्षाणि — क्षणभूतानि यास्यन्ति R. 2,52,52. 3,22,12. 7,99,19. Spr. 309. 421. 1138. 2432. Kathâs. 1,63. 34,173. 46,29. Râǵa-Tar. 1, 193. 244. 3,364. Kâdamb. 37. ब्रह्मा यात्पुत्तमं यौवनम् Spr. 311. आयुर्याति दिने दिने 4038. यात्रास्वेव वयो यथो Râǵa-Tar. 4,131. यात *verstrichen* u. s. w. Harîv. 7711. R. 2,33,2. 4,49,7. Spr. 193. 2070. Varâh. Bṛh. S. 77,3. Kathâs. 18,206. 20,72. 22,98. 24,170. 45,317. 51,185. 52,30. Râǵa-Tar. 1,52. Mâlav. P. 110,20. Bhaṭṭ. 7,89. यातं वयः Verz. d. Oxf. H. 130,b,6. नवमो ऽङ्कः *der 9te Act ist zu Ende* 143,b, No. 295. यातमनागतं च *das Vergangene und das Zukünftige* Varâh. Bṛh. S. 68,1. — 3) *gehen* so v. a. auf eine best. Entfernung (acc.) *reichen, sich erstrecken:* पञ्च (योजनानि) शब्दानां गतिर्यति शब्दः Varâh. Bṛh. S. 30,32. für eine best. Zeit (acc.) *hinreichen:* मासमेको नरो याति द्वौ मासौ मृगसूकरौ Hit. I,158. — 4) *gehen* so v. a. von *Stellen gehen, gelingen, zu Stande*

kommen: एतत्तपसा न याति न चेज्यया निर्वपणाद्दलाद्वा Bhāg. P. 5,12,12. — 5) verfahren, sich benehmen: नैवमन्याः स्त्रियो यान्ति MBh. 4,77. — 6) gehen —, kommen —, sich begeben —, fahren —, reisen —, gelangen zu, nach, in; marschiren gegen; die Ergänzung oder nähere Bestimmung a) im acc.: कं यांश RV. 1,39,1. यो वो दूरादनसा रथेन 3,33,9. वृत्तिं 7,40,5. स प्रीतो याति वार्यम् 5,6,3. 81,1. सोमपेयम् 6,40,4. 7,28,3. धात्रिम् Vāsāk. 5,3. AV. 2,12,7. — कुणिउनम् MBh. 3, 2290. 2293. 2714. विदर्भां यातुमिच्छामि दमयन्त्याः स्वयंवरम् 2772. 2827. fg. 3,3028. 3,5977. 7099. 12, 6352 (med.). Harīv. 7396 (med.). R. 1, 1, 85. 2, 5, 21. 34, 35. 50, 1. 5, 89, 27 (med.). यद्दं यास्ये रणाजिरम् 5,34,16. संकेतम् AK. 2,6,2,10. पतिगृहम् Çiç. 84. Mṛicch. 34. Spr. 4406. 4544. Kathās. 18,80. 40,89. तीर्थानि 52, 239. Bhāg. P. 5,13,1. Mālav. P. 109,30 (act. und med.). Pañcat. 1,2,75. द्वारकां याताः Harīv. 8929. Spr. 2462. Bhāg. P. 6,1,38. प्रवर्तणेन सः — पारमम्बुनिधेर्ययौ Kathās. 18,306. यास्ये पदं पारं मनोदधेः R. 5,1,83. Vārāh. Bṛ. S. 104, 60. दिवम् M. 11, 240 R. 1,55,18. 58,18. 60,24. त्रिदिवम् M. 9,253. R. 7,30,48 (med.). यास्ये त्रिविष्टपम् Bhāg. P. 4, 12, 31. स्वर्गम् M. 7, 89. स्वः 53. नरकम् 3, 172. 249. 4, 87. रसातलम्, भुवम् Bhāg. P. 9,9,4. 5. 10,49,19 (med.). सर्वतोदिशम् MBh. 3,2638. शिरसा च महीं ययौ so v. a. verneigte sich bis zur Erde R. 1,9, 67 (65 Gorr.). पादौ ते याम मूर्धभिः Harīv. 4814. नदीं मगधान्ययौ R. 1, 34,9. यात्येव यमुना पूर्णा समुद्रम् Spr. 3426. इयमेकपदी याति मम तं पितुराश्रमम् R. Gorr. 2,65,40. यत्किं मातुः Kathās. 18,223. यौ यौ योनिम् M. 12,53. Bhāg. P. 5,17,15. 7,1,37. दृष्टिपथम् zu Gesicht kommen Vārāh. Bṛ. S. 54,20. लोचनपथम् Spr. 1246. अदर्शनपथम् unsichtbar werden MBh. 3,1744. दृग्गोचरम् Rājat. 6,320. कर्तुर्न याति गोचरम् Spr. 3346. अगोचरं नयनयोः den Augen entschwinden Vikr. 72. यायादरिपुरम् marschire gegen M. 7, 181. 185. विषयं परस्य Kām. Nītis. 15,4. परम् gegen den Feind 1. 11,3. 10. तामेव याहि प्रियाम् gehe zu Spr. 688. H. 329. कृपिम् Bhāg. P. 5,12,6. 5,9. कौसल्यां शरणं यामः R. 2,78,13. 3, 55,48. Bhāg. P. 9,7,7. MBh. 3,2845. शत्रुरुस्तम् in die Hand des Feindes gerathen Bhaṭṭ. 5,60. कर्णौ zu Ohren kommen Spr. 4007. auf Jmd stossen 3882. von der Bewegung der Gestirne nach einer best. Richtung hin: सप्तर्षिदत्तम् — यात्सु चित्रशिखण्डिषु Rājat. 1,55. यस्तं यात्यादित्ये Āçv. Gṛ. 2,6,14. M. 4,37. Vārāh. Bṛ. S. 39,4. यात्यस्तशिखरं पतिरोषधीनाम् Çiç. 77. क्लिकरे याते स्थाणुदिशम् Vārāh. Bṛ. S. 24,33. 28,1. 104,36. 43. दक्षनतयात stehend in 10,19. — यत्तम् an's Ende zu stehen kommen RV. Prāt. 12,1. zu Ende kommen Çiç. 139, v. l. Rāgh. 3,21. यायाद्यं वै द्वियामत्तं भूयो यातासि चासकृत् so v. a. fertig werden mit Bhaṭṭ. 9,47. — b) im loc.: पुनरेव याहि राज्ञः सकाशे R. 2,32,12. याता गङ्गायाम् Bhāg. P. 9,16,2. वृत्ते Vet. in LA. (III) 4,4. कीर्तिश्च ते ऽतुला वत्स त्रिषु लोकेषु यास्यति MBh. 13, 1937. तस्यां तस्य — च मनो ययौ Kathās. 32, 143. चक्रं करे यातम् in die Hand gelangt Harīv. 8905. तत्र MBh. 1,6194. 4,444. R. 1,33,6. यत्र Kathās. 52,232. क्व MBh. 3,2240. 2330. प्रिया नान्या वत्तो मे ऽस्तीति यदि माम्। त्वमवोचः क्व तत्र यातम् so v. a. was ist daraus geworden? wie steht es damit? Harīv. 7121. — c) im dat.: यत्नतः स्वनिवेशायेभे यत्ने Kathās. 47,92. न देवाय न विप्राय न बन्धुभ्यो न चात्मने। कृपणस्य धनं याति so v. a. zu Gute kommen Spr. 1399. फलेभ्यः nach Früchten gehen P. 2,3,14, Sch. रामलक्ष्मणनाशाय zum Verderben von R. 3,36,22. कुशेध्माहरणाय Rāgh. 14,70. तपसे um sich zu kasteien R. 1,46,7. — d) im acc. mit प्रति: दोलेव मुक्तरायाति याति चैव सखी प्रति MBh. 3, 2359. सूर्यं स रथ आयाति यो ऽयामोत्याण्डवान्प्रति 5,1503. Kathās. 24,252. तदा यायाद्विषुं प्रति M. 7,171. — e) im infin.: कृष्णं द्रष्टुम् Vop. 26, 100. विगाहितुं यामुनमम्बु Bhaṭṭ. 3, 39. daneben noch ein acc. des Ortes: उद्यानानि — मायाक्षे क्रीडितुं याति कुमार्यः Spr. 4406. Rājat. 5,48. 6,186. Bhaṭṭ. 7,53. — 7) an eine Beschäftigung gehen, in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaft werden, erlangen; mit acc.: सर्वव्यापारम् Kumāras. 2,54. मृगयाम् R. 4,17,18. Bhāg. P. 9,20,6. यत्नं यो दशाम् Pañcat. 70,5. घनरंगिथुनप्रेक्षणीयामवस्थाम् Megh. 18. वशम् in die Gewalt Jmds (gen.) kommen R. 3,62,14. Vārāh. Bṛ. S. 34,17. प्रकृतिम् zu seiner Natur zurückkehren Spr. 3144. MBh. 3,5826. निद्राम् einschlafen Spr. 2475. Kathās. 12,109. 18,191. स्वापम् Bhāg. P. 10,51,23. निधनम् den Tod finden Spr. 3310. Vārāh. Bṛ. S. 24,33. विक्रियाम् Spr. 3266. दर्शनम् sichtbar werden Vārāh. Bṛ. S. 11,42. 58,1. Bhāg. P. 1,6,34. आलोकम् dass. Vārāh. Bṛ. S. 47,10. गर्हणाम् M. 2,80. संसर्गम् 11,181. संपर्कम् Vikr. 13. उदयम् aufgehen (von Gestirnen) Vārāh. Bṛ. S. 8,27. 11,17. विस्मयम् MBh. 3,2795. R. 1,2,1. मोहम् Bhag. 4, 35. प्रसादम् Pañcat. 67,8. प्रबोधम् 37,20. विषादम् Kathās. 32,209. उपतापम् Vārāh. Bṛ. S. 10,12. 14. पाकम् 32,22. संप्रयोगम् 78,25. खेदम् Rājat. 4,691. पराभवम् Spr. 4871. लयम् MBh. 3,5840. R. 1,64,20. 3,62,14. Vārāh. Bṛ. S. 10,11. 14,32. 46,78. 93,2. Kathās. 18,269. विनाशम् R. 2,44,13. विलयम् Spr. 1371. संस्थितिम् M. 6,90. ख्यातिम् MBh. 3,8273. निर्वृतिम् R. 3,71,7. सनुव्रतिम् Spr. 3107. निष्पत्तिम् Vārāh. Bṛ. S. 8,12. प्रौढिम् Kathās. 14,63. तृप्तिम् Mālav. P. 61,20. वृद्धिम् Vop. 2,11. Vārāh. Bṛ. S. 4,32. हूत्यम् Botendienst thun RV. 1,74,7. 6,58,3. 7,9,5. काठिन्यम् Vārāh. Bṛ. S. 21,34. कालुष्यम् Kathās. 19,98. लाघवम् Bhāg. 2,35. Çaut. (Bz.) 4. उदात्तमुतिताम् RV. Prāt. 3,11. यकुलतान् M. 3,63. 5,35. 59. 11,25. 12,9. 40. 68. 70. MBh. 3,3066. 5,7148. R. Gorr. 2,33,24. 3, 61,44. Ṛt. 1,2. 9. Megh. 94. Rāgh. 3,26. 5,71. 9,22. 12,11. Spr. 689. 1979. 2042, v. l. 2795. Vārāh. Bṛ. S. 5, 1. 12, 17. 42, 10. 73, 4. 78, 20. 79, 39. 104, 87. Kathās. 18,262. 53,33. Rājat. 3,318. 6,180. Prab. 70,3. यास्यत्याख्यां भरत इति Çiç. 102. स्थानश्रेणीम् Spr. 2807. यन्यत् (so die v. l.) Çvetāçv. Up. 6,4. यकुतोभयम् Bhāg. P. 1,12,28. यो ऽधिविद्यामधीतात् empfangen —, lernen von 9,9,17. उत्सवादुत्सवम् ein Fest nach dem andern erleben Kathās. 39,218. — 8) intro (feminam), mit acc.: स्त्रियम् MBh. 13, 4518. यात्मतनयां प्रज्ञानाद्यो ऽयासीत् Prab. 8,3. — 9) angehen, anflehen; mit dopp. acc. RV. 1,24,11. 58,7. तेहं यामि इविणम् 5,54,15. भगमुग्रो यधं याति रथम् 7,38,7. 8,3,9. 27,1. यन्ना यामि दृढि तनः 10,47,3. 8,50,6. 62,6. — 10) hinter Etwas kommen, erkennen: तथास्य चित्तं स्पृशि संवितर्कयन्त्यर्पणस्यास्य न यामि तत्त्वतः MBh. 4,234. — 11) यातु so v. a. dem sei wie ihm wolle Hit. 101,18. 128,9. — 12) यात fehlerhaft für ज्ञात in यातमन्यु MBh. 13,809. ज्ञात° ed. Bomb. — Vgl. 3. इ und गम्.

— caus. यापयति 1) Jmd gehen heissen, aufbrechen lassen, entlassen Bhāg. P. 10,38,52. 84,65. zu einem Marsche veranlassen Kām. Nītis. 11,25. दृष्टिम् den Blick gehen lassen, — richten: दृष्टिं पथिकः क्व याप-

पतु (v. l. für पातयतु) Spr. 491. *vertreiben, verscheuchen:* मदयापितलज्जा Rāgh. 9,27. *lindern* (eine Krankheit) Soṃ. 1,30,21. — 2) *verstreichen lassen; zubringen* (eine Zeit): नायं यापयितुं (so die ed. Bomb.) कालो विद्यते माधव क्वचित् MBh. 6,4284. (रात्रिम्) उद्वेविरक्तनिद्रयुर्भिर्यापयन्ती Megh. 87. Mālav. 28,15. Pañkat. 183,24. — 3) *gelangen lassen zu, theilhaft werden lassen;* mit dopp. acc.: यापितो येन पीतसलिलो नागः) स्मरम्रियम् Vaitān. Bṛh. S. 12,3. — 4) यापिताया: Daçak. 83,9 (Bomb. Chr. 194,4) wohl fehlerhaft für पापिताया: (caus. von 1. पा). — Vgl. यापक flg.

— *desid.* यियासति *zu gehen —, zu reisen —, zu marschiren —, fortzugehen —, zu gelangen beabsichtigen, — sich anschicken, — im Begriff stehen* MBh. 7,1226. Vaitān. Bṛh. S. 88,30. 89,14. Kathās. 121,160. वनम् MBh. 3,47. पुरं स्थानम् 7,5908. दिनशतप्राप्यं देशम् Spr. 1883. पारमब्धेः Kathās. 18,292. स्वर्णद्वीपम् 36,80. यस्तं मर्त्योधरं श्रेष्ठं यियासति दिवाकरः so v. a. *ist im Begriff untergegangen* MBh. 7,6257. — Vgl. यियासु. — intens. ईयायते *sich bewegen:* नेयायते Prasaṃgap. 4,2. nach dem Comm. intens. von 3. इ. — Vgl. यायावर.

— यच्छ् *herbei —, nahekommen;* mit acc. ṚV. 1,31,17. 44,6. मम ब्रह्मेन्द्र पाह्यच्छ 2,19,7. 3,33,2. 3. 6,16,44. यत्साच्छ् याति मरुत्मानमेवास्याच्छ् याति TS. 6,1,9,3.

— याति 1) *vorübergehen:* मातियासीः Bhaṭṭ. 2,31. (einen Ort) *passiren, vorüberkommen an, überholen; superare:* (रथः) येनातियाथो दुरितानि विश्वा ṚV. 5,77,3. AV. 13,2,5. अयो धन्वान्यतियाथो अर्यान् ṚV. 6,62,2. 9,13,6. ग्रामान् — पुष्पितानि वनानि च। पश्यन्नतियथौ शीघ्रं शरैरिव रघोर्गतैः॥ R. 2,49,3. 8. 57,4. 71,4. 8. °यात mit act. Bed. Bhāg. P. 1,6,14. Hierher gehört wohl auch यशीव तौ यतिं येषं (von येष् nach Sāy.) रथेन ṚV. 2,27,16. — 2) *übergehen:* यतिं वाणो समतो पीपरि ṚV. 1,133,7. *übertreten:* निर्देशम् Bhāg. P. 10,70,27.

— व्यति 1) *durchdringen:* वि वारमव्यं सनयातिं याति ṚV. 9,97,56. — 2) *verstreichen, verfliessen:* दिवसाः सुभगाः पुण्यास्त्वरिता व्यतियान्ति नः R. 3,22,10. °यात Harīv. 3787.

— समति *verstreichen, verfliessen:* सप्तनी षट्मत्ययुः R. 1,19,1.

— अधि *entkommen:* कुतो ऽधियास्यसि क्रूर निस्तस्तेन पत्त्रिभिः Bhaṭṭ. 8,90.

— अनु *hingehen zu, hinfahren; nachgehen, nachfolgen:* अनु देवाञ्चविष्टो यासि साधन् ṚV. 3,1,17. यस्य प्रयाणमन्वन्य इद्युः 5,81,2. यः पूर्व्यामनुयाति भर्वन् 6,6,2. 12,5. Śat. Br. 10,6,4,7. Liṭ. 8,5,22. पूर्वेषामनुपूर्व्येण यातं वर्त्मानुयामहे *nachwandeln* MBh. 1,7346. अनुयाहि माधवदत्तोम् Spr. 1051. गङ्गां चैवानुयास्यामः *sich hinbegeben zu* MBh. 1,4999. सम्प्रति मञ्जुलवञ्जुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् *hingegangen zu* Gīt. 11,2. अनुययुर्गृहान् *gingen von Haus zu Haus* Harīv. 3431. एक एव सुहृद्धर्मो निधने ऽप्यनुयाति यः *nachgehen, folgen* Spr. 516. त्वामनुयास्यामि MBh. 1,2355. 2,1606. 3,11920. 15684. 4,537. 633. 1039. 7,71. Harīv. 4860. N. 9,7 (अन्वगात् MBh. 3,2303). R. 1,2,24. 24,6. 60,31. 73,37. 2,30,39. 31,8. 33,6. 37,24. 58,6. 70,29. 83,3. 91,8. R. Gorr. 1,75,30. Mṛicch. 131,22. Çiç. 28. Rāgh. 9,24. 10,30. Kumāras. 4,21. Kathās. 82,52. Rāja-Tar. 3,230. Bhāg. P. 1,4,5. 3,31,21. 9,6,52. med. MBh. 3,57 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 7,163. 10,142. तिष्ठत्तमनुतिष्ठत्ति पासं पासि (अनु zu ergänzen) दिवेदिवः Mārk. P. 18,24. अनुयात mit act. Bed., *secutus:* मां चानुयाता विपिनं तपोधनम् R. 2,54,18. R. Gorr. 2,62,6. 4,9,11. Kathās. 31,44. mit pass. Bed., *begleitet* von MBh. 14,1184. Harīv. 2455. 4988. Rāgh. 12,104. 14,29. Kathās. 10,208. 14,11. 18,11. 46,248. Rāja-Tar. 5,358. लोकलोचनमानसानुयाता प्रातिष्ठत Daçak. in Bemr. Chr. 190,17. कपानुयात Soṃ. 2,361,15. भर्तारमनुया so v. a. *dem Gatten im Tode folgen, sich mit ihm verbrennen lassen* Spr. 3483. Rāja-Tar. 5,235. भर्तारमनुयाता Mārk. P. 22,34. *folgen* so v. a. *gleichen Schritt mit Jmd halten, Jmd nachkommen* R. 3,44,30. *nachthun, nachahmen, erreichen, gleichkommen:* तेषां कथयितुं शक्तस्त्वनुयातुम् Mārk. P. 133,9. न किलानुययुस्तस्य राज्ञो रक्षितुरंशः Rāgh. 1,27. अनुयातलीलम् 16,71. समतया — अनुययौ यमम् 9,6. अनुयातः स्ववीर्येण वासुदेवम् MBh. 3,10890. mit gen. der Person: तेषां महात्मनां राज्ञां को ऽनुयास्यति मद्विधः Mārk. P. 120,7. *nachgehen* so v. a. *befolgen:* शक्रच्छन्दानुयाता 1,39. *erreichen, erlangen:* सर्वान्कामाननुयातो ऽसि MBh. 14,223. — In der Stelle ओषधीनां शिरांसीव द्विषच्छीर्षाणि सो ऽन्वयात् MBh. 4,1727 ist vielleicht ऽन्वच्छात् *hieb ab* zu lesen. Nīlak. fasst अन्वयात् als abl., indem er अनुक्रमात् erklärt. — Vgl. अनुया, अनुयातर् flgg. — caus. *Jmd theilhaft werden lassen,* mit dopp. acc.: यातनामनुयापितः Bhāg. P. 8,22,39.

— मनु *folgen* MBh. 2,1608. Vaitān. Bṛh. S. 104,54. °यात mit pass. Bed. MBh. 7,3261.

— यत्तर् s. यत्तर्याणीय.

— अप *fortgehen, sich entfernen, sich zurückziehen, fliehen, weichen* von (abl.) AV. 6,73,3. 19,56,6. MBh. 3,248. 674. रणात् 15214. 15750. रथोपस्थात् 5,7219. भीमात् 7,5806. 6307. Harīv. 3681. 10698. 14015. अपयात ब्रह्मस्मिः *schert euch* Mṛicch. 174,4. Kathās. 32,249. 55,72. पार्श्वान्नापयाति स्म मे सदा *wich nicht von meiner Seite* 124,197. Çiç. 9. 83. Bhāg. P. 4,29,76. Pañkat. 129,24. 232,7. नातिदूरापयाते तु रथे MBh. 3,720. अपयास्यति मम शोकः Çiç. 96, v. l. Spr. 42. शापो ऽपयातु ते Kathās. 56,139. गिर्याज्ञानापये दोषा अपयान्ति Sarvadarçanas. 116,6. शेषं गृहेषु सक्तस्य प्रमत्तस्यापयाति हि Bhāg. P. 7,6,8. MBh. 12,3470. न चास्य नियमाद्धिरपयाति महात्मनः *lässt nicht ab* von 9,2310. नापयाति 5,7486 fehlerhaft für नोपयाति, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. अपयातव्य flg. — caus. *entführen, rauben* Bhāg. P. 9,10,11.

— अन्वप scheinbar in der Stelle सो ऽन्वपयाज्जवेन MBh. 4,1669, wo aber mit der ed. Bomb. सो ऽप्यपया° zu lesen ist.

— प्रत्यप *sich zurückziehen, heimwärts fliehen* MBh. 8,4840. रथात्तम् *seinen Wagen verlassen und einen andern besteigen* 7,3670. 8,4003.

— व्यप *fortgehen, sich entfernen, sich zurückziehen:* स तं मा व्यपयाः पुनः MBh. 3,739. 775 (wo व्यपयात् mit der ed. Bomb. zu lesen ist). 13165. 4,1900. 5,7200. रणात् 7302. व्यपयातेषु वासाय सैन्येषु 7,2478. 8,4015 (med.). Harīv. 6427. यादवः — व्यपयान्ति *weichen* R. ed. Bomb. 3,66,6 (प्रतियान्ति Gorr. 71,5). तवैव गच्छतस्तस्य व्यपयाञ्जनी शिवा *verstrich* R. Scul. 2,49,2.

— व्याप scheinbar MBh. 3,775, wo aber mit der ed. Bomb. व्यपयात् zu lesen ist.

— अपि, AV. 4,37,3 lesen die Hdschr. अपि यानि, was keinen Sinn giebt (vgl. 3. इ mit अपि); die Ausg. hat dafür यामि gesetzt.

— अभि 1) *adire, zugehen auf, hingehen —, treten —, kommen —, sich hinbegeben zu, sich drohend wenden gegen, begegnen:* अभि स्पृधो यामियुद्वज्रबाहुः RV. 1,174,5. AV. 4,29,7. अन्यत्र राज्ञोऽभि यातु मन्युः 6,40,2. 10,1,15. मृडतं माभि यातम् 11,2,1. Kaṭṭ. 14. — तत्रैनं नागराः सर्वे सत्कारेणाभ्युत्तस्थुः MBh. 2, 952. 3, 2259. 14443. 5, 6099. 7, 2630. Harīv. 11031. Kathās. 30,15. 36,16. 84, 25. Bhāg. P. 4, 23, 26 (अनुयाति ed. Bomb.). कुबेरादभियास्यमानात् (pass.) Raghu. 5, 30. शत्रुम् MBh. 2, 191. 4, 2142. 5, 7447. 7483. ये च — अभियाता धनंजयम् 6, 5542. परचक्राभियात (mit pass. Bed.) 12, 4729. राष्ट्रं तस्याभियास्यामः 4, 978. सगुडम् Harīv. 322. गिरिश्रेष्ठम् 6935. R. 2, 50, 16. गृहम् R. Gorr. 2, 3, 28. 47, 6. 73, 7. 8. 4, 25, 7. 41, 8. 5, 73, 2. 6, 16, 13. Kum. 5, 1. Bhāg. P. 3, 21, 9. 5, 13, 6. भूपतेः श्रियम् Raghu. 9, 30. स्वर्गम् *zum Himmel gehen* so v. a. *sterben* Daç. 2, 55. सैकेतनम् *zu einem Stelldichein* Vet. in LA. (III) 20, 14. ohne Object *herbeikommen* MBh. 5, 7133. 12, 4264. Harīv. 4993. R. 1, 25, 10. 2, 71, 21. R. Gorr. 1, 21, 1. Bhāg. P. 1, 9, 37. 3, 22, 18. 8, 11, 13. 9, 6, 17. 8, 10. देवविमानानि — अभिघातानि MBh. 3, 1763. *einen Angriff machen* Kum. Nīṭis. 13, 2. 13. *kommen*, von der Zeit: कालो ऽभियातस्त्रिगुणवचनुर्युगविकल्पितः (genauer wäre अतियातः *verstrichen*) Bhāg. P. 2, 3, 33. — 2) *an Etwas gehen, sich hingeben:* वासम् so v. a. *sich niederlassen* R. 7, 66, 15. पाषण्डम् *sich der Ketzerei hingeben* Bhāg. P. 5, 14, 13. — 3) *theilhaft werden*, mit acc. MBh. 5, 1699. 13, 5851. न तु तद्भजति यस्यस्तदण्डो गतवैरो ऽभियाति Bhāg. P. 5, 13, 15. ऐश्वर्यमभियातः R. 5, 88, 10. — Vgl. अभियातर् fgg. — caus. *herbeikommen lassen, hinsenden* Bhāg. P. 5, 2, 3.

— प्रत्यभि *auf Jmd* (acc.) *losgehen* Bhāg. P. 10, 17, 6.

— समभि (*zusammen*) *zugehen auf, hingehen zu* (acc.); *herbeikommen* MBh. 1, 1338. 7, 3974. 8, 3978. 9, 1547. Harīv. 10509. Mārk. P. 103, 22.

— अव 1) *herbeikommen:* अव स्वर्गुक्ता दिव या वृधा गतुः RV. 1, 168, 4. नेकः भद्रं इत्तस्विने नावये (infin.) नोषया उत 8, 47, 12. — 2) *abbitten, abwenden:* तं नो अग्ने वरुणस्य देवस्य ऽवं यासिसीष्ठाः (VS. Pair. 3, 82. P. 3, 1, 34, Vārtt.) RV. 4, 1, 4. नू चित्पुरानुवं यासदुग्रान् 6, 66, 5. अवं देवैर्देवकृतमेनो ऽयासिषम् VS. 3, 48. अवयातां RV. 1, 94, 12 halten wir für fehlerhaft st. अवयाता nom. sg. — Vgl. अवया, अवयातर् fgg.

— या 1) *herankommen, kommen nach, in, zu* (acc.): या पूर्णया निवुता याथो अश्वम् RV. 1, 135, 7. 168, 6. याये infin. 2, 18, 3. 4, 16, 1. यस्तम् 10. 20, 1. 5, 61, 1. वार्तिः 8, 22, 17. 10, 130, 1. या — यच्छ 1, 167, 2. 4, 20, 2. 44, 5. AV. 3, 8, 1. परा यात पितरः या च यात 18, 3, 14. Çat. Br. 14, 7, 1, 42. यातताविनमायात्तं कन्यात् M. 8, 350. MBh. 1, 717. 3, 2182. 2239. 5, 6065. R. 1, 9, 33. 2, 34, 16. 39, 10. 40, 42 (यायात्तौ mit der ed. Bomb. zu lesen). 91, 9. R. Gorr. 1, 66, 11. 3, 62, 29. Kum. Nīṭis. 13, 56. Raghu. 12, 64. Spr. 371. fg. 374. 1379. Kathās. 12, 65. 13, 29. 15, 40. 18, 167. 275. 356. 25, 204. Rāja-Tar. 3, 31. 341. Bhāg. P. 1, 11, 17. 14, 2. 7. 3, 21, 26. Hit. 9, 6. 18, 10. fgg. Çiç. in LA. (III) 33, 3. 7. तेन मुत्रायातमपि (impers.) Vet. 8, 6. यामात् P. 1, 4, 24, Sch. वनात् R. Gorr. 2, 100, 44. Kathās. 18, 280. 26, 4. Rāja-Tar. 1, 330. कुतो ऽयमायाति MBh. 4, 300. त्रिपष्टियोजनायाता Kathās. 13, 22. संमुखम् *entgegenkommen* Rāja-Tar. 5, 146. कात्तिनपुरम् MBh. 3, 8964. Çiç. 14, 1. Kathās. 18, 120. 52, 25. 55, 182. Rāja-Tar. 2, 114. Nalod. 3, 2. यज्ञम् R. Gorr. 1, 43, 22. स्वर्गम् 4, 17, 24. कालिन्दीमध्यम् R. Schl. 2, 55, 19. अस्तिकम् Vikr. 121. Kathās. 42, 107. अस्तम् *untergehen* und *sterben* Rāja-Tar. 3, 133. 4, 366. कर्णपथम् *zu Ohren kommen* Çiç. 79, 12. ग्रामम् Bhaṭṭ. 5, 57. मयं शरणम् Bhāg. P. 7, 10, 32. 8, 8, 36. तद्गृहे Pāṇ. 214, 4. लक्ष्मीरधनस्य पुनर्लोचनमार्गे ऽपि नायाति Kathās. 53, 32. श्लोघो भृशमाययौ 12, 111. परत्र च सहायात्ति न भोगा नार्थसंचयाः 51, 28. यामाता मधुगामिनी Spr. 3713. यष्टमे ऽत्तर यायाते Bhāg. P. 8, 13, 11. पस्य धर्मविहीनस्य दिनान्यायात्ति यात्ति च Spr. 2432. नायात्यकाले शिशिरोऽवर्षाः 4379. भयमायातम् Vaṇīn. Bḥn. S. 46, 44. पुनरागा *wiederkommen* R. 1, 1, 75 (80 Gorr.). 42, 23. 2, 40, 48. पूरा नदीनां पुण्याणि तद्वणो शशिनः कलाः। तीर्णानि पुनरायात्ति यौवनानि न देहिनाम् ॥ Kathās. 53, 110. so v. a. *wiedergeboren werden* Bhāg. P. 3, 32, 15. अनायात्तं (*zurückkommend*) क्लेशराजातक्लेदम् (vom Klystier) Suçr. 2, 214, 19. क्षेत्रवस्त्वावनायाते 20. *sich bei Jmd* (acc.) *einstellen:* तेन तस्यायं निद्रा Kathās. 29, 107. निद्रास्त्री — यस्य नायं 43, 183. *zu Jmd* (acc.) *kommen* so v. a. *Jmd treffen, Jmd zu Theil werden:* त्वामायात्ति शिलीमुखाः (*Bienen* und *Pfeile*) स्मरधनुर्मुक्तास्तया मामपि Spr. 2579. अनार्यवृत्तम् u. s. w. अनर्थाः क्षिप्रमायात्ति 3466. मामेव चैतान्यायात्ति मल्कारत्वानि Kathās. 53, 63. *eingehen —, aufgehen in* (acc.) Bhāg. P. 9, 20, 27. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaft werden, erlangen;* mit acc.: वशम् Sṛṣṭa. 1, 149, 14. बन्धनम् Spr. 844. दर्शनम् *sichtbar werden* Vaṇīn. Bḥn. S. 11, 40. 48. मृत्युम् 14, 32. तुलाम् Raghu. 19, 50. विक्रियाम् Spr. 3234. 3314. निर्वेदम् Mudg. Up. 1, 2, 12. तोषम् Spr. 383. संकोचम् 3238. नवीभावम् Kathās. 14, 63. प्रकाशम् Spr. 3818. प्रबोधम् Çiç. Cr. 91, 11. तापम् Spr. 2292. संतापम् Rāja-Tar. 3, 403. Vaṇīn. Bḥn. S. 5, 26. प्रध्वंसम् 76. विनाशम् 46, 41. प्रसवम् 21, 7. प्रमूतिम् 10. विवृद्धिम् 106, 4. विवृद्धिम् 33, 84. वृद्धिम् 29, 12. Raghu. 17, 41. Kathās. 52, 366. तृप्तिम् 21, 9. Raghu. 3, 3. उन्नतिम्, अधोगतिम् Spr. 3299. व्यक्तिम् Sarvadarçanas. 90, 2. वैपुल्यम् Rāja-Tar. 4, 712. देर्घ्यम् Vaṇīn. Bḥn. S. 11, 23. वाल्लभ्यम् 75, 6. 85, 7. मान्यत्वम् 4. एकत्वम् Harīv. 10674. केतुताम् Spr. 357. 3572. पञ्चत्वम् Kathās. 34, 20. 41, 12. Rāja-Tar. 5, 376. — 3) *hervorgehen, resultiren* Sarvadarçanas. 23, 4. 79, 9. — 4) *angehen, sich für Jmd* (gen.) *schicken;* mit infin.: वक्तुं नायाति राजेन्द्र एतयोर्निर्णयस्त्वयोः। यर्षाङ्गिशोधात् MBh. 2, 831. — Vgl. आयात fgg., क्रमायात, मार्गायात. — caus. s. यापयन.

— अत्या *vorübergehen an* (acc.): अत्यायाहि शश्वतः RV. 3, 35, 5. 5, 75, 2.

— अभ्या *herbeikommen, kommen nach, zu* MBh. 2, 1213. 3, 216. 12305. पुरम् R. Gorr. 1, 68, 16. 2, 73, 14. Mārk. P. 123, 47. *zu Jmd* MBh. 1, 562.

— उदा *sich hinaufbegeben zu:* सभाम् Kaṭṭ. 17.

— उपा 1) *herbeikommen, kommen nach, zu* RV. 1, 171, 2. 4, 21, 1. 5, 53, 3. या नो देवेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि 7, 14, 3. उपायातं द्रविणं सर्ववीरं वरूत्ता 71, 2. 72, 1. 8, 81, 10. प्रद्युम्नो ऽयमुपायाति MBh. 3, 738. 4, 231. Harīv. 6200. R. Gorr. 1, 12, 33. 4, 33, 22. Kathās. 25, 268. 30, 54. Bhāg. P. 10, 23, 18. राजमार्गम् MBh. 1, 5451. राजधानीम् R. 1, 9, 66 (64 Gorr.). R. Gorr. 1, 2, 22. Kathās. 16, 87. 33, 89. Bhāg. P. 3, 21, 48. यज्ञम् R. 1, 73, 7 (75, 8 Gorr.). तस्यान्तिकम् Kathās. 10, 102. 13, 12. अस्तम् *untergehen* und auch *sterben* 10, 129. Rāja-Tar. 4, 6. 5, 126. मां MBh. 7, 2814. Kathās. 16, 17. 18, 231. 20, 181. 22, 193. 35, 18. 143. 45, 209. 54, 169. 56, 406. Mārk. P. 72, 17. Bhaṭṭ. 4, 44. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhält-*

miss kommen; mit acc.: तृप्तिम् Mârk. P. 31, 8. विलोकनीयताम् Kir. 8, 45. — Vgl. उपायात.

— अभ्युपा *hinzukommen, herankommen* Kathâs. 18, 132.

— समुपा dass.: तत्रैव समुपायायो Kathâs. 12, 102. 17, 159. विराटम् *gehen zu* MBh. 4, 280. वसन्ते समुपायाते *gekommen* Spr. 623.

— पर्या *herkommen von* (abl.) ṚV. 8, 8, 3. या नो यातं दिवस्परि 4. या यास्पर्यं या परि स्वाकृा सोमस्य पीतये 34, 10.

— अनुपर्या, so Âçv. Gṛhy. 3, 12, 15 bei Stenzler; s. jedoch u. अनुपरि.

— प्रा *herbeikommen:* तमा प्र यातं ṚV. 7, 24, 1. या तु प्र यातं 29, 1. 3, 30, 2. 8, 2, 19.

— उपप्रा dass.: उप प्र यातं वरुमा धनिष्ठम् ṚV. 7, 70, 6.

— प्रतिप्रा dass.: प्रति प्र यातं वरुमा धनाय ṚV. 7, 70, 5.

— प्रत्या *zurückkommen, zurückkehren* MBh. 4, 1698. Râǵa-Tar. 6, 203. स्राध्वमन् Ragh. 2, 67. Kathâs. 13, 194. 53, 22.

— समा 1) *zusammen herbeikommen, zusammenkommen, hinzukommen, herantreten, kommen, kommen nach, zu:* लोकपाला मरुद्गणाः समायाति (सभां या° ed. Calc.) दिदृक्षवः MBh. 3, 2139 (N. 3, 5). R. 1, 59, 11. 2, 91, 14. 4, 37, 23. Mârk. P. 109, 37. 128, 27. LA. (III) 91, 1. चत्वारो वराः समायाताः 13, 1. द्वौ पन्थानौ समायातौ Pañkat. 245, 2. समायात् MBh. 4, 1107. R. Gorr. 2, 33, 6. समायाते काले Spr. 3178. Kathâs. 104, 50. Râǵa-Tar. 6, 216. Pañkat. 34, 17. 46, 6. Hit. 14, 22. कस्त्वं कुतः समायातः 40, 21. 83, 2. Vet. in LA. (III) 7, 11. 9, 13. Verz. d. Oxf. H. 14, *b*, 10. कृत्वा नन्दस्य मन्त्रिणम् । खिन्नः समागयो द्रष्टुं कदाचिद्विन्ध्यवासिनीम् *er ging* Kathâs. 2, 2. वृत्तयः सर्वे एवैते स्वं स्वं सदा समाययुः Harîv. 14494. R. 2, 71, 10. Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 29. तमुद्देशं समायातः *gekommen* Pañkat. 199, 2. कदाचित्तस्य पार्श्वम् Kathâs. 14, 1. निकटं तस्य 43, 279. समायास्यन्ति ते शक्तिकम् MBh. 12, 7213. Mârk. P. S. 636, Z. 12. यत्र समाययौ Kathâs. 34, 144. Hit. 27, 14. Vet. in LA. (III) 3, 22. कुतो ऽपि स्थानात् — राजसभायां समायातः 2, 3. तस्मिंस्तडागे 5, 16. ताम् *ging auf sie zu* Kathâs. 9, 62. कालमेघः समाययौ *zog auf* 52, 322. शक्रं समायान्तं *herangeflogen kommend* MBh. 5, 7206. समायाति सदा लक्ष्मीर्नारिकेलफलाम्बुवत् Spr. 3177. तिलपुष्पात्समायाति वायुः 1034. यस्या दुष्टा दशा समायाता *kam über sie* Z. d. d. m. G. 14, 374, 3. मम बलाभिद्रा समायाता Pañkat. 27, 10. यावत्कृष्णपतः समायाति Vet. in LA. (III) 8, 3. शशाकस्यावसरः समायातः Pañkat. 55, 4. — 2) *verstreichen, verfliessen:* मासा दश समाययुः MBh. 4, 373. — 3) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen;* mit acc.: वृद्धिम् Spr. 3257. Mârk. P. 25, 13. सौहित्यम् Râǵa-Tar. 4, 635.

— अभिसमा *zusammen herbeikommen* MBh. 5, 1974.

— उद् 1) *hinausgehen, weggehen:* स्थानात् Çat. Br. 14, 5, 3, 1. *abfliegen:* क्रमशस्ते (शराः) पुनस्तस्य चापात्समभिवोद्ययुः Ragh. 12, 47. — 2) *sich erheben:* पतत्युद्यात्ति Gît. 4, 19. खम् Kathâs. 26, 231. दिवम् 28, 92. 107, 29. — 3) *sich erheben* so v. a. *entstehen:* विरोधो ऽन्योऽन्यमुखयोः Râǵa-Tar. 4, 687. इति मतिरुदयासीत् Naish. 2, 109. — 4) *übertragen, übertreffen:* त्वामुद्यातितराम् Mârk. P. 69, 60. — Vgl. उद्यान. — caus. s. उद्यापन.

— अभ्युद् *sich gegen Jmd erheben* MBh. 6, 3217. अभ्युद्यतो st. अभ्युद्यातो ed. Bomb.

— प्रत्युद् *sich erheben und Jmd* (acc.) *entgegen gehen* (in freundlicher oder feindlicher Absicht) MBh. 4, 1666. 1824. 2185. 2187. 5, 2235. 6, 1690. 2292. 14, 176. 2106. 2222. 16, 139. R. Gorr. 1, 21, 7 (20, 8 Schl.). 2, 46, 20. Kumâras. 6, 50. Kathâs. 16, 73. 121, 271. Râǵa-Tar. 3, 220. Bhâg. P. 1, 11, 8. प्रत्युद्याति mit pass. Bed. Ragh. 1, 49. Mâgh. 23. auch mit gen. der Person: प्रेष्यागच्छत्तामाकिताग्रीनामग्रयः प्रत्युद्यान्ति ved. Cit. bei Mallin. zu Ragh. 1, 49. — Vgl. प्रत्युद्यातृ.

— समुद् *sich gegen Jmd* (acc.) *erheben* MBh. 8, 1316. पञ्च नः सङ्क्षितान्सर्वान्विराटनगरे तदा । एक एव समुद्याताः 6, 1436.

— उप 1) *herbeikommen, besuchen, hingehen —, kommen nach, zu, sich Jmd nähern:* यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञम् ṚV. 7, 1, 12. 26, 1. TBr. 3, 1, 2, 4. चन्द्रो याति भगामुषं ṚV. 8, 4, 9. ग्रामम् 1, 82, 5. बर्हिः 135, 1. युक्ता रथमुषं देवौ घर्मातन 161, 7. स्तोमम् 3, 60, 7. इक्षेषं यात 4, 35, 1. निष्कृतम् 3, 86, 32. AV. 13, 2, 37. 18, 4, 8. सोमदम् Âçv. Gṛhy. 2, 6, 11. Gobh. 3, 4, 28. — रथं गृहीत्वोपयगौ R. 2, 82, 27. स्यन्दनेनोपयान् R. Gorr. 2, 125, 1. 4, 37, 37. Gît. 9, 8. Bhâg. P. 3, 31, 40. कस्माच्चैकोपयातो ऽसि R. 2, 91, 8. 6. 5, 27, 12. R. Gorr. 1, 73, 6. 2, 100, 6. 3, 42, 31. MBh. 3, 11905. Kathâs. 52, 231. 53, 142. Bhâg. P. 1, 19, 15 (um Schutz zu suchen). 3, 31, 20. यत्रोपयाति कृपिभिः सोमवीथीम् MBh. 13, 4896. उत्तमां गतिम् Kathâs. 111, 73. स्वपुरम् MBh. 2, 49. 3, 618. 637. 2764. 5, 7106. 7486 (wo नोपयाति mit der ed. Bomb. zu lesen ist). तदर्थमुपयातो ऽस्मयोध्याम् R. 1, 73, 4. 2, 50, 15. 57, 16. 71, 9. 5, 63, 13. Ṛt. 1, 23. Bhâg. P. 3, 21, 37. 4, 30, 18. 5, 21, 10. दिवमुपयातानाम् Spr. 1157. अस्तम् Kathâs. 30, 144. सकाशम् Bhâg. P. 3, 16, 26. क्षेत्रपदवीम् Verz. d. Oxf. H. 58, *b*, 4. सवितरि क्षयमुपयाते Vâsiṇ. Bḥn. S. 42, 12. उपक्षपाक्षयनोपयातस्य भानोः 104, 61. गृहोपयात Bhâg. P. 4, 20, 15. (नदी) अर्चिता चोपयाता (*besucht*) च गन्धर्वैः MBh. 3, 10903. उपयात्यर्चयित्वा तु ताम् 172. 5, 1149. 7, 6406. अरुं तु तं नरव्याघ्रमुपयातः प्रसादकः R. 2, 90, 17. 4, 35, 31. Spr. 2500. Kathâs. 84, 25. Bhâg. P. 1. 2, 3. 3, 16, 20. 5, 14, 40. त्वामेव शरणं नित्यमुपयास्ये Harîv. 2918. 12350. पुरुषं पुराणं ब्रह्म प्रधानमुपयाति *eingehen in* Bhâg. P. 3, 32, 10. मधुः (= वसन्तः) उपयगौ Ragh. ed. Calc. 9, 24. शरण्यशोपयातायाम् R. 4, 29, 1. ज्ञां प्रशास्तिहूतीमुपयाताम् Kathâs. 10, 216. दुर्मन्त्रिणं कमुपयाति न नीतिदोषाः so v. a. *begegnen* Spr. 1193. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaftig werden, erlangen, finden:* मृत्युम् Vâsiṇ. Bḥn. S. 69, 30. घनो घना वायुवशोपयाताः Harîv. 8783. मुदम् Spr. 3529. क्षयम् Gît. 3, 4. धातृभावम् Spr. 1322 (= MBh. 1, 634). लोभम् MBh. 1, 7634. नाशम् Mârk. P. 49, 25. विनाशम् R. 2, 48, 22. R. Gorr. 2, 69, 7. Vâsiṇ. Bḥn. S. 17, 21. 54, 61. पाकम् 8, 12. 46, 7. 51. शमम् 5, 63. मोक्षम् 7, 19. प्रकोपम् 38, 3. संक्षयम् 47, 14. विषादम् Spr. 1292. प्रसादम् Pṛan. 68, 12. प्रकाशम् Harîv. 5224. मूर्छाम् Bhâg. P. 5, 26, 8. पीडाम् Vâsiṇ. Bḥn. S. 5, 35. वृद्धिम् 25, 2. आर्तिम् MBh. 1, 7634. ख्यातिम् Harîv. 6497. पुष्टिम् Mârk. P. 16, 71. यां यां सृष्टिम् Bhâg. P. 1, 19, 16. भूतिं चोपयगौ तस्य सारूप्येण मरुद्गणैः MBh. 3, 2296. भार्यात्वम् M. 12, 69. स्थिरत्वम् Spr. 1322. तनुताम् Ragh. 9, 37. मृदुत्वम् Mârk. P. 68, 32. एकत्वम् 102, 10. ब्रह्मवाच्यग्निसोमानां सालोक्यम् MBh. 13, 4173. काठिन्यम् Vâsiṇ. Bḥn. S. 21, 34. माधुर्यम् Spr. 4966. तस्य साकल्यम् Kathâs. 32, 35. क्व शरणमुपयाति तत्र ज्ञानः Vâsiṇ. Bḥn. S. 5, 38. कल्पान्तम् Bhâg. P. 5, 13, 7. किंचिदूनम् 14, 38. सातादन्यैरपकृतमपि प्रीतिमेवो-

पयाति *wird zur Freude* Spr. 2012. — 3) *eintreten* (feminam): अनुयायान्पतिः Spr. 636, v. l. तस्मात्स युवतीमन्यो नाकामामुपयास्यति R. 7,26,28. यथा-मैतद्योपयाता MBh. 8,2081. — Vgl. उपयान, उपयायिन्.

— अभ्युप 1) *herbeikommen, hingehen zu, losgehen auf* R. 1,73,5. 4, 62,12. निवेशायाभ्युपायाम[:] MBh. 7,1967. तौ राजपुत्रौ सहसाभ्युपाया-च्छ्येन इवामिषं रक्षोदिविचन्द्रसूर्यौ R. 2,29,33. — 2) *in einen Zustand u. s. w. kommen:* शमम् *zur Ruhe gelangen* Mârk. P. 131,19.

— उपोप *gelangen zu, antreten:* ते द्वादशं वर्षमुपोपयाता (wohl so zu lesen) वने विहर्तुं कुरवः MBh. 3,12358.

— प्रत्युप *zurückkehren* MBh. 4,2356. प्रत्युपायां पुनर्गृहम् (so die ed. Bomb. st. गृहे der ed. Calc.) 1,8393. प्रत्युपायाद्गृहे प्रति 13,1883. काल-स्त्वयं प्रत्युपयाति दारुणो दुर्योधनो युद्धमुपागमय्यत् 8,1991.

— समुप 1) *zusammen herbeikommen:* श्रेणीयः समुपोस्तत्र समुपायात्स-मन्ततः R. Gorr. 2,82,12. *hingehen —, sich begeben zu:* मरुतोत्तम् MBh. 3,1912. वाहिनीम् Vaitân. Bhn. S. 47,25. यत्तम् 11,34. यतस्तौ शरण्य-शरणं समुपयाता: 43,1. — 2) *in einen Zustand u. s. w. kommen:* संदर्शे-नम् *sichtbar werden* Vaitân. Bhn. S. 87,26.

— नि 1) *überführen* (mit einem Wagen): यमित्रयन्तं सर्वरथा नि याहि RV. 5,35,5. यश्चकर्थ मित्रं मरुतो नि यात 42,10. गिरिम् 54,5. — 2) *herab-kommen zu:* विभिन्द्यर्वानमश्विना नि यातः RV. 5,73,5. — 3) *gerathen in:* मार्कं पौत्रमघं नियाम् Âçv. Grhj. 1,13,7. — Vgl. नियायिन्, नियान.

— परिणि P. 8,4,17, Sch.

— प्रणि P. 8,4,17, Sch. Vop. 8,22. 9,16. *gerathen in:* रूपम् Bhatt. 9,100.

— निस् 1) *hinausgehen, — fahren, — ziehen, das Haus verlassen, hervorkommen aus* MBh. 1,4912. 2,951. 4,987. चतुरङ्गबलं चापि शीघ्रं निर्यातु R. 1,69,3. 2,47,11. 57,19. fg. 68,7. 70,3. निर्यातो वाभियातो वा 71,20. R. Gorr. 1,71,2. 3,28,27. 4,35,29. 6,11,6. Spr. 1084. Kathâs. 12,67. 134. 15,90. 18,108. 186. 25,53. 28,144. 32,308. fg. 33,37. राज्ञो यात्रासु Râja-Tar. 3,78. 121. 5,53. 254. 257. 259. Bhâg. P. 8,16,7. 9,15, 27. Ver. in LA. (III) 20,19. Bhatt. 8,5. 15,95. वाहिनीम् Kathâs. 18,182. 53,48. नगरात् MBh. 1,5091. गृहात् 5452. R. 2,76,19. Spr. 1230. Rasn. 10,38. Kathâs. 13,95. 27,151. Râja-Tar. 5,104. Bhâg. P. 1,10,14. 4, 30,44. Bhatt. 2,1. युद्धाय MBh. 8,1260. Harîv. 10732. Rasn. 12,83. Ka-thâs. 49,87. दिग्जयाय Râja-Tar. 4,402. क्वचिद्विहारार्थम् Pañkat. 238,19. मृगयाम् *auf die Jagd* MBh. 13,346. समीपं मानवेन्द्राणाम् Harîv. 9603. वाह्नेः — नरा निर्यान्त्यरण्यानि Spr. 4423. Bhâg. P. 2,2,28. न च निर्या-न्ति प्राणा मे Kathâs. 25,131. Spr. 3337. हिरण्मयानि वित्तानि तदा नि-र्यान्ति कृपणतः Kathâs. 35,61. 83,68. यद्यार्चियो ऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो नि-र्यान्ति Bhâg. P. 3,3,23. बालनिर्यातधूम 10,71,22. तन्मुखनिर्यातं यशः 4, 31,24. — 2) *vergehen, verstreichen:* क्षणानि दिनानीव तदानीं मम नि-र्यन्तु Spr. 5401. — 3) *bereinigen* (ein Feld) MBh. 12,3586; vgl. निर्यातृ (auch in den Nachträgen). — 4) *bei Seite legen:* घासदर्वे च निर्यातं (= दत्तं Nîlak.) धनं त्विक् विवर्धयेत् (so die ed. Bomb. st. राजा न इह विन्दते der ed. Calc.) MBh. 12,3282. — Vgl. निर्या fg. und निर्याति. — caus. 1) *hinausgehen —, hinausziehen lassen:* सेनाम् MBh. 5,5702. R. 7,64, 18. *hinausjagen:* शिबिरात् Bhâg. P. 1,7,36. स्वपुर्याः 3,1,41. — 2) *weg-schaffen, aufheben:* निर्यापितदेवधर्म Bhâg. P. 3,21,17. — 3) *beginnen, unternehmen:* निर्यापितो महोत्सवः Bhâg. P. 4,3,8. — Vgl. निर्यापण. — desid. s. निर्यियासु.

— अभिनिस् *hinausgehen, — ziehen* MBh. 3,654. 4,1022. 1252. Bhâg. P. 10,63,5. नगरात् MBh. 14,2177. R. 2,71,1. 7,23,6,89. युद्धाय 6,27, 19. वधायास्य 3,28,16. — Vgl. अभिनिर्याण.

— प्रतिनिस् *wieder herauskommen:* (यथा) न जीवन्प्रतिनिर्याति मरुतो ऽस्माद्यत्रतात् MBh. 6,3155. यथा प्रयुक्त ओंकारः प्रतिनिर्याति मूर्धनि Mârk. P. 42,6.

— विनिस् *hinausgehen, — fahren, — ziehen* MBh. 1,4913. 2,2592. 4,983. 5,7436. Kathâs. 12,62. 24,51. 32,78. 34,123. 88,14. Râja-Tar. 5,59. 327. 448. वह्निम् 3,160. उदरात् Kathâs. 25,52. तोरः 26,208. स्था-नात् Râja-Tar. 5,218. 2,164. राज्ञधान्याः 236. युद्धाय Kathâs. 58,6. दि-ग्जयाय Râja-Tar. 3,27. 4,513. तान्प्रति Harîv. 10626. प्राणास्तस्या विनिर्ययुः Kathâs. 13,90. यष्टिः पुत्रसहस्राणि भिन्ने तुम्बे विनिर्ययुः R. Gorr. 1,40,17. विकोशासिविनिर्यातैः खड्गरश्मिभिः Kathâs. 112,153. विनिर्यो-स्ती वक्त्रात् — यात्रा Râja-Tar. 4,218. मानसानिर्विनिर्ययौ । मानसात् 585. यथा मात्रा कृतास्तस्माद् (हृदयात्) उपदेशा विनिर्ययुः Kathâs. 12,81. विनिर्याति (im Gegens. zu समायाति) महा लक्ष्मीर्गजभुक्तकपित्थवत् Spr. 3177. — Vgl. विनिर्याण.

— परा *weggehen, hingehen:* परो याहि मघवन्ना च याहि RV. 3,53,5. AV. 18,3,14. — caus. Kâç. 88.

— परि *umherwandeln, umwandeln, umfahren, durchwandern; herbeikommen:* याभिः सूर्यं परियाथः पेरावतिं RV. 1,112,13. यावापृथिवी यो-धना परि 5,33,7. 10,49,7. रथैः 3,38,8. 4,15,2. 7,69,5. वर्तिरश्विना परि यातमस्मयू 8,26,14. 5,75,7. 10,85,18. AV. 13,2,4. 6. Kâç. 16. Lâṭy. 3, 10,4. MBh. 12,8019. यानैस्तदा परियया श्वेताश्वश्च महारथः 14,2135. स-मन्तात्परियातो ऽसि R. Gorr. 2,106,19. सेनां कृत्स्नाम् MBh. 5,5701. म-हीम् 12,3527. पुरीम् R. 6,31,3. *abrinnen*, vom Soma RV. 9,82,2. 3. 83,5. *durchlaufen:* विश्वा रूपा 9,111,1. *umringen, umgeben:* यन्तैर्वधैः 1,121,9. *umgehen* so v. a. *hüten:* परि कृत्यदृतिर्यथो रियः 6,63,2. अग्निः सहसा परि याति गोनाम् 10,80,5. *umgehen* so v. a. *vermeiden:* यदा परियास्यंहः 6,37,4. — Vgl. परियाण fgg. — caus. *und umher-wandeln —, die Runde machen lassen:* पुरोडाशं तं परियाप्य (= प्रस्था-प्य Nîlak.) MBh. 1,7205. — परियापयमाण Kâç. zu P. 8,4,29.

— अनुपरि *rings durchfahren:* सर्वा दिशो ऽनुपरियायात् Âçv. Grhj. 3,12,15. Diese Lesart halten wir für die richtige.

— प्र 1) *sich auf den Weg machen, aufbrechen, eine Fahrt antreten; gehen —, sich hinbegeben —, fahren zu* (acc.): प्र ये ययुरेवकामो रथा इव RV. 7,74,6. 92,3. 93,1. प्र स्यन्द्रा याथो मनुषो न होता 1,180,9. प्र यीत-न सवीरश्को सखायः 165,12. 2,16,7. यस्तोमेभिर्न प्र याहि 3,53,6. 4,19, 8. 8,27,8. 9,69,2. 86,16. 97,8. प्र पाकस्थेभिर्यातो वविन्द 10,1,7. 8,1. VS. 12,32. 28,14. TBr. 3,7,6,1. Çat. Br. 6,7,4,2. 8,4,3. 5. Mund. Up. 1, 2,11. Der inf. प्रयै (vgl. P. 3,4,10) findet sich RV. 10,104,3 (in anderer Verbindung beim Schol. zu P.), wo übrigens प्रयै zu vermuthen ist. ततः सर्वे तवेत्युक्ता मात्रा सह महारथाः। प्रययुः MBh. 1,6041. 3,2624. 15690. 16908. Harîv. 3525. R. 1,69,5. 2,46,30. R. Gorr. 1,9,40. 58,32. 92,25. Mârk. 11,18. 120,1 (प्रयाम शीघ्रं zu trennen). विमुखाः प्रयान्ति Spr. 3054. 4590. Vaitân. Bhn. S. 28,15. Kathâs. 12,42. 105. 14,64. 18,246. 26,133. 32,48. 51,193. 52,90. 276. Râja-Tar. 5,293. Bhâg. P. 1,13,38.

4,2,12. Mārk. P. 61,29. Daçak. in Benp. Chr. 157,15. Pañcat. 221,12. रथमारूढ — प्रययौ ज्वनेर्दृषैः MBh. 3,2848. ततः प्रायामहं तेन स्यन्दनेन 12068. R. Gorr. 2,44,25. रथेन खरयुक्तेन प्रयातो दक्षिणामुखः R. Schl. 2,69,15. नौभिः प्रयाताः 1,9,11 (9 Gorr.). MBh. 1,5586. सेना प्रयाता R. 2,92,36. 3,54,9. Rāgh. 2,6. 16,38. Kathās. 51,173. 54,150. Varāh. Bṛh. S. 33,30. 88,24. Rāja-Tar. 1,301. Prab. 88,4. Pañcat. 168,22. प्रयायतां (3. sg. imper. pass. impers.) MBh. 12, 12077. युवभिः प्रयये (pass. impers.) Çiç. 9,70. इतो ऽन्यतः प्रयातुम् Spr. 2369. गृहात् Kathās. 16,88. उज्जयिन्याः 18,86. 24,89. 25,37. 56,73. दूरात् 50,16. दूरम् Śāntik. 7, 24. Rāja-Tar. 5,147. दूरप्रयात 4,410. स्वगृहाभिमुखम् Hit. 42,14. यस्माल्लोकादमुं लोकं प्रयाताः Maitrāyp. 1,4. दक्षिणां दिशम् MBh. 1,5876. 3,240. 2616. 3058. 5, 5079 (med.). 7106. 7342. 7502. 13, 4889. Harīv. 8122. R. 1,1,93. 2,40,18. 49,9. 80,4. 96,26. R. Gorr. 1,26,5. 5,27,16. Rāgh. 12,25. Śāntik. 12,72. आकाशं विपुलम् Spr. 2083. 3928. Kathās. 10,8. 13,132. 18,145. 21,32. 52,232. 56,56. Bālār. P. 1,10,33. 2,2,25. 3,4,4. Mārk. P. 43,15. Bhatt. 3,36. नरकम् Prab. 21,2. विन्ध्यवासिनीम् Kathās. 54,160. शत्रुबलम् ziehen gegen Harīv. 13161. ये मां युद्धे प्रयास्यन्ति (ऽभियोत्स्यन्ति ed. Bomb.) तान्क्षिप्यामि MBh. 7,7159. शङ्कूरं मा प्रयाता वै महानदी Mārk. P. 56,17. पर्वतं मन्दरं दिव्यमेष पन्थाः प्रयास्यति MBh. 3,10900. यानि यानि पवित्राणानि Mārk. P. 14,25. तत्र MBh. 13,4890. Hit. 84,10. Kathās. 26,14. पुरं प्रति MBh. 3,15081. Kathās. 18,392. तौ भद्रां प्रति 289. पुण्यवनाय Bhatt. 1,25. वनवासाय R. 2,45,1. MBh. 3,765. द्रौपदीं द्रष्टुम् 1, 6925. R. Gorr. 2,25, 24 (wo कर्तुं zu lesen ist). Kathās. 18,86. घसवः प्रयान्ति entfliehen Gir. 10,11. मम प्राणाः प्रयान्तु Kathās. 18,137. sich auf den Weg machen so v. a. sterben Bhag. 8,5. प्रयात gestorben 23. verfliessen, vergehen: प्रयाताः सप्त वासराः Kathās. 4,23. vergehen, verschwinden; von Krankheiten Verz. d. Oxf. H. 234,b,5. ललाटलेखा न पुनः प्रयाति Spr. 4948. Bilār. 17. auseinanderfliegen: पद्मा प्रयान्ति संयान्ति स्रोतोवेगेन वालुकाः Spr. 4787. त्रुटत्सुकं मुक्ताजालमिव प्रयाति कटिति घण्टिद्दिशः 3003. — 2) = या wandeln, gehen, sich bewegen, fahren: यं च पन्थानमाक्रम्य प्रयाति मनुजेश्वरः R. 5,81,22. प्रब्रूहि कः केन पथा प्रयाति Çiç. 183. (सारङ्गः) वियति बकुतरं स्तोकमूर्व्यां प्रयाति 7. रात्रिंदिवं गन्धवहः प्रयाति 101. इह तुरगशतैः प्रयान्तु मूढाः Spr. 431. अप्रयान् sich nicht bewegend MBh. 5,7178. प्रयात (sich in Bewegung gesetzt habend) = प्रयान् gehend, sich bewegend, fliegend: प्रयाते तु रथे MBh. 3,2809. सो ऽपश्यद्धंसयुगलं प्रयातं गगणे निशि Kathās. 3,27. — 3) sich benehmen: तन्मित्रमापदि सुखे च समं प्रयाति Spr. 1926. l. l. — 4) in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss gerathen, theilhaftig werden: निष्ठां गतिम् Kathās. 52,409. निधनम् Spr. 3346. परितापदुःखम् 2931. निद्राम् Ṛt. 4,14. वैधस्य वशम् Varāh. Bṛh. S. 68,110. निष्ठाम् Harīv. 8464. fg. मुदम् Mārk. P. 74,48. Spr. 618. भवं योनिशतेषु Jāān. 3,131. सङ्गम् Ṛt. 4,3. 6,6. पराभवम् MBh. 4,902. Spr. 3241. उदयम्, क्षयम् 3783. Mārk. P. 112,10. विरामम् Spr. 2385. नाशम् Varāh. Bṛh. S. 84,1. समाप्तिम् Spr. 2460. परमां वृद्धिम् 3763. सौख्यम् 1391. Ṛt. 6,4. मानुष्यम् Kathās. 27,71. पारमेष्ठ्याम् Bālār. P. 2,2,22. स्थैर्यम् Mārk. P. 21,56. समूढत्वम् Maitrāyp. 3,2. विषमत्वम् 5,2. ऊर्ध्वपतित्वाद्यतम् Jāān. 3,131. भावनीयताम् Spr. 167. देवत्वम् 171. 500. Kām. Nītis. 15,9. Rāja-Tar. 1,268. Mārk. P. 23,65. Bhatt. 6,49. Sarvadarçanas. 170,9. — Vgl. प्रया, प्रयाणि fgg., प्रयामन् fgg., प्रयिषु, गणेशभुर्गप्रयात, चण्डवृष्टि°, भुजंग°. — caus. प्रायापयमाण Kāç. zu P. 8,4,29. प्रयाप्यमाण und प्रयाप्यमान Schol. zu P. 8,4,30. aufbrechen lassen Çat. Br. 11,8,4,3. Vgl. प्रयापण fgg. — desid. sich auf den Weg machen wollen: राजानं प्रयियासन्तम् Çat. Br. 14,7,4,44. — caus. vom desid.: veranlassen, dass Jmd sich auf den Weg machen will: प्रयियासयत्तः Bhatt. 3,25.

— अनुप्र auf dem Wege nachfolgen TBr. 3,7,4,1. den Weg einschlagen nach: घाघातमन्वानुप्रयामि शामित्रमालब्धुमिवाधरे ऽग्नेः Mṛicch. 161, 12. nach Jmd (acc.) aufbrechen, Jmd begleiten: तं प्रयान्तमनुप्रायात् MBh. 5,2949. R. Gorr. 2,33,7. पृष्ठतो ऽनुप्रयातानि (mit act. Bed.) 43,23 (45, 22 Schl.). अनुप्रयात begleitet von Kumāras. 3,23. 52.

— अभिप्र herbeikommen zu: अभि प्रिया मरुतो या वो अश्व्या हव्या मित्र प्रयाथन RV. 8,27,6. aufbrechen MBh. 4,1650. R. 5,73,18. दिशं दक्षिणपश्चिमाम् Kathās. 101,174. वनम् R. 2,31,37. अभिप्रयातस्य वनं चिराय ते 23,43. angreifen: अभिप्रयामि संग्रामे यदहं युद्धदुर्मदान् MBh. 4,1381. पूर्वं चाभिप्रयातस्य चक्रं तस्य मनोजवम् । भविष्यति चाप्रतिहतं सततं चक्रवर्तिनः ॥ 1,2983. — Vgl. अभिप्रयायम्, अभिप्रयायिन्.

— उपप्र herbeikommen, — fahren; sich aufmachen zu RV. 1,82,6. सोमम् TS. 2,2,4,2. 3. Çāṅkh. Br. 22,9.

— परिप्र herbeikommen zu: पूषं हि देवीः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः RV. 4,51,5.

— प्रतिप्र heimkehren RV. 1,169,6. MBh. 3,10287. स्वगृहम् Irm. bei Sāy. zu RV. 1,123,1. प्रतिप्रयात MBh. 12, 8320. R. 3,1,1. 6,105,1. 7. 64,18. Rāgh. 14,19. Verz. d. Oxf. H. 117, a, 8 (hier vielleicht °यात्तं zu lesen). zurückfliessen Śrāpr. Br. 5,10. — Vgl. प्रतिप्रयाण.

— विप्र auseinandergehen, — laufen: विप्रयातरथानीकाः MBh. 6, 2121. 7,3760. 9,1055. An der ersten Stelle die ed. Bomb. विप्रद्रुत°.

— संप्र 1) (zusammen) aufbrechen, hingehen zu Çiṅkh. Ça. 2,16,1. MBh. 1,4645. 2,2517. तदनीकं विराटस्य मुमुचे — संप्रयातं (= संप्रयात्; संप्रयातं ed. Bomb.) तदा रात्रिरिवोदितं (d. i. निरीक्षत् = निरीक्षमाणम्) गवां पदम् 4, 1034. 5,3463. 5154. Harīv. 4461. 10911. 11071. R. Gorr. 2,101,40. 5,35,27. 7,14,2. नक्षत्रैः संप्रयास्यामि पुरम् MBh. 3,15082. ब्रह्मणः सदनम् 13,1851. नभस्तलम् R. 3,60,1. 5,55,13. 7,18,19. ततो दिवाकरो रात्रिं संप्रयाति च कर्कटम् Verz. d. Oxf. H. 46,a,42. (नदी) संप्रयात्युत्तरान्युद्धन् MBh. 6,278. संप्रायादाश्रमपदं प्रति 3,16857. sich bewegen (von Gestirnen): (पद्मा) येनासौ संप्रयास्यति Śāntik. 6,16. नखैः संप्रयातः mit Nägeln zu Werke gehend, sich der Nägel bedienend MBh. 12, 8863. — 2) (zusammen) in ein Verhältniss, eine Lage, einen Zustand gerathen: समतां Varāh. Bṛh. S. 17,2. उच्छ्रूनीः Mārk. P. 121,28.

— अनुसंप्र hingehen AV. 11,1,36.

— अभिसंप्र hingehen, sich nähern MBh. 6,3762. संवारयिष्यूनभिवारयिता ed. Bomb. st. यावारयिष्यन्नभिसंप्रयाण der ed. Calc.

— उपसंप्र hingehen VS. 13,53.

— प्रति 1) herkommen zu: उभा पीतं प्रति कृण्यानिं वीतये RV. 8,90, 7. hingehen zu: भानावस्तं प्रतियासे महीयम् MBh. 5,7216. मूतपुत्ररथं प्रति । प्रतियातम् (यातां तु ed. Bomb.) 7,7844. losgehen auf Jmd (acc.) Harīv. 5608. रणाय वीरः प्रतियातबुद्धिः gerichtet auf R. 5,43,14. — 2)

heimkehren, wiederkehren MBh. 3,1712. 5,7423. 7518. Harıv. 3958. R. 1,66,6. 3,4,36. 11,17. ह्येव न जीवन्प्रतियास्यसि 59,10. 5,12,13. 7,18,18. Raghu. 5,18. Daçak. in Benf. Chr. 181,17. धन्विकमस्य गुरोः Raghu. 8,90. पुरीमिमाम् MBh. 1,6780. 5,6031. 16,171. R. 2,32,37 (31,3 Gorr.). 5,53,27. 73,50. गृहान् MBh. 4,1253. Bhâg. P. 10,29,27. स्वधाम 4,8,33. स्वमावासम् R. 3,46,19. उर्वीम् Raghu. 1,75. स्वमनीकम् MBh. 9,1341. पाण्डवान् 5,643. कथं पुनर्नः प्रतियास्यते Bhâg. P. 10,39,24. *wieder von dannen gehen:* विसृज्य सलिलं मेघाः प्रतियाताः R. 4,29,9. प्राणिनं सर्वमादः। स्पृशत्यनिलवल्लोके तेषेन प्रतियाति (व्यपयाति ed. Bomb.) च ॥ 3,71,5. प्रतियातनिद्र so v. a. *erwacht* Bhâg. P. 5,1,16. — 3) *Jmd* (acc.) *willfahren:* यावन्मां प्रतियास्यति R. 2,111,14. महचनमङ्गीकृत्य प्रतियास्यत्ययोध्याम् Comm. in der ed. Bomb., यावन्न प्रतियास्यति Gorr. (2, 120,14). — 4) *Jmd* (acc.) *gleichkommen:* गयं नृपः कः प्रतियाति कर्मभिः Bhâg. P. 5,15,7. — 5) *vergolten werden* Bhâg. P. 10,32,22. — Vgl. प्रतियान fg. — caus. *heimkehren lassen nach* (acc.) Bhâg. P. 10,73,28.

— वि 1) *weggehen, sich abwenden:* यस्मिन्मनो दृगपि नो न वियाति लाभम् Bhâg. P. 5,2,16. — 2) *durchfahren, mit dem Wagen —, mit den Rädern durchschneiden:* वि यौधन वनिनः पृथिव्या व्याशा पर्वतानाम् RV. 1,39,3. वि यौत विश्वमित्रार्णाम् 86,10. विभिन्दुना रथेन वि पर्वतौ धयातम् 116,20. 117,16. 3,31,9. दुश्चक्रुणीः 5,12,6. 62,7. तमः 65,2. वि वृत्रं पर्वशो यंयुः 8,7,23. — 3) *durchlaufen, durchschneiden:* तुविर्येभिः सत्वभिर्याति वि ऋषः RV. 1,140,9. वि रोदसी पथ्या याति साधन् 6,66,7. 8,62,13. 9,91,3. रोचना 10,32,2. *zwischen durch gehen, — fahren* Çat. Br. 12,4,4,2. 3. — 4) वियात *dreist, unverschämt* AK. 3,1,25. H. 432. Hall. 2,216. विद्रूपं यातं गमनं चेष्टनं यस्य स वियातो ऽविनीतः Kâil. zu P. 7,2,19. urspr. wohl *aus der Art geschlagen;* vgl. वैयात्य. — AV. 3,31, 5 scheint der Text entstellt zu sein.

— अभिवि *herbeifahren:* शतं रथेभिरुषा वि यात्यभि मानुषान् RV. 1,48,7.

— सम् 1) *zusammen gehen, — fahren, gehen, wandeln, fahren* TS. 5, 3,10,1. TBr. 2,4,3,3. Çat. Br. 3,3,4,7. 7,4,13. नाराजके जनपदे क्षुद्भयैः परमवाप्नुयुः। नराः संयान्ति सहसा रथेश प्रतिमण्डितैः ॥ Spr. 4431. को ऽयं स्यन्दनारूढः — निर्लज्ज इव संयाति R. 7,23,3,5. Bhâg. 15,8. *zusammenkommen, sich vereinigen:* यथा प्रयान्ति संयान्ति स्रोतोवेगेन वालुकाः Spr. 4787. Bhâg. P. 3,3,23. *mit Jmd* (acc.) *feindlich zusammenstossen, kämpfen* MBh. 6,3143. *hingehen:* संयाहि यतो बाणो रथे स्थितः Harıv. 10783. यत्रुनं वीत्य संयातं नरदशवधं प्रति MBh. 7,6065. स्वपुरम् Harıv. 5636. ह्यर्यं पदं हरेः Bhâg. P. 5,19,23. *kommen* R. 6,33,24. पुनरपि वीरवरः संयातः Vet. in LA. (III) 28,15. विधूमामिव (so die ed. Bomb.) संयान्तीमुल्काम् MBh. 7,8881. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss treten, theilhaftig werden:* निर्वाणम् Bhâg. P. 11,14,46. एकताम् R. 4,33,26. पापान्संसारान् M. 12,52. तथा शरीराणि विकाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही Bhag. 2,22. ग्रुभाँल्लोकान् MBh. 3,6013. अपावृतमृतम् Bhâg. P. 3,9,18. — 3) *sich richten nach* (acc.): गुरुणेव कृतमन्यं कर्म (acc.) संयाति दैवम् (nom.) MBh. 13,341. — संययुः Harıv. 15892 fehlerhaft für सं पयुः, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. संयान.

— अनुसम् *auf- und abgehen:* रतिणश्चानुसंयासु पवि R. 2,79,18. *hingehen zu, nach, besuchen:* शक्रस्त्रैलोक्यमनुसंययौ MBh. 12,8222. यादित्यमनुसंयाती R. 4,58,5. मरुतश्च कुबेरस्य यमस्य वरुणस्य च। भवनान्यनुसंयामि MBh. 1,3072. तीर्थान्यन्यान्यनुसंयाहि 3,10096. — Vgl. अनुसंयान.

— अभिसम् *besuchen, kommen zu:* यतो विद्मा यभि सं यंति संयतः RV. 9,86,15. नावोदकादुदकमभिसंयाति Kâṭh. 22,6. *losgehen auf Jmd* (acc.): मामेकमभिसंयातो MBh. 8,1828.

— उपसम् *vereint kommen zu:* यस्य त्रिषप्तयुपसंयात् सवँ RV. 6,73,1.

— प्रतिसम् *auf Jmd losgehen, Jmd angreifen:* सो ऽर्जुनं प्रतिसंयातः (प्रति könnte auch mit यर्जुनं verbunden werden) MBh. 6,2697. सो ऽर्जुनप्रमुखे यात्तम् ed. Bomb.

2. या (= 1. या) am Ende eines comp. *gehend;* s. सपा°, एव°, तुर°, देव°.

3. या f. zu 1. य.

4. या f. zu 2. य; nachzuholen wäre die Bed. लक्ष्मी H. 226.

याकृत्क adj. von यकृत् P. 7,3,51, Sch.

याकृल्लोमन् adj. von यकृल्लोम गण पलायादि zu P. 4,2,110.

यात्त (von 1. यत्त) adj. *den Jaksha eigen:* स्थान Gaupar. zu Siddhânt. 14.

याग (von 1. यज्) m. *Opfer* AK. 2,7,4,2. 13. 47. 3,4,9,11. 6,2,11. Trik. 2,7,2. H. 820. Hall. 2,259. °स्थ Jâḍ. 3,251. Colebr. Misc. Ess. 1,318. Raghu. 8,30. यात्रायागादि नागानी प्रावर्तयत Râja-Tar. 1,185.236. मत्स्यापूपयागविधायिन् 6,11.113. Verz. d. Oxf. H. 79,a,24. Bhâsâp. 160. Schol. zu Kâṭy. Ça. 250,7. 254,16. 271,9. 362,2. 3. °संप्रदानं देवता Kâç. zu P. 4,2,24. Weber, Ǵjot. 111. °काल 49. 53. 68. 72. fg. 75. 88. 109. gegenüber होम Ind. St. 2,96. — Vgl. गण°, यज्ञ°, ब्रह्म°, मातृ°, सत्र°, सोम°.

यागकर्मन् (याग + क°) n. *Opferhandlung* Mârk. P. 16,71. Weber, Ǵjot. 111.

यागमण्डप (याग + म°) *Opferhalle, Tempel* Verz. d. Oxf. H. 105,a,20.

यागसंतान (याग + सं°) m. ein anderer Name Ǵajanta's (Sohnes des Indra) H. ç. 33.

यागसूत्र (याग + सूत्र) n. *Opferschnur*, neben यज्ञोपवीत Ind. St. 2, 174. 178.

याच्, याचति, °ते Dhâtup. 21,3. अयाचे; अयाचिषम्, याचिषत्, अयाचिष्ट; याचिष्यामि, याचिष्ये; याचिता; याचितुम्; partic. praet. pass. याचित. 1) *flehen, heischen, betteln, bittend angehen* (mit dopp. acc.; vgl. P. 1,4,51, Sch. Vop. 5,6), *anflehen:* सदा याचामहे गिरा RV. 8,1,20. ग्रुक्रा याशिरं याचते 2,10. सवं आदित्यान्योचियामहे (daneben auch पियाचियामहे nach P. 8,1,5, Vârtt. 3, Sch.) 56,1. याचते सुम्नं पवमानमुक्थिनम् 9,78,3. पीत इन्द्रविन्द्रमस्मभ्यं याचतात् 86,41. 10,9,5. 22,7. 48,5. AV. 5,7,5. 12,4, 1. fgg. Çat. Br. 2,3,4,3. fgg. 3,9,3,24. fg. 3,4,3,17. 13,3,6,12. TS. 1, 5,9,6. दीक्षितव्यमाणः तत्रियं देवयजनं याचति Ait. Br. 7,20. Kâṭy. Ça. 10, 2,35. 22,1,31. Âçv. Ça. 2,10,6. तं देवाः पुनरयाचन् zurückfordern, wiederhaben wollen TBr. 1,3,10,1. TS. 2,1,3,1. 3,3,1. Çat. Br. 11,4,3,4. न याचेत् Kaush. Up. 2,1. MBh. 3,2934. ये दग्धुर्न च याचेयुः 4,474. 5,7120. 7,2104. 13,3047. Spr. 4330. R. 1,10,24. 5,91,3. Bhâg. P. 3,1,3. अयाचमान Kaush. Up. 2,1. याचते M. 8,191. याचमान Spr. 4348. MBh. 3,15761. R. 2,31,9. 43,29. 52,45. 54. शिरसा याचे 62,12. 3,53,11. Spr. 2430. अयाचत दिनं देवा भवत्विति यथा पुरा Mârk. P. 16,50. Daçak. in Benf. Chr. 195,1. कस्मैचिद्याचते (dat. partic.) धनम् M. 8,212. MBh. 13,2425. Bhâg. P. 6,9,50. Mârk. P. 29,35. Bhatt. 14,105. अयाचत वरम् MBh.

3, 8708. Hariv. 4470. R. 1, 1, 22. 3, 53, 6. Mṛicch. 107, 15. Vikr. 41. Ragh. 2, 64. 8, 12. 9, 81. Kathās. 25, 144. 55, 170. Bhāg. P. 4, 9, 31. Mārk. P. 16, 70. Pañcat. 251, 15. Çiç. in L.A. (III) 37, 7. Vet. ebend. 24, 2. वरं याचितवत्यसि R. Gorr. 2, 37, 16. याचित्वा जलम् Kathās. 25, 202. भाग्यायत्तमतः परं न खलु तत्स्नेहबन्धुभिर्याच्यते Çiç. 92, v. l. याचित *erbeten, gefordert* AK. 2, 9, 3. H. 866. Jāṭ. 2, 67 (so v. a. *geborgt*; vgl. याचितक). 238. R. 1, 33, 12. Spr. 1573. 2648. Kumārās. 4, 17. Kathās. 27, 162. 32, 157. Pañcat. 182, 13. अयाचित AK. 2, 9, 3. H. 866. M. 4, 5. 11, 211. Jāṭ. 1, 215. Bhāg. P. 7, 11, 19. अयाचं भृगुशार्दूलम् MBh. 5, 7063. 7, 2106. मा च याचिष्म कं च न 12, 1014. 13, 291. R. 1, 1, 35. याचे ऽहं वः सर्वान् MBh. 13, 300. R. 1, 57, 18. 2, 106, 33. Megh. 3. Spr. 514. Kathās. 22, 19. राघवं याच्य शिरसा R. 6, 33, 37. पुनर्नरो याचति याच्यते च Spr. 4330. Kathās. 31, 134. याच्यमान MBh. 1, 6129. 5, 5995. 7396. R. 2, 43, 4. याचित *gebeten* M. 4, 228. Jāṭ. 1, 203. 2, 256. R. 1, 46, 15. 2, 45, 27. 90, 19. शिरसा याचितो मया 101, 13. Mālav. 55. Megh. 112. Kumārās. 4, 35. Kathās. 12, 140. Bhāg. P. 4, 3, 14. 8, 9, 33. Mārk. P. 61, 61. Pañcat. 169, 3. IV, 7. अतियाचित Spr. 1939. तौ वरौ याच भर्तारम् R. Gorr. 2, 8, 17. 3, 36, 106. याचेनमन्वरान्पितॄन् M. 3, 258. MBh. 1, 3961. R. 1, 65, 5. 2, 107, 5. 111, 25. R. Gorr. 1, 1, 25. Ragh. 12, 17. Kumārās. 7, 52. Spr. 444. Kathās. 1, 31. 22, 67. 135. 27, 111. 32, 59. 46, 226. 228. 56, 97. 174. 101, 265. Rāja-Tar. 3, 422. 6, 36. Bhāg. P. 4, 9, 31. Bhatt. 6, 8. 7, 11. बालानिमान्वसु याचितुम् MBh. 14, 50. नित्यं याच्यमानः M. 8, 131. भोजनं राज्ञा स कदाचिद्याच्यत Rāja-Tar. 1, 162. Pañcat. 212, 15. अयाचि संभोगम् Vop. 24, 13. याचितस्ते पिता राज्यं रामस्य च विवासनम् R. 2, 72, 48. Ragh. 11, 1. Kumārās. 6, 27. Kathās. 4, 103. 14, 64. 27, 142. Bhāg. P. 9, 13, 9. Hit. 64, 19. Die Person steht häufig auch im abl., seltener im gen.: यज्ञनिष्ठये धनं ब्राह्मणः कदाचिन्न शूद्राद्याचेत् Kull. zu M. 11, 24. याचमानाः परादनम् MBh. 1, 6197. Kathās. 8, 31. 36, 44. 63, 159. 113, 36. Bhāg. P. 8, 15, 1. नन्दाद्याचितुं गुरुदक्षिणाम् Kathās. 4, 94. 27, 110. कुतो ऽपि नीरं याचित्वा Pañcat. 174, 14. केनाम्भो याचितं भूयात् Kathās. 25, 137. राज्ञस्तस्य कदाचिन्नु व्रजतो विजयेश्वरम्। अयाचे काचिदबला भोजनम् Rāja-Tar. 1, 131. Die Sache in comp. mit अर्थे अर्थम्: शय्यार्थे (शय्यार्थे ed. Bomb.) मरुन्द्रेण याचितः MBh. 5, 2198. मोक्षार्थे तव याचितः R. 6, 10, 27. im acc. mit प्रति: तं म याचते गमनं प्रति 2, 29, 21. प्रसूतिं प्रति याचितः Kumārās. 6, 27. im dat.: व्रतसंवादनाय मया निपुणिकामुखेन पूर्वं याचितो महाराजः Vikr. 37, 7. s. तं अयाचे ऽभ्यवहाराय *er forderte ihn auf zu essen* Bhāg. P. 3, 4, 36. तेन तदुत्पादनाय याचितः Sāj. zu RV. 1, 125, 1. कन्यां याच् *um ein Mädchen werben, ein Mädchen zur Ehe verlangen von Jmd* (abl., seltener acc.) *für Jmd* (कृते, अर्थे) Kathās. 17, 73. 52, 94. 55, 86. 90. 105, 22 (विवाहार्थम्). Bhāg. P. 9, 6, 40. 15, 8. यन्मे कन्या स्वकन्यार्थे मोहाद्याचितवानसि MBh. 5, 7432. याचितुं तां च कन्यां म तत्पितुः — अयोध्यां प्राक्षिणोद्दूतम् Kathās. 9, 37. स्वपुत्रगुरुमेनस्य कृते 13, 69. 14, 78. 32, 118. 36, 84. 66, 91. 88, 8. 104, 63. अयाच्यमानो च वरैः Śiv. 1, 28. Kathās. 82, 400. याचिता 401. 35 (पितुः). Vet. in L.A. (III) 16, 10. तत्पितरं सुषेणं तामयाचत Kathās. 28, 83. पिता मे याच्यताम् 83. तौ मृतौ याच्यतां तावत् 112, 173. — 2) *Jmd* (dat.) *Etwas* (acc.) *anbieten:* यस्मै देवताया उदकं पीयामि AV. 15, 13, 3. 9, 6, 4. 18. याचति वित्तं गुरवे शिष्यः Durgāp. bei Wasr. — 3) vielleicht so v. a. *versprechen* AV. 6, 118, 3. 119, 3. 7, 57, 1.

— caus. याचयति, अयीयाचत् P. 7, 4, 2. *werben lassen:* याचयन्ति परस्परम् MBh. 13, 2438. याचयित्वा Pañcat. 25, 15 fehlerhaft für याचित्वा.

— desid. पियाचिषते; vgl. oben u. simpl. Z. 5.

— अनु *Jmd* (acc.) *in Bezug auf Etwas anflehen*, act. MBh. 10, 611. R. Gorr. 2, 120, 20. med. Kathās. 92, 48.

— प्रत्यनु *Jmd* (acc.) *anflehen*, act. R. 2, 105, 11.

— अपि, caus. wofern अपि zum Verbum zu ziehen ist, etwa *nicht haben wollen, verwerfen:* अप्यस्य पुत्रान्पौत्रांश्च याचयते बृहस्पतिः AV. 12, 4, 38.

— अभि *flehen, heischen, anflehen, bittend angehen* (mit dopp. acc.): अभियाचते (dat. partic.) Bhāg. P. 5, 18, 6. Mārk. P. 38, 20. शिरसा त्वभियाचे ऽहं कुरुष्व करुणां मयि R. 2, 106, 29. रामस्येवाभियाचते पैतृराज्ये ऽभिषेचनम् R. Gorr. 2, 1, 40. पितरं नो ऽभियाच 1, 33, 27. 5, 27, 30. सगरं चाभ्ययाचन्त सर्वे प्राञ्जलयः स्थिताः MBh. 3, 8890. 10586. R. 1, 14, 6. 9. 7, 46, 18. Bhāg. P. 3, 22, 13. अभियाचितः *angeflcht, gebeten* Spr. 4717. Bhāg. P. 3, 2, 25. यदेनं कश्चिद्ब्राह्मणः कंचिदर्थमभियाचेत् MBh. 1, 679. Mārk. P. 72, 20. राज्यं रात्राभियाचितः R. Gorr. 2, 17, 19. Bhāg. P. 5, 3, 17. — Vgl. अभियाचन.

— समभि *anflehen:* कंसं समभियाचतो Hariv. 3336.

— आ *flehen:* आयाचत्तौ R. 2, 55, 25. *flehen um:* अयाचमानाम् — रामस्य च भवं नित्यमभवं रावणस्य च 5, 21, 22. आयाचित n. *Gebet* R. Gorr. 2, 1, 40.

— उप *um Etwas bitten:* त्वया पुरस्तादुपयाचितो यः सो ऽयं वरः Ragh. 13, 53. भक्तिलक्ष्मीसमृद्धानां किमन्यदुपयाचितम् (subst.) Sarvadarçanas. 92, 8. fg. नमद्वारलोष्टस्य यद्दत्स्यादुपयाचितम् Varāh. Bṛh. S. 2, 19. — Vgl. उपयाचन, उपयाचित (vgl. noch Kathās. 11, 13. Pañcat. 213, 14).

— निस् *losbitten, sich ausbitten:* निर्याचन्भूनात्पुरुषं यमाय AV. 6, 133, 3. TS. 3, 1, 8, 2. शृण तै रुद्र भागो यं निर्याचया: 9, 4. 5, 1, 3, 4. यमेनैव दैवयज्ञेनस्ये निर्याच्यात्मने ऽग्निं चिनुते *nachdem er bei Jama einen Fleck der Erde zur Cultusstätte sich auserbeten hatte* 2, 3, 1.

— प्र *flehen, bitten um, heischen, anflehen, bittend angehen* (mit dopp. acc.): प्रमोद् नः प्रयाचताम् (gen. pl. partic.) MBh. 1, 1259. 12, 9213. 13, 4629. प्रयाचिष्ये 5, 7114. वरमन्यं प्रयाचसे 7, 141. R. 2, 15, 31. कुशलं मे प्रयाचितुम् MBh. 3, 16948. प्रयाचस्व नदीम् 9950. स पारित्राता यदि न प्रदास्यति प्रयाच्यमानो भवता Hariv. 7210. युक्तास्तेन प्रयाचितुम् R. 5, 81, 43. प्रयाचामो वरं त्वाम् MBh. 3, 2780. st. प्रयाचत 13, 114 liest die ed. Bomb. besser अयाचत. — Vgl. प्रयाचक fg.

— संप्र dass.: तं गत्वा सहिताः सर्वे वरं वै संप्रयाचत MBh. 3, 8696.

— सम् dass., med. Kathās. 103, 16. तं पुत्रार्थं समयाचत MBh. 1, 6837. Bhāg. P. 9, 1, 14. गरुत्मेधिनं समयाचेरन् 10, 72, 17.

याचक (von याच्) nom. ag. *ein Bittender, Bettler* AK. 3, 1, 49. Trik. 2, 8, 56. H. 387. Hall. 2, 204. Jāṭ. 3, 139. MBh. 1, 2330. 2, 493. R. 7, 92, 11. Spr. 80. 1048. 1301, v. l. 4937. Kathās. 38, 35. 39. 58, 24. Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 21. 163, *a*, 1. Bhāg. P. 4, 2, 26. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 9, Çl. 33. अयाचकः सदा योगी MBh. 12, 342. याचकी f. *Bettlerin* 1, 3189.

याचन (wie eben) 1) n. *das Bitten, Betteln:* भावं याचनतत्परेण मनसा Spr. 2079. धनेन पण्डितस्य वमतियाचनं प्रतीयते *das Bitten um* Sin. D. 332, 11. *das Werben um:* दुहितृ° Vet. in L.A. (III) 16, 9. — 2) f.

या *a) das Bitten, Betteln, Bitte* AK. 2,7,22. H. 388. Hall. 2,205. याचना माननाशाय Kâs. 91 in Hass. Anth. 320. याचना हि पुरुषस्य मक्षं नाशयति Spr. 4870. वध्यतामभययाचनाञ्जलिः *das Bitten um* Raghu. 11, 78. किं परयाचनाभिः *das Anbetteln eines Andern* Spr. 1256. कुरुष याचनाम् *erfülle die Bitte* R. 2,27,22. 37,19. 112,10. 43,18. — *b)* schlechte v. l. für यातना AK. 1,2,2,3.

याचनक (von याचन) m. *Bettler* AK. 2, 1, 49. H. 388. Hit. 38. M. 3, 165. MBh. 12,3325. Harîv. 11152.

याचनीय (von याच्) adj. *zu fordern, zu verlangen* Pañcat. 88,11. n. impers.: याचनीयं मुनेस्तुष्टात् *man muss eine Bitte an ihn richten* MBh. 3,15310.

याचितक (von याचित, part. praet. pass. von याच्) n. *eine geborgte Summe* P. 4,4,21. AK. 2,9,4. H. 881. Mit. 260,4.

याचितृ (von याच्) nom. ag. *Forderer* Kull. zu M. 8,190. *ein Bittender, Bettler* R. 1,31,7. कालः करोति पुरुषं दातारं याचितारं च Spr. 3920. *Werber* (um eine Jungfrau) Kumâras. 1,52. 6,82.

याचितव्य (wie oben) adj. *zu bitten:* न केनचिद्याचितव्यः कथञ्चित्कस्यांचिदापदि MBh. 12,3317. तामस्मदर्थे युष्माभिर्याचितव्यः *ihr sollt für uns bei ihm um sie werben* Kumâras. 6,29.

याचिन् (wie oben) adj. *heischend:* वृष्टि° Nir. 2,12.

याचिष्णु (wie oben) adj. *bittend, Bittsteller:* भृगूणां तु धनं ज्ञात्वा राजानः सर्व एव ते । याचिष्णवोऽभिजग्मुस्तान् MBh. 1,6303. Bhâg. P. 10,81,34. Davon nom. abstr. °ता *Bettelei* M. 12,32.

याच्ञेष्ठ (1. यात् + येष्ठ) adj. *bestmöglich:* ऊतयः RV. 3,53,21. — Vgl. यावच्छ्रेष्ठ.

याञ्चा (wie oben) f. *das Heischen, Bitten, Betteln; Bitte, Gesuch* P. 3, 3,90. Vop. 26,180. AK. 2,7,22. 3,3,6. H. 388. Hall. 2,205. TS. 1,5, 9,4. °प्राप्त AK. 2,9,4. Spr. 2492. मृतं तु नित्ययाञ्चा स्यात् Bhâg. P. 7, 11,19. °जीवन Hit. 31,8. °वर्धासि Spr. 1894. पातालाभय° Kathâs. 19, 91. याञ्चामृते *ohne zu bitten* Bhâg. P. 2,7,17. तयाञ्चा न चक्रे *erfüllte nicht die Bitte* 4,14,29. Mâns. P. 37,13. याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा Megh. 6. मयाञ्चाविमुख Bhâg. P. 4,27,22. भग्नयां भव्ययाञ्चायाम् 14,20. भग्नयाञ्च adj. 5,18,21. °भङ्ग *Fehlbitte* Spr. 1163. *Werbung* (um ein Mädchen): कृतयाञ्च Kathâs. 17,76. In der Dramatik: याञ्चा तु क्वापि याञ्चा या (so ist zu lesen) स्वयं हूतमुखेन वा Sâh. D. 490. 471.

याञ्ज्य m. dass.: यथो क ब्रह्मभ्यो वशा याञ्ज्याय कृणुते मनः AV. 12,4, 30. Âit. Br. 7,20. याञ्ज्या f. Çat. Br. 2,3,4,4.

याच्य (von याच्) adj. P. 7,3,66. *zu Etwas aufzufordern, anzugeben, um ein Almosen anzusprechen* M. 8,181. 10,113. सुहृदपि न याच्यः कृशधनः Spr. 1922. 3233. Ragh. od. Calc. 1,87. *zu fordern, zu verlangen, worum man bitten muss* oder *kann:* याचसे न वयाच्यानि Harîv. 1023. अयाच्यमपि देयं खलु स्यात् *auch worum man nicht gebeten wird* MBh. 5,1727. n. *das Betteln* 13,3047. स्त्रियो नाकृत्तिं याच्यताम् *so v. a. man Weiber braucht man nicht zu werben* 12,9316.

याज् (von 1. यज्) nom. ag. *Opferer:* कृपमेधशतस्य याट् Bhâg. P. 9,23, 32. कृपमेध° 1,18,46. तुरगमेध° 9,22,36.

याज (wie oben) m. 1) *Opfer* in घृति° (hier vielleicht nom. ag. *Opferer*), उपांशु° (s. u. उपांशु 1, *a*), क्षतु°, ज्ञीव°, शत°. — 2) *gekochter Reis oder Speise* überh. H. 395. — 3) N. pr. eines Brahmarshi (neben उपयाज) MBh. 1,6362. 2,662. LIA. I, 641. — 4) याजभोज्यः MBh. 7, 804 fehlerhaft für कृपभोज्यः, wie die ed. Bomb. liest.

याजक (vom caus. von 1. यज्) m. 1) *Opferpriester* AK. 2,7,17. H. 817 (= यज्ञमान!). an. 3,85. Mnh. k. 142. M. 3,173. Spr. 3068. MBh. 1,2022. 3113. 2,179 (= R. Gorr. 2, 100, 36). 3,10496. 7,3027. 13, 4818 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 14, 260. 15, 516. R. 1, 13, 3. 39,13 (61,14 Gorr.). 60,3. 2,76,13. R. Gorr. 1,13,2. 38. Varâh. Bṛh. S. 10,5. 48,16. Kathâs. 41,18. Bhâg. P. 10,74,16. P. 1,3,72, Sch. Vop. 23,58. गणानाम् M. 3,154. in Comp. mit dem Veranstalter des Opfers (das comp. ein Oxytonon) P. 2,2,9. 6,2,151. ब्राह्मण°, क्षत्रिय° Sch. गुरु° M. 3,178. व्रात्य° Jâén. 3,269. श्वसुर° MBh. 1,2344. दैत्य °Bhâg. P. 7,5,8. पतित° Mâns. P. 15,1. नक्षत्रयागयाजकाः *diejenigen, welche den Gestirnen Opfer darbringen und für eine ganze Gemeinde als Opferpriester fungiren,* MBh. 12,2874. राज्ञ° *der einen Fürsten (Krieger) zum Opferpriester erwählt* (vgl. R. 1,59,13) 8,1846. 2095. fg. Davon nom. abstr. याजकत्व n. Verz. d. Oxf. H. 267,d,28. 30. Vgl. ग्राम°, नक्षत्र°. — 2) *ein königlicher Elephant* H. an. Med. °गज Hit. 49. *ein brünstiger Elephant* Gaṇiku. im ÇKDa.

याजन (wie oben) n. *das Versehen des Opfers für Andere* (gen. oder im comp. vorangehend) Çâṅkh. Gṛhy. 4,11. Daiv. 9,13,27. 29. M. 1,88. 8, 340. 10, 75. fgg. 103. 109. fgg. 11, 180. Jâén. 1,118. MBh. 1,8118. 3, 5048. 12,6732. 14,127. 176. R. Gorr. 1,60,6. Kâm. Nîtis. 2,19. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,33. 267,*a*,7. fgg. Mâns. P. 14,83. व्रात्यानाम् M. 11,197. 60. Jâén. 3,237. R. 1,58,5. सयाज्य° M. 3,65. P. 2,1,53, Sch. Jâén. 3,338.

याजनीय (wie oben) adj. *für den man als Opferpriester thätig sein darf* Kull. zu M. 9,238.

याजमान (von यजमान) n. *die Handlung, welche der Veranstalter eines Opfers selbst vollzieht,* gaṇa मलिप्यादि zu P. 4,4,43 und युवादि zu 5, 1,130. Kâty. Ça. 1,8,19. 4,12,16. 12,1,9. 25,13,42. Çâṅkh. Ça. 2,11,1. Lâṭy. 2,3,17. Ind. St. 3,388. 5,15.

याजमानिक (wie oben) adj. *den Veranstalter eines Opfers betreffend* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 84.

याजयितृ (vom caus. von 1. यज्) nom. ag. *der fungirende Opferpriester* Verz. d. Oxf. H. 267,*a*,24. fg.

यौज्ञि (von यज्ञ) Uṇâdis. 4,124. f. *Opfer* (आध्यानपरिप्रश्नयोः): कां याज्ञिकार्यीः । सर्वा याज्ञिकार्यम् P. 3,3,110, Sch. nach Uéóval. m. = यष्टृ, nach Uṇâdis. im Saṅkshiptas. aber = यज्ञ ÇKDa.

यौज्ञिका f. dass. P. 3,3,110, Sch.

याज्ञिन् (von 1. यज्) nom. ag. *Opferer* Jâén. 1, 220. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 539, 9. gewöhnlich am Ende eines comp. (भूते) P. 3,2,85. अग्निष्टोम° Sch. दर्शपूर्णमास° TS. 2,2,2,1. अश्वमेध° Çat. Br. 14, 6,2,3. Kathâs. 44,122. सोम° Kâty. Ça. 4,2,45. H. 817. असोम° Çat. Br. 1,6,4,10. fg. अमक्रतु° MBh. 3,15442. दशप्रयुत° 7,2314. यज्ञसङ्घ° 13,3455. क्रतुप्रवर° R. 5,16,41. सत्र° Harîv. 2780. सत्याज्ञिन् Bhag. 9, 25. 34. सत्याज्ञिन् Maitrâyaṇ. 6, 30. नित्य° Harîv. 6763. — Vgl. आत्म° (auch Maitrâyaṇ. 6,10. Bhâg. P. 7,15,55), ग्राम° (auch Jâén. 1,163), देव°, वक्र° (auch Verz. d. Oxf. H. 267,*a*,29), सक्त्र°.

पौत्रुक (wie eben) adj. am Ende eines comp. (*gewöhnlich*) *opfernd:* इ-ष्टि° Çat. Ba. 14,4,3,3.

पात्रुर्वेदिक adj. *zum Jagurveda in Beziehung stehend* Schol. zu Kâtj. Ça. 1035,6. Müller, SL. 170. पात्रुर्वेदिक 178. Schol. zu Kâtj. Ça. 172,9. 13.

पात्रुष adj. (f. ई) *zu den Jagus in Beziehung stehend* TBa. 3,12,9,1. Ind. St. 1,83,5. 10,436. गायत्री 3,103. शाखा Verz. d. Oxf. H. 257,*b*,8. 264,*a*,16.

पात्रुष्मत adj. f. ई in Verbindung mit इष्टका = पशुष्मती — Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 278.

पात्र (von पत्र) adj. *zum Opfer gehörig:* मन्त्र Nir. 7,3. 4.

पात्रतुर्र (von पत्र + तुर) 1) m. patron. des Ṛishabha Çat. Ba. 12,8, 3,7. 13,5,4,15. Çâṅkh. Ça. 16,9,8. 10. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 2,230,*b*.

पौत्रदत्तक adj. von पत्रदत्त gaṇa यवादिगणादि zu P. 4,2,80.

पौत्रदत्ति m. patron. von पत्रदत्त P. 4,1,137, Sch.

पात्रदेव m. N. pr. eines Autors Colebr. Misc. Ess. I, 61. पत्रदेव im Index; Beides fehlerhaft für पात्रिकदेव.

पात्रपर्त adj. von पत्रपति gaṇa अश्वपत्यादि zu P. 4,1,84.

पात्रवल्क्य 1) adj. von *Jâgñavalkja herrührend:* ब्राह्मणानि Schol. zu P. 4,2,66. 3,105. wohl fehlerhaft पात्रवल्क्य in der neueren Ausg. an beiden Stellen, in der alten an der ersten. — 2) m. pl. der entsprechende pl. zu पात्रवल्क्य 1) gaṇa काण्वादि zu P. 4,2,111.

पात्रवल्क्यीय adj. *zu Jâgñavalkja in Beziehung stehend, von ihm herrührend:* काण्ड Verz. d. B. H. No. 211. धर्मशास्त्र Jîv. in der Unterschr. u. mit Ergänzung von धर्मशास्त्र Kull. zu M. 4,212.

पात्रवल्क्य 1) m. (von पत्रवल्क) patron. यौ° gaṇa गर्गादि zu P. 4,1, 105. N. pr. eines besonders im Çat. Ba. als Autorität viel angeführten Lehrers, z. B. 1,3,4,21. 26. 2,4,3,2. 3,4,3. 3,1,3,4. 9,21. 3,10. Jîv. 1,4. MBa. 2,107. 13,250. Harîv. 1466 (sein Geschlecht). 2308. 7993. Uttarar. 76,7 (98,4). VP. 279. fgg. Bṛih. P. 6,15,13. 9,12,4. 22, 37. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,22 u. s. w. Pârâç. 188,14 (पड्याव° gedr.). °स्मृति (verschieden von der uns bekannten) Sarvadarç. 138,17. ist ज्ञानगुणा Verz. d. Oxf. H. 14,*a*,N. °गीता 87,*b*,38. Hall 14. °शिक्षा Ind. St. 10,433. बृद्ध° Verz. d. B. H. No. 1166; vgl. बृद्धपात्र°. — 2) adj. *zu Jâgñavalkja in Beziehung stehend, von ihm herrührend:* धर्मा: Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,13. u. Titel einer Upanishad Ind. St. 2, 323. मान्त्रिक° (?) Verz. d. Oxf. H. 50,*a*,17; vgl. पात्रवल्क 1).

पात्रसेन (von पत्रसेन) patron. 1) m. des Çikhaṇḍin Kâuṣ. Ba. 7,4. — 2) f. ई der Draupadi Taitt. 2,8,15. H. 711. MBa. 1,6322. 7131. 3, 13682. 4,139. 9,2318.

पात्रसेनि (wie eben) m. patron. des Çikhaṇḍin MBa. 5,725. 6,5316. 7,216. 9,2161.

पौत्रायणि m. patron. von पत्र gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

पात्रिक (von पत्र) 1) adj. (f. ई) *zum Opfer gehörig, darauf bezüglich* u. s. w.: प्रति Çâṅkh. Ça. 1,2,3. नामधेय 7,4,15. व्रत 3,9,4. Kâuç. 73. क्रिया R. 1,30,19. जन्मन् Bṛih. P. 4,31,10. उपनिषद् Ind. St. 2,79. 208. 3,386. Verz. d. B. H. No. 152. — 2) m. *a) ein Kenner des Opfers, Liturgiker* gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. = पात्रक Taitt. 3,3,39. Mân. k. 142. = पात्रक und पत्रकर्तृ Candan. im ÇKDn. — Çat. Ba. 14,6,7,2. 4. Çâṅkh. Gṛihj. 1,14. Pâr. Gṛihj. 2,6. Nidânas. 2,1. Nir. 5,11. 7,4. 23. 11,29. 42. 13,9. AV. Pariç. 4,102. P. 4,3,139. Harîv. 11450 (पात्रिय die neuere Ausg.). 11363. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 60. Kumârila bei Müller, SL. 187. Verz. d. B. H. No. 246. Verz. d. Oxf. H. 216,*b*,35. Bṛih. P. 11, 10,23. Vop. 5,5. Kusum. 3,15. Kull. zu M. 3,271. °कितव P. 2,4,33, Sch. पौत्रिकाश्य 6,2,65, Sch. पात्रिकाश्य unter den Beinw. Vishṇu's Pârâç. 4,3,61. Vgl. देव° und दीक्षित° als N. pr. Verz. d. B. H. No. 246. — *b*) Bez. verschiedener *beim Opfer zur Anwendung kommender Pflanzen:* Kuça-*Gras* Taitt. Mantr. *eine Art* Kuça-*Gras* (दर्भभेद) Candan. im ÇKDn. *Ficus religiosa; Butea frondosa; rothblühender* Khadira Rîdân. im ÇKDn.

पात्रिकदेव (पा° + देव) m. N. pr. eines Schol. des Kâtj. Ça. Verz. d. Oxf. H. 382,*a*, No. 450. Weber in Kâtj. Ça. S. X. — Vgl. देवपात्रिक.

पात्रिकबलभा (पा° + व°) f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 246.

पात्रिकानत्त (पात्रिक + घ°) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 364,*b*, N. 1.

पौत्रिक (von पात्रिक) n. *die Regeln der Liturgiker* P. 4,3,129.

पात्रिय 1) adj. = पत्रिय *zum Opfer gehörig, — geeignet:* द्रव्य MBu. 10,737 (पत्रिय ed. Bomb.). काल Bṛih. P. 10,74,6. — 2) m. v. l. für पात्रिक in der Bed. 2) *a*) Harîv. 11450. पत्रियं देशमिच्छन्ति ते पात्रियाः Nilak.

पात्रीय adj. wohl nur fehlerhaft für पत्रीय Çaṃk. zu Kaṭhop. Up. S. 46 (°कर्मन्).

पाज्य (vom caus. von 1. पद्) P. 7,3,66. Vop. 20,8. 9. 12. 1) adj. *derjenige, zu dessen Gunsten das Opfer dargebracht wird;* m. *Opferherr* Ait. Ba. 4,25. पाज्येनापि पाज्यान् MBu. 5,831. शैत्रिरयाज्यो M. 3,148. 4,33. 8,317. 388. Jîv. 1,120. MBu. 1,747. 6386. पाज्यस्ते 6774. वैश्य° 3,10791. राजयाजक° 8,1846. 2096. भृगूणां क्षत्रिया पाज्या: 13,2905. 4422. 14,99 (wo mit der ed. Bomb. पूर्वम् st. पुत्रम् zu lesen ist). 124. 162. 178. Harîv. 3880 (चेद्यो st. पाज्यो die neuere Ausg.). R. 7,23,8,81. Raṃn. 1,86. बहु° *der viele Opferherren hat, für Viele opfert* Vas. bei Kull. zu M. 3,151. अ° *für den man nicht opfern darf* Çat. Ba. 14,6,10,3. Kâtj. Ça. 25,8,16. M. 11,39. Jîv. 3,227. MBu. 13, 4527. P. 2,1,53, Sch. — 2) f. पाज्या Vop. 26,11. (sc. ऋच्) *die Worte, welche im Augenblick der Hingabe des Opfers gesprochen werden, Begleitspruch* Z. d. d. m. G. IX, LIII. LXII. VS. 19,20. 20,12. Ait. Ba. 1,4. 11. 2,13. 26. पाज्यया यजति प्रतिवेँ पाज्या 40. घृत° 3,32. TS. 1,3,2,1. 6, 10,3. सामानो पाज्यो यजति Çat. Ba. 1,4,2,19. 7,2,7. 11. 3,4,4,2. Âçv. Ça. 1,5,4. fgg. 6,1. 3,7,2. 3. 9,3. 5,18,13. 19,1. Kâtj. Ça. 1,2,6. Çâṅkh. Ça. 1,17,1. fgg. 7,3,4. 7,6. P. 8,2,90. पाज्यानुवाक्ये gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 8,2,37. त्रिवती पाज्यानुवाक्या भवति P. 6,1,176, Vârtt. 2, Sch. पाज्यानुवाक्या: Ind. St. 1,69. 72 (hier auch °वाक्यका:). प्रयाजपाज्या: 73.

पाज्यता (von पाज्य) f. *der Stand eines Opferherrn* MBu. 14,126. पाज्यत्व n. dass. 168.

पाज्यवत् adj. *mit einem Begleitspruch* (पाज्या) *versehen* Çat. Ba. 4,1, 4,26. 3,3,3,16. 11,2,1,6.

पाज्यन (von पज्यन्) m. *der Sohn eines Opferers* Vop. 7,1. 10.

1. यात् (abl. von 1. या) adv. conj. *in soweit als, so viel als; so lange als, seit:* यादधीमसि *soviel wir verstehen* RV. 1,80,15. यर्धामसि यादेव विन्मा तान्नो मरुतस्तम् (vgl. Sindh. K. zu P. 7,1,39) 6,21,6. यामु ष्वावेस्ततनन्याडुयासः 7,88,4. यात्सूर्यामासा मिथ उच्चरातः 10,68,10. य द्यावित्पन्यृथिवी यादश्नायत AV. 12,1,57. — Vgl. याच्छ्रेष्ठ, याद्राध्य.

2. यात् adj. von यत् in सुणायात्.

यात 1) adj. *gegangen* u. s. w.; n. *Gang* s. u. 1. या. — 2) n. *das Lenken eines Elephanten mit dem Haken* H. 1231. Halâj. 2,67; vgl. यत 2).

यातन (vom caus. von यत्) 1) n. *das Vergelten:* वैरस्य यातनम् *das Rächen* MBh. 9,258. — 2) f. या a) dass.: यातनां दा *es Jmd vergelten* MBh. 1,1997. वैर° *Rache* 12,5150. Hariv. 11232. Pañkat. 111,9. 188,3. — b) *Qual, Pein;* insbes. *Höllenqual* AK. 1,2,2,3. 3,4,4,15. H. 1338. Halâj. 3,4.5,80. घोरा R. 5,19,9. 26,16. Spr. 1973. Kathâs. 38,111. Gît. 9,10. Râga-Tar. 6,333. अकरोन्नाना यातना मृत्युकेतवे Bhâg. P. 7,1,41. यातनामनुयापितः 8,22,29. गर्भ° Pañkat. 2,2,66. 4,3,204. Verz. d. Oxf. H. 28,a, No. 71. यमतये M. 6,61. 12,16. यामीः प्राप्नोति यातनाः 31. fg. MBh. 14,443. Bhâg. P. 3,30,21. 25. 29. 33. 5,26,7. fgg. 30. यमयातनाः 32. 5,2,29. °मृक्षः 3,9. निरय° Pañkat. 4,4,1. Verz. d. B. H. 143, 9. Kesch. 65,7. Personificirt als Tochter von Bhaja *Furcht* und Mṛtju *Tod* Bhâg. P. 4,8,4.

यातयज्जन (यातयत्, partic. vom caus. von यत्, + जन) adj. *die Leute verbündend, vereinigend:* Mitra RV. 1,136,3. 3,59,8. 5,72,2.

यातयाम s. u. यातयामन्.

यातयामन् (यात + या°) und °याम adj. *was seinen Gang gemacht —, seine Arbeit gethan hat* d. i. *erschöpft, ausgenützt, verbraucht;* überh. *untauglich, unbrauchbar geworden* (AK. 3,4,22,147. H. an. 4,218. Med. m. 62), ein im Ritual oft gebrauchter technischer Ausdruck, z. B. न दारुपात्रेण दुह्यात्. यद्यिदं दारुपात्रम्. यदीदारुपात्रेण दुह्यात्. यातयामा वा एषोऽग्निर्यो यदेतं *man soll nicht in ein Holzgeschirr melken, denn in demselben* (im Holze) *steckt* Agni (welcher also die Milch unmittelbar empfängt); *melkt man in's Holzgeschirr, so opfert man nachher eine verbrauchte* (schon ein Mal vergebene) *Opfergabe* TBr. 3,2,2,9. 3,4,1. TS. 5,1,8,2. यद्यर्धु 6,3,9,3. Atri 7,1,8,1. यत्त Çat. Br. 1,5,3,23. 3,1,3,24. °याम TS. 2,6,3,1. कस्मात्सत्याद्यातयामान्यन्यानि क्रव्योऽयातयाममाज्यम् *weshalb werden andere Opferstoffe unbrauchbar, während das Opferschmalz brauchbar bleibt?* 3,4,9,4. 5,1,8,3. Çat. Br. 4,3,3,5. 6,3,1,23. स्तोमाः 9,3,3,4. न यातयामैः कार्यं कुर्यान्न सकृद् भुञ्जीत Çiṅkh. Gṛhj. 4,11. Pañkav. Br. 13,10,1. कृन्दांसि Müller, SL. 227. कृत्तं वेष्टनमौशीरमुपानद्व्यजनानि च। यातयामानि देयानि ग्रहाय परिचारिणे ॥ MBh. 12,9299. fg. भोजन Bhâg. 17,10. R. 2,61,67 (62,26 Gorr.). कृन्दांस्ययातयामानि Bhâg. P. 4,13,27. अयातयामोपस्कृतैः 19,28. अयातयामास्तस्यान्यामा स्वास्तरयापनाः *unnütz verstrichen* 3,22,35. कामा यातयामाः *schal* 4,28,9. मठार्ता° *ergraut, alt geworden bei* (nach dem Comm. *der seine Zeit zugebracht hat mit*) 30,19. *alt an Jahren* AK. H. 340. H. an. Med. Halâj. 2,348.

यातयामत्व n. nom. abstr. davon Gobh. 1,8,14. — Vgl. अयातयाम.

1. यातर् (von 1. या) nom. ag. *gehend, fahrend, auf der Reise —, auf einem Marsche befindlich* Śâśvat. 12,73. Varâh. Bṛh. S. 33,13. 86,51. 84. 87,5. 88,19. 22. 35. 89,1. 95,25. Jîvat. 4,42. *Wagenfahrer* RV. 1,70,11. यानस्य चैव यातुश्च यानस्वामिन एव च *Wagenführer* M. 8,290. अग्र° *vorangehend* R. 7,21,28. क्षेमाद्र° *rettend auf* Hariv. 2443. स्वर्गातर् *zum Himmel gehend, sterbend* MBh. 5,1341. Als fut. z. B. यातारस्ते यमालयम् Śâṅk. 1,116,61.

2. पार्तर् nom. ag. scheint *Rächer* zu bedeuten in der Stelle: यत्कैर्यातारं कमवृण इन्द्र हृदि यत्ते ब्रह्मुयो भीरगच्छत् RV. 1,32,14. = कर्तर् Sây.; vgl. सुणाया.

3. पातर् Uṇâdis. 2,98. acc. पातरम्, nom. acc. du. पातरौ, nom. pl. पातरम् Vop. 3,63. *die Frau des Bruders des Gatten* AK. 2,6,1,30. H. 514. Halâj. 2,353. Sin. D. 43,3. पाताननान्दरौ P. 6,3,25, Sch.

पातलराय m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. B. H. 368,31.

1. पातव्य (von 1. या) 1) n. impers. *eundum, proficiscendum, zu marschiren* MBh. 3,13304. 4,2118. 13,1402. 3789. Hariv. 10321. Spr. 3027. Kâm. Nîtis. 13,2. यातव्याय प्रक्रियाहूतम् *zur Abreise* 12,1. अवश्ययातव्यता 13,18. — 2) adj. *petendus, impugnandus* Kâm. Nîtis. 18,11.

2. पातव्य (von 1. पातु) adj. *gegen Spuk —, gegen Hexerei dienend* P. 4,4,121. तनू Kâṭh. 11,11.

यातसुच (von यतसुच्) n. = यौक्तसुच N. eines Sâman Ind. St. 3,230,5.

यातानप्रस्थ N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. यातानप्रस्थक P. 4, 2,104, Vârtt. 33, Sch.

यातानुयात (यात + अनु°) wohl n. *das Gehen und Folgen* gaṇa शाकपार्थिवादि zu P. 2,1,69.

यातायात (यात + आ°) n. *das Gehen und Kommen* Bhâg. P. 12,13,2.

याति f. angeblich nom. act. vom intens. von 1. या P. 1,1,55, Sch. — Vgl. अरि°.

यातिक m. *Wanderer, Reisender* Çabdar. im ÇKDa. wohl fehlerhaft für यात्रिक.

1. यातु Uṇâdis. 1,73. m. 1) etwa *Spuk, Hexerei:* नाहं यातुं सहसा न हेतिं सखं सख्युरवृणे न वृत्तं: RV. 5,12,2. मा नो रक्षत यो वेशन्मा यातुर्गातुमावतम् 8,49,20. auch wohl AV. 2,24,1. Kâṭh. 37,17. Çat. Br. 10,5, 2,20. — 2) Bez. *einer Gattung von Dämonen, die in allerhand spukhaften Formen erscheinen,* RV. 7,21,5. 104,21. AV. 4,9,9. 5,29,3. 10,7,13. 13,4,27. Kaṭh. 106. neutr. = रक्षस् nach AK. 1,1,1,56. H. 187. Halâj. 1,73. — Vgl. अग्र°, उलूक°, कोक°, गृध्र°, देव°, ब्रह्म°, शत°, शुशूलूक°, श्व°, सुपर्ण° und यातुधान.

2. यातु (von 1. या) m. 1) *ein Reisender* Trik. 2,8,29. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,73. — 2) *Wind* Uṇâdis. im Saṅkshiptas. ÇKDa. — 3) *Zeit* Uṇâdis.

यातुघ (1. यातु + घ) adj. *die Jâtu vernichtend;* m. *Bdellion* Râgân. im ÇKDa.

यातुचातन (1. यातु + चा°) adj. *die Jâtu verscheuchend* AV. 1,16,2.

यातुजम्भन (1. यातु + ज°) adj. *die Jâtu verschlingend* AV. 4,9,3.

यातुजू (1. यातु + जू; vgl. RV. 7,21,5) adj. *von Jâtu getrieben, besessen* RV. 4,4,5. 10,116,5.

यातुधान (1. यातु + 2. धान) m. = 1. यातु 2) AK. 1,1,1,56. H. 187. Halâj. 1,73. RV. 1,35,10. अग्ना मेरोव यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्तत्प्रुषस्य 7,104,15. 16. 24. 10,87,2. 3. 7. 10. 120,4. VS. 13,7. AV. 1,7,1. fgg. 4,3,4. 8,32,2. 13,3. 7,70,2. 19,46,2. Çat. Br. 7,4,1,29. Kâṭh.

37,14. MBh. 3,3438. 12248. 5,3571. 4851. 13,184. 14,185. R. 3,30,27. 5,10,16. 6,33,3. 7,59,20. Rāgh. 12,43. Ind. St. 10,173. Vārāh. Bṛh. S. 46,80. Bhāg. P. 2,10,39. 5,21,18. 6,6,28. Prab. 3,12. fem. ई RV. 1,191, 8. 10,118,8. VS. 16,5. AV. 1,28,2. 4. 2,14,3. 4,9,9. 18,17. 20,6. 19,39, 6. MBh. 13,4453. Bhāg. P. 3,19,20. 8,10,47. 10,6,3.

यातुमत्तम् (von 1. यातु) adj. *Spuk treibend, hexend* RV. 1,133,2. 7,104, 20. 25. AV. 1,7,4.

यातुमावत् adj. dass. AV. Paipp. 4,8. RV. 1,36,20. न पे यावा तरति यातुमावान् 7,1,5. मा नो रसा घृभिनयातुमावताम् 104,23. मा नो रसु या वेशान्या यातुर्यातुमवताम् 8,49,20.

यातुविद् (1. यातु + विद्) adj. *des Spuks kundig* Śat. Br. 10,5,2,20.

यातुहन् (1. यातु + हन्) adj. *Spuk vertreibend* AV. 1,16,1.

यातृक m. *Wanderer, Reisender* Candr. im CKDa. fehlerhaft für यात्रिक.

यातोपयात (यात + उप°) n. *das Gehen und Kommen;* davon adj. यातोपयातिक (in der Bed. तेन निर्वृत्तम् gaṇa घतखूतादि zu P. 4,4,19.

यात्रिक (von पत्र) m. pl. N. einer buddhistischen Schule Burn. Intr. 441. 443. fg.

यात्य (vom caus. von यत्) m. *Bewohner der Hölle (Qualen unterliegend)* H. 1338. Hall. 3,3.

यात्रा (von 1. या) Uṇādis. 4,167. 1) *Gang, Aufbruch, Fahrt, Reise, Marsch, Kriegszug* AK. 2,8,2,63. 3,4,25,177. Trik. 3,3,367. H. 790. an. 2,449. Med. r. 79. Hall. 2,297. Hariv. 5284. श्रो यात्रा R. 1,68,17. यात्रामयापियम् *ich machte mich auf die Reise* 2,72,27. 78,1. 82,19. 21. Śaṃk. 1,108,20. Rāgh. 16,25. न चिरं तापाय तव यात्रा भविष्यति Spr. 1376. 4727. 4818. Śārad. 14,13. Vārāh. Bṛh. S. 72,6. 79,23. 86,10. 87,5. 6. 27. 89,12. 14. 93,11. 13. 94,13. 95,25. Bhāg. P. 11,2,4. Mārk. P. 31, 39. वारणायत° *Gang nach* MBh. 1,143 in der Unterschr. समुद्र° Hariv. 8304. मार्गशीर्षे शुभे मासि यायाद्यात्रां महीपतिः *einen Feldzug unternehmen* M. 7,182.207. MBh. 2,193. 12,2662. fg. R. 2,82,23. °गमन 24. 3,22, 7. 4,30,3. 6,1,7. यात्रागुप्त Śaṃk. 1,122,5. Bhar. Nāṭ. 34,68. Kām. Nītis. 11,1. 5. दूर° 15,43. Rāgh. 4,24. 6,54. शक्तेषेवाभवद्यात्रा तस्य शक्तिमतः सतः 17,56. Spr. 4231. Kathās. 19,60. 69. 42,81. 88. 54,212. Rāja-Tar. 1,67. 115. 4,131. 282. 495. 5,326. यात्रां दा *einen Feldzug unternehmen* 6,230. रथयात्र 5,214. Hit. 94,9. 10. Verz. d. Oxf. H. 332,b,14. fg. *Ausfahrt* (des Viehes) Kauśikas. 8,18. 21. तस्मिन्प्रयाते परलोकयात्राम् *der Gang in die andere Welt* Rāgh. 18,15. प्राणात्तिकी so v. a. *Tod* Hariv. 4713. घोर्ध्वदैहिकी dass. 4803. — 2) *ein festlicher Zug, Procession;* = उत्सव Trik. H. an. Med. Kathās. 10,87. 34,174. इन्द्रयात्राप्रसङ्ग 30,96. 123,159. यात्रायागादि नागानाम् Rāja-Tar. 1,135. 220. यमेश्वर° 267. Verz. d. B. H. No. 1236. Śiv. D. 109. Hit. 83,12. देव° Verz. d. Oxf. H. 390,a,15. Trik. 2,7,8. — 3) *Lebensunterhalt,* = यापन (*passing away time* Colebr. und Wilson), वृत्ति AK. 3,4,25,177. Med. H. an. Hall. 5,33 (= अनुवृत्ति?). M. 4,3. Jāṅ. 3,54. 59. तस्मिन्हि यात्रा लोकस्य MBh. 5,3027. 13,2089. 14,1281. Spr. 4872. Bhāg. P. 7,15,15. 10,86,15. शरीर° *Unterhalt des Körpers* Bhag. 3,8. Kathās. 52,101. देह° (s. auch bes.) dass. Nilak. 32. — 4) *Verkehr:* लौकिकी M. 11,184. इन्द्रयात्रा Bhāg. P. 8,14,3. — 5) *Mittel* Viçva im ÇKDa. — 6) Bez. *einer gewissen Gattung astrologischer Werke* Vārāh. Bṛh. S. 2, S. 6, Z. 4. von Vārāha-mihira verfasst 1,10. 43,21. 44,14. 18. 48,22. Der vollständige Titel dieses Werkes ist योगयात्रा; vgl. Kern in der Vorrede zu Vārāh. Bṛh. S. 25. fgg. und Ind. St. 10,161. fgg. — 7) *a sort of dramatic entertainment* Wilson. — Vgl. गङ्गा°, तीर्थ° (auch Kathās. 33,28. 39,34. 38. 52, 242. Dhūrtas. 83,12), दण्ड°, देव°, देह°, दोल°, पुनर्यात्रा, प्राण°, ब-र्हियात्रा, वृक्षयात्रा, मख°, योग°, रथ°, लोक°.

यात्राकार (या° + 1. कार) m. *der Verfasser eines Werkes von der Art der Jātrā* Vārāh. Bṛh. S. 86,3; s. यात्रा 6).

यात्रानेकोत्सव (या° + म°) m. *ein grosser festlicher Aufzug* Rāja-Tar. 1,222. Pañcat. 43,3. — Vgl. यात्रोत्सव.

यात्रिक (von यात्रा, 1) adj. *a) zu einem Marsche, einem Feldzuge in Beziehung stehend* M. 7,184. — *b) zum Unterhalt erforderlich* M. 6,27. — 2) n. *a) Marsch, Feldzug* MBh. 12,3833. — *b)* Titel *einer gewissen Gattung astrologischer Werke* (vgl. यात्रा) Verz. d. B. H. 236,9. Ind. St. 10,161. 164. 195. — Vgl. प्राणयात्रिक, सिद्धियात्रिक, यातिक, यातृक.

यात्रिन् (wie eben) adj. *auf einem Zuge befindlich* Kām. Nītis. 12,19.

यात्रोत्सव (यात्रा + उ°) m. *ein festlicher Aufzug, Procession* Spr. 5373. Kathās. 12,177. 26,4. 73,327. 74,208. 89,6.

यात्सत्त्र (यास्, partic. von 1. या, + स°) n. *fahrende Feier,* Bez. *gewisser langdauernder Feiern, welche* Sārasvata *heissen,* Kāty. Ça. 25,3, 25; vgl. Āçv. Ça. 12,6,1. fgg.

याद्य (von 1. या) s. दीर्घ°.

यादायाद्यार्थ (von यद्या कद्या च) n. *ein Stattfinden unter allen Umständen* P. 5,1,98.

यादाकामी (von यद्या + काम) f. *das Handeln nach Gutdünken* Kāty. Ça. 1,2,10. Çāṅkh. Ça. 1,3,6. 6,6,10. Lāṭy. 2,5,16. 10,20,14. Kauç. 60. 73.

यादाकाम्य n. dass. Çāṅkh. Ça. 2,1,6. 10,13,5. Schol. zu Kāty. Ça. 30,1 v. u. — Vgl. यद्याकाम्य.

यादातथ्य (von यद्यातथम्) n. *ein richtiges Verhältniss, die gebührliche Art, Wahrheit* Tattvas. 2. यादातथ्येन पण्डितम् (गृह्णीयात्) Spr. 2670, v. l. यादातथ्यम् adv. *der Wahrheit gemäss* MBh. 3,17404. 13,6312. °तथ्येन dass. 2,1501. 13,3065. 7153. 14,36. 330. R. Gorr. 2,13,23. 4,3,16. 7,12,13. *nach Gebühr* Bhāg. P. 11,16,2. °तस्स् adv. dass. VS. 40,8.

यादात्म्य (von यद्या + आत्मन्) n. *die wahre Natur, das wahre Wesen* Hariv. 14918. fgg. Rāgh. 10,25. Bhāg. P. 1,12,28. 7,10,42. Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 76. 283. zu Kāṭh. Up. S. 22. Schol. zu Naish. 22,55. Sarvadarçanas. 56,3.

यादार्थिक adj. = यद्यार्थ Wilson.

यादार्थ्य (von यद्यार्थ) n. *die wahre Bedeutung* Kumāras. 5,77. Śiç. D. 323,17.

यादासंस्तरिक (von यद्या + संस्तर) adj. *den Teppich in seiner ursprünglichen Lage belassend* Burn. Intr. 310.

याद्, nur im partic. praes. med. *eng verbunden* —, *im Verein mit:* शश्वच्छश्वद्भूतिभिर्यादमानः RV. 3,36,1. समुद्रेण सिन्धवो यादमानाः 7. वि वो रथा वयाइ यादमानो ऽस्तोन्द्रवो वीयते वर्तनिभ्याम् 7,69,3. यमर्धत्तो वसुभिर्यादमानाः 76,5.

यादस् (यादस् + ईश) m. *das Meer* H. 1073.

यादःपति (यादस् + प°) m. 1) dass. AK. 1,2,3,2. H. 1073, Sch. — 2)

Bein. Varuṇa's H. 188.

यादव 1) adj. (f. ई) zu Jadu in Beziehung stehend, von ihm herstammend: कुल Bnlc. P. 11, 1, 3. वंश Hariv. 3164. 3253. पुरी 6987. स्त्री 9595. कन्या MBu. 1, 6867. राजन् Rāja-Tar. 1, 62. m. ein Nachkomme Jadu's (= कृष्ण Mān. v. 48. Çārnar. im ÇKDa.) Vop. 7, 1. 9. Bhāg. 11, 41. MBu. 7, 6031. Hariv. 4238. Naiṣ. 1, 1 (यादवतम्). यादवी f. MBu. 1, 3766. Hariv. 770. 11069. Rāja-Tar. 1, 60. °पुत्र MBu. 12, 3660. °मातृ adj. 13, 89. यादवी unter den Namen der Durgā Taik. 1, 1, 53. H. ç. 48. pl. यादवाः Jadu's Nachkommen MBu. 1, 3533. 3, 1896. 14, 2479. Hariv. 1898. 5180. VP. 418. 441. 609. fgg. = माधवाः, वृष्णयः (वृष्णि = यादव Taik. 3, 3, 139) Bnlc. P. 9, 23, 29. यादवशार्दूल = कृष्ण MBu. 13, 1024. यादवेन्द्र desgl. Pāṇ. 4, 1, 24. अयादवी (vgl. निर्यादव) मही कर्तुम् Bnlc. P. 10, 30, 3. — 2) m. N. pr. eines Lexicographen Colebr. Misc. Ess. II, 49. Journ. of the Am. Or. S. 5, 524. Verz. d. Oxf. H. 113, b, 3. 126, a, 17. 164, a, 4. 182, b, 43. 194, a, 13. °कोष 162, b, 21. eines Astronomen Ind. St. 2, 231. 256. 270. fg. यादवाचार्य m. N. pr. eines Lehrers Hall 203. °पण्डित (= यादवव्यास) eines Autors 103. — 3) n. Reichthum an Hausvieh AK. 2, 9, 58, v. l. Mān., wo यादवं st. यादवः zu lesen ist. — Vgl. याद्व.

यादवक m. pl. Jadu's Nachkommen Hariv. 13793. 13823.

यादवगिरि (या° + गिरि) N. pr. eines Landes Wilson, Sel. Works 1, 37.

यादवराय m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 4, Çl. 2.

यादवव्यास m. N. pr. eines Autors Hall 25. 27. = यादवपण्डित 103.

यादवाभ्युदय (यादव + अ°) m. Titel eines Werkes Mack. Coll. I, 113. — Vgl. यादवोदय.

यादवेन्द्र (यादव + इन्द्र) m. 1) Bein. Kṛshṇa's Pāṇ. 4, 1, 24. — 2) N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 280, a, N. 2. श्रीयादवेन्द्रपुरी Verz. d. Tüb. H. 13.

यादवोदय (यादव + उ°) m. das Aufsteigen der Jādava, Titel eines Kāvja genannten Schauspiels, Sin. D. 203, 5. — Vgl. यादवाभ्युदय.

यादस् n. Sidd. K. 247, b, 11. 1) so v. a. Flüssigkeit (उदक) Naigh. 1, 12. = सरित् Fluss Sidd. K. 247, b, 12. Samenerguss Durga zu Nir. 3, 13. im Wasser lebend Comm. zu TBr. 3, 4, 4, 13; aus der Zusammenstellung hier und VS. 30, 20 ist eher Lust, Wollust (urspr. enge, fleischliche Verbindung; vgl. याद्) zu folgern. — 2) ein im Wasser lebendes Ungeheuer, ein grosses Wasserthier AK. 1, 2, 3, 20. H. 1348. Halāj. 3, 34. वरुणो यादसामरूम् sagt Kṛshṇa Bhāg. 10, 29. R. Gorr. 1, 42, 7. 5, 74, 27. Ragh. 1, 16. Kathās. 81, 42. Kir. 5, 29. Rāja-Tar. 1, 40. Bnlc. P. 1, 8, 30. 2, 6, 42. 3, 17, 25. 8, 10, 15. यादसां नाथः Bein. Varuṇa's Halāj. 1, 74. यादसां प्रभु: desgl. Rāja-Tar. 3, 62. यादसां पतिः a) desgl. AK. 1, 1, 2, 36. Taik. 3, 3, 179. H. an. 3, 21. Mān. t. 234. Mīmāṅs. P. 22, 11. — b) das Meer AK. Taik. H. an. Mān.

यादस् m. so v. a. Flüssigkeit Naigh. 1, 12.

यौदुर (von याद्) adj. (f. ई) nach Sāj. reichliche Flüssigkeit (beim coitus) ergiessend ṚV. 1, 126, 6. eher wollüstig umarmend oder dergl.; vgl. यादस् 1).

यादृत्त (1. य + दृत्त) adj. wie aussehend, qualis (rel.) P. 6, 3, 90, Sch.

यादृच्छिक (von यदृच्छा) adj. (f. ई) zufällig MBu. 12, 3769. Daçak. 153, 7. Mallin. zu Çiç. 3, 58. Sarvadarçanas. 8, 17. unerwartet zugefallen: राज्य MBu. 12, 3872. dem Zufall Alles anheimstellend, kein bestimmtes Ziel verfolgend Ind. St. 2, 175. Bnlc. P. 1, 6, 38.

यादृश् (1. य + दृश्) adj. wie aussehend, qualis (rel.) Nir. 6, 15. P. 5, 3, 91. 7, 1, 83 (nom. यादृङ् im Veda). यादृगेव दृष्टेश तादृगुच्यते ṚV. 5, 44, 6. loc. यादृश्मिन् 8. Nir. 1, 15. — MBu. 2, 1366. 7, 6787. 5279. 13, 2358. Bhāg. 13, 3. R. Gorr. 2, 117, 21. Spr. 497. 1432. 3719. 4873. Vaitān. Bṛn. S. 104, 30. Kathās. 20, 204. 46, 216. Bnlc. P. 4, 29, 64. Mīmāṅs. P. 39, 27. 102, 2. 120, 4. तदेव यादृक्तादृक् क्षेत्रव्यम् quale tale TBr. 1, 4, 2, 4.

यादृश (1. य + दृश) adj. (f. ई) desgl. P. 3, 2, 60. 5, 3, 91. 4, 1, 15. Çat. Br. 1, 3, 5, 12. 7, 4, 2, 1. 13, 2, 2, 11. M. 1, 12. 4, 254. 5, 24. 8, 61. 9, 9. 161. 12, 31. Sund. 3, 7. R. 2, 71, 33. 93, 6. 106, 2. 3, 69, 22. 4, 5, 23. 43, 44. Suçr. 1, 215, 17. Spr. 2422. 2468. fgg. 3732. 4374. 4874. Vaitān. Bṛn. S. 104, 36. Prān. 99, 12. उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने dem ersten Besten Spr. 488. Ind. St. 2, 254. कुलाभ्यादृशतादृशात् Kathās. 24, 152.

यादोनाथ (यादस् + नाथ) m. Bein. Varuṇa's H. 188, Sch. Rāgān. im ÇKDa. Ragh. 17, 81.

यादोनिवास (यादस् + नि°) m. das Meer H. 1069.

याद्राध्य adj. nach Sāj. für die Gebenden (यात्, partic. von 1. या) d. h. Lebendigen erreichbar (राध्य); wir vermuthen याद्राध्यम् (1. यात् + रा°) adv. so weit es sich thun lässt, so gut oder so schnell als möglich: याद्राध्यो वरुणो योनिमप्यमनीशितं निमिषि क्षर्भुराणः ṚV. 2, 38, 8.

यौद्र adj. patron. zum Jadu-Geschlecht gehörig: नि तुर्वशं नि याद्रं शिशीहि ṚV. 7, 19, 8. यो अस्ति याद्रः पशुः 8, 1, 31. राधांसि याद्रानाम् 6, 46. Ueberall dreisilbig zu sprechen.

यौन (von 1. या) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. Sidd. K. 249, a, 9. 1) m. Bahn, neben पथि Wegbahn, gebahnter Weg: पथ ऋतस्य यानान्मधो समञ्जन् ṚV. 10, 110, 2. वं चकर्थ मनवे स्योनान्पथो देवत्राञ्जसेव यानान् zu den Göttern führend 73, 7. मृगैर्न यानैरुपयाता पशुम् TBr. 3, 1, 2, 10. — 2) f. यौनी (यानी gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41) in einer Formel TS. 4, 4, 6, 2. Kāṭh. 22, 5. — 3) n. a) das Gehen, Fahren, Reiten, Marschiren (gegen den Feind) Taik. 3, 3, 234. fg. H. an. 2, 280. Mān. n. 16. यानाश्वासनाशने M. 7, 220. 11, 130. Suçr. 1, 244, 8. 277, 9 (neben वाहन). Vaitān. Bṛn. S. 43, 24. 86, 47. 98, 9. शीघ्र° MBu. 3, 2038. 2749 (pl.). मृगया° das auf die Jagd Gehen Kām. Nītis. 14, 41. समुद्र° Seefahrt M. 8, 157. परगृहे das Gehen in ein fremdes Haus Jiān. 1, 84. घशोकवनिका° R. 1, 3, 29. परलोक° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 27, 12. गवां च यानं पृष्ठेन das Reiten auf M. 4, 72. अश्वैर्यानं यानम् Prasaṅgan. 14, b. न तथा करिणा यानं तुरगेण रथेन वा । नारायणेन वा यानं यथा मन्दविषेण मे ॥ Pañcat. III, 248. गज° MBu. 3, 15722. गो°, उष्ट्र°, खर° Hariv. 7781. शिविका°, रथ° R. Gorr. 2, 34, 12. विमानयाना adj. f. fahrend auf Bnlc. P. 4, 3, 6. — घस्तिनाप्रत्यपीतस्य तृणे यानम् AK. 2, 8, 3, 64. 4, 13. H. 791. 735. M. 7, 160. fgg. 168. यदा तु यानमातिष्ठेदरिराष्ट्रं प्रति 181. Jiān. 1, 246. Kām. Nītis. 11, 1. fgg. Ind. St. 10, 160. Spr. 4231. 4619. — b) Fuhrwerk, Wagen, Vehikel überh. AK. 2, 8, 3, 26. 3, 4, 2, 25. Taik. 2, 8, 45. 3, 3, 234. fg. H. 89. 759. H. an. Mān. Halāj. 2, 294. चक्रिन् AK. 2, 8, 3, 19. H. 751. ṚV. 4, 43, 6. पदस्य यानं भवति रथो वा किंचिदा Çat. Br. 5, 5, 3, 7. Çāṅkh. Çr. 15, 3, 15. Lāṭj. 3, 4, 13. 5, 6. 11, 16. Āçv. Gṛhj. 1, 8, 1. Sāṅkh.

Bs. 6,2. 10. Pln. Gaṇ. 1,10. Kauç. 14. 42. Kaiṣṇ. Up. 3,12,3. M. 2,202. 3,64. 4,120. 202. 232. 8,290. fg. 404. fg. Jiṣṇ. 1,151. 2,299. MBn. 1, 7205. 3,939. 2262. 4,96. 13,252. R. 1,3,16. 17,14. 2,30,45. 32,16. 19. 40,40. सयुक्त 69,13. यानेश शकटेशेव 113,20. 4,38,30. 6,99,2. Suça. 1,68,15. 98,2. Rāgn. 13,69. Kumāras. 6,76. Kām. Nītis. 7,30. Vaṛāh. Bṛn. S. 46,60. 52,7. 68,116. 88,12. Bhāg. P. 3,10,16. Pañcat. 1,3,24. 4,68. गोऽश्वोष्ट्र° gezogen von M. 2,204. 11,201. Jiṣṇ. 3,291. MBn. 13, 2585. Suça. 1,106,19. शतसङ्ख्य° Spr. 3053. नरवाहिना । यानेन Sänfte MBn. 3,2716. 2714. मनुष्यवाह्यं चतुरश्रयानम् Rāgn. 6,10. Bhāg. P. 3,10, 2. 15. यानरत्नं तुरंगः Spr. 3000. हंसेन यानेन Bhāg. P. 3,24,20. हंस° 3, 1,9. Am Ende eines adj. comp. H. 9. — c) bei den Buddhisten *das zur Erkenntniss führende Vehikel, das Mittel zur Erlösung von der Wiedergeburt* Burn. Intr. 63, N. 2. Lot. de la b. l. 315. — Vgl. यम°, यज्ञो°, गो°, शत्रु°, देव°, नर°, नारी°, नौ° (auch *Schiff* R. 1,9,63 = 63 Gorr.), पति°, पितृ°, पुं°, पूर्णा, पृष्ठ°, बर्हि°, बर्हिष्मान, भद्र°, मध्यम°, मरु° रघ°, वसुभ्मान, स्वर्ग°.

यानक (von यान) n. *Fuhrwerk, Wagen* Bhāg. P. 3,10,21.

यानकार (यान + 1. कार) m. *Wagner* Vaṛāh. Bṛn. S. 10,17.

यानपात्र (यान + पात्र) n. *Schiff, Boot* AK. 2,4,44,62. H. 875. Harīv. 8363. Kathās. 18, 293. fg. 25, 40. 26, 133. 36, 83. 100. 51, 175. 52, 222. 224. 56, 57. Pañcat. 262, 2.

यानपात्रिका (von यानपात्र) n. *ein kleines Schiff, Boot* Kathās. 101, 157.

यानभङ्ग (यान + भङ्ग) m. *Schiffbruch* Rāgān. 4, 3. — Vgl. पोतभङ्ग.

यानमुख (यान + मुख) n. *der Vordertheil eines Wagens* AK. 2,8,2,23. H. 757.

यानयान (यान 3) b) + यान 3) a) n. *das Fahren oder Reiten* Suça. 1, 60, 19. 267, 2.

यानवत् (von यान) adj. *mit einem Wagen versehen, zu Wagen fahrend* MBn. 3, 10895. अधा ह्यितो यानवता Spr. 4075. Kām. Nītis. 14, 19.

यानशाला (यान + शा°) f. *Wagenschauer* R. 3, 39, 2. 4.

यानिक (von यत्र) adj. 1) *von den stumpfen chirurgischen Instrumenten handelnd* Suça. 1, 8, 7. — 2) *künstlich geläutert oder dergl.*, Bez. einer Art Zucker Suça. 1, 187, 11.

याप (vom caus. von 1. या); m. nom. act.; s. कालं°.

यापक (wie oben) adj. *bringend, verleihend:* तीर्थमाशिषां यापकं नृणाम् Bhāg. P. 3, 23, 23.

यापन (wie oben) 1) adj. a) *verstreichen lassend, zu Ende bringend:* यामाः स्वास्तरयापनाः Bhāg. P. 3, 22, 35. — b) *erleichternd, lindernd;* so heisst ein gewöhnlich aus Honig und Oel bereitetes Klystier (daher माधुतैलिक genannt) Suça. 2, 198, 3. — c) *das Leben fristend, unterhaltend:* यस्त्वाहृपि हि यापनम् MBn. 12, 7719. — 2) f. (या) und n. a) n. *das Verjagen* Taik. 3, 3, 254. H. an. 3, 401. Med. n. 110. — b) *das Verstreichenlassen der Zeit, Aufschieben, Versäumen, Versäumniss;* n. = कालयापन, कालक्षेपेण Taik. H. an. Med. P. 3, 4, 60. Vop. 7, 90. यापना Naish. 2, 18. कालयापन (s. auch bes.) dass. Kām. Nītis. 17, 31. कालयापना Spr. 1949. — c) *das Lindern* (einer Krankheit): यापनार्थम् Suça. 2, 78, 11. 343, 3. — d) *das Fristen, Erhalten:* देहयापनं कर् MBn. 3, 15410. विना वधं न कुर्वन्ति तापसाः प्राणयापनम् 12, 447. fg. आत्मयापनाय स्वापनं प्रतिष्ठा P. 6, 1, 146, Sch. यापन = वर्तन, यात्रा *Lebensunterhalt* AK. 3, 4, 25, 177. Taik. H. an. Med. n. 110. r. 79. — e) *das Ausüben, Ueben:* धर्मयापना MBn. 12, 4826. = धर्मोपदेश Nīlak.

यापनीय (wie oben) adj. als Erkl. von याप्य Med. j. 47.

याप्ता f. = इष्टा *Flechte* Bādarāy. im ÇKDa.

याप्य (vom caus. von 1. या) adj. = यापनीय Med. j. 47. 1) *zu lindern, sich lindern lassend;* von Krankheiten Suça. 1, 30, 21. 87, 3. 127, 7. 253, 20. 2, 305, 4. 319, 17. Çiṣṣ. Saṃh. 1, 5, 31. °त्व n. ebend. — 2) *gering, unbedeutend* AK. 3, 2, 3. H. 1442. Med. P. 5, 3, 47. वैयाकरणा Sch. फल Vaṛāh. Bṛn. S. 4, 21. 19, 22. 86, 61.

याप्ययान (या° + यान) n. *Sänfte* AK. 2, 8, 2, 21. H. 758. Hir. 158. Halāj. 2, 295.

याभ (von यभ्) m. *fututio* Vop. 21, 5. Bhāg. P. 9, 19, 5. Comm. zu Kirāt. 1, 66.

याभवत् (von याभ) adj. *futuor, bene futuens:* याभवतः (zugleich या भवतः) प्रिया Kirāt. 1, 66.

याभिस् (instr. pl. f. von 1. य) adv. *damit:* प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदरः । याभिः काण्वस्योप बर्हिरासदं यासद्वभ्री *damit er komme* RV. 8, 1, 8.

1. याम (von यम्) m. nom. act. Vop. 26, 170. = यम, संयम n. s. w. AK. 3, 3, 18. H. an. 2, 333. Med. m. 24. — Vgl. अस्तर्याम.

2. यामं (von 2. यम) 1) adj. (f. ई) *Jama betreffend, von ihm kommend* u. s. w. Ait. Br. 3, 37. Taitt. Br. 1, 4, 6, 6. Kauç. 83. Kāṭh. 22, 11. यद्वृत्तानि Sarpr. Br. in Ind. St. 1, 36. fg. यातना: M. 12, 17. 21. fg. — 2) m. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 230, b. TBr. 3, 9, 20, 1. Çiṣṣ. Ça. 16, 12, 20. Pañcav. Br. 3, 8, 4. Kāṭy. Ça. 22, 6, 15; vgl. मरु°.

3. याम (von 1. या) 1) m. Uṇādis. 1, 139. Çiṣṣ. 2, 15. gaṇa वृषादि zu P. 5, 1, 203. a) *Fahrt, Lauf; Bahn; Fortgang* RV. 1, 39, 6. 48, 4. 87, 3. यस्यानासः सूर्यस्येव यामः 100, 2. चित्रो वो याम: प्रयतास्वृष्टिषु 166, 4. मा यामादस्मादव क्रीक्रियो नः 3, 53, 19. वधू यामेषु शोभते 4, 32, 22. fg. 5, 53, 12. मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत् 56, 7. यानं येष्ठाः 7, 56, 6. 69, 2. यद्यामं यासि वायुभिः 8, 7, 4. 5. 20, 5. उषास घातिरत्त यामभिन्द्राय 85, 1. AV. 18, 2, 6. याम, प्रतिष्ठा Çat. Br. 3, 7, 3, 4. 5. TS. 6, 3, 4, 6. 6, 6, 2. याम, तेम Kāṭh. 19, 12. 31, 2. TBr. 3, 2, 2, 9. पञ्चयाम *in fünf Gängen verlaufend:* यज्ञ RV. 10, 52, 4. 124, 1. — b) *Wagen:* कुवित्स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयात् RV. 4, 51, 4. 6, 66, 7. 10, 20, 9. — c) *Nachtwache (Periode), ein Zeitraum von drei Stunden* AK. 1, 1, 2, 6. H. 145. an. 2, 333. Med. m. 24. Halāj. 1, 106. उत्थाय पश्चिमे यामे M. 7, 145. द्वौ प्रथमौ यामौ रात्रेः MBh. 2, 219. सप्तयामप्रतिमा (रजनी) 7, 8278. याममात्रार्धशेषायां यामिन्यां प्रत्यबुध्यत 12, 1896. R. Gorr. 2, 3, 5. Suça. 1, 111, 12. 242, 6. 2, 264, 21. Mṛcch. 95. Rāgn. 17, 1. Vaṛāh. Bṛn. S. 2, S. 4, Z. 3. 11, 44. 39, 4. Kathās. 4, 46. 13, 149 17, 101. 24, 112. Rāja-Tar. 3, 178. Bhāg. P. 3, 11, 8. 10. 22, 35. 5, 8, 28. Am Ende eines adj. comp. (f. या): त्रियामा रजनी MBh. 7, 8275. दीर्घयामा त्रियामा Mṛcch. 107. Vikr. 45. शतयामेव बभूव शर्वरी R. Gorr. 2, 81, 33. Kathās. 29, 4. 85, 33. 109, 107. — d) wohl *Wanderstern, Planet:* सोमो भगं इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा AV. 6, 21, 2. — e) pl. Bez. *einer Klasse von Göttern* MBh. 3, 15446. 9, 2482. Harīv. 414. VP. 54. Bhāg. P. 4, 3, 12. 8, 1, 18. Mārk. P. 50, 18. Burn. Intr. 202. 603.

Lalit. ed. Calc. 71,5. 170,20. 268,6. falschlich यमा: 38,4. Vgl. सुयाम. — *f)* यामस्य (oder इन्द्रस्य) सर्क: N. eines Sâman Ind. St. 3,230,b. — 2) f. ई *a)* N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's (Manu's) Harîv. 143. 12449. VP. 119. यामि (ed. Bomb. ज्ञामि) Bhâg. P. 6,6,4. नागवीथी च यामिज्ञा (aus metrischen Rücksichten verkürzt) Harîv. 148. नागवीथी च ज्ञामिज्ञा (so beide Ausgg.) 12480. — *b)* N. pr. einer Apsaras Harîv. 14162. ज्ञामी die neuere Ausg. — Vgl. घतोर्याम, कृज्ञ°, चित्र°, त्रि°, वेष°, दृष्ट°, पज्ञ°, पृत्त°, यात° und 1. यामन्.

यौमक (von यम्) P. 7,3,34, Sch, 1) m. du. Bez. *des* Nakshatra Punarvasu H. 110. — 2) der voc. यामकि vom f. यामकी als Schimpfwort in der Stelle: नो त्वेवान्यत्र यामकि पुंश्चल्या यगनं मे यस्ति Çâṅkh. Br. 27,1.

यामकिनी f. = 1. यामि Hir. 139.

यामकोशी (3. याम + कोश) nach Sây. adj. *den Weg sperrend;* vermuthlich m. *Wagenkasten* (vgl. कोश 1) *e*): इन्द्र दृळ्हं यामकोशा घभूवन् ṚV. 3,30,15.

यामघोष (3. याम + घोष) 1) m. *Hahn* Çabdar. im ÇKDr. — 2) *eine metallene Platte* oder *eine Pauke, an der die Nachtwachen angeschlagen werden;* m. Taik. 1,1,121.; ÇKDr. und Wilson f. या nach derselben Autorität.

यामतूर्य (3. याम + 3. तूर्य) n. = यामघोष 2) Ragh. 6,36.

यामदुन्दुभि (3. याम + दुं°) m. dass. R. 2,81,3.

यामदूत (von यमदूत) m. pl. N. pr. eines Geschlechts Harîv. 1465. 1771. an der ersten Stelle liest die neuere Ausg. लोहितायनभूताश्च st. लोहिता यामदूताश्च.

1. यौमन् (von 1. यु) n. 1) *Gang, Lauf, Fahrt, Flug; das Kommen:* विशो वो यामन्यपते स्यर्दृक् ṚV. 7,38,2. 3,54,14. 4,27,4. यामन्नयामं कृणुतं रथं मे 1,181,7. 131,7. गिरिं प्र च्यावयति यामभि: 5,36,4. 1,37,11. उत पूषा भवसि देव यामभि: 5,81,5. उषसो यामन्नक्ता: 6,38,4. 3,30,13. 9,45,4. यामन् 10,77,4. 92,13. नि ते यामन्नविक्ष्महि *bei deinem Kommen* 10,127,4. Namentlich *Marsch, Kriegszug* ṚV. 4,24,2. 8,64,10. मृकायासो न यामन्नुत त्विषा 10,78,6. वि कृष्टे श्मिं नरो यामनि बाधितास: (oder zu 2) 80,5. 7,66,5. ता नो यामन्नुरुष्यतामभीके 85,1. — 2) *das Angehen* (mit Bitten u. s. w.), *Anrufen,* überh. *das Nahen zu den Göttern* (= यज्ञ Comm.): स यामनि प्रति बुधि ṚV. 1,25,20. य: स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन् 33,2. पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य यामं ज्ञन्मस्य शर्ति वनते सुदानु: 6,38,1. स यामन्ने स्तुवते कर्यो धा: 10,46,10. कथा देवानां कत्मस्य यामनि सुमतु नाम प्रवदन्तो मनामहे 64,1. मरुद्भि यामन्धुर चेकानाः 77,3. शिवो नो अस्मिन्नुरुष्यत यामनि 7,32,26. 1,112,1. यामन्यामन्नुप-युक्तं वक्षिष्ठम् Agni AV. 4,23,3. इष्टेन यामन्नमति ज्ञनातु स: TS. 3,2,8,4. — Es lässt sich übrigens nicht verkennen, dass in vielen dieser Stellen eine adverbiale Bed. des loc. etwa *hac vice, dieses Mal* oder ähnlich besser befriedigen würde. — पुनर्यामन् adj. *wieder brauchbar* (vgl. यातयामन्) Kâṭh. 12,8. Çâṅkh. Br. 19,7. — Vgl. अखिद्र°, घनुत्र°, इष्ट°, उग्र°, दुर्यामन्, युतयामन्, पृथु°, प्रवद्यामन्, यात°, सु° und 3. याम.

2. यामन् = यामिन् in घतुर्यामन्.

यामन scheinbar Hip. 1,38, wo aber mit MBh. 1,5912 यावियो st. यामनो zu lesen ist.

यामनाली f. = यामघोष 2) Taik. 1,1,121.

यामनेमि m. Bein. Indra's Taik. 1,1,57. H. ç. 31.

यामयम (3. याम + यम) m. *eine für jede Stunde bestimmte Beschäftigung* Bhâg. P. 10,13,38.

यामव्रत n. (sc. व्रत) Bez. *einer best. zu* Jama *in Beziehung stehenden Observanz* Harîv. 7941. 7943. — Vgl. यमव्रत.

यामल n. 1) = यमल *Paar* Taik. 2,3,38. H. 1424. — 2) Bez. *einer Klasse von Tantra-Schriften* Verz. d. Oxf. H. 7,b,2. 88,a,5. fgg. 90,a, N. 1. 97,a, No. 131. 101,b, 44. 103,b,9. 104,a,17. 109,a,1. °ता f. 29. Häufig fälschlich ज्ञामल geschrieben; vgl. आदि°, कृत्त° (u. गोराङ्ग, ब्रह्म°, रुद्र°, सिद्ध°.

यामलार्जुन adj. von यमल gaṇa पत्तादि zu P. 4,2,80.

यामलीय (von यामल) n. Titel einer Schrift oder Bez. *einer Gattung von Schriften* Verz. d. Oxf. H. 95,b,9.

यामवती (von 3. याम) f. *Nacht* H. 142, Sch. (wo so zu ändern ist) und Rîgân. im ÇKDr. — Vgl. यामिनी.

यामवृत्ति (3. याम + वृ°) f. *das Wachestehen* Kâm. Nîtis. 16,2.

यौमशुत adj. nach Sây. *durch raschen Lauf* (3. याम) *berühmt* ṚV. 5,52,15.

यामहूत (1. यामन् + हूति) adj. *der durch Bitten sich rufen lässt, hilfbereit;* nach Sây. *zum Kommen — oder zur Zeit zu rufen;* die Açvin: ता यामन्यामहूतमा यामन्या मृळयत्तमा ṚV. 5,73,9. यश्चिनो यामहूतमा नेदिष्ठं यास्यार्यम् 8,62,6.

यौमहूति (1. यामन् + हूति) f. *Hilferuf:* रात्तावधराणामश्चिना यामहूतिषु ṚV. 8,8,15. यो मस्मै भवति यामहूतौ 10,117,3.

यामातृ m. = ज्ञामातृ *Tochtermann* Verz. d. Oxf. H. 189,a,1. Çabdar. und Upâdhjâj. im ÇKDr.

यामातृक m. dass. Vaṭ. in LA. (III) 19,22.

यामायन (von 2. यम) m. patron. der Liedverfasser Ûrdhvakṛçana, Kumâra, Damana, Devaçravas, Mathita, Çaṅkha und Saṁkasuka ṚV. Anukr.

1. यामि f. = ज्ञामि Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,13. = कुलस्त्री und स्वसृ Med. m. 24. यामय: M. 4,133. Mârk. P. 14,59. 50,64. यामीभि: M. 4, 180; vgl. ज्ञामि 2) *a*).

2. यामि = यामी; s. u. 3. याम 2) *a*).

यामिक (von 3. याम) adj. *auf der Wache stehend:* पुरुष so v. a. *Nachtwächter* Kathâs. 3,63. °भट ÇKDr. mit einem Citat der Prâkṛita m. *Nachtwächter, ein auf der Wache stehender Mann* Kathâs. 122,30. fg. Râgâ-Tar. 3,173. 4,515. 6,77.

यामिका f. = यामिनी *Nacht* Wilson nach Çabdârthak.

यामित्र m. = ज्ञामित्र ÇKDr. nach dem Jîmûtavâhana und Gôtîndatatva; Varâh. Bṛh. 1,18.

यामिन् (von यम्) in घतुर्यामिन्. — यामिनी s. bes.

यामिनय् (von यामिनी), °यति *als Nacht erscheinen:* यामिनयन्ति दिनानि Kirâtârg. 139,14.

यामिनी (von 3. याम 1, *c*) f. 1) *Nacht* AK. 1,1,3,4. H. 142. Hâlâj. 1, 107. MBh. 12,1896. R. 5,14,24. Suçr. 2,154,1. Ragh. 15,12. 17,1. 19, 39. Spr. 1928. 2475. 3713. Kir. 5,44. Gîr. 7,6. 8,1. Kathâs. 3,67. 23, 93. 54,206. 55,193. 56,31. Râgâ-Tar. 3,178. 4,379. 6,77. Bhâg. P. 6,5, 33. Daçar. in Beng. Chr. 188,8. Vgl. दर्श°. — 2) N. pr. *a*) einer Toch-

ter Prahlâda's Kathâs. 46,22. — *b*) der Gattin Târksha's und Mutter der Çalabha Bhâg. P. 6,6,21.

यामिनीपति (य° + पति) m. *der Gatte der Nacht, der Mond* Çabdar. im ÇKDa. Bhâg. P. 10,35,25.

यामी s. u. 3. याम 2) und 1. यामि.

यामीर 1) m. *der Mond.* — 2) f. घा *Nacht* Çabdâmrtâv. bei Wilson.

यामुन 1) adj. zur Jamunâ *in Beziehung stehend, von ihr kommend, an ihr wachsend* u. s. w.: स्रोतसा यामुनेनेव (so die ed. Bomb.) MBh. 7, 92. ज्ञल Harîv. 14747. Spr. 829. वंशेश (वन्येश ed. Bomb.) यामुने: R. 2, 55,3. — 2) m. *a*) metron. P. 4,1,113, Sch. Verz. d. Oxf. H. 127,*a*, No. 227. — *b*) pl. Bez. eines Volkes MBh. 6,358 (VP. 190). Vaitân. Bhn. S. 14,2. 23. Bhâg. P. 1,10,34. Mârk. P. 58,42. — *c*) N. eines Berges MBh. 3,12352. 5,600. गङ्गायमुनयोर्मध्ये यामुनस्य गिरेरध: 13,3397. R. 4,40, 19. — *d*) N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 60,3. यामुनाचार्य Hall 203. यामुनाचार्यस्वामिन् 117. — 3) n. *a*) (sc. घाञ्जन) *Spiessglanz* AK. 2, 9,101. H. 1051. AV. 4,9,10. — *b*) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8022.

यामुनेष्टक n. *Blei* Gaṇîtas. im ÇKDa.; vgl. यवनेष्ट.

यामुन्दायनि m. patron. von यमुन्द gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154. Schol. zu 149.

यामुन्दायनिक m. Geringachtung ausdrückendes patron. von यामुन्दायनि Schol. zu P. 4,1,149.

यामुन्दायनेय m. desgl. ebend.

1. यामेय (von 1. यामि) m. *der Schwester Sohn* ÇKDa. und Wilson.

2. यामेय metron. von 2. यामि Bhâg. P. 6,6,6.

यामोत्तर (2. याम + उ°) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*b*.

यौम्य (याम्य Kîç. zu P. 4,1,85) 1) adj. zu Jama *in Beziehung stehend, ihm gehörend, ihm eigen* u. s. w.: काका: Âçv. Gṛhj. bei Stenzler S. 46. रोग Kauç. 81. वृत्ति M. 8,172. कोपविधारण MBh. 2,2377. °सत्त्ववत् (v. l. यम°) Suçr. 1,333,12. सभा MBh. 2,310. fg. 13,3795. धनुस् 7,1041. मामनि 2,2627. मातर: कार्त्तिकेयस्य 9,2654. Vaitân. Bhn. S. 5,23. 30,8. पुरी Bhâg. P. 3,21,7. 10. Mârk. P. 10,76. 15,54. नियोग 78,29 (नियोगे zu lesen). 108,18. °पाश Bhâg. P. 6,2,20. दूता: 21. नरा: Mârk. P. 12, 38. यातना: Kathâs. 65,7. मुहूर्त Verz. d. B. H. No. 912. ऋत Kull. zu M. 9,307. ऋक्ष *das von Jama beherrschte* Nakshatra Bharaṇî Suçr. 2,261,12. Vaitân. Bhn. S. 7,9. 9,2. 6. 35. 10,3. 15,27. Mârk. P. 38,53. याम्या f. dass. H. an. 2,378. Med. j. 47. Insbes. *südlich*; in Verbindung mit दिश् und घाशा oder याम्या f. mit Ergänzung des subst. *der Süden* H. 169, Sch. Halâs. 1,101. (याम्या = प्राची: H. an. Med.). TS. 4,4,12,4. Harîv. 4837. R. 2, 103,26 (111,32 Gorr.). 3,29,6. 54,10. 4,60,16. 5,27,17. Weber, Ġjot. 33. Mârk. P. 29,18. Sâmas. 2,7. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,24. Vaitân. Bhn. S. 2, S. 7, Z. 13. 3,4. 11,12. 19. 22. 25. 27. 53,25. 54,63. उत्तरयाम्यमार्गस्था: 9,4. fgg. याम्योदधि 14,18. 26,7. 54,40. 44. 60,2. 86,20. याम्याट् 87,6. 90,7. Sâmas. 2,68. 3,15. Bhaṭṭ. 14,15. याम्ये *im Süden, in südlicher Richtung* Weber, Râmây. Up. 300. Vaitân. Bhn. S. 8,15. 31,2. 54,23. 48. 68. 70. 78. 87,43. 95,21. याम्येन dass. 4,5. 5,23. 11,24. 18,1. 53,73. 54,18. 41. 87,4. याम्यतस् von *Süden* her 86,21. याम्योत्तर *südlich und nördlich* Sâmas. 3,4. Vaitân. Bhn. S. 5,13. von *Süden nach Norden gehend* 4,12. 54,118. — 2) m. *a*) (sc. नर, पुरुष, दूत) *ein Scherge* Jama's: नमो यमाय याम्येभ्यश्च Çâṅkh. Gṛhj. 2,14. Sâṅkhây. Br. 5,1. Mârk. P. 11,30. 12,35. 14,64. — *b*) Bein. Agastja's Med. — *c*) Bein. Çiva's Ind. St. 2,39. MBh. 7,9321 (= यामकर्ता काल: Nîlak.). 14,193. — *d*) Bein. Vishṇu's (neben मरु°) MBh. 12,12864 (= यमगण Nîlak.). — *e*) *Sandelbaum* Med.

याम्यतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,37.

याम्या (von 3. याम 1, *c*) f. = यामिनी *Nacht* Taitt. 1,1,104. H. ç. 18. — याम्या *Süden* s. u. याम्य 1).

याम्यायन n. *der Gang der Sonne nach Süden*, = दक्षिणायन Mahâbhâsk. im ÇKDa.

याम्योदूत (याम्या + उ°) m. *im Süden entstanden, wachsend*; m. *ein best. Baum*, = भीताल Râgân. im ÇKDa.

यायजूक (vom intens. von 1. यज्) adj. *fleissig opfernd* P. 3,2,166. Vop. 26,153. AK. 2,7,6. H. 818. Halâs. 2,265. Çat. Bhn. 1,7,3,14. 4,1,2,15. MBh. 13,3072. Harîv. 11381. 12390. R. 2,72,18. 102,5. 5,36,32. Kâṭhâs. 3,95. 10,27. 32,33. 80,17 (nach Aufrecht). Bhaṭṭ. 2,20.

यायात adj. Jajâti *betreffend, ihm gehörend* u. s. w.: वयस् MBh. 1, 3170. तीर्थ 9,2349. वंश Harîv. 5164. u. Jajâti's *Geschichte*, Titel des 18ten Kapitels im 9ten Buche des Bhâg. P. — Vgl. घपर°, पूर्व°.

यायावर (vom intens. von 1. या) 1) adj. P. 3,2,176. 4,1,58, Sch. Vop. 26,156. *umherwandernd, keinen festen Wohnsitz habend:* तस्मान्नायावर: तेम्यस्थेशे तस्मान्नायावर: तेम्यमध्यवस्यति TS. 5,2,4,7. Kâṭh. 19,12. भैतं चेरुरुस्त्रेषु यायावरगृहेषु च Mârk. P. 41,8. Bhaṭṭ. 2,20. — 2) m. *a*) *ein zum Rossopfer bestimmtes (frei umherwanderndes) Ross* Taitt. 2, 8,12. — *b*) pl. Name eines Brahmanengeschlechts, zu welchem Gâratkâru gehört, MBh. 1,1030. 1036. 1633. 1828. यायावरा गणा: । ग्रयोणाम् 12,8902. यायावरा नाम ब्राह्मणा घासंस्ते ऽर्धमासायाग्निहोत्रमनुरुवन् Bharadvâga bei Nîlak. zu MBh. 1,1030. sg. = ज्ञारत्कारु Taitt. 2,8, 20. — 3) n. *das Leben eines umherziehenden Bettlers* Bhâg. P. 7,11,16.

यायिन् (von 1. या) adj. *gehend, reisend, marschirend, laufend, fahrend, fliegend, sich bewegend:* यायिन्या धत्रिन्या R. 2,93,1 (102,1 Gorr.). Vaitân. Bhn. S. 89,1. 12. 93,27. 31. ज्ञलभैरिव यायिभि: MBh. 8,3160. यायिन्यो न निवर्तन्ते सतां नैम्य: सरित्समा: Spr. 345. वीरेण पृष्ठतो यायिना MBh. 2,50. घनुलोम° (घश्व) Vaitân. Bhn. S. 93,14. भूतसंसारे सततयायिनि M. 1,50. भीष्मद्रोणप्रभृतय: संत्रस्ता: साधुयायिन: MBh. 5,2478. वायिभि: शीघ्रयायिभि: R. 2,57,8. सेनाय° MBh. 3,14874. 8,3258. शतयोजन° (कृय) 3,2693. गजाश्वरथ° *reitend* —, *fahrend auf* 6,3738. कृयस्यन्द्न° R. 5,12,21. सारवैर्दृयायिन: Harîv. 9300. पशु° Pañkat. 1,3,25. संग्राम° *stehend in* Rṭus. 17,8. उत्स्यन्दद्रोप° *gehend nach* Kathâs. 25,39. प्राग्यायिन् Sâmas. 7,2,3. चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि Uttarar. 11,7 (15, 10). Insbes. *in's Feld ziehend* Harîv. 6606. Vaitân. Bhn. S. 9,25. 17,13. 18,2. 5. 34,22. 39,5. von Planeten im Grahajuddha 16,5. 17,6. fgg. 20,6. Jogaç. 1,14. fg. AV. Par. in Ind. St. 10,318. — Vgl. घग्र° (auch Kathâs. 21,46. 46,86. 51,4), नौ°, मनो° (auch Brahmav.-P. 1,40, wo मनोयायि मनो° zu trennen ist), समुद्र°.

यार्कायण m. patron.; pl. Saṃh. K. 184,*a*,2.

1. यौव m. = 2. यव TS. 4,3,9,2. 10,3. 4,9,2. 5,3,8,5.

2. याव (von 1. यव) = यावक P. 5,4,29. adj. *aus Gerste bestehend,*

— *bereitet* Kâṭy. Ça. 4,11,8. अ° 5,12,5. m. *eine best. aus Gerstenkörnern bereitete Speise* H. an. 2,535.

3. याव m. *Lackfarbe* AK. 2,6,2,26. H. 686. an. 2,535. Verz. d. Oxf. H. 98,a,4. Naiṣ. 22,46.

1. यौवक m. n. = 2. याव P. 5,4,29. *eine best. aus Gerstenkörnern bereitete Speise* 4,3,149, Sch. घोलयावल 2,92, Sch. AK. 2,9,18. H. 1175. M. 11,125. MBh. 12,7815. 11080. 12092. 13,3841. 6228. Spr. 4845. Hariv. 7855. 7872. 7883. Suça. 2,72,19. 163,8. Vaṛâh. Bṛh. S. 44,11. 51,30. Bhâg. P. 9,10,34. Mârk. P. 41,11. Râǵa-Tar. 3,415 (zugleich = 2. यावक). °कृच्छ्र m. *eine best. Askese:* यवानामप्सु साधितानां सप्तरात्रं पयो मासं वा प्राशने यावककृच्छ्रः Pâraçârîyabh. 9,a,7.

2. यावक m. = 3. याव H. 686, Sch. Hall. 2,400. Çabdar. im ÇKDr. Kâm. 5,40. Gît. 7,27. Kathâs. 37,44. Râǵa-Tar. 3,145 (zugleich = 1. यावक). Schol. zu Naiṣ. 22,46.

यावक्रीतिक m. *ein Kenner der Geschichte des Javakrita* P. 4,2,60, Vârtt. 5, Sch.

यावच्छक्यम् (यावत् + शक्य) adv. *nach Möglichkeit* Hit. 15,11.

यावच्छस् (von यावत्) adv. *wie* (rel.) *vielfach* Vop. 7,69. TS. 1,3,9,1. Çat. Br. 2,2,2,4.

यावच्छास्त्रम् (यावत् + शास्त्र) adv. *wie weit das Çastra reicht* Çiṅkn. Ça. 18,21,1.

यावच्छेषम् (यावत् + शेष) adv. *wie viel übrig ist* Kâṭy. Ça. 12,6,17.

यावच्छ्रेष्ठ (यावत् + श्रेष्ठ) adj. *bestmöglich* AV. 7,31,1.

यावच्छ्लोकम् (यावत् + श्लोक) adv. *der Zahl der Çloka entsprechend* Vop. 6,61.

यावज्जन्म (यावत् + जन्मन्) adv. *das ganze Leben hindurch* Mârk. P. 14,72.

यावज्जीवम् (यावत् + जीवम् absol.) adv. *das ganze Leben hindurch, auf Lebenszeit* P. 3,4,30. Çat. Br. 5,2,2,4. 5,2,6. 2,3,4,4. Kâṭy. Ça. 18,6,30. Çiṅkn. Ça. 3,1,8. R. 2,36,24. Spr. 35. 901. Râǵa-Tar. 2,90. Bhâg. P. 5,16,26. Mârk. P. 21,40. Paṅkat. 221,17. fg. Sarvadarçanas. 1,17. Ver. in LA. (III) 35,3. यावज्जीवेन dass. Spr. 3470. यावज्जीवकृतमुकृत Verz. d. Oxf. H. 282,b,38.

यावज्जीविक (von यावज्जीवम्) adj. *lebenslänglich* Âçv. Ça. 3,14,22. Davon nom. abstr. °ता Schol. zu Kâṭy. Ça. 32,4.

यावत् indecl. s. u. यावत्.

यावतीय (von यावत्) adj. *der wievielte* (rel.) P. 5,2,52. Vop. 7,42. M. 1,20. P. 1,3,11, Vârtt. 1.

यावत्कपालम् (यावत् + कपाल) adv. *nach dem Umfange der Schalen* Kâṭy. Ça. 2,3,20.

यावत्कामम् (यावत् + काम) adv. *wie viel —, wie lang man mag* Âit. Br. 6,33.

यावत्कालम् (यावत् + काल) adv. *wie lange es dauert* Çiṅkn. Gaṇ. 6, 1. *eine Zeit lang* Kathâs. 32,19. 37,97.

यावत्कृतम् (यावत् + कृ°) adv. *wie* (rel.) *oft* Kaçç. 80.

यावत्तरम् (यावत् + 1. तरप्) adv. *nach Vermögen* (= यावद्बलम्, यथाशक्ति) Taitt. Âr. 2,15,3. यावत्तरम् accentuirt, also nicht als comp. gefasst.

यावत्पूत (यावत् + त्पूत) adv. *wie weit mit Fett getränkt* TS. 6,1,8,4.

यावत्प्रमाण (यावत् + प्र°) adj. *wie* (rel.) *gross:* °विस्तार Bhâg. P. 5,20,2.

यावत्सत्त्वम् (यावत् + सत्त्व) adv. *so weit der Verstand reicht, nach bestem Verstande* Bhâg. P. 6,1,62. सत्त्व = धैर्य Comm.

यावत्सम्बन्धु (यावत् + स°) adv. *wie weit die Verwandtschaft reicht, mit Inbegriff aller Verwandten* RV. 10,4,37.

यावत्स्वम् (यावत् + स्व) adv. *so viele man besitzt* Kâṭy. Ça. 4,2,28.

यावदङ्गीन (von यावत् + अङ्ग) adj. *ein wie* (rel.) *grosses Glied bildend* AV. 6,72,3.

यावदत्तम् (यावत् + दत्त) adv. *bis zum Ende* Bhâg. P. 8,14,6. यावदत्ताय dass. Gobhilagṛ. 2,54. fg.

यावदभीक्ष्णम् (यावत् + अ°) adv. *für die Dauer eines Augenblicks* Nir. 2,25.

यावदमत्रम् (यावत् + 2. अमत्र) adv. *den Krügen entsprechend, in der Anzahl, als Krüge da sind,* P. 2,1,8, Sch.

यावदर्थ (यावत् + अर्थ) adj. 1) *so viel wie nöthig, dem Bedarf entsprechend* M. 2,51. 182. Bhâg. P. 5,3,2. °परिग्रह 3,28,4. °प्रतिग्रह 4,19, 17. यावदर्थम् adv. Spr. 220. Bhâg. P. 4,26,6. 7,12,6. 13. 14,8. यावदर्थकृत 12,9. — 2) *nicht mehr als nöthig an Etwas* (loc.) *hängend* Bhâg. P. 2,2,3.

यावदर्ध (यावत् + 2. अर्ध) m. *der wievielte* (rel.) *Tag* Çat. Br. 3,3,4, 19. Kâṭy. Ça. 7,9,20. Liṭ. 1,3,1.

यावदाभूतसंप्लवम् (यावत् - 2. आ + भूत - संप्लव) adv. *bis zum Untergange der Geschöpfe, bis zum Ende der Welt* Spr. 2199. 2854. — Vgl. भूतसंप्लव und यावदाहूतसंप्लवम्.

यावदायुषम् (यावत् + 2. आयुस्) adv. *so lange die Lebenszeit währt, das ganze Leben hindurch, für's ganze Leben* Kaṭh. Up. 5,9,2. 8,15.

यावदायुस् (wie eben) adv. dass. Vikr. 87,2. Râǵa-Tar. 2,68. Spr. 2888.

यावदायुःप्रमाण adj. *lebenslänglich* 4880.

यावदाहूतसंप्लवम् Jîv. 3,188 und Bṛhannâradîyap. im Âhnikat. fehlerhaft für यावदाभूतसंप्लवम्. = प्राकृतप्रलयपर्यन्तम् Mit., भकारस्य ककारप्रक्रान्तिः Raghun.

यावदित्थम् (यावत् + इ°) adv. *so viel wie nöthig* Spr. 220, v. l.

यावदीप्सितम् (यावत् + ईप्सित) adv. *so viel Einem beliebt* R. Gorr. 2,100,49.

यावदुक्त (यावत् + उक्त) adj. *so viel wie angegeben ist* Kâṭy. Ça. 9, 13,23. 10,6,12. °क्रम् adv. 15,9,33.

यावदुत्तमम् (यावत् + उत्तम) adv. *bis zur äussersten Grenze:* सत्वाग्नि या° MBh. 3,4509.

यावद्गमम् (यावत् + गम) adv. *so schnell man gehen kann:* पराद्रवत् *so v. a. so schnell als möglich* Bhâg. P. 1,7,16.

यावद्बलम् (यावत् + बल) adv. *nach Kräften* Comm. zu Taitt. Âr. 2,15,3.

यावद्भाषित (यावत् + भा°) adj. *so viel wie gesprochen worden ist:* °संदेशकार Sîm. D. 88.

यावद्राज्यम् (यावत् + राज्य) adv. *für die ganze Regierungszeit* Râǵa-Tar. 3,256.

यावद्वेदम् (यावत् + वे° absol.) adv. *so viel man bekommt* P. 3,4,30.

यावद्व्याप्ति (यावत् + व्या°) adv. *wie weit Etwas reicht* Nir. 3,15.

1. यौवन् (von 1. या) nom. ag. *Reisiger* oder *Angreifer* (vgl. यातृ):

न यं यावा तरति यातुमावान् RV. 7,1,5. *gehend, fahrend* am Ende eines comp.: s. बहणा°, बय°, एक°, एव°, देव°, पुरो°, पूर्व°, प्रातर्यावन्, शुभं°, प्रुध°, म°, मायं°.

2. यावन् in सणा° nach Sis. von 3. यु; s. daselbst.

3. यावन् so v. a. 2. यव in सयावन् TS. 5,6,4,1.

1. यावन (von 1. यवन) 1) adj. *im Lande der Javana geboren* Pañcatantra. 20,a,3.37,a,1. — 2) m. *Weihrauch* AK. 2,6,3,30. H. 848. Sch.

2. यावन (vom caus. von 2. यु) n. *das Verbinden, Vermengen:* घृ° (= घृतमिश्रण Comm.) RV. Pair. 11,12.

3. यावन (vom caus. von 3. यु) n. *das Entfernen:* भयानाम् Nir. 4,21. — Vgl. शयव°.

यावनाल 1) m. = यवनाल Rigan. im ÇKDa. Schol. zu Kir. Ça. 422, 11. Vgl. कषाय°, तुवर°, धवल°. — 2) f. ई *aus Javanâla gewonnener Zucker* Rigan. im ÇKDa.

यावनालनिभ m. *eine dem Javanâla ähnliche* (निभ) *Rohrart* Rigan. im ÇKDa. u. यावनालशर.

यावनालशर m. = यावनालनिभ Rigan. im ÇKDa.

यावत् (von 1. या) 1) adj. *wie* (rel.) *gross, wie weit reichend, wie lange dauernd, wie viel* P. 5,2,39. 6,3,91. Vop. 7,91. यावत्तरो मघवन्यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः RV. 1,33,12. 7,91,1. यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय 32,15. 79,4. यावदिदं भुवनं विश्वमस्ति 1,108,2. AV. 3,22,4. यावतो यावीयस्वी वरिम्णा 4,6,2. 6,72,2. यावतः सपत्नानाम् 7,13,2. 12,1,33. 3, 36. 14,2,49. यावतः — तेभ्यः सर्वेभ्यः Ait. Br. 1,5. यावदलोकितं तावत्परिवासय 2,14. 6,9. Çat. Br. 1,2,5,13. 12,2,2,11. 14,1,4,13. Kir. Ça. 3,2,3. Liṭ. 1,8,2. Âçv. Gṛhj. 2,4,6. 4,1,9. 6,4. यावान्यज्ञास्मि Bhag. 18,55. Bhâg. P. 2,9,31. यावती सेनवेहद्धिस्तावतीं दातुमर्हति M. 8,155. 194. यावत्त्व विषयं राजन्यावांस्तव वशे स्थितः MBh. 14,889. Bhâg. P. 3,23,43. 7,14,38. यावान्पतिगणः R. 3,55,49. 4,19,3. यावानर्थः Bhag. 2,46. यावच्छक्यं विनश्येत् Jâṭ. 2,161. यावच्च कुर्याद्न्यो ऽस्य कुर्याद्गुणे ततः Spr. 3845. विच्छेणार्थेन यावता Bhâg. P. 5,1,64. तावन्मात्रं प्रकुर्वीत यावता प्राणधारणम् Harîv. 1204. प्रयोक्तनं यस्य तु यावता स्यात् Verz. d. Oxf. H. 193,a,3. काले यावति Mânn. P. 43,41. यावता तृणेन Râga-Tar. 5,110. यात्मावगमो ऽत्र यावान् Bhâg. P. 1,18,23. यावत्तः *quot* M. 3,124. 132. 176. 178. 4,168. 5,38. MBh. 2,602. R. Gorr. 2,35,7. Spr. 2480. 4883. Nâgân. 12,15. Bhâg. P. 3,30,35. 4,25,12. यावानेव पुरुषः *aus wie vielen Theilen bestehend, wie vielfach* Ait. Br. 6,29. TS. 5,1,6, 1. TBr. 1,1,5,3. Bhâg. P. 2,8,8. RV. Pair. 18,21. यावत्तावर्थं प्रथमं संमेयुः *wie viele Jahre zählend* AV. 12,3,1. यावज्जननं तावन्मरणम् *wie oft sich wiederholend* Spr. 4876. सा च मे यावती त्यक्ता विशालनयनेः सुता *qualis* Mânn. P. 127,29. आस्तां यावत् Sarvad. P. 4,14,a. यथिकारः प्रस्तावः प्राप्तम् इति यावत् *so viel als* Sarvadarçanas. 133,10. 180,10. Schol. zu Gaim. 1,1,5. 2,16. प्रविश्य विज्ञातं यावच्चर्म दारु च *nichts als Haut und Holz* Pañcat. ed. orn. I, 89. यावत्तावत् *wie viel immer, Bez. einer unbestimmten Zahl* Colebr. Alg. 139. 228. यावत्तः कियत्तः *wie viele immer:* यावतीः कियतीश्च प्रजा वाचं वदन्ति तासां सर्वासां सूयते TBr. 2,7,8,1. यावत्त् am Anfange eines comp.: यावद्दत्तर्य Çat. Br. 1,2,4,22. यावद्कीर्तिन् Liṭ. 3,2,6. Kumâr. 26,9. — 2) यावत् indecl. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,36. fgg. साकल्ये कात्स्न्यें ऽवधौ माने ऽवधारणे AK. 3,4,22(23),6. H. an. 7,23. कात्स्न्यें ऽवधारणे ॥ प्रशंसायां परिच्छेदे मानाधिकारसंभवे । पक्षान्तरे च Med. Dhv. 31. fg. *a) wie weit, wie sehr, wie viel, in welcher Menge, — Anzahl:* यावद्द्यावापृथिवी तावदित्तत् RV. 10,114,8. AV. 3,22,3. 5,22,5. यावदस्य वशः स्यात् Çat. Br. 1,3,3,14. 5,1,5,13. Ait. Br. 1,13. यावदेवायं विष्णुस्त्रिर्विक्रमेत तावदस्माकम् 6,15. TBr. 2,1,11,1. यावत्पुरुष ऊर्ध्वबाहुस्तावदमिश्रितः Kauç. 83. यावन्नामो गतम् Kaiṇ. Up. 7,1,5. यावद्रूपं गतं त्वया MBh. 3, 16767. यावत्प्रपश्यति 13,1287. परिलिपसि दण्डेन यावत्तावद्वाप्स्यसि R. 2,32,25. R. Gorr. 2,54,31. यावत्सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति so v. a. von *da, wo die Sonne aufgeht, bis dahin, wo sie untergeht,* Bhâg. P. 9,6,37. 5,16,1. 24,5. 8,21,30. ग्रीव शरदो यावदिच्छसि Kaṭhop. 1,23. यावदिच्छसि रत्नानि किरणं वा तावद्दामि ते सर्वम् R. 1,53,21. R. Gorr. 2,32,18. 41. यावत्स्वलोमसंख्यास्ति Spr. 2481. यो यावन्निष्क्रयोतार्थम् *in welchem Betrage* M. 8,59. *wie oft* Bhag. 13,26. पूर्वं यावत्समुद्यतः *in welchem Maasse* Râga-Tar. 3,453. यावद्दत्तः पचति शोभनम् als Ausruf P. 8,1,37, Sch. Kâç. zu 36. — *b) wie lange, während:* यावद्वै तुष्णका भवाम: Çat. Br. 1,8,1,3. यावत्सूर्यो यसंदिवि AV. 6,75,3. 5,19,4. TBr. 3,3, 9,5. यावद्यस्मिं क्षरीरे प्राणो वसति Kaṭh. Up. 3,2. M. 3,237. 4,111. R. 1,51,8. 2,42,3. 3,73,4. Spr. 1024. 4877. 4879. Râga-Tar. 5,36. यावच्चयस्ते ब्रीवेयुः M. 2,235. Bhâg. P. 1,13,47. यावच्च मे धरिष्यन्ति प्राणाः MBh. 3,2232. 16833. R. 1,2,39. 60,28. यावन्तु निर्यतस्तस्य स्त्रीवृन्दमदृश्यत 2,42,1. Kathâs. 3,63. 4,54. Râga-Tar. 5,252. 340. यावदेव तु संमुग्धाः R. 2,16,21. यावदध्ययनम् M. 2,241. यावल्लोचनगोचरा Spr. 1028. 2482. 2483. 4878. 4882. यावदिन्द्राशतुर्दश (so ist zu lesen) Mânn. P. 100, 44. यावदतिणायनमरूणि वर्धते यावदुदगयनं रात्रयः Bhâg. P. 5,21,6. 7,12,10. — *c) mittlerweile, inzwischen;* mit der 1ten Person praes. als Ankündigung eines Vorhabens Bhag. 1,22. MBh. 3,12213. 4,1641. 5, 7016. निगृह्य मां — बलं दर्पं च यावद्धे नाशयामि दुरात्मनः so v. a. *ich gedenke zu Nichte zu machen* R. Gorr. 1,35,16. 5,9,30. Çik. 8,10. 16. 22. 9,4. 31,6. 32,13. 33,1. 59,5. 61,1. Vikr. 3,13. 38,5. 78,11. Kathâs. 5,84. 33,36. 124,98. potent. st. praes. Çik. 18,23 (v. l. praes.). 104,22, v. l. Bei der 3ten Person steht der imper.: धनुर्गृह्णीष्व कृपान् — वार्क्षेयो यावदेतं मे पतमानपतामिह MBh. 3,2811. Kathâs. 39,61. — *d) sobald als, im Augenblick als;* mit praes. Çik. 139. Manu. 103. Kathâs. 18,362. 39,119. 53,126. Pañcat. 48,24. 173,18. 1,123. Hit. 12,1. 43,21. 83,9. Vet. in LA. (III) 5,15. 18,4. 20,8. 28,8. Çuk. ebend. 36,4. mit potent. Spr. 2908. mit perf. Kathâs. 18,149. 172. 182. mit aor. 13,105. ohne verbum finitum: यावत्कंचिद्गता तावन्मूढा सा पुरोधसा 4,36. 52,46. Pañcat. 63,1. ज्ञाता नोत्कलिका स्तनौ न लुलितौ u. s. w. सहसा यावच्छठेनामुना । दृष्टेनैव मनो हृतम् — *es war noch keine Sehnsucht da, der Busen wogte noch nicht, als jener Bösewicht, nur erblickt, mir plötzlich schon das Herz entwandte,* Spr. 962. यावत् mit यदा *sobald als:* यावत्तिलाग्रमिदं भस्म गङ्गया लोककान्तया । पतेयं भविता तात स्वर्गमेष्यति वै तदा ॥ R. Gorr. 1,43,20. — *e) bis dass;* mit praes. st. fut. P. 3,3,4. Vop. 25,3. R. 2,32,16. 3,26,4. 49,13. Manu. 35. Çik. 8,13. 101,11. Vikr. 13. Spr. 1358. 4123a. Kathâs. 16,22. 38. 18,107. Pañcat. 76,22. Vet. in LA. (III) 8,3. mit potent.: यावद्भूयेनेतो भूप इच्छाम इति Liṭ. 9,11,2. M. 8,27. 11,233. R. Gorr. 2,8,53. Spr. 4140. Daçak. in Benf. Chr. 195,1. mit

fut.: अनाहारो u. s. w. शये पुरस्ताच्छालायां यावन्मां प्रतियास्यति R. 2,111, 14. Daçak. in Benf. Chr. 181,16. यावदेव नलः क्वचित् । इतो नेता हि MBh. 3,2613. mit aor.: तावच्चेटिकाभिर्विमोहितः । यावत्तृतीये प्रहरे दण्डाधिपतिरागमत् ॥ Kathâs. 4,58. 18,122. mit imperf.: यावत्तत्रागतो ऽभवत् 4,61. mit Ergänzung der copula: उच्छेषणं तु तत्तिष्ठेद्यावद्विप्रा विसर्जिताः M. 3,265. Jâǵń. 2,141. R. 1,64,19. 3,55,19. Varâh. Bṛh. S. 55,25. Kathâs. 7,28. यावत्कालस्य पर्ययः MBh. 1,5729. Spr. 2764. यावच्चन्द्ररोहिणीयोगः Vikr. 38,12. यावज्जीवितसंक्षयः Mârk. P. 110,26. Bhâg. P. 11,24,19. स्थीयतामत्र यावदागमनं मम MBh. 1,2876. R. 2,32, 24. R. Gorr. 2,26,26. 31,13. 5,3,74. Mârk. P. 22,14. यावत्तुरगदर्शनम् R. 1,40,14 (41,15. 17 Gorr.). 49,13 (50,17 Gorr.). यावद्व्रतसमापनम् Bhâg. P. 8,16,45. दक्षिणांश्चापि पाञ्चालान्यावच्चर्मण्वती नदी (चर्मण्वतीं नदीम्?) MBh. 1,5513; vgl. h) β). — f) यावत् mit einer Negation *so lange nicht, bevor, ehe, bis dass;* mit praes.: शूद्रेण हि समस्तावद्यावद्वेदे न जायते M. 2,172. 5,126. 11,153. भवतो ऽश्रमाय गच्छाव यावन्न पिता ममैति MBh. 3,10076. 5,7456. न हन्मि (निहन्मि ed. Calc.) फाल्गुनं यावत्तावत्पादौ न धावये 8,304. 13,4558. R. 1,65,15. R. Gorr. 1,41,29. 67, 8. 3,1,28. 30. 68,37. Kumâras. 4,20. Vikr. 61,10. Çâk. 139, v. l. Spr. 533. 1026. fg. 1030. 1861. 1916. 2485. 2601. 3168. Kathâs. 15,42. 52, 206. 53,4. 6. Mârk. P. 109,37. Pańḱat. 21,3. 61,3. Hit. 15,10. 43,12. Vet. in LA. (III) 21,15. पुराधर्मो वर्तते नेह यावत्तावद्गच्छामः सुरलोकं चिराय MBh. 13,4556. mit potent. AV. 12,4,27. Spr. 2479. Bhâg. P. 3, 18,25. तावत्स्यादशुचिर्विप्रो यावत्तत्स्यादनिर्दशम् M. 5,79. mit fut. Ḱhând. Up. 6,14,2. MBh. 3,2623. 13,4558. R. 2,99,5. fgg. R. Gorr. 2,16,19. mit imperf. Râǵa-Tar. 4,579. ohne verbum finitum: यावन्न कृतमूलास्ते — तावत्प्रहरणीयास्ते MBh. 1,7426. यावत्परधनैषिणः ॥ न दूरे ते गताः 7763. 3,15340. R. 2,99,8. Kathâs. 10,119. यावन्न शून्या दिशः Spr. 634. 2482. यावद्भयमनागतम् 1029. 2484. यावन्न bedeutet auch *falls nicht:* यावत्त्वं नास्वादयसि प्रथमं भूपते रक्तं तावन्मम देवगुरुकृतः शपथः स्यात् Pańḱat. 62,1. *ob nicht:* जिज्ञासनाय रक्तं ते मया शाकरसीकृतम् । यावन्नाद्याप्यहंकारः परित्यक्तस्त्वया मुने ॥ Kathâs. 5,136. — g) न परम् und न केवलम् — यावत् so v. a. *nicht nur — sondern sogar:* प्रजानां न परं चक्रे यः पितेवानुपालनम् । यावद्गुरुरिव ज्ञानमपि स्वयमादिशत् ॥ Kathâs. 27,14. ततश्चिकित्स्यमानः सन्व्रणस्तस्य दिने दिने । न परं न रुरोहैव यावन्नाडीत्वमाययौ 28,160. 29,123. fg. त्यक्त्वास्मान्किं त्वया नीतं न परं बत मानसम् । यावच्छरीरम् (von Brockhaus als comp. gefasst) अप्येतां निःस्नेहपरुषां दशाम् ॥ 86,39. न केवलम् । प्रबुद्धो नैतदानङ्गप्रभां यावत्स्वमप्यसि ॥ 52,217. 53,123. Pańḱat. 31,17. — h) praep. α) *während,* mit acc.: सप्ताष्टदिवसं यावत् R. 1,10,20 (21 Gorr., सप्ताष्टदिवसान्राजा ed. Bomb.). वर्षं यावत् *ein Jahr lang* Spr. 1441. सकलां रात्रिं यावत् Pańḱat. 117,3. मासमेकं यावत् Hit. 42,2. यावद्वर्षाणि द्वादश Suçr. 1,167,14. — β) *bis* (räumlich und zeitlich), mit acc.: धरणीं बिभिदुः क्रुद्धाः सर्वे यावद्रसातलम् R. Gorr. 1,41,23. यावदग्रनखं लिप्ता चन्दनेन सुगन्धिना 2, 8,48 (9,43 Schl.). रविरद्यानुयातव्यो यावदस्तमथोदयम् 4,60,8. स्वगृहं यावत् Kathâs. 54,47. सर्पकोटरं यावत् Pańḱat. 98,22. Hit. 111,18. नदीं यावच्छरावतीम् H. 932. दक्षिणां वेदिश्रोणिं यावत् Schol. zu Kâtj. Çr. 5,4,9. पादादुरो यावत् Varâh. Bṛh. S. 58,46. समयः परिपाल्यो नो यावद्वर्षं त्रयोदशम् MBh. 3,15311. यावच्छुक्लत्रयोदशीम् Bhâg. P. 8,16,48. यावत्स्तोत्रसमाप्तिम् Schol. zu Kâtj. Çr. 9,7,4. अवभृथकालं यावत् 6,8, 3. सूर्योदयं यावत् R. 2,65,11. परिणयनं यावत् Dâj. 166,14. आगमनं यावत् Kathâs. 93,71. संध्याकालं यावत् Pańḱat. 87,20. जयपराजयं यावत् Dhûrtas. 92,3. Statt des acc. der nom. mit folgendem इति: प्रकृत्या इत्यधिकारो ऽत्र इति यावत् Schol. zu P. 6,2,137. 3,3,19. Siddh. K. zu 4,1,82. अत ऊर्ध्वमीषत्परिहाणिर्यावत्सप्ततिरिति *allmähliche Abnahme bis man siebenzig zählt* Suçr. 1,129,6. त्रिंशदिति यावत् Varâh. Bṛh. S. 50,19. fg. पञ्च यावदिति 53,10. अद्य यावत् *bis heute* Hit. 20,19. ततः प्रभृति सर्गांश्च यावद्विंशत्यगायताम् *bis zwanzig, bis zum zwanzigsten* (adv. comp.) R. 7,94,16; vgl. oben u. e) am Ende. यावदा mit abl. dass.: यावदा स्थैर्यसंभवात् Suçr. 1,18,10. यावत् allein mit abl.: यावद्गोस्तनपानाच्च यावच्छायोपसेवनात् । जन्तवः कर्मणा वृत्तिमाप्नुवन्ति युधिष्ठिर ॥ MBh. 3,1205. — 3) यावता (instr.) *wie weit, wie lange:* यावता (= यदा Comm.) चित्रकूटस्य नरः शृङ्गाण्यवेक्षते R. 2,54,29. यावता जीवेत Bhâg. P. 1,2,10. 5,22,5. 6. *bis dass:* यावता दश पूर्येरन् Lâṭj. 9,2,4. mit einer Negation *so lange nicht, bevor:* नागमद्यावता गुरुः Bhâg. P. 9,13,3. यावता नागतो गतः 5,23. तावतैव कुलवृद्धिर्यावता पाणिग्रहणं न भविष्यति Z. d. d. m. G. 14,570,19. यावता *sobald als, in dem Augenblick als:* यावता राजा द्वारमुद्घाट्य पश्यति तावता u. s. w. 571,23. यावता सर्वे ऽपि तं लात्वा कियन्तं मार्गं गतास्तावत् Verz. d. Oxf. H. 156,a,27. — 4) यावति (loc.) *wie weit* Çat. Br. 8,6,2,8. *wie lange:* यावति तत्र सूर्यो गच्छेत् TBr. 1,5,2,1. — Vgl. तावत्.

यावन्मात्र (यावत् + मात्रा) adj. (f. आ) 1) *welches Maass habend, wie gross, wie weit sich erstreckend:* यावन्मात्रमुल्बणं तावद्भूयादृचं वार्धर्चं वा u. s. w. Çâṅkh. Br. 26,5 bei Müller, SL. 406. पुरे तावत्तमेवास्य तनोति रविरातपम् । दीर्घिकाकमलोन्मेषे यावन्मात्रेण साध्यते ॥ Kumâras. 2,33. — 2) *mässig, unbedeutend, winzig;* °मात्रम् adv. *ein wenig, einigermaassen:* यावन्मात्रेण च मया सहायेन MBh. 7,7274. यावन्मात्रापि सत्क्रिया Spr. 3423. यावन्मात्रमिवैवावद्येत् Çat. Br. 1,7,2,9. तस्य देवा यावन्मात्रमिव गन्धस्यापजघ्नुः 4,1,2,8. यावन्मात्र इवान्नस्य रसः सर्वमन्नमवति 10,3,5,12. नक्तं यावन्मात्रमिवैवापक्रम्य बिभेति Ait. Br. 4,5. यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्यो३ वसते ṚV. 10,88,19.

यावयत्सख (यावयत्, partic. praes. vom caus. von 1. यु, + सखि) m. *ein abwendender* d. h. *vertheidigender, schützender Gefährte:* ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः ṚV. 10,26,5.

यावयद्द्वेषस् (यावयत् + द्वे°) adj. *Feinde fernhaltend* ṚV. 1,113,13. 4,52,4.

यावशूक m. = यवक्षार Ratnam. im ÇKDr. Suçr. 2,7,12. Çârṅg. Saṁh. 2,2,63. °ज Suçr. 1,227,13. 2,127,7. Vâgbh. 6,151.

यावस (von यवस) Uṇâdis. 3,119. m. = तृणसंतति Uǵǵval. — यावसानि Hit. III,53 unnöthige Aenderung Lassen's; vgl. Spr. 5028.

यावास und यावास adj. von यवास (विकारे, अवयवे) gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141.

याव्य partic. fut. pass. von यु P. 3,1,126. Vop. 26,7 (von यु, यौति). = याप्य *unbedeutend* H. 1442, Sch.

यौशु n. nach Sâj. *Umarmung, coitus;* nach den Zusammensetzungen eher *die beim coitus stattfindende Ergiessung* (auch des Weibes): ददाति महां यादुरी याशूनां भोज्या शता ṚV. 1,126,6. — Vgl. अ°, बुद्बुद°,

मु°. Könnte zu यस् gehören.

यशोधरेण (von यशोधरा) m. metron. des Râhula Taik. 1,1,12, wo fälschlich यशो° gedruckt ist; ÇKDa. und Wilson haben die richtige Form.

यशोभद्र (von यशोभद्र) m. Bez. *des 4ten Tages im* Karmamâsa Ind. St. 10, 296.

यष्टीक (von यष्टि) adj. *mit einem Stocke —, mit einer Keule bewaffnet* P. 4,4,59. Vop. 7,15. AK. 2,8,2,36. H. 771. Râǵa-Tar. 6,203. 215. 317. 337. f. ई Pat. zu P. 4,1,15.

यास 1) m. = पवास *Alhagi Maurorum Tournef.* AK. 2,4,2,10. Ratnam. 119. Vgl. धन्व°. — 2) f. या *eine Drosselart, Turdus Salica* Çabdam. im ÇKDa.

यास्क (von यस्क) m. patron. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. N. pr. eines Lehrers, Verfassers des Nirukta, Çat. Br. 14,5,2,21.7,2,27. ṚV. Pair. 17,25. MBh. 12,13230. Ind. St. 1,17. 103. 3, 396. 8,243. Verz. d. Oxf. H. 113,b,3. 162,b,21. pl. यास्काः Jaska's *Nachkommen* (fehlerhaft für यस्काः nach P. 2,4,63) Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,26. Sâṁk. K. 183, b, s. f. यास्की und pl. यास्क्याः P. 2,4,63, Sch. यास्काः *die Schüler Jaska's* ebend.

यास्कायनि m. patron. von यास्क P. 4,1,91, Sch.

यास्कायनीय m. pl. *die Schüler* Jâskâjani's ebend.

यास्कीय m. pl. desgl. ebend.

यिस्य m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,274.

यियक्षु (vom desid. von 1. यज्) adj. *zu opfern im Begriff stehend* MBh. 2,533. 7,3172. 12,4493. 13,3326. Raghu. 13,3.

यियविषु (vom desid. von 2. यु) adj. *Jmd* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *zu bedecken —, zu überschütten im Begriff stehend* Bhatt. 9,33.

यियासु (vom desid. von 1. या) adj. *zu gehen —, aufzubrechen —, in's Feld zu ziehen im Begriff stehend* MBh. 1,844. 7,697. 8,3286. Kâm. Nîtis. 11,21. Mârk. P. 99,11. Varâh. Bṛh. S. 88,22. 93,49. Jogajâtrâ 1,5. योगयात्राम् Spr. 2310. वितस्तातः Râǵa-Tar. 1,162. यमसादनम् MBh. 1,6276. स्वर्गाद्दीपम् Kathâs. 86,75. तपसे वनम् Mârk. P. 36,4. 109,28. 43. 119,15. 129,19. 21. यमलोकाय MBh. 7,3002. ब्रह्मलोकाय 5985. तक्षणाय Kathâs. 54,148. मिथिलां प्रति R. 1,33,15 (34,13 Gorr.). प्रियां प्रति Kathâs. 71,107. भीष्मम् *auf* Bhîshma *loszugehen beabsichtigend* MBh. 6,3761. हंसैर्दिगानुभिः *im Begriff stehend davonzufliegen* Mṛicch. 76,4. वियासवः प्राणाः Râǵa-Tar. 4,220.

1. यु pronom. Stamm der 2ten Person in den Formen: 1) du. युवम् nom. ṚV. 1,13,6. 93,5. 112,3. 117,13. 119,10. Çat. Br. 1,6,3,13. युवाम् acc. ṚV. 1,109,3. 7,83,1. nom. und acc. in der klassischen Sprache; युवभ्याम् ṚV. 1,108,2. 109,2. 117,25. युवाभ्याम् 109,4. 8,5,3. 26,16 und in der klass. Spr.; युवत् ṚV. 1,109,1. युवाम् 112,2. 117,13. 119,3. 5. 7,72,2. युवयोस् Çat. Br. 1,6,3,13. 18 und in der klass. Spr.; vgl. युवदेवत्य, युवद्रिक्, युवधित, युवय, युवाक, युवादत्त, युवानीत, युवाय, युवायुत, युवावत्त. — 2) pl. यूयम् ṚV. 1,15,3. 86,9. 4,41,5. त्वं मे गुरुः = यूयं मे गुरवः Kâç. zu P. 1,2,59. युष्मान् ṚV. 8,7,6. युष्मास् (falscher) acc. pl. f. VS. 11,47, wofür युष्मान् TS.; युष्माभिस्, युष्मभ्यम् ṚV. 1,88,3. युष्मत् 7,60,10. 95,5. युष्मत्तम् R. 7,8,7. युष्माकम् ṚV. 1,39,2. 110,7. युष्माकमेकः Ârt. Br. 2,6. Çat. Br. 11,5,1,12. öfters mit Elision des Endconsonanten: युष्माहोती ṚV. 7,59,9. युष्माकेकः Çat. Br. 3,2,1,39. 5, 2,2,15. युष्मासु, युष्मे loc. (angeblich nom. P. 7,1,39, Sch.) ṚV. 3,47,5. 57,19.; vgl. युष्मदीय, युष्मयत्, युष्माक, युष्मादत्त, युष्मावीत, युष्मावत्, युष्मेयित. युष्मात; am Anf. eines comp. युष्मत् in der klass. Sprache gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. AK. 3,6,8,46.

2. यु, यौति Dhâtup. 24,22 (मिश्रणे und अमिश्रणे; vgl. 3. यु. P. 7,3, 89, Sch. युनाति, युनोति Dhâtup. 31,9 (बन्धने). erhält den Bindevocal इ Kâr. 1. 9 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Vop. 8,60. युयविव P. 6,4,126, Sch. यविता Vop. 9,11. युता P. 7,2,11, Sch. In der klassischen Sprache haben wir keine Form des verbi finiti angetroffen; in der älteren Sprache erscheinen folgende Formen: यौमि, युवैते, युवासे. युर्वेत्त, युयुवत, युते, युवते 3 pl., युताम् 3. sg., नि.युयोतम्, युर्वत्, युयुवें, युवितां fut.; नि.यूय, partic. युत. 1) *anziehen, anspannen; anbinden, festhalten:* यौत्रैः युते TBr. 3,3,3. 3. युक्ष्व हि त्वं रथवाहसो युवस्व यौष्यो वसो ṚV. 8,26,20. वायो शतं हरीणां युवस्व यौष्यीणाम् 4.48,3. कदा धियो न नियुतो युवासे 8,33,3. वटिशयुतं पिशितम् *befestigt an* Spr. 36. — 2) *an sich ziehen, in Besitz nehmen, in die Gewalt bekommen:* यौषा वा इयं वाग्यद्देनं न युविता *weil sie ihn nicht an sich ziehen — d. h. nicht an sich herankommen lassen will* Çat. Br. 3,2,1,22. स यमो देवानामिन्द्रियं वीर्यमयुवत TS. 2,1,4,3. 2,3,2. 6,6,3,3. यद्वै ज्ञात इदं सर्वमयुवत तस्माज्ज्यविष्ठः Çat. Br. 7,5,2,38. सर्वा: सपत्नानामोषधीर्युते 3,6,1,10. 4,7,2,25. fg. 9,4,2,11. 13,6,1,9. संवत्सरमेव भातृव्यायुवते Kâṭy. 36,2. तं वो यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव *festhalten* AV. 2,2,1. चन्द्रमा युतामर्गतस्य पन्थाम् K. *zwinge ihn auf den Weg der Nimmerwiederkehr* 11,10,16. — 3) *Jmd in die Gewalt geben:* चन्द्रं रयिं चन्द्र चन्द्राभिर्गृणते युवस्व ṚV. 8,6,7. — 4) *verbinden, vermengen:* यूयं यौतेः Nir. 4,24. युत *hinzugefügt* Sâmav. 8,1. *verbunden, vereinigt* Taik. 3,2,1. H. an. 2,188. Med. t. 48. पाणिर्निकुञ्चः प्रसृतस्तौ युतावञ्जलिः AK. 2,6,2,36. H. 396. °ज्ञानु 436. यौतकं युतयोर्दंयम् *ehelich Verbundene* 320. *in Conjunction stehend mit:* रोहिणीयुतः शशी Varâh. Bṛh. S. 24,12. 36. सूर्यः सोम्ययुतो वोक्तितो ऽपि वा 40,13. 42,14. 69,4. रूपकया वानुमत्या वा मासर्क्षाणि युतान्यपि Bṛihaǵ. P. 7,14,22. *verbunden mit, vermehrt um* (d. i. wozu *hinzugefügt worden ist*), *versehen mit, im Besitz stehend von* Sâmav. 1,67. युता मासैर्मधुमुक्तादिभिर्गतैः 48. लक्ष्य° 2,39. 3,23. 9,5. 10,2. Varâh. Bṛh. S. 8,20. 53,6. 10. 13. चतुर्युता विंशतिः *vierundzwanzig* 58,17. 22. 81,32. षट्त्रिंकपञ्चहियुतः शककालस्तस्य राज्यस्य *so v. a. 3526 Jahre vor der Çaka-Aera* 13,3 (= Râǵa-Tar. 1,56). Bṛihasâṁh. 31. दिव्यै रत्नमयैर्वृतैः फलपुष्पप्रदैर्युता (सभा) *versehen mit* MBh. 2,354. 3,2402. तेजसा यशसा लक्ष्म्या स्त्रित्या च परया युता (वैदर्भी) 2410. 12004. कृष्णपुष्टत्रनैर्ऋता (नगरी) R. 1,5,14. Bhatt. 1,7. स्वपत्न्या युतः सर्वैः स दृष्टो वणिक् *so v. a. der Kaufmann mit seiner Frau* Kathâs. 13,176. भातृभ्यां द्वन्द्वयुतः *mit seinen beiden Brüdern und mit Ram.* Bhâg. P. 9,10,32. पयः शकृता युतम् Varâh. Bṛh. S. 50,25. 51,5. गुणैरपैर्युतम् (सलिलम्) 54,122. 56,20. 27. मुदा (könnte auch मुद् + घायुत sein) MBh. 5,6061. 7225. ज्ञायु° M. 6,76. मधु° Suçr. 2,162,13. श्री° R. Einl. राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि 1,1,20. गोयुतानूप 2,49,10. मालां पद्मोत्पलयुताम् *zusammengefügt aus, bestehend aus* 3, 52,26. फलानि घृतकाण्डयुतानि *mit* L.A. (III) 59,4. शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतम् Spr. 2853. AK. 2,6,2,24. Varâh. Bṛh. S. 12,16. 20,6. 30,21. 30. 46,22. 48,21. 53,68. 125. घाज्यघृतक्लिन्न *beschmiert mit* 55,19. स्वे-

दृषुताङ्ग 78,17. भोगयुत = भोगिन् 68,18. त्याग° = त्यागिन् 111. बल° = बलिन् 69,1. 81,2. 12. 13,10. 15,24. 54,106. वाल्युत (यान) 46,60. पर्याणादियुतो वाजी 93,6. वसन्तकायुता देवी दृग्धा *zugleich mit* Kathās. 16,14. 23,224. 123,262. Çiç. in LA. (III) 33,13. नानारत्न° *im Besitz stehend von* Vet. ebend. 1,17. यज्ञो यागादिभिर्युतः *so v. a. der Opfer u. s. w. vollbringt* AK. 2,7,4. (नृणां धर्मम्) वर्णाश्रमाचारयुतम् *in Verbindung stehend mit, betreffend* Bhāg. P. 7,11,2. रागसंदूषणयुतो सीते बुद्धिं निवर्तय R. 3,61,35. — 3) योति = अर्चतिकर्मन् Naigh. 3,14; vgl. oben u. 2) AV. 2,2,1. — Vgl. अयुत, गोयुत.

— caus. पावयति, अयीपवत् P. 7,4,80, Sch.

— desid. यियविषति und युयूषति P. 7,2,49. 4,80, Sch. Vop. 19,8. *an sich ziehen —, festhalten wollen:* युयूषतः सवयसा तदिद्दधुः RV. 1,144,3. *zügeln:* सुधा वाजं न गध्यं युयूषन् 4,16,11. — Vgl. यियविषु.

— desid. vom caus. यियावयिषति P. 7,4,80, Sch.

— intens. योयोति P. 7,3,89, Sch. योयुवति 6,4,87, Sch.

— व्यति *unter einander mengen, vermengen:* अन्योऽन्यं स्म व्यतियुतः (2. du.) शब्दान् शब्देस्तु भीषणान् Bhaṭṭ. 8,6.

— अभि, partic. °युत *enthalten in* (acc.), *eingefasst in:* स्त्रीयोनिमभियुतो गर्भः Nīl. 2,19.

— आ 1) *an sich ziehen, erfassen* RV. 2,37,2. स घा यो अग्निं द्रविणोदा आयुवते 3,27,3. आ स्वमग्निं युवमानः 1,58,2. आ ज्ञाया युवते पतिम् *sieht in ihre Arme* 105,8. आ वृष्णोदेव युवसे स्वर्शः *die Zügel* TBr. 2,7,16,2. वयांसि सवितः पतत्रैरावायुवानानि पतन्ति *indem sie die Flügel anziehen* Çat. Br. 4,1,2,26. आयुवाना इव हि प्रवत्ते 9,4,1,5. पुरुः सर्वैः पाद्भिः सममायुते *das Zugthier zieht mit allen Füssen zugleich an* 13,2,2,6. 11,5,1,5. — 2) *sich einer Sache bemächtigen, einnehmen:* विशस्य यो मनां आयुयुवे RV. 1,138,1. — 3) *Jmd Etwas verschaffen:* रायस्पोषं त्वमस्मभ्यं गवां कृत्तिं वसो आयुवस्व TS. 2,4,5,2. — 4) आयुत am Ende eines comp. *verbunden —, versehen mit:* सिंहशार्दूलमातङ्गचरार्क्षमृगायुत (वन) MBh. 3,2439. 2464. पद्मसौगन्धिकायुत 12041. 14,2348. R. 1,30,5. 53,5. 2,31,2. 55,22. 59,31. 94,22. 96,3. R. Gorr. 2,57,5. 3,79,40. 5,14,42. Bhāg. P. 11,14,41. Ueberall am Ende eines Çloka durch das Metrum bedingt für das einfache युत. — Vgl. आयवन (*Geräth zum Mengen*). — intens. etwa *sich zusammenziehen, sich hineinschmiegen:* आयोयुवानो वृषभस्य नीळे RV. 4,1,11.

— आस्या (mit Flügelschlag) *zustreben auf:* पादाभ्यामेव तच्छिरः शिरो ऽभ्यायसि, पताभ्यासे तच्छिरः शिरो ऽभ्यायुवते Ait. Br. 4,13.

— उदा *aufstören, aufrühren:* चरुं नेतवेव त्रिरुदायुवति Kātj. 2. Gobh. 1,7,7. 4,1,5. 2,11.

— समा, partic. °युत *zusammengebracht, — getrieben* Nīl. 4,24. मालीं पद्मोत्पलसमायुताम् *zusammengefügt —, bestehend aus* MBh. 4,1778. तक्रं व्योषलवणसमायुतम् *verbunden mit* Suçr. 1,179,14. शरीरं श्लेष्मसमायुतम् MBh. 13,7443.

— उद् *in die Höhe ziehen:* उत्पृषणो युवामदे ऽभीवृतेव सारथिः RV. 6,37,6. ऊर्धमुद्यौति (प्रस्तरम्) TS. 2,6,5,5. यदि ते मन उद्युतम् *verrückt* AV. 6,111,2. — Vgl. उद्याव.

— नि 1) *anbinden, festmachen:* रशनया नियुयं RV. 10,70,10. TBr. 3,6,11,2. तनूहमं निर्युतं तस्तभ्वांसम् RV. 1,121,3. नि यद्युवेथे निर्युतः 180,6. 7,91,5. — 2) *Jmd Etwas in die Gewalt geben, verschaffen:* दृषिं नि वाजं मत्यं युवस्व RV. 7,5,9. 40,2. 92,3. भोजानं न्यत्रये पुरोयोधम् 68,5. तस्मै शत्रूनि स्वष्ट्रान्युवति क्रत्वे वृत्रम् 10,42,5. धानेड्यस्य पशूनिर्युवते *er bringt in seine Gewalt* TS. 2,6,2,3. विशो न मुम्रा नि युवे व्रतानाम् RV. 8,19,33. — Vgl. नियव, निर्युत् (u. 1) ist zu setzen: *Verleihung, Gewährung;* 3) die Bed. *Zugthier* ergiebt sich unmittelbar), निर्युत. — intens. *anbinden:* न्योर्यो वर्षणीनो वक्रं वृष्णि न योयुवे RV. 10,93,9.

— परि, partic. °युत *rings umfassend:* योनिः परियुतो भवति Nir. 2,5.

— प्र *umrühren, mengen:* पार्श्वेन वसादेयं प्रयौति TS. 6,3,11,1. auch Çat. Br. 3,8,2,24, wo damit in Verbindung gesetzt ist प्रयुतं हेयं: VS. 6,18; etwa durch *verstört* wiederzugeben. Hierher das adj. प्रयुत् in प्रयुतो न पातारः (irrig betont) *Menger oder Verstörer* (des Soma), *nicht Trinker*, von den Steinen gesagt. प्रयुवतो गच्छति *mengend* Nir. 9,26. युवा प्रयौति कर्माणि *vermengt, stört* 4,19. प्रयुवतीमिव शरमयोमियुम् *verstörend* 10,29. — Vgl. प्रयुत.

— प्रतिप्र s. प्रतिप्रयवण.

— प्रति *anbinden, hemmen:* प्राणानेवास्य प्रतीचः प्रतियौति TS. 3,4,8,3. प्रतियुतो वरुणस्य पाशैः 5,6,2,3.

— वि s. u. 3. यु mit वि.

— प्रवि partic. °युत *vollgestopft:* यमुना प्रयुवती गच्छतीति वा प्रविधुतं (= स्तिमितमिव तरंगैः Durga) गच्छतीति वा Nir. 9,26.

— सम् 1) med. *an sich bringen, in sich aufnehmen; aufzehren:* सं यो वनी युवते भुविदन् RV. 7,4,2. सं यो वनी युवते भस्मना दृता 10,115,2. 191,1. सयो गा वज्रिन्युवसे सामिन्द्रून् 6,47,14. — 2) *Etwas mit Jmd verbinden so v. a. mittheilen:* सं पेदोजो युवते विश्वमाभिः RV. 5,32,10. — 3) *verbinden, vermengen* VS. 1,22. मृदम् Çat. Br. 6,3,1,3. TS. 2,4,9,2. 5,1,9,5. Kāty. Çr. 2,5,14. न च कां च न काञ्चनसमचित्तिं न कपिः शिखिना शिखिनां समयोत् *mit Feuer in Verbindung bringen so v. a. in Flammen setzen* Bhaṭṭ. 10,5. मुदा संयुक्ति कावुत्स्वम् *so v. a. in Freude versetzen* 20,16. संयुत *gebunden:* सत्यपाशेन R. 2,34,30. सप्त रश्मिसंयुतम् Raghu. 3,42. नाव: सुसंयुता: *gut zusammengefügt, — gezimmert* R. Gorr. 2,97,17 (सुसंहता: 89,12 Scm.). असंयुत *nicht zusammengefügt, — zusammengesetzt* Bhāg. P. 3,11,1. संयुत und अ° *verbunden und unverbunden* (Hände) Verz. d. Oxf. H. 86,a,24. fgg. 201,b,30. 31. 36. 202,a,1. 15. एकत्र संयुतौ Vaṇīn. Bṛh. S. 54,76. परस्परं संयुतौ 79,16. किमस्मान्संयुतदोषान्तरेण लिखथ (v. l. संभृत°) *gehäuft, allerhand* Çiç. 69,15. मधुना संयुतं पर्वम् *verbunden mit* AV. 6,30,1. Gobh. 4,7,21. सप्तेन Çāṅkh. Śrāut. 1,3,10. लिङ्गदेहेन Bālar. 16. षष्टिः षष्टिशता संयुता *sechsundsechzig* Rājat. 1,54. कामो धर्मो वार्थेन संयुतः Bhāg. P. 4,8,64. रसेनाक्षेण पेयेन लेखाधोय्येण संयुतम् । अन्नानां निचयं सर्वं सृजास्व *bestehend aus* R. 1,32,24. पावकं (पावकं die neuere Ausg.) च बलिं कुर्याद्दधिना (दध्ना च die neuere Ausg.) सह संयुतम् Harīv. 7855. श्यामे चाण्डालसंयुते Kātj. 141. देशे पाण्डवसंयुते MBh. 4,938. Spr. 4118. मृत्युसंयुत TS. 1,5,9,4. तपोनियमसंयुता: (दृष्टौकसः) MBh. 1,1108. 3,7479. शमसंयुता (गौतमी) 13,17. मुखवैवर्ण्य° Spr. 372. प्रतिष्ठा भाग्यसंयुताम् 3965. Raghu. 9,54. वित्त° Vaṇīn. Bṛh. S. 13,21. 21,31. 24,36. 35,20. 68,112. 77,16. 31. 86,74. Kathās. 44,163. Bhāg. P. 1,1,3. 2,1,25. 3,33,17. 4,20,13. विद्याविक्रम° Rājat. 4,530. Brahma-P. in LA. (III) 49,14. अशीतिसंयुतं शतम् *hundert*

und achtzig Vaitân. Bṛh. S. 32,31. 7,13. 53,13. 54,25. Śâṅkh. 1,53. 2, 28. 3,19. प्रयु° in Conjunction stehend mit Vaitân. Bṛh. S. 21,31. 103,6. मध्यमिन्द्राभिष्टयसंयुतम् so v. a. enthaltend R. Gorr. 1,64,19. प्रेष्य° (नामन्) so v. a. Bezug habend auf M. 2,32. मर्त्यं पाङ्क्तयसंयुतम् 7,58. क्रोधमात्मनि संयुतम् (संश्रितम् ed. Schl.) so v. a. gerichtet gegen R. Gorr. 2,9,7. संयुत Siv. 3,33 fehlerhaft für संयत, wie MBh. 3,16781 gelesen wird. — Vgl. संयाव. — desid. s. संयुयूषु.

3. यु, युयौति, angeblich युयुधि neben युयोधि P. 3,4,88, Sch. (वि)यूयोत्, युयोक्वन्, यूयोक्वन्, युयवन्, (वि)युव, युवते, युवत्त, (वि)यवत्त, युयौत्, यवावि, यावीम्, यूयम्, यौषत्, योषति, योषम्, योष्टम्, यौत् 2. sg.; infin. यौतवे, यौत्तवै, यौतोम्. 1) fernhalten, trennen von; bewahren vor (abl.); verwehren, vorenthalten; abwehren (mit acc.): युयोध्यस्मद्दुरोयाम RV. 2,6,4.29,2. युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः 189,1. युयोत नो अनपत्यानि गन्तोः 3,54,15. द्वेषांसि युयुतं सूर्यादधि 6,59,8. 7,34,13. 56,9. 71,1. 2. 8,18,5. 8. युयोतना नो अरंहसः 10. 11. 31,16. 60,13. न तमंहो युयोतनो मर्तं युवत्त रायः 4. यस्य नू चिदर्वता इशो योतोः 6,18,11. विशो कवीनां रयिमा युयोधि 2,33,2. Çat. Br. 6,8,3,9. med.: मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः RV. 2,33,1. माकिर्नेत्रा रातिमतो युयोत 8,60,5. अयोव्यन्याधा द्वेषांसि VS. 28,15; vgl. TBr. 3,6,12, 1. Nir. 9,42. त्रया यूपते 10,39. पुत्र getrennt, = पृथक् H. an. 2,188. = पृथग्भूत (so ist zu lesen st. ऽपृ°) Mân. 1. 48. Kap. 7,2,13. तं वत्सा उप तिष्ठन्त्येकशोर्पाणा युता (könnte auch zu 2. यु gehören) दर्शं AV. 13,4,6. Dieses ist das यु घमिश्रणे Dhâtup. 24,23. — 2) sich fernhalten, getrennt bleiben, — werden: गमत्स शिप्री न स योषत् RV. 8,1,27. 33,9. मा ते युयोम संदृशः AV. 7,68,3. न दत्तान्मा यूपम् 6,123,4. न राष्ट्रात्र तस्थे विशो युवते या ऽयुतं ददाति Çâṅkh. Çr. 15,16,17.

— caus. यर्वयति und यार्वयति (vgl. AV. Paipp. 4,92) trennen, fernhalten u. s. w.: मंस्थावाना पवयसि त्वमेक इत् RV. 8,37,1. 1,5,10. यावया दिद्युमेभ्यः 6,46,9. 12. उत नो ग्रामायवगन्निन्द्रः 8,48,5. 10,102,3. 127, 6. 132,5. ब्रह्महिंयः मूर्णायावपस्व 5,42,9. AV. 1,2,3. 5,22,6. 7,65,1. VS. 3,26. Çat. Br. 13,8,3,13. पार्वयते (सुगुप्तायाम्) Dhâtup. 33,26.

— intens. sich zurückziehen, zurückweichen; klaffen: यौषिद्रुस्यामर्वो यंतेः स्वनाद्योयवोद्दियमा वज्र इन्द्र ते RV. 1,32,10. नदं व योर्तोनां नदं योयुवतीनाम्। पतिं वो वघ्यानां धेनूनामिषुध्यसि aestuantium, recedentium 8,58,2. न यस्याः पारं ददृशे न योयुवत् kein Ende —, keine Lücke habend AV. 19,47,2. — Vgl. पवयावन्.

— अप beseitigen: अप स्वसारं सनुतर्युयोति RV. 1,92,11. 5,87,8. 8, 11,3. 9. 104,6.

— अव abtrennen: अवयुवती Nir. 4,11. — caus. fernhalten Nir. 9,42.

— निस् beseitigen: निर्यवाणो अशस्तीः RV. 4,48,2.

— प्र beseitigen: नकिष्टे कर्मणा नशन्न प्र योषत् RV. 8,31,17. partic. प्रयुत nach den Comm. getrennt, zerstreut; wohl besser abwesend, zerstreut so v. a. achtlos, sorglos (मनसा प्रयुतः). Mân. zu VS. 11,75 erklärt अप्रयावम् durch अप्रमत्तम् und für अप्रयुत RV. 7,100,2 würde achtsam passen. Man vgl. ausserdem प्रयुति, अप्रयुवन् und युक्त mit प्र. धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम् RV. 3,57,1. 58,4. अविं प्रयुतं शयानम् 5,32,2. — Vgl. प्रयोतृ.

— वि 1) sich trennen, — scheiden: न मे इन्द्रेण सख्यं वि योषत् RV. 2,18,5. मा वि यौष्टम् 10,85,42. AV. 3,30,5. 9,5,27. — 2) getrennt werden von, beraubt werden, einer Sache (instr.) verlustig gehen: न स राया शशमानो वि योषत् RV. 4,2,9. यथा स वीरैरशभिर्वि यूयाः (vgl. P. 3, 1, 85, Kâr., Sch.) 7,104,15. 10,61,12. रायस्पोषेण VS. 4,22. गावो वत्सैर्वियुताः RV. 5,30,10. स्वप्नेनेर्विपुतः Vaitân. Bṛh. S. 104,39. मृगाङ्कदत्तवियुत Kathâs. 75,18. कान्तामुखश्रीवियुत privatus Rasn. 16,20. वियुत vermindert, wovon abgezogen worden ist Śâṅkh. 2, 38. nicht in Conjunction stehend mit — (im comp. vorangehend) Vaitân. Bṛh. S. 100, 2. Dieses zu युत und सयुत verbunden im Gegensatz stehende वियुत könnte eben so gut zu 2. यु gezogen werden. — 3) ablösen von, bringen um (instr.): नू चिन्मघा नः सख्या वियोषत् RV. 4,16,21. मा नो वि यौष्टं सख्या 8,75,1. मा नो वि यौः सख्या विद्ध तस्य नः 2,32,2. माकिर्न एना सख्या वि योषुः 10,23,7. In sämmtlichen Stellen könnte सख्या mit den Comm. als acc. pl. gefasst werden, jedoch spricht तस्य 2, 32, 2 für sg. के मे मर्यकं वि यवत्त गोभिः 5,2,5. वि ते युयोत शवसा व्योजसा वि युष्माकाभिर्ऋतिभिः 1,39,8. — 4) scheiden, auseinanderbringen: को दंपती वि यूयोत् RV. 10,93,12. spreiten, zerstreuen: यथा दास्यनुपूर्वं वियूयसे (vgl. P. 6,4,58) 10,131,2. न विधर्ते विपुयात्प्रस्तारम् TS. 2,6,8,4. öffnen: वि कोशं मध्यमं युव RV. 9,108,9.

4. यु (von 1. या) adj. fahrend: न योरुषद्रिरस्यः पृणत्ते रवस्य कञ्चन। यदीमे यामि हूत्यम् RV. 1,74,7. nach Sây. flüchtig oder in's Unglück rennend: स्वैः स एवै रिरिषीष्ट पुर्वनिः 8,18,13, wo wir हुपुर्वनिः vermuthen nach 14 und 15. Etwa so v. a. Zugthier: हा यू Çat. Br. 3,7,4,10 entsprechend dem अस्थूरि.

युक्त 1) partic. adj. s. u. 1. युज्. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Raivata Harîv. 433. eines der 7 Weisen unter Manu Bhautja 492. — 3) f. आ eine best. Pflanze, vulgo एलानी Ratnam. im ÇKDa.; vgl. युक्तरसा. — 4) n. a) Gespann Çat. Br. 6,7,4,8. 12,4,4,2. — b) a measure of four cubits Wilson nach Med.; fehlerhaft für पुत्र.

युक्तकारिन् (युक्त + का°) adj. Angemessenes thuend, auf passende Weise zu Werke gehend Kir. Nîtis. 4,21. Nalân. 12,14.

युक्तकृत् adj. dass. Bâlar. P. 3,12,51.

युक्तयावन् (युक्त + या°) adj. der die Soma-Steine zur Hand genommen —, in Thätigkeit gesetzt hat RV. 2,12,6. 3,4,9. 5,37,2. AV. 9, 6, 27. TS. 5,3,6,1.

युक्तत्व (von युक्त) n. 1) das Verwendetsein: पात्राणाम् Kâty Çr. 25,13, 45. das Beschäftigtsein 4,9,9. 12,1,9. — 2) Angemessenheit: य° Vedântas. (Allah.) No. 103.

युक्तदण्ड (युक्त + द°) adj. Strafe anwendend; gerecht strafend R. 3,70, 13. Kir. Nîtis. 14,12. 16. Spr. 474. Davon nom. abstr. °ता Rasn. 4,8.

युक्तमनस् (युक्त + म°) adj. angespannten Geistes, aufmerksam Çat. Br. 11,5,8,1.

युक्तरथ (युक्त + रथ) 1) m. Bez. eines reinigenden Klystiers Suçr. 2, 198,4. seine Zusammensetzung 227,16. angeblich so genannt, weil es noch zulässig ist, wenn der Wagen schon bespannt oder das Reitthier gesattelt ist 228,20. — 2) n. Bez. eines Wundertrankes Suçr. 2,162,16. 18. 163,3.

युक्तरसा (युक्त + रस) f. eine best. Pflanze, vulgo एलानी AK. 2,4,8, 8; vgl. युक्ता.

युक्तरूप (युक्त + रूप) adj. *idoneus, geeignet, angemessen, entsprechend, passend;* mit loc. und gen. MBh. 2,2001. 3,15700. 5,909. 6,2563. 5761. Harıv. 15717. R. 5,36,2. Çik. 12. 49. 55,2. Comm. zu ṚV. Prāt. 4,18. ग्र° MBh. 4,281. Kumāras. 5,69. युक्तरूपम् adv. MBh. 3,4026.

युक्तवत् adj. *das Zeitwort* युज् *enthaltend* Ait. Br. 4,29. Çat. Br. 7,5,2,32.

युक्तसेन (युक्त + सेना) adj. *dessen Heer zum Ausmarsch bereit ist* Suçr. 1,122,3. Davon adj. °सेनीय *über einen solchen handelnd* 2.

युक्तायन् (युक्त + घ्न°) n. *a sort of wooden spade or shovel* Wilson nach Çabdārthak.

युक्तारोहिन् (युक्त + घा°) adj. P. 6,2,81.

युक्तार्थ (युक्त + घर्थ) adj. *sinnreich, sinnvoll, vernünftig:* वचन R. Gorr. 2,86,21. 5,81,2. °योग 2,78,18.

युक्ताश्व (युक्त + घश्व) adj. *geschirrte Rosse habend:* प्र वो रथं युक्ताश्वं भरध्वम् so v. a. *in geladenem Wagen* ṚV. 5,41,5.

युक्ति (von 1. युज्) f. 1) *das Einspannen, Anwerkseltzen* (Gegens. वियुक्ति) Ait. Br. 6,23. Pañcav. Br. 11,1,6. युक्तिं कर् mit loc. eines nom. act. *Anstalten treffen* R. 6,82,27. ध्यानयुक्तिं समाधिताः = ध्यानं समा° Verz. d. Oxf. H. 52, *b*, 1. *Anwendung, Gebrauch, Praxis* Suçr. 1, 26,6. 131,20. एवं मन्त्रो ऽर्थदो ऽप्येकः किं पुनर्युक्तिसंयुतः Kathās. 17,122. fg. 9,81. 17,121. सर्वौषधियुक्तिज्ञ 41,11. 33,82. fg. 90. fg. *Mittel,* auch *Zaubermittel, ein fein ausgedachtes Mittel, Kunstgriff, Kniff* Kuvalay. 150, *a.* अत्यत्तचञ्चलस्येह पारतन्त्र्य निबन्धने। कामं विद्यायते युक्तिर्न स्त्रीचित्तस्य का च न ॥ Spr. 3416. देकात्तरावेशे Kathās. 45,79. 31,50. Rāja-Tar. 3,68. युक्तिं हीयात्तराक्रान्ये तणमत्तव्यचित्तयत् 80. तत्स मृद्भुतो देशान्निर्व्यास्येताचिराद्यया। तां पुत्र चित्तयेर्युक्तिं त्वम् Kathās. 39,56. तेनोपदिष्टया युक्त्या — स चकारात्मनः सद्यो रूपस्य परिवर्तनम् 12,50. युक्तिबलात् 12,59. 31,93. 96,49. 16,1. 29,149. 171. 30,130. 40,47. 43, 141. 57,140. 65,192. 108,170. युक्तिं कर् *ein Mittel erfinden, eine List anwenden* 15,83. 18,242. 56,363. 60,98. 124,39 (wo wohl कान् st. किन् zu lesen ist). तथापि तावद्युक्तिं ते करिष्ये *ein Mittel angeben* 72,333. 123,44. °युक्त्या *vermittelst, vermöge* 30,127. 37,241. 43,252. 45,290. Pañcat. 183,22. कालयुक्त्या खारिर्मित्रं ज्ञायते न च सर्वदा Kathās. 33,129. °युक्तितम् dass. 45,37. 60,127. °युक्तिभिः dass. 19,81. Rāja-Tar. 3,165. im comp. ohne Flexionszeichen: पञ्चयुक्तिपरिधात्तो Kathās. 43,34. युक्त्या *auf eine feine, schlaue, versteckte Weise, durch —, mit List, vermittelst einer List, unter irgend einem Vorwande* Spr. 1189. Kathās. 4,120. 5,64. 7,67. 10,51. 105. 142. 11,10. 12,3. 13, 85. 94. 15,119. 18,160. 236. 19,63. 21,52. 24,86. 25,204. 27,38. 28, 124. 30,99. 118. 32,24. 33. 161. 188. 33,112. 175. 34,185. 209. 38, 129. 39,32. 39. 232. 40,67. 107. 49,31. 64. 50,18. 52,357. 53,25. 56, 257. 313. 338. 400. 60,66. 64,103. 65,228. 82,30. 86,20. Rāja-Tar. 4, 361. 293. 5,90. 6,86. 139. Daçak. 51 in Hall. Anth. 221. युक्तितम् dass. Kathās. 5,109. 33,214. 66,44. युक्तिभिस् dass. 38,37. am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen: युक्तयुपलब्ध 17,32. 36,343. — 2) *das Zutreffen, Passen, Angemessenheit, Richtigkeit:* उत्तरोत्तरयुक्तौ च उत्तरोत्तरयुक्तीनां ed. Bomb.) वक्ता वाचस्पतिर्यथा R. 2,1,13. यत्र खल्वियं वाचो युक्तिः so v. a. *ein treffendes Wort* Milar. 3,11. वाचो युक्तिषु: AK. 3,1, 39. H. 346. नीति°, छंद°, नगरी° u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 342, *b*, 21. fgg. लोकयुक्ति° Sarvadarçanas. 97,20. भेदस्ययुक्तिः 62,21. युक्त्या *in angemessener Weise, in richtigem Maasse, wie es sich gehört:* एतानि युक्त्या सेवेत प्रसङ्गो यत्र दोषवान् Spr. 1766. Kām. Nītis. 1,49. Suçr. 1, 242,19. 2,149,4. समाक्षिप्तशरेर्युक्त्या Spr. 5058. Suçr. 1,102,8. 2,120,10. 275,4. गतामोदाकृषिता मे देहे युक्त्या Kathās. 93,25. ववौ युक्त्या सुप्रियात्मा मुखे शिवः (अनिलः) R. 2,91,24 (100,21 Gorr.). तदयं युक्त्या मुने देवासुराख्यः Kathās. 48,14. युक्तितस् dass. MBh. 5,6090. Suçr. 1,24,3. 2,131,15. 341,5. — 3) *Argument, Beweisgrund; Argumentation, ratiocinatio* Kap. 1,60. Jiñān. 2,92. 213. Suçr. 1,11,19. 2,536,4. fgg. Vaiç. Bhāṣ. 4,22. LA. (III) 90,1. °वाक्य Çāṅk. bei Wind. 94. °कथन Spr. 246. वक्तुर्निरूपणेर्युक्तिप्रत्यये: 685. वचनं धर्मयुक्तिसमन्वितम् Pañcat. III, 163. Bhāg. P. 9,8,21. VP. bei Muir, ST. 1, 147. Nilak. 53. 161. Vedântas. (Allah.) No. 90. Schol. zu Kap. 1,4. 36. 123. 131. zu Gaut. 1,1,3. zu Bhāṣ. Âr. Up. S. 204. zu Kirāt. Ça. 498,12. zu P. 8,2,94. Sarvadarçanas. 26,4. 123, 19. सयुक्ति Spr. 886. सुयुक्त्या Verz. d. Oxf. H. 244, *b*, No. 609. In der Dramatik *eine verständige Betrachtung, Erwägung der Umstände:* मन्त्रप्रधारणार्थानां युक्तिः Daçar. 1,26. Sāh. D. 343. युक्तिर्व्यवधारणम् 501. 471. = लोकानुकूलसंघटनप्रयोजनविचारः Pratāpar. 21, *a*, 4. — 4) *Grund, Motiv:* युक्त्या कया Bhāg. P. 3,31,15. Mārk. P. 99,24. — 5) *Summe* Sāṅkhyak. 7,14. — 9) *Alliage, Legirung* Vaiç. Bhāṣ. 8,15. — 7) *Verbindung von Worten, Satz* Nir. 1,15. — 8) in der Astr. *Conjunction* Weber, Gjot. 34. — Unter den Çabdālaṁkāra Verz. d. Oxf. H. 208, *a*, No. 489. — Nach den indischen Lexicographen hat युक्ति die Bedd. योग oder योजन (AK. 3,4,2,22. Trik. 3,3,179. H. an. 2,189. Med. t. 47) und न्याय (Trik. H. an. Med.). — Vgl. घर्म° (auch MBh. 12,5056. Spr. 3392. 4431), सत्त°, गन्ध°, निर्युक्तिक, मल्लयुक्ति, यवा°, स्व°.

युक्तिकर (यु° + 1. कर) adj. *passend, angemessen* oder *begründet:* वाक्यानि R. 2,109,23. युक्तिरेव करः कारणं येषां तानि Schol.

युक्तिकल्पतरु (यु° + क°) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 342, *a*, No. 800.

युक्तिज्ञ (यु° + ज्ञ) adj. 1) *sich auf Mischungen verstehend,* wohl = गन्धयुक्तिज्ञ Vaiç. Bhāṣ. 8,19,12. — 2) *die rechten Mittel kennend* Kām. Nītis. 10,6.

युक्तिभाषा (यु° + भा°) f. Titel einer Schrift Gild. Bibl. 313.

युक्तिमत् (von युक्ति) adj. 1) *verbunden, verknüpft:* समसंघात = शब्द) R. Gorr. 2,100,24. समो लयसमन्वितः Sch. 91,27. — 2) *geschickt,* mit infin.: वक्तुम् Kathās. 62,34. — 3) *mit Argumenten versehen, begründet;* davon nom. abstr. युक्तिमत्त्व Bhāg. P. 11,22,25.

युक्तियुक्त (यु° + युक्त) adj. 1) *erfahren:* घ° (वैद्य) Suçr. 1,94,16. — 2) *passend, angemessen* oder *begründet:* वचन Spr. 2491. fg.

युक्तिशास्त्र (यु° + शास्त्र) n. *die Lehre von dem was sich schickt, — passt* MBh. 13,5103.

युक्तिसिद्धप्रयोगी f. Titel einer Schrift Hall 173.

युगं (von 1. युज्, gaṇa उञ्छादि zu P. 6,1,160. 1) n. m. *Joch* AK. 3,4, 8,25 (m.). H. 756. an. 2,42. Med. g. 17 (m.). युगादीनां च वोढारो युग्यप्राजङ्गशाकटाः AK. 2,9,64. H. 1261. ṚV. 2,39,4. मा युगं वि शारि 3,53, 17. 1,115,2. 184,3. 8,80,7. 10,60,8. 101,3. युगानि पुरस्तात्कृषमाणा धनस्तात् TBr. 1,5,8,3. AV. 4,1,40. Çat. Br. 3,5,4,24. 34. Kaṭy. 20. 37.

76. युगेन (= योगेन = युगपद् Comm.) TBa. 3,7,10,1. भद्रयुगे M. 8,291. °भङ्ग Kathâs. 60,12. Pañkat. ed. orn. 4,13. धन्वनेव (so die ed. Bomb., विधात्रा Nilak.) युगे हायराण्यं Nilak.) नर्दं विषयस्तन् MBh. 2,1932. 3, 14909. पार्थिक्षियुगा कृपाः 4,1707. 5,7214. 6,3879. °मध्ये, °मंनकनेषु, °पालीषु 7,3597.8783. fg. Hariv. 2656. 12538. R. 3,34,32. 6,18,34. Jiân. 2,299. Varâh. Bṛh. S. 11,37. 46,9. Kathâs. 97,6. Çiç. 3,68. द्वियुगः Bhâg. P. 5,21,15. °व्यायतबाहु Raghu. 3,34. °दीर्घदार्भिः 10,87. °बाहुक्यः Kumâras. 2,18. — 2) n. *Paar* AK. 2,3,38. 3,4,3,25. Taik. 2,5,38. H. 1424. H. an. Med. Halâj. 4,15. वस्त्र° Âçv. Gṛhj. 3,8,1. Çâṅkh. Gṛhj. 3,1. MBh. 3,2632. AK. 2,6,3,14. H. 668. Varâh. Bṛh. S. 48,72. Kathâs. 24,124. Kull. zu M. 7,126. Schol. zu P. 8,4,13. स्तन° Çiç. 18. Spr. 1233. स्त्रजन° 2518. AK. 1,1,3,20. 2,1,18. Varâh. Bṛh. S. 47,11. 51,43. 52,8. 54,61. 68,44. Kathâs. 26,285. Çiç. 9,72. Râjâ-Tar. 1,209. Daçakum. 83,9. Am Ende eines adj. comp. f. या Kathâs. 66,157. Prab. 67,2. In der Stelle चतुर्दस्तं धनुर्दण्डो नाडिकायुगमेव च Mârk. P. 49,39 könnte man auch नाडिका यु° trennen und beide Worte als Synonyme von चतुर्दस्त fassen; vgl. 7). — 3) n. *Doppel-Çloka, zwei Çloka, durch welche ein und derselbe Satz durchgeht*, Râjâ-Tar. 8,3.4.6.14. — 4) n. *Geschlecht* (von Menschen, daher gewöhnlich mit मानुष, मनुष्य u. s. verbunden, γένος ἀνθρώπων), sowohl *Generation*, als *der durch Abstammung zusammengehörige Stamm*: तं विशे (ad sensum) मानुषा युगेन्द्रं क्षत्रे तविषं पनस्युवः RV. 8,46,12. प्रमिनती मनुष्या युगानि 1,92,11. 103,4. पुरु चरिष्णवे मानुषा युगा 144,4. 2,2,2. विशे ये मानुषा युगा पासि मर्त्यं रियः 5,32,4. 6,16,23. 8,31,9. 9,12,7. 10,140,6. पर्वण्या नाकुषा युगा मक्षा रजांसि दीयथः 5,73,3. 7,9,4. 10,27,19. युगे युगे 1,139,8. 3,26,3. 6,8,3. 13,6. 36,5. 18,94,12. M. 10,42. Bhâg. 4,8. पर RV. 1,166,13. उत्तर 3,33,8. 10,72,1. उषर 7,87,4. देवानां पूर्व्ये युगे 10,72,1. मासभिः पुत्रैरदितिरुप प्रैत्पूर्व्यं युगम् *das erste Geschlecht* 9. दीर्घतमा मामतेयो ममत्सु-दुर्वान्दशमे युगे। अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः *in der zehnten Generation* entweder von einer wunderbaren Langlebigkeit oder von einer, sonst unbekannten Genealogie zu verstehen, 1,158,6. त्रियुग n. *eine Periode von drei Generationen*: या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा RV. 10,97,1. Nir. 9,28. या सप्तमाद्युगात् M. 10,64. Jiân. 1,96. चतुर्विंशे युगे Hariv. 2323. सप्तमयुगपर्यये MBh. 2,72. प्रवर्तयन्युगमन्य-युगान्ते 3,1573. सुबहूनि युगानि 14,2776. युगशतपरिवर्तान् Çiç. 193. युगपर्यागते काले Spr. 3619. पूर्वयुगे Hariv. 1013. प्राजापत्ये (so die ed. Bomb.) MBh. 12,6176. ब्रह्म°, तत्रस्य *Zeitalter der Br., der* Ksh. Hariv. 11808. वैकुण्ठे च देवेषु कृतवे मानुषे युगे (मानुषेषु च die neuere Ausg.) so v. a. *unter den Menschen* 2379. पुरुष° m. *Generation* Mahâbh. in Ind. St. 2,8,N. 2. — 5) n. *eine Periode von fünf Jahren* (पञ्चके युगे Pañkav. Br. 17,13,17), insbes. *ein Lustrum im 60jährigen Jupitercyklus*: संवत्सराः पञ्च युगम् MBh. 2,455. Sâṅkh. 1,19,3. 19. Weber, Gjot. 23. 26. 88. 93. Nax. 2,334. VP. 224. शतवो वत्सरास्तवा। तणा लवा मुहूर्ताश्च निमेषा युगपर्ययाः॥ MBh. 13,627. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4. 8,31. 26,31. 33. 35. 37. fgg. — 6) n. *Weltperiode, Weltalter, Cyklus*, deren vier (nämlich Kṛta oder Satja, Tretâ, Dvâpara und Kali) ein Weltleben bilden; s. Roth, Ueber den Mythus von den Menschengeschlechtern, S. 24. fgg. AK. 3,4,3,25. 14,71. H. an. Med. शतं ते युक्तं हायनान्ते युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः AV. 8,2,21. M. 1,68. 85. 9,301. Jiân. 3,172. MBh. 6,387. fgg. Hariv. 315. fg. 12322. Sâmas. 1,8.9. 17. 18. 30. 33. fg. 29. 33. fg. 37. 46. 56. 3,9. 13,18. VP. 23. Bhâg. P. 1,6,21. 3,11,30. 32. 22,36. चतुर्युग n. *die vier Weltalter* gaṇa पात्रादि zu P. 2,4,17, Vârtt. 4. Vop. 6,53. AK. 3,6,3,3. M. 1,71. MBh. 12,11227. Hariv. 316. Sâmas. 1,15. fg. Verz. d. Oxf. H. 21,b,N. 2. 44,b,25. Bhâg. P. 3,11,18. कृतं युगम् M. 1,69. 81. 9,302. MBh. 3,11234. fgg. 12831. Hariv. 311. 11304. Sâmas. 1,23. Varâh. Bṛh. S. 4,26. प्रथम Bhâg. P. 6,10,16. द्वादि° Râjâ-Tar. 1,341. त्रेतायुगे युगे R. 7,76,36. द्वापरे युगम् M. 9,302. द्वापरे युगपर्यये Hariv. 11316. कलौ युगे 11321. M. 1,86. कष्टं युगम् Vet. in LA. (III) 30,2. °सहस्र Nir. 14,4 = Bhag. 8,17. देवानाम् M. 1,71. दैविक 72.79. दैव AK. 1,1,3,21. H. 160. दिव्य ebend. MBh. 12,7575. AK. 1,1,3,22. — 7) n. als Längenmaass = *vier* Hasta H. an. (wo °चतुष्के st. चतुर्ये zu lesen ist) und Med.; vgl. oben u. 2) am Ende. — 8) n. Bez. *der Zahl vier* Çaut. 33. 42. Sâmas. 8,3. *der Zahl zwölf* Ind. St. 8,166. — 9) n. Bez. *eines best. Standes* —, *einer best. Configuration des Mondes* Varâh. Bṛh. S. 4,12. fg. — 10) n. Bez. *einer best.* Nâbhasa-*Constellation* (von der Klasse Sâṁkhjajoga), wenn nämlich *alle Planeten in zwei Häusern stehen*, Varâh. Bṛh. 12,10.19. — 11) *eine best. Arzneipflanze*, = वृद्धि H. an. Med. — Vgl. अनुयुगम्, ईषायुग (unter ईषा), उरु°, कलि°, गो°, चतुर्युग (चतुर्युगी MBh. 1,7343 fehlerhaft für चतुर्युक्ती, wie die ed. Bomb. liest), त्रि° (adj. auch Bhâg. P. 3,16,22. 8,17,23), त्रेता° (unter त्रेता), देव° (auch Nir. 12,41), धर्म°, पञ्च°, मनु°, महा°, सत्य°.

युगकीलक (युग + को°) m. *Pflock am Joche* AK. 2,9,14. H. 737. Halâj. 2,420.

युगक्षय (युग + 2. क्षय) m. *Ende eines Juga, Weltende* R. 3,30,37. Verz. d. Oxf. H. 117,a,4. Bhâg. P. 8,24,31.

युगंधर (युगम्, acc. von युग, + धर) 1) adj. (f. या) *das Joch tragend* (?) MBh. 13,3833. सत्यादियुगं धारयति ता: Nilak. — 2) m. n. *Deichsel* AK. 3,6,3,35. 2,8,3,25. H. 756. Halâj. 2,292. सक° adj. MBh. 6,1936. सयुगन्धुर ed. Bomb. — 3) m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1,31,8. — 4) m. N. pr. P. 4,2,130. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 4,12. Varâh. Bṛh. S. 32,19. VP. 187, N.; vgl. P. 4,1,173, Sch. sg. N. pr. eines Fürsten Hariv. 9207. 1935 (wo nach सात्यकि: in der älteren Ausg. ausgefallen ist: युयुधानस्य भूमिस्तस्याभवत्सुतः। भूमेर्युगंधरः पुत्र इति वंशः समाप्यते॥). VP. 435. Bhâg. P. 9,24,14. eines Berges P. 8,2,46, Sch. Çârdar. im ÇKDa. Burnouf in Lot. de la b. l. 842. युगंधरे दधि प्राश्य MBh. 3,10321. 8,2062. eines Waldes Pañkat. 1,10, 48. — Vgl. योगंधर, योगंधरक, योगंधरायण, योगंधरि.

युगप (युग + 2. प) m. N. pr. eines Gandharva MBh. 1,4312. Hariv. 14137.

युगपत्र (युग + पत्र *Blatt*) m. *Bauhinia variegata* H. 1152. °पत्रक m. dass. AK. 2,4,3,3. °पत्रिका f. *Dalbergia Sissoo Roxb.* Taik. 2,4,32. — Vgl. युग्मपत्र.

युगपद्, nach Andern युगपैद् (युग + 2. पद्) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. *gleichzeitig, zugleich* (urspr. *in demselben Joch stehend, neben einander*); Gegens. क्रमशस्, पृथक्. AK. 3,5,22. युगपदुत्पन्न Nir. 1,2. °पदाव Kâç. Ça. 1,5,1. 7,1. 2,4,25. 5,19. 3,6,17. °पत्कर्मन् Liṅg. 1,

9,1. °पत्प्राप्ति Âçv. Gṛhj. 4,4,3. युगपत् प्रलीयन्ते यदा तस्मिन्महात्मनि M. 1,54. Bhag. 11,12. MBh. 3,11936. Harîv. 11763. 11768. R. 2,72,41. R. Gorr. 2,68,29. 4,21,4. 5,25,36. 6,94,22. Kâm. 2,2,6. Śiśupâlav. 30. Çiç. 77. ad 69,2. Ragh. 4,15. 5,68. Kumâras. 2,18. Çiç. 9,41. Varâh. Bṛh. S. 11,27. 40,4. 88,27. 93,43. Kathâs. 21,43. 117. 26,278. 34,256. 42,70. Bhâg. P. 2,4,9. 3,6,2. 11,24. 4,10,8. Ind. St. 8,311,1 v.u. Schol. zu Gaim. 1,1,15. zu Naish. 22,46. चक्रेण युगपत् = सचक्रम् Schol. zu P. 2,1,6. Vop. 6,61. द्य° Śiśupâlav. 18. — Vgl. योगपद्य.

युगपार्श्वग (युग - पार्श्व + 1. ग) adj. *zur Seite des Joches gehend* (von einem jungen Stiere) AK. 2,9,63. H. 1260. °पार्श्वक v. l.

युगपुराण (युग + पु°) n. Titel eines Abschnittes in der Gargasaṁhitâ Ind. St. 9,173.

1. युगमात्र (युग + मात्रा) n. *die Länge eines Joches:* युगमात्रोदिते सूर्ये MBh. 3,16723. = क्रोशचतुष्क Nîlak. °दर्शिन् Vishṇ. 197.

2. युगमात्र (wie eben) adj. (f. ई) *Joch-gross* Çat. Br. 3,3,4,24. 7,3,1, 27. Kâty. Çr. 3,3,22. 17,3,14.

युगल n. 1) *Paar* AK. 2,5,38. Trik. 2,5,38. H. 1423. Hâlâj. 4,18. नयन° Spr. 1233. स्तनचक्रवाक° 1970. Varâh. Bṛh. S. 69,10. 12. 24. Kathâs. 3,27. 11,51. Bhâg. P. 4,26,20. 5,2,13. Mârk. P. 63,62. Kâraṇḍ. 3. वस्त्र° Pañcat. 29,16. 184,16. 226,18. Auch m. Sûçr. 1,22,14. Spr. 999. युगलो भू *mit einem Andern bei Seite gehen* Verz. d. Oxf. H. 61, *b*, No. 108, Z. 9. Am Ende eines adj. comp. f. या Pañcat. 226,19. — 2) *Doppelgebet*, Bez. *eines best. Gebetes an* Lakshmi *und* Nârâjaṇa Pâncarâtrak. 25 im ÇKDa. Hierher wohl °भक्ता: als Bez. einer Unterabtheilung der Kaitanja Vaishṇava Wilson, Sel. Works 1,169.

युगलक (von युगल) n. 1) *Paar:* चरणाम्बुज° Kathâs. 43,266. — 2) *Doppel-Çloka, zwei Çloka, durch welche ein und derselbe Satz durchgeht*, Schol. zu Kâvjâd. 1,13. Râéa-Tar. S. 2. 22. 135. 212.

युगलाढ्य (युगल + आढ्या) m. *eine best. Pflanze*, = वर्वूर Râéân. im ÇKDa. युगलात u. d. letzten Worte nach derselben Aut.

युगलाय् (von युगल) *ein Paar darstellen:* पाशयुगलायित *ein Paar Schlingen darstellend* Spr. 999, v. l.; s. Th. 3, S. 367.

युगवस्त्र oder °त्रा (युग + व°) gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45. — Vgl. योगवस्त्र.

युगव्या, युगव्यायतबाहु d. i. युग - व्यायत - बाहु erklärt der Comm. zu Ragh. ed. Calc. 3,34 durch युगव्यावत् (!) वर्गलावत् लम्बौ बाहू यस्य सः.

युगशार (?) Kâṭh. 12,10 in Ind. 3,464,11.

युगांशक (युग *Lustrum* + 1. अंशक *Theil*) m. *Jahr* Trik. 1,1,109. H. ç. 24. युगांशक Hâr. 28.

युगादि (युग + आ°) m. *der Anfang eines Juga, Weltanfang* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,43. °कृत् Bez. Çiva's Çiv.

युगादिजिन m. *der erste* (आदि) Gina *des Juga:* श्री° Bez. Ṛshabha's Çatr. S. 18.

युगादीश m. *der erste* (आदि) *Herr* (ईश) *des Juga*, Bez. Ṛshabha's ebend.

युगाद्या (युग + आ°) f. *der erste Tag eines Juga* Colebr. Misc. Ess. 1, 186. Wilson, Sel. Works 2,207. fg. 210. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,16.

युगाध्यक्ष (युग + अ°) m. *Aufseher über ein Juga*, Beiw. Prâgâpati's Weber, Giot. 20. Çiva's Çiv.

युगान्त (युग + अन्त) m. 1) *Ende des Joches:* मयुगान्तकूबर R. 5,42,16. — 2) *Meridian:* युगान्तमधिरूढः सविता so v. a. *es ist Mittagszeit* Çiç. 57,2, v. l. nach einigen Erklärern ist hier युग = प्रहर, nach andern = दण्डचतुष्टय; vgl. युगान्तर 2). — 3) *Ende einer Generation* MBh. 3, 1873. — 4) *Ende einer Weltperiode, Weltende* H. 161. Hall. 1,117. Harîv. 3662. 3003. 11322. R. 2,61,21. 4,8,2. 60,16. Ragh. 13,6. Spr. 317. Bhâg. P. 2,7,12. 38. 3,33,4. 5,18,6. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,43. °रवि R. 4,14,26. युगान्ताग्नि MBh. 1,5475. R. 3,30,35. Spr. 2353. युगान्तार्णव Bhâg. P. 5,18,25. °कार Varâh. Bṛh. S. 11,15.

युगान्तक m. = युगान्त 4) Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,24. 42.

युगान्तर (युग + अ°) n. 1) *eine Art Joch, ein besonderes Joch* H. 757. — 2) *die zweite Hälfte des durch den Meridian durchschnittenen Bogens, den die Sonne am Himmel beschreibt:* युगान्तरमाढः सविता so v. a. *es ist Mittag vorbei* Çiç. 57,2; vgl. युगान्त 2). — 3) *eine andere —, eine folgende Generation* Spr. 1581.

युगाय् (von युग), °यते *lang wie ein Juga —, wie eine Ewigkeit erscheinen:* त्रुट्यैर्युगायते यामपरार्धतास् Bhâg. P. 10,31,13.

युगिन् in वस्त्र° (von वस्त्रयुग) adj. *mit einem Kleider-Paare versehen* P. 5,4,13, Sch.

युगेश (युग + ईश) m. *der Beherrscher eines Lustrum* Varâh. Bṛh. S. 8,32.

युगोरस्य (युग + उ°) m. Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,49.

युग्म (von 1. युज्) Uṇâdis. 1,143. 1) adj. (f. आ) *paarig, geradzahlig* Kâty. Çr. 16,7,24. Âçv. Gṛhj. 1,14,4. 15,7. 2,5,13. fg. Gobh. 4,3,24. 5,17. ṚV. Prâr. 1,3. 2,7. 5,10. 16,38. M. 3,48. Jâéñ. 1,79. 227. Sûçr. 1,321,14. Ind. St. 8,313. 345. Varâh. Bṛh. S. 78,23. 83,2. Mârk. P. 30,7. 31,37. 34,80. fg. Kull. zu M. 3,277. — 2) n. Sidd. K. 249, *a*, 13. *a*) *Paar* AK. 2,5,38. 3,4,29,214. Trik. 2,5,38. H. 1424. Hall. 4, 13. वस्त्र° Çâṅkh. Gṛhj. 5,2. Jâéñ. 1,291. Kathâs. 24,113. 43,73. fg. पादुकोपनहौ युग्मानि R. 2,91,69 (100,70 Gorr.). रत्नौ° Sûçr. 2,340,7. स्तन° Spr. 505. नयनलक्षन° 864. Sûryas. 2,30. 34. fgg. 38. 11,8. Varâh. Bṛh. S. 51,9. 40. 54,60. 70,9. 105,1. Kathâs. 6,40. 20,27. Pañcar. 1,14,57. °चारिणोः क्रौञ्चयोः *paarweise* Uttarar. 27,13 (36,4). °भुक्त so v. a. भुक्त° Sûçr. 2,311,18. सा युग्मं प्रसूयते *Zwillinge* 1,325,12. युग्मापत्या *eine Mutter von Zwillingen* Kathâs. 21,48. Am Ende eines adj. comp. f. आ Çaut. 8. Ṛt. 4,14. Kâraṇḍ. 46. — *b*) *die Zwillinge im Thierkreise* Ind. St. 2,239. — *c*) *Doppel-Çloka, zwei Çloka, durch welche ein und derselbe Satz durchgeht*, Colebr. Misc. Ess. 2,71. Râéa-Tar. S. 14. 151. 154. fg. 195. 203. 222. 226. 249. — *d*) *Vereinigung —, Zusammenfluss zweier Flüsse* (= संगम Comm.). R. 2,71,5. — *e*) häufig fehlerhaft für युग्य, z. B. M. 8,293 ed. Lois. MBh. 3,14922. R. 2,89,18 (die Bomb. Ausgg. haben die richtige Lesart). — Vgl. नृ°.

युग्मक 1) adj. = युग्म 1) Ind. St. 8,313. — 2) n. *a*) = युग्म 2) *a*) Ver. in L.A. (III) 13,14. am Ende eines adj. comp. f. या Kathâs. 23,226. — *b*) = युग्म 2) *c*) Sin. D. 338. Schol. zu Kâvjâd. 1,13. Râéa-Tar. S. 112.

युग्मज (युग्म + 1. ज) m. du. *Zwillinge* Trik. 3,3,302.

युग्मधर्मन् (यु° + ध°) adj. Çatr. 3,5.

युग्मन् adj. = युग्म 1): स्तोमाः Çat. Br. 8,3,3,4.

युग्मत्त् adj. dass. TS. 5, 4, 8, 5. TBr. 2, 7, 18, 4. Çat. Br. 9, 3, 3, 5. Pañcav. Br. 16, 14, 6. 19, 8, 5.

युग्मपत्र m. = युगपत्र *Bauhinia variegata* Ratnam. 157.

युग्मपत्रिका f. = युगपत्रिका *Dalbergia Sissoo Roxb.* Çabdar. im ÇKDr.

युग्मपर्ण (यु° + पर्ण) m. *Bauhinia variegata* und *Alstonia scholaris* Riâan. im ÇKDr.

युग्मफला (यु° + फल) f. N. verschiedener Pflanzen, = इन्द्रवारुणी und वृश्चिकाली Riâan. im ÇKDr. = गन्धिका Ratnam. ebend.

युग्मफलोत्तम (युग्म - फल - उ°) m. *Asclepias rosea* Ratnam. bei Wilson.

युग्मविपुला (यु° + वि°) f. *ein best. Metrum* Ind. St. 9, 345.

युग्मिन् (von युग्म) adj. Çatr. 3, 4.

युग्य (von युग) gaṇa गवादि zu P. 5, 1, 2. = युगस्य वोढा P. 4, 4, 76. AK. 2, 9, 64. H. 1261. युग्यं = युगमर्हति gaṇa दण्डादि zu P. 5, 1, 66. युग्य (angeblich partic. fut. pass. von 1. युज्) = पत्त्र P. 3, 1, 121. Vop. 26, 20. AK. 2, 8, 2, 26. H. 759. Halâ. 2, 294. n. 1) *Wagen* M. 8, 393. fg. विमुक्त-युग्यकवच MBh. 10, 129. R. Gorr. 1, 71, 3. 2, 73, 6. Riâa-Tar. 5, 33. — 2) *Jochthier* Jiâs. 2, 298. अश्व° MBh. 1, 2292. Kim. Nitis. 15, 23. Hcat. 5, 49. 12, 86. यानयुग्यम् *Wagen und Pferde* MBh. 3, 2262. 14922. R. 1, 69, 3 (यानं युग्यम् ed. Bomb.). 2, 89, 18. यानं युग्यम् (collect.) dass. MBh. 4, 535. R. Gorr. 2, 97, 23. युग्यसन्नाहिकम् MBh. 13, 2793. Hier und da fälschlich युग्म geschrieben. — 3) ऋग्दशतयोक्रते युग्यम् (v. l. युज्यम्) N. eines Sâman Ind. St. 3, 217, a. — Vgl. दृतिणा°, सव्या°.

युग्यवाह (यु° + वाह) m. *Wagenlenker* Riâa-Tar. 6, 264. 7, 482.

युङ्ग्. युंङ्क्ते Dnâtup. 5, 30 (वर्जने).

युङ्ग s. ययुङ्ग.

युङ्गिन् m. Bez. *einer best. Mischlingskaste:* गङ्गापुत्रस्य कन्यायां वीर्येण वेणधारिणः। बभूव वेणधारो च पुत्रो युङ्गी प्रकीर्तितः॥ Brahmav. P. im ÇKDr. योगिन् st. dessen Verz. d. Oxf. H. 22, a, 7.

युङ्, युच्छ्ते युंच्छति प्रमादे Dnâtup. 7, 35) *weichen, sich wegmachen von* (abl.): न यो युच्छति तिग्मेऽइ यथा दिवः RV. 5, 54, 13. इतो युच्छन्तामुरः 8, 39, 2. — Vgl. 3. यु.

— प्र *abwesend sein* (मनसा *mit der Aufmerksamkeit*): sodann auch ohne diesen Zusatz *gleichgiltig —, achtlos sein:* या सप्राता मनसा न प्रयुच्छन्तः RV. 10, 65, 3. वेनन्ता न प्र युच्छतः। धृतव्रताय दाशुषे 1, 23, 6. कदा चन प्र युच्छस्यभे नि पासि जन्मनी Vikrm. 4, 7. — Vgl. अप्रयुच्छत्.

1. युज्, युनक्ति, युङ्क्ते Dnâtup. 29, 7 (योगे). ययुञ्जसे Harîv. 3057. युञ्जते 3. sg. Çvetâçv. Up. 2, 6. MBh. 13, 750. ययुञ्जम् 5, 7291. युञ्जत = ययुङ्क्त 1, 7982. ved. युनैक्ति, युनक्ते, योक्षि, योक्षम्, योक्षते und युयोक्षते (RV. 8, 59, 7) 3. sg.; युयोजन्, युयुक्रे, युयुग्रे; ययुक्षत्, ययुक्षि, ययुग्धि, ययुग्धन्, युक्षत, ययुक्षत 3. pl.; योक्ष्ये; युयोक्षते, ययोक्षि; युक्ता, युक्ताय VS. 11, 3; योक्तुम्, युक्षे infin. RV. 1, 61, 6. 1) *schirren, anspannen:* Ross und Wagen: युञ्जते रथे: RV. 4, 13, 1. युक्ता रुहिण्यामुषं वामदर्षाट् 5, 40, 1. 56, 6. कामक्रो युञ्जाथे रथम् 74, 3. यामेषु यद्वं युञ्जते प्रभे 1, 87, 3. (उषाः) गोभिरुणोभिर्युञ्जाना *fahrend mit* 3, 80, 3. 2, 18, 2. 3, 26, 4. 7, 16, 2. 23, 3. अस्याद्यं स्वधया युक्तमानम् 78, 4. AV. 19, 13, 1. VS. 4, 32. 35, 2. हरी इन्द्रो युयोक्षते RV. 8, 59, 7. योक्त्रेण योग्यं युञ्जन्ति Çat. Br. 1, 9, 2, 32. ययोक्षी युञ्जन्ति Çâṅkh. Gṛhy. 1, 13, 2. युक्ता रथान् MBh. 1, 193. 7948 (wo mit der ed. Bomb. ययुञ्जन् zu lesen ist). Spr. 2631. युक्तास्ते स्यन्दनेषु तुरंगाः Pañc. 78, 14. योक्ष्यन्ति धुरि धेनुकाः MBh. 3, 13023. (सत्समागमः) दुःखानां धुरि युज्यते *so v. a. wird an die Spitze gestellt* Spr. 3265. युक्ता रथवरम् Harîv. 4461. वाजिभिः R. Gorr. 2, 38, 10. fg. युञ्जतां युग्यान् 1, 71, 3. R. Schl. 2, 70, 13. 3, 39, 4. MBh. 3, 11761. युक्त *angeschirrt, angespannt* RV. 1, 116, 18. रथे युक्तास्त्र आशवः 118, 4. 5, 27, 2. रुतशो धूर्षु युक्तः 7, 63, 2. 4, 48, 4. Wagen 69, 2. AV. 13, 3, 9. MBh. 3, 2791. R. 2, 46, 27. R. Gorr. 2, 38, 12. चेतैरश्वैर्युक्ते मरुति स्यन्दने Bhag. 1, 14. MBh. 3, 11931. Harîv. 2439. R. 2, 39, 13. R. Gorr. 1, 17, 3. वाजिरथान्युक्तान् R. Schl. 2, 92, 31. रथेन खरयुक्तेन 2, 69, 15. 18. वाजिनः MBh. 3, 13072. भानुः सप्तयुक्ततुरंगः Çiç. 101. इन्द्रियाणि Spr. 3099. त्रियुक्त *mit Dreien bespannt* Kâç. Ça. 15, 1, 22. 22, 4, 15. चतुर्युक्त MBh. 5, 3045. — 2) *anspannen in verschiedenen Uebertragungen so v. a. in Thätigkeit setzen, in Gebrauch nehmen, zurüsten, verrichten* u. dgl.: अद्रिणा युज्यते वाज्रयन्तो RV. 5, 1, 3. die Soma-Steine (vgl. 10, 94, 6. 7) 40, 8. 43, 4. 3, 41, 2. 57, 4. 7, 42, 1. Liṭ. 1, 10, 1. den Mörser RV. 1, 28, 5. पात्राणि Çat. Br. 4, 4, 2, 17. धिया युयुज्र इन्दवः RV. 1, 46, 3. यज्ञमुं वा रथं न वाजसातये। धिये पूषण्युज्महि 5, 51, 3. VS. 11, 3. Ait. Br. 6, 33. युञ्जते मन उत युञ्जते धियः RV. 5, 81, 1. 7, 27, 1. VS. 11, 1. fgg. (1, 3 = Çvetâçv. Up. 2, 3 mit Varianten). इन्द्रियाणि मनो युङ्क्ष सदश्वानिव सारथिः। इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः नेत्रे युञ्जते सदा॥ MBh. 14, 1426. मनो दुष्टम् — बुद्धा युञ्जीत Bhag. P. 3, 28, 7. ब्रह्म RV. 10, 13, 1. नेदेव मी यन्नत्रं देवाः 51, 4. 27, 4. उग्रं युयुज्म पतनासु सासहिम् 8, 50, 12. युञ्जते यस्यौमृत्विजः AV. 12, 1, 33. TS. 3, 1, 10, 2. यज्ञम् Çat. Br. 1, 9, 2, 32. तेन (यज्ञेन) यज्ञमयायुञ्जन्। युञ्जानः स यज्ञुर्वेद इति शास्त्रविनिश्चयः Verz. d. Oxf. H. 54, b, 15. यानम् Liṭ. 1, 8, 9. मा नो ऽतो ऽन्यत्पितरो युंग्धम् (sc. वासः) Âçv. Çr. 2, 7, 6. चनुः मित्र क उ देवो युनक्ति. प्राणः युक्तः Kenop. 1. युज्यतां मरुतो सेना *werde gerüstet* R. 2, 79, 9 (86, 13 Gorr.). 92, 30 (101, 33 Gorr.). Mârk. P. 125, 4. तासामसुरसेनानां युज्यतीनाम् Harîv. 8065. अकालयुक्तसैन्य Spr. 6; vgl. युक्तसेन. आशिषो युयुक्षुः — आदित्याय so v. a. *sprachen Segenswünsche* Bhag. P. 4, 19, 41. 9, 11, 29. युञ्जानः परमाशिषः 5, 13. नमो ऽयुंग्भ्यः सावित्रीः *brachten unsere Verehrung dar* 4, 30, 26. प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते *wird gebraucht, — angewandt* Bhag. 17, 26. यद्दानमप्रियकरं दानं च प्रियकारकम्। क्षीणेऽप्यतानामर्थानां काले युक्तं प्रशस्यते॥ *angewandt* M. 7, 204. तं मामेवं विधम् — समर्थमरिनिघ्नेषु। कस्माद्युनक्ति (so die ed. Bomb.) सारथ्ये *anstellen bei* MBh. 8, 1365. (तान्) युयोज स यथायोगमधिकारेषु 2, 1289. कार्ये मरुति युञ्जानः 12, 3498. योग्येषमात्यान्कार्येषु युञ्जीत Kâmas. 34, 194. तं प्रजासर्गरक्षायाम् — युयोज युयुजे ऽन्यांश्च स वै सर्वप्रजापतीन् Bhag. P. 4, 30, 31. भूतन्द्रियविकारेषु ऽयुङ्क्त 10, 72, 12. वानरो ऽयं नरश्रेष्ठ युज्यतां सेतुकर्मणि R. 5, 94, 15. Spr. 3307. मरुति कर्मणि युज्यमानः *beschäftigt mit* Bhag. P. 6, 3, 25. pass. *sich rüsten zu* (dat.): युद्धाय युज्यस्व Bhag. 2, 38. योगाय so. क्रूराय कर्मणे युक्तः *gerüstet zu* MBh. 7, 881. यात्रायुक्त Suçr. 1, 122, 5. युक्त *an's Werk gesetzt, angestellt, beschäftigt, obliegend, sich befleissigend, bedacht auf* (die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend) RV. 10, 27, 9. यथा युक्तो जीतवेदो न रिष्यः 51, 7. Kâç. Ça. 3, 4, 22. P. 6, 2, 66. (चराः) ये युक्ता इषे मगा MBh. 5, 7549. ययुक्तचार R. 3, 37, 7. 10. यज्ञानां वाहने युक्तः MBh. 3, 2625. रूपेषु 4, 315. यज्ञेषु R. Gorr. 2, 109, 8. क्रियासु Spr. 763. आचारे M. 1, 108. स्वाध्याये, दैवे कर्मणि 3, 75. 127. लोकस्याप्यायने 313. 4, 25. 6, 8. 7, 125. 9, 324. 326. MBh. 3, 1786. पौरा-

णामस्थिते R. 1,39,22. 77,10. R. Gorr. 2,100,2. 3,69,8. 6,106,2. R. ed. Bomb. 6,87,22. Spr. 4491. Bhâg. P. 1,19,17. 8,10,1. ध्यानेनैषयुक्तः Spr. 460, v. l. मङ्गलाचार° M. 4,145. fg. 9,239. तया° MBh. 1,7626. 5,6016. परस्त्रियव्यापारयुक्तात्मन् Spr. 2004. ध्यानयुक्तेन मनसा Verz. d. Oxf. H. 33,a, 12. *geübt, geschickt, erfahren* R. 5,33,7. धर्मार्थयोर्ज्ञाने MBh. 5,1104. योगस्थे चिनये चैव युक्तो वारणवाहिनाम् R. 2,1,30. कोपनंग्रहणे. बलपरिग्रहे R. Gorr. 1,7,7. 10. अयुक्तबुद्धिर्गुणदोषदर्शने 3,37,23. अ° (= अविवेकिन् Comm.) Bhâg. P. 10,73,11. — 3) *auflegen* Geschosse (auf den Bogen): युयोज्ञ बाणान् MBh. 1,7025. अयुङ्क्तमेव चैवाहं तदस्त्रं भृगुनन्दन 5,7291. मा युङ्क्ष्व दिव्यान्यस्त्राणि 3,12309. 5,7265. *befestigen:* दिव्यं चेदं किरीटं ते स्वयमिन्द्रो युयोज ह 3,12278. आभरणानि Spr. 3307. चेकार नेत्रयोर्युज्याच्चकार सर्वमेधिषु *fügen auf* Bhâg. P. 6,8,8. शिरसि कपालानि *setzen auf* Lâṭj. 8,8,18. योनौ रेतो युनक्ति *fügen in, thun in* Çat. Br. 7,5,1,33. यो हृदि युञ्जन् *in's Herz schliessend* Bhâg. P. 3,24,34. med. und pass. *sich hängen an* (eig. und übertr.): युञ्जानाश्च विलम्बिरे (so die neuere Ausg.) | कण्ठेषु Harîv. 11767. पुत्रेषत्र न पण्डितः Spr. 100. — 4) eine Zuneigung u. s. w. Jmd (loc.) *zuwenden:* मणि यो यस्तव स्नेहो रोहसेने मे पुत्रकात् Mahâv. 133,17. युञ्जानया भक्त्या भगवति Bhâg. P. 3,25,19. आत्मानम्, मनः, मानसम्, चेतः, चित्तम्, चित्तम् *den Geist, den Sinn, die Gedanken auf einen Punkt richten;* act. und med. Maitrâjup. 6,3. Bhag. 6,15. 10. 28. 9,34. Bhâg. P. 2,1,19. 2,7. 4,1,26. die Ergänzung im loc. 3,9,23. 24,43. 27,26. 4,28,38. 6,2,40. 7,3,41. 9,6,51. 54. Ohne आत्मानम् u. s. w. *sich vertiefen;* med. MBh. 13,750. Mârk. P. 43,40. युञ्जान MBh. 14,362 (in beiden Ausgg. fälschlich युञ्जान). Bhâsâṃ. 64. act. MBh. 14,346. Bhâg. P. 7,1,25. Mârk. P. 111,2. योनौ समुपचक्रमे MBh. 12, 12580. mit beigefügtem योगम् dass.; act. Bhag. 6,13. Mârk. P. 39,27. med. 28. युञ्जते समाधौ Daśûp. 26,68. Sidd. K. zu P. 7,1,71. युञ्जते ब्रह्मचारो योगम् P. 3,1,87, Vârtt. 3, Sch. युक्त *gesammelt, aufmerksam, vertieft, ganz bei der Sache seiend:* यो मे गिरस्तुविजातस्य पूर्वीर्युक्तेनाभि च्यक्रणो गणाति (sc. मनसा Sây.) ṚV. 5,27,3. यथा वा युक्तमात्मानं मन्यत तथा युक्तो ऽधीयीत स्वाध्यायम् Âçv. Gṛhj. 3,2,2. Çvetâçv. Up. 2,2. Taitt. Up. 1,11,4. Mund. Up. 3,2,5. ṚV. Prât. 14,28. M. 2,223. 243. 4,95. 100. 6,31. 7,142. 206. 9,312. 11,259. Bhag. 2,61. 6,8. 14. 8,11. MBh. 1,2339. 12,4142. 14,563. Harîv. 5236. fg. R. Gorr. 2,8,39. 3,72,7. 7,106,16. Spr. 3488. 4093. 4378. 4620. 5010. 5261. Bhâsâṃ. 64. सु° Maitrâjup. 4,4. अ° Bhag. 18,28. यस्मिन्युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च *in den versenkt* Çvetâçv. Up. 1,15. शत्रुसेविनि मित्रे च युक्ततरो भवेत् *gar sehr auf seiner Hut seiend* M. 7,186. युक्ततम Bhag. 6,47. — 5) *verbinden, zusammenbringen, aneinanderfügen; anreihen* ṚV. 1,163,5. अग्निं पुनन्मि शर्वसा घृतेन VS. 18, 51. स्तोमम् Lâṭj. 1,12,2. 2,3,20. Çat. Br. 14,8,14,2 (Kâṭh. Up. 2,6). Maitrâjup. 6,21 (med.). नूनं भूतानि भगवान्युनक्ति विपुनक्ति च Bhâg. P. 10,82,42. स हि प्रत्यगात्मानमात्मना पुनक्ति Kâç. zu P. 1,2,51. यद्यपादेन — छिन्नमंगेति *wurde zusammengeführt mit* Râja-Tar. 3,366. pass. *sich verbinden mit:* स तया कुन्तिभोजस्य दुहित्रा कुरुनन्दनः ॥ युयुजे *verband sich ehelich* MBh. 1,4420. fg. मन्त्रिभिर्युयुजे नीतिविशारदैः *er umgab sich mit* Ragh. 8,17. *Jmd* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *verbinden* so v. a. *versehen, beschenken mit, Jmd einer Sache theilhaftig machen:* सात्त्वमात्मार्थसंभोगैर्युनक्ति MBh. 2,474. R. 1,9,68 (67 Gorr.). तत्रेमं तत्र नैर्घोरैः पुनः सान्त्वैश्च योजय 3,62,33. यमं पुनक्मि कालेन Bhatt. 6,37. यात्रीभिर्युञ्जतामुलाम् (so die ed. Bomb.) MBh. 1,7982. यात्मानं मेयसा योक्ष्ये 3,2489. 7,696. ये ऽनागसो वयमुर्वन्मक्ति क्रित्वियेण Bhâg. P. 3,16,25. न मां ममत्वभेदेन योक्तुमर्हसि Harîv. 10963. R. Gorr. 2,30,34. 35,24. मां दुःखैर्योक्तुमिच्छसि Spr. 4521. Kumâras. 6,79. pass. *einer Sache* (instr.) *theilhaftig werden:* वेदपुण्येन युज्यते M. 2,78. फलेन 7,128. 144. MBh. 3,2629. 10862. कालधर्मणा R. Gorr. 1,43,27. Spr. 1601. 3477, v. l. 3798. 4025. 4433. 4840. 4914. 5098. Çiç. 64,16. Raçn. 3,65. Kumâras. 4,44. Kathâs. 22,92. 30,31. Bhâg. P. 1,11,39. 3,7,5. mit dopp. instr. *durch Jmd einer Sache theilhaftig werden* MBh. 3,258. Bhâg. P. 1,11,24. statt des einfachen instr. der Sache auch der instr. mit सह MBh. 13,7101. युक्त *verbunden, vereinigt, hinzugefügt, an einander gereiht, regelmässig auf einander folgend* Vaṃç. Bṛh. S. 77,36. Bhâg. P. 3,26,51. 4,1,48. विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ṚV. 7,79,2. 1,23,13. Çâṅkh. Çr. 13,19,17. युक्तम् adv. *in Schaaren* Çat. Br. 12,4,4,3. युक्त *verbunden* —, *versehen mit, im Besitz von* (instr. oder im comp. vorangehend) ṚV. Prât. 1,19. मरुद्भिर्नसा M. 2,221. 6,70. 9,169. 11,53. MBh. 1,7982. 3,1807. 3076. 2802. 12,8496. सिसृक्षया so v. a. *zu schaffen beabsichtigend* Harîv. 534. Bhag. 8,10. R. 1,1,2. 9. 20. 4,7. 7,18. 32. 11. 53,7. 53,19. Ragh. 7,1. Spr. 790. Śâṅk. 1,48. fg. Vaṃç. Bṛh. S. 8,21. 15,19. 63,11. 77,6. 23. Kathâs. 14,61. 18,229. 23,1. Bhâg. P. 1,2,15. 9,16. AK. 3,1,27. Vop. 3,143. छिन्नेव युक्ता वदली गतेन *in Berührung gekommen mit* R. 3,53, 61. फल° *verbunden mit* Kâṭj. Çr. 1,1,2. AV. Prât. 3,89. 4,3. P. 2,3, 4. 8. 19. M. 9,310. 12,4. Bhag. 2,30. MBh. 1,7245. 3,2677. R. 2,26,25. धर्मयुक्त (वाक्य) 39,17 54,19. 55,9. Mṛicch. 23. Spr. 2734. 3198. 3287, v. l. Śâṅkhâj. 2. Śâṅk. 2,63. Vaṃç. Bṛh. S. 16,27. 17,19. 43,16. 50,8. 53,97. 55,20. 56,21. 80,15. 103,11. Kathâs. 5,129. 33,126. AK. 1,1, 2,5. 2,8,2,86. H. 327. LA. (III) 4,6. 35,17. 53,13. विंशतिश्चतुर्युक्ता *vierundzwanzig* Vaṃç. Bṛh. S. 21,30. 23,7. 48,17. तेनयुक्तम् adv. (s. auch bes.) R. 1,13,10 nach dem Comm. hierher zu ziehen (तेनो विघ्नयाधाराक्षिप्तं यद्वा तेनो विघ्नराक्षिप्तम्. तया युक्तम् *auf diese Weise verbunden* ṚV. Prât. 2,13. तया युक्तः *in solchem Zustande befindlich* MBh. 3, 2958. *so verfahrend* Spr. 4715. *verbunden mit* so v. a. *bezüglich auf:* गाथा यज्ञदानयुक्ताः Kâṭj. Çr. 20,2,7. 8. ज्ञाति° Kâç. 9. ज्ञातकर्माणि पुरोहितधानयुक्तानि MBh. 5,7407. तवादर्शनयुक्तेन शोकेन R. 5,32,27. Kâm. Nîtis. 14,12. युज् pass. *in Conjunction treten mit* (instr.): यदक्रुः पुंसा नक्षत्रेण चन्द्रमा युज्येत Pâr. Gṛhj. 1,14. श्रेष्ठाभ्यानि नक्षत्राणयुदुयतिनातीत्य युज्यते Vaṃç. Bṛh. S. 4,7. उत्तरा फल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते R. 5,73,18. यदा पुंसा नक्षत्रेण चन्द्रमा युक्तः स्यात् Âçv. Gṛhj. 1,14,2. Weber, Ind. Stud. 70. Vaṃç. Bṛh. S. 98,12. 104,56. पुष्ययुक्ते निशाकरे 48, 13. 69,3. 98,16. अद्य वार्हस्पतः सोमान्युक्तः पुष्येण (so die ed. Bomb.: किं नु वार्हस्पतो योगो युक्तः पुष्येण Gorr.) R. 2,26,9 (11 Gorr.). नक्षत्रेण युक्तः कालः P. 4,2,3. युक्तः कालेन यश्च न so v. a. *wer nicht die rechte Zeit benutzt* Spr. 4631. कालयुक्तं वाक्यम् *zeitgemäss* R. 1,32,1. देशकालार्थयुक्त Bhâg. P. 1,15,27. कार्येण मरुता युक्तः so v. a. *beschäftigt mit, begriffen in* MBh. 5,3427. (न) स्वभावमतिवर्तन्ते योनियुक्ताः शरीरिणः *gebunden an, abhängig von* Spr. 4309. — 6) *mit sich verbinden;* mit acc.: (मरुतः) उभे युनक्त (= योजयन्ति Sây.) रोदसी ṚV. 5,66,6. 3,20,4.

वाणी रोहिणीं यदि युनक्ति *in Conjunction treten mit* Varāh. Bṛh. S. 24, 28. 47, 19. माघशुक्लाद्विको युद्धे श्रविष्ठायां च वार्षिकीम् (?) Wasa, Gṛhy. 113. *so v. a. theilhaftig werden:* न नु तमो न गुणाश्च युङ्क्ते Bhāg. P. 7, 9, 22. — 7) *Jmd* (loc. gen.) *Etwas* (acc.) *zu Theil werden lassen, zukommen lassen, verleihen:* अनागस्यघे युञ्जन् Bhāg. P. 1, 17, 14. येषु — शिताद्गुरं न युञ्जते 4, 26, 21. प्रभावभूमे नृणां युङ्क्ते Mārk. P. 81, 11. यमुपयन्ते देहात्मशादिषु नृभिः Bhāg. P. 8, 9, 29. शेषमात्मनि युञ्जीत *sich zu Theil werden lassen, selbst geniessen* M. 6, 12. — 8) *sich vergegenwärtigen, — in's Gedächtniss zurückrufen:* तं मुहूर्तं तणं वेलां दिवसं युयोज (= अनुचिन्तितवती Nīlak.) MBh. 3, 16752. — 9) *auftragen, befehlen, injungere:* आस्थाय तत्तद्युङ्क्ते नाथः Bhāg. P. 5, 1, 15. — 10) pass. *passen, sich schicken, gemäss sein, sich ziemen, zukommen, recht sein:* युज्यते *es ist recht* Çik. 88, 10. Kathās. 11, 29. युज्यति Harīv. 7064. न ज्ञापस्तत्र युज्यते R. 1, 21, 7. Spr. 3307. Kathās. 24, 203. Rāǵa-Tar. 4, 101. Hit. 83, 19. Bhāg. P. 4, 19, 37. Sarvadarçanas. 81, 20. 115, 1. 121, 2. 161, 6 (*so v. a. logisch richtig sein* in Sarvadarçanas.). स स्वामी युज्यते भुवि *der eignet sich zum Herrn der Erde* Spr. 2264. कृताशनप्रतिनिर्दाहात्मा ननु युज्यते *ist es nicht ganz in der Ordnung, dass das, was das Feuer vertritt, brennt?* 3579. यद्येन युज्यते लोके *was zu einander passt* 2392. नास्मिन्युज्यते कर्म किंचिद्दा मौञ्जिबन्धनात् *schickt sich für ihn, kommt ihm zu* M. 2, 171. MBh. 3, 16700 (युज्यति). शब्दो मरुद्राज इति — तस्मिन्युज्यते ऽर्भके ऽपि Raghu. 18, 41. Hit. 16, 12. महतामास्पदे नीचः कदापि नहि युज्यते Spr. 2136. तदेतन्मे न युज्यते Kathās. 30, 9. LA. (III) 37, 8. कथं भगवतः — पुत्रेष्वनिर्गुणस्य गुणाः क्रियाः Bhāg. P. 3, 7, 2. क्षुधा मे युज्यते वक्त्रम् *wie käme mir zu?* *so v. a. ich kann nicht haben* 3, 23, 36. Paṇḍat. 40, 21. एवं नीचजने ऽपि युज्यति गुरुं प्राप्ते सतां सर्वदा Spr. 880. यत्र वा युज्यते ह्यन्यामप्येतत् Paṇḍat. 113, 10. तत्रात्र युज्यते स्थातुम् Mṛǵh. 33, 21. Paṇḍat. 57, 3. व्यसने महति प्राप्ते स्थिरैः स्थातुं न युज्यते Mahān. 235. प्रतिकर्तुं प्रकृष्टस्य नावकृष्टेन युज्यते R. 4, 17, 17. तं च दातुं न युज्येते Kathās. 57, 157. तवापि युज्यते नैव दातुम् *er kann nicht gegeben werden* 159. 12, 166. 45, 196. नैतद्युज्यते मरुमेव पितृपर्यायागते वने त्यक्तुम् Paṇḍat. 21, 4. 61, 4. 96, 4. नैतद्युज्यते ते कर्तुम् 214, 5. तत्र वयैकाकिन्यास्य भूम्ने रक्षोभयं कर्तुं युज्यते 61, 22. युक्त *passend, angemessen, sich schickend, sich ziemend, recht, richtig* AK. 2, 8, 4, 24. 3, 4, 44, 80. 83. 32, 144. Trik. 3, 4, 7 (= परिमित). H. 743. Hall. 4, 61. 5, 94. M. 8, 94. युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ Bhag. 6, 17. MBh. 1, 5942. 6153. 3, 16720. 5, 1295. Harīv. 4011. R. 2, 80, 15. 3, 24, 1. 67, 24. Sūçr. 1, 124, 1. Milav. 49. 34, 3. Vikr. 12, 6. 87, 6. Spr. 976. 1643, v. l. 1966. 3346. Kathās. 23, 164. 51, 207. Rāǵa-Tar. 4, 412. 6, 208. Bhāg. P. 3, 5, 3. 24, 23. 33, 24. 4, 27, 13. Mārk. P. 83, 76. Paṇḍat. 69, 10. Hit. 18, 3. LA. (III) 34, 3. 36, 11. इति पञ्चविधा भाषा युक्ता न पुनरष्टधा Verz. d. Oxf. H. 181, *a*, 24. 26. यु° Spr. 3346. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 232. Sarvadarçanas. 29, 2. 34, 22. 70, 16. सु° R. 2, 60, 38. 82, 28. 3, 29, 4. युक्तम् adv. *auf passende Weise* Spr. 3913. हितकुलनिलयं नाथ युक्तं त्यजामि *so v. a. es ist angemessen, dass ich verlasse* 4340. न युक्तं वसत *es ist nicht angemessen, dass ihr wohnt* Harīv. 6017. युक्तमांसल *gehörig fleischig* Varāh. Bṛh. S. 70, 9. युक्तशीताम्र *nicht zu kalt und nicht zu heiss* R. 2, 44, 9. युक्ते च दैवे पुरुषेण *günstig* M. 7, 197. युक्ते मुहूर्ते R. 1, 73, 8 (75, 9 Gorr.). 5, 73, 11. मुहूर्तेन मुखेन 72, 20. *passend u. s. w. für;* mit gen.: अनुरूपो हि युक्तश्च त्वं ममापि तवापि च MBh. 3, 16702. 14, 2208. R. 3, 32, 40. 5, 24, 6. Milav. 69, 1. Vṛddha-Kâṇ. 15, 7. Rāǵa-Tar. 4, 62. Prab. 21, 14. ममात्रावस्थानमयुक्तम् Hit. 30, 17. mit loc.: युक्तमेतत्तयि MBh. 2, 4. 5, 6089. R. 2, 90, 20 (99, 33 Gorr.). 101, 11. युष्माभिर्दर्शने युक्तम् *so v. a. für euch schenswerth* Harīv. 6009. सर्वं राज्ञा मत्रयमानास यद्या युक्तं रक्षणे वै प्रजानाम् MBh. 5, 7461. युक्तं (अयुक्तं) यत् *es ist passend (unpassend) dass* R. 4, 16, 19. 6, 103, 11. Kathās. 14, 3. 32, 72. Paṇḍat. 170, 8. युक्त und अयुक्त mit einem infin.: युक्तमितो ऽन्यत्र प्रयातुम् Spr. 2369. Mudrār. 103, 5. Kathās. 32, 48. Hit. 41, 1. Prab. 35, 12. पिशुनवचनैर्दुःखं नेतुं न युक्तमियं तनम् Spr. 385. Mudrār. 14, 4. Ratnāv. 46, 8. Kathās. 28, 101. न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम् Çiç. 56, 9. Prab. 13, 14. वराकमिक्ष्वाकुस्त्रीस्य न युक्तमेतत्कर्तुम् Varāh. Bṛh. S. 47, 2. Bhatt. 8, 86. अयुक्तं निधने कामं पुत्रस्य यतितुं मया R. 6, 69, 17. न युक्तं भवतामप्रुचि दृष्ट्वा प्रतिशपं दातुम् MBh. 1, 781. युक्तं तस्याप्रनेयस्य वीर्यमत्रवतो मया । समाश्वासयितुं भार्यां 3, 2678. 14, 838. 1610. युक्तं हि पशना तत्र स्वर्गं प्राप्तुमनंशयम् 26. तस्मात्प्रतिक्रिया युक्ता भीष्मे कर्तुं तव 5, 6094. तस्मात्प्रतिक्रिया कर्तुं युक्ता तस्मै त्वयानघ 7022. 7057. दैवोपघातानि — युक्तान्यासेवितुं तया R. 3, 52, 39. Kathās. 22, 169. न युक्तं भवतात्मनृतेनोपचरितुम् MBh. 1, 769; vgl. Hoefer, Vom Infinitiv S. 87. 121 und Zeitschr. f. d. W. d. Spr. 2, 182. fgg. — 11) युज्ञान (Spr. 4330) und युक्त (R. 6, 109, 3) *dem es wohlgeht, sich in guten Verhältnissen befindend.* — 12) युक्त in der Gramm. *primitiv* (Gegens. *abgeleitet*) P. 1, 2, 51. — युज्ञान s. auch bes. Vgl. देवयुक्त, प्रातर्युक्त.

— caus. योजयति, °ते (aus metrischen Rücksichten), अयूयुजत् 1) *schirren, anspannen* Kātj. 14. 15. योजयां चक्रे रथान् MBh. 1, 7917. रथान्योजयत 7918. 4, 1025. R. 1, 69, 5. 2, 39, 10. 12. 70, 29. स्यन्दनं तैर्योजितैः । योजयित्वा 46, 26. श्यामतुरंगयोजितं रथम् Bhāg. P. 1, 16, 12. अश्वान्योजयित्वा MBh. 3, 2290. 2788. fg. रथे 2790. 13026. 4, 1017. R. 2, 57, 3 (3 Gorr.). 7, 46, 2. Varāh. Bṛh. S. 61, 9. Bhāg. P. 5, 21, 15. अयूयुजद्वृक्षवराबत्रीश्च नागान्क्ष्णोश्च R. 2, 82, 31 (89, 13 Gorr.). — 2) ein Heer *rüsten:* वज्रव्यूहीम् MBh. 4, 985. R. 1, 51, 21. षडङ्गिनीम् R. Gorr. 1, 32, 21. सैन्यम् 78, 5. Netze, Schlingen *stellen, auswerfen:* जालं ते योजयामासुः MBh. 13, 2634. पाशो योजितः Hit. 21, 10, v. l. — 3) *gebrauchen, anwenden, verrichten:* बहुधा ज्ञाग्निपस्तस्य योजिताः *so v. a. dargebracht, gesprochen* MBh. 7, 718. किमाभयो मे स्तव एष योज्यताम् Bhāg. P. 4, 15, 22. ब्रह्मदण्डमयूयुजन् । रात्रि 13, 22. छन्दोस्ययातयामानि योजितानि घृतव्रतैः *angewandt* 27. सह गोपीभिर्योजयन्मधुराः कथाः *Worte wechselnd, sich unterhaltend* Harīv. 3743. परस्य पत्न्या पुरुषः संगार्थं योजयत्वरुः M. 8, 354. गुणवद्भिः सदा नैः । स कथां योजयामास मैत्रीं संगतमेव च *pflegte* R. Gorr. 2, 1, 6. *unternehmen, beginnen:* मतोन्मत्तं योजितो व्यवहारः Jiv. 2, 32. *zu Ende bringen:* घर्षनिष्पत्रं तद्धूर्षद्योजयत् Rāǵa-Tar. 3, 403. — 4) *Jmd* (acc.) *zu Etwas* (dat.) *antreiben:* प्रत्योत्पत्तये शमदमादीन्योजयाम: Prab. 18, 10. पापान्निवारयते योजयते हिताय Spr. 1771. *Jmd verhelfen zu* (loc.): पदे तत्रे Sarvadarçanas. 88, 10. *Jmd einsetzen, anstellen bei, beauftragen mit* (loc.): यदैं दण्डधरो राज्ञा प्रजानामिह योजितः Bhāg. P. 4, 21, 21. भक्ष्यभोज्याधिकारेषु दुःशासनमयोजयत् MBh. 2, 1290. यत्र कर्मणि 5, 7016. Kir. Nitis. 19, 6. Bhāg. P. 5, 5, 18. Mārk. P.

95,18. कुम्भयोरहरूपे Kathâs. 22,150. पौवराज्ये Râja-Tar. 5,129. Mârk. P. 118,21. स्वे स्वे विषये 50,35. fg. सर्गयोजित Bhâg. P. 3,13,17. — 5) *auflegen* Âçv. Grhj. 4,3,1. योजयस्व धनुःश्रेष्ठे शरम् R. 1,75,29. ततो ऽस्मानुपूर्व्येण दिव्यान्यस्त्राण्ययोजयम् MBh. 3,12332. 12313. 5,7202. Harîv. 16079. fg. किमर्थमस्त्रं रत्नस्मु न योजयसि *richten auf* R. 5,36,48. 68,18. *anfügen, befestigen:* धनुरयोजयम्। वीणासु तन्त्रीः Kathâs. 26,168. त्रुटितं पयोधरतटे हारं पुनर्योजय Sin. D. 42,21. पद्मानि तन्त्र्यो गुणकर्मदाभिः सुदुस्त्यजैर्बन्धनं वयं योजिताः Bhâg. P. 3,1,14. नतत्राणि कालायन ईश्वरयोजितानि 22,11. *hinstellen:* पदातीश्च महीपालः पुरो ऽनीकस्य योजयेत् Spr. 4498. *hineinthun, versetzen in:* योजयेद्वीतये पत्ये Śâmas. 13,20. कर्माणि कार्यमाणो ऽहं नानायोनिषु योजितः Bhâg. P. 7,13,23. वायुं वापी तितौ कायं तेजस्तेजस्यथूयुजत् 4,23,15. दुःखे मरुति तत्र त्वां योजयामि R. Gorr. 2,38,7. Bhâg. P. 1,18,30. 3,25,10. सुकुले योजयेत्कन्यां पुत्रं विद्यासु योजयेत्। व्यसने योजयेच्छत्रुम् Spr. 3235. H. 16. Bîlar. 3. *anfügen:* उदर्कान् Kâuç. 8. *hinzufügen* P. 8,1,73, Sch. — 6) मनः, आत्मानम् *den Geist richten auf, sich vertiefen in* (loc.) Harîv. 14555. Bhâg. P. 4,31,3. Mârk. P. 48,4. आत्मानं योज्य *sich sammelnd, sich zusammennehmend* MBh. 6,3816. — 7) *verbinden, vereinigen, zusammenfügen, zusammenbringen* Vaitân. Bhn. S. 54,114. 55,19. Râja-Tar. 5,104. Pañcat. 244,3 (in der Ausg. von Bühler besser पावस्त्रीवं संचारयति). न चेदिदं ईदृशयोजयिष्यत् Kumâras. 7,66 (= Ragh. 7,14). धनया यदि मित्रं न योजयेयमस्मम् Kathâs. 22,83 Prab. 41,14. तेन योजितसंबन्धम् Kumâras. 6, 50. मोदकान् — फलाकारान्सुयोजितान् R. Gorr. 1,9,37. शत्रुणा योजयेच्छत्रुम् Spr. 2941. रत्नानि शास्त्राणि च Vaitân. Bhn. S. 104,1. तेनेयं योजिता वृत्तिः *verfasst* Roth, Zur L. u. G. d. W. 60. so v. a. *in Ordnung bringen* Spr. 2512. *Etwas* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *versehen, ausstatten, theilhaftig machen, beschenken:* (धनुः) योजयामास शोणेन R. Gorr. 1,77, 32. योजयामास नवया मौर्व्या गाण्डीवम् MBh. 4,1910. R. 1,49,11. विप्रेभ्यो गदेशास्य सर्वद्रव्याणि योजयेत् M. 7,218. ईदृशैर्योजयन्त्येमाः सुखदुःखादिभिः प्रजाः 1,26. तपसा योज्य देहम् MBh. 1,3882. 3,8425. रिपुं प्राणैः 6477. सभिषेकेण गोविन्दम् Harîv. 4022. R. 2,61,20. R. Gorr. 1,32,9. 2,26,25. 35,50. 3,2,8. 17,26. 5,2,42. 5,98,26. 7,20,25. Spr. 442. 1607. 3235. Ragh. 10,57. 12,40. Mâlav. 34. Râja-Tar. 1,281. Mârk. P. 113, 7. Sin. D. 289. Daçak. in Benf. Chr. 185,12. Pañcat. ed. orn. 2,5. (तम्) योजयामास बाहुभ्यां पद्मं रत्नमया यथा so v. a. *umfangen, umschlingen* MBh. 4,771. योजयन्ती च वाक्यमात्रेण भामिनीम् so v. a. *nur Worte mit ihr wechselnd* Harîv. 7392. योजित *versehen mit* (instr. oder im comp. vorangehend) Vaitân. Bhn. S. 2,20. Râja-Tar. 3,163 (st. des verb. fin.). Bhâg. P. 10,79,17 (desgl.). मणिरिव कृत्रिमरागयोजितः Spr. 1920. MBh. 3,832 (पीडित die ed. Bomb.). Harîv. 4632. — 8) *Jmd* (loc.) *Etwas* (acc.) *zu Theil werden lassen:* कालं न्यगति योजयन् Harîv. 2386. राज्ञसु योजितौत्कण्ठ्याम् Bhâg. P. 1,8,37. — 9) mit dem instr. eines Sternbildes *die Conjunction desselben mit dem Monde angeben können* P. 5,1,28, Vârtt. 7. — 10) med. *geringachten* Vop. in Dhârtp. 33,36.

— desid. युयुक्षति 1) *Jmd* (acc.) *anzustellen* —, *an ein Geschäft zu setzen Willens sein:* कर्म चेच्छामि वै कर्तुं तस्य यो मां युयुक्षति MBh. 4, 248. 251. — 2) *aufzulegen* (Pfeile auf den Bogen) *Willens sein:* बाणाविमो — कस्मै युयुक्षसि Bhâg. P. 5,2,8. — 3) med. *sich zu vertiefen gesonnen sein* Bhatt. 3,51.

— अधि *auflegen, aufladen* Bhâg. P. 10,71,16.

— अनु med. P. 1,3,64, Vârtt. 1) *wieder einholen,* — *an sich ziehen* Ait. Br. 4,26. Çat. Br. 5,4,3,3. — 2) *Jmd* (acc.) *befragen, fragen nach* (acc.) M. 8,79. 259. MBh. 4,26. 105. 12,1932. 1934 (mit dopp. acc.). 10995. 14,145. Harîv. 3057. R. Gorr. 2,110,4. Ragh. 5,18. 11,62. Çiç. 13,68. Daçak. 58,15. 82,5. Prab. 111,13. P. 8,2,94, Sch. — 3) *eine Lehre ertheilen* Âçv. Çr. 3,14,1. अनुयोक्तुं त्रगाद् Râja-Tar. 6,61. अनुयुक्त MBh. 13,1588 nach Nîlak. = भृतकाध्येता *von einem bezahlten Lehrer unterrichtet werdend.* — 4) *sich bedanken:* ते चान्वयुञ्जत (= अधियो युयुजुः Comm.) Bhâg. P. 10,7,16. — 5) *sich Jmd* (acc.) *anschliessen, in Jmdes Dienste treten* Spr. 4350. — 6) अनुयुक्ता हि साचिव्ये Spr. 3472 fehlerhaft für अनि° हि सा°, धुरि वानुयुज्यमानः Spr. 280 fehlerhaft für धुरि च नियु°. — Vgl. अनुयोक्तृ. — caus. 1) *auflegen* (ein Geschoss) R. 5,68,11. — 2) *anfügen, anreihen* Kâuç. 44. 53. 106. 136. — desid. *zu fragen nach* (acc.) *Willens sein:* धर्मानन्वयुयुक्षन्तः MBh. 12,1957.

— अभ्यनु *befragen:* °युज्य MBh. 12,5667.

— पर्यनु dass.: °युक्त Kathâs. 27,162.

— समनु 1) *fragen nach:* °युज्य Verz. d. Oxf. H. 170,b,39. — 2) *Jmd* (acc.) *anweisen, Jmd einen Befehl ertheilen:* न च प्रेषयिता कश्चित्प्रेष्यैः समनुयुज्यते R. 5,1,68. — Vgl. समनुयोज्य.

— अप med. *sich lösen von* (abl.) Çat. Br. 5,5,2,4.

— अभि med. P. 1,3,64, Vârtt. 1) med. *sich den Wagen anspannen für, zu* (acc.): यो गतिमभियुङ्क्ते तां गतिं गत्वासतो विमुञ्चते Çat. Br. 1,8, 3,27. — 2) act. *wiederholt —, doppelt anspannen* Çat. Br. 9,1,2,11. — 3) med. *Jmd* (acc.) *zu Etwas* (dat.) *auffordern:* यद्म त्वाभियुञ्जीत युद्धाय R. 7,61,9. — 4) *Jmd* (acc.) *angreifen;* med. MBh. 5,1975. 1982. 12,8502. R. 6,2,2. Kir. Nîtis. 8,79. act. Vaitân. Jogas. 3,1. °युज्य Harîv. 12131. Daçak. in Benf. Chr. 200,23. °योक्तुम् Kir. Nîtis. 13,61. Kathâs. 18,86. 25,277. 38,9. 40,86. pass. Kir. Nîtis. 8, 39 (wo mit dem Comm. तथान्या याभि° zu lesen ist). 9,76. Kathâs. 15,97. Prab. 9,3. °युक्त *angegriffen* AK. 3,4,24,86. H. an. 4,95. Med. t. 182. R. 2,10,27 (= कृतपराभव Comm.). 5,80,9. 6,11,18. Spr. 191. 207, v. l. 1273, v. l. 1330. 1949. 3548. Kathâs. 13,11. 34,211. Prab. 8,10. 84,1. °योज्य (s. auch bes.) *anzugreifen* Vaitân. Bhn. S. 3,84. Jogas. 3,1. अधिव्याधिबलक्षेन कदाचिन्नाभियुज्यते *wird nicht heimgesucht* Mârk. P. 137,3. — 5) *anklagen,* mit dem acc. der Person und der Sache: पत्यौरभियुज्यते M. 8,183. Spr. 3386. °युक्त *angeklagt, verklagt* Jâtâ. 2,9. 28. 100. Mṛicch. 143,6. — 6) *Etwas fordern, begehren, Ansprüche auf Etwas machen:* अभियुक्त = प्रार्थित Trik. 3,3,170. Harîv. 12190 (अनिर्मुक्त die neuere Ausg.). — 7) act. *Jmd* (acc.) *an Etwas* (loc.) *stellen, mit Etwas beauftragen:* सर्वांस्तानभ्ययुञ्जंस्ते तत्राग्निचयकर्मणि MBh. 14,2637. — 8) act. *sich an Etwas* (acc.) *machen, an Etwas gehen:* कर्म समाप्तायामातमभियुञ्जन् (= अनुतिष्ठन् Comm.) Bhâg. P. 5,4,8. वैयर्थ्यकुर्वाणकर्माण्यनभियुक्तानि (= अनादृतानि Comm.) 9,6. med. *sich anschicken,* mit inf. Daçak. in Benf. Chr. 190,2. *behandeln* (ärztlich) *mit* (instr.): योग्यैः Suçr. 1,94,16. — 9) med. *seine Thätigkeit entfalten, wirksam sein:* वायुर्यत्राभियुञ्जते (= शब्दमभिव्यक्तं करोति Comm.) Çvetâçv. Up. 2,6. — 10) °युक्त *ganz bei*

einer Sache seiend, hingegeben; = तत्पर् H. an. 4,95. Med. t. 182. Bhag. 9,22. R. 5,9,19. इदं विश्वं पाल्यं विधिवदभियुक्तेन मनसा Uttarar. 56,15 (73,8). Bhāg. P. 1,19,24. कोष्ठागारे ऽभियुक्तः स्यात् *bedacht auf* Kām. Nītis. 5,77. धान्यशस्याभियुक्त MBh. 13,285. सर्वपतिसेवाभियुक्त Daçak. in Benf. Chr. 190,3. — 11) °युक्त *bewandert in* (loc.), *eine Sache verstehend, ein Sachkenner:* कुरुकादिषु प्रयोगेषु Kathās. 32,126. धनियुक्तैरङ्गीकृतः (so ist zu lesen) Mallin. zu Kumāras. 3,44. Sin. D. 84,10. Vedântas. (Allah.) No. 124. Kāç. zu P. 2,3,122. Sid. zu Çat. Br. 2,6,2,7. 3,2,4,5. Sarvadarçanas. 147,2. fg. 157,17. 175,12. — 12) °युक्ताः Bez. der den Vaiçja entsprechenden Bewohner von Kuçadvîpa Bhāg. P. 5,20,16. — Vgl. धनियुज्यचन् fgg. — caus. *Jmd* oder *Etwas* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *versehen, einer Sache theilhaftig machen:* दिष्टान्तेन MBh. 7,2577. Pañcat. 3,9,10. Prab. 109,15. Pañcat. 163,15.

— प्रत्यभि *einen Gegenangriff auf Jmd* (acc.) *machen:* तं प्रत्यभियुक्तवान् Kathās. 107,99. *angreifen:* पौरैः प्रत्यभियुक्तानाम् Prab. 86,18, v. l. — Vgl. प्रत्यभियोग. — caus. *eine Gegenklage gegen Jmd* (acc.) *vorbringen* Jiān. 2,9.

— या 1) *anschirren* ṚV. 3,50,2 (act.). वातान्रथेष्वायुयुग्ध्वे 5,58,7. 10,44,7. धायुञ्जन् MBh. 1,7918 fehlerhaft für धयुञ्जन्, wie die ed. Bomb. hat. — 2) med. *anlegen, befestigen:* धलंकारमायुञ्जाते Çiç. Cu. 80,2. — 3) *Jmd* (loc.) *Etwas* (acc.) *zu Theil werden lassen:* तद्भवान् — मय्यायुङ्क्तमनुग्रहम् Bhāg. P. 3,14,16. — Vgl. धायुक्त fg. (*ganz bei einer Sache seiend* Taitt. Up. 1,11,4). — caus. 1) *fügen —, thun auf* (loc.) Pañcat. 3,2,17. मालाः — धायोजिताः शिरसि ṚV. 2,21. *befestigen an* (loc.) Bhāg. P. 5,23,3. — 2) *zusammenfügen, bilden:* कुसुमायोजितकार्मुक Kumāras. 4,24.

— उपा act. *anschirren* ṚV. 3,35,2.

— समुपा, °युक्त *versehen mit, erfüllt von:* ऋषिभिः समुपायुक्तं तीरम् MBh. 3,10099.

— व्या *sich trennen, auseinandergehen:* °युज्य Mānav. P. 32,30.

— समा 1) *schirren, rüsten, zurechtmachen:* अश्वान्स्वान्स्वान्समायुज्य पप्रू रथपरिच्छदाः Bhāg. P. 10,11,29. नावं समायुक्ताम् R. 7,47,1. — 2) *Jmd Etwas auftragen, anvertrauen:* ये ऽर्थाः स्त्रीषु समायुक्ताः Spr. 4896. — 3) (feindlich) *zusammenstossen mit* (acc.): यद्या नावं समायुङ्ग्याद्वार्तराष्ट्रान् (so die ed. Bomb.) MBh. 4,1603. — 4) *verbinden —, zusammenbringen mit* (instr.): धूमजालेन समायुक्तः (feindlich) *zusammengestossen mit* R. 6,18,20. धग्निना *in Berührung gekommen mit* MBh. 15,1072. *verbunden —, versehen —, ausgerüstet —, ausgestattet mit* (instr. oder im comp. vorangehend) 3,2017. Harīv. 10197. R. 5,93,8. Spr. 2822. Sāmān. 13,17. Vaitān. Bṛh. S. 79,18. M. 12,28. Bhāg. 15,14. MBh. 3,2783. 13,3232. Harīv. 4305. R. 1,62,18. 2,91,22 (100,19 Gorr.). 3,27,17. 42,18. 5,14,31. 6,93,22. Mṛicch. 34,16. Spr. 4622. 4782. Vaitān. Bṛh. S. 54, 121. Mānav. P. 32,25. Verz. d. Oxf. H. 40,b,27. Pañcat. 1,7,2. 65. — Vgl. समायोग. — caus. *versehen mit:* न तद्भुजबलेन शक्यो मौर्य्या समायोजयितुम् MBh. 1,7360.

— धभिसमा, °युक्त *verbunden —, versehen mit* (instr.): धकीर्त्या MBh. 12,2478.

— उद् med. P. 1,3,64, Vārtt. Vop. 23,31. 1) *sich rüsten, Anstalten treffen* Verz. d. Oxf. H. 257,a,1. रन्तुम् Daçak. 32,18. उद्युक्त *gerüstet, schlagfertig, zur That bereit, an's Werk gehend, mit allem Eifer sich an Etwas machend* MBh. 7,4268. R. 1,1,45. 4,12,7. उद्युक्तो विद्यासमधिगच्छति Spr. 1093. Kām. Nītis. 8,50. 13,39. 15,60. 18,42. Vaitān. Bṛh. S. 4,24. 15,20. Kathās. 45,35. 134. Rāja-Tar. 5,331. Mārk. P. 99,12. Bhaṭṭ. 8,16. धग्निप्रवेशाय Kathās. 101,252. दानाध्ययनयज्ञेषु Mārk. P. 50,75. इषस्त्रे प्रति MBh. 1,5221. विश्वस्तयोद्युक्त Rāja-Tar. 2,19. 3,1. Spr. 2573. AK. 3,1,9. — 2) *sich auf und davon machen:* स ह तत ह्व शर्यात उद्युयुत्से Çat. Br. 4,1,5,7. तदहरेव पौर्णमासेन हविषेष्ट्वोद्युङ्क्षीरन् Liṭ. 10,16,6. 7. पद्भ्यां कुस्ती कस्तिन्याः पदेन पद्युयुत्से etwa so v. a. *auf Schritt und Tritt nacheilt* AV. 5,70,2; die Stelle ist demnach u. पद 8) zu streichen und u. 1) zu stellen. — Vgl. उद्योग fg. — caus. *aufregen, anfeuern, zur That antreiben:* युद्धाय Harīv. 5133. R. 5,48,12. MBh. 3, 1867. 5,70. Harīv. 6579. R. 5,27,22. 31,22. धाक्षपटलोन्मोचितानाकाण्डचण्डाम्बुवाहाः *erregt, zusammengetrieben* Prab. 81,8.

— समुद् caus. *anfeuern:* समराय Prab. 85,18. Mālav. 9,17.

— उप mod. P. 1,3,64. Vop. 23,31. ausnahmsweise auch act. 1) *anschirren* ṚV. 1,39,6. 140,4. गौ न धुर्युप युज्ञाये धनः 151,4. उप वृत्रं युयुत्से वृषण्वा हरी 8,4,11. 10,102,7 (act.). AV. 4,23,3. *daran schirren* Çat. Br. 5,1,4,11. — 2) *sich anschliessen:* मरुद्भिरग्ने उप युज्यहे ṚV. 1,165, 5. — 3) *sich an Etwas* (loc.) *machen, sich kümmern um:* नासंपृष्टो ह्युपयुङ्क्ते (व्युपयुङ्क्ते v. l.) पार्थिवे Spr. 3993. — 4) *sich an Jmd anschliessen, in Jmdes Dienste treten:* न वै प्राज्ञा गतस्त्रीके भर्तारमुपयुञ्जते Spr. 4330. — 5) *sich aneignen, für sich nehmen:* तस्यादित्यो भागमुपयुङ्क्ते भाति MBh. 13,7375. चौरैर्हृतं धनम् M. 8,40. *annehmen* Harīv. 14346. — 6) *verwenden, anwenden, gebrauchen:* धक्षीनसक्तान्युपयुञ्जाना यत्ति Ait. Br. 6,21. den Soma Çat. Br. 14,3,2,30. (धनम्) उपयोक्तुं हिताप्येभ्यः (so die ed. Bomb.) कव्यवाहे च MBh. 2,1223. 14,2068. पणान्धमुत्तान्गुणान्नरः षडुपायुङ्क्त Ragh. 8,21. Bhāg. P. 7,13,8. प्रेष्यभावेन नामेयं देवीशब्दक्षमा सती। स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्त्रोर्णा वोपयुज्यते॥ Mālav. 87. *geniessen* (auch von Speisen), *verzehren:* यदाहारमुपयुञ्जानाः Harīv. 2872. राज्यमुपयुज्यताम् Mṛicch. 175,8. दारादीनुपयुङ्क्ते Bhāg. P. 5,26,9. 10,70,13. धन्नम् u. s. w. Âçv. Gṛhj. 4,7,27. Liṭ. 1,6,2. MBh. 1,709. 715. 734. 3637. 6862. 3,87. 10064. 14860 (भोगानुपभोगांश्च). 15364. 13,236. Harīv. 1198. 3794. R. Gorr. 2,56,20. 95,15. Sūça. 1,20,6. 113,9. 128,3. 2,75,2. Mucc. 13. फलान्युपायुङ्क्त स दण्डनीतेः Ragh. 18,15. Kathās. 37,93. 93. 30,13. 40,80. Daçak. in Benf. Chr. 199,17. fg. Verz. d. Oxf. H. 260,a,25. 313, a,12. Bhāg. P. 1,15,11. 5,16,24. 20,22. 24,16. 6,2,19. Bhaṭṭ. 8,39. उपयोक्ष्यति (उपभोक्ष्यति ed. Bomb.) MBh. 1,6221. 3,12140. न चोपयुङ्क्ते (ग्निः) तदाहृ *verzehrt* Spr. 3384. चिरकाल्युपयुक्तदेहे Bhāg. P. 10,29,35. 9,2,14. क्रमेणास्योपयुञ्जन्ति ह्युपमायुस्तवैव च MBh. 11,173. उपयुक्तोदका प्रपा *verbraucht* R. Gorr. 2,123,13. — 7) pass. *zur Anwendung kommen, tauglich —, nützlich —, erforderlich sein, sich eignen, am Platze sein* MBh. 3,12739. उभयमेव तत्रोपयुज्यते फलं धर्मस्यैवेतरस्य च 5,1598. नोपयुज्यति कर्मणि Harīv. 11823. R. 5,73,22. इयं नृपाणामुल्लासे ह्रासे वा देशकालयोः। — कथा युक्तोपयुज्यते Rāja-Tar. 1,21. यदि प्राणयुक्तायं देहो ऽयं नोपयुज्यते Spr. 2363. मुक्तारत्नस्य शाणाश्मघर्षणं नोपयुज्यते 3331. 3034. शरदश्च शुभं वद कुत्रोपयुज्यते 1915. 1962. मौसास्थिकोशसंघो हि कोपयुज्यत एव ते Kathās. 41,42. कर्मसूपयुज्यते Prab. 110,10.

Sin. D. 85, 2. Paśkat. 133, 8. Vaijntas. (Allah.) No. 112. Kull. zu M. 10, 3. P. 3, 1, 56, Sch. तस्मैयमुपयुज्यते *signet sich für ihn, ist für ihn bestimmt* Bhāg. P. 9, 23, 37. धनुष्मुपयुज्यमान zu *Nichts nützend* Uttarar. 73, 16 (93, 1). उपयुक्त *zur Anwendung kommend, nöthig, erforderlich, am Platze seiend:* यच्चहस्तूपयुक्तं च तस्या: Kathās. 36, 65. 38, 71. 61, 11. 123, 31. Rāja-Tar. 4, 325. प्रयाणेषु 588. प्रभुकार्योपयुक्तासु Kathās. 33, 140. 22, 38. Prab. 110, 6. 9. सवर्णसंज्ञोपयुक्ता: स्थानप्रयत्ना: P. 1, 1, 9, Sch. Paśkar. 1, 11, 4. 2, 28. पदार्थानुपयुक्तेन राज्येन Kathās. 72, 173. Madhus. in Ind. St. 1, 16, 10. किमुपयुक्तो ऽपमेतावद्धर्तनं गृह्णात्यवानुपयुक्तो वा so v. a. *er verdienend* Hit. 98, 14. धनुपयुक्तमिवात्मानं मन्यते *unwürdig* Çik. 97, 2. — Vgl. उपयोक्तव्य (*zu geniessen*) fgg. — caus. 1) *berühren, zusammenstossen mit* (acc.) Bhāg. P. 5, 16, 25. — 2) *anwenden* Sūçr. 1, 113, 10. — desid. s. उपयुयुक्षु.

— व्युप = उप 3) Spr. 3095, v. l.

— समुप *geniessen, verzehren:* पर्णं समुपयुक्तवान् MBh. 3, 1535. — caus. dass.: बलिषड्भागमुद्धृत्य बलिं समुपयोजयेत् (य:) MBh. 12, 3233.

— नि gewöhnlich med. 1) *anbinden, fesseln an* (loc.), bes. das Opferthier an den Pfosten: पाशे न बद्धो ऽवहिते नि युज्यताम् AV. 2, 12, 2. VS. 6, 9. Çāṅkh. Çr. 4, 14, 7. Çat. Br. 3, 7, 3, 3. 9, 4, 22. परियो पशुं नियुञ्जन्ति Āçv. Çr. 3, 2, 5. पशुं बद्ध्वा यूपे रशनायां वा नियुनक्ति Gobh. 4, 8, 15. Ait. Br. 7, 16 (निनियोज्ञ perf.). पशूनानि नियुञ्जते पशूनां मध्यमे ऽक्नि Cit. bei Gaupāy. zu Sāṁkhyak. 2. MBh. 14, 2635. R. 1, 13, 31. स्त्रक्वेनासौ (गर्दभ:) शस्यक्षेत्रमध्ये नियुक्त: Hit. 81, 13. समुद्रो ऽयं नियुज्यताम् R. 5, 92, 17. धुरि *an die Deichsel spannen:* वरूत्रं किं तुदसि मा नियुज्य धुरि गा R. Schl. 2, 36, 14. so v. a. *vorn an stellen* 5, 2, 2. so v. a. *die schwerste Arbeit aufbürden* Spr. 280, v. l. *verbinden, zusammenfügen:* कपोतौ (*eine best. Stellung der Hände*) भौतौ u. s. w. नियुज्यते (vgl. मुष्टि, अञ्जलि बन्ध) Cit. bei Çāṅkh. zu Çik. 78, 9. — 2) *an Jmd binden* so v. a. *von Jmd abhängig machen:* तं गृणते नि युङ्धि AV. 3, 3, 11 (v. l. RV.). बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् Āçv. Gṛhj. 1, 21, 7. आत्मन्येव स्त्रियम् Çat. Br. 5, 3, 3, 6. भ्रुवं नियुक्तस्तस्यां किं मदनेन *an sie gekettet* R. 5, 20, 6. — 3) *den Blick, den Geist, die Gedanken richten auf* (loc. dat.): नियुक्ता यत्र वा दृष्टि: MBh. 1, 7694. तस्य विनाशाय शीघ्रं राज्ञा मनो नियुङ्क्ष्व Kull. zu M. 7, 12. आत्मा सुखे नियोक्तव्य: Spr. 2723. *stellen an* (loc.): गुरुस्थाने न मां वीर नियोक्तुमनर्हसि MBh. 3, 1358. *bringen auf:* कथमिमां चित्तवैतामके मार्गे नियोक्तुमरभुत्सके 1, 6156. *Jmd anhalten —, anweisen zu, anstellen bei, zu, betrauen —, beauftragen mit:* चातुर्वर्ण्ये च लोके ऽस्मिन्स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति R. 1, 1, 92. MBh. 5, 1561. Çik. 9, 13. क्षिते Spr. 2174. यं तु कर्मणि यस्मिन्स न्ययुङ्क्त प्रथमं प्रभु: M. 1, 28. आकरकर्मान्ते 7, 62. कार्यदर्शने 8, 9 (act.). कृत्ये MBh. 2, 1228. कार्ये गुरुणि Kumāras. 3, 13. क्षेमतुरंगरक्षणे Ragh. 3, 38. वाणिज्यव्यवहारेषु Kathās. 43, 70. लेखस्य लेखने 267. 71, 82. Bhāg. P. 10, 73, 24. Hit. 41, 23. 62, 20. 90, 18. प्राणेषु च धनेषु च Spr. 2360. नियुक्तेयं वनवासे R. 2, 37, 16. कार्येषु M. 9, 231. MBh. 4, 131. यज्ञेषु 317. R. 3, 66, 7 (68, 17 Gorr.). 4, 9, 7. P. 6, 2, 75. Çik. 13, 23. Ragh. 5, 29. 6, 26. 31. होमे Paśkar. 1, 7, 76. Mālav. 11. Spr. 1583. 2372. 3472 (Conj.). Kathās. 14, 35. P. 4, 4, 70, Sch. Bhāg. P. 5, 21, 16. 8, 14, 1. Hit. 91, 11, v. l. 97, 17. Bhatt. 3, 5. स पुत्रमेकं राज्याय पालयेति नियुज्य R. 1, 55, 11 (स पुत्रमेकं राज्याय नियुज्य परिपालने Gorr. 56, 11). दुष्कृतस्मर्तव्यिसत्कारेण नियुज्य Çik. 7, 18. धुर्यूयमे यम Kathās. 1, 40. पित्रा नियुक्तो वनवासाय R. 4, 4, 5. Bhāg. P. 5, 21, 17. राज्ञो समाननार्थं च पौराणां च तन न्ययुज्यत Kathās. 14, 34. सो ऽपि नियुक्तवान्। गूढमन्तःपुरे तत्र निशि नारीमन्वेतितुम् 3, 70. 34, 68. राज्यभारनियुक्त *betraut —, beauftragt mit* R. 1, 27, 18. 5, 70, 9. Spr. 884. वृथा एव राज्ञा पिङ्गलकेनारण्यरक्षार्थं सेनापतिर्नियुक्त: *als Heerführer eingesetzt* Hit. 38, 17. कृतमन्त्रौ — वर्षयतो नियुज्य Bhāg. P. 5, 20, 31. प्रकृतिस्त्री नियोक्ष्यति *anhalten, dazu treiben* Bhag. 18, 39. MBh. 3, 2758. 5, 6084 (act.). Harīv. 11161 (act.). R. 1, 34, 16 (35, 16 Gorr.). R. Gorr. 2, 20, 12. 5, 78, 23. Spr. 4014. नियुज्यताम् Hit. 88, 17. नियुज्यमान Spr. 3544. MBh. 1, 6943. नियोक्तव्य 4862. 5, 6084. M. 9, 64. Jāṁ. 2, 8. नियुक्त *angehalten, angewiesen, angestellt, beauftragt, aufgefordert* M. 3, 173. 5, 27. 28. 9, 58. fgg. 63. 144. 167. R. 1, 14, 35 (31 Gorr.). 2, 54, 18 (17 Gorr.). 90, 12. 101, 7. 105, 36. fg. (114, 24. fg. Gorr.). 107, 6. 7. Ragh. 16, 38. Kathās. 14, 54. 18, 276. 20, 88. 24, 222. 28, 93. Bhāg. P. 2, 6, 31. 5, 10, 4. Brahma-P. in L.A. (III, 37, 16. नियुक्त M. 9, 142. 147. Jāṁ. 3, 268. Harīv. 7338. R. Gorr. 2, 62, 2. 93, 16. Kathās. 60, 112. नियुक्त m. *ein Angestellter, Beamter* Spr. 1009. — 4) *Jmd zur Rechenschaft ziehen:* न स राज्ञा नियोक्तव्यो न नियोक्तव्य बन्धुभि: M. 8, 186. — 5) *Jmd* (loc.) *Etwas* (acc.) *aufladen, auftragen:* गुरुकार्याणि सर्वाणि नियुज्य कुशिकात्मजे R. 1, 24, 22. भवद्भिर्यन्नियुज्यते Bhāg. P. 10, 41, 48. — 6) *verwenden:* गावाम् Pāṇ. Gṛhj. 1, 15. Gobh. 1, 4, 24. वास: 3, 1, 9. — 7) नियुक्त *bestimmt, vorgeschrieben:* पाठीनरोहितावत्रौ नियुक्तौ रुव्यकव्ययो: M. 5, 16. नियुक्तम् adv. *durchaus, auf jeden Fall, nothwendig* ṚV. Pāṛ. 3, 12. 11, 23. P. 4, 4, 66. — 8) कृतत्रेतानियुक्तानि Harīv. 323 fehlerhaft für कृतत्रेतादियुक्तानि, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. नियुक्ति, नियोक्तृ fgg. — caus. 1) *anspannen:* वृषभौ धुरि नियोज्य Hit. 46, 12. *anbinden, befestigen:* स्वकण्ठे पाशे नियोज्य Paśkar. 135, 4. हर्म्ये घामोकरनियोजितम् *gefasst in* Spr. 5020. — 2) *hinstellen, aufstellen:* पाशास्तत्र नियोजिता: Hit. 21, 10. शनैश्चरो यस्याणां च मध्ये पित्रा नियोजित: Mārk. P. 78, 33. *legen —, auftragen auf* Verz. d. Oxf. H. 103, b, 8. *hinbringen zu:* केशेषाकृष्य तौ रणडौ पाण्डवेषु नियोजय Prab. 41, 17. *richten auf:* ब्रह्मनियोजितात्मन् Kumāras. 3, 13. *Jmd versetzen —, bringen in, zu:* दास्ये MBh. 1, 1237. कृच्छ्रे R. Gorr. 2, 10, 13. दु:खे 78, 3. दु:खमार्गे Spr. 253. संदेहे Paśkar. 8, 21. *anhalten —, zwingen zu:* क्लिशेषु M. 9, 224. धर्मे MBh. 1, 6194. विनये Kām. Nītis. 1, 64. कर्मणि घोरे Bhag. 3, 1. कृत्येषु Spr. 2689. *an ein Amt, eine Beschäftigung stellen, in eine Würde einsetzen:* स्वपदे Kathās. 22, 58. यस्मिन्विषये Prab. 37, 8. कञ्चिन्मुख्याश्च मुख्येषु (sc. कार्येषु) मध्यमेषु च मध्यमा: । जघन्याश्च जघन्येषु भृत्यास्तान् नियोजिता: ॥ R. Gorr. 2, 109, 20. यौवराज्ये R. Schl. 2, 26, 23. मन्त्रिपदे Kathās. 6, 70. 25, 276. Mārk. P. 78, 31. Sarvadarçanas. 86, 9. Paśkar. 24, 5. कृत्यार्थे Harīv. 2098. तव कौतुकप्रतिकर्मणि Kathās. 45, 295. साम्यधर्मेषु Paśkar. 31, 6 (27, 15 ed. orn.). घर्मस्य संग्रहे व्यये च M. 9, 11. रक्षायां धान्यवेतणे । दक्षिणायां च वै दाने MBh. 2, 1292. बलिपाङ्क्तिरनेकशस्त्वया गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता Kumāras. 4, 15. R. 2, 36, 4. प्राप्ते, मूर्ते नियोज्यमाने Spr. 1887. fg. तदलानि सारमाद्य: सेनापतये नियोज्यन्ताम् Hit. 102, 2. *Jmd anweisen —, antreiben zu, auffordern* (dat.): वनवासाय R. Gorr. 2, 17, 20. रावणोच्छित्तये Kathās. 13, 82. खर्जूरानयनं प्रति 61, 32. यज्ञार्थम् M. 9, 58. R. 1, 38, 10. दिव्यार्थे Paśkar. 97, 1. यद्भवेद्व त्वया तत्र

किमर्थं न नियोजितः R. 4,16,17. Bhāg. 3,36. MBh. 4,102. Hariv. 9693. R. Gorr. 2,16,11. 3,33,2. 5,28,10. 56,30. Mārk. P. 51,26. fg. Kathās. 23,8. — 3) *hingeben:* वित्तं सुपात्रे यो नियोजयेत् Spr. 1862. यदि स्वयमेवात्मानं वधाय नियोजयति Pañcat. 70,3. *übertragen:* उत्तमाधममध्यानि युद्धे कार्याणि पार्थिवः। उत्तमाधममध्येषु पुरुषेषु नियोजयेत्॥ Mitāksh. 89 im ÇKDn. u. मध्य adj. — 4) *anwenden, in's Werk setzen:* पूर्वं दैवं (sc. कार्यं) नियोजयेत् M. 3,204. बुद्धिम् *den Verstand anwenden* Spr. 179. — 5) *Jmd mit Etwas* (Instr.) *versehen, einer Sache theilhaftig machen:* स्मरं वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति Kumāras. 4,42. शासनशतेन Pañcat. 4,23. सभ्यागतक्रियया 117, 12. शपथैः so v. a. *beschwören* Vaitān. Bhn. S. 88, 41. देशत्यागेन *belegen —, bestrafen mit* (unter नियोजयितव्य ungenau übersetzt) Pañcat. 261,6.

— अनुनि so v. a. नि 2), mit loc. oder dat.: ब्रह्मण्येव तत्रमनुनियुनक्ति Ārt. Bh. 2,33. Pañcav. Bh. 18,1,14. 19,16,6. Kāṭh. 29,9.

— उपनि med. *heften an* (loc.) Kāṭh. 29,9.

— विनि med. P. 1,3,64, Vārtt. selten act. 1) *lösen, abtrennen:* रथेषु विनियुक्तेषु *vom Wagen abgelöst* MBh. 1,3491. pass. *auseinander fallen:* (गात्राणि, देहानि) कालेन विनियुज्यते 11,91. — 2) *abschiessen:* विनियोक्ष्याम्यहं (विनियोक्ष्यामि Scal.) बाणानृषभाक्षिगतगर्मसु R. ed. Bomb. 2,23,37. *richten auf:* प्रत्यक्षं विनियुक्तात्मा Kumāras. 2,31. — 3) *Jmd stellen an, anweisen zu, bestimmen zu, anstellen, beauftragen:* शेषां सेनां गुरुत्राणे विनियुज्य Hariv. 8034. रक्षार्थं पत्तवाटस्य पाण्डवान्विनियुज्य 8053. 7048. कार्ये त्वां विनियोक्ष्यामि MBh. 1,4152. कार्ये ऽत्र विनियुक्तानाम् R. 5,2,6. विनियुञ्जीत राज्ये त्वाम् MBh. 9,233. R. 4,9,4. घस्रे 7,92, 2. विनियुङ्क्ते भोगभुक्तये पुमः Sarvadarçanas. 88, 16. यथा सम्राडेवाधिकृतान्विनियुङ्क्ते Prāçnop. 3,4. विनियुङ्क्ष्व माम् MBh. 14,1650. R. 2,39,20. 4, 63,22. 7,13,3. सख्ये च विनियुज्यताम् *er werde in die Freundschaft eingesetzt* so v. a. *er werde zum Freunde gemacht* Hariv. 4034. — 4) *Etwas anwenden, verwenden, gebrauchen* Uttarar. 109, 14 (148, 10). Kathās. 22,29. 53,97. 90,22. Çaṃk. zu Bhn. Âr. Up. S. 271 (अविनियुक्तत्व). 303. zu Khānd. Up. S. 31. Kull. zu M. 8,30. 212. 11,23. Sarvadarçanas. 124, 17. किंचिदिहनियुज्य च *Etwas davon geniessend* Daçar. 93,9; oben so und zwar mit kleiner Schrift als scenische Bemerkung ist zu lesen 90, 10. — Vgl. विनियोग fg. — caus. 1) *Jmd an Etwas stellen, anweisen zu, beauftragen mit:* विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं विनियोजितः Jāt. 1,270. सेयमुत्पादनार्थाय मया त्वं विनियोजितः Hariv. 3003. यत्नेषु 9393. विनियोगे ऽस्मिन् R. 3,60,38. यो यत्र कुशलः कार्ये तं तत्र विनियोजयेत् Spr. 2356. Kām. Nītis. 5,76. नरं पशुत्वे विनियोजितम् *zum Opferthier erkoren* R. Gorr. 1,63,7. गुरुत्वाधिपतित्वे Mārk. P. 108,30. मयात्र विनियोजितः 132,37. R. 4,20,11. — 2) *Jmd Etwas übertragen:* सर्वमेतत्तु कृत्येषु विनियोजयेत् M. 7,226. — 3) *Jmd* (dat.) *Etwas* (acc.) *anbieten, darreichen* Pañcat. 3,7,35. — 4) *anwenden, gebrauchen* Çvetāçv. Up. 5, 3. 6,4. Suçr. 1,58,12. — 5) *verrichten:* कलामेवार्कर्म Pañcat. 3,7,19.

— संनि 1) *bringen —, versetzen in:* ततो मां विषमे कृत्ये व्यसने संनियोक्ष्यति Mārk. P. 99,30. — 2) *Jmd anweisen:* तदर्वं संनियोक्ष्यामि सर्वानेव दिवौकसः MBh. 1,2500. — Vgl. संनियोग. — caus. 1) *bringen auf, in, versetzen in:* तेन तनयं मार्गे प्रवृत्तेः संनियोजय Mārk. P. 26,27. किमर्थं दिव्यमात्मानं मानुष्ये संन्ययोजयत् Hariv. 2140. — 2) *stellen an, anweisen zu, betrauen mit, beauftragen:* साचिव्ये संनियोजितः Spr. 2548. राज्ञी तु प्रतिपूजार्थं सैन्यं सेन्ययोजयत् MBh. 2,1291. R. Gorr. 1,39,23. वीरसंभावनार्थाय कृत्तिकाः संन्ययोजयत् R. Schr. 1,38,23. वसिष्ठं संन्ययोजयत्। स्वदारेषु (sc. अपत्यार्थम्) MBh. 1,6012. तत्र ताः संनियोजय Brahma-P. in LA. (III) 50,22. MBh. 4,462. — 3) *zuweisen, bestimmen:* प्रभाप्रभुं समभ्येति विधिना संनियोजितम् Spr. 10.

— निस्, partic. निर्युक्त Hariv. 3438. 4643. 11783. 12338; statt dessen die neuere Ausg. निर्मुक्त. st. सारनिर्युक्तं 4530 hat die neuere Ausg. सायुनिर्व्यूढं und st. चारुनिर्युक्तो 4655 चारुभिर्युक्तो. 4528 liest die neuere Ausg. दृढनिर्युक्त st. °संयुक्त der älteren. — Vgl. निर्योग.

— विनिस् *abschiessen:* विनिर्योक्ष्याम्यहं (विनियोक्ष्यामि ed. Bomb.) बाणानृषभाक्षिगतगर्मसु R. 2,23,37. wohl nur Druckfehler.

— प्र med., ausnahmsweise auch act. P. 1,3,61. Vop. 23,31. 1) *anschirren, anspannen:* पृषतीः RV. 1,85,3. 5,52,8. wohl auch 10,33,1. प्रयुञ्जती दिव ईति 5,47,1. यानेन गोभिः सैतैः प्रयुक्तेन R. 1,17,14. गोप्रयुक्तदान so v. a. गोप्रयुक्तयानदान MBh. 13,3334. प्रयुक्तेन्द्रियवाजिन् Brahma-P. in LA. (III) 52,12. — 2) *in Bewegung setzen, werfen, schleudern, abschiessen:* नैतानि (यन्त्राणि) निरधिष्ठाने प्रयुज्यन्ते MBh. 3,12309. 12017 (act.). 5,7173. 7291 (act. und med.). Ragh. 7,58. Kathās. 39,38. 50,65. Bhāg. P. 3,19,22. न मन्त्रवाक्ताय — प्रायुङ्क्त भूयः स गदाम् 6,11.12. परमास्त्रं प्रयुक्तम् MBh. 1,211.5,7282. Spr. 4943. Ragh. 2,34. 12,99. Mārk. P. 134,11. सुप्रयुक्तशर H. 772. अक्षैः — ईशप्रयुक्तैः *geschwungen* Bhāg. P. 5,8,24. अक्षान्प्रयोक्ष्यन् *die Würfel werfen* MBh. 4,224. महत्प्रयुक्ता वाललता: *bewegt* Ragh. 2,10. शापः प्रयुक्तो ऽयं मयि त्वया *geschleudert* MBh. 1,6734. स्थाने रोषः प्रयुक्तः *ausgelassen* 6845. उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनः *richten auf* RV. 1,48,4. जातोयागप्रयुक्तधी Rāja-Tar. 4,525. Worte u. s. w. *richten an, vorbringen, hersagen, aussprechen:* देवतायां स्तुतिं प्रयुङ्क्ते Nir. 7,1. प्रायुङ्क्त तदाशिषः R. 1,13,38 (35 Gorr.). रामलक्ष्मणसीतानाम् 2,32,11 (act.). 35,7. रामाय R. Gorr. 2,32,10. 4,8,57 (act.). Ragh. 3,35. 11,5. 13,8. Bhāg. P. 4,9,39. 7,10,33. 9,3,19. P. 3,2,83, Sch. प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनम् Ragh. 2,70. M. 3,152. मङ्गलानि R. 3,6,12. मा च शास्त्रानुगो वार्धं प्रयुञ्जीत कदा च न R. Gorr. 2,79,11. वाचा स्वरसंपत्प्रयुक्तया 4,63,11. Kām. Nītis. 17,15. Bhāg. P. 6,10,28. Bhatt. 8,39. द्वेष्यप्रयुक्ते वचः Kathās. 34,195. प्रीतिवाक्यानि रूक्ष्याणि प्रयुज्य मुनये Hariv. 7233. R. 3,38,27. गिरं तत्त्वप्रबोधप्रयुक्ताम् Ragh. 5,74. तिस्रो मात्रा मृत्युमत्यः प्रयुक्ताः *ausgesprochen* Prāçnop. 5,6. गौः सम्यक्प्रयुक्ता, दुष्प्रयुक्ता Spr. 4034. Sāh. D. 1,18. सक्षो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह *ein unvollständiger oder ein nach Betonung oder Laut falsch hergesagter Spruch* Çikshā 52. सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्म 17. एवं वर्णाः प्रयोक्तव्या नाव्यक्ता न च पीडिताः 21. Schol. zu Gaim. 1,1,5. प्रयुञ्जीया रज्ञगन्नाम किंचन Kathās. 6,54. किं ब्रवीषीति यत्राठो विना पात्रं प्रयुज्यते *gesprochen wird* Cit. beim Schol. zu Çiç. 31,7. — 3) *Jmd antreiben, anweisen, heissen* Bhatt. 8,96. भर्त्रा ध्रुवदर्शनाय प्रयुज्यमाना Kumāras. 7,85. Kathās. 33,95. गर्भस्योत्पाटने मम 26,191. Hariv. 10314. यत्र प्रयुज्यते मार्गे प्रकृतिस्थेन Wilson, Sāṃkhyak. S. 183. Bhatt. 3,54. प्रपलायने सुकरे क्षिप्ता मा प्रायुङ्क्त राज्ये वत दुष्करे त्वाम् 81. प्रयुज्यमान als Erkl. von प्रयोज्य (*der angewiesen wird* neben प्रयोक्तृ *der da anweist;* unter d. Ww. unrichtig erklärt) Z. d. d. m. G. 7, 168, N. 1. यत्र केन प्रयुक्तो ऽयं

यां चरति पूरुषः Bhag. 3,36. अयुङ्क्त Gobh. 3, 1,17. R. 3,51,27. 4,8, 23. 57,14. Kir. Nitis. 6,12. Ragh. 7,22. 12,46. Kumâras. 1,21. Kathâs. 3,41. 13,141. 17,50. Râga-Tar. 4,116. Bhâg. P. 3,2,30. 9,7,3. Hit. 112, 10. Daçak. in Benf. Chr. 192,20. Bhaṭṭ. 6,133. मारुतिं दूतं प्रयुङ्क्ते erkor Mârutî zum *Boten* 88. Kumâras. 3,6. — 4) *stellen an* (loc.), *setzen* Bhâg. P. 5,23,6. यत्रात्मगतमित्येतत्कविना प्राक्प्रयुक्तम् Schol. zu Çâk. 13,8. समान उपसर्जनसंज्ञकं पूर्वं प्रयोक्तव्यम् Schol. zu P. 2,2,30. Vop. 3,1. 8,1. *legen auf:* तस्यार्थात्तं धनुषि प्रयुञ्जतः Bhâg. P. 4,11,3. — 5) *Jmd hinführen zu, auf, bringen in* (acc.): प्रयुज्यमाने मयि तां मुद्धो भागवतीं तनूम् Bhâg. P. 1,6,29. गतिमणुवोम् 3,25,36. दृढं मनः (acc.) कर्म (nom.) यत्ते प्रयुङ्क्ते 5,5,6. — 6) *verbinden mit:* प्रजा मर्त्यान्प्र युनक्ति धीरैः AV. 19,56,1. — 7) *in Thätigkeit setzen, anwenden, gebrauchen; anstellen, vollziehen; feiern* (ein Opfer u. s. w.): हते देवास्त्रिः सवनस्य प्रयुञ्जते TBr. 1,6,2,2. शक्करी यो यज्ञे प्रयोक्तासौ TS. 2,6,2,3. 2,6,5. सर्वेभ्यः कामेभ्यो यज्ञः प्रयुज्यते 4,44,2. 5,3,1. पात्राणि यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति act. P. 1,3,61. 8,1,15, Sch.; प्रयुनक्ति सुवम् Vop. 23,51.) 6,5, 44,1. यज्ञादेव तत्यज्ञं प्रयुङ्क्ते *aus dem Opfer nimmt er was er zum Opfer verwendet* TBr. 3,2,5,6. 3,6,12. 7,4,1. चातुर्मास्यानि Âçv. Ça. 2,13,1. 9,2,3. Çat. Br. 1,8,2,27. 6,6,4,15. Kâtj. 7,8. Lâṭj. 6,2,9. 13. 19. प्रयुक्तानां पुनःप्रयोगमेके Kâtj. 63. दृष्ट हतेषां पशूनां प्रयुक्ततमो यदा: *am meisten gebraucht* Ait. Br. 2,8. गोदानार्थं (°र्वे ed. Bomb.) प्रयुञ्जीत रोहिणीम् MBh. 13,3669. वाहिनीम् Ragh. 11,5. Bhâg. P. 1,10,32. यानम्, यानम्, संधिम्, विग्रहम्, द्वैधम्, संश्रयम् M. 7,161. 8,130. साम, दानम्, भेदम्, दण्डम् Jâtâ. 1,345. 355. MBh. 4,690. 5,301. R. Gorr. 2,6,25. 89,1. Kathâs. 34,200. नीतिम् 5,44. 16,35. 46,133. विद्याम् *einen Zauberspruch* 33,99. 42,35. 46,111. fg. 120,56. Bhâg. P. 9,24,32. गाथाम् 4,10,29. M. 7,104. R. 6,7,8. कुशस्त्रम् Suçr. 1,94,15. 134,15. Harîv. 8437. Çârṅ. 6. 23. Spr. 1522. 4932. Kathâs. 30,99 (act.). Bhâg. P. 4,18,3. Mârk. P. 41, 12 (act.). Schol. zu Kâp. 1,62. अयेत्ययं शब्दो ऽधिकारार्थः प्रयुज्यते Sarvadarçanas. 133,9. 13. गुणातिरस्त्वयपूर्वो न प्रयुज्यत एव *ist nicht im Gebrauch* Pat. zu P. 1,3,51. सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते Bhag. 17, 26. क्रियाः सम्यक्प्रयुक्ताः *vollzogen* Prâçnop. 3,6. यज्ञो प्रयुञ्जसे (so ed. Bomb.) MBh. 2,1881. 3,7466. गुरूणाम् 3,1835. 13,4901. Varâh. Bṛh. S. 43, 11. 48,73. नमस्कारम् MBh. 3,2206. सत्क्रियाम् Kumâras. 5,32. 39. 6,52. परिचर्याः Bhâg. P. 4,8,58. अग्निमुद्वहयाम् M. 2,248. यज्ञम् 3,152. आह्वानम् MBh. 13,3070. प्रयुक्तपाणिग्रहणोपचारो Ragh. 7,86. मणिः प्रयुक्तसंस्कारः 3,18. शान्तिम् Varâh. Bṛh. S. 46,3. 17. 48,82. अग्निहोत्रम् Harîv. 13373. कर्मणाभिचारिकम् Râga-Tar. 6,121. नीराजनाविधीन् Ragh. 17,12. आर्द्रातनारोपणम् 7,25. बलिम् Varâh. Bṛh. S. 39,11. प्रयुक्तं रात्रसैः सद्भिः । वैरम् *begonnen, unternommen* R. 3,67,12. Prab. 33,11. न खलु मया प्रयुक्तमिदम् *nicht ich habe es ja angestellt* Mâlav. 19. अधितेषायमानादेः प्रयुक्तस्य परेण *zugefügt* Sâh. D. 93. कार्यं मे त्वयि प्रयुक्तम् Çâk. 107,1. सुप्रयुक्तस्य दृश्यस्य *wohl ausgeführt* Spr. 3271. *aufführen* (ein Schauspiel u. s. w.): मृच्छकटिकं नाम प्रकरणं प्रयोक्तुम् Mâlav. 1,11. *bewirken, hervorbringen* Sarvadarçanas. 126,13. 127,1. 132,22. प्रयुञ्जन्भागमिन्द्रेणापि-ताम् Bhâg. P. 6,13,23. ये प्रबलैर्विलोचनैस्तथातिसाहसमिव प्रयुञ्जते Kumâras. 5,33. अरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् 1,39. *handeln, verfahren:* यथा माठव्यं प्रति (माठव्ये v. l.) भवता तथैव प्रयुक्तम् Çâk. 93,13. — 8) *ausleihen, borgen* (*zum Vortheil anwenden*) M. 8, 49. 146. Jâtâ. 2,11. अप्रयुज्यमान (das folgende प्रयोक्तव्यक्त als Glosse zu streichen, Pârâç. ed. orn. 3,17. — 9) pass. *entsprechen, am Platze sein:* तादृग्भार्यायां मृतायामुत्सवः कर्तुं प्रयुज्यते Pârâç. 224,24. तदेवाप्रयुक्तम् ed. orn. 60,4. नीतिर्विधिप्रयुक्ता (सिद्धिः) Spr. 143. धनुष्ठितं प्रयुज्यतो सिद्धये *so v. a. führe zum Ziele* Mâlav. 45,10. — Vgl. प्रयुक्ति, प्रयुक्, प्रयोक्तृ (gg., प्रयोगिन्, प्रयोग्य (gg., प्रयोज्य. — caus. 1) *werfen, schleudern, abschiessen:* यन्त्रम् MBh. 3, 11988. मयि 5,7171. 7292. याशिषः *Segenswünsche herzagen* R. Gorr. 2,17,13. पितुः पुत्राय यद्दूषो मरणाय प्रयोजितः *ausgelassen* Bhâg. P. 7,4,16. मनः *den Geist auf einen Punkt richten* Çvetâçv. Up. 2,10. — 2) *Jmd antreiben, anweisen, absenden* Bhâg. P. 5,5,17. Sadukt. P. 4,18,a. अरण्ये *in den Wald weisen* VP. bei Mill, ST. 1,147,1. *Jmd an ein Geschäft stellen:* मा स्म लुब्धोञ्ज मूर्खोञ्ज कामार्थेषु प्रयोजयेः MBh. 12,2722. — 3) *anwenden, gebrauchen* MBh. 18, 116. Seça. 2,363,20. Çârṅ. 14. Kir. Nitis. 7,54. 17,60. 19,35. Sim. D. 295. 432. Verz. d. Oxf. H. 103,b,25. Sadukt. P. 4,18,a. Sarvadarçanas. 100,17. *üben, erweisen:* यानशस्त्रम् M. 3,112. भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः Bhâg. P. 1,2,7. 3,32,23. नाज्ञातबलवीर्येषु पुमान्किंचित्प्रयोजयेत् Spr. 1322. *unternehmen, beginnen:* धनुतिष्ठेत्समारब्धमनारब्धं प्रयोजयेत् Kir. Nitis. 11,37. वृद्धिम् *Zinsen nehmen* M. 10,117. प्रयोगम् *Geld auf Zinsen geben* Sadukt. P. 4,35,b. 36,a. *aufführen, darstellen* Harîv. 8450. fg. एक एक सूत्रधारः सर्वं प्रयोजयति Sim. D. 129,17. 165,12. *darstellen lassen* von (instr.) Uttarar. 86,18 (111,7). — 4) *bezwecken* P. 8, 3,62, Sch. — 5) *zur Anwendung kommen* gaṇa 1. तुभ्रादि zu P. 8,4,39. — 6) *Jmd* (dat.) *Etwas* (acc.) *übertragen:* साम्नेवार्थं ततो लिप्सेत्कर्म चास्मै प्रयोजयेत् MBh. 3,1256. — desid. *anzuwenden Willens sein:* शब्दान्प्रयुयुक्षमाणः Pat. in Mahâbh. S. 52.

— अतिप्र *abschliessen von* (instr.): यथा गृहमन्या वा अन्यामति मा प्रयुक्त TS. 6,3,11,4. सर्वेणैवैनमिन्द्रियेणाति प्रयुङ्क्ते 7,2,2,4.

— अनुप्र med. 1) *hinten anfügen, anfügen nach* (abl.) P. 3,1,40. 1,3, 63, Sch. Vop. 8,56. — 2) *verfolgen, einholen:* पश्चादनुप्रयुङ्क्ते तम् AV. 11, 2,13. TBr. 1,8,4,1. 3,9,2,1. Çat. Br. 13,1,4,1. 2,3,1. *sich anschliessen, nachfolgen:* भीमो धनुष्प्रयुङ्क्तामित्रं रथं पुरोगवः AV. 12,1,40. — Vgl. धनुष्प्रयोग.

— अभिप्र med. *anfassen, angreifen, bemeistern:* देवास्तृतीयमवनात्प्रातःसवनमभिप्रायुञ्जत Çâṅkh. Br. 14,5. (धनुरान्. देवाश्चातुर्मास्यैरभिप्रायुञ्जत TBr. 1,3,6,3. वार्कृत्या हि पुरुषो यज्ञमभिप्रयुङ्क्ते TS. 6,1,2,2.

— प्रतिप्र 1) act. *anfügen statt eines andern, substituiren* Pârâç. Br. 7,10,8. — 2) med. *abtragen* (eine Schuld): ऋणं प्रतिप्रयुञ्जानः MBh. 9,2882. ऋणं तत्प्रतियुञ्जानः ed. Bomb.

— विप्र *trennen von* (instr.) *so v. a. berauben:* तं प्राणैर्विप्रयुङ्क्ष्व MBh. 1,6735. pass. *getrennt werden von* (instr.) R. 2,33,20 (22 Gorr.). विप्रयुक्त *nicht in Conjunction stehend mit* Varâh. Bṛh. S. 47,17 (v. l. विप्रनुक्त). *getrennt* MBh. 3,2647. रामेण R. 1,22,8. 4,10,19. Varâh. Bṛh. S. 104,42. यवला° Megh. 2. बन्धन° *frei von* Mârk. 143,5. मणि° *ohne — seiend* Varâh. Bṛh. S. 81,36. सर्वतः *entblösst von Allem* MBh. 1,3631. याकारैर्विप्रयुक्तार्थो: *keine Reichthümer aus Minen bestehend* Harîv. 2873 (याकारै° die neuere Ausg.; Nîlak. hat मुकारैर्वि° gelesen:

मुकैर्यथोचितैः कार्यैः विशेषेण प्रयुक्तार्थाः) Hariv. 2873. घनविप्रयुक्ताः (falsche Lesart) Prasnop. 5,6 wird erklärt: न विप्रयुक्ता घविप्रयुक्ता नाविप्रयुक्ता घनाविप्रयुक्ताः. — Vgl. विप्रयोग. — caus. *trennen von* (instr.), *berauben:* पुत्रेणेहेन कोसल्या यथा ते विप्रयोजिता R. Gorr. 2,76,15. पतिं प्राणैर्विप्रयोज्य 75,3. *befreien von:* रामेण — त्रिःसप्तकृत्वो ऽर्कं तत्रियैर्विप्रयोजिता Hariv. 2946.

— सँप्र 1) *anschirren, bespannen:* हरिसंप्रयुक्तं महेन्द्रवाहम् MBh. 3, 11903. रथं संप्रयुक्तम् R. 2, 46, 22. = सम्यगानीय दर्शितम् *vorgeführt* Comm. — 2) pass. *verbunden werden, sich verbinden:* चेति समुच्चयार्थ उभाभ्यां संप्रयुज्यते Nir. 1,4. 11. 12. 5,16. *hinzugefügt werden, sich (äusserlich) anschliessen:* वाक्यात्रमिव पश्यामि माधुर्यं संप्रयुज्यते Hariv. 7093. *sich fleischlich vermischen mit:* सा संप्रायुक्षत मक्षिणा Rāja-Tar. 3,497. संप्रयुक्त *verbunden, vermischt:* संप्रयुक्तैर्व रोषधैः Mārk. P. 51,44. कुल्या *verbunden —, vereinigt mit* MBh. 1,4474. ऊष्मणा ṚV. Prāt. 1,13. द्वाभ्यां मातृकासंप्रयुक्ताम् Sūçr. 1,246,9. गजाभ्यां संप्रयुक्ताभ्याम् *feindlich an einander gekommen* MBh. 7,5694. पतितैः संप्रयुक्ताः *in Berührung gekommen mit* M. 11,179. संप्रयुक्तो दृष्टे *gebunden an, abhängig von* MBh. 7,1047. मृगयासंप्रयुक्त *beschäftigt mit* Kām. Nītis. 18,62. — 3) *Jmd mit Etwas* (instr.) *verbinden so v.a. veranlassen zu:* उपचारैरशुचिभिः संप्रयुज्य च तापनात् R. 3,1,22. pass. *theilhaftig werden, sich schuldig machen* Jāṭ. 3,129. तेनैव कर्मणा संप्रयुज्यते Spr. 4070. — 4) *Jmd antreiben:* ऐरावणमधिष्ठातुं प्रवरं संप्रयुक्तवान् (s नियुक्तवान् die neuere Ausg.) Hariv. 8873. श्येना यवैर्वामियसंप्रयुक्ताः MBh. 3,15692. — 5) *in Thätigkeit setzen, freien Lauf lassen:* यमसंप्रयुञ्जतः (= नियच्छतः Comm.) प्राणान् Bhāg. P. 11,26,23. — 6) *ausführen, vortragen* (einen Gesang) Verz. d. Oxf. H. 199,b, No. 472. — 7) संप्रयुक्त *der seine ganze Aufmerksamkeit auf einen Gegenstand gerichtet hat* MBh. 14,551. — Vgl. संप्रयोग. — caus. 1) *anrüsten, fertig machen:* रथम् Hariv. 9284. — 2) *vereinigen, verbinden* MBh. 3,1153. नानेकाद्रिनिवर्तयकथया संप्रयोजितः *verbunden mit* Śiś. D. 278. — 3) *vorbringen:* सम्यक्क पृच्छेया संप्रयोजिता MBh. 18,155. — 4) *anwenden, gebrauchen* Śiś. D. 432.

— प्रति 1) *befestigen:* उभे घुरौ प्रति वक्षि पुनक्त ṚV. 10,101,10. — 2) *abtragen* (eine Schuld): ऋणं तत्प्रतियुञ्जानः MBh. 9,282 nach der Lesart der ed. Bomb., ऋणं प्रतिप्रयुञ्जानः ed. Calc. — Vgl. प्रतियोग. — caus. *auflegen* (den Pfeil auf den Bogen) MBh. 8,4051. — Vgl. प्रतियोजयितव्य.

— वि 1) *ablösen:* यथा चतुर्थं वियुनक्ति वाचम् AV. 8,9,3. *trennen:* तांश्च वियुनङ्मि (!) Bhāg. P. 10,39,19. नूनं भूतानि भगवान्युनक्ति वियुनक्ति च 82,42. संयुज्यते वियुज्यते तया कालेन देहिनः Spr. 4787. वियुक्त *getrennt* M. 7,214. Kumāras. 5,26. Megh. 99. Bhāg. P. 3,3,47. Mārk. P. 125,24. Çiç. in LA. (III) 33,9. वियुक्तो *uneins* M. 9,102. अवियुक्त *nicht getrennt* Kām. Nītis. 13,69. 82. Rāgh. 13,31. pass. *getrennt werden von* (instr.): स वै केनचिदर्थेन तया मन्दो व्ययुज्यत MBh. 3,2646. R. Gorr. 2, 38,4. Spr. 4810. Kām. Nītis. 12,49. Mārk. P. 21,102. Bhāg. P. 5,8,3. मा नलेन मरु वियुज्यताम् Comm. zu Naish. 3,5. act. med. *befreien von, bringen um* (instr., selten abl.): वह्वान्वियुङ्क्ते मगधाधिपकर्मपाशात् Bhāg. P. 10,70,29. सो ऽस्मेनम् — वियुनक्ति देहात् MBh. 3,10924. तं प्राणैर्वियुञ्ज्यात् Sūçr. 1,94,19. 116,11. pass.: को ऽद्यैव मया वियुज्यतां तवामुरुहत्प्राणयशःसुहृज्जनैः R. 2,23,41 (20,45 Gorr.). *verlustig gehen, kommen um* (instr.): न च प्राणैर्वियुज्यते 1,32,19. 6,36,68. Spr. 306. Kathās. 31, 64. 33,73. Bhāg. P. 1,13,19. Mārk. P. 16,79. व्रतेन M. 5,91. सर्वधर्मान्यान्, ब्रात्मना 7,46. R. 5,76,22. Çiç. 150. Spr. 4025. Rāja-Tar. 4,479. 6,145. act. in derselben Bed.: ऊभावपि प्राणैः वियोज्यावः R. Gorr. 2, 66,37. शरीरेण वियुक्त *sich vom Körper befreit habend* Çaṃk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 279. वियुक्त *getrennt von* (instr. oder im comp. vorangehend), *ermangelnd, frei von, —los:* वियुक्ता पतिना तेन R. 1,2,15. 2,27,22. Rāgh. 13,63. Vikr. 78,19. fg. Kathās. 45,358. Bhāg. P. 3,10,11. तद्वियुक्ताः Kathās. 10,197. नगरीम् वियुक्तां पुरुषेन्द्रेण R. Gorr. 2,124,25. 5,74,37. Varāh. Bṛh. S. 33,37. यानैर्वाक्यवियुक्तम् 46,60. 77,28. 81,3. — 2) med. und pass. *sich lösen, erschlaffen, nachlassen, weichen:* तच्चापि चित्तवाजिशं शनैर्वियुङ्क्ते Bhāg. P. 3,28,34. वातनिगनाः सरुषमाः पुरुषपरिचर्यादय इवेतराशः कतिपयेनाहर्गणेन वियुज्यमानाः किल सर्व एवोदवसन् 5,8,5. शनैर्वियुज्यते संध्या R. 1,33,16. — 3) in der Stelle व्रतस्था च शरीरं तं यदि नाम वियोक्ष्यसि MBh. 3,7362 fehlerhaft für वियोक्ष्यसि, wie die ed. Bomb. liest und wie schon Benfey vermuthet hat. — Vgl. वियोग. — caus. 1) *trennen* MBh. 3,1153. Kathās. 69,129. Pañcat. 42,22. वियोजिता । मात्रा धातृभिरन्यैश्च *getrennt von* Mārk. P. 70,6. धातृमातृवियोजिता 3. *Jmd befreien von* (abl.): तथाऽरण्यधर्माद्वियोज्य ग्राम्यधर्मेषु नियोजितः Pañcat. 31,6 (27,15 ed. orn.). *Jmd bringen um* (instr.): बलिनं वः पुत्रैरिष्टैर्व्ययोजयत् MBh. 1,2923. R. 2,53,19. R. Gorr. 2,34. 12. शरीरेण Hariv. 2335. जीवितेन R. Gorr. 2,22,4. प्राणैः MBh. 8,4178 (med.). R. Gorr. 1,33,17. 3,36,48. Pañcat. 90,6. यमुभिः Daçak. in Benf. Chr. 196,12. fg. मया सैव पत्त्रैः शाखा वियोजिता Mṛicch. 63,23. R. 6,94, 13. संमानेन Pañcat. 30,10. Rāgh. 9,66. रूपमात्रवियोजित MBh. 3,2851. — 2) *rauben:* ब्राह्मणस्यातिथेयैव स्वार्थे प्राणान्वियोजयन् MBh. 1,6225.

— सम् act. 1) *verbinden, in Zusammenhang bringen; zusammenbringen, vereinigen:* व्रजे गावो न संयुजे ṚV. 8,41,6. TS. 2,5,9,5. द्वौ द्वौ कालौ Çat. Br. 3,3,3,6. Çāṅkh. Çr. 1,16,7. Lāṭ. 2,9,12. 10,2,10. 6,9. छन्दसी Pañcav. Br. 4,4,2. संयुज्यते वियुज्यते तया कालेन देहिनः Spr. 4787. pass. mit रत्या *sich fleischlich verbinden* Prasnop. 1,13. स्त्रीपुंसौ यदा ग्राम्यधर्मतया संयुज्येयाताम् Çaṃk. zu Kaṭh. Up. S. 18. संयुक्त *zusammengefügt:* दृढ° Hariv. 4328. °माल्यानि R. 5,14,52. *verbunden* im Gegens. zu वियुक्त *getrennt* M. 7,214. Kathās. 25,223. von *unmittelbar auf einander folgenden* Consonanten P. 6,3,59, Sch. Çiks. 2. Verz. d. Oxf. H. 181,b, No. 413. वेदयेन न च संयुक्तान् (= इन्द्रियसंयुक्तान् Comm.) शब्दस्पर्शरसानसम् *alle insgesammt* d. i. *ich kann weder hören, noch fühlen, noch schmecken* R. 3,64,67. संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरं च व्यक्ताव्यक्तम् d. i. *sowohl vergänglich als auch unvergänglich* Çvetāç. Up. 1,8. सुसंयुक्ताः *gut verbunden* d. i. *in richtigem Zahlenverhältnisse zu einander stehend* R. 2,70,22. संयुक्त = संबन्धिन् *verwandt* Pāṇ. Gaṇ. 3,10. Kaç. 92. *Etwas mit Etwas* (instr.) *verbinden;* pass. *sich verbinden mit:* नान्योऽन्येन मध्यमाः स्पर्शाः संयुज्यन्ते न तकारेण रेफः ṚV. Prāt. 12,2. यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री संयुज्येत यथाविधि *sich ehelich verbinden* M. 9,22. pass. *zusammenkommen mit —, zusammentreffen mit:* रघुनाथो ऽप्यगस्त्येन — संयुयुत्से शरत्काल इवेन्दुना Rāgh. 15,54. act. *Jmd mit Etwas versehen, ausrüsten mit, theilhaftig werden lassen;* pass. *theilhaftig werden:* स नो बुध्न्या शपसा संयुनक्तु Çvetāç. Up. 3,4 = 4,1. पौरुषाख्येन संयोक्तुम् R. 1,1,21 (24 Gorr.).

समयुक्त नीरेण क्रमेन MBh. 1,6389. देहस्य कालपर्यायधर्मणा 3,15971. जीवेन R. 7,76,18. संयोक्ष्यसे स्वेन वपुर्महिम्ना Raghu. 5,55. भृत्यविचारज्ञो भृत्यैः संयुज्यते नृपः Spr. 1976, v. l. संयुक्त *verbunden —, versehen —, ausgestattet mit* (instr. oder im comp. vorangehend): घनमाला वसिष्ठेन संयुक्ता *ehelich verbunden mit* M. 9,23. दध्ना तु मधु संयुक्तम् H. 833. वधूनाटकसंघैश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीम् *angefüllt mit* R. 1,5,18. Bhatt. 8,30. बन्धो ऽन्धैरिव संयुक्तः R. 4,17,7. आचारेण M. 1,109. MBh. 3,16868. धर्मार्थर्मेण Hariv. 2307. लाघवेन मुनेर्युक्तः R. 6,18,47. श्रेष्ठसंयुक्तं भक्ष्यम् M. 3,24. रथो मातलिसंयुक्तः MBh. 3,1715. सर्वाभरण° 1,5975. R. 2,32,3. 80,19. Suçr. 1,120,7. Varâh. Bṛh. S. 21,31. 56,30. Kathâs. 4,47. 13,142. 21,39. Bhâg. P. 3,1,33. 18,6. LA. (III) 38,7. 54, 2. H. 832. फल° Kâd. Ç. 1,5,16. ब्रह्मस्तेय° M. 2,116. उपपातक° 11, 108. 257. प्रीति° 9,168. 12,27. 29. शारीरं धनसंयुक्तं दण्डम् 9,236. गीतैश्च स्तुतिसंयुक्तैः MBh. 1,7718. धर्म° 3,16702. 13,335. R. 1,4,3. 5,4. 2,36,15. 56,13,c. 91,3. 3,62,15. 24. 4,17,30. Spr. 5380. H. 433. Paṇḍat. 185,11. *verbunden mit* so v. a. *in Verbindung —, in Beziehung stehend zu, betreffend:* यज्ञेन° Kâd. Ç. 1,3,36. (नामधेयम्) वैष्णस्य धनसंयुक्तम् M. 2,31. fg. तदाचष्टे ° (संधि) 7,163. स्तनयशब्दसंयुक्ताः MBh. 3,12000. 5,7308. सुरासुर° (युद्ध) so v. a. *der Kampf der Götter mit den* Asura Hariv. 2307. Śiç. D. 11,2. — 2) *sich verbünden:* यदे च तं चे वृत्रक्रुमं गुंज्याव सनिभ्य धा ṚV. 8,51,11. — 3) *stecken —, versetzen in* (loc.): यत्र यत्रैव संयुक्तो धात्रा गर्भे पुनः पुनः MBh. 12,8198. *richten auf:* चित्तमेकत्र संयुञ्याद्ध भगवतो मुनिः Bhâg. P. 3,28,20. — Vgl. संयुक्त u. s. w., त्रिषंयुक्त. — caus. 1) *schirren, bespannen, anspannen:* रथम् R. 3,39,5. गन्धर्वैः MBh. 3,11762. स्यन्दनान् Bhâg. P. 11,6,39. अश्वान् Kathâs. 56, 372. बलीवर्दयुगम् 20,27. — 2) *ausrüsten:* सेनाम् MBh. 4,1008. — 3) *befestigen an* (loc.): व्यामिमां चापि गाण्डीवे समयोजयत् MBh. 3,12067. यत्रा मेढीस्तम्भ आक्रमणपशवः संयोजिताः Bhâg. P. 5,23,2. *hinzufügen zu* (loc.) Çâṅkhâs. 2,23. *heften —, richten auf* (loc.): संयोज्य तस्मिन्दृष्टिम् MBh. 15,700. संयोज्यात्मानमात्मनि Bhâg. P. 4,23,12. 1,13,52. इन्द्रियाण्यसंयोज्य *die Sinne nicht richtend* (auf die Aussenwelt) Maitrâyaṇ. 6,21. v. l. इन्द्रियाणि संयोज्य *die Sinne bändigend.* अस्त्रम् *ein Geschoss auflegen, abschiessen* MBh. 3,816. संयोजित = उपाहित AK. 3,2,41. H. 1483. — 4) *Jmd anstellen* (an ein Amt) MBh. 4,31. — 5) *verbinden, zusammenfügen, zusammenbringen, zusammenführen:* संयोजितकरपुगल Paṇḍat. 230,19. भित्त्वं संयोजयामास Bhâg. P. 3,6,3. दंपती ad Mṛicch. 113. Bhâg. P. 10,82,43. *verbinden, zusammenbringen mit* (instr.) MBh. 13, 2302. संयोजयाम्यु त्वं भार्यया हि द्विजोत्तमम् Mâns. P. 69,65. Kathâs. 73, 332. *versehen —, beschenken mit, theilhaftig machen, ausstatten:* धनुरादाय शरेण समयोजयत् Hariv. 12257. लाञ्छनान्विषेण Kâm. Nîtiç. 7,52. Varâh. Bṛh. S. 81,36. पत्तमानं फलेन Jâtâ. 3,121. fg. MBh. 1,4951. 6474. 3,8434 (med.). Ragh. 16,86. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 84. Kathâs. 51, 18. Râjat. 4,46. Bhâg. P. 4,27,3. Paṇḍat. 30,12. 244,5. Sâj. zu ṚV. 1,100,6. — 6) *Etwas* (acc.) *Jmd* (gen.) *übergeben, einhändigen* R. 2,115, 18. Paṇḍat. ed. orn. 26,20 (besser wäre निक्षाङ्कभारणेर्वस्त्रेश्च). — 7) *veranstalten:* स विप्रो वेत्तवे सत्रं पुत्रार्थं समयोजयत् Hariv. 13393. वृषाणो ज्ञातदर्पाणां युद्धानि समयोजयत् 4079. *thun, vollbringen* Bhâg. P. 3,21,23. — 8) med. *sich vertiefen* MBh. 5,7260.

— अनुसम्, partic. °युक्त am Ende eines comp. *begleitet von* Mâlav. P. 20,11, wo °संयुक्तं च oder °संयुक्तो च° zu lesen ist.

— अभिसम्, partic. °युक्त *versehen —, behaftet mit* (instr.): व्यसनेन R. 5,24,38. — caus. *verbinden —, in Verbindung bringen mit* (instr.) Harav. 16314.

— उपसम् vgl. उपसंयोग. — caus. *Jmd* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *versehen:* ग्रामणेन MBh. 13,5870.

— प्रतिसम्, partic. °युक्त *mit einem Andern verbunden, an etwas Anderes gebunden:* जीव MBh. 12,7978 nach der Lesart der ed. Bomb.; vgl. u. मिश्रय् mit प्रतिसम्.

— विसम्, partic. °युक्त *getrennt von, ermangelnd, entbehrend, sich fernhaltend von* so v. a. *nicht beobachtend, vernachlässigend:* एतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया M. 2,80.

2. युज् (= 1. युज् P. 3,2,39. 61. Decl. 7,1,71. Vop. 3,133, fg. 1) adj. subst. *verbunden, zusammengespannt, das an demselben Wagen mitziehende Thier; Genosse, Verbündeter* ṚV. 1,7,5. इन्द्र स्तोममिमं मम कृधा युजश्चिदन्तरम् 10,9. युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक इन्द्रः 33,10. वयं जयेम वयं युजा वृतम् 102,4. 129,4. युजेव वाजिनौ du. 2,24,12. यं यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः 25,1. 4,28,1. 2. 32,6. राया युजा संधमादः 7,43,5 (vgl. 5,20, 1). 93,4. ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा वेवामके 3,17,2. 51,6. ते नः मरुत युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा 72,2. 3,7,3. 10,33,9. 89,8. AV. 4,23,5. 6,54,1. 2. TS. 7,5,19,1. VS 23,27. मनश्च रु वै वाक्च युजौ देवेभ्यो यज्ञं वहतः Çat. Br. 1,4,4,1. 8,2,27. Śaṅkh. Br. 3,7. Nasalirte Formen (nach den Grammatikern sollen alle starken Casus des nicht componirten युज् nasalirt sein): इमे तं पैण्य वृषभस्य युञ्जम् ṚV. 10,102,9. हरी ते युजा धृषती घनूताम् 1,162,21. — अविध्यता युक् *versehen —, behaftet mit* Bhâg. P. 11,11,7. युधिध्मः *Furcht erregend* Bhatt. 6,118. Häufig am Ende eines comp. *bespannt mit:* रुरियुजं रथम् MBh. 3,12023. Hariv. 8879. दुर्धर्ष° MBh. 3,16510. दुरिसहम° Ragh. 12,103. दृप्तोत्तम° MBh. 3,3241. दिव्याश्च° 7130. 14,2612. श्वेत° 8,1751. *verbunden —, versehen mit:* प्रीति° Hariv. 14410. Çaṅk. 1,298. पुण्याः कामयुजो (*Wünsche gewährend*) रुद्राः Hariv. 11449 (सर्वकामयुताद्रयः die neuere Ausg.). सप्ति° 13502. क्रीडा° R. 4,10,31. Varâh. Bṛh. S. 31,34. 76,7. योग° Bhâg. P. 3,33, 12. तन्मर्त्तयोगाणयोग° 7,14,23. बुद्धि°, मति° Paṇḍat. 3,2,7. त्रिगुणात्तु° 7,6. 15,12. क्रिया° H. 565. वृष्टि° 1107. समकालयुजः = ये समकालमेव युज्यन्ते Bhâg. P. 5,23,1. उभ° 3,21,45 nach dem Comm. = उभा युक् योगो यस्य, es könnte aber उभ auch als nom. abstr. gefasst werden. — 2) adj. *paarig, geradzahlig* (घ° *nicht paarig*) Liṭ. 6,5,16. 27. ṚV. Prâṭ. 13,16. M. 3,277. MBh. 3,1358. Ind. St. 8,307. 309. 312. 337. 339. Varâh. Bṛh. 1,7. Mânav. P. 30,14. — 3) *Paar, Zweizahl* Çabdar. im ÇKDa. तरणीकृत्य° Paṇḍat. 3,12,14. 2,18. *die Zwillinge im Thierkreise* Ind. St. 2,239. युजौ *die beiden* Açvin Taitt. 1,1,65. — Vgl. घ°, घरुण°, घर्शो°, घश्च°, शत°, चतुर्युज् (auch MBh. 1,7343, wo mit der ed. Bomb. °र्युजां st. °र्युगां zu lesen ist, दुर्युज्, धर्म°, नित्य°, पुं°, प्रातर्युज् (hier auch mit act. Bed.), ब्रह्म°, भ°, मना°, मित्र°, युवा°, रुद्रो°, रुव°, वचो°, स°, सु°, स्व°.

युज्ञ = 2. युज् 2) in युज्ञात्र Pâṇ. Gaṇ. 1,17.

युंज्य (von 1. युज्) 1) adj. *a) verbunden, verbündet; verwandt* ṚV. 1,

143,4. भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मे समानेभिर्वृषभ पौंस्येभिः 165,7. यो मे राजन्युजो वा सखा वा स्वप्नं भरमाहे 2,28,10. 6,3,8. सत्तोमरि युज्येभिर्न देवैः 7,39,6. 10,99,4. AV. 5,11,9. — *b) angemessen, passend, geeignet; gleichartig, zusammengehörig:* सखा RV. 1,22,19. शवः 32,7. 156,2. 8,21,7. पयः 32,10. यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति 7,22,2. 9,88,1. रयिः 7,36,7. 37,5. 8,4,12. 46,19. VS. 19,3. — 2) n. *Bund; Zusammengehörigkeit, Verwandtschaft:* यूयं नः अधि तंमधं युज्याय देवाः RV. 2,28,3. युज्य, सखिव, धात्र 4,25,2. 7,19,2. 8,4,18. तुविद्युम्नस्य युज्या (d. i. युज्यमा) वृणीमके 79,2. 9,66,18. — 3) उमदग्रेर्वतं युज्यम् (v. l. für युग्यम्) N. eines Sâman Ind. St. 3,217,a.

युञ्ज् s. u. 2. युज् 1).

युञ्जक (von 1. युज्) adj. *vollziehend, übend:* ध्यान° Verz. d. Oxf. H. 33,a,9.

युञ्जन्द N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,11. पु° v. l.

युञ्जवत् m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 130,12 fehlerhaft für मु°.

युञ्जान 1) partic. adj. s. u. 1. युज्. — 2) m. *a) Wagenlenker.* — *b) ein Brahmane* (विप्र) Med. n. 111. oder *ein im Joga befindlicher Brahmane*, wie Wilson angiebt.

युञ्जानक adj. *das Wort* युञ्जान *enthaltend* gaṇa गोयदादि zu P. 5,2,62.

1. युत् (von 3. यु) adj. *fernhaltend, abwendend;* s. द्वेषो°.

2. युत् *glänzen* Dhâtup. 2,30.

1. युत 1) partic. adj. von 2. यु; s. das. — 2) n. *ein best. Längenmaass:* vier *Handlängen* (रत्नि) Med. t. 48.

2. युत partic. adj. von 2. यु; s. das.

1. युतक (von 1. युत) 1) adj. = युक्त *verbunden* H. an. 3,85. fg. Med. k. 142. fg. — 2) n. *a) eine Art Gewand* (वस्त्रभेद) Taik. 3,3,18. *eine Art Frauengewand* (स्त्रीवस्त्रभेद) H. an. *Saum eines Gewandes* (पल्लव) ebend. *Saum eines Frauengewandes* (नारीवस्त्रपल्लव) Med. — *b)* = चलनाम H. an. Med. = प्रूर्णाम Nighaṇṭuratnam. im ÇKDa. — *c)* = संशय *Zweifel* Taik. H. an. Med. = संश्रय *Zuflucht* Nighaṇṭuratnam. — *d)* = युग, युग्म *Paar* H. an. Med. — *e)* = मैत्रीकरण *das Sichbefreunden* Çabdar. im ÇKDa.

2. युतक (von 2. युत) n. = यौतक Taik. 3,3,18. H. an. 3,85. Med. k. 142. fg.

युतद्वेषस् (2. युत + द्वे°) adj. von *Feinden befreit* RV. 1,53,4.

युति (von 2. यु) f. 1) *das Zusammentreffen, Zusammenkommen* Śâśvat. 3,41. 6,16. 21. मुहूर्त्तयुति *mit Freunden* Varâh. Bṛh. S. 71,10. 95,42. 99,7. — 2) *das Verschenwerden mit* (instr. oder im comp. vorangehend), *das in-den-Besitz-Gelangen von:* धनैः Varâh. Bṛh. S. 71,7. रत्न° 12. — 3) *Summe* Śâśvat. 3,8. 20. 4,20. 10,6. 8. — Vgl. गन्ध°, यत्न°, पूति.

युत्कार (2. युध् + कार) adj. *kämpfend* RV. 10,103,2.

युद्ध (partic. praet. pass. von 1. युध्) 1) adj. *bekämpft* R. 5,78,10. — 2) n. *Kampf, Schlacht* AK. 2,8,3,72. H. 790. Hall. 2,298. RV. 10,54,2. नाराशंसस्य युद्धमस्ति TBr. 1,5,9,1. देवा वा असुरैर्युद्धमुपयन्नायन् Ait. Br. 3,39. उतेव युद्धेनातेव मायया 6,36. Çat. Br. 13,4,3,6. Kâṭh. Çr. 28,2,8. Kaṭhâ. Up. 3,1. M. 7,190. 198. fg. R. 2,75,22. Varâh. Bṛh. S. 4,12. क्षत्रियाणां स्वधर्मोचरणं युद्धम् Manus. in Ind. St. 1,22,1. युद्धे विनाशो भवति कदाचिदभयेऽपि Spr. 2495. मुमुल MBh. 1,1176. युद्धे पराङ्मुखैः 3,1759. युद्धानिवर्तिन् H. 795. युद्धं शिक्षेत कुक्कुरात् Spr. 2494. युद्धे शूरं ज्ञानीयात् 332. यत्रायुद्धे ध्रुवो मृत्युर्युद्धे जीवितसंशयः । तमेव कालं युद्धस्य प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ 2295. °काल 2493. न युद्धगोग्यतामस्य पश्यामि सकृत्तनैः R. 1,22,2. Pañcat. 87,18. येन युद्धं तव तमम् R. 4,9,40. चिरकालस्थितं घोरयुद्धं मे राघवेण 6,34,23. तयोर्बभूव युद्धं तुमुलम् Raghu. 3,57. सं युद्धायाभिनिर्यान्ति रामस्य R. 6,27,19. युद्धाय निरगाद्भूयाम् Kathâs. 54,217. अत्र युद्धं मया दत्तं रावणस्य पुनः पुनः । पतत्युष्ट्रनखैर्घोरम् R. 3,72,20. प्रदद्यान्मे यो ऽद्य युद्धम् 4,9,49. 38. 40. दानवैः सार्कं प्राक्तनयुद्धेन वह्निना Kathâs. 17,18. अ° MBh. 5,7469. मुमुद्धमेव तत्रापि समाचरेत् M. 7,176. मन्यु° R. 1,37,7. कुरु° Spr. 939. वृत्तयुद्धा भू Kathâs. 60,57. °शक्ति Verz. d. Oxf. H. 24,b,32. fg. In der Astr. *Planetenkampf, Opposition* Sûrjas. 7,1. 19. fg. Varâh. Bṛh. S. 17,1. fgg. 18,8. 47,1. — Vgl. कूट°, यक्ष°, द्वंद्व°, प्रति°, बाहु° (auch MBh. 3,11973), मित्र°, मुष्टि°, रथ°, वाद्°.

युद्धक n. = युद्ध Kathâs. 49,71.

युद्धकाण्ड (युद्ध + का°) n. *das Buch von der Schlacht*, Titel des 6ten Buches in Vâlmîki's Râmâjaṇa und im Adhjâtmarâmâjaṇa R. Gorr. 1,4,93. Verz. d. Oxf. H. 29,b,18.

युद्धकारिन् (युद्ध + का°) adj. *kämpfend;* davon nom. abstr. °कारित्व Spr. 4585.

युद्धकीर्ति (युद्ध + की°) m. N. pr. eines Schülers Çaṁkarâkârja's Verz. d. Oxf. H. 248,a,2.

युद्धक्षयार्णव (युद्ध - क्षय + अर्णव) m. Titel eines Abschnittes im Gjotiḥçâstra Verz. d. Oxf. H. 7,a,3 v. u. 202,a,1 v. u.

युद्धक्षोपाय (युद्ध - क्षय + उ°) m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 910.

युद्धच्युत s. u. च्युत.

युद्धपुरी (युद्ध + पु°) f. N. pr. einer *Stadt:* °माहात्म्य Mack. Coll. 1,81.

युद्धभू (युद्ध + 2. भू°) f. *Kampfplatz* Kathâs. 48,1.

युद्धभूमि (युद्ध + भू°) f. dass. MBh. 8,768. 3899. Harîv. 13817. Kâm. Nîtis. 18,38. Kathâs. 25,125. 43,133.

युद्धमय (von युद्ध) adj. *aus dem Kampf hervorgegangen, darauf beruhend:* दर्प MBh. 5,7090.

युद्धमुष्टि (युद्ध + मु°) f. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena VP. 436.

युद्धमेदिनी (युद्ध + मे°) f. *Kampfplatz* Harîv. 13669 = R. 6,19,16.

1. युद्धरङ्ग (युद्ध + रङ्ग) m. *Kampfbühne, Kampfplatz* MBh. 7,2590. Harîv. 5583. 16023.

2. युद्धरङ्ग (wie oben) adj. *dessen Bühne die Schlacht ist;* m. Bein. Kârttikeja's Çabdar. im ÇKDa.

युद्धवत् adj. von युद्ध gaṇa बलादि zu P. 5,2,136.

युद्धवस्तु (युद्ध + वस्तु) n. *Kriegsgeräthe* Kâm. Nîtis. 19,34.

युद्धवीर (युद्ध + वीर) m. *ein Held in der Schlacht*, neben दानवीर, धर्म° und दया° Verz. d. Oxf. H. 166,b,28. fg. Sâh. D. 89,3. 13. *Heroismus* als रस 233.

युद्धशालिन् (युद्ध + शा°) adj. *tapfer* R. 5,85,25.

युद्धसार (युद्ध + सार) m. *Pferd* Çabdar. im ÇKDa.

युद्धाचार्य (युद्ध + आ°) m. *Fechtlehrer* M. 3,162.

युद्धाजि (युद्ध + अजि°) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âṅgirasa Ind. St. 3,206,b. — Vgl. रणाजि; für योधाजिय müsste aber eine Form युधाजि angenommen werden.

युद्धाधन् (युद्ध + ध°) adj. *sich in die Schlacht begebend, sich in einen Kampf einlassend:* युद्धाधानो न शस्यते राजानो सकृतमना: Kathās. 27, 146.

युद्धिन् adj. von युद्ध gaṇa बलादि zu P. 5, 2, 136.

युद्धोन्मत्त (युद्ध + उ°) 1) adj. *kampfberauscht.* — 2) m. N. pr. eines Rākshasa R. 5, 12, 14. Bhaṭṭ. 13, 75.

युद्धोपकरण (युद्ध + उ°) n. *Kriegsgeräthe* Nir. 9, 11.

युद्भू (2. युध् + 2. भू) f. *Kampfplatz* H. an. 2, 15.

1. युध्, युध्यते Dhātup. 26, 64. युध्यति (गतिकर्मन्) Naigh. 2, 14. युयुधे, युयुधिषे, युयुधिषीत, अयुद्ध, योत्सि 2. sg., योधत्, (अभि)योधानै, युयुत्समाने; युयोध, युयुधे; योत्स्यामि (vgl. Kâr. 4 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10), योत्स्ये: in der nachvedischen Sprache act. nur aus metrischen Rücksichten; *kämpfen, bekämpfen* (mit acc.); zuweilen *im Kampfe überwinden:* इन्द्रश्च यद्ययुधाते अहिश्च RV. 1, 32, 13. 63, 7. 132, 5. यं युध्यमाना अवसे हवन्ते 2, 12, 9. युध्ये वेन मे वेन पच्छे 4, 18, 2. विश्वे चनेदना वो देवासो इन्द्र युयुधु: 4, 30, 3. 6, 25, 5. दश रात्रीन: सुदासं न युयुधु: 7, 83, 7. 8, 2, 12. युध्यतीषु 85, 14. 9, 70, 10. मा युत्स्माकं मनसा दैव्येन AV. 7, 52, 2. 12, 1, 41. Âçv. Bn. 6, 15. Çâṅ. Bn. 2, 6, 4, 2. यच्चकृतोर्दं वे पुरं युध्यसि 3, 4, 4, 21. 22. 11, 1, 6, 10. Kâṭh. 29, 5. प्रतीपमन्य ऊर्मिर्युध्यति ved. Cit. P. 3, 1, 85, Kâr., Sch. — med. ohne Ergänzung M. 4, 167. 7, 89. fg. 92. 197. 200. Bhāg. 1, 22. 11, 24. नाहं योत्स्ये युध्यमाने त्वयि MBh. 1, 177. 7096. 5, 7146. 7204. Harīv. 10306. 10572. 10652. R. 3, 57, 12. Spr. 2290. 3471. 3552, v. l. 4786. Kathās. 13, 7. Bhāg. P. 5, 12, 23. Pañcat. 36, 8. Bhaṭṭ. 5, 101. 15, 34. fg. act. M. 7, 192. MBh. 1, 2387 (युध्यतो: zu lesen). 7119. 2, 616. 905. 3, 797. 4, 1020. 5, 7077. Harīv. 16023. R. 4, 10, 35. 17, 19. Spr. 3552. 4360. Mārk. P. 82, 52. युध्यते pass. impers. Spr. 4786, v. l. युयुधाते परस्परम् R. 3, 56, 35. युयुधुश्च परस्परम् Bhāg. P. 3, 17, 14. व्याकुलसमाचारैर्न युध्यते नृपात्मजा: MBh. 1, 5411. 5590. 3, 624. 5, 7041. 7075. 7127. Harīv. 3093. R. 1, 22, 5. दैवेन 2, 22, 21. Bhāg. P. 3, 10, 26. 30. Mārk. P. 82, 40. fgg. योत्स्यन्ति युधि विक्रम्य शत्रुभिस्तव MBh. 3, 15172. 5, 7235. Bhāg. P. 3, 10, 27. Mārk. P. 82, 47. शत्रुभि: सह योत्स्यते MBh. 3, 5796. Harīv. 10480. 13175. R. Gorr. 1, 73, 17. 4, 16, 29. Kathās. 48, 12. सर्वं निर्ऋतिनायुद्ध 50, 37. युध्यत: सह देवैस्ते शुभं भवतु मङ्गलम् MBh. 1, 1372. भीष्मेण सह मा योत्सी: 3, 7114. 7138. 7305. Mārk. P. 82, 45. वयं योत्स्यामहे परान् MBh. 1, 7085. 3, 12121. 15175. 5, 2489. 6, 5035. Harīv. 8145. 13174. R. 5, 48, 16. 6, 18, 21. Rāgh. 12, 50. Kām. Nītis. 13, 73. fgg. Kathās. 48, 7. कथं न युध्येयमहं कुलघ्न MBh. 4, 1255. समस्तैर्नहि शक्यो वै योद्धुं राम: R. 4, 8, 10. युद्ध *bekämpft* 5, 78, 10. Mit loc. *kämpfen für* oder *um:* पुरु पत्ने इन्द्र सत्पतिं गवे चकर्योर्वरासु युध्यन् RV. 5, 33, 4. वो चेष्टे सुष्टुती गोषु युध्यन् 6, 26, 2.

— caus. act. P. 1, 3, 86. Vop. 22, 2. 1) *in Kampf verwickeln, zum Kampfe führen, kämpfen lassen:* त्वमेताञ्जनृतो व्रतेन सश्चो योधयो रजस इन्द्र पारे RV. 1, 33, 7. स योधया च क्षयया च क्षरान् 3, 46, 2. यद्योधया मरुतो मन्यमानान् 7, 98, 4. संरक्तान्योधयेदल्पान् M. 7, 191. 193. सूदेन तं मद्रं योधयामास MBh. 4, 363. योध्यते स विशालेन सिंहै: 366. 562. पुरीम् *kämpfen lassen* so v. a. *vertheidigen* 3, 639. — 2) *bekämpfen, glücklich bekämpfen:* एक: शतं योधयति प्राकारस्थो धनुर्धर: Spr. 329. MBh. 7, 194. 1, 3190 (med.). 4980. 7103. 8276. 2, 1016. मा युयुधो भारत पाण्डवेयान् 2130. 3, 12162. 8, 4010. Harīv. 8483. R. 1, 45, 45. 5, 37, 17. 6, 18, 21. Kathās. 12, 21. 13, 29. 20, 91. 47, 73. Pañcat. 4, 6, 8. Bhaṭṭ. 16, 28.

— desid. act. (in der klass. Sprache nur aus metrischen Rücksichten) und med. *zu bekämpfen Willens sein, sich zur Wehr setzen, bekämpfen wollen* RV. 1, 33, 6. युयुत्सन्ते तमसि क्षर्म्ये धी: 5, 32, 5. 10, 48, 10. य इमा प्रतीचीमाकूतिमभित्रो नो युयुत्सति AV. 11, 20, 26. किमर्वा न युयुत्ससे MBh. 4, 1252. Bhaṭṭ. 15, 73. 16, 35. P. 8, 4, 55, Sch. मत्स्यानां च युयुत्सताम् MBh. 4, 1478. 7, 8267. R. 5, 82, 14. Vaṇis. Bṛh. S. 47, 25. Bhāg. P. 6, 12, 7. त्वं युयुत्ससे यो ऽर्जुनेन MBh. 8, 1797. Kathās. 42, 45. ये युयुत्सन्ति पाण्डवै: MBh. 5, 3069. युयुत्समाना: कौरवेयान् 597. 7, 4330. 10, 640.

— caus. vom desid. *Jmd kampflustig machen:* सैन्यं समस्तमयुयुत्सयत् Bhaṭṭ. 17, 50.

— intens. vgl. पर्योयुध्.

— अनु *Jmd* (acc.) *im Kampfe beistehen* MBh. 6, 3048 (अनुगास्यामि ed. Bomb.). 5, 2489 ist को नु युध्येत zu schreiben.

— अभि *bekämpfen, besiegen; erkämpfen:* सोमं नो राये भागमभि युध्य RV. 1, 91, 23. युष्माकास्त्वभि योधान उत्तमे 121, 5. यदा मरुत्वमभि योधी: 4, 38, 8. 6, 31, 3. पर्णा वि वो जोभिरभि योधदिन्द्र: 39, 2. गा: 60, 2. 7, 98, 4. 10, 8, 8. 120, 3. योद्धारि कृत्वा शर्वसोत दंसना विश्वा ताताभि मज्मना 8, 77, 4. *kämpfen:* अन्ययुध्यत Harīv. 13480. अभियुध्यद्भिर्वै रै: Bhāg. P. 10, 46, 9. यमुनाभ्ययुध्यत् 83, 10.

— आ *bekämpfen:* य: क्रुद्धमायोत्स्यति MBh. 3, 15648. st. तत्रायुधाना Harīv. 7959 liest die neuere Ausg. तत्र प्रधाना. — Vgl. आयुध, आयोधन. — caus. *bekämpfen* Śrāṅkhśr. Bn. 4, 4. न रथिन: पादचारमायोधयति Uttarar. 98, 10. fg. (130, 4. 5). आयोधित MBh. 3, 15054.

— प्रा *kämpfen:* अप्रातै: प्रायुध्यते Çiç. 18, 33.

— उद् *streitig oder zornig sich gegen Jmd setzen, auffahren:* (प्रजा:) यस्मा उदेवायोधंस्तासां मन्यूनवाप्रणात् Pañcav. Bn. 7, 3, 2. uneig. vom *wallenden* Wasser u. s. w.: उद्योधत्यभि वल्गति तृष्णा: पेनमस्यति वङ्कुलांश्च विन्दून् AV. 12, 3, 39.

— नि *kämpfen:* ये च केचिन्नियोत्स्यन्ति समाजेषु नियोधका: MBh. 4, 31. नियुध्यतोरेवामभेन्द्रनक्रयो: Bhāg. P. 8, 2, 28. ताभ्यां सह नियोत्स्यते तौ Harīv. 4212. द्वैद्युद्धेन च मया साकमेव नियुध्यते Kathās. 38, 182. — Vgl. नियुत्सा, नियुद्ध (auch Kām. Nītis. 18, 33. Vaṇis. Bṛh. S. 13, 33. Kathās. 49, 25), नियोद्धृ fg.

— प्र *den Kampf beginnen, angreifen, kämpfen:* प्रवो इव प्रयुध: प्रोत युयुधु: RV. 5, 39, 5. तथा प्रयुध्यमानेषु पाण्डवेषेषु MBh. 7, 6615. सेनायादभिनिष्पत्य प्रायुध्यंस्तत्र मानवा: 6, 2424. पक्ष प्रायुध्यंस्ते (प्रायुद्धंस्ते die ältere, अयुध्यंस्ते die neuere Ausg.) Harīv. 10467. तयो: प्रयुध्यतो: संख्ये 5031. R. 7, 28, 48. यम् — प्रायुध्यत MBh. 11, 606. प्रायुध्यन्कक्षम् Harīv. 10487. प्रयुद्ध *im Kampfe begriffen, kämpfend* MBh. 6, 1665. Harīv. 7542. 10928. सह सोमेन 13181. R. 4, 15, 26. 7, 27, 28. 28, 36. fg. Kathās. 47, 55. 50, 31. n. *Kampf, Schlacht* 72, 403. 101, 180. — Vgl. प्रयुध्. — caus. 1) *den Kampf eröffnen lassen:* आदित्यं वैशनसं वावस्थाय प्रयोधयेत् *in der Aufstellung des* Âditja *oder des* Uçanas *beginne er die Schlacht* Âçv. Gṛhj. 3, 12, 16. — 2) *angreifen, bekämpfen:* प्रायोधयमहं रिपुम् Harīv. 1108. — desid. *kämpfen wollen:* य: पाण्डवान्यो प्रयुयुत्सते त्वम् MBh. 3, 15646. योधानां प्रयुयुत्सताम् 6, 676. Vgl. प्रयुत्सु.

— सम्प्र *den Kampf beginnen, kämpfen:* °युध्येते Harıv. 10468. वाकुभ्यो संप्रयुध्यस्व यदि योद्धुं त्वमागतः R. 6,65,31. भूरेयोः संप्रयुध्यतोः 87,6. संप्रयुद्ध *im Kampfe begriffen, kämpfend* MBh. 7,4066. 5357. Harıv. 13674. R. 6,91,3.

— प्रति *bekämpfen, siegreich bekämpfen, es mit Jmd im Kampfe aufnehmen, kämpfen:* मां प्रतियुध्यते MBh. 1,7103. 3,1995. Harıv. 4550. R. 3,51,16. 6,13,21. कथं भीष्ममहं संख्ये — इयुधिः प्रतियोत्स्यामि Bhag. 2,4. MBh. 1,5611. 2,2547. 4,1552. R. 1,70,23. 4,15,11. 7,19,23. °योद्धुम् MBh. 4,1241. Harıv. 8270. प्रतियोद्धुं न शक्तो हि मानुषैरिह संयुगे MBh. 13,6900. प्रतियुद्ध *bekämpft* R. 5,46,14. प्रत्ययुध्यन् MBh. 1,7093. 3,13171. R. Gorr. 1,23,26. 4,17,19. °युध्य R. Gorr. 2,119,17. °योद्धुम् MBh. 14,2507. — Vgl. प्रतियोद्धर् fgg. — caus. *bekämpfen, siegreich bekämpfen, es mit Jmd im Kampfe aufnehmen:* को वा दुर्योधनं शक्तः प्रतियोधयितुं रणे MBh. 1,7116. Varâh. Bṛh. S. 43,1.

— सम् *zusammen kämpfen, kämpfen mit, bekämpfen:* संयुध्यतोर्हरिहरेयोः Bhâg. P. 10,72,37. धरेण समयुध्यत (सह युध्यत die neuere Ausg.) । मार्ष सर्वेण सैन्येन Harıv. 13177. fg. R. 6,18,12. समयुध्यत पाण्डवम् MBh. 1,5177. तेन चाहं न शक्तोऽस्मि संयोद्धुम् R. 1,22,22. — caus. 1) *zusammen in's Gefecht bringen:* यद्वृत्रं तव चाशनिं वधेण समयोधयः RV. 1,80, 13. — 2) *bekämpfen:* MBh. 1,7098. 4,561. 1875. 6,2311. — desid. *zu kämpfen Willens sein:* संयुयुत्सति MBh. 8,282.

— प्रतिसम् *einem Angriff gemeinschaftlich widerstehen:* प्रतिसंयुयुधुः Bhâg. P. 8,10,4.

2. युध् (= 1. युध्) 1) nom. ag. *Kämpfer:* युधां श्रेष्ठः MBh. 1,7105. 2, 1231. 4,597. युधां वरः Harıv. 3583. 10947. — 2) f. *Kampf, Schlacht* AK. 2,8,2,74. H. 796. Hall. 2,298. युधा युधमुप यासि RV. 1,53,7. 59, 1. 5,25,6. 6,46,11. न शत्रुरस्ति विविदे युधा ते 7,21,6. युत्सु पृतनासु 82,4. मृते स विन्दते युधः 8,27,17. 10,103,3. 3. AV. 1,24,1. 4,24,7. ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान् 5,66,1. 103,3. 10,10,24. Çat. Br. 5,2,4,16. युधा पते AV. 7,81,3. MBh. 2,1168. 1198. 5,3131. Bhâg. P. 6,12,23. युधि MBh. 1,1171. 3,1745. Bhag. 1,4. R. 2,51,10. 86,8. Ragh. 3,21. Spr. 2823. 3166. Varâh. Bṛh. S. 19,3. युधि श्रेष्ठः MBh. 5,7389. 14,2463. युधम् Kathâs. 48,26. im comp. Pâṇ. 3,2,5. — Vgl. अमित्रा°, आयुर्युध्, गोयु°, पुरो°, वृषा°.

युधाश्वेष्टि m. N. pr. eines Mannes Âit. Br. 8,21.

युधाजि vgl. युद्धाजि und योधाजय.

युधाजित् (युधा, instr. von 2. युध्, + जित्) 1) adj. *durch Kampf siegend* Pâṇ. Br. 7,5,14. MBh. 3,12705. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kroshṭu von einer Mâdrî Harıv. 1907. 2041. eines Fürsten der Kekaja und mütterlichen Oheims von Bharata R. 1,73,1. 2 (75,1 Gorr.). 2,70,28. 72,6. 7,100,1. Ragh. 15,87. eines Sohnes Vṛshṇi's VP. 424. Bhâg. P. 9,24,11. Verz. d. Oxf. H. 49,a,34. Königs von Uggajinî 81,b,8.

युधाजीव (युद्धाजीव?) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 3,208,b.

युधानँ (von 1. युध्) Uṇâdis. 2,90. m. *Feind* Uṇâdis.

युधामन्यु (युधा, instr. von 2. युध्, + म°) m. N. pr. eines Kriegers auf Seiten der Pâṇḍava Bhag. 1,6. MBh. 5,2263. 18,27. Bhâg. P. 10,82,25.

युधामुर (युद्धामुर?) m. Bein. eines Fürsten Nanda's Z. f. d. K. d. M. 3,168.

युधि, nur im dat. युधये als infin. zu 1. युध्, RV. 5,30,9. 10,27,2. 38, 3. 84,4. 113,2. — Vgl. दृशये, मरुधे u. s. w. und युद्धिगम.

युधिक (von 1. युध्) adj. *kämpfend, streitend* ÇKDa. wohl eine falsche Form.

युधिगमँ (युधिम्, acc. von युधि, + गम) adj. *in den Streit ziehend* AV. 20,128,11.

युधिष्ठिर (युधि, loc. von 2. युध्, + स्थिर) m. N. pr. P. 8,3,95. gaṇa वाह्वादि zu P. 4,1,96. Schol. zu 6,3,9. pl. *die Nachkommen des Judh.* P. 2,4,66, Sch. 1) des ältesten im Ehebette Pâṇḍu's und der Kuntî und zwar vom Gotte Dharma erzeugten Sohnes Taik. 2,8,14. H. 707. MBh. 1, 2443. fg. 3816. Harıv. 1933. 4035. Bhag. 1,16. Lalit. ed. Calc. 24,8. VP. 437. 439. अनेशापि युधिष्ठिरेण सहसा प्राप्तो ह्यनर्थः कथम् Spr. 1824. द्वितीययुधिष्ठिर इव प्रजाः पालयामास Ksarîç. 26,19. °राजसूय 42,3. यासन्मघासु मुनयः शासति पृथ्वीं युधिष्ठिरे नृपतौ। षड्द्विकपञ्चद्वियुतः शककालस्तस्य राज्ञश्च ॥ Varâh. Bṛh. S. 13,3 = Râga-Tar. 1,56. — 2) eines Sohnes des Kṛshṇa Harıv. 9196. — 3) zweier Fürsten von Kâçmîra Râga-Tar. 1,332 (auch सन्ध° genannt). 3,379. — 4) eines Töpfers Paṇḍar. 217,20. Spr. 3341. — 5) eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 778. — Vgl. यौधिष्ठिर, यौधिष्ठिरि.

युधेन्य (von 1. युध्) adj. *zu bekämpfen* RV. 10,120,5.

युध्मँ (wie oben) Uṇâdis. 1,144. adj. *streitbar, Kämpfer;* = योद्धर् Schol. zu Uṇ. 1,142. RV. 1,55,2. 5. 2,21,3. 3,46,1. सं यद्विशो ववृत्रत्त युध्माः 4,24,4. स युध्मः सत्वा 6,18,2. 8,1,7. 81,8. m. = शर *Pfeil* Uṇâdis. *Schlacht; Bogen* Med. m. 24. = शेषसंग्राम und शरभ Uṇâdisûtra. im Saṃkshiptas. im ÇKDa.

युध्य (wie oben) adj. *zu bekämpfen;* s. सध°.

युध्यामर्धि m. N. pr. eines Mannes (nach Sây.) RV. 7,18,24.

युधिन् (von 1. युध्) adj. *streitbar, Kämpfer:* युधा सं कृञ्जिगेषु RV. 9, 66,16. 88,3. राजा 10,75,4. — Vgl. राज°, सङ्°.

युन्ध्, युन्ध्यति v. l. für पुन्ध् Dhâtup. 3,7.

युप्, युप्यति Dhâtup. 26,124 (विमोहने; nach den Erklärern व्याकुलीकरणे, एकीकरणे, समीकरणे). 1) *verwischen (Erhabenheiten und Vertiefungen ausgleichen); glätten, schlichten:* पाप्यां स्त्रियं युपितमस्तरीरते AV. 4,23,2. — 2) *verwischen so v. a. zerstören, verwirren:* यश्चित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम RV. 7,89,5. — 3) nach Sây. *verwischt* —, *unsichtbar sein:* युयोप नाभिरुपरस्यायोः RV. 1,104,4.

— caus. *verwischen,* die Spur: मृत्योः पदं योपयन्त्तः RV. 10,18,2. Kauç. 71. 86. यत्ते यूपेनायोपयन् Âit. Br. 2,1. TS. 6,3,8,7. 5,8,1. Çat. Br. 1,6, 3,1. दिशः Kâṭy. 26,6.

— intens. योयुप्यते *glatt streichen, schlichten:* प्रस्तारम् TS. 2,6,8,5. 6. Çat. Br. 1,8,3,13. वेदिम् TS. 2,6,4,4.

— mit caus. *turbare:* नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि RV. 10,124,7.

— सम् caus. *verwischen, glätten:* संयोपयन्तो दुरितानि विश्वा RV. 10,165,5.

युयु m. *Pferd* Hall. 2,281 wohl fehlerhaft für यपु, wie Aufrecht vermuthet.

युयुक्खुर m. = तुरव्याघ्र Çabdâm. im ÇKDa. *Hyäne* Wilson.

युयुत्सानर्नसति (यु° von 1. युत्स् + न°) adj. *mit Rossen fahrend* RV. 8,62,4.

युयुत्सा (vom desid. von 1. युध्) f. *Kampflust, Streitlust:* युयुत्सया MBh. 1,283. 644. 2,898. 3,12078. 16180. 5,7099. 7,1550. Harıv. 2450. R. 1,32,3.

युयुत्सु (wie oben) 1) adj. *kampflustig, zu kämpfen verlangend mit* (सीधम् u. s. w. oder blosser instr.) Bhag. 1,1. MBh. 1,7090. 8202. 3,12280. 5,7132. 7552. Harıv. 3384. 9292. R. Gorr. 1,77,13. 4,9,49. 5,37,43. 40,13. 6,18,18. 90,8. Ragh. 11,70. Varâh. Bṛh. S. 47,25. Kathâs. 60, 201. 113,25. Bhâg. P. 3,17,20. 9,6,15. — 2) m. N. pr. eines der vielen Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2446. 2448. 2728. 4321. 5449. 11, 315. 13,7715. Bhâg. P. 1,10,9. 13,3.

युयुधन (von 1. युध्) m. N. pr. eines Fürsten von Mithilâ Bhâg. P. 9,13,25.

युयुधान (wie oben) Uṇâdis. 2,91. m. N. pr. eines Sohnes des Satjaka Taitt. 1,1,25. Bhag. 1,4. MBh. 2,129. 3,611. 2009. 11,315. 13,7715. Harıv. 1935. 5085. 6633. 9206. VP. 435. Bhâg. P. 1,7,50. 3,1,21. 9,24,13. *ein Kshatrija und Bein. Indra's* Uṇâdivṛ. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

युयुधि (wie oben) adj. *streitbar* ṚV. 1,85,5. 115,4. यू° 149,4.

युयुवि s. यूयुवि.

युव Pronominalstamm s. u. 1. यु.

युवक m. = युवन् *Jüngling* ÇKDa. — Vgl. भूति°.

युवकन्यति (युवन्-+का°) adj. *als junger Mann schon kahlköpfig* P. 2, 1,67. f. ई *als junges Mädchen schon kahlköpfig* Schol.

युवगण्ड (युवन्-+ग°) m. *Ausschlag auf dem Gesicht junger Leute* Taitt. 2,6,17.

युवजरती (युवन्-+ज°) f. *als junge Frau schon alt erscheinend* P. 2, 1,67. nach dem Schol. auch m. युवजरत् *als Jüngling schon alt erscheinend.*

युवजानि (युवन्-+जानि = जाया) adj. *ein junges Weib habend* P. 5,4, 134, Sch. ṚV. 8,2,19.

युवति (fem. zu युवन्) 1) adj. f. und subst. *jung, Jungfrau, junges Weib* P. 4,1,77. AK. 2,6,4,8. H. 511. Hall. 2,327. ṚV. 1,118,5. तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मृज्यमानाः परि यन्त्यापः 2,35,4. 4,18,8. न मर्धति युवतिर्ज्ञानेत्रीः 3,54,14. 5,2,1. 2. मर्यं न युवतिभिः समर्षति 9,86,16. 10,30,3. AV. 14,2,61. Çat. Br. 13,1,6,6. 4,3,3. TBr. 3,1,4,9. 2,4. Âçv. Gṛhj. 4,6,4. 11. M. 2,212. 216. 11,36. Spr. 2639. 2696. 4624. Mṛicch. 34. 80. Çiç. 93. Varâh. Bṛh. S. 33,18. 51,18. 52,6. 70,10. 74,20. 93,21. 104,27. °ज्ञ Spr. 1891. Am Ende eines adj. comp. im fem. als Stellvertreter von युवन् *Jüngling:* सबालवृद्धयुवतिः पुरी *mit Knaben, Greisen und Jünglingen* Harıv. 4934 (सबालवृद्धा सा चैव पुरी die neuere Ausg.). In comp. mit einem Gattungsnamen P. 2,1,65. हा° *ein junges Elephantenweibchen* Sch. युवति heisst Ushas ṚV. 1,113,7. 123,3. 10. die Finger 93,2. 2,35,11. du. Nacht und Morgen, Himmel und Erde 1, 62,9. 185,5. AV. 18,7,6. 19,40,1. ṚV. 10,3,7. 18,10. Zu der Stelle न स्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम् ṚV. 10,178,3. Nir. 10,29 wird युवा zu vergleichen sein. — युवती = युवति Siddh. K. zu P. 4,1,77. H. 511, Sch. MBh. 3, 1661. 4,1075. R. 6,99,12. Spr. 4. 1494. 3642. Varâh. Bṛh. S. 75,4. Hit. 42,2. °ज्ञ MBh. 14,2685. Pañkat. 138,3. *die Jungfrau im Thierkreise* Ind. St. 2,260. Vgl. वार°, सुर°. — 2) f. *Geliebte* Çârṅâs. im ÇKDa.

युवतीष्टा युवति + 1. इष्ट f. *gelber Jasmin* (स्वर्णयूथिका) Râǵân. im ÇKDa.

युवत् abl. du. der 2ten Person; s. u. 1. यु 1).

युवदेवत्य (von युवन् + देवता) adj. *auch beide zur Gottheit habend* Çat. Br. 8,2,1,13.

युवद्रिक् (von युव) adj. *nach euch beiden gerichtet* ṚV. 4,43,4.

युवधित (युव + धित) adj. *von euch beiden gesetzt, — geordnet* ṚV. 6,67,9.

युवन् (von 2. यु; vgl. या ज्ञाया युवते पतिम् ṚV. 1, 105, 2) Uṇâdis. 1, 156. युवा, यूनम्, यूने u. s. w. P. 5,4,133. Vop. 3,117. das न geht nie in णा über 20. 6,9 Anf. 1) adj. *jung*, m. *Jüngling, ein junger Mann* AK. 2,6,1,42. H. 339. Med. n. 111 (= तरुण, श्रेष्ठ, निसर्गबलशालिन्). Hall. 2,318. युवाना पितरा पुनरेकत ṚV. 1,20,4. 63,3. 112,21. 144,4. युवा गणः 87,4. 3,61,13. युवाकुमारः 1, 155, 6. 2,4,5. 35,4. 5,60,3. 74,3. VS. 22,22. AV. 7,2,1. 9,4,24. 10,8,44. कन्याइ युवानं विन्दते पतिम् 11, 5, 18. Çat. Br. 7,2,2,15. Âçv. Gṛhj. 1,23,2. 2,7,11. Kauç. 9. यूनो (du.) रु सत्ता प्रथमे वि जज्ञतुः ṚV. 9,68,3. युवन् heissen Indra, Agni, Marut und andere Götter 2,20,3. 3,32,7. 46,1. 5,1,1. 6,5,1. 62,4. 7, 67,10. — 1,165,2. 186,1. 3,31,7. 5,57,3. 7,20,1. युवन्, स्थविर M. 2, 120. 216. युवस्थविरबालाः MBh. 3,2522. 15595. R. 2,84,3. Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,112. Ragh. 3,70. 6,81. Ṛt. 6,20. Spr. 1392. 1968. 3375. Varâh. Bṛh. S. 76,3. 12. Kathâs. 3,64. 18,110. 365. Bhâg. P. 4,29,72. युवा पुरुषः Vet. in LA. (III) 19,6. von Thieren Kîrt. Ça. 4,9,12. 25, 12,9. MBh. 1,5570. 13,3518. H. 1276. चातक° Spr. 661. 2936. f. यूनी Vop. 4,27. Çârṅâr. im ÇKDa. Vgl. पुनर्युवन्, यविष्ठ, यवीयस्, युवति. — 2) m. in der Gramm. *ein jüngerer Nachkomme eines Mannes bei Lebzeiten eines älteren* P. 1,2,65. 2,4,58. 4,1,90. 91. 163; vgl. u. गोत्र 1) *b*). — 3) m. Bez. *des 9ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,31. Weber, Gjot. 98. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*, No. 782.

युवन m. *der Mond* H. ç. 12 wohl fehlerhaft.

युवनाश्व m. N. pr. verschiedener Männer, unter andern des Vaters von Mândhâtar, Pravarâkhjâ. in Verz. d. B. H. 36,9. MBh. 1,226. 3, 10427. 12517. 7, 2276. 12, 978. 5924. 8599. 13, 5663. Harıv. 670. 711. R. 1,70,24. fg. (72,22 Gorr.). 2,110,13 (116,31. 119,13 Gorr.). 7,67,5. VP. 361. fg. 369. Bhâg. P. 9,6,20. 25. Verz. d. Oxf. H. 53,*b*, 11. 76,*b*, 12.

युवनाश्वज m. *Sohn des* Juv. = मान्धातृ H. 700. — Vgl. यौवनाश्व, यौवनाश्वि.

युवस् adj. = युवन् *jugendlich:* युवद्रयः ṚV. 10,39,3.

युवर्यु (von युवन्) adj. *jugendlich sich gebärdend:* एष स्तोमो मारुतं शर्ध आशुः रुद्रस्य सूनूर्युवन्यूरदेश्याः ṚV. 5,42,15.

युवपलित (युवन्-+प°) adj. *als junger Mann schon grauhaarig* P. 2, 1,67. f. आ *als junge Frau schon grauh.* Schol.

युवप्रत्यय (युवन्-+प्र°) m. *ein Suffix, welches sogenannte Juvan-Patronymica bildet,* Schol. zu P. 2,4,59. fgg.

युवमारिन् (युवन्-+मा°) adj. *als Jüngling —, in der Jugend sterbend:* घ° Âit. Br. 8,25.

युवयु (von युव) adj. *nach euch beiden verlangend* ṚV. 4,41,3. 6,63,3. 7,70,7. — Vgl. युवायु.

युवराज (युवन्-+राज = राजन्) m. *Kronprinz und Mitregent* AK. 1, 1,5,12. H. 332. R. 2,63,12. R. Gorr. 2,1,27. 41. Ragh. 3,35. Kâm. Nîtis.

17,25. fg. Varāh. Bṛh. S. 30,19. 34,10. 20. 36,1. 43,62. 49,2. 3. 53,7. fgg. 73,4. Kathās. 22,31. Paṇḍat. 156,16. Colebr. Misc. Ess. II, 286. Journ. of the Am. Or. S. 6,500. 517. Bein. Maitreja's, des zukünftigen Buddha, Tāik. 1,1,24.

युवराजत्व (von युवराजन्) n. *die Würde eines Kronprinzen und Mitregenten* R. Gorr. 2,7,3. Kathās. 44,26. Rāja-Tar. 3,102.

युवराजन् m. = युवराज Harav. 3247.

युवराज्य n. nom. abstr. von युवराज und = युवराजत्व Kathās. 52,366. Paṇḍat. 130,13. Racn. 3 in der Unterschr. — Vgl. यौवराज्य.

युवत्वलिन (युवन् + व°) adj. *schon als Jüngling Runzeln habend* P. 2, 1,67. f. घी *schon als junge Frau* R. ä. Schol.

युवशी (von युवन्) adj. *jugendlich* RV. 1,161,3. 7. 8,33,5.

युवी f. heisst ein Pfeil Agni's: या त इषुर्युवा नाम तया नो मृड TS.5,5,9,1.

युवीक (von युव) adj. *euch beiden angehörig, — ergeben:* दसा युवाकवः मुनाः RV. 1,3,3. 120,3. घर्मिणा मधुपृक्तेना युवाकुः सोमस्तं पीतम् 3, 58,9. धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे 7,60,3. 67, 4. गिरो दस्रा जुजुषाणा युवाकोः 68,1. 7. Eigenthümlich ist der Gebrauch dieses adj. ohne Casuszeichen: युवाकु शचीनां युवाकु (statt gen.) सुमतीनाम् RV. 1,17,4. इडीयन्मित्रधितये युवाकु (statt dat.) 120,9. ähnlich mag auch 7,60,3 ursprünglich युवाकु als n. pl. zu धामानि gestanden haben.

युवादत्त (युव + दत्त) adj. *euch beiden gegeben* RV. 8,26,12.

युवानीत (युव + नीत) adj. *euch beiden gebracht* RV. 8,26,12.

युवाम N. pr. einer Stadt Hall in der Einl. zu Vāsavad. S. 46.

युवायु von युव, adj. *nach euch beiden verlangend:* सोमाः RV. 1,135, 6. — Vgl. युवयु.

युवायुज् (युव + 2. युज्) adj. *für euch beide* oder *durch euch beide geschirrt* RV. 1,119,3.

युवावत् (von युव) adj. *euch beiden zugehörig* RV. 3,62,1.

युवीभू (युवन् + 1. भू) *jung werden:* °भूत Kathās. 97,41.

युष्टग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Rāja-Tar. 3,8.

युष्म, युष्मत् s. u. 1. यु 2).

युष्मदीय (von युष्मत्) adj. *euer* P. 4,3,1. 7,2,98. Kathās. 7,15. 24,115.

युष्मद्विध (युष्मत् + विधा) adj. *einer von eures Gleichen* Bhāg. P. 3, 18,10. 19, 45, 47.

युष्मयत्त (von युष्म) adj. *euch suchend:* गिरः RV. 3,39,7.

युष्मीक (wie eben) adj. *euer:* युष्माकाभिरूतिभिः RV. 1,39,3. 166,14. — Vgl. युष्माकम् unter 1. यु 2).

युष्मीदत्त (युष्म + दत्त) adj. *euch gegeben* RV. 5,54,12. 8,47,6.

युष्मादृश् (युष्म + दृश्) adj. *einer von eures Gleichen* Kathās. 28,94. Daśarūp. in L.A. 76,4.

युष्मादृश adj. dass. Kathās. 21,128. 35,78. 109,75.

युष्मीनीत (युष्म + नीत) adj. *von euch geleitet* RV. 2,27,11.

युष्मीयत् (von युष्म) adj. *euch gehörig* RV. 2,29,4.

युष्मेषित (युष्म + इ°) adj. *von euch gesandt* RV. 1,39,8.

युष्मोत (युष्म + ऊत) adj. *von euch geschützt, — geliebt* RV. 7,38,4.

यू m. (nach dem Schol.) = यूष *Brühe* H. 404. — Vgl. यूष्.

यूक m. und यूका f. (dieses häufiger) Uṇādis. 3,47. *Laus* H. 1206. 1356. M. 1,40. 45. Suçr. 1,116,20. 2,138,3. Çiśiṇ. Saṁh. 1,7,10. Kathās. 60, 137. Spr. 301. Bhāg. P. 5,26,17. Paṇḍat. 60,24. Vedântas. (Allah.) No. 71. यूकाभयेन नहि केशविमोक्षणं स्यात् Çāṅgīnāy. bei Udāyan. यूकालिक्षम् Udāyan. als Längenmaass Varāh. Bṛh. S. 58,2. Mārk. P. 49,27. Hitopa-deśa 1,60.

यूकादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Rāja-Tar. 3,11.

यूकर gaṇa कक्षाश्वादि zu P. 4,2,80.

यूर्ति (von 2. यु) f. nom. act. P. 3,3,97. Vop. 26,185. *Verbindung, Vereinigung:* बहिर्यूति adj. so v. a. *vor die Thür gesetzt* Bhaṭṭ. 7,69. — Vgl. गोयूति, युति.

यूथ (wie eben) Uṇādis. 2,12. 1) m. n. (in der älteren Sprache nur n.) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,a,7. *Schaar, Heerde* Nir. 4, 24. AK. 2,5,41. H. 1412. an. 2,219. Med. th. 11. Halāy. 4,1. RV. 1,10, 2. गवाम् 81,7. 3,55,17. 4,2,18. पद्मत् 38,5. इळा यूथस्य माता स्मद्भीभिः 5,41,19. 6,19,3. 29,5. सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे 7,60,3. उतेव यूथा परियन्नाघोषत् 9,71,9. AV. 5,20,3. TS. 5,7,2,1. Âçv. Gṛhy. 4,8,3. विषाणिनाम् R. 3,31,22. Çiś. 102. Vikr. 110. Varāh. Bṛh. S. 46,55. 61, 6. 17. 63,5. रुद्राणाम् Bhāg. P. 3,12,16. मत्कारयानां यूथस्य पतिः Kathās. 47,33. Bhāg. P. 8,10,19. यूथया सयूथाः R. 2,93,1 (102,1 Gorr.). मुख्ययूथा सेना 6,23,31. स्वयूथस्य विमाननम् Kām. Nīt. 15,26. Bhāg. P. 8,2, 28. यूथस्याम्बा (यूथस्याद्या die neuere Ausg.) als Bein. der Durgā Harav. 10241. वानरा यूथचारिणः Kathās. 60,206. कुञ्जर° MBh. 3,2537. कुञ्जर°, मृग° R. 2,54,39 (40 Gorr.). 95,18. 97,9. R. Gorr. 2,106,3. Çiś. 32. Hit. 82,12. 16. वराह° Racn. 2,17. Bṛ. 1,17. वानर° Paṇḍat. 10,6. 93,1. मेष° 253,13. वृक° Bhāg. P. 4,29,54. नैगम° R. 2,106,33. *Menge überh.*. हय° Harav. 3591. मीन° 15264. शङ्ख° Racn. 13,12. दोर्दण्ड° Bhāg. P. 7,8,31. Vgl. निर्यूथ, यथायूथम्. — 2) यूथी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. *eine Jasminart*, = प्रकुसुमी Trik. 2,4,33. = पुष्पकेट Med. = मागधी, पुष्पविशेष und कुरण्टक H. an. = यूथिका Çabdar. im ÇKDr.; vgl. पीतयूथी, स्वर्ण° und यूथिका.

यूथक am Ende eines adj. comp. = यूथ 1): गन्धर्वगीतिवादित्रयूथकैः Bhāg. P. 12,8,22. = गायकादिसमुदायिभिः Comm.

यूथग (यूथ + 1. ग) m. N. einer Götterschaar unter Manu Rākshusha Mārk. P. 76,31.

यूथत्व n. nom. abstr. von यूथ 1) Kauç. 24. AV. Paric. 18.

यूथनाथ (यूथ + नाथ) m. *Beschützer —, Haupt einer Schaar, — einer Heerde* AK. 2,8,2,3. H. 1220. Hit. 83,1. रुरि° R. 4,22,38. रिपु° Bhāg. P. 3,3,1. यमुर° 8,17,16.

यूथप (यूथ + 2. प) m. *Hüter —, Haupt einer Schaar, — Heerde* (insbes. eines Elephantentrupps) AK. 2,8,2,3. R. 1,16,26 (20,18. fg. Gorr.). कुरेणव स्वारण्ये स्थानप्रच्युतयूथपाः 2,65,20. यूथपाः सयूथाः 93,1 (102,1 Gorr.). 4,1,9. 3,18. 5,18,13. Bhāg. P. 8,12,27. सन्वधावत दुर्मर्षा मृगेन्द्र इव यूथपम् 9,15,28. पृथ्वी रुतयूथपा MBh. 7,27. यूथपाधिप Bhāg. P. 3,18,12. मृग° MBh. 1,3569. R. 3,74,19. रुरि° 1,16,27. 6,2,24. कुञ्जर° 2,86,22. 97,6. Vikr. 109. Bhāg. P. 8,2,19. Paṇḍat. 253,16. Hit. 82,18, v. l. नर° MBh. 6,3524. हय° 4,971. 1111. दैत्यानां हययूथपः Harav. 12999. Bhāg. P. 1,15,15. 2,1,38. मल्लराज°, सतिराज° Kathās. 47,26. मुर° Bhāg. P. 6,4,39. यमुर° 8,12. 33. 7,7,4. यमरदानव° 2,7,13. दैत्येन्द्र° 7,10,16. यूथप° R. 4,39,33. हययूथप° MBh. 1,5272. हययूथपयूथानां

यूथपो ऽपै नार्यभः 5,3788. अधिरथयूथप = Bhâg. P. 3,4,28. कपियूथप° R. 4,13,4. — Vgl. प्रति°.

यूथपति (यूथ-+प°) m. *Herr —, Haupt einer Schaar, — Heerde* (insbes. *eines Elephantentrupps*) H. 1220. करेणूनामिवाक्रन्दो बद्धे यूथपतौ वने R. Gorr. 2,39,36. Spr. 2857. Hit. 82,12. Bhâg. P. 2,7,15. 6,11,8. 8,2,27. वीर° 5,2,18. मुरललनालालाम° 16,16. स्वःस्त्री° 12,8,22.

यूथपरिधृष्ट (यूथ-+प°) adj. *aus der Heerde verlaufen:* °धृष्टा मृगी R. 5,26,9. — Vgl. यूथधृष्ट, यूथदृप्त.

यूथपशु (यूथ-+पशु) m. Bez. *einer best. Abgabe* (कर) P. 6,3,10, Sch.

यूथपाल (यूथ-+पाल) m. = यूथप R. 4,28,30. वानर° 1,16,33 (20,22 Gorr.).

यूथधृष्ट adj. = यूथपरिधृष्ट Taitt. 3,3,362. MBh. 3,2426. Bhâg. P. 4,28,46.

यूथमुख्य (यूथ-+मु°) m. *Haupt einer Schaar:* यदूनाम् Harîv. 4204.

यूथर्य adj. von यूथ gaṇa अश्वादि zu P. 4,2,80.

यूथशस् (von यूथ) adv. *schaarenweise, heerdenweise* MBh. 3,2409. Bhâg. P. 4,10,26. 10,75,10.

यूथवृत्त (यूथ-+वृत्त) adj. = यूथपरिधृष्ट R. 2,85,19.

यूथाग्रणी (यूथ-+अ°) m. *Haupt einer Schaar:* वीर° Bhâg. P. 9,22,19.

यूथिका (von यूथ) f. *Jasminum auriculatum* AK. 2,4,2,52. Taitt. 3,3,105. 221. H. 1148. Med. k. 143. Hall. 2,30. Vish. 109. Ṛt. 2,25. Megh. 27. Spr. 821. Gnat. 19. Bhâg. P. 10,30,8. Paṇḍan. 1,3,59 (neben मागधी). *Kugelamaranth* Med. *Clypea hernandifolia W. et* A. Rîgan. im ÇKDa.

यूथीकर् (यूथ-+1. कर्) *zu einer Heerde machen, in eine Heerde vereinigen:* °कृत्य स्ववत्सकान् Bhâg. P. 10,12,3.

यूथ्य (von यूथ) adj. gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54 (यौथ्य nach 6,1,213). *zur Heerde gehörig:* वयन् ṚV. 9,15,4. यथानामिव यूथ्याम् Vâlakh. 8,4. मो चिन् वृष्टिर्यूथ्या३स्वा सदा ṚV. 10,23,4. यौथ्य am Ende eines comp. *zur Schaar —, zur Heerde von — gehörig* gaṇa वर्ण्यादि zu P. 6,2,131. श्वयूथ्या: so v. a. *ein Rudel Hunde* MBh. 8,4604. मृत्तावान्स्यात्स्वयूथ्येषु *gegen die Seinigen* 12,4360. — Vgl. स°.

यून् यूनी s. u. युवन्.

यून (von 2. यु) n. *Band, Schnur* Kâṭy. Çr. 1,3,14. 15. 21. 5,8,29.

यूनर्वन् in der Stelle: मा मा यूनर्वा हासीदित्याह साम वै यूनर्वा Paṇḍav. Br. 6,4,8. Lâṭy. 1,7,8.

यूनि (von 2. यु) f. *Verbindung, Vereinigung* ÇKDa. nach Sidd. K.

यूप (von युप्) Uṇâdis. 3,27. m. AK. 3,6,2,19 (3,6,4,35 ist wohl यूप die richtige Lesart). 1) *geschlichteter Pfosten, Säule*, namentlich *der Pfosten, an welchen das Opferthier gebunden wird*, H. 824. दर्भो न यूपः ṚV. 1,51,14. सना यूपेव जरणा शयाना *truncus* 4,33,3. प्रर्नाप्रिक्तेर्हो निदितं सरस्वाय्यूपदम्बः 5,2,7. VS. 19,17. AV. 9,6,22. यूपो यस्यां निमीयते 12,1,38. 13,1,17. Çat. Br. 3,5,2,4. 6,2,3. 12. 4,1. 11,7,2,1. fgg. 4,1. Paṇḍav. Br. 3,10,2. TS. 5,3,2,1. 7,2,2,3. Kauç. 93. 125. Kâṭy. Çr. 7,1,24. MBh. 3,10295. fg. 7,2266. 3947. fgg. 12,968. R. 1,13,33. 62,19. 2,30,8. 61,17. Suçr. 1,110,16. Ragh. 1,44. Varâh. Bṛh. S. 70,10. 97,11. Bhâg. P. 4,19,19. एकयूपं TS. 5,5,2,1. Kâṭy. Çr. 3,8,27. त्रि° 15,10,8. यूपैकादशिनी Çâṅkh. Br. 10,2. Çat. Br. 3,7,1,22. Kâṭy. Çr. 8,8,6. MBh. 3,10668. einundzwanzig Çat. Br. 13,4,2,5. R. 1,13,27. अष्टास्रि 28. MBh. 3,10665. चित्य° Gorr. 3,3,27. Âçv. Gṛhj. 3,6,8. उभयतोयूपम् Kâṭy. Çr. 9,11,1. °च्छेदन 7,1,31. °खात AK. 2,4,2,2,169. यूपाग्र 2,7,18. H. 825. यूपदारु P. 6,2,43, Sch. °संस्कार Ind. St. 1,73. °लक्षण Titel eines Paṇic. des Kâṭyâyana Verz. d. Oxf. H. 386,b, No. 310. नाना° Çâṅkh. Çr. 8,9,2. 5. सयूपक AK. 3,6,2,19. अयूपक Âçv. Çr. 9,2,3. अयूप Kâṭy. Çr. 22,7,3. यूप = अयस्तम्भ Uṇâdis. im ÇKDa. यूपावट s. u. अवट. यूपशकल u. शकल. Vgl. अश्व°, स्थूर°. — 2) Bez. *einer best. Constellation von der Gattung* Âkṛtijoga, *wenn nämlich alle Planeten in den Häusern 1, 2, 3 und 4 stehen*, Varâh. Bṛh. 12,7. 18.

यूपकटक (यूप-+क°) m. als Erklärung von यूपाल AK. 2,7,18. H. 825.

यूपकर्ण (यूप-+कर्ण) m. *die mit Ghṛta bestrichene Stelle eines Opferpfostens* H. 825.

यूपकेतु (यूप-+केतु) m. Bein. des Bhûriçravas MBh. 6,3232,7. 7,1118; vgl. 3947. fgg.

यूपद्रु (यूप-+द्रु) m. *Acacia Catechu Willd.* Taitt. 2,4,15.

यूपद्रुम (यूप-+द्रुम) m. dass. Çabdar. im ÇKDa. = रक्तवादर Râgân. ebend.

यूपध्वज (यूप-+ध्वज) adj. *den Opferpfosten zur Fahne habend*, Beiw. der personif. Opfer Harîv. 9671.

यूपलक्ष्य (यूप-+ल°) m. *Vogel* Çabdam. im ÇKDa.

यूपवत् (von यूप) adj. *mit einem Opferpfosten versehen, wobei ein O. sich befindet:* क्रियाविधि Ragh. 11,37.

यूपवाह् (यूप-+वाह्) adj. *den Pfosten herbeiführend* ṚV. 1,162,6.

यूपवर्स्क (यूप-+व्र°) adj. *den Pfosten behauend* ebend.

यूपाक्ष (यूप-+अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Râkshasa R. 6,33,9. यूपाक्ष्य 5,41,2. 29.

यूपाक्ष्य (यूप-+आक्ष्या) m. s. u. यूपाक्ष.

यूपाकृति (यूप-+आ°) f. *Opfer bei Errichtung des Opferpfostens* Kâṭy. Çr. 6,1,4. 10,10. 8,8,9.

यूपीय (von यूप) adj. *zu einem Pfosten geeignet* gaṇa अयूपादि zu P. 5,1,4.

यूप्य (wie eben) adj. dass. ebend. P. 5,1,67, Sch. Çâṅkh. Br. 10,2.

यूयम् s. u. 1. यु 2).

यूयुधि s. युयुधि.

यूयुवि (यु° Padap., von 3. यु) adj. *beseitigend:* आरे विश्वं पथेष्ठां द्वेषो युयोतु यूयुविः ṚV. 5,50,3.

यूय्, यूयति (हिंसायाम्) Dhâtup. 17,29. — Vgl. जूय्.

यूष 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. AK. 3,6,2,35. Sidd. K. 249,b,6. *Fleischbrühe, Brühe* überh., *jus* H. 404. Çâṅkh. Çr. 4,18,13. Gobh. 4,1,7. Kauç. 64. TBr. Comm. II, 668. Suçr. 1,161,19. 231,17. 241,2. 2,26,15. धान्य 34,4. निम्ब° 48,9. 64,2. 366,7. वानरकृत्यम° Kathâs. 63,106. पूग°, कृरेणुक° Lalit. ed. Calc. 331, N. 1. medicinische Vorschriften darüber Çâṅkh. Sâṅ. 2,2,103. सप्तमुष्टिक 104. 3,1,18. Vgl. यूषन्, यूस्. — 2) m. *der indische Maulbeerbaum* Çabdar. im ÇKDa.

यूषन् Nebenform von यूष in den schwachen Casus P. 6,1,63. Vop. 3,39. पात्राणि यूषन्नासेचनानि ṚV. 1,162,13. VS. 25,3. TS. 6,3,11,1. 4.

यूस् = यूष 1) H. 404. रसो वा एष यत्पशूनां यद्यूषः TS. 6,3,11,1. 4. Der Comm. zu H. führt den nom. यूस् auf यु zurück.

येन (instr. von 1. य) rel. adv. und conj. 1) *nach welcher Richtung, wohin:* मुक्तानि चान्यवर्तन्त येन यातो तिलोत्तमा MBh. 1,7707. R. 2,33,16. 22. 6,16,19. गच्छ त्वं भो पुरुष येन काङ्क्षसि Saddh. P. 4,17,a. — 2)

wo: उपाद्रवयेन वै वनम् MBh. 3,15772. 13748. 14,2310. R. 2,75,8. येन स दरिद्रपुरुषस्तेनोपसंक्रामेत् Saddh. P. 4,17,a. येनाग्निस्तेन गतः P. 2,1, 14, Sch. अग्मतुर्येन तौ गङ्गाम् so v. a. येन सा गङ्गा R. 2,52,10. — 3) *auf welche Weise:* येन — तेन Pân. Gaṇ. 2,2. M. 4,178. *wie in Bezug auf,* mit acc.: येनेशं क्षरिरीशस्तं तेन Vop. 5,7. — 4) *woher, warum, weswegen, wodurch, in Folge wessen:* शृणु मे मघवन्येन न दृश्यसे मक्षीतितः MBh. 3,2122. शृणुत येन जानामि मैथिलीम् R. 4,59,3. किं तत्र येनासि ममानुकम्प्या Rāgat. 14,74. Kathās. 16,64. 18,179. 226. — 5) *dass, quod:* किं जानमधुना येन यूयं यूयं वयं वयम् Spr. 2498. न त्वया तत्कृतं कर्म येनाहं विमितः पुरा MBh. 3,2051. — 6) *weil, da* H. 1537, Sch. क्वाऽहं त्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येनं स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः RV. 3,62,1. R. 4,19, 18. Spr. 1148. 1212. 1258. 1392. 1516. 2078. 4266. 4455. Çiç. 25,1. 14. Çaṅk. 1. Kathās. 18,201. 36,121. Prasaṅgar. 72,9. Mārk. P. 18,25. LA. (III) 29,3. 57,14. — 7) *auf dass, damit:* तत्तीर्थस्तौ स्वकुलेन तुभ्यं गुणवते गुरुम्। ददामि सर्वं येन स्यो न पुनर्दुःखभागिनौ॥ Kathās. 18,271. 52,312. तदनं मायावचनैर्विश्वास्यार्हं क्षात्रतो व्रजामि येन विश्वस्तो भवति Pañcat. 33,7. शीघ्रमानीयतां तुरभाण्डं येन पोतकर्मकरणाय गच्छामि 40,15. 84,17. 206,6. — 8) *so, dass* (einem *so, talis* entsprechend): स त्वमात्मिन योगं तं येन शीघ्रा कृपा मम। भवेयुः so v. a. *gieb dir Mühe, dass* MBh. 3,2639. उपायो ऽयं मया दृष्टो निरपायो नरेश्वर। येन दोषो न भविता तव 2178. तत्त्वा पातयिष्ये येन mit potent. Mārk. P. 43,67. तत्तथा कुरु येन mit potent. Kathās. 3,18. 12,100. 17,54. mit praes. 32,124. 61,267. मम चैतावाँल्लोभविरहो येन स्वकृतस्यमपि सुवर्णकङ्कणं यस्मै कस्मैचिद्दातुमिच्छामि Hit. 11,5.

येमन n. = क्षेमन H. 424, Sch.

येयज्यार्ह m. so heisst *der Spruch* ये यजामहे, auf welchen die Jâgjâ folgt, VS. 19,24. Çiṅkh. Br. 3,5. Çr. 1,1,39. fg. 2,2. 19. 20. 3,16,15. MBh. 3,12482.

येवाय m. N. *eines schädlichen kleinen Thieres, Insects* oder dergl. AV. 5,23,7. 8. Dafür यवाय in der Stelle: तो वयश्च यवायश्चाभवतां तस्मात्तौ वर्षेषु ग्रुष्यतो ऽद्रिर्हि कृतौ Kâṭh. 30,1. यवाय steht auch im gaṇa 1. कुमुदादि und im gaṇa प्रेक्षादि zu P. 4,2,80.

येष्, येषति *wallen, sprudeln:* उक्षा येषन्ती RV. 3,53,22. चरू AV. 4,7, 4. येष्, येषते v. l. für येष् (प्रयत्ने) Dhâtup. 16,14. — Vgl. यस्.

— निस् *herausquellen, ausschwitzen:* यद्यो क्लु य एव लोहितेनो यो वाव धनावर्षेयति तस्य नाश्यम् TS. 2,5,8,4. — Vgl. निर्यास.

येष्टिक adj. als Beiwort von मुहूर्त Kauṣh. Up. 1,3. 4.

येष्ठ (von 1. या mit dem suff. des superl.) adj. *am meisten —, am schnellsten gehend oder fahrend* RV. 5,41,3. 74,5. यामं येष्ठाः 7,36,6.

योक् indecl. neben श्योक् gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. = श्योक् Pân. Gaṇ. 2,1 (श्योक् st. dessen in Z. d. d. m. G. 7,533,2).

योक्तर् (von 1. युज्) nom. ag. *Anschirrer, Anspanner, Wagenlenker* MBh. 8,4901. *der anschirrt* oder *in Thätigkeit setzt* VS. 30,14.

योक्त्र्य (wie eben) adj. 1) *in's Werk zu setzen, anzuwenden, woran man zu gehen hat:* स्तोम TS. 3,1,10,1. तेषु दण्डः MBh. 5,2888. योग Bhâg. 6,23. — 2) *anzustellen* (zu ein Geschäft): कर्मणि MBh. 1,6509. — 3) *zu versehen —, auszustatten mit, theilhaftig zu machen;* mit instr. der Ergänzung: इष्टकाचयैः पुरो Harîv. 5263. ईप्सितेनाभिलाषेण MBh. 3, 2758. — 4) *zu sammeln, auf einen Punkt zu richten:* योक्त्र्ये ऽऽत्मा कर्म शत्रया वेद्यं वै काङ्क्षता परम् MBh. 12,8915.

यौक्त्र (wie eben) n. P. 3,2,182. Vop. 26,68. *Strick, Seil, Gurt* AK. 2, 9,13. H. 893. Hall. 2,420. RV. 3,33,13. 5,33,2. सुमाने योक्त्रे सक् वौ पुनस्मि AV. 3,30,6. 7,78,1. TS. 1,6,4,3. TBr. 3,3,3,3. Çat. Br. 1,3,4, 13. Maitr. 1,4,3,7. Kâṭh. Çr. 2,7,1. 3,8,2. 7,4,6. 8,1,7. 16,3,6. Kauç. 33. 76. M. 8,292. काञ्चनरश्मियोक्त्राः (रथाः) MBh. 4,1663. 5,3014. 6,2293. 2968. 7,4389. Harîv. 9285. 9319. R. 1,43,19. 20. *das Band* am Besen (वेद) Âçv. Çr. 1,11,3. 8. Çâṅkh. Çr. 1,15,11. भुज° *die umschlingenden Arme* als *Schlinge* gedacht (vgl. बाहुपाश u. पाश) MBh. 7,5922. दश° *mit zehn Gurten versehen* (von *den Fingern* umspannt) RV. 10,49,7 und nach dieser Stelle Naish. 2,3 योक्त्र als Bez. der *Finger.*

योक्त्रक n. = योक्त्र Vârâh. Bṛh. 27,28.

योक्त्रय् (von योक्त्र), °यति *umbinden, umschlingen:* (तम्) योक्त्रयामास बाहुभ्यां पशुं रशनया यथा MBh. 3,446. 4,771 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 1,6028.

योग (von 1. युज्) 1) m., ausnahmsweise n. MBh. 13,1132. am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 17,49. P. 2,2,8, Vârtt. 1. Çiç. 42. *a) das Anschirren:* वाजिनो रासभस्य RV. 1,34,9. एकस्मिन्योगे भुरणा सनाये परि वां मक्ष भवतो रथो गात् *in einer und derselben Fahrt* 7,67,8. योगो योग इति क्रुद्धाः समब्रवीन्यचोदयन् *angespannt! angespannt!* MBh. 5,5958. — *b) Gespann:* न तत्र रथा न रथयोगा न पन्थानो भवन्ति Çat. Br. 14,7,1,11. रथयोगविद् MBh. 3,12086. सोर° Kâç. 27. षड्योगं, अष्टयोगं (AV. Paipp. 3,2) *Sechs-, Achtgespann* AV. 6,91,1. सीरं षड्योगम् Kâṭh. Çr. 5,11,13. Vgl. द्योग. — *c) das Rüsten* (eines Heeres): एते हि योगाः सेनायाः प्रशस्ताः परबाधने MBh. 12,3693. सेना° 3691. 2,2466. बलानाम् R. 2,82,29 (89,11 Gorr.). योगमाज्ञापयामासुर्दृढाय च विनिर्यये MBh. 8, 10. योग = सेनकर्म, सेनाङ्ग AK. 3,4,2,23. Trik. 3,3,66. fg. Med. g. 18. fg. — *d) das Auflegen* (eines Pfeils): योगमस्त्राणि गच्छति (so die ed. Bomb.) MBh. 6,5202. अस्त्र° 4,47. — *e) das Anstellen, Inswerksetzen, Ausführen, Anwendung, Gebrauch:* सूनृतस्य RV. 3,27,11. 10,30,11. माध्वाम् 33, 9. छन्दसाम् 10,114,9. वाचः TS. 2,5,9,1. यो वै यज्ञं योग यागति पुनक्ति 1,6,6,4 (vgl. AV. 19,13,1). एतैरुपाययोगैः M. 9,10. कर्मणाम् (Gegens. सन्यास) Bhag. 5,1. बुद्धि° 2,49. वसना° MBh. 4,1360. 1363. माया° R. 1,31,8. Bhâg. P. 2,9,26. अष्टस्य स्वरयोगो मे R. 2,69,20. विश्वास° 5,90, 10. क्रिया° (s. auch bes.) Bhâg. P. 1,5,24. 3,21,7. क्षेत्रदातिएयोगः Vish. 23. Ragh. 10,87. Kir. 5,52. Râǵa-Tar. 2,171. मरुत्तमानामभिधानयोगः Bhâg. P. 1,18,18. समाधि° 3,5,46. 8,21. वितान° 2,1,37. भोग° Râǵa-Tar. 1,65. 278. 3,298. 4,271. Paṅkar. 3,1,6. *Anwendung eines Medicaments, Mittel, Kur* Suçr. 1,147,13. 161,14. 185,19. 2,33,6. 49,17. 69,4. वाजीकर 153, 16. 338,19. Çiṅkh. Sâṅkh. 3,2,17. योग = प्रयोग Med. = औषध Trik. = भेषज Med. — *f) Mittel* überh., *schlaues Mittel, Kniff:* तस्या योगमविन्दत्तः MBh. 1,5152. नहि योगं प्रपश्यामि येन मुच्येयमापदः 6127. प्रच्छन्नो वा प्रकाशो वा योगो यो ऽरिं प्रबाधते 2,1953. योगेन *unter Anwendung eines Mittels, auf eine schlaue Weise* 3,10777. 7,677. मुक्तना योगेन मृडभवसि न तु नीचाः Spr. 49. बलभिर्योगैः MBh. 13,2655. Harîv. 4147. 4151. R. 2,73,15. R. Gorr. 1,52,16. 2,78,13. Ragh. 9,22. Bhâg. P. 3, 14,15. दृष्ट्वा मैत्रपतं योगं पशूनां स पतिर्मखे 4,5,21. श्रेयःप्रसिद्धये 18,3. 7,

7,21. *ein übernatürliches Mittel, Zauber:* योगेन वपुरात्मानं कृत्वा MBh. 1,916. तं योगं मम चतुर्यो ऽप्युपदिश Spr. 1212. Kathâs. 1,50. 8,34. प्राकाम्यज्ञानान्योगांस्तथा निगडभञ्जनान् 12,42. 62. योगमन्यदेकप्रवेशकम् 45, 78. 13,20. 16,10. 17,104. 32,37. 143. 33,104. 171. 37,27. 45,57. 60. 72, 880. Râéa-Tar. 1,199. 2,105. so v. a. *Betrug:* योगाधमनविक्रीत, योगदानप्रतियत्क् M. 8,165. योगनन्द् (Gegens. सत्यनन्द्) *der falsche* Nanda Kathâs. 4,103. 111. योग = उपाय AK. Taik. Med. = कार्मण H. an. 2, 44. Med. — *g) Gelegenheit:* कथंचिदेव भवति कार्ये योगः सुदुर्लभः Kâm. Nîtis. 11,72. पुण्यानुष्ठानयोगेषु Mâns. P. 51,59. — *h) Unternehmen, Werk, Geschäft, That:* कृतपूर्वी तितयो योगे ṚV. 4,24,4. 1,5,2. योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे 30,7. घृतः 2,8,1. AV. 10,5,1. TS. 1,5, 2,3. 5,5,2. — *i) das Erwerben, Gewinnen* (neben क्षेम *Besitz;* vgl. योगक्षेम) ṚV. 7,54,3. 86,8. 10,89,10. VS. 30,14. AV. 19,8,2. योगे ऽन्यामाँ प्रज्ञानां मनः क्षेमे ऽन्यामाम् TS. 5,2,8,7. Kauç. 56. MBh. 13,2081 (die ed. Bomb. क्षेमस्य st. क्षेमं च der ed. Calc.). = अपूर्वलाभ, बलव्यलाभ, अपूर्वार्थसंप्राप्ति Taik. H. an. Med. — *k) Verbindung, Vereinigung, das Zusammentreffen, Berührung:* विधाय योगं पार्श्वेन संशक्तकरणोः सक् MBh. 7,793. Harîv. 3429. श्रवणाङ्गुष्ठ° Maitrâyaṇ. 6,22. 26. R. 5,35,25. Ragh. 3,26. 6,65. Kumâras. 5,67. Çik. 42. Spr. 2054, v. l. 4373. 4810. AK. 3, 4,22 (29), 1. Vaitân. Bân. S. 54,18. 79,19. 27. 88,14. 93,21. 104,24. Kathâs. 17,122. 31,58. Sâh. D. 50,1. Bhâg. P. 5,5,6. Mîmâ. P. 16,6. Weber, Rik-mat. Up. 291. Bhâshâp. 56. Nîlak. 35. बन्धो ऽत्र दुःखयोग एव 66. Kap. 1, 19. Schol. zu P. 8,1,24. 4,40. Vop. 2,35. यदा न सोमित्रिरियाय योगम् *sich einigen, nachgeben, sich fügen* R. 6,112,110. *Verbindung verschiedener Stoffe, Mischung, Gemisch* AK. 2,7,22. Vaitân. Bân. S. 54, 121. 55,30. 57,8. 76,9. 77,19. 25. विषयोगास्तथा सर्वे विदिताः शत्रुनाशनाः MBh. 2, 257. R. 5,14,44. bei den Gaina *Berührung mit der Aussenwelt* Sarvadarçanas. 36,17. fgg. 37,10. 20. 38,23. im Sâṅkhya einer der zehn मूलिकार्थ Tattvas. 43. *Verbindung mit* (instr.) so v. a. *das Theilhaftwerden:* ब्रह्मत्वयशसा योगं ब्रवीतु Harîv. 7266. सत्यं° Prab. 74,11. अधर्मप्रभवं चैव दुःखयोगं शरीरिणाम् M. 6,64. न नूनं तपसो वास्ति फलयोगः सुतस्य वा so v. a. *hat keine Früchte getragen* R. 2,63,39. योग = संगति AK. Taik. H. an. Med. — *l)* in der Astr. *Conjunction:* नक्षत्र° (s. auch bes.) Lîl. 8,1,5. Sûrjas. 7,11. 14,15. 17. Vaitân. Bân. S. 24,5. 9. 11. 29. 25,4. 26,12. 27,1. 2. 107,3. MBh. 1,7333. 3,15959. 5,125. 13,1732. 3273. Harîv. 2476. R. Gorr. 2,12,3. 26,11. 5,35,23. 6,112,59. P. 3,1,26, Vârtt. 7. Çiç. 181. Vikr. 38,12. Ragh. 1,46. Kumâras. 7,6. Spr. 4377. Bhâg. P. 3,16,27. 7,14,23. — *m) Summation, Summe* Colebr. Alg. 5. Sûrjas. 4,10. fg. 20. 7,4. 9,10. गणितस्याद्य योगस्य चक्रे संवत्सरं प्रभुः Harîv. 272. तत्कार्यं मृगशावाक्ष्या गुणयोगो दुनोति माम् so v. a. *alle Vorzüge* Spr. 2370. — *n) Zusammenstellung, Reihenfolge, Anordnung:* एतेषामङ्गे योगविशेषान्वक्ष्यामः Âçv. Çr. 11,1,1. सकर्मयोग Çâṅkh. Çr. 13,24, 20. स्तोम° Lâṭ. 2,1,1. 9,7. क्रतु° Kauç. 6. ऋचाम् (oder zu *o*) Kâṭy. 31,13. — *o) Zusammenhang, Beziehung, Relation:* मानयोगौश्च ज्ञानीयातुलयोगौश्च सर्वशः M. 9,330. द्रव्याणां स्थानयोगाः *die respectiven Standorte* 332. स्त्रीधर्मयोगम् (= धर्मोपायम् Kull.) 1,114. तत्र स्थानानि भूतानां योगंश्चिन्त्य पृथग्विधान्व्यधत शतशो ब्रह्मा Harîv. 11803. हृदयं वेद योगं ज्ञानाति प्रीतियोगं परस्परम् R. Gorr. 1,78,15. Kap. 1,31. P. 1,2,34. पुमाण्यांश स्त्रीयोगैः सक् (vgl. पुंयोग) AK. 3,6,3,37. दिव्य° adj. MBh. 3,1063. नव° *neunfach* 10666. योगान् am Ende eines comp. *vermittelst, in Folge von, gemäss* Kâṭy. Çr. 1,2,16. 4,17. आनुपूर्व्य° 5,10. गुण° 13. फल° 6,9. कर्म° 12. वेद° 8,29. 4,4,2. 12,1,3. 22,2,14. 15. 23,4,12. Çvetâçv. Up. 4,1. ṚV. Prâr. 13,4. M. 1,41. R. 1,60,20 (62,20 Gorr.). Çik. 47. Kap. 1,12. fg. 3,32. Sâṅkhyas. 42. Ragh. 7,3. 13,29. Kumâras. 7,55. Kîm. Nîtis. 3,39. Spr. 1362. 4273. Vaitân. Bân. S. 75,2. Kathâs. 18,274. Râéa-Tar. 6,48. Naish. 22,46. Sâh. D. 7,1. AK. 2,10,24. °योगतस् dass. Ragh. 17, 78. Kathâs. 46,236. 59,38. Bhâg. P. 1,9,27. 3,5,24. °योगेन dass. M. 9, 295. R. 5,81,40. Sûrjas. 13,16. Vaitân. Bân. S. 26,2. Spr. 2036. Bhâg. P. 3,5,32. 10,30. 24,17. — *p)* in der Astr. *Constellation* Vaitân. Bân. S. 40,1. 14. 78,25. Bân. 5,13. *Constellationen mit dem Monde* heissen चान्द्रयोगाः 13 passim; *Constellationen ohne den Mond* heissen क्षययोगाः oder नाभसयोगाः und werden eingetheilt in याकृतियोगाः, सैध्यायोगाः, याम्ययोगाः (याम्यक्षयोगाः) und दलयोगाः 12 passim; ausserdem werden noch aufgeführt द्वियकृयोगाः 14 passim. Auf einem andern Principe beruht die Eintheilung in राजयोगाः, प्रव्रज्यायोगाः, लोकयोगाः u. s. w. 4,13. 6,12. 7,8. 13,4. 25,12. *sechzehn Constellationen* Ind. St. 2, 265. fgg. — *q)* in der Astr. Bez. *einer best. Zeiteintheilung;* es werden 27 आनन्दादि und auch 28 विष्कम्भादि solcher Joga mit Namen aufgeführt Colebr. Misc. Ess. II, 363. Sûrjas. 2, 65 (vgl. die Note dazu S. 432). Vaitân. Bân. S. 103,13 (नन्दादि Schol. st. आनन्दादि). — *r) Etymologie, Ableitung der Bedeutung eines Wortes aus seiner Wurzel, die aus der Etymologie sich ergebende Bedeutung eines Wortes* (Gegens. रूढि) Sîs. zu ṚV. 1, S. 72,16. Schol. zu Kâṭy. Çr. 4,14,31. 15,1,1. भवति हि निष्पन्ने ऽभिव्याहारे योगपरीष्टिः Nir. 1,14. Prâtiçâkh. 9,a,3. 4. H. 2. — *s) Abhängigkeit eines Wortes von einem andern, Rection, Construction:* शास्त्रकृतो योगः शब्दानाम् (nach Dunsa *Zusammensetzung, Bau;* es wäre auch die vorangehende Bed. moglich) Nir. 1,2. दूरस्थानामपि पदानामेकीकरणं योगः Sûçr. 2,557,4. कृद्योगा षष्ठी *ein von einem* Kṛdanta *abhängiger Genetiv* P. 2,2,8, Vârtt. 1. — *t)* in der Gramm. *Regel* (ursprr. *ein abgeschlossener Satz*) P. 1,3,11, Vârtt. 1. Pat. zu P. 1,1,62. Kâç. zu P. 1,1,39. Sidd. K. zu P. 7,2,63. इति योगो विभज्यते Schol. zu P. 1,3,16. पृथग्योगकरण Schol. zu VS. Prâr. 3,101. 4,116. 131. 167; vgl. योगविभाग. योग = सूत्र Taik. — *u) das Passen zu einander, Angemessenheit:* द्वयोर्योगं न पश्यामि तपसो रक्षणस्य च MBh. 5,3433. न योगो ऽस्ति विषस्य रुधिरस्य च R. 5,83,29. नक्षेताभ्याम् — अस्मदादेः सकाध्ययनयोगो ऽस्ति Uttarar. 27,2.3 (35,12. fg.). अन्यतर° Kap. 1,76. 120. अ° *logische Unmöglichkeit:* उत्तरस्य कार्यस्यायोगः Schol. zu Kap. 1,39. नाशायोग s. Vedântas. (Allah.) No. 84. Sarvadarçanas. 141,15. fg. 143,17. 150,14 fgg. 180,5. योगतस् *wie es sich gebührt, auf die richtige Weise* M. 6,9. योगेन dass. R. 5,90,31. अयोगेन Spr. 2811. योग = युक्ति AK. Taik. H. an. Med. — *v) Anspannung der Kräfte, Bemühung, Fleiss, Eifer, Aufmerksamkeit:* शस्त्रे च परमं योगम् (अतिष्ठत्) MBh. 1,8230. 8244. इन्द्रियाणां त्रये योगमातिष्ठेद्विवाशिनम् M. 7,44. स त्वमातिष्ठ योगं तं येन शीघ्रा रणा मम । भवेयुः MBh. 3,2639. परया भक्तियोपेतो योगेन परमेण 1, 3245. विद्या योगेन रक्ष्यते Spr. 3134. 4994. R. 5,18,18. समाध्यनुबद्ध° Bhâg. P. 3,16,26. कामधुक्सत्र योगतः R. 1,55,1. सर्वान्संसाधयेदर्थानति-

एवन्योगतस्तनुम् M. 2,100. — w) पूर्णेन योगेन oder जलपूर्णेन योगेन so v.l. zum *Ueberfliessen, aus vollem Herzen, aus unwiderstehlichem Drange* Harıv. 5425. 5196. fehlerhaft ज्ञपूर्वेण st. जल° 5429. — x) *Sammlung —, Concentration der Geistesthätigkeit, feste Richtung der Erkenntniss auf einen Punkt, Meditation, Contemplation; die zur Kunstfertigkeit erhobene Contemplation; die systematische Begründung derselben, der Joga als ein best. philosophisches System* (als Gründer desselben gilt später Patañgali); = ध्यान AK. Trik. H an. Med. यत्प्राप्तार्थस्य प्राप्तये पर्यनुयोगो योगः Sarvadarçanas. 15,11. Taitt. Up. 2,4. Taitt. Âr. 8, 4. सूक्ष्मतां चान्ववेतेत योगेन परमात्मनः। देहेषु च समुत्पत्तिमुत्तमेषधमेषु च ॥ M. 6,66. इदं ध्यानमिदं योगम् MBu. 13,1132. अष्टयोगा 17,49. Harıv. 5006. तपोयोगबलेन R. 1,3,6. °प्रसूतेन चेतसा R. Gorr. 1,15,24. किमात्मयोगेन निवर्तितेन 4,29,24. Raghu. 1,8. 18,32. Spr. 757. Vaṛâh. Bṛh. S. 69,38. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः Jogas. 1,2. Sarvadarçanas. 160,7. fgg. Kap. 5,2,16. यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह। बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम् ॥ तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्। Katuop. 6,10. fg. एवं प्राणमयोंकारं यस्मात्सर्वमनेकधा। पुनर्नक्ष युञ्जते वापि तस्माद्योग इति स्मृतः ॥ Maitrıcp. 6,23. Çvetâçv. Up. 2,11. MBu. 1,48. युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये Bhag. 6,12. समत्वं योग उच्यते 2,48. योगात्तरायाः Prab. 61,17. योगोपसर्गाः 88,13. मोक्षोपायो योगो ज्ञानश्रद्धानचरणात्मकः H. 77. योगाद्वृद्ध Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 10,143. Bhâg. P. 3,18, 15. साध्यो योगमवाप्स्यसि Nir. 14,6. Çvetâçv. Up. 6,13. Bhag. 2,39. MBu. 12,7137. 11037. fg. 14,546. fgg. Lalit. ed. Calc. 179,5. Lot. de la b. l. 4. Bhâg. P. 2,1,6. Eine verkehrte Auffassung des Wortes, nämlich als *Verbindung der Einzelseele mit Gott* oder *der Allseele* findet man z. B. bei den Pâçupata: चित्तद्वारेणात्मेश्वरसंबन्धो योगः Sarvadarçanas. 77, 15. न पद्मासनता योगो न नासाग्रनिरीक्षणम्। ऐक्यं जीवात्मनोराहुर्योगं योगविचारदाः ॥ Kulârṇavat. in Verz. d. Oxf. H. 92,a,7. b. Bei den Pâñcarâtra ist योग *Andacht, andächtiges Suchen Gottes:* योगो नाम देवतानुसंधानम् Sarvadarçanas. 55,22. 18. प्राणायामः प्रत्याहारो ध्यानं धारणा तर्कः समाधिः षडङ्ग इत्युच्यते योगः Maitrıcp. 6,18. Amṛtan.-Up. in Ind. St. 9,25. षडङ्ग° Verz. d. Oxf. H. 8,a,36. H. 85. आरम्भश्च घटश्चैव तथा परिचयोऽपि च। निष्पत्तिः सर्वयोगेषु योगावस्थाः प्रकीर्तिताः ॥ Verz. d. Oxf. H. 235,b,24. fg. Auch *eine einzelne Handlung, welche dem Joga förderlich ist*, wird als Joga bezeichnet: सा च तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानात्मिका क्रिया योगमाधनत्वाद्योग इति Sarvadarçanas. 172,3. 6. Hierher wohl योग = वपुःस्थैर्य Med. — y) der personif. Joga ist ein Sohn Dharma's von der Krijâ Bhâg. P. 4,1,51. — z) *ein Anhänger des Joga-Systems* MBu. 3,13741. 12,11038. fg. 11550. Schol. zu Kap. 5,57. Verz. d. B. H. No. 616. — aa) *der das Vertrauen missbraucht, Verräther* Trik. H. an. Med. — bb) *Später* Trik. — cc) N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 238,b,30. 239,a,24. —2) f. या a) Beiw. der Pîvarî, einer Tochter der Manen Barhishad, Harıv. 977. 1244. — b) Bez. einer Çakti Wenn, Râmat. Up. 326. Paṛâç. 3,20,30. — Vgl. अप्सु°, अश्व°, इन्द्र°, कथा° (vgl. noch उपविष्टः सभामध्ये कथायोगेन MBu. 3,16638. कथायोगेन वुध्येत वाग्मित्वं सत्यवादित्वम् Kâm. Nitis. 4, 36), कर्म° (auch in den Nachträgen; कर्मयोगात् und कर्मयोगतस् *in Folge vorangegangener Handlungen, — des Schicksals* Kathâs. 43,193. 181), काल° (*Zeitpunkt* Kathâs. 41,14. कालयोगेन bedeutet *nach einiger Zeit, einige Zeit darauf;* vgl. MBu. 12,5290. R. 1,34,11. कालपर्याययोगेन dass. 7,65,17), क्रम° (यत्ने क्रमयोगेन auch MBu. 3,8818), क्रिया°, तत्र°, चूर्ण°, ज्ञान° (auch Bhag. 3,3), दण्ड°, दुर्योग (*Vergehen* Uttarâdh. 109,8 = 147,14 der neueren Ausg.), दैव° (°योगात् Spr. 2366. °योगतस् Kathâs. 39,5. Râǵa-Tar. 6,15. °योगेन Bhâg. P. 3,20,14), ध्यान, ध्यान° (auch Jâén. 3,61. MBu. 3,16726), नक्तत्र°, निद्रा° (auch Harıv. 523), पूर्ण°, पृथग्योग, पृश्नि°, प्राचीन°, बर्हिर्योग (auch Vop. 3,9), ब्रह्म°, भक्ति° (auch Bhâg. P. 1,2,7. 20. 2,2,11. 3,25,44. 32,23), भद्र°, मन्त्र°, मिथ्या°, यथायोगम्, विधियोग, सोम°, स्थाने°, हरि°.

योगक (von योग) m. Beiw. des Agni als *Hochzeitsfeuers* Gṛhjâsaṃgr. 1,5.

योगकला (योग + क°) f. = योगपट्ट Bhâg. P. 4,6,39.

योगकन्या (योग + क°) f. ein N. der zur Göttin erhobenen Tochter der Jaçodâ, die Kaṃsa in der Meinung, dass sie ein Kind der Devakî sei, um's Leben gebracht hatte, Harıv. 3351. 9071.

योगकरण्डक (योग + क°) 1) m. N. pr. eines Ministers des Brahmadatta Kathâs. 19,80. — 2) f. °ण्डिका N. pr. einer Pravrâǵikâ Kathâs. 13,88.

योगकुण्डलिनी (योग + कु°) f. Titel einer Upanishad Ind. St. 3,325.

योगक्षेम (योग + क्षेम) m. *Besitz des Erworbenen, Erhaltung des Vermögens; Vermögen, Subsistenz; Sicherheit, Wohlfahrt* VS. 22,22. योगक्षेमं वो घृताच्याकं भूयासमुत्तमम् RV. 10,166,5. Ait. Br. 8,6. TBr. 3,3,8,4. Çat. Br. 11,5,6,4. 12,1,1,10. 13,1,4,3. Sâṅkh. Br. 2,8,9. Kauç. 114. प्रेयो मन्द्रो योगक्षेमाद्वृणीते Kathop. 2,2. Taitt. Up. 3,10,2. M. 7,127. 8, 230. 9,219. Jâén. 1,100. Dâs. 103,9. Bhag. 9,22. MBu. 1,2608. 3,16851. 5,4209. 12,2688. 3227. 13,2146. R. 2,48,17. 53,3. 76,8. 112,21. R. Gorr. 2,45,20. 123,20. 124,12. Spr. 4900. Kâm. Nitis. 2,2. Kathâs. 34, 200. 49,78. Bhâg. P. 1,6,7. Verz. d. Oxf. H. 70,b,12. Verz. d. B. H. No. 1022. °कर MBu. 1,3341. R. 2,113,12. Gorr. 127,7. °वह Schl. 115, 14. °समर्पयितर् MBu. 13,1921. यै° Çat. Br. 11,4,2,2. Ait. Br. 1,14. Wird gewöhnlich erklärt als *Erwerb und Erhaltung des Besitzes*, was aber das m. sg. und pl. nicht bedeuten kann und dieses erscheint doch auch in der späteren Sprache, z. B. MBu. 12,518 योगः क्षेमश्च ed. Bomb.). 2808. °क्षेमाः 2677. 13,3144. Das n. sg. und das m. du. müssen entschieden als Dvandva gefasst werden, bedeuten aber auch geradezu *Wohlfahrt;* das n. Spr. 4332. 4421 (v. l. masc.). Vaṛâh. Bṛh. S. 8,11. योगक्षेमी Râǵa-Tar. 6,210. समानयोगक्षेम am Ende eines adj. comp. so v. a. *gleichen Werth mit — habend, Nichts mehr seiend als:* ज्ञानभावसमानयोगक्षेमत्वात् Sarvadarçanas. 47,12. घटाकाशसमानयोगक्षेमत्वात् 128,12. निर्योगक्षेम adj. *sich nicht um Erwerb und Besitz kümmernd* Bhag. 2,45.

योगगति f. *der ursprüngliche Zustand:* पावकः पवमानश्च शुचिरित्यग्नयः पुरा। वसिष्ठशापादुत्पन्नाः पुनर्योगगतिं (= अग्नित्वं Comm.) गताः ॥ Bhâg. P. 4,24,1.

योगचक्षुस् adj. *bei dem die Meditation das Auge vertritt*, Beiw. Brahman's Mâṛk. P. 97,9.

योगचर m. Beiw. Hanumant's Trik. 2,8,6.

योगचन्द्रिका f. Titel einer Schrift Hall 17.

योगचिन्तामणि m. desgl. Hall 12. 17. Verz. d. B. H. No. 648.

योगचूर्ण n. *magisches Pulver* (चूर्ण) Daçak. 71, 2.

योगज 1) adj. *durch Meditation —, durch Joga hervorgerufen* Bhâsârp. 62. — 2) n. *Agallochum* Bhâvapr. im ÇKDr.

योगतत्त्व n. *das Wesen des Joga* Ind. St. 2, 1. Titel einer Upanishad 49. fg. °प्रकाश und °प्रकाशक Titel einer Schrift Hall 18.

योगतन्त्र n. *Joga-Lehre, ein über den Joga handelndes Buch* Hariv. 12139. Bhâg. P. 9, 21, 26. Bez. einer Klasse von Schriften bei den Buddhisten Burn. Intr. 1, 537. 638. Schiefner, Lebensb. 244 (14).

योगतरंग m. Titel einer Schrift Hall 12.

योगतल्प n. *Joga-Lager* so v. a. योगनिद्रा Bhâg. P. 2, 10, 13.

योगतारका f. *der Hauptstern eines* Nakshatra Sûrjas. 8, 19. Varâh. Bṛh. S. 24, 34.

योगतारा f. dass. Sûrjas. 8, 16. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 323.

योगतारावली (योग + ता°) f. Titel einer Schrift Hall 18. 119.

योगत्व n. *das Joga-Sein* Sarvadarçanas. 163, 9. 164, 4. fg.

योगदीपिका f. Titel einer Schrift Hall 18.

योगदेव m. N. pr. eines Gaina-Autors Sarvadarçanas. 31, 15.

योगधर्मिन् adj. *der Meditation —, dem Joga huldigend* MBh. 17, 49. Hariv. 6463. R. 7, 23, 8, 43. Bhâg. P. 3, 16, 1.

योगनन्द m. *der falsche* Nanda (gegenüber सत्यनन्द) Kathâs. 4, 103. 111 u. s. w. fälschlich योगानन्द Hall in der Einl. zu Vâsavad. 55.

योगनाथ m. *Herr des Joga*, Beiw. Çiva's Verz. d. Oxf. H. 89, *a*, 8. Datta's Bhâg. P. 6, 8, 14.

योगनाविक m. *ein best. Fisch*, = गर्गाट Hân. 186.

योगनिद्रा f. *halb Contemplation, halb Schlaf; ein Zustand zwischen Schlaf und Wachen, leichter Schlaf;* insbes. Vishṇu's *Schlaf am Ende eines Joga* (auch personificirt) Spr. 808. 5080. सेवेत साधो सुखयोगनिद्राम् Kâm. Nîtis. 15, 44. Ragh. 10, 14. Pañkat. 27, 5. 29, 24. 125, 25. MBh. 1, 1218. Ragh. 13, 6 (Çiç. D. 340, 21). VP. 498. 500. 502. Bhâg. P. 1, 3, 3. 3, 9, 21. 11, 31. 10, 2, 15. Mârk. P. 81, 49. 52. Verz. d. Oxf. H. 16, *b*, N. 4. — Vgl. निद्रायोग und विष्णुं निद्रामयं योगं प्रविष्टम् Hariv. 2834.

योगनिद्रालु m. Bein. Vishṇu's H. ç. 67, wo fälschlich योगि° gelesen wird.

योगनिलय m. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

योगंधर (योगम्, acc. von योग, + धर) m. 1) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Spruches* R. 1, 30, 6. — 2) N. pr. eines Ministers des Çatânika Kathâs. 9, 14. 43. des Piṇḍola Schiefner, Lebensb. 276 (46). — Vgl. योगंधरायण.

योगपट् und °पट्क n. *das bei der Contemplation um Rücken und Knie geschlungene Tuch* Padma-P., Kârttikam. 2 im ÇKDr.

योगपति m. *Herr des Joga*, Bein. Vishṇu's Pañkar. 4, 3, 18.

योगपत्नी f. *Gattin des Joga*, Bein. der Pivarî, die auch Jogâ und Jogamâtar genannt wird, Hariv. 977. 1244. an der ersten Stelle योगिपत्नी die neuere Ausg.

योगपथ m. *der zum Joga führende Weg* Bhâg. P. 1, 6, 36. 4, 4, 24. 6, 25. 11, 20, 24.

योगपद् n. *der Zustand der Contemplation* Dhâtup. in Ind. St. 2, 4.

योगपट्क n. Bez. *eines best. bei der Contemplation umgeworfenen Gewandes* ÇKDr. nach Siddhântaç. in Vivâdatâṇḍ. Wohl fehlerhaft für °पट्ट.

योगपातञ्जल m. *ein Anhänger des* Patañgali *als Joga-Lehrers* Madhus. in Ind. St. 1, 23, 20.

योगपारंग m. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

योगपीठ n. Bez. *einer best. Art zu sitzen bei der Contemplation* Pañkar. 3, 2, 27. Kâlikâ-P. 56 im ÇKDr.

योगबीज n. Titel einer Schrift Hall 14. 18.

योगभावना f. *composition by the sum of the products* Colebr. Alg. 171.

योगभाष्य n. Titel eines *Commentars* des Vjâsa Verz. d. Oxf. H. 247, *b*, 4.

योगभास्कर Titel einer Schrift Hall 18.

योगमणिप्रभा f. Titel eines Commentars zu den Jogasûtra Hall 12.

योगमय (von योग) adj. (f. ई) *aus der Contemplation —, aus dem Joga hervorgegangen:* °ज्ञान (so die neuere Ausg.) Hariv. 11604. पाडुके Bhâg. P. 4, 15, 18. Vishṇu Pañkar. 4, 3, 20. धर्मो बुद्धियोगमयः (d. i. बुद्धिमयो योगमयश्च) MBh. 3, 18773.

योगमल्लिन् m. Titel einer Schrift Hall 15.

योगमातृ f. *Mutter des Joga* Mârk. P. 23, 65. Verz. d. Oxf. H. 89, *b*, 14. Bein. der Pivarî Hariv. 977. 1244 (an der ersten Stelle योगिमातृ die neuere Ausg.).

योगमाया f. *die Mâjâ des Joga* Bhâg. P. 3, 13, 44. 5, 4, 3. 6, 18, 60. 10, 3, 48.

योगमार्तण्ड m. Titel einer Schrift Hall 119.

योगमाला f. *ein Kranz von Kuren* Verz. d. B. H. No. 947. *Zauberkranz*, Titel eines Werkes über *Zauberei* 905.

योगमुक्तावली f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 21.

योगमूर्तिधर m. pl. Bez. einer Klasse von Manen *(den Joga als Gestalt tragend)* Mârk. P. 97, 10.

योगयाज्ञवल्क्य n. Titel einer Schrift Hall 18. Verz. d. B. H. No. 648.

योगयात्रा f. 1) *der Gang zur Versenkung des Geistes, — zum Joga* Spr. 2310. — 2) Titel einer Schrift des Varâhamihira Ind. St. 10, 161. fgg.

योगयुक्त adj. *in tiefes Nachdenken versunken, dem Joga obliegend* Spr. 1273.

योगयोगिन् adj. dass. MBh. 12, 9106.

योगरङ्ग m. = नारङ्ग *Orangenbaum* Râgân. im ÇKDr. — Vgl. योगारङ्ग.

योगरत्न n. 1) *Zauberjuwel* Verz. d. B. H. No. 905. — 2) Titel eines medic. Werkes (*ein Juwel von Arzneimitteln*) Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 22.

योगरत्नमाला f. Titel eines Werkes über *Zauber* Verz. d. Oxf. H. 322, *a*, No. 764.

योगरत्नसमुच्चय f. Titel eines *medic.* Werkes Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 22. 358, *a*, 12.

योगरत्नाकर m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 974.

योगरत्नावली f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 5.

योगरथ m. *der Joga als Wagen* Bhâg. P. 8, 5, 29.

योगरहस्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 37.

योगरुस्य n. desgl. Hall 17.

योगराज m. 1) *ein Fürst unter den Arzneimitteln*, Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Bhâvapr. im ÇKDr. — 2) *ein Fürst —, ein*

Meister im Joga Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,21.

योगराजोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 390,*b*,No. 35.

योगरूढ adj. von Wörtern, *die neben ihrer etymologischen weiteren Bedeutung noch eine engere haben*, z. B. पङ्कज *im Schlamme gewachsen* und speciell *Lotusblume* Comm. zu Buâmâr. S. 83. Davon nom abstr. °ता f. Comm. zu Sâṁkhjapr. S. 8, 4.

योगरोचना f. Bez. *einer best. Zaubersalbe* Mṛkkh. 47, 22.

योगवत् (von योग) adj. 1) *verbunden, vereinigt* Mâhâ. P. 23, 21. — 2) *dem Joga obliegend* Harîv. 3036. 11351.

योगवर्त्तिका f. *ein magisches Licht, Zauberlaterne* Daçak. 71, 3.

योगवह् adj. *vermittelnd, fördernd:* कार्य° MBh. 5, 2617. सर्व° 8, 1415.

योगवाचस्पत्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 178,*a*,24.

योगवार्त्तिक n. Titel eines Commentars, = पातञ्जलभाष्यवार्त्तिक Hall 10. Verz. d. Oxf. H. 232,*a*, No. 362. Colebr. Misc. Ess. I, 231. 235. 335.

योगवासिष्ठ n. Titel eines Werkes, = वासिष्ठरामायण Verz. d. Oxf. H. 353,*b*, No. 840. d. Tüb. H. 23. Colebr. Misc. Ess. I, 327. II, 102 (hier fälschlich °वसिष्ठ geschrieben). Hall 121. °शास्त्र Ind. St. 1, 468. °तात्पर्यप्रकाश Hall 121. संक्षेप° Verz. d. B. H. No. 643. °सार 640. fg. Verz. d. Oxf. H. 232, *b*, No. 363. 233,*a*, No. 364. Hall 122. °सारविवृति Verz. d. B. No. 640. Hall 122. °सारचन्द्रिका, °सारसंग्रह ebend. Davon योगवासिष्ठीय adj. *zu jenem Werke gehörig* Verz. d. B. H. No. 642.

योगवाह् 1) m. Bez. *der secundären Laute* Visarġanîja, Gihvâmûlîja, Upadhmânîja und Nâsikja VS. Prât. 8, 22. Der Schol. zu Prâtiçâkja 22 und Rûpaçarman zu VS. Prât. haben यो°; vgl. auch Maitrây. S. 166. — 2) f. ई *a) Alkali* H. 945. — *b) Honig* (vgl. u. योगवाहिन् 2.) Mad. in Nigh. Pr. — *c) Quecksilber* Wilson und ÇKDr.

योगवाहिन् 1) adj. *a)* व्यवायि च विकाशि स्यात्सूक्ष्मं ह्येदि मदावहम् । यद्योगं द्रावितलोहं योगवाहि स्मृतं (°वाहामृतं v. l.) विषम् ॥ Çârîr. Saṁh. 1, 4, 22. — *b)* vielleicht *Ränke schmiedend:* कुकृत्यं योगवाहित्वं वैधुर्यं द्रोहवृत्तिता Râjat. 4, 671. — 2) n. *Menstruum:* नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि परं मधु Suçr. 1, 185, 20.

योगविद् adj. 1) *die rechten Mittel —, die rechte Weise kennend, wissend, was sich schickt, — sich gebührt* Harîv. 4022. 12485. R. 5, 33, 7. Suçr. 2, 349, 1. Ragh. 15, 95. Râjat. 2, 91. Bhâg. P. 3, 19, 10. — 2) *mit dem Joga vertraut* MBh. 12, 13080. 14, 554. Verz. d. Oxf. H. 235, *b*, 12. Bhâg. P. 4, 1, 33. Sarvadarçanas. 177, 15. unter den Beiww. Çiva's Çiv.

योगविभाग m. *Spaltung einer Regel, indem man aus dem, was zu einander gehört und in einer Regel gesagt werden könnte, zwei Regeln macht*, Schol. zu P. 6, 2, 59. Bhâshâ zu Vârar. 3, 49. — Vgl. पृथग्योगकरण.

योगवृत्तिसंग्रह m. Titel einer Schrift Hall 11.

योगशत n. Titel eines *medic.* Werkes Verz. d. B. H. No. 939. fgg. Verz. d. Oxf. H. 316,*b*, No. 732. 404,*b*, No. 35.

योगशतकाव्यान n. Titel einer Schrift Hall 19.

योगशब्द m. 1) *das Wort* योग Sarvadarçanas. 160, 19. — 2) *ein Wort, dessen Bedeutung sich aus der Etymologie von selbst ergiebt*, Kâç. zu P. 1, 2, 53.

योगशरीरिन् (योग + शरीर) adj. *dessen Leib Joga ist* MBh. 2, 340.

योगशायिन् adj. *halb schlafend, halb in Gedanken versunken* Râjat. 3, 100. — Vgl. योगनिद्रा.

योगशास्त्र n. *Joga-Lehre* (unter andern die des Patañgali) Jâtâs. 3, 110. MBh. 14, 546. 549. Verz. d. B. H. 14, 5. Verz. d. Oxf. H. 17, *a*, 4 v. u. 71, *a*, 25. 89, *a*, 1. 237, *a*, No. 368. 302, *b*, 6. Pañkat. 1, 10, 4. 2, 8, 22. Madhus. in Ind. St. 1, 22, 18. Sarvadarçanas. 154, 2. fgg. °सूत्रपाठ Hall 18.

योगशिक्षा f. Titel einer Upanishad Colebr. Misc. Ess. I, 95. Ind. St. 1, 249. 251. 302. 2, 47. wohl fehlerhaft für योगशिखा.

योगशिखा f. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325. Hall 18. Verz. d. Oxf. H. 349, *b*, 20. — Vgl. योगशिक्षा.

यौगम् (von 1. युग) Uṇâdis. 4, 215. n. = समाधि und काल Uṇâdis.

योगसंग्रह m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 936. Hall 17.

योगसमाधि m. *die dem Joga eigenthümliche Versenkung des Geistes* Ragh. 8, 24.

योगसार 1) *ein Universalheilmittel* Gârudi-P. 173 im ÇKDr. — 2) Titel eines Werkes über Joga Hall 18. 19. 200. Verz. d. Oxf. H. 183, *b*, 36. °संग्रह 232, *a*, No. 362. Hall 12. °समुच्चय 17.

योगसिद्ध 1) adj. *durch Joga im Zustande der Vollkommenheit seiend* Bhâg. P. 3, 12, 6. जीव (bei den Gaina) Colebr. Misc. Ess. I, 381. — 2) f. धा N. pr. einer Schwester Vâkaspati's VP. 120.

योगसिद्धान्तचन्द्रिका f. Titel eines Werkes Hall 11.

योगसिद्धप्रक्रिया f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 110, *b*, 3.

योगसिद्धिनस् (von योग + सिद्धि) adj. *in der Zauberkunst erfahren* Kathâs. 4, 99.

योगसुधानिधि m. Titel eines Werkes Ind. St. 2, 232.

योगसूत्र n. das dem Patañgali zugeschriebene Sûtra *über Joga* Hall 7. 9. Verz. d. Oxf. H. 229, *a*, No. 361. 247, *a*, 19. °भाष्य 270, *b*, 34. °व्याख्यान 237, *b*, No. 369. °गूढार्थद्योतिका Hall 11. °वृत्ति 10. योगसूत्रार्थचन्द्रिका 11.

योगहृदय n. Titel einer Schrift Hall 18.

योगाग्निमय (von योग + अग्नि) adj. *durch's Feuer des Joga hindurchgegangen* Çvetâçv. Up. 2, 12.

योगाङ्ग (योग + अङ्ग) n. *ein Bestandtheil des Joga*, deren acht und auch sechs angenommen werden: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान und समाधि Jogas. 2, 28. fg. Sarvadarçanas. 178, 8. Verz. d. Oxf. H. 233, 3. fgg. आसनं प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणा । ध्यानं समाधिरेतानि योगाङ्गानि भवन्ति षट् ॥ 236, *a*, No. 367. योगाङ्गानानि 94, *b*, 3.

1. योगाचार (योग + आ°) m. 1) *die Observanz des Joga* Verz. d. Oxf. H. 43, *a*, 2. — 2) Titel einer Schrift über den Joga Mallin. zu Kumâras. 3, 47.

2. योगाचार (wie eben) m. pl. N. einer best. buddhistischen Schule, sg. *ein Anhänger dieser Schule* Colebr. Misc. Ess. I, 391. Burn. Intr. 1, 445. fgg. 510. Lot. de la b. l. 513. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 19. Vedântas. Comm. S. 93, 10. Sarvadarçanas. 9, 2. 15, 15. fg. 24, 11. योगाचार्यभूमिशास्त्र (wohl योगाचार° zu lesen) Hiouen-thsang 1, 269. fehlerhaft योगाचार्य LIA. II, 460. Z. f. d. K. d. M. 4, 493.

योगाचार्य (योग + आ°) m. 1) *ein Lehrer der Zauberkunst* Mṛkkh. 47, 21. — 2) *ein Lehrer des Joga* MBh. 1, 3607. Harîv. 931. fg. 980. Bhâg. P. 3, 12, 3.

— 3) fehlerhaft für योगाधार; s. u. 2. योगाचार.

योगाञ्जन (योग + अ°) n. 1) *Heilsalbe* Suçr. 2,326,8. — 2) *der Joga als Salbe* Prab. 53,9.

योगात्मन् (योग + आ°) adj. *dessen Wesen der Joga ist, dem Joga obliegend* MBh. 6,2944. 13,352. Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,41.

योगानन्द (योग + आ°) m. *die Wonne des Joga* Verz. d. Oxf. H. 222,*b*,34. 42. fehlerhaft für योगानन्द Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 53.

योगानुशासन (योग + अ°) n. *Joga-Lehre* Madhus. in Ind. St. 1,22,18. fg. Patañgali's *Lehrbuch* Verz. d. Oxf. H. 108,*a*, No. 168. °सूत्र Hall 9. °सूत्रवृत्ति 11.

योगान्त (योग + अन्त) Bez. *einer der sieben Theile, in welche nach* Parâçara *die Bahn Mercur's getheilt wird*, Vaṇîn. Bṛh. S. 7,8. योगान्तिका f. (sc. गति) dass., umfasst Mûla und die beiden Ashâḍhâ 11.

योगापत्ति (योग + आ°) f. *Modification des Gebrauchs, — der Anwendung* Âçv. Çr. 1,1,1.

योगाम्बर (योग + अ°) m. N. einer buddhistischen Gottheit Wilson, Sel. Works 1,24.

योगाय् (von योग), °यते *zum Joga werden:* भोगो (so ist zu lesen) योगायते Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,21.

योगायन (?) Ind. St. 3,261.

योगारङ्ग m. = योगरङ्ग Râéân. im ÇKDa.

योगासन (योग + 1. आ°) n. *eine dem Joga entsprechende Art zu sitzen* Amṛtan. Up. in Ind. St. 3,30. Verz. d. B. H. No. 616. Bhaṭṭ. 7,77. Kull. zu M. 6,49. ध्यानयोगासने ब्रह्मासनम् AK. 2,7,39. H. 838.

योगि, gen. pl. योगीनाम् aus metrischen Rücksichten st. योगिनाम् MBh. 13,916. Mârk. P. 111,2. Verz. d. Oxf. H. 236,*a*, No. 867 (hier hätte auch योगिनाम् gepasst).

योगित (von योग) adj. *toll (bezaubert)*: चा AK. 2,10,22. H. 222. योगोन्मादित st. dessen Med. k. 44. रोगित H. 1280. रोगोन्मादित H. an. 3,8.

योगिता (von योगिन्) f. am Ende eines comp. *das Zusammenhängen mit, das in-Beziehung-Stehen zu* Buâsiṇ. 23.

योगित्व (von योगिन्) n. 1) am Ende eines comp. dass. Sin. D. 70,9. 96,16. — 2) *der Zustand eines* Jogin Mârk. P. 18,8. 42,17.

योगिदण्ड (योगिन् + दण्ड) m. *eine best. Rohrart*, = वेत्र Râéân. im ÇKDa.

यार्गिन् (von योग) P. 3,2,142 (von 1. युज्, 1) adj. am Ende eines comp. *in Conjunction stehend mit:* चन्द्र° Mârk. P. 75,55. सोम° 62. *verbunden mit:* विवाहे मत्स्ययोगिनम् 64. स्वाङ्ग° so v. a. *zusammenhängend mit, in Beziehung stehend zu:* पुरुष° Kâṭ. Çr. 1,7,21. Schol. zu 9,13,20. कर्मणा कालयोगिना MBh. 3,11244. Harîv. 12439. 12443. Buâsiṇ. 27. Kusum. 14,6. 46,18. — 2) adj. *dem Joga obliegend*, m. *ein* Jogin H. 76, Sch. Wilson, Sel. Works 1,205. fgg. Maitrâjaṇ. 6,10. Bhag. 3,3. 6,10. Dhâṇâbindûp. in Ind. St. 2,2. 4. Jogaç. ebend. 48. Amṛtan. Up. ebend. 3,34. Nṛs. Up. ebend. 109. 122. Werner, Rîmat. Up. 286. 339. 362. Suçr. 1,9,12. Lalit. ed. Calc. 212,7. Lot. de la b. l. 4. Spr. 1435. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः 2042. 2257. Ver. in LA. (III) 24,19. 2,3. Spr. 4079. Ragh. 6,38. 8,17. 10,24. Kathâs. 1,53. 25,82. Râéa-Tar. 1,337. 6,110. VP. 135. 652. Bhâg. P. 1,5,23. 9,29. 19,27. 3,16,19. 8,21,1. Mârk. P. 39,1. Verz. d. Oxf. H. 95,*a*,11. Sarvadarçanas. 45,11. 95,4. fgg. 166,1. 169,8. 177,3. 178,19. fgg. Bez. Jâgñavalkja's Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,2. Arguna's H. ç. 137. Vishṇu's MBh. 13,901. Çiva's H. ç. 45. eines Buddha 79. योगिनी Spr. 3740. Mârk. P. 23,65. 52,31. Prab. 31,6. Bez. der Durgâ H. ç. 51. — 3) m. Bez. *einer best. Mischlingskaste* Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,7. युङ्गिन् v. l. — 4) f. °नी *a) ein best. mit Zauberkraft ausgestattetes weibliches Wesen, Fee, Hexe* (im Gefolge Çiva's und der Durgâ) Harîv. 10002. Wilson, Sel. Works 1,233. 237. 2,33. fg. 39. Kathâs. 37,109. 150. 155. 191. 48,122. 124. 56,107. 75,173. fg. 108,25. 33. 123,212. Râéa-Tar. 2,100. fgg. Ver. in LA. (III) 10,20. Verz. d. B. H. No. 910. 1313 (64 an der Zahl). Verz. d. Oxf. H. 70,*a*,37. 88,*a*,17. 89,*b*,13. 91,*b*,23. 94,*a*,16. 109,*a*,40. Pâṇân. 4,3,74. — *b)* Bez. *einer best.* Çakti bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 89,*a*,17. — *c)* bei den Buddhisten *ein Frauenzimmer, welches die von Jmd verehrte Göttin darstellt*, Burn. Intr. 538. — Vgl. काल°, कु°, नक्षत्र° (auch Harîv. 2387), मध्य°, मरुा° (in der 1ten Bed. auch MBh. 9,2297. 13,752. Bhâg. P. 1,4,4. 8,9), योग°, स्थाने°.

योगिनीतन्त्रालशम्बर n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 108,*b*,30. 109,*a*,18.

योगिनीज्ञानार्णव m. Titel einer Schrift ebend. 93,*b*,6.

योगिनीतन्त्र n. Titel eines Tantra ebend. 93,*b*,6. 97,*a*, No. 131. 100,*b*, No. 136. 279,*a*,23.

योगिनीपुर n. N. pr. einer *Stadt* ebend. 340,*a*,4.

योगिनीभैरव n. Titel eines Tantra ebend. 108,*b*,33. 109,*a*,22.

योगिनीहृदय n. Titel einer Schrift ebend. 93,*b*,6. 6. 104,*a*,18. 108,*a*,32. 341,*a*,38.

योगिपत्नी f. *Gattin der* Jogin Harîv. 977, v. l. für योगपत्नी.

योगिमातृ f. *Mutter der* Jogin Harîv. 977, v. l. für योगमातृ.

योगिराज् m. *ein Fürst unter den* Jogin Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,12.

योगीन्द्र m. dass. Weber, Rîmat. Up. 339. 361. Kathâs. 45,80. Paṇḍân. 1,1,9. 66. Paṇḍat. 240,12. Bez. Jâgñavalkja's Jâén. 1,2.

योगीय् (von योग), °यते *für Joga halten* Verz. d. Oxf. H. 236,*a*, No. 867.

योगीश m. *ein Fürst* (Îça) *unter den* Jogin Mârk. P. 17,24. Verz. d. Oxf. H. 92,*a*,12. Bez. Jâgñavalkja's H. 851, Sch.

योगीश्वर 1) m. *ein Fürst* (Îçvara) *unter den* Jogin Spr. 397. 2046. Kâm. Nîtis. 14,63. Mârk. P. 17,25. 96,28. 109,65. Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,7. Bez. Jâgñavalkja's Jâén. 1,1. Ind. St. 1,58. Verz. d. Oxf. H. 263,*b*, No. 633. — 2) f. ई N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,35.

योगेन्द्र (योग + इन्द्र) m. *ein Meister im* Joga Wilson, Sel. Works 1,163.

योगेश (योग + ईश) m. 1) dass. Bhâg. P. 4,19,6. 6,18,60. 8,3,27. Bez. Jâgñavalkja's H. 851. — 2) Bez. der Stadt Brahman's Çabdârthak. bei Wilson.

योगेश्वर (योग + ईश्°) 1) m. *a) ein Meister im* Joga Bhag. 18,75. MBh. 13,930. Harîv. 13209. Spr. 397, v. l. Bhâg. P. 1,1,23. 8,14. 43. 18,14. 2,2,10. 23. 8,20. 3,3,23. 16,36. 32,12. 4,7,38. 5,4,3. 10,9. 21. 9,2,32. Mârk. P. 97,8. Paṇḍân. 4,3,38. Paṇḍat. 34,23 (ed. orn. 31,1). Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,1 v. u. ein Vetâla als *Meister in der Zauberei* so angeredet Kathâs. 83,35. wohl Bez. Jâgñavalkja's Verz. d. Tüb. H. 13. — *b)* N. pr. *α)* eines Sohnes des Devahotra Bhâg. P. 2,13,28. — *β)*

eines Brahmarâkshasa Kathâs. 12, 49. 32, 25. 33, 96. — 2) f. ई a) eine Meisterin im Joga Kathâs. 65, 218. — b) eine Fee Kathâs. 31, 16. Râǵa-Tar. 1, 333. 2, 108. — c) N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, b, 4. einer Vidjâdharî Kathâs. 18, 231. 378. — d) eine best. Pflanze, = वन्ध्याकर्कोटकी Bhâvapr. im ÇKDa. — Vgl. महायोगेश्वर.

योगेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, a, 10.

योगेश्वरत्व (von योगेश्वर) n. Meisterschaft im Joga MBh. 1, 310. Bhâg. P. 3, 15, 19.

योगेष्ट योग + 1. इष्ट n. Zinn AK. 2, 9, 106. Blei H. 1041.

योगैश्वर्य n. = योगेश्वरत्व Bhâg. P. 5, 5, 35. 16, 14. 9, 8, 17.

योगोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 76, a, 13.

यौग्य (von योग) 1) adj. P. 5, 1, 102. Schol. zu P. 3, 1, 121 (von 1. युज्). a) zum Zug tauglich; m. Zugthier AV. 8, 9, 7. Çat. Br. 1, 3, 4, 13. 3, 5, 4, 24. 9, 4, 3, 10. 4, 12. — b) zu einer best. Kur gehörig Çâṅkh. Çr. 1, 1, 27. — c) brauchbar, angemessen, entsprechend, zukommend, geeignet, passend, zu Gute kommend; geschickt, fähig; von Personen und Sachen; = पात्र AK. 3, 4, 25, 131. = योगार्ह, उपायिन् (fälschlich उपाय Med.), शक्त. प्रवीण H. an. 2, 378. Med. j. 48. — Kâṭy. Çr. 22, 4, 11. Jîv. 2, 225. Kap. 3, 2, 18. Gaut. 1, 22. °भूमिषु MBh. 4, 135. Kathâs. 27, 145. R. Gorr. 2, 3, 37. 5, 36, 32. Raghu. 6, 29. Âpast. 6, 6. ad Çiç. 54. Spr. 272. 1169. 3805. Kathâs. 3, 116. 16, 10. 22, 111. 31, 71. 34, 194. 49, 194. Sin. D. 721. Râǵa-Tar. 1, 336. 4, 252. 253. 5, 249 योग्य Ta., योग्य ed. Calc.). Verz. d. Oxf. H. 311, a, 37. VP. bei Mus, ST. 1, 63. Bhâg. P. 7, 13, 23 योगे: ed. Bomb., योग्यै: ed. Bomb.). 11, 20, 24. Mârk. P. 100, 17 (zu lesen °दोषदीनयो°). 109, 24. 113, 9. Pañkat. 19, 20. Z. d. d. m. G. 14, 573, 6. Kuçum. 25, 8. 7. die Ergänzung c) im gen.: समेव योग्या मम Harîv. 10001. न चासौ रत्नमौ योग्य: so v. a. gewachsen R. 1, 22, 7. नेदानीं गुरु (so die ed. Bomb.) योग्यो ऽयं वासो मे सत्त्वने वने 2, 52, 61. Çiç. 187. Vasiṅ. Bṛih. S. 9, 7. Râǵa-Tar. 5, 32. Pañkat. 185, 19. Vet. in LA. (III) 9, 11. 28, 4. द्रुपस्य Schol. zu P. 2, 1, 6. Vop. 6, 61. नैवं वनस्य योग्या R. 2, 38, 4. खपलीको नरो भूप न योग्यो नित्यकर्मणाम् Mârk. P. 71, 40. — β) im loc.: तत्र वं योग्यो न युद्धेषु MBh. 7, 5787. कर्मणि 8, 1662. शक्तस्य साध्ये 1668. R. Gorr. 1, 23, 7. 3, 40, 5. 5, 65, 17. 7, 59, 8, 21. Suçr. 1, 29, 1. Râǵa-Tar. 6, 181. Sarvadarçanas. 101, 3. — γ) im dat.: तत्साधनाय Kathâs. 46, 197. — δ) im comp. vorangehend: रात्र° Jîv. 2, 261. MBh. 3, 15577. Vasiṅ. Bṛih. S. 77, 8. Kathâs. 21, 76. Râǵa-Tar. 2, 151. Pañkat. 215, 11. Vet. in LA. (III) 12, 20. 29, 14. Z. d. d. m. G. 14, 573, 7. इन्द्रिय° Wilson, Sâṅkhyak. S. 27. कालालंकारयोग्यौ ते स्तनौ चेमौ MBh. 4, 392. Harîv. 4370. तपो° R. 3, 3, 18. तत्काल° Spr. 3270. सभा° (वाच्) 4124. षण्डता° AK. 2, 9, 62. राज्य° Râǵa-Tar. 4, 714. Mârk. P. 16, 88. Vop. 8, 97. Sarvadarçanas. 85, 19. fg. इज्याकर्म° Mârk. P. 70, 23. दारक्रिया° Raghu. 3, 40. Pañkat. 188, 20. Hit. 72, 8. Kathâs. 20, 23. सुरतसंभोग° 45, 224. Prab. 110, 5. निशातिवाह्य° Kathâs. 18, 106. उत्थान° Çiç. 38. Kâm. Nîtis. 13, 50. 16, 10. देवोपस्थान° Milav. 65, 16. प्रत्यक्षदर्शन° Schol. zu Naish. 22, 48. सलिलाञ्जलिदान° Spr. 205. Pañkat. 252, 20. न खलु वयममुष्य दानयोग्या: verdienen gegeben zu werden Sin. D. 49, 21. Ausnahmsweise in comp. mit dem, was geeignet u. s. w. macht, Daçak. 62, 11. — ε) im infin.: इमे मूढा: योग्या रत्नप्राणैर्योद्धुम् R. 1, 22, 4. ऊमौ योग्यावहं मन्ये रक्षितुं पृथिवीमिमाम् 4, 2, 11. 35, 18. भृत्यत्राणान्दासीस्वं गृहे त्वरयन्मृशम्। योग्यस्ताडयितुं क्रोधात् dazu bist du gut, stets bei der Hand MBh. 7, 5790. त्वया लोका: क्लेष्टुं (durch den infin. pass. zu übersetzen) योग्यो न मानुष: R. 7, 20, 8. यादृशेनेह द्रव्येण योग्यं दातुं घृतेन वै। तादृशं खलु ते दत्तम् MBh. 14, 1612. fg. P. 6, 1, 81, Sch. — 2) m. das Sternbild Pushja Med. — 3) f. या a) oxyt. Veranstaltung, Werk: सुतस्य वा केशिनो योग्याभिर्धुरि धिष्व ṚV. 3, 6, 6. यज्ञोग्या यज्ञवेधे सर्वेषाम् 7, 70, 4. स विश्वाहा सुमनो योग्या भुवि सिषासन्निर्वनते वार इन्द्रियम् 10, 53, 11. — b) praktische Uebung, Praxis Suçr. 1, 28, 20. 29, 1. 10. °सूत्रोपो ऽध्याय: 28, 19. Ausübung, exercitatio: प्राणिधान° Raghu. 8, 19. मान° Kirâṭ. 2, 243. insbes. Leibesübung, Gymnastik, kriegerische Uebung Taik. 3, 2, 20. 3, 442. H. 788. H. an. Med. Halîs. 2, 315. यामादयो हि शौर्यस्य योग्यत्वेन दिवानिशम् Kâm. Nîtis. 14, 27. निपुणे, शवे, योग्यासु MBh. 1, 4986. महावीर्यो कृतयोग्यो 5350. योग्यो चक्रे धनुषा 5223. यत्न° R. 2, 1, 9. कृत्यशास्त्रादियोग्याभि: Kathâs. 94, 11. °रूप H. 752. Halîs. 2, 290. — c) N. pr. der Gattin des Sonnengottes H. an. Med. — 4) n. a) eine best. Pflanze, = सर्ज्जि AK. 2, 4, 3, 31. H. an. Med. Sandel Çabdaratn. bei Wilson. — b) Vehikel Çabdaratn. — c) Kuchen Çabdaratn. — d) Milch H. ç. 98. — Vgl. यथायोग्यम् (auch MBh. 13, 4710).

योग्यता (von योग्य) f. Angemessenheit, das Geeignetsein, Befähigung Taik. 3, 3, 222. न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह रक्षसै: R. 1, 22, 2 (23, 2 Gorr.). Jogas. 2, 55. Kathâs. 46, 104. 74, 268. Râǵa-Tar. 2, 33. 60. 3, 147. 5, 253. 6, 362. Spr. 2178. 2887. Bhâg. P. 3, 31, 45. fg. Mârk. P. 113, 9. Tattvas. 30. Schol. zu Kâṭy. Çr. S. 22, 4. Bodhâr. 31. Sin. D. 6. 27, 8. Halîs. 2, 109. Vop. 25, 17. Pañkat. 241, 6. Schol. zu Kap. 1, 101. zu P. 2, 1, 6. Kuçum. 26, 9. °वाद् m. Titel einer Schrift Hall 57.

योग्यत्व (wie oben) n. dass. Jogas. 2, 41. Vedântas. (Allah.) No. 59. Schol. zu Kâṭy. Çr. S. 22, 9. Vop. 6, 58, Anf.

योक्तक (von 1. युज् nom. ag. 1) Anschirrer, Anspanner: वाजि° MBh. 4, 320. रथ° 9, 319. Bhâg. P. 12, 11, 48. — 2) Veranstalter, Ausführer: युद्ध° so v. a. kampflustig MBh. 5, 3114. = युद्धयोगिन् Nîlak.

यौक्तन (wie oben) n. AK. 3, 6, 2, 30. 1) n. das Anschirren, Anspannen: लाङ्गल° Pân. Gaṇ. 2, 13. रथे योक्तनमूर्ज्जितानाम् Harîv. 8395. — 2) n. Gespann, Gefährt, Geschirr: धेनुं ṚV. 5, 62, 6. उतो त्वस्य यन्मक्ष्वश्वयोक्तनं वृक्तम्। दामा रथस्य दर्दृशे 8, 61, 6. दैशयोक्तन (dahor = यद्धुलि Naish. 2, 5) 16, 94, 7. — 3) n. Fahrt so v. a. Wegstrecke, welche in einer Anspannung durchlaufen wird, Station; weiterhin ein best. Wegemaass von vier Kroça (etwa zwei geogr. Meilen; nach anderen Rechnungen eine kleinere Strecke, z. B. $2^1/_2$ engl. Meilen, Useful Tables 122), Warren, Kâla Sank. 394. Taik. 2, 1, 17. 2, 4. 3, 3, 254. H. 888. an. 3, 402. Med. n. 111. fg. Hin. 197. Hiouen-thsang 1, 50 (= 8 Kroça). 60. Lalit. ed. Calc. 170, 5. Mârk. P. 49, 40 (= 4 Gavjûti d. i. 8 Kroça). यदाशुभि: पतसि योक्तना पुरु ṚV. 2, 16, 3. 1, 123, 8. 10, 86, 20. परावतो न योक्तनानि मंसते 78, 7. घर्मिता योक्तनानि AV. 4, 26, 1. त्रिंशद्दस्या उपनं योक्तनानि the pudendum ist dreissig Meilen lang TBr. 2, 4, 2, 7. योक्तनात्र परम् VS. Pârç. 1, 24. M. 11, 75. योक्तनं वाधतो वक्तेत् 132. MBh. 1, 1114. खयोक्तनमुगन्धि 6065. 3, 2012. R. 1, 5, 7. 2, 92, 10. 98, 30. Spr. 461. 1440. 2534. Ind. St. 9, 432. Çâṅkh. 1, 59. 68. 4, 1. 12, 60. 63. 65. 80. 82. Vasiṅ. Bṛih. S. 21, 25. 23, 4. 30, 32.

Kathâs. 18,102. Paṅkat. 226,9. Vet. in LA. (III) 4,1. masc. Dhanâkarapûr. in Ind. St. 2, 1. त्रियोजनम्, पञ्चयोजनम् u. s. w. *eine Strecke von drei, fünf* u. s. w. Joǵana AV. 8,131,3. R. 1,1,63. 2,91,29. षष्टियोजनी *eine Strecke von sechzig Joǵ.* Kathâs. 18, 349. 94,14. Râǵa-Tar. 3, 295. 5, 103. Am Ende eines adj. f. आ MBh. 2, 312. 3, 10585. R. Gorr. 2,28,13. 3,39,22. 47,13. 5,6,18. 20. fg. 56,21. fg. Vaṛâh. Bṛh. S. 30,33. — तदार्ये वो मरुतो मक्षिवत्नं दीर्घं तंतान सूर्यो न योजनम् *Fahrt* so v. a. *Bahn* RV. 5,54,5. घर्चत्ति नाधीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः 1,92,3 (vgl. 30,18). 191,10. vielleicht auch 88,5, wo Sây. das Wort durch स्तोत्र erklärt. *Drei Bahnen* oder *Stationen* ähnlich zu verstehen wie die *drei Fusstapfen* Vishṇu's: त्री घन्व योजना सप्त सिन्धून् 35,8. 164,9. — 4) n. (bisweilen auch आ f.) *Anordnung, Zurüstung; Veranstaltung:* इमा तुंयस्व योजनेन्द्र या ते धर्मन्मन् RV. 8,79,3. विद्वाना अस्य योजनम् 9,7,1. निर्मिते अस्य योजना 102,3. पात्र° Kâṭy. Çr. 9,2,1. 14,2. 26,2,13. स्तोम° Schol. zu Lâṭy. 2,5,23. अग्नि° Kâṭy. Çr. 18,6,16. शास्त्रनामादि° *das Zurüsten, Zurechtmachen* Sin. D. 171. आस्कार° *Speisebereitung* MBh. 12, 2187. भूषणयोजन und शेखरापीडयोजना (v. l. °योजन beim Schol. zu Bṛhc. P. 10,45,36) unter den 64 Kalâ Verz. d. Oxf. H. 217,a,6. 5. शिलाप्रासाद° *das Aufbauen, Erbauen* Râǵa-Tar. 4,190. *das Herstellen, in-Ordnung-Bringen:* इदानीं कथायोजनाय व्याप्याकृदात्मनः श्लोकचतुष्टयमवतारयति Verz. d. Oxf. H. 142,b,27. Râǵa-Tar. 1,10. यैर्मण्डलस्य क्रियते हरोत्सवस्य योजनम् 187. एवं कृते ततस्तेन नष्टार्थस्य योजनम् 6,353. काव्यांशस्य न योजना Kathâs. 1, 11. — 5) n. *das Anweisen, Antreiben:* प्रेतमाकृतं स्याद्दुत्माकृगिरा कस्यापि योजनम् Sin. D. 491. — 6) f. आ *Vereinigung, Verbindung:* एकपञ्चाशता Sin. D. 112,16. तन्मात्राहंकार° Kull. zu M. 1,16. — 7) f. आ *Construction* (in gramm. Sinne) Wilson, Sanskrit. S. 107. Çaṅk. zu Kaṭha-Up. S. 61. Nîlak. zu Harîv. 6373. Schol. zu Maitrâyaṇ. 1, 4. — 8) n. *Sammlung —, Concentration der Geistesthätigkeit, feste Richtung der Erkenntniss auf einen Punkt* Çvetâçv. Up. 1,13. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9, 32. = योग (das aber hier auch schlechtweg *Verbindung* bedeuten kann) Taik. 3,3,254. H. an. Med. — 9) n. *die Weltseele* (परमात्मन्) H. an. Med. — Vgl. अग्नि-योजन, बकुयोजना, भिक्षयोजनी.

योजनगन्ध 1) adj. *dessen Geruch sich ein Joǵana weit verbreitet.* — 2) f. आ a) *Moschus* Taik. 3, 3, 223. H. an. 3, 22. fg. Med. dh. 48. — b) Bein. α) der Satjavatî, der Mutter Vjâsa's, Taik. H. 848. H. an. Med. MBh. 1, 2412. — β) der Sîtâ Taik. H. an. Med.

योजनगन्धिका f. Bein. der Satjavatî Taik. 2, 8, 11.

योजनपर्णी (यो° + पर्णा) f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Roxb., *indischer Krapp* Ratnam. im ÇKDr.

योजनवल्लिका f. dass. Râǵân. im ÇKDr. °वल्ली AK. 2,4,3,9.

योजनिक am Ende eines adj. comp. nach einem Zahlwort *so und so viel Joǵana lang, — messend* R. 5,6,19.20. 56,20. fgg. f. आ 19. — योजनिका in पद° ist das f. zu योजनक von योजन.

योजनीय (von 1. युज्) adj. 1) *anzuwenden:* मृदुपरुषगुणो योजनीयो स्वकाले Spr. 1314. Verz. d. Oxf. H. 264, *b*, 31. — 2) *zu verbinden mit* (instr.): इदमिदमिति सम्यक्कर्मणा योजनीयम् so v. a. *in's Werk zu setzen* Kîm. Nîtis. 13, 95. — 3) *grammatisch zu verbinden, zu construiren* Schol. zu Maitrâyaṇ. 1, 4.

योजन्य (von योजन) am Ende eines adj. comp.: षष्टि° *sechzig Joǵana entfernt* Kathâs. 28, 188.

योजयितृ (vom caus. von 1. युज्) nom. ag. *Fasser* (eines Edelsteins) Spr. 393.

योजयितव्य (wie oben) adj. 1) *zu gebrauchen, auszuwählen* Vaṛâh. Bṛh. S. 48,17. — 2) *auszustatten, zu versehen mit* (instr.) Gaurav. zu Siṅhâs. 56.

योजयितृ (von 1. युज्) nom. ag. *Vereiniger, Verbinder, Zusammenfüger:* चरणयाट्° Vaṛâh. Bṛh. S. 51,12.

योज्य (wie oben) adj. 1) *zu richten auf:* बुद्धिर्व्यसनेषु योज्या Spr. 2382. — 2) *anzustellen, angestellt zu werden verdienend* (an ein Amt u. s. w.): भृत्यानुत्तमपदयोज्यान् Paṅkat. 16, 20. *anzuhalten zu:* धर्म° R. Gorr. 2, 114, 17. — 3) *anzuwenden, in Anwendung zu bringen* Jâtâ. 1, 266. Spr. 644. Vaṛâh. Bṛh. S. 59, 14. 84, 2. 88, 10. 98, 8. Paṅkat. 3, 13, 7. Sin. D. 294. 298. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 326. Sarvadarçanas. 35, 14. 42, 13. H. 12. Schol. zu Kap. 1, 18. आशीरन्या न ते योज्या so v. a. *herzusagen* Çik. 187, v. l. — 4) *hinzuzufügen zu* (loc.) Sâhas. 2, 32. 3, 17. 10, 7. Kîm. Nîtis. 8, 38. 19, 23. — 5) *zu versehen mit* (instr.), *theilhaftig zu machen* MBh. 15, 197. R. 2, 46, 23 (44, 23 Gorr.). Gaurav. zu Siṅhâs. 56. — 6) *auf den die Geistesthätigkeit fest zu richten ist, der Gegenstand des* Joga MBh. 13, 1153. = योगे ब्रह्मणि प्रविलापनीयः Nîlak.

योटक m. *Constellation:* विवाहे राशियोटकभयोटकनक्षत्रयोटकगण योटकयोनियोटकवर्गयोटकभेदेन पञ्चविधो योटकः ÇKDr. nach der Çaivatantrasaṅgîtâ. — Vgl. योट.

योतु m. = परिमाण Uṇâdik. im ÇKDr.

यौत्र (von 2. यु) n. P. 3, 2, 182. Vop. 26, 68. *Strick, Seil* AK. 2, 9, 13. H. 893. R. Gorr. 2, 45, 29.

योत्रप्रभाद् m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 107, *b*, No. 166.

योद्धृ (von 1. युध्) m. *Kämpfer, Streiter, Kriegsmann, Soldat* AK. 2, 8, 2, 29. H. 763. P. 4, 2, 56. तयोरन्यतरेणाहं योद्धा स्याम् so v. a. *ich möchte kämpfen* R. 1, 22, 25. योद्धा यस्य धनंजयः *für den — kämpft* MBh. 3, 1918. 2451. Harîv. 14453. राज्ञामयोद्धारम् Spr. 1270. सार्थवाह° Mâlav. 68, 9. Râǵa-Tar. 1, 61. राज्ञः Paṅkat. 47, 18. 218, 7.

योद्धव्य (wie oben) adj. *zu bekämpfen* MBh. 3, 7567. 12, 2541. n. impers. *zu kämpfen, pugnandum:* कैर्मया सह योद्धव्यम् Bhag. 1, 23. MBh. 1, 5429. 3, 17278. 4, 1487. 1584. 14, 326. 328. R. Gorr. 2, 95, 21. 5, 41, 5. 82, 21. Kathâs. 22, 41. 46, 202. Paṅkat. 48, 1. Hit. 105, 19. योद्धव्ये उत्सृज्य ed. Bomb.) wo es *zu kämpfen gilt* (*galt*) MBh. 6, 1546.

योधं (wie oben) m. n. (?) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. 1) m. *Krieger, Streiter, Kriegsmann, Soldat* AK. 2, 8, 2, 29. H. 763. RV. 1, 143, 5. 3, 39, 4. न तो योधो मर्त्यमानो पुपोध 6, 25, 5. वर्मण्वन्तो न योधाः 10, 78, 3. Çiksh. Gaṇ. 2, 2. M. 7, 97. fg. MBh. 1, 6537. 3, 15753. 4, 1461. 8, 3557 (wo mit der ed. Bomb. योधव्रतस° zu lesen ist). R. 1, 5, 20. 6, 20. 2, 41, 18. 81, 13. 82, 24. fg. (89, 6 fg. Gorr.). R. Gorr. 2, 100, 56. 5, 48, 18. 6, 107, 7. Spr. 2120. 4527. Vaṛâh. Bṛh. S. 15, 19. 39, 3. 51, 21. Kathâs. 12, 22. Râǵa-Tar. 6, 250. Prab. 87, 9. Paṅkat. 175, 7. Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 16. °संराव AK. 2, 8, 2, 76. रथ° *zu Wagen* MBh. 6, 3506. रथाश्वयोधाः *zu Wagen, zu*

Ross Bhāg. P. 9, 10, 20. वसन्त° *der Frühling als Kriegsmann* Ṛt. 6, 1. योध vom Wagen ṚV. 6, 26, 4. वृषो योधः *ein zum Kampf abgerichteter oder geeigneter Stier* Vaitān. Bṛh. S. 48, 44. Am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 3, 11279. 9, 1793. R. Gorr. 2, 91, 16. 5, 15, 20. 6, 1, 46. Vgl. पुरा°, वाङ्°. — 2) m. *Kampf* in दुर्योध und मिथोयोध. — 3) *ein best. Metrum*, 4 Mal — ⏑ — — ⏑ — — Colebr. Misc. Ess. II, 139 (I, 6).

योधक (wie oben) m. = योध 1) MBh. 5, 913. 13, 1586. R. Gorr. 2, 32, 24.

योधन (wie oben) n. *Kampf* Bhāg. P. 8, 15, 7. Mārk. P. 135, 17. चित्र° MBh. 4, 1363. क्रूर° Kām. Nītis. 18, 58. — Vgl. दुर्योधन.

योधनपुरतीर्थ n. N. pr. eines Tīrtha Verz. d. Oxf. H. 66, *a*, 9.

योधनीपुर n. N. pr. einer *Stadt* ebend. 66, *b*, 41. 67, *a*, N. 4. Vgl. Tchen-tchou-koue und Tchen-wang-koue *royaume du maître (roi) des combats* Hiouen-thsang 1, 377.

योधागार (योध + आ°) m. *Wohnhaus der Kriegsleute, Kaserne* MBh. 12, 2649.

योधिक s. यौधिक.

योधिन् (von 1. युध्) adj. am Ende eines comp. *kämpfend, streitend:* दिव्यास्त्र° Harīv. 12951. Kathās. 120, 57. MBh. 3, 11736. R. 1, 16, 22 (20, 12 Gorr.). 2, 64, 39. माया° MBh. 2, 575. सन्मार्ग° *auf ehrliche Weise* Ragh. 17, 69. त्यक्तजीवित° MBh. 3, 2120. तीक्ष्ण° 5, 7283. काल° Spr. 6. व्यूढाश्व° Kathās. 48, 19. क्रूर° *zu Ross* MBh. 6, 3505. गज° 5, 5959. 6, 2279. Harīv. 13314. *bekämpfend, Bekämpfer:* दानव° R. Gorr. 2, 88, 25. — Vgl. वय°, सागत°, क्रूट°, गरुत्योधिन्, चित्र°, हंह°, वाङ्°.

योधिवन (योधिन् + वन) n. N. pr. einer Oertlichkeit R. 2, 68, 17.

यौधीयेस् (compar. zu योध) adj. *streitbarer* ṚV. 1, 173, 5.

योधेय m. 1) = योध *Krieger, Streiter* ÇKDa. und Wilson. — 2) pl. N. pr. eines Geschlechts Harīv. 1678 nach der Lesart der neueren Ausg., यौधेय die ältere; vgl. यौध्य.

यौध्य (von 1. युध्) 1) adj. zu *bekämpfen* ṚV. 9, 9, 7. MBh. 3, 2269. 6, 30. 12, 3341. Vgl. घ° (adj. auch Harīv. 3065). — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 3, 15244.

योनल m. = पवनाल H. 1178.

यौनि (von 2. यु) Uṇādis. 4, 51. m. und f. (dieses in der alten Sprache selten; aus metrischen Rücksichten bisweilen auch योनी) Taitt. 3, 3, 16. Śāṅkh. Ç. 247, *b*, 1. 1) *Schooss; Geburtsort, Mutterleib, vulva* Nir. 2, 3. 19. AK. 2, 6, 2, 27. Taitt. 3, 3, 255. H. 609. an. 2, 280. Mān. n. 16. Hālis. 2, 239. 5, 76. ṚV. 1, 164, 33. fg. 2, 9, 3. अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः 3, 29, 10. वि त्रिष्कीध वनस्पते योनिः सूर्यस्येव 5, 78, 5. युवो रजांसि यन्तवे नेति योनिषु 10, 40, 11. 63, 15. 162, 4. AV. 1, 11, 3. 5. 3, 23, 2. 5. गर्भमा धेहि योन्याम् 5, 25, 3. योन्या इव प्रपूर्तिं गर्भः 6, 121, 4. VS. 8, 29. योनिं प्रविशादिन्द्रियम् 19, 76. Ait. Br. 1, 2. मध्ये योनिर्धृता 3, 35. 5, 15. TS. 6, 1, 3, 6. यथा योनौ रेतः सिञ्चेत् Çat. Br. 1, 7, 3, 14. 6, 4, 4, 19. संभूतिं तस्य तां विद्याद्योनावभिजायते M. 2, 147. विशिष्टं कुत्रचिद्दोषं स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित् 9, 24. fg. 27. बीजाद्योनिर्गरीयसी 52. 56. Suçr. 1, 290, 15. 2, 93, 17. 396, 2. fgg. Bhāg. P. 4, 6, 42. योनिः प्रक्षिप्यते स्त्रियाः MBh. 13, 2227. Spr. 3268. 3276 परयोनावभिगमनम् Vaitān. Bṛh. S. 46, 36. परयोनिषु गच्छतो मैथुनम् 86, 66. घ्नत° adj. f. M. 9, 226. 10, 5. योनिर्यथा न दुष्येत कर्तारं ते तथाध्वगे Bhāg. P. 9, 24, 33. गोः R. 1, 55, 3. सयोनिप्राणिन् *ein weibliches Wesen* AK. 3, 6, 4, 2. °चिकित्सा Verz. d. B. H. No. 949. °देापचिकित्सा 972. °व्यापद् Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 16. — 2) *Heimath, Haus; Lager, Nest, Stall* u. s. w.: ज्ञायेव योनौ ṚV. 1, 66, 3. 2, 38, 8. सादयो यज्ञं सुकृतस्य योनौ 3, 29, 8. समानं योनिमनु संचरन्ती 3, 33, 3. ज्ञायेदस्तं मघवन्त्सेदु (मा Padap.) योनिः 53, 4. 4, 16, 10. आ यस्योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथ 5, 67, 2. 3, 71, 6. 82, 4. समाने योनौ सहशेय्याय 10, 10, 7. यमस्य 123, 6. मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे 123, 7. AV. 13, 1, 17. सप्तयोनिर्वो अग्निः स्वामेवैनं योनिं गमयति TS. 5, 2, 2, 4. 3, 2, 6, 3. Çat. Br. 13, 2, 2, 10. ततो गच्छेत राजेन्द्र भीमायाः स्थानमुत्तमम् । तत्र ज्ञात्वा तु योन्यां वै MBh. 3, 5026. — 3) *Stätte des Entstehens oder des Bleibens, daher Ursprung, Quelle,* (zum Empfang zubereiteter) *Raum, Behälter, Sitz* u. s. w.: = प्रकृति AK. 3, 4, 44, 75. = उत्पत्तिस्थान Trik. = कारण H. 1313. H. an. = आकर Med. राज्ञ्युपसे योनिमारैक् *hat Platz gemacht* ṚV. 1, 113, 1. 124, 8. योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि 104, 1. समाने योनौ मिथुना समोकसा 144, 4. 2, 3, 11. 3, 1, 7. 5, 7. सप्तस्य 63, 12. 18. 4, 1, 12. 5, 21, 4. 9, 8, 3. VS. 3, 6. अयं योनिश्चकृमा यं वयं ते ṚV. 4, 3, 2. 6, 15, 16. 7, 3, 5. 8, 29, 2. अयोरुहा 9, 1, 2. मृन्मय VS. 11, 59. 12, 61. die *Stätten* des Feuers: नि षदा योनिषु त्रिषु ṚV. 2, 36, 4. सप्तधा योनिमासदथ वि वः VS. 13, 3. इयं वा अस्य सर्वस्य योनिः, सोमं योनौ सादयति Çat. Br. 4, 1, 3, 9. 10, 6, 4, 1. मेया तत्रस्य योनिर्यद्वस्य 14, 4, 2, 23. Çvetāçv. Up. 4, 11. 5, 2. die ṚK ist योनि d. h. *Ausgangspunkt, Grundform* des Sâman Ait. Br. 3, 35. Çāṅkh. Br. 24, 6. s. Ça. 7, 21, 2. 5. वक्रेर्यथा योनिगतस्य मूर्तिर्न दृश्यते, इन्धन° Çvetāçv. Up. 1, 13. सप्तर्योनिनिरिचारिणः Bhāg. P. 2, 27, 22. M. 9, 321. Spr. 1668. दृष्ट योनिः सर्वस्य Mānp. Up. 6. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 8, 126. ब्रह्मक्षत्रस्य वै योनिर्वंशः *ein Geschlecht, aus dem Brahmanen und Krieger hervorgegangen sind,* Bhāg. P. 9, 22, 43. त्रसानां त्रिविधा योनिरण्डस्वेदजरायुजाः MBh. 6, 164. H. 1357. मनःशङ्कारसंकल्पात्मानो योनिः कामस्य 229. तेजसां योनिम् Mārk. P. 105, 28. 99, 33. दिव्याभरणयोनयः Harīv. 6005. सर्व° Ragh. 10, 21. क्षमायोरमृतस्य चेभयोर्वंशनद्याम्बुधराश्च योनयः Kumāras. 4, 43. धर्मस्य M. 2, 25. दैवेन ज्ञानयोनिना MBh. 5, 3761. विश्वयोनयः Kām. Nītis. 10, 5. शब्दयोनिर्धातुः AK. 3, 4, 24, 68. Am Ende eines adj. comp. *entstanden —, hervorgegangen aus* H. 6. ṚV. Prāt. 2, 11. 11, 2. Bhāg. 3, 22. 7, 6. MBh. 15, 335. Ragh. 6, 8. Kumāras. 6, 39. Vikr. 28. Verz. d. Oxf. H. 179, *a*, No. 410. — 4) *Geburtsstätte* so v. a. *Familie, Geschlecht, Stamm, die durch die Geburt bestimmte Daseinsform* (als Mensch, Brahmane u. s. w., Thier u. s. w.): शीलवृत्ते समाख्याय विद्यां योनिं च कर्म च MBh. 13, 2406. विद्यायोनिसंबन्ध P. 6, 3, 22. यमसंबन्धा च योनितः M. 2, 129. स्त्रियाः संयक्करणं प्राक् तद्विगाख्यातयोनितः Vaitān. Bṛh. S. 86, 70. 96, 8. (न) स्वभावमतिवर्तते योनिगुप्ताः शरीरिणः Spr. 4309. योनीनामधमा वयम् R. 7, 39, 4, 21. क्रूरयोनिस्त so v. a. *Race* MBh. 5, 5283. यां यां योनिं तु स्त्रीवो ऽयं येन येनेह कर्मणा । क्रमशो याति लोके ऽस्मिन् M. 12, 53. 74. 6, 63. बह्वीस्तु संविशन्योनीर्जायमानः पुनः पुनः MBh. 13, 1923. शुभकृत् शुभयोनीषु पापकृत्पापयोनिषु (प्रजायते) 3, 13872. Bhāg. P. 3, 14, 42. यस्य सत्त्वस्य या योनिस्तस्यां तत्परिमृग्यते so v. a. *unter seines Gleichen* R. 5, 14, 62. स्वां योनिमासाद्य 7, 18, 20. कलुषयोनिस्त M. 10, 57. fg. विलीन° MBh. 3, 13674. क्षत्र° Bhāg. P. 3, 23, 7. चण्डालपुक्कशानां योनिमृच्छति M. 12, 53. वैश्ययोनौ ज्ञाता Mārk. P. 115, 20. ब्रह्मक्षत्रियविड्योनि adj. so v. a. *zur Kaste der Brahmanen, Krieger oder*

Vaiçja *gehörig* M. 2, 80. 8, 62. 9, 239. दास° adj. 8, 415. भृगालयोनिं प्राप्नोति 5, 164. 9, 30. Ind. St. 1, 265. Pâśup. 188, 5. 6. — 5) als Synonym von भग (das missverstanden wurde) *der Regent des* Nakshatra Pûrvaphalgunî Vaitân. Bṛh. S. 98, 4; vgl. योनिदेवता. — 6) *Wasser* Naigh. 1, 12. H. an. — 7) mystische Bez. *des Diphthongen* ए Weber, Rânây. Up. 318. Ind. St. 2, 316. — Vgl. स°, खञ्जन°, सत्य°, सप्त°, सप्तोत्र°, सप्तम°, एक°, कर्ण°, कुम्भ°, कृत°, कृष्ण°, घृत°, चित्त°, जगद्योनि, जीव°, तिर्यग्योन, तिर्यग्योनि, दुर्योनि, देव°, धूम° (vgl. धूमोर्णयोनि R. Gorr. 2, 102, 11), नेत्र°, पद्म°, पाप°, पुरा°, प्रति°, प्राण°, ब्रह्म° (von Brahman *stammend* auch MBh. 3, 16187. R. 1, 34, 1), भूत° (auch Mṛicch. Up. 1, 1, 6), मनो°, महा°, वस्त्र°, वि°, शत°, स°, सैकल्य°, सैकीर्ण°, सत्य°, सार्ङ्गयोनि, स्व°.

योनिकुण्ड n. Bez. *einer best. mystischen Figur* Verz. d. Oxf. H. 96, *b*, 13.

योनिग्रन्थ m. = ह्रन्द्रस् Colebr. Misc. Ess. 1, 306.

योनिज (योनि + 1. ज) adj. *aus einem Mutterleibe hervorgegangen*, im Gegens. zu अयोनिज (s. auch bes.) Kâṭh. 4, 2, 8. MBh. 2, 296. R. 3, 4, 23. Kathâs. 27, 71. 34, 41. fg. 81. अधम° von *der niedrigsten Herkunft* M. 9, 23.

योनित्व (von योनि) n. *das Ursprungsein, Quellesein* Nyâs. Tîp. Up. 2, 6 in Ind. St. 9, 162. पञ्चाङ्ग° Kumâras. 1, 17. Am Ende eines comp. *das Entstandensein aus, das Gegründetsein auf:* धान्य° (eigentlich nom. abstr. vom adj. comp. धान्ययोनि) Suçr. 1, 192, 18. 230, 16. 286, 1. शस्त्र° Sarvadarçanas. 60, 13.

योनिदेवता f. *das* Nakshatra Pûrvaphâlgunî H. 111; vgl. योनि 5).

योनिद्वार n. 1) *Muttermund* Suçr. 1, 278, 8. — 2) N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3, 8073.

योनिन् = योनि am Ende eines adj. comp.: अव्यक्तयोनिनः MBh. 13, 1125. शब्दयोनिनम् (°योनिम् die neuere Ausg.) Harîv. 2481. — Vgl. नीच°.

योनिनासा f. *the upper part of the vulva, or the union of the labiae* Wilson nach Çabdârthak.

योनिभ्रंश m. *Vorfall der Gebärmutter* Suçr. 1, 278, 12.

यौनिमत् (von योनि) adj. *mit seinem Mutterschoose u. s. w. verbunden* TBr. 1, 1, 2, 7. 3, 9, 22, 2. Kâṭy. 26, 3.

योनिमुक्त adj. *von der Wiedergeburt befreit* Çvetâçv. Up. 1, 7.

योनिमुख n. *Muttermund* Suçr. 1, 277, 20. 278, 2. 6.

योनिमुद्रा f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* ÇKDa. nach der Çâktânandatarañgiṇî.

योनिरुज्ञम n. *the menstrual excretion* Wilson nach Çabdârthak.

योनिरोग m. *Krankheit der weiblichen Geschlechtstheile* Suçr. 1, 175, 7. 290, 15. 2, 296, 5. Verz. d. B. H. No. 963.

योनिलिङ्ग n. *the clitoris* Wilson nach Çabdârthak.

योनिवेश in der Stelle: क्षत्रिया योनिवेशासु MBh. 6, 374. st. dessen क्षत्रियोपनिवेशासु ed. Bomb.; noch andere Lesarten verzeichnet in VP. 194. fg., N. 152.

योनिसंवृत्ति f. *contraction or closure of the vagina* Wilson.

योनिसंकर m. *fleischliche Vermischung zwischen verschiedenen Kasten, Misheirath* M. 10, 60. R. 1, 6, 17 (21 Gorr.).

योनिसंभव und स° adj. = योनिज und अयोनिज Verz. d. Oxf. H. 23, *b*, 14.

यौन्य (von योनि) adj. *einen Schooss —, einen Behälter bildend* RV. 8, 45, 30.

यौन्यशस् (योनि + स°) n. *eine best. Krankheit der weiblichen Geschlechtstheile*, = कन्द Taik. 2, 6, 14.

योपन (von युप्) s. ज्ञन° (wo *störend* st. *hemmend* zu lesen ist), ज्ञीवित°, पद्° (wo zu verbessern ist 1) *womit man die Fusspur verwischt.* — 2) *das Verwischen der Fusspur oder ein dazu dienendes Werkzeug*).

यौवणा (wohl von 2. यु wie युवन्) f. *Mädchen, junges Weib, Gattin* RV. 3, 32, 2. 56, 8. 62, 8. 7, 95, 3. 8, 8, 10. मरुद्भ्यो न यौवणाम् 9, 101, 14. 10, 39, 7. 14. 40, 6. यौवणे दिव्ये *Morgen und Nacht* 7, 2, 6. 10, 110, 6. अप्या 11, 2. सयौवणा Baudh. P. 3, 12, 14. RV. 8, 46, 30, nach Sây. ebenfalls *Mädchen*, könnte es *Stute* bedeuten. parox.: दाना मित्रं न यौवणा 5, 52, 14 (nach Sây. so v. a. स्तुति).

यौवन् f. dass.; pl. RV. 4, 3, 5. so heissen *die Finger* 3, 1, 7. 6, 5. 56, 3. 68, 7. त्रितस्य 32, 2. 38, 2.

यौवा (योधा Uṇâdis. zu Unâdis. 3, 62) f. dass. Nir. 3, 4. AK. 2, 6, 2, 2. H. 504. Hall. 2, 226. RV. 1, 48, 3. 92, 11. कुर्वतस्य 104, 2. विमदाय ज्ञायां न्यूहुः पुरुमित्रस्य योधाम् 117, 20. नि ते नंसै पीप्यानेव योधा 3, 33, 10. 38, 8. 48, 2. मर्यो न योषामभिमन्यमानः 4, 20, 5. याचार्त्सी मनसेव योधा 6, 75, 4. 7, 69, 4. Morgenröthe 1, 123, 9. सूर्यस्य 75, 5. उषो हरूचे युवतिर्न योधा 77, 1. पित्र्यावती 3, 46, 2. अप्या 10, 10, 4. 27, 12. 123, 5. योषेव दृष्टा पतिमृतिषा या AV. 12, 3, 39. 14, 1, 56. 2, 37. VS. 22, 22. वृषा वा सपत्नो योधा सुव्रत्सपत्न्या Âit. Br. 6, 3. TBr. 3, 3, 8, 2. Çat. Br. 1, 2, 5, 15. 16. 7, 2, 12. 3, 3, 5, 6. 7, 1, 1, 14. *equa* (nach Sây.) RV. 1, 36, 1. die mittlere Vâk (nach Sây.) 101, 7. — Jâim. 2, 393. MBh. 1, 7388. fg. 6, 560. बालेव योधा R. 5, 28, 3. Vaitân. Bṛh. S. 12, 8. 19, 16. 74, 2. Daç. 18, 16. Kathâs. 47, 106. Çiç. 4, 42. Baudh. P. 3, 25, 30. 4, 17, 19. ब्रह्मविद्ब्रह्मणो योषाः Jâim. 3, 268. MBh. 11, 441. शैलूष इव योधां त्वमन्यस्मै दातुमर्हसि R. Gorr. 2, 30, 8. दारुमयी *eine hölzerne Gliederpuppe* MBh. 2, 1139. 5, 951. 1446. Baudh. P. 1, 6, 7. — Vgl. गर्भ°, देव°.

योषितृ Uṇâdis. 1, 99. f. dass. AK. 2, 6, 2, 2. 3, 4, 26, 76. H. 504. Hall. 2, 226. गच्छेः ज्ञारो न योषितम् RV. 9, 38, 4. यद्वाड् वर्धतो शेपस्तेन योषितमिच्छति AV. 4, 101, 1. 11, 1, 4. übertragen auf *weibliche Sachen* 1, 17, 1. 5, 122, 5. 11, 1, 17. 27. — Çat. Br. 1, 4, 5, 14. 8, 6, 7. 3, 2, 4, 10. योषित्कामा 4, 3. 9, 2, 20. 13, 1, 9, 6. — M. 2, 132. 4, 213. 5, 90. 132. 8, 404. 9, 10. 24. 56. 77. 85. 11, 174. 188. पुंसः 4, 122. 12, 60. पुं° 9, 11. गुरु° 2, 210. MBh. 1, 7690. 3, 2124. 2467. R. 1, 9, 7. Suçr. 2, 344, 1. Vish. 40. Çiç. 68, 13, v. l. Bṛ. 1, 9. Mudr. 38. 40. Spr. 194. किं न कुर्वन्ति योषितः 615. 1583. बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता 4624. Kathâs. 3, 55. 18, 337. Vaitân. Bṛh. S. 16, 34 (विप्रव°). 33, 26. 70, 6. 11. 19. 104, 24. Weber, Rânây. Up. 336. केनापि योषिन्मोहाय निर्मिता Brahma-P. in LA. (III) 56, 22. Weibchen (eines Vogels) AK. 2, 5, 25. H. 1331. योषितो मन्त्रः *weibliche Zauberspräche* Verz. d. Oxf. H. 97, *b*, N. 2. — Vgl. कुल°, मृ°, पण्य°, वार°.

योषिता f. dass. Uṇâdis. zu Unâdis. 1, 99. AK. 2, 6, 2, 2. Taik. 2, 6, 1. H. 504, Sch. Mugdh. Up. 2, 1, 5.

योषित्ता absol. eines denom. von योषा oder योषितृ in der Stelle: योषित्ता मायया त्मानम् Baudh. P. 10, 6, 4. = वेषतो वरा नारीमिव ज्ञात्मानं विधाय Comm.

योषिन्मय (von योषितृ) adj. (ई) *als Weib geformt, ein Weib darstellend:* माया Baudh. P. 3, 21, 27. 5, 2, 37.

योस् indecl. *Heil, Wohl* in der Verbindung शं यो: und शं च योश्. धत्तं यज्ञमानाय शं यो: RV. 1,93,7. 8,60,15. यच्छ 4,12,5. भव 1,189,2. 3,17,3. यन्तु 5,47,7. शं योर्यत्ते मनुर्हितं तदीमहे 1,106,5. (आपः) शं योरभि स्रवन्तु न: 10,9,4. अयो न: शं योररपो दधात 15,4. 37,11. शमिन्द्रासोमौ सुविताय शं यो: 7,35,1. वृष्टी शं योरारे अघ्नि भेषजम् 5,53,14. ईळे तोकाय तनयाय शं यो: 5,69,3. ईशेन न: शं योरुषसो व्युष्टिषु न्यमिना वक्तं पशुषु घस्मिन् 7,69,5. शं योर्वृष्टि Çat. Br. 1,9,3,16. शं योरभिस्रवन्तीय (vgl. oben RV. 10,9,4) MBu. 13,901 (शंयोर्गङ्गासाद्गुण्यकर्त्र्या देवताया: Nîlak.). यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता RV. 1,114,2. ता शं च योश्च रुद्रस्य बाहुमा 2,33,13. शं च योश्च मयो दधे 8,39,4.

योकुल m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,23; vgl. याकालेय Saṁs. K. 183,b,2.

यौकारीय adj. von यूकार gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

यौक्तसुच (von युक्त + सुच्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230. Lâṭj. 6,11,4.

यौक्ताश्व (von युक्ताश्व) n. desgl. Ind. St. 3,230. Paṁkav. Br. 11,8,7. Lâṭj. 5,11,4. 5. यौक्ताश्वाग्न n. und यौक्ताश्वोत्तर n. desgl. Ind. St. 3,230.

यौक्तिक (von युक्ति, 1) adj. *zutreffend, richtig:* s. अ°. — 2) m. *der Geführte eines Fürsten, der diesen durch Scherze und Späße aufheitert,* = नर्मसचिव Çabdar. im ÇKDr.

यौग m. *ein Anhänger der Joga-Lehre* H. 862.

यौगक adj. von योग ÇKDr. nach Sîdh. K. — Vgl. यौगिक.

यौगंधर und यौगंधरक zu Jugaṁdhara *in Beziehung stehend* P. 4,2,120.

यौगंधरायण (von युगंधर und यौगंधर) m. patron. gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,17 (यौगंधायण). Minister Udajana's Mṛicch. 67,20. Kathâs. 9,43. 11,2. 13,61.

यौगंधरायणीय adj. zu Jaugaṁdharâjaṇa *in Beziehung stehend, ihm eigen* Kathâs. 17,163.

यौगंधरि m. *ein Fürst der Jugaṁdhara* P. 4,1,173, Sch.

यौगपद n. = यौगपद्य Bhâg. P. 4,4,20.

यौगपद्य (von युगपद्) n. *Gleichzeitigkeit* Çârîr. Ça. 13,14,2. Gaut. 1,9,13. P. 2,1,6. Vop. 6,58, Anf. Kim. Nîtis. 14,66. Sâh. D. 245,4. 7. Prasannar. 100,a,7. Sarvadarçanas. 12,13. 62,7. यौगपद्येन instr. = युगपद् MBu. 1,7858. 2,995. 3,12142. 13574. 14,148. अ° Kap. 3,2,3. 8,1,11. Bhâshâp. 84.

यौगवरत्र n. = युगवरत्राणां समूह: gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45.

यौगिक adj. (f. ई) = योगाय प्रभवति P. 5,1,102. 1) *zur Kur gehörig* Suçr. 2,16,19. अ° 18. — 2) *zur Anwendung kommend:* अ° Kîm. Nîtis. 13,66. — 3) *der Etymologie genau entsprechend, aus der Etymologie von selbst sich ergebend, die der Etymologie genau entsprechende Bedeutung habend* AK. 2,10,47. H. 1. 18. Schol. zu H. 76. Prabodhâc. 9,a, 5. Schol. zu Kâṭj. Çr. 189,14. 596,10. 708,12. Sarvadarçanas. 172,17. Verz. d. Oxf. H. 177,a, 36. 210,b, 4 v. u. यौगिकदृष्ट heisst ein Wort, *welches eine etymologisch klare, daneben aber auch eine aus der Etymologie sich nicht ergebende Bedeutung hat,* Bhâshâp. S. 84. यौगिकत्व n. nom. abstr. Schol. zu H. 87 u. s. w. — 4) *zum Joga in Beziehung stehend, aus ihm hervorgegangen:* ज्ञान Paṁkav. 1,1,48. 2,7,53.

यौजनशतिक (von योजन + शत) adj. 1) *der hundert Joǵana geht* P. 5,1,74, Vârtt. 1. — 2) *zu dem man aus einer Entfernung von hundert Joǵana kommt* P. 5,1,74, Vârtt. 2.

यौजनिक (von योजन) adj. *ein Joǵana gehend* P. 5,1,74.

यौट्, यौटति (संबन्धे) Dhâtup. 9,2. — Vgl. यौटक.

यौड्, यौडति v. l. für यौट् Dhâtup. 9,2.

यौतक (von 2. युतक) adj. *eigenthümlich und gehörend* MBu. 13,3595 (= 3520). n. *Privatvermögen, Privatbesitz,* insbes. *die Mitgift der Frau* AK. 2,8,4,28. Trik. 3,3,142. H. 520. an. 3,88. M. 9,131 (= MBu. 13, 2472). न चादत्ता कनिष्ठेभ्यो ज्येष्ठ: कुर्वीत यौतकम् 214 (= MBu. 13,5123). गृहक्षेत्रेषु यौतके: Jiân. 2,149. न तत्र संविभज्यन्ते स्वकर्मभि: परस्परम्। यदेव पस्य यौतकं तदेव तत्र सो ऽश्नुते MBu. 12,12090. Râǵa-Tar. 6,103. — Vgl. यौतुक.

यौतकि m. patron. gaṇa कोड्यादि zu P. 4,1,80. f. यौतकी ebend.

यौतव n. = यौतव AK. 2,9,88. H. 883, v. l.

यौतुक n. = यौतक Trik. 3,3,38. MBu. 13,2472 (die ed. Bomb. यौतक) = M. 9,131 (यौतक). Paṁkav. 1,4,49.

यौथिक (von यूथ) adj. *zu einer Schaar —, zu einer Heerde gehörig;* m. *Geführte, Kamerad* Bhâg. P. 5,8,6.

यौध्यै adj. von पूथ gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

यौध (von योध) adj. *kriegerisch:* ज्ञातीनां यौधानां पुत्रा: Lâṭj. 8,5,1.

यौधाजय n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,230,b. Ârsh. Br. 3,17. Paṁkav. Br. 7,5,12. Lâṭj. 6,11,4. 7,8,3. ज्ञातारात्तं यौ° Ind. St. 3,204, b. इन्द्रस्य यौ° 208,b. — Vgl. महा° und युद्धाजि.

यौधिक (von योध) adj. als Bez. *einer best. Art zu fechten* Harîv. 15980. यौधिक die neuere Ausg.

यौधिष्ठिर 1) adj. (f. ई) zu Judhishṭhira *in Beziehung stehend, ihm gehörig* u. s. w.: बल, सैन्य MBu. 1,302. 520. 3,15854. 5,575. श्री 5,4715. 15,469. शोक 4,569. Sâh. D. 147,13. Râǵa-Tar. 1,120. 2,144. — 2) m. patron. MBu. 6,1732. 7,3640 (यौधिष्ठिरा: स्थिता: st. यौधिष्ठिरादय: ed. Bomb.). f. ई Harîv. 9196.

यौधिष्ठिरि m. patron. von युधिष्ठिर gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. MBu. 7,4061.

यौधेय (wohl von योध) m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes P. 4,1,178. 5,3,117. Ind. St. 1,50. MBu. 2,1870. 7,768. 6956. Harîv. 1678 (यौ° die neuere Ausg.). Varâh. Bṛ. S. 4,25. 5,40. 67. 75. 14,28. 16,22. 17,19. Mân. P. 58,17. Z. f. d. K. d. M. 4,171. 174. fg. LIA. I, 644. II, 792. sg. *ein Fürst der* Jaudheja, f. ई P. a. a. O. ein Sohn Judhishṭhira's heisst Jaudheja MBu. 1,3828. nach Sîdh. K. im ÇKDr. ist यौधेय m. = योद्धृ *Kämpfer.*

यौधेयक = यौधेय Varâh. Bṛ. S. 9,11. 11,59.

1. यौन (von योनि) adj. 1) *auf Heirath beruhend, durch Heirath entstanden, — verwandt;* n. *eheliche Verbindung, Heirath, Verwandtschaft durch Heirath:* संबन्ध, संबन्धक M. 2,40. 3,157. MBu. 1,4012. Spr. 4923. MBu. 9,2358. 12,3144. संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन्। यानसंयाजनाध्यापनाद्योनान्न तु यानासनाशनात्॥ M. 11,180. यौने: प्रेतेश्च यौनेश्च श्रुद्धानाम् Harîv. 6997. Bhâg. P. 10,61,25. 68,25. 82,30. — 2) am Ende eines comp. *hervorgegangen aus:* घाम्र° neben सद्योनि und पर्वतयोनि MBu. 13,4867.

2. यौन m. pl. N. pr. eines Volkes, wohl = यवन und auch daraus

Vaiçja *gehörig* M. 2, 80. 8, 62. 9, 229. दास° adj. 8, 415. मृगालयोनि प्राप्नोति 5, 164. 9, 30. Ind. St. 1, 263. Pañcat. 188, 3. 6. — 5) als Synonym von भग (das missverstanden wurde) *der Regent des* Nakshatra Pûrvaphalguni Varâh. Bṛh. S. 98, 4; vgl. योनिदेवता. — 6) *Wasser* Naigh. 1, 12. H. an. — 7) mystische Bez. *des Diphthongen* ए Weber, Rik. Up. 318. Ind. St. 2, 316. — Vgl. अ°, खलिन°, खत्य°, खब्ज°, गम्भोज°, ग्रस्म°, एक°, कर्ण°, कुम्भ°, कृत°, कृष्ण°, घृत°, चित्त°, जगद्योनि, जीव°, तिर्यग्योन, तिर्यग्योनि, दुर्योनि, देव°, धूम° (vgl. धूमोज्ञयोनि R. Gorr. 2, 102, 11), नेत्र°, पद्म°, पाप°, पुरा°, प्रति°, प्राण°, ब्रह्म° (von Brahman *stammend* auch MBh. 3, 16187. R. 1, 34, 1), भूत° (auch Mudg. Up. 1, 1, 6), मनो°, मक्ष°, वस्त्र°, वि°, शत°, स°, संकल्प्य°, संकीर्ण°, सत्य°, सादृश्योनि, स्व°.

योनिकुण्ड n. Bez. *einer best. mystischen Figur* Verz. d. Oxf. H. 96, b, 13.

योनिगन्ध m. = कुन्दम् Colebr. Misc. Ess. 1, 308.

योनिज (योनि + 1. ज) adj. *aus einem Mutterleibe hervorgegangen*, im Gegens. zu अयोनिज (s. auch bes.) Kap. 4, 2, 5. MBh. 2, 296. R. 3, 4, 23. Kathâs. 27, 71. 34, 41. fg. 81. अधम° von *der niedrigsten Herkunft* M. 9, 23.

योनित्व (von योनि) n. *das Ursprungsein, Quellesein* Nyâs. Tîp. Up. 2, 6 in Ind. St. 9, 162. यज्ञाङ्ग° Kumâras. 1, 17. Am Ende eines comp. *das Entstandensein aus, das Gegründetsein auf:* धान्य° (eigentlich nom. abstr. vom adj. comp. धान्ययोनि) Sûçr. 1, 192, 18. 236, 18. 280, 1. शस्त्र° Sarvadarçanas. 60, 13.

योनिदेवता f. *das* Nakshatra Pûrvaphâlguni H. 111; vgl. योनि 5).

योनिद्वार n. 1) *Muttermund* Sûçr. 1, 278, 8. — 2) N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3, 8073.

योनिन् = योनि am Ende eines adj. comp.: अल्पाक्षयोनिन: MBh. 13, 1125. शब्दयोनिनम् (°योनिन्नम् die neuere Ausg.) Harîv. 2481. — Vgl. नीच°.

योनिनासा f. *the upper part of the vulva, or the union of the labiae* Wilson nach Çabdârthak.

योनिभ्रंश m. *Vorfall der Gebärmutter* Sûçr. 1, 278, 13.

यौनिमत् (von योनि) adj. *mit seinem Mutterschooss u. s. w. verbunden* TBr. 1, 1, 2, 7. 3, 9, 22, 2. Kâṭy. 26, 8.

योनिमुक्त adj. *von der Wiedergeburt befreit* Çvetâçv. Up. 1, 7.

योनिमुख n. *Muttermund* Sûçr. 1, 277, 20. 278, 2. 6.

योनिमुद्रा f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* ÇKDa. nach der Çâktânandatarañgiṇî.

योनिरक्त n. *the menstrual excretion* Wilson nach Çabdârthak.

योनिरोग m. *Krankheit der weiblichen Geschlechtstheile* Sûçr. 1, 175, 7. 290, 15. 2, 296, 8. Verz. d. B. H. No. 963.

योनिलिङ्ग n. *the clitoris* Wilson nach Çabdârthak.

योनिवेश in der Stelle: क्षत्रिया योनिवेशासु MBh. 6, 274. st. dessen क्षत्रियोपनिवेशासु ed. Bomb.; noch andere Lesarten verzeichnet in VP. 194. fg., N. 152.

योनिसंवृत्ति f. *contraction or closure of the vagina* Wilson.

योनिसंकर m. *fleischliche Vermischung zwischen verschiedenen Kasten, Misscheirath* M. 10, 60. R. 1, 6, 17 (21 Gorr.).

योनिसंभव und अ° adj. = योनिज und अयोनिज Verz. d. Oxf. H. 23, b, 14.

योन्य (von योनि) adj. *einen Schooss —, einen Behälter bildend* R. V. 8, 45, 20.

योन्यर्श्स् (योनि + अ°) n. *eine best. Krankheit der weiblichen Geschlechtstheile,* = कर्ण Taitt. 2, 6, 14.

योपन (von युप्) s. ज्ञन° (wo *störend* st. *hemmend* zu lesen ist), जीवित°, पद्° (wo zu verbessern ist 1) *womit man die Fusspur verwischt.* — 2) *das Verwischen der Fusspur oder ein dazu dienendes Werkzeug*).

यौवणा (wohl von 2. यु wie युवन्) f. *Mädchen, junges Weib, Gattin* R. V. 3, 32, 2. 56, 5. 62, 8. 7, 95, 3. 8, 8, 10. मर्ज्ञोरो न योर्यणाम् 9, 101, 14. 10, 39, 7. 14. 40, 6. योर्यणे दिव्ये *Morgen und Nacht* 7, 2, 6. 10, 110, 6. अप्या 11, 2. सयोर्यणा Baudh. P. 3, 12, 14. R. V. 8, 46, 30, nach Sây. ebenfalls *Mädchen*, könnte es *Stute* bedeuten. parox.: दाना मित्रं न योर्यणा 5, 32, 14 (nach Sây. so v. a. स्तुति).

यौवन् f. dass.; pl. R. V. 4, 5, 3. so heissen *die Finger* 9, 1, 7. 6, 5. 56, 3. 68, 7. त्रितस्य 32, 2. 38, 2.

यौषा योर्षा Uṇâdi-Sûtra zu Uṇâdis. 3, 62) f. dass. Nir. 3, 4. AK. 2, 6, 4, 2. H. 504. Hall. 2, 326. R. V. 1, 48, 3. 92, 11. कुर्वत्यस्य 104, 3. त्रिमदार्य ज्ञार्या न्यूलुथु: पुरुमित्रस्य योर्याम् 117, 20. नि ते नंसै पोप्यानेव योर्या 3, 33, 10. 38, 8. 48, 2. मर्गो न योर्यामभिमन्यमान: 4, 20, 3. ज्ञावारंती मर्मनिव योर्या 6, 75, 4. 7, 69, 4. Morgenröthe 1, 123, 9. सूर्यस्य 75, 3. उषो रुरुचे पुवतिर्न योर्या 77, 1. पित्र्यावती 3, 46, 2. अप्या 10, 10, 4. 27, 12. 123, 3. योर्येव दृष्ट्वा पतिमृत्विया पा AV. 12, 3, 39. 14, 1, 56. 2, 37. VS. 22, 23. वृषा वा सपत्नो योषा सुब्रह्मण्या Âit. Br. 6, 3. TBr. 3, 3, 2, 2. Çât. Br. 1, 2, 5, 13. 15. 7, 2, 12. 3, 3, 5, 6. 7, 1, 1, 14. *equa* (nach Sây.) R. V. 1, 56, 1. die mittlere Vâk (nach Sây.) 101, 7. — Jâân. 2, 292. MBh. 1, 7288. fg. 6, 860. बालेव योषा R. 5, 28, 3. Vaitân. Bṛh. S. 12, 8. 19, 16. 74, 2. Bṛh. 18, 16. Kathâs. 47, 106. Çiç. 4, 42. Baudh. P. 3, 25, 36. 4, 17, 19. ब्रह्मविष्णुत्रपूरुयोषा: Jâân. 3, 263. MBh. 11, 441. वैलूष इव योषां त्वमन्यस्मै दातुमर्हसि R. Gorr. 2, 30, 3. दारुमयी *eine hölzerne Gliederpuppe* MBh. 2, 1139. 5, 951. 1446. Baudh. P. 1, 6, 7. — Vgl. गर्भ°, देव°.

योषितृ Uṇâdis. 1, 99. f. dass. AK. 2, 6, 4, 2. 3, 4, 24, 76. H. 504. Hall. 2, 326. गच्छेर् ज्ञारो न योषितम् R. V. 1, 38, 4. यथाङ्ग वर्धतो शेपस्तेन योषितमिच्छति AV. 6, 101, 1. 11, 1, 4. übertragen auf *weibliche Sachen* 1, 17, 1. 6, 122, 5. 11, 1, 17. 27. — Çat. Br. 1, 4, 5, 14. 8, 1, 7. 3, 2, 1, 40. योषित्काम 4, 3. 9, 8, 20. 13, 1, 9, 6. — M. 2, 132. 4, 213. 5, 90. 153. 8, 494. 9, 10. 24. 56. 77. 85. 11, 174. 188. परस्य 4, 133. 12, 60. पर° 9, 41. गुरु° 2, 210. MBh. 1, 7690. 3, 2124. 2467. R. 1, 9, 7. Sûçr. 2, 344, 1. Vish. 40. Çiç. 68, 13, v. l. Bṛ. 1, 2. Mudg. 38. 40. Spr. 194. किं न कुर्वन्ति योषित: 615. 1583. बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता 4624. Kathâs. 3, 55. 18, 337. Vaitân. Bṛh. S. 16, 34 (विग्रव°). 33, 26. 70, 6. 11. 18. 104, 24. Weber, Rik. Up. 356. केनापि योषिन्मोहाय निर्मिता Brahma-P. in L.A. (III) 56, 22. *Weibchen* (eines Vogels) AK. 2, 5, 25. H. 1331. योषिनो मनव: *weibliche Zaubersprüche* Verz. d. Oxf. H. 97, b, N. 2. — Vgl. कुल°, मधु°, पण्य°, वार°.

योषिता f. dass. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1, 99. AK. 2, 6, 4, 2. Taitt. 2, 6, 1. H. 504, Sch. Mudg. Up. 2, 1, 5.

योषिता absol. eines denom. von योषा oder योषितृ in der Stelle: योषिता मायया त्मानम् Baudh. P. 18, 6, 4. = वेषतो वरा नारीमिव त्मानं विधाय Comm.

योषिन्मय (von योषितृ) adj. (f. ई) *als Weib geformt, ein Weib darstellend:* माया Baudh. P. 2, 21, 27. 6, 2, 27.

योस् indecl. *Heil, Wohl* in der Verbindung शं यो: und शं च योश्च. धत्तं यजमानाय शं यो: RV. 1,93,7. 8,60,15. पच्छ 4,12,5. भव 1,189,2. 3,17, 3. धस्तु 5,47,7. शं योरभि स्रवन्तु न: 10,9,4. यत्रा न: शं योररपो दधात 13,4. 37,11. शमिन्द्राग्नी मुविताय शं यो: 7,35,1. वृष्टी शं योरारे अस्मि भेषजम् 5,53,14. ईळे तोकाय तनयाय शं यो: 5,69,3. त्र्यैन न: शं योरुषसो व्युष्टिषु न्यग्निना वरूतं यज्ञे अस्मिन् 7,69,5. शं योर्वृष्टि Çat. Br. 1,9,3,18. शं योरभिस्रवन्तीय (vgl. oben RV. 10,9,4) MBu. 13,901 (योर्यज्ञसाधुत्वकर्त्र्या देवतायाः Nîlak.). पच्छं च योश्च मनुरायजेते पिता RV. 1,114,2. ता शं च योश्च रुद्रस्य बभ्रि 2,33,13. शं च योश्च मयो दधे 8,39,4.

योकुल m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,23; vgl. याकुलेय Sâmk. K. 185,b,2.

यौकारीय adj. von यूकर gaṇa kṛśâśvâdi zu P. 4,2,80.

यौक्तस्तुच (von युक्त + स्तुच्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230. Lâṭj. 6,11,4.

यौक्तास्य (von युक्तास्य) n. desgl. Ind. St. 3,230. Pañcav. Br. 11,8,7. Lâṭj. 6,11,4. 5. यौक्तास्याग्न n. und यौक्तास्योत्तर n. desgl. Ind. St. 3,230.

यौक्तिक (von युक्ति. 1) adj. *zutreffend, richtig*; s. अ°. — 2) m. *der Geführte eines Fürsten, der diesen durch Scherze und Späße aufheitert*, = नर्मसचिव Çârdûn. im ÇKDa.

यौग m. *ein Anhänger der Joga-Lehre* H. 862.

यौगक adj. von योग ÇKDa. nach Sîdh. K. — Vgl. यौगिक.

यौगंधर und यौगंधरक zu Jugaṁdhara *in Beziehung stehend* P. 4,2,120.

यौगंधरायण (von युगंधर und योगंधर) m. patron. gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,17 (योगंधायण). Minister Udajana's Mṛkkh. 67,20. Kathâs. 9,43. 11,2. 15,61.

यौगंधरायणीय adj. zu Jaugaṁdharâjaṇa *in Beziehung stehend, ihm eigen* Kathâs. 17,163.

यौगंधरि m. *ein Fürst der Jugaṁdhara* P. 4,1,173, Sch.

यौगपद n. = यौगपद्य Buâc. P. 4,4,20.

यौगपद्य (von युगपद्) n. *Gleichzeitigkeit* Çârîr. Ça. 13,14,2. Gaut. 1, 9,13. P. 2,1,6. Vop. 6,38, Anf. Kim. Nîtis. 14,66. Sin. D. 245,4. 7. Prâtiçâkh. 100,a,7. Sarvadarçanas. 12,13. 62,7. यौगपद्येन instr. = युगपद् MBu. 1,7858. 2,995. 3,12142. 13574. 14,148. अ° Kâç. 3,2,3. 8,1,11. Buâsiâ. 84.

यौगयात्र n. = युगयात्राणां समूहः gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45.

यौगिक adj. (f. ई) = योगाय प्रभवति P. 5,1,102. 1) *zur Kur gehörig* Suçr. 2,16,19. अ° 18. — 2) *zur Anwendung kommend*: अ° Kâm. Nîtis. 13,86. — 3) *der Etymologie genau entsprechend, aus der Etymologie von selbst sich ergebend, die der Etymologie genau entsprechende Bedeutung habend* AK. 2,10,47. H. 1. 18. Schol. zu H. 76. Prâtiçâkh. 9,a, 3. Schol. zu Kâṭj. Ça. 189,14. 596,10. 708,12. Sarvadarçanas. 172,17. Verz. d. Oxf. H. 177,a,36. 210,b,4 v. u. यौगिकरूढ heisst ein Wort, *welches eine etymologisch klare, daneben aber auch eine aus der Etymologie sich nicht ergebende Bedeutung hat*, Buâsiâ. S. 84. यौगिकत्व n. nom. abstr. Schol. zu H. 87 u. s. w. — 4) *zum Joga in Beziehung stehend, aus ihm hervorgegangen*: ज्ञान Pañcad. 1,1,48. 2,7,53.

यौजनशतिक (von योजन + शत) adj. 1) *der hundert Joǵana geht* P. 5,1,74, Vârtt. 1. — 2) *zu dem man aus einer Entfernung von hundert Joǵana kommt* P. 5,1,74, Vârtt. 2.

यौजनिक (von योजन) adj. *ein Joǵana gehend* P. 5,1,74.

यौट्, यौटति (संबन्धे) Dhâtup. 9,2. — Vgl. यौटक.

यौड्, यौडति v. l. für यौट् Dhâtup. 9,2.

यौतक (von 2. युतक) adj. *eigenthümlich Jmd gehörend* MBu. 13,3595 (= 3520). n. *Privatvermögen, Privatbesitz*, insbes. *die Mitgift der Frau* AK. 2,8,8,28. Trik. 3,3,142. H. 520. an. 3,85. M. 9,131 (= MBu. 13, 2472). न चादत्ता कनिष्ठेभ्यो ज्येष्ठः कुर्वीत यौतकम् 214 (= MBu. 13,3122). गृहक्षेत्रेश यौतकैः Jâǵ. 2,149. न तत्र संविभज्यते स्वकर्मभिः परस्परम्। यदेव यस्य यौतकं तदेव तत्र सो ऽमुते MBu. 12,12090. Rîâ-Tar. 6,103. — Vgl. यौतुक.

यौतकि m. patron. gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80. f. यौतकी obend.

यौतव n. = यौतव AK. 2,9,35. H. 883, v. l.

यौतुक n. = यौतक Trik. 3,3,38. MBu. 13,2472 (die ed. Bomb. यौतक) = M. 9,131 (यौतक). Pañcad. 1,4,49.

यौथिक (von यूथ) adj. *zu einer Schaar —, zu einer Heerde gehörig*; m. *Geführte, Kamerad* Buâc. P. 5,8,6.

यौध्र्य adj. von यूध्र gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

यौध (von योध) adj. *kriegerisch*: ज्ञातीनां यौधानां पुत्राः Lâṭj. 8,5,1.

यौधाजय n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,230,b. Ârs. Br. 3,17. Pañcav. Br. 7,5,12. Lâṭj. 6,11,4. 7,8,5. ज्ञातारात्तं यौ° Ind. St. 3,204, b. इन्द्रस्य यौ° 208,b. — Vgl. महा° und युद्धाजि.

यौधिक (von योध) adj. als Bez. *einer best. Art zu fechten* Harîv. 15980. योधिक die neuere Ausg.

यौधिष्ठिर 1) adj. (f. ई) zu Judhishṭhira *in Beziehung stehend, ihm gehörig* u. s. w.: बल, सैन्य MBu. 1,202. 320. 3,15884. 5,575. श्री 5,4715. 15,469. शोक 4,869. Sin. D. 147,15. Rîâ-Tar. 1,120. 2,144. — 2) m. patron. MBu. 6,1782. 7,3640 (यौधिष्ठिराः स्थिताः st. यौधिष्ठिरादयः ed. Bomb.). f. ई Harîv. 9196.

यौधिष्ठिरि m. patron. von युधिष्ठिर gaṇa वाक्कादि zu P. 4,1,96. MBu. 7,4061.

यौधेय (wohl von योध) m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes P. 4,1,178. 5,3,117. Ind. St. 1,50. MBu. 2,1870. 7,768. 6950. Harîv. 1678 (यौ° die neuere Ausg.). Varâh. Bṛh. S. 4,25. 5,40. 67. 75. 14,28. 16,22. 17,19. Mârk. P. 58,17. Z. f. d. K. d. M. 4,171. 174. fg. LIA. I, 644. II, 792. sg. *ein Fürst der Jaudheja*, f. ई P. a. a. O. ein Sohn Judhishṭhira's heisst Jaudheja MBu. 1,3828. nach Sîdh. K. im ÇKDa. ist यौधेय m. = योद्धृ *Kämpfer*.

यौधेयक = यौधेय Varâh. Bṛh. S. 9,11. 11,59.

1. यौन (von योनि) adj. 1) *auf Heirath beruhend, durch Heirath entstanden, — verwandt*; n. *eheliche Verbindung, Heirath, Verwandtschaft durch Heirath*: संबन्ध, संबन्धक M. 2,40. 3,137. MBu. 1,4042. Spr. 4923. MBu. 9,3358. 12,2144. संवत्सरेण पतति पतितेन सकाचरन्। याजनाध्यापनाद्योनान्न तु यानासनाशनात्॥ M. 11,180. योनि: शेषेश शेषेश मुक्तानाम् Harîv. 6997. Buâc. P. 10,61,25. 68,25. 82,30. — 2) am Ende eines comp. *hervorgegangen aus*: खाग्नि° neben खड्योनि und पर्वतयोनि MBu. 13,4867.

2. यौन m. pl. N. pr. eines Volkes, wohl = यवन und auch daraus

entstanden, MBh. 12,7560.

यौप (von यूप) adj. (f. ई) *zum Opferpfosten in Beziehung stehend* Bṛh. Dev. in Ind. St. 1, 111.

यौर्व्य (wie oben) adj. gaṇa सैंकाशादि zu P. 4,2,80.

यौयुधानि m. patron. von युयुधान MBh. 16,247.

1. यौवत (von युवति) n. *eine Schaar junger Mädchen oder Frauen* P. 4,2,38 (oxyt.). Sidd. K. zu P. 4,2,38 (proparox.). AK. 2,6,4,22. H. 1415, v. l. Gir. 10,15.

2. यौवत n. = यौतव Buar. zu AK. 2,9,55.

यौवतेय (von युवति) m. *der Sohn einer jungen Frau* Vop. 7,1.5.

यौवन (von युवन्) m. (!) n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) n. *Jugendalter, Jugendkraft, Jugendblüthe* P. 5,1,130. Vop. 7,19. AK. 2,6,4,40. H. 339. यौवने (यौ वने die Hdschrr.) जीवानुपपृक्षती ज्रा AV. 18,4,30. कौमारं यौवनं ज्रा Bhag. 2,13. MBh. 5,7421. R. 1,9,7. 39,18. 4,63,14. Śṛṅg. 1,129,4. 5 (vom 30ten bis zum 40ten Jahre). 343,1. शैशव, यौवन, वार्द्धक Rāgat. 1,8. 3,32. Vikr. 26. Kām. Nītis. 14,58. Spr. 685. 815. कौमार, यौवन, स्थाविर 1774. बाल्य, यौवन 1969. 2577. 2637. 3433. 4178 यौवने काले v. l.). Varāh. Bṛh. S. 74,18. 78,12. 96,1. 7. यौवनारूढा Kathās. 18,261. 277. Bhāg. P. 9,22,13. Pañcat. 128,2. Hit. 10,19. 28,14. चञ्चल LA. (III) 16,15. 32,9. दिनैः कतिपयैः संस्थम् 35,22. Sarvadarśanas. 145,14. °स्थ MBh. 3,16641. Spr. 4924. Kathās. 43,151. Pañcat. 183,25. pl.: यौवनानि मरुत्सखि निगृह्यतामिव दुर्दमानि: Kāvy. 46. Megh. 26. Spr. 194. 2897. यौवनं नवं चन्द्रमसः Harīv. 4078. am Ende eines adj. comp. f. या: प्रातयौवना MBh. 3,2111. Kathās. 73,422. संप्राप्त° MBh. 1,2207. 5,7411. ऊढ° Pañcar. 3,7,37. नव° Rāgat. 9,7. Ṛt. 4,12. Verz. d. Oxf. H. 25,a,10. Spr. 1960. प्रत्यग्र° Kathās. 27,201. गत° Spr. 975. Paar. 16,3. संपूर्ण° Kathās. 47,110. स्थिर° Harīv. 6977. Vikr. 109. Pañcar. 1,10,89. Mṛicch. 18,19. स° Ṛt. 1,7. Sin. D. 100. Rāja-Tar. 3,433. यापूर्णोद्कयौवना वसुमती Varāh. Bṛh. S. 27,8. — 2) n. *eine Schaar junger Leute*, insbes. *Mädchen* zu P. 4,2,38. H. 1415. — 3) n. Bez. *des dritten Grades in den Mysterien der* Çākta Verz. d. Oxf. H. 91,b,11. — Vgl. नित्य°.

यौवनक n. = यौवन 1) gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,122. Vārtt. zu P. 6,4,151.

यौवनकण्टक m. n. = यौवनपिटका Çabdam. im ÇKDr.

यौवनपिटका f. *Jugendausschlag, das Erscheinen von Eruptionen im Gesicht junger Leute* Śṛṅg. 1,292,11; vgl. 293,19.

यौवनमत्त 1) adj. *vor Jugend ausgelassen.* — 2) f. या *ein best. Metrum, 4 Mal* –⏑⏑––, ––––––⏑⏑––– Colebr. Misc. Ess. II, 162 (XI, 16).

यौवनलक्षण *ein Zeichen der Jugend:* 1) *Anmuth.* — 2) *der weibliche Busen* H. an. 6,4. Med. g. 118.

यौवनवत् (von यौवन) adj. *in der Jugendblüthe stehend;* f. वती LA. (III) 19,1. Hit. 28,4. रूपयौवनवती *in Schönheit und Jugend prangend* 115,5, v. l. Kathās. 35,126.

यौवनाश्व (von युवनाश्व) m. patron. des Māndhātar Taitt. 2,8,3. ṚV. Anukr. Āçv. Çr. 12,13. Maitrāyaṇ. 1,4. Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 56, 9. MBh. 2,1929. 3,10423. 7,2272. 2279. 12,974. 13,360. 3689. Verz. d. B. H. No. 434. 1127. Bhāg. P. 9,6,34. 37. patron. eines Grosssohnes des Māndhātar 7,1 nach dem Schol. zu P. 6,2,107 parox. und in यौवन + अश्व zu zerlegen.

यौवनाश्वक m. patron. des Māndhātar Gaṇiḍ. im ÇKDr.

यौवनाश्वि m. desgl. MBh. 2,649. R. Gorr. 2,116,33.

यौवनिक m. (!) = यौवन 1) H. 339, Sch.

यौवनिन् (von यौवन) adj. *im Jugendalter stehend* Harīv. 14594. Mālav. P. 65,9. 75,27.

यौवनोद्र (यौवन + उ°) m. *Geschlechtsliebe; der Liebesgott* H. ç. 77.

यौवराज्यिक adj. (f. या und ई) von युवराज gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

यौवराज्य (von युवराज) n. *die Würde eines Thronerben und Mitregenten* MBh. 3,16912. 5,4182. R. 1,1,21. 2,26,3. 35,33. 52,32. 64,60. Vikr. 161. Kathās. 10,212. 22,25. 30,57. Rāja-Tar. 5,32. 139. Daçak. in Benf. Chr. 197,15. Paar. 97,9. am Ende eines adj. comp. f. या Kathās. 26,94.

यौषिण्य n. *Weiblichkeit* Bhāg. P. 5,1,29. — Vgl. योषण् u. s. w.

यौष्माकि (von युष्मत्) adj. *eurig* P. 4,3,1. 2. Vop. 7,22. Kathās. 112,205.

यौष्माकीण (wie oben) adj. dass. P. 4,3,1. 2. Vop. 7,22. Durga zu Nir. 5,4.

र

र 1) m. = तीक्ष्ण und दारुण (पावक) H. an. 1, 11. Med. r. 1. *love, desire; speed* Wilson nach Ekakshara. — 2) f. *a)* री = विक्षेप und दान Ekakshara. im ÇKDa. = काञ्चन Çabdar. ebend. — *b)* f. री = गति Çabdar. im ÇKDa. — 3) n. = तेजस् *Glanz:* रं (so ist zu lesen) तेजः सवितुर्यच्च दलितं पञ्चयाधुना । रंदलेति च ते नाम द्वापरान्ते भविष्यति ॥ Verz. d. Oxf. H. 74,*a*,25.

रंसु (von रन्, रण्, रंज्मु Padap.; auf रम् zurückgeführt Nir. 6, 17) adj. *erfreulich, ergötzlich;* adv.: स चित्रेण चिकिते रंसु भामा ṚV. 2, 4, 5. = रमणीयेषु Sis. Zur Bildung des Wortes vgl. दंतु und धंतु (von दक्) *brennend* ṚV. 2, 4, 4. 10, 115, 4; vgl. ṚV. Prāt. 4, 41.

रंसुजिह्व (रंसु + जिह्वा) adj. *der eine angenehme Zunge (Stimme) hat* (vgl. ṚV. 5, 26, 1. 6, 16, 2); von Agni: होता रिरिण्यरंसुजिह्वः ṚV. 4, 1, 8. = रमणीयशोभनज्वालोपेत Sis.

रंह्, रंहति (गतौ) Dhātup. 17, 83. Naigh. 2, 14. Nir. 9, 11. कर्म्मतिः मुराष्ट्रेषु रंहतिः प्राच्यमध्यमेषु गमिमेव वार्याः प्रयुञ्जते Pat. in Mahābh. S. 62. *rinnen machen;* med. *rinnen, rennen:* त्वमुतो सनुभिर्व्रह्मणा वरंह ऊधः पर्वतस्य वज्रिन् ṚV. 5, 32, 2. स रंहत उरुगायस्य जूतिम् 3, 27, 9. (धारा) रंहमाणा व्यरोचयत् वारं वाजीव (धावति) 100, 4. 110, 3. वरंहत पथाभिः ककुभान् 10, 102, 7. act. in der Bed. des med.: न रराधसकुञ्जरम् Bhatt. 14, 98.

— caus. = simpl.: वाजे षहिं रंहयन्तः ṚV. 1, 85, 5. तस्येदर्वन्तो रंहयन्त घाशवः 8, 19, 6. 10, 113, 6. वातस्य रंहिस्यामृतस्य योनिः Kauç. 49. रंह्यति (v. l. वंह्यति) *sprechen* oder *leuchten* Dhātup. 33, 123.

— intens. partic. रारंहाणौ *eilend, eilig* ṚV. 1, 134, 1. यद्यासो न रघ्यो रारंहाणाः 148, 3. तद्न्ववेदिन्द्रो रारंहाणा धीसाम् 10, 139, 4.

रंह = रंहस् in वातरंह.

रंहस् (von रंह्) Uṇādis. 4, 213. n. *Schnelle, Geschwindigkeit* AK. 1, 1, 4, 39. H. 494. Hall. 2, 288. (देवगन्धर्ववाकाः) न क्षीयन्ते च रंहसः MBh. 1, 6484. नावमारुह्य रंहसा Rāja-Tar. 5, 84. Bhāg. P. 5, 14, 29 (nach dem Comm. adj. = शीघ्र). 7, 8, 33. यमङ्गरंहसा 4, 5, 5 यमरंहो° 19, 27. यतिभ्यस्तर° 5, 17, 9. यज्ञ° 6, 11, 21. मारुतस्य Rāgān. 2, 34. मनसा कार्यसिद्धौ वराढ्यगुणरंहसा Kumāras. 2, 63. काल° Bhāg. P. 4, 27, 3. कालेनाव्यक्तरंहसा 4, 4, 16. 5, 23, 2. कालेन गभीररंहसा 4, 5, 18. तार्क्ष्यमारुत° MBh. 1, 5886. गरुडानिल° 7, 1605. R. 5, 1, 32. मनोमारुत° MBh. 1, 897. 3, 12027. मनो° Harīv. 8895. मनसा समरंहसः Kumāras. 6, 36. so v. a. *impetus, Heftigkeit, Feuer:* वासुदेवाङ्घ्रयनुध्यानपरिबृंहितरंहसा । भक्त्या Bhāg. P. 1, 15, 29. ज्ञानविराग° 4, 22, 26. अन्योऽन्यसंदर्शनहर्ष° 10, 82, 14. so v. a. मूढम (nach dem Comm.) 4, 24, 28. als Beiw. Çiva's (*die personificirte Geschwindigkeit*) MBh. 14, 195. 213. Vishṇu's Harīv. 14141. — Vgl. यति°, वात°.

रंहस am Ende eines adj. comp. = रंहस् : तुरगैर्मनोमारुतरंहसैः Harīv. 6198.

रंहि (von रंह्) f. 1) *das Rinnen, der rinnende Strom:* पर्वस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या ṚV. 9, 2, 1. 6, 8. 106, 13. पुनानस्य सचेतो यत्ति रंहयः 86, 47. — 2) *das Rennen, Jagen, Eile, Flug* Nir. 10, 39. विव्यचद्भा रंहिता न रंह्या ṚV. 10, 96, 4. 95, 3. 178, 3. यास्ते शोचयो रंहयो ज्ञातवेदो याभिरापृणासि दिवमुत्तरंहम् AV. 18, 2, 9. पूषा रंह्या VS. 6, 13. Çat. Br. 3, 8, 2, 22.

रक्, राकयति (घास्वादने) Dhātup. 33, 63. राकयति मोदकं बालकः Durgāc. im ÇKDa. — Vgl. रग्, रघ्, लक्, लग्.

रक *gaṇa* शणिडकादि zu P. 4, 3, 93. m. *the sun gem; crystal; a hard shower* Wilson nach Çabdārthak.

रकसा f. *eine Gattung des leichteren Aussatzes* (लघुकुष्ठ), auch zu den लघुरोग gezählt, Suçr. 1, 268, 4. 269, 13. 292, 10. 294, 18. Çārṅg. Saṃh. 1, 7, 65.

रकार m. *der Laut* र R. 3, 43, 35. Verz. d. Oxf. H. 99, *a*, 16.

रक्ष m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 5, 423. 6, 170. 197. 304. 333. 334. °त्रया Bez. einer von ihm errichteten Bildsäule der Çrī 5, 425. An zwei Stellen bei Taoven रक्ष gedruckt.

रक्त (partic. von रञ्ज्) 1) adj. *a) gefärbt* AK. 3, 4, 24, 82. 6, 8, 45. H. an. 2, 189. Med. r. 48. धूम° Çat. Br. 6, 3, 1, 26. वासस् Āçv. Gṛhj. 1, 19, 11. Çāṅkh. Gṛhj. 1, 11. M. 10, 37. 12, 66. लाला° Kauç. 76. °कुम्भ 84. °पायस Sarvad. Bh. 5, 2. तेन रक्तम् P. 4, 2, 1. — *b) roth* AK. 1, 1, 4, 24. H. 1395. 49. H. an. Med. Hall. 4, 48. 2, 282. 3, 58. °कण्ठ Çāṅkh. Gṛhj. 1, 12. कूजानि घातुरक्तानि MBh. 1, 1172. °स्मश्रुशिरोरुह 5929. अशोक इव रक्तः 5, 7154. कुरु-

वक्त्रः R. 3,79,36. °माल्यानुलेपन 1,62,19. 2,69,15. Verz. d. B. H. No. 1209. °वस्त्रपरिधान 144, 4. °वासस् adj. M. 8,256. Mâns. P. 34, 54. नेत्रे रक्तासे R. 3,52,34. 55,11. MBh. 1,7705. 3,2966. R. 4,40,39. 5,12,34. काले रक्तदिवाकरे Hariv. 4462. वालातपरक्तसानु Raghuv. 6,60. Vikr. 136. Çuka. 1,113,7. 233,11. 2,290,3. 297,16. Bṛ. 6,19. Megh. 37. Spr. 4925. Varâh. Bṛh. S. 3,26. 31. 8,3. 34,9. Buâs. P. 3,15,28. 28,21. Mârk. P. 109,65. fünf (sieben) Körpertheile müssen roth sein: रक्ता पञ्चसु रक्तेषु MBh. 4, 253. रक्ता च (so die ed. Bomb.) पञ्चसु 5,3939. सप्तसु रक्तः Varâh. Bṛh. S. 68,84. नेत्रात्तपत्रकरतालवधेष्टविद्धा रक्ता नखाश्च खलु मुखावक्षनि 87. *roth* und zugleich *zugethan, liebend, verliebt* Spr. 231. 2579. 2581. 3630. शारक्त (s. auch bes.) *röthlich* Kathâs. 21,3. Paṇḍat. 64,15. — *c) nasalirt* ṚV. Pâṛ. 1,7. 19. 6,6. 11,6. 18. 13,6. 14,9. 20. 22. 24. — *d) lieblich, reizend* (von der Stimme, Sprache): रक्तान्तरपद (वचन) R. 3,5,2. कोकिला मदरक्तया Spr. 232. तो चापि मधुरं रक्तम् — गायताम् R. 1,4,29. सुरक्ता मधुरा वाणी 2,71,24. Ragh. 16,64. Vgl. रक्तकण्ठ fg. — *e) aufgeregt, mit Leidenschaft an Etwas* oder *Jmd hängend, zugethan, liebend, verliebt;* = अनुरक्त H. an. Med. न च रक्तो विरावयेत् M. 4,64. मद° (हंस) Spr. 4683. स्वभाव° von *Natur leidenschaftlich* Buâs. P. 1,5,15. देवास्तपसि रक्ता हि मुखे रक्ता मखासुराः। देवाः सत्ये रताः Hariv. 8769. काम° *hängend an* Spr. 3788. 3803. विरक्तो रक्तवत् Buâs. P. 7,14,5. रक्तविरक्त unter den Bedeutungen Çiva's MBh. 12,10374. पौरुषानर्दाश्च रक्तान् R. 2,112,11. Spr. 2002. 4882 Kathâs. 11,16. Râga-Tar. 3,3. रक्ततरो हि तस्याः परिजनः Daçak. in Benp. Chr. 190,19. रक्ते विरक्ते मय्यस्थे स्वामिनि Spr. 4224. रक्तेयं मम कामिनी 2554. सा चान्यमिच्छति जनं स जनो ऽन्यरक्तः 2461, v. l. 1349. 5313. Daç. 2,21. Varâh. Bṛh. S. 78,2. Kathâs. 24,86. लोकलोको यदा सर्वो रक्तो रामगुणैरयम् *entzückt von* R. Gorr. 2,9,41. *zugethan, verliebt* und zugleich *roth* Spr. 231. 2579. 2581. 3630. — *f)* = क्रीडारत *an Spielen seine Freude habend* Dhan. im ÇKDr. — 2) m. *a) Safflor* (कुसुम्भ). — *b) Barringtonia acutangula* Râgân. im ÇKDr. — 3) f. आ *a) Lack* (लाक्षा) Râgân. im ÇKDr. Çuka. 2,275,8. 276,1. — *b) Abrus precatorius.* — *c) Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा). — *d)* = उष्ट्रकाण्डी Râgân. — *e)* Bez. einer der sieben Zungen des Feuers H. 1099, Sch. Halâj. 1,68. — 4) n. *a) Blut* AK. 2,6,2,15. 3,4,44,67. H. 621. H. an. Med. Halâj. 3,10. M. 4,132. चत्वार (so die neuere Ausg.) च भृशं रक्तम् Hariv. 8898. रक्तिनास्तेजसा व्याप्तः शरीरस्थेन देहिनाम्। यव्यापन्नः प्रसन्नेन रक्तमित्यभिधीयते॥ Çuka. 1,13,15. 127,3. 253,6. 2,474,8. रक्तं सर्वशरीरस्थं जीवस्याधारमुत्तमम् Çiva-P. Sahh. 1,6,7. Varâh. Bṛh. S. 3,25. 10,20. 12,6. 30,27. Râga-Tar. 5,335. Buâs. P. 6,12,26. 9,2,7. Prab. 81, 11. Paṇḍat. 60,25. — *b) Kupfer* H. 1039. Med. Hân. 111. — *c) Saffran* AK. 2,6,2,26. H. 643. H. an. Med. — *d) die Frucht der Flacourtia cataphracta Roxb.* H. an. Med. Hân. 102. — *e) Mennig.* — *f) Zinnober.* — *g)* = पद्मक n. Râgân. im ÇKDr. — Vgl. जीव°, नाग°, पीत°, पुष्प°, पूय°, श्वेत°.

रक्तक (von रक्त) 1) adj. *roth* Varâh. Bṛh. S. 8,46. — *b) mit Leidenschaft an Etwas* oder *Jmd hängend* Med. k. 144. — *c) angenehm unterhaltend* (विनोदिन्) Çabdar. im ÇKDr. — *d) blutig:* मेरु Çiva-P. Sahh. 1, 7,43. — 2) m. *a) ein rothes Kleid* Med. — *b)* Bez. verschiedener *roth blühender Pflanzen: Pentapetes phoenicea* AK. 2,4,2,53. Med. *Engelamaranth* Med. = रक्तशिग्रु und रक्तेरण्ड Râgân. im ÇKDr.

रक्तकङ्गु m. *Panicum italicum* Nigh. Pr.

रक्तकाण्ड m. *eine Species von Celastrus* Nigh. Pr.

रक्तकण्ठ adj. (f. ई) *eine reizende Stimme habend:* °खग Buâs. P. 4, 6,29. कलवघः 10,33,9. m. = कोकिल (Comm.) 4,6,12.

रक्तकण्ठिन् adj. dass.: गायका: MBh. 7,2913. R. 7,37,3.

रक्तकदम्ब m. *roth blühender* Kadamba Vikr. 124.

रक्तकदली f. *eine Species von Musa* Nigh. Pr.

रक्तकन्द m. 1) *Koralle* H. 1066. — 2) Bez. *zweier Knollengewächse:* रक्तालु und रक्तपलाण्डु Râgân. im ÇKDr.

रक्तकन्दल m. *Koralle* Trik. 2,9,30.

रक्तकमल n. *eine rothe Lotusblüthe* Râgân. im ÇKDr.

रक्तकम्बल n. dass. Padmottarakh. 13 im ÇKDr.

रक्तकरवीर m. *roth blühender Oleander, Nerium odorum rubro-simplex* Râgân. in Nigh. Pr. °क ÇKDr. nach derselben Aut.

रक्तकाञ्चन m. *Bauhinia variegata* Ratnam. 157.

रक्तकाण्डा f. *eine roth blühende* Punarnavâ Râgân. im ÇKDr.

रक्तकाष्ठ n. *Caesalpina Sappan Lin.* Râgân. im ÇKDr.

रक्तकुमुद n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* Gaṇḍîr. im ÇKDr.

रक्तकृमिजा f. *Lack* Nigh. Pr.

रक्तकेशर m. 1) *Rottleria tinctoria Roxb.* Ratnam. im ÇKDr. — 2) *der Korallenbaum* Râgân. im ÇKDr.

रक्तकैरव n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* Ratnam. 150.

रक्तकोकनद n. *eine rothe Lotusblüthe* Gaṇḍîr. im ÇKDr.

रक्तखदिर m. *roth blühender* Khadira Râgân. im ÇKDr.

रक्तखाडव m. *eine ausländische Dattelart* Nigh. Pr.

रक्तगन्धक n. *Myrrhe* Râgân. im ÇKDr.

रक्तगर्भा f. *Lawsonia alba, die Hennapflanze* Nigh. Pr.

रक्तगुल्म m. *eine best. Form der* Gulma *genannten Krankheit* Gi-ruḍa-P. 196 im ÇKDr. °गुल्मिनी adj. f. *daran leidend* Çuka. 2,432,8.

रक्तगैरिक n. *eine Art Ocker* (सुवर्णगैरिक) Nigh. Pr.

रक्तगन्धि m. *eine Mimosenart* Nigh. Pr.

रक्तग्रीव m. 1) *eine Taubenart* Nigh. Pr. — 2) *ein* Râkshasa H. ç. 37.

रक्तघ्न 1) adj. *dem Blut entgegenwirkend.* — 2) m. *Andersonia Rohitaka Roxb.* Gaṇḍîr. im ÇKDr. — 3) f. ई *eine Art* Dûrvâ-Gras Çabdam. im ÇKDr.

रक्तचन्दन n. *rother Sandel* und *Caesalpina Sappan* AK. 2,6,2,33. 9, 111. H. 642. Ratnam. 142. Jîvân. 1,296. R. 2,33,9. 91,56. 5,3,29. 6,82, 61. Çuka. 2,420,13. 433,15. Mṛicch. 157,18.

रक्तचित्रक m. *ein best. Strauch,* = कालमूल Râgân. im ÇKDr.

रक्तचिल्लिका f. *eine Art Chenopodium* (*Spinat*) Nigh. Pr.

रक्तचूर्ण n. *Mennig* Hân. 44.

रक्तच्छर्दि f. *Blutspeien* Çiva-P. Sahh. 3,3,22.

रक्तज (रक्त + 1. ज) adj. *aus dem Blute stammend* Wise 197. Çuka. 1,281,20.

रक्तजलुक m. *eine Art Schnecke* (भूनाग) Râgân. im ÇKDr.

रक्तजिह्व 1) adj. *rothzüngig.* — 2) m. *Löwe* H. ç. 183. Çabdam. im ÇKDr.

रक्तजार (von रक्त) n. = रक्तगैरिक Nigh. Pr.

रक्ता (von रक्त) f. 1) *Röthe* MBh. 3, 11347. — 2) *die Natur des Bluts:* रसः रञ्जितः पाचितस्तत्र पित्तेनायाति रक्तताम् Çiva-P. Sâṁh. 1, 6, 6. — Vgl. अति° unter अतिरक्त.

रक्तगुण्ड m. *Papagei* H. 1335.

रक्तगुण्डक m. *eine Art Schnecke* (भूनाग) Râǵân. im ÇKDa.

रक्तघणा f. *eine best. Grasart* (गोमूत्रिका) Râǵân. im ÇKDa.

रक्तचन्दनम् n. *Fleisch* H. 622.

रक्तत्रिवृत् f. *eine roth blühende* Trivṛt Râǵân. im ÇKDa.

रक्तदल (von रक्त) n. *Röthe:* कमलानाम् Spr. 2578.

रक्तदन्तिका f. *die Rothzähnige*, Beiw. der Durgâ Mârk. P. 91, 10. °द्-न्ती Wilson nach Çaṁḍîpratâp.

रक्तदूला f. N. zweier Pflanzen: चिचिड्डिका und नालिका Râǵân. im ÇKDa.

रक्तदूषण adj. *dem Blut entgegenwirkend* Suçr. 1, 177, 3.

रक्तदृश् m. *Taube* (*rothäugig*) Çaṁḍîpratâp. bei Wilson.

रक्तधातु m. 1) *Röthel, rubrica* Trik. 2, 3, 6. — 2) *Kupfer* Râǵân. im ÇKDa.

रक्तनयन 1) adj. *rothäugig.* — 2) m. *Perdix rufa* Çaṁḍîpratâp. bei Wilson.

रक्तनाडी f. *eine vom Blut herrührende Zahnfistel* Çiva-P. Sâṁh. 1, 7, 76.

रक्तनाल 1) = वीरसो. — 2) *eine Lotusart* Nigh. Pa.

रक्तनासिक m. *Eule* (*einen rothen Schnabel habend*) Çaṁḍîp. im ÇKDa.

रक्तनेत्र adj. *rothäugig* Suçr. 1, 120, 4. Pâṇḍ. 83, 3. Davon nom. abstr. ता° f. Suçr. 1, 366, 1. °त्व n. Çiva-P. Sâṁh. 1, 7, 73.

रक्तप 1) adj. *Blut trinkend.* — 2) m. *ein* Râkshasa H. an. 3, 445. Med. p. 22. — 3) f. आ a) *Blutegel* AK. 1, 2, 8, 22. H. an. Med. — b) *eine Dâkinî* Med.

रक्तपक्ष m. Beiw. Garuḍa's (*rothe Flügel habend*) Çaṁḍîpratâp. bei Wils.

रक्तपट adj. *ein rothes Gewand tragend;* m. *eine Art Bettler* (= सौप्यशिलु Comm.) Vaǵr. in Ind. St. 2, 287. रक्तपटीकृत *in einen solchen Bettler verwandelt* Spr. 3305, v. l.

रक्तपत्रा *Boerhavia erecta rosea* Nigh. Pa.

रक्तपत्राङ्ग n. *eine Art rothen Sandels* Ratnam. 143.

रक्तपत्रिका f. N. zweier Pflanzen: नाकुली und रक्तपुनर्नवा Râǵân. im ÇKDa.

रक्तपदी f. *eine best. Pflanze* Ǵaṭâdh. im ÇKDa.

रक्तपद्म n. *eine rothe Lotusblüthe* Vaǵr. Bṛh. S. 46, 37.

रक्तपर्णी = रक्तपुनर्नवा Nigh. Pa.

रक्तपल्लव m. *Jonesia Asoca Roxb.* Râǵân. im ÇKDa.

रक्तपाकी f. *die Eierpflanze* (वृन्ताकी) Ratnam. 12.

रक्तपाता f. *Blutegel* Çaṁḍîp. im ÇKDa. — Vgl. रक्तपा unter रक्तप.

रक्तपाद 1) adj. *rothfüssig;* m. *ein Vogel mit rothen Füssen* MBh. 5, 4858. Jâtâ. 1, 175. R. 7, 6, 37. *Papagei* H. 1335, v. l. — 2) m. *Elephant und Wagen* (स्यन्दन) H. an. 4, 140. — 3) f. ई *Mimosa pudica* Râǵân. im ÇKDa.

रक्तपायिन् 1) adj. *Blut trinkend.* — 2) m. *Wanze* Râǵân. bei Wilson. — 3) f. °नी *Blutegel* Râǵân. bei Wilson und im ÇKDa.

रक्तपारद n. *Zinnober* Trik. 2, 9, 25. Hir. 135. m. Ǵaṭâdh. im ÇKDa.

रक्तपिटिका f. *eine rothe oder Blutbeule* Çiva-P. Sâṁh. 1, 7, 63.

रक्तपिण्ड m. *Hibiscus rosa sinensis* Trik. 2, 4, 25. n. *die Blüthe* Çaṁḍîp. im ÇKDa. Nach Wilson noch: *a spontaneous discharge of blood from the nose and mouth; a red pimple or boil; a climbing plant* (*Ventilago madraspatana*).

रक्तपिण्डक m. = रक्तालु Râǵân. im ÇKDa.

रक्तपित्त n. *Blutsturz* (einer Störung des *Bluts* durch die *Galle* zugeschrieben) Wise 272. Suçr. 2, 470, 4. Çiva-P. Sâṁh. 1, 7, 12. ऊर्ध्वग Suçr. 1, 173, 4. 2, 369, 17. 437, 3. °कर 1, 192, 10. Verz. d. B. H. No. 935. 967. 975. 977. 996. Verz. d. Oxf. H. 306, *b*, 19. 312, *b*, 17. 316, *a*, 7 v. u. 357, *a*, 25 v. u. °काम 305, *b*, 28.

रक्तपित्तरुज् (रक्तपित्त + रुज्) f. *eine Art Dûrvâ-Gras* Çaṁḍîp. im ÇKDa. — Vgl. रक्तघ्नी unter रक्तघ्न.

रक्तपित्तिन् (von रक्तपित्त) adj. *zum Blutsturz geneigt, daran leidend* Suçr. 1, 34, 20. रक्तपित्ती पित्तेष्वस्य शोणितं स विनश्यति 111, 8. 121, 14. 2, 140, 6.

रक्तपुच्छक adj. (f. °पुच्छिका) *rothschwänzig;* f. *eine Art Eidechse* H. 1299.

रक्तपुनर्नवा f. *eine roth blühende* Punarnavâ Râǵân. im ÇKDa.

1. रक्तपुष्प n. *eine rothe Blume* Vet. in LA. (III) 10, 20.

2. रक्तपुष्प 1) adj. *rothe Blüthen habend* Vaǵr. Bṛh. S. 15, 14. — 2) m. N. verschiedener Pflanzen: *Bauhinia variegata purpurascens* Ratnam. 157. = कास्तीर Ǵaṭâdh. im ÇKDa. = रोहितक Çaṁḍîp. ebend. = दाडिम und बक Ratnam. ebend. = बन्धूक und पुंनाग Râǵân. ebend. — 3) f. आ *Bombax heptaphyllum* Ǵaṭâdh. im ÇKDa. — 4) f. ई N. verschiedener Pflanzen: *Grislea tomentosa* Ratnam. 164. = पाटलि Ǵaṭâdh. im ÇKDa. = शवा, श्यावर्तकी, नागदमनी, करुणी und उष्ट्रकाण्डी Râǵân. ebend.

रक्तपुष्पक 1) m. N. verschiedener Pflanzen: = पलाश und रोहितक Ǵaṭâdh. im ÇKDa. = पर्पट und शाल्मलि Râǵân. ebend. — 2) f. °पुष्पिका *Mimosa pudica* Çaṁḍîp. im ÇKDa. = रक्तपुनर्नवा und भूपाटलि Râǵân. im ÇKDa.

रक्तपूय N. einer Hölle Verz. d. Oxf. H. 16, *b*, 23.

रक्तपूरक n. *die getrocknete Schale der Mangostane* Râǵân. im ÇKDa.

रक्तपैत adj. von रक्तपित्त: विधान Suçr. 2, 474, 3.

रक्तपैत्तिक adj. desgl.: रोग Suçr. 1, 179, 8.

रक्तप्रदर m. *Mutterblutfluss* Çiva-P. Sâṁh. 1, 7, 101.

रक्तप्रसव m. N. zweier Pflanzen: रक्तकरवीर und रक्तप्रसून Râǵân. im ÇKDa.

रक्तफल 1) adj. *rothe Früchte habend* Vaǵr. Bṛh. S. 15, 14. — 2) m. *der indische Feigenbaum* Ǵaṭâdh. im ÇKDa. — 3) f. आ *Momordica monadelpha Roxb.* AK. 2, 4, 8, 4. H. 1183. = स्वर्णवल्ली Râǵân. im ÇKDa.

रक्तफेनक m. *Lunge* H. 605.

रक्तबिन्दु m. 1) *a red spot forming a flaw in a gem* Wilson nach Çaṁḍîpratâp. — 2) *Blutstropfen* Mârk. P. 88, 40. 53.

रक्तबीज m. 1) *Granatbaum* Râǵân. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Asura Mârk. P. 88, 39. fgg.

रक्तबीजका f. *eine best. Pflanze,* = तरदी Râǵân. im ÇKDa.

रक्तभव n. *Fleisch* H. 622.

रक्तभाव adj. (f. आ) *verliebt* Hariv. 8394.

रक्तमञ्जर m. *Barringtonia acutangula* Trik. 2, 4, 17.

रक्तमण्डल 1) adj. *eine rothe Scheibe habend* (vom Monde) und zugleich *ergebene Unterthanen habend* Spr. 3650. — 2) m. *eine rothge-*

ringelte —, rothgefleckte Schlangenart Suçr. **2**, 265, 11. — 3) f. घा *ein best. giftiges Thier* Suçr. **2**, 289, 21. — 4) n. *eine rothe Lotusblüthe* Çabdârthak. bei Wilson.

रक्तगण्डलता f. *durch das Blut hervorgebrachte Erscheinung rother Flecken am Körper* Çârîr. Sârîr. **1**, 7, 73.

रक्तगत adj. *bluttrunken, vom Blutegel* Vishn. 26, 39. 45.

रक्तगन्धिन् m. *ein best. rother Fisch* Râgân. im ÇKDr.

रक्तगर्दभक 1) adj. *rothköpfig.* — 2) *eine Reiherart, Ardea sibirica* H. ç. 193.

रक्तगुदा f. *eine best. Frauenkrankheit; s. u.* बाधक 2).

रक्तगुद adj. *eine rothe Schnauze habend;* m. N. pr. eines Affen Pañkat. 205, 6.

रक्तगूत्रता (von रक्त + मूत्र) f. *Blutharnen* Çârîr. Sârîr. **1**, 7, 73.

रक्तगूलक m. *eine Art Senf* (देवमर्षप) Râgân. im ÇKDr.

रक्तगूला f. *Mimosa pudica* Râgân. im ÇKDr.

रक्तगेरु m. *Blutharnen* Çârîr. Sârîr. **1**, 7, 43. — Vgl. शोणितगेरु.

रक्तगोलणा s. u. गोलणा 2) *d*).

रक्तगोष्टि f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Roxb. Gaṇîdn. im ÇKDr. °का f. dass. Ratnam. 28. Râgân. im ÇKDr.

रक्तगोवनाल m. = तुवरगोवनाल Râgân. im ÇKDr.

रक्तघ्र (von रक्त, रञ्ज्) nom. ag. *Färber* H. an. 2, 281. Med. n. 115 (wo रक्तरि का° zu lesen ist). Die richtige Form wäre रङ्क्र.

रक्तघ्राणि 1) m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. **2**, 287, 16. °घ्राणी f. dass. 288, 4. 289, 21. — 2) *eine best. Augenkrankheit* Suçr. **2**, 357, 6. — 3) °घ्राणी f. = घाकाळीव *Lepidium sativum, Kresse* Nigh. Pr.

रक्तघोण m. 1) *Mennig.* — 2) *eine Knospe der Butea frondosa* H. an. 4, 86. Med. n. 106. — 3) *Rottleria tinctoria Roxb.* Râgân. im ÇKDr. — 4) *a sort of cloth.* — 5) *an angry man* Wilson nach Çabdârthak.

रक्तघोणका f. *eine Knospe der Butea frondosa* Çabdam. im ÇKDr.

रक्तघोवतक n. *ein best. Fruchtbaum,* = महाघोवत Râgân. im ÇKDr.

रक्तचण्डुल m. *Knoblauch* Râgân. im ÇKDr.

रक्तचटा f. = काकतुण्डी Râgân. im ÇKDr.

रक्तचक्षुस् 1) adj. *rothäugig.* — 2) m. *Taube* H. 1330.

रक्तचटी f. *Blattern* Taik. **2**, 6, 18.

रक्तचतरी f. dass. Gaṇîdn. im ÇKDr.

रक्तचर्मन् m. 1) *Lack.* — 2) N. verschiedener Pflanzen: *Granatbaum; Butea frondosa; Pentapetes phoenicea; zwei Arten Gelbwurz* (निशाद्वय); *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Roxb.; *Safflor* Râgân. im ÇKDr.

1. रक्तचर्मन् m. *die rothe Farbe* oder *die Farbe des Blutes* Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 6.

2. रक्तचर्मन् 1) adj. *rothfarbig* Suçr. **1**, 199, 7. °मणि Amṛtan. Up. in Ind. St. **9**, 37. — 2) m. *Coccinelle* (इन्द्रगोप) Râgân. im ÇKDr. — 3) n. *Gold* H. ç. 162.

रक्तचर्धन 1) adj. *Blut vermehrend.* — 2) m. *Solanum Melongena* Çabdam. im ÇKDr.

रक्तचर्षाभू f. = रक्तपुनर्नवा Râgân. im ÇKDr.

रक्तचसन adj. *roth gekleidet;* m. *ein Brahmane im 4ten Stadium als frommer Bettler* H. 809.

रक्तचात m. *eine best. Krankheit* Glaupa-P. 193 im ÇKDr.

रक्तचालुक n. *Mennig* Taik. **2**, 9, 32. Hân. 44. f. घा dass. Çabdar. im ÇKDr.

रक्तचासिन् adj. *in ein rothes Gewand gehüllt* R. **2**, 69, 16.

रक्तचिद्रधि m. *Blutgeschwür* Suçr. **1**, 280, 14. 281, 18. **2**, 124, 17.

रक्तचृत m. *ein best. Baum* Suçr. **1**, 228, 12.

रक्तचसा f. *Nyctanthes arbor tristis* Çabdam. im ÇKDr.

रक्तशालि m. *rother Reis, Oryza sativa* H. 1169. Hall. 2, 125. Suçr. **1**, 73, 4. Varâh. Bṛh. S. 29, 2.

रक्तशामन n. *Mennig* Hân. 175.

रक्तशिंशु m. *roth blühender Çigru* Râgân. im ÇKDr.

रक्तशीर्षक m. 1) *eine Reiherart* Nigh. Pr.; vgl. रक्तमस्तक. — 2) *Pinus longifolia* (oder *ihr Harz*) Ratnam. 41.

रक्तशुक्रता (von रक्त + शुक्र) f. *blutige Beschaffenheit des Samens* Suçr. **1**, 366, 8.

रक्तशृङ्गिक n. *Gift* Râgân. im ÇKDr.

रक्तश्याम adj. *dunkelroth* H. 1398. Hall. 4, 52. Varâh. in Ind. St. **2**, 296.

रक्तष्ठीवनता f. *Blutspeien* Çârîr. Sârîr. **1**, 7, 63.

रक्तष्ठीवी f. dass. Verz. d. Oxf. H. 319, *a*, 7. *b*, No. 758.

रक्तसंकोच m. *Safflor* Çabdârthak. bei Wilson.

रक्तसंकोचक n. *eine rothe Lotusblüthe* Çabdârthak. bei Wilson.

रक्तसंज्ञ (रक्त + संज्ञा) n. *Saffran* Taik. **2**, 6, 35.

रक्तसंदंशिका f. *Blutegel* Râgân. in Nigh. Pr.

रक्तसंध्यक n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* AK. **1**, 2, **2**, 35. H. 1164.

रक्तसरोरुह n. *eine rothe Lotusblüthe* AK. **1**, 2, **2**, 40. H. 1162.

रक्तसर्षप m. *Sinapis ramosa Roxb.* Râgân. im ÇKDr.

रक्तसाखा f. *rother Kugelamaranth* Râgân. im ÇKDr.

रक्तसार 1) adj. *bei dem das Blut vorwaltet, von sanguinischem Temperament* Varâh. Bṛh. S. 68, 97. — 2) m. *eine best. Pflanze* Suçr. **2**, 69, 21. = घण्टपत्तेल und रक्तखदिर Râgân. im ÇKDr. — 3) n. *rother Sandel und Caesalpina Sappan Lin.* Râgân. im ÇKDr.

रक्तसूर्याय् (von रक्त + सूर्य), °यते *eine rothe Sonne darstellen, ihr gleichen* Harîv. 4749.

रक्तसौगन्धिक n. *eine rothe Lotusblüthe* (रक्तकह्लार) Gaṇîdn. im ÇKDr.

1. रक्तस्राव m. *Fliessen von Blut* Varâh. Bṛh. S. 87, 35.

2. रक्तस्राव m. *eine Art Sauerampfer* Gaṇîdn. im ÇKDr.

रक्तहेमा f. Bez. einer Rágiṇî Wilson und ÇKDr. angeblich nach Hall.

रक्ताकार (रक्त + घा?) m. *Koralle* Râgân. im ÇKDr.

रक्ताक्त (रक्त + घाक्त) n. *rother Sandel* oder *Caesalpina Sappan* Gaṇîdn. im ÇKDr.

रक्ताक्त (रक्त + 3. घक्त) 1) adj. *rothäugig* H. an. 3, 741. R. **2**, 77, 26. 88, 14. **3**, 55, 4. **5**, 45, 5. Verz. d. Oxf. H. 10, *b*, N. 6. Bhâg. P. **4**, 14, 44. Çiç. in LA. (III) 34, 17. = क्रूर *furchtbar, Grausen erregend* H. an. Med. ab. 44. — 2) m. *a) Büffel* H. 1283. H. an. Med. Hân. 80. Hall. **2**, 72. — *b) Perdix rufa.* — *c) Taube* H. an. Med. — *d) der indische Kranich* Râgân. im ÇKDr. — *e)* N. pr. eines Zauberers Buan. Intr. 172. Schiefner, Lebensb. 260 (30). — *f)* N. pr. eines Ministers eines Eulenkönigs Kathâs. 62, 103. Pañkat. 173, 20. — 3) n. N. des 58ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus Varâh. Bṛh. S. 8, 31.

रक्तालि m. = रक्ताल 3) Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 7. रक्तालिन् Aufrecht.

रक्ताङ्ग (रक्त + अङ्ग) m. *Koralle* H. 1066.

रक्ताङ्ग (रक्त + 3. अङ्ग) 1) m. *a) ein best. Vogel* R. 4,50,13. — *b) Wanze* Rigân. im ÇKDa. — *c) eine best. Pflanze*, = काम्पिल्ल. काम्पिल्ल AK. 2. 4,3,11. Med. g. 45. fg. Ratnam. 163. — *d) der Planet Mars* Trik. 3, 3,68. H. an. 3,130. Med. Ind. St. 3,261. — *e) Sonnen- oder Mondscheibe* (मण्डल) Çabdar. im ÇKDa. — *f)* N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2139. — 2) f. *a) eine best. Pflanze*, = जीवन्ती Med. (ohne Angabe der Form). रक्ताङ्गा H. an. रक्ताङ्गी Wilson und ÇKDa. रक्ताङ्गी *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Roxb. Bhâvapr. im ÇKDa. — *b)* ई *Koralle* H. 1066, v. l. — 3) n. *a) Koralle* H. an. Med. — *b) Saffran* Med. — *c) eine best. Pflanze*, = काम्पिल्ल H. an.

रक्तातिसार (रक्त + अ°) m. *blutiger Durchfall* Çârîr. Saṃh. 2, 1, 9. Verz. d. B. H. No. 949. रक्तातीसार Wilson.

रक्ताधरा (रक्त + अधर) f. *eine Kimînarî* (nach Wilson) Daçak. 171,13.

रक्ताधार (रक्त *Blut* + आधार) m. *die Haut* Rigân. im ÇKDa.

रक्ताधिमन्थ (रक्त + अ°) m. *inflammation of the eyes, ophthalmia with sponginess of the vessels so as to discharge blood on being touched* Wilson; vgl. Suçr. 2,314,2. fgg.

रक्तापक्व (रक्त + अ°) n. *Myrrhe* Rigân. im ÇKDa.

रक्तापामार्ग (रक्त + अ°) m. *roth blühender Apâmârga* Rigân. im ÇKDa.

रक्ताभ (रक्त + आभा) adj. *ein röthliches Aussehen habend* R. 2,60,18.

रक्ताभिष्यन्द (रक्त + अ°) m. *von Blut herrührende Ophthalmie* Suçr. 2,326,18.

रक्तामिषाद (रक्त - आमिष + अद) adj. *Blut und Fleisch essend:* यक्ष R. 1,29,17.

1. रक्ताम्बर (रक्त + अ°) n. *ein rothes Gewand:* °धर MBh. 2, 221. R. 3,35,3. 13.

2. रक्ताम्बर (wie eben) adj. *in ein rothes Gewand gehüllt;* f. आ N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,8. रक्ताम्बरत्व n. *das Tragen eines rothen Gewandes* (bei den buddh. Mönchen) Sarvadarçanas. 24,16.

रक्ताम्बुरुह n. *eine rothe Lotusblüthe* R. 7,8,9.

रक्ताम्र (रक्त + आम्र) m. *eine best. Pflanze*, = कोशाम्र Rigân. im ÇKDa.

रक्तारुण (रक्त + अ°) adj. (f. आ) *blutroth* Kathâs. 21,14.

रक्तार्बुद (रक्त + अ°) m. *Blutgeschwulst* Malamâsat. im ÇKDa. — Vgl. शोणितार्बुद unter अर्बुद 4).

रक्तार्मन् (रक्त + अ°) n. *eine best. Augenkrankheit* Mâdhavakara im ÇKDa.; vgl. लोहितार्मन् unter अर्मन्.

रक्तार्शस् (रक्त + अ°) n. *eine Form der Hämorrhoiden* Bhâvapr. im ÇKDa.

रक्तालु (रक्त + आलु) m. *Dioscorea purpurea* Rigân. im ÇKDa. °क m. dass. Suçr. 1,223,3.

रक्ताशय (रक्त + आ°) m. *viscus in which the blood is contained or secreted, viz. the heart, the liver, and the spleen* Wilson.

रक्ताशोक m. *roth blühender Açoka* Mucc. 76. Spr. 2380. Varâh. Bṛh. S. 29,2. 43,42. Kathâs. 71,248.

रक्ति (von रञ्ज्) f. 1) *Reiz, Lieblichkeit;* s. रक्तिमन्. — 2) *das Hängen an, Zugethansein* Çabdârthak. bei Wilson. रात्रादिषु Schol. zu Çiç. 50. — 3) = रक्तिका Colebr. Alg. 2.

रक्तिका (von रक्ति oder रक्त) f. *Abrus precatorius* Ratnam. 33. *das Korn* als Gewicht = $^1/_{80}$, $^1/_{7}$ oder $^2/_{15}$ Mâshaka Çârîr. Saṃh. 1, 1, 15. 6,11. Colebr. Alg. 2. das wirkliche Gewicht desselben wird nach Durchschnitten auf 1,6 bis 1,8 Gran Troy-Gewicht bestimmt, J. As. S. Lond. N. S. 2,153. Schol. zu Kâtj. Çr. 4,4,28. 15,6,30. 20,1,6. Prâjâçittapr. 7,*a*,4. Burn. Intr. 597. Weber, Kṛshṇaj. 307.

रक्तिमन् (von रक्त) m. *Röthe* Kuvalaj. 117,*b*, 8. 138,*b*, 2. Schol. zu Naish. 22,52. Sarvadarçanas. 25,12.

रक्तिमन् (von रक्ति) adj. *reizend, lieblich:* गीत Kathâs. 86,7.

रक्तेक्षु (रक्त + इक्षु) m. *rothes Zuckerrohr* Rigân. im ÇKDa.

रक्तेरण्ड (रक्त + ए°) m. *rother Ricinus* Bhâvapr. und Rigân. im ÇKDa.

रक्तैर्वारु (रक्त + ए°) m. *eine Gurkenart*, = इन्द्रवारुणी Rigân. im ÇKDa.

रक्तोत्क्लिष्ट (रक्त + उ°) m. *eine best. Augenkrankheit* Çârîr. Saṃh. 1,7,87.

रक्तोत्पल (रक्त + उ°) 1) m. *Bombax heptaphyllum* Rigân. im ÇKDa. — 2) n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* AK. 1,2,3,41. Trik. 1, 2, 33. H. 1163. Ratnam. 150. R. 4,44,39. Varâh. Bṛh. S. 29, 9. रक्तोत्पलाभ adj. *die Farbe der Nymphaea rubra habend* Gaṇîdu. im ÇKDa.

रक्तोपल (रक्त + उ°) n. *Röthel, rubrica* Hin. 133.

1. रक्ष्, रक्षति (पालने, Dhâtup. 17, 6. रक्त, रक्षितव्, रक्षितृ, रक्षितुम् (in der späteren Sprache), रक्षिष्यति; in der älteren Sprache, desgleichen in der späteren, aber hier nur aus metrischen Rücksichten, auch med.; partic. रक्षित; *bewachen, bewahren, beschützen, hüten, behüten, in Acht nehmen, erhalten, erretten, sorgen:* स नो रक्षिषदुरितात् RV. 7,12,2. 15,3. 18. नाकं रक्षेथे सुभिरक्तिभिर्हितम् 1,34,3. 41,1. व्रता रक्षन्ते धर्मता: मेहनाभि: 62,10. अमृतत्वम् 96,6. अमुर्णम् 2,27,4. भुवनानि 1,160,2. ये मुंगीया रक्षसि 2,23,3. शतं मा पुर आयसीररक्षन् 4,27,1. AV. 11,5,3. 12,1,18. Çat. Br. 2,1,4,15. अश्वम् 13,7,*a*,3. सोमम् Kâtj. Çr. 8,9,25. मातेव पुत्रावतस्व Praçnop. 2,13. तेन तेन अरीरेण, स रक्ष्यते Çvetâçv. Up. 5,10. वयो राजन्गुप्तिता रक्षमाणा: entweder passivisch oder Fehler für रक्ष्यमाणा: AV. 18, 4, 70. — (राज्ञा) रक्षता प्रजा: M. 7, 36. 8, 307. 10, 118. fg. 11, 23. Spr. 1830. 3204. 4926. Varâh. Bṛh. S. 27, 3. प्रजा रक्षत्व R. 7,59,*a*,13. भार्यायां रक्ष्यमाणायां प्रजा भवति रक्षिता। प्रजायां रक्ष्यमाणायामात्मा भवति रक्षित: ॥ MBh. 3,529. रुद्रा यविष्ठो मरुद्गणो। रक्षन्तु त्वाम् 2256. 1,6153. 3,2519. 2711. मा रक्षी: 10562. अरातीय: सर्वदास्मान् Bhatt. 3,13. 9,79. 15,87. MBh. 3,11814. 5,5431. 7230. 7234. R. 1,32,6. 2,51,6. 8. 86,7 (94,8 Gorr.). 112,27. R. Gorr. 2,30,28. 3,51,37. यो रुनिष्यति वध्यं वो रक्ष्यै रक्षति च द्विषम् Çiç. 135. Ragh. 2, 50. तं रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि Spr. 2720. यथा शक्तिमतो पतिम्। रक्षन्ति प्रमदा पत्युं रक्षाम्यहे तथा Kathâs. 13,163. रक्षाम्यहे शरीरं ते तत्सुखं स्वपिहि 18,115. 62,82. Bhâs. P. 1,16,22. 18,43. 18,73,21. रात्रौ निशि रक्षन्विनिर्यायी *Wache haltend* Kathâs. 88,14. रक्षते दानवान् MBh. 1,2196. 6209. 3,10570. 11816. 4,1292. 5,7068. 7256. 7484. Hariv. 10011. R. 1,61,18. 5,36,18. Kathâs. 26,148. Mâlav. P. 52,20. रक्षेत्कन्यां पिता विद्वान् पति: पुत्रास्तु वार्द्धके। अभावे ज्ञातयस्तेषां न स्वातन्त्र्यं क्वचित्स्त्रिया: ॥ Spr. 4928. 1774. 4183. M. 9,6. 9. MBh. 13,2221 (wo रक्ष्यसे mit der ed. Bomb. zu lesen ist). पशून् *das Vieh hüten* M. 9,328. MBh. 1,698 (mod.). 699. 718. R. Gorr. 2,32,41. चोरादिभ्य: प्रजा नृप: रक्षन् Bhâg. P. 4, 14, 17. Spr. 4943. MBh. 4, 2104. R. 1, 48, 21. Vet. in L.A. (III) 10, 2. रक्ष

लोकांश्च देवांश्च शक्रं च महतो भयात् MBh. 3,8762. Bhaṭṭ. 3,16. किल्बिषात् R. 2,106,28 (113,22 Gorr.). विघ्नतः Ragh. 11,24. व्यसनतः Bhâg. P. 1,13,32. सर्वतो रक्षते यो माम् Hariv. 7115. Bhâg. P. 9,22,35. परद्रव्यान्मनो रक्ष परदारात् Hariv. 14687. एवमात्मा बन्धैश्च रक्ष्यते Mârk. P. 95,17. वसुधाम्, क्षितिम्, क्ष्माम् *das Land —, das Reich beschützen* so v. a. *regiren* MBh. 3,2238. Râǵa-Tar. 1,99. 192. 3,97. 6,190. राष्ट्रम् Spr. 4803. ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षतीति Çâk. 13. सृजति, रक्षति, संहरति Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,98. रक्षन्ती जीवितं पितुः MBh. 1,6186. R. 6,3,1. रक्षस्व जीवितम् 16,69. अपि पुत्रकलत्रैर्वा प्राणान्रक्षेत पण्डितः Spr. 149. 1319. कराभ्यामक्षिणी रक्षन् Râǵa-Tar. 3,408. नागानां चापि यज्ञो ऽयं रक्ष्यते हि महर्षिभिः R. Gorr. 1,41,12. Bhaṭṭ. 2,27. आपदर्थं धनं रक्षेत् Spr. 355. लब्धं रक्षेदवेक्षया 234. 233. राज्यम् R. 2,23,29. 31,20 (med.). 73,12. 112,11. यथोद्धरति निर्दाता कक्षं धान्यं च रक्षति Spr. 4803. 2719. Ḱaurap. 35. रक्षेद्विवरमात्मनः Spr. 1369. सेवधिस्ते ऽस्मि रक्ष माम् M. 2,114. MBh. 1,5573. Râǵa-Tar. 2,97. शेषं कस्यापि रक्षसि Spr. 2384. सुनिहितमपि चार्थं दैवतै रक्ष्यमाणम् 5010. 5254. रहस्यं चिररक्षितम् *bewahrt* Kathâs. 45,50. भवानिमां प्रतिकृतिं रक्षतु *verwahre* Çâk. 90,2. अपि रक्ष्यते भवता रहस्यनिक्षेपः Vikr. 18,6. एतावुरणकौ — न्यासौ रक्षस्व Bhâg. P. 9,14,21. Râǵa-Tar. 5,220. कुलं मानं च रक्षता Mṛḱḱh. 174,18. धर्मं स्वं रक्षमाणेन MBh. 3,8886. धर्मो वा यदि रक्ष्यते R. 5,84,15. Bhâg. P. 3,16,18. स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च। स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन्हि रक्षति ॥ M. 9,7. शीलमेवैकं ररक्ष Kathâs. 13,135. स्वाकारं रक्षन् Pańḱat. 23,11. तस्याबन्ध्यप्रसादत्वं रक्षन्तः पितृमन्त्रिणः Râǵa-Tar. 1,78. ऋधग्यतो अनिमिषं रक्षमाणः *sorgfältig achtend auf* ṚV. 7,61,3. 9,87,2. 1,146,4. व्रतानि 6,8,2. 8,56,13. सखा सख्युर्निमिषि (mit loc.) रक्षमाणाः 1,72,5. तद्गतिम् — पुण्यतीर्थगमनाय रक्ष मे so v. a. *sichre mir* Ragh. 11,87. रक्षन्ति भावि कल्याणं भाग्यान्येव Kathâs. 20,19. रक्षन्तस्तपसि बलं च लोकपालाः Kir. 5,50. *in Acht nehmen* so v. a. *nicht antasten:* या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति VS. 19,10. *sich hüten vor, verhüten:* तन्निनेत्रस्य लङ्घनम्। एकस्य रक्षेः Kathâs. 20,65. मृत्युः शक्यो न रक्षितुम् 72,333. पिशुनप्रेरणा प्रभोः रक्षितुं यदि पार्यते Spr. 4183. med. *sich hüten* d. h. *sich flüchten:* उदप्रुतो न वयो रक्षमाणाः ṚV. 10,68,1. vielleicht *verstecken:* रक्षते शिरः 9,68,4. — partic. रक्षित (वर्तमाने) Kâr. zu P. 3,2,188. = त्रात u. s. w. AK. 3,2,55. H. 1497. *geschützt, bewacht, bewahrt, erhalten;* von Personen M. 11,23. MBh. 3,529. Spr. 2009. रक्षितं व्यसनेभ्यश्च मित्रम् 583. *gehütet:* स्त्री M. 9,15. Spr. 3303. धुर्यरक्षिता श्रीः Kathâs. 18,137. उर्वी Ragh. 2,66. कन्यान्तःपुरे रक्षापुरुषरक्षिते Pańḱat. 44,12. दैवरक्षित (Gegens. दैवहत) Spr. 208. लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः। रक्षितं वर्धयेत् 233. fgg. तान् (प्राणान्) निघ्नता किं न हतं रक्षता किं न रक्षितम् 1319. तिलगुल्मं सदा सिञ्चेद्यावत्पुष्पेद्धि रक्षितः *gehütet, gepflegt* Hariv. 7874. *verwahrt* Vet. in LA. (III) 14,3. Hit. 86,18. गोरक्षित *aufbewahrt für* P. 2,1,36. रक्षितम् adv. *wohl verwahrt* Kathâs. 53,64. धर्म *beobachtet, aufrechterhalten* Spr. 4247. Mârk. P. 72,2. 4. अरक्षित *ungehütet* M. 9,12. Spr. 5285. अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम् 208. मन्त्र *nicht geheim gehalten* 199. सुरक्षित *wohl gehütet, gut bewacht* M. 9,12. Kathâs. 30,113. वेश्मन् MBh. 3,2144. 2155. सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति 208. न्यासमिव राज्यं सुरक्षितम् Râǵa-Tar. 2,159. मन्त्रं सुरक्षितम्। कुर्यात् *er stelle die Berathung sehr geheim an* Spr. 4692. Vgl. देवरक्षित, बुद्ध°, महा°, मैत्रेय°.

— caus. रक्षयति, अररक्षत् P. 7,4,93, Sch. *schützen:* को ऽस्मानत्र वने रक्षयिष्यति Pańḱat. 70,13. *bewahren:* स्वाकारं रक्षयेद्यस्तु स भृत्यो ऽर्हो महीभुजाम् Spr. 1367.

— desid. रिरक्षिषति *zu beschützen beabsichtigen vor* (abl.): रिरक्षिषन्तः MBh. 5,2368. 6,3760 (रिर° zu lesen). 4695.

— intens.: रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः *der fleissig gehütet —, beobachtet wird* ṚV. 4,3,14. *fleissig hütend* Sâj.

— अधि *bewachen, behüten:* त्रैलोक्यं यो ऽधिरक्षति Hariv. 15811. besser यो हि रक्षति die neuere Ausg.

— अनु *hütend nachgehen* Çâṅkh. Çr. 16,10,11. के पृष्ठतो ऽन्वरक्षन्त (पृष्ठतश्चाप्यभवन् ed. Bomb.) MBh. 7,7330. *behüten, beschützen;* med. R. 6,103,2.

— अभि *bewahren, behüten, beschützen* ṚV. 1,136,5. 163,5. 4,53,5. यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथ 8,47,1. 9,114,3. 10,86,4. 157,4. AV. 10,6,12. 7,23. 12,3,11. पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम् 2,13,1. 3,12,8. Çat. Br. 2,3,4,40. Âçv. Çr. 2,5,2. 12. Kauç. 135. Ḱhând. Up. 4,17,10. भीष्ममेवाभिरक्षन्तु Bhag. 1,11. दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति Spr. 4162. 4920. MBh. 4,1535. 5,711. 6,542. Hariv. 2471. 7115. R. 2,25,3. fgg. धात्री स्वपुत्रवत्स्कन्दं शूलहस्ताभ्यरक्षत MBh. 3,14365. 6,544. 13,2265. उपर्यन्तःपुरे सा (कन्यका) च रत्नमित्यभिरक्ष्यते Kathâs. 3,58. 78,131. बलं भीष्माभिरक्षितम् so v. a. *befehligt* Bhag. 1,10. MBh. 4,425. R. 2,2,4. 25,6. 52,77. R. Gorr. 1,35,30. 2,27,24. 5,43,4. 73,34. अधर्मात्त्वभिरक्ष माम् MBh. 7,2081. एवं बहुभ्यः शत्रुभ्यः प्रज्ञयात्माभिरक्षितः Kathâs. 33,130. Bhâg. P. 1,18,24. ताभ्यः स्त्रियो ऽभिरक्ष्याः Varâh. Bṛh. S. 78,10. येन वीरः कुरुक्षेत्रमभ्यरक्षत् MBh. 4,161. यः कृत्स्नामटवीमेतां पर्यन्तस्थो ऽभिरक्षति Kathâs. 29,135. 115,10. स्वगृहं तं कालं सो ऽभ्यरक्षत MBh. 13,2306. Hariv. 8999. वसुंधराम् — बाहुवीर्याभिरक्षिताम् R. 2,88,18. ऋष्यमूकः — शिशुनागाभिरक्षितः 3,76,28. Kathâs. 39,28. सत्त्वमिन्द्रो ऽभिरक्षतु Suçr. 1,17,5. प्राणा यन्मे ऽभिरक्षिताः Bhâg. P. 9,5,17. ये ऽभ्यरक्षन्पुरातनीं तस्य देवस्य सृष्टिम् MBh. 13,1375. यो ग्रह इवार्थमभिरक्षति Bhâg. P. 5,26,36. एष कल्पतरुः कस्य कृते ऽमोघो ऽभिरक्ष्यते *gehegt —, gepflegt werden* Kathâs. 90,21. यथा बीजाङ्कुरः सूक्ष्मः परिपुष्टो ऽभिरक्षितः Spr. 2316. आकारमभिरक्षेत *bewahre* MBh. 1,5616. 2,2183. आकारमभिरक्षन्ती प्रतिज्ञां धर्मसंहिताम् 4,472. व्रतानि *beobachten* ṚV. 4,53,4. 7,83,9. 9,73,3. — Vgl. अभिरक्षितर्.

— अव scheinbar in der Stelle: रमन्ते चोपहासेन पुरुषाः पुरुषैः सह। अन्योऽन्यमवरक्षन्तो देशे देशे समैथुनाः ॥ MBh. 8,2115, wo aber wohl अवक्षरन्तो *begiessend, besudelnd* (mit Samen) zu lesen ist. Der bei der Umstellung erscheinende seltene Fuss — ⏑ — — mag zur Erhaltung des einfachen Schreibfehlers beigetragen haben.

— आ *behüten, beschützen, bewahren, bewachen:* आ मा मित्रावरुणेह रक्षतम् ṚV. 7,50,1. द्वाराणि यन्त्रैरारक्षितानि MBh. 15,186. भरतारक्षितं पुत्रराज्यम् R. 2,52,58. — Vgl. आरक्ष fgg.

— उप s. उपरक्षणः प्रनि, °रक्षति Vop. 8,73.

— परि *bewachen, bewahren, beschützen, hüten, behüten, in Acht nehmen, erhalten, erretten, servare:* घ्रंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गयम् ṚV. 5,44,7. जिघत्सुभ्य इमं मे परि रक्षत AV. 8,2,20. परिरक्षेदिमाः प्रजाः (राजा) M.

7,142. MBh. 3,528. 15708. R. Gorr. 2,50,5. तां कन्यां वासुकिः पर्यरक्षत MBh. 1,1642. 1940. 2948. 3,14366. 7,3661. Harıv. 9083. 9690. परिरक्ष्यमाण Bhâg. P. 5,9,21. परिरक्षित 24,28. 9,9,40. MBh. 5,6035. योषितः परिरक्षितुम् *hüten* M. 9,10. यथा नः पर्जन्यः परिरक्षतु Sâk. 1,17,2. तद्दिदं परिरक्ष्यतां वपुः Kumâras. 4,44. आत्मानं परिरक्षस्व MBh. 1,6195. शक्यस्तेनानुमानेन पुरा ऽपि परिरक्षितुम् *erhalten —, gerettet worden* Spr. 2129. परिरक्ष यस्मदीयप्राणान् Pañkat. ed. orn. 58,12. आत्मानं परिरक्षस्व पुरीं चेमां सराक्षसाम् R. 5,88,24. 23,17. सीता च परिरक्षिता *gerettet* 56,144. Mṛicch. 110,17. अयोध्यां परिरक्षति *so v. a. beherrscht* R. Gorr. 2,109,49. Harıv. 733. 3714. Spr. 5063. Bhâg. P. 5,4,17. मद्भयपरिरक्षिते ऽस्मिन्वने Pañkat. 30,24. 215,7. नक्षेयं राघवस्यार्थे जीवितं परिरक्षता *schont* R. 6,4,27. न स्म पश्यामहे कंचिद्यः प्राणान्परिरक्षति MBh. 6,1062. *schonen, vor Berührung behüten* Sâk. 1,98,16. शिष्टे मौनम् — काकेभ्यः पर्यरक्षत *aufbewahren* R. 2,96,38 (105,27 Gorr.). एष चूडामणिर्दिव्यो मया सुपरिरक्षितः 5,37,7. ये विप्राः — ब्राह्मीं वाचं परिरक्षन्ति MBh. 13,4886. स्वधर्मं परिरक्षता *treu bewahrend* R. 4,24,10. 5,51,13. प्रतिज्ञाम् R. Gorr. 2,50,5. लोकयात्रामिमां कृत्स्नां परिरक्षत्त यामते *so v. a. bedacht auf* Harıv. 6811. *vermeiden* Sâk. 2,15,12. med. mit gen. *Jmd vermeiden, machen, dass man nicht mit Jmd zusammenkommt* R. 5,73,20. — Vgl. परिरक्षक fgg.

— संपरि *beschützen*: लोकान्संपरिरक्षितुम् R. 7,104,3.

— प्र *bewahren, schützen vor* (abl.), *erretten von*: कार्कशेन द्वितीयेन सर्पात्पान्थः प्ररक्षितः Spr. 147. Bühler's Ausg. des Pañkat. liest जीवितं परिरक्षितम् st. सर्पात्पान्थः प्र°. — Vgl. प्ररक्ष fg.

— प्रति 1) *behüten, beschützen*: यदि शूरस्तथा लेभे (लेभं ed. Bomb.) प्रतिरक्षेत्तथा भये MBh. 12,3596. विद्या ह्याशाः प्रति रक्षत्यकें AV. 10,8,26. सत्यौ (so die ed. Bomb.) प्रतिज्ञां तां पार्थेन प्रतिरक्षता *treu haltend* MBh. 8,3562. — 2) *fürchten, sich retten vor*: प्रतिरक्षत्रमुर्यम् VS. 8,24.

— वि *behüten, beschützen, bewahren*: सर्वं भूतम् AV. 10,6,18. 13,2,41. राज्ञो राष्ट्रं वि रक्षति 11,5,17. अन्योऽन्यं समुपाश्रित्य विरक्षन्ति रणाजिरे न त्यक्ष्यन्ति रणाजिरम् ed. Bomb.) MBh. 7,6410. द्रोणं च के व्यरक्षत्त 7329.

— सम् *bewachen, bewahren, beschützen, hüten, behüten, erhalten, erretten, sorgen*: संरक्षतो मुनिगणान्निग्रतो राक्षसान्मम R. 3,10,25. 7,108,27. Spr. 1828. Verz. d. Oxf. H. 257,a,N. 3. संरक्ष्यमाणो राज्ञा M. 7,136. MBh. 7,220. 6059. R. 5,19,33. Kathâs. 20,87. Râja-Tar. 3,39. संरक्षित Harıv. 9072. Mṛicch. 105,13. 110,15. Râgat. 4,35. 13,65. Kathâs. 9,80. संरक्षेत्सर्वतश्चैनं पिता पुत्रमिवौरसम् M. 7,135. पित्रा संरक्षितं शक्रात् Bhatt. 8,8. केदारान् — मृगव्याघ्रादिभ्यः संरक्षमाणमङ्गिरःप्रवरमुनम् Bhâg. P. 5,9,14. प्राणैः संरक्षितैः सर्वं पतो भवति रक्षितम् Spr. 3163. कर्कं संरक्ष्य Râja-Tar. 5,216. अनिद्र एव षड्रात्रं स संरक्षन्मुनेः क्रतुम् R. Gorr. 1,33,6. मधुवनं संरक्ष त्वम् 5,63,27. धर्मं संरक्षते दण्डस्तस्मैवार्थं ब्रवीषि च। कामं संरक्षते दण्डः MBh. 12,4126. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् Spr. 3030. संरक्षेन्मद्यवीजम् Kâm. Nîtis. 11,53. मद्यं संरक्षेत् 54. ईप्सित्योः संरक्षतेर्गोरवम् *bewahren* Spr. 330. आत्मनश्च पतेश्च वृत्तिं संरक्ष *sichre* MBh. 13,3080. *aufbewahren, verwahren*: तदानवशरीरं ते संरक्ष्य स्थापितं मया Kathâs. 45,30. — Vgl. संरक्षण fgg.

2. रक्ष् (= 1. रक्ष्) adj. am Ende eines comp. *bewachend, hütend* u. s. w. Vop. 3,136. — Vgl. गो°.

3. रक्ष् (eigentlich सक्ष् = रिष्, रिष्) *beschädigen, verletzen*: मा नो रक्षीर्दक्षिणां नीयमानाम् AV. 5,7,1. — Davon रक्षस्.

रक्ष (von 1. रक्ष्) 1) nom. ag. (f. ई) *Wächter, Hüter*: नृपस्य रक्षान्यरिक्षरामि (रक्षी v. l.) Mṛicch. 53,22. 58,18 (s. d. Anmm.). am Ende eines comp. *bewachend, beschützend, hütend, erhaltend*: नृप° (भृत्य) Spr. 783, v. l. प्रतिकाररक्षी *Thorwächterin* Râgat. 6,20. नदीरक्ष R. 2,84,7. गजपाद° MBh. 4,2092. जगद्रक्ष Harıv. 15686. तेषां धर्मैकरक्षाणाम् *bewahrend, beobachtend* R. 2,73,19. Vgl. क्षेत्र°, गो°, चक्र°, तुरग°, पाद°, पुर°, पृष्ठ°, लोक°, सेना°, सोम°. — 2) रक्षा a) *Schutz, Erhaltung, Bewahrung* H. an. 2,569. Med. s. h. 23. Nir. 5,23. स्याद्रक्षो नामधेयं रक्षासमन्वितम् M. 2,32. 4,133. MBh. 3,12772. Çik. 47. नियुक्तो रक्षाविधौ Kathâs. 34,72. Bhâg. P. 2,3,8. 10,82,6. कृतरक्ष *dem Schutz geweiht ist* Sâk. 1,17,21. यदश्वरक्षम् Râgat. 2,40. das obj. im gen. MBh. 3,2624. रक्षां करोतु मतनं बृहद्बालस्य सर्वशः 5,5429. R. 3,14,21. Râgat. 2,8. Mârk. 44. Bhâg. P. 1,8,13. Mârk. P. 96,43. Pañkat. 1,3,15. fg. Pañkat. 51,14. 157,7. रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः M. 7,3. जगतः Bhâg. P. 4,8,7. मयि सृष्टिरियं लोकानां रक्षा युष्मास्ववस्थिता Kumâras. 2,28. सृष्टिरक्षाविनाशनैः (so ist zu lesen) Harıv. 14932. Bhâg. P. 12,7,9. 14. गोविप्रसुरसाधूनां छन्दसाम् — धर्मस्यार्थस्य चैव ह 2,24,3. वनस्य R. 5,60,20. यज्ञस्य 1,20,4. यज्ञस्य Sâk. 1,10,10. das obj. im comp. vorangehend (Accent eines solchen comp. gaṇa घोषादि zu P. 6,2,35): भृत्य° Bhâg. P. 2,4,18. Kathâs. 10,164. 23,2. Râja-Tar. 2,108. Bhâg. P. 3,13,12. प्रजासर्ग° 4,30,31. लोक° MBh. 1,1152. तपोवनसस्य° Çik. 17,20. आवास° Pañkat. 184,8. गृह° Hit. 50,6. शरीर° Râgat. 2,4. देह° LA. (III) 91,6. क्षिति° Çik. 179. समयसेतु° Bhâg. P. 5,4,8. सङ्घ° Hit. 115,1, v. l. पद्माशालिवनस्फीति° Râja-Tar. 3,22. जीवित° MBh. 12,4274. द्यौचित्यान्वय° Kathâs. 1,11. शीत° *Schutz vor der Kälte* Pañkat. 93,7. कृरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षाम् Bhâg. P. 6,8,10. पद्य° (am Ende eines adj. comp., f. या) *Schutz auf der Reise* Kathâs. 43,258. Vgl. नगर° — b) *Wache* (concret): नृपस्य रक्षी परिरक्षामि Mṛicch. 53,22, v. l. विधाय रक्षाम् Kâm. Nîtis. 13,44. Vgl. अङ्ग°. — c) *was zum Schutze dient, eine zum Schutz einer Person vorgenommene Handlung; Amulet, mystische Zeichen*: कृत्वा रक्षां निरामयाम् R. 1,62,18. कृत्वा मनोमयीं रक्षाम् Amṛitan. Up. in Ind. St. 9,30. पशोर्दोहात्क्षणेभ्यो वा: सर्वं बालस्य सर्वतः। रक्षां विदध्युरे सम्यग्गोपुच्छभ्रमणादिभिः॥ गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्। रक्षां चक्रुश्च शकृता द्वादशाङ्गेषु नामभिः॥ Bhâg. P. 10,6,19. fg. Sâk. 1,16,13. 13,71,13. °विधान 2,16,11. सर्वरक्षासमन्वित Weber, Kṛishṇaj. 269. 283. घोषधीं चापि सिद्धार्थां विशल्यकरणीं तथा। चकार रक्षां कौसल्या मन्त्रैरभिजजाप च॥ R. 2,25,36. °बन्ध Verz. d. B. H. 136,a,132. (Verz. d. Oxf. H. 35,a,13). VP. 506. रक्षाश्च चैव गृह्णे लेख्याः Mârk. P. 51,37. — d) *Schutzgottheit*; vgl. पक्ष°, मक्षा°. — e) *Asche* (als *Schutzmittel*) H. 828. H. an. Halâ. 1,69. Çabdar. im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 184,a,31.

रक्षेश (1. रक्षस् + ईश) m. Bein. Râvaṇa's H. 706.

रक्षक (von 1. रक्ष्) 1) nom. ag. *Wächter, Hüter* Kathâs. 43,22. fg. 46,144. 208. 63,146. अधुनाहं ते सर्वचिक्षेषु रक्षकः 66,126. Pañkat. 1,7,58. Pañkat. 8,25. Hit. 42,5. बालानाम् Pañkat. 4,8,62. Hit. 128,8. गवादिरक्षकाः Kathâs. 30,95. लोक° Harıv. 14940. कीचकवन° Kathâs. 46,106. शस्य° Hit. 81,15. रक्षिका *Wächterin, Hüterin* Kathâs. 74,167. अन्तःपुर° 103,14. अमृतस्य यत्। रक्षकं चक्रयन्त्रम् 29,47. Vgl. अङ्ग°,

गो°, धन°, पञ्च°, भूमि°, मार्ग°, रात्रि°. — 2) रक्षिका f. = रक्ष 2) c): धनेन विधिना यस्तु रक्षिकाबन्धमाचरेत् । स सर्वदोषरक्षितः सुखं संवत्सरं वसेत् ॥ Haribhaktivilâsa 31 im ÇKDa.

रक्षकाम्बा (रक्षक + अ°) f. N. pr. eines Frauenzimmers Hall 203.

रक्षण (von 1. रक्ष्) 1) nom. ag. *Beschützer, Hüter:* Vishṇu MBh. 13, 7048. — 2) f. आ *das Beschützen, Hüten:* प्रोषमे रक्षणाभिः Çiç. 103, v. l. आत्म° Pañcar. 1, 14, 107. — 3) f. ई *Zügel* Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 5, 56. — 4) n. proparox. *das Bewachen, Schützen, Behüten, Bewahren, Schutz:* रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभिः RV. 4, 3, 14. sg. M. 8, 39. 205. 10, 80. 11, 225. Jâśn. 3, 297. MBh. 5, 3433. R. 2, 30, 28. Çiç. 103. Spr. 1828. Bhâg. P. 5, 24, 3. Pañcar. 1, 2, 34. Hit. 114, 7. प्रजानाम् M. 1, 89. R. Gorr. 2, 43, 28. Ragh. 1, 24. Spr. 1830. दुर्बलानाम् M. 8, 172. आर्यव्रतानाम् 9, 253. भार्यायाः MBh. 1, 1870. 6150. R. 2, 46, 9. त्रैलोक्यस्य R. 1, 1, 5. Ragh. 11, 5. Çiç. 27, 5. Pañcar. 1, 7, 72. Hit. 13, 13. पशूनाम् *das Hüten des Viehes* M. 1, 90. 8, 410. 9, 326. योषितम् 16. कुमाराणाम् 7, 152. स्वस्त्यस्य Suçr. 1, 3, 6. 122, 4. वाजिनाम् *Pflege der Pferde* Varâh. Bṛh. S. 86, 33. das obj. im loc.: वशायुत्रानु चैव स्याद्रक्षणं निष्कुलासु च । पतिव्रतासु च स्त्रीषु M. 8, 28. im comp vorangehend: अक्षितलोक° Bhâg. P. 4, 20, 13. कुल° R. 2, 68, 22. वर्णाश्रम° Ragh. 14, 67. LA. (III) 88, 9. व्याधित° Suçr. 1, 124, 4. गोविप्र° Bhâg. P. 7, 11, 24. क्षेमतुरंग° Ragh. 3, 38. जीवित° Kathâs. 61, 75. — उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम् Spr. 499. इतदेव हि पाणिडत्यं यत्स्वल्पाद्भूरिरक्षणम् 1503. मान° R. 6, 100, 13. *eine prophylaktische Cerimonie* Mânn. P. 51, 38. — Vgl. अग्नि°, अङ्ग°, गर्भ°, पाद°, पुत्र°.

रक्षणारक m. *Hornverhaltung* Çabdar. im ÇKDa. रक्षणोरक v. l.

रक्षणि (von 1. रक्ष्) f. *eine best. Pflanze,* = त्रायमाणा Râjân. im ÇKDa.

रक्षणीय (wie oben) adj. *zu beschützen, zu behüten:* भर्तव्या रक्षणीया च पत्नी हि पतिना सदा MBh. 3, 2734. Harîv. 10951. Mâlav. 53, 13. Spr. 2420. Kathâs. 18, 237. 28, 134. Hit. 107, 9. रक्षणीया विशेषेण परदारा मनोभुवा R. 3, 36, 14. न यस्य वध्यो न च रक्षणीयः Bhâg. P. 8, 5, 22. Pañcat. 83, 7. 211, 20. पुत्रो ऽयं भवता नकुलादरक्षणीयः 238, 18. इदं राष्ट्रम् Kathâs. 12, 39. तेजस् Ragh. 11, 61. कन्या Pañcat. 34, 23. रक्षणीयावरेन्द्राणाम् — कौशलात् *verdienend beherrscht zu werden* R. 2, 50, 10. *zu vermeiden, wovor man sich zu hüten hat:* स्त्रीवैरम् Kathâs. 15, 134. तैलबिन्दुनिपातश्च रक्षणीयस्त्वया 27, 44.

रक्षणीरक s. रक्षणारक.

रक्षपाल m. *Hüter, Wächter* Pañcat. 217, 4. 232, 2. °क m. dass. Wasse, Kaśmîraç. 269.

रक्षपुरुष Pañcat. ed. orn. 4, 18 fehlerhaft für रक्षापुरुष.

रक्षभगवती f. = प्रज्ञापारमिता Burn. Intr. 51. 462. fg. रक्षा भ° Lot. de la b. l. 533.

1. रक्षस् (von 1. रक्ष्) adj. *hütend* in पथि°.

2. रक्षस् (von 3. रक्ष्) n. *Beschädigung:* मा नो रक्षो अघ नेद्यानुमार्वताम् RV. 7, 104, 22. मा नो रक्ष अघ वेशीन्मा यातुर्यातुमार्वताम् 8, 49, 20. — 2) concret *Beschädiger,* Bez. *nächtlicher Unholde, welche das Opfer stören und den Frommen schädigen,* Nir. 4, 18. gaṇa भीमादि zu P. 3, 4, 74. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 188. AK. 1, 1, 6. 56. H. 187. Halâj. 1, 73. 5, 4. coll. RV. 1, 21. 5. 133, 5. शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे 5, 2, 9. 6, 18, 10. 7, 104, 1. 4. 13. 22. AV. 4, 17, 5. 7, 70, 2. 8, 2, 12. उन्मेते रक्षस्परि 8, 111, 3. यातुं रक्षः संसृजनात् Âit. Br. 2, 7. plur. RV. 7, 15, 10. 38, 7. V8. 2, 23. 29. द्रुमके रक्षसो गोवा यवि कृतामि 5, 32. AV. 1, 33, 2. 2, 4, 4. 12, 1, 50. 14, 2, 24. न यत्ते रक्षसो कीर्तयेत्कानि रक्षस्यृतेरणा वै पशवः Âit. Br. 2, 7. तच्चद्रक्षस्तस्माद्रक्षांसि (vgl. R. 7, 4, 13) Çat. Br. 1, 1, 4, 16. 6, 4, 11. 8, 4, 16. नाष्ट्रा रक्षांसि 1, 4, 21. 2, 3, 5 (so in Buch 1—5, in den späteren रक्षो-सि नाष्ट्राः. Âçv. Gṛhy. 3, 4, 1. यमुरक्षांसि Satapr. Br. 1, 2. TS. 2, 4, 4, 1. 6, 3, 2. 2. 6, 3, 1. Çat. Br. 13, 4, 3, 10. रक्षोघ्नाः Gobh. 1, 4, 18. रक्षोदेवत्य Kauç. 4. रक्षोविघ्ना Çâṅkh. Çr. 16, 2, 19. रक्षांसि M. 1, 48. 3, 170. 204. 230. 238. 4, 199. 7, 23. 38. 12, 44. Bhag. 11, 36. R. 1, 9, 49. Suçr. 1, 71, 2. 117, 9. Çiç. 28, 13. यत्तरक्षःपिशाचाः M. 1, 37. 11, 95. गन्धर्वोरगरक्षसाम् 3, 196. वित्तेशो यत्तरक्षसाम् Bhag. 10, 23. 17, 4. MBh. 3, 13581. 8, 2101. R. 1, 1, 42. 55, 17. Suçr. 1, 114, 8. Varâh. Bṛh. S. 13, 11. 46, 14. 92. 31, 6. 68, 108. रक्षोगणाः R. 4, 40, 37. रक्षोराज Vet. in LA. (III) 4, 9. Kinder der Khasâ Harîv. 234. sg. von einem einzelnen Rākshasa: सर्पिं वै रक्षो ऽग्रहीत् Pañcav. Br. 15, 3, 20. MBh. 1, 5993. 7632. R. 1, 1, 45. Vikr. 54, 8. Kathâs. 18, 282. रक्षोभूत 25, 274. दृतङ्कृत्वा गतो रक्षः प्रकर्षेण नरावलः R. 7, 23, 8, 55. दीर्घजिह्वो वा इदं रक्षो यत्तरक्षा यत्तानवलिरक्त्यचरत् Pañcav. Br. 13, 6, 9. रक्षस् = निर्ऋति Weber, Râmây. Up. 302. 305. दुर्नय° *ein* Rakshas *von einem boshaften Könige* Râja-Tar. 5, 416. Nach gaṇa पर्श्वादि zu P. 5, 3, 117 sind die Rakshas ein यातुधानीविसंघ. — Vgl. अघ°, पुरुष°, ब्रह्म°, मह्य°, वि°, सद°, रात्रस.

3. रक्षस् (wie oben) m. *Beschädiger,* Bez. *der* Rakshas, *nächtlicher Unholde:* विध्यं रक्षस्तपिष्ठैः RV. 4, 4, 1. 5, 42, 10. 2, 23, 14. बाधस्व दूरेऽवो रक्षसो अमीवाः 3, 15, 1. 7, 1, 3. 19. यो वो रक्षः शुचिरस्मीत्याहे 104, 16. 8, 23, 14. 49, 10. 19. रक्षा दृंहन्ता चिद्रक्षसः सदांसि 9, 91, 4. AV. 2, 3, 6. 4, 19, 3. 14, 2, 7. — Vgl. रात्रस.

रक्षस्त्व (von 2. oder 3. रक्षस्) n. *Schadenfreude* oder *dämonische Natur:* यो नः कश्चिद्रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः RV. 8, 18, 13.

रक्षस्य adj. *anti-rakschasisch:* तनू P. 4, 4, 121. TS. 2, 3, 12, 1. nach dem Schol. zu P. 4, 4, 128 मन्यवे.

रक्षस्विन् adj. *unhold, rakschasisch* RV. 1, 12, 5. 36, 10. दुःशंसे मर्त्ये दुर्विदंसे रक्षस्विनि 7, 94, 12. 8, 22, 18. 47, 12. 49, 8. 20. वि मृधो जहि रक्षस्विनीः AV. 6, 2, 2. 7, 114, 2.

रक्षःसभम् (2. रक्षस् + सभा) n. *eine Menge von* Rākshasa AK. 3, 6, 3, 27.

1. रक्षा (von 1. रक्ष्) f. s. u. रक्ष.

2. रक्षा f. = राक्षा, लाक्षा *Lack* Mud. 3, 23.

रक्षाकरण्डक (1. रक्षा° + क°) n. *ein Amulet in Form eines Körbchens* Çiç. 103, 12 (im Prâkrit).

रक्षागृह (1. रक्षा° + गृह) n. *das Gemach einer Wöchnerin* (*Schutzgemach* gegen Unholde u. s. w.) Ragh. 10, 69.

रक्षाधिकृत (1. रक्षा + अ°) adj. *mit dem Schutz* (des Landes, des Ortes) *betraut:* भृत्याः Spr. 1943. m. *Polizeibeamter* M. 9, 272.

रक्षाधिपति (1. रक्षा° + अ°) m. *Polizeidirector* Çântis. 24.

रक्षापति (1. रक्षा° + प°) m. dass. Varâh. Bṛh. 18, 17.

रक्षापत्र (1. रक्षा° + पत्र) m. *eine Art Birke,* = भूर्ज Râjân. im ÇKDa.

रक्षापुरुष (1. रक्षा° + पु°) m. *Wächter, Hüter* Pañcat. 8, 24. 44, 12. 192, 12. falschlich रक्षपु° ed. orn. 4, 18.

रक्षापेतक m. *a doorkeeper or porter; a guard of the women's apart*

ments; a cabinnite; an actor, a mime Wilson nach Çaṇḍikâdhak.

रत्नाप्रदीप (1. रत्न + प्र°) m. *eine zum Schutz gegen Unholde brennende Lampe* Kathâs. 28, 1.

रत्नाभूषण (1. रत्न + भू°) n. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienender Schmuck* Suçr. 1, 34, 13.

रत्नाभ्यधिकृत adj. subst. = रत्नाधिकृत MBu. 12, 3273.

रत्नामङ्गल (1. रत्न + म°) n. *eine zum Schutz gegen Unholde u. s. w. vorgenommene Cerimonie* Suçr. 1, 368, 2.

रत्नामणि (1. रत्न + म°) m. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienendes Juwel* Weber, Kṛshṇaj. 269. fg. जगद्रत्नामणेः प्रभोः *eines Fürsten, der als ein solches Juwel die Erde hütet,* Kathâs. 78, 46.

रत्नामल्ल (1. रत्न° + म°) m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. II, 274. fg.

रत्नामोषधि (1. रत्न° + म°) f. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienendes Wunderkraut* Kathâs. 108, 47.

रत्नारत्न (1. रत्न° + रत्न) n. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienendes Juwel* Kathâs. 96, 112. Râǵa-Tar. 4, 584.

रत्नारत्नप्रदीप (1. रत्न° + रत्न°) m. *eine vor Unholden u. s. w. schützende Lampe, die mit ihren Edelsteinen leuchtet,* Kathâs. 32, 89.

रत्नावत् (von 1. रत्ना) adj. *des Schutzes geniessend, geschützt:* स्वामीरत्नावती तस्य भुवेन भूमिः Ragh. 18, 47. Prab. 2, 13.

रत्नासर्षप (1. रत्न° + स°) m. *vor Unholden u. s. w. schützender Senf* Râǵa-Tar. 3, 338. °शर्षप beide Ausgg.

रति (von 1. रत्) adj. am Ende eines comp. im Veda *hütend, schützend* P. 3, 2, 27. — Vgl. पथि°, पशु°, सोम°.

रतिक (von रत्ना) m. *Wächter, Hüter:* °बल Daçak. 75, 3. °पुरुष 92, 12.

रतित 1) partic. adj. s. u. 1. रत्. — 2) m. N. pr. *a)* eines Lehrers der Medicin Suçr. 1, 1, 8. — *b)* eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 40. Verz. d. Oxf. H. 161, *a*, 14. 162, *b*, 22. Siddh. K. zu P. 2, 2, 14. — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras MBu. 1, 2558.

रतितक (von रतित, 1) in द्वार° adj. *auf den Schutz der Frau oder Frauen bezüglich* Verz. d. Oxf. H. 216, *a*, 2. — 2) f. रतितिका N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 112, 116.

रतितर् (von 1. रत्) nom. ag. *Hüter, Beschützer, Wächter* AK. 3, 4, 23, 35. RV. 1, 89, 1. 5. 2, 39, 6. यर्द्व्यो गोषा यमृतस्य रतिता 8, 7, 7. सानौ 10, 14, 11. 67, 6. सोमस्य 85, 3. AV. 3, 27, 1. 12, 3, 55. 19, 15, 3. Çat. Br. 13, 4, 2, 5. Spr. 1372. MBu. 3, 1809. 2075. 2444. 11468. 4, 2104. R. 1, 1, 15. 7, 8. Kâm. Nîtis. 7, 4. Çiç. 63, 16. 111. Ragh. 1, 27. 3, 20. 51. Paṇḍat. I, 391. Kathâs. 46, 158. Uttarar. 30, 1 (39, 11). Râǵa-Tar. 1, 182. Bhâg. P. 4, 21, 21. 7, 2, 38. Mârk. P. 69, 28. दुःखेभ्यः R. Gorr. 2, 31, 14. यु° Spr. 656. 3066. M. 8, 309. R. 1, 61, 7. प्रजाः 2, 75, 23. रतित्री Râǵa-Tar. 3, 108. 6, 193. रतिता als fut. 3. sg. Bhâg. P. 4, 9, 51. 2. sg. 23.

रतितवत् (von रतित) adj. *den Begriff* रत् *enthaltend* Âçv. Çr. 2, 10, 5.

रतितव्य (von 1. रत्) adj. *zu hüten, zu schützen, zu bewahren* MBu. 1, 4884. 7, 8869. Spr. 3724. 4938. यस्मादेकाहरुद्रो रतितव्या नैका बहुभ्यो गोतामि रतितव्यः MBu. 13, 80. Vish. M. 9, 328. प्राणाः R. 5, 80, 14. सुवर्णभाण्डम् Mṛǵ. 26, 9. *wovor man sich hüten muss,* zur Erklärung von रत्नम् Nir. 4, 18.

रतितृ (wie oben) nom. ag. *Hüter, Beschützer, Bewacher, Wächter* Âçv. Çr. 10, 6, 7. Kâty. Çr. 26, 2, 11. MBu. 1, 4309. fg. 3, 2992. 11428. 4, 110. 6, 724. 9, 1682. 13, 7719. R. 2, 79, 13. 5, 49, 14. 33. Mṛǵ. 26, 7. 47, 23. Çiç. 73, 1. Ragh. 3, 39. 13, 62. Kâm. Nîtis. 14, 37. Kathâs. 3, 69. 5, 66. 16, 17. 19. 23, 82 (सु°). 33, 57. 73, 26. Râǵa-Tar. 4, 327. 548. 579. रतितर्वर्ग m. *Leibwache* AK. 2, 8, 4, 6. H. 722. Hall. 2, 278. In comp. mit dem obj.: यमृत° MBu. 1, 1426. नर्तनागार° 4, 788. रथ° 2069. त्रिलोक° Vikr. 5. तत्स्थान° Kathâs. 13, 24. 25, 249. गज्ञ° 43, 23. यत्तःपुर° 5, 60. Paṇḍat. ed. orn. 53, 16. गोत्र° Râǵa-Tar. 1, 93. मात्रोश्चारित्ररतितृत्वात् (so ist zu lesen) 6, 166. in comp. mit dem im abl. gedachten Begriffe: गायत्री सर्वरतितृणी (der Comm. fasst सर्व als Object) R. 7, 109, 8. रिपु° Kathâs. 29, 107. स्वकार्यधेय° 15, 12. व्यसन° 33, 62. *vermeidend, sich scheuend vor:* वैर° 39, 238. — Vgl. आकाश°, कोश°, द्वार°, नगर°, नगरी°, पशु°, पुर°.

रतिगणभोजन m. N. einer Hölle, *in der man den* Rakshas *zur Speise dient,* Bhâg. P. 5, 26, 7.

रतिघ्न (2. रत्न + घ्न) 1) adj. (f. ई) Rakshas *zurückschlagend* oder *tödtend:* सूक्त Kauç. 126. धूप Suçr. 1, 16, 9. 172, 21. 180, 13. Râma Weber, Râmat. Up. 296. योपधी R. Gorr. 2, 23, 20. मत्राचक्र Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 113. Lampe Colebr. Misc. Ess. I, 191. मन्त्र Madhus. zu Bhag. 11, 36 im ÇKDa. Kathâs. 20, 138. subst. mit Ergänzung von मन्त्र in रतिघ्नापिन् 62, 97. — 2) m. *a) Semecarpus Anacardium* Taik. 2, 4, 13. — *b) weisser Senf* Ratnam. 150. — 3) f. ई *Acorus calamus* Ratnam. 24. — 4) n. *a) saurer Reisschleim* Taik. 2, 9, 10. H. 416. — *b) Asa foetida* Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. रतोघ्न.

रतोत्ननी f. *Nacht* (Rakshas *ersengend*) Taik. 1, 1, 104.

रतोऽधिदेवता f. *die an der Spitze der* Rakshas *stehende Göttin* Kathâs. 25, 100.

रतोभाप् s. u. 2. भाप्.

रतोमुख m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu P. 2, 4, 63.

रतोयुज् adj. *Gefährte des* Rakshas RV. 6, 62, 8.

रतोवाक् m. pl. N. pr. eines Volksstammes MBu. 7, 2436.

रतोविक्षोभिणी f. N. pr. einer Göttin (*die* Rakshas *in Aufregung versetzend*) Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 39.

रतोरुण adj. = रतोरुन् gaṇa गोपथादि zu P. 5, 2, 62. Davon रतोरुणक adj. *das Wort* रतोरुण (रतोरुन्) *enthaltend* ebend.

रतोरुत्य n. *das Schlagen der* Rakshas RV. 6, 45, 18.

रतोरुन् 1) adj. *die* Rakshas *schlagend* RV. 2, 23, 3. 7, 8, 6. 73, 4. 9, 1, 2. 37, 3. 10, 87, 1. 97, 6. 103, 4. VS. 5, 24. fg. Çat. Br. 1, 6, 2, 11. 7, 4, 1, 37. — 2) m. *a)* angeblich N. pr. des Liedverfassers von RV. 10, 162. — *b) Bdellium* Râǵân. im ÇKDa.

रत्ना (von 1. रत्) m. *Schutz* P. 3, 3, 90. Vop. 26, 180. AK. 3, 3, 8. H. 1523.

रत्न्य (wie oben) adj. *zu hüten, zu schützen, zu bewahren, in Acht zu nehmen:* रत्न्यो ऽहं पुत्रवत्तया MBu. 3, 1862. 14, 490. R. 2, 96, 51. R. Gorr. 1, 63, 21. 79, 13. 4, 17, 28. 5, 23, 3. Çiç. 155. Kâm. Nîtis. 15, 17. Spr. 907, v. l. 1314. Kathâs. 15, 112. 62, 82 (यु°). Râǵa-Tar. 4, 358. Bhâg. P. 10, 48, 29. Mârk. P. 69, 35. fg. 132, 31. आत्मा हि सर्वदा रत्न्यो दारैरपि धने-

रपि Spr. 4293. त्रैलोक्यजीवितेनापि यो रक्ष्यः Rtsa-Tan. 3,43. आत्मा च रक्ष्यः सततं भोजनादिषु MBn. 13,137. स्त्रियः zu hüten Jtsn. 1,181. Spr. 502. Vasiṣ. Dgn. S. 78,11. सदा स्वेभ्यः परेभ्यश्च रक्ष्यो राजभिरतिभिः Kim. Nitis. 7,29. मूढेभ्योऽपि प्रसङ्गेभ्यः स्त्रियो रक्ष्या विशेषतः Spr. 5283. स्वात्मवधात् zu hüten vor, abzuhalten von Kathās. 5,74. धर्मव्यतिक्रमात् 113,14. भृत्यैः रक्ष्य उपस्कारः in Acht zu nehmen Jtsn. 2,193. ब्रह्मस्वम् MBn. 13,4342. अस्थीनि zu hüten, zu bewachen Kathās. 64,79. शिस्येण रक्ष्यं यदशक्यरक्षणम् Raghuv. 2,40. 56. स गुणस्तेन गुणवता रक्ष्यः संवर्धनीयश्च Spr. 614. यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः Raghuv. 3,48. समय MBn. 1,5527. vor dem oder wovor man sich hüten muss, zu vermeiden Kathās. 28,165. लोक 34,236. लोकतोऽपि हि ते रक्ष्यः परिवादः R. 2,36, 20. स्कन्धावारस्य मृत्यवः Kim. Nitis. 16,39. अन्योऽन्यवियोगिता Kathās. 13,94. 32,96. 56,115. Rtsa-Tan. 4,345. रक्ष्यतम vor Allem zu hüten: सत्यं तु मे रक्ष्यतमं न राज्यम् MBn. 3,10285. R. Gorr. 2,52,6. M. 8,339. रक्ष्य Mṛkkh. 58,18 fehlerhaft für रत, wie schon Stenzler bemerkt hat. — Vgl. गो°, दू°.

रक्ष् रक्षति (गतौ) Dhātup. 5,22. — Vgl. रङ्क्, रिक्ष्, रिङ्क्.

रग् रगति (शङ्कायाम्) Dhātup. 19,28. व्यगात् P. 7,2,5, Schol. — रग्, रार्गयति (आस्वादने) = रक् Dhātup. 33,63, v. l.

रघ् रार्घयति (आस्वादने) = रक् Dhātup. 33,63, v. l.

रघट s. u. रघु.

रघु (von रङ्ग्) 1) adj. *a) rennend, dahinschiessend; m. Renner:* घत्यो न वाजी रघुरद्यमानः RV. 5,30,14. 4,5,18. des Indra 10,49,2. fem. 1,52,5. 4,41,9. क्षुद्रा रघ्वी 6,63,9. — श्येन 5,45,9; auch AV. 8,7,24, wo रघेा steht, wäre रघवी (= श्येना) ganz passend. compar. रघीयस् TS. 7,4,9, 1. — *b) leicht, wandelbar:* क्रतु RV. 9,33,17. — Vgl. मदेरघु und लघु. — 2) m. N. pr. *a)* eines alten Königs und Vorfahren Râma's, dessen Genealogie verschieden angegeben wird; im Harîv. erscheinen sogar zwei Raghu unter den Vorältern Râma's. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,20. Harîv. 819. fgg. R. 1,70,38 (72,27 Gorr.). 2,110,28 (119,25 Gorr.). द्विलोपः, धवेद्य धातोर्गमनार्थम् (vgl. रङ्ग्) सर्वविज्ञकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम् Raghuv. 3,21. Uttarar. 74,11 (96,3). VP. 383. 416 (ein Sohn Jadu's). Rtsa-Tan. 1,191. Ksmîrîç. 58,13. °विजय Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,41. °चरित 42. pl. रघवः *die Nachkommen* Raghu's Raghuv. 1,9. 13,7. Rtsa-Tan. 1,191. Râma führt die Beinamen रघूत्तम R. 1,65,5. 3,50,6. रघुप्रवर 49,57. रघुवर R. im ÇKDn. रघूद्वह Çandr. im ÇKDn. Raghuv. ed. Calc. 12,69. °नायक Verz. d. Oxf. H. 136,*b*, No. 262. Vgl. राघव. — *b)* eines Sohnes des Çâkjamuni, = राहुल Ind. St. 3,149. — *c)* eines Autors Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,12. — 3) m. so v. a. रघुवंश 2) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,156; vgl. रघुकार.

रघुकार m. *der Verfasser des* Raghuvaṁça, Beiw. Kâlidâsa's Trik. 2,7,26.

रघुतूर्य adj. *vom Renner stammend* RV. 9,86,1.

रघुतिप्पणी *ein Commentar zum* Raghuvaṁça Verz. d. B. H. No. 508.

रघुदेव 1) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 133,*a*, No. 244. °भट्टाचार्य oder °न्यायालंकारभट्टाचार्य 248,*b*, No. 617. 525,*c*. Verz. d. B. H. No. 685. Hall 30. 40. fgg. 51. fg. 59. 61. 68. 80. — 2) f. ई Titel eines von Raghudeva verfassten Commentars Hall 30. Macn. Coll. I, 18.

रघुद्रु adj. *rasch —, wie ein Renner laufend* RV. 1,140,4. 5,6,2. 8,1, 9. 10,61,16.

रघुनन्दन m. 1) Raghu's Nachkomme, Beiw. Râma's Çandr. im ÇKDn. R. 1,52,12. 56,12. 61,11. Weber, Rmây. Up. 300. — 2) N. pr. eines neueren Autors, des Verfassers der 28 Tattvâni, Wilson, Sel. Works 2,60. Gild. Bibl. 488. fgg. °भट्टाचार्य Verz. d. B. H. No. 1403. °दीक्षित Hall 4. रघुनन्दनाचार्यशिरोमणि Colebr. Misc. Ess. II,45.

रघुनाथ m. 1) Beiw. Râma's Çandr. im ÇKDn. Raghuv. 15,54. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,2. 4. 14,*a*,11. Weber, Rmây. Up. 362. Wilson, Sel. Works 1,99. रघुनाथाभ्युदय m. Titel eines Gedichts Verz. d. B. H. No. 533. — 2) N. pr. verschiedener Männer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Cl. 3. Wilson, Sel. Works 1,56. 59. 135. Verz. d. B. H. No. 118. 722. 823. Verz. d. Tüb. H. 13. Verz. d. Oxf. H. 148,*a*, No. 318. 292,*a*, 32. 525,*c*. Hall 30. 132. °चक्रवर्तिन् Colebr. Misc. Ess. II,37. °तर्कवागीशभट्टाचार्य Hall 7. °दास Wilson, Sel. Works 1,136. 138. fg. 167. Verz. d. Tüb. H. 13. °दीक्षित Verz. d. Oxf. H. 150,*a*, No. 319. °भट्ट Hall 158. 175. fg. 179. Wilson, Sel. Works 1,138. fg. °भट्टाचार्य Verz. d. B. H. No. 650. °भट्टाचार्यतार्किकशिरोमणि Hall 82. °भट्टाचार्यशिरोमणि 80. Verz. d. Oxf. H. 241,*a*, No. 387. °शिरोमणिभट्टाचार्य Hall 31. 66. 72. °सरस्वती 203. घनश्यामन्दरघुनाथयति 134.

रघुपति m. 1) Beiw. Râma's Raghuv. 12,104. Mnch. 12. Kathās. 72,91. Bnâc. P. 9,10,20. 11 20. Ind. St. 8,423,4. Verz. d. Oxf. H. 132,*b*,10. 139,*a*, No. 276. 181,*b*,8. — 2) N. pr. des Vaters des Lexicographen Gaṭâdhara Verz. d. Oxf. H. 189,*b*, No. 434. °भट्टाचार्य Hall 40. रघुपत्युपाध्याय Verz. d. Tüb. H. 13.

रघुपत्मन्वत्तम् (रघु-पत्मन् + तँ°) adj. *leichtbeschwingt:* वेर्न इषद्धा रघुपत्मन्तमाः RV. 6,3,3.

रघुपत्वन् adj. *schnell fliegend:* मतयः RV. 1,85,6. देवाँ अच्छा रघुपत्वा जिगाति 10,6,4.

रघुमन्यु adj. *raschen Eifers voll* RV. 1,122,1.

रघुयत् (partic. von रघुय् und dieses von रघु) adj. *rasch dahineilend* RV. 4,5,9. रघूयते dat. TBr. 3,7,13,4.

रघुया (von रघु) adv. *rasch, leichthin:* वयो न पप्तू रघुया परिज्मन् RV. 8,28,4.

रघुयामन् adj. *rasch fahrend* RV. 8,39,4.

रघुराम m. N. pr. eines Mannes Ksmîrîç. 52,10 u. s. w.

रघुवंश m. 1) Raghu's *Stamm* R. Gorr. Einl. 2. 2,104,20 (95,19 Schl.). — 2) Titel des bekannten von Kâlidâsa verfassten, Raghu's *Stamm* verherrlichenden Kunstgedichts. °संजीवनी Titel von Mallinâthas Commentar zum Raghuvaṁça Verz. d. Oxf. H. 113,*a*,26. 126,*a*,5.

रघुवर्तनि adj. *leicht hinrollend*, von einem Wagen RV. 8,9,8. übertragen auf ein Ross 9,81,2.

रघुवीर m. 1) Beiw. Râma's Weber, Rmây. Up. 296. — 2) N. pr. eines Autors, = रघुदेव Verz. d. B. H. No. 685.

रघुष्यद् (रघु + स्यद्) adj. *eilig* RV. 1,64,7. 85,6. 140,4. 3,26,2. 4,5,9. 5,25,6. 73,5. 8,34,17. AV. 3,7,1. 13,3,16. रघुस्यद (sic) = लघुस्यद Kâç. zu P. 8,2,18, Vârtt. 2.

रघुस्यद s. u. रघुष्यद्.

रघ्यत् s. u. रघ्यत्.

रङ्क m. *Hungerleider, Bettler;* adj. = कृपण, मन्द (मल्ल H. an.) H. an. 2, 14. Med. k. 30. Viçva bei Uṇâdis. 3, 40. Gegens. रातान् Spr. 718. 2582. Vemana-Kân. 10, 5. कङ्क° so v. a. *ein ausgehungerter Reiher* Pras. 87, 12. प्रेत° Mitartha. 78, 17. — Vgl. जल°, मत्स्य°, मीन°, रण°, राघ°.

रङ्कु m. 1) *eine Art Antilope* AK. 2, 5, 10. H. 1293. Halâj. 2, 75. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit P. 4, 2, 100. gaṇa कच्छादि zu 4, 2, 133. — Vgl. जल°, राघ°, राङ्कव.

रङ्कुमालिन् m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 69, 89.

रङ्कर् s. रक्.

रङ्कु N. pr. eines Flusses Mbh. P. 37, 19. wohl fehlerhaft für वङ्कु.

रङ्ख्, रङ्खति (गतौ) Dhâtup. 5, 23. — Vgl. रख्.

रङ्ख्, रङ्ख्ति (गतौ) Dhâtup. 5, 36.

रङ्ग (von रञ्ज् 1) m. a) *Farbe* Taitt. 3, 3, 67. H. an. 2, 65. fg. Med. g. 19. न भाति वाससि क्लिष्टे रङ्गयोग इवाङ्कितः Sèça. 2, 157, a. वासो यथा रङ्गवशं प्रयाति MBh. 5, 1269. — b) *nasale Färbung eines Vocals* Çikshâ 26. 30; vgl. Ind. St. 4, 269. 362 und रङ्क. — c) *Theater, Schaubühne, Schauplatz, Arena* P. 6, 4, 27, Sch. H. 282. Halâj. 1, 97. = नृत्यगुदुवोः (ist wohl नृत्यभू und गुदू) H. an. = नृत्ये रणतितौ Med. = नृत्य, रण, खल Taitt. — MBh. 1, 152. 4418. 4417. 5347. 3, 2193. 2198. 4, 341. 345. 6, 3523. 7, 3932. Harîv. 4211. 4532. यथाचार्योपदेशेन रङ्गशोभी भवेन्नटः Bhar. Nâṭjaç. 34, 52. रङ्गादस्तिस्तु नेपथ्यम् Bhar. beim Schol. zu Çik. 3, 6. °प्रवेश Mṛicch. 17, 11. 82, 23. Kathâs. 49, 14. Râga-Tar. 1, 333. रङ्गविघ्नोपशान्ति Sin. D. 281. Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, 22. 41. मल्ल° Bâlar. P. 10, 36, 24. 42, 33. °पीठ Daçak. 77, 11. त्रैलोक्यस्येव मे राज्यरङ्गे ऽस्मिन्वत्सगतशिरम् Râga-Tar. 2, 136. तारुण्यकेलारते° Çâk. 34. *Theater* so v. a. *die Zuschauer* Siddhântas. 59. घनो रागवदचित्तवृत्तिरालिखित इव सर्वतो रङ्गः Çik. 4, 12. fg. रङ्गं प्रसाद्य मधुरैः श्लोकैः Daçak. 3, 4 = Sin. D. 284. °प्रसादन (°प्रसाधन gedr.) Prâtiçâkh. 23, *a*, 9. — d) *Borax.* — e) *der aus der Acacia Catechu gewonnene Catechu-Extract* Râgân. im ÇKDr. — f) N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 5, 353. 396. fgg. — 2) n. (m. n. Med.) = वङ्ग *Zinn* AK. 2, 9, 106. Taitt. 2, 9, 34. 3, 3, 61. 67. H. 1042. H. an. Med. — Vgl. घनरङ्ग°, केलि°, दीर्घरङ्ग, दृढरङ्ग, नटरङ्ग, नी°, पट्ट°, पत्त°, पूर्व°, मत्स्य° (unter °रङ्ग), युद्ध°, रण°, राज°, श्री°, स°, सु°.

रङ्गकार (रङ्ग + 1. कार) m. *Färber:* रङ्गके रङ्गकारम् Bâlar. P. 10, 41, 32. °क dass. Harîv. 4470.

रङ्गकाष्ठ n. *Caesalpina Sappan Lin.* Râgân. im ÇKDr. — Vgl. पट्टरङ्ग.

रङ्गक्षेत्र n. N. pr. einer Oertlichkeit Hall 203.

रङ्गचर m. *Schauspieler, Gladiator* u. s. w. Vaitân. Bpn. 19, 6.

रङ्गज (रङ्ग + 1. ज) n. *Mennig* Rathnam. im ÇKDr.

रङ्गजीवक m. 1) *Färber.* — 2) *Schauspieler* Çârdar. bei Wilson.

रङ्गण n.: गोपीनां चैव रङ्गणम् (v. l. für रत्नाम्) vielleicht *das Tanzen* (von रङ्ग) Paṇâd. 1, 7, 73.

रङ्गद (रङ्ग + 1. द) 1) m. a) *Borax.* — b) *der aus der Acacia Catechu gewonnene Catechu-Extract.* — 2) f. आ *ein best. weisser Farbestoff,* = स्फटी, दृढरङ्गा Râgân. im ÇKDr.

रङ्गदत्त (wohl n.) Titel eines Schauspiels Sin. D. 191, 12.

रङ्गदारक n. *eine best. Erdart,* = कङ्कुष्ठ Râgân. im ÇKDr.

रङ्गदृढा f. = दृढरङ्गा Râgân. im ÇKDr.

रङ्गद्वार् f. *die Thür —, der Eingang zu einem Theater, — zu einer Schaubühne* Harîv. 9116. Bâlar. P. 10, 36, 28.

रङ्गद्वार n. *der Prolog in einem Schauspiel* Sin. D. 279. 128, 16. fgg.

रङ्गनाथ 1) m. N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. I, 334. 337. II, 324. 396. 421. 452. 454. Verz. d. Oxf. H. 135, *b*, No. 258. 136, *a*, No. 262. 151, *a*, 27. Hall 31. 56. 180. eines Scholiasten des Sûrjasiddhânta. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 11 (रङ्गनाथ).

रङ्गपताका f. N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. 118, 5.

रङ्गपत्री f. *die Indigopflanze* Râgân. im ÇKDr.

रङ्गपुष्पी f. desgl. ebend.

रङ्गबीज n. *Silber* Taitt. 2, 9, 33. Çârdar. im ÇKDr.

रङ्गभूति f. *die Vollmondsnacht im Monat* Âçvina Çârdar. im ÇKDr.

रङ्गभूमि f. *Schauplatz, Kampfplatz* Çârdar. im ÇKDr. MBh. 1, 3321. Paṇâd. 35, 3.

रङ्गमङ्गल n. *eine Feierlichkeit auf der Bühne* Sin. D. 138, 9.

रङ्गमण्डप *Schauspielhaus* Kathâs. 71, 75. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 24.

रङ्गमल्ल 1) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 873. — 2) f. ई *die indische Laute* Çârdar. im ÇKDr.

रङ्गमाणिक्य n. = माणिक्य *Rubin* Râgân. im ÇKDr.

रङ्गमातृ f. 1) *Lack* H. 683. an. 4, 124. Med. t. 216. Hla. 219. — 2) *Kupferin* Med. — 3) = त्रुटि H. an.

रङ्गमातृका f. *Lack* Taitt. 2, 6, 36.

रङ्गराज m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 130, *a*, 13. eines Gelehrten, der auch °दीक्षित, रङ्गराजाध्वरिन्, रङ्गराजाध्वरीन्द्र genannt wird, 113, *b*, 37. 213, *a*, No. 805. Colebr. Misc. Ess. I, 337. Verz. d. B. H. No. 632. Hall 114. 153. 192. 194. °स्तव m. Titel einer Schrift 19.

रङ्गलामिनी f. *Nyctanthes arbor tristis* Çârdaś. im ÇKDr.

रङ्गवती (f. von रङ्गवत् und dieses von रङ्ग) f. N. pr. einer Frau, die ihren Gatten Rantideva umbrachte, Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

रङ्गवल्लिका f. Bez. *einer best. beim Opfer gebrauchten Pflanze* Sâlikan. K. 19, *a*, 1. 5. Prasoçan. 2, *b*, 3. रङ्गवल्ली f. dass. Weber, Kâṭhaka 279.

रङ्गवस्तु n. *Farbestoff* Paṇâd. 1, 7, 38.

रङ्गवाट *ein eingehegter Schauplatz für Kämpfe, Spiele, Tänze* MBh. 3, 803. Harîv. 4334. 9113.

रङ्गवाराङ्गना f. *eine Bajadere* Spr. 1233.

रङ्गविद्याधर m. *ein Meister in der Schauspielkunst* Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, 26. 39.

रङ्गशाला f. *Schauspielhaus, Tanzsaal* Çârdar. im ÇKDr.

रङ्गाङ्गण (रङ्ग + अ°) n. *Schauplatz, Arena* MBh. 1, 3352.

रङ्गाङ्गा (रङ्ग + 3. अङ्ग) f. *ein best. weisser Stoff,* = स्फटी Râgân. im ÇKDr.

रङ्गाजीव (रङ्ग + आ°) m. 1) *Maler* AK. 2, 10, 7. H. 921. Halâj. 2, 436. — 2) *Schauspieler* H. 328.

रङ्गारि (रङ्ग + अरि) m. *wohlriechender Oleander* Rathnam. im ÇKDr.

रङ्गावतरण (रङ्ग + अ°) n. *das Betreten der Bühne, die Beschäftigung*

eines Schauspielers MBh. 12,10795. Kull. zu M. 4,215.

रङ्गावतारक (रङ्ग + घ°) m. *Schauspieler* H. 328. M. 4, 215.

रङ्गावतारिन् m. dass. Gaṇân. im ÇKDr. Jiéṅ. 1,161. 2,70.

रङ्गिन् (von रङ्ग) 1) adj. *a) hängend —, Genuss findend an:* तुरंगगति° Çatr. 1,163. — *b) die Bühne betretend:* नटयोरिव रङ्गिणोः Bhâg. P. 10, 72, 35. — 2) f. °णी *Asparagus racemosus Willd.* Gaṇân. im ÇKDr. = कैवर्तिका Râǵân. ebend.

रङ्गेश (रङ्ग + ईश) m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 130, *a*, No. 235.

रङ्गेश्वरी (रङ्ग + ई°) f. wohl N. pr. oder Bein. der Gamahlin Raṅgeça's ebend.

रङ्गेष्टालुक n. *eine Art Zwiebel* Taik. 2,4,34 (रङ्गेष्टा° gedr.). im Index रङ्गेष्टालु, रङ्गेष्टालुक.

रङ्गोत्ति m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 177, *a*, No. 402. रङ्गोत्तीभिट्ट Hall 78. fg. fälschlich रङ्गोत्तिभिट्ट Verz. d. B. H. No. 764.

रङ्गोपजीविन् (रङ्ग + उ°) m. *Schauspieler* R. Gorr. 2,90,15. Verz. d. Oxf. H. 120, *b*, 8.

रङ्गोपजीव्य (रङ्ग + उ°) m. dass. Vaṇîn. Bṛn. S. 9, 43.

रङ्ग्, रंङ्गते (गतौ) Dhâtup. 4,33. act. *eilen, rennen:* द्वारं ररङ्गतुर्गाम्यम् Bhaṭṭ. 14,15. auf diese Wurzel spielt Kâlidâsa an in der Stelle: (दिलीपः) अवेक्ष्य धातोर्गमनार्थमर्थं विज्ञस्कार नाम्ना रघुनात्मसंभवम् Raǵu. 3, 21. Vgl. रंङ्ग्. — caus. रङ्गयति *sprechen* oder *leuchten* Dhâtup. 33,120.

रङ्गनाथ s. u. रङ्गनाथ 2).

रङ्गम् n. = रंङ्गम् *Eile* Bhân. im Dvaitôpak. ÇKDr. Sûraç. 71 in Hall, Auth. 211, wo रङ्गः st. रंङ्गः zu lesen ist; vgl. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,213.

रच् *verfertigen:* रचिष्यति (करिष्यति die neuere Ausg.) Harîv. 6373. — रचयति (प्रतियत्ने, v. l. प्रयत्ने und कृत्याम्) Dhâtup. 35,12. 1) *verfertigen, bilden, errichten, bereiten, zurechtmachen, hervorbringen, zu Stande bringen, bewirken:* शाकारचित *verfertigt aus* Vaṇîn. Bṛn. S. 79,13. 14. 17. 39. मायाविकल्परचितैः स्पन्दनैः Raǵu. 13,75. रचितवलयैः Spr. 490. नगरं मायारचितम् Kathâs. 3,78. योगी स्वात्मनं रचयित्वा प्रतिबबंध स्म Z. d. d. m. G. 14,573,19. पावत्ते रचयामि चितामस्म् Kathâs. 53,157. तत्र तत्र च दृश्यन्ते रचिताः काष्ठराशयः R. 3, 16, 8. मत एवाविदूरे च शयनं रचयात्मनः R. Gorr. 2,53,5. Gîr. 5,10. सेतवः — भगवद्रचिताः Bhâg. P. 3,21,34. 23,21. पञ्चभूतरचिते शरीरे 31,11. धुवित्रं व्यजनं तथद्रचितं मृगचर्मणा Âk. 2,7,23. काचस्फटिकयोः खण्डैः — रचितं व्याजालंकरणम् Kathâs. 24,184. रचयामास स्वोत्तरीयेण पाशम् 90,73. रक्तपुष्पैर्मण्डलं रचयित्वा (v. l. für कृत्वा) Ver. in LA. (III) 10,20. स (व्यञ्जकः) चतुर्विध आकार्यो रचितो भूषणादिना । वचसा वाचिको ऽङ्गेनाङ्गिकः सत्त्वेन सात्त्विकः ॥ H. 283. मेघः) विद्युत्प्रभारचितपीतपटोत्तरीयः Mṛǵ. 76,8. Bhâg. P. 3,28,32. 30,9. 4,7,39. 12,15. 16,19. 5,1,35. 11,12. 6,16,41. 8,5,44. 9,8,23. 9,47. Nîlak. 158. पुष्पाणां प्रकरैः स्मितेन रचितो नो कुन्दवात्यादिभिः Spr. 1168. धूपङ्गे रचिते 2083. Prasâd. 12,1. अञ्जलीं रचय 40, 11. मयायं रचितो ऽञ्जलिः R. 2,13,12. 62,7. Kathâs. 20,237. 27,49. 53, 153. Bhâg. P. 4,20,31. 6,3,30. रचितातिथ्य Kathâs. 28,84. 33,87. 44, 27. रचितोत्सव 25,170. रचितमङ्गल 20,27. 26,271. 43,238. रचितस्वागत 79. रचितानति 18,347. रचयन्त्यो गतागतम् 3, 66. रचितध्यान 24,144. रचयन्त्यस्य सपर्याम् Bhâg. P. 3,2,2. 15,47. माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुरेरीक्षते Spr. 2920. त्वया रचितपूर्वं (v. l. für चरितपूर्वं) नीवारबलिम् *dargebracht* Çiç. 96. रचयति विघातम् Vaṇîn. Bṛn. S. 32,5. चिन्ताम्, चिन्ताः *sich Sorgen machen* Prasâd. 90,20. 43,13. रचितार्थ = कृतार्थ *der sein Ziel erreicht hat* Kathâs. 67, 112. *verfassen:* पदानि रचयन्ती Çiç. 63. पञ्च तन्त्राण्येतानि रचयित्वा Paṇḍat. 5, 11. Vaṇîn. Bṛn. S. 21,2. Vers. d. Oxf. H. 129, *a*, 30. मन्दं मन्दं रचयति पदम् *erdenkt einen Vers* und zugleich *bereitet sich eine Stellung* Spr. 1215. रचितं मया *ausgedacht, erfunden* Kathâs. 49,140. *machen zu:* रचितश्च राज्ञा । पदैव सुधीवकविः परेण Bhaṭṭ. 12,37. — 2) *anbringen, thun an, in* (loc.): शतधा रचिताः शूरैः शतघ्नो रत्नसंगणैः R. 5,72,9. त्वया रचितस्तिलको वक्त्रे 36,34. रचितं त्वया स्वयमङ्गेषु ममेदं कुसुमप्रसाधनम् Kumâras. 4,18. रचयति चिकुरे कुरुबककुसुमम् Gîr. 7,23. अङ्गकेषु रचयति चन्दनालेपनानि Śiç. D. 71,2. न वा मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे (auf einem Gemälde) Çiç. 143. रचयिष्यामि तनुं विभावसौ Kumâras. 4,34. पाशो ऽत्र त्वया मे रच्यताम् *befestige* Kathâs. 13,98. ततो वर्णाः पञ्च क्रस्वाः) रचिताः *angebracht* Çatr. (Bn.) 40. रचितधी *dessen Gedanken gerichtet sind auf* (loc.) Bhâg. P. 4,7,28. 6,16,39. — 3) रचित *versehen mit* (instr. oder im comp. vorangehend): सप्तप्राकाररचिता पुरी Harîv. 10010. यत्नान्तत्र° 13896. रत्नच्छायारचितबलिभिः (v. l. für खचित) Megh. 36. कुर्म्यस्थलानि ज्योतिश्छायाकुसुमरचितानि 67. (क्रीडाशैलः) रचितशिखरः पेशलैरिन्द्रनीलैः (रचित = खचित Comm.) 75. ताम्बूलीनां दलैस्तत्र रचितापानभूमयः Raǵu. 4,42. मार्गेण भक्तिरचितस्फटिकेन 13,69. सुगन्धिपुष्परचिते समे देशे Suçr. 1,241,8. विशेषोपक्रमरचितपद Bhaṭṭ. Nîtiç. 18,95. — 4) mit caus. Bed. *bewirken, dass Jmd Etwas thut, bringen zu;* mit dopp. acc.: मनेतस्मिन्दृष्टे हृदयमवधानं रचयति Uttarar. 97,9 (127,14). — 5) in der Stelle श्लथत्तस्ताम् (वाग्मिनः) रचयन्त्रोणयति वेगितः MBh. 7,3096 *so v. a. tummelnd, also* = चारयन् (चरयन् wäre eine ungewöhnliche Form), welches nicht zum Metrum passt.

— आ caus. 1) *bereiten:* मधुपर्कमारचय्य Itih. bei Sîs. zu ṚV. 1,123,1. *verfassen* Madhus. in Ind. St. 1,16,1 v. u. — 2) *sich aufsetzen:* आरचितमुण्डमाल Daçak. in Bunr. Chr. 183,6. — 3) *versehen mit:* इत्यारचय्य वपुरर्णशतार्धकेन Paṇḍat. 3,1,24. आरचय्य भुवि गोमयाम्भसा स्थण्डिलम् 6,2.

— उप caus. *bilden, hervorbringen:* मनोरथैरुपरचितप्रासादवापीतटक्रीडाकाननकेलिकौतुकवृषाम् Spr. 1307. स्व आत्मन्युपरचितस्थिरभक्तिमालाय Bhâg. P. 12,12,67.

— वि caus. 1) *verfertigen, bilden:* नावं विरचये (zugleich *verfassen*) रम्यां तरणाय गुणैर्युताम् Vers. d. Oxf. H. 100, *b*, No. 135. *errichten* (eine Statue) Râǵa-Tar. 1,175 (विरचय्य mit der ed. Calc. zu lesen). 4,512. 6,306. पार्श्वं विरचयामास लतया *verfertigte aus* Kathâs. 80,42. 93,31. 104,71. तितिविरचितशय्य *zurechtgemacht* Kumâras. 7,94. *vollbringen:* नानायागेषु विरचिताङ्गक्रियेषु Bhâg. P. 5,7,6. दीर्घा वन्दनमालिका विरचिता दृष्ट्येव नेन्दीवरैः *gebildet, hervorgebracht, bewirkt* Spr. 1168. ad Çiç. 193 (तनुविरचित° zu lesen). Kir. 5,31. Bhâg. P. 1,3,30. 3,15,42. 31,48. 4,1,55. 5,3,6. 20,41. 8,12,10. 9,19,27. *verfassen:* श्लोका विरच्यते Kuval. 3, *a*. Vaṇîn. Bṛn. S. 36,31. Gîr. 4,10 (zugleich *verrichten*). Madhus. in Ind. St. 1,16,2 v. u. Verz. d. Oxf. H. 138, *b*, No. 273. व्यरीरचत् 200, *a*, 13. व्यरचि Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13, Cl. 30. Paṇḍat. 103,4. LA. (III) 12,13. LA. (I) 67,12. 68,16. *erfinden, er-*

sinnen: इति विरचितवाग्भिर्वन्दिपुत्रैः (könnte einfach auch bedeuten *diese Worte gesprochen habend*) Raghu. 5, 75. विरचितपदं गेयम् Megh. 84. 101. Milav. 77. एवं विरचितोक्तौ च धूर्ते Kathâs. 24, 74. वचो विरचितम् 43, 206. तेन मया तस्योपरि वधोपाय एष विरचितः Pañkat. 86, 18. — 2) *anlegen, thun an, in:* कुशलविरचितानुकूलवेष Raghu. 5, 76. नवामेकामेकावलिमपि मणौ यं विरचये: Spr. 2792. मुक्ताजालं चिरविरचितम् Megh. 94. फणासु विरचिता महामणयः Bhâg. P. 5, 24, 31. यस्मिन्निदं विरचितं व्योमीव जलदावलिः 9, 18, 49. शिरोविरचिताञ्जलि Kathâs. 19, 87. — 3) विरचित *versehen mit* (instr.) Megh. 19. 61.

रचन (von रच्, 1) n. *das Ordnen, Anordnen, Einrichten, Vorbereiten, Composition:* माया नृपशरीरवेषरचने Mudrâr. 50, 17. कुर्वे पुस्तकवास्य रम्यरचनम् Verz. d. Oxf. H. 101, *a*, 9. चतुष्पदीप्रबन्ध° 129, *b*, 1. Gewöhnlich f. या *Ordnung, Anordnung, Einrichtung, Vorbereitung, Betreibung, Bewerkstelligung; Erzeugniss, Werk, eine litterärische Composition:* व्यूहरचना MBh. 8, 2132. व्यूहरचनां विधाय Pañkat. 9, 23. यद्येयमावयोः शैले संग्रामरचना कृता Harîv. 5431. श्लोकाप्याकल्परचना Sin. D. 138. भूषासामर्थ्यरचना 149. नाभ्यस्ता कषायवस्त्ररचना so v. a. *die Kleider sind noch nicht oft getragen worden* Mudrâr. 114, 5. संक्षिप्ता वस्तुरचना *eine gedrängte Anordnung* Sin. D. 422. संगीतरचनायां कृतायाम् Milav. 19, 1. विच्छिन्नदुर्गरचन adj. Pañkat. 148, 7. शराणां पत्ररचना *das Einsetzen der Federn in die Pfeile* Hit. 116. भ्रुकुटि° *das Runzeln der Brauen* Spr. 732. Megh. 51. इष्टार्थस्य *Anordnung* Bhag. Nîtiç. 19, 45. Daçak. 1, 49. Sin. D. 407. प्रगुण° Daçak. 1, 4. अर्थ° *das Betreiben seiner Sache, Verfolgung seines Ziels, Bemühung* Bhâg. P. 2, 9, 10. 23, 3. मृत्कुम्भवालुकारन्ध्रपिधान° Sin. D. 64, 11. यतिभिरे समवसरणस्य रचनाम् so v. a. *begannen das Werk* Çatr. 1, 174. Verz. d. Oxf. H. 121, *b*, No. 214. भव्यानां शुभनिष्पायरचनाचित्तो विधत्ते विधिः so v. a. *das Ausfindigmachen, Erdenken* Kathâs. 43, 236. अनिन्द्यपदप्रमाणवाक्यप्रपञ्च° Verz. d. Oxf. H. 187, *b*, 32. महती निवासरचना so v. a. *ein grosses Gebäude* Mudrâr. 32, 4. पानभूमिरचना: *künstlich hergestellte Trinkplätze* Raghu. 19, 11. प्रतिकृतिरचना: *Bildnisse* 18, 53. अनेकविधपट° Pañkat. 132, 24. कनक° *Goldsachen* Kathâs. 46, 283. गीति° *Gesangstück* Râga-Tar. 5, 280. वचन° *geschickte Reden, Beredtsamkeit* Pañkat. 68, 5. 161, 2. भवदुःखहार° *Gebilde* Spr. 664. सैमिनिकोपसूत्र° *Composition* Verz. d. Oxf. H. 167, *a*, 33. अयमेष रचनानुवादः *Werk, That* Bhâg. P. 3, 15, 23. 25, 26. अनङ्ग° LA. 83, 4. सन्मङ्गलोपचाराणां मैत्रादिरचनाभवत् Raghu. 10, 75. रचनानिर्विशेषम् Râga-Tar. 3, 93. सत्वररचनम् adv. *schnell, eiligst* Gît. 5, 14. रचना: *künstliche Gebilde* Gaim. 1, 24. नातिलघुविपुलरचनाभिः *eine litterärische Composition* Vâsân. Bhm. S. 1, 2. उदात्तरचनान्वित so v. a. *Stil* Sin. D. 189, 5. Nach den Lexicographen ist रचना = परिस्पन्द AK. 2, 6, 2, 38. = प्रतिपत्र Trik. 2, 6, 41. = ग्रन्थन, गुम्फ u. s. w. H. 653. Halâ. 4, 45. = व्यूह H. 747. Halâ. 3, 9. = निवेश, स्थिति H. 1499. = पाश, भार, उच्चय, कस्त, पत्त u. s. w. in comp. mit einem Worte, das *Haupthaar* bedeutet, H. 568. Vgl. कूटरचना (auch Kathâs. 57, 115), केश° (auch P. 2, 3, 44, Sch.), दत्त°, धूर्त°, पत्त°. — 2) f. या personif. als Gattin Tvashtar's Bhâg. P. 6, 6, 42.

रचयितृ (wie eben) nom. ag. *Verfasser:* अस्य नृपकस्य Verz. d. Oxf. H. 142, *a*, No. 290.

रचित 1) partic. adj. s. u. रच्. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104.

रचितव (von रचित) n. *das Verfasstsein* Sarvadarçanas. 129, 6.

रचितव्य Harîv. 8234 fehlerhaft für रक्षितव्य, wie die neuere Ausg. liest.

रञ्, रञ्ज् *a*) रञ्जति, रञ्जते (रागे) Dhâtup. 23, 30. P. 6, 4, 26. Vop. 8, 133. अनुरञ्जन्ति R. 7, 99, 11 aus metrischen Rücksichten. — *b*) रञ्जयति, रञ्जयते (रागे) Dhâtup. 26, 55. P. 3, 1, 90. Vop. 24, 9. — ररञ्जयिषु und ररञ्जयिषु Vop. 8, 133. erhält keinen Bindevocal Kâr. 2 aus Sidd. K. zu P. 7, 2, 10. रक्ता und रञ्जिता P. 6, 4, 32. — 1) रज्यति und °ते *sich färben, sich röthen, roth sein:* रज्यति (und °ते) वस्त्रं स्वयमेव P. 3, 1, 90, Sch. यद्रज्यत etwa *färbte sich* AV. 15, 8, 1. यद्रज्यत् Çiç. 9, 7. तवाधरो रज्यति Naish. 3, 120. रज्यत् 7, 60. 22, 52. 53. नेत्रे स्वयं रज्यतः Uttarar. 102, 13 (138, 2). चलयौ तव रज्येते Spr. 4036. — 2) रज्यति und °ते *in Aufregung gerathen, aus seiner Gemüthsruhe kommen, sich hinreissen lassen, entzückt sein von, seine Freude haben an* (instr.) Naish. 7, 60 (act.). कृतविद्यो ऽपि बलिना व्यक्तं रागेण रज्यते Spr. 2961. बलप्राणेन पूरणाम् — यद्रज्यत जनः सर्वः MBh. 4, 355. रज्यते न कथाभिः Spr. 3035. अन्योऽन्यमथ रज्यते सर्वे MBh. 14, 1059. याभिर्विधुक्ता रज्येयं नाकमेकमपि क्षणम् *froh werden,* — *sein* Kathâs. 45, 358. यत्कि रज्यद्रज्यहा कार्याकार्ये (acc. du.) सतां मनः 112, 88. Çiç. 9, 7. Gewöhnlich mit einem loc. verbunden in der Bed. *Gefallen finden an, sich hingezogen fühlen zu, sich verlieben in:* रञ्जनीयेषु रज्यति कोपनीयेषु कुप्यति Nîlak. 16. यार्यकर्मणि रज्यते Spr. 3725. को हि रज्येदसारे Kathâs. 18, 346. क्षणदर्शिनि सायासे भोगे रज्यन्ति नोत्तमाः Daçakum. 59 in Hall. Anth. S. 222. न कामे ऽपि वेश्या रज्यति Kathâs. 38, 39. याद्धे कल्पतरावित्र नित्यं रज्यन्ति जननिवहाः Spr. 3239. सज्जने रज्यते जनः 1205. 701. तेषु रज्येथाः MBh. 12, 5908. रामे रञ्जतु (lies रज्यतु) मे मनः Verz. d. Oxf. H. 166, *b*, 17. Kathâs. 43, 165. तस्यामार्यपुत्रश्च रज्यति 31, 88. संनिकृष्टे निकृष्टे च कष्टे रज्यन्ति कुस्त्रियः 64, 124. निर्गुणानपि न द्वेष्टि न रज्यति गुणैरपि Sin. D. 111. स्त्रियो वा केषु रज्यन्ते विरज्यन्ते च ताः पुनः MBh. 13, 2334. Spr. 967. — 3) रञ्जति = गतिकर्मन् Naish. 2, 14. — रक्त partic. s. bes.

— caus. 1) *färben, röthen:* इदं रञ्जनि रज्यय किलासं पलितं च यत् AV. 1, 23, 1. यदहं कंसस्य वासांसि रञ्जयामि Harîv. 4472. P. 6, 4, 24, Vârtt. 3, Sch. वाणी रञ्जयत्यस्यामूढामणिमरीचिभिः Kumâras. 6, 81. 7, 19. रञ्जयन्दिशः MBh. 12, 9998. ud Çik. 78. Gît. 10, 6. Bhâg. P. 3, 8, 8. नृपस्तद्वनं महत् । तेजसा रञ्जयामास संध्याधमिव भास्करः MBh. 1, 6772. स्वतेजसा रञ्जयते जगत् so v. a. *erhellt, erleuchtet* 14, 1101. श्वेतातपत्रशशिनोपरि रज्यमानः (= शोभातिशयं नीयमानः Comm.) Bhâg. P. 4, 7, 21. रञ्जित *gefärbt, geröthet* H. an. 2, 189. Med. t. 48. वाससी शुक्ले महारजनरञ्जिते MBh. 8, 2528. Suçr. 1, 14, 1. 43, 14. Ṛt. 1, 3, v. l. 6, 13. Kathâs. 37, 33. 71, 213. 124, 22. Spr. 3445. Pañkat. 132, 24. Verz. d. Oxf. H. 222, *b*, 16. अगामास्तं दिनकरः संध्यारागेण रञ्जितः Harîv. 4839. MBh. 8, 2170. क्रोधरञ्जितलोचन Harîv. 13770. R. 6, 20, 28. हारो मणिमयाश्चैव तपनीयेन रञ्जिताः 93, 6. Raghu. 3, 64. Vikr. 60. Vâsân. Bhm. S. 24, 14. Bhm. 12, 17. Kathâs. 40, 8. 56, 322. Pañkat. 4, 1, 34. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 503, Çl. 18. वनं रक्तैशोकरञ्जितम् *erleuchtet, erhellt* Bhâg. P. 10, 29, 21. तेजसा चैव रञ्जितः R. 5, 87, 11. यथा कर्मफलैर्देवो रञ्जितस्तमसा वृतः । विवर्णो वर्णमाश्रित्य देहेषु परिवर्तते MBh. 12, 9999. सुरञ्जित *geschickt gefärbt*

Kathâs. 24, 184. समरञ्जित *gleich gefärbt* Harîv. 11960. 11997. 12180. — 2) *zur Freude stimmen, erfreuen, beglücken, entzücken, zufriedenstellen:* रञ्जयेन्मनः Buan. Nîtiç. 19, 52. Verz. d. Oxf. H. 200, *b*, 6. Paṇḍat. 51, 22. चित्तं मयि रञ्जयन् Bhâg. P. 11, 15, 12. रञ्जयतीमानि भूतानि Maitrâjop. 6, 7. MBh. 7, 2187. रञ्जयिष्यति यल्लोकमयमात्मविचेष्टितैः Bhâg. P. 4, 16, 15. ज्ञगत्ति Verz. d. Oxf. H. 256, *b*, 19. प्रजाः M. 7, 19. MBh. 3, 2234. R. Gorr. 1, 19, 28. 53, 7 (52, 7 Schl.). Spr. 1829. Kathâs. 31, 19. Gîv. 10, 5. Râǵa-Tar. 2, 11. Bhâg. P. 1, 12, 4. Mâlav. P. 120, 1. राष्ट्रं च रञ्जयामास वृत्तेन MBh. 1, 4009. पौरज्ञानपदांश्च रक्तावरञ्जयितुम् R. 2, 112, 11 (122, 11 Gorr.). Daçar. 2, 21. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति Spr. 39. Kathâs. 6, 54. 12, 77. 13, 117. 14, 59. 39, 243. 47, 106. 50, 162. Râǵa-Tar. 5, 118. Paṇḍat. 44, 20. प्रजा रञ्जयते MBh. 1, 6364. 13, 7700. बलं संभाषासंप्रदानेन रञ्जयस्व R. 7, 64, 5. कलिङ्गसेनया प्रीत्या रञ्ज्यमानः स तस्थिवान् Kathâs. 34, 167. रञ्जित *erfreut, beglückt, zufriedengestellt* Siv. 3, 40 (चरन्ति ताः st. च रञ्जिताः MBh. 3, 16758). R. Gorr. 2, 1, 33. 4, 28, 9. 7, 109, 14. अरञ्जितश्च बालोऽपि दोषमुत्पादयेद्ध्रुवम् *wenn er nicht befriedigt wird* Kathâs. 14, 36. 19, 78. 37, 25. 52, 2. Râǵa-Tar. 3, 145. 5, 437. Verz. d. Oxf. H. 120, *a*, 31. Paṇḍat. 113, 24. सुरञ्जित Kathâs. 45, 237. — 3) रञ्जयति und रञ्जयति unter den अर्चतिकर्माणः Nâigh. 3, 14. — 4) रञ्जयति मृगान् = रमयति मृगान् P. 6, 4, 24, Vârtt. 3. Vop. 8, 138. 18, 22.

— intens. रारज्जीति *in freudiger Aufregung —, ausgelassen sein:* मृक्षे शिशानो अर्यसि । बलरित्तेण रारज्जन् ṚV. 9, 5, 2.

— अनु 1) *sich entsprechend färben, — röthen:* अन्वरज्यदतुषारकरः Çic. 9, 7. संध्यानुरक्ते नभसि Varâh. Bṛh. S. 24, 18. — 2) *sich hinreissen lassen, entzückt sein, Gefallen finden:* तव प्रकीर्त्या ज्ञगत्प्रकृत्यत्यनुरज्यते च Bhâg. 11, 26. सर्वलोको ऽनुरज्येत कर्म त्वनेन कर्मणा R. 2, 58, 28. Spr. 972. नैर्गुण्यान्नानुरज्यते (श्रीः) 3421, v. l. अन्वरज्यत् Çic. 9, 7. नानुरज्ञस (lies नानुरज्यस) चास्ते Râǵa-Tar. ed. Calc. 3, 146. *sich hingezogen fühlen zu Jmd, Jmd treu anhängen, Jmd lieben;* mit acc. der Person: अनुरज्यन्ति R. 7, 99, 11. अनुरज्यन्ति तं प्रजाः Spr. 3814. MBh. 12, 2496. नानुरज्यन्त तं प्रजाः 14, 71. 74. R. 3, 55, 15. 4, 54, 10. 5, 10, 22. समस्तमनुरज्यन्त विषमस्थं त्यजन्ति च (स्त्रियः) R. ed. Bomb. 2, 13, 5. mit loc. der Person: अगुढप्रकृतौ रात्रि ज्ञनता नानुरज्यते Paṇḍat. 1, 335. भर्तुर्मृतस्य भार्यायां या ऽनुरज्येत कामतः M. 3, 173. वेश्यासु Kathâs. 57, 52. अनुरक्त *a) geliebt:* अनुरक्तः प्रजाभिश्च प्रजाश्चाप्यनुरञ्जयन् R. 2, 1, 10. प्रियया Bhâg. P. 3, 23, 38. — *b) treu anhängend, zugethan, ergeben, liebend* M. 7, 64. 202. MBh. 3, 2275. 2730. 2907. 12, 4262. R. 1, 7, 2. 2, 27, 23 (°चेतस्). 31, 16. 4, 9, 28. अनुरक्ता वयं मुणेः *in Folge von* 6, 104, 29. भार्यासु नानुरक्तासु च विरक्तासु v. l.) Spr. 2134, v. l. 1634. 2209. 3543. Kâm. Nîtis. 1, 21. 5, 46. 8, 74. Vikr. 59, 21. Kathâs. 12, 38. Daçak. 93, 18. Râǵa-Tar. 3, 465. 4, 373. 473. Bhâg. P. 1, 5, 29. 16, 22. 3, 4, 10. 4, 9, 60. 20, 15. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234. *Jmd zugethan, hängend an;* mit acc. der Person MBh. 3, 2343. R. 2, 21, 10. 45, 1. 46, 8. 22. रामं कैर्गुणैरनुरक्तानि 3, 55, 20. Mṛicch. 14, 1. Çiç. 146. mit loc. der Person MBh. 2, 1239. R. 2, 40, 4 (स्वनुरक्त). 70, 6. Spr. 5151. Bhâg. P. 1, 18, 22. किमनुरक्तो विरक्तो वापि मयि स्वामी Hit. 33, 18. त्वयि गाढमनुरक्ता सा *stark verliebt* Vet. in LA. (III) 9, 16. mit loc. der Sache *Gefallen findend an:* येषामभीरुकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्ता रसज्ञा Spr. 4897. die Ergänzung im comp. vorangehend: मुनिहिंसानुरक्तानाम् R. 3, 28, 20. रागानुरक्तचित्त so v. a. *unter dem Einfluss stehend* von Spr. 3961. संजीवकवचनानुरक्त Paṇḍat. 32, 9. प्रियानुरक्तं चेतः *an der Geliebten hängend* Kathâs. 9, 50. 18, 237. भृत्यानुरक्त Bhâg. P. 4, 9, 18. — 3) अनुरक्त *daran hängend, — befestigt:* रज्जवः Schol. zu Kîr. Ça. 16, 5, 2. — Vgl. अनुरक्ति, अनुराग. — caus. 1) *entsprechend färben, — röthen:* तेजसास्यानुरञ्जितम् R. Gorr. 1, 39, 20. Harîv. 3624. Varâh. Bṛh. S. 44, 25. Gîv. 2, 8. Râǵa-Tar. 4, 196. Bhâg. P. 10, 42, 2. *gefärbt* so v. a. *verklärt, gehoben:* अनुकम्पानुरञ्जितविशदरुचिरशिशिरस्मितावलोक 8, 9, 10. — 2) *für sich gewinnen, an sich* (acc.) *ziehen, — fesseln;* mit acc.: धर्मेण च प्रजाः सर्वा यथावदनुरञ्जयन् MBh. 1, 3504. R. 1, 7, 16 (17 Gorr.). 2, 1, 10. 107, 15. 4, 7, 10. Kâm. Nîtis. 8, 69. fg. तं स्वागतेनान्वरञ्जयत् Kathâs. 22, 56. तस्यास्य हृदयं मादृशी कानुरञ्जयेत् 46, 172. 50, 160. 56, 2. 98, 48. Daçak. 63, 17. 87, 7. अनुरञ्ज्य Kathâs. 40, 73. अनुरञ्ज्य (!) 124, 193. MBh. 2, 1014. पित्रापरञ्जितास्तस्य प्रज्ञास्तेनानुरञ्जिताः Harîv. 321. R. Gorr. 2, 2, 26. 14, 9. 33, 13. Kathâs. 55, 101. क्षात्रगुणानुरञ्जितमनसम् Paṇḍat. 34, 28 (ed. orn. 31, 3). 49, 2. — Vgl. अनुरञ्जक fg.

— अप 1) *sich entfärben:* श्यामापरक्ताधर *entfärbt, bleich* (unter अपरक्त fälschlich in अप + रक्त zerlegt) Çiç. 133. — 2) *abwendig werden:* नूनं मित्राणि ते रतः साधूपचरितान्यपि । स्वदोषादपरज्यन्ते MBh. 13, 5889. अपरक्त *abgeneigt:* मनुष्याणामपचारादपरक्ता देवताः Varâh. Bṛh. S. 46, 3. — Vgl. अपराग. — caus. *sich abgeneigt machen, Jmdes Liebe verscherzen;* mit acc. der Person: पित्रापरञ्जितास्तस्य प्रज्ञास्तेनानुरञ्जिताः Harîv. 321.

— अभि 1) *entzückt sein, grosse Freude haben an:* (न) कथाभिरभिरज्यते Spr. 4428. अभिरक्त *ergeben, zugethan* MBh. 4, 16. *hängend an:* धर्माभिरक्त R. 7, 10, 32. — 2) अभिरक्त *entzückend, reizend:* (गीतम्) मैरक्तमभिरक्तं च परया स्वरसंपदा R. Gorr. 1, 3, 61. — caus. *färben:* पद्मरेणवभिरञ्जित R. 4, 50, 12. तेजोभिरभिरञ्जितम् 1, 38, 21.

— समभि *roth erscheinen, funkeln:* को ऽयं मेत्रैः समभिरज्यते MBh. 12, 12592.

— उद् intens. *in Aufregung gerathen:* यस्मान्मे मन उदिव रारज्जीति AV. 6, 71, 2.

— उप 1) *sich färben, — röthen:* उपरक्त *gefärbt, geröthet:* कोपोपरक्तानि मुखानि Śiç. D. 337, 7. श्यामोपरक्ताधर schlechte v. l. für श्यामापरक्ताधर Çiç. 133. रुचिम् Çat. Bṛ. 11, 4, 4, 3. — 2) *verfinsternd über Etwas* (loc.) *sich legen:* मनसि — समशब्दमसौ विदमुपरज्याकाशते Bhâg. P. 4, 29, 69. उपरक्त *verfinstert* (von Sonne und Mond) AK. 1, 1, 3, 10. H. an. 4, 100. fg. Med. t. 190. R. 1, 55, 9 (56, 9 Gorr.). 2, 34, 3. 4, 14, 3. Varâh. Bṛh. S. 3, 28. m. Bez. Râhu's H. an. — 3) उपरक्त *gefärbt* so v. a. *stehend unter dem Einflusse von* (instr. oder im comp. vorangehend): रजसा Bhâg. P. 3, 8, 33. अविद्याकामकर्मभिरुपरक्तमनसा 5, 14, 3. विषयोपरक्त 11, 3. Sarvadarçanas. 162, 1. 7. 8. — 4) उपरक्त *niedergedrückt, niedergebeugt* AK. 3, 1, 43. Trik. 3, 3, 150. H. 381. H. an. Med. — Vgl. उपराग. — caus. 1) *färben:* काचस्फटिकखण्डा हि नानारागोपरञ्जिताः Kathâs. 24, 178. धरणीकिञ्जल्कोपरञ्जित Bhâg. P. 5, 17, 1. — 2) *afficiren, Einfluss üben auf* (acc.) Sarvadarçanas. 162, 16. उपरञ्जित *unter dem Einfluss von — gebracht, unter dem Einfluss von — stehend* Gaṇar. zu Siddh. 40. — Vgl. उपरञ्जक fg.

— प्रति caus. *entsprechend färben, — röthen:* मूर्याशुप्रतिरञ्जित MBu. 1,1412. ततो ऽस्तमगमत्सूर्यः संध्यया प्रतिरञ्जितः R. 6,14,21.

— वि 1) *sich entfärben, seine ursprüngliche Farbe verlieren:* चकोरस्य विरज्येते नयने विषदर्शनात् (vgl. Sçs. 2,246,2) Kâm. Nîtis. 7,12. केशा यपि विरज्यन्ते निःस्नेहाः Spr. 2983. act. Varâh. Bṛh. S. 78,19. विरक्तसंध्याकपिश Râgat. 13,64. — 2) *gleichgiltig werden, das Interesse für Personen und Sachen aufgeben, erkalten:* विरज्यते MBu. 3,13891. Bhâg. P. 3,13, 49. 30,4. 7,6,13. 11,34. विरज्य Spr. 1060, v. l. Schol. zu Bhâg. P. 1,4, 12. विरज्यते मित्राणि Sṛṅgâr. Bh. 5,6. सेवकाः Spr. 2983. तदा विरागानुरक्तो ऽपि विरज्यते जनः 4805. तस्मादस्माद्विरज्येत Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 323. तत: कन्या विरज्यताम् MBu. 1,7411. विरज्यति न मित्रेभ्यः 12, 6288. संसारे विरज्य Kull. zu M. 4,149. Kap. 3,66. स्त्रियो वा केषु रज्यते विरज्यते च ताः पुनः MBu. 13,2234. 2608. तस्यां न राजा विरज्येत् Kathâs. 32,32. 37,144. 38,40. 39,202. यौनं कृष्यति लङ्कायां विरज्यति समृद्धयः Bhaṭṭ. 18,22. विरक्त *a) gleichgiltig geworden* d. i. *kein Interesse mehr für Personen oder Sachen habend, erkaltet, abhold* MBu. 12,10371. Kap. 2,2. 4,23. Kathâs. 28,18. Bhâg. P. 1,13,24. 3,16,7. 32,30. 7,14,5. 9,6, 52. रक्ताद्वत्तिं समीहेत विरक्तस्य विवर्धयेत् Kâm. Nîtis. 5,46. 8,74. रक्ते विरक्ते मध्यस्थे स्वामिनि Spr. 4224. सेवामृतलता रक्ता विरक्ता विषयद्वारी (sc. स्त्री) 1549. 1634. 2134. °प्रकृति 3158. 4629. Kathâs. 33,185. 37,213. Paṇḍar. 60,5. Hit. 27,17. Verz. d. Oxf. H. 216,*a*,5. °भाव Spr. 3413. Paṇḍar. 33,16. °हृदय Kathâs. 5,105. 36,126. स° *ergeben, geneigt* Spr. 5352. इतस्माद्विरक्तः Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 13. मयि सा विरक्ता Spr. 2461. परदोषेषु 5018. Hit. 53,19. Kathâs. 3,45. भोगसंपदि 17,92. जीवितं प्रति 6,78. दानादान° Spr. 2045. कथा° Hit. 27,16. — *b) gleichgiltig geworden* d. i. *kein Interesse mehr erregend, für den man erkaltet ist:* विरक्ता Taik. 2,6,4. Rîâ-Tar. 2,155. — Vgl. विरक्ति, विराग. — caus. 1) *färben* so v. a. *fleckig machen:* तद्वार्तवं प्रशंसन्ति यदाभो न विरञ्जयेत् Sçs. 1,313,10. — 2) *machen, dass Jmd gleichgiltig wird, — erkaltet:* पुत्रत्यः तृणमात्राद्विरञ्जिताः so v. a. *alsbald erkaltend* Spr. 3642.

— सम् 1) *sich färben, sich röthen:* चिताधूमेन नीलेन संरज्यते च पाटपाः MBu. 12, 5777. पुरा संरज्यते संध्या 1,6028. 6442. संरक्त *geröthet:* कोपसंरक्तनयन 1701. 5,373. 7066. R. 1,39,15. fg. 2,35,2. R. Gorr. 1, 4,29. 3,22,20. 33,16. 51,24. 55,12. 56,39. 4,9,1. 5,2,21. 83,1. 7,8,2. Verz. d. Oxf. H. 236,*b*,40. — 2) संरक्त *entzückend, reizend;* vom Gesange R. Gorr. 1,3,61. संरक्ततरमत्यर्थं मधुरं तावगायताम् R. Schl. 1,4, 17. *hinreissend* (im Gesange): संरक्ताभित्रिपुरविजयो गीयते किंनरीभिः Megh. 57; vgl. रक्त. रक्तकण्ठ. — caus. 1) *färben, röthen:* धातुसंरञ्जितशिल Harîv. 11860. — 2) *erfreuen, beglücken:* संरञ्जयन्प्रजाः Bhâg. P. 4,22,55.

— अनुसम् *भर्तारमनुसंरक्ता ergeben, zugethan* R. 1,17,16 (17,5 Gorr.).

— अभिसम् partic. praet. pass. *hängend an, ergeben:* कामभोगाभिसंरक्तो मैथुनायोपचक्रमे R. 7,26,41.

रज्र् gaṇa पचादि P. 3,1,134. m. 1) = रज्स् *a) Staub* Med. ğ. 13. Açâjur. bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,216. Çabdar. im ÇKDr. Hierher wird gezogen अर्वा: पादरजोयमाः Spr. 217, wo aber रजोयम eine auch sonst vorkommende Contraction von रजउपम ist. — *b) Blüthenstaub* Med. Açâjur. und Çabdar. कुङ्कुमरजन्यासाय Prasaṅgân. 15, *a*. dagegen ist in पद्मपुष्परजोन्मिश्र R. 3,79,29 eine unregelmässige Contraction anzunehmen. — *c) Menstrualblut* Med. Açâjur. Çabdar. auch n. nach Çabdar. — *d) Leidenschaft* Med. Açâjur. Çabdar. — 2) N. pr. *a)* eines Wesens im Gefolge Skanda's MBu. 9,2575. — *b)* eines Fürsten, eines Sohnes des Viraǵa, VP. 165. — Vgl. अग्नि°, नी°, भृङ्ग°, वि°, स°.

रजउद्दाम adj. (f. आ) = मलोद्दामम् Kauç. 35.

रजःपुत्र m. *ein Sohn der Leidenschaft, der Lust* so v. a. *ein sonst ganz unbekannter Mann* Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,36. 45. Wohl mit beabsichtigtem Anklange an राजपुत्र; vgl. रजस्तोक.

रजक (von रज्) m. 1) *Wäscher* (der sich auch mit dem *Färben* der Kleider beschäftigt) P. 3,1,145, Vârtt. 6,4,24, Vârtt. 3. Vop. 26,38. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,32. AK. 2,10,10. Taik. 2,10,4. H. 914. an. 3,86. Halâ. 2,438. रजकं रङ्गकारकम् Harîv. 4470. fgg. Bhâg. P. 10,41,32. Paṇḍar. 62,24. यो न जानाति निर्कर्तुं वस्त्राणां रजको मलम्। रक्तानां वा शोधयितुं यथा नास्ति तथैव सः॥ MBu. 12,3404. रजकेन यथा शुक्लं वस्त्रं भवति धारितम् Matsja-P. 170,21 (nach Aufrecht). Jâḍ. 1,164 (neben चैलधाव). R. 2,83,15 (90,15 Gorr.). Varâh. Bṛh. S. 10,5. 13,22. 87,17. 41. नग्नश्रमणके देशे रजकः किं करिष्यति Spr. 666. को दाता रजको दद्याति वसनं प्रातर्गृहीत्वा निशि 5015. Sin. D. 35,11. Vop. 5,32. रजकस्य गर्दभः Kathâs. 63,132. fg Paṇḍar. 214,25. Hit. 30,1. 17. 81,12. fg. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,29. 281,*b*,28. 282,*b*,48. रजकतनुत्वाप्यम् P. 2,4,10, Sch. eine verachtete Klasse von Menschen Colebr. Misc. Ess. II, 184. fg. तीवर्णी धीवरात्पुत्रो बभूव रजकः स्मृतः Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,12. रजकी *Wäscherin* (nach Pat. zu P. 3,1,145 *die Frau eines Wäschers*) P. 3,1,145, Vârtt. Vop. 26,28. Sin. D. 61,3. रजक्यो तीवराश्चैव कपालीति बभूव ह Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,12. Bez. *eines Frauenzimmers am 3ten Tage der Menses* Ver. in LA. III, 8,11. unter den 8 Akula bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 91,*b*,36. रजिका *Wäscherin* Pat. zu P. 3,1,145. Varâh. Bṛh. S. 78,9. — 2) *Papagei* (शुक) H. an. st. dessen *clothes* (d. i. अंशुक) Wilson nach derselben Aut. und ÇKDr. nach Viçva. — 3) angeblich N. pr. eines Fürsten VP. 466, N. 5 und darnach LIA. I, Anh. XXXIII; fehlerhaft für राजक.

रज्र्त (von रज् = रज्र् wie अर्जुन und रजत) Uṇâdis. 3,111. 1) adj. *weisslich, silberfarbig* (AK. 3,4,44,82. H. an. 3,287. Med. t. 143); *silbern:* शुभ्रमुत्तप्यायने रजतं हरिणाणो। रथे युक्तमसनाम सुषामणि RV. 8, 25,22. (पुरम्) रजतामलरत्नमकुर्वत Ait. Br. 1,23. VS. 23,37. रजतं हिरण्यम् *weissliches Gold* d. h. *Silber* TS. 1,5,1,2. Çat. Br. 12,4,4,7. 13, 4,2,10. 14,1,2,14. Kâṭy. 10,1. सुवर्णरजतौ रूक्मौ Çat. Br. 12,8,2,11. TBr. 1,5,10,1. 7. 8,9,1. पात्र 2,2,9,7. 3,9,9,5. निष्क Paṇḍav. Br. 17, 1,14. Âçv. Çr. 2,3,15. Kaṭhân. Up. 3,19,1. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. zu belegen nur das n.: *a) Silber* AK. 2,9,97. H. 1043. H. an. Med. Halâ. 2,17. 5,8. AV. 5,28,1. 13,4,31. Ait. Br. 7,12. Kâṭy. Çr. 10,2,27. 26,2,20. Kauç. 16. Kaṭhân. Up. 4,17,7. Sṛṅgâr. Bh. 6,6. M. 8,321. 11,57. 167. R. 1,53,11. सुवर्णरजतैः 2,32,14. 94,5. Sucr. 1,5,2. Varâh. Bṛh. S. 64,1. Kir. 5,41. Naish. 22,52. Verz. d. Oxf. H. 282,*a*,28. — *b) Gold* H. 1043. AK. 3,4,44,82 soll Kaṇakasvâmin nach Aufrecht रजसि st. रजते lesen. — *c) Perlenschmuck* AK. 3,4,44,82.

H. an. Med. Hall. 3, 8. — *d) Blut.* — *e) Elfenbein.* — *f) ein best. Berg* (als neutr.? vgl. रजतकूट u. s. w.). — *g) ein best. See* (als neutr.?) H. an. — *h) Sternbild* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. महा°.

रजतकूट N. pr. einer *Kuppe* im Malaja-Gebirge Kathâs. 68, 69.

रजतदंष्ट्र (र° + दंष्ट्रा) m. N. pr. eines Sohnes des Vajradaṁshṭra, eines Fürsten der Vidjâdhara, Kathâs. 65, 78.

रजतद्युति m. Bein. Hanumant's Çabdar. im ÇKDr.

रजतनाभ m. N. pr. eines mythologischen Wesens Hariv. 382. 385. वत्सनाभ an der ersten Stelle die neuere Ausg. — Vgl. रजतनाभि.

रजतनाभि 1) adj. *einen weisslichen Nabel habend* VS. 29, 59. — 2) m. N. pr. eines Abkömmlings des Kubera AV. 8, 10, 25; vgl. रजतनाभ.

रजतपर्वत m. *ein Berg von Silber:* घंटुमात्राम R. 4, 40, 45. °दान Verz. d. Oxf. H. 41, *a*, 23. N. pr. eines best. *Berges* (aber nicht des Kailâsa) Hariv. 9736.

रजतपात्र n. *Silbergefäss* AV. 8, 10, 23. Râdâ-Tan. 5, 482.

रजतप्रस्थ m. Bein. des Kailâsa Taik. 2, 3, 1.

रजतभाजन n. *Silbergefäss* Suçr. 1, 170, 4.

रजतमय (von रजत) adj. (f. ई) *silbern* Varâh. Bṛh. S. 60, 5. 81, 26. Kathâs. 73, 119. Schol. zu Naish. 22, 53.

रजतवाक् m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Sarvân. K. 184, *a*, 4.

रजताकर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *b*, 8.

रजताद्रि (रजत + अद्रि) m. *der Berg von Silber*, Bein. des Kailâsa H. 1028. Spr. 681.

रैजन (von रज्र) Uṇâdis. 2, 79. P. 6, 4, 24, Vârtt. 5. 1) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Kaṅgoja TS. 2, 3, 8, 1. Pañkav. Br. 13, 4, 11. Vgl. राजनि. — 2) *Strahl* Çiksh. Bh. 7, 4. — 3) n. *Safflor* Uṇâdis.; vgl. महा° महारजनरञ्जित MBh. 8, 2528).

रजनक m. N. pr. = रजन Ind. St. 3, 460.

रजनि (Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2, 103) und रजनी (gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41) f. desselben Ursprungs wie रजस्. 1) *Nacht*, रजनि (überall nur aus metrischen Rücksichten gebraucht) AK. 1, 5, 6. Spr. 2294. 3178. Gît. 8, 2. Kathâs. 18, 145. 42, 225. 47, 96. Abhinanda bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2, 103. रजनी AK. 1, 1, 8, 4. Taik. 3, 3, 257. H. 142. 144. an. 3, 403. Med. n. 114. Hall. 1, 106. fg. Viçva bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2, 103. AV. 1, 23, 1. Jâén. 1, 248. MBh. 3, 2721. 14765. 16821. R. 1, 9, 31. 13, 36. 2, 34, 33. 48, 26. 63, 3. 83, 14. Suçr. 1, 242, 10. Çâk. 46, 8. Mâlav. 84. Raçu. 9, 37. Kumâras. 4, 11. Spr. 3317. 4184. Varâh. Bṛh. S. 38, 5. 7. Kathâs. 4, 9. 18, 213. Bhâg. P. 5, 14, 9. Pañkat. 128, 11. 248, 5. Hit. 9, 5. Ver. in LA. (III) 3, 21. Naish. 22, 49. °कोलि Verz. d. B. H. No. 340. रजनी unter den Beinn. der Durgâ Hariv. 3277. — 2) रजनी *eine best. Pflanze* Varâh. Bṛh. S. 44, 9. = ञनी, ञतुका, ञतुकृत् AK. 2, 4, 3, 19. Med. *Curcuma longa* (wie alle Wörter mit der Bed. *Nacht*) Taik. H. an. Med. Viçva a. a. O. Ratnam. 58. Suçr. 1, 42, 2. 2, 24, 2. 62, 11. 419, 1. Naish. 22, 49. °हय und रजन्यौ *Curcuma longa* und *aromatica* (= कृमिद्रा und दारुहरिद्रा) Suçr. 1, 133, 7. 2, 284, 21. 357, 1. रजनी *die Indigopflanze* H. an. Med. Viçva. Die Bedd. *Weintraube* bei Viçva und *Lack* in H. an. beruhen wohl auf einer Verwechselung von ञ्रात mit लाता und von ञतु, ञतुक (= लाता) mit ञतूका. — 3) रजनी N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5, 20, 10. रजनी im Index zu VP. und रजानी im Text 183 fehlerhaft für राजनी. — Vgl. नक्तरजनी.

रजनिकर m. *der Nachtmacher, der Mond* Hall. 1, 43.

रजनिचर m. *Nachtwandler* d. i. *ein* Râkshasa MBh. 7, 2607. R. 5, 76, 23. Bhatt. 12, 86.

रजनिमन्य adj. *für Nacht geltend, — angesehen:* दिवस Bhatt. 7, 13.

रजनी s. u. रजनि.

रजनीकर m. *der Nachtmacher, der Mond* H. 105, Sch. Çabdar. im ÇKDr. Gîr. 7, 22. 12, 22. Bhâg. P. 4, 28, 24. °नाथ schlechte v. l. für रजनीचरनाथ Spr. 2383.

रजनीगन्ध m. *Pollanthes tuberosa* Wilson; f. या *eine best. Pflanze mit weisser Blüthe* ÇKDr.

रजनीचयनाथ schlechte v. l. für रजनीचरनाथ (s. u. रजनीचर) Spr. 2383.

रजनीचर adj. *in der Nacht wandelnd*, Beiw. des Mondes Hariv. 11802. °नाथ *der Schutzherr der Nachtwandler* oder *der Oberste der Nachtwandler* als Bez. *des Mondes* Spr. 2383. रजनीचर m. *ein* Râkshasa Çabdar. im ÇKDr. R. 3, 31, 4. 38. 53, 61. 5, 28, 12. 30, 4. 7, 5, 4. Nach Wilson und ÇKDr. auch *Nachtwächter* und *Dieb.*

रजनीजल n. *Schnee, Reif* Hin. 67.

रजनीपति m. *der Herr —, der Gatte der Nacht, der Mond* Kathâs. 25, 140.

रजनीमुख m. *Eintritt der Nacht, Abend* AK. 1, 1, 8, 6. H. 144, v. l. Hall. 1, 109. Râdâ-Tan. 4, 423.

रजनीय (von रज्र) adj. *woran man seine Freude hat, entzückend:* °कर्मन् MBh. 2, 2088. मरुनीय° ed. Bomb. — Vgl. रञ्जनीय.

रजनीरमण m. *der Gatte der Nacht, der Mond* Kathâs. 106, 30.

रजनीकामा f. *Nyctanthes arbor tristis* Çabdar. im ÇKDr.

रजयित्री (vom caus. von रज्र) f. *Färberin* VS. 30, 12.

रजःशर्य adj. (f. या) so v. a. रजसि (= रजते) शेते Mân. *silbern* VS. 5, 8. Sây. zu Âit. Br. 1, 23 citirt dafür रजाशय, wie auch घगाशय und कृराशय; vgl. Ind. St. 10, 364.

रजःशुद्धि f. *richtige Beschaffenheit der menses;* so heisst ein Kapitel im Çârîra Suçr. 1, 9, 7; vgl. 313, 16.

रैवम् (von रज्र = 3. ऋज् wie ऋजुन und रजत) 1) n. Uṇâdis. 4, 216. P. 6, 4, 24, Vârtt. 3. Vop. 26, 68. *a) Dunstkreis, Luftkreis,* sofern darin *Nebel, Wolken* u. a. sich bewegen; pl. *die Lüfte;* jenseits ist *der Lichtraum des Himmels* (रोचना दिवः), wie αἰθήρ jenseits des ἀήρ. RV. 1, 36, 5. दिवो रज उपमस्तभायः 62, 5. यत्सानवंसि: श्येनो न भीतो अतरो रजांसि 32, 14. न ते विद्यावस्थिमानं रजांसि 7, 21, 6. आत्मा ते वातो रज आ नवीनोत् 87, 2. रजः सूर्यो न रश्मिभिः (द्यापृणक्ति) 1, 84, 1. सप्त 124, 5. अर्यं दिव ईयर्ति विश्वमा रजः 9, 68, 9. 7, 66, 18. यो वां रजांस्यस्मिना रथो विमिमीते रोदसी 8, 62, 13. कं स्विदस्य रजसो महस्परं कावरं मरुतो यस्मिन्नायय 1, 168, 6. 187, 4. रजसो विमानं रथम् 2, 40, 3. य ईं राजानावृतुथा विदधृजसो (oder abl. als gen., wie Sây. erklärt) मित्रो वरुणश्चिकेतति 8, 62, 9. पाप्यां रजो युपितमत्तरिते AV. 4, 25, 2. यो अत्तरिते रजसो विमानः RV. 10, 121, 5. अर्कणुतमत्तरिते वरीयो ऽप्रथतं द्यावे नो रजांसि 8, 69, 3. अमूर्ते मूर्ते रजसि निषत्ते 10, 82, 4. AV. 7, 25, 1. 41, 1. 10, 3, 9. 13, 2, 8. 43. VS. 13, 44. Sâṅkhây. Br. 1, 2. Çat. Br. 14, 8, 15, 4. TS. 3, 5, 8, 2. —

Im Besondern α) *eines der Weltgebiete:* दिवो वा पार्थिवादधि। मरुतो वा रजसः RV. 1,6,10. 149,4. दिवि तर्यत्ता रजसः पृथिव्याम् 7,64,1. पार्थिवम्, रजः, दिवः सदांसि VS. 34,32. दिवो रजसः पृथिव्याः Vâjas. 9,3. या धर्ताारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य RV. 5,69,4. 34,4. 6,7,7. पार्थिवानि, रजांसि 31,2. पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम् 61,11. वीन्द्र यासि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा 10,32,2. 149,2. AV. 13,1,7. 4,1, 4.— β) *irdischer und himmlischer Dunstkreis;* in manchen der folgenden Stellen kann aber पार्थिव als subst. gefasst werden: *Erdenraum;* vgl. die Stellen unter α). या पंप्रो पार्थिवं रजो बहधे रोचना दिवि RV. 1,81,5. 90,7. 9,72,8. न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवम् 8,77,5. 1,134,1. 6,49,3. ये पार्थिवे रजस्या निषत्ताः 10,15,2. आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा 4,53, 3. सखायो वाजमकृन्दिवो रजः 1,110,6. — γ) drei *Dunstkreise:* अन्तरितम्, त्री रजांसि, त्रीणि रोचना RV. 4,53,5. je drei रोचना, व्याप्तः, रजांसि 5,69,1. AV. 13,3,21. तृतीये रजसि RV. 10,45,3. 123,8. 9,74,6. AV. 13, 1,11. sechs RV. 1,164,6. — δ) du. *die untere und die obere Region* (über der Erde) Naigh. 3,30. RV. 1,160,4. विवर्तयन्ती रजसी समीचे 7,80,1. उभे नि विश्वा रजसी 99,1. मही घेषरे रजसो विधर्मणि 9,68,3. अरुषो कृष्ण-मरुषर्वुनं य वि वर्तते रजसो धेनामिः 6,9,1. दूतो देवानां रजसो समीयसे 15,9. 4,42,3. 6. उर्वी गभीरे रजसी सुमेके अवंशे धीरः शच्या समैरत् 56,3. — ε) *die obere und untere Grenze des Dunstkreises* (पार und वर्ध): (वसेतान्) अधोधयो रजस इन्द्र पारे RV. 1,33,7. तर्यत्तस्य रजसः पराके 7,100,5. यो अस्य पारे रजसो विवर्पे 10,27,7. दूरे पारे रजसो रोचनाकरम् 49,6. या सिस्रतू रजसः पारे अर्वतः Vâjas. 11,2. अधो वृवी रजसो वर्धनाधयत् RV. 1,52,6. तं देवा वृधे रजसः सुदंससं दिवस्पृथिव्योररतिं न्येरिरे 2,2,3. 4,1,11. 17,14. अस्तो 5,47,3. पूर्व अर्धे 1,92,7. 124,8. — ζ) रजसस्पतिः RV. 7,35,5 nach Sây. Indra. — *b) Dust, Nebel; Dunkelheit, Dunkel* (vgl. ἀήρ); = रात्रि Naigh. 1,7. या कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च RV. 1,35,2. 4. नाकृष्यं सुगेभिर्नक्तमूरुषू रजोभिः *im Dunkel* 116,20. 6,62,6. रथस्य भानुं हरिषू रजोभिः 2. रजस्तमो मोर्ा गाः AV. 8,2,1. पारयामि त्वा रजस उग्रो मृत्योरपीपरम् 9. केतुमान-न्यस्केनानो रजांसि विश्वा धादित्य प्रवतो वि भासि 13,2,28. सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतम् RV. 1,164,14. सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने 5,59,3. पट्वरीर्णा चित्रा तंतानो रजांसि 10,111,4. ततंथ तन्वक्वसो भानुमन्विहि vom *Dunst zum Licht* 53,6. धूमेनाग्नी रजसा च मध्यम: Nir. 12,26.— *c) Dunst, Staub* (AK. 2,8,2,66. 3,4,2,22. H. 970. Med. s. 30. fg. Halâj. 2,288); *Unreinigkeit, kleine Partikeln irgend eines Stoffes:* कृष्णा रजांसि पतयन्त: प्रणीर्ा ज्ञानवेदसः RV. 8,43,6. पस्यो वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वन् AV. 12,1,51. अर्चा इव रजो दुधुवे वि तां जनान् 67.10,1,32. रजः स्पर्शो मेध्यम् M. 5,133. 11,110. पार्थिवे रजः MBh. 1,6021. R. 1,28,14. 2,33,19. प्रशाम्य महीरजः 40,33. 72,31. 3,76,33. 4,39,9. रजोधूमाकुला दिशः Suçr. 1,22,2. 118,5. रजःकण Nâgân. 1,85. Varâh. Bṛh. S. 3,9. 28. 9,41. 16,10. 30,3. धूताधरजम् adj. Kathâs. 18,113. 244. Prab. 77,9. Bulc. P. 3,17,3. 4,5,7. रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैः Nâgân. 1,42. 4,29. 6,33. 12,32. Çiç. 8. Spr. 2700. 2816. Pañcat. 1,14,100. क्षयो° Kauç. 8. मलयज° Spr. 3268. *Staubkörnchen:* त्रसरेणवोऽष्टौ विहायसो यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः। प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते ॥ M. 8,132. Jâjñ. 1,361. Varâh. Bṛh. S. 58,1. 2. Ind. St. 3,436. ए: पार्थिवान्यपि कविर्विममे रजांसि Bulc. P. 2,7,40. 3,23,19. Vgl. लोक°. — *d) Blüthenstaub* Med. सुमनो° AK. 2,4,4,17. पद्मपुष्प° R. 3,79,29. Mâgh. 34. 66. Çiç. 86. 131. Vikr. 26. Mâlav. 44. Bulc. P. 4,24,23. अज्ञात° adj. Spr. 135. — *e) das Staubige* d. i. *das aufgerissene und bebaute Land:* उत्तर्यासो मरुतो दिता इव पृङ्क रजांसि पर्वसा मयोभुवः RV. 1,166,3. घृतैर्गव्यूतिमुक्षतं मधा रजांसि 3,62,16. परि यत्पांसि भरते रजांसि *sie führt über die Flächen, die Felder* 16,75,7. — *f) die menses* (eig. *Unreinigkeit*) Nir. 4,19. AK. 2,6,1,21. 3,4,20,233. H. 536. Med. अरजोविद्या कुमारी Kauç. 37. Gobhilagṛh. 2,21. Suçr. 1, 30,16. रजसेव स्त्रिया रक्तं रजःसंज्ञं प्रवर्तते 43,16. 44,18. रजसाभिप्लुतां नारीम् M. 4,41. रजसा समभिप्लुताम् 42. रजस्युपरते 5,66. 108. रजसाभि-परिप्लुता MBh. 3,523. यसंप्राप्तरजा गौरी प्राप्ते रजसि रोहिणी Spr. 282. 2907. Varâh. Bṛh. S. 74,9. अज्ञात° adj. Spr. 135. अदृष्ट° Hâlâs. 2,239. — *g)* in der Philosophie *die mittlere der drei Qualitäten* (सत्त्व, रजस् oder तेजस् und तमस्), *die den Geist verdüsternde Leidenschaft* (wobei an रञ्, रज्, राग angeknüpft wird) AK. 1,1,4,7. 3,4,20,233. Med. Maitrâjan. 5,2. M. 12,24. रागद्वेषौ रजः स्मृतम् 26. यत्तु दुःखसमायुक्तम-प्रीतिकरमात्मनः। तद्रजो ऽप्रतिघं विद्यात् 28. तमसो लक्षणं कामो रज-सस्त्वर्थ उच्यते। सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः 38. काम एष क्रोध एष रजोगुणसमु-द्भवः 3,37. Sâṁkhjak. 13. 54. Madhus. in Ind. St. 1,23,17. Suçr. 1,81,7. 2,537,18. Varâh. Bṛh. S. 66,9. Bṛh. 2,7. Weber, Râmat. Up. 289. 324. Bulc. P. 3,8,13. रजोऽधिक *in dem das* Rágas *vorherrscht* Varâh. Bṛh. S. 69,8. *Leidenschaft* überh. MBh. 3,1086. शान्त° adj. Bhag. 6,27. रजो-विरिक्तमनाः शशास Ragh. 14,85. अस्तर्गतमपास्तं मे रजसो ऽपि परं तमः Kumâras. 6,60. Kathâs. 20,128. Bulc. P. 3,15,20. रोषरजोभिः (zugleich *Staub*) Spr. 2816. — *h) Zinn* H. ç. 139 (kein Fehler st. रङ्ग, da dieses im Text sich findet). — *i)* = ज्योतिस्, उदक, लोक, अक्षन् Nir. 4,19. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha VP. 83. — Vgl. अ°, दुस्त°, नी°, पेरो°, पाद°, पुष्प°, भृङ्ग°, मही°, वि°, स°, राजस.

रजर्सं (von रजस्) adj. *trübe, dunkel:* नियान AV. 8,2,10. etwa *unrein, schmutzig* 11,2,25. — Am Ende eines adj. comp. = रजस् in अप्रात-रजसा *die menses noch nicht habend* Gobhilagṛh. 2,28.

रजसानु m. 1) *Wolke.* — 2) *Geist, Herz* (चित्त) Uṇâdik. im ÇKDa.

रजस्क am Ende eines adj. comp. von रजस् in नी° und वि°.

रजस्तमस्क adj. von den *Qualitäten* रजस् und तमस् *beherrscht:* असुराः Bulc. P. 7,1,11.

रजस्तमोमय adj. *die Natur der Qualitäten* रजस् und तमस् *habend* Mâlav. P. 68,28. 41.

रजस्तुर् adj. *durch den Dunstkreis kommend, die Lüfte durcheilend* RV. 1,64,12. 8,2,2. 66,7. 9,48,4. 108,7.

रजस्तोक m. n. *das Kind* (तोक) *der Leidenschaft* d. i. *die Habsucht* Bulc. P. 12,8,16. 25. — Vgl. रजःपुत्र.

रजस्यु (von रजस्, रजस्यति *zu Staub werden, zerstieben* Gaṇaratnam. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

रजस्य (wie eben) adj. *dunstig* oder *staubig* VS. 16,45.

रजस्वर्ल (wie eben) P. 5,2,112. Vop. 7,32. 1) adj. (f. घा) *a) bestäubt, mit Staub erfüllt* MBh. 7,1454. 8396. 9,1370. Bulc. P. 7,13,12. रजस्व-लात्व 5,13,4. 14,9. — *b)* f. *die menses habend, eine Frau während der menses* Vop. 7,32. AK. 2,6,1,20. H. 534. Med. l. 162. Halâj. 2,333. Gobh. 3,5,3. Çâṅkh. Gṛhj. 2,12. 6,1. M. 3,239. 5,66. Jâjñ. 3,229. MBh.

2,2228. 4,1566. 12,1378. Sūrya. 1,290,13. 2,147,12. 537,18. Rāgat. 11, 60. Spr. 3031 (so v. a. *mannbar*). Kathās. 73,113. Verz. d. Oxf. H. 33, *b*,16. 59,*b*,14. 85,*b*,33. °गमन 87,*b*,24. 283,*a*,3. 5. 6. 294,*b*,16. 311,*a*, 35. Vet. in LA. (III) 8,2. — *c*) von *der Qualität* Rāgas *erfüllt, voller Leidenschaft* M. 6,77. चित्त Bhāg. P. 11,19,26. धतिरजस्वलमति 5,14,9. — *d*) als Erklärung von रजिष्ठ Nir. 8,19 nach Durga so v. a. उदकवत्. — 2) m. *Büffel* Taik. 2,3,4. H. 1282. Med.

रजस्विन् (wie oben) adj. *voller Blüthenstaub* und zugleich von *der Qualität* Rāgas *erfüllt:* संसारमेरोस्त्र Verz. d. Oxf. H. 140,*a*, No. 282.

रजःस्पृश् adj. *den Staub —, die Erde berührend:* न तावन्मानुषी येन पादौ नास्या रजःस्पृशौ Kathās. 28,61.

रजाशय s. रजःशय.

1. रजि m. 1) N. pr. eines von Indra bezwungenen Dämons oder Fürsten: तं रजिं पिठीनसे दशस्यन्यष्टि सुरुमा शय्या सचाकन् RV. 8, 26,6. nach Sāj. N. eines Mädchens oder so v. a. *Reich*. Vgl. die Vermuthung zu AV. 20,128,12. N. pr. eines Sohnes des Āju (MBh. 1,2150 nach der Lesart der ed. Bomb., राजि ed. Calc.). Harīv. 1476. VP. 406, 411. fg. Bhāg. P. 9,17,1. 12. fg. Verz. d. Oxf. H. 40, *a*, 23 und N. 3. — 2) unbekannt ist die Bed. des Wortes in folgender Stelle: उभा रजी न केशिना पतिर्दन् RV. 10,103,2. nach Sāj. *Himmel und Erde* oder *Sonne und Mond*.

2. रजि f. etwa *Richtung* (vgl. ऋजु): रजिष्ठया रज्या पञ्च या गोस्तुतूर्यति पर्यप्रे दुवस्युः RV. 10,100,12.

रजिष्ठ s. u. ऋजु.

रजीकर् (रजस् + 1. कर्) *in Staub verwandeln* Vop. 7,34.

रजीषम् s. u. ऋजु.

रजेषित (रजस्इषित Padap.) adj.: यच्चेषितं रजेषितं मनेषितं प्राग्म तदिदं नु तत् RV. 8,46,23. nach Sāj. रजस् = उष्ट्र oder गर्भ und इषित = प्रापित.

रजोगात्र (रजस् + गात्र) m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha Mārk. P. 52,26.

रजोगुणमय adj. *die Qualität* Rāgas *habend* Mārk. P. 68,24.

रजोयुज् (रजस् + य°) adj. Vop. 26,48.

रजोदर्शन n. *die Erscheinung der ersten menses* (रजस्) Saṃk. K. 1,*a*.

रजोबल n. *Finsterniss* Taik. 1,2,1. H. ç. 19. Vielleicht richtiger रजोवल. — Vgl. रजस्वल.

रजोमेघ m. *Staubwolke* MBh. 9,1213. R. 1,28,14.

रजोरस m. *Finsterniss* Candam. im ÇKDr.

रजोवल s. रजोबल.

रजोरुर m. *Wäscher* Candam. im ÇKDr.

रजोरुणधारिन् (?) m. = व्रतिन् Hall. 2,189.

रज्जव्य (von रज्जु) n. *Seilzeug* Çat. Br. 6,7,4,28. Kāṭ. Çr. 17,2,9. 26,2,7.

रज्जु (vielleicht von सृज्; vgl. सज्) Uṇādis. 1,16. f. P. 4,1,66, Vārtt. Vop. 4,39. Siddh. K. 248,*b*,11. in comp. auch m. (कर्कटरज्वा und °रज्जुना; vgl. Daçak. 71,2: रज्जुनि vermuthet AV. 20,133,2) ebend.; in der älteren Sprache auch रज्जू; acc. रज्वम् ved., gen. रज्वान् (M. 11,168) und रज्ञोस् (P. 6,2,9, Sch.). 1) *Strick, Seil* AK. 2,10,27. H. 928. Med. f. 14. Hall. 2,442. या शीर्ष्णया रशना रज्ञुरस्य RV. 1,162,8. AV. 5, 121,2. 3,11,8. वरुण्या Çat. Br. 1,3,4,14. या रज्जौ (रज्जू v. l.) मृजन्ति TS. 2,5,8,7. Çat. Br. 10,2,2,8. 11,3,4,1. 14,1,2,11. रज्जू प्रवयन्ति Çāṅkh. Çr. 17,3,7. दृतती die Schlange AV. 4,3,2. 19,47,8. Çat. Br. 4, 4,5,3. मौञ्जी 6,7,4,13. Kāṭ. Çr. 16,5,2. कुश° Āçv. Gṛhy. 4,8,15. शाव° Kauç. 13. दर्भ° 39. °धान 44. °संदान Çat. Br. 14,3,4,22. यद्गुवह Kāṭ. Çr. 7,6,14. यवमलिव सृष्टया रज्ज्या परितत्य 21,3,23. रज्जूना 13,7,1. — M. 8,319. 11,168. ताड्याः स्यू रज्ज्वा वेणुदलेन वा 8,299. 9,280. रज्जुमास्थाय so v. a. *ich werde mich erhängen* MBh. 3,2163. R. 2,74,29. 78,7. 5,36, 122. Sūrya. 1,23,10. 65,15. 161,21. वृष्य° Megh. 84,14. सुवर्ण° 86,8. Spr. 1937. 2369. 3342. 3836. 4469. प्रेम रज्जुदृढबन्धनमुक्तम् (so ist zu trennen) 4607. Vāsiṇ. Bhn. S. 43,38. 66. 95,40. °व्यालक 51,14. बबन्धुस्तं °बन्धेन Kathās. 18,300. 305. 43,36. 64,100. °पेटा 107. °पीठिका 73,121. °यष्टि 43,25. Bhāg. P. 1,7,34. त्रिकाण्डी Vop. 6,53. Pāṇ. Gaṇ. 76, 17. 133,3. Vet. in LA. (III) 8,13. Vedānt. (Allah.) No. 91. °च्छिद् P. 3, 2,61, Sch. °वर्तन 3,3,89, Sch. रज्जूद्धतमुदकम् Uṇ. zu Uṇādis. 1,16. काष्ठ° *ein Strick zum Zusammenbinden der Holzscheite* R. 1,4,20. Am Ende eines adj. comp. im f. °रज्जुका Kathās. 73,119. — 2) in der Med. *Sehnen, die von der Wirbelsäule ausgehen*, Suçr. 1,337,13. 338,15. Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,2 v. u. — 3) *Flechte* (वेणी) Med. — 4) Bez. *einer best. Constellation* Vārāh. Bṛh. 12,3. 11. — Vgl. पशु°, पाद°, पाश°, पूति°, बल्ली°, वात°.

रज्जुकण्ठ m. N. pr. eines Lehrers gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. — Vgl. राज्जुकण्ठिन्.

रज्जुदाल m. *ein best. Baum* Çat. Br. 13,4,4,6. — Vgl. राज्जुदाल.

रज्जुदालक m. *das wilde Huhn* Jāṭ. 1,174.

रज्जुभार m. N. pr. eines Lehrers gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. — Vgl. राज्जुभारिन्.

रज्जुवाल m. = रज्जुदालक M. 5,12.

रज्जुशारद adj. *so eben vom Stricke kommend, so eben geschöpft:* Wasser P. 6,2,9, Sch.

रज्जुसर्ज m. *Seiler* VS. 30,7.

रञ्ज् s. निरञ्जन und vgl. लाञ्ज्.

रञ्ज् s. रञ्.

रञ्ज s. ज्वलरञ्ज.

रञ्जक (vom caus. von रञ्ज्) 1) adj. = रञ्जन H. an. 3,403. *a*) *färbend* Çiṅkṣ. Saṃk. 1,3,10. Viṣṇu. 12,13. Schol. zu Kap. 1,19. Nāmça in Mānān. S. 10. m. *Färber* M. 4,216. रञ्जकी f. *Färberin* unter den 8 Akula bei den Çākta Verz. d. Oxf. H. 91,*b*,36. — *b*) *angenehm erregend, entzückend, erfreuend* Verz. d. Oxf. H. 138,*b*, No. 273. 199,*b*, No. 472. 200, *b*, No. 476. 211, *b*, No. 499 (f. रञ्जिका). — 2) m. *eine best. Pflanze*, = कम्पिल्लक. — 3) n. *Mennig* Rāgān. im ÇKDr.

रञ्जन (wie oben) 1) adj. = रञ्जक H. an. 3,403. = रागजनन Med. n. 113. *a*) *färbend:* °द्रव्य Mallin. zu Kumāras. 1,33. °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 152,5. — *b*) *angenehm erregend, entzückend, erfreuend:* हृदय° Gīt. 10,7. Verz. d. Oxf. H. 141,*b*,21. 200,*a*,5 v. u. ज्ञान° 199, *b*, No. 472. Gīt. 1,19. ज्ञानरञ्जनी f. Bez. einer best. Gebetsformel Pāṇ. 3,15,32. — 2) m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) Rozb. Rāgān. im ÇKDr. — 3) f. ई *a*) wohl so v. a. *freundliche Begrüssung* Burn. Intr. 402, N. 2.

— *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: *die Indigopflanze* AK. 2, 4, 2, 13. *Nyctanthes arbor tristis* Çabdar. im ÇKDn. *Gelbwurz* Râǵan. im ÇKDn. *ein best. wohlriechender Stoff* ebend. ÇKDn. und Wilson lassen das Wort nach Med. noch andere Pflanzen bezeichnen, die aber in der gedr. Med. unter रञ्जिनी, in H. an. unter राजिनी verzeichnet werden. — 4. m. *a*) *das Färben* Vicân. 12, 13. केश° Verz. d. Oxf. H. 122, *b*, 24. *Farbe:* नानारञ्जनरक्ता: MBn. 12, 3689. कपिञ्जलमारञ्जनस्य सौन्दर्यम् Spr. 3030. — *b*) *das Nasaliren:* उपधा° Cit. beim Schol. zu VS. Pâṛ. 3, 135. — *c*) *das Entzücken, Erfreuen, Beglücken, Zufriedenstellen* MBn. 12, 1998. 2057. Harîv. 3069. R. 1, 3, 37 (33 Gorr.). Spr. 1215. Ragu. 4, 12. 6, 21. Râǵa-Tar. 3, 102. 5, 436. Mallin. zu Kumâras. 4, 9. Verz. d. Oxf. H. 138, *b*, No. 273. Mâlav. P. 27, 6. — *d*) *rother Sandel* AK. 2, 6, 2, 32. H. 642. H. an. Med. — Vgl. केश° (s. auch oben u. 4) *a*), नखरञ्जनी, नेत्ररञ्जन, पाक°, मनो°, योनि°, रसिकरञ्जनी, स्तोरञ्जन.

रञ्जनक m. *ein best. Baum*, = कङ्कोल Râǵan. im ÇKDn. — Vgl. पट्°.

रञ्जनद्रु m. *ein best. Baum*, = घण्टक (?), vulgo घाघराळ ÇKDn.

रञ्जनीय (vom caus. von रञ्ज् und von रञ्जन nom. act.) adj. 1) *gut zu stimmen, zu erfreuen, zufriedenzustellen* Kathâs. 14, 37. 35, 43. — 2) *woran man seine Freude hat:* रञ्जनीयेषु रज्यति कोपनीयेषु कुप्यति Nîlak. 16. Sarvadarçanas. 177, 4. — Vgl. रञ्जनीय.

रञ्जनी f. Bez. verschiedener Pflanzen: *die Indigopflanze; Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Rabd. und = प्रपौण्डरीकचनिका Med. p. 113. Wilson und ÇKDn. nach derselben Aut. रञ्जनी, H. an. राजिनी.

रट् रटति (परिभाषणे, Vop. वाचि) Dhâtup. 9, 10. *heulen, brüllen, schreien, krächzen, laut wehklagen:* पपात रटतो भूमौ रराट च भयंकरम् Bhatt. 14, 81. Verz. d. Oxf. H. 257, *a*, 16. कराटा (= उष्ट्राः, रेटुः Bhatt. 14, 5. घोराघाराटिपुः शिवाः 13, 27. रटतो वायसाः Mârk. 157, 10. कर्र त्वं रट Spr. 2813. रटन्तः कराटाः कटु Kâç. zu Pân. 8, 3, 83 (nach Âufrecht). रटन्ति मर्त्यसंघाः Vârtt. Bhâṣ. S. 19, 7. Kathâs. 18, 109. vom Laute eines fallenden Beils: °पटुरटद्धाराधारः (nach einem Schol. पटु-घट°) कुठारः Prân. 5, 10. vom Laut einer Glocke: पटु रटति घण्टा Mâlatîm. 74, 20. *rauschen, rauschend reden:* माघे मासि रटत्यापः किंचिद्भ्युदिते रवौ । ब्रह्मघ्नमपि चाण्डालं कं पतन्तं पुनीनके ॥ Wilson, Sel. Works 2, 183. *laut verkünden:* रटन्तीव पुराणानि Weber, Kâṣhnâǵ. 221. *zujauchzen*, mit acc.: जनगणारटितैस्तज्जगे: Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 9, Çl. 30. रटित n. *Geschrei:* रटितैश्च कर्कशैरोः Râǵa-Tar. 2, 168. धातघातक किं वृथातिरटितैः Spr. 3503. = कुत्सित H. an. 4, 104. — रटन्ती s. bes. Vgl. रट्.

— caus. रटयति dass. Kâç. zu Dhâtup. 35, 65.

— intens. *schreien, krächzen:* क्रौञ्चीं भर्तारामिव रारटन्तीम् R. Gorr. 2, 77, 22. कराटो रारटीत्येषः Kâçikâ. 86, 26 (nach Âufrecht).

— घा *schreien, kreischen* Kathâs. 23, 36. 70, 94. Bhatt. 3, 38, v. l. — Vgl. घाराट.

— परि vgl. परिराटक fg.

रटन (von रट्) n. *Beifallsruf:* विद्याधराभीलरटनैर्वाच्छ्यं तस्य लेभिरे Râǵa-Tar. 6, 159.

रट्टी f. Bez. *des 14ten Tages in der dunkelen Hälfte des Monats* Mâgha, so genannt nach den bei diesem Feste gesprochenen Worten: माघे मासि रटत्यापः (s. oben u. रट्, Wilson, Sel. Works 2, 183. fg. Jama in Tithâlôtt., Matsjasûkta 55, Bhavishjôttarapurâṇa 1, Kâlikâ-P. und Kṛityatattvârṇava im ÇKDn.

रट्टा f. N. pr. einer Fürstin Râǵa-Tar. 4, 152.

रठ् रठति (परिभाषणे) Dhâtup. 9, 50. — Vgl. रट्.

रड्डु 1) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8, 281. 299. 345. 348. — 2) f. घा N. pr. einer Fürstin ebend. 8, 3343. 3402. 3472. 3483. 3500.

रण् s. रन्.

रण (von रन्) Vârtt. 3 zu P. 3, 3, 58. gaṇa वयादि zu P. 6, 1, 203. 1) m. *Behagen, Ergötzen, Lust, Freudigkeit* RV. 1, 110, 21. मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय 3, 47, 1. सुतं रणाय ते सुतः 8, 17, 12. यमसूत पृश्निर्मरुते रणाय मरुतामनीकम् 1, 168, 9. 3, 34, 4. यूयं मर्या चिकितुषे रणाय 5, 41, 4. 7, 20, 5. 8, 83, 16. ता नं ऊर्त्ये दधातन मरुते रणाय चर्षणे 10, 9, 1. रणं कृधि रणकृत् 112, 10. VS. 14, 3. दीर्घायुत्वाय वर्चसे रणाय AV. 2, 4, 1. 3, 4. pl. RV. 6, 27, 1 (= स्तोतारः Sây.). — 2) m. n. gaṇa घर्घरीचादि zu P. 2, 4, 31. Taitt. 3, 5, 14. Siddh. K. 249, *a*, 5. (*Kampflust, Kampf* Naigh. 2, 17. Nir. 4, 5. 10, 47. AK. 2, 8, 2, 72. Trik. 3, 3, 137. H. 796. an. 2, 151. Med. p. 25. Halây. 2, 298. RV. 1, 119, 3. प्रार्पण्यहीरो अभि पौंस्यं रणम् 10, 113, 4. यस्मा इदु स्वष्टा तक्षद्वज्रं रणाय 1, 61, 6. 9. घर्मस्तप्तो रणे रणे 74, 3. 5, 16, 15. AV. 5, 2, 4 (मदे मदे RV.). RV. 6, 67, 11. रणाय दस्युकृत्याय 10, 95, 7. 8, 33, 9. वयं वयं शीशपाम्नेषु रणेषु 10, 120, 5. रणः प्रवर्तते तत्र भीमः प्रलयसंनिभः Ragu. 12, 72. Vârâh. Bṛih. S. 46, 19. वचोभीवितथेरामीत्पुरेवानिःसरणे रणः Spr. 4348. देवासुरो नाम रणः Bhâg. P. 3, 10, 5. Râǵa-Tar. 4, 702. द्विषत्सैन्येरथ प्रवर्तते रणः 6, 243. क्व च शस्त्रं क्व च रणम् R. 3, 13, 24. रणे M. 7, 90. 98. 9, 322. MBn. 1, 1181. 2, 1375. 3, 11964. 7, 5916. R. 1, 1, 46. कथं तेषां मया रणे । स्थातव्यम् 22, 14. Spr. 2826. AK. 2, 8, 2, 65. 64. 71. Pañkat. 218, 16. Halây. 3, 22. रणस्य च पश्चिमे भागे 41. रणेन R. 5, 89, 14. रणाय समाहूतः Kathâs. 10, 24. मृगयारणाम् Bhâg. P. 3, 17, 20. °विशारद MBn. 3, 2185. °समुद्यमे Bhag. 1, 22. रणोद्योग Vârâh. Bṛih. S. 46, 23. रणागम 8, 17. °सीरम्भ Râǵa-Tar. 5, 334. °शिरसि Çiç. 137. 183. Spr. 1314. रणाग्र Kathâs. 47, 78. °गोचर *im Kampfe begriffen, kämpfend* Mâlav. P. 134, 24. °स्थ MBn. 3, 10270. रणेयिन् Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 27. °मार्गकोविद *in den verschiedenen Arten des Kampfes erfahren* Bhâg. P. 3, 17, 20. वर्ण° Vârâh. Bṛih. S. 47, 11. रति° Gît. 7, 19. सिंहासन° *Kampf um* R. 3, 39, 13. — 3) m. *Laut, Ton* AK. 3, 3, 8. 3, 4, 22, 31. Trik. H. 1400. H. an. Med. — 4) m. = कोण H. an. Med. *the quill or bow of a lute, etc.* Wilson. — 5) m. *Gang* Çabdar. im ÇKDn. — Vgl. घी°, वल्गण, मल्ला°, मल्ली°, मुने°.

रणक (von रन् oder रण) m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 9, 12, 14.

रणकर्मन् n. *Kampf* R. 3, 60, 38. 4, 14, 19. 7, 23, 32. 29, 33. 36. Mâlav. P. 113, 27.

रणकाम्य्, °म्यति *Kampf wünschen* Bhatt. 5, 14. 18, 21.

रणकारिन् adj. *Kampf verursachend* Vârâh. Bṛih. S. 3, 35.

रणकृत् adj. 1) *Freude machend* RV. 10, 112, 10. — 2) *kämpfend, Kämpfer:* रणे रणकृतां वरः MBn. 2, 1375. 7, 5916.

रणक्षिति f. *Kampfstätte, Schlachtfeld* MBn. 6, 2290. Harîv. 5598. Ragu. 7, 46.

रणक्षेत्र n. dass. MBn. 5, 7106.

रणत्तोणि f. dass. Prân. 3, 5. °तोणि v. l.

रणांजय (रणम्, acc. von रण, + जय) m. N. pr. eines Fürsten VP. 463. Bhâg. P. 9,12,13.

रणतूर्य n. *Kriegstrommel* Taik. 1,1,122.

रणत्कार m. *Geklingel, Gerassel:* कङ्कण° Prab. 40,6. Milatin. 15, 14. 74,22. 86,15. *Gesumme* (der Bienen) Râga-Tar. 3,405. — Vgl. रन् und रणरण *Mücke.*

रणदत्त m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 148,*a*,7.

रणदुन्दुभि m. *Kriegstrommel* Spr. 1130.

रणदुर्गाधारणयन्त्र n. Bez. *eines best. Amulets* Verz. d. Oxf. H. 96,*b*,9.

रणधुरस्वामिन् m. Bez. einer best. Statue des Sonnengottes Râga-Tar. 3,462.

रणप्रिय 1) adj. *kampflustig* Kin. Nitis. 17,33. — 2) m. *Falke.* — 3) n. *die wohlriechende Wurzel von Andropogon muricatus Retz.* Râgân. im ÇKDa.

रणभट m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 121,276.

रणभू f. *Kampfplatz, Schlachtfeld* Bhâg. P. 3,1,37. 4,10,19. Verz. d. Oxf. H. 193,*a*,4.

रणभूमि f. dass. MBh. 14,2360. Ragh. 10,45.

रणमत्त 1) adj. *rasend im Kampfe.* — 2) m. *Elephant* Çabdam. im ÇKDa.

रणमुख n. 1) *der Mund des Kampfes* (und zugleich *Vordertreffen*): कृत्वा रणमुखे प्राणान् MBh. 13,4841. — 2) *Vordertreffen* Bhâg. P. 8,10,23.

रणमुष्टि m. *eine best. Pflanze,* = विषमुष्टि Râgân. im ÇKDa.

रणरङ्ग m. *die Gegend zwischen den Fangzähnen eines Elephanten* Hia. 204.

रणरङ्ग m. *Schlachtbühne, Schlachtplatz, Kampffeld:* °नटो नृत्यन्निव Râga-Tar. 8,348. °दुर्मद Bhâg. P. 6,11,8. °मल्ल = भोजराज, भोजपति Colebr. Misc. Ess. 1,233. vielleicht ist so zu lesen auch in der Inschr. ebend. II, 143. fgg.

रणरण 1) m. *Mücke* Taik. 2,5,36. Vgl. रन्, रणत्कार. — 2) n. *Sehnsucht* Taik. 1,1,120.

रणरणक 1) m. n. *Sehnsucht, sehnsüchtige Gedanken um einen geliebten Gegenstand* H. 314. Hall. 4,57. उत्कण्ठा सेनापो रणरणको जागरस्तनोस्तनुता। फलमिदमहो मयाते मुखाय मृगलोचना दृष्टा ॥ Sârâsvatîk. 3,7 (nach Aufrecht). Milatin. 24,19. Uttarar. 19,2 (23,11). — 2) *der Liebesgott* Taik. 1,1,39.

रणलक्ष्मी f. *Kriegsglück, Schlachtgöttin* Kathâs. 48,99.

रणवङ्गमल्ल Colebr. Misc. Ess. II, 143. fgg. vielleicht fehlerhaft für रणरङ्गमल्ल; s. u. रणरङ्ग.

रणवन्य m. N. pr. eines Fürsten Mâlav. P. 101,6.

रणवृत्ति adj. *dessen Handwerk der Kampf ist:* पार्थिवा: Harîv. 3648.

रणशिक्षा f. *Kriegskunst* MBh. 1,5238.

रणशूर m. *Kriegsheld* R. 5,43,10.

रणसंकुल n. *Schlachtgetümmel* AK. 2,8,8,73. H. 799. an. 3,654. Med. l. 98.

रणसत्र n. *die als Opferhandlung gedachte Schlacht* MBh. 3,15313.

रणस्तम्भ m. 1) *Kriegsdenkmal.* — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,10. VP. 186, N. 11.

रणस्थान n. *Kampfstätte, Kampfplatz* MBh. 6,2533.

रणस्वामिन् m. *eine Statue des Çiva, als Herrn der Schlacht,* Râga-Tar. 3,434. 457. 5,394.

रणाग्नि (रण + ग्नि°) m. *die als Feuer gedachte Schlacht:* दत्ता शरीरे क्रव्याद्भो रणाग्नौ MBh. 13,4840.

रणाङ्ग (रण + 3. अङ्ग) n. *ein Werkzeug der Schlacht, Schwert* u. s. w. Bhatt. 14,98.

रणाङ्गन (रण + अ°) n. *Kampfplatz, Schlachtfeld* MBh. 6,3797. 7,6242 (ed. Calc. रणाङ्गण). Râga-Tar. 1,63. 5,333.

रणाजि (रण + अजि°) m. N. pr. eines Sâdhja Harîv. 13601. — Vgl. युद्धाजि.

रणाजिर (रण + अ°) n. *Kampfplatz, Schlachtfeld* MBh. 1,820. 1184. 5,718. 5843. 14,2398. 15,810. R. 3,35,96. 5,79,14. 83,10. 7,32,45. Spr. 3079. Kathâs. 30,8. 103,7. Bhâg. P. 4,10,20. 9,15,32.

रणातोद्य (रण + आ°) n. *Schlachttrommel* Kathâs. 47,44.

रणादित्य (रण + आ°) m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra Râga-Tar. 3,386. 431. 434. 473. eines andern Mannes 7,232. 234.

रणान्तकृत् (रण + अ°) adj. *dem Kampfe ein Ende machend,* Beiw. Vishṇu's R. 6,102,16.

रणारम्भा (रण + आरम्भ) f. N. pr. der Gattin Ranâditja's Râga-Tar. 3,391. 431. 434. °स्वामिदेव Bez. einer von ihr errichteten Statue 460, wo wohl °देवी zu lesen ist.

रणालंकरण (रण + अ°) m. *Reiher* (कङ्क) Râgân. im ÇKDa.

रणावनि (रण + अ°) f. *Schlachtfeld* Harîv. 5383.

रणाश्व (रण + अश्व) m. N. pr. eines Fürsten VP. 362, N. 18.

रणिनर् (von रन्, nom. ag. *sich ergötzend:* सुतेषु ṚV. 8,85,19.

रणेचर (रणे, loc. von रण, + चर) adj. *auf dem Schlachtfelde wandelnd,* von Vishṇu Paṇâd. 4,3,99.

रणेश (रण + ईश) m. = रणस्वामिन् Râga-Tar. 3,462.

रणेश्वर (रण + ई°) m. desgl. ebend. 3,458. 457. 6,71.

रणेस्वच्छ m. *Hahn* H. ç. 190. Wenn die Form richtig sein sollte, in रणे, loc. von रण, + स्वच्छ zu zerlegen.

रणोत्कट (रण + उ°) 1) adj. *rasend im Kampfe* R. 3,32,36. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2570. eines Daitja Harîv. 12936.

रण्ड 1) adj. = अर्धचर्मावच्छिन्नावयव und = धूर्त Uṇâdiv. im Saṅkshiptas. ÇKDa. fehlerhaft für खण्ड *verkrüppelt, verstümmelt:* आचरन्यरशाखोक्तं शाखारण्ड: स उच्यते so v. a. *ein Verräther an seiner* Çâkhâ Vasishṭha im Comm. zu Pân. Gaṇ. bei Müller, SL. 51. Häufiger ist das f. रण्डा als verächtliche Bez. eines Weibes, etwa so v. a. *Vettel* Prab. 41,17 (Schol. 1: रण्डा = निगमकगृह्य, Schol. 2: रण्डेत्यधिक्षेपोक्ति:). 57,8 (Schol. 1: रण्डा भर्तृहीना निरन्तरसुरतलीना:, Schol. 2: रण्डा विधवा:). Râga-Tar. 6,260. Pañkat. 1, 437. तिष्ठते रण्डा विकर्मस्थेव्य: (vgl. P. 1, 4, 34) स्वहृदयं व्यनक्तीत्यर्थ: Saṅkshiptas. im ÇKDa. पापरण्डे voc. Manivinâd. 63,15. Nach Taik. 3,3,116. H. an. 2,127. Med. d. 23 und Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,113 bedeutet रण्डा *Wittwe;* diese Bed. kann das Wort in बालरण्डा (*junge Wittwe*) Verz. d. Oxf. H. 235,*a*, 32 haben. रण्डा Med. d. 24 fehlerhaft für वण्डा (वण्डा). — 2) f. आ a) *Salvinia cucullata Roxb.* AK. 2,4,2,6. Taik. 3,3,116. H. an. 2,127.

Med. 4. 23. Uéévar. zu Unâdis. 1,112. — *b) ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 134, a. — Vgl. शलरण्ड, त्रयारण्डा, रुण्ड.

रण्डक m. *ein unfruchtbarer Baum* Çabdâk. im ÇKDa. — Vgl. वण्ड.

रण्डाश्रमिन् (रण्ड + आश्रम) adj. *nach dem 45sten Jahre sein Weib verlassend:* चत्वारिंशद्वत्सराणी साष्टानी च परे यदि । स्त्रिया विमुक्ते कश्चित्स तु रण्डाश्रमी मतः ॥ Bhavishja-P. im Udvâhat. ÇKDa.

1. रण्य (von रन्) 1) adj. *ergötzlich, erfreulich:* इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय RV. 9,96,9. प्रजापतिः पृथिवीं रण्यां नः कृणोतु AV. 12,1,43. — *b) kampflustig:* उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृता RV. 8,66,1. — 2) n. *a) Ergötzlichkeit, Freude:* प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते RV. 3,55,7. — *b) Kampf:* मदे सोमस्य रण्यानि चक्रिरे RV. 1,85,10. यस्य शत्रोत्पपिवाँ इन्द्र शत्रूननानुकृत्या रण्या चकर्व 10,112,5.

2. रण्य n. von unermittelter Bedeutung und Herkunft: यानि ते ऽग्नः शिवकाम्यावेधः रण्याय कम् AV. 9,3,6.

रण्यावत् adj. *im Kampfe siegend* RV. 8,59,1.

रण्यवाच् adj. *erfreulich redend* RV. 3,55,7.

रण्व् *ergötzen* nur in der Stelle: बृहस्पतिस्त्वा सुमे रण्वतु TS. 1,2, 5,1. = रमयतु Comm., रम्णातु st. dessen VS. रण्व्, रण्वति (गतौ) Dhâtup. 13,37. — Vgl. रण्वत.

रण्व (von रन्) adj. (f. या) *behaglich, erfreulich, lieblich; fröhlich, lustig:* पुष्टि RV. 1,65,5. 2,4,4. 6. 24,11. शोक 1,66,3. निर्यत्तो रण्वो दुरोणे 69,4. रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव तर्पः 1,144,7. 10,64,11. 3,26,1. सदा रण्वः पितुमतीव संसत् 4,1,5. 7,5. 37,1. 5,7,2. रण्वः पुरीव नॄणाम् 6,2, 7. 3,3. 29,1. 7,34,3. नरो न रण्वाः सवने मदन्तः 39,7. 10,11,5. 33,6. 64,10. या रण्वासो युयुधयो न सैन्यं त्रितं नशन्त 115,4.

रण्वन् in der Stelle: यवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शर्विष्ठे वाजे विदुषा चिदर्ध्यन् RV. 5,44,10. रमणीयाभिश्चितिभिः Sây.

रण्वसंदृश् adj. *lieblich anzuschauen* RV. 3,61,5. 6,16,37. 7,1,21.

रण्विवत् adj. in der Stelle: उपासानक्ता वयेव रण्वो RV. 2,3,6. nach Sây. शब्दिते, स्तुते oder परस्परं गच्छन्त्यौ.

रत (von रम्) 1) partic. adj. s. u. रम्. — 2) f. या N. pr. der Mutter des Tages MBh. 1,2384. — 3) n. *a) Liebeslust, Liebesgenuss, coitus* AK. 2,7,36. 3,4,29,124. Trik. 2,7,31. H. 272. 536. Med. t. 50. बाह्याभ्यन्तरं चेति द्विविधं रतमुच्यते। तत्राद्यं चुम्बनाश्लेषनखदन्तक्षतादिकम्। द्वितीयं सुरतं साक्षान्नानाकारणं कल्पितम्। Vîrabhadra bei Mallin. zu Kir. 9,47. Verz. d. Oxf. H. 215,b,26. चित्ररतानि 29. रताभ्यासमनिकम् und °विशेषाः 31. रतोपरमसंसुप्त R. 5,14,11. Megh. 87. घनवभूषणचित्रनाङ्गनारतम् Ragh. 19,23. 25. 27. Spr. 1885. 2092, v. l. 3359. Vasiṣ. Bḥg. S. 19,4 (pl.). रतान्त Kathâs. 19,30. विपरीत Râja-Tar. 5,372. Kâdâmb. 12. Vet. 11,9. °कूजित Trik. 3,2,14. H. 1408. Hâlâs. 2,414. Vgl. नु°. — *b) die Schamtheile,* = गुह्य Med.

रतकील (रत *coitus* + कील) m. *Hund* H. 1280.

रतगुरु (रत *coitus* + गुरु *Lehrer*) m. *Gatte* Trik. 2,6,10.

रतच्चर (रत *coitus* + च्चर) m. *Krähe* Trik. 2,5,19.

रततालिन् m. *Wollüstling* Çabdam. im ÇKDa.

रतताली f. *Kupplerin* Trik. 2,6,6.

रतनागाच m. H. an. 3,11 in den drei letzten Bedd. von रतनागोच; s. स्त्रीणां वशीकृतौ ist wohl स्त्रीणां च शीतकृतौ zu lesen.

रतनागोच m. 1) *Wollüstling* Çabdam. im ÇKDa. — 2) *Hund* Trik. 3, 3,78. Med. k. 21. — 3) *der Liebesgott* Med. — 4) *sonus, quem mulier in coitu edit,* Trik. Med. — Vgl. रतनागाच.

रतनिधि (रत *coitus* + नि°) m. *Buchstelze* Trik. 2,5,16.

रतबन्ध m. *coitus* H. an. 2,355.

रतमन्दिर (रत + मन्दि) n. 1) *Tag.* — 2) *ein Bad zum Vergnügen.* — 3) *eine Gruppe von acht glückbringenden Dingen* H. an. 4,28. Med. k. 209.

रतवत् (von रम्) adj. *eine Bildung aus der Wurzel* रम् *enthaltend:* यद्रतवद्यत्पर्यस्तवत् Ait. Br. 3,1 bezieht sich auf die Worte नकिः सुदासो रथं पर्यासम् न रीरमत् RV. 7,32,10. Das Brâhmaṇa und Sây. ziehen पर्यास zu 2. यस्, wir stellen es zu 1. यस्.

रतव्रण (रत *coitus* + व्रण *Wunde*) m. *Hund* Trik. 2,10,6. H. 1280.

रतशायिन् (रत *coitus* + शा°) m. dass. H. 1280.

रतस्त्रिएडक m. *Weiberverführer* Trik. 2,10,8. H. an. 3,10. Med. g. 38.

रतान्डुक (रत *coitus* + अन्डुक?) m. *Hund* H. 1280.

रतान्धी f. *Nebel* Trik. 1,1,38.

रतामर्द (रत + मा°) m. *Hund* Çabdam. im ÇKDa. रतामर्ध Wilson nach dems. Aut.

रताम्बुक (?) n. du. *die beiden Vertiefungen unmittelbar über den Hüften* H. ç. 126.

रतायनी (रत + अयन) f. *Hure* Çabdam. im ÇKDa.

रतार्घिन् (रत + घ°) adj. *geil, brunstig* Hâlâs. 2,230.

रति (von रम्) f. 1) *Rast, Ruhe:* इह रतिरिह रमध्वम् VS. 8,31. Çiksh. Gaṇ. 4,9. — 2) *Lust, Behagen, Gefallen an* (loc.); = राग H. an. 2,190. Med. t. 49. रतिर्मनोऽनुकूले ऽर्थे मनसः प्रवणायितम् Sâh. D. 207. 208. H. 72. 295. Hâlâs. 1,91. Kâṭhop. 1,28. Maitrâjop. 3,5. 5,1. M. 1,25. उत्तमा 9,28. एष स्त्रीपुंसयोरुक्तो धर्मो वो रतिसंहितः 103. MBh. 14,389. Harîv. 6733 (wo die neuere Ausg. तेषां रतिविनाशनम् liest). R. 2,49,15 (46,17 Gorr.). 94,26. 95,5. R. Gorr. 1,9,29. 2,28,27. fg. 4,44,105. कौ व्यायुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरम् Çiç. 22,34. Spr. 4469. 4854. मूर्तिमत्यौ रतिर्निर्वृतौ इव Kathâs. 16,122. Bhâg. P. 1,8,42. तत्र वासे MBh. 1,6130. राज्ये 9,1792. Vikr. 103. Spr. 688. 735. मृगीदृशि 859. 1322. 2279. स्वयोषिति 2773. 4275. शौरौ भक्तिरती 5094. Vaṇîs. Bḥg. S. 69, 25. Kathâs. 2,9. Bhâg. P. 1,2,8. 3,26. 9,25. 2,2,34. 4,22,25. fg. Mîkh. P. 70,19. Vṛddha-Kâç. 6,14. त्यक्तधर्मरति adj. R. 2,75,37. भव° Spr. 571. Bhâg. P. 1,9,36. 3,3,11. 8,10. 28,3. तामुपाश्रय रतिं चन्द्रार्धचूडामणौ Spr. 2256. रतिमाप्स्यति ते त्वयि (so die neuere Ausg.) Harîv. 3173. स्वेषु दारेषु रतिं नोपलभे R. 5,22,30. न रतिं लेभे Kathâs. 33,65. 38,92. रतिं स्वकेषु दारेषु नाधिगच्छामि R. 3,53,22. रतिं न विन्दते रामस्त्वामपश्यन् 5,32,38. Harîv. 9217. न शय्यासनभोगेषु रतिं विन्दति कर्हिचित् MBh. 3,2107. Mîkh. P. 20,21. पापे रतिं मा कृथाः *finde keinen Gefallen an* Spr. 1051. 1995. 3083. को न कुर्यात्कथारतिम् Bhâg. P. 1,2,15. रतिं बध्नाति यत्र च Spr. 4825, v. l. यया नृपतिनीप्येषु बबन्ध न रतिं क्वचित् Kathâs. 3,29. 57,103. Mîkh. P. 62,9. आत्म° adj. *seine Lust habend —, Gefallen findend an* Kâṭhân. Up. 7,25,2. Muṇḍ. Up. 3,1,4. Bhâg. 3,17. अध्यात्म° adj. M. 6,49. भार्या° adj. Jâṭ. 1,121. धर्म° adj. Ragh. 1,23. समानयोनि° adj. Spr. 631. वनशैलगोकुल° adj. Vaṇîs. Bḥg. 18,2. कलह° adj. Sâh. D. 79. स्वात्मवति adj. Bhâg. P. 3,4,16. — 3) insbes.

Wollust, Liebeslust, Liebesgenuss, coitus H. 837. H. an. Med. Halle. 2, 114. 5, 42. ये दिवा रत्या संयुज्यते Prâçnop. 1, 13. सानन्दं रतिं प्रजातिम् Kaush. Up. 1, 7. M. 3, 45. 11, 5. MBh. 13, 2229. R. 5, 14, 26. Daçak. 1, 30. Vikr. 85. पण्यस्त्री° Mricch. 26. Spr. 20. °शक्ति 2077. 2959. 3459. 4862. Çiç. 4, 66. Vaitân. Bṛh. S. 74, 18. °भोग 104, 29. Râga-Tar. 3, 308. 5, 383. Bhâg. P. 4, 6, 25. 5, 11, 10. 7, 12, 26. 9, 14, 19. तदीयतां मे रतिदक्षिणां Pañkat. 226, 1. या न वेत्ति सदा पुंसां चतुराणां रतिक्रमम् Verz. in LA. (III) 16, 20. °लम्पट Verz. d. B. H. No. 1006. °ज्ञ Spr. 853. — 4) *die Schamtheile* Med. — 5) elliptisch für रतिगृह *Lusthaus* Vaitân. Bṛh. S. 53, 9. — 6) die personif. *Liebeslust* als Gemahlin Kâma's H. 229. H. an. Med. Halle. 1, 34. Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 35. MBh. 1, 2507. Harîv. 4600. 9333. 12482. R. 3, 52, 27. Kumâras. 2, 64. Ragh. 6, 2. 7, 15. Kathâs. 16, 75. 18, 27. 21, 32. 22, 3. 104. Prab. 6, 3. Pañkat. 1, 10, 92. Weber, Rigv. Up. 303. Verz. d. Oxf. H. 21, *b*, 3. 101, *b*, 7. रतौ MBh. 3, 2665. Harîv. 10064 (die neuere Ausg. रतेः सुत). R. 3, 4, 9. 5, 18, 26. Mâlav. P. 21, 16. — 7) Bez. der *6ten* Kalâ *des Mondes* Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 25. — 8) N. pr. einer Apsaras MBh. 13, 1425. — 9) N. pr. der Gattin Vibhu's und Mutter Pṛthushêṇa's Bhâg. P. 5, 15, 5. — 10) Bez. eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches R. 1, 30, 7 (31, 8 Gorr.). — 11) mystische Bez. *des Buchstabens* न Weber, Rigv. Up. 318. 320. — 12) *ein best. Metrum, 4 Mal* — ⏑ Colebr. Misc. Ess. II, 138 (II, 2). — Vgl. 3. घ° (*Trauer* auch MBh. 13, 897), निर्माण°, भू°, लीला°.

रतिकर adj. (f. ई) 1) *Lust* —, *Freude bereitend* R. 1, 19, 16 (27 Gorr.). R. Gorr. 1, 75, 29. 2, 1, 4. Bhâg. P. 3, 23, 45. Bez. eines Samâdhi Vishṇ. 17. — 2) *der Liebe pflegend* (= कामिन् Comm.) Vaitân. Bṛh. S. 16, 8.

रतिकामतर्कवागीश m. N. pr. eines Commentators des Mugdhabodha Colebr. Misc. Ess. II, 46.

रतिकुक्कुर n. *pudendum muliebre* Taitt. 2, 6, 22.

रतिक्रिया f. *Beischlaf* Taitt. 3, 2, 19. Kâm. Nitis. 2, 25.

रतिगुण m. N. pr. eines Devagandharva MBh. 1, 2555.

रतिगृह n. 1) *Lusthaus* Vaitân. Bṛh. S. 53, 16. — 2) *pudendum muliebre* Taitt. 2, 6, 21.

रतिधरणसमत्तस्वर m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva Vishṇ. 88.

रतिनन्दक m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, 33.

रतिनद्ध m. Bez. eines Samâdhi Vishṇ. 18.

रतिदेव Siv. 2, 17 fehlerhaft für रन्तिदेव.

रतिनाग m. *quidam coeundi modus:* पीडयेद्रुरुणा रुरुणमेन कामुकं कामिनी यदा । रतिनागः समाख्यातः कामिनीनां मनोरमः ॥ Ratim. im ÇKDa. — Vgl. रतिपाश.

रतिपति m. *der Gatte der* Rati, *der Liebesgott* AK. 1, 1, 8, 21. H. 229, Sch. Halâj. 1, 32. Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 33. Git. 5, 7. Çiç. 9, 66. Bhâg. P. 10, 29, 46.

रतिपाश m. *quidam coeundi modus:* पीडयेद्रुरुणा रुरुणमेन कामुको यदि सुन्दरीम् । रतिपाशस्तथा (wohl तदा zu lesen) ख्यातः कामिनीनां सुखावहः ॥ Smaradîpikâ im ÇKDa. — Vgl. रतिनाग.

रतिप्रपूर्णा m. N. eines Kalpa (*einer Weltperiode*) Lot. de la b. l. 94.

रतिप्रिय 1) m. *der Geliebte der* Rati, *der Liebesgott* Çabdam. im ÇKDa. — 2) f. आ ein Name der Dâkshâjanî Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 12. रतिप्रिया v. l.

रतिभवन n. *Lusthaus* Vaitân. Bṛh. S. 53, 14.

रतिमञ्जरी f. Titel eines im ÇKDa. öfters citirten Werkes über *Erotik.*

रतिमती f. *eine* Apsaras Taitt. 1, 1, 64.

रतिमत् (von रति) adj. *lustig, froh, seine Lust habend an:* सर्वत्र Kathâs. 122, 34.

रतिमन्दिर n. 1) *Lustgemach, Liebesgemach* Pañkat. 1, 7, 61. Rasam. im ÇKDa. — 2) *pudendum muliebre* Gaṇiku. im ÇKDa.

रतिमित्र m. *quidam coeundi modus:* पातयेद्रुरुणा च कामुकं यदि कामुकी । रतिमित्रस्तदा ख्यातः कामिनीनां सुखावहः ॥ Ratim. im ÇKDa.

रतिरमण m. *der Geliebte der* Rati, *der Liebesgott* Taitt. 1, 1, 39.

1. रतिरस m. *Liebesgenuss:* °ज्ञानि Spr. 2629.

2. रतिरस adj. *wie Liebesgenuss schmeckend, süss wie Liebesgenuss:* मधु Mricch. 67, wo मधु रति° getrennt zu lesen ist.

रतिरहस्य n. *die Geheimnisse des Liebesgenusses,* Titel eines Werkes über *Erotik* Verz. d. Oxf. H. 113, *b*, 37. 126, *a*, 17. von Kakkoka 218, *a*, 10.

रतिलक्ष n. *Beischlaf* Hit. 50.

रतिलोल m. N. pr. eines Dämons Lalit. ed. Calc. 394, 1.

रतिवर m. 1) *der Geliebte der* Rati, *der Liebesgott* H. 229, Sch. — 2) *ein der* Rati *gewährtes Gnadengeschenk:* °दान Verz. d. Oxf. H. 75, *b*, 21.

रतिवर्धन adj. *die Liebeslust befriedigend* (eig. *mehrend*): स एको ऽवष्टस्तासां बहूनां रतिवर्धनः Bhâg. P. 9, 19, 6.

रतिवल्ली f. *die als Liane gedachte Liebeslust* Kathâs. 14, 27.

रतिशूर m. *ein Held im Liebesgenuss, ein Mann von ausserordentlicher Zeugungskraft* Pañkat. 1, 14, 31. 38.

रतिसंयोग m. *coitus* R. 2, 71, 22.

रतिसवरा f. *Trigonella corniculata* Çabdam. im ÇKDa.

रतिसर्वस्व n. *der Inbegriff der Liebeslust,* Titel eines Werkes über *Erotik* Verz. d. Oxf. H. 126, *a*, 17.

रतिसुन्दर m. *quidam coeundi modus:* नारीपदद्वयं कामी धारयेद्दृढपे यदि । धृतकण्ठो रमेत्कामी बन्धः स्याद्रतिसुन्दरः ॥ Ratim. und Smaradîpikâ im ÇKDa.

रतिसेन (र° + सेना) m. N. pr. eines Fürsten der Kola Râga-Tar. 3, 482.

रतू Uṇâdis. 1, 94. f. *der Götterfluss* Uggval. auch *eine wahre Rede* Schol. zu Up. 1, 92.

रतोत्सव (रत + उ°) m. *ein Fest des Liebesgenusses* Çiç. 147.

रतोढक (रत + उ°) m. *der indische Kuckuck* Çabdam. im ÇKDa. रथोढक H. c. 188.

रत्न (रर्ते Uṇâdis. 3, 14. wohl von रा wie रयि) 1) n. Taitt. 3, 5, 7. Sindh. K. 249, *a*, 9. m. MBh. 3, 13182. *a) Gabe; Habe, Besitz, Gut* RV. 1, 20, 7. 35, 8. स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना । यद्देवा गच्छतादितः 41, 6. 125, 1. 140, 11. 141, 10. 2, 38, 1. वसु रत्ना दधानो वि राजसि 3, 2, 11. 3, 1. कृधि रत्नं धनानाम् 18, 3. 26, 3. प्रजावत् 8, 6. 34, 3. दधाति रत्नं विधते 4, 12, 3. दमे दमे सप्त रत्ना दधानः 5, 1, 5. या नो रत्नानि विभजासि 5, 75, 3. 8, 56, 7. AV. 5, 1, 7. 7, 14, 1. Çat. Br. 5, 3, 3, 1. — *b) Kleinod, Juwel, Edelstein, Perle* AK. 2, 9, 94. Taitt. 2, 9, 27. H. 1063. an. 2, 280. Med. n. 17. Halâj. 2, 21. 409. 5, 64. M. 7, 303. 318. 8, 100. 328. 11, 4. 12, 61. MBh. 1, 7630.

7692. 3, 2493. 12082. समुद्रमिव रत्नाढ्यम् R. 1, 3, 7. घोरेक्ष्मिव रत्नानाम् 5, 16. 53, 21. 3, 49, 21. 57. Sucn. 1, 6, 13. 13, 6. 21, 17. 107, 7. 119, 2. न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् Kumâas. 5, 45. ad Çiç. 62. Ragh. 1, 16. Mâlav. 13. 36. Çiç. 27. Vikr. 144. Spr. 2585. fg. 2693. 3302. Vaṛâh. Bṛh. S. 12, 1. Kathâs. 18, 72. Vet. in LA. (III) 1, 17. 2, 8. रत्नानां शोधनमाराम् Verz. d. B. H. No. 958. °धेनु 468. Verz. d. Oxf. H. 35, a, 33. 43, a, 19. °शैलदान 41, a, 23. रत्नाचलदान 35, b, 30. Verz. d. B. H. No. 468. °परीक्षा Mack. Coll. I, 132 (als Titel eines Werkes). Verz. d. Oxf. H. 86, a, 18. रत्नान्योन्यकयः 123, a, 23. केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यलरूपम् Spr. 1904. 3023. पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि यव यत्नं सुभाषितम् । मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ 4571. रत्नत्रय n. bei den Gaina ist सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान und सम्यक्चारित्र Sarvadarçanas. 31, 13. fgg. रत्नं हि भगवन्नेतद्रत्नभागी च पार्थिवः। तस्मान्मे शबली देहि R. 1, 53, 9. विद्या° *das Juwel Gelehrsamkeit* Spr. 983. तं चापि रत्नं नारीणाम् MBh. 3, 2101. स्त्री° *eine Perle von Weib* R. 3, 55, 13. 5, 22, 11. Spr. 3031. fg. Vikr. 110. Vaṛâh. Bṛh. S. 74, 17. 78, 13. Pañcat. 40, 24. पोषिद्रत्न MBh. 3, 2467. Bhâg. P. 4, 10, 2. कन्या° MBh. 3, 2079. Kathâs. 18, 71. Mâlav. P. 21, 30. पुं° Spr. 2700. पुत्र° Kathâs. 9, 68. गत्न°, यत्न° Uttarat. zu Unâdis. 3, 14. सप्तरत्नी MBh. 3, 13152. धनूरत्नम् R. 1, 33, 7. विमान° Ragh. 12, 104. यज्ञिन° 4, 65. पोत° Vaṛâh. Bṛh. S. 48, 13. Daçak. in Benf. Chr. 189, 2. 191, 16. Burn. Intr. 67. रत्न = स्वल्पातिश्रेष्ठ AK. 3, 4, 20, 129. H. an. Med. Wie मणि bezeichnet auch रत्न *den Magnet* Schol. zu Kap. 1, 97. Am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 1, 7346. 5, 2037. 9, 1787. 1795. 13, 589. Ragh. 4, 65. Bhâg. P. 3, 23, 32. — *c*) verkürzt für रत्नकम्बल Cat. Bp. 5, 3, 2, 1. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 4, 710. भृ° Verz. d. B. H. No. 258. — Vgl. ध्रुवरत्ना, बुधरत्न, मणि°, मदन°, मुक्ता°, मौक्तिक°, वज्र°, सद्रत्न, सु°.

रत्नक (von रत्न) m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 178.

रत्नकन्दल m. *Koralle* Çabdar. im ÇKDr.

रत्नकर m. Bein. Kubera's H. 189.

रत्नकरण्डक Titel eines buddh. Werkes Vjutp. 43.

रत्नकलश m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7, 600.

रत्नकला f. N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 318, a, 9.

रत्नकीर्ति m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5, 17.

रत्नकूट 1) m. N. pr. eines *Berges* Çabdar. im ÇKDr. — 2) n. N. pr. einer Insel Kathâs. 26, 3. 36, 9. — 3) m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21. °सूत्र Titel eines buddh. Sûtra Burn. Intr. 562. Hiouen-thsang 1, 388. Vjutp. 41.

रत्नकेतु m. N. pr. eines Buddha Burn. Intr. 530. eines Bodhisattva Vjutp. 21. der gemeinschaftliche Name von 2000 künftigen Buddha Lot. de la b. l. 135. °राज 134.

रत्नकोटि Bez. eines Samâdhi Vjutp. 17.

रत्नकोश (°कोष) m. Titel verschiedener Werke Colebr. Misc. Ess. II, 20. 39. Verz. d. Oxf. H. 113, b, 4. 182, b, 44. 245, a, No. 613. 279, a, 24. 292, b, 1. 333, b, No. 785. 352, a, No. 834. Verz. d. B. H. No. 1176. Hall 81. 202. °बादरकृस्य 81. °कारिकाविचार Verz. d. Oxf. H. 245, a, No. 613. — Vgl. नाग°.

रत्नकेत्रकूटसंदर्शन m. N. pr. eines Bodhisattva Lalit. ed. Calc. 364, 1. रत्नक्षत्रकूट° Foucs.

रत्नखानि f. *eine Fundgrube für Edelsteine* Cat. 10, 112.

रत्नगर्भ 1) adj. *Edelsteine bergend, mit Edelsteinen besetzt:* °गृह MBh. 3, 2669. वासांसि R. 4, 44, 98. — 2) m. *a*) *das Meer* Râgân. im ÇKDr. — *b*) Bein. Kubera's Taik. 1, 1, 78. H. ç. 39. — *c*) N. pr. α) eines Bodhisattva Lalit. ed. Calc. 368, 6. Wilson, Sel. Works II, 13. — β) eines Commentators des Vishṇupurâṇa Wilson in VP. LXXIV. Verz. d. Oxf. H. 63, a, No. 111. Verz. d. B. H. No. 487. — 3) f. या *die Erde* Taik. 2, 1, 2. H. 937. Halâj. 2, 2.

रत्नचीवतीर्थ n. N. pr. eines Wallfahrtsortes Verz. d. Oxf. H. 13, b, 12.

रत्नचन्द्र m. N. pr. 1) eines *Edelsteingrube* hütenden Gottes Çâṇ. 10, 124. — 2) eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 2. — 3) eines Sohnes des Bimbisâra, Schiefner, Lebensb. 254 (24).

रत्नचन्द्रामति m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 72, 93.

रत्नचूड m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21. eines mythischen Fürsten Wilson, Sel. Works II, 16. रत्नचूडोपाख्यान 1, 283. रत्नचूडमुनि ebend.

रत्नचूडापरिपृच्छा f. Titel eines Werkes Burn. Intr. 561.

रत्नचूर s. u. रत्नचूड.

रत्नच्छत्र n. *ein Sonnenschirm aus Edelsteinen* Pañcar. 1, 11, 31.

रत्नच्छत्रकूटसंदर्शन m. N. pr. eines Bodhisattva Lalit. 280. रत्नतेत्रकूट° ed. Calc.

रत्नच्छत्राभ्युद्गतावभास m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 367, 13.

रत्नतेजोऽभ्युद्गतराज m. desgl. Lot. de la b. l. 276.

रत्नत्रयपरीक्षा f. Titel einer Abhandlung Hall 115.

रत्नदत्त m. N. pr. verschiedener Personen Lot. de la b. l. 2. 303. Kathâs. 27, 16. 57, 6. 88, 5. 123, 165. Verz. d. Oxf. H. 152, b, 29. 153, a, 14.

रत्नदर्पण m. 1) *ein aus Edelsteinen bestehender Spiegel* Pañcar. 1, 7, 48. 12, 19. — 2) Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 209, a, No. 490.

रत्नदीप m. *eine Lampe, in der Edelsteine die Stelle des Feuers vertreten*, Spr. 165. 5320. Kathâs. 101, 42. Bhâg. P. 10, 81, 31.

रत्नदीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 941.

रत्नद्रुम wohl *Koralle* (vgl. रत्नवत्); davon adj. °मय *aus Korallen bestehend* MBh. 3, 12198, wo mit der ed. Bomb. °मयैश्चित्रैः zu lesen ist.

रत्नद्वीप *die Insel der Edelsteine* oder *Perlen*, Bez. einer best. *Insel* Harîv. 5238. Râga-Tar. 4, 462. Tantras. im ÇKDr.; vgl. *Ile des joyaux* Lot. de la b. l. 115. — Vgl. मणिद्वीप.

रत्नधर m. N. pr. des Vaters eines Gagaddhara Verz. d. Oxf. H. 136, a, No. 259. Verz. d. B. H. No. 534. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

रत्नधा adj. *Gaben —, Güter verschaffend, — spendend* RV. 1, 1, 1. 13, 2. स्तोम 20, 1. 164, 49. 2, 1, 7. 4, 34, 6. 33, 7. 5, 8, 3. कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि 7, 16, 6. 10, 35, 7. AV. 7, 14, 1. Çat. Br. 14, 9, 4, 23.

रत्नधेय n. *das Güterspenden* RV. 4, 13, 1. 34, 1. 4. 35, 1. 2. 5, 42, 7. 10, 78, 3.

रत्नधेय m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

रत्ननदी f. N. pr. eines *Flusses* Kathâs. 123, 228.

रत्ननाभ adj. *im Nabel einen Edelstein habend*, unter den Beinw. Vishṇu's MBh. 13, 7034.

रत्ननिधि m. 1) *eine Fundgrube für Edelsteine* oder *Perlen*, als Bez.

des Meeres und des Meru MBh. 1,2329. unter den Beiww. Vishṇu's Paṅkar. 4, 3, 95. — 2) *Backsteine* ÇKDa. nach Trik. 2, 5, 16, wo aber रतनिधिः zu lesen ist.

रत्नपर्वत m. *ein Berg, der Edelsteine birgt*, R. 4, 43, 40. 44, 85. Bez. des Meru Hariv. 2903.

रत्नपाणि m. N. pr. eines Bodhisattva Burn. Intr. 147. Lot. de la b. l. 2. eines Grammatikers Verz. d. B. H. N. 762. Verz. d. Pet. H. No. 91.

रत्नपाल m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 275, *b*, No. 653.

रत्नपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 24, 82. 123, 204.

रत्नप्रकाश m. Titel eines Wörterbuchs Mallin. zu Çiç. 12, 16.

रत्नप्रदीप m. = रत्नदीप Mṛicch. 69. Bâlar. P. 3, 33, 17. Paṅkar. 1, 7, 48. 3, 15, 5. am Ende eines adj. comp. °क Kathâs. 73, 338.

रत्नप्रभ 1) m. *a*) N. einer Klasse von Göttern Lot. de la b. l. 2. — *b*) N. pr. eines Fürsten Kathâs. 46, 31. — 2) f. घा *a*) Bez. *der Erde* Ind. St. 16, 312. — *b*) Name einer Hölle bei den Gaina H. 1360. — *c*) N. pr. verschiedener Personen Râga-Tar. 3, 379. Hit. 110, 17. Kathâs. 35, 120. fgg. 65, 216. einer Nâgî 55, 146. 151. — *d*) Name des 7ten Lambaka im Kathâs., so benannt nach einer Fürstin, deren Geschichte 35, 120. fgg. erzählt wird, 1, 6.

रत्नबाहु m. Bein. Vishṇu's H. ç. 71.

रत्नभाज् adj. 1) *Gaben austheilend* ṚV. 7, 81, 4. — 2) *im Besitze von Kleinodien seiend* R. 2, 49, 62.

रत्नमञ्जरी f. N. pr. einer Vidhjâdharî Hit. 63, 19.

रत्नमति m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 12.

रत्नमय (von रत्न) adj. (f. ई) *aus Edelsteinen gebildet, daraus bestehend, damit reichlich versehen* R. 4, 33, 5. Spr. 2211. Kathâs. 43, 186. H. 61. पूजा Râga-Tar. 1, 148. — Vgl. सर्व°.

रत्नमाला f. 1) *ein Halsband aus Juwelen, Perlenschmuck* Paṅkar. 1, 4, 31. 11, 35. Paṅkat. 235, 19. 25. — 2) vollständiger und abgekürzter Titel verschiedener Werke Colebr. Misc. Ess. II, 47. 323. 363. Mbh. Anh. 3. Verz. d. Tüb. H. 17. Ind. St. 5, 297. Verz. d. Oxf. H. 182, *b*, 44. 196, *a*, 23. 279, *a*, 24. 285, *a*, 24. 292, *b*, 1. 336, *a*, No. 790. = न्याय° 220, *b*, No. 527. — Vgl. अधिकरण°, अभिधान°, ज्योतिष° (unter ज्योतिष), न्याय°, पर्याय°, प्रमाण°, मणि°, योग°.

रत्नमालावत् (von रत्नमाला) 1) adj. *mit einem Perlenschmuck versehen*. — 2) f. °वती f. N. pr. eines Wesens im Gefolge der Rádhá Paṅkar. 2, 4, 43.

रत्नमालिका f. demin. von रत्नमाला; s. कुल°.

रत्नमालिन् adj. *mit einem Halsband aus Juwelen geschmückt* Weber, Rîmây. Up. 294.

रत्नमुकुट m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

रत्नमुष्य n. *Diamant* H. 1063.

रत्नमुद्रा f. Bez. eines Samâdhi Vjutp. 16.

रत्नमुद्राकुस्त m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

रत्नमेघसूत्र n. Titel eines buddh. Sûtra Hiouen-thsang I, 456.

रत्नयष्टि m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 366, 10.

रत्नयुग्मतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 73, *b*, 30.

रत्नरक्षित m. N. pr. eines der beiden Uebersetzer des Karaṇḍavjûha in's Tibetische Burn. Intr. 230.

रत्नराज् m. *Rubin* Râgân. im ÇKDa.

रत्नराजि f. *Perlenschnur* Râga-Tar. 3, 432.

रत्नराशि m. 1) *ein Haufen Edelsteine* MBh. 3, 2348. Çiç. 27, 8. — 2) *das Meer* H. 1074, Sch.

रत्नरेखा f. N. pr. einer Fürstin Kathâs. 66, 137.

रत्नलिङ्गेश्वर m. bei den Buddhisten Svajambhû in seiner sichtbaren Form Wilson, Sel. Works 2, 15.

रत्नवत् (von रत्न) 1) adj. *a*) *von Gaben begleitet* ṚV. 3, 28, 5. — *b*) *reich an Edelsteinen oder Perlen, damit verziert* MBh. 6, 2078. 8, 2135. 14, 2358. R. 4, 40, 33. 43, 9. 5, 50, 10. Râgat. 6, 4. Paṅkar. 1, 3, 38. — 2) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55, 7. — 3) f. °वती *a*) *die Erde* Çârdûl. im ÇKDa. — *b*) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. Daçak. 138, 4. fgg. Kathâs. 88, 6. — Vgl. रत्नावती.

रत्नवर्धन m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 5, 40. 128. 162. errichtet eine nach ihm रत्नवर्धनेश benannte Statue des Çiva 163.

रत्नवर्मन् m. N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 57, 58.

रत्नवर्ष m. N. pr. eines Fürsten der Jaksha Kathâs. 26, 213.

रत्नवर्षुक n. Bez. *des Juwelen regnenden* mythischen Wagens Pushpaka Çârdûl. im ÇKDa.

रत्नविग्रह m. N. einer Welt Lot. de la b. l. 146.

रत्नशास्त्र n. Titel eines Werkes des Agastja Verz. d. Oxf. H. 113, *b*, 11.

रत्नशिखर m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

रत्नशिखिन् m. N. pr. eines Buddha Vjutp. 3. Lalit. ed. Calc. 201, 9.

रत्नशेखर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 397, *a*, 8.

रत्नसंग्रह m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279, *a*, 25.

रत्नसंघात m. *eine Menge von Juwelen*; davon °मय adj. (f. ई) *aus einer Menge von Juwelen gebildet, — bestehend* MBh. 1, 7692.

रत्नसमुद्गल Bez. eines Samâdhi Vjutp. 23.

रत्नसंभव m. 1) N. pr. eines Dhjânibuddha Burn. Intr. 117. Wilson, Sel. Works 2, 12. 14. 35. Schiefner, Lebensb. 244 (14). eines Buddha Burn. Intr. 533. eines Bodhisattva Lalit. ed. Calc. 366, 10. — 2) N. pr. des Gebietes, in dem der Buddha Çaçikotu erscheinen wird, Lot. de la b. l. 92.

रत्नसागर m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279, *a*, 26.

रत्नसानु m. Bein. des Berges Meru AK. 1, 1, 4, 45. H. 1032. Hall. 1, 136.

रत्नसू adj. *Edelsteine erzeugend*: मेदिनी Raghu. 1, 65. Râga-Tar. 1, 43. 3, 300. subst. f. *die Erde* H. 937.

रत्नसूति f. *die Erde* Râga-Tar. 3, 108.

रत्नसेन m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 5, Cl. 8.

रत्नस्वामिन् N. eines von Ratna errichteten Heiligthums Râga-Tar. 4, 710.

रत्नस्रुवस् n. Bez. einer Opferhandlung im Râgasûja, betreffend diejenigen Personen, welche als *kostbare Besitzthümer* eines Fürsten gelten, Kâtj. Ça. 15, 3, 1.

रत्नाकर (रत्न + घा°) m. 1) *eine Fundgrube für Juwelen* Bâlar. P. 7, 4, 17. Paṅkar. 1, 10, 47. 2, 2, 53. नानारत्नाकरवती (मेदिनी) Vasiṣṭh. Bpn.

S. 48, 24. — 2) *das Meer* AK. 1, 2, 8, 2. H. 1074. Hall. 3, 30. Spr. 2384. 3373. 3763. 4534. Kathâs. 59, 59. 86, 82. Nigh. 26, 17. कारुण्य° Hir. 27, 6. am Ende eines adj. comp. f. या Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 7, Çl. 20. — 3) N. pr. eines Buddha Burn. Intr. 102. Hiouen-thsang I, 385. eines Bodhisattva Schiefner, Lebensb. 268 (39). eines Dichters und verschiedener anderer Personen Râga-Tar. 3, 34. Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 21. 100, *a*, 42. 285, *a*, No. 665. fgg. Lot. de la b. l. 2. 303. Hiouen-thsang I, 385. 388. — 4) N. pr. eines Rosses, eines Sohnes des Uććaiḥçravas, Kathâs. 123, 11. — 5) Titel verschiedener Werke Verz. d. Oxf. H. 113, *b*, 5. 126, *a*, 17. 273, *a*, No. 646. fg. *b*, 42. 279, *a*, 26. 288, *b*, No. 689. 292, *b*, 2. 295, *a*, No. 713. Verz. d. B. H. No. 941. 1403. Hall 174. des Kojadeva Nrsn. Pr. Vgl. कृत्य°, परिशिष्टसिद्धान्त° (unter परिशिष्ट), प्रस्ताव°, योग°, प्रुद्धि°, संगीत°, स्मृति°. — 6) N. pr. einer Stadt (wohl n. in dieser Bed.) Kathâs. 59, 59. 66, 136.

रत्नाकरनिघण्ट m. Titel eines *Wörterbuchs* Ind. St. 3, 351.

रत्नाङ्ग (रत्न + अङ्ग) m. N. pr. des Wagens von Vishṇu Çabdar. im ÇKDr.

रत्नाङ्गुरीयक (रत्न + अ°) n. *ein Fingerring mit Edelsteinen* Paṅkar. 1, 11, 10. रत्नाङ्गुलीयक Kathâs. 18, 361.

रत्नादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Râga-Tar. 8, 2434.

रत्नाद्रि m. N. pr. eines mythischen *Berges* Weber, Râmây. Up. 277. 324.

रत्नाधिपति (रत्न + अ°) m. 1) *Oberherr der Kostbarkeiten.* — 2) N. pr. eines Fürsten Kathâs. 36, 10.

रत्नापुर n. N. pr. einer *Stadt* Râga-Tar. 8, 2435.

रत्नार्चिस् (रत्न + अ°) m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 364, 1.

रत्नावती (von रत्न) f. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 132, *b*, 40. — Vgl. रत्नवत्.

रत्नावभास (रत्न + अ°) m. N. eines Kalpa Lot. de la b. l. 92. 124.

रत्नावली (रत्न + आ°) f. 1) *Perlenschnur* Mahân. 35, 1. 12. 14. Kathâs. 50, 138. Hir. 29, 11. — 2) Bez. einer best. rhetorischen Figur: क्रमिकं प्रकृतार्थानां न्यासं रत्नावली विदुः॥ Beispiel: चतुरास्यः पतिर्लक्ष्म्याः सर्वज्ञस्त्वं महीपते *du bist*, o Fürst, Brahman, Vishṇu, Çiva Kuvalay. 138, *a*. — 3) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Kathâs. 77, 22. Râga-Tar. 3, 476. Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 5. Schiefner, Lebensb. 275 (45). — 4) Titel verschiedener Werke, unter andern auch des bekannten Schauspiels, Ind. St. 8, 196. Verz. d. Oxf. H. 144, *b*, No. 303. 203, *a*, No. 484. 206, *b*, 38. — 93, *b*, 7. 211, *b*, No. 499. 279, *a*, 27. 292, *b*, 2. Ind. St. 2, 252. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46. — Vgl. धातु°, प्रशस्ति°, प्रसङ्ग°, भक्ति°, भगवद्भक्ति°, योग°, शब्द°.

रत्नावलीनिबन्ध m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 274, *a*, No. 649.

रत्नासन (रत्न + आ°) n. *ein mit Juwelen verzierter Thronsessel* Weber, Râmây. Up. 321. 323.

रत्नि (verstümmelt aus अरत्नि) Uṇâdis. 4, 2. m. f. 1) *Ellbogen* Âçv. Çr. 6, 3, 4. — 2) *Elle* H. 509. Hall. 2, 381. Uććval. Snadv. Bh. 4, 4. अष्ट° adj. MBh. 8, 2623.

रत्निन् (von रत्न) adj. 1) *Gaben habend, — empfangend:* वाचं वाचं जरितू रत्निनीं कृतम् ṚV. 1, 182, 4. स्यामास्य रत्निनो विभागे 7, 40, 1. — 2) Bez. *derjenigen Personen, in deren Wohnung von Fürsten das* Ratnahavis *dargebracht wird*, nämlich: Brâhmaṇa, Râǵanja, Mahishî, Parivṛkti, Senânî, Sûta, Grâmaṇî, Kshattar, Saṁgrahîtar, Bhâgadugha und Akshâvâpa TBr. 1, 7, 8, 1. Çat. Br. 5, 3, 1, 12. Davon nom. abstr. रत्नित्व n. TBr. ebend.

रत्निपृष्ठक (र° + पृष्ठ) n. *Ellbogen* H. ç. 122.

रत्नेन्द्र (रत्न + इन्द्र) m. *ein Fürst unter den Edelsteinen, ein überaus kostbarer Edelstein* Paṅkar. 1, 4, 56. °सार 7, 51. 11, 13. 2, 4, 37.

रत्नेश्वर (रत्न + ई°) 1) m. N. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 209, *a*, No. 490. 378, *a*, No. 376. 382, *a*, No. 450. — 2) n. N. eines Liṅga Verz. d. B. H. 146, *b* (67). °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 3.

रत्नोत्तमा f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Vjutp. 105.

रत्नोद्भव (रत्न + उ°) m. N. pr. eines buddh. Heiligen Wilson, Sel. Works 2, 36.

रत्नोल्का f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Vjutp. 105.

रत्यङ्ग (रति + 3. अङ्ग) n. *pudendum muliebre* Çabdar. im ÇKDr.

1. रथ (von रंह्) Nir. 9, 11 (von रिच्). Uṇâdis. 2, 3 (von रम्). 1) m. *a*) *Wagen*, namentlich *der zweirädrige Streitwagen* (auch *Fahrzeug der Götter*) AK. 2, 8, 2, 1. 19. 21. fg. H. 751. an. 2, 220. Med. th. 12. Hall. 2, 289. Vîçva bei Uććval. zu Uṇâdis. 2, 2. तत्त्वामात्यास्यो परिज्मानं सुखं रथम् ṚV. 1, 20, 3. रथो न मह्मिरभि वर्तति वाजम् 3, 15, 5. वसुमन्तं 4, 4, 10. सुवृत् 36, 2. ब्रह्मोकर्म भगवो न रथम् 16, 20. 43, 2. 8. यास्य रथे तिष्ठ 5, 1, 11. रथे युञ्जते मरुतः शुभे सुखम् 63, 3. 6, 47, 27. 7, 32, 10. मनोजवसं 68, 3. स्वधया सुज्यमानः 78, 4. गणो वो हूरादृणस्य रथेन 3, 33, 9. 8, 80, 7. Ait. Br. 4, 6. 7, 12. AV. 5, 14, 5. 18, 1, 8. Çat. Br. 5, 1, 4, 7. 8, 10. 4, 8, 3. Çâṅkh. Çr. 12, 14, 2. M. 8, 209. 295. 342. 9, 280. MBh. 3, 2114. 2294. 2790 (mit vier Pferden bespannt). घोषवास्य R. 2, 39, 10. 46, 25. Sarga. 1, 104, 6. 107, 9. Ragh. 1, 5. Ver. in LA. (III) 30, 14. रथचिक्र Bhadrâbh. in Ind. St. 1, 118. रथानि (पुराणानि ed. Bomb.) MBh. 6, 1894. अश्व°, गर्दभ° *mit Rossen* —, *Esels bespannter Wagen* Ait. Br. 4, 9. Kâty. Çr. 15, 1, 22. अश्वतरी° 22, 2, 25. Kâlid. Up. 4, 2, 1. *Veṅkaṭ* überh.: रथोरधाद्रुह Kathâs. 18, 388. पतिराज्ञरथो रुरिः 47, 46. Am Ende eines adj. comp. f. या AK. 2, 8, 2, 42. H. 748. — *b*) *Wagenführer* (vom *Gespann* und *Lenker*): सूर्यमा धत्था दिवि चित्र्यं रथम् ṚV. 5, 63, 7. दृश उ स्य वृषा रथो ऽव्यो वारेभिरर्षति। गच्छन्वाजं सहस्रिणम् 9, 38, 1. परि यत्काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा 94, 3. 3, 49, 4. — *c*) *Kämpfer, Kriegsheld* MBh. 2, 622. 3, 15608. 15697. 5, 5792. Kathâs. 48, 48. °वर MBh. 5, 5793. रथोदार 5852. 5883. °सत्तम 4, 1058. °पुंगव 1091. °यूथप 1111. Harîv. 12999. Kathâs. 48, 47. Bhâg. P. 3, 1, 38. रथ, अति°, सर्ध° MBh. 5, 5850. 5899. सप्तगुणसंमित 5883. रथातिरथसंख्यायां यो ऽग्रणीः 2, 2665. सर्ध°, पूर्ण°, द्विगुण, त्रिगुण u. s. w. Kathâs. 47, 13. fgg. — *d*) *Körper* Taik. 3, 3, 199. H. an. Vîçva a. a. O. — *e*) *Fuss* H. an. Vîçva. — *f*) *Glied, Theil* Med. — *g*) *Calamus Rotang* AK. 2, 4, 3, 10. H. 1137. H. an. Med. Vîçva. *Dalbergia ougeinensis* Roxb. Râǵan. im ÇKDr. — *h*) = पौरुष Taik. 3, 3, 199. — 2) f. ई *ein kleiner Wagen* Taik. 2, 8, 49. — Vgl. अरथ, अति°, धनु°, धन्य, कीर्तिरथ, कृति°, क्रम°, क्रीडा°, गो°, चन्द्र°, चित्र°, जङ्घा°, ज्योतो°, तेष°, दश°, दशपूर्व°, दृढ°, देव°, पत्र°, पद्मथ, पद्म°, पादरथी, पुरुरथ, पुरो°, पुण्य°, पुष्य°, प्रस्थन्, प्रतिरथ, प्रिय°, बलरथ, बल्ल°, ब्रह्म°, भगी°, भद्र°, भाण्डो°, भानु°, भाव्य°, भीम°, मनुष्य°, मनो°, मयू-

र°, महारथ, मका°, मीन°, यम°, योग°, प्रचरथ, स°, सिक्त°, सु°, हंस°.

2. रथ (von रम्) m. *Behagen, Ergötzen, Lust* in मनोरथ und 2. रथजित्.

रथक m. *ein best. Theil des Hauses* (मन्दिरावयवविशेष) nach ÇKDa. in der Stelle: अष्टकांशेन गर्भस्य रथकानां तु निर्गमः। परिधेर्गुणभागेन रथकोस्तत्र कल्पयेत् ॥ तत्तृतीयेन वा कुर्याद्रथकानां तु निर्गमम्। त्रयं त्रयं स्थापनीयं रथकत्रितये सदा ॥ Çilpasârasaṃgraha 20.

रथकक्षा f. *eine Menge von Wagen* P. 4,2,51.

रथकट्या f. dass. Vop. 7,35. AK. 2,8,2,23. H. 1422.

रथकार m. = रथकार Çabdar. im ÇKDa.

रथकल्पक m. *Zurüster von Wagen, Wagenmeister* MBu. 7,1337.

रथकाम्य्, °काम्यति *nach dem Wagen verlangen, angespannt sein wollen:* अश्वः Kâṭy. 7,5.

रथकाय (collect. von रथ) m. *die Abtheilung der Wagen* (in einem Heere), *die Wagen* Hiouen-thsang I, 82.

रथकार m. *Wagner, Zimmermann* AK. 2,10,9. H. 917, Sch. H. an. 4,276. Med. r. 293. Halâs. 2,432. AV. 3,5,6. VS. 16,17. 30,6. TBa. 1,1,4,3. Çat. Ba. 13,4,2,17. Kâṭy. Çr. 1,1,9. 20,2,16. Pâraṅk. 43,1. 185,10. 228,8. Hit. 86,4. Im System der Sohn eines Mâhishja von einer Karaṇi Jâṭ. 1,95. AK. 2,10,4. H. an. Med. — Vgl. राथकारिक, राथकार्य.

रथकारक m. = रथकार H. 899.

रथकारत्व n. *das Handwerk des Wagners, — Zimmermanns* Pâraṅk. 228,12.

रथकुटुम्बिक m. *Wagenlenker* H. 760.

रथकुटुम्बिन् m. dass. AK. 2,8,2,38.

रथकूबर s. u. कूबर.

रथकृत् m. 1) *Wagner, Zimmermann* H. 917. Kâṭy. Çr. 4,7,7. 9,3. im System der Sohn eines Mâhishja und einer Karaṇi H. 893. — 2) N. pr. eines Jaksha VP. 233.

रथकेतु m. *Wagenbanner* R. 6,86,37.

रथक्रान्त m. Bez. *eines best. Tactes* (neben अश्वक्रान्त, विष्णु°, सूर्य° und विष्णु°) Saṅgîtaratnâkara im ÇKDa.

रथक्रीत adj. *um den Preis eines Wagens erkauft* AV. 11,6,23.

रथतय adj. *im Wagen verweilend:* कदा भुवद्वर्तयाणि ब्रह्मा कदा स्तोत्रे सहसयोर्यं दाः *so v. a. wann werden die Priester es dahin bringen wie Fürsten im Wagen zu fahren?* RV. 6,35,1.

रथगणक adj. viell. *der das Amt hat die Wagen zu überzählen* gaṇa उक्षान्नादि zu P. 5,1,129. mit einem im gen. gedachten Worte comp. gaṇa पाशकादि zu P. 2,2,9. Accent eines solchen comp. gaṇa पाशकादि zu P. 6,2,151. — Vgl. राथगणक und पत्तिगणक.

रथगर्भक m. *ein Miniaturwagen* d. i. *Sänfte* H. 753. — Vgl. राथगर्भक.

रथगुप्ति f. *eine am Wagen zum Schutz desselben angebrachte Vorrichtung* AK. 2,8,2,35. H. 758.

रथगृत्सं m. *ein gewandter Wagenlenker, Leibkutscher* Ait. Br. 3,48. VS. 15,15.

रथगोपन n. = रथगुप्ति Halâs. 2,294.

रथग्रन्थि m. *Wagenknopf* Harîv. 15200.

रथचक्र n. *Wagenrad* Ait. Br. 3,43. TBa. 1,1,6,8. Çat. Br. 2,3,3,12. 5,1,5,2. 11,8,4,11. Kauç. 14. 15. MBu. 3,12093. 12169. 6,1894 (रथचक्राणि ed. Bomb. st. °चक्राश der ed. Calc.). R. 4,60,9. Kâm. Nîtis. 8,2. Vaitân. Baudh. S. 43,46. °चित् *in Form eines Wagenrades geschichtet* Çat. Br. 6,7,3,3. TS. 5,4,44,2.

रथचरण m. 1) *Wagenfuss* d. i. *Wagenrad* Bâlar. P. 1,9,37. 5,1,31. 8,6. 10,3. Vgl. रथपाद. — 2) *Anas Casarca Gm.* (s. चक्रवाक) Çabdar. im ÇKDa.

रथचर्या f. (häufig im pl.) *das Fahren zu Wagen* MBu. 1,5340. 6,3077. 9,470. 13,5101. R. 1,19,19 (रथचर्यासु zu lesen). 2,52,47 (51,18 Gorr.).

रथचर्षणा *ein best. Theil des Wagens, Behälter* oder dgl.: यो कुं वो मधुना दृतिराश्रिता रथचर्षणे। ततः पिबतमश्विना RV. 8,5,19. nach Sây. *auf einer sichtbaren Stelle in der Mitte des Wagens.*

रथचर्षणि adj. so v. a. रथगमन nach Durga zu Nir. 5,12 in dem Citat: धानाः सोमानामिन्द्राहि च पिब च। वब्धो ते क्रतो धाना उप सद्रीयं त्रिप्रताम्। या रथचर्षणे मिश्रस्त्व. Es steht Nichts im Wege die Form als loc. von रथचर्षण anzusehen.

रथचित्रा f. N. pr. eines Flusses MBu. 6,334 (VP. 183).

रथजङ्घा f. *ein best. Theil des Wagens, Hintertheil* Liṭ. 1,9,16.

1. रथजित् (1. रथ + जित्) adj. *Wagen gewinnend* RV. 9,78,4.

2. रथजित् (2. रथ + जित्) adj. *Zuneigung gewinnend, liebreizend:* अप्सरसः AV. 6,130,1. — Vgl. राथजितेय.

रथजूति adj. *rasch zu Wagen fahrend* oder m. N. pr. AV. 19,44,3.

रथज्ञान n. *die Kenntniss des Wagenlenkens* Kâmas. 56,371. — Vgl. रथविज्ञान.

रथज्ञानिन् adj. *mit der Kunst des Wagenlenkens vertraut* Kâmas. 56,368.

रथतूर् adj. *den Wagen befördernd:* प्रभे कं यासि रथतूर्भिरर्वैः RV. 1,88,2. ते नो ऽवसु रथतूर्मनीषाम् 10,77,8, wo der nom. sg. mit ते zu verbinden ist; vgl. u. रथयु und ते रुपेत्तमाः। समुत्पेतुरथाकाशं रथिनं मोक्षयन्निव MBu. 3,2794.

रथदारु n. *zum Bau von Wagen sich eignendes Holz* P. 6,2,43, Sch.

रथद्रु m. *Dalbergia ougeinensis* Roxb. AK. 2,4,2,7.

रथद्रुम m. dass. H. 1142.

रथधुर् f. *Wagendeichsel* MBu. 1,3367.

रथनाभि f. *Nabe am Wagen* VS. 34,3. Çat. Br. 14,3,3,3.

रथनीड s. u. नीड 3).

रथनेमि s. u. नेमि.

रथंतर (रथम्, acc. von रथ, + तर) P. 3,2,46, Sch. Vop. 24,60 (m.). 1) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,231, a. RV. 1,164,25. 10,187,1. AV. 8,10,3. 11,3,16. VS. 10,10. 11,3. TBa. 2,1,3,7. 7,3,1. Ait. Br. 3,1. Çat. Br. 1,7,3,17. 8,4,19. Çâṅkh. Çr. 10,9,20. 11,12,3. Kauṣh. Up. 2,12,1. 2. Kauṣh. Up. 1,3. Kâlikop. in Ind. St. 9,14. MBu. 2,447. 3,14162. 5,1711. 12,1633. 10118. 13,875. 936. 4896. 7369. 14,311. Harîv. 16306. gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. VP. 42. Mârk. P. 48,31. Viṣṇ. P. bei Muir, ST. 4,317, N. 231. Verz. d. Oxf. H. 56,b,30. °पृष्ठ Çâṅkh. Çr. 7,20,3. 13,2,1. 11,30. °सामन् 13,29,14. Pâraṅkh. Br. 3,3,12. — 2) m. das Rathaṁtara als eine Form Agni's und zwar als Sohnes des Tapas gefasst MBu. 3,14174. — 3) f. ई N. pr. einer Gattin Taṁsu's MBu. 1,3707. — Vgl. अरेा° (auch AV. Paipp. 2,51) und राथंतर.

रथपथ m. *Bahn des Wagens* Liṭ. 3,10,11. auch in einer übertra-

genen Bed. (प्रतिकृतौ मंज्ञायाम्) gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

रथपर्याय m. *Calamus Rotang (ein Synonym von* रथ) Çabdar. im ÇKDa.

रथपाद् m. *Wagenfuss* d. i. *Wagenrad* H. 755. — Vgl. रथचरण.

रथप्रा 1) adj. nach Sây. *den Wagen füllend* ṚV. 6,49,4. 8,63,10. — 2) f. N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 73,*a*, No. 129. *b*, 2. 4; vgl. रथप्सा, रथस्या.

रथप्रोत adj. *in den Wagen fest gefügt*, Personification in einer formelhaften Aufzählung VS. 15,17.

रथप्रोष्ठ m. N. pr.; pl. ṚV. 10,60,8. — Vgl. राथप्रोष्ठ.

रथप्सा f. N. pr. eines Flusses Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. रथप्रा, रथस्या, रथस्या.

रथबन्ध m. *Fesselung —, Festhaltung des Wagens, Wagenfessel* MBh. 8, 2582.

रथमहोत्सव m. *ein grosses Wagenfest, die feierliche Procession eines Idols zu Wagen* Verz. d. B. H No. 1181. — Vgl. रथोत्सव.

रथमुख n. *Vordertheil des Wagens* AV. 8,8,23. TS. 2,4,9,2. 5,4,9,3. — Vgl. रथशिरस्.

रथर्या (von रथ) f. *Lust nach Wagen* ṚV. 8,46,10. — Vgl. रथयु.

रथयात्रा f. *die feierliche Procession eines Idols zu Wagen* Wilson, Sel. Works 1,128. 135. Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,5. *b*,14. 17. 62,*b*,13. 85,*a*,14. रथयात्रोत्सव Verz. d. B. H. 136,*a* (129).

रथयान n. *das Fahren zu Wagen* AV. 4,34,4. R. Gorr. 2,34,12.

रथयावन् adj. *zu Wagen fahrend* ṚV. 8,38,2.

रथयु (von रथ) adj. *nach Wagen begehrend* Nir. 6,31. ṚV. 1,51,14. in den folgenden Stellen ist der nom. sg. mit einem nom. und acc. pl. zu verbinden (vgl. u. रथतूर्): उशतीर्हि॑रो देव॒ रथं॑ रथ्यु॒र्धाय॑धम् 10,70,8. स्वाध्यो॑ वि दु॒रो दे॒वय॑न्तो॒ऽशिश्र॑यु॒ रथ॑युर्देव॒ताता॑ 7,2,8. — Vgl. रथया.

रथयुज् 1) adj. *den Wagen schirrend, an den Wagen geschirrt* ṚV. 1, 139,4. क्रत्वः 8,33,14. वायु 10,64,7. — 2) m. *Wagenlenker* Rasn. 9,25.

रथयुद्ध n. *ein Kampf zu Wagen* MBh. 1,551.

रथयोग s. u. योग 1) *b*).

रथराज m. N. pr. eines Ahnen Çâkjamuni's LIA. II, Anh. 2.

रथर्यू (von रथ), °र्यति *im Wagen fahren* Naigh. 2,14. 4,3. Nir. 6, 29. एष देवो॑ रथर्यति॒ पव॑मानो॒ दशस्यति ṚV. 9,3,5. यदे॒तश्चि॒त् पत॑रै॒ रर्यसि 10,37,3. 8,90,3.

रथर्वी adj. oder subst. f. Bez. einer Schlange: पै॒ङ्गो रथ॒र्व्याः शिरः॑ स किं॑शिद् पृदाकोः AV. 10,4,5.

रथवंश m. *eine Menge von Wagen* MBh. 3,15720. 4,1153. 1645.

रथवत् (von रथ) adj. 1) *von Wagen begleitet, Wagen habend* ṚV. 1, 122,11. राधस् 5,57,7. 7,27,5. 76,6. — 2) *das Wort* रथ *enthaltend* Ait. Br. 4,23.

रथवर्त्मन् n. P. 6,2,151, Sch. *Weg für Wagen, Fahrstrasse* R. 2,42, 12. Rasn. 4,82.

रथवाह् 1) adj. (f. ई) *einen Wagen ziehend:* घस्रा Çat. Br. 5,5,4,25. Kâṭj. Çr. 15,10,20. — 2) m. *a) Wagenpferd, ein an einen Wagen gespanntes Pferd* MBh. 4, 2043. 7,1012. — *b) Wagenlenker* Kathâs. 56, 294. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,16.

रथवाहक m. *Wagenlenker* MBh. 3,2890.

रथवाहन 1) m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,7012. — 2) n. proparox. *ein bewegliches Gestell, auf welches der Wagen gesetzt wird, Untersatz* (vgl. βημός bei Homer) ṚV. 6,75,3. VS. 12,71. AV. 3,17,2. TBr. 1,7, 9,6. Kâṭj. 21,10. Çat. Br. 5,4,3,23. fg. Mân. zu VS. 10,25. die Schreibung °वाकण Kâṭj. Çr. 15,6,27. 30. VS. Prât. 3,35. Mân. zu VS. 10, 21. °वार्ह TS. 1,8,10,1. TBr. 1,8,4,2. Kâṭj. 15,9. TS. Comm. II, 193.

रथविज्ञान n. *die Kenntniss des Wagenlenkens* Kathâs. 56,253. 294. — Vgl. रथज्ञान.

रथविद्या f. dass. Kathâs. 56,257.

रथविमोचन n. *das Abschirren vom Wagen;* davon adj. °विमोचनीय *darauf bezüglich* TBr. 1,3,6,6. 7,9,5.

रथवीति m. N. pr. eines Mannes ṚV. 5,61,13. fg.

रथवीथी f. *Weg für Wagen, Fahrstrasse* Buâs. P. 4,15,20.

रथव्रज m. = रथवंश AK. 2,8,2,23. MBh. 4,1056. 6,5441.

रथव्रात m. dass. MBh. 4,1070. 5,5960.

रथशक्ति f. *der Fahnenstock auf einem Streitwagen* Harîv. 9363.

रथशाला f. *Wagenschuppen* MBh. 2,2694. 3,2883. 12,10453.

रथशिक्षा f. *die Theorie des Wagenlenkens* R. Gorr. 1,80,28.

रथशिरस् n. so v. a. रथमुख Kâṭj. Çr. 18,5,17. 20. Lâṭj. 2,8,1.

रथशीर्ष n. dass. Çat. Br. 9,4,4,13.

रथश्रेणि f. *Wagenreihe* Çat. Br. 10,6,4,7.

रथसङ्ग m. *feindliches Zusammentreffen von Wagen* ṚV. 8,33,2.

रथसप्तमी f. Bez. *des 7ten Tages in der lichten Hälfte des* Âçvina Verz. d. Oxf. H. 284,*b*,48. Wilson, Sel. Works 2, 196.

रथसूत्र n. *eine Vorschrift über Wagenbau* MBh. 2, 235. Schol. zu Kâṭj. Çr. 16,9. 10 und Anm.

रथस्थ 1) adj. s. u. स्थ. — 2) f. स्था N. pr. eines Flusses MBh. 1,6435; vgl. रथप्सा, रथस्या.

रथस्पति (रथ॑स्पति Padap.) m. *der Genius des Behagens, des Ergötzens* (odor *des Streitwagens*): एष॑ ते॒ देव॒ नेता॒ रथ॑स्पतिः (= सर्वस्य पालकः Sây.) शं रयिः ṚV. 5,50,5. सु॒भगा॑ वाजो॒ रथ॑स्पतिर्भगः॑ 10,64,10. विश्वे॑ देवासो॒ रथ॑स्पतिभगः॑ । सु॒भगा॑तः 93,7. Gebildet wie वनस्पति u. s. w., wo die Endung पति dem Ohr als gen. erscheint.

रथस्या s. u. रथस्या.

रथस्पृश् adj. *den Wagen berührend* (und dadurch scheu geworden): घस्रौ॑ ṚV. 10,95,8.

रथस्या f. N. pr. eines Flusses gaṇa पारस्करादि zu P. 6,1,157. Da das Wort ein eingeschobenes स enthalten soll, so wird wohl रथस्पा die richtige Lesart sein; vgl. रथप्रा, रथप्सा, रथस्था.

1. रथस्वन m. *Wagengerassel;* am Ende eines adj. comp. f. स्वा Kathâs. 56,291.

2. रथस्वन् adj. wohl so v. a. स्वनद्रथ; personificirt in der formelhaften Aufzählung VS. 15,16. N. pr. eines Jaksha Buâs. P. 12.11.35.

1. रथाक्ष् (रथ + 2. अक्ष) m. *Wagenachse* TS. 6,6,4,1. Kâṭj. 29,3. Çâṅkh. Gṛ. 1,13. MBh. 7,6090. als Längenmass (= 104 Aṅgula nach dem Schol. zu Kâṭj. Çr.): °मात्र Kâṭj. Çr. 8,8,6. °मात्रैरिषुभिः MBh. 7,6829. R. 3,67,18.

2. रथाक्ष (रथ + 3. अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge

Skanda's MBh. 9,2565.

रथाग्र MBh. 5,1832 fehlerhaft für रथाग्र्य *der beste Kämpfer*, wie die ed. Bomb. liest.

रथाङ्गा f. v. l. für रथाङ्गा Vaśiṣ. Bṛh. S. 16,16.

रथाङ्ग (रथ + 3. अङ्ग) 1) n. a) *Wagentheil* H. 758. Hall. 2, 293 (m.). Âçv. Gṛhy. 2,6,7. Çâṅkh. Gṛhy. 1,15. MBh. 1,6488. 14,2447. — b) *Wagenrad* AK. 2,8,2,24. Trik. 3,3,68. H. 755. an. 3,130. fg. Med. g. 46. Hall. 2, 292. Çiç. 98, 22. °नेमय: 169. Vikr. 100. °घनि Rāgn. 7,38. Sin. D. 18,2. — c) *Discus*, insbes. der Kṛshṇa's oder Vishṇu's MBh. 6,2594. Harīv. 7329. Bhāg. P. 2,2,8. 3,19,7. 9,4,50. 10,38,36. 66,21. °पाणि Bein. Kṛshṇa's oder Vishṇu's Hall. 1,22. Harīv. 8434. Çiç. 1,21. Bhāg. P. 1,3,28. 11,2,39. — d) *die Scheibe eines Töpfers* MBh. 7, 3960. चक्रं तु die ed. Bomb. st. रथाङ्गं der ed. Calc. — 2) m. *Anas Casarca Gm.* (s. चक्रवाक) Trik. H. 1330, Sch. H. an. Med. Hall. 2,80. Vikr. 100. — 3) f. आ v. l. für रथाङ्गा Vaśiṣ. Bṛh. S. 16,16. — 4) f. ई *eine best. Pflanze*, = सहि Rāgān. im ÇKDa.

रथाङ्गतुल्याङ्गयन m. *der mit dem Wagenrade gleichen Namen tragende Vogel* d. i. *Anas Casarca Gm.* (चक्रवाक) Harīv. 8794.

रथाङ्गनामक m. dass. AK. 2,5,22.

रथाङ्गनामन् m. dass. Rāgn. 3,24. 13,31. Kumāras. 3,37. Mālav. 84. Kathās. 104,112, wo रथाङ्गनाभौ zu lesen ist.

रथाङ्गसंज्ञ (र° + संज्ञा) m. dass. R. Gorr. 2,111,49.

रथाङ्गाह्व m. dass. MBh. 3,11813.

रथाङ्गाह्व (रथाङ्ग + आह्व) m. dass. H. 1330. R. 2,103,42.

रथाङ्गाह्वय m. dass. AK. 2,5,22.

रथाङ्गाह्वयन adj. *nach dem Rade benannt:* हिंसा: = चक्रवाका: R. 2,93,11 (104,11 Gorr.).

रथानीक (रथ + अ°) n. *ein Heer von Streitwagen* Draup. 7,21 (यथानीकं MBh. 3,15715). 6,1760.

रथान्तर m. N. pr. eines Lehrers (fehlerhaft für रथीतर) VP. 277, N. 7. Nach Agni-P. im ÇKDa. Bez. eines Kalpa.

रथाध (रथ + अध) m. *Calamus Rotang* Çabdam. im ÇKDa. °पुष्प m. dass. AK. 2,4,2,10.

रथारथि (von रथ + रथ) adv. *Wagen gegen Wagen* MBh. 4,1056. — Vgl. कचाकचि, केशाकेशि, नखानखि u. s. w. und P. 5,4,127.

रथारोह (रथ + आ°) 1) adj. subst. *zu Wagen sitzend, ein Kämpfer zu Wagen* MBh. 6,1897. — 2) m. *das Besteigen des Wagens* Çiç. 96,3, v. l. für रथारोहण.

रथारोहिन् = रथारोह 1) H. 761.

रथार्भक (रथ + अ°) m. *ein kleiner Wagen* Wilson. — Vgl. रथगर्भक.

रथावह m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 7,1493.

रथावर्त (रथ + आ°) m. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8001.

1. रथाश्व (रथ + अश्व) m. *Wagenpferd* Kathās. 113,53.

2. रथाश्व (wie eben) n. sg. *Wagen und Pferd* M. 7,96. °दान Verz. d. Oxf. H. 33,b,8.

रथासंग (रथ + सङ्ग) adj. *dem Wagen gewachsen, ihn zu ziehen tüchtig* RV. 8,26,20.

रथाह्व und रथाह्व (रथ + आ°) *Tagereise zu Wagen* Lāṭ. 1,11,12. Kāṭy. Ça. 25,14,15. रथाह्वं n. dass. Çat. Br. 12,2,2,13.

रथाह्वा (रथ + आ°) f. N. pr. eines Flusses Vaśiṣ. Bṛh. S. 16,16. v. l. रथाङ्गा und रथाङ्गा.

रथिक (von रथ) adj. (f. ई) und subst. *zu Wagen fahrend, Besitzer eines Wagens* gaṇa पर्पादि zu P. 4,4,10. AK. 2,8,2,44. H. 761. Vaśiṣ. Bṛh. S. 15,11. 86,73. P. 1,3,23, Vârtt. 1, Schol. रथिकाश्वारोहम् P. 2,4,2, Sch.

रथित (wie eben) adj. *in den Besitz eines Wagens gelangt* Maitrjup. 4,4.

रथिन् (wie eben) 1) adj. a) *einen Wagen besitzend, im Wagen fahrend; Besitzer eines Wagens, Kämpfer zu Wagen* AK. 2,8,2,28. 44. H. 761 (bis). Hall. 2, 288. RV. 5,83,3. अस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु 6,47, 31. अयं रथी सुतृप इन्नमो इदिन्द्र ते सखा 8,4,9. 10,40,5. 51,6. 1,122, 5. AV. 4,34,4. 7,62,1. 73,1. ये रथिनो ये अश्वा: 11,10,24. VS. 16,26. अतिथि TS. 5,2,2,3. Çat. Br. 3,7,2,7 (superl.). Kāṭhop. 3,3. MBh. 1, 4084. 2,2079. 3,724. fg. 2794. 13598. 4,674. 1629. 8,1620. fg. 16,210. Harīv. 1954. 9733. Spr. 2587. R. 2,46,27. 63,19. R. Gorr. 2,73,17. 3, 49,18. 5,83,2. (वेदेत्) अपुष्पावधिनं सूत: Bharata beim Schol. zu Çiç. 5,2. Kir. Nitis. 8,2. Rāgn. 7,34. 49. 15,8. Vikr. 100. Uttarar. 98,10 (130,4). Bhāg. P. 1,15,17. 3,1,30. नास्थी रथिन: सखा Spr. 1500. — b) *aus —, in Wagen bestehend:* सेना MBh. 5,5703. इषं: *Wagenlasten bildend oder auf Wagen gefahren* RV. 1,9,8. — c) *zum Wagen gehörig, — gehörig:* Rosse RV. 6,27,8. 9,97,50. — 2) रथिनी f. *eine Menge von Wagen* gaṇa खलादि zu P. 4,2,51, Vârtt.

रथिन (wie eben) adj. *einen Wagen besitzend* u. s. w. Vop. 7, 32. fg. AK. 2,8,2,44, v. l.

रथिर (wie eben) adj. *einen Wagen besitzend, im Wagen fahrend* (P. 5,2,109, Vârtt. 3. Vop. 7,32. fg. AK. 2,8,2,44. H. 761); auch so v. a. *eilig:* अनु देवावधिरा यामि साधन् RV. 2,1,17. 26,1. 31,20. 7,7,4. die Açvin 69,3. स्वर्: सिषासन्नधिरो गविष्टिषु 9,76,2. 97,46. अर्वय: 10,76, 7. अधर्षव: 9,97,37. कर्णय: Vâlakh. 2,8.

रथिराय (von रथिर), partic. रथिरायत् *herbeieilend:* रथिरायतामुशती पुरंधिरस्मद्यग्गा दावने वसूनाम् RV. 9,93,4.

रथ्य (von रथ) P. 5,2,109, Vârtt. 2. adj. subst. acc. रथ्यम्, pl. रथ्यान्; nach VS. Paṭ. 3,110 Dehnung des इ von रथिन् vor त und न: vgl. P. 8,2,17, Vârtt. 1. 1) *zu Wagen fahrend, Wagenlenker, Kämpfer zu Wagen* RV. 1,25,3. 2,39,2. 3,3,6. 5,87,3. 7,39,1. 8,25,2. परि णो वृणक्त्वघा दुर्गाणि रथ्येव पथा 47,5. 64,1. 84,1. मृज्मदर्शं रथीरिव 9,64, 10. रथीरभून्मुद्गलानी गविष्टौ 10,102,2. करीणां रथ्यो विव्रतानाम् 23, 1. 78,3. 130,7. 4,36,4. नकिष्टुद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे 1,84,6. superl. 1,22,2. 6,56,2. 3. (इन्द्र:) रथीतमो रथीनाम् 8,45,7. TS. 4,7,15,3. — 2) *Lenker, Leiter* überh.; *Herr, Gebieter:* यज्ञानाम् RV. 8,44,27. 10, 92,1. अधराणाम् 1,44,2. 6,7,2. 8,11,2. Ait. Br. 2,34. राय: RV. 2,24, 15. 5,54,13. 7,5,5. वार्याणाम् 6,5,3. बहुतस्य 1,77,3. दक्षस्य 9,16,3. पू- षं हि षा रथ्यो नस्तनूनाम् 6,51,6. सुतस्य 9. 55,1. 7,66,12. 8,19,35. — 3) *Wagenlasten bildend oder auf Wagen gefahren:* रयि RV. 6,49,13. वाजी: 1,121,14. इषो रथी: (vgl. 1,9,8) 3,30,11. — 4) *zum Wagen gehörig:* अश्वास: RV. 1,148,3. 8,92,7.

रथीकर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122,a,4.

रथीतर 1) compar. zu रथी; s. das. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Bṛihadd. 1,5. 3,5. Verz. d. Oxf. H. 54,b,28. 56. 55,a,3. Baudh. P. 2,6,1. 2. pl. *seine Nachkommen* s. Pravarabdu. in Verz. d. B. H. 56,18. 60,36. — Vgl. राथीतर.

रथीनर m. N. pr. VP. 359 fehlerhaft für रथीतर.

रथीयँ (von रथ), partic. praes. *fahrend:* रथीयन्तीव प्र जिहीते यवर्धि: *als wollte es mitfahren fliegt das Kraut dahin* ṚV. 1,166,5.

रथीवृत adj. *vom Fahrenden erwählt:* रथो न यो रथीवृतो घृणीवाञ्चेतति त्मना *etwa Lieblingswagen* ṚV. 10,176,3.

रथेचित्र adj. *auf dem Wagen prangend;* personif. VS. 15,16.

रथेष्ठ (रथ + इष्ठ) m. *Besitzer eines Wagens, Kämpfer zu Wagen* Rāgat. 7,34.

रथेष्ठभ् s. u. ष्ठभ्.

रथेषा (रथ + ईषा) f. *Wagendeichsel* MBu. 5,7214 (wo रथेषा st. रथेषौ der ed. Bomb. und रथे सा der ed. Calc. zu lesen ist, wie schon Benfey gesehen hat). 6,1761. 2170. 7,8781. Harıv. 6682 (रथेशा ed. Calc.).

रथेषु (रथ + इषु) m. Bez. *einer Art von Pfeilen* Harıv. 7490. 8149. vielleicht so v. a. रथास्त्रमात्र; s. u. रथास्त्र.

रथेष्ठा adj. *auf dem Wagen stehend* (स्था), zu *Wagen fahrend, Kämpfer zu Wagen* ṚV. 1,173,4. 5. 2,17,3. 6,21,1. 22,5. या रथे रिरिषेथे रथेष्ठा: 29,1. 8,4,13. वर्धन्तु त्वा रथेष्ठामा हरिषो रघुवर्ति: 33,14. 8,97,49. VS. 22,32.

रथोष्ठ, रथोऽरुक् (रथ + ऊठ) adj. *auf einem Wagen gefahren* ṚV. 10,148,3.

रथोत्सव (रथ + उ°) m. *Wagenfest, die feierliche Procession eines Idols zu Wagen* Verz. d. Oxf. H. 77,a,13. — Vgl. रथमहोत्सव.

रथोद्धत (रथ + उ°) 1) adj. *stolz auf seinen Wagen* (mit Anspielung auf 2) *a)* Vaṛāh. Bṛ. S. 104,31. — 2) f. या *a) ein best. Metrum, 4 Mal* — ◡ — ◡ — ◡ — ◡ — Çaut. 25. Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 8). Ind. St. 3,375. — *b)* Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 874.

रथोहक् s. u. रथोहक्.

रथोपस्थ (रथ + उ°) m. *Schooss (Fond) des Wagens* AV. 3,3,23. Ārt. Bṛ. 8,10 (= रथोर्धभाग Sāj.). Çat. Bṛ. 2,3,3,12. Lāṭ. 1,9,25. Buadd. 1,47. MBu. 1,179. 193. 3,343 (= रथनीड 344). 2870. 2884. 2890. 4,1106. 1401. 2006. 5,7219. R. 2,40,16 (39,20 Gorr.). 6,68,19.

रथोरग (रथ + उ°) m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6,362; vgl. VP. (II) 2,175.

रथोष्मा (रथ + उष्मन् oder ऊ°) f. N. pr. eines Flusses Harıv. 9307.

रथोघ (रथ + ओघ) m. *eine Menge von Wagen* Vaṛāh. Bṛ. S. 68,95.

रथौजस् (रथ + ओ°) adj. *Wagen-mächtig;* personif. VS. 15,15.

रथ्य (von रथ) 1) adj. *a)* parox. *zum Wagen gehörig, an den Wagen gewöhnt* u. s. w.; m. *Wagenpferd (am Streitwagen)* P. 4,3,121. 4,76. AK. 2,8,2,14. H. 1234. an. 2,379. Med. j. 80. सप्ति ṚV. 2,31,7. सत्य 4,4. 4,41,10. 5,41,3. 9,96,1. चक्र 4,1,3. 10,10,7. 89,2. 1,33,9. 180,4. Çat. Bṛ. 5,4,2,16. याणि ṚV. 1,35,6. याजि *Wagenrennen* 9,91,1. धावत्यधी मृगत्रवातमेव रथ्या: *Wagenpferde* Çiç. 8. रथ्यानागाश्वचरित Verz. d. Oxf. H. 47,b,16. Nach H. an. ist रथ्य m. auch = रथीस (d. i. रथीश) *Theil eines Wagens.* — *b)* perisp. dass.: सर्थी: R. 6,37,3. 9,86,2. der acc. sg. रथ्यम् z. B. 5,46,2 kann hierher oder zu रथी gezogen werden. — *c)* vielt. *an den Landstrassen* (रथ्या) *seine Freude habend:* रथ्यविरथ्य als Beiw. Çiva's neben चतुष्पथरत MBu. 12,10389. Nilak.: रथ: तद्भावो विरथ: तदुभयार्थाय रथ्यविरथ्याय. — 2) f. या *a)* parox. *Fahrstrasse* P. 5,1,6. Vārtt. AK. 2,2,2. H. 981. H. an. (= प्रतोली, पथ् und पवर). Med. (= विशिखा und वर्तनी). Hit. 122. Hall. 2,134. Gorr. 1,2,36. Çiçup. Gaṇ. 4,7. Kaç. 141. Jāṭ. 1,196. MBu. 1,5605. 13,4993. 16,37. चक्र° Harıv. 4079. घोष° 4425. R. 2,6,11 (5,11 Gorr.). 33,4. R. Gorr. 2,59,13. 5,15,9. 13. 49,16. 6,11,35. Rāgat. 15,35. °पङ्क्ति Spr. 920. रथ्याजि 1004. 2045. 2152. रथ्यात: 2588. Vaṛāh. Bṛ. S. 28,5. 53, 77. Kathās. 20,136. 65,132. Rāja-Tar. 2,29. 5,74. 241. Baudh. P. 1,11, 15. 4,9, 57. 21,2. 25,16. Mārk. P. 35,13. 20. 24. am Ende eines adj. comp. f. या R. Gorr. 2,4,18. 73,31. 4,41,52. Kathās. 41,74. — *b)* oxyt. *eine Menge von Wagen* P. 4,2,50. AK. 2,8,2,23. H. 1422. H. an. Med. — 3) n. *a)* parox. *Wagenzeug, Wagengeschirr, Rad* u. s. w.: सभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतमादिशे ṚV. 9,21,6. 2,4,6. Lāṭ. 2,8,2. 20. = रथाङ्ग Comm. — *b)* perisp. etwa *das Wagenrennen, Wagenkampf;* vielt. auch *Fuhrwerk:* प्रवाव्यधाना रथ्येव याति विश्वा सेवो मंहिना सिन्धुरन्या: ṚV. 7,95,1. एषेथां चित्रथ्या नयेम 10,102,11. — Vgl. धनुरथ्या, परिरथ्य, मरुद्रथ्या, राथ्य.

रथ्यचर्या R. 1,10,19 fehlerhaft für रथचर्या.

रद्, रदति (विलेखने) Dhātup. 3,16; रत्ति: रदितै partic. 1) *kratzen, ritzen; hacken, nagen* Nir. 2,26. यत्रा वो दिद्युद्रदति ṚV. 1,166,6. यामादो गृधा: कुर्णपे रदन्ताम् AV. 11,10,8. Suçr. 2,263,8. — 2) (eine Bahn) *schürfen, — vorzeichnen, — öffnen:* पथ: ṚV. 2,30,2. 5,80,3. 7,87,1. सर्धन: 60,4. गातुम् 47,4. — 3) *in eine Bahn leiten:* सिन्धून् ṚV. 10,89, 7. 3,33,6. 7,49,1. — 4) *Jmd Etwas zuleiten, zuführen* ṚV. 1,116,7. वाजं विप्राय 117,11. शुरुध: 169,8. रदा पूषेव न: सनिम् 6,61,6. 9,93,4. यज्ञाय्यम् Pāraṣk. Bṛ. 16,6,6. TBr. 2,3,9,9. रदिते यवुदे तवे *etwa auf deine Vorbereitung hin* AV. 11,9,7.

— प्र *einritzen, schürfen:* प्र वर्तनीररदो विश्वधेना: ṚV. 4,19,2. पन्थाम् 5,10,1. 10,73,2.

— वि *zertrennen:* गोत्रं पर्व वि रदा तिरश्चा ṚV. 1,61,12. *eröffnen oder zuführen:* वि न: सरूंषि शुरुधो रदन्तु 7,62,3.

रद (von रद्) 1) adj. *aufritzend, nagend an:* नीरदै: प्रियकानाकदयावनीरदै: Ghaṭ. 1. — 2) m. *a) Zahn* AK. 2,6,2,42. H. 383. 290. an. 2, 233. Med. d. 14. Hall. 2,372. °क्षाउन Gir. 10,3. Vaṛāh. Bṛ. S. 51,42. Bṛ. 17,9. *Fangzahn eines Elephanten* Nalod. 2,3. Vaṛāh. Bṛ. S. 94,11. 13. °कोश 81,21. — *b)* Bez. *der Zahl zweiunddreissig* Wurm. Nax. 2,382. — *c)* nom. act. *das Kratzen, Ritzen* u. s. w. H. an. Med. — Vgl. चक्र°, जिह्वा°, द्वि°, रसना°, वज्र°.

रदच्छद m. *Lippe (Zahndecke)* H. 581. — Vgl. दन्तच्छद, दशनच्छद, रदनच्छद.

रदन (von रद्) m. *Zahn* AK. 2,6,2,42. H. 384. Hall. 2,373. Suçr. 1, 259,3. *Fangzahn eines Elephanten* Harıv. 7542 (pl. st. du.). Rāgat. 4,59.

रदनच्छद m. *Lippe* AK. 2,6,2,41. MBu. 3,11522. 6,1798. R. 5,25,15 (वदनच्छद gedr.). Spr. 3562. Kathās. 4,7.

रदनिका (von रदन) f. N. pr. eines Frauenzimmers Mṛicch. 6,15.

रदनिन् (von रदन) m. *Elephant* Rāgān. im ÇKDa.

रदावसु (रदऽवसु Padap.) adj. *Güter eröffnend, — zuführend* ṚV. 7,32,18.

रदिन् (von रद्) m. *Elephant* Hall. 2,59.

रद्द m. Bez. *des 4ten Joga* Ind. St. 2,271.

रद्धर् (von रध्, nom. ag. *Bezwinger, Unterdrücker, Peiniger, Quäler:* लङ्कानिवासिनाम् Bhatt. 9,29.

रध्, रध्यति (हिंसासंराद्धयोः) Dhâtup. 26,84. ररन्ध, ररन्धिम P. 7,1,61. fg. ररन्धिम und रेध्म, अरन्धत् Vop. 11,4. ved. रारधुस्, रधम्, रधान, रन्धि, रन्धीस्; रद्धा und रन्धिता P. 7,2,45. Vop. 8,46. 11,4. partic. रद्ध. 1) *in die Gewalt kommen, Jmd* (dat.) *unterthan —, dienstbar werden* Nir. 6,34. 10,10. द्विषेश मक्षा रध्यतु मा घाकं द्विषते रधम् AV. 17,1,6. RV. 1,50,12. 10,128,5. शत्रवो कि शत्रवो रारधुष्टे 7,18,13. VS. 10,25. धातर्व्येभ्यो रध्यासो पन्मिवो विप्रिया स्मः TS. 6,2,2,1. रद्धं वृत्रम् *unterworfen* RV. 10,113,8. — 2) *in die Gewalt geben:* मा नो निदे च वक्तवे ऽर्यो रन्धीरराव्णो RV. 7,31,5. 1,174,2. 4,16,12. यस्मभ्यं वृत्रा सुकृतानि रन्धि 22,9. — 3) *in seine Gewalt bringen, bezwingen, unterdrücken, peinigen, quälen:* यत्तं रधितुमारेभे Bhatt. 9,29.

— caus. रन्धयति P. 7,1,61. रन्धयस्व, रीरधत्; 1) *in die Gewalt geben, dahingeben, dienstbar machen:* मा नो वधाय कृत्वे जिकीळानस्य रीरधः RV. 1,25,2. 30,18. यर्कर्म्भते रन्धया शासदव्रतान् 51,2. 2. 130,2. 132,4. 2,11,19. मा नं मार्भ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः 32,2. 3,16,3. 8,49,5. नृषदंसशतुर्ये रन्धयेनम् 10,87,8. 28,9. पृथुश्रवसे रीरधा सुवृक्तिम् 30,1. AV. 6,6,1. 34,3. 12,1,14. इक्षि रेतो मघवन्बन्धयस्व RV. 3,30,16. — 2) *quälen, peinigen:* भरतं शोकसंतप्तं भृशः शोकैररन्धयत् R. 2,81,3; vgl. रुन्धय् u. 2. रुध् caus. — 3) *zu Nichte machen:* कर्माशयान्रन्धय Bhâg. P. 5,18,8. विज्ञानदृग्वीर्यमुरन्धिताशय 2,2,19. योगरन्धितकर्मन् 3,3,27. ज्ञानाग्निना रन्धितकर्मकल्मषाः 21,2. — 4) *kochen, Speisen zubereiten:* रन्धित ÇKDn.

— intens. *in die Gewalt geben:* दिवोऽं स्मे रीरत मरुतः सकर्त्तिभिम् RV. 5,54,13. पृषा नः स्पृधः समजा समर्तिस्वन्द्रे रारन्धि मिथतीरदेवीः 6,25,9. *überlassen, lassen* in der Stelle रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि so v. a. *lass uns die Sonne schauen* 10,59,5; so nach Nir. 10,40, aber wegen des loc. besser auf 1. रन् zurückzuführen.

— उप caus. *quälen, peinigen:* (तम्) यमानुचराः कुम्भीपाके तप्ततैल उपारन्धयन्ति Bhâg. P. 5,26,13. यस्त्विह वा उग्रः पशून्यन्तिणो वा प्राणतो (partic. nach dem Comm.) उपरन्धयति ebend.

— नि caus. *in die Gewalt geben* RV. 7,19,2.

— परि caus. *zu Nichte machen:* परिरन्धितकषायाशय Bhâg. P. 5,1,33.

रध्र (von रध् = ऋध्, im Zend aredra) adj. nach Sây. so v. a. समृद्ध oder राधक, आराधक *begütert* oder *derjenige, welcher es* (den Göttern) *recht macht, rechtschaffen; der sich in Gunst zu setzen weiss:* यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य RV. 2,12,6. 10,24,3. रध्रस्य स्थो यजमानस्य चोदौ 2,30,6. यथा रध्रे पारयात्यर्कः 34,15. इमे रध्रे चिन्मरुतो बुनन्ति भूमिं चिद्यथा वर्मवो सुयक्ते 7,56,20. — Vgl. अरध्र, wo hiernach zu vermuthen wäre *nicht in rechter Verfassung sich befindend* oder *nicht genehm.*

रध्रचोद adj. etwa *den Rechtschaffenen fördernd:* Indra RV. 2,21,4.

रध्रचोदन adj. dass.: Indra RV. 6,44,10. 8,69,3. 10,38,5.

रध्रतुर (तुर von 1. तुर्) adj. etwa so v. a. रध्रचोद. अरध्रस्य रध्रतुरो बभूव RV. 6,16,4. nach Sây. °तुर *Ueberwinder der zu Unterwerfenden* (रध्र von रध्, रन्ध्).

1. रन् (रण्), रणति (शब्दे) Dhâtup. 13,2. रेणान्, रणान्त, रेण्यति; राण (रराण Padap.): रेणिष्टन, अराणिषुम्. 1) *sich göttlich thun, sich behagen lassen, sich vergnügen an* oder *bei;* mit loc., selten acc.: तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति RV. 4,33,6. ब्रध्नस्य शासने रणसि 3,7,8. सुते रेण 5,51,8. 8,12,17. 18. 13,9. शास्त्रे 33,16. यस्मिन्नुक्थानि रण्यसि 16,2. नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन 2,36,3. रणन्गावो न यवसे 5,53,16. 10,23,1. 1,38,2. यदीतिष्ये रणन्नृभ्वः समस्तः 4,33,7. 8,81,20. 82,20. सोमो देवेषु रण्यति 9,107,18. तवाहं सोम रारण मध्ये 19. कृते चिदत्र मरुतो रणन्त 7,57,5. यत्रा रणसि घोतयः 9,111,2. नाहं रारण सख्युर्वृषाकपेरृते *es ist mir nicht wohl ohne* 10,86,12. कस्य ब्रह्माणि रण्यवः 5,74,3. यो कृष्या मतैषु रण्यति 18,1. — 2) *ergötzen:* इन्द्रं कृविर्मतीर्विशो अराणिषुः RV. 8,13,16. — 3) *klingen, tönen:* रणद्भिः स्वरैः Çiç. 1,10. रणत्स्वाभरणातोद्येषु Kathâs. 74,235. रणन्मणिमेखल Spr. 2833. 691. 2207. Z. d. d. m. G. 14,569,15. रणत्काञ्चननूपुर Bhâg. P. 3,17,21. रणद्वेणु 2,29. रणित *a)* adj. *klingend, tönend:* चरणरणितमणिनूपुरा Gît. 2,16. 11,1. Kathâs. 25,150. 26,212. Vet. in L.A. 21,1. रणितं = रणो ऽस्य मंत्रातः gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. — *b)* n. *Geklinge, Getön:* वलय° Spr. 23. काञ्चीमणि° 2934. नूपुरतालरणितैः Prab. 3,13. वेणु° Rîâ-Tar. 2,167. Bhâg. P. 10,21,11. *Gesumme:* भाम्यद्भृङ्गी° Gît. 2,20. मधुपावली° Prab. 79,15. — रन् 3) ist wohl eine besondere Wurzel, da die Bedeutungen sich nicht vermitteln lassen.

— caus. रणयति, °ते, अरीरणत् und अरराणत् Pat. in Sidd. K. zu P. 7,4,2. Vop. 18,8. ved. रारणत् (रराणत् Padap.), अरारणुस्, रारन्धि, रारन्तु, रराणत 2. pl. RV. 1,171,1. 1) *sich göttlich thun, sich ergötzen an, gern sein bei, sich's wohl sein lassen bei* (loc.): यः सोम सख्ये तव रारणत् RV. 1,91,14. 147,1. सुतेषु 10,5. 8,32,6. उक्थेषु रणया इव 34,11. 3,41,4. सोम रारन्धि नो हृदि *sei gern in uns* 1,91,13. 3,42,5. अरंणयन्नपधीः सख्ये अस्य 10,88,2. भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ 6,1,4. 3,4, 21. 3,57,2. 4,7,7. सीदन्तु गोष्ठे रणयञ्चस्मे 8,28,1. TS. 2,4,8,1. — 2) *Jmd ergötzen mit* oder *bei:* वयमु वा उक्थेषु रणयामसि RV. 8,87,12. 1,100,7. ते स्याम ये रणयन्त सोमैः 10,148,3. hierher auch 59,5; vgl. oben u. रध् intens. — 3) *ertönen lassen:* वीणां रणयन् Bhâg. P. 1,6,33. — 4) रर्णयति (गतौ) Dhâtup. 19,33. 56.

— नि in der Stelle: याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यवः RV. 1,112,13. scheint verdorben zu sein, auch die Betonung weicht ab.

— वि caus. *ertönen lassen:* वेणुं विरणयन् Bhâg. P. 10,18,8. 19,15.

2. रन् in der Stelle: युवे क्षात्रं मघो रन् RV. 1,120,7 nach Sây. partic. praes. von रा und zwar sg. st. du., also so v. a. दातारौ.

रन्तर् (von रम्) nom. ag. *Verweiler, der gern bleibt:* भुवद्विरेषु काव्येषु रन्ता RV. 9,92,3. könnte auch auf 1. रन् zurückgeführt werden.

रन्तव्य (wie eben) adj. *mit dem man der Liebe pflegen soll:* रक्षेव हि रन्तव्या विरूपभावा तु कान्तव्या Spr. 5313.

1. रन्ति (von 1. रन्) m. vielleicht *Kämpfer* (vgl. रण *Kampf*): मुष्टिं चक्रुर्निगतो रन्तयश (= रममाणाः Sây.) RV. 7,18,10. स्यालो भवसि रन्तियो सुषस्य पत् 8,102,5.

2. रन्ति (von रम्) 1) f. *a)* *das gern-Verweilen:* तेषां मतानां मयि रन्तिरस्तु AV. 3,10,6. इक्ष रन्तिः VS. 22,19 (st. dessen रतिः 8,51). TS. 4,4,

42,4. 5. — *b*) als Schmeichelname der Kuh (in einer häufigen Formel) etwa so v. a. *Ergötzen* (weshalb es auch zu 1. रन् gezogen werden könnte): रन्तिरसि रमतिरसि नर्मासि TS. 1,6,3,1 (vgl. रन्ती नन्दी SV. II,3,1,4 a,1). VS. 8,43. Pañcav. Br. 20,15,15. — 2) m. N. pr. Vop. 26, 42. eines Lexicographen, = रन्तिदेव Mallin. zu Çiç. 1,20. Schol. zu Visnup. 19.

रन्तिदेव (2. र° + देव) m. 1) Bein. Vishṇu's Trik. 1,1,31. H. ç. 70. Med. v. 63. — 2) N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Saṁkṛti, Med. MBh. 1,224. 2099. 3,4096. 13809. 16674. 7,2856. fgg. 12,1013. fgg. 8591. 10753. 13,3351. 3544. 14,2787. Mucn. 46. VP. 480. Bhâg. P. 1, 12,24. 2,7,44. 9,21,2. 10,72,21. Hall in der Einl. zu Visnup. 53. Verfasser von Mantra bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,35. — 3) N. pr. eines Lexicographen, = रन्ति Med. Anh. 1. Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,44.

रन्तिनार m. N. pr. eines Fürsten VP. 447. Varianten: रन्तिभार, रन्तिनार, मतिनार.

रन्तिभार m. = रन्तिनार Bhâg. P. 9,20,6.

रन्तु f. 1) *Weg.* — 2) *Fluss* Med. 1. 50 (रन्तुः st. रन्तुं zu lesen).

रन्त्य (von 1. रन्) adj. *belustigend, behaglich:* कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूत् RV. 10,29,3. इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् AV. 6,33,1. वसन इव रन्त्यः SV. Naigeya 4,2.

रन्दना f. Bein. der Saṁgñâ, der Gattin des Sonnengottes, Verz. d. Oxf. H. 74,*a*,25.

रन्ध् s. रध्.

रन्धक (vom caus. von रन्ध्) nom. ag. P. 7,1,61, Sch.

रन्धन (wie eben) 1) nom. ag. *Vernichter:* अभद्र° Bhâg. P. 4,30,28. — 2) n. nom. act. P. 7,1,61, Sch. *a*) *das Vernichten:* अविद्यापन्थि° Bhâg. P. 5,19,20. — *b*) *das Kochen, Zubereiten von Speisen:* रन्धनाय स्थाली P. 2,1,36, Sch. °कर्मन् Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,31.

रन्धनाय् (von रन्धन), रन्धनायति = caus. von रन्ध् *in die Gewalt geben* RV. 1,53,10.

रन्धस् oder रन्धस m. N. pr. eines Mannes aus dem Geschlecht der Andhaka; vgl. रान्धस.

रन्धि (von रन्ध्) f. 1) *Unterwerfung* RV. 7,18,15. — 2) *das Garwerden* · तण्डुलगर्भा° Bhâg. P. 5,10,23.

रन्ध्र (wohl von रद्) n. Sinon. K. 249,*b*,1. im Bhâg. P. bisweilen auch m. 1) *Oeffnung, Spalte, Höhlung* AK. 1,2,4,3. 3,4,22,120. H. 1363. an. 2,423. Med. v. 79. Hariv. 3,2. 5,49. उशना यत्परावतो उक्षणो रन्ध्रमर्यातन । यैर्न चक्रदद्भिषा etwa *Ohrhöhle* oder *Luftröhre des Ochsen*, auf einen Mythus oder eine Oertlichkeit bezüglich, RV. 8,7,26 (= मघा Sây.). उक्षणोरन्ध्र Pañcav. Br. 13,9,13 ist N. pr. — वृत्तस्य MBh. 3, 13993. भुव: Rucn. 15,82. शैल° 10,26. Kathâs. 19,113. 53,110. Mucn. 58. नाभि° Rucn. 18,19. अङ्गुलि° 6,19. मृत्कुम्भवालुकारन्ध्रविधान Sin. D. 64,11. नखरन्ध्रमुक्तैर्मुक्ताफलैः केसरिणाम् Kumâras. 1,5. वल्मीक° Bhâg. P. 3,3,3. ज्वालामुख° 10,41,22. ज्वाल° 60,4. 5. मुखमाला° Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,38. श्रोत्रो° Mucn. 43. वक्त्र° Rucn. 9,68. नेत्र° Bhâg. P. 10,32,3. शिरोभिस्तिमयः सान्द्रैर्वृतं वितन्वन्ति जलप्रवाहान् Rucn. 13, 10. Rîâ-Tar. 2,86. वक्त्ररन्ध्रपरिपूरणलब्धगीति Çiç. 4,61. वेणु° Pâṇ. 3,3,18. रन्ध्रान्वेषिः Bhâg. P. 10,21,5. विवेश तेनैव पथा लब्धरन्ध्रो कृदि स्मरः Kathâs. 3,89. समूलमेषापि रन्ध्रेण प्रविशत्यन्तरं रिपुः Spr. 3285. Es werden zehn *Oeffnungen* am menschlichen Leibe angenommen: je zwei an Nase, Augen und Ohren, dann Harnröhre, After, Mund und eine vermeintliche am Schädel (s. ब्रह्मरन्ध्र) Çiâo. Sâṁ. 1,5,20. 3,8,7. Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,3 v. u. गलरन्ध्र *Luftröhre* Nîlak. zu MBh. 12,10262. Wohl = योनि in der Stelle व्यसनमनेकरन्ध्रम् (नानागर्भवासरूपम् Comm.) Bhâg. P. 3,31,21. — 2) Bez. *eines best. Theils am Kopfe des Pferdes* (vgl. उपरन्ध्र) Varâh. Bṛ. S. 66,4. — 3) *Fehler, Mangel* H. an. Med. प्रकाशरन्ध्राणि रत्नानि शास्त्राणि च Varâh. Bṛ. S. 104,1. *Blösse, Schwäche:* स्वरन्ध्रगोपनम् Jîân. 1,210. MBh. 1,4573. 6,4949. 13, 132. 15,210. प्रकृत्ति च रन्ध्रेषु R. 5,90,11. Spr. 1751. 4391. 4818. Bhaṭṭ. Nîtiç. 34,67. fg. Mṛicch. 125,18. Kâm. Nîtis. 13,95. 15,13. °गुप्ति 29. 19,29. Rucn. 12,11. 15,17. 17,61. Varâh. Bṛ. S. 16,39. 69,21. Çârîr. zu Bṛ. Âr. Up. S. 84. Rîâ-Tar. 4,519. तं कृत्वा रन्ध्रे प्रतीक्षते Bhâg. P. 10,61,20. Pañcat. 182,2. रन्ध्रोपनिपातिनो ऽनर्थाः (vgl. छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति Spr. 533. 2334) *das Unglück trifft immer die schwache Stelle, das Unglück kommt nie allein* Çiç. 81,2. — 4) Bez. *des 8ten astrologischen Hauses* Varâh. Bṛ. 6,7. 11. 9,6. 25,6. — Vgl. कर्ण° (auch Kâm. Nîtis. 15,43. Kathâs. 29,146), नगरन्ध्रकर, नी° (adv. *ununterbrochen* Uttarar. 105,10 = 143,2 der neueren Ausg.), प्राण°, वज्रकन्धिका, ब्रह्मरन्ध्र (auch Prab. 1,10), भीरु°, मही°, मानरन्ध्रा und छिद्र.

रन्ध्रकाष्ठ m. *eine best. Pflanze*, = ज्ञालवर्तूरक Râéan. im ÇKDa.

रन्ध्रबन्धु m. *Ratte* Trik. 2,5,10. Hin. 217.

रन्ध्रवंश m. *hohler Bambus* Râéan. im ÇKDa.

रन्ध्रागत (रन्ध्र + आ°) n. Bez. *eines best. Uebels der Pferde*, viell. *der Dampf* MBh. 12,10262. = अश्वगलरन्ध्रगतं नासिकाएउम् Nîlak.

रप् रेपति (व्यक्तायां वाचि) Dhâtup. 11,7. *schwatzen* (leichthin oder unbedacht), *flüstern:* उत स्या वो मधुमन्मादिकारपत् RV. 1,119,9. रपत्कविः 174,7. सुता वदेतो यन्तं रपेम 10,10,4. कामभूता बहवेऽहं तद्रपामि 11. रपद्गन्धर्वीरप्सु च योषणा 11,2. — Vgl. लप्.

— intens.: स ईं भगो न प्रति वस्त उघ्राः शोचिषा रारपीति मित्रमहाः RV. 5,3,6.

— आ *zuflüstern, ansagen:* सुतस्य सामन्त्सरमारपन्ती VS. 22,2.

— परि s. परिराप्.

— प्र *schwatzen:* नाभानेदिष्ठो रपति प्र वेनन् RV. 10,61,19.

— प्रति *zuflüstern:* उत मे ऽरपद्वृतिर्मन्डुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम् RV. 5,61,9.

रपस् n. *Gebrechen, körperlicher Schaden, Verletzung:* नो रपांसि मृळतम् RV. 1,34,11. अपभर्ता रपसो दैव्यस्य 2,33,7. तनूनाम् 7,34,13. 10, 97,10. AV. 5,40,10. 6,91,1. मा मां पथ्येन रपसा विदत्सहः RV. 7,50,1. 8,18,8. 16. त्मना रपो मरुत यातुरस्य न इर्कर्ता विदुर्तं पुनः 20,26. 56,21. 10,39,8. 137,2. 3. VS. 35,11. nach Sây. so v. a. Rakshas RV. 1,69,8. 6,31,3. — Vgl. अ°.

रप्श् nur mit प्र und वि. — प्र med. *hinausreichen:* प्र तुविद्युम्नस्य दिवो रप्शे महिमा पृथिव्याः RV. 6,18,12. der gebräuchliche Ausdruck ist प्र रिरिचे und könnte auch hier gestanden haben.

— वि med. *zum Ueberschwang oder zum Platzen voll sein, strotzen:* दृतिर्मधुनो वि रप्शते RV. 4,45,1. 10,113,2. मघवानो वि रप्शते AV.

28,128,5. *übergenug haben an* (instr.): वि यो रारप्श ऋषिभिर्नवेभिर्वृतो न पक्तः RV. 4,20,5. — Vgl. विरप्श, विरप्शिन्.

रप्शॅद्धन् (रप्शात्, partic. praes. von रप्श् + उ°) adj. *ein strotzendes Euter habend* RV. 2,34,5.

रप्सु so v. a. रूप nach Mahidh. zu VS. 33,19; vgl. प्सुः, सप्सः, सप्सः Naigh. 3,7.

रप्सुॅदा du.: गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा RV. 8,61,12. Sây. und Mahidh. haben werthlose Erklärungen. — Vgl. लप्सुद्.

रफ्, रेफति (गतौ, nach Vop. auch हिंसायाम्) Dhâtup. 14, 19. रफ् (रफ्), सर्फति (हिंसायाम्) 28, 20. (आघपुद्दनिन्दाहिंसादानेषु) 23, v. l. रफित *etwa herabgekommen, elend* RV. 10,117,2. — Vgl. रम्फ्, रेफ.

रब्धृ m. und रब्धी f. nom. ag. von रभ् Mahidh. zu VS. 21,46.

रभ्, रम्भ्, रंभते (रभस्ये) Dhâtup. 23,5. P. 7,1,63. Vop. 11,4. °रभति (meist aus metrischen Rücksichten); °रेभे; °रारब्ध; °रप्स्यते (vgl. Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2,10); °रब्धुम्; *fassen:* उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व AV. 11,1,14. *umfassen:* रम्भत्त (!) इव वाकुभिः Bhâg. P. 10,73,6. आरभत् *begann* Hariv. 8106 fehlerhaft für आरभत्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. लभ् und यभ्.

— caus. रम्भयति P. 7,1,63. अरारम्भत् Vop. 18,1.

— desid. रिप्सते P. 7,4,54. Vop. 19,9. 13.

— अभि *umfassen, umarmen:* अभिरेभिरे Bhâg. P. 10,17,4. 21,6. 82, 15. — caus. 1) dass.: अभिरम्भित Bhâg. P. 10,38,7. — 2) *Jmd Etwas zu Theil werden lassen, versetzen in;* mit dopp. acc.: कश्मलं मरुद्भिरम्भितः Bhâg. P. 5,8,12.

— आ 1) *erfassen, anfassen; sich festhalten an, sich klammern, sich stützen auf:* ये त्वाभ्य चर्मसि RV. 1,57,4. पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभे 182,7. सिचम् 3,53,2. आ वो रम्भं न जिव्रयो ररभ्म 8,45,20. 9,73,1. 10, 8,3. सखिवम् 133,6. 135,3. शिक्वयी 87,2. समिधा s. AV. 1,7,6. 5,8,9. कस्तौ 8,1,6. शत्रून् 10,3,1. या रमस्य कृणाग वातमारभे 1,28,3. 6,76,2. VS. 4,9. Çat. Br. 6,2,2,21. 39. Âçv. Grihj. 2,6,1. अग्निरारब्धः *Feuer, das gefangen hat* AV. 5,18,1. Çat. Br. 6,2,2,20. *sich an Jmd machen, sich mit Jmd messen:* पारगामिनमारभेत् MBh. 13,2127. शम्बुमालिनमारब्धो हनूमानपि so v. a. *kämpfte mit* R. 5,18,10. — 2) *Fuss fassen, betreten; erreichen:* धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम् RV. 9,73,3. मूर्धानं राय 1,24,8. दिव इव मानुं 10,62,9. आरभमाणा भुवनानि विश्वा 125,8. — 3) *sich an Etwas machen, unternehmen, anfangen, beginnen, incipere* VS. 4,6. TBr. 3,3,7,3. Âpast. Br. 2,6,4,10. आरम्भणीयेन संवत्सरमारभते 12,6,7,15. TS. 1,6,8,1. 6,4,2,1. Çat. Br. 1,7,4,20. 3,2,1,37. 7,4,5. 6,2,2,18. वाचा व्रतमारभते 12,2,2,1. आरभ्य कर्माणि Çvetâçv. Up. 6,4. आरभेत ततः कार्यम् M. 9,299. fg. MBh. 3,13900. 5,5973. R. 1,12,37. 2,30,42. 5,33, 30. Çiç. 44,5. Spr. 3713. 5367. Bhâg. P. 3,20,9. 4,29,58. 60. 5,4,13. 7,7,47. घोरेभिरे पुत्रीयामिष्टिम् Raghu. 10,4. आरभते ऽल्पमेवाज्ञः Spr. 381. 476. 3538. पार्थे यत्नमारभ्य MBh. 3,2175. आम्रकलिकाभङ्गम् Çiç. 78,16. वरणासंस्कारम् Mâlav. 33,12. धर्म्या हिंसाम् Kâm. Nîtis. 6,5. वैरम् Spr. 2948. आरब्धम् Kathâs. 25,124. गुलिकाक्रीडाम् 42,8. अर्थान् Bhâg. P. 4,48,5. व्रतम् 6,19,2. मन्त्रम् 9,13,1. 3. मारब्धा बलिविप्लवम् Bhaṭṭ. 5,38. क्रूरम् 17,33. अध्वरम् — आरेभिरे so v. a. *sie begannen das Meer zu quirlen* Bhâg. P. 8,7,2. आरभते ohne obj. im Gegens. zu आस्ते Bhag. 3,7. acc.: कार्यदर्शनमारभेत् M. 8,22. पापोदयफलं विद्वान्यो नारभति वर्धते MBh. 5,1480. कर्माण्यदृष्टमारभम् 13,3943. नारम्भानारभेत्क्वचित् Bhâg. P. 7,13,8. वेदादिमारभेत् *den Veda beginnen* nämlich *zu lesen* Âçv. Grihj. 3,5,12. आरब्धवान्क्रियाम् Hariv. 6495. मोक्षादारभ्यते कर्म Bhag. 18,25. MBh. 1,3982..3,1416. तीव्रं चारप्स्यते तपः 13,992. सम्यगारभ्यमाणं हि कार्यम् Spr. 5189. यद्येदमारभ्यते मित्रभेदो नाम प्रथमं तन्त्रम् *beginnt* Pañcat. 6,1. इत्ययमतिदेश आरभ्यते Kiç. zu P. 1,1,56. यावा कार्यं तथारभ्यताम् impers. Hit. 39,8. *beginnen zu* mit infin. P. 3,4, 68. आमन्त्रयितुमारेभे R. 2,113,18. R. Gorr. 1,40,23. 2,109,14. 3,52,12. Ragh. 8,45. Kathâs. 22,224. 26,237. 34,71. Bhâg. P. 4,27,15. Daçak. in Benf. Chr. 182,2. Bhaṭṭ. 9,29. 15,78. act. Hariv. 8106 (आरभत् die neuere Ausg. st. अरभत् der älteren). R. 5,68,39. भोक्तुमारब्धवानसम् R. Schl. 1,65,8. 3,51,26. Pañcat. 64,8. कुम्भकर्णेन पेषुमारभ्मि (impers.) Bhaṭṭ. 15,88. मुग्धतयैव नेतुमक्षिप्तः कालः किमारभ्यते Spr. 2215. absol. आरभ्य von — *an;* mit abl. Vop. 5,21. स्वपितुर्वधात् । आरभ्य Kathâs. 10,177. Kiç. zu P. 4,1,162. Râga-Tar. 1,53. 138. Bhâg. P. 5,1,26. 7,2. Pañcat. 49,1. Hit. 111,18. आरभ्य सप्तमान्मासात् (bei Burn. zu lesen °मासाच्च°) Bhâg. P. 3,31,10. 7,1,17. mit acc.: सूर्योदयमारभ्य von *Sonnenaufgang an* Sarvadarçanas. 175,2. प्रतिपद्दिनमारभ्य Bhâg. P. 8,16, 48. पातालतलमारभ्य 11,3,10. Verz. d. Oxf. H. 102, a, No. 138. इत्येतमकारमारभ्य Vop. 7,118. अद्यारभ्य von *heute an* Hit. 42,2. 91,21. 126, 16. कुट कौटिल्य इत्यारभ्य P. 1,2,1, Sch. partic. आरब्ध a) *woran man sich gemacht hat, unternommen, angefangen, begonnen:* °यज्ञ Ait. Br. 1,1. चिरारब्धमिदं चापि नागस्यापि मन्त्रनम् MBh. 1,1141. यद्येदं व्रतमारब्धं मया 3,2210. 16718. R. 2,22,24. 36,14. 63,26. 73,21. Kâm. Nîtis. 11,57. रक्षसि — आरब्धा वा तदाग्रयणी कथा Vikr. 51. Kathâs. 14, 17. 18, 339. 22, 234. 26, 57. 32, 41. Râga-Tar. 5,165. Bhâg. P. 1,6,39. वार्त्तायां लुप्यमानायामारब्धायां पुनः पुनः 3,30,12. 4,11,8. 15,11. 18,8. आरब्धानेव कुरुते भोगान् 21,11. 5,1,16. 19,19. °कामिन्नवर्त्त Daçak. in Benf. Chr. 183,6. Vedântas. (Allah.) No. 144. क्रियाभिः सम्यगारब्धा वर्णाः so v. a. *zu curiren begonnen* Suçr. 1,104,11. येन न — आरब्धा मार्गितुं सीता R. 4,55,6. को ऽयं कर्तुमिदारब्धो मल्लिनाथप्यनपत्रया Kathâs. 41,16. तेन विकारः कारयितुमारब्धः Hit. 49,10. केनापि देवायतनं कर्तुमारब्धम् Pañcat. 10,4. एकस्मिन्दिवसे राजकुलान्मर्कटेन फलं गृहीत्वा भक्षयितुमारब्धम् (impers.) Vet. in LA. (III) 2, 7. 8. तस्या बालकेन गृहे रोदितुमारब्धम् 14,8. 21,18. — *b) seinen Anfang nehmend, beginnend:* कूले तूतर आरब्धः (मागस्य सीमन्तः) R. 5,93,41. निशावसान आरब्धो लोककल्पो ऽनुवर्तते Bhâg. P. 3,11,23. यत आरब्ध एष नरलोकसार्थः 5,14,38. — *c)* = आरब्धवत्, mit acc.: स्वमेव कर्म आरब्धो Hariv. 5310. mit infin.: ते मन्त्रयितुमारब्धाः *sie fingen an zu* MBh. 1,1108. सर्वी मही क्षेतुमारब्धो 7660. 3,2619. R. 3,25, 16. 5,56,86. Mârk. P. 106,57. Pañcat. 10,9. 35,11. 62,22. 69,7. mit loc.: आरब्ध उन्नतपसि Bhâg. P. 4,23,4. — 4) *machen, bilden, zusammenfügen:* तृणैरारभ्यते रज्जुः Spr. 1957, v. l. भूतैः पञ्चभिरारब्धे देहे Bhâg. P. 3,31,30. अविद्याकामकर्मभिः । आरब्धः (कायः) 4,20,5. भूतैः पञ्चभिरारब्धैः (= देहाद्याकारेण परिणतैः) 11,15. योगमायायारब्धपारमेष्ठ्यमैश्वर्यम् (आरब्ध = आविष्कृत Comm.) 3,16,15. — Vgl. आरम्भ fgg., आरम्भणीय, आरम्भिन्, अनारभ्य. — caus. *anfangen, beginnen:* आरम्भि-

तकार्येषु Verz. d. Oxf. H. 249,b,9. — desid. आरिप्सते P. 3, 4, 55, Sch.; vgl. आरिप्सु. — intens. *sich festhalten, befestigt sein, hängen:* ऐषामंसेषु रम्भिणीव रारभे RV. 1,168,3.

— अन्वा *von hinten anfassen, — berühren, sich an oder zu Jmd halten, sich von Jmd nachziehen lassen:* विशे देवासो अनु मा रभध्वम् *so v. a. stellet euch auf meine Seite* AV. 2,12,3. 6,48,1. 122,2. 12,3,20. इन्द्रम् 2,17. fg. अन्वारभेथां वयं उत्तरावत् 3,17. देवता एवान्वारभ्य सुवर्गं लोकमेति TS. 2,2,5,5. 6,3,9,4. Çat. Br. 3,4,4,6. 6,3,3. सविता यज्ञमानो ऽन्वारभते 4,2,3,4. 13,2,3,1. यंसे ऽधर्युमन्वारभेत Âçv. Çr. 1,3,25. क्षेत्रसमम् Çâṅkh. Çr. 7,5,10. यदि मा संस्पृशेद्रामः सकृदन्वारभेत वा । धनं वा यौवराज्यं वा (sc. लभेत) ध्रुवेयमिति मे मतिः ॥ R. 2,64,60. अन्वारब्ध mit pass. Bed. Kâtj. Çr. 8,1,2. 8,26. Âçv. Gṛhj. 3,5,10. mit act. Bed.: अन्वारब्धे यज्ञमाने पत्न्यौ च Lâṭj. 1,3,1. Ait. Br. 8,10. एनमन्वारब्धमग्निं तिष्ठन्तम् Çat. Br. 2,3,4,15. 13,2,7,1. Kâtj. Çr. 4,2,23. 8,16. Vgl. अन्वारभ्य fgg. — caus. von *hinten anfassen lassen, nach Jmd* (loc.) *stellen:* अस्मानेव तत्रमन्वारम्भयति TS. 2,6,9,5.

— व्यन्वा (*nach verschiedenen Seiten*) *berühren:* तेनो स उभौ व्यन्वारभमाण एतौ मां चामुं च लोकम् Ait. Br. 6,8.

— समन्वा *sich anfassen* (von Mehreren gesagt), *Etwas gemeinschaftlich anfassen* Ait. Br. 5,22. पौडुम्बरीम् 24. Çat. Br. 4,6,9,8. 12,8,1, 20. अधर्युमुखाः समन्वारब्धाः सर्पन्ति Âçv. Çr. 8, 13, 22. तं विश्वाकर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च Çat. Br. 14,7,2,2. °रब्ध *sich haltend an* Âçv. Gṛhj. 1,7,3. 8,9. 14,3. 20,2.

— सम्या *anfassen, berühren, beschreiten; sich an Etwas machen, anfangen:* तदेव सप्तमेन पदेनाभ्यारभ्य वसति Ait. Br. 5,10. सवरणीव तद्क्रा परमस्यारभते 6,8. तान्येव तदभिमर्शतो यत्यभ्यारभमाणाः 20. Çat. Br. 13,4,1,2. 3. सेतुमभ्यारभत् *er begann zu bauen* MBh. 3,10734. — Vgl. अभ्यारम्भ.

— समुपा *anfangen, beginnen:* विग्रहः समुपारब्धो नाहं शाम्यत्यविप्रहात् MBh. 5,3083.

— प्रा 1) *anfassen:* तौ पृक्षः सुमतिं वयं वृत्रस्य प्र वणामिव । इन्द्रस्य वा रभामहे RV. 6,37,5. — 2) *anfangen, unternehmen, beginnen:* शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः Bhag. 18,15. प्रारभेत हि विश्रब्धं Spr. 3694. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः 1913. तया प्रारम्भि (impers.) यत् Gîr. 12,12. निर्गन्तुं प्रारेभे तद्क्रात् Kathâs. 7,66. 11,62. 13,127. 18,106. 222. 37,13. 124. 42,104. नित्यं शिरः । क्षेतुं प्रारब्धवानस्मि 6,186. प्रारब्ध 1) mit pass. Bed.: °कर्मन् Nilak. 30. Kâm. Nîtis. 11,37. Ragh. 14,7. प्रारब्धस्यान्तगमनम् Spr. 97. प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति 1913. 5293. Mârk. P. 133,21. Pañkat. 200,21. ed. orn. 55,23. Ver. in LA. (III) 12,16. तीराब्धिः प्रारब्धो मथितुं सुरैः Kathâs. 22,186. — 2) mit act. Bed.: प्रारब्धा पुरतो यथा मनसिजस्याज्ञा तथा वर्तितुम् Spr. 3244. Râja-Tar. 3,349. — Vgl. प्रारब्धि fgg. — desid. partic. प्रारिप्सित *was man zu beginnen beabsichtigt* Sâh. D. 1,4. Verz. d. Oxf. H. 37,b, No. 91. Saṅîṣ. K. 22,b,7. Sarvadarçanas. 137,12. fg.

— प्रत्या s. प्रत्यारम्भ.

— व्या, °रब्ध *von verschiedenen Seiten erfasst, — festgehalten:* यदृचैव क्षेत्रं क्रियते पशुधार्यवं सामोद्गीथे व्यारब्धा त्रयी विद्या भवति Ait. Br. 3,33.

— समा *sich an Etwas machen, anfangen, unternehmen, beginnen* TS. 1,1,11,1. ते नात्मना कर्म समारभन्ते MBh. 3,10260. R. Gorr. 2,116,4. 5,43,11. Mṛicch. 48,7. Bhâg. P. 4,3,3. Pañkad. 1,1,11. Verz. d. Oxf. H. 2,b,4. Bhatt. 12,45. ततः कर्म समारभेत् M. 7,59. तेषां निग्रहनिर्वासान्विविधांस्ते समारभन् MBh. 1,3238. शक्यमर्थं समारभ 3,10728. 13,3942. R. 7,70,8. धाव्यातुं तत्समारेभे R. Scrr. 1,45,13. Bhâg. P. 10,89,3. Pañkad. 1,2,54. अहं त्विमं ज्वलनिधिं समारप्स्याम्युपायतः *ich will mich an ihn machen so v. a. ich will ihm beizukommen suchen* (= आराधयिष्यामि Nîlak.) MBh. 3,16298. समारभ्य mit vorangehendem acc. von — an Verz. d. Oxf. H. 102, b, No. 138. समारब्ध *angefangen, unternommen, begonnen:* कर्मन् MBh. 13,342. प्रमादेन मुतार्थं मे समारब्धम् R. 1,18,3. असमीक्ष्य समारब्धम् 2,58,26. अनुतिष्ठेत्समारब्धम् Kâm. Nîtis. 11,57. नीतयः Ragh. 12,69. °नवोद्यानि (आश्रममण्डलानि) *zu bauen angefangen* 13,22. जिज्ञासा Hit. 20,13. ed. Jonas. 1512. समारब्धतर Nidânas. 4,8 in Ind. St. 10,93. मम चैतत्समारब्धं पर्व *begonnen, eingetreten* R. 3, 42,14. ततो ऽहं हिमवत्पृष्ठे समारब्धो महाव्रतम् *ich begann* MBh. 2, 428. दग्धुं समारब्धाः *sie fingen an Feuer anzulegen* 1,3823. — Vgl. समारभ्य, समारम्भ.

— अनुसमा *sich an Jmd* (acc.) *hängen, — reihen* TS. 2,4,8,1. TBr. 3,3,8,8. — caus. med. *sich* (loc.) *Jmd* (acc.) *anreihen:* ता इन्द्रं आत्मन्वनु समारभ्यत TS. 2,4,8,2.

— उपसमा med. *sich in eine Reihe stellen* Kaṭh. 139.

— परि *umfangen, umfassen, umarmen:* परिरेभिरे पतिम् Bhâg. P. 1, 11,33. दोर्भ्याम् 4,9,43. 10,38,36. °रप्स्यते (so ist zu lesen) 10. Sarvadarçanas. 124,11. °रभ्य MBh. 1,5258. 6388. 4,514. 812. 6,3824. R. 2,96,23 (105, 22 Gorr.). R. Gorr. 2,39,4. 52,9. 53,41. 5,14,26. Ragh. 11,92. Kumâras. 5, 3. Gît. 1,39. 48. 2,13. Çiç. 9,72. Kathâs. 25,66. 257. 70,83. Bhâg. P. 10,71, 27. Mârk. P. 12,11. Prab. 113,14. Verz. d. Oxf. H. 201, b, No. 483. नागभोगेन महता परिरभ्य महीमिमाम् MBh. 3,13558. 13,6865. °रब्धुम् R. 4,22,19. Vikr. 147. Ragh. 13,22 (s. d. Corigg.). Bhâg. P. 10,89,3. °रब्ध mit pass. Bed. Bhâg. P. 4,27,3. 10,90,7. mit act. Bed. R. 2,96,23 (vgl. 105,22 Gorr.). Vgl. परिरम्भ fgg. — caus. dass.: °रम्भित Verz. d. Oxf. H. 68,b,32. Bhâg. P. 1,17,3. 6,1,61. गोविन्द° *so v. a. ganz von ihm in Beschlag genommen* 7,4,38. — desid. *zu umfangen im Begriff stehen:* परिरिप्समान Ragh. 13,33, v. l. परीरिप्सते Prab. 71,10.

— संपरि *zusammen umfangen, — umfassen:* परस्परं संपरिरभ्य बाहुभिः R. 6,74,43.

— सम् 1) *anfassen, packen; zugreifen; sich gegenseitig fassen* (zum Tanz, Kampf u. s. w.): समिधा रभेमहि *kabhaft werden* RV. 1,53,4. 5. 8,32,9. तत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व AV. 2,6,4. VS. 27,5. तमयुवः केशिनीः सं हि रेभिरे RV. 1,140,3. 10,53,8. संरभ्या धीरा स्वर्भिरनर्तिषुः 94,4. über einen Frass *herfallen* AV. 11,10,8. यत्ते सर्वास्तन्वः सं रभस्व *ziehe an dich* 19,3,2. 1,3. TS. 4,4,9,2. 5,3,11,2. तं देवा हस्तान्संरभ्यैक्षन् *sich an den Händen haltend* 6,2,4,2. Çat. Br. 2,5,4,8. पदा वै द्वौ संरभेते यद्य तौ वीर्यं कुरुतः *wenn zwei sich packen* 14,1,1,8. 9,4,19. योक्त्रे भृत्याः संरभसे *zerren sich um* Kaṭh. 76. संरब्ध *Hand in Hand, eng verbunden mit:* ताभिः संरब्धमन्वविन्दन् AV. 13,1,1. Lâṭj. 10,9,5. Kâṭj.

Up. 1,12,4. MBn. 3,2545. — 2) med. pass. *in Eifer —, in Aufregung gerathen (innerlich erfasst werden)*: संरम्भमाण (v. l. संरब्धमान) MBn. 5, 37. संरभ्य Bhāg. P. 4,27,22. संरब्ध *in Eifer gerathen, angeregt*: रमणीयान्बहुविधान्पादपान्कुसुमोत्कटान्। सीतावचनसंरब्ध यानयामास लक्ष्मणः॥ R. 2,55,30. 4,50,2. *aufgeregt, aufgebracht, wüthend*; von Menschen und Thieren MBn. 1,389. 6005 (वारणौ). 3,15693. 4,592. 5,7182. 7276. 7,363 (wo mit der ed. Bomb. संरब्धा zu lesen ist). 3168. 13,4331. Harīv. 312. 3032. Rāgat. 16,16 (सिंह). Daçak. 1,43. Bhāg. P. 3,18,18. 5,12,4. 8,11,2. 21,18. कौरवान्प्रति MBn. 4,887. 1790. 7,7117. R. Gorr. 2,21,1. 6,4,30. संरब्धतर 5,63,8. सुसंरब्ध MBn. 3,2032. 5,7182. R. 3, 26,11. 4,8,38. Spr. 3274. Pañcat. 238,24. संरब्धमनस् Bhāg. P. 3,10,6. वैरसंरब्धया धिया 10,74,46. वाच् *zornig* Daçak. 1,37. Sin. D. 374. संरब्धपरुषाक्षर R. 3,54,1. संरब्धतरमत्यर्थं वाक्यम् 1,54,18 (53,16 Schl.). — 3) संरब्ध *verstärkt, vermehrt, gesteigert*: °मान (= संवृद्धदर्प Nīlak.) MBn. 5,37, v. l. कवचोत्तमेधसंरब्धकण्ठाग्राम Rāgat. 5,344. — 4) *schwellend, geschwollen*: °नेत्र R. Gorr. 2,76,32. व्रण Suçr. 2,6,11. मांस° 313,13. — 5) संरब्धो Harīv. 9120 fehlerhaft für संरूढो, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. संरम्भ.

— अनुसम् *anfassen, sich halten an*: इन्द्रं सखाय अनु सं रभध्वम् ṚV. 10,103,6. *sich gegenseitig halten*: अन्वारभेथामनुसंरभेथाम् *fasset euch und haltet einander* (an den Händen) AV. 6,122,3.

— अभिसम् 1) *anfassen, festhalten*: दृश स्वसारः पुर्वामं ज्ञातमभि सं रभध्वे ṚV. 3,29,13. पतेभिरिक्तेभिरत्राभि सं रभेमहि 10,134,7. — 2) अभिसंरब्ध *in Eifer gerathen, aufgeregt, aufgebracht, wüthend*: समुद्रमभिसंरब्धा (°संरम्भात् die neuere Ausg.) मध्यमः Harīv. 12170. R. 6,3,17. MBn. 4,1047. अन्योऽन्यमभिसंरब्धौ 752. R. 5,76,33. — Vgl. अभिसंरम्भ.

— प्रति 1) *Jmd packen, angreifen*: यो यः स्म समरे पार्थं प्रतिसंरभते (°संयते ed. Bomb.) MBn. 7,3169. प्रतिसंरब्धाः *einander haltend* (an den Händen) 3764. — 2) प्रतिसंरब्ध *aufgeregt, wüthend* MBn. 5,3606. R. 4,31,10; vgl. u. सम् 3).

रभ (von रभ्) m. N. pr. eines Affen R. 4,33,14.

रंभस् (wie eben) n. *Ungestüm, Gewalt*: शिशुरादत्त सं रभः ṚV. 1,143,3. रभसा *mit Ungestüm* MBn. 7,7701 (ed. Bomb. तरसा). Bhāg. P. 4,28,2. प्रतिबुद्ध: so v. a. *unsanft* Irn. bei Sās. zu ṚV. 1,125,1. परिघव्य *leidenschaftlich* Mālav. P. 72,19. दृष्टदर्दुरः *vor Wuth* Bhāg. P. 7,2,30.

रभस (von रभस्) Uṇādis. 3,117. 1) adj. (f. आ) a) *wild, ungestüm*; überh. *gewaltig* Naish. 3,3. Buhlr. zu AK. 3,6,2,21. von den Commentatoren gewöhnlich durch वेगवत्, बलवत्, सोत्साह u. s. w. erklärt. तनू वाजाय रभसाय जर्मने (मरुताम्) ṚV. 1,166,1. 5,54,3. सुतासः *stark, scharf* 1, 82,6. 8,73,6. धर्धेनुं वक्वा रभसासो अस्यवः 10,95,14. VS. 21,38. ṚV. 3,31, 12. 8,61,1. बाल्ये ऽपि रभसः सदा *wild, ungestüm* MBn. 3,2027. 6,2846. 3857. 13,2154. तं रणे रभसम् 7,4032. संग्राम° 6,3450. हार्कार° Bhāg. P. 3,17,11. अभिघातरभसस्य मरिष्यस्य *mit Ungestüm verlangend nach* Rāgat. 9,61. अम्भोबिन्दुघटरभसाद्यातकान् Megh. 22. रभसगा दिगन्तदिदृक्षया Kir. 5,1. स्खलीकार Spr. 2994. °स्वनैः Bhāg. P. 12,4,12. अतिरभसतरंरब्धम् 5,17,9. — b) *von lebhafter, stechender Farbe*: दधानः शुक्रा रभसा वपूंषि ṚV. 3,1,8. वत्सेषु कृक्वा रभसासो अद्रयः 1,166,10. आ सोमो वत्सो रभसानि दत्ते 9,96,1. रभसं दर्शनम् (अग्निम्) 2,10,4. — 2) m. a) nom. abstr. AK. 3,6,2,21. *Ungestüm, Gewaltigkeit, Heftigkeit*; = वेग und हर्ष Trik. 3,3,449. H. an. 3,758. Med. s. 30. Vaij. bei Mallik. zu Kir. 5,1. = गमकारित Trik. 3,2,18. = शीघ्रमुख Kalika im ÇKDa. रभसाच्चापलात्तथा MBn. 6,3850. Gīt. 3,6. Bhāg. P. 3,15,28. रभसात् *mit Ungestüm, in aller Eile, in Hast, schnell* Spr. 1140. 2322. 3419. Kathās. 32,93. 38,6. 72. 46,12. 48,85. 92,63. Rāga-Tar. 1,371. Mālav. P. 69,12. रभसेन dass. Spr. 313 (v. l. रभसात्). 1015. विभूतिं रभसावासाम् 3834. रभसोत्थिता Çiç. 9,72. Daçak. in Benr. Chr. 194,8. अतिरभसकृतानां कर्मणाम् Spr. 843. रभसाद्वेष 524. रभसाकर्षण Kathās. 18,406. कालः करालरभसः Bhāg. P. 5,8,25. तस्मै और्वद्रभसभक्षत् Rāga-Tar. 3,136. मृगमदसौरभ° *Gewaltigkeit, Heftigkeit* Gīt. 1,29. रति° 2,11. Bhāg. P. 5,9,19. 11,11. 7,9,15. वद्भिसरणरभसेन *aus heftigem Verlangen nach* Gīt. 6,3. स° adj. *ungestüm, leidenschaftlich*: तौ कण्ठे सरभसो ऽग्रहीत् Kathās. 101,335. °मनस् 17,171. सरभसदृष्टि Bhāg. P. 3,30,20. सरभसरतायाम् Spr. 229. सरभसम् adv. *mit Ungestüm, in aller Hast, plötzlich, stracks* Mālav. 67,24. Spr. 389. Uttarar. 106,12 (144,11). Kathās. 9, 90. Bhāg. P. 5,26,27. Vet. in LA. (III) 20,13. सकलसरभसव्यामर्शकण्ठग्रहम् Spr. 530. Nach Aruṇa im ÇKDa. ist रभस auch = पौर्वापर्यविचार (eher hätte man पौर्वापर्याविचार erwartet). — b) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1,30,4 (31,5 Gorr.). — c) N. pr. α) eines Dānava Harīv. 12037. नभस Lassen, रश्मिस die neuere Ausg. — β) eines Fürsten, eines Sohnes des Rambha, Bhāg. P. 9, 17,10. — γ) eines Lexicographen Colebr. Misc. Ess. II,53. 59. Verz. d. Oxf. H. 182,b,44. °कोष 162,b,22; vgl. u. केसर 7) und रभसपाल. — δ) eines Rākshasa R. 5,80,1. — ε) eines Affen (vgl. रभ) R. 4,39,7. — 3) f. आ = रभस 2) a) Trik. 3,5,18. — Vgl. गो° und रामस्य.

रभसपाल m. N. pr. eines Lexicographen Man. Anh. 2; vgl. रभस 2) c) γ).

रभसावत् adj. etwa so v. a. रभस 1) b): (अग्निः) सुभर्वं वेषो रभसावतो धनौत् ṚV. 6,3,6.

रंभस्वत् (von रंभस्) adj. *ungestüm*: अस्मात्सु तत्र चोदयेन्द्रे राये रभस्वतः। तुविद्युम्न यशस्वतः ṚV. 1,9,6. अग्निरत्रे रभस्वद्दो रभस्वाँ एरु गम्याः 10,3,7.

रभि f. *ein best. Theil des Wagens* (etwa *Zugscheit*): हिरण्ययी वो रभिरेषा अक्षो हिरण्ययः ṚV. 8,3,29.

रभिनेय (?) m. patron.; pl. Saṃhit. K. 185,b,4.

रंभिष्ठ (von रभ् mit dem suff. des superl.) adj. *überaus ungestüm*: पुत्रैः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वयं मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः ṚV. 5,58,6. *überaus stark*: रशना VS. 21,46.

रंभीयंस् (von रभ् mit dem suff. des compar.) adj. dass. VS. 21,46. Âçv. Çr. 3,4,14. 6,10 Comm. Çāṅkh. Çr. 6,1,12. — Vgl. रभ्यंस्.

रभेणाक m. N. pr. eines Schlangendämons MBn. 1,2149.

रभ्यंस् adj. = रभीयंस्. पातं च सस्रुषो युवं च रभ्यसो नः ṚV. 1,120,4.

रभोदा (रभस् + 2. दा) adj. *ungestüme Kraft verleihend* ṚV. 6,22,8.

रम्, रमते क्रीडायाम् Dhātup. 20,22. रंमति (in transit. Bed. und aus metrischen Rücksichten); उपरम्येताम् Harīv. 13233. ved. रम्णाति; °राम, रेमे; °रंसीत्, रंस्त P. 7,2,73. Vop. 8,71. रंस्यते, रंस्यति Kār. 3 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10. रत्वा (रत्त्वा Kathās. 64,46), °रत्य und °रम्य P. 6,4,37. fg.; रन्तुम्, °रमितुम् (MBn. 1,4183); रत. 1) act. zum *Still-*

stehen bringen, festmachen Naish. 2,19 (वधकर्मन्). Nir. 10,9.32. धुनिमेतोररम्णात् RV. 2,13,5. 12,2.5,32,1. सविता पत्नैः पृथिवीमरम्णात् 10, 149,1. बृहस्पतिष्ट्वा मुखे रम्णातु VS. 4,21. देवं त्वष्टर्वसु रम 6,7. — 2) act. med. *Jmd* (acc.) *ergötzen* MBu. 3,1820 (रमत्येनं ed. Bomb., रमयतीव Ind. Sp. 5,4). रमते तत्र वै देवो रममाणो गिरेः सुताम् Hariv. 1376. तस्य कलत्रं रन्तुं ममीकृते *futuere* Cuk. in LA. (III) 37,3. — 3) med. *stillstehen, ruhen; bleiben, gern bleiben bei* (loc.): घोरस्तं पर्वतश्चित्सरिष्यन् RV. 2,11,7. यार्पश्चिदस्मा घरमत्ते देवीः 3,56,4. 8,90,4. 10, 111,9. नो घास्मिन्वमते ज्ञने 145,4. AV. 1,17,3. 5,22,9. मयि वो रमतां मनः 7,12,4. 60,1. 115,4. 8,1,1. कथं वातो नेलयति कथं न रमते मनः 10,7,27. रमेथां मे वचसे *haltet still meinen Rede* RV. 3,33,5. VS. 3,21. 5,17. 8,31. 13,35. Ait. Br. 2,8. न क्व वै गायत्री तमा रमते 3,39. TS. 3,4,8,5. 5,2, 8,3. Çat. Br. 5,2,4,12. 14. 7,4,1,16. ज्ञात्कते पशवो न रमन्ते Pañcav. Br. 17,7,2. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः Spr. 4772. Varâh. Bṛh. S. 56,8. रमते तत्र संपदः Spr. 173. अभितो रम्यतां (impers.) M. 3,251. — 4) med. (act. nur aus metrischen Rücksichten) *stehen bleiben bei* so v. a. *sich genügen lassen an; sich ergötzen —, Gefallen finden an; a)* mit loc.: वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः RV. 10,34,13. ईशेरो क्षय वित्ते देवा घरन्तीः Ait. Br. 3,48. Weber, Râmat. Up. 286. स्व एव धामन्रममाणाम् Bhâg. P. 2,9,16. 4,14. स्व एव लोके रमतो मरुतामुनेः 4,4,19. 5, 19,5. न चैकस्मिन्वमत्येताः पुरुषे MBh. 13,2400. स्त्रीषु दारेषु रम्यताम् (impers.) R. 5,23,5. गीते वा रमते Çat. Br. 6,1,1,15. न तेषु भोगेषु रमते बुधः Bhag. 5,22. 18,36. नाधर्मे रंस्यते मनः MBh. 1,4756. 13,580. R. 2,55,27. रमते चतुस्तवास्मिन्गिरिकन्दरे 96,5. 3,53,20. Sûçr. 1,112, 18. Spr. 856. 2903. 2972. 3179. 5195. Varâh. Bṛh. S. 53,93. Kathâs. 21, 80. 47,99. 104,35. Bhâg. P. 2,1,7. 9,2. 9,9,44. 20,12. Mârk. P. 62,21. वरयान्यं पतिं यत्र मनस्ते रमते 125,32. Prab. 107,18. Bhatt. 1,2. देवत्रा रेमे Vop. 7,98. यत्र वास्य रमेन्मनः M. 2,223. 4,175, v. l. Spr. 903. Bhâg. P. 5,14,32. विप्रगृहे स्वेनैव धनव्ययेन रममाणया Daçak. in Benf. Chr. 181,3. विद्वेषु रमते (या नारी) Ver. in LA. (III) 20,12. रत *sich genügen lassend, sich ergötzend, Gefallen findend an, einer Sache ganz ergeben, als gewohnter Beschäftigung obliegend:* प्राणे Çat. Br. 14,8,12,3. संभूत्याम् 7,2,13. प्रियकृत्ये M. 2,235. 11,78. Bhag. 12,4. MBh. 3,16621. R. 1,7,4. 2,54,22. 58,28. 3,53,12. 4,16,12. Spr. 4839. Brahma-P. in LA. (III) 48,13. तेषां (स्त्रीणां) चावरणे M. 3,163. पतिशुश्रूषणे R. 1,1, 88. 2,24,27. Varâh. Bṛh. S. 45,15. वाग्नियां रत्तणे 86,33. तद्विषत्तस्तुतौ Rîâ-Tar. 3,503. Pañcat. 1,7,87. वचने MBh. 3,2222. व्याकरणे 13,4303. तपसि R. 1,9,3. 2,100,14. 4,9,70. योगसि Bhatt. 1,25. यत्र तत्राश्रमे Spr. 1225. तथाप्यस्मिन्थोरे पथि वत रता नात्मनि रताः 3035. पापुंसि रता Śiç. 2,280. मिथ्या प्रव्रजिते R. 5,24,5. गुरुजने Spr. 1027. स्वात्मन् (loc.) Bhâg. P. 3,14,27. पुंसि 25,15. स्त्रीषु Ver. in LA. (III) 30,9. पोरुषे रतमानसाः Verz. d. Oxf. H. 9,a,3 v. u. Die Ergänzung mit रत componirt: वेदवादरत Bhag. 2,42. प्रजानुग्रह° R. 1,1,5. 2,24,20. हिंसा° Spr. 3439. Ragh. 9,4. Spr. 807. 1313. 2899. Varâh. Bṛh. S. 15,4.10. 15.16,19. 39. कृषि° (= कृषीवल) 33,2. 68,71. Bhâg. P. 1,5,12. Brahma-P. in LA. (III) 54,16. Pañcat. 27,9. 203,2. Hit. 19,2. धातुवाद° = कौरुषमिन् Taitt. 3,3,225. भार्गो पररताम् so v. a. *mit Andern buhlend* Spr. 2999. वैश्यरतः क्षत्रियः wohl so v. a. *auf Kosten der Vaiçja lebend, diese ausbeutend* Verz. d. Oxf. H. 154,b,10. — *b)* mit instr.: रममाणाः स्त्रीभिर्वा पतिर्वा ज्ञातिभिर्वा Kâmas. Up. 8,12,3. कथाभिः MBh. 3,58 (सक् ist adv.). पद्मालब्धोपचारार्थैः 12,2876. R. 2,36,19. भोगैः 7,59,2. पौराङ्गनानां लोचनैः Megh. 28. Kathâs. 44,53. Bhâg. P. 3,31,32. 9,18,39. Bhatt. 6,67. चित्रास्वादकथैर्मृत्यैरनायासितकार्मुकैः । ये रमन्ते नृपास्तेषां रमन्ते रिपवः श्रिया ॥ Spr. 912. R. 2,36,4. Mârk. P. 23,78. रमन्ते परयोषिता so v. a. *pflegen der Liebe mit* Spr. 764. रमन्ते मातृभिः सुताः MBh. 6,68. Kathâs. 56,292. Vop. 5,30. Brahma-P. in LA. (III) 55,11. मा च ग्रामसौख्येन (so ist zu lesen) दण्डनायकेन तत्पुत्रेण च सनं रमते Hit. 66,7. मा रंस्था जीवितेन नः so v. a. *spiele nicht mit unserem Leben* Bhatt. 6, 15. स्वकर्मणीव रताः *Gefallen findend an, zufrieden mit* Pañcat. 228,10. — *c)* mit infin.: वदते नहि वस्तुं मे स्वर्गेऽपि रमते मनः R. Gorr. 2,21, 15. — *d)* mit सक्, सार्धम्, साकम् *sich mit Jmd vergnügen* und insbes. *mit Jmd der Liebe pflegen;* med. MBh. 3,2253. 2640. R. 2,27,3. 31,27. 94,12. R. Gorr. 2,27,13. त्वमार्य सक् वैदेह्या वनवासे ऽपि रंस्यसे 31,21. Kathâs. 18,405. Bhâg. P. 3,1,25. Mârk. P. 20,6. 61,35. MBh. 1,2907. 3,2233. 13,1466. Kathâs. 37,105. 42,159. 45,342. Brahma-P. in LA. (III) 54,9. Pañcat. 1,10,37. Hit. 63,23. 86,10. 110,18. ed. Johns. 1394. Sây. zu RV. 1,125,1. रमते योषितासेन पुरुषः पुरुषैः सक् *treiben Unzucht mit einander* MBh. 8,2115. act. R. Gorr. 1,65,12. 3,61,34. 35. रन्तुम् R. Schl. 2,96,9. 7,31,9. रत्वा Kathâs. 64,46. रमस्व सक्तो मया MBh. 13, 1465. — *e)* ohne weiteren Beisatz *vergnügt sein, sich ergötzen:* एकाकी न रमते Çat. Br. 14,4,2,4. Kâṭhân. Up. 8,12,3. Maitrâyup. 2,6. MBh. 1,981. 2905. 8061. 3,1795. 4,264. 403. R. 2,55,21. 91,74. 3,73,17. 7, 108,29. Ragh. 9,71. 14,30. मम मनो रमते Vikr. 70,21. न विना परिवादेन रमते दुर्जनो जनः Spr. 1458. 2883, v. l. Kathâs. 34,166. 52,64. Prab. 90,12. Bhâg. P. 3,23,44. 4,27,1. 9,19,6. तुष्यसि च रमसि च Bhag. 10,9. MBh. 12,7755. 13,1276. रमामि कथयन्त्यास्ते दृष्ट्वा R. 3,5,3. 15,28. Mârk. P. 51,90. Weber, Râmat. Up. 334. रम्यताम् impers. MBh. 1,7649. Vikr. 19,1. Spr. 4341. रन्तुम् Mârk. P. 20,7. Çiç. in LA. (III) 33,3. रत *vergnügt, froh* Bhâg. P. 3,23,40. 10,47,8. Häufig in Verbindung mit einem loc. des Ortes: रममाणः पुरे रम्ये MBh. 1,6412. 3,1877. 13,1427. 3861. Harîv. 1376. R. 2,34,30. 54,25. 56,11. 60,9. 94,11. Ragh. 8,94. Gît. 7,22. यत्र रमान्यत्वम् MBh. 1,6449. R. 3,79,43. Bhâg. P. 5,13,18. रतवानस्मि R. 2,94,16. रन्तुं प्रसीद शश्वन्मलयस्थलीषु Ragh. 6,64. *sich ergötzen* so v. a. *der Liebe pflegen:* दंपत्योः रममाणयोः Bhâg. P. 3,23,46. रता हि रममाणास्तु वञ्चयन्तीह मानवान् MBh. 13,2236. रममाणे चक्रवाकयुगे Mârk. P. 62,10. मृगा रमन्ते *begatten sich* P. 3,1,26, Vârtt. 4, Sch. ततो निवेश्य बर्हा तां रन्तुमाभिष्यति स्म सः Kathâs. 58,96. बलात्कारेण Daçak. 32,15. पुंसः स्त्रियाश्च रत्योः Bhâg. P. 10,60,38. — Vgl. रत, रत्तव्य, देवरंत, निर्माणरत, मत्कीरत, सुरत.

— caus. रमयति und रामयति Vop. 18,22. घोरोरमत्, रमयामकः ved. P. 3,1,42. 1) zum *Stillstehen bringen:* घोरः RV. 5,31,8. 1,165,2. तं सूरो दक्षिणेतो रमयो नृन् 120,13. 5,32,13. घोरोरमद्दर्तमानं विदेतोः 2,38,3. रथम् 7,32,10. 56,19. श्येनमायिनम् TS. 2,4,2,1. पशून् 6,3,6,2. प्रजाम् Kâṭh. Çr. 4,14,23. Pañcav. Br. 6,7,18. — 2) रमयति *ergötzen, durch Befriedigung der Liebeslust ergötzen* MBh. 1,3905. 6064. 6071. 2,133. 205. 3,1859. 4,25. 12,8842. 14,2642. 15,541. Harîv. 9004. R. 2,48,11

(43,12 Gorr.). रमो रमयतां श्रेष्ठः 33,1. 61,1. 5,74,15. R. Gorr. 1,1,23. 78,18. 53,1. 3,3,20. 15,18. Mucc. 110. Spr. 1157. 3194. 3770. Varâh. Bṛn. S. 19,5. 76,3. Kathâs. 1,66. Gît. 1,44. 2,8. 11. Bhâg. P. 1,6,39. 3,2,29. 3,21. 4,7,21. 27,1. 5,18,16. 9,14,24. 24,63. 10,29,42. Brahma-P. in LA. (III) 54,14. Kusum. 1,10. med. MBh. 4,55. Harîv. 8342. Bhâg. P. 4,25,38. रमौ रमयेन्द्रियाणि रमयते *ergötzt seine Sinne* 5,18,16. रमित MBh. 13,380 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Gît. 7,12. — 3) मृगावमयति *die Gazellen sich begatten lassen* so v. a. *melden, dass die Gazellen sich begatten*, P. 3,1,26, Vârtt. 4, Sch. Vop. 18,22. — 4) *sich ergötzen:* पिबति रमयति च MBh. 3,11271. Harîv. 3739. Spr. 1917.

— desid. s. रिरंसा, रिरंसु.

— intens. रेरम्यते, रेरमीति P. 7,4,85. Vop. 2,31. das ved. रारन्धि wird auch hierher gezogen P. 6,4,103, Sch.; vgl. u. रघ् und रन्.

— अति *Höchst entzückt sein:* °रमते v. l. für अभिरमते Spr. 635. st. °रत R. 1,70,21 lesen die ed. Bomb. und auch Scht. 2,110,18 richtig अभिरत.

— अनु 1) act. *inne halten:* आकावे Çâṅku. Ça. 17,17,12. — 2) med. *seine Freude an Etwas haben* Spr. 2883, v. l. अनुरत *Gefallen findend an* (loc. oder im comp. vorangehend): तत्रधर्मेऽनुरतः R. 3,4,6. कृत्यावेक्षादिषु कर्मसु विद्यासु चानुरतः Varâh. Bṛn. S. 69,37. धर्मानुरत 15,10. मगाङ्गानुरत Bhaṭṭ. 8,39. लीलावतारानुरत Bhâg. P. 1,2,34. *verliebt* 10, 33,26. — Vgl. अनुरति.

— अप, partic. अपरत 1) *sich nicht aufhaltend:* अपरता अस्मादोषधयः Nir. 9,8. — 2) *ruhend, feiernd, sich jeglicher Thätigkeit enthaltend* Bhâg. P. 10,21,10.

— अभि 1) med. *sich aufhalten:* यत्राभिरंस्यमाना भवन्ति Âçv. Gṛhj. 4, 6,16. *ruhen* Çâṅkh. Gṛhj. 4,2. अभि भो रम्यताम् M. 3,251, v. l. अभिरम्यतामिति वदेद्दूयुस्ते ऽभिरताः स्म कः Jâtâ. 1,251. *möget ihr befriedigt sein* und *wir sind befriedigt* Stenzler. — 2) *sich ergötzen, Gefallen finden an:* अगस्त्येऽभिरंस्यते Harîv. 11321. विद्यासु विहानिव सो ऽभिरेमे पत्नीषु Bhaṭṭ. 1,9. कथाभिरभिरम्य R. 1,25,20 (26,21 Gorr.). अभिरंस्ये ऽहं त्वयैव सह 2,27,18. Mṛicch. 83,11. माद्यति मोदते ऽभिरमते प्रस्तौति Spr. 635. 2976. त्रिदिवगताभिरमन्ति मानवेन्द्राः MBh. 3,1878. अभिरम्य तत्रा तत्यौ शिलायाम् R. 2,96,21 (105,20 Gorr.). 3,19,19. अभिरत *sich genügen lassend, sich ergötzend, Gefallen findend an, einer Sache ganz ergeben, — als gewohnter Beschäftigung obliegend:* स्वे स्वे कर्मणि Bhag. 18,45. तपसि MBh. 1,674. धर्मपत्नीमभिरतो त्वयि 4651. 5,6078. 13,5299. यागेषु Harîv. 4846. कृष्णे 11306. सत्ये R. 2,36,29. 56,18. 3,15,40. 71,13. Kâm. Nîtis. 6,8. Bhâg. P. 3,32,17. 4,20,28. 9,6,48. 10,60,34. राजधर्मेऽभिरत Harîv. 3107. 3643. Spr. 4230. Varâh. Bṛn. S. 13,5. 7. 21. Bhâg. P. 3,8,7. 25,34. 32,41. 5,19,1. Mârk. P. 51,118. Verz. d. Oxf. H. 54,b,21. मौसलेतोऽभिरता विहारार्थं च R. 3,49,39. त्रिशङ्कुरिह तिष्ठतु। दक्षिणस्यामभिरतो दिशि R. Gorr. 1,62,32 2,119,19 (110,19 Scht.). — 3) किंनराभिरतानि Mârk. P. 61,21 fehlerhaft für किंनराभिरुतानि. — Vgl. अभिरति, अभिराम. — caus. *ergötzen:* भार्येव चाभिरमयति (विद्या) Spr. 2174. कथाभिरनुकूलाभी राजानं चाभ्यरामयत् (चाभ्यरोचयत् ed. Bomb.) MBh. 13,476. त्वयाभिरमिताः Bhâg. P. 10,29,36.

— अव *aufhören, nachlassen;* nur im partic. mit der Negation zu belegen; vgl. अनवरत und füge noch hinzu Spr. 429. Varâh. Bṛn. S. 38, 5. Kathâs. 20,34. 22,259. Dhûrtas. in LA. 67,7. Bhâg. P. 5,1,33. 24, 29. Vṛndâvan. (Allah.) No. 122. — Vgl. अवरति.

— उपा *sich behaglich finden:* अग्रः प्रस्तरेण संमृज्यमान उपावरमते Pañcâv. Br. 6,7,18.

— आ act. P. 1,3,83. Vop. 22,1. 1) *einhalten* (zu reden): आरमाच्छ्रावाक Ait. Br. 6,30. Liṭ. 1,11,26. आरमेदा मन्त्रेभ्यात् Âçv. Çr. 2,16,2. Schol. zu Kâṭy. Çr. 5,5,18. विरामो ऽस्तिति चारमेत् M. 2,72. *abstehen:* आरम्यताम् (impers.) MBh. 1,4181. आरत *aufgehört:* °निःस्वन Kum. 5,6. अनारत (s. auch bes.) adj. und °तम् adv. *unaufhörlich, ohne Unterlass* AK. 3,5,11. MBh. 12,12417. Spr. 3844. Kathâs. 38,82. Râja-Tar. 4,169. Pañcar. 3,15,4. Verz. d. Oxf. H. 117,b,6. — 2) *sich ergötzen, Gefallen finden an:* सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचे चैवारमेत्सदा (चैव रमेत्सदा v. l.) M. 4,175. आरमन्तं परं स्मरे Bhaṭṭ. 8,52. द्यूतारमल्लोकलोचन Spr. 2745. नृपतिदुहित्रारमेयम् (so ist zu schreiben) *sich geschlechtlich ergötzen* Daçak. 93,3. ताभिश्च सनं युगपदारमत् Kathâs. 44,30. आरमुरिला पुलिनानि Bhaṭṭ. 3,38. — Vgl. आराति. आरमण, आराम.

— उपा 1) *ruhen, ausruhen:* उपारम MBh. 1,6038. °रम्य 6818. उपारत *ruhend, sich jeglicher Thätigkeit enthaltend* Bhâg. P. 3,22,1. उपारतधीस्तस्मिन् *dessen Geist ruht, — fest gerichtet ist auf* 6,2,42. *zur Ruhe kommen, aufhören, nachlassen:* उपारतयोमुवर्षवेग 10,7,25. वातवर्षमुपारतम् 23,25. — 2) *abstehen* von (abl.): तपसो ऽभ्युपारम R. Gorr. 1,67,11. योगात् Kumâras. 3,58. विग्रहात् Bhâg. P. 8,11,44. उपारमध्वं संयामात् MBh. 6,3744. 7270. अखिलकामुकेभ्यः Bhâg. P. 11,28,33. तेषां दानप्रवृत्तेरनुपारतानाम् Ragh. 16,3. योगादुपारतम् Bhâg. P. 8,12,44. स्थानत्रयात् so v. a. *frei von* 1,18,26. उपारम *stehe ab davon* MBh. 13, 1893. तस्माद्वंगते त्वयं (so die ed. Bomb.) उपारमितुमर्हसि 1,4188.

— व्युपा act. *abstehen von Etwas, ablassen* Harîv. 3118.

— समा dass.: ते कं समारताः *sie liessen davon ab* Kâṭhâ. Up. 1,10,11.

— उद् act. *einhalten* (zu reden) Çat. Br. 7,4,2,39.

— उप act. und med. in intransit., act. in transit. Bed. P. 1,3,84. fg. Vop. 22,1. 1) *stillhalten* (im Lauf), *am Orte bleiben* TBr. 2,1,2,1. TS. 7,1,10,1. उपात्र खलु रमत Çat. Br. 11,4,1,3. 5,6. Çâṅkh. Çr. 16,22, 21. Nir. 2,21. — 2) *zur Ruhe kommen, aufhören thätig zu sein, sich dem Quietismus ergeben:* यत्रोपरमते चित्तम् Bhag. 6,20. उपरमति, °ते विभुः Vop. 22,1. इत्वं मुनिस्तूपरमेत् Bhâg. P. 2,2,19. 5,6,6. 20,2. 9,20, 33. उपरत *zur Ruhe gekommen* Siddhânt. 66. Bhâg. P. 1,11,35. 3,1,28 (उपरतारिः). Vop. 2,19. Prab. 37,6. निन्दाप्रशंसोपरत so v. a. *gleichgiltig gegen* MBh. 5,1403. *zur Ruhe gekommen* so v. a. *gestorben* Çâṅkh. Gṛhj. 4,7. Harîv. 3179. R. Gorr. 2,88,19. 4,8,34. 5,22,12. Bhâg. P. 1,13,32. 4,14,39. 28,55. 5,9,8. 9,6,11. 17,14. 20,22. Pañcat. 93,18. 98,3. *ruhig* so v. a. *geduldig* Çat. Br. 14,7,2,28. — 3) *innehalten* (mit Rede, Handlung u. s. w.), *aufhören* Çat. Br. 14,6,8,12. 8,14. उपरमति घोषं घोषकृतः Çâṅkh. Çr. 17,17,7. 12,13,4. अहोरात्रमुपरम्य प्राध्ययनम् Gṛhj. 4, 6. ऋतावृद्धक्षोपरराम Bhâg. P. 1,6,26. 9,42. विनश्य सुमहानादौ श्रमेणोपरताः स्त्रियः R. 2,51,13. 86,14. Bhâg. P. 7,5,33. LA. (III) 87,18. मृगशशकादीन्व्यापादयन्नोपरराम Pañcat. 53,19. ते नोपरेमुः *sie liessen nicht nach* Harîv. 8433. 15346. उपरमस्व MBh. 13,1471. Bhaṭṭ. 8,55. स्खल-

शब्दः — उपरराम MBh. 1, 2174. 3, 853. 7, 3633. वागुपारमत् Kathâs. 2, 70. 16, 120. उपरतेषु शब्देषु Âçv. Gṛhy. 4, 6, 7. MBh. 1, 119. 2, 2276. R. 2, 3, 3. 91, 28 (100, 25 Gorr.). ततो युद्धमुपारमत् MBh. 3, 7162. यावद्युद्धमुपरमति, °ते P. 1, 3, 85, Sch. उपरत *aufgehört, verschwunden, nicht mehr da seiend:* उपरतशोणिता Gorr. 2, 5, 6. Pân. Gṛhy. 2, 11. M. 5, 66. R. 5, 21, 2. Spr. 593. उपरतं वाक्यम् 1966. Sin. D. 63, 15. Bhâg. P. 1, 3, 34. 3, 21, 21. 4, 7, 26. 5, 3, 38. 6, 6. 10, 15. 8, 9, 35. अनुपरत *unaufhörlich* Çat. Br. 1, 3, 2, 6. Bhâg. P. 5, 17, 3. 7. — 4) *abstehen von, entsagen; mit abl.:* युद्धाद्युपारमन् MBh. 7, 3633. Harîv. 13233. तद्वचणात् Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 32. Bhâg. P. 1, 13, 2. संसृतेः 13, 33. 4, 28, 42. 5, 1, 22. Bhaṭṭ. 8, 54. 9, 51. विस्मयाद्योपरेमिरे R. 7, 97, 23. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 319. Bhâg. P. 3, 3, 14. यशस्कारम्भादुपरम्य Daçak. in Benr. Chr. 181, 12. ऋणादुपरतम् Bhag. 2, 35. स्वव्यापाराद्वचनात् Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 315. यस्माल्लोकादुपरते यमे Bhâg. P. 3, 4, 30. विलापेभ्यो रतं रामम् R. 2, 53, 29. निर्घोषेभ्यो रत 51, 12. — 5) *abwarten:* रुवीपि अप्यमाणान्युपरमति Çat. Br. 2, 2, 4, 2. 3, 8, 3, 29. — 6) *beruhigen:* देवदत्तमुपरमति = उपरमयति P. 1, 3, 84, Sch. — Vgl. उपरम fg., उपराम. — caus. °रमयति *zur Ruhe bringen, beruhigen* Nir. 2, 18. P. 1, 3, 84, Sch.

— व्युप *verschiedentlich pausiren:* °रमम् absol. Âçv. Çr. 7, 11, 20. *zur Ruhe gelangen, aufhören:* इन्द्रियाणां व्युपरमे मनो व्युपरतं यदि MBh. 12, 9897. निःस्वनः — व्युपारमत् 14, 1945. व्युपारमन्त युद्धानि Harîv. 5102. व्युपरतमवलक्षान Mṛicch. 1, 2. *abstehen von* (abl.): योधा व्युपारमन्युद्धात् MBh. 7, 5745. व्युपरम्य ततो युद्धात् 6, 5718. — Vgl. व्युपरम.

— नि 1) med. *sich zur Ruhe begeben, aufhören:* यामावर्यन्तो नि विशे रमध्वम् AV. 5, 13, 5. न्यघ्निना क्रतमु कामो यरंमत (यरंमत RV.) 14, 2, 5. — 2) निरत *sich genügen lassend, sich ergötzend, Gefallen findend an, einer Sache oder einer Person ganz ergeben, sich gern mit Etwas beschäftigend, treu an Etwas hängend;* die Ergänzung im loc.: स्वधर्मे MBh. 3, 15604. 15640. धनुर्वेदे च वेदे च 13, 91. R. 1, 19, 19. निर्देशे पितुः 4, 14, 18. 5, 77, 18. विद्याधातुवर्णाकृतासु Vaṛâh. Bṛh. S. 69, 20. Uttarar. 43, 7 (37, 5). im instr.: वन्येन फलमूलेन R. 7, 94, 20 (निरत = निरताहार = नियताहार Comm.). im comp. vorangehend: स्वदार° M. 3, 45. R. 1, 6, 12. स्वकर्म° 14. 2, 80, 1. Bhag. 18, 45. अहिंसा° MBh. 3, 2248. तपः-स्वाध्याय° R. 1, 1, 1. प्राणिनिपात° 59, 21. धर्म° 2, 61, 23. प्रतिज्ञा° 3, 48, 18. Mṛicch. 70, 19. लोकक्रीडा° Mucc. 34. Spr. 220. 1326. 2080. 2025. 4653. Vaddha-Kân. 11, 12. Vaṛâh. Bṛh. S. 68, 72. 103, 9. Kathâs. 27, 208. Bhâg. P. 3, 23, 7. Prab. 20, 14. तदेकनिरत *ganz an ihm hängend* Kathâs. 23, 93. Sin. D. 73. — Vgl. निरति, 2. निरमण, निरामिन्. — caus. 1) *aufhalten, festhalten, hemmen:* मो षु वो वाघतेभ्यारे यस्मिन्नि रीरमन् RV. 7, 32, 1. 2, 18, 3. 4, 17, 14. 5, 53, 9. 10, 160, 1. नि रामय शरितः सोम इन्द्रम् 42, 1. दामनि 1, 56, 3. नि रामय मय्येव तन्वं मम Nir. 10, 18. — 2) *geschlechtlich ergötzen:* सुरतोत्सुकाम्। रामो निरमयन् Bhâg. P. 3, 23, 44.

— परि act. P. 1, 3, 83. Vop. 22, 1. *Gefallen finden an, erfreut sein über* (abl.): ऋणं पर्यारमत्तस्य दर्शनात् Bhaṭṭ. 8, 53. — caus. *geschlechtlich ergötzen:* °रमिता Khandon. 25.

— प्र caus. *in einen angenehmen Zustand versetzen:* रात्रिः प्ररमयति भूतानि नक्तंचारीणि Nir. 2, 18.

— प्रति, °रत *Gefallen findend an* (loc.), *gern obliegend:* रामो हि सर्वलोकस्य क्षिते प्रतिरतः सदा R. 6, 104, 37.

— वि act. P. 1, 3, 83. Vop. 22, 1. ausnahmsweise und namentlich aus metrischen Rücksichten auch med. 1) *einhalten* (zu reden u. s. w.), *pausiren, aufhören* Çiṅkh. Çr. 5, 19, 16. Liṭ. 1, 3, 6. Kauç. 141. विरमेत्यलिणीं रात्रिम् M. 4, 97. एतावदुक्त्वा वचनं विरराम स पार्थिवः MBh. 1, 3112. 2, 1401. 3, 16721. 4, 60. 12, 6238. R. 1, 21, 20. 30, 24. 59, 32. 2, 12, 27. 44, 24. 105, 39. 7, 108, 7. Çiç. 15, 3. 67, 5. 107, 3. Kathâs. 1, 62. 18, 316. 28, 125. Râjat. 6, 24. Bhâg. P. 3, 9, 26. 4, 4, 1. विरम्य Kathâs. 22, 59. एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे Râgat. 2, 51. Kathâs. 14, 88. 15, 95. 16, 119. 17, 21. Râjat. 3, 319. 4, 97. 256. इत्युक्त्वा विरतं (impers.) वाचा Kathâs. 23, 75. 52, 65. पावकाश्च तदा दावं दग्ध्वा समृगपक्षिणम्। अक्षतानि पश्च चैकं च विरराम सुतर्पितः॥ MBh. 1, 8475. क्रोडित्वा विरतं रात्रौ R. 5, 14, 7. पीत्वा मधूनि विरते ते ददर्श 9. यावदेनो न कर्वचित्प्रलपन्विरमति Pañcat. 93, 16. स यावद्ऊर्ध्वः पैतृविध्यैति तावति स्वयमेव व्यरमत TS. 2, 4, 12, 1. Çat. Br. 6, 7, 3, 9. तदपि न वराकी विरमति *lässt nicht nach* Spr. 429. प्राप्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः 1913. 1966. Bhâg. P. 4, 20, 26. Pañcat. 1, 2, 7. विरमस्व MBh. 13, 1496. Harîv. 6240. विरम्य Kathâs. 72, 320. विरमेद्दग्धयोनिरिवानलः *erlöschen* Bhâg. P. 7, 12, 31. विरराम so v. a. *er entsagte allem Andern* 4, 28, 40. मन्त्रं ते विरमतु MBh. 1, 2135. 2138. Spr. 2691. 2706. 5173. रात्रिरेव व्यरंसीत् *ging zu Ende* Uttarar. 12, 13 (17, 6). विरमत्समाधि Bhâg. P. 7, 9, 33. 12, 10. 10, 73, 15. Vop. 25, 27. विरमन्ति न व्यलितुमोषधयः Kir. 3, 24. कोलाहलो विरमते Bhâg. P. 3, 15, 18. 4, 19, 35. किमयं शब्दो विरतः R. 2, 71, 26. 86, 14. R. Gorr. 2, 74, 13. Mṛicch. 44, 16. Çiç. 90. Râgat. 4, 78. 8, 54. 65. Çiç. 9, 12. Sin. D. 23. वर्षमविरतं पतति *unaufhörlich, ununterbrochen* Mṛicch. 75, 6. Vaṛâh. Bṛh. S. 19, 5. Râjat. 6, 317. Bhâg. P. 3, 30, 8. 31, 43. 4, 31, 20. Mârk. P. 51, 36. 116, 35. — 2) *abstehen von, entsagen, aufgeben;* mit abl. P. 1, 4, 24, Vârtt. अत्यभावाद्विरमेयुः Kâç. Çr. 22, 4, 27. MBh. 3, 14250. Harîv. 5635. 11268. R. Gorr. 2, 60, 23. Ragh. 8, 23. Spr. 571. 2383. 2833. 2866. Vikr. 39. Kathâs. 43, 29. 45, 96. 111. 49, 52. 95 (निर्बन्धप्रार्थनातः). Râjat. 1, 210. 2, 51. 4, 631. Bhâg. P. 6, 1, 63. 10, 39. 7, 9, 49. Mârk. P. 76, 45. Pañcat. 1, 2, 46. Pañcat. 161, 1. 213, 3. Bhaṭṭ. 3, 21. 8, 53. med. Bhâg. P. 1, 11, 34. 2, 2, 16. Mârk. P. 113, 29. अविरतो दुश्चरितात् Kaṭhop. 2, 24. Kâç. Çr. 22, 4, 23. विरतः पापात् MBh. 3, 1333. R. 1, 6, 14. 3, 16, 21. Ragh. 14, 71. Kathâs. 41, 34. Çârṅ. 10, 144. Bhâg. P. 3, 16, 2. Vop. 5, 30. परापवादविरत R. 1, 7, 6. Râjat. 1, 133 (wo mit der ed. Calc. °हिंसाविरतः zu lesen ist). अलमयमर्थबोधनादभिधायी विरतायी तदाप्यर्थबोधनाच्च लक्षणायी विरतायाम् so v. a. *aufgehört hat* zu Sin. D. 19, 9. तदाप्यर्थबोधनविरतायां लक्षणायाः 119, 2. Statt abl. ausnahmsweise loc.: (कलेवरे) रमन्ति मूढा विरमन्ति पण्डिताः VP. beim Schol. zu Prab. 96, Çl. 30. विलापे विरतम् R. Gorr. 2, 53, 31. — 3) विरम्यतां भवान् Mâlav. 24, 11 fehlerhaft; Weber vermuthet तावत् st. भवान्. — Vgl. विरति u. s. w. — caus. 1) *zur Ruhe bringen:* °रामयति Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 93. विरमितधर्मप्रतियत्न Bhâg. P. 5, 1, 29. — 2) *zu Ende bringen:* रत्नानीं तदानीम्। कथाप्रकारैर्बुधिर्मकात्मा विरामयामास R. 7, 66, 17.

— प्रवि *abstehen von, unterlassen;* mit abl.: ततो ऽमरारक्षणादेव

प्रविरतो ऽभवत् Rîéa-Tar. 4,638.

— सम् *sich ergötzen, Gefallen finden an* (loc.): मैरंसीष्टाः मुरमुनिकृते वर्त्मनि Bhaṭṭ. 19,30. मैरमस्व मया साकम् *sich fleischlich ergötzen* Bhâg. P. 3,14,19. 21.

रमै (von रम्) 1) adj. *ergötzend, erfreuend* gaṇa श्वलादि zu P. 3, 1, 140. गुरुकाधिप° Kir. 5, 20. Vgl. मनो°. — 2) m. *a) Geliebter, Gatte.* — *b) der Liebesgott.* — *c) rothblühender* Açoka H. an. 2,333. Med. m. 25. — 3) f. या *a)* ein N. der Lakshmi, *der Glücksgöttin;* auch in appellat. Bed. *Glück, Reichthum* AK. 1,1,8,23. Taik. 1, 1, 41. H. 226. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*, 28. Spr. 920. 4817. 5403. Weber, Rámat. Up. 296. 307. fgg. 312. 328. Bhâg. P. 3,9,23. 4,25,28. 5,18,16. fg. 7,9,26. 8,3,5. 8,8. 23. 9,20,8. Vop. 5, 7. Verz. d. Oxf. H. 80, *b*, 30. = शोभा *Pracht, Schönheit* Rîgân. im ÇKDa. — *b)* Bez. *des 11ten Tages in der dunklen Hälfte des* Kârttika Verz. d. B. H. 341, 8. — *c)* N. pr. einer Tochter Çaçidhvaga's und Gattin Kalki's Kalki-P. 23 im ÇKDa. — *d)* schlechte Variante von रामा Colebr. und Lois. zu AK. 2,6,4,4. — रमकर्षित Padma-P. 16,144 fehlerhaft für रामकर्षितः in Betreff von Paṇḍit. I, 369 s. Spr. 4700.

रैमक (wie oben) Uṇâdis. 2, 33. adj. = विलासिन् *sich ergötzend, spielend, scherzend* Uggval.

रमट s. रमठ.

रमठ 1) m. pl. N. pr. eines Volkes im Westen Varâh. Bṛh. S. 14,21. 16,21. MBh. 3,1991 (रमट ed. Calc., रामठ ed. Bomb.). 12, 2430. — 2) n. = रामठ *Asa foetida* Uṇâdis. im ÇKDa.

रमठधनि m. *Asa foetida* Çabdaç. im ÇKDa.

रैमण (von रम्) 1) adj. (f. ई) *ergötzend, erfreuend* gaṇa मन्वादि zu P. 3, 1, 134. Bhâg. P. 4, 6, 11. 5,7,11. 8,8,7. 10,21,5. Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92. 129,*a*,30. Bhaṭṭ. 6,72. — 2) m. *a) Geliebter, Gatte* H. 317. 8. an. 3,220. Med. ṇ. 73. Hall. 2,342. MBh. 12,6516. R. Gorr. 2,30, 18. 5,13,44. Megh. 38. 83. Vikr. 89. Ragh. 14,27. Kumâras. 4,21. Spr. 902. 1535. 1896. 2162. 2234. 2667. 3161. 4729. Çârṅgadharap. 3 bei Hall. 513. Çiç. 9,60. Gît. 3,10. 10,9. Bhâg. P. 4, 6, 11. Paṇḍar. 4, 3, 129. H. 701. क्षपा° *der Gatte der Nacht, der Mond* Rîéa-Tar. 3,269. — *b) der Liebesgott* Med. — *c) Esel* H. an. — *d) Testikel* Çabdaç. im ÇKDa. — *e) ein best. Baum,* = मकरिष्ट Rîgân. im ÇKDa. — *f)* N. pr. α) einer mythischen Person, eines Sohnes der Manoharâ, MBh. 1,2586. Hariv. 155. — β) Bein. Aruṇa's, des Wagenlenkers der Sonne, Taik. 1,1,103. — γ) eines Mannes Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 56,12. — *δ)* pl. eines Volkes (vgl. रमठ) MBh. 6,374 (VP. 194). — 3) f. या *a) ein junges reizendes Weib* Schol. zu AK. 2,6,4,4. — *b) ein best. Metrum, 4 Mal* ⏑ ⏑ — Colebr. Misc. Ess. II, 138 (III, 4). — *c)* N. der Dâkshâjaṇî in Râmatîrtha Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,16. — 4) f. ई *a) ein junges reizendes Weib, Geliebte, Gattin* AK. 2,6,4,4. H. 503. Med. Hall. 2, 327. R. 3, 43,38. Spr. 531. Kathâs. 52,214. Rîéa-Tar. 6,301. भोगः को रमणीं विना Prasaṅgâbh. 7,*b*,2. Bhâg. P. 10,14,21. Nalod. 2,14. Kuval. 167,*a*. — *b) Aloe indica Royle,* = बाला Çabdaç. im ÇKDa. — *c) ein best. Metrum, 4 Mal* ⏑ ⏑ — ⏑ ⏑ — Ind. St. 9,366. *4 Mal* ⏑ ⏑ — Colebr. Misc. Ess. II, 138 (III, 4). — *d)* N. pr. eines weiblichen Schlangendämons Rîéa-Tar. 1,263. रमणत्वी 265. — 3) n. *a) sinnliches Vergnügen, Beischlaf, Begattung* Çabdar. im ÇKDa. Nir. 6,17. रमणायोपेयते न धर्माय 12,13. Verz. d. Oxf. H. 24,*b*,47. मृग° P. 6,4,24, Vârtt. 3. 3,1,26, Vârtt. 4, Sch. Vop. 8,133. — *b) das Ergötzen, Erfreuen:* लोक° Bhâg. P. 10,2,13. *das Ergötzen durch Befriedigung der Sinneslust;* mit acc. des Mannes Çiv. in LA. (III) 36, 4. — *c) Hinterbacke, Schamgegend* (सघन) H. an. — *d) die Wurzel von Trichosanthes dioeca Roxb.* H. an. Med. — *e)* N. pr. eines Waldes Hariv. 8955. — Vgl. उषा°, पर°, रजनी°, रति°, रसिक°, राका°.

रमणक 1) n. N. eines Varsha MBh. 6, 288. Bhâg. P. 5,20,9 (als m. N. pr. des Regenten dieses Varsha, eines Sohnes des Jaṅghabâhu). m. N. pr. eines Dvîpa 19,30. 10,16,63. 17,1. VP. 175, N. 3. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vitihotra Bhâg. P. 5,20,31.

रमणीय् (von रमणी), °यते *Jmdes* (gen.) *Geliebte* —, *Gattin darstellen:* तव सदा रमणीयते श्रीः Sîm. D. 271,21.

रमणीय (von रम्) adj. *vergnüglich, ergötzlich, anmuthig, schön* H. 1445, Sch. Nir. 1,20. 7,15. 9,27. 10,47. °चरण (Gegens. कपूय) Kâṭh. Up. 5,7,10. न्यग्रोध MBh. 1,5896. वन 3,2236. राष्ट्र 4,10. R. 1,2,6. 2, 30,44. 55,30. 56,9. 80,13. Vikr. 37,10,63,18. दिवसाः परिणामरमणीयाः Çiç. 3. वपुस् 57. अव्यक्तवर्णारमणीयवचःप्रवृत्ति 176. 11,19, v. l. 12,1. 13, 10. 99,13. Spr. 361. 2629. 3179. 3576. कथा Kathâs. 40,115. Bhâg. P. 4,8,46. Mârk. P. 23,96. Sîm. D. 66,1. अ° Paṇḍar. 123,20. अति° Spr. 3409. Prab. 52,15. — Vgl. रम्य.

रमणीयक n. *Anmuth, Schönheit* Çiç. 11, 19, v. l. fehlerhaft für रामणीयक.

रमणीयता (von रमणीय) f. dass. Spr. 24. Uttarar. 70,3 (90,3). सर्वावस्थाविशेषेषु माधुर्यं रमणीयता Sîm. D. 132.

रमणीयत्व (wie oben) n. dass. R. 7,2,11. Çiç. 80,7. Sîm. D. 479.

रमैण्य Uṇâdis. 3,101. wohl = रमणीय.

1. रमैति (von रम्) f. *Ort des angenehmen Aufenthalts:* मयि सन्नाता रमतिर्वो अस्तु AV. 6,73,2. TBr. 3,7,3,1.

2. रैमति (wie oben) Uṇâdis. 4, 68. 1) *gern bleibend, anhänglich;* von der Kuh, *die sich nicht verläuft:* पद्भ्या रथ रमैतयः AV. 7, 75,2. TS. 1, 6,3,1. 7,1,13,1. — 2) m. *a) Liebhaber.* — *b) Himmel* Med. t. 144. — *c) Krähe* Çabdar. im ÇKDa. — *d) Zeit.* — *e) der Liebesgott* Uggval.

रमाकान्त m. *der Geliebte der* Ramâ d. i. Vishṇu Paṇḍar. 46, 8.

रमाधव m. *der Gatte der* Ramâ d. i. Vishṇu Gagadîça im ÇKDa.

रमाधिप m. *der Gebieter der* Ramâ d. i. Vishṇu Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,13.

रमानाथ m. 1) *der Gebieter der* Ramâ d. i. Vishṇu oder Kṛshṇa MBh. 2,2292. — 2) N. pr. eines Dichters Verz. d. B. H. No. 336. eines Commentators des Amarakoça Wilsons in der Einl. zur 1ten Ausg. des Wörterbuchs S. XXV.

रमापति m. *der Gatte der* Ramâ d. i. Vishṇu oder Kṛshṇa Kathâs. 71,200. Bhâg. P. 8,17,7. 10,39,44. Paṇḍar. 4,1,8. Vop. 26,130.

रमाप्रिय n. *Lotus (der* Ramâ *lieb)* Çabdaç. im ÇKDa.

रमावेष्ट m. *Terpentin* Rîgân. im ÇKDa.

रमाश्रय m. *die Zuflucht der* Ramâ d. i. Vishṇu Bhâg. P. 4, 12, 23.

रमितंगम m. N. pr. P. 3,2,47, Sch.

रमेश m. *der Gebieter der* Ramā d. i. Vishṇu oder Kṛshṇa Prāçnottaram. in Monatsber. der Berl. Ak. 1868, S. 111, Cl. 32. Çatr. 13,2.

रमेश्वर m. dass. Kiçikn., Hariharastotra nach ÇKDa.

रम्फ्, रम्फति (गतौ, nach Vop. auch हिंसायाम्) Dhātup. 11,20. रम्फ् (रम्प्), रम्फति (हिंसायाम्) 28,20. P. 7,1,59, Vārtt. — Vgl. रफ्, रिम्फ्.

1. रम्ब्, रम्बते *(schlaff) herabhängen*; न तेशे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्याइ कर्पत् RV. 10,86,16. — Vgl. लम्ब्.

— अव dass.: घनस्य ऊरू अवरम्बमाणा RV. 8,1,34.

— घा s. घारम्बण.

2. रम्ब्, रम्बते (शब्दे) Dhātup. 10,14. (गतौ) 15,87.

1. रम्भ् s. रभ्.

2. रम्भ्, रम्भते (शब्दे) Dhātup. 10,24. *brüllen*: रम्भमाण Bhāg. P. 10, 36,2. — Vgl. लम्भ्.

— उप *mit Schall erfüllen, erschallen lassen*: कूर्पयन्यार्कि वेणुरवेण ज्ञातकूर्प उपरम्भति विश्वम् Bhāg. P. 10,35,12.

1. रम्भ (von 1. रम्भ्) 1) m. a) *Stab, Stütze* Naigh. 3,20. Nir. 3,21. H. an. 2,241. Med. bh. 7 (= वेणु *Bambusrohr*). Hālā. 4,41. घा वी रम्भे न विव्रंयो रम्भा शंवसस्पते RV. 8,45,20. — b) N. des 8ten Kalpa (*Weltperiode*) Verz. d. Oxf. H. 31,b,42. — c) N. pr. α) eines Sohnes des Āju Hariv. 1476. VP. 406. 412. Bhāg. P. 9,17,1. 10. — β) eines Sohnes des Viviṁçati Bhāg. P. 9,2,25. — γ) eines Fürsten von Vajrarāṭra Kathās. 44,36. 82. fgg. — δ) des Vaters des Asura Mahisha und Bruders des Karambha, Verz. d. Oxf. H. 46,b,11. — ε) eines Affen Med. (wo वानरास्त्र st. वारणास्त्र zu lesen ist). R. 4,39,20. 37. 5,1,39. 73,44. 6,22,3. — 2) f. घा a) *Musa sapientum, Pisang* AK. 2,4,4,1. Trik. 3,3,186. 289. H. 1136. H. an. Med. Hla. 105. Hālā. 2,37. Bāla beim Schol. zu Naish. 2,37. Kathās. 32,105. Bhāg. P. 3,14,9. 8,2,13. 9,11,28. 10,34,37. 60,24. Verz. d. Oxf. H. 72,a,24. Pāṇḍān. 1,7,34. °फल Dhūrtas. in LA. 79,16. °स्तम्भनिभं तवोरुयुगलम् Bīn. D. 155,12 (= Ratnāv. 67,7, wo रम्भागर्भनिभं gelesen wird). Çaut. 44. Naish. 2, 37. रम्भातरुणीवोरुद्वं 22,43. विघृतरम्भमूरुद्वयम् Gīt. 10,15. रम्भोरु adj. f. Vop. 4,30 (vgl. P. 4,1,69). Çiç. 8,19. °रू voc. R. Gorr. 1,66,7. 3,61,43. Raghu. 6,35. Çiç. Ca. 36,1. Vikr. 39. Milav. 45. Bhāg. P. 3,20,34. कन्यां रम्भोरुम् MBh. 1,2401. रम्भोरु द्वयम् Kirān. 2,237. Vgl. कनक°. — b) *eine Art Reis* Bāla s. a. O. — c) *ein best. Metrum, 4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. II, 159 (III, 12). — d) N. der Dākshājaṇī im Malaja-Gebirge Verz. d. Oxf. H. 39,a,35. = गौरी Çabdar. im ÇKDa. — e) N. pr. einer Apsaras, der Gattin Nalakūbara's, die Rāvaṇa entführte, Trik. 3,3,289. Vaijn. zu H. 183. H. an. Med. Hālā. 1,88. Bāla a. a. O. MBh. 1,2558. 4818. 3,16132. 5,3975. 13,491. Hariv. 7226. 8451. 8694. fgg. 11250. 12472. 12691. 14163. R. 1,63,28 (65, 32 Gorr.). R. Gorr. 2,100,18. 5,92,71. R. ed. Bomb. 8,60,11. 7,26,14. fgg. Vikr. 87,10. fgg. Spr. 424. Kathās. 17,20. fgg. 28,55. fgg. 101,374. Mālav. P. 106,59 (रम्भा चा° zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 228,b, No. 350. Brahma-P. in LA. (III) 50,17. Naish. 2,37. — f) *Hure* Dharan. im ÇKDa.

2. रम्भ (von 2. रम्भ्) 1) adj. *brüllend* in गो°. — 2) f. घा *Gebrüll* H. 1406.

रम्भक m. N. pr. eines Mannes Buhn. Intr. 181.

रम्भातृतीया f. Bez. *eines best. 3ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34,a,28.

रम्भाभिसार m. *der Angriff auf* Rambhā, Titel eines Schauspiels Hariv. 8694.

रम्भाल Suçr. 2,14,2 vielleicht fehlerhaft für रम्भाल.

रम्भाव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34,b,23. 284,b,6.

रम्भिन् (von 1. रम्भ) 1) adj. *einen Stock tragend* d. i. *Greis* (Thierhüter nach Sây.): रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्यम् RV. 2,15,9. — 2) f. रम्भिणी wohl *ein best. Geräthe oder Schmuck*: एषामंसेषु रम्भिणीव रारभे RV. 1,168,3.

रम्य (von रम् Vop. 26,12. 1) adj. *ergötzlich, angenehm, anmuthig, schön* AK. 3,4,18,104. H. 1445. an. 2,279. Med. j. 49. तनू Cat. Bā. 7, 4,8,16. 8,7,4,8. M. 7,69. MBh. 3,1756. 2486. 2508. 2511. 2534. 2660. 13572. 4,11. 12,4662. 13290. R. 1,1,31. 3,12. 19. 9,54. 2,32,3. 43,11. 46,1. 3,48,7. Sūça. 1,241,7. Rt. 1,1. 6,2. 33. Raghu. 11,93. Megh. 79. Çiç. 13. 19. 86. 132. Vikr. 73. Spr. 1494, v. l. 1970. 2589. fg. 2832. 3246. fg. 3318. 3980. 3991. 4930. fg. Vasiṣ. Bān. S. 48,8. 15. 104,62. Kir. 5, 11. Kathās. 1,23. 18,61. 352. 25,140. 28,64. Rāja-Tar. 1,4. 3,175. Bhāg. P. 1,16,35. 3,33,18. Mārk. P. 21,2. Brahma-P. in LA. (III) 52,8. Daçak. in Beng. Chr. 182,22. Pañcat. 74,21. Vet. in LA. (III) 1,13. 5,8. सु° Mālav. 10. सु° R. 2,54,41. रम्य = बलकर Gaṇit. im ÇKDa. Vgl. रमणीय. — 2) m. a) *Michelia Champaka* (चम्पक) Lin. H. an. Med. = वकवृक्ष Çabdar. im ÇKDa. — b) N. pr. eines Sohnes des Āgnīdhra VP. 162. fg. — 3) f. घा a) *Nacht* Naigh. 1,7, v. l. H. an. (hier fälschlich n.). Med. Vgl. रम्या. — b) *Hibiscus mutabilis* Rāgān. im ÇKDa. — c) Bez. der weiblichen Personification einer best. musikalischen Weise As. Res. 9,451. — d) N. pr. einer Tochter Meru's und Gattin Ramja's Bhāg. P. 5,2,22. — 4) n. a) *die Wurzel von Trichosanthes dioeca Roxb.* Med. — b) *der männliche Same* Gaṇit. im ÇKDa.

रम्यक (von रम्य) 1) m. *Melia sempervirens* Rāgān. in Nigh. Pr. n. *die Wurzel von Trichosanthes dioeca Roxb.* Trik. 2,4,22. — Suçr. 1,144,17. 158,11. 2,35,12. — 2) Bez. einer der acht Vollkommenheiten im Sāṁkhja, f. (sc. सिद्धि) Tattvas. 41. n. Gaudap. zu Sāṁkhjak. 51. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Āgnīdhra Bhāg. P. 5,2,19. n. N. eines nach ihm benannten Varsha 20. 16,8. 18,24. VP. 168. Mārk. P. 60, 11. Çat. 1,293. Schol. zu H. 946. fg. (947 fälschlich रम्यङ्ग). N. pr. eines Waldes Pāṇḍān. 1,10,44.

रम्यग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* MBh. 2,1118 nach der Lesart der ed. Bomb., मुञ्जग्राम ed. Calc.

रम्यता (von रम्य) f. *Anmuth, Schönheit* Prasannar. 86,a,2.

रम्यत्व (wie eben) n. dass. R. 4,44,111. 7,2,10.

रम्यपुष्प m. *Bombax heptaphyllum* Rāgān. im ÇKDa.

रम्यफल m. *eine best. Pflanze*, = कारस्कर Rāgān. im ÇKDa.

रम्यभी m. Beim. Vishṇu's Pāṇḍān. 4,3,30.

रम्याति m. N. pr. eines Mannes Prajāpatis. in Verz. d. B. H. 59,14.

रय m. 1) = घरुण (vgl. रमण). — 2) = शोभा Uṇādis. im ÇKDa.

रय्, रयते (गतौ) Dhātup. 14,10.

रय (von री) m. 1) *Strömung, Strom* H. 1067. Hālā. 3,47. Rāja-Tar. 1,40. नदी° sg. und pl. MBh. 2,681. R. 2,64,69. Spr. 2142. सम्बु° R.

2,63,12. रम्भसाम् AK. 3,4,26,28. निम्नगा° 26, 233. ज्म्बूषण्डप्रतिकृतरयं तोयम् Mann. 20. *schnelle Bewegung, Geschwindigkeit* AK. 1,1,6, 59. H. 494. Halây. 2,288. कर्यं गतरयम् Spr. 2899. रथेन — अनुद्गातरयेण Rasm. ed. Calc. 2,72. रथचरणापरिमाण° Buic. P. 5,8,6. आशुरयोत्मुकमक् 13,2. Pañcar. 3,14,19. रयात् *eiligst, strucks* Çatr. 14,130. रयेण dass. Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,5. *Lauf* in übertr. Bed. संवत्सर° Buic. P. 4,29,16. आशुरयः प्रव्वारः 23. *heftiger Drang, Heftigkeit, Innigkeit:* विषयविष° 5,3,14. रोग° Spr. 4074. भक्तिरनुदिनमेधमानरया Buic. P. 5, 7,7. — 2) N. pr. eines Sohnes des Purûravas Buic. P. 9,15,1. 2. eines andern Fürsten Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,5. — Vgl. पयो°, भूत°.

रयक m. s. रवक.

रयप्रमसूत्रसिद्धान्त (so im Ind., राय° im Text) Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,282.

रयम् vgl. अमूर्त°.

रयि (von रा) m., selten f.; die gewöhnlichen Formen sind रयिम्, रयिम्, रयीणाम्, ein Mal रयिभिम्; man findet aber auch रय्या RV. 10, 19,7. VS. 12,7. AV. 3,14,1. रय्यै (VS. Pair. 4,130) VS. 9,22. 14,22. रय्याम् TS. 7,1,2,2. *Habe, Besitz*, auch wohl *Werthgegenstand, Kleinod:* पितृवित RV. 1,73,1. वसुमत् 159,4. बकुल 3,1,19. वीरवत् 2,11,12. सर्ववीर 30,11. प्रजावत् 4,31,10. गोमत् 5,4,11. पुष्टाश्व 41,5. अश्विन् 8,6,9. पोषं रयीणाम् 2,21,6. तस्मिंबयिर्धुवो धेस्तु दास्वान् 4,2,7. 34,10. इरः प्रजामिरः रयिं राराणाः 36,9. 6,6,7. रयिपतिं रयीणाम् 31,1. सुवीरं रयिं गृणते रिरीहि 63,6. रयिं रास्व सुवीर्यम् 8,23,12. एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया 9,29,6. रयिभिः समेधमानः 1,64,10. Kaiṭh. Up. 5,16,1. *Staff* Praçnop. 1,4,9. Als fem. RV. 1,66,1. 68,7. 4,34,2. एनी 5,33,6. 10,19,3. 167,1. AV. 1,15,2. 6,33,3. 7,80,2. VS. 27,6. Çat. Br. 9,2,2,22. 10,6,4,5. Çâṅkh. Ça. 12,15,4. — Personificirt: अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति RV. 9,101,7. इतं पूषा रयिर्भगः स्वस्ति सर्वधातमः 8,31,11; vgl. 10,66,10. रयेरङ्गिरसस्य प्रस्तोभः N. eines Sâman Ind. St. 3,231,*a*. — Vgl. बृहद्रयि.

रयिक m. N. pr. = रैक्व Ind. St. 1,261. fg.

रयिद adj. *Besitz gebend:* युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणाम् RV. 3,54,16.

रयिमत्तम (superl. zu einem nicht vorhandenen रयिमत् von रयि) adj. *überaus viel besitzend:* यो रयिवो रयिमत्तमो यो सुम्नैर्बुमत्तमः RV. 6, 44,1. Zur Form des Wortes vgl. P. 8,2,17.

रयिपति m. *Herr des Besitzes:* अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् RV. 1,60,4. 72,1. 2,9,4. रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु 40,6. 6,31,1. 9,97,24.

रयिमत् (von रयि) adj. P. 5,1,37, Vârtt. 2. 1) *mit Besitz verbunden; wohlhabend, reich:* यज्ञम् RV. 10,36,10. सर्वत्तो वा ये रयिमन्तः सातौ 74,1. Agni VS. 12,39. Kâṭh. Ça. 4,14,22. Çat. Br. 7,2,2,11. 10,6,4,5. 14,1,2,22. Kaiṭh. Up. 5,16,1. — 2) *das Wort* रयि *enthaltend* Çat. Br. 13,4,2,13.

रयिवत् (wie oben) adj. *reich* RV. 6,5,7. 44,1. 68,8. — Vgl. रेवत्.

रयिविद् adj. *Habe findend, — besitzend* RV. 2,1,3. पतिश्चिकित्वान्रयिविद्रयीणाम् 3,7,3.

रयिवर्धु adj. *am Besitz sich erfreuend* RV. 7,91,3. VS. Pair. 3,136.

रयिषाच् (रयि + साच्) adj. *Besitzes theilhaft:* नासत्या रयिषाचः स्याम RV. 1,180,9.

रयिषाळ् (रयि + साळ्) adj. *über Besitz gebietend* RV. 1,38,2. 2,68,8.

रयिष्ठ n. N. verschiedener Sâman Pañcav. Br. 14,11,30. fg. Liṭ. 7,5,13. Ind. St. 3,231,*a*. इन्द्रस्य रयिष्ठम् 208,*a*. गोतमस्य रयिष्ठम् 215,*b*.

रयिष्ठा (रयि + स्था) adj. (*im Besitz befindlich*) *begütert, ein reicher Besitzer:* मा नो गोष्ठे रयिष्ठा स्थापयाति AV. 7,39,1. सास्वत्तं पुष्टपतिं रयिष्ठाम् 40,2. तत्र रयिष्ठामनु सं भरैतम् TBr. 1,4,8,10. TS. 3,4,2,2. Mahânâr. Up. in Ind. St. 2,99,1.

रयिस्थान adj. dass.: रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि RV. 6,47,6.

रयीषेण् (partic. eines denom. von रयि) adj. *Besitz wünschend* RV. 3,62,2.

रयीषिन् adj. scheint eine falsche Form zu sein SV. I,5,2,4,5. *Schätze begehrend* Benfey.

रय्यावृ m. N. pr. eines Mannes Râṇâ-Tan. 8,325. Wohl identisch mit रथावृ.

रराट 1) n. parox. = ललाट *Vorderkopf, Stirn* VS. 5,21. 24,1. स रराटादुदमृष्ट *er wischte sich* (den Schweiss) *von der Stirne* TBr. 2,1,2,1. Kâṭh. 14,6. Pân. Gaṇ. 3,6. f. रराटी dass. Buic. P. 2,1,28. — 2) f. रराटी *Gewinde von Gras, welches am östlichen Eingange des Schuppens für die sogenannten* Havirdhâna *angebracht wird*, Âit. Br. 1,29. Çat. Br. 3,5,2,9. 24. Kâṭy. Ça. 9,3,19. Âçv. Ça. 4,9,1. 13,4.

रराण 1) adj. *zur Stirn in Beziehung stehend:* तनू Pân. Gaṇ. 3,13. — 2) f. रराणी *a*) = रराटी 2) Kâṭy. Ça. 8,3,26. 4,18. Liṭ. 1,9,9. Çâṅkh. Br. 9,3. — *b*) *Horizont* Çâṅkh. Br. 18,4.

रराव्न् (von रा) adj. *spendend, freigebig:* युवो रराव्ना परि सख्यमासते RV. 10,40,7. न्यरातीरराध्णो विश्वा धर्मा धरातीरिते युष्कृत्यामुरः 8,39,2.

रर्फ्, रर्फति (गतौ) Dhâtup. 11,18, v. l.

रलमानाथ m. N. pr. eines Dichters Verz. d. B. H. No. 536.

रला f. *ein best. Vogel* Vaṇîs. Bṛh. S. 86,37. = कलरुकारिका 88,6.

रल्लक m. AK. 3,6,2,17. 1) *ein wollenes Tuch, eine wollene Decke* AK. 2,6,2,18. H. 670. an. 3,87. Halây. 2,296. Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 4, 61. Çâṅkh. Çrâṇ. 3,2,15. — 2) *eine Hirschart* H. an. Vaij. a. a. O. Mukuṭa zu AK. nach ÇKDa. पल्लल° Çiç. 4,61. — 3) *die Augenwimpern* Schmidt zu AK. ÇKDa.

रव (von रु) m. P. 3,3,22. *Gebrüll, Gedröhne, Geschrei, Gesumme, Gesang; Laut, Ton* überh. AK. 1,1,6,1. 3,4,22,51. H. 1400. Halây. 1, 138. fg. वृषभस्येव ते रवः RV. 1,94,10. 3,31,6. 7,79,4. AV. 5,13,3. वल्गू रवेण दरयः RV. 1,62,4. 71,2. 4,50,1. 10,67,6. पष्कृतीषु वदता रवेणेन्द्रे प्रुम्नं दधात 7,33,4. 9,72,3. 10,94,12. *Donner:* चित्रभिरभ्रैरुषा तिष्ठो रवेण 5,63,3. — शात्तरवाः पतिमगासंघाः Vaṇîs. Bṛh. S. 21,16. पुरुष° adj. 53,106. कृशतनु° adj. 63,2. सिंह° Spr. 1672. MBh. 3,11333. सिंहनाद° 7,466. रातमः — व्यनदद्भैरवं रवम् 1,6092. 3,11334. R. 7,7,16. Râṇâ-Tan. 3,408. रवाः । सार्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः Spr. 4007. लाला° Kathâs. 56,127. कोकारवैः रवैरन्यैश्च पक्षिणाम् MBh. 13,1816. चारुरवं कोकम् R. 1,2,32. कोकिल° Çiç. 52,11. कोकिलकोडाकलकल° Spr. 421. 2610. मधुलिह्नाम् Raṅn. 9,32. Kathâs. 69,95. गीत° Vaṇîs. Bṛh. S. 44, 7. 46,62. वैतालिक° Kathâs. 44,185. पाणिपाट° Harîv. 13240. मल्लमेघ° MBh. 1,1130. 7934. 3,1716. Mṛicch. 83,2. शरण्वा: R. 4,27,12. Buic. P. 6,9,23. बाणशङ्ख° MBh. 7,466. R. 7,7,16. शङ्खतूर्य° Harîv. 9024. Va-

sin. Bḥn. S. 43,21. 97,9. परु° Hall. 5,35. भेरी° Rāǵa-Tar. 1,268. 4,327. 5,346. 3,400. AK. 3,4,28,170. घण्टा° Paṅkat. 229,15. कलवीङ्का° Kathās. 14,90. 17,107. Paṅkat. 81,20. विभूषण° R. 4,13,21. 1,9, 17. नूपुर° Spr. 573, v. l. शार्ङ्गचाप° R. 7,7,16. Rāgn. 9,34. भिद्यमानात्पराद्विन्दोरव्यक्तात्मा रवो ऽभवत् Verz. d. Oxf. H. 104,b,14. Am Ende eines adj. comp. f. घा MBu. 9,581. Mālat. 79,19. Kathās. 90,42. Bhāg. P. 10,77,12. — Vgl. कटु°, कण्ठी°, कल°, घण्टा°, चण्ड°, ज्ञन°, तुवी°, नी°, भीमवेग°, मघ°, मदनकाकु°, मक्का° (adj. auch MBu. 3,12378. Bhāg. P. 8,10,23), मेघ°, लोक°, वीणा°, शार्ङ्ग°.

रवक m. Bez. *eines* Dharaṇa-*Gewichts von Perlen, wenn deren 50 auf ein* Dharaṇa *gehen*, Varāh. Bṛh. S. 81,17. रुवक, रिवक v. l.

रवर्ण (von रु) Uṇādis. 2,74. 1) adj. nom. ag. P. 3,2,148, Sch. *brüllend, schreiend, singend* u. s. w.; = शब्दन AK. 3,1,38. H. 348. Çabdar. im ÇKDa. कोकानां कुलानि Bhaṭṭ. 7,14. = तीक्ष्ण, भण्डक (*jesting, a jester* Wilson), चञ्चल Çabdar. a. a. O. — 2) m. a) *Kameel* H. 1254. Hall. 2, 125. Çiç. 12,9. — b) *der indische Kuckuck* Uṇādis. zu Uṇādis.; hier könnte रवण aber auch als adj. zu कोकिल gefasst werden. — c) N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. eines Nāgarāǵa Vjutp. 85; vgl. रावण. — 3) n. *Messing* H. 1049.

रवणाक *ein Seihgefäss mit einer Röhre* Vjutp. 209.

रवंय (von रु) Uṇādis. 3,113. m. 1) = रव ṚV. 1,100,12. बृहस्पतेः 1,80,1. Çat. Bṛ. 1,1,4,14. शकस्य Liṭ. 5,1,13. — 2) *der indische Kuckuck* Uṇādis.

रवस् s. पुत्र°, बृहद्रवस्.

रवि m. 1) *eine best. Form der Sonne* (vgl. Ind. St. 10,164. 192. fgg.); *Sonne überh.*; *der Sonnengott* Uṇādis. zu Uṇādis. 4,138. AK. 1,1,2,22. 3,4,4,8,73. 28,169. Taik. 1,1,98. H. 95. Hall. 1,38. 5,34. 53. Weber, Ḥâǵ. 34. fg. 76. 91. 101. Nax. 2,287. M. 1,23. 4,75. MBu. 3,2132. 12186. R. 1,35,2. 2,63,14. 6,4,36. 28. Ṛt. 1,12. 17. Rāgn. 1,18. 9,25. Çiç. 37. 102. Spr. 2391. Varāh. Bṛh. S. 58,46. VP. bei Muir, ST. 1,61. Bhāg. P. 9,24,31. Mārk. P. 77,1. LA. (III) 92,16. Verz. d. Oxf. H. 46, a,46. Paṅkat. 189,22. °चार Verz. d. B. H. No. 878. °यक् Verz. d. Oxf. H. 86,a,46. °यकृण 327,a, No. 773. unter den 12 Âditja Hariv. 11549. Weber, Rāmây. Up. 304. 313. रवौ so v. a. रविदिने *an einem Sonntage* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,508, ult. — 2) *Berg* Hall. 5,53. — 3) N. pr. eines Samviraka MBu. 3,15398. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra 9,1404.

रविकर m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 197,a, No. 457.

रविकान्त m. *eine Art Krystall*, = सूर्यकान्त Rāǵān. im ÇKDa.

रविगुप्त m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,14. Vjutp. 91. Spr. l, 11.

रविचक्र n. *eine best. astrol. Figur: die Sonne als Mann, auf dessen Glieder Sterne aufgetragen werden*, Ǵârpa-P. 60 im ÇKDa.

रविज m. *Kind der Sonne:* 1) Bez. bestimmter Ketu Varāh. Bṛh. S. 11,10. — 2) *der Planet Saturn* Varāh. Bṛh. S. 5,61. 10,20. 17,6. 103, 1. 39. Bhāg. 4,8. 9,1. — °गर्वपरिहार Verz. d. Oxf. H. 79,a,4.

रवितनय m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Varāh. Bṛh. S. 34,12. Bṛh. 13,8. 23,17.

रवितर् (von रु) nom. ag. *Schreier* Ait. Br. 2,7.

रवितीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,32. 67,a,8.

रविदत्त m. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 154,a,27. eines Dichters 124,b,14.

रविदिन n. *Sonntag* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,342.

रविदीप्त adj. als Auguralausdruck von *der Sonne beschienen, der Sonne zugekehrt* Varāh. Bṛh. S. 53,106.

रविदेव m. N. pr. eines Dichters Verz. d. B. H. No. 880.

रविनन्दन m. *Sohn der Sonne:* 1) Manu Vaivasvata Bhāg. P. 9,1, 19. — 2) der Affe Sugrîva Taik. 2,8,7.

रविन्द् n. = घरविन्द् *Lotusblüthe* Dhan. im ÇKDa.

रविपत्र m. *ein best. Strauch*, = घादित्यपत्र Rāǵān. im ÇKDa.

रविपुत्र m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Varāh. Bṛh. S. 47,13.

रविपुना (r *Creticus* + वि°) f. *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 138.

रविप्रिय 1) m. N. verschiedener Pflanzen: = लकुच Çabdam. im ÇKDa. = घादित्यपत्र und रक्तकरवीर Rāǵān. im ÇKDa. — 2) f. घा N. der Dâkshâjaṇî in Gaṅgâdvâra Verz. d. Oxf. H. 39,b,13. रतिप्रिया v. l. — 3) n. a) *eine rothe Lotusblüthe.* — b) *Kupfer* Rāǵān. im ÇKDa.

रविबिम्ब n. *Sonnenscheibe* Varāh. Bṛh. S. 3,20.

रविमण्डल n. dass. Bhāg. P. 4,4,18.

रविरत्न n. = रविकान्त Rāǵa-Tar. 6,294.

रविरत्नक n. *Rubin* Rāǵān. im ÇKDa.

रविलोचन adj. *sonnenäugig*, Beiw. Vishṇu's und Çiva's ÇKDa. u. Çiv.

रविलोह n. *Kupfer* Rāǵān. im ÇKDa.

रविवार m. *Sonntag* Wilson, Sel. Works 2,199.

रविवासर m. n. dass. Verz. d. Oxf. H. 70,b,13.

रविसंक्रान्ति f. *der Eintritt der Sonne in ein Zeichen des Thierkreises* Mān. P. 31,21.

रविसंज्ञक (von रवि + संज्ञा) n. *Kupfer* Çabdar. im ÇKDa.

रविसारथि m. *der Wagenlenker der Sonne*, Aruṇa H. 102, Sch.

रविसुत m. *Sohn der Sonne:* 1) *der Planet Saturn* Varāh. Bṛh. S. 15, 31. 23,10. Bṛh. 22,6. — 2) der Affe Sugrîva Rāgn. 12,104.

रविसुन्दररस m. Bez. *eines best. Elixirs* Verz. d. B. H. No. 993.

रविसूनु m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Navagrahastotra im ÇKDa.

रवीन्द्र, रवीन्द्रो Hariv. 4946 schlechte Lesart für सुरेन्द्रो, wie die neuere Ausg. liest.

रवीषु m. *der Liebesgott* Taik. 1,1,33. वरीषु ÇKDa. und Wilson wie der gedr. Text, vgl. jedoch die Corr.

रशनासंमित (रशन = रशना + सं°) adj. *so lang wie das Seil* (am Ǵûpa) TS. 5,6,8,1.

1. रशना (wohl desselben Ursprungs wie रश्मि) f. Uṇādis. 2,78. *Strick, Riemen; Zügel, Gurt; Gürtel;* insbes. *Frauengürtel* (AK. 2,6,8,10. H. 664. Hall. 2,405). वि मद्क्रव्याय रशनामिवागः ṚV. 2,28,8. 10,53,7. VS. 21,46. 22,2. 28,33. TS. 1,6,8,3 (*Bauchgurt des Rosses* nach dem Comm.). या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य ṚV. 1,162,8. 163,2. 3. 4,1,9. 10, 18,14. विषूचो अश्वान्युयुजे वनेजा सद्योदिवो रशनाभिर्गृभीतान् 79,7. 9, 87,1. AV. 7,78,1. 10,9,2. Beim Thieropfer werden zwei *Seile* ge-

brauchl, das eine als *Gurt* um den Pfeiler gelegt, am andern das Thier gebunden. TS. 5,6,4,2. Çat. Br. 3,6,2,10. 7,4,25. Âçv. Gṛhj. 4,8,15. Kâty. Çr. 5,3,15. 27. मुञ्जकाशताम्बल्यो रशनाः Gobh. 2, 10, 7. Lâṭy. 8, 11,29. तम् योक्त्रयामास वाक्युभ्यां पशुं रशनया यथा MBh. 3,446. 4,771. R. 7,23,4,40. Bhâg. P. 1,7,33. 56. 5,9,15. किरणरशन (सूर्य) 4.19,19. तदिदं कालरशनं जनाः पश्यन्ति सूरयः *an die Zeit gebunden* 3,11,3. सुतकलत्रधनागारक्षेत्रादिमोहरशना 10,48,27. — विप्रस्य रशना मौञ्जी MBh. 13,1611. Vaitân. Bṛh. S. 43,42. Pâraṇ. 3,11,20. Mârk. P. 68,18. °दामभूषित (जघन) MBh. 3,1626. R. Gorr. 2,8,43. MBh. 11,693. R. 2,32,7. 5, 13,35. Râgat. 7,10. 8,57. 19,37. Megh. 36. Mâlav. 41,12. Gîr. 10,6. Bhâg. P. 5,2,6. Bildlich von den *Fingern* Naish. 2, 5. Nir. 3,14. 8,19. 20. तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम् ṚV. 10,4,6. das Meer als *Gürtel* der Erde gedacht: समुद्ररशना चोर्वी Harîv. 12902. Çik. 68, v. l. Spr. 4666. Vaitân. Bṛh. S. 12,17. 43,32. तुङ्गितविकृतश्रेणिरशना (नदी) Vikr. 115. स्फुरिततडिद्रशनैरम्बुवाहैः Vaitân. Bṛh. S. 24,13. — किरणरशन (°रसन ed. Bomb.) Bhâg. P. 4,7,20 wohl fehlerhaft für °वसन. Das Wort wird häufig fälschlich रसना geschrieben; die Bomb. Ausgg. des MBh. (mit Ausnahme von 11,693), R. und Bhâg. P. aber haben regelmässig श. — Vgl. नीरसन (lies नीरशन) und वात°.

2. रशना f. *Zunge* Çabdar. im ÇKDr. falsche Schreibart für रसना.

रशनाकलाप m. *ein aus mehreren Schnüren gedrehter Frauengürtel* Mṛicch. 11,16. Ragh. 16,65. Varâh. Bṛh. S. 70,4. Ṛt. 3,20. am Ende eines adj. comp. f. या 3.

रशनाकृत (f. रशना + या°) adj. *mit dem Zügel hergelenkt* Kâç. 127. Wilson, Omina 397.

रशनागुण m. *Gürtelschnur:* रशनागुणास्पद *der Sitz der Gürtelschnur, Taille* Kumâras. 5,10.

रशनाय् (von f. रशना), partic. med. *dem Zügel folgend* (?): येऽदे पूर्वगावरशनायमाना AV. 14,2,74.

रशनोपमा (f. रशना + उ°) f. *Gürtelgleichniss: ein Gleichniss, in welchem mit dem, was zuerst verglichen wurde, ein Anderes verglichen wird, mit diesem ein drittes und so fort,* Sâh. D. 684. Beispiel Spr. 899.

रश्मन् m. = रश्मि 1); nur instr. रश्मा in der Stelle: सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्ठा व्रतानि ṚV. 6,67,1.

रश्मि (wohl derselben Ursprungs wie f. रशना) Uṇâdis. 4,46. m. (f. Kâṭaka Up. 2,6,2). 1) *Strang, Riemen; Leitseil, Zügel; Messschnur* AK. 3, 4, 22, 110. 24, 239. Taitt. 2,8,16 (= प्रतोद *Stachelstock*). H. 1252. an. 2, 234. Med. m. 25. Hâlâ. 2,237. 430. Uṇâdis. (= रज्जु). ṚV. 1,28,4. यस्मिन्नक्षा अधिचानस्य पम्या यात्रुर्न रश्मि तुव्योतासः गोः 4,22,3. परि यो रश्मिना दिवो ऽन्तान्ममे पृथिव्याः 8,25,18. सप्तस्य रश्मिमनुयच्छमाना 1, 123,13. 5,7,3. 1,141,11. 5,33,3. 6,29,2. मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः 75,6. मृजन्ति रश्मिमोजसा 8,7,3. 10,130,7. वि ते मुञ्चामि रशना वि रश्मीन् TS. 1,6,4,3. TBr. 1,2,4,2. यत्तेरो रश्मी रथस्य Âpast. Bṛ. 2,27.4, 19. सेशिता रश्मिना रथः संशिता रश्मिना सूर्यः VS. 23,14. Çat. Br. 2,3, 3,7. 13,3,3,5. Âçv. Gṛhj. 2,6,1. पैङ्ग° *fünfsträngig,* vom Wagen des Soma-Pûshan ṚV. 2,40,3. अरश्मिक adj. *ohne Zügel* Âçv. Gṛhj. 2,6, 4. — मुक्तरश्मिरिव यत्तः *Strick* R. 4, 16, 2. प्रतोदं रश्मीन्वा *Zügel* M. 8, 99. योक्त्ररश्म्योः 8,292. MBh. 6,3968. रथान्येमे य रश्मिभिः 3,1732. सधान् रश्मिभिश्च समुद्यम्य 2793. स यत्तेत्युच्यते सद्भिर्न यो रश्मिषु लम्बते Spr. 2453. संयच्छ वाजिनो रश्मीन् R. 2, 40, 22. रश्मिविवादाय Ragh. 2, 23. अयं रथरश्मिसंयुतम् 3,42. मुक्तेषु रश्मिषु Çik. 8. °संयमन 5,12. चलद्रश्मि (कुमारथि) Brahma-P. in LA. (III) 52,13. एक° (रथ) Bhâg. P. 4, 26,2. नेत्राभ्यां नेत्रयोरस्या रश्मिं संयोज्य रश्मिभिः MBh. 13,2302. आत्मनो रश्मीन् Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,25. Bez. der *Finger* (wie रशना): प्र रश्मिभिर्दशभिर्भाति भूम ṚV. 9,97,33. — 2) *Strahl* AK. 3,4,10, 32. 33,140. H. 99. H. an. Med. Hall. 1,38. 65. कतमो यो रश्मिरस्या तंतान ṚV. 1,35,7. 4,52,7. सूर्यस्य 1,135,9. 4,14,2. वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः 7,36,1. उषा यदग्निं रश्मिभिर्व्यक्तात् 77,3. मृजन्सूर्यो न रश्मिभिः 9,43,22. AV. 2,32,1. 12,1,15. रश्मिभिर्मण्डलं पप्रि Çat. Br. 2,2,2,14. 10,5,4,1. TBr. 3,1,4,1. Kâṭha Up. 2,6,2. 5. AV. Paric. in Ind. St. 10, 318. सूर्यरश्मयः M. 5,132. यष्टौ सामान्यवादित्यस्तोयं करति रश्मिभिः Spr. 3040. R. 2,34,8. मन्दरश्मिरभूत्सूर्यः 62,19. Sucr. 1,20,14. चन्द्रस्य R. 2,44,10. LA. (III) 88,4. Pañcat. 102,11. दीपस्य R. 2,64,68. ज्योतिषाम् Çik. 165. Vaitân. Bṛh. S. 12,15. 13,9. 47,20. 56,4. Naish. 22,56. sieben ṚV. 1,105,9. 2,5,2. AV. 7,107,1. Agni wird angeredet: कीळंवो रश्मा भुवः ṚV. 5,19,5. die Sonne: स्वर्णरश्मिं यजेष्टा रश्मिः VS. 2,26 (nach Mahîdh. ware derjenige der sieben *Strahlen* gemeint, der die Sonnenscheibe selbst ist; vgl. zur Stelle TS. 3,2,10,2). नृपः प्रदीप्तरश्मिः Ghaṭ. Kârp. Nitis. 3,92. — 3) angeblich so v. a. यज्ञ VS. 15,6; vgl. Çat. Br. 9,3,3,2. — 4) = पत्र Med., = पद्मन् Wilson und ÇKDr. nach derselben Aut. — Vgl. इष्ट°, उच्च°, ऋजु°, तिग्म°, तुङ्गि°, पृथु°, प्राचीन°, वि°, वृष°, शीत°, सप्त°, सु°, स्थूल°.

रश्मिकलाप m. *ein aus 84* (nach Andern *56* H. 661, Sch.) *Schnüren bestehender Perlenschmuck* H. 659. Vaitân. Bṛh. S. 81,22.

1. रश्मिकेतु m. Bez. *eines best. Kometen* Vaitân. Bṛh. S. 11,40.

2. रश्मिकेतु adj. *Strahlen im Banner führend;* m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,80,2. 6,18,12. 69,12.

रश्मिकोटि m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,11.

रश्मिन् am Ende eines adj. comp. st. des einfachen रश्मि *Zügel:* घृतरश्मिनि Bhâg. P. 1,9,29.

रश्मिपति m. *eine best. Pflanze,* = रविपत्र Râgân. im ÇKDr.

रश्मिपवित्र adj. *durch Strahlen gereinigt* TBr. 3,7,4,1.

रश्मिप्रभास m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 89. fg.

रश्मिमण्डल n. *Strahlenkranz* AV. Paric. in Ind. St. 10,318.

रश्मिमत् (von रश्मि) 1) adj. *strahlig,* Beiw. der Sonne R. 5,41,30. R. ed. Bomb. 6,106,6. — 2) m. a) *die Sonne* MBh. 3,14326. R. 5,12,42. — b) N. pr. eines Mannes Kathâs. 59,93. fgg. — Vgl. रश्मिवत्.

रश्मिमय (wie oben) adj. *aus Strahlen gebildet.* — *bestehend:* इषून् Bhâg. P. 4,13,18. बुद्धि° *durch die Strahlen des Verstandes leuchtend* R. 5,82,2.

रश्मिमालिन् adj. *strahlenbekränzt* R. 4,58,5. स्वतेजो° 5,41,20.

रश्मिमुच m. *der Strahlenentsender, die Sonne* MBh. 7,6689.

रश्मिराज m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 202, 3.

रश्मिवत्त् (von रश्मि) 1) adj. *strahlig* TBr. 2,8,2,1. Nir. 12,32. रश्मिवतामिवादित्यः MBh. 5,5389. अरश्मिवत्तमादित्यं रश्मिवन्तं च पावकम् । यः पश्येत् Verz. d. Oxf. H. 51,a,29. AV. Paric. in Ind. St. 10,318. अव-

गत° so v. a. अवगतरश्मि adj. ebend. रश्मीवती (VS. Prāt. 3, 96) VS. 13,43. — 2) m. *die Sonne* MBu. 3, 8270. 4, 550. 6, 793 (an den beiden letzten Stellen रश्मिमत् ed. Bomb.). Hariv. 3579. R. 4, 8, 2. — Vgl. रश्मिमत्.

रश्मिशतसमुत्पन्नपरिपूर्णाधत्र m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 164.

रश्मिस m. N. pr. eines Dānava Hariv. 12937 nach der Lesart der neueren Ausg., रभस die ältere Ausg., नभस Lanst.

रश्मीवत्त् s. u. रश्मिवत्त् 1).

1. रम्, रमति (शब्दे) Dhātup. 17, 63. Nir. 9, 11. 11, 25. Naigh. 3, 14 (अर्थतिकर्मन्): रराम. घरामीत्; hier und da auch med. *brüllen, wiehern, heulen, schreien, dröhnen, ertönen:* अश्व पदरसदिव च रामभो ऽभवत् Çat. Br. 5, 1, 4, 11. 3, 4, 28. रामभारावसदृशं रराम च ननाद च MBu. 2, 1494. रेमुर्घोरोषिताः सिंहा नदला इव तोयदाः Hariv. 3936. 8532. मदागजा रेमुः MBu. 7. 9419. Hariv. 4671. गोमायुमारङ्गगणाः — भीममरासिषुः Bhatt. 3, 26. क्रोष्टूवमतः 6, 5. रराम रात्रसो दूर्यात्सतडित्तोयदो यथा R. 7, 7, 28. 32, 43. Bhatt. 14, 9. रोदसी रराम च 88. कूजमानरासीच्च भयंकरम् 13, 122. रमनानारम Çiç. 6, 78. Naish. 1, 22. तारस्वे कोकिले रमति Çiç. 6, 70. (पर्वतोत्तमः) रराम सिंहाभिकृतो मदागत इव द्विपः R. 5, 4, 8. 54, 11. क्रुद्धः — करीव वन्यः पटुयं रराम Bhāg. 16, 78. (तेन नादेन) रराम गगनं कृत्स्नमुत्पातजलदैरिव MBu. 1, 8289. रेमतू रोदसी गाढम् 3, 11602. Hariv. 2393. 9020. Mṛicch. 85, 16. उच्चै रमतो पयोमुचाम् Ṛv. 2, 10. रमदब्द AK. 3, 4, 24, 148. रराम च मदो भृशम् MBu. 3, 11340. 6, 5701. 8, 1707. रमते व्यथते भूमिः कम्पतीव च सर्वशः 6, 5304. भूमयं रमते यदा-म्बुदः Varāh. Bṛih. S. 28, 18. शङ्कराद् — रराम R. 7, 7, 10. रमतूर्य Kathās. 88, 26. रमतु रशना Gīt. 10, 6. रमतो गाण्डिवस्य MBu. 7, 103. रुकालिङ्गरमत्खञ्जलता Kathās. 108, 106. रमित adj. *unarticulirte Laute* von *sich gebend* Gīt. 7, 17. n. *Gebrüll, Geschrei, Getön* H. an. 3, 288. Med. t. 144. वनरुरिरमिते: Rāgā-Tar. 2, 158. रणदुन्दुभेः Spr. 1130. *Donner* AK. 1, 1, 2, 10. H. 1406. H. an. Med. Kāvjād. 3, 28. नवघन° Spr. 3042. Rāgā-Tar. 4, 390. Ghaṭ. 14. — Vgl. राम्.

— intens. *laut schreien:* उच्चै रारम्यमाणा ताम् (सीताम्) Bhatt. 8, 96.

— अनु *mit Geschrei u. s. w. begleiten, einen Laut erwiedern; mit* acc.: मयूरैरुद्गोषैरनुरमितस्य पुष्करस्य Mālav. 20, v. l. अनुरमित n. *Wiederhall* Uttarāb. 33, 20 (45, 2) = Mālatīm. 145, 15.

— अभि *zuwiehern, mit* acc. Kāṭj. Çr. 20, 3, 4.

— आ *brüllen, schreien:* मृगाकुलमारमत् Naish. 3, 14. द्विषतो च पङ्क्तिमारममानाम् 1, 11. आरमित adj. *schreiend:* मारम Mālav. 41. n. *Gebrüll, Geheul:* सिंहारमितनिर्घोष Hariv. 8550. मृगालारमितशब्द 8663.

— वि *schreien* Hariv. 8540. Bhatt. 15, 42.

2. रम्, रमति, रस्यति und रमयति (आस्वादनक्रीडनयोः Dhātup. 35, 77) *schmecken:* रमतो रमना रसान् MBu. 12, 10304. न रस्यति 11383. रमयति Çat. Br. 14, 7, 2, 25 (रमयते Bṛih. Âr. Up. 4, 3, 25). 3, 18. Maitrāyp. 6, 7. कथामृतम् Kathās. 9, Einl. रमितवती मद्यम् Çiç. 10, 27. *schmecken* so v. a. *empfinden:* रस्यत इति रसः Sāh. D. 6, 22. रस्यमानता 24, 2. — रमति MBn. 14, 871 fehlerhaft für रमते, wie die ed. Bomb. liest. रमयति ist wohl als denom. von रम, रमति und रस्यति aber als spätere Bildungen aufzufassen.

— desid. *zu schmecken verlangen:* रिरमयिषति भूयः शय्याम् Çiç. 11, 11.

रस (vgl. 2. रम्) 1) m. parox. am Ende eines adj. comp. f. आ. a) *Saft, aus Pflanzen* und insbes. *Früchten gewonnener wohlschmeckender Saft; bildlich das Beste, Feinste, Kräftigste, Ros; Flüssigkeit* überh., Naigh. 1, 12. 2, 7. Nir. 2, 20. 12, 1. AK. 3, 4, 20, 229. H. 404 (= यूष *Brühe;* vgl. मांस°). H. an. 2, 387. Med. s. 8. Halāj. 3, 75. Vaid. bei Mallin. zu Çiç. 13, 18. वृत्रं त इन्द्रुर्वृषभ पीयाय स्वाहू रसो मधुपेयो वयाय RV. 6, 44, 21. मधो रसः 5, 43, 4. 1, 187, 4. 3. सोमं इन्द्रस्य रसः 8, 3, 20. 9, 23, 5. 47, 3. तं सोमे रसमा दधुः 113, 3. 8. मद्य 65, 15. 74, 9. गिरेरिव प्र रसो यस्य पिन्विरे दत्रोणि Vālakh. 1, 2. 5, 2. यो अस्तरितमायुणाद्रसेन AV. 4, 35, 3. यो नो रसं दिप्सति पितो यंयं यो अघायति यो गवां यस्तनूनाम् RV. 7. 104, 10. 1, 23, 22. 37, 5. 71, 5. (आपः) यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः 10, 9, 2. यो रसस्य हरणाय जातमाविवेश AV. 1, 28, 3. अरण्यादन्य ओषधीः कृण्वन्नो रसेभ्यः 2, 4, 5. 26, 4. 5. 3, 13, 5. ओषधीनाम् 31, 10. 4, 4, 5. 5, 13, 2. 3. Ait. Br. 3, 27. 7, 31. 8, 7. 20. TS. 2, 1, 2, 1. TBr. 1, 3, 10, 8. यज्ञस्य Çat. Br. 1, 6, 2, 1. 2, 4, 2, 1. आपो वा ओषधीनां रसः 3, 6, 1, 7. रसो वृक्षादिवाक्लतात् 14, 6, 9, 21. पयसः Kāṭj. Çr. 25, 11, 21. Nir. 3, 16. 7, 10. 11. Suçr. 1, 210, 10. 212, 20. 213, 15. इतुकाएउ° R. 2, 91, 15. वनस्पतेरपक्वानि फलानि प्रचिनोति यः। स नाप्नोति रसं तेभ्यः Spr. 2714. fg. चूतस्यापि प्रसवरसं फलम् 3562. 3453. अरविन्दमकरन्द° Bhāg. P. 5, 1, 5. 6, 3, 28. नारिकेल° Rāgā-Tar. 4, 155. कुसुमस्य, मधुरस्य Çiç. 72. Varāh. Bṛih. S. 48, 7. रुधिरा° Spr. 3036. चन्दन° R. 5, 5, 12. अलक्त°, अलक्तक°, लाक्षा° 2, 60, 18 (16 Gorr.). Çiç. 9, 46. Ṛv. 1, 5. Çāk. 80. Varāh. Bṛih. S. 43, 18. Kathās. 9, 47. H. 686. मधु नवमनास्वादितरसम् Spr. 94. धातु° Kumāras. 1, 7. ताम्रधातु° Rāgā-Tar. 4, 614. ताम्बूलनिष्ठीवन° Kathās. 70, 8. भृङ्गनाम° 39, 20. गवां रसः (vgl. गोरस) *Milch* MBu. 13, 3525. गोशकृद्रस M. 11, 91. विषस्येव रसं हि पीत्वा *Gifttrank* MBh. 3, 1371. विष° Spr. 518. रसान्भोमान् R. 2, 63, 14. रसं भोमम् R. Gorr. 2, 65, 13. यदत्ते हि रसं (रसान् od. Calc.) रविः Raghu. 1, 18. 4, 66. वर्तयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान्स्त्रियः *Fruchtsäfte* u. s. w. M. 2, 177. 7, 121. 9, 329. 10, 96. 94. 12, 62. Jāgñ. 3, 36. 215. MBu. 13, 353. 2772. 14, 2682. Varāh. Bṛih. S. 41, 4. 48, 41. Bhāg. P. 5, 16, 18. 20. 21. Mārk. P. 120, 17. °धेनु Verz. d. Oxf. H. 35, *b*, 41. 59, *a*, 22. Blut रसमिश्र genossen Kauç. 11. 22. fg. विस्मृतभोजनरस so v. a. *Essen und Trinken* Z. d. d. m. G. 14, 569, 19. रसेनात्रेण पेयेन लेह्यचोष्येण R. 1, 32, 21. रसैरन्नेन पानेन चोष्यलेह्येन R. Gorr. 1, 53, 22. यदानस्य प्रदानस्य कर्तव्यस्य च कर्मणः। तिष्ठमक्रियमाणस्य कालः पिबति तद्रसम्॥ Spr. 337. एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रसः। अपामोषधयो रस ओषधीनां पुरुषो रसः पुरुषस्य वाग्रसो वाच ऋग्रस ऋचः साम रसः साम उद्गीथो रसः Khānd. Up. 1, 1, 2. अवबोध° Bhāg. P. 3, 9, 2. 4, 13, 8 — *α*) poetische Bez. des *Wassers* Taik. 3, 3, 148. H. an. Med. रसं सर्वसमुद्राणाम् R. 4, 27, 3. अन्यसरितामपि रसं समुद्रगाः प्रापयन्त्युदधिम् Spr. 4581. 5028. Megh. 29. उपायरत्नमंजिका नीतिमहावल्ली Kathās. 33, 85. घृत° Spr. 4064. — *β*) *Saft des Zuckerrohrs* Suçr. 2, 149, 5. 224, 20. 241, 9. — *γ*) *Myrrhe* AK. 2, 9, 103. H. 1063, Sch. H. an. Med. Ratnam. 42; vgl. गन्धरस. — *δ*) *Samenfeuchtigkeit* AK. 3, 4, 20, 229. H. an. Med. Halāj. 5, 75. Vaid. a. a. O. ṚV. 1, 105, 2. — *ε*) *Chylus* (aus Speise entstehend und durch die Galle in Blut umgewandelt) AK. 3, 4, 24, 67. Taik. H. 619. fg. H. an. Med. Halāj. 5, 71. 75. Vaid. a. a. O. (wo धातौ st. धाये zu lesen ist). Wise 49. Çāṅkh. Gṛihj. 1, 6, 4. 6. Suçr. 1, 96,

13. Nir. 14, 6. — ζ) *Milch* H. ç. 98 (wohl fälschlich neutr.). — η) *geschmolzene Butter* Halâj. 3, 75. — ϑ) *Mixtur* Verz. d. B. H. No. 903. *Lebenselixir, Zaubertrank;* = घृत Vaiç. a. a. O.: तीरोदमथनं कृत्वा रसं प्राप्स्याम तत्र वै R. 1, 45, 18. 33 (46, 22. 26 Gorr.). कूप° Bhâg. P. 7, 10, 38. रसकूपामृत 59. सिद्धामृत° 61. Râǵa-Tar. 1, 110. — ι) *Giftirank* AK. 3, 4, 30, 229. H. 1193. H. an. Med. Halâj. 3, 24. 5, 75. Vaiç. Daçar. 183, 3. रसार्णव Râǵa-Tar. 6, 72. °दान 322. 8, 448. — κ) *Quecksilber* AK. 2, 9, 100. Trik. H. 1050. H. an. Med. Halâj. 5, 75. Vaiç. (wo, wie schon Stenzler gesehen, पारदे zu lesen ist). Sarvadarçanas. 97, 13. fgg. mystisch als *Quintessens* des menschlichen Körpers betrachtet 99, 11. रसस्य परब्रह्मणो साम्यम् 103, 9. als Çiva's *Same* gedacht 98, 18. — λ) *Mineral* oder *ein metallisches Salz;* aufgezählt in Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761; vgl. उप°, मक्षा°. = क्षेमन् *Gold* Vaiç. a. a. O.; vgl. 2. रसित. — *b*) *Geschmack* (als Haupteigenschaft des *Flüssigen*) AK. 1, 1, 4, 16. 3, 4, 30, 229 (गुण). Trik. H. 1389. H. an. Med. Halâj. 5, 75. Vaiç. a. a. O. सर्वेषां रसानां त्रिद्वैकापनम् Çat. Br. 14, 5, 4, 11. 6, 2, 3. 8, 5. 7, 4, 25. रसनग्राह्यो गुणो रसः Tarkas. 13. Bhâg. P. 2, 2, 29. त्यक्त्वेमं पृथिवी गन्धमापश्च रसमात्मनः MBh. 1, 4161. यावो रसगुणाः M. 1, 78. 3, 126. 12, 98. वेदयेत न शब्दस्पर्शरसान् R. 2, 64, 67. Ragu. 3, 4. व्याप्तः सर्वरसानां हि लवणो रस उत्तमः Spr. 804. नानास्वादु° adj. R. 1, 53, 4 (54, 4 Gorr.). तद्रस adj. Spr. 3522. यद्यभिमतरसा Megh. 50. निरुपम° adj. Spr. 728. सर्वं चोरसम् Bhâg. P. 3, 3, 28. Die Bedd. *Geschmack* und *schmeckender Stoff* oder *Saft* werden häufig nicht auseinandergehalten, Sâṃ. 1, 147. fgg. 130, 12. fgg. द्वाक्षाः षड् रसेधायतो रसाः पुनर्द्रव्याश्रयाः 4, 14. षड्रस 43, 2. MBh. 1, 6058. 3, 138. 9, 2354. R. 1, 32, 28 (33, 23 Gorr.). R. Gorr. 1, 34, 4. Kathâs. 45, 230. 82, 19. Die sechs Hauptarten des *Geschmacks* sind: मधुर, अम्ल, लवण, कटुक, तिक्त und कषाय MBh. 12, 6851. fg. Sâṃ. 1, 133, 17. fgg. 75, 5. fgg. Davon giebt es 63 mögliche Verbindungen 2, 345, 9. fgg. कषायो मधुरस्तिक्तः कटुश्च (also mit Weglassung von लवण) इति नैकधा। भौतिकानां विकारेण रस एको विभिद्यते ॥ Bhâg. P. 3, 26, 32. Pañkat. 61, 11. रसतस् *dem Geschmacke nach* MBh. 13, 3681. 3686. — *a*) Bez. *der Zahl sechs* Çaut. 29. 39. Vâsiṣ. Bhâṣ. S. 98, 1. Ind. St. 8, 167. — β) *Geschmack* so v. a. *Geschmacksorgan, Zunge* Bhâg. P. 4, 29, 11, 8, 20, 27. — γ) *Geschmack* —, *Genuss an, Neigung zu, Verlangen nach, Liebe zu* und *das, worauf der Geschmack, die Neigung, das Verlangen gerichtet sind, Alles was Genuss gewährt und reizt;* = राग AK. 3, 4, 30, 229. H. an. (wo fälschlich रोग gedruckt ist). Med. Halâj. 5, 75. किरणैर्यं रसेन दृष्टम् Paramârthaṣ. in Verz. d. Tub. H. 7, 29. fgg. घनेन नूनं वेदानां कृतमाकरणं रसात् MBh. 12, 13516. Spr. 1836. 2021. Kathâs. 3, 87. 94, 12. रसादते Vikr. 40. रतिरसतस् Kathâs. 47, 120. नीरसायां रसं बाले बालिकायां विकल्पयेत् *vermuthet Liebe bei* Spr. 2635. °क्षणेन Ragu. 9, 35. Megh. 29. कर्पूरोभिन्नाम्रशाके ऽपि वा। बालावल्लमेरात्रिनीमधुनि वा यस्याविशेषो रसः ॥ Spr. 4205. इष्टे वस्तुन्युपचितरसाः Megh. 111. Uttarâr. 19, 5 (26, 2). गन्धर्वदत्ताया पत्रोपरि मकाक्षरः Kathâs. 106, 18. परानुयत्क° Spr. 2845. गोतरसादिव Kathâs. 12, 19. 44, 185. मृगयारसात्, °रसेन 6, 92. 21, 16. 30. 32, 106. 35, 37. °रसमनुभू Ver. in LA. (III) 5, 2. क्रूरार्धनरसात् Kathâs. 86, 137. तत्सेवारससंप्राप्त 27, 136. 10, 3. 22, 151. स्त्रीमात्ररसात् 86, 169. 67, 11. Gîr. 1, 36. Râǵa-Tar. 3, 118. Dhûrtas. in LA. 74, 16. रसिकं रसेन कुर्याद्यशे *durch das, woran er hängt,* Spr. 2197. प्रणयस्य रसं दत्त्वा *Genuss* Harîv. 7411. परापत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः Spr. 4513. क्रीडारसं निर्विशतीव बाल्ये Kumâras. 1, 29. विषयपरारसाः *die aus der Sinnenwelt hervorgehenden Genüsse* Spr. 3035. दिवसाः संभृतरसाः 421. विविधविषयरसस्पर्श Prasn. 2, 10. भवरसास्वादन Spr. 23. भवरसे वैराग्यमाधीयताम् 1412. गजबन्धरसासक्त Kathâs. 12, 6. संगम° Çântiç. in Çatakâv. 39. सारसीकान्तरसानुवर्तिन् Spr. 1490. प्रभूरिकारसः स्वयं नु मदनः *nur an — Geschmack findend* Vikr. 9. Kumâras. 5, 82. Kathâs. 21, 2. तदा चतुर्णामपि प्रीतिरासीत्समरसा द्वयोः *gleichen Genuss gewährend* Ragu. 4, 18. तत्किं शास्त्रकथारसेन Dhûrtas. in LA. 83, 15. कथा रसस्पृताम् Spr. 730. In den folgenden Beispielen hat das Wort sowohl die Bed. *Genuss, Reiz* als auch *Saft:* लावण्यरसनिर्झरिणी (उर्वशी) Kathâs. 17, 7. प्रेमरसासारवर्षिणा घनुषा 11, 49. किं वा काव्यरसः स्वादुः किं वा स्वादीयसी सुधा Spr. 3868. सुभाषितरसास्वाद 3274. — *c*) der *Geschmack* eines Kunstwerks ist sein *Charakter*, sein *Grundton*, seine *Grundstimmung;* es werden acht, neun und auch zehn Rasa angenommen: शृङ्गार, वीर, बीभत्स, रौद्र, हास्य, भयानक, करुण, अद्भुत, शान्त und वात्सल्य (bei neun fällt das letzte fort, bei acht die beiden letzten). AK. 1, 1, 3, 17. 3, 4, 30, 229. H. 293. 304. 327. Gaupa beim Schol. zu H. 294. H. an. Med. Halâj. 1, 90. 93. 5, 75. Daçar. 1, 11. 3, 27. 29. fg. 4, 1. Sin. D. 45. fg. 60. 209. fgg. 247. 377. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 50. fg. 87, *a*, 14. 211, *b*, No. 490. 214, *a*, 21. fgg. 265, *b*, 25. R. 1, 4, 7 (3, 46 Gorr.). Pañkat. V, 44. Vikr. 36. Bhâg. P. 10, 70, 19. पद्यारसम् Mâlav. 20, 20. Auch vom *Grundton* im Charakter eines Menschen: शान्त Râǵa-Tar. 1, 23. करुण° Uttarar. 37, 7 (50 7). 107, 17 (146, 1). हास्यरसाधिदेवता: Mallin. zu Kumâras. 7, 95. fünf Rasa (oder Rati) *Gemüthsstimmungen* (शान्ति, दास्य, साख्य, वात्सल्य und माधुर्य) bilden die fünf Stufen in der Bhakti der Vaishṇava Wilson, Sel. Works 1, 163. — *e*) *ein Metrum* von *4 Mal 7 0 Silben* Ind. St. 8, 107. 111. — *d*) = शब्द 3) Vaiç. a. a. O. — 2. f. रसी *a*) *Feuchtigkeit:* सिन्धुर्द्यौर्वा रसया सिषद्वान् ṚV. 4, 43, 6. रसा दधीत वयसा 8, 61, 13. — *b*) N. pr. eines Flusses: यासी रसा तोदसोद्धः पिपिन्वथुः ṚV. 1, 112, 12. मा वो रसानितभा कुभा नि रीरमत् 5, 53, 9. 10, 75, 6. — *c*) *ein mythischer Strom, der die Erde und Luft umfliesst,* Nir. 11, 25. = घृतस्रुतनदी Comm. पारे णः शर्मन्त्स्या धारया सोम विष्यतः। सदा रसेव विष्टपम् ṚV. 9, 41, 6. कुवित् रसाया अतरः पयांसि 10, 108, 1. 2. यस्य समुद्र रसया सहाहुः 121, 4. सिषक्तु माता मह्ना रसा नः 5, 41, 15. — *d*) *die Unterwelt* (vgl. रसातल): रसां विविशतुस्तूर्णमुदकपूर्वे (so die ed. Bomb.) महोदधौ MBh. 12, 13479. 13503. fg. 13511 (रसानामालय). Bhâg. P. 3, 13, 17. 30. 42. 4, 7, 46. 5, 18, 29. 25, 13. 6, 11, 22. 8, 16, 27. 21, 25. 9, 20, 31. 10, 6, 13 (pl.). 47, 15. 70, 44. — *e*) *die Erde, Land* AK. 2, 1, 2. Trik. 3, 3, 148. H. 937. H. an. Med. Halâj. 2, 1. Spr. 2642. Nalod. 2, 10. — *f*) *Zunge* Trik. H. ç. 122. H. an. Med. — *g*) N. verschiedener Pflanzen: *Clypea hernandifolia W. et A.* AK. 2, 4, 2, 3. H. an. Med. *Boswellia thurifera Roxb.* AK. 2, 4, 2, 11. Trik. H. an. Med. *Panicum italicum Lin.* H. an. Med. *Weinstock* und = काकोली Çabdar. im ÇKDa. — 3) n. *a*) *Myrrhe* Râǵân. im ÇKDa.; vgl. oben u. 1) *a*) γ). — *b*) *Milch;* s. oben u. 1) *a*) ζ). — *c*) *Geschmack* Vâsiṣ. Bhâṣ. S. 51, 31. in diesem wahrscheinlich unächten Kapi-

tel sind Verstösse gegen das Genus nicht selten. — *d*) in der Stelle रसानि तान्युदकानीति Nir. 11,25 ist wohl रसानितभा कुभा नीति (RV. 5,53, 9) zu lesen. — Vgl. ष°, धनु°, धन्व°, धमृत° (m. auch R. 2,30,15. R. Gorr. 1,15,11. Spr. 2840. Kathâs. 22,201. adj. *wie Nectar schmeckend* Pañkat. 248,12), धयो°, इक्षु° (in der 1sten Bed. auch Bhâg. P. 5,16,14), उप°, एक° (adj. *nur einen Geschmack habend* Ragu. 10,17. धनुकूलता *nur an Einem Geschmack findend, nur Einem geltend* Uttarar. 79,6 = 102,3 der neueren Ausg.; so v. a. स्थिर nach dem Comm.; vgl. auch oben 1) *b*) γ), कनक°, काम°, तुद°, गङ्गाधर° (lies *Mixtur* st. *Recept*), गर्भ°, गो°, ज्योती° (Comm. zu R. 2,94,6: ज्योतिर्नक्तं रसः पादपरसः), तोय°, द्रवरसा, नीरस (könnte Pañkat. IV,62 auch *keine Zuneigung habend* bedeuten), पञ्चरसा, पिष्ट°, पुष्प°, प्रणिपात°, बकु°, ब्रह्म° ब्रह्मरसास्व *der Nectar des* Brahman Bhâg. P. 4,4,15), भक्ति° (auch Kathâs. 25,220), भूरि°, मधु°, मद्य° (auch *Wohlgeschmack* R. 3,62,37), मांस°, मूर्ध°, मृगरसा, मोघरस, यत्त°, रत्नो°, रति°, वि°, विष°, श°, सर्व°, सिद्ध°, सु°, सुधा°, स्व°.

रसक (von रस) m. *Brühe, Fleischbrühe* H. 413. तन्मांसैः साधयामास रसकोत्तमम् Kathâs. 39,9. 12. neutr. 16. — Vgl. त्रि°.

रसकर्पूर n. *Quecksilbersublimat* Bhâvapr. im ÇKDa.

रसकर्मन् n. *Behandlung des Quecksilbers, ein mit dem Q. vorgenommener Process* Sarvadarçanas. 100,7. Verz. d. B. H. No. 906.

रसकल्पना f. dass. Verz. d. B. H. 284,4.

रसकल्याणिनीव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34, *a*,36. 41,*a*,2.

रसकुल्या f. N. pr. eines *Flusses* in Kuçadvîpa Bhâg. P. 5,20,16.

रसकेतु m. N. pr. eines Prinzen Çâñgarn. 4.

रसकेसर n. *Kampher* Hin. 104.

रसकोमल n. *ein best. Mineral* (महारस) Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

रसक्रिया f. *Anwendung von Bähmittein* Suçr. 2,124,14. 18. 241,20. 330,18. 331,6. 7. 334,2.

रसगन्ध *Myrrhe*, m. Trik. 2,9,26. n. Râgân. im ÇKDa. — Vgl. गन्धरस.

रसगन्धक m. 1) dass. Çârañg. im ÇKDa. — 2) *Schwefel* Râgân. im ÇKDa.

रसगर्भ n. 1) *ein Collyrium aus dem Safte der Curcuma xanthorrhiza* AK. 2,9,102. H. 1053. — 2) *Mennig* Râgân. im ÇKDa.

रसज्ञ adj. 1) *den Geschmack empfindend; m. das Organ des Geschmacks* Bhâg. P. 3,26,41. — 2) *Sinn habend für das, was wahren Genuss gewährt*, Bhâg. P. 1,5,19.

रसज्ञाक्ष adj. *den Geschmack empfindend* Tarkas. 7.

रसघर्न adj. *ganz aus Saft bestehend* Çat. Br. 14,7,1,13.

रसज्ञ m. *Borax* Râgân. im ÇKDa.

रसचन्द्रिका f. Titel von Çamkara's Commentar zum Abhiñânaçakuntala Verz. d. Oxf. H. 135, *a*, No. 254.

रसचिन्तामणि m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसज्ञ 1) adj. *a*) *in Flüssigkeiten entstehend* H. 1336. M. 11,142. — *b*) *vom Chylus herrührend* Wise 196. — 2) m. *Zucker* Râgân. im ÇKDa. — 3) n. *Blut* (*aus Chylus entstanden*) Çârañg. im ÇKDa.

रसज्ञ 1) adj. (f. घा) *wissend wie Etwas schmeckt* (eig. und übertr.), *erkennend welchen wahren Genuss Etwas gewährt; mit Etwas vertraut:* पयसाम् Ragu. 2,36. फलस्य Mâlav. 59. ऐश्वर्यस्य R. 2,33,7. भगवतः कथायाः Bhâg. P. 3,15,48. सांसारिकेषु सुखेषु Uttarar. 34,10 (45,12). फलमूल° R. 4,37,25. सुखैश्वर्य° 2,33,8. शोक° 3,35,66. अनुराग° Kathâs. 28,75. ohne Ergänzung Spr. 3055. Bhâg. P. 1,1,19. 3,20,6. 4,31,21. 5,3,28. Çiva Çv. — 2) f. घा *Zunge* AK. 2,6,2,42. Trik. 3,3,255. H. 585. Halâj. 2,366. Spr. 4897. — 3) n. dass. Bhâg. P. 4,23,19.

रसज्ञता (von रसज्ञ) f. *die Kenntniss des Geschmacks einer Sache, das Vertrautsein mit Etwas:* तणाच्च गतवानस्मि प्रलापानां रसज्ञताम् Kathâs. 3,102. मालवस्त्रीविलासानां यास्यामो ऽत्र रसज्ञताम् 24,86. यावत्कस्मात्पुष्येषुशराघातरसज्ञताम् 7,16. यथा विन्ध्याटव्यां प्राप्य सांबाधारसज्ञताम् 13,45. Ragu. 3,26. विक्रमैकरसज्ञता Kim. Nîtis. 11,22.

रसज्ञान n. *die Kenntniss der Geschmäcke*, ein Kapitel der Medicin Suçr. 1,8,20; vgl. 153,12.

रसज्येष्ठ m. *der süsse Geschmack* H. 1388.

रसतन्मात्र n. *der Urstoff des Geschmacks* Tattvas. 12. — Vgl. रसमात्र.

रसतम (von रस) m. *der Saft aller Säfte, die Quintessenz aller Quintessenzen* Çat. Br. 9,1,2,36. Kâṭhân. Up. 1,1,2.

रसतरंगिणी f. Titel zweier Werke Verz. d. Oxf. H. 213, *a*, No. 506 (Verz. d. B. H. No. 824). Gild. Bibl. 268.

रसता f. nom. abstr. von रस 1) *b*) δ) Sin. D. 33. 240.

रसतेजस् n. *Blut* H. 621.

रसत्व n. nom. abstr. von रस 1) *a*) ε): कथं रसत्वं (so die od. Bomb.) व्रजति शोणितत्वं कथं पुनः (भुक्तमन्नम्) MBh. 14,571.

रसद 1) adj. *Säfte von sich gebend, Harz ausschwitzend:* नगाः Nalod. 3,14. — 2) m. *Arzt* (*Säfte —, Mixturen reichend*) MBh. 12,4453.

रसदर्पण m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसदालिका f. *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रेक्षु) Râgân. im ÇKDa.

रसदीपिका f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,24.

रसद्राविन् m. *eine Citronenart*, = मधुरत्रम्बीर Râgân. im ÇKDa.

रसधातु m. *Quecksilber* Râgân. im ÇKDa.

1. रसन (von 1. रस्) n. *das Brüllen, Schreien, Dröhnen* u. s. w. Trik. 3,3,255. H. an. 3,402. Med. n. 112. क्षितेः *das Dröhnen der Erde* Varâh. Bṛh. S. 46,86. मण्डूकानाम् *das Quaken der Frösche* 28,4.

2. रसन (von रस्य) 1) m. *das Phlegma* (कफ), sofern es in der Zunge den *Geschmack* bewirkt, Çârîr. Sâṁkh. 1,5,11. Wise 46. — 2) f. घा *a*) *Zunge* AK. 2,6,2,42. Trik. 3,3,255. 5,21. H. 585. an. 3,402. Med. n. 112. Halâj. 2,366. Maitrâjop. 6,30. MBh. 14,1111. Suçr. 2,402,10. Kathâs. 14,90. 50,5. प्रसार्य रसनां पथि 69,25. Bhâg. P. 3,4,19. Bhâsâṁkîp. 100. Sarvadarçanas. 148,7. °मल Hin. 193. — *b*) N. zweier Pflanzen, = राम्ना Trik. 3,3,255. H. an. Med. = गन्धभद्रा Çârañg. im ÇKDa. — 3) n. *das Schmecken, Geschmack; Geschmacksorgan* Trik. 3,3,255. 5,21. H. an. Med. Jîvân. 3,77. Bhâv. 15,9. MBh. 12,6335. 8983. Suçr. 1,243, 7. 8. रसनेन्द्रिय 30,73. Mîm. P. 39,57. इन्द्रियं रसनाख्यं रसनं जिह्वाभवर्ति Tarkas. 7. 13. Sâṁkhyas. 26. Bhâsâṁkîp. 39. Bhâg. P. 2,2,29. 3,26, 12. 48. 5,7,26. 11,9,20. fg. *das Empfinden, Fühlen* Sin. D. 244. 271. 24, 11. 70,8. — Vgl. रशना.

13. Nir. 14, 6. — ζ) *Milch* H. ç. 98 (wohl fälschlich neutr.). — η) *geschmolzene Butter* Halâj. 5, 75. — ϑ) *Mixtur* Verz. d. B. H. No. 963. *Lebenselixir, Zaubertrank;* = घृत Vaić. a. a. O.: क्षीरोदमथने कृत्वा रसं प्राप्स्याम तत्र वै R. 1, 45, 18. 23 (46, 22. 26 Gorr.). कूप° Bhâg. P. 7, 10, 58. रसकूपामृत 59. सिद्धामृत° 61. Râǵa-Tar. 1, 110. — ι) *Gifttrank* AK. 2, 4, 20, 229. H. 1193. H. an. Med. Halâj. 3, 24. 5, 75. Vaić. Daçar. 185, 3. रसार्णव Râǵa-Tar. 6, 72. °दान 322. 8, 448. — κ) *Quecksilber* AK. 2, 9, 100. Trik. H. 1050. H. an. Med. Halâj. 5, 75. Vaić. (wo, wie schon Stenzler gesehen, पारदे zu lesen ist). Sarvadarçanas. 97, 13. fgg. mystisch als *Quintessenz* des menschlichen Körpers betrachtet 99, 11. रसस्य परब्रह्मणो साम्यम् 103, 9. als Çiva's *Same* gedacht 98, 18. — λ) *Mineral* oder *ein metallisches Salz;* aufgezählt in Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761; vgl. उप°, महा°. = हेमन् *Gold* Vaić. a. a. O.; vgl. 2. रसित. — *b*) *Geschmack* (als Haupteigenschaft des *Flüssigen*) AK. 1, 1, 4, 16. 3, 4, 20, 229 (गुण). Trik. H. 1389. H. an. Med. Halâj. 5, 75. Vaić. a. a. O. सर्वेषां रसानां त्रिद्धैकायनम् Çat. Br. 14, 5, 4, 11. 6, 2, 3. 9, 3. 7, 4, 25. रसनयाह्यो गुणो रसः Tarkas. 13. Bhâg. P. 2, 2, 29. त्यक्तेन पृथिवी गन्धमापश्च रसमात्मनः MBh. 1, 4161. आपो रसगुणाः M. 1, 78. 5, 128. 12, 98. वेदेषु न शब्दस्पर्शरसान् R. 2, 64, 67. Raçu. 3, 4. ब्यातः सर्वरसानां हि लवणो रस उत्तमः Spr. 804. नानास्वादु° adj. R. 1, 53, 4 (54, 4 Gorr.). तद्रस adj. Spr. 3522. यभिमतरसा Megh. 50. निरुपम° adj. Spr. 728. यवं चोरुरसम् Bhâg. P. 3, 3, 28. Die Bedd. *Geschmack* und *schmeckender Stoff* oder *Saft* werden häufig nicht auseinandergehalten, Suçr. 1, 147. fgg. 130, 12. fgg. आकारः षड्डु रसेष्वायत्तो रसाः पुनर्द्रव्याश्रयाः 4, 14. षड्रस 43, 3. MBh. 1, 6658. 3, 138. 9, 2354. R. 1, 52, 23 (53, 22 Gorr.). R. Gorr. 1, 54, 4. Kathâs. 45, 230. 82, 19. Die sechs Hauptarten des *Geschmacks* sind: मधुर, अम्ल, लवण, कटुक, तिक्त und कषाय MBh. 12, 6851. fg. Suçr. 1, 133, 17. fgg. 75, 5. fgg. Davon giebt es 63 mögliche Verbindungen 2, 343, 9. fgg. कषायो मधुरस्तिक्तः कटुश्च (also mit Weglassung von लवण) इति नैकधा। भौतिकानां विकारेण रस एको विभिद्यते ॥ Bhâg. P. 3, 26, 42. Pañkat. 61, 11. रसतस् *dem Geschmacke nach* MBh. 13, 5681. 5686. — *a*) Bez. *der Zahl sechs* Çaut. 29. 39. Varâh. Bṛh. S. 98, 1. Ind. St. 8, 167. — β) *Geschmack* so v. a. *Geschmacksorgan, Zunge* Bhâg. P. 4, 29, 11, 8, 20, 27. — γ) *Geschmack —, Genuss an, Neigung zu, Verlangen nach, Liebe zu* und *das, worauf der Geschmack, die Neigung, das Verlangen gerichtet sind, Alles was Genuss gewährt und reizt;* = राग AK. 3, 4, 20, 229. H. an. (wo fälschlich रोग gedruckt ist). Med. Halâj. 5, 75. हिरण्यं रसेन दृष्टम् Paramârthaçâr. in Verz. d. Tub. H. 7, 29. fgg. यनेन नूनं वेदानां कृतमाकरणं रसात् MBh. 12, 13516. Spr. 1836. 2921. Kathâs. 3, 37. 94, 12. रसादते Vikr. 40. यतिरसतम् Kathâs. 47, 130. नीरसायां रसं बालो बालिकायां विकल्पयेत् *vermuthet Liebe bei* Spr. 2635. °क्षणेन Raçu. 9, 35. Megh. 29. कर्पूरोन्मिश्रमशकेऽपि वा। बालावल्कमेरोन्नितीमधुनि वा यस्याविशेषो रसः ॥ Spr. 4205. इष्टे वस्तुन्युपचितरसाः Megh. 111. Uttarâr. 19, 5 (26, 2). गन्धर्वदत्ताया पत्रोपरि मकाक्षसः Kathâs. 106, 18. परानुयक्त° Spr. 2845. गोतरसादिव Kathâs. 12, 19. 44, 188. मृगयारसात्, °रसेन 6, 93. 21, 16. 30. 32, 106. 35, 37. °रसमनुभूय Ver. in LA. (III) 5, 2. कुरार्चनरसात् Kathâs. 86, 137. तत्सेवारससंप्राप्त 27, 136. 10, 2. 22, 181. स्त्रीमात्ररसात् 86, 169. 67, 11. Gît. 1, 36. Râǵa-Tar. 3, 118. Duṛṭar. in LA. 74, 16. रसिकं रसेन कुर्याद्वशे *durch das, worum er hängt,* Spr. 2197. प्रणयस्य रसं दत्त्वा *Genuss* Harîv. 7411. प्रायशः प्रीतेः कवयिव रसं वेत्ति पुरुषः Spr. 4513. क्रीडारसं निर्विशतीव बाल्ये Kumâras. 1, 29. विषयरसाः *die aus der Sinnenwelt hervorgehenden Genüsse* Spr. 3035. दिवसाः संभृतरसाः 421. विविधविषयरसस्पर्श Prab. 2, 10. भवरसास्वादन Spr. 23. भवरसे वैराग्यमाधीयताम् 1412. गन्धरसासक्त Kathâs. 12, 6. संगम° Çântiç. in Çatakâv. 39. साक्षसैकात्तरसानुवर्तिन् Spr. 1490. भृङ्गीकरसः स्वयं नु मदनः *war an — Geschmack findend* Vikr. 9. Kumâras. 5, 82. Kathâs. 21, 3. तदा चतुष्मतो प्रीतिरासीत्समरसा ह्योः *gleichen Genuss gewährend* Raçu. 4, 18. तत्किं शास्त्रकथारसेन Duṛṭar. in LA. 83, 15. कथा रसस्पीताम् Spr. 730. In den folgenden Beispielen hat das Wort sowohl die Bed. *Genuss, Reiz* als auch *Saft:* लावण्यरसनिर्कारिणी (उर्वशी) Kathâs. 17, 7. प्रेमरसासारवर्षिणा चतुषा 11, 49. किं वा काव्यरसः स्वादुः किं वा स्वादीयसी सुधा Spr. 3868. सुभाषितरसास्वाद 3274. — *δ*) der *Geschmack* eines Kunstwerks ist sein *Charakter*, sein *Grundton*, seine *Grundstimmung;* es werden acht, neun und auch zehn Rasa angenommen: शृङ्गार, वीर, बीभत्स, रौद्र, हास्य, भयानक, करुण, अद्भुत, शान्त und वात्सल्य (bei neun fällt das letzte fort, bei acht die beiden letzten). AK. 1, 1, 3, 17. 3, 4, 20, 229. H. 295. 304. 327. Gaupa beim Schol. zu H. 294. H. an. Med. Halâj. 1, 90. 92. 5, 75. Daçar. 1, 11. 3, 27. 29. fg. 4, 1. Sâh. D. 45. fg. 60. 209. fgg. 247. 577. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 50. fg. 87, *a*, 14. 211, *b*, No. 499. 214, *a*, 21. fgg. 265, *b*, 25. R. 1, 4, 7 (3, 46 Gorr.). Pañkat. V, 44. Vikr. 36. Bhâg. P. 10, 70, 19. यवारसम् Milav. 20, 20. Auch vom *Grundton* im Charakter eines Menschen: शान्त Râǵa-Tar. 1, 23. करुण° Uttarâr. 37, 7 (50 7). 107, 17 (146, 1). हास्यरसाधिदेवता: Mallin. zu Kumâras. 7, 95. fünf Rasa (oder Rati) *Gemüthsstimmungen* (शान्ति, हास्य, साख्य, वात्सल्य und माधुर्य) bilden die fünf Stufen in der Bhakti der Vaishṇava Wilson, Sel. Works 1, 163. — *ε*) *ein Metrum* von *4 Mal 7 Silben* Ind. St. 8, 107. 111. — *ζ*) = शब्द (?) Vaić. a. a. O. — 2. f. रसी *a*) *Feuchtigkeit:* सिन्धुर्द्यौर्वा रसया सिञ्चदाभिः ṚV. 4, 43, 6. रसा दधीत वयसम् 8, 61, 13. — *b*) N. pr. eines Flusses: यासी रसी लोदसीद्रः पिपिन्वषुः ṚV. 1, 112, 12. मा वो रसानितभा कुभा नि रीरमत् 5, 53, 9. 10, 75, 6. — *c*) *ein mythischer Strom, der die Erde und Luft umfliesst,* Nir. 11, 25. = यक्षरिक्षनदी Comm. परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम् ṚV. 9, 41, 6. कयं रसाया यतरः पयांसि 10, 108, 1. 2. यस्य समुद्र रसया सहाहुः 121, 4. सिषक्तु माता मही रसा नः 5, 41, 15. — *d*) *die Unterwelt* (vgl. रसातल): रसां विविशतुस्तूर्णमुदकपूर्वे (so die ed. Bomb.) महोदधौ MBh. 12, 13479. 13503. fg. 13511 (रसानामालय). Bhâg. P. 3, 13, 17. 30. 42. 4, 7, 46. 5, 18, 29. 25, 12. 6, 11, 23. 8, 16, 27. 21, 25. 9, 20, 31. 10, 6, 12 (pl.). 47, 15. 70, 44. — *e*) *die Erde, Land* AK. 2, 1, 2. Trik. 3, 3, 448. H. 937. H. an. Med. Halâj. 2, 1. Spr. 2642. Nalod. 2, 10. — *f*) *Zunge* Trik. H. ç. 122. H. an. Med. — *g*) N. verschiedener Pflanzen: *Clypea hernandifolia W. et A.* AK. 2, 4, 2, 3. H. an. Med. *Boswellia thurifera* Roxb. AK. 2, 4, 4, 11. Trik. H. an. Med. *Panicum italicum* Lin. H. an. Med. *Weinstock* und = काकोली Çabdar. im ÇKDa. — 3) n. *a*) *Myrrhe* Râǵân. im ÇKDa.; vgl. oben u. 1) *a*) γ). — *b*) *Milch;* s. oben u. 1) *a*) ζ). — *c*) *Geschmack* Varâh. Bṛh. S. 51, 81. in diesem wahrscheinlich unächten Kapi-

tel sind Verstösse gegen das Genus nicht selten. — *d*) in der Stelle रसानि तान्युदकानीति Nir. 11,28 ist wohl रसानितमा कुभा नीति (RV. 5,53, 9) zu lesen. — Vgl. य°, धनु°, घन°, घमृत° (m. auch R. 2,30,15. R. Gorr. 1,15,11. Spr. 2840. Kathâs. 22,201. adj. *wie Nectar schmeckend* Pañkat. 248,12), घयो°, इतु° (in der 1sten Bed. auch Bhâg. P. 5,16,14), उप°, एक° (adj. *nur einen Geschmack habend* Ragu. 10,17. धनुकूलता *nur an Einem Geschmack findend, nur Einem geltend* Uttarar. 79,6 = 102,8 der neueren Ausg.; so v. a. स्थिर nach dem Comm.; vgl. auch oben 1) *b*) γ), कनक°, काम°, कुङ्क°, गङ्गाधर° (lies *Mixtur* st. *Recept*), गर्भ°, गो°, ज्योती° (Comm. zu R. 2,94,6: ज्योतिर्नक्तत्रं रसः पादपरसः, तोय°, द्रवरसा, नीरस (könnte Pañkat. IV,62 auch *keine Zuneigung habend* bedeuten), पञ्चरसा, पिष्ट°, पुष्प°, प्रणिपात°, बङ्ग°, ब्रह्म° (ब्रह्मरसास्व *der Nectar des* Brahman Bhâg. P. 4,4,15), भक्ति° (auch Kathâs. 25,230), भूरि°, मधु°, मद्य° (auch *Wohlgeschmack* R. 3,62,37), मांस°, मूर्ध°, मृगरसा, मेघरस, यत्त°, रज्जो°, रति°, वि°, विष°, स°, सर्व°, सिद्ध°, सु°, सुधा°, स्व°.

रसक (von रस) m. *Brühe, Fleischbrühe* H. 413. तन्मांसैः साधयामास रसकोत्तमम् Kathâs. 39,9. 12. neutr. 16. — Vgl. त्रि°.

रसकर्पूर n. *Quecksilbersublimat* Bhâvapr. im ÇKDa.

रसकर्मन् n. *Behandlung des Quecksilbers, ein mit dem Q. vorgenommener Process* Sarvadarçanas. 100,7. Verz. d. B. H. No. 906.

रसकल्पना f. dass. Verz. d. B. H. 284,4.

रसकल्याणिनीव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34, a,30. 41,a,3.

रसकुल्या f. N. pr. eines *Flusses* in Kuçadvîpa Bhâg. P. 5,20,16.

रसकेतु m. N. pr. eines Prinzen Çâṅkarâm. 4.

रसकेसर n. *Kampher* Hit. 104.

रसकोमल n. *ein best. Mineral* (मक्षिक) Verz. d. Oxf. H. 321,a,No. 761.

रसक्रिया f. *Anwendung von Bähmittein* Suçr. 2,124,14. 18. 241,20. 330,12. 331,6. 7. 344,1.

रसगन्ध *Myrrhe*, m. Trik. 2,9,36. n. Râgân. im ÇKDa. — Vgl. गन्धरस.

रसगन्धक m. 1) dass. Çabdar. im ÇKDa. — 2) *Schwefel* Râgân. im ÇKDa.

रसगर्भ n. 1) *ein Collyrium aus dem Safte der Curcuma xanthorrhiza* AK. 2,9,102. H. 1053. — 2) *Mennig* Râgân. im ÇKDa.

रसज्ञ adj. 1) *den Geschmack empfindend; m. das Organ des Geschmacks* Bhâg. P. 3,26,41. — 2) *Sinn habend für das, was wahren Genuss gewährt*, Bhâg. P. 1,5,19.

रसज्ञाक्क adj. *den Geschmack empfindend* Tarkas. 7.

रसघर्न adj. *ganz aus Saft bestehend* Çat. Br. 14,7,2,13.

रसज्ञ m. *Borax* Râgân. im ÇKDa.

रसचन्द्रिका f. Titel von Çamkara's Commentar zum Abhiǵñânaçakuntala Verz. d. Oxf. H. 135,a, No. 254.

रसचिन्तामणि m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसज्ञ 1) adj. *a*) *in Flüssigkeiten entstehend* H. 1356. M. 11,143. — *b*) *von Chylus herrührend* Wise 196. — 2) m. *Zucker* Râgân. im ÇKDa. — 3) n. *Blut (aus Chylus entstanden)* Çabdar. im ÇKDa.

रसज्ञ 1) adj. (f. घा) *wissend wie Etwas schmeckt* (eig. und übertr.), *erkennend welchen wahren Genuss Etwas gewährt; mit Etwas vertraut:* पयसाम् Ragu. 2,36. फलस्य Milav. 39. ऐश्वर्यस्य R. 2,33,7. भगवतः कथायाः Bhâg. P. 3,15,48. सांसारिकेषु सुखेषु Uttarar. 34,10 (45,12). फलमूल° R. 4,37,25. सुखैश्वर्य° 2,33,8. शोक° 3,35,66. धनुराग° Kathâs. 28,75. ohne Ergänzung Spr. 3055. Bhâg. P. 1,1,19. 3,20,6. 4,31,21. 6,3,23. Çiva Çiv. — 2) f. घा *Zunge* AK. 2,6,2,42. Trik. 3,3,255. H. 585. Hall. 2,366. Spr. 4897. — 3) n. dass. Bhâg. P. 4,25,42.

रसज्ञता (von रसज्ञ) f. *die Kenntniss des Geschmacks einer Sache, das Vertrautsein mit Etwas:* तणाच्च गतवानस्मि प्रलापानां रसज्ञताम् Kathâs. 5,102. मालवस्त्रीविलासानां पास्यामो ऽत्र रसज्ञताम् 24,86. यावकस्मात्पुष्पेषुशराघातरसज्ञताम् 7,16. यथा विन्ध्याटवी प्राय सा संबाधरसज्ञताम् 13,65. Ragu. 3,26. विक्रमैकरसज्ञता Kir. Nitis. 11,33.

रसज्ञान n. *die Kenntniss der Geschmäcke*, ein Kapitel der Medicin Suçr. 1,8,20; vgl. 153,12.

रसज्येष्ठ m. *der süsse Geschmack* H. 1388.

रसतन्मात्र n. *der Urstoff des Geschmacks* Tattvas. 12. — Vgl. रसमात्र.

रसतम (von रस) m. *der Saft aller Säfte, die Quintessens aller Quintessenzen* Çat. Br. 9,1,2,36. Kâṭh. Up. 1,1,3.

रसतरंगिणी f. Titel zweier Werke Verz. d. Oxf. H. 213, a, No. 306 (Verz. d. B. H. No. 824). Gild. Bibl. 268.

रसता f. nom. abstr. von रस 1) *b*) *δ*) Sîn. D. 33. 240.

रसतेजस् n. *Blut* H. 621.

रसत्व n. nom. abstr. von रस 1) *a*) ε): कथं रसत्वं (so die ed. Bomb.) व्रजति शोणितत्वं कथं पुनः भुक्तमन्नम् MBh. 14,671.

रसद 1) adj. *Säfte von sich gebend, Harz ausschwitzend:* नगाः Nalod. 3,14. — 2) m. *Arzt (Säfte —, Mixturen reichend)* MBh. 12,4453.

रसदर्पण m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसदालिका f. *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रेक्षु) Râgân. im ÇKDa.

रसदीपिका f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 316,b,24.

रसद्राविन् m. *eine Citronenart*, = मधुरनिम्बीर Râgân. im ÇKDa.

रसधातु m. *Quecksilber* Râgân. im ÇKDa.

1. रसन (von 1. रस्) n. *das Brüllen, Schreien, Dröhnen* u. s. w. Trik. 3,3,255. H. an. 3,402. Med. n. 112. क्षितेः *das Dröhnen der Erde* Vaiç. Bhr. S. 46,88. मण्डूकानाम् *das Quaken der Frösche* 28,4.

2. रसन (von रस्य) 1) m. *das Phlegma* (कफ), sofern es in der Zunge den *Geschmack* bewirkt, Çiñâs. Saṅh. 1,3,11. Wise 46. — 2) f. घा *a*) *Zunge* AK. 2,6,2,42. Trik. 3,3,255. 5,21. H. 585. an. 3,402. Med. n. 112. Hall. 2,366. Maitrâyaṇ. 6,20. MBh. 14,1111. Suçr. 2,402,10. Kathâs. 14,90. 30,5. प्रसार्य रसनां मणि 69,25. Bhâg. P. 3,4,19. Bhâvapr. 100. Sarvadarçanas. 148,7. °मल Hit. 193. — *b*) N. zweier Pflanzen, = राम्ना Trik. 3,3,255. H. an. Med. = गन्धभद्रा Çabdar. im ÇKDa. — 3) n. *das Schmecken, Geschmack; Geschmacksorgan* Trik. 3,3,255. 5,21. H. an. Med. Jiñâs. 3,77. Bhâg. 15,9. MBh. 12,6235. 8982. Suçr. 1,243, 7. 8. रसनेन्द्रिय 30,73. Mitâx. P. 39,57. इन्द्रियं रसनाख्यं रसनं जिह्वाग्रवर्ति Tarkas. 7. 13. Siddhânt. 26. Bhâvapr. 39. Bhâg. P. 2,2,29. 3,26, 13. 48. 5,7,26. 11,8,20. fg. *das Empfinden, Fühlen* Sîn. D. 244. 271. 24, 11. 70,8. — Vgl. रसना.

रसनाथ m. *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDa.

रसनायक m. Bein. Çiva's Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. रसराज, रसेन्द्र, रसेश्वर.

रसनारद (र° *Zunge* + रद) m. *Vogel* H. ç. 186.

रसनालिक् m. *Hund (mit der Zunge leckend)* Trik. 2,10,3. H. 1280.

रसनीय (von रसय्) adj. *was geschmeckt wird* MBh. 12,12757.

रसनेत्रिका f. *Realgar, rother Arsenik* H. 1060.

रसन्तर्म = रसतम und nasalirt um einen Anklang an रथंतर zu gewinnen, Çat. Br. 9,1,2,36.

रसपद्धति f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 970.

रसपाकज n. *Zucker* Râǵan. im ÇKDa.

रसपाचक m. *Koch* MBh. 4,1271.

रसपारिजात Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 968.

रसपुष्प n. *ein best. Quecksilberpräparat* Wilson.

रसप्रदीप m. 1) Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,36. Hall 18. — 2) Titel eines rhetorischen Werkes Verz. d. B. H. No. 823.

रसप्रबन्ध m. *ein dichterisches Product*, insbes. *ein Drama*; am Ende eines adj. comp. f. आ Vikr. 3,7.

रसफल m. *Cocosnussbaum* Çabdar. im ÇKDa.

रसबन्धन n. wohl *ein best. Theil der Eingeweide* R. 5,25,46.

रसभव n. *Blut (aus Chylus entstehend)* H. 621.

रसभेद m. MBh. 5,1705 nach Nilak. *ein best. Quecksilberpräparat* (र-सभेदः पारदगुटिकाविशेषश्चित्तामणिनंतश्चित्तितवस्तुप्रदः).

रसभोजन adj. von *Flüssigkeiten sich nährend* Varâh. Bṛh. S. 68,109.

रसमञ्जरी f. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Colebr. Misc. Ess. II, 93. Verz. d. B. H. No. 597. fgg. 1383. Verz. d. Oxf. H. 213,*b*, No. 507. °प्रकाश 508.

रसमय (von रस) adj. (f. ई) 1) *aus Saft* —, *Flüssigkeit gebildet*, — *bestehend*: पृथग्रसमयैः पयः *Milch aus je einem besondern Saft gebildet* Bhâg. P. 4,18,25. क्रीडारसमयस्य शेषवाम्बुधेः *aus dem Wasser «Spiel» bestehend* Kathâs. 28,99. — 2) *aus Quecksilber (Quintessenz) bestehend*: तनु Sarvadarçanas. 99,6. — 3) *dessen Wesen Geschmack ist*: घस्मम् Bhâg. P. 3,5,34. — 4) *geschmackvoll, voller Reize*: गिर् Verz. d. Oxf. H. 147,*b*, No. 315. मार्कण्डेयपुराण Mârk. P. 137,7.

रसमल *der Unrath des Körpers* Kap. 2,28. — Vgl. रसमूला.

रसमहार्णव m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. 246,*a*, No. 619.

रसमातृका f. *Zunge (Mutter des Geschmacks)* H. ç. 121.

रसमात्र n. = रसतन्मात्र Bhâg. P. 3,26,41. 44.

रसमूला f. *ein Prâkrit-Metrum von 4 Mal 24 Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 157 (III, 51). im Text रसमल, im Index wie bei uns.

रसय् s. u. 2. रस्.

रसयति (von रसय्) f. *das Schmecken* Bṛh. Âr. Up. 4,3,25. रसात् st. रसयतेः Çat. Br. 14,7,1,25.

रसयामल n. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 310,*b*, 23.

रसयितर् (von रसय्) nom. ag. *Schmecker* Çat. Br. 14,7,1,25. 2,18. Maitrâyaṇ. 6,7. 11.

रसयितव्य (wie oben) adj. *schmeckbar, was geschmeckt wird* Prâçnop. 4,3.

रसयोग m. pl. *künstlich gemischte* —, *präparirte Säfte* MBh. 13,3681.

रसरत्न n. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 971.

रसरत्नदीपिका f. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 213,*b*,3.

रसरत्नप्रदीप m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 972. 941. Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,36.

रसरत्नहार m. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 44.

रसरत्नाकर m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 126,*a*,13. eines medicinischen Verz. d. B. H. No. 963.

रसरत्नावली f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसरहस्य n. desgl. ebend.

रसराज m. 1) *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDa. Sarvadarçanas. 102,7. Verz. d. Oxf. H. 320,*a*,32. — 2) = रसाञ्जन Râǵan. im ÇKDa.

रसराजलक्ष्मी f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761.

रसराजशेखर m. desgl. Verz. d. B. H. No. 965.

रसराजसेन m. desgl. ebend. No. 941.

रसलेख m. *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDa.

रसवत्ता (von रसवत्) f. *Saftigkeit, Schmackhaftigkeit, die Eigenschaft des Geschmackvollen* Sin. D. 6,10. Vâsavad. 7,3.

रसवत् (von रस) 1) adj. P. 5,2,95. *saftig, schmackhaft, kräftig*: पयस् ṚV. 5,44,13. तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् (सोमः) 6,47,1. AV. 18,4,23. Çat. Br. 1,9,2,7. 3,9,4,5. सस्यानि MBh. 1,2503. 1238. फलानि 1239. 4,922. R. 7,84,7. Hariv. 3709. 12667. R. 6,112,53. Kâm. Nîtis. 11,73. Spr. 3079, v. l. Mârk. P. 61,32. 120,16. मधु R. 5,60,9. Ragh. 8,67. भक्ष्यैर्भोज्यैश्च पेयैश्च रसवद्भिः MBh. 1,3068. पान 7,4246. तोय 14,1632. R. 3,22,24. Ragh. 11,11. स्वादिष्ठं मधुनो घृताच्च रसवत्प्रस्रवत्यक्षरम् Spr. 8374. यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् 2381. als Eigenschaft eines Oels Suçr. 1,184,4. चमस *mit Saft gefüllt* Kâvç. 20. क्षेत्र *die gehörige Feuchtigkeit habend* MBh. 5,2822. रसवती मुदा *überfliessend vor Freude* Pârâç. 1,14,69. Bein. des Agni TS. 2,2,4,1. *mit Reizen versehen, reizend, geschmackvoll*: कामाः Hariv. 12664. शब्दाद्याः Sin. D. 4,7. पद्म 6,9. घलंकार 733. Uttarar. 86,15 (111,3). — 2) f. वती a) *Küche* AK. 2,9,27. H. 998. Hall. 2,140. — b) Titel eines erotischen Gedichts Verz. d. B. H. No. 396. einer Ergänzung zum Saṁkshiptasâra Verz. d. Oxf. H. 174,*b*,6.

रसवह् adj. *Saft führend* Suçr. 1,324,3. 6.

रसविक्रयिन् m. *Verkäufer von Säften*, — *Flüssigkeiten* Varâh. Bṛh. S. 10,8. क्ष्यादि° M. 3,159.

रसविद् adj. *den Geschmack kennend*, — *empfindend*, *einen feinen Geschmack* (in übertr. Bed.) *habend* Bhâg. P. 4,29,11. 1,18,14.

रसशास्त्र n. *Alchemie* Sarvadarçanas. 100,11.

रसशुक्त s. u. शुक्त.

रसशोधन 1) m. *Borax* H. 944. — 2) n. *das Reinigen des Quecksilbers* Verz. d. Oxf. H. 321, No. 761.

रससंग्रहसिद्धान्त m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 969.

रससागर m. Titel 1) eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761. — 2) eines rhetorischen ebend. 327, *b*.

रससार Titel eines Commentars Hall 67.

रससिद्ध adj. *der durch Quecksilber Vollkommenheit erlangt hat, mit der Alchemie vertraut* Rāǵa-Tar. 4, 246. Sarvadarçanas. 98, 14. in dieser Bed. und zugleich *mit den poetischen* Rasa *vertraut* Spr. 940.

रससिद्धान्तसागर m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 320, *b*, 2 v. u.

रससिद्धि f. *durch Quecksilber erlangte Vollkommenheit, das Vertrautsein mit der Alchemie* Rāǵa-Tar. 4, 363.

रससिन्धु Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रससुधाकर m. Titel eines rhetorischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 327, *b*.

रससुधाम्भोधि m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

रससेवान n. *Mennig* Çabdaś. im ÇKDr.

रसस्तव m. Titel eines alchemistischen Werkes Sarvadarçanas. 98, 11. fg. 100, 20.

रसाकर (रस + आ°) m. Titel eines rhetorischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 126, *a*, 18.

रसाखन (रसा + खन) m. *Hahn (in der Erde scharrend)* Çabdaś. im ÇKDr.

रसाग्र n. = रसाञ्जन Rāǵān. im ÇKDr.

रसाञ्जन (रस + 2. अञ्जन) n. *Kupfervitriol* (vielleicht auch *andere Salze*) und *ein daraus unter Zusatz von Curcuma bereitetes Kollyrium* AK. 2, 9, 103. Suçr. 1, 46, 13. 52, 21. 59, 13. 376, 9. 2, 13, 9. 62, 8. 224, 20. 326, 7. 333, 19. 333, 4. 368, 1.

रसाढ्य (रस + आ°) 1) adj. *saftreich.* — 2) m. *Spondias mangifera* Rāǵān. im ÇKDr.

रसातल (र° + तल) n. 1) *Unterwelt, Hölle* AK. 1, 2, 1, 1. H. 1363. 1525. Hall. 3, 1. MBh. 12, 13506. रसातलतलं गतः 13, 328. R. 1, 1, 64 (67 Gorr.). 40, 12. R. Gorr. 1, 4, 142. 3, 31, 25. 5, 54, 19. 78, 9. Ragh. 12, 70. 13, 3. Kumāras. 6, 68. Spr. 965. 1240. 4255. Kathās. 22, 253. LA. (III) 90, 6. Rāǵa-Tar. 3, 55. 4, 502. Bhāg. P. 1, 3, 7. 3, 18, 1. Mārk. P. 71, 15. 106, 46. चतुर्थं Kathās. 45, 282. पञ्चम 325. मेदिनीं सप्तमीं सातलाम् 99, 41. N. einer der 7 *Unterwelten:* रसातलं नाम सप्तमं पृथिवीतलम् MBh. 5, 3602. fgg. Ārjabh. Up. in Ind. St. 2, 178. Bhāg. P. 2, 5, 41. 5, 24, 7. 30. VP. 204, N. 1. Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 46. Paṇḍar. 2, 2, 43. Vaidjan. (Allah.) No. 70. Vgl. क्रीडा° und पाताल. — 2) *Bez. des 4ten astrologischen Hauses* Varāh. Bṛh. 23, 3. 10.

रसात्मक (von रस + आत्मन्) 1) adj. *dessen Wesen Saft, Flüssigkeit, Nectar ist:* उदपाति Kumāras. 5, 22. — 2) *dessen Wesen Geschmack ist:* शब्दम् Bhāg. P. 2, 5, 28; vgl. रसना रसैकात्मिका Verz. d. Oxf. H. 101, *a*, 6. — 3) *dessen Wesen Schmackhaftigkeit ist, geschmackvoll:* वाक्यं रसात्मकं काव्यम् Sāh. D. 3.

रसादान (रस + 1. आदान) n. *das Ansichziehen der Flüssigkeiten, das Austrocknen, Ausdörren* H. 394.

रसाधार (रस + आ°) m. *die Sonne (Behälter der Flüssigkeiten)* Çabdak. im ÇKDr.

रसाधिक (रस + अ°) 1) adj. *geschmackvoll oder reich an Genüssen:* भवनेषु रसाधिकेषु Çiç. 179. — 2) m. *Borax* Rāǵān. im ÇKDr. — 3) f. आ *eine best. Pflanze,* = काकोलीद्राक्षा ebend.

रसाधिपत्य (रसा + आ°) n. *die Herrschaft über die Unterwelt* Bhāg. P. 5, 11, 25. 10, 16, 37. 11, 14, 14.

रसाध्यक्ष (रस + अ°) m. *ein Aufseher über die Säfte, — Flüssigkeiten* Schol. zu R. bei Gorr. VII, S. 341.

रसान्तर (रस + अ°) n. 1) *ein anderer Geschmack, ein anderer Genuss:* लब्धदिव्यरसास्वादः को हि रज्येद्रसान्तरे Kathās. 18, 346. — 2) *eine verschiedene Gemüthsstimmung, Wechsel der Stimmung* Kumāras. 7, 91. Sāh. D. 220.

रसापायिन् m. *Hund (mit der Zunge trinkend)* H. ç. 180.

रसाभास (रस + आ°) m. *der blosse Schein einer Gemüthsstimmung, die Uebertragung einer Gemüthsstimmung auf nicht-fühlende Wesen; das Erscheinenlassen einer Gemüthsstimmung an unpassender Stelle* Verz. d. Oxf. H. 211, *b*, No. 499. Sāh. D. 7, 13; vgl. 247. fg.

रसाभिव्यञ्जिका f. Titel eines Commentars Hall 102.

रसामृत n. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 311, *b*, 37.

रसामृतसिन्धु Titel eines Werkes, = भक्ति° Hall 144. Wilson, Sel. Works 1, 167.

रसाम्भोधि (रस + अ°) m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

रसाम्भोनिधि (रस + अ°) m. desgl. Verz. d. B. H. No. 940.

रसाम्ल (रस + अम्ल) 1) m. *eine Art Sauerampfer,* = अम्लवेतस Rāǵān. im ÇKDr. — 2) n. *Fruchtessig, eine saure Brühe* (insbes. aus der Tamarindenfrucht); = वृक्षाम्ल Rāǵān. = चुक्र Bhāvapr. im ÇKDr.

रसायक m. *eine best. Grasart* Çabdak. im ÇKDr.

रसायन (रस + अ°) 1) m. *a) eine best. gegen Würmer angewandte Arznei,* = विडङ्ग Med. n. 202. विदंगम *Vogel* st. विडङ्ग H. an. 4, 167. — *b) ein Alchemist* Wilson. — *c)* Bein. Garuḍa's H. an. Med. — 2) f. ई *a) Kanal der Flüssigkeiten* (im Körper) Suçr. 2, 81, 3. — *b) N. verschiedener Pflanzen:* गुडूची, काकमाची, मण्डूकपर्णी, गोरक्षदुग्धा, मांसरोहिणी Rāǵān. im ÇKDr. — 3) n. *eine Klasse von Mitteln, die den Organismus kräftigen, erneuern und langes Leben verleihen sollen, z. B. Soma; Alterativum, Elixir, Lebenselixir* H. an. Med. Wise 155. Suçr. 2, 157. fgg. 1, 103, 1. 119, 11. रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा 159, 3. 213, 3. रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् Çiva. Saṃh. 1, 4, 12. Verz. d. Oxf. H. 309, *a*, 23. fgg. 316, *b*, 19. 357, *b*, 3. Verz. d. B. H. No. 929 (S. 278, Çl. 48). 938. 966. °तन्त्र heisst der betreffende *Abschnitt* in der Medicin Suçr. 1, 2, 2. 17. — MBh. 1, 6658. Hariv. 9220. R. 5, 73, 12. Spr. 2950. fg. 4932. Varāh. Bṛh. S. 16, 20. 34. 70, 1. Kathās. 40, 32. 78. सिद्ध° adj. 41, 11. 33. 70, 43. Bhāg. P. 5, 24, 13. Mārk. P. 40, 3. Verz. d. Oxf. H. 26, *b*, 12. Wilson, Sāṁkhyak. S. 11. Sarvadarçanas. 98, 5. Schol. zu Kir. Ça. 110, 19. 111, 18. हरभक्तिरसायनं पीत्वा MBh. 13, 775. कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि Uttarar. 17, 12 (24, 2). परमकर्णरसायनानि Verz. d. Oxf. H. 215, *a*, No. 314. कर्णरसायनीकृत 146, *b*, 4. मित्रं प्रीतिरसायनं नयनयोः Spr. 2200. vom *ersten befruchtenden Regen* in Beginn der Regenzeit: घृष्टमाघृतं गर्भे भास्करस्य गभस्तिभिः। रसं सर्वद्रुमाणां द्यौः प्रसूते रसायनम् ॥ R. 4, 27, 3. Richtet sich hier und da (vgl. प्रधान) nach dem Geschlecht des Nomens, auf welches es be-

zogen wird: कृत्कर्णरसायना: कथा: Buâs. P. 3,25,25. स्वकीर्तिर्न परामृनां कीर्णकर्णरसायना Spr. 2411. Nach den Lexicographen ausserdem: *Buttermilch* H. 409. *Gift* Med. = कटि *(langer Pfeffer?)* Râgân. im ÇKDa. — Vgl. ताम्र°, भक्ति°, भगवद्भक्ति°, योग°.

रसायनफला f. *Terminalia Chebula oder citrina* Trik. 2,4,15.

रसायनश्रेष्ठ m. *Quecksilber* Râgân. im ÇKDa.

रसाढ्य (von रसाढ्, einem denomin. von रस) adj. *saftig, schmackhaft:* रसाढ्यः पर्यसा पिन्वमानः (सोमः) RV. 9,97,14.

रसार्णव (रस + अ°) m. Titel eines alchemistischen Werkes Sarvadarçanas. 97,16. 100,12. 102,9. Verz. d. B. H. No. 941. 967.

रसाल (von रस) 1) m. *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: *der Mangobaum* AK. 2,4,2,14. Trik. 3,3,406. H. an. 3,679. Med. l. 126. Spr. 2782. 3329. Git. 1,47. 4,22. Paṇḍar. 1,10,51. Verz. d. Oxf. H. 17,*b*, No. 63, Çl. 8. 72,*a*,20. 257,*a*, N. 3. *Zuckerrohr* AK. 2,4,8,29. Trik. H. 1194. H. an. Med. *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रक) Râgân. im ÇKDa. *Brodfruchtbaum* Çabdar. im ÇKDa. *Weizen* und *eine Grasart* (कुन्दरतृण; कुन्दुर ist *Maus, Ratte;* vgl. *b*). — *b) eine Mausart* Verz. d. Oxf. H. 309, *a*,20. — 2) f. आ *a) gekäste Milch mit Zucker und Gewürz* AK. 2,9,44. H. 403. H. an. (hier fehlerhaft मुर्विका st. मार्जिता). Med. Hân. 194. 227. क्वदा: पूर्णा रसालाया दध्न: श्वेतस्य चापरे R. Gorr. 2,100,67. रसालापूपकांश्चित्रान् MBh. 13,2771. statt तथा रसालाश्च बकुप्रकारा: पयु: Harîv. 3447 liest die neuere Ausg. तथारसालांश्च बकुप्रकारान्पयु:. — *b) Zunge* H. an. Med. Hân. 227. — *c)* Dûrvâ-*Gras* H. an. Med. Sucr. 1,233,9. Vâgbh. 6,33. *Desmodium gangeticum* Dec. H. an. Med. *Weinstock* Çabdar. im ÇKDa. — 3) f. ई *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रक) Râgân. im ÇKDa. — 4) n. *Weihrauch* und *Myrrhe* H. an. Med. R. 6,96,3. — Vgl. बह्व°.

रसालंकार m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसालय (रस + आ°) m. 1) *ein Sitz der Reize, — alles dessen was entzückt* Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,20. — 2) pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,42.

रसालसा f. *ein Flüssigkeit führendes Gefäss des Körpers, Ader* u. s. w. Çabdaś. im ÇKDa.

रसालिका f. *Hemionitis cordifolia* Roxb. Çabdaś. im ÇKDa.

रसावतार m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसाश (रस + आश) m. *der Genuss von Flüssigkeiten:* घ° Kauç. 141.

रसाशिन् (रस + आ°) adj. *Flüssigkeiten geniessend:* त्रिरात्ररसाशी स्नातकव्रतं चरति Kauç. 42. 57. 82; vgl. 78. 139.

रसाशिर् (रस + आ°) adj. *mit Saft (Milch* nach Sây.) *gemischt* RV. 3,48,1.

रसाश्वासा f. *eine best. Schlingpflanze* (पलाशी) Râgân. im ÇKDa.

रसास्वाद (रस + आ°) m. *das Schlürfen von Saft; das Gefühl des Genusses* Vedântas. (Allah.) No. 135. 139.

रसास्वादिन् (रस + आ°) adj. *Saft kostend;* m. *Biene* Çabdam. im ÇKDa.

रसाह्व (रस + आह्वा) m. *das Harz der Pinus longifolia* Ratnam. im ÇKDa.

रसिक (von रस) 1) adj. f. आ = सरस Med. k. 144. *a) Geschmack —, Gefallen an —, Sinn —, das richtige Verständniss für Etwas habend; versessen auf;* die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend: यत्रो नवनवाद्यर्थनिर्माणे रसिको विधि: Kathâs. 106,104. प्रवास° Spr. 234. घासोदमात्र° 1690. पद्मानपत्र° 1693. 2343. स्पर्श° 3179. अनुचितसमारम्भ° 3753. Mâlatîm. 102,8. ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मन: Kathâs. 20,46. 27,56. 31,227. 71,18. fg. Sîn. D. 45,10. Râga-Tar. 3,110 (wo तेन्नस्त्रिमैत्रीरसिक: zu schreiben ist). 6,183. Hit. 103,3. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,42. 14,*a*, No. 37. नाट्य° *sich verstehend auf* 201,*b*, No. 483. काव्य° Çaut. 13. Ohne Ergänzung *einen richtigen Geschmack habend, Sinn für das Schöne habend:* नट Pat. zu P. 5,2,95. Git. 6,9. Kathâs. 8,10. Buâs. P. 1,1,3. *eine besondere Leidenschaft —, ein Steckenpferd habend:* रसिकं रसेन कुर्याद्यशे Spr. 2197. रसिकाभार्य *ein leidenschaftliches Weib zur Frau habend* Vop. 6,14. रसिकागोपिकानन्ददायक Paṇḍar. 4,8,39 aus metrischen Rücksichten st. रसिकगो°. — *b) geschmackvoll:* भारती Spr. 2658. — 2) m. *a) Ardea sibirica* (सारस) Râgân. im ÇKDa. — *b) Pferd.* — *c) Elephant* Sârasvata im ÇKDa. — 3) f. आ *a) Zuckerrohrsaft.* — *b) gekäste Milch mit Zucker und Gewürz* Med. — *c) Zunge* H. ç. 121. Viçva im ÇKDa. — *d) Gürtel* (vgl. रशना) Viçva ebend. — Vgl. काम°, माया°, शीत°.

रसिकता (von रसिक) f. *Geschmack an, Sinn für* (loc.): वने Spr. 411. गुणे 4262.

रसिकरञ्जनी (र° + र°) f. Titel eines Commentars Hall 118.

रसिकरमण (र° + र°) n. Titel eines Gedichts Verz. d. Oxf. H. 148, *a*, No. 318.

रसिकेश्वर (wohl रसिका *ein leidenschaftliches Weib* + ई°) m. Beiw. Kṛshṇa's Brahmavaiv. P. 32 im ÇKDa.

1. रसित von 1. रस् s. das.

2. रसित (von रस) adj. *mit Gold u. s. w. überzogen, — ausgelegt* Trik. 3,3,131. H. an. 3,288. Med. l. 144.

1. रसितृ (von 1. रस्) nom. ag. *Brüller, Toser:* रसितारमुचै: पतिमापगानाम् Sîn. D. 68,4.

2. रसितृ nom. ag. = रसयितृ *Schmecker* MBh. 12,12757.

रसिन् (von रस, adj. 1) *saftig, kräftig:* सोम RV. 8,1,26. 3,1. 9,113,5. VS. 19,35. — 2) *einen richtigen Geschmack habend, Sinn für das Schöne habend* Nalod. 2,39.

रसुन m. = रसोन = लशुन Çabdaś. im ÇKDa.

रसेन्द्र (रस + इन्द्र) m. *Quecksilber* Râgân. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 320,*a*,26. Sarvadarçanas. 102,6.

रसेन्द्रकल्पद्रुम m. Titel eines insbes. über *Quecksilber* handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 321,*b*, No. 763. Verz. d. B. H. No. 966.

रसेन्द्रचिन्तामणि m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 321,*b*, No. 762. 311,*b*,37. Verz. d. B. H. No. 967.

रसेश्वर m. = रसेन्द्र *Quecksilber:* °दर्शन *die Lehre der Alchemisten* Sarvadarçanas. 97. fgg. °सिद्धान्त m. Titel eines dieser Lehre huldigenden Werkes 98,21. fg. 101,9.

रसोत्तम (रस + उ°) 1) m. *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) *Lin.* Râgân. im ÇKDa. — 2) n. (?) *Milch (die schönste Flüssigkeit)* H. ç. 98.

रसोदधि (रस + उ°) m. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 143,*a*, No. 292.

रसोद्भव (रस + उ°) m. *Perle* H. 1068. — Vgl. रसोपल.

रसोन m. = रसुन *Allium ascalonicum, Schalottenzwiebel* H. 1186. Hla. 223. Suça. 1, 219, 16. °क m. dass. AK. 2, 4, 8, 14. Trik. 2, 4, 35. 3, 3, 236.

रसोपल (रस + उ°) n. *Perle* Trik. 2, 9, 33. — Vgl. रसोद्भव.

रसोल्लास (रस + उ°) m. 1) Bez. einer der acht Vollkommenheiten: *das spontane Erscheinen der Säfte im Körper* VP. (II) 1, 91. रसस्य स्वत एवात्तरुल्लासः स्यात्कृते युगे। रसोल्लासाख्या सा सिद्धिस्तया कृत्ति नुधं नरः॥ Comm. ebend. Wilson, Hall und Muir (ST. 1, 22) nehmen die Form रसोल्लासा an. — 2) *das Erwachen des Verlangens nach:* प्राणसमासमागमरसोल्लासैः Gît. 1, 36. Comm.: तया समागमस्य रसादुत्पन्नैरुल्लासैः, oder — रसादुल्लासो रूपो येषां तैः। °रसोल्लासिन् adj. *ein Erwachen des Verlangens nach — empfindend* Verz. d. Oxf. H. 209, *b*, No. 492.

1. रसौकस् (रसा + ओ°) n. pl. *die Wohnungen der Unterwelt* Bhâg. P. 5, 20, 45. 9, 20, 31.

2. रसौकस् (wie eben) adj. *die Unterwelt bewohnend*, m. *Bewohner der Unt.* Bhâg. P. 3, 18, 3. 11.

रस्त Uṇâdis. 3, 12. 1) *Ding, Gegenstand* Uǵǵval. — 2) f. या = रसना *Zunge* H. ç. 121.

रस्य (von रस्‌ und रस) 1) adj. *schmeckbar* MBh. 14, 1398. *schmackhaft* Bhâg. 17, 8. — 2) f. या N. zweier Pflanzen: = राम्ना und पाठा Râǵân. im ÇKDa. — 3) n. *Blut (aus Chylus entstanden)* Çârdak. im ÇKDa.

रह्, रहति und रहयति *verlassen, aufgeben* Dhâtup. 17, 82. 32, 83. 35, 6. रहति मुखं दीनः und रहयति शोकं धीरः Durgâd. im ÇKDa. रहित *verlassen, einsam;* von einem Orte MBh. 6, 5821. वन R. 3, 52, 38. 66, 2. रहिते *an einem einsamen Orte, im Geheimen* MBh. 1, 3407. 5, 7249. 7415. R. 3, 52, 6. 21. 54, 23. 59, 7. 4, 9, 70. रहितेषु (Gegens. याकुलेषु) dass. 3, 43, 34. रहित *verlassen —, getrennt —, frei von, ohne — seiend, — los;* die Ergänzung im instr. Voc. 5, 10. रहिता भर्तृभिः साध्वी न कुर्यात्सा कदा च न Spr. 2593. रहिते भिन्नकेर्यामे Jîân. 3, 59. MBh. 3, 3673. R. 1, 70, 35. 2, 27, 20. 41, 18. 42, 25. 47, 17. 3, 52, 5. 4, 40, 67. Spr. 2021. रहिता सत्कविवेन कीदृशो वाग्विदग्धता 2817. Bhâg. P. 1, 16, 31. 3, 9, 33. 7, 1, 37. Prab. 43, 11. Hall. 2, 331. im comp. vorangehend: लावण्यवतेपरहितं मनः Maitrâyaṇ. 6, 34. स्वरूप° MBh. 12, 4270. सदृत्त° R. Gorr. 1, 6, 13. Suça. 1, 230, 5. Çaut. 18. Spr. 137, v. l. 568. 729. 1138. 2336. 4733. Vaitân. Bhn. S. 43, 59. 54, 6. 68, 4. 56. 115. 70, 2. 103, 10. Kathâs. 4, 43. Râǵa-Tar. 3, 186. Dhûrtas. in LA. 70, 10. Bhâg. P. 18, 38, 11. Vedântas. (Allah.) No. 123. Sin. D. 2, 80. Hit. 30, 2. Bhatṭ. 2, 11. 10, 58. H. 2. 1120. *verlassen, aufgegeben, fehlend, nicht da seiend* am Anf. eines adj. comp.: रहितामुर (यासुर = यसुरभाव) Bhâg. P. 7, 4, 33. °रत्रयान् — शिलोच्चयान् Kir. 3, 10.

— वि *verlassen:* नोत्सहे त्वां विरहितुं शून्ये ऽहम् R. 3, 51, 17. न विरहयेदार्यम् Çiśân. Gaṇ. 4, 11. (रविः) विरहयन्मलयादिम् Raǵa. ed. Calc. 9, 26. त्वा विरहय्य Bhâg. P. 6, 11, 25. तरविरहितासना *eiligst den Sitz verlassend* Çiç. 9, 75. विरहित = विनाकृत Trik. 3, 1, 19. Hla. 206. *getrennt, allein stehend* R. 3, 59, 3. अविरहितौ दंपती भूयास्ताम् *ungetrennt* Vikr. 86, 11. *getrennt —, frei von, ohne — seiend, — los;* die Ergänzung im instr. MBh. 3, 2355. R. Gorr. 2, 35, 21. fg. 3, 52, 7. Suça. 1, 229, 14. Vikr. 114. सर्वोपमाभिः विरहितः पुरुषः Spr. 1019. 2021, v. l. धर्मव्रतैः Vaitân. Bhn. S. 15, 28. Kir. 5, 6. Bhâg. P. 4, 12, 6. अविरहित-मनेकेनाङ्गभावा फलेन Kir. 5, 52. im gen.: न तदस्ति विना (überflüssig) देव यत्ते विरहितं रुरे Harîv. 14966. im comp. vorangehend: अद्धा° (यज्ञ) Bhag. 17, 13. Sâhasâṅk. 72. Spr. 1091. 1138, v. l. Vaitân. Bhn. S. 68, 2. — Vgl. विरह.

रह् m. = रहस् Comm. zu AK. 2, 8, 4, 22. रहोभावाः *im Geheimen* Bhâg. P. 10, 55, 40.

रहण (von रह्) n. *Trennung* Nalod. 2, 14.

रहयति m. Harîv. 1638 fehlerhaft für अरहयति; die neuere Ausg. hat eine ganz andere Lesart.

1. रहस् n. = रंहस् *Schnelle, Geschwindigkeit:* स्वरहसास्खलता Bhâg. P. 2, 7, 40.

2. रहस् (von रह्) Uṇâdis. 4, 214. n. *Einsamkeit, ein einsamer Ort:* रहो (v. l. für स्थानं) नास्ति Spr. 3308. Vaitân. Bhn. S. 76, 2. Bhâg. P. 7, 9, 46 (= विविक्तवास Comm.). *Geheimniss:* तं प्रथमा रहःसखी Raǵa. 8, 57. स्वात्म° Bhâg. P. 3, 4, 18. कथ्यतां न रहो यदि 9, 9, 19. पित्रानुवर्णितरहाः (adj.) 3, 15, 46. रहःशुचि *der sich seines geheimen Auftrags erledigt hat* Kathâs. 101, 238. = विविक्त AK. 2, 8, 4, 22. = गुह्य Trik. 3, 3, 449. H. an. 2, 588. Med. s. 30. वीकाशः स्फुटरहसो; Hall. 5, 51. = तल्प (d. i. रहस्य) H. an. Med. = रत, रति *Beischlaf* Trik. H. 537. H. an. Med. Hall. 2, 414. Gewöhnlich wird रहस् als adv. gebraucht in der Bed. *an einsamem Orte, im Geheimen, heimlich* (Gegens. प्रकाशम्) AK. 2, 8, 4, 23. 3, 4, 25, 185. H. 741. Hall. 4, 23. M. 3, 34. 6, 59. 8, 354. 363. 9, 172. Jîân. 2, 166. MBh. 3, 1800. 2757. 2866. 5, 7430. R. 1, 2, 37. 77, 13. R. Gorr. 1, 2, 35. fg. Çik. 119. fg. Vaitân. Bhn. S. 74, 16. 19. Kathâs. 12, 91. 28, 161. 37, 151. 42, 139. 46, 225. Râǵa-Tar. 3, 501. 4, 223. 525. 6, 169. 331. Spr. 3833. 4184. Bhâg. P. 1, 11, 10. 3, 4, 12. 19, 28. 30, 9. 4, 23, 28. 7, 12, 9. 9, 14, 12. 18, 17. Mâlav. P. 16, 16. Pañkat. 192, 23. सुरहःस्थान adj. *an einem ganz einsamen Orte gelegen* Pañkat. 1, 6, 13. रहसि loc. = रहस् Nir. 4, 18. Bhag. 6, 10. MBh. 5, 3971. R. 1, 9, 9 (6 Gorr.). 3, 64, 9. Raǵa. 3, 3. Çik. 79, 15. Vikr. 31. Vaitân. Bhn. S. 12, 6. Kathâs. 3, 61. 17, 98. 18, 232. 20, 1. 33, 41. Bhâg. P. 1, 17, 6. 2, 9, 21. 3, 14, 30. 6, 17, 8. 9, 6, 51. 18, 31. Brahma-P. in LA. (III) 54, 13. Daç. in Bhp. Chr. 181, 23. Pañkat. 253, 25. Hit. 63, 22. सुरहसि Pañkat. 1, 10, 38. रहस्सु dass. Harîv. 8357. R. 6, 101, 27.

रहस = रहस् in घनु°, ध्रुव°, तप°.

रहसनन्दिन् m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 45. रहसा° im Index.

रहस्य (ohne Trennung im Padap.) adj. nach Sis. *heimlich gebärend:* ध्रुवे मत्कर्त रहस्यहिवागः ṚV. 2, 29, 1.

रहस्कर adj. *Jmdes* (gen.) *geheimen Auftrag ausführend* Bhâg. P. 10, 47, 28.

रहस्य (von रहस्) gaṇa दिगादि zu P. 4, 3, 54. 1) adj. *geheim;* n. *Geheimniss, geheime Lehre, Mysterium* AK. 2, 8, 4, 23. 3, 4, 24, 156. H. 742. an. 3, 502. Med. j. 101. Hall. 1, 9. 4, 23. रोमाणि (so v. a. *die an den geheimen Stellen befindlichen*) M. 4, 144. एनसाम् 11, 247. Verz. d. Oxf. H. 283, *a*, 9. व्रत Jîân. 3, 301. वृत्त R. 1, 2, 36. स्तुति 62, 26. कन्दर 2, 96, 3 (105, 3 Gorr.). रहस्यालोधनं मलः H. 741. रहस्याध्यायिन् (प्रणिधि) M. 7, 223. MBh. 3, 16893. 4, 98. इमन्यच्च देवर्षे रहस्यं सर्वयोषिताम् *ein*

alle Weiber betreffendes Geheimniss 13, 2227. Daçar. 1, 39. Kim. Nitis. 5, 36. Çik. 22. Spr. 636. 1530. 3019. 4168. Kathâs. 21, 32. 27, 159. 45, 48. Pañkat. 43, 12. Hit. 36, 19. LA. 20, 19. °धारिन् *im Besitz eines Geheimnisses seiend, in ein Geheimniss eingeweiht* Kathâs. 13, 22. 38, 123. °संरक्षण Pañkat. 129, 2. °भेद Spr. 2592. Kim. Nitis. 14, 36. °भेदन Kathâs. 37, 230. कुरुरहस्यमकाण्ड 32, 140. वेदे सकल्पं सरहस्यम् (so v. a. Upanishad) M. 2, 140. 165. 11, 262. 12, 107. Çikshâ. Gaṇ. 2, 11. Bhag. 4, 3. यज्ञाणि सप्रयोगरहस्यानि MBh. 1, 5131. 13, 345. Harîv. 14074. R. 1, 55, 16 (56, 16 Gorr.). Ind. St. 1, 20. 61. 106. 2, 22. 3, 276. 8, 151. 9, 159. Vaitân. Bhp. S. 26, 16. 46, 99. Uttarar. 7, 9 (11, 4). Weber, Râmat. Up. 320. Verz. d. B. H. No. 484. 944. Burn. Intr. 207. Bhâg. P. 1, 6, 27. 7, 44. 3, 1, 31. Mârk. P. 63, 29. Hit. 37, 3. Sarvadarçanas. 171, 12. रहस्यम् adv. *im Geheimen* MBh. 4, 2327. Verz. d. Oxf. H. 109, a, 35. Accent eines auf रहस्य ausgehenden comp. gaṇa वर्ग्यादि zu P. 5, 2, 131. — 2) f. या *a)* N. pr. eines Flusses H. an. Med. MBh. 6, 326 (VP. 182). — *b)* N. zweier Pflanzen: राम्रा und पाठा Râgân. im ÇKDa. — Vgl. देव°, भागवतलीला°, भाद्र°, मत्स्य°, मलावाका° (u. d. W.), योग°, रति°.

रहस्यत्रयसार Titel eines Werkes Hall 112.

रहस्यु (von रहस्) m. N. pr. eines Mannes Pañkat. Bh. 14, 4, 7.

रहःस्थ (रहस् + स्थ) adj. f. या *an einem einsamen Orte —, bei Seite stehend, allein seiend* Kathâs. 12, 154. Pañkat. 43, 24. euphem. so v. a. *im Liebesgenuss begriffen* Vaitân. Bhp. S. 78, 14. Kathâs. 28, 145.

रहाट m. 1) *a) counsellor, a minister. —* 2) *a ghost, a spirit. —* 3) *spring* Wilson nach Çabdâmṛtak. In den beiden ersten Bedd. würde रहो ऽट am Platz sein.

रहाय् (denom. von रहस्) रहायते gaṇa भ्राशादि zu P. 3, 1, 12.

रहोकर् und रहीभू (रहस् + 1. कर् und 1. भू) Vop. 7, 34. दृष्ट्वा दयितया साकं रहीभूतं दशाननम् *an einen einsamen Ort zurückgezogen, abseits gegangen* Bhatt. 8, 55.

रहूगण m. pl. N. pr. eines zu den Âṅgirasa gezählten Geschlechts ṚV. 1, 78, 5. Âçv. Çr. 12, 11. Sâṅkh. K. 186, a, 9. sg. N. pr. des Liedverfassers von ṚV. 9, 37. fg. सिन्धुसौवीररपति Bhâg. P. 5, 10, 1. 2.

रहोगत (रहस् + गत) adj. *an einem einsamen Orte —, allein seiend* M. 7, 147. MBh. 3, 2089. Kim. Nitis. 7, 52. Bhâg. P. 1, 11, 34. *geheim:* भृगोर्भार्या रहोगता MBh. 1, 886.

1. रा, रांति (दाने) Dhâtup. 24, 49. रातै TS. रास्व VS. Prât. 4, 144. रते 3. sg. रराणाम्, रराम्व, रराधम् ṚV. 5, 83, 7. रिरीहि; perf. रेतुः, रराणे, ररिमे, ररिवंस्, रेराणाः रासीयः रातवे: रातः von der Form रास्, रासन्, रासत् Naigh. 3, 20. रासते, यरासत: *verleihen, gewähren, überlassen; übergeben, geben:* वयं ते अद्य ररिमा हि कामम् ṚV. 3, 14, 3. पिबा सोमं ररिमा ते मदाय 32, 3. रासि वयं रासि मित्रमस्मे 2, 11, 14. रेरे कृण्वं मतिभिर्यज्ञियानाम् 7, 39, 6. 40, 6. 59, 5. स्तुवते रासि वार्जान् 95, 6. न पापत्वाय रासीय 32, 13. इमं यज्ञं देवत्रा धेहि सुक्रतो रराणः 3, 1, 22. 4, 2, 20. 8, 19, 26. रास्व सुप्रजस्मे 1, 114, 9. 117, 24. 166, 3. प्रती देवि रराम्व नः AV. 7, 20, 3. 68, 1. 12, 1, 44. न यो रेरे सधमादं दस्यवे ṚV. 10, 119, 3. VS. 4, 16. रातिं राका TS. 3, 4, 9, 1. रिरीहि ṚV. 6, 39, 5. सुवीरं रयिं गृणते रिरीहि 65, 6. 9, 11, 9. शोडः सूर्ये दृशये रिरीहि 91, 6. दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरीहि 10, 98, 10. 169, 3. Hierher ziehen wir auch: स नो वोधि पुरोळाशे रराणः पिबा तु सोमं गोसृत्रीकमिन्द्र *lass uns den Kuchen, du aber trinke den* Soma (nach Sây. *beachte erfreut den Kuchen*) 6, 23, 7. — Ait. Br. 7, 17 Çat. Br. 1, 9, 3, 19. 3, 9, 4, 4. Kauç. 71. 106. Çikshâ. Ça. 7, 18, 9. तेषां रासीश कामान् Bhâg. P. 3, 21, 14. परलोकशास्त्रोपनतं न राति न तदिच्छति 4, 27, 25. 5, 18, 21. न राति रोगिणो ऽपथ्यं वाञ्छतो ऽपि भिषक्तमः 6, 9, 19. 11, 22. 7, 10, 4. 6. 8, 3, 19. Pañkat. 2, 3, 38. को भिक्षां रास्यति, राति Vop. 25, 5. Weber, Râmat. Up. 286. रातां Bhâg. P. 10, 14, 38. रातवे ऽन्नं बुधार्दितानाम् 4, 17, 11. इन्द्राय विश्वा सवनानि मानुषा रातानि मत्सु ṚV. 1, 131, 1. 162, 11. 7, 67, 7. 8, 3, 14. 32, 21. 10, 116, 7. TS. 3, 5, 8, 1. Harîv. 1472. Bhâg. P. 1, 12, 16. 3, 16, 32. Vgl. यज्ञदात, कीर्ति°, कृति°, क्षय°, देव°, ब्रह्म°, भगवद्दात, वसु°, विष्णु°.

— व्यति, °राते Siddh. K. 163, a, 13. व्यत्यरे P. 6, 4, 64, Sch.

— सम् *verleihen, gewähren:* उत नः पितुमा भर संरराणो सहस्रिणम् ṚV. 8, 32, 3. 6, 70, 6. VS. 17, 1. 19, 81. तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममेतु *Antheil lassend* ṚV. 10, 15, 8. विष्णुः प्रजया संरराणो हविषा दधातु *Habe sammt Kindern* AV. 7, 17, 4. VS. 8, 17. Unrichtige Nachbildungen solcher Stellen scheinen zu sein AV. 2, 34, 3. 4. (संविदान: v. l. der TS.). VS 8, 36. 32, 5. Einmal der imper. सं रिरीहि ṚV. 6, 46, 8.

2. रा (= 1. रा) nom. ag. am Ende eines comp. *verleihend, gewährend* Bhâg. P. 5, 7, 12.

3. रा रै, रायति (शब्दे) Dhâtup. 22, 13. *bellen:* रायतः शुनः ṚV. 1, 182, 4. स्तेनं राय *anbellen* 7, 55, 3.

— अभि *anbellen:* द्विषतम् Taitt. Âr. 4, 30, 1.

4. रा f. s. u. रै 2).

राउल m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 964.

राका f. Uṇâdis. 3, 40. Schol. zu P. 7, 3, 44. 4, 13. 1) *die Genie des wirklichen Vollmondstages* (neben Anumati *der Genie des vorangehenden Tages;* s. Näheres Z. d. d. m. G. 9, LVII. Ind. St. 5, 229. Weber, Glos. 60. fgg.*); *Vollmondstag, Vollmond* Naigh. 5, 5. Nir. 11, 30. AK. 1, 1, 2, 8. Trik. 3, 3, 39. H. 149. an. 2, 14. fg. Med. k. 31. Halây. 1, 112. Viçva bei Uṇâdi. ṚV. 2, 32, 4. 5, 42, 12. Ait. Br. 3. 37. 47. 7, 11. TS. 1, 8, 9, 1. 2, 4, 9, 1. 6. TBr. 1, 7, 9, 1. Çat. Br. 2, 5, 4, 38. Sharv. Bh. 4, 6. Kâtj. 12, 3. Çikshâ. Ça. 1, 13, 3. MBh. 8, 1486. Weber, Kṛishṇaj. 250. 268. VP. 225. मघाराकासमागमे Bhâg. P. 7, 14, 22. 15, 54. °यज्ञ Pañkat. Bh. 16, 13, 1, Sch. eine Tochter des Âṅgiras (vgl. रागा) und der Smṛti VP. 83. Mârk. P. 52, 21. des Âṅgiras und der Çraddhâ Bhâg. P. 4, 1, 34. Gattin Dhâtar's und Mutter Prâtar's 6, 18, 3. Die Brâhmaṇa und Comm. führen das Wort auf 1. रा zurück. — 2) N. pr. einer Râkshasî, der Mutter Khara's und der Çûrpaṇakhâ MBh. 3, 15893. 15896. einer Tochter des Sumâlin R. 7, 5, 40. — 3) N. pr. eines Flusses H. an. Med. Viçva s. v. O. Bhâg. P. 5, 20, 10. — 4) *Krätze* Trik. H. an. Med. Viçva. — 5) *ein eben mannbar gewordenes Mädchen* Trik. H. 536. H. an. Med. Hin. 130. Halây. 2, 333. Viçva.

राकाचन्द्र m. *Vollmond* Kathâs. 101, 268. 113, 25.

राकानिशा f. *Vollmondsnacht* Kathâs. 75, 129.

*) 59, 12 ist, wie Weber später erkannt hat, विवक्षिते न zu trennen; demnach sind 62, 4 die Worte «bei Somakâra und» zu streichen.

राकापति m. *Vollmond* Bhâg. P. 4,12,19. 8,22,12.

राकारमण m. dass. Kathâs. 43,204.

राकाविभावरी f. *Vollmondsnacht:* °न्नि m. *Vollmond* Sin. D. 323,19.

राकाशशाङ्क m. *Vollmond* Kathâs. 119,193.

राकाशशिन् m. dass. Spr. 2477.

राकिणी f. N. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,3; vgl. लाकिनी 28. 38. वाकिनी 5 und डाकिनी.

राकेन्दीवरबन्धु (राका + इ°) m. *Vollmond* Verz. d. Oxf. H. 128,*a*,7.

राकेश (राका + ईश) m. dass. Bhâg. P. 10,29,21. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

राक्क adj. *aus* Raka *stammend* gaṇa शणिष्टकादि zu P. 4,3,92.

रात्तसँ (von 2. रत्तस्) 1) adj. (f. ई) *den* Rakshas *eigen, rakshasisch:* वाच् Ait. Br. 2,7. विवाक् (धर्म. विधि) Âçv. Gṛhj. 1,6,8. M. 3,21. 23. fg. 26. 33. Mârk. P. 113,23. 134,27. fg. मक्ष Kâç. Ça. 1,10,11. विधि M. 5,31. प्रकृति Bhâg. 9,12. यज्ञ Harîv. 10616. R. Gorr. 1,30,17. रूप 3, 48,11. कापलत्तण Sûçr. 1,336,2. सेना, बल R. 3,30,45. 7,23,2,45. पुरी 5,9,21. माया 7,15,30. योनि Kathâs. 42,206. शील 66,16. कर्मन् Ved. in LA. (III) 14,12. रात्रौ श्राद्धं न कुर्वीत रात्तसी कीर्तिता हि सा M. 3,280. — 2) m. *a*) = 2. रत्तस् 2) = 3. रत्तस् gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38. AK. 1,1,4,35. H. 187. Med. s. 31. Hall. 1,73. 87. Kâuç. 106. Maitrâyaṇ. 1, 1. MBh. 1,5927. R. 1,1,40. 45. Sûçr. 1,16,16. 112,3. Raghuv. 12,68. Vasiṣṭh. Bhâg. S. 16,37. Kathâs. 18,280. fg. Weber, Rimây. Up. 286. 353. Lot. de la b. l. 8. Pañkat. 182,22. Ved. in LA. (III) 31,11. fgg. im नक्तञ्चक्र neben देव und मानुष Verz. d. Oxf. H. 96, *a*. रत्तास इति वैरूपं रात्तमास्ते भवतु वः R. 7,4,13. VP. 41. °राज्य R. 5,80,16. रात्तसेन्द्र Taik. 2,8,5. MBh. 1,5979. R. 3,35,38. रात्तसेश H. 706, Sch. रात्तसेश्वर MBh. 1,5962. R. 7,15,30. entstehen aus Brahman's Füssen Harîv. 11794. Kinder Pulastja's MBh. 1,2571. VP. 5, N. 13. der Khasâ Harîv. 11552. VP. 150. der Surasâ Bhâg. P. in VP. 149, N. 13. Am Ende eines adj. comp. f. या R. 3,41,8. 5,26,37. 34,3. 80,16. 28. fg. 88,24. ई (fehlerhaft) 26,39. राज्ञ° so v. a. *ein Teufel von König* Râja-Tar. 5,277. Nach gaṇa पर्ण्यादि zu P. 5,3,117 ist रात्तस *ein Fürst der* Rakshas; nach H. 91 bilden die Râkshasa bei den Gaina eine Unterabtheilung der Vjantara. — *b*) Bez. *des 30ten* Muhûrta Ind. St. 10,296. — *c*) m. *one of the astronomical* Jogas *or divisions of the moon's path* As. Res. 9,336. — *d*) N. pr. eines Ministers Nanda's Mudrâ. 34,2. fgg. 153,8. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,14. — 3) m. n. Bez. *des 49ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vaṇiç. Bṛh. S. 8,45. 47. Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,5. — 4) f. ई *a*) *ein weibliches* Rakshas Taik. 3,3,247. H. an. 3, 753. MBh. 1,5940. 3,2349. R. 1,1,44. 3,30. 28,7. 2,74,8. 3,23,12. 62, 34. 4,41,38. 5,27,9. 6,108,25. Mudrâ. 121,1. Raghuv. 12,61. Kathâs. 29, 128. fgg. Wilson, Sel. Works 2,231. fgg. Insel der Râkshasî Lot. de la b. l. 428. रात्तसालय = लङ्का Sûrjas. 1,62. रात्तसि° *die Nacht als nächtliche Unholdin* Kathâs. 98,1. रात्तसी auch Bez. *einer best. Unholdin,* welche in einer der 4 Ecken eines Hauses sich aufhält, Vaṇiç. Bṛh. S. 53,82. — *b*) *Nacht* H. ç. 18; vgl. oben unter 1) am Ende und सायाङ्क-स्त्रिमुहूर्तः स्यात् श्राद्धं तत्र न कारयेत्। रात्तसी नाम सा वेला गर्हिता सर्वकर्मसु ॥ Trivikrama im ÇKDr. — *c*) *eine Art Parfum* (चण्डा) AK. 2,4, 4,16. Med. — *d*) *Spitzzahn, Fangzahn* H. an. — Vgl. अपेतरात्तसी, अप्रेत°, अल°, प्रेत°, ब्रह्मरात्तस, भृगु°, मानुष°.

रात्तसकाव्य n. Titel eines *Gedichts* Verz. d. B. H. No. 880.

रात्तसग्रह m. *der Dämon der* Râkshasa, Bez. *eines best. Krankheitsgeistes* MBh. 3,14504.

रात्तसता f. *der Zustand eines* Râkshasa R. Gorr. 1,28,8. 4,3,14.

रात्तसत्व n. dass. R. 1,27,11. Kathâs. 23,256. 272.

रात्तसीकरण m. *das Verwandeln in einen* Râkshasa Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761.

रात्तसीभू *in einen* Râkshasa *verwandelt werden:* °भूत Kathâs. 11,55.

रात्ती f. = लात्ता *Lack* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,62. AK. 2,6,2,26. H. 683.

रात्तोघ्नँ adj. (f. ई) = रात्तोघ्न P. 5,4,36, Vârtt. 5. vom *Schläger des* Rakshas *handelnd:* गायत्री Ait. Br. 1,16. 19. TS. 5,1,10,3. Çat. Br. 3,4,4,16. 7,4,2,33. अगस्त्यस्य रात्तोघ्नम् N. eines Sâman Ind. St. 3,200,*a*. यज्ञे रा° desgl. 201,*a*. वामदेवस्येतत्यज्ञदर्शं रात्तोघ्नं सामिधेन्यो भवन्ति Kâṭy. 10,5. सूक्त Weber, Kṛshṇaj. 303. रात्तोघ्नानि (sc. सूक्तानि) Verz. d. Oxf. H. 398,*a*,1 v. u.

रात्तोऽसुरँ adj. (f. ई) *zu den* Rakshas *und den* Asura *in Beziehung stehend, über diese handelnd, sie betreffend:* ग्रन्थ u. s. w. gaṇa देवासुरादि zu P. 4,3,86, Vârtt. वेद gaṇa देवासुरादि zu P. 4,3,129, Vârtt. *die Worte* रात्तोऽसुर *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61.

राक्ष्, रात्तयति (शोषणालमर्थयोः) Dhâtup. 5,8. — Vgl. लाक्ष्.

रात्तँ und रार्गँ (von रञ्ज्, रञ्ज्) 1) m. P. 6,4,27. 1,216. 159, Sch. Vop. 8,133. 26, 174. am Ende eines adj. comp. f. या Spr. 3180. Raghuv. 17, 44. Ṛt. 5,11. Çik. 175. Vaṇiç. Bṛh. S. 78,15. Kathâs. 21,76. 38,121. Pañkat. 203,5. ई gaṇa अक्षादि zu P. 4,1,45. *a*) *das Färben:* मूर्धन्न° Vaṇiç. Bṛh. S. 77,1. चर्मणां निर्मितरागम् Kumâras. 4,19. Bez. *eines best. Processes, dem das Quecksilber unterworfen wird,* Verz. d. Oxf. H. 320, *a*,14. Sarvadarçanas. 100,6. — *b*) *Farbe* Taik. 3,3,68. H. an. 2,46. Med. g. 20. Harîv. 4472. R. Gorr. 1,76,4. Sûçr. 2,317,14. fg. 318,5. Raghuv. 2,15. 5,72. 7,7. 10,19. 16,59. Kumâras. 3,20. Ṛt. 1,5. 6,5. Megh. 33. 103. Çik. 20. 175. ad 14. Spr. 1920. Vaṇiç. Bṛh. S. 12,19. 77,36. Kathâs. 23,78. 24,178. Mârk. P. 31,36. *Farbe* und zugleich *Leidenschaft* Spr. 3810. — *c*) *Röthe* AK. 1,1,4,25. Taik. रोष° MBh. 3,13639. Sûçr. 1,34,16. 37,2. 38,14. रमो रागमुपैति *wird roth* 43,12. 69,16. 2,304,7. Spr. 622. 2673. 3535. 4933. Kumâras. 5,11. Vikr. 26. *Röthe* und zugleich *Leidenschaft, Zuneigung* Spr. 472. 2831. 3180. 3807. Pañkat. 203,5. Naish. 22,55. — *d*) *Nasalirung* ṚV. Pât. 11,19. 14,24. विषमरागता 4. — *e*) *Reiz, Lieblichkeit* (der Stimme, des Gesanges): गीत° Çik. 5. 4,11. अहो रागपरिवाहिणी गीतिः 39,11. सुरागस्वरेण Pañkat. 213,1. उपनीतरागत्वम् (वाचः) H. 66. — *f*) *eine musikalische Weise,* deren 6 angenommen werden (Bhairava, Kauçika, Hindola, Dîpaka, Çrîrâga und Megha, oder Çrîrâga, Vasanta, Paṅkama, Bhairava, Megha und Naṭanârâjana, oder Mâlava, Mallâra, Çrîrâga, Vasanta, Hillola und Karṇâṭa); sie werden personificirt und jedem werden 5 oder 6 Râginî und 8 Söhne zugetheilt, ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 199,*b*, No. 471. 200,*a*,4 v. u. *b*,14. fg. 201,*b*, No. 481. Verz. d. B. H. No. 1384. Râja-Tar. 5,362. Pañkar. 1,11,3. Pañkat. 248,6.

Çuk. in LA. (III) 33, 5. ग्रामरागाः सप्त Mâṅk. P. 23, 51. Paṇḍar. 3, 3, 36. रागाः (so Bühler st. वर्णाः) षड्विंशतिः Paṇḍav. V, 44 (55 Bühler). Nach H. an. und Med. *eine musikalische Note* (गान्धारादि). — *g) Leidenschaft, haftiges Verlangen nach Etwas, Sympathie, Zuneigung, Liebe, Freude an;* = लोभादि (s. weiter unten) Taik. H. an. Med. = अनुराग H. 296. H. an. Med. = रस AK. 3, 4, 20, 229. Halâj. 3, 75. = मात्सर्य, मत्सर Taik. H. an. Med. = गृध्नुता Taik. 1, 1, 131. Gegens. विराग, वैराग्य Kap. 2, 9. Sâṅkhjak. 43. Bhâg. P. 1, 9, 26. अपराग Spr. 4934. Kâm. Nîtis. 12, 8. द्वेष M. 6, 60. 12, 26. Bhag. 3, 34. Çiç. 6. Spr. 4003. Râǵa-Tar. 1, 7. 3, 329. Bhâg. P. 5, 14, 27. H. 73. Sarvadarçanas. 115, 11. 167, 13. 15. अविद्यतास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः Mallin. zu Çiç. 4, 55. रागोदयो Spr. 1314. — Mundp. Up. 1, 2, 9. Maitrâjan. 3, 5. Jâṅ. 2, 4. कामरागावबर्हित Bhag. 7, 11. Harîv. 4474. Kap. 3, 30. 4, 9. 25. 27. Kâm. 6, 2, 10. Çiçp. 37. Ragh. 16, 60. 17, 44. Ṛt. 5, 11. 6, 23. Spr. 2594. fgg. 2717. 2881. 3729. 3961. 4432. 5110. Varâh. Bṛh. S. 78, 15. 106, 5. Kathâs. 21, 76. 27, 23. 37, 28. 38, 121. Râǵa-Tar. 1, 271. चेष्टा रागानुगाः 3, 513. 518. 4, 26. fg. 5, 369. 6, 74. 83. 297. 333. Bhâg. P. 5, 18, 14. Prab. 13, 10. Paṇḍar. 29, 17. Daçak. in Benf. Chr. 197, 5. राग, काम, इच्छा, तृष्णा Spr. 2396. क्लेशरागापनयन Kâm. Nîtis. 17, 6. रागान्ध Maitrâjan. 4, 3. Spr. 778. Râǵa-Tar. 1, 255. 5, 386. °प्रकृतीत 4, 676. लीणा° AK. 3, 4, 45, 20. गण्डस्थलस्थमद्वारिषु वद्धरागमत्तभ्रमद्भ्रमरः Spr. 812. संत्रीवकनिवद्ध° Paṇḍar. 58, 13. तथा तथास्य वै यूते रागो भूयो ऽभिवर्धते MBh. 3, 2285. गुणेषु Spr. 859. मुखे Bhâg. P. 6, 17, 22. नैपधे MBh. 3, 2212. 14125. Mârk. P. 62, 14. तद्रागात् R. 2, 60, 19. 5, 51, 10. युद्धरागात् Harîv. 5056. स्वदेशरागेण Spr. 2448. विषयोपभोगरागात् Kâm. Nîtis. 7, 35. दर्शनाभ्यामसंवद्धचक्षूराग *Augenlust* Râǵa-Tar. 5, 382. °प्राप्तिः प्रयोगस्य (*increase of the interest of the performance* Ball.) Sin. D. 407. Kumâras. 7, 91. *Leidenschaft, Zuneigung* und zugleich *Farbe, Röthe* Spr. 472. 2831. 3807. 3810. — *h) Fürst, König* H. an. Med. — *i) die Sonne; der Mond* Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. रा *a) Elusine coracana Pers.* Râǵân. bei Wilson. — *b)* N. pr. der 2ten Tochter des Aṅgiras (vgl. राका) MBh. 3, 14125. — Vgl. अङ्गराग (auch Prab. 49, 1), गुण° (auch Kathâs. 12, 25), चित्त°, तरु°, नि°, नीली°, पद्म°, पिक°, पीत°, पुष्प°, भक्ति°, मञ्जिष्ठा°, मणि°, मद°, मुख°, वीत°, स°, संध्या°, हरिद्रा°.

रागखाडव s. u. रागषाडव.

रागखाण्डव n. *eine Art Zuckerwerk* MBh. 7, 2267. पिप्पलीशुण्ठीयुक्तो गुडसूपः खाण्डवः स एव शर्करायुक्तो रागखाण्डव (राग: खा° gedr.) Nîlak. zu MBh. 14, 2684, wo der Text खाण्डवराग hat; vgl. रागषाडव.

रागखाण्डविक m. *ein Verfertiger von solchem Zuckerwerk* MBh. 15, 19.

रागचूर्ण m. 1) *Acacia Catechu Willd.* H. an. 4, 86. Med. p. 106. — 2) *ein rothes Pulver, mit dem man sich beim Feste* Holâkâ *bestreut,* Çabdar. im ÇKDa.; in dieser Bed. hatte man neutr. erwartet. — 3) *Lack* (लाक्षारस) Râǵân. im ÇKDa. — 4) *der Liebesgott* H. an. Med.

रागच्छत्र m. *der Liebesgott* (कामदेव) Çabdar. im ÇKDa. Bein. Râma's Wilson.

रागद 1) m. *eine best. Stande,* = तेरापो Râǵân. im ÇKDa. — 2) f. या *Krystall (verschiedene Farben erzeugend)* Çabdârthak. bei Wilson.

रागदालि m. *Linsen* (मसूर) Râǵân. im ÇKDa.

रागदृप् v. l. für रागयुत् ÇKDa.

रागद्रव्य n. *Farbestoff* P. 4, 2, 1, Sch.

रागपट्ट *eine Art Edelstein* Weber, Kṛshṇaǵ. 275, N. 2. fehlerhaft für रत्नपट्ट.

रागपुष्प 1) m. *Pentapetes phoenicea* und *rother Kugelamaranth.* — 2) f. ई *die chinesische Rose* Râǵân. im ÇKDa.

रागप्रसव m. *Pentapetes phoenicea* und *rother Kugelamaranth* Râǵân. im ÇKDa.

रागबन्ध m. *Aeusserung der Zuneigung, Zuneigung* Ragh. 18, 51. Milav. 29 (= Vikramâ. 21).

रागभञ्जन m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 37, 207.

रागमञ्जरिका f. domin. von रागमञ्जरी Daçak. in Benf. Chr. 194, 21.

रागमञ्जरी f. N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. in Benf. Chr. 190, 7. fgg.

रागमय (von राग) adj. *roth* und zugleich *verliebt* Kâvjâd. 2, 75.

रागमाला f. *der Kranz der musikalischen* Râga, *ein Kapitel über d.* m. R. Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 36. Titel eines Werkes über diesen Gegenstand 201, *b*, No. 481. fg. 374, *a*, No. 301.

रागयुत् m. *Rubin* Râǵân. im ÇKDa. रागदृप् v. l.

रागरज्जु m. *der Liebesgott* Taik. 1, 1, 38. H. p. 77.

रागलता f. Rati, *die Gattin des Liebesgottes,* Taik. 1, 1, 29. Gaṇâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 35.

रागलेखा f. *Farbenstrich* Mâlav. 46.

रागवत् (von राग) adj. *roth* Gît. 3, 14.

रागविबोध m. Titel eines Werkes über *die musikalischen* Râga Verz. d. Oxf. H. 200, *a*, No. 475.

रागवत्त m. *der Liebesgott* Çabdam. im ÇKDa.

रागषाडव m. *ein Zuckerwerk aus Granatäpfeln und Weintrauben mit einer Brühe von Phaseolus Mungo* Râǵav. im ÇKDa. Sucr. 1, 231, 18. 233, 8. 240, 17. 241, 4. °षाड्व R. 5, 14, 14. Nach Andern *halbreife Mangofrüchte in Syrup eingemacht mit Ingwer, Kardamomen, Butter u. s. w.* Nach Pa., wo °खाडव gedruckt ist; vgl. die richtige Form रागखाण्डव.

रागसूत्र n. = पट्टसूत्र und तुलासूत्र *ein seidener Faden* und *der Strick an einer Wage* H. an. 4, 276. Med. r. 294.

रागाङ्गी f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा), Roxb. Râǵân. im ÇKDa.

रागाख्या f. dass. ebend.

रागानुगाविवृति f. Titel eines Buches Verz. d. Tub. H. 17.

रागार् adj. *der in Bezug auf eine Gabe Hoffnungen erweckt, sie aber nicht erfüllt,* Çabdam. im ÇKDa. रागार्ह Wilson.

रागार्णव m. Titel eines über *die musikalischen* Râga handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201, *a*, No. 479.

रागाशनि m. *ein* Buddha Taik. 1, 1, 8.

रागिता (von रागिन्) f. *das Verlangen nach* (loc. oder im comp. vorangehend): सत्यप्यर्थे निराशत्वमसत्यपि च रागिता Kâm. Nîtis. 14, 15. गाढालिङ्गन° Kathâs. 86, 116.

रागिन् (von रञ्, रञ्ज् und राग) 1) adj. P. 3, 2, 142. 6, 4, 24, Vârtt. 4. *a) gefärbt* Taik. 3, 3, 256. नीलयादि° AK. 3, 4, 44, 32. रागिन् *farbig* heisst die Amaurosis (तिमिर), wenn sie die zweite Membran des Auges afficirt, सरागिन् in der ersten Suça. 2, 343, 5. 6. 341, 15. — *b) färbend* H.

an. 2,281. Mbh. n. 113 (wo रक्तरि का° zu lesen ist). — c) *roth* Spr. 2597. Kathâs. 21,9. *roth* und zugleich *verliebt:* मंध्येव रागिणी वेश्या न चिरं पुत्रि दीप्यते 12,93. संध्यावत्तत्तथारागिण्यः स्त्रियः 37,148. 52,285. — d) *von Leidenschaften ergriffen, in der Gewalt der Liebe stehend, verliebt, mit Leidenschaft an Etwas* oder *Jmd* (loc. oder im comp. vorangehend) *hängend, grossen Geschmack an Etwas findend* Trik. H. an. Med. Bhâg. 18,27. Harîv. 11946. Spr. 2352. 2414. 2717. 2881. 3268. 3342. 4300. Gît. 9,10. Kathâs. 11,24. 37,85. 147. 52,403. Râga-Tar. 4,396. 5, 231. 6,154. 163. Paṡâc. 1,4,16. Daçak. in Benf. Chr. 180,23. Gaupap. zu Sâṁkhyak. 12. Verz. d. Oxf. H. 80,*b*, 10. Sin. D. 26, 4. Vet. in LA. (III) 20,3. स° Spr. 1538. यद्देय° M. 2,1. गुणे रागी Spr. 4527. राज्ये Râga-Tar. 4,660. लव्यस्या हृदयं रागि Mâlav. P. 21,11. यदु° Çiç. 9,38. Kathâs. 22,17. तदुपरागि मनः Bhâg. P. 6,1,19. कलवीणारवरागिणी श्रुतिः Kathâs. 14,30. तवाङ्घ्रिपङ्कजरेणोरागिणीं भक्तिम् Paṡâc. 4,4,3. — e) *ergötzend, erfreuend:* अन्यत्र चतूरागिण्यः Mâlatîm. 19,11. — 2) m. *eine best. Kornart,* = वल्लतरकणिश Râgân. im ÇKDr. — 3) f. रागिणी a) *eine Modification der* Râga *genannten Weisen, dreissig oder sechsunddreissig an der Zahl* d. i. *fünf oder sechs auf jeden* Râga; personif. sind sie *die Gemahlinnen der* Râga, As. Res. 3,73. Verz. d. Oxf. H. 200, *b*, 15. 201,*b*, No. 481. Paṡâc. 1,11,3. Çiç. in LA. (III) 33,5. — *b*) N. pr. der ältesten Tochter der Menakâ Vimâna-P. 48 im ÇKDr. — c) *eine Form der* Lakshmî ÇKDr. nach einem Purâṇa. — Vgl. पीतरागिणी.

राघ्, रांघते (सामर्थ्ये) Dhâtup. 4,38. — Vgl. लाघ्.

राघव m. 1) *ein Nachkomme* Raghu's H. an. 3,709. fg. (lies रघुज st. मधुज). Med. v. 49. patron. Aǵa's Ragh. 8,16. Daçaratha's R. 2,63,41. 64,1. Râma's 1,1,52. 3,22. 2,110,28 (119,28 Gorr.). 3,48,8. Ragh. 12, 32. 44. Weber, Rîmây. Up. 298. 327. fg. राघवी Bez. Râma's und Lakshmaṇa's R. 5,63,28. 6,110,17. fg. Ragh. 12, 52. pl. R. 2,64,24. 66, 6. राघवसिंह Bez. Râma's R. 1,3,24. — 2) N. pr. eines neueren Fürsten Kshitîç. 23,1. fgg. des Verfassers der Hastaratnâvalî Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483. der Ganeçastuti 358,*a*, No. 853. °पञ्चाननभट्टाचार्य Hall 48. — 3) N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 85. — 4) *Meer* H. an. Med. (wo घव्यो zu lesen ist). — 5) *ein best. grosser Fisch* diess.

राघवचैतन्य m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*, 15.

राघवदेव m. N. pr. eines Dichters ebend. 124,*b*, 16. des Vaters von Dâmodara und Grossvaters des Çârṅgadhara 122,*b*, 6. Verfassers des Laghukintana Hall 185.

राघवपाण्डवीय n. Titel eines künstlichen Gedichts, welches als Geschichte sowohl der Râghava als auch der Pâṇḍava gedeutet werden kann, Colebr. Misc. Ess. II, 98. Ind. St. 3, 481. Verz. d. Oxf. H. 121,*a*, No. 212. Verz. d. B. H. No. 331.

राघवभट्ट m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 93,*b*, 8. 279,*a*, 28. 292,*b*, 8. 341,*a*, 38. Hall 26.

राघवविलास m. Titel eines Werkes Sin. D. 208,14.

राघवानन्द m. N. pr. eines Schülers des Harinanda Wilson, Sel. Works 1, 47. eines Autors Sin. D. 277,19. Hall 188. des Verfassers der Nyâyâvalîdîdhiti Colebr. Misc. Ess. I, 300. eines Commentars zum Mânavadharmaçâstra Gild. Bibl. 430. °मुनि Hall 105. °सरस्वती 6. 91. 107. 182.

राघवाभ्युदय m. Râma's *Aufschwung,* Titel eines Schauspiels, Sin. D. 187,16.

राघवायण n. *die Geschichte* Râma's, = रामायण Agni-P. im ÇKDr.

राघवीय n. *das von* Râghava *verfasste Werk* Verz. d. Oxf. H. 104,*a*, 18.

राघवेन्द्र m. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629. 385,*a*, No. 484. Hall 99. Verz. d. B. H. 159,4. °यति No. 684.

राघवेश्वर N. eines nach Râghava benannten Liṅga des Çiva Kshetrîç. 26,11.

राङ्कव m. *Dorn* Hin. 91.

राङ्कव adj. 1) *der* Rañku *genannten Antilope gehörig:* वदने राङ्कवैः *mit* Rañku-*Gesichtern* MBh. 9,2475. *aus dem Haare des* Rañku *verfertigt, wollen;* m. *eine wollene Decke* AK. 2,6,3,13. H. 669. fg. MBh. 2, 1817. 12,6887. राङ्कवाणी च संचयान् R. 4,30,34. (अश्याः) राङ्कवाजिनसंस्पर्शः R. Gorr. 2,30,14. °कृत्तशायिन् MBh. 3,14749. राङ्कवाजिनशायिन् 5,3141. पर्यङ्के राङ्कवास्तृते R. Gorr. 2,13,6. राङ्कवास्तरण 32,9. 62,19. 3,49,15. R. ed. Bomb. 6,113,12. MBh. 1,131. 1459. — 3) *aus* Rañku *stammend* (aber nicht von Menschen) P. 4,2,100. gaṇa कच्छादि zu 133.

राङ्कवक adj. *aus* Rañku *stammend* (von Menschen) P. 4,2,100. gaṇa कच्छादि zu 134.

राङ्कवायणी adj. (f. ई) *aus* Rañku *stammend* (aber nicht von Menschen) P. 4,2,100.

राङ्ग Daçaras. in LA. 67,2 vielleicht fehlerhaft für वाङ्ग.

राङ्गण n. *eine best. Blume,* vulgo रङ्गन् ÇKDr. nach dem Dravjaguṇa.

राचित m. patron. von रचित gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

राचितायनि m. patron. von राचित v. l. im gaṇa कुरितादि zu P. 4,1,100.

1. राज्, राजति, °ते (दीप्ति) Dhâtup. 19,74. ved. auch राष्टि, घराट्; रराज, रराजतुस् und रेजतुस्, रराजे und रेजे, रराजिय und रेजिय P. 6, 4, 125. Vop. 8,127. (वि) घराजियुस्; in der älteren Sprache nur act.: राजेसे infin. RV. 8,86,10. 9,86,36. 1) *walten, herrschen; Fürst —, König —,* überh. *der Erste sein;* mit gen. *gebieten über;* mit acc. *regieren, lenken* Naigh. 2,21. समिद्धो यस्य राजसि देवो देवैः सलक्षमित् RV. 1,188, 1. देवेषु राजसि 3,49,13. 19,22. त्रयो राजन्त्यस्य वीराः 3,56,8. स्वेन दक्षेण राजथः 4,56,6. 8,13,3. अग्ने राजन्नसे दिव्येन शोचिषा (Agni heisst oft राजन्) 3,2,4. उपसामसि श्रियः त्वो वस्तुषु राजसि 8,19,31. एते सदसि राजतः AV. 7,34,1. दिवश्च ग्मश्च RV. 1,23,20. वाजस्य 36,12. 45,4. य एको वस्वो वरुणो न राजति 143,4. 144,6. 3,62,17. कृष्टेः 4,42,1. 33,4. 6,70,2. सुतस्य कलशस्य 10,167,1. — 2) *sich auszeichnen, ein Ansehen haben, besonders in die Augen fallen, prangen, glänzen; erscheinen wie;* act.: (तिस्रो त्रिरात्राः) तासां या मध्ये रात्रति सा वशा दुष्प्रतियद्धा AV. 10, 10,28. प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्टि शूरः RV. 1,104,4. मध्ये रोता दुरोणे वर्धियो राजथः (Accent missverständlich) 8,12,1. आदित्यतेजःप्रतिमानतेजा भीष्मो यथा राजसि सुव्रतस्त्वम् MBh. 1,2109. नहि राजत्ययोध्यायं मामोरवार्त्तनुो तया R. 2,114,14. R. Gorr. 2,33,36. रामलक्ष्मणयोर्मध्ये सीता राजति ते स्नुषा । विद्युद्वामत्वयोर्मध्ये पद्मा श्रीरिव रूपिणी ॥ 60,13. शिला : शैलस्य राजन्ति — बकुधा बकुभिर्वृताः 103,20. Varâh. Bṛh. S. 13, 1. Gît. 3,12. यस्य राजन्ति वलिविभङ्गाः Vâsavad. 3. Sin. D. 49,1. सुमू-

स्मेणोत्तरीयेण मेघवर्णेन राजता MBu. 3, 1021. 4, 190. राजतीमू — नलिनीमिव सर्वतः R. 2, 95, 4. राजत्कुण्डलमाला 3, 42, 42. (गिरिम्) राजत्तमुच्छ्रितैः शृङ्गैः 4, 41, 40. शङ्खचक्रगदापद्मराजदुज्ज्वलचतुष्टय Pañcar. 3, 11, 21. 12, 12. 13, 4. Prab. 81, 4. रराज कुत्स्ना माद्री च पाण्डुः सङ्ख्ये चरन्। कोणयोरिव मध्यस्थः श्रीमान्पौरंदरो गजः॥ MBu. 1, 4477. 2, 695. 5, 7. Harıv. 3968. R. 1, 1, 32. रराज मुखं पद्मः वाल्यवृत्तेरिवोच्छ्रितेः R. Gorr. 1, 13, 27. न रराज शशी चापि 2, 40, 16. 5, 3, 26. Ragh. 3, 7. 6, 6. रणतिति: — रराज मृत्योरिव पानभूमिः 7, 46. 12, 100. Kumāras. 1, 28. Kathās. 18, 404. 27, 13. Bhāg. P. 8, 15, 9. Bhatt. 9, 61. तानि यस्तान्यनीकानि रेजुर्दुर्नमार्गणैः। शैलं प्रति बलाधानि व्यासानीवार्करश्मिभिः॥ MBu. 4, 1703. 1705. R. Gorr. 2, 60, 16. 31, 18. 6, 70, 11. Ragh. 10, 60. 11, 7. Kathās. 22, 3. Bhāg. P. 4, 10, 19. 8, 10, 15. Bhatt. 2, 2. 14, 7. med.: तत्र स्म राजते भैमी सर्वाभरणभूषिता। सखीमध्ये ऽनवद्याङ्गी विद्युत्सौदामनी यथा॥ MBu. 3, 2083. एषा गङ्गा सप्तविधा राजते 10821. उपगीयमाना धर्मैर् राजते वनराजयः 11606. R. 2, 66, 22. माल्यापणेषु राजते नाग्र पण्यानि वै तथा 71, 27. 76, 9. R. Gorr. 2, 107, 14. Mārk. 1, 7. Vish. 160. सतो ऽपि हि न राजन्ते दरिद्रस्येतरे गुणाः Spr. 3120. मुक्ताकारतया in der Gestalt von 3132. 3842. प्रतिशशी च यदा दिवि राजते Varāh. Bṛh. S. 28, 11. Kathās. 27, 136. हंसवत्कापि राजते 47, 111. नूतेन कांचिद्राजते 113. Weber, Rāmāy. Up. 286. राजन्ते तावदन्यानि पुराणानि सतां गणे। यावद्भागवतं नैव श्रूयते Bhāg. P. 12, 13, 14. Mārk. P. 31, 65. Prab. 41, 10. तोयदेषु यथा — राजमाना शतह्रदा MBu. 6, 4542. सूक्ष्मवस्त्रधरं रेजे जघनम् 3, 1827. Kumāras. 6, 49. गुरुणा स्तनभोगेन मुखचन्द्रेण भास्वता। शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे अरुन्धतीव॥ Spr. 865. 2211. सुतप्रबुद्धमिव तद्रेजे राजगृहं ततः Kathās. 14, 21. 21, 14. 27, 8. 39, 160. Rāja-Tar. 4, 514. Bhāg. P. 3, 19, 8. 8, 15, 35. — partic. राजित (könnte auch zum caus. gezogen werden) sich auszeichnend, prangend, glänzend, verschönert: वनेराजितकौस्तुभ Harıv. 13778. (घनः) विचित्रवर्णविचलद्वैजयन्तीव राजितः Kathās. 81, 35. विरंगमैः। गुञ्जद्भिरित इतीति वदद्भिरिव राजितम् (वनम्) 71, 195. Bhāg. P. 4, 6, 18. Kirāt. 3, 10. Bhatt. 17, 101. वाणीः — गार्ध्वराजितैः (vgl. u. गार्ध्वराजित, auch in den Nachträgen) MBu. 3, 12230. कङ्क° (कङ्कतेराजित die neuere Ausg.) Harıv. 9318. Kir. 5, 9. रत्न° Kathās. 12, 151. कारवेगुर° 26, 232. 33, 211. 43, 9. विकीर्णकूलद्रुमराजितासु नदीषु MBu. 13, 522. (सरः) ऊर्मिरम्यराजितम् Śāk. 1, 60. उल्लसन्मत्तकोकिलाराबराजिते मधूत्सवे Kathās. 33, 5.

— caus. walten, herrschen: अधिराजो राजसु राजयाते (°ति TS.) AV. 6, 98, 1.

— यति hinfahren über: सख्यो यः स्यन्द्रो विथुरेव धर्वीयानृणो न तायुरति धन्वा राट् RV. 6, 12, 5.

— यतु nachahmen: उभे वाचौ वदति सामगा इव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानु राजति RV. 2, 43, 1. सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् 9, 96, 18.

— अभि med. prangen: एतस्योरसि सुव्यक्तं श्रीवत्समभिराजते MBu. 3, 10960.

— उप an zwei verdorbenen Stellen, nämlich MBu. 9, 3608 und Pañcat. V, 12; an der ersten Stelle ist mit der ed. Bomb. zu lesen: न विमतिं कांचिद्राजित्वा तु पराजितः, an der zweiten mit Bühler: या ब्रह्मनः स्मरोत्पत्तौ मानसेनोपराजितम्.

— निस् caus. 1) prangend machen, erglänzen lassen: यस्पृष्टचरणा क्षस्य चूडामणिमरीचिभिः। नीराजयति भूपालाः पादपीठान्तभूतलम्॥ Prab. 23, 6. 7. अमरचयचमूचक्रचूडामणिश्रेणिनीराजितोपान्तपादद्वयाम्भोज 31, 2. 2, 3. दिव्यास्त्रस्फुरदुग्रदीधितिशिखानीराजितस्यं धनुः Uttarar. 111, 14 (150, 12). — 2) die नीराजन genannte Ceremonie vollziehen an (acc.): नीराजयित्वा सैन्यानि प्रयाति विजिगीषवः (पृथिवीपतिः) Harıv. 3840. राजा नीराजितः Vasiṣ. Bṛh. S. 44, 23. नीराजितकृपद्दिप Kām. Nītis. 4, 66.

— परि nach allen Seiten hin Glanz verbreiten: प्रभया परिराजन्तम् (मृगम्) R. 3, 49, 3. वृताः सुहृद्भिः परिरेजुरुत्सवा यथा सदस्येर्ऋषिभिस्त्रयो ऽग्नयः 2, 112, 33. सर्वतो हनुमानेकः संपतन्परिराजते। कृताञ्जन इवाकाशे ज्वालामालापरिष्कृतः॥ 5, 52, 7.

— प्रति in seinem Glanze erscheinen wie (इव): घनोपघनैः कान्तैः कान्ता ललनोरमा। मतारका यैरिव सा ह्यारका प्रत्यराजत॥ Harıv. 6345.

— वि 1) = simpl. 1): वृकर्न्यक्त उर्विया वि राजथ RV. 5, 55, 3. 1, 188, 4. 3, 10, 7. स दैर्घतस्य वर्पुषो वि राजसि 10, 140, 4. वोरस्य 139, 6. देवानाम् AV. 1, 10, 1. 19, 42, 4. वि ते मदा यराजिषु: bemeisterten dich 8, 14, 10. मन्द्रानो यस्य बर्हिषो वि राजसि 13, 4. 15, 5. घियो विश्वा वि राजति 1, 3, 12. पुवृणयना सक्ष्मा वि राजसि bemeistern 5, 8, 5. विश्वं भुवनम् 63, 7. रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति 9, 71, 7. 10, 170, 1. त्रिंशद्धाम 189, 2. वि पर्वतेषु राजथ 8, 7, 1. यमिः त्रिषधस्थे धामसु समाडेको वि राजति VS. 12, 117. AV. 2, 36, 3. 3, 4, 1. उग्रो विराजन्नप वृङ्क्षि शत्रून् 12, 6. 11, 1, 22. 3, 16. 14, 1, 64. यो वाव सर्वासु दिक्षु विराजति स एव विराजति Çat. Br. 8, 5, 4, 5. लोके Ārt. Br. 1, 5. पवमानो सोमः, der auch राजन् ist) वि राजसि RV. 9, 5, 1. ऋषिर्वि राजति युष्मान् 3, 61, 13. — 2) = simpl. 2); act.: विराजति प्रज्ञया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन Kāṭh. Up. 2, 16, 2. व्यराजन्नाक्षिनस्तत्र सूर्यो ग्रुप्रतिरक्षिताः MBu. 1, 1412. विराजति यथा सोमो मेघैर्मुक्तः 3, 8106. 8148. एषा भागीरथी — वातेरिता पताकेव विराजति नभस्तले 8646. R. 2, 97, 19. R. Gorr. 2, 103, 6. 106, 16. 3, 32, 31. कृत्वाबुपचितो वृत्रो संहतो तो (पयोधरौ) विराजतः 52, 23. 6, 44, 56. 5, 67, 13. R. ed. Bomb. 4, 40, 53. Spr. 2277. शीलं शौचं तान्तिर्दातिर्ण्यं मधुरता कुले जन्म। न विराजन्ति हि सर्वे वित्तक्षीणस्य पुरुषस्य॥ 2992. Çiç. 9, 62. मृदुकुञ्चितदीर्घेण कुसुमोत्करधारिणा। केशकलापेन ललना ग्रहमाश्व विराजती॥ MBu. 3, 1922. 2137. 12068. सोमे मन्दरशृङ्गे विराजति Harıv. 4336. सूर्ये विराजति 4897. R. 5, 11, 1. 45, 2. 6, 84, 27. कारकमलविराजत्स्वायुधा Pañcar. 3, 8, 2. Bhatt. 6, 143. सरः सीतया। विरराज सरःबाकुशिवरगेव निशाकरः R. 3, 23, 11. Ragh. 2, 20. 15, 10. Rāja-Tar. 6, 279. कृतयानुगतो तत्र नृवीरौ तौ विरेजतुः MBu. 1, 7125. R. 1, 19, 12. 2, 104, 30. 3, 56, 32. Kathās. 18, 6. 19, 68. 34, 32. Bhatt. 11, 21. — med.: अनुसंवत्सरं जाता अपि ते कुरुसत्तमाः। पाण्डुपुत्रा व्यराजन्त पञ्च संवत्सरा इव॥ erschienen wie MBu. 1, 4856. एतस्मात्कारणात् — कृशिन्दो विराजते। तेभ्यो राजसूयेभ्यः überragen 2, 496. विमानस्थो विराजते 3, 8138. एष तस्याश्रमः पुण्यो य एषो ऽग्ने विराजते 10510. चन्द्रविस्पर्धिना देवि मुखेन तं विराजसे 4, 189. 228. 1042. यशसा 13, 1707. गुणाः 8598. R. 1, 13, 29. 2, 65, 17. 80, 21. 94, 6. R. Gorr. 2, 8, 43. 26, 12. 59, 17. 3, 32, 30. 4, 2, 18. 6, 92, 33. Kām. Nītis. 8, 2. 87. Spr. 1271. 3347. 4165. 4409. (वाक्) प्रिया वा मधुरा वा तु स्वाम्येवेव विराजते so v. a. am Platze sein 4600. 5195. Kir. 5, 16. Kathās. 25, 173. Rāja-Tar. 4, 401. Bhāg. P. 2, 9, 12. 3, 13, 39. 8, 5, 8. Verz. d. Oxf. H. 148, 5, 8. नगाश्च भूरिमदराजिविराजमानाः Spr. 2916. Rāja-Tar. 6, 317. Bhāg. P. 8, 15, 5. Prab. 21, 18. सौभाग्यचिह्नमिव मूर्ध्नि पदं विरेजे Spr. 3248.

Rāśa-Tar. 4,198. 5,449. Bhāg. P. 4,13,13. — partic. विराजित (könnte auch zum caus. gezogen werden) = राजित: तोरणेन विराजितं रङ्गम् MBh. 3,2193. सुवर्णाङ्गदैस्तु विराजितानां गवाम् 13,2952. Harīv. 2422. 6880. 11790. R. 2,100,21 (108,20 Gorr.). 5,13,29. Vārāh. Bṛh. S. 12,2. शीलेन विराजितवपुर्गुणः Kathās. 20,117. 22,251. 25,15. Bhāg. P. 3,23, 15. 8,18,3. Verz. d. Oxf. H. 151,a,7. Pāṇ. Gaṇ. 1,6,15. 7,29. गृहे क्रीडातिविराजितम् MBh. 4,741. 7,1567. युद्धे सिंहनादविराजितम् 7063. 12,12816. Harīv. 11861. R. 5,13,11. Kir. 5,4. Kathās. 106,46. ज्ञानेन विज्ञानविराजितेन Bhāg. P. 3,5,13. Pāṇ. Gaṇ. 1,3,77. fg. 4,57. Çaṃk. 1,296. — Vgl. विराज्. — caus. *prangen machen, mit Glanz erfüllen, Glanz verleihen, erhellen;* mit acc.: गोकुलम् विराजयति तं देशम् MBh. 13, 2699. विराजयन्नात्मतेजो राजमार्गम् R. 2,26,2. B. Gorr. 2,38,17. 3,75,55. भूतानि सर्वाणि विराजयन्तम् (सीतानुगम्) 5,11,4. Bhāg. P. 3,20,18. व्यराजयत वैदेही वेषम् तत्सुविभूषिता । उच्चतो ऽभ्रमतः काले हं प्रभेव विवस्वतः ॥ R. 2,39,18.

— अतिवि (अति वि) *in hohem Grade prangen, — glänzen;* med. MBh. 3,2700. 11844. 11860. 11862. Harīv. 7078. R. Gorr. 2,2,22. Kir. Nītis. 3,14.

— अधिवि *vorherrschen, sich auszeichnen vor* (acc.): मरुत्को अधि मिया विराजतः ṚV. 1,168,6. अधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति 3,75,3.

— अनुवि *nachleuchten:* अनु प्रयाणमुषसो वि राजति *der Bahn der Morgenröthe sieht er nach* ṚV. 5,81,2.

— अभिवि 1) als Umschreibung von वि + राज् Nir. 11,27 wohl *regieren.* — 2) *prangen, einen Glanz um sich verbreiten;* med.: (नारायणस्थानम्) भासयन्सर्वभूतानि सुश्रियाभिविराजते MBh. 3, 11861. 7, 2045. न तत्र सूर्यस्तपति न सोमो ऽभिविराजते 12, 13362. Harīv. 6413. R. 2,26, 10. Bhāg. P. 8,3,5. partic. °राजित (könnte auch caus. sein) *prangend, in vollem Glanze stehend:* दिव्यपुष्पोपकीर्णेश्च सर्वतो ऽभिविराजितम् (याममम्) MBh. 3,11043. 12,1546.

— संवि *prangen:* अर्जुनस्तु रणे राजन्योधयन्संव्यराजत MBh. 6,5472.

— सम् *walten über:* समाजैस्समधराणाम् ṚV. 1,27,1. संराजितुम् P. 8, 3,25, Sch. — Vgl. समाज्.

2. राज् (= 1. राज्), nom. राट् P. 3,2,61. 8,2,36. Vop. 3,77. fg. 184. 1) m. *Fürst, König* AK. 2,8,1,1. H. 689. Halāy. 2,366. am Ende eines comp.: अमर° MBh. 4,1573. विदर्भ° 3,2221. दैत्य° Bhāg. P. 2,17,22. मतङ्ग° MBh. 1,5385. सर्व° 2,530. वादि° Pāṇ. Gaṇ. 2,14,75. शङ्ख° *so v. a. die Muschel der Muscheln* MBh. 7,4170. 4172. — 2) m. N. eines Ekāha Kāty. Çr. 22,10,7. Āçv. Çr. 9,8,21. Pāṇ. Gaṇ. Bh. 13,1,1. Lāṭy. 3,4,1. Maçāka 5,1. — 3) m. *ein Metrum von 4 Mal 22 Silben* Ind. St. 8,107. 111. — 4) f. N. einer Göttin: इन्द्राण्यै राज्ञ्यम्बिनी राट् ṚV. 5,46,3. Nir. 12,46. nach Sāy. = राजमाना. Ausserdem in den Formeln: द्यां ते राट् (= राज्ञी Mān.) VS. 9,22. 18,28. मूर्धासि राट् (= राजमाना Mān.) 14,21. राडसि TBr. 3,11,8,10. — Vgl. अङ्ग°, अधि°, अप्र°, अरण्य°, इन्दु°, उडु°, एक°, ऋतु°, गिरि°, गृध°, ज्ञन°, ज्येष्ठ°, तृण°, देव°, धर्म°, नाग° (auch MBh. 1,1135), पेरेत°, पर्वत°, भूत°, मनु°, मृग°, पल°, यम°, वने°, विश्व°, स्व°.

राज् m. am Ende eines comp. = राजन् *Fürst, König, der Erste unter seines Gleichen* P. 5,4,91. Vop. 6,27. विदर्भ° MBh. 3,2222. 2428. 2694. शाल्व° 5,7017. केकय° R. 1,73,2. 77,17. चेदि° Çiç. 20,6. राजस° R. 6,36,6. नरराजसराजयोः Rāśa-Tar. 3,74. गन्धर्व° Vikr. 11,13. वानर° R. 1,1,60. कपोत° Hit. 9,15. प्लक° Çiç. in LA. (III) 36,10. गिरि° MBh. 3,2441. व्यूह° *so v. a. die beste der Schlachtordnungen* 6,2062. Am Ende eines adj. comp. f. या P. 4,1,28, Sch. — Vgl. अत°, अद्रि°, अधि°, अमर°, आदि°, अस्त°, गुरु°, घट°, तरु°, तृण°, देव°, हि°, हिम°, धर्म°, नक्षत्र°, नद°, नाग°, पर्वत°, पशु°, पितृ°, पुरुष°, पृथ्वी°, प्रति°, प्रेत°, ब्रत°, बाल°, बुद्ध°, बृहद्राज, ब्रह्म°, भुजग°, भृङ्ग°, मणि°, मत्स्य°, मदन°, मनुष्य°, मद्य°, मर्म°, मक्षा°, मीन°, मृग°, मेघ°, यम°, यशो°, युव°, योग°, राज°, विघ्न°, शैल°, सर्प°, सिन्धु°, सुख°, सुर° u. s. w.

राजऋषि m. = राजर्षि Bhāg. P. 8,24,10.

1. राजक (von राजन्) m. 1) *regulus:* चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ṚV. 8,21,18. Harīv. 15181. 15183. 16099. Aus metrischen Rücksichten auch schlechtweg für राजन् *Fürst, König* gebraucht: अखिलराजकपूजितार्घ्रि Kathās. 18,405. विद्याधर° 116,91. Bhāg. P. 12, 1,3. AK. 3,6,3,27. Häufig am Ende eines adj. comp. (= राजन्): षोडश° MBh. 1,333. Kir. Nītis. 8,21. मानिताखिल° Kathās. 44,183. 171. स° MBh. 9,1184. 14,2348. Spr. 519. Kathās. 12,183. 33,74. 56,181. Vgl. ग°, धातु°, भृङ्ग°, मक्षा°. — 2) N. pr. verschiedener Männer Lalit. ed. Calc. 295,5. Rāśa-Tar. 7,26. 8,2842. 2846.

2. राजक (wie oben) n. *eine Menge von Fürsten, — Königen* P. 4,2, 39. Vop. 7,19. AK. 2,8,4,3. H. 1417. Kir. 2,47. Mārk. P. 109,6. Kirāt. 3,35. Bhaṭṭ. 2,32.

राजकथा (1. राजन् + क°) f. *Geschichte der Fürsten, — Könige* Rāśa-Tar. 1,11. 14.

राजकदम्ब m. angeblich = कदम्ब H. 1138, Sch. nach Gaṇiṣ. im ÇKDa. *eine* Kadamba-*Art.*

राजकन्दर्प m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,b,38.

राजकन्यका f. *Fürstentochter, Prinzessin* Kathās. 25,3. 28,111. 36, 20. Rāśa-Tar. 2,148.

राजकन्या f. dass. R. 1,77,29. 5,31,7. Kathās. 7,74. 16,19. 24,81. 30, 36. 31,3. Bhāg. P. 9,6,43. गन्धर्वपतमुरःकिन्नर° Kādab. 45.

राजकर m. *der dem König darzubringende Tribut* Wilson.

राजकर्कटी f. *eine Gurkenart,* = चीनाकर्कटी Rāgān. im ÇKDa.

राजकर्ण m. Wasa, Nax. 2,391. nach Colebrooke Misc. Ess. II, 322, Tafel *Elephantenzahn.*

राजकर्तृ m. *Königsmacher;* pl. *diejenigen Personen, welche den König auf den Thron setzen* (nach Sāy. Vater, Brüder u. s. w.), Arr. Ba. 8,17. R. 2,79,1. auch 67,1 ist mit der ed. Bomb. so zu lesen st. राष्ट्र° bei Schl. — Vgl. राजकृत्.

राजकर्मन् n. 1) *ein dem Fürsten zu leistender Dienst* M. 7,125. किं गतेन प्रभिन्नेन राजकर्माण्यकुर्वता Spr. 673. — 2) Soma-*Handlung* Kauç. 3.

राजकलश m. N. pr. eines Mannes Rāśa-Tar. 7,20. fgg.

राजकला f. *der 16te Theil der Mondscheibe, Mondsichel* Sūr. D. 18,21.

राजकलि s. u. 1. कलि 1) e).

राजकशेरु m. (wenigstens nicht n.) *Cyperus rotundus* Hāl. 183. n. *die Wurzel von Cyperus pertenuis* Roxb. AK. 2,4,25,190.

राजकार्य n. *eine Obliegenheit des Fürsten, Staatsgeschäft* MBh. 4,2263. Kathās. 18,81. R. 1,7,2. Hit. 87,17.

राजकिनेय m. metron. von राजकी Vop. 7,7.

राजकीय (von राजक) adj. *fürstlich, königlich* P. 4,2,140. °सम् Karmâs. 62,228. पुरुष Sin. D. 13,12. °नामन् Vet. in LA. (III) 10,18. काश्मीरदेशीयराजकीय (so ist zu lesen) इतिहास: Râja-Tar. ed. Calc. auf dem Titelbl. राजकीय m. so v. a. राजकीय: पुरुष: *Diener eines Fürsten* Vet. in LA. (III) 20,21 (wo राजकीय भ° zu lesen ist). 25,21.

राजकुमार und राजकुमारी m. *Prinz* P. 6,2,59. Sin. D. 14,7. fgg. Vet. in LA. (III) 5,15. Lot. de la b. l. 107. 109. 113.

राजकुमारिका f. *Prinzessin* Karmâs. 28,43.

राजकुल n. 1) *ein fürstliches Geschlecht, die Familie eines Fürsten:* यस्य राजकूलस्य जीवितम् R. 2,87,9. °प्रज्ञाता 5,11,21. Bâlar. P. 1;16, 22. 4,21,36. 5,14,16. Prab. 99,5. pl. so v. a. *Fürsten* Spr. 1362. 3793. Vaddha-Kân. 14,12. °विवाद Śrâpv. Bh. in Ind. St. 39,3 v. u. राजकुलानुमन्तव्य Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,16. — 2) *der Palast eines Fürsten* (wo auch Recht gesprochen wird) Śrâpv. Bh. in Ind. St. 1,40,1 v. u. MBh. 4,93. 5,7426. R. 2,65,5. R. Gorr. 2,4,21. Spr. 4801. Karmâs. 4,102. 9,84. 12,88. 14,46. 23,155. 30,114. 31,74. 41,5. 43,129. 49,129. Çâṅk. zu Kâṅkh. Up. S. 53. Daçak. in Benf. Chr. 183,18. Pañkat. 29,24. 40,13. 96,20. 100,22. Hit. 88,18. Vet. in LA. (III) 22,7.

राजकुलभट्ट m. wohl *ein im fürstlichen Palast angestellter Doctor* Râja-Tar. 6,246. 249.

राजकुलवत् scheinbar R. 2,67,30, wo aber राजाकुलवतां mit der ed. Bomb. (nach dem Comm. राज्ञा कुल°) zu lesen ist.

राजकुष्माण्ड m. *Solanum Melongena* Gaṇâdh. im ÇKDa.

राजकर्तृ m. so v. a. राजकर्तर् AV. 3,5,7. Çat. Br. 3,4,4,7. 13,2,2,18.

राजकृत adj. *vom König gemacht* AV. 18,1,3.

राजकृत्य n. *eine Obliegenheit des Fürsten, Staatsgeschäft* Karmâs. 35, 36. Pañkat. 30,11.

राजकृत्वन् P. 3,2,95. = राजकर्तर्, mit acc. Bhaṭṭ. 6,130.

राजकोशातक n. *eine best. Frucht* Varâh. Bṛh. S. 54,121.

राजक्रय m. *Soma-Kauf* Âçv. Çr. 4,2,18. 8,12. Liṭ. 2,9,5.

राजक्रयणी f. so v. a. सोमक्रयणी Liṭ. 5,5,7.

राजक्रिया f. *das Geschäft eines Fürsten* Pañkat. 63,25.

राजक्षवक m. *eine Art Senf* Suçr. 1,222,17. Vîrun. 6,73. fg.

राजक्षवूरी f. *eine Art Dattelbaum* (नृपप्रिया) Râjân. im ÇKDa.

राजगवी f. *Bos grunniens* Nigh. Pr. nach dem Schol. zu Taitt. Âr. 8,1,8. 12,1 hellfarbig an Schnauze und Hintertheil, sonst schwarz.

राजगिरि m. 1) *Königsberg*, N. pr. einer Oertlichkeit Daçak. 32,11. — 2) *eine best. Gemüsepflanze*, = राजाद्रि Râjân. im ÇKDa.

राजगुरु m. *Rathgeber —, Minister eines Fürsten* R. Gorr. 2,4,12. 69,1.

राजगृह n. 1) *die Wohnung eines Königs, Palast* Karmâs. 12,54. 14, 21. 18,326. 20,47. 30,111. 36,14. Kâraṇḍ. 31. Verz. d. Oxf. H. 78,b,29. 342,b,22. — 2) N. pr. der Hauptstadt von Magadha LIA. 1,135. gaṇa धूमादि zu P. 4,2,137. MBh. 1,7476. 2,833. 3,8082. Hariv. 4953. 5132. R. 2,67,6. 68,2. 6. 70,1. R. Gorr. 1,4,26. 79,35. 43. 2,70,6. Lalit. ed. Calc. 20,6. 297,6. 298,2. 306,3. 309,3. Burn. Intr. 100. Karmâs. 3,7. 112,112. Çatr. 10,331. Wilson, Sel. Works 1,291. 293. 295. 299. 303. neun Jôgana von Pâṭaliputra entfernt Ind. St. 16,312. °माहात्म्य Mack. Coll. 1,81. Verz. d. Pet. H. No. 41. राजगृह (wohl ein davon abgeleitetes adj.) वनम् Viṣṇ-P. in der Einl. zu Viśvâm. 13.

राजगृहक adj. von राजगृह 2) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,137.

राजगेह n. = राजगृह 1) Paṇḍar. 2,6,22.

राजगोध m. *ein best. Fisch* Taitt. 1,2,17.

राजघ P. 3,2,55, Vârtt. Naiṣn. 1,10 nach dem Comm. entweder राज्ञ: प्रत्यर्विनो कृतवान् oder राजश्रेष्ठ; nach Taitt. 3,1,14 = तीक्ष्ण.

राजचिह्नक n. *die Geschlechtstheile* (उपस्थ) Çabdar. im ÇKDa.

राजजम्बु f. *eine Art* Gambû und *eine Art Dattelbaum* (पिण्डखर्जूर) H. an. 4,212. Med. h. 15. — Vîra. 90.

राजत (von रजत) 1) adj. (f. ई) *silbern* P. 4,3,134. Âçv. Çr. 9,4,12. Kâṭy. Çr. 19,4,10. 20,2,6. Liṭ. 9,2,13. M. 3,202. 5,112. 8,136. fg. 220. Jâṇ. 1,182. MBh. 1,7215. 5,7101. 6,1806. 7,1030. 1024. 3638. Hariv. 3931. R. 1,13,18 (10 Gorr.). 3,21,14. 17 (धातव:). 4,40,46. 5, 12,20. Suçr. 1,99,5. 170,9. 240,9. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 23. Râja-Tar. 4,198. 205. Spr. 3322. Mâlav. P. 31,64. Weber, Kṛṣṇaj. 273. 278. fg. राजतान्वित *mit Silber ausgelegt* M. 3,201. हेमराजतसंकीर्ण *mit Gold und Silber ausgelegt* R. 4,33,25. — 2) n. *Silber* Schol. zu Kâṭy. Çr. 51, 21. हेमराजतचित्राभ्याम् R. 3,49,1.

राजतनय 1) m. *Fürstensohn, Prinz* Karmâs. 28,150. — 2) f. या *Fürstentochter, Prinzessin* Karmâs. 10,120. 16,24.

राजतरंगिणी f. *Strom d. i. fortlaufende Geschichte der Könige*, Titel verschiedener *Chroniken* von Kâçmîra Râja-Tar. 1,24. Gild. Bibl. 241. fgg. LIA. 1,473. fgg. II, 18. fgg. Verz. d. Oxf. H. 147.

राजतरु m. *Cathartocarpus (Cassia) fistula* und *Pterospermum acerifolium Willd.* Râjân. im ÇKDa. — Suçr. 2,522,18.

राजतरुणी f. *Kugelamaranth* Râjân. im ÇKDa.

राजता (von राजन्) f. *Königthum, königliche Würde* R. 2,70,7. Kim. Nitis. 19,16. Spr. 2290. Karmâs. 36,68. 42,45. घ° *Königlosigkeit* Ait. Br. 1,14.

राजताल 1) m. *Betelnussbaum* Taitt. 2,4,40. Çabdar. im ÇKDa. °ताली f. dass. Ragh. 4,56. — 2) m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87,a,11.

राजतिमिष m. *Cucumis sativus Lin.* Hin. 181. — Vgl. राजतेमिष.

राजतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Wilson, Sel. Works II, 19. fg.

राजतुङ्ग m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 7,338.

राजतेमिष m. = राजतिमिष Taitt. 2,4,36.

राजत्व n. = राजता Hariv. 7316. R. 2,72,31. R. Gorr. 1,1,38. Karmâs. 20,191. 22,211. 30,62. 52,373. Râja-Tar. 4,177. विद्याधर° Karmâs. 26,242. सर्वस्तवानाम् MBh. 13,1134.

राजदण्ड m. *königliche Gewalt, eine vom König verhängte Strafe:* ततो न्यूनतरस्यास्य नापराधो न पातकम् । न चास्य राजदण्डोऽपि प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ इति प्रायश्चित्ततत्त्वधृताङ्गिरोवचनम् ÇKDa. °भयाकुल Râja-Tar. 5,240. = शास्ति Schol. zu Up. 4,181.

राजदत्ता f. N. pr. eines Frauenzimmers Karmâs. 36,48.

राजदत्त m. 1) *Hauptzahn, Vorderzahn* P. 2,2,31. राजदत्तास्तु चत्वारो दशनानां पुर: स्थिता: Taitt. 2,6,29 (s. die Corrigg.). चत्वारो राजदत्ता: स्यु:

मंमुखीना रदास्तु ये Bâla beim Schol. zu Naish. 7, 46. मध्यदत्ता राजदत्ता दंष्ट्रात्यार्श्वयोर्द्वयोः Vaśe. beim Schol. zu H. 584. राजदत्तौ तु मध्यस्थावुपरिश्रेणिकौ क्वचित् H. 584. *vier Zähne* gemeint Naish. 7, 46. — 2) N. pr. eines Mannes; s. राजदत्ति.

राजदत्ति m. patron. von राजदत्त P. 4, 1, 160, Sch.

राजदर्शन n. *das Zugestehtkommen eines Fürsten, Audienz bei einem Fürsten:* मां राजदर्शनं कारय so v. a. *führe mich zum Fürsten* Hit. 98, 8. 9. Titel eines künstlichen Gedichts Verz. d. Oxf. H. 211, *b*, 6.

राजदार m. pl. *eine Gemahlin* und *die Gemahlinnen des Königs* R. 2, 89, 15.

राजदुहितृ f. *Fürstentochter, Prinzessin* P. 6, 3, 70, Vârtt. 10. Kathâs. 10, 96. Pañkat. ed. orn. 50, 1. Davon °दुहितृमय adj. (ई): सर्वा दिशो °मयीरपश्यत् so v. a. *überall glaubte er die Prinzessin zu sehen* ebend. 3.

राजदूर्वा f. *eine lange Art von* Dûrvâ-*Gras* Prasoḍan. 93, *b*, 5.

राजदृषद् f. P. 6, 1, 223, Sch. wohl Bez. *des grösseren unteren Mühlsteins.*

राजदेव m. N. pr. eines Lexicographen (= गोत्रराजदेव nach Aufrecht) Verz. d. Oxf. H. 182, *b*, 14.

राजद्रुम m. wohl = राजवृक्ष Suça. 2, 238, 17. 321, 14.

राजद्वार f. *das Thor eines fürstlichen Palastes* Hit. 98, 7.

राजद्वार n. dass. Harîv. 3284. Spr. 458. Mâṛk. P. 126, 18 (°द्वारम् acc. könnte auch zu °द्वार् gehören). Hit. 88, 18, v. l.

राजद्वारिक m. *Thürsteher an einem fürstlichen Palaste* Spr. 2353.

राजधत्तूर m. *eine Art Stechapfel* Râǵân. im ÇKDn. u. महाशठ; °क m. nach ders. Aut. in der alphabetischen Ordnung.

राजधर्म m. *die Pflicht eines Fürsten;* pl. *die für einen Fürsten geltenden Bestimmungen* M. 7, 1. 9, 324. R. 2, 26, 1. 102, 1. MBh. 12, 3089. Verz. d. Oxf. H. 7, *b*, 4. 13, *a*, 30. 85, *b*, 42. 268, *b*, 5. राजधर्मानुशासन n. Titel des 1ten Abschnittes im 12ten Buche des MBh. °कौस्तुभ bildet einen Theil des Smṛtikaustubha Verz. d. Oxf. H. 272, *b*, No. 645.

राजधर्मन् m. N. pr. eines Reihers, eines Sohnes des Kaçjapa, MBh. 12, 6337. fgg. — Vgl. धर्मराज् 3).

राजधान्यक n. = राजधानी Çabdar. im ÇKDn.

राजधानी f. *die Residenz eines Fürsten* H. 973. Halâj. 2, 131. MBh. 3, 13887. 4, 147. fg. 7, 2973 (यमस्य). R. 1, 4, 24 (3, 65 Gorr.). 9, 66. 2, 46, 4. 52, 80. 88, 19. 4, 41, 66. 5, 16, 105. 107, 16. Raghun. 2, 70. 5, 40. Çiç. 112, 19. Mucch. 25. Kathâs. 15, 63. 25, 269. 32, 121. 34, 14. Râǵa-Tar. 4, 24. 70. 5, 236. 6, 125. Verz. d. Oxf. H. 13, *b*, 3. Prab. 25, 7. कुल° Raghun. 16, 36.

राजधान्य n. *Panicum frumentaceum* Roxb. Râǵân. im ÇKDn. *eine Reisart* (Râǵân. ebend. u. d. W. राजान्न). Varâh. Bṛh. S. 15, 12.

राजधामन् n. *Palast* —, *Residenz eines Fürsten* Râǵa-Tar. 5, 482. कुरु° (kann in कुरुराज + धामन् mit dem Comm. zerlegt werden) Bhâg. P. 10, 71, 33.

राजधीर m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 49, 3.

राजधुर् (राजन् + धुर्) m. *das Joch, an dem ein Fürst zu ziehen hat, die Last der Regierung* P. 5, 4, 74, Sch. °धुरा f. Vop. 6, 73.

राजधुस्तूरक m. *eine Datulart* Râǵân. im ÇKDn.

राजधूर्त m. dass. ebend.

1. राजन् (von 1. राज्) Uṇâdis. 1, 156. m. 1) *König, Fürst* AK. 2, 8, 4, 1. 3, 4, 16, 114. Taik. 2, 8, 1. H. 689. an. 2, 280. fg. (= पार्थिव und प्रभु). Med. n. 115 (= नृपति und प्रभु). Halâj. 2, 266. उर्वं तत्रं पंशीत कृत्नि राजभिः RV. 1, 40, 8. 126, 1. वस्वः 2, 14, 11. कुविन्मो गोषा कासे ब्रवस्य कुविद्राजानम् 3, 43, 5. सघस्थस्य 4, 3, 1. 30, 7. सप्तिं वा यं राजानं वा सुपूदघः 5, 54, 7. ब्रह्मणो देवकृतस्य 7, 97, 3. राजामुत्तमं मानवानाम् AV. 4, 22, 5. राजा राष्ट्रं वि रक्षति 11, 5, 17. अयं विशो विश्पतिरस्तु राजा 4, 22, 3. सोषधीनां राजा वनस्पतिः 8, 7, 16. पूर्वो राज्ञो ऽभिवदति Çat. Br. 3, 3, 4, 14. यस्यै विशो राजा भवति 5, 4, 2, 3. वैश्यो राज्ञे बलिं हरेत् 11, 2, 6, 14. कौरव्य 12, 9, 2, 3. ऐक्ष्वाक Çiṅkh. Çr. 15, 17, 1. Âçv. Gṛhj. 3, 12, 1. Kauç. 15. M. 1, 114. 4, 33 (राजतम्). 110. राजानः क्षत्रियाश्च 12, 46. MBh. 3, 2072. भव राजा कुरूणु 9, 1891. R. 1, 1, 33. Çiç. 27, 18. 31, 3. राजेन्दु Raghu. 1, 12. पृथुं वैन्यं प्रजा दृष्ट्वा रक्ताः स्मेति यदब्रुवन् । ततो राजेति नामास्य कानुरागादजायत ॥ MBh. 7, 2396. 12, 1032. VP. 101. fg. तथैव सो ऽभूदन्वर्था राजा प्रकृतिरञ्जनात् ॥ Raghu. 4, 12. in etym. Zusammenhang mit रज् gebracht Çiç. 111. 64, 21. Unter den Göttern führen als *Herrscher* je in ihrem Gebiete den *Königsnamen:* Varuṇa und die übrigen Âditja RV. 1, 24, 7. 4, 1, 2. 5, 85, 3. 7, 64, 1. AV. 3, 3, 3. Çat. Br. 2, 2, 3, 1. RV. 1, 20, 3. 41, 3. 3, 56, 7. 62, 6. 7, 66, 11. AV. 3, 12, 4. Kauç. 71. Indra H. an. Med. RV. 1, 178, 2. 5, 40, 4. 6, 36, 4. 7, 27, 3. 8, 33, 3. 59, 1. TS. 5, 5, 22, 1. Agni RV. 5, 4, 1. 6, 1, 13. 8, 5. 9, 43, 24. 10, 87, 3. Jama 10, 14, 1. 7. AV. 6, 116, 1. 8, 10, 23. 18, 3, 69. TS. 5, 5, 22, 1. Çat. Br. 2, 3, 3, 1. Soma d. i. *Mond* (AK. 3, 4, 16, 114. Taik. 1, 1, 35. 3, 3, 256. H. 103. H. an. Med. Hâr. 13. Halâj. 1, 42) und Soma RV. 1, 23, 14. 6, 75, 18. VS. 6, 26. AV. 2, 36, 3. 5, 21, 11. 6, 104, 3. 8, 7, 20. 14, 1, 49. Kauç. 128. सोमो राजा चन्द्रमाः Çat. Br. 10, 4, 2, 1. 1, 6, 4, 5. 14. 14, 5, 4, 3. TS. 2, 3, 5, 1. राहू राजानं त्सरति चरन्तम् Kauç. 100. सोमाय राज्ञे M. 9, 129. राजन् *Mond* und zugleich *König* Kirâṭ. 2, 211. fg. 222. Auch der Soma-*Saft* und die *Pflanze* werden geradezu *König* genannt: राजानमुपावरोरुषुः Âit. Br. 1, 14. तान्क्व राजा मदपी चकार 6, 1. 7, 22. सोमस्य राज्ञो भक्षयन्ति Çat. Br. 1, 1, 2, 7. 3, 3, 2, 1. 4, 2, 11. राजानं क्रेष्यन् 4, 5, 4, 2. यदि राज्ञोपदस्येत् 2, 2, 5. Am Ende eines comp. steht in der Regel राज्ञ्, jedoch findet man nicht selten auch राजन्, z. B. विदर्भ° MBh. 3, 2124. काशि° 5, 6040. केकय° R. 1, 12, 23. त्रिदशारि° 6, 36, 78. सायद° Pañkat. 63, 20; vgl. धर्म°, नाग°, प्रति°, फल°, मनुष्य°, यम°, पुत्र°, सिन्धु°, सोम°, स्व°. Am Ende eines adj. comp. f. राजन् oder राज्ञी P. 4, 1, 28, Sch. — 2) = राजन्य *ein Mann aus der Kriegerkaste* AK. 2, 4, 16, 114. H. 863. H. an. Med. राजविशः Âçv. Çr. 1, 3, 2. Kâṭhaka Up. 8, 14, 1. ब्राह्मण, राजन्, वैश्य, शूद्र M. 2, 32. 36. fg. 44. 46. 3, 12. — 3) *ein* Jaksha Taik. 3, 3, 256. H. 194. H. an. Med. wohl aus राजराज als Bein. Kubera's geschlossen. — 4) N. pr. eines der 18 Diener des Sonnengottes und zwar einer Form Guha's Vâjpi beim Schol. zu H. 103.

2. राज्ञ् (wie eben) *Lenkung, regimen:* यद्द्यौ भुवं पत्नीमानस्य राजनि *ich bin unter der Leitung* d. h. *ich folge dem Willen des Frommen* RV. 10, 49, 4.

राजन (von राजन् 1) adj. *aus fürstlichem Geschlecht stammend, aber nicht zur Kriegerkaste gehörig* Sidd. K. zu P. 4, 1, 137. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses MBh. 6, 329 (VP. II, 148). — 3) n. oxyt. N. eines Sâman

Ind. St. 3,231,a. TS. 7,5,8,2. Liṭ. 1,6,38. 3,12,7. Çiṅkh. Çr. 16,14,8. Kâṭhâ. Up. 2,20,1. 2. Bhâg. P. 11,27,31. इन्द्रस्य राज्ञरोहिणो, रोहिणोरेकर्षे राज्ञरम् Ind. St. 3,208,b.

राज्ञय m. *Staatsklugheit, Politik* R. 5,11,10. — Vgl. राज्ञीति.

राज्ञापित m. *ein fürstlicher Bartscheerer* und *ein Bartscheerer ersten Ranges* P. 6,2,63, Sch. (Accent des Wortes).

राज्ञामन् m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. राज्ञपटोलक.

राज्ञि m. patron. von ज्ञ Taitt. Âr. 5,4,12. Pâraṅk. Bh. 14,3,17. 23,16,11.

राज्ञिघण्टु m. Titel eines medicinischen Wörterbuchs von Haraharipaṇḍita (Harasiṁha-Kâçmîrapaṇḍita ÇKDa. VII, Einl.) Nicol. Pr. Verz. d. Oxf. H. 286,a,3. im ÇKDa. stets in der Form राज्ञनिर्घण्ट citirt; राज्ञिघण्ट Colebr. Misc. Ess. II,20. — Vgl. निघण्टुराज्ञ.

राज्ञिवेशन n. *der Palast eines Fürsten* R. 2,51,13. 78,13. R. Gorr. 2,4,13. 12,24.

राज्ञीति f. *Staatsklugheit, Politik* MBh. 15,978. Kathâs. 34,189. 42, 93. षड्विधा Bhâg. P. 10,45,24. Pañkat. 188,4. Verz. d. B. H. No. 495. 1018. Verz. d. Oxf. H. 85,b,44. 86,a,6. 123,a,24. 125,a,38. °शास्त्र 131, b, No. 238.

राज्ञील m. *Smaragd* Çabdar. im ÇKDa.

राज्ञ्य (von राज्ञ्) Çiṅk. 4,8. 1) adj. *fürstlich, königlich;* m. *ein Angehöriger fürstlichen Stammes, Adelicher,* älteste Bez. *der zweiten Kaste* P. 6,1,137. AK. 2,8,4,1. H. 863. Halâ. 2,266. बाहू राज्ञ्यः कृतः RV. 10,90,12. ब्राह्मणा एव पतिर्न राज्ञ्योऽ न वैश्याः AV. 5,17,8. 18,3. 6,38, 4. 10,10,18. 12,4,32. fg. 15,8,1. 19,32,8. VS. 22,22. 30,5. Ait. Br. 3, 48. 7,19. 31. 8,6. TS. 2,4,12,1. 5,4,4. 10,1. 5,1,10,2. TBr. 1,7,2,6. तत्र राज्ञ्यः Çat. Br. 5,1,5,11. 8,28. 4,3,17. 4,9. 13,4,3,5. राज्ञ्या विशः 17. राज्ञ्या मनुष्याः 5,3,6. Kâṭy. Çr. 4,9,2. 3. 15,1,17. 22,10,7. Âçv. Çr. 2, 1,3. 4,15,5. M. 2,49.190. 3,110. 4,84. 10,12. 23. 98. 11,83. 87. 93. 127. Jâǵñ. 1,92. P. 6,2,34. MBh. 1,1811. 5,7249. 13,1611. 1905. भोज्ञ° 14,2581. R. 2,82,31 (89,13 Gorr.). Ragh. 3,43. 4,37. 7,32. Megh. 49. Vârâh. Bṛh. S. 4,24. 80,11. Uttarar. 112,17 (152,4). Bhâg. P. 1,7,43. 8,43. 4,28,29. राज्ञ्या f. MBh. 5,4497. Harîv. 8309. m. pl. Bez. eines best. *kriegerischen* Stammes (vgl. राजपुत्र) Vârâh. Bṛh. S. 14,28. Mârk. P. 58,47. Nach Uṇâdis. 3,100 राज्ञ्य, nach Uǵǵval. mit dieser Betonung Bein. Agni's. — 2) m. *eine Art Dattelbaum* (तोरिका) Râǵân. im ÇKDa.

राज्ञ्यक 1) adj. von *Kriegern bewohnt* P. 4,2,53. — 2) n. *eine Schaar von Kriegern* P. 4,2,39. 5,4,151, Vârtt. AK. 2,8,2,4. H. 1417. Ragh. 7,33. Daçak. 57,12.

राज्ञ्यत्व (von राज्ञ्य) n. *das Kriegersein, das zur-Kriegerkaste-Gehören* Sây. zu RV. 1,125,1.

राज्ञ्यबन्धु m. *Fürstengenosse* (gewöhnlich geringschätzig gebraucht) Çat. Br. 1,1,4,12. 2,4,2. 3,1,4,10. 10,5,2,10. 11,6,3,5. 14,9,4,5. Liṭ. 3,2,10. = राज्ञ्य, क्षत्रिय M. 2,65.

राज्ञ्यवत् adj. *mit einem Fürstlichen verbunden* TS. 5,1,10,3.

राज्ञ्यवस् adj. von *einem guten Fürsten beherrscht* P. 5,2,14. AK. 2, 1,13. Ragh. 6,22. Kirât. 3,6. — Vgl. राज्ञवस्.

राज्ञपटोल 1) m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Rattan. im ÇKDa. °क m. dass. Hîn. 105. — 2) f. ई = मधुरपटोली (fehlt in den Wörterbüchern) Râǵân. im ÇKDa.

राज्ञपट्ट m. *eine Art Edelstein, ein Diamant von geringerer Güte* Taik. 2,9,30. H. 1066. Vaṭṭ. 137. Uttarar. 97,16 (129,1). Mâlatîm. 180,7.

राज्ञपत्निका f. = चातकपक्षिन् ÇKDa. angeblich nach Hîn.; vgl. राज्ञभट्टिका.

राज्ञपति m. *Fürstenherr* Çat. Br. 11,4,3,9. Kâṭy. Çr. 5,13,1.

राज्ञपत्नी f. *Gemahlin eines Fürsten* R. 2,104,2. Vârâh. Bṛh. S. 5,76. Spr. 4935.

राज्ञपथ m. *Hauptstrasse* Harîv. 6341. R. Gorr. 2,4,18. 5,10,14. Ragh. 14,30. 16,12. Kumâras. 7,63. Râǵa-Tar. 1,201. Bhâg. P. 10,42,1. am Ende eines adj. comp. f. या R. 1,77,7 (78,6 Gorr.). R. Gorr. 2,6,2. Nach gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100 प्रतिकृतौ संज्ञायाम्.

राज्ञपथ्य (von राज्ञपथ), °थ्ये *eine Hauptstrasse darstellen* Verz. d. Oxf. H. 235,a,13.

राज्ञपद्धति f. *Hauptstrasse:* इयं सा मोक्षमार्गाणामग्र्या राज्ञपद्धतिः Sarvadarçanas. 147,8.

राज्ञपर्णी f. *Paederia foetida Lin.* Râǵân. im ÇKDa.

राज्ञपलाण्डु m. *eine best. Art Zwiebel* ebend.

राज्ञपाल m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. II,280. Reinaud, Mém. sur l'Inde 263 (राज्यपाल v. l.). eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,b,2.

राज्ञपितृ m. *Königsvater* Ait. Br. 8,12. 17.

राज्ञपीलु m. *ein best. Baum,* = महापीलु Râǵân. im ÇKDa.

राज्ञपुत्र 1) m. *a) Königssohn, Prinz;* f. ई *Königstochter, Prinzessin:* कस्य नरा राज्ञपुत्रेव सवनानि गच्छथः RV. 10,40,2. Ait. Br. 7,17. Çat. Br. 13,4,3,5. 5,3,5. Âçv. Çr. 10,8,11. Pâraṅk. Bh. 1,1,4. TBr. 3,8, 8,1. Kâṭh. 14,8. 28,1. Liṭ. 3,10,1. Prâçnop. 6,1. राज्ञो राज्ञपुत्रान् MBh. 3,2125. 2767. 3376. 4,92. R. 1,4,2. 58,15. 2,26,4. 27,2. Milav. 70,23. Kathâs. 28,111. fgg. Râǵa-Tar. 2,144. Hit. 7,21. 44,7. 45,1. °पुत्री P. 6,3,70, Vârtt. 10. MBh. 3,2443. 15602. 4,75. R. 1,72,12. 2, 38,6. R. Gorr. 2,26,4. 4,42,12. Buâr. Nîtiç. 34,22. Kathâs. 7,104. 11,54. 16,21. 18,165. 388. 33,7. Verz. d. Oxf. H. 216,b,39. Pañkat. 44, 21. — *b) ein* Radschput, im System eine Mischlingskaste: der Sohn eines Vaiçja von einer Ambashṭhâ (Paraçara im ÇKDa. Colebr. Misc. Ess. II,180) oder eines Kshatrija von einer Karaṇî (Verz. d. Oxf. H. 22,a,10) Kathâs. 24,90. 115. 38,74. 74,89. 111,29. Râǵa-Tar. 7,234. Hit. 39,18. Vet. in I.A. (III) 23,17. f. ई Verz. d. Oxf. H. 22,a,10. — *c) der Planet Mercur* (*Sohn des Mondes*) Taik. 1,1,23. Çabdar. im ÇKDa. — *d) eine Mangoart* (महाराज्ञचूत) Râǵân. im ÇKDa. — 2) f. ई *a) Königstochter* und *ein Frauenzimmer aus der Kaste der* Radschput; s. o. 1) *a) b).* — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: = कटुतुम्बी und ज्ञाती Râǵân. im ÇKDa. = मालती Gaṇîkâ. im ÇKDa. — *c) eine Art Parfum* (रेणुका) Râǵân. im ÇKDa. — *d) eine Art Metall* (राज्ञरीति) ebend. — *e) Moschusratte* ebend.

राज्ञपुत्रक (von राज्ञपुत्र) n. *eine Menge von Königssöhnen* P. 4,2,39. H. 1417.

राजपुत्रा f. *Mutter von Königen (Könige zu Söhnen habend)* RV. 2,27,7.

राजपुत्रिका f. 1) *Königstochter, Prinzessin* Hariv. 1356. — 2) *ein best. Vogel* (शारारि) Gaṇiku. im ÇKDa.

राजपुत्रीय Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,28.

राजपुर n. *Königsstadt*, N. pr. einer *Stadt* LIA. I, 562. MBu. 7,119. 12,110. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,23. Hiouen-thsang I, 188. °पुरी f. desgl. Rāǵa-Tar. 6,286. 348. fg. 7,1133. 1155. 8,1168. 1372.

राजपुरुष m. *Diener —, Beamter eines Fürsten* P. 6,1,223, Sch. Nir. 2,3. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,3. MBu. 1,4314. Mṛǵ. 154,11. fg. Çik. 17,6. Spr. 3229. Vaǵas. Bṛn. S. 53,8. 14. 93,20. Kathās. 9,84. 24,62. Rāǵa-Tar. 3,156. 5,435. 467. 6,98. Bhāg. P. 5,26,16. 22. Pañcat. 40, 31. 97,24. Hit. 63,8. Vet. in LA. (III) 22,7. Z. d. d. m. G. 14,572,8.

राजपुष्प 1) m. *Mesua Roxburghii Wight.* Çabdam. im ÇKDa. — 2) f. ई *eine best. Pflanze*, = करुणी Rāǵān. im ÇKDa.

राजपूग m. *eine Art Betelpalme* Bhāg. P. 4,6,17.

राजपूरुष m. = राजपुरुष Kathās. 24,52.

राजपौरुषिक (wohl von राजपौरुष) adj. *im Dienste eines Fürsten stehend* MBu. 13,6028.

राजपौरुष्य n. nom. abstr. von राजपुरुष gaṇa धनुश्शतिकादि zu P. 7,3,20.

राजप्रकृति f. *Minister eines Fürsten* R. Gorr. 2,88,3.

राजप्रत्यनस् m. Accent des Wortes P. 6,2,60.

राजप्रिय 1) m. = राजकलाण्डु Rāǵān. im ÇKDa. u. d. letzten Worte. — 2) f. या *eine best. Pflanze*, = करुणी Rāǵān.

राजप्रेष्य 1) m. *Diener eines Fürsten* MBh. 3,2382. 12,2359 nach der Lesart der ed. Bomb. (ग्रामप्रेष्य ed. Calc.). — 2) n. *Fürstendienst* (die richtigere Form wäre °प्रेष्य) MBh. 12,2286.

राजफणिञ्जक m. *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDa.

1. राजफल n. *die Frucht von Trichosanthes dioeca Roxb.* Trik. 2,4,22.

2. राजफल 1) m. *ein best. Baum*, = राजादनी Rāǵān. im ÇKDa. u. d. letzten Worte. — 2) f. या *Eugenia Jambolana Lin.* (जम्बू) Rāǵān. im ÇKDa.

राजबदर 1) m. *eine Art Judendorn* Rāǵān. im ÇKDa. — 2) n. स्याद्राजबदरं रक्तमेलके लवणे ऽपि च Med. r. 307. *a plant (a sort of Justicia); salt* Wilson nach ders. Aut.; vgl. मेलकलवण, welches *eine Art Salz* bezeichnet.

राजबला f. *Paederia foetida Lin.* AK. 2,4,3,18. — Vgl. भद्रबला.

राजबलेन्द्रकेतु m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 532.

राजबान्धव m. f. (ई) *Verwandter (Verwandte) des Fürsten* Âçv. Gṛhy. 2,3,3 (des Königs Varuṇa). Çāṅkh. Gṛhy. 4,18. Pāra. Gṛhy. 2,4. Rāǵa-Tar. 6,252 (°भान्धव: Tr.).

राजबोधिन् adj. von *fürstlicher Abstammung* AK. 2,7,2. H. 713. Rāǵa-Tar. 4,353. 6,93. 8,2801. 2934.

राजब्राह्मण und राजब्राह्मण m. P. 6,2,59.

राजभट m. *Söldling eines Fürsten, Soldat* R. 1,54,3 (55,3 Gorr.). s. Kathās. 90,117. Daçak. 25,3. Bhāg. P. 3,30,21. 5,26,27. — Vgl. राजभृत.

राजभट्टिका f. *ein best. Wasservogel* Hit. 84.

राजभद्रक m. *Costus speciosus* oder *arabicus* und *Azadirachta indica* Juss. Rāǵān. im ÇKDa. Die richtige Lesart soll nach ÇKDa. पारिभद्रक sein.

राजभय n. *Gefahr von Seiten eines Fürsten* Vaǵas. Bṛn. S. 53,102. 95, 19. *Furcht vor einem Fürsten* Pañcat. 218,5.

राजभवन n. *der Palast eines Fürsten* R. 1,20,7. R. Gorr. 2,3,5. Kathās. 14,20. 18,120. 26,111. 42,128. Rāǵa-Tar. 4,12. Bhāg. P. 9,10,45.

राजभाव m. = राजता Çabdārthak. bei Wilson.

राजभाव् gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

राजभृत (राजन्+भृत) m. = राजभट MBh. 13,4276. R. Gorr. 1,55,8. Vaǵas. Bṛn. S. 10,18. राजभृत auch adj. von राजभृत् gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

राजभृत्य m. *Diener eines Fürsten* R. Gorr. 1,55,6. Rāǵa-Tar. 6,101.

राजभोगीन adj. *einem Fürsten zum Genuss gereichend, — heilsam* P. 5,1,9, Vārtt. 3.

राजभोग्य 1) m. *Buchanania latifolia.* — 2) n. *Muskatnuss* Çabdam. im ÇKDa. — Im Pāli ist राजभोग्ग *Minister* oder *hoher Beamter.*

राजभोजन adj. *von Fürsten genossen:* शालय: P. 6,2,150, Sch.

राजभ्रातृ m. *Königsbruder* Ait. Br. 1,13. Çat. Br. 5,4,4,6. Kāty. Çr. 15,7,12. Pāraṇ. Gṛ. 19,1,4.

राजमणि m. *eine Art Edelstein* Vaǵas. Bṛn. S. 80,4.

राजमण्डूक m. *eine grosse Froschart* Rāǵān. im ÇKDa.

राजमन्दिर n. 1) *der Palast eines Fürsten* Kām. Nītis. 16,3. Kathās. 15,122. 18,399. 26,43. 32,182. 43,9. 47. 55,100. Rāǵa-Tar. 6,9. 313. — 2) N. pr. der Hauptstadt der Kaliṅga LIA. I, 563, N.

राजमल्ल m. *ein fürstlicher Ringer* Trik. 3,2,17.

राजमल्लिल N. pr. einer Stadt Ind. St. 2,245.

राजमहेन्द्रतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 148,*b*,34.

राजमातृ f. *des Königs Mutter* Spr. 2607.

राजमात्र n. *Jeder der auf den Namen* राजन् *Anspruch hat* Çāṅkh. Br. 27,6. Ça. 17,5,3. 4. 15,3.

राजमानव n. nom. abstr. von राजमान (s. 1. राज्) *prangend, glänzend* Vedântas. (Allah.) No. 72.

राजमानुष m. *ein königlicher Beamter* Jiṭ. 2,242.

राजमार्ग m. 1) *Hauptstrasse* M. 9,282. MBh. 3,2018. 4,2183. 14,2049. Hariv. 4467. 5779. R. 1,5,8. 2,26,2. 33,8. 41,14. 43,13. 57,16. 70,26. R. Gorr. 1,79,38. 2,1,37. 4,16. 74,13. 3,29,2. 4,33,10. 5,10,20. 32,12. 6,9,21. Spr. 4416. Mṛǵ. 26,7. Raǵat. 6,10. 7,4. Kām. Nītis. 7,29. Bhāg. P. 1,11,25. Mālav. P. 16,20. 26. Pañcar. 1,4,58. Pañcat. 129,16. Vet. in LA. (III) 19,5. *die grosse Strasse* in übertr. Bed. Sarvadarçanas. 111, 21. — 2) *der Fürsten Art und Weise, — Verfahren* so v. a. *Kampf:* °विशारद Hariv. 15989.

राजमार्तण्ड Titel eines astr. Werkes und eines Commentars zu Patañǵali's Yogasûtra Colebr. Misc. Ess. I, 235. II, 463. Verz. d. Oxf. H. 229,*a*, No. 561. 279,*a*,28. 292,*b*,3. 316,*a*,12. 336,*a*, No. 790. Verz. d. B. H. No. 1176. Hall 10. Weber, Ksḥṇaj. 233. 295. — Vgl. बृहद्राजमार्तण्ड.

राजमाष m. *Dolichos Catjang* Trik. 2,9,5. Hir. 182. MBh. 13,3282 (fälschlich °माम ed. Calc.). Çiç. Saṃh. 3,9,7. Viçva. 6,19. Mālav. P. 32,11.

राजमाष्य adj. *zum Anbau von* राजमाष *geeignet, damit bestanden* (ein Feld) P. 5,1,20, Vārtt. 1, Sch.

राजमास MBh. 13,3282 fehlerhaft für राजमाष.

राजमुद्ग m. *eine Bohnenart* H. 1174.

राजमुनि m. = राजर्षि Çiç. 47.

राजमृगाङ्क 1) Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Verz. d. B. H. No. 997. — 2) Titel eines astr. Werkes Verz. d. B. H. 113,*b*,39.

राजयक्ष्मन्, später °यक्ष्मन् m. *eine best. lebensgefährliche Krankheit; bei Spätern Lungenschwindsucht* (ein Wortspiel leitet die Benennung vom *Mond* ab) H. 463. Halâs. 2,447. RV. 1,161,1. AV. 11,3,39. 12,5, 22. TS. 2,3,5,2. Kauç. 13. Kâtj. 11,3. 27,3. राजश्चन्द्रमसो यस्माद्भूत्वा किलामयः। तस्मात्तं राजयक्ष्मेति केचिदाकुर्मनीषिणः॥ Suçr. 2,445,7. 20. 506,21. Hariv. 1338. 1360. Çiç. 2,96. Verz. d. Oxf. H. 303,*b*,32. 306,*b*, 21. 312,*b*,22. 316,*a*, No. 731. 337,*a*, No. 849. fg. Verz. d. B. H. No. 955. 967. 975. fgg. राजयक्ष्मनामन् m. Bez. eines best. allegorisch-mythischen Wesens, dem auf dem Baugrund eines Hauses eine best. Stelle zugewiesen wird, Varâh. Bṛh. S. 53,47.

राजयक्ष्मिन् adj. *die Schwindsucht habend* Suçr. 2,75,4.

राजयज्ञ m. *Königsopfer* Kâtj. Çr. 20,1,1. 22,10,29. 11,15. Mâlav. 70,23.

राजयान n. *ein fürstliches Vehikel, Palanquin* Bhâg. P. 5,10,15.

राजयुधन् m. *Bekämpfer eines Fürsten* P. 3,2,35.

राजयोग m. 1) *eine Constellation, unter welcher Fürsten geboren werden*, Varâh. Bṛh. S. 2, S. 6. Bṛh. 11 (passim). Ind. St. 2,275. Verz. d. B. H. No. 878. — 2) Bez. *einer best. Stufe der Meditation* (योग) Verz. d. Oxf. H. 224,*b*,9. 233. fgg., No. 566; vgl. Aufrecht in der Note auf S. 235,*a*. — Was bedeutet aber das Wort in Verbindung mit मन्त्रयोग und लययोग Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,18?

राजयोषित् f. *die Gemahlin eines Fürsten* R. 2,89,14. 104,3.

राजरङ्ग n. *Silber* Çabdar. im ÇKDr.

राजरथ m. *ein fürstlicher Wagen* MBh. 2,2064.

राजराज m. *Oberfürst:* वैन्य Bhâg. P. 4,18,29. वन्यानां मृगाणाम् wird der in den Wald ziehende Râma R. 2,107,17 (115,17 Gorr.). Bez. *des Mondes* Hariv. 1331.

राजराज m. 1) *Oberkönig, Oberfürst* H. an. 4,57. Med. ğ. 36. R. 2,92,14. पृथिव्यां राजराजोऽस्मि सप्ताङ्गबलकीर्तिताम् R. Gorr. 2,9,13. ऋग्वेदवकवि° Gîr. 11,21. Bez. Kubera's AK. 1,1,6,54. H. an. Med. Hall. 1,79. MBh. 3,15891. Hariv. 2468. R. 2,93,4 (104,4 Gorr.). 6,4,29. Mṛcch. 3. Kir. 8,51. Daçak. 133,12. Bhâg. P. 4,12,8. Mârk. P. 126,9. *des Mondes* H. ç. 10. H. an. Med. Statt राजराजविमर्दनम् R. 1,74,17 liest die ed. Bomb. besser राजा राजवि°. — 2) N. pr. zweier Männer Râga-Tar. 7,186.8,1993.

राजराजता f. *die Würde eines Oberkönigs* Kathâs. 14,21.

राजराजत्व n. dass.: कुबेरस्य MBh. 3,15888.

राजराज्य n. *die Herrschaft über alle Fürsten* Hariv. 1331. 4033.

राजरामनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,21.

राजरीति f. *eine Art Glockenguss* Râgân. im ÇKDr.

राजर्षि (राजन् + ऋषि) m. *ein Rshi fürstlicher Abkunft* (wie Manu, Purûravas, Viçvâmitra u. s. w.) Thâr. 2,7,17. 8,20. H. 712. Âçv. Çr. 1,3,4. Kâtj. Çr. 20,3,2. 8. M. 9,67. Bhâg. 4,2. 9,23. MBh. 1,7661. 3,1748. 1841. 5,6037. R. 1,4,10. 6,2. 8,26. 32,22. 37,5. 61,12. 2,21,46. 49,15. 94,19. 107,14. 4,20,7. Suçr. 1,16,20. Çiç. 71. 104,18. Lalit. ed. Calc. 313,12. VP. 284. Bhâg. P. 3,13,3. 4,27,20. 9,6,19. Mârk. P. 19, 37. Pañcat. 76,9. °लोक R. Gorr. 1,59,2.

राजर्षिन् m. = राजर्षि, gen. pl. राजर्षिणाम् (aus metrischen Rücksichten) Hariv. 11326.

राजलक्षण n. *ein fürstliches Abzeichen, ein Merkmal, dessen Besitz einen künftigen Fürsten anzeigt*, Daçak. 10,1.

1. राजलक्ष्मन् n. *ein königliches Abzeichen:* ग्र° adj. Spr. 339.

2 राजलक्ष्मन् m. Bein. Judhishṭhira's Dhanañgâja im ÇKDr.

राजलक्ष्मी f. 1) *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* Raghu. 2, 7. Vikr. 160. Râga-Tar. 6,86. Bhâg. P. 4,8,70. Vgl. राजश्री. — 2) N. pr. einer Prinzessin Râga-Tar. 8,3481.

राजलिङ्ग n. *ein königliches Abzeichen* AK. 3,4,26,94. Thâr. 3,3,204.

राजलीलानामन् n. pl. Titel einer Sammlung von *Beinamen Krshṇa's die auf seine Belustigungen als König Bezug haben*, Hall 146.

राजलोक m. *eine Gesellschaft von Fürsten* MBh. 2,479. Kathâs. 14, 59. 18,26. 42,195 (hier fälschlich राज्य°). Mârk. P. 109,11.

राजवंश m. *ein fürstliches Geschlecht* R. Gorr. 2,7,21. Kathâs. 42,35. Verz. d. B. H. 128,*a*,18. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,23. 25. 332,*b*,2. राजवंशावली *Genealogie der Fürsten* (von Videha und Ajodhjâ) Mack. Coll. I,98.

राजवंश्य adj. *aus fürstlichem Geschlecht stammend* AK. 2,7,3. H. 713.

राजवत् (von राजन्) adv. = राज्ञेव Suçr. 1,244,1. = राजनीव R. 2,58, 17. Spr. 2607.

राजवदन m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,2792 u. s. w.

राजवर्ध m. *Königswaffe* AV. 6,13,1.

राजवत् (von राजन्) 1) adj. *einen Fürsten habend, reich an Fürsten* P. 8,2,14, Sch. AK. 2,1,13. सभा MBh. 5,7. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Djutimant VP. 82. — 3) f. °वती N. pr. der Gattin des Gandharva Devaprabha Kathâs. 36,114. — Vgl. राजन्वत्.

राजवन्दिन् (°बन्दिन्?) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 33,38.

राजवर्चस् (राजन् + वर्चस्) n. *königliche Würde* P. 5,4,78, Vârtt. Vop. 6,78.

राजवर्त्मन् n. *Hauptstrasse* H. 987.

राजवर्धन m. N. pr. Hiouen-thsang I, 247 fehlerhaft für राज्यवर्धन.

राजवल्लभ m. 1) *Liebling eines Fürsten* Mârk. P. 49,59. Davon nom. abstr. °ता f.: °तामेति *er wird ein Liebling des Fürsten* Pañcat. 4,6,17. — 2) Bez. verschiedener Pflanzen: = राजबदर, राजाह्वा und राजाम्र Râgân. im ÇKDr. — 3) Bez. *einer Art von Räucherwerk* Verz. d. B. H. No. 907. — 4) Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 336,*a*, No. 790. der 2te Çloka lautet nach ÇKDr.: श्रीनारायणदासेन कविराजेन धीमता। प्रतिसंस्क्रियते द्रव्यगुणो ऽयं राजवल्लभः॥

राजवल्ली f. *Momordica Charantia Lin.* Ratnam. im ÇKDr.

राजवसति f. *das Leben am Hofe eines Fürsten* MBh. 4,93. स राजवसतिं वसेत् 96. fg. 109. 120. 126. fgg. Spr. 239, wo eben so zu lesen ist.

राजवाघट्य m. patron. Pravarâdhjâs. in Verz. d. B. H. 35,13. vielleicht fehlerhaft für राजबान्धव्य (von °बान्धव).

राजवार्तिक n. Titel einer Schrift über Sâṁkhja Colebr. Misc. Ess. I, 234. Hall 8. Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 570. — Vgl. भोज°.

राजवाह् m. *Pferd* Çabdar. im ÇKDr.

राजवाहन m. N. pr. eines Sohnes des Königs Râgahaṁsa Daçak.

9,19. fgg.

राजवाह्य m. *ein königlicher Elephant* Trik. 2,8,35. H. 1222. Hall. 2,69.

राजवि (राजन् + वि) m. *der blaue Holzhecher* Çabdârthak. bei Wilson.

राजविद्या f. *Fürstenlehre, Staatslehre* Kin. Nitis. 1,7.8

राजविनोदताल m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,12.

राजविहार m. *ein königliches Kloster* Râga-Tar. 4,200.

राजवीथी f. *Hauptstrasse* Ragh. 18,38.

राजवृक्ष m. *Cathartocarpus (Cassia) fistula* AK. 2,4,8,4. H. an. 4,221. fg. Man. sh. 56. *Buchanania latifolia* Roxb. H. an. Man. *Euphorbia Tirucalli* Çabdar. im ÇKDa. — Suçr. 1,133,4. 2,23,9. 66,16. 367,6. 415,12.

राजवृत्त n. *das Verfahren —, der Beruf eines Fürsten* R. 2,21,7. R. Gorr. 2,111,1. 4,16,35. fg. Spr. 1630.

राजवेश्मन् n. *der Palast eines Fürsten* MBh. 3,2660. R. 2,34,19. 37, 17. 91,33. R. Gorr. 1,21,5. 70,2. 2,4,14. Kathâs. 18,24. 42,184. 43, 12. 124,76.

राजवेष m. *eine fürstliche Kleidung* Ragh. 19,30.

राजशण m. = पट्ट Çabdam. im ÇKDa. vulgo पाट् (*Corchorus olitorius Lin.*) ÇKDa. °शन Wilson nach dems. Aut.

राजशफर m. *ein best. Fisch*, = इक्षिश Hit. 189.

राजशय्या f. *ein königliches Ruhebett* H. 716.

राजशाक m. *eine best. Gemüsepflanze*, = वास्तूक Râgân. im ÇKDa.

राजशाकनिका f. desgl., = राजगिरि Râgân. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

राजशाकिनी f. dass. ebend.

राजशासन n. *ein königlicher Befehl* M. 10,55.

राजशास्त्र n. *Fürstenlehre, Staatslehre* MBh. 12,13211.

राजशुक m. *eine Papageienart*, = प्राप्त Râgân. im ÇKDa.

राजशृङ्ग 1) m. *ein best. Fisch, Macropteronotus Magur* (मङ्गुर) Ham. H. 1347. — 2) n. *ein fürstlicher Sonnenschirm mit goldenem Griffe* Trik. 2,8,32.

राजशेखर m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,16. 140,*a*, No. 282. fg. 140,*b*, No. 284. 146,*b*, No. 313. 182,*b*,45. 209,*a*,11. 254,*b*, 36. 255,*a*,29. 258,*a*,4. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 20.

राजशैल m. N. pr. eines *Berges* Mârk. P. 55,7.

राजश्यामलोपामक m. pl. N. einer Secte Verz. d. Oxf. H. 250,*a*,14.

राजश्यामाक m. *eine best. Körnerfrucht* Mârk. P. 32,9.

राजश्री f. *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* Harîv. 4344. 4952. R. 2,81,6. R. Gorr. 2,25,38. 96,10. Râga-Tar. 1,281. 5,19. 449. 466. 6,279. — 4,144 ist nicht, wie Troyer annimmt, ein Dichter dieses Namens gemeint, sondern वाक्पतिराज als Beiwort von भवभूति aufzufassen.

राजस 1) adj. (f. ई) *der Qualität* रजस् *angehörig, zu ihr in Beziehung stehend* Maitrâjup. 3,5. 5,2. M. 12,32. 36. 40. 45. fgg. Bhag. 7,12. 14,18. 17,2. Spr. 4770. Sâmkhjak. 45. Suçr. 1,130,4. 192,6. Tattvas. 20. Bhâg. P. 3,29,9. Mârk. P. 40,7. Verz. d. Oxf. H. 14,*a*, N. 1. 56,*b*,10. 80,*a*,25. 81,*a*,1 v. u. Wilson, Sel. Works 1,12. fg. 232. Sarvadarçanas. 154,22. — 2) f. ई Bein. der Durgâ Çabdar. im ÇKDa.

राजसंमर्द m. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* Kathâs. 13,168.

राजसत्र n. *Königsopfer, ein von einem Fürsten veranstaltetes Opfer* Kathâs. 33,54.

राजसत्व n. nom. abstr. von राजस 1) Ragh. 11,90.

राजसदन n. *ein fürstlicher Palast* AK. 2,2,9.

राजसदन् n. dass. Kathâs. 43,12. 101,116.

राजसभा f. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* AK. 3,6,9. Vet. in LA. (III) 2,3.

राजसर्प m. *eine Schlangenart* H. 1304. Hall. 3,21. — Vgl. राजाहि.

राजसर्षप m. *schwarzer Senf, Sinapis ramosa* Roxb. H. 418. Hit. 181. Hall. 2,426. Ratnam. 114. *ein Korn dieser Senfart* als Gewicht = 3 Likshâ = ⅛ Gaurasarshapa M. 8,133. Jiân. 1,361. fg.

राजसाह् N. pr. eines Landes Ksuttiç. 52,17.

राजसात् (von राजन्) adv.: संपद्यते *fällt dem Fürsten zu* Vop. 7,55.

राजसायुज्य n. *Königthum* Çabdârthak. nach Wilson.

राजसारस m. *Pfau* Çabdam. im ÇKDa.

राजसिंह m. 1) *ein Löwe von Fürst, ein ausgezeichneter König* MBh. 5,7229. 7237. 7418. R. 1,12,22. fg. (21. fg. Gorr.). Spr. 2262. — 2) N. pr. zweier Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Çl. 13. Hall 71.

राजसिक adj. = राजस 1) Pañkat. 1,1,55.

राजसुख n. *die Freude —, das Glück eines Fürsten* Kâdab. 26.

राजसुत 1) m. *Königssohn, Prinz* R. 2,26,2. 72,42. 100,38. R. Gorr. 2,98,24. Ragh. 3,38. Kathâs. 74,122. — 2) f. आ *Königstochter, Prinzessin* Ragh. 6,26. Kathâs. 7,71. 16,17. 24,78. 28,107.

राजसुन्दरगणि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 186,*a*,5.

राजसू (राजन् + सू) adj. *zum König machend* VS. 10,1. 6.

राजसूनु m. *Königssohn, Prinz* R. 1,27,16 (28,15 Gorr.). Kathâs. 34, 217. 39,160. Mârk. P. 21,11.

राजसूय m. (sc. क्रतु, यज्ञ) und n. (AK. 3,6,2,31) Bez. *der religiösen Feier der Königsweihe* P. 3,1,114. Vop. 26,11. येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः। शास्ति यथाज्ञया राज्ञः स समाट्॥ AK. 2,8,1,3. H. 691. Hall. 2,267. राजसूयो नृपाधरः Trik. 2,7,3. AV. 4,8,1. 11,7,7. TS. 5,6, 2,1. TBr. 2,7,4,1. 6,1. Ait. Br. 7,15. Âçv. Çr. 3,3,1. 4,1. राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति Çat. Br. 5,1,1,12. 2,3,9. Kâty. Çr. 14,1,7. Kauç. 92. MBh. 3,1726. 2445. Harîv. 1333. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,41. Bhâg. P. 1, 9,41. Mârk. P. 7,39. Sarvadarçanas. 122,9. 10. P. 2,4,4, Sch. °यार्जिन् Çat. Br. 5,5,1,2. 3,5. राजसूयेष्टि MBh. 2,514. राजसूयारम्भपर्वन् heissen die Adhjâja 12—18 im 2ten Buche des MBh. राजसूयो मन्त्रः *ein beim Râgasûja herzusagender Spruch* P. 4,3,66, Vârtt. 2, Sch. Nach Çabdârthak. bei Wilson bedeutet das Wort noch: *Lotus; eine Art Reis; Berg.*

राजसूयिक adj. (f. ई) *zum Râgasûja in Beziehung stehend, davon handelnd* u. s. w. Schol. zu Kâty. Çr. 18,5,3. 15. दक्षिणा P. 5,1,95, Sch. Mârk. P. 7,35. 36. 39. पर्वन् MBh. 1,318. so heissen die Adhjâja 32—34 im 2ten Buche des MBh.

राजसेवक m. *Diener eines Fürsten* Spr. 3183, v. l. Kathâs. 20,166. 111,24. Bhâg. P. 7,5,15. *ein* Radschput Pañkat. 217,28.

राजसेवा f. *Fürstendienst* Çiç. 51. Spr. 2609. °सेवोपजीविन् Kathâs. 73,257.

राजसेविन् m. *Fürstendiener* Spr. 2947. 4939.

राजस्कन्ध m. *Ross* Trik. 2,8,41.

राजमुद्ग m. *eine Bohnenart* H. 1174.

राजमुनि m. = राजर्षि Çiç. 47.

राजमृगाङ्क 1) Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Verz. d. B. H. No. 997. — 2) Titel eines astr. Werkes Verz. d. B. H. 113,*b*,39.

राजयक्ष्मन्, später °यक्ष्मन् m. *eine best. lebensgefährliche Krankheit; bei Spätern Lungenschwindsucht* (ein Wortspiel leitet die Benennung vom *Mond* ab) H. 463. Hall. 2,447. ṚV. 1,161,1. AV. 11,3,39. 12,5, 22. TS. 2,3,5,2. Kauç. 13. Kâṭh. 11,3. 27,3. राजयक्ष्मसो यस्माद्भ्रष्टेष किलामयः। तस्मात् राजयक्ष्मेति केचिदाकुर्मनीषिणः॥ Suçr. 2,445,7. 20. 506,21. Hariv. 1358. 1360. Çiç. 2,96. Verz. d. Oxf. H. 303,*b*,33. 306,*b*, 21. 312,*b*,22. 316,*a*, No. 751. 357,*a*, No. 849. fg. Verz. d. B. H. No. 935. 967. 978. fgg. राजयक्ष्मनामन् m. Bez. eines best. allegorisch-mythischen Wesens, dem auf dem Baugrund eines Hauses eine best. Stelle zugewiesen wird, Varâh. Bṛh. S. 53,17.

राजयक्ष्मिन् adj. *die Schwindsucht habend* Suçr. 2,75,4.

राजयज्ञ m. *Königsopfer* Kâtj. Çr. 20,1,1. 22,10,29. 11,15. Mâlav. 70,13.

राजयान n. *ein fürstliches Vehikel, Palanquin* Bhâg. P. 5,10,15.

राजयुधन् m. *Bekämpfer eines Fürsten* P. 3,2,95.

राजयोग m. 1) *eine Constellation, unter welcher Fürsten geboren werden*, Varâh. Bṛh. S. 2, S. 6. Bṛh. 11 (passim). Ind. St. 2,275. Verz. d. B. H. No. 878. — 2) Bez. *einer best. Stufe der Meditation* (योग) Verz. d. Oxf. H. 224,*b*,9. 233. fgg., No. 566; vgl. Aufrecht in der Note auf S. 235,*a*. — Was bedeutet aber das Wort in Verbindung mit मन्त्रयोग und लययोग Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,187?

राजयोषित् f. *die Gemahlin eines Fürsten* R. 2,89,14. 104,3.

राजरङ्ग n. *Silber* Çabdar. im ÇKDa.

राजरथ m. *ein fürstlicher Wagen* MBh. 2,2064.

राजराज् m. *Oberfürst:* वैन्य Bhâg. P. 4,18,29. वन्यानां मृगाणाम् wird der in den Wald ziehende Râma R. 2,107,17 (115,17 Gorr.). Bez. *des Mondes* Hariv. 1331.

राजराज m. 1) *Oberkönig, Oberfürst* H. an. 4,37. Med. ǵ. 36. R. 2,92,14. पृथिव्यां राजराजो ऽस्मि सप्तद्वीपसमाकुलाम् R. Gorr. 2,9,13. ज्ञपदेवकविº Gîr. 11,21. Bez. Kubera's AK. 1,1,8,64. H. an. Med. Hall. 1,79. MBh. 3,14891. Hariv. 2468. R. 2,93,4 (104,4 Gorr.). 5,4,29. Megh. 3. Kâm. 3,51. Daçak. 133,12. Bhâg. P. 4,12,8. Mârk. P. 126,9. *des Mondes* H. ç. 10. H. an. Med. Statt राजराजविमर्दनम् R. 1,74,17 liest die ed. Bomb. besser राजा राजविº. — 2) N. pr. zweier Männer Râéa-Tar. 7,186. 8,1993.

राजराजता f. *die Würde eines Oberkönigs* Kathâs. 14,31.

राजराजत्व n. dass.: कुबेरस्य MBh. 3,13888.

राजराज्य n. *die Herrschaft über alle Fürsten* Hariv. 1331. 1033.

राजरामनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,21.

राजरीति f. *eine Art Glockenguss* Râéân. im ÇKDa.

राजर्षि (राजन् + ऋषि) m. *ein Ṛshi fürstlicher Abkunft* (wie Manu, Purûravas, Viçvâmitra u. s. w.) Thân. 2,7,17. 8,20. H. 712. Âçv. Çr. 1,3,4. Kâtj. Çr. 20,3,2. 8. M. 9,67. Bhag. 4,2. 9,33. MBh. 1,7661. 3,1748. 1841. 5,6037. R. 1,4,10. 6,3. 8,26. 52,22. 57,8. 61,12. 2,21,46. 49,18. 94,19. 107,14. 4,20,7. Suçr. 1,16,20. Çiç. 71. 104,18. Lalit. ed. Calc. 313,12. VP. 284. Bhâs. P. 3,13,3. 4,27,20. 9,6,19. Mârk. P. 19, 37. Pañcat. 76,9. °लोक R. Gorr. 1,59,2.

राजर्षिन् m. = राजर्षि, gen. pl. राजर्षिणाम् (aus metrischen Rücksichten) Hariv. 11326.

राजलक्षण n. *ein fürstliches Abzeichen, ein Merkmal, dessen Besitz einen künftigen Fürsten anzeigt*, Daçak. 10,1.

1. राजलक्ष्मन् n. *ein königliches Abzeichen:* घ° adj. Spr. 539.

2 राजलक्ष्मन् m. Bein. Judhishṭhira's Dhanañgéaja im ÇKDa.

राजलक्ष्मी f. 1) *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* Ragh. 2, 7. Vikr. 160. Râéa-Tar. 6,86. Bhâg. P. 4,8,70. Vgl. राजश्री. — 2) N. pr. einer Prinzessin Râéa-Tar. 8,3481.

राजलिङ्ग n. *ein königliches Abzeichen* AK. 3,4,46,94. Thân. 3,3,204.

राजलीलानामन् n. pl. Titel einer Sammlung von *Beinamen* Kṛshṇa's *die auf seine Belustigungen als König Bezug haben*, Hall 146.

राजलोक m. *eine Gesellschaft von Fürsten* MBh. 2,479. Kathâs. 14, 59. 18,26. 42,195 (hier fälschlich राज्ञ°). Mârk. P. 109,11.

राजवंश m. *ein fürstliches Geschlecht* R. Gorr. 2,7,21. Kathâs. 42,35. Verz. d. B. H. 128,*a*,18. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,23. 28. 352,*b*,2. राजवंशावली *Genealogie der Fürsten* (von Videha und Ajodhjâ) Mack. Coll. 1,96.

राजवंश्य adj. *aus fürstlichem Geschlecht stammend* AK. 2,7,2. H. 713.

राजवत् (von राजन्) adv. = राज्ञेव Suçr. 1,241,1. = राजनीव R. 2,36, 17. Spr. 2607.

राजवदन m. N. pr. eines Mannes Râéa-Tar. 8,2799 u. s. w.

राजवर्ध m. *Königswaffe* AV. 6,13,1.

राजवत् (von राजन्) 1) adj. *einen Fürsten habend, reich an Fürsten* P. 8,2,14, Sch. AK. 2,1,13. मघा MBh. 5,7. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Djutimant VP. 82. — 3) f. °वती N. pr. der Gattin des Gandharva Devaprabha Kathâs. 36,114. — Vgl. राजन्वत्.

राजवन्दिन् (°वन्दिन्?) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 53,38.

राजवर्चस् (राजन् + वर्चस्) n. *königliche Würde* P. 5,4,78, Vârtt. Vop. 6,78.

राजवर्त्मन् n. *Hauptstrasse* H. 987.

राजवर्धन m. N. pr. Hiouen-thsang I, 247 fehlerhaft für राज्यवर्धन.

राजवल्लभ m. 1) *Liebling eines Fürsten* Mârk. P. 49,49. Davon nom. abstr. °ता f.: °तामेति *er wird ein Liebling des Fürsten* Pañcat. 4,6,17. — 2) Bez. verschiedener Pflanzen: = राजबदर, राजादनी und राजाम्र Râéân. im ÇKDa. — 3) Bez. *einer Art von Räucherwerk* Verz. d. B. H. No. 967. — 4) Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 336,*a*, No. 790. der 2te Çloka lautet nach ÇKDa.: श्रीनारायणदासेन कविराजेन धीमता। प्रतिसंस्क्रियते द्रव्यगुणो ऽयं राजवल्लभः॥

राजवल्ली f. *Momordica Charantia Lin.* Rathnam. im ÇKDa.

राजवसति f. *das Leben am Hofe eines Fürsten* MBh. 4,92. स राजवसतिं वसेत् 96. fg. 109. 120. 126. fgg. Spr. 239, wo eben so zu lesen ist.

राजवाघट्य m. patron. Pravarâkhjas. in Verz. d. B. H. 35,13. vielleicht fehlerhaft für राजवान्धव्य (von °वान्धव).

राजवार्त्तिक n. Titel einer Schrift über Sâṁkhja Colebr. Misc. Ess. I, 234. Hall 8. Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 570. — Vgl. भोज°.

राजवाह m. *Pferd* Çabdar. im ÇKDa.

राजवाहन m. N. pr. eines Sohnes des Königs Râgahaṁsa Daçak.

9, 19. fgg.

राजवाह्य m. *ein königlicher Elephant* Trik. 2, 8, 35. H. 1222. Hall. 2, 69.

राजवि (राजन् + वि) m. *der blaue Holzhecker* Çabdârthak. bei Wilson.

राजविद्या f. *Fürstenlehre, Staatslehre* Kâm. Nîtis. 1, 7. 8

राजविनोदताल m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 12.

राजविहार m. *ein königliches Kloster* Râga-Tar. 4, 200.

राजवीथी f. *Hauptstrasse* Ragh. 18, 38.

राजवृक्ष m. *Cathartocarpus (Cassia) fistula* AK. 2, 4, 2, 4. H. an. 4, 321. fg. Med. sh. 56. *Buchanania latifolia* Roxb. H. an. Med. *Euphorbia Tirucalli* Çabdar. im ÇKDr. — Sûçr. 1, 133, 4. 2, 23, 9. 66, 16. 367, 6. 415, 12.

राजवृत्त n. *das Verfahren —, der Beruf eines Fürsten* R. 2, 21, 7. R. Gorr. 2, 111, 1. 4, 16, 35. fg. Spr. 1639.

राजवेश्मन् n. *der Palast eines Fürsten* MBh. 3, 2660. R. 2, 34, 19. 37, 17. 91, 33. R. Gorr. 1, 21, 5. 70, 2. 2, 4, 14. Kathâs. 18, 24. 42, 184. 43, 12. 124, 74.

राजवेष m. *eine fürstliche Kleidung* Ragh. 19, 30.

राजशण m. = पट्ट Çabdam. im ÇKDr. vulgo पाट् (*Corchorus olitorius Lin.*) ÇKDr. °शन Wilson nach ders. Aut.

राजशफर m. *ein best. Fisch*, = इलिश Hit. 189.

राजशय्या f. *ein königliches Ruhebett* H. 716.

राजशाक m. *eine best. Gemüsepflanze*, = वास्तूक Râgân. im ÇKDr.

राजशाकनिका f. desgl., = राजगिरि Râgân. im ÇKDr. u. d. letzten Worte.

राजशाकिनी f. dass. ebend.

राजशासन n. *ein königlicher Befehl* M. 10, 55.

राजशास्त्र n. *Fürstenlehre, Staatslehre* MBh. 12, 12214.

राजशूक m. *eine Papageienart*, = प्राश Râgân. im ÇKDr.

राजशृङ्ग 1) m. *ein best. Fisch, Macropteronotus Magur* (मङ्गुर) Ham. H. 1347. — 2) n. *ein fürstlicher Sonnenschirm mit goldenem Griffe* Trik. 2, 8, 32.

राजशेखर m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 16. 140, *a*, No. 282. fg. 140, *b*, No. 284. 146, *b*, No. 313. 182, *b*, 45. 209, *a*, 11. 254, *b*, 36. 255, *a*, 29. 258, *a*, 4. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 20.

राजशैल m. N. pr. eines *Berges* Mârk. P. 55, 7.

राजश्यामलोयामक m. pl. N. einer Secte Verz. d. Oxf. H. 250, *a*, 14.

राजश्यामाक m. *eine best. Körnerfrucht* Mârk. P. 32, 9.

राजश्री f. *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* Harîv. 4344. 4952. R. 2, 81, 6. R. Gorr. 2, 25, 38. 96, 10. Râga-Tar. 1, 281. 3, 19. 449. 466. 6, 279. — 4, 144 ist nicht, wie Troyer annimmt, ein Dichter dieses Namens gemeint, sondern वाक्पतिराज als Beiwort von भीमभूति aufzufassen.

राजस 1) adj. (f. ई) *der Qualität* रजस् *angehörig, zu ihr in Beziehung stehend* Maitrâyu. 3, 5. 5, 2. M. 12, 32. 36. 40. 45. fgg. Bhag. 7, 12. 14, 18. 17, 2. Spr. 4770. Sâmkhjas. 45. Sûçr. 1, 130, 4. 192, 6. Tattvas. 20. Bhâg. P. 3, 29, 9. Mârk. P. 40, 7. Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, N. 1. 56, *b*, 10. 80, *a*, 25. 81, *a*, 1 v. u. Wilson, Sel. Works 1, 12. fg. 252. Sarvadarçanas. 154, 22. — 2) f. ई Bein. der Durgâ Çabdar. im ÇKDr.

राजसंसद् m. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* Kathâs. 13, 168.

राजसत्र n. *Königsopfer, ein von einem Fürsten veranstaltetes Opfer* Kathâs. 33, 54.

राजसत्व n. nom. abstr. von राजस 1) Ragh. 11, 90.

राजसदन n. *ein fürstlicher Palast* AK. 2, 2, 9.

राजसदन् n. dass. Kathâs. 43, 13. 101, 116.

राजसभा f. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* AK. 3, 6, 9. Ver. in LA. (III) 2, 3.

राजसर्प m. *eine Schlangenart* H. 1304. Hall. 3, 21. — Vgl. राजाहि.

राजसर्षप m. *schwarzer Senf, Sinapis ramosa* Roxb. H. 418. Hîn. 181. Hall. 2, 426. Ratnam. 114. *ein Korn dieser Senfart* als Gewicht = 3 Likshâ = ⅓ Gaurasarshapa M. 8, 133. Jâgn. 1, 361. fg.

राजसाह N. pr. eines Landes Kshitîç. 52, 17.

राजसात् (von राजन्) adv.: संपद्यते *fällt dem Fürsten zu* Vop. 7, 55.

राजसायुज्य n. *Königthum* Çabdârthak. nach Wilson.

राजसारस m. *Pfau* Çabdam. im ÇKDr.

राजसिंह m. 1) *ein Löwe* von *Fürst, ein ausgezeichneter König* MBh. 5, 7329. 7397. 7418. R. 1, 12, 22. fg. (21. fg. Gorr.). Spr. 2262. — 2) N. pr. zweier Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 5, Çl. 13. Hall 71.

राजसिक adj. = राजस 1) Pâṇ. 1, 1, 55.

राजसुख n. *die Freude —, das Glück eines Fürsten* Kâmâd. 26.

राजसुत 1) m. *Königssohn, Prinz* R. 2, 26, 2. 72, 42. 100, 38. R. Gorr. 2, 98, 24. Ragh. 3, 38. Kathâs. 74, 123. — 2) f. आ *Königstochter, Prinzessin* Ragh. 6, 26. Kathâs. 7, 71. 16, 17. 24, 78. 28, 107.

राजसुन्दरगणि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 186, *a*, 5.

राजसू (राजन् + सू) adj. *zum König machend* VS. 10, 1. 6.

राजसूनु m. *Königssohn, Prinz* R. 1, 27, 16 (28, 15 Gorr.). Kathâs. 34, 217. 39, 160. Mâlav. P. 21, 11.

राजसूय m. (sc. क्रतु, यज्ञ) und n. (AK. 3, 6, 2, 31) Bez. *der religiösen Feier der Königsweihe* P. 2, 1, 114. Vop. 26, 17. येनेष्ट्वा राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः। शास्ति यशाज्ञया राज्ञः स सम्राट्॥ AK. 2, 8, 2, 3. H. 691. Hall. 2, 267. राजसूयो नृपाध्वरः Trik. 2, 7, 3. AV. 4, 8, 1. 11, 7, 7. TS. 5, 6, 2, 1. TBr. 2, 7, 4, 1. 6, 1. Ait. Br. 7, 15. Âçv. Çr. 3, 3, 1. 4, 1. राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति Çat. Br. 5, 1, 1, 12. 2, 3, 9. Kâty. Çr. 14, 1, 7. Kauç. 92. MBh. 3, 1728. 2445. Harîv. 1333. Verz. d. Oxf. H. 266, *b*, 41. Bhâg. P. 1, 9, 41. Mârk. P. 7, 39. Sarvadarçanas. 122, 9. 10. P. 2, 4, 4, Sch. °यार्हन् Çat. Br. 5, 5, 1, 2. 2, 5. राजसूयेष्टि MBh. 2, 514. राजसूयारम्भपर्वन् heissen die Adhjâja 12—18 im 2ten Buche des MBh. राजसूयो मन्त्रः *ein beim Râgasûja herzusagender Spruch* P. 4, 3, 66, Vârtt. 2, Sch. Nach Çabdârthak. bei Wilson bedeutet das Wort noch: *Lotus; eine Art Reis; Berg.*

राजसूयिक adj. (f. ई) *zum Râgasûja in Beziehung stehend, davon handelnd* u. s. w. Schol. zu Kâty. Çr. 18, 3, 3. 15. दक्षिणा P. 5, 1, 95, Sch. Mârk. P. 7, 25. 36. 39. पर्वन् MBh. 1, 318. so heissen die Adhjâja 32—34 im 2ten Buche des MBh.

राजसेवक m. *Diener eines Fürsten* Spr. 3183, v. l. Kathâs. 20, 166. 111, 24. Bhâg. P. 7, 5, 15. *ein Radschput* Pârâç. 217, 35.

राजसेवा f. *Fürstendienst* Çiç. 51. Spr. 2609. °सेवोपजीविन् Kathâs. 73, 257.

राजसेविन् m. *Fürstendiener* Spr. 2947. 4039.

राजस्कन्ध m. *Ross* Trik. 2, 8, 41.

राजस्तम्ब m. N. pr. eines Mannes; s. राजस्तम्बायन und °स्तम्बि.

राजस्तम्बायन m. patron. Cat. Br. 10,4,3,1. proparox. 6,5,9.

राजस्तम्बि m. desgl. Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 55,33.

राजस्त्री f. *Gattin eines Fürsten* R. 2,57,21.

राजस्थलक adj. von राजस्थली gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजस्थली f. N. pr. einer Oertlichkeit gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजस्व n. *Eigenthum eines Fürsten* M. 8,149.

राजस्वर्ण m. *eine Art Stechapfel*, = राजधुस्तूरक Rāǵān. im ÇKDa.

राजस्वामिन् m. *Fürstenherr*, als Beiw. Vishṇu's Rāǵa-Tar. 8,1824.

राजहंस m. 1) *Flamingo* AK. 2,5,24. H. 1326. Hall. 2,97. = कल-हंस und कादम्ब H. an. 4,331. Med. s. 61. — Hariv. 12670. R. 4,40,47. Ragh. 5,75. Kumāras. 1,34. Ṛt. 3,21. Megh. 11. Vikr. 93. Spr. 626. Kathās. 39,160. 42,224. 50,6. Bhāg. P. 3,28,27. 4,7,21. 5,17,13. Pañcar. 1,7,30. Hit. 79,7. Verz. d. Oxf. H. 132,*b*, No. 243. am Ende eines adj. comp. f. आ (v. l. fehlerhaft ई) Spr. 573. °हंसी *Flamingoweibchen* Ragh. 6,26. Vikr. 19. Kathās. 69,7. 112,96. Kāraṇḍ. 5. 23. — 2) *ein ausgezeichneter Fürst* Trik. 3,3,148. H. an. Med. — 3) N. pr. eines Fürsten von Magadha Daçar. 2,7. eines Autors Verz. d. B. H. No. 941. eines Dieners Kathās. 6,124.

राजकर्म्य n. *der Palast eines Fürsten* Kām. Nītis. 16,6.

राजकर्षण n. *die Blüthe von Tabernaemontana coronaria R. Br.* (तगरपुष्प) Rāǵān. im ÇKDa. *Stadt* Wilson nach Çabdārthak. (eine Verwechselung von तगर und नगर).

राजकरिन् m. *ein stattlicher Elephant* P. 6,2,63, Sch. Hit. 49.

राजकार m. *Bringer des* Soma Kāṭh. 34,3.

राजकासक m. *ein best. Fisch, Cyprinus Catla* (कातल) *Ham.* Çabdar. im ÇKDa.

राजाङ्गण (राजन् + अ°) n. *der Hofraum in einem fürstlichen Palaste* Kathās. 33,41. 47.

राजातन m. Uṇādis. 2,78. *Buchanania latifolia Roxb.* Çabdam. im ÇKDa. Viçva bei Uṇādis. *Butea frondosa Roxb.* und *Mimusops Kauki* Viçva. — Vgl. राजादन.

राजात्मकस्तव m. Bez. *eines best. Lobspruches auf* Râma Weber, Rāmat. Up. 363.

राजात्यावर्तक m. = राजावर्त Rāǵān. im ÇKDa. u. d. l. W.

राजादन m. *Buchanania latifolia* (n. *die Nuss*) AK. 2,4,3,15. H. 1142. an. 4,188. Med. n. 203. *Mimusops Kauki* oder *hexandra* (n. *die Frucht*) AK. 2,4,3,26. *Butea frondosa* Med. Ratnam. 44. = त्रिपत्तक H. an. — Suçr. 1,157,1. 211,19. 228,15. 2,15,7. 79,1. 131,12. 490,5. Vīrūn. 6, 120. Schol. zu Kāṭh. Ça. 176,17. राजादनफल oder राजादनफल (vgl. die Ausleger zu AK. 2,4,3,26) n. Çiṅ. 3,12, Sch. राजादनी f. *ein best. Baum*, = कपीष्ट, नीपवीज u. s. w. Rāǵān. im ÇKDa. Çabd. 1,270. 279.

राजादि m. *eine best. Gemüsepflanze*, = राजगिरि Rāǵān. im ÇKDa. u. d. l. W.

राजाधिकारिन् m. *Richter* Kathās. 60,222.

राजाधिकृत m. dass. Varāh. Bṛh. S. 10,16. Kathās. 60,228.

राजाधिदेय Hariv. 2032 fehlerhaft für राजाधिदेव.

राजाधिदेव 1) m. Bein. Çūra's Hariv. 2032. fg. (राजाधिदेय ed. Calc.). 5085. 6628. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter Çūra's Hariv. 1928. VP. 437. Bhāg. P. 9,24,30. 38.

राजाधिराज m. *Oberkönig* Taitt. Ār. 1,31,6.

राजाधिष्ठान s. u. अधिष्ठान 1).

राजाधन् (राजन् + अ°) m. *Hauptstrasse* Rāǵa-Tar. 1,370.

राजान्, °नति denom. von राजन् Siddh. K. zu P. 5,4,15.

राजानक (राजन् + अ°) m. *regulus, kleiner Prinz* Rāǵa-Tar. 6,261. 8, 2969. Hall in der Einl. zu Vāsavad. 16. °राम Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,13.

राजानुजीविन् m. *ein Diener des Fürsten* Matsja-P. im ÇKDa.

राजान्न (राजन् + अन्न) n. 1) *von einem Fürsten oder Krieger empfangene Speise* M. 4,218. °प्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 59,*b*,38. — 2) *eine Art Reis* (*Fürstenspeise*), *der in Andhra gebaut wird*, Rāǵān. im ÇKDa.

राजान्यत्व (राजन् + अ°, nom. abstr. von अन्य) n. *Thronwechsel* Varāh. Bṛh. S. 3,18.

राजाभिषेक m. *Königsweihe* Verz. d. Oxf. H. 332,*b*,12. 335,*b*,19. °पद्धति f. Titel einer Abhandlung über diesen Gegenstand Mack. Coll. I, 34.

राजाम्र m. *eine Art* Âmra Rāǵān. im ÇKDa.

राजाम्र m. = अम्रवेतस Rāǵān. im ÇKDa.

राजाय् (von राजन्), °यते P. 1,4,15, Sch. 8,2,3, Sch. *sich wie ein König gebahren, sich dafür halten* Spr. 894.

राजार्क m. = अर्क *Calotropis gigantea* Rāǵān. im ÇKDa.

राजार्ह (राजन् + अर्ह) 1) adj. *einem Fürsten zukommend, ihm gebührend, seiner würdig* Med. h. 23. R. 3,49,42. — 2) f. आ *Eugenia Jambolana Lam.* Rāǵān. im ÇKDa. — 3) n. *a) Agallochum* AK. 2,6,3,28. H. 640. Med. — *b) eine Reisart*, = राजान्न Rāǵān. im ÇKDa. u. d. l. W.

राजार्हण (राजन् + अ°) n. *ein fürstliches Ehrengeschenk* R. Gorr. 2,72,20.

राजालाबू f. *eine Gurkenart* Madanavinoda im ÇKDa.

राजालुक m. *ein best. Knollengewächs*, = मकाकन्द Hāṃ. 101.

राजावर्त m. *eine Art Diamant* H. 1066. राजावर्तोपलक्ष्याम Kathās. 73, 339. unter den रत्न aufgeführt Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761.

राजावलि und °ली f. *Königsreihe*, Titel einer *Fürstenchronik* Verz. d. Oxf. H. 147,*a*,36. Verz. d. B. H. No. 566. °पाठक Titel einer anderen *Chronik* Rāǵa-Tar. ed. Calc. auf dem Titelbl., °पतांका (welches Aufrecht in °पताका verbessert) Verz. d. Oxf. H. 147,*a*,37.

राजाश्व m. *ein starker Hengst* AV. 5,102,2. P. 8,2,2, Sch.

राजासन n. *Königssitz, Thron* MBh. 4,2266. Hariv. 4344. R. 2,91,37 (100,36 Gorr.). R. Gorr. 2,4,23.

राजासन्दी f. *ein Schemel, auf dem der* Soma *gesetzt wird*, VS. 19,16. Çat. Br. 3,3,4,26. 14,1,2,3. Kāṭy. Çr. 26,2,17.

राजासलक्षण m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,29,2. nach Hall verderbt aus राजसलक्षण.

राजाहि m. *eine Art Schlange* (अहि) Trik. 1,2,3. — Vgl. राजासर्प.

1. रात्रि m. N. pr. eines Sohnes des Âju MBh. 1,3150. रत्रि ed. Bomb.

2. रात्रि (Uṇādis. 4,124) und रात्री (Uṇādis.) f. Vop. 4,17. Siddh. K. 248,*a*,3. 1) *Streifen* (पङ्क्ति, रेखा) AK. 2,4,4,4. H. 1423. an. 2,174. Med. g. 14. Hall. 4,36. भस्म°, उदक° Âçv. Çr. 3,10,15. Çat. Br. 14,5,3,3. Kāṭy. Çr. 25,3,7. Liṭ. 3,8,33. श्वेतलोहित° MBh. 7,1009. 9,2609. नील° Varāh. Bṛh. S. 64,1. Suçr. 1,113,5. 269,8. 286,6. 2,247,9. 258,12. 261,16. 263,14. 264,7. Kām. Nītis. 7,19. अनाविष्कृतदान° (द्विपेन्द्र) Ragh.

2,7. Spr. 2916. Vikr. 78. R. 5,13,39. कुसलराजग: Dhûrtas. in LA. 80, 14. आविष्कृतवर्हराजि adv. Spr. 2343. प्राणि° (प्राणिराजि ed. Bomb.) MBh. 7,510. Pañkat. 1,7,30. राजीव° Spr. 2629. Çiç. 4,9. खड्ग° Verz. d. Oxf. H. 117,a,28. मुक्ता° Pañkat. 1,3,78. उत्पलराजीनि विलोचनानि Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211. धूम° Harîv. 12807. घात्त° Spr. 4871. मेघ° R. 2,93,11 (102,12 Gorr.). R. Gorr. 2,64,19. 5,5,21. Mâlav. 56. नीलपयोद° Kumâras. 7,39. घन° R. 7,4,23. in Schlangennamen: मधुल°, बिन्दु° Suçr. 2,265,16. स्निग्ध° 266,2,4. राजितम् *in langen Reihen* Varâh. Bṛh. S. 12,3. Vgl. तिरश्चि°, तीर्थ°, नील°, रक्त°, रत्न°, रोम°, वन°. Wohl wie खडु von रज् = रञ्ज् Pass. — 2) ई = राजिका *schwarzer Senf* Râgân. im ÇKDa. — 3) राज्याम् Kathâs. 41,58 fehlerhaft für राज्ञ्याम्.

राजिक 1) adj. von राजन् in षोडश° von *sechzehn Königen handelnd* MBh. 7,2451; vgl. die Unterschriften in den Adhjâja 55—71 desselben Buches. — 2) m. *a*) = नरेन्द्र (nicht *König*) Taitt. 3,3,359. — *b*) N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 35,b,23. — 3) f. घा *a*) *Streifen* (पङ्क्ति, रेखा, = राजि H. an. 3,58. Med. k. 145. — *b*) *Feld* H. an. Med. — *c*) *schwarzer Senf, Sinapis ramosa Roxb.* (vgl. राजसर्षप) AK. 2,9,19. Taitt. 3,3,418. H. 418. H. an. Med. Hall. 2,136. Ratnam. 114. Suçr. 1,217, 5. Pañkat. 184, 18. *ein Korn dieser Senfart als Gewicht* = 6 Mâshaka = $^1/_2$ Sarshapa Çârîr. Saṃh. 1,1,14. — *d*) N. *eines zu den* कुष्ठरोग *gezählten Ausschlages* Çârîr. Saṃh. 1,7,65. — Vgl. धर्मराजिका.

राजिकाफल m. *weisser Senf, Sinapis glauca Roxb.* Râgân. im ÇKDa.

राजिचित्र adj. *buntgestreift*, Bez. einer Art Schlange Suçr. 2,265,16.

राजिनी s. रज्जिनी.

राजिफला f. *eine Gurkenart* (*mit gestreiften Früchten*), = चीनार्कर्की Râgân. im ÇKDa.

राजिमत् (von 2. राजि) adj. *gestreift* Suçr. 2,343,11. Harîv. 10291 (राजयत्ति st. राजिमत्ति die neuere Ausg.; vgl. R. 5,28,13. Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211). Bez. einer Gattung von Schlangen Suçr. 2,264,8. 265, 3. 16. 266,4. 267,5. रामाशोकोत्तरराजिमत् Harîv. 2902. — Vgl. राजीमत्.

राजिल (wie eben) adj. *gestreift*; m. Bez. *einer Gattung von Schlangen* AK. 1,2,1,6. H. 1305. Hall. 3 21. Suçr. 2,266,3. Ragh. 11,27. Kathâs. 22,202.

राजी s. u. 2. राजि.

राजीक m. pl. N. pr. eines Volkes R. 4,44,12, v. l.; s. S. 526.

राजीकृत (2. राजि + कृत) adj. *gestreift, Streifen bildend* R. 5,28,13; vgl. Harîv. 10291. Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211.

राजीफल m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Râgân. im ÇKDa.

राजीमत् adj. = राजिमत् *gestreift* Suçr. 2,429,12. Schlangen Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,12.

राजीय्, °यति denomin. von राजन् Schol. zu P. 1,4,15. 8,2,2. Vop. 21,3.

राजीव (von राजी) P. 5,2,109, Sch. 1) adj. (f. घा) *gestreift:* °पक्ष्म (nach dem Schol. *lotusfarbige Flecken habend*) Kâç. Ça. 22,9,13. राजीवा धानर्याप्त तौशेवोक्तः Pañkav. Bh. 21,14,8. nach Âçâra im ÇKDa. = राजोपजीविन् (also von राजन् abgeleitet) *von einem Fürsten seinen Lebensunterhalt habend.* — 2) m. *a*) *ein best. Fisch* AK. 1,2,2,19. Taitt. 3,3,420. H. an. 3,710. Med. v. 48. Hall. 3,27. M. 5,16. Jîân. 1,178. Suçr. 1,206,6. 18. sein Laich ist giftig 2,257,17. — *b*) *eine Antilopenart* Taitt. H. an. Med. — *c*) *Elephant* Taitt. 2,8,33. — 3) n. *eine blaue Lotusblüthe* AK. 1,2,2,40. H. 1161. H. an. Med. Hall. 3,58. gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. Jîân. 3,317. Kumâras. 3,45. Spr. 2629. Çiç. 4,9. °नेत्र adj. so v. a. *blauäugig* MBh. 5,3252. °लोचन adj. (f. घा) 3,1754. 5,7399. 13,102. Harîv. 11071. R. 2,72,7. 93,2. 3,68,23. °प्रभलोचन 5,31,30.

राजीविनी f. *Nelumbium speciosum* (die Pflanze, die Blüthe ist राजीव), *eine Gruppe von Nel. spec.* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135.

राजेन्द्र (राजन् + इन्द्र) m. 1) *ein ausgezeichneter Fürst, Oberkönig, Kaiser* MBh. 5,5948. 5952. 7052. 7118. 7294. R. Gorr. 2,110,21. मण्डलेश्वरान्; तस्माद्गुणो राजा राजेन्द्रः परिकीर्तितः Brahmavaiv.-P. im ÇKDa. Vgl. auch u. इन्द्र 1) *b*). — 2) N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,31. eines Sohnes des Kâçinâtha 261,*a*,12.

राजेन्द्रगिरि m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 1,239.

राजेय adj. von Râgi *abstammend:* तत्र Harîv. 1477.

राजेयु m. N. pr. v. l. für रन्तेयु VP. 447, N. 7.

राजेश्वर (राजन् + ई°) m. *Oberkönig*, N. pr. eines Mannes Râgâ-Tar. 7,223.

राजेष्ट (राजन् + 1. इष्ट) 1) m. = राजपलाण्डु Râgân. im ÇKDa. u. d. l. W. — 2) n. *eine Art Reis*, = राजान्न Râgân. im ÇKDa. u. d. l. W.

राजेष्टकनसंज्ञक m. *eine best. Pflanze*, = भूनाकुशी Râgân. im ÇKDa.

राजोपकरण (राजन् + उप°) n. pl. *die Insignien eines Fürsten* Varâh. Bṛh. S. 3,18. Kathâs. 43,47. — Vgl. राज्योपकरण.

राजोपसेवा f. *Königsdienst* M. 3,64.

राजोपसेविन् m. *ein königlicher Diener* Varâh. Bṛh. S. 39,3.

राज्जुकण्ठिन् m. pl. *die Schule des* Raggukaṇṭha gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

राज्जुदाल adj. von रज्जुदाल TBa. 3,8,20,1. 20,1. Çat. Br. 13,4,4,5. Kâty. Çr. 20,4,17.

राज्जुभारिन् m. pl. *die Schule des* Raggubhâra gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

राज्ञी (von राजन्) f. 1) *Königin, Fürstin* Vop. 4,12. Med. ś. 2. VS. 14, 13. 15,10. TBa. 2,2,6,2. 3,11,8,1. Âçv. Br. 5,23. MBh. 3,2682. 5,7027. 7431. Ragh. 1,37. 76. Kathâs. 13,64. 18,87. Râgâ-Tar. 5,235. Varâh. Bṛh. S. 5,86. °पद *die Würde —, die Stellung einer Königin* 70,10. Vgl. मद्रा°, मर्य°. — 2) Bez. *der nach Westen gerichteten Seite des Gehäuses der Weltseele* Kaush. Up. 3,13,2. — 3) ein N. der Gemahlin des Sonnengottes Med. Mitrâ-P. 11 im ÇKDa.; vgl. VP. 266, N. 1. — 4) *gelbrothes Messing* H. 1048.

राज्य (wie eben) 1) adj. *zur Herrschaft berufen, königlich* TBa. 1,1, 2,1. — 2) n. (auch राज्य und राज्य AV.) *Herrschaft, Königthum; Reich* (vgl. राष्ट्र) gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128. gaṇa ब्राह्मणादि zu 124 (vgl. Sidd. K. 92,*a*). Vop. 7,19. AK. 3,1,14,31. त्वा विशो वृणतां राज्याय AV. 3,1,2. यासो सोमः परि राज्यं बभूव 12,3,31. पर्ष राज्यानि वीरुधाम् 11,6,15. यमस्य राज्ये 18,4,31. स राज्ञो राज्यमनु मन्यतामिदम् 4,8, 1. TBa. 1,4,2,1. TS. 2,1,2,1. 6,6,3. 7,5,6,3. Çat. Br. 2,2,2,1. 4,4,6. नहि ब्राह्मणो राज्यायालम् 5,1,1,12. यत्रं राज्यं परं साम्राज्यम् 13,3,3,13.

सोमो राज्यमादत्त 11, 4, 2, 3. Ait. Br. 7, 22. 8, 6. 12. श्रेष्ठं श्रेष्ठं राज्यमाधिपत्यम् Kaush. Up. 5, 2, 6. Gegens. याकिंचन्य Spr. 3676. fg. 382. पप्रच्छ कुशलं राज्ये राज्याश्रममुनिम् (d. i. राज्ञानम्) Raghu. 1, 58. Vasiṣṭha Bhg. S. 48, 17. 49, 7. 68, 6. °सुख 70, 12. 74, 1. 77, 4. देवेषु über MBh. 1, 4160. त्रिषु लोकेषु 3910. पृथुस्तु विनयाद्राज्यं प्राप्तवान् M. 7, 42. R. 1, 1, 86. राज्यानि विनयात्प्रतिपेदिरे Spr. 4621. Raghu. 4, 1. °लाभ Verz. d. Oxf. H. 334, a, 17. °त्याग 28, b, 22. एतदर्थं हि राज्यानि प्रशासति नराधिपाः R. 2, 32, 24. 4, 8, 35. M. 9, 66. Hariv. 8243. क्रमप्राप्तं पितुः स्वं यो राज्यं समनुशास्ति स MBh. 3, 2449. राज्यं रक्षितुम् R. 2, 73, 12. °रक्षा Spr. 1206. राज्यं गृह्णाण भरत पितृपैतामहम् R. 2, 79, 5. बद्ध° Rāja-Tar. 5, 282. नन्दियामे ऽकोराज्यम् so v. a. regierte R. 1, 1, 38. त्रिंशद्वर्षसहस्राणि राज्यं कृत्वा 42, 27. 7, 59, 19. Kathās. 30, 39. 62, 167. Mārk. P. 18, 2. 114, 18. fg. 133, 5. त्रिंशद्वर्षसहस्राणि राजा राज्यमकारयत् R. 1, 43, 9. 51, 20. राज्यमुपासित्वा 1, 93. राज्यं सुगन्धा विदधे स्वयम् Rāja-Tar. 5, 242. पुत्रे राज्यं समासृज्य M. 9, 322. राज्ये सुतं कृत्वा Mārk. P. 109, 37. पुत्रमेकं राज्याय पालयेति नियुज्य R. 1, 35, 11. राज्ये सुग्रीवप्रतिपादनम् 3, 23. 1, 68. सो ऽचिराद्भ्रश्यते राज्यात् M. 7, 111. भंशयिष्यामि तं राज्यात् MBh. 3, 2253. राज्याच्युतः R. 2, 97, 22. प्रच्युता राज्यात् 3, 53, 22. राज्यात्स्वादवरोपितः 4, 8, 20. राज्याद्विवासितम् 2, 84, 4. °विभ्रष्ट Kathās. 18, 405. °विभ्रष्टः Buḍ. P. 6, 15, 22. एतत्प्रदास्यामि राज्यार्धं ते Kathās. 29, 164. 175. 18, 402. मयमूल Spr. 4692. निस्तकण्टक Pañcat. 202, 19. °भेदकर Spr. 2230. राज्याभिषेक Verz. d. B. H. No. 897. राज्याभिषेकदीक्षितिं Verz. d. Oxf. H. 272, b, No. 645. राज्याभिषिक्त Weber, Rāmat. Up. 320. सप्ताङ्ग M. 9, 294. 296. Kām. Nītis. 4, 1. राज्याङ्ग AK. 2, 8, 1, 18. H. 714. शेष्यं राज्यमराजकम् (v. l. राष्ट्रमराजकम्) Spr. 269. स्वानि राज्यानि मुख्यानि सद्मानि R. 7, 39, 7. राज्यमेकशकारीद्धैः Spr. 1196. 2951, v. l. °राज्य Herrschaft des, ein von — beherrschtes Reich P. 5, 2, 130. ब्राह्मण°, क्षत्रिय° Sch. रघुराज्याभिषेक Raghu. 3 in der Unterschr. भरतार्तितं स्फीतं पुत्रराज्यम् R. 2, 52, 38. न मूढराज्ये निवसेन्माधार्मिकजनावृते M. 4, 61. सुर° Herrschaft über R. 4, 7, 3. त्रैलोक्य° Bhag. 1, 35. पृथ्वी° Kathās. 18, 178. काशि° R. 7, 39, 19. सप्तद्वीपराज्ये ऽभिषेक्तुम् Hit. 41, 1. सकलविरुंगराज्याभिषेक Pañcat. 158, 18. अराज्या ने प्रभा मूढा भवित्री Hariv. 1630. — Vgl. नर°, पृथिवी°, मह्य°, यम°, युव°, वेद°, समर्य°, स्व°.

1. राज्यकर (राज्य + 1. कर) adj. regierend MBh. 1, 1722.

2. राज्यकर (राज्य + 4. कर) m. der Tribut eines tributären Fürsten Kshitiç. 7, 3.

राज्यकर्तृ R. 2, 67, 1 fehlerhaft für राजकर्तृ, wie die ed. Bomb. liest.

राज्यकृत् adj. regierend Spr. 2343 (Conj.).

राज्यतन्त्र n. sg. und pl. Regierungssystem, Regierung R. 2, 112, 25. R. Gorr. 2, 7, 19. Rāja-Tar. 4, 719. Mārk. P. 28, 3.

राज्यदेवी f. N. pr. der Mutter Bāṇa's Hall in der Einl. zu Vāsavad. 12. राष्ट्रदेवी v. l. 30.

राज्यद्रव्य n. ein zur Herrschaft, insbes. zur Königswürde erforderlicher Gegenstand; davon adj. °मय dazu gehörend R. 2, 22, 28.

राज्यधर m. Regent, N. pr. eines Mannes Kathās. 43, 23. 59.

राज्यपाल m. N. pr. eines Fürsten Reinaud, Mém. sur l'Inde 263. राजपाल v. l.

राज्यलक्ष्मी f. Glanz der Regierung R. Gorr. 2, 91, 6. — Vgl. राजलक्ष्मी.

राज्यलीलाय् (von राज्य + लीला) König spielen; davon °लीलायित n. Königsspiel: तत्तापि देवैकाकी कोप्यस्कम् । राज्यलीलायितं राज्यधरो नाम विधेर्वशात् ॥ Kathās. 43, 59.

राज्यलोक Kathās. 42, 195 fehlerhaft für राजलोक.

राज्यवर्धन m. N. pr. zweier Fürsten: 1) eines Sohnes des Dama VP. 353. Buḍ. P. 3, 2, 29. Mārk. P. 109, 4. fgg. — 2) eines Sohnes des Pratāpaçīla oder Prabhākaravardhana Hall in der Einl. zu Vāsavad. 12. 31. Journ. of the Am. Or. S. 4, 529, z. 3. Hiouen-thsang I, 247 (hier fälschlich राज°).

राज्यश्री f. N. pr. einer Tochter Pratāpaçīla's Hall in der Einl. zu Vāsavad. 31. fg.

राज्यसेन m. N. pr. eines Fürsten von Nandipura Verz. d. Oxf. H. 133, b, 32.

राज्यस्थ adj. regierend, die Herrschaft führend Hariv. 8243 (राज्ये स्थिते नृपे die neuere Ausg.). R. 1, 39, 20. 2, 53, 18. Mārk. P. 7, 31.

राज्यस्थायिन् adj. dass. Pāṇ. 4, 3, 135.

राज्यस्थिति f. Regierung Rāja-Tar. 1, 361.

राज्योपकरण n. pl. Reichsinsignien MBh. 9, 2194. — Vgl. राजोपकरण.

राटि (von रट्) f. Schlacht, Kampf H. 798. m. = शरारि ÇKDr. nach AK. 2, 5, 25; hier ist aber घाटि gemeint.

राटिका (vielleicht von रट्) f. s. मृग° (etwa die Gazellen zum Schreien veranlassend).

राडु m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55, b, 21.

राडि m. = शरारि ÇKDr. nach AK. 2, 5, 25; hier ist aber घाडि gemeint.

राढा f. 1) Schönheit, Pracht Trik. 3, 3, 118. H. 1512. an. 2, 131. Med. dh. 3. Halāy. 2, 410. — 2) N. pr. einer Landschaft im westlichen Bengalen und der Hauptstadt darin; = सुह्म H. an. Med. = देश Trik. — As. Res. 5, 56. 64. fg. Kathās. 74, 29. Z. d. d. m. G. 3, 165. राढाभिधानो जनपदः Pārç. 68, 16. गौडे राष्ट्रेऽनुत्तमं निरुपमा तत्रापि राढा पुरी 22, 18. दन्तिणा° 20, 5. 23, 11. °पुर Verz. d. Oxf. H. 261, a, 5. राढा Colebr. Misc. Ess. II, 188. fg. दन्तिणाराढा 189. es kommt auch die Form राढ vor, z. B. Verz. d. Oxf. H. 338, b, 22. Colebr. Misc. Ess. II, 179; vgl. u. 2. वङ्ग 2) c) und गोमुख 8) b).

राढीय adj. von राढा 2) Schol. zu Pārç. 22, 13. Wilson, Sel. Works I, 156. राढिय Colebr. Misc. Ess. II, 189.

राण n. 1) Blatt. — 2) Pfauenschweif Çabdārthas. bei Wilson.

राणक 1) Titel eines Commentars zum Tantravārttika Hall 170. 183. 207. Verz. d. Oxf. H. 279, a, 29. — 2) f. राणिका Zügel Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 5, 56.

राणाङ्क m. Bein. Dāmodara's Verz. d. B. H. No. 934.

राणायनि m. patron. von राण gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. राणायनीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Lāṭy. 6, 9, 16. राणायिनीपुत्र Nidānas. 9, 1 in Ind. St. 1, 45. राणायनीसूत्र in einem SV. Gaṇa (Tüb. Hdschr.).

राणायनीय m. pl. die Schule des Rāṇāyana Ind. St. 1, 43. 47. 53. 61. 63. 3, 273. fg. Colebr. Misc. Ess. I, 18. 326. n. sg. das Sūtra des Rāṇāyana Ind. St. 1, 50. m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55, b, 6. राणायनीय v. l.

राणायनीपि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55, b, 11.

राणि m. patron. von रण gaṇa वेलादि zu P. 2,4,59.

राणिय m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 873. Verz. d. Oxf. H. 349,b,13. 20.

राण्य adj. so lesen alle von uns und A. Weber verglichenen Hdschrr. in der Stelle: सुते सोमे सुतपाः शक्तमानि राण्या क्रियास्म वक्षणानि पुष्टेः RV. 5,23,6. Müller und Aufrecht haben रायो, Sây. erklärt das Wort durch रमणीय.

रात 1) partic. adj. s. u. 1. रा. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Ind. St. 3,406. fgg.

रातमनस् adj. *bereitwillig:* रातमनसो ऽविर्गृह्णानि Çat. Br. 1,1,2,12. ब्रह्मणाय 3,6,4,7. आलम्भाय 7,2,5,6. ते रातमनसो ऽस्तं दानाय भवन्ति 4,3,4,14.

रातंकविस् adj. = रातकव्य 1) *a*): धेनुर्न शिश्ये स्वसरेषु पिन्वते ऽनाय रातंकविये मरीमिषम् RV. 2,34,8.

रातकव्य 1) adj. *a) der die Opfergabe* (den Göttern) *willig überlässt, ein freigebiger Opferer* RV. 1,31,13. 54,7. दधे हि वामघिना रातकव्यः शश्वत्तमागा उषसो व्युष्टौ 118,11. 153,3. 2,25,1. 4,44,3. कस्मा घ मुत्रो-ताय रातकव्याय प्र यंसुः 5,33,12. 7,19,6. 8,92,13. Häufig नमसा रातकव्यः 5,43,14. 6,11,4; vgl. AV. 3,3,1. — *b) derjenige welchem die Opfergabe überlassen wird, — gehört* RV. 7,35,1. Çâṅkh. Ça. 3,6,3. नमसा रा° RV. 4,7,7. 5,43,6. 8,69,6. — 2) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âtroja, Verfassers von RV. 5,65. 66 (vgl. Vers 3).

रातिं (von रा) P. 3,3,96 (angeblich nur im RV. oxytonirt); f. auch रातौ gaṇa अक्षादि zu P. 4,1,45. 1) adj. *bereitwillig, günstig; zu geben willig* (Gegens. अरातिं) RV. 1,29,4. AV. 11,8,21. भगो रातिर्वाजिनो मन्तु नो रत्नम् RV. 10,66,10. मक्षासावस्मभ्यमस्तु रातिः मक्षेन्द्रो भगः AV. 1,26,2. धाता रातिः सवितेदं जुषन्ताम् 3,8,2. 7,17,4. VS. 22,13. पीपा यं रातिं मन्येत तस्मा एनं प्रयच्छेताद्ध मित्रस्य ध्रुवम् Âit. Br. 8,3. Çat. Br. 14,6,8,34. — 2) f. *Verleihung, Gunst, Gnadenbezeugung; Gabe, Opfergabe* RV. 1,60,1. सुमति, रातिं 89,2. 10,143,4. वर्धन्ती रातिः 1,117,1. 122,7. 132,2. गृभीता 162,2. ये स्तोतृभ्यो रातिमुपमुक्तिं सूरयः 2,1,16. भगस्य 3,62,11. य इमा मर्ताय रातिं ददौ ददुष मर्त्याय 4,3,2. 34,10. श्यामर्क ते सदमिद्रातो 6,30,2. 7,1,20. 25,4. या राधो पत्नु पर्वतस्य रातौ 37,2. AV. 6,39,2. प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची RV. 6,63,4. 7,25,3. 8,9,16. इयं ते इन्द्र गिर्वणो रातिः तरति मन्वतः 8,13,4. पारावतस्य रा-तिमु श्रवश्चक्रेषामुषु 34,18. घर्षिनो यस्ते चेदथ गच्छानिद्दुषो रातिम् 68,3. उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठात् 10,93,17. AV. 19,3,4. VS. 38,13. Çat. Br. 14,2,2,26. Çâṅkh. Ça. 3,6,6. इन्द्रस्य रातिः N. eines Sâman Ind. St. 3,208,b. — Vgl. अ°, अनर्श°, अलर्षि°, चित्र°, पिशङ्ग°, पूष°, ब्रह्म°, मंस्कृष्ठ°, विमृष्ट°, स°, सु°.

रातिषाच् (रा° + साच्) adj. *Gunst verleihend, über Gaben verfügend, freigebig;* auch Bez. von *spendenden Genien:* वो रातिषाचो मघवेषु सञ्चिरे RV. 2,1,13. ता नो रासद्रातिषाचो वसूनि 7,34,22. 23. 35,11. भगं वाजं रातिषाचं पुरंधिम् 36,8. रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः 38,5. मात्रे पृथ्वाघृणा इरस्यो वद्रेत्रो यद्रातिषाचश्च रासन् 40,6. 10,65,14. तदोषधी-भिरभि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये 6,49,14. सत्रेणो ऋङ्गिरसो नवग्वा इष्टावर्तस्तो रातिषाचो दधानाः AV. 18,3,20. Çâṅkh. Ça. 8,21,21. — Vgl. स्मद्रातिषाच्.

रातुल m. N. pr. eines Sohnes des Çuddhodana VP. 463. — Vgl. राकुल.

रात्र n. = रात्री *Nacht;* selbständig nur in der Stelle त्रीणि रात्राणि MBh. 13,6230 und bei der künstlichen Erklärung von पञ्चरात्र Pâṇ. 4,1,44: रात्रं च ज्ञानवचनं ज्ञानं पञ्चविधं स्मृतम् । तेनेदं पञ्चरात्रं च प्रव-दन्ति मनीषिणः ॥ Am Ende eines comp. ist रात्र der regelmässige Vertreter von रात्री P. 5,4,87. Vop. 6,46. 51. 57. अपरात्रे *am Ende der Nacht* MBh. 3,10795. 14750. वर्षारात्र (so v. a. वर्षाकाले Comm.) उपागते R. 7,64,10. 4,26,21. वर्षारात्र m. Vop. 6,46. 51. द्वादशरात्रे MBh. 1,6614. अष्टाविंशतिरात्रं (acc.) वा मासौ वा 4,1178. त्रिरात्रम् acc. *drei Tage hindurch* 14,2193. Pâṇ. 8,19. त्रिरात्राणि MBh. 3,4060. दशरात्रेण *zehn Nächte hindurch* R. 1,21,18. कतिपयरात्रम् acc. *einige Nächte hindurch* Çiç. 28,14. पञ्चदशरात्रः P. 3,3,137, Sch. ततो नाक्षायत तदा दिवारात्रं तथा दिशः *nicht Tag noch Nacht* MBh. 3,816. दिवारात्रम् adv. *am Tage und in der Nacht* M. 5,80. MBh. 3,2647. 12340. 16,38. R. 1,38,12. Nach P. ist ein auf रात्र ausgehendes comp. stets masc., nach Andern aber nur dann, wenn kein Zahlwort vorhergeht, P. 2,4,29. Sidd. K. zu d. St. AK. 3,6,2,12. 2,25. — Vgl. अति°, अनुरात्रम्, अपररात्र, अर्ध°, अ-हो°, गण°, चिर°, पुण्य°, पूर्व°, प्रतिरात्रम्, प्रथमरात्र, ब्रह्म°, मध्य°, मध्यम°, महा°, सर्व°, एक°, द्वि° u. s. w.

रात्रक 1) adj. f. रात्रिका *a) nächtlich* Râéa-Tar. 5,132, wo °ता रा-त्रिका गौः zu trennen ist. पञ्चरात्रक *fünf Nächte (Tage) während* Pâṇ. ed. orn. 4,17. — *b) ein Jahr lang im Hause einer Buhldirne wohnend* H. an. 3,67. fg. Med. k. 145. — 2) n. = 2. पञ्चरात्र 3) H. an. Med. *ein Zeitraum von fünf Nächten* Wilson.

रात्रि s. u. रात्री.

रात्रिक adj. *am Ende eines comp. nach einem Zahlwort so und so viele Nächte (Tage) verweilend:* नगरे पञ्चरात्रिका ग्रामे चैकरात्रिकाः MBh. 12,7005. ग्रामेकरात्रिकाः 14,1284 könnte eine unregelmässige Contraction von ग्राम (d. i. ग्रामे) एक° sein. Auch *für so und so viele Nächte (Tage) ausreichend;* vgl. एक°, द्वै° *in zwei Nächten (Tagen) vollbracht* u. s. w. P. 5,1,87, Sch. — Vgl. पञ्च°.

रात्रिकार m. *der Nachtmacher* d. i. *der Mond* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 7.

रात्रिचर = रात्रिंचर P. 6,3,72, Sch. Vop. 26,31. m. *Nachtwandler* d. i. 1) *Dieb* H. ç. 93. — 2) *Nachtwächter* Wilson. — 3) *ein Râkshasa* AK. 1,1,4,55. H. 187. f. ई Bhaṭṭ. 2,23.

रात्रिचर्या f. 1) *das Umherstreichen in der Nacht:* वर्ज्यं रात्रिचर्याम् MBh. 8, 2099. — 2) *eine bei Nacht vor sich gehende Verrichtung* Kathâs. 20, 161. 71,282. fg. 94,72.

रात्रिञ 1) adj. *zur Nacht erscheinend.* — 2) n. *Stern* Çabdârthak. bei Wilson.

रात्रिजल n. *Nebel* Çabdam. (Çabdar. bei Wilson) im ÇKDr.

1. रात्रिजागर m. *Nachtwachen* Spr. 688.

2. रात्रिजागर 1) adj. *in der Nacht wachend.* — 2) m. *Hund* H. 1279.

रात्रिजागरद् 1) adj. *Nachtwachen verursachend.* — 2) m. *Mosquito* Râéân. im ÇKDr.

रात्रिंचर = रात्रिचर P. 6,3,72, Sch. Vop. 26,31. m. *ein Râkshasa* AK. 1,1,4,55. H. 187. R. 7,5,16.

रात्रितरा (von रात्रि mit dem suff. des compar.) f. *tiefe Nacht:* °तरायाम् P. 6,3,17, Sch.

रात्रितिथि f. *eine lunare Nacht* Ind. St. 10,297.

रात्रिदिवम् Kathâs. 70,26 wohl fehlerhaft für रात्रिंदिवम्.

रात्रिनाशन m. *Vernichter der Nacht* d. i. *die Sonne* H. ç. 7.

रात्रिंदिवं *Tag und Nacht* P. 5,4,77. समरात्रिंदिवे काले AK. 1,1,3,4. व्यस्तरात्रिंदिवस्य ते Kumâras. 2,8. °विभागेषु Ragh. 17,49. एकेन रात्रिंदिवेन Ind. St. 10,274. रात्रिंदिवानि 9,463. 10,265. fg. °दिवम् adv. *bei Tag und bei Nacht* P. 5,4,77, Sch. R. 1,44,2. Kâm. Nîtis. 16,9. Spr. 2037. °दिवा dass. 4733.

रात्रिपदविचार m. Titel eines Werkes Hall 47.

रात्रिपरिशिष्ट n. = रात्रिसूक्त Ind. St. 2,193. 206.

रात्रिपर्याय m. *die drei Kehrsätze in der Recitation der* Atirâtra-*Nacht* Çâṅkh. Br. 17,8. Çr. 6,13,5. 7,26,13. 9,7,1. Lâṭy. 3,4,7. 5,11,3.

रात्रिपुष्प n. *die Blume der Nacht* d. i. *eine in der Nacht sich öffnende Lotusblüthe* Rigân. im ÇKDr.

रात्रिपूजा f. *nächtliche Verehrung einer Gottheit* Wilson, Sel. Works 1,148.

रात्रिबल adj. *in der Nacht seine Kraft offenbarend;* m. *ein* Râkshasa H. ç. 37. — Vgl. संध्याबल.

रात्रिभोजन n. *das Essen zur Nachtzeit:* °निषेध m. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1,282.

रात्रिमट (रात्रिम्, acc. von रात्रि, + मट्) m. = रात्र्यट Vop. 26,31. m. *Nachtwandler, ein* Râkshasa Taitt. 1,1,74.

रात्रिमणि m. *das Juwel der Nacht* d. i. *der Mond* Hit. 13.

रात्रिमारण n. *ein Mord in der Nacht, ein an einem Schlafenden verübter Mord* Taitt. 2,8,39.

रात्रिंमन्य adj. *für Nacht geltend, — angesehen werdend:* अहः P. 6,3,72, Sch.

रात्रिरक्षक m. *Nachtwächter* Kathâs. 88,13.

रात्रिराग m. *die Farbe der Nacht* d. i. *Dunkel, Finsterniss* H. ç. 19 (zu lesen °रागो).

रात्रिलग्ननिरूपण n. Titel einer dem Kâlidâsa zugeschriebenen Abhandlung, citirt im ÇKDr. u. पुनर्वसु.

रात्रिवासस् n. 1) *Nachtgewand* Tantrâsâra und Lakshmîkarîtra im ÇKDr. — 2) *das Kleid der Nacht* d. i. *Dunkel, Finsterniss* Çabdam. im ÇKDr.

रात्रिविगम m. *Ausgang der Nacht, Tagesanbruch* Çabdam. im ÇKDr.

रात्रिविप्रेषगामिन् 1) adj. *zur Nacht der Trennung entgegengehend.* — 2) m. *Anas Casarca Gm.* (s. चक्रवाक) Rigân. im ÇKDr.

रात्रिवेद m. *Kenner der Nacht* d. i. *Hahn* Çabdam. im ÇKDr.

रात्रिवेदिन् m. dass. Taitt. 2,5,18.

रात्रियामन् und °साम्न् n. *ein zur* Atirâtra-*Nacht gehöriges* Sâman Çat. Br. 11,5,8,6. 7. Pañkav. Br. 9,2,20. Lâṭy. 9,7,10.

रात्रिसत्र n. *Nachtfeier* Kâty. Çr. 24,1,1. Çâṅkh. Çr. 13,14,9. Lâṭy. 8,2,16.

रात्रिसाम्न् s. रात्रियामन्.

रात्रिसूक्त n. Bez. der nach RV. 10,127 eingeschalteten *Hymne an die Nacht* Ind. St. 7,419. Verz. d. Oxf. H. 268,*a*,26. 33. 298,*b*, No. 725 (रात्री°). 398,*a*, No. 144.

रात्रिस्नास m. *weisser Lotus (in der Nacht lachend* d. i. *sich öffnend)* Çabdam. im ÇKDr.

रात्रिस्थायक m. *ein Wächter im Gymnasium* Çabdam. im ÇKDr.

रात्री (P. 4,1,31. AV. Pâr. 3,6. H. 141, Sch. रात्रौ Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,67) und später रात्रि Uṇâdis. 4,67. f. 1) *Nacht* (vgl. राम *dunkelfarbig, schwarz*) Naigh. 1,7. Nir. 2,18. AK. 1,1,3,5. 3,4,18,69. Taitt. 1,1,105. H. 141. Hall. 1,108. fg. personif. Naigh. 3,3. Nir. 9,28. RV 10,127,1. रात्री व्यख्यत् निवेशनीम् 1,35,1. रात्र्या बन्धुः 94,7. रात्र्यं तमो यदधुः 10,69,11. रात्र्युषसे योनिमारैक् 1,113,1. रात्रीमुषसः पारयध्यै 3,81,4. योरुक्त्मा रात्री परितक्म्या या 5,30,14. रात्रीभिः, यक्तभिः 10,10,9. VS. 3,10. °AV. 5,5,1. यत्र ब्राह्मणो रात्रिं वसति पापया 17,18. घर्मावास्यां 1,16,1. पौर्णमासीं TS. 2,5,6,4. Gobh. 4,3,22. नमो रात्र्या नमो दिवा AV. 11,2,16. Ait. Br. 3,44. 4,3. सोमस्य वै रात्री ऽर्धमासस्य रात्रेः पर्वणः पर्वण्यं धामन् TS. 2,5,6,4. Çat. Br. 2,3,4,23. त्रिंशन्मासस्य रात्रयः 3,1,1,13. 10,4,3,12. संवत्सरतमीं रात्रिम् so v. a. *heute über ein Jahr* 11,5,1,11. 14,9,1,19. रात्र्याम् Âçv. Gṛ. 1,17,13. 4,4,14. रात्रौ Lâṭy. 2,5,24. 3,1,26. पुरा रात्रेः 10,15,7. °शेष Âçv. Gṛ. 3,7,1. °देवत 2,4,12. रात्र्यां रात्र्यां व्यतीतायाम् Spr. 4944. R. 1,38,9. Vaitân. Bhp. S. 78,11. रात्रिः स्वप्नाय भूतानाम् M. 1,65. पत्नीषु रात्रिम् 4,97. 5,81. MBh. 3,3009. गता भगवती रात्रिः R. 1,43,6. नीत्वा रात्रिम् Megh. 33, v. l. 39. 87. रात्र्या M. 5,64. 6,69. रात्री gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. M. 3,280. 4,50. MBh. 3,16834. Megh. 86. Vaitân. Bhp. S. 8,18. 21,8. 32,25. Kathâs. 18,322. Vet. in L.A. (III) 3,18. 8,18. रात्र्यहनी M. 1,66. fg. R. 1,63,25. Spr. 2767. Selten am Ende eines comp. (s. रात्र): पञ्चाशद्रात्रिकर्शितौ (पञ्चाशद्रात्रक° ed. Bomb.) MBh. 13,2796. वर्षरात्रिनिवासिन (वर्षारात्रि° Gorr., वर्षरात्र° ed. Bomb.) R. 1,3,24. रात्रि als einer der vier Körper Brahman's VP. 40. रात्रि mit dem patron. भारद्वाजी als Verfasserin von RV. 10,127. — 2) abgekürzte Bez. *a*) für अतिरात्र Çat. Br. 5,1,2,2. 3,2,3. — *b*) für रात्रिपर्याय Çat. Br. 13,5,2,10. Pañkav. Br. 20,1,1. Ait. Br. 4,5,6. Çâṅkh. Çr. 7,14,8. — *c*) für रात्रिसामन् Lâṭy. 6,10,11. — 3) रात्रि wie alle Wörter für *Nacht* = कुरिरा Ratnam. 58. MBh. 13,6242. Suçr. 2,66,7. 323,13. — 4) रात्रीः MBh. 14,2668 fehlerhaft für पात्रीः, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. बन्ध°, काल°, भीम° (unter भीमरथ), मोक्ष°, यत्त°, शिव°, शेष°.

रात्रीण nach einem Zahlwort *in so und so vielen Nächten vollbracht* u. s. w. P. 5,1,87. एक° Lâṭy. 8,4,3. द्वि° 11.

रात्रीदेवोदास n. N. eines Sâman Ind. St. 3,231,*a*. रात्रीरुद्रदेवोदास v. l.

रात्रीसूक्त s. रात्रिसूक्त.

रात्रीरुद्रदेवोदास s. रात्रीदेवोदास.

रात्र्यट = रात्रिमट Vop. 26,31. m. *ein* Râkshasa Çaṇḍikâbhâṣ. bei Wilson.

रात्र्यन्ध adj. *nachtblind* Suçr. 2,339,7. Pañkat. 167,21. — Vgl. नक्तान्ध.

रात्र्यन्धता f. *Nachtblindheit* Gârudha-P. 189 im ÇKDr.

रात्र्याकूपार n. N. eines Sâman Ind. St. 3,204,*a*.

रात्र्यान्ध्य n. = रात्र्यन्धता Çiñkṣ. Saṅgr. 1,7,94. — Vgl. नक्तान्ध्य.

राथकारिकै adj. (f. ई) von रथकार gaṇa कुमुदादि 2. zu P. 4,2,80.

राथकार्य m. patron. von रथकार gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

रौद्रगणाक n. *die Beschäftigung —, das Amt des* रुद्रगणाक gaṇa उद्धा-

त्रादि zu P. 5, 1, 129.

राथन्तितेयी metron. (f. ई) Ableitung von रथन्ति; so heissen Apsaras AV. 6, 130, 1.

रौथंतर 1) adj. (f. ई) von रथंतर gaṇa उत्सादि zu P. 4, 1, 86. Indra TS. 2, 3, 2, 3. 7, 2, 8, 2. TBa. 1, 1, 3, 1. VS. 29, 60. Ait. Ba. 4, 10. 29. 5, 30. 8, 1. Çat. Ba. 1, 7, 3, 17. 5, 5, 2, 4. Pañcav. Ba. 18, 2, 5. — 2) m. patron. gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104. f. ई N. pr. einer Lehrerin Bṛhadd. 5, 28 in Ind. St. 1, 105.

राथंतरायणी m. patron. von राथंतर gaṇa कुरितादि zu P. 4, 1, 100.

राथप्रोष्ठ m. patron. des Asamâti Müller in Journ. R. As. S. II, 432. fgg. (1866). Ind. St. 10, 33, 1.

रौथीतर m. patron. von रथीतर gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104. des Satjavakas Taitt. Up. 1, 9, 1. रौथीतरीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Ba. 14, 9, 4, 32.

राथीतरायणी m. patron. von राथीतर gaṇa कुरितादि zu P. 4, 1, 100.

1. रौथ्य RV. 1, 157, 6. adj. Dehnung für रथ्य nach Padap. und RV. Prât. 9, 27.

2. राथ्यं (von रथ) adj. zum *Wagen* tauglich: वृषन् VS. 23, 13.

राद्ध s. राध्.

राद्धान्त m. = सिद्धान्त *Schlusssatz, conclusio, ein bewiesener Satz* AK. 1, 1, 4, 13. H. 242. Halâj. 1, 10. Sarvadarçanas. 126, 13. 127, 13. fg. Bṛhad. P. 12, 11, 1. Pañcar. 1, 2, 56.

राद्धान्तित (von राद्धान्त) adj. *als Schlusssatz sich ergebend, logisch bewiesen* Schol. zu Pañcav. Ba. 18, 7, 1.

रौद्धि (von राध्) f. P. 3, 3, 94, Vârtt. 1, Sch. Vop. 26, 190. *richtiges Zutreffen, Gelingen, Glück*: राद्धिः सम्पद्धिर्व्यृद्धिः AV. 10, 2, 10. 11, 7, 22. TBa. 1, 2, 6, 7. Çat. Ba. 4, 6, 9, 11. 8, 6, 3, 2. Lâṭj. 3, 11, 3. 4, 1, 6. 2, 10. Âçv. Çr. 12, 10.

राध् (vgl. ऋध्). राधति, राधत्, राधाम: रराधीति (संसिद्धौ) Dhâtup. 27, 16. रौध्यति (वृद्धौ, nach Andern संसिद्धौ) 27, 71 und रौध्यते in intransit. Bed.; ररौध, रराधतुस्, und रेधतुस्, रराधिथ und रेधिथ (die contrahirten Formen nur in der Bed. von हिंसा) P. 6, 4, 123. Vop. 8, 52. 11, 3. अरात्सीत्, अराट्स्म, अराट्सुस्; रात्स्यति. राद्धा Kâr. 4 aus Sidd. K. zu P. 7, 2, 10. Schol. zu P. 7, 2, 62. राध्यासम्; (वि)राधिषि, अराधि: partic. राद्ध. 1) *gerathen, gelingen*: तन्मे राध्यताम् VS. 1, 3. TS. 1, 5, 10, 3. तदृशके तन्मे ऽराधि VS. 2, 23. *fertig werden*: घोदनो राध्यमान: AV. 11, 3, 11. *sich passend fügen*: पृथिवी नै: प्रवतो राध्यतो च 12, 1, 2. *Jmd* (dat.) *zu Theil werden*: अराध्यस्मा अवमित्याचक्षते । एतद्वै मुखतो ऽग्नै राद्धम् । मुक्तो ऽस्मा अन्नं राध्यते Taitt. Up. 3, 10, 1. राद्ध *zu Stande gekommen*: पूर्तेन u. s. w. राद्धं निःश्रेयसं पुंसाम् Bṛhad. P. 3, 9, 41. कर्मन् 4, 29, 62. *fertig*, = सिद्ध, पक्व Taitt. 2, 7, 11. H. 412. ब्रह्मोदन Kâṭj. Ça. 4, 8, 9. *vollendet, vollkommen geworden*: योगराद्धेन चेतसा Bṛhad. P. 3, 11, 17. *zu Theil geworden, zugefallen*: इन्द्रपद 8, 3, 13. यस्मद्राद्धतरो ऽसुर: 3, 18, 23. राद्धमेतावपि 23, 10. नग्नमूलं राद्ध: so v. a. *zu Gesicht gekommen* 15, 46. — 2) *Gelingen haben, den Zweck erreichen, zurecht kommen, Glück haben mit* (instr.): य: प्रथमो दक्षिणया रराध RV. 10, 107, 6. VS. 22, 4. AV. 5, 6, 8. कृष्या 11, 3, 41. यज्ञेन Ait. Ba. 2, 34. 3, 15. प्रयमेन स्तोमेन राद्धा TBa. 3, 9, 9, 1. अरात्सुरिमे यजमाना: TS. 7, 4, 9, 3. 5, 2, 1. Çat. Ba. 1, 9, 1, 12. 3, 1, 2, 5. 6, 2, 24. 4, 3, 3, 11. यो वै पुत्राणां राध्यते 6, 1, 2, 12. Âçv. Gṛhj. 4, 4, 2. भवता राधसा राद्धम् (impers.) Bṛhad. P. 4, 24, 33. राद्ध *derjenige dem es gelungen ist, glücklich*: सर्वे हि पुण्या राद्धा: TBa. 2, 1, 2, 6. स यो मनुष्याणां राद्ध: समृद्धो भवति Çat. Ba. 14, 7, 1, 32. Kauç. 56. — 3) *reif werden für Etwas* so v. a. *theilhaftig werden, gelangen in, nach*; mit dat. und loc.: नरकाय राध्यति Âpastamba bei Müller, Sl. 103. राध्यते विमुक्ति मानवान्भवति nach Taitt. Up. 3, 10, 6. — 4) *Jmd* (dat.) *günstig sein, sich für Jmd interessiren* P. 1, 4, 39. Vop. 5, 15. देवदत्ताय राध्यति = पृष्ट: सन्देवदत्तस्य शुभाशुभं पर्यालोचयति P., Sch. — 5) *richtig oder glücklich durchführen, zu Stande bringen, fertig machen, zurecht machen*; mit acc.: कथा राधाम् स्तोमं मित्रस्य RV. 1, 41, 7. उपस्तुतिम् 8, 39, 12. को व: स्तोमं राधति यं जुजोषथ 10, 63, 6. मखस्य शिर: VS. 37, 3. यज्ञम् Ait. Ba. 5, 25. कामम् Çat. Ba. 1, 3, 3, 10. 9, 2, 4. 3, 6, 2, 1. पर्व ते राध्यासम् *richtig treffen* TS. 1, 1, 2, 1. — 6) *Jmd zurecht bringen* so v. a. *gewinnen, befriedigen*: का राधद्धोत्राश्विना वाम् RV. 1, 120, 1. अराधि कोता 10, 53, 3. 1, 70, 8. देवान् Ait. Ba. 1, 1. — 7) *beschädigen* (हिंसायाम्, वधे) P. 6, 4, 123. Vop. 8, 52. वानरा भूधराश्चेधु: Bhatt. 14, 19. = उन्मूलितवन्त: *entwurzelten* Comm.

— caus. राधयति 1) *zu Stande* —, *zu Wege bringen*: तास्ते समृद्धीरिह राधयामि AV. 11, 1, 10. तस्योत्थानं देवता राधयन्ति (so liest die ed. Bomb. st. धारयन्ति der ed. Calc.) MBh. 5, 1036. पुष्कलावर्यधर्माव्ययीरधत् Daçak. 113, 14. — 2) *befriedigen*: तै दक्षिणाभी राधयेत् TS. 5, 6, 9, 3. 2, 6, 8, 3. यस्तेवान्यं राधयत्यन्यं न TBa. 2, 1, 2, 9.

— अनु *glücklich fertig werden mit* (gen.): अन्वेषामरात्सम TBa. 1, 3, 2, 8; auch AV. 5, 6, 5 ist wohl अनु st. नु zu lesen. अनुराद्ध *zu Theil geworden, zugefallen*: विष्वी पृथग्धारणायानुराद्धाम् Bṛhad. P. 7, 2, 46. — Vgl. अनुराध, अनूराध.

— अप 1) *fehlen, verfehlen* (z. B. das Ziel) AV. 2, 35, 2. काष्ठाम् Ait. Ba. 4, 9. सुवर्गं लोकम् TBa. 3, 9, 2, 3. अपराधमिति मन्यमान: *ich habe gefehlt (ein Unrecht begangen* Comm.) 1, 6, 2, 4. इषंति नापरात्स्यामि TS. 5, 4, 11, 3. Çat. Ba. 4, 6, 3, 2. 5, 3, 5, 29. 11, 1, 2, 4. तथा नस्त्वं गौतम मापराधा: *mögest du uns nicht fehlen*, — *entstehen (dich nicht verfehlen gegen* Comm.) 14, 9, 1, 11. अपराधुयाद्दक्षिणा प्रजानीं प्रजनेनम् *mittelst des* TBa. 3, 2, 10, 3. AV. 5, 6, 7. एतद्वा अनपराद्धं नतत्रे यत्सूर्य: Çat. Ba. 2, 1, 2, 19. निमिताद्यपराद्धेषु: *dessen Pfeil das Ziel verfehlt hat* Çiç. 2, 27; vgl. अपराद्धपत्का, अपराद्धेषु. — 2) *Schuld haben* —, *tragen*, — *sein an* (loc.), *sich Etwas zu Schulden* (*haben*) *kommen lassen, sich vergehen gegen Etwas* (loc.) oder *Jmd* (gen.), *Etwas verbrochen haben gegen Jmd* (gen.): एवं स्त्री नापराध्नोति नर एवापराध्यति MBh. 12, 9518. नापराध्यामि 13, 2169. 3, 11751. R. Gorr. 2, 38, 47. 66, 49. न कश्चिन्नापराध्यति 5, 64, 6. ed. Bomb. 6, 113, 41. Kathâs. 27, 68. Mârk. P. 17, 8. दैवमपराध्यति R. Gorr. 2, 117, 20. नापराध्यामहे यथा 7, 102, 4. स्वामी तत्रापराध्नुयात् Bṛhaspati in Vivâd. 49, 2 v. u. दैवे तत्रापराध्यति R. 6, 101, 9. कार्यकारणकर्तृत्वे न कश्चिदपराध्यति 98, 34. यौवनमत्रापराध्यति न चारित्र्यम् Mṛicch. 145, 21. तेनापराध्यति चतुर्षु कस्तत्र सिक्तनिर्माणे Kathâs. 96, 46. कस्माद्धर्मे ऽपराध्नुय: MBh. 4, 1611. 12, 2715. शय्यासने च मे राज्ञापराध्येत कथं न 3, 17005. कथं नास्यापराध्नुयाम् 1, 1585. 3, 11413. 4, 1479. नहि मे ऽन्यो ऽपराध्यति *es hat mir ja kein Anderer Etwas zu Leide gethan* 1, 4322. 5959.

12,8182. न ते ऽक्षमयाराध्यामि कर्मणा मनसापि वा। वाचा वा R. Gorr. 2,30, 9. 3,56,21. 7,36,28. Spr. 1965. को वा कस्यापराध्यते Mirr. P. 118,17. नापराध्यामि किंचित् *ich lasse mir Nichts zu Schulden kommen* MBh. 1,667. 3, 14058. 14,2405. नैषा किं चापराध्यति *was hat sie verbrochen?* Kathis. 21, 80. काका: किमपराध्यन्ति हंसैर्नरधिषु शालिषु 75,191. बैद्धि: किमपराध्यते (pass. impers.) Prab. 20,18. कस्मिन्मया नापराद्धमज्ञानाद्येन u. s. w. R. 2, 18,11. Kathis. 14,74. व्यक्तं तत्र त्वयापराद्धं येनास्म्यभिशप्त: MBh. 1,666. देव्या नैवापराद्धं ते Kathis. 17,48. किमु तस्य मया बाल्यादपराद्धं महीपते: MBh. 3,2962. R. Gorr. 2,13,15. 38,48. Vikr. 5,8. Kathis. 37,18. अज्ञानतापराद्धं यन्मया ते 94,75. किमपराद्धं कारणत्वेन so v. a. *was ist daran auszusetzen, dass es Ursache ist?* Sarvadarçanas. 133,2. अपराद्धं न मे *ich habe Nichts verbrochen* Mirr. P. 61,50. न तु यौष्मस्यैवं मृगमपराद्धं युवतिषु so v. a. *die Hitze greift die jungen Mädchen nicht in so reissender Weise an* Çik. 57. अपराद्ध *der sich Etwas hat zu Schulden kommen lassen, schuldig, der sich vergangen hat an Jmd* (gen., selten loc.) R. Gorr. 2,119,26. Kim. Nitis. 17,50. Ragh. 8,47. 9,79. Milav. 39, 17 (अनपराद्ध). Kathis. 17,49. Hit. ed. Johns. 1430. अस्यापराद्धा: MBh. 3,15705. 14,2406. Çik. 110,16. Kathis. 43,255. Mirr. P. 132,3. अवध्या वादवानी हि स्वपराद्धा अपि (स्वापराधे ऽपि हि die neuere Ausg.) Harîv. 7492. भवति — अपराद्धो ऽस्मि Mudrâr. 24,12. — Vgl. अपराध, अपराधिन्, अनपराद्धम्. — caus. s. अपराधय.

— अभि, partic. °राद्ध *befriedigt, gewonnen:* देवता Çiç. 1,71. — caus. *zufriedenstellen, befriedigen* Çat. Br. 2,2,4,3. 6. Snadv. Br. 2,10. तमुत्तमेन शौचेन कर्मणा चाभिराधय MBh. 12,3909. कथं देवं प्रकारैरभिराध्यते R. 2,30,33. fg. — Vgl. अभिराधन in den Nachträgen. — desid. des caus. *befriedigen wollen:* अभिरिराधयिषति Çat. Br. 2,3,4,6.

— अव *missrathen:* यथैव पञ्चवराधेति स रिक्त: Ait. Br. 3,7. *einen Fehler machen* AV. 5,6,6.

— आ caus. 1) *befriedigen, zufriedenstellen, sich geneigt machen, zu gewinnen suchen, Jmd dienen:* mit acc. der Person Nir. 5,17. M. 10, 121. fg. MBh. 1,569. 4371. 6868. 3,7097. 11939 (आराधितश्च ते d. i. त्वया). 4,262. 326. 5,4453. 7395. 8,1592. 13,620. 1000. R. 1,17,21. 2, 107,4 (113,4 Gorr.). R. Gorr. 1,40,6. 2,3,40. 23,13. Ragh. 1,77. 81. 10, 86. 18,23. Mudr. 46. Çik. 4,12. Vikr. 35,4. Spr. 39. 383. 2413. 2487. 3717. Kathis. 7,105. 11,36. 16,42. 18,110. 315. 19,4. 21,32. 26,214. 27,105. 142. 31,11. 38,34. 42,56. 44,140. 49,234. 52,165. Prab. 99,8. Bhâg. P. 2,2,32. 3,1,28. 4,20. 9,12. 15,14. 17,30. 30,6. 4,11,11. 24, 55. 5,2,2. 18,19. 20,32. 9,15,17. Weber, Rmat. Up. 327. 357. Mirr. P. 18,12. 56,11. Brahma-P. in LA. (III) 48,17. Paṇḍar. 1,2,6. 2,6,31. Paṇḍat. 125,12. 203,3. Vedântas. (Allah.) No. 2. परेषां चेतांसि Spr. 1726. न तु प्रतिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् 1876. 2661. स्वाराधित 2977. — 2) *Etwas gewinnen, theilhaftig werden:* आराधयति धर्मज्ञ: परलोकं जितेन्द्रिय: R. 2,60,6. — 3) आराध्यते Daçak. 88,18 (Benr. Chr. 197,16) wohl fehlerhaft für आरभ्यते. — Vgl. आराधन fgg., दुराराध्य. — desid. आरिराधयिषति P. 7,4,54, Vârtt., Sch. — desid. vom caus. s. आरिराधयिषु.

— उपा caus. *Jmd* (acc.) *dienen* M. 10,121.

— समा caus. = आ 1) MBh. 3,10344 (mod.). Bhâg. P. 2,19,19. 10, 48,11. Mirr. P. 74,52. Paṇḍar. 4,2,5. — Vgl. समाराधन.

— उप caus. s. उपाराधय.

— प्र s. प्राराधन्. — caus. s. प्राराध्य.

— प्रति s. प्रतिराध. — caus. *Jmd* (acc.) *entgegen wirken* Ait. Br. 6, 33. — desid. प्रतिरित्सति P. 7,4,54, Vârtt., Sch.

— वि 1) *um Etwas* (instr.) *kommen:* मं युतेन गमेमहि मा युतेन वि राधिषि AV. 4,1,4. मा प्रत्नया प्रतिगृभ्य वि राधिषि 3,29,6. तेनाहं मत्येन मा विराधिषि ब्रह्मणा Kaush. Up. 3,11,2. — 2) *Jmd zu nahe treten, ein Leid anthun:* क्रियाममभिरक्षिणा विराध्यत्तं तमेत क: Spr. 2111. — Vgl. विराध. — caus. *uneins werden:* मल्लोकस्मादनराद्धिराधयन्ति (= विभिन्दन्ति Comm.) Paṇḍav. Br. 15,12,7. अविराधयन्ती *nicht uneins werdend mit* (पत्या) AV. 2,36,4 (unter अविराधयत् anders aufgefasst).

— सम्, partic. संराद्ध *zu Theil geworden* Bhâg. P. 8,13,20. — caus. 1) *eins werden über, sich einigen auf* (loc.) TS. 2,1,9,4. Kâṭ. 25,3. Paṇḍav. Br. 9,1,34. संराधयत्त: मधुराधयत्त: *einträchtig* AV. 3,30,5. — 2) *befriedigen, zufriedenstellen;* mit acc. der Person Bhâg. P. 3,5,4.

— अभिसम् s. अभिसंराधन in den Nachträgen.

राध 1) m. oder n. (von राध्) so v. a. राधस्. राधानां पते (Indra) RV. 1,30,5. 3,51,10; vgl. राधस्पति. Auch wohl in: इन्द्रेण राधसा सह पुष्या न यामनि Kauç. 106. — 2) m. (von राधा) *a) Bez. eines best. Monats,* = वैशाख AK. 1,1,2,16. H. 153. an. 2,246. Med. dh. 13. Râja-Tar. 8,2782. — *b) Mannsname* Buan. Intr. 377, N. 4. राधो गौतम: N. pr. zweier Lehrer Ind. St. 4,373. fg. — 3) f. धा Vop. 26,191. *a) N. eines* Nakshatra, = विशाखा AK. 1,1,2,23. H. 113. H. an. Med. ein späterer, aus अनुराधा gebildeter Name. — *b) Blitz* H. an. Med. — *c) Bez. einer best. Stellung beim Bogenschiessen* H. an. Med.; vgl. राधाभेदिन्, राधावेधिन्. — *d)* = समृद्धि Schol. zu Naish. 3,50; vgl. राधावत्. — *e) Bez. zweier Pflanzen: Myrobalanenbaum* und *Clitoria Ternatea Lin.* H. an. Med. — *f) N. pr. α)* der Gattin Adhiratha's und Pflegemutter Karṇa's MBh. 1,2775. 4403. 3,17154. fgg. °सुत d. i. Karṇa 1,7115. 8,4231. °तनय H. 711. — *β)* einer Hirtin, die als Geliebte Kṛishṇa's später göttlich verehrt wurde, H. an. Med. Git. 1,1. Paṇḍar. 1,1,75. 2,3,18. fgg. 36. Verz. d. Oxf. H. 21,*b*,4. 22,*b*,38. 23,*a*,27. *b*,10. 24,*b*, 4. 25,*a*,30. 26,*b*,36. 48. fg. 27,*a*,3. 10. 20. fg. 27. 33. 40. 44. fg. 39,*b*,14 (mit Dâkshâjanî identificirt). 68,*b*,35. fgg. 145,*a*,38. fg. Paṇḍat. 45,2. Colebr. Misc. Ess. I, 197. Wilson, Sel. Works I, 12 u. s. w. II, 66. 70. fgg. 94. 100. Burnouf in Bhâg. P. I, cvi. fgg. Hall 146. 152. °मख Verz. d. B. H. No. 1164. °कान्त m. Bein. Kṛishṇa's Brahmavaiv. P., Brahmakh. 17 im ÇKDa. °रमण m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 246,*a*, No. 618. Wilson, Sel. Works I, 159 (vgl. 169). राधेश und राधेशा desgl. Paṇḍar. 1,5,12. राधोपासक Verz. d. B. H. 160. — *γ)* einer Sclavin Lalit. ed. Calc. 332, 12. Schiefner, Lebensb. 277 (47). — Vgl. अर्धराध.

राधगुप्त (राधा + गुप्त; vgl. P. 8,3,63) m. N. pr. eines Ministers des Açoka Buan. Intr. 360. 399. 421. 427. Schiefner, Lebensb. 310 (80).

राधन (von राध्) n. = साधन, प्राप्ति, तोष H. an. 3,404. = साधन, प्राप्ति Med. n. 114. °द्रव्य als Erkl. von पाक्ल H. an. 3,662. fg. Med. l. 108. राधना f. = भाषण Med. n. 114.

राधरङ्ग m. = सीर, सीरक und घनोपल Med. k. 210. *a plough; thin rain; hail* Wilson. — Vgl. das folg. Wort.

राधरङ्कु m. = सार, शीकार und डालदोपल H. an. 4,29.

राधस् (von राध्) n. (*das womit man Andere günstig stimmt, befriedigt*) 1) *Erweisung des Wohlwollens, Wohlthat, Liebesgabe;* überh. *Geschenk, Gabe* Naigh. 2,10. Nir. 4,4. चित्रं राधः haufig, z. B. RV. 1,17,7. 5,13,6. यस्मन्यं तर्दसो दानाय राधः समर्यस्व वङ्कु ते वसव्यम् 2,13,13. दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु 22,3. या नो भद्रस्त्व राधसि 4,32,21. उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः 5,38,1. गव्य, यव्य 32,17. रथवत् 7,77,5. स नो राधांस्या भर 15,11. मक्षो रयो राधसो यद्दंहः 28,5. 8,79,2. इन्दो भर्व मघवा राधसो महः 9,81,3. 10,139,3. AV. 5,11,11. 19,7,3. 20,135,9. Çat. Br. 3,7,4,11. — 2) *Wohlthätigkeit, Freigebigkeit* RV. 3,51,12. 4,24,1. 8,10,5. चोदु राधो मघोनाम् 7,96,2. न ते वर्ताऽस्ति राधसः। यद्दित्समि स्तुतो मघम् 8,14,4. 24,22. 46,11. 10,7,2. AV. 7,46,2. — 3) im Bulg. P., wo das Wort wieder künstlich von den Todten auferweckt wird, können folgende Bedd. angenommen werden: *das Gelingen, Zustandekommen:* लोककर्त्यस्य राधसे 4,24,15. यवाप्त° adj. *dem es gelungen ist, der sein Ziel erreicht hat* 7,57. अल्प° adj. *dem wenig gelingt* so v. a. *unglücklich* 10,53,23. *das Streben, Ringen nach:* धनन्य° *nach nichts Anderem strebend* 9,21,17. न्यस्ताखिल° 10,65,6. *Macht* 2,4,14. 4,24,33. अमोघ° 7,3,22. इन्द्रिय° 4,31,11. — Vgl. अ°, धनवध°, यज्ञ°, धृषि°, चित्र°, तुवि°, पङ्क्ति°, विश्व°, वीति°, सत्य°, सु°, स्पार्ह°.

राधस्पति (राध + पतिः vgl. रघस्पति) m. *Herr der Gaben:* वं हि राधस्पते राधसो महः नयस्यासि विधतः RV. 8,50,14.

राधाकृष्ण m. N. pr. des Verfassers der Dhâturatnâvali Colebr. Misc. Ess. I, 47.

राधाजन्माष्टमी f. Bez. *eines best. 8ten Tages, des Geburtstages der* Rádhá. Verz. d. Oxf. H. 14,b,28. — Vgl. कृष्णजन्माष्टमी.

राधातन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 141,b,48.

राधादामोदर m. N. pr. eines Mannes Hall 103.

राधानगरी f. N. pr. einer *Stadt* in der Nähe von Uggajini Reinaud, Mém. sur l'Inde 113.

राधानुराधीय adj. *zu den* Nakshatra Rádhá und Anurádhá *in Beziehung stehend:* रात्रि, यज्ञ °यम् P. 4,2,6, Sch.

राधभेदिन् m. Bein. Arguna's Buçaiva. im ÇKDa. — Vgl. राधावेधिन् und राध 3) c).

राधामाधव m. N. pr. eines Autors Wilson, Sel. Works I, 168.

राधामोहनशर्मन् m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 263,b, No. 635.

राधारसमुधानिधि m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 131,b, No. 239. राधासुधानिधि Wilson, Sel. Works I, 177.

राधावत् (von राधा) adj. *reich* Naish. 3,50.

राधावल्लभ m. 1) *der Geliebte der* Rádhá, Bez. Krishna's Wilson, Sel. Works I, 177. — 2) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 289,b, No. 694. 290,a,10. 291,a, No. 705. °राय Ksmîraç. 44,12.

राधाविनोद m. Titel eines Gedichts Verz. d. B. H. No. 577. — Vgl. राधिकाविनोद.

राधावेधिन् m. Bein. Arguna's H. 709. — Vgl. राधभेदिन्.

राधासुधानिधि m. s. u. राधारसमुधानिधि.

राधि und राधी f. gaṇa वरूत्रादि zu P. 4,1,45. — Vgl. कृष्टराधि.

राधिक 1) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Gajasena Bulg. P. 9,22,10. — 2) f. या Hypokoristikon von राध 3) β) Gir. 1, 37. Pañcad. 1, 1, 2. Verz. d. Oxf. H. 20,b, 22. 25,a,2. 27,a,42. Weber, Kṛshṇaj. 322.

राधिकाविनोद m. = राधाविनोद Verz. d. B. H. No. 577.

राधेय (von राधा) m. metron. Karṇa's Taitt. 2,8,18. 3,3,124. H. 711, Sch. MBh. 1, 5221. 7051. 7095. 3,14822. 4,1300. 6, 5826. 8, 4355. R. 7, 6,28. Rica-Tar. 5,279.

राधोगूर्त adj. *durch Wohlthun angenehm, — beliebt* VS. 6,34.

राधोदेय n. *Erweisung von Gunst, das Geben von Geschenken* RV. 4, 51,3. 8,4,4.

राध्य (von राध्) adj. 1) *durchzuführen, was man recht machen soll:* स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता RV. 1,136,1. लडुक्था ऊमस्ते राध्यानि 4,11,3. — 2) *zu gewinnen, zu befriedigen:* तदिं नरा शंस्यं राध्यं चाभिष्टिमन्तासत्या वहेथम् RV. 1,116,11. बृहस्पतेः सुविदत्राणि राध्या 2,24, 10. एषा ते राध्यं मनः 8,81,28. सर्वे राध्याः स्व *zu verehren* Ait. Br. 7,18. — Vgl. याद्राध्य.

राधेवाक m. patron. Saṁh. K. 184,b,4. wohl eine falsche Form.

राध्र s. राण्ध्र.

राध्रधर्मन् m. patron. (aus dem Geschlecht der Andhaka) P. 4,1,114, Sch.

राप्य partic. fut. pass. von रप् P. 2,1,136. Vop. 26,12.

राभस्य (von रभस) n. Uṇâdis. zu Unâdis. 3,117. als Bed. von रभ् Dhâtup. 23,5.

1. रामे (wohl desselben Ursprungs wie रात्री) 1) adj. (f. या) *dunkelfarbig, schwarz* Nir. 12,13. AK. 3,4,23,143. H. 1397. an. 2,234. Med. m. 26. fg. Halâj. 4,49. रामे कृष्णे घसिक्नि च AV. 1,23,1. Schaf 12,2,19. नास्य राम (= रमणीयः पुत्रः Comm.) उच्छिष्टे पिवेत् Taitt. Âr. 5,8,13. राम्या *eine Dunkle d. i. ein Weib gemeiner Herkunft:* नाग्निं चित्वा राम्यामुपेयात् TS. 5,6,8,3. Taitt. Âr. 5,8,13. Schol. zu Kâtj. Çr. 18,6,27. Auch die Bedeutung 2. राम 2) c) α) wäre indessen hier möglich. Nach AK. H. an. und Med. auch *weiss.* — 2) m. a) *eine Hirschart* AK. 2,5, 11. Taik. 3,3,302. H. an. Med. — b) *Pferd* Med. — c) N. pr. eines Mannes RV. 10,93,14. mit dem patron. Mârgaveja Ait. Br. 7,27. 34. Aupatasvini Çat. Br. 4,6,4,7. Gâmadagnja, Verfassers von RV. 10,110. Im Epos und später erscheinen *drei* Râma (daher राम als Bez. *der Zahl drei* Varâh. Bṛh. S. 8, 20), von denen die beiden ersten für Incarnationen Vishṇu's gelten: α) mit dem patron. Gâmadagnja oder Bhârgava, ein Sohn der Renukâ, auch परशुराम genannt, Taik. 3,3,302. H. 848. H. an. Med. (wo रेणुकेये st. वेणुकेये zu lesen ist). रामः शस्त्रभृतामहम् (vgl. Harîv. 3869) sagt Krishṇa Bhag. 10,31. MBh. 1,272. 2612. 3, 8658. 8,1584. 12,1715. fgg. 12948. Harîv. 2313. fgg. 3869. fg. रामरामविवाद R. 1,3,11 (3 Gorr.). 74, 22. fg. 76,1. R. Gorr. 1,77,33. 37. Bhâgav. 11, 63. — β) mit dem patron. Râghava oder Dâçarathi Taik. 2,8,3. 3,3,302. H. 703. H. an. Med. MBh. 3.14197. 15933. 12, 12949. Harîv. 822. 2324. fgg. 3063. fgg. 3871. 7373. R. 1, 1,10. 17. 20. रामरामविवाद 3,11 (3 Gorr.). रमयत्येव स गुणैरुदारैस्तेनिमाः प्रजाः। यस्मादतो राम इति नामैतत्तस्य विश्रुतम् ॥ R. Gorr. 1,1,22. 6,102. Bhâgav. 11,68. Varâh. Bṛh. S. 58, 20. VP. 384. Bulg. P. 9, 10. fgg. Spr. 2630. रामो क्षेममृगे न वेत्ति 2631. रमते योगिनो ऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ Weber, Râmat. Up. 286. — γ) = Balarâma, Halâjudha, ein älterer Bruder Kṛshṇa's AK. 1,1,6,18. 3,4,22,143. H. 224. H. an. Med. Halâj. 1,29. Bhâg. P. 1,11,17. 10,1, 8. Weber, Kṛshṇaj. 208. 281. 284. 289. erscheint bei den Gaina unter den 9 *weissen* (s. oben u. 1) Bala's H. 698. — Râma unter den sieben Weisen eines Manu Harîv. 453. Mârk. P. 80, 4. Râma ist ein auch später häufig vorkommender Name: so heisst z. B. ein Sohn Târâvaloka's und einer Mâdrî und Zwillingsbruder Lakshmaṇa's Kathâs. 113,32. verschiedene Lehrer, Autoren u. s. w. Burn. Intr. 367 (neben भद्दत्त°). Colebr. Misc. Ess. II, 49. Verz. d. B. H. No. 109. 833. Ind. St. 2,389. Hall 84. 119. Verz. d. Oxf. H. 126,*b*, No. 220. 129,*b*, No. 234. 148,*a*, 9. 151,*b*, No. 321. fgg. 335,*b*, No. 788. 341,*b*, N. 358,*a*, No. 853. 386,*a*, No. 505. ein Fürst von Mallapura 148,*b*, 15. 18. von Çṛṅgavera 165,*a*, 7. 178,*a*, 16. — Râgâ-Tar. 8,785. Kshîrîç. 10, 7. fgg. — *d*) Bein. Varuṇa's Med. — *e*) pl. N. pr. eines Volkes VP. 177. — 3) f. घा *a*) *ein Weib niedriger Herkunft;* s. u. 1). — *b*) = हिङ्गु *Asa foetida* H. an. Med. = हिङ्गुल *Mennig* Çabdar. im ÇKDr. — 4) f. ई *Dunkel, Nacht:* उषा न रामीरुषसैषयन्ती RV. 2,34,11. — 5) n. *a*) *Dunkel:* यमी रूपाद्विर्वर्णैरभि रामंस्यात् RV. 10,3,3. — *b*) = वास्तुक (*Chenopodium album*) und कुष्ठ (in welcher Bed.?) H. an. Med. = तमालपत्र Râgân. im ÇKDr. — Vgl. घघो°, परशु°, बल°, भद्दत्त°, मणि°, मनसा°.

2. राम (von रम् 1) nom. act. *Lust, Freude:* स्वकुटुम्ब° adj. Bhâg. P. 7,6,14. — 2) oxyt. nom. sg. gaṇa श्वेतादि zu P. 3,1,140. *a*) adj. (f. घा) *erfreuend, entzückend, lieblich, reizend* AK. 3,4,22,143. H. an. 2,336. Med. m. 26. fg. रामस्य लोकरामस्य R. 1,19,20. भावेन रामा MBh. 1,1812. R. 2,44,24. Kathâs. 65,27. मृगी Mârk. P. 65,22. रामारामं नगद्भूरामे राज्यं प्रशासति *lieblicher als lieblich* MBh. 7,2246. Bhaṭṭ. 10,2. Nalod. 1,5. — *b*) m. *Liebhaber* Varâh. Bṛh. S. 19,5. — *c*) f. घा α) *eine Schöne, ein junges reizendes Weib, Geliebte, Frau* AK. 2,6,4,4. Trik. 2,6,1. H. 505. H. an. Med. Halâj. 2,336. Kathâp. 1,25. MBh. 1,3039. R. 5, 11,20. Ragh. 5,19. 12,23. 16,15. Vikr. 114. Spr. 24. 691. 1456. 2629. 2651. 4817. 4931. 5274. Varâh. Bṛh. S. 19,5. Gît. 1,44. Kathâs. 18,12. 56,125. Râgâ-Tar. 1,270. अरुन्धती सतीनां तु रामासु च तिलोत्तमा Verz. d. Oxf. H. 39,*b*, 36. Bhâg. P. 3,23,40. 44. 4,26,14. 28,59. Pâṇ. Gaṇ. 2,3, 32. 4,5. 18. Dhûrtas. 87,18. — β) Bez. verschiedener Pflanzen: = श्वेतकण्टकारी, गृहकन्या, श्यामशीतला. घशोक Râgân. im ÇKDr. — γ) *ein best. Pigment* गोरोचना, Râgân. — δ) *Röthel, rubrica* Çabdar. im ÇKDr. — ε) *Fluss* Med. auch in H. an. ist wohl हिङ्गु नदीस्त्रियोः zu lesen. — ζ) *ein best. Metrum:* ⏑–⏑–––⏑⏑–⏑–––, ⏑–⏑–––⏑⏑–⏑–––; ––⏑–––⏑⏑–⏑–––, ––⏑–––⏑⏑–⏑––– Journ. of the Am. Or. S. 6, 314. — η) N. pr. einer Apsaras Vâyu beim Schol. zu H. 183. einer Tochter Kumbhâṇḍa's Harîv. 9973. 11026. fg. der Mutter des 9ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 39. — Vgl. सु°.

रामक 1) nom. ag. vom caus. von रम् P. 7,3,34. = रमक Vop. 7,22. — 2) m. N. pr. eines Berges MBh. 2,1172.

रामकण्ठ m. N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 87,14.

रामकरी f. Bez. einer Râgiṇî Wilson und ÇKDr. angeblich nach Halâj.: रामकिरी und रामकीरी ÇKDr. unter राग.

रामकर्पूर *ein best. wohlriechendes Gras,* = नख H. an. 2,434. Med. r. 53. m. Wilson nach Çabdar., °क m. ÇKDr. nach derselben Aut.

रामकल्पद्रुम m. Titel eines Werkes Hall 183.

रामकवच n. Râma's *Zauberspruch* Verz. d. Oxf. H. 14,*a*, 16. 99,*a*, No. 133.

रामकाण्ड m. 1) *eine Art Zuckerrohr* Râgân. im ÇKDr. unter रामसार. — 2) N. pr. eines Scholiasten Colebr. Misc. Ess. II, 47.

रामकिरी und रामकीरी f. s. u. रामकरी.

रामकुतूहल n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 198,*b*, No. 467. — Vgl. रामकौतुक.

रामकुमार m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 260,*a*, No. 627. °मिश्र Hall 100. 168.

रामकृष्ण m. N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. I, 230. 234. II, 453. Ind. St. 1,27. 59. 3,250. Verz. d. B. H. No. 166. 267. 330. 630. 673. 965. 1019. Verz. d. Oxf. H. 141,*a*, 20. 223,*a*, No. 341. fg. 277,*a*, No. 634. 289,*b*, No. 694. 291,*a*, No. 705. 321,*b*, No. 763. 394,*a*, No. 103. Hall 25. 27. 98. 181. °तीर्थ Gild. Bibl. 421. fg. °दीक्षित Hall 100. Colebr. Misc. Ess. I, 336. °देव II, 454. °पण्डित Hall 105. °भट्ट 173. fgg. 181. 183. Verz. d. B. H. No. 140. 966. 1223. °भट्टाचार्य Hall 8. °भट्टाचार्यचक्रवर्तिन् 66. °राय Kshîrîç. 33,5. 45,1. रामकृष्णाचार्य Verz. d. B. H. No. 540. रामकृष्णाधरिन् Hall 100. रामकृष्णानन्दतीर्थ 136. 189.

रामकृष्णकाव्य n. oder रामकृष्णविलोमकाव्य n. Titel *eines künstlichen, von vorn und hinten zu lesenden,* Râma *und* Kṛshṇa *besingenden Gedichtes* Verz. d. Oxf. H. 132,*a*, No. 240. Habn. Anthol. 463. fgg.

रामकृष्णपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 338,*a*, 16.

रामकेली f. Bez. einer Râgiṇî ÇKDr. u. राग. — Vgl. रामकरी.

रामकेशवतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*, 42.

रामकौतुक n. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1170. — Vgl. रामकुतूहल.

रामक्षेत्र n. N. pr. einer Gegend Paṇḍaçkîttrend. 12,*a*, 2.

रामगङ्गा f. N. pr. eines Flusses LIA. 1,36. II,524.

रामगायत्री f. Bez. einer best. Hymne auf Râma Weber, Râmat. Up. 313.

रामगिरि m. N. pr. eines *Berges* Megh. 1. 99. VP. 180, N. 3. Vgl. Weber, Kṛshṇaj. 330, N. 1.

रामगीतगोविन्द Titel eines Gedichts Mack. Coll. I, 103.

रामगीता f. (sc. उपनिषद्) sg. und pl. Titel eines Abschnittes im Adhjâtmarâmâjaṇa Verz. d. B. H. No. 464. Verz. d. Oxf. H. 29,*b*, 22. 299,*b*, No. 731. Verz. d. Pet. H. 11. Weber, Râmat. Up. 283. fg. 341. 349.

रामगोविन्दतीर्थ m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 569. Hall 7. 11. 109. 143.

रामग्राम m. N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang I, 325. Burn. Intr. 372.

रामचक्र s. रामाचक्र.

रामचन्द्र 1) Bez. Râma's, des göttlich verehrten Sohnes des Daçaratha, Weber, Râmat. Up. 338. 344. fg. 354. 359. 362. Verz. d. Oxf. H. 14,*a*, 14. 26. 29,*a*, 1. 94,*a*, 36. fg. 129,*a*, 20. Colebr. Misc. Ess. I, 197. Wilson, Sel. Works I, 46. 54. 102. — 2) N. pr. verschiedener späterer Fürsten, Autoren, Lehrer u. s. w. VP. 477. Burnouf in der Einl. zu Bhâg. P. I, cl. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Cl. 5. 8. 7,28, 14.

Ksurṇ. 7, 13 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 37, *b*, No. 92. 38, *b*, 3. 119, *b*, No. 206. 130, *b*, 40. 150, *b*, 38. 161, *a*, No. 355. *b*, 20. 280, *b*, 11. 321, *b*, No. 762. 341, *b*, N. 350, *b*, No. 824. 356, *a*, No. 845. *b*, 9. Verz. d. B. H. No. 577. Colebr. Misc. Ess. II, 10. fgg. 47. 379. Ind. St. 1, 467. Hall 183. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 16. °कविराज Wilson, Sel. Works I, 168. °गुरु Verz. d. B. H. No. 967. °दास Verz. d. Tüb. H. 13. °परमहंस Hall 14. °भट्ट 48. 174. Verz. d. B. H. No. 1169. °भारत्याचार्य Wilson, Sel. Works I, 201. °शर्मन् Verz. d. B. H. No. 653. °सरस्वती 727. Hall 104. 117. 153. fg. 203. रामचन्द्राचार्य 187. Verz. d. B. H. No. 734. Colebr. Misc. Ess. II, 41. रामचन्द्रेन्द्रसरस्वती Hall 121.

रामचन्द्रचम्पू f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 211, *b*, No. 499.

रामचन्द्रचरित्रसार n. desgl. ebend. 121, *b*, No. 213.

रामचन्द्रस्तवराज m. Titel eines Abschnittes der Sanatkumâra-saṁhitâ ebend. 106, *b*, No. 161.

रामचन्द्राश्रम 1) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 173, *a*, No. 386. — 2) n. N. pr. eines Tîrtha ebend. 77, *b*, 31.

रामचन्द्रोदय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 201, *a*, No. 480.

रामचर m. = बलराम H. an. 2, 443.

रामचरण m. N. pr. eines Scholiasten des Sâhitjadarpaṇa Verz. d. Oxf. H. 214, *b*, No. 511.

रामचरित n. Râma's (des Sohnes des Daçaratha) *Thaten* Verz. d. Oxf. H. 13, *a*, 45. 27, *a*, 18. Verz. d. B. H. No. 826. Ind. St. 1, 246.

रामच्छदनक m. *eine best. Pflanze* Bhâvapr. im ÇKDr. रामाच्छदनक v. l.

रामज्ञ m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 3, 29.

रामजीवन m. N. pr. eines Sohnes des Rudrarâja Ksurṇ. 33, 4.

रामठ Uṇâdis. 1, 103. 1) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2, 1194. 3, 1991 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 8, 2052 (माठर ed. Bomb.). Vasiṣṭh. Bṛh. S. 10, 5. LIA. 1, 569. fg. 836. II, 191. — 2) m. n. *Asa foetida* AK. 2, 9, 40. 3, 4, 1, 9. H. 422. Hâlâs. 2, 462. Suçr. 2, 246, 12. 498, 9. — 3) m. *Alangium hexapetalum* Ratnam. im ÇKDr. — 4) f. ई = नाडीहिङ्गु Râjân. im ÇKDr. — Vgl. रमठ.

रामण (vom caus. von रम्) 1) m. N. zweier Pflanzen: *Diospyros embryopteris Pers.* und = गिरिनिम्ब Râjân. im ÇKDr. — 2) f. या N. pr. einer Apsaras R. 2, 91, 45. वामना ed. Bomb.

रामणि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57, 38.

रामणीयक (von रमणीय) 1) n. *Lieblichkeit, Schönheit* P. 5, 1, 122, Sch. Çiç. Cr. 120, 3. Mâlatîm. 14, 1. Kir. 1, 39. Naish. 5, 12. angeblich auch adj. = रमणीय Comm. zu AK. 3, 2, 2. — 2) N. pr. eines Dvîpa MBh. 1, 1303.

रामतरुणी f. *eine best. Blume*, = तरुणीपुष्प Râjân. im ÇKDr.

रामतर्कवागीश m. N. pr. eines Grammatikers Verz. d. Oxf. H. 175, *a*, 31. 176, *b*, 1. Mudr. ST. II, 36. 64. fg.

रामतापनीय n. Titel der bekannten, 1864 von A. Weber herausgegebenen Upanishad. रामतापनी Ind. St. 3, 326, 1. 2.

रामतीर्थ 1) n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 8051. 8159. 9, 2835. Harîv. 9520. R. 6, 109, 49. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 17. 67, *b*, 13. Verz. d. B. H. 143, 2. — 2) m. N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. I, 335. 337. Ind. St. 1, 470. 9, 13. 157. Verz. d. Oxf. H. 38, *a*, N. Verz. d. B. H. No. 616. Hall 91. 99. 110. 189. °यति 101.

रामत्व n. *das* Râma-*Sein* Harîv. 7373. R. 6, 81, 21. Sîn. D. 114, 6.

रामदत्त m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 292, *b*, 4.

रामदास m. N. pr. verschiedener Personen Verz. d. B. H. No. 1353. Verz. d. Oxf. H. 141, *a*, 8. Colebr. Misc. Ess. II, 43.

रामदूत 1) m. Râma's *Bote*, Bein. Hanumant's Trik. 2, 8, 7. — 2) f. ई *eine Art Basilienkraut* Çabdac. im ÇKDr.

रामदेव m. 1) Bez. Râma's, des Sohnes des Daçaratha, Weber, Râmat. Up. 279. — 2) N. pr. verschiedener Männer Râja-Tar. 3, 238. 240. 6, 91. 7, 676. Verz. d. Oxf. H. 126, *b*, 1. 150, *b*, 35. 260, *b*, No. 629. 261, *b*, 3. 318, *a*, 25. 341, *b*, N. 365, *a*, No. 72. 378, *a*, No. 376. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 7. °मिश्र Colebr. Misc. Ess. II, 49. Hall 83.

रामद्वादशी f. Bez. *des 12ten Tages in der — Hälfte des Monats* Gjaishṭha Verz. d. Oxf. H. 38, *a*, 20.

रामधर m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

रामन् in मयूर° Harîv. 13994 fehlerhaft für रोमन्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. सु°.

रामनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 122, *a*, 20.

रामनवमी f. Bez. *des 9ten Tages in der lichten Hälfte des* Kaitra, *des Geburtstages* Râmakandra's, Verz. d. Oxf. H. 285, *a*, 14. 287, *a*, 10. Weber, Râmat. Up. 281. 359. fg. Kâṣikhaṇḍa 304. 310. °निर्णय m. Titel einer Schrift Hall 151.

रामनाथ m. 1) Bez. des göttlich verehrten Râma, des Sohnes des Daçaratha, Wilson, Sel. Works I, 39. Verz. d. Oxf. H. 238, *a*, 22. — 2) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 125, *b*, No. 218. 280, *a*, N. 1. Hall 111.

रामनामव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 283, *a*, 14.

रामनारायण m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 48. Verz. d. Oxf. H. 330, *a*. °जीव N. pr. eines Fürsten 92, *a*, 37.

रामनृपति m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. B. H. No. 833.

रामन्यायालंकार m. N. pr. eines Gelehrten Colebr. Misc. Ess. II, 47.

रामपण्डित m. N. pr. eines *Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 295, *b*, No. 717.

रामपाल m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8, 1037.

रामपुर n. N. pr. eines Dorfes (ग्राम); s. u. मङ्कानन्द 2) *c*).

रामपूग m. *Areca triandra* Roxb. Trik. 2, 4, 41.

रामपूजाशरणि f. Titel eines Werkes, = रामपद्धति Verz. d. B. H. No. 1324. Weber, Râmat. Up. 277. 282. 301. fgg.

रामपूर्वतापनीय n. *der erste Theil des* Râmatâpanîja Verz. d. Oxf. H. 394, *b*, 20. — Vgl. रामोत्तरतापनीय.

रामप्रकाश m. Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 261, *a*, 28.

रामप्रसादतर्कवागीश m. N. pr. eines Gelehrten Colebr. Misc. Ess. II, 46.

रामप्रसादतर्कालंकार m. desgl. ebend. 57.

रामबाण m. Râma's *Pfeil*: 1) Bez. *einer Art Zuckerrohr* Râjân. im ÇKDr. u. रामशर. — 2) Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Rasendrakintâmaṇi im ÇKDr.

रामभक्त m. 1) *ein Verehrer* Râma's Weber, Râmat. Up. 362. — 2) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 100, *a*, 4 v. u.

रामभट्ट m. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 127, *b*, No. 229. Hall 26. 173. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 22.

रामभद्र m. 1) Bez. Râma's, des Sohnes des Daçaratha, H. 703, Sch. Çârdar. im ÇKDa. Uttarar. 29, 1 (38, 9). Kathâs. 34, 226. 51, 58. 103, 239. 105, 70. Verz. d. Oxf. H. 12, b, 29. 138, a, No. 270. Weber, Rimat. Up. 296. 338. 356. Comm. zu Çiç. 55. — 2) N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. II, 46. Verz. d. B. H. 166. 333 (रामभद्राम्बा). Verz. d. Oxf. H. 293, b, No. 716. Hall 139. °भट्ट 69. °भट्टाचार्य 84. 201. °यति 100. °सरस्वती 107. °सार्वभौमभट्टाचार्य 67. 80. रामभद्राश्रम 158. Verz. d. Oxf. H. 183, a, 25.

रामभक्त m. *ein an Râma gerichteter Spruch* Weber, Rimat. Up. 332. 335. fg. 362. Verz. d. Oxf. H. 93, b, 7. 99, a, No. 153 (neutr.). °पञ्चक n. Titel einer *Sammlung solcher Sprüche* 299, b, No. 732.

रामभिक्ष m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122, a, 8.

रामभोक्तृ m. desgl. Ind. St. 1, 473, N.

रामयन्त्र n. Bez. *eines best. Diagramms* Weber, Rimat. Up. 316. fg.

रामरहस्य n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 326, 1.

रामराज m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 316, b, 23. Bei Weber, Kâmaṇâs. 218, N. ist कामराज st. रामराज zu lesen.

रामराम m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 177, b, No. 403.

रामरुद्रभट्ट m. N. pr. eines Autors Hall 41. f. ई Titel der von ihm verfassten Schrift ebend.

रामल m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8, 217.

रामलवण n. *eine Art Salz* (रोमक) Ratnam. im ÇKDa.

रामलिङ्गकृति m. N. pr. eines Autors Colebr. Misc. Ess. I, 263.

रामलेखा f. N. pr. einer Fürstin Râja-Tar. 7, 256.

रामवर्धन m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 6, 126.

रामवर्मन् m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 29, b, No. 73.

रामवल्क n. *Cassia-Rinde* (वच) Râjân. im ÇKDa.

रामवाजपेयिन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279, a, 30. 341, a, 39. रामवाजपेय Verz. d. B. H. No. 1086.

रामविलास m. Titel eines Gedichts Verz. d. Oxf. H. 214, b, No. 511. °काव्य n. Titel eines andern *Gedichts* 132, a, No. 241.

रामवीणा f. Bez. *einer Art Laute* Çârdar. im ÇKDa.

रामव्याकरण n. Titel einer *Grammatik* des Vopadeva Colebr. Misc. Ess. II, 49. Verz. d. Oxf. H. 161, b, 17.

रामव्रतिन् (von राम + व्रत) m. pl. N. pr. einer Secte Vjutp. 91.

रामशर m. *eine Art Zuckerrohr* Râjân. im ÇKDa.

रामशर्मन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 176, a, No. 399. 198, a, No. 465. Ind. St. 10, 433. 435. fg.

रामशीतला f. = षोडशीतला Râjân. im ÇKDa.

रामश्रोपाद m. N. pr. eines Lehrers Hall 108.

रामषडक्षरमन्त्रराज m. Bez. *eines best. sechssilbigen an Râma gerichteten Spruches* Verz. d. Oxf. H. 99, a, No. 153.

रामसंयमिन् m. N. pr. eines Autors Hall 110.

रामसख m. Râma's *Freund*, Bez. Sugrîva's Çârdar. im ÇKDa.

रामसरस् n. N. pr. eines heiligen *Sees* Verz. d. Oxf. H. 46, b, N. — Vgl. रामह्रद.

रामसहस्रनामस्तोत्र n. *Preis der tausend Namen* Râma's, Titel eines Abschnittes im Brahmajâmalatantra, Verz. d. Oxf. H. 98, b, No. 152.

रामसाहि m. N. pr. eines *Fürsten* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 5, Çl. 11.

रामसिंह m. N. pr. eines Mannes Verz. der Oxf. H. 285, b, 3. °देव 209, a, No. 490. Verz. d. B. H. No. 545.

रामसूक्त n. Bez. einer best. *Hymne* Verz. d. Tub. H. 17.

रामसेतु m. Râma's *Brücke*, N. pr. eines Ortes Verz. d. Oxf. H. 257, b, 40.

रामसेनक m. *Gentiana Cherayta Roxb.* Râjân. im ÇKDa.

रामसेवक m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 178, a, No. 404.

रामस्तुति f. Titel eines Werkes Hall 94.

रामस्तोत्र n. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 826.

रामस्वामिन् m. N. einer Bildsäule des Râma Râja-Tar. 4, 275. 327. 334. fg.

रामहृदय n. Râma's *Herz*, Bez. eines Abschnitts im Adhjâtmarâmâjaṇa, Verz. d. Oxf. H. 29, b, 21. Weber, Rimat. Up. 283. 287. 341. 359.

रामह्रद m. Râma's *See*, N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3, 7355. 13, 1733. Hariv. 9520. deren fünf MBh. 3, 5096. fg. 9, 2032. 12, 1705. Bhâg. P. 10, 82, 10. ब्रह्मवेदिः कुरुक्षेत्रे पञ्चरामह्रदान्तरम् H. 950.

रामाचक्र n. Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88, a, 34. रामचक्र im Ind.

रामाचार्य m. N. pr. verschiedener *Lehrer* Verz. d. Oxf. H. 38, b, N. 3. 161, a, No. 355. Verz. d. B. H. No. 738. Hall 113. 188.

रामाच्छर्दनक s. रामच्छर्दनक.

रामाण्डार m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279, a, 30. fg. Hall 192.

रामात्मैक्यप्रकाशिका f. Titel einer Abhandlung über *die Identität Râma's und der Weltseele* Hall 136.

रामादेवी f. N. pr. der Mutter Gajadeva's Gîr. 12, 30.

रामानन्द (राम + आ°) m. N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. II, 46. 57. Wilson, Sel. Works I, 17 u. s. w. II, 72. Ind. St. 1, 466. Weber, Rimat. Up. 282. 284. Verz. d. B. H. No. 400. 489. fgg. Verz. d. Oxf. H. 72, a, 44. 175, a, 30. 302, a, No. 736. Hall 93. 130. °तीर्थ 89. °यति 107. °सरस्वती 89. 107. 127. 139. 202. °स्वामिन् Verfasser des Vaidjabhûshana Nigh. Pa. Einl. °रात्र Verz. d. Tub. Hdschr. 13.

रामानुज (राम + अ°) m. N. pr. eines berühmten Vedânta-Philosophen und Vaishṇava Wilson, Sel. Works I, 34. fgg. Verz. d. Tub. H. 13. Hall 92. 93. 112. 116. 118. 172. 203. Weber, Rimat. Up. 281. fg. 284. Sarvadarçanas. 45, 21. 51, 19. 56, 10. 61, 2. Verz. d. Oxf. H. 220, a, No. 527. 221, b, No. 536. 243, b, No. 604. 299, b, No. 732. 300, a, No. 733. wohl adj. zu Râmânuja *in Beziehung stehend* 285, b, No. 669.

रामानुष्टुभ् f. Bez. *eines best. an Râma gerichteten Spruches* Weber, Rimat. Up. 313.

रामाभिनन्द् m. Titel eines Schauspiels Sîm. D. 138, 1.

रामाभ्युदय m. desgl. ebend. 171, 4.

रामायण 1) adj. (f. ई) Râma *betreffend*: (वाल्मीकेः) रामायणी कथाम् Spr. 3885. Verz. d. Oxf. H. 120, a, 27. n. *ein* oder *das die Schicksale* Râma's *besingendes Epos* Taik. 3, 2, 14. MBh. 3, 11177. Hariv. 8672. 16232. °गान Verz. d. Oxf. H. 13, b, 34. °मकरन्दी R. Einl. ein Âkhjâna 1, 1, 95. R. Gorr. 1, 1, 105. प्राचेतसोपज्ञ Raçik. 15, 63. °कथा Uttarar. 86, 3 (110,

9). Rîéa-Tar. 1,166. °माहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 30,*a*,11. मार्ं रामायणस्य — ऋषिणा चाग्निवेशेन गीतम् 121,*b*,No.213. Vgl. अद्भुत°, अध्यात्म°, आत्त°, महा°. — 2) f. ई oxyt. *Enkelin der oder des Schwarzen* (राम) AV. 6,83,3; vgl. राथजितेयी.

रामायणीय adj. *zum* Râmâjaṇa *in Beziehung stehend* Verz. d. Oxf. H. 121,*a*, No. 213.

रामार्चनचन्द्रिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,s. 279,*a*, 31. fg. 292,*b*,5. Verz. d. Tüb. H. 17.

रामार्य m. N. pr. eines Lehrers Hall 180.

रामालिङ्गनकाम adj. *nach der Umarmung einer Schönen sich sehnend*; m. Bez. des *rothblühenden Kugelamaranths* Rîéan. im ÇKDa.

रामावक्षोरोपम adj. *den Brüsten einer Schönen gleichend* (die sich nicht trennen); m. Bez. der *Anas Casarca Gm.* Rîéan. im ÇKDa. रामवक्षोरोपम gedr.

रामाश्रम m. N. pr. eines Gelehrten Colebr. Misc. Ess. II,56. fg. Wilson in der Einl. zur 1ten Ausg. d. Wört. XXIII. fg. Verz. d. Oxf. H. 38,*a*, No. 93. 173,*a*, No. 386.

रामाश्वमेध m. Râma's *Rossopfer*, Titel eines Abschnitts im Padmapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 84,*a*, No. 142. रामाश्वमेधिक adj. *auf* Râma's *Rossopfer bezüglich* 13,*b*,35.

रैमि m. patron. von राम gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,12.

रामिन् nom. ag. von रम् in der Bed. *geschlechtlich ergötzend* in क्षणा°.

रामिल (von रम्) m. 1) *Geliebter, Gatte.* — 2) *der Liebesgott* H. an. 3, 680. Med. l. 127. — 3) N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,18. 22. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 15. 20.

रामुष N. pr. einer Oertlichkeit Rîéa-Tar. 2,55.

रामेन्द्रयति m. N. pr. eines Autors Hall 98.

रामेन्द्रवन m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,4 v. u. Verz. d. B. H. No. 489.

रामेश (राम + ईश) 1) m. N. pr. eines Mannes: °भट्ट Hall 173. — 2) n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 64,*a*,9. Wilson, Sel. Works I, 223.

रामेश्वर (राम + ईश्°) 1) m. N. pr. verschiedener Personen Dutâtas. 67,9. Hall 181. Verz. d. Oxf. H. 136,*a*, No. 259. 140,*a*, No. 281. 192, *b*, No. 438. 196,*b*, No. 467. 278,*b*, N. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46. भट्ट° Verz. d. B. H. No. 138. 823. °भट्ट 1223. 1233. Verz. d. Oxf. H. 130, *b*, 35. 277,*a*, No. 654. 321,*a*, No. 761. Hall 13. 175. fg. 178. °भट्टारक Sarvadarçanas. 100,8. °राय Kshitîç. 23,1. 3. °शर्मन् Verz. d. Oxf. H. 192,*b*, No. 437. — 2) n. N. eines Liṅga Weber, Râmat. Up. 280. Verz. d. B. H. No. 1242. °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 64,*b*,2. N. pr. eines heiligen Badeplatzes 84,*a*,4. 248,*a*,5. °तीर्थ 66,*a*,42. *b*,31. 38. 77,*b*,20; vgl. LIA. I, 56. 157.

रामेषु (राम + इषु) m. Râma's *Pfeil*: 1) Bez. *einer Art Zuckerrohr* Rîéan. im ÇKDa. u. रामशर. — 2) m. N. pr. eines Mannes Daçak. 148,18.

रामोत्तरतापनीय n. *der zweite Theil des* Râmatâpanîja Verz. d. Oxf. H. 394,*b*,21. — Vgl. रामपूर्वतापनीय.

रामोद m. N. pr. eines Mannes gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. Davon patron. रैमोदायन ebend.

रामोपनिषद् f. N. einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 390,*b*, No. 35.

रामोपाध्याय (राम + उ°) m. N. pr. eines *Lehrers* Schol. in der Einl. zu Kâtjâp.

रामोपासक (राम + उ°) m. *ein Anbeter* Râma's (Sohnes des Daçaratha) Verz. d. B. H. 160.

राम्भ (von रम्भ) m. *Bombusstock* AK. 2,7,15. H. 815.

राम्यी (vgl. रात्री und 1. राम) f. *Nacht* Naigh. 1,17. RV. 2,2,8. 3,34, 3. या भानुना रुशता राम्यास्वञ्जीभि तिरस्तमसाधिदक्षून् 6,65,1. तिरस्तमो ददृशे राम्याणाम् 7,9,2. AV. 19,49,7.

राय m. am Anfange und am Ende von Personennamen = राजन् *Fürst*; vgl. आनन्द°, कल्याण°, खाना°, गोविन्द°, चुक्क°, माणिक्य°, मूकल°, यातल°, यादव°. Nach Wilson in VP. 398, N. 1 ist राय im Bhâg. P. ein Sohn des Purûravas; die gedruckten Ausgg. (9,15,1) haben aber रय. Im Index des Verz. d. Oxf. H. wird राय als ein Sohn Viçokadeva's aufgeführt, der Text 280,*b*,5 hat aber रय.

रायण n. = पीठा ÇKDa. nach einer Hdschr. der Çabdar.

रायणेन्द्रसरस्वती m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 366,*a*, No. 94.

रायभाटी f. *Strömung eines Flusses* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. रय.

रायमुकुट oder vollständiger °मणि m. N. pr. eines Erklarers des Amarakoça Colebr. Misc. Ess. II, 18. 34. Verz. d. Oxf. H. 182,*b*, 30. Verfassers eines juridischen Werkes 292,*b*,6.

रायराघव m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483.

रायस्काम (रायस्, gen. von रै + काम) adj. *besitzlustig, reich zu werden wünschend* RV. 1,78,2. 7,32,2. 42,6.

रायस्पोष (रायस् + पोष) 1) m. *Vermehrung des Reichthums, Zunahme des Wohlstandes* VS. Pâr. 2, 42. 3, 24. AV. Pâr. 2, 80. gaṇa धरीक्षणादि zu P. 4,2,80; vgl. u. पोष 1). — 2) adj. *Reichthümer vermehrend*: Kṛshṇa MBh. 13,7368.

रायस्पोषक adj. von रायस्पोष 1) gaṇa धरीक्षणादि zu P. 4,2,80.

रायस्पोषदा adj. *Wachsthum des Besitzes schenkend*, dat. °दे VS. 5,1. 6,32. VS. Pâr. 5,6.

रायस्पोषदावन् adj. dass. TS. 5,2,8,3.

रायस्पोषवनि adj. *wachsenden Reichthum verschaffend* VS. 5,12. 27. 6,3.

रायाणनीय m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,7. रायायनीय v. l.

रायान (sic) m. N. pr. eines Hirten Verz. d. Oxf. H. 25,*a*,3. 10. 14. 18 (रायन). N. 1.

रायोवाज (रायस्, gen. von रै + वाज) m. N. pr. eines Mannes Pârâçar. Bh. 3,1,4. 13,4,17. Davon रायोवाजीय n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 231,*a*. Pârâçar. Bh. 13,4,16. 18. 24,1,7. Lâṭj. 7,2,1. 10,2,13.

राया und रायोय s. u. राठा und राठीय.

राल m. = शराल *das Harz der Shorea robusta* H. 647. रालक dass. Varâh. Bṛh. S. 41,2.

रालकार्य m. *Shorea robusta* Rîéan. im ÇKDa.

राव (von रु) m. *Gebrüll, Geschrei, Getöse, Gesumms, Schall, Laut* H. 1400, Sch. Çabdar. im ÇKDa. eines Stiers Pârâçar. 9,12. गर्द्भ° Varâh. Bṛh. S. 53,103. 90,10. रत्नौ रवती राव: R. 7,7,41. Kathâs. 11,71.

Weber, Rîmây. Up. 207. Ved. in LA. (III) 4, 9. अविरतव्रणरावम् adv. Vaitân. Bṛh. S. 43, 59. ज्वलद्रा° MBh. 1, 1222. 13, 742. Hit. 111, 20, v. l. मुरज्रवाद्य° Mâlav. 21. भैरव° adj. (ध्वनिल, Vaitân. Bṛh. S. 30, 6. रुवत्ति रावान्मधुरान्बहून्: MBh. 1, 2555. रमणीयतरं तरुणीजनमोक्तमधुरिपुरावम् *Gesang* Gît. 11, 4. महा° *lautes Gebrüll* Hit. 92, 18. adj. (f. घी) *laut schreiend* (नारायणी, Mârk. P. 91, 18. — Vgl. चारुरावा, दीर्घराव, मेघ° und रव.

रावण 1) adj. (vom caus. von रु) *schreien —, wehklagen machend:* सर्वलोकानाम् R. 3, 36, 35. लोक° MBh. 3, 11212. Hariv. 14318. R. 1, 14, 37 (19 Gorr.). R. Gorr. 1, 23, 19. 3, 36. 3. 6, 22, 7. 7, 16, 38. Bhâg. P. 9, 10, 36. शत्रु° Kir. Nîtis. 11, 13. त्रैलोक्य° Hariv. 2338 (die ältere Ausg. त्रैलोक्यद्रावण). Bhâg. P. 3, 10, 15. Ueberall zur Erklärung des Eigennamens रावण gebraucht. — 2) m. *a*) oxyt. patron. von रवण gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112. — *b*) N. pr. des zehnköpfigen Fürsten der Râkshasa, jüngeren Bruders des Kubera und Beherrschers von Laṅkâ, der von Râma besiegt wird, Taik. 2, 8, 5. H. 706. MBh. 3, 15881. fgg. रावयामास लोकान्यस्मात्तस्माद्रावण उच्यते (vgl. u. 1.) 13928. Hariv. 2337. fgg. 5871. 7373. 8694. 8696 (an den beiden letzten Stellen liest die ed. Calc. fälschlich वारण). 10409. R. 1, 1, 47. fg. 71. 79. 14, 13. fgg. 22, 17. 3, 23, 28. 6, 93, 8. Raghu. 12, 32. Buan. Intr. 514. Râja-Tar. 3, 446. fg. VP. 383. 417. Bhâg. P. 4, 1, 37. 7, 1, 43. Spr. 54. गृध्वाक्षायुस्वराड्ढादाच्यर्तं ज्ञयाक् रावणः 1534. रामपत्नीं वनस्थां यः स्वानिवृत्त्यर्थमाददे । स रावण इति ख्यातो यद्वा रावाच्च रावणः ॥ Weber, Rîmây. Up. 297. giebt die Worte Pâṇini's, Kâtjâjana's und Patañgali's in Stein Ind. St. 5, 161. Verfasser eines Commentars zum Sâmaveda 10, 176. zum Ṛgveda Hall 119. Verfasser der Arkakikitsâ Verz. d. B. H. No. 943. — *c*) N. pr. eines Fürsten von Kâçmira (neben Indragît und Vibhîshaṇa) Râja-Tar. 1, 193. fg. 196; vgl. LIA. I, 473, N. 4. — 3) n. Bez. eines Muhûrta (neben विनीयण) Verz. d. B. H. No. 912.

रावणगङ्गा f. N. pr. eines nach dem Râkshasa Râvaṇa benannten Flusses auf Laṅkâ Gaṇḍa-P. 70 im ÇKDa.

रावणहस्त *ein best. Saiteninstrument* H. 286, Sch.

रावणह्रद m. Râvaṇa's *See*, N. pr. eines Sees, aus dem die Çatadru entspringt, LIA. I, 34. 45. Buan. Intr. 171, N. 1.

रावणारि m. Râvaṇa's *Feind*, Bein. Râma's, Gaṇḍa. im ÇKDa.

रावणि m. patron. von रावण gaṇa पैलादि zu P. 2, 4, 59 und तौरुष्यादि zu 61. Bez. Indragit's, des ältesten Sohnes des Râkshasa Râvaṇa, H. 706. MBh. 3, 16449. 7, 4065. 5888. R. 6, 67, 1. 7, 28, 22. Verfasser eines Bâlatantra Verz. d. B. H. No. 958. pl. *die Söhne* Râvaṇa's Bhatṭ. 13, 79.

रावन् (von 1. रा) adj. *spendend* VS. 6, 30 (द्यावन् TS.). — Vgl. स°, पुरु°.

रावि (von रु) adj. *brüllend, tosend, schreiend:* ज्वलदा घोरा राविणः MBh. 3, 12685. मधुररावियो ज्वलदा: Vaitân. Bṛh. S. 32, 21. मेघदुन्दुभिरावियी गो, *wie* R. 1, 54, 7. द्यावु° Schol. zu P. 3, 2, 79. 6, 2, 80. द्यावकार°, द्योकार° *den Laut* द्या, द्यो *in seinem Schrei hören lassend* Vaitân. Bṛh. S. 88, 33. — Vgl. क्रूर°, वृकद्रावि, मित°, वक्र°.

रावेट N. pr. eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 332, *b*, 4.

राश्, राशते (शब्दे) v. l. für राम् Dhâtup. 16, 25. उलूकाद्याप्यराशत्त MBh. 7, 6658. घटश्यत्त ed. Bomb.; die richtige Lesart wird wohl घरा-शत्त oder घरामत्त sein.

राशभ Mârk. P. 48, 26 fehlerhafte Schreibart für रासभ.

राशि Uṇâdis. 4, 132. m. Siddh. K. 249, *b*, 3 v. u. m. f. (das f. nicht zu belegen) Taik. 3, 5, 17. 1) *Haufe, Menge, Masse, Schaar, Gruppe, Quantität, Zahl* AK. 2, 5, 12. 3, 4, 28, 216. H. 1411. an. 2, 552. Med. ç. 11. Hall. 4, 1. Colebr. Alg. 17. 131. mit कृत u. s. w. componirt gaṇa येणयादि zu P. 2, 1, 39. वस्वी राशिमभिनेतामि भूरिम् ṚV. 4, 20, 8. 6, 35, 3. von Getraide AV. 6, 142, 3. Kaçç. 61. वल्मीक° 21. द्यूतस्य R. 1, 53, 3. 2, 32, 26. काष्ठ° 3, 16, 8. Vaitân. Bṛh. S. 33, 5. Bhâg. P. 5, 10, 10. भस्म° Suçr. 1, 101, 19. भस्मराशीकृत R. 1, 41, 30. तूल° Çiç. 10. तिल° Pañkat. 121, 11. द्रव्य° 203, 7. गोनाम् ṚV. 9, 87, 9. पैत्र्य (nach Çaṅk. राशि = गणित) Kaṭhâd. Up. 7, 1, 2. 4. एकस्यैव मतो राशिर्वज्रयः पाण्डवास्तथा Hariv. 22. यस्य वृत्तं न जल्पन्ति मानवा महदद्भुतम् । राशिवर्धनमात्रं स नैव स्त्री न पुनः पुमान् ॥ Spr. 4859. नरराशय: R. Gorr. 2, 20, 38. पन्नग° Hariv. 10199. Ragh. 13, 15. Weber, Gjot. 47. 109. मद्य° Müller, SL. 121. वर्ण° ṚV. Paiṭ. Einl. Sarvadarçanas. 124, 14. सप्तदशक MBh. 3, 13917. Hariv. 2181. Ind. St. 8, 326. मूल° *Grundzahl* 329. बहु° und लघु° adjj. Colebr. Alg. 35. °भागानुबन्ध, °भागापवाह 15. °व्यवहार 103. तैत्तमीं राशिं गगनस्थं दिवाकरम् Mârk. P. 104, 17. MBh. 3, 9900. शुभानामशुभानां च हेतो राशी 18, 93. अखिलसत्त्व° Bhâg. P. 3, 21, 18. अर्थ° Siddh. D. 143, 4. यशो° Ragh. 4, 80. Vikr. 11, 17. Spr. 3671. पुण्य° Râja-Tar. 3, 113. Paṇḍar. 1, 7, 6. पाप° Weber, Rîmây. Up. 336. Vgl. अग्नि° (auch Paṇḍar. 1, 3, 19), अनल°, नेत्र°, जल° (auch Kir. 5, 19), तेजो° (auch Buac. 11, 17), पुण्य°, ब्रह्म° (von einer Person gesagt MBh. 5, 7215), लवणाम्बु°, वारि°. — 2) als Maass so v. a. Droṇa Çâṅkh. Çr. 1, 1, 21. — 3) (*Sterngruppe*) *ein Zodiakalbild, ein Zwölftel der Ekliptik, ein astrologisches Haus* AK. 1, 1, 2, 29. 3, 4, 28, 216. H. 116. H. an. Med. Weber, Gjot. 21. 106. MBh. 3, 13099. Vaitân. Bṛh. S. 5, 10. 9, 27. 28, 1. 19. 40, 3. 8. 41, 1. 42, 2. 98, 17. 100, 2. 103, 7. 104, 29. राशितेत्रगृक्षभानि भवनं चैकार्थसंप्रत्ययाः d. i. *die Wörter* राशि, क्षेत्र, गृक्ष, भ *und* भवन *sind gleichbedeutend* Bṛh. 1, 4 (vgl. Z. f. d. K. d. M. 4, 343). 5, 1. fgg. 17, 2. 24, 3. Bhâg. P. 5, 21, 3. 4. 22, 1. 2. 5. 12, 2, 34. Mârk. P. 58, 76. Weber, Rîmây. Up. 313. fg. Ind. St. 2, 278. fgg. Kusum. 22, 19. Verz. d. Oxf. H. 46, *a*, 42. 86, *b*, 3. 5. 93, *b*, 25. 333, *a*, 16. 336, *b*, No. 792. 337, *a*, 3. राश्यधिप *der Regent eines astrol. Hauses* 86, *b*, 3. राशिप dass. Vaitân. Bṛh. 1, 12. °प्रविभाग *Vertheilung der 12 Zodiakalbilder* (unter die 28 Nakshatra), Titel des 102ten Adhj. in Vaitân. Bṛh. S. °भेद *Theil eines Zodiakalbildes, — eines astrol. Hauses* Vaitân. Bṛh. S. 69, 3. राश्यंश = नवांश Bṛh. 1, 3. Vgl. जन्म°, पुं°, ब्रह्म°. — 4) N. eines Ekâha Âçv. Çr. 9, 8, 22. Çâṅkh. Çr. 14, 39, 1.

राशिक am Ende eines comp. nach einem Zahlwort *aus so und so vielen Quantitäten, Zahlen bestehend* Colebr. Alg. 35.

राशिचक्र n. 1) *der Zodiakus* As. Res. 2, 291. — 2) Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88, *a*, 22. 93, *a*, 21. 95, *b*, 13.

राशित्रय n. *Regel de Tri* Ind. St. 15, 264.

राशिस्थ adj. *in Haufen stehend, aufgehäuft* Kathâs. 39, 116. 119.

राशीकर् (राशि + कर्) *auf einen Haufen bringen, zusammenhäufen:* °कुरुष्व तिलान् Kathâs. 39, 122. °कृत 124. R. 2, 96, 34. भस्मराशीकृत

in einen Haufen Asche verwandelt R. 1,41,30. Gorr. 43,13.

राशीकरण n. *das Zusammenhäufen* P. 3,3,61, Sch.

राशीकरणभाष्य n. Titel eines Werkes der Pâçupata Sarvadarçanas. in Verz. d. Oxf. H. 247,a,36. Hall 163. राशीकारभाष्य die gedr. Ausg. 78,19. fg.

राशीभू (राशि + 1. भू) *sich anhäufen:* °भूतधन *der Schätze angehäuft hat* Spr. 1140. °भूत: प्रतिदिशमिव त्र्यम्बकस्यट्टहास: Megh. 39. प्रेमराशीभवन्ति *werden zu einer Fülle von Zuneigung* 111.

राष्ट्र (von 1. राज्; रैराष्ट्र Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,158) 1) m. n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. Taik. 3,5,13. das m. nur durch MBh. 13,3050 zu belegen. *Reich, Herrschaft; Gebiet, Land; Unterthanen, Volk* AK. 3,4,25, 186. 186. H. 947. an. 2,449. Mnu. 7,79. मर्म द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य RV. 4,42,1. 10,109,3. 124,4. राजा राष्ट्राणाम् 7,34,11. 84,3. मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत् 10,173,1. नास्मोद्राष्ट्रं भ्रंशते TS. 5,7,4,4. मे मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजश्च मे दधत् AV. 10,3,12. 13,1,35. 12,1,8. VS. 9,23. 20,8. तस्य त्रैकादशाते राष्ट्रमिव प्रजा बभूव *seine Nachkommenschaft war ein ganzes Volk* Ait. Br. 5,30. तत्रं हि राष्ट्रम् 7,22. 31. 8,7. 9. तत्रात्, बलात्, राष्ट्रात्, विश: 24. TS. 3,4,8,1. 2. राष्ट्रम्, विश: *Land, Leute* 1,6,10,3. 2, 5,2,3. 5,7,4,4. यं मृधो ऽभिप्रवेपेरन्राष्ट्राणि वाभिसमीयु: *in sein Land einfallen* TBr. 1,2,1,13. Çat. Br. 3,4,4,5. 6,1,2,25. 11,2,3,17. 4,3,3. 20. तत्र एव हि राष्ट्रे प्रतितिष्ठति 12,8,3,20. यदिदं सङ्ग्रामेषु राष्ट्रं तत्रापि दधामि 9,3,3. — दुर्गं च राष्ट्रं च लोकं च सपराचरम् M. 7,29. कोशराष्ट्रे 65. 143. तं राष्ट्राद्विवासयेत् 8,219. अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, खर्च, दण्ड 7,157. स्वाम्यमात्यौ पुरं राष्ट्रं कोशदण्डौ सुहृत्तथा । सप्त प्रकृतयो ह्येता: 9,294. AK. 2,8,1,17. H. 714. स्व° M. 7,32. 111. MBh. 1,6109. 3,2729. पुराणि सराष्ट्राणि 2712. R. 1,1,20. 3,2. 7,14. fg. 8,24. 9,21. राष्ट्रमराजकम् Spr. 2328. पर°, स्व° 41. कुराजराज्यानि राष्ट्राणि 612. Varâh. Bṛh. S. 19,19. 33,11. 20. 36,2. 46,3. °भय *dem Reiche drohende Gefahr* 39. 60. तस्य प्रलुप्यते राष्ट्रम् M. 9,254. तद्राष्ट्रं विप्रमेव विनश्यति 10,61. राष्ट्राभिवृद्धि 7,109. °विवृद्धि Varâh. Bṛh. S. 44,21. °कर्षण M. 7,113. राष्ट्रस्य संग्रह: 113. fg. MBh. 12,3261. fg. सुसंगृहीत° M. 7,113. स्वराष्ट्रपरिपालन Jiân. 1,341. °गुप्ति MBh. 12,3261. fg. °भङ्ग Daçak. 76,18. °विप्लव Spr. 438, v. l. °करणीय Verz. d. Oxf. H. 13,a,20. क्षुधा राष्ट्रमविरोधेव सीदति M. 7,134. स राजापि सपत्निक: । सराष्ट्रश्चापि विदधे शंकरारधनव्रतम् ॥ Kathâs. 21,142. Am Ende eines adj. comp. f. घा Hariv. 4017. 6544. R. 2,34,41. 62,42. 110,27 (119,24). R. Gorr. 2,35,47. 46,13. Vgl. घृत°, पांसु°, मरा°, यम°, सु°. — 2) m. n. *Calamität, Elend, Noth* AK. 3,4,25,186. H. an. Mnu. — 3) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Kâçi Bhâg. P. 9,17,4.

राष्ट्रक 1) am Ende eines adj. comp. = राष्ट्र *Reich* u. s. w.: राज्यं चेदं सराष्ट्रकम् MBh. 1,3209. — 2) adj. *im Reiche —, im Lande wohnend:* नना नागरराष्ट्रका: Bhâg. P. 10,43,20. — 3) f. राष्ट्रिका *eine Art Solanum,* = वृक्षती AK. 2,4,2,12. Ratnam. 12. — Vgl. राष्ट्रिक.

राष्ट्रकाम adj. *nach dem Reich verlangend* TS. 3,4,8,1.

राष्ट्रकूट m. pl. N. pr. eines Volksstammes Z. f. d. K. d. M. 3,168.

राष्ट्रगोप m. *Hüter des Reiches* Ait. Br. 8,25.

राष्ट्रतन्त्र n. *Regierungssystem, Regierung* R. 3,61,25. — Vgl. राज्यतन्त्र.

राष्ट्रदा adj. *Herrschaft gebend* VS. 10,2.

राष्ट्रदिप्सु adj. *Land oder Leute beschädigen wollend, — bedrohend* AV. 19,3,16.

राष्ट्रदेवी f. N. pr. der Gattin Kîrtabhânu's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 50.

राष्ट्रपत adj. von राष्ट्रपति gaṇa यज्ञपत्यादि zu P. 4,1,34.

राष्ट्रपति m. *Herr des Reiches, König* gaṇa यज्ञपत्यादि zu P. 4,1,34. Çat. Br. 11,4,3,14. MBh. 3,935. 4,216.

राष्ट्रपाल 1) m. a) *Hüter des Reiches, Herrscher, König:* तद्राष्ट्रपाल (d. i. तद्राष्ट्र + पाल) Bhâg. P. 10,86,16. — b) N. pr. eines Mannes Buan. Intr. 138, N. 3. Schiefner, Lebensb. 269 (39). eines Sohnes des Ugrasena Hariv. 2028. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,28. °परिपृच्छा Titel eines Werkes Vjutp. 41. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter Ugrasena's Hariv. 2029. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,41.

राष्ट्रपालिका = राष्ट्रपाली (s. u. राष्ट्रपाल) Bhâg. P. 9,24,24.

राष्ट्रभृत् 1) adj. *die Herrschaft pflegend, — erhaltend:* ये देवा राष्ट्रभृतो ऽभितो यन्ति सूर्यम् AV. 13,1,35. तस्मै बलिं राष्ट्रभृतो भरन्ति *unterthan* 10,8,15. Wasser (bei der Königssalbung) Ait. Br. 8,7. Kâṭy. 37,10.11. 21,12. — 2) f. N. einer Apsaras AV. 5,118,1. Taitt. Âr. 2,4. Davon — 3) m. Bez. von *Würfeln* AV. 7,109,6. — 4) Bez. *gewisser Sprüche* (VS. 18,28) und *Opferungen* TS. 3,4,8,2. 5,4,9,2. 7,4,4. Çat. Br. 9,4, 4,1. Kâty. Çr. 18,5,16. Pâr. Gṛhy. 1,5. — 5) m. N. pr. eines Sohnes des Bharata Bhâg. P. 5,7,3.

राष्ट्रभृति f. *Aufrechthaltung der Herrschaft:* राष्ट्रभृतये (d. i. °भृत्ये) चास्मिन्राष्ट्रे दधाति TS. 5,7,4,4.

राष्ट्रभृत्य n. dass. AV. 19,37,3.

राष्ट्रवर्धन 1) adj. *das Reich wachsen machend, — in die Höhe bringend* R. 1,5,11. 2,36,20. — 2) m. N. pr. eines Ministers Daçaratha's und Râma's R. 7,59,3,26. Wilson, Rigv. Up. 302. 305.

राष्ट्रवासिन् m. *Bewohner eines Reiches, Unterthan* Taik. 3,2,16.

राष्ट्रान्तपाल m. *Hüter der Grenzen des Reiches* Kâm. Nîtis. 15,21.

राष्ट्रि f. = राष्ट्री *Herrscherin:* यज्ञस्य राष्ट्रिरसि Gobh. 4,10,10.

राष्ट्रिक m. 1) *Bewohner eines Reiches, Unterthan* M. 10,61. — 2) *Beherrscher eines Reiches* Hariv. 10894. — Vgl. राष्ट्रक.

राष्ट्रिन् adj. *Inhaber eines Reiches* Çat. Br. 13,1,3,2. 2,3,6.

राष्ट्रिय (von रैराष्ट्र) 1) adj. *im Reich geboren, zum Reich gehörig* P. 4, 2,93. Schol. zu P. 4,3,25. धन्य° (von धन्यराष्ट्र) Kâṭy. 37,11. — 2) m. *Schwager des Königs* in der Bühnensprache AK. 1,1,3,14. H. 333. Kâṭy. zu Çâk. 73,1. Mâlatîm. 66,23. 154,11. 175,3. °प्याल dass. 138,18. रट्ठिय im Prâkrit Çâk. 79,2. — Vgl. राष्ट्रीय.

1. रैराष्ट्री m. Naigh. 2,22. वायुर्न राष्ट्र्यात्येत्यकूत् RV. 6,4,5. = राज्यवत् Sây.; ein Thema राष्ट्रिन् anzunehmen erlaubt die Betonung nicht.

2. रैराष्ट्री (von 1. राज्) nom. ag. f. *Lenkerin, Herrscherin, Führerin* Naigh. 2,22. (वाक्) राष्ट्री देवानाम् RV. 8,89,10. यूयं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् 10,125,3. इयं पित्र्या राष्ट्र्युत्तरस्यै Ait. Br. 1,19; vgl. AV. 4,1,2. Çâṅkh. Çr. 5,9,10. nach Sây. die Vâk.

राष्ट्रीय (von राष्ट्र) 1) adj. am Ende eines comp. *zu dem und dem Reich gehörig:* स्वराष्ट्रीयजना: Kull. zu M. 7,111. धन्य° Çat. Br. 5,3,4,9. — 2) m. *Schwager des Königs* H. 333, v. l. MBh. 12,3205. 3269. — Vgl.

राष्ट्रिय.

1. राम्, रौमते (शब्दे) Dhātup. 16,25. *heulen, schreien:* घार्तारं रराम (पयोदः) Spr. 1603. चिक्की कुचीति रामते सारिका वेश्मसु स्थिता: R. 6,11, 42. act.: काका गोमायवो गृध्रा रासन्ति च सुरेश्वम् 36. सारमानां च रासताम् 3,76,14. काक कार्कोति रासत्तम् (वाशत्तम् ed. Bomb.) MBh. 8,1961. सारस्य इव रासत्यः (वाशत्यः ed. Bomb.) 11,532. — Vgl. 1. रम्.

— intens. *laut schreien, — wehklagen:* इमे ते भ्रातरः — रारास्यमानास्तिष्ठन्ति (वावाश्यमानाम् ed. Bomb.) MBh. 12,389.

— परि *mit Geschrei begleiten:* नदत्तं पाञ्चजन्यम् — ममत्तात्पर्यरासत्त (पर्यवाशत्त ed. Bomb.) रासभी: MBh. 16, 49.

2. राम् *verleihen* u. s. w. s. u. 1. रा.

राम m. 1) *ein best. Hirtenspiel, ein Tanz, den Kṛshṇa mit seinen Hirtinnen aufführte,* Trik. 3,3,449. H. an. 2,389. Med. s. 10. Hin. 176. Hariv. 8412. Gît. 1,42. 48. VP. 533. fg. Bhâg. P. 2,7,38. 3,2,14. अलब्धरासः कल्याणः 10,47,38. Pañkar. 1,12,55. 62. 2,3,36. 39. 3,12,3. Vers. d. Oxf. H. 75,b,28. 128,b,21. 145,b, No. 306. °क्रीडा 26,b,47. 27,a,11. Bhâg. P. 10,33,3. Pañkar. 2, 3, 66. °महोत्सव 1, 10, 67. 11, 1. रासोत्सव Bhâg. P. 10,33,3. °गोष्ठी 16. 47,44. Pañkar. 3,12,3. °प्रणेतृ Hariv. 8406. रासेश्वर Vers. d. Oxf. H. 21,a,39. रासेश्वरी Pañkar. 1,12,61. 2,3,65. 4, 48. 5, 30 (राधे° gedr.). राधा रासेश्वरी रासवासिनी (= राममण्डलवासिनी), रासकेश्वरी Brahmavaiv. P. 17 im ÇKDa. रासाधिष्ठात्री Pañkar. 2,3,65. °यात्रा Wilson, Sel. Works I, 128. 130. Vimarçavatantra 54 und Utkalakalikâ im ÇKDa. °मण्डल Kṛshṇa's *Spielplatz* Bhâg. P. 10,33,6. Pañkar. 1,7,60. 2,3,21. 66. 5,13. Vers. d. Oxf. H. 21,a,39. b,4. 24,b,43. रासोद्भवा Pañkar. 2, 4, 49. — 2) *Spiel* überh. Bhâg. P. 3,9,14. 5,2,12. 8,19. 13,17. — 3) *Geschrei von verschiedenen Seiten* (कोलाहल) und *Laut, Ton* überh. (ध्वान) H. an. Med. — 4) = भीमपराक्रमलक Trik. H. an. Med.; nach ÇKDa. enthält das zusammengesetzte Wort zwei Bedeutungen; *Rede* und *Fessel* Wilson. — दूरासद Uttarar. 44,5 (neuere Ausg.) zerlegt Benfey in दूरास + द und jenes in दुस् + रास *disagreeable speech;* es ist aber mit der älteren Ausg. 33,11 दुरासद zu lesen.

रासक m. n. *einer Art von Schauspielen* Sâh. D. 548. Schol. zu Daçar. 1,8; vgl. Einl. S. 6. 7. und नाट्य°.

1. रासन (von रसना *Zunge*) adj. *zur Zunge in Beziehung stehend, schmeckbar:* रस P. 4,2,92, Sch.

2. रासन fehlerhaft oder v. l. für वाशन in घोर°.

रासभ (von 1. रस्) Unâdis. 3,125. m. *Esel, Eselhengst* Nalod. 1,15. AK. 2,9,78. H. 1236. Hall. 2, 135. कदा योगो वाजिनो रासभस्य der Açvin RV. 1,34,9. 116,2. 8,74,7. विमोचनं वाजिनो रासभस्य des Indra 3,53,8. उपास्वाहाशी धुरि रासभस्य 1,162,21. Bhâ. 5,1,8,7. Çâṅkh. Br. 18,1. Çat. Br. 6,1,2,11. 3,1,2,23. 3,3. 4,4,3. Kâtj. Çr. 16,2,4. Pân. Gaṇ. 3,15. रासभाराव MBh. 1,4508. रासभारूप 7,1061. 14,2239. 15,210. (तम्) पर्यरासत्त (पर्य्यवाशत्त ed. Bomb.) रासभाः 16,49. °युक्तो रथः R. Gorr. 2,71,15. 19. Verz. d. Oxf. H. 51,b,27. Subha. 1,135,9. यः स्पृशेद्रासभम् — सचैलं स्नानमुद्दिष्टं तस्य पापप्रशान्तये Spr. 2457. Bhâg. P. 3,17,12. Mârk. P. 48,26 (राभ). Weber, Kṛshṇaj. 284,3. रासभी f. *Eselin* Çabdar. im ÇKDa. MBh. 13, 1879. fg. Pañkat. 215,9. — Vgl. ऋषभ, करभ, कलभ, गर्दभ, तुरभ, वृषभ, शरभ, शलभ.

रासभसेन m. N. pr. eines Fürsten LIA. II,700.

रासायन adj. von रसायन Subha. 2,157,7.

रासिन् Fehler oder v. l. für वाशिन् in घोर°.

रासेरम (रासे, loc. von रास, + रम) m. रासेरमो रसमिद्धबलो शृङ्गारकालयोः । षष्ठीत्रागारके रसगोद्यामू H. an. 4,332. रासेरमस्तु गोष्ठ्यां स्याद्रासशृङ्गारयोरपि ॥ रसमिद्धरसावासषष्ठीत्रागारके ऽपि च । Med. s. 60. fg. = उत्सव Çabdar. im ÇKDa. = परिहास Gaṇâdh. im ÇKDa.

रास्ना (राज्ञी Unâdis. 3, 15) f. 1) *Gurt* (vgl. रशना, रश्मि) VS. 1, 30. 11,59. 38,1. Çat. Br. 6,2,2,25. 5,2,11. 13. — 2) Bez. zweier Pflanzen; = रसन Trik. 3,3,235. a) *Mimosa octandra* Roxb., ein dorniger Schlingstrauch AK. 2, 4,5,5. H. an. 2,281. Med. n. 17. — b) *die Ichneumonpflanze* AK. 2,4,2,2. H. an. Med. Ratnam. 49. Subha. 1,131,14. 140,3. 2,38,3. 93,20. 130,3. 416,3. Çârṅg. Saṅh. 2,2,31. राज्ञा 37. fg.

राज्ञाका f. *Bändchen:* तस्मादियमत्तरा रुनू राज्ञाकेव Kâṭy. 25,9.

राज्ञावत् (von राज्ञा) adj. *mit einem Gurt versehen:* राज्ञावमेन्द्रवायवयात्रम् Çat. Br. 4,1,5,19. Kâtj. Çr. 9,2,5.

रास्पिन् adj. nach Comm. *rauschend, geräuschvoll* Nir. 6,21. प्र वो नर्यातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः RV. 1,122,4.

रास्पिर् adj.: मातुष्पदे परमे ग्रुक्र आयोर्विपन्यवो रास्पिरासो अग्मन् RV. 5,43,14. nach Sây. die Stotâraḥ Hotar u. s. w.

रास्य in गो° adj. Belw. Kṛshṇa's Pañkar. 4,8,16.

रौक्मति m. patron. gaṇa पैलादि zu P. 2,4,59.

रौक्मि m. patron. von राक्म ebend.

रौक्मित्य (von रुक्मित) n. am Ende eines comp. *das ohne-Etwas-Sein, Nichthaben* Sâh. D. 243,6. 282,18. Sarvadarçanas. 144,22.

रौक्मिल m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,1306.

राड्ढ (wohl von रभ् Uṇâdi-Sûtra zu Unâdis. 1,1. *der Ergreifer* (vgl. ग्रह), Bez. des Dämons, der Sonne und Mond *packt* und dadurch die Verfinsterung derselben bewirkt; er ist nach dem Epos ein Sohn Viprakitti's (Viprakit's) und der Siṁhikâ. Bei der Quirlung des Oceans mischte er sich unter die Götter, trank von dem Unsterblichkeitstrank, ward aber von Sonne und Mond dem Vishṇu verrathen, der ihm dafür den Kopf abschlug. Der unsterblich gewordene Kopf rächt sich nun an Sonne und Mond, indem er sie zu Zeiten verschlingt. Râhu wird auch zu den Planeten gezählt. Ueber das Verhältniss des Mythus zu der wissenschaftlichen Theorie von den Eklipsen wird Varâh. Bṛh. S. 5, 1. fgg. gehandelt; vgl. Siddhânta-ç., Golâdh. 8, 9. fg. und den Commentar dazu. Als Ursache der Finsternisse ist Râhu — *der Drachenkopf, der aufsteigende Knoten des Mondes* oder, was dasselbe ist, *die Abweichung in Breite* (विक्षेप) *der Mondbahn von der Ekliptik;* vgl. Sûrjas. 2, 6. Varâh. Bṛh. S. 5, 5. Auch die *Eklipse* selbst (z. B. 20, 6. 34, 15) und namentlich *der Moment des Eintritts der Finsternisse* (z. B. 103, 1) wird durch Râhu bezeichnet. AK. 1,1,2,28. 3,4,30,235. Trik. 1,1,94. H. 121. 220. Hall. 1,49. AV. 19,9,10. राहु राज्ञानं त्मरति स्वरत्तम् Kauç. 100. °चार AV. Paric. in Ind. St. 1,87. MBh. 1,1161. fgg. 1266. fgg. 2539. 3,13477. Hariv. 216. 12188. fg. 12404. fg. 12503. fg. 13226. 14291. VP. 140. 148. 240. Bhâg. P. 5,23,7. 6,6,34. 18,12. शतशीर्ष Hariv. 13082. fg. 13188.

13657. राहुकेतू यथाकाशे उदितौ जगतः तये MBh. 8, 4464. राहोश्च मूतके (vgl. राहुमूतक) M. 4, 110. चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य Kâdaṃb. Up. 8, 13. R. 5, 6, 27. स्थितमिव राहुमुखे शशाङ्कबिम्बम् Mṛicch. 67. 25. प्रविश्य वदनं राहोः MBh. 12, 10448. °यस्ते दिवाकरे 3, 7062. पौर्णमासीमिव निशां राहुग्रस्तनिशाकराम् 2667. R. 5, 21, 14. Mṛicch. 148, 16. Spr. 990. 3227. AK. 1, 1, 8, 9. वर्धमानः प्रज्ञाचन्द्रः (*der Mond der Unterthanen* d. i. *der Fürst*) — यस्तो नियतिराकृणा (so v. a. *starb*) Râjat. 6, 292. राहुः शार्कमुपागमत् MBh. 2, 2693. राहुः शशिकलामिव (गृह्णाति) Kathâs. 18, 169. °घात AV. Paric. in Ind. St. 16, 319. स बभूव यथा राहुः समीपे चन्द्रसूर्ययोः R. 6, 79, 45. सर्वं राहुरपैति MBh. 6, 78. राहुश्छादयति चन्द्रादित्यौ 488. पर्वणीव मुमंक्षुर्हि राहुः पूर्णं निशाकरम् (पीडयति) 8130. तान्प्रति (*gegen die andern Planeten*) राहुर्न वैरायते Spr. 3189. विधुपरिघंसे च राहुयकः 3713. Weber, Rimat. Up. 286. °दर्शन *Eklipse* Vaṃs. Bṛh. S. 3, 11. °गत *verfinstert* 3, 67. सराहोः शशिसूर्ययोः so v. a. *verfinstert* Buḍ. P. 3, 17, 8. Regent von Südwesten Vaṃs. Lagaṇḍ. 2, 1. °पूजा Verz. d. B. H. No. 1264. °रिष्टशान्ति Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 44. °मतस्य निवर्हणम् 251, *a*, 25. ध्रुव°, पर्व° Ind. St. 16, 315. fg. तामसकीलकसंज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत् Vaṃs. Bṛh. S. 3, 7. 11, 22. Viele Asura Râhu Burn. Lot. de la b. l. 3. Nach Upaniṣ. im Saṅkshiptas. soll nach ÇKDa. राहु (von रहू abgeleitet) = त्याग sein.

राहुग्रसन n. *das von Râhu kommende Verschlingen* d. i. *Verfinstern der Sonne oder des Mondes* Dṛṣṭiniyaç. 79 in Haas. Anth. 224.

राहुग्रहण n. *das von Râhu kommende Ergreifen* d. i. *Verfinstern der Sonne oder des Mondes* R. Gorr. 2, 33, 16.

राहुग्रास m. *Sonnen- oder Mondfinsterniss* H. 125.

राहुग्राह m. dass. H. 125, v. l.

राहुच्छत्र n. *frischer Ingwer* Râjân. im ÇKDa.

राहुभेदिन् m. *Spalter Râhu's*, Bez. Vishṇu's Gaṭiṣm. in Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 12.

राहुमूर्धभिद् m. *der Râhu den Kopf spaltete*, Bez. Vishṇu's Taik. 1, 1, 31.

राहुमूर्धहर m. *Köpfer Râhu's*, Bez. Vishṇu's H. 221, Sch.

राहुरत्न n. *Râhu's Juwel*, Bez. *einer Art von Edelstein*, = गोमेद Râjân. im ÇKDa.

राहुल m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 57, 22. Sohnes des Çâkjamuni Lalit. ed. Calc. 2, 1. Burn. Intr. 446. 535 (°भद्र). Lot. de la b. l. 2. 130. 164. Schiefner, Lebensb. 243 (15; hier °भद्र). 283 (53). eines Sohnes des Çuddhodana VP. 403, N. 20 (v. l. für रातुल). eines Ministers Hiouen-thsang I, 45. fg. °मू *Râhula's Vater* d. i. Çâkjamuni H. 237.

राहुलक m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 23.

राहुलत (?) m. N. pr. eines buddhistischen Patriarchen LIA. II, Anh. VI.

राहुसंस्पर्श m. *eine Berührung mit Râhu* so v. a. *eine Sonnen- oder Mondfinsterniss* Hariv. 1, 41.

राहुसूतक n. *Râhu's Geburt* so v. a. *Râhu's Erscheinen, eine Sonnen- oder Mondfinsterniss* Jâtâ. 1, 146; vgl. राहोश्च सूतके M. 4, 110.

राहुगणे (von राहुगण) m. patron. Gotama's RV. Anukr. Çat. Br. 1, 4, 2, 10. 18. 11, 4, 3, 20. Âçv. Çr. 12, 11. राहूगणाः pl. zu राहूगणय gaṇa काण्वादि zu P. 4, 2, 111.

राहूगणय m. patron. von राहूगण gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. fehlerhaft राहुकन्य Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 55, 20.

राहूच्छिष्ट n. *Allium ascalonicum, Schalottenzwiebel* (von Râhu *liegen gelassen* d. i. *verschmäht*) Taik. 2, 4, 35.

राहूत्सृष्ट n. dass. Hin. 223.

1. रि, री, रियति (गतौ) Dhâtup. 28, 111. रिर्णाति Naigh. 2, 14 (गतौ). Dhâtup. 31, 30 (गतिरेषणयोः): रिणाते, रिणते 3. pl.: रीयते (स्रवणे) Dhâtup. 26, 20. रिर्यतुम् P. 3, 2, 78, Vârtt. 1, Schol. partic. रीण. 1) *freilassen, freimachen; laufen lassen:* अपः RV. 1, 56, 6. 2, 22, 4. 3, 7, 28. 32, 3. 9, 109, 22. 138, 1. तं वृत्रो धरिणा इन्द्र सिन्धून् 4, 19, 5. 42, 7. 2, 12, 3. 13, 6. सूर्यम् 4, 30, 6. — 2) *losmachen, ablösen, abtrennen:* पयो घिया गामरिणीत चर्मणः RV. 3, 60, 2. रिणाति (= पृथक्करोति Durga) पद्यः सुधितेव बर्हणा 1, 166, 6. Fraglich bleibt: वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो बृहद्रिणादेकः स्वपस्यया कविः 3, 3, 11. = प्रापेात् TS. Comm. — 3) *entlassen* so v. a. *verleihen:* तन्मिन्द्र शर्म रिणाः AV. 20, 135, 11. — 4) med. *in Stücke gehen, sich auflösen; in's Fliessen gerathen:* नोदत्ते घायो रिणते वनानि RV. 5, 58, 6. रीयति घृतम् 1, 135, 7. घर्मन्वती रीयते सं रभिष्म 10, 53, 3. partic. रीण *in Fluss gerathen, fliessend* AK. 3, 2, 12. H. 1496. Vgl. लो.

— caus. रेषयति P. 7, 3, 36. 86. Vop. 18, 8.

— अनु *nachfliessen:* वर्त्मान्येषामनु रीयते घृतम् RV. 1, 83, 3. घर्किं वृध्यानुरीयमाणाः VS. 10, 19.

— आ 1) *laufen lassen:* ए रिणासि वर्किषि प्रियं गिरा RV. 9, 71, 6. — 2) *laufen:* अस्मे रीयन्ते निवनेव सिन्धवः 10, 40, 9. एडे निमं न रीयते 1, 30, 2.

— नि 1) *auflösen, trennen, zerstören:* नि रिणाति शत्रून् RV. 1, 61, 13. 10, 116, 3. 120, 1. स्थिरा चिदन्ना 1, 127, 4. पुरूणि दस्मो नि रिणाति जम्भैः 148, 4. विषम् AV. 5, 13, 1. घसुर्वर्णं वर्णं नि रिणाते अस्य तम् RV. 9, 71, 2. नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्यूथः etwa *zerreissen* 5, 30, 4. — 2) *sich frei machen, entrinnen:* निरिणानो वि धावति RV. 9, 14, 4. उषा कुमेव नि रिणीते अप्सः etwa *freimachen* so v. a. *enthüllen* 1, 124, 7. 5, 80, 6.

— निस् 1) *ablösen:* निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिः RV. 1, 161, 7. — 2) *entlocken oder verführen:* लोपामुद्रा वृषणं नी रिणाति RV. 1, 179, 4.

— प्र *abtrennen, austreiben:* यद्देवस्य शवसा प्रारिणा घसुम् RV. 2, 22, 4. Dunkel ist: शुचिः प्र यस्मा अत्रिवत्प्र स्वधितीव रीयते 5, 7, 8.

— वि *zertrennen:* घर्किं वर्मेण वि रिणा घर्ष्वन् RV. 4, 19, 2.

— सम् *zusammenfügen, herstellen, einrichten:* सं तं रिणीहो विपुतं दंसोभिः RV. 1, 117, 4. 11. सामम् 19. भरद्वाजमेतशः सं रिणाति 5, 31, 11. Kâṭj. Çr. 22, 6, 11. Liṭ. 3, 8, 11. आपस्त्वा समरिणन् *Wasser hat dich zusammengespült* VS. 6, 18.

2. रि = रै am Ende eines adj. comp.; vgl. अतिरि, बृहद्रि und P. 1, 1, 48. 2, 37.

3. रि als Bez. *der zweiten Note* eine Abkürzung von ऋषभ Verz. d. Oxf. H. 200, *b*, 3.

रिःफ (aus ऽफ्ण) n. Bez. *des 12ten astrologischen Hauses* Vaṃs. Bṛh. 1, 15. 20, 3. 10. 23, 6. Ind. St. 2, 254. 270. 281. — Vgl. रिष्फ.

रिंक्णाम् bei Uṇâdi. zu Uṇâdis. 4,198 fehlerhaft für रेक्णास्, wie auch Aufrecht annimmt.

रिक्क s. u. रिच्.

रिक्तक adj. *leer* AK. 3,2,6. H. 1446. पुमान् *ein Mann ohne Gepäck* M. 8,404.

रिक्तकुम्भ m. *Leertöpfigkeit* vielleicht so v. a. *hohler Schall, leeres Geschwätz:* सर्वाणि रिक्तकुम्भान्यारात्तात्सवितः सुव AV. 19,9,4.

रिक्तकृत् adj. *leer machend, eine Leere bewirkend* Varâh. Bṛh. S. 45,3.

रिक्तागुरु und रिक्तीगुरु P. 6,2,42.

रिक्तता f. *Leere:* कोशादृते न तत्रान्यो दृष्टो कश्च न रिक्तताम् *kein Anderer als die Schatzkammer erfuhr eine Leere* so v. a. *Jedermann hatte vollauf, nur der Schatz ward leer* Kathâs. 23,81.

रिक्तपाणि adj. *leere Hände habend* d. i. *kein Geschenk bringend:* रिक्तपाणिर्न पश्येत राजानं ब्राह्मणं स्त्रियम् MBh. 7,7886. Spr. 2632. fg. रित्तपाणी im Prâkrit Mâlav. 45,18. — Vgl. रिक्तहस्त.

रिक्तहस्त adj. *leere Hände habend* so v. a. *kein Geschenk mitbringend* Kathâs. 80,25. *kein Geschenk erhalten habend* Spr. 4214. — Vgl. रिक्तपाणि.

रिक्तार्क m. *ein auf einen* रिक्त *genannten Tag fallender Sonntag* Verz. d. Oxf. H. 97,b,27.

रिक्तीकर् *forträumen, fortschaffen:* °कृतहृदय Pañcat. 89,2. Comm. zu Bhaṭṭ. 6,36.

रिक्थ (von रिच्) Uṇâdis. 2,7. n. Sidd. K. 249,*a*,6. *Nachlass, Erbe* Naish. 2,10. Nir. 3,5. AK. 2,9,90. H. 191. fg. Hâlâ. 5,58. न ग्रामये तान्वो रिक्थमारिक् RV. 3,31,2. घधीयत देवराता रिक्थयोरुभयोरृषिः *eines doppelten Erbes* Ait. Br. 7,18. M. 8,27. 9,104. 132. 141. 144. 152. 163. 165 (पितृ°). 184. 190. 192. Jiân. 2,117. Çiç. 91,2. Bhâg. P. 5,7,8. °विभाग Verz. d. Oxf. H. 263,*a*,19. *Vermögen, Besitz* überh. M. 8,30. Bhâg. P. 8,22,29. Häufig सक्थ geschrieben. — Vgl. गोत्र°.

रिक्थग्राह् adj. *erbend*, m. *Erbe* Jiân. 2,51.

रिक्थभागिन् dass. M. 9,188.

रिक्थभाज् dass. M. 9,155. Schol. zu Çâṅkh. Gṛhj. 4,16,1.

रिक्थहर dass. M. 9,185.

रिक्थहार dass. Bhâg. P. 4,27,10. 8,22,9 (bei Burnouf fälschlich रिक्तहार).

रिक्थहारिन् dass. Mit. im ÇKDa.

रिक्थाद (रिक्थ + घाद) dass.; m. so v. a. *Sohn* Bhâg. P. 2,9,10. 5,20,20.

रिक्थिन् (von रिक्थ) adj. *erbend*, m. *Erbe* Jiân. 2,29. 45. 137. Dâsabh. 125,3 v. u. — Vgl. एक°.

रिक्थीय (wie eben) adj. अ° *keinen Anspruch auf das Erbe habend* M. 9,147.

रिंक्न् m. = स्तेन Naish. 3,34.

रिता = लिता H. 1208.

रिख् = लिख्; vgl. रेखा, ἐρείκω, ἐρίζω. रिख्, रेखति (गतौ) Vop. in Dhâtup. 5,33; vgl. रिङ्.

— घा *anritzen, aufreissen:* घा रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे RV. 6,53,7.

रिङ्, रिंङति (गतौ, सर्पणे) Vop. in Dhâtup. 5,32. *kriechen* (von Kindern gebraucht, die noch nicht zu gehen verstehen): रिङ्गता (so die ed. Bomb.) Bhâg. P. 2,7,27. *kriechen* so v. a. *langsam von Statten gehen:* निकरस्थवितीर्णभूरिमोदस्फुटरिङ्त्पटुयुक्तिमान्विवादः Verz. d. Oxf. H. 258,*a*,19. रिंग्यते Dhoïs. im ÇKDa. — Vgl. रिङ्.

रिङ्गण (von रिङ्) n. *das Kriechen der Kinder* H. 1322 (= स्खलन). मुक्ताघ रिङ्गणविधिं पादचङ्क्रमणावधिम् । कुमारः पञ्चवर्षीयः कलाभ्यासे विधास्यति ॥ Çâṅk. 14,137. — Vgl. रिङ्खण.

रिङ्ग (wie eben) f. 1) Bez. *eines best. Ganges der Pferde.* — 2) *das Tanzen.* — 3) *Carpopogon pruriens* Roxb. Med. kh. 5. — Wilson, der das f. eben so wenig wie ÇKDa. kennt, giebt dem m. nach Çabdâratnâv. die Bedd.: *disappointing, deceiving; a horse's hoof; one of a horse's paces; dancing;* ausserdem ohne Angabe einer Aut. *sliding, slipping.*

रिङ्, रिंङति (गतौ) Dhâtup. 5,47. *kriechen* (von Kindern gebraucht, die noch nicht zu gehen verstehen), *sich mit Mühe fortbewegen* Bhâg. P. 2,7,27. कलिङ्गो रिङ्गति Verz. d. Oxf. H. 246,*a*, No. 619. ज्ञानुभ्यां सरु पाणिभ्यां रिङ्गमाणो विनश्यतु: Bhâg. P. 10,8,21. Verz. d. Oxf. H. 242, *a*, No. 593. fgg. रिङ्गमाणगति Paṇḍân. 4,8,12. रिङ्गदत्युत्तरंग Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5,502, Cl. 2. रिङ्गते Dhoïs. im ÇKDa. रिङ्गित n. *das Wogen:* तरंग° Khandok. 22. — Vgl. रिङ्.

— caus. *kriechen lassen* Bhâg. P. 10,30,16.

रिङ्गण (von रिङ्) n. = रिङ्गण AK. 1,1,2,36.

रिङ्गि (wie eben) f. *Gang, Bewegung* Bhâg. P. 5,7,13.

रिङ्गिन् (wie eben) adj. *kriechend* (von kleinen Kindern gesagt) Hariv. 3436.

रिच्, रिणक्ति, रिङ्क्ते (विरेचने) Dhâtup. 29,4. रिच्यात् Çiṅkh. Br. 27,1. घरीक् (घरीक्); रैचति (विरोचनसंपर्चनयोः) Dhâtup. 34,10. रिरेच, रिरिच्याम्, रिरिचे, रिरिक्षेम्; रिरिचानै, घरिरेचीत्, घरिरिति, रिक्त, रिक्थाम्, घरेचि; रेक्ष्यति, रेक्ता (vgl. Kâç. 2 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10); रिच्यते und रिच्यते; *räumen, leeren; freilassen, überlassen, preisgeben; hinterlassen:* योनिम् RV. 1,113,1. सदनानि 2. पन्थाम् 16. 2,13,5. 7,71, 1. 1,124,8. रिणयोधांसि कृत्रिमाणेयानाम् 2,15,8. रिक्थम् 3,31,2. घधो रिरेच सक्थिभिर्निकामैः 4,16,6. 28,5. ग्रावेव पत्वे तन्वं रिरिच्याम् 10, 10,7. कृतोव वृत्रं रिणचोव सिन्धून् 8,89,12. स भूर्यसा कर्तृभिर्यो भरिरेचीत् *hingeben, feil haben* (vgl. *licet*) 4,24,9. घादित्पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात् etwa *hinter sich lassen* so v. a. *auf das Gekochte folgt das Gebackene, eine Darbringung drängt die andere* s. AV. 5,1,3. स रिरिचानो ऽमन्यत निर्वोर्यः शिक्षितः TS. 7,1,8,1. TBr. 1,1,10,1. Çat. Br. 3,8,1,2. 9,1,2. 4,4,4,7. ध्रुवा वै रिच्यमाना पशवो ऽनु रिच्यते TS. 1,7,2, 1. रिच्यते इव वा एष यः सोमेन यजते Çat. Br. 12,8,2,1. Ait. Br. 3,7. Kâṭh. 28,1. रिरिक्षांसस्तन्वः कृण्वत त्राम् *preisgebend* RV. 4,24,3. 1, 72,5. रिणच्मि ब्रह्मधेस्तोयम् *ich schaffe das Wasser aus dem Meere fort, ich entleere das Meer* Bhaṭṭ. 6,36. pass. *kommen um* (instr.), *verlustig gehen, befreit werden von:* यत्किंचिदेनमिति ब्रुवाणेन रिच्येत वै पुमान् Bhâg. P. 8,19,41. घाविर्भूते शशिनि तमसा रिच्यमानेव रात्रिः Vikr. 8. zu *Nichte* —, zu *Schanden werden:* तस्य पुरुषार्थो न रिच्यते R. 5,1,17. partic. रिक्त und रिक्त P. 6,1,208. 1) adj. *leer* Med. t. 50. Hâlâ. 4,92. Ait. Br. 3,7. Bhâg. P. 8,19,40. उखा Kâṭh. Ça. 17,1,20. Çat. Br. 7,1, 1,40. भाण्ड M. 8,405. Varâh. Bṛh. S. 51,28. Pañcat. 96,18. सुवर्णमन्थि 134,12. घट Z. f. d. K. d. M. 3,389. कुम्भ 4,347. ब्रह्मद Spr. 400. 1905.

भूतल 2783. प्रकोष्ठ Mrkk. 2. मध्यरिक्तो यदा कोशो so v. a. *hohl* Verz. d. Oxf. H. 202,b,18. °मति so v. a. *an Nichts denkend* Bhāg. P. 4,22,39. धनरिक्ते कुले *besitzlos* MBh. 13,6696. रज्जोरिक्तमनस् Raghu. 14,35. पानीयरिक्तोदर Spr. 3503. Kathās. 16,33. Bhāg. P. 1,15,21. दानरिक्तेन मात्रा von *keinem Geschenk begleitet* Kir. Nitis. 17,62. *leer* so v. a. *arm, Nichts besitzend* MBh. 1,3289. Bhāg. P. 9,10,23. *arm* und zugleich *leer* Mrkk. 20. so v. a. *eitel, hohl, werthlos:* रिक्तं न खमिदृप्यम् P. 8,1,8, Sch. घरिक्त *nicht leer* Kāś. Ça. 5,6,31. तृणा Bhāg. P. 8,15,6. *nicht mit leerer Hand* Çāṅkh. Grihj. 3,5. *im Ueberfluss vorhanden:* घरिक्ताखिलमेषट्: Bhāg. P. 4,22,11. — 2) Bez. *einer der vier ominösen Buchstaben* Varāh. Bṛih. S. 48,3. — 3) Bez. *bestimmter lunarer Tage* (des 4ten, 9ten und 14ten) Varāh. Bṛih. S. 98,13. रिक्ता (sc. तिथि) 99,2. 100,2. रिक्तायां नवम्यां तिथौ Kull. zu M. 11,132; vgl. रिक्तार्क. — 4) n. *Wald (Einöde)* Taitt. 3,3,180. Med. — Nach dem Schol. zu P. 8,1,208 soll रिक्त संज्ञायाम् paroxytonirt sein.

— caus. रेचयति (विशेषेण संपर्चनयोः) Dhātup. 34,10. *leer machen:* कोष्ठागाराणि Daçak. 187,5. *entlassen* (den Athem): मारुतम् Pāṇ. 3,2,26. mit Ergänzung von मारुतम् u. s. w. dass. Amṛitan. Up. in Ind. St. 2, 31. Verz. d. Oxf. H. 89,b,40. *verlassen, aufgeben:* रेचितपुण्यवत्ता: (द्विरेफा:) Raghu. 6,7. रेचित *gekämmt* Boṛ. *einer best. Stellung der Hände beim Tanz* (vgl. अर्धरेचित, उत्तमरेचित) Verz. d. Oxf. H. 202,a,24. — Vgl. रेचक, रेचन.

— अति med. pass. *hinter sich lassen, hinausreichen über, überragen; übrigbleiben, überschüssig sein:* यस्य दिवमति मह्ना पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम् RV. 6,21,2. न त्वामिन्द्राति रिच्यते (der Soma) *geht nicht über deine Kraft, deine Capacität* 8,81,22. 14. 10,90,5. मा वो मदस्या अतिरिक्तत Çat. Br. 4,3,4,18. AV. 8,9,26. Ait. Br. 7,26. Çat. Br. 3,1,2,2. 3,2,13. सोमो ऽत्यरेचि *blieb übrig* 4,5,2,11. Çvetāçv. Up. 2,6. ततो यो वाममत्यरिच्यत Nir. 13,9. न वा आत्माङ्गान्यतिरिच्यते नात्मानमङ्गान्यतिरिच्यन्ते so v. a. *Leib und Glieder fallen zusammen, der Leib ist nicht ohne die Glieder* u. s. w. Çat. Br. 12,2,3,6. छन्दांसि वा अतिरिच्यन्त। न त्रीण्यरिच्यत। न त्रीण्युदभवन् *drei Metren waren zu lang, drei reichten nicht zu* (an Zahl der Silben) TBr. 1,3,10,1. वि वा एतस्य पशु रिच्यते यस्य रुचिरतिरिच्यते TS. 3,4,6,1. नातिरिच्यते यथा *auf dass es nicht mehr sei* Rāmāyaṇa-Tar. 4,347. न किंचिदतिरिच्यते *wallet vor* M. 9,296. 12, 25. दैवमत्रातिरिच्यते Spr. 30. स्वभाव एवात्रातिरिच्यते 1404. यद्किंचन्यं च राज्यं च तुलया समतोलयम्। यत्यरिच्यत दारिभ्यं राज्यादपि गुणाधिकम् ॥ *wog schwerer* Spr. 3676. R. Gorr. 2,61,10. Kāṇ. Nitis. 5,48. विक्रममसामर्थ्यादतिरिच्यते मां शतेन *um hundert Mal überlegener an* R. 5,56,24. संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते *ist ärger als der Tod* Bhag. 2,34. R. 4,15,3. Spr. 1028. पुत्रगात्रस्य संस्पर्शश्चन्दनादतिरिच्यते *ist besser als* 378. Varāh. Bṛih. S. 48,84. श्वपचो ऽपि कुलज्ञानी ब्राह्मणादतिरिच्यते Verz. d. Oxf. H. 91,a,26. MBh. 3,175. mit acc. *übertreffen:* य: पुनः प्रतिमानेन त्रींल्लोकाननतिरिच्यते 5,2459. देवान्मनुष्यान्गन्धर्वानत्यरिच्यत दक्षिणा: so v. a. *die Opfergeschenke übertrafen die der Götter* u. s. w. 12,916. दक्षेव तु मदाधार्यः श्रोत्रियानतिरिच्यते 4004. Spr. 1119. 3804. तेजसा यशसा वीर्यादत्यरिच्यत पावकम् (वीर्यवान् ed. Bomb.) R. 1,16,14. ननु शब्दो ऽतिरिच्यतां प्रमाणम् Kusum. 36, 8. partic. अतिरिक्त 1) *überschüssig, übermässig, zu gross, zu viel* (Gegens. ऊन und क्षीण) AK. 3,2,25. H. 1449. कृतुं नो ब्रूत यतमो ऽतिरिक्तः AV. 9,9,17. Ait. Br. 1,17. ऊनातिरिक्त 3,4. Kāṭy. Ça. 8,6,24. Çat. Br. 3,9,2,15. 13, 8,4,13. अतिरिक्ताङ्ग Suçr. Bh. 6,11. M. 3,242. 4,141. Jāgn. 1,223. 3, 211. क्रिया क्षीनातिरिक्ता वा Suçr. 1,127,20. Kāṇ. Nitis. 7,19. Buhlair. 19. क्षीनातिरिक्तकाले *zu früh oder zu spät* Varāh. Bṛih. S. 46,32. एकया विरात्रमतिरिक्तः *um eine übersteigend* Pāraṇ. Bh. 16,3,7. *einen Ueberschuss von* (geht im comp. voran) *habend, zu viel von Etwas habend:* पूगफलातिरिक्त (ताम्बूल) Varāh. Bṛih. S. 77,26. वातकफातिरिक्ता (स्त्री) 78,17. लभ्यं किं चातिरिक्तं *noch darüber, noch mehr* Mālāv. 178,3. सर्वातिरिक्तसारेण *Alle übertreffend* Raghu. 1,14. — 2) *verschieden* von (abl. oder im comp. vorangehend) Sin. D. 31,5. Madhus. in Ind. St. 1,13,23. उत्तमर्णाय धनातिरिक्तं देयं वृद्धिः P. 5,1,47, Schol. 8,1,41, Schol. विज्ञानातिरिक्तवस्तु Schol. zu Kap. 1,41. Nilak. 60. Sarvadarçanas. 46,7. 91, 23. 116,20. 133,5. 10. 12. 14. 16. 140,16. 141,1. नेश्वरस्यातिरिक्तशरीरसिद्धिः *es lässt sich nicht behaupten, dass* Içvara *einen besondern Leib habe,* Nilak. 111. — Vgl. अतिरिक्त. — caus. *überschüssig machen, zu viel thun:* सोमं मातिरीरिचः Çat. Br. 4,4,2,7. अति क्व रेचयेदन्यः प्रस्तुयात् 6,2,17. 8,2,2,23. इदं वा अत्यरीरिचन्निदमूनमकन् 11,2,3,7. 9. 13,1,2,2. 14,2,4,24. Ait. Br. 5,24. TS. 2,5,11,4. 5,6,11,5. अति तस्यास्य रेचयेत् TBr. 3,2,2,4.

— अत्यति pass. *bedeutend überragen, — mehr sein:* म्रियमाणा: कपोतास्तु मांसेनात्यतिरिच्यते *wiegt bedeutend mehr als das Fleisch* MBh. 3,10338.

— व्यति pass. 1) *hinausreichen über, überragen, vorzüglicher sein, übertreffen;* mit abl. und acc.: ममस्यानां च मीमांसा न लक्ष्मीर्व्यतिरिच्यते Harīv. 3576. स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यते हरेण चरितानि ते Raghu. 10,31. उपाध्यायान्दशाचार्य पिता तमेव व्यतिरिच्यते Spr. 1119. व्यतिरिक्त *überschüssig, übermässig* MBh. 14,1062,fg. उद्रेक° 1063. वत्सायिकार्यव्यतिरिक्तमन्यत् *übrig geblieben* von v. l. beim Schol. zu Raghu. ed. Calc. 2,66. — 2) *sich trennen von:* (सोममृतः) पदार्काद्व्यतिरिच्यते Bhāg. P. 5, 22,12. *sich unterscheiden von:* न मत्तो व्यतिरिच्यते Çāṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 142. Bhāg. P. 6,16,56. कृत्स्नो विकारग्रामः सन्नावस्तमीमसि न व्यतिरिच्यते *halten sich innerhalb fallen zusammen mit* Suçr. 1,90,6. 7. व्यतिरिक्त *unterschieden, verschieden, ein anderer als* Harīv. 11799 (Nilak. liest व्यतिषिक्त, welches er durch मिश्रित erklärt). Bhāg. P. 4, 9,15. 5,11,6. 18,5. 10,47,32. देहाद्यतिरिक्तमूर्तिः Prab. 27,2. Bhāg. P. 4,7,31. 7,3,22. 12,5,3. M. 8,152. शरीरादिव्यतिरिक्तः पुमान् *Seele ist etwas Anderes als der Leib* u. s. w. Kap. 1,140. Kusumāñj. 1,31. 5,23. Schol. zu P. 2,3,30. 3,4,77. Çāṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 139. Bhāg. P. 4, 22,21. Vedântas. (Allah.) No. 12. Sarvadarçanas. 48,1. 49,2. 52,9. 141, 8. 10. शरीराव्यतिरिक्त Kathās. 33,70. यत्यत्नभावव्यतिरिक्तत्वे सति Sarvadarçanas. 111,20. साधनाभावाव्यतिरिक्तत्वे सति 113,11. देषव्यतिरिक्तज्ञान *frei von* 113,14. — Vgl. व्यतिरिक.

— अनु med. *nach Jmd sich entleeren:* ध्रुवा वै रिच्यमाना यज्ञो ऽनु रिच्यते यज्ञ यजमानः TS. 1,7,8,1.

— अभि med. pass. *zu Gunsten Jmds* (acc.) *übrigbleiben, Jmd zu Gute kommen:* होतारं वा अभ्यतिरिच्यते यदतिरिच्यते TS. 7,1,8,6. 2,3,6,1.

घप्रियं भात्व्यमभ्यतिरिच्येत TBr. 1, 2, 5, 3. 4, 5, 1. Çat. Br. 1, 9, 1, 18. पञ्चमानस्य श्रियम् 3, 9, 2, 34. 11, 1, 2, 5. Kâṭy. 26, 1. Kâṭ. Çr. 25, 13, 17.

— था *überlassen:* स सुन्वत इन्द्रः सूर्मा देवो रिणक्तर्त्याय स्तवान् ṚV. 2, 19, 5. AV. 13, 3, 11. — Vgl. थारेक. — caus. 1) *den Athem entlassen:* थारेच्य Verz. d. Oxf. H. 234, b, 35. — 2) थारेचित in Verbindung mit भू so v. a. *verzogen* (= एकैकशो निवर्तिता Mallin.) Kumâras. 3, 5. Mâlatîm. 68, 9. Daçak. 78, 2.

— उद् med. pass. *hinausreichen über, hervorragen, vorzüglicher sein als:* उत्सक्थ्लोदरिरिचे कृष्टिषु शर्वः ṚV. 1, 102, 7. उदिर्व्वस्य रिच्यते ऽशः 7, 32, 12. ममैवोदरिच्यते जन्म — तव जन्मनः MBu. 1, 3070. उत्तरोत्तरमेतेभ्यो वर्षमुदरिच्यते गुणैः 6, 234. उदरिक्त *hinausreichend über* (acc.): शिखरैः खमिवोदरिक्तैः R. Gorr. 2, 103, 4. *überschüssig, übermässig, im Uebermaass vorhanden, überflüssig, übrig* TS. 7, 3, 20, 1. Âçv. Çr. 2, 7, 21. MBu. 14, 1064. fg. Suçr. 1, 81, 6. 2, 375, 18. °मन्मथा Kathâs. 94, 52. Mâlav. P. 48, 8. °रमान्गुडादीन् Kull. zu M. 2, 177. Daçak. 152, 1. अनुदरिक्तावनूनौ Mâlav. P. 46, 8. अनुदरिक्त (पुर = शरीर) *nirgends ein Uebermaass zeigend* MBu. 14, 987. तमसोदरिक्तः *im Uebermaass versehen mit* Mâlav. P. 17, 10. रजसोदरिक्ताः VP. bei Muir, ST. I, 22. बलोदरिक्त *überlegen an, reichlicher versehen mit* MBu. 1, 3543. सत्त्वोदरिक्त *im Uebermaass versehen mit* Râǵa-Tar. 3, 343. VP. bei Muir, ST. I, 22. Mâlav. P. 17, 6. 45, 15. सद्भावोदरिक्तचित्त Pañkar. 1, 6, 12. तज्ज्ञानोदरिक्तया भक्त्या *gesteigert durch* Bâlar. P. 1, 15, 17. उदरिक्तचेतस् *hochsinnig* Kathâs. 32, 73. उदरिक्तधित *hochmüthig* 91, 35. उदरिक्त dass. MBu. 3, 7044. Spr. 3246, v. l. — Vgl. उद्रेक. — caus. *steigern:* अधिकोदरिचिताभिष्यम् adv. Râǵa-Tar. 5, 365. — Vgl. उद्रेचक.

— समुद् partic. समुदरिक्त *im Uebermaass versehen mit* (instr.) VP. bei Muir, ST. I, 22.

— नि s. निरेक.

— प्र mod. pass. *hinausreichen, hervorragen über:* दिवश्चित्ते प्र रिरिचे महित्वम् ṚV. 1, 59, 3. 61, 9. 109, 6. 164, 25. त्वं तान्सो प्रति वासि मन्मनाग्ने प्र चं देव रिच्यसे 2, 1, 15. 22, 2. 3, 6, 3. प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः 46, 3. 6, 24, 3. 30, 1. 7, 42, 3. प्र वि रिरिचे रोदसी दिवो यासेभ्यस्परि 8, 77, 3. 10, 32, 5. TS. 7, 3, 20, 1. — Vgl. प्रारेचान्, प्रेक fg. — caus. *übriglassen:* पित्रो नारिरेचीतिकं चन प्र ṚV. 6, 20, 4. *lassen:* प्रियो यमस्तस्मै प्रारिरेचीत् 10, 13, 4.

— वि mod. pass. 1) *hinausreichen:* यतश्चिदस्य महिमा वि रेचि ṚV. 4, 16, 5. — 2) *Durchfall bekommen:* यः सोमं पीत्वा क्षुद्यते विरिच्येत वा Lâṭy. 8, 10, 9. विरिक्त *der seinen Leib entleert hat* M. 5, 144. Suçr. 2, 326, 20. — Vgl. विरेक. — caus. *leeren, leer machen:* कोशमस्य विरेचय MBu. 12, 3920. *laxiren, ausputzen* Suçr. 1, 44, 18. 150, 19. 2, 174, 19. शिरः 16. विरेच्य als Erkl. von निर्पात्य *von sich gegeben habend* Nîlak. zu Hariv. 4013. — Vgl. विरेचक fg.

रिञ्, रैञ्चते (भर्त्सने) Vop. in Dhâtup. 6, 19.

रिटि vgl. u. भेड्डि°. Wilson nach Çabdârthak.: *the crackling or roaring of flame; a musical instrument; black salt.*

रिणीनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 114, *a*, No. 177.

रिण्व्, रिंण्वति (गतौ) Dhâtup. 18, 66.

रित् adj. etwa *entrinnend* (von 1. रि; nach Sây. = गन्त्री): यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृत्रत्नमः ṚV. 6, 57, 4.

रिद्ध adj. *reif* (Korn) H. 1183. — Vgl. सद्ध.

रिधम m. 1) *Frühling.* — 2) *Liebe* Vîçva im ÇKDa.

1. रिप् (= लिप्) 1) *schmieren, kleben:* यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति ṚV. 1, 162, 8. — 2) *anschmieren so v. a. betrügen:* कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि ṚV. 5, 85, 8.

— अपि, partic. °रिप्त *verklebt so v. a erblindet:* युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तम् ṚV. 1, 118, 7. युवं कण्वाय नासत्यापिरिप्ताय कर्म्ये । शश्वद्भूतादिंशस्यतः 8, 5, 23.

2. रिप् (= 1. रिप्) f. 1) *Betrug, Kniff;* concret *Betrüger:* मा नो मुखा रिपो घायोरुन्दमन् ṚV. 2, 32, 2. न देभति तं रिपः 7, 32, 12. अव वेदो रोत्राभिर्यत्त रिपः 60, 9. ये वा रिपौ दधिरे देवे अधरे 104, 18. Vgl. पतिरिप्, welches demnach *den Gatten täuschend* bedeutet. — 2) nach Naigh. 1, 1 (रिपः) und Comm. so v. a. *Erde:* पातिं प्रियं रिपो अग्निं पदे वेः पातिं पक्षः शरणं सूर्यस्य ṚV. 3, 5, 5. सप्त न पक्षमंबदच्छचन्तं रिरिक्षाणं रिप उपरे धन्तः 10, 70, 3.

रिपु (von 1. रिप्) Uṇâdis. 1, 27. 1) adj. *betrüglich, verrätherisch;* m. *Betrüger, Schelm;* später *Widersacher, Feind* Naigh. 3, 24 (= स्तेन). AK. 2, 8, 4, 10. H. 728. Halâj. 2, 300. ṚV. 1, 36, 16. दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः 147, 3. 148, 3. 2, 23, 16. पाशा रिपवे विचेताः 27, 16. 34, 9. मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम *falscher Freund* 4, 3, 13. स्तेना अद्म्रायिपवो नृचक्षसः 5, 3, 11. नेह्रा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा 79, 9. 7, 104, 10. 8, 51, 7. 13. दुरत्यस्य रिपवे मर्त्याय 7, 65, 3. 8, 11, 4. 22, 14. 23, 15. 10, 165, 3. AV. 12, 49, 9. न कूटरायुधैरन्यायुध्यमानो रणे रिपून् *Feinde* M. 7, 90. 93. 171. 183. 186. 200. °निपातिन् MBu. 3, 2492. 12, 1275. °सूदन R. 1, 32, 8. Suçr. 1, 108, 10. बलवति रिपौ वा सुहृदि वा Spr. 309. लोभान्न चान्यो ऽस्ति रिपुः पृथिव्याम् 1137. बलेन किं यस्य रिपुश्च बाधते 1301. न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित्कस्यचिद्रिपुः । कारणादेव जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥ 1344. °रक्त 2634. घातमेव स्वात्मनो मित्रमात्मैव रिपुरात्मनः 3703. भुजोच्छिन्नरिपु Raghu. 2, 33. °भय *Gefahr von Seiten des Feindes* Vaṇîs. Bân. 8. 53, 86. 119. °बल *ein feindliches Heer* 74, 3. °घ्न 79, 12. °क्रून् (°कृण MBu. 10, 630) 101, 18. 104, 23. °वशग 79, 21. °नागकुलासक Râǵa-Tar. 1, 89. शक्र° MBu. 3, 11912. क्रोश° Spr. 64; vgl. H. 10 (wo die v. l. रिपु st. अरि hat) und मदन°, मधु°. In der Astrol. *ein feindlicher Planet* Vaṇîs. Bân. 8. 69, 6. — 2) m. Bez. *des 6ten astrologischen Hauses:* रिपुगते गुरौ Vaṇîs. Bân. 8. 104, 28. Bân. 7, 14. 9, 4. Lagadâ. 1, 15. °भवन n. dass. Vaṇîs. Bân. 8. 104, 15. °भाव m. dass. Verz. d. B. H. No. 878. °स्थान n. dass. Verz. d. Oxf. H. 230, *a*, 2 v. u. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Çiśiṭi Hariv. 68. fg. VP. 98. des Jadu Bâlar. P. 9, 23, 20.

रिपुघातिन् 1) adj. *den Feind schlagend.* — 2) f. °घातिनी *eine best. Schlingpflanze* Çabdâm. im ÇKDa. *Abrus precatorius* Wilson.

रिपुंजय 1) adj. *den Feind bestegend:* बहूनां चैव सत्त्वानां समवायो रिपुंजयः Spr. 4623. घाख्यान Bâlar. P. 8, 13, 28. — 2) m. N. pr. verschiedener Fürsten, = दिवोदास Verz. d. Oxf. H. 70, *a*, 21. ein Sohn Çiśiṭi's Hariv. 68. VP. 98. Suvîra's Bâlar. P. 9, 21, 20. Vîçvagît's und letzter Fürst der Bârhadratha 22, 47. VP. 465.

रिपुता f. *das Feindsein:* रिपुतामुपैति *wird zum Feinde* Spr. 383.

रिपुमल्ल m. N. pr. eines Fürsten Çaṃ. 1, 222. 2, 660.

रिपुरात्तम m. N. pr. eines Elephanten Kathâs. 121,276.

रिप्र (von 1. रिप्) Uṇâdis. 3,55 (कुत्सिते). 1) n. *Schmutz, Unreinigkeit*, auch uneigentlich: गृभ्णाति रिप्रमविरस्य तान्वा ṚV. 9,78,1. विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति सिन्धवः 10,17,10. AV. 18,3,24. 12,2,11. 13. रिप्राभिर्मुक्तो शमलाच्च वाचः 3,8. 16,1,10. 12,3,17. = पाप Nir. 4,21. Vgl. अ°. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Çiśhṭi Hariv. 68. विप्र v. l.

रिप्रवाहे adj. *das Unreine entführend* ṚV. 18,16,9.

रिप्सु adj. vom desid. von रभ् Vop. 26,190.

रिफ्, रिफैति (कथनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु, v.l. कत्थन st. कथन) Dhâtup. 28,33. केशार्थे Sis. zu Ait. Br. 5,4. रेफित्वा P. 1,2,28, Sch. Vop. 26,206. 1) *knurren*: यत्र विसर्पते पामन्यर्पुः सा पशून्हिंसाति रिफती रुशती *sie schädigt das Vieh knurrend, mürrisch* AV. 3,28,1. — 2) रिफते *geschnarrt werden, die Aussprache des r haben* oder *bekommen*: विसर्जनीयो नत्यलोपयो (नित्य° die gedr. Ausg.) रिफते Âçv. Çr. 1,3,10. partic. रिफित *geschnarrt, als r ausgesprochen* Çâṅkh. Çr. 1,2,9. 10. VS. 1,33. 100. 4,18. 122. अ° *nicht geschnarrt* (Visarga nach अ, आ) 7,6. ṚV. Pâiṅg. 1,17. 2,9. 4,14. Aehnlich विरिफित *der r-Aussprache verlustig*: आपो नः स्वयुक्तिभिरिति चतुर्थस्याङ्क आद्यं भवति वैमदे विरिफितं विरिफितस्य सप्तेत्यतुर्थे ऽक्तनि चतुर्थस्याङ्को ऽपम् Ait. Br. 5,4. nach Sis. so v. a. *sehr mühsam* (mit dem Njâṅkha) *ausgesprochen*; die Bez. bezieht sich aber in Wirklichkeit darauf, dass in dem betreffenden Liede des Vimada ṚV. 10,21,1. fgg. der Refrain वि वो मदे gesprochen wird, während वः nach वि sonst als रिफित betrachtet wird, wie die Regel des ṚV. Pâiṅg. 1,23 (vgl. auch den Comm.) es ausspricht. — Vgl. रेफ und रिम्फ्.

— अत्र, अवरिफता श्वोत्तरवेदिं परीणाताम् Kâṭy. 27,3.

— आ *schnarchen*: आरेफतः शयीरन् Çâṅkh. Br. 17,9.

रिभ् (P. 7,2,18, Sch.), रेभति (रेभ् शब्दे Dhâtup. 10,22) Naigh. 3,14 (वर्चतिकर्मन्); रिरेभ: *knarren, knistern; murmeln* (von Fliessendem); *plaudern, schwatzen; laut reden, jubeln, bejauchzen* (mit acc.): तस्मादेरंधयो ऽनभ्यक्ता रेभति *deshalb knarrt das Holz* (am Wagen), wenn es *nicht geschmiert ist*, TS. 7,1,1,3. घृतह्रदस्य स्वधावतो हूतस्य रेभतः सदो vom *knisternden* Feuer ṚV. 8,44,20. 10,3,6. सोमः पवित्रमत्येति रेभन् 9,96,5. 17. 97,7. 47. पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः 57. 106,14. अग्नीलस्य श्रोत्रियस्य मुखं व्येव ज्ञायते तृणमिव रेभतीव *sein Gesicht sieht vergnügt aus und er scheint zu plaudern* Ait. Br. 1,25. रेभन्तो वै देवाश्च सपत्नाश्च स्वर्गं लोकमायन् *schwatzend, laut mit einander redend* 6,32. घृतं गौपत्रं तक्वानस्याङ्के चिद्धि रिरेभाथिना वाम् ṚV. 1,120,6. 7,18,22. उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः 76,7. 8,37,7. 10,61,24. 92,15. — स शोभिवार्षं रेभति (?) ṚV. 1,105,9.

— अभि *anknurren, anbellen*: मामङ्ग सारमेयो ऽभिरेभति Bhâg. P. 1,14,12. अभीरोभति ed. Bomb.

— वि, °रिभ्य (स्वरे) P. 7,2,18. Vop. 26,111. °रिभित und °रेभित in anderer Bed. P., Schol.

रिभ्वन् m. = स्तेन Naigh. 3,24. — Vgl. रिक्वन्.

रिमेढ m. = वरिमेढ Râjân. im ÇKDr.

रिम्फ्, रिम्फैति (हिंसायाम्) Dhâtup. 28,30, v. l. रिम्फति und रिफति Vop. 13,4.

रिम्फ n. *der Thierkreis* Wilson.

रिम्ब्, रिम्बति v. l. für रिम्ब् Dhâtup. 15,39.

रिरंसा (vom desid. von रम्) f. *das Verlangen sich zu ergötzen*, insbes. *geschlechtlich, Geilheit* Bhâg. P. 3,14,20. Nalod. 1,11. अनिलः । परिक्रामन्वने वृक्षानुवैतीव रिरंसया MBh. 1,2339. Kathâs. 58,93. 64,106. Râja-Tar. 3,302. Daçak. 152,2. रति° Bhâg. P. 3,23,11.

रिरंसु (wie eben) adj. *das Verlangen habend sich zu ergötzen*, insbes. *geschlechtlich, geil*: भवानतेषु कुशलो वयं चापि रिरंसवः Hariv. 6727. Bhâg. P. 7,1,10. Suçr. 2,153,13. 447,16. Spr. 3881.

रिरक्षा f. ungrammatische Form für रिरक्षिषा; in comp. mit dem obj. Bhâg. P. 4,15,6. 10,63,20. 90,19. — Vgl. रिरक्षु.

रिरक्षिषा (vom desid. von 1. रक्ष्) f. *das Verlangen zu bewachen, zu hüten, zu bewahren, zu schützen, aufrechtzuerhalten*: जगद्रिरक्षिषया Bhâg. P. 5,15,5.

रिरक्षिषु (wie eben) adj. *das Verlangen habend zu bewachen, zu hüten, zu bewahren, zu schützen, aufrechtzuerhalten* MBh. 8,3022. Bhâg. P. 3, 22,5. 10,3,21. प्रजाः 4,17,35.

रिरक्षु adj. dass.: पद्मोत्कृपया रिरक्षुः Bhâg. P. 2,7,32. — Vgl. रिरक्षा.

रिरमयिषु (vom desid. des caus. von रम्) adj. *das Verlangen habend zu ergötzen*, insbes. *geschlechtlich*; mit acc. Mân. Sr. 22 bei Uddâlak. zu Uṇâdis. 1,99.

रिरिषु (vom desid. von 1. रिष्) adj. *verletzen wollend* ṚV. 1,189,6.

रिरी f. *gelbes Messing* H. 1048. — Vgl. रीरी, रीति.

रिरीक्षण m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 7,938. 1055. 8,1007. 1039. 1368. 1406. 1626. 1838. 1986. 2098 u. s. w. Oefters auch रिङ्क्षण gedruckt.

रिवक s. रवक.

रिश् und लिश्, रिशति (हिंसायाम् Dhâtup. 28,126) und लिशति (गतौ Dhâtup. 28,127), लिशति; लेशिष्यति (अल्पीभावे) Dhâtup. 26,70. लिलिशे: अलेशिषि: रेक्ष्यति und लेक्ष्यति, रेष्टा und लेष्टा, लेष्टुम् P. 8,2,36. Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. *rupfen; abreissen*; daher *abweiden*, Spitzform: मूषवर्मं रिशसेनेः ṚV. 6,28,7. रिष्ट *gezerrt, aus der Lage gebracht, zerrissen*: ततो रिष्टं हतं भिषगिच्छति ṚV. 8,112,1. रिष्टं न यामन्नप भूतु दुर्मतिः *ein Bruch am Wagen* 1,131,7. यते रिष्टं यते युक्तमस्ति पेष्टं त आत्मनि *wenn dir ein Knochen im Leibe verrenkt oder gebrochen ist* AV. 4,12,2. Die beiden ersten Stellen liessen sich auch zu रिष् ziehen.

— आ *abweiden*: उषा ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम् ṚV. 10,169,1. यदापोमोषधीनां परिशमारिशामहे 1,187,8. ततो न मनुष्या आपुर्न पशव आलिलिशिरे Çat. Br. 2,4,3,3.

— वि med. *sich auszerren, aus der Lage gezerrt werden, brechen* (am Körper), *zerrissen werden*: यदात्मनि तन्वो मे विरिष्टम् AV. 7,57,1. 8,53,2. यन्मे मांसे तन्वो यद्विलिष्टम् VS. 2,24. 23,14. सप्तदशेन क्रियमाणो व्यलेशिषि । भिषक्यतु मेति TBr. 1,5,44,2. यदे पशस्य क्रूरं यद्विलिष्टं तदन्वाहरति TS. 1,7,8,1. 2,6,5,6. यदा मनीषानो भारमादत्ते वि वै न लिशते *der geht aus den Fugen, bricht zusammen* 6,2,5,1. युक्तः तणुते वा वि वा लिशते Çat. Br. 4,4,3,13. 6,4,3,1. ब्रह्मा विलिष्टं संदधाति *er richtet ein, was aus den Fugen ist*, Kâṭy. Çr. 25,14,26. पशस्य विरिष्टं संदधाति Kâṭh. Up. 4,17,4.

रिशी (von रिश्) f. *die Rupfende, Zerrende*: यत्तःपात्रे रेरिहती रि-

शाम् AV. 11,9,15.

रिशादस् adj. von unbekannter Bed.; im Padap. nicht zerlegt, von den Commentatoren erklärt durch रेशयदारिन् *den Verletzer zerreissend* oder nach der v. l. °दाशिन् (von 1. दश् 4.) Nir. 6, 14. zerlegt in रिश und अदस् (von अद्), रिशा und दस्, रिशद् und अस् u. s. w. Sis. zu den Stellen und Mantra. zu VS. 3, 44. Bez. namentlich der Marut und anderer Götter RV. 1, 26, 4. 39, 4. 64, 5. 77, 4. 186, 8. 5, 60, 7. 61, 18. 64, 1. 66, 1. 67, 2. 71, 1. 7, 59, 9. 66, 7. 8, 8, 17. 27, 4. 10. 30, 2. 72, 5. रिशादसो न मर्या अभिक्वेः 10, 77, 3. श्येनासो न स्वयशसो रिशादसः 5. (सोमः) सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः 9, 69, 10. VS. 3, 44. 33, 72.

रिश्य m. = ऋश्य Taitt. 2, 5, 6.

1. रिष्, रेषति (हिंसायाम्) Dhâtup. 17, 43. रिष्यति (हिंसायाम्) 26, 120, v. l. und रिष्यते; रिषत्, रिषाम, रिषाथन, रिषन्, रेषत्; रेषिता und रेष्टा P. 7, 2, 48. Vop. 8, 79. रिष्ट (vgl. अ°). 1) *verkehrt werden, Schaden nehmen; versagen, misslingen, zu Schanden werden:* न रिष्येत्त्वावतः सखा RV. 1, 91, 3. सख्ये मा रिषाम वयं तवेन्द्र 94, 1. 102, 21. यद्धो युक्तो न रिष्याः 10, 51, 7. नू चित्स धेषते जनो न रेषत् 7, 20, 6. 33, 4. न रिष्यति सर्वनम् 5, 44, 9. पृतन्यन्तं न रिष्यति 6, 54, 3. 8, 92, 13. 10, 48, 5. AV. 2, 15, 1. 11, 1, 25. 13, 2, 37. मा सु भित्था मा सु रिषः VS. 11, 68. Ait. Br. 1, 13. Çat. Br. 6, 1, 3, 1. 6, 2, 3. 9, 3, 4, 13. 14, 6, 9, 28. Bṛh. Âr. Up. 3, 9, 26. यद्वैकपादब्रह्मवो वैकेन यक्रेण वर्तमानो रिष्यत्येवमस्य यज्ञो रिष्यति Kâṭh. Up. 4, 16, 3. यद्वै यज्ञस्य रिष्टं यदशान्तम् Çat. Br. 12, 4, 2, 3. Çiraṇ. Gṛhj. 3, 7. Kauç. 125. रिषे infin. RV. 5, 41, 16. 7, 34, 17. पासि मर्त्यं रिषः 1, 41, 2. 98, 2. 2, 26, 4. 5, 63, 2. 2, 35, 6. पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि (VS. Pâṭh. 3, 27) VS. 3, 48. Liesse sich meistens auch concret fassen. In der nachvedischen Literatur erscheint das med. रिष्यते, im Bhâg. P. aber auch रिष्यति. तेन (मार्गेण) गच्छन्न रिष्यते M. 4, 178. MBh. 13, 7162. fg. तस्येहार्थो न रिष्यते 5, 1770. लोके बुद्धिप्रकाशेन लोकमार्गो न रिष्यते 12, 12174. तस्यापुर्न रिष्यते 13, 4992. 5024. fg. किं वा न रिष्यते कामो धर्मो वार्थेन संयुतः Bhâg. P. 4, 8, 64. न रिष्यते ज्ञातु समुद्यमः क्वचित् 8, 12, 46. संवत्सरस्यापि भूतानां कृतः किल न रिष्यति 4, 27, 24. 7, 3, 38. चतुर्वर्षस्य न रिष्यति 8, 1, 11. 16, 12. 10, 84, 32. — 2) *beschädigen:* पाहि रीषत (über die Dehnung s. RV. Pâṭh. 9, 24. 25. 29. AV. Pâṭh. 4, 36) उत वा शिवो नः RV. 1, 36, 14. 189, 3. 2, 30, 9. 5, 3, 12. 7, 15, 13. प्रति ष्म रिषतो दह 1, 12, 5. 8, 44, 11. या मा न रिष्येत् 48, 10. येन ज्ञायो न रिष्यति AV. 14, 1, 30. रेष्टारं रेष्टुम् Bhaṭṭ. 9, 31. Hierher zieht Benfey MBh. 3, 13141, wo aber gelesen wird कल्किमरिष्यति मरुतः. — 3) रिष्ट n. = अरिष्ट (urspr. *das Unfehlbare*) *Unheil, Unglück:* तत्र हि रिष्टानामशेषाणां समाप्तयः Mârk. P. 50, 39. राहुरिष्टशान्ति, केतुरिष्टशान्ति Verz. d. Oxf. H. 96, b, 44. रिष्टाध्याय (die lithogr. Ausg. अरिष्टा°) 328, b, No. 779. *ungünstiges Vorzeichen* Suçr. 1, 102, 19. = अप्रभ AK. 3, 4, 9, 38. Med. ṇ. 26. Halâj. 5, 18. = अभाव AK. Med. = पाप Halâj. = क्षेम AK. H. an. 2, 97. = अशुभ H. an. अरिष्ट *unheilvoll* auch Bhâg. P. 1, 14, 3.

— caus. रेषयति, रीरिषत्, रीरिषत, रि° und रीरिषीष्ट RV. Pâṭh. 9, 25. 27. fg. *verkehren, Schaden thun, beschädigen, versagen —, fehlen machen:* न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्तं रेषणा रेषयन्ति RV. 1, 168, 8. 3, 53, 20. 7, 46, 3. मा नस्तस्माद्देनसो देव रीरिषः 89, 3. मा नः प्रजां रीरिषत् TBr. 3, 1, 2, 2. मा रीरिषो मामकैस्तावकैस्तेन (so die ed. Bomb.) MBh. 7, 9469. स्वयं रिषुस्तन्वं रीरिषीष्ट RV. 6, 51, 7. स्वैः प एवैं रिरिषोष्ट दुर्गनैः *sich Schaden thun* 8, 18, 12. 1, 114, 7. 8. VS. 16, 15. समस्मै धा देधामि प्रजया रेषयेनान् AV. 11, 1, 20. मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः *bringt uns nicht, mittendrinn, um Erreichung unserer (vollen) Lebenszeit* RV. 1, 89, 9. रीरिषीष्ट mit der intransitiven Bed. *misslingen, zu Schanden werden* in der Stelle: (मम) मा रीरिषीष्ट निगमस्य गिरा विसर्गः Bhâg. P. 3, 9, 24.

— desid. *beschädigen wollen:* प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिनाति RV. 7, 36, 4. यो नः कश्चिद्रिरिक्षति रक्षस्वेन मर्त्यः 8, 18, 2. — Vgl. रिरिक्षु.

— अनु *nach einem* (acc.) *Andern verkehrt werden, — Schaden nehmen:* यज्ञं रिष्यन्तं यजमानोऽनुरिष्यति Kâṭh. Up. 4, 16, 3.

— अभि *misslingen:* घोदनः) यो लोकानां विधर्तिर्नाभिरेषात् AV. 4, 25, 1.

— आ caus. *schädigen:* मास्मां भुजमा रीरिषो नः RV. 1, 104, 6.

2. रिष् (= 1. रिष्) f. *Schaden* oder concret *Beschädiger* s. u. 1. रिष् 1).

रिष (von रिष्) adj. in नघा°.

रिषण्य्, रिषण्यति P. 7, 4, 36. = रिष् *fehlen, versagen, unzuverlässig werden, fallere:* यद्देवेन मनसा यो रिषण्यति शासमुग्रो मन्यमानो जिघांसति RV. 2, 23, 12. अधी ष्वमिन्द्र मा रिषण्यः *lass es nicht fehlen* 2, 11, 1. यद्वो याकि द्रुत्यं मा रिषण्यः 7, 9, 3. मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत *machet keinen Fehler* 8, 1, 1. 20, 1. पिबा पिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यः 10, 22, 15. Hiernach ist unter अरिषण्य und अरिषण्यत् zu verbessern: *nicht fehlend, sicher, zuverlässig.*

रिषण्यु adj. *unzuverlässig, trügerisch* RV. 1, 148, 5.

रिषि m. = ऋषि Comm. zu AK. 2, 7, 42.

रिषीक, रिषीकाणामयनम् als Beiw. Çiva's Hariv. 7425. रिषीणामयनम् die neuere Ausg.; रिषीकारणां (sic) क्रिमाणां कालादीनाम् Nîlak.

रिष्ट 1) adj. und n. s. u. रिष्, 1. रिष्, अरिष्ट und मरुत्°. — 2) m. *a*) = 2. रिष्टि *Schwert* H. an. 2, 97. Med. ṇ. 26. — *b*) *Sapindus detergens* Roxb. (केनिल) Med. — *c*) N. pr. eines Fürsten MBh. 2, 326. eines Daitja Hariv. 3112. eines Sohnes eines Manu Mârk. P. 111, 4. — 3) f. आ N. pr. der Mutter der Apsaras Mârk. P. 104, 7.

रिष्टक m. *Sapindus detergens* Roxb. Çabdar. im ÇKDr.

रिष्टतात adj. = तेमेकार H. 489. Halâj. 2, 185.

1. रिष्टि (von 1. रिष्) f. *Schaden; das Fehlschlagen;* = अशुभ Med. ṇ. 26. नास्तिर्न रिष्टिः TBr. 2, 1, 11, 1. पक्षस्य Ait. Br. 5, 32. तस्य कृ न कांचन रिष्टिर्भवति *dem misslingt Nichts* 7, 20. Çat. Br. 12, 4, 4, 3. 4, 6. मरुता रिष्टिमूचकाः Sâṁkhâjan. im ÇKDr. u. विलग्न. इषु° *Fehlgehen des Pfeils* als N. eines Sâman Kâṭj. Ça. 22, 10, 23. अरिष्टामय *eine nicht durch äussere Verletzung entstandene Krankheit* 20, 3, 16.

2. रिष्टि m. = ऋष्टि *Schwert* AK. 2, 8, 2, 57. H. 782. Med. ṇ. 26. Halâj. 2, 317. = शस्त्रभेद Çabdar. im ÇKDr.

रिष्टीय् (von रिष्ट). °यति = रिषण्य् P. 7, 4, 36, Sch.

रिष्फ n. = रिःफ Ind. St. 2, 276. 281.

रिष्य m. = ऋष्य, ऋश्य Çabdar. im ÇKDr.

रिष्यमूक m. = ऋष्यमूक Varâh. Bṛh. S. 14, 12.

रिह (von रिष्) Uṇâdis. 1, 152. adj. = रिष्ट Ujjval.

रिक्, रिक्ते (अर्चतिकर्मन्) Naigh. 3, 14. 19. रेळिक्, रिक्षे 3. pl., रिक्षाणा (रिक्षाण VS. 2, 16); *lecken, belecken; liebkosen:* उत नः ई मतयो ऽश्वयोगाः

शिग्रु न गावस्तरुणं रिरिक्षति ṚV. 1, 166, 7. 146, 2. 2, 35, 12. गर्वेव शुभे मातरा रिरिक्वणे 3, 33, 1. 41, 5. 55, 12. 8, 20, 21. क्रतुं रिरिक्षति मधुनाभ्यञ्जते 9, 86, 43. 46. 97, 57. 100, 1. 7. रिरिक्षाणे रिप उपस्थे अक्तः 10, 79, 3. 114, 4. शिग्रु न विप्रा मतिभी रिरिक्षति 123, 1. तर्णारितृतवत्पयो विप्रा रिरिक्षति धीतिभिः: *ablecken* 1, 22, 14. AV. 5, 1, 4. Schol. zu Pāṇ. Bn. 6, 3, 14. रिक्‌. रेरिक्ति (वधे) Kavikalpadrumā im ÇKDa. — Vgl. अरीळ्‌क and लिक्‌.

— intens. *wiederholt belecken, küssen:* रेरिक्त्, रेरिक्ते, रेरिक्राणा ṚV. 3, 55, 14. 1, 140, 9. 4, 38, 6. 6, 27, 7. रेरिक्ते पुवतिं विश्पतिः सन् 10, 4, 4. तामा रेरिक्तीरुधः समञ्जन् 45, 4. अक्तःपात्र रेरिक्तो रिशाम् AV. 11, 9, 15. पर्जन्यो रेरिक्षमाणो वीरुधः समनक्ति Çat. Bn. 6, 7, 3, 2. — Vgl. रेरिक्षाण.

— सा *belecken (benagen):* योनिं यो अक्तरेरिळ्‌के ṚV. 10, 162, 4. — Vgl. आरेरुण.

— परि dass.: अधीवास परि मातू रिरिक्वर्क ṚV. 1, 140, 9.

— प्रति dass.: तं गन्धर्वस्य प्रत्यास्रा रिरिक्ति AV. 7, 73, 3.

— सम् *gemeinsam belecken:* वत्समिव मातरा संरिरिक्षाणे ṚV. 3, 33, 3.

रिरिक्‌ adv. *wenig* Naigh. 3, 2, v. l.

रिरिक्षाण m. = स्तेन Naigh. 3, 24.

रिरिक्षण s. रिल्‌क्षण.

रिरिक्वन्‌ m. = रिरिक्षाण Naigh. 3, 24, v. l. — Vgl. रिम्बन्‌.

1. री Verbalwurzel s. u. 1. रि.

2. री = रै in श्रधरी.

3. री f. s. u. रु 2) *b*).

रीड्या f. = घृणा Vāsaṇ. im ÇKDa. = लज्जा Kālikā ebend. — Vgl. रीढा.

रीढा f. und रीढाकारञ्ज m. *eine Karañja-Species* Rāǵān. im ÇKDa.

रीढक m. *Rückgrat* H. 601.

रीढा f. *Geringachtung* AK. 1, 1, 2, 23. H. 1479. Hall. 4, 30. तपस्विरीढाकारी Pāṇḍavāśvam. 5, 67. सहीढं पुनरग्याद् Kāçikā. 76, 49 (beide Stellen bei Aufrecht, Hall. Ind.). — Vgl. अवलीढा.

रीति (von 1. री) f. 1) *Strom; Lauf, Strich, Linie:* मरुतेव रीतिः शर्वसासरत्पृथक्‌ ṚV. 2, 24, 14. वातेवाजुर्या नभेव रीतिरन्ती इव चतुषा यातमर्वाक्‌ 39, 5. तामस्य रीतिं पशोरिव प्रत्यनीकमाप्नुयम् 5, 48, 4. दिवो वृष्टिरीड्या रीतिरापाम् 6, 13, 1. 9, 108, 10. रीतीर्निर्वर्तयामास काञ्चनाञ्जनराजतीः *Ströme —, Striche von Gold* u. s. w. Harīv. 3931 = 5527. कनकरीतिभिः 8361. रीतीभूत *in einer Reihe stehend* Pāṇ. Gaṇ. 3, 10. दक्षिणोत्तररीति Schol. zu Kāç. Ça. 916, 1 v. u. = स्यन्द AK. 3, 4, 24, 71. Med. t. 50 (hier fälschlich स्यन्द gedr.). = श्रवण H. an. 2, 190. = सीमन्‌ *Grenze* H. an. — 2) (*Lauf der Dinge*), *Art, Weise;* = प्रचार AK. Med. = रूप, लक्षण u. s. w. H. 1376. = गति H. an. सर्वत्रैषा विस्तरा रीतिः Spr. 3389. इति रीतिः पुरातनी Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 23. निशात. क्लिष्टचक्राक्षरीतिरुग्रो रसक्रमः Kāvyāl. 14, 62. अनया रीत्या *auf diese Weise* Vet. in LA. (III) 2, 6. अस्मदुक्तया रीत्या Sarvadarçanas. 102, 20. उक्तरीत्या Schol. zu P. 1, 1, 69. zu Kap. 1, 71. 153. पूर्वोक्तरीत्या Nīlak. 169. वक्ष्यमाणरीत्या Sāh. D. 23, 12. — 3) *Stil, Diction* H. an. Sāh. D. 3. 624. fgg. 4, 14. 6, 12. fg. Prāt̤ipad. 11, *a*, 9. 67, *a*, 9. Verz. d. Oxf. H. 199, *a*, 4. 206, *b* und 207, *a*, No. 487. 208, *a*, No. 489. 210, *a*, 1. Es werden *drei, vier* und auch *sechs Stile* angenommen: वैदर्भी, गौडी und पाञ्चाली; dieselben und लाटिका; die vorhergehenden vier und überdies पाञ्चालिका und मागधी. — 4) *Glockengut, gelbes Messing* AK. 2, 9, 97. Trik. 3, 3, 180. H. 1048. H. an. Med. Hall. 2, 13. Kaṭuk. 24, 178. 193. Rāǵa-Tan. 4, 203. 6, 172. 4te Rāǵa-Tan. 12. *Eisenrost* Trik. H. an. Med. = दाघस्वर्णादिमल Dhan. im ÇKDa.; vgl. ब्रह्म°, रिरी, रीरी, रैत्य.

रीतिक 1) n. *Vitriol als Kollyrium* Rāǵān. im ÇKDa. — 2) f. या = रीति *Glockengut, gelbes Messing* Vaṇik. Bṛn. S. 57, 8. *Vitriol als Kollyrium* Çāṅgad. im ÇKDa.

रीतिपुष्प n. *Vitriol als Kollyrium* AK. 2, 9, 103. H. 1054.

रीत्यप्‌ adj. *Wasser strömend:* वृष्टिद्यावा रीत्यापा Mitra und Varuṇa ṚV. 5, 68, 5. Çat. Bn. 1, 9, 1, 6. (इन्दवः) वृष्टिद्यावो रीत्यापः (voc.) ṚV. 9, 106, 9.

रीर m. Bein. Çiva's Gaṇḍn. in Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 6.

रीरी f. = रिरी, रीति *Glockengut, gelbes Messing* H. 1048.

रीव्‌, रीवति und °ते (धादानमेवरणयोः) Dhātup. 21, 15, v. l. — Vgl. चीव्‌.

1. रु, रौति Naigh. 3, 14 (अर्चतिकर्मन्‌). Dhātup. 24, 24 (शब्दे) und रवीति P. 7, 3, 95. Vop. 9, 53. vod. रुर्वति, रुर्वत्‌ 3. sg.; partic. रुर्वत्‌ (रवत्‌ MBn. 1, 6293), रवमाण (R. 7, 34, 23), रवाण (Āçv. Ça. 2, 18, 10); रुराव, रुरुविव Vop. 9, 53. रुरुविरे; धरावीत्‌, धराविषुम्‌, धरवत्तः रविष्यति und रविता Kāç. 1 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. auch रोता Vop. 9, 53. *brüllen, heulen, laut schreien, toben, quaken, summen, dröhnen:* रुवद्भिः ṚV. 1, 173, 3. 10, 91, 6. रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया 9, 70, 7. 71, 9. 5, 42, 14. मा रविष्ट नेहस्तोके तनये रविता रवत्‌ Ait. Br. 2, 7. ते रोत्याप्यमाना रुरुविरे 7, 27. TBr. 1, 5, 9, 9. Çat. Bn. 2, 3, 3, 18. Kātj. 30, 1. Pāṇ. Bn. 7, 3, 11. Liṅ. 5, 1, 14. अक्लेशेष्टे च रुवति M. 4, 115. रासभारावसदृशं रुराव च ननाद च MBn. 1, 4508. गोमायुरेष सेनाया रुवन्मध्ये प्रधावति 4, 1462. अशिवं चारुवद्भिरुवाः Kāṭuk. 116, 3. Bhaṭṭ. 12, 72. 14, 21. तरुलः — रवसं भैरवं रवम्‌ MBn. 1, 6293. रुवन्नग्र मरुत्वान्‌ (रातमाः) 3, 11716. R. 4, 9, 64. 7, 7, 41. 34, 23. उद्धावति रौति नृत्यति Bulg. P. 7, 7, 34. इत्यौत्तानः 4, 13, 40. Bhaṭṭ. 3, 17. न खल्वरुमिदं शून्ये रौमि किं न शृणोषि मे MBn. 1, 3022. शिखी रौति त्रिमात्रम्‌ Çikshā 49. रौति कुक्कुटः Vaṇik. Bṛn. S. 63, 1. 86, 62. 88, 34. 89, 4. 90, 13 (रुवत्ती). 91, 1. 93, 16. 20. 96, 3. fgg. एते रुवन्ति मधुरं सारसा जलचारिणः MBn. 1, 5898. मणडूकेषु रुवत्सु 12, 5400. रुवन्ति रावान्मधुरान्पटूंश्च 1, 2655. कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम्‌ (मशकः, खलः) Spr. 1884. *mit Geschrei* u. s. w. *erfüllen, das Geschrei richten gegen:* पुंस्कोकिलरुताः (वनाः) MBn. 3, 1335. सर्वपक्षिरुतं वनम्‌ Harīv. 3543. R. 3, 7, 3. 4, 41, 11. विहंगमरुता (संध्या) Vaṇik. Bṛn. S. 30, 7. 34, 8. 39, 1. 86, 72. Kām. Nītis. 16, 25. रुत n. *Gebrüll, Geschrei, Gesang* (der Vögel) u. s. w. AK. 1, 1, 6, 4. H. 1407. रुते क्रौञ्चानि Kāç. Ça. 5, 6, 38. गोमायुरुतानि Spr. 1844. कुञ्जा रुतैर्गरुमनादयत्‌ R. 2, 78, 12. Suçr. 2, 281, 19. वसते शीतशीतेन कोकिलेन वने रुतम्‌ । अन्तर्वनगताः पद्माः श्रोतुकामा इवोत्थिताः ॥ Spr. 2739. पुंस्कोकिलानाम्‌ Çik. 131. परापुष्ट° MBn. 4, 886. R. Gorr. 2, 56, 13. °विहंगसारसाः 3, 22, 33. द्विजानाम्‌ 2, 98, 16. Brahma-P. in LA. (III) 31, 15. हंस° Suçr. 1, 107, 11. Ṛt. 1, 5. Vaṇik. Bṛn. S. 3, 39. 47, 28. 86, 6. 41. fg. 88, 10. 26. 34. 37. 89, 15. Verz. d. B. H. H. No. 896. fg. रुतानि षट्पदानाम्‌ Bhaṭṭ. 2, 10. Çic. 9, 34. रुतज्ञः सर्वसत्त्वानाम्‌ so v. a. *die Sprache aller Thiere kennend* MBn. 12, 4269. 13, 5206. Harīv. 1234. R. 2, 35, 17. कस्तिरुताभिज्ञ Kāṭuk. 13, 17. रुतज्ञा अपि पक्षिणाम्‌ 101, 49. विद्यो च

तुभ्यं दास्यामि सर्वभूतरुतानि ते । एषाभिव्यक्तिमेष्यन्ति Mārk. P. 64, 3. सर्वत्रसूनो रुतवेत्ता Verz. d. Oxf. H. 40, *a*, 26. 230, *a*, 9. रुतज्ञ *Augur* Vasiṅ. Bṛh. S. 96, 1. Zu पर्जन्यनादरुतया Bhāg. P. 4, 30, 7 ergänzt der Comm. वाचा und erklärt रुत durch *Klang*. — Vgl. गरुडरुत, गोरुत, तुरीरवत्, रव, राव u. s. w.

— caus. रावयति, घरीरवत् P. 7, 4, 30, Sch. *brüllen lassen*, zum *Schreien bringen* Āçv. Çr. 2, 18, 12. रावयामास लोकान्यत्तस्मादावणो उच्यते MBh. 3, 15928. यस्माल्लोकत्रयं चैतद्रावितं भयमागतम् । तस्माद्वै रावणो नाम नाम्ना राजन्भविष्यसि ॥ R. 7, 16, 37. शङ्खरावित u. *Laut, Schall* 7, 12. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen*: शान्तपक्षिमृगरावितां दिशः Vasiṅ. Bṛh. S. 24, 12. die Form घरूरुवत् (वर्गांसि) Bhāg. P. 10, 70, 2 in der Bed. des intens.

— desid. रुरुषति P. 7, 2, 12, Sch.

— desid. vom caus. रिरावयिषति P. 7, 4, 30, Sch.

— intens. रौरवीति P. 7, 3, 94, Sch. रोरुक्ति Comm. zu Āçv. Çr. 2, 18, 12. रौरुवत् partic.: रोरुयते, रोरुयति *heftig brüllen, — schreien, — tosen, — dröhnen*: घर्षेव पत्नीरुर्ध्येति रोरुवत् ṚV. 1, 140, 6. 3, 55, 17. 4, 38, 3. 5, 30, 11. 7, 101, 1. 10, 8, 2. 28, 2. 73, 3. TBr. 3, 1, 4, 3. रोरुवाण 10. घोरारवीद्वृषो घस्य वक्षः ṚV. 2, 11, 10. वृषा वज्र्यं रोरवीत् 8, 6, 10. ein Fluss 5, 61, 8. Soma 9, 65, 19. 74, 5. AV. 11, 10, 26. रोरवीति च वानरः MBh. 4, 1633. रोरवीषि करुणं वत चक्रवाकि Bhāg. P. 10, 90, 16. सो ऽहं शरणमन्येमि रोरवीमि च दुःखितो MBh. 1, 7806. 2, 3208. रोरुयते घा Vasiṅ. Bṛh. S. 89, 8. रोरुयते पुत्रवधाभितप्ता MBh. 11, 616. Bhāg. P. 9, 6, 31. स ज्ञानमेत्रयस्य धातृभिरिरुतो रोरुयमाणो मातुः समीपमुपागच्छत् MBh. 1, 663. fg. 6112. 7752. 8446. 2, 2261. Harīv. 5781. Vasiṅ. Bṛh. S. 19, 19. Verz. d. Oxf. H. 97, *a*, No. 151. पुष्पाणेवोपधयश्च रोरुयति सरुग्रशः MBh. 9, 2914. Bhāg. P. 3, 31, 24. किमेवं भृशदुःखितो रोरुयेताम् (रोरुग्येताम् v. l.) MBh. 1, 6182.

— घनु *Jmdes* (acc.) *Geschrei u. s. w. nachahmen*: चकोरचक्रीचक्राह्वभारद्वाजांश्च बर्हिणः । घनुरोति स्म Bhāg. P. 10, 15, 13. *Jmdes* (acc.) *Geschrei u. s. w. erwiedern* Vasiṅ. Bṛh. S. 90, 7. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen, ertönen machen*: मधुकरानुरुत (उपवन) 24, 1.

— घभि *anbrüllen, anheulen, anschreien*: घभि रुव AV. 5, 20, 3. शिवैषोग्रस्तमादित्यमभिरौति Bhāg. P. 4, 14, 12. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen, ertönen machen*: सारसाभिरुता (नदी) MBh. 3, 1335. 11595. 14861. 7, 6670. Harīv. 12671. R. 2, 49, 11. R. Gorr. 2, 46, 12. 96, 6. 3, 21, 13. 6, 15, 11. 12. Mārk. P. 61, 21 (wo किंनराभिरुतानि zu lesen ist). शार्दूलशब्दाभिरुत Harīv. 3391. मयूरकोकाभिरुत Bhāg. P. 4, 6, 12. भेरीमृदङ्गाभिरुत R. 5, 12, 23. घभिरुत u. *Geschrei, Gesang*: भैरवाभिरुते युद्धे R. 6, 70, 29. कोकिलाभिरुत 1, 9, 15 (17 Schl.).

— घा *her —, hinbrüllen, — dröhnen* ṚV. 1, 10, 4. *anbrüllen*: तस्करानारुवत्यः (गावः) Vasiṅ. Bṛh. S. 92, 1. *aufschreien*: वीरो राघवावारुताम् Bhaṭṭ. 17, 24. घारवेत् Saddh. P. 4, 15, 5. घारुत n. *Geschrei*: वकुपतिमृगारुतैः R. Gorr. 2, 62, 14. 5, 9, 59. — Vgl. घारव, घाराव, घारविन्. — intens.: घा रोदसी वृषभो रोरवीति ṚV. 6, 73, 1. 10, 8, 1.

— उप s. उपरव, उपराव.

— प्रति *Jmdes* (acc.) *Geschrei erwiedern*: °रौति Vasiṅ. Bṛh. S. 88, 87. घन्यप्रतिरुता (शिवा) 90, 7. — Vgl. प्रतिरव.

— वि *heulen, laut schreien* u. s. w.: घोरार्ज्ञिक्या नादान्विरुवति MBh. 3, 16823. दक्षिणा च विरौति शिवा Kathās. 124, 108. तारस्वरेण विरोतुमारब्धवान् (शृगालः) Pañcat. 64, 4. उच्चैर्विरुवन्मृगः Vasiṅ. Bṛh. S. 30, 3. बलिभुग्विरौति 47, 28. 53, 106. 86, 38. 95, 27. Mṛicch. 144, 2. Vikr. 102. Kathās. 62, 74. विरौमि भृशदुःखिता MBh. 3, 336. 4, 770. विरुवतो मरुद्गावम् 7, 1323. Ṛt. 6, 26. Spr. 3813. Bhaṭṭ. 5, 54. विरौमि भ्रूत्ये 18, 29. विरवेत् Saddh. P. 4, 15, 5. कर्णे कलं ननु विरौति शनैर्विचित्रम् (मशकः, खलः) *summen* Spr. 1884, v. l. न म (माणः) विरौति *klingt* 595. जीर्णात्वाद्रुरुस्य विरौति कपाटः *knarrt* Mṛicch. 48, 16. *anschreien, anrufen*: विरुराव च लक्ष्मणम् Bhaṭṭ. 14, 62. शान्तः (शकुनः) पञ्चमदीप्तेन विरुतः Vasiṅ. Bṛh. S. 86, 71. दक्षिणादिक्स्थैर्विरुता संध्या 30, 5. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen, ertönen machen*: दिक्पुंस्कोकिलादिभिश्चान्यैः । विरुते वनोपकण्ठे 48, 7. मयूरविरुतानि (घरण्यानि) R. 3, 12, 15. घरिभिर्विरुतगा वनमालया Bhāg. P. 3, 15, 10. विरुत n. *Geheul, Geschrei, Gesumme* u. s. w.: गोमायु° M. 4, 115. R. 2, 33, 18. वर्हिणाम् Harīv. 4383. H. Gorr. 2, 43, 34. हंसविरुतैः Ṛt. 3, 8. पुंस्कोकिलस्य 6, 33. Raghu. 9, 42. Çik. 33. घा मरणादपि विरुतं कुर्वाणाः काकाः) स्पर्धया सह मयूरैः Spr. 363. मधुप° *Gesumme* 1719. Kumāras. 4, 13. किल्किला विरुतैर्दिशं च हृदयेव समन्ततः *Gestirpe* R. 2, 96, 11 (103, 10 Gorr.). विरुतैर्मरुताम् *Geheul der Winde* Nalod. 3, 15. जलप्रपातविरुतैः *Getöse* R. 3, 38, 40. — caus. *laut schreien*: न च रक्षो विरावयेत् M. 4, 64. *mit Geschrei erfüllen, ertönen machen*: जयशब्दविरावितां दिशम् adv. Vasiṅ. Bṛh. S. 19, 17.

— सम् *gemeinschaftlich schreien*: समैरादितैरा ज्ञनः Bhaṭṭ. 17, 71.

2. रु (= 1. रु) m. *Laut* Ekākshar. im ÇKDr. *fear, alarm; war, battle* Wilson nach Çabdārthak.

3. रु, रौति (गतिरेषणयोः, वधे गत्याम्, रोषण st. रेषण, भाषणे) Dhātup. 22, 68. रुरुविषे, घरविष्ट, घरोष्ट Vop. 8, 118. zu belegen nur रुरुषे AV. 19, 29, 3 (nach Hdschrr.), रावियम् und partic. रुतै; *zerschlagen, zerschmettern*: शिरो न्वस्य रावियम् ṚV. 10, 86, 5. भिषजो रुतस्य चित् 39, 3. रुतं भिषगिच्छति 9, 112, 1. AV. 5, 5, 6. VS. 16, 49. Hierher ziehen wir auch घरुणात् (vielleicht nur Fehler für घरुणात्) in der Stelle: तत्पूषा प्राश्यं दतौ ऽरुणात्तस्मात्पूषा प्रविष्टभागो ऽदन्तको हि *zerschlug die Zähne* TS. 2, 6, 8, 3. Vgl. घरुतक्नु.

— intens.: रोरुवद्मनो ṚV. 1, 34, 1. 5.

4. रु (= 3. रु) m. *cutting, dividing* Wilson nach Çabdārthak.

रुम्, रुंशति und रुंशयति (भाषायाम्) Dhātup. 33, 115. Vgl. रुम्, रुष्.

रुक adj. *freigebig* Çabdam. im ÇKDr.

रुक्काम (2. रुच् + काम) adj. *nach Glanz begierig* TS. 2, 2, 3, 3. Kāṭh. 13, 3. 34, 3.

रुकप्रतिक्रिया (2. रुच् + प्र°) f. *Behandlung einer Krankheit, ärztliche Praxis* AK. 2, 6, 3, 1. H. 473.

रुकं (von 1. रुच्) Uṇādis. 1, 145. 1) m. *Schmuck von Gold* (vielleicht auch von *Edelsteinen*); in den Brāhmaṇa *Goldscheibe, Goldplättchen zum Anhängen*: वर्तास्सु रुकाः ṚV. 1, 166, 10. गणं पिष्ट रुकेभिरञ्जिभिः 5, 56, 1. वि धावते रुकामो घधि बाकुर्यु 8, 20, 11. म्रिये रुको न रोचते 4, 10, 3. 5, 53, 4. वि धावते रवेधा । दिवि रुक्म इवोपरि 61, 12. 6, 51, 1. 7, 57, 2. दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति *die Sonne als goldene Scheibe* 63, 4. 10, 45, 8 1, 88 2. घावो नामी रुको यत्तर्वि भाति 96, 5. रुकं न

दर्शतं निखातम् 117, 8. VS. 13, 10. TS. 2, 3, 2, 3. 5, 1, 10, 3. TBa. 1, 8, 2, 3. 3, 1. तदस्मै रुक्मं कृत्वा प्रत्यमुञ्चत् 2, 2, 10, 3. Çat. Ba. 3, 3, 4, 20. 5, 2, 5, 21. शतविततम् 4, 4, 13. 6, 7, 4, 1. fgg. °पुरुष Ishṭakâ 1, 2, 20. 10, 4, 2, 13. सुवर्णरज्जवो रुक्मो 12, 8, 2, 11. Kâṭh. 11, 1. 4. Kâṭy. Ça. 15, 8, 24. 16, 3, 1. 19, 4, 10. °ललाटो ऽश्वः 22, 2, 11. Âçv. Ça. 2, 4, 16. neutr. AV. 2, 5, 25. fg. vielleicht aus dem späteren Gebrauch fehlerhaft in den Text gebracht. — 2) m. Siddh. K. 249, *a*, 13. *Gold* Naigh. 1, 12. AK. 2, 9, 96. Trik. 3, 3, 302. H. 1043. an. 2, 335. Med. m. 28. Halây. 2, 18. Vîçva bei Uṇâdiṣ. 1, 115. Ratnam. 87. °स्तेय M. 11, 57. MBh. 2, 1256. रुक्मस्य च गर्भयोषा (गङ्गा) so v. a. *Gold in sich bergend* (u. गर्भयोषा falsch aufgefasst) 13, 1846. 14, 1686. Harîv. 3807. 6580. R. 2, 70, 20. Bhâg. P. 3, 14, 21. °पुङ्खैः शरैः MBh. 1, 4562. R. 6, 34, 24. °सार Suçr. 1, 328, 18. °वर्ण Mudg. Up. 3, 1, 3 = Maitrâyaṇ. 6, 18. रुक्माभ M. 12, 122. °तुल्यप्रभ Kâm. Nîtis. 14, 31. °संनिभा Harîv. 6717. *Eisen* लोक् Trik. H. an. Med. und Vîçva. — 3) m. wie alle Wörter für *Gold* Bez. *der Mesua Roxburghii Wight.* (vgl. AK. 2, 4, 2, 45) und *des Stechapfels* (vgl. AK. 2, 4, 2, 58) ÇKDn. — 4) m. N. pr. eines Sohnes des Rukaka Bhâg. P. 9, 23, 33. — Vgl. अधि°, पयु°, सु°.

रुक्मकवच m. N. pr. eines Enkels des Uçanas Harîv. 1977. fgg. VP. 420.

रुक्मकारक m. *Goldarbeiter* AK. 2, 10, 8.

रुक्मकेश m. N. pr. eines Sohnes des Bhîshmaka Bhâg. P. 10, 52, 22.

रुक्मत् (von 2. रुच्) adj. *glänzend*, Bein. Agni's TS. 2, 2, 2, 3. — Vgl. वि°.

रुक्मपाशी m. *die Schnur, an welcher die goldenen Anhängsel getragen werden*, Çat. Ba. 6, 7, 4, 7. 27. 3, 8. 7, 2, 4, 15. Kâṭy. Ça. 17, 2, 4.

रुक्मपुर n. *Goldstadt*, Bez. der von Garuḍa bewohnten Stadt, Paṇḍar. 84, 7.

रुक्मप्रस्तरण adj. *einen mit Goldschmuck verzierten Ueberwurf habend* AV. 14, 2, 30.

रुक्मबाहु m. N. pr. eines Sohnes des Bhîshmaka Bhâg. P. 10, 52, 22.

रुक्ममय (von रुक्म) adj. *aus Gold verfertigt, golden* Harîv. 7903. रूप्यरुक्ममयाणि *silbern und golden* MBh. 13, 3247. 3508.

रुक्मांगदिन् m. N. pr. eines Sohnes des Bhîshmaka Bhâg. P. 10, 52, 22.

1. रुक्मरथ m. *ein goldener Wagen, der Wagen* Rukmaratha's d. i. Droṇa's MBh. 7, 279.

2. रुक्मरथ adj. *einen goldenen Wagen habend;* m. Bein. Droṇa's MBh. 1, 6994. 4, 1824. 5, 784. 7, 253. 256. N. pr. eines Sohnes des Çalja 1814. 1816. des Mahant Harîv. 1078. fg. des Bhîshmaka Bhâg. P. 10, 52, 22. pl.: एते रुक्मरथा नाम राजपुत्राः MBh. 7, 4310.

रुक्मवक्षस् adj. *dessen Brust mit Goldbehängen geschmückt ist:* die Marut RV. 2, 34, 2. 3. 5, 55, 1. 57, 5. 8, 20, 22. 10, 78, 2. AV. 6, 22, 2.

रुक्मवत् (von रुक्म) 1) adj. *mit Gold geschmückt.* — 2) m. N. pr. = रुक्मिन् Harîv. 3948. — 3) f. °वती *a) ein best. Metrum, 4 Mal* — ⏑ ⏑ — — ⏑ ⏑ — — Colebr. Misc. Ess. II, 139 (V, 6); Ind. St. 8, 369. — *b)* N. pr. einer Enkelin Rukmin's und Gattin Aniruddha's Harîv. 6717, wo mit der neueren Ausg. भीमतीं st. रुक्मिणीं zu lesen ist.

रुक्मवारण adj. *einen goldenen Wagen habend;* m. Bein. Droṇa's MBh. 7, 3943. — Vgl. 2. रुक्मरथ.

रुक्माङ्गद adj. *ein goldenes Geschmeide am Oberarm tragend;* m. N. pr. verschiedener Fürsten MBh. 1, 6994. Verz. d. Oxf. H. 83, *b*, 24. 133, *b*, 38. Hit. 39, 4.

रुक्मिन् m. N. pr. = रुक्मिन्, रुक्मिन् aus metrischen Rücksichten st. रुक्मिणम् Harîv. 8100. 8111.

रुक्मिन्[1] (von रुक्म) 1) adj. *Goldschmuck tragend, damit verziert:* रथ RV. 1, 66, 6. Rosse 3, 15, 5. Çat. Ba. 13, 3, 4, 2. Ait. Ba. 8, 21. — 2) m. *a)* N. pr. des ältesten Sohnes des Bhîshmaka und Gegners Kṛshṇa's, der seine Schwester Rukmiṇî geraubt hatte; wird von Baladeva getödtet. MBh. 1, 2698. 2, 1166. 1351. 5, 79. 5351. Harîv. 4963. 5016. 5090. fgg. 5496. 5803. 6392. fgg. 6661. fgg. 6707. fgg. 8010. 8069. 9134. Kâm. Nîtis. 11, 23. 14, 31. VP. 573. fg. 580. Bhâg. P. 2, 7, 34. 10, 52, 23. 61, 19. रुक्मिणशासन unter den Beinamen Vishṇu's Paṇḍar. 4, 3, 137. Baladeva führt die Beinn.: रुक्मिदर्प Çabdar. bei Wilson, रुक्मिदारिन् Trik. 1, 1, 36. रुक्मिभिद् H. 224. रुक्मिदारण (so ist zu lesen) H. 224, Sch. — *b)* N. pr. eines Gebirges H. 947, Sch. — 3) f. रुक्मिणी *a)* N. pr. einer Tochter Bhîshmaka's, die Kṛshṇa mit Gewalt entführte und ehelichte; sie ist die Mutter Pradjumna's und wird später mit Lakshmî identificirt (vgl. Gaṭṭin. in Verz. d. Oxf. H. 100, *b*, 24). MBh. 1, 2790. 2, 57. 3, 575. 708 (रुक्मिणीनन्दन). 5, 1881. 3976. 5260. 13, 598. 620. Harîv. 3095. 3805. fgg. 6091. fgg. 6187. 6580. fgg. 6694. 6759. 7351. 7726. fgg. 8977. 9038. 9135. 9179. fg. 9209. fgg. 9438. fgg. Milav. 77. Çiç. 2, 38. VP. 573. fg. 613. Bhâg. P. 3, 1, 28. 10, 52, 23. Weber, Rîmây. Up. 340. Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, 19. 27, *a*, 32. fg. Paṇḍar. 3, 7, 20. 4, 1, 43 (रुक्मिणीश). Bez. der Dâkshâjaṇî in Dvâravatî Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 14. °तीर्थ 66, *b*, 42. °व्रत 73, *a*, 17. °व्रत n. Bez. *einer best. Begehung*, so heisst nach ÇKDn. ein Abschnitt im Kalki-P. — *b)* einer Tochter des Çrosḥṭhin Sulokana Z. d. d. m. G. 14, 569, 7.

रुक्मेषु (रुक्म *Gold* + इषु *Pfeil*) m. N. pr. eines Fürsten Harîv. 1980. fg. VP. 420. Bhâg. P. 9, 23, 33.

1. रुत्त (von 1. रुच्) adj. *glänzend, strahlend:* वृषा रुत्त घोषयधीषु नूनोत् RV. 6, 3, 7.

2. रुत्त adj. *vunâ* u. s. w. s. द्रुत.

रुत्न Râjâ-Tar. 5, 433 fehlerhaft für द्रुत.

रुक्सम्मन् (2. रुच् + स°) n. *Koth, Excremente* Çabdâmrtak. bei Wilson.

रुगन्वित (2. रुच् + ग°) adj. *von Schmerz begleitet, schmerzhaft* Suçr. 1, 120, 10. 2, 433, 2.

रुग्ण (रुज्) s. u. 1. रुच्.

रुग्दाह् (2. रुच् + दाह्) m. *eine Art Fieber* Verz. d. Oxf. H. 319, *b*, No. 758. 318, *b*, 1 v. u.

रुग्भेषज (2. रुच् + भे°) n. *Arzneimittel, Heilkraut* Vaṭṭ. Bṛh. S. 19, 1.

रुग्विनिश्चय m. Titel eines medic. Werkes Verz. d. Oxf. H. 312, *a*, No. 745. 337, *b*, No. 851. Verz. d. B. H. No. 941.

रुच्य adj. *das Wort* रुच् *enthaltend* Çat. Ba. 9, 4, 2, 12. fg.

1. रुच्, रोचते Naigh. 1, 16 (ज्वलतिकर्मन्). Dhâtup. 18, 5 (दीप्ति und अभिप्रीति). ved. रुचानै; रुरुचै, रुरुचान, रुरुचेम; रुरुचुस् und रुरुच्याम् ved. in transit. (caus.) Bed.; अरुचत् und अरोचिष्ट P. 1, 3, 91. अरोचि; रोचिष्यते; रुचियीय; aus metrischen Rücksichten hier und da auch act.; रुचित्वा und रोचित्वा P. 1, 2, 26. रोचितुम्; der Auslaut der Wurzel geht

nie in क über P. 7, 3, 89, Vârtt. 1 (vgl. jedoch अवरोकिन्, आरोक, विरोक). 1) med. *scheinen, leuchten, hell sein* (von Sonne, Feuer, Sternen u. s. w.): रोचन्ते रोचना दिवि ṚV. 1, 6, 1. यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते 43, 5. रोचन द्यौः 4, 1, 17. अग्निः श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके 4, 10, 5. 7, 3, 9. अग्निर्वनेषु रोचते 8, 43, 8. 3, 2, 3. उषसः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः 4, 51, 9. रुचे जनन्त सूर्यम् *zum Scheinen* 9, 23, 2. केनाहरकरोद्रुचे AV. 10, 2, 16. ययोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत् ṚV. 3, 55, 11. स्वर्ण वस्तोरुषसामरोचि 7, 10, 2. 77, 2. रथः पविभी रुचानः 69, 1. दिवि तारो न रोचन्ते Vâlakh. 7, 2. 8, 8. VS. 8, 49. AV. 5, 20, 6. 17, 1, 21. Çat. Br. 11, 3, 2, 7. सूरो न रुरुक्वान् ṚV. 1, 149, 3. रुरुचे साधिकं सुभ्रूरापतन्ती नभस्तलात्। सौदामनीव विभ्रष्टा द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ॥ MBh. 1, 6813. रोचमानो महाराज विष्णुलोकं च गच्छति 3, 7048. सा दीप्तशस्त्रप्रवरा दैत्यानां रुरुचे (शुशुभे die neuere Ausg.) चमूः Hariv. 2659. R. 5, 10, 2. Bhâg. P. 11, 2, 27. रुचित *glänzend, blank:* कार्षापण P. 1, 2, 21, Sch. यथा न्वेव रुचितः स्यात्तथा धवितव्यः (घर्मः) *leuchtend* d. h. *von der Gluth bestrahlt* Çat. Br. 14, 1, 2, 33. Kâtj. Çr. 26, 4, 4. Çâñkh. Çr. 5, 9, 29. — 2) act. *scheinen —, leuchten lassen:* महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः ṚV. 4, 16, 4. भरद्वाजेषु सुरुचा रुरुच्याः 6, 35, 4. रथस्य भानुं रुरुचुः 6, 62, 2. — 3) *leuchten* so v. a. *in vollem Glanz erscheinen, prangen:* अश्वो रश्मिना प्रतिहृतो भूयिष्ठं रोचते Çat. Br. 13, 2, 2, 9. येनेदमद्य रोचते को अस्मिन्वर्णमा भरत् *die Farbe, die es schmückt,* AV. 11, 8, 16. यो ऽग्निं चित्वा न रोचते TS. 5, 3, 10, 3. Kâṭh. 9, 16. प्राणेन रोचते Çat. Br. 7, 5, 2, 12. स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्। तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥ M. 3, 62. 61. नृत्तेन राजते काचित्काचिद्गीतेन रोचते। वीणादिवादनज्ञानेनान्या कान्ता च रोचते ॥ Kathâs. 47, 113. स हुताशोष्मणाक्रान्तः प्रदीप इव नारुचत् Râǵa-Tar. 4, 374. शक्रं रोचमानं स्वया श्रिया Bhâg. P. 6, 10, 18. क्षमया रोचते लक्ष्मीर्ब्राह्मी सौरी यथा प्रभा 9, 15, 40. न तथैतर्हि रोचन्ते गृहेषु गृहसंपदः 4, 26, 14. विज्ञानं चास्य रोचते M. 4, 20. कच्चिद्रोचेज्जनपदे कच्चिद्राष्ट्रे च मे यशः MBh. 12, 3350. — 4) *schön —, gut erscheinen, gefallen;* mit dat. (P. 1, 4, 33. Vop. 5, 15) und gen.; med.: यद्यद्रोचेत विप्रेभ्यः M. 3, 231. MBh. 1, 4243. रोचतां गमनं मह्यं तवापि *mir und dir* 14, 892. R. 2, 46, 10. Çâk. 24, 6. 71, 15. Mâlav. 12, 6. Kâm. Nîtis. 8, 3. Spr. 683. Kathâs. 19, 45. 24, 141. Râǵa-Tar. 6, 51. 65. वासो मम न रोचते MBh. 1, 3327. 7441. 7550. 2, 2681. 3, 16687. 4, 13. 5, 7415. 13, 770. 14, 1881 (wo mit der ed. Bomb. मे st. मां zu lesen ist). R. 1, 9, 33. 68, 16. 2, 21, 2. 29, 15. 30, 42. 46, 24. 82, 19. 3, 13, 11. 4, 18, 14. Spr. 1147. 2526. Bhâg. P. 3, 24, 31. 4, 30, 37. 8, 6, 31. Mârk. P. 48, 40. Pańḱat. 189, 22. 190, 2. नरेन्द्रस्य तद्रुरुचे वचः Hariv. 5156. रिपोर्लक्ष्मीर्मा ते रोचिष्ट MBh. 2, 1962. किमर्थं ते — नैतद्रोचिष्यते वचः R. 5, 92, 18. act.: तदङ्गदस्यापि रुरोच वाक्यम् 4, 53, 26. एकान्तेन हि सर्वेषां न शक्यं तात रोचितुम् *Allen gefallen* MBh. 12, 3353. mit einem infin.: रामाय यौवराज्यं मे दातुमत्रैव रोचते R. Gorr. 2, 2, 4. Häufig ohne Hinzufügung der Person: अन्यन्न रोचते MBh. 1, 647. 5582. R. 3, 21, 7. Varâh. Bṛh. S. 104, 3. कुरुष्व यद्रोचते *was (dir) gefällt* Pańḱat. 70, 10. यदि रोचते R. 2, 21, 21. Bhâg. P. 9, 20, 14. Mârk. P. 16, 75. Pańḱar. 1, 9, 4. रोचमान *gefallend, erwünscht* Bhaṭṭ. 8, 73. अ° Spr. 2310. रोचमानमिवातिथिम् *wie einen lieben Gast* MBh. 7, 32. रुचितं Uṇâdis. 4, 185. dass.: पित्र्ये स्वदितमित्येव वाच्यं गोष्ठे तु सुश्रुतम्। संपन्नमित्यभ्युदये दैवे रुचितमित्यपि ॥ M. 3, 284. रुचितं यदि ते MBh. 3, 16828. Hariv. 10217. MBh. 5, 462. 13, 774. 1476. R. Gorr. 1, 74, 6. 2, 30, 36. 6, 93, 13. Râǵa-Tar. 6, 66. यदस्य रुचितं कर्तुम् MBh. 1, 7952. उभयतो रुचिते *wenn es beiderseits gefällt* Çâñkh. Gṛhj. 1, 6. *lecker* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4, 185. — 5) *Gefallen finden:* न रोचे MBh. 1, 7444. mit acc.: समुदाचारसंयुक्तमिदं वाक्यमरोचताम् R. 5, 92, 15. mit dat.: रुरुचुः सर्वे वासाय so v. a. *verlangen nach* Hariv. 5384.

— caus. रोचयति, °ते, अरूरुचत्; 1) *scheinen —, leuchten lassen:* हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः ṚV. 3, 44, 2. 8, 3, 6. 29, 10. 9, 37, 4. 63, 7. अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रियः 83, 3. 49, 5. — 2) *beleuchten, erhellen:* स रोचयज्जनुषा रोदसी उभे ṚV. 3, 2, 2. 6, 39, 4. 9, 9, 3. Bhâg. P. 2, 5, 11. 8, 2, 2. 11, 26. स्वयं लोकं रोचयस्व यावन्तमिच्छसि Çat. Br. 13, 2, 2, 11. — 3) *gefallen —, angenehm machen:* ब्रह्मणस्पते पतिमस्यै रोचय AV. 14, 1, 31. श्रेष्ठी पात्रे रोचयत्येव यं कामयेत तम् Ait. Br. 3, 30. तस्मै हिमाद्रेः प्रयतां तनूजां यतात्मने रोचयितुं यतस्व Kumâras. 3, 16. न त्वरोचयतात्मानम् Bhaṭṭ. 8, 64. — 4) *bewirken, dass Jmd* (acc.) *Gefallen findet, — Verlangen fühlt nach* (dat.): स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम् Gît. 10, 2. — 5) (*sich Etwas schön —, gut erscheinen lassen*) *Gefallen finden an, belieben, gutheissen, für gut finden, erwählen;* med. P. 1, 3, 89. Vop. 23, 58. mit acc.: अतो भक्ष्यं न रोचये MBh. 1, 5578. न ते वाचं रोचयते 14, 240. R. 2, 82, 14. 3, 61, 30. अद्यैव गमने बुद्धिं रोचयस्व 15, 46. यदि त्वात्यन्तिकं वासं रोचयेत गुरोः कुले M. 2, 243. R. 2, 54, 24 (26 Gorr.). न विग्रहं रोचयते बलस्थैः Spr. 5261. mit infin.: न त्वं रोचयसे नेतुं मामितः R. Gorr. 2, 29, 22. Mârk. P. 8, 215. Häufiger act.: गमनमरोचयन् MBh. 1, 3822. R. 1, 36, 3 (37, 3 Gorr.). कृष्णस्य दर्शनं शक्रो रोचयामास Hariv. 3960. स साधु कौन्तेय इतो वासमर्जुन रोचय MBh. 4, 8. 15, 580. Hariv. 6416. R. 2, 56, 13, *f.* 3, 2, 1. स रोचयामास परैश्च बन्धं प्रसह्य रक्षोभिरवग्रहं च 5, 44, 18. वरणं रोचयन्ति मे 7, 17, 10. पुनर्युद्धमरोचयन् MBh. 9, 1351. नहि पापमपापात्मा रोचयिष्यति पाण्डवः 1, 5741. अरोचयन्सुरा धर्मं धर्मं तत्यजिरे ऽसुराः 3, 8492. Spr. 4351. Bhâg. P. 5, 13, 17. 14, 30. तेषां किंचित्स्म रोचय MBh. 4, 10. R. 3, 21, 8. पितरं रोचयामास दशरथं नृपम् *er erwählte sich zum Vater* R. 1, 15, 2 (1 Gorr.). राजानं रोचयामासुरंशुमन्तम् 43, 1 (44, 1 Gorr.). *beabsichtigen, im Sinne haben:* रोचयन्गणश्रेष्ठं देवानाममितौजसाम् Hariv. 245. 253. Verz. d. Oxf. H. 54, *b*, 12. pass. *gefallen, erwünscht sein:* तस्माद्वो रोच्यतां मन्त्रो रामं प्रति R. 5, 77, 6. — 6) = simpl. *gefallen:* नैतद्रोचयते मह्यम् R. Gorr. 2, 117, 10.

— अति 1) med. *durchleuchten, hinleuchten über* Nir. 3, 11. ṚV. 1, 94, 7. 10, 51, 3. तिरो धन्वाति रोचते 187, 2. AV. 13, 1, 36. Ait. Br. 4, 18. सर्वाः प्रजाः Çat. Br. 7, 4, 1, 10. 14, 5, 1, 9. त्रीनत्यरोचे — लोकान् Bhâg. P. 1, 16, 34. — 2) med. act. *heller leuchten als, überstrahlen;* mit acc.. अत्यरोचश्च — भास्करं स्वेन तेजसा MBh. 3, 486. स ब्रह्मवर्चसेन सभां ब्रह्मर्षिगणसंजुष्टामत्यरोचत Bhâg. P. 8, 18, 18. अत्यरोचत (so die ed. Bomb.) तान्सर्वान्धृष्टद्युम्नः समागतान् MBh. 7, 1028. यथा मां नातिरोचन्ति (नातिवो° ed. Bomb., = न निन्दन्ति Comm.) Bhâg. P. 3, 14, 21. — caus. 1) *unangenehm empfinden:* स्त्रीत्वं नैवातिरोचयन् v. l. der ed. Bomb. für नैव तिरोहयन् der ed. Calc. MBh. 5, 7427. — 2) कर्मणा *Etwas in's Werk zu setzen suchen:* मनसा चिन्तयन्पापं कर्मणा नातिरोचयन् (नाभिरोचयेत् ed. Calc.)। न प्राप्नोति तस्य फलम् MBh. 5, 3314 nach der Lesart der ed. Bomb.

— घनु caus. *Gefallen finden an, für gut finden, erwählen:* म विचित्य मक्षतेक्षा वनमेवान्वरोचयत् MBh. 3,12679.

— अभि 1) med. *leuchten, in vollem Glanze erscheinen, prangen:* अभिरुरुचे रामः R. 6,86,23. घर्मो ऽभिरोचते यस्माद्घर्मरोचस्ततः स्मृतः Mārk. P. 108,16. — 2) *gefallen:* यदभिरोचते भवते Vikr. 21,11. अभिरुचित *gefallend, erwünscht, genehm:* सार्धं तु स्त्रीसहस्रं वै — न ते ऽभिरुचितम् R. 6,95,18. यदभिरुचितं भवते Vikr. 21,11, v. l. यदभिरुचितं तन्मे कृत्वा प्रिये सुखमास्यताम् Spr. 383. अलक्रीडाभिरुचितं वाराहं रूपम् *Gefallen findend an* (vgl. Harīv. 12353) MBh. 3,13829. अलक्रीडायामभिरुचितं प्रीतिर्यस्य Nīlak. Vgl. यथाभिरुचित und यभिरुचि. — caus. 1) act. *bewirken, dass Jmd Gefallen findet, angenehm unterhalten;* mit acc. der Person: कथाभिरनुकूलाभी राज्ञानं चाभ्यरोचयत् (चाभ्यरामयत् ed. Calc.) MBh. 13,476 nach der Lesart der ed. Bomb. — 2) *Gefallen finden an, belieben, für gut finden, gern haben;* med.: जीर्णस्यास्य शरीरस्य विश्रान्तिमभिरोचये R. 2,2,6. न स्वर्गमप्यभिरोचये 30,27. यन्मे मात्रा कृतं पापं नाद्दे तदभिरोचये R. Gorr. 2,88,14. 3,42,18. 5,51,6. प्रणामम् 73,14. नाभिरोचयसे नेतुं त्वं मां केनेव हेतुना *warum willst du nicht?* R. Schl. 2, 29,19. act.: तदरुरोचाग्नु प्रस्थानमभ्यरोचयत् Harīv. 5713. R. 7,26,59. कथं विनिर्जितां सीतामस्माभिः सो ऽभिरोचयेत् 5,59,3. mit dat.: गमनायाभिरोचय *entschliesse dich zu* 1,37,2 (36,2 Schl.). मनसा चिन्तयन्पापं कर्मणा नाभिरोचयेत् (नातिरोचयन् ed. Bomb.) so v. a. *nicht in's Werk zu setzen sucht* MBh. 5,3314.

— अव med. *herabglänzen* AV. 3,7,3. — Vgl. अवरोचिन्.

— आ med. *herglänzen:* दिवश्चिदा ते रुचयन्त (vgl. गृभ्, कृपय्) रोकाः ṚV. 3,6,7. Vgl. आरोक, आरोचन. — caus. med. *Gefallen finden an, billigen, gutheissen:* तव सर्वमभिप्रायमविज्ञाय — वासं नाऽरोचये ऽरण्ये R. 2,30,38. wohl fehlerhaft für न रोचये, wie die ed. Bomb. liest.

— उद् med. *erglänzen* AV. 13,3,22.

— उप med. *strahlend nahen:* (उषाः) उषो रुरुचे युवतिर्न योषा ṚV. 7,77,1.

— निस् act. *durch Glanz vertreiben:* निरग्नयो रुरुचुर्निरु सूर्यः (अद्भिः) ṚV. 8,3,20.

— परि med. *ringsum leuchten:* °रोचमान Bālar. P. 3,21,22.

— प्र med. 1) *hervorleuchten:* प्र रोचिष्यस्या उषसो न सूरिः ṚV. 1,121, 6. 3,29,14. प्र रोचना रुरुचे रण्यसंदृक् 61,5. — 2) *einleuchten, gefallen:* किं प्ररोचते Śat. Br. 1,6,2,3. 4. 3,2,2,8. यद्वा तदपिभ्यो यज्ञः प्ररोचत 11,2,2,7. — caus. 1) *erleuchten, erhellen:* प्र द्यावा शोचिः पृथिवी चरोचयत् ṚV. 1,143,3. 9,75,4. प्राद्रुरुचद्रोदसी 85,12. *leuchten lassen:* प्रारोचयन्मनवे केतुमह्नाम् 3,34,4. — 2) *scheinbar —, stattlich —, gefällig machen:* सा नो भूमे प्र रोचय हिरण्यस्येव संदृशि AV. 12,1,15. य एभ्यो यज्ञं प्ररोचयत् Śat. Br. 1,6,2,5. 3,9,2,28. TS. 2,5,11,7. Ait. Br. 3,9. *empfehlen, anpreisen:* विधिविक्षिप्तमर्थवादप्ररोचितं मन्त्रेण स्मृतमभ्युदयकारि भवति Cit. bei Sāy. zu Baudh. bei Müller, Sl. 170. — 3) *Gefallen finden an (acc.), gut befinden:* त्वया तु दुष्कराः कस्मादिदं वासः प्ररोचितः MBh. 3,1374. — Vgl. प्ररोचन.

— संप्र med. *gefallen, gut scheinen:* धन्यं वो वृणुधे वे यादृशे संप्ररोचते MBh. 6,1400.

— प्रति, प्रत्यरोचत MBh. 7,1028 fehlerhaft für सत्यरोचत, wie die ed. Bomb. liest. — caus. act. *Gefallen finden an (acc.), belieben, beschliessen:* प्रस्थानम् MBh. 3,11546.

— वि 1) *scheinen, erglänzen, glänzen, hell sein; erscheinen, sichtbar werden, — sein; einen Glanz um sich verbreiten* in übertr. Bed., *ansehnlich werden, ein Ansehen haben, prangen;* med. ṚV. 1,95,2. यो रुरुहि रोचसे। वं घृतेभिराक्तः 2,7,4. 3,29,6. 5,44,2. 7,3,6. 8,4. वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचानाः 36,13. वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः 10,43, 9. घर्मावादित्यो न व्यरोचत *die Sonne schien nicht* TS. 2,1,2,4. Çat. Br. 3,3,2,2. यत्येदं प्रदिशि यहिरोचते *erscheint, sichtbar ist* AV. 4,23, 7. 28,1. 13,1,55. यो ब्राह्मणो विद्यामनूच्य न विरोचते *kein Ansehen gewinnt* TS. 2,1,2,3. — प्रुक्षः प्रौष्ठपदे पूर्वे समारुह्य विरोचते MBh. 6,82. तद्दनं बलमेघेन शरधारेण संवृतम्। व्यरोचत 1,2844. प्रवृद्धनगमस्या च सर्वदैव व्यरोचत भूमिः) 2719. संसृष्टं ब्रह्मणा तत्र भूय एव व्यरोचत 3, 967. व्यरोचत यथा पूर्वं मान्धाता 1734. पिप्रुस्तस्या व्यरोचत 2704. 4, 1792. 5,953. 13,4809. 14,2062. 2111. Harīv. 4314. Spr. 1282. 3457. R. 1,31,24. 44,18. 27. 2,1,22. 98,21 (107,20 Gorr.). R. Gorr. 2,67,24. 3,9,23. 7,37,22. Rāgh. 9,51. 17,14. 18,50. Bhāg. P. 1,9,3. 19,30. 2,2, 11. 5,7,7. 10,82,8. Mārk. P. 123,19. व्यरोचिष्ट च रात्रिषु Bhaṭṭ. 15,56. सर्वाण्यति च सैन्यानि भारद्वाजो व्यरोचत *überstrahlte* MBh. 7,1028. act.: पारिव्राजवनानीव व्यरोचयुरिवोत्थिताः *erschienen wie* MBh. 7,5551. Der Grammatik gemäss ist der aor. act. व्यरूरुचत् Rāgh. 6,5. Kathās. 66, 192. Bhaṭṭ. 8,66. — 2) act. *scheinen lassen, erhellen:* वि रुरुचुः ṚV. 4, 7,1. 10,122,5. — 3) med. *einleuchten, gefallen:* एतद्विभीषणेनोक्तम् — राघवस्य व्यरोचत R. 5,92,11. — Vgl. विरोक u. s. w. — caus. 1) *scheinen lassen, erhellen:* द्योतो वि ṚV. 3,36,3. उषसः 86,21. यद्रुरुचद्वि दिवो रोचना 85,9. प्रभया विरोचयन्ती भवनम् Bhāg. P. 10,2,20. — 2) *Gefallen finden an:* युद्धमेव व्यरोचयम् R. 5,36,128. स्त्रीधर्मं सा व्यरोचयत् so v. a. *wurde geil* Harīv. 4583.

— अतिवि med. mit zum Ueberfluss wiederholten अति *überstrahlen:* अति सर्वाण्यनीकानि पिता ते ऽतिव्यरोचत MBh. 6,1669. ऽभिव्यरोचत ed. Bomb.; vgl. सर्वाण्यति च सैन्यानि भारद्वाजो व्यरोचत 7,1028.

— अभिवि med. *glänzen, strahlen;* s. u. अतिवि.

— सम् med. *gleichzeitig —, in die Wette scheinen:* यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ṚV. 8,9,18. 9,2,6. VS. 37,14. fg. Çat. Br. 14,1,2, 4. *glänzen, strahlen* Bhāg. P. 3,13,30. — caus. act. *Gefallen finden an (acc.), belieben, für gut befinden, beschliessen:* संन्यासम् MBh. 1,627. तत्र निवासम् Harīv. 365. प्रस्थानम् R. 4,38,7. 5,59,7. *erwählen:* यत्पुत्रमात्मपितरं समरोचयत्सः *dessen Sohn er zu seinem Vater auserkor* Verz. d. Oxf. H. 255,a,5.

2. रुच् (= 1. रुच्) f. 1) *Helle, Licht, Glanz* AK. 1,1,2,35. H. 100. an. 1,7. Med. k. 9. Hall. 1,35. 65. ṚV. 4,56,1. प्रत्नवद्रोचया रुचः 9,9,8. दविद्युतत्या रुचा 64,28. 96,24. घया रुचा क्रीळया पुनानः 111,1. 18, 188,3. VS. 12,16. 13,22. fg. 39. TS. 2,1,4,1. भास्कर° Cic. 9,23. Rāgh. 9,6. शशि° Megh. 45. Spr. 899. 2815. फणामणिमहस्रुचाम् Cic. 9,25. Kir. 5,43. Bhāg. P. 3,18,2. 4,12,35. 30,4. 11,2,27. पशु° Sidd. K. zu P. 6,3,116. रुचे infin. s. u. 1. रुच् 1). — 2) *Ansehen, Pracht* H. an. Med. म नः सहैव सख्ये नयौ रुचे भव ṚV. 9,105,5. 10,106,4. रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु u. s. w. VS. 18,48. Ait. Br. 1,21. Çat. Br. 5,3,10,2. 3,4,

9,12. fg. Kâṭh. 8,9. भिन्नो रागः किसलयरुचामाध्यधूमोद्गमेन ad Çiç. 14. Vaṛâh. Bṛ. S. 12,4. Spr. 2322 (zugleich *Gefallen*). कृतरुचश्च ज्ञाम्बूनदैः *schön gemacht* Çiç. 4,66. — 3) *Farbe:* भङ्गरुचस्तवालकान् Ragh. 8,52. ताम्ररुचा करेण Kumâras. 3,65. Mâlav. 47. Kir. 5,45. Vaṛâh. Bṛ. S. 24, 18. शक्रकार्मुक° 44,25. स्मितपाटलाधर° Spr. 346. नीलोत्पलदल° Prasan. 112,10. Bhâg. P. 4,7,33. घन° 5,3. — 4) *Aussehen;* am Ende eines adj. comp.: सर्वे जनाः सुरुचः Bhâg. P. 10,75,24. Kâṭâṇ. 2,71. — 5) *Gefallen an, Gutfinden, Verlangen nach* H. an. Med. यद्यग्निमिच्छ रुचा तम् VS. 11,19. नानाबुद्धिरुचो लोके मनुष्यान् MBh. 13,5907. Spr. 2522 (zugleich *Pracht*). — Vgl. स°, सकृत्त°, यशोत° तनू°, तिग्म°, दिवो°, निमेष°, नी°, पुरु°, पुरू°, पुरो°, यथारुचम्, सुरुच्.

रुचि (von 1. रुच्) adj. *licht* VS. 31,20. fg.

रुचक (wie oben) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2, 27. 1) n. *eine der fünf Arten von Knochen des menschlichen Leibes: die Zähne* Suçr. 1, 302, 4. 339, 14. 16. H. an. 3,59. m. Med. k. 146. अधरोष्ठ° und ओष्ठ° dass.: दन्तावरोष्ठरुचक adj. R. 4,33,40. उपाकर्मौष्ठरुचक adj. von Vishṇu in der Gestalt eines Ebers Harîv. 2233. 12366. Nîlak. erklärt ओष्ठरुचक durch ओष्ठस्य भूषणम्. — 2) n. *ein best. Goldschmuck,* = निष्क H. an. Med. Çaṅk. zu Bṛ. Âr. Up. S. 29. Sarvadarçanas. 151,12. *Halsschmuck* (nach dem Comm.) Daçak. 91,1 (रुचक gedr.). *Ring* (nach dem Comm.) in der Stelle मुचुटी मूले रुचकभूषणा Vâsav. 25,4. *Pferdeschmuck,* n. H. an. masc. Med. — 3) *ein best. Glück bringender Stoff,* n. = मङ्गलद्रव्य H. an., m. = माङ्गल्यद्रव्य Med. रुचकम् Suçr. 2, 388, 17. रुचका रोचनास्तथा रुचकं रोचनास्तथा ed. Bomb.; *Citrone* nach Nîlak.) MBh. 7,2931. रोचना रुचकश्चैव Harîv. 9584. रुचका रोचनाश्चैव R. Gorr. 2,12,8. रुचकेन च भूषितम् Bhâg. P. 3,23,32. — 4) m. Bez. *einer viereckigen Säule:* समघनचतुरस्रो (sc. स्तम्भः) रुचकः Vaṛâh. Bṛ. S. 53,28. — 5) m. Bez. *eines der fünf Wundermenschen, welche unter best. Constellationen geboren werden,* Vaṛâh. Bṛ. S. 69,2. 7. 28. 30. 37. — 6) n. Bez. *eines Gebäudes, das von drei Seiten Terrassen hat und nur von der Nordseite geschlossen ist,* Vaṛâh. Bṛ. S. 53,35. — 7) N. pr. *a)* eines Berges VP. 169. Bhâg. P. 5,16,27. Çatr. 1, 348. — *b)* eines Sohnes des Uçanas Bhâg. P. 9,23,33. — Die Lexicographen geben noch folgende Bedd.: *Citrone,* m. AK. 2,4,2,59. Med. *Ricinus communis,* m. AK. 2,4,2,31. n. H. an.; m. *Taube* Med.; n. *Kranz* H. an. Med.; = सौवर्चल *Sochalsalz* und *Nitron, Alkali* AK. 2,9,43. 110. H. 943. H. an. Med. (= सौवर्चल und सर्जिकाक्षार). Hâs. 155. 75 (= लवण). Hall. 2, 462; = रोचना und विडङ्ग H. an.; = प्रोत्कार H. an.; = उत्कार Med.; = स्वाग्वरस (?) Çabdar. im ÇKDr.; *a sort of temple* (s. u. 6.) Wilson nach ders. Aut.; vgl. Colebr. und Lois. zu AK. 2,2,10. Nach Wilson ohne Angabe einer Aut. noch adj. *agreeable, pleasing; sharp, acrid; tonic, stomachic* (n. *a stomachic*).

रुचा (wie oben) f. *Gefallen, Gutfinden:* तदे तस्मै न रुचामभूपेति *das gefällt ihm nicht* MBh. 3, 252. = दीप्ति, शोभा, इच्छा, शारिकाप्रभेदाच् Çabdar. im ÇKDr.

रुचि (wie oben) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,119. 1) f. Sidd. K. 247,*b*,1 v. u. *a) Licht, Glanz* AK. 1,1,2,25. 3,4,8,30. H. 99. an. 2,59. Med. k. 8. Hall. 1,38. Vaṛâh. beim Schol. zu Kâm. 10,62 (lies कान्तिरुचेर्भासि). AV. 13,2,30. 17,1,21. रुचिरग्नेर्यथा Harîv. 7088. गौर्याः Râjat. 1, 29. Prab. 15,7. (राज्ञः पुत्राः) रुच्या प्रोष्ठपदोपमाः R. 1, 19, 9. — *b) Pracht, Schönheit* H. an. Med. Vaṛâh. तदानन° Ragh. 5, 67. ad Çiç. 19. — *c) Farbe:* भ्रमरपतरुचौ सुदीर्घे केशे Mṛicch. 149, 15. Megh. 13. भ्रमितोत्पलस्य Spr. 3825. 3937. Vaṛâh. Laghuj. 1,6 in Ind. St. 2,278. Çiç. 9,19. Gît. 7, 24. Bhâsâp. 1. — *d) Gefallen —, Geschmack an, Lust; Appetit* AK. 3, 4, 8, 30. H. 393. H. ç. 103. H. an. Med. Hall. 4, 25. Vaṛâh. तस्मिन्न इन्द्रो रुचिमा दधातु AV. 3,15,16. स्त्रीषु पुंसु भगो रुचिः 12,1,25. यदा च रुचिरश्व 13,4,23. P. 1,4,33. Vop. 3,15. यत्रास्य न रुचिः काचित् MBh. 3,3601. न व्यज्यते रुचिर्यस्य Spr. 3363. Râja-Tar. 5,1. Bhâg. P. 1,5,25. 12,3,27. Mârk. P. 1,33. Pañcar. 1,8,27. 30. Sarvadarçanas. 31, 19. तस्मिँल्लब्धरुचिः adj. Bhâg. P. 1,5,27. आदे प्रति Jâṭ. 1,218. प्रवास° *Lust, Gefallen an* Spr. 2936. वसुदेवकथा° Bhâg. P. 1, 2, 16. 4, 22,23. स्वस्वभोज्य° 10,13,10. Sarvadarçanas. 118,12. भक्तारुचि *Widerwille gegen Speisen* Suçr. 1,62,2. mit infin. Ragh. 6,35. तान्यप्यङ्गस्य महारसानि भृशं मुद्गपाणि रुचिं ददुर्कृ so v. a. *gefielen ihm* MBh. 3,10041. तस्याः — न स तितोषा रुचये बभूव so v. a. *gefiel ihr nicht* Ragh. 6,44. रुचिमावक्ते सतां क्रियापि *macht Lust zu* Vikr. 48. रुच्या *nach Gefallen, nach Belieben, nach Wunsch* Jâṭ. 2,96. Verz. d. Oxf. H. 200,*a*,6 v. u. यः कश्चिदेवो निज्ञातः स्वरुच्या तु परस्परम् Jâṭ. 2,84. Kull. zu M. 3, 222. Häufig am Ende eines adj. comp.: सत्यधर्म° *Gefallen findend an* R. 2,46,4. सधर्म° MBh. 1,4341. 3,687. 8489. Bhâg. P. 11,7,8. दण्ड° MBh. 3,12043. Pañcat. 91,18. प्रतिपरु° M. 4,190. Jâṭ. 1,112. MBh. 14, 2781. 15, 198. Harîv. 3108. 4848. 12355. R. 2, 1, 18. 3, 3, 72. 30, 3. Spr. 772. 954. 1069. 1555. 3159. Mâlatîm. 84, 14. Vaṛâh. Bṛ. S. 2, 9. 12,11. 17,3. 19,3. मांस° *begierig nach* Hit. 19,19. भिन्नरुचिर्हि लोकः so v. a. *Jeder hat seinen eigenen Geschmack* Ragh. 6,30. Mâlav. 4. घनन्य° *für nichts Anderes Sinn habend* 54. निषिद्धैकरुचि H. 859. स्व° adj. *seiner Lust fröhnend* Mârk. P. 65,3. — *e)* Bez. *einer Art von Umarmung:* तत्प्रणयी यथा। नायिकाया नायकस्य संमुखे ज्ञान्वोरुपर्युपविश्य वक्षसि वक्षो दत्वा पद्वस्थानम्। इति कामशास्त्रम्। ÇKDr. — *f) eine Art gelbes Pigment,* = गोरोचना Râjân. im ÇKDr. — *g)* N. pr. α) einer Apsaras MBh. 13, 1424. — β) der Gattin Devaçarman's MBh. 13, 2263. fgg. — 2) m. N. pr. *a)* eines Prâgâpati, Gatten der Âkûti und Vaters Jaǵña's oder Sujaǵña's (einer Manifestation Vishṇu's) und des Manu Raukja VP. 49, N. 2. 54. Bhâg. P. 1,3,12. 2,7,2. 3,12,55. 21,3. 4,1. 2. fgg. Verz. d. Oxf. H. 48,*a*,16. Mârk. P. 50,16. 95,1. fgg. — *b)* eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13, 251 (ऋषिर्वज्रः st. रुचिर्वज्रः ed. Bomb.). — *c)* eines Fürsten VP. 462, N. 11. — 3) adj. = रुचिर *gefällig, reizend:* देश R. 3,21,7. — Vgl. स°, उच्च°, दृढ°, धर्म°, निर्वाण°, पीयूष°, प्रदान°, भक्त°, भद्र°, भा°, पक्ष°, यथा° (auch Jâṭ. 2,55. Kull. zu M. 3,222), वर°, वसु°, विश्व°, सु°.

रुचिकर 1) adj. *Lust machend, das Verlangen erregend* Kir. 10,62. *Appetit erregend* Suçr. 1,155,13. 209,10. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 212,*b*, No. 302. Hall 206.

रुचित 1) partic. adj. s. u. 1. रुच्. — 2) f. या *ein best. Metrum* Wilson; fehlerhaft für रुचिरा.

रुचितवत् adj. *den Begriff des* रुचित (*die Wurzel* रुच्) *enthaltend* Ait. Br. 1, 21.

रुचिता am Ende eines comp. *das Gefallenfinden an:* धारम्भरुचिता (eig. nom. abstr. von धारम्भरुचि adj.) *die Lust Vieles zu unternehmen* M. 12,32. समान° (nom. abstr. von समानरुचि adj. *an Gleichem Gefallen findend*) *gleicher Geschmack* Rigá-Tar. 1,310. सविभाग° Suça. 1,312,18. धर्मे रुचिता MBh. 13,5628 fehlerhaft für धर्मरुचिता, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. रुचित्व.

रुचित्व n. = रुचिता am Ende eines comp.: हिंसा° nom. abstr. von हिंसारुचि adj. *Gefallen findend an* R. 5,29,25.

रुचिदत्त m. N. pr. eines Commentators Verz. d. Oxf. H. 243,a, No. 601. 531,c. Verz. d. B. H. No. 678. Hall 83. °मिश्र 30.

रुचिदेव m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 110,123.

रुचिधामन् n. *die Stätte des Lichtes* d. i. *die Sonne* Çiç. 9,18.

रुचिनाथ m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 823.

रुचिपति m. N. pr. eines Commentators des Anarghjarâghava Verz. d. Oxf. H. 137,b, No. 267.

रुचिपर्वन् m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,1177.

रुचिप्रद adj. *Appetit machend* Suça. 1,177,8. 178,11. 198,8. 199,3.

रुचिप्रभ m. N. pr. eines Daitja MBh. 12,8264.

रुचिफल n. *eine best. Frucht,* = धमृताङ्क Rigân. im ÇKDa.

रुचिर्कर्तृ m. *der Herr des Lichtes* d. i. *die Sonne* und zugleich *der Herr der Lust* d. i. *Gatte* Çiç. 9,17.

रुचिर् (von 1. रुच्) Uṇâdis. 1,53. 1) adj. (f. या) *a) hell, glänzend, prächtig, schön* AK. 3,2,1. H. 1444. Hall. 4,4. °प्रभ R. 7,22,7. धाञ्जिषु रुचिरं च Varâh. Bṛh. S. 31,28. 84,2. दशन 105,10. कनकरुचिरश्री Vikr. 76. Spr. 739. कनकस्तम्भ° (रङ्ग) MBh. 3,2193. रुचिरं वेव चित्तयेत् Amṛtan. Up. in Ind. St. 3,26. मकरार्धरुचिरं गृहम् Kathâs. 35,88. Kâdamb. 15. मुनिमतम Brahma-P. in LA. (III) 51,10. Mârk. P. 63,58. रथ MBh. 1,4098. धानन 3,2187. धपाङ्ग 2269. मृगदिशाः 12042. 16969. वस्त्र 4,2117. Harîv. 6926. 8707. सम्भु 9462. R. 1,5,12 (11 Gorr.). 64,6. 2,52,6. 91,52. 96,18. R. Gorr. 2,32,18. 100,31. 3,6,4. 21,9. 49,33. 52,16. 24. 4,13,5. Kâm. Nîtis. 7,49. Ragh. 9,67. 14,48. Spr. 999. 3288. 3639. Varâh. Bṛh. S. 6,12. 12,1. 43,25. 44,24. 47,7. 56,27. 63,2. 3. 68,2. 69,10. 70,7. 104,21. काया Kathâs. 35,239. 59,179. स्मित Bhâg. P. 1,15,18. 16,36. 19,26. गिर् 3,15,11. 23,36. 25,38. 4,24,41. 27,2. 5,2,5. 8. 11. 17,13. 18,16. 24,10. 6,10,31. 7,6,11. 9,13. 3,1,24. Pâṇ. Gaṇ. 1,11,4. Kâdamb. 24. विवृति Verz. d. Oxf. H. 139,b, 8 v. u. सु° MBh. 5,1791. R. 1,63,2 (65,2 Gorr.). 2,72,19. — *b) gefallend, genehm, zusagend, ansprechend* MBh. 5,3582. यस्यस्य नास्ति रुचिरं तत्र न तस्य स्पृहा मनोज्ञे ऽपि Spr. 2391. Rigá-Tar. 2,40. Pâṇ. Gaṇ. 1,11,12. स्वमात्मरुचिरं समाचर Pañcat. 170,6. *appetitlich* Çânkh. Śr. 1,2,4. *locker* Uṇâdis. im ÇKDa. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Sonagît Harîv. 1038. fg.; vgl. रुचिराश्व. — 3) f. या *a) ein best. gelbes Pigment,* = गोरोचना Rigân. im ÇKDa. — *b)* N. zweier Metra: *α) 4 Mal 50 Moren* Colebr. Misc. Ess. II,157 (III,43). — *β) 4 Mal* ⏑ – – –, ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. II,161 (VIII,2). Ind. St. 8,384. — *c)* N. pr. eines Flusses R. 4,40,20. — 4) n. *a) Safran.* — 2) *Rettig.* — 3) *Gewürznelken* Rigân. im ÇKDa.

रुचिरकेतु m. N. pr. eines Bodhisattva Burn. Intr. 530. 533.

रुचिरदेव m. N. pr. eines Prinzen Kathâs. 67,6. fgg.

रुचिरधी m. N. pr. eines Fürsten VP. 450.

रुचिरप्रभासम्भव m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 89.

रुचिरभीगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabhûm. 2.

रुचिराञ्जन m. = शोभाञ्जन *Hyperanthera Moringa* Rigân. im ÇKDa.

रुचिराश्व m. N. pr. eines Sohnes des Sonagît VP. 452. Bhâg. P. 9,21,23. fg. — Vgl. रुचिर् 2).

रुचिरासुत m. metron. Pâlakâpja's Taik. 2,7,22.

रुचिरुचि, रुचिरुचे रोचनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,231,b.

रुचिवह् adj. *Licht bringend* P. 6,3,121, Vârtt.

रुचिष्य (von 1. रुच्) Uṇâdis. 4,178. adj. 1) *gefallend, genehm, erwünscht* Uṇâdis. न पृथ्वीं कामये कृत्स्नां संतुष्टो ऽस्मि पैस्त्रिभिः । एष एव रुचिष्यो मे वरः Harîv. 14265. — 2) *Appetit machend* Suça. 1,224,16. 231,19. *locker* Uṇâdis. im ÇKDa.

रुचिस्थ adj. Suça. 1,219,15 fehlerhaft für रुचिष्य *Appetit machend.*

रुची f. = रुचि Râmâjaṇa-Gorr. im ÇKDa.

रुच्य (von 1. रुच्) 1) adj. P. 3,1,114. Vop. 26,20. *a) gefallend, prächtig, schön* P., Sch. AK. 3,2,2. H. 1444. — *b) Appetit machend* Suça. 1,178,7. 180,4. 210,12. 226,15. Vishn. 6,114. Bhâvapr.; s. u. कुण्डलिन् 3) *b*). — 2) m. *a) Geliebter, Gatte* H. 517. Hall. 2,242. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Strychnos potatorum Linn.* (s. कतक) und *Reis* Rigân. im ÇKDa. *Aegle Marmelos Corr.* H. 815, Schol.; vgl. रोच्य = बैल्व. — 3) n. = सौवर्चल Rigân. im ÇKDa.

रुच्यकन्द m. *Arum campanulatum Roxb.* Rigân. im ÇKDa.

रुच्यवाकन Harîv. Langl. I,41 fehlerhaft für कृच्यवाकन.

1. रुज्, रुजति (भङ्गे) Dhâtup. 28,122. रुजाना: Naigh. 4,3. रोराज; ved. रोक् 2. sg.; रोक्ष्यति (vgl. Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10); hier und da auch med.; partic. रुग्ण (hier und da fehlerhaft रुग्): *erbrechen, zerbrechen, zertrümmern:* यदिं रुजन्मरुतो रवेण RV. 1,71,2. ऊर्वम् 3,32,16. 4,2,15. 4,11. गोत्रा 16,3. कमायो यदिं परिधिं रुजन्ति 18,6. 6,6,3. पुरः 16,39. 18,10. रुज वस्त्वो पतन्यति 9,33,3. 91,4. 18,89,6. 7. रुग्णमद्रेः 3,31,6. AV. 16,1,3. यद्रुजंश प्राग्वंशम् Harîv. 12231. नदी कूलानि रुजति P. 2,3,54, Sch. रुरुजुर्यज्ञपात्राणि Bhâg. P. 4,5,15. शिरोमणिम् — गदया रुरोज ह 10,77,3. Bhaṭṭ. 14,78. श्येनो यथा पतिपूगावघ्नो (*zerpflückend*) माद्रीपुत्रो शेषयेतां न शत्रून् MBh. 5,660. रुग्ण *zerbrochen* Vop. 20,88. fg. AK. 3,2,40. H. 1483. वात° (वनस्पति) MBh. 3,678. Ragh. 9,62. Kathâs. 5,101. 93,75. Bhâg. P. 2,7,35. Bhaṭṭ. 4,42. शैल° *zerschmettert* Ragh. 12,73. R. 2,114,6 (wo die ed. Bomb. रुग्णगजवाजिरथध्वजी liest). वसिष्ठकिगदारुग्णाः (वसुराः) MBh. 1,1170. रुग्णा मेघाः (वायुना) 12,12408. घासौ प्रज्ञानमेघो वेमूनां मा भैत्सीत् (भेत्स् von भिद्, nicht von भी, wie Manoh. annimmt) रोक्षो वै नः किं चनामयत् *mache Keinen Wunden noch Gebreste* VS. 16,47. *Jmd* (acc.) *Schmerzen bereiten:* रुजन्ति कि शरीराणि रोगाः शारीरमानसाः । सायका इव तीक्ष्णाग्राः Spr. 4945. रोगो रुज्यते येन वस्तुः MBh. 7,2118. यदि सत्यं मृदून्येव तवाङ्गानि किमकाण्डे रुजन्ति माम् Spr. 4112. Kathâs. 62,233. mit dem gen. des obj. bei unpersönlicher Ausdrucksweise P. 2,3,54. चौरस्य रुजति रोगः Sch. falsch angewandt in der Stelle: रावणस्येव रोदयन्ति कपयः *die Affen werden Râvaṇa Pein verursachen* Bhaṭṭ. 8,120. शो-

कारुणा vor *Kummer gebrochen* R. 2,102,9. — Vgl. रोग und घरुण.

— caus. रोजयति (हिंसायाम्) Dhātup. 33, 129. *schlagen:* ताभ्यां (बाहुभ्यां) वत्तस्यद्रुजत् Bhāg. P. 10,67,23.

— desid. s. रुरुजिषा.

— घव *abbrechen:* घवरुज्य गुल्मान् MBh. 1,8884. घमेणेवावरुणानां नगानाम् Harīv. 3365. statt घवरुग्रम् MBh. 7,1248 liest die ed. Bomb. richtiger घवस्थानम्.

— घा *erbrechen, zerbrechen, abbrechen, ausbrechen, zerhauen:* दृळ्हा चिदारुजे वसु ṚV. 4,31,2. पुरः 32,10. 3,62,18. 10,84,1. वलम् AV. 4, 24,2. प्रवृद्धमारुज्य महीप्रवेगम् MBh. 1,7178. 3,422. 11308. 5,8002. 7, 1128. 12,12408 (द्रुतेन रुजता ed. Bomb.). घारुणानेकविटप Vāmn. Bhg. S. 19,20. घारुजन्पर्वताग्राणि Harīv. 6961. शृङ्गम् R. 5,65,25. fg. घरेरारुजन्दंष्ट्राम् MBh. 5,4503. पततुण्डनखैः — गात्राण्यारुजता *zerfleischend* R. 3,72,20. स्तनानारुज्य कार्ष्णेर्शार्ताः पर्यदेवयन् Harīv. 5694. घारुजेत्त्रिदशान्दैत्यः सिन्धुवेगो नगानिव 13279. धर्मं हतानारुजति यथा नद्यनुकूलजान् (sc. वृक्षान्) MBh. 5, 3433. शल्यधातर्यथारुणे 7,1631. मम प्राणानारुजन्ति (बाणाः) 6, 3629. शोकः प्राणानारुजतीव मे । नदीतीररुहान्वृक्षान्वारिवेगो महानिव ॥ R. Gorr. 2,66,62. केशानारुज्य *sich die Haare ausraufend* Harīv. 4832. med.: स रुषः क्रोधेनारुजते द्रुमान् 4297. 4282. विषाणं गौरिव महात्स्वयमारुजते ऽऽत्मनः MBh. 2,2113. — Vgl. घारुज् fgg., घारोग.

— समा *zerbrechen, abbrechen:* वृक्षं समारुज्य MBh. 4,1082.

— उद् med. *sich von einem Schlage erholen* (wenn die Lesung richtig ist): ये वै मुरुक्षं घ्नन्ति न स पुनरुज्जिहीते Śāṅkh. Br. 3,1. = उत्तिष्ठेत् Comm. — Vgl. कूलमुद्रुज.

— समुप oder समुपा *einhauen auf, hart bedrängen:* देवो मर्खं (als belebtes Wesen gedacht) समुपारुजत् Harīv. 12221.

— परि *rings aufbrechen* AV. 16,1,2.

— प्र *zerbrechen:* पुरः ṚV. 1,51,5. वृक्षौ 102,4. 5,2,10. घारुजन्प्ररुजन्भञ्जन्विघ्निद्रावयन्तिपन् MBh. 7,1122. वनस्पतीन् Bhāg. P. 8,2,19. — Vgl. प्ररुज.

— वि *zerbrechen, zerschmettern, zerreissen:* वि वृत्रस्य समया पार्श्वा रुजः ṚV. 1,56,6. 3,30,16. वि रुज वीड्वङ्गैः 4,3,14. 6,22,6. रुजद्दृणा वि वलस्य सानुम् 30,2. वि वृत्रं पर्वशो रुजन् 3,6,13. पर्वतं गिरिम् 53, 5. 10,87,23. 152,3. वलम् Ait. Br. 6,24. AV. 9,8,12. पद्भिः 18. श्रोणी Śat. Br. 4,5,2,3. घाण्डम् 11,1,6,3. Kāṭh. Ça. 22,3,22. तस्य शक्तिं सकृत्सा विरुज्य MBh. 8,4228. धर्माराणं विरुजति गजः Çiç. 32, v. l. विरुजन्द्रुमान् Vāmn. Bhg. S. 32,9. विरुग्ण Bhatt. 5,25. 12,75.

— सम् *zerbrechen:* सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम् ṚV. 10,49,6. घश्मसंरुग्णभीमास्य *zerschmettert* Rāja-Tar. 4,478.

2. रुज् (= 1. रुज्) 1) adj. *zerbrechend, zerschmetternd:* पारावीर° MBh. 5,2993. — 2) f. *Schmerz, Krankheit* AK. 2,6,2,2. 3,4,2,10. 26, 199. H. 462. Halāy. 2, 445. ब्राह्मणस्य रुजः कृत्या M. 11,67. घोरा रुजस्तीव्राः Harīv. 10836. fg. Suça. 1,58,15. 70,1. 165,4. 2,2,1. 3,1. Kathās. 27,186. Bhāg. P. 1,14,44. Vāmn. Bhg. S. 71,3. 81,30. रुग्भय 24,26. 43,9. 53, 60. Rāgān. 19,52. रुजमादधति विपुलाम् Çārṅ. (Bh.) 5. शान्त्यै रुजाम् Spr. 775. यदीनामपनेष्यति । रुजम् Kathās. 20, 164. नृणां पुरुरुजा रुज घाशु क्षिति Bhāg. P. 2,7,21. रुजो निदानवित् (भिषक्) 6,1,3. मानसी *Seelenschmerz* Vīkr. 30. घनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन् ed Çiç. 54. दृग्रुज् *Augenschmerzen, Augenkrankheit* AK. 3,4,8,29. Vāmn. Bhg. S. 104,5. घति° 51,11. 104,16. गुरु° 5,26. हृद्रुज् *Seelenschmerz* Bhāg. P. 4,6,47. मनसिज° *Liebesschmerz* Vīkr. 51. उद्दीपितस्मर° Bhāg. P. 2,7, 23. गण्डस्वेदापनयनरुजा Megh. 27 wohl fehlerhaft für °रुचा *aus Verlangen, in Folge des eifrigen Bemühens.* — Vgl. घ°, घरुणी°, नी°, नेत्र°, पार्श्व°, मरु°, मानस°, मुख°, शिरो°.

1. रुत (von 1. रुज्) 1) adj. *zerbrechend* in वलंरुत. — 2) f. घा Vop. 26, 192. *a) Bruch* (भङ्ग) Taik. 3,3,37. H. an. 2,74. Med. ṭ. 14. — *b) Schmerz* AK. 2,6,2,2. Taik. H. 462. 60. H. an. Med. Halāy. 2, 445. निपातात्तव शस्त्राणां शरीरे पापचेतसा MBh. 8,1609. रुजाः R. 3,43,27. रुजाय घोराः 63,19. ललाटे च रुजा क्षिप्ते 29,15. शिरसः MBh. 3,16816. Suça. 1,3, 20. 121,10. 2,346,8. 439,17. हृदयप्रमाथिनी Mālav. 37. निरगादरिवर्गस्य हृदयात् रुजाज्वरः Kathās. 18,83. am Ende eines adj. comp.: उग्र° Suça. 2,4,18. मन्दरुजा 308,19. — *c)* = कुष्ठ *Costus speciosus* oder *arabicus* Rāgān. im ÇKDa. — Vgl. घरुत, नीरुत, मरुरुत, शिरोरुजा, सरुत.

2. रुत् m. von unbekannter Bedeutung in der Stelle: रुतयो मा वेनयो मा क्षोसिष्टाम् AV. 16,3,2.

रुतस्कर (रुतम्, acc. pl. von 2. रुत् + 1. कर) adj. *Schmerzen bereitend* MBh. 3,14144.

1. रुता *Bruch; Schmerz* s. u. 1. रुत्र.

2. रुती f. in der Anrede an den Pfeil (इषु) VS. 10,8.

रुताकर (1. रुता + 1. कर) 1) adj. (f. ई) *Schmerzen bereitend* Spr. 4865. — 2) m. *Krankheit* H. 312. — 3) n. *die Frucht der Averrhoa Carambola Lin.* Carāḍ. im ÇKDa.

रुतापह (1. रुता + घ°) adj. *Schmerzen vertreibend* Suça. 1,165,8.

रुतावत् (von 1. रुता) adj. *schmerzhaft* Suça. 2,8,16. 308,11.

रुतार्दित् (wie eben) ved. adj. P. 5,2,122, Vārtt. 1. wohl *schmerzhaft.*

रुतासक् m. *ein best. Fruchtbaum,* = घम्बन Rāgān. im ÇKDa.

रुद्, रौदते (प्रतिघाते, दीप्तौ) Dhātup. 18,7. रोदयति (रोषे) v. l. für रुष् 32,121. (भाषार्थ, भासार्थ) 33,110.

रुठ्, रौठति (उपघाते) Dhātup. 9,51. रौठते (प्रतिघाते) 18,9, v. l. *quälen, peinigen:* रोठमानस्य वैदेह्या मांसार्थे वापमस्य R. 5,66,30; vgl. काकेनालोड्यमानां ताम् 2,105,39 (काकेनारोध्यमानां ताम् 96,40 Schl.).

रुणास्का f. *eine Kuh, die sich leicht melken lässt,* Carāḍ. im ÇKDa.

रुणा f. N. pr. eines in die Sarasvatī sich ergiessenden Flusses MBh. 3,7022.

रुण्ड्, रौण्डति (स्तेये) Dhātup. 9,41.

रुण्ठ्, रौण्ठति (गतौ) Dhātup. 9,61. (घालस्ये, प्रतिघाते, क्षोटे) 38, v. l. (स्तेये) 41, v. l.

रुण्ड्, रौण्डति (स्तेये) Dhātup. 9,41, v. l.

रुण्ड adj. *verstümmelt;* m. *ein verstümmelter Mensch, ein blosser Rumpf* (कबन्ध) H. 565. Hir. 137 (neutr.). Halāy. 3,8. पृष्टः स रुण्डः पुरुषो ऽभ्यधात् । निकृत्तरुस्तचरणो नद्यौ तितौ ऽस्मि शत्रुभिः ॥ Kathās. 63,11. तद्भार्या तेन रुण्डेन रेमे 18. 41. तौ सरुण्डाम् 40. तौ पृष्ठाद्रुरुण्डकाम् 32. वेल्लद्वैरवभूरिरुण्डनिकरैः Uttarar. 93,12 (121,6).

रुण्डिका f. 1) *Schlachtfeld.* — 2) *Liebesbotin.* — 3) *Thürschwelle* Med.

k. 147. — 4) = विभूति Çabdar. im ÇKDa.

रुद्र m. N. pr. eines Mannes Mirk. P. 76,24.

1. रुद्, रोदिति (अश्रुविमोचने) Dhātup. 24,59. P. 7,2,76. Vop. 9,26. ved. auch रुदेति; रोदिष्यति und रोत्स्यति (Çat. Br.); अरोदीत् und अरोदत् P. 7,3,98. fg. Vop. 8,34. 9,27. 1) *jammern, heulen, weinen:* त्वमेतावदुदनो ज्रयंतयोधयो रवस इन्द्र पारे ṚV. 1,33,7. रुदत्यौ: पुरुषे रुते AV. 11,9,14. 14,2,60. TS. 1,5,8,1. TBr. 2,2,9,4. Çat. Br. 9,1,1,6. Śāṅkhār. Br. 5,7.10. Āçv. Gṛhj. 1,6,8. Gobh. 3,3,22. रोदिमि u. s. w. MBu. 3,331. 3375. R. 5,34,21. Ṛt. 6,26. Vikr. 83,12. Spr. 28. Kathās. 11,63. Bhāg. P. 1,7,47. Mārk. P. 52,4. Pañcat. 51,11. 98,15. Hit. 99,4. Vet. in LA. (III) 25,20. रुदत्यमुमुखा गाव:, दैवतानि रुदन्तीव Bhāg. P. 1,14,19. किल्किला विरुतैर्दीर्घं रुदन्तीव R. 2,96,11. Spr. 375. रुदिम: Harīv. 10282. रुदन्तं प्ररुदन्ति Spr. 5396. R. 1,46,20. 2,64,39. 5,60,17. Rāgh. 8,84. वाक्बाष्पगद्गदरुद्ध Bhāg. P. 1,14,12. रुदती Āçv. Gṛhj. 1,8,4. M. 3,33. MBu. 3,2107. 2374. 2376. 2424. 2687. 5,3986. 6000. 7025. R. 1,54,2. 7 (mit der ed. Bomb. रुदती zu lesen). 4,18,4. 19,6. Megh. 110. Çiç. 9,24. Kathās. 13,130. 25,141. 29,90. 31,8. Vet. in LA. (III) 17,19. 24,20. रुदन्ती MBh. 3,2686. R. 2,40,29. 3,51,42. 5,26,42. Çik. 54,15 (l). Kathās. 23,139. Hit. 99,3 (रुदती ed. Johns. 2090). रोदन्ती Harīv. 11035. रुदिहि P. 6,4,101, Sch. Kathās. 11,39. मा पिता रुद (क्रन्द MBh. 1,6201 ed. Calc., aber रुद ed. Bomb.) Brāhmaṇ. 3,22. अरुदत् Rāgh. 13,59. धाराधुणा Kathās. 30,27. मा रुद: R. 1,46,20. मा रोदी: MBh. 3,393. R. Gorr. 1,47,20 (रोधो: gedr.). Mārk. P. 52,5. Bhāg. P. 1,7,47. अरोदीत् Bhaṭṭ. 15,71. 17,48. अरोदत् ebend. अरोदिषीत् Bhāg. P. 10,62,35. अरोद MBh. 3,2352. 2685. R. 1,2,14. Mārk. P. 52,5. Pañcat. 50,10. अरुदत्: MBh. 2,2616. R. 2,41,7. 57,21. 81,8. रोदिष्यसि Spr. 28. रुदित्वा P. 1,2,8. Vop. 19,16. 26,207. MBh. 3,2750. R. 2,72,26. Çik. 53,22. Bhaṭṭ. 3,50. रोदित्वा MBh. 13,5410. रोदितुम् Çik. 126, v. l. Kathās. 11,63. 13,127. 129. Vet. in LA. (III) 14,8. 21, 18. med.: रुदते MBh. 13,748. Harīv. 11072 (S. 792). रुदामहे 4817. रुदेत Spr. 5492. देवी रोदताम् MBh. 5,7095. रोदमान N. (Bauch) 11,4. रुदमान Mārk. P. 25,10. रुरुदे R. 2,52,19. pass. impers.: किमेवं रुद्यते भवता Pañcat. 98,13. रुद्यमाने wenn *geweint* wird M. 4,108. रुद्यमान Mārk. 51,80 fehlerhaft für रुदमान. रुदित n. *das Jammern, Heulen, Weinen* AK. 1,1,3,25. 3,4,26,93. H. 1402. Hall. 3,17. Harīv. 4817. किं ते विलपितेनैवं कृपणं रुदितेन च R. 2,44,2. 105,35 (विलापरुदिते ed. Bomb.). R. Gorr. 2,66,14. °शब्द 4,20,21. Suçr. 1,108,17. Ragh. 14, 69. fg. Megh. 82. Spr. 3991. Vārāh. Bṛh. S. 46,25. 49. 51,29. 68,73. 86, 21. 97,6. बालानां रुदितं बलम् Brahmavaiv. P. im ÇKDa. (u. बल). Kathās. 47,47. Daçak. in Benf. Chr. 184,10. pl. R. 5,26,39. Spr. 186. Siç. D. 103. अरण्य° n. sg. und pl. *ein Weinen in den Wald hinein* so v. a. — *vor tauben Ohren* Spr. 2770. 98. — 2) *bejammern, beweinen:* मा त्वाघशंसो रुदन् AV. 8,1,19. जीवं रुदन्ति ṚV. 10,40,10. Çat. Br. 12,4, 2,4. 3,3. 5,1,17. 14,4,2,19. यद्येवं स्त्री पौत्रमघं न रोदात् Pāṇ. Gṛhj. 1,8. Einschiebsel nach Āçv. Gṛhj. 1,13. मार्ते पुत्र्यमघं रुदम् Kaush. Up. 2,8; vgl. न पुत्ररोदं रोदिति, मा पुत्ररोदं रुदम् Khānd. Up. 3,15,2. तं रुदन्ति MBh. 5,1547. मा मृतं रुदती भव R. 2,74,2. 6,82,11. Bhaṭṭ. 5,3. रुदित von *Thränen benetzt* MBh. 13,1577; vgl. u. अव.

— caus. रोदयति *jammern —, heulen —, weinen machen:* पणिम् ṚV. 10,67,6. सर्वमेतित्पशोरादयन्मुद्गयन् 99, 8. Çat. Br. 11,6,3,7. 14,6,9,3. Khānd. Up. 3,16,3. MBh. 13,748. Kumāras. 5,56. Uttarar. 66,3 (85,3).

— desid. रुरुदिषति P. 1,2,8. Vop. 19,16. — Vgl. रुरुदिषु.

— intens. *heftig jammern u. s. w.:* रोरुद्यते MBh. 1,6182 (nach der Lesart der ed. Bomb.). रोरुद्यमान Baudhāṇ. 1,4 (रोरुद्यमाण MBh. 1,6112). Bhaṭṭ. 3,29. रोरुदती MBh. 3,11092 (S. 572). Harīv. 4818. — Vgl. रोरुदा.

— अनु 1) *hinterdrein weinen* Nalod. 3,22. — 2) *weinen um, über;* mit acc. ad Çik. 135. — 3) *Jmd* (acc.) *nachjammern, in Jmdes Jammern einstimmen:* अञ्जिपङ्क्ति: — विरुतै: करुणस्वनैरियं गुरुशोकामनुरोदतीव(!) माम् Kumāras. 4,18. — *flere* R. 2,55,21 ed. Seramp. nach Westergaard und Bopp.

— अभि *jammernd einen Laut ausstossen:* भृङ्गराजाभिरुदिता: — मधुरस्वरा: R. 3,79,13. — Vgl. अभिरोरुद.

— अव *Thränen fallen lassen auf:* अवरुदित *worauf Thränen gefallen sind* MBh. 13,4367.

— उपा *bejammern, beweinen;* mit acc. Bhaṭṭ. 2,4.

— प्र *zu jammern —, zu heulen —, zu weinen anfangen; laut jammern, heulen* Çiṅku. Gṛhj. 1,15,2. श्वान: प्ररुदन्त इव Vārāh. Bṛh. S. 46, 68. प्ररुदन्तम् R. Gorr. 1,47,20. रुदन्तमन्य: प्ररुदन्नुपैति 5,60,17. प्ररुरोद MBh. 1,5218. 6199. 3,2724. 2919. 2947. R. 5,36,25. Kathās. 97,42. प्रारुदन् Bhaṭṭ. 17,71. प्रारोदीत् Kathās. 61,22. प्ररुद्य 97,33. Verz. d. Oxf. H. 237, a, N. 3. न गर्भस्थ: प्ररोदिति Suçr. 1,319,20. जगाम मातु: प्ररुदन्समीपम् *weinend* Bhāg. P. 4,8,14. प्ररुदती MBh. 2,2626. Kathās. 13,128. प्ररुदन्ती Bhāg. P. 9,10,21. यदाकस्मात्प्रवृत्ते तव साध्या प्ररोदितुम् Kathās. 10,36. रुदन्तं प्ररुदन्ति so v. a. *weinen mit dem Weinenden* Spr. 5396. प्ररुदित *der angefangen hat zu weinen* d. i. *weinend* MBh. 1,6200. R. Gorr. 1,17,11 (22 Schl.). 2,83,18. 123,5. 6. 7,49,5. Vikr. 153. Kathās. 72,8. 101,209.

— वि *laut jammern, — heulen, — weinen:* शैलूषीव विरोदिषि MBh. 4,494. Bhāg. P. 1,18,40. व्यरुदन्देवलिङ्गानि 3,17,13. विरुदित n. *lautes Jammern, — Weinen* Uttarar. 56,18 (73,11).

2. रुद् (= 1. रुद्) adj. *jammernd, heulend, weinend;* s. अघ°, भव°.

रुदेय (von 1. रुद्) Un. 3,114. m. *Kind* Comm.; *Hund* (कुक्कुर) Uṇādik. im ÇKDa. H. an. 3,319 (सन्). *Hahn* (कुक्कुट) ebend. — Vgl. रुवथ.

रुदन (wie eben) n. *das Jammern, Weinen* Harīv. 7583. st. des grammatischen रोदन wegen des näheren Anklangs an रुद्र gebraucht.

रुदन्तिका und रुदन्ती f. *die Weinende,* Bez. *eines best. kleinen Strauches, der Saft träufelt,* = घृतस्रवा Rāgān. im ÇKDa.

रुद्ध 1) adj. partic. s. u. 2. रुध्. — 2) N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 251,b,15.

रुद्धक m. *Citrone* Nīlak. zu Harīv. 8443. vielleicht fehlerhaft für रुचक.

रुद्धमूत्र adj. *an Harnverhaltung leidend* Suçr. 1,120,10.

रुद्र Uṇādis. 2,22. 1) adj. nach den Comm. von रु oder रुद् mit oder ohne र (= रु) u. s. w. *heulend, heulen machend, mit Gebrüll laufend, schrecklich;* oder *Uebel vertreibend, zu preisen* u. s. w. Nach unserer Ansicht hängt das Wort wurzelhaft zusammen nicht bloss mit रोदसी, das die Comm. selbst als fem. zu रुद्र kennen, sondern auch mit रोद-

सी du. Schon deshalb sind jene Ableitungen unbrauchbar; die wirkliche Bedeutung, für welche ausserdem nur in रुद्रवर्तनि einiger Anhalt liegt, ist noch zu ermitteln. Auch an einen Zusammenhang mit रुधिर liesse sich denken. Agni RV. 1,27,10. 3,2,5. राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं शर्दस्यो: 4,3,1. AV. 7,87,1. die Açvin RV. 1,158,1. 2,41,7. 5,73,8. 75,2. 6,22,14. 26,5. Indra 13,20. 61,3. Mitra-Varuṇa 5,70,2. 3. रुद्रासो एषामियिरासो अद्रुक् स्पर्शे: 9,73,7. = स्तोतृ Naigh. 3,16. = विपुल u. s. w. Halâj. 4,14. angeblich *furchtbar, schrecklich* (= क्रूर Comm.) in der Stelle: सकलभयालकुलप्रलयकालाग्निरुद्रेण चेदिपतिना Paṇḍ. 4,12.; vgl. jedoch कालाग्निरुद्र. — 2) m. *a*) N. des Beherrschers der Marut, des *Sturmgottes*; vgl. die Lieder RV. 2,33. 7,46. 5,49,10. Rudra wirft mit seinem Bogen tödtliche Geschosse auf die Erde, verleiht aber auch Heilmittel und hat eine besondere Gewalt über das Vieh. Schon in den Brâhmaṇa wird Rudra zuweilen als eine Form des Agni aufgefasst; in der Folge wird Çiva mit ihm identificirt. Naigh. 5,4. Nir. 10,5. 11,14. AK. 1,1,1,30. H. 195. Halâj. 1,100. 5,2. परि वो हेती रुद्रस्य वृज्या: RV. 6,28,7. अहे रुद्राय धनुरा तनोमि 10,125,6. भिषक्तमौ भिषजाम् 2,33,4. 5,42,11. घा रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे 10,64,8. AV. 1,19,3. 6,20,2. 32,2. 39,3. यो ते रुद्र इषुमास्यत् 90,1. 11,2,7. 17. VS. 3,57. fg. 4,20. 5,11. 9,39. मीढुष्टम RV. 1,122,1. 5,41,2. तपद्धीर 10,92,9. स्थिरधन्वन् 7,46,1. भवारुद्रा AV. 11,2,14. सोमारुद्रा RV. 6,74,1; vgl. P. 6,2,142. TBr. 1,6,4,2. 2,1,2,3. रुद्रो वा एष: । यदग्नि: 2,1. TS. 5,3,2,1. Çat. Br. 5,2,4,13. 6,1,2,10. 9,1,1,1. पशूनां पतीरुद्रो ऽग्नि: 1,7,2,5. सो ऽयं शतशीर्षा रुद्र: सहस्राक्ष: शतेषुधिरधिज्यधन्वा प्रतिहितायी भीषयमाणो ऽतिष्ठत् 9,1,1,6. यमिमानुको रुद्र: पशूनस्यात् 2,6,2,6. पशुपति 5,3,2,6. 12,7,2,20. 13,3,4,2. Pâraṇ. Gṛ. 7,9,18. Âçv. Gṛ. 4,8,9. 24. Kâṭh. Up. 3,7,1. fgg. 16,2. 4. विद्यात MBh. 1,569. यतैतान्पातयिष्यामि रुद्र: पशुगणानिव 7,755. 757. 12,2702. fgg. 14,193. ततो ऽसृजत्पुनर्ब्रह्मा रुद्रं रोषात्मसंभवम् Harîv. 43. Mârk. P. 50,6. Etymologie des Namens Harîv. 7583. VP. 58. Bhâg. P. 3,12,10. Mârk. P. 82,5. — रुद्रमग्निमयं विद्यात् Harîv. 10666. R. 1,36,20. 44,10. 2,31,29. 3,70,2. 4,3,20. 44,52. यमेश 6,35,3. Kumâras. 3,76. Raghu. 2,54. 11,47. VP. 51. Spr. 1994. Pâraṇ. Pr. 1. रुद्रायतन Varâh. Bṛh. S. 46,6. 10. 53,48. Verz. d. Oxf. H. 50,*a*,37. 53,*b*,43. fgg. 58,*a*,18. *b*,16. fgg. 80,*a*,25. Lalit. ed. Calc. 313,8. कुम्भाण्डाधिपति 148,16. Rudra als eine der acht Formen Çiva's VP. 58. ज्येष्ठ° Râga-Tar. 1,134. 4,190. रुद्रस्य शरावोधीयम्, ऋषभ:, रैवत: (रैवत्य:), वैराज:, शाक्वर: Namen von Sâman Ind. St. 3,231,*b*. — *b*) pl. Rudra's heisst *eine bes. Schaar* von *Winden*, oder *die* Marut, *Söhne* Rudra's. AK. 1,1,1,5. RV. 1,39,4. 2,34,9. 3,32,2. रुद्रस्य मरुत: 5,59,8. मुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु 60,2. युवा पिता स्वपा रुद्र एषाम् 8. 6,66,11. 8,13,28. Die Götterschaaren theilen sich in Âditja, Vasu und Rudra; häufig werden nur die zwei letzten genannt, RV. 1,45,1. Indra mit den Vasu, Varuṇa mit den Âditja, Rudra mit den Rudra 7,35,6. 10,66,2. 125,1. 150,1. 2,31,1. 3,20,3. Vîrabh. 6,8. RV. 8,90,15. AV. 6,68,1. 8,8,12. 10,7,22. 11,6,13. VS. 11,54. fg. In bestimmten Zahlen gedacht: *elf, dreiunddreissig*: त्रिंशत्त्रयश्च गणिनो रुद्रास्तो दिवं रुद्रा: पृथिवीं च सचन्ते । एकादशासो यज्ञमुषर्द: सुतं सोमं जुषन्ताम् TS. 1,4,44,1. 3,4,9,7. Çat. Br. 4,5,7,2. 6,1, 2,7. TS. 4,5,1,2. यावुतिभागा वा अन्ये रुद्रा कुर्विंशागा अन्ये 5,5,9,2. 3,6. TBr. 1,3,11,3. 2,1,10,1. Âpast. Br. 8,12. Çat. Br. 11,6,3,7. रुद्रास्त्वेन्द्रायानो भरन्तु Çâṅkh. Çr. 4,21,11; vgl. Âçv. Gṛ. 1,24,16. वसून्यदत्ति तु पितृन्रुद्रांश्चैव पितामहान् । प्रपितामहांस्तथादित्यान् M. 3,284. 11,221. MBh. 3,1340. 2356. Harîv. 441. Kumâras. 2,26. Varâh. Bṛh. S. 46,31. 48,26. 56. धर्मस्य वसव: पुत्रा रुद्राश्चामिततेजस: MBh. 12,7340. Kinder Kaçjapa's Harîv. 11849. der Surabhi 12477. VP. 150, N. 18. रुद्राश्च सर्वे ऽरुणधूम्रकाया: सैतैर्युगैर्गतिभिर्वल्गुदृष्टि: Harîv. 13149. रुद्रेण सक्तिता रुद्रा दक्षस्य इव तेजसा । संनद्धाश्चारुमुकुटा: प्रामव: पर्वता इव ॥ 16273. रुद्रान् (पत्नेत्) वीर्यकाम: Bhâg. P. 2,3,3. रुद्राणां रुद्रसृष्टानां समत्ताद्भसतां जगत् 3,12,16. रुद्रैरिव यमो राजा मरुद्भिरिव वासव: (वृत:) MBh. 3,14782. रुद्राणां शंकरश्चास्मि sagt Kṛishṇa Bhag. 10,23. शतमेतत्समाख्यातं शतरुद्रे महात्मनाम् MBh. 13,7092. Harîv. 168. VP. 121. सहोवाचैतं भूतस्य भार्या रुद्राश्च कोटिश: Bhâg. P. 6,6,17. रुद्रैकादशक Vop. 5,34. MBh. 3,10668. Harîv. 9497. VP. 38. die stark variirenden Namen der elf Rudra aufgeführt MBh. 1,2365. fgg. 4825. fg. 13,7090. fg. Harîv. 163. fgg. 11531. fg. VP. 121. Bhâg. P. 6,6,17. fg. Weber, Râmat. Up. 304. 312. fg. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,22. fgg. 190,*a*,26. fgg. रुद्राणामष्टमो रुद्र: ist Vishṇu R. 6,102,19. — *c*) Bez. *der Zahl elf* Varâh. Bṛh. S. 8,20. 98,1. Bṛh. 7,1. sg. so v. a. *der elfte* Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 139. 320,*a*,12. — *d*) pl. abgekürzte Bez. *der an* Rudra *gerichteten Sprüche* Pâṇ. Gaṇ. 3,3,9; vgl. रुद्रजाप u. s. w. — *e*) mystische Bez. *des Buchstabens* ए Weber, Râmat. Up. 317. fgg. — *f*) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 54,86. Verz. d. Oxf. H. 135; *a*, No. 284. 296, *a*, No. 719. fgg. 318,*a*,44. Ind. St. 1,472, N. 1. Verz. d. Tüb. H. 13. Râga-Tar. 8,475. eines Lexicographen Med. Anh. 2. Verz. d. Oxf. H. 126,*a*, 19. 196,*a*,22. Bein. eines Fürsten Pradjota Schiefner, Lebensb. 269 (39). — *g*) *Calotropis gigantea* Râgân. im ÇKDa. — *h*) N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Harîv. Lanc. II, 311, fehlerhaft für रुरु, wie beide Ausgg. des Textes lesen. — 3) f. घा N. pr. *a*) einer Gattin Vasudeva's Viṣṇ-P. in VP. 439, N. 2. — *b*) einer Tochter Raudrâçva's Harîv. 1661. 1663. भद्रा die neuere Ausg. und Langlois. — *c*) = रुद्रजटा Râgân. im ÇKDa. u. d. letzten W. — 4) f. ई *eine Art Laute* (vgl. रुद्रवीणा) Çârṅg. im ÇKDa. — Vgl. प्रताप°, महा°, मालव°, मेधा°, मत्तरुद्रदत्त.

रुद्रक m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 306,6. fgg. Foucaux 376. Burn. Intr. 154, N. 1. 386, N. 2. Hiouen-thsang I, 367. Schiefner, Lebensb. 263 (13). 293 (63). v. l. उद्रक.

रुद्रकलश m. Rudra's *Topf*, Bez. eines best. beim Planetenopfer gebrauchten *Topfes* Verz. d. B. H. No. 1253. fg.

रुद्रकवीन्द्र m. = रुद्रभट्ट Hall 26.

रुद्रकाटि Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 4 fehlerhaft für रुद्रकोटि.

रुद्रकाली f. *eine Form der* Durgâ VP. 66.

रुद्रकोटि f. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8060. 8047. °माहात्म्य Mack. Coll. I, 81. — Vgl. रुद्रकाटि.

रुद्रकोष m. Rudra's *Wörterbuch* Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,4 v. u.

रुद्रगण m. Rudra's *Schaar* d. i. *die* Rudra's Varâh. Bṛh. S. 48,71.

रुद्रगर्भ m. Rudra's *Sprosz*, Bein. Agni's MBh. 2,1148.

रुद्रगीत n. *das Lied von* Rudra Bhâg. P. 4,30,1. 10. रुद्रगीता f. sg. Weber, Rînây. Up. 332. pl. Verz. d. Oxf. H. 38,*b*,17. Verz. d. B. H. No. 485.

रुद्रचण्डिका Bez. eines best. Spruches Verz. d. Oxf. H. 90,*a*,15.

रुद्रचण्डी f. *eine Form der* Durgâ; Bez. eines Abschnittes im Rudrajâmala Gild. Bibl. 503.

रुद्रचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Hall 185.

रुद्रच्छत्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 148,*a*,4.

रुद्रज m. *Quecksilber* (Çiva's *Same*) Râéân. im ÇKDa. neutr. Wilson nach ders. Aut.

रुद्रजटा f. Rudra's *Flechte*, Bez. einer best. Schlingpflanze Râéân. im ÇKDa.

रुद्रजप m. Bez. *best. an* Rudra *gerichteter Gebete* Weber in der Einl. zu VS. VIII. Vaâu. Bgn. S. 46,31. Verz. d. B. H. No. 1279. Verz. d. Oxf. H. 296,*b*, No. 723. Ind. St. 9,59.

रुद्रजपन n. *das leise Hersagen des* Rudrajápa Verz. d. B. H. No. 1233.

रुद्रजापक adj. *der den* Rudrajápa *leise hersagt* Nṛs. Tîp. Up. in Ind. St. 9,121.

रुद्रजापिन् adj. dass. Jâéân. 3,304. Nṛs. Tîp. Up. in Ind. St. 9,121.

रुद्रजाप्य n. Bez. *best. an* Rudra *gerichteter Gebete* Verz. d. Oxf. H. 74,*b*,33. 296,*b*, No. 724. Ind. St. 1,471.

रुद्रट m. N. pr. = रुद्रभट्ट und auch daraus entstanden Verz. d. Oxf. H. 209,*b*, No. 491. 210,*a*, No. 495. 211,*b*, No. 499. Sîm. D. 165,2. 254,11.

रुद्रतनय m. Rudra's *Sohn*, Bez. 1) des 3ten schwarzen Vâsudeva bei den Gaina H. 695. — 2) der *Strafe* MBh. 12, 4430. des *Schwertes* H. ç. 144.

रुद्रतल n. *das* Rudra-*Sein* Kâṭhaka in Nir. 10, 3. Maitrâyaṇ. 6, 26. Mâhâbh. P. 46, 15. Ind. St. 3, 453. 5, 54.

रुद्रदत्त 1) m. N. pr. eines Autors Hall 192. °वृत्ति Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,32. — 2) Titel eines medic. Werkes Verz. d. B. H. No. 973.

रुद्रदामन् m. N. pr. eines Fürsten Z. f. d. K. d. M. 4,152. fgg.

रुद्रदेव m. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 141,*a*, No. 288. 144,*b*, No. 301. Hall 180. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 4, Cl. 3. LIA. II, 952.

रुद्रधर m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,33. 292,*b*,6.

रुद्रन्यायवाचस्पतिभट्टाचार्य m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 246,*a*, No. 618. Abgekürzt wird er auch रुद्रभट्टाचार्य und न्यायवाचस्पति genannt.

रुद्रपण्डित m. N. pr. eines *Gelehrten*, = रुद्रसूरि Verz. d. B. H. 211, N. 2.

रुद्रपत्नी f. 1) Rudra's *Gattin* Upaniṣ. im ÇKDa. — 2) *Linum usitatissimum* Ratnam. im ÇKDa.

रुद्रपद्धति f. Titel eines Werkes des Paraçurâma Verz. d. Oxf. H. 278,*b*,32. Verz. d. B. H. No. 1283. 1288.

रुद्रपाल m. N. pr. eines Mannes Râéa-Tar. 7, 144. fgg. 166. fgg. 8, 1151.

रुद्रपुत्र m. Rudra's *Sohn*, patron. des 12ten Manu Mâhâbh. P. 94,32; vgl. VP. 268 und रुद्रसावर्णि.

रुद्रपुर n. N. pr. eines Staates Wilson, Sel. Works I, 24.

रुद्रपूजन n. Rudra's *Verehrung*, Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1280.

रुद्रपूजा f. desgl. ebend. 1281.

रुद्रप्रताप m. N. pr. eines Fürsten, = प्रतापरुद्र Verz. d. Oxf. H. 148,*b*,8.

रुद्रप्रयाग m. Bez. des *Zusammenflusses* der Mandâkinî mit der Gaṅgâ LIA. I, 80. Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,35.

रुद्रप्रिया f. Rudra's *Geliebte*, Bez. *der Terminalia Chebula* Çabdar. im ÇKDa.

रुद्रभट्ट m. N. pr. eines Mannes, = रुद्रकवीन्द्र Hall 26. Verfassers des Çṛṅgâratilaka Pratîpân. 2,*b*,3. Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,23. 209,*b*, No. 491. 212,*a*, No. 500. रुद्रभट्टाचार्य = रुद्रन्यायवाचस्पतिभट्टाचार्य Hall 34. 49. 58. 66. 74. 84. 184. — Vgl. रुद्र.

रुद्रभाष्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 131,*b*,8.

रुद्रभू f. Rudra's *Stätte* d. i. *eine Leichenstätte* Çabdâtnar. bei Wilson.

रुद्रभूति m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Drâbhjâyaṇi Ind. St. 4, 372.

रुद्रभैरवी f. *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,16. °पूजापद्ध 96,*a*,7.

रुद्रमय adj. Rudra's *Wesen habend:* रुद्रे विष्णुः प्रविष्टस्तु तथा रुद्रमयो भवेत् Harîv. 10664.

रुद्रमहादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Verz. d. Oxf. H. 137,*b*, No. 339.

रुद्रयज्ञ m. *ein dem* Rudra *geltendes Opfer* Kâtuîs. 45,18. 27.

रुद्रयामल n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 88,*a*, No. 145. 90,*b*, No. 146. 93,*b*,9. 101,*b*,45. 104,*a*,19. 108,*a*,32. 109,*a*,1. 33. 110,*b*,3. 252,*a*,13. 279,*a*,34. 299,*a*, No. 729. *b*,1. Verz. d. B. H. No. 1176. 1311. 1327. fgg. 1333. Verz. d. Pet. H. No. 46. Gild. Bibl. 503.

रुद्रराय m. N. pr. eines *Fürsten* Kshitîç. 26,10. fgg.

रुद्रराशि m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Cl. 31.

रुद्ररोदन n. Rudra's *Thränen* d. i. *Gold* Bhâg. P. 8,24,18. यद्रोदीत्तदुस्य रुद्रत्वं यदवशीर्यत तद्रजतं हिरण्यमभवदिति श्रुतेः Comm.

रुद्ररोमन् f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2625.

रुद्रलता f. = रुद्रजटा Râéân. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

रुद्रलोक m. Rudra's *Welt* Harîv. 7991. VP. 213, N. 3. — Vgl. रुद्रस्वर्ग.

रुद्रवट N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 4092. Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,18.

रौद्रवरुण adj. *die aus* Rudra's *bestehende Schaar um sich sammelnd:* Soma TS. 3,2,5,2.

रौद्रवत् adj. Rudra oder *die* Rudra *mit sich habend:* Indra Âit. Br. 2,20. VS. 6,32. 38,8. Agni Kâṭh. 10,6. TS. 2,2,8,3. Pâraâv. Br. 21,14,13. Kâty. Ça. 22,3,14.

रौद्रवर्तनि adj. als Beiwort der Açvin RV. 8,22,1.14. 10,39,11. VS. 19,82.

रुद्रविंशति f. Bez. *der letzten 20 Jahre im 60jährigen Jupitercyclus* ÇKDa.

रुद्रविधान n. Titel einer Schrift Ind. St. 1, 469. Verz. d. B. H. No. 1278. °पद्धति 1284.

रुद्रवीणा f. Bez. *einer best. Laute* Saṅgîtaratnâkara im ÇKDa.

रुद्रव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 12,*b*,18.

रुद्रशर्मन् m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 14,27.

रुद्रसंप्रदायिन् m. pl. N. einer Secte Wilson, Sel. Works I, 119.

रुद्रसरस् n. N. pr. eines *Sees* Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,39.

रुद्रसर्ग m. *die von* Rudra *ausgehende Schöpfung* Varâha-P. im ÇKDa. *die Schöpfung der* Rudra (obj.) Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,18. fgg.; vgl. VP. 38, N. 13. — Vgl. रुद्रसृष्टि.

रुद्रसामन् n. Bez. eines best. Sâman Sâṁk. K. 67,*b*,10. 70,*a*,9.

रुद्रसावर्णि m. Bez. des 12ten Manu Bhâg. P. 8,13,33. — Vgl. रुद्रपुत्र.

रुद्रसावर्णिक adj. *dem* Rudrasâvarṇi *gehörig, unter ihm stehend:* मन्वन्तर Mârk. P. 100,38.

रुद्रसिंह m. N. pr. verschiedener Männer LIA. II, 757, N. Verz. d. B. H. 153, N.

रुद्रसुन्दरी f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,10.

रुद्रसू f. *eine Mutter von elf Kindern* Çârdar. im ÇKDa.

रुद्रसूक्त n. Bez. einer best. *Hymne* Verz. d. Oxf. H. 398,*a*, No. 144. Verz. d. B. H. No. 1285. Saṁk. K. 70,*a*,9. pl. 67,*b*,9.

रुद्रसूरि m. N. pr. eines Autors, = रुद्रपण्डित Verz. d. B. H. No. 728.

रुद्रसृष्टि f. *die Schöpfung* Rudra's oder *der* Rudra (obj.) Verz. d. B. H. 128,*a* (10). — Vgl. रुद्रसर्ग.

रुद्रसेन m. N. pr. eines Kriegers MBh. 7,7009.

रुद्रसोम m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 64,110.

रुद्रस्कन्द m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 379,*b*, No. 398. 380,*a*, No. 403.

रुद्रस्वर्ग m. Rudra's *Himmel* Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,17. — Vgl. रुद्रलोक.

रुद्रस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,12.

रुद्रहिमालय m. N. pr. eines Gipfels des Himâlaja LIA. I, 49, N. 1.

रुद्रहूति adj. nach Manion. *die Anrufung der Lobsänger habend:* स्वार्का रुद्रार्य रुद्रहूतये VS. 38,16.

रुद्रहृदय n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3,325.

रुद्राक्रीड m. Rudra's *Spielplatz* d. i. *eine Leichenstätte* Taik. 2,8,61. Bhatt. 17,69.

रुद्राक्ष 1) m. *Elaeocarpus Ganitrus Roxb.* Çârdar. im ÇKDa. n. *die Beere*, die zu Rosenkränzen verwandt wird, Râgân. im ÇKDa. Wilson, Sel. Works I, 224. 236. 262. II, 217. Verz. d. Oxf. H. 64, *a*, 2. रुद्राक्ष so v. a. रुद्राक्षमाला *Rosenkranz* Râga-Tar. 2, 137. 170. °धारण Verz. d. B. H. No. 1301. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,8. 9. °माहात्म्य 94,*b*,1. Verz. d. Pet. H. No. 43. °माला Weber, Kṛshṇaj. 341. °मालिका Verz. d. B. H. No. 1288. — 2) N. einer Upanishad Ind. St. 3, 325.

रुद्राचार्य m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,18.

रुद्राणी f. Rudra's *Gattin* P. 4,1,49. Vop. 4, 23. AK. 1,1,2,32. H. 203. Hall. 1,15. Çiksh. Ça. 4,19,3. Colebr. Misc. Ess. I, 179. MBh. 5, 3969. 13, 3992. 4004. Hariv. 9332. 10275. Bhâg. P. 3, 12,12. 8,17,26. 12,10,3. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,4. Weber, Kṛshṇaj. 291. Bez. *eines 11jährigen nicht menstruirenden Mädchens, welches bei der* Durgâ-*Feier diese Göttin darstellt,* Annadâkalpa im ÇKDa. u. कुमारी.

रुद्राध्याय m. Bez. *bestimmter an* Rudra *gerichteter Gebete* Verz. d. Oxf. H. 74,*b*,32. Ind. St. 1, 383. Verz. d. B. H. No. 143. रुद्राध्यायिन् adj. *diese Gebete hersagend* 1283. Ind. St. 2, 23.

रुद्रायण m. N. pr. eines Fürsten von Roruka Burn. Intr. 143. 340. Schiefner, Lebensb. 274 (44).

रुद्रारि m. Rudra's *Feind* oder adj. Rudra *zum Feinde habend;* m. Bez. *des Liebesgottes* Çârdûlavar. bei Wilson.

रुद्रावर्त N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8018.

रुद्रावसृष्ट adj. von Rudra *abgeschossen* TS. 3,5,*a*,2.

रुद्रावास m. Rudra's *Wohnstätte* d. i. Kâçi (Benares) Çârdûlavar. bei Wilson.

रुद्रिय 1) adj. *dem* Rudra oder *den* Rudra's *gehörig* u. s. w. (zugleich mit Beziehung auf die appellative Bed.): स्तोम ṚV. 2, 11, 3 (nach Sây. so v. a. मुख्यसाधनभूत, स्तोतृकृत; eher von *den* Rudra's *kommend*). मरुत्व 7, 40, 5. रुद्रं रुद्रियं रुद्रियं रुवामके 10, 64, 8. (मरुतः) धा द्यावापृथिवी बभूवुरी वेविदानाः प्र रुद्रियो जिगिरे 1, 72, 4. 3, 26, 8. 8, 20, 3. in Stellen wie 1, 38, 7. 2, 34, 10. 5, 57, 7. 7, 55, 23, wo das Wort am Ende eines Pâda steht, ist der Vocal ī wohl nur metrische Einschiebung (व्यवाय) und wäre folgerichtiger रुद्र zu schreiben. Dieses ist ganz entschieden der Fall in folgenden Stellen: आदित्या वसवो रुद्रियासः 8, 62, 8. 10, 48, 11. sg. m., nach Sây. coll. *die Schaar der* Marut, ist wohl zu erklären wie oben. Çat. Br. 1, 7, 3, 21. 4, 9. 16. एष वै रुद्रियो ऽग्निः 12, 5, 4, 6. तनू Çâṅkh. Çr. 3, 6, 3. — 2) n. Rudra's *Macht* Çat. Br. 1, 7, 3, 21. उभयी रुद्रियात्प्रमुञ्चति 2, 6, 3, 2. 18. so v. a. सुख Sây. zu ṚV. 2, 11, 3. — Vgl. शत°.

रुद्रैकादशिनी f. *die elf* Rudra-*Hymnen* Jîv. 3, 309. Verz. d. B. H. No. 1284. Ind. St. 2, 23.

रुद्रोपनिषद् f. Titel zweier Upanishad Ind. St. 2, 15. 22. 53. 3, 107. Verz. d. Oxf. H. 394,*b*,22.

रुद्रोपस्थ m. Rudra's *Glied*, Bez. eines best. Berges Hariv. 12834.

1. रुध्, रौधति so v. a. रुज्. Hierher ziehen wir वेदोधति नभि *was auf dem Boden sprosst* ṚV. 8, 43, 6. indem wir eine Störung der Versabtheilung hier und in v. 7 annehmen, dessen letzter Pâda mit v. 8 zu verbinden ist. Sây. erklärt निरुणद्धि und denkt einen acc. hinzu. — Vgl. रोध in न्यरोध.

— अव s. 1. अवरोध und 1. अवरोधन.

— उद् s. उद्रोधन.

— प्र s. प्ररोधन.

— वि *sprossen, wachsen:* वि यो वीरुत्सु रोधन्महित्वेनोत प्रजा उत प्रसूषत्तः ṚV. 1, 67, 9. — Vgl. वीरुध्.

2. रुध्, रुणद्धि, रुन्द्धे (आवरणे) Dhâtup. 29, 1. ved. partic. रुधत्तम्, opisch रुन्धति, रुन्धते, रुन्धेय, रुन्धेत, रोधतिः अरुधत् und अरौत्सीत् Vop. 14, 1. ved. अरौत्, रुध्यम्, (अप) अरोधम्, अरुत्स्मसि, अरौत्सिः रुरोध, रुरुधेः रोत्स्यति, रोद्धा Kâr. 4 aus Sidd. K. zu P. 7, 2, 10. pass. reflex. अरुद्ध P. 3, 1, 64. Vop. 24, 11. रोद्धुम् (रोधितुम् MBh. 2, 926), रुद्ध्वा, °रुध्य; 1) *zurückhalten, aufhalten, anhalten, in seiner Bewegung hemmen:* न रुणद्धि यातम् Vârâh. Bṛh. S. 78, 2. इदं रुणद्धि मे पदम् Vikr. 103. प्रयातां किंचिदन्तरम् । दण्डाधिपो रुणद्धि स्म तृतीयस्तान्नम् Kathâs. 4, 35. 48, 62. 73, 292. यद्यपि चञ्चलम् । मनो रुणद्धि तदपि 36, 114. रुन्धन्ति Hariv. 11933. रुन्धान MBh. 7, 3534. Bhâg. P. 3, 13, 31. अरुणात् Çic. 9, 32. तौ (पतौ) रुरोध स सायकैः R. 1, 28, 22. 3, 34, 10. Ragh. 7, 32. 12, 80. 13, 17. Kathâs. 10, 187. 13, 118. रुरुधुः MBh. 1, 8074. दण्डेन रुरुधुः प्रजाः 12, 6149. Hariv. 7513. Kathâs. 25, 249. अरौत्सीत् MBh. 8, 344. अरुधत् Çic. 9, 72. रुद्ध्वा Mâlav. 52, 6. रोद्धुम् R. 2, 111, 17. 3, 5, 20. Spr. 2920.

Kathās. 62, 224. नगरं प्रविशन् आप्तः सर्वं सैन्यैरुध्यत Rāǵa-Tar. 5, 431. Kathās. 18, 392. रुद्ध Gobh. 2, 3, 9. R. 1, 28, 23. 7, 36, 43. Vikr. 121. Spr. 4818. Kathās. 42, 46. 45, 246 (रुद्धाः zu lesen). व्यरुरुप्रवेशतः 48, 29. Rāǵa-Tar. 3, 19. 51. 4, 248. 6, 44. अरुरुधुः 49. Vet. in LA. (III) 17, 22, v. l. रणे ऽरुद्धः Harīv. 9199 nach der Lesart der neueren Ausg. मैथुनरुद्धस्य पाण्डोः *im Beischlaf gehemmt, dem der Beischlaf gewehrt war* Bhāg. P. 9, 22, 26. (लिप्सान्) गिरीनरोत्सीत् Bhaṭṭ. 15, 80. नदीं शुक्तिमतीं गिरिः। अरौत्सीत् MBh. 1, 2367. Harīv. 11207. R. 7, 32, 15. 18. Bhāg. P. 9, 15, 20. *zurückstossen* Bhaṭṭ. 8, 80. अस्त्रे रुद्धे MBh. 5, 7305. R. 3, 35, 48. शक्यते नैव रोद्धुं च कथमप्ययुना मया (प्रवरुणम्) *ich kann das Schiff nicht zurückhalten* Kathās. 26, 14. यानपात्रमकस्मादभवद्रुद्धं व्यासक्तमिव केनचित् 18, 294. 298. 303. धारयामास जीवितम्। रुद्धे प्रविष्टया रुद्धे तत्प्रत्यागमवाञ्छया 230. *zurückhalten, festhalten, vor einem Falle bewahren:* पाशाबन्धः कुसुममदृशं प्राणशो लुञ्चनानां सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि Megh. 10. करेण रुद्धा ऽपि हि केशपाशः Ragh. 7, 6. करुरुद्धनीवि (वसनं) Śiç. 9, 75. — 2) *hemmen, unterdrücken, verhindern, wehren:* प्राणान् AV. 11, 3, 33. ओषधिरुद्धवीर्य Ragh. 2, 32. Bhāg. P. 3, 8, 11. 4, 22, 39. रुन्धन्नपि धिया शुचः 9, 11, 16. रुणद्ध्यर्वागमम् Vārāh. Bṛh. S. 53, 69. रुद्धगिर् Bhāg. P. 10, 82, 14. 60, 23. Spr. 2083. रोद्धुं रुमितम् 2084. रुद्धतटाभिमुख्य (d. i. रुद्ध + तटा°, nicht रुद्ध - तट + आ°) 2586. भवतामननुज्ञातं (subj.) रुणद्धि मम विक्रमम् R. 5, 58, 7. अरुद्ध च पराक्रमम् Bhaṭṭ. 15, 63. रुद्धालोके नरपतिपथे Megh. 38. रुद्धा दृष्टिः Daçak. 73, 5. निद्रां नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशाम् Megh. 88. रुद्धापाङ्गप्रसरं 93. प्राणापानगती रुद्ध्वा Bhag. 4, 29. वियति वल्गतो नक्षत्राणां गतीरपि Prab. 54, 13. दिव्यानां च गतीं रोद्धुम् Kathās. 33, 188. रुरुधुस्तस्य प्रवेशम् 18, 107. 46, 201. क्षितिभृद्रुद्धनिर्गम Rāǵa-Tar. 2, 28. रुद्धप्रवाहा वितस्ता 4, 703. दुरतिपाकां दलिणाभिश्च रुद्धः Vārāh. Bṛh. S. 46, 17. रणेरणेवो रुरुधिरे रुधिरेण सुरद्विषाम् *der Staub wurde gebunden* Ragh. 9, 21. किं रुद्धं ते मयाशनम् *habe ich dir das Essen versagt?* Kathās. 27, 35. भूमावरुन्धती ख्याता रुन्धत्यपि मतीधुरम् (so ist zu schreiben) *die oberste Stelle der tugendhaften Frauen* (anderen Frauen) *versagend d. i. selbst an der Spitze der tugendhaften Frauen stehend* 80. मत्या रुद्धाः *gehemmt, nicht wirkend* Sarvadarçanas. 171, 10. — 3) *zurückhalten* so v. a. *bei sich behalten:* घोरे घर्भूहिंयमैरोत् AV. 10, 4, 26. so v. a. *sparen, kargen mit* (acc.): त्वं ह्यिग्नेव न धना रुरोधिथ ṚV. 1, 102, 10. तस्मै कृणोमि न धना रुणध्मि 10, 34, 12. यो देवकामो न धना रुणद्धि 42, 9. — 4) *einschliessen, einsperren in* (loc.): विमाने तौ रुरोध R. 7, 24, 2. रुरुधुस्तं मरीचाले पुरे Mārk. P. 122, 14. रावणात्तःपुरे रुद्धा R. 4, 58, 25. 5, 10, 11. M. 9, 12. Bhāg. P. 1, 8, 23. 4, 28, 60. 7, 1, 27. मनः — रुदि रुन्ध्याच्छनैः 15, 33. गर्तरुद्ध इवोरगः R. 4, 34, 2. आत्मरुद्धानि (ओषधिबीजानि) Bhāg. P. 4, 17, 24. mit doppeltem acc.: रुरोध गोकुलं गोपैः Vop. 3, 6. einen Weg *versperren:* रुद्धा रथमार्गम् R. 3, 56, 8. Megh. 100. रुणद्धि सवितुर्मार्गम् Bhaṭṭ. 6, 35. einen Feind, einen Ort *einschliessen, belagern, besetzen:* एकं रुद्धा स्थिताः सत्तो रुद्धाः स्मो ऽन्येन शत्रुणा Kathās. 49, 70. अरुणाच्यवनः साकेतम्, अरुणाच्यवनो माध्यमिकान् Pat. in Ind. St. 5, 131. लङ्कायां उत्तरं द्वारम् R. 6, 16, 28. रुरोध च गृहं तस्य Kathās. 17, 81. 43, 104. 88, 26. fg. 112, 163. यत्संप्रति गृहमपि मे बलवत्तरेण मकरेण रुद्धम् *besetzt* Pañcat. 227, 21. अरुन्धतीं पुरीम् MBh. 3, 638. 13237. R. Gorr. 1, 68, 19. 21. 6, 16, 55 (med.).

Vārāh. Bṛh. S. 7, 19. Bhāg. P. 3, 3, 10. 4, 28, 2. 8, 15, 23 (med.). Bhaṭṭ. 15, 10. पुरं चारुरुध्यतारिणा Mārk. P. 37, 18. Bhaṭṭ. 14, 29. Kathās. 31, 105. Bhāg. P. 9, 10, 17. *verschliessen:* नगरद्वारम् R. 4, 9, 66. Rāǵa-Tar. 5, 431. रुद्धा गुहाः किम् Spr. 4033. (वायुः) रुरोध सर्वभूतानि यथा वर्षाणि वासवः R. 7, 35, 50. 58. — 5) *verhüllen, verdecken:* अर्कं रुन्ध्यां शरैः R. 3, 55, 10. 4, 27, 9. 37, 29. Ragh. 14, 82. Kathās. 108, 7. Rāǵa-Tar. 3, 60. शरैरुत्तरितं रुरुन्धतुः (sic) R. 6, 90, 17. Mṛicch. 76, 6. Rāǵa-Tar. 2, 139. भूतं (*ein Wesen*) रुन्धानं रोदसी शरीरिणा Vārāh. Bṛh. S. 53, 2. यो (सै die neuere Ausg.) भुवं चैव रुन्धेय (रुन्धेयम् ed. Calc.) Harīv. 305. वस्त्रान्तररुद्धवक्त्राः Mṛicch. 159, 18. घनतिमिररुद्धे च नयने Spr. 1615. शोकाद्रुवबाष्परुद्धदृशः Vārāh. Bṛh. S. 3, 14. Kathās. 14, 24. Spr. 2277. Bhāg. P. 1, 13, 30. 4, 30, 44. मेघरुद्ध MBh. 5, 7193. चरणार्धरुद्धवमुष so v. a. *mit dem halben Fusse den Erdboden berührend* Spr. 1246. रुद्ध = संवीत. आवृत AK. 3, 2, 40. H. 1476. — 6) *verstopfen, erfüllen, anfüllen:* धमद्भिः कण्ठदेशम् Kathās. 17, 81. मुखे बाष्पो रुणद्धि मे R. 4, 60, 1. रुक्तरुद्धमुखाः 52, 25. 53, 1. आज्यधूमोद्भवो गन्धो (आज्यधूमो भवेद्गन्धो ed. Calc., आज्यधूमोद्भवोऽगन्धो ed. Bomb.) रुणद्धीव तपोवनम् MBh. 13, 6482. वेश्मानि धूमरुद्धानि 14, 1741. रुद्धवसुधान्नेक्षाविर्वास्य Rāǵa-Tar. 1, 115. ज्वालारुद्धमिवोरगम् R. 4, 33, 41. ग्रामरुद्धवदन (वाजिन्) Vārāh. Bṛh. S. 93, 7. — 7) *peinigen, hart mitnehmen:* मर्म मे निशितः शरः। रुणद्धि (= पीडयति Comm.) मृदु सोत्सेधं तीरमम्बुरयो यथा॥ R. 2, 63, 43. — 8) रुद्ध = संवरुद्ध *erhalten* Bhāg. P. 2, 7, 21.

— caus. 1) *zurückhalten, aufhalten:* कौरवान्रुन्धतो रोष कर्णो रोधयते MBh. 8, 2903. — 2) *Jmd durch Jmd einsperren lassen*, mit dopp. acc.: रोधयामासुरिष्टं तौ सुगोप्यमपि Pañcar. 1, 14, 105. *belagern lassen durch* (instr.): लङ्कां रोधयामास वानरैः Ragh. 12, 71. — 3) *Macht ausüben auf, fesseln;* mit acc.: न रोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म एव च Bhāg. P. 11, 12, 1. — 4) *quälen, peinigen:* मैथिलीं हरता तेन मां च रोधयता भृशम् R. 4, 5, 22. in dieser Bed. auch रुन्धयति in der Verbindung: शोको मां रुन्धयत्यथम् MBh. 3, 999. 12, 191. 733; vgl. रुध् caus. 2).

— अनु 1) *versperren:* शिलाभिः u. s. w.: ये मार्गमनुरुन्धन्ति MBh. 13, 1849. *einschliessen, umzingeln:* रुद्धानुचरैर्मखो मघान् — अन्वरुध्यत Bhāg. P. 4, 5, 13. *fesseln, in seine Gewalt bringen, beherrschen:* यावन्मनो रजसा पूरुषस्य सत्त्वेन वा तमसा वानुरुद्धम् 5, 11, 4. तपोवनमनुरुन्धन्ति Çiç. 18, 10, v. l. für तपोवनमुपरुन्धन्ति *in Verwirrung bringen.* — 2) pass. oder Klasse 4. *sich einschliessen in, sich hängen an* (acc.): सौपर्णीरनु रुध्यसे ṚV. 8, 43, 9; vgl. P. 6, 1, 134, Sch. — 3) *kleben an* (acc.): अनुरुन्ध्यादहं व्यूषम् so v. a. *während dreier Tage wird er der Sünde nicht los* M. 5, 63. so v. a. *Jmd auf dem Fusse folgen:* यथमनुरुध्यमानस्तायमीभ्यामबालसत्त्वो बालः Çiç. Ca. 151, 2 (अनुबध्यमानः die andere Rec.). पुंसामनुरुध्य ज्ञातां so v. a. *unmittelbar nach* P. 3, 2, 100, Sch. *an Jmd oder Etwas hängen, Jmd zugethan sein, einer Sache sich hingeben, obliegen, sich angelegen sein lassen;* med. und act.: एके तमनुरुन्धाना ज्ञातयः पर्युपासत Bhāg. P. 10, 2, 4. नानुरुन्धन्ति मोतृचित्तानुवर्तनम् Rāǵa-Tar. 3, 95. मानुषे लोकमासाद्य तज्ज्ञातिमनुरुन्धतः (कृष्णस्य) Bhāg. P. 10, 7, 3. सर्गादि यो ऽस्यानुरुणद्धि 4, 17, 33. gewöhnlich अनुरुध्यते (कामे Daçar. 26, 65) und °सि in dieser Bed.: यद्यमप्यापि — राममेवानुरुध्यसे MBh. 3, 16194. नानुरुध्ये विरुध्ये वा न द्वेष्मि न च कामये 12, 9349. 15, 966. स-

मस्यमनुरुध्यते विषमस्थं त्यजसि (योषितः) R. 3, 19, 6. भर्तारमनुरुध्यन्तः क्लिश्यन्ते वीरपत्न्यः MBu. 4, 492. गतप्रोकान् — पार्थान्नानुरोद्धुं तमर्हसि 3, 15632. अनुरुद्धः (तनुरुद्ध beide Ausgg.) शिक्षी राज्ञा मिथ्याचरितो मया *dem ich zugethan bin* 5, 1308. इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धाम् *seine Zuneigung zu erkennen gebend* Uttarab. 55, 3 (71, 1). यद्यदालम्बसे काम तत्तदेवानुरुध्यसे *daran hängst du* Spr. 3594. धर्मम्, ज्ञानम्, काममनुरुध्यते Nir. 14, 6. MBu. 5, 4136. Spr. 4275. दोषम् MBu. 3, 13891. सुखप्रिये 5, 950. धर्म्यमुपभोगम् 12, 6676 (अनुरुध्ये st. अनुरुन्ध्ये ed. Bomb.). शौचम् 8390. निद्राप्रतिज्ञामनुरुध्यमाना मकाण्डमाः कर्म समारभन्ते *haltend an* Spr. 216. धर्ममेवानुरुध्यति MBu. 3, 2169. धर्यम् 12675. सुखप्रिये 5, 648 (कामात् st. कामान् ed. Bomb.). काममनुरुन्ध्यता (lies °रुध्यता) Mâlav. P. 75, 16. आश्रमे वासमनुरुध्य *Gefallen findend an* R. 7, 48, 5. — 4) *gutheissen, billigen;* med.: इक्ष्वाकूणां गोविन्दराज्ञोक्तिं नानुरुन्ध्मके Kull. zu M. 4, 7. 11, 180. अनुवानस्मि यत्कर्म कृतवानसि भार्गव। अनुरुध्यामके ब्रह्मन्पितुरानृण्यमास्थितम् (आस्थितः ed. Bomb.) ॥ *wir billigen es, dass du* R. 1, 76, 2. यत्तैर्वाचित्रैर्यत्नतो भवाय ते राजन्स्वदेशाननुरोद्धुमर्हसि Bulg. P. 4, 14, 21. — 5) *sich richten nach, Rücksicht nehmen auf:* मनो ऽनुरुन्धती भर्तुः MBu. 13, 4497. लोकगाथामनुरुन्धानः Sarvadarçanas. 2, 1. नानुरोत्स्ये शुभाल्लक्ष्मीम् Buatt. 16, 23. कृत्स्न तिर्यग्जो ऽपि परिचयमनुरुध्यते Uttarab. 51, 8 (66, 8). अनुरुध्यस्व भगवतो वसिष्ठस्यादेशम् 75, 13 (97, 7). शक्तिर्गुणाभ्यां तत्र प्रधानमनुरुध्यते Verz. d. Oxf. H. 162, *b*, N. 7. स्वामनुरुध्य बुद्धिम् 198, *b*, No. 467. न चास्या हृदयमननुरुध्य स्वेच्छया नर्म कुर्यात् Kâmaç. bei Mallin. zu Kumâras. 7, 94. नायं पापो मया कृत्स्न युक्तः स्यादनुरोधितुम्। प्राणेन *er verdient nicht, dass ich in Bezug auf sein Leben Rücksicht auf ihn nehme* MBu. 2, 926. स्वर्गार्थमनुरुद्धः so v. a. *den Himmel im Auge habend* Spr. 4673, v. l. — Vgl. अनुरुद्ध fg., अनुरोध fgg.

— अप *abhalten, abwehren; verstossen, ausschliessen*, namentlich von Herrschaft oder Besitz *vertreiben:* अपरुद्धं ज्ञायामरोधम् RV. 10, 34, 2. 3. अपनिधिम् Ait. Br. 5, 30. अन्यतेत्रे अपरुद्धं चरित्रम् AV. 3, 3, 4. 12, 3, 43. अपेमं जीवा अपरुध्यगृक्ष्यः 18, 2, 27. राष्ट्रात् Ait. Br. 8, 10. Çat. Br. 12, 9, 3, 1. TS. 2, 2, 6, 5. 3, 4, 1. यो ऽपगतः सा ऽपरुध्यतां यो ऽपरुद्धः सो ऽपगच्छतु 6, 6, 8, 3. Kâṭh. 27, 5. सिन्धुतिरात्रावपिर्योगमपरुद्धधारम् Pañcav. Br. 12, 12, 6. 15, 3, 25. 18, 5, 5. Kâtj. Ça. 19, 1, 3. 22, 9, 16. अपरुद्ध Kâm. Nîtis. 13, 73 fehlerhaft für उपरुद्ध (vgl. 67). Vgl. अपरोद्धृ, अपरोध. — desid. अपरुरुत्स्यमान *den man abschaffen will* Kâṭh. 37, 11.

— व्यप intens. *Jmd verstossen, der Herrschaft berauben* R. ed. Bomb. 2, 58, 20; vgl. u. अव intens.

— अभि 1) *abwehren, abhalten* MBu. 8, 4303. — 2) *in Verwirrung bringen:* सैनिकास्तपोवनमभिरुन्धन्ति Çâk. Ça. 24, 10. 33, 3. उपरुन्धन्ति die andere Recension.

— अव 1) *Jmd abhalten, zurückhalten:* न शशाकोत्तरैर्वाक्यैरवरोद्धुं नमुग्धतम् R. 3, 1, 32. मा गा इत्यवरुद्धा Çiç. 33. Sin. D. 48, 8. *versperren, hemmen:* सेतसो वर्त्मान्यवरुध्यते गर्भेण Suçr. 1, 328, 8. *festhalten, einschliessen* (nach dem Comm.): अवं श्मशा रुंधहाः RV. 10, 163, 1. *absondern, zurückstellen, einsperren; beseitigen:* गवां सङ्घम् Çat. Br. 11, 6, 3, 1. 14, 6, 4, 2. उद्गातारम् 13, 2, 2, 2. मल धातव्यान् 14, 5, 2, 1. 6, 2. Çâṅkh. Br. 12, 2. Sâṅgv. Br. 4, 2. अवरोधि गौर्देवदत्तेन *wurde eingesperrt*, अवारुद्ध गौः स्वयमेव *sperrte sich selbst ein* P. 3, 1, 64, Sch. mit doppeltem acc. P. 1, 4, 51. अवरुणद्धि गौ व्रजम् Schol. शोकं चित्तमवारुधत् *er schloss seinen Kummer in's Herz ein* Buatt. 6, 9. gewöhnlicher mit acc. und loc.: आत्मानमात्मन्यवरुध्य Bulg. P. 2, 2, 16. ईश्वरः सर्वो रुणद्धवरुध्यते ऽत्र कृतिभिः शम्भूपुभिः 1, 1, 2. तिर्यङ्मनुष्यविबुधादिषु — अवरुद्धदेहः 3, 9, 19. अवरुद्धानु दामोपु *eingeschlossen* Jiân. 2, 290. अवाविकाः *eingehegt* M. 8, 236. महिमा तस्य बद्धवन्धक्या अवरुद्ध इवाभवत् *gleichsam eingesperrt* Râga-Tar. 6, 286. तामवरुद्धवमनैषीत् so v. a. *sperrte sie in seinen Harem ein* (vgl. अवरोध) 4, 677. भवानीनाथैः स्त्रीगणार्बुदसङ्खैरवरुध्यमानः (= सर्वतः सेव्यमानः Comm.) *umlagert, umgeben* Bulg. P. 5, 17, 16. *belagern:* पुरमवारुणात् Daçak. 93, 20. काश्या गाढतरावरुद्धवसनप्रान्ता *zugezogen, zusammengebunden* Spr. 630. med. *bei sich behalten, zurückhalten* so v. a. *nicht gewähren:* यमे प्रवर्तितो धर्मस्तुलां धारयता त्वया। स्वर्गद्वारं च वृत्तिं च भूतानामवरोत्स्यते ॥ MBu. 12, 9390. *in sich schliessen, enthalten* Bulg. P. 3, 12, 11. अवरुध् = अपरुध् *verstossen, ausschliessen, vertreiben:* यस्य चार्थे ऽवरुध्यसे R. 2, 30, 9. राष्ट्रात् Kauç. 16. Çiṅkh. Çr. 14, 50, 8. पाञ्चालस्य वने वसतो वरूथस्य (d. i. ऽवरुद्धस्य, wie schon Weber vermuthet hat) Kâṭh. Anukr. in Ind. St. 3, 460. अवरुद्धा ऽचरत्यर्वो वर्षाणि त्रिदशानि च MBu. 4, 2011. अवरुद्ध *bedeckt, verhüllt:* निगादितद्वयैर्वलधरज्वालोज्ज्वलमवरुद्धं व्यरुमव वाहः। यदि विषदेवं भवति सुभितम् Vasiṣ. Bṛh. S. 24, 20. अवरुद्धचरन् *unerkannt, incognito* Daçak. 104, 15. — 2) act. *verleihen, verschaffen (für Jmd abfordern):* सा मे ऽमुष्मादिदमवरुन्ध्यात् (v. l. अवरुन्द्धाम् *erlange für mich*) Kaṭha Up. 2, 3. med. *erhalten, erlangen, erreichen (für sich absondern, als sein Theil verwahren):* अयैरिमितं लोकमवै रुन्धे AV. 9, 5, 22. 6, 9. 10. पथो देवयानान् 15, 11, 3. अमृतस्य भक्षम् 13, 2, 15. तेन वै स देवतामेन्द्रियं चावारुन्ध TS. 2, 5, 2, 2. सर्वत एवैनमवरुध्य चिनुते 5, 7, 10, 2. प्रजामवरुन्धीमहि 7, 2, 6, 1. Âçv. Br. 1, 6. 12. 2, 17. 3, 2. कामम् Kâṭh. 33, 1. Çat. Br. 4, 6, 9, 20. अन्नम् 5, 2, 2, 3. 10, 6, 3, 5. सर्वं ह्येवास्य तदात्मावरुद्धमभिजितम् 11, 2, 3, 1. 12, 7, 3, 7. 14, 4, 3, 21 (अवारुन्धत् Bṛh. Âr. Up. 1, 3, 21). Sâṅkh. Br. 3, 7. Kauṣṭ. Up. 2, 15, 2. Bulg. P. 2, 7, 21 (wo die ed. Bomb. अमृतान्यवावारुन्ध यानुश्च liest; das erste अव erklärt der Comm. अवसन्नं पूर्वं देत्यैः). 3, 25, 27. 4, 13, 9 (अवरुन्धानः = आप्नुवन्, ज्ञानन् Comm.). 5, 1, 15. 2, 21. 4, 4. 14, 1. 22. 32 (der Comm. ergänzt सुखदुःखादि, Burnouf übersetzt अवरुन्धान durch *s'arrêtant*). 39 (अवरुन्धते st. अवरुन्द्धे). 10, 68, 28. 11, 12, 2. act.: पथो काष्ठामचिरादवरोत्स्यसि 2, 33, 10. सर्वे कामा अवरुद्धाः स्युः Çaṅk. zu Kauṣṭ. Up. S. 16. Bulg. P. 3, 23, 7. 10, 15, 22. Mârk. P. 49, 58 (?). — 3) *an Jmd hängen, Jmd zugethan sein* (vgl. अनु): पशुमेवावरुन्धतो Bulg. P. 4, 15, 5. — Vgl. 2. अवरोध fg., 2. अवरोधन. — caus. वेगावरोधित wohl *verstopft* Suçr. 2, 239, 3. — desid. med. अवरुरुत्सते *zu erlangen wünschen, einzuholen suchen* TS. 1, 5, 8, 1. TBr. 1, 3, 3, 1. 2, 1, 3, 1. Ait. Br. 1, 12. अमृतत्वम् Çat. Br. 10, 4, 3, 6. Kâṭh. 12, 5. पशून् Âçv. Çr. 11, 2, 18. Bulg. P. 3, 9, 18. 9, 13, 10. act. 4, 8, 30. — intens. *aus der Herrschaft vertreiben, der Herrschaft berauben:* अतिक्रान्तवया राजा मा स्मैनमवरोरुधः (स्मैनं व्यरोरुधः ed. Bomb.) । कौमारराज्ये जीवस्व तस्यैवाज्ञा प्रवर्तताम् ॥ R. 2, 58, 20.

— पर्यव s. पर्यवरोध.

— प्रत्यव 1) *hemmen, unterdrücken:* प्रत्यवरुद्धोज्झन Bulg. P. 1, 10,

1. = संकुचितभोग oder प्राप्तभोग Comm. — 2) *wiedererlangen:* स्मृतिं प्रत्यवरुध्य Bhāg. P. 2,2,1. — Vgl. प्रत्यवरोधन.

— समव 1) *einsperren, einschliessen:* कोशकारो यथात्मानं कीटः समवरुन्धति (= °रुणद्धि) MBh. 12,11266. pass. *enthalten sein:* एकस्मिन्यज्ञक्रतौ समवरुध्यन्ते Pāñcar. Bh. 16,15,9. 19,9,5. — 2) *erlangen, erhalten:* °रुद्ध Bhāg. P. 10,87,14. — 3) pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen:* समवरुध्यते im Gegens. zu युज्यते Harīv. 11778 nach der Lesart der neueren Ausg. (Nīlak. macht auf die überschüssige Silbe aufmerksam).

— आ 1) *einschliessen, einsperren:* वत्सानारुध्य शाद्वले Bhāg. P. 10, 13,7. *umzingeln, belagern:* तेषु तेषवकाशेषु शीघ्रमारुध्यतां पुरी Harīv. 3013. — 2) *abwehren, verscheuchen:* बन्धुता प्रत्तमारुणात् Bhaṭṭ. 17,49. — 3) *festhalten, herholen, betreiben:* आरुन्धानो गर्भ्या समत्सु ṚV. 4,38, 4. आ रुन्धां सर्वतो वायुः AV. 3,20,10. वायवारुन्धि नो मृगान् Kauç. 127. रसम् Śat. Br. 3,9,3,13. 15. 24. — 4) med. *sich enthüllen, sich entwickeln* (?): चतुरारुन्धते, श्रोत्रमा°, प्राण आ° Kāṭhaka-Up. 2,3. आरुन्धे v. l. — Vgl. आरोधन. — caus. 1) *versperren:* पद्ध्यामारोधयन्मार्गम् MBh. 1,4188. *belagern:* नगर्याः पश्चिमं द्वारं शीघ्रमारोधयत्तु Harīv. 3015. — 2) *belästigen:* काकेनारोध्यमाना R. 2,96,40; vgl. u. रुध्.

— समा *versperren:* तस्य मार्गं समारुध्य R. 7,32,42.

— उद् *hinaustreiben, verdrängen aus:* मेधावी राजा सर्वेभ्यो मात्सेभ्य उदरौत्सीत् Śat. Br. 14,7,1,41.

— उप 1) *einsperren, einschliessen, eintreiben:* वर्तयो उपरुन्धन्ति मिथुनत्वाय TBr. 3,8,22,3. Śat. Br. 13,2,2,2. पशून् 3,7,2,4. गाः Kāṭhaka-Up. 4,6, 1. अक्षाश्चैवोपरोत्स्यते पयसो अर्धं युगत्तये Harīv. 11158. उपरोधम् absol. in Verbindung mit einem loc. oder instr. P. 3,4,49. व्रजेषूपरोधं गाः स्थापयति, व्रज उपरोधम् und व्रजेनोपरोधम् Schol. उपरुद्ध *ein Gefangener* Raghuv. 18,17. einen Feind, eine Stadt *einschliessen, umzingeln, belagern:* उपरुध्यारिमासीत M. 7,195. उपरुद्ध (बल) Kām. Nītis. 13,67. 73 (hier अपरुद्ध gedruckt). बलैः समन्तादुपरुद्धं कुसुमपुरम् Mudrār. 41,15. Pañcar. ed. orn. 55,16. पवनेनोपरुद्धायतन Bhāg. P. 4,28,13. अभ्यक्तरं विशितुः प्रमदोपरुद्धे (°रुद्धो?) लोकस्य *eingeschlossen, umringt* Kathās. 34, 239. — 2) *zurückhalten, behalten, nicht aus den Händen geben:* संभूय वणिजो पण्यमनर्घेणोपरुन्धताम्। विक्रीणतां वा विक्रितो दण्ड उत्तमसाहसः॥ Jāgn. 2,250. — 3) *belästigen, plagen, beunruhigen, behelligen:* मा मोपरोत्सीः Kaṭhop. 1,21. उपरुन्धन्ति राजानो भूतानि विजयार्थिनः MBh. 12,3584. Raghuv. 4,83. उपरोधति R. 7,74,6. उपरुन्धानाः (उपरुद्धानाम् die neuere Ausg., = अपराधवताम् Nīlak.) Harīv. 6038. एवं वदद्भिर्वाक्यैरुपरुन्ध्य R. 7,73,19. परदारान् — नोपरोद्धुमिहार्हसि 5,47, 16. Raghuv. 5,22. Mālav. P. 10,5. उपरुध्यमान Bhāg. P. 5,14,5. बाष्पवेगोपरुद्धात्मन् R. Gorr. 2,58,25. बलीयसा 3,43,4. Bhāg. P. 4,28,15. 24. 5,26,16. प्राणानुपरुणद्धीति मे so v. a. *bedrohen, in Gefahr bringen* R. 2,75,41. R. Gorr. 2,63,41. 79,20. उपरुध्यन्ति मे प्राणाः 3,73, 14. पोरा अस्मदन्वेषणास्तपोवनमुपरुन्धन्ति *bringen in Verwirrung* Çiç. 18,10. 24,8. — 4) *Jmd aufhalten, zurückhalten:* मा गा इत्युपरुद्धा v. l. für अवरुद्धा Çiç. 35. *Etwas hemmen, unterbrechen, stören:* प्रवर्तं नोपरुन्धेत शनैरग्निमिवेन्धयेत् MBh. 12,7817. शास्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यो धर्मो यत्रोपरुध्यते M. 4,348. Daçak. in Bemp. Chr. 182,17. कृत्यमारब्धं किं न पूर्वमुपारुधः R. 2,36,14. उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम् Çiç. 87,13. उपरुद्धवृत्तिं वाप्यं कुर् 90. वाग्योपरुद्धया वाचा R. Gorr. 2,60,4. — 5) *verhüllen, verdecken:* रेणुः — उपरोध सूर्यम् Raghuv. 7,36. उपरुद्धो च नगतीं तमसेव समावृताम् R. 2,69,11. — 6) = अपरुध् *verstossen, von der Regierung ausschliessen:* सगरो ज्येष्ठं पुत्रमुपारुधत् R. 2,34,16. रामः विमकोरात्मजं येनैवमुपरुध्यते 36,26. — Vgl. उपरोध fgg. — caus. *verkürzen, verringern, Einbusse erleiden lassen:* धर्मार्थविघ्नाकालाननुपरोधयन्कामसूत्रं तदङ्गविद्याश्च पुरुषो ऽधीयीत Verz. d. Oxf. H. 216,b,29.

— प्रत्युप *verstopfen:* प्रत्युपरुद्धकण्ठो न किंचिदूचे ऽश्रुपरिप्लुतात्मः Bhāg. P. 11,29,35.

— समुप *hemmen, unterbrechen, stören:* शौद्रं हि कुर्वतः कर्म धर्मः समुपरुध्यते MBh. 13,2148.

— नि 1) *zurückhalten, festhalten, aufhalten, anhalten, in seiner Bewegung hemmen:* मुतरवे प्रियरवे दधानाः सख्युः पृष्टे निरुन्धानासो अप्नस् ṚV. 1,122,7. स निरुध्या नवीयो यविष्ठो यामिर्विशंयाँ अकृणोत् बलिहूतः 5,6,5. दस्युभिर्निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम् MBh. 4,199. एतांश्चापि निरोत्स्यामि वेलेव मकरालयम् 3,2281. 7,5335. Harīv. 5810. Çiç. 16,16. निवेष्टुकामं न्यरौत्सीत् Verz. d. Oxf. H. 259,a,20. त्वं चेत्तोयवेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोद्धुं क्षमः Spr. 3020. सङ्क्रामानमकार्येषु निरुन्ध्युर्नरिणो नृपम् 3116. निरुद्धा मालिकाभिः Varāh. Bṛh. S. 92,2. Kathās. 4,36. 42,127. Rāja-Tar. 1,322. किं धर्मेण निरुध्यसे 4,32. Mārk. P. 102,3. Bhaṭṭ. 16,20. वेगादर्कं प्रविशतं पवनं निरुन्ध्याम् so v. a. *einholen* Mṛicch. 10,20. स्रोतः *hemmen* Suçr. 1,102,2. 262,8. निरुद्धालेपनसंज्ञस्तेनास्रावसंनिरोधः *den Ausfluss hemmend* 64,13. पद्मप्रावृतव्रजपुटनिरुद्धेन वाय्वेण Spr. 1720. mit Ergänzung von रयम् so v. a. *lenken* Çiç. 169. *abhalten, abwehren:* निरुन्धानो यमीतिं गोभिः ṚV. 1,53,4. वृत्रा 8,2. Ait. Br. 1,10.3,36. स्रावाद्रुदकात् Śat. Br. 13,4,2,17. — 2) *hemmen, unterdrücken, verhindern, wehren:* न्यरुन्धबुद्धलद्वाग्यम् Bhāg. P. 4,10,14. 11,33. 3,23,50. अवतरिते गतिर्यया दर्शनं च न्यरुध्यत (so ist zu lesen) MBh. 4,1052. Harīv. 11770. 11781. निग्रसीष्यं निरुन्धानः Spr. 1756. ऐहिकामुष्मिकान्कामानिरुध्य Mānav. P. 39,23. निरुद्धा वासनाः केन Rāja-Tar. 3,424. Sarvadarçanas. 164,5. Bhaṭṭ. 3,39. तदा श्वा निरुणद्धि यात्राम् Varāh. Bṛh. S. 89,14. 90,36. — 3) *einschliessen, einsperren:* अतीष्टुविरुद्धा आपः पणिनेव गावः ṚV. 1,32,11. निरुद्धधिर्न्यकृषन्तृष्यावान् 10,28,10. याचितो निरुन्धानः *einschliessend, nicht herausgebend* AV. 12,4,36. 5,17,12. Śat. Br. 3,7,2,8. विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुन्ध्यादेकवेश्मनि M. 11,176. Kathās. 34,184. गिरिव्रजे निरुद्धानां राज्ञां कृष्णेन मोक्षणम् MBh. 1,409. R. 5,16,51. निरुद्धतोय (मकरालय) 93,11. Bhāg. P. 5,26,34. मनो हृदि निरुध्य Bhag. 8,12. einen Weg *versperren:* निरुन्धानाः सतां मार्गम् Kām. Nītis. 4,12. मार्गं निरोद्धुम् Mṛicch. 85,23. न्यरुन्धंश्चास्य पन्थानम् Bhaṭṭ. 17,49. einen Ort *einschliessen, belagern:* निरुरुधुः — बलैर्नृपमन्दिरम् Rāja-Tar. 1,368. राजधानीं निरुद्धवान् 6,125. Bhāg. P. 9,6,16. 10,50,4. 76,9. *verschliessen, schliessen:* निरुद्धे नन्दिना द्वारे Kathās. 1,46. 50,183. निरुद्धवातायनमन्दिर Ṛt. 5,2. श्रोत्रे निरुद्धे मया Spr. 996. die Sinne, das Herz (gegen die Aussenwelt) *verschliessen:* निरुध्य चेन्द्रियग्रामम् MBh. 3,13633. निरुद्धचेतसो ऽज्ञाणि निरुद्धान्यक्षिलान्यपि Spr. 1604. मनो निरुन्ध्यात् 2867. द्वारं निरुध्यासुम् Bhāg. P. 4,8,60. निरुद्धकरणाशय 1,13,58. यदा चित्तं

निरुध्यते Sarvadarçanas. 177, 12. 184, 4. fgg. Bhâg. 6, 20. — 4) *verhüllen, verdecken:* निरुद्धं भगवतं सर्वं व्यधं मेघैः समततः MBh. 13, 2069. Harîv. 8782. R. 5, 8, 24. Suçr. 1, 23, 2. Varâh. Bṛh. S. 24, 15. 28, 6. 47, 26. Râǵa-Tar. 1, 269. Bhâg. P. 2, 9, 37. Bhaṭṭ. 7, 70. — 5) *erfüllen, anfüllen:* बाष्पनिरुद्धकण्ठी R. Gorr. 2, 123, 24. Bhâg. P. 6, 14, 50. धूपगन्धनिरुद्ध (स्थान) MBh. 14, 1921. खगपदतैः पर्णैर्निरुद्धं नीलकोमलैः (वनम्) R. Gorr. 2, 98, 3. वाह्निशालाः — निरुद्धा मक्षिकैरिव Râǵa-Tar. 4, 165. Bhâg. P. 3, 17, 17. — 6) *unterdrücken* so v. a. *verschwinden machen* Çiç. 4, 55. युगे युगे भवत्येते सर्वे दस्यादयो नृणाः। पुनश्चैव निरुध्यन्ते *und verschwinden wieder* Harîv. 112 = VP. bei Muir, ST. I, 27, N. 45. अको राशिनिरुद्धास्ते कालेन कृदि ये कृताः Bhâg. P. 3, 3, 22. — 7) निरुद्ध so v. a. अपरुद्ध *verstossen* Pârâśar. Bh. 3, 1, 9. Kâṭh. 13, 5. — 8) निरुध्य MBh. 3, 962 fehlerhaft für निरुह्य (wie schon Westergaard vermuthet hatte), निरुध्यतु 13, 4530 fehlerhaft für विरुध्यतु; die Bomb. Ausg. hat an beiden Stellen die richtige Lesart. निरुध्यत्पद्म् Râǵa-Tar. 2, 165 wird wohl auch unrichtig sein. — Vgl. निरुद्ध fg., निरोद्धव्य fgg. — caus. 1) *einschliessen:* वायुं निरोधयेत् Verz. d. Oxf. H. 234, *a*, 31. 33. — 2) *verschliessen lassen:* द्वारान् (!) Râǵa-Tar. 5, 128.

— उपनि *einsperren, einschliessen, eintreiben:* पशून् Çat. Bṛ. 3, 7, 3, 3.

— सं॰नि 1) *zurückhalten, festhalten:* °रुद्ध MBh. 3, 1612. 6, 1964 (स निरुद्धेषु ed. Bomb.). 7, 923. 4432. स्वकर्मभिर्मानवं संनिरुद्धम् 13, 2956 = 3, 12728, wo fälschlich स्वकर्मभिर्दानवसंनिरुद्धे gelesen wird. — 2) *hemmen, unterdrücken, aufheben:* धृतिश्च संनिरुध्यते पुरा तवेरु MBh. 12, 13082. कामक्रोधस्य लोभस्य (मोहस्य die ältere Ausg.) संनिरुद्धस्य मेधया Harîv. 11696. यद्यपि न संनिरुध्यते दुःखम् Wilson, Sâṅkhyak. S. 10. प्राणायामैः संनिरुद्धदुर्गः Bhâg. P. 4, 23, 8. प्राणापानौ संनिरुध्यात् 7, 15, 33. — 3) *einschliessen, gefangen halten* Çvetâç. Up. 4, 9. Harîv. 10230. Bhâg. P. 9, 15, 22. Verz. d. Oxf. H. 256, *a*, 2. अग्निहोत्रं संनिरुद्धाग्नि so v. a. *zusammengeschürt* R. 7, 24, 40. 36, 5. (vor der Aussenwelt) *verschliessen:* संनिरुध्येन्द्रियग्रामम् Spr. 3161. पञ्चेन्द्रियस्य ग्रामस्य नवद्वारस्य — संनिरुद्धस्य Harîv. 11696. — 4) *erfüllen, anfüllen, voll machen:* देहेन तस्य मल्लस्य — संनिरुद्धो मरुद्रङ्गः स शैलेनेव लक्ष्यते Harîv. 4733. रोमभिः संनिरुद्धाङ्गम् MBh. 12, 87. — Vgl. संनिरुद्धगुद, °रोद्धव्य, °रोध.

— परि 1) *einschliessen:* एतमेवैनमग्नयो परिरोधमानयति TBr. 3, 9, 11, 2. — 2) *Jmd zurückhalten* Spr. 971. — 3) *anfüllen:* बाष्पपरिरुद्धात R. Gorr. 2, 16, 38. 7, 24, 26. — Vgl. परिरोध.

— प्र 1) *Jmd zurückhalten:* माता मे प्ररुणद्धि (मरुणद्धि Sây. 5, 82) माम् MBh. 3, 16830. — 2) *hemmen, sperren:* यतीर्धेन त्वा धयमधर्युराजुतीः प्रोरुत्सोत् Çat. Bṛ. 11, 4, 2, 14. प्राणान् 12, 4, 2, 6. Pârâśar. Bṛ. 13, 4, 14.

— संप्र pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen:* °रुध्यते im Gegens. zu पुष्यते Harîv. 11778. समवरुध्यते die neuere Ausg.

— प्रति 1) *abhalten, zurückhalten, hemmend entgegentreten, sich widersetzen:* तं यः प्रतिरुन्धेऽयज्ञः स प्रतिरुन्धेत्तस्माद्व प्रत्यरोत्सि Âit. Bṛ. 6, 34. TS. 6, 4, 2, 2. प्रतिरुध्य गुरुम् M. 11, 38. MBh. 5, 7144. अन्योऽन्यं प्रत्यरुन्धताम् Bhâg. P. 10, 44, 4. प्रतिरुद्धत्व R. 4, 60, 3. दैवं पुरुषकारेण प्रतिरोद्धुम् R. Gorr. 2, 20, 9. अप्रतिरुद्धेन प्रज्ञानेन *ungehemmt* Bhâg. P. 2, 9, 24. अप्रतिरुद्धचक्र 4, 16, 27. यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः स्यादेकेनाङ्गेन यज्वनः *unterbrochen, gestört* M. 11, 11. — 2) *einschliessen, einsperren:* नगरे प्रतिरुद्धः MBh. 5, 1214. भ्रातरं पूर्वजं कि यः। अक्षभिः प्रत्यरोत्सीत् — बिले R. 4, 55, 3. *absperren:* प्रतिरुध्य रणाजिरम् MBh. 5, 7220. die Sinne u. s. w. (gegen die Aussenwelt): प्रतिरुध्येन्द्रियाणि 823. प्रतिरुद्धेन्द्रियप्राणमनोबुद्धि Bhâg. P. 1, 18, 26. — 3) *verhüllen, verdecken:* ते दिशो विदिशः सर्वे प्रतिरुध्य प्रकारिणः MBh. 3, 12114. Harîv. 13611. — Vgl. प्रतिरोद्धृ fgg.

— वि 1) med. *Widerstand finden:* पुरस्ताच्चवानां सवित्रा विरुन्धते। सवित्रैव विरुध्य ब्रह्मणा यवानादधते *durch S. finden sie Widerstand vor dem Getreide, durch das Br. nehmen sie es in Besitz* TBr. 1, 8, 4, 1. — 2) विरुध्यते und °ति *a) streiten, in Feindschaft leben, Feindschaft beginnen, kämpfen mit* (instr., instr. mit सह, gen., loc., acc. mit प्रति): नानुरुध्ये विरुध्ये वा न द्वेष्मि न च कामये MBh. 12, 9249. यश्चाकस्माद्विरुध्यते 6275. Spr. 3276. अन्योऽन्यं विरुध्यन्ते विबुध्यन्ते ed. Bomb.) MBh. 1, 1357. व्यरुध्यत परस्परम् Viṣṇu-P. bei Muir, ST. I, 31, N. 56. ब्राह्मणैश्च विरुध्यते MBh. 5, 1063. Harîv. 7313. Spr. 2836. 4288. 4922. Bhâg. P. 10, 1, 68. Mâlav. P. 27, 10. बन्धुभिश्च विरुध्यतु (निरु° ed. Calc.) MBh. 13, 4520. 4572. 4577. R. 7, 61, 8. चाषस्य काकेन विरुध्यतः Varâh. Bṛh. S. 88, 24. मृत्युर्बुधस्ते ऽद्य मया विरुध्य R. 3, 44, 31. त्वया सह विरुध्यते MBh. 2, 227. तत्कार्यं सह पित्राहं विरुध्येयम् R. Gorr. 2, 23, 17. fg. तत्तस्मं न विरोधं ते सह तेन 4, 14, 19. न च ते ऽहं विरुध्यामि कस्मान्मां कृतवानसि 16, 19. यस्मिन्विरुध्य दशकंधर आर्तिमार्च्छत् Bhâg. P. 2, 7, 23. इन्द्रेण — यस्मान्प्रति (so trennen wir) विरुध्यता R. 5, 41, 8. *bekämpfen:* ब्रह्म (acc.) तत्र (nom.) यत्र विरुध्यतीह् MBh. 12, 2782. विरुद्ध *im Streite liegend, in Feindschaft lebend, feindselig gesinnt, verfeindet* R. 2, 1, 13. 4, 55, 9. Kâm. Nîtis. 13, 55. Spr. 123 (zugleich *eingeschlossen*). 253. Varâh. Bṛh. S. 93, 46. 97, 12. Kathâs. 39, 229. 45, 306. निरुत्साहं विरुद्धानां रक्षिता नमतां पुनः 46, 158. 74, 101. Râǵa-Tar. 5, 452. Hit. ed. Jouss. 2120. परस्परेणाविरुद्धाः R. 4, 7, 8 (11 Gorr.). राघवेण विरुद्धस्य तव 3, 41, 21. 4, 57, 18. 5, 48, 13. Spr. 1679. मद्बलेन विरुद्धाय *dem, der sich meiner Macht widersetzt,* R. 2, 23, 25. तपश्चरणौ मृदुसौम्यशीलिनौ सदा विरुद्धं शक्ति रावणम् 5, 89, 33. अविरुद्धस्ततस्तस्य तणेन समपद्यत MBh. 12, 4271. Kathâs. 60, 142. परस्पराविरुद्धाः Raǵu. 10, 81. राज्ञविरुद्धानाम् Spr. 4871. Râǵa-Tar. 4, 165. von Planeten Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 1 v. u. *feindselig* so v. a. *unerwünscht, widerwärtig, gehässig* u. s. w.: लक्षणं R. 5, 27, 32. चेष्टित Kathâs. 74, 161. °शंसन = गालि H. 272. विरुद्धमकरोन्मपि Kathâs. 20, 129. 5, 4. 44, 123. मा स्याद्राजकुले किंचिद्विरुद्धम् 49, 132. य° 71, 210. विरुद्धमिदं वयानुष्ठितं यन्मां प्रदाय कन्यान्यस्मै प्रदत्तेति Pârâśar. 130, 1. 39, 25. यदि वो प्रति विरुद्धमाचरामि 213, 20. अन्यथा विरुद्धं ते फालिष्यति (अन्यथा ते विरुद्धं फलं भविष्यति v. l.) Hit. 58, 18. विरुद्धधी *Feindseliges im Sinne habend, schadenfroh* Râǵa-Tar. 1, 303. अस्मद्विरुद्धं कुरुते Kathâs. 45, 167. परविरुद्धेषु नोत्सरुत्ते मक्षणाय: 17, 149. कर्म लोकविरुद्धम् R. 3, 35, 4. — *b) in Widerspruch stehen mit Etwas, einen Widerspruch bilden:* एतद्विरुध्यते MBh. 13, 5595. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 39. 94. Nîlak. 157. Muir, ST. 4, 221. न च केन च धर्मेण (so die ed. Bomb., Nîlak. erwähnt aber auch die Lesart der ed. Calc.) विरुध्यते प्रजा इमाः MBh. 8, 2074 (vgl. R. 4, 17, 33). सेयं भगवतो माया यन्नयेन विरुध्यते Bhâg. P. 3, 7, 9. यत्स्ववाचो वि-

रुध्येत 10,77,30. विरुद्ध *in Widerspruch stehend, einen Widerspruch enthaltend, widerstreitend, widersprechend, entgegengesetzt, logisch einander ausschliessend* (die Ergänzung im gen., instr. oder im comp. vorangehend) Kâty. Çr. 5, 11, 25. किमिदं वर्तसे भद्रे विरुद्धं यौवनस्य ते R. 7,17,4. विरुद्धं धर्मकीर्तिभ्याम् R. Gorr. 2,58,29. तद्देशकुलजातीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् M. 8,46. धर्म° R. 4, 17, 33. 5, 47, 17. 48, 4. धर्माविरुद्ध Bhâg. 7, 11. परस्परविरुद्धानाम् M. 7, 152. विरुद्धं बत भाषते Jâtâ. 2,14. Kap. 1,23. Mâlav. 13,12. Çik. 177. नियकस्तद्विरुद्धः *ist das Entgegengesetzte davon* AK. 3,3,13. Çiç. 9,62. Spr. 1927. Kathâs. 28,182. Sin. D. 203. 574. 214,2. Prab. 20,17. 52,14. Sarvadarçanas. 12,2. 3. 22,12. 26,2. 44,12. 45,2. 49,17. 50,6. 9. 11. 18. 61,11. 130,15. 163,19. Paṇḍat. 131,11. 199,4. Trik. 3,3,463. Schol. zu P. 1,3,50. 2,4,13. Sidd. K. zu P. 3,1,96. Bâlar. P. 4,9,16. 6,4,32. 10,88,2. Vedântas. (Allah.) No. 90. Schol. zu Kap. 1,155. Nilak. 4. Verz. d. Oxf. H. 241, b, 13. Verz. d. B. H. No. 973. विरुद्धोक्ति = विप्रलाप H. 276. रेवाभास Tattvas. 41. Bâlar. 70. 73. Sarvadarçanas. 119,16. विरुद्धत्व 45,20. विरुद्धता 166,14. — 3) विरुद्ध *dem Gesetze u. s. w. widersprechend, verboten, unerlaubt:* कर्मन् M. 4,13. Maitrâyaṇ. 6,34. Jâtâ. 1,129. MBh. 3,9995. R. 2,58,26. — 4) विरुद्ध *misslich, bedenklich, gefährlich:* कार्य R. 5,77,19. ब्राह्मणार्थं ते विरुद्धमिह दृश्यते MBh. 13,1920. — An den Schluss stellen wir diejenigen Bedeutungen, die der Wurzel eigentlich in Verbindung mit andern Präpositionen zukommen: 5) *festhalten:* बाहुदण्डविरुद्ध R. 4,10,21. — 6) *hemmen, unterdrücken:* स्वरश्च व्यरुध्यत *die Stimme versagte ihm* R. 2, 36, 10. येन — धन्वरे गतिः । सिद्धादीनां विरुद्धाभूत् Kathâs. 45,83. अविरुद्ध *ungehemmt* Vikr. 49, 11. — 7) *einschliessen:* विरुद्ध *eingeschlossen* Spr. 123 (zugleich *feindselig gestimmt*). *belagern:* व्यरुन्धन् (धरुन्धन् ed. Bomb.) मिथिलाम् R. 1,66,21. *verschliessen, zuhalten:* घ्राणं करेण विरुणद्धि (च रु° v. l.) Rtr. 6,26. — Vgl. विरोधय्य u. s. w., मनोविरुद्ध, वाचाविरुद्ध. — caus. 1) *verfeinden, entzweien:* कबंधनाथं तत्रापि पुत्रान्मे भ्रातृभिः सह । विरोधयेत् MBh. 11,705. मैधेयानपि मैधत्स्व विरोध्यांश्च विरोधय 12,2050. विरोधयामास मिथो विष्णुं शंकरमेव च R. Gorr. 1,77,18. पद्म्योऽन्येन ते पुत्रा विरोध्यन्ते कथंचन MBh. 3,360. — 2) *gegen Jmd feindlich auftreten, befeinden, bekämpfen:* तं विरोध्य R. 3, 62, 9. प्रधानसंभिको माधुरो मया विरोधितः Mâlav. 33, 10. न विग्रसेत्पूर्वं विरोधितस्य शत्रोश्च मित्रत्वमुपागतस्य Spr. 1463. mit gen.: कुलस्यास्य यद्विरोधयसे भृशम् Harîv. 4194. — 3) *Etwas bestreiten, Einwendungen machen gegen:* त्रानीयादागमान्सर्वान्प्राज्ञो च न विरोधयेत् MBh. 10,180. अविरोधित so v. a. *nicht ungern gesehen* Çiç. 10,69. भूता कार्या विनश्यन्ति देशकालविरोधिताः । विक्लवं दूतमासाद्य so v. a. *weil Ort und Zeit ihnen ungünstig sind* Spr. 4671. — desid. *Feindschaft zu beginnen trachten:* विरुरुत्सति MBh. 5,3265.

— प्रतिवि scheinbar R. 3, 41, 8, wo aber यस्मान्प्रति विरुध्यता zu trennen ist.

— सम् 1) *aufhalten, zurückhalten:* स चेत्पथि संरुद्धः पशुभिर्वा रथेन वा M. 8,295. माता मे संरुणद्धि माम् Siv. 5,32. ततः प्रवेशे संरुद्धे (so die neuere Ausg.) रतिभिः Harîv. 9120. Râja-Tar. 5, 453. धातुर्वचनसंरुद्धः R. 4,34,2. बाष्पसंरुद्धा *durch Thränen gehindert* 2, 24, 1. तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नेव तान्संरुणद्धि *festhalten, fesseln* Spr. 92. सत्पपाशेन संरुद्धः स्नेहस्तस्य न लुप्यते R. Gorr. 2, 50, 18. यो मोचयति संरुद्धमिदं प्रवक्ष्यामि Kathâs. 18,296. *in feindlicher Absicht Jmd festhalten, angreifen:* तं संरोध योद्धारं संगरे Râja-Tar. 1,61. यज्ञाविके तु संरुद्धे वृकैः M. 8, 235. *zurückhalten, abwehren:* °निस्त्रिंशान् — वर्मणा संरोध MBh. 7, 559. विंशत्या सायकैः — पुनश्चैव शतेनास्य संरोध महारथम् 7708. *verhalten, verenthalten, versagen:* संरुद्धप्रजनन Nir. 5,2. कश्चित्र — यायिनां मनुष्याणां वृत्तिं वै संरुणत्सि वै MBh.2,226. संरुद्धचेष्ट *gehemmt* Raghu. 2,43.— 2) *eintreiben, einschliessen, einsperren, absperren, gefangen halten* Cat. Bh. 1,2,4,11. fgg. Nir. 6, 16. रात्रौ मागधसंरुद्धान्मोक्षयिष्यति MBh. 13,6839. संरुद्धा गिरिकन्दरे Harîv. 6940. R. 4,9,23. सीतां संरुन्धता बलात् 5,94,23. गर्भं प्राप्य संरुध्य दोषधातूंश्च यावत् Kathâs. 63,188. केदारखण्डे निःसरमाणमुदकमवारणीयं संरोद्धुम् MBh. 1,693. संरुद्धा नगरी *eingeschlossen, belagert* R. 6,17,2. संरुद्धनासाग्रो वामपाणिना *zugehalten* Kathâs. 82, 20. समरुद्धव विक्रमः *schloss sich gleichsam ein* Bhaṭṭ. 6,34. eine Stadt *einschliessen, belagern* Harîv. 4973. R. 5,17,2. Râja-Tar. 1,59. Bâlar. P. 10,50,3. einen Weg *versperren:* मार्गं संरुध्य MBh. 3, 2541. कदलीखण्डसंरुद्धनलिनीपुलिन *eingeschlossen von* Bâlar. P. 4,6,21. मनः संरुध्य *verschliessen* MBh. 3, 13632. धैर्यसंरुद्धमानस R. Gorr. 2,30,26. — 3) *verhüllen, bedecken:* मेघैश्च गगनं नीलैः संरुद्धमभवद्दने: MBh. 13,6870. दिवाकरः संरुद्धः R. 3,33,12. — 4) *verstopfen* Kathâs. 53,110. कफसंरुद्धनाडि Bâlar. P. 3, 30, 17. बाष्पसंरुद्धकण्ठ R. 4, 15, 30. अश्रुसंरुद्धनयना *angefüllt mit* 19,30. 5,33,16. — Vgl. संरोध. — caus. *absperren lassen:* पालीभिरम्भः संरोध्य Râja-Tar. 5,106.

— अतिसम्, प्रकर्षेणातिसंरुद्धा so v. a. *vor Freude überfliessend* R. 6, 98, 11.

— अभिसम् 1) *hindrängen zu, halten bei:* तानाग्नीध्रमभिसंरुरुधुः Cat. Bh. 3, 6, 1, 28. — 2) *zurückhalten, abhalten:* तं तु द्वारस्थाः (so die ed. Bomb.) — न शेकुरभिसंरोद्धुम् R. 2, 14, 42. — 3) *verhüllen, verdecken:* अन्योऽन्यमभिसंरुद्धाः प्रकाशा न चकाशिरे R. 6,31,38.

— उपसम् *hindrängen zu, halten bei* Cat. Bh. 1,2,4,11. fg.

— प्रतिसम् *in sich einschliessen, einziehen:* प्रतिसंरुद्धविक्रम Bâlar. P. 3,11,27.

3. रुध् (= 2. रुध्) adj. *zurückhaltend, hemmend:* कार° Mcan. 40.

रुध (von 2. रुध्) adj. dass. in अरोरुध.

रुधिक्रा (रुधिष्क्रा Padap.) m. N. pr. eines von Indra besiegten Dämons RV. 2, 14, 5.

रुधिर Uṇâdis. 1, 52. 1) adj. *roth, blutig:* क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि AV. 5,29,10. — 2) m. a) *der blutrothe Planet d. i. Mars* H. an. 3,597. Med. r. 208. Spr. 2649. Varâh. Bṛh. 2,13. 4,18. 22,6. — b) *ein best. Edelstein;* s. रुधिराक्ष. — 3) n. AK. 3,6,2,22. a) *Blut* AK. 2,6,2,15. H. 621. H. an. Med. Hall. 3,10. 5,44. Cat. Bh. 14, 6, 2, 31 (proparox.). पदा गवां स्तनेषु रुधिरं प्रवर्तति Snâpv. Bh. 6,9. रुधिरे च स्नुते M. 4,122. वमतो रुधिरं बहु MBh. 1,1170. फेनिल 5936. °लालस 12, 4278. °ताप्तात R. 2,50,4. रुधिरेणावसिक्ताङ्गः 64,26. MBh. 1,7730. °चर्चितसर्वाङ्गो Ver. in L.A. (III) 21,14. Suçr. 1,5,2. 46,20. 118,13. 259,3. Varâh. Bṛh. S. 3,24. 30. 28,12. 47,16. °बिन्दु Paṇḍat. 123,14. °वर्ष Snâpv. Bh. 6,3. Varâh. Bṛh. S. 21,26. °सार *bei dem das Blut vorwaltet* Varâh. Lagh. 2,14. plur. Spr. 756. Paṇḍat. 171,11. am Ende

eines adj. comp. f. घा MBh. 7,4645. Varāh. Bṛh. S. 27,5. Kathās. 26, 144. रुधिराध्याय Titel eines Abschnitts im Kālikā-P. Verz. d. Oxf. H. 78,a, No. 122. — *b*) *Saffran* Taik. 3,3,367. H. an. Med. Hir. 260. — *c*) N. pr. einer Stadt Harīv. 9823; vgl. शोणितपुर.

रुधिरात s. रुधिराह्य.

रुधिराह्य adj. *blutbenannt*, subst. Bez. *eines best. Edelsteins* Varāh. Bṛh. S. 80,4. Gāruḍa-P. 181 im ÇKDa. Ratnapar. 35. रुधिरात Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,14.

रुधिरानन n. Bez. *einer der fünf rückläufigen Bewegungen des Mars* Varāh. Bṛh. S. 6,4.

रुधिरान्ध N. einer Hölle VP. 207. 209. so in beiden Ausgg., obgleich gesagt wird, dass der Name *whose wells are of blood* bedeute; dieses wäre aber रुधिरान्धु.

रुधिरामय m. = रक्तपित्त *Blutsturz* Suçr. 2,473,4.

रुधिराशन adj. von *Blut sich nährend*, Beiw. der Rākshasa R. 1, 32,20. von Pfeilen R. Gorr. 2,20,41.

रुधिरोद्गारिन् adj. *Blut ausspeiend*; m. Bez. *des 57sten Jahres im 60jährigen Jupitercyklus* Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,7. — Vgl. उद्गारिन् in den Nachträgen.

1. रुष्, रुष्यति (विमोक्ने) Dhātup. 26, 125. *Reissen* (im Leibe) *haben*: तासौ ह्रग्धा रुष्यत्येत् TBr. 2, 1,4,2. तस्य वियस्य न कश्चनाग्नात् य ग्नाग्नात्सो ऽरुष्यत् Kāṭh. 25,4. — Vgl. लुष्, *rumpere*.

— caus. रोषयामि, षड्रुषत् 1) *Reissen verursachen*: (विष) नामीमदो नाव्रुषः AV. 4,6,3. ज्ञातिवांसं न व्रुषः (so zu vermuthen) 7,2.5,6; vgl. AV. Paipp. 4,36. — 2) *abbrechen*: यज्ञयोर्वो ऽवयवेद्रोषयेतामुक्षस्य TS. 2, 6,6,4. मा व्रुषाम यज्ञस्य TBr. 3,7,5,6. — Vgl. 1. रोषणा.

2. रुष् nach dem Comm. so v. a. *Erde*: यथे रुष यादृपितं व्रवाहु RV. 4,5,7. पाति प्रियं रुषो यथे पदे वेः s. पञ्च पदानि रुषो यन्त्वरोकम् 10,13,2.

रुषेटि f. *Nebel, Dampf* Çabdārthak. bei Wilson.

रुष 1) m. parox. N. pr. eines Mannes RV. 8,4,2. — 2) f. घा N. pr. *a*) einer Salzgrube H. 941. an. 2,325. Med. m. 27. Halāy. 2,14. LIA. I,249,N. 3. ०भव adj. *dort gewonnen* (= रौमक) H. 942. — *b*) einer Frau des Affen Sugrīva H. an. Med. R. 4,17,28. 33,37. 43. 35,5. 55,14.

रुषण्वत् P. 8,2,12. m. N. pr. 1) eines Mannes: ज्येष्ठो ज्ञामदग्ज्यो रुषण्वान्नाम नामतः MBh. 3,11080 (S. 572). eines Sohnes Suprātīka's Kathās. 9,44. 10,213. 12,37. 14,34. 15,4. 34,114. सरुषण्वत्क adj. 14,58. 15,109 (wo सरु° zu verbinden ist). 21,3. — *b*) eines Berges P. 8,2,12, Sch.

रुष्य Uṇādis. 2,14. adj. = घरूण und शोभन Uṇādis.

रुरु Uṇādis. 4,102. m. 1) *eine Hirschart* AK. 2,5,10. Taik. 3,3,368. H. 1293. an. 2,449. Med. r. 80. Halāy. 2,72. VS. 24,27. 39. MBh. 2, 2320. 3,1961. 2402. 13629. 5,2314. 7,2792. 8,3337. 12,7976. Spr. 3775. R. 2,93,2. R. Gorr. 2,114,32. Suçr. 1,204,10. 21. Rāgān. 9,51. 72. Varāh. Bṛh. S. 48,76. 86,38. 48. Bālār. P. 3,10,20. 4,6,20. °रक्त Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,4. °नखधारिन् (Kṛishṇa) Pārāç. 4,8,35. रुरुपतम् P. 2,4,12, Vārtt. 1, Sch. Çākjamuni als रुरु Vaijay. zu H. 233. रुरु am Ende eines comp. nach dem verglichenen Wesen gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. — 2) *ein best. reissendes Thier*, eine zur Erkl. von रौरव wohl nur erfundene Bed. Bālār. P. 5,20,11. fg. *Hund* H. ç. 180. — 3) *ein best. Fruchtbaum* gaṇa प्रक्षादि zu P. 4,3,164. — 4) N. pr. *a*) eines Sohnes des Ṛishi Pramati und der Ghṛitāčī (einer Apsaras) MBh. 1,371. fg. 940. fgg. 13,2004. Kathās. 14,76. 28,88. eines unter den Viçve Devās aufgeführten göttlichen Wesens, welches den Beinamen सप्तर्षिपुत्र führt, Harīv. 11343. eines der 7 Weisen unter Manu Sāvarṇi, mit dem patron. Kāçjapa, 454. — *b*) eines von der Durgā getödteten Dānava Taik. H. an. Med. Kathās. 20, 144. 53,171. 78,90. 109,101. Verz. d. Oxf. H. 39,*a*,12. — *c*) einer Form Bhairava's Verz. d. Oxf. H. 25,*b*, N. s. 250,*a*,18. — Vgl. मरु°, रौरव, रौरवक.

रुरुक m. N. pr. eines Fürsten Harīv. 739. fg. VP. 373. — Vgl. रौरुकि.

रुरुर्तणि (vom desid. von 1. रुष्) adj. *zu zerstören fähig*: शतं पुरो रु° RV. 8,48,2.

रुरुदिषु (vom desid. von 1. रुद्) adj. *zu weinen im Begriff stehend, weinerlich gestimmt* Weber, Rāmāy. Up. 336. Bhatṭ. 7,99.

रुरुरैव s. u. रुरु 4) *c*).

रुरुमुण्ड m. N. pr. eines Berges, v. l. für उरुमुण्ड Burn. Intr. 378,N. 3.

रुरुशीर्षन् adj. *das Haupt vom* रुरु *genannten Hirsche* (d. h. *eine Hornspitze*) *habend*, von einem Pfeile RV. 6,75,15.

रुवण्य् (von einem nicht vorhandenen रुवण, nom. act. von रु, °पति *grobe oder kreischende Töne von sich geben*: उप भूष ज्रितर्मा रुवण्यः ग्रावण्या वाचं कुविदङ्ग वेदेत् RV. 8,85,12.

रुवण्यु (von रुवण्य्) adj. *kreischend*: या वो रुवण्युर्नोधिजो ऊधन्यो घोषेव शंसमुनस्य नंशे RV. 1,122,8.

रुवथ (von रु) Uṇādis. 3,116. m. 1) *das Brüllen des Stieres* Kāṭh. 36, 9. — 2) *Hund* Uṇādis.

रुवु m. *Ricinus communis* (एरण्ड) Ratnam. 3. Çabdāmṛ. Saṃ. 1,4,18. = रुकेरण्ड Rāgān. im ÇKDa.

रुवुक m. *Ricinus communis* Ratnam. im ÇKDa. = रुकेरण्ड Rāgān. ebend. — Vgl. उरुवूक, रुवक, रुवूक, व्रुवक.

रुवूक m. *Ricinus communis* Ratnam. im ÇKDa. auch रुवूक (!) ebend.

रुष् s. 1. रुष् und 1. रुशत्.

रुषद्गु m. N. pr. eines Ṛishi Verz. d. Oxf. H. 345,*a*,32. नृषद्गु v. l. — Vgl. रुषद्गु.

रौशत्पशु adj. *weisses Vieh* —, *weisse Heerden habend* RV. 5,75,9.

रौशद्गर्मि adj. *weisswogig, lichtwogig* RV. 1,38,4.

रुशद्गु 1) adj. *weisse Rinder habend* RV. 5,64,7. — 2) m. N. pr. eines Mannes; so ist nämlich wohl für रुषद्गु, रुपद्गु, रुपद्गु, उषद्गु, उषद्गु, ग्रषद्गु, ग्रष्यद्गु, नृषद्गु zu lesen.

रुशद्रथ 1) adj. *einen lichtfarbigen Wagen habend*. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Bālār. P. 9,23,3.

रौशद्वत्स adj. *weisshalbig* RV. 1,113,3.

रुशना f. N. pr. einer der Gattinnen Rudra's: धीर्धृती रुशना u. s. w. Bālār. P. 3,12,18. धीर्वृत्तिरुशना ed. Bomb., was richtiger ist, da nur 11 Namen erwartet werden.

1. रौशत् adj. (pflegt als partic. von रुच् betrachtet zu werden) *licht, lichtfarbig, hell, weiss* (vgl. λευκός), Gegens. कृष्ण, श्याव. कृष्णेभिरुक्षा या रुशद्भिर्वपुर्भिः RV. 1,62,8. 113,2. 4,7,9. अर्चि 1,48,12. 92,8. भानु 2.

पुवं श्यावाय रुशतीमदत्तम् *dem Schwarzen eine Weisse* 117, 5. पर्यः 62, 9. 4, 3, 9. 5, 72, 4. 8, 82, 12. पार्ः 3, 29, 3. 4, 11, 1. 51, 9. रुशद्वसानः 5, 13. वासः 7, 77, 2. यमि 6, 1, 3. 6, 1. ऊर्मयः 64, 1. गावः 3. उक्षणः 6, 1, 33. वत्सम् 61, 3. ऊधस् 10, 31, 11. तनू 85, 20. 10, 75, 7.

2. रुशत् s. u. 1. रुष्.

रुशम 1) m. properox. N. pr. eines Mannes ṚV. 8, 3, 13. 4, 2. Vilakh. 3, 9. pl. रुशमाः ṚV. 5, 30, 12. 13. AV. 20, 127, 1. — 2) f. आ N. pr. Ruçamâ wettet mit Indra, wer schneller die Erde (भूमि) umlaufe; Indra umkreist die Erde, Ruçamâ das Land Kurukshetra und gewinnt, Paiṅgav. Bn. 25, 13, 2.

रुशेकु m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 9, 23, 30. Andere Bücher lesen रुषद्गु, उषद्गु, सुषद्गु u. s. w.

1. रुष्, रुष्म्, रुशति (हिंसायाम्) Dhâtup. 28, 126. रुशत्, und रुषत्; रोषति (हिंसायाम्) Dhâtup. 17, 42. रुष्यति (रोषे, v. l. हिंसायाम्) 26, 120. रुष्म् erhält keinen Bindevocal Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. घरुषत्; रोष्टा und रोषिता P. 7, 2, 48. Vop. 8, 79. partic. रुष्ट und रुषित P. 7, 2, 28. Vop. 26, 113. 1) *unwirsch* —, *missmuthig* —, *widerwärtig sein, zürnen:* छिन्द्धीव वपुर्गादुषन्निव (°दृषन्निव die Ausg., पेषयन् Comm.) वृकयात् Âçv. Çr. 9, 7, 12. सा पशून्त्सोषाति रिफती रुशती AV. 3, 28, 4. या समा रुशत्येति *das Jahr, das sich übel anlässt*, Kauç. 102. न या रोषति न यभत् Ait. Br. 4, 10. रुषे यस्य च रुष्यामि मुहूर्तं स न जीवति R. 3, 35, 27. 7, 59, 8, 31. इन्द्रेण रुष्यता 4, 43, 20. रुष्यन्ती 5, 36, 39. घरुष्यबुष्यमाणस्य (कुष्यमानस्य die eine, कुप्यमाणस्य die andere Ausg. des MBh.) सुकृतं नाम विन्दति । दुष्कृतं चात्मनो मर्त्यो रुष्यत्येवापमार्ष्टि वै ॥ Spr. 3586. ततो ऽरुष्यत् Bhaṭṭ. 17, 40. मा कर्मणा मनसा वापि वाचा भर्तुश्चित्तं रुषती Harîv. 7796. मा रुषः MBh. 7, 2084. Bhaṭṭ. 15, 16. 31. रुष्य absol. R. 2, 98, 12. partic. रुष्ट (Gegens. तुष्ट) *ergrimmt, aufgebracht, erzürnt, zornig* Kâr. zu P. 3, 2, 188. Harîv. 8121. R. 3, 30, 37. Spr. 622. क्वचिद्रुष्टः क्वचित्तुष्टो रुष्टस्तुष्टः क्षणे क्षणे 773. 4851. Râjat. 6, 242. Bhâg. P. 4, 28, 19. 9, 10, 21. 18, 51, 12. Mârk. P. 91, 37. Paṅkat. 2, 8, 22. Paṅkat. 228, 9. Kull. zu M. 9, 313. Bhaṭṭ. 8, 113. 9, 20. पुत्रस्य मातापितरौ यस्य रुष्टावुभावपि *zürnend auf* MBh. 13, 5457. राज्ञा त्वयि रुष्टः Kull. zu M. 8, 193. मनो ऽतिरुष्टम् Bhâg. P. 4, 19, 24. रुषित = रुष्ट Kâr. zu P. 3, 2, 188. M. 9, 33. MBh. 5, 2178. 7297. Harîv. 250. 4308. 7047. 8009. R. 2, 97, 17. R. Gorr. 1, 57, 6. 2, 20, 3. 36, 22. 3, 53, 42. 71, 7. 4, 32, 22. Bhâg. P. 10, 41, 34. Bhaṭṭ. 5, 56. 9, 20. एवं स रुषितस्तेन (सेरु° ed. Bomb.) MBh. 7, 6992. Vaṛâh. Bṛh. S. 21, 24. मातृगुप्तं प्रति न नो रोषेण रुषितं (beide Ausgg. fälschlich ह्रु°) मनः Râjat. 3, 282. — 2) *Etwas übel aufnehmen:* सो अंस्य कामं विधतो न रोषति ṚV. 2, 33, 4. — 3) *missfallen, zum Ueberdruss sein:* न दानो अंस्य रोषति *der Schmaus ist ihm nicht zuwider* ṚV. 8, 4, 3. इदमहं रुशन्तं भगे तनूहं पिमयोक्षामि AV. 14, 1, 28. पाशीः *missfällig* (den Menschen) 4, 16, 6. घरसिक्नीकृत्वा रुशन्तीं पुनानो या लोहिनी तां ते घ्नो ऽनुरोमामि *die widerliche schwarze* 12, 3, 54. रुषती (वाच्) *missliebig, verletzend* MBh. 5, 2744. v. l. für उषती Spr. 1554. 4280. 4698. रुशती 1554, v. l. H. 273. Bhâg. P. 6, 10, 28. जिह्वा *eine verletzende Zunge* 4, 4, 17. घाप: *missliebig, gefährlich* 9, 9, 24. — रुषित Taṇḍ. 3, 1, 27 fehlerhaft für द्रुषित.

— caus. रोषयति (रोषे) Dhâtup. 32, 131. *Jmd unmuthig machen, erzürnen, aufbringen:* रोषयन्निव माम् R. 5, 36, 36. रोषये त्वां न भीषये 6, 13, 33. रोषित MBh. 1, 5885. 7, 3988. 8, 3191. Harîv. 11260. R. Gorr. 1, 62, 6. 2, 20, 2 (23, 2 Schl.). 4, 5, 16. Râgat. 9, 84. 11, 71. Çiç. 9, 18. किं रोषितस्तातो रुद्रशर्मा त्वया मयि Kathâs. 14, 50. Daçak. 71, 8. Paṅkat. 163, 4.

— घमि, partic. °रुषित *ergrimmt, aufgebracht* MBh. 8, 1717.

— घा, caus. partic. °रोषित dass.: सिंहा: Harîv. 3936.

— सम्र, partic. °रुष्ट dass. MBh. 12, 4868.

— वि *heftig zürnen auf* (gen.): घकारणार्थेन विरुष्यमाणा (विरु° die neuere Ausg.) प्रेष्याङ्गनस्य Harîv. 7043. विरुष्ट *heftig zürnend, sehr aufgebracht* Kâraṇḍ. 40.

— सम्, partic. °रुषित *ergrimmt, aufgebracht:* तेन MBh. 7, 6993 nach der Lesart der ed. Bomb. — caus. *Jmd erzürnen, in Zorn versetzen:* संरोष्यमाणा Spr. 4809. — संरोषयेत् Sçca. 2, 334, 12 und संरोषित 13 gehört zu द्रुष्.

2. रुष् (= 1. रुष्) f. (nom. रूट्) Siddh. K. 247, *b*, 15. *Ingrimm, Zorn, Wuth* AK. 1, 1, 2, 26. H. 299. विमुञ्च मानिनि रुषम् Spr. 1965. रुषा MBh. 1, 575. 3, 2299. R. 4, 5, 29. Vikr. 80. Râgat. 5, 21. Spr. 2237. 3736. Kathâs. 12, 93. 43, 107. 45, 233. Râjat. 1, 319. 6, 253. Sin. D. 103. Bhâg. P. 1, 18, 30. 3, 1, 11. 4, 1, 65. 4, 26. 18, 1. Mârk. P. 18, 36. Vop. 5, 18. रुषोक्तो AK. 3, 3, 19. घतिरुषा MBh. 4, 459. रुषां फलम् Spr. 901. Râjat. 3, 284. भगरुषो: Râgat. 9, 19. ईर्ष्यारुषाम् Kathâs. 21, 9. am Ende eines adj. comp.: प्रक्षेपनिर्बन्धरुषो कि सत्त: Râgat. 16, 30. देव्य उज्झितरुष: 19, 20. सरुषि नृपे Spr. 3196. — Vgl. घ°, घति°, घप°.

रुषद्गु m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 9, 2370. fgg. — Vgl. रुशद्गु.

रुषद्गु m. N. pr. eines Fürsten VP. 420. — Vgl. रुशद्गु.

रुषा f. = 2. रुष् H. 299.

रुष्ट 1) partic. adj. s. u. 1. रुष् 1). — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53, *b*, 24.

रुष्टि gaṇa मधादि zu P. 4, 2, 86. Davon adj. °मत् ebend.

रुष्य gaṇa मधादि zu P. 4, 2, 86. Davon adj. °मत् ebend.

1. रुह्, रोहति (बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च) Dhâtup. 20, 23. रुरोह्, रुरोहिथ; घरुहत् und घरुक्षत् (vod. und episch P. 3, 1, 59), रुक्ष्यम्, घारुक्षम् (MBh. 3, 12776), घध्यारुक्षमहि (MBh. 9, 277), घारुक्षत्स्व (Harîv. 6306), रुक्षाण: रोदयति und रोहा Kâr. 6 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. घरोहिष्ये MBh. 13, 539; द्रुहा, रोढुम्, रोढुम् ep., रोहिष्ये ved. P. 3, 4, 10. द्रुह: med. aus metrischen Rücksichten. 1) *ersteigen, erklimmen:* ग्रावेव रोहति ṚV. 8, 41, 3. 61, 4. 1, 110, 6. दिवो रोहिष्यरुरुत्पृथिव्या: 5, 71, 3. रुक्षो रुरोहु रोहितः AV. 13, 3, 26. VS. 12, 103. Ait. Br. 1, 3. पूषम् Çat. Br. 5, 1, 3, 2. वत्सम् 9, 3, 3, 6. Âçv. Çr. 11, 3, 7. द्रुरुपरिच्छदा: so v. a. *aufgeladen* Bhâg. P. 10, 11, 29. *erklimmen* so v. a. *erreichen:* कामम् Çat. Br. 2, 1, 2, 7. मनो रुक्षाणा: etwa *ihren Willen erreichend* ṚV. 1, 32, 3. — 2) (in die Höhe) *wachsen:* वया इव रुरुहु: सप्त विस्रुह: ṚV. 5, 7, 6. 10, 16, 13. यद्या बीजमुर्वरायां रोहति AV. 10, 6, 33. 8, 7, 17. त्रिभि: काण्डैस्त्रीन्स्वर्गान्रुरुहत् 12, 3, 42. Çat. Br. 14, 6, 9, 33. यद्या सस्यानि रोहन्ति प्रकीर्णानि मरीतले MBh. 13, 3149. छिन्नो हि रोहति तरु: Spr. 925. 3808. तत: सस्यानि नारुरुहु: MBh. 1, 6633. रोहते — वनं परशुना कृत्तम् Spr. 2647. रोहते सत्यम् Vaṛâh. Bṛh. S. 54, 98. न चापि सर्वबीजानि सम्यग्रोहन्ति MBh. 3, 12855. 5, 986. यद्योषरे बीजमुप्तं न रोहेत् 13,

4314. Spr. 2469. 4378. Bhāg. P. 6,16,39. रुरुक्षौ रुरुक्षुः Bhāg. P. 2,10, 24. पादौ रुरुक्षते 28. भृगोः श्मश्रूणि रोक्षन्तु 4,6,51. वृक्षो ऽयमपुष्पावकः — विषद्रुमः Rāǵa-Tar. 4, 26. Kām. Nītis. 13,13. वृक्षशाद्वल (वरण्य) Harīv. 3643. वृक्षतृणाङ्कुरेषु (कर्म्मेषु) Rāǵat. 16,18. वृक्षस्कन्धो महाद्रुमः R. 2,105, 8. वृक्षरागप्रवाल (मनस्विव्रतरु) Mālav. 59. केसरैरर्धवृक्षैः Mṛicch. 21. अवृक्षमूलत्व Mālav. 8. वृक्षस्यासु R. 7,23,4,12. — 3) verwachsen, heilen: चर्मणा चर्म रोक्षतु, मांसं मांसेन रो॰ AV. 4,12,4. व्रणाश्चास्य चिरेण रोक्षन्ति Suçr. 1,37,6. Spr. 2047 (med.). Kathās. 28,160. 179. वृक्षव्रण R. 6, 105,18. Suçr. 1,37,6. 60,18. 88,15. fg. 18. Rāǵat. 13,73. Kathās. 10,197. 65,15. 101,248. Rāǵa-Tar. 4,281. H. 465. Vgl. दूरुह. — 4) wachsen so v. a. sich entwickeln, sich bilden, hervorgehen; gedeihen, an Umfang gewinnen, zunehmen: रोक्षन्ति का धिकप्रत्यूहाः Rāǵa-Tar. 1,188. कश्चिन्मतिविपर्यासप्रकारो हृदि रोक्षति 3,42. 4,236. कामधियस्त्वयि रुचिता न परम रोक्षन्ति Bhāg. P. 6,16,39. ततदा वाक्यं न रोक्षति so v. a. trägt keine Frucht, ist unnütz MBh. 12, 11944. यातिं मे हृदये वृक्षाम् 6,581. Spr. 2338. Rāǵa-Tar. 3,48. Bhāg. P. 1,8,48. 9,9,47. °यौवन bei dem sich das Jünglingsalter eingestellt hat 10,55,9. Pārāç. 3,7,37. Kathās. 27,187. संप्रयदोषवृक्ष hervorgegangen aus Rāǵat. 6,41. 1,21. वृक्षश्च कृतमूलश्च शेषं स्वास्यति ते सुतः gewachsen so v. a. sich Anhang verschafft habend R. 2,9,27. वृक्षसौहृद bei dem die Freundschaft Wurzeln geschlagen hat Vikr. 10. योगिनो वृक्षयोगाः Bhāg. P. 3,21,18. सप्तयो वृक्षमन्यवः 4,14,24. 5,12,6. 8,22,6. 10,47,39. fg. 55,40. वृक्ष = ज्ञात Mān. Dh. 3. — 5) वृक्ष gewachsen so v. a. verbreitet, allgemein bekannt, offenkundig; = प्रसिद्ध Mān. तव तन्वङ्गि गिष्यैव वृक्षमङ्गेषु मार्दवम् Spr. 4112. ततात्किल त्रायत इत्युदयः तत्रस्य शब्दो भुवनेषु वृक्षः Raǵu. 2,38. Sāh. D. 13,3. Daçak. 82,3. Verz. d. Oxf. H. 177, b, 17. Gaupar. zu Siṃhās. 61. Schol. zu Bhaṭṭ. 5,18. सुवृक्षे रोहार्थे Vārtt. Pāṇ. S. 2,3. अवृक्ष unbekannt, unerhört (und nicht वृक्ष oder यावृक्ष) ist wohl anzunehmen Kathās. 61, 231. Rāǵa-Tar. 4,124. 5,178. — 6) वृक्ष überliefert, allgemein bekannt von Wörtern, deren Bedeutung etymologisch sich nicht erklären lässt; eine specielle, von der Etymologie unabhängige (nach indischer Anschauung) Bedeutung habend H. 1. व्युत्पत्तिरक्षिताः शब्दा वृक्षा यास्काद्युदाहृताः 2. पत्रावपवशक्तिनैरपेक्षेण (d. i. °क्ष्येण) समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तरुः वृक्षः पवा गोपदधटादिपदम् Comm. zu Bālabh. S. 83. Schol. zu P. 2,2,26. अमनुष्यशब्दो रक्षःपिशाचादिषु वृक्षः 4,28,2,1,139. 4,3,99. 5, 1,18. 59. 3,27. 6,2,8. Siddh. K. zu P. 6,3,34. Vop. 7,14. नाम वृक्षमपि च व्युत्पादि Çiç. 10,22. °नाममाला Verz. d. Oxf. H. 210, b, 4 v. u.; vgl. योगवृक्ष und यौगिकवृक्ष unter यौगिक. — MBh. 1,5337 ist nicht रूक्षास्ते, wie Johnson und nach ihm Benfey annehmen, sondern उक्षास्ते gemeint. Vgl. 1. रुष्.

— caus. रोक्ष्यति und später रोक्षयति P. 7,3,43. Vop. 18,18. 1) in die Höhe bringen, aufsteigen machen: ये सूर्यमारोक्ष्यन्ति RV. 10,62,3. 65,11. AV. 13,1,18. TBr. 1,2,4,1. चतुष्पञ्चाशतं रक्षसावोपयित्वा महाशिलाम् aufführen Rāǵa-Tar. 4,199. — 2) legen auf, bringen in, stecken an, in: फलवत्सश्च ये वृक्षाः समूलविटपास्तथा। रोपयित्वा वरूथेषु R. Gorr. 1,9,8. तामरोपयत् । गुरुनासां मुखे तस्याः Kathās. 61,16. चापरोपितशर Spr. 2289. मुकुटे रोपितः काचश्चरणाभरणे मणिः gefasst in 2206. यष्टिरोपितमार्गेण gerichtet auf Raǵu. 9,32. रात्रावेश्मनि ते मधु रोक्ष्यते *deine Versetzung in* MBh. 4,271. ते मुखमुके तु d. i. ते मुखं मुके तु ed. Bomb. übergeben, übertragen: गुणवत्सुतरोपितश्रियः — दिलीपवंशाः Raǵu. 8,11. — 3) pflanzen, säen: तस्माद्रोक्ष्यं रोपयेत् MBh. 13, 2995. 6072. R. 2,80,7 (87,8 Gorr.). Spr. 2349. Vārāh. Bṛih. S. 55,8. fg. 28. Rāǵa-Tar. 2,15.130. शाखा एव रोपिता वृक्षतां यान्ति in die Erde gesteckt Kull. zu M. 1,46. यारामांश्च रोपयेत् MBh. 13,3002. प्रयत्नं सर्ववीजानि रोप्यमाणानि चैव हि 3,13116. bildlich: उच्चस्थान — बद्धमूलां तृणाच्छन्नां भुवं दीर्घामरोपयत् Rāǵa-Tar. 5,149. तदेष शत्तनोर्वंशः (so die neuere Ausg.) पृथिव्यां रोपितो मया Harīv. 3007. — 4) wachsen —, verwachsen machen, heilen lassen, heilen (trans.): रोक्ष्येदम् (sc. यष्टिं छिन्नम्) AV. 4, 12,1. व्रणावोपयेत् Suçr. 2,10,11. 4. Kathās. 28,163. 169. fg. 177. fg.

— desid. रुरुक्षति; Bhāg. P. 4,8,67 ist प्रेम्णारुरुक्षत्तं (desid. von आ - रुह्) zu schreiben.

— यति 1) hinaussteigen über: यति त्री सोम रोचना रोक्ष्न यामसे दिवम् RV. 9,17,3. — 2) grösser wachsen: यदन्नैनातिरोक्षति RV. 10,90,2 = Çvetāç. Up. 3,15 = Taittar. 20 (v. l. यत्येन). — 3) यतिवृक्ष allgemeine Verbreitung, allgemeines Bekanntsein, Landkundigkeit Rāǵa-Tar. 6,272.

— व्यति erlangen, theilhaftig werden; mit acc.: तदा देक्षो देक्ष्मन्यं व्यतिरोक्षति कालतः MBh. 3,13939. statt dessen तदा देक्षैर्देक्ष्वसो व्यतिरोक्षति नान्यथा 6,134. — caus. vertreiben, der Herrschaft berauben: तत्राचलमकं दोषान्यैर्वान्व्यतिरोपितः MBh. 3,601.

— अधि 1) ersteigen, besteigen: गिरिं न वेना अधि रोक् तेजसा RV. 1,56,2. नावम् 8,42,3. स्थूणाम् AV. 3,12,6. द्याम् 13,3,26. स्वो रुक्षाणा अधि नाकमुत्तमम् VS. 11,22. स मायमधि रोक्षतु मणिः श्रेष्ठाय मूर्धतः AV. 10,6,31. 11,1,13. दिव्येन विमानेन स्वर्गमध्यरुक्षत् R. 2,64,48. Çiç. 96, 14. गिरिमधिरोक्षितुम् MBh. 3,9982. R. Gorr. 1,45,5. 5,54,9. Çiç. 9,1. Vikr. 14. हेमकूटशिखरे 6,15. कन्यादान् Jiǵ. 1,272. अधिरोक्षति यं नित्यं पिशाचाः पुरुषं प्रति MBh. 3,14508. रथान् 7,8217. R. 5,73,28. Spr. 4001. Kathās. 12,133. 13,28. वेदीम् MBh. 3,11019 (S. 570, med.). 11021 (obend., act.). तरुम् R. 3,70,28. चितां Harīv. 771 (med.). विमानम्, रथम् MBh. 3,14098. 14948 (med.). R. 2,83,2. 7,75,8 (med.). Kathās. 45, 364. Bhāg. P. 4,12,27. Mārk. P. 125,16. Bhaṭṭ. 5,108. पर्यङ्कम् MBh. 5, 1188. आसनम् R. 1,70,9 (med.). शयनम् 2,42,29. besteigen (zur Begattung): पुत्रो मातरं स्वसारं वाधिरोक्षति Ait. Br. 7,13. treten auf: केशादीनाधिरोक्षेत् Kull. zu M. 4,78. Suçr. 1,110,17 (zugleich besteigen). पादाकृतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोक्षति — रेणुः sich setzen auf Spr. 1762. अधिरोक्षार्य पादाभ्यां पादुके tritt mit den Füssen in die Schuhe R. 2,112,21. fg. sich in die Luft erheben, aufsteigen: रथाङ्गाह्वयना द्विजाः। अधिरोक्षन्ति 95,11. Bhāg. P. 3,23,30. अधिवृक्ष ersteigen —, besteigen habend, sitzend auf: गिरिप्रङ्खाधि॰ Rāǵa-Tar. 5,217. पुगालम्, गगनालम् Çiç. 57,2 v. l. वटवृक्षाधि॰ Vet. in L.A. (III) 21,11. रथाधिवृक्ष Çiç. 97,1. Raǵu. 12,104. लघुकाष्ठाधि॰ Pāṇ. 76,18. यङ्कं चाधिवृक्षः R. 5,73,27. Vop. 26,129. तुरगाधि॰ Raǵu. 7,34. द्विजस्कन्धाधि॰ R. 2,45,21 (43,22 Gorr.). Bhāg. P. 2,7, 16. Sarvadarçanas. 153,11. रत्नोऽधि॰ Kathās. 18,352. अधिवृक्ष गजारोक्ष Hinaufgestiegen R. 3,57,28. °गोवाटा Kathās. 20,143. अवरुक्षाधिवृक्षः Rāǵa-Tar. 6,52. Pāṇ. 128,19. पर्वतस्याधिवृक्षं स्थलम् oben gelegen P. 5,2,34, Sch. — 2) erklimmen so v. a. erreichen, gelangen zu: दृष्यामधि-

रोढुमशक्तः पदं परम् Bhāg. P. 4,3,21. परस्परतुलामधिरोक्ष्यन्ति दे *erlangen gegenseitige Aehnlichkeit* Rāgh. 5,68. प्रतिज्ञामध्यरोक्षत *so v. a. gelangte zu dem, was er gelobt hatte, löste sein Wort* R. 7,67,3. अधिरूढ a) mit pass. Bed.: पद् Bhāg. P. 4,12,42. °समाधियोग 3,28,38. — b) mit act. Bed.: निशामधिरूढयोर्यूनोः Spr. 916. योगाधि° Rāgh. 13,52. — Vgl. अधिरोहण, धाराधिरूढ. — caus. 1) *besteigen machen, hinaufgehen lassen, setzen auf:* नाके ऽधि रोक्ष्यैनम् VS. 12,63. नाकमधि रोक्ष्येमम् AV. 1,9,2. 18,3,4. मर्य इव योषामधि रोक्षमेनाम् 14,2,37. नावं चाप्यधिरोक्ष्यन्तीः MBh. 13,4390. यत्रैष प्रासादमधिरोप्यते Kāṭhāś. 20,170. तामङ्कम् 1,22. शरीरं तुलाम् 7,95. रथे 56,226. वाहने 26,128. 52,228. शूले 88,42. स्कन्धे 26,241. Rājat. 4,239. नाभ्यां स्थितं (धनिनं) हृदि Bhāg. P. 2,2,20. विमानाधिरोपित Kāṭhāś. 47,39. शूलाधि° 18,148. पतत्स्कन्धाधि° 73,248. शुद्धासत्कान्तानां मूर्धानमधिरोपिता *so v. a. an die Spitze von — gestellt* Rājat. 6,71. — 2) *hineinstecken, einsäen:* अधिरोप्य Vaitān. Bhn. S. 55,23. *anlegen, anthun:* अधिरोप्यार्यं पादाभ्यामिमे गृह्णीष्व पाडुके R. Gorr. 2,123,20. fg. *einsetzen in:* पित्र्ये राज्ये Kāṭhāś. 70,21. *versetzen in:* वसतौ पुराणशोभामधिरोपितायाम् Rāgh. 16,42. *schiessen in:* निशमनसि मदा येवैतिरागो ऽध्यरोपि Çāṭ. 14,328. — 3) *spannen:* कार्मुकम् Rāgh. 11,81. — 4) *übergeben, übertragen:* विनयेनाधिरोप्य शासनम् — अखिलदेशराजसु Kāṭhāś. 20,225. *beilegen, ertheilen:* उदारक इति प्रीतलोकाधिरोपितनामा Daçak. 72,4. 5. — Vgl. अधिरोपण.

— अन्वधि *nach Jmd hinaufsteigen* Lāṭ. 3,18,3.

— उपाधि *zu Jmd hinaufsteigen* Çāṭ. Br. 3,2,2,3. 5,3,1,7.

— समधि 1) *besteigen, hinaufsteigen* Ait. Br. 4,20. Hariv. 6533 nach der Lesart der neueren Ausg. — 2) *auf Etwas —, hinter Etwas kommen, sich überzeugen von:* तव धैर्यं च वीर्यं च सर्वे समधिरूढाः स्म MBh. 5,2283.

— अनु 1) *besteigen:* पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहम् RV. 10,13,3. — 2) med. *erwachsen:* वृषा ह्यानु रोक्षते RV. 2,5,4. 8,13,6.

— व्यप caus. 1) *ablegen, ausziehen:* अधिरोप्य पाडुके व्यपरोप्य च R. Gorr. 2,123,21. — 2) *Jmd um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* राज्यात् MBh. 3,10246. जीवितात् 1879. प्राणैः 14,2160.

— अपि *verwachsen, zuwachsen:* पृथिव्यै लातमपिरोक्षति TS. 2,5,3,3.

— समपि dass.: समस्थ्यपि रोक्षतु AV. 4,12,5.

— अभि *hinsteigen zu, besteigen* Çāṭ. Br. 12,2,2,10. अभीमकं स्वर्नोन्यं भूमा पृथिव्यै रुरुक्षुः RV. 5,7,5. किंशुकतः शृङ्गम् R. 1,44,5. Vikr. 14, v. l. प्रासादकूर्म्याणि विमानशिखराणि च R. 2,33,3. रथम् MBh. 5,7233. यानपात्रम् Kāṭhāś. 25,40. ये च मामभिरोक्ष्यन्ति *hinaufsteigen zu* Hariv. 12031.

— समभि *zusammen hinaufsteigen, besteigen* Hariv. 6533 (समधिरोक्ष्यन् die neuere Ausg.). शृङ्गाणि 12795. — caus. *aufladen:* भाण्डं समभिरोप्यताम् Hariv. 3522.

— अव *hinabsteigen; beschreiten, betreten:* अवरोक्षन्नृतस्य सीम् RV. 5,78,4. Çāṭ. Br. 5,1,5,4. चर्मणि Kāty. Çr. 14,3,15. Āçv. Gṛhy. 2,6,12. कूपम् 3,9,6. पन्थानम् Çr. 2,3,6. यो व्याघ्रावबरूढो जिघत्सतः *herbeigekommen* AV. 6,140,1. — यानासनस्थश्चैनमवरुह्याभिवादयेत् M. 2,202. मरुद्भ्यो वाक्यात् (vgl. P. 5,4,45, wo gesagt wird, dass statt der Endung des abl. hier nicht तस् stehen könne) MBh. 3,11906. 11922. 6,2221. 9,2462. fg. 3470 (med.). प्रासादात् Hariv. 11022 (S. 790). R. 2,7,11 (med.). वृक्षाग्रात् 98,27. R. Gorr. 1,79,28. 4,49,28 (med.). 5,74,14. Rāgh. 1,54. 4,80. Çiç. 167. Kāmās. 17,116. 21,71. 42,11. Bhāg. P. 4,6,25. 9,42. 5,10,16. Pañcat. 1, 4,62. Bhatt. 8,104. अवरुह्याधिरूढः in einen Brunnen Rājat. 6,52. अवरुह्य च ते भूमिम् R. 4,49,26. अवरूढश्च विपदो ममात्मनः *so v. a. abgenommen, abgeladen* Kāmās. 27,28. ऐश्वर्यात् *hinabsteigen von der Herrschaft so v. a. darum kommen* Bhāg. P. 4,14,16. Vgl. अवरोक्ष्यन् fgg. — caus. 1) *hinabsteigen —, betreten lassen* Kauç. 61. 80. °रोप्य Gobh. 2, 4,8. अवरोक्ष्यधम् *lasset sie absteigen* MBh. 3,15609. तामवरोपयत्पत्नी रथात् Rāgh. 1,54 (अवरोक्षयत् ed. Calc.). Hariv. 9721. *aussteigen lassen* (aus einem Schiffe) R. 2,89,19. *herabnehmen:* वृत्तमाद्धनूंषि MBh. 4, 1318. गाण्डीवम् (vom Wagen) 9,3468. स्कन्धाधिक्रविकाम् R. 4,24,31. Bhāg. P. 3,6,39. — 2) *pflanzen:* अवरोप्य वृत्तम् MBh. 1,7063; vgl. अवरोपण. — 3) *Jmd entsetzen, bringen um:* राज्यादवरोपितः MBh. 4, 2101. R. 4,8,20. Mālav. P. 8,292. 9,6. — 4) *herabsetzen, vermindern:* पादशस्त्ववरोपितः (धर्मः) M. 1,82. MBh. 12,8501. — 5) *herunterbringen, zu Nichts machen:* राष्ट्राणि Bhāg. P. 1,16,23. तदवरोपितकर्तृवादाः 8,22,19.

— अध्यव *herabtreten auf:* हिरण्यम् TBr. 1,3,2,7.

— अन्वव *nach Jmd betreten:* नास्य देवा न गन्धर्वाः u. s. w. पदमन्ववरोक्तुं प्राप्तस्य परमां गतिम् MBh. 12,8452.

— अभ्यव *herabtreten auf* Çāṭ. Br. 5,2,4,20. fg. हुताशनः । श्वेताश्वमिव प्रासादं श्वलभ्यवरूढवान् R. 3,52,15.

— उपाव *herabsteigen auf, zu* (acc.), *heraustreten aus* (abl.): उपावरोक् जातवेदः पुनस्त्वम् TBr. 2,5,8,3. सोमं राजन्विशास्त्वं प्रजा उपावरोक् VS. 6,26. TS. 7,3,10,1. Pañcav. Br. 13,10,10. Çāṭ. Br. 5,2,2,19. 10, 3,2,5. — caus. *herausstreten lassen aus* (abl.), technischer Ausdruck für das *Wiederhervorholen* des durch eine symbolische Handlung in den Reibhölzern u. s. w. geborgenen Feuers, Çāṅkh. Çr. 2,17,8. Gṛhy. 5,1. Kauç. 40. Ind. St. 9,311. — Vgl. u. समा.

— प्रत्यव 1) *wieder herunterersteigen zu* (acc.), *herabsteigen auf* Ait. Br. 4,21. Çāṭ. Br. 5,1,1,5. 6,7,2,6. स्वर्गाल्लोकात् 12,4,2,6. इमं लोकम् TBr. 1,8,8,5. मनुष्यरथेनैव दैवरथं प्रत्यवरोक्षति 1,6,5. प्रत्यवरोक् जातवेदः (vgl. u. उपाव) Āçv. Çr. 3,10,3. TS. 1,7,6,2. 5,6,6,1. — 2) *von Jmd* (acc.) *ehrerbietig absteigen* (vom Sitz, Wagen): यद्वा ज्येष्ठस्यायति पापीयान्प्रत्यवरोक्षत् Çāṭ. Br. 4,1,2,9. संवत्सरं न कं चन प्रत्यवरोक्षत् TS. 5,5,2,3. क्षत्रियं विशः Çāṭ. Br. 3,9,2,7. रथात् MBh. 8,3202. — 3) *die* Pratjavarohaṇa *genannte Feier begehen, beziehungsweise das Lager aus der Bettstelle wieder auf den Erdboden verlegen* (vgl. Strehler zu Āçv. Gṛhy. S. 69) Çāṅkh. Gṛhy. 4,17. — Vgl. प्रत्यवरूढि, प्रत्यवरोक् fgg. — caus. *Jmd herabbringen von, Jmd* (acc.) *um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* दर्पात् MBh. 8,2769. मानात् 12,4159. मित्रया 4,536.

— अभिप्रत्यव *herabsteigen auf:* उडुम्बरशाखाम् Ait. Br. 8,9.

— व्यव *besteigen:* शयनम् MBh. 13,1488 (med.). — caus. *Jmd entsetzen:* कालेन बलिरिन्द्रः कृतः कालेन व्यवरोपितः Vers. d. Oxf. H. 216, b,6. *Jmd um Etwas* (abl.) *bringen:* स्थानात् Spr. 4920. भोजनात् MBh. 5,3688.

— आ 1) *besteigen, ersteigen; sich erheben zu, einsteigen in; sich aufschwingen —, sich setzen auf;* mit acc. und loc.: सानोः सानुम् RV. 1,10,2. रथम् 34,3. गर्तम् 5,62,8. नावम् 7,88,3. नाकम् 3,2,12. स्वर्गं लोकमारुक्षेयम् ved. Cit. P. 3,1,86, Sch. या पदग्नान्वनन्वतः शृङ्गाणि रथे रुक्मम्

RV. 8,1,31. आ सोमो अस्मॉ अरुक्त् *ist bei uns eingekehrt* 48,11. 89,3. 9,40,2. 63,22. योनिम् AV. 3,20,1. सा भूमिमा रुरोहिथ वक्वां श्यावा वधूरिव 4,20,3. आ रोक् तमसो ज्योतिः 8,1,3. दिवि घोष आरुक्त् RV. 7, 83,3. वे अमुर्यमारुक्त् 5,10,2. रघे 8,22,9. यो अश्वत्थः शमीगर्भ आरुरोक् वे मधा TBr. 1,2,1,3. पशुम् Çat. Br. 7,3,3,17. तुलाम् 11,2,3,35. आ रोक्तामुत्तरसि वृणाना: RV. 10,18,7. उखामर्चिः Çat. Br. 6,6,3,3. *beschreiten:* अग्निम् 7,3,3,17. 5,3,4,10. 9,2,4,2. bei der Begattung Kauç. 89. — आमारोक् so v. a. *starò* Riéa-Tan. 3,385. स्वर्लोकमारोहयन् Bhâg. P. 4,12,31. आरोहन् (!) 11,17,30. गिरिमारुह्य MBh. 3,11949. Harîv. 5493 (pass.). 7612. Vop. 3,21. मरुद्देश्म MBh. 3,2868. प्रासादान् R. 2,33,4. प्राकारम् Bhatt. 8,56. आरुरुक्षे पर्वं पदम् Bhâg. P. 4,21,7. अचलम् MBh. 9,3045. R. 5,14,17. Spr. 1740. कीरो ऽपि — आरोक्ष्यति सतां शिरः Spr. 689. रथम् MBh. 3,1724. 1727. 1729. 5,7125. R. 2,40,11. 13. 2,48,6. 7,46,23. Kâm. Nîtis. 7,30. Çik. 95,11. 96,2. Prab. 79,2. Vet. in LA. (III) 31,13. आरोक्ष्माणा रथम् MBh. 1,5734. 3,1728. 1731. 8,2964. Harîv. 6306. R. 7,46,22. Bhâg. P. 3,11,16. 18,47,65. आरूढानामयं रथः R. 3,48,5. यो न यानं न पर्यङ्कं न पीठं न गजं रथम् । आरोक्ष्यति MBh. 4,96. विचारदोलाम् Kathâs. 9,87. 101,188. आसनम् Spr. 5395. Bhâg. P. 4,8, 11. नावम् R. 1,26,3 (27,3 Gorr.). 2,32,8. 69. 89,16. 21. Spr. 3537. Kathâs. 26,7. Riéa-Tan. 5,84. Bhâg. P. 3,24,42. क्रमान् R. 2,68,10. 97,20. Varâh. Bṛh. S. 44,22. 93,13. Kathâs. 13,9. 18,18. 26,86. Çuk. in LA. (III) 35,15. खगाधिपम् Bhâg. P. 3,4,26. आरोहिष्ये कथं त्वयम् MBh. 13,539. 5,3884. आरोक्षति शनैर्भृत्या धुन्वत्तमपि पार्थिवम् Spr. 749. गवयशारुरुवृषान् *besprungen* Harîv. 8290. यत्रारोक्षंत्त जेतारो वहन्ति च पराजिताः (ein Spiel) *in dem die Sieger reiten und die Besiegten tragen (geritten werden)* Bhâg. P. 10,18,21. आरुरुक्षो मम योगं नेष्यामि तं विकामसा MBh. 1,3966. वृक्षम् Kathâs. 18,210. स्कन्धम् 165. 249. यज्ञम् Spr. 2855. शाखाम् R. Ind. अग्निमारोह्यते *so v. a. wird den Scheiterhaufen besteigen* R. 6,72,37. वेदीम् MBh. 3,11018 (S. 570). Kathâs. 16, 79. क्षेत्रमारुह्य मालम् Mṛicch. 16. Çik. 62,15. आरुरोक्षन्तरं गिरेः Kathâs. 23,36. तत्रारोक्षत MBh. 3,8002. वत्सेषु 2545. Varâh. Bṛh. S. 79,6. रथादिषु Bhatt. 14,8. निम्नमारुक्षताम् impers. (sc. रघे) R. 2,46,24. शय्यासनयोः Mâlav. P. 34,85. नावि MBh. 3,12776. करेणुकायाम् Kathâs. 13, 21. fg. विक्रमे 12,147. 152. स्कन्धे 18,156. 380. आरोक्षति न यः स्वस्य वंशस्याग्रे ध्वजो यथा Spr. 679. ढौढ़ *a*) in pass. Bed.: आरूढो वृतो भवता P. 3,4,72, Sch. (वारणोः) महामात्रोत्तमारूढैः *geritten von* Harîv. 5469. MBh. 4,1031. °नृपस्थान *bestiegen* Bhâg. P. 4,14,4. impers.: आरूढं भवता P. 3,4,72, Sch. — *b*) in act. Bed.: दूरमारूढः सविता Çik. 57,2, v. l. आरूढच्युत *gestiegen und wieder gefallen* Bhâg. P. 11,7,74. शमीमश्वत्थ आरूढः AV. 5,11,1. व्योम Kathâs. 48,84. युगान्तरमारूढः सविता Çik. 57, 2. अद्रीन् Ragh. 6,77. Mṛicch. 18. वत्सम् P. 3,4,72, Sch. काको वत्सामारूढः Hit. 38,11. अश्वम्, वत्सम्, कार्ष्णसम्, नावम्, खरम्, उष्ट्रम् M. 4,120. रथम् R. 2,40,17. क्रमम् 1,19,22. चिताम् Kathâs. 27,98. अन्वरोत्सङ्गम् 22,10. ब्रह्मणः पन्थानमारूढाः *sich erhoben habend auf, betreten habend* Maitrâjop. 6,29. पवनपदवीम् Mṛicch. 8. यौवनपदवीम् Pañkat. 87,14. उत्सवम् R. 3,45,6. तरौ Kathâs. 29,129. सिंहासने 18,53. मठोपरि 24, 218. स्वराहूढः Bhatt. 7,81. प्रासादारूढ Hit. 4,6. रथारूढ Çik. 97,1, v. l. Vikr. 5,4. Kathâs. 18,388. Vet. in LA. (III) 30,17. Riéa-Tan. 3,218. क्रमारूढ *reitend auf, sitzend auf* Spr. 4883. Varâh. Bṛh. S. 58,56. fg. Kathâs. 12,157. 18,384. Riéa-Tan. 4,277. Mârk. P. 78,24. Pañkat. 43, 5. 44,23. 46,6. Verz. d. B. H. No. 936. स्कन्धारूढ Kathâs. 18,157. लतारूढ (विहंग) Bhâg. P. 5,2,4. स्थलारूढ *auf dem Erdboden stehend* (d. i. *nicht zu Wagen seiend*) M. 7,91. सर्वभूतानि यद्यारूढानि *gesetzt auf* Bhag. 18,61. चक्रारूढ Pañkat. 163,2. करतारूढ *auf der Hand liegend* Harîv. 12181. दोलारूढ *auf einer Schaukel sitzend, sich schaukelnd* Pañkat. 256, 16. *so v. a. schwankend, in Zweifel seiend* Kathâs. 32,9. 57,102. 67,30. दोलारूढ इवाभवत् 83,31. 119,90. आरूढ ohne Ergänzung *reitend:* स्वारूढैः (साद्° die neuere Ausg.) मादिभिः Harîv. 5470. *eingestiegen* (in ein Schiff) R. 2,89,17. *aufgesteckt, oben aufgesetzt:* आरूढप्रोच्छ्रितच्छत्र कुञ्जर) Kathâs. 19,62. mit einem loc. *so v. a. enthalten in, liegend in:* प्रजासु वा वृष (अग्निः) घृतप्रुषारूढः TS. 5,1,8,3. प्रमातर्यनारूढो ऽनधिगत इति यावत् Schol. zu Kap. 1,88. रेखारूढा मूर्खाः स्युः शास्त्रयन्त्रित एव च Wilkins, Rimây. Up. 289. — *c*) n. *das Bespringen:* गवारूढेषु (गवारोहेषु die neuere Ausg.) Harîv. 4104. — 2) *anwachsen:* नासिकौ क्षिप्त्वा भार्यामास्तामरोपयत् । गुरुनासौ मुखे तस्या न च तत्रारुरोक् सा ॥ Kathâs. 61,16. — 3) eine Bogensehne *steigt, wenn das unbefestigte Ende derselben mit der oberen Spitze des aufrecht stehenden Bogens verbunden wird:* आरोक्ष्यगुणनघ्नेण धनुषा Kathâs. 27,8: vgl. weiter unten u. caus. 3). — 4) *aufsteigen* so v. a. *hervorgehen, entstehen, sich entwickeln:* आरोक्ष्यगुणनघ्नेण वपुषा Kathâs. 27,8. या प्रज्ञा पूर्वमारूढा मानसी Harîv. 11845. इत्यारूढश्चकुप्रतर्कमपरिच्छेदाकुलं मे मनः Çik. 106. आरूढरुषा — अनेन Kumâras. 7,67. आरूढवेग (शर्व) Kathâs. 20,81. यौवनारूढगर्व Spr. 2597. तदागमारूढगुरुप्रकर्ष Ragh. 5,61. Nilak. 48. 51. 56. — 5) *an Etwas gehen, zu machen beginnen; sich begeben in, gerathen in, erreichen, gelangen zu:* अनर्वाणं लोकमा रोक्षमे दिवि RV. 1,51,12. न संशयमनारूह्य नरो भद्राणि पश्यति । संशयं पुनरारूह्य यदि जीवति पश्यति ॥ *sich in Gefahr begeben* Spr. 1483. आरोक्ष्यसि किमर्थं त्वमीदृशान्प्राणसंशयान् Kathâs. 26,128. 18,373. वीरारोक्षति संदेहम् *gerâth in Gefahr* Spr. 3422. न दर्पमारोक्षति 4353. आरुरोक् कुमुदाकारोपमाम् *bekam Aehnlichkeit mit* d. i. *wurde ähnlich* Ragh. 19,24. तव तुल्यां पदारोक्षति दत्तवानमा Kumâras. 5,34. आरुरोक् प्रतिज्ञां स सर्वसत्त्वाय *so v. a. er gelobte* MBh. 1,2015. R. 7,17,17. आरूढ *a*) in pass. Bed.: °समाधियोग Bhâg. P. 3,8,21. नित्यारूढसमाधित्वात् 33,27. — *b*) in act. Bed.: पदम् *der sein Ziel erreicht hat* Bhâg. P. 3,32,23. संशयम् *in Gefahr gerathen* Çik. 92,6. उपायात्तमपि कृदयमारूढम् *so v. a. ist mir eingefallen* Prab. 37,4. उदयम् *aufgegangen* (vom Monde) und zugleich *zur Höhe gelangt* (von einem Fürsten) Spr. 3650. नवयौवनम् Kathâs. 23,199. यौवनारूढा 18,261. 32,94. योगारूढ Bhag. 6,4. Bhâg. P. 3,18,15. मानारूढ 4,26,8. स्वयोधारूढ Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 256. 282. मनोरथारूढ *seinen Wünschen —, seiner Phantasie nachhängend* (zugleich wohl *in dem Wagen des Herzens fahrend*) Kathâs. 10,202. — 6) न वारोक्ष्यामि R. Gorr. 2,68,36 fehlerhaft für नान्वारोक्ष्यामि. — Vgl. आरुरुक् fg., आरूढि. आरोक्तृ fg., आरोक् fgg. — caus. 1) *aufsteigen machen, besteigen lassen, setzen auf; beschreiten lassen;* mit dopp. acc. oder mit acc. und loc.: सूर्यं दिव्यारोहयः RV. 1,51,4. 4,13,2. तीर्थेनाश्वम् Kâç. Ça. 17,3,23. चर्म 15,5, 25. अश्मानम् Âçv. Gṛhj. 1,7,7. 4,6,2. नावम् Kauç. 71. अश्वम् 17. हृदि-

रोप्य *aufschlagen* Kir. Ça. 3, 6, 10. — आरोपित *aufsteigen gemacht* Kathâs. 20, 171. Bhâg. P. 5, 26, 28. स्वर्गम् MBh. 13, 324. प्रासादतलम् 3, 2882. रथम्, यानम्, विमानम् 15749. 15789. 5, 3935 (med.). R. 1, 61, 22. 2, 36, 24. R. Gorr. 1, 75, 20. 3, 55, 28. 6, 22, 20. Bhâg. P. 3, 23, 37. 9, 23, 35. याने Sâṃk. 1, 98, 2. रथे Vet. in LA. (III) 31, 14. mit Ergänzung von रथम् oder रथे MBh. 3, 2290. 2793. R. Gorr. 2, 39, 21. नावम् R. Schl. 2, 52, 69. नावि Bhâg. P. 1, 3, 15. mit Ergänzung von नावम् oder नावि R. 2, 52, 9. शयनम् M. 3, 17. शय्याम् Kathâs. 17, 87. शय्यायाम् Pañcat. 38, 21. चिताम् R. 2, 64, 55. 3, 73, 36. fg. स्कन्धम् Pañcat. 169, 25. Sarvadarçanas. 153, 10. स्कन्धे Kathâs. 18, 380. रथप्रष्ठम् Vet. in LA. (III) 14, 18. गर्दभम् 22, 16. वधेन्द्रम् Bhâg. P. 4, 4, 5. यज्ञम् MBh. 3, 1776. 5, 6042. Kumâras. 1, 37 (आरोपिता zu lesen). Râgh. 3, 26. यज्ञे R. 2, 72, 4. 101, 2. वत्तसि Spr. 1750. शूलान् Jâtâ. 2, 272. शूलायाम् Kathâs. 20, 18. Pañcat. 41, 15. Mârk. P. 14, 75. उत्सङ्गे शिर आरोप्य *legen auf* MBh. 3, 16810. यज्ञे शीर्षमारोप्य आलिन: R. 4, 20, 20. 24, 22. मञ्चमारोप्य मठिकोपरि *stellen auf* Kathâs. 15, 49. *laden auf:* गन्त्रेष्वारोपित: कोश: Kâm. Nîtis. 19, 16. R. Gorr. 2, 39, 20. पुत्रे कुटुम्बविसंभारम् Kull. zu M. 4, 257. आरोपित *aufgeladen, darauf gelegt* Hariv. 4, 62. Kâç. zu P. 8, 4, 3. Kathâs. 37, 155. Spr. 3059. तुलाम् *auf die Wagschale stellen* so v. a. *in Gefahr bringen* 3916. पत्रम् so v. a. *Etwas zu Papier bringen, niederschreiben* Çik. 81, 2. मनोविषयम् so v. a. *Jmd in sein Herz schliessen* Kumâras. 6, 17. med. *sich besteigen lassen* P. 1, 3, 67, Sch. — 2) *pflanzen* Kathâs. 61, 24. Mârk. P. 68, 49. — 3) einen Bogen *mit der Sehne bespannen* MBh. 1, 7032 (wo das pass. आरोप्यमाण: nicht richtig sein kann; Nîlak. erklärt die Form durch मज्यीकर्तुमिच्छन्). 7048. 16, 230. Hariv. 4306. R. 1, 33, 10. 67, 16. fg. 3, 4, 28. 43. 4, 8, 30 (med.). Kumâras. 3, 35. Çik. 94, 2. Kathâs. 112, 34. Uttarar. 91, 10 (118, 1). Gît. 3, 12. Mârk. P. 132, 17. Bhatt. 14, 8. Verz. d. Oxf. H. 137, b, No. 267. eine Bogensehne *aufrichten* so v. a. *das unbefestigte Ende derselben mit der oberen Spitze des aufrecht stehenden Bogens verbinden:* कोदण्डे नमत्यारोपितं गुणम् Kathâs. 120, 62. 113, 34. आरोपितधनु *bogenförmig zusammengezogen* Bhâg. P. 4, 3, 18. 9, 10, 4. — 4) *steigen lassen* so v. a. *befördern, an einen hohen Platz stellen* Râgh. 15, 91. राज्ये *in die Herrschaft einsetzen* Kathâs. 30, 59. — 5) *legen —, stecken —, thun in:* बीजानि — तस्यामारोप्येर्नावि MBh. 3, 12777. तास्वप्सु बीजं शक्तिरूपमारोपितवान् Kull. zu M. 1, 8. तिमिमत्स्यान्गजांश्चैव नाडानारोपयन्ति ते *in ihr Lager* R. 4, 43, 16. तानग्नीनारोप्य चात्मनि (vgl. u. समा im caus.) Jâtâ. 3, 86. Bhâg. P. 5, 5, 28. तस्मिन्निदं सर्वं शरीरमारोप्य (symbolisch) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 125. मया हि तत्र चौरा: सकलेव शीर्षवीर्यबलमेषदारोपिता VP. bei Muir, ST. I, 85. यात्मप्रतिकृतिं तस्मिन्यज्ञे आरोपयिष्यति *anbringen* MBh. 5, 3222. *richten auf:* यस्मिन्नेवाधिकं चतुरारोप्यति (आरोक्ष्यति v. l.) Spr. 2424. — 6) *hervorgehen lassen, bewirken, hervorrufen:* मनसि संदेहमारोपयति Prab. 84, 8. आरोपितमैत्रो तौ स्वभर्तरि Mârk. P. 72, 13. आरोपितगुण *der Vorzüge an den Tag gelegt hat* Kathâs. 113, 34. 120, 62. न्यायारोपितविक्रम Spr. 5381; in der Ausg. von Bühler wird न्यायारोपितविक्रमाण्यपि नृणां gelesen und der Herausgeber übersetzt *from whom powerful assistance might be justly be expected; genauer denen mit Recht — beigelegt wird* (vgl. 7). — 7) *beilegen, zuschreiben, übertragen auf* (loc.) Sin. D. 280, 1. Bhâg. P. 1, 3, 31. 2, 10, 43. Prâtiçâkh. 80, *a*, 1. 5. Vedântas. (Allah.) No. 80. H. 70. Verz. d. Oxf. H. 29, *a*, 13. 42. *b*, 10. Mallin. zu Kir. 1, 1. Comm. zu R. bei Muir, ST. IV, 392. Sarvadarçanas. 110, 10. 13. Schol. zu Kâp. 1, 59. Kusum. 14, 15. छाया हि भूमे: शशिनो मलत्वेनारोपिता मुद्धिमत: प्रजाभि: so v. a. *den Schatten der Erde haben die Menschen fälschlicher Weise zu einem Schmutzflecken des reinen Mondes gemacht* Râgh. 14, 10. die ungrammatische Form आरुरोपित Bhâg. P. 10, 87, 25. — 8) = simpl. *besteigen:* पर्वतस्यापरं पार्श्वं क्षिप्रमारोक्ष्यत्यसौ Hariv. 5493. रथमारोक्ष्यत्यायुष्मान् Çik. Ca. 145, 3. आरोक्ष्यु die andere Rec. — 9) आरोक्ष्यामास in der Stelle: शीघ्रमारोक्ष्यामास दानवैर्हारकां पुरीम् Hariv. 6933 fehlerhaft für आरोधयामास *liess belagern;* सर्वमारोक्ष्यामास die neuere Ausg. — Vgl. आरोप fgg. — desid. zu *ersteigen —, zu besteigen wünschen:* यमारुरुक्षत: ṚV. 8, 14, 14. दिवम् Bhâg. P. 8, 11, 3. गिरिम् 5, 14, 13. रथम् 10, 53, 56. यज्ञम् 4, 8, 9. 67. कुञ्जरयूथा गजस्येव शिर एवारुरुक्षति MBh. 12, 2024. आरुरुक्षत्यपानद्दे शिरो मुकुटसेवितम् Bhâg. P. 10, 68, 24. Vgl. आरुरुक्षु.

— अत्या *über seine Grenzen hinaus steigen:* नात्यारोक्षति भ्रातुर्मर्मद्रोघ: स्वजनवानपि R. 4, 17, 22. अत्यारूढ *die Grenzen überschreitend, übermässig:* अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभव: Râgh. 12, 33. मया तस्य दुरात्मन: । अत्यारूढं रिपो: सोढम् so v. a. *gar zu viel von ihm ertragen* 10, 42.

— अध्या 1) *besteigen, ersteigen:* या सूर्यस्य वरूतो वरूत्रधि रथमरुक्षत् ṚV. 8, 75, 1. दिवं पृथिव्या अध्या रुरोह VS. 8, 53. वसुधा विजुपदं द्वितीयमध्यारुरोहेव रजश्छलेन Râgh. 16, 28. शिखराग्रम् R. 5, 74, 12. 6, 14, 3 (med.). 15. 18 (med.). वृक्षान् MBh. 4, 271. वध्यांशालाम् Kathâs. 22, 222. मास्तोरम् 36, 209. अर्धलिङ्गान्योधान् Râja-Tar. 3, 339. रथम् MBh. 1, 6295. R. 2, 92, 31 (101, 24 Gorr.). 7, 22, 3 (med.). वारणम् Daçak. 74, 18. शयनम् R. 7, 26, 24. मार्गम् *betreten* MBh. 9, 277. श्वाङ्गारूयना हि स्त्रिय: । अध्यारोक्षन्ति *erheben sich in die Lüfte* R. Gorr. 2, 104, 11. अध्यारूढ = समारूढ H. an. 4, 73. Med. dh. 11. — 2) *über das gewöhnliche Maass gehen:* अध्यारूढ = अध्यधिक H. an. Med. — caus. 1) *besteigen lassen,* mit dopp. acc.: प्लवम् R. 2, 53, 16. — 2) *Jmd zu Etwas befördern, an Etwas stellen:* समात्यपदे ऽध्यारोपितस्त्वम् Pañcat. 24, 9. — 3) *voraussetzen bei, fälschlich übertragen auf* (loc.) Bhâg. P. 5, 10, 6. 13, 25. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 166. 200. 211. zu Kâṭhâ. Up. S. 7. — 4) *übertreiben* P. 2, 1, 33, Sch. — अध्यारोप.

— अन्वा *nach oder bei Jmd aufsteigen; ersteigen, beschreiten:* पुत्रं पत्रं मनसान्वारोक्षामि *ich fahre im Geiste mit dem Opfer hin* AV. 5, 122, 4. TS. 5, 4, 10, 2. अग्निं यन्नान्वारोक्षेत् 6, 6, 1. एष वै देवयान: पन्थास्तमेवान्वारोक्षम् 7, 2, 4, 4. क्रतून् Çat. Br. 13, 3, 8, 1. — अन्वारोक्ष्य नुयोव: sc. गिरिम् *er bestieg nach ihm den Berg* R. 5, 14, 11. अन्वारूढाय तत्पुत्रास्तत्र (d. i. गिरौ) ताम् Kathâs. 29, 130. अन्वारुरोक्ष चाप्येनम् sc. रथम् MBh. 2, 36. 3, 2345. 7, 2991. R. Gorr. 2, 13, 26. तै चिताग्निगतम् — अन्वारुरुक्षु: पत्यशतम: MBh. 16, 200. या त्वां चितौ समारूढं न वारोक्ष्यति (lies नान्वारो?) R. Gorr. 2, 68, 36. शरीर आत्मा प्राणेनात्मनान्वारूढ: *enthält in sich* Çat. Br. 14, 7, 2, 42. Vgl. अन्वारोक्षण. — caus. *wieder hinaufbringen:* ताम् (प्रतिमाम्). — अन्वारोक्षिता पुन: Çaṅk. 14, 231. गृहं गृहानन्वारोक्षेत् *bringt in sein Haus* TS. 3, 4, 10, 4. — des. nach *Jmd Etwas zu erklimmen wünschen* Bhâg. P. 4, 12, 42.

— उपान्वा *nach Jmd Etwas besteigen und neben ihm Platz nehmen:* रथम् MBh. 5,4745.

— समन्वा *nach Jmd Etwas besteigen:* तत्रैनं चिताग्निस्थं माद्री समन्वारुरोह sc. चिताम् MBh. 1,3813.

— अभ्या *ersteigen, besteigen; sich emporschwingen —, sich hinaufsetzen zu, beschreiten:* नाकम् AV. 3, 29, 3. सुवर्गं लोकम् TBr. 1,3,8,5. 3,8,2. ein Schiff Çat. Br. 4,2,3,10. अभि वा एषो ऽग्नी धारोहति य एनावृतिष्ठते TS. 1,3,9,3. शरीरं संस्कृत्याभ्यारोहति 5,6,6,4. साक्षाद्वा एष देवानभ्यारोहति य एषो यज्ञमभ्यारोहति यथा खलु वै श्रेयानभ्यारूढः कामयते तथा करोति *geradezu zu den Göttern erhebt sich, wer zu seinem Opfer sich erhebt, so wie ein angesehener Hochstehender nur zu wünschen hat, so thut er,* TS. 2,3,3,3. 7,4,3,1. तत्रम् Çat. Br. 2,4,3,7. 3,3,4,9. अभि क्व वै श्रेयांसं रोहति नैनं पापीयानभ्यारोहति *erhebt sich über ihn* 12,2,3,10. — Vgl. अनभ्यारूढ, अभ्यारोह fgg.

— अवा caus. *herabbringen von* (abl.): रथस्था प्रतिमा भर्तुरवारोपिता गिरेः Çaṃk. 14,229.

— उदा *sich erheben zu:* पृथिव्या अरुमुदस्तरिक्षमारुहम् VS. 17,67. AV. 18,1,61.

— उपा 1) *hinaufsteigen zu Jmd* Âçv. Gṛhj. 3,12,12. MBh. 2,37. 939. *besteigen:* गिरिपृष्ठम् Spr. 833, v. l. MBh. 1,1107. शमीम् 4,170. प्रासादाग्रमुपारुहत् R. Gorr. 2,6,1. महारथमुपारुहत् 7,12,20. यानान्युपारुहत् 6,111,16. नावमुपारुहत् 7,46,33. स्थलीमुपारूढा (उपारुहा ed. Bomb. 3, 13,22) पर्वतस्याविदूरतः। तत्र पञ्चवटो नाम *gelegen auf* 3,19,23. न संतानः प्रमाणपदवीमुपारोढुमर्हति so v. a. *darf nicht als wirklicher Beweis gelten* Sarvadarçanas. 26,6. — 2) *herankommen, sich nähern* MBh. 7,5738. उपारूढो मध्याह्नः *Mittag ist da* Mâlav. 24,2. *kommen —, gelangen zu:* स्थलमुपारुहा पर्वतस्याविदूरतः R. ed. Bomb. 3,13,22. उपारूढः सामग्र्यमिव चन्द्रमाः Raghu. 17,30. — Vgl. उपारुह्. — caus. *zu sich heraufsteigen lassen auf* (acc. oder loc.): तावुपारोप्य स्यन्दनम् MBh. 10, 654. रथे 5,4726.

— समुपा *besteigen:* विमानम् MBh. 3,15436. वृषभं समुपारूढा देवी पार्वती R. 5,35,26.

— पर्या *heraufsteigen aus:* (सूर्यम्) यो रोहतं बृहतः पाजसस्परि RV. 10,37,8.

— प्रा *hinaufsteigen zu, besteigen:* त्रिविष्टपम् MBh. 3,10594. पादैरुत्तान् 7,9041.

— प्रत्या caus. *wieder hinaufsteigen lassen, — hinaufbefördern:* प्रत्यारोपय रथोपरि राजपुत्रम् Uttarar. 100,9 (133,4). R. 4,38,39.

— समा 1) *hinaufsteigen zu, auf, besteigen, beschreiten:* स्वर्गम् MBh. 5,4078. सुरपुरीम् Spr. 2462 (med.). नभः Kathâs. 35,158. गिरिपृष्ठम् Spr. 833. गिरिम् R. 5,74,1. उष्ट्रयानम्, खरयानम् M. 11,201. रथम्, विमानम् MBh. 3,1729. 2791. 12027. 5, 7339. Harîv. 13133. R. 1,1,85. 5,43,15. Kathâs. 43,41. नावम् Âit. Br. 6,21. Kathâs. 18,293. सिंहासनम् 32. शयने Pañcat. 186,23. वाजिनम् Kathâs. 18,118. Râja-Tar. 4,268. Bhâg. P. 3,6,15. मत्पृष्ठम् Pañcat. 115,2. तत्पृष्ठोपरि 198,10. तच्चक्रम् — तन्मस्तकाद्वाक्षणाशिरसि समारुहाक् 242,10. 14. प्रियस्याङ्के R. 2,96,16. कुतोशनम् so v. a. चिताम् Spr. 4741. इमाँल्लोकान् Çat. Br. 1,9,3,10. 2,1, 2,3. einen Pfad TS. 2,5,6,2. देवा गार्हपत्यं चित्वा समारोहन् Çat. Br. 7,2,2,1. 3,2,3,1. 3,2,3,13. वितर्कपदवीम् Prab. 116,9. समारूढ a) in pass. Bed.: मातङ्गाः समारूढाः कुशलैरुत्तिमादिभिः *geritten von* MBh. 4, 1038. शतं सहस्राणयश्वानां समारूढानि धन्विभिः R. 2,83,5. °करेणुका Kathâs. 18,87. 52,343. — b) in act. Bed.: सुरलोकम् R. 1,36,22. समारूढा (sc. खम्) भूतासनविमानकाः Kathâs. 46,31. एकचक्रे (°क्रा die Ausgg.) समारूढा विहंगमाः Vṛddha-Kâṇ. 10,15. रथम् Mâlav. P. 132,42. अश्वम् R. Gorr. 2,90,5. Mâlav. P. 21,50. Kathâs. 18,101. दारुमये गरुडे Pañcat. 48,10. पक्षोत्स्कन्धे Mâlav. P. 16,28. तस्योपरि Pañcat. 115,4. खड्गम् Spr. 4890. सिंहासनम् Kathâs. 9,18. चिताम् R. Gorr. 2,68,26. उत्पथम् *auf Abwege gerathen* R. Schl. 2,78,4. *hineingegangen in, aufgenommen in:* समारूढेषु चारणीनाशे *wenn die Reibhölzer verloren gehen, nachdem die Feuer in sie aufgenommen sind,* Âçv. Çr. 3,12,30. Kâtj. Çr. 5,2,19. 6, 10,13. — 2) *zuwachsen, zuheilen:* °व्रूढ Harîv. 11076. *gewachsen nach* Nîlak. — 3) *losgehen auf Jmd oder Etwas* MBh. 7,5084. यज्ञमस्य समारुहा (समासाद्य ed. Bomb.) तस्यो भीमो मकीतले 5768. — 4) *an Etwas gehen, antreten:* उग्रं तपः MBh. 13,7603. नभसा तुल्यं समारोहाक् *so v. a. bekam Aehnlichkeit mit* Raghu. 8,15. चक्रवर्तिं समारूढः *eingegangen auf* M. 8,136. प्रज्ञया वाचम्, चक्षुः, श्रोत्रम्, जिह्वाम्, त्वक्, शरीरम्, उपस्थम्, पादौ, मनः समारुह्य *an die Rede, das Auge u. s. w. mittelst des Verstandes gehend so v. a. in Thätigkeit setzend* Kaush. Up. 3, 8. — Vgl. समारोह, समारोहण. — caus. 1) *hinaufsteigen —, besteigen lassen:* पितृणां सेतुं य आरोहयामि AV. 18,4,1. धर्ममेवैनं लोकं समारोहयति TS. 6, 6,4,1. दिशः Çat. Br. 5,4,4,3. स्वर्गं समारोपितः Spr. 2462. वैनतेये Pañcat. 44,16. पृष्ठे 52,2. खड्गम् Bhâg. P. 4,4,26. शूले Mṛicch. 170,22. Râja-Tar. 2,79. *aufladen, auflegen* MBh. 9,1349. R. Gorr. 1,34,16. 71,2. 5, 19,49. Kathâs. 43,234. शस्त्रे दिवि *aufgehen lassen* Mâlav. P. 75,61. fg. वेदीम् *aufführen* Kathâs. 45,313. *in die Höhe heben, aufheben* MBh. 4, 802. bildlich so v. a. *befördern, an einen hohen Platz stellen* Raghu. ed. Calc. 13,91. — 2) *setzen in:* पीठिकाम् Kathâs. 75,119. *versetzen in, unter:* सर्वे जीवितसंशये वयमभी वाचा समारोपिताः Vaṇis. in Sin. D. 160,8. तं पुत्रिणाम् — समारोपयदग्र्यसंख्याम् Raghu. 18,29. das Feuer versetzen in (loc. oder acc.), vom symbolischen Auffangen desselben in einen andern Gegenstand durch Wärmen der Hände, Hölzer u. s. w.: अरण्योः, आत्मन्, आत्मनि TS. 3,4,10,4. 5. Çat. Br. 4,6,3,2. 12,4,3,10. 11. 13,6,2,20. M. 6,25. 28. Bhâg. P. 7,12,24. अरणी वेत्स्यकौ वा Âit. Br. 7,7. auch ohne Bez. des Ortes Kâtj. Çr. 5,3,1. 7,1,36. 25,3,9. Âçv. Çr. 3,10,4. °रोप्य Lâṭj. 3,4,6. Çâṅkh. Çr. 16,16,2. Kauç. 40. med. *sich aufnehmen lassen:* गार्हपतेरेव प्रथमः समारोक्ष्यते Çat. Br. 4,6,3,12. Kâtj. Çr. 12,2,3. — 3) einen Bogen *mit der Sehne bespannen:* समारोपितकार्मुक R. 6,66,7. Bhâg. P. 1,17,4; vgl. u. आ caus. 3). — 4) *Jmd* (loc.) *Etwas übergeben, übertragen:* पुत्रे राज्यं समारोप्य Verz. d. Oxf. H. 38, b, No. 95. समारोप्य वचो मयि MBh. 12,1418; vgl. वाक्यानि — एकस्मिन्ब्राह्मणे निवेश्य 15,311. *beilegen, zuschreiben, übertragen auf* Bhâg. P. 5,5,30. Sarvadarçanas. 173,2. 3. — 5) *an den Tag legen:* समारोपितशौचः MBh. 13,5262. समारोपितविक्रम R. 6,69,21. — Vgl. समारोपण.

— अनुसमा *aufsteigen nach:* उत्तरमादित्यमग्निरनुसमारोहति TBr. 2,1,2,10.

— अभिसमा (zu einem Opfer in den heiligen Raum) *schreiten:* ते प्रा-

ण्णीर्यमभिममीरोहन् TBa. 1,3,9,3. प्रायणीयाप्यकर्माभिलक्ष्य देवयजनं प्रविष्टाः Comm.

— उप 1) *verwachsen, vernarben:* व्रणाः Suçr. 2,13,15. 38,14. उपरूढव्रण 63,13. — 2) *kommen —, übergehen in:* पूर्वस्मादवस्थान्तरमुपरूढा तत्रभवती so v. a. *sie hat sich verändert* Mâlav. 31,13. — 3) उपरूढ *haftend —, befindlich an* (loc.) Gaupân. zu Sâṁkhjak. 30 (°ढं zu lesen). — caus. *verwachsen —, vernarben lassen* Suçr. 2,106,7.

— नि, partic. निरूढ *gewachsen:* मत्काकदम्बः मुखार्थनिरूढः Bhâg. P. 5,16,23. 25. °मूल 3,30,7. *fest wurzelnd:* ममता 2,4,2 (विरूढा ed. Bomb.). 4,27,10. so v. a. रूढ *aus der Etymologie nicht erklärlich* Sarvadarçanas. 172,21. — caus. *verpflanzen, versetzen nach* (loc.), Menschen Râga-Tar. 1,345.

— निस् s. नीरोह्.

— प्र 1) *hervorwachsen, treiben, sprossen:* काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती VS. 13,20. ते सुवर्गं लोकमा प्रारोहन् TBa. 1,1,2,5. मूलात् Çat. Br. 14, 6,9,33. पलाशानि 9,2,1,15. Kâṭhân. Up. 5,2,3. व्रीहयः शालयो मुद्गास्तिला माषास्तथा यवाः । यथाबीजं प्ररोहन्ति M. 9,39. क्वचित्सस्यं (so die ed. Bomb.) प्ररोहति MBh. 12,2691. 13,7141. न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति Spr. 1416. यदा प्रमृष्टा ओषध्यो न प्ररोहन्ति ताः पुनः Mârk. P. 49,73. उच्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्ररोहति Spr. 130. M. 9,54. MBh. 12,6896 (med.) Kull. zu M. 2,112. मूलबीजम् Spr. 2113. तुषेणापि परित्यक्ता न प्ररोहन्ति तण्डुलाः 3084. नक्तनुत्तं प्ररोहति MBh. 13,7608. प्ररूढशालि Ṛt. 5,1. लतास्तमालस्य नवप्ररूढाः R. 5,11,17. नाभिप्ररूढाम्बुरुह Râgat. 13,6. प्ररूढबीजा मही Varâh. Bṛh. S. 53,98. प्ररूढकेशश्मश्रुनखरोमोपचित *lang gewachsen* Pâṇkat. 182,10. स्फीतमस्यप्ररूढानि (so die neuere Ausg.) वनानि *bewachsen mit* Harîv. 3729. प्ररूढ = बद्धमूल Med. Kh. 8. — 2) *wachsen* so v. a. *gedeihen, zunehmen, stärker werden:* नहि दुर्वलदग्धानां कुले किंचित्प्ररोहति Spr. 2176. गोभिः पशुभिरश्वैश्च कृष्या च सुमहत्या । कुलानि न प्ररोहन्ति यानि क्षीणानि वृत्ततः ॥ MBh. 5,1290. गुरुद्रारुप्ररोहत्सुकृतात्यय Râga-Tar. 4,123. प्ररूढ *weit verbreitet, gewachsen* so v. a. *groß —, stark geworden:* भुवि व्यसनिताख्याति: प्ररूढा ते लतेव या Kathâs. 11,23. प्ररूढे संसर्गे मणिभुजगयोर्जन्मजनिते Spr. 288. °स्मरयौवना Śiç. D. 100. °भाव Bhâg. P. 4,13,1. रूप: Râga-Tar. 3,284. °किरणे हि चन्द्रे नक्तञ्चराणामल्पता भवति Schol. zu Naish. 22,54. = वृद्ध H. an. 3,189. = जठर d. i. ज्येष्ठ *alt* ebend. und Med. a. a. O. — 3) *hervorgehen, entstehen:* यस्यायमङ्गात्प्ररूढः Çiç. 178. यथा प्ररूढो घर्मान्ते देहत्कर्तं कृताशनः Harîv. 13351. स्त्रियः प्ररूढगर्भाः so v. a. *schwanger* R. 1,15,26 (24 Gorr.). स्वेदबिन्दु° 3,76,19. Bhâg. P. 4,11,30. — 4) *verwachsen, vernarben:* न प्ररोहति (v. l. für संरोहति) वाक्क्षतम् Spr. 2647. क्षतप्ररूढामिव बाणरेखाम् R. 5,11,24. — Vgl. प्ररुक्, प्रव्रुढि, प्रोह् fgg. — caus. 1) *pflanzen:* °रोपित Spr. 2350. 3976. bildlich: घत्युदात्तगुणोघेषा कृतपुण्यैः प्ररोपिता । शतशाखी भवत्येव यावन्मात्रापि सत्क्रिया ॥ *gepflanzt auf* so v. a. *ihnen erwiesen* 3423. — 2) *stecken — befestigen an, in:* यष्टिं प्ररोपयेन्मञ्चे Varâh. Bṛh. S. 43,29.

— अनुप्र *nachwachsen* Çat. Br. 7,4,2,13.

— अभिप्र *sprossen* Suçr. 2,300,15.

— प्रति 1) *wieder sprossen, — treiben:* छिन्नस्य यदि वृक्षस्य न मूलं प्रतिरोहति MBh. 12,6896. — 2) *nachahmen:* गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढमूर्तयः Bhâg. P. 10,30,2. — caus. 1) *je an seine Stelle pflanzen* Varâh. Bṛh. S. 53,6. — 2) *wieder pflanzen, wieder einsetzen:* कलमा उत्खातप्रतिरोपिताः Râgat. 4,37. उत्खातान्प्रतिरोपयन् von Pflanzen und Fürsten Spr. 440. शत्रून् नुदत्य प्रतिरोपयन् Râgat. 17,42.

— वि 1) *auswachsen, austreiben, sprossen:* वनस्पते शतवल्शो वि रोह ṚV. 3,8,11. AV. 6,30,2. ṚV. 6,24,3. वि वीरुत्क्वीरुधः 10,40,9. एषा मर्या प्रजा पशवो ऽस्मत्वं वि रोहतु AV. 19,6,33. VS. 5,43. 12,100. 13,21. यूपः TBa. 1,4,3,1. व्यस्यामोषधयो रोहन्ति TS. 3,4,8,3. von der *Erection* AV. 4,4,3. विरूढ *ausgewachsen, gewachsen, gekeimt* H. an. 3, 190. Med. Kh. 9. Kâṭ. Çr. 15,9,28. fg. Çâṅkh. Çr. 13,4,1. Çat. Br. 7,2, 4,27. यच्चत्वं सुविरूढमूलम् Bhag. 15,3. °तृणाङ्कुरासु (गण्डेदलीषु) Mṛicch. 6,19. Ragh. 2,26. उत्पाटितविरूढं नीवारवलिम् Çiç. 96. मलिलाद्विरूढं कन्दम् Bhâg. P. 3,8,17. सर्वबीजाविरूढेव यथा सीता *mit aufgegangenem Samen aller Art bestanden* MBh. 7,3945. — 2) *hervorgehen, entstehen:* विरूढ = जात H. an. Med. °बोध Bhâg. P. 3,8,22. °स्वेदकणिका 10,43,16. — 3) *besteigen:* सुविरूढानां कुरुत्यारोहिर्विशारदैः नागानाम् *gut geritten von* MBh. 7,3105. — Vgl. विरूढक, विरोह्, विरोहण. — caus. 1) *wachsen machen* ṚV. 8,80,5. *pflanzen:* विरोप्यन्तां गुल्मिनः R. 7,54,11. — 2) *verwachsen —, vernarben machen:* विरोपितव्रण Daçak. 86,3. 3. — 3) *entsetzen, vertreiben aus:* पुत्रं राज्याच्चापि व्यरोपयत् MBh. 3,5049. — Vgl. विरोपण.

— सम् 1) *wachsen:* प्रेमद्रुमाः संरुरुक्षुः प्रियाणाम् Bhatt. 11,5. कूर्मापसंरूढतृणाङ्कुरेषु Ragh. 6,47. संरूढ = अङ्कुरित H. an. 3,191. Med. Kh. 10. — 2) *zusammenwachsen, verwachsen, vernarben:* तस्माद्विधृता यद्यानो ऽभूवन्न पर्वानः समरुक्षन् TS. 2,5,11,2. संरुरुक्षुव्रणाः R. ed. Bomb. 6,50,39. Suçr. 1,67,11. 83,15. न संरोहति वाक्क्षतम् (वाक्कृतम् falschlich bei Kull. zu M. 7,52) Spr. 2647. संरूढव्रण R. 3,73,6. 6,71,25. संरूढशरक्षतज (falschlich संरूढ Anâ. 11,1) MBh. 3,12274. — 3) *hervorbrechen, zum Vorschein kommen:* संरोहत्पुलका Śiç. D. 243,11. मिथः संरूढरागयोः 214. पष्टिवर्षगते काले पक्षाघो ऽभून्ममानघ । स संरूढो ऽसकृत् Harîv. 2127. — 4) संरूढ *fest wurzelnd, — haftend:* तस्मे मनसि संरूढं करिष्यामः so v. a. *das werden wir dem Gemüth fest einprägen* MBh. 12,12366. = प्रौढ H. an. Med. — caus. 1) *wachsen machen:* वंशं कुरोर्वंशदवाग्निनिर्हृतं संरोहयेवा Bhâg. P. 1,10,2. *pflanzen, einsetzen:* संरोपितान्यालयन् von Pflanzen und Fürsten Spr. 440, v. l. *säen:* संरोपिते ऽप्यात्मनि धर्मपत्नी त्यक्ता मया *obgleich ich mich gesäet hatte* (sc. in ihrem Mutterleibe) so v. a. *ein Kind mit ihr gezeugt hatte* Çiç. 151. — 2) *zusammenwachsen —, vernarben lassen* Suçr. 1,60,5.

— उपसम् *verwachsen, vernarben:* व्रणश्चिराद्युपसंरोहति Suçr. 1,18, 3. 4. — Vgl. उपसंरोह्.

2. रुह् (= 1. रुह्) f. *das in-die-Höhe-Gehen; Wuchs, Trieb, Sprosse:* शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः ṚV. 10,97,2. रुहो रोहन्ति AV. 13,1,4. यास्ते रुहः प्ररुहो यास्ते आरुहो याभिरापृणासि दिवम् 9. 26. 3,26. Çâṅkh. Çr. 5,10,32. Am Ende eines comp. *hervorschießend, wachsend;* s. अम्भो°, क्षिति°, इन्द्रोरुह्राम, जल°, तनु°, पङ्क°, पर्णा°, पर्व°, भू°, भूमी°, मरो°.

रूढ (von 1. रुह्) 1) adj. (f. या) am Ende eines comp. *wachsend, gewachsen, entstanden* H. 6. बीजकाण्डरूढानि M. 1,48. गिरिसानु° MBh.

7,5643. मेरु° Harıv. 9003. द्रुमस्थानरूक्षद्रुमा: R. 3,52,16. पम्पातीर° 79, 32. 4,2,5. MBh. 3,12361. Mnch. 30. यत्राभिसिन्धु° Bhāg. P. 4,9,11. गिरिरात्मरूक्षै: (आत्मगतै: ed. Bomb.) फुल्लै: कर्णिकारैरिवावृत: *auf ihm wachsend* MBh. 11,566. Vgl. यङ्ग°, यम्बु°, यम्भो°, उर्मि°, कर°, तिति°, गात्र°, गृक्षे°, ज्ञगतो°, ज्ञल°, ज्ञले°, तनु°, तनू°, तीर°, धरणी°, नलिनी°, नीर°, पङ्क°, पङ्के°, पाणि°, पृथिवी°, बीज°, भू°, भूमी°, मधु°, मक्षी°, शिरा°, सेरा°. — 2) *f.* या *Panicum Dactylon* AK. 2,4,5,24. H. 1193. Hin. 93. = मक्षाममङ्गा Rāǵān. im ÇKDa.; vgl. यग्नि°, यन्न°, कत°, कच्छ°, काण्ड°, काण्डे°, कृन्न°, नेत्र°, तरु°, पादप°, फले°, वल्ल°.

रूक्ष *n. Loch, Oeffnung* (छिद्र) Çabdar. im ÇKDa.

रूक्षिरूक्षिका *f.* = उत्कण्ठा ÇKDa. nach einem Purāṇa; vgl. रणारणाक.

रूक्षून् (von 1. रूक्ष्) Uṇādis. 4,113. *m. Baum, Pflanze* Ujjval.

1. रूक्ष (von रूक्ष्) 1) adj. (*f.* या) Ujjval. zu Uṇādis. 3,66 (von रूक्ष abgeleitet und रूक्त geschrieben). *rauh —, trocken anzufühlen; dürr, mager, aridus, siccus, saftlos* (Gegens. चिक्कण, स्निग्ध, प्रक्लिन्न, यापोन, यवाद्) AK. 3,4,29,227. H. an. 2,570. Med. sh. 23. Çat. Br. 4,6,9,18. Çiñkṣ. Br. 10,1. Pañcav. Br. 5,8,1. तं रूक्षं नाज्ञानात्स चाङ्गानि चाङ्ग 24,13,2. unter den verschiedenen स्पर्श MBh. 12,6856. 14,1416. रूक्षं (vgl. रूषित unter रूष्) स्यन्दनरेणुभि: R. 5,95,26. Kathās. 19,21. लोध्रकषाय° (कपोल) Kumāras. 7,17. Haṭha MBh. 1,5932. Varāh. Bṛh. S. 69,33. Bhatt. 2,30. Rāgan. 7,67 (रथतुरगरजोभि:). Handfläche Varāh. Bṛh. S. 68,40. Lippen 52. Baume 29,14. 31,3. 54,19. 105. धरणी, भूमि Spr. 2812. भूमि, भू, क्षिति R. Gorr. 2,125,12. Suçr. 1,135,8. Kām. Nītis. 4,53. Mārk. P. 32,19. Wolken Varāh. Bṛh. S. 21,21. 24,21. योषधयो निदाघे निःसारा रूक्षा घातेमात्रं लघ्व्यो भवन्ति Suçr. 1,20,16. नेत्र 2,348,19. Varāh. Bṛh. S. 61,1. पिङ्गरूक्षनेत्र Mārk. P. 8,33. मेघै रूक्षै: स्निग्धैश्च Suçr. 2,349,1. देह 553,14. °मानाङ्ग 38,4. कृशो रूक्षो ऽत्यशी 76,19. °दुर्बल 137,17. 177,6. 179,17. 180,16. 21. 210,3. 396,3. Mārk. P. 8,31. 121. तुल्लामरूक्ष (?) Rāǵa-Tar. 5,433. von Speisen Suçr. 2,26,14. Kathās. 14,39. *frei von Fett:* Arzenei u. s. w. Suçr. 2,180,12. भेषज 355,3. 325,8. 191,8. Çiñkṣ. Sārṅg. 3,6,37. उत्सादन Suçr. 2,45,11. vom Geschmack (*trocken auf der Zunge*) Bhāg. 17,9. MBh. 1,716. Suçr. 1,70,11. 154,7. 190,14. Vorz. d. Oxf. H. 237, *a*, No. 568. *rauh* von Winden MBh. 3, 12438. 4,1288. 16,2. R. 6,29,11. Varāh. Bṛh. S. 5,94. 30,6. पश्चिमे रूक्षे धर्ममासे Harıv. 3345. vom Geruch MBh. 12,6848. 14,1409. von Lichterscheinungen, die das Auge *unsanft* berühren, AV. Paric. in Ind. St. 10,318. °वर्णा ज्ञलदा: MBh. 4,1239. 16,5. Varāh. Bṛh. S. 3,25. 32. 9, 44. 11,12. 32. 39. 34,5. 33. 47,7. 8. 27. 60,33. Ind. St. 2,258. *rauh* von der Stimme, von Worten; *das Ohr —, das Gemüth unangenehm berührend* AK. H. 269. H. an. Med. धातुस्य वाक् MBh. 1,647. °स्वर (विरुगम) R. Gorr. 2,125,4. Mṛicch. 143,13. Varāh. Bṛh. S. 68,25. रूदित 73. °वाशिन् (so ist zu lesen) Kām. Nītis. 10,26. गोमायु (wegen seiner Stimme) R. 3,64,4. शिलासु रूक्षं पतन्ति धारा: Mṛicch. 92,14. परा जितान्याण्डवेयास्तु वाचो रौक्षा रूक्षा भाषते धार्तराष्ट्र: MBh. 5,859. 871. 14, 159. Harıv. 11094 (S. 792). R. 4,31,8. 6,101,6. Spr. 618. 1649. 4380. 4698. 4906. Bhāg. P. 6,10,28. घातेयरूक्षातरमुखरमुख Spr. 1434. Rāǵa-Tar. 3,87. यस्त्वा रूक्षायमावयत् MBh. 3,998. 6,3330. R. Gorr. 2,61, 29. °निष्ठुरवाद Suçr. 1,105,5. °वादिन् R. 5,48,6. रूक्षाभिभाषिन् Harıv. 7916. Rāǵa-Tar. 2,25. उपचार R. 3,1,21. अभिनिवेश Rāgn. 14,43. रूक्षं च मुक्तरीक्षते *unfreundlich, unwirsch* Kām. Nītis. 5,43. von Personen Spr. 2635. Çiç. 191. Gegens. अनुनीत Vikr. 61. रोष° Daçak. 2,9. गृक्षं धनविक्षीनस्य so v. a. *unheimlich* Spr. 805. Uttarādh. 32,6 (42,8). Häufig fälschlich रूक्त geschrieben, die Bomb. Ausgg. haben regelmässig die Länge. — Vgl. लूक्ष. — 2) *m. eine best. Grasart,* = वाल्क. — 3) *f.* या *Croton polyandrum Roxb.* oder *Croton Tiglium Lin.* Rāǵān. im ÇKDa.

2. रूक्ष *m. Baum* H. 1114. wohl eine falsche Zurückübersetzung des prākr. रुक्ख = वृक्ष.

रूक्षगन्धक *m. Bdellion* Rāǵān. im ÇKDa.

रूक्षण (von रूक्षय्) 1) adj. *mager machend* Çiñkṣ. Sārṅg. 3,2,4. — 2) *n. das Magermachen, Behandlung mit Mitteln, die das Fett mindern:* घृतिस्निग्धस्य रूक्षणम् Suçr. 2,180,21. Çiñkṣ. Sārṅg. 3,1,29.

रूक्षणात्मिका *f. eine best. Körnerfrucht,* = लङ्का Rāǵān. im ÇKDa.

रूक्षता (von 1. रूक्ष) *f. Dürre, Trockenheit, Magerkeit:* मूर्धज्ञानाम् Spr. 4462. श्लेष्मनाशे रूक्षता Suçr. 1,48,19. इन्द्रियाणाम् 2,237,9. य° Çat. Br. 13,8,2,18. Pañcav. Br. 20,13,4. *rauhes —, unfreundliches Wesen:* ज्ञातेर्निरूपभोगस्य दृश्यते भुवि रूक्षता Spr. 934.

रूक्षत्व (wie eben) *n. Rauhheit, Trockenheit, ausdörrende Natur:* घोष्याद्रूक्षत्वाच्च (यवो:) Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 130.

रूक्षदर्भ *m. eine Art Gras,* = कुरिदर्भ, कुरिर्दर्भ Rāǵān. im ÇKDa.

रूक्षपत्र *m. Trophis aspera,* = शाखोट Rāǵān. im ÇKDa.

रूक्षपेषम् *adv.* in Verbindung mit पिष् *trocken d. i. ohne Zusatz von Fett oder Flüssigkeit zermalmen* P. 3,4,35.

रूक्षप्रिय *m.* = मधूषोषध Rāǵān. im ÇKDa.

रूक्षय् (von रूक्ष), रूक्षयति (प्राकृत्य) Daṇḍin. 33,56. 1) *dünn —, mager machen:* तान्येनं रूक्षाणि रूक्षयन्ति Çat. Br. 4,6,9,18. — 2) *bestudeln, beschmieren:* तारक्षतरूक्षित Varāh. Bṛh. S. 104,16. — Vgl. यरूक्षित. — वि *bestreichen:* गोमयेन चकुशो विरूक्षितं बीजम् Varāh. Bṛh. S. 55,19.

रूक्षस्वादुफल *m. ein best. Fruchtbaum,* = घन्वन Rāǵān. im ÇKDa.

रूक्षीकर् *rauh —, trocken anzufühlen machen:* पांसुरूक्षीकृताङ्ग so v. a. *mit Staub bedeckt* Mṛicch. 137,8.

रूक्षेश्वर *m. pl.* N. einer Çiva'itischen Secte Wilson, Sel. Works I, 32. 236.

रूचक s. रूचक.

रूढ s. u. 1. रूह्.

रूढपर्याय *adj. in wachsenden Kehrsätzen sich bewegend* Līl. 6,7,7.

रूढवंश *adj. hohen Geschlechts* Daçar. 2,1.

रूढि (von 1. रूह्) *f.* 1) *das Steigen* (eig. und übertr.): रूढिमेति *kommt hoch zu stehen* Rāǵa-Tar. 1,284. 6,266. — 2) *Wachsthum:* दृढा रूढि नेतुम् *zu festem Wachsthum verhelfen* Spr. 1094. — 3) *Ueberlieferung, hergebrachter Brauch:* कवि° H. 5. रूढि: पारंपरायाता येयमस्मद्कै स्थिता Rāǵa-Tar. 4,271. — 4) *eine überlieferte, nicht unmittelbar aus der Etymologie sich ergebende Bedeutung eines Wortes* Sāh. D. 13. 13,7. 213,11. अभिधा द्विविधा रू ढ्यूपूर्विका योगपूर्विका च Prātiçāk. 9,*a*,3. Schol. zu Kāty. Çr. 4,14,31. zu P. 3,3,20. zu Buiṣṇ. S. 83. Kāç. zu P. 1,2, 55. 6,1,103. Vorz. d. Oxf. H. 188,6,27. 240,*a*, No. 619. Sarvadarçanas. 172,8. fgg. °शब्द Bhām. Nirṇ. 18,14. Schol. zu AV. Pāit. 4,16. zu P. 2,1,66. °शब्दता Rāǵa Tar. 3,76.

रूपं Unâdis. 3, 28. 1) n. Sinne. K. 249, a, 11. am Ende eines adj. comp. f. या: ई Paṇḍar. 2, 6, 22 wohl fehlerhaft. a) *äussere Erscheinung*, sowohl *Farbe* (namentlich pl.) als *Gestalt, Form* AK. 1, 1, 4, 16. 7, 38. Trik. 3, 3, 278. H. 1376. an. 2, 298. fg. Med. p. 9. fg. Halâs. 3, 79. Vîçva bei Uṇâdis. zu Unâdis. 3, 28. रूपं रूपं मघवा बोभवीति माया: कृण्वानस्तन्वं परि स्वाम् RV. 3, 53, 8. 6, 47, 18. घोषा इदस्य शृण्विरे न रूपम् 10, 168, 4. नभो न रूपमरुषं वसाना: 7, 97, 6. रूपा रुरिता 10, 96, 3. कृष्णा, यर्तुना 21, 3. विश्वा रूपाणि रुरिता कृणोषि AV. 5, 20, 2. विश्वा रूपाण्याविशन् RV. 7, 55, 1. 8, 15, 13. 5, 81, 2. 10, 136, 5. 139, 3. 169, 3. पिता यत्सीमभि रूपैरवासयत् 1, 160, 2. या नाभिभिर्मृदुर्वनि विश्राना रूपेभि: 5, 43, 10. रूपैरपिशदुर्वनानि विश्वा 10, 110, 9. 184, 1. दिवि रूपमासजत् *hat dem Himmel seine Farbe gegeben* 124, 7. त्वष्टा रूपेव तक्ष्या 8, 91, 5. त्वष्टा रूपाणामीशे TBr. 1, 4, 3, 1. AV. 1, 22, 3. नाम रूपं च 11, 7, 1. Bhâg. P. 1, 3, 14. 8, 38. रूप, नामन्, कर्मन् Çat. Br. 14, 4, 4, 1. 11, 2, 3, 3. हे रूपे कृणुते रोचमान: AV. 13, 2, 25. उग्रश्चक्रमीना तनिषि विश्वा रूपाणि पुष्यसि 10. वक्षो विश्वा रूपाणि विवेशतम् 14, 2, 30. उपवर्कणां ददति रूपाणामवकृत्वी *Farben* TBr. 1, 1, 6, 10. ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुरा: सन्त: स्वधया चरन्ति *Spukgestalten* VS. 2, 30. *Traumgestalten* Çat. Br. 14, 7, 1, 14. चत्वारि चतुरो रूपाणि हे शुक्ले हे कृष्णे *Farben* TS. 5, 3, 1, 4. घात्मन्रूपे 6, 1, 6, 1. ज्योति: पश्यति रूपाणि रूपं च बहुधा स्मृतम् । ह्रस्वो दीर्घस्तथा स्थूलश्चतुरस्रोऽनुवृत्तवान् (णुवृत्तवान् ed. Bomb.) ॥ शुक्ल: कृष्णस्तथा रक्तो नील: पीतोऽरुणास्तथा । कठिनश्चिक्कण: श्लक्ष्ण: पिच्छिलो मृदुदारुण: ॥ एवं षोडशविस्तारो ज्योतीरूपगुण: स्मृत: । MBh. 12, 6853. fgg. M. 1, 77. 12, 98. Verz. d. Oxf. H. 104, *b*, 30. 225, *a*, No. 549. 226, *a*, No. 554. Râǵa-Tar. 5, 375. Bhâg. P. 2, 2, 29. Bahuviv. 2. 99. einer der fünf Skandha bei den Buddhisten Burn. Intr. 511. H. 233, Sch. धूम्र° *Farbe* MBh. 7, 9621 = 13, 7510. नरूपेण *in der Gestalt eines Mannes* M. 7, 8. R. 3, 52, 14. Spr. 2523. 3271. Bhâg. P. 1, 7, 45. घर्थमनर्थरूपेण सा ददर्श R. Gorr. 2, 8, 33. नेता (स्त्रिय:) रूपं परीप्सते *das Aeussere eines Menschen* Spr. 1647. °विपर्यय M. 11, 48. तस्य दृष्टस्य तद्रूपं तिप्रमत्तरघीयत MBh. 3, 2619. 2621. 2804. रूपेण विकृत: R. 1, 1, 54. नक्षीदृशं तापसानां रूपं भवति कर्हिचित् 9, 45. 56, 17. 2, 42. 12. Çiç. 115. Vikr. 9. मनेदमिति यो ब्रूयात्सोऽनुयोज्यो यथाविधि । संवाद्य रूपसंख्यादीन्स्वामी तद्द्रव्यमर्हति ॥ *das Aussehen eines Gegenstandes* M. 8, 31. fg. देशस्य R. 2, 93, 6. रूपं कर् *eine Gestalt annehmen, sich verwandeln in*, mit eigenthümlicher Construction in der älteren Sprache: घश्व: श्वेतो रूपं कृत्वा *sich in ein weisses Ross verwandelnd* Ait. Br. 6, 35. घाखू रूपं कृत्वा TBr. 1, 1, 2, 2. TS. 5, 2, 6, 5. 6, 1, 2, 1. घाग्नं रूपं कृत्वा Nir. 12, 10. मृगाविङ्गानां कस्य रूपं करोम्यहम् R. 5, 35, 29. स्त्रीरूपमद्भुतं कृत्वा MBh. 1, 1156. Kathâs. 13, 143. 39, 175. नलरूपमकारि तै: 56, 269. स हि रूपाणि कुरुते विविधानि MBh. 13, 2270. कृत्वा रूपाण्यनेकश: R. 1, 28, 18. रूपं बहुरूपं कृत्वा 64, 7. 3, 31, 28. MBh. 3, 2557. घात्मन: परमं रूपं घाकरोन्मन्मथाकृति Brahma-P. in LA. (III) 53, 22. स्वं चैव रूपं कुर्वन्तु *die eigene Gestalt annehmen* MBh. 3, 2211. 2839. घस्मैव सर्वे रूपं भवाम *seine Gestalt annehmen* Çat. Br. 14, 4, 2, 22. भीमरूपं समास्थित: R. 5, 50, 18. रूपं पूर्वणाख्या नाम्ना सदृशं प्रत्यपद्यत Raghu. 12, 38. रूपमन्यत्स शिश्रिये Kathâs. 18, 243. *Lautform, Form* eines Wortes: स्वं रूपं शब्दस्य P. 1, 1, 68. सर्वादीनि शब्दरूपाणि Schol. zu P. 1, 1, 27. देवेति रूपान्तरं बोध्यम् Sidd. K. zu P. 1, 2, 6. किमो रूपम् Vop. 25, 5. Am Ende eines adj. comp. पत्ताय घृतरूपाय *der eine Gestalt angenommen hatte* Bhâg. P. 3, 19, 3. *ein — Aeusseres habend, die Gestalt von — habend, in der Gestalt von — auftretend, das Aussehen von — habend, dem ähnlich* H. 1462. मनोज्ञरूपा *ein angenehmes Aeusseres habend* R. 1, 9, 32. समत्त° Çiç. 190. घनाचार° *von ungewöhnlichem Aussehen* Kauç. 117. वेश्या मुनिरूपा: *Buhldirnen in der Gestalt von* Muni R. 1, 8, 23. मातृरूपे ममामित्रे voc. 2, 74, 7. पद्मारूपा श्री: MBh. 3, 14404. ब्राह्मणीरूपा Kathâs. 16, 10. Râǵa-Tar. 1, 25. Bhâg. P. 1, 19, 14. 5, 26, 20. Paṇḍar. 238, 22. तं क्रोञ्चारिरूपानविज्ञातानिव दर्शयो चकार *er zeigte ihm drei unbekannte bergähnliche Gegenstände* TBr. 3, 10, 11, 4. प्रवद्रूपमपि किंचित् *etwas flussähnliches* Âçv. Gṛhj. 1, 12, 6. Kauç. 33. नदी° 71. घग्नि° R. 1, 65, 15. घनल°, केतु° Vaitân. Bhâr. S. 11, 3. घशोक° *die Farbe des* Açoka *habend* 37, 2. 54, 110. स एव शब्दस्तद्रूपो वाससां निर्ज्ञतामिव *ein Laut, ähnlich dem von Kleidern, die gewaschen werden*, MBh. 7, 3231. मृगतृष्णि° Bhâg. P. 7, 9, 23. दाद्रूपा धाद्रूपाश्च धातव: *Wurzeln von der Lautform* दा *und* धा Schol. zu P. 1, 1, 20. घसूपो निपात: *ein aus einem blossen Vocal bestehender* Nip. zu 14. तस्याज्ञा हिंसाविरतिरूपा *ein in der Form von — auftretender Befehl* so v. a. *der Befehl, der darin bestand, dass man* — Râǵa-Tar. 3, 80. मायया नामरूपया *erscheinend als* Bhâg. P. 8, 14, 10. यस्य स्फुरणस्य फलं प्रियालिङ्गनरूपम् *bestehend in* Schol. zu Çiç. 15. राज्ञो ऽभिलाषरूपेयं प्रथमकामावस्था zu 22. 26. 31, 4. बधद्एउं ताउनाग्यङ्गाच्छेदरूपम् Kull. zu M. 8, 129. सोमाङ्गरूपेषु यागसंधिषु zu 261. मुनेरपत्यं शकुन्तलारूपम् *so v. a. nämlich —, das ist* Çak. Schol. zu Çiç. 41. Häufig in Zusammensetzung mit einem adj. oder partic., wobei nicht selten रूप als ganz überflüssig erscheint: घोर° *ein imposantes Aussehen habend* M. 7, 121. घार्य° 10, 57. कुद्धो ऽप्यकुद्धरूप: MBh. 1, 3596. उन्मत्तरूपा 3, 2814. प्रेत° Harîv. 4549. विद्रूपरूप MBh. 1, 5931. Mâlav. P. 69, 20. घाकारादीन्दीर्घरूपान् = दीर्घान् RV. Prât. Einl. शान्त° Spr. 1114. नूतनरूपा (वाच्) 4698. वाच: पञ्चरूपा: MBh. 2, 2196. fg. सत्य° (वाक्य) R. 2, 57, 21. घोररूपाणि निमित्तानि Bhâg. P. 1, 14, 2. घमद्धान° MBh. 13, 1130. पारमार्त° 2, 2250. प्रहृष्ट° 3, 13654. क्रुष्ट° 3, 7519. त्रस्तरूपं तु विज्ञाय जगत्सर्वम् R. 1, 23, 5. घदृष्टरूपा (लता) *bisher unbekannt* 2, 55, 29. संपन्न° *locker* 5, 14, 45. निष्पातरूपां गणेशप्रतिमाम् Kathâs. 71, 60. नान्यदन्येन संसृष्टरूपं (संसृष्टं रूपं ed. Lois.) विक्रयमर्हति M. 8, 202. रागादिना स्वापितरूपम् (स्थगितरूपम् bei Lois.) Kull. zu M. 8, 203. विमृष्ट° Burn. Intr. 49. कान्त° ad Çiç. 19. शक्य° (so ist zu lesen und demnach zu übersetzen) Spr. 4908. घाम्यरूपा पृथिवी MBh. 9, 722. सकरुणा हि गुरवो गर्भरूपेषु (= बालकेषु Comm.) Uttarâs. 124, 8 (168, 3). घानन्द° *so v. a. von Wonne erfüllt* Prâçnop. 2, 10. Nach P. 5, 3, 66 (vgl. jedoch Vârtt.) und Vop. 7, 50 soll रूप als tonloses Suffix den vorangehenden Begriff lobend hervorheben: पटु° *recht geschickt*, पचतिरूपम् *er kocht gut*, वैयाकरणरूप: *ein ordentlicher Grammatiker* Schol.; vgl. P. 8, 1, 57. Verhalten eines fem. vor einem solchen रूप P. 5, 3, 35. 42. fgg. Vop. 7, 49. — b) *Bild, Bildniss:* न चेदके निरीक्षेत स्वं रूपम् M. 4, 38. लिखितं पटे। रूपं सुन्दरसेनस्य Kathâs. 101, 101. स्थापयेद्देश रूपाणि Weber, Ṛṣabhaç. 284. — c) *eine schöne Gestalt, Schönheit* Trik. H. an. Med. Vîçva a. a. O. नभो न रूपं वरिमा मिनाति RV. 1, 71, 10. 2, 13, 3. 9, 65, 19. पशूनाम् (nach

Comm.) VS. 39,4. TS. 7,8,25,1. Çat. Br. 9,4,1,1. योषितिं रूपं दधाति 13,1,9,6. Âçv. Gṛhy. 1,3,3. °मन्त्रगुणोपेत M. 3,40. वर्णरूपोपसंपन्न 4,68. °द्रव्यविक्रीत 141. °गुणान्विता 7,77. वयोरूपसमन्वित 8,182. Jâán. 1,290. MBh. 3,2081. °संपन्ना 2084. R. 1,4,27. MBh. 3,2124. 2357. 5,7019. R. 1,6,13. Çik. 13,10. 42. रूपं ज्ञा कृत्ति Spr. 2636. °यौवनसंपन्न 2637. रूपाभिजनसंपन्न 2638. यप्रतिम 2639. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम् 2797. Varâh. Bṛh. S. 78,13. 105,5. रूपोपेत 15,26. कुलरूपानुरूपा भार्या Kathâs. 11,6. °यौवनगर्विता Brahma-P. in LA. (III) 50,4. °समन्वित Weber, Kṛishṇaj. 274. रूपाढ्या Vet. in LA. (III) 1,14. परमाद्भुतरूपा Kathâs. 18,85. — *d) Naturerscheinung, Erscheinung, Symptom* Varâh. Bṛh. S. 3,9. 5,16. 21,35. 37. 32,8. 12. 20. 43,27. Sûçr. 2,55,21. Verz. d. Oxf. H. 305, *b*, 17. 312, *a*, No. 745. *Anzeichen:* व्रणस्येतद्राविनो रूपमाकुः MBh. 12,8760. fg. *Abzeichen, charakteristisches Zeichen, Eigenthümlichkeit, Repräsentation, Symbol* Bhâg. P. 3,7,29. दीप्तायें रूपं शब्दादीनि VS. 19,13. 21. यस्मरयः तत्रस्य रूपम् Ait. Br. 4,9. यत्मुरा भवति तत्रूपं तत् 8,8,1. 2. 2,28. 3,29. 32. 4,26. 5,1. 4. TBr. 2,1,2,9. सर्वासां देवतानाम् TS. 3,5,9,1. Çat. Br. 1,5,2,12. 6,3,41. 13,1,5,1. इष्टि° 1,6,2,12. Kâty. Çr. 14,7,2. यदृष्टं घोषधय उच्यन्ति प्राणिनश्च पृथिव्यां तदस्यिनो रूपम् so v. a. *das ist die Sache der* Açvin Nir. 6,36. बोधशावगतिश्चैव स्मृतिर्विज्ञानमेव च। इत्येतानीह रूपाणि तस्य रूपस्य भास्वतः॥ *Erscheinungsform* Mâṇ. P. 101,19. पञ्च रूपाणि राज्ञानो धारयत्यमितौजसः। यमेरिन्द्रस्य सोमस्य यमस्य वरुणस्य च॥ *Natur* Spr. 4486. यावदेतमेतच्छब्दरूपं ज्ञात्वागच्छामि Pârâśar. 21,25. देशं रूपं च कालं च *Umstände* M. 8,45. सोमो रूपविशेषैरोषधिश्चन्द्रमा वा Nir. 11,3. °संपन्न *modificirt* 1,15. वृत्त्या लक्षणरूपया Bhâg. P. 3,26,14. रूपैः सप्तभिः *auf sieben Arten* Kap. 3,73. Siddhânt. 63. 65. रूपभेदात् *je nach der Art, wie es sich äussert*, Weber, Kṛishṇaj. 223. यरिष्टरूपाणि *Arten* Sûçr. 1,119,7. बहूनि विप्ररूपाणि कारिष्यन्ति च राक्षसाः R. 6,82,67. यावतु निर्यतस्तस्य रक्षोरूपमदृश्यत so v. a. *eine Spur von Staub* R. Schl. 2,42,1. — *e) ein einzelnes Stück, Exemplar:* सार्धास्तिस्रो गुञ्जाः सप्ततिमूल्यं धृतं रूपम् von einer Perle Varâh. Bṛh. S. 81,11. daher Bez. *der Zahl Eins* Siddhântaç. Ganit. Bhagrahasûtrâdh. 4. Weber, Gâṇ. 77. fg. Ind. St. 2,444. fgg. Verz. d. Oxf. H. 188, *b*, 13. *sg. the arithmetical unit*, pl. *integer number* Colebr. Alg. 17. 149. *absolute number* 139. °विभाग 6. 10. °भागानुबन्ध, °भागापवाक् 15. — *f) eine best. Münze*, wohl *eine Rupie*, = नाणक H. an. Viçva a. a. O. st. dessen fälschlich मानक Trik., नालोक Med. — Varâh. Bṛh. S. 81,14. P. 1,4,52, Vârtt. 4, Sch. रूपार्धक *eine halbe Rupie* H. an. 2,39. Med. g. 13. — *g)* in der Dramatik *eine in der Katastase* (गर्भ) *angestellte Betrachtung* Bhar. Nâṭyaç. 19,83. Daçar. 1,36. Sâh. D. 365. 367. Pratâpar. 21, *b*, 8. — *h) Schaustück, Schauspiel* Trik. H. an. Med. Daçar. 1,7. — Die Lexicographen kennen noch folgende Bedd. — *i) Vieh, Viehheerde* Trik. H. an. Med. Viçva. = मृग Halâj. 5,30. — *k)* = शब्द *Laut, Wort* Trik. H. an. Viçva. — *l) ein* Çloka H. an. Med. — *m)* = ग्रन्थावृत्ति Trik. H. an. Med. *acquiring familiarity with any book or authority by frequent perusal, learning by heart or rote* Wilson; eher *Citat.* — 2) m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 1,134. 157. fg. 167. fg. Verz. d. Oxf. H. 145, *a*, No. 305. 532, *b*. — 3) f. आ N. pr. eines Flusses VP. 185, N. 80. — 4) m. oder n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 12. रूम v. l. — Vgl. अ°, अति°, अनेक°, अन्य°, अमार°, एवं°, काम°, किं°, कु°, ज्ञात°, तथा°, तप्त°, त्रि°, दश°, देश°, नष्ट°, नाना°, नी°, नैक°, पञ्च°, पर°, पिशङ्ग°, पुं°, पुरु° (auch Bhâg. P. 4,24,61), पुरुष°, पूर्व°, पृथग्रूप, प्रति°, प्राप्त°, प्रिय°, बहु°, बाल°, बहुरूप, भद्ररूपा, भाद्रप, भाव°, भूत°, महा°, युक्त°, वि°, विश्व°, स°, सु°, स्व°.

रूपक (von रूप und रूपय्) 1) adj. *a) in (angenommener) Gestalt erscheinend:* संवतीरप्सरसो रूपका उत AV. 11,9,15. — *b) bildlich bezeichnend* Sin. D. 308,3. 5. — 2) m. *eine best. Münze*, wohl *eine Rupie* Varâh. Bṛh. S. 81,12. fgg. Pârâśar. 127,8. 252,13. P. 5,1,48, Sch. Râja-Tar. 6,52. 60. 66. सुवर्ण° 45. स्वर्ण° Kathâs. 78,13. das Geschlecht nur aus einer Stelle in Varâh. Bṛh. S. zu ersehen. Nach Jukticalpataru im ÇKDr. ist रूपक n. als Gewicht = 3 गुञ्जा. — 3) f. रूपिका *Schwalbenwurz, Asclepias lactifera Lin.* Ratnam. im ÇKDr. Sûçr. 1,159,15. 2,64,3. 102,17. रूपिकायाः पयः 282,10. — 4) n. *a)* am Ende eines adj. comp. = रूप 1) *a)*: गिरिं (so die ed. Bomb.) प्रत्यूरुरूपकम् *bildend* MBh. 3,9981. समाधिस्तु तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् *bestehend in* H. 83; vgl. Verz. d. Oxf. H. 186, *b*, 38. दत्तात्तात्तचितरूपका (sic) = दत्तात्तात्तचिता R. 5,13,11. मणिविद्रुमवैदूर्यजालान्तरित° Mâlav. P. 23,103. — *b) Figur, Bildniss:* तेषां पुरुषरूपकमिव कृत्वा *eine menschenähnliche Figur* Ait. Br. 7,3. चित्रे किमालिखामीरूं रूपकम् Kathâs. 55,43. ईदृगालिख्य चित्रे मे देहि रूपकम् 67. — *c) Erscheinungsform, Art:* द्वे वाव खल्वेते ब्रह्मज्योतिषो रूपके Maitrâyaṇ. 6,36. — *d) Metapher, Tropus* H. an. 3,90. Med. k. 148. Kâvyâd. 2,66. fgg. Sâh. D. 669. 676. fgg. 105,13. 299,18. 308,2. 7. Kuvalay. 14. fg. Pratâpar. 78, *b*. Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 13. 208, *b*, 15. 211, *b*, 9. श्लिष्ट° Mallin. zu Çiç. 9,36. — *e) Schaustück* H. an. Med. Daçar. 1,7. Sâh. D. 273. Verz. d. Oxf. H. 142, *a*, No. 290. — *f)* = मूर्त (मूर्त्ति?) Med. = धूर्त H. an. — Vgl. तप्त°, दश°, पुरुष°, प्रति°, बहु° (f. °रूपिका MBh. 1, 6077), महा°, वि°, सु°.

रूपकताल m. Bez. *eines best. Tactes* Gît. S. 26.

रूपकर्तर् m. *Bildner von Gestalten*, Beiw. Viçvakarman's R. 5,22,13.

रूपकार m. *Bildhauer* Kathâs. 37,9. 123,140.

रूपकृत् 1) adj. *Gestalten bildend:* Tvashṭar TS. 6,1,8,3. 3,6,2. Çat. Br. 11,4,3,17. Kâty. Çr. 5,13,1. — 2) m. *Bildhauer* Kathâs. 37,8.

रूपगोस्वामिन् m. N. pr. eines Autors, = रूप Verz. d. Oxf. H. 175, *a*, 37.

रूपग्रह् 1) adj. *Gestalten —, Farben wahrnehmend.* — 2) m. *Auge* H. ç. 119.

रूपचिन्तामणि m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 135, *b*, No. 255.

रूपजीव R. 2,36,3 und Daçar. in Benf. Chr. 193,5 fehlerhaft für रूपाजीव.

रूपज्ञ adj. *Gestalten —, Farben erkennend, — unterscheidend:* अ° Çat. Br. 14,7,2,2.

रूपण (von रूपय्) n. 1) *bildliche Bezeichnung* Sin. D. 672. 675. 308,6. 11. *Bildlichkeit* Vidy. 176. — 2) *Untersuchung, Prüfung* Sin. D. 59.

रूपतत्त्व n. *Natur, Wesen* H. 1376.

रूपतम adj. *farbigst* Çat. Br. 3,3,4,23. 4,3,2,2.

रूपता am Ende eines comp.: ब्रह्म° nom. abstr. von ब्रह्मरूप adj. *im Brahman aufgehend* Nîlak. 33. दुःख°, घानन्द° nom. abstr. von दुःखरूप, घानन्दरूप *in Leid —, in Wonne bestehend* 34.

रूपत्व n. nom. abstr. von रूप 1) *a)* Sarvadarçanas. 48,18. 106,19. fg.

रूपधर 1) adj. am Ende eines comp. *eine — Gestalt —, die Gestalt von —, die Farbe von — habend:* दिव्य° Vet. in LA. 27, 17. गो° Rasa. 2, 3. कनक° Varāh. Bṛh. S. 30, 28; vgl. u. 1. कामरूप. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 31, 120.

रूपधातु s. u. धातु 6).

रूपधारिन् adj. 1) *eine Gestalt tragend:* कामतो रूपधारित्वम् *ein Wechsel der Gestalt nach Belieben* Kām. Nītis. 17, 53. — 2) *mit Schönheit ausgestattet* Vimāna-P. 16 im ÇKDr.

रूपधृत् adj. am Ende eines comp. *die Gestalt von — tragend:* कपि° Kathās. 37, 141. हित° 40, 20. विविध° *verschiedene Gestalten habend* 54, 17.

रूपधेय n. P. 5, 4, 36, Vārtt. 2. *Gestalt und Farbe* (पशवः) त्वष्टा येषां रूपधेयानि वेद AV. 2, 26, 1. — Vgl. नामधेय.

रूपनयन m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, N. 2.

रूपनारायण m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 273, *b*, 43. 279, *a*, 25. 341, *b*, N. 532, *b*.

रूपनाशन m. *Eule* Cabdan. im ÇKDr.

रूपप m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 57, 50.

रूपपति m. *Herr der Bildungen:* Tvashṭar Çat. Br. 11, 4, 3, 17. Kāṭy. Çr. 5, 13, 1.

रूपपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 342, *a*, 15.

रूपभेद 1) m. *Verschiedenheit der Erscheinungsform* Weber, Kṛshṇaj. 223. — 2) m. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109, *a*, 10.

रूपमञ्जरी f. 1) N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 153, *b*, 11. — 2) Titel eines medic. Werkes ebend. 406, *b*, No. 35.

रूपमाला f. Titel einer Grammatik Colebr. Misc. Ess. II, 48. Verz. d. Oxf. H. 162, *b*, 23.

रूपमाली (!) f. ein best. Metrum: *4 Mal* – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. II, 139 (IV, 10, wo 3 m st. rm zu lesen ist).

रूपय् (von रूप), रूपयति Daiyūḍ. 35, 79 (रूपक्रियायाम्). P. 3, 1, 25. 1) *Gestalt verleihen, zur Anschauung bringen:* तत्र रूपयत इभिर्विषयाः Sarvadarçanas. 20, 11. fg. रूपित 93, 16. Prab. 27, 12. कैलासो रूपितश्चापि मायया षडुनन्दनैः auf dem Theater Harīv. 8695. बहुरूपरूपित *in vielfacher Form erscheinend* Bhāg. P. 5, 18, 31. 11, 28, 17. *vorgestellt, eingebildet* Sāh. D. 669. In der Bühnensprache bedeutet रूपय् *Etwas darstellen, durch Gebärden Etwas zu erkennen geben:* संस्पर्शम् Çiç. 32, 15. पद्मोच्चयम् 45, 2. गतिभङ्गम् 54, 6. विस्मयम् 72, 8. 11, 15, v. l. 50, 15, v. l. Vikr. 6, 6. 12, 16. fg. 47, 13. Mālav. 29, 13. 68, 5. — 2) *betrachten, beschauen;* = रूपे पश्यति P. 3, 1, 25, Sch. Vop. 21, 17. — 3) med. wohl *sich zur Anschauung bringen, erscheinen* Vop. 22, 2.

— नि 1) in der Bühnensprache *Etwas darstellen, durch Gebärden Etwas zu erkennen geben:* रथवेगम् Çiç. 5, 16. 7, 22. वस्तसेचनम् 9, 11. धैर्यव्याधाम् 11, 18. 32, 3. संस्पर्शम् 15, v. l. भृङ्गारलज्जाम् 14, 3. पद्मोच्चम् 37, 12, v. l. स्खलितम् 45, 2. 50, 16. 61, 17. Vikr. 29, 5. Prab. 79, 4. — 2) *erblicken, wahrnehmen* Harīv. 15364. Spr. 1884. Daçak. 93, 4. Bhāg. P. 6, 4, 29. Bhaṭṭ. 17, 65. *sich eines Dinges vergewissern:* प्रत्यक्षेण निरूपिते स्थाणावादौ Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 8. *ausfindig machen:* यावदुपायो ऽत्र निरूप्यते Kathās. 122, 60. तत्तत्र प्रतीकारो निरूप्यताम् 62, 9. — 3) *genau hinsehen, betrachten, untersuchen, erwägen, erforschen, prüfen, wissenschaftlich betrachten, — untersuchen, erörtern:* यत्नतः Mṛcch. 157, 20. Çiç. 9, 1. 88, 4. Pañcat. ed. orn. 50, 1. Z. d. d. m. G. 14, 569, 19. Vikr. 39, 5. 78, 11. Kathās. 5, 18. 28, 86. 29, 24. 182. 32, 28. Prab. 44, 9. Hit. 10, 3. 17. 20, 15. 26, 11 (सुनिरूपित). 38, 11. 42, 4. 68, 14. 91, 1 (सुनिरूपित). 98, 15 (सुनिरूपित). 99, 1. Mṛcch. 121, 4. Uttarar. 30, 8 (39, 18). Bhaṭṭ. 12, 54. Med. Anh. 5 (सुनिरूप्य). Spr. 962. 1955 (सुनिरूपित). Sūçr. 1, 31, 5. Tarkas. 51. Pratāpar. 21, *b*, 7. Sāh. D. 2. 6, 21. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 66. zu Kāṭh. Up. S. 42. Bhāg. P. 1, 4, 31. 7, 7, 46. Madhus. in Ind. St. 1, 20, 5. Bālabh. 124. Verz. d. Oxf. H. 266, *b*, 44. Sarvadarçanas. 36, 15. fg. 74, 10. 84, 13. fg. 90, 18. 174, 11. Kusum. 3, 2. — 4) *festsetzen, bestimmen, definiren* Pañcat. 158, 18. 171, 10. Mārk. P. 18, 7. Bhāg. P. 1, 5, 22. 3, 11, 12. 18. 4, 30, 22. 5, 12, 8. 6, 16, 14. 7, 5, 13. Bālabh. 107. Sarvadarçanas. 53, 13. 77, 13. 145, 9. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 271. — 5) *einsetzen, erwählen, bestimmen zu:* संजीवकस्य रत्नायुरुपाविन्दुप्य Pañcat. 8, 24. 161, 10. शृगालं रत्नपालम् 217, 4. Bhāg. P. 1, 8, 34. 4, 14, 10. मया निरूपितस्तुभ्यं पतिः 27, 28. यदेवेन वाराणसी नाम नगरी राजधानी निरूपिता Prab. 25, 7. निरूपितो बालक एव योगिनां शुश्रूषणे Bhāg. P. 1, 5, 23. केदारकर्मणि 5, 9, 12. 10, 75, 7. त्वयात्मनो ऽर्धे निरूपितास्मि 4, 3, 14. जगत्त्राणाक्षमप्रजापतये 9, 3, 9. Pañcat. 174, 20. 184, 3. तस्य च प्रतिवीरतयास्माभिर्भवाविन्दुपितः Prab. 72, 8. तदत्राटवीराज्ये ऽभिषेक्तुं भवान्सर्वस्वामिगुणोपेतो निरूपितः Hit. 41, 2. — 6) *richten* (ein Geschoss), *abschiessen:* (°बाल्लीकाग्नेयः) शस्त्राणि निरूपितानि Bhāg. P. 1, 15, 16. — 7) निरूप्यते Bhāg. P. 4, 1, 61 fehlerhaft für निरू°; desgleichen निरूप्य M. 6, 38 (die v. l. hat die richtige Form). Bhāg. P. 1, 15, 39. 8, 16, 31. 9, 23, 9 fehlerhaft für निरूप्य. — Vgl. निरूपण fgg.

— प्र *darlegen, auseinandersetzen, erklären* Sarvadarçanas. 31, 14. 33, 13.

— वि s. विरूपय्.

रूपरत्नाकर m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 182, *b*, 45.

रूपलता f. N. pr. einer Prinzessin Kathās. 31, 120.

रूपवत् (von रूप) 1) adj. गण रसादि zu P. 5, 2, 95. *a*) *Gestalt* oder *Farbe habend* Bhāg. P. 2, 5, 27. fg. 6, 44. *schön geformt* oder *schönfarbig:* भूषणानि MBh. 3, 11912. *verkörpert, leibhaftig:* मारुत R. 5, 13, 8. संपद् Kathās. 18, 288. प्रमोद् 23, 221. सर्वसिद्धि 39, 244. am Ende eines adj. comp. *die Gestalt von — habend, in der Gestalt von — erscheinend:* हंसकोकिल° MBh. 13, 2280. मत्स्य° Mārk. P. 59, 26. — *b*) *eine schöne Gestalt habend, schön;* von Personen Nal. 5, 13. MBh. 3, 1811. 3072. 3084. Spr. 307. 1561. Varāh. Bṛh. S. 8, 8. 58, 45. 68, 99. Kathās. 31, 55 (रूपवत्तम). Hit. 115, 5 (अधिक°). Vet. in LA. (III) 29, 13. कवचं स्पर्शरूपवदुत्तमम् *schön anzufühlen und von schönem Aussehen* MBh. 3, 12067. — 2) f. °वती N. pr. *a*) verschiedener Frauenzimmer Kathās. 69, 163. 123, 166. Burn. Intr. 138, N. 2. — *b*) eines Flusses Bhāg. P. 5, 20, 22.

रूपवासिक m. pl. v. l. für रूपवासिक VP. 187, N. 32.

रूपवासिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 351 (VP. 187).

रूपशस् (von रूप) adj. *je nach der besonderen Bildung:* विकृतानि रूपशः RV. 1, 164, 15. Kāṭy. 114. 128.

रूपशालिन् adj. *mit Schönheit ausgestattet, schön;* von einem Mädchen Kathās. 37, 130. 43, 69. 61, 142. Mārk. P. 75, 27.

रूपशिखा f. N. pr. der Tochter des Rākshasa Agniçikha Kathās.

39, 85. fgg.

रूपसमृद्ध adj. 1) von *vollkommen passender Form* Ait. Br. 1, 4. 12. 16. 25. — 2) *vollkommen schön* Çat. Br. 13, 1, 4, 15. TS. 7, 1, 6, 6.

रूपसमृद्धि f. *eine entsprechende Form* Sis. zu Ait. Br. 1, 4.

रूपसंपद् f. *Schönheit der Form, Schönheit* MBh. 1, 5912. 6003. 7694.

रूपसिद्धि m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 34, 17.

रूपसेन m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 42, 199. eines Fürsten LA. (III) 13, 16.

रूपस्थ adj. *eine Gestalt habend:* देवता Weber, Rimat. Up. 288, 1.

रूपस्विन् (von रूप nach falscher Analogie gebildet) adj. *schön:* रूपस्विन्याः पुत्रो यूथे च रूपस्वितमः Pân. Gaṇ. 3, 9.

रूपाजीव (रूप + धा°) adj. (f. धा) *aus der Schönheit ein Gewerbe machend, von der Prostitution lebend:* स्त्रियः Kâm. Nîtis. 7, 45. ज्ञन Daçak. 85, 5 (falschlich रूपजीव Bhâr. Chr. 193, 5). f. *Hure* AK. 2, 6, 4, 19. H. 533. Hâlâs. 2, 335. R. 2, 36, 2 nach der Lesart der ed. Bomb. (रूपजीव Schl.).

रूपावचर m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Buddhisten Vâjtp. 160. Lalit. ed. Calc. 33, 4. 113, 17. 268, 9. 314, 4. Burnouf in Lot. de la b. l. 333. — Vgl. कामावचर, ध्यानावचर.

रूपाश्रय m. *ein Behälter von Schönheit* oder adj. *überaus schön:* स्त्री Bhâg. P. 4, 13, 17.

रूपास्त्र m. *der Liebesgott (dessen Geschoss die Schönheit ist* Taik. 1, 1, 38.

रूपिक *gemünztes Gold* oder *Silber:* °व्यवहार Vâjtp. 193.

रूपिणिका (demin. von रूपिणी) f. N. pr. einer Buhldirne Kathâs. 12, 78.

रूपिन् (von रूप) 1) adj. *a) eine Gestalt habend, körperhaft* Kap. 4, 1, 11. श्व° 12. Bhâg. P. 3, 24, 31. *verkörpert, leibhaftig* MBh. 3, 16626. 16645. 14, 229. R. 1, 1, 6. 5, 9, 20 (wo समृद्धिमिव zu lesen ist). 47, 26 (रूपिणीम् wohl zu lesen). Kathâs. 2, 31. 26, 47. 211. 42, 39. Bhâg. P. 2, 9, 18. 3, 15, 21. 9, 10, 13. 10, 24, 36. *am Ende eines comp. die Gestalt —, das Aussehen von — habend:* पति° Bâdar. 4, 18. बहुविधमेघ° MBh. 1, 1183. शुकवायस° 13, 2280. Hariv. 12340. R. 1, 59, 11. घार्य° 2, 92, 25. मृग° 3, 49, 21. 47. कालपाशेन सीताविप्रकृरूपिणा 5, 47, 35. ज्ञघनं स्वर्गरूपिणम् 7, 26, 21. Varâh. Bṛh. S. 33, 26. Kathâs. 16, 11. 20, 178. 33, 202. Bhâg. P. 1, 15, 5. 3, 31, 26. 7, 1, 40. 8, 21, 11. Mârk. P. 38, 3. Brahma-P. in LA. (III) 38, 5. Pañkat. 55, 21. 235, 10. बहु° *vielgestaltig* Bhâg. P. 4, 17, 3. — *b) eine schöne Gestalt habend, schön;* von Personen Çat. Br. 13, 1, 9, 6. उर्वशी वै रूपिणयप्सरसाम् Pat. zu P. 5, 2, 95. R. 1, 4, 11. AK. 3, 4, 1, 16. Mârk. P. 98, 3. Ver. in LA. (III) 31, 3. — *c) am Ende eines comp. den Charakter von — habend, gekennzeichnet —, sich äussernd als* Sin. D. 70. बुद्धिर्विज्ञानरूपिणी Bhâg. P. 2, 10, 32. गुणाः साधनरूपिणः Vedântas. (Allah.) No. 148. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Agâmîḍha MBh. 1, 3722. 3724. — Vgl. श्व°, धन्य°, तथा°, देव°, ब्रह्म°, स्व°.

रूपेन्द्रिय n. *das Gestalt und Farbe wahrnehmende Organ, das Auge* Sucr. 1, 313, 4.

रूपेश्वर 1) m. N. pr. eines Gottes Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 26. — 2) f. ई N. pr. einer Göttin Devî-P. im ÇKDr.

रूपोपजीवन n. *das Gewinnen des Lebensunterhalts durch seine schöne Körperform, das Auftreten in nackter oder leicht verhüllter Gestalt als Broderwerb* MBh. 12, 10795. ज्ञलमंडपिकेति दानिषात्येषु प्रसिद्धं यत्र मू-स्मयन्नं व्यवधाय चर्ममयैराकारै राज्ञामात्यादीनां चर्या प्रदर्श्यते Nîlak.

रूपोपजीविन् adj. *durch seine schöne Körperform den Lebensunterhalt gewinnend* Varâh. Bṛh. S. 5, 74.

रूप्य (von रूप und रूपन्) 1) adj. *a) eine schöne Gestalt —, ein schönes Aussehen habend* P. 5, 2, 120. AK. 3, 4, 24, 162. Taik. 3, 3, 318. H. an. 2, 330. Med. j. 50. — *b) einen Stempel tragend, geprägt* P. 5, 2, 120; vgl. 3) *b*). — *c) was bildlich bezeichnet wird* Sin. D. 308, 3. 5. — *d) am Ende eines comp.* = तस्माद्गतः P. 4, 3, 81. *ehemals im Besitz von — gewesen* 5, 3, 54. Vop. 7, 67. *ein fem. behält davor seinen Charakter* 6, 11. Siddh. K. zu P. 5, 3, 54. Ableitungen von Wörtern, die auf रूप्य ausgehen, P. 4, 2, 106. 104, Vârtt. 9. — 2) m. N. pr. *a)* eines Mannes *gaṇa* तिकादि zu P. 4, 1, 154. — *b)* eines Berges Çatr. 1, 294. — 3) n. *a) Silber* AK. 2, 9, 91. 97. Taik. 2, 9, 32. 3, 3, 319. H. 1042. H. ç. 161. H. an. Med. Hall. 1, 81. 2, 17. M. 4, 230. 5, 113. 8, 131. Jîân. 1, 263 (°माष). सुवर्णास्य मलं रूप्यं रूप्यस्यापि मलं त्रपु MBh. 5, 1526. R. 3, 49, 35. 4, 16, 24. Sucr. 1, 227, 21. 369, 8. 2, 264, 9. Varâh. Bṛh. S. 31, 17. 72, 8. 86, 80. 95, 15. Prab. 112, 8. Bhâg. P. 8, 12, 32. Weber, Kṛshṇaj. 278. 283. Pañkat. 241, 17. Schol. zu Kâç. Ç. 1, 3, 12. Verz. d. Oxf. H. 320, *b*, No. 760. °रत्नपरीक्षा unter den 64 Kalâ 217, *a*, 12. — *b) gestempeltes oder geprägtes Gold oder Silber* AK. 2, 9, 92. Taik. 3, 3, 319. H. 1046. H. an. Med.; vgl. 1) *b*). — Vgl. रौप्य.

रूप्यक in सुवर्ण° adj. *gold- und silberreich* R. 4, 40, 33.

रूप्यमय adj. (f. ई) *silbern, silberhaltig:* भूमि Pañkat. 241, 16. 18.

रूप्याचल (रूप्य + च°) m. *Silberberg*, Bez. des Kailâsa LA. (III) 86, 7. — Vgl. रजताद्रि.

रूप्याध्यक्ष m. *Münzmeister* AK. 2, 8, 4, 7. H. 723.

रूम N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 12. रूप v. l.

रूर् adj. *hitzig (Fieber):* तक्मन् AV. 1, 25, 1. 5, 22, 10. 13. 7, 116, 1.

रूरुक m. *Ricinus communis* Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. रुरुक u. s. w.

रूर्, रूर्पति (भूर्याम्) Dhâtup. 17, 27. रूर्पित *bestäubt, bestreut* (mit Pulver), *beschmiert:* शेते पांसुषु रूर्पितः MBh. 9, 30. पांसुरूर्पितगात्र 6. 4978. R. Gorr. 2, 67, 21. 3, 33, 63. 4, 19, 32. चन्दन° MBh. 1, 4949. 2, 823. 3, 1924. 5, 2327. 7, 4571. 8, 3138. Hariv. 12306. 16179. R. 2, 42, 13. 91, 36 (100, 34 Gorr.). 5, 3, 29. 45, 7. 6, 93, 12. Spr. 4409. पङ्कजरेणु° Bhâg. P. 8, 2, 23. कुङ्कुम° 10, 60, 23. कुङ्कुमपङ्क° 82, 15. मृगमद रुचि° Gît. 7, 24. नखराग° Ragh. 19, 8. रुरिदातिल° Bhâg. P. 10, 3, 7. शरा रुधिररूर्पिताः R. 3, 31, 18. मांसशोणित° 5, 79, 6. कुङ्कुमेन तृणारूर्पितेन so v. a. *klebend an* Bhâg. P. 10, 21, 17. रूर्पित = गुण्डित AK. 3, 2, 38. H. 1483. Hâlâs. 4, 63. = कर्दम्वित, खचित Taik. 3, 1, 27 (falschlich रुपित gedr.). रूर्पित Prab. 27, 12, v. l. wird vom Comm. durch नष्ट erklärt. रूर्पित Rîâ-Tar. 3, 283 fehlerhaft für रुपित. — Vgl. रेणुरूर्पित und वृत. — caus. रूर्पयति (विस्फुरणे) Dhâtup. 33, 84, p. — Vgl. लूप्.

— सम् caus. *bestreuen:* संरोपयेतु नयनं भिषक्शूर्णैस्तु लावणैः Sucr. 2, 334, 12. संरोपित 13. Man hatte an beiden Stellen संरू° erwartet.

रूपक m. *Gendarussa vulgaris Nees.* Çabdâm. im ÇKDr.

रूपण (von रूप्) n. *das Bestreuen:* पुष्परेणुरूपणं तनौ विचित्रम् Kumâras. 132.

रे interj. bei der Anrede H. 1337. रे मनुष्या वदत Spr. 711. रे त्रायत

ग्नाः 881. 2071. 2640. 2642. Kathâs. 44, 139. 63, 123. Prab. 7, 2. Hit. 10, 19. 81, 21. इत्यकात्मन् रे वद् Kathâs. 40, 6. द्यौः पाप वञ्चितो ऽसि रे Prab. 58, 3. Mâlav. P. 26, 35. रे किमीदृक् संजातः कथ्यताम् Kathâs. 32, 156. Prab. 13, 2. ohne voc. und ohne Aufforderung Spr. 3082 (vgl. jedoch die v. l.). रे रे कोकिल 2640. 2643. Vṛddha-Kâṇ. 17, 20. रे रे मूर्खा यूयम् Paśâc. 254, 13.

रेउइ N. pr. eines Dorfes Kaṇvâç. 23, 7. 26, 20.

रेक्, रेकते (शङ्कायाम्) Dhâtup. 4, 6.

रेक m. 1) *Besorgniss, Furcht* H. an. 2, 13. Med. k. 31. ÇKDa. und Wilson angeblich nach H. auch रेका; es ist aber 1375 घोरक gemeint. — 2) *Ausleerung* (von रिच्) H. an. Med. — 3) *ein Mann niedrigen Standes* H. an. Med. — 4) *Frosch* (vgl. भेक) Trik. 1, 2, 26.

रैक (von रिच्) adj. *leer, öde:* पद् ṚV. 4, 3, 12. 10, 108, 7.

रैकणास् (wie oben) Uṇâdis. 4, 198 (vgl. Aufrecht zu d. St.). n. *erworbener Besitz; Eigenthum, Habe; Werthgegenstand* Naigh. 2, 10. ṚV. 1, 31, 11. 121, 5. 138, 1. निर्णिजा रेकणासा प्रावृतः 162, 2. तद्रेकणो यत्प्रमृण्यमृतिम्मने दात्रं दाशुषे दाः 6, 20, 7. परिषद्यं रोधनास्य रेकणः 7, 4, 7. 40, 2. नित्य 8, 4, 18. दृढो रेकणस्तन्वे दधिर्वसु 46, 15. 10. 132, 2.

रैकणास्वत् adj. *reich* Nir. 11, 46. स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेकणस्वत्यभि या वाममेति ṚV. 10, 63, 10.

रेख (von रिख्) 1) m. *a*) = रेखा 1): घटरेन्दु° Kâraṇḍ. 7 in Haṃs. Anth. 228. — *b*) N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112. — 2) f. रेखी gaṇa सिध्मादि zu P. 3, 3, 104. Vop. 26, 191. *a*) *ein gerittzter Streifen, Linie* H. an. 2, 24. Gaṇaratna. 1, 52. fg. Jâṭâ. 2, 100. °मात्रमपि तु-लयति मनोर्वर्त्मनः परम् । न व्यतीयुः प्रजास्तस्य Raghu. 1, 17. 5, 44. 6, 55. व्यक्तोर्ध्वरेखा भृकुटी: 7, 55. Kumâras. 7, 18. Çiç. 14. °न्याम Spr. 1797. तस्य गणनासु वित्तं दत्ता रेखापि मार्ष्टयति 3300. रेखाः कुर्वन् Kathâs. 30, 107. Weber, Râmat. Up. 313. Râja-Tar. 5, 101. Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 21. 22. fg. Hall. 2, 386. Vaṃç. Bṛh. S. 3, 22. 4, 15. 31, 22. 53, 12. 55. 100. 67, 7. auf der Handfläche 68, 13. fgg. 75. fgg. 69, 22. 70, 12. fgg. ऊर्ध्वरे-खास्तलो ऊर्ध्वरेखा° od. Bomb.) पादो MBu. 5, 2331. Râgh. 4, 33. विधात्रा रचिता रेखा ललाटे ऽक्षमालिका Spr. 2810. त्रिरेखा ग्रीवा AK. 2, 6, 2, 39. H. 586. °त्रयाङ्किता ग्रीवा Hall. 2, 362. कृष्ण° *Linie auf der Handfläche* Kull. zu M. 9, 252. भाल° Kâraṇḍ. 7 in Haṃs. Anth. 228. केश° Vaṃç. Bṛh. S. 58, 13. अञ्जन° Râja-Tar. 1, 208. संध्याभ्र° Spr. 3180, v. l. भस्म° Trik. 2, 7, 15. जल° *ein Streifen Wasser* Spr. 2245. *ein in Wasser gezogener Strich* 4065. (vgl. जले रेखा Paśâc. 1, 14, 33). निकषे हेमरेखेव Râgh. 17, 46. H. 5, 11, 21. चन्द्र° Mâlav. P. 88, 13. H. 5, 11, 24. 18, 3. 20, 3. धूम° 11, 24. बाण° *eine von einem Pfeil herrührende lange Wunde* ebend. मृति° *eine den Tod anzeigende Linie* Daçak. 7, 13. प्रथमैकरेखा so v. a. *das Beste und Einzige in seiner Art:* तौ लिखितले वरकामिनीनां सर्वाङ्गसुन्दरतया प्रथमैकरेखाम् Kâraṇḍ. 20. — *b*) *Zeichnung* Çiç. 141. fg. Kathâs. 122, 27. खड्गरेखा लिलेख Spr. 2697. — *c*) *der erste Meridian* Sûrjas. 1, 61. — *d*) = घनभोग H. an. *fulness, satisfaction* Wilson. — *e*) = छद्मन् *Betrug, Verstellung.* — *f*) *ein Bischen* H. an. — Vgl. काम°, पत्र°, पद्म°, बिन्दु°, ब्रह्म°, मदन°, मध्य°, मेघ°, रत्न°, समरेख und लेख.

रेखक s. बिन्दु°.

रेखाग्र m. *Längengrad* Molesw.

रेखागणित n. *Geometrie* Molesw. Verz. d. Oxf. H. 340, *b*, No. 797.

रेखान्तर n. *geographische Länge* Molesw.

रेखाय् (von रेखा), रेखायते (प्राचामाद्यर्थे:) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3, 1, 27.

रेखायनि m. patron.; pl. Saṃgr. K. 184, *a*, 3.

रेखिन् (von रेखा) adj. *Linien* (auf der Handfläche) *habend:* वक्ररेखा° Vaṃç. Bṛh. S. 68, 50.

रेच (von रिच्) 1) m. im Joga *Entleerung der Brust, das Ausstossen des Athems* Verz. d. Oxf. H. 234, *b*, 39. 237, *a*, No. 368. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9, 27, 3. — 2) f. ई Bez. zweier Pflanzen, = कम्पिल्लक und घण्टापाठ Râgân. im ÇKDa.

रेचक (wie oben) 1) adj. *a*) *die Brust entleerend.* — *b*) *den Unterleib entleerend, abführend.* — 2) m. *a*) *das Ausschnaufen* (bei Hunden): प्रावृट्काले ऽवग्रहे ऽग्नेः ऽवगाढ प्रत्यावृत्तेः (so ist nach Kern zu lesen) रे-चकैश्चाप्यभीक्ष्णम् Vaṃç. Bṛh. S. 89, 7. im Joga *das Ausstossen des Athems* Jâṭâ. bei Kull. zu M. 6, 70. Dattâtrêjôp. in Ind. St. 2, 3. Amṛtan. Up. ebend. 9, 26 (wohl रेचकश्चैव zu lesen). 27, Comm. zu Jogas. 1, 34. Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, 1. 234, *b*, 32. Verz. d. B. H. No. 613. VP. 633, N. 10. Bhâg. P. 3, 28, 9. 4, 24, 50. 7, 13, 32. Paśâc. 3, 2, 25. fg. Vedântas. (Allah.) No. 131. Sarvadarçanas. 174, 16. 18. — *b*) *Spritze* Bhâg. P. 10, 90, 9. 10. — *c*) Bez. verschiedener *abführender* Stoffe: *Salpeter* Trik. 2, 9, 36. *Croton Jamalgota Hamilt.* und = तिलकवृक्ष Râgân. im ÇKDa. — *d*) pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6, 2097. घोरचक ed. Bomb. — *e*) N. pr. eines Mannes Vikr. 76, 1. fgg. रेधक v. l. — Vgl. वात°.

रेचन (wie oben) 1) adj. *abführend* Suçr. 1, 162, 3. — 2) f. ई Bez. verschiedener Pflanzen: = त्रिवृत् (त्रिवृता) und दन्ती H. an. 3, 404. Med. n. 16. = गुन्द्रा und रोचनका (d. i. रोचनिका) H. an. = काम्पिल्ल Çabdar. im ÇKDa. = कालाञ्जनी Râgân. ebend. — 3) n. *a*) *das Leermachen, Schmälern:* कोशदण्डाभ्याम् Kâm. Nîtis. 8, 38. = कोशदण्डतनूकरण Comm. — *b*) *das Entleeren der Brust, das Ausstossen des Athems* Comm. zu Jogas. 1, 34. — *c*) *Entleerung des Unterleibes* Trik. 2, 6, 16. Suçr. 1, 8, 20. Sarvadarçanas. 106, 22. Comm. zu Kap. 1, 1, 7. — Vgl. वीत°.

रेचनक m. = कम्पिल्लक Râgân. im ÇKDa. — Vgl. ताल°.

रेचित n. Bez. *eines best. Ganges der Pferde* AK. 2, 8, 2, 16. H. 1218. — Vgl. रेक्.

रेच्य m. = रेच Âyurvêdâlaṃk. im ÇKDa. wohl fehlerhaft.

1. रेज्, रेजति, °ते Naigh. 2, 14 (गतिकर्मन्). 3, 29. Dhâtup. 6, 23 (दीप्तौ). 1) act. *hüpfen —, beben machen:* पूषं कृ भूमिं किरणं न रेजय ṚV. 5, 59, 4. को वो ऽन्तर्मरुतो रेजति त्मना द्रुन्वेव विध्रया 1, 168, 5. य इयर्त्यन्नं रेजति 129, 6. — 2) med. *hüpfen, beben, zittern, zucken:* येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वाँ इव विश्पतिः । भिया यामेषु रेजते ṚV. 1, 37, 8. 31, 2. 80, 14. 2, 11, 9. 6, 30, 5. सर्वं विष्वो जनिमेजात् यो रेजयद्भूमिर्भिक्षमाणा स्वस्य मन्योः 4, 17, 2 (hier wird übrigens, da das act. von रेज् sonst transit. Bed. hat, richtiger एजद्भूमिः zu verstehen sein). कृष्टयः 8, 92, 3. AV. 1, 32, 3. von den Flammen ṚV. 1, 143, 2. यद्ग्नेरग्ने जुह्वा३ रेजमानः 3, 31, 3. 10, 6, 5. यत्रा न हार्दि क्रव्णास्य रेजते 5, 44, 9. मनसा रेजमाने 10, 121, 6. — Vgl. एज्.

— caus. *erzittern —, beben machen:* स्वनो न वो ऽमवाञ्चेरयद्ध्वयी ṚV. 5, 87, 3. 7, 57, 1. म ऊर्वस्य रेजयत्यपावृतिम् 8, 33, 3. 10, 61, 16.

— प्र *erheben:* स्वनान्मरुतामरेजत प्र मानुषाः RV. 1,38,10. — caus. *beben machen:* ग्रामेण रेजयत्प्र भूमं RV. 4,22,3.

— सम् *zittern:* यद्यात्प्रव्यथमानादिमे लोकाः मे रेजन्ते Ç*at.* Br. 3,6,4, 13. 9,4,13.

2. रेङ् (= 1. रेङ्) nom. ag. (nom. रेट्) P. 3,2,75, Schol. Vop. 26, 69. m. *Feuer* Çabdaratnak. bei Wilson. — Vgl. 2. रेष्.

रेट् रैटति (परिभाषणे. याचे वाचि Vop.) Dhâtup. 21,4.

रेड् रेळ्ते so v. a. क्रुध्यति nach Naigh. 2,12. wohl verwandt mit रिष्; zu belegen nur das partic. praes. mit अ priv., etwa so v. a. *non fallens:* अरेडता (= अनादरमकुर्वता Comm.) मनसा तच्छ्केयम् TS. 1,6,2,2. Kâṭh. 32,2.

रेणु रेणु Uṇâdis. 3,28) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. m. f. Sîdh. K. 251,*a*, 13. f. 248,*b*, 11. zu belegen nur m. 1) m. *Staub, Staubkorn* AK. 2,8,2,66. H. 970. an. 2,132. Med. p. 28. Halâj. 2,288. शफच्युत RV. 1,33,14. इयर्ति रेणुम् 36,4. 4,17,13. 42,5. 38,6. यावे धुवोः किरते रेणुमृञ्जन् 7. नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत 10,72,6. 168,1. यथा वातेरयावर्यति भूम्यां रेणुमन्तरिताञ्चाधम् AV. 10,1,13. ग्रलसंमिश्र R. 1,5,8 (ग्रलसंशात्त Gorr. 1). 2,93,14. धातुन्न 3,79,31. Çiç. 86. तुरगखुरोत्थ 31. Vikr. 4. वातोद्धत Ṛt. 1,10. Spr. 3393. रेणूत्पात Varâh. Bṛ. S. 27,5. 30,31. 46,36. Bhâg. P. 4,5,7. वसुधा° MBh. 1,6032. सैन्य° R. 2,97,3. भस्म° Kathâs. 18,248. प्रुष्कमूलेष° Râga-Tar. 3,401. भूरेणवः Daçâtar. in LA. 74,3. भीमावेणून्स विममे Bhâg. P. 8,5,6. सिकतारेणवो यद्वत्संघट्टव्यपा परिवर्तिताः Pañkat. II,62. *ein Staubkorn* als Maass = sieben परमाणुरजांसि Lalit. ed. Calc. 169,21. केसुम *Blüthenstaub* AK. 3,4,2,22. पद्म° MBh. 12,4283. R. 4,50,12. Çiç. 171. Bhâg. P. 8,2,23. fg. — 2) m. Bez. *eines best. medicinischen Stoffes* (der auch in der Parfümerie verwandt wird); = रेणुका Suçr. 2,207,2. Varâh. Bṛ. S. 77,3. = पर्पट, पर्पटक H. an. Med.; vgl. कुरेणु. — 3) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vaiçvâmitra, Verfassers von RV. 3,70 und 10,89. Ait. Br. 7, 17. Âçv. Ç. 12,14. Çâṅkh. Ç. 15,26,1. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 37,21 (sg. und pl.). aus Ikshvâku's Geschlecht Hariv. 1453. eines Sohnes des Vikukshi R. Gorr. 2,119,9. — Lalit. ed. Calc. 201,3. pl. Hariv. 1466. Hierher oder zu 4) VP. 400. Bhâg. P. 9,15,12. — 4) f. N. pr. einer Gattin Viçvâmitra's Hariv. 1461. 1769. — 5) Hin. 108 fehlerhaft für वेणु. — Vgl. ऋक्ष°, नाग°, नी°, पुष्प° (auch Hariv. 5772), वल्मीकरेणु, भद्र°, मधु°.

रेणुक (von रेणु) 1) m. *a*) N. pr. eines Jaksha (nach Nîlak.) MBh. 1, 1188. eines mythischen Elephanten 13,6156. fgg. — *b*) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1,31,6. — 2) f. आ *a*) *ein best. Arzneistoff* (wohlriechend, in Körnern wie Pfeffer) AK. 2,4,4,3. H. an. 3,91. Med. k. 148. Ratnam. 129. — *b*) N. pr. einer Tochter des oder der Renu, Gattin Gamadagni's und Mutter Paraçurâma's H. an. Med. MBh. 3,11072 (S. 372). 5,3972. 13,4607. Hariv. 1453. fg. 1769 (wo die neuere Ausg. रेणुका st. रेणुमान् liest). R. 1,51,11 (52,11 Gorr.). 2,21,32. Spr. 3165. VP. 400. fg. Bhâg. P. 9,15,12. 16,2. 13. Verz. d. Oxf. H. 26,*a*, 24. रेणुकायास्तीर्थम् MBh. 3,8024. °तीर्थ 7020. °सुत 8658. H. 848. Bhâg. P. 1,9,6. Vgl. रेणुकेय. — *c*) Titel einer von Harihara verfassten Kârikâ (vgl. रेणुकारिका) Verz. d. B. H. No. 266.

रेणुंकाकाट adj. nach dem Comm. *Staub durchfurchend* oder — *aufwirbelnd* (zu TBr.): न ता वर्वा रेणुकाकाटो अश्नुते RV. 6,28,1. अपावीणां रेणुकाकाटं नदत्ताम् VS. 28,13.

रेणुकाचार्य m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 292,*b*, 6. Hall 192.

रेणुकारिका f. Titel einer Kârikâ Verz. d. Oxf. H. 279,*a*, 35. — Vgl. रेणुक 2) *c*).

रेणुत्व n. *das Staub-Sein:* पङ्को ऽपि रेणुत्वमियाय *wurde zu Staub* Ragh. 16,30.

रेणुदीक्षित m. N. pr. eines Autors Weber, Lit. 137.

रेणुप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 5,4731. वेणुप ed. Bomb.

रेणुपालक m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,21.

रेणुमत् m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra von der Renu Hariv. 1461. 1769 (hier रेणुका die neuere Ausg.).

रेणुम्रक्षित 1) adj. *bestäubt.* — 2) m. *Esel* Taitt. 2,9,26.

रेणुवास 1) adj. *in Staub (Blüthenstaub) gehüllt.* — 2) m. *Biene* Taitt. 2,5,26.

रेणुशस् (von रेणु) adv. zu —, *in Staub:* कर् *in Staub verwandeln* Râga-Tar. 4,337.

रेणुसार m. *Kampher* Taitt. 2,6,39. °क m. dass. Çabdar. im ÇKDr.

रेत = रेतस् *der männliche Same* Viçvapr. in Verz. d. Oxf. H. 188,*b*, 21.

रेतःकुल्या f. *ein Bach von männlichem Samen* (in einer Hölle) Bhâg. P. 5,26,26.

रेतज 1) adj. *aus dem eigenen Samen erzeugt, leiblich:* पुत्र MBh. 13, 2623. fg. — 2) f. आ *Sand* Bhâvapr. im ÇKDr.

रेतन n. = रेतस् *der männliche Same* Çabdar. im ÇKDr.

रेतस् (von 1. रि) Uṇâdis. 4,201. n. 1) *Guss, Strom* Naigh. 1,12. नित्यन्यः पृथिवो रेतसावति RV. 5,83,4. द्रोदसी) यस्मे रेतः सिञ्चते पन्यनुर्हितम् 6,70,2. 7,33,7. यवाम् 8,44,16. दिवो रेतसा सचते पयोधा 9, 74,1. 1,100,3. प्रवतस्य रेतसो ज्योतिष्यश्यात्ते 8,6,30. पयः प्रवतस्य रेतसो दुधानाः 3,31,10. चतुर्धा रेतो यमवद्दशायाः AV. 10,10,29. कदिन्वे रेतो व्रवः *Libation* RV. 4,3,7. दिवो न यस्य रेतसा शोचत्यर्चयः 5,17,3. मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् *erster Erguss* 10,129,4. — 2) *Samenerguss, Same* (AK. 2,6,2,13. H. 629. Med. s. 32. Halâj. 3,16): वृत्रो यन्मस्य RV. 1, 164,34. यन्यस्मिन्यूथे नि दधाति रेतः 3,53,17. 5,83,1. प्रजावत् 7,67,6. 9,86,28. रेतो व्रतुः 10,61,6. इमया रेतो संजग्मानो नि षिञ्चत् 7. 64,14. 94,5. VS. 19,76. प्रिय AV. 2,28,5. प्रमुञ्चतो भुवनस्य रेतः 34,3. 5,28,6. विधतो द्रुग्धमूषभस्य रेतः 14,2,14. VS. 8,14. Ait. Br. 2,28. रेतसा व्यृध्यते TS. 5,6,8,4. सा रेतो ऽधत्त *empfing* 6,5,6,1. तस्य रेतः परापतत् TBr. 1,1,2,8. उत्तानायां स्त्रियां पुमांसेतः सिञ्चति Kâṭh. 20,6. Çat. Br. 1, 4,5,3. योनौ रेतः सिक्तम् 7,2,1,14. रेतः प्रचस्कन्द 4,3. योनौ रेतः प्रतिष्ठितम् 9,2,1,11. रेतांसि रेत धादधति *nehmen weg* 3,2,1,40. Pañkav. Br. 3,7,9. Kaṭy. 22. न रेतः स्कन्दयेत्क्वाचित् M. 2, 180. 9,20. रेतः सिक्ता स्वयोनिषु 11,170. 173. रेतसः सेकः 120. रेतःसेक 88. रेतः सिषिचतुः कुम्भे Bhâg. P. 6,18,5. तस्य रेतः प्रचस्कन्द, स्कन्नमात्र MBh. 1,2380. परिस्कन्न 2381. अग्नि° R. Gorr. 1,39,16. तस्यामाधत्त रेतः Bhâg. P. 3,23,47. 5,49. 13,37. 8,5,33. यस्त्विदृ वै सवर्णा भार्यां द्विजो रेतः पाययति कामोच्छ्रितः 5,26,26. भुक्त्वा रेतोविण्मूत्रम् M. 4,222. Verz. d. Oxf. H. 282,*a*, 1. रेतसि दरिद्रः Varâh. Bṛ. S. 68,16. लीणा° Suçr. 1,2,19. 260,2. रेतसो ऽत्ते *nach der Samenergiessung* Mân. P. 78,24. 108,11. — 3) *Same* so

v. a. *Nachkommenschaft, Generation* Çat. Br. 3,2,4,21. त्रीणि वाव रेतां-सि पिता पुत्रः पौत्रः TS. 5,6,8,4. — 4) *Quecksilber* (Çiva's *Same*) Med. — Vgl. घ°, ऊर्ध्व°, कुम्भ°, हि°, पर्जन्य°, बक्र°, भूरि°, मल्ल°, वसु°, वह्नि°, विश्व°, स°, सत्त्व°, सु°, सुवर्ण°, हिरण्य°.

रेतस am Ende eines comp. = रेतस् in अग्नि°, कपोत°.

रेतस्य adj. *Samen führend* Ait. Br. 1,20. ऋच् heisst der erste Vers des Bahishpavamâna Stotra Sâṅkh. Br. 2,1. Liṭ. 1,12,8. 6,3,4.

रेतस्वत् adj. *samenreich, befruchtend*, Bein. Agni's Çâṅku. Ça. 2,5,17.

रेतस्विन् adj. *samenreich* (Gegens. घरेतस्, सिक्तरेतस्) TS. 5,5,2,2. 7,3,10,2.

रेतःसिच् adj. *Samen ergiessend:* योषा Çat. Br. 7,4,2,24. Bez. best. Ishṭaká 10,4,2,14. 5,5,10. 7,4,2,23. fgg. TS. 5,6,8,4. Kâṭy. Ça. 17,4,22. 6,3. 8,3. 10,17.

रेतःसिच्य n. *Samenergiessung* Çâṅku. Br. 10,3.

रेतिन् adj. *samenreich* oder *besamend:* वृषभ RV. 10,40,11.

रेतोधस् s. 1. रेतोधा.

1. रेतोधा adj. *besamend, befruchtend:* वृषभ RV. 3,56,3. 7,101,6. Soma 9,86,29. Agni TBr. 2,1,2,11. RV. 10,129,5 (pl. °धाः). शेपो गर्भस्य रेतोधाः AV. 5,25,1. VS. 8,10. 23,20. TS. 5,2,2,4. TBr. 2,7,4,1. Kâṭy. Ça. 23,3,1. रेतोधाः (von रेतोधा oder °धस्) MBh. 3,11022 (S. 370). रेतोधाः पुत्र उच्यति (नयति) नरदेव ममत्वतः 4,2103 = Hariv. 1723 = Bhâg. P. 9,20,32. m. *Vater* H. ç. 116.

2. रेतोधा f. *das Besamen* Kâuç. 24.

रेतोधेय n. dass. Çâṅku. Br. 10,3. Pâraṅk. Gṛ. 3,7,12. 12,10,11.

रेतोमार्ग m. *Samenweg* Suçr. 2,419,3.

रेत्य n. = रीति *Glockengut* Nîlak. zu AK. 2,9,97. ÇKDn. — Vgl. रैत्य.

रेत्र n. = रेतस्, पीयूष, पट्वास, सूतक ÇKDn. nach Med.; *semen virile; quicksilver; nectar or ambrosia; perfumed or aromatic powder, pulvillo* Wilson nach H. an.; die gedruckten Ausgaben geben diese Bedd. (वेतम् st. रेतम् und सूत्रक st. सूतक Med.) dem Worte वेत्र.

रेधक m. N. pr. eines Mannes Vîrân. 76, 1, v. l. für रेचक.

रेप्, रेपते (गतौ, nach Andern auch शब्दे) Dhâtup. 10,10.

रेप adj. *verächtlich* H. 1442, Sch. an. 2,299. Med. p. 10. *grausam* H. an. Med. — Vgl. रेपस्, रेफ.

रेपस् (von रिप्) Uṇâdis. 4,189. n. *Fleck, Schmutz:* न घस्मानस्तन्वीइ रेप आ धुः RV. 4,6,6. adj. = अधम, क्रूर, कृपण Med. s. 32. — Vgl. घ°, रेप, रेफ, रेफस्.

रेफ (von रिफ्) Uṇâdis. 5,54. 1) m. Siddh. K. 250,a,3. a) *der Schnarrlaut, das* र VS. Prât. 1,10. P. 8,3,108. Vârtt. 4. AK. 3,4,20, 135. Taitt. 3,3,280. H. an. 2,302. Med. ph. 2. Âçv. Ça. 1,2,13. RV. Prât. 1, 10. °संधि 4,9. VS. Prât. 3,38. 37. 80. 140. 4,2. 24. fg. 98. 142. 7,9. ÂV. Prât. 1,38. 37. 88 u. s. w. Taitt. Prât. 1,8. 2,5. 8. P. 4,4,128, Vârtt. 2. Voc. 2,31. Weber, Râmat. Up. 289. 314. Rîga-Tar. 6,39. Verz. d. Oxf. H. 97,b,2. समस्तरेफान् (= शब्दान् Comm.) Bhâg. P. 8,20,25. — b) *Creticus* (— ⏑ —) Piṅgala in Ind. St. 8,210. — c) = राग Çabdar. im ÇKDn. — 2) adj. *verächtlich* Uṇâdis. AK. 3,2,3. 3,4,20, 135. Taitt. H. 1442. H. an. Med. — Vgl. चित्र°, हि°.

रेफवत् adj. *den Schnarrlaut enthaltend* so v. a. म RV. Prât. 14,9. घ° *kein r enthaltend* 4,16.

रेफविपुला f. = रविपुला Ind. St. 8,342.

रेफस् adj. = अधम u. s. w. Halâj. 2,182. Çabdar. im ÇKDn. = क्रूर, दुष्ट, कृपण Çabdar. — Vgl. रेपस्.

रेफिन् (von रेफ) adj. *den Schnarrlaut —, ein* र *enthaltend, die Natur des* र *habend* Âçv. Çr. 1,5,11. ऊष्मा रेफी पञ्चमो (d. i. Visarga) नामिपूर्वः RV. Prât. 1,30. 4,9. fg.

रेभ्, रेभते (शब्दे) Dhâtup. 10,32. — Vgl. रिभ्.

रेभ (von रिभ् 1) adj. *knisternd, knasternd, plätschernd, laut tönend;* m. *Rufer, Recitator, Declamator* Naigh. 3,16. (सोमः) रेभो यदह्यते वने RV. 9,66,9. वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः 1,113, 17. यथा रेभो न शोरत सवनानाम् 127,10. यन्नु पश्चात्कवयो यत्ति रेभाः 163, 12. स यन्नः ईं रेभो न प्रति वस्त उक्षाः 6,3,6. यन्मधु श्लोको भनति रेभ इष्टौ 11,3. रेभैरदेत्यनुमद्यमानः 7,63,3. समौ रेभासो अस्वरन्नित्रं सोमस्य पीतये 8,86,11. 9,7,6. 71,7. तो सप्त रेभा अभि सं नवन्ते 10,71,3. 87,12. यद्दाक्षस्तृष्टं शमयत रेभाः 13. AV. 20,127,4. fgg. *Schwätzer, Plauderer* VS. 30,6. — 2) m. N. pr. eines Schützlings der Açvin, welchen sie aus Wasser und Gefangenschaft retten; mit dem patron. Kâçjapa Liedverfasser von RV. 8,86. — RV. 1,112,5. 116,24. 117,4. 118,6. 119, 6. 10,39,9. pl. Âçv. Çr. 12,14. — Vgl. रैभ्य.

रेभण (wie oben) n. *das Brüllen der Kühe* Taik. 2,9,21.

रेभसूनु m. Rebha's *Sohn;* zwei Liedverfasser von RV. 9,99 und 100.

रेभिल m. N. pr. eines Mannes Mahâbh. 44,6. 67,10. °क 43,14.

रेमि ved. adj. von रम् P. 3,2,171, Vârtt. 2, Sch.

रेरिवन् adj. in der Stelle: यद्कं वृत्तस्य रेरिवा Taitt. Up. 1,10,1. = प्रेरयितृ Çaṅk.

रेरिह्क (vom intens. von रिह्) adj. *beständig leckend* AV. 8,6,6.

रेरिह्राण (wie oben) m. 1) ein Name Çiva's Taik. 1,1,44. H. ç. 46 (fälschlich रेरह्राणि). an. 4,37. Med. n. 107. Hir. 8. Verz. d. Oxf. H. 191,a,2. — 2) *Dieb* Çabdar. im ÇKDn. — 3) = घम्वर Med. = वर H. an. = घसृर ÇKDn. und Wilson nach Med. — Vgl. लेलिह्यान.

रेव्, रेवते (प्रवगतौ) Dhâtup. 14,30.

रेव 1) m. N. pr. eines Sohnes des Ânarta und Vaters des Raivata Hariv. 643. fg.; vgl. रेवत. — 2) f. आ a) N. pr. eines Flusses, die Narmadâ, AK. 1,2,3,31. Taik. 1,2,31. H. 1083. an. 2,325 (zu lesen नील्यां मे°). Med. v. 21. Halâj. 3,52. Megh. 19. Râgân. 6,43. 16,31. Spr. 1807. Vaṅîn. Bhm. S. 12,6. Kathâs. 19,98. Daçak. 197,12. Sin. D. 5,3. Bhâg. P. 5,19,18. 9,15,20. 10,79,21. Hit. 111,18, v. l. Verz. d. Oxf. H. 10,a, N. 1. 66,b,2. 149,b,6. °माहात्म्य 64,b, No. 114. fgg. °खण्ड 84,b, 6. 24. °तीर्थ 73,b,24. °कावेरीसंगम 65,b,33. °सागरसंगम 67,b,14. कृ-ष्णावेरीसंगम 65,b,42. वागुरेवासंगम 66,a,2. °संगम 149,a,16. — b) *die Indigopflanze.* — c) Bein. der Rati, der Gattin des Liebesgottes, H. an. Med.; vgl. रेवति. — 3) n. Name verschiedener Sâman Ind. St. 3,231,b.

रेवट 1) m. a) *Eber.* — b) *Bambusrohr* (वेणु, *Stab* d. i. रेणु Wilson). — c) *Wirbelwind.* — d) *Giftarzt* Agastjaçâla im ÇKDn. — e) *oil of the moringa tree.* — f) a *plantain, the fruit* Wilson. — 2) n. *eine Muschel mit von rechts nach links gehenden Windungen* Agastjaçâla im ÇKDn.

रेवण m. N. pr. eines Mannes Hall 166.

रेवत m. 1) *Citronenbaum* (म्लेच्छ) Gaṇḍn. im ÇKDa. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* Çabdar. im ÇKDa. — Suçr. 2,39,3. 65,18. — 2) N. pr. verschiedener Manner Burn. Intr. 396, N. 2. Lot. de la b. l. 1. eines Sohnes des Andhaka Hariv. 3248. fg. रेवत die neuere Ausg.). des Ânarta (vgl. रेव) Bhâg. P. 9,3,27. des Vaters der Revatî und Schwiegervaters des Balarâma ÇKDa. nach dem MBh. — 3) N. pr. eines Varsha (?) MBh. 6,426. — Vgl. रैवत.

रेवतक 1) m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 396. — 2) n. *eine best. Pflanze*, = पारेवत n. Râgân. im ÇKDa. — Vgl. रैवतक.

रेवति f. 1) Bein. der Rati, der Gattin des Liebesgottes, Taik. 3,3, 179. Vgl. रेव 2) c). — 2) = रेवती N. pr. der Gattin Balarâma's Hariv. 8383. 8386.

रेवतिपुत्र (रेवती + पुत्र) m. *der Sohn der* Revatî P. 6,3,62, Sch.

रेवत्त् (aus रयिवत् contrah.) 1) adj. P. 6,1,37, Vârtt. 2. 176, Vârtt. 1. 8,2,15, Vârtt. 1. *a) besitzend, wohlhabend, reich:* मक्ष्वी राये रेवत्स्कृधी नः ṚV. 10,22,15. न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रो ऽसुन्वता सुतपाः मे मृषन्ते 4,25,7. 8,21,14. रेवाँ इदग्ने धिषणे सदा त्वे 45,15. 1,120,12. 6,44,11. स मर्तो अग्ने रेवानमर्त्ये य ओहते क्रत्वम् 7,1,23. 42,4. 8,2,11. रेवाँ इद्रेवतः स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः 13. मद् घा सोम मन्दी रेवाँ इव *ich komme in der Trunkenheit mir als reicher Mann vor* 48,6. 10,116,2. 1,4,3. विश्पतिं 27,12. 18,2. स रेवान्याति प्रसो रथेन 2,27,12. AV. 20,128,4. 8. 9. Mitra-Varuṇa ṚV. 8,47,9. 10,36,3. रेवदुवाह सचनो रथो वाम् *reiches Gut* 1,116,18. रेवद्यो दधाद्रेवदाशाद्रेवदाशते नरा मायाभिरितऊति माकिनम् 151,9. 8. पथ्याः AV. 3,4,6. — *b) reich in der Erscheinung* d. h. *prangend, prunkend, prächtig* (diese Bed. scheint wegen des adv. angenommen werden zu müssen, das mit verbis des Glänzens verbunden wird): die Morgenröthe ṚV. 3,61,6. 4,51,4. person. Nacht (als gestirnt) AV. 19,47,4. Vṛshâkapâyi ṚV. 10,86,12. वाजे रेवदिहवे वितरं वि भाहि 6,1,11. Kräuter AV. 6,21,3. गङ्गा MBh. 13,1853. adv. ṚV. 1,79,5. 93,11. उषो रेवदस्मे व्युच्छ 92,14. 124,9. 10. घर्मं घुमन्तं रेवदिहि दीदिहि 2,9,6. 2,6. 35,4. 3,7,10. घर्मन्धिष्टा भारता रेवदग्निम् 23,2. स रेवच्चोच 10,69,8. — 2) f. रेवती *a)* pl. *die Reichen, die Prangenden* als Bez. *der Kühe* (vgl. die Comm.: रेवती = स्त्रीगवी Âçvalâjana im ÇKDa.): रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ṚV. 1,30,12. द्विगुतमस्मे रेवतीः पुरंधीः 138,2. रेवती रमध्वमस्मिन्योनौ VS. 3,21. 6,8. — *b)* pl. *Gewässer:* यावो रेवतीः शृणुता हवं मे ṚV. 10,30,8. पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम् 180,1. मे रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ताम् VS. 1,21. रेतु वरुणो रेवतीभिः Âçv. Gṛhj. 2,9,4. Kâty. Çr. 25,5,28. Kauç. 103. — *c)* N. eines Nakshatra (vgl. Journ. of the Am. Or. S. 5,343); pl. ṚV. 10,19,1. AV. 3,7,3. तस्मै ते द्यावापृथिवी रेवतीभिः (nach dem Comm. zu TBr. zu *d*) gehörig) कामं दुहातामिह शक्वरीभिः 13,1,5. Vaitân. Bhâr. S. 105,2. Mânn. P. 33, 16. sg. (auch so v. a. *Tag der* Revatî) gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41 (oxyt.). H. 115. an. 3,288. Med. t. 145. AV. 19,7,3. TS. 4,4,10,3. Çâṅkh. Gṛhj. 1,26. 3,11. Pâr. Gṛhj. 3,9. MBh. 5,2926. 6,419. 13,3284. 4368. Vaitân. Bhâr. S. 7,6. 9,25. 10,18. 102,6. Mânn. P. 58,53. 75,20. रेवत्यृक्ष 21. fg. 84. 62. fg. im comp. Vaitân. Bhâr. S. 98,17. 102,6. रेवत्यर्क्ष Mânn. P. 75, 2. 18. fg. Vgl. Weber, Nax. passim. — *d)* pl. Bez. *der nach dem Anfangsworte benannten Verse* ṚV. 1,30,12, *aus welchen das* Raivata Sâman *gebildet wird*, Ind. St. 3,231,5. VS. 23,35. TS. 2,2,6,6. TBr. 1,5,9,5. Pañcav. Br. 13,7,2. 9,4. 14. 10,4. Lâṭy. 2,9,5. 7,4,1. 10,13,12. Kauṣ. Up. 2,18,1. 2 (रेवत्यः st. रेवत्यं zu lesen). MBh. 13,6242 ist wie 6236 mit der ed. Bomb. रेवतीं zu lesen. — *e)* N. *der Unholdin einer best. Krankheit* Hariv. 3290. 9342. 10241. MBh. 3,14482. Suçr. 2,388,5. 389, 3. 5. Çiva. Saṃh. 1,7,109. Verz. d. Oxf. H. 307,b,28. wird mit Durgâ und auch Aditi (MBh.) identificirt; vgl. noch Kathâs. 53,172. H. ç. 30. = मातृभिद् H. an. Med. — *f)* N. pr. der Gattin Mitra's Bhâg. P. 6,18, 5. — *g)* N. pr. einer Tochter des Lichtglanzes (कान्ति) des Nakshatra Revatî und Mutter des Manu Raivata Mânn. P. 75,25. fgg. — *h)* N. pr. der Gemahlin Balarâma's, Tochter Kakudmin's, der das patron. Raivata führt, Taik. 3,3,179. H. an. Med. Hariv. 648. fgg. 1933. 8311. fgg. 8387. Mṛcch. 50. VP. 357. 439. Bhâg. P. 9,3,29. 10,52,15. — *i)* N. pr. einer Gattin Amṛtodana's Schiefner, Lebensb. 237 (7). — Nach P. 4,3,34, Vârtt. 1 ist रेवती so v. a. *eine unter dem* Nakshatra Revatî *Geborene*. — 3) n. रेवत्यागतुरम् N. eines Sâman Ind. St. 3,231,5. — Vgl. अणुरेवती.

रेवतीभव m. *der Planet Saturn* H. 120.

रेवतीरमण m. *der Gatte der* Revatî d. i. Balarâma AK. 1,1,6,18. Halâj. 1,29. unter den Namen Vishṇu's Pañcar. 4,3,129.

रेवतीश m. *der Gatte der* Revatî d. i. Balarâma H. 224.

रेवतीसुत m. *ein Sohn der* (Unholdin) Revatî, unter den Namen Skanda's MBh. 3,14633.

रेवत्य ved. adj. von रेवती (प्रशस्ये) P. 4,4,122. पद्धो रेवती रेवत्यम् Schol.

रेवत्त m. N. pr. eines Sohnes des Sonnengottes und Hauptes der Guhjaka H. 103. Vaitân. Bhâr. S. 38, 56. Mânn. P. 78, 24. 31. 108, 11. 20. VP. 266, N. 1. °मनुस् f. *die Mutter des* Manu Revanta (s. रेवत), Bein. der Saṃgñâ, einer Gemahlin des Sonnengottes, Taik. 1,1,100.

रेवत्तोत्तर Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 113,b,40. fg.

रेवोत्तरस् (रेवा + उ°) m. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 12,8,1,17. 9,3,1.

रेशदारिन् (v. l. °दाशिन्) zur Erkl. von रिशादस् Nir. 6,14. रेशय = रिशमत् Comm.

रेशी f. Bez. *des Wassers* TS. 3,3,3,1. Kâṭh. 30,6. रेषी VS.

1. रेष् रेषते (अव्यक्ते शब्दे) Dhâtup. 16,19. वृकशब्दे *Geheul des Wolfes* Siddh. K. 120,b,1 v. u. घोटककर्तृशब्दे *Gewieher des Pferdes* Durgâd. bei Westr. — Vgl. क्रेष्.

2. रेष् subst. in der Stelle: रेडस्यग्निष्टा शोणातु VS. 6,18. = रिष्टा Mahidh. liesse sich zu रिष् ziehen etwa in der Bed. von लेश. TS. hat d. v. l. शी:. Möglich wäre auch 2. रेह्.

रेष (von रिष्) m. *das Schadennehmen* Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 287. 290.

1. रेषण (wie eben) 1) adj. *versehrend* ṚV. 1,148,5. — 2) n. *Schaden, das Fehlschlagen* Nir. 10,45. Dhâtup. 22,62. 31,30. — Vgl. पुरुष°.

2. रेषण n. *das Geheul des Wolfes* H. 1407. — Vgl. 1. रेष्.

रेषा f. dass. H. 1407.

रेषिन् (von रिष्) nom. ag.; s. पुरुष°.

रेष्टृ (wie eben) nom. ag. *Beschädiger, Verschrer* Bhaṭṭ. 9,31.

रेष्मच्छिन्न (रेष्मन् + छिन्न) adj. *vom Sturm abgerissen:* रेष्मच्छिन्नं पद्या तृणम् (so st. तृणम zu lesen) AV. 6,102,2. — Vgl. रेष्ममथित.

रेष्मन् (von रिष् = रिष्) m. *Wirbelwind (Weltuntergang Comm.); Sturmwolke:* वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः कीर्तिश्च पशवश्च पुरःसरा AV. 15, 2, 1. VS. 23, 2.

रेष्मबन्धित adj. = रेष्मच्छिन्न Kauç. 35.

रैष्म्य adj. *im Sturm oder in der Sturmwolke befindlich:* नमो वात्याय च रेष्म्याय VS. 16, 39.

रेक्त् रेक्तृ) gaṇa भृगादि zu P. 3, 1, 12.

रेक्राय्, रेक्रायते denom. von रेक्त् gaṇa भृगादि zu P. 3, 1, 12.

रै (= रयि) Uṇâdis. 2, 66. m., selten f. राम्, रायौ. रायै, रायस्, pl. रायस्, acc. रायस् und रायस्, रायाम्, राभ्याम्, राभिस् VS. Prât. 2, 42. fg. P. 7, 2, 85. Vop. 3, 70. *Besitz, Habe, Gut; Kostbarkeit* AK. 2, 9, 91. 3, 4, 25, 38. 25, 167. H. 191. 1043. an. 1, 11. Med. r. 1. Halâj. 1, 80. 2, 18. Dhan. bei Uéâval. zu Uṇâdis. 2, 66. ṚV. 1, 31, 10. रायो च नः स्वपत्या इषे धाः 54, 11. मा रायो राजन्युयमादवं स्याम् 2, 27, 17. राय आ तुवा वमूनि 3, 36, 6. 4, 2, 9. 11. 20. रायो विभक्ता सैभरश्च वस्वः 17, 11. प्र पैंसि रायः 5, 36, 4. रायः स्याम पतयः 49, 4. रायो धारा वसो राशिः 6, 33, 3. तवत्स रायः 7, 20, 6. रायस्कामः 9. 9, 108, 13. 10, 42, 9. स्वपत्य 2, 9, 5. नृतम 3, 19, 2. पुरुस्पृह 4, 8, 7. नित्य 41, 10. पार्थिव, दिव्य 5, 68, 3. वसुत्त 6, 19, 13. पुरुवीर, पुरुत्तु 22, 2. परम 7, 60, 11. पाञ्चजन्य 72, 5. यशावत् 100, 2. रायो वसूनीः Vikrm. 4, 10. चित्रो राम् ṚV. 10, 111, 7. TBa. 1, 2, 4, 31. मे अग्निर्मे पथ्याइ रायो यस्मिन्समुद्रे न मिन्धवः ṚV. 6, 19, 5. ममेष राय उप याहि शक्रतामिह *er gehöre zu meinem Eigenthum* AV. 18, 2, 37. Çâṅkh. Çr. 9, 28, 2. यस्माच्चायो मघवान् मचताम् 4, 9, 1. Liṭ. 3, 6, 2. रायः पशवो गृहाः Bhâg. P. 3, 25, 39. 6, 15, 21. 7, 7, 29. 10, 49, 23. नष्टरायः (adj. gen. sg.) तपस्विनः 11, 23, 13. रै als indecl. im gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. — Vgl. घतिरै.

रैकरोति *zum Besitz machen* Uéâval. zu Uṇâdis. 2, 66.

रैक्क m. N. pr. eines Mannes Kâṭh. Up. 4, 1, 2. 5. 8. 2, 2. 4. — Vgl. रयिक्क.

रैक्कपर्ण m. pl. N. pr. einer Oertlichkeit Kâṭh. Up. 4, 2, 5.

रैक्व m. patron. von रेक्व gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112.

रैणव 1) m. patron. von रेणु Âçv. Çr. 12, 14. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 231, b. वेणव v. l.

रैणुकेय (von रैणुका) m. metron. Paraçuràma's H. 848, Sch. (रे°). Med. m. 26 (वेणु°).

रैतर्म (von रेतस्) adj. *seminalis* Çat. Br. 14, 5, 5, 2.

रैतिक (von रीति) adj. *messingen* Sucr. 1, 99, 5.

रैत्य (wie eben) adj. dass. M. 5, 114.

रैभ (von रेभ) 1) m. patron. Verz. d. Oxf. H. 345, a, 32. — 2) f. ई (sc. ऋच्) parox. Bez. bestimmter Verse im Ritual ṚV. 10, 85, 6. TS. 7, 5, 11, 2. so heissen die drei Verse AV. 20, 127, 4—6, die das Wort रेभ mehrmals enthalten, Arr. Br. 6, 22.

रैभ्य m. patron. von रेभ gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. Çat. Br. 14, 5, 3, 10. 7, 3, 26 (mit wechselnder Accentuation). Âçv. Çr. 12, 14. Prâyaçcitt. in Verz. d. B. H. 59, 30. 60, 2 v. u. 62, 29 (sg. und pl.). MBh. 2, 111. 3, 10700. 10703. fgg. 12, 1771. 7592. 12758. 13, 1763. 7663. Harîv. 6601. 9570. Verz. d. Oxf. H. 18, b, 16. 19, a, 42. 37, b, 30. 39, b, 21. 336, b, 1 (ein Astronom). 345, a, 30. Verz. d. B. H. 125, 2 v. u. ein Sohn Sumati's und Vater Dushjanta's Bhâg. P. 9, 20, 7. nach Nîlak. ein देवतागणविशेष wie das vorangehende Pâriplava Harîv. 432.

रेयृ (von रै), रेयति *Reichthümer wünschen* P. 6, 1, 79, Sch.

रैवत 1) adj. a) (von रेवत्) oxyt. *aus wohlhabendem Hause stammend, reich:* वरा इवेद्रैवतासो हिरण्यैरभि स्वधाभिस्तन्वः पिपिग्रे ṚV. 5, 60, 4. — b) *zum Manu Raivata in Beziehung stehend:* मन्वन्तर, मन्वन्तर Raivata's Manvantara Bhâg. P. 8, 5, 1. Mârk. P. 100, 36. — c) oxyt. zum Sâman Raivata *gehörig* u. s. w.: Indra TS. 2, 3, 3, 3. Savitar VS. 29, 60. सप्तम Pañcav. Br. 13, 10, 10. Liṭ. 6, 10, 2. 7, 1, 1. — 2) m. a) oxyt. *Wolke* Naigh. 1, 10. — b) *eine* (imaginäre) *Art von Soma* Sucr. 2, 164, 18. *ein best. Knollengewächs,* = सुवर्णालु Trik. 3, 3, 181. Med. t. 145. = सुवर्ण und घलु H. an. 3, 239. — c) Bez. *des Dämons einer best. Kinderkrankheit:* यदिति रेवती प्राक्कुर्यरुस्तस्यास्तु रेवतः । सो ऽपि बालान्मलायोरो बाधते वै मलाधकः ॥ MBh. 3, 14482. fg. — d) N. einer der 11 Rudra Harîv. 166. VP. 121. Bhâg. P. 6, 6, 17. Verz. d. Oxf. H. 82, b, 26. — e) Bein. Çiva's Trik. 1, 1, 45. 3, 3, 181. H. an. Med. — f) N. des 5ten Manu M. 1, 62. Harîv. 409. 434. VP. 262. fg. Bhâg. P. 5, 1, 22. 8, 5, 2. Mârk. P. 53, 7. 75, 1. fgg. 68. — g) N. pr. eines Daitja Dhan. im ÇKDa. — h) N. pr. eines Ṛshi MBh. 2, 145 (पर्वत ed. Bomb.). eines Brahmarshi Lalit. ed. Calc. 295, 3. eines Fürsten MBh. 5, 3788. 13, 3665 (रैवते रक्ति° st. रैवतेन रक्ति° ed. Bomb.). Harîv. 5250 (patron. von रेवत; die neuere Ausg. liest auch 5248. fg. रैवत). patron. Kakudmin's, Beherrschers von Ânarta, Kuçasthalî 644. fgg. 6265. VP. 355. fgg. Bhâg. P. 10, 52, 15. eines Sohnes des Amṛtodana von der Revatî Schiefner, Lebensb. 237 (7). 266 (36). Lot. de la b. l. 126. — i) N. pr. eines Gebirges bei Kuçasthalî (= सपत्त, उज्जपत्त) Trik. 3, 3, 181. H. an. Med. MBh. 1, 7036. 2, 614. Harîv. 5249. 6265. VP. 180, N. 3. Mârk. P. 57, 14. Çatr. 1, 852. रैवताद्रि 10, 148. रैवताचल 149. °गिरि Verz. d. Oxf. H. 149, a, 20. = 3) f. ई MBh. 13, 6236. 6242 (रेवती ed. Calc.) nach Nîlak. = रैवत n.: eher als adj. mit इष्टि (= पवित्रेष्टि nach Nîlak.) zu verbinden. — 4) n. N. eines Sâman (aus ṚV. 1, 30, 13) Ind. St. 3, 232, a. VS. 10, 14. 13, 58. Çâṅkh. Br. 23, 4. Çr. 16, 7, 1. 8, 14. Liṭ. 3, 12, 6. Kaush. Up. 1, 5. Auch रैवत (v. l. रैवत्य) सप्त: als Name eines Sâman, = रुद्रस्य (vgl. oben u. 2, d) e) सप्त: Ind. St. 3, 232, a.

रैवतक (von रैवत) gaṇa अरीकृणादि zu P. 4, 2, 80. 1) m. a) N. pr. eines Gebirges, = रैवत H. 1031. MBh. 1, 7592. 6, 418. 14, 1784. Harîv. 5250. 6412. 8952. 9601. Bhâg. P. 5, 19, 16. 10, 67, 9. Mârk. P. 75, 23. pl. *die Bewohner dieses Gebirges* Varâh. Bṛh. S. 14, 19. 16, 31. — b) N. pr. eines Thürstehers Çiç. 23, 1. — 2) n. *eine best. Pflanze,* = पारेवत (vgl. रेवतक) Râéân. im ÇKDa. — Vgl. केलि°.

रैवतमदनिका f. Titel einer Goshṭhî (*einer Art Schauspiel*) Sâh. D. 201, 17.

रैवतिक m. metron. von रेवती P. 4, 1, 146. 3, 131. Vop. 7, 1. 9. Gîrîlop. in Ind. St. 2, 77, 1.

रैवतिकीय adj. von रैवतिक P. 4, 3, 131.

रैवत्य 1) adj. = रैवत्य (v. l. रैवत) सप्त: N. eines Sâman Ind. St. 3, 232, a. — 2) n. oxyt. (von रेवत्) *Reichthum:* रैवत्येव मरुतो मारुतः स्थन ṚV. 10, 94, 10.

रैवायन m. patron.; pl. Saṁhân. K. 185, b, 3.

1. रोकं (von 1. रुच्) 1) m. a) *Licht, Helle* Trik. 3, 3, 39. H. an. 2, 15.

fg. Med. k. 32. Vaiś. und Vīçva bei Mallin. zu Çiç. 5, 54. दिवधिदा तें रुचयत्त रोकाः ṚV. 3,6,7. — *b*) = क्रयभिद् Med. k. *buying with ready money* Wilson. — 2) n. *a*) *Loch, Höhle* AK. 1,2,3,2. Trik. H. 1364. H. an. Med. Halāy. 3,2. Vaiś. und Vīçva a. a. O. Ist etwa hierher zu ziehen die Stelle beim Schol. zu Çiç. 20,9: ग्रीष्मे न पथ्यं कटु तिक्तमुष्णम्। तारास्वु रोकायं (रोकं wurde in's Versmaass passen) भगणां व्यवायः ॥? — *b*) *Boot, Schiff* H. an. Med. — *c*) = घर H. an. = चल Med. *moving, shaking* Wilson. — *d*) = कृपणभेद H. an.

2. रोक m. oder रोकस् n. (wie eben) *Lichterscheinung:* यद्ध स्मेषु रोदसी स्वर्शोचिरामवत्सु तस्थौ न रोकः ṚV. 6,66,6.

रोग (von 1. रुज्) m. 1) *Gebrechen, Krankheit* P. 3,3,16. AK. 2,6,2,2. H. 462. Med. g. 21. Halāy. 2,445. AV. 1,2,4. तदोषधस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् 2,3,3. विरुग्ण रोगी तन्वः स्वायाः 3,28,3. 6,44,1. 120,3. शीर्षण्य 3,8,1. 21. fg. Kaiyad. Up. 7,26,2. M. 8,108. संतापयन्ति कमपथ्यभुजं न रोगाः Spr. 1195. 2644. रोगार्दित 2645. प्राणान्तिक 2467. रोगानीकराज् Suçr. 2,399,16. रोगराट्रोगमंघातो ज्वर इत्युपदिश्यते 427,13. 1,3,9.35, 7.36,4. Varāh. Bṛh. S. 6,2. 7,3. °द् *verursachend* 43,27. °प्रद् 89,3. °भय 3, 26. 5, 92. 8, 24. 46, 39. 79, 36. °लय 12, 18. 104, 9. °नाश 7. °निग्रहण Suçr. 1,195,1. °लक्षण Verz. d. B. H. No. 973. °विनिश्चय 954. रोगायतन M. 6,77. °वैरूप्य *in Folge von Krankheit* Kathās. 12,71. °परिमाणानि Weber, Nax. 2, 393. °गणना Verz. d. Oxf. H. 315, *a*, No. 748. °ज्ञान 325, *a*, 24. रोगोपशम 30. °प्रश्न 334, *a*, 1 v. u. रोगानुत्पादनीय 303, *b*, 35. °निवृत्ति Madhus. in Ind. St. 1,21,10. रोगाडुन्मुक्त Halāy. 2,223. रोगोन्मादित von einem *tollen* Hunde H. an. 3,5. तुद्रोग *Krankheit vor Hunger* Pārāç. 70,13. प्रत्यारोगा (so ist zu schreiben) नियोगिनः so v. a. *eine Plage für die Unterthanen* Rāǵa-Tar. 6,136. दीर्घ° adj. Spr. 4628. विमुक्तरोगा Mārk. P. 64,1. *die Krankheit als Genius* Varāh. Bṛh. S. 53, 43. 63. Vgl. घोरोग (adj. auch Jāṭ. 1,208. Varāh. Bṛh. S. 103,9.), कृमि°, क्षय° (auch Rāǵa-Tar. 5,442), तुद्र°, तृषा°, नी°, नीली°, नेत्र°, पाण्डु°, पाप°, बाल°, मक्षा°, मुख°, वि°, स°, क्षुद्रोग u. s. w. — 3) *Costus speciosus* oder *arabicus* Med.

रोगघ्न adj. (f. ई) *Krankheit vertreibend* Suçr. 1,167,7. n. *Arsenik* ÇKDn. nach dem Vaidjaka.

रोगनाशन adj. *Krankheit vertreibend* AV. 6,44,2.

रोगभाज् adj. *krank, kränklich* Spr. 181. Varāh. Bṛh. S. 101,4.

रोगभू f. *eine Stätte für Krankheiten* so v. a. *der Körper* Çabdar. im ÇKDn.

रोगमुक्त adj. *von einer Krankheit befreit, genesen:* °ज्ञान Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 18.

रोगमुरारि m. Titel eines medic. Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रोगराज m. *der Fürst unter den Krankheiten* d. i. *Lungenschwindsucht* Rāǵan. im ÇKDn.; vgl. रोगराज् und रोगानीकराज् oben u. रोग 1).

रोगशात्तक m. *Arzt* Çabdar. im ÇKDn.

रोगशिला f. *Realgar, rother Arsenik* Rāǵan. im ÇKDn.

रोगशित्तिपन् m. *eine best. Pflanze*, vulgo शरालु Gaṇāḍh. im ÇKDn. *Cassia fistula* Wilson.

रोगश्रेष्ठ m. *die beste* (d. i. *schlimmste*) *der Krankheiten* so v. a. *Fieber* Rāǵan. im ÇKDn.

रोगहर adj. *Krankheit vertreibend* Suçr. 1, 191, 3. 4. Varāh. Bṛh. S. 79,11. n. *Arsenik* Çabdar. im ÇKDn.

रोगहारिन् adj. *Krankheit vertreibend;* m. *Arzt* AK. 2,6,2,3. H. 472.

रोगहृत् adj. dass.; m. *Arzt* Rāǵa-Tar. 6,68.

रोगिर्त (von रोग) adj. *mit einer Krankheit behaftet* gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. H. 459, Sch. Varāh. Bṛh. S. 45,13. *toll* (von einem Hunde) H. 1280. Halāy. 2,127.

रोगितरु m. *der Baum der Kranken*, Bez. des Açoka Rāǵan. im ÇKDn.

रोगिन् (von रोग) adj. *krank, kränklich* M. 2,138. 3,8. 114. 9,82. 230. Jāṭ. 1,117. 209. 2,98. Harīv. 7672. Spr. 2220. 2645. fg. 4325. 4664. Varāh. Bṛh. 20,9. 21,3. Kathās. 60,41. Rāǵa-Tar. 3,461. 4,212. Bhāg. P. 1,14,41. 6,9,49. Mārk. P. 34,76. Sin. D. 2,9. मन्द्° *selten krank* MBh. 3,12639. दीर्घ° *lange kränkelnd, siech* Spr. 4628, v. l. — Vgl. अ° (auch Spr. 3275. Jāṭ. 1,53. अरोगिन 265), क्षय°, पाण्डु°, पाप° (auch MBh. 14,1010), मक्षा°, वक्त्र°.

रोगिवल्लभ n. *Arsenik* Çabdar. im ÇKDn.

रोग्य partic. fut. pass. von 1. रुज् Vop. 26,3. *Krankheit erzeugend, ungesund* (von रोग), = अपथ्य, अहित Çabdar. im ÇKDn.

रोचं (von 1. रुच्) 1) adj. *leuchtend* AV. 17,1,21. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Vjuṣṭ. 91. Schiefner, Lebensb. 232 (2). — Vgl. गो°.

रोचक (wie eben) 1) adj. = रोचन Med. n. 116. fg. *Appetit machend* Suçr. 1,200,13. अ° *den Appetit benehmend* Verz. d. Oxf. H. 129, *a*, 12. — 2) m. *a*) *Appetit, Hunger* H. 393. — *b*) *eine den Durst* (*den Appetit*) *reizende Speise*, = अवदंश Rāǵan. im ÇKDn. — *c*) Bez. verschiedener Pflanzen: *Musa sapientum* Çabdar. im ÇKDn. *eine Zwiebelart* (राजपलाण्डु) Rāǵan. ebend. = गन्धपर्णभेद Bhāvapr. im ÇKDn. — *d*) *ein Verfertiger von unächten Schmucksachen* H. 2,83,14. = काचकुप्यादिकर्तृ Kathās. — Vgl. अ°, कञ्चल°.

रोचकिन् (von रोचक) adj. *Lust —, Verlangen habend:* अ° Rāǵa-Tar. 2,53. — Vgl. अ°.

रोचनं (von रुच्) 1) adj. gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134 (proparox.). = रोचक Med. n. 116. fg. *a*) *licht, hell, blank, leuchtend* H. 445. AV. 4, 10,3. 6. 14,1,36. सवितृ TBr. 3,10,8,2. लोक Çat. Br. 7,1,1,24. Çāṅkh. Br. 20,1. यो (अपामञ्जलिः) रोचनस्तमिदं गृह्णामि Gobh. 3,4,11. Pār. Gṛhy. 2,6. खद्योत इव रोचनो MBh. 8,1959. मक्षादेव Harīv. 7424 (= चिन्मय Nīlak.). — *b*) *Gefallen erweckend, gefallend, lieblich* Bhatt. 6,73. Bhāg. P. 1,10,11. 10,61,25 (f. या). कर्ण° 73,14. — *c*) *Appetit machend* Suçr. 1,150, 6. 11. 188,13. 192,13. 217,16. 219,1 (f. ई). — 2) m. *a*) *eine Varietät der Baumwollenstaude* (कूश्माण्डमलि) AK. 2,4,8,27. Trik. 3,3,256. H. an. 3,408. Med. nach Rāǵan. im ÇKDn. auch = श्वेतशिग्रु, पलाण्डु, शारिवा, कारव्य, अङ्कोठ und दाडिम. — *b*) Bez. eines best. Krankheitsdämons (ग्रह) Harīv. 9560. — *c*) N. einer der fünf Pfeile des Liebesgottes (*der Gefallen Erweckende*) Verz. d. Oxf. H. 184, *b*, No. 419. — *d*) N. pr. eines Sohnes des Vishṇu von der Dakshiṇā Bhāg. P. 4,1,7. — *e*) N. Indra's unter Manu Svārokisha Bhāg. P. 8,1,20. — *f*) N. pr. eines Berges Mārk. P. 57,13. — 3) f. रोचनी Uṇādis. zu Uṇādi. 2,78. *a*) *Lichthimmel;* s. u. 5) *a*) am Ende. — *b*) *ein schönes Weib* H. an. Med. — *c*) *ein best. gelbes Pigment*, = गोरोचना Trik. 2,9,22. 3,3,246. H. an. Med. P. 4,2,2. M. 8,234. Jāṭ. 1,278. MBh. 2,893. 5,1542. 13,5874.

6009. 6263. Harîv. 9384. Sûçn. 2, 13, 2. 66, 4. 110, 16. 132, 19. 333, 14. °वर्ण 323, 12. गोपितृतो रोचना Spr. 759. Râgat. 17, 24. Kumâras. 7, 32. Pañkar. 3, 9, 14. Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 3. 242, *a*, No. 393—395. रोचनाभ Ind. St. 3, 277. °वर्ण 275. plur. MBh. 7, 2931 (रोचनास्तथा ed. Bomb. st. रोचनास्तथा der ed. Calc.). R. Gorr. 2, 12, 8. — *d) eine rothe Lotusblüthe* H. an. Med. — *e)* = mahr. काळीसोवरी *dunkler Çâlmali Baum* Bhâvapr. in Nigh. Pr. — *f)* = वंशरोचना Tabâschîr Râgân. in Nigh. Pr. — *g)* N. pr. einer Gattin Vasudeva's Bhâg. P. 3, 24, 44. 48. — 4) f. ई *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Convolvulus Turpethum R. Br.* AK. 2, 4, 3, 27. Med. = काम्पिल्ला AK. 2, 4, 4, 12. Med. = दन्ती Med. = धात्रीफला Râgân. im ÇKDr. — H. an. 3, 103. — *b) Realgar, rother Arsenik* H. 1060. — *c) ein best. gelbes Pigment* (= रोचना) Râgân. im ÇKDr. Spr. 759, v. l. — 5) n. *a) Licht, Glanz; Lichtraum des Himmels:* घर्त्समुक्षो रोचसि रोचनेन RV. 10, 4, 2. 88, 5. मं दिव्येन दीदिहि रोचनेन AV. 2, 6, 1. चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि *Lichter so v. a. Gestirne* 19, 7, 1. सो वा आदित्यो दिव्यं रोचनम् Çat. Br. 6, 2, 4, 26. Lâṭj. 1, 6, 26. Kâuç. 5. तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः RV. 9, 86, 27. 1, 6, 1. 49, 1. 155, 3. घर्तरिते, दिवो रोचने 3, 6, 8. रोचने परस्तात्सूर्यस्य 22, 3. सूर्यस्य 1, 14, 9. नाकस्य 19, 6. विश्वमा भाति रोचनम् 3, 44, 4. इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दंहितानि च 3, 14, 2. 7. दिवो रोचना पप्रिवांसम् 1, 146, 1. 81, 3. 93, 5. 6, 7, 7. दिवो विश्मानि रोचना 8, 3, 3. 9, 85, 9. 10, 4, 2. 49, 6. 89, 1. AV. 7, 73, 4. 13, 1, 39. तारका विततता रोचने दिवि TBr. 3, 12, 3, 1. VS. 13, 3. drei solche *Lichthimmel* RV. 1, 102, 3. 149, 4. आदित्यास्त्री रोचना दिव्या धारयन्त 2, 27, 9. 3, 36, 3. 4, 53, 3. 5, 69, 1. 81, 4. 6, 44, 23. 9, 17, 3. Çat. Br. 8, 6, 3, 19. auch fem.: एतं तिस्रो ऽति रोचनाः AV. 8, 75, 3. TBr. 3, 3, 11, 3. — *b) das Erregen des Verlangens nach* (geht im comp. voran) Bhâg. P. 11, 11, 23. — *c)* देवानां रोचनम् N. eines Sâman Ind. St. 3, 219, *b*. — Vgl. गोरोचना, पुष्परोचन, भक्त°, योगरोचना, वंश°, सु°, रोचनिक.

रोचनक 1) m. *Citronenbaum* Râgân. im ÇKDr. — 2) f. रोचनिका *a) eine best. Pflanze*, = गुण्डरोचनी Ratnam. 163. = काम्पिल्लिका Hân. 133. रोचनका (sic) = रेचनी H. an. 3, 404. — *b)* = वंशरोचना Tabâschîr Râgân. im ÇKDr.

रोचनफल 1) m. *Citronenbaum.* — 2) f. या *eine best. Gurkenart*, = चिर्भिटा Râgân. im ÇKDr.

रोचनस्थ adj. *im Lichtraum des Himmels befindlich* RV. 3, 2, 14. 6, 6, 3.

रोचनाकर gaṇa सात्तादादि zu P. 1, 4, 74.

रोचनामुख m. N. pr. eines Daitja MBh. 5, 3685.

रोचनावत् (°नवत् Padap.) adj. *licht, hell* AV. 13, 3, 10; vgl. TBr. 2, 7, 18, 3.

रोचमान 1) partic. adj. s. u. 1. रुच्. — 2) m. *a) ein Haarwirbel am Halse eines Pferdes* Tris. 3, 8, 44. Vaig. bei Mallin. zu Çiç. 5, 4. Kâtyâs. 74, 78. Çiç. 5, 4. — *b)* N. pr. eines Fürsten MBh. 1, 2654. 6990. 2, 516. 1027. 1066. — 3) f. या N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2647.

रोचम् s. स्व°.

रोचि *Licht, Strahl:* स्वरोचिर्भिर्यथा सूर्यो भासयन्सकला दिशः Mârk. P. 83, 6. 7. vielleicht fehlerhaft für स्वरोचिर्भिः. रोचिभिः (= विषयवासनाज्वालाभिः Nîlak.) Harîv. 11933 Lesart der neueren Ausg. st. रोषिभिः der älteren.

रोचिन् (von 1. रुच्) *hell, licht;* s. मित°.

रोचिष (von रोचिस्) m. N. pr. eines Sohnes des Vibhâvasu von der Ushas Bhâg. P. 6, 6, 16. der acc. रोचिषम् könnte übrigens auch auf ein m. रोचिस् zurückgeführt werden.

रोचिष्णु (von रुच्) adj. P. 3, 2, 136. Vop. 26, 142. 1) *leuchtend, schmuck, blühend* AK. 2, 6, 3, 2. H. 443. VS. 12, 57. Âçv. Gṛhj. 1, 7, 6. Çat. Br. 14, 5, 1, 9. Pân. Gaṇ. 1, 6. रोचिष्णुरस्क zur Erkl. von रुक्मवक्षस् Nir. 3, 15. ज्योतिस् MBh. 12, 8315. Çiva Çiv. मणि Bhâg. P. 5, 24, 31. श्यामलाम्बर° Kathâs. 94, 9. — 2) *Appetit machend* Sûçn. 1, 190, 18.

रोचिष्मत् (von रोचिस्) 1) adj. *leuchtend:* अग्नि Harîv. 10488. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Svârokisha Bhâg. P. 8, 1, 19.

रोचिस् (von 1. रुच्) n. Uṇâdik. zu Unâdis. 2, 113 (paroxyt.). *Licht, Glanz* AK. 1, 1, 2, 36. H. 99. Hall. 1, 28. RV. 5, 26, 1. Râga-Tar. 1, 1. Bhâg. P. 3, 12, 32. 28, 23. 4, 1, 5. 2, 5. 5, 2. शारत्पद्मपलाश° 24, 32. 5, 20, 13. 10, 59, 7. ईषत्स्मितरोचिषा (°शोचिषा ed. Bomb.) गिरा Anmuth 2, 9, 18. — Vgl. अचिर°, स्व°.

रोची f. *Hingcha repens Roxb.* Çabdar. im ÇKDr. Vâjîp. 142.

रोच्य partic. fut. pass. von 1. रुच् P. 7, 3, 66.

रोट s. पूग°.

रोटकव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284, *a*, 7 v. u.

रोटिका f. *eine Art Gebäck* Verz. d. Oxf. H. 153, *b*, N. 1. रोटिका, पव°, माष°, चणक° Bhâvapr. im ÇKDr.

रोड्, रोडति (उन्मादे) Dhâtup. 9, 73. (अनादरे) 72, v. l. — Vgl. लोड्, रोड्, रोढ्.

रोड 1) adj. *gesättigt, befriedigt* (तृप्त). — 2) m. *das Zerstampfen* (लोढ) Med. d. 24.

रोढृ nom. ag. von 1. रुह् Med. k. 149.

रोणीक N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. रोणीकौय P. 4, 2, 141, Vârtt. 1, Sch.

रोद (von रुद्) m. *Klageton, das Winseln:* यद्गौ केशिनो अनो गृहे ते समनर्तिषु रोदेन कण्वनोऽघम् AV. 14, 2, 59. 60. अघ 8, 6, 26. पुत्ररोदं रुद् *seine Kinder beweinen* Kâuç. Up. 3, 15, 2.

रोदन (wie oben) 1) n. *a) das Weinen* AK. 3, 4, 29, 136. H. an. 3, 405. Med. n. 117. R. 3, 59, 1. Sûçn. 1, 316, 5. बालानां रोदनं बलम् Spr. 1192. Kathâs. 73, 225. 124, 138. Bhâg. P. 3, 14, 48. Vet. in LA. (III) 25, 2. 17. 28, 16. °वत् Bhâg. P. 3, 17, 10. pl. Sûçn. 1, 373, 10. zu den Kinderkrankheiten gezählt Çiâo. Sâṁh. 1, 7, 108. — *b) Thränen* AK. 2, 6, 2, 44. H. 307. H. an. Med. Hâlây. 2, 364. — 2) f. ई *Alhagi Maurorum Tournef.* AK. 2, 4, 3, 10. — Vgl. रुद्रोदन.

रोदस् = रोदसी 1): gen. du. रोदसोः RV. 3, 22, 3. die indischen Lexicographen führen auch रोदसी auf रोदस् n. zurück: रोद इव तु रोदसी H. an. 3, 733. रोदश्च रोदसीति च Med. s. 32. Hall. 1, 121. Am Anfange eines comp.: रोदःकुक्षि Naish. 3, 82.

रोदसिप्रा (für रोदसी-प्रा) adj. *weiterfüllend* RV. 10, 88, 3. 10.

रोदसी f. 1) du. रोदसी *die obere und untere Welt, Himmel und Erde.* Die urspr. Bed. ist noch zu ermitteln. Nir. 6, 1 stellt das Wort als von रुध् abgeleitet mit रोधस् zusammen: (die Wesen) *in sich enthaltend;* diese Ableitung ist unzulässig schon wegen des Zusammenhanges zwi-

schen रुद्र und रोदसी 2), wenn anders die beiden रोदसी 1) und 2) zusammengehören. Naigh. 3, 30. Nir. 10, 6. 11, 50. AK. 3, 4, 30, 231 रोदस्यौ = रोदसी. H. 939. 1526. an. 3, 753. Med. s. 32. Halâj. 1, 121. निरंहसं घंधसो रोदस्योः RV. 1, 33, 5. नमो दिवे बृहते रोदसीभ्याम् 136, 6. धनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे 2, 1, 15. 11, 9. 3, 2, 2. धत्तर्हूतो रोदसी दस्म ईयते 3, 2. समैरयं रोदसी धारयं च 4, 42, 3. वि पर्जन्यं सृजसि रोदसी धनु 5, 53, 6. वावन्धे प्र समर्त रोदसी धत्तरितम् 85, 3. 6, 8, 3. 30, 1. 70, 2. 3. 6. राध्यं रोदस्योः 7, 6, 2. 72, 3. रोदसीमे 90, 3 (vgl. VS. Prât. 4, 85. Kâç. zu P. 1, 1, 11). 8, 61, 13. 10, 80, 1. 2. AV. 1, 32, 3. 4, 1, 4. या यो रोहसि रोदसी 14, 4. पदेत्तरा रोदसी पत्परस्तात् 16, 3. यावद्रोदसी विबबाधे धर्मिः 8, 9, 6. सुमेके RV. 3, 15, 3. बहुला 36, 1. देवी 4, 55, 6. 6, 44, 3. देवपुत्रे 17, 7. उर्वी 67, 3. उरूची 11, 4. न ज्ञातमंष्ट रोदसी (als sg. behandelt) 8, 39, 3. In der nachvedischen Sprache रोदसी als nom. und acc. MBh. 1, 3550. 5, 2769. 7350. Vish. 1. Varâh. Bṛh. S. 53, 2. Kathâs. 2, 15. Śiç. D. 7, 10. Bhâg. P. 1, 7, 30. 14, 17. लोकमातरौ 2, 3, 5. 4, 14, 5. 17, 16. 6, 9, 14. 9, 20, 32. रोदस्योः 8, 21, 27. — 2) sg. रोदसी nach Nir. 11, 49. 12, 46 Rudra's *Gattin*, nach den Comm. auch *Gattin der Marut*, *Blitz*: (रथम्) या पस्त्यासु स्वौ मुरणानि विक्षती सचा मरुत्सु रोदसी RV. 5, 56, 8. 6, 66, 6. 10, 92, 11. द्यावापृथिवीममुर्या सचध्यै विरितस्तुका रोदसी नृमणाः 1, 165, 5. so auch ebend. 4, obwohl als du. behandelt; ursprünglich wohl रोदसीम्. Eben so finden sich Stellen, wo irrig रोदसी betont ist, daher im Padap. Dual angenommen wird, z. B. या रोदसी वरुणानी शृणोतु RV. 5, 46, 8. 61, 12. 7, 34, 22. auch wohl 40, 2.

रोदस्त्व n. ein zur Etymologie von रोदसी gebildetes Wort: पदेरोदीत्तदनर्वा रोदस्त्वम् TBa. 2, 2, 9, 4.

रोदितव्य (von रुद्) partic. fut. pass. impers. zu *weinen*: यतो न रोदितव्यम् Spr. 3056. ते Mârk. P. 109, 18. यनया 28. Vet. in LA. (III) 21, 17. न रोदितव्यं पश्यामि भवतामात्मनस्तथा *ich sehe keine Veranlassung zum Weinen für* Mârk. P. 22, 28. रोदितव्ये प्रकुर्वितान् *wo man weinen sollte* MBh. 7, 726. रोदितव्ये धुवे (रोदितव्यं ध्रुवे die neuere Ausg.) माया: Hariv. 4795.

रोद्धृ (von 2. रुध्) nom. ag. *Einschliesser, Belagerer*: द्विषाम् Raghu. 17, 52.

रोद्धव्य (wie oben) adj. *zu verschliessen*: द्वारमेषां न रोद्धव्यमिदं प्रविशताम् Kathâs. 36, 4.

1. रोध (von 1. रुध्) m. vielleicht in रोधावरोध *Bewegung auf und ab* Kaṭṭ. 98. — Vgl. न्यरोध.

2. रोध (von 2. रुध्) m. 1) *das Zurückhalten, Festhalten*: पाणिरोधम् — कामिनः स्म कुरुते Çiç. 10, 69. रोधमुक्तं प्रवहणम् so v. a. *frei geworden* Kathâs. 18, 304. — 2) *Einsperrung*: राक्षसास्तपुरे R. 5, 66, 3. गवाम् Mârk. P. 13, 1. मरुद्रोधाद्विनिर्मुक्तः R. 7, 36, 6. *Einschliessung, Belagerung* (einer Stadt) MBh. 3, 781. 12, 2184. Hariv. 3010. 5265 (am Ende eines adj. comp. f. या). Raghu. 11, 52. Varâh. Bṛh. S. 12, 19. 34, 10. 30. 91, 2. 3. 93, 8. Mârk. P. 122, 15. Pañkat. ed. orn. 53, 18. *Versperrung* MBh. 5, 2225. मार्ग° Suçr. 1, 253, 7. उपल° *durch Steine* Kir. 5, 15. — 3) *Verwehrung, Hemmung, Unterdrückung*: चेष्टाभोजनवाग्रोध Jâén. 2, 220. प्रवेशरोधकृत् Kathâs. 10, 41. दृष्टिरोधकार Spr. 3582. वृत्ति° Kusum. 22, 17. स्मृति° Çiv. 191. ज्ञान° Bhâg. P. 4, 22, 31. श्वास° 10, 3, 34. Verz. d. Oxf. H. 200, *a*, No. 475, Z. 10. Sarvadarçanas. 89, 13. = निरोध und नाश Taitt. S. 3, 3, 219. — 4) *das Befehden*: ग्रामद्वयस्य लोकानां रोधः R. Gorr. 1, 4, 27. = सन्यागम H. an. 4, 214. — 5) *Damm, Ufer*: नर्मदा रोधवद्वृद्धा R. 7, 32, 18. ज्वलरोधेषु Suçr. 1, 106, 15. रोधस्य Râjat. 4, 249 könnte auch रोधःस्थ sein. — 6) N. pr. eines Mannes गण शिवादि zu P. 4, 1, 112. — 7) N. einer Hölle VP. 207. fg. — Vgl. प्राण° (v. l. für प्राणावाध *Lebensgefahr* Spr. 3136).

रोधक (wie oben) adj. *einsperrend, einschliessend, belagernd*: पयोधरोधकमुरसि डुकूलम् Gîv. 12, 4. पुर° Ind. St. 10, 198. — Vgl. सभ्य°.

रोधकृत् (2. रोध + कृत्) m. Bez. *des 43sten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8, 43. fg.

रोधचक्र (2. रोध + चक्र) adj. als Bez. von Flüssen Naigh. 1, 13. etwa *am Ufer Wirbel* (s. चक्र 12.) *bildend*: समुद्रं न स्रवतो रोधचक्राः RV. 1, 190, 7. यत्रा मही रोधचक्रे वावृधेते AV. 5, 1, 5. — Vgl. रोधवक्रा, रोधोवप्र.

रोधन (von 2. रुध्) 1) m. *der Planet Merkur* Trik. 1, 1, 93. — 2) रोधनी f. = रोधस्. विश्वेदनु रोधना यस्य पौंस्यम् RV. 2, 13, 10. — 3) n. proparox. *a*) *das Aufhalten, Zurückhalten, das Hemmen, Unterdrücken*: यन्युगर्तयोः (subj. gen.) Bhâg. P. 3, 30, 28. चतुर्हृदय° Vishn. 7, 22. कुर्वतो दृष्टिरोधनम् R. 6, 90, 25. श्वासप्रश्वास° H. 83. Verz. d. Oxf. H. 186, *b*, 33. 266, *a*, 9. 270, *a*, 2. — *b*) *das Einsperren, Einschliessen, Verschluss* Bhâg. P. 10, 13, 32. रोधना गोः RV. 1, 121, 7. मनसस्य Buâr. Nitiç. 18, 19.

रोधवक्रा f. = रोधोवक्रा Bhâr. zu AK. ÇKDr.

रोधस् (von 2. रुध्) n. Uéêval. zu Uṇâdis. 4, 188. *Erdaufwurf, Damm, Wall, Schutzwehr; Hügel, hohes Ufer*: रिणग्रोधांसि (रुजद्रोधांसि TS.) कृत्रिणाण्येषाम् RV. 2, 15, 3. उर्व स्तभायदुपमिन्न रोधः 4, 5, 1. विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्योऽधाज्जनिमचेतत् ता: 4, 22, 4. 10, 48, 2. so v. a. कूल *hohes Ufer* Nir. 6, 1. AK. 1, 2, 3, 7. H. 1077. Halâj. 3, 45. MBh. 7, 306 (wo mit der ed. Bomb. °रोधसम् zu lesen ist). 1403. 6186. R. 4, 53, 15. Raghu. 3, 42. 8, 33. 9, 14. 16, 34. Megh. 42. Vikr. 3. Milav. 71, 2. 76 (वरदारोधावृतैः zu schreiben). Kathâs. 42, 224. 114, 41. Râjat. 3, 328. Śiç. D. 5, 3. Bhâg. P. 3, 22. 27. 5, 16, 21. 8, 10, 5. 10, 13, 9. Verz. d. Oxf. H. 67, *a*, 27. in Verbindung mit कूल MBh. 3, 11887. 13, 248. von der *abschüssigen Wand* eines Brunnens Bhâg. P. 3, 19, 4. पर्वत° *Bergwand* Hariv. 11911. 12044. R. 7, 79, 17. ohne पर्वत dass.: रोधस्सु विषमेषु च MBh. 1, 5888. 8314. *Wand* einer dicken Wolke Kathâs. 33, 110. Bez. *der weiblichen Hüften* Bhâg. P. 3, 20, 29; vgl. तट. — du. रोधसी (neben रोदसी) so v. a. द्यावापृथिव्यौ Naigh. 3, 30.

रौधस्वत् (von रोधस्) 1) adj. Bez. von Flüssen Naigh. 1, 13. nach Sây. *mit hohen Ufern versehen*: मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु। या तेमखिद्रयामभिः RV. 1, 38, 14. — 2) f. °वती N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5, 19, 18.

रोधिन् (von 2. रुध्) 1) adj. *a*) *zurückhaltend, aufhaltend*: कृच्छ्र° Raghu. 19, 27. मूत्र° Suçr. 1, 257, 19. Kathâs. 13, 118. कर्णशिरोरुज° Çiç. 29. — *b*) *versperrend*: उत्तरहार° Raghu. 1, 30. गलरोधिनो ऽङ्कुरान् Suçr. 1, 306, 19. — *c*) *verwehrend, hemmend, hindernd, störend*: व्रतं व्यापारोधि मदनस्य Çiç. 26. मुनिसुतार्पणायस्मृतिरोधिना तमसा 125. प्रवेश° Kathâs. 73, 121. भेरिरवैः पोराशीर्घोषरोधिभिः so v. a. *übertönend* Râjat. 5, 346. — *d*) *erfüllend*: रामक्रोधेऽवस्थाम्बररोधिनः Kathâs. 102, 51. — 2) *eine best. Pflanze*: रोधिच्छदपुटे Pañkat. 3, 14, 37. ob etwa रोध°

zu lesen ist? — Vgl. घनरोधिनी, मार्गरोधिन्.

रोधोवक्रा (रोधस् + व°) *f. Fluss* Taik. 1,2,29. H. 1079. — Vgl. रोधवक्र, रोधवक्रा, रोधोवप्र.

रोधोवती (von रोधस्) *f. Fluss* Riéan. im ÇKDa.

रोधोवप्र m. *ein reissender Fluss* Halâj. 3,14.

रोध्य (von 2. रुध्) adj. *zurückzuhalten:* घ° Paṇéan. 4,3,14.

रोध 1) m. *Symplocos racemosa Roxb.*, ein Baum mit gelber Blüthe; aus seiner Rinde wird das *rothe* (vgl. रुधिर, रोहित) Pulver bereitet, das beim Feste Holâkâ gestreut wird, Taik. 2,3,268. H. 1159. an. 2, 450. Med. r. 81. Suça. 1,38,8. 60,4. 134,1. 138,8. 141,9. 15. 157,18. Mucn. 66, v. l. Rasn. 2,29. 3,2. Vaṛâh. Bṛn. S. 16,30. 51,15. 77,29. 86,30. Vgl. लोध्र. — 2) *Sünde*, m. Taik. n. H. an. Med. — 3) n. *Beleidigung* H. an. Med.

रोधपुष्प m. 1) *Bassia latifolia* (मधूक) Riéan. im ÇKDa. — 2) *eine zu den Ringschlangen gezählte Schlangenart* Suça. 2,265,12.

रोधपुष्पक m. 1) *eine unter den* शालि *aufgeführte Körnerfrucht* Suça. 1,193,7. — 2) = रोधपुष्प 2) Suça. 2,266,6.

रोधपुष्पिणी f. *Grislea tomentosa Roxb.* Riéan. im ÇKDa.

रोधप्रसूक m. *eine Reisgattung, deren Aehren die Farbe der* Rodhra-*Blüthen haben*, Nigh. Pr.

1. रोप (von रुप्) n. *Loch, Höhle* H. 1364. an. 2,299, wo रन्ध्रे st. रोधे zu lesen ist.

2. रोप (vom caus. von रुह्) m. 1) = रोपण Taik. 3,3,279. H. an. 2, 299. Med. p. 10. *das Pflanzen:* वृक्षाणाम् MBu. 13,2998. — 2) *Pfeil* AK. 2,8,3,55. Taik. H. 778. H. an. Med. Halâj. 2,311.

रोपक (wie oben) nom. ag. *Pflanzer:* वृक्ष° R. Gorr. 2,87,2. — m. *a weight of metal or a coin, the seventieth part of a* Suvarṇa Wilson; vgl. रूप 1) *f*) und रूपक 2).

1. रोपणी (von 1. रुप् 1) adj. *Leibschneiden verursachend:* ये घर्ङ्घनि मृदयन्ति यत्पामो रोपणास्तव AV. 9,8,12. — 2) n. = विमोक्षन oder उपद्रव TBr. Comm. 3,476,9.

2. रोपण (vom caus. von 1. रुह्) 1) adj. (f. ई) *a) aufsetzend, ansetzend:* नासिका° Kathâs. 61,14; vgl. 16. — *b) verwachsen machend, heilend* (Wunden) Suça. 1,31,14. व्रण° 34,6. 133,10. 156,15. 2,349,21. चतुष्प्रकारो गणस्तस्यः स्निग्धः शमनशोधनौ । रोपणश्च Verz. d. Oxf. H. 304, *b*, 11. fg. रोपणी वर्तिः, रसक्रिया 311, *b*, 24. चूर्ण 25. — 2) n. *a) das Aufrichten, Aufstellen:* नल° Kâçikâkh. 13,16. मेघि° 16,17. — *b) das Heilenmachen, Mittel zum Zuheilen* Suça. 1,38,10. 48,7. 63,19. 133, 14. 2,9,16. 10,18. 20,14. 17. Kann hier und da auch als adj. gefasst werden. — *c) das Pflanzen, Anpflanzen, Versetzen von Pflanzen:* स्थले कमलरोपणम् Spr. 209. वृक्ष° Verz. d. Oxf. H. 12,*b*,24. 86,*b*,18. 87,*a*,35. धान्य° 86,*b*,26. Kâçikâkh. 12,7. 11. 13,11. 15. 20.

रोपणीका f. *ein best. Vogel*, nach Sâj. *Drossel* (शारिका): प्रुक्षेषु मे कृमिणो रोपणाकासु दध्मसि RV. 1,50,12. AV. 1,22,4.

रोपणीय (vom caus. von 1. रुह् und von रोपण) adj. 1) *aufzurichten* Kâçikâkh. 16,15. — 2) *zu pflanzen, anzupflanzen* Vaṛâh. Bṛn. S. 55, 2. 5. — 3) *zum Zuheilen tauglich* Suça. 2,10,11.

रोपयितर् (vom caus. von 1. रुह्) nom. ag. 1) *Aufsetzer, Auflieger:* न तेषां तत्र माल्यानां कश्चिद्रोपयिता नरः R. 3,76,10. न तानि कश्चिन्माल्यानि तत्रारोपयिता नरः ed. Bomb. 73,32. — 2) *Pflanzer, Anpflanzer:* वृक्ष° Kull. zu M. 3,163.

रोपि (von 1. रुप्) *f. reissender Schmerz:* तकनैः AV. 5,30,16. fraglich 11,2,3

रोपिन् (vom caus. von 1. रुह्) adj. *pflanzend, anpflanzend:* वृक्ष° MBu. 13,2993. पञ्चसरोपी नरकं न याति Cit. bei Kull. zu M. 3,163.

रोपुषी f. = रोपि: विप्रुषं RV. 1,191,13.

रोप्य (vom caus. von 1. रुह्) adj. *zu pflanzen, anzupflanzen:* वृक्षा: MBu. 13,3000. रोप्यातिरोप्या: (व्रीकय:) *(Reis) der gesäet und später wieder verpflanzt wird* Suça. 1,196,14; vgl. LIA. I, 246.

1. रोम = रोमन् am Ende eines adj. comp.: घनातरोम MBu. 3,10058. घरोम 1,8010 (f. घा). Vaṛâh. Bṛn. S. 70,3. सरोम 21. — Vgl. दीर्घ°.

2. रोम 1) m. *Loch, Höhle* Çabdâkshar. bei Wilson; vgl. 1. रोप. — 2) n. *Wasser* Çabdak. im ÇKDa.

3. रोम *Rom* Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,1 v. u. — Vgl. बरुद्रोम und 2. रोमक.

1. रोमक am Ende eines adj. comp. = रोमन्. पाटल° (तुरग) R. 3,12,33.

2. रोमक 1) m. *a)* N. pr. eines उदीच्यग्राम gaṇa पलव्यादि zu P. 4, 2,110. कृशाश्वादि zu 80. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 2,1837. *die Römer, Bewohner des Römerreiches* Vaṛâh. Bṛn. S. 16,6. sg. *Rom* Siddhânta-çir. Golâdh. Bhuvanak. (III) 28. Verz. d. B. H. No. 939. 1240. Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,34. Reinaud, Mém. sur l'Inde 341. fg. — *b) der Römer*, Bez. eines best. Astronomen Verz. d. B. H. No. 835. 881. 939. Verz. d. Oxf. H. 333,*a*,9. Ind. St. 2,247. fg. °तान्त्रिक 274. — 2) n. *a) salzhaltige Erde und das aus ihr gesogene Salz*, = पांसुलवण Riéan. im ÇKDa. Suça. 1,157,8. 226,12. 227,2. — *b) eine Art Magnet* (अयस्कान्तभेद) Riéan. im ÇKDa.

रोमकन्द (1. रोमन् + कन्द) m. *ein best. Knollengewächs*, = पिण्डालु Riéan. im ÇKDa.

रोमकपत्तन n. *die Stadt Rom* Verz. d. Oxf. H. 323,*b*,N. 1. 340,*a*,7. Siddhântaçir. Golâdh. Bhuvanak. (III) 17.

रोमकर्णिका (1. रोमन् + कर्णा) m. *Hase* Çabdâkshar. bei Wilson.

रोमकसिद्धान्त m. N. eines der fünf Haupt-Siddhânta zu Varâhamihira's Zeit: पौलिशरोमकवासिष्ठसोरपैतामहेषु पञ्चस्वेतेषु सिद्धान्तेषु Vaṛâh. Bṛn. S. S. 4, Z. 1. 2. Colebr. Misc. Ess. II, 380. 388. 411. 476. Reinaud, Mém. sur l'Inde 332. Ueber ein späteres Machwerk unter demselben Namen s. Kern in der Vorrede zu Vaṛâh. Bṛn. S. 47. fg. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*, No. 796.

रोमकाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* der Astronomie Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,3; vgl. 2. रोमक 2).

रोमकायण m. N. pr. eines Autors Bhadd. 3,10 in Ind. St. 1,103.

रोमकूप (1. रोमन् + कूप) m. n. *Haargrübchen, Pore der Haut* MBu. 3,12968. भवतां रोमकूपाणि (so die ed. Bomb.) प्रकृष्टान्युपलक्षये *so v. a. ich bemerke, dass eure Härchen am Körper sich sträuben*, 4,1466. 6, 3213. 12,10308. 13,1330. 4127. 14,1738. Harîv. 14270. R. 1,53,2 (56, 2 Gorr.). 56,18 (57,17 Gorr.). Mâlav. P. 82,23. Paṇéan. 2,2,26. Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,30. Suça. 1,64,6. 116,2. 295,6. 365,2. 2,138,18. वर्त्म° 1,36,6. स्तब्धरोमकूपता 49,1. — Vgl. लोमकूप.

रोमकेसर n. *der als Fliegenwedel gebrauchte Schweif des Bos grunniens* ÇKDa. u. Wilson angeblich nach Taik.; hier heisst es aber 2,8,31: चामरं रोमगुत्सं च केशरं चावचूलकम्.

रोमगर्त m. = रोमकूप. °गर्तेषु सूकरस्य Buic. P. 3,13,38.

रोमगुच्छ m. = रोमगुत्स H. 717. Hin. 172.

रोमगुत्स (f. रोमन् + गु°) n. *der als Fliegenwedel gebrauchte Schweif des Bos grunniens* Taik. 2,8,31.

रोमण्वत् (von f. रोमन्) adj. *behaart, haarig* RV. 9,112,4. — Vgl. रोमवत्.

रोमत्यक्त् adj. *das Haar verlierend*, von einem Pferde Varāh. Bṛh. S. 93,11.

1. रोमन् n. Unādis. 4,150. = लोमन् Kāç. zu P. 5,2,18. *Haar am Körper der Menschen und Thiere* (in der Regel mit Ausschluss der langen Kopf- und Barthaare, der Mähne und des Schweifes) AK. 2,6,2,30. 2,12. H. 619. 630. Hālā. 2,269. 294. रोमाण्यवगी RV. 1,135,6. 9,62,8. 78,4. 97,11. Çāṅkh. Ça. 4,14,4. 18,24,19. Gṛhj. 1,24. Ait. Br. 2,9. Kāṭh. Up. 8, 13,1. रोमाणि रूक्ष्यानि M. 4,144. 221. पशुरोमाणि 5,38. (क्षये:) नाग्नि-र्दहति रोमाणि 8,116. ततो रोमाणि मे ऽकृपन् MBh. 2,1935. मयूरसमरोमभि: । रूपै: 3,12065. दीर्घरोमधर R. Gorr. 2,28,24. 3,49,3. 4. 74,15. Sūça. 1,5,1. 17,9. 2,13,10. fgg. Rāgān. 1,33. Spr. 1035. Varāh. Bṛh. S. 57,7. 61,11. 67,6. 68,4. 69,19. 70,2. Buic. P. 2,6,4. 3,13,24. 22,29. 5,26,14. 8,7,28. केशवालरोमाणि (वाजिन:) Cit. beim Schol. zu Çiç. 6,5. रोमोत्पाटन Verz. d. B. H. No. 988. कृष्टरोमन् adj. Taik. 3,1,21. R. Gorr. 1,22,1. 52,1. Buic. P. 4,24,22 (von Pflanzen). Ver. in LA. (III) 3,22. कृष्टरोमणी Varāh. Bṛh. S. 92,3. प्रकृष्टरोमन् adj. R. 3,65,19. Buic. P. 3,13,5. संकृष्टरोमाङ्ग R. 3,55,5. सुवर्णरोमयूथ Pañcat. 35,1. *Gefieder* der Vögel R. 4,59,19. रोमा पृथिव्या: RV. 1,65,8. — Vgl. ऊर्ध्व°, दीर्घ°, नेत्र°, पृथु° (*breithaarig* d. i. *schuppig* von Fischen), बल्ल°, मयूर°, मक्ष°, स्वर्ण°, ह्रस्व°.

2. रोमन् m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,363 (VP. 192). ed. Bomb. liest: वनायवो दशापार्श्व रोमाण:. — Vgl. 2. रोमक 1) *a*).

रोमन्थ m. AK. 3,6,2,19. *das Wiederkäuen*: उद्गीर्णस्य वा सवर्गीर्णस्य वा मन्थो रोमन्थ: Pat. zu P. 3,1,15. रोमन्थं वर्तय् P. 3,1,15. Rāgān. 1, 33. मृगकुले रोमन्थमभ्यस्यतु Çiç. 39. गो° Varāh. Bṛh. S. 48,11. Çiç. 5, 62. TBa. Comm. 1,193,12. *das Kauen* des Betels damit verglichen Rāgā-Tan. 5,364. *Wiederkäuen* so v. a. *oftmaliges Wiederholen*: स्वविक्रमक-थास्तोत्र° 331. Nach den Erklärern zu P. 3,1,15 soll कोटो रोमन्थं व-र्तयति bedeuten अपानप्रदेशात्निःसृतं द्रव्यम् (= रोमन्थम्) अभ्राति oder वर्तुलं करोति *seinen Unrath verzehren* oder *Kügelchen daraus drehen*.

रोमन्थाय्, °यते *wiederkäuen* P. 3,1,15. Vop. 21,12.

रोमपाद् m. N. pr. zweier Fürsten VP. 442. 445. Buic. P. 9,23,7. 10. — Vgl. लोमपाद्.

रोमपुलक m. = पुलक 1) *b*) = रोमहर्ष Buic. P. 5,17,2. Kāṭhāp. 35.

रोमफला f. = रोमशफला Nigh. Pr.

रोमबद्ध adj. *aus Haar gewebt* Jiçv. 2,180. v. l. रोमबन्ध m. *Haargewebe*.

रोमभूमि f. *die Stätte der Haare* d. i. *die Haut* Rāgān. im ÇKDa.

रोममूर्धन् adj. *Härchen auf dem Kopfe habend, auf dem Kopfe behaart*; von Insecten Sūça. 2,310,3.

रोमरतासार m. *Bauch* H. ç. 125. scheint fehlerhaft zu sein.

रोमराजि und °राजी f. *Haarreihe, Haarlinie, Haarstreifen*: pl. bei einer Gazelle R. 3,49,33. sg. am Leibe des Menschen, insbes. des Weibes oberhalb des Nabels, ein Zeichen der Pubertät, Sūça. 1,44,18. 321,18. 356,16. 2,90,4. R. 3,52,32 (wo रोमराज्या zu schreiben ist). 5,21,19. Kumāras. 1,38. Ṛt. 2,26. Kāraṇḍ. 1. Pañcār. 3,3,12. 22. रोमराजिपथ so v. a. *Taille* Çiç. 9,22.

रोमलता f. *die Haarlinie oberhalb des Nabels* (beim Weibe) H. 606.

रोमलतिका f. dass. Sīm. D. 40,3.

रोमवत् (von f. रोमन्) adj. *behaart* Sūça. 2,13,12. चतुर्धर्चेषु गण मधादि zu P. 4,2,86 (vgl. 67—70). — Vgl. मृदु° und रोमण्वत्.

रोमवाहिन् adj. *Haar abschneidend, haarscharf*; von einem Messer Vīkr. 26,1.

रोमविकार m. *Veränderung in der Lage der Härchen am Körper, das Sträuben der Härchen* H. 305. Hālā. 3,29.

रोमविक्रिया f. dass. Sīm. D. 167. Prasāṅgar. 50,*b*,7. Kumāras. 5,10.

रोमविधंस m. *Laus* Wilson.

रोमविवर n. = रोमकूप Buic. P. 10,14,11.

रोमवेध m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 941.

रोमर्श (von f. रोमन्) 1) adj. (f. श्रा) *stark behaart* (am Körper), *haarig* गण लोमादि zu P. 5,2,100. Vop. 7,22. fg. सर्वाङ्गेभ्य रोमशा गन्धा-रीणामिवाविका RV. 1,126,7. ऊर्ध्व: 8,31,9. 80,6. Çāṅkh. Ça. 14,3. M. 3,7. MBh. 2,1850. Sūça. 1,159,19. 2,293,4. 310,5. Varāh. Bṛh. S. 68, 25. 59. 70,17. श्र° 68,32. 70,5. 8. पृष्ठे च रोमशं चर्म (मार्जारस्य) Kāmas. 65,162. कृरिणाजिन 167. खररोमवच् (सूकर) Buic. P. 3,13,27. von Pflanzen Sūça. 2,171,8. मक्ष्रा° *sehr stark behaart* 1,124,12. — 2) m. *a*) *Widder, Schaf* Taik. 2,9,23. H. 1276. Hin. 80. — *b*) *Eber* — *c*) *ein best. Knollengewächs* (पिण्डालु) und = कुम्भी Rāgān. im ÇKDa. — *d*) = डुलल Hin. 136. — *e*) N. pr. eines Ṛshi Buic. P. 6,15,14. eines Astronomen Verz. d. B. H. No. 862. Ind. St. 2,247; vgl. 2. रोमक 1) *b*). — 3) f. श्रा *a*) *Cucumis utilissimus* Roxb. Taik. 2,4,36. = दृग्घावृत्त Rāgān. im ÇKDa. — *b*) N. pr. der angeblichen Liedverfasserin von RV. 1,126,7; vgl. oben u. 1) und Bṛhadd. 2,17 in Ind. St. 1,114. — 4) n. so v. a. *pudenda* RV. 10,86,16. — Vgl. लोमश.

रोमशफला m. *eine best. Pflanze*, = पिण्डपर्णी Rāgān. im ÇKDa.

रोमशुक्र n. *ein best. Parfum*, = स्थौणेयक Bhāvapr. im ÇKDa.

रोमहर्ष m. *das Sträuben der Härchen des Körpers, Riesein der Haut* (vor Kälte, Furcht, Freude, Geilheit) Hālā. 3,29. Bhāg. 1,29. MBh. 4, 1240. 2249. 13,934. R. 7,26,30. 36,24. Sūça. 1,232,18. 256,1. 267,17. Rāgā-Tan. 3,41. Buic. P. 11,14,23.

रोमहर्षण 1) adj. *Haarsträuben verursachend* d. i. *Grauen oder grosse Freude erregend* Bhāg. 18,74. MBh. 1,212. Harīv. 3107. R. 1,30,17. 62,16. 2,42,20. 112,1. 3,32,3. 6,102,17. Buic. P. 3,10,5. 9,6,17. — 2) m. *a*) *Terminalia Bellerica*, deren Nüsse als (*Grauen erregende*) Würfel gebraucht werden, H. an. 3,16. Med. p. 116. — *b*) Beiw. Sūta's, des Erzählers der Purāṇa, Med. VP. 283. Muir, ST. III, 21. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*, No. 43. 82,*a*, No. 138. Buic. P. 10,78,22. Verz. d. B. H. 13, 6 (°नन्दन). Buic. P. 1, Einl. xxxvii. fg. auch der Vater Sūta's so genannt Buic. P. 1,4,22; vgl रोमकूर्षणि. — 3) n. = रोमकूर्ष H. 305. H.

an. Med. — Vgl. लोमकर्षण.

रोमकर्षणि Verz. d. Oxf. H. 9, b, 26. 59, a, 36 und °कर्षिणि 9, b, 13 fehlerhaft für रोमकर्षणि.

रोमकर्षित (von रोमकर्ष) adj. *bei dem die Härchen am Körper sich sträuben* Padma-P. 16, 144. so ist wohl st. रमकर्षित zu lesen; aber dann muss auch सर्वदा st. सर्वत्र gelesen werden, da सर्वत्र रोमकर्षिता: das Versmaass stören würde.

रोमाञ्च (von रोमाञ्च), °ञ्चति *ein Riesein der Haut empfinden* Gir. 4, 19.

रोमाञ्च m. = रोमकर्ष AK. 1, 1, 2, 25. H. 303. Hall. 3, 29. gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. कर्षाद्भुतभयादिभ्यो रोमाञ्चो रोमविक्रिया Sâh. D. 167. Prasannar. 80, b, 7. रोमाञ्चाद्भुतमानस Harîv. 9432. Suçr. 2, 288, 20. Ragh. 6, 81. तनू रोमाञ्चमालम्बते Spr. 2083. तनोति रोमाञ्चम् (स्मर: पवन:) *bewirkt ein Riesein der Haut* 2990. Varâh. Bṛh. S. 90, 10. Daçar. 4, 5. 42. रोमाञ्चेनेव कीलित: Kathâs. 10, 207. गात्रेरोमाञ्चचर्चिता 14, 28. त्रिभर्ति — गात्रे रोमाञ्चकञ्चुकम् 90, 165. Spr. 3274. उद्भेदरोमाञ्च Sâh. D. 63, 18. Brahma-P. in LA. (III) 58, 5. °वीचि Kâmand. 44. Prab. 37, 6. सरोमाञ्चम् adv. 58, 7. सरोमाञ्चा Kathâs. 100, 9.

रोमाञ्चकिन् m. N. pr. eines Schlangendämons Vâyu beim Schol. zu H. 1311.

रोमाञ्चिका f. *eine best. Pflanze*, = रुद्रन्ती Râgân. im ÇKDn.

रोमाञ्चित (von रोमाञ्च) adj. *emporgerichtete Härchen habend, ein Riesein empfindend* gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. Taik. 3, 1, 21. Harîv. 8735. Mṛicch. 91, 17. Spr. 962. Uttarar. 63, 6 (81, 4). Râga-Tar. 1, 302. 4, 397. Mârk. P. 100, 20. Paṇḍat. 128, 21. ऊर्ध्वरोमाञ्चिततनु R. 6, 37, 28.

रोमान्त m. *die Haarseite* d. i. *die obere Seite der Hand* Âçv. Gṛhj. 1, 7, 8.

रोमाली f. *Härchenreihe* (oberhalb des Nabels; vgl. रोमराजि); = वयःसंधि wohl *Pubertät* Çabdam. im ÇKDn.

रोमालु m. *ein best. Knollengewächs*, = पिण्डालु Râgân. im ÇKDn.

रोमालुविटपिन् m. *eine best. Pflanze*, = कुम्भी Râgân. im ÇKDn.

रोमावली f. *Härchenreihe* (oberhalb des Nabels) H. 606. Spr. 472. 2878. Dhûrtas. in LA. 83, 8. — Vgl. रोमराजि.

रोमाह्वयपत्रा f. *ein best. Strauch*, = किण्किरिष्टा Râgân. im ÇKDn.

रोमोद्गति f. = रोमकर्ष Vaiṭṭâbh. Einl. in Verz. d. Oxf. H. 143, b, No. 306.

रोमोद्गम f. dass. H. 306. an. 3, 16. Hall. 3, 29. Kumâras. 7, 77. Pañkar. 3, 3, 24. am Ende eines adj. comp. f. या Spr. 830. LA. 11, 12. 83, 2. व्यक्तरोमोद्गमत्व n. Mâlav. 59.

रोमोद्भेद m. dass. Taik. 1, 1, 131. Prab. 11, 16.

रोरवण (vom intens. von 1. रु) n. *heftiges Brüllen* Nir. 13, 7.

रोरुक N. pr. eines Landes oder einer Stadt Burn. Intr. 145. 340. Schiefner, Lebensb. 235 (3). 274 (44).

रोरुद्रा (vom intens. von रुद्) f. *heftiges Weinen*; davon adj. °वत् *heftig weinend* Bhaṭṭ. 3, 32.

रोरुय nom. ag. vom intens. von 1. रु Vop. 26, 29.

रोल 1) m. *a) Flacourtia cataphracta* Roxb. Çabdam. im ÇKDn. — *b) frischer Ingwer* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) f. या *ein best. Metrum*, = लोला Colebr. Misc. Ess. II, 90. 92. 156 (III, 10).

रोलदेव m. N. pr. eines Malers Kathâs. 55, 37.

रोलम्ब m. *Biene* Taik. 2, 5, 35. H. 1212. Spr. 2668. Sâh. D. 77, 1. 79, 13. Paṇḍar. 3, 3, 8. Daçar. 2, 10.

रोलिचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 280, b, 10.

रोषंसा f. *wish, desire* Wilson nach Çabdârthak. रोसंसा in der zweiten Ausg., aber vor रोष stehend, also wohl nur Druckfehler. Beide Formen sind offenbar falsch.

रोष् (nom. रोट्) nom. ag. von 1. रुष् P. 3, 2, 75, Sch. Vop. 26, 69. nach Dunçin. im ÇKDn. = किल्ब, वधक.

रोष (von 1. रुष्) m. *Zorn, Wuth* AK. 1, 1, 3, 26. H. 299. Hall. 2, 207. MBh. 1, 6030. R. 2, 78, 24. Vikr. 144. Spr. 1965. 2109. Râga-Tar. 3, 282. Bhâg. P. 4, 6, 46. LA. (III) 90, 3. Prasannar. 80, b, 7. Paṇḍat. 174, 25. ईर्ष्यारोषौ R. 2, 27, 8. प्रच्छाद्य रागरोषौ Spr. 1314. तीव्ररोषसमाविष्ट MBh. 3, 2397. रोषेण मरुतावेष्ट: R. 2, 74, 1. R. Gorr. 1, 68, 20. °परीत R. Schl. 2, 96, 30. रोषाकुलितेन चेतसा Harîv. 7039. °ताम्रात MBh. 3, 3046. R. 2, 78, 16. रोषात्प्रस्फुरमाणोष्ठौ R. Gorr. 2, 30, 1. °जुष्ट Daçar. 2, 9. °दृष्टि Bhâg. P. 2, 7, 7. °विधम 9, 10, 13. °भाषण Daçar. 1, 41. रोषोक्ति H. 1542. रोषमाकारयन्तीव्रम् R. 1, 60, 19. रोषं कर्तुम् MBh. 12, 12769. रोषं समुत्थं शमयन् Bhâg. P. 3, 17, 29. ज्ञात° adj. R. 1, 1, 4. मा रोषं कुरु तां प्रति 2, 112, 27. MBh. 1, 1267. त्रास° *Zorn gegen* R. 1, 75, 6. Harîv. 7041. Râga-Tar. 6, 110. Am Ende eines adj. comp. f. या Schol. zu Kâvyâd. 2, 154. — Vgl. दीर्घ°, वि°, स°.

रोषण (wie oben) 1) adj. *zornig, leicht in Wuth gerathend* P. 3, 2, 151, Sch. H. 391. an. 3, 221. Med. ṇ. 73. fg. Hall. 2, 206. MBh. 3, 10321. 5, 2035. R. 6, 2, 21. Mârk. P. 112, 15. सर्वभूतानाम् *gegen alle Wesen* MBh. 13, 7417. क्षत्रिय° *aufgebracht gegen* Harîv. 8304. घ° MBh. 5, 1402. 9, 3263. 12, 12770. यति° 13868 (°रोषण voc. ed. Bomb.). 14, 2891. — 2) m. *a) Probirstein.* — *b) Quecksilber* H. an. Med. — *c) salzhaltiger Boden* H. an. — *d) Grewia asiatica* Ratnâv. in Nigh. Pr. — Vgl. चण्डमरुरोषणतन्त्र, मु°.

रोषणता (von रोषण) f. *Geneigtheit zum Zorn, Leidenschaftlichkeit* Çik. 93.

रोषमय (wie oben) adj. *aus Zorn* —, *aus Wuth hervorgegangen*. सृक्तः सर्पयतयस्तीव्रं रोषमयं विषम् Harîv. 2484. तमस् Bhâg. P. 9, 8, 12.

रोषादेप m. in der Rhetorik *eine durch Zorn an den Tag gelegte Erklärung, dass man mit Etwas nicht einverstanden sei*, Kâvyâd. 2, 154. Beispiel Spr. 4590.

रोषावरोह m. N. pr. eines Kriegers auf Seiten der Götter im Kampfe gegen die Asura Kathâs. 48, 17.

रोषिन् (von 1. रुष्) adj. *zornig, wüthend* Harîv. 11935. रोषिभि: (= विषयवासनाज्वालाभि: Nîlak.) st. रोषिभि: die neuere Ausg.

रोष्टृ (wie oben) nom. ag. dass. Bhaṭṭ. 9, 31.

रोह (von 1. रुह्) gaṇa अजादि zu P. 3, 1, 140 (oxyt.). 1) adj. *hinaufsteigend*: °शिक्षिन् Spr. 2486. *reitend auf*: कुस्त्यश्व° R. 2, 91, 58 (कुस्त्यश्वारोह ed. Bomb.). Kathâs. 10, 118. — 2) m. *a)* parox. *Erhebung, Höhe; das Aufsteigen* z. B. von einer kleineren Zahl zu einer grösseren; Gegens. प्रत्यवरोह. रोहावरुहौ: AV. 4, 14, 1. 13, 1, 13. VS. 13, 51. TS. 5, 5, 1, 7. TBr. 1, 1, 2, 2. स्वर्गस्य लोकस्य Ait. Br. 3, 19. Çat. Br. 6, 7, 2, 4. 8, 3, 4, 9. Paṇḍav. Br. 7, 7, 6. पर्याय° Liṭ. 6, 6, 5. 10, 20, 16. Çiksh. Ça. 15, 2, 15. 4, 3. एषां लोकानां रोहेण सवनानां रोह यामातो रोहात्प्रत्यव-

रोहणिकीर्षित: Nir. 7, 23. — *b) das Aufgehen* (eines Samenkorns), *Wachsen:* न तस्य बीजं रोहति रोहकाले MBh. 5, 336. बीजं चैकं रोहमसङ्ख्यमेति *geht tausendfältig auf* 12, 4389. — *c) Spross, Schoss* H. 1118. — Vgl. दू°, भङ्गरोहा, मांसरोहिणी unter मांसरोहिणी.

रोहक (wie eben) nom. ag. = रोहृ (रोढृ) ÇKDa.) Mân. k. 149. 1) *Reiter* MBh. 8, 1486. Vgl. कटि°. — 2) *wachsend;* s. याव°. — 3) m. Bez. *einer Art von Gespenstern* Mân.

रोहग m. N. pr. eines Berges Wilson nach Gaṇiḍ., रोहण ÇKDa. nach ders. Aut.

रोहण (von 1. रुह्) 1) m. N. pr. eines Berges, der Adamspik auf Ceylon Gaṇiḍ. im ÇKDa. Rîâ-Tar. 3, 72. रोहणं सूक्तिरत्नानां वन्दे वृन्दं विपश्चिताम् Verz. d. Oxf. H. 120, *a*, 22. गुरुं वन्दे जगदेण्यं गुणरत्नैकरोहणम् (so ist zu lesen) 187, *b*, No. 428, Çl. 4. Çatr. 10, 167. fg. °पर्वत 126. रोहणाचललाभे रत्नसंपद् इव (संपन्नाः) Sarvadarçanas. 92, 6. — 2) f. ई *Mittel zum Verhelfen* AV. 6, 12, 1. — 3) n. *a) Mittel zum Ersteigen:* दिव: RV. 1, 32, 9. — *b) das Besteigen, Betreten, Reiten, Sitzen, Stehen auf:* क्षोद्रयानक्षत्यग्नेर्वृत्तेरिणेरोहणे Jîân. 1, 131. — *c) das Anlegen, Befestigen:* ज्या° *der Sehne* Verz. d. Oxf. H. 121, *b*, No. 213, Çl. 3. — *d) das Verwachsen, Heilen:* क्षत° MBh. 13, 3189. — *e) das Hervorgehen, Entstehen:* गुणरत्नरोहणभुव: Sin. D. 221, 1. — *f) der männliche Same* Rîâm. im ÇKDa. — Vgl. दू°, पाद°.

रोहणद्रुम m. *Sandelbaum* H. 641. Hall. 2, 389. — Vgl. रोहिण.

रोहत्त m. und रोहत्ती f. (von 1. रुह्) Uṇâdis. 3, 127. m. *ein best. Baum* Uṇâdis. *Baum* überh. Uṇâdivṛ. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa. f. ई *eine best. Schlingpflanze* Uṇâdis. im ÇKDa. *Schlingpflanze* überh. Uṇâdivṛ. im Saṅkshiptas. ebend.

रोहस् (wiederholt) n. *Erhebung, Höhe:* दिव: RV. 6, 71, 6. Çâṅkh. Ça. 3, 25, 13.

रोहसेन m. N. pr. eines Mannes Mṛicch. 22, 24. 150, 6. 166, 1.

रोहाय्, °यति denom. von रोहत्, partic. praes. von 1. रुह्, gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 12.

रोहि Uṇâdis. 4, 118. m. *eine Art Gazelle* (vgl. रोही, रोहित्): महारोहीन् R. ed. Bomb. 3, 68, 32. रोहिणाम 33 (R. Gorr. 73, 33). R. Gorr. 3, 36, 35. = अतिन् Uṇâdivṛ. *Same* und *Baum* Uṇâdis. im ÇKDa.

रौहिण Uṇâdis. 2, 35. 1) adj. *unter dem Sternbilde* Rohiṇî *geboren* P. 4, 3, 37, Sch. unter den Beiww. Vishṇu's Hariv. 14120. — 2) m. *a)* N. pr. eines Mannes gaṇa यस्कादि zu P. 4, 1, 110. pl. *seine Nachkommen* Âçv. Ça. 12, 14. — *b)* Bez. *verschiedener Pflanzen:* = भूतृण, वट und रोहितक Rîâm. im ÇKDa. — Milâvim. 78, 13. 132, 16. — 3) n. Bez. *des 9ten* Muhûrta *des Tages* Uṇâdis. im ÇKDa. — Vgl. रोहिण.

रोहिणि f. = रोहिणी als N. eines Nakshatra Çârdar. im ÇKDa. Varâh. Bṛih. 8. 107, 4.

रोहिणिका (von रोहिणी) f. 1) *ein roth aussehendes Frauenzimmer* Gaṇiḍ. im ÇKDa. — 2) *Hautentzündung* (vgl. रोहिणी) Çârṅg. Saṅh. 1, 7, 79. — Vgl. कटु°.

रोहिणितर्ज n. ved. = रोहिणीतीर्थ P. 6, 3, 64, Sch. TBr. 1, 1, 10, 6.

रोहिणिनन्दन m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. Balarâma MBh. 7, 9222 (रौ° ed. Calc.).

रोहिणिपुत्र m. *der Sohn der* Rohiṇî als N. pr. P. 6, 3, 63.

रोहिणियोग und °योन रोहिणी als N. eines Nakshatra + सेना, m. N. pr. P. 8, 3, 100, Sch. — Vgl. रोहिणीयोग.

रोहिणी s. u. रोहित und रोहिन्.

रोहिणीकान्त m. *der Geliebte der* Rohiṇî, Bein. *des Mondes* Weber, Kṛishṇaj. 296.

रोहिणीचन्द्रव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 31, *b*, 7.

रोहिणीचन्द्रशयन n. desgl. ebend. 40, *b*, 40.

रोहिणीतनय m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. Balarâma Weber, Rimat. Up. 340.

रोहिणीतपस् Titel einer Schrift, Wilson, Sel. Works I, 283.

रोहिणीतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 66, *a*, 10.

रोहिणीत्व n. nom. abstr. von रोहिणी (als N. eines Nakshatra) P. 6, 3, 64, Sch. Çat. Br. 2, 1, 2, 6.

रोहिणीपति m. *der Gatte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Taitt. 1, 1, 86. H. 104.

रोहिणीप्रिय m. *der Geliebte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Ind. St. 2, 261.

रोहिणीभव m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. *der Planet Mercur* Ind. St. 2, 261.

रोहिणीयोग m. *die Conjunction des Mondes mit dem* Nakshatra Rohiṇî Varâh. Bṛih. S. 23, 1. vollständiger चन्द्र° Vasish. 38, 12.

रोहिणीरमण m. 1) *der Gatte der Kuh* d. i. *der Stier* Rîâm. im ÇKDa. — 2) *der Gatte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Git. 3, 10.

रोहिणीवल्लभ m. *der Geliebte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Hall. 1, 42.

रोहिणीव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 12, *b*, 28. Weber, Kṛishṇaj. 234.

रोहिणीश m. *der Herr —, der Gatte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* H. 104, Sch. Hit. 13.

रोहिणीयेण m. N. pr. gaṇa सुयामादि zu P. 8, 3, 98. — Vgl. रोहिणियेण.

रोहिणीसुत m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. *der Planet Mercur* H. 117.

रोहिणेय Taitt. 3, 3. 319 fehlerhaft für रौहिणेय.

रोहिण्यष्टमी f. *der achte Tag in der schwarzen Hälfte des* Bhâdra, *wenn der Mond in Conjunction mit dem* Nakshatra Rohiṇî *steht,* ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 44.

रोहित् Uṇâdis. 1, 99. 1) f. *a) eine rothe Stute* RV. 1, 14, 12. 100, 16. 5, 56, 3. 7, 42, 2. — *b) das Weibchen einer Gazelle* Mân. k. 147. Uṇâdis. VS. 24, 30. 37. TS. 5, 1, 6, 3. तामण्यो भूत्वा रोहितं भूतमभ्येत् (nach Sây. so v. a. सनुमतीम्) Ait. Br. 3, 33. AV. 4, 4, 7. रोहिद्भूता Bhâg. P. 3, 31, 36. Manjuṣ. 22 bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1, 48. 99. — *c)* pl. Bez. *der Flüsse* Naigh. 1, 13. — *d)* pl. Bez. *der Finger* Naigh. 2, 5. — *e) eine best. Schlingpflanze* Mân. Uṇâdis. — 2) m. *a) Sonne* Mân. — *b) ein best. Fisch,* = रोहित. — 3) adj. *roth* Uṇâdivṛ. im Saṅkshiptas. ÇKDa. — Vgl. रोहिद्रश्व und रोहित.

रौहित Uṇâdis. 3, 94. 1) adj. f. रौहिता (nicht zu belegen) und रौहिणी *roth, röthlich* P. 4, 1, 39. Vop. 4, 27. AK. 1, 1, 4, 21. Taitt. 3, 3, 136. fg. H. 1395. an. 3, 221. fg. Mân. p. 74. प्रश्नि RV. 1, 39, 6. 8, 7, 28. वत्स 4, 2, 3. गो AV. 1, 22, 1. 3. वर्ण 2. 5, 23, 4. 6, 83, 2. 12, 1, 11. 13, 4, 24. चर्मन् 14, 2, 23. Kâṭy. Ça. 4, 8, 3. VS. 16, 19. 19, 82. 24, 2. 3. रोहितवर्ष पशवो भूयिष्ठा: Kâṭy. 24, 2. Ait. Br. 3, 24. पियोलिका: Kâç. 116. Çâṅkh. Ça.

4,14,12. Kâṭhaka-Up. 2,1,4. 6,4,1. Kauṣîtaki-Up. in Ind. St. 9,13. Varâh. Bṛh. S. 48,44. So wird auch ein Metrum genannt: रोहितं वै नामैतच्छन्दो यत्पादुच्छेयम् Ait. Br. 5,10. सर्व° Çat. Br. 3,3,4,22. — 2) m. *a) ein rothes Ross, Fuchs:* Agni's Name. 1,15. Çat. Br. 6,6,3,4. रोहितेन त्वाग्निर्देवता गमयतु TS. 1,6,4,3. ṚV. 1,94,10. 134,9. 2,10,2. 3,6,6. 4,6,9. 5,61,9. 8,3,22. Pâraṇ. Gṛh. 14,3,12. Bildlich von *der Sonne* in den Liedern AV. 13,1,1. fgg.; vgl. Kauç. 24. Daher auch Bez. *dieser Lieder* AV. 19,23,23. Kauç. 99. — *b) eine best. Hirschart* AK. 2,5,10. H. 1294. an. 3,289. Med. l. 146. Varâh. Bṛh. S. 86,26. Uttarar. 91,1 (117,4). lebt am Wasser Suçr. 1,204,10. — *c) ein best. Fisch, Cyprinus Rohita Ham.* AK. 1,2,3,19. Trik. 1,2,16. H. 1346. H. an. Med. Hin. 188. Halâj. 3,27. M. 5,16. Jâṭ. 1,177. षड्दन्ता रोहितान्मत्स्यान्वाक्षणेभ्यः (Nîlak.: रोहितान् लोहितभूप्रदेशान् पद्मरागखनिमतो वा मत्स्यान् देशविशेषान्) MBh. 7,2284 = 12,984. R. 3,76,9. Suçr. 1,206,8. 11. Vishṇ. 6,68. झगाघजलसंचारी न गर्वं याति रोहितः Spr. 19. °मत्स्य Varâh. Bṛh. S. 54,15. — *d) ein best. Baum, Andersonia Rohitaka Roxb.* H. an. Med. Suçr. 2,342,3. °वृक्ष Varâh. Bṛh. S. 54,72. — *e) ein best. Perlenschmuck* (क्षौमभेद) H. an. — *f) eine best. unvollkommene Form eines Regenbogens* Varâh. Bṛh. S. 28,16. रोहितेन्द्रधनूंषि M. 1,38. Mârk. P. 48,35; vgl. 4) *a*). — *g)* N. pr. *α)* eines Sohnes des Hariçkandra Ait. Br. 7,14. Çâṅkh. Çr. 15,18,3. Harîv. 756. Bhâg. P. 9,7,3. fgg. °गाथा: Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,3; vgl. रोहिताश्व. — *β)* eines Manu Harîv. 469. — *γ)* eines Sohnes des Kṛshṇa Harîv. 9184. रोहित ed. Calc. — *δ)* eines Sohnes des Vapushmant, Fürsten von Çâlmala, Mârk. P. 53,27. — *ε)* pl. Bez. einer Klasse von Gandharva R. 4,41,60. — *ζ)* pl. Bez. einer Klasse von Göttern unter dem 12ten Manu Mârk. P. 94,33. — *η)* eines Flusses Schiefner, Lebensb. 237 (7). — 3) f. रोहिणी *a)* proparox. *eine röthliche Kuh* (im Veda vielleicht auch *eine röthliche Stute*) ṚV. 8,82,13. 90,13 (wo wir रोहिणया: vermuthen). AV. 13,1,22. fg. Çat. Br. 2,1,2,6. 4,5,2,2. TS. 5,1,6,2. Kâṭh. Çr. 13,4,15. MBh. 3,13260. 13,3669. 3705. 3716. 3720. 4919. *Kuh* überh. AK. 2,9,67. Trik. 2,9,16. H. 1265. an. 3,221. Med. n. 74. Halâj. 2,113. In der Mythologie eine Tochter der Surabhi und Mutter des *Rindes* MBh. 1,2631. fg. R. 3,20,35. fg. Viṣṇ-P. in VP. 150, N. 19. Mutter der Kâmadhenu Kâlikâ-P. im ÇKDa. — *b)* proparox. im AV., sonst oxyt. N. eines Nakshatra (und *des damit verbundenen lunaren Tages*); personif. eine Tochter Daksha's und die bevorzugte Gattin des Mondes, gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. Trik. 3,3,136. fg. H. 109. die *Rothe* benannt nach der Farbe des Hauptsternes, des Aldebaran, Journ. of the Am. Or. S. 6,329. AV. 19,7,2. Çat. Br. 2,1,2,6. 7. 11,1,6,7. TS. 2,3,5,1. TBr. 1,1,2,2. 10, 6. 2,7,2, 4. Ait. Br. 3,33. Âçv. Çr. 2,1,10. Gaṇ. 2,10,3. Weber, Nax. passim; MBh. 1,3767.2,2019.3,2676.16171. 4,238. 9,2018. fgg. 13,3237. Harîv. 3284. 7734. 7955. 12434. 12483. R. 1,1,27. 2,114,2 (125,2 Gorr.). 3,3,11. 35,22. 4,19,30. 5,17,36. 21,9. 31,5. 6,72,42. 59. Çiç. 181. Varâh. Bṛh. S. 6,9. 10. 10,4. 11,54. 12,21. 13,3. 24,12. 28. 31. 36. 26,12. 47,6. 100,1. 102,1. 103,1. Mârk. P. 33,9. 38,10. Vet. in LA. (III) 13,11. Weber, Kṛshṇaj. 225. pl. Varâh. Bṛh. S. 8,19. 26,11. 54,123. 98,6. In der Figur des Sternbildes sieht der Inder einen *Karren* Colebr. Misc. Ess. II, 331. रोहिण्या: शकटम् Spr. 2367. Sûrjas. 8,13. रोहिणीशकट Spr. 2649. Varâh. Bṛh. S. 24,30. Paṇḍat. 50,20. Kuvalaj. 169,b. einen *Tempel* Journ. of the Am. Or. S. 6,329. einen *Fisch* (शकुल) Kâlidâsa im Ritusaṃhâra nach ÇKDa. — *c) Blitz* Med. — *d) ein junges Mädchen, das eben die Regeln bekommen hat*, Spr. 282. Gaṇḍakaṣûc. 2,35. *ein neunjähriges Mädchen* 39. — *e) Halsentzündung in verschiedenen Formen* H. 467. H. an. Med. Wils 310. Suçr. 1,32,1. 92,13. 306,14. 20. 2,130,14. Çârṅg. Saṃh. 1,7,73. — *f)* Bez. verschiedener Pflanzen: *eine best. Gemüsepflanze* Suçr. 1,74,8. 141,14. 157,16. 2,11,21. = कटुरोहिणी H. an. = कर्कोटा (?) Med. vulgo काण्टाशिरीष Ratnam. 162. = सोमवल्क H. an. Med. = काश्मरी, हरीतकी und मञ्जिष्ठा Râgân. im ÇKDa. = कपिलवर्णा वर्तुलाकारा विरेचने प्रशस्ता हरीतकी Râéav. ebend. रोहिणीतरु Kâtyâs. 59,27. Könnte in dieser Bed. auch als f. von रोहिन् gefasst werden; vgl. अशोक°, कटु°, कटुक°, कन्द°, पीत°, भद्र°, मांस°. — *g)* N. pr. *α)* einer Gattin Vasudeva's und Mutter Balarâma's MBh. 1,7308. Harîv. 1947. 1932. 3165. 3305. fgg. 3371. fgg. VP. 498. Bhâg. P. 9,24,44. fg. Weber, Kṛshṇaj. 281. 283. fgg. 289. fgg. — *β)* einer Gattin Kṛshṇa's Harîv. 6701. VP. 578. — *γ)* der Gattin Mahâdeva's VP. 59. Mârk. P. 52,10. — *δ)* einer Tochter Hiraṇjakaçipu's MBh. 3,14194. — *ε)* einer der 16 Vidjâdevî H. 239. — *h)* adj. oxyt. *unter dem* Nakshatra Rohiṇî *geboren* P. 4,3,34, Vârtt. 1. — 4) n. *a) eine best. unvollkommene Form eines Regenbogens* AK. 1,1,2,12. H. 179. an. 3,289. Med. l. 146. Halâj. 1,57. Varâh. Bṛh. S. 47,20; vgl. 2) *f*). — *b) Blut.* — *c) Saffran* Med. — Vgl. कर्कन्धु°, धूम°, लोहित, रुधिर und रोहिस.

रोहितक 1) m. *a)* N. eines Baumes, *Andersonia Rohitaka Roxb.* AK. 2,4,2,29. Ratnam. 153. Kâṭ. Çr. 6,1,9, v. l. Suçr. 2,72,16. — *b)* pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 3,15256. — *c)* N. pr. eines Flusses Schiefner, Lebensb. 265 (35). — *d)* N. eines Stûpa Hiouen-thsang I, 140. hier könnte der Name auch लोहितक lauten. — 2) f. रोहितिका *ein rothaussehendes Frauenzimmer* Gaṇiṇ. im ÇKDa. — Vgl. रोहीतक.

रोहितकारण्य n. Rohitaka-*Wald*, N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 5,599.

रोहितकूल N. pr. einer Oertlichkeit Paṇḍat. Bh. 14,3,12.

रोहितकूलीय n. N. eines Sâman Paṇḍat. Bh. 14,3,11. 15,11,6. Liṭ. 6,11,4. इन्द्रस्य रोहितकूलीयम् Ind. St. 3,208,b. उत्तर रो°, रोहितकूलीयाग्र n. und रोहितकूलीयोत्तर n. 232,a.

रोहितगिरि m. N. pr. eines *Gebirges*; davon °गिरीय m. pl. *die Bewohner dieses Gebirges* P. 4,3,91, Sch.

रोहितपुर n. N. der von Rohitaka, dem Sohne Hariçkandra's, gegründeten *Stadt* Harîv. 756.

रोहितवत् adj. *ein rothes Ross habend* Liṭ. 1,4,4.

रोहितवस्तु N. pr. einer Oertlichkeit Lalit. 380.

रोहितात adj. *rothängig* R. 5,14,4.

रोहिताक्ष adj. *rothscheckig* VS. 29,59.

रोहितायन m. patron.; pl. Saṃgr. K. 186,a,10. wohl fehlerhaft für रो° oder रोहिणायना:.

रोहिताश्व 1) adj. *rothe Rosse habend.* — 2) m. *a) der Gott des Feuers,*

Feuer AK. 1,1,1,50. H. 1099. Med. v. 63. Halâj. 1,64. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Hariçkandra Med. VP. 373; vgl. रोहित 2) *g*) α). — Vgl. रोहिदश्व.

रोहितास्य Mâns. P. 8,58 wohl fehlerhaft für रोहितास्य 2) *b*).

रोहितेष m. = रोहितक 1) *a*) Ratnam. bei Buan. zu AK. ÇKDa.

रोहितैतन adj. *rothbunt* TS. 7,3,13,1. — Vgl. लोहितैतन.

रोहिदश्व adj. *mit rothen Stuten fahrend:* Agni ṚV. 1,45,2. 4,1,8. 8,43,16. 10,7,4 (wo voc. zu vermuthen ist). 98,9. VS. 11,72. — Vgl. रोहिदश्व.

रोहिन् (von 1. रुह्) 1) adj. *aufgehend* Nir. 6,17. *in die Höhe geschossen, lang:* नैव ह्रस्वा न महती न कृशा नापि रोहिणी (नातिरो° ed. Bomb., = नातिरक्ता Nilak.) MBh. 2,2173. *wachsend:* यकृष्ट° Ragh. 14, 77. नगेन्द्रवन° R. 5,5,20. *wachsend* so v. a. *an Zahl zunehmend* Ind. St. 1,107. 113. fg. — 2) m. N. verschiedener Bäume: *Andersonia Rohitaka* Roxb. AK. 2,4,2,29. H. an. 2,282. Med. n. 118. *der indische Feigenbaum* (वट) und *Ficus religiosa* H. an. Med. — 3) f. hierher vielleicht die u. रोहित 3) *f*) verzeichneten Pflanzennamen. — Vgl. आगत°, निपत्यरोहिणी (wohl *fallend und wieder steigend* als N. einer Pflanze).

रोहिष् f. = रोहित् 1) *b*) Abhinanda bei Uçânas. zu Unâdis. 1,48. = रोहिष Colebr. und Lois. zu AK. 2,5,10; vgl. रोहिष्.

रोहिष m. 1) *eine best. Grasart* H. 1191, v. l. H. an. 3,742 (= कत्तृण). Suçr. 2, 207, 6. 379, 12. = पूतीका: Schol. zu Kâtj. Çr. 1087, 5. — — 2) *ein best. Fisch.* — 3) *eine Gazellenart* H. an. — Vgl. रोहिष und दीर्घरोहिषक.

रोहिष्यै ved. infin. von 1. रुह् zum *Wachsthum* P. 3,4,10. TS. 1,3, 10,2. ist dat. eines nom. act. रोहिषी oder रोहिषि; vgl. अव्यथिष्यै.

रोही f. 1) = रोहित् *das Weibchen einer Gazelle* MBh. 3,16172. रोही (= कृष्णी Nilak.) ed. Bomb.; vgl. रोहि. — 2) N. pr. eines Flusses MBh. 6,338 (VP. 184).

रोहीतक 1) m. = रोहितक *Andersonia Rohitaka* Roxb. Râgân. im ÇKDa. Vaṇîn. Bṛh. S. 54, 68. 79. 84. — 2) n. N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 2, 1186. nach Nilak. N. pr. eines Berges. N. pr. eines festen Platzes an der Grenze von Multân: قلعة روهيتك بالقرب من حدود الملتان Albyrouny bei Reinaud, Mém. sur l'Inde 370. — Vgl. रोहीत, रोहीतक.

रौक्म (von रुक्म) adj. (f. ई) *golden, mit Gold versiert* M. 4,26. MBh. 3,3045. 7,76. 13,6381. 14,2093. Hariv. 7893. R. 5,14,42. 7,16,2. Râgat. 8,3469. Bhâg. P. 4,9,61. 10,1,30.

रौक्मिणेय m. metron. von रुक्मिणी gaṇa प्रथादि zu P. 4,1,123. Bez. Pradjumna's MBh. 1,6997. 7914. 2,129. 5,1881. 7,4260. 13,616. 7407. 16,157. Hariv. 6718.

रौक्मक m. patron.; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,4.

रौक्मायण m. desgl.; pl. ebend. 60,32.

रौक्ष (von रूक्ष) n. *Dürre, Trockenheit, Magerkeit* Jâḍ. 3,76. Suçr. 1, 20,18. 117,20. 148,19. 154,12. 14. 2,14,10. *Rauhheit, Härte* in übertr. Bed.: विप्रस्य MBh. 13,1625 रौक्ष्म ed. Calc.). प्रतिषेध° Ragh. 5,58. मृत्यु° 14,88. रौक्ष्य: bei Uçânas. zu Unâdis. 3,66 wohl fehlerhaft für रूक्ष्य: nom. pl. fem.

रौचनिक adj. (f. ई) *mit* Rocanâ *gefärbt, die Farbe der* R. *habend* P. 4,2,2. रुच् Kâç. 3,45.

रौच्य 1) m. *a*) *ein Stab aus* Bilva-*Holz* H. 815 (nach dem Comm. von रुच्य = बिल्व). — *b*) patron. (von रुचि) des 13ten Manu Hariv. 410. 490. VP. 269. Mârk. P. 53,8 (pl.!). 94,27. 97,20. 98,7. des 9ten VP. 268, N. 1. — 2) adj. von 1) *b*): मन्वन्तर Mârk. P. 100,39.

रौट्, रौटति = रोड् Vop. in Dhâtup. 9,72.

रोड्, रौडति (अनादरे) Dhâtup. 9,72.

रौढीय (wohl von ब्रूढि) m. pl. N. einer grammatischen Schule: पाणिनीय° Siddh. K. 235,*b*,1 v. u. — Vgl. घृत°.

रौद्र und रौद्र (VS. Çat. Br.) 1) adj. (f. आ und ई) *dem oder den* Rudra *gehörig u. s. w.,* Rudra-*ähnlich, ungestüm, wild, furchtbar* AK. 1,1,3, 20. = भीष्म (भीषण) und तीव्र H. an. 2,450. Med. r. 81. Agni ṚV. 10, 3,1. die Açvin (heissen auch रुद्र) 61,15. अक्षन् 1. अनीक VS. 5,34. TS. 2,1,2,2. Çat. Br. 5,2,4,11. पशव: 6,3,2,7. कर्मन् 3,1,4,15. 42. स्रुच् Çâṅkh. Çr. 14,37,13. Kâtj. Çr. 5,10,2. यज्ञ von Rudra *kommend* MBh. 3,11985. 12238. 12240. R. 1,36,6 (37,5 Gorr.). Kathâs. 30,56. चक्षुस् MBh. 4,472. R. 1,25,12. मातर: MBh. 9,2656. बलि Rudra *geltend* R. 2,56,27. सूक्त an R. *gerichtet* Sây. zu ṚV. 1,114,6. नदी *nach* R. *benannt* Verz. d. Oxf. H. 63,*a*,2. शक्ति 23,*a*, N. 5. 81,*a*,41. 104,*b*,12. 184,*a*,9. घरणपराक् *furchtbar* MBh. 3,2420. पूर्णपात्रा 15900. 16139. 3,1498. 12, 10308. 14,210. R. 1,14,33. 35,18. 2,25,15. 3,50,28. 73,1. 36. 4,5,20. 6,8,16. 108,35. Spr. 168. Kathâs. 18,96. 61,39. Mârk. P. 45,19. Paṇḍar. 1,14,29. Paṇḍat. 216,9. कर्मन् MBh. 10,305. 13,2067. Spr. 2769. Paṇḍat. III, 141. MBh. 3,14271. fg. 14275. क्षत्रियधर्म 4,1850. संध्या 3,336. नदी 7,502. Hariv. 9336. यातना MBh. 13,6675. रूप R. 1,36,17. R. Gorr. 1, 3,26. बुद्धि 3,13,20. श्मशान Spr. 805. गण Vaṇîn. Bṛh. S. 46,19. 23. Paṇḍar. 1,6,60. Verz. d. Oxf. H. 76,*b*, No. 124. Prasn. 74,5. कालस्य गति: Bhâg. P. 1,14,3. °दंष्ट्र 6,9,16. Sin. D. 76,2. मुहूर्त Weber, Gjot. 27. MBh. 1,6028. 3,14268. Verz. d. B. H. No. 912. तारा so v. a. *Unglück verheissend, — bringend* R. 3,35,32. Vaṇîn. Bṛh. S. 86,16. als रुद्र in poetischen Compositionen AK. 1,1,2,17. H. 294. H. an. Med. Halâj. 1,92. R. 1,4,7 (3,46 Gorr.). Sin. D. 232. Prabodhâk. 10,*a*,8. 59, *a*,9. 60,*a*,5. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,24. रौद्रम् adv. *auf eine furchtbare Weise:* घतीव हसते रौद्रम् MBh. 13,749. — 2) m. patron. *ein Sprössling* Rudra's MBh. 1,3431. 3,14632. — 3) m. *Verehrer des* Rudra Verz. d. Oxf. H. 248,*a*,7. Wilson, Sel. Works I, 17. — 4) adj. in Verbindung mit गण oder subst. m. pl. Bez. *best. böser Geister* Hariv. 12869. Verz. d. Oxf. H. 59,*a*,4. H. 1362, Sch. — 5) *Hitze,* m. Med. n. Halâj. 1,40. रौद्रेणाकुलित: Hit. 115,1, v. l. — 6) m. *die kalte Jahreszeit* H. 156. — 7) m. ein N. Jama's Dhan. im ÇKDa. — 8) m. Bez. *des 54ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vaṇîn. Bṛh. S. 8,48. fg. Verz. d. Oxf. H. 332, *b*,6. — 9) m. Bez. *eines best.* Ketu Vaṇîn. Bṛh. S. 11,32. — 10) n. Bez. *des unter* Rudra *stehenden* Nakshatra Ârdrâ Weber, Gjot. 34. Nax. 1,309. Vaṇîn. Bṛh. S. 4,7. 7,8. 10,5. 15,4. 23,9. 102,2. रौद्रर्क्ष n. dass. 101,3. Sûrjas. 9,14. रौद्री f. dass. H. 110. m. (wohl fehlerhaft) Mârk. P. 58,15. — 11) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 14,2476. — 12) f. ई *a*) ein N. der Gaurî H. an. Med. — *b*) *eine best. Pflanze,* = रुद्रजटा Râgân. im ÇKDa. — *c*) Titel eines von Rudrabhaṭṭâkârja

verfassten Commentars Hall 74. — 13) n. *a*) *wildes —, furchtbares Wesen* Suçr. 1,336,1. इत्याक्रन्दन्मौद्रः Kathâs. 56,27. — *b*) N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 44,*a*,6 v. u. — *c*) N. eines Sâman Ind. St. 3,231,*b*. Kaiṇḍ. Up. 2,24,7. — Vgl. महा° (adj. auch MBu. 12,4373. Kathâs. 25, 228), सोमा°.

रौद्रक = रुद्रेण कृतम् (संज्ञायाम्) gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

1. रौद्रकर्मन् n. *eine Furchtbares bezweckende Zauberhandlung* Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,27.

2. रौद्रकर्मन् 1) adj. *Furchtbares vollbringend* MBu. 10, 305. R. 3,57, 32. 5,23,11. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBu. 1, 2739. 4551. — Vgl. प्रति°.

रौद्रकर्मिन् adj. = 2. रौद्रकर्मन् 1) MBu. 1,2545. 3,14486.

रौद्रता f. *wildes —, furchtbares Wesen, Furchtbarkeit* R. 3, 13, 4. 7, 62,3. Milatin. 77,7.

रौद्रपाद scheint N. eines Nakshatra zu sein, = रौद्र = आर्द्रा Kâsikâ. 12,17.

रौद्रमनस् adj. *wilden Sinnes:* सुरा पीत्वा रौद्रमनाः Çat. Br. 12,7,3,20.

रौद्राग्न adj. zu Rudra und Agni *in Beziehung stehend* Âçv. Çr. 2,17,18.

रौद्राणी in °स्तोत्र Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,17 wohl fehlerhaft für रुद्राणी.

रौद्रायण m. patron. von रुद्र; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,5.

रौद्राश्व m. N. pr. eines Sohnes oder entfernteren Nachkommen Pûru's MBu. 1,3695. 3698. Harîv. 1658. VP. 447. Bhâg. P. 9,20,3. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. B. H. 122,12. 126,3.

रौद्रि m. patron. von रुद्र Harîv. 7219.

रौद्रीभाव m. Rudra's (Çiva's) *Charakter* MBu. 3,15824.

रौध m. patron. von रोध gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

रौधादिक adj. *zu der mit* रुध् *beginnenden Klasse von Wurzeln* d. i. *zur 7ten Klasse gehörig* P. 3,2,56, Sch.

रौधिर (von रुधिर) adj. *aus Blut bestehend:* द्रव् MBu. 1,378. 3,10204. *von Blut stammend* Suçr. 1,10,21.

रौप्य (von रूप्य) 1) adj. *silbern* Jâtâs. 1,204. MBu. 8,1407. R. Gorr. 2,13,22. 4,25,32. 5,13,12. Suçr. 2, 136, 15. Bhâg. P. 4, 25, 14. Weber, Kṛshṇaj. 278. Naish. 22,53. — 2) f. आ N. pr. einer Oertlichkeit MBu. 3,10819. — 3) n. *Silber* Râgân. im ÇKDa. Gâruḍa-P. 188 ebend. Weber, Kṛshṇaj. 283. Verz. d. Oxf. H. 35,*b*,31. Verz. d. B. H. No. 994. — Unbestimmt ob adj. *silbern* oder n. *Silber:* °भाषक M. 8,135. R. 3,48,12. Çiç. 4,67. Kathâs. 18,47.

रौप्यमय (von रौप्य) adj. (f. ई) *silbern* Harîv. 7882. Râga-Tar. 5,46. Weber, Kṛshṇaj. 299. रौप्यकमयानि MBu. 13,3247. रौप्यापसरिरण्मये: Bhâg. P. 3,2,3.

रौप्यायण m. patron.; pl. Saṅgh. K. 183,*b*,5.

रौप्यायणि m. patron. von रूप्य gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

रौम 1) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 3,54. — 2) n. *eine Art Salz*, = रौमक Râmâçrama zu AK. 2,9,42 nach ÇKDa.

रौमक 1) adj. oxyt. von रौमक (einem उदीच्यग्राम) gaṇa पलक्ष्यादि zu P. 4,2,110. *römisch*, von *den Bewohnern des Römerreichs gesprochen* Colebr. Misc. Ess. 1,315. vom *Astronomen* Romaka *herrührend:* गणित Verz. d. B. H. No. 939. — 2) n. (von रुमा) *eine Art Salz* AK. 2, 9, 42. H. 942. Med. k. 152 (wo वसुकं रौ° zu lesen ist). °लवण Ratnam. im ÇKDa.

रौमकीय adj. von रौमक gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

रौमण्य adj. von रौमन् gaṇa सैकशादि zu P. 4,2,80.

रौमशीय adj. von रौमश gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

रौमरुर्पाणक adj. (f. °णिका) von Romaharshaṇa *verfasst* Bhâg. P. 1, Einl. xxxvii.

रौमरुर्पायणि (von रौमरुर्पायण) m. patron. Sûta's Bhâg. P. 1,2,1. Verz. d. Oxf. H. 12,*a*,3. fehlerhaft रौ° 9,*b*,26. 39,*a*,36. रौमरुर्षिणि 9,*b*,13.

रौमायण adj. von रौमन् gaṇa पत्यादि zu P. 4,2,80.

रौम्य m. pl. Bez. best. böser Geister im Dienste Çiva's MBu. 12,10308.

रौरव 1) adj. *a*) von *der* रुरु *genannten Hirschart stammend* Âçv. Gṛhj. 1,19,10. Kauç. 57. Gobh. 2,10,6. M. 2,41. 3,269. Jâtâs. 1,258. MBu. 1,7124. 13,4346. Râgat. 3,31. Uttarar. 82,8 (105,11). Bhâg. P. 1, 18,27. — *b*) *furchtbar* Taitt. S. 3,3,420. H. an. 3,710. Med. y. 49. Çârdar. im ÇKDa. *unstät* und *betrügerisch* Çârdar. — 2) m. *a*) N. einer Hölle AK. 1,2,3,1. Taitt. H. an. Med. M. 4,88. Jâtâs. 3,222. MBu. 13, 4825. R. 7,21,13. Buan. Intr. 201. VP. 207. Bhâg. P. 3, 30, 29. 5,26,7. 10. fg. Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,13. Mârk. P. 8,218. 10,80. fgg. 13,32. zeugt Duḥkha mit Vedanâ 30, 31. — *b*) N. des 8ten Kalpa; s. u. वत्स्य 2) *d*). — 3) n. *a*) oxyt. *die Frucht von* रुरु gaṇa प्रत्यादि zu P. 4,3,118. — *b*) N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,231,*b*. Ait. Br. 3,17. Pañkav. Br. 7,5,7. 12,4,23. Liṭ. 7,2,1. अग्ने रौरवम् Ind. St. 3,201,*a*. — Vgl. महा° (in der ersten Bed. auch Mârk. P. 8,218).

रौरवक = रुरुणा कृतम् (संज्ञायाम्) gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

रौरुकिन् m. pl. *die Schule des* Ruruka: रौरुकिब्राह्मण Gobh. 3,2,5. Liṭ. 2,3,1. रौरुकिशाखा Schol. zu Pañkav. Br. 1,4,1.

रौशर्मन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 314,*b*, No. 746.

रौहिक adj. = रुरु इव gaṇa मद्रादि zu P. 5,3,108.

रौहिण 1) adj. *unter dem* Nakshatra Rohiṇî *geboren* P. 4,3,37, Sch. — 2) m. *a*) *Sandelbaum* Taitt. 2,6,39. Hâr. 183. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,55. MBu. 1,1381 (nach Nîlak. = वट *der indische Feigenbaum*). Harîv. 9002. — *b*) (sc. पुरोडाश) Bez. *best. Opferfladen beim* Pravargja Çat. Br. 14,1,3,17. 3,1. 20. 2,1,1. 3,41. Kâtj. Çr. 2,3,3. 4,6,14. 26,1, 20. 4,6. Liṭ. 1,6,35. — *c*) Bez. eines Agni Çat. Br. 2,1,3,13. — *d*) N. pr. eines von Indra besiegten Damons ṚV. 1,103,2. 2,12,12. AV. 20, 129, 12. Daher so v. a. मेघ *Wolke* Naigh. 1, 10. — *e*) N. pr. eines Mannes Âçv. Çr. 12, 14. mit dem patron. वासिष्ठ Taitt. Âr. 1,12,3. — *f*) pl. N. einer grammatischen Schule: पाणिनीयरौहिणाः P. 6,2, 36, Sch. — 3) n. *a*) Bez. *des 9ten* Muhûrta *des Tages* Çâṅkhâjan. im ÇKDa. — *b*) इन्द्रस्य राजनरौहिणे und धातू रौहिणाम् Namen von Sâman Ind. St. 3,208,*b*. — Vgl. महा° und रौहिण.

रौहिणक n. Name eines Sâman Liṭ. 1,6,35.

रौहिणायन (von रौहिण) m. patron. gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. des Prijavrata Çat. Br. 10,3,5,14. 14,5,5,20. 7,5,25. VS. App. LVI, 12. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,22.

रौहिणि m. patron.: रौहिणेरर्कस्य राजनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,208,*b*.

रौहिणिनन्दन MBh. 7,8222 fehlerhaft für रो°, wie die ed. Bomb. liest.

रौहिणेय 1) m. metron. von रोहिणी gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. a) *Kalb (der Kuh)* Trik. 3,3,319 (fälschlich रो° gedr.). H. an. 4,229. Med. j. 126. — b) Bez. Balarâma's AK. 1,1,1,19. Trik. H. 224. H. an. Med. Halâj. 1,29. MBh. 1,7148. 5,4. 7,8220. Hariv. 3374. Pańḱar. 4,3,128. — c) *der Planet Mercur* AK. 1,1,2,27. Trik. 3,3,219. 319. H. 117, Sch. H. an. Med. Halâj. 1,46. — 2) n. *Smaragd* Râǵan. im ÇKDr.

रौहिणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,b,17.

रौहिण्य m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,a,9.

रौहित 1) adj. a) *vom Thiere oder Fische* रोहित *stammend* Suçr. 2,2,339,11. — b) *zum* Manu Rohita *in Beziehung stehend:* अन्तर Hariv. 468. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Hariv. 9184. रोहित die neuere Ausg. und Langlois.

रौहितक adj. *aus dem Holze der Andersonia Rohitaka gemacht* Kâtj. Çr. 6,1,9.

रौहित्यायनि m. patron. Saṁsk. K. 184,a,10.

रौहिदश्व m. patron. des Vasumanas ṚV. Anukr.

रौहिष् m. = रौहिष *eine Hirschart:* स एव रौहिषां मध्ये चरति Cit. aus Bhavabh. bei Bhar. zu AK. ÇKDr. — Vgl. रोहिष्.

रौहिष Uṇâdis. 1,48. 1) m. a) *eine Hirschart* AK. 2,5,10. H. 1294. Med. sh. 44. Saṁsârâv. bei Uǵǵval. — b) *ein best. Fisch,* = रोहित Aǵajap. im ÇKDr. — 2) f. ई a) *das Weibchen von der Hirschart* रौहिष. — b) *Schlingpflanze* (लता) Uǵǵval. = दूर्वा Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. ÇKDr. — 3) n. *eine best. Grasart,* = कत्तृण AK. 2,4,8,32. H. 1191. H. an. Med. Saṁsârâv. a. a. O. — Vgl. रोहिष.

रौही f. *das Weibchen einer best. Hirschart* MBh. 3,16172 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Mârk. P. 74,11.14. — Vgl. रोहि und रोही.

रौहीत N. pr. eines Landes: °देश Râǵa-Tar. 4,12. — Vgl. रोहीतक.

रौहीतक 1) adj. a) *von der Andersonia Rohitaka stammend, aus ihr gemacht* gaṇa रजतादि zu P. 4,3,154. Kâtj. Çr. 6,1,9, v. l. इध्म Schol. zu 1,3,18. — b) *aus der Gegend* Rohita *stammend* Râǵa-Tar. 4,11. — 2) m. = रोहीतक *Andersonia Rohitaka* MBh. 3,12361.

रौहेय adj. von रोह gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

ल

ल m. 1) ein N. Indra's Taik. 1,1,57. Med. l. 1. — 2) *cutting* Wilson nach Çabdan.

लक्, लार्कयति (आस्वादने) Dhâtup. 33,63, v. l.

लक n. 1) *the forehead.* — 2) *the ear or spike of wild rice* Çabdâtnan. bei Wilson.

लकच m. = लकुच Çabdan. im ÇKDa.

लकार् m. 1) *der Buchstab* ल AV. Prât. 1,5. 39. 46 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 97, *a*, *b*. घनुकूलां विमलाङ्गीं कुलजां कुशलां सुशीलसंपन्नाम् । प-ञ्चलकारां भार्यां पुरुषः पुण्योदयाल्लभते ॥ Prasâdâbdh. 13,*b*. — 2) *der gemeinschaftliche Name für alle Tempora und Modi* (vgl. P. 3,4,77), *verbum finitum* Verz. d. Oxf. H. 177,*a*, N. 1. °विशेषार्थनिरूपण 177,*a*,26. लकारार्थप्रक्रिया 163,*a*, No. 388. 164,*b*, No. 363. 165,*b*, No. 367. Verz. d. B. H. No. 736. °वाद Hall 59.

लकुच m. *Artocarpus Lacucha Roxb.*, ein Baum, der zähen Milchsaft reichlich enthält; n. *die Frucht* AK. 2,4,2,41. MBh. 1,7585. 3,11868. Hariv. 12678. Suçr. 1, 39, 6. 74,15. 157, 5. 210, 17. Vîsnu. 6, 141. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 55, 4. 10. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,28.

लकुट m. = लगुड *Knüttel* Schol. zu Kiṭ. Ça. 666,6.

लकुटिन् adj. *mit einem Knüttel versehen* R. 7,23,4,36. Mâṛk. P. 8, 122. 169.

लकुल gaṇa बलादि zu P. 4,2,80.

लकुलिन् m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 33,*b*,32.

लकुल्य adj. von लकुल gaṇa बलादि zu P. 4,2,80.

लक्कक m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,434. 453. 457.

लक्क s. गूध°.

लक्कक m. 1) *Lappen, Läppchen,* = नक्कक AK. 2, 6, 2, 16. Suçr. 1, 36, 5. 2, 181, 13. — 2) = घलक्कक Çabdan. im ÇKDa. scheinbar R. Gorr. 2,60,16 und Kaṭuṣ. 3,71, wo aber प्रकृत्याल° und वामस्यलक्ककम् zu lesen ist.

लक्ककर्मन् m. *eine Abart des* Lodhra (रक्तवर्णलोध्र) Çabdâ. im ÇKDa.

लक्कनचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1174.

लक्, लक्कते *bemerken, wahrnehmen:* स्वभर्तुरवनायमलक्कमाणो Buic. P. 3,16,12. *betrachten:* सर्वत्र तत्र तामेव कन्यां ज्ञातामलक्कत । दिवाप्य-काण्डप्रतिपद्मन्दलेखामिवोदिताम् Kaṭuṣ. 34,17. — Vgl. लक्ष्, worauf diese secundäre Wurzel zurückzuführen ist.

लक्त (von लग्; vgl. लक्ष्मन्, लक्ष्मी) 1) *ein ausgesetzter (angehefteter) Preis:* सुप्रीत्र यो त्रिगीवा लक्तमाददे (= लक्ष्यम् Sây.) ṚV. 2, 12, 4. लक्ष्य° adj. *der den Preis —, den Sieg davongetragen hat; bewährt, erprobt:* यमकृण्वन्धलक्तास्ते (मघोनाः) रुद्रे MBh. 4, 241. Hariv. 5122. Kaṭuṣ. 62,9. नागा रणे MBh. 7, 1335. मचिवाः M. 7,54. — 2) *Zeichen, Mal:* षड्भिर्लक्तैश्च तां सर्वां (गां) लक्तयामास MBh. 3,14852. नखलक्त° Kâmâṇ. 15. — 3) n. *Ziel, Zielpunkt* AK. 2, 8, 2, 54. Trik. 3, 3, 440. H. 777. an. 2, 570. Med. sh. 23. Spr. 1910. दृष्टलक्तभिद्: (°लक्ष्य° ed. Calc.) Râgn. 1, 61. चरन्धिरेषु लक्तेषु बाणसिद्धिः Kâm. Nîtis. 14, 28 (लक्ष्येषु 27). सिद्ध-लक्तेण बाणेन Kaṭuṣ. 112,56. आकाशे लक्तं बद्ध्वा *sein Ziel auf den Luftraum richtend* so v. a. *ohne bestimmtes Ziel in's Blaue schiessend* Çiç. 31,7, v. l. आकाशबद्धलक्त Vîkr. 54,4. °भूता vielleicht so v. a. von *Allen gesucht* Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,26. स्थूल° adj. *grosse Ziele verfolgend* Jâtâ. 1,208. nach den Erklärern *freigebig* oder *kenntnissreich;* v. l. °लक्ष्य; vgl. स्थूललक्षिता, स्थूललक्ष्य. — 4) *hunderttausend,* nach den Lexicographen f. und n.; zu belegen nur n. und m. AK. 2,6,2,24. Trik. 3,3,440. 5,20. H. 873. H. an. Med. Siddh. K. 230,*b*,10. एकोनत्रिंशल्ल-क्षाणि Jâtâ. 3,101. लक्षान्तरे Śâk. Spr. 835. 1626. 1666. 1910. लक्षेश 1626. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 77,17. 80,12. Kaṭuṣ. 8,13. 33,10. Paṇḍar. 235,23. Hit. 115,4. रूपं लक्षं रथानाम् Hariv. 13909. Spr. 1363. Kaṭuṣ. 43,109. 44, 131. 46, 244. 115, 9. Râǵa-Tar. 4,242. 415. fg. 5, 127. 142. Buic. P. 5, 21,7. 6,17,2. Mâṛk. P. 54,8. सुवर्णस्य Kaṭuṣ. 5,113. ब्रह्माण्डलक्षै: Spr. 4000. Gîr. 3,16. Kaṭuṣ. 8,2. 34,67. Râǵa-Tar. 3,337. 4,494. Kâmâṇ. 43. Ind. St. 3,251. सुवर्ण° Kaṭuṣ. 12,9. 21,87. 35,23. लक्षं नरहिषान् MBh. 8,3668. लक्षै: सुन्दरमन्दिरैः Paṇḍar. 1, 11, 16. 2,2,39. द्वात्रिंशल्ल-क्षोद्गतानाम् Buic. P. 5, 20, 24. दशलक्षं सुवर्णम् Paṇḍar. 1, 4, 51. लक्ष-स्वर्णम् 11,26. लक्ष्मीं च निश्चलां लक्षपौरुषीम् 8,32. °श्लोकमिदं शास्त्रम् 2,1,20. लक्षलक्षै: 1,7,34. शतलक्षम् 2,2,29. °पूजनोद्यापनविधि Verz. d. Oxf. H. 284,*a*,23. °पूजामाहात्म्य 30,*a*,11. Verz. d. B. H. No. 466. त्रयो

रौहिणिनन्दन MBh. 7,8222 fehlerhaft für रो°, wie die ed. Bomb. liest.

रौहिणेय 1) m. metron. von रोहिणी gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. a) *Kalb (der Kuh)* Trik. 3,3,319 (fälschlich रो° gedr.). H. an. 4,229. Med. j. 126. — b) Bez. Balarâma's AK. 1,1,1,19. Trik. H. 224. H. an. Med. Halâj. 1,29. MBh. 1,7148. 5,4. 7,8220. Hariv. 3374. Pańḱar. 4,3,128. — c) *der Planet Mercur* AK. 1,1,2,27. Trik. 3,3,219. 319. H. 117, Sch. H. an. Med. Halâj. 1,46. — 2) n. *Smaragd* Râǵan. im ÇKDr.

रौहिणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,b,17.

रौहिण्य m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,a,9.

रौहित 1) adj. a) *vom Thiere oder Fische* रोहित *stammend* Suçr. 2,2,339,11. — b) *zum* Manu Rohita *in Beziehung stehend:* अन्तर Hariv. 468. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Hariv. 9184. रोहित die neuere Ausg. und Langlois.

रौहितक adj. *aus dem Holze der Andersonia Rohitaka gemacht* Kâtj. Çr. 4,1,9.

रौहित्यायनि m. patron. Saṁsk. K. 184,a,10.

रौहिदश्व m. patron. des Vasumanas ṚV. Anukr.

रौहिष् m. = रौहिष *eine Hirschart:* स एव रौहिषां मध्ये चरति Cit. aus Bhavabh. bei Bhar. zu AK. ÇKDr. — Vgl. रोहिष्.

रौहिष Uṇâdis. 1,48. 1) m. a) *eine Hirschart* AK. 2,5,10. H. 1294. Med. sh. 44. Saṁsârâv. bei Uǵǵval. — b) *ein best. Fisch,* = रोहित Aǵajap. im ÇKDr. — 2) f. ई a) *das Weibchen von der Hirschart* रौहिष. — b) *Schlingpflanze* (लता) Uǵǵval. = दूर्वा Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. ÇKDr. — 3) n. *eine best. Grasart,* = कत्तृण AK. 2,4,5,32. H. 1191. H. an. Med. Saṁsârâv. a. a. O. — Vgl. रोहिष.

रौही f. *das Weibchen einer best. Hirschart* MBh. 3,16172 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Mârk. P. 74,11.14. — Vgl. रोहि und रोही.

रौहीत N. pr. eines Landes: °देश Râǵa-Tar. 4,12. — Vgl. रोहीतक.

रौहीतक 1) adj. a) *von der Andersonia Rohitaka stammend, aus ihr gemacht* gaṇa रजतादि zu P. 4,3,154. Kâtj. Çr. 6,1,9, v. l. इध्म Schol. zu 1,3,18. — b) *aus der Gegend* Rohita *stammend* Râǵa-Tar. 4,11. — 2) m. = रोहीतक *Andersonia Rohitaka* MBh. 3,12361.

रौहेय adj. von रोह gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

ल

ल m. 1) ein N. Indra's Trik. 1,1,37. Med. l. 1. — 2) *cutting* Wilson nach Çabdar.

लक्, लार्कयति (आस्वादने) Dhâtup. 33,63, v. l.

लक a. 1) *the forehead.* — 2) *the ear or spike of wild rice* Çabdâratnâv. bei Wilson.

लकच m. = लकुच Çabdar. im ÇKDr.

लकार् m. 1) *der Buchstab* ल AV. Prât. 1,3. 39. 46 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 97, *a*. *b*. अनुकूलां विमलाङ्गीं कुलजां कुशलां सुशीलसंपन्नाम् । पञ्चलकारां भार्यां पुरुषः पुण्योदयाल्लभते ॥ Prasaṅgâbhin. 13,*b*. — 2) *der gemeinschaftliche Name für alle Tempora und Modi* (vgl. P. 3,4,77), *verbum finitum* Verz. d. Oxf. H. 177,*a*, N. 1. °विशेषार्थनिरूपण 177,*a*,26. लकारार्थप्रक्रिया 163,*a*, No. 338. 164,*b*, No. 363. 165,*b*, No. 367. Verz. d. B. H. No. 736. °वाद् Hall 59.

लकुच m. *Artocarpus Lacucha Roxb.*, ein Baum, der zähen Milchsaft reichlich enthält; n. *die Frucht* AK. 2,4,2,41. MBh. 1,7585. 3,11568. Hariv. 12678. Suçr. 1,39,6. 74,15. 157,5. 210,17. Vîsnu. 6,141. Vaitân. Bṛh. S. 55,4. 10. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,23.

लकुट m. = लगुड *Knüttel* Schol. zu Kâç. Ça. 666,6.

लकुटिन् adj. *mit einem Knüttel versehen* R. 7,23,4,36. Mârk. P. 8, 122. 169.

लकुल gaṇa बलादि zu P. 4,2,80.

लकुलिन् m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,22.

लकुल्य adj. von लकुल gaṇa बलादि zu P. 4,2,80.

लक्कक m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,434. 453. 457.

लक्क s. गूध°.

लक्कक m. 1) *Lappen, Läppchen,* = नक्कक AK. 2,6,2,16. Suçr. 1, 36,5. 2,181,13. — 2) = मलक्कक Çabdar. im ÇKDr. scheinbar R. Gorr. 2,60,16 und Kathâs. 3,71, wo aber प्रकृत्याल° und वासस्यलक्ककम् zu lesen ist.

लक्ककर्मन् m. *eine Abart des* Lodhra रक्तवर्णलोध्र, Çabdar. im ÇKDr.

लक्कनचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,1174.

लक्, लक्षते *bemerken, wahrnehmen:* स्वभर्तुरवमानमलक्षमाणा Bhâg. P. 3,16,12. *betrachten:* सर्वश तत्र तामेव कन्यां जातामलक्षत । दिवाप्यकाण्डप्रतिपन्नकलेखामिवोदिताम् Kathâs. 34,47. — Vgl. लक्ष्, worauf diese secundäre Wurzel zurückzuführen ist.

लक्ष्य (von लग्; vgl. लक्ष्मन्, लक्ष्मी) 1) *ein ausgesetzter (angehefteter) Preis:* यद्गीर्षु वो भिंगीवो लक्षमार्हत् (= लक्ष्यम् Sây.) ṚV. 2,12,4. लक्ष्य° adj. *der den Preis —, den Sieg davongetragen hat; bewährt, erprobt:* यस्कक्षव्यलक्षास्ते (मरुतः) रुद्रे MBh. 4,341. Hariv. 5122. Kathâs. 62,9. नागा रणे MBh. 7,1325. सचिवाः M. 7,34. — 2) *Zeichen, Mal:* यद्वैर्लक्षैश्च ताः सर्वा (गाः) लक्षयामास MBh. 3,14852. नखरक्षत° Kâraṇḍ. 15. — 3) n. *Ziel, Zielpunkt* AK. 2,8,2,34. Trik. 3,3,440. H. 777. an. 2, 570. Med. sh. 23. Spr. 1910. दृष्टलक्षभिदः (°लक्ष्य° ed. Calc.) Raghu. 1, 61. चरस्थिरेषु लक्षेषु बाणसिद्धिः Kâm. Nîtis. 14,25 (लक्ष्येषु 27). सिद्धलक्षेण बाणेन Kathâs. 112,86. आकाशे लक्षं बद्ध्वा *sein Ziel auf den Luftraum richtend* so v. a. *ohne bestimmtes Ziel in's Blaue zielend* Çiç. 31,7, v. l. आकाशबद्धलक्ष Vikr. 54,4. °भूता vielleicht so v. a. *von Allen gesucht* Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,26. स्थूल° adj. *grosse Ziele verfolgend* Jiân. 1,308. nach den Erklärern *freigebig* oder *kenntnissreich;* v. l. °लक्ष्य; vgl. स्थूललक्षिता, स्थूललक्ष्य. — 4) *Hunderttausend,* nach den Lexicographen f. und n.; zu belegen nur n. und m. AK. 2,6,2,24. Trik. 3,3,440. 5,20. H. 873. H. an. Med. Siddh. K. 230,*b*,10. एकोनत्रिंशल्लक्षाणि Jiân. 3,101. लक्षात्तरे Śaṁk. Spr. 835. 1626. 1666. 1910. लक्षेश 1626. Vaitân. Bṛh. S. 77,17. 80,12. Kathâs. 8,15. 53,10. Pañcat. 255,22. Hit. 113,4. दत्तं लक्षं रथानाम् Hariv. 15909. Spr. 1363. Kathâs. 43,109. 44, 131. 46,244. 115,9. Râga-Tar. 4,243. 415. fg. 5,137. 148. Bhâg. P. 3, 21,7. 6,17,2. Mârk. P. 54,8. सुवर्णस्य Kathâs. 5,113. ब्रह्माण्डलक्षैः Spr. 4000. Gîr. 3,16. Kathâs. 8,2. 34,67. Râga-Tar. 3,357. 4,494. Kâraṇḍ. 43. Ind. St. 3,231. सुवर्ण° Kathâs. 12,9. 21,87. 35,25. लक्षं नरेन्द्रिपान् MBh. 8,3665. लक्षैः सुन्दरमन्दिरैः Pañcat. 1,11,16. 2,2,89. द्वात्रिंशल्लक्षयोजनायाम Bhâg. P. 5,20,21. दशलक्षं सुवर्णम् Pañcat. 1,4,51. लक्षस्वर्णम् 11,26. लक्ष्मीं च निश्चलां लक्षयोगयुतीम् 8,32. °श्लोकमिदं शास्त्रम् 2,1,20. लक्षलक्षैः 1,7,34. शतलक्षम् 2,2,29. °पूजनोद्यापनविधि Verz. d. Oxf. H. 284,*a*,32. °पूजामाहात्म्य 30,*a*,11. Verz. d. B. H. No. 466. त्रयो

लक्ता: Jiéś. 3,102. लक्तकेा ऽपि Ind. St. 9,35. कन्यां सलक्ताम् Paśśat. V,84. — 3) *Schein, Verstellung* (व्याज) Trik. 3,3,440. H. 378. H. an. Med. लक्तसुप्त *sich schlafend stellend* Mṛśśh. 48,25, v. l. — Vgl. परो°, रति°, वि° und लक्ष्य.

लक्तक 1) adj. (von लक्तय्) *indirect bezeichnend (nicht benennend), elliptisch —, metonymisch ausdrückend:* अभिधादित्रयोपाधिवैशिष्ट्यात्त्रिविधो मतः। शब्दो ऽपि वाचकस्तद्वल्लक्तको व्यञ्जकस्तथा॥ Sin. D. 31. Verz. d. Oxf. H. 246, *a*, No. 619. — 2) m. N. pr. zweier Männer Rāǵa-Tar. 8, 913. 2178. — 3) n. = लक्ष *hunderttausend:* पदातीनां त्रिलक्तकम् Paṇ. 1,4,81. 2,4,25.

लक्तर्ण (von लक्तय्, Uṇ. 3,7. 1) m. *a*) = लक्ष्मण *Ardea sibirica* Çabdar. im ÇKDr. — *b*) N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 3,283. = लक्ष्मण (Rāma's Bruder) H. an. 3,223. Viçva bei Uṇ. zu Uṇ. 3,7. Hariv. 2331. 2333 (die neuere Ausg. richtig लक्ष्मण). — 2) f. आ *a*) *Ziel:* सिद्धिं पश्यति लक्तर्णाम् Hariv. 11841. — *b*) *eine indirecte Bezeichnung, eine elliptische, metonymische Ausdrucksweise* Sin. D. 11. 13. 252. 269. Bhāshāp. 81. Vedântas. (Allah.) No. 102. fgg. Schol. zu Kāṭy. Çr. 17,3. 621,23. 730,4. चमसशब्देन लक्तर्णया तत्स्था आप उच्यन्ते 740,13. 763,9. Sarvadarçanas. 50,10. 13. 172,7. fgg. 173,2. fgg. Kusum. 20,4. Weber, Râmat. Up. 337. Schol. zu P. 4,3,70. Siddh. K. zu 69. Vgl. अन्नकृल्लक्तर्णा, उपादान°, अकृल्लक्तर्णा, ज्ञान°, भाग°, लक्तर्ण°, सामान्य°. — *c*) = लक्ष्मण *das Weibchen der Ardea sibirica* Med. p. 76. Sṛśr. 1,317,11. *das Weibchen der Gans* Schol. zu Uṇ. 3,7. — *d*) N. pr. einer Apsaras Vâlm. beim Schol. zu H. 183. MBh. 1,4818. Hariv. 12472. 14163 (लक्ष्मण ed. Calc.). — 3) n.; am Ende eines adj. comp. f. आ Âçv. Çr. 2,14,18. Kāty. Çr. 16,4,6. MBh. 13,2448. 14,1190. fgg. Ragh. 19,55. Kathâs. 5,31. Bhâg. P. 2,4,22. 6,19,6 u. s. w. ‖ Verz. d. Oxf. H. 220, *a*, No. 527. *a*) *Merkmal, Zeichen, Charakter, Attribut* (häufig sg. in collect. Bed., z. B. M. 6,44. 8,261. Vaśiṣ. Bḥ. S. 36,31. 61,1. 65,1. 68,108. 78,18. 79,1. 84,2); daher *Marke, Strich* (अङ्क), bes. *die auf der Opferstätte gezogenen Linien, Stichwort* u. s. w.; = चिह्न AK. 1,1,2,18. Trik. 3,3,258. H. 106. an. 3,222 (wo लक्तर्णा st. लवर्णा zu lesen ist). Med. Halây. 1,45. Viçva a. a. O. Nir. 1,1. इष्टकाः पृथग्लक्तर्णाः Kāty. Çr. 16,4,6. 8,3. Gobh. 1,1,10. कृत° 2,1,3. 3,6. 4,2, 1. 3. एतदादृक्नस्य लक्तर्णं श्मशानस्य Âçv. Gṛhy. 4,1,15. Kauç. 80. 137. तस्य Çâṅkh. Çr. 1,16,6. पुरस्ताल्लक्तर्ण, उपरिष्टाल्लक्तर्ण Çat. Br. 1,7,2, 18. fg. देवतालक्तर्णा याज्यानुवाक्याः *die J. und A. haben die Götternamen* (ihre Stellung am Anfange oder am Ende) *zum Merkmal* Âçv. Çr. 2,14,18. fg. द्रव्य° Kap. 1,1,15. निर्व्रीलक्तर्णैर्युक्ताः M. 11,53. वीत्रलक्तर्णलक्षित 9,35. MBh. 3,2680. नृपलक्तर्णान्वित R. 1,4,21. न च मे रूक्षमे वीर किमिदं भूरलक्तर्णम् R. 5,36,18. Megh. 78. Çiç. 71,12. 102,17. कार्यसिद्धेः Ragu. 10,6. 19,47. अनारम्भो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्तर्णम् Spr. 97. 181. 2035. Kathâs. 34,71. 61,38. Râǵa-Tar. 1,189. 2,146. Bhâg. P. 5,20,38. शुभ° adj. R. 1,1,13. 2,21,39. 24,35. 52,1. Kathâs. 23,54. 45,248. कल्याण° 29,161. पुण्य° Kumâras. 5,73. दृष्टं च कपिलक्तर्णम् MBh. 1,2277. पेटा स्त्रीपुंसलक्तर्णा AK. 2,6,1,15. H. 532. पुरुष° MBh. 5,7527. स्त्रीणाम् 7528. लक्तर्णं लक्तर्णेन वदनं वदनेन च *Geschlechtstheile* 13,2303. शरा वर्हिर्णलक्तर्णाः *gekennzeichnet* so v. a. *versehen mit* R. 3, 26,22. 6,80,30. यशनीया मेघवर्हिर्णलक्तर्णाः MBh. 3,1791. भुजदण्डयुगं गाण्डीवलक्तर्णम् Bhâg. P. 1,15,18. तुल्याभिज्ञनलक्तर्णा R. 5,19,32. *ein glückliches Merkmal, günstiges Zeichen* Âçv. Gṛhy. 1,5,3. 4. Çâṅkh. Gṛhy. 1,5. M. 3,4. 4,68. 158. 7,77. MBh. 1,5905. 4,70 (sg. st. pl.). R. 1,1,27. Râǵa-Tar. 3,485. AK. 3,4,18,84. Brahma-P. in LA. (III) 80,6. Daçak. in Benr. Chr. 197,11. 13. द्वात्रिंशल्लक्तर्णोपेत Hit. 99,7. ad Vet. 3,16 (LA. III). Lot. de la b. l. 616. °भ्रष्ट *seiner guten Zeichen verlustig gegangen, in's Unglück gerathen, unglücklich* Jiéś. 3,217. विगत° dass. Kathâs. 25,142. कृत° dass. Mârk. P. 50,95. *Symptom einer Krankheit* Verz. d. Oxf. H. 312, *a*, No. 745. सृष्टिः संक्षेपलक्तर्णा *durch Kürze sich kennzeichnend, in aller Kürze angegeben* M. 1,41. चोदनालक्तर्णो ऽर्थो धर्मः Gaim. 1,1,2. — *b*) *nähere Bestimmung, Definition* M. 1,112. fg. 8,406. ṚV. Prât. 13,12. Sṛśr. 1,2,3. 2,17,10. सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्। एतद्विद्यात्समासेन लक्तर्णं सुखदुःखयोः॥ Spr. 4828. Sin. D. 3,4. 17. fg. Schol. zu Çiç. 60,11. Sarvadarçanas. 5,7. 46,19. 60,15. 78,20. 104,9. fgg. तत्र (in Kaṇâda's System) उद्देशो लक्तर्णं परीक्षा चेति त्रिविधास्य शास्त्रस्य प्रवृत्तिः 21. 103,17. 106,1. fgg. — *c*) *Bezeichnung* so v. a. *Name* Trik. 1,1,117. 3,3,259. H. an. Med. Viçva bei Uṇ. यथेोस्तिष्ठति लक्तर्णम्। लोके धाता विधाता च MBh. 1,2614. त्रयं ब्रह्म साम्यनुःसामलक्तर्णम् M. 1,23. ककुत्स्थ इत्याख्तिलक्तर्णो ऽभूत् Ragh. 6, 71. Megh. 25. निमेषलक्तर्णामत्पल्यकालम् Schol. zu Naish. 22,41. — *d*) *Erscheinungsform, Art, Species* H. 1376. दश लक्तर्णानि धर्मस्य M. 6,92. दशकं धर्मलक्तर्णम् 92. 94. दशलक्तर्णेयुक्त 12,4. संधिर्ज्ञेयो द्विलक्तर्णः 7,163. 12,31. fgg. कर्मणा यज्ञिकेात्रादिलक्तर्णेन so v. a. *erscheinend als* Çâṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 303. Bhâg. P. 5,15,6. भक्तिर्नवलक्तर्णा *sich auf neunfache Weise äussernd* 7,5,24. — *e*) *Ziel, Richtung, Hindeutung auf* P. 1,4,54. 90. 2,1,14. 3,3,5. AK. 3,4,22 (20),6. श्रुलक्तर्णो गुणवृद्धी so v. a. *betreffend, sich beziehend auf* P. 1,1,5, Sch. मनुष्यलक्तर्णे लुवर्थे 1,2,52, Vârtt. 3, Sch. Schol. zu AV. Prât. 4,122. पुराणं दशलक्तर्णम् so v. a. *behandelt Zehnerlei* Bhâg. P. 2,9,43. द्वादशलक्तर्णी मीमांसा Verz. d. Oxf. H. 220, *a*, No. 527. वृद्धो यूना तल्लक्तर्णयेव विशेषः *nur diese betreffend* P. 1,2,65. तत्सकलं धर्मलक्तर्णम् so v. a. *fällt unter den Begriff des Rechts* Jiéś. 1,6. — *f*) *Wirkung, Einfluss:* प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्तर्णम् P. 1,1,62. Vop. 3,45. नायं स्वरः प्रत्ययलक्तर्णेन भवति P. 6,1,197, Sch. — *g*) *Veranlassung, Gelegenheit:* सर्वथा सर्वभूतानां नास्ति मृत्युरलक्तर्णः। तव त्वयं रणे मैथिलीकृतलक्तर्णः॥ R. 6,95,12. यात्रा° Spr. 4231. पुनरप्येममर्थं लब्धलक्तर्णो यथोपपत्तिरूपायैः साधयिष्यति Daçak. 135,4. — Vgl. अ° (n. *Mangel an Kennzeichen, — an einem Kriterium* Pat. bei Gold. Mân. 30. adj. *ohne schöne Zeichen, hässlich* Kathâs. 40,29), उत्तर°, कृत° (*gekennzeichnet* R. 3,36,9. *glückliche —, gute Zeichen an sich tragend* MBh. 2,1850. R. Gorr. 2,7,4. *betreffend, sich beziehend auf:* आयुधानां पुराणानामादानकृतलक्तर्णा मतिः Hariv. 5031. कथाः शुभाः। चक्रतुर्वेदसंबद्धास्तच्छेयकृतलक्तर्णाः MBh. 13,1761. *veranlasst* R. 6, 93,9), दशलक्तर्णी, देकृलक्तर्ण, निर्लक्तर्ण, पञ्च°, प्रति°, प्रमाण°, त्राङ्ग°, वि°, सु°.

लक्तर्णक am Ende eines adj. comp. (f. °णिका) = लक्तर्ण *Merkmal:* पूर्वोक्तलक्तर्णिका Ind. St. 9,299,6. 7. — Vgl. दृश°.

लक्तर्णाङ्ग adj. *die Zeichen* (am Körper) *zu deuten verstehend* R. Gorr.

2, 29, 8. Vaṛāh. Bṛh. S. 68, 89. 114. नर° 116. तल्लक्षणज्ञ *seine guten Merkmale erkennend* Bhāg. P. 1, 19, 25.

लक्षणत्व n. *das eine-Definition-Sein:* काव्य° Sāh. D. 5, 8.

लक्षणलक्षणा f. Bez. *einer best. elliptischen oder metonymischen Ausdrucksweise* Sāh. D. 15. Sarvadarçanas. 173, 8.

लक्षणवत् adj. 1) *gekennzeichnet:* पञ्चिर्लक्षणवानेतैः (so die ed. Bomb.) MBh. 12, 9077. *mit guten Zeichen versehen* R. Gorr. 2, 118, 5. — 2) त्रिंशल्लक्षणवत् *dreissig Erscheinungsformen habend:* धर्म Bhāg. P. 7, 11, 12.

लक्षणवादरहस्य n. Titel einer Schrift Hall 61.

लक्षणसंग्रह m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 341, *a*, 39.

लक्षणसंनिपात m. *Brandmarkung* R. 5, 48, 6 (52, 15 ed. Bomb.).

लक्षणसमुच्चय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279, *a*, 36. 336, *a*, No. 790.

लक्षणिन् adj. = लक्षणज्ञ R. Gorr. 2, 29, 9.

लक्षणीय (von लक्षय्) adj. 1) *sichtbar oder zu vermuthen, anzunehmen* Rāgat. 11, 62. — 2) *was elliptisch, metonymisch ausgedrückt wird* Kuṭṭan. 32, 8.

लक्षणोरु (लक्षण + ऊरु) adj. f. °रूः P. 4, 1, 70. — Vgl. लक्ष्मणोरु.

लक्षण्य (von लक्षण) adj. 1) *als Merkmal dienend:* वृत्त Pāṇ. Gaṇ. 3, 15. — 2) *mit guten Zeichen versehen* Jāṭ. 1, 82. 80. MBh. 13, 2509. 5599. R. 2, 109, 5. सर्वलक्षण° Pañcat. 4, 3, 42. st. यल्लक्षण्यं (दिवाकरम्) *kein rechtes Aussehen habend* MBh. 6, 5209 liest die ed. Bomb. यल्लक्ष्माणम्.

लक्षदत्त m. N. pr. eines Fürsten Kāthās. 53, 8. fgg.

लक्षपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathās. 33, 9.

लक्षय् (von लक्ष), लक्षयति, °ते Dhātup. 32, 8 (दर्शनाङ्कयोः). 33, 23 (आलोचने). 1) *bezeichnen, kennzeichnen:* यद्भिर्लक्षयेत्ता: सर्वा (गाः) लक्षयामास MBh. 3, 14852. लक्षित *bezeichnet, gekennzeichnet, erkennbar an:* सर्वलक्षणलक्षित 1, 5424. R. 1, 45, 41. 7, 37, 2, 24. Mārk. P. 34, 77. 66, 25. प्रभूतलक्षणलक्षित R. Gorr. 2, 26, 18. राजलक्षणलक्षित 3, 36, 6. राज्ञतेर्धातुभिर्यैस्त्रिर्देशे देशे च लक्षितः (गिरिः) 21, 14. वर्त्मसि लक्षितं प्रिया Bhāg. P. 2, 9, 15. सर्वप्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्षिता M. 9, 35. R. 5, 86, 5. उन्मेषनिमेषाभ्याम् Bhāg. P. 3, 13, 11. तया (यशनायया) लक्षितेन मृत्युना Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 42. यल्लक्षित Çat. Br. 3, 3, 1, 16. Kāṭy. Çr. 7, 6, 14. — 2) *naher bezeichnen, definiren* Nilak. 46. Schol. zu Kāp. 1, 101. — 3) *mittelbar bezeichnen, — ausdrücken:* यत्र गोशब्दः — वाक्रीकार्थं लक्षयति Sāh. D. 13, 7. 107, 10. fgg. Vedântas. (Allah.) No. 104. तेनार्थेनार्थात्तौ लक्ष्यते Sarvadarçanas. 173, 1. 172, 11. प्रज्ञार्थातिर्हि — यद्धा लक्ष्यते Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 24. वयश्शब्देनात्र वैयश्शब्दो लक्ष्यते Kāç. zu P. 1, 2, 35. Schol. zu P. 4, 3, 80. गोसहचारिणो गुणा ग्राम्यमान्द्यादयो लक्ष्यन्ते *sind gemeint* Sāh. D. 14, 16. यस्य कस्यचिदर्थस्य लक्षितत्वे Vedântas. (Allah.) No. 105. — 4) *auf ein Ziel richten:* शरास्तीव्रा: पतिष्यन्ति रामलक्ष्मणलक्षिता: R. 5, 23, 20. — 5) *bezeichnen als, nennen:* कालस्यानुगतिर्या तु लक्ष्यते ऽण्वी बृहत्यपि Bhāg. P. 2, 8, 13. सा लक्ष्यतां (लक्षिता Bk.) प्रभावती Çaṅk. 35. — 6) *bezeichnen als* so v. a. *halten —, ansehen für:* तुल्यं हि लक्षये ज्ञानं बालुकस्य नलस्य च MBh. 3, 2800. न ते ऽस्त्यविदितं किंचिदिति त्वां लक्षयाम्यहम् 10578. तस्य वाक्यस्य पर्यायं पर्यायमिव लक्षये Harīv. 9652. अन्यत्र क्षेत्रज्ञः पुत्रो लक्ष्यते MBh. 13, 2629. fgg. जडान्धबधिरोन्मत्तमूकार्कातः — लक्षितः पथि बालानाम् Bhāg. P. 4, 13, 10. — 7) *sein Augenmerk richten auf, beachten, untersuchen:* यत्नं लक्षयित्वाज्ञायत Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 24. zu Kaṭh. Up. S. 88 (wo यमि ल° d. i. यमि = ल° zu lesen ist). चरितान्यस्य लक्षय MBh. 3, 2922. Kām. Nītis. 7, 15. कौरा विमृदितव्रीव्हेर्लक्षयित्वा Jāṭ. 2, 103. एवमन्ये पि भेदाः — न पृथग्लक्षिताः Sāh. D. 211, 7. Z. d. d. m. G. 7, 311, N. 4. Verz. d. Oxf. H. 181, *a*, 36. सुलक्षित M. 8, 402. — 8) (an bestimmten *Zeichen*) *erkennen:* गतिचेष्टाविकारैश्च नृपतेः भाषितैस्तथा। लक्षयस्व तथाभावं दुष्टादुष्टम् R. 4, 1, 28. एभिर्लक्षणैर्लक्षयेथाः — भवनम् Megh. 78. इङ्गितैर्लक्षयामास नेयं सीतेति निश्चितम् R. 5, 14, 38. लक्षये ऽस्वस्थमात्मानं भवत्या लक्षणैरहम् Bhāg. P. 8, 16, 10. न चोभावप्यलक्ष्येनाम् Bhaṭṭ. 17, 106. लक्ष्यते ज्ञायते ऽनेनेति लक्षणम् Schol. zu Gaim. 1, 1, 2. एवं प्राग्देहसंस्कृतं कर्म लक्ष्यते चित्तवृत्तिभिः Bhāg. P. 4, 29, 63. 1, 8, 19. Vikr. 53. अनेन वयुषा बाला विष्णुनानेन सूचिता। लक्षितेयं मया देवी निभृतो ऽग्निरिवोल्मुषा MBh. 3, 2702. Spr. 1824. Bhāg. P. 2, 2, 35. 3, 27, 13. 4, 22, 2. — 9) *bemerken, wahrnehmen, erblicken;* act. Maitrjup. 6, 16. M. 12, 27. MBh. 4, 52. R. 2, 63, 45. 6, 92, 24. Çik. 140. Kām. Nītis. 4, 37. Spr. 3891. Kathās. 10, 168. Rāǵat. 4, 497. 6, 59. Daçak. in Benf. Chr. 184, 9. 186, 13. Bhāg. P. 4, 8, 27. med. MBh. 1, 5924. 3, 2205. R. Gorr. 2, 60, 8. 5, 31, 7. Çik. 69, 8. Bhāg. P. 4, 22, 9. 10, 41, 3. ज्ञायद्विरपि चास्माभिः शक्या लक्षयितुं न ते Kathās. 112, 149. तां लक्षयित्वा MBh. 3, 2395. न कस्ती चायतः प्राणो लक्ष्यते R. 2, 26, 16. यादृशं लक्ष्यते वृत्तम् 93, 9. लक्ष्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु 4, 29, 12. 40, 43. Sūçr. 1, 243, 4. Ragh. 9, 72. Çik. 38. Rāǵat. 3, 378. Bhāg. P. 1, 18, 43. 4, 17, 32. 21, 26. Hit. 20, 14. योगप्रभावो न च लक्ष्यते ते Ragh. 16, 7. भगवतो गृह्येषु गृह्यमेधिनाम् — न लक्ष्यते ह्यवस्थानमपि Bhāg. P. 1, 19, 39. 3, 26, 14. R. 2, 26, 18. 35, 34. 60, 8. 3, 68, 50. Vaṛāh. Bṛh. S. 86, 7. Kathās. 47, 34. Mārk. P. 16, 37. Hit. 25, 10. यदा विनाशकालो वै लक्ष्यते दैवनिर्मितः *erblickt wird* so v. a. *erscheint, sich einstellt* Spr. 4808. लक्षित *bemerkt, erblickt, wahrgenommen, gesehen* MBh. 3, 2155. 2699. 2938. Ragh. 7, 41. Çik. 98, 15. Spr. 2103. Kathās. 45, 259. Bhāg. P. 4, 25, 13. Pañcat. 225, 25. Sāh. D. 38, 19. साधु लक्षितमयमागतः Mṛicch. 117, 25. यल्लक्षित *unbemerkt* MBh. 1, 5879. 3, 2158. R. 4, 40, 37. Ragh. 2, 27. Çik. 90. Kām. Nītis. 12, 43. Kathās. 7, 88. 13, 87. 16, 57. 18, 137. Rāǵat. 6, 48. 270. Daçak. in Benf. Chr. 186, 12. स्वलक्षित *durchaus nicht bemerkt* Bhāg. P. 2, 5, 20. यल्लक्षितम् adv. Kathās. 28, 105. 34, 46. mit folgendem यद् *sehen, dass:* ज्ञानास्त्वलक्षयन्त्यत्र स्वयं पौरुषवातरत् Rāǵat. 3, 458. sehr häufig mit einem zweiten appositionellen acc. (nom. bei pass. Constr.) construirt: तं तदैकाग्र्यमनसं कृष्णः पार्थमलक्षयत् MBh. 1, 7920. 13, 2765. R. Gorr. 2, 6, 14. 3, 1, 1. 2. 4, 33, 29. Mālav. 29, 1. Kumāras. 3, 51. भवत्यनघमान्सर्वास्तान्गुणांल्लक्षयामके MBh. 12, 8029. R. 1, 9, 44 (43 Gorr.). Çik. 16, 20. Bhāg. P. 1, 14, 13. 17, 26. 5, 14, 21. लक्षयित्वा चात्मानं तेजोहीनम् MBh. 1, 8142. 4, 1056. 13, 475. R. 7, 28, 1. Pañcat. 33, 5 (29, 7 ed. orn.). तौल्लक्ष्य (= लक्षयित्वा) चित्रस्तान् R. 7, 15, 1. स दृष्ट्वा तूणमुखेन वामं व्यापारयन्कस्तमलक्ष्यतावी Ragh. 7, 54. 9, 43. Spr. 1639. 1842. Çik. 169. Rāǵat. 1, 167. 3, 523. लक्षितास्ते त्वया तत्र वायसेन प्रकोपिता R. 5, 36, 41. 47, 23. Spr. 3807. Kathās. 42, 208. 49, 45. mit इव nach dem appositionellen acc. (nom. bei pass. Constr.): यस्वस्थमिव चात्मानं लक्षये MBh. 3, 16750. नातिस्वस्थेव लक्ष्यते *aussehen, zu sein scheinen* 2119. 16721. 8, 1813. R. 2, 91, 43. 93,

16. 5,4,13. 5,28. 54,12. Bhâgn. 3,2. 8,57. 11,39. 17,15. Kumâras. 2,20. 7,42. Çiç. 69,3. Vikr. 8. Varâh. Bṛh. S. 9,26. 27,4. Çâṅk. zu Bṛu. Âr. Up. S. 283. Bhâg. P. 5,25,2. Pañkat. 4,3,200. Pañkat. 231,25. Hit. 69, 4, v. l. Prab. 33,10. Sarvadarçanas. 16,21. स (भीष्मः) च वृन्दावनगुणैर्वसन् इव लक्षितः Bhâg. P. 10,18,3. यथं ध्वनिर्घोषो नैषधस्येव लक्ष्यते so v. a. *dieser Wagengerassel hört sich wie das des* Nala an MBh. 3,2888. — लक्ष्यते MBh. 5,7042 fehlerhaft für लप्स्यते (so die ed. Bomb.), लक्ष्यतां R. 5,82,19 fehlerhaft für भक्ष्यतां, अलक्ष्य Pañkat. 4,2,25 fehlerhaft für आलक्ष्य.

— अति, अनतिलक्षितः Kâm. Nîtis. 12,9 fehlerhaft für अनभि° *unbemerkt, ungesehen.*

— अभि 1) *bezeichnen, bestimmen:* रामानलव्योमत्रयैः शकाब्दे ऽभिलक्षिते Verz. d. Oxf. H. 188,*b*,13. अभिलक्षितो वरो रुद्रः so v. a. *ausersehen zu* MBh. 12,13223. — 2) *sein Augenmerk richten auf, im Auge haben:* प्रायणीयाख्यकर्माभिलक्ष्य देवयजनं प्रविष्टाः Comm. zu TBr. 1,5,*, 3. — 3) *berichten, kundthun:* भरद्वाजाभिगमनम् u. s. w. तेषां तत्रस्थैरभिलक्षितम् R. 2,57,2. — 4) *erblicken, gewahr werden:* पार्थतश्च मकरायुद्ध विमुखो ऽभ्याभिलक्ष्यते so v. a. *scheint zu sein* MBh. 8,1045. Harîv. 3675. त्रिदशगणैरभिलक्षितप्रभावः *erblickt, gesehen* Harîv. 13051. अनभिलक्षित *unbemerkt, ungesehen* MBh. 1,5822. नाभिलक्षित dass. Jâtâk. 3,59.

— आ *erblicken, gewahr werden, sehen;* med. MBh. 4,1868. °लक्ष्य 1,787. 2,2402. 3,12213. R. Gorr. 2,71,3. 3,1,4. 4,10,8. 5,29,17. 7,34, 15. Râǵa-Tar. 4,422. 5,365. Bhâg. P. 1,7,22. 12,34. 6,9,4. 10,16,13. Pañkat. 4,2,30 (fälschlich अलक्ष्य gedr.). Pañkat. ed. orn. 53,16. एतदालक्ष्यते राम मधूकानां मरुद्वनम् R. 3,19,22. Bhâg. P. 10,39,26. आलक्षित 1,4,6. R. Gorr. 2,5,15. आलक्षये भवतीमत्तराधिम् Bhâg. P. 1,16,20. नातिपर्याप्तमालक्ष्य मत्कुलेश्च भोजनम् Bhâg. 15,18. Bhâg. P. 3,23,49. 4,7,22. 23,21. 6,12,30. 7,8,3. 8,12,37. Sarvadarçanas. 56,10. शोच्या च प्रियदर्शना च मदनविक्लिष्टेयमालक्ष्यते *erscheint* Çâk. 58. 133. 69,2, v. l. प्रागेवालक्षितं स्वरम् *vernommen, gehört* R. 7,35,42. शत्रुरालक्षितो MBh. 7,6262 fehlerhaft für शत्रुश्चालक्षितो d. i. अल°, wie die ed. Bomb liest. — Vgl. आलक्ष्य.

— उपा *erblicken, gewahr werden:* तमुपालक्ष्य Bhâg. P. 9,3,5. यत्तर्वत्नोमुपालक्ष्य देवीम् 14,40.

— समा dass.: नैषादिं मा समालक्ष्य भयंस्तस्थौ तदन्तिके MBh. 1,5219. वितथोत्तान्समालक्ष्य पतितांश्च महीतले 8,1062. Harîv. 6427. 13262 R. 4,18,28. 38,12. 7,14,20. दैवं समालक्ष्य *auf das Schicksal sehend* so v. a. *auf die Erfüllung des Schicksals wartend* MBh. 13,313.

— उप 1) *bezeichnen, kennzeichnen:* °लक्षित *bezeichnet, gekennzeichnet, erkennbar an* Jâǵ. 1,20. 2,151. Kâm. Nîtis. 7,47. Kathâs. 10,121. 31, 41. 56,338. Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 29. Râǵa-Tar. 4,417. Bhâg. P. 3,11,32. 4,29,20. 5,3,3. 7,7. 22,2. 7,9,36. 11,5,27. Mâlav. P. 74,58. 97,20. Weber, Râmây. Up. 332. Schol. zu P. 1,4,84. 2,1,16. Kusum. 58,16. fg. Kull. zu M. 2,170. 3,45. 9,35. Schol. zu Naish. 22,42. यङ्गाद्यम्पोपलक्षिताः (वङ्गाः) so v. a. *mit Einschluss von* Kâmpâ H. 957. — 2) *näher bestimmen, definiren;* act. Schol. zu ṚV. Prât. 3,1. °लक्षित Bhâg. P. 3,26,17. — 3) *uneigentlich bezeichnen, — ausdrücken:* उमाशब्दो ब्रह्मविद्यामुपलक्षयति Sîs. bei Muir, ST. 4,338. नक्षत्रशब्देन ज्योतिःशास्त्रमुपलक्ष्यते Kull. zu M. 3,162. Sîs. D. 153,8. Sarvadarçanas. 87,9. सा (शाल्मली) द्वीपद्रुतय (dat.) उपलक्ष्यते so v. a. *dient metonymisch als Name des* Dvîpa Bhâg. P. 5,20,8. अनुपलक्षितसंज्ञोऽभिधीयमाना *benannt mit einem Namen, neben dem noch kein anderer uneigentlicher besteht,* 17,1. — 4) *sein Augenmerk richten auf, beachten;* act. MBh. 12,4370. 13,6606. Kâm. Nîtis. 16,40. शतशो ऽप्युपलक्षये Harîv. 12351. पाणिनीयादिशब्दस्मृतीरुपलक्ष्य Verz. d. Oxf. H. 176,*b*,26. तत्सर्वमुपलक्षितम् 266,*a*,17. — 5) *betrachten als, halten für:* एतत्कृत्यतमं राज्ञो नित्यमेवोपलक्षये MBh. 13,2087. पुरंदरपुरादेतं विशिष्टमुपलक्षये 3,12188. लोकप्रवादः सत्यो ऽयं पण्डितैरुपलक्षितः R. 5,26,6. — 6) *erblicken, bemerken, wahrnehmen, sehen;* act. R. 5,27,31. 6,88,9. Suçr. 1,21,6. 133,7. Mṛkkh. 14,19. Varâh. Bṛh. S. 86,10. med. MBh. 3,16775. 16888. R. 2,58,25 (27 Gorr.). 27. 59,17 (15 Gorr.). 4,8,7. 12,41. 58,8. 5,56,67. Bhâg. P. 10,62,15. °लक्ष्य Âçv. Çr. 1,12,31. Çâṅkh. Çr. 1,16,9. MBh. 12,8092. बुभुक्षितानां दीनानां नातृप्तिरुपलक्ष्यते R. Gorr. 1,13,12. Kathâs. 46,45. Bhâg. P. 3,26, 49. Sarvadarçanas. 93,13. प्रत्यक्षेण Mârk. P. 21,74. 113,11. °लक्षित MBh. 3,2186. R. 4,54,26. 7,37,5,29. Kâm. Nîtis. 16,14. Kathâs. 31,46. Bhâg. P. 3,30,30. Hit. ed. Johns. 1813. Vet. in LA. (III) 10,14. प्रत्यक्षम् R. 4,46,18. सम्यगुपलक्षितं (so mit der v. l. zu lesen) भवत्या Çâk. 15,15. Daçar. 83,6. Pañkat. 30,14. नोपलक्षित Bhâg. P. 5,18,20. अनुपलक्षित R. 1,2,18. 5,1,6. Kâm. Nîtis. 17,17. Kathâs. 93,17. Bhâg. P. 4,13,47. Daçar. 78,1. Kull. zu M. 7,147. Sarvadarçanas. 93,9. — भवतां रोमकूपाणि प्रहृष्टान्युपलक्षये MBh. 4,1464. R. 2,32,21. 71,34. कृतक्षियमिवात्मानमपि चाप्युपलक्षये R. Gorr. 2,71,22. सुखासीनं ततस्तं तु विश्रान्तमुपलक्ष्य च MBh. 1,6,7843. Bhâg. P. 3,18,6. 4,9,2. Çâṅk. 10, 133. Daçar. 63,17. स गिरिरन्य एवोपलक्ष्यते Harîv. 3937. 11393 (उपलभ्यते die neuere Ausg.). R. Gorr. 2,73,22. Mârk. P. 66,13. Hit. ed. Johns. 2410. अगमुपलक्षितक्रोध इवोपलक्ष्यते Prab. 6,6. न भारती मे ऽङ्ग मृषोपलक्ष्यते Bhâg. P. 2,6,33. देवरात्रो ऽपि मया नित्यमत्रोपलक्षितः। विचलन्प्रथमोत्पाते दृश्यानाम् MBh. 3,12030. Harîv. 9718. R. 4,5,20. Vikr. 78,20. fg. Kathâs. 32,66. लेप्यानीवोपलक्षिताः Bhâg. P. 10,39,36. इतरवदिहोपलक्षितः 5,3,9. प्रविष्टो ऽनुपलक्षितः R. 5,12,1. ब्रह्माद्याश्च वै कोशं च भरतो चोपलक्ष्यते *es hat den Anschein, als wenn* 2,61,11. *vernehmen, hören:* यथाभाषितं किंचिदिहोपलक्ष्य Harîv. 8409. उपलक्षितम् (so ist zu lesen) Mâlav. 67,17. *wahrnehmen* so v. a. *empfinden:* यस्माद्दुःखमुपलक्ष्यते (v. l. für उपलभ्यते) Spr. 1491. — Vgl. उपलक्षक fgg.

— सम्युप *erblicken, wahrnehmen:* (निमित्तानि) सुरर्षिसिद्धाभ्युपलक्षितानि R. 5,28,11.

— समुप 1) *sein Augenmerk richten auf, beobachten:* निमित्तानि समुपलक्षयेत् Kâm. Nîtis. 16,38. — 2) *erblicken, wahrnehmen:* उत्क्रोशोत्क्रुश्य नेक्षन्तमहं समुपलक्षये MBh. 2,1537. येन लिङ्गेन यो देशो युक्तः समुपलक्ष्यते 1,281.

— संप्रति *erblicken, wahrnehmen:* यस्यामिकस्य स्वामित्वं यस्मिन्संप्रतिलक्ष्यते (so die ed. Bomb.) MBh. 13,2638.

— वि 1) *kennzeichnen:* °लक्षित *gekennzeichnet, erkennbar an* Bhâg. P. 1,8,39. 3,21,20. 5,18,18. 10,38,25. — 2) *erblicken, wahrnehmen:* नातिदूरे च नगरं वनादस्माद्विलक्ष्यते (यस्माद्धि ल° MBh. 1,5924) Hit. 1, 51. विलक्ष्य दैत्यम् Bhâg. P. 3,18,21. 10,7,24. विलक्षित 5,6,6. तस्मै-

लक्ष्यश्रं चित्तं सर्वावयवसंस्थितम्। विलक्ष्य 3,28,20. 7,3,16. 8,14,44. — 3) *(das Ziel aus dem Auge verlieren) verwirrt werden:* विललंस्तु (v. l. विलक्षणास्तु und वलतस्तत्र) MBh. 3,382. विलक्ष्य Pañkat. 235,25. विलक्षित *bestürzt* MBh. 1,7055. *verliegen* Kathâs. 13,174. 17,32. 124,149. विलक्षितस्मित (= मलज्जस्य Schol.) Gît. 2,19. *ungehalten:* निर्व्यापारविलक्षितानि सान्त्वय वलानि Uttarâs. 109,17 (148,13).

— सम् 1) *kennzeichnen:* °लक्षित *gekennzeichnet, erkennbar an* Pañkâr. 3,5,15. 7,7. — 2) *erblicken, wahrnehmen, erfahren:* रिरंसो तस्य संलक्ष्य Râjat.-Tar. 3, 503. संलक्ष्यते फलत एव तव प्रसादः 232. क्षेमः संलक्ष्यते क्षयो विवृद्धिः क्ष्यामिकापि वा Kâçik. 1,10. Sâh. D. 102,5. संलक्षितस्तु मूलो ऽर्थ वाक्यारंभेऽङ्गितेन वा 748. संलक्षित Gît. 3,16. असंलक्षित Kathâs. 78,132. मूलैरिव शिरो विद्धमिदं संलक्ष्यायाम्यहम् MBh. 3,16751. तो तर्ज्यमानां संलक्ष्य दशग्रीवेण R. 5,24,10. वेगावतरणादाशुदर्शनः संलक्ष्यते मनुष्यलोकः *erscheint* Çâk. 99,7. शीर्यमाणः संलक्ष्यते न Kâçik. 16,62. Vikr. 137. विद्धेव पुष्पचापेन तत्तणं ममलक्ष्यत Kathâs. 14,29. Suçr. 1,308,9. Kâçik. 8,42. Buâc. P. 3,15,21. Pañkat. ed. orn. 53,20. *vernehmen, hören:* तं च शब्दमसक्तं वै तस्याः संलक्ष्य MBh. 7, 5226. — Vgl. संलक्षण, संलक्ष्य.

लक्षकोम (लक्ष *hunderttausend* + कोम) m. Bez. *eines best. Opfers an die Planeten* Gobhilaçr. 1,8. Verz. d. Oxf. H. 35,*a*,19. 42,*b*,20. 83,*a*, 21. लघु° Verz. d. B. H. 91,4. बृहल्लक्ष° s. लक्षकोमपद्धति No. 1251. — Vgl. कोटिकोम.

लक्षणपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 340,*a*,4.

लक्षितव्य (von लक्ष्) adj. zu *definiren* Sâh. D. 33,21. 269,15.

लक्षिन् (von लक्ष) adj. *mit Gutes verheissenden Merkmalen versehen* R. 7,23,17. — Vgl. स्थूल°.

लक्षीकृ (लक्ष + 1. कृ), °करोति, °कुरुते *zum Ziele machen, zielen auf* Kumârâs. 3,17. Çiç. 104,21. Daçâvat. 83,11. — Vgl. लक्ष्यीकृ.

लक्षीभू (लक्ष + 1. भू) *zum Ziele werden:* °भूत Kull. zu M. 11,73. बाणलक्ष्यीभूत ebend.

लक्ष्म = लक्ष्मन् am Ende eines adj. comp.: देवलक्ष्मं TS. 2,5,11,1.

लक्ष्मक m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,1284. 1541. 1632 u. s. w.

लक्ष्मण (von लक्ष्मन्) 1) adj. gaṇa पामादि zu P. 5, 2, 100 (falschlich von लक्ष्मी abgel.). *mit Mälern —, mit Kennzeichen versehen* TS. 7, 1, 6,3. *mit glücklichen Zeichen versehen, glücklich;* = लक्ष्मीवत्, श्रीमत् u. s. w. AK. 3,1,14. Trik. 3,3,137. H. 357. an. 3,223. Med. g. 76. fg. — 2) m. *a) Ardea sibirica* H. 1328. — *b)* N. pr. eines Vâsishṭha gaṇa प्रुथादि zu P. 4, 1, 123. eines Sohnes des Daçaratha und jüngeren Bruders des Râma Trik. 2,8,5. 3,3,137. H. 704. H. an. Med. R. 1,1, 35. Kâç. 11,91. 12,9. 15,44. Çiç. 9,31 (zugleich instr. von लक्ष्मन्). Kathâs. 113,32. Râja-Tar. 4,274. VP. 384. Buâc. P. 5,19,1. Weber, Râmat. Up. 297 (wo das Metrum keine Form लक्ष्माण erfordert). राघवे सलक्ष्मणे R. 3,52,2. am Ende eines adj. comp. f. आ 6,19,53. — N. pr. verschiedener anderer Personen Pañkat. 99,19. Journ. of the Am. Or. S. 6, 517, c. Verz. d. Oxf. H. 1, *b*. 2, *a*. 104, *a*, No. 160. 134, *b*, No. 250. 251, *b*, 44. Verz. d. B. H. No. 938. 1170. Hall 77. — 3) f. आ *a) das Weibchen der Ardea sibirica* AK. 2,5,25. Trik. 3,3,137. H. 1329. H. an. Med. Hân. 185. Hall. 2,89. Aṇâ. 9,21 सारसाः सु. लक्ष्मणाः MBh. 3,12152. *eine weibliche Gans* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,7. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen, = घोषधि, °भेद H. an. Med. = पृश्निपर्णी Schol. zu Kâç. Ça. 1074,8. = पुत्रकन्दा Buâvapr. im ÇKDa. = सेतकण्टकारी Râgân. ebend. — Suçr. 1, 369, 11. 2, 387, 17. — *c)* N. pr. α) einer Gattin Kṛshṇa's Harîv. 6702. 8985. 9179. 9189. VP. 578. Buâc. P. 10,58,57. — β) einer Tochter Durjodhana's, die Sâmba, ein Sohn Kṛshṇa's, entführte Buâc. P. 10, 68, 1. — γ) einer Apsaras Harîv. 12472. 14163. लक्षणा die neuere Ausg. wie auch MBh. — δ) der Mutter des 8ten Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 39. — 4) n. *a)* = लक्षण *Mal, Zeichen* Çârdan. im ÇKDa. लक्ष्मर्ण (wohl nur fehlerhaft für लक्षर्ण) तु मरुत्त्वस्य प्रतिज्ञापरिपालनम् R. 6,85,9. am Ende eines adj. comp. शश° (शशलक्षण ed. Bomb.) als Bez. *des Mondes* MBh. 3, 16198. श्रीवत्स° (°लक्षण die neuere Ausg.) Harîv. 3323. शरा वार्ष्णेयलक्ष्मणाः (wohl fehlerhaft für °लक्षणाः; R. 3,8,4. Sicher scheint die Lesart श्री °. durch Çrî *gekennzeichnet* Buâc. P. 2,2,10 zu stehen; hier kann aber लक्ष्मण mit dem Comm. als adj. gefasst werden. — *b)* = लक्षण *Name* Uṇâdis. und Bhâs. zu AK. ÇKDa.

लक्ष्मणकवच n. Titel einer Hymne zum Lobe Lakshmaṇa's Verz. d. Oxf. H. 107,*a*, No. 165.

लक्ष्मणकुण्डक n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 84,*a*,4. 5.

लक्ष्मणखण्डप्रशस्ति f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,38.

लक्ष्मणचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Hall 185.

लक्ष्मणदेव m. N. pr. eines Mannes Hall 23. 67. 77. Verz. d. B. H. No. 681.

लक्ष्मणप्रसू f. Lakshmaṇa's *Mutter*, Bez. der Sumitrâ, einer der vier Frauen Daçaratha's, Çârdan. im ÇKDa.

लक्ष्मणभट्ट m. N. pr. zweier Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 201,*a*, No. 480. Wilson, Sel. Works I, 120.

लक्ष्मणराजदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Journ. of the Am. Or. S. 6,518,6.

लक्ष्मणसेन m. N. pr. und Bein. verschiedener Personen Z. f. d. K. d. M. 1,227. Schol. zu Gît. 1,4. Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,25. 134,*a*,43. °देव Verz. d. Tüb. H. 13.

लक्ष्मणस्वामिन् m. N. einer Bildsäule des Lakshmaṇa Râja-Tar. 4,276.

लक्ष्मणाचार्य m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works I, 28. Verz. d. Oxf. H. 341,*a*,10.

लक्ष्मणोरु (लक्ष्मण + ऊरु) adj. f. °रू Vop. 4, 30. — Vgl. लक्षणोरु.

लक्ष्मण्य m. N. pr., nach Sîkṣ. *Sohn des* Lakshmaṇa ṚV. 5,33,10.

लैंक्ष्मन् (von लक्ष्म् wie लक्ष्त und लक्ष्मी) n. 1) *Mal, Merkmal, Marke, Zeichen* (sg. bisweilen in collectiver Bedeutung, daher so v. a. *Definition*) AK. 1,1,2,18. 3,4,24,79. 26,137. H. 106. an. 2,282. Med. n. 119. Hall. 1,45. 3,69. AV. 1,23,1. 6,141,2. 3. 12,4,6. कृष्ण TS. 7,4,19,2. Çat. Br. 1,7,2,18. 3,4,4,11. 5,4,3. Suçr. 2,269,12. Varâh. Bṛh. S. 43, 58. 67. 51, 44. 52, 10. 54, 48. Bṛh. 18, 1. Spr. 2662. क्रिमीणां Çâk. 19. Çiç. 9,31. उत्तमो लोकपालो ऽयमिति लक्ष्म प्रशस्तिषु। यः प्राप्तवान् Râja-Tar. 1,340. पुंलक्ष्म (vom Folgenden zu trennen) 2,104. Buâc. P. 3,16, 21. 5,18,23. Ind. St. 8,296. 300. 331. धमीधो स्पष्टवाल्लक्ष्म नोच्यते Sâh. D. 531. इति कथितं संग्रहाद्द्रव्यस्य लक्ष्म Sarvadarçanas. 53,21. Am Ende eines adj. comp.: देव° TS. 5,2,8,2. पुरस्तात्लक्ष्मन् 2,6,2,3. 4. Ind. St. 8,300. Kumârâs. 7,13. Râgân. 19,30. Râja-Tar. 1,2. अ° (Lesart der ed. Bomb.) so v. a. *kein Ansehen habend:* दिवाकर MBh. 6,5209. Vgl. क-

म्य°, मृगराज°, राज°. — 2) = प्रधान *das Haupt, der Vorzüglichste* AK. 2,4,46,137. H. an. Med.

लक्ष्मवीयो Hariv. 4635 fehlerhaft für लक्ष्य°, wie die neuere Ausg. liest.

लक्ष्मि = लक्ष्मी *Glück*, aus metrischen Rücksichten gebraucht in °वर्धन R. 1,19,20. R. Gorr. 2,18,31. 6,71,10. 82,31. 7,46,12. °संपन्न R. Schl. 1,19,21.

लक्ष्मी (von लक्ष्मन्, wie लक्त und लक्ष्मन्) Uṇâdis. 3,160. f. nom. लक्ष्मीस् Vop. 3,80. hier und da auch लक्ष्मी H. 226, Randgl., Rakshita bei Uéval. zu Uṇâdis., TS. TBa. Verz. d. Oxf. H. 97, *a*, No. 151, 1 v. u. acc. लक्ष्म्यम् AV. Am Ende eines adj. comp. erhält sich das ई auch im masc. P. 1,2,48, Sch. °लक्ष्मि neutr. R. Gorr. 2,33,22. 1) *Merkmal, Zeichen* Nir. 4,10. भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि RV. 10,71,2. — 2) mit oder ohne पापी *ein schlimmes Zeichen, bevorstehendes Unglück, Unglück* AV. 1,18,1. 7,115,1—3. विषम° *fortuna adversa* Vaṃs. Bṛh. S. 81,27. — 3) *ein gutes Zeichen* (in der älteren Sprache gewöhnlich mit पुण्या verbunden), *gute Aussicht, ein bevorstehendes Glück, Glück* AK. 2,8,2,50. Trik. 3,3,303. H. 357. an. 2,336. Med. m. 28. AV. 11,7,17. 12,3,6. Cat. Br. 3,4,4,8. 11. पुण्यामेव लक्ष्मीं संभावयति Ait. Br. 2,40. माकुरी वा एषा लक्ष्मी यद्दीक्षितो लक्ष्मीरेव पशूनवरुन्धे TS. 2,1,4,2. श्री und लक्ष्मी VS. 31,22. श्रेष्ठलक्ष्मी TBr. 2,1,2,2; die mythol. Erklärung s. im Comm. zu d. St. und vgl. श्रेष्ठ 3) *g*). समया ब्रुवाणा लक्ष्मीः कमेकं संश्रिता नरम् R. 1,1,6. नक्षत्रेनं क्षास्यते लक्ष्मीर्दुर्लभा या गतायुषाम् R. ed. Bomb. 6,46,39. शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं मार्गति वासहेतोः Spr. 460. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः 471. धनुष्मेको लक्ष्म्याम् 1859. लक्ष्मीरुत्साहसंपन्नात् — नापैति 2030. ज्ञानपदैर्लक्ष्मीः समालम्ब्यताम् 4721. 4946. Vaṃs. Bṛh. S. 71,5. 84,2. 93,13. Kathâs. 18,204. 406. संगमो लक्ष्मीविन्ध्ययोरिव 25,171. लक्ष्मीस्तेषां सदा स्थिरा Weber, Kṛshṇaj. 231. लक्ष्म्या विपर्यये R. 2,22,29. °विवर्त Daçar. 74,16. वीतव्यसनम् u. s. w. प्रविशन्ति सदा लक्ष्म्यः Spr. 2882. नृपति° *das Glück eines Fürsten* Vaṃs. Bṛh. S. 4,20. कालत्रयज्ञमात्मानमवरोधे मरुत्यपि। तया मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिपः॥ *die gute Genie eines Fürsten* Ragh. 1,32. 12,26. या लक्ष्मीर्नीलुलिताङ्गी वीरशोणितकुङ्कुमैः Spr. 2478. क्षितेरिन्द्रियस्य नृपतेः — भवति स्खलिता लक्ष्म्यः कीर्तयश्च नभःस्पृशः 4076. 4791. साम्राज्यलक्ष्मीलीलाम्बुज Kathâs. 23,69. Râga-Tar. 3,175. लक्ष्मीश्चन्द्रगुप्ते निवेशिता so v. a. *die königliche Würde* Kathâs. 5,123. नमया रोचते लक्ष्मीर्ब्राह्मी *die Herrlichkeit der Brahmanen* Bhâg. P. 9,15,40. *Reichthum:* लक्ष्म्या परमया युतः (कुबेरः) MBh. 3,12004. तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान्मन्यते Spr. 82. लक्ष्म्या परिपूर्णः 2052. लक्ष्मीं कृतार्थीसात्कृतवान् Râga-Tar. 5,18. — 4) *Schönheit, Anmuth, Pracht* H. 1512. H. an. Med. Hall. 5,27. शिरसः Hariv. 4788. देहस्य R. 4,16,4. MBh. 3,2410. मुखस्य Spr. 1693. स्वप्रभा° R. 2,94,21 (103,21 Gorr.). चन्द्रे 2,70,5. 5,1,21. मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति Çiç. 19. Kumâras. 3,49. Vikr. 23. जलद° Spr. 1427. लावण्य° Kathâs. 43,114. Kir. 5,39. Râga-Tar. 1,104. 3,361. am Ende eines adj. comp. Kir. 5,52. Bhâg. P. 2,2,10. — 5) personif. als *Göttin des Glückes und der Schönheit* (oft neben श्री) Hariv. 1337. लक्ष्मीरलक्ष्मीरूपेण दानवानां वधाय ist Durgâ 3279. 6613. 9498. 14027. R. 3,52,26. Kumâras. 1,44. Spr. 2164. 2651. गुणानां जनमालोक्य — लक्ष्मीः कुरङ्गीव दूरं दूरं पलायते 4020. पाटलिपुत्रे नेत्रे लक्ष्मीसरस्वत्योः Kathâs. 3,78. लक्ष्मीः सा (कन्या) स्वागतेह नः 33,8. गृहे लक्ष्म्यो मान्या मततमबला मानविभवैः Vaṃs. Bṛh. S. 74,4. पतिर्लक्ष्म्याः so v. a. *ein Liebling der Glücksgöttin* 61,18. als Gattin der Sonne (neben श्री) Purushasûkta in Ind. St. 9,9. als Gattin Prâgâpati's (neben श्री) Mahânâr. Up. ebend. 2,82. entsteht bei der Quirlung des Meeres MBh. 1,1155. जलधिसुतया लक्ष्म्या Daçar. 77,3. Gattin Dharma's und Mutter Kâma's MBh. 1,2378. Hariv. 11525. 11535. 12432. 12482. VP. 54. 119, N. 12. Mâlav. P. 50,20. Schwester (Mutter nach VP. 82) Dhâtar's und Vidhâtar's MBh. 1,2615. Gattin Nârâyaṇa's oder Vishṇu's AK. 1,1,4,22. Taik. 1,1,61. 3,3,303. H. 226. H. an. Med. Hal. 224. Hâlâ. 1,31. MBh. 1,7352. Hariv. 12308. R. 5,25,26. Nâr. Tîr. Up. in Ind. St. 9,98. 103 (neben श्री). VP. 60. 82. Verz. d. Oxf. H. 76, *b*, 24. Gattin Dattâtreja's Mâlav. P. 18,29. fgg. = सीता Çârad. im ÇKDa. — N. der Dâkshâyaṇî in Bharatâçrama Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 26. eine Manifestation der Prakṛti 23, *a*, 27. °कवच 26, *a*, 19. 94, *a*, 23. °मन्त्र: 93, *b*, 5. °यन्त्र 94, *b*, 10. 96, *b*, 1. लक्ष्म्या धारणयन्त्रम् 3. 4. — 6) Bez. verschiedener *glückbringender* Pflanzen: = वृद्धि AK. 2,4,3,21. Med. = वृद्धि Med. = प्रियङ्गु H. an. = फलिनी Med. = स्थलपद्मिनी, हरिद्रा und शमी Râgân. im ÇKDa. — Suçr. 1,71,16. — 7) Bez. der 11ten Kalâ des Mondes Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 26. — 8) N. zweier Metra: α) *4 Mal* – ⏑ – ⏑ ⏑ – ⏑ ⏑ – ⏑ ⏑ – Ind. St. 8,383. — β) *4 Mal* – – – ⏑ ⏑ – – – ⏑ ⏑ – – – Colebr. Misc. Ess. II, 161. (IX, 8). — 9) *die Gattin eines Helden* (वीरयोषित्) Çârad. im ÇKDa. — 10) = द्रव्य und मुक्ता Râgân. im ÇKDa. — 11) ein Frauenname Çiç. in LA. (III) 37,3. Hall 183. — Vgl. अ° (*f. Unglück* auch R. 3,72,28. Suçr. 1,180,12. Spr. 4869. adj. *unschön:* अलक्ष्मीणि वेश्मानि R. Gorr. 2,33,22; in den Nachträgen ist die Stelle Spr. 3585 zu streichen), मात°, जय°, मङ्गा°, वज्रलक्ष्मी, राज° (unter 1) noch hinzuzufügen *die gute Genie eines Fürsten* und Vet. in LA. (III) 25,16, राज्य°.

लक्ष्मीक am Ende eines adj. comp. von लक्ष्मी *Glück, Reichthum* गण उरःप्रभृति zu P. 5,4,151. पुण्य° Cat. Br. 3,4,4,11. 5,4,3. गत° R. Gorr. 1,60,17. पूर्ण° Kathâs. 20,184. अलक्ष्मीकतम *der allerunglücklichste* Spr. 3585. पुत्रसंक्रान्त° *dessen königliche Würde auf den Sohn übergegangen ist* Uttarar. 10,17 (14,15).

लक्ष्मीकान्त m. *der Geliebte der* Lakshmî d. i. Vishṇu Verz. d. Oxf. H. 237, *b*, 36 Gaṇeçasuṭamivratakathâ im ÇKDa.

लक्ष्मीकुलतन्त्र n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 104, *a*, 19. 20.

लक्ष्मीकुलार्णव m. desgl. Hall 197.

लक्ष्मीगृह n. *die Wohnstätte der* Lakshmî, Bez. *der rothen Lotusblüthe* Taik. 1,2,34.

लक्ष्मीचरित्र n. Titel eines Werkes ÇKDa. u. रात्रिवासस्.

लक्ष्मीजनार्दन n. Lakshmî und Gaṇârdana; in einem Çâlagrâma: एकद्वारे चतुश्चक्रे नवीननीरदोपमम्। लक्ष्मीजनार्दनं ज्ञेयं रक्षितं वनमालया॥ Brahmavaiv. P., Prakṛtikh. im ÇKDa.

लक्ष्मीताल m. 1) *eine Palmenart*, = श्रीताल Râgân. im ÇKDa. — 2) Bez. *eines best. Tactes* Saṅgîtaratnâk. im ÇKDa.

लक्ष्मीत्व n. *das* Lakshmî-*Sein:* सीतायाः Schol. zu R. ed. Bomb. 6,17,35.

लक्ष्मीदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 126, *b*, No. 221. eines Erklärers des Bhâskara Colebr. Misc. Ess. II, 220. 224 u. s. w.

लक्ष्मीदेवी f. N. pr. einer gelehrten Frau Hall 175. Verz. d. Oxf. H. 262, *b*, No. 632.

लक्ष्मीधर 1) m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 63, 7. Râga-Tar. 7, 1209. fgg. Hall 134. Verz. d. B. H. No. 118. 166. 243. 246. 751. 1234. Verz. d. Oxf. H. 110, *b*, 1. 122, *b*, 6. 124, *b*, 25. fg. 150, *b*, No. 320. 160, *a*, No. 352. 161, *b*, No. 356. 200, *b*, No. 476. 209, *a*, 12. fg. 273, *b*, 14. 279, *a*, 37. 283, *a*, 31. Verz. d. Tub. H. 13. Mchr, ST. II, 34. Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 48. 50. °भट्ट Verz. d. Oxf. H. 292, *b*, 7. °सूरि Verz. d. B. H. No. 45. 1176. °कवि Hall 102. °दीक्षित 136. लक्ष्मीधराचार्य 134. 187. — 2) (wohl n.) ein best. Metrum: *4 Mal* — ⏑ — — ⏑ — — ⏑ — — ⏑ — Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VII, 12).

लक्ष्मीनाथ m. *Schutzherr der* Lakshmi als Bein. Vishṇu's H. 214, Sch. Buâc. P. 5, 9, 22. Verz. d. Oxf. H. 14, *b*, 35.

लक्ष्मीनारायण 1) m. du. und n. sg. Lakshmi *und* Nârâjaṇa Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 35. Colebr. Misc. Ess. I, 198. Wilson, Sel. Works I, 38. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 10, *b*, 4. °माहात्म्य 13, *b*, 48. 14, *a*, 1. °संवाद Mack. Coll. I, 53. in einem Çâlagrâma Wilson, Sel. Works I, 50. Colebr. Misc. Ess. I, 156. एकहारे चतुश्चक्रे वनमालाविभूषितम् । नवीननीरदाकारं लक्ष्मीनारायणाभिधम् ॥ Brahmavaiv. P. im ÇKDr. — 2) °यति m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 620. Hall. 205.

लक्ष्मीनिवास m. *die Wohnstätte der Glücksgöttin* Verz. d. Oxf. H. 263, *a*, 4. लक्ष्मीनिवासाभिधान Titel einer Schrift Hall in der Einl. zu Vâsavad. 44.

लक्ष्मीनृसिंह 1) n. Lakshmi *und der Mannlöwe;* in einem Çâlagrâma: द्विचक्रं विस्तृतास्यं च वनमालासमन्वितम् । लक्ष्मीनृसिंहं विज्ञेयं गृहिणां च सुखप्रदम् ॥ Brahmavaiv. P. im ÇKDr. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 100, *a*, 43.

लक्ष्मीपति m. *der Gatte —, Herr des Glücks:* 1) Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. 1, 1, 1, 23. Ha an. 4, 124. Med. t. 217. Vaidja-Kîn. 10, 17. — 2) *Fürst, König* Med. Verz. d. Oxf. H. 118, *a*, No. 194. — 3) *Betelpalme.* — 4) *Gewürznelkenbaum* H. an. Vîçva im ÇKDr.

लक्ष्मीपुत्र m. *der* Lakshmi *Sohn:* 1) Bein. Kâma's Trik. 3, 3, 269. H. an. 4, 277. Med. r. 295. — 2) *Pferd* Trik. H. ç. 178. H. an. Med. Vaiś. bei Mallin. zu Çiç. 15, 111; vgl. ebend. im Text श्रात्मजाः श्रियः als Bez. von *Pferden.* — 3) Bez. Kuça's und Lava's, der Söhne Râma's Çabdas. im ÇKDr.

लक्ष्मीपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 155, *b*, 5.

लक्ष्मीपुष्प m. *Rubin* H. 1064.

लक्ष्मीपूजा f. *Verehrung der* Lakshmi, Bez. eines Festes am 15ten Tage in der dunklen Hälfte des Âçvina As. Res. III, 263 nach Haughton.

लक्ष्मीफल m. *Aegle Marmelos Corr.* (बिल्व) Râgân. im ÇKDr.

लक्ष्मीयन्त्र n. Bez. *eines best. Spruches* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 78. 104. — Vgl. पञ्चलक्ष्मी.

लक्ष्मीरमण m. *der Gatte der* Lakshmi d. i. Vishṇu Spr. 2162. Verz. d. Oxf. H. 160, *b*, 12. 177, *a*, 7.

लक्ष्मीवत् (von लक्ष्मी) 1) adj. Vop. 7, 28. *a) glücklich, mit Glücksgütern ausgestattet* AK. 3, 1, 14. H. 357. MBu. 18, 72. R. 4, 29, 22. 6, 15, 28. Spr. 4947. Mâlav. P. 18, 31. — *b) schön,* von Personen Harîv. 4479. R. 1, 1, 13 (15 Gorr.). Suçr. 1, 334, 3. Varâh. Bṛh. S. 104, 36 (mit Anspielung auf das Metrum लक्ष्मी). गिरि Harîv. 8949. 12841. R. 4, 44, 119. — 2) m. *Artocarpus integrifolia Lin.* Çabdam. im ÇKDr. ein anderer Baum, = घनरोहित Râgân. ebend.

लक्ष्मीवर्मदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Colebr. Misc. Ess. II, 299. fgg. Journ. of the Am. Or. S. 7, 35. fg.

लक्ष्मीवल्लभ m. N. pr. eines Autors Hall 165.

लक्ष्मीवसति f. *die Wohnstätte der* Lakshmi, Beiw. der Blüthe von Nelumbium speciosum Spr. 3848.

लक्ष्मीवेष्ट m. = श्रीवेष्ट *Terpentin* Râgân. im ÇKDr.

लक्ष्मीश m. 1) *der Herr der* Lakshmi d. i. Vishṇu Vop. 25, 10. — 2) *der Mangobaum* Çabdâmṛtak. bei Wilson.

लक्ष्मीसख m. *ein Freund —, ein Liebling —, ein Bevorzugter der Glücksgöttin* Râga-Tar. 2, 139.

लक्ष्मीसमाह्वया f. Bein. der Sîtâ (*den Namen* Lakshmi *führend*) Çabdar. im ÇKDr.

लक्ष्मीसहज m. *der Mond (der zugleich mit der* Lakshmi *Entstandene)* Çabdar. im ÇKDr.

लक्ष्मीसूक्त n. Bez. *einer best. Hymne auf* Lakshmi Verz. d. Oxf. H. 298, *b*, No. 725.

लक्ष्मीसेन m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 66, 173. fgg.

लक्ष्मीस्तोत्र n. *Preis der* Lakshmi Wilson, Sel. Works I, 322. Verz. d. Oxf. H. 27, *a*, 13. 94, *a*, 23. Bez. einer best., dem Agastja zugeschriebenen Hymne 132, *b*, No. 242.

लक्ष्म्याराम m. *der Garten der* Lakshmi, Bez. eines best. Waldes Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. 2. पुण्यफल.

लक्ष्य (von √लक्ष्) 1) adj. *a)* zu *definiren* H. 1525. Schol. zu Kap. 1, 93. — *b) was angedeutet —, mittelbar bezeichnet* oder *ausgedrückt wird:* सर्वो वाच्यश्च लक्ष्यश्च व्यङ्ग्यश्चेति त्रिधा मतः Sâh. D. 10. fg. Vedântas. (Allah.) No. 96. 99. यत्यत्तदुःखसंकिलत्वे रामे धार्मिणि लक्ष्ये Sâh. D. 16, 9. — *c)* zu *halten für, anzusehen als:* उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः Spr. 481. — *d) worauf man sein Augenmerk richtet, was man im Auge hat* AK. 3, 4, 3, 26. 6, 3, 25. P. 1, 1, 57, Sch. *worauf man sein Augenmerk zu richten hat, zu beobachten* Vârtt. Bṛh. S. 68, 89. 101. Kathâs. 32, 21. — *e)* zu *erkennen, erkennbar an* (instr. oder im comp. vorangehend) Megh. 73. Ragh. 7, 57. 4, 8. Kumâras. 3, 74. Vikr. 37. Daçâvat. 70, 11. सुख° *leicht zu erkennen* Harîv. 3828. — *f) sichtbar, wahrnehmbar* MBu. 13, 2631. Kumâras. 3, 31. Çiç. 102, v. l. Mâlav. 31. Sâh. D. 228. 234. सर्व° Daçak. 91, 1. ग्र° (s. auch bes.) *unsichtbar* R. 5, 20, 12. Çiç. 37. 175. Kathâs. 18, 93. Buâc. P. 1, 8, 18. 19, 25. 8, 10, 31. लक्ष्यालक्ष्य *sichtbar und nicht sichtbar* so v. a. *kaum sichtbar* MBu. 1, 8457. R. 5, 9, 33. Mâlatîm. 78, 4. Sâh. D. 334. — 2) m. लक्ष्य und श्रलक्ष्य Bez. *bestimmter über Waffen gesprochener Zaubersprüche* R. 1, 30, 3. — 3) n. *a)* = लक्ष *ein ausgesetzter Preis:* लक्ष्याभिहरण *das Davontragen des Preises* MBu. 1, 1979. इह चेच्छाम्यते लक्ष्यं कर्त्तुमाज्ञेप्यामहे परान् *wenn wir hier den Preis davontragen* so v. a. *wenn wir hier Erfolg ha-*

ben 7,7662. लक्ष्य° = लक्ष्यलत R. Gorr. 2,65,9. 3,40,8. 10. 4,14,15. 5,36,60. Kim. Nitis. 19, 32. — *b*) = लत *Ziel* AK. 2, 8, 2, 54. H. 777. Med. j. 52. Halis. 2, 313. लक्ष्याग्रयुतसायक: AK. 2, 8, 2, 36. H. 772. Halis. 2, 316. Mugd. Up. 2, 2, 3. 4. Maitrup. 6, 24. लक्ष्यं लक्ष्य: MBn. 12,1244) शस्त्रभृतां वा स्यात् M. 11,73. लक्ष्यं भिक्षा MBn. 1,388. वेद्धुं लक्ष्यम् 5256. Ind. St. 1, 302, N. P. 2, 3, 7, Sch. लक्ष्यं पातयितुम् MBn. 1, 7200. लक्ष्यमुद्दिश्य रात्तमान् R. 3,26,20. दृष्टलक्ष्यभिद: शरा: Ragh. ed. Calc. 1,61. Çik. 38. Megh. 72. °भूत Bhâg. P. 5,26,24. 7,15,42. °सिद्धि Kim. Nitis. 7, 36. चरेषु यत्र लक्ष्येषु बाणसिद्धिश्च जायते 14,27. दृशौ परिदेविलानाम् Milav. 45. नेत्रशतैक° Ragh. 6,11. P. 3,2,114, Sch. एकसंधात° adj. VP. bei Muir, ST. 4,34. लक्ष्यं बन्ध् *sein Ziel richten auf:* दूरबद्धलक्ष्य Kumâras. 3,64. मणि (so auch in der älteren Ausg. zu lesen) बद्धलक्ष्य: Uttarar. 95, 9 (124, 8). आकाशे लक्ष्यं बद्धा *sein Ziel auf den Luftraum richtend* so v. a. *ohne bestimmtes Ziel in's Blaue sehend* Çik. 31,7, v. l. Mudrâr. 6,19. 31,3. 62,5. — *c*) = लत *hunderttausend* Rîâ-Tar. 1,86. 104. — *d*) = लत *Schein, Verstellung* AK. 1, 1, 2, 33. Med. रोमाञ्चलक्ष्येण Ragh. 6,81. मुखलक्ष्येण Kim. Nitis. 5,45. लक्ष्यमुक्त so v. a. *sich schlafend stellend* Mṛicch. 48, 20. 25. Daçak. 135, 1. — *e*) *Merkmal* Ind. St. 8, 303, 16 fehlerhaft für लक्ष्मन्. — *f*) vielleicht *Beispiel* Sin. D. 123. Verz. d. Oxf. H. 181, *a*, No. 412, Z. 6. — Vgl. अ°, अभिलक्ष्यम्, दुर्लक्ष्य, निर्लक्ष्य, मूप°, सलक्ष्य, स्थूल° und लत.

लक्ष्यज्ञत्व n. *Kenntniss des Zieles* oder — von *Beispielen* Verz. d. Oxf. H. 207, *a*, N. 3.

लक्ष्यता (von लक्ष्य) f. 1) *das Sichtbarsein:* °तां गो *sichtbar machen, zeigen* Spr. 1408. — 2) *das Zielsein:* °तां या *zum Ziel werden* Kathâs. 19, 99.

लक्ष्यत्व n. 1) nom. abstr. von लक्ष्य 1) *b*) Sarvadarçanas. 137, 10. — 2) *das Zielsein:* गत: पञ्चेषुलक्ष्यत्वम् Spr. 866.

लक्ष्यवीथी f. *die überall sichtbare Strasse* Hariv. 4638. nach Nilak. so v. a. ब्रह्मलोकमार्ग, देवयान.

लक्ष्यवेधृ 1) adj. *das Ziel treffend.* — 2) m. *Pfeil* H. ç. 141.

लक्ष्यीकृ = लक्षीकृ Ragh. 9,57. बाणलक्ष्यीचकार 67. लक्ष्मीकोरनि fehlerhaft für लक्ष्यी° Çik. 104, 21, v. l.

लक्ष्योभू s. u. लक्षोभू.

लख्, लंखति गतौ Dhâtup. 5,24. — Vgl. लङ्, लिङ्.

लक्ष्मिदेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Verz. d. Oxf. H. 296, *a*, No. 718. vgl. लयमादेवी (gespr. लक्षमा°) in einer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 343, 7. eine Corruption von लक्ष्मीदेवी.

लग्, लंगति Nir. 6,26. Dhâtup. 19,24 (सङ्गे). लग्यति (घात्रपे) Nir. 4, 10. zu belegen nur लगति. 1) *sich heften an:* नहि श्लोकमामङ्गे श्लोका लगति Daçak. 93,7. कथितस्य ग्रीवायां लगति Pañcat. 245,7. कर्णे लगति (खड्ग:, भृङ्ग:) Spr. 306, v. l. सर्वाङ्गेर्लगत व्रजतामत्तरात्मन्यनन्ते 734. पादयोर्लगित्वा *sich an seine Füsse schmiegend* so v. a. *sich ihm zu Füssen werfend* Z. d. d. m. G. 14,571,2. मदनमार्गका: — राजस्तस्याल गन्हृदि so v. a. *drangen in sein Herz* Kathâs. 51, 131. इन्दीवरी मञ्जरी कान्ता मन्यकण्ठे लगिष्यति Verz. d. Oxf. H. 198, *b*, No. 468. उल्लेखा यत्र लगति *sich haften an* so v. a. *berühren, schneiden* Comm. zu Golâdh. Sphutâgatîv. 13. विदितेङ्गिते हि पुर एव शने सपदीरिता: खलु लगन्ति गिर: *haften* Çic. 9,69. — 2) *sich heften an* so v. a. *sich unmittelbar anschliessen, unmittelbar folgen:* विवादो ऽत्रालगत्तयो: *es entspann sich ein Streit darüber* Kathâs. 77,12. प्रभाते ऽहं यास्यामि । तत्र कतिचिद्दिनानि लगिष्यन्ति so v. a. *darüber werden einige Tage hingehen* Pañcat. 185,19. — partic. 1) लग्न *a*) adj. *a*) = सक्त *hängen geblieben, festsitzend, hängend —, sich anschmiegend an, steckend an, auf, in* P. 7,2,18. Vop. 26,111. Taik. 3, 3, 257 (falschlich शक्त). H. an. 2,282. Med. n. 18. कर्वं चास्य शिरो लग्नम् MBn. 9,2254. मक्षोरस्य तल्लग्नं शङ्कुनाम् 2257. fg. लग्ने: शङ्कुनखैर्गात्रे (so die ed. Bomb.) 13,2660. लग्नगर्भा विमुच्येत 12, 13126 = Hariv. 14383 (प्रमुच्येत). कण्ठे लग्ना *am Halse hängend* (eine Geliebte) Kathâs. 12,88. 37,227. कण्ठलग्ना Megh. 110. Kathâs. 50,98. Spr. 2131. कण्ठलग्नेन रुदितेन Kathâs. 28,125. वसुधाधिपम् । पुच्छे लग्नम् Mârk. P. 74,14. त्रिकूटायाम् Verz. d. Oxf. H. 136, *a*, 1. षड्रदकोटिलग्नं प्रालम्बम् Ragh. 6, 14. Hit. 33, 12. Verz. d. Oxf. H. 62, *a*, 12. Kathâs. 25,106. स्कन्धोत्तुङ्गकुङ्कुमकेसरान् Ragh. 4,67. लग्नषड्ज Kumâras. 7,49. Kathâs. 37,44. Mṛicch. 86,21. इन्दुलग्नोर्मिकस्ता Megh. 51. मया तव कुन्तायलग्नया *an deiner Handspitze hängend* so v. a. *mit dir verheirathet* Pañcat. 119, 6. अलीकलग्ना: (फलका:, खला:) अलीक *Stirn* und *Falschheit*) Spr. 4139. लग्नकच = ललाट AK. 2, 4, 2, 40. प्रतिमुक्तलग्नमधुप Prab. 79,15. Milav. 40. Kumâras. 3,30. 7,16. कुटिलनखाग्रलग्नमुक्त Ragh. 9,65. नागदन्तलग्न (फलक) Daçak. 91,16. यष्ट्यै Kathâs. 37,225. Rîâ-Tar. 5,410. नखपदं लग्नं स्तनतटे Spr. 3744. कस्मिन्संग्रामे प्रकाशो ऽयं ते ललाटे लग्न: Pañcat. 218,10. Rîâ-Tar. 6,355. सर्वाङ्गलग्नाम्बर Spr. 24. मृताङ्ग° so v. a. *die am Todten hängenden Kleider* Jîv. 2,302. चन्द्रकान्त्याङ्गलग्नया Kathâs. 3,62. गवाक्षजालायलग्नपक्ष्मलोचना: 18,14. नवे भाजने लग्न: संस्कार: Spr. 2398. तरुस्कन्धलग्नैकदन्त Çik. 32. दशनशिखरे धरणी तव लग्ना Gît. 1,17. पत्निनीं दत्तलग्नाम् Kumâras. 3,76. ललाटलग्नैस्तेरिपुभि: Bhâg. P. 4,10,9. Kathâs. 82, 41. 45. कायलग्नं मायकम् 39,70. कूप° *im Brunnen steckend* Bhâg. P. 9, 18, 21. उच्चार° Lalit. bei Burn. Intr. 504, N. 3. पाद° *im Fusse steckend* (काण्टक) Spr. 483. *an Jmdes Füsse geschmiegt* so v. a. *zu Jmdes Füssen liegend* Kathâs. 14, 66. 39, 198. 227. 52, 80. 67, 93. चरण° dass. Dhûrtas. 92, 2. हृदये शरं लग्नम् *steckend in* Mârk. P. 134, 31. मनोभववल्ल्येव मयो हृदयलग्ना । तया *an's Herz geklammert* Kathâs. 17,79. पार्श्व हृदये लग्नम् (काव्यम्, काण्डम्) *in's Herz gedrungen* Verz. d. Oxf. H. 120, *a*, 18. fg. मक्षलग्न श्वापदै: *angeschmiegt an, sich berührend mit* Ragh. 4,53. प्रान्तलग्नो दवाग्नि: Rt. 1,25. गात्रलग्न (वह्नि) Spr. 161. रेखाभिर्भूलग्नाभि: Vasiṣṭh. Bdh. S. 68,78. Verz. d. Oxf. H. 202, *a*, 43. Sin. D. 278. पृष्ठे लग्ना: *sich an den Rücken schmiegend* so v. a. *auf dem Fusse folgend* Z. d. d. m. G. 14,572,9. पृष्ठतो लग्न: Vet. in LA. (III) 20, 10. अस्य पृष्ठलग्नानाम् Pañcat. 125, 11. 106, 13. नयनं यत्र लग्नम् *geheftet auf* Bhâg. P. 11, 30, 3. पक्षिन्मनो दृगपि नो न विपाति लग्नम् 5,2,16. मानसं तस्यां लग्नसमाधि Gît. 3,15. Mṛicch. 1,4. मार्गे so v. d. *auf dem Wege bleibend, den Weg verfolgend* Vet. in LA. (III) 17, 20. *sich berührend mit* so v. a. *schneidend* (von Linien): तुङ्गेर्धरेखा यत्र लग्ना (प्रतिमण्डले) Golâdh. Sphutâgatîv. 13. तिर्यग्रेखा यत्र कलायां लग्ना Comm. zu Golâdh. Grahaṇav. 13. — β) *sich anschliessend, unmittelbar folgend:* तच्छ्रुतं यद्भादशवार्षिकावृष्टि: संपद्यते लग्ना Pañcat. 50, 18. द्वयोरपि विनिपात: संपद्यते लग्नम्

(लग्नः?) 92, 6. तत्र कानिचिद्दारुमाणि लग्नानि so v. a. *darüber gingen mehrere Tage hin* Vet. in LA. (III) 19, 1. — γ) *im Zusammenhange mit Etwas stehend:* धर्मेण (धनलग्न der Text) Çat. Br. 3, 2, 4, 11. किमस्य वणिजो भक्तव्ययेन शाकमूलादिना परिव्ययेन लग्नम् so v. a. *wie viele Unkosten fallen auf?* Kull. zu M. 7, 127. — δ) *im Begriff stehend*, mit infin. Paṇḍat. 244, 6. — ε) *toll, wüthend* (von einem Elephanten) Hall. 2, 65. — 2) m. *ein Sänger, dessen Amt es ist, den Fürsten am Morgen aus dem Schlaf zu wecken*, Taik. 2, 8, 56. — 3) n. *der Punkt, in dem sich zwei Linien berühren (schneiden)*, insbes. *der Punkt, in dem der Horizont und die Bahn der Sonne oder der Planeten zusammentreffen, der Aufgangspunkt der Sonne und der Planeten* (= राशीनामुदयः AK. 1, 1, 3, 29. Taik. H. 116. H. an. Med.); in der Astrol. *Horoscop* und auch *das ganze 1te Haus* Sûrjas. 3, 17. Varâh. Bṛh. S. 2, 3. 28, 1. 34, 9. 45, 16. 60, 20. 78, 25. 94, 10. 96, 7. fgg. 98, 17. fg. 103, 13. Bṛh. 1, 9. 16. 3, 6. 4, 7. fgg. Ind. St. 2, 274. fg. 281. Verz. d. B. H. No. 845. 862. Verz. d. Oxf. H. 330, *b*, 29. 331, *a*, 4. 332, *b*, 3. Mân. P. 109, 28. fg. शस्तलग्ने 123, 3. °स्थित Varâh. Bṛh. S. 104, 61. °सौम्य Bṛh. 12, 4. °गत 22, 2. °गत 25, 4. °प 22, 5. °पति 8, 19. लग्नेश Ind. St. 2, 269. fgg. लग्नभवः Sûrjas. 3, 46. लग्नात्तरप्राणाः 9, 3. लग्नात्तरभवः 10, 2. मीनलग्ने R. 1, 19, 8. कर्कटे लग्ने वाक्यताविन्दुना सह । प्रेष्यमाने 2. Später ein von den Astrologen zu einem Unternehmen als günstig bezeichneter Zeitpunkt (m. im Kathâs.): लग्ने च परिकल्पिते Kathâs. 15, 127. लग्नं विनिश्चित्य 16, 82. 46, 9. 50, 130. 80, 16. 104, 68. °निर्णय Verz. d. Oxf. H. 93, *a*, 36. लग्नं ज्ञातुम् Râga-Tar. 3, 337. लग्नमुक्ता 348. 351. Hit. 97, 13. लग्नस्य संप्राप्तः Kathâs. 123, 216. प्रस्थान° 12, 13. 54, 148. नास्ति लग्नः संवत्सरे ऽत्र वः 149. उक्तो लग्नश्च दूरे यत् 33, 62. दूरलग्नप्रदान 34, 79. 32, 17. उद्वाहलग्नं निरोतुम् 18. पप्रच्छ लग्नं विवाहे राजदत्ताया गणकानात्मनस्तथा 30, 32. वं कन्यका च चिरभाविविवाहलग्ना 32, 102. प्रस्थिते लग्नवित्ता Spr. 2989. Auch mit Beifügung von शुभ u. s. w.: लग्नो वो शोभनो राजन्नस्ति मासेषितस्त्रियु Kathâs. 36, 53. 52, 141. 54, 149. निर्णीय शुभलग्नम् Hit. 94, 9. Ver. in LA. (III) 16, 11. लग्नो ऽनुकूलो ऽस्ति राज्ञो मासेषु पञ्चसु Kathâs. 32, 6. लग्नः कलिङ्गसेनाया देवस्य च प्रभावकः । विवाहमङ्गलायेव किं नाप्येव विलोक्यते ॥ 3. शुभफलदमपच्छल्लग्नम् 34, 247. कुलज्ञेनागता गेहादिवाहस्तेन दूरतः 32, 95. सुलग्ने ऽस्या पवावेधि । कार्यः पाणिग्रहः 31, 70. so v. a. *der entscheidende Augenblick, Entscheidung:* लग्ने ऽप्युपस्थिते 79, 40. लग्नो खेष मयार्जितः *ich habe die Entscheidung herbeigeführt, durch mich ist die Sache zu Stande gekommen* 48. — Vgl. भूलग्ना, भूरि°, मधुलग्न, मध्य°. — 2) लगित P. 7, 2, 15, Sch. गृधो मरुमत्वो दुर्गाभ्यन्तरं लगितः (v. l. चलितः, प्रचलितः) vielleicht *schlüpfte in* Hit. 129, 14.

— caus. लार्गयति (आस्वादने, v. l. आसादने) Dhâtup. 33, 63. — Vgl. रक्, लक्.

— अनु *sich heften an, unmittelbar folgen:* शब्दानुलग्न *dem Laute nachgehend* Vet. in LA. (III) 23, 6.

— अव, partic. अवलग्न *herabhängend, hängend an:* तौ स्तिमितवस्त्रमिवावलग्नाम् Kâdab. 23 in Hall. Anth. S. 231. स्कन्धावलग्नोद्धतपक्षिनीक (द्विप) Ragu. 16, 68. कण्ठावलग्ना Kathâs. 30, 140. हस्तावलग्न Spr. 786. Vgl. अवलग्न (in der Bed. *Taille* auch Paṇḍar. 1, 5, 23). — caus. अवलागयति *anheften, anknüpfen* Schol. zu Kâty. Ça. 5, 10, 21. Hierher wohl (nicht zum simpl.) अवलगित (s. u. d. W. in den Nachträgen und füge noch hinzu Buaa. Niyâç. 18, 107. Daçak. 3, 13) urspr. *Anhängsel.*

— आ *sich anheften an, sich anschmiegen:* आलगतु Kirâṭ. 3, 50. पटालग्ने पत्यौ *wenn sich der Gatte an's Gewand schmiegt* Spr. 1675. — caus. आलागयति *anheften, anknüpfen* Schol. zu Kâty. Ça. 5, 10, 21.

— समा, partic. °लग्न *zusammengefügt, einander auf den Leib gerückt:* केशाकेशि समालग्ना न शेकुश्चेष्टितुं नराः MBh. 9, 1230.

— परि, im Prâkrit partic. परिलग्ग *hängen geblieben:* कुरवयमालापरिलग्गं च वक्कलं Çâk. 18, 20.

— वि *sich anhängen an:* तस्याः पुच्छे विलगिष्यामि Verz. d. Oxf. H. 136, *a*, 5. तस्याः पुच्छे विलग्य 135, *b*, 44. — partic. विलग्न 1) adj. *a*) = लग्न Taik. 3, 3, 238. H. an. 3, 415. Med. n. 133. *hängen —, stecken geblieben, feststitzend, hängend an, steckend auf:* रथे विलग्नाविव चन्द्रसूर्यौ MBh. 4, 1690. विलग्नग्राभवत्तस्मिंश्छातामंतानसंकुले (सलिलाशये) 11, 135. दंष्ट्राविलग्नांस्त्रीन्पिण्डान् 12, 13412. Bhâg. P. 3, 13, 30 (निमग्नो ed. Bomb.). केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु Buaa. 11, 27. पुच्छे Verz. d. Oxf. H. 135, *b*, 42. तरौ Varâh. Bṛh. S. 43, 20. लतागुल्म° Kathâs. 77, 29. प्रियतमसंभुक्ते विलग्नम् *sich klammernd an* Çiç. 9, 84. वटप्ररोहमासाद्य तत्रैव विलग्नः Paṇḍat. 259, 2. अम्बर° *hängend an* Çiç. 9, 20. बाहुविलग्नपद्म° (बाह्य) Çâk. 184. Ragu. 9, 68. रथकारशरीरे पादो विलग्नः *blieb hängen, stiess an* Paṇḍat. 186, 9. तीरविलग्ना नौ) so v. a. *gelandet* Kathâs. 101, 191. पुरो विलग्नैर्दारदृष्टिपातैः *geheftet* Kumâras. 7, 50. गोभिस्तृणविलग्नाभिः so v. a. *auf dem Grase liegend* Harîv. 3388. केशिवक्त्र° (वालु) *ruhend auf* 4313. *herabhängend:* स्तनद्वय R. Gorr. 2, 8, 11. क्रोडी wohl so v. a. *im Käfig hängend* R. Schl. 2, 78, 26. — *b*) *vergangen, verflossen:* तया सह तदर्धे कालकापतो समेयती वेला विलग्ना Paṇḍat. 207, 22. — *c*) *dünn, schmal* (von der Taille; vgl. 2, *b*) विलग्नमध्या MBh. 1, 6426. 3, 10084. वेदिविलग्नमध्या 4, 1195. Kumâras. 1, 39. — 2) n. *a*) = लग्न *Aufgang eines Gestirns, Horoscop* u. s. w. Varâh. Bṛh. S. S. 6, Z. 3. Bṛh. 4, 12. 15. 19. 5, 10. fg. 6, 2. शुभराशिविलग्ने Dipaṅ im ÇKDa. गोचरे वा विलग्ने वा ये यका रिष्टसूचकाः । गोचरे स्वराश्यपेक्षया यदा कदापि । विलग्ने जन्मलग्ने । इति संस्कारतत्त्वम् ÇKDa. — *b*) *Taille* (wo Ober- und Unterkörper *sich berühren:* vgl. अवलग्न 1, *c*) Taik. H. 607. H. an. Med. (m. n.). Hall. 2, 262. — विलगित (उपतापे) wird P. 6, 4, 24, Vârtt. 1 auf लङ् zurückgeführt.

— सम्, partic. संलग्न *stecken geblieben, steckend in:* हस्तसमसि संलग्नं (संमग्नं ed. Bomb.) पङ्के द्विपमिवावशम् MBh. 12, 11157. *in unmittelbare Berührung gekommen, handgemein geworden:* तयोः संलग्नयोर्युद्धे 13278. *sich berührend mit:* कनिष्ठा पार्श्वसंलग्ना Verz. d. Oxf. H. 202, *b*, 33. = संसक्त Schol. zu ṚV. Prât. 5, 22. रोधसि तद्वदुपसंलग्ने so v. a. *am Ufer dieser Insel* Kathâs. 123, 111. रत्नभूधरसंलग्नरत्नासन so v. a. *herkommend aus* Paṇḍar. 4, 6, 10. — caus. संलागयति *fest legen auf* (loc.) Schol. zu Kâty. Ça. 17, 5, 23.

लगड adj. *hübsch, schön* Taik. 3, 1, 12. — Vgl. लडक्.

लगत und लगध m. N. pr. eines Astronomen, des Verfassers des Gjotisha, Weber, Gjot. S. 9. 109. 112.

लगनीय partic. fut. pass. von लग्. मम पादे ऽन्येन तस्यापरेण लगनीयमेव *an meinen Fuss soll sich ein Anderer und an dessen Fuss wieder*

ein Anderer hängen Verz. d. Oxf. H. 156,*a*,5.

लगालिका f. *ein best. Metrum, 4 Mal* ⏑—⏑— Colebr. Misc. Ess. II, 158 (IV, 3). — Vgl. नगानिका, नगानी, नगालिका.

लगुड m. AK. 3,6,2,18. *Knüttel* 3,4,22,44. H. 785. Halâj. 4,41. M. 8,315. MBh. 7,1317. 8,747. Hariv. 12205. Kâm. Nîtis. 5,81. Varâh. Bṛh. 25,6. Spr. 5399. Kathâs. 20,125. 37,126. 53,13. 17. Râǵa-Tar. 6,23. Paṅkat. 37,3. 40,21. 174,24. Hit. 23,6. 12. 101,7. 12. 115,6. 7. am Ende eines adj. f. आ Kathâs. 72,207. — Vgl. लकुट.

लग्न s. u. लग् und 1. लङ्.

लग्नक m. *Bürge* (*der da haftet*) AK. 2,10,44. Trik. 2,10,17. H. 882. Hâr. 137. Halâj. 2,225.

लग्नकाल m. *der von den Astrologen zu einem Unternehmen als günstig bezeichnete Zeitpunkt* Kathâs. 71,166.

लग्नक्र adj. *fest auf Etwas bestehend, zudringlich* (*an die Kehle pakkend* Bhoǵan.) Kathâs. 28,170; vgl. बद्धग्रह 49,16.

लग्नचन्द्रिका f. Titel eines astr. Werkes Ind. St. 1,467,1.

लग्नदिन n. *der von den Astrologen zu einem Unternehmen als günstig bezeichnete Tag* Kathâs. 103,187.

लग्नदिवस m. dass. Kathâs. 73,36. 84,27.

लग्नदेवी f. N. einer fabelhaften Kuh aus Stein Çatr. 14,296.

लग्नवेला f. = लग्नकाल Kathâs. 21,222. Hit. 41,13.

लग्नसमय m. dass. Paṅkat. 129,16.

लग्नाक m. = लग्नदिन Kathâs. 103,170.

लग्निका f. fehlerhafte Variante für नग्निका (s. u. नग्नक) Comm. zu AK. 2,6,2,8.

लघँट् Uṇâdis. 1,134. m. *Wind* Ujjval. auch लघटि nach dem Pâṇâjana ebend.

लघत्ती f. N. pr. eines Flusses MBh. 2,375. लङ्घती ed. Bomb.

लघय् (denom. von लघु), °यति P. 1, 1, 57, Sch. *erleichtern, vermindern, schwächen, lindern:* नितान्तगुर्वीं धुरम् Ragh. 3,35. शरदम्बुदसंक्षतिम् Kir. 5,4. पृथून् (Pflanzen und Fürsten) Spr. 440. Bhaṭṭ. 10,39. व्यथाम् Ragh. 11,62. मनसिजरुजम् Vikr. 51.

लघिमन् (von लघु) m. gaṇa पृथ्वादि zu P. 5, 1, 122. Vop. 7, 61. 1) *Leichtigkeit* MBh. 13,1015 (महिमा st. लघिमा ed. Bomb.). लघिम्नोत्पत्य Buǵ. P. 10, 44, 34. Mârk. P. 99, 54 (लघिमगुण° zu lesen). समभूते मे लघिमानमात्मा Ragh. 13, 37. *die übernatürliche Kraft sich nach Belieben leicht zu machen* H. 202. Mârk. P. 40, 29. Paṅkat. 1, 1, 49. 2, 8, 2. Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,14. 184,*a*,13. 231,*b*,8. Vet. in LA. (III) 3,12. — 2) *Leichtsinn* Bhaṭṭ. 3,7. — 3) *geringes Ansehen, die Jmd zu Theil werdende Geringachtung:* यः (राजा) सकललघिमभाजनमुदरं न बिभर्ति डिम्भरूपम् Çiç. Paddh. Manasvipraçaṅsâ 7.

लघिष्ठ und लघीयस् s. u. लघु.

लघु (aus älterem रघु) Uṇâdis. 1,30. 1) adj. (f. लघ्वी und लघु), compar. लघीयस् (selten लघुतर), superl. लघिष्ठ Vop. 7,53. *a) rasch, schnell, behende:* नर M. 7,193. पतिन् R. 2,96,45 (105,44 Gorr.). °लक्ष्मि Spr. 814. °गति Megh. 16. लघूत्थान Kâm. Nîtis. 11,63. लघुसमुत्थान 4,70. शरं च दस्तादादाय ततो लघुपराक्रमः R. ed. Gorr. 1,77,38. °परिक्रम Kâm. Nîtis. 12,25. लघुगुरुकृतप्रतिलतणानि (von Tacten) Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,14. Bez. eines best. Fluges der Vögel Paṅkat. II, 87. Bez. der Nakshatra Hasta, Açvini und Pushja (vgl. क्षिप्र in den Nachträgen) Varâh. Bṛh. S. 98,9. Weber, Nax. 2,385, N. 4. लघु adv. = शीघ्रम्, द्रुतम् AK. 1,1,2,60. Trik. 3,3,73. H. 1470. an. 2,55. Med. gh. 5. Halâj. 4,13. R. 2,16,21 (44,21 Gorr.). 58,23. 7,95,5. Kathâs. 27,156. 29,136. 37,224. 121,110. 122,24. 124,10. Mârk. P. 109,57. 134,55. लघूत्पित Kâm. Nîtis. 18,66. लघुद्राविन् *schnell* (*leicht*) *in Fluss gerathend* (Quecksilber) Sarvadarçanas. 99,18. — *b) leicht d. i. nicht schwer* H. an. Med. गुरुर्लाघा लघुर्भव AV. 9,3,24. पर्णाल्लघीयसी भव 10,1,29. MBh. 3,2615. 10943. 12,6836. R. Gorr. 2,31,25. 4,9,93. Suçr. 1,20,16. 116,16. Ragh. 9,62. Megh. 20 (zugleich *gering geachtet*). Vṛddha-Kâç. 15,19. Varâh. Bṛh. S. 81,5. 6. Râǵa-Tar. 3,128. Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,44. Buǵ. P. 2,10,23. 8,12,23. Paṅkat. 76,17. fg. 253,13. °काष्ठ adj. *einen leichten Unterleib —, nicht viel im Magen habend* Kâm. Nîtis. 7,36. *leicht zu verdauen, nicht schwer im Magen liegend* Suçr. 1,149,16. 18. उदक 172,4. *leicht* so v. a. *sich leicht fühlend, keine Last empfindend* Hariv. 10644. fg. वपुस् Çiç. 38. मार्गपरिश्रमादलघुशरीरा Mâlav. 65,15. लघुत्तरात्मना Kathâs. 67,103. *leicht* so v. a. *ohne Gefolge:* लघुर्भव मत्कराज्ञ लघुः स्वैरं गमिष्यसि MBh. 3,8449. *leicht zu vollbringen* 5,739. धर्म Spr. 580. *leicht von Statten gehend:* संहारविततेपलघुक्रियेण रुस्तेन Ragh. 5,48. so v. a. *leicht articulirt* (neben मध्यम und गुरु von der Aussprache des व) Ind. St. 10,438. *leicht* so v. a. *leicht machend:* सङ्ग Śiksh. 13. — *c) prosodisch kurz* ṚV. Prât. 2,14. 17,22. 18,20. 33. AV. Prât. 1,51. Taitt. Prât. 2,10. P. 1,4,10. 7, 3, 86. Çînt. 2,19. 21. 3,14. Ind. St. 8, 84. 89. 211. 426. 453. 467. Çaut. 9. fgg. 22. Varâh. Bṛh. S. 104,58 (zugleich *unanschnlich*). Mârk. P. 39,18. ह्र° Çaut. 44. लघीयस् ṚV. Prât. 18,20. *kurz der Zeit nach*, von einer Unterdruckung des Athems: लघुमध्योत्तरीयाध्यः प्राणायामस्त्रिधोदितः Mârk. P. 39,18. लघुर्द्वादशमात्रस्तु 14. — *d) klein, kurz, winzig, gering, unbedeutend* (Gegens. महत्, बृहत्, विपुल) H. 1427. H. an. Med. यानानि R. 2,92,33 (101,36 Gorr.) गोष्पद 6,69,16. समुद्रान्परिखालघून् Kathâs. 52,7. Ragh. 12,66. लघुश्मवती Suçr. 1,135,7. सैन्य Kathâs. 122,95. °हीपा: Hit. 84,3. °मात्र Âçv. Çr. 3,14,4. सामन् Çat. Br. 12,2,2,10. Lâṭj. 6,10,20. Gobh. 3,3,28. नातिलघुविपुलरचनाभिः Varâh. Bṛh. S. 1,2. Bṛh. 28 (26),7. Buǵ. P. 3,16,14. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*, No. 403. 232,*b*, No. 626. Sarvadarçanas. 90,19. °प्रमाण Varâh. Bṛh. S. 70,14. सर्षप Spr. 113. दर्पणे करिणः 3733. शशक Paṅkat. 55,11. 87,8. °हार 170,24. °विवर 25. भोजनम् *schmale Kost* Spr. 2064. लघु भुक्तवत्तम् Suçr. 1,15,6. यत्लघूर्मिगतिः Çiç. 9,28. 78. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, Cl. 40. क्षमा, मैत्री Spr. 382. भावाः Kathâs. 25,42. कर्मन् MBh. 3, 10485. कर्तव्यानि Paṅkat. 202, 5. °रागवशीकृत Kathâs. 37,28. पापानि, प्रायश्चित्तानि Buǵ. P. 6,2,16. चतुष्प्रकाराः Paṅkat. 172,4. तृण Spr. 82. *klein, schwach, elend, unbedeutend, unanschnlich, gering geachtet,* von Personen M. 7,209. MBh. 3, 11303. R. 6,16,29. 85,8. 101,16. Megh. 20. Spr. 113. 440. 1129. 1461. 3490. 3794. 3930. 4074. 4142 (Gegens. साधु). 5385, v. l. Varâh. Bṛh. S. 104,58. Prab. 31,14. Paṅkat. 68,6. °संदेशपदा सरस्वती *wenig* Ragh. 8,76. यत्लघुसंचारा गतिः Mâlav. 110,4 (vgl. die Adan.). बलैरलघुहृदयैः Râǵa-Tar. 4,513. °सिराल Varâh. Bṛh. S. 68,8. लघु मन् *gering achten*

Çiç. 160. Spr. 1738. लघीयस् MBh. 2,2211. 3,10622. ब्रह्मिन्, तृण Spr. 2927. लघुतर Paṇḍat. 53,9. 16. वंक्षीयसी लघिष्ठा वा गिरं निर्मात्ति वामिनः *lang oder kurz* Cit. bei Kull. zu M. 5, 64. लघिष्ठ = अल्प und भेलक H. an. 3,177. = अत्यल्प und भेल Med. th. 16. — *e) jünger:* भवदीयलघुभ्रातरौ Paṇḍat. 220,3. तस्माल्लघुः Verz. d. B. H. No. 881; vgl. Ind. St. 2, 417. — *f) leise:* °पदन्यास Kathâs. 112,152. लघु *laut:* गीत Bhâg. P. 10,35,10. — *g) angenehm, ansprechend;* = इष्ट, चारु, मनोज्ञ AK. 3,1,4,29. H. an. 2,55. Med. gh. 3. °वासस् M. 2,70. लघु वासो दर्शनं वाक्ष लघ्वी MBh. 5,901. Râgat. 11,12. 80. आभरण *hübsch, schön* Milav. 82. — 2) f. लघु *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2,4,4,21. Trik. H. an. Med. Ratnam. 123. — 3) f. लघ्वी *a) ein leichter Wagen* Trik. 2,8,49. H. an. 2,536. Med. v. 23. Hâr. 162. — *b) Trigonella corniculata Lin.* Râgân. im ÇKDn. — 4) n. *a) ein best. Zeitmaass,* = 15 Kâshṭhâ = $^1/_{15}$ Nâḍikâ Bhâg. P. 3,11,7. 8. VP. 22, N. 3. — *b) Agallochum, eine best. Species von Ag.* (अगरु, कृष्णागरु) Trik. H. ç. 129. Med. Ratnam. 133. *die Wurzel von Andropogon muricatus* (vgl. लघुतृण) Râgân. im ÇKDn. — Vgl. परि°.

लघुकङ्कोल m. *Pimenta acris oder eine ähnliche Myrtacee* Hemâdri in Nigh. Pr.

लघुकण्टका f. *Mimosa pudica* Vaidjarn. in Nigh. Pr.

लघुकर्कन्धु m. f. *eine kleine Art Zizyphus* Madanav. in Nigh. Pr.

लघुकर्णी f. *eine best. Pflanze,* = mahr. मोरवेल Râgân. in Nigh. Pr.

लघुकाय 1) adj. *einen leichten Körper habend.* — 2) m. *Ziege* Trik. 2,9,25.

लघुकाश्मर्य m. *ein best. Baum,* = कङ्कोल Râgân. im ÇKDn.

लघुकौमुदी f. *die kurze* Kaumudî, Titel einer Abkürzung der Siddhântakaumudî, Gild. Bibl. 381.

लघुक्रम adj. *einen raschen Schritt habend, rasch an Etwas gehend, eilend:* पक्वतालानि मक्षितो पातयाव लघुक्रमो Harîv. 3709. विवृते गर्ते निपपात लघुक्रमः Mâṇ. P. 21,9. °क्रमम् adv. *raschen Schrittes, schnell* Kathâs. 6, 134.

लघुखट्टिका f. *Sessel, Lehnstuhl* Hâr. 200.

लघुगर्ग N. pr. eines Geschlechts Wilson, Sel. Works I, 338. — Vgl. खरतरगच्छ.

लघुगङ्गाधर m. N. *eines medic. Pulvers gegen Durchfall* Çârṅg. Saṅh. 2,6,21.

लघुगर्ग m. *ein best. Fisch* Trik. 1,2,20. Hâr. 190.

लघुगोधूम m. *eine kleine Weizenart* Râgân. in Nigh. Pr.

लघुग्रहमञ्जरि f. Titel eines astrol. Werkes Mack. Coll. I, 130.

लघुचन्द्रिका f. Titel eines Commentars Hall 137.

लघुचित्त adj. (f. या) *leichtsinnig, flatterhaft:* स्त्रियः MBh. 13,2202. °ता f. *Leichtsinn, Flatterhaftigkeit* R. 4,1,22.

लघुचित्तन n. Titel eines Werkes Hall 185.

लघुचित्तामणिरस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 993.

लघुचिर्भिटा f. *Koloquinthe* Râgân. im ÇKDn.

लघुचेतस् adj. *kleinen Geistes, niedern Sinnes* (Gegens. उदारचरित) Spr. 203.

लघुच्छदा f. *eine Spargelart* Dhanvan. in Nigh. Pr.

लघुच्छेद्य adj. *leicht auszurotten.* — *zu vernichten* Paṇḍat. III, 69. wohl fehlerhaft für लघूच्छेद्य.

लघुतङ्गल m. *ein best. Vogel,* = लावक Trik. 2,5,31.

लघुतातक n. Titel eines von Varâhamihira verfassten *kürzeren* Werkes über die *Nativitäten* Verz. d. B. H. No. 858. fgg. Verz. d. Oxf. H. 338,*a*,17. — Vgl. बृहत्तातक.

लघुतातिविवेक m. *der kurze* Gâtiviveka, Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 278,*a*,36.

लघुता (von लघु) f. 1) *Behendigkeit, Geschicklichkeit* MBh. 7,4654. fg. बाहूनाम् Mâṇ. P. 19,15. — 2) *Leichtigkeit* Suçr. 1,43,20. 149,1. 17. 313,4. Ṛt. 3,4. शरीर° Verz. d. Oxf. H. 237,*a*, No. 368. — 3) *prosodische Kürze* Varâh. Bṛh. S. 104,57. Ind. St. 9, 225. — 4) *Kleinheit, Kürze, Geringigkeit, Unbedeutendheit:* कश्मलं लघुतां याति MBh. 13,7145. दिनानि लघुतां ययुः *wurden kurz* Râga-Tar. 3,170. — 5) *Leichtsinn, Uebereilung, Unüberlegtheit* R. 2,27,2. — 6) *geringes Ansehen, Mangel an Würde, Erniedrigung* R. 5,70,9. Spr. 1079. 2503. 4308. 4911. Çiç. 9,56. Varâh. Bṛh. S. 104,57. Bhâg. P. 5,1,20.

लघुत्व (wie eben) n. 1) *Behendigkeit, Geschicklichkeit:* विमोक्षादानसंधाने MBh. 1,5245. — 2) *Leichtigkeit* Çvetâçv. Up. 2,13. Suçr. 1,20,18. 118,2. 170,1. 184,20. लघुत्वादुत्स्वप्नायते *weil er sich leicht fühlt* Mṛicch. 49,10. — 3) *prosodische Kürze* Ind. St. 9,223. — 4) *Leichtsinn, Uebereilung, Unüberlegtheit* MBh. 13,6884. — 5) *Mangel an Würde, geringes Ansehen, Erniedrigung* R. 3,35,28. 6,36,95. Spr. 1031. Vṛddha-Kâṇ. 13,14. Prâçnottarâh. 18 in Monatsber. der Berl. Ak. 1868, S. 110. Çârṅg. Paddh. Prakîrṇ. 17.

लघुदर्वी f. *eine kleinere Art Croton* Bhâvapr. in Nigh. Pr.

लघुदीपिका f. Titel eines Commentars Colebr. Misc. Ess. I, 76.

लघुदुन्दुभि m. *eine kleine Trommel* (डगडु) Çârṅg. im ÇKDn.

लघुद्राक्षा f. *eine kleine Traube ohne Kerne, Kischmisch* (काकलीद्राक्षा) Râgân. im ÇKDn.

लघुद्वारवती f. *die jüngere* Dvâravatî oder *der jüngere Theil der Stadt* Dv. Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,21. — Vgl. मूलद्वारवती.

लघुनामण्डल n. Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,44.

लघुनामन् n. *Agallochum* (अगरु) Çârṅg. im ÇKDn.

लघुनारदीय n. *das kürzere* Nâradîja Verz. d. Oxf. H. 278,*b*,13. — Vgl. बृहन्नारदीय.

लघुन्यायसुधा f. Titel eines Commentars Hall 97.

लघुन्यास m. Titel einer grammatischen Schrift Verz. d. Oxf. H. 185,*b*,38.

लघुपञ्चमूल n. Râgân. in Nigh. Pr.; s. u. पञ्चमूल 1).

लघुपण्डित m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 110,*b*,9.

लघुपतनक m. N. pr. einer Krähe (*schnell fliegend*) Paṇḍat. 104,13. Hit. 9,6. — Vgl. लघुपातिन्.

लघुपत्रक m. = रोचनी Çârṅg. im ÇKDn.

लघुपत्रफला f. = लघुदम्बरिका Râgân. im ÇKDn. u. d. l. W.

लघुपत्री f. *eine best. Pflanze,* = अश्वत्थी Râgân. im ÇKDn.

लघुपद्धति f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 338,*a*,17.

लघुपराशर m. *der kürzere* Parâçara (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. Oxf. H. 278,*b*,25. — Vgl. बृहत्पराशर.

लघुपरिभाषावृत्ति f. Titel eines *kurzen Commentars* zu den grammatischen Paribhâshâ Colebr. Misc. Ess. II, 42.

लघुपर्णी f. = लघुकर्णी Madanav. in Nigh. Pr.

1. लघुपाक m. *Verdaulichkeit* Çârîr. Sârîr. 1,4,12.

2. लघुपाक adj. *leicht verdaulich* Suçr. 1,193,9. 196,17. Çârîr. Sârîr. 1,1,37.

लघुपाकिन् adj. dass. Suçr. 1,188,20. 196,8.

लघुपातिन् adj. *schnell fliegend;* m. N. pr. einer Krähe Kathâs. 61,58. — Vgl. लघुपतनक.

लघुपिच्छिल m. *Cordia Myxa Lin.* Râgân. im ÇKDr.

लघुपुलस्त्य m. *der kurze* Pulastja (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Ind. St. 1, 235.

लघुपुष्प m. *eine Art* Kadamba (भूमिकदम्ब) Râgân. im ÇKDr.

लघुप्रयत्न adj. *mit geringer Articulation ausgesprochen:* °तर compar. P. 8,3,18.

लघुबदर 1) m. *eine Art Judendorn.* — 2) f. ई desgl. (= भूबदरी) Râgân. im ÇKDr.

लघुबृहत्पुराण n. Titel einer Abkürzung des Lalitavistara Mack. Coll. I, 30.

लघुबोध m. Titel einer (*leichtverständlichen*) Grammatik Verz. d. B. H. No. 778. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 48.

लघुब्रह्मवैवर्त n. *ein abgekürztes* Brahmavaivarta Verz. d. Oxf. H. 278,*b*,16.

लघुब्राह्मी f. *eine best. Pflanze,* = शलोद्भवा Râgân. im ÇKDr.

लघुभव m. *Erniedrigung* Spr. 1859, v. l.

लघुभागवत n. *das abgekürzte* Bhâgavata Wilson, Sel. Works I, 167.

लघुभाव m. *Leichtigkeit* Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,43.

लघुभुज् adj. *wenig essend* Varâh. Bṛh. 17,1.

लघुभूयणकात्ति f. Titel eines Commentars Colebr. Misc. Ess. II, 42.

लघुमञ्जूषा f. desgl. Hall 115.

लघुमन्थ m. = तुद्राग्निमन्थ *Premna spinosa* Râgân. im ÇKDr.

लघुमास 1) m. *Rebhuhn* Trik. 2,3,26. — 2) f. ई *eine Art Valeriana* (गन्धमांसी) Râgân. im ÇKDr.

लघुमानस Titel eines astr. Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,41.

1. लघुमूल n. *in algebra, the least root with reference to the additive quantities,* Wilson; *the lesser root of an equation* Hauebt.

2. लघुमूल adj. *unbedeutende Wurzeln habend* so v. a. *am Anfange unbedeutend* (Gegens. महोदय, महाफल): घर्ष Spr. 3893. MBh. 2,164. R. Gorr. 2,109,14.

लघुमूलक n. *Radies* Bhâvapr. in Nigh. Pr.

लघुयम m. *der kurze* Jama (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,23.

लघुलण n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* AK. 2,4,8,30.

लघुललितविस्तर *ein Auszug aus dem* Lalitavistara Verz. d. Oxf. H. 84,*b*,2. 372,*b*, No. 266.

लघुवसिष्ठसिद्धान्त oder लघुवा° m. Titel einer *Abkürzung des* Vas. Colebr. Misc. Ess. II, 377. 379. 392.

लघुवाक्यवृत्ति f. Titel eines Werkes Hall 107. °प्रकाशिका ebend.

लघुवार्त्तिक n. Bez. der letzten acht Bücher im Tantravârttika Hall 170. Titel eines Werkes des Kumârila 184. °टीका ebend. Mack. Coll. I, 12.

लघुवासिष्ठसिद्धान्त s. u. लघुवसिष्ठ°.

1. लघुविक्रम m. *ein rascher Schritt* R. 7, 101, 3 (nach dem Comm. adj., indem er गोघेः ergänzt).

2. लघुविक्रम adj. *einen raschen Schritt habend, behend auf den Füssen, eilend* Harîv. 3747. R. 1,26,11 (27,10 Gorr.). 42,5. 12 (43,12 Gorr.). 3,26,19. 40,29. 68,30. 7,21,1. 82,30; vgl. आशुविक्रम MBh. 8, 1910. त्वरितविक्रम R. Gorr. 1,43,5. 7,107,8.

लघुविष्णु m. *der kurze* Vishṇu (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,1.

1. लघुवृत्ति f. *ein kurzer Commentar,* Titel eines best. Commentars Colebr. Misc. Ess. II, 44. लघुवृत्त्यवचूरिका Verz. d. B. H. No. 767.

2. लघुवृत्ति adj. *dessen Art und Weise zu sein eine leichte ist, was leicht ist* RV. Prât. 18,33.

लघुवेधिन् adj. *geschickt treffend* MBh. 7,4561.

लघुवैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा f. Titel einer *Abkürzung der* Vaijâk. Colebr. Misc. Ess. II, 42.

लघुशब्दरत्न n. Titel einer *Abkürzung des* Çabdaratna Colebr. Misc. Ess. II, 13. 41. Verz. d. B. H. No. 730.

लघुशब्देन्दुशेखर m. Titel eines Commentars zur Siddhântakaumudî, einer *Abkürzung des* Çabdend. Verz. d. Oxf. H. 164,*b*. 165,*a*. Colebr. Misc. Ess. II, 13. 41.

लघुशाक्तिपुराण n. Titel einer *Abkürzung des* Çâktip. Verz. d. Oxf. H. 372,*b*, No. 266.

लघुशिखरताल m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,10.

लघुशिवपुराण n. *das abgekürzte* Çivap. Verz. d. Oxf. H. 75,*a*, No. 127.

लघुशौनकी f. *die kürzere* Çaun., Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1247. — Vgl. वृद्धशौनकी.

लघुसंयक् m. Titel eines Werkes Mack. Coll. I, 139.

लघुसंयक्तिणीसूत्र n. desgl. Wilson, Sel. Works I, 282.

लघुसत्त्व adj. *einen schwachen Charakter habend* Varâh. Bṛh. S. 15, 12. °ता f. *Schwäche des Charakters* MBh. 3,15111. R. 7,22,10.

लघुसदाफला f. = लघुडम्बरिका Râgân. im ÇKDr.

लघुसप्तति f. *eine Abkürzung der* Saptatikâ: °स्तव Verz. d. B. H. No. 1338.

लघुसांख्यवृत्ति f. = लघुसांख्यसूत्रवृत्ति Titel einer *Abkürzung des* Sâṁkhjapravakanabhâshja Hall 2. Verz. d. Oxf. H. 238,*a*, No. 374.

लघुसार adj. *winzig, unbedeutend, werthlos:* तृणमिव लघुसारे सर्वमसारसौख्ये Journ. of the Am. Or. S. 7,44.

लघुसिद्धान्तकौमुदी f. = लघुकौमुदी Verz. d. B. H. No. 734.

लघुसिद्धान्तचन्द्रिका f. Titel eines Commentars Hall 178.

लघुसुदर्शन n. *ein best. med. Pulver* Verz. d. B. H. No. 982.

लघुस्वानता f. Burn. Lot. de la b. l. 426,2 wohl fehlerhaft für लघूत्थानता (beide Formen auch Vjutp. 144) *rasches an's Werk Gehen,* wie die v. l. hat; vgl. लघूत्थान Kâm. Nîtis. 11,63. लघुसमुत्थान 4,70. लघूत्थित 18,66.

लघुस्पद = रघुस्पद Kâç. zu P. 8,2,15, Vârtt. 2.

लघुहस्त adj. *Geschicklichkeit in den Händen besitzend*, von guten Bogenschützen, Schreibern u. s. w. gesagt, H. 772. Hallâs. 2,316. MBh. 7,4741. Sûçr. 1,123,16. Kathâs. 42,133. Bhâg. P. 6, 10, 25. Spr. 3090. 4717. लघुचित्रहस्त MBh. 3,15709.

लघुहस्तता f. *Geschicklichkeit in den Händen* MBh. 5,2356. Ragh. 9,63.

लघुहस्तव n. dass. Kathâs. 11,70.

लघुहस्तवत् adj. = लघुहस्त Harîv. 7524 (wo mit der neueren Ausg. °हस्तवान् zu lesen ist). Bhâg. P. 8,11,21.

लघुहारीत m. *der kurze Hârîta* (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. B. H. No. 1166. Kull. zu M. 2,246.

लघुहेमडुग्धा f. = लघुडुम्बरिका Râéân. im ÇKDn.

लघूकर् (लघु + t. कर्), °कृत *leichter gemacht* Mân. ç. 204. *kürzer gemacht* und zugleich *um das Ansehen gebracht* Spr. 3870.

लघूकरण n. *das Vermindern, Verringern:* पञ्चमल° Sarvadarçanas. 75,18.

लघूक्ति f. *eine kurze Ausdrucksweise* Cit. bei Kull. zu M. 5,64.

लघुडुम्बरिका f. *Ficus oppositifolia* Râéân. im ÇKDn.

लघूय् (von लघु), लघूयति *geringschätzen* Çat. Br. 6,7,2,18. 9,1,2,6.

लघ्वक्षीर n. *eine geringere Feige* Râéân. und Râéâv. im ÇKDn. u. यक्षीर.

लघ्वत्रि m. *der kurze Atri* (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. B. H. No. 940. — Vgl. बृहदत्रि.

लघ्वाम्रडुम्बराढ्या f. = लघुडुम्बरिका Râéân. im ÇKDn. u. d. l. W.

लघ्वार्यसिद्धान्त m. *ein abgekürzter Âryas.* Colebr. Misc. Ess. II, 467.

लघ्वाशिन् adj. *wenig essend* Bhag. 18,52. MBh. 12,5920.

लघ्वाहार adj. dass. MBh. 3, 10845. 13935. Mârk. P. 40,15. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,21.

लङ्क 1) m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. °शान्तमुखा: *die Nachkommen Laṅka's und Çântamukha's* gaṇa तिककितवादि zu P. 2,4,63. — 2) लङ्का f. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,40. gaṇa वाकिनादि zu P. 4,1,155. AK. 3,6,4,7. *a*) N. der Hauptstadt von Ceylon und Bez. der ganzen Insel, die das Epos von Râkshasa unter ihrem Fürsten Râvaṇa bewohnt sein lasst, Taitt. 3,3,40. H. an. 2,16. Med. k. 32. Viçva bei Uṇâdis. MBh. 3,15874. 16252. 16333. fgg. R. 1,1,71. 3,53,35. 6,15,22. 95,12. LIA. I, 200, N. 3. Hiouen-thsang II, 144. Varâh. Bṛh. S. 14,11. Goldâs. Bhuvanâk. 17. 26 (°देश). Ragh. 12,61. 63. 66. Kathâs. 51,61. Râéa-Tar. 1, 298. 3,73. Weber, Râmây. Up. 299. Bhâg. P. 5,19, 20. Mârk. P. 58,20. Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,49. 29,*b*,18 (°काण्ड). LA. (III) 4,5 Anm. °पुरी AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (56). Burn. Intr. 514. °नगरी Ganitâdhy. Kilakâdhy. 15. लङ्कोदय *Sonnenaufgang in Laṅkâ* Sûrjas. 13,14. Goldâs. Madhyamâdhy. 20. Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 53. °नाथ Verz. d. B. H. No. 943. Ragh. 15,103. °पति H. 706, Sch. लङ्काधिप Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,25. लङ्काधिपति R. 3,37,34. Ragh. 6,62. लङ्काधिराज Râéa-Tar. 3,73. लङ्केन्द्र 4,502. लङ्केश Taitt. 2,8,5. H. 699. 706. Harîv. 1876. Ragh. 12,84. लङ्केश्वर R. 6,36,76. Ragh. 6,40. 13,78. Spr. 1185. 2630. लङ्कारि *der Feind von L. d. i. Râma* 3523. °दाहिन् *der Verbrenner von L. d. i. Hanumant* Çabdar. im ÇKDn. — *b*) = रावणवृक्ष LIA. I, 34. — *c*) *eine* Çâkinî H. an. Med. Viçva. — *d*) *ein liederliches Weib* diess. — *e*) *Zweig* diess. und Taitt. — *f*) *eine best. Körnerfrucht* (= कारलत्रिपुटा u. s. w.) Râéân. im ÇKDn. = लङ्कोपिका Ratnâk. in Nigh. Pa.

लङ्कलङ्का f. N. pr. einer Tochter der Saṁdhjâ, Gattin Vidjutkeça's und Mutter Sukeça's R. 7,4,23.

लङ्कापिका, लङ्कायिका und लङ्कारिका f. = लङ्कोपिका Çabdar. im ÇKDn.

लङ्कावतार oder vollständiger सद्धर्म° Titel eines buddh. Sûtra Burn. Intr. 6. 8. 68. 109. 438. 514. 542. Hiouen-thsang II, 144. Wilson, Sel. Works II, 21.

लङ्केशवनारिकेतु m. Bein. Arǵuna's MBh. 4,1294. Nîlak.: लङ्केशस्य रावणस्य वनं तस्यारिर्नाशको हनूमान् स केतुर्ध्वजो यस्य स ल°.

लङ्कोपिका f. *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2,4,8,21.

लङ्कोपिका f. dass. Çabdar. im ÇKDn.

लङ्क, लंङ्कति (गतौ) Dhâtup. 5,25.

लङ्क, लंङ्कति Nir. 6,26. (गतौ. गतौ खञ्जे Vop.) Dhâtup. 5,37. विलङ्कित. उपतापे aber विलगित P. 6,4,24, Vârtt. 1. विलङ्कयन् Pañkat. I, 369 fehlerhaft für विलङ्घयन्; vgl. Spr. 4700.

लङ्क 1) adj. als Erkl. von खोर *lahm* Schol. zu Kâç. Ça. 22,3,19. — 2) m. *a*) = सङ्क (vgl. लग्). — *b*) = पिङ्ग H. an. 2,47. Med. g. 21. — H. an. 2,428 wird टार durch लङ्क (रङ्क Med.) umschrieben.

लंङ्कक m. = वल्लभ Ujjval. zu Uṇâdis. 2,37.

लङ्गल 1) n. = लाङ्गल *Pflug* Kâç. 29,4. — 2) लङ्गल oder लाङ्गल N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang II, 177. 412. Vie de Hiouen-thsang 208.

लङ्गिम oder लङ्गिमन् Kâṇḍan. 109. Dhâtuv. in L.A. 67,17. लङ्गिमन् 83,1.

लङ्गूल n. = लाङ्गूल Uṇâdis. im ÇKDn.

लङ्घ्, लंङ्घति, °ते Dhâtup. 4,34 (गतौ, भोजननिवृत्तौ). 5,55 (शोषणे, गतौ). 1) *springen auf:* यन्त्रो चालङ्घयुः शैलान् Bhatt. 15,32. — 2) *fasten.* — 3) *abzehren:* यं व्याधिरतिदीप्ताङ्गं कदाचित्तु न लङ्घति Halây. im ÇKDn. — caus. लङ्घयति Dhâtup. 33,87. 121 (भाषार्थ, भासार्थ). aus metrischen Rücksichten hier und da auch med. 1) *springen über, überschreiten, hinübergehen über;* mit acc.: वत्मतल्लीम् M. 4, 38. लङ्घयित्वा प्रयाहि माम् MBh. 3,11173. fg. सागरः प्लवगेन्द्रेण क्रमेणैकेन लङ्घितः 11178. प्राकारम् 4,511. 13,1575. सरितः 7281. Harîv. 3747. 4282. वेलां न लङ्घयति das Meer R. Gorr. 2,11,3. 4,63,16. 5,1,19. 28. 2,43. 3,7. 6,3. 53, 16. 7,27,1. Megh. 55. Ragh. 4,52. Spr. 1239. 1319. Varâh. Bṛh. S. 53. 108. Râéa-Tar. 3,225. 4,566. Mârk. P. 35,30. 50,33. 51,90. कल्पान्तवातसंघातप्रलङ्घिताशेषभूभृतः (उदधेः) Prab. 3, 1. 92, 13. Verz. d. Oxf. H. 33,*a*,4. 6. मर्यादाम् *die Grenze überschreiten* MBh. 12,2565. Harîv. 14324. R. 7,36,33. Spr. 4201. Bhâg. P. 1,18,37. स्थितिम् Kathâs. 45,91. R. Gorr. 2,121,17. — 2) *besteigen, hinüberfahren über, von oben berühren:* दुर्गालङ्घितविग्रहः (उमावल्लभ) Sâh. D. 18, 20. कृत्त इव भूतिमलिनो यथा यथा लङ्घयति — दर्पणम् Spr. 3397. कलाग्रिलङ्घितनरु Ragh. 11, 93. निवासशैषे मे ऽभ्यत्यो देवैरपि न लङ्घते so v. a. *wird betreten* Kathâs. 94, 71. यावद्रूपं कटिति न जरया लङ्घते (v. l. für लुप्यते) प्रेयसीनाम् Spr. 2601. Prasan. 1, 10. — 3) *übertreten, verletzen, zuwiderhandeln:* संविदम् Jâén. 2, 137. निदेशम् Ragh. 9, 9. आदेशम् Kathâs. 33, 15. आज्ञाम् 51, 13. Râéa-Tar. 4, 312. मन्त्रिमतम्

Kathâs. 38, 53. वचः 49, 16. गुरुवाक्यम् Spr. 4090. शास्त्राणि Mârk. P. 30, 88. — 4) *hinüberkommen über, entgehen:* नियतिः केन लङ्घ्यते Spr. 2011. प्राक्तनं केन लङ्घ्यते 2169. भाग्यं न लङ्घ्यति को ऽपि विधिप्रणीतम् 3655. दैवलिखितं भोगम् Kathâs. 40, 21. शिरसि लिखितम् Spr. 4147. प्रज्ञापतिवरम् so v. a. *hintertreiben, vereiteln, hemmen* R. 7, 23, 8, 58. दैवी च सिद्धिरपि लङ्घयितुं न शक्या Mudrâk. 98, 13. Spr. 1900. — 5) *sich über Jmd hinwegsetzen* so v. a. *gegen Jmdes Willen handeln, sich vergehen gegen Jmd, beleidigen, verletzen* M. 5, 151. 8, 371. MBh. 1, 1445 (लम्बयित्वा ed. Bomb.). Hariv. 571 (तर्जिता st. लङ्घिता die neuere Ausg.). Spr. 5397. इयमा घलङ्घितात्मा *der sich nicht in der Leidenschaft vergessen hat* Kathâs. 20, 128. रविणा लङ्घितो मासः Weber, Gjot. 101. — 6) *Jmd übertreffen:* गुणैरौदार्यशौर्यधैर्यघनमलङ्घयन् Râgâ-Tar. 4, 217. *Etwas übertreffen, verdunkeln:* धर्यणामार्यतो रामो धैर्यं रावणो लङ्घयन् R. 6, 90, 12. (यशः) जगत्प्रकाशं तद्दोषमिश्रया भवदुरुलङ्घितुं मनोयातः Râgâ-Tar. 3, 48. — 7) *Jmd fasten* (Essenszeiten *übergehen*) *lassen* Suçr. 2, 407, 12. 462, 11. सुलङ्घित *den man hat richtig fasten lassen* 407, 17. — Vgl. लङ्घन fgg.

— desid. vom caus. *zu überschreiten gedenken:* मेरुं लिलङ्घयिषति Cit. im Comm. zu Kâvjâd. 2, 350.

— अति caus. *übertreten, verletzen:* आज्ञाम् Kathâs. 18, 37. Prab. 7, 16 (अभिलङ्घ्य v. l.). — Vgl. अतिलङ्घन, अतिलङ्घिन्.

— अभि caus. 1) *springen über, überschreiten:* अद्रिम् M. 4, 54. Jâgn. 1, 137. मर्यादाम् MBh. 12, 5455. — 2) *übertreten, verletzen:* धर्मम् MBh. 12, 8219. आज्ञाम् Prab. 7, 16. — 3) *sich vergehen gegen Jmd:* ब्रह्मणाम् MBh. 12, 3565. — Vgl. अभिलङ्घन.

— अव caus. *hinwegkommen über* (eine Zeit), *verbringen:* अवलेलावलङ्घिते । ग्रीष्मे Kathâs. 78, 22. सर्वकालमवलङ्घ्य so v. a. *keine Zeit eingehalten habend* Gobh. 7.

— उद् caus. 1) *überschreiten, hinübergehen über, passiren:* कावेरीम् Kathâs. 19, 95. पर्वतम् 39, 143. 43, 137. 202. अर्णवम् 100, 11. 103, 1. 109, 11. 44. 116, 11. Râgâ-Tar. 3, 221. गिरिम् Verz. d. Oxf. H. 128, *b*, 13. आकाशमपारम् 148, *a*, No. 318, Z. 8. देशान् Kathâs. 23, 38. 67, 106. 25, 10. Râgâ-Tar. 4, 146. अध्वानम् *einen Weg zurücklegen* Mrcch. 46. Kathâs. 86, 33. 111, 12. *über eine Zeit hinwegkommen, eine Zeit zubringen, verleben* 67, 106. 72, 407. — 2) *sich schwingen auf, zu sitzen kommen auf:* उडुपेन शंभोरलङ्घ्यमुल्लङ्घितमुन्नमाङ्गम् Spr. 4023. — 3) *übertreten, verletzen, zuwiderhandeln:* स्वकं धर्मम् Mârk. P. 28, 34. 132, 12. Daçak. in Benf. Chr. 181, 4. आज्ञावचनम् Kathâs. 30, 99. आज्ञाम् Râgâ-Tar. 3, 80. 4, 218. 378. 5, 395. Mârk. P. 114, 21. समयम् Kathâs. 108, 182. नीतिम् 190. सत्यामिमां गिरम् 84, 31. शासनम् 36, 162. Bhâg. P. 5, 26, 6. 12, 1, 9. शास्त्रम् 5, 1, 67. सत्पथम् *den Weg der Guten verlassen* 5, 7, 2. — 4) *hinüberkommen über, entgehen:* को हि स्वशिरसम्प्राप्तां विधेर्मोल्लङ्घ्येदतिम् Kathâs. 52, 211. प्राक्तनम् Pañkat. 1, 3, 10. — 5) *sich vergehen gegen Jmd, beleidigen* Daçak. in Benf. Chr. 191, 20. fg. Comm. zu Vâsavad. 7, 1. — Vgl. उल्लङ्घन fg.

— समुद् caus. *übertreten, verletzen, vernachlässigen:* सदाचारम् Mârk. P. 34, 7. नित्यनैमित्तिकीः क्रियाः 3.

— परि caus. *abspringen von, verlassen* (einen Weg): नीतिमार्गम् Spr. 2718. — Vgl. परिलङ्घन.

— प्रति caus. 1) *sich schwingen —, sich setzen auf:* आसनादीनि मंक्षीत्य प्रतिलङ्घ्य च पत्रतः Sarvadarçanas. 39, 10. — 2) *übertreten, verletzen:* धर्मम् MBh. 12, 9576.

— वि *springen:* साकं भेकैर्विलङ्घन्तः Bhâg. P. 10, 12, 10. इतस्ततो विलङ्घद्भिर्गोवत्सैः 46, 10. — अविलंघसे Verz. d. Oxf. H. 76, *b*, N. 2 wohl fehlerhaft für अविलम्बितम्. — caus. 1) *springen über, überschreiten, hinübergehen über, passiren:* प्राकारम् Kathâs. 75, 120. पयोनिधिम् 69, 182. विन्ध्यम् Ragh. 16, 32. Râgâ-Tar. 6, 2. Bhâg. P. 11, 4, 10. Pañkat. 1, 7, 12. अध्वानम् *einen Weg zurücklegen* Ragh. 5, 42. गव्यूतिम् Râgâ-Tar. 2, 163. eine Zeit *überspringen, nicht einhalten:* समयम् Kumâras. 3, 28. विलङ्घयित्वा so v. a. *gewartet habend* MBh. 12, 4792. — 2) *sich erheben zu, gen:* नभः Spr. 1756. Kir. 5, 1. विलङ्घिताकाश (स्त्रिमाचल) Râgâ-Tar. 3, 225. — 3) *übertreten, verletzen, zuwiderhandeln:* आज्ञाम् Kathâs. 18, 33. Ragh. 9, 74. — 4) *hinüberkommen über* so v. a. *überwinden:* आपदम् Kathâs. 18, 309. दैवम् Spr. 471, v. l. so v. a. *vereiteln:* विलङ्घिताधोरणतीव्रयत्नाः सेनागजेन्द्राः Ragh. 5, 48. — 5) *übergehen, bei Seite lassen, aufgeben:* अन्यमान् Ragh. 3, 4. लज्जाम् Kathâs. 32, 196. — 6) *übertreffen:* कर्णोत्पलं प्रापस्तव दृष्ट्या विलङ्घते Kâvjâd. 2, 224. — 7) *sich vergehen gegen Jmd, beleidigen* Spr. 4700. — 8) *fasten lassen* Suçr. 2, 486, 12. — Vgl. विलङ्घन fgg.

— अनुवि caus. *vorübergehen bei Jmd, Jmd bei Seite lassen, nicht einkehren bei* Bhâg. P. 10, 31, 16.

— संवि caus. *bei Seite liegen lassen, vernachlässigen, unterlassen:* विधिम् Pañkat. 3, 7, 19.

— सम्, संलङ्घिता रात्रिः *vorübergegangen* Lâṭj. 6, 6, 15.

लङ्घक (von लङ्घ्) nom. ag. *Beleidiger* Varâh. Bṛh. 14, 4. = गुरुवचनातिक्रामिन् Comm.

लङ्घनी f. N. pr. eines Flusses MBh. 2, 375 nach der Lesart der ed. Bomb., लघ्वी ed. Calc.

लङ्घन (von लङ्घ्) n. 1) *das Springen, Hinüberspringen —, Hinübersetzen über, Ueberschreiten* (das obj. im gen. oder im comp. vorangehend) Pâṇ. Gaṇ. 2, 7. R. Gorr. 1, 80, 29. Suçr. 1, 79, 18. 262, 3. Bhâg. P. 10, 18, 12. सागरस्य R. Gorr. 1, 3, 21 (26 Schl.). विन्ध्यपर्वत° 4, 70. 4, 1, 2. 58, 26. 62, 2. 63, 27. योजनानां सहस्रस्य 5, 1, 64. 2, 41. 5, 100, 7. Verz. d. Oxf. H. 83, *b*, 5. 24. 344, *a*, 18. Spr. 2460. 3392. Kathâs. 109, 45. Râgâ-Tar. 3, 68. 6, 226. Daçak. in Benf. Chr. 183, 1. Sîh. D. 26, 12. 16. मर्यादा° Kathâs. 50, 74. दीर्घाध्व° *das Zurücklegen eines langen Weges* Râgâ-Tar. 6, 47. शीघ्रलङ्घन adj. *schnell fliegend* (eine Wolke) Gaṇit. 8. Bez. *eines best. Ganges der Pferde, Courbette* H. 1248. Gaurâp. zu Sâhityad. 17. *das Sicherheben zu, gen:* नभो° Ragh. 16, 33. उच्चैःपद° Kumâras. 5, 64. *das Bespringen:* वडवालङ्घनमनिलस्य Daçak. in Benf. Chr. 182, 11. = प्लवन und क्रमण H. an. 3, 406. Med. n. 118. als Bed. von घात AK. 3, 4, 22 (28), 3. — 2) *Einnahme, Eroberung:* दुर्गस्य Spr. 3800. *Besiegung:* अरेः Mârk. P. 134, 20. — 3) *das Uebertreten* (eines Gebots u. s. w.) Kap. 4, 15. Sarvadarçanas. 117, 6. शासन° Râgâ-Tar. 2, 47. समयस्य *das Versäumen* R. Gorr. 1, 4, 66. — 4) *das Verschmähen:* प्राणिपात° Vikr. 36, 4. Mâlav. 38. — 5) *ein Vergehen gegen Jmd, Beleidi-*

gung MBu. 12,119. Kathâs. 20,63. 22,138. Spr. 4647 (zugleich *Fasten*). ऋतुः पूर्वस्य *eine dem ersten, verstorbenen Gatten angethane Beleidigung* so v. a. *Wiederverheirathung* MBu. 1,6178 (vgl. M. 5,151). घातप° *ein von der Hitze angethanes Leid* Çiç. 31,8. Auch लङ्घना in dieser Bed. Mâlav. P. 135,22. 32. 36. — 6) *das Fasten* Taitt. 2,7,10. H. 473. an. 3, 406. 5,12. Med. g. 37. n. 118. Halâj. Hin. 203. Suçr. 1,215,17. 21. 2, 44,6. 407,6. 19 (घति°). Spr. 4647 (zugleich *Beleidigung*). Mrkk. III, 43, a,11. Verz. d. B. H. 290,21. — Vgl. दुर्लङ्घन, मृत्यु°.

लङ्घनीय (wie oben) adj. 1) *worüber man hinübersetzen kann oder muss, zu überschreiten, zu passiren:* यत्नो Kathâs. 100,10. *erreichbar, einholbar:* यात्मोद्वर्तैरपि रत्नोभिरलङ्घनीया (स्वेयामपि प्रसरतां रत्नमाला° v. l.) रघ्याः Çiç. 8. — 2) *zu übertreten:* आज्ञा Verz. d. Oxf. H. 237,6,16. नियोग 138,a,5. — 3) *dem man zu nahe treten darf, gegen den man sich vergehen darf* Spr. 4811.

लङ्घनीयता f. nom. abstr. von लङ्घनीय 1) und 3) Spr. 1040 (घ°).

लङ्घनीयत्व n. nom. abstr. von लङ्घनीय 3) Râjat. 6,2 (घ°).

लङ्घय (von लङ्घ्) adj. 1) *zu überspringen, — überschreiten, — passiren* Mucc. 55. वाङ्क Spr. 169. 2482. गिरि Kathâs. 18,355. नदी 350. 110,13. यकृच्छ्रलङ्घ्याः पन्थानः *ohne Beschwerde zurückzulegen* Râjat. 3,234. 4,287. 332. *erreichbar* 3,324. Kathâs. 61,90. — 2) *zu übertreten:* आज्ञा Kathâs. 120,31. वचस् Râjat. 4,335. शासन Bâlar. P. 4,4,14. — 3) *zu vernachlässigen* Pañkat. 4,3,21. — 4) *dem man zu nahe treten kann, antastbar* MBu. 12,2007. Kumârâs. 7,48. Spr. 2482. 4023. यलङ्घ्यवीर्य Bâlar. P. 9,10,22. — 5) *den man fasten lassen muss* Suçr. 2,407,12. — Vgl. दुर्लङ्घ्य.

लङ्घ्, लंघ्यति (लघणे) Dhâtup. 7,26. — Vgl. लाङ्घ्.

1. लज्, लज्जते (व्रीडायाम्) Dhâtup. 28,10. *sich schämen:* लेजिरे ऽन्ये पराजिताः Bhaṭṭ. 14,105. लज्ज *sich schämend, beschämt* Schol. zu P. 7, 2,14. 8,2,39 (von लज्). 45. H. an. 2,382. Med. n. 18. — Vgl. लज्.

2. लज्, लंजति (भर्त्सने, v. l. भर्जने) Dhâtup. 7 64. — Vgl. 1. लज्.

3. लज्, लर्जयति (प्रकाशने) Dhâtup. 35,66. — Vgl. 2. लज्.

लज्, लज्जते (व्रीडायाम्) Dhâtup. 28,10. लज्जतेर्वा स्याद्भ्राघाकर्मणः Nir. 4,10. auch act. aus metrischen Rücksichten; *sich schämen:* यलज्जिष्ट Bhaṭṭ. 15,33. किं किं न लज्जय Harîv. 8124. नाभ्य कालस्ते लज्जितुम् R. Gorr. 2,57,29. लज्जमान R. Schl. 2,37,11. MBu. 1,5947. Râjat. 3,234. लज्जते स्म कचैर्विना Kathâs. 61,180. स्नुषा श्वश्वाश्चाल्लज्जमाना *sich schamend vor* Âit. Br. 3,33. वृद्धाया धर्मशीलाया मातुरर्हसि लज्जितुम् R. Gorr. 2,120,6. यद्या वीरभटाग्यास्ते स्वदत्तेन ललज्जिरे (so ist zu lesen) Kathâs. 44,165. कथमद्दो मोक्षान लज्जामहे Spr. 2626. लज्जते बान्धवास्तेन 2634. 2742. मोलितश्चासि धर्मज्ञैः पाण्डवैर्न च लज्जसे MBu. 3,13213. यत्सर्वेणोच्यते ज्ञातं (so ist wohl zu lesen) यत्र लज्जति चाचरन् *eine Handlung, von der man wünscht, dass sie von Jedermann gekannt werde (d. i. die man nicht geheim zu halten braucht) und deren man sich nicht zu schamen braucht, wenn man sie begeht,* M. 12,87. महाव्याधातिक्रुच्छ्रम्पूढ न लज्जसे कथम् MBu. 3,13640. R. 2,12,53. Spr. 672. Pañkat. 119,6. यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति (warum nicht लज्जते?) M. 12,85. महाव्याधाराणि कर्माणि कृत्वा लज्जसि वै न च MBu. 3, 13637. ईदृशं गर्हितं कर्म कथं कृत्वा न लज्जसे R. 3,39,7. 5,30,82. Kathâs. 20,13. Hit. 92,3. यतिव्रतेन महर्षिणा सह रन्तुं लज्जमानया Sây. zu RV. 1,125,1. लज्जित (लग्न s. u. 1. लज्) 1) adj. a) *sich schämend, beschämt* AK. 3,2,41. Taitt. 3,3,257. H. 1484. an. 2,382. Med. n. 18. Hem. 12,75. Kathâs. 13,156. Pañkat. 1,10,33. 14,102. Sin. D. 72. दिष्ट्या न लज्जिता देवी सपत्न्या सक्तिलुप्तया Kathâs. 18,20. भग्नाभिनय° 45,256. — b) *verschämt, verlegen* d. i. von *Scham* —, *Verlegenheit begleitet:* स्मित Gîr. 7,17. — 2) n. *Scham, Schamgefühl:* विगलित° Gîr. 1,31. मलज्जिता Pañkat. 1,14,106. मलज्जितत्रैककरुणाम् Uttarar. 117, 1 (158,7). — Vgl. 1. लज्.

— caus. लज्जयति *Jmd sich* (acc.) *schämen machen, Jmdes Schamgefühl erwecken* Hem. 19,14. Vaṭs. in Sin. D. 147,1. Râjat. 4,668. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 30.

— अधि, partic. °लज्जित *sich schämend, beschämt* in der Stelle: °देापदर्शनादधिलज्जितायाः प्रकृतेः bei Wilson, Sânkhjas. S. 174. vielleicht fehlerhaft für यति°.

— वि *sich schämen:* विलज्जते यो भार्यति वा वोढुम् Bhâg. P. 4,8,18. विलज्जमान Hit. 2,23 (लज्जमानेव ललना MBh. 1,5947). MBh. 3,2217. Hem. 14,27. Bhâg. P. 2,5,13. 7,17. विलज्जतीं 1,11,33. प्रष्टुं विलज्जतो 11,1, 15. विलज्जित *sich schämend, beschämt* Kathâs. 24,197. 36,34. 53,10. Bhâg. P. 5,12,6. पादस्पर्श° 9,5,2. Kumârâs. 1,14. Kathâs. 124,141.

— सम् *sich schämen, verlegen sein:* संलज्जमाना R. 2,53,16.

लज्ज m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Vop. 7,14. vielleicht fehlerhaft für लज्ज.

लज्जाका f. *der wilde Baumwollenbaum, Gossypium* Rathâk. in Nigh. Pr.

लज्जारी f. *eine weisse Sinnpflanze* Râgân. in Nigh. Pr. — Vgl. लज्जिरी.

लज्जा (von लज्ज्, f. 1) *Scham, Schamgefühl* AK. 1,1,7,23. H. 311. Halâj. 2,412. लज्जया R. 2,98,19. Çiç. 15,3. Spr. 2265. Kathâs. 18,102. Pañkat. 34,10. °विनमानना Vâsiṭ. Bhn. S. 78,12. गुणोघवननी Spr. 2655. लज्जा तिरश्ची यदि चेतसि स्यात् 2656. fgg. 2679. Râjat. 5,324. लज्जावत MBh. 3,1852. लज्जाकितुकयोः संगदः Kat Ic. 3,66. किं न कैरव लज्जा ते कुर्वतः कोशसंवृतिम् Spr. 1879. युवां मे का लज्जा *warum sollte ich mich euer schämen* Kathâs. 2,52. भृङ्गारलज्जां निर्वपयति Çiç. 14,3. एषैव मकृती लज्जा सदाचारस्य भूपतेः । यदकालभवो मृत्युस्तस्य संस्पृशति प्रजाः ॥ Râjat. 4,84. कस्माच्च लज्जामवकृन् Spr. 3506. लज्जावद् Râjat. 6,177. लज्जोद्वहन 5,334. यलज्जाकर Spr. 2707. लज्जाकृति *Scham bezeichnend* 688. लज्जोज्झिता Râjat. 6,332. यपकृत्य लज्जाम् MBh. 3, 2726. विहाय लज्जाम् Hem. 2,40. व्यस्मरल्लज्जाम् Râjat. 2,22. am Ende eines adj. comp. (f. या): मुक्त° R. 2,36,12. Kumârâs. 3,7. त्यक्त° Bhâg. P. 5,26,23. क्रान्त° 8,7,33. प्रगलज्जा Râjat. 4,37. यलज्जा *schamlos* MBh. 13,513. मलज्ज *verschämt, Schamgefühl bastzend* R. 1,34,23. Spr. 277. Kathâs. 13,51. 21,69. 45,363. Daçak. 64,2. Pañkat. 45,5. मलज्जम् adv. Çiç. 38,1. Vikr. 22,12. Dhûrtas. 72,15. Daçak. 73,12. Die *Scham* personificirt als Gattin Dharma's MBh. 1,2579. Harîv. 12482. VP. 54. Mâlav. P. 50,21. Mutter Vinaja's 27. Vgl. निर्लज्ज. — 2) = लज्जालु 2) Râgân. im ÇKDa.

लज्जाय् (von लज्जा), davon partic. लज्जायित *verschämt, verlegen:* ईक्षण Bhâg. P. 10,22,23.

लज्जालु (wie oben) 1) adj. *schamhaft.* — 2) m. f. *Mimosa pudica* Râ-

ÇAK. im ÇKDa. ÇAÑC. SAṂK. 2,2,41.

लज्जावत् (wie oben) adj. *verschämt, verlegen* MBh. 3,2152. RAGH. 7, 32. KATHĀS. 90,54. SIK. D. 99. Davon nom. abstr. लज्जावत्त्व n. 41,2.

लज्जाशील adj. *schamhaft, verlegen* AK. 3,1,28. H. 390.

लज्जिरी f. = लज्जालु 2) RĀJAN. im ÇKDa. — Vgl. लज्जारी.

लज्या f. = लज्जा 1) ÇABDAR. im ÇKDa.

लञ्चन *Eleusine coracana* (eine Kornerfrucht) RĀJAN. in NIGH. PR.

लञ्जा f. *Geschenk* H. 737. HALĀY. 2,279.

1. लञ्ज्, लञ्जति (भर्त्सने, v. l. भर्जने) DHĀTUP. 7,65. — Vgl. 2. लन्ज्.

2. लञ्ज्, लञ्जयति (हिंसाबलादाननिकेतनेषु) DHĀTUP. 32,30, v. l. (भापार्श्व, v. l. भामार्श्व) 33,111. लञ्जयति und लञ्जापयति (प्रकाशने) 35,66, v. l. — Vgl. 3. लन्ज् und लुञ्ज्.

लञ्ज 1) m. *a*) = पद् H. an. 2,75. — *b*) = कच्छ् H. an. Hir. 255. — *c*) = पुच्छ् GAṆAR. im ÇKDa. — *d*) = पङ्क Hir. — 2) f. घा *a*) *an adulteress.* — *b*) *sleep.* — *c*) *a current.* — *d*) Lakshmī WILSON nach ÇABDĀRTHAR.

लञ्जिका f. *Hure* TAṬ. 2,6,5. H. 533.

लट्, लँटति (बाल्ये, nach Andern auch परिभाषणे) DHĀTUP. 9,11. — Vgl. रट्.

लट m. = प्रमादवचन und दोष VIÇVA im ÇKDa. *Dieb* DHAN. bei WILSON. — Vgl. लब्.

लँटक m. = दुर्जन UÇÇVAL. zu UṆĀDIS. 2,32. — Vgl. लट्, लडु.

लटकन m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 309,*b*,4.

लटकामिश्र m. N. pr. eines Mannes HALL XVIII (nach dem Index).

लटपर्णा n. = त्वच RĀJAN. im ÇKDa. *gröberer Zimmt* DHANV. in NIGH. PR.

लट्ट m. = दुर्जन ÇABDAR. im ÇKDa. — Vgl. लटक, लडु.

लब्, लबति (प्रमादवचने) GAṆARATNAM. im gaṇa काण्ड्वादि zu P. 3,1, 27. — Vgl. लट.

लँडु UṆĀDIS. 1,151. 1) m. *a*) *Pferd.* — *b*) = जातिविशेष, vulg. नेठुआ (*a dancing boy* nach HALĀY.). — *c*) *ein best.* RĀGA UṆĀDIK. im ÇKDa. — 2) f. घा AK. 3,6,4,10. = तुलिका UÇÇVAL. angeblich nach HIR.; st. dessen तूलिका VOPA. und RABHAṢA ebend. *a*) *ein best. Vogel* TAṬ. 3,3, 421. H. an. 2,536. MED. v. 22. HIR. 256. VIÇVA bei UÇÇVAL. VIDDH. 6, 48. PRĀYAÇCITTAND. 52,*b*,2. = ग्रामचटक RĀJAN. (nach AUFRECHT). — *b*) *Safflor* H. 1139. H. an. — *c*) *eine* Karaṇḍa-*Art* MED. VIÇVA. *die Frucht einer* Karaṇḍa-*Art* TAṬ. *Frucht* überh. MED. und VIÇVA. — *d*) = वाद्य VIÇVA; so auch MED., wo aber nach den Corr. वद्य (d. i. ऽवद्य) zu lesen ist; = द्यूतवद्य TAṬ. — *e*) = द्यूत *Würfelspiel* VOPA. und RABHAṢA bei UÇÇVAL. — *f*) = शिनी (!) HIR.; st. dessen शिली UÇÇVAL. nach dess. Aut. — *g*) = भृंगराज, vulg. भेंटरी BHARATA zu AK. nach ÇKDa.

लट्टाका f. = लट्वा *ein best. Vogel* MBh. 12,6720 nach der Lesart der ed. Bomb., लड्डाका ed. Calc.

लड्, लँडति (विलासे) DHĀTUP. 9,76. लडयति (त्रिक्रोन्मथने, v. l. त्रिक्रोन्मथनयोः, त्रिक्रोन्माथनयोः) 19,52. लटयति und लाटयति (भाषणे) 35,81, v. l. लार्डयति (उपसेवायाम्) 32,7. लाटयते (ईप्सायाम्) 33,15, v. l. लडित = ललित VṚTTAR. 158. 165. — Vgl. लल्.

लडक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2033. धेनुक ed. Bomb.

लडर्थवाद m. Titel einer Schrift *über die Bedeutung des Praesens* (लट्) HALL 59.

लडह् 1) adj. *hübsch, schön* TAṬ. 3,1,13. GAUḌA beim Schol. zu H. 1445. Vgl. लगड. — 2) m. N. pr. eines Volkes VARĀH. BṚH. S. 14,32. लक्र v. l.

लडु m. = दुर्जन ÇABDAR. im ÇKDa. — Vgl. लटक, लट्.

लडु *eine Art Gebäck* R. in LA. (III) 39,3. *It is made of coarsely ground gram or other pulse, or of corn-flour, mixed up with sugar and spices, and fried in ghee or oil. It is distinguished into several varieties.* MOLESW. u. लाडू.

लडुक m. n. dass. H. ç. 96 (hier fälschlich लडक). ÇABDAR. und RĀJAV. im ÇKDa. VṚTTAR. 134. VET. in LA. (III) 9,11. 13. सावित्रे लडुकान्द्यात् MATSJA-P. 258,20. लडुकानि तिलानां च BRAHMAVAIV-P. 3,8,53. मिष्टान्नं लडुकापूपम् 2,61,73. लडुकैः पेनिकाभिश्च KIÇIKU. 4,93. Vgl. GILDEMEISTER in LA. (III) S. 257.

लड्डा f. N. pr. eines Frauenzimmers RĀJA-TAR. 7,406.

लड्डाका s. लट्टाका.

लण्ड्, लण्डयति (उत्क्षेपणे) DHĀTUP. 32,9. (भाषार्थ) 33,125. — Vgl. खेलण्ड्.

लण्ड n. *Unrath des Körpers, Excremente* ÇKDa. mit folgendem Beleg (BHĀG. P. 10,37,8): समेधमानेन स कञ्जवाक्ना निरुद्धवायुश्वरणौ च विक्षिपन् । प्रस्विन्नगात्रः परिवृत्तलोचनः पपात लण्डं विसृजन्क्षितौ व्यसुः ॥ लेण्ड ed. Bomb.

लण्ड्र *London:* °ज्ञ *aus London gebürtig* MAHĀCHANDRA 23 im ÇKDa.

लता f. 1) *Schlinggewächs* AK. 2,4,4,9. 11. H. 1117. an. 2,191. MED. t. 51. HALĀY. 2,25. BALA bei MALLIN. zu NAIṢ. 1,85. वृक्षगुल्मलतावल्ल्यस्त्वक्सारास्तृणजातयः MBh. 6,171. 13,2992. वनस्पत्योषधिलतास्त्वक्सारा वीरुधो द्रुमाः BHĀG. P. 3,10,18. गुल्मवल्लीलतानां च पुष्पितानां च वीरुधाम् M. 11,142. तृणगुल्मलतानाम् 12,38. लता वल्लीश्च गुल्मांश्च R. 2, 80,6. लतावितानगुल्मान् R. GORR. 2,87,9. 3,21,12. VARĀH. BṚH. S. 29, 14. 48,5. 55,18. 85,1. MBh. 1,6005. न लता वर्धते क्षातु मकाद्रुममनाश्रिता 3,1396. R. 1,9,12. 51,23. 2,52,95. °प्रतानोद्भवितैः कोशैः RAGH. 2, 8. 10. 3,7. VIKR. 13. सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलार्थिना SPR. 2303. VARĀH. BṚH. S. 46,95. KATHĀS. 18,277. 22,103. BRAHMA-P. in LA. (III) 49,12. उद्यान°, वन° ÇIK. 16. घृत° (Gegens. विषवल्लरी) SPR. 1549. am Ende eines adj. comp. (f. घा): शस्तौषधिद्रुमलता (vom folgenden मधुरा zu trennen nach KERN) मक्षो VARĀH. BṚH. S. 53,88. श्री° RĀJA-TAR. 6,233. Mit einer *Liane* werden verglichen: *a*) die Brauen: भ्रू° KUMĀRAS. 2,64. MṚCH. 48. ÇIK. 63. SPR. 472. 663. VARĀH. BṚH. S. 12,9. DAÇAK. 78,2. Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,21. — *b*) die Arme: भुज° MṚCH. 93. RAGH. 9,16. बबन्धास्य कण्ठे भुजलताम्रज्जुम् KATHĀS. 18,269. 20,232. बाहु° RĀJA-TAR. 5,27. — *c*) die Klinge eines Schwertes: खड्ग° KATHĀS. 19,104. 44,147. 50,5. — *d*) die Locken: अलक° SPR. 3610. — *e*) der schlanke Körper eines Weibes: स्त्रिगात्रलता BRAHMA-P. in LA. (III) 57,20. — *f*) der Blitz: तडिल्लता ṚV. 2,20. KIR. 10,19. विद्युल्लता KATHĀS. 25,41. 34,223. — 2) = शाखा *Ranke* AK. 2,4,4,11. H. 1119. H. an. MED. (°शाक्यो: st. °शाकयो: zu lesen). BALA. चूत° SPR. 3981. — 3) Bez. verschiedener Pflanzen: *Panicum italicum* AK. 2,4,2,36. H. an. MED. BALA; *Trigonella corniculata* AK. 2,4,4,21. TAṬ. 3,3,131. H.

an. Med. *Cardiospermum Halicacabum* AK. 2,4,5,15. H. an. Med. *Gaertnera racemosa* (vgl. माधवीलता) H. 1147. H. an. Med. Hall. 2,53. Bala; = कस्तूरिका, कस्तूरी (vgl. लताकस्तूरिका) Trik. H. an. Med. *Panicum Dactylon* H. an. Med. = केवर्तिका und मारिषा Râgân. im ÇKDa. — 4) *Riemen an einer Peitsche, Geissel* Suçr. 1,25,10. 65,14. 102,1. 338,8. राज्ञो लताभिर्न संभवन्ति *es entstehen keine Striemen durch Geisselhiebe* 2,261,16. वेत्र° (eines Thürstehers) Pañkat. 16,1. पेण्यस्तल्लताः (d. i. मांसलताः) *Fleischstreifen, Muskeln* H. 623. — 5) *Perlenschnur* H. 660. Vaiju. Bpu. S. 81,31. 34. मुक्ताहार° Spr. 2207. — 6) *ein schlankes Weib, Weib überh.*; = योषित् Bala a. a. O. Naish. 1,85. नग्नो परलतां पश्यन् Tantrâs. Çâmbh. im ÇKDa. °साधन Mâyâtantra 12 ebend. — 7) *ein best. Metrum, 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑–⏑–⏑–, ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. II, 162 (XIII, 2). — 8) N. pr. *a)* einer Apsaras MBh. 1,7853. 2,394. — *b)* einer Tochter Meru's und Gattin Ilâvṛta's Bhâg. P. 5,2,22. — Vgl. कर्ण°, कल्प°, नाग°, फणि°, भू°, मधु°, मही°, मांस°, माधवी°, मुक्ता°, रोम°, सूर्य°, सोम° u. s. w.

लताकर m. *eine best. Stellung der Hände beim Tanz* Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,23.

लताकरञ्ज m. *Guilandina Bonduc* Râgân. im ÇKDa.

लताकस्तूरिका und लताकस्तूरी f. *eine best. aromatische Arzneipflanze* Râgân. im ÇKDa. Dhanvân. und Bhâvapr. in Nigh. Pa. Suçr. 1,213,12.

लतागृह m. n. *eine aus Lianen gebildete Laube* MBh. 1,7589. R. 5, 14,65. 16,28. 37,42. Ragh. 19,23. Kumâras. 3,41. Kathâs. 14,69. 83, 120. 117,28. am Ende eines adj. comp. f. घा Kir. 5,5.

लताङ्गी f. = कर्कटशृङ्गी Râgân. in Nigh. Pa.

लताजिह्व m. *Schlange (deren Zunge eine Liane ist)* Çabdam. im ÇKDa. — Vgl. लतारसन.

लतातरु m. Bez. verschiedener *Bäume: Shorea robusta* Trik. 2,4,21. *Borassus flabelliformis* und *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDa.

लतादुम m. *Shorea robusta* Ratnam. im ÇKDa. nach unserer Hdschr. 211 दीर्घ°.

लतानन m. *eine best. Stellung der Hände beim Tanz* Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,25.

लतान्त n. *Blume* Çabdârthak. bei Wilson.

लतापनस m. *Wassermelone* Trik. 2,4,37.

लतापर्ण 1) m. unter den Namen Vishṇu's H. ç. 64. — 2) f. ई *Cynanchum oxhioides* und *Trigonella foenum graecum* Dhanv. in Nigh. Pa.

लतापर्णिका f. = पर्णिका *Trigonella corniculata* Çabdar. im ÇKDa.

लताप्रतानिनी nach ÇKDa. und Wilson ein Wort; vgl. jedoch u. प्रतानिन्.

लताफल n. *die Frucht der Trichosanthes dioeca Roxb.* Bhâvaprak. P. Kshîrâgâdhikâra. 102 im ÇKDa.

लताभद्रा f. *Paederia foetida* Çabdam. im ÇKDa.

लताभवन n. = लतागृह; s. घर° in den Nachträgen.

लतामणि m. *Koralle* Trik. 2,9,20.

लतामण्डप m. = लतागृह Çik. 32,19. ed. Cu. 65,9. Spr. 393.

लतामहत् f. *Trigonella corniculata* Çabdar. im ÇKDa.

लतामाधवी = माधवीलता = माधवी = लता *Gaertnera racemosa* Çabdar. im ÇKDa. Çik. 58.

लतामृग m. *Affe* Wilson. — Vgl. शाखामृग.

लताम्बुज n. *Flaschengurke* Hin. 202.

लतारष्टि f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Roxb. Çabdam. im ÇKDa.

लतारावक n. *Schoss, junger Trieb* (प्रवाल) Hin. 91. fälschlich *Koralle* Wilson nach ders. Aut.

लतारसन m. *Schlange* Hin. 15. — Vgl. लताजिह्व.

लतार्क m. *eine grüne Zwiebel* AK. 2,4,5,13.

लतालक m. *Elephant* Trik. 2,8,34.

लतालय m. *eine aus Schlingpflanzen gebildete Wohnung* (einer Eule) Kathâs. 33,109.

लतालिङ्ग (?) in लतालिङ्गादवं मण्डलम् Verz. d. B. H. 274,*a*,2.

लतावलय = लतागृह Çik. 41,18. Davon °वत् *mit solchen Lauben versehen* 32,14.

लतावृक्ष m. *Cocosnussbaum* Dhanv. in Nigh. Pa. *Shorea robusta* Dravjar. ebend.

लतावेष्ट m. 1) N. pr. eines Berges Hariv. 8930. 10319. Vgl. लतावेष्टित. — 2) *quidam coeundi modus:* बाहुभ्यां पादयुगाभ्यां वेष्टयित्वा स्त्रियं रमेत्। लघु लिङ्गताडनं (vielleicht मलिङ्ग° st. लघु लि° zu lesen) येनो लतावेष्टो ऽयमुच्यते ॥ Ratiṣ. im ÇKDa.

लतावेष्टन n. *Umarmung* Çabdârthak. bei Wilson.

लतावेष्टित m. = लतावेष्ट 1) Hariv. 8933.

लतावेष्टितक n. *eine Art Umarmung* Çabdam. im ÇKDa.

लताशकुनक m. *Shorea robusta* Nigh. Pa. nach Trik. 2,4,21, wo aber mit dieser Verbindung लतातरु und शकुनतरु gemeint sind.

लताशङ्ख m. *Shorea robusta* Çabdar. im ÇKDa. eine falsche Form; vgl. लतातरु und शङ्कुतरु.

लतिका (von लता) f. 1) *eine kleine Liane:* प्रेम° Kâvjâd. 144,12. बाहु° Spr. 751. 3053. Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483, Z. 4. यष्टि° vom *schlanken Körper* eines Mädchens Uttarab. 56,6 (72,12). अलतिका adj. f. *keine Lianen habend* Kir. Nitis. 19,10. — 2) *Perlenschnur:* ग्रीवाभरण° Spr. 2702. — Vgl. अमृत°, कर्ण°, कल्प°, रोम°, श्रवण°.

लैतु m. N. pr. eines Mannes Uṇâdis. 1,73. — Vgl. लातव्य.

लतोदुम m. als Erkl. von अवरोह Trik. 3,3,455. H. an. 4,335. Med. h. 27. Hall. 2,39.

लैत्तिका Uṇâdis. 3,147. *eine Eidechsenart* Ujjval. — Vgl. अव°, गो°.

लदनी f. N. pr. einer Dichterin Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,26.

लद्ध (?) m. *ein best. Thier* Verz. d. B. H. No. 807.

लद्धनदेव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,11.

1. लप्, लपति (व्यक्तायां वाचि) Dhâtup. 11,8. ललाप, लपिष्यति; aus metrischen Rücksichten auch med. *schwatzen.* सर्वत्र सर्वं लपतु MBh. 13,4517. लपन्तः कोकिलाः Hariv. 7673 (vgl. 8369). *flüstern:* लपितुं किमपि श्रुतिमूले Gît. 1,41. तदा ललाप ज्ञानं च निर्मलम् Pañkat. 2,2,39. *wehklagen* Nalod. 3,27. लपित *gesprochen* AK. 3,2,57. n. *Geschwätz, Gesumme* 1,1,5,1. H. ç. 81. ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनं मशका इव AV. 4,36,9. — Vgl. अलपत् (verbessere *nicht irre redend*), इप्.

— caus. लापयति, aor. अलीलपत् und अललापत् Vop. 18,3. *zum Reden veranlassen:* अनेनैव मुखेनालापयिष्यवाः (आ° nach Çaṅk.) Kâdamb.

Up. 4,2,5. — Vgl. caus. von ली.

— intens. लालपीति P. 7,3,94, Sch. *sinnlos herausschwatzen* AV. 6, 111,1. सुरां पीत्वा सकृ लालपत घासते Kâṭ. 12,12. *wehklagen, jammern:* लालप्यते R. 5,15,35. MBu. 5,748. लालप्यमान 1,3602. 4168. 6557. 7, 115. 8,4620. R. 2,75,45. R. Gorr. 2,78,22. 108,16. 5,82,128. Mârk. P. 74,36. एवं लालप्यतस्तस्य MBu. 1,968. 13,470. लालप्यैवं सकरुणम् 3, 10200. *wiederholt anreden:* लालप्यमानमेकैकं जरितां च पुनः पुनः 1,8449. — अनु s. अनुलाप.

— अप *ableugnen, läugnen:* संभूत्य च तपस्विभ्यः सत्ते वै यन्नदर्शिणाम् । तां चापलपताम् (impor.) R. 2,75,24. शतमपलपति P. 1,3,44, Sch. Kull. zu M. 8,139. तदनुभवसिद्धमपलपतो गन्नन्निमीलिकेव Sân. D. 124, 5. 6. राज्ञदेयमपलपितम् *unterschlagen* Kull. zu M. 8,400. — Vgl. अपलाप fg. und caus. von ली.

— अभि *schwatzen —, sprechen über* Ait. Br. 6,33. Çâṅkh. Br. 30,5. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 148. — Vgl. अभिलाप, अभीलापलप्, निरभिलप्य.

— आ *anreden, sich unterhalten mit:* अरुं कारणे कदमकमेका वामालपेयं निरता स्वधर्मे MBu. 3,15604. Spr. 1749. Mârk. P. 35,21. मञ्जुघास्था भियान्योऽन्यस्पर्शं लब्धापि नालपन् Kathâs. 4,68. एवं तयोरालपतोः 37, 177. एवमन्योऽन्यमालप्य 66,88. युष्माभिः ममालप्य कर्यं नु कितवीरकम् । सकालपिष्यामि पुनः 121,105. आप्तैः सहालपन् Râjat.-Tar. 3,210. *sprechen, reden:* आलपन्तः सुमधुरं धार्तराष्ट्राः (d. i. दंशाः) Harîv. 8608. आलपन्ती (so ist zu lesen) Kathâs. 47,112. उच्चैष्टा नालपेत्किंचित् Mârk. P. 34,30. न भूय आलपेत् Sarvad. P. 4,16,a. वर्णासि — आलपन् — तानि तानि ताः *zu ihnen* Naish. 2,12. तत्र यो ऽन्यत्कर्मणः साधु मन्येन्मोघं (so die ed. Bomb.) तस्यालपितं दुर्बलस्य *eine Unterredung mit dem* MBu. 3,816. — Vgl. आलपन, आलप्ति, आलाप, आलापिन्. — caus. *sich mit Jmd* (acc.) *in eine Unterhaltung einlassen* Spr. 312. 2221. Pañkat. 207,18. 242,13. *zu Jmd* (acc.) *sprechen* Bhâg. P. 10,90,24. — Vgl. आलापन (auch in den Nachträgen).

— समा *sich unterhalten mit* (acc.) Sân. D. 207,5.

— उद् caus. *Jmd* (acc.) *liebkosen* Çiç. Cu. 154,8 (उपलालपन् die andere Recension). Mârk. P. 27,1. 76,3. 7. — Vgl. उल्लाप, उल्लापन (in den Nachträgen, wo zu verbessern ist: *das Liebkosen*), उल्लापिन् fg. und caus. von ली.

— प्र (*unbedacht*) *herausreden, schwatzen, faseln* TBr. 2,2,10,3. लघुवात्प्रलपामकं MBu. 13, 6884. लोकेनेति निरर्गलं प्रलपता Spr. 2053. उन्मत्तात्प्रलपतः 3834. Çiç. 23,14. Kathâs. 94,104. Prab. 50,5. Kuval. 140,a. Daçar. 81,3. *schwatzen* so v. a. *sich unterhalten* Bhâg. P. 10, 32,1. *eine Rede vorbringen, sprechen* Bhag. 5,9. MBu. 14,35. न तत्र प्रलपेत्प्राज्ञो बधिरेष्विव गायनः Spr. 4775. यावदसौ न वर्धयित्प्रलपन्विरमति Pañkat. 93,16. 94,12. *anrufen:* शिव शिव शिवेति प्रलपतः Spr. 309. *wehklagen* Pañkat. 75,25. *wehklagend Etwas sprechen, — erzählen:* आर्ताः प्रलपामीदम् MBu. 3,1203. वधमप्रतिरूपम् R. 2,64,1. *wehklagend anrufen:* प्रलपन्तीं स्म पाण्डवान् MBu. 2,2339. प्रलपित *wehklagend gesprochen:* वचो वैदेहीति (oder वै देहीति) प्रतिपदमुदस्यु प्रलपितम् Sân. D. 114,4. n. *Geschwätz, Gerede:* सुतप्रलपितानि Kum. Nitis. 11,65. किं वृथा प्रलपितेन Pañkat. 146,1. किं बहुना प्रलपितेन 162,7. *Wehklage:* आक्रन्दः प्रलपितं शुचा Sân. D. 472. Pañkat. 224,16. — Vgl. उन्मत्तप्रलपित, प्रलपन, प्रलाप, प्रलापिन्. — caus. *zum Sprechen veranlassen:* तवापि क्षेत्रः प्रलापयति Mâlav. 86,14. — Vgl. प्रलापन.

— विप्र 1) *sich ausführlich aussprechen:* विप्रलाप *Auseinandersetzung, Erörterung:* न चेन्मोघं विप्रलापं ममेदम् MBu. 12,1035. 1040. — 2) *wehklagen, jammern:* इति विप्रलपन् (इत्येवं विलपन् ed. Bomb.) MBu. 7,2327. 14,2022. — Vgl. विप्रलाप.

— वि *unverständliche —, klägliche Töne ausstossen, jammern* AV. 1,7,3. उतेव मृता विलपन्त्यपायति 6,20,1. MBu. 1,5902. 3,1203 (विलपिष्यामि). 2269. 2360. 2371. 2381. 2412. 2422. 2500. 4,1115 (विलपिष्यतः partic. fut.). Harîv. 4839 (विलपती). R. 1,1,51. 2,21,1. 26,19. 30,22. 39,8. 47,12. 75,17. 76,5. 4,24,40 (विलपती). Sâṃ. 1,118,16. fg. 2,384, 13. Ragh. 8,42. Kumâras. 4,4. Spr. 1807. Kathâs. 16,51. Gîr. 3,6. Mârk. P. 14,54. 22,24. 51,73. Pañkat. 28,18. 29,15. 35,13. Hit. 20,13. 42,16. 123,20. Bhatt. 6,11. विलपन्तम् R. 4,20,2. विलपामकं R. ed. Bomb. 6,95, 26. विलपमान MBu. 3,2267. R. 2,13,10. 75,18.44. विलप्यन्त् *wehklagend* MBu. 7,2681. *wehklagend sprechen,* mit acc.: विललापेदम् MBu. 2,2343. एवमादीनि 2574. विलपति प्रियां प्रति *wehklagt über* Ragh. 8,69. *bewehklagen:* सुतम् R. 1,1,33 (35 Gorr.). 2,48,26. Râja-Tar. 6,206. विलपित n. *Klage, Jammer* Nir. 3,2. MBu. 3,2436. R. 2,39,40 (38,50 Gorr.). 44,2. 77,19. R. Gorr. 2,79,35. 4,61,27. 7,24,23. — 2) *vielfach sprechen:* एवं तेषां विलपतां विप्राणां विविधा गिरः MBu. 1,7049. विलेपुः कोकिलाः — मधुराणि विचित्राणि Harîv. 8360 (vgl. 7673). — Vgl. विलाप. — caus. *Jmd* (acc.) *wehklagen —, jammern machen* P. 1,4,52. Vârtt. 3, Sch. AV. 1,7,2. 6. *viel reden lassen,* med. Bhatt. 8,22.

— प्रवि s. प्रविलापिन्.

— सम् 1) *sich unterhalten* Daçar. 59,5. — 2) *benennen:* सकल इति संलप्यते Sarvadarçanas. 85,17. — caus. *Jmd anreden:* संलापितानां मधुरैर्वचोभिः Spr. 3077. — Vgl. संलाप fgg.

2. लप् (= 1. लप्) nom. ag. in अभीलापलप्.

लपन (von 1. लप्) n. *Mund* AK. 2,6,2,40. H. 572. Halâj. 2,362. — Vgl. वक्त्र und वदन.

लपित (wie oben) 1) adj. und n. s. u. 1. लप्. — 2) f. आ N. pr. einer Çârṅgikâ (*eines best. Vogels*), mit der Mandapâla sich begattete, MBu. 1,8347. fgg.

लपेटिका f. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBu. 3,8157.

लपेत m. N. des Dämons einer best. Kinderkrankheit Pâr. Gṛhj. 1,16.

लप्सिका Bez. *eines best. Gerichts:* समितां सर्पिषा भृष्टां शर्करां पयसि क्षिपेत् । तस्मिन्घनीकृते न्यस्येल्लवङ्गमरिचादिकम् ॥ मिश्रिया लप्सिका ख्याता Bhâvapr. im ÇKDa. — Vgl. लापशी und लापशी bei Molesw.

लप्सुट n. = कूर्च *Bocksbart* Schol. zu Kâṭ. Çr. 15,1,38.

लप्सुटिन् adj. *bärtig,* vom Bock TS. 5,6,10,1. Çat. Br. 6,2,2,6. 15. Kâṭ. Çr. 15,1,38.

लप्स्यन n. der Form und dem Zusammenhange nach ein nom. act., interpolirt und gewiss unrichtig Nir. 4,10.

लवँ m. *Wachtel* VS. 24,24. °सूक्त *Wachtellied* heisst nach einer Legende das Lied RV. 10,119. Nir. 7,2. Daher Aindra Lava als Liedverfasser genannt RV. Anukr. लव *Perdix chinensis* Râjân. im ÇKDa. — Vgl. लाव.

लब्ध s. u. लभ् und vgl. पदालब्ध. लब्धा adj. f. Bez. einer best. Heroine Gaṇiṇ. im ÇKDa.

लब्धक (von लब्ध) adj. *bekommen, erlangt;* s. दुःखलब्धिका.

लब्धदत्त m. N. pr. eines Mannes, *der wieder fortgab was er erhielt,* Kathās. 53, 6. fgg.

लब्धनामन् adj. *einen Namen erlangt habend, in gutem Rufe stehend, berühmt:* कस्तिनः Kām. Nītis. 16, 5.

लब्धनाश m. *der Verlust des Gewonnenen* Spr. 3760.

लब्धप्रणाश m. dass., Titel des 4ten Buches im Pañkatantra.

लब्धर् (von लभ्) nom. ag. *Bekommer, Erhalter, Erlanger, Gewinner* Kāṭhop. 2, 7. Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 190. राज्य° Mārk. P. 118, 37. धर्माणां लब्धा fut.) P. 4, 4, 84.

लब्धलक्ष 1) adj. s. u. लक्ष 1). — 2) m. N. pr. eines Mannes MBh. 7, 7012.

लब्धवर 1) adj. *der seinen Wunsch erlangt hat, dem ein besonderer Vorzug in Folge einer Bitte und in Berücksichtigung seiner Verdienste von einer höheren Macht in Gnaden ertheilt worden ist* MBh. 1, 7646. — 2) m. N. pr. eines Tamilehrers Kathās. 52, 265. fgg.

लब्धवर्ण adj. *(der die Buchstaben erlernt hat;* vgl. ग्रथमलब्ध, ग्रथमोपलब्ध) *unterrichtet, gelehrt* AK. 2, 7, 5. H. 341. Hālā. 2, 177. Rāgān. 11, 2. सुभाषित° Pāṇḍavāk. 5, 47 (nach Aufrecht).

लब्धव्य (von लभ्) adj. *zu bekommen, zu erhalten, zu erlangen* H. a. n. 2, 351. Med. j. 52. Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 190. 260. एवं न शक्यते लब्धुमलब्धव्यम् MBh. 5, 3900.

लब्धशब्द adj. = लब्धनामन् R. 2, 63, 19.

लब्धि (von लभ् f. 1) *Erlangung* (das obj. im gen. oder im comp. vorangehend) Hālā. 5, 58. Jṭān. 1, 351. Vārtt. Bṛh. S. 50, 17. fg. (pl.). 71, 11. fg. 85, 6. 97, 5. 7. 8. 10. 11. 14. fgg. 20. 22. fgg. 26. 104, 20. Kathās. 17, 55. Bhāg. P. 2, 7, 18. 7, 7, 40. 10, 38, 15. 60, 20. ब्राह्मणप्राण° *Gewinnung, Erhaltung* Rāǵa-Tar. 3, 86. Ohne obj. *Gewinn* (beim Verkauf) Vārtt. Bṛh. S. 42, 5. 6. 50, 18. — 2) *Quotient* Colebr. Alg. 8.

लब्धिम adj. *gewonnen, erhalten* Bhaṭṭ. 7, 65.

लभ् (= alterem रभ्, लँभते (प्राप्तौ) Dhātup. 23, 6. लेभे, लप्स्यते, लब्धा (vgl. Kāç. 8 aus Śiśup. K. zu P. 7, 2, 10), अलब्ध P. 8, 2, 40, Sch. pass. aor. अलाभि und अलम्भि (mit praepp. nur अलम्भि) P. 7, 1, 69. Vop. 24, 7. लब्धा, लब्धुम्; aus metrischen Rücksichten auch act., z. B. लभति Maitrāyaṇ. 6, 32 (in ungebundener Rede). लभामि MBh. 3, 12894. Harīv. 9972. लभेत् MBh. 1, 3689. 3, 1086. 13, 360. Harīv. 10041. Mārk. P. 43, 20. लभेयम् MBh. 1, 6386. 3, 12018. लभतु 5, 7057. अलभत् 1, 5115. 3, 1796. अलभन् 10496. ललाभ Verz. d. Oxf. H. 25, *b*, 13. fg. लप्स्यामि MBh. 3, 14797. लप्स्यसि Harīv. 11837. लभिष्यसि Pāṇḍav. 1, 13, 34. st. des ungrammatischen अलम्भत MBh. 3, 8305. अलम्भत 14, 2644 und अलम्भताम् 285 liest die ed. Bomb. richtig अलभत u. s. w.; 2, 1269 haben beide Ausgg. प्रलम्भते. 1) *erwischen, fassen; antreffen, finden:* नर्तुचिममुरं नालभत TBr. 1, 7, 4, 6. दूर इव पशुं लभते Ait. Br. 3, 24. न पक्वेऽलप्स्यत 7, 17. Kāṭy. 89. वशे Çat. Br. 1, 9, 3, 33. Lāṭ. 4, 3, 17. सा राज्ञी रतिभिर्लब्धा Kathās. 5, 66. 18, 242. 33, 117. धर्मलब्ध von *Gluth ergriffen* Mṛcch. 62, v. l. यदि तां न लभेत्कर्ण राज्यलम्भोपपादनम् *sich bemeistern* MBh. 5, 4814. मित्रं ध्रुवम् M. 7, 208. यज्ञियं पशुम् R. 1, 61, 14 (63, 16 Gorr.). मनुष्यपतिसुतो हुतं लभध्वम् 4, 41, 79. यदा तु प्रतिषेद्धारं पापो न लभते क्वचित् Spr. 4383. Kathās. 12, 103. 18, 227. 30, 102. Mārk. P. 74, 31. Hit. 38, 4. Z. d. d. m. G. 14, 573, 10. यज्ञया कूपलब्धया Bhāg. P. 9, 19, 11. Spr. 783. न कृष्टा लभ्यते कश्चित्सर्वः शीकपरायणः *wird gefunden, — angetroffen* R. 2, 41, 14. Kathās. 24, 232. 79, 29. न चैनं कश्चिदाहृढं (घोरोढु v. l.) लभते राजसत्तमम् MBh. 1, 1756. निधिम् *einen Schatz finden* Hit. 2, 34. fg. Kathās. 33, 154. अत्यिकं मा लब्धा Spr. 3335. धनगुप्तगृहं पृच्छन्कृच्छ्रेण लब्धास्तमिते सूर्ये प्रविष्टः Pañcat. 137, 25. नाम्भो ऽत्र लभते क्वापि Rāǵa-Tar. 4, 294. 5, 108. Kathās. 23, 41. मार्गम् *einen Weg finden* Kumārās. 3, 49. अवकाशम् *Platz —, einen freien Spielraum —, Gelegenheit finden, sich Eingang verschaffen, am Platze sein* Maitrāyaṇ. 6, 22. वाचो वाच्यविवेकविज्ञानविधियामीदृग्विधा मादृशी लप्स्यन्ते क्व किलावकाशम् Verz. d. Oxf. H. 120, *a*, 33. fg. andere Beispiele s. u. अवकाश 2). अवसरम् dass.: लब्धावसर adj. *der eine Gelegenheit gefunden hat;* davon °त्व n. Çiç. Cr. 58, 9. इत्यादि मक्षिणो वाक्यं न लेभे तस्य चावसरम् *so v. a. machte keinen Eindruck auf ihn* Kathās. 40, 55. लब्धावसर *Gelegenheit gefunden habend* Kāṭh. Up. Einl. 1, 15. 2, 13. पदम् *Platz finden* eig. und übertr. *so v. a. sich Eingang verschaffen* Çiç. 138. Rāgān. 9, 42. 8, 90. Bhāg. P. 3, 28, 20. अलब्धनिद्रालस्य *keine Zeit zum Schlafe findend* 5, 14, 21. कात्यायनस्यायं लब्धः कालः प्रकाशने *so v. a. der Zeitpunkt ist da* Kathās. 5, 90. लब्धतीर्थ *so v. a. die Gelegenheit habend* Bhāg. P. 3, 19, 4. — 2) *erhalten, bekommen, in den Besitz von Etwas gelangen, theilhaftig werden* (pass. zu *Theil werden*), *wiedererlangen:* यज्ञे लप्स्यमानो भवति *er wird beim Opfer Etwas bekommen* d. h. *einen Gewinn davon haben* Ait. Br. 1, 13. धनम् Çat. Br. 13, 5, 4, 15. 2, 4, 3, 4. Kāṭhop. 1, 27. M. 4, 156. R. 3, 76, 30. Spr. 1288. fg. 3605. Vikr. 42. अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः Spr. 233. fg. मासे मासे च लेभे स तस्मात्स्वर्गशतं नृपात् Kathās. 35, 23. तेभ्यो लब्धेन भैक्षेण M. 11, 123. देशानलब्धांश्चिप्सेत लब्धांश्च परिपालयेत् 9, 251. 8, 147. 201. fg. यमू अत्यक्रोतं दासशतं लब्धम् Prāṇ. 61, 2. लेभे स्वकं वपुः MBh. 3, 2997. लक्ष्मीम् Kathās. 18, 204. Rāǵa-Tar. 5, 136. प्रियम् Çiç. 62. लब्धास्त्र MBh. 3, 1727. आभरणमिदं कुतो लब्धम् Vet. in L.A. (III) 10, 14. लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन् Spr. 2661. रमे कोवायं लब्धानन्दी भवति Taitt. Up. 2, 7. स्वर्गम् MBh. 13, 361. R. 1, 43, 5 (44, 5 Gorr.). Mṛcch. 158, 1. लोकाञ्छुभान् MBh. 1, 6939. 15, 339. यज्ञभागम् 5, 550. कृत्स्नमंशम् M. 8, 207. वेतनम् 216. चत्वारि लेभे मुखानि Bhāg. P. 3, 8, 16. मेदिनीम् MBh. 3, 2677. राज्यम् 16779. कामम् R. 1, 10, 10. 2, 43, 3. Megh. 6. Weber, Rāmat. Up. 328. सर्वाभिप्रायकृतान् MBh. 5, 7400. पुत्रम् Ait. Br. 7, 13. Khānd. Up. 4, 4, 2. MBh. 1, 6385. 13, 688. R. 1, 15, 14. 23, 15. Rāǵa-Tar. 1, 107. Mārk. P. 52, 27. मुतांश्च लप्स्यामहे धनं च तात P. 8, 2, 104, Sch. तमलभत पतिम् Rāgān. 9, 22. दुःखिता याचिता लब्धा च Vet. in L.A. (III) 16, 11. गर्भम् MBh. 5, 7398. 3, 10496. वृत्तिम् Harīv. 11837. जीवम् 9972. इन्न Kām. 5, 43. आयुः M. 4, 156. आयुः शतान्दम् Mṛcch. 1, 18. ईप्सितां गतिम् Harīv. 7986. लब्धास्पद Spr. 2660. फलम् M. 9, 49. 51. 54. MBh. 3, 142. R. 1, 62, 27. Megh. 25. 35. यशः MBh. 3, 8303. Bhāg. 11, 33. Spr. 2364. ज्ञानम् Bhāg. 4, 29. Bhāg. P. 4, 16, 25. बुद्धिम्, चेतः MBh. 3, 2331. संज्ञाम् 5, 7180. R. 2, 34, 21. चेतनाम् Pañcat. 35, 11. शरणम् R. 2, 96, 43. मर्त्यशब्दम् 1, 63, 17 (65, 20 Gorr.). Kathās. 17, 45. लब्धप्रवणादिसंज्ञ P. 1, 4, 102, Sch. सुखम् Khānd. Up. 7, 22. R. 2,

24,32. Mucch. 98. Spr. 3053. शर्म MBh. 3,1799. R. 3,50,22. Bhâg. P. 3, 5,39. रतिम् Kathâs. 38,92. मुदम् MBh. 3,1876. 3006. 5,7546. Mârk. P. 16,86. प्रकर्षम् R. Gorr. 2,121,1. 4,7,24. नेत्रनिर्वाणम् Çik. 33,1. धृतिम् Kathâs. 18,315. लब्धदिव्यरसास्वाद 346. शान्तिमात्मनः R. 1,64,16. शमम् 2,85,19. केवलत्वम् Maitrâyaṇ. 6,21. स्वातन्त्र्यम् 22. पुरुषत्वम् MBh. 5, 7382. Spr. 4171. Bhâg. P. 5,24,1. ब्राह्मण्यम् R. 1,65,25. यौवराज्यम् R. Gorr. 2,12,27. स्वास्थ्यम् Çik. 58,5. वाक्षाभ्यम् Râjat. 6,188. मानम् R. 2,109,3. मुक्तिं सेक्ष्यम् Spr. 2822. प्रतिष्ठाम् 3965. विश्रान्तिम् Vikr. 20. विश्रम्भम् R. 2,60,7. वृद्धिम् Ṛt. 1,25. प्रभावम् Kathâs. 19,11. सुप्रख्याम् Spr. 5226. प्रवेशम् Mucch. 41. Pañcât. 31,9. खड्गधारापरिघङ्गम् Spr. 2486. शिरःकृन्तनविधिम् 4147. सख्यम् R. 4,7,4. सेवाम् Râjat. 5,154. लब्धपुण्यप्रसाद Bhâg. P. 3,15,7. धनुष्ताम् MBh. 3,14797. AK. 2,7,10. दुःखम् R. 2,74,25. Spr. 267. 3262. क्लेशम् 2062. मृत्युम् R. 3,49,54. Mârk. P. 43,20. शापम् 74,42. ज्ञानातिरस्क्रियाम् Spr. 169. धर्षमाणम्, विडम्बनम् 163. वञ्चनाम् R. 2,34,27. पापम् 75,38. निद्राम् R. 2,51,9. 86,10 (94, 11 Gorr.). Spr. 4521. Vet. in LA. (III) 20,8. स्पर्शम्, संस्पर्शम् *eine Berührung erfahren, berührt werden* Râjat. 4,22. Kathâs. 4,63. 37,17. कर्पूरः पावकस्पृष्टः सौरभं लभतेतराम् Spr. 3329. श्लभततरां निर्वृतिम् Kathâs. 26,282. लब्ध = प्राप्त AK. 3,2,54. Taik. 3,3,148. H. 1490. — 3) mit einem infin. P. 3,4,65. zu — *bekommen:* द्रष्टुम् MBh. 4,95. Spr. 5131 (vgl. न तमिक् दर्शनाय लभते Kaṭhân. Up. 2,3,1). भोक्तुम् P. 3,4,65, Sch. प्रवेष्टुं लभते *es gelingt ihm einzutreten* Harîv. 8249. न चैनं कश्चिदारोढुं (v. l. für धारयेत्) लभते राजसत्तमम् so v. a. *es gelingt Niemand zu sehen, wie der König hinaufsteigt* MBh. 1,1756. मर्तुमपि न लभ्यते *es ist Einem nicht ein Mal zu sterben vergönnt* Kathâs. 96,22. नाधर्मो लभ्यते कर्तुं लोके वैयाघ्रे so v. a. *es kann —, es darf kein Unrecht verübt werden* 106,136. Râjat. 3,142. षष्टुं ततो नालभत द्विजान् *er fand keinen Brahmanen zum Opfern* Mârk. P. 133,21. — 4) *besitzen, haben:* अपत्योत्पादनाय सामर्थ्यमलभमानः Sîy. zu Ṛv. 1,125,1. लभते नात्मलाभे रश्मयश्चन्द्रसूर्ययोः Mârk. P. 60,6. सम्बन्धमलभमानः *keinen logischen Zusammenhang habend* Sin. D. 12,2. 15,6. — 5) *wahrnehmen, erkennen:* तद्भिज्ञानलब्धा Kathâs. 39,107. *herausbringen, hinter Etwas kommen:* सत्यमलभमानः Kull. zu M. 8,109. pass. *sich ergeben, sich herausstellen, zu Tage treten* Sarvadarçanas. 125,9. fgg. 131,1. 159,10. Sin. D. 4,3. als Resultat einer Rechnung Weber, Gjot. 83. धर्मणं रेचनम् u. s. w. गमनादेव लभ्यते so v. a. *fällt unter den Begriff von* Bâlabh. 6.

— caus. लम्भयति P. 7,1,64. aor. अललम्भत् Vop. 18,1. 1) *bewirken, dass Jmd Etwas erlangt, bekommt, theilhaftig wird;* mit doppp. acc.: धामनम् Harîv. 14547. पुत्रं श्रियम् Râgat. 18,8. Kathâs. 30,104. शरीरं वासुदेवस्य रामस्य च महात्मनः संस्कारं लम्भयामास MBh. 1,624. Mârk. P. 22,46. सत्कारं लम्भयाम मत्तायं पूजयन्तितुः MBh. 3,16068. Harîv. 4901. विद्रूपकं संज्ञां लम्भयति *giebt* Vid. *ein Zeichen* Vikr. 47,12. लम्भयत्रयाण्युणम् Çatr. 14,78. Çâṅk. zu Bhâg. Âr. Up. S. 234. देवभेदं च लम्भितः MBh. 2,1529. स्त्रीभावं चापि लम्भिता Harîv. 9929. 10065. सो ऽयं मृत्युं मर्त्येन लम्भितः R. 6,94,17. तेन पित्रा बालो ऽपि न विद्याः क्षेत्रेण लम्भितः Kathâs. 65,74. लम्भितलोभ Gît. 2,4. statt des acc. auch instr. der Sache: मितं मितिमा मुतरां मुनेर्वपुः — लम्भयन् Çiç. 1,25. — 2) *bekommen, erhalten:* स्वभार्यां कुले महति लम्भितां (= परिणीतां Comm.) Bhâg. P. 5,1,65. — 3) *herausbringen, hinter Etwas kommen:* अशातिकेषु वर्त्मसु मिथो विवादमानयोः । अविन्दंस्तन्नतः सत्यं शपथेनापि लम्भयेत् ॥ M. 8,109.

— desid. लिप्सते लीप्सते TBr.) P. 7,4,54. 8,4,55. Vop. 19,9. 13. hier und da auch act. aus metrischen Rücksichten; zu *ergreifen* —, zu *erwischen* —, zu *bekommen* —, zu *erlangen* —, zu *erhalten* —, zu *gewinnen suchen:* रुहं निपाने (so die ed. Bomb.) लिप्सतो व्याघवत्तावतिष्ठताम् MBh. 7,3792. 13,225. Bhaṭṭ. 7,88. भोगस्य TBr. 1,6,10,5. Çâṅkh. Çr. 8,8,9. क्रय्यम् Gobh. 1,9,14. Liṭ. 3,2,9. भिक्षाम् M. 6,50. अलब्धं चैव लिप्सेत Spr. 233. यो ऽदत्तादायिनो रुस्ताल्लिप्सेत ब्राह्मणो धनम् M. 8,340. लिप्सन्तः सर्ववस्तूनि Bhâg. P. 8,8,35. Hit. II,8 (wohl fehlerhaft). काम्यां वृत्तिं लिप्समानः MBh. 12,9431. देशानलब्धांल्लिप्सेत लब्धांश्च परिपालयेत् M. 9,251. साम्नैवार्थं ततो लिप्सेत् MBh. 3,1256. यज्ञातलिप्सां (adv., °प्सां ed. Bomb.) लिप्सेत 12,9987. 13,1617 (act.). 14, 882. R. Gorr. 1,32,9. 2,26,37. Kâm. Nîtis. 11,22. अन्तरम् MBh. 5,1637. 2645. तस्मात्क्षेत्रं न लिप्सेत मित्रेभ्यो धनसंचयात् Spr. 3012. गुणाधिकान्मुदं लिप्सेदनुक्रोशं गुणाधमात् Bhâg. P. 4,8,34. लिप्स्यमान P. 3,3,7. लिप्सित R. 4,1,30. — Vgl. लिप्सा fg. und लीप्सितव्य.

— अनु (von *hinten*) *erwischen, haschen:* धावन्तम् Çat. Br. 3,2,1,36. 4,5,10,7. Kâtj. Çr. 25,12,24. — desid. Çat. Br. ebend. Kâtj. Çr. 25,12,22.

— अभि 1) *anfassen, berühren:* भागवताङ्घ्रिरेणुम् Bhâg. P. 2,3,23. — 2) *bekommen, erhalten, erlangen, theilhaftig werden:* देवास्त्रिदिवं चाभिलेभिरे MBh. 12,1186. अम्बरम् *ein Kleid* Vaitân. Bhn. S. 71,13. सर्वं स्वार्थम् Bhâg. P. 11,5,36. अवमानादीनि अनात् 5,14,26. मानम् 9, 10,7. यं कृकिणो भगवतो ऽभिलेभे sc. als Sohn 3,1,23. — desid. *zu erhaschen —, zu bekommen wünschen:* वासस्तदभिलिप्सती (das der Wind davongetragen hatte) MBh. 1,3940. वृत्त्यर्थमभिलिप्सन्तः Viṣṇ-P. bei Muir, ST. I, 30, N. 53.

— आ 1) *erwischen, erfassen; anfassen, berühren* Ṛv. 10,87,7. इध्ममर्चिरालभते TBr. 2,1,10,1. पाणिभ्याम् Âçv. Çr. 1,11,2. Gobh. 1,13,7. Kâtj. Çr. 1,10,14. 2,3,1. Pâr. Gobh. 2,2. ललाटम् Kauç. 90. M. 4,117. गाम् 5,87 (= Mârk. P. 35,29). 11,203. नामृतस्य हि पापीयान्नार्यामालभ्य जीवति MBh. 4,516. 1313. अनालब्धं क्षभति गणिऽवम् 5,1909. 2929. R. Gorr. 1,42,21. Vaitân. Bhn. S. 24,8. गावश्चालेभिरे (pass.) भेटिः Bhaṭṭ. 14,91. Bemerkenswerth sind folgende Schwurformeln: सत्येनायुधमालभे MBh. 3,15197. R. 2, 98,6. 3,33,3. 26. आयुधं तेन सत्येन पादौ चैवालभे तव 2,18,19. सत्येनालभ्य पादौ ते 29,24. तवा मूर्धानमालभे MBh. 5,5991. सत्येनात्मानमालभे 3,16847. 5,5992. 14,2273. तेनाहं विप्र सत्येन स्वयमात्मानमालभे 13, 156. सत्यमात्मानमालभे 15,112. — 2) das Opferthier *fassen und anbinden*, daher euphemistisch für *schlachten, opfern:* पशुषु यूपेष्वालभेत TBr. 1,8,6,1. नास्मानालप्स्यधे Ait. Br. 2,3. 6. 8. 4,22. तमेतमभिषेचनीयं पुरुषं पशुमालेभे 7,15. TS. 5,4,12,2. प्रातर्वै पशूनालभते Çat. Br. 3, 7,2,4. 1,1,4,15. fg. वशामालभ्य संज्ञपयति 4,5,2,1. 11,8,2,3. अश्वमेधम् 2,5,4. 13,7,1,9. Kâtj. Çr. 21,2,4. ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभेत Cit. bei Nîlak. zu MBh. 2,365. गर्भं पशुमालभ्य Jâṅ. 3,280. MBh. 7,2372. 12,9128. 14,288 (अलभत ed. Bomb. auch an erster Stelle). 2644 (अलभत ed. Bomb.). Mṛicch. 161,12. Bhâg. P. 5,9,12. 11,10,28. 21,30. — 3) *anfan-*

gen, unternehmen (vgl. रभ् mit आ): व्रतम् TS. 1,6,3,2. 10,3. घर्घर्चम् 2,5,3,4. — 4) *Jmd gewinnen:* एवं सामभिरालब्धः (= उक्तः oder कृदि स्पृष्टः Comm.) Bhāg. P. 10, 57, 40. — 5) *erlangen, theilhaftig werden:* न चैवाल्पभसे त्राणमभिपन्ना बलीयसा MBh. 4,701. कामिम् Mṛicch. 15. तस्य विषयमालभ्य Kām. Nītis. 9,62. — 6) आलल्लम्भे Rāja-Tar. 2,112 fehlerhaft für आललम्बे. — Vgl. आलब्धि fgg. und आलम्भ fgg. — caus. 1) आलम्भयति *anfassen —, berühren lassen* Kauç. 52. 58. 72. Kāty. Ça. 7, 5,3. 8,15. — 2) *beginnen lassen:* व्रतम् TBr. 2,2,2,2. — desid. आलिप्सते Schol. zu P. 7,4,54. 8,4,55. 1) *berühren wollen* Kāty. Ça. 8,2,7. — 2) *anbinden* — d. h. *schlachten wollen* Çat. Br. 6,2,1,3. 7,5,2,4.

— अन्वा 1) (von *hinten*) *erfassen, in die Hand nehmen, berühren:* द्रुस्मीन् ṚV. 10,130,7. संसम् Gobh. 2,10,26. Kauç. 69. 80. MBh. 5,1195. Harīv. 8207. — 2) *sich halten an:* सत्यम् Çat. Br. 9,5,4,12. — Vgl. अन्वालम्भन.

— उपा 1) *berühren* Çat. Br. 1,9,3,21. — 2) *binzu binden* d. i. — *schlachten;* s. उपालम्भ्य. — 3) *tadeln, Vorwürfe machen;* mit acc. der Person Kāṭh. Up. 2,22,3. 4. Nir. 1,14. MBh. 1,4330. 2,1337. 3,16332. 4,485. 659. 675. 7, 2336 (act.). R. Gorr. 2,61,27. 116,11. Mṛicch. 83, 14. fg. 91,20. Ragh. 7,41. Kumāras. 5,58. Çiç. 59,15. 85,7. ad 54. Vikr. 63,12. Spr. 3670. Çiç. 9,60. Kathās. 17,22. 64,12. 16. Bhāg. P. 5,8,19. 7,4,45. Prab. 103,19. Bhaṭṭ. 3,30. 6,125. — 4) उपाल° fehlerhaft für उपल° MBh. 7,3070. Çiç. Ca. 14,13. Bhāg. P. 5,10,1. Verz. d. Oxf. H. 264,a,29. an den drei ersten Stellen hat die v. l. das Richtige. — Vgl. उपालभ्य fgg. — caus. *Jmd tadeln, Jmd Vorwürfe machen* Pārāç. 134,24.

— प्रत्या *von der anderen Seite her fassen:* अङ्गुष्ठेन Āçv. Ça. 1,7,5. पराञ्चमावृतं संपिण्ड्यात्प्रत्यालभमानम् *ohne dass er seiner Seits fassen —, sich zur Wehr setzen kann* Çat. Br. 1,6,3,33.

— समा 1) *anfassen, berühren:* उत्तरामुत्तरां शाखां समालम्भे रोहेत् Çat. Br. 9,3,3,6. Jīān. 3,13. पाणिना MBh. 4,1421. R. 1,29,25. 41,23. R. Gorr. 1,13,33. 30,24. 2,86,9. — 2) *salben* R. 2,25,25. प्राणान् d. i. *Mund und Nase* Suçr. 1,16,12. Mṛicch. 47,23. Kathās. 37,13. 18. 99, 10. Naish. 22,56. Bhaṭṭ. 14,92. समालब्ध = विच्छिन्न Taitt. 3,3,262. H. an. 3,416. Med. n. 132. — Vgl. समालम्भ fgg.

— उद् Mṛicch. ed. Calc. 342,17. fg., wo aber mit der neueren Ausg. मे वयस्यो लभ्यं st. च पस्योल्लभ्यं zu lesen ist.

— उप 1) *erwischen, habhaft werden, finden, bekommen, erhalten, wiedererlangen, theilhaftig werden* (pass. zu *Theil werden*) Kāty. Ça. 25, 9,3. 12,25. R. 3,46,14. MBh. 1,1046 (act.). 1883. 3,2397. R. 3,74,29. उपलब्धं हि मित्रं मे 4,9,101. 40,71. Vikr. 65,19. Daçak. 73,10. 80,17. नावमिव मामुपलभ्य 88,3. 6. Saddh. P. 4,14,a. गर्भानुपलेभिरे *empfingen* R. 1,15,25 (23 Gorr.). M. 11,17. MBh. 13,307. नालभ्यं चोपलभ्येत नृणाम् 7601. 14,448. Harīv. 6507 (दुर्गकर्माणि संस्कारानुपकल्प्य die neuere Ausg.). धनधर्मम् R. 3,42,47. धन्यतमं रसमुपलभते *nimmt einen Geschmack an* Suçr. 1,169,11. Mṛicch. 1,16. Ragh. 8,31. 10,2. 18,21. Rāja-Tar. 5,207. Bhāg. P. 1,16,24. 3,16,6. 33,37. 5,2,18. 3,4. प्रकृतम् Harīv. 607. स्मृतिम् MBh. 1,3994. Çiç. 108,7. Verz. d. Oxf. H. 51,b,35. संज्ञाम् MBh. 1,216. R. 2,62,3. 3,25,9. सुखम् Spr. 3322. 4073. Kumāras. 4,42. शान्तिम् MBh. 1,6826. 16,276. निर्वृतिम् Rāja-Tar. 1,65. स्वेषु दारेषु रतिम् R. 5,22,30. Vikr. 67,4. निद्राम् 29. बालस्पर्शम् Çiç. 103,19. — 2) *wahrnehmen:* प्रत्यक्षतः P. 6,3,30, Sch. सालादनुपलभ्यमानावग्निपिशाचौ कपोतवाताभ्यामनुमीयेते ebend. अग्निरासोपदेशात्प्रतीयते ऽत्राग्निरिति । प्रत्यासीदता धूमदर्शनेनानुमीयते । प्रत्यासन्नेन च प्रत्यक्षत उपलभ्यते Comm. zu Nyāyas. 1,1,3. Gaim. 1,1,2. Tattvas. 18. Nilak. 157. Kumārila bei Müller, Sl. 310. Çāṅk. zu Bādar. Ār. Up. S. 27. 300. Verz. d. Oxf. H. 256,b,8. 264,a,29 (उपाल° fälschlich gedruckt). Daçarūp. 61. Gaṅgāp. zu Sāhityad. 6. Schol. zu Kap. 1,109. 114. 137. Sarvadarçanas. 7,13. 21. 21,19. तमालश्यामलत्वेनोपलभ्यमानं तमः *wahrgenommen werdend als* 110,17. 144,4. MBh. 1,3276. नलं च कृतसर्वस्वमुपलभ्य 3,2274. 2396. 4,771. 7,3070 (उपलप्स्यन्ति ed. Bomb.). Harīv. 11393. R. 2,65,13. 3,60,13. 5,14,59. 51,15. नोपलेभे तदात्मानम् 7,88,12. Vikr. 57,11. न मुखं दुःखमेवास्ति यस्मात्तदुपलभ्यते Spr. 1491. 5328. Bhāg. P. 1,8,8. 9, 9. 16,19. 2,7,12. 10,9. 3,17,27. 20,21. 27,10. 28,36. 4,6,40. 28,46. 29, 64. 5,2,2. 3,7. 9,18. 10,1 (उपलब्धः ed. Bomb.). 15,6. 24,5. 29. 7,9,34. 9,14,40. Mālav. P. 37,24. Sāh. D. 10,3. Pārāç. 53,3. Kāç. zu P. 1,2, 54. Kull. zu M. 8,69. Schol. zu Çiç. 13,12. — 3) *erfahren, in Erfahrung bringen, kennen lernen, erkennen, sich Gewissheit verschaffen über* M. 7,87. MBh. 2,2615. 4,898. Harīv. 4600. R. 1,68,11. 3,34,17. 39,2. 60, 14. 4,47,17. 58,11. 59. 5,1,32. 38,17. 71,4. 7,33,22. Ragh. 12,60. Çiç. 11,16. Mālav. 44,3. 41. 64. Vārāh. Bṛih. 2,3. Kathās. 33,93. 65,225. 73,257. Rāja-Tar. 3,500. 4,430. Bhāg. P. 4,6,3. 5,1,9. Daçak. 59,3. 69,10. Pārāç. 172,21. Bhaṭṭ. 3,27. धनुपलभ्यात्मानमननुविद्य Kāṭh. Up. 3,3,4. Kāṭhop. 6,12. fg. Maitrīyop. 4,4. 6,3. *erkennen, einsehen, wissen* MBh. 2,809. मनसो दुःखमूलं तु स्नेह इत्युपलभ्यते 3,72. सव्यदक्षिणयोर्यत्र विशेषो नोपलभ्यते Spr. 3220. चतुर्थं नोपलभ्यते *kennt man nicht* 671. 3067. Kathās. 6,128. विनाशस्तव रामेण संयुगे नोपलभ्यते *so v. a. ist unbegreiflich* R. 6,95,7. — 4) pass. mit act. Bedeutung: नोपलभ्यति मूढात्मा प्रत्यक्षं ब्रह्म शाश्वतम् *nimmt wahr* Harīv. 11600 (मूढानां die neuere Ausg., also hier wirkliches pass.). स हि स्थानानि सर्वाणि कार्त्स्न्येन कपिपुंगवः । नरमांसाशिनो लोके नैपुण्येनोपलभ्यते ॥ *kennt* R. 3,75,70. — 5) उपलब्ध R. 2,40,45 fehlerhaft für उपा° *getadelt*, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. उपलब्धव्य fgg., उपलभ्य fgg. — caus. 1) *bewirken, dass Jmd etwas erhält, zukommen lassen:* बुभुजे च भियं स्वर्गो दिग्देवोपलम्भिताम् Bhāg. P. 6,15,36. — 2) *Jmd Etwas erfahren —, erkennen lassen* P. 1,4,52, Vārtt. 2, Schol. — 3) *bewirken, dass Jmd* oder *Etwas erkannt wird, erkennbar machen* Bhāg. P. 4,1,35. — desid. etwa *eingreifen wollen in:* यज्ञानां गूढमुपलिप्समानाः AV. 6, 118,1, wo die Lesart zweifelhaft ist; die Hdschrr. scheinen गन्तुम् oder गन्त्रम् zu schreiben, während TBr. 3,7,13,2 वृणमुपलिप्समानाः gelesen wird. — Vgl. उपलिप्सा fg.

— प्रत्युप *wiedererlangen, wiederbekommen* Vikr. 133. Bhāg. P. 5,20, 25. 8,11,1.

— समुप 1) *erlangen, bekommen* MBh. 9,2086. R. 5,24,9. 7,88,23 (act.). — 2) *erfahren, kennen lernen* Vārāh. Bṛih. S. 88,10.

— परि *erlangen, bekommen* Verz. d. Oxf. H. 248,b,6.

— प्र, प्रालम्भि, प्रलम्भ् P. 7,1,69, Sch. Vop. 24,7. 1) *ergreifen, packen, sich Jmds bemeistern* MBh. 5,1551. काममन्युभ्यां प्रलब्धः 4820.

An beiden Stellen vielleicht auch in der Bed. 3). — 2) *erlangen, bekommen* Kathās. 21,138. — 3) *Jmd hintergehen, anführen, foppen, zum Narren halten* MBh. 2,1365 (प्रलम्भन्ते beide Ausgg., = धवलम्बन्ते Nīlak.). 3,2612. 11,132. Bhāg. P. 3,17,27. 29. 18,13. 4,7,12. 10,22,21. 34,18. 11,1,16. — Vgl. प्रलब्धव्य, प्रलम्भ fg. — caus. *Jmd anführen, foppen, zum Narren halten* Bhāg. P. 3,3,20. 10,60,49.

— विप्र 1) *Jmd anführen, hintergehen, verhöhnen, zum Narren halten* MBh. 5,7431. Çiç. 70,22. Uttarar. 114,15. fg. (135,10). Kathās. 4,61. 12,190. 23,202. 45,272. 71,170. Bhāg. P. 1,18,48. 4,15,24. 25,62. 5,10,6. 9,21,34. Mārk. P. 24,27. Daçar. 2,25. 4,62. Prasannar. 5,b,6. Sin. D. 112. 118. Ver. in LA. (III) 20,16. Hit. 92,6. 120,18. AK. 3,1,41. H. 442. Hālās. 2,223. त्वयोदितं व्यक्तमविप्रलब्धम् *ohne Trug* Bhāg. P. 5,10,10. das Gesetz *verhöhnen* so v. a. *ohne alle Rücksicht verletzen:* न वै धर्मो विप्रलब्धः सभायां पापात्मभिः MBh. 3,228. — 2) *wiedererlangen, wiederbekommen* MBh. 14,1732 nach der Lesart der ed. Bomb., प्रविल° ed. Calc.; die richtige Lesart wird प्रतिल° sein. — Vgl. विप्रलम्भ. — caus. *verhöhnen* so v. a. *rücksichtslos verletzen:* यात्राम् *einen Befehl* Bhāg. P. 6,3,8.

— प्रति 1) *wiedererlangen, wiederbekommen:* भर्तारम् MBh. 3,16309. Hariv. 9985. R. 3,8,25. 4,25,39. Bhāg. P. 4,9,51. Mārk. P. 24,43. चत्वारि MBh. 1,6827. 7882. R. 4,61,13. ब्राह्मण्यम् (so die neuere Ausg.) Hariv. 1019 (act.). दर्शनम् so v. a. *wiedersehen* MBh. 13,939. संज्ञाम् 1,6773. 6,2885. 4574. 7,4071. 8,831. 14,2013. R. 2,39,9 (38,9 Gorr.). R. Gorr. 2,9,37. 35,2. 58,1. 5,30,15. Milav. 68,19. चेतनाम् MBh. 3,712. R. 6,8,7. प्रतिलब्धेन्द्रियप्राण Bhāg. P. 10,16,55. प्रतिलब्धवच् 6,16,38. प्रतिलब्धज्ञानमो 8,17,13. — 2) *erlangen, bekommen, theilhaftig werden:* पत्नीम् Bhāg. P. 3,13,1. वरं श्रेष्ठम् MBh. 12,4180. Saddh. P. 4,7,a. b. 26,a. Bhāg. P. 3,31,39. कामम् 8,21. 5,13,12. मनोरथम् 14,26. बोधम् 3,5,48. स्त्रीं भगवति प्रतिलब्धभावः 28,34. 16,7. मानम् so v. a. *stolz werden* 2,14. 5,13,10. pass. zu *Theil werden, sich darbieten:* रन्धम् Çaṅk. zu Bādar. Ār. Up. S. 84. — 3) *seinen Theil bekommen* so v. a. *bestraft werden* MBh. 1,3490. — 4) *erfahren:* इन्द्रात्प्रवृत्तिम् R. 3,63,29. प्रतिलभ्य च धर्मात्मा शिष्यं धर्मपरायणम् *nachdem er in Erfahrung gebracht hatte, dass* MBh. 13,2341. — 5) *erwarten, abwarten:* प्रतिलभ्यतां शरत् R. 4,26,25. — Vgl. प्रतिलभ्य fgg.

— वि 1) *auseinandernehmen* Kāty. Çr. 10,8,5. *wegziehen* (den Dünger aus dem Stalle) Kāṭh. 7,26. — 2) *verleihen, verschaffen:* पौरपुरन्ध्रीणां विलब्धनयनोत्सवः Kathās. 55,100. — 3) *abtreten, überlassen:* विलब्ध इव चक्राङ्कैस्तस्य तीर्णानि शेरते। — करुणाक्रन्दितध्वनिः Kathās. 87,19. यत्कृतमत्र प्रभुर्पूर्यं कारादाय कुटुम्बिनः। विक्रमादित्यदेवेन विलब्धाः शासनेन मे॥ 124,77. मण्डलानि विलभ्यन्ते यैः Rāja-Tar. 3,243. 5,263. इति ज्ञात्वा स्वामिभोगादिकं यत्नेप्यद्य विलप्स्यद्य च so v. a. *einhändigen* (*levy* Hall) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,548,10. — Vgl. विलम्भ. — caus. *Jmd Etwas zu Theil werden lassen*, mit dopp. acc. Kathās. 121,167. — desid. *auseinandernehmen —, vertheilen wollen* Çat. Br. 2,6,2,16. 4,4,2,2.

— प्रवि *wiedererlangen, wiederbekommen* MBh. 14,1732. विप्रल° ed. Bomb.; die richtige Lesart wird प्रतिल° sein.

— सम् 1) *sich gegenseitig fassen* TBr. 1,7,1,6. — 2) *erlangen, bekommen, theilhaftig werden:* मानुलुङ्गं कुत इदं संलब्धं भवताम् Kathās. 53,40. यया (भक्त्या) संलभ्यते रतिः Bhāg. P. 7,7,32. — desid. s. संलिप्सु.

लभ m. nom. act. von लभ् in ईषल्लभ (s. u. ईषत्) und दुर्लभ. — Vgl. लाभ.

लभन (von लभ्) n. 1) *das Finden, Antreffen, Habhaftwerden:* घात्म° Bhāg. P. 10,60,57. — 2) *Empfängniss:* उमायां लभनस्य को ऽर्थः im Comm. zu Gaut. 1,3,31. Ballantyne übersetzt: *what is the meaning of this about intercourse on days of fasting?*, oder nach einer anderen Lesart (offenbar उमायां लशुनस्य) *what is the meaning of garlic as regards the goddess Umā?* — Statt मृत्तिकालभनात् MBh. 3,8228, wo man übrigens eher घालभन vermuthen würde, liest die ed. Bomb. मृत्युकालभयात्. — Vgl. लम्भन.

लभस्त Uṇādis. 3,117. m. = घाग्निबन्धन *Pferdestrick* Uṇādis. = धन *Reichthum* und घाचक *Bittsteller* Comm. zu Up. 3,116.

लभ्य (von लभ्) adj. P. 3,1,98, Sch. 1) zu *finden, anzutreffen:* वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यः Kaṭhop. 1,22. नक्षत्तरेण चक्रन्दो र्तेः मुर्लभ्यः Pat. zu P. 7,4,77. मृणालसूत्रात्तरमप्यलभ्यम् Kumāras. 1,40. — 2) *wer oder was in Jmdes Besitz gelangen kann oder soll, erreichbar, erlangbar, erhaltbar;* = लब्धव्य H. an. 2,331. Med. j. 52. नास्मि लभ्या विराटेन न चान्येन कदा च न MBh. 4,278. 3,16186. मयि प्रीते तु यद्धर्म्यं नालभ्यं विद्यते तव 13508. 5,1685. 13,38. P. 5,1,93. Mahān. 178,3. Rāgat. 1,3. 4,88. Kumāras. 5,18. Spr. 1286. 1930. 2364. 2460. 2618. 2938. 3014. 3006. 3844. 4531. Kathās. 33,19. Bhāg. P. 3,9,12. 7,6,25. Mārk. P. 72,21. Pāṇ. ed. orn. 3,15. Hit. 23,18. — 3) zu *fassen, zu erkennen, zu verstehen, verständlich:* सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष घात्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् Muṇḍ. Up. 3,1,5. 2,3 (= Kaṭhop. 2,22). पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया Bhag. 8,22. Bhāg. P. 4,24,54. Pāṇ. 4,8,37. गङ्गातटे घोष इति प्रतिपादनाल्लभ्यस्य शीतत्वपावनत्वातिशयस्य Sin. D. 11,6. Çaṅk. zu Bādar. Ār. Up. S. 111. Kusum. 57,10. Verz. d. Oxf. H. 162,a,N. 1. Schol. zu Naish. 22,55. — 4) *entsprechend, angemessen, passend* AK. 2,8,4,24. Trik. 3,3,320. H. 743. H. an. Med. Rāgān. 10, 42. Kumāras. 5,48. घाघज्ञानलभ्ये वृषेणिकागर्के Kathās. 12,84. स्ववृत्तिलभ्यानां दीनाराणाम् 78,16. Rāja-Tar. 1,284. mit einem infin.: ज्ञातः शत्रुर्न कौन्तेय लभ्यः पीडयितुं रणे so v. a. *darf nicht* MBh. 2,924; vgl. u. लभ् 3). — 5) mit der Bed. des caus. *auszustatten* —, *zu versehen mit:* (पुत्राः) वृत्त्या (भृत्या ed. Bomb.) लभ्याः MBh. 13,5081.

लम् (= älterem रम्) *sich ergötzen* (geschlechtlich): निगृहीतेन्द्रियो भूत्वा नाप्सरोभिर्ललाम (= रराम Nīlak.) Hariv. 12072.

लंमक Uṇādis. 2,33. m. 1) = तीर्थशोधक Uṇādis.; vgl. रमक. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69 und gaṇa नडादि zu 4,1,99. उपकाः *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि; उपकलमकाः *die Nachkommen* Upaka's und Lamaka's gaṇa तिककितवादि zu P. 2,4,63. — Vgl. लामकायन.

लम्न m. pl. Bez. einer best. Klasse von Menschen Rāja-Tar. 8,1105.

लम्पक m. pl. N. einer Secte bei den Gaina Wilson, Sel. Works 1,341.

लम्पट adj. (f. घा) *gierig, lüstern* H. ç. 102. Hālās. 2,198. Jāḍava bei Mallin. zu Çiç. 4,6. Hir. 192 (लिम्पट nach den Corrigg.). Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,548,8. Bhāg. P. 5,2,14. 7,15,40. 12,3,21.

पुरु° 7,15,70. स° 3,14,49. 22,2. 10,96,18. 11,20,15. नारि° 10,81,26. die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend: स्त्रीषु Kathâs. 47, 101. स्त्री° 102. पारस्त्री° Bhâgavatâv. P. 2, 55, 30 (nach Aufrecht). भोगलम्पटा (शिक्षा) Kathâs. 30, 117. प्रफुल्लमल्लीमधु° Sîm. D. 300, 21. सङ्गिलकाम° Bulg. P. 5, 18, 21. 19, 14. तद्गन्धासव° 10, 59, 40. Pañkat. 3, 5, 28. कोटिकोटिविपाटन° Piṅgalâmatam. 4, 189 (nach Aufr.). विषयरासास्वाद° Sarvadarçanas. 101, 3. Pañkat. 253, 18. रति° *geil* Verz. d. B. H. No. 1006. Davon nom. abstr. °त्व n.: भवरसास्वादने Spr. 23.

लम्पा f. N. pr. einer Stadt Kathâs. 67, 36. 45. eines Reiches Hiouen-thsang I, 95.

लम्पाक 1) adj. = लम्पट H. an. 3, 91. Med. k. 149. — 2) m. N. pr. eines Volkes, = मुरण्ड H. 960. H. an. Med. MBh. 7, 4547. Mâlav. P. 87, 10. Reinaud, Mém. sur l'Inde 353. LIA. I, 29, N. 1. 422.

लम्पाघण्ट m. *eine Art Trommel*, = प्रतिपत्तिपटह Hâs. 72. = ढक्का H. an. 3, 352. Med. r. 160.

लम्फ m. *Sprung* ÇKDa. Auch उल्लम्फन und प्रलम्फन n. ebend. — Vgl. कम्फ.

1. लम्ब् (= Alterem 1. रम्ब्), लम्बते (विलम्बने) Dhâtup. 10, 15. Nir. 6, 26. ललम्बे, लम्बिष्यते, लम्बितुम्, लम्बित; aus metrischen Rücksichten auch act. 1) *herabhängen, hängen an:* प्रतृष्णं वैव तिष्ठेल्लम्बेत वा Çat. Br. 11, 1, 6, 32. पुत्रानं निरस्ते (so die ed. Bomb.) वीरं लम्बमानम् MBh. 6, 1879. 8, 55. 11, 136. R. 5, 64, 24. 6, 7, 34, 17. Kathâs. 40, 102. Pañkat. V, 36. ग्रवाक्शिरास्तु यो लम्बेत् MBh. 13, 884. Spr. 4953. सपत्रो वृक्ष शाखायां लम्बते MBh. 1, 1336. 1383 (act.). 12, 6597. R. 3, 39, 30. प्रपाते मे लम्बमानः MBh. 2, 2187. वृक्षाग्र लम्बन्ति न भ्रान्ति MBh. 3, 13653) तथैव भग्नाः Draup. 6, 18. शमीवृक्षस्य लम्बमानशिखायाम् Pañkat. 94, 1. द्रोणप्रमाणानि लम्बमानानि — मधूनि मधुकरिभिः संभृतानि नगे नगे R. 2, 56, 8 (11 Gorr.). R. Gorr. 5, 74, 7. यभिमं लम्बते तु यत् नेत्रम् Suçr. 2, 21, 2. शयधुर्मुष्कवल्लम्बते गले 1, 289, 7. Pañkat. 136, 1. Hit. 49, 14. लम्बमें वृषणम् Bulg. P. 2, 19, 10. लम्बता कण्ठचर्मणा Harîv. 4103. लम्बमानाङ्घ्रि Râja-Tar. 1, 80. वानरस्य लम्बमानं लाङ्गूलम् Pañkat. 250, 7. लम्बमाना कण्ठभूषा H. 657. स लम्बमानः कृष्णस्य भुजाये सघनो गिरिः Harîv. 3944. R. Gorr. 1, 60, 3. Kathâs. 40, 90. 65, 207. 75, 51. 55. Râja-Tar. 7, 1247. लम्बित *herabhängend, hängend:* बालशयन Pañkat. 3, 14, 12. लम्बितोष्ठ MBh. 13, 1201. लम्बितास्या R. 5, 25, 34. Verz. d. Oxf. H. 202, b, 8. 12. बडिशो ऽयं त्वया ग्रस्तः कालसूत्रेण लम्बितः *hängend an* MBh. 3, 11495. कण्ठ° (पद्ममूत्र) AK. 2, 7, 49. H. 945. — 2) *herabsinken, sich senken:* तेन लम्बामहे गर्ते MBh. 1, 1038. 1034. 1033. 3, 8553. गर्तमेतमनुप्राप्ता लम्बामः 8555. लम्बमानमिवाम्बुदम् Harîv. 3381. Megh. 42. किंलम्बत (तमः) Çiç. 9, 10. लम्बते च दिवाकरः MBh. 7, 5072. R. Gorr. 1, 67, 27 (65, 34 Schl.). लम्बमाने दिवाकरे 34, 28 (33, 20 Schl.). 2, 54, 8. 3, 15, 5. शिरो मे लम्बते MBh. 6, 3723. शिरसा लम्बता 3722. लम्बित *gesenkt, hinabgeglitten, abgefallen:* स्तदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रिय लोचने Gît. 12, 19. — 3) *sich hängen an* so v. a. *sich klammern —, sich halten an:* पार्श्वतः पृष्ठतश्चापि लम्बमानास्तदुन्मुखाः R. 2, 40, 21. मूरवाङ्कपु लोको ऽयं लम्बते पुत्रवत्सदा MBh. 12, 3680. Kâm. Nîtis. 15, 59. यो रश्मिषु लम्बते so v. a. *der die Zügel schiessen lässt* Spr. 2453. लम्बित *sich klammernd an, sich haltend an, gestützt auf:* करेण वातायनलम्बितेन Megh. 13, 21. यन्योऽन्यलम्बितकरौ ततस्तौ करिरात्तसौ so v. a. *Hand in Hand* R. 7, 34, 43. वलकङ्कणलम्बितचन्दन *hängen geblieben* Verz. d. Oxf. H. 133, a, No. 244. — 4) *zurückbleiben, nachbleiben* (im Raume), *sich langsamer bewegen* Sâmav. 1, 25. — 5) *nachbleiben* (in der Zeit), *zögern, säumen* MBh. 5, 129. लम्बित = विलम्बित *langsam, gemessen* (von einem Tacte) Bâlarâm. beim Schol. zu H. 292.

— caus. 1) *herabhängen lassen, herablassen:* चर्मपेटा गवातेषु दत्त्वा तत्र हि लम्ब्यते Kathâs. 64, 100. *aufhängen:* चित्रपटं तत्र भित्तावलम्बयत् (so ist zu lesen, wie schon das Metrum zeigt) 122, 62. — 2) *sich anklammern lassen:* को लम्बयेदाकृष्णाय कृत्तम् so v. a. *die Hand anlegen* Megh. 6, 75. — 3) wohl *demüthigen* MBh. 1, 1445, wo die ed. Bomb. लम्बयित्वा st. लङ्घयित्वा liest.

— सम् 1) *herabhängen:* य एष स्तन इवावलम्बते Taitt. Up. 1, 6, 1. स्तनवदवलम्बते यः कण्ठे ऽज्ञानां मणिः स विज्ञेयः Vajin. Bhp. S. 65, 3. परागवलम्बमानकुटिलालिकपिशकेशभूरिभार Bulg. P. 5, 5, 31. ग्रवलम्बित *herabhängend, hängend an:* शाखायां मृतकमवलम्बितमास्ते Vet. in LA. (III) 4, 3. 12, 13. Spr. 2774. Çiç. 144. Pañkat. 116, 22. 128, 9. — 2) *herabsinken, sich senken:* के भवतो ऽवलम्बन्ते गर्ते क्वास्मिन्नधोमुखाः MBh. 1, 1035. 1324. मूर्धे ऽवलम्बति 4, 1040. ग्रवलम्बित *der sich herabgelassen —, niedergesetzt hat* Hit. 13, 10. — 3) *sich klammern —, sich halten an, sich stützen auf:* mit acc.: सलोमवलम्ब्य स्थिता Çiç. 78, 8. उर्वशी राजानमवलम्बते Vikr. 10, 8. Çiç. 9, 39. Megh. 3, 25. दण्डकाष्ठमवलम्ब्य स्थितः Çiç. 21, 1. शाखी वटतरोः Kathâs. 26, 17. 32, 327. मम पक्षमवलम्ब्य Spr. 1427. Bulg. P. 5, 14, 40. 23, 3. ग्रवलम्बमान *anhängend* Suçr. 2, 373, 17. ग्रवलम्बित *gestützt auf* AK. 3, 4, 42, 106. चित्रलेखाकृस्तावलम्बिता Vikr. 7, 8. st. des acc. auch loc.: भूतं क्षिप्त्वा च भाव्यर्थे यो ऽवलम्बेत (ऽवलम्बेत्स ed. Bomb.) MBh. 1, 3443. auch instr.: ननु — नात्मना नावलम्बे *ich finde ja meine Stütze in mir selbst* Megh. 108. — 4) *fassen, anfassen, packen:* कृत्ते ऽवलम्ब्य तम् Kathâs. 121, 173. 63, 113. कृत्तेनावलम्ब्योर्वशीम् Vikr. 49, 11. ग्रवलम्ब्यतां पुत्रः Çiç. 108, 19. ग्रवलम्ब्यापराः कण्ठे कृरिम् Harîv. 8326. Mṛicch. 119, 14. Kathâs. 37, 217. ग्रवलम्बित *gefasst* Suçr. 2, 336, 8. — 5) *halten* (damit Jmd oder Etwas nicht falle, sinke) Çiç. 96, 21. कृत्तेन तस्यावावलम्ब्य वासः Raghu. 7, 9. Kumâras. 3, 55. 6, 68. 7, 59. Mâlav. 47, 8. Kathâs. 18, 298. uneig.: यमी गुणाः — हृदयं न ग्रवलम्बितुं तमाः Raghu. 8, 59. Mâlav. 31, 2, v. l. ग्रवलम्बित *daran gehalten, darauf gelegt* Suçr. 1, 60, 11. — 6) zu *Etwas greifen, sich hingeben:* मायाम् Bulg. P. 3, 31, 13. व्यवसाम् Bhatt. 7, 71. ग्राशाम् Kathâs. 81, 57. प्राणांस्तत्प्राप्त्याशावलम्बितान् 106, 144. त्वया राज्यमवलम्ब्यताम् so v. a. *werde König* R. 2, 72, 31. मानुष्यत्वमवलम्ब्य LA. (III) 87, 14. धैर्यम् Spr. 3655. Vikr. 34, 4. Hit. 13, 19. धैर्यमेकं सदायम् Kathâs. 49, 233. धृतिम् 25, 298. स्वातन्त्र्यम् Çiç. 70, 14. दानिष्यम् Mâlav. 23, 22. नैर्घृण्यम् 69, 10. माध्यस्थम् Kumâras. 1, 53. नैराश्यम् Spr. 1057. मार्दवम् Z. d. d. m. G. 14, 571, 17. *theilhaftig werden:* शैक्षत्वम् Vajin. Bhp. S. 4, 3. ग्रवालम्बियत दक्षत्वं कवे नु पुण्यपुण्यताम् (so ist zu lesen) Râja-Tar. 3, 65. *obliegen:* स्वानधिकारान्प्रभावैरवलम्ब्य Kumâras. 2, 18. — 7) nach einer best. Weltgegend *greifen* so v. a. eine best. Richtung *einschlagen:* प्रातिष्ठत ततः प्रातरवलम्ब्योत्तरां दिशम् Kathâs. 37, 33. 52. — 8) *abhän-*

gen —, abhängig sein von, beruhen auf, in nächster Beziehung stehen zu: सर्वो ऽयं ब्रनस्त्वामवलम्बते Bhaṭṭ. 18,41. व्यवरोहो ऽयं चारुदत्तमवलम्बते Mṛcch. 142,17. सो ऽयं क इति बुद्धिस्तु मात्रात्यमवलम्बते Bilsâr. 166. Müller, SL. 197. — 9) *zurückbleiben, nachbleiben:* पृष्ठे ऽवलम्बितः Gorâdâs. Grahaṇav. 27. — 10) *zögern, säumen* R. Gorr. 2, 121,6. अवलम्बित H. 1478 fehlerhaft für अविल°, wie die v. l. hat. — Vgl. अवलम्ब fgg. — caus. 1) *herabhängen lassen, herablassen:* दासीभिः पेटां रज्ज्वावलम्बिताम् Kathâs. 64, 104. *aufhängen:* तं च कलशं नागदत्तो ऽवलम्ब्य Pañcat. 252,10. वृत्तायसङ्किना पाशेनात्मानमवलम्बयम् Kathâs. 96,16. — 2) *ergreifen:* हस्तम् Milav. 42,6. — 3) *stützen, halten, vor einem Fall bewahren:* शक्यमिदानीं जीवितमवलम्बयितुम् (अवलम्बितुम् v. l.) Mâlav. 31,2. — 4) *aufladen, aufbürden:* सचिवावलम्बितधुरं नराधिपम् Ragh. 9,69.

— समव *fassen, anfassen:* बाहुभ्यामूरू समवलम्बत MBh. 3,10988. उत्तस्तनौ समवलम्ब्य या रतिः so v. a. *in seine Arme schliessend* Varâh. Bṛh. S. 74,18. fg.

— आ 1) *herabhängen, hängen:* मुखालम्बितलेमसूत्र Vikr. 140. — 2) *sich klammern —, sich hängen an, sich stützen auf:* अशोकस्य विपुलां शाखामालम्ब्य R. 5,26,10. Kathâs. 65,203. fg. कृत्तभुजंगपुच्छम् Verz. d. Oxf. H. 128,b,12. Kathâs. 65,189. Pañcat. 128,19. यद्यदालम्बसे काम Spr. 3894. auch mit loc.: आलम्बस्व रामसु *halte dich an* R. 5,35,23. — 3) *ergreifen, fassen, packen:* पाणिम् MBh. 9, 3540. अयाणि शैलानां शिखराणि मरुत्स्यपि R. 4,8,5. तं पाणावालम्ब्य Kathâs. 45,412. पाणिनावलम्ब्य भूपालम् Râja-Tar. 4,433. केशान् 5,432. धम्बु Ghaṭ. 22. धनुः Bhaṭṭ. 6,35. मरुत्सुतानि 14, 95. so v. a. *einnehmen, erobern:* रावणपुरीमालम्बिष्यत्ति R. 5,72,19. तस्य कविता मञ्चितमालम्बते so v. a. *gefangen halten* Daçâvat. 67,4. — 4) *halten, stützen:* ता आलम्बमिष्टकामिष्टकामुपदध्यात् Kâṭh. 22, 8. R. 2, 103, 23 (111, 29 Gorr.). अधिकृत्ति यात्तमाधोरणालम्बितम् Ragh. 18,38. पतितां किं नाम नालम्बसे Sîtâ. D. 116,3. — 5) *zu Etwas greifen, sich anlegen, an Etwas gehen, sich hingeben:* काषायमालम्बताम् *zu einem rothen Gewande greifen* so v. a. *ein solches Gewand anlegen* Spr. 3661. भूमिकामाललम्बे (so ist zu lesen) कामु Râja-Tar. 2,112. तनू रोमाञ्चमालम्बते so v. a. *die Haut am Körper fängt an zu rieseln* Spr. 2083. रामस्य सदृशं व्यक्तं स्वरमालम्ब्य *seine Stimme annehmend* R. 3,50,22. 64,5. 9. 66,12. आलम्ब्यनामितिं वेग (d. i. स्वयंवरो) यस्ते रामसु रोचते Mârk. P. 124, 22. कुमुदव्रतम् Kathâs. 72,257. वकोव्रतम् 76,11. अपत्याशी सखीमिव। आलम्ब्य (eig. *sich klammernd an*) 34, 39. ध्यानम् *sich hingeben* MBh. 12, 6810. यथा यथा हि सद्गतमालम्बतीतरे जनाः 10890. धैर्यमालम्ब्य 5,7139. R. Gorr. 2,26,25. Kathâs. 37,42. Pañcat. 21,6. धीरत्वम् Kathâs. 31,85. धृतिम् 22,100. हार्दं सौहृदम् R. 4, 4, 15. शौर्यम् 6, 16, 72. तदलं शोकमालम्ब्य क्रोधमालम्ब 5,71,11. क्रोधं च नालम्बसे Weber, Vaitâs. 235. सत्त्वमालम्ब्य R. 6, 99, 56. Bhâg. P. 8, 11, 13. औदास्यम् Spr. 1337. न कथंचिदहं स्थैर्यमालम्बते Pañcat. 225,23. स्थैर्यं मयालम्बितम् Spr. 1749. तद्धैर्यं सत्यमालम्बितम् Pañcat. ed. orn. 56,16. आलम्बितप्रार्थन Vikr. 38. तूष्णीमालम्बसे चेत् so v. a. *wenn du dich dem Schweigen hingiebst* तूष्णीम् = निवृत्तिम्, निर्व्यापारत्वम् Comm.) Prab. 98,1. — 6) nach einer best. Weltgegend *greifen* so v. a. eine best. Richtung *einschlagen:* दक्षिणां दिशमालम्ब्य स प्रतस्थे Kathâs. 28, 3. 75, 49. — 7) *abhängen von, beruhen auf* (acc.) Sâh. D. 63. — Vgl. आलम्ब u. s. w. — caus. *sich anklammern lassen:* आलम्बितकर *der die Hand angelegt hat* Vikr. 125.

— अव्या *einholen, erreichen:* अथ खलु भगवंस्ते पुरुषाः सर्व एव ब्रवेन प्रधावितास्तं दरिद्रपुरुषमध्यालम्बेयुः (अध्यालभेयुः?) Saddh. P. 4,15,a.

— अपा s. अपालम्ब.

— व्या *säumen, zögern* Mucch. 46.

— समा 1) *sich klammern an:* समाललम्बे घनम् MBh. 6,4187. so v. a. *zu Jmd halten* Râja-Tar. 1, 233. *sich stützen auf, sich verlassen auf:* भवत्तेजः Kathâs. 18, 373. *sich halten an* so v. a. *Rücksicht nehmen auf:* नानाशास्त्रम् Verz. d. Oxf. H. 176,a,34. — 2) *ergreifen, fassen, packen* Kumâras. 5,84. कन्यां कण्ठे Kathâs. 73, 211. — 3) *zu Etwas greifen, sich hingeben:* स्वरम् *eine Stimme annehmen* R. 3, 60, 26. तेजः स्तोत्रम् R. Gorr. 2,20,8. धैर्यम् 5,16,8. 7,23,4,18. विश्वासम् Mṛcch. 55,19. विनयम् Spr. 3168. साहसम् 4445. समाललम्बे (pass.) रिपुमित्रकलत्रैः पदैः प्रकाशः कुनदैर्विषादः Bhaṭṭ. 11,1. — 4) *theilhaftig werden:* ब्रनपदैः लक्ष्मीः समालम्ब्यताम् Spr. 4721. v. l. ब्रनपदे लक्ष्मीः समालम्बताम् *sich niederlassen auf.* — caus. *hängen* (trans.) *an:* तं धनुषि समालम्ब्य Pañcat. 144,23.

— उद् *hängen,* उल्लम्बित *hängend:* पादेनैकेन गगणे द्वितीयेन च भूतले। तिष्ठाम्युल्लम्बितः Mṛcch. 33,20. — caus. *aufhängen, aufknüpfen:* राजद्वारि स चौरिकाम् — उल्लम्बयत् Kathâs. 51,130. 55,37. 42. 71,81. उल्लम्ब्य तौ तिप्रं वधकैरवशो हृतः 64,53. 25,181. 75,48. 77,64.

— समुद् *hängen:* समुल्लम्बित *hängend* Mṛcch. 34,2.

— परि *zurückbleiben, sich langsamer bewegen* Śâṅk. 3,9. *verbleiben an einem Orte:* सकृत्कृतापराधस्य तत्रैव विलम्बतः MBh. 12,5157. *ausbleiben, nicht kommen:* सप्तैते वसवः प्राप्ताः स एक परिलम्बते Harîv. 3008. — परिलम्ब्य Gîr. 11,25 fehlerhaft für परिरभ्य *umarmend,* wie die v. l. hat.

— प्र *herabhängen* Sucr. 1,289,3. प्रलम्बित *herabhängend* Kathâs. 62, 145. — Vgl. प्रलम्ब fgg.

— अभिप्र, partic. °लम्बित *herabhängend* Saddh. P. 4,12,a.

— प्रति caus. *aufhängen, aufknüpfen* Pañcat. 93,4, v. l.

— वि 1) *auf beiden Seiten hängen an* (acc.): वीव वा यत्तरात्मा पत्नी लम्बते Pañcav. Br. 14,9,20. *herabhängen, hängen an* (loc.): धमत्सु पुंधि नागेषु मनुष्या विललम्बिरे MBh. 7, 3204. 4395. R. 5,55,22. 61,2. Pañcar. 3,5,11. विलम्बस्त्यः (लताः) Harîv. 12013. विलम्बित *herabhängend* 4731. स्तनाभार° Ragh. 10,63. — 2) *sich senken, sich neigen:* दिवाकरे विलम्बमाने ऽस्तमुपेत्य पर्वतम् MBh. 7, 1969. — 3) *hängen bleiben* so v. a. *langsam von der Stelle kommen, längere Zeit verweilen bei, säumen, zögern* MBh. 8,4156. fg. एकैकस्मिन्वशौ त्रिंशत्त्रिंशन्मासान्विलम्बमानः Bhâg. P. 5,22,16. एकेन सकलत्रेण तेमं नेतुं विलम्बितुम् R. 3,1,31. 2,19,11. किमर्थं तं विलम्बसे *was zögerst du?* 1,75,16. 4,5,11. R. Schl. 2,77,22. Kâm. Nîtis. 12,20. Kumâras. 7,13. इति यावत्स नृपतिर्विचिकित्सन्विलम्बते Kathâs. 45,103. न विलम्बेत शौचार्थम् Mârk. P. 34, 112. नायं कालो विलम्बितुम् MBh. 3,2823. R. 5,95,6. मा विलम्बस्व 7, 23,4,55. Mârk. P. 15,67. मा विलम्बत Harîv. 15305. Mârk. P. 18, 34. मा विलम्ब Pañcat. 107,25 fehlerhaft für माविलम्बम्. किमर्थं हि वि-

लम्ब्यते R. 1,73,15. पतत्तु ब्रह्मदण्डो ऽसौ किमद्यापि विलम्बते Rāǵa-Tar. 4,681. पथि शिखरिणो मूले मूले विलम्ब्य *verweilend* 2,164. तणं विलम्ब्य Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,19. विलम्ब्य शशको ऽभ्यगात् *säumend, zögernd, langsam* Kathās. 60, 98. Çik. 18, 21. कुतस्त्वं विलम्ब्यागतो ऽसि *so spät* Hit. 68, 4. अविलम्ब्य *ohne Verzug* Kathās. 56, 110 (सा-वि° zu schreiben). 112, 168. चिरं तु भवता कालो व्यतीपेण विलम्बितम् (कालो und विलम्बित: die neuere Ausg.) Harīv. 4455. लज्जया मया विलम्बितम् Pañkat. 84, 10. क्व रामः शयितो रात्रौ क्व स्थितः क्व विलम्बितः *wo hat er verweilt?* R. Gorr. 2, 93, 12. अनुव्रजविलम्बित *aus — säumend, zögernd* Bhāg. P. 4, 20, 20. एवमेवास्मिन्नवसाणेपि ऽविलम्बितेन भवितव्यम् *du darfst nicht säumen* Mālav. 53, 13. विलम्बितफलैः *verzögert* Rāǵat. 1, 22. विलम्बितवतंसेशपाणिग्रहमहोत्सवा Kathās. 33, 2. 68, 9. *langsam, gemessen* (Gegens. द्रुत) AK. 1, 1, 2, 9. H. 292. RV. Prāt. 13, 18. Pat. zu P. 1, 4, 109 (in der ed. Calc.). Daçak. 144, 15. °गति (zugleich mit Anspielung auf das Metrum dieses Namens) Varāh. Bṛh. S. 104, 16. अ° Kir. Ç. 10, 1, 5. 10. विलम्बितम् adv. Varāh. Bṛh. S. 43, 61. Kathās. 40, 2. अविलम्बितम् *ohne Verzug, schnell, rasch* Suçr. 1, 13, 5. Spr. 745. Kām. Nītis. 6, 10. Vikr. 79, 13. Kathās. 26, 46. 46, 226. Bhāg. P. 3, 6, 21. विलम्बित n. *Verzug:* किं विलम्बितेन Pañkat. 208, 9. यत्तं मे चिरं विलम्बितेन Saddh. P. 4, 13, *a*. — 4) विलम्बित *in nächster Beziehung stehend zu:* कर्माणि निर्वाणविलम्बितानि Bhāg. P. 1, 16, 24. — Vgl. विलम्ब u. s. w. und द्रुतविलम्बित. — caus. 1) *hängen auf:* भिक्षापात्रं नगदन्ते विलम्बयित्वा (eine falsche Form) Pañkat. 116, 19. — 2) *Jmd verweilen machen, aufhalten:* तं दास्यस्तावद्यत्नलम्बयन् । यावत्तैर्विविधैर्यावत्ततोपः प्रक्रो ऽत्यगात् ॥ Kathās. 124, 187. — 3) *versäumen, unnütz verstreichen lassen:* चिरं तु भवता कालो व्यतीपेण विलम्बितः Harīv. 4455 nach der Lesart der neueren Ausg. — 4) *säumen, zögern:* शीघ्रकृत्येषु कार्येषु विलम्बयते यो नरः Spr. 2986. अविलम्बयन् Jāān. 1, 89. R. 2, 107, 16.

— प्रवि *vorhängen:* अतिप्रविलम्बितशिरम् *zu sehr vorhängend* Suçr. 2, 239, 5. Vgl. प्रविलम्बिन्. — caus. *aufhängen, aufknüpfen:* तं पापबुद्धिं शमीशाखायां प्रविलम्ब्य (प्रतिलम्ब्य v. l.) Pañkat. 98, 4.

2. लम्ब्, लँम्बते (शब्दे) Dhātup. 10, 18. — Vgl. 2. रम्ब् und लम्ब्.

लम्ब (von 1. लम्ब्) 1) adj. (f. या) *herabhängend, hängend an, herabhängend bis, lang herabhängend:* इक्षु° Kathās. 75, 156. °मेखला MBh. 9, 2652. स्रग्दामलम्बाभरणा Harīv. 3755. तोयलम्ब इवाम्बुदः ebend. 2440. पक्षस्तबकलम्बेन क्रोरेण 3970. लम्बाभरण R. 7, 7, 28. Kathās. 29, 52. Rāǵa-Tar. 5, 242. Raçn. 6, 60. सत्रा विशालवतःस्थललम्बया 84. °शाटपट्टावृत Spr. 1210. °शीर्ष Suçr. 2, 53, 19. °चूडक Nir. 1, 11. °केश Ganḍa-sāhas. 1, 89. °केसर Harīv. 2425. 12975. °सट (so die neuere Ausg.) 4298. °शिख 2298. 14305. लम्बालक Daçak. 4, 59. Mṛkh. 82. धवलकमागण्डलम्बम् 88. Raçn. 6, 23. °स्थिच्, °उठर MBh. 1, 5929. चललम्बास्तनोदर R. 5, 10, 18. Harīv. 3563. °स्तनी Suçr. 1, 371, 18. Kathās. 20, 109. लम्बोदरपयोधरा R. 5, 17, 26. Kathās. 116, 29. लम्बैर्वृषणैः Varāh. Bṛh. S. 61, 16. °बाहु MBh. 6, 2610. Harīv. 15836. Varāh. Bṛh. S. 69, 13. यात्रानुलम्बबाहु 58, 15. °कस्त R. 7, 23, 8, 9. कर्णौ Varāh. Bṛh. S. 62, 1. नातिपृथू न लम्बे भ्रुवौ 70, 8. लम्बमालो Harīv. 3653 fehlerhaft für लम्बमानो, wie die neuere Ausg. liest. — 2) m. *a) eine Senkrechte* Colebr. Alg. 58. यष्टिलम्ब, रज्जुलम्ब, सम°, द्यायतसम° ebend. — *b) Complement der Breite* Sūrjas. 3, 14. Golādhj. Tripraçnādh. 7. 34. Gaṇitādhj. Tripraçnādh. 12. °रेखा dass. Golādhj. Jantrādhj. 27. लम्बज्या oder लम्बकज्या *der Sinus desselben* Sūrjas. 1, 60. 3, 14. Gaṇitādhj. Tripraçnādh. 14. °गुण dass. Golādhj. Madhjamādhj. 25. — *c) Bez. eines best. Wurfes oder Zuges in einem best. Spiele* Çārdān. im ÇKDr. — *d)* N. pr. *a)* eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52, *b*, 19. — *β)* eines Daitja Harīv. 2440. 2651. = प्रलम्ब 3113. fg. — *c)* = नर्तक, धङ्क und कास Uṇādiv. im Saṃkshiptas. ÇKDr. — *f) Geschenk* ÇKDr. und Wilson nach H. 737, wo aber die richtige Lesart लम्बा, die schlechtere लम्बा ist. — 3) f. या *a) eine Art Gurke* Med. h. 6. Suçr. 2, 116, 19. 391, 13. — *b)* N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2636. eine Form der Durgā Harīv. 10722. 10806. fgg. = दुर्गा, गौरी Trik. 1, 1, 52. Med. ein Name der Lakshmī Med. N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's (Manu's) Harīv. 145. 148. 12449. 12480. VP. 119. Bhāg. P. 5, 6, 4. 8. N. pr. einer Rākshasī Lot. de la b. l. 240. — लम्बाविग्रवपसो mit doppelter Betonung gaṇa वनस्पत्यादि zu P. 6, 2, 140.

लम्बक (wie oben) 1) m. *a) eine Senkrechte* Wilson. — *b) Complement der Breite* Golādhj. Tripraçnādh. 33. — *c) ein best. Geräthe* Vjutp. 209. — *d)* N. des 13ten astr. Joga Journ. of the Am. Or. S. 1, 432. लम्बुक As. Res. 9, 366. — *e)* Bez. der grösseren Abschnitte (achtzehn an der Zahl) im Kathāsaritsāgara Kathās. 1, 4. fgg. — यत्नंकार° 61, 24 fehlerhaft für °लम्भक. — 2) f. लम्बिका *das Zäpfchen im Halse* H. 585.

लम्बकर्ण 1) adj. (f. या und ई) *lang herabhängende Ohren habend* MBh. 9, 2653. R. 5, 17, 24. — 2) m. *a) Ziegenbock, Ziege* Trik. 2, 9, 24. 3, 3, 138. H. an. 4, 87. Med. n. 107. — *b) Elephant* Çārdān. im ÇKDr. — *c) Falke* Rāǵān. im ÇKDr. — *d) ein Rākshasa* Çārdān. im ÇKDr. — *e) Alangium hexapetalum* H. an. Med. — *f)* N. pr. *α)* eines Wesens im Gefolge Çiva's Vāyu bei Schol. zu H. 210. — *β)* eines Esels Pañkat. 214, 21. — *γ)* eines Hasen Pañkat. 161, 2.

लम्बकेशक m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52, *b*, 19.

लम्बजिह्व adj. *die Zunge hängen lassend;* m. N. pr. eines Rākshasa Kathās. 25, 196.

लम्बदत्ता f. *eine best. Pflanze,* = सेंदली Rāǵān. im ÇKDr.

लम्बन (von 1. लम्ब्) 1) nom. ag. *herabhängend,* unter den Beiww. Çiva's (neben लम्बितोष्ठ) MBh. 13, 1201. लम्बन्ते ऽस्मिन्नेकानि तरोः फलानीव ब्रह्माण्डानि Nīlak., also *herabhängen lassend.* — 2) m. *Phlegma, Schleim* (कफ) Çārdān. im ÇKDr. — 3) n. *a) Franse* Vjutp. 136. — *b) ein lang herabhängender Halsschmuck* AK. 2, 6, 2, 5. — *c) Parallaxe in Länge* Comm. zu Sūrjas. 3, 1. Golādhj. Grahaṇav. 17. 19. 23. स्फुटलम्बनलिप्तिका: *die Minuten, welche sie beträgt,* 21. °कला: dass. 27. °विधि *die Regel für die Berechnung derselben* Spashṭādhjāja. 38. — *d)* Bez. *einer best. Kampfart* Harīv. 15979 nach der Lesart der neueren Ausg. (लवण ed. Calc.). — *e)* N. pr. eines Varsha in Kuçadvīpa Mārk. P. 53, 25. — Vgl. यत्न°, दृग्लम्बन.

लम्बपयोधरा adj. f. *hängende Brüste habend* MBh. 9, 2653. N. einer der Mütter im Gefolge Skanda's 2639.

लम्बवीत्रा f. = लम्बदत्ता Rāǵān. im ÇKDr.

लम्बर s. u. घाडम्बर 1) in den Nachträgen.

लम्बात m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 32,b,19.

लम्बिकाकोकिला f. N. pr. einer Gottheit Verz. d. Oxf. H. 149,a,4.

लम्बिन् (von 1. लम्ब्) 1) adj. *herabhängend, hängend an, herabhängend bis zu* AK. 2,6,2,37. H. 652. अवलम्बिनीर्डाः कपोलदेशे Kumâras. 5,47. तरुशाखाय° Kathâs. 65,203. 207. Bâgh. 5,67. श्रोणिलम्बियुगुप्तासमेखला 11,17. 13,33. 16,43. घायार्ति° Mâlav. 85. घनतिलम्बिडकुल 82. पूर्वार्ध° *geneigt, gesenkt mit* Megh. 52. घलम्बि LA. 20,20 ist nicht, wie Lassen und nach ihm Benfey annehmen, घ-+-लम्बिन्, sondern 3.sg. aor. impers.: *wenn Schweisstropfen sich anhängen.* Vgl. 1. घालम्बिन्. — 2) f. लम्बिनी N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2636.

लम्बुक m. 1) N. pr. eines Schlangendämons Vâitp. 85. — 2) s. u. लम्बक 1) *d*).

लम्बुषा f. *ein Perlenschmuck aus sieben Schnüren* Çârdûlavikr. bei Wilson.

लम्बोदर 1) adj. (f. ई) *einen Hängebauch habend* MBh. 9,2653. Kathâs. 70,102. 125. Vâitp. 206. = घाघून H. an. 4,277. = उदान Trik. 3,3,268. Med. r. 294. — 2) m. *a*) Beiw. Ganeça's AK. 1,1,2,34. Trik. H. 207. H. an. Med. Hall. 1,16. Kathâs. 50,178. 55,162. Verz. d. B. H. 117,6. Verz. d. Oxf. H. 27,*a*,37. 40. 148,*a*, No. 318, Z. 3. Paṇḍar. 1,7,86. 93. — *b*) N. pr. eines Fürsten VP. 472. Bâlar. P. 12,1,23. — *c*) N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 32,*b*,18. — 3) f. ई N. einer Unholdin Sûrya. 2,398,6.

लम्बोष्ठ 1) adj. *der die Unterlippe hängen lässt* Çikshâ 19 in Ind. St. 4,268. — 2) m. *Kameel* Râgân. im ÇKDa. लम्बोष्ठ Trik. 2,9,23.

लम्भ्, लँम्भते (शब्दे) Vop. in Dhâtup. 10,24. — Vgl. 2. रम्भ्.

लम्भ (von 1. लभ्) 1) m. *a*) *das Finden, Wiederfinden:* वेदेक्षो° R. 5, 3,39. — *b*) *Erlangung, Wiedererlangung:* पत्त° R. 4, 63, 15. उत्तरोत्तरदेह Gaupar. zu Siddhânt. 52. स्मृति° Kâlnd. Up. 7,26,2. राज्य° MBh. 1,362. 5714. 5,4814. ईप्सितलम्भानाम् Vikr. 40,11. पादुर्ग° *Einnahme einer feindlichen Festung* Varâh. Bṛh. S. S. 6, Z. 8. — 2) f. आ *Hacke, Einfriedigung* Hit. 174. — Vgl. लाभ.

लम्भक (wie oben) nom. ag. P. 7,1,64, Sch. 1) *Finder:* घलंकार° (°लम्बक gedr.) Kathâs. 61,24. — 2) वर्ष° vielleicht *ein Varsha abgrenzend* (vgl. वर्षपर्वत und लम्भा unter लम्भ्) MBh. 6,455.

लम्भन (wie oben) n. 1) *das Erlangen, Bekommen, Wiedererlangen* H. 1520. घगस्त्याद्यलम्भनम् R. Gorr. 1,3,12. राज्य° MBh. 9,3262. Vgl. गर्भ°. — 2) (vom caus.) *das Verschaffen:* सिद्धि° Daçak. 61,4.

लम्भनीय (wie oben) adj. *zu erlangen* Kâtyân. 1,25.

लम्भम् (wie oben) absol., = लाभम् P. 7,1,63. Vop. 24,7.

लम्भुक (wie oben) adj. *der Etwas zu erhalten —, zu bekommen pflegt,* mit acc. Kâlnd. Up. 5,2,2.

लय्, लँयते (गतौ) = रय् Vop. in Dhâtup. 14,10.

लँय (von ली) 1) m. Vop. 26,171. *a*) *das Sichanheften, Anlieben;* = श्लेष Trik. 3,3,319. *fg.* = संश्लेषण H. an. 2,381. = संश्लेष Med. j. 51. संप्रति प्रेषिता दूती तस्मिन्नेव लयं गता so v. a. *ist bei ihm hängen geblieben* Spr. 2407. — *b*) *das Sichducken, Niederkocken:* लयमास्थाय (लयम् = घङ्गसंकोचम् Nîlak.) MBh. 7,5767 nach der Lesart der ed. Bomb. — *c*) *das Verschwinden —, Eingehen in; Untergang;* = प्रलय Çârdar. im ÇKDa. = विनाश Med. st. dessen fälschlich विलास (daher die Bed. *sport, pastime* bei Wilson) H. an. प्रधाने लयः Sarvadarçanas. 179,22. Vedântas. (Allah.) No. 87. प्रकृति° Siddhânt. 45. नाशः कारणलयः Kap. 1, 121. लयं या, गम् u. s. w. *verschwinden —, eingehen —, aufgehen in:* प्रेतासे दृष्टमस्माभिस्तत्राचार्यं प्रविश्य पत् । स्तम्भस्थपुत्रिकास्वसर्नर्तको लयमागताः ॥ Kathâs. 123, 133. तस्मिन्नेव (sc. ब्रह्मणि) लयं याति बुद्बुदः सागरे यथा Kâlikop. in Ind. St. 9,20. Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,40. Mṛkkh. 1,4. Bâlar. P. 7,1,19. Mârk. P. 40,27. *fg.* ततः समस्ता देव्यः — लयम् । तस्या देव्यास्तनौ (so zu lesen mit Dhrtn. 10,4) जग्मुः 90,4. शास्त्रिकं पौष्टिकं चैव तथा चैवाभिचारिकम् । सर्गादिषु लयं ब्रह्मन् त्रितयं त्रिविधागमत् ॥ 102,11. ध्यान° Gîr. 4,8. Kâraṇḍ. 118. योगीनो पुञ्जतो चेतसो लयम् Mârk. P. 111,2. लयं संगताः so v. a. *verstecken sich* R. 7,23,8, 34. शक्रादिषपि लोकेषु वर्तमानो लयाल्लयो । मूयते *Untergang, Tod* R. 3,71,10. प्रभवलयहेतोरप्युत Prab. 97,18. रुद्रो°, तमो° adj. Bâlar. P. 11,23,22. प्रकृतीनां लयानां च सा गतिस्तस्य MBh. 13,1100. सर्वः प्रभवो लयः Vop. 5,1. विद्योद्भवस्थितिलयेषु Bâlar. P. 3,9,14. 4,7,39. त्रिजगत्स्थानलयेष्वेषु 30,33. त्रिजगदुत्पत्तिस्थितिलयनिमित्त 6,9,41. त्रिजगदुदयविभवलय° Sarvadarçanas. 49,20. कल्पलयो Bâlar. P. 12,4,1. नैमित्तिक (vgl. प्रलय) 8,24,7. प्राकृतिक 12,4,21. Paṇḍar. 1,14,17. लयार्क *die Sonne beim Untergang der Welt* Bâlar. P. 10,77,38. घहंकार° Bilar. 10. बुद्धि° Çiva. 96. स्थूलसूक्ष्मप्रपञ्च° Vedântas. (Allah.) No. 27. लयं या *untergehen, zu Grunde gehen, zu Nichte werden* Spr. 1843. Kathâs. 22,28. Bâlar. P. 3,32,4. Mârk. P. 90,35. Vṛddha-Kâç. 11,2. — *d*) *Rast, Ruhe:* घलय *restless* Çic. 4,87 (u. 2. घलय nicht genau wiedergegeben). Bâlar. P. 3,3,17. — *e*) *geistige Trägheit:* लयविक्षेपरक्तिं मनः कृत्वा Maitrâjan. 6,34. Vedântas. (Allah.) No. 135. लयस्तावद्घण्टावस्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा 136. — *f*) *Tempo* (deren drei angenommen werden: द्रुत, मध्य und विलम्बित) AK. 1,1,8,3. 9. Trik. H. 292. 1410. H. an. Med. Hall. 1,94. Paṇḍar. V,43. Nâgân. 8,7. Daçar. 1,9. Pratâpar. 19,*b*,8. Çikshâ 32 in Ind. St. 4,270. MBh. 2,132 (लये स्थाने ed. Bomb.). Hariv. 8691. R. 1,2,21. 4,6. 29. 2,91,27. 7,71,15. Mâlav. 19,11. 29. Mârk. P. 23,52. 59. Çiç. D. 543. तलयैरिव पाणिभिः Ragh. 9,45. — *g*) *ein best. Ackergerkzeug,* etwa *Egge* oder *Hacke* VS. 16,7. — 2) n. = लघुलय *die Wurzel von Andropogon muricatus* Comm. zu AK. 2,4,8,30. — 3) adj. *den Geist träge machend* Bâlar. P. 11,25,18. = घावरणात्मक Comm. — Vgl. द्वि°, नभो°, भूति°, मनो°.

लयन (wie oben) n. 1) *Rast, Ruhe* Mallin. zu Çic. 4,87. — 2) *Ruhestätte* Prab. 48,16. = गृह nach dem einen, = घासन nach dem andern Comm. *Stätte* Vâitp. 35. *Haus* 130. — Vgl. गुणालयनी.

लयपुत्री f. *Tänzerin, Schauspielerin* Trik. 1,1,125.

लयपेग m. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,18 neben मत्तपेग und राजपेग.

लयाराम्भ m. *Tänzer, Schauspieler* Trik. 1,1,124.

लयालम्ब m. dass. Çârdar. im ÇKDa.

लरमानाथ m. N. pr. eines Autors, = रलमानाथ, रमानाथ Verz. d. B. H. No. 336.

लर्ब्, लँर्बति (गतौ) Dhâtup. 14,37.

ललू, लँलति (ईप्सायाम्) Dhâtup. 9,77 (vgl. लड् विलासे 76) und ललते: *tändeln, scherzen, spielen, sich frei gehen lassen:* गापत्ती च ललत्ती च MBh. 1,3208. यथामुखं यथोत्साहं ललतु त्वयि पुत्रवत् 13,3029. (कदा)

कथयेत्यति धर्मज्ञः स वत्स इव मां ललन् R. Gorr. 2,42,15. गजकलभा इव ललामः Mṛicch. 70,20. ललदुत्तारकरुतरंग (लोलदु° Çic. 3,72) Sis. D. 68,4. ललस्व पपि विश्रब्धा कृष्टमाज्ञापयस्व च । मत्प्रसादाल्लभस्यार्य ललन्तु तव बान्धवाः ॥ R. 5,22,34. ललमाना वराङ्गनाः 1,9,18 (19 Sch.). MBh. 1,3364. शिम्पुर्यद्वा पितुरङ्के सुसुखं वर्तते नग । तथा तवाङ्के ललितं शैलराज मया प्रभो ॥ 3,1741. — ललित adj. und subst. s. besonders.

— caus. लालयति (*tändeln lassen*) *liebkosen, zärtlich sein gegen Jmd, schmeicheln, hätscheln, verwöhnen, hegen und pflegen, besorgen* लड्, लाय्यति उपसेवायाम् Dhâtup. 32,7. लल्, ललयति, लालयते ईप्सायाम् 33, 14); mit acc. MBh. 7,525. 1261. R. 2,43,15. यो नः सदा लालयति पिता पुत्रानिवौरसान् 47,6. Spr. 2003. तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत् 2664. fg. Vaṛâh. Bṛ. 17,10. Kâraṇḍ. 39. Bhâg. P. 4,8,9. 28,9. 6,1,28 (लालयान). 14,38. 10,7,14. लालयेः स्वबलान्भोगै रत्नैश्च स्वयमर्जितैः Harîv. 9063. लाल्यमानं ज्ञनैरेवम् Bhâg. P. 4,9,33. Çâṇ. 14,122. ललयित्वा wohl fehlerhaft für लाल° Paṇḍâr. 229,22. लालितः सततं गृहे MBh. 2,1797. 2409. 5,3136. 7,2503. 4540. 12,337. 5563. 14,1849. Harîv. 4797. R. 2,77,14 (84,12 Gorr.). R. Gorr. 1,17,6. 2,62,8. 14. 80,8. 107,12. 4,15,22. 21,24. 5,1,61. Kâm. Nîtis. 3,39. Spr. 150. 1098. 1330. 2660. 4030. 5123. Râǵa-Tar. 2,8. 5,341. 6,77. Bhâg. P. 4,9,60. 26,20. 10,45,4. Mâlav. P. 109,29. Verz. d. Oxf. H. 198,a,5. Paṇḍâr. 87, 11. 109,19. वरण्यवीवाञ्जलिदानलालिता रुरिणाः Kumâras. 5,15. इदं शरीरं पितृभ्यां लालितं बाल्ये Kathâs. 97,46. केशसंभोगलालिताः पारिव्राजस्य मञ्जर्यः Śiç. D. 315,16. पुत्रस्य मुखं लालयन्ती so v. a. *streichelnd* Bhâg. P. 10,7,36. स्रमालालितपादपल्लव 13,19. कौमोदकीं लालयन् (*vielleicht spielen lassend* so v. a. *schwingend*) Harîv. 8511. रोलम्बलालितमुरुद्रुम *geliebkost d. i. zärtlich umschwärmt* Paṇḍâr. 3,5,3. कपर्दिकां नदीं दिव्यजलकल्लोललालिताम् von *den Wellen geliebkost* Çâṇ. 1,52. धनुकूलदेवलालितो वत्सराजमृगप्रवेशः so v. a. *begünstigt* Śiç. D. 130, 7. 140,7.

— उपा caus. *hätscheln;* s. उपालाल्य.

— उद् s. उल्लाल. — caus. *liebkosen:* उल्लालयित्वा (!) Paṇḍâr. ed. Bomb. II, 46,11. *jumping up* Bumlkr.

— उप caus. °लालपति *liebkosen, zärtlich sein gegen Jmd* (acc.) Çiç. 104,5. Mâlav. 29,1. Bhâg. P. 5,4,4. 8,10. उपलालित 3,33,19. 10,5,27. 15,46. पेर्वस्रमाल्याभरणानुलेपनैः शरीरं (= शरीरे) स्वाभ्यस्तयोपलालितम् 3,14,27. °करकमलकुड्मलोपलालितचरणारविन्दयुगल 6,16,28. — Vgl. उपलालन.

— सम् caus. °लालपति dass. Bhâg. P. 3,24,34. 28,22. 12,13,23.

ललज्जिह्व (ललत्, partic. praes. von लल्, + जिह्वा) 1) adj. (f. या) *dessen Zunge spielt* d. i. *hinundhergeht, züngelnd* Kathâs. 106,127. Prab. 65,12. Verz. d. Oxf. H. 98,a,21 (fälschlich ललज्जि°). = दिग्ध Mss. b. 16. Vgl. ललन 3) *b*) und 4). — 2) m. *a*) *Hund.* — *b*) *Kamel* Med.

ललद्भु (ललत् + भ्रू) m. *eine best. Pflanze,* = लिम्पाक Gaṇḍîn. im ÇKDa.

ललन (von लल्) 1) adj. *spielend, schillernd,* von Licht und Farben: रत्नप्रदीपा भाभाति ललना रत्नसंयुताः Bhâg. P. 3,33,17. 4,9,62. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: = बाल, साल und प्रियाल Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. या *a*) *ein tändelndes Weib, Weib* überh., *Gattin* AK. 2,6,4,3. Taik. 3,3,238. H. 505. an. 3,407. Med. n. 119. Hall. 2,327. MBh. 1,5947. 3, 1632. R. 3,15,15. Spr. 1389. 2087, v. l. 3401. 3842. Praçnottaram. 7 und 12 in Monatsb. d. Berl. Ak. 1868, S. 99. 109. Kathâs. 37,243. 80, 88. Gît. 3,16. Râǵa-Tar. 1,270. 2,1. 4,266. 6,148. Bhâg. P. 3,14,49. 15,17. 22,18. 23,39. 4,25,27. 26,16. 5,2,17. 16,16. 9,14,17. 18,16,35. 55,26. Mârk. P. 123,23. Paṇḍâr. 4,8,114. Prab. 19,12. Verz. d. Oxf. H. 187,b, No. 428, Z. 18. — *b*) *Zunge* Taik. H. an. Med.; vgl. ललज्जिह्व und जिह्वाललन u. 4). — *c*) N. verschiedener Metra: α) *4 Mal* —◡◡◡—, —◡◡◡◡◡— Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,24). Ind. St. 8,283. — β) *4 Mal* —◡◡◡—, ◡◡◡◡◡— Ind. St. 8,419. — γ) *eine best. Art von* Gâthâ Ind. St. 8,417. — *d*) N. eines best. mythischen Wesens R. 2, 20,32. धनला ed. Bomb. und MBh. — 4) n. *Spiel, Tändelei* H. 556. *das Spielen* der Zunge so v. a. *das Hindurchhergehen* derselben: जिह्वाललनभीषणा Mârk. P. 87,7; vgl. ललज्जिह्व und ललना *Zunge.*

ललनाप्रिय 1) adj. *Weibern lieb.* — 2) m. *Nauclea Cadamba* (कदम्ब) Bomb. — 3) n. = क्रौवेर Râǵân. im ÇKDa.

ललनिका (domin. von ललना) f. *Weibchen, ein armes Weibchen* Kirâṇ. 3,50.

ललन्तिका (von ललन्ती, partic. praes. f. von लल्) f. *ein lang herabhängender (spielender, summender) Halsschmuck* AK. 2,6,3,5. H. 657.

ललल्ल onomatop. vom Laute eines *Lallenden:* ललल्लेति विस्पष्टप्रस्फुटं ब्रुवन् Kathâs. 13,109.

ललाट (= älterem ललाट) n. *Stirn* Çiky. 3,3. Sinon. K. 249,*a*,2. AK. 2,6,2,43. H. 573. Hall. 2,370. 376. AV. 5,7,1. 10,2,3. Çat. Br. 3,7, 4,3. Kâṭy. Çr. 6,4,2. Liṭ. 3,8,20. Çiraṇ. Çr. 2,12,2. Gaṇ. 2,1,19. Gobh. 2,6,2. Kauç. 26.38. 45.76.81.90. M. 2,46. 9,240. Jâǵ. 2,13. MBh. 3,2787. Harîv. 12718. 12782. 14277. R. 2,96,18. Sûrya. 1,116,20. 118,3. 237,6. Vikr. 73,6. Vaṛâh. Bṛ. S. 50,11. 51,10. 58,3. 6. Çiç. 4,26. Râǵa-Tar. 3,365. Bhâg. P. 4,10,3. Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,28. Vet. in LA. (III) 13,14. °देश Spr. 4954. °तट Râǵa-Tar. 6,109. °पट्ट Hall. 2,386. Spr. 2662. Pâṇḍavâyaṇa. 4,50. °पट्टिका 5,32 (nach Aufrecht). स्वयं दरिद्रो भवितेति वेधसा लिपिं ललाटे धनिकस्य ग्राहयतीम् Naish. 1,15. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्ष्टुं कः क्षमः Spr. 1698. 2910. 3227. 5392. °लेखा न पुनः प्रयाति 4948. am Ende eines adj. comp. (f. या): सु° R. 1,1,12. मरु° 3,55,4. पृथुकर्ण° 5,17,26. विषम° Vaṛâh. Bṛ. S. 68,70. निम्न° 72. उच्च° Taik. 2,6,2. eines Elephanten AK. 2,8,2,6. Hall. 2, 83. Vaṛâh. Bṛ. S. 67,7. eines Pferdes 66,3. 4. 93,3. einer Kuh Rasn. 1,23. °पट्ट beim Bock Paṇḍâr. 35,2. ललाटे *a fronte, vorn* TBr. 3,6,23, 1. Çiraṇ. Çr. 15,3,29. — Vgl. प्र°.

ललाटक 1) n. *eine schöne Stirn* Çaṇḍân. im ÇKDa. *Stirn* überh. Durgâsiṃha ebend. — 2) f. लालाटिका *Stirnschmuck* P. 4,3,83. AK. 2,6,3, 4. H. 655. *ein mit Sandel auf die Stirn aufgetragenes Mal* Taik. 2,6,40. Hall. 2,386. °पट्ट Kumâras. 5,55.

ललाटंतप adj. *die Stirn brennend,* Beiw. einer glühenden Sonne P. 3,2,36. Vop. 26,55. Rasn. 13,41. Uttarar. 113,10 (153,6). Milarin. 12,4.

ललाटपुर n. N. pr. einer *Stadt* P. 5,4,74, Sch.

ललाटाल adj. (f. ई) *auf der Stirn ein Auge habend* MBh. 2,1837. 3,

16187. Çiva 1628. Hariv. 14872.

ललाटिका s. u. ललाटक.

ललाटिकाय्, °यते *ein Stirnzeichen darstellen*: ललाटिकायमान Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, No. 289, Z. 15. fg.

ललाटूर्ण adj. *eine hohe* oder *schöne Stirn habend* gaṇa सिध्मादि zu P. 5, 2, 97.

ललार्त्त adj. = ललाट Schol. zu P. 4, 3, 65. 5, 1, 6.

ललाम 1) adj. (f. ललामी) *mit einer Blässe (Stirnfleck) versehen*, vom Vieh AV. 15, 1, 1. TS. 2, 1, 3, 4. 4, 1. 7, 3, 4. 1. Kâṭh. Ça. 20, 1, 33. ललामीकरिणि: MBn. 7, 962. धूम° TS. 2, 1, 10, 1. कृष्ण° Kâṭh. 13, 5. Ueberh. *mit einem (heilen) Fleck versehen*: कृष्णोच्छलामाश्यामरान् प्रुक्काश्यान्याठकृशिप्रभान् (es ist der *Schweif*, nicht das *Thier* selbst gemeint) MBn. 2, 1861. तमस् 12, 13193 (= चिन्तामणिरत्नवद्भावरूप Nîlak.). — 2) m. n. *Schmuck (Stirnschmuck), Zierde*: सुदर्शनं वै देवतानां ललामम् MBn. 5, 1882. Hariv. 16065. Bhâg. P. 3, 14, 49. 22, 18. 5, 3, 3. 6, 6. unbestimmt ob ललाम oder ललामन्: ज्रयाक् प्रथमं रामो ललामप्रतिमं ल° = धन्न Nîlak.) कुलम् Hariv. 5037. ग्राम्यमललामभूता Çiç. 25, 4. Kathâs. 101, 81. Daçar. 68, 2. Bhâg. P. 3, 16, 9. 5, 16, 16. Çiç. 4, 28. Vgl. u. 4). — 3) f. ई *a*) Bez. einer Unholdin AV. 1, 18, 1. — *b*) *ein best. Ohrenschmuck* Çârdam. im ÇKDn. — 4) n. *Blässe, Stirnfleck* AK. 3, 4, 22, 145 (ग्रस्यभूषा; ग्रस्यललाटे ऽन्यवर्णचिह्नम्, गवादीनां ललाटचित्रम् d. i. °चिह्नम् Bhar. nach ÇKDn.). *Mal, Sectenzeichen* (पुण्ड्र) AK. H. an. 3, 406. Med. m. 31. Hâlâs. 5, 69. *Zeichen* (चिह्न, लक्ष्मन्, लाञ्छन) H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 184, *b*, 7. *Banner, Flagge* (धन्न, केतु, पताका) AK. H. an. Med. Vjutp. 139. *Schmuck* (भूषा) H. an. Med. Hallâs. Vjutp. *eine Zierde unter seines Gleichen, der Beste in seiner Art* (प्रधान, प्राधान्य) AK. H. an. Med. = प्रभाव H. an. Med. Hallâs. = रम्य H. an. Med. *Schweif* AK. H. an. Med. Hallâs. *Horn; Pferd* H. an. Med. Hallâs. — Vgl. लालामिक.

ललामक n. *ein auf der Stirn liegender Blumenkranz* AK. 2, 6, 2, 37. H. 652. Hallâs. 2, 398.

ललामगु m. scherzhafte Bez. des *penis* VS. 23, 29.

ललामन् n. = ललाम *Schmuck, Zierde*: कन्या° Ragh. 3, 64. nach H. an. 3, 406 (wo ललामवच्छलामासे zu lesen ist) und Med. n. 203 *Mal, Sectenzeichen; Zeichen* (vgl. Verz. d. Oxf. H. 184, *b*, 7); *Banner, Flagge; Schmuck; eine Zierde unter seines Gleichen*; = प्रभाव; *Schweif; Horn; Pferd*; nach H. an. auch = रम्य; = मुख Mahîdh. zu VS. 23, 29.

ललामवत् adj. *mit einer Blässe versehen*: चतुर्कोत् °(सपा) Ind. St. 4, 397.

ललित (von लल्) 1) adj. *a*) *naiv, arglos, einfältig*: धीरादीन्य R. 4, 33, 39. धीरललित (u. d. W. ungenau wiedergegeben) *klug, aber dabei von einer liebenswürdigen Einfalt* Bhar. Nîtiç. 34, 1. 3. Daçar. 2, 2. 3. Sin. 65. 68. 539. ललित 36, 2. Daçar. 2, 40. — *b*) *anmuthig, lieblich, schön, hübsch*; = ललित (sic) H. an. 3, 290. Med. l. 147. von Frauen und Männern R. 1, 64, 8. 7, 37, 8, 37. Ragh. 6, 37. 8, 66. 19, 39. Megh. 33. 65. Spr. 3401. Râga-Tar. 5, 449. घर्म्मरस् Çiç. 41, v. l. मातर्ललिते wird die Sarasvatî angeredet Verz. d. Oxf. H. 110, *a*, No. 173, Cl. 3. कामिन् Milav. 52. वपुस् Kumâras. 3, 75. ललिताङ्गुलिनर्त्तनै: 6, 45. मृणालनाल-ललितभुजा Kathâs. 4, 6. ललिताकृति Râga-Tar. 4, 17. 266. कुण्डल R. 5, 13, 66. विवाहकौतुक Ragh. 8, 1. कुसुम 9, 70. Sin. D. 66, 14. Gît. 1, 27. धामन् 8, 5. Pañkar. 1, 10, 30. 7, 35. प्रकरणमनङ्गस्य Mṛicch. 82, 20. °ह-ञ्जन Dhûrtas. 91, 14. ललिताङ्गहार Kumâras. 7, 91. गति Bhâg. P. 1, 9, 40. 10, 47, 52. Mâlat. P. 61, 35. ग्रलिकुलकोकिललालिते मुरभिसमये Sin. D. 21, 1. Gesang Mṛicch. 44, 12. °रसकथा Spr. 4897. ललितार्घवन्ध Vikr. 32. ललितालापा Çrut. 39. Kathâs. 23, 94. Mâlat. P. 65, 7. स्मित Bhâg. P. 5, 25, 5. वाच् 3, 23, 30. Mâlat. P. 87, 24. Vet. in LA. (III) 30, 5. Verz. d. Oxf. H. 38, *b*, No. 95, Z. 13. 193, *a*, 14. 213, *a*, No. 305. विज्ञान Milav. 34. ललिताभिनय Bhar. Nâtjaç. 18, 55. Vikr. 36. Milav. 67. ललितल-लित *überaus lieblich* Uttarar. 10, 8 (14, 6). Pañkar. 3, 13, 18. ललितम् adv. Hariv. 8389. Mṛicch. 44, 9. Ṛt. 3, 1. Bhâg. P. 4, 25, 25. 44. 6, 7, 5. 10, 34, 21. Mâlat. P. 90, 26. Kâvjâd. 3, 150. कविता नातिललिता Verz. d. Oxf. H. 143, *a*, 33. — *c*) *erwünscht, beliebt, genehm*; = ईप्सित H. an. Med. मृत्योराघातललितमायोधनं मरुत् MBn. 7, 6179. परागृक् ° Mṛicch. 70, 17. गाथा घात्मनो ललिता: Bhâg. P. 10, 80, 27. — *d*) = चलित Vîçva und Çabdar. im ÇKDn. — 2) m. *a*) Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanze* Verz. d. Oxf. H. 202, *a*, 32. — *b*) N. *eines best. musik. Râga* Saṅgîtadâm. im ÇKDn. — 3) f. घा *a*) *Moschus* Râgân. im ÇKDn. — *b*) Bez. einer best. Göttin Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 11. einer Form der Durgâ 39, *a*, 32. *b*, 7. ललितोपाख्यान 30, *a*, 12. कुमारीललितामाधन 88, *a*, 16. N. pr. einer Hirtin, die mit der Durgâ und mit der Râdhikâ identificirt wird, ÇKDn. nach Brahmavaivartapurâṇa und Padma-P., Pâtâlkh., Râsalîlâ. — *c*) N. pr. eines Flusses Kâlikâ-P. 81 im ÇKDn. — *d*) Bez. verschiedener Metra: *α*) *30 + 32 Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 154, *b*, 14. — *β*) *4 Mal* ⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑–⏑⏑–⏑– ebend. 160 (VII, 8). — *γ*) *4 Mal* –⏑–⏑–⏑⏑–⏑–⏑–⏑– ebend. (VII, 20). Ind. St. 8, 393. — *δ*) *4 Mal* –⏑⏑–⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑– ebend. 392. — *ε*) *4 Mal* –⏑⏑ –⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XVII, 2). — *ζ*) *2 Mal* –⏑–⏑⏑–⏑–, ⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑– ebend. 165 (VI, 14). — 4) n. *a*) *eine natürliche, ungesuchte Handlung* (wie die eines Kindes): भीरुरपि प्रशास्त्यधि रिपूंश्च वीरललिते: Vâmân. Bâm. S. 104, 11. = चरित Comm. — *b*) *liebenswürdige Einfalt, Naivetät, Anmuth, Lieblichkeit* (beim Weibe) AK. 1, 1, 2, 31. H. 508. H. an. und Med. (an beiden Orten ist क्राव st. क्वार zu lesen). Hallâs. 1, 89. शृङ्गाराकारचेष्टाढ्यं मरुत् ललितं मृदु Daçar. 2, 13. वाग्वेषयोर्मधुरता तद्वच्छृङ्गारचेष्टितं ललितम् Sin. D. 95. 89. सुकुमाराङ्गविन्यासो मनोज्ञो ललितं भवेत् Daçar. 2, 39. 30. Sin. D. 144. मकलाङ्गममीचीनभूषणविन्यासो ललितम् Rasârn. 6, 14 (nach Aufrecht). उपदिशति कामिनीनां यौवनमद एव ललितानि Spr. 3030. R. 1, 9, 16. R. Gorr. 1, 9, 39. Verz. d. Oxf. H. 256, *a*, 16. — *c*) N. zweier Metra: *α*) *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑–⏑⏑– Ind. St. 8, 354. fg. — *β*) *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑ ⏑⏑–⏑–⏑–⏑⏑– ebend. 383. — *d*) N. pr. einer Stadt (vgl. ललितपुर) Râga-Tar. 4, 187. — Vgl. कुमारललिता, ज्येष्ठ°, दुर्ललित, धीर°, प्र-वर°, मदनललिता, शार्ङ्गललित, सु°.

ललितक n. N. pr. eines Tîrtha MBn. 3, 8012 nach der Lesart der ed. Bomb.; ललितिक ed. Calc. — Vgl. ललीतिका.

ललितचैत्य m. N. eines best. Kaitja Wilson, Sel. Works II, 22.

ललिततात्त m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 13.

ललितपद 1) adj. (f. घा) *aus lieblichen Worten bestehend*: गिर् Vâmân. Bâm. S. 104, 29 (mit Anspielung auf das Metrum gleiches Namens). —

2) n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VII, 23). Ind. St. 9, 382.

ललितपुर n. N. pr. einer *Stadt* Wilson, Sel. Works II, 25. 29; vgl. ललित 4) *d*).

ललितपुराण n. = ललितविस्तरपुराण Colebr. Misc. Ess. II, 190.

ललितमाधव n. Titel eines Schauspiels von Rûpa Verz. d. Tüb. H. 24. fälschlich **ललिता°** Wilson, Sel. Works I, 167.

ललितलोचन 1) adj. (f. आ) *schönäugig* MBh. 13, 2330. Râja-Tar. 5, 389. 6, 77. — 2) f. आ N. pr. der Tochter eines Vidjâdhara Vâmadatta Kathâs. 68, 69. 69, 1. fgg. 103, 244.

ललितविस्तर m. oder vollständiger **°पुराण** n. Titel eines *ausführlichen Sûtra, das die ungekünstelten, naiven Handlungen* Çâkjamuni's *erzählt*, Burn. Intr. 56. 68. fg. **मुललितविस्तर** Lalit. ed. Calc. 8, 5. — Vgl. लघु°.

ललितव्यूह m. 1) Bez. *einer best. Vertiefung* (समाधि) bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 361, 12. — 2) N. pr. eines Devaputra ebend. 248, 12. 263, 14. — 3) N. pr. eines Bodhisattva ebend. 363, 4.

ललितातन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95, *b*, 10.

ललितातृतीया f. Bez. *eines best. 3ten Tages:* **°व्रत** Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 27. fg.

ललितादित्य m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmira Râja-Tar. 4, 48. 126. 134. fg. 188. 393. 5, 69. **°पुर** n. N. pr. einer von ihm gegründeten *Stadt* 6, 219. 224.

ललितापीड m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmira Râja-Tar. 4, 659. 673. fg.

ललितामाधव s. ललितमाधव.

ललितार्घनवन्दिका f. Titel eines Werkes über *die Verehrung der Lalitâ* Mack. Coll. I, 138.

ललिताव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284, *b*, 39; vgl. दशरथ° 25. fg. उपाङ्ग° 36.

ललिताषष्ठी f. Bez. *eines best. sechsten Tages:* **°व्रत** Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 10. fg.

ललितासप्तमी f. Bez. *des siebenten Tages in der lichten Hälfte des* Bhâdra ÇKDa. nach dem Bhavishja-P.

ललितिक s. ललितक.

ललित्य m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 7, 692. 768. 2353. sg. Bez. *des Fürsten dieses Volkes* 1610.

ललोतिका f. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3, 8142 (der ganze Çloka fehlt in der ed. Bomb.). — Vgl. ललितक.

लल्यान N. pr. einer Oertlichkeit Râja-Tar. 6, 183.

लल्ल 1) m. N. pr. eines Astronomen Golâdh. Bhuvanak. 53. Tripraçnav. 31. fgg. Ganitâdh. Sphashṭâdh. 40. Colebr. Misc. Ess. II, 332. 338. fgg. Verz. d. Oxf. H. 331, *b*, No. 782. 336, *a*, No. 790. eines Juristen 279, *a*, 37. 285, *a*, 34. 286, *a*, 8. eines Ministers **लोहरमन्त्रिन्** Râja-Tar. 8, 1834. 1845. 1901. — 2) f. आ N. pr. einer Buhldirne Râja-Tar. 6, 74. 77.

लल्लवाराहमत m. *der Sohn* Lalla's *und* Vârâha's (Varâhamihira's?), angebliches N. pr. des Verfassers des Nakshatrasamuk-kaja Verz. d. Oxf. H. 333, *b*, No. 785.

लल्लिय m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 5, 154. 232.

लल्लुशीलाल m. N. pr. eines Autors Ind. St. 1, 471.

लव (von लू) 1) m. *a*) *das Schneiden* (von Korn) P. 3, 3, 20, Sch. AK. 3, 3, 24. Taik. 3, 3, 120. H. 1521. an. 2, 525. Med. v. 22. *das Abschneiden, Abpflücken* (von Blumen) Nalod. 2, 20. **कुसुमलवच्छुरित** so v. a. *gepflückte Blumen* Daçak. 90, 9. — *b*) *Schur, Wolle* (nach Kull.) M. 8, 131. *Haar* (einer Kuh) Ragh. 15, 32. — *c*) *Abschnitt, Stück, eine Partikel von, ein Minimum, ein Bischen* (nach Râjân. im ÇKDa. auch n.) AK. 3, 2, 11. Taik. H. 1427. H. an. Med. Halâj. 4, 3. Çat. Br. 11, 2, 3, 19. **कच्चिल्लवं च मुष्टिं च परराष्ट्रे परंतप । अविक्षय महाराज निक्षिपसि समरे रिपून् ॥** MBh. 2, 198. **कुशमुष्टिमुपादाय लवं चैव तु** R. 7, 66, 6. **घासिप°** *Fleischstück* Vish. 125. **घृतलवत्कन्यालव** Spr. 2588. **तिति°** 1802. **मृत्तिका°** Ragh. 3, 2, v. l. beim Schol. in der ed. Calc. **तृण°** Spr. 965. **कुशलाग्रशमीलवैः । अभिषिक्तस्य** MBh. 3, 16078. 14, 2805. **जल°** *Tropfen* Megh. 21. 71. 91. Ragh. 16, 66. Spr. 2543. Râja-Tar. 3, 266. **स्वेद°** Ragh. 6, 57 (am Ende eines adj. comp. f. आ). 8, 50. 13, 20. **अम्बु°** 13, 27. **अमृत°** Kir. 5, 44. **स्फारनीहार°** Râja-Tar. 3, 168. **अमृतलव** Bâlc. P. 7, 8, 30. **मधु°** 9, 25. 5, 14, 22. **घन°** Spr. 1429. **स्वल्पवित्त°** Râja-Tar. 4, 628. **लक्ष्मी°** Spr. 967. **भूलेपलक्ष्मी°** Git. 11, 22. **ज्ञान°** Spr. 39. **सुख°** Varâh. Bṛh. S. 74, 3. Spr. 3265, v. l. **अपराध°** Vikr. 118. **अपो°** Râja-Tar. 3, 35. Pañkat. 3, 2, 29. **काम°** Bâlc. P. 3, 21, 14. 4, 20, 25. 54. **प्रेता°** 3, 16, 7. 10, 61, 4. **भावानां लवैः** Daçak. 2, 47. **घाशीर्भिर्ललितवाग्भिः** Bâlc. P. 3, 13, 48. **लालित्य°** Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 503, Çl. 6. Sîh. D. 40, 11. **मधुलवलेश** Spr. 3520. **लवम्** adv. *ein wenig:* **लवमपि लवङ्गे न रमते** Sarasvatîk. 1 (nach Aufrecht). — *d*) *ein best. Zeittheil* (= $^1/_{4000}$ Muhûrta nach Paraçara bei Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 2; nach Andern $^1/_{5400}$, $^1/_{30250}$ Muh.); häufig personif. Taik. H. 136. H. an. Med. Wenn, Gjot. 41. fgg. 90. fg. 105. Nal. 2, 287. Ind. St. 9, 461. 464. fgg. MBh. 1, 1292. 5443. 13, 627. 776. 7383. Hariv. 9529. 14079. Varâh. Bṛh. S. 48, 59. Bâlc. P. 1, 18, 13. 3, 11, 6. 7. 4, 30, 34. 7, 3, 31. Mârk. P. 99, 50. VP. 22, N. 3. Hiouen-thsang I, 61. — *e*) bei den Astronomen = **घंश**, **भाग** *Grad* Golâdh. Tripraçnav. 32. fgg. Ganitâdh. Bhagrahajuttsâdh. 7. Tripraçnâdh. 32. — *f*) *Zähler eines Bruchs* Colebr. Alg. 13. — *g*) = **विनाश** *Untergang* Med. = **विलास** *Ausgelassenheit* u. s. w. H. an. und Veçva im ÇKDa. — *h*) N. pr. α) eines Sohnes des Râma und der Sîtâ (neben कुश) Taik. 2, 8, 4. H. 704. H. an. Med. Ragh. 15, 32. Verz. d. B. H. 115 (XLIV). Uttarar. 66, 8 (85, 8). VP. 385. 386, N. 17. Bâlc. P. 9, 11, 11; vgl. कुशीलव 3). — β) eines Fürsten von Kâçmira, Vaters des Kuça, Râja-Tar. 1, 18. 34. — 2) n. *a*) *Muskatnuss* Çabdâ. im ÇKDa. — *b*) = **लवङ्ग** *Gewürznelke.* — *c*) *die Wurzel von Andropogon muricatus* Râjân. im ÇKDa.

लवक 1) proparox. nom. ag. von लू (समभिहारे) P. 3, 1, 149 nebst Vârtt. Vop. 26, 41. — 2) Bez. *eines best. Stoffes* in **मलवक** Pañkat. 3, 1, 19.

लवङ्ग m. *Gewürznelkenbaum;* n. *Gewürznelke* Udâtt. zu Unâdis. 1, 119. AK. 2, 6, 2, 27. H. 646. R. 3, 74, 3. Varâh. Bṛh. S. 27, 4. Kathâs. 111, 15. Pañkat. 1, 10, 30. **°पुष्प** Ragh. 6, 57. **°लता** Git. 1, 27. Sucr. 1, 215, 6. 243, 19. 2, 137, 10. لونك Alberuny bei Reinaud, Mém. sur l'Inde 343.

लवङ्ग 1) n. *Gewürznelke* Çabdan. im ÇKDa. — 2) f. लवङ्गिका N. pr. eines Frauenzimmers Hall in der Einl. zu Vâsavad. 37.

लवङ्गकलिका f. *Gewürznelke* Râéan. im ÇKDa.

लवट m. N. pr. eines Mannes Râéa-Tar. 5,176. 204.

लवण 1) n. AK. 2,6,2,23. Siddh. K. 249, a, 5. *Salz* (insbes. *Seesalz*) AK. 2,9,41. H. 941. Mân. g. 75. AV. 7,76,1. Âçv. Çr. 2,16,24. Kâṭhâ. Up. 4,17,7. 6,13,1. M. 6,12. 8,327. 10,96. 92. 94. 12,63. Harîv. 13655. R. 3,76,24. 5,14,45. Varâh. Bṛh. S. 13,9. 23. 16,7. 28,4. 41,6. Kathâs. 61, 39. fgg. Paṇḍar. 184, 9. Verz. d. B. H. No. 933. °धेनु Verz. d. Oxf. H. 35,a,30. 32. 39,a,25. °पर्वत 35,b,26. लवणाचल 41,a,22. verschiedene Arten von *Salz* Suçr. 1,226,11. काण्ड° 2,36,16. लवणानुरस 1, 34,11. तीक्ष्ण° 12. मधुलवण: तार: 2,126,6. Accent eines auf लवण ausgehenden Wortes P. 6,2,4. गौ° *so viel Salz als man der Kuh reicht* Schol. — 2) adj. (f. या) *salzig, gesalzen* P. 4,4,21. gaṇa मयड्वादि zu 5,2,127. AK. 1,1,4,18. H. 1388. Mân. Dha. 181 (wo लावणं st. त्यावणं zu lesen ist). Hall. 5,75. Çat. Br. 14,5,4,13. Lâṭj. 1,1,12. Kâṭhâ. Up. 4,13,2. MBh. 14,1411. Suçr. 1,79,8. 155,4. 156,1. 157,9. 2,546,2. fgg. Spr. 804. 2260. Varâh. Bṛh. S. 54, 122. 76, 12. Bṛh. 2,14. Bhâg. P. 3, 31,7. Mârk. P. 34,25. Verz. d. Oxf. H. 237, a, No. 368, Z. 12. यत्लवणाणिन् Âçv. Gṛhj. 1,8,10. 22,19. 4,4,15. Gobh. 2,3,12. लवणं कृत्वा und लवणंकृत्य gaṇa सात्तादादि zu P. 1,4,74. — 3) m. a) Bez. einer best. Hölle VP. 207. fg. — b) N. pr. α) eines Râkshasa oder Daitja H. an. 3,223. Mân. MBh. 1,1303. 13,861. Harîv. 2342. 3063. fgg. 5151. fgg. R. Gorr. 1,23,22. 7,61,17. 67,18. Râgat. 15,2. 3. Uttarab. 131,11 (176, 3). VP. 385. Bhâg. P. 9, 11, 14. — β) eines Fürsten aus Hariçkandra's Geschlecht Verz. d. B. H. 192,10. Verz. d. Oxf. H. 354,b,2. — γ) eines Sohnes des Râma: लवणाङ्कुशौ (sonst कुशलवौ) Çat. 9,533. — δ) eines Flusses Mân. — ε) = वत्स und यस्थिभेद (?) H. an. — 4) f. या a) = त्विष् *Glanz, Schönheit* (vgl. लावण्य) H. an. zu. dessen fehlerhaft द्विष् Mân. — b) *eine best. Pflanze*, = मकाव्योतिष्मती Râéan. im ÇKDa. — c) N. pr. eines Flusses Mân. Milarip. 144,12. — 5) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. N. pr. verschiedener Flüsse LIA. 1, 78. 84. 103. — 6) n. Harîv. 13979 fehlerhaft für लम्बन (*eine best. Art zu kämpfen*), wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. यत्तार°, यत्तारात्लवणाशिन्, काल°, तत्काल°, त्रि°, त्रिकूट°, पच°, बकु°, भास्कर°, राम°, पचलवण, भिन्दि°, लावण.

लवणकिंप्रुका f. *eine best. Pflanze*, = मकाव्योतिष्मती Râéan. im ÇKDa.

लवणतार m. *eine Art Salz*, = लोणार Râéan. im ÇKDa.

लवणखानि f. *Salzgrube* H. 941.

लवणजल adj. *salziges Wasser habend*: सागर MBh. 1,1166. m. *Salzmeer, das Meer, Ocean*: लवणजलोद्भव *im Meer entstehend*; m. *Muschel* 7,1676.

लवणजलधि m. *Salzmeer, das Meer, Ocean* Bhâg. P. 5,17,9.

लवणजलनिधि m. dass. R. 5,31,62.

लवणता f. *Salzigkeit* Suçr. 1,149,10.

लवणतृण n. *eine Art Gras*, = घसकाण्ड Râéan. im ÇKDa.

लवणतोय adj. *salziges Wasser habend*; m. *Salzmeer, das Meer, Ocean* R. 5,7,21. 44.

लवणत्व n. *Salzigkeit* MBh. 6,3643.

लवणपाटलिका f. *Salzbeutel* Vaitân. 209.

लवणपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 154,b,19.

लवणभद् m. = लवणतार Râéan. im ÇKDa.

लवणमन्त्र m. *ein von einer Salzdarbringung begleitetes Gebet* Verz. d. Oxf. H. 98,b,10. 106,a,36.

लवणमेदुर m. *salzige Harnruhr*; davon adj. °मेदिन् *daran leidend* Suçr. 2,78,2.

लवणय् (von लवण), लवणायति *salzen* P. 3,1,21.

लवणवारि adj. und m. = लवणतोय H. 1075.

लवणसमुद्र m. dass. Tait. 2,1,5. Ind. St. 10,269.

लवणस्थान n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 330,b,11.

लवणस्य् (von लवण), °स्यति *nach Salz verlangen* P. 7,1,51.

लवणाकर m. 1) *Salzgrube* Hall. 2, 14. — 2) *Fundgrube* —, *Fülle von Anmuth* Daçar. 4,32.

लवणासुरक m. *der Tödter des* Râkshasa Lavaṇa, Bein. Çatrughna's Râgat. 15,40. Paṇḍar. 4,3,118.

लवणाब्धि m. *das Salzmeer* Mârk. P. 54, 7. °ज n. *Seesalz* Râéan. im ÇKDa.

लवणाम्बुराशि m. *das Meer, Ocean* Râgat. 13,15. Vikr. 18.

लवणाम्भस् m. dass. MBh. 1,819. 1131. 1168. 3,12787. 16239. Harîv. 4914. R. 3,28,2. 72,26. 4,38,36. 5,2,61. 34,8. 6,3,7. 7,23,2,40. Râgat. 12,70. 17,54.

लवणायस n. *ein best. Salz*, = लोणार Râéan. im ÇKDa.

लवणार्णव m. = लवणाम्भस् R. 1,1,70. Râéa-Tar. 3,478. Bhâg. P. 5,17,8.

लवणालय m. dass. R. 4,41,24.

लवणाश्व m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 3,936.

लवणिमन् m. nom. abstr. von लवण gaṇa दृढादि zu P. 5,1,122. *Anmuth* H. an. 6,4.

लवणीय्, °यति denom. von लवण P. 7,1,51, Sch.

लवणोत्तम n. *Flussesalz* Hall. 2,450. Ratnam. 65. Suçr. 2,540,16.

लवणोत्थ n. *ein best. Salz*, = लोणार Râéan. im ÇKDa.

लवणोत्स n. N. pr. einer Stadt Râéa-Tar. 1,231. 6,46. 57. 7,763. — Vgl. लोचनोत्स.

लवणोद m. *das Meer mit salzigem Wasser, Ocean* AK. 1,2,2,2. Verz. d. Oxf. H. 33,a,12. Ind. St. 10,283. 314.

1. लवणोदक n. *Salzwasser* Hall. 2,167.

2. लवणोदक adj. *salziges Wasser habend*, vom Meere MBh. 3,13577. 13,2136. 7319. m. *das Meer* Vaitân. 103.

लवणोदधि m. *Salzmeer, Ocean* R. 5,74,16. Bhâg. P. 5,20,2. Mârk. P. 56,15.

लवन (von लू) 1) nom. ag. *der da schneidet* (Korn u. s. w.) gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134 (hier fälschlich लवण). Vop. 26,29. — 2) f. ई ein best. Fruchtbaum: *Anona reticulata* Çabdar. im ÇKDa. — 3) n. a) nom. act. AV. Pâr. 3,10, Sch. P. 1,3,14, Sch. *das Schneiden* (des Kornes), *Mähen* AK. 3,3,24. H. 1521. Nir. 2,2. Kaṭhâs. 16,8. Kâty. Çr. 1, 7,2.10. °कर्तर् Kull. zu M. 7,110. — b) *Werkzeug zum Schneiden*: दर्भ° Kauç. 8.

लवनीय (wie eben) adj. = लव्य Comm. zu Bhatt. 8, 129.

लवन्य m. Bez. einer best. Klasse von Menschen Rāja-Tar. 7, 1241. fgg. लावन्य 1242). 8, 1129. 1133. 3388.

लवय्, लवयति = लवमाचष्टे P. 1, 1, 55, Vārtt. 2, Sch.

लवराज m. N. pr. eines Brahmanen Rāja-Tar. 8, 1347.

लवली f. 1) *Averrhoa acida Lin.* Rāgān. im ÇKDa. Suça. 1, 214, 1. Vasiṣṭha-Dh. S. 27, 4. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 26 (vgl. Ind. St. 3, 351, N. 11). °फल Taitt. 3, 3, 166. Ind. St. 3, 350. fg. °फलपाण्डुर Vikr. 146. — 2) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 165 (VII, 3). Ind. St. 3, 349. fgg.

लववत् (von लव) adj. *nur einen Augenblick während:* संयोग Spr. 2351 (Conj.).

लवशस् (wie eben) adv. 1) *in kleine Stücke:* छेदयेत् M. 9, 282. कृत: MBh. 1, 3211. — 2) *nach Augenblicken, auf Augenblicke:* त्रुटिशो लवशश्चापि गण्यते कालनिश्चय: MBh. 5, 3782. लवश: क्षणशश्चापि न च तुष्ट: सुयोधन: 2842.

लवाक m. *ein Werkzeug zum Schneiden* Uṇādis. im ÇKDa. *das Schneiden* (छेदन) Uṇādisūtrav. im Saṅkshiptas. ÇKDa. fehlerhaft für लवाणक.

लवाणक (von लू) Uṇādis. 3, 83. m. *ein Werkzeug zum Schneiden, Sichel* Ujjval.

लविं (wie eben) m. dass. Ujjval. zu Uṇādis. 4, 138.

लविंत्र (wie eben) n. dass. P. 3, 2, 184. Vop. 26, 169. AK. 2, 9, 13. H. 892. Halāj. 2, 422.

लवेरणि m. N. pr. eines Mannes; pl. Saṅgr. K. 184, *a*, 10. wohl fehlerhaft für ला°.

लव्य partic. fut. pass. von लू P. 6, 1, 80, Sch. *abzuhauen, niederzuhauen:* वन Bhatt. 8, 129. — Vgl. एक° und लाव्य.

लष्, लाषयति (शित्प्रयोगे) Dhātup. 36, 55, v. l. für लस्.

लसुन Uṇādis. 3, 57. n. (und selten m.) *Lauch, Knoblauch* AK. 2, 4, 8, 14. Taitt. 3, 3, 221. H. 1186. M. 5, 5. 19. 9, 39. Jāṭ. 1, 176. MBh. 8, 2034. 13, 4363. Suça. 1, 145, 6. 157, 10. 217, 6. 376, 7. 2, 168, 15. 328, 20. 337, 2. 364, 17. 366, 9. 496, 5. Vishṇ. 6, 10. Çiñc. Saṅh. 3, 8, 17. Spr. 4479. Rāja-Tar. 1, 344. Mārk. P. 32, 12. लसुनादिभक्षणप्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 281, *b*, 45. fg. लसुनादिघ्राण Prāyaçcittas. 3, *a*, 6. 4, *a*, 6. Hier und da लसुन geschrieben.

1. लष्, लाषयति, °ते und लाष्यति, °ते Dhātup. 21, 23 (कान्ति). P. 3, 1, 70. Vop. 8, 67. 128. Nir. 4, 10 (प्रेप्सायाम्). *begehren, Verlangen haben nach* (acc.): गाधायत्तावविद्वर खेदनं रामाच्युतौ वो लषतो बुभुक्षितो Bhāg. P. 10, 23, 7.

— अप s. अपलाषिका fgg.

— अभि *nach Etwas oder Jmd begehren, Verlangen haben nach*, mit acc.: अभिलषेत् u. s. w. MBh. 1, 6530. Hariv. 2465. Suça. 1, 373, 10. Vikr. 13, 20. 107. Kathās. 106, 102. Bhāg. P. 4, 28, 9. Mārk. P. 51, 73. 66, 17. Śiç. D. 28, 5. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 6, Çl. 16. Pañcat. 91, 17. 190, 3. Hit. 69, 5. Vet. in L.A. (III) 2, 22. ad 19, 10. med. (aus metrischen Rücksichten) अभिलषते MBh. 13, 4330. Mārk. P. 63, 67. अभिलष्यन्ती Bhatt. 4, 22. अभिललाष Kathās. 12, 107. अभिलेषु: Rāgat. 19, 12. अभिलषिष्यसि Hariv. 7012. mit infin.: सेवितुं साक्षात्तदाभिललाष सा Kathās. 22, 11. अभिलषित (hier und da fälschlich अभिलाषित geschrieben) *begehrt, gewünscht;* n. *das Begehrte, Gewünschte, Wunsch* MBh. 3, 16703. 9, 3810. Hariv. 6595. R. 1, 20, 18 (21, 17 Gorr.). Spr. 634. 1726. 5089. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 9, Çl. 33. Mārk. P. 100, 14. Pañcat. 38, 17. 41, 1. Hit. 44, 5. 84, 18. 133, 9. Dhūrtas. in L.A. 78, 17. चिरमभिलषितविलास Gīt. 11, 24. चिराभिलषित MBh. 3, 1851. Mārk. P. 22, 48. मनोऽभिलषित MBh. 3, 15309. Mārk. P. 61, 58. Viṣṇ-P. bei Muir, ST. I, 29. Hit. 133, 9, v. l. यते ऽभिलषितं प्राप्तुं पालं तस्मात् MBh. 1, 1778. गन्तुं तवाभिलषितामगामुज्जयिनीमकम् *nach Uṇādis., wohin du zu gehen beabsichtigtest,* Kathās. 71, 269. यदाभिलषित (s. auch bes.) Mārk. P. 64, 14. Pañcat. 15, 24. — Vgl. अभिलाष fgg.

— समभि *begehren nach:* °लषत् Hariv. 11267.

— आ dass.: परस्परं चालषते निरन्धा: Bhāg. P. 5, 13, 6.

— परि dass.: न परिलषति केचिदपवर्गमपि Bhāg. P. 10, 87, 21.

2. लष्, लाषयति (शित्प्रयोगे) Dhātup. 35, 56 v. l. für लस्.

लषणी nom. ag. von 1. लष् P. 3, 2, 150.

लषणावती f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 37. *b*, 8. °देश 352, *b*, 20.

लषमण (= लक्ष्मण = लक्ष्मण) m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 344, 2.

लषमादेवी (= लक्ष्मा° = लक्ष्मी°) f. N. pr. einer *Fürstin* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 343, 7.

लष्ट Uṇādis. 1, 153. m. *Tänzer* Ujjval.

1. लस्, लसति (प्रेषणक्रीडनयो:) Dhātup. 17, 64. 1) *strahlen, glänzen, prangen;* partic. लसत् *strahlend* u. s. w.: कौस्तुभ MBh. 3, 15838. द्युति Kathās. 116, 32. धवलोल्लासलसत्कपोलफलका Spr. 1235. लासोद्वेगपरिलसन्निवलीलता: 1310. Çārṅg. 14, 25. Gīt. 10, 7. Rāja-Tar. 3, 171. Einschiebung nach 4, 436. Çārṅg. 4, 3. Bhāg. P. 1, 9, 30. 11, 20. 19, 6. 2, 2, 9. 3, 21. 9, 12. 3, 21, 20. 23, 33. 28, 14. 4, 8, 49. 9, 54. 24, 47. 6, 1, 34. 4, 37. 8, 2, 14. 6, 4. 9, 17, v. l. 12, 13. 15, 9. 10, 13, 8. 11, 27, 38. Pañcar. 3, 5, 14. 7, 14. 10, 16. 18. 12, 11. 14, 2. Naish. 22, 53. Kādamb. 83. 132. Verz. d. Oxf. H. 121, *b*, No. 214. 248, *a*, 26. 249, *b*, 15. 260, *b*, No. 629. Nalod. 1, 34. 2, 33. लसमान 1, 46. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen, entstehen:* लसद्भक्तिदेवी Kathās. 23, 58. सञ्चारितावलोकनलसद्विशेष 24, 227. लसद्घृण 26, 165. लसन्मदविलासा 52, 206. दिव्यान्योऽन्यवपुर्विलोकनलसद्भावानुरागौ 407. लसद्भाष्पपूरा 59, 85. 91, 31. — 3) *erschallen, ertönen:* लसन्नादै: — वले: Kathās. 18, 2. 119. 25, 136. 97, 14. 102, 112. Kādamb. 103. — 4) *spielen, sich vergnügen, sich der Freude hingeben:* लसति 3. sg. praes. Kādamb. 79. — Vgl. उल्लसित.

— caus. लासयति (शित्प्रयोगे, v. l. शित्प्रोपयोगे) Dhātup. 33, 55. 1) *tanzen:* गायत्यो वादयत्यश्च लासयत्यस्तथैव च R. 7, 2, 11. वादयन्ति तदा शान्तिं (wohl तवा गान्ति = गायन्ति zu lesen) लासयत्यपरे तथा 2, 69, 4. Comm.: शान्तिं तस्य खेदशान्तिमुद्दिश्य लासयन्ति नर्तयन्ति वेश्या: ॥ शान्तिं लोलयन्तीति पाठे तस्य शान्तिं तूष्णीमवस्थानं चालयन्ति ॥ — 2) *tanzen lassen, — lehren* Vikr. 23.

— धनु s. धनुलासक, धनुलासिन्.

— अभि hier und da fehlerhaft für अभि-लष्.

— उद् 1) *erglänzen, strahlen, prangen;* partic. praes. उल्लसत् *erglänzend* u. s. w. Bhāg. P. 1, 3, 4. 9, 24. 17, 44. 3, 28, 16. 4, 24, 49. 8, 10,

53. 12,30. 18,2. 10,6,5. 30,54. 60,9. Paṇḍar. 3,5,29. 10,18. 15,2. उल्लसमान dass. Çiç. 20,56. उल्लसित *glänzend, strahlend* Paṇḍar. 3,2,13. Verz. d. Oxf. H. 242,a, No. 593—595. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen, entstehen:* उल्लसद्धिस्मयोत्सुक्यमाकुल Kathās. 22,108. Rāja-Tar. 2,103. Bulg. P. 2,2,12. Verz. d. Oxf. H. 121,*b*, No. 214. सर्वोपलोल्लसितवह्नि Çiç. 4,53. उल्लसितविधम Sin. D. 54,8. — 3) *ertönen, erschallen:* उल्लसद्गीत Kathās. 17,107. 35,5. 103,196. Rāja-Tar. 3,2. — 4) *spielen, sich vergnügen, sich der Freude hingeben, ausgelassen sein:* उल्लास Kshemendra. 110. उल्लसत् Verz. d. Oxf. H. 117,*a*, 42. प्रेमोल्लसन्मानसा Spr. 1235. Kshemendra. 133. उल्लसित *in freudig erregter Stimmung seiend* Kathās. 54,26. उल्लसितम् adv. *in freudiger Aufregung* Hit. 21,15, v. l. — 5) *sich hinunndherbewegen:* उल्लसत्कुसुम Bhaṭṭ. 9,86. मदोल्लसद् Caut. 33. Bulg. P. 3,28,30. उल्लसल्लोचन Spr. 346. उल्लसितैकधूलत Çik. 63, v. l. Dhūrtas. 9,14. Paṇḍar. 3,11,4. — Vgl. उल्लास. — caus. 1) *erglänzen —, strahlen machen:* चलत्कुण्डलोल्लासितोत्फुल्लगण्ड Paṇḍar. 3,10,18. Prab. 81,13. — 2) *erscheinen lassen, bewirken:* कामम् Sin. D. 305,16. मुहुरुल्लासयाम् Verz. d. Oxf. H. 130,*b*, 38. — 3) *ertönen —, erschallen lassen:* प्रियकथाम् Sin. D. 40,12. — 4) *freudig erregen, in eine frohe Laune versetzen:* उल्लास्य मधुरैर्वाक्यैस्तम् Çaṃk. 14,146. उल्लासित *freudig erregt* Hit. 21,15 (vgl. den Comm.). — 5) *tanzen lassen, in Bewegung versetzen:* उल्लासयत्यः श्रथबन्धनानि गात्राणि Ṛt. 6,8. उल्लास्यमानाः पताकाः Kathās. 6,165. 34,121. Verz. d. Oxf. H. 145, *a*, 27. उल्लासितभ्रूवल्लीक Gīt. 2,21. Rāja-Tar. 4,642. Spr. 1547. ततः स्वशिरश्केतुमुल्लासितः (so ist wohl zu lesen st. उल्लसितः) खड्गः प्रहर्केणापि Hit. ed. Jones. 2111 (उन्नामितः ed. Schl.). — Vgl. उल्लासन.

— प्रोद्, partic. प्रोल्लसत् 1) *erglänzend* Çiç. 2,19. — 2) *ertönend, erschallend* Kathās. 103,153. — 3) *sich hinunndherbewegend* Kathās. 25, 12. — caus. *freudig erregen:* प्रोल्लासिताशय Kathās. 110,106.

— समुद् 1) *erglänzen:* समुल्लसत्त्या भासा Çiç. 8,65. समुल्लसित *strahlend* Gīt. 11,28. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen* Kir. 3,41. यावत्सु वैराणि समुल्लसन्ति Spr. 781. — Vgl. समुल्लास.

— परि *ringsumher strahlen:* परिलसत् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 20.

— वि 1) *glänzen, strahlen:* विलसति, °लास Bhaṭṭ. 10,66. विलसत् Spr. 2396. Kathās. 35,18. Bulg. P. 1,9,34. 3,20,29. 23,9. 28,31. 4,8,50. 26,23. 30,6. 5,3,2. 11,14,40. Paṇḍar. 3,5,30. Prab. 49,2. Verz. d. Oxf. H. 132,*a*, N. 2. विलसित *glänzend, strahlend* Bulg. P. 5,25,5. Paṇḍar. 3,7,31. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen, entstehen, sich zeigen:* विलसत् Çiç. 9,87. Kathās. 2,81. 18,389. 35,117. 44,180. 113,100. Kshemendra. 8. Bulg. P. 4,30,22. Verz. d. Oxf. H. 136,*b*, No. 332. विलसित *zum Vorschein gekommen* Bulg. P. 1,2,31. 5,4,4. 18,16. n. *das Erscheinen, zum-Vorschein-Kommen:* विद्या° Verz. d. Oxf. H. 80, *b*, 37. — 3) *ertönen, erschallen:* विलसन्मेघशब्द Kathās. 13,16. Verz. d. Oxf. H. 139,*a*, 4. — 4) *spielen, sich vergnügen, sich der Freude hingeben, ausgelassen sein:* विलसति Gīt. 1,38. 7,18. इह विलस 11,14. Vidagdh. 7,2. व्यलसन्नमरेमन्या भूर्लोके ऽस्मिन्नराधिपाः Kathās. 97,15. Çaṃk. 1,280. विललास Kshemendra. 141. पर्यङ्के तया सह विललास Hit. 42,9. R. Gorr. 1,45,28. Harīv. 15789 (°राज्ञि विक्रमालोकमण्डनम् die neuere Ausg.). Kathās. 51,189. येनाद्यैकाग्र्यभुजेन चिरं विलसितं पुरा Spr. 2296. विलसित n. *heiteres Spiel, frohe Ausgelassenheit, lustiges —, ausgelassenes Treiben; Treiben* überh. Rāgat. 18,31. 19,40. Kathās. 22,11. Gīt. 5,6. Mālatīm. 171,9. Prab. 112,7. विधि° Spr. 2078. Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,8. दुर्बुद्धिविलसितं नरपशूनाम् Prab. 29,9. — 5) *sich hinunndherbewegen:* विलसत् Megh. 48. Rāgat. 13,76. Spr. 188. Kathās. 71,2. Kāvyād. 44. Bulg. P. 10,71,33. विलसित *sich hinunndherbewegend* 5,9, 19. n. *das Hinunndherbewegen* Spr. 771. Häufig von der *zuckenden Bewegung* des Blitzes: विलसत्सौदामनी Spr. 2072. Prab. 79,13. विलसित n. *das Zucken* (des Blitzes) Spr. 294. 421. Vikr. 137. Kir. 5,46. Prāçnottarām. 23 in Monatsber. d. Berl. Ak. d. Ww. 1868, S. 100. Kāvyād. 2,332. Kshemendra. 103. — Vgl. सप्तगजविलसित, गजतुरग°, दुर्विलसित, धमर्°, विलास u. s. w.

— प्रवि 1) *stark strahlen, — glänzen* Verz. d. Oxf. H. 130,*b*, 42. Bulg. P. 3,8,45. — 2) *stark hervorbrechen, in hohem Maasse erscheinen:* प्रविलसदनुराग Cit. beim Schol. zu Gīt. 7,2. Verz. d. Oxf. H. 129,*a*, 5 v. u.

2. लस् (= 1. लस्) adj. *strahlend, glänzend:* स्व° Çiç. 9,39.

लस (von 1. लस्) 1) adj. *sich hinunndherbewegend;* s. स्व°. — 2) f. या *Gelbwurz* (गन्धपलाशिका) Hiṃ. 93.

लसक adj. = लासक Mān. k. 149. fg.

लसिका f. *Speichel* Çabdar. im ÇKDr.

लसीका f. dass. Vishṇ. 12,2. Nach ÇKDr. = इक्षुरस *Zuckerrohrsaft* oder लस्यांसमध्यगरस *Lymphe;* nach Vyutp. 101 *Eiter.*

लसोफरञ्ज N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*, 48.

लस्तक m. *die Mitte des Bogens* AK. 2,8,2,53. H. 775.

लस्तकिन् m. *Bogen* Çabdam. im ÇKDr.

लस्यूतनी f. *eine grobe Nadel* Çat. Br. 3,3,2,25. 6,3,25. Kāṭy. Çr. 8,4,21.

लरुका f. gaṇa क्षिपकादि zu P. 7,3,45, Vārtt. 6.

लरुड N. pr. eines Volkes Varāh. Bṛh. S. 14,22. v. l. लउड und लरुर.

लरुर m. N. pr. 1) eines Volkes Varāh. Bṛh. S. 14,22, v. l. für लरुड. — 2) einer Provinz in Kāçmīra, das jetzige Lahul, Rāja-Tar. 5, 51. 8,916.

लरुरि und लरुरी f. *Weile, Weile* H. 1076. Halāy. 3,31. Çabdar. im ÇKDr. Spr. 814. 2297. 2586. Kathās. 28,99. 57,75. Rāja-Tar. 4,641. Paṇḍar. 3,12,4. — Vgl. घानन्द्°, गङ्गा°.

लल्कि m. Hypokoristikon von लल्होड P. 5,3,83, Vārtt. 8, Schol. — Vgl. कल्कि.

लल्होड m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,83, Vārtt. 8, Schol. — Vgl. कल्होड.

लल्ल m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. Çāṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. 3,3,1. pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu P. 2,4,63. — Vgl. लाल्ल, लाल्लायनि.

1. ला, लाति (सादाने, v. l. दाने) Dhātup. 24,30. *ergreifen, mit sich —, zu sich nehmen:* लाति Sin. D. 11,12. ललुः खड्गान् Bhaṭṭ. 14,92. लां (शक्तिं) चालामोहिपदृताम् 15,53. लात्वा Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,43. 156, *a*,27. Z. d. d. m. G. 14,372,6. Çaṃk. 14,149. 166.

2. ला (= 1. ला) f. *das Nehmen; das Geben* Mud. I. 1.

लाकिनी f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 89,*b*, 25. 35. — Vgl. राकिणी, वाकिनी.

लाकुच adj. von लकुच Vicva. 7, 34.

लाकुचि m. patron. von लकुच; pl. Saṁs. K. 184, a, 8.

लाकुटिक s. लालाटिक.

लात्त adj. Ind. St 1, 110, 7 nach Kuhn fehlerhaft für लाक्ष्म *an die Lakshmi gerichtet.*

लात्तकी f. Bein. der Sîtâ: लत्तशः कमलादास्यो यस्याः स लात्तकी मता Purushottamakh. 55 im ÇKDr.

लात्तण (von लत्तण) adj. *der sich auf die charakteristischen Merkmale eines Dinges versteht:* षडेव स्वरितज्ञातानि लात्तणाः प्रतिज्ञानते Schol. in der Einl. zu AV. Pariç. 3, 33.

लौत्तणि m. patron. von लत्तण P. 4, 1, 153.

लात्तणिक (von लत्तण und लत्तणा) adj. (f. ई) 1) *sich auf die Zeichen verstehend;* m. *Zeichendeuter* P. 4, 2, 60, Vârtt. 7. R. 6, 23, 4. कन्या° 17. — 2) *uneigentlich gemeint, nicht direct unter Etwas verstanden, eine übertragene Bedeutung habend* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 117. Schol. zu Kir. Çr. 4, 4 v. u. 32, 7 v. u. Schol. zu P. 7, 1, 100. 3, 31. Verz. d. Oxf. H. 210, b, 2 v. u. Davon nom. abstr. °त्व n. Sarvadarçanas. 30, 14. Schol. zu P. 6, 4, 37. 7, 3, 113.

लात्तणार्थ (von लत्तण) 1) adj. *sich auf die Zeichen verstehend, dieselben deutend* R. 2, 29, 9. लत्तणिन् ed. Bomb. — 2) m. patron. P. 4, 1, 152.

लात्ता Uṇâdis. 3, 62. f. AK. 3, 6, 2, 10. 1) *eine best. Pflanze* AV. 5, 5, 7 (voc.). — 2) *Lack* (sowohl *die von der Schildlaus kommende rothe Farbe* als auch *das rothe brennbare Harz einer best. Baumes*) Ardhak. I, 188. AK. 2, 6, 2, 26. Trik. 2, 6, 26. H. 685. Hâr. 219. 259. Hâlây. 2, 400. 5, 37. °रक्त Kaṁç. 76. 28. 38. M. 10, 89. 92. Jñân. 3, 37. MBh. 1, 3726. Suçr. 1, 142, 20. °चूर्ण 46, 16. किङ्कुलाक्ते निर्यासौ 145, 12. 2, 25, 1. 126, 9. 357, 2. 367, 12. Spr. 2662. 3044. 4955. Kîr. 5, 23. Varâh. Bṛh. S. 10, 11. 11, 11. 57, 5. 61, 15. 68, 40. 77, 9. Sâh. D. 71, 3. Verz. d. Oxf. H. 103, b, 23. Sarvadarçanas. 25, 15. °रस Suçr. 1, 315, 9. Çiç. 80. Ṛt. 1, 5. 6, 13. Varâh. Bṛh. S. 43, 18. 78, 19. Kathâs. 9, 47. 30, 46. Sarvadarçanas. 23, 11. °भवन (vgl. जतुगृह) Buâlc. P. 3, 1, 6. °गृह Vṛittas. im Comm. zu Daçak. 4, 68. — Vgl. रक्ता.

लाक्षातरु m. *Butea frondosa* Çabdam. im ÇKDr.

लाक्षाप्रसाद m. = लाक्षाप्रसादन Riâk. im ÇKDr.

लाक्षाप्रसादन m. *eine Art* Lodhra AK. 2, 4, 2, 21.

लाक्षावृक्ष m. *Butea frondosa* Hir. 107. = कोशाम्र Riâk. im ÇKDr.

लाक्षिक (von लाक्षा) adj. (f. ई) *mit Lack gefärbt* P. 4, 2, 2. Schol. zu 4, 1, 15. वस्त्र Bhatt. 5, 62.

लाक्षेय m. patron.; pl. Saṁs. K. 184, a, 7.

लाक्ष्म s. u. लात्त.

लाक्ष्मण 1) adj. von लक्ष्मण 3) b) Vicva. 6, 98. — 2) m. patron. von लक्ष्मण Saṁs. K. 184, b, 1.

लाक्ष्मणि m. patron. von लक्ष्मण; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 38, 18.

लाक्ष्मणेय m. patron. von लक्ष्मण, wenn ein Vâsishṭha gemeint ist, gaṇa प्रभृति zu P. 4, 1, 123.

लाक्षिक adj. (f. ई) = लक्ष्यमधीते वेद वा P. 4, 2, 60, Vârtt. 7.

लाख्, लाखति (शोषणालमर्थयोः) Dhâtup. 5, 9. — Vgl. राख्.

लागुडिक könnte *mit einem Knüttel* (लगुड) *bewaffnet* bedeuten, was aber Paṁkat. 230, 19 nicht passt; wohl fehlerhaft für लालाटिक.

लाघ्, लाघते (सामर्थ्ये) Dhâtup. 4, 29. — Vgl. राध् und उल्लाघय् in den Nachträgen.

लाघवकोलस m. Bez. *einer best. Form der Gelbsucht* Suçr. 2, 466, 16. 467, 8. लाघवको ऽलसाख्यः gedruckt.

लाघव (von लघु) n. gaṇa पृथ्वादि zu P. 5, 1, 122. Schol. zu 131. 1) *Schnelligkeit, Geschwindigkeit* MBh. 3, 7207. R. 4, 42, 4 (लाघवं च zu lesen). गति° Mallin. zu Kumâras. 1, 15. — 2) *Geschicklichkeit, Gewandtheit* MBh. 1, 4106. 4117. 5224. 5237. 4, 1887. 5, 5964. 6, 2466. 7, 4634. fg. 4658. 4660. R. 3, 33, 17. 6, 18, 47. 36, 39. 78. Kathâs. 48, 39. Mâlav. P. 124, 7. 127, 21. कृत्स्न° MBh. 3, 759. 764. 6, 2743. R. 6, 36, 55. Paṁkat. 218, 16. पाणि° Harîv. 9332. घस्र° MBh. 1, 5364. 5, 5490. — 3) *Leichtigkeit; Gefühl der Leichtigkeit, Erleichterung* Jñân. 3, 76. Tattvas. 25. Suçr. 1, 34, 15. 46, 5. 148, 19. 151, 15. 2, 47, 8. 429, 9. यस्मिन्कर्मण्यस्य कृते मनसः स्याल्लाघवम् *keine Erleichterung des Herzens* M. 11, 232. विनाशितेषु दुर्गेषु भवेद्दे कर्मलाघवम् *Erleichterung des Geschäfts* R. 5, 50, 4. — 4) *Leichtsinn, Uebereilung, Unüberlegtheit:* घस्रानाल्लाघवेन वा R. Gorr. 2, 15, 11. तिर्यक्° *Unzuverlässigkeit der thierischen Natur* Kathâs. 27, 170. — 5) *Geringheit, Wenigkeit, Unbedeutendheit:* घास्कार° Mâlav. P. 41, 17. बुद्धि° R. 2, 58, 26 (29 Gorr.). Mâlav. 14, 23. सत्त्व° R. 4, 6, 6. — 6) *Kürze einer Silbe* Ind. St. 8, 216 (= Çaut. Bh. 4). — 7) *Kürze im Ausdruck, Sparsamkeit in Worten, Concision* Ind. St. 8, 372. Kâç. zu P. 8, 3, 55. Müller, SL. 170. Schol. zu Kir. Çr. 9, 3, 8. 9. 17, 3, 14. zu Gaim. 1, 1, 9. zu Kap. 1, 63. 146. Nîlak. 39. Kuṁk. 11, 5. Sarvadarçanas. 113, 23. — 8) *geringes Ansehen, Schmälerung des Ansehens, Mangel an Würde* Spr. 1407. 1896. 2229. 5202. Râga-Tar. 2, 171. 4, 38 (am Ende eines adj. comp. f. घा). 6, 5. लाघवं या Bhâg. 2, 35. लाघवमास्थिताः MBh. 1, 7044. लाघवं समुपागम्य Harîv. 10378. लाघवं प्राप्नोति Spr. 225. न नेया भवता राजन्वयमात्मा च लाघवम् Râga-Tar. 3, 245. कन्या हि तत्र न प्रेष्या भवेदेवं हि लाघवम् Kathâs. 12, 3. 13, 5. एषा कुर्यात्कस्य न लाघवम् 87, 37. लघवकारि चात्मनः Spr. 3431. 4675. कुरुते ऽस्मिन्वमोघे ऽपि निर्वाणालातलाघवम् *so geringschätzig behandeln wie* Kumâras. 2, 33. — Vgl. गुरु° (in der 2ten Bed. auch Buâlc. P. 6, 1, 8), घरु°, लघुता und लघुत्व.

लाघवायन m. N. pr. eines Autors: °सूत्र Ind. St. 1, 470.

लाघविक (von लाघव) adj. *sich kurz fassend* Schol. zu Kir. Çr. 24, 3, 21.

लौङ्गाक्षायनि m. metron. von लङ्गा gaṇa वाकिनादि zu P. 4, 1, 158.

लाङ्गायनि m. patron. von लङ्ग gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99.

लाङ्गल (लाङ्गलं Uṇâdis. 1, 108) 1) n. a) *Pflug* Nir. 6, 26. AK. 2, 9, 13. H. 890. an. 3, 681. Med. l. 127. fg. Hâlây. 2, 420. ṚV. 4, 57, 4. AV. 2, 8, 4. VS. 12, 71. TS. 5, 6, 2, 4. Kir. Çr. 22, 3, 18. Kauç. 20. 93. 106. °योक्त्र Pâr. Gṛhj. 2, 13. MBh. 3, 332. 13289. 5, 4427. 9, 3348. 12, 3656. Harîv. 4438. R. 1, 66, 14. R. Gorr. 2, 76, 24. 3, 4, 12. 7, 7, 47. Varâh. Bṛh. S. 33, 9. 46, 63. Bṛh. 27, 5. नख° Verz. d. Oxf. H. 82, a, No. 138, 2. 7. Buâlc. P. 10, 68, 41. कर्षतो लाङ्गलैः MBh. 3, 13323. पृथिवीं लाङ्गलेनैव भित्त्वा 1248. सौवर्णलाङ्गलायैर्वलिखति वसुधामर्कमूलस्य हेतोः als Absurdität Spr. 3311. लाङ्गलोल्लिखितावनि Kathâs. 33, 31. लाङ्गलापकर्षिन् (गवेन्द्र) Spr. 870. लाङ्गलस्य गतिः R. 4, 60, 13. °दण्ड AK. 2, 9, 14. — b) Bez. *einer best. Gestalt des Mondes* Varâh. Bṛh. S. 4, 9. — c) Bez. *eines*

pflugähnlichen Stückes an einem Hause (गृहदारु). — *d) Weinpalme* (ताल). — *e) eine best. Blume* H. an. Med. — *f) das männliche Glied* (wohl nur fehlerhaft für लाङ्गूल) Taik. 2,6,23. — 2) m. *a) eine Art Reis* (शालि) Vigan. 6, 2. — *b)* pl. N. einer Schule Ind. St. 1, 47. 61. 3, 273. fg. Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,18. nach P. 6,4,144, Vârtt. 1 von लाङ्गलिन्. — *c)* pl. N. pr. eines Volkes, v. l. für शाङ्गल VP. II, 176, N.; vgl. Hiouen-thsang II, 177. 412. Vie de Hiouen-thsang 208 und लङ्गल. — *d)* N. pr. eines Sohnes des Çuddhoda und Enkels des Çâkja Buic. P. 3,12,13; vgl. राङ्गल. — 3) f. ई *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Jussiaea repens Lin.* AK. 2,4,8,29. H. an. Med. *Hemionitis cordifolia* Ratnam. 10. = राम्ना 49. *Rubia Munjista* und *Hedysarum lagopodioides* Dunv. in Nigh. Pr. — Pârâs. 1,10,51. °कल्क Suça. 1,370,11. 2,49,12. 130,21. Nach den Erklärern zu AK. 2,4,8,34 auch = लाङ्गलिन् *Cocosnussbaum.* — *b)* N. pr. eines Flusses MBh. 2,374. — Vgl. घास्य°, दुष्ट°, मुख°.

लाङ्गलक 1) am Ende eines adj. comp. = लाङ्गल *Pflug;* s. पद्म°. — 2) adj. Bez. *eines pflugähnlichen chirurgischen Schnittes:* हाभ्यां समाभ्यां पार्श्वाभ्यां छेदो लाङ्गलको मतः । ह्रस्वमेकतरं पद्म सो ऽर्धलाङ्गलकः स्मृतः Suça. 2,59,4. — 3) f. लाङ्गलिका = लाङ्गली *Jussiaea repens Lin.* Çabdar. im ÇKDr. — 4) f. लाङ्गलिकी f. dass. Ratnam. 38. Suça. 1,33,8. 146,4. 157,11. 2,62,3. 117,15.

लाङ्गलपद्धति m. *Pflüger, Landmann* P. 3,2,9, Vârtt. 1.

लाङ्गलचक्र n. Bez. *eines best. pflugähnlichen Diagramms* Gjotishattva im ÇKDr.

लाङ्गलधन्वन् adj. *einen Pflug im Banner habend;* m. Beiw. Balarâma's MBh. 5,44. Rigà-Tar. 1,61.

लाङ्गलपद्धति f. *der Weg des Pfluges* d. i. *Furche* AK. 2,9,14. Halâj. 2,421.

लाङ्गलाह्य adj. *nach dem Pfluge benannt;* subst. Bez. der *Jussiaea repens Lin.* Suça. 2,109,1.

लाङ्गलायन m. patron. von लाङ्गल Ait. Br. 5,3. pl. N. einer Schule, = लाङ्गल Müller, SL. 373.

लाङ्गलाह्वया f. = लाङ्गलाह्य Suça. 1,132,14. 2,25,18. 522,4.

लाङ्गलि m. patron. von लाङ्गल, N. pr. eines Lehrers VP. 282. Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,6. 16.

लाङ्गलिक 1) m. Bez. *eines best. vegetabilischen Giftes* H. 1199. — 2) f. ई *Methonica superba Lam.* AK. 2,4,6,6. — लाङ्गलिका s. u. लाङ्गलक.

लाङ्गलिन् 1) adj. *mit einem Pfluge versehen:* फालकुद्दाल° (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) R. 2,32,28. — 2) m. *a)* Beiw. Baladeva's H. an. 3,408. Med. n. 204. MBh. 1,8015. 9,2186. Harîv. 2069. Megh. 50. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,5. — *b)* N. pr. eines Lehrers P. 6,4,144, Vârtt. 1. Verz. d. Oxf. H. 53,*a*,40. 55,*b*,18. — *c) Cocosnussbaum* AK. 2,4,8,34. H. 1151. H. an. Med.

लाङ्गलीषा und लाङ्गीषा (लाङ्गल + ईषा) f. *Deichsel am Pfluge* gaṇa शकन्धादि zu P. 6,1,94, Vârtt. 2. Vop. 2,13. Comm. zu Çânt. 3,17.

लाङ्गुल n. = लाङ्गूल 1) *Schweif, Schwanz* Sâj. zu AK. 2,8,2,18. Med. l. 127 (लाङ्गूल ÇKDr. nach dens. Aut.). Spr. 756. Hit. 76,6 (ed. Jones. लाङ्गूल). °य° Buic. P. 6,9,21. लाङ्गुलेगृह (absol.) v. l. im gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72. — 2) *das männliche Glied* H. ç. 126. Med. — Vgl. गो°.

लाङ्गुलिका f. *Uraria lagopodioides Dec.* Rigân. in Nigh. Pr. Vgl. देव°.

लाङ्गुलिनी f. N. pr. eines Flusses VP. 185, N. 80. — Vgl. लाङ्गूलिनी.

लाङ्गूल Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,90. 1) n. *a) Schweif, Schwanz* Nir. 6,26. AK. 2,8,2,18. H. 1244. an. 3,680. Halâj. 2,286. 3,23. 5,69. Çârîr. Ç. 17,5,10. MBh. 4,1436. 13,5998. R. 5,16,22. 49,8. Suça. 2,281,14. Vasishṭha. Bṛh. S. 11,47. 62,1. 72,1. Buic. P. 5,23,5. Mârk. P. 83,21. Pâṇ. Gaṇ. 239,7. °चालन MBh. 5,2651. Spr. 2663. लाङ्गूलानि विचिक्षिपुः R. 5,69,22. °विक्षेप Kumâras. 1,13. लाङ्गूलमुद्यम्य Buic. P. 4,16,22. उच्छ्रित° R. 5,55,27. कुञ्चितापतदूर्ध ebend. समुद्गत° Hit. ed. Jones. 1614. समाविध्यत लाङ्गूलम् R. 5,3,1. 5,23. 38,37. लाङ्गूलगृह (absol.) gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72. — *b) das männliche Glied* H. ç. 126. H. an. — *c) Kornkammer* Comm. zu Uṇ. 4,92; fehlerhaft, wie aus Uṇâdis. 4,90 zu ersehen ist. — 2) f. ई *Uraria lagopodioides Dec.*, eine glückbringende Pflanze, Suça. 1,71,11. — Vgl. गो° (unter गोलाङ्गुल, *eine Affenart* Mâlatîm. 152,10), मुनो° und लाङ्गुल.

• लाङ्गूलिका f. *Hemionitis cordifolia Roxb.* Rigân. im ÇKDr.

लाङ्गूलिन् 1) adj. *geschwänzt.* — 2) m. *a) Affe* Çabdar. im ÇKDr. — *b) eine best. Heilpflanze* (रास्नौषध) Rigân. im ÇKDr. — 3) f. °लिनी N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,29; vgl. लाङ्गुलिनी.

लाञ्, लाञ्चते (भर्त्सने, भर्त्सने) Dhâtup. 7,66. Nir. 6,9. — Vgl. लञ्, लञ्, लाञ्.

लाजी (vielleicht von भ्रस्ज्, भर्ज्) 1) m. pl. Taik. 3,5,6. Sindh. K. 249,*b*, 12. *geröstetes Korn* Nir. 6,9. AK. 2,9,47. Taik. 2,9,15. 3,3,147. H. 401. an. 2,75. Med. ç. 14. fg. Halâj. 2,430. VS. 19,12. 21. 21,42. Çat. Br. 12,8,2,7. 10. 9,1,2. 13,2,2,5. Âçv. Gṛhj. 1,7,3. 15. Kâṭj. Çr. 20,4,32. Pâr. Gṛhj. 1,6.7. MBh. 1,5415. 3,15326. 16078. 5,7477. 6, 5764.7,2776.13,2447.4727. 15,432. Harîv. 9076. R. 1,53,2 (54,2 Gorr.). 73,21. 2,43,13. 91,55 (100,52 Gorr.). 6,96,16. 97,19. Vikram. 6,37. Suça. 1,236,5. °मण्ड 229,6. लाजाञ्जनचूर्ण 2,473,7. °वर्ण 296,16. 299,5. पुष्पलाजायलंकृत 1,71,8. Kâm. Nîtis. 7,52. Ragh. 2,10. 4,27. Kumâras. 7,69. 80. fg. Vasish. Bṛh. S. 43,36. 48,19. 35. 67,14. Kathâs. 34,257. 80, 128. 140. 103,192. fg. 195. Rigà-Tar. 1,370. 2,119. Buic. P. 4,9,37. 21, 2. 5,9,16. 8,21,6. Pâṇâd. 3,13,12. Auch f. लाजा Med. R. 4,25,26. शर्करालाजामधुकैः Suça. 2,97,7. लाजैर्वा तण्डुलैर्भृष्टैर्लाजामण्डः प्रकीर्तितः Çârîr. Saṅh. 2,2,119. Vasish. Bṛh. S. 43,60. Pâṇâd. 158,3. Nach H. an. und Med. soll m. sg. = धार्ष्टतण्डुल, nach Hem. 149 = खाजिक, उत्तुय sein. — 2) n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* H. an. Med.

लाजि m. nach Manidh. *eine Menge gerösteter Körner* VS. 23,8. nach Comm. zu TBr. 3,9,4,8 voc. von लाजिन् = लाजोपलक्षित; vgl. VS. Pair. 2,20. 30.

लाजी f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,35. — Vgl. इन्द्रलाजी.

लाञ्छ्, लाञ्छति (लक्षणे) Dhâtup. 7,27. लाञ्छित *gekennzeichnet, markirt, versehen mit* (instr. oder im comp. vorangehend) Verz. d. Oxf. H. 222,*b*,18. Sarvadarçanas. 64,19. शिलास्तम्भं चक्रेणोपरि लाञ्छितम् Kathâs. 12,174. विद्याधरमहाचक्रवर्तिलक्षण° 43,212. 113,26. Ragh. 10, 61. Vikr. 83. श्रीशब्द° Rigà-Tar. 3,353. वलस्तनवलालाञ्छितम् 4,663. Prab. 21,16. 81,15. Buic. P. 10,16,62. Pâṇâd. 3,13,24. सप्तपद° TBr.

Comm. 1,37,10. — Vgl. लत, ललप्.

लाञ्छन (= लक्षण und wohl auch daraus entstanden) 1) n. a) *Zeichen, Abzeichen, Mal* Nir. 4,10. AK. 1,1,2,18. 3,4,28,118. H. 106. an. 3,107. Med. n. 119. Halâs. 1,27. 44. fg. 2,283. 5,34. Bulg. P. 3,28,21. Schol. zu Kîrt. Ça. 28,1,33. im Monde Kumâras. 7,35. eines Fürsten Kathâs. 23,70. Bulg. P. 1,17,1. 29. 3,24,55. 10,68,37. eines Gottes Verz. d. Oxf. H. 183,b,1 v. u. *Feldzeichen* Ragh. 3,53. *Schandfleck* Spr. 225. 420. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) *gekennzeichnet durch* so v. a. *versehen mit:* किरीट° (शिरस्) Hariv. 4370. Ragh. 6,18. 16,31. Kathâs. 15,92. स्वनाम° so v. a. *benannt nach* 52,215. श्रीकण्ठपद्° Utpalar. 1,10(2,4). — 2) *Name, Benennung* H. an. Med. — Vgl. पद्म°, मृग°, शश°.

लाञ्ज्, लाञ्जते = लाञ्छ् Dhâtup. 7,67.

लाट (nach Lassen aus राष्ट्र) 1) m. pl. N. pr. eines Volkes und des von ihm bewohnten Gebietes, das Λαρική des Ptolemaeus Taik. 3,3,102. H. an. 2,97. Med. t. 26. LIA. I,108, N. 2. MBh. 13,2158. Varâh. Bṛh. S. 69, 11. Verz. d. Oxf. H. 338,b,26. Verz. d. B. H. No. 393. °देश Kathâs. 78,119. 47, 106. °विषय 74,138. Râga-Tar. 6,200 (wo wohl °शैडोड्रसंभव: zu lesen ist). Çâṅk. 14,166. °मालवलक्ष्मीलतापरशु Hall in der Einl. zu Vâsavad. 51. लाटान्वय Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,507, Z. 31. °ज्ञन Sîm. D. 260,14. °नारी Kathâs. 19,104. °रामका: Verz. d. Oxf. H. 217,b,N. °भाषा 323,b,34. Sarvadarçanas. 178,12. लाटेश्वर Daçak. 24,5. — 2) adj. (f. ई) zu Lâṭa *in Beziehung stehend:* रीति Râga-Tar. 1,300 (लाट beide Ausgg.). 4,209. स्त्रिय: Verz. d. Oxf. H. 217,b,19. रीति Sîm. D. 629. भाषा Kâyâd. 1,35. m. *ein Fürst der* Lâṭa Kathâs. 122,3. — 3) m. *Kleid, Gewand* (वस्त्र, वैयुक) Taik. H. an. Med. *abgetragene Schmucksachen* u. s. w. (जीर्णभूषणादि) Çabdar. im ÇKDr.

लाटक adj. (f. लाटिका) *zu den* Lâṭa *in Beziehung stehend, bei ihnen gebräuchlich:* रीति Sîm. D. 625.

लाटाचार्य m. *der Lehrer der* Lâṭa, N. pr. eines Astronomen Kern in der Einl. zu Varâh. Bṛh. S. 33. Weber, Gjot. 9. 10. لاتن Albirouny bei Reinaud, Mém. sur l'Inde 331. falschlich लाढाचार्य Colebr. Misc. Ess. II, 409.

लाटानुप्रास m. *die Alliteration der* Lâṭa, in der Rhet. *Wiederholung desselben Wortes in derselben Bedeutung aber in anderer Verbindung* Sîm. D. 638. 384. 238,18. Prataparu. 72,b,9. Verz. d. Oxf. H. 210,a, N.

लाटायन Colebr. Misc. Ess. I, 100 fehlerhaft für लाह्यायन.

लाटीय adj. = लाटक: रीति Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 480, Z. 22.

लाठ्, लार्ठति (जीवने, nach Andern दीप्तौ पूर्वभावे धैर्त्ये स्वप्ने च) gaṇa काण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लाढ m. N. pr. des Verfassers eines Sûtra Weber, Lit. 73. fgg. Muller, SL. 181. 199. 210. Ind. St. 1, 18. 43. 48. fgg. 5, 437. fgg. 446. fg. Verz. d. B. H. 71, Z. 4 v. u. No. 309. fg. 312. 327. Verz. d. Oxf. H. 279,a,38. 378,b, No. 384. 379,a,1. 383,b, No. 467. 393,a, No. 84.

लाड्, लार्डयति (धारणे, तेपे Kavikalp. im ÇKDr.) Dhâtup. 35,81, v. l.

लाड m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 5,226. eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,b,7.

लाढखान m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 218,b,4.

लाढन 1, m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 180,b,24. °मल्ल desgl. Verz. d. B. H. 173,22. — 2) n. s. u. लालन 3).

लाडम m. N. pr. eines Mannes Hall 28.

लाडि m. patron. gaṇa कौड्यादि zu P. 4,1,80. f. लाड्यी ebend.

लाढाचार्य s. u. लाटाचार्य.

लाणठनी (?) f. = कुलटा H. ç. 111.

लौतव्य m. patron. von लतु Uçîjan. zu Unâdis. 1,75. Sharv. Bh. 4,7 (लालव्य Sis. zu Pâṇ. Bh. 2,6,8). N. pr. eines Kammerers Vikr. 77, 10. 78,9. 83,15.

लाति könnte nom. act. von ला sein in देव°.

लात्त m. mystische Bez. *des Buchstabens* व Weber, Rik. Up. 317. fg.

लात्तवत्त m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Gaina H. 93.

लान्द्र gaṇa पावादि zu P. 5,4,29. Davon adj. लौन्द्रक ebend.

लाप m. nom. act. von लप्; s. सल्लाप.

लापय् caus. von लप् und लो.

लापिका s. घत्तर्ला° und वल्गिर्ला°.

लापिन् (von लप्) adj. 1) *sprechend, sagend, verkündend:* शुचि° Hariv. 8637. प्रोषितानन्दयशोक° Gnat. 11. — 2) *jammernd, wehklagend* Mârk. P. 8,171.

लाप्य partic. fut. pass. von लप् P. 3,1,126. Vârtt. 3 zu 124. Vop. 26,12.

लाव m. = लव *eine Art Wachtel, Perdix chinensis* AK. 2,5,25. पञ्चत्तरं वर्हिणालावयोर्भवेत् R. 3,53,58. Sçça. 1,73,7. 200,20. 2,59,13. 364,3. 412,3. 441,15. 480,2. Auch लावा f. Râgân. im ÇKDr. Fast überall लाव geschrieben.

लावक m. dass. Taik. 2,5,21. 3,3,73. H. an. 3,137. Med. gh. 10. Sçça. 2,232,20. Verz. d. B. H. No. 897. °युद्ध Verz. d. Oxf. H. 217,a, 13. लावकीयुद्ध Sçça. 2,459,3. Ueberall लावक geschrieben.

लावात m. *eine Art Reis* (*Wachtelauge*) Spr. in Nigh. Pr. °क Sçça. 1,196,2. mit व gedr.

लावु und लाबू = ब° Çabdar. im ÇKDr. mit व gedr.

लावुकायन m. N. pr. eines in Gaimini's Sûtra genannten Philosophen Colebr. Misc. Ess. I, 296. wohl fehlerhaft für लामकायन.

लावुकी (लावुकी gedr.) f. *eine Art Laute* Hân. 211; vgl. अलावुवीणा unter अलाबु 1).

लाभ्, लाभयति (प्रेरणे) Dhâtup. 35,81.

लाभ (von लभ्) m. 1) *das Finden, Antreffen* M. 10,115. पुंस: Spr. 3309. विदेशे बन्धुलाभ: Kathâs. 25,70. — 2) *das Bekommen, Kriegen, Erlangung; Gewinn, Vortheil* AK. 2,9,80. H. 860. धर्म° Kîrt. Ça. 4,3,19. °काम 7,3. M. 6,37. fg. हिरण्यभूमि° Jâtâ. 1,251. सर्व° R. 2,40,9. 106, 4. यज्ञ° R. Gorr. 1,4,19. स्त्रीरत्न° Ragh. 7,31. परितोष° 11,92. शुद्धि° 12,10. अनिष्टादिदृष्टलाभे Spr. 104. भुवस्तस्या: 193. स्थान° 2922. अमात्य°, धन° 4013. Varâh. Bṛh. S. 50,17. 52,3. 53,75. 87,8. Râga-Tar. 2,142. 3,264. Bulg. P. 3,6,37. 5,17,2. Hit. 47,12. 57,20. Daçak. 77,16. निद्रा° Pârâç. 202,10. लाभमिवेष्टमाप्य R. Gorr. 2,2,36. पवेच्छालाभसंतुष्ट Pârâç. 4,8,52. इमं लब्धवांल्लाभम् MBh. 1,6474. कस्मिंश्चिद्यागता दूराद्वणिजो लाभकारणात् 2,249. 3,2531. 4,488. 13,1640. P. 5,1,47. Jâtâ. 1,275. 2,193. Ragh. 8,92. Spr. 62. 735. 1672. 2299. 3035 (Gegens. व्यय). Varâh. Bṛh. S. 42,3. 4. 7. 51,23. 72,6. Kathâs. 32,138. Bhâg. P. 1,2,9. 10. Mârk. P. 33,12. द्विगुण° Pârâç. 88,8. सत्य° Dhûrtas. 76,

19. Sarvadarçanas. 74,13. 16. 75,2. 6. धर्मे स्थितिः परो लाभः R. Gorr. 2,18,17. 4,4,12. वर्तते चोत्तमां वृत्तिं लक्ष्मणो ऽस्मिन्सदानघ। दृश्यवान्सर्वभूतेषु लाभस्तस्य महात्मनः॥ *sein Vortheil so v. a. seine grösste Freude* R. Schl. 2,44,5. लाभालाभौ *Gewinn und Verlust* Jiân. 2,259. Bhag. 2, 38. R. 2,22,22. लाभालाभे च पण्यानाम् M. 9, 331. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): पुत्रलाभा (= लब्धपुत्रा Nilak.) च सा पत्नी न तुतोष MBh. 1,4197; wir vermuthen, dass °लाभाच्च zu lesen sei. — 3) *Einnahme so v. a. Eroberung:* पुराणाम् Varâh. Bṛh. S. 7,19. 30,23. दुर्ग° Harîv. 6192. — 4) *Auffassung, Erkenntniss* Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 111. Sin. D. 6,7. Bhâg. P. 1,11,4. 5,6,20. 9,10. 18,20. 8,9,21. 7,9,11. Kusum. 57, 11. — 5) Bez. *des 11ten astr. Hauses* (vgl. आय) Varâh. Bṛh. S. 40,6. 78,25. 98,17. 104,24. 31. Bṛh. 1,12. 9,5. 11,17. Ind. St. 2,176. °स्थान Verz. d. Oxf. H. 330,*b*,34. — Vgl. अ°, दुर्लाभ, पुनर्लाभ (auch R. 5,19, 23), भूमि°, भोग°, मित्र°, यथालाभम्.

लाभक (von लाभ) m. *Gewinn, Vortheil* Varâh. Bṛh. S. 42,12. fg.

लाभम् absol. von लभ्, = लम्भम् P. 7,1,69. Vop. 24,7.

लाभलिप्सा f. *Gewinnsucht* Spr. 3311.

लाभवत् (von लाभ) adj. *einen Gewinn habend, im Gewinn seiend* Spr. 4697. परिप्लुतेव लाभवान् Kathâs. 5,98. am Ende eines comp.: भूरिकस्यचयाम° *in den Besitz von — gekommen* 74,259.

लाभिन् (von लभ्) adj. *findend, bekommend:* स्वमात्रस्य परीतातणालाभिनः Râja-Tar. 5,131.

लाभ्य n. angeblich = लाभ Çabdar. im ÇKDa.

लामकायन m. patron. von लमक gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. N. pr. eines Lehrers Liṭ. Nidânas. und Dains. (s. Ind. St. 4,384). संवर्गजित् Ind. St. 4,373. लामकायना: = लमका: gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69.

लामकायनि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,10.

लामकायनिन् m. pl. *die Schule des* Lâmakâjana Ind. St. 1,45. fg.

लामगायनि m. = लामकायनि Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,17, wo die Hdschrr. लोभगायिनि lesen.

लामज्जक n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* AK. 2, 4, 8, 30. Ratnam. 120. Suçr. 1,146,5. 2,101,2. 297,10.

लौप von unbekannter Bed. in der Stelle: घस्तेव मु प्रेतुं लाषमस्यन् RV. 10,42,1. Könnte als absol. von ली gefasst werden, etwa *sich* duckend.

लायक nom. ag. von ली AV. Paipp. 3,40, Sch.

लाल m. N. pr. eines Astronomen Verz. d. B. H. No. 881 (vgl. Ind. St. 2,245. 417). — Vgl. नन्द°.

लालक (vom caus. von लल्) adj. (f. लालिका) *liebkosend, schmeichelnd* Nalod. 2,28.

लालचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,45.

लालन (vom caus. von लल्) 1) adj. *liebkosend, hätschelnd.* — 2) m. Bez. *eines best. giftigen mausartigen Thieres* Suçr. 2, 281, 14. Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,18. — 3) n. *das Liebkosen, Hätscheln, Hegen und Pflegen:* सुतस्य Spr. 1260. लालने (v. l. लाउने) बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः। तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत्॥ 2664. (शृणुकुणाकस्य) पोषणपालनलालनप्रीणानानुध्यानेन Bhâg. P. 5,8,5. 6. 25. श्वपउस्थकणि° Râja-Tar. 5,290.

लालनीय (wie oben) adj. *zu liebkosen, zu hätscheln, zu hegen und zu pflegen* Harîv. 7203. 7246. R. Gorr. 2,38,7. 4,14,23. Kathâs. 121,264.

लालय् caus. von लल् und ली.

लालयितव्य adj. = लालनीय MBh. 13,2488. Harîv. 11264.

लालवत् (von लाला) adj. *den Speichel triefen lassend:* मति° Suçr. 2,281, 14.

लालव्य s. u. लातव्य.

लालस 1) adj. (f. आ) *heisses Verlangen tragend —, begierig nach* H. ç. 102. an. 3,754. Hâlâs. 2,198. Jâdava bei Mallin. zu Çiç. 4,6. सर्वे लालसभूताः स्म तस्मात्रात्रमके सकृ MBh. 3,10851. Bhâg. P. 4, 20, 27. विषयेषु 24,66. 10,51,51. आ° MBh. 12,8467. überaus häufig in comp. mit einer Ergänzung: पुत्रदर्शन° MBh. 1,4743. 3,1817. 2484. 2524. 13,4036. R. 1,9,58 (56 Gorr.). 2,92,9. R. Gorr. 2,13,21. 26,5. 30,24. 5,16,50. 29,6. Suçr. 1,192,4. Kumâras. 7,56. Kathâs. 82,257. Bhâg. P. 1,11,3. उत्सव° Harîv. 3788. पतिलालसा MBh. 3,2522. रुधिर° 12,4273. सर्व° 13,1164. पुत्र° R. 2,74,9. काम° R. Gorr. 2,18,5. Çaut. 34. 36. Çiç. 4, 6. Spr. 683. 1170. Gîr. 1,37. Kathâs. 15,126. 32,270. Râja-Tar. 4,242. 6,213. Sin. D. 55,13. Bhâg. P. 2,23,46. 4,7,44. 5,14,42. Pañcat. 81,21. *Gefallen findend an, ganz hingegeben:* शोक° *sich der Trauer ganz ergebend* MBh. 1,504. 12,1127. R. 2,21,20. 57,30. 87,8 (85,8 Gorr.). R. Gorr. 2,61,1. 79,36. 112,18. 4,18,19. 19,6. 5,8,27. मृगव्यसन° Bhâg. P. 4,26,4. मण्डूकगति° Pañcat. 4,8,95. davon nom. abstr. °ता f.: °विलासलालसतया तामाम् Verz. d. Oxf. H. 110,*a*, No. 173, Çl. 2. — 2) m. und f. (आ) *heisses Verlangen* (तृष्णातिरेक, औत्सुक्य, यात्रा, प्रार्थन) AK. 1,1,2,28. 3,4,30, 231. H. 541. H. an. Med. s. 33. Hâlâs. 2,343. लोला यौवनलालसाः Spr. 2072. लालसा P. 7,1,51, Vârtt. 2. — 3) f. आ ein best. Metrum: *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑–⏑–, ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑– Ind. St. 8,397. — MBh. 10,84 ist mit der ed. Bomb. नालसः st. लालसः zu lesen; 7,3383 hat die ed. Bomb. शुचीन् व्रतिलाननान् (vgl. u. व्रतिल in den Nachträgen).

लालसिंह m. N. pr. eines Astronomen Colebr. Misc. Ess. II, 409. — Vgl. लल्ल.

लाला f. *Speichel* AK. 2,6,2,18. H. 633. Vîcan. 6,141. Suçr. 2,129, 19. 257,8. 15. °क्लिन्न Spr. 728. 3179. 3321. Ṛt. 1,21. Varâh. Bṛh. S. 90,6. Kathâs. 87,44. घर्म° 102,152. Sin. D. 180. °पूर्णार्णव Bhâg. P. 5, 26,28. कोणकारकस्य Jiân. 3,147. — Vgl. घर्म°.

लालाट (von ललाट) adj. *auf der Stirn befindlich:* नेत्र Prab. 1,12.

लालाटि m. patron.; pl. Saṃsk. K. 184,*a*,8.

लालाटिक 1) adj. *an der Stirn befindlich* Schol. zu Kir. Ça. 688,13. — 2) *auf die Stirn* (des Herrn) *schauend;* m. *ein aufmerksamer Diener* P. 4,4,46. AK. 3,4,8,17. H. an. 4,39. fg. Med. k. 210 (wo भाल st. भाव zu lesen ist), so ist wohl zu lesen st. लागुडिक Pañcat. ed. Kos. 230,19 und st. लाकुटिक ed. Bühler 41,2 v. u. — 3) adj. *zu einem Geschäft untauglich (sich auf die Stirn des Herrn verlassend)* AK. H. an. Med. — 4) m. *eine Art Umarmung* H. an. Med.

लालाटी f. = ललाट *Stirn* Suçr. 1,361,8. 2,120,12.

लालाभक्ष m. N. einer Hölle, in der ein Missethäter *Speichel* als *Speise* geniesst, VP. 207. fg. Bhâg. P. 5,26,7 (vgl. 23).

लालामिक adj. (f. ई) = ललाम गृह्णाति P. 4,4,40.

लालामेक् m. *Absonderung schleimigen Harnes* Çârîr. Saṃh. 1,7,43.

लालाय् (von लाला), °यते *den Speichel triefen lassen:* वक्त्रं लालायते *Spr.* 831. लालायित *Geifer entlassend:* फणिन् ÇKDa. (इत्यनन्तदेवोक्त-गणेशलिखितपाणिनिव्याकरणीयमहाभाष्यम्).

लालाविष *adj. dessen Speichel Gift ist,* von giftigen Insecten H. 1313.

लालास्रव m. = लालास्राव *Spinne* H. 1210, Sch. (°स्रव).

लालास्राव m. 1) *Speichelfluss* Suçr. 1,102,2. 2,278,14. — 2) *Spinne (Speichel fliessen lassend)* H. 1210.

लालास्राविन् *adj. mit Speichelfluss verbunden, solchen bewirkend* Suçr. 1,303,21. 304,15.

लालिक m. *Büffel* H. 1283. — Vgl. लाविक.

लालित s. u. dem caus. von लल्; davon °क m. *Günstling, Liebling* Rāǵa-Tar. 3,228 (hier vielleicht N. pr.). 6,152. 166. 264.

लालित्य (von ललित) n. *Anmuth* Sin. D. 129. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234, Z. 13. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 6.

लालील m. als Name Agni's Taitt. Âr. 10,1,7.

लाल्य *adj.* = लालनीय Spr. 2985 (Conj.).

1. लाव (von लू) *adj.* (f. ई) *schneidend, abschneidend, pflückend:* कुशमूचि° Raçu. 13,42. कुमुमलावी f. *Blumenleserin* Spr. 1575. शत्रु° *Feinde zerhauend, — tödtend* Bhaṭṭ. 6,87. — Vgl. काण्ड°, पुष्प°.

2. लाव s. लाव.

1. लावक (von लू) *nom. ag. Abschneider, Mäher* P. 6,1,78, Sch. Çāk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 170. Schol. zu Kāṭy. Çr. 132,14. Mān. P. 46,16.

2. लावक s. लावक.

लावण (von लवण) *adj. salzig, gesalzen* H. 411. Hir. 181 (लवावण gedr.). Harîv. 2980. Suçr. 2,334,12.

लौवणिक (wie eben) 1) *adj.* (f. ई) Schol. zu P. 4,1,15. 7,3,50. *a) mit Salz zubereitet, gesalzen;* s. उद्°, दक°. — *b) mit Salz handelnd,* m. *Salzhändler* P. 4,4,32. — 2) n. *Salzgefäss* ÇKDa. und Wilson.

लौवण्य (wie eben) n. gaṇa दृढादि zu P. 5,1,122. 1) *Salzigkeit* Spr. 1780 (zugleich in der Bed. 2). — 2) *Anmuth, Schönheit:* मुक्ताफलेषु च्छायायास्तरलत्वमिवान्तरा । प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते ॥ Uddhavalîlâmṛi im ÇKDa. Çiç. 141. Kumāras. 7,19. Spr. 305. 863. 1631. 1780. 1970. 2667. fg. 3294. 3664. 3728. Vaṇîm. Bṛh. S. 105,8. Kathās. 14,68. 17,7. 27,65. 38,30. °लक्ष्मी 43,114. Kâdab. 32. Prab. 101,12. Sin. D. 52,12. Hit. 63,16. Vet. in LA. (III) 19,3. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 24. लोचन° Kathās. 28,20. इन्दो: 17,109. Spr. 3825. स्त्र° Suçr. 1,180,11. पुस्तकस्य Rāǵa-Tar. 3,261. Am Ende eines adj. comp. f. या Çiç. 110. Kathās. 54,238. 50,132.

लावण्यमञ्जरी f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathās. 69,160.

लावण्यमय (von लावण्य) *adj.* (f. ई) *anmuthig, schön* Kumāras. 1,25.

लावण्यवत् (wie eben) 1) *adj. dass.* — 2) f. °वती ein Frauenname Kathās. 87,4. 98,7. Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,30. Hit. 39,19.

लावण्यार्जित (लावण्य + अ°) *adj. durch Anmuth erlangt,* Bez. *desjenigen unantastbaren Besitzes einer Frau* (स्त्रीधन), *den sie als Hochzeitsgeschenk von ihren Schwiegereltern erhielt:* प्रीत्या दत्तं तु यत्किंचिद्भर्त्रा वा श्वशुरेण वा । पादवन्दनिकं यत्तल्लावण्यार्जितमुच्यते ॥ Vivâdâr. 138,14. fg.

लावान्त, °क s. u. लावान्त.

लावाणक m. 1) N. pr. einer an Magadha grenzenden Oertlichkeit Kathās. 15,119. 19,118. 44,45. 166. 179 (an den drei letzten Stellen fälschlich लावानक gedr.). — 2) N. des 3ten Lambaka im Kathāsaritsāgara Kathās. 1,6. 20 in der Unterschr.

लावानक s. u. लावाणक 1).

लाविक m. = लालिक Çabdâtnak. bei Wilson.

लाविन् (von लू) *adj. abschneidend, pflückend* in पुष्प°.

लावु, लावू und लावुकी s. लाबु u. s. w.

लावेरणि m. patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,128. लावेरिणि (!) Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 56,8. — Vgl. लवेरणि.

लावेरणीय *adj.* von लावेरणि gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,128.

लावेरिणि s. u. लावेरणि.

लाव्य (von लू) *adj. was durchaus geschnitten werden muss* Schol. zu P. 3,1,128. 6,1,80. — Vgl. लव्य.

लौयुक (von 1. लय्) *adj. begehrlich, habsüchtig* P. 3,2,154. Vop. 26,146.

लास m. 1) (von 1. लस्) *das Springen, Hüpfen, Sichhinundherbewegen:* मदनवनितलासैः — दृष्टिपातैः Bṛ. 6,30. मदवनितविलासै v. l. *Tanz, Frauentanz* Çabdar. im ÇKDa. — 2) *Fleischbrühe, Brühe* (यूष) Çabdar. im ÇKDa.

लासक (von 1. लस्) 1) *adj. a)* = लसक Med. k. 149. fg. — *b) hinundherbewegend:* (भास्वान्) कुमुमभरनतानां लासकः पादपानाम् Bṛ. 2,27. — 2) m. *a) Tänzer* H. an. 3,91. Med. neben नर्तक unter den Beinamen Çiva's R. 7,23,4,47. — *b) Pfau* H. an. Med. — *c)* N. pr. eines *Tänzers* Kathās. 74,36. — *d)* = वेष्ट Dhan. im ÇKDa. — 3) f. लासिका *a) Tänzerin* AK. 1,1,3,8. H. an. 3,36. Med. k. 107. Kathās. 57,75. — *b) eine Art Schauspiel,* v. l. für विलासिका Sin. D. 205,7. — 4) f. लासकी *Tänzerin* ÇKDa. und Wilson. — 5) n. = घण्टक *Thurm* Hir. 139. — Vgl. कविलासिका, तर्कुलासक.

लासन (wie eben) n. *das Hinundherbewegen, Schwingen:* लोमराङ्कुश-लासने: MBh. 7,5923 nach der Lesart der ed. Bomb., °पाणेः ed. Calc.

लासवती (von लास) f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathās. 74,38. fgg.

लासिन् (von 1. लस्) *adj. sich hinundherbewegend, tanzend;* s. रङ्ग-लासिनी.

लास्फोटनी f. = घास्फोटनी Rîǵan. zu AK. 2,10,24 nach ÇKDa.

लास्य (von लस्) 1) n. *Tanz, Tanz mit Begleitung von Instrumentalmusik und Gesang* AK. 1,1,2,10. H. 280 (vgl. Comm.). Med. j. 32. fg. Hall. 1,93. MBh. 1,3905. 2,349. 7,2860. 13,426. Rāǵa-Tar. 4,422. Mārk. P. 129,9. Bhâr. Nâṭyaç. 18,117. Daçar. 1,4. लास्याङ्गानि दश 3, 46. fgg. Sin. D. 433. Verz. d. Oxf. H. 187, *b*, No. 428, Z. 24. 200, *a*, 7. 9. 203, *a*, No. 484, Z. 12. 236, *a*, 16. घल्लास्या: क्रीडामगूरा: Raçu. 16,14. विलोलदोर्वल्लरीललित° Pârçvân. 3,5,21. लता° Kathās. 35,8. Kâdamb. 76. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 26 (Ind. St. 3,351, N. 11). — 2) m. *Tänzer* Çabdar. im ÇKDa. °पाठिनाम् Mārk. P. 68,26. लास्या f. *Tänzerin* Çabdar. im ÇKDa.

लास्यक n. = लास्य 1) Çabdar. im ÇKDa.

लाहरिमल्ल m. N. pr. eines Feldherrn Kshitîç. 32,20. fgg.

लाह्यै m. patron. von लह्य gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. Çāk. zu Bṛh. Âr. Up. 3,3,1.

लौल्लायनि (von लाह्य) m. patron. des Bhuǵju Çat. Br. 14,6,2,1. 2.

so ist wohl auch Prasaradhi. in Verz. d. B. H. 39, 13 st. लक्षायनि zu lesen.

लि m. *weariness, fatigue; loss, destruction; end, term; equality, sameness; a bracelet* Wilson nach Çabdârthak.

लिकावन्ध Verz. d. B. H. No. 845 ohne Zweifel fehlerhaft.

लिकुच 1) m. = लकुच AK. 2,4,2,41. Daçak. 180,5. — 2) n. = चुक्र Râgân. im ÇKDn.

लिक्का f. = लिक्ता Çabdar. im ÇKDn.

लिक्षा f. AK. 3,6,2,10. *Nits, das Ei einer Laus* Uéâval. zu Uṇâdis. 3,66. H. 1208. als Maass = 8 Trasarenu M. 8,132. Jâñ. 1,361 (*Mohnkorn* Stenzler). मात्र गोरक्षास्येकं लिक्षात्रयः। मात्र लिक्षाः सर्षपः Lalit. ed. Calc. 170,1. 2. लिक्ष (so) = 8 वालाग्र Varâh. Bṛh. S. 58,2. यूकालिक्षम् *Läuse und Nisse* Uéâval. zu Uṇâdis. 3,47.

लिक्षिका f. dass. Çabdar. im ÇKDn. u. लिक्षा.

लिख् (= hiterem रिख्, लिर्खति (घतरविन्यासे) Dhâtup. 28,72. लिखते, लिलेख, अलेखीत्, लिखिष्यति (Hariv. 9983), लिखितुम् (विलेखितुम् P. 3,4,13, Sch.), लिखित्वा (nur dieses zu belegen) und लेखित्वा P. 1,2, 26. Vop. 26,107. लिख्य Weber, Râmat. Up. 308. fg. pass. लिख्यते. अलेखि, लिखित. 1) *ritzen, aufreissen, furchen, kratzen* AV. 12,3,22. 20, 132,3. गौ मा लेखीः VS. 5,43. TS. 6,3,2,3. इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत् स दिवमलिखत् सो ऽर्यम्णः पन्थां अगच्छत् TBr. 1,7,6,6. नखैर्लिखतो दशनैर्दशतः R. 5,61,20. ततो वाली विषाणाग्रैर्लिखितो दनुसूनुना 4,9,76. मार्जारा भृशमवनिं नखैर्लिखन्तः Varâh. Bṛh. S. 28,5. गां खुराग्रैस्तथा — लिखन्तः प्रययुस्तदा (क्रयाः) MBh. 12,1918. पद्भ्यां मही लिखति R. 6,2,17. लिखन्नास्ते भूमिम् Spr. 2669. Buâc. P. 3,23,50. 10,29,29. Bîn. D. 60,3. मूर्ध्ना दिवमिवालिखन् Bhatt. 15,22. mit der Lanzette *ritzen* Suçr. 2,7, 10. तुण्डेन लिखेत्तदा स्वपिच्छानि *picken* Varâh. Bṛh. S. 93,31. काकश्च तस्योपरि चञ्चा किमपि लिखतु Hit. 43,15. — 2) *durch Ritzen u. s. w. Etwas hervorbringen, eine Linie ziehen, einritzen, einkratzen, reissen, zeichnen, schreiben, niederschreiben, malen:* पत्सीमन्तं कङ्कतस्ते लिलेख TBr. 2,7,12,3. Çat. Br. 2,6,4,12. 7,2,3,1. Kâty. Çr. 5,3,25. 4,9. बालेन्दोः प्रापणात्ते लिखति *macht einen Strich* 17,4,10. लेखाम् Çikân. Gaṇ. 1,7. Kâç. 76. घनसव्यलिखिता रेखा Varâh. Bṛh. S. 53,104. वर्त्म — लिखेच्छस्त्रेण पत्रैर्वा Suçr. 2,332,4. 11. वर्त्म दुर्लिखितम् 16. मालिणाय स्वकृत्तेन पितृनामपूर्वकम्। यत्राक्षममुकः साक्षी लिखेयुरिति समाः॥ *schreiben* Jâñ. 2,87. fg. MBh. 1,78. fg. देवदूतस्य वचनं लिखित्वा *niederschreiben* Hariv. 3996. Mṛicch. 140,23. वर्णोर्मी कल्पलतोपगुकेषु — चञ्चरीकं लिखति Çik. 164. इत्येतदमात्येन लिखितम् 90,20. सौभाग्यातपत्रेणेव लिखिता पुष्पायुधेन स्वयम् Spr. 472. 2991 पश्चा यल्लिख्यते किंचित्सत्यं संपद्यते हि तत् Kathâs. 3,50. (कवाम्) तामात्मशीर्षैः — लिलेख 8,8. राज्ञो लेखं स्वकृत्तलिखितम् 43,263. 269. Râga-Tar. 2,6. 3,251. 322 (zu schreiben ध्यायालि°). 4,389. 5,396. fgg. Naish. 22,54. Dhûrtas. 90,17. Verz. d. Oxf. H. 255,a,18. Mâlav. P. 37,22. 97,35. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,508, Cl. 34. Hit. Pr. 8. Çuk. in LA. (III) 34,4. तस्मिंश्च (पुस्तके) लिखितमास्ते *steht geschrieben* Pañcat. 127,9. Sarvadarçanas. 73,13. तल्लिख्यतामगत्तनो दिवम: *werde aufgeschrieben* Pañcat. 3,6. अकस्मु गण्यमानेषु तीयमाणे तथायुषि। जीविते लिख्यमाने च किमुत्थाय न धावसि॥ *da das Leben verzeichnet ist* so v. a. *da die Lebensdauer genau bestimmt ist* MBh. 12,12032. मूषकं कस्ते गृहीत्वा संपुटे च तम्। लिखित्वास्य so v. a. *ihm gut geschrieben haben* Kathâs. 6,39. लेखा हि कालालिखिता सर्वथा दुरतिक्रमा Hariv. 11109. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः 8pr. 1688. 2386. 3227. 4147. 5392. Kathâs. 40,31. Râga-Tar. 2,89. Pañcat. 1,3,12. निजपुरुषकृल्लिखितेनात्मनि पुरुषद्वेषेण so v. a. *in's Herz eingegraben* Buâc. P. 5,7,7. सा लिखितेवास्ति मे हृदि Sin. D. 69,14. लिखितपाठक *Geschriebenes hersagend* d. i. *ablesend* Çukas. 32 in Ind. St. 4,270. गुरुमुखादधीयेतव्यं न तु लिखितपाठः कर्तव्यः Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,30. fg. Sarvadarçanas. 123,13. 124,18. उपरिलिखितयाम *oben geschrieben, — erwähnt* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,7. द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ *gezeichnet* Megh. 78. Gorâbhi. Sphuṭâs. 33. Spr. 1797. पाणौ खड्गरेखां लिलेख 2697. पत्रे सीमां लिखेत् Kull. zu M. 8,255. यो मां भक्त्या लिखेत्कुर्ये *malt* MBh. 2,731. 733. मत्सादृश्यं लिखन्ती Megh. 83. Çik. 86,17. Git. 7,23. घलिखत्स मकरदेवीम् Kathâs. 3,29. 31,18. fg. 44,82. 51,124. 126. 55,75. 77. Weber, Kṛishṇaj. 230. 268. 273. 283. fg. 289. fg. 299. 307. Râmat. Up. 307. 309. fg. Sin. D. 36,14. Dhûrtas. 73,13. लिखितानलनिश्चल Kumâras. 6,48. लिखितेव *wie gemalt* so v. a. *unbeweglich* Kathâs. 17,27. 65,38. चित्रलिखित इव तस्थौ Z. d. d. m. G. 14,573,24. Hit. 42,9. लिखित n. (लिखिता f. H. 484, Sch.) *Schrift, Schriftstück, ein geschriebenes Document* AK. 2,8,4, 16. नक्षत्रमतिनिपुणोऽपि पुरुषो नियतिलिखिते लेखामतिक्रमितुम् Daçak. 83,7. 8. Jâñ. 2,20. 22. °स्थितये Râga-Tar. 3,385. 4,138. °दूषक 6,29. अन्योऽन्यलिखितं कस्ते गृहीत्वा Kathâs. 24,174. विद्यते यावयोरत्र स्वकृत्तलिखितं मिथः 189. — 3) *glätten, poliren* Mâlav. P. 106,50. 52. 60. 64. 107,1. 9. — 4) *coire* MBh. 13,2456 nach Nîlak., was schwerlich richtig ist.

— caus. 1) लेखयति *a) einritzen —, reissen —, schreiben —, aufschreiben lassen:* लेखे Çikân. Ça. 17,10,7. क्वाप्यापि पत्रेलिखितम् *was man hat schreiben lassen* M. 8,168. Jâñ. 2,7. यो हरिवंशं लेखयति Hariv. 6. शासनम् Kathâs. 124,62. Râga-Tar. 3,190. Weber, Kṛishṇaj. 283. लेखयो चक्रतुर्द्रव्यम् *liessen verzeichnen, aufschreiben* R. Gorr. 2,2,6. *malen lassen* Kathâs. 55,70. — *b*) = simpl. *ritzen* Suçr. 2,334,4. *schreiben* Jâñ. 2,86. चित्रमप्यद्य लेखिताः (प्रतिमाः) *gemalt* Weber, Kṛishṇaj. 283. — 2) लिखापयति *schreiben lassen* Verz. d. B. H. No. 53, Z. 4.

— desid. लिलिखिषति und लिलेखिषति P. 1,2,26. Vop. 19,16.

— घञ् *abschaben:* मलम् AV. 14,2,68.

— अभि *einritzen, reissen, zeichnen, schreiben, malen* Paṇcar. 3,13, 20. Varâh. Bṛh. S. 48,29. धात्राभिलिखितान्याहुः सर्वभूतानि कर्मणा MBh. 11,171. Jâñ. 2,93. Mṛicch. 140,18. Vikr. 25,17. Kathâs. 17,124. 42,90. 55,37. 101,121. Vâsavad. 239,2. Dhûrtas. 91,5. अभिलिखित *gemalt* Hariv. 9991. Uttarar. 6,9 (9,13). — caus. *verzeichnen —, schreiben lassen* Jâñ. 1,318. *malen lassen* Kathâs. 51,137. 53,76. अभिलेखित n. *ein schriftliches Document* Jâñ. 2,149.

— अव *anritzen, wund machen* Suçr. 1,33,18. 2,63,16. दारुण 336,7. — Vgl. अवलेख fg.

— आ 1) *anritzen, mit einem Riss bezeichnen* Çat. Br. 7,4,1,43. 8, 7,2,17. सञ्चालिखित 10,2,6,8. Liṭ. 10,13,17. Kauç. 137. *ritzen, kratzen* Sin. D. 103,22. अङ्गाभ्यामालिखन्पर्याङ्कं हिरदो यथा R. 4,9,62. आलिखन्त इवाकाशम् so v. a. *gleichsam an das Himmelszelt streifend* MBh.

4,1233. Harîv. 8971. R. 6,79,40. विन्ध्यमालिखसमिवाम्बरम् 7,31,18. मालिप्य विलिपति *kratzend, scharrend* P. 6,1,142, Sch. — 2) *einritzen, reissen, zeichnen, aufschreiben, malen:* रेखा) पादालिखिता Varâh. Bṛh. S. 33,103. मण्डलमालिप्य 48,24. Golâdhj. Grahaṇav. 17. Weber, Rimat. Up. 307. fg. Daçak. 92,2. Paṅkar. 3,13,30. Schol. zu Çiç. Gṛhj. 1,25. मालिखितमिव मतौ Varâh. Bṛh. S. S. 6, Z. 11. चित्रे ऽपि मालिखत्यश्वान् विलि° MBh. 3,16670) Siv. 2,13. प्रतिमा: MBh. 6,76. Harîv. 9983. R. 1,5,12 (14 Gorr.). Racs. 19,19. Mṛcch. 103. Milav. 23. Ratnâv. 31,132. fgg. 55,18. fg. 46. 67. fgg. मालिखित इव (unbeweglich) *wie gemalt* Çiç. 4,11. fg. तस्यावालिखितो यथा Ratnâv. 45,264. — Vgl. मालिखत्, मालेखन, मालेख्य (auch Mṛcch. 70), व्यालिखित. — caus. *malen lassen* Ratnâv. 55,68. fg.

— व्या 1) *ritzen, streifen an:* सं व्यालिखमिव विभाति स मन्दराद्रिः Kir. 5,30. — 2) *schreiben* Verz. d. Oxf. H. 172,b,22.

— समा *reissen, zeichnen:* ग्रहान्सनक्षत्रगणान्समालिखेत् Varâh. Bṛh. S. 24,6. Ratnâv. 37,9. *schreiben:* वर्णान् Sarvadarçanas. 170,16. Verz. d. Oxf. H. 90,a,22. 98,a,2. Weber, Rimat. Up. 310.

— उद् 1) *aufritzen, furchen, eine Linie ziehen* Çat. Bṛ. 2,1,4,2. 4, 2,13. वेद्याम् Kâṭh. Çr. 2,6,26. भूमौ 7,3,32. Sûtra. 1,6,16. medic. *ritzen* 2,334,20. Vâgbh. 8,13. चरणेनोल्लिखन्मक्षीम् *kratzend* MBh. 3,374. बुरोवानेनुल्लिखन् Buâc. P. 10,36,9. लाङ्गलोल्लिखितावनि Ratnâv. 33,31. वल्मीकोल्लिखितपोनास *aufgerissen, aufgeschlitzt* R. 5,14,16. उल्लिखतो सुतोत्पाभिर्दंष्ट्राभिरितरेतरम् 6,32,33. वल्मीकशिखराणि मृङ्गाग्रघटनैरुल्लिखन् Paṅkat. od. orn. 5,3. मृङ्गाभ्यां तदुदरमुल्लिख्य Paṅkat. 91,3. विषाणोल्लिखितस्कन्ध *geritzt, gerieben* Spr. 932. मन्देशबुप्रकारैः शिरं उल्लिखिष्यामि (wohl so zu lesen st. उल्लिखयिष्यामि; °लिखामि die Hamb. Bdschrr.) *picken auf* Paṅkat. 146,13. एष घोरो यक्षः स्वातिमुल्लिखन्खे गभास्तिभिः *ritzend so v. a. sich reibend an, berührend* Harîv. 4257. खमिवोल्लिखन् *am Himmelszelt sich gleichsam reibend d. i. bis dahin reichend* R. 6,15,23. MBh. 3,2453 (wo खमुल्लि° st. समु° mit N. 12,39 zu lesen ist). शैलमुल्लिखसमिवाम्बरम् R. 4,43,38. 5,3,26. 7,18. 17,22. गगनतलमिवोल्लिखन्तम् Varâh. Bṛh. S. 12,6. उल्लिखित *n. Furche, Streifen:* विषाणोल्लिखिताङ्कित MBh. 6,2569. 4852. लाङ्गलोल्लिखित *n.* Harîv. 5778. — 2) *einritzen:* लेखाम् Gobh. 1,1,9. Âçv. Gṛhj. 1,3,1. Çâṅkh. 2,6,9. Varâh. Bṛh. S. 53,102. लतणम् Sâṅkh. Br. 5,2. — 3) *ausschnitzeln, meisseln* Kumâras. 5,55. स (विश्वकर्मा) स्तम्भं वीक्ष्य सुश्रेणीं तत्र गौरीं समालिखत् । उपकोशे ऽपि शस्त्रेण क्रोडपेवोल्लिलेख ताम् ॥ Kathâs. 37,9. 12. उल्लिखित = उत्कीर्ण H. an. 4,100. Med. s. 188. — 4) *zu einem Bilde gestalten* so v. a. *zur Anschauung bringen:* तत्स्यात्प्रवृत्तिज्ञानं (*Erkenntniss der Aussenwelt*) पत्रोलादिकमुल्लिखेत् Sarvadarçanas. 19,10. पनुल्लिखित 105,9. fg. — 5) *glatt machen, schleifen, poliren:* संस्कारोल्लिखितो मणिः Çiç. 133. Racs. 6,22. उल्लिखित = तनूकृत H. an. Med. — 6) *durchsieben, durchflechten:* मत्स्योल्लिखितमूर्धज Harîv. 12086. — 7) ein musikalisches Instrument *schlagen:* वाणम् Lâṭj. 4,1,8. 10. — 8) *aufreissen* so v. a. *aufstören:* कपम् Sûtra. 2,480,10. — Vgl. उल्लेख fgg. — caus. = simpl. 8): धातून्मूलान्वा देहस्य विशेष्योल्लेखयेच्च पत् । लेखनं तन्यथा तोक्षं नीरमुक्तं वचा यवः Çârṅg. Saṅh. 1,4,10.

— प्रोद् *ritzen, Striche ziehen in:* प्रोल्लिखन्ती धरित्रीम् Spr. 1427.

einritzen: लतणम् Gṛhjâsaṅgr. 1,48. 51.

— समुद् 1) *rings umfurchen und ausheben, ausstechen:* पद्मं Çat. Bṛ. 3,3,4,6. *ritzen, furchen:* तुषारसंघातशिलाः खुराग्रैः समुल्लिखन् — वकुभान् Kumâras. 1,57. उत्तरद्वारम् — समुल्लिखद्दिवाम्बरम् *das Himmelszelt gleichsam ritzend, sich daran reibend, es berührend* R. 5,9,25. — 2) *aufschreiben, niederschreiben, aufführen* (in einem Buche): श्लोकिकत्वादमरः स्वकोषे न यानि नामानि समुल्लिलेख ॥ Trik. 1,1,2. — समुल्लिखद्भिः MBh. 3,2453 fehlerhaft für खमुल्लि°.

— उप *umreissen, umgrenzen:* वेदीं लतणेनोपलिप्य MBh. 12,1454. — Vgl. उपलेख.

— निस् *ätzen, wund machen* Suçr. 1,36,16. 2,7,11. 344,4. — Vgl. निर्लेखन.

— विनिस् *schröpfen* Suçr. 2,389,6.

— परि *rings umreissen, mit einer Furche —, mit einem Striche umziehen* TS. 5,1,8,4. Çat. Bṛ. 3,3,4,5. यवरम् 6,4,3. 5,2,26. 4,3. यज्ञस्य पदम् 6,3,3,23. Kâṭh. Çr. 6,2,3. गार्हपत्यस्य परिलिखति *zieht einen Kreis um* 16,7,29. Kauç. 25. fg. परिलिखितं रक्षः *in einen Kreis eingeschlossen* TS. 1,2,5,1. *rings bekratzen, — glatt machen:* पर्वतानानयन्ति स्म नखैः परिलिखन्ति च R. 5,95,23. — Vgl. परिलेख fg. und परिलिखन n. *das Glattmachen, Poliren* Mân. P. 106,65.

— प्र 1) *ritzen, Striche ziehen in:* न चैव प्रलिखेद्भूमिम् M. 4,55. — 2) med. *sich kämmen* (Comm. *zeichnen*): या प्रलिखते तस्यै क्षतिरुपमारो जायते TS. 2,5,1,7. act.: कङ्कतैः Pâr. Gṛhj. 2,14. abcol. Kauç. 76.

— प्रति *zurückschreiben, in einem Schreiben antworten:* इदमिदानीमनेन प्रतिलिखितम् Milav. 8,16.

— वि, ved. infin. विलिखम् (ईषो विलिखः) P. 3,4,13, Sch. 1) *ritzen, zerkratzen, aufreissen, wund machen* Lâṭj. 5,1,2. 7,10. Schol. zu Kâṭh. Çr. 217,23. लाङ्गलाग्रैर्विलिखति वसुधाम् Spr. 3311. वेदिप्रान्तान्खुरविलिखितात् ad Çiç. 78. पादेन हैमं विलिलेख पीठम् Racs. 6,15. विलिखन्तं वसुधराम् MBh. 3,375. वराहैः 11953. R. Gorr. 2,80,18. 7,9,17. Suçr. 1,103,13. 2,144,21. Kumâras. 2,33. Varâh. Bṛh. S. 51,18. निर्भिन्नौ च गात्राणि विलिखतौ च सायकैः Harîv. 13285. Suçr. 1,60,13. नखविलिखितशरीरावयवा Paṅkat. 46,2. मृङ्गैर्गगनं विलिखमिव *den Himmel gleichsam ritzend, sich an ihm reibend d. i. ihn berührend, bis dahin reichend* Harîv. 12842. मृङ्गैर्विलिखन्तमिवाम्बरम् R. 4,41,40. यमु यस्य हृदयं व्येव लिखेत् so v. a. *wenn es ihm ärgerlich ist* Çat. Bṛ. 12,4,3,1. 4,2. — 2) *einritzen, reissen, zeichnen, schreiben, aufschreiben, malen:* कलाप्यवृत्तं विलिप्य Golâdhj. Sphuṭâs. 10. 12. Weber, Rimat. Up. 308. 310. fg. Paṅkar. 3,12,3. 13,28. 4,5,38. Verz. d. Oxf. H. 103,b,24. 32. fg. 258,a,8. 263,b, No. 635. Sarvadarçanas. 170,18. चित्रे ऽपि विलिखत्यश्वान् MBh. 3,16670. Gîr. 4,6. Buâc. P. 10,62,21. — Vgl. विलिखन, विलेख fgg., अविलिख. — caus. *einritzen —, schreiben lassen:* विलेखयेत् Weber, Kṛishṇaj. 270. विलिखापयेत् 283.

— सम् 1) *aufritzen, schröpfen* Suçr. 2,123,11. — 2) *einritzen, schreiben* Weber, Rimat. Up. 310. Paṅkar. 3,13,29. Verz. d. Oxf. H. 97,b,21. — 3) ein musikalisches Instrument *schlagen:* वाणम् Lâṭj. 4,1,9; vgl. unter उद् 7). — 4) मालिखित ein Spielausdruck: यत्रैषं वा मालिखितमेषमुत संरुधम् AV. 7,50,8.

लिखँ (von लिख्) nom. sg. P. 3,1,135.

लिखन (wie eben) n. 1) *das Ritzen, Kratzen:* तितिनख° *das Kratzen in der Erde mit den Nägeln* Spr. 4462. नलयन्थीनां तनूलिखनम् Sin. D. 123,5; vgl. 103,23. — 2) *das Einritzen, Schreiben* ÇKDa. nach Sinas. zu AK. 2,8,4,16. प्रसिद्धमस्य° Mikk. P. 51,22. Saṁs. K. 33,*a*,6. Pañkan. 1,13,14. Verz. d. Oxf. H. 43,*b*,3. वेदात्तेधित्यादिश्लोकलिखनं दृश्यते Sin. D. 129,7. 8. Brahmavaiv. P. Çaivadharmakarmakh. 15 nach ÇKDa. — Vgl. चित्र° und लेखन.

लिखिखिल्ला (?) m. *Pfau* H. ç. 187.

लिखित 1) adj. und n. s. u. लिख्. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi, der auch als Verfasser eines Gesetzbuches fast immer in Verbindung mit Çaṅkha genannt wird, MBh. 2,292. 13,3220. 6263. Colebr. Misc. Ess. I, 314. Ind. St. 1,20. 232. 234. 240. 467. Verz. d. B. H. No. 1017. Verz. d. Oxf. H. 34,*a*,10. 266,*b*,10. 270,*b*,30. 279,*a*,38. *b*,12. 356,*a*,31. Gild. Bibl. 432. Nach MBh. 12, 668. fgg. wurden dem Likhita, weil er in der Einsiedelei seines Bruders Çaṅkha ohne dessen Erlaubniss Früchte gebrochen und gegessen hatte, vom Könige Sudjumna beide Hände abgehauen. Daher ist शङ्खलिखित so v. a. *ein strenge Gerechtigkeit übender Fürst* 4252. शङ्खलिखिता वृत्तिः so v. a. *das Ueben strenger Gerechtigkeit* 4756. शङ्खलिखितप्रिय *ein Freund strenger Gerechtigkeit* 4808.

लिप्या m. *Nits, das Ei einer Laus* Çaṅk. Saṁs. 1,7,10. लिप्या f. dass.; als Maass: ज्वालान्तरगते भानौ यद्याणुर्दृश्यते (sic) रजः। तेषत्तुर्भिर्भवेल्लिप्या लिप्याष्टकैश्च सर्षपः॥ Çabdak. im ÇKDa. — Vgl. लिता.

लिङ्, लिँङ्क्ति (गतौ) Dhâtup. 5,34. — Vgl. लख्, लङ्.

लिगु Uṇâdis. 1,37. n. = चित्त Varadâr. bei Uéval. m. = मूर्ख Schol. zu Uṇ. 1,36. = भूप्रदेश und मृग Nânârthâravam. im ÇKDa. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99 und गर्गादि zu 105. — Vgl. निगु und अलिगु.

लिङ् Ber. *der Personalendungen des Potentialis und Precativs* P. 3,4,103. 7,2,79 u. s. w. लिङर्थवाद् m. Titel einer grammatischen Abhandlung Hall 60.

लिङ्गवाराकतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,2.

लिङ्ग्, लिँङ्क्ति (गतौ) Dhâtup. 5,48. आलिङ्क्ति, °ते und आलिङ्ग्यति s. u. आलिङ्ग्. MBh. 12,6089 erscheint लिङ्ग्य in der Bed. von आलिङ्ग्य *umfassend*. — Vgl. लिङ्ग्य्.

लिङ्ग (wohl von लग् wie लत्त, लत्मन्, लत्मी) n. am Ende eines adj. comp. f. आ Nir. 2,8. MBh. 3,13089. 7,2141. Pat. bei Gold. Mân. 156. aber विष्णुलिङ्गी (s. d.). 1) *Kennzeichen, Abzeichen, Merkmal, das Charakteristische*, τεκμήριον; daher *Stichwort* und dergl. AK. 2, 4, 2, 26. Taik. 3,3,69. H. an. 2,47. Med. g. 21. Verz. d. Oxf. H. 184,*b*,6. 312,*a*, No. 745, Z. 17. Maitrâjup. 6,10. 31. Çvetâçv. Up. 6,9. बाह्यैर्विभावयेल्लिङ्गैर्भावमात्मगतं नृणाम् M. 8,25. 252. fg. (*Grenzzeichen*). Bhâg. 14,21. येन लिङ्गेन यो देशो युक्तः समुपलक्ष्यते। तेनैव नाम्ना तं देशं वाच्यमाकूर्मनीषिणः॥ MBh. 1,231. 2,2646. 3,2927. Hariv. 4942. देवानां यानि लिङ्गानि MBh. 3,2204. देवलिङ्गानि R. 3,63,21. राक्षलिङ्गानि MBh. 1,2878. Bâlar. P. 1,16,4. क्षत्रलिङ्गानि M. 1,30. MBh. 1,29. लिङ्गैर्मुदः संवृतविक्रियास्ते Raghu. 7,27. दोषदर्शिलिङ्गदर्शिन् 14,71. न लिङ्गं धर्मकारणम् Spr. 1225. विराग° Râǵa-Tar. 3,500. Bhâg. P. 2,5,20. Mârk. P. 15,45. Sin. D. 17,11. इङ्गिताकारलिङ्गाभ्याम् Spr. 4934. Kap. 1,2,17. Tattvas. 22. लिङ्गदर्शने त्रायमाणं ज्ञानम् 48. Tarkas. 37. Siddhânt. 5. Sûrya. 1,93,9. 127,16. स्व° 2,307,1. वायुलिङ्गं चेन्द्रलिङ्गं वाय्वग्नेये मते Nir. 1,17. °स्थ obend. Âçv. Çr. 1,5,32. 5,1,7. 4,3. विश्व° *das Kennwort* विश्व *enthaltend* Nir. 12,40. घ° obend. Kauç. 1. 28. Schol. zu Kâty. Çr. 24,4,10. 23. °वाक्यगोचरिरोधे लिङ्गं बलवत् 26,12. 14. अलिङ्गयकृणे गौः सर्वत्र *wenn keine specielle Bestimmung gegeben ist* Kâty. Çr. 15,2,13. तल्लिङ्ग adj. Sûrya. 1,310,7. Sin. D. 299. Das einfache लिङ्गानाम् st. des adj. तल्लिङ्गानाम् Kâty. Çr. 22,3,19. इन्द्रलिङ्गा मन्त्राः so v. a. *an Indra gerichtet* Vaitân. Bṛh. S. 60,11. मरुत्स्तेलिङ्गैः 46,16. तत्सलिङ्गाभिराशीर्भिः *an ihn gerichtet* MBh. 7,2141. so v. a. *Andeutung:* मुतिलिङ्गवाक्याद्° Sarvadarçanas. 122,7. 13. fg. 159,14. — 2) *ein angemaasstes, Einem nicht zukommendes Abzeichen, ein angenommenes äusseres Zeichen, durch welches man Andere zu täuschen beabsichtigt:* न शक्यमिदं मूढेन लिङ्गमाश्रित्य वर्तितुम् MBh. 13,449; vgl. कृत्रिमा कृतलिङ्गस्थः R. 6,82,84. कृत्रलिङ्गप्रविष्टानां पाण्डवानाम् MBh. 4,1000. लिङ्गान्तरे वर्तमानाः (दस्यवः) 12,2439 und लिङ्गवृत्ति. — 3) *Beweismittel*, τεκμήριον; = साधन, व्याप्य Taik. 3,2,11. Halâs. 5,86. = अनुमान H. an. Med. Kap. 2,1,14. 18. वेदलिङ्गात् *weil es aus dem Veda folgt* 4,2,11. 2,2,4. Gaim. 1,3,28. Kâty. Çr. 1,8,37. 9,4,26. Kâm. Nîtis. 1, 29. fg. Kull. zu M. 3,152. Schol. zu P. 4,1,15. 6,3,35. Vârtt. 4. Sarvadarçanas. 73,6. — 4) *Geschlechtszeichen, Geschlechtsglied* AK. 3, 4, 2, 26. 24, 75. Taik. 2,6,23. 3,3,69. H. 610. H. an. Med. M. 5,136. Jâdj. 2,226. 3,223. Hariv. 7593. Vaitân. Bṛh. S. 68,7. 90. Bhâg. P. 3,31,3. Verz. d. B. H. No. 975. Mârk. P. 39,30. प्रवृद्ध° Sûrya. 2,396,3. तस्मै देवतेगयलिङ्गा प्रादुर्बभूव Nir. 2, ६. — 5) *das grammatische Geschlecht* Taik. 3,3,69. VS. Prât. 4, 170. P. 2,3,46. 4,26. AK. 3,6,3,42. H. 19. °विपर्यय Weber, Râmat. Up. 336. Verz. d. Oxf. H. 191,*b*,28. 192,*a*,40. *b*, No. 437. — 6) *das göttlich verehrte Geschlechtsglied* Çiva's (Rudra's), Çiva *in der Form eines Phallus* Taik. 3,3,69. H. an. Med. MBh. 10,780. 782. 13,515. fgg. 7511. fgg. लिङ्गाध्यक्ष 1191. ऊर्ध्व° 12,1669. 13,1160. R. 7,31,42. fg. Spr. 3063. Vaitân. Bṛh. S. 46,3. 57,4. 58,53. 55. 59,7. 60,5. Kathâs. 51,98. 69,155. Râǵa-Tar. 1,194. 2,130. 3,439. fg. Verz. d. B. H. No. 1309. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*. 44,*b*,5. 17. fg. 21. 32. fg. 42,*a*,11. 43,*a*,1. 45,*a*,27. fg. 54,*a*,15. 63,*b*,30. 75,*b*,14. fg. 76,*a*,6. 12. 85,*b*,3. 8. Muir, ST. 4,325. fgg. L.A. (III) 87,3. Wilson, Sel. Works I, 223. fg. Burn. Intr. 538. Sarvadarçanas. 102,12. शिव° Vaitân. Bṛh. S. 50,2. Kathâs. 59,81. 69,153. Râǵa-Tar. 2,128. 3,114. घर्षा° 2,161. Kathâs. 51,95. सहस्रलिङ्गी f. *tausend* Liṅga Râǵa-Tar. 2,129. — 7) *Götterbild* Vaitân. Bṛh. S. in der Unterschr. nach 46,17. — 8) *der feine Körper* (vgl. लिङ्गदेह, लिङ्गशरीर, सूक्ष्मशरीर), *das Urbild des groben, sichtbaren Körpers, das durch den Tod nicht vernichtet wird*, Kap. 3,9. 16. Siddhânt. 20. 41. fg. 52. 55. Bîlar. 12. Vedântas. (Allah.) No. 39. Nîlak. 36.63. Bhâg. P. 3,19,28. 4,12,18. 20. 12. 29, 32. 5,19,28. — 9) = प्रातिपदिक *Nominalthema* Durgâd. zu Vop. 1,12 (abgekürzt लि bei Vop.). Vgl. Ernst Kuhn, Kaccâyanappakaranam Specimen S. 20. — 10) = लिङ्गपुराण Bhâg. P. 12, 13, 6. Verz. d. Oxf. H. 65, *a*, 40. fg. 79, *b*, No. 130, Z. 1 v. u. — 11) = व्यक्त सांख्योदितम् Taik. 3,3,69. = सांख्योक्तप्रकृति H. an. Med. = प्रधान

Liṅga-P. bei Mudr, ST. 4,325. °मात्र = बुद्धि Jogas. 2,19. अ° = अव्यक्त ebend. Kap. 1,125 erklärt der Comm.: लिङ्गं स्वकारणे लयं गच्छतीति, 127.: लयं गच्छतीति लिङ्गं कार्यम्; vgl. Gaupap. zu Sāṁkhjak. 10. 40.° — Vgl. अ° (adj. *keine Merkmale habend* Bhāg. P. 1,6,26. अलिङ्गत्व n. *das Fehlen aller Kennzeichen* MBh. 12,7181), अविलिङ्ग, कु°, त्रि°, त्रिलिङ्गी, देवलिङ्ग, निर्लिङ्ग, पुं°, प्रतिलिङ्गम्, बाणलिङ्ग, भिन्न°, भू°, यथालिङ्गम्, योनिलिङ्ग, राज्ञ°, विष्णुलिङ्गी, सीमलिङ्ग, सीमा°, स्त्री°.

लिङ्गक 1) am Ende eines adj. comp. *a*) = लिङ्ग 1): तल्लिङ्गक Wilson, Sāṁkhjak. S. 23. Sarvadarçanas. 8, 13. fg. — *b*) = लिङ्ग 5): भेद्य° AK. 3, 4, 25, 190. — 2) m. *Feronia elephantum Corr.* (*Erectionen bewirkend*; vgl. लिङ्गवर्धन) Çabdak. in Verz. d. Oxf. H. 193,*b*, No. 453, Z. 3 v. u. — Vgl. कु°, त्रि°.

लिङ्गा f. *eine best. Pflanze*, = लिङ्गिनी Rāǵān. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

लिङ्गतोभद्र (लिङ्गतस्, adv. von लिङ्ग, + भद्र) n. Bez. *eines best. Zauberkreises* Verz. d. Oxf. H. 284,*a*, 31. Verz. d. B. H. No. 922.

लिङ्गत्व (von लिङ्ग) n. nom. abstr. von लिङ्ग 1) Bhāg. P. 3,20,33.

लिङ्गदेह m. n. = लिङ्ग 8) Bālar. 16. Verz. d. B. H. No. 1365.

लिङ्गद्वादशव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 44,*b*, 38.

लिङ्गधर adj. *Abzeichen tragend*: मिथ्या° *falsche Abzeichen tragend, nicht das seiend, was der Schein besagt* Verz. d. Oxf. H. 58,*b*, 34. धर्मात्परिप्लुतो रामो धर्मलिङ्गधरश्च सन् R. 4,16,20. मुक्तलिङ्गधर *den blossen Anschein eines Freundes habend* Bhāg. P. 7,5,38.

लिङ्गधारण n. *das Ansichtragen der Abzeichen* (an denen man erkannt wird) MBh. 3,2214.

लिङ्गधारिणी f. Bez. der Dākshājaṇī in Naimisha Verz. d. Oxf. H. 39,*a*, 32.

लिङ्गनाश m. 1) *das Verschwinden —, Zugrundegehen der charakteristischen Merkmale*: वङ्क्षेपधा योनिगतस्य मूर्तिर्न दृश्यते नैव च लिङ्गनाशः Çvetāçv. Up. 1,13. = मूत्पदेकस्य विनाशः Çaṁk. — 2) *eine best. Augenkrankheit, die in der Linse ihren Sitz hat*, Wise 294. Suçr. 2,316,14.18. 343,9. Çāṅg. Saṁh. 1,7,23. Verz. d. Oxf. H. 308,*a*, 32. fg.

लिङ्गपीठ n. *Piedestal eines* Liṅga Rāǵa-Tar. 2,136.

लिङ्गपुराण n. Titel eines Purāṇa Wilson in VP. XLII. fgg. Verz. d. Oxf. H. 44,*a*, No. 101. 101,*b*, 46. 279,*a*, 39. 341,*a*, 40.

लिङ्गप्रतिष्ठाविधि m. *Regeln über die Errichtung eines* Liṅga Verz. d. Oxf. H. 45,*a*, 28. वैखानसोक्त Verz. d. B. H. No. 150. — Vgl. लिङ्गार्चाप्रतिष्ठाविधि.

लिङ्गमाहात्म्य n. *die Majestät der* Liṅga, Titel eines Abschnittes in verschiedenen Purāṇa Verz. d. Oxf. H. 44,*a*, 32. 45,*a*, 27. fg. 75,*b*, 15. Mack. Coll. I, 81.

लिङ्गमूर्ति adj. *die Form des Phallus habend*: Çiva Verz. d. Oxf. H. 74,*a*, 2.

लिङ्गय् (von लिङ्ग), °यति (चित्रीकरणे) Dhātup. 33,65. ein Wort *nach den verschiedenen Geschlechtern moviren*: लिङ्गयति शब्दं स्त्रीनपुंसकैः शाब्दिकः । चित्रं करोतीत्यर्थः Durgās. im ÇKDa. — Vgl. लिङ् und घालिङ्.

— उद् *aus Merkmalen erschliessen*: उच्छिङ्गितशास्त्रवेङ्गित Kir. 14,2.

लिङ्गलेप m. Bez. *einer best. Krankheit* Verz. d. B. H. No. 963.

लिङ्गवत् (von लिङ्ग) adj. 1) *Merkmale besitzend* Bhāg. P. 7,2,34. — 2) *verschiedene Geschlechter habend* Maitrāyaṇ. 6,8. — 3) *mit einem* Liṅga *versehen*, Bez. einer best. Çiva'itischen Secte, Wilson, Sel. Works I, 224. 230. 332.

लिङ्गवर्धन 1) adj. *Erectionen bewirkend*. — 2) m. *Feronia elephantum Corr.* Çabdak. in Verz. d. Oxf. H. 193,*b*, 2 v. u.

लिङ्गवर्धिन् 1) adj. *Erectionen bewirkend*. — 2) f. *Achyranthes aspera* Çabdak. im ÇKDa.

लिङ्गविशेषविधि m. *Regeln über die verschiedenen grammatischen Geschlechter*, Titel einer dem Vararuki zugeschriebenen Abhandlung, Verz. d. Oxf. H. 167,*a*, No. 371.

लिङ्गवृत्ति adj. *den Lebensunterhalt durch falsche äussere Abzeichen gewinnend, heuchlerisch* AK. 2,7,53. H. 856. Hall. 2,250.

लिङ्गशरीर n. = लिङ्गदेह Colebr. Misc. Ess. I, 245. 372. 418. Vedānt. (Allah.) No. 44.

लिङ्गशास्त्र n. *ein Lehrbuch über das grammatische Geschlecht* Mān. Anh. 8.

लिङ्गसंभूता f. *eine best. Pflanze*, = लिङ्गा, लिङ्गिनी Rāǵān. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

लिङ्गस्थ M. 8,65 nach Kull. = ब्रह्मचारिन्.

लिङ्गकर्णी f. = मूर्वा Ratnam. 32.

लिङ्गाग्र n. *glans penis* Taik. 3,3,135.

लिङ्गानुशासन n. *die Lehre vom grammatischen Geschlecht* H. 19. Verz. d. Oxf. H. 182,*b*, 4 v. u.

लिङ्गार्चनतत्त्व n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 101,*b*, 46; vgl. u. मुक्तवाप्र 2).

लिङ्गार्चाप्रतिष्ठाविधि m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 151. — Vgl. लिङ्गप्रतिष्ठाविधि.

लिङ्गालिका f. *eine Mansart* Hir. 217.

लिङ्गिन् 1) adj. *mit einem Merkmale versehen, Träger eines Merkmals, derjenige, welchen das Kennwort bezeichnet*, Kauç. 25. Sāṁkhjak. 5. MBh. 12,11353. Comm. zu Nyāyas. 1,5. Sin. D. 122,11. am Ende eines comp. *die Merkmale —, das Charakteristische von — besitzend*: कालमार्याश्च° Bhāg. P. 3,5,37. मार्जार° M. 4,197. उन्मत्त° *das Ansehen eines Verrückten habend* Bhāg. P. 6,15,11. — 2) adj. *falsche —, ihm nicht zukommende Abzeichen tragend, Heuchler* Sin. D. 46,1. am Ende eines comp. *nur den Schein von — habend, Jmd spielend*: ब्रह्मान्द्विजलिङ्गिनः M. 9, 224. धनार्यानार्यलिङ्गिनः 260. तपस्वि° Kām. Nītis. 12,26. ज्ञानि° Kathās. 19,83. व्रति° Rāǵa-Tar. 4,518. सुर° Bhāg. P. 3, 15,33. राज्ञ्या ब्रह्मलिङ्गिनः 10,72,17. — 3) adj. *mit Recht seine Abzeichen tragend, dessen äussere Erscheinung mit dem inneren Wesen übereinstimmt*; m. *ein Brahmane in einem best. Lebensstadium*, insbes. *ein Asket* Hall. 2,189. अलिङ्गी लिङ्गिवेषेण यो वृत्तिमुपजीवति । स लिङ्गिनां हरत्येनः M. 4,200. 8,407. MBh. 12,2335 (सर्वलिङ्ग° ed. Bomb.). 2441. 13,1531. fg. Spr. 3306 (स्त्रीलिङ्गिविप्रवालेषु Bühler). वर्णिनां लिङ्गिनां चैव 303. Kām. Nītis. 2,33. 12,36. Bharata bei Çaṁk. zu Çik. 32,3. Daçar. 2,62. f. लिङ्गिनी 27. 59. Sin. D. 173,16. Prasannar. 6,*a*, 7. Suçr. 2,148,7. — 4) adj.

mit einem Liṅga *versehen;* m. pl. N. einer Çiva'itischen Secte Colebr. Misc. Ess. I, 198. — 5) adj. *mit einem feinen Körper versehen* Bhâg. P. 4, 29, 65. — 6) adj. Beiw. Parameçvara's *als Trägers des* लिङ्ग = प्रधान Liṅga-P. bei Muir, Sr. 4, 325. — 7) adj. *das worin sich Etwas auflöst,* subst. *die Ursache* Schol. zu Kap. 1, 127; vgl. u. लिङ्ग 11). — 8) m. *Elephant* Gal. im ÇKDa. — 9) f. *eine best. Pflanze,* = पञ्चगुरिया im Hindi Râgân. im ÇKDa.

लिङ्गोपस्तलेङ्गिकाननिरासस्तुत्य m. Titel einer Abhandlung Hall 53.

लिङ्गोपस्तलेङ्गिकाननविचार m. desgl. ebend. 52.

लिच्छवि N. pr. eines fürstlichen Geschlechts LIA. I, 138, N. 1. 820. fg. II, 80. 960. Burn. Intr. 530. Lalit. 137. 424. Hiouen-thsang I, 396. Wilson, Sel. Works II, 344. Schiefner, Lebensb. 233 (3). 268 (38). — Vgl. निच्छवि, निच्छवि.

लिट्, लिटयति (अल्पकुत्सनयोः, अल्पीभावे कुत्सायां च) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3, 1, 27.

लिन्दु Kâṭhân. Up. 2, 14 nach Çâṅk. = पिच्छल d. i. पिच्छिल *schlüpfrig, schlüpfrig.*

लिप् (= älterem रिप्, लिर्म्पति, °ते (उपदेहे, लेपे Vop.) Dhâtup. 28, 139. P. 7, 1, 59. लिलेप, लेप्स्यति Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. aor. अलिपत्, अलिपत und अलिप्त P. 3, 1, 53. fg. Vop. 8, 91. 13, 1. 1) *Etwas* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *beschmieren, bestreichen; besudeln, verunreinigen:* ता (ओषधीः) ज्ञाताः पितरौ विषेणालिम्पन् TBr. 2, 1, 4, 1. सर्पिषा Kauç. 25. Kâṭh. 25, 4. Çâṅkh. Ça. 7, 8, 12. Bâ. 13, 9. चन्दनैः Jâân. 3, 53. Spr. 1778. 2670. Bhâg. P. 10, 29, 7. लिप्रमङ्गानि लिम्पस्व पायसेन MBh. 13, 7425. Bhatt. 19, 11. लिलेप 14, 94. Harîv. 7041. अलिपत् Kathâs. 24, 93. 41, 50. तच्चूर्णं तस्य दुर्वृद्धेरोष्ठौ ष्मश्रूणि चालिपत् 61, 48. चन्दनेनालेपि Schol. zu Naish. 22, 36. न मां कर्माणि लिम्पन्ति Bhag. 4, 14. न कर्मणा लिप्यते पापकेन TBr. 3, 12, 9, 8. Çat. Bâ. 14, 7, 1, 28. Kâṭhân. Up. 5, 10, 10. Kâṭhop. 5, 11. Nir. 12, 3. M. 1, 104. 3, 71. 4, 201. 9, 243. 10, 104. fg. Bhag. 5, 10. 13, 31. MBh. 12, 11667. fg. (लिप्यति). Spr. 522. 2069. Kâm. Nîtis. 6, 5. Bhâg. P. 4, 26, 7. 6, 13, 9. बुद्धिर्यस्य न लिप्यते Bhag. 18, 17. वामदेवो न लिप्तवान् *verunreinigte sich nicht* M. 10, 105. st. des acc. ausnahmsweise loc.: तेन लिम्पत्स्य घाननकुचेषु Bhâg. P. 10, 21, 17. लिप्त *beschmiert, bestrichen; besudelt, verunreinigt* AK. 3, 2, 39. H. 1483. an. 2, 191. Med. t. 32. घृत° Çat. Bâ. 1, 3, 1, 24. Kâtj. Ça. 4, 4, 10. 10, 8, 12. M. 4, 36. MBh. 8, 2059. R. 2, 9, 43 (8, 48 Gorr.). 78, 6. 5, 10, 20. 19, 16. Varâh. Bṛh. S. 55, 7. 39, 12. 71, 3. Kathâs. 4, 48. 69. 9, 48. 12, 169. 18, 244. Râga-Tar. 4, 195. Bhâg. P. 6, 1, 61. 10, 65, 20. 75, 15. Hit. 21, 14. Verz. in LA. (III) 4, 7. Sân. D. 16, 5. Verz. d. Oxf. H. 152, *a*, N. 3. *mit Gift bestrichen, vergiftet* (Pfeil u. s. w.) H. an. Med. लिप्तवासित angeblich mit Umstellung der Worte gaṇa क्षुद्रादत्तादि zu P. 2, 2, 31. गन्धैस्तं लिप्तवासिता Bhatt. 5, 90. — 2) *Etwas* (acc.) *an Etwas* (loc.) *schmieren, anheften;* pass. *kleben, heften an:* न कर्म लिप्यते नरे Îçop. 2. यः कपाले रसो लिप्त घासीत् Çat. Bâ. 6, 1, 1, 13. 3, 2. ततेन लिप्ताभिशापमपमार्ष्टुम् Bhâg. P. 10, 83, 9. — 3) *anflammen, entzünden:* तस्यालिपत शोकाग्निः स्वासं काष्ठमिव ज्वलन्। अलिपेवानिलः शीतो वने तम् Bhatt. 6, 22. — 4) लिप्त *gegossen* AK. 3, 2, 60. H. an. Med. — Vgl. तामलिप्त, ताम्रलिप्त, निर्लिप्त (*unbefleckt* Pañkat. 1, 3, 30. 5, 6. 7, 41. 84. 8, 11. 2, 1, 19. 27. 3, 51. 4, 6. 7, 41. अति° 1, 1, 4).

— caus. लेपयति 1) *Etwas mit Etwas beschmieren, salben* Suçr. 2, 28, 11. Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 30. ज्ञात्येन च सुवर्णेन सुनिष्टप्तेन — लेपयिष्यामि ते स्थगु so v. a. *überziehen, verdecken* R. 2, 9, 40. — 2) *Etwas an Etwas schmieren:* स्कन्धे च लेपयेद्भस्म Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 21.

— अनु *einsalben,* med. *sich salben:* नलदेन Âçv. Çr. 8, 10, 2. Gṛhj. 3, 8, 11. अञ्जस्वानुलिम्पस्व Pân. Gṛhj. 2, 14. Kauç. 26. 80. स्नापयित्वानुलिप्य च Kathâs. 92, 39. Weber, Kṛshṇaj. 290. कुङ्कुमादिक्रमेणाङ्गमनुलिम्पन्ति Schol. zu Naish. 22, 36. वधूरन्वलिम्प — न वधूः Çic. 9, 51. प्रियङ्गुचन्दनाभ्यां च विल्वेन नगरेण च। पथगेवानुलिम्पेत MBh. 13, 5042. act. mit med. Bed.: न चानुलिम्पेदस्नाता 5006. अनुलिप्त *beschmiert, bestrichen, gesalbt, überzogen mit:* रुधिरेणानुलिप्ताङ्गः MBh. 1, 1172. मलयङ्गानुलिप्ताङ्गो 3, 2667. पार्थ्येन चन्दनेन 6, 4128. Harîv. 3630. 3887. Suçr. 2, 286, 15. तिमिरेणानुलिप्तेव तदा सा नगरी बभौ R. 2, 49, 27. R. Gorr. 2, 13, 7. 4, 27, 7. 29, 13. 5, 14, 5. 18. 45, 4. Mṛkkh. 157, 10. Kâm. Nîtis. 7, 49. Çic. 9, 13. Spr. 2478. Kathâs. 40, 2. Bhâg. P. 7, 13, 41. Mâlav. P. 30, 30. 61, 16. 74, 9. मांसेनानुलिप्तं शरीरम् Mahâbh. 3, 4. प्रभानुलिप्त Ragh. 10, 10. कृरिभिरचिरभासा तेजसा चानुलिप्तैः Çâk. 166. स्नातानुलिप्त *gebadet und gesalbt* Kauç. 83. Suçr. 1, 113, 6. Daçak. 65, 16. Hit. 42, 1. Vgl. अनुलेप fgg. — caus. *einsalben* Harîv. 14839. Suçr. 1, 34, 5. Weber, Kṛshṇaj. 288. fg. Daçak. 92, 20.

— अभि *bestreichen:* मृदा TS. 5, 7, 10, 2. Kauç. 69. — caus. dass. MBh. 13, 7427.

— अव 1) *bestreichen, beschmieren* Çâṅkh. Ça. 7, 8, 12. Bâ. 13, 9. Suçr. 2, 36, 11. fg.; med. *sich bestreichen* (loc. st. acc.): °भुजरजतस्तम्भेषगुरुचन्दनकुङ्कुमपङ्कानुलेपेनावलिम्पमानाः Bhâg. P. 5, 25, 5. अवलिप्त *bestrichen* MBh. 1, 6391. Suçr. 2, 30, 1. चन्दनावलिप्त Ver. in LA. (III) 8, 2. 5. *überzogen, belegt* (die Zunge) Suçr. 1, 115, 2. etwa *besudelt, unrein* oder auch *blind* wie अपिहित (= सगर्व Mahâbh.) VS. 24, 3. कृतव्यधनोत्यवलिप्त कृत्यया विध्यति (vgl. AV. 5, 14, 9) Kauç. 39. — 2) अवलिप्त *hochmüthig, stolz* M. 4, 79. MBh. 1, 2487. 6153. 6161. 2, 1437. 1324. 3, 11811. 12674. 5, 1495. Harîv. 10333. R. Gorr. 2, 9, 21. 3, 1, 19. 35, 72. 5, 9, 56. 6, 16, 64. 7, 17, 21. Spr. 873. 2347 (मनस्). 2798. Varâh. Bṛh. S. 16, 13. Râga-Tar. 4, 66. Bhâg. P. 10, 25, 6. अनवलिप्त Harîv. 4243. — Vgl. अवलेप fg.

— आ *bestreichen, beschmieren, salben:* गोमयेन Çat. Bâ. 12, 4, 4, 1. Kauç. 26. Harîv. 3525. Suçr. 1, 64, 5. 2, 8, 6. Uttarar. 61, 3 (79, 1). आलिपत् Kathâs. 63, 15. Bhatt. 15, 109. मुखमालिप्य MBh. 2, 2624. 2637. Kathâs. 45, 50. Bhâg. P. 3, 16, 26 (*sich bestreichend*). Pañkat. 171, 11. आलिप्त Mṛkkh. 91, 10. Kathâs. 56, 223. Bhâg. P. 10, 84, 45. *aufschmieren, auftragen:* आलिप्यते चन्दनमङ्गनाभिः Ṛt. 6, 13, v. l. — Vgl. आलेप fg. — caus. *bestreichen, beschmieren, salben:* आलिम्पयति Kauç. 47. 61. आलेपयति Suçr. 1, 55, 7. 2, 47, 8. — Vgl. आलिम्पन.

— समा med. *sich salben:* समालिपत Bhatt. 17, 5. — caus. *salben* Sân. D. 109, 7.

— उप 1) *bestreichen, beschmieren, salben; verunreinigen:* स्थण्डिलं गोमयेन Âçv. Gṛhj. 1, 3, 1. Çâṅkh. Ça. 13, 24, 28. Gṛhj. 1, 7. Gobh. 2, 1, 11. 3, 7, 3. 11. Varâh. Bṛh. S. 60, 7. Pañkat. 3, 9, 3. 15, 25. चन्दनेनाङ्गमु-

पलिप्य MBn. 7,2922. बिम्बं मृदयोपलिप्तम् Çvetâçv. Up. 2,14. पीतूपलिप्तसर्वाङ्ग MBn. 2,2625. Hariv. 4102. Suçr. 1,29,7. Varâh. Bṛh. S. 45,6. Miss. P. 51,92. Schol. zu Naish. 22,32. यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते॥ Bhag. 13,32. MBh. 12,11669. — 2) *sich anhängen an, überziehen* Suçr. 1,262,7. तेषां विषाग्नसं स्वादु यो वक्त्रमुपलिम्पति Vikram. 10,2. — Vgl. उपलेप fgg. — caus. *beschmieren, bestreichen, salben* M. 3,206. R. 2,100,33 (108,31 Gorr.).

— पर्युप *beschmieren, bestreichen* Gobh. 1,5,15.

— नि 1) *anschmieren*, med. *sich anschmieren* Çat. Br. 1,8,2,14. fg. Çâṅkh. Çr. 1,10,2. 2,9,12. Gṛihj. 6,6. — 2) *verschwinden machen*, med. *verschwinden, unsichtbar werden:* (बन्धेन) तेनाहमसुं सेनां नि लिम्पामि AV. 11,10,13. नि केतवो जनानां न्यृष्टयो दधिरे पविष्टे RV. 1,191,4. — Vgl. निलिम्प.

— परि *bestreichen, umschmieren* Çat. Br. 14,9,2,1. Kâuç. 72. MBh. 12,7717. Suçr. 1,161,21.

— प्र 1) *beschmieren, bestreichen, beflecken;* med. *sich beschmieren* u. s. w.: कृत्स्नयेव सह्रियेणेव तत्प्रलिलिपुः Çat. Br. 2,4,2,2. 12. Kâty. Çr. 15,6,2. पयश्चूर्णैः Çâṅkh. Çr. 4,15,31. घनलेपनेन पाणी Âçv. Gṛihj. 3,8,11. Kâuç. 21. 26. 30. 58. Suçr. 1,481,4. Bhâg. P. 10,75,15. med. Kâty. Çr. 15,6,2. दिव्याः सर्वाः प्रलिम्पन्ताम् Çâṅkh. Gṛihj. 4,18. — 2) प्रलिप्त *klebend —, haftend an* (loc.) MBh. 13,7443; vgl. 7435. — Vgl. प्रलेप fgg. — caus. *beschmieren, bestreichen* MBh. 12,2642. Varâh. Bṛh. S. 55,2. 24; auch u. कपालिन् 3) *b*).

— वि 1) *beschmieren, bestreichen, überziehen, salben* Çat. Br. 3,3,4, 17. घृतैः Suçr. 2,259,5. मुखं विलिप्यमानम् 303,2. Kathâs. 37,6. 7. 13. 16. Bhâg. P. 10,5,14 (Weber, Kṛishṇaj. 304). 29,2. 75,14. 80,21. Pañkat. 3,15,26. Vet. in LA. (III) 7,17. Bhatt. 3,20. 6,21. 15,6. विलिप्त *beschmiert, bestrichen, gesalbt* H. an. 2,191. Med. t. 52. Jiân. 1,277. MBh. 12, 6252. Hariv. 8265. 8423. Verz. d. Oxf. H. 106,*a*,9. Hit. 128,13. — 2) *schmieren —, streichen auf:* चितभस्मराजः — विलिप्यते मौलिभिरम्बरौकसाम् so v. a. *wird von den Himmelsbewohnern auf die Köpfe gestreut* Kumâras. 5,79. — Vgl. विलेप fgg. — caus. विलिम्पित *beschmiert, bestrichen* Çabdar. im ÇKDr. u. लिप्त.

— सम् *bestreichen, beschmieren* Çat. Br. 6,5,3,4. Kâty. Çr. 16,3,28. Weber, Kṛishṇaj. 271. खड्गा रुधिरसंलिप्ताः Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,24. — caus. dass. MBh. 1,4930.

लिंपि (von लिप्) f. Uṇâdis. zu Unâdis. 4,119. P. 3,2,21. 1) *das Bestreichen* u. s. w.; s. लिपिकार. — 2) *das Schreiben, Schrift, Art und Weise zu schreiben* AK. 2,8,4,16. H. 484. Hâlâ. 4,42. पवनानाम् P. 4, 1,49. Vârtt. 3. °ज्ञ Kâm. Nîtis. 16,37. लिपेर्यथावद्ग्रहणम् Ragh. 3,28. 18,45. क्रमेण शिक्षितमाद्यं लिपिं गणितमेव च Kathâs. 6,32. Varâh. Bṛh. 14,3. 18,2. Gîr. 8,4. °ज्ञान Daçak. 60,12. Sâh. D. 268,14. Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,4. 339,*a*,2 v. u. Pañkat. 3,4,12. 6,21 (अष्टादशलिपिना). 7,20. यदि दरिद्रो भवितेति वेधसा लिपिं ललाटे किल निर्घृणस्य ज्ञायताम् Naish. 1, 18. Schol. zu 22,84. Lalit. ed. Calc. 142,11. 143,5. 16. fgg. °शास्त्र 2. °संख्या = अन्य *eine umfangreiche Schrift* Hâlâ. 5,58. विंशतिसंख्यायां ज्ञापकलिपिवम् B. Gobh. 1,CXXXI. — Vgl. अङ्ग°, पुष्प°, प्रति°, भूत°, मध्यान्तरविस्तर° u. s. w.

लिपिकर P. 3,2,21. m. 1) *Tüncher* B. Gobh. 1,12,6. — 2) *Schreiber, Abschreiber* H. 484. Hâlâ. 2,431. Vâsavad. 239,1. MBh. 1, S. 407 und II, S. 85 am Schluss.

लिपिका f. = लिपि *Schrift* Çabdar. im ÇKDr.

लिपिकार m. = लिपिकर *Schreiber, Abschreiber* AK. 2,8,4,15.

लिपिन्यास m. *das Schreiben* Kathâs. 40,22.

लिपिफलक n. *Schreibtafel* Lalit. ed. Calc. 143,14.

लिपिशाला f. *Schreibstube* (wo die Kinder schreiben lernen) Lalit. ed. Calc. 141,9. 142,3. 4. 15.

लिपी f. = लिपि *das Schreiben, Schrift* Çabdar. im ÇKDr.

लिप्त partic. s. u. लिप्. लिप्ता s. bes.

लिप्तक (von लिप्त) adj. *mit Gift bestrichen, vergiftet* (ein Pfeil) AK. 2,8,2,56. H. 779. — लिप्तिका s. bes.

लिप्ता (= griech. λεπτή) f. *Minute, der 60te Theil eines Grades* Colebr. Misc. Ess. II,358. 527. fg. Ind. St. 2,254. Weber, Gjot. 106. Nax. I,310. Verz. d. B. H. No. 836. Golâdhj. Madhjamâdhik. 21. Ganitâdhj. Bhâgabhâshjâ. 3. am Ende eines adj. comp.: षड्वर्गलिप्ते बुधे wenn *Mercur 25 Minuten* (in dem Sternbilde steht) Varâh. Bṛh. 7,6. Dieses Wort (von ली in der Bed. श्लेषण abgeleitet) ist vielleicht Uṇâdis. 3,55 gemeint; aber Uǵǵval. nimmt लिप्तम् = श्लिष्टम् an.

लिप्तिका f. dass. Ganitâdhj. Bhâgabhâs. 3. नति° Golâdhj. Grahaṇav. 19. लम्बन° 24. Weber, Nax. I,310. Satkṛtjâmuktâvalî im ÇKDr.

लिप्तीकर् *auf Minuten* (लिप्ता) *reduciren:* °कृत्वा (!) Varâh. Bṛh. 7,10.

लिप्सा (vom desid. von लभ्) f. *der Wunsch haben zu werden, — zu erhalten, Verlangen nach* AK. 1,1,2,27. 3,4,18,109. H. 430. Hâlâ. 2,209. 3,57. P. 3,3,6. 1,3,35. Vârtt. 2. Vop. 23,12. das obj. im loc.: लिप्सा चक्रे प्रसेनानुं मणिरत्ने स्यमन्तके Hariv. 2056. im comp. vorangehend: मृग° MBh. 1,3378. सर्वोपभोग° 3,97. सर्व° 1313. 5,1417. धर्म° 4,924. R. Gorr. 2,18,44. Kâm. Nîtis. 13,57. Spr. 311. 5169. Kathâs. 13,90. 33,111. 51,135. Verz. d. Oxf. H. 255,*a*,28. Sarvadarçanas. 64,7. am Ende eines adj. comp.: सभोगलिप्स = सभोगलिप्सु (welches nicht zum Metrum gepasst hatte) Kathâs. 7,110. — Vgl. लाभ°.

लिप्सितव्य (wie oben) adj. *was zu erhalten man wünschen muss, zu wünschen:* सकृत्सतां संगतं लिप्सितव्यम् MBh. 5,214.

लिप्सु (wie oben) adj. *habhaft zu werden —, zu erlangen wünschend, ein Begehren habend, verlangend, wünschend* H. 429. Hâlâ. 2,208. ohne Ergänzung Bhâg. P. 3,16,12. das obj. im acc.: कंचिदेवार्थम् MBh. 12, 2610. पुत्रम् Hariv. 6430. कन्याललाम Ragh. 5,61. धनवन्ति सुखानि 18, 38. उदरभरणमात्रम् Spr. 304. Kathâs. 24,112. Verz. d. Oxf. H. 10, *b*, N. 5. im comp. vorangehend: धन° MBh. 1,1963. 2855. 3,11811. 7,1992. Hariv. 3739. Bhâg. P. 2,7,22. 10,86,3. Pañkar. 3,13,21. Pañkat. 5,4.

लिप्सुता (von लिप्सु) f. *das Verlangen nach:* परदारपरद्रोहपरद्रव्येक° Verz. d. Oxf. H. 68,*a*, No. 119, Z. 13. fg.

लिप्स्य (vom desid. von लभ्) adj. *was man zu erhalten —, zu haben wünscht* Vop. 25,6.

लिवि (लिवि) f. = लिपि P. 3,2,21. *das Schreiben, Schrift* AK. 2,8, 4,16. H. 484. Uǵǵval. zu Unâdis. 4,119.

लिविकर (लिवि°) m. = लिपिकर P. 3,2,21. *Schreiber, Abschreiber*

mit einem Liṅga *versehen;* m. pl. N. einer Çiva'itischen Secte Colebr. Misc. Ess. I, 198. — 5) adj. *mit einem feinen Körper versehen* Bhâg. P. 4, 29, 63. — 6) adj. Beiw. Parameçvara's *als Trägers des* लिङ्ग = प्रधान Liṅga-P. bei Muir, Sr. 4, 323. — 7) adj. *das worin sich Etwas auflöst,* subst. *die Ursache* Schol. zu Kap. 1, 137; vgl. u. लिङ्ग 11). — 8) m. *Elephant* Gaṇiṇ. im ÇKDa. — 9) f. *eine best. Pflanze,* = पञ्चाङ्गुलिया im Hindi Râgân. im ÇKDa.

लिङ्गोपहितलैङ्गिकभानविरोधसारकृत्य n. Titel einer Abhandlung Hall 53.

लिङ्गोपाधितलैङ्गिकभानविचार m. desgl. ebend. 52.

लिच्छवि N. pr. eines fürstlichen Geschlechts LIA. I, 138, N. 1. 820. fg. II, 80. 960. Burn. Intr. 530. Lalit. 137. 424. Hiouen-thsang I, 396. Wilson, Sel. Works II, 344. Schiefner, Lebensb. 233 (3). 268 (38). — Vgl. निच्छवि, निष्छवि.

लिट्, लिटयति (अल्पकुत्सनयोः, अल्पीभावे कुत्सायां च; gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3, 1, 27.

लिण्ड Kâṭh. Up. 3, 14 nach Çaṅk. = पिच्छिल d. i. पिच्छिल *schlüpfrig, schlüpfrig.*

लिप् (= älterem रिप्, लिर्म्पति, °ते (उपदेहे, लेपे Vop.) Dhâtup. 28, 139. P. 7, 1, 59. लिलेप, लेप्स्यति Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. aor. अलिपत्, अलिपत und अलिप्त P. 3, 1, 53. fg. Vop. 8, 21. 13, 1. 1) *Etwas* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *beschmieren, bestreichen; besudeln, verunreinigen:* ता (योषधीः) ज्ञाताः पितरौ विषेणालिम्पन् TBr. 2, 1, 8, 1. सर्पिषा Kauç. 28. Kâṭh. 25, 4. Çâṅkh. Ça. 7, 8, 12. Br. 13, 9. चन्दनैः Jâṭ. 3, 53. Spr. 1778. 2670. Bhâg. P. 10, 29, 7. तिप्रमङ्गानि लिम्पस्व पायसेन MBh. 13, 7425. Bhatt. 19, 11. लिलेप 14, 94. Harîv. 7041. अलिपत् Kathâs. 24, 93. 41, 80. तच्चूर्णं तस्य दुर्वृद्धेरोष्ठौ स्मश्रूणि चालिपत् 61, 43. चन्दनेनालेपि Schol. zu Naish. 22, 56. न मां कर्माणि लिम्पन्ति Bhag. 4, 14. न कर्मणा लिप्यते पापकेन TBr. 3, 12, 9, 3. Çat. Br. 14, 7, 1, 28. Kâṭh. Up. 5, 10, 10. Kâṭhop. 5, 11. Nir. 12, 3. M. 1, 104. 3, 71. 4, 201. 9, 243. 10, 104. fg. Bhag. 5, 10. 13, 31. MBh. 12, 11667. fg. (लिप्यति). Spr. 522. 2069. Kâm. Nîtis. 6, 5. Bhâg. P. 4, 26, 7. 5, 13, 9. वृद्धस्य न लिप्यते Bhag. 18, 17. वामदेवो न लिप्तवान् *verunreinigte sich nicht* M. 10, 106. st. des acc. ausnahmsweise loc.: तेन लिम्पत्य आननकुचेषु Bhâg. P. 10, 21, 17. लिप्त *beschmiert, bestrichen; besudelt, verunreinigt* AK. 3, 2, 39. H. 1483. an. 2, 191. Med. t. 52. खाद्य° Çat. Br. 1, 3, 1, 24. Kâtj. Ça. 4, 4, 10. 10, 8, 12. M. 4, 56. MBh. 8, 2059. R. 2, 9, 43 (8, 43 Gorr.). 78, 6. 5, 10, 20. 19, 16. Varâh. Bṛh. S. 55, 7. 59, 12. 71, 2. Kathâs. 4, 48. 69. 9, 48. 12, 169. 18, 244. Râga-Tar. 4, 193. Bhâg. P. 6, 1, 61. 10, 63, 20. 75, 15. Hit. 21, 14. Vet. in LA. (III) 4, 7. Sâh. D. 16, 5. Verz. d. Oxf. H. 132, *a*, N. 3. *mit Gift bestrichen, vergiftet* (Pfeil u. s. w.) H. an. Med. लिप्तवासित angeblich mit Umstellung der Worte gaṇa राजदन्तादि zu P. 2, 2, 31. गन्धैस्तं लिप्तवासिता Bhatt. 5, 90. — 2) *Etwas* (acc.) *an Etwas* (loc.) *schmieren, anheften;* pass. *kleben, heften an:* न कर्म लिप्यते नरे Îçop. 2. यः कपाले रसो लिप्त आसीत् Çat. Br. 5, 1, 1, 12. 2, 2. ततेन लिप्ताभिशापमपमार्ष्टुम् Bhâg. P. 10, 83, 9. — 3) *anflammen, entzünden:* तस्यालिपत शोकाग्निः स्वान्तं काष्ठमिव ज्वलन् । ग्लपितेवानिलः शीतो वने तम् Bhatt. 6, 22. — 4) लिप्त *gegessen* AK. 3, 2, 60. H. an. Med. — Vgl. तामलिप्त, ताम्रलिप्त, निर्लिप्त (*unbefleckt* Pâṇḍar. 1, 3, 80. 5, 6. 7, 41. 84. 8, 11. 2, 1, 19. 27. 3, 51. 4, 6. 7, 41. यति° 1, 1, 4).

— caus. लेपयति 1) *Etwas mit Etwas beschmieren, salben* Suçr. 2, 28, 11. Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 30. ज्ञात्येन च सुवर्णेन सुनिष्टप्तेन — लेपयिष्यामि ते स्थगु so v. a. *überziehen, verdecken* R. 2, 9, 40. — 2) *Etwas an Etwas schmieren:* स्कन्धे च लेपयेद्भस्म Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 21.

— अनु *einsalben,* med. *sich salben:* नलदेन Âçv. Çr. 6, 10, 3. Gṛhj. 3, 8, 11. यज्ञास्वानुलिम्पस्व Pân. Gṛhj. 2, 11. Kauç. 26. 80. ज्ञापयित्वानुलिप्य च Kathâs. 92, 39. Weber, Kṛshṇaj. 290. कुङ्कुमादिकमेणाङ्गमनुलिम्पन्ति Schol. zu Naish. 22, 56. वपुरन्वलिप्त — न वपुः Çic. 9, 51. प्रियङ्गुचन्दनाभ्यां च वित्वेन तगरेण च । पद्मगेवानुलिम्पेत MBh. 13, 5042. act. mit med. Bed.: न चानुलिम्पेदज्ञाता 5006. अनुलिप्त *beschmiert, bestrichen, gesalbt, überzogen mit:* रुधिरेणानुलिप्ताङ्गः MBh. 1, 1172. मलपङ्कानुलिप्ताङ्गो 3, 2667. पार्थ्येन चन्दनेन 6, 4425. Harîv. 3630. 3887. Suçr. 2, 286, 15. तिमिरेणानुलिप्तेव तदा सा नगरी कृता R. 2, 48, 27. R. Gorr. 2, 13, 7. 4, 27, 7. 29, 15. 5, 14, 5. 18. 45, 4. Mṛkkh. 157, 10. Kir. Nîtis. 7, 49. Çic. 9, 15. Spr. 2478. Kathâs. 40, 2. Bhâg. P. 7, 13, 41. Mârk. P. 30, 60. 61, 16. 74, 9. मांसेनानुलिप्तं शरीरम् Maitrâjop. 3, 4. प्रभानुलिप्त Ragh. 10, 10. रुधिरेणाधिकाभां तेजसा चानुलिप्तैः Çik. 166. ज्ञातानुलिप्त *gebadet und gesalbt* Kauç. 83. Suçr. 1, 113, 6. Daçak. 65, 16. Hit. 42, 1. Vgl. अनुलेप fgg. — caus. *einsalben* Harîv. 14839. Suçr. 1, 34, 5. Weber, Kṛshṇaj. 288. fg. Daçak. 92, 20.

— अभि *bestreichen:* मृदा TS. 5, 7, 10, 2. Kauç. 69. — caus. dass. MBh. 13, 7437.

— अव 1) *bestreichen, beschmieren* Çâṅkh. Ça. 7, 8, 12. Br. 13, 9. Suçr. 2, 36, 11. fg.; med. *sich bestreichen* (loc. st. acc.): °भुजङ्गतस्तन्मेधगुरुचन्दनकुङ्कुमपङ्कानुलेपेनावलिप्यमानाः Bhâg. P. 5, 25, 5. अवलिप्त *bestrichen* MBh. 1, 6391. Suçr. 2, 50, 1. चन्दनावलिप्त Vet. in LA. (III) 8, 2. 5. *überzogen, belegt* (die Zunge) Suçr. 1, 115, 2. etwa *besudelt, unrein* oder auch *blind* wie अपिहित (= सगर्व Mahâbh.) VS. 24, 3. कृतव्यधनीत्यवलिप्तं कृत्यया विध्यति (vgl. AV. 5, 14, 2) Kauç. 39. — 2) अवलिप्त *hochmüthig, stolz* M. 4, 79. MBh. 1, 2437. 6153. 6161. 2, 1437. 1554. 3, 11311. 13674. 5, 1495. Harîv. 10333. R. Gorr. 2, 9, 21. 3, 1, 19. 35, 72. 5, 9, 56. 6, 16, 64. 7, 17, 21. Spr. 873. 2347 (मनस्). 2798. Varâh. Bṛh. S. 16, 13. Râga-Tar. 4, 66. Bhâg. P. 10, 25, 6. अनवलिप्त Harîv. 4243. — Vgl. अवलेप fg.

— आ *bestreichen, beschmieren, salben:* गोमयेन Çat. Br. 12, 4, 4, 1. Kauç. 26. Harîv. 3523. Suçr. 1, 64, 5. 2, 8, 6. Uttarar. 61, 2 (79, 1). आलिपत् Kathâs. 63, 15. Bhatt. 15, 109. मुखमालिप्य MBh. 2, 2624. 2627. Kathâs. 43, 50. Bhâg. P. 8, 16, 26 (*sich bestreichend*). Pâṇḍat. 171, 11. आलिप्त Mṛkkh. 91, 10. Kathâs. 56, 223. Bhâg. P. 10, 84, 45. *aufschmieren, auftragen:* आलिप्यते चन्दनमङ्गनाभिः Ṛt. 6, 12, v. l. — Vgl. आलेप fg. — caus. *bestreichen, beschmieren, salben:* आलिम्पयति Kauç. 47. 61. आलेपयति Suçr. 1, 55, 7. 2, 47, 8. — Vgl. आलिम्पन.

— समा med. *sich salben:* समालिपत Bhatt. 17, 5. — caus. *salben* Sâh. D. 109, 7.

— उप 1) *bestreichen, beschmieren, salben; verunreinigen:* स्थण्डिलं गोमयेन Âçv. Gṛhj. 1, 3, 1. Çâṅkh. Ça. 18, 24, 28. Gṛhj. 1, 7. Gobh. 2, 1, 11. 3, 7, 3. 11. Varâh. Bṛh. S. 60, 7. Pâṇḍar. 3, 9, 3. 15, 25. चन्दनेनाङ्गमु-

पलिप्य MBn. 7,2922. विम्बं मृद्योपलिप्तम् Çvetâçv. Up. 2,14. पौमूपलिप्तसर्वाङ्ग MBn. 2,2625. Hariv. 4102. Suçr. 1,29,7. Varâh. Bṛh. S. 45,6. Mârk. P. 51,92. Schol. zu Naish. 22,52. यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते॥ Bhag. 13,32. MBh. 12,11669. — 2) *sich anhängen an, überziehen* Suçr. 1,202,7. तेषां विग्राहसे स्वाङ्गे यो वक्त्रमुपलिम्पति Vishn. 10,2. — Vgl. उपलेप fgg. — caus. *beschmieren, bestreichen, salben* M. 3,206. R. 2,100,33 (108,31 Gorr.).

— पर्युप *beschmieren, bestreichen* Gobr. 1,5,15.

— नि 1) *anschmieren*, med. *sich anschmieren* Çat. Br. 1,8,1,14. fg. Çâṅkh. Çr. 1,10,2. 2,9,12. Gṛihj. 6,6. — 2) *verschwinden machen*, med. *verschwinden, unsichtbar werden:* (वज्रेण) तेनाऽस्मभ्यं सेनां नि लिम्पामि AV. 11,10,13. नि केतवो जनानां न्यृष्टयो दधिरे पविलिप्सत RV. 1,191,4. — Vgl. निलिम्प.

— परि *bestreichen, umschmieren* Çat. Br. 14,9,3,1. Kauç. 72. MBh. 12,7717. Suçr. 1,161,21.

— प्र 1) *beschmieren, bestreichen, beflecken;* med. *sich beschmieren* u. s. w.: कृत्ययेव वह्नियेणेव तत्प्रलिलिपुः Çat. Br. 2,4,3,2. 12. Kâṭj. Çr. 15,6,8. पवचूर्णैः Çâṅkh. Çr. 4,15,21. घृतलेपनेन पाणी Âçv. Gṛihj. 3,8,11. Kauç. 21. 26. 30. 58. Suçr. 1,481,4. Bhâg. P. 10,75,15. med. Kâṭj. Çr. 15,6,8. दिव्याः सर्षपाः प्रलिम्पताम् Çâṅkh. Gṛihj. 4,15. — 2) प्रलिप्त *klebend —, haftend an* (loc.) MBh. 13,7443; vgl. 7425. — Vgl. प्रलेप fgg. — caus. *beschmieren, bestreichen* MBh. 12,2642. Varâh. Bṛh. S. 55,5. 24; auch u. कपोतलिन् 3) *b*).

— वि 1) *beschmieren, bestreichen, überziehen, salben* Çat. Br. 3,3,4, 17. शरीरैः Suçr. 2,259,5. मुखं विलिप्यमानम् 503,2. Kathâs. 37,6. 7. 13. 16. Bhâg. P. 10,5,14 (Weber, Kṛishṇaj. 304). 29,2. 75,14. 80,21. Pañkat. 3,15,26. Vet. in L.A. (III) 7,17. Bhaṭṭ. 3,20. 6,21. 15,6. विलिप्त *beschmiert, bestrichen, gesalbt* H. an. 2,191. Mud. t. 32. Jâṭ. 1,277. MBh. 12,6382. Hariv. 8265. 8425. Verz. d. Oxf. H. 106,*a*,9. Hit. 128,12. — 2) *schmieren —, streichen auf:* चिताभस्मरजः — विलिप्यते मौलिभिर्म्बौकसाम् so v. a. *wird von den Himmelsbewohnern auf die Köpfe gestreut* Kumâras. 5,79. — Vgl. विलेप fgg. — caus. विलिम्पित *beschmiert, bestrichen* Çabdar. im ÇKDr. u. लिप्त.

— सम् *bestreichen, beschmieren* Çat. Br. 6,5,3,4. Kâṭj. Çr. 15,3,28. Weber, Kṛishṇaj. 271. खड्गा रुधिरसंलिप्ताः Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,24. — caus. dass. MBh. 1,4980.

लिंपि (von लिप्) f. Uṇâdis. 4,119. P. 3,2,21. 1) *das Bestreichen* u. s. w.; s. लिपिकर्. — 2) *das Schreiben, Schrift, Art und Weise zu schreiben* AK. 2,8,4,16. H. 484. Hâlâ. 4,42. यवनानाम् P. 4, 1,49. Vârtt. 3. °सु Kâm. Nîtis. 18,27. लिपेर्यथावद्ग्रहणम् Rudr. 3,28. 18,43. क्रमेण शिक्षितव्याहं लिपिं गणितमेव च Kathâs. 6,32. Varâh. Bṛh. 14,5. 18,2. Gîr. 8,4. °ज्ञान Daçak. 60,13. Sâh. D. 268,14. Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,4. 339,*a*,2 v. u. Pañkat. 3,4,13. 6,21 (अष्टादशलिपिना). 7,20. यदि दरिद्रो भवितेति वैधसीं लिपिं ललाटे ऽर्थिजनस्य बाधतीम् Naish. 1, 15. Schol. zu 22,54. Lalit. ed. Calc. 142,11. 143,5. 16. fgg. °शास्त्र 2. °संख्या = ग्रन्थ *eine umfangreiche Schrift* Hâlâ. 5,58. विंशतिसंख्याया ज्ञापकलिपित्वम् R. Gorr. 1,cxxxi. — Vgl. खड्ग°, पुष्प°, प्रति°, भूत°, मध्यान्तरविस्तर° u. s. w.

लिपिकर् P. 3,2,21. m. 1) *Tüncher* R. Gorr. 1,12,6. — 2) *Schreiber, Abschreiber* H. 484. Hâlâ. 2,431. Vîravar. 239,1. MBh. I, S. 407 und II, S. 85 am Schluss.

लिपिका f. = लिपि *Schrift* Çabdar. im ÇKDr.

लिपिकार m. = लिपिकर् *Schreiber, Abschreiber* AK. 2,8,4,15.

लिपिन्यास m. *das Schreiben* Kathâs. 40,22.

लिपिफलक n. *Schreibtafel* Lalit. ed. Calc. 143,14.

लिपिशाला f. *Schreibstube* (wo die Kinder schreiben lernen) Lalit. ed. Calc. 141,9. 142,3. 4. 15.

लिपी f. = लिपि *das Schreiben, Schrift* Çabdar. im ÇKDr.

लिप्त partic. s. u. लिप्. लिप्ता s. bes.

लिप्तक (von लिप्त) adj. *mit Gift bestrichen, vergiftet* (ein Pfeil) AK. 2,8,2,36. H. 779. — लिप्तिका s. bes.

लिप्ता (= griech. λεπτή) f. *Minute, der 60te Theil eines Grades* Colebr. Misc. Ess. II,338. 527. fg. Ind. St. 2,254. Weber, Gjot. 106. Nax. I,310. Verz. d. B. H. No. 836. Golâdhj. Madhjamâdhik. 21. Ganitâdhj. Bhâgarahâsjâ. 3. am Ende eines adj. comp.: पञ्चवर्गलिप्ते बुधे wenn *Mercur 25 Minuten* (in dem Sternbilde steht) Varâh. Bṛh. 7,6. Dieses Wort (von ली in der Bed. श्लेषणे abgeleitet) ist vielleicht Uṇâdis. 3,55 gemeint; aber Uǵǵval. nimmt लिप्तम् = श्लिष्टम् an.

लिप्तिका f. dass. Ganitâdhj. Bhâgarahâs. 3. नति° Golâdhj. Grahaṇav. 19. लम्बन° 24. Weber, Nax. I,310. Satkṛtjâhnikatîkâ im ÇKDr.

लिप्तीकर् *auf Minuten* (लिप्ता) *reduciren:* °कृत्वा (!) Varâh. Bṛh. 7,10.

लिप्सा (vom desid. von लभ्) f. *der Wunsch habhaft zu werden, — zu erhalten, Verlangen nach* AK. 1,1,3,27. 3,4,18,109. H. 430. Hâlâ. 2,209. 5,57. P. 3,3,6. 1,3,25. Vârtt. 2. Vop. 23,12. das obj. im loc.: लिप्सां चक्रे प्रसेनातु मणिरत्ने स्यमन्तके Hariv. 2036. im comp. vorangehend: मृग° MBh. 1,3372. सर्वोपभोग° 3,97. सर्व° 1212. 5,1417. धर्म° 4,924. R. Gorr. 2,18,44. Kâm. Nîtis. 13,57. Spr. 311. 3169. Kathâs. 13,90. 33,111. 51,135. Verz. d. Oxf. H. 255,*a*,33. Sarvadarçanas. 64,7. am Ende eines adj. comp.: सुभोगलिप्स = सुभोगलिप्सु (welches nicht zum Metrum gepasst hätte) Kathâs. 7,110. — Vgl. लाभ°.

लिप्सितव्य (wie eben) adj. *was zu erhalten man wünschen muss, zu wünschen:* सकृत्सतां संगतं लिप्सितव्यम् MBh. 5,214.

लिप्सु (wie eben) adj. *habhaft zu werden —, zu erlangen wünschend, ein Begehren habend, verlangend, wünschend* H. 429. Hâlâ. 2,208. ohne Ergänzung Bhâg. P. 3,16,12. das obj. im acc.: कंचिदेवार्थम् MBh. 12, 2610. पुत्रम् Hariv. 6430. कन्याललाम Raghu. 5,64. घनस्तानि मुखानि 18, 28. उदरभरणमात्रम् Spr. 304. Kathâs. 24,119. Verz. d. Oxf. H. 10,*b*, N. 5. im comp. vorangehend: धन° MBh. 1,1965. 2855. 3,11811. 7,1992. Hariv. 3739. Bhâg. P. 2,7,22. 10,86,3. Pañkar. 3,13,21. Pañkat. 5,4.

लिप्सुता (von लिप्सु) f. *das Verlangen nach:* परदारपरद्रव्यैक° Verz. d. Oxf. H. 68,*a*, No. 119, Z. 13. fg.

लिप्स्य (vom desid. von लभ्) adj. *was man zu erhalten —, zu haben wünscht* Vop. 23,6.

लिबि (लिबि) f. = लिपि P. 3,2,21. *das Schreiben, Schrift* AK. 2,8, 4,16. H. 484. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,119.

लिबिकर (लिबि°) m. = लिपिकर् P. 3,2,21. *Schreiber, Abschreiber*

H. 484, Sch.

लिविकर (लिवि°) m. = लिपिकर *Schreiber, Abschreiber* ÇKDa. nach Bhâvadhiçrita zu AK. 2,8,4,15.

लिवी (लिवी) f. = लिपी Çabdar. im ÇKDa.

लिंबुजा f. *Schlinggewächs, Liane* Nir. 6,28. 11,24. धन्या द्यौ परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् RV. 10,10,13. fg. AV. 5,8,1. Kauç. 35. Pâraskar. Bh. 12,13,11.

लिम्पँ nom. ag. von लिप् P. 3,1,138. Vop. 26,35. m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâyu beim Schol. zu H. 210.

लिम्पट adj. *den Mädchen nachgehend* Hit. 102 (s. Corrigg.). — Vgl. लम्पट.

लिम्बाक 1) m. *Esel.* — 2) m. *Citronenbaum* Çabdar. im ÇKDa. = निम्बूकविशेष, n. *die Frucht* Râjân. im ÇKDa.

लिम्पि f. = लिपि *Schrift* Pâraskar. 3,13,25.

लिम्बभट्ट m. N. pr. eines Mannes Hall 136.

1. लिम्प् s. u. रिम्प्.

2. लिप्र् (= 1. लिम्प्) nom. ag.; nom. लिट् P. 8,2,36, Sch.

लिश (von 1. लिम्प्) nom. ag.; s. कु°.

लिंष m. = लष *Tänzer* Comm. zu Uṇ. 1,152.

1. लिख् (= alterom रिख्), लेढि und लीढे (आस्वादने) Dhâtup. 24,6. वि लिखति Suçr. 2,533,3. लिक्षेत् (MBh. Vaitân. Bhn. S.) neben लिखात्; लिलेख्; लेख्यति und लेढा Kâr. 6 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10. Schol. zu P. 8,2,33. 40. fg. अलिखत und अलीढ P. 7,3,73. Schol. zu 3,1,45. 8,2,40. Vop. 8,129. लीढ्वा, लेढुम्; लीढ P. 8,3,13, Sch. *lecken, belecken, leckend geniessen* (leicht zergehende oder dickflüssige Körper): जिह्वया लिखती मुखम् R. Gorr. 2,66,28. यस्त्वि निर्दशनः श्वेव जिह्वया लेढि केवलम् Spr. 1652. उत्तरोष्ठम् Suçr. 1,118,20. दीर्घजिह्वी वै देवानां कव्यमलेट् ved. Cit. beim Schol. zu P. 6,1,59 (vgl. Âpast. Bh. 2,22). या च लिखाढवि: Spr. 4814, v. l. एवमेव नरव्याघ्र: परालीढं (परिलीढं ed. Scal.) न मन्यते R. ed. Bomb. 2,61,16. मधुसर्पिषो Suçr. 1,101,18. 116,18. 194,18. 2,436,16. MBh. 3,12388 (लिक्षान). Spr. 3866. Vaitân. Bhn. S. 5,45. 51,21. 76,6. 89,1. 17. Kir. 5,38. Kathâs. 22,199. 25,106. 94,119 (wo जिह्वया मक्षिकाणी zu lesen ist). Bhâg. P. 6,9,15. 8,18,26. 10,13,24. Vers. d. Oxf. H. 130, *b*, 17. Bhatt. 18,7. तं तुरं जिह्वया लेढि als Bezeichnung unbesonnener Vermessenheit R. 3,53,30. नो मे ऽनिमिषो लेढि (= तान्यमति Comm.) देहित: Bhâg. P. 3,25,33. Die Form लिक्ष्नि in folgendem von Âtreja bei Westr. angeführten Citat: मक्षिकाण्योर्लिक्षति च जिह्वया कदाचित्. — घट्टे ऽव लेख्यते MBh. 13,3872 fehlerhaft für घट्टेघालख्यते, wie die ed. Bomb. liest.

— caus. लेख्यति *lecken lassen* Suçr. 1,159,13. 369,4.

— intens. *beständig lecken, züngeln, züngeln nach:* लेलिक्ष्यसे ग्रसमान: समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भि: Bhag. 11,30. (हौपी) लेलिक्षमाणस्तृपित: MBh. 12,4265. जिह्वाभिर्ये विषवक्त्रै लेलिक्षन्ते सूर्यप्रख्यम् 13706. मक्षिकाणी लेलिक्ष्यमुड्ड: 3,10397. Harîv. 14582. मक्षिकाणी लेलिक्षानस्य MBh. 5,2047. लेलिक्ष्यज्जिह्वया लेलिक्ष् (जि° ed. Bomb.) वक्त्रम् 3,10894. लेलिक्षद्वक्त्रै (°द्वक्त्रो beide Ausgg.) व्याघ्र: 12,4378. लेलिक्षानैर्मेक्षानाग्नै: 3,12240. Harîv. 5032. R. 6,92,40. Bhâg. P. 4,24,66. लेलिक्ष्यद्भिश्च पक्षिभि: Harîv. 2462. लेलिक्षान von Çiva MBh. 14,198. लेलिक्षान vom *züngelnden* Feuer Gobhilagṛ. 1,23. त्रासपंक्षायमायाति (व्याघ्र:) लेलिक्षानो मक्षीरुक्षान् MBh. 1,3368. 3408. लेलिक्ष्यमाने सैन्येषु प्रवृद्धमिव पावकम् 6,4899. (शक्तिम्) व्यक्तसीमग्निवत्संख्ये लेलिक्षानां मुमत्तत: 5,7271. बाणो लेलिक्षान: R. 6,79,70. — Vgl. लेलिक्, लेलिक्षान.

— घ्र *belecken, lecken an, mit Maul oder Schnabel berühren* Âpast. Bh. 2,22. Kâṭh. 29,1. Pâraskar. Bh. 13,6,9. Âçv. Çr. 3,14,11. श्वावलिखाढवि: Spr. 4814. MBh. 1,667 (med.). 669. पुरा न सोमो ऽधारयो ऽवलिक्षते पुना 3.15687. 13,2286 (अवलिक्षेत्). Vaitân. Bhn. S. 89,17 (°लिक्षेत्). श्वावलीढं कवि: MBh. 3,16543. 8,2059. 13,1575. Mâns. P. 34,36. मक्षिकामृतरसमुद्रविप्रुषा सकृदवलीढया Bhâg. P. 6,9,28. पतत्रिणावलीढम् M. 4,208. धमन्नावलीढयो: पङ्क्तकोशयो: Raghu. ed. Calc. 3,8. कीरमुखावलीढ Mâlâv. 6,20. ज्वालावलीढवदन Harîv. 10200. Kir. 13,11. Prab. 3,8. Kathâs. 23,238 (wo स्फुरद्दीपावलीढे — मक्षीराक्षनिशानकैकचरीमुखे zu lesen ist). विद्युच्चक्रावलीढाङ्ग *bestrichen von, länge der Oberfläche berührt* R. 3,43,3. कदाचायावलीढं तु पङ्क्तम् Harîv. 7050. *auf der Zunge schmelzen lassen* Suçr. 2,341,1. दंष्टार्धावलीढे: *halb verzehrt* Çiç. 7. Scheinbar findet sich अवलीढ auch Kathâs. 26,142, wo aber statt खचद्दत्तावलीढतमालं (verstösst auch gegen das Metrum) wohl zu lesen ist खचद्दत्तावलोलीढमालं. Was bedeutet aber अवलीढ Suçr. 1,123,7? Vgl. अवलेढ fg. — intens. *beständig lecken, züngeln:* ज्वलन इवावलेलिक्ष्यत् चक्रम् MBh. 1,1181.

— आ *belecken, lecken an:* स्वजिह्वया । आलिक्ष्मृक्किणी Bhâg. P. 10,66,33. नहि सिंह: परालीढमामिषं भोक्तुमिच्छति । नृसिंहो भरतालीढं रामो राज्यं न भोक्ष्यते ॥ R. Gorr. 2,62,25. नालीढं नापरिक्षितम् MBh. 13,5044 nach der von Nîlak. erwähnten Lesart (आलीढा erklärt durch रसस्वली). मायाविभिरनालीढम् (आगम्) — निशाचरै: Raghu. 10,46. सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रै: 2,37. आलीढ = घर्षित Med. dh. 7. मणि: शाणालीढ: so v. a. *geschliffen, polirt* Spr. 2087, v. l. Vgl. आलीढ. — intens. *stark belecken, züngeln nach:* उपदावानलस्तद्वनमालेलिक्षान: सक् तेन दृष्टक् Bhâg. P. 5,6,9.

— प्रत्या, partic. °लीढ = घर्षित Med. dh. 12. — Vgl. प्रत्यालीढ.

— उद्, partic. उल्लीढ *geschliffen, polirt:* मणि: शाणोल्लीढ: Spr. 2087.

— निस् *nippen* Çat. Bh. 2,3,4,21. Kâty. Çr. 4,14,27. Çâṅkh. Çr. 2,9,13.

— परि *belecken:* वक्त्रं जिह्वया R. 5,79,13. मक्षिकाणी Jâti. 2,13. Pâraskar. 262,20. °लीढ R. 2,61,16 (परालीढ ed. Bomb.). Spr. 3683. Vgl. परिलेलिक्. — intens. *beständig lecken:* मक्षिकाणी परिलेलिक्ष् MBh. 5, 3594. 6,2701. Pâraskar. 35,7 (46,6 ed. orn.). 85,3. लेलिक्षान Bhâg. P. 10,16,25.

— प्र *auflecken, auf der Zunge vergehen lassen* Suçr. 2,430,1. — Vgl. प्रलेढ् fg.

— प्रति caus. *lecken lassen an,* mit dopp. acc. Çat. Bh. 14,4,2,4.

— वि *belecken, lecken an:* मक्षिकाणी MBh. 6,2840. 7,7362. Suçr. 2, 533,3. Bhâg. P. 7,6,30. *auflecken, auf der Zunge vergehen lassen* Suçr. 2,504,5 (med.). 506,20. — intens. *beständig belecken, züngeln nach:* विलेलिक्ष् MBh. 12,8078. (वनधूमकेतु:) विलेलिक्षान: स्थिरजङ्गमान् Bhâg. P. 10,19,7.

— सम् *belecken, lecken an* Kâṭh. 30,1. R. 5,25,15. 7,23,19. Bhatt. 13,42. मक्षिकाणी संलिक्ष् MBh. 9,3100. संलिक्षान 3,10653. 12,4948. so

v. a. *gemessen:* देवतातिथिशेषेण यात्रा प्राणस्य संलिह् 10049.

— परिस्म् *belecken, lecken an:* मृक्किणी परिमलिह्न् MBn. 3,11500. 11502. 4,692. 5,3627. 6,1918. 3037. 3593. 7,6378. 9,744.

2. लिह् (= लिह्) nom. ag. (nom. लिट्) *leckend* Schol. zu P. 1,2,46. Vop. 3,93. am Ende eines comp. Schol. zu P. 8,2,23. 4,43. H. 7. पदालेहमकरन्द° Bulg. P. 1,16,6. नयनयोरीक्षालिहो पाताः *ablecken* so v. a. *ablesend* Sin. D. 45,8. — Vgl. गुड°, क्षिद्धा°, दाम°, पुष्प°, मधु° (Bulg. P. 6,3,33 nicht *Biene*, sondern adj. *Honig leckend, — kostend*), रसना°.

लिह् (von 1. लिह्) nom. ag. dass.; s. वर्धलिह्, गो°.

1. ली, लिनाति (श्रयणे) Dhātup. 31, 31. लिनाति (= प्रापेति) बाला लावण्यम् Daśak. im ÇKDa. und bei Wasr. लिनाति ग्रन्थी नदी so v. a. *ergiesst sich in* Daśak. im ÇKDa. लाँयति (द्रवीकरणे) Dhātup. 34,6. Zu belegen nur लीयते (श्रयणे) Dhātup. 26,30. 1) *sich schmiegen an, sich andrücken:* दारुदारुतं भृशं त्रस्तं लीयमानं परस्परम् सैन्यम् MBn. 8,4162. लीयते विभक्तौ als etym. Erklärung von लिबुआ Nir. 6, 28. स्वातःकरणकरिणी संयमालानलीनम् *liegend an* Spr. 401. लीनविद्याधरोरगः (गिरेस्तटः) R. 4,83,26. नेन्द्रियार्थेषु लीयते *klingt nicht an* Hall. 261 nach Wasr. लीन *ganz hingegeben einer Sache* (loc.): तस्यौ संख्यायां लीना वाक्यव्यशाणिउला: Verz. d. Oxf. H. 58,b,38. सद्गुणध्याम° Z. d. d. m. G. 14,570,11. तत्त्व° Sarvadarçanas. 166,1. — 2) *stecken bleiben, stocken:* लीयते गर्भः *bleibt stecken* sc. im Mutterleibe Suçr. 1, 377, 1. कालः सूक्ष्मामपि कलां न लीयते 18,20. दोषो लीनो मर्मसु तिष्ठति 31,17. 246, 12. 377, 10. 2, 183, 13. Vīrān. 8, 28. दन्तलीने हनू *worin die Zähne stecken* Mahīdh. zu VS. 11,78. — 3) *sich niedersetzen, sich setzen auf* (von Vögeln und Insecten, gleichsam *sich anheften*): लीयमान इवाण्डजः MBn. 10,39. Kumāras. 7,21. पद्मान्धकारे खद्योतं लीयमानं ततस्ततः MBn. 14,185. तस्य घट्टैः शिरसि लीयते (impers.) Bhātt. 18,12. लीन *sitzend auf, in:* नैकतलीनदृक्समिधुना श्रोतोवक्त्रा Çik. 144. न पङ्कजं तत्पदलीनषट्पदम् Spr. 1381. Kir. 3,26. *sich legen* (auf's Lager): गृहे शयनमेके निशायां यत्र लीयते MBn. 12,11987. — 4) *sich ducken, kauern, sich verstecken, hineinschlüpfen in; verschwinden:* शशैर्लीनम् Spr. 2237. घनविद्युल्लीनबालचन्द्रसितत्वगाः Vārāh. Bṛh. S. 48, 12. कुञ्जलीनान्मृगान् Rāgat. 9,64. Spr. 830. MBn. 1,4310. 4315. R. 2,114,4 (125,4 Gorr.). 3, 1,23. 30,7. 68,8. 5,13,42. 20,21. 30,18. 56,75. व्याधस्तस्ते निभृतं लीनः Pañcat. 187,5. मातुः शय्यान्तरे Kām. Nītis. 7,51. Kumāras. 1,12. Gīt. 2, 1. Bhātt. 2,48. चित्रभित्तेरिवोत्तो रात्रौ पुमान् — निर्गतोऽपोषभुङ्मौ प्रातश्चैव लीयते Kathās. 66,48. शीघ्रं पिवेतद्रक्तं मे यावद्भौ न लीयते 72, 138. Sin. D. 7,9. R. 6, 16,9. त्रिलोक्यां लीयमानायां संवर्ताम्भसि Bulg. P. 3,24,33. 10,43,6. कुमुदमपि गते ऽस्तं लीयते चन्द्रबिम्बे रुसितमिव वधूनां प्रोषितेषु प्रियेषु Bv. 3,25. उत्थाय कुदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः Spr. 450. प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते *verschwindet in, geht auf in* R. Gorr. 1,1,106. Jīān. 3,180. Spr. 1412, v. l. 2163. Prān. 107,18. Tattvas. 27. लीना ब्रह्मणि Çvetāçv. Up. 1,7. MBn. 14,532. 544. Kālikop. in Ind. St. 9,20. Gaupar. zu Sāṅkhyak. 61. Bulg. P. 1,6,18. 15, 31. 3,10,7. 27,14. 6,1,2. Vedāntas. (Allah.) No. 149. Sarvadarçanas. 90,1. Gīt. 4, 2. लीनवस्तु Kav. 1,92. लीन *steckend in, verborgen in:* मौदामिनीव बलदोदरसंश्लिलीना Mālatīm. 15,1. शमीमिवाभ्यन्तरलीनपावकाम् Rāgat. 3,9. Spr. 1756. 2072. व्यक्ता नोक्ताश्च ये सर्वा लीना ये चाप्यनिर्मलाः *versteckt (nicht hier ausgesprochen)* Suçr. 2,536,13. Bhāg. Nitjāç. 19,20. 21 (Sin. D. 302). अन्तर्लीनं *hineingeschlüpft, drinnen steckend:* अन्तर्लीनभुजंगमं गृहमिव Spr. 118. दुःखानि Uttarār. 42,12 (56,10). Pañcat. 109,20. सर्पश्चिरं वल्मीकद्वारान्तर्लीनः 175,24. अपूर्वशर्वरीशान्तर्लीनभानुश्रियं दधे Rāga-Tar. 3,337. अन्तर्लीनम् adv. *innerlich:* विक्रस्य Pañcat. 185,3.191, 3. ed. orn. 18, 21. 41, 22. लीन n. *das Aufgehen —, Verschwinden in* Pañcar. 1,1,46. — गृधाणि लीयन्ते MBn. 6,3203 fehlerhaft für गृधा निलीं°, wie die ed. Bomb. liest; लीन fehlerhaft für नील MBn. 14, 2693 (ed. Bomb. नील). R. Gorr. 2, 8, 43. Prān. 109, 1 (v. l. नील). — Vgl. तामसलीन.

— caus. लापयते P. 1,3,70 (समाननशालीनीकरणे: प्रलम्भने च). 6, 1, 48, Vārtt. (प्रलम्भनशालीनीकरणयोः). Vop. 12, 1. 23,58 (पत्राभिनवे). त्रटाभिर्लापयते = पत्रामर्धिगच्छति P. 1,3,70, Sch. = प्रलभते P. 6, 1, 48, Vārtt., Sch. Warum nicht zu लप्?

— अनु *nach Etwas verschwinden:* शब्दं यसति भूतादिर्नभस्तमनुलीयते Bulg. P. 12,4,16.

— अप caus. med. *Jmd demüthigen oder anführen, hintergehen* Bhātt. 8,44. Gehört wohl eher zu लप्.

— अभि 1) *sich schmiegen an:* भीष्ममेवाभिलीयन्ते (रुवाभ्यलीयन्त ed Bomb.) MBn. 6,3128. कपिलाशावस्य क्रोडमभ्यलीयत Daçak. 11, 1. अभिलीन *angeschmiegt:* पश्चादुच्चैर्नुतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः Megh. 37. Pañcar. 3, 9, 15. — 2) *sich setzen auf, in* (von Vögeln und Insecten): विहगानाभिलीनाश्च लताः *auf denen Vögel sitzen* Harīv. 12012. भ्रमराभिलीनयोः पङ्कजकोशयोः Rāgh. 3, 8.

— अव 1) *stecken:* दोषाः श्लेष्मस्त्वग्वलीयमाना घनीभावमापन्नाः Suçr. 2, 193, 10. — 2) *sich niedersetzen* (von Vögeln): विहगादिभिरवलीनैः Vārāh. Bṛh. S. 53, 114. — 3) *sich ducken:* कर्णावाप्यच्युतैर्वाणैर्वध्यमानास्तु सोमकाः। अवालीयन्त राजेन्द्र वेदनार्ता भृशार्दिताः॥ MBn. 8,939. लज्जया त्रवलीयन्ती स्वेषु गात्रेषु मैथिली *versteckt sich in ihren Gliedern* R. 6, 99, 13. अवलीन *der sich geduckt —, versteckt hat:* शिशावत्ने (हनूमान्) R. 5,23,13. उदयावलीन von der Sonne Naish. 2,46.

— व्यव *sich ducken, kauern:* मुक्ता गाण्डीवनिर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः। सर्वसैन्यानि भीतानि व्यवलीयन्त MBn. 6, 3120 = Harīv. 13483.

— समव *aufgehen —, verschwinden in:* न तस्य प्राणा उत्क्रामन्त्यत्रैव समवलीयन्ते विमुक्तश्च विमुच्यत इत्येवमादिश्रुतेः Vedāntas. (Allah.) No. 130.

— आ 1) *sich anschmiegen:* कोकिला स्थिता चूते मत्तेवालीय Kathās. 111,33. माहं कदम्बमालीना मेघकाले Harīv. 3424. आलीनचन्दनौ। स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ Rāgh. 4,51. — 2) *sich setzen auf, in* (von Insecten): आलीनषण्मदौ पद्मौ Kathās. 85,36. — 3) *sich ducken, kauern, sich verstecken:* मुकुरुत्पतते बाला मुकुः पतति विक्कला। मुकुरालीयते भीता MBn. 3, 2375. अस्ताद्रिकन्दरालीने लज्जयेवांशुमालिनि *versteckt* Kathās. 18,103. बकालीन *wie ein Reiher kauernd, — sich versteckt haltend* MBn. 12, 5809. आलीननरवारणा (अयोध्या) *in der Menschen und Elephanten sich versteckt halten* R. 2, 114, 2. आ समन्तालीनानि स्निग्धानि लग्नानि नराणां वारणानि कबन्धानि यस्याम् Comm. — Vgl. आलय und भावालीना.

— प्रत्या *sich hängen an* (acc.): तमेतस्मिन्युगे मृत्युः प्रत्यालिल्ये

Ind. St. 2,315,9.

— उद् caus. उल्लापयते in der Verbindung वालम् = वञ्चयति (वाल-मुल्लापयति in anderer Bed.), in der Verb. श्येनो वर्त्तिकामुल्ला° = न्य-ग्भावयति P. 1,3,70, Sch. 6,1,48, Vârtt., Sch. Vop. 23,53. Warum nicht zu लप्.

— उप *sich anschmiegen an* (acc.): पद्मा सर्वाणि भूतानि मृत्योर्भीतानि मारिष । धर्ममेवोपलीयते कर्मवत्ति हि यानि च ॥ तथा कर्णं मकेधासं पु-त्रास्तव नराधिप । उपालीयत संत्रासात्पाण्डवस्य महात्मनः ॥ MBh. 8, 4171. fg. 4170.

— नि 1) *ankleben, sich anheften:* निलीना मत्तिका मूर्ध्नि Varâh. Bṛh. S. 93,58. 43,63. सोत्रेश्च निलीनभृङ्गैः Bhaṭṭ. 2,5. पूर्वमेव हि वस्तूनां यो ऽधिवासो निलीयते Râǵa-Tar. 3,426. मधु भवननिलीनम् Varâh. Bṛh. S. 93,58. ब्रह्मज्ञाने निलीना: so v. a. *ganz vertieft in* Spr. 1313, v. l. für विलीनाः. — 2) *sich niedersetzen* (von Vögeln): घनेषु च निलीयते वा-यसाः MBh. 4,1462. नीचैर्गृध्रा निलीयते (so die ed. Bomb.) भारतानां चमूं प्रति 6,5203. निलिल्ये मूर्ध्नि गृध्रो ऽस्य Bhaṭṭ. 14,76. Harîv. 3828. श्ये-नादयो यस्य निलीयेयुः शिरस्यथ Mâlav. P. 51,69. काकः कपोतो गृध्रो वा निलीयेयुस्य मूर्धनि Verz. d. Oxf. H. 51, *a*, 33. — 3) *sich verstecken, sich verschlüpfen, verschwinden, unsichtbar werden;* in der älteren Sprache folgende Formen: निलीयमान, निलयते (= निरयते von अय् Sâyaṇa. K. zu P. 8,2,19), न्यलयत und न्यलायत (im Padap. ohne Avagraha), निलिल्ये, निलयां चक्रे, न्यलेष्ट, निलायम्, निलीन. पेडं ऽभिगतो निलयते AV. 11,2,13. उतास्मिन्नल्पे उदके निलीनः 4,16, 3. स्रुवा अभ्युद्यच्छमाना निलीयमानेति Âit. Br. 3,22. स निलायत सो ऽपः प्राविशत् TS. 2,6,6,1. देवेभ्यो नि° *vor den Göttern* 5,1, 8,4. 2,2. देवेभ्यो अनिलायत 2,3. देवेभ्यो निलायत 4,2,6. 5,2,8,2. TBr. 1,1,3,3. 2,8,5. 4,2,3. सा भीषा निलिल्ये Çat. Br. 1,2,8,1. 6,4, 1. 4,1,2,1. 13,1,4,3. Kâṭh. 25,1.7. निलीयते MBh. 1,4980. Spr. 2710. मातुः *vor der Mutter* P. 1,4,28, Sch. निलीयमाना वृतेषु Bhâg. P. 5,12,26. निलिल्ये MBh. 3,10360. 12,10685. Harîv. 8715. 8718. निलि-ल्यिरे MBh. 3,10975. Bhâg. P. 3,17,22. निलिल्युः MBh. 3,11109. 12091. R. 2,97,4 (106,2 Gorr.). Bhâg. P. 3,13,33. 4,14,3. तदा निलिल्युर्दि-शि दिशि 10,23. गुहास्वन्ये न्यलेषत Bhaṭṭ. 15,33. निलीय Harîv. 8730. R. 6,9,6. Gît. 2,11. Prab. 100,17. निलीन MBh. 1,7187. 7,5767. R. 1, 35,15. Prab. 88,14. Bhâg. P. 3,15,33. निलीन mit pass. Bed.: वरणया-नि — यथानिलयमायद्भिर्निलीनानि मृगद्विजैः *Wälder, in denen sich Thiere und Vögel verkrochen hatten,* R. 2,46,3. — Vgl. निलय fg. und निलापन in den Nachträgen.

— अपनि *sich verstecken, verschwinden:* शत्रवः पराजितासो अप नि लयन्ताम् RV. 10,84,7. देवा अपन्यलयन्त Çat. Br. 4,1,3,1.

— अभिनि s. °लीयमानक.

— संनि 1) *sich niedersetzen* (von Vögeln): उपरिष्टाच्च वृक्षस्य बलाका संन्यलीयत MBh. 3,13654. — 2) *sich verstecken, verschwinden:* यौ यौ दिशमवैक्षत । तस्यौ तस्यौ भयत्रस्ता रात्तसाः संनिलिल्यिरे R. 6,72,25.

— प्र, °लीय und लाय Vop. 12,1. 26,212. *sich verstecken:* प्रलायम् mit इ und वृ *sich versteckt halten* Çat. Br. 7,2,4,9. TBr. 3,2,8,3. Kâṭh. 29,8. *sich auflösen; aufgehen in* (auch vom Sterben), *verschwinden:* प्रेव वै रेतो लीयते प्रेव वपा लीयते Âit. Br. 2,14. Çat. Br. 14,2,2,34. अव्यक्ताद्य-क्षयः सर्वाः प्रभवत्यहरागमे । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ Bhâg. 8,19. M. 1,54. तास्वेव भूतमात्रासु प्रलीयते 12,17. Kûrmap. in Ind. St. 9,20. सद्यः मेघेन तडित्प्रलीयते Spr. 2970. एकः प्रजायते ब्रह्मुरेक एव प्रलीयते 3822 (vgl. Bhâg. P. 10,49,21). तस्माद्विवर्तता तेन्नस्त्वय्येव प्र-लीयताम् MBh. 7,2059. प्रलीयते चोद्भवति 12,7084. 13,2292. 14,614. 692. 705. Harîv. 518. 10550. Saṃk. 1,377,10. Kumâras. 2,10. Tattvas. 27. Bhâg. P. 10,14,25. Pâṇâr. 2,1,31. Kull. zu M. 1,52. प्रलीन *verschwunden, dahin gegangen* (auch von Gestorbenen), *aufgegangen in* Bhag. 14,15. MBh. 14,690. 695. 698. 702. 704. उत्थानानि प्रलीनविक्ल-वानि R. 2,39,12. Saṃk. 1,347,19. Spr. 3839. Çântiç. in Çatakîv. 40. Kathâs. 94,66. °मुक्त Râǵa-Tar. 1,1. Pâṇâr. 2,1,21. 30. Sarvadarçanas. 179,21. प्रलीनोडुपे निशि Bhâg. P. 3,2,6. °शाखा *verloren gegangen* Müller, SL. 104. प्रलीना (= स्वस्वव्यापाररक्षिताः Sây.) न्योकस इव शेरे *aufgelöst, hingegossen* Âit. Br. 5,28. — Vgl. प्रलय, प्रलयन, प्रलीनता unter प्रलीन.

— विप्र, partic. °लीन *auseinandergeflogen* (von einem geschlagenen Heere) MBh. 7,746.

— संप्र *verschwinden, aufgehen —, untergehen in:* अव्यक्तं पुरुषे ब्र-ह्मण्यविष्क्रिये संप्रलीयते MBh. 12,12895. Bhâg. P. 11,24,25. कार्याव्यो Spr. 1478. °लीन *verschwunden, aufgegangen in:* °महोरग (गिरि) R. 5,4,12. एवं धर्माद्यात्मधर्मेषु सर्वान्सर्वावस्थं संप्रलीनाविबोध *aufgegangen in* so v. a. *enthalten in* MBh. 12,2330.

— प्रति 1) *sich klammern an:* प्रतिलीन यासीत so v. a. *unverrückt* Çâṅkh. Gṛhj. 3,1. — 2) *verschwinden:* स्वप्नवत्प्रत्यलीयत Bhâg. P. 3,21,17.

— वि, °लेता und लाता, °लीय und °लाय P. 6,1,51, Sch. 1) *sich schmiegen —, sich heften an:* तत्र केचिन्नरा भीता व्यलीयन्त महीतले so v. a. *duckten sich auf den Erdboden* MBh. 10,410. पतत्पतंगप्रतिम-स्तपोनिधिः पुरो ऽस्य यावन्न भुवि व्यलीयत Çic. 1,12. तदङ्के विलीनमि-तलोचना: *geheftet auf* Pâṇâr. 3,7,38. तमोभिरुक्तायाविलीनैः *geheftet an* Râgat. 13,56. ब्रह्मज्ञाने विलीना: *vertieft in* Spr. 1313. — 2) *sich setzen* (von Vögeln): शाखाविलीनानां पतिणाम् *sitzend auf* Kathâs. 26, 28. — 3) *stocken:* विलीनातारम् Spr. 1163. — 4) *sich verstecken, sich verschlüpfen:* विलीयमानैर्विरुतैः Spr. 2839. Kathâs. 26,84. विलीन *versteckt* Bhâg. P. 7,2,56. विलीयते यं दृष्ट्वा शत्रवः Hall. 188 bei West. विलिल्युः Anâd. 6,13 (निलिल्युः MBh. 3,12091). *verschwin-den, zu Nichte werden:* यस्मिन्धर्मो विराजेत तं राजानं प्रचक्षते । यस्मि-न्विलीयते धर्मस्तं देवा वृषलं विदुः MBh. 12,3376. Bhâg. P. 1,18,45. Spr. 450, v. l. न कथंचिद्विलीयते विद्वद्भिश्चिन्तिता नृपाः 1955. विलीयेरन्दुः 2840. विलीयते तदा क्लेशाः Bhâg. P. 3,7,13. Weber, Rimâr. Up. 355. fg. Gegens. ज्ञायते Bhâg. P. 10,24,13. 6,1,55. Pâṇâr. 4,3,208. विलीन *verschwunden, zu Nichte geworden, hingegangen* Maitrâyaṇ. 6,24. Ṛv. 4, 1. Varâh. Bṛh. S. 4,17. Prab. 98,13. Pâṇâr. 1,14,23. 3,1,20. °पल्लव Kathâs. 22,3. अविलीना वत्सरसहस्राणि भूपाः so v. a. *lebe* Uttarar. 124, 12 (168,7). — 5) *vergehen, sich auflösen, schmelzen:* क्षिप्रम् Harîv. 6245. तुहिनेन विलीयता Mâlav. P. 61,19. स्थालीपाके वि लीयते AV. 20,134, 3. 4. घाण्यम् Kâvy. 2. Suçr. 1,99,6. विलीयमानेवानन्दात् Daçar. 2,17. विलीन *vergangen, aufgelöst, geschmolzen* AK. 3,2,49. Trik. 3,3,160. H. 1487. an. 3,415. Hall. 2,121. Kâṭhâ. Up. 6,13,1. Suçr. 2,348,4. Spr. 830.

Kathâs. 85, 84. 87. Mârk. P. 61, 28. स्वर्गविलीन TS. Comm. 2, 109, 6. — Vgl. विलय fg. — caus. 1) *verschwinden machen, aufgehen lassen in* (loc.), *zu Nichte machen:* सर्वं चिदात्मनि विलापयेत् Verz. d. Oxf. H. 226, *b*, 3. 6. विलापिता (als Erkl. von निर्यापिता:) देवधर्मा: Comm. zu Buâ. P. 3, 21, 17. विलापित Prasn. 116, 8. — 2) *schmelzen* (trans.): विलापयत्यात्मम् TBa. Comm. 1, 66, 16. Kâuç. 126. विलाप्यमान Sûça. 2, 363, 3. विलापित 362, 10. विलापयति, विलापयति, विलालयति oder विलीनयति घृतम् P. 7, 3, 39, Sch. ज्ञतु विलापयति ebend. लोहं विलापयति Siddh. K. 153, *a*, 12. Vop. 18, 15. 23, 53.

— घनुवि *sich auflösen in* (acc.): यथा सैन्धवखिल्य उदके प्रास्त उदकमेवानुविलीयेत Çat. Br. 14, 5, 4, 12.

— घभिवि caus. *schmelzen lassen:* °लाप्य Sûça. 2, 88, 3.

— प्रवि *verschwinden, zu Nichte werden:* कर्म समग्रं प्रविलीयते Bhâg. 4, 22. पुन: MBh. 1, 2819. 6461. पापम् — यथा लवणमम्भोभिराप्लुतं प्रविलीयते 13, 7590. 14, 1165. Harîv. 12246. Sûça. 1, 318, 4. Varâh. Bṛh. S. 34, 3. Verz. d. Oxf. H. 224, *a*, 1. इत्येव सर्वे प्रविलीयन्ति काना: Mahâp. Up. 3, 2, 2. MBh. 5, 3839. Vgl. प्रविलय. — caus. °लापयति 1) *verschwinden —, aufgehen lassen in* (loc.) Buâ. P. 1, 13, 52. Verz. d. Oxf. H. 226, *b*, 4. 5. — 2) *auflösen, schmelzen* Sûça. 1, 20, 9. 14. 2, 368, 12.

— सम् *sich anschmiegen:* अन्योऽन्यं समलीयन्त पलायनपरायणा: MBh. 7, 934. मृदुराई: कृशो भूत्वा शनै: संलीयते रिपु: Spr. 4746. गात्रं संलीय *an den Leib sich schmiegend* 3528. श्रवणे शिरोधरायां संलीने Harîv. 4787. संलीणकर्णा Pañkat. 163, 6. *hineingehen in:* यथा राजन्हस्तियदे पदानि संलीयन्ते सर्वमन्नोदवानि MBh. 12, 2330. नष्टमात्मनि संलीनं नाधिगन्तुर्कृताशनम् 13, 4036. *sich verstecken, sich versteckt halten:* संलीनमपि दुर्गेषु निग्रन्तुर्यमसादनम् 1, 7671. संलीना मृगयन्तिण: R. Gorr. 1, 36, 18. निलयसंलीनैर्मृगपतिभि: 2, 44, 3. 3, 29, 12. *sich ducken, kauern, sich zusammenziehen:* संलीय तस्मिन्विषमे वृते R. 5, 19, 34. संलीयमान von einem geschlagenen Heere MBh. 7, 8146. संलीन *geduckt, gekauert, zusammengezogen* Sûça. 2, 384, 4. MBh. 3, 8705. संलीनो वृषोपस्थ उपाविशत् 4, 1457. 7, 5794. 10, 443. संलीना स्वेषु गात्रेषु Sâh. D. 116. शैलपृष्ठार्धसंलीन उरग: Harîv. 4677. संलीनमानस (संदीन° die neuere Ausg.) so v. a. *kleinmüthig* Harîv. 5690. — Vgl. संलय.

2. ली f. = प्रेषण (vgl. 1. ली) und चपल (vgl. 3. ली) Med. l. 1.

3. ली nur intens. लेलायति (दीप्ति) Siddh. K. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3, 1, 27. लेलीयति Çat. Br. 14; लेलायत्ती, लेलीयतम् gen., घलेलायत्, घलेलत्, घलेलीयत; *schwanken, schaukeln, zittern:* पृथिव्यलेलायन्यया पुष्कारपर्णमेवम् Çat. Br. 2, 1, 4, 5. TS. 5, 6, 4, 2. Kâṭh. 8, 2. 22, 9. Çat. Br. 11, 4, 2, 1. वायोर्लेलयत इवेवापगृह्णन्ति 8, 2, 3. 14, 7, 2, 7. यदा लेलायते ऋचि: समिद्धे हव्यवाहने Mahâp. Up. 1, 2, 3. नवद्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहि: Çvetâçv. Up. 3, 18. लेलायमाना Bez. einer der sieben Zungen des Agni Mahâp. Up. 1, 2, 4. Gobhil. 1, 14. — Vgl. लेलया.

लीका f. Bez. best. böser Geister Mârk. P. 51, 109. fgg.

लीक्का f. = लिक्षा Çabdar. im ÇKDr.

लीक्षा f. dass. ebend.

लीन s. u. 1. ली; davon 1) लीनता f. *a) das sich Anschmiegen an:* लीनता करिपादाब्जे मुक्तिरित्यभिधीयते Pañkat. 2, 7, 2. — *b) das Versteckt-sein:* पर्णान्यन्तरलीनतां विदधति स्कन्धोदयात्पादपा: Çiç. 167. — 2) लीनत्व n. *das Stecken in Etwas, Versteckt-sein* Sûça. 2, 405, 2.

लीप्सितव्य (vom desid. von लभ्) adj. *begehrenswerth* Ait. Br. 2, 3.

लीला f. 1) *Spiel, Scherz, Belustigung:* = क्रीडा, विलास AK. 3, 4, 20, 201. H. 355. an. 2, 308. Med. l. 46. क्रीडन्ति लीलाम् Harîv. 4339. °विधान 15787. लीला विदधत: Buâ. P. 1, 1, 18. लीला: कर् Harîv. 2463. सक्ता लीला धारयन् 2985. लीलाघो नारद: MBh. 13, 252. Bhâr. Nîtiç. 34, 32. Spr. 685. 3318. fg. Ragh. 16, 71. Çiç. 8, 24. Buâ. P. 10, 11, 22. Verz. d. Oxf. H. 127, *a*, No. 223. स्त्रीभिर्लीलैव प्रेष्यते लीला Prasaṅgâbh. 14, *b*. शिशुलीला तत: कुर्वन् Harîv. 3407. 3650. बाल° Buâ. P. 3, 2, 3. बाललीलाधर Sûça. 2, 394, 11. विधतो चाम्बिकालीलाम् (ब्राह्मीम्) Kathâs. 93, 78. कृष्ण° Spr. 4897. वृद्धो ऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम् 4036. कन्दुक° *Ballspiel* Kumâras. 3, 19. Buâ. P. 5, 9, 19. 8, 12, 18. 22. हिन्दोल° Spr. 3053. द्यूत° Kathâs. 62, 164. पानादि° 18, 27. 17, 1. 38, 22. 56, 210. 75, 115. 108, 123. मृगया° (so zu verbinden) 42, 6. संभोग° 93, 46. तन्मुखाब्जालि° 74, 240. सदुद्भवस्थाननिरोध° Buâ. P. 2, 4, 12. Sarvadarçanas. 40, 20. लीलया निःशङ्कितया Pañkat. 161, 18. लीलया *zur Belustigung, um sich zu belustigen* Spr. 566. Kathâs. 44, 40. Sarvadarçanas. 35, 7. Buâ. P. 1, 1, 17. 3, 7, 2. 10, 11. घात्मलीलया dass. 1, 10, 24. स्वलीलया dass. 7, 8, 40. 10, 8, 32. स्वलीलावशात् Sarvadarçanas. 54, 18. am Anf. eines comp. लीला so v. a. लीलया *zur Belustigung:* °विग्रहधरण 129, 2. 13. ज्ञलद° *das Spiel der Wolken* Journ. of the Am. Or. S. 7, 44. पल्लव° Spr. 680. Insbes. *die in der Nachahmung des Geliebten bestehende Belustigung eines Mädchens:* प्रियानुकारणं लीला मधुराङ्गविचेष्टितै: Daçar. 2, 35. 4, 64. Sâh. D. 136. 50, 15. 54, 2. Pratâpar. 55, *b*. AK. 1, 1, 2, 32. 3, 4, 20, 201. H. 307. H. an. Med. Halâ. 1, 39. Gît. 6, 5. — 2) *blosses Spiel, blosse Belustigung* so v. a. *eine ohne alle Anstrengung von der Hand gehende Handlung:* निखिलवारिधियान° Râjat. 4, 717. कोर्धृतक्रोडतनो: स्वनायया निशम्य गोरुद्धरणं रसातलात् । लीलाम् Buâ. P. 3, 20, 8. लीलया so v. a. *ohne alle Anstrengung, mit der grössten Leichtigkeit* MBh. 13, 858. Harîv. 2330. R. 1, 67, 15. 3, 31, 20. 4, 9, 92. Kathâs. 47, 84. Vṛddha-Kâç. 15, 19. Buâ. P. 3, 2, 30. 13, 46. 19, 9. 11. Mârk. P. 21, 83. 82, 49. Pañkat. 48, 20. 211, 12. ed. orn. 56, 3. Hit. 81, 18; vgl. लीलामात्रेण Pañkat. 1, 9, 22. घप्रयत्नेनैव लीलान्यायेन Çâk. bei Wind. Sankara 112. Am Anf. eines comp. लीला = लीलया *ohne Anstrengung:* °साध्य Kathâs. 123, 161. °दग्ध Spr. 919. °गोवर्धनधर Pañkat. 4, 3, 134. — 3) *blosses Spiel* so v. a. *blosses Aussehen, Schein:* स प्रविश्य ददर्शात्र चित्रालोकनलीलया । स्थितं कनकवर्षं तं नृपं चित्रकरो रुरु: ॥ so v. a. *er betrachtete den Fürsten als wenn er ein Bild ansähe* Kathâs. 55, 39. तस्मिंश्चितानले — न्यपतच्छीतलह्रदलीलया *als wenn es ein kühler Teich wäre* 53, 160. गजलीलया so v. a. *nach Art eines Elephanten, wie ein Elephant* Buâ. P. 3, 13, 32. गजेन्द्रलील *einen Elephanten darstellend, einem El. gleichend* 26. 9, 10, 6. Auch in comp. mit dem, was den Schein bewirkt: शैलप्राकारलीलया Râjat. 1, 31. लावण्यलीलाजल (सरस्) Spr. 1970. गोत्रलीलातपत्र Buâ. P. 3, 2, 33. — 4) *beabsichtigter Schein, Verstellung:* °नटन *ein Tanzen, durch welches man Jmd zu täuschen beabsichtigt,* Spr. 2396. °मन्दं प्रस्थितम् *erkünstelt langsam* 2081. घवज्ञया न दातव्यं कस्यचिल्लीलयापि वा so v. a. *im Spotte, zum blossen Scheine* 4436, v. l. — 5) *Anmuth, Liebreiz* Kumâras.

1,84. Ragh. 6,1. लीलावधूतेक्षामरैः Megh. 36. Kathâs. 56,250. Kâtyâp. 34. Prasan. 40,4. °खेल Ragh. 4,22. °विलसितैः Spr. 771. °स्मित Ragh. 5,70. Râja-Tar. 4,302. °हसित Bhâg. P. 2,2,12. °गति Ragh. 7,7 (= Kumâras. 7,58). लीलावलोकन Bhâg. P. 3,20,30. 8,8,7. °वलयरणित Spr. 23. — 6) *ein best. Metrum:* 4 *Mal* –⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. II, 162 (XI, 6). — Das Wort wird gewöhnlich als eine Corruption von क्रीडा betrachtet, könnte aber vielleicht mit 3. ली in Verbindung stehen. — Vgl. घस्र°, घव°, घादि°, तुरगलीलक, भागवत-लीलारहस्य, मध्य°, महालीलसरस्वती, राजलीलानामन्, सलील.

लीलाकमल n. *eine zum Spielen dienende Lotusblüthe* Kumâras. 6,84. Megh. 66.

लीलाकार m. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,409. fg. — Vgl. मत्तमातङ्ग°.

लीलाकलह m. *ein scherzhafter —, nicht ernstlich gemeinter Streit* Spr. 3178.

लीलाखेल 1) adj. *anmuthig sich wiegend* Ragh. 4,22. — 2) n. *ein best. Metrum:* 4 *Mal* – – – – – – – – – – – – – – – – Colebr. Misc. Ess. II, 161 (X, 6); लील° gedr., man könnte auch लीलाखेला vermuthen.

लीलागार n. *Lusthaus* Ragh. 8,94.

लीलागृह n. dass. Kathâs. 1,66.

लीलागेह n. dass.: घम्बु° Kathâs. 114,51.

लीलाङ्ग adj. als Beiw. eines Stiers MBh. 13,3778 fehlerhaft für नीलाङ्ग. Nîlak.: लीलाङ्ग = विलसिताङ्ग.

लीलाचल m. N. pr. eines Gebietes, = लीलाद्रि = पुरुषोत्तम (?) Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,13. — Vgl. लीलापर्वत und नीलाचल.

लीलातनु f. *eine zum blossen Vergnügen angenommene Form, Scheinform* Bhâg. P. 7,7,34.

लीलातामरस n. = लीलाकमल Spr. 2662. 2671.

लीलाद्रि m. = लीलाचल Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,13.

लीलापद्म n. = लीलाकमल Sâh. D. 21,5. Kirâtârg. 2,361.

लीलापर्वत m. N. pr. eines *Berges* Kathâs. 48,51. — Vgl. लीलाचल.

लीलाब्ज n. = लीलाकमल Kuvalây. 166,*a*,3.

लीलाभरण n. *Scheinschmuck*, z. B. ein Armband aus Lotusfasern Çiç. Cu. 60,7.

लीलामधुकर m. Titel eines Schauspiels Sâh. D. 192,4.

लीलामनुष्य m. *dem Schein nach Mensch, nicht in Wirklichkeit Mensch:* विष्णु Bhâg. P. 10,43,45.

लीलामय (von लीला) adj. *in Spielen —, Belustigungen bestehend, davon handelnd:* रासक्रीडादिलीलामयगीतानि Verz. d. Oxf. H. 128,*b*,21.

लीलामानुषविग्रह adj. *der nur zu seiner Belustigung oder zum Schein einen menschlichen Körper hat*, unter den Beiww. Krishṇa's Pañkâs. 4,1,17.

लीलाम्बुज n. = लीलाकमल Kathâs. 23,69. 25,222.

लीलाय् (von लीला), °यति, °यते *spielen, sich belustigen:* °यत्यः कुलं घ्नन्ति (योषितः) Spr. 2672. Harîv. 8331. °यमान 10597. R. 3,43,19. लीलायित n. *Spiel, Belustigung* Gît. 12,28. Râja-Tar. 1,208. — Vgl. राज्य°.

लीलायुध m. pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 5,592. wohl fehlerhaft für नीलायुध, wie die ed. Bomb. liest.

लीलारति f. *Belustigung:* कोकेषु *mit Krähen* Spr. 926.

लीलारविन्द n. = लीलाकमल Ragh. 6,13. Kathâs. 28,53.

लीलावज्र n. *ein wie ein Donnerkeil aussehendes Werkzeug* Kathâs. 35,42.

लीलावतार m. *das Erscheinen Vishṇu's auf Erden zu seiner eigenen Belustigung* Bhâg. P. 1,2,24. 2,6,45. 8,24,39.

लीलावत् (von लीला) 1) adj. *anmuthig, reizend:* भारती Verz. d. Oxf. H. 142,*a*,10. Colebr. Alg. 1. — 2) f. °वती *a) eine anmuthige Schöne* H. 507, Sch. Spr. 2673. 3168. Colebr. Alg. 3. 127. — *b)* Beiw. der Durgâ Verz. d. Oxf. H. 92,*b*, No. 148, Z. 5. — *c)* N. pr. der Gattin des Asura Maja Kathâs. 45,137. — *d)* N. pr. einer Gemahlin Avikshita's Mârk. P. 123,17. — *e)* N. pr. einer Kaufmannstochter Hit. 28,2. — *f) ein best. Versmaass* Colebr. Misc. Ess. II, 137 (III, 33). — *g)* Titel eines Abschnittes des Siddhântaçiromaṇi Gild. Bibl. 505. fgg. Hall 120. Verz. d. Oxf. H. 338,*a*,18. Verz. d. B. H. No. 828. fgg. 831. °टीका 868. Ind. St. 2,253. — *h)* Titel eines medic. Werkes Verz. d. Oxf. H. 404,*b*, No. 35. — *i)* = न्याय°: °प्रकाश Titel eines Commentars zu diesem Werke Verz. d. B. H. No. 687. fgg. — Vgl. न्याय°, कृष्ण°.

लीलावापी f. *Lustteich* Kathâs. 9,66.

लीलावेश्मन् n. *Lusthaus* Râja-Tar. 1,338.

लीलाशुक m. *Vergnügungspapagei*, Beiw. des Dichters Bilvamaṅgala Verz. d. Oxf. H. 128,*a*, No. 230.

लीलास्वात्मप्रिय m. N. pr. eines Autors von Mantra bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,14.

लीलोद्यान n. *Lustgarten* Taik. 2,4,1. Kathâs. 71,72. 109,41. 114,55.

लीलोपवती (?) f. *ein best. Metrum:* 4 *Mal* – – – –, – – – – – – – – – – Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 18).

1. लुक् *zusammentreffen mit* (समम्, सह): देवैः सर्वैः समं यत्र लुकिष्यसि महेश्वर, इह मे प्रीतिरतुला लुकितस्य मुरेः सह Verz. d. Oxf. H. 66, *a*, N. 1 zur Erklärung von लुकेश्वर.

2. लुक् in der Gramm. *Abfall, Schwund* VS. Prât. 3,12. P. 1,1,61. 2, 19. 4,1,22. 7,3,89. 4,82. Vop. 3,54. 91. 169. 6,3 u. s. w. *abgefallen, geschwunden* VS. Prât. 1,114, v. l. Wird Gaṇaratnamah. 2,86 auf लुच् (लुच्यते ऽपनीयत इति लुक्) zurückgeführt, was wohl richtig ist, obgleich लुक् (loc. लुकि, gen. du. लुकोस्) nicht लुच्, das Thema ist.

लुकेश्वर n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,*b*,19. °तीर्थ 66, *a*,31. — Vgl. unter 1. लुक् und लुठनेश्वरतीर्थ, लुठेश्वर.

लुगि in महालुगिपद्धति.

लुङ्ग = मातुलुङ्ग *Citrone* SidDh. und Hem. in Nigh. Pa.

लुञ्च्, लुञ्चति (प्रयत्नने) Dhâtup. 7,5. लुञ्चित्वा und लुचित्वा P. 1,2,24. Vop. 26,205. *raufen, ausraufen, rupfen, berupfen:* लुलुञ्चुश्च तदा केशान् *sie rauften sich das Haar* MBh. 9,1625. R. 6,37,30. Müller, SL. 83. Bhatt. 3,22. 14,59. 15,2 (वलुञ्चयुः). लुञ्चितकेशाः von den Gaina gesagt Colebr. Misc. Ess. I, 381. लुञ्चितमूर्धजाः und लुञ्चिताः desgl. Sarvadarçanas. 44,3. 5. श्मश्रूणि । मूर्धालुलुचे Bhâg. P. 4,5,19. किञ्चिल्लुञ्चितपत्र Kathâs. 62,70. तितिरिं लुञ्चितम् Sûçr. 2,435,14. वलुञ्चोत्कर्णनासिकम् *ausreissen, abreissen* Bhatt. 13,57. *enthülsen:* तिलानुञ्छोदकेन समर्घे लुञ्चित्वा (v. l. विलुप्य) Pañkat. 121,13. तिला लुञ्चिताः (v. l. लुण्टिताः) 17. 19. fg. 22. 24. Spr. 1516. मृष्टलुञ्चित (mit Vorstellung der Worte) gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. Statt किंचिन्मुञ्चत: Sûçr. 1,105,

13 ist wohl किंचिल्लुञ्चत्तः *an Etwas zupfend* zu lesen.

— अव *abreissen, ausreissen:* अवलुञ्च ग्रामेका तुरावाग्रो MBh. 3, 10760. fg. Mark. P. 5, 3. — Vgl. अवलुञ्चन.

— आ *ausraufen, rupfen an:* कर्णो केशांश्च Sucr. 1, 118, 20. — Vgl. आलुञ्चन.

— उद् *ausrupfen, herupfen:* उल्लुञ्चितच्छद् Kathis. 62, 71. — Vgl. उल्लुञ्चन.

— वि *ausraufen:* मूर्धजान् Bhatt. 18, 36.

लुञ्च (von लुञ्च्) nom. ag.: अ° vielleicht *der Einen nicht rupft und zupft* Buan. Nitis. 34, 102. — Vgl. कु°.

लुञ्चक (wie oben) 1) nom. ag. *Raufer, Zauser;* s. केश°. — 2) m. wohl *eine best. Hörnerfrucht* Sucr. 2, 72, 19 (es könnte aber auch अलु° oder अलु° gemeint sein).

लुञ्चन (wie oben) n. *das Ausraufen:* केश° Dacak. 68, 13. — Vgl. लुण्ठन 2).

लुञ्ज्, लुञ्जयति (हिंसाबलादाननिकेतनेषु, v. l. दान st. आदान) Dhatup. 32, 31, v. l. (भाषार्थ oder भासार्थ) 33, 85.

लुट् लौटते (गतिकर्मन्) Naigh. 2, 14. (प्रतिघाते, दीप्तिप्रतिरुत्योः) Dhatup. 18, 8. लौटति (विलोडने, विलोटने, विलोटविलोडयोः) 9, 27. लुंठति (विलोडने) 26, 113. *sich wälzen:* लुठन्सशोको भुवि Bhatt. 3, 32. 18, 11. लुटत् wohl fehlerhaft für लुठत् *umherliegend:* सर्वत्रैव लुटत्सुरत्नविचये Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 7, Cl. 20. — caus. लोटयति (भाषार्थ oder भासार्थ) Dhatup. 33, 81. aor. अलूलुटत् und अलुलोटत् Naisa in Simon. K. zu P. 7, 4, 3.

1. लुठ्, लुठति (संश्लेषणे, लोठे) Dhatup. 28, 87. अलुठत् und अलोठिष्ट P. 1, 3, 91. 1) *sich wälzen:* तं पादात्ते लुठसि Spr. 752. लुठति धरणिशयने Gir. 3, 5. 7, 34. Verz. d. Oxf. H. 77, *a*, 13. लुठन् 145, *a*, 28. Kathis. 71, 55. 84, 14. 89, 34. 95, 25. पङ्के लुठत्तमुरगम् Rāga-Tar. 4, 600. Çatr. 14, 252. Kull. zu M. 6, 32. अनुलुठन् Rāga-Tar. 7, 1067. लुलोठ Kathis. 7, 66. 61, 212. 71, 54. Hit. 123, 18. 128, 13. लुठमानः स गच्छति Mārk. P. 12, 6. लुलुठे Bhatt. 14, 34. अलोठिष्ट 15, 36. लुठित *sich wälzend:* चकार मृतमात्मानं निशेष्टं लुठिताङ्गकम् Kathis. 58, 29. भूमौ लुठिताः Pārśvan. ed. orn. 57, 20. von einem Pferde AK. 2, 8, 2, 18. n. *das Sichwälzen* (eines Pferdes) H. 1245. *sich wälzen* von einem Flusse: अलकानन्दा लुठन्ती भारतमभि वर्षम् Bhāg. P. 5, 17, 9. *sich hinundherbewegen, rollen:* ज्वालकणाः Spr. 3490. निरन्तरलुठद्वाष्प 4051. शिरांसि लुठन्ति Mantrik. 302 (vgl. Verz. d. Oxf. H. 151, *a*, 21). लुठल्लोलालकैः *flatternd* Spr. 3235. कुरो ऽयं कुरिणालीर्णा लुठति स्तनमण्डले 3350. मणिर्लुठति पादेषु 2086. लिङ्गपीठलुठद्ज्ञानकुम्भ Rāga-Tar. 2, 126. लुठद्भ्रमन् 5, 92. शाखिनो ऽलुठन् (= पतिताः Comm.) Bhatt. 18, 25. अलोठिषत वातेन प्रकीर्णाः स्तबकोच्चयाः 8, 66. शिलाकलापो लुठितः किमञ्जनगिरेरयम् Kathis. 102, 77. — 2) *berühren:* मां विषाणाग्रेण लुठति (= संघट्टयति) Bhāg. P. 5, 8, 18. *in Aufregung versetzen:* मर्माणि लुठन्ति (= लोठयन्ति, लोभयन्ति Comm.) हृदयं मम 1, 15, 18. — लौठते (गतिकर्मन्) Naigh. 2, 14. लुठ्, लौठति (उपघाते) Dhatup. 9, 52. लुठ्, लौठते (प्रतिघाते) 18, 9.

— caus. अलूलुठत् und अलुलोठत् Siddh. K. zu P. 7, 4, 3. Vop. 18, 3. *wälzen, hinundherrollen:* लाङ्गूलैर्लोठयां चक्रुः (व्यापादितवत्सः, ताडितवत्सः Comm.) Bhatt. 14, 26.

— desid. *im Begriff sein —, nahe daran sein zu rollen:* घर्ष्मा लुलुठिषते P. 3, 1, 7, Vârtt. 1, Schol.

— उद् *sich krampfhaft bewegen:* उल्लुठति Spr. 1971.

— निस् *herabrollen:* शैलनिर्लुठिताः शिलाः Rāga-Tar. 5, 88. — caus. *herabwälzen:* शतमन्यश्चकारेन्द्राणां निरलोठयत् Rāga-Tar. 1, 303.

— परिनिस् *herabrollen:* तस्य विन्ध्यतटव्यूढवक्षसः परिनिर्लुठत्। स-शब्दमभिषेकाम्बु रेवायाता इवाबभौ ॥ Rāga-Tar. 3, 240.

— परि *hinundherrollen:* पर्यलुठन्नितस्ततः — नरशिरःकपालानि Dacak. 131, 5.

— प्र *sich wälzen:* तितौ तस्य प्रलुठतः Pārśvan. 234, 23. प्रलुठित *sich wälzend* Bhatt. 5, 108. प्रलोठित (vgl. P. 1, 2, 21) *der sich zu wälzen angefangen hat* 7, 104.

— वि 1) *sich wälzen, sich hinundherbewegen, hinundherzucken:* शामान्युवति भूतले विलुठति Sik. D. 57, 4. स्वयोष्ठलुठन्मूर्धन् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 8, 519, Cl. 26. विलुठतो वक्रकर्णस्य Spr. 4139. — 2) *in Bewegung bringen, in Aufregung versetzen:* विलुठितमाभीरवारनारीभिः Verz. d. Oxf. H. 226, *b*, No. 353, Cl. 1.

2. लुठ्, लोठयति (चौर्ये) Vop. in Dhatup. 32, 27. *plündern:* मठिका लोठ्यमाना Rāga-Tar. 4, 71. — Vgl. लुण्ठ्, लुण्ठ्, लुण्ड्.

— निस् *plündern, rauben, stehlen:* निर्लोठ्य मठिकाम् Kathis. 76, 30. परकाव्येन कवयः परद्रव्येण चेश्वराः। निर्लोठितेन स्वकृतिं पुनस्त्यजतने जणे ॥ Spr. 4504.

लुठन (von 1. लुठ्) n. *das Sichwälzen* Trik. 2, 8, 46. Spr. 4075.

लुठनेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha, = लुठेश्वर, लुकेश्वर Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, 15.

लुठेश्वर n. = लुठनेश्वरतीर्थ Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, 16.

लुड्, लौडति (विलोडने, मन्थे) Dhatup. 9, 27, v. l. लुर्डति (संश्लेषणे, मेघे, संवृतौ) 28, 87, v. l. — Vgl. लुल् und 2. लुड्.

— caus. लोडयति *rühren, aufrühren, in Bewegung —, in Unruhe versetzen:* सारमुद्धर्तुमेते कलशिमुदधिगुर्वी वल्लवा लोडयन्ति Çiç. 11, 8. मृगयूथलोडिता (सरित्) R. 2, 93, 18 (104, 19 Gorr.). वातलोडिता जलराशयः 5, 74, 31. लोड्यमाने पाण्डवानां महार्णवम् MBh. 9, 700. घनौघं लोडयन् 7, 1804. 3367. 6, 3197. 8, 2389. तद्वनम् — लोडयामास दुष्यन्तः मृदुपन्थविधान्मृगान् 1, 2333. 2338. R. 5, 60, 7.

— आ caus. *rühren, umherbewegen, umrühren, mengen, hineinrühren:* मन्थं वा प्रसव्यमालोड्य Âçv. Grihy. 3, 10, 11. पिष्टमालोड्य तोयेन Schol. zu Kir. Ça. 150, 16. 310, 4. Âçv. Grihy. 1, 24, 15. Çânkh. Sraut. 2, 6, 1. Sucr. 1, 32, 18. 158, 10. 2, 110, 13. 131, 13. विषमालोड्य पास्यामि MBh. 4, 689. R. 2, 48, 24. R. Gorr. 2, 45, 30. गन्धालोडिततोय *ungerührt, aufgerührt* Sucr. 2, 173, 20. मत्स्यस्त्रीविभ्रमालोलैस्तल्लावण्यमालोड्य (so die v. l.) Pārśvan. 78, 14. आलोडित = मथित Med. t. 142. *in Unordnung bringen, verwirren, in Unruhe versetzen:* आलोडितान्घटान् R. 5, 14, 31. व्यूहेष्वालोड्यमानेषु पाण्डवानाम् MBh. 7, 5096. मरुतो मेनामालोड्य 3823. वनेचरस्य किमिदं कामेनालोड्यते मनः 1, 7921. कामेनालोडितां ताम् सीताम् R. Gorr. 2, 105, 29. *durchwühlen* (ein Buch), *sich vertraut machen mit:* आलोड्य सर्वशास्त्राणि पुराणानि Prasannar. 13, *a*. Sarvadarçanas. 1, 9. भरतादिमतं सर्वमालोड्यातिप्रपञ्चतः Verz. d. Oxf. H. 200, *b*, No. 476. — Vgl. आलोडन.

— व्या caus.: °लोडित = मथित H. an. 3, 285. st. व्यालोडयत् ist

Hariv. 9091, wie schon das Versmaass zeigt, mit der neueren Ausg. व्यलोडयत् zu lesen.

— सम caus. *zusammenrühren, umrühren, hineinrühren* Suçr. 2,350, 16. सदैकध्यं समालोड्य 65,6. पिष्टं समालोड्य तोयेन सक् MBh. 13,706. विषमेतत्समालोड्य (°नोड्य ed. Calc.) कुम्भेन 3,11477. *verwirren, in Unordnung bringen:* सेनाम् MBh. 8, 891. *durchwühlen* (ein Buch), *sich vertraut machen mit:* भाष्यकारमतं सम्यक् — समालोड्य Verz. d. Oxf. H. 2, b, 4. Hierher wohl auch die uns nicht vorliegende Stelle Kiçkn. 10,48 (*to reflect* Benfey).

— निस् caus. *gründlich durchwühlen, genau durchforschen:* घनिर्लोडितकार्य Çiç. 2,27.

— परि caus. *verwirren, in Unordnung bringen:* वनानि परिलोडयन् MBh. 2,389.

— विप्र caus. *verwühlen, in Unordnung bringen:* नलिनी द्विरदेनेव समत्ताद्विप्रलोडिता MBh. 7, 6624. st. dessen प्रतिलोडिता (प्रविलोडिता?) 4999.

— प्रति caus. s. u. विप्र.

— वि caus. *verrühren, umrühren, aufrühren* Suçr. 2,227, 13. Schol. zu Kâtj. Çr. 509,23. विलोड्यमाने तस्मिंस्तु जलाशये MBh. 12,4901. Hariv. 16095. R. 3,15,6. 24,12. 5,55,2. Râjat. 8,2845. *Umundherbewegen:* परं नयत्तीक् विलोड्यमानं यथा प्रवं वायुरिवार्णवस्थम् MBh. 12,7515. *umstürzen:* पादाङ्गुष्ठेन शकटं क्रीडमानो व्यलोडयत् (so die neuere Ausg.) Hariv. 9091. 3412. *verwühlen, verwirren, in Unordnung bringen, in Aufregung versetzen:* (नलिनीः) विलोड्यमानाः पश्येमाः करिभिः MBh. 3, 11604. सैन्यम् — यथा मृगगणान्सिंहः — व्यलोडयत् 7,3756. 8,840. Hariv. 6937. धन्विनः 9340. MBh. 12, 7511. Ragh. ed. Calc. 7,56. — Vgl. विलोडन.

— अतिवि caus. *umstürzen, verwüsten:* यदुसदनमुपेन्द्रपालितं त्रिदिवमिवामररक्षितम् । प्रसभमतिविलोड्य को हरेत् u. s. w. MBh. 8,1740.

— सम् caus. *Umundherbewegen:* शिरश्च राज्ञःसंकस्य पादेन समलोडयत् MBh. 9,3314. *in Unordnung —, in Verwirrung bringen:* एवं संलोडयामास गरुडस्त्रिदिवालयम् 1,1477. यत्र संलोडिता लुब्धैः प्रायशो धर्मसेतवः 12,10595. तेन संलोड्यमानं तु पाण्डूनां तद्बलं महत् 6,4292. 7,5174. 6690. 6692. 7287. 9,797. pass. *zu Schanden werden:* यज्ञमेधसहस्रस्य फलं संलोड्यते Spr. 271, v. l. Th. III, S. 339. — Vgl संलोडन.

लुण्ठ्, लुण्ठति (स्तेये) Dhâtup. 9, 42. लुण्ठयति (स्तेये, यवज्ञाचैर्ये Vop.) 32,27. *enthülsen:* तिला लुण्ठिताः (schlechte v. l. für लुञ्चिताः) Pañkat. 121,17. 19. fg. 22. 24. II, 68. — Vgl. लुण्ठ्.

— निस् *plündern;* s. u. लुण्ठ् mit निस्.

— वि *enthülsen:* तिलान्विलुण्ठ्य Pañkat. 121,13, schlechte v. l. für लुञ्चित्वा.

लुण्टक m. 1) *eine best. Gemüsepflanze,* vulgo नटा Çabdac. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 155,a,32.

लुण्टा f. = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDa.

लुण्टाक (von लुण्ट्) nom. ag. (f. ई) P. 3,2,155. Vop. 26,147. m. *Krähe* Taik. 2,5,20.

लुण्ठ्, लुण्ठति (स्तेये) Dhâtup. 9, 42, v. l. (आलस्ये प्रतिघाते च, क्षेपे st. प्रतिघाते Vop.) 58. (गतौ) 62. *aufrühren* (vgl. लुड्): लुण्ठिता क्रीडता तेन नर्मदा Hariv. 1870. *in Bewegung —, in Aufregung versetzen:* पीडिताः पुनरन्योऽन्यं लुण्ठन्तो रणमूर्धनि MBh. 6,1882. — caus. 1) *rauben, stehlen, plündern:* हियं लुण्ठयता यशः Râjat. 4,120. लुण्ठयामासतुः कृत्स्नं पुरम् Kathâs. 114,119. Die folgenden Formen könnten auch zum simpl. gehören: ज्ञातिभिर्लुण्ठ्यते नैव विद्यारत्नं महाधनम् Spr. 985, v. l. im Kâvjakâlpa. लुण्ठित *geraubt, gestohlen* Kathâs. 28,251. Spr. 3227. Râjat. 5,221. 427. यमामान्यतद्रूपलोभलुण्ठितलज्जा Kathâs. 29,81. *geplündert:* देशो मे लुण्ठितो ऽनेन 66,123. Râjat. 5,438. 842. — 2) *enthülsen* (vgl. लुञ्च्, लुण्ट्): तिलान् Pañkat. 121,11.

— अव s. अवलुण्ठन.

— उद् s. उल्लुण्ठा.

— निस् *stehlen, plündern:* निर्लुण्ठिततुरंगासिकोश Râjat. 8,1697. विटनिर्लुण्ठ्यमान (पार्श्वेव) 6,153. निर्लुण्ठ्य° ed. Calc. — Vgl. निर्लुण्ठन.

— वि 1) *rauben, stehlen:* तरुणीर्विलुण्ठितुम् Kuvalay. 190,a. विलुण्ठिष्यति Spr. 2588. *plündern:* सा भूमिर्व्यलुण्ठ्यत Kathâs. 20,19. विलुण्ठित 21,118. 24,84. — 2) विलुण्ठित = विलुठित *sich wälzend* Râjat. 8,2247. — Vgl. विलुण्ठन.

लुण्ठक (von लुण्ट्) nom. ag. *Plünderer:* ग्राम° Pidha-P., Pañkâkh. im ÇKDa.

लुण्ठन (wie oben) n. 1) *das Plündern:* ग्राम° Kull. zu M. 9,274. — 2) fehlerhaft für लुञ्चन Schol. zu Çâk. 39. — 3) = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDa.

लुण्ठनदी f. N. pr. eines *Flusses* Hariv. 9515. कुण्डनदी die neuere Ausg.

लुण्ठा f. = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDa.

लुण्ठाक m. *Krähe* ÇKDa. und Wilson nach Taik.; die gedr. Ausg. liest लुण्टाक.

लुण्ठि (von लुण्ठ्) f. *Plünderung:* काश्मीरेषु व्यधुर्लुण्ठिम् Râjat. 6,288. लुण्ठिं चकारशृलिकापणे 8,1092. — Vgl. लुण्डीकृ.

लुण्ठो f. = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDa.

लुण्ड्, लुण्डति (स्तेये) Dhâtup. 9,43, v. l. लुण्डयति dass. 32,27, v. l.

लुण्डिका f. 1) *Ballen:* मेषलोमलुण्डिकया घट्टा Bhâsharâdjatarâjv. im ÇKDa. Vgl. लुण्डीकृत. — 2) = लुण्डी *regelrechtes —, gebührendes Benehmen* Hit. 215.

लुण्डी f. = लुण्डिका 2) Taik. 2,8,30. = निगम 3,3,288.

लुण्डीकृ *zusammenballen:* कलातललुण्डीकृतं पद्माकृप्य Mâkk. 34, 11. *ragged* Wilson in der Uebers. und nach ihm Benfey. — Vgl. लुण्डिका 1).

लुन्थ्, लुन्थति (क्रियाक्लेशयोः, v. l. °क्लेशनयोः) Dhâtup. 3,8.

1. लुप् (= alterem रुप्, लुम्पति, °ते Dhâtup. 28,137 (छेदने). P. 7,1, 89. लुलोप; erhält keinen Bindevocal Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7,2, 10. लुप्त्वा, लोतुम्, लुप्यते, लुप्त. 1) *zerbrechen:* लुलुपुश्च पात्राणि Hariv. 12230. यद्गृहं प्राग्वंशं लुलुपुश्च (so die neuere Ausg.) 12231. *beschädigen:* विद्वांस्यलुप्तानि (धामराणि) न शोभनानि Varâh. Bṛh. S. 72,2. — 2) *Jmd packen, über Jmd herfallen:* लोकान्विवक्षासमयेव ततो लुप्येत्यधा वृकः Spr. 3389. नीचः प्राप्यपदं प्राप्य स्वामिनं लोतुमिच्छति 1628. — 3) *rauben, plündern:* दैस्यून् — लुप्तः Bâlar. P. 7,8,11. लोकस्य वसु लुप्यताम् (gen. pl. partic.) 4,14,39. अन्यलुप्तं स्वर्णम् Kathâs. 72,267. वध्नाति घ्नति लुम्पति दृप्तं राजकुलानि (subj.) वै Bâlar. P. 10,41,36. (बाले) धनाधे सर्वतो लुप्ते *um Alles gebracht* MBh. 1,6157. आदिलुप्त *des Anfangs*

—, *des Anlaufs verlustig gegangen* Nir. 10,24. धर्म° Kauç. 63. Çiñkh. Ça. 14,40,26. 2,14,7. व्रतलुप्त *gekommen um* MBh. 13,1547. 4397. लुप्त n. *geraubt* —, *gestohlenes Gut* Çabdar. im ÇK Dn. — 4) *unterdrücken, beseitigen, verschwinden machen:* लुंप्यते und लुप्यते *unterdrückt werden, verschwinden, verlorengehen, abfallen, ausfallen* (von Worten, Silben, Buchstaben): नवार्क् लुम्पेत् Weber, Nax. 2,285. ह्रस्वम् लुम्पन्ति ṚV. Prāt. 14, 13. 15. 19. fg. Kār. zu P. 6,1,144. उदात्तस्तावत्सर्वान्स्वरान्लुप्यति Schol. zu ṚV. Prāt. 3,6. वुर्ढि लुम्पति यद्व्यम् Çiñkh. Sāñkh. 1,4,21. यस्मत्संवत्सरं लुप्त्वा स्वं तमाविष्करिष्यति Çatr. 14,103. इदं मृत्यवति लुम्पति Buiç. P. 7,3,27. 11,6,8. मृत्यस्यधो लुम्पसि पासि विश्वम् 10,48,21. अङ्गुलिस्वेदेन मे लुप्यते ऽक्षराणि Vikr. 27,2. पावत् — रूपं कटिति न ब्रूया लुप्यते प्रेयसीनाम् Spr. 2601. ग्रामसि चक्रन्दसि लुप्येयुरक्षराणि Liṭ. 3,7,7. यदेर्धचाल्लुप्येत TS. 3,2,9,3. Çiñkh. Ça. 13,1,8. Liṭ. 7,11, 6. पुनरुक्तानि लुप्यन्ते पदानि Çiñkh. in Ind. St. 4,278. ṚV. Prāt. 4,9. 13. 26. VS. Prāt. 4,34. Taitt. Prāt. 1,10. Schol. zu AV. Prāt. 4,16. 60. 64. fg. zu P. 1,2,64. तस्य भागो न लुप्यते M. 9,211. यायुषो ऽतिप्रवृद्धस्य भार्यार्थे ऽर्धमलुप्यत MBh. 1,980. वार्तायां लुप्यमानायामारब्धायां पुनः पुनः Buiç. P. 3,30,12. सत्यपाशेन संरुद्धः क्षेत्रज्ञस्तस्य न लुप्यते (*reisst nicht*) R. Gorr. 2,50,18. स्मृतिर्मे देवि लुप्यते 66,58. व्रतमस्य न लुप्यते M. 2,189. कृत्वा मम परित्राणं तव धर्मो न लुप्यते MBh. 1,7803. 13,2543. Harīv. 5979. Mārk. P. 20,55. 134,22. 135,26. लुप्त *unterdrückt, verschwunden, zu Nichte geworden, verlorengegangen, abgefallen:* लुप्तक्रिय Āçv. Çr. 2,19,3. लुप्तवर्णपदं ग्रस्तम् AK. 1,1,5,20. H. 266. Halāy. 1,142. Mārk. P. 132,4. Sāh. D. 219,17. Schol. zu P. 1,1,62. Vop. 1,13. 3,16. नो लुप्तं साखि चन्दनं स्तनतटे Spr. 622. Kathās. 86,116. धर्मलुप्ताम्बुसेवद्व 87,31. 90,165. प्रकृति MBh. 5,797. °स्मृति 14,37. °धर्मक्रिया M. 8,226. Bhāg. 1,42. R. 5,51,14. Ragh. 3,40. 14,36. 49. 56. Varāh. Bṛh. 15,2. Rāja-Tar. 1,358. 6,124. 298. 8,1816. Çatr. 14,158. Buiç. P. 3,13,9. 4, 2,13. Mārk. P. 39,59. भवेदलुप्तश्च मुनेः क्रियार्थः Ragh. 2,55. Buiç. P. 3, 23,38. अलुप्तधर्म MBh. 16,204. Kathās. 74,124. 78,7. 84,58. Schol. zu Kap. 1,19. शशलुप्तं n. wohl *das Verschwinden nach Hasenart* P. 6,2, 145, Sch. — 5) लुंप्यति (विमोहने) Dhātup. 26,126. erhält den Bindevocal Siddh. K. zu P. 7,2,10. लुप्यमान *sich verwirrend* Maitrāyaṇ. 3,2. 6,30; vgl. लुभ्. — Vgl. अनर्थलुप्त, इन्द्रलुप्त.

— caus. लोपयति, aor. अलूलुपत् und अलुलोपत् Siddh. K. zu P. 7,4, 3. Vop. 18,3. 1) *Etwas unterlassen, versäumen; zuwiderhandeln, verletzen;* mit acc. der Sache: कुतो दायाँल्लोपयेद्ब्राह्मणानाम् (दायालो° ed. Calc.) MBh. 5,714. प्रत्युत्थानं च कृतस्य — न लोपयति 7,2822. यद्यावयो हि राज्यानि प्राप्नुवन्ति नृपत्वये । इत्वाकुकुलनाथे ऽस्मिंस्तल्लोपयितुमिच्छसि ते लो° ed. Bomb., der Comm. ergänzt आचारम्) R. 2,35,9. विक्रीतमाहितं क्रीतं पांत्पत्रा ज्ञोवता गम । न तल्लोपयितुं शक्यं मया 111, 28. धर्मम् M. 8,16. MBh. 12,8378. सत्यम् Spr. 4454. — 2) *Jmd um Etwas bringen, von Etwas abbringen:* सत्याद्गुरुमलोपयन् Ragh. 12,9.

— intens. लोलुप्यते (भावगर्काणाम्) P. 3,1,24. *Jmd verwirren:* न त्वा कामा बहवो लोलुपन्तः Kaṭhop. 2,4.

— अप 1) *anraufen, abtrennen:* तृणानि Çat. Br. 2,4,4,9. तस्माद्देवास्तमो ऽपालुम्पन् Kāṭh. 12,13. — 2) pass. *abfallen* Ait. Br. 3,19. ये गर्भा अवपद्यन्ते अगर्भादपलुप्यते *fällt* AV. 5,17,7. — Vgl. अपलुप्.

— अभि *rauben, plündern:* चोराणामभिलुम्पताम् Buiç. P. 4,14,38.

— अव 1) *abtrennen, abstreifen* TS. 3,2,2,1. Taitt. Ār. 10,31. अवलुप्तशिराः Śāṅkh. Br. 1,3. 2,2. — 2) *Jmd packen, über Jmd herfallen:* वृकवच्चावलुम्पेत Spr. 2695. द्वेष्टारमवलुम्पेयथा वृकः 3615. 478. वृकावलुप्तं n. *das Packen nach Wolfsart* P. 6,2,145, Sch. — 3) *entreissen:* अन्योऽन्यस्यावलुम्पन्ति सारमेया यथामिषम् । राज्ञ्या भरतश्रेष्ठ भोक्तुकामा वसुंधराम् ॥ MBh. 6,381. — 4) *unterdrücken, verschwinden machen:* मृतादीदमन्योऽयं य एव दृतत्यवलुम्पते च यः Buiç. P. 7,2,39. ये वृद्धा क्रोधमुत्थितम् । प्रदीप्तमवलुम्पन्ति दीप्तमग्निमिवाम्भसा ॥ Spr. 1311. — Vgl. अवलुम्पन, अवलोप fg.

— अन्ववं pass. *nach Jmd abfallen* Pāraṣkar. Br. 6,3,12.

— आ 1) *anraufen:* बालान् Çat. Br. 3,4,4,17. तृणानि Kāṭh. Çr. 25, 1,18. — 2) *abtrennen* Ait. Br. 1,17. — 3) *herabfallen lassen* (in Theilen): यद्यार्द्रमालुम्पेत्सुचो घर्मे AV. 12,4,34. — 4) pass. *eine Störung erleiden, unterbrochen werden:* यन्नस्तावन्मुक्तरूपाचेतैर्दृष्टिरालुप्यते मे Megh. 103.

— व्या *zu Nichte machen:* यङ्गलानिम् Megh. 71. pass. *verschwinden, zu Nichte werden* LA. 20,20.

— उद् *herausgreifen, herausfischen* (z. B. aus einer Brühe): घृताद्धुलुप्तम् AV. 5,28,14. Sūçr. 1,230,13. 17. Kauç. 19. 72. उल्लोपम् absol. 43. — Vgl. उल्लोप्य.

— समुद् *aufgreifen, wegnehmen, to pick up:* प्रस्तरो Çat. Br. 2,3,2, 43. 6,1,45. समुल्लुप्य यत्नमन्यत्कर्तुं दधे 3,3,1,19. Kāṭh. Çr. 8,2,11.

— नि *rauben:* निलोपं (absol., क्रियते Vājñ. 127. निलोपकारक ebend.

— परि 1) *wegnehmen* Ait. Br. 6,14. *entfernen, zu Nichte machen:* दीपिकालोकपरिलुप्यमानतिमिरभार Daçak. 72,12. fg. pass. *wegfallen* ṚV. Prāt. 2,4. — 2) *beseitigen:* आचार्यशास्त्रम् — अस्माकमपरिलुप्तं यथा स्यात् Schol. zu ṚV. Prāt. 1,16. — Vgl. परिलोप.

— विपरि, partic. °लुप्त *aufgehoben, zu Nichte gemacht* Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 213. — Vgl. विपरिलोप.

— प्र 1) *anraufen:* दर्भान्कोचित्प्रलुम्पन्ति कृत्स्नैः Harīv. 12228. — 2) *rauben:* ब्राह्मणस्य प्रशान्तस्य कविर्धाङ्गैः प्रलुप्यते Spr. 1998. कव्यादिरङ्गलतिका नियतं प्रलुप्ता (विलुप्ता ed. Cow.) Uttarāś. 36,6. मलोपोक्तप्रलुप्तस्मृति Spr. 3719. प्रलुप्तः पितृपिण्डतः *gekommen um* Mārk. P. 31, 1. — Vgl. प्रलोप.

— विप्र 1) *entreissen, rauben:* उभयोर्हस्तयोर्मुक्तं यदन्नमुपनीयते । तद्धिप्रलुम्पत्यसुराः सहसा M. 3,225. MBh. 13,4292. विप्रलुप्तं च वो राज्यं नृशंसेन 5,2834. — 2) *heimsuchen:* प्रजा यस्य — अनर्थैर्विप्रलुप्यन्ते MBh. 12,5242. — 3) *stören, unterbrechen:* तपः — तद्धिप्रलुप्तम् Buiç. P. 7,8,43.

— संप्र *rauben oder schänden:* कुमार्यः संप्रलुप्यन्ते MBh. 12,3401.

— वि 1) *zerreissen, zerpflücken, abreissen:* शकुन्तनिवहैर्विघसैर्विलुप्तच्छदः (तरुः) Spr. 922. मार्जार इव दुर्वृत्तस्तमेव (कृत्स्नम्) हि विलुम्पति 1166. *ausreissen:* मूढस्याङ्गे ऽङ्गे लोम लोम मे । नखैर्व्यलुम्पन्दन्तैश्च Kathās. 37,127. विलुम्पतश्च केशांश्च मज्जाश्च बहुधा MBh. 7,3586. वपान् 1976. — 2) *entreissen, wegnehmen, fortnehmen, rauben:* यज्ञमानस्य रेतः Ait. Br. 6,9. दूर्शम् Kauç. 83. परस्परं विलुम्पन्ति सारमेया यथामिषम् MBh. 12,4489. रत्नानि हि विलुम्पन्ति साहसात्तत्कृतं M. 3,204. Spr. 479, v. l. Buiç. P. 5,13,10. 14,2. पाशो बलिः — दैत्यैश्च सारमगणैश्च

विलुप्तपूर्व: Mahâbh. 6,18. तस्करविलुप्तवित्ता: Varâh. Bṛh. S. 3,14. क्रव्यादिरङ्गलतिका नियतं विलुप्ता Uttarar. ed. Cow. 72,12 (प्रलुप्ता die ältere Ausg.). *plündern:* पुरीम् Bhâg. P. 4,27,14. मार्यम् 5,13,3. 26,27. 7,7,6. राष्ट्रं मुरत्तितं तात शत्रुभिर्न विलुप्यते MBh. 2,161. Varâh. Bṛh. S. 71,8. — 3) *zerstören, zu Grunde richten, zu Nichte machen:* यो रक्षितृभ्य: संप्रदाय राजा राष्ट्रं विलुम्पति MBh. 13,3084. यज्ञवाटं विलुलुपु: Harîv. 8010. पशुपतिमनुयाग्यै: पत्त्रपुष्पफलान्वितम्। वृतं विलुप्यमानं दृष्ट्वा Mârk. P. 43,53. सैरन्ध्रामि विलुम्पामि MBh. 12,8130. 14,2699. विलुम्पन्विसृजन्गृह्णन् Bhâg. P. 2,9,26. Naish. 22,54. कामक्रोधौ शरीरस्थौ प्रज्ञानं तौ विलुम्पत: Spr. 3999. 2872. सतां मार्गान् MBh. 12,8895. विलुप्य शासनान्यन्यानि Çâk. 14,282. 191. तस्य यज्ञो हि रक्षोभिस्तदा विलुलुपे किल R. 1,20,3 (21,2 Gorr.). med. und pass. *zerfallen, zu Grunde gehen, zu Nichte werden, verschwinden, fehlen, nicht da sein:* विलुम्पतामघम् Kâuç. 83. माके प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय Kâṭhân. Up. 3,16,2. वि तया ह्रन्दांसि लुप्येरन् Ait. Br. 6,2. स्मृतिर्मम विलुप्यते R. 2,64,68. वदनं कान्तमार्तायां वैदेह्या न विलुप्यते R. Gorr. 2,60,15. कपिले च नास्य प्रज्ञा विलुप्यते Kathâs. 37,111. 69,45. धर्मो वि° Mârk. P. 77,18. Weber, Nax. 2,286. विलुप्त *zu Grunde gegangen* u. s. w. MBh. 1,6251. Ragh. 9,82. 15,2. 16,59. 19,32. Kumârас. 4,2. Gaṇaratna bei Mallin. zu Kumâras. 7,98. Kathâs. 90,175. 101,887. 106,146. Sin. D. 306,1. अविलुप्त Kathâs. 65,35. Râǵa-Tar. 5,3. Bhâg. P. 3,7,5. — Vgl. विलोप fgg. — caus. *es fehlen lassen an* (acc.), *vorenthalten, entziehen:* काले स्थाने च पात्रे च नहि वृत्तिं विलोपयेत् (राजा) Kâm. Nîtis. 5,65. *verschwinden —, zu Nichte machen, unterdrücken:* तेन (वातेन) तत्र प्रदीप: स दीप्यमानो विलोपित: so v. a. *ausgelöscht* MBh. 1,5233. न च धर्मं विलोपये 12,5627. धर्मार्थौ च विलोपितौ 1,7752.

— प्रवि, partic. °लुप्त *verschwunden, entfernt, zu Nichte geworden* Kumâras. 5,3. Kathâs. 103,206. — caus. *aufgeben, fahren lassen:* प्राक्कर्म प्रविलोप्यतां चितिबलान्नाप्युत्तरे स्थीयताम् Spr. 3836.

— सम् *zupfen, zerren; wegreissen:* सर्वा: संलुप्येत: कृत्या: पुन: कर्त्रे प्र हिणमसि AV. 10,1,30. Kâṭh. 21,7. योनिमनुपरामृश्य संलुप्याच्छिनत् Çat. Br. 5,5,3,6. — caus. *zerstören, zu Grunde richten:* समलूलुपन् MBh. 8,1423.

2. लुप् (= 1. लुप्) *Abfall, Ausfall, Schwund* (eines Lautes u. s. w.) P. 1,1,61. 2,31. 4,2,4. 3,166. 5,2,105. 3,98. AK. 3,6,6, 41. Çiṅt. 2,16. Vop. 1,13. 2,16. 19. 3,41. 116. 166. so v. a. लुप्त *abgefallen* VS. Paiṭ. 1,114.

लुप्तविसर्गता f. *das Fehlen des* Visarga Sin. D. 575.

लुप्तोपम adj. *wobei das tertium comparationis fehlt* Nir. 3,18. Çaṅk. zu Kâṭhân. Up. S. 61.

लुप्तोपमा f. *ein unvollständiges —, elliptisches Gleichniss* Prâtiṣâkh. 75, b, 3. Kuvalay. 7,a; vgl. Sin. D. 651. fgg.

लुब्ध 1) adj. s. u. लुभ्. — 2) m. *Jäger* H. an. 2,247. Med. dh. 14. MBh. 16,126. R. 2,99,2. P. 5,4,126 (AK. 2,10,24).

लुब्धक (von लुब्ध) m. 1) *Jäger* AK. 2,10,21. H. 927. Hall. 2,441. MBh. 1,554. 3,2393. 5,1637. 16,110. 126. Kâm. Nîtis. 16,7. Spr. 2234. 2998. Kathâs. 8,24. fg. 33,112. Râǵa-Tar. 5,345. Bhâg. P. 4,29,53. 7,2,30. Paṅkat. 104,15. 106,6. 7. Hit. 14,12. — 2) *der Stern Sirius* (vgl. मृगव्याध). Ganitâdhj. Bhagrahaj. 7. 8. Comm. zu Sûrjas. 8,10. fgg. Colebr. Misc. Ess. II, 352. 464. त्रिशङ्कु: किं न नीतो यौ विश्वामित्रेण लुब्धक: Kathâs. 28,88. — 3) bildliche Bez. des *Afters* Bhâg. P. 4,23,53. 29,15. — Vgl. खार्द्रा°.

लुब्धता (von लुब्ध) f. *Habgier* Spr. 3824.

लुब्धत्व (wie oben) n. dass. Râǵa-Tar. 4,628. *heftiges Verlangen nach:* तत्सिद्धि° Kathâs. 20,106.

लुभ्, लुभ्नाति (विमोहने) Dhâtup. 28,22. लुभ्यति (गार्द्धे) 26,128. 1) *irre werden, in Unordnung gerathen:* नास्य देवत्रा लुभ्यति Âit. Br. 2,27. वायव्यमस्य लुब्धं शमेदृचं वा पदं वातीपातेनैव तल्लुब्धम् 3,3. Nir. 4,14. 6,3. Nach P. 7,2,54 und Vop. 26,102 lautet der absol. von लुभ् in der Bed. विमोहन लुभित्वा und लोभित्वा, das partic. लुभित. — 2) लुभ्यति, लुलुभे; लोभिता und लोब्धा P. 7,2,48. Vop. 8,79. 11,3. लुभित्वा, लाभित्वा und लुब्धा, लुब्ध P. 7,2,54. Vop. 26,102. *ein (heftiges) Verlangen empfinden (aus der geordneten Ruhe kommen):* स्मितशोभितेन मुखेन चेतो लुलुभे देवहूत्या: Bhâg. P. 3,22,21. die Ergänzung im loc.: न लुभ्यति तृणेघपि MBh. 13,3024. देवा घपि च लुभ्यन्ति त्वयि Kathâs. 32,96. 33,160. पाण्डवार्थे हि लुभ्यत: *sich interessirend für die Sache der* Pâṇḍava MBh. 5,4389. im dat.: रामो लुलुभे मृगाय Spr. 283. लुब्ध *ein Verlangen empfindend; gierig, habsüchtig* AK. 3,1,22. H. 429. an. 2,247. Med. dh. 14. Hall. 2,208. Daçak. 89,5. M. 4,87. 7,80. Bhâg. 18,27. R. 2,66,6. 73,11. Daçar. 2,8. Spr. 2017. 2674. fgg. 4628. 4956. fg. Varâh. Bṛh. S. 101,2. घ° M. 8,63. 77. R. 1,6,6. यति° Paṅkat. I, 1 (Hit. II, 1). या लुब्धा धनकाङ्क्षया R. Gorr. 2,34,10. ब्राह्मणाते लुब्ध: MBh. 1,2062. लुब्धो यशसि न सर्वे Kathâs. 55,30. मधु° R. 5,62,5. गन्ध° Spr. 820. धन° 1291. 1937. Varâh. Bṛh. S. 101,12. गुणलुब्धा: संपद: Spr. 3220. 3768. द्यूप° Kathâs. 17,138. 30, 15. Râǵa-Tar. 4,677. Daçak. 77,1. 6. Bhâg. P. 4,9,12. 29,53. Hit. 10,2. 34,18. Ver. in LA. (III) 5,7. बन्धु° so v. a. *an den Verwandten hängend* R. 2,115,6. — 3) *locken, an sich ziehen:* नूनं स कालो मृगवेषधारी मां लुलुभे R. 5,28,10. — Vgl. घलुभ्यत् und लुब्ध.

— caus. लोभयति 1) *in Unordnung bringen:* प्राणान् Çat. Br. 4,1,4, 8. — 2) *Jmdes Verlangen erregen, locken, anlocken, an sich ziehen:* द्यूपैर्यौवनमाधुर्यचेष्टितस्मितभाषितै:। लोभयित्वा वरारोहे तपस्तप्तं निवर्तय॥ MBh. 1,2920. लोभयामास या चेतो मृगभूतस्य तस्य वै 3,9997. R. 1,8,18 (24 Gorr.). 9,4. 64,8. 63,10. R. Gorr. 1,65,16. लोभयिष्यसि कामुकस्त्वमटव्यां चित्रकानना: 2,43,15. 3,15,15. 49,26. 50,6. नाके लोभयितुं शक्या ऐश्वर्येण धनेन वा 5,23,12. Kathâs. 11,24. 45,90. 72,228. Paṅkat. 256,1. Bhaṭṭ. 5,18. लोभ्यमाननयन: प्रथीयसीभिर्मेखलागुणार्पैर्नितम्बिभि: योषिताम् Ragh. 19,26. मुखलेशेन लोभित: Spr. 3984. Bhâg. P. 10,15,26. med.: यन्मां लोभयसे रम्भे R. 1,64,12 (66,15 Gorr.). लोभयान Harîv. 3740. लोभितवती MBh. 1,4884.

— intens. *ein heftiges Verlangen haben nach* (loc.): लोलुभ्यमानास्ते ऊर्ध्वेषु Kâm. Nîtis. 7,1.

— अनु caus. *ein Verlangen haben nach:* पश्यन्नाकुलं चित्रं नर: को नानुलोभयेत् R. 2,49,38.

— अभि caus. *anlocken:* वल्गलाकुर्वता गेयमभिलोभयतेव, वज्रमभिलोभयति Paṅkat. Bṛ. 7,7,11.

— अव s. अवलोभन.

— आ *in Unordnung gerathen:* प्राणा आलुभ्येत् Çat. Br. 10,3,4,7. 8. — desid. vom caus. *in Unordnung bringen —, stören wollen:* यो न एतदतिक्रामाद्य आलुलोभयिषात् Ait. Br. 1,24.

— उप caus. *Jmdes Verlangen erregen, locken, verführen:* प्रजाम् Pâr. Gṛhy. 1,12. अबलेशोपलोभित Kâm. Nîtis. 10,24.

— परि dass.: कथमिव मां परिलोभसे (aus metrischen Rücksichten st. परिलोभयसि) धनेन Mṛicch. 127,16. — caus. dass. R. 5,31,29. Kâm. Nîtis. 17,22.

— प्र 1) med. *irre gehen, sich vergehen* (in geschlechtlicher Beziehung): यन्मे माता प्रलुलुभे विचरत्यपतिव्रता M. 9,20. त्रिस्तनी कुब्जेन सह प्रलुब्धा so v. a. *fasste eine unerlaubte Neigung zu* Pañkat. 262,8. — 2) *Jmdes Verlangen erregen, locken, verführen:* यद्यहं संशितात्मानं प्रलोब्धुं त्वामिहागता: MBh. 1,7863. प्रलुब्ध *verleitet, verführt, fortgerissen* 7,6506. — Vgl. प्रलोभ. — caus. *Jmdes Verlangen erregen, locken, heranlocken, zu verführen suchen* MBh. 1,2919.7400. 7620. 3,10044. 16011. R. Gorr. 1,63,4. 3,44,16. 47,15. 64,21. 4,61,8. 6,103,9. Ragh. 6,58. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 116. Bhâg. P. 3,30,37. 7,2,50. fg. 9,35. 10,2. Mârk. P. 31,30. med. MBh. 3,10071. Hariv. 9224. कुमारं बालक्रीडनकैः प्रलोभ्य so v. a. *des Knaben Aufmerksamkeit ablenkend* Suçr. 1,54,15. वनितादिव्रजालापेक्षतितरामतिप्रलोभितकर्णा: *in hohem Grade herangezogen zu* Bhâg. P. 4,29,54. — Vgl. प्रलोभक fgg.

— उपप्र s. उपप्रलोभन.

— विप्र caus. med. *locken, zu verführen suchen* MBh. 12,7280.

— संप्र caus. dass. MBh. 13,2410.

— प्रति caus. 1) *irremachen, bethören* Nir. 9,33. चित्तम् ṚV. 10,103, 12. — 2) *an sich locken, heranlocken:* कथाभि: प्रतिलोभ्यते MBh. 12,4125. पक्षेण Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 118.

— वि *in Verwirrung —, in Unordnung gerathen:* विलुभिता केशा: P. 7,2,54, Sch. विलुभितं वात: केसरम् Bhaṭṭ. 9,40. विलुभितव्रत 5,52. — caus. 1) *irre führen* Daçak. 3,15. — 2) *Jmdes Verlangen erregen, locken, zu verführen suchen* MBh. 3,15638. 12,4128. R. Gorr. 1,66,9. Varr. 8,16. Kâm. Nîtis. 1,43. 7,52. 13,53. 18,60. Ragh. 19,10. 35. Kumâras. 4,20. Spr. 5634. Kathâs. 91,31. — 3) *zerstreuen, angenehm unterhalten:* स्वं चित्तम् R. 2,94,1 (103,1 Gorr.). कोपविष्ट: — लतासु दृष्टिं विलोभयामि (v. l. विनोदयामि) *ergötzen an* Çâk. 81,17.

— सम् *in Verwirrung gerathen:* नेदुर्दिश: प्रस्तरश्च संलुभ्यात: Çat. Br. 3,4,4,18. — caus. 1) *verwirren, untereinanderbringen* (= एकत्रकरण Comm.): कुशान् Lâṭy. 2,11,3. — 2) *verwischen:* पदानि AV. 6, 28,1. संयोवयत्त: ṚV. — 3) *locken, heranlocken, zu verführen suchen* R. Gorr. 1,4,53. MBh. 13,2362.

लुम्ब्, लुम्बति (घर्दने) Dhâtup. 11,37. लुम्बयति (घर्दने, v. l. घर्दशने) 32,118.

लुम्बिका f. *ein best. musikalisches Instrument* H. ç. 87.

लुम्बिनी f. N. pr. einer Fürstin und eines nach ihr benannten Haines Lalit. ed. Calc. 89,13. 90,7. 12. 104,14. 289,10. 317,9 (लुम्बिनि aus metrischen Rücksichten). Burn. Intr. 382. Schiefner, Lebensb. 233 (3). Davon adj. लुम्बिनीय Lalit. ed. Calc. 92,13.

लुल्, लोलति (विलोडने, विलोटने) Dhâtup. 9,27, v. l. *sich hinundherbewegen:* लोलदुग्र Çiç. 3,72. लोलत्काकुलि Pârâç. 3,5,16. लुलित 1) *sich hinundherbewegend, bewegt, flatternd, wogend* H. 1480. Hall. 4, 61. यम्भस् (Gegens. प्रसन्न) MBh. 12,7442. यम्न: — नैलुलितम् Ragh. 16,34. 59. लुलिताकुलकेशान्त R. 7,26,42. Ṛt. 4,14. लुलितालककेशान्ता Kathâs. 74,242. 103,209. °लुलिताङ्कुश 104,102. शिरो लुलितकुण्डलम् 47,70. स्तनौ न लुलितौ Spr. 962. Uttarar. 103,12 (140,3). वनं लुलितपल्लवम् Bhaṭṭ. 9,56. °पतत्रिमाल 10,14. मुलुलितधनुस् Soṃa. 2,383, 2. तत्त्वज्ञानामृताम्भःप्रवलुलितधियाम् Spr. 3081. मनस् *in Unruhe versetzt* R. 2,42,29. 73,44. R. Gorr. 2,79,31. n. *Bewegung:* बलमलुलितमुग्रधानि — अङ्गकानि Uttarar. 11,11 (13,15). — 2) *berührt, woran Etwas streift:* कचलुलितश्रमवारि (= विकीर्ण Comm.) Bhâg. P. 1,9,34. श्रमतिलुलित Çiç. 61, v. l. — 3) (*aus seiner Ruhe gekommen, in Unordnung gerathen;* vgl. चल्) *mitgenommen, Schaden genommen habend, beschädigt, gelitten:* वने मृगलुलिते MBh. 7,1452. 6725. मुलुलिते सैन्ये 8,2457. शोकाश्रुलुलितानना R. 2,65,18. शरीरलुलिता शय्या Çiç. 74. लुलितस्रगाकुल Ragh. 19,23. लुलिताङ्गराग (v. l. गलिताङ्गराग) Ragh. ed. Calc. 16,58. यथा नगेन्द्रो लुलितो (= उन्मूलित Comm.) नभस्वता Bhâg. P. 3,19,26. यत्तकासिलुलितात् (= खण्डित Comm.) — विमानात् 4,9,10. तद्वज्रकोलुलितप्राग्र्यपक्ष (= छिन्न Comm.) 6,11,21. 7,9,28 (= विध्वस्त Comm.). लुलितमकरन्दो मधुकरै: (पुष्पाणामञ्जलि:) Veṇîs. in Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 306, Z. 3. Vet. in LA. 20,20. — Vgl. लोल und लुड्.

— caus. 1) *in Bewegung versetzen:* मन्ये मालवनं रम्यं लोलयन्ति प्रवंगमा: R. 6,111,24. यनिलेन लोलितलताङ्कुलये — शाखिने Çiç. 9,4. — 2) *in Verwirrung bringen, zu Schanden machen:* शास्त्रिम् R. 2,69,4, v. l.; vgl. u. 1) लस् caus. 1).

— अभि, partic. °लुलित *berührt, woran Etwas streift* Çiç. 61.

— आ, आलुलित (d. i. आ + लुलित) *leise bewegt:* पादाङ्गुष्ठालुलितकुसुमे कुट्टिमे Spr. 2780.

— उद् vgl. उल्लोल.

— वि, partic. °लुलित 1) *hinundherbewegt:* यतिपरुषपवनविलुलितदीपशिखाचपला लक्ष्मी: Spr. 3484. — 2) *herabgestürzt:* पुष्पचिक्खाविलुलिता: पुष्पवृष्टी: Bhâg. P. 5,2,9. विलुलितमतिपूरैर्वाष्पम् Uttarar. 53,8 (68,12). — 3) *auseinandergegangen, auseinandergefallen, in Unordnung —, in Verwirrung gebracht:* दुश्शासनविलुलिता वेणि: Veṇîs. in Sin. D. 162,8. विलुलितालक Ṛt. 4,16. Spr. 391. Gît. 7,13. Bhâg. P. 8,7,17. विलुलितस्रस्तपत्रो मूर्धजा: Gît. 12,13. Bhâg. P. 10,47, 12. Bhaṭṭ. 8,131. uneig.: तस्मिन्विलुलिते सैन्ये MBh. 7,5311. 9,529. 841. एवं विलुलिते लोके Hariv. 11171. तथा विलुलिते धर्मे 11181. — caus. *hinundherbewegen:* विलोलितदृग् Mârk. P. 77,5. 6. *nach allen Seiten auseinanderwerfen:* यथा काकस्माद्भवति भूमौ पांसुर्विलोलित: (= शिलायां शिलया पिष्ट: Nîlak.) । तथैवेह भवेद्धर्म: सूक्ष्म: सूक्ष्मतरस्तथा ॥ MBh. 12,4337. fg.

— सम्, partic. संलुलित 1) *in Berührung gekommen mit:* सिन्दूरसंलुलितमौक्तिकहार Kathâs. 16. = लिप्त *beschmiert* Comm. — 2) *verwirrt, in Unordnung gebracht:* यत्संलुलितकेश Vṛitt. 12. संलुलितेन्द्रिय R. 2,71,29.

लुलाप m. *Büffel* AK. 2,5,4. °काक्षा f. *Büffelkuh* Râgân. im ÇKDn. —

Vgl. लुलाय.

लुलापकन्द m. = मल्लिपकन्द Râéan. im ÇKDn.

लुलाप m. *Büffel* H. 1282. Halâ. 2,73. क्षुरविधुतधारित्रीचित्रकायो लुलाप: RM. bei Aufrecht, Halâ. Ind.

लुश m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Dhânâka, Liedverfassers von ṚV. 10,35. fg. ṚV. Pait. 2,31. Pañcav. Br. 9,2,22.

लुशाकपि m. N. pr. eines Mannes Pañcav. Br. 17,4,3; vgl. Kâṭy. 30, 2 in Ind. St. 3,371,1. 2.

लुष्, लौषति (स्तेये) Vop. in Dhâtup. 9,42. — Vgl. लूष्.

लुषभ Uṇâdis. 3,124. m. *ein brünstiger Elephant* Uééval.

लुक्, लौक्ति (गार्ध्ये) Vop. in Dhâtup. 26,128. — Vgl. लुभ्.

1. लू, लुनाति, लुनीते (छेदने) Dhâtup. 31,13. Schol. zu P. 6,4,112. fg. 7,3,80. लुनाति: लुलाव Vop. 25,25. लुलविय Schol. zu P. 6,1,196. 4, 126. 7,2,61. लुलुवतुस् zu 6,4,77. लुलुविधे und लुलुविढ्वे zu 8,3,79. अलावीत् zu 7,2,1. लाविष्टाम् und लाविष्टाम् zu 6,1,187. अलविधम् und अलविढ्वम् zu 8,2,25. 3,79. reflex. अलावि und अलविष्ट zu 3,1,62. लविष्यति zu 7,2,10. Vop. 25,25. लविषीधम् und लविषीढ्वम् Schol. zu P. 3,3,79. लवितुम्; लूत्वा und लून zu 7,2,11. 61. 8,2,44. Vop. 26,88. fg. 1) *schneiden* (Gras, Getraide u. s. w.), *abschneiden:* यवसान्मुष्टिर्लुनीति TBr. 3,2,3,6. लुनत्त: Çat. Br. 1,6,4,3. दात्रेण P. 1,3,67, Sch. उपमूललूनं बर्हि: Kauç. 1. 61. Gobh. 1,5,19. धान्यानामिव लूनानाम् MBh. 6, 4084. R. 3,16,8. Kathâs. 71,267. लूनकेदार Kull. zu M. 3,100. Schol. zu P. 3,1,62. 8,1,195. लूनपुनर्जातकेशादि Kâsik. 17,9. Sarvadarçanas. 128,20. कुञ्चितलूनवाच Varâh. Bṛh. 27 (25),4. प्रसुप्तस्य सिंहस्य पक्ष्माणि मुखाल्लुनासि MBh. 3, 15644. लूनपक्ष इव द्विज: R. 1,53,10 (56,10 Gorr.). 2,64,4. 4,9,25. Spr. 1524. कण्टकैर्लूनपक्षो मधुप: 822. लूनवाङ्ग Kathâs. 27,148. लूलाव च कां तस्य 52,121. 18,339. Ragh. 12,43. Râéa-Tar. 4,299. 304. Bhaṭṭ. 9,80. Kâdamb. 49. लुनीहि नन्दनम् *haue nieder* Çiç. 1,51. Bhaṭṭ. 9,23. स्वकरस्तलून: पुष्पोच्चय: *gepflückt* Kumâras. 3,61. किसलयमलूनं कररुहै: Spr. 94. केसरायं लूनम् (मधिकेण) *abgenagt* Hit. 58,3. लूनमांस: षडङ्घ्रिभि: *zerstochen* Râéa-Tar. 3,408. पक्षिणा शरासनज्यामलुनात् *zerschnitt* Ragh. 3,59. परबाणलूना: पृषत्का: 7,42. विषोगानिलूनस्य मनसो नास्ति भेषजम् Spr. 47. व्याघ्राणी भल्ललूनदंष्ट्राभि: *ausgehauen* Kathâs. 42,4. इन्द्रियाणि माम् वह्य: सपत्न्य इव गेरुषितं लुनन्ति *zerreissen* Bhâg. P. 7,9,40 = 11,9,27. लून = छिन्न u. s. w. AK. 3,2,33. H. 1489. Halâ. 2,422. — 2) *zerschneiden* so v. a. *zu Nichte machen:* अलक्ष्मीम् Spr. 4869. कौलीनम् Râéa-Tar. 6,138. लोकानलावीद्विजितांश्च तस्य Bhaṭṭ. 2,53. लूनडम्बर Râéa-Tar. 3,476.

— caus. लावयति, अलीलवत्, अलीलवत Schol. zu P. 7,4,1. 80. 93. fg. *schneiden lassen:* लावयति दात्रं स्वयमेव 1,3,67, Schol.

— desid. लुलूषति P. 7,4,79, Schol. — desid. vom caus. लिलावयिषति P. 7,4,80, Schol.

— intens. लोलूयते P. 7,4,82, Sch. absol. लौलूयम् und लोलूयम् 6,1, 194, Sch. *vollkommen abschneiden:* क्लेन पतौ लोलयां चक्रे कव्यात्पतत्रिण: Bhaṭṭ. 8,107. — desid. vom intens. लोलूयिषते P. 6,1,9, Sch.

— व्यति med. *sich gegenseitig schneiden* P. 1,3,14, Sch. act., wenn इतरेतर, अन्योऽन्य oder परस्पर beigefügt wird, 16, Sch. Vop. 23,55. fg.

— अभि s. अभिलाव.

— आ *abschneiden, abpflücken:* यमरवधूकुस्तसदृग्यालूनपक्षवा: (नन्दनद्रुमा:) Kumâras. 2,41. — Vgl. आलव.

— न्या s. u. व्या.

— व्या *abschneiden:* व्यालूनमूर्धघ्न Harîv. 9539. न्यालून° die neuere Ausg.

— उद् *schneiden* (Gras, Getraide): सकृदुल्लून Çârîr. Ça. 4,4,4. — Vgl. उल्लू.

— निस् *zerhauen:* यमनिर्लूनचर्मन् Kathâs. 50,18. *abhauen:* एकैकभल्लनिर्लूनकंधरा: 48,60. 18,201. निर्लूनै: शूरमूर्धभि: 50,7. कुलिशनिर्लूनपक्षधृक् ग्वाचल: 68,22.

— प्र s. प्रलव fgg.

— विप्र *abschneiden, abpflücken:* किसलयमिव मुग्धे बन्धनाहिप्रलूनम् Sîn. D. 74,7.

— वि, प्रवल्हविलून (f. ई und या) P. 4,1,52, Vârtt. 3.

2. लू (= 1. लू) nom. ag., लुवी, लुवम् P. 6,4,53, Sch. aber सकृल्वी, सकृल्वम् ebend. — Vgl. एक°.

लून (= द्रुत) adj. य° *nicht dürr, nicht rauh* TS. 2,5,11,3. 5,5,20,6. यज्ञस्यालूनात्तवाप TBr. 1,1,6,6. — Vgl. य°.

लूना f. 1) *Spinne* AK. 2,5,13. H. 21. 1210. an. 2,192. Med. t. 52. Halâ. 2,101. M. 12,57. Suçr. 2,257,15. यस्माल्लूनं तृणं प्राप्ता मुने: प्रस्वेदबिन्दव: । तस्माल्लूतेति भाष्यते संज्ञया ताश्च षोडश ॥ 296,9. Varâh. Bṛh. S. 46,79. Verz. d. Oxf. H. 309,a,13. Vedântas. (Allah.) No. 40. — 2) *Ameise* H. an. Med. — 3) *eine best. Hautkrankheit* H. an. Med. Verz. d. B. H. No. 963. Râéa-Tar. 4,524. 527. 6,187. लूतास्य 185. 4,523. — 4) parox. von unbekannter Bed. in der Stelle. प्रजाभ्य एव सृष्टाभ्य इमा लूतामवारुन्धते TS. 7,5,9,1. — Vgl. अभि°.

लूतामर्कटक m. 1) *Affe.* — 2) *arabischer Jasmin* (नवमालिका). — 3) = पुत्री, wohl *Puppe* H. an. 6,2.

लूतारि m. *der Spinnen Feind*, Bez. *eines best. Strauchs*, = दुग्धफेनी Râéân. im ÇKDn.

लूतिका (von लूता) f. *Spinne* Çârdar. im ÇKDn.

लून 1) adj. s. u. 1. लू. — 2) n. = लूम *Schwanz* Halâ. 2,286; vgl. लूनविष.

लूनक (von लून) 1) adj. = भिन्न H. an. 3,93. = भेदित Med. k. 150. — 2) m. *Vish* H. an. Med.; vgl. gaṇa पावादि zu P. 5,4,29.

लूनयवम् adv. *nachdem die Gerste geschnitten worden ist* gaṇa तिष्ठद्गु zu P. 2,1,17. — Vgl. लूयमानयवम्.

लूनविष adj. *im Schwanze das Gift habend:* वृश्चिकाद्य: H. 1312.

लूनि f. nom. act. von 1. लू P. 8,2,44, Vârtt. 1. Vop. 26,184. *das Schneiden, Abschneiden* 11,3. लूनि = त्रोलि (?) Uééval. zu Uṇâdis. 4,105.

लूनी nom. ag. von लूनीय् P. 6,1,112, Sch. Vop. 3,61.

लूनीय् denom. von लून ebend.

लूम n. *Schwanz, Schweif* AK. 2,8,2,18. — Vgl. लून 2).

लूयमानयवम् adv. *wenn die Gerste geschnitten wird* gaṇa तिष्ठद्गु zu P. 2,1,17. — Vgl. लूनयवम्.

लूष्, लौषति (भूषायाम्) Dhâtup. 17,26. लूषयति (हिंसायाम्) 32,70. (स्तेये) Vop. zu 32,27. — Vgl. द्लूष्, लुष्.

लूष s. यर्क°.

लूक und लूकमुदत्त m. N. pr. eines Mannes Bcan. Intr. 421. 180. Nach Vjutp. 74 bedeutet लूक *schlecht*.

लेक m. in einer Formel, angeblich N. eines Âditja: लेकः सलेकः मुलेकः TS. 1,3,8,3. — Vgl. लेख 1) *b*).

लेकुचिक m. N. pr. eines Mannes Bcan. Intr. 140, N. 5.

लेख (von लिख्; vgl. रेख) 1) m. *a*) *Schreiben, Brief* (sg. und pl.) Taik. 2,8,28. H. an. 2,23. Med. kh. 4. Hir. 54. Hariv. 3971. Kim. Nitis. 9, 68. Kumâras. 1,7. Mâlav. 70,14. 16. 74,9. Varâh. Bṛh. S. 87,5. Katâs. 5,65. 69. 30,186. 42,92. 108. fg. 43,263. 267. 269. 44,127. 138. 161. 56, 89. Râga-Tar. 3,206. 208. 235. 367. fg. 371. 4,504. Hit. 120,10. Verz. d. Oxf. H. 334,*b*,9 (Verz. d. B. H. No. 880). कूट° *ein untergeschobenes* —, *verfälschtes Schreiben* Katâs. 124,198. — *b*) pl. Bez. einer Klasse von Göttern MBh. 13,1371 (nach der Lesart der ed. Bomb., लोका: ed. Calc.). Hariv. 14269. unter Manu Kâkshusha 437. VP. 263. Mârk. P. 76,52. *ein Gott* überh. AK. 1,1,1,3. Taik. 3,3,52. H. 88. H. an. Med. Halâs. 1,6; vgl. लेखर्षभ und लेक. — *c*) N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 2) f. लेखा (vgl. रेखा) Vop. 26,191. *a*) *Riss, Strich, Linie, Streifen, Furche, Reihe* AK. 2,4,1,4. Taik. 3,3,52. H. 1423. H. an. (wo राजी st. ध्यायी zu lesen ist). Med. Halâs. 2, 387. Çat. Br. 6,3,1,25. 7, 2,1,18. 10,2,1,6. स्थेन लेखामुल्लिखेत् Âçv. Çr. 2,6,9. Gṛhj. 1,3,1. Kâty. Çr. 2, 6, 27. 4, 1, 11. Kauç. 76. Suçr. 1, 114, 3. अधस्तादत्तयोर्यस्यं लेखा: स्यु: 123,1. 3. Kim. Nitis. 7,20. Varâh. Bṛh. S. 82,4. लेखा कि कालालिखिता सर्वथा डुरतिक्रमा Hariv. 11109. नखलमतिनिपुणोऽपि पुरुषो निपतितिलिखिते (°लिखितां?) लेखामतिक्रमितुम् Daçar. 83,7. 8. वल्कलशिखानिस्यन्दलेखा: Çiç. 14, v. l. घनिनवनदलेखा auf der Backe eines Elephanten Spr. 82. मेघ° MBh. 4, 498. Kumâras. 7,16. Pañkat. 203, 5. भ्रुवोर्लेखा Varâh. Bṛh. S. 38, 12. Kumâras. 1,48. Râga-Tar. 4, 642. तडिल्लेखा R. 5,75,14. Spr. 2286. विद्युल्लेखा Mṛkkh. 1,7. Vikr. 70. ज्योतिर्लेखा Megh. 43. शाङ्खवर्णेन° Hit. Pr. 1. षड्ज° Râga-Tar. 1,378. चतुर्लेख adj. (= ललाटे चतुर्लेखायुक्त Comm.) R. ed. Bomb. 5,35,18 (32,12 Gorr.). — *b*) *die schwache Sichel* (des Mondes): चान्द्रमसीव लेखा Kumâras. 1, 28. 2,34. इन्दु° Kir. 5,44. चन्द्र° (s. auch bes.) MBh. 3,1831. प्रतिपच्चन्द्रलेखा Katâs. 4,29. शशाङ्क° Çiç. 35,21. — *c*) *Saum*: तटलेखास्थितमात्मसैन्यचक्रम् Kir. Nitis. 7,34. *Saum des Himmels, Horizont*: लेखास्वर्कै Varâh. Bṛh. 11,14. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,6(?). — *d*) *das Zeichnen, Malen*; = लिपि H. an. Med. घालेख्य°, घतरस्य Halâs. 4, 43. *Zeichnung* Çiç. 141, v. l. *Bild, Figur*: मृग° im Monde Ragh. 8, 42. सव्यपाद° *Abdruck* Kir. 5, 40. कमलाकरोलमकरीलेखाङ्कितोर:स्थल Spr. 1326. v. l. — *e*) गण्ड° so v. a. गण्डभाग, गण्डस्थली *Backengegend* Ragh. 7, 24. 10, 12. Kumâras. 7, 82. Kir. 16, 2. — *f*) = शिखा und चूडाय Taik. 3, 3, 52. — Vgl. घनलेखा, इन्दु°, क्रम°, चन्द्रलेख, चित्रलेखा, त्रयलेख, देवलेखा, पत्र° (in der ersten Bed. auch Kumâras. 3, 28), पद्म°, ब्रह्मलेख, मकरीलेखा, मद°, मदन°, मन्मथलेख, मृगलेखा, यशो°, राग°, राम°, शशि°, हलेख.

लेखक (wie oben) 1) nom. ag. *Schreiber, Abschreiber, Secretär* AK. 2, 8,1,15. Taik. 1, 1, 72. 2, 8, 26. H. 186. 483. Halâs. 2, 431. Jâtâ. 2, 58. MBh. 1,70. 77. fgg. 2,206. वेदानाम् 13,1644. 13,417. Hariv. 16189. Spr. 2991. 3090. 3209. 4747. Varâh. Bṛh. S. 3,74. 10,10. 34,11. Râga-Tar. 6,13. 40. Pañkat. 237, 1. रात्र° Pattrakaumudi im ÇKDr. घधिकरण° Râga-Tar. 6,38. कायस्थं कूटलेखकम् Katâs. 42,111. कूटरात्राज्ञालेखक Kull. zu M. 9, 232. — 2) *das Niederschreiben*: इति बहुविधं लेखकं कृत्वा Mṛkkh. 167,20. — Vgl. काष्ठ°, चित्र°, दैव°, नख°.

लेखकमुक्तामणि m. Titel einer Unterweisung für *Schreiber* Verz. d. Oxf. H. 341,*b*, No. 790.

लेखन (von लिख्) 1) adj. (f. ई) *aufritzend, wundmachend, scarificirend; aufstörend, reizend, stimulans, in Fluss bringend* Suçr. 1,27,18. 31,15. 132,8. 173,8. 182,4. 184,17. 204,15. 2,349,12. 19. धातून्मूलान्वा देहस्य विशोष्योल्लेखयेच्च यत्। लेखनं तद्यथा तोक्मं नीरमुस्तं वचा पटव: ॥ Çârṅg. Saṅh. 1,4,10. Vâgbh. 6,11. 38. °वस्ति *eine best. Art von Klystier* Suçr. 1,53,2. 2,225,18. Çârṅg. Saṅh. 3,6,18. — 2) m. *Saccharum spontaneum Lin.* (zu *Schreibstiften* gebraucht) Râgân. im ÇKDr. — 3) f. ई *a*) *Löffel*; s. घृत°. — *b*) *Schreibstift, Schreibrohr, Schreibpinsel* Taik. 2,8,28. Hâla. 212. MBh. 1,78. लेखनि aus metrischen Rücksichten (s. u. मुद्रालिपि); am Ende eines adj. comp.: पुरुष: प्रगृहीतलेखनि: Varâh. Bṛh. 27 (25),17. — 4) n. *a*) *das Wundmachen* Suçr. 1,26, 14. 2,3,16. 7, 9. = छेद्य Taik. 3, 3, 257. H. an. 3, 408. = छेदन (fehlerhaft für छेदन) Med. n. 120. — *b*) *das Anstreifen, Berühren* von Himmelskörpern beim Planetenkampfe AV. Par. in Ind. St. 10, 318. 320. — *c*) *das Niederschreiben, Abschreiben* H. an. Med. MBh. 1,74. Katâs. 43, 267. Pañkat. 237, 1. पत्रलेखनद्रव्य Verz. d. Oxf. H. 94,*b*,15. — *d*) *ein Werkzeug zum Furchen* Kauç. 137. — *e*) = भूर्ज *eine Art Birke, auf deren Rinde geschrieben wird*, Taik. H. an. Med.

लेखनि s. u. लेखन 3, *b*).

लेखनिक (von लेखन) 1) adj. *der einen Andern für sich ein Document unterschreiben lässt.* — 2) m. *ein Ueberbringer eines Briefes, Briefträger* H. an. 4,30. fg. Med. k. 211.

लेखनिका (f. zu लेखनक und dieses von लेखन) s. चित्र°.

लेखनीय (von लेखन und लिख्, adj. 1) *als scarificans dienend*: पुटपाक Suçr. 2,349,11. — 2) *zu zeichnen, zu malen* Weber, Kâmasâ. 282.

लेखपत्र n. *Brief* Mâlatîm. 172,7.

लेखपत्रिका f. dass. Katâs. 124,56.

लेखप्रतिलेखलिपि f. Bez. *einer best. Art zu schreiben* Lalit. ed. Calc. 144,7.

लेखर्षभ (लेख + ऋषभ) m. Bein. Indra's AK. 1,1,1,37.

लेखसंदेशहारिन् adj. *einen brieflichen Auftrag überbringend* Katâs. 102, 130.

लेखहार m. *ein Ueberbringer eines Briefes, Briefträger* Siddh. K. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 15,3. Katâs. 3,65. 39,186. 101,249. fg. 123,333.

लेखहारक m. dass. Siddh. K. im ÇKDr. Katâs. 39,190. 42,91. fg. 101,331. 334. Râga-Tar. 6,319.

लेखहारिन् adj. *einen Brief überbringend*: दूतानां संगुप्तार्थलेखहारित्वादिना परराष्ट्रप्रस्थापनम् Kull. zu M. 7,153.

लेखाधिकारिन् m. *der Secretär eines Fürsten* Râga-Tar. 3,206.

लेखाधू m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,123 (लेखाधू v. l.). pl. *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि zu 2,4,69.

लेखाधू f. N. pr. eines Frauenzimmers v. l. im gaṇa शिवादि zu P. 4,

1,123. लेखाधुमन्य *geltend für* — Schol. zu P. 6,3,68.

लेखाय्, लेखायति (विलाने स्खलने च) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लेखार्ह m. = भीताल *eine Palmenart* (auf deren Blättern *geschrieben* wird) Rāǵan. im ÇKDn. लेखार्ह्य in der alphabetischen Ordnung, लेखार्ह unter भीताल. — Vgl. लेप्यपत्र.

लेखिन् (von लिख्) 1) adj. *ritzend, streifend an, berührend:* गिरेर्माल्यवतः — पर्यन्तलेखि प्रसृतम् Ragh. 13,26. — 2) f. ई *Löffel:* घृत° H. 836, Sch.; vgl. लेखन 3) *a*).

लेख्य, लेख्यति = लेखाय् gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लेख्य (von लिख्) 1) adj. *a*) *scarificandus* Suçr. 1,14,19. 92,12. 2,331, 15. — *b*) *zu schreiben, niederzuschreiben* Jiǵ. 2,6. Mārk. P. 51,37. — *c*) *zu malen* Jiǵ. 1,297. — *d*) *mit Farben dargestellt, gemalt:* प्रतिमा Buic. P. 11,27,12. °पत्र Spr. 1234. °रूप dass. Weber, Kṛshṇaǵ. 277. — *e*) *zu rechnen* —, *zu zählen zu* (loc.): कमलेष्वं कोऽपि त्वम् — उन्मादिजुषु Spr. 3867. — 2) n. *a*) *das Schreiben, die Kunst des Schreibens:* चकार पत्रम् — लेख्यादिषु तथा शिल्पेषु MBu. 3,7609. R. Gorr. 1, 80,2. 29. Vāmn. Pur. S. 15,12. 16,18. 19,10. *das Abschreiben:* ग्रन्थस्य यत्प्रचरितो ऽस्य विनाशमेति लेख्याद्युकृमुनमुद्धाधिगमक्रमेण 106,5. — *b*) *das Zeichnen, Malen* Vāmn. Pur. 18,2. — *c*) *Schriftstück, Brief* H. an. 2,25. Med. kh. 4. Kām. Nītis. 12,47. °संस्थापन Sāh. D. 136. *ein schriftliches Document* Jiǵ. 1,317. 2,84. Spr. 2946 (wohl nicht *Bild*). तदर्थं च स्वकृत्तेन शिवं लेख्यमकारयत् Kathās. 24,173. Verz. d. Oxf. H. 263, *a*,17. *Inschrift:* चिरं तिष्ठति मेदिन्यां शैले लेख्यमिवार्पितम् MBu. 13, 6330. — *d*) *ein gemaltes Bild:* लेख्यानीवोल्लालितानि Buic. P. 10,39,36. — Vgl. क्रय°, दुर्लेख्य.

लेख्यगत adj. *gemalt* MBu. 13,2309. Hariv. 9987.

लेख्यचूर्णिका f. *Pinsel zum Schreiben* oder *Malen* Çabdar. im ÇKDn.

लेख्यपत्र m. *Weinpalme* Buiāpr. im ÇKDn. °क m. dass. Çabdaratn. bei Wilson. — Vgl. लेखार्ह.

लेख्यमय adj. *gemalt* Comm. zu Buic. P. 10,39,36.

लेख्यस्थान n. *Schreibstube* Trik. 2,8,29.

लेट m. Bez. *einer best. Mischlingskaste;* s. u. कोल 1) *b*), गङ्गपुत्र 2) und उम. — Vgl. उप°.

लेव्, लेवति (दीप्तिपूर्वकभावन्वप्रधोर्त्तेषु) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3, 1, 27. — Vgl. लोव्.

लेण्ड n. *Unrath des Körpers, Excremente:* लेण्डं विसृजन् (so ist zu lesen; vgl. u. लण्ड) Buic. P. 10,37,8. उत्तमर्ण वृकलेण्डं मूत्रं च भयमाप ह Brahmavaiv. P., Çatrughnaǵanmakh., Dhenukāsurav. 22 im ÇKDn. गज° Suçr. 2,67,4. अश्व° Schol. zu Kāty. Ça. 16,4,8. — Vgl. लण्ड (wohl fehlerhaft).

लेत m. n. *Thränen* Trik. 2,6,30. — Vgl. लोत.

लेदरी f. N. pr. einer Oertlichkeit Rāǵa-Tar. 1,87.

लेप्, लेपते (गतौ, सेवने) Dhātup. 10,11.

लेप (von लिप्) m. = लेपन, प्रलेपन Trik. 3,3,279. H. an. 2,299. Med. p. 11. 1) *das Anstreichen, Bestreichen* Vop. in Dhātup. 28,139. Jiǵ. 1, 189. Mārk. P. 35,16. कामं सुरभिलेपेन कान्तिं वहति काञ्चनम् Spr. 3223. — 2) *was aufgestrichen wird, Salbe, Teig, Tünche;* = सुधा AK. 3,4,28, 105. H. an. Viçva im ÇKDn. Suçr. 1,65,8. fgg. 132,2. 2,4,19. Çāṅk. Saṅk. 1,1,26. 2,1,21. 3,3. 3,11,1. 5. घनकृत° Hariv. 8436. Buic. P. 7,12,12. सर्पिस्तैलवसाभिश्च लाक्षया वाप्यनल्पया। मृत्तिकां मिश्रयित्वा तं लेपं कुड्येषु दापय ॥ MBu. 1,5724. के ऽमी पञ्च नराः — लेपनिर्मिताः Çatr. 1,282. पङ्क° Spr. 117. मृल्लेप Rāǵa-Tar. 3,397. fg. 401. मृत्तिकालेपयुत (so ist zu lesen) Sarvadarçanas. 40,13. 19. — 3) *Unreinigkeit, Schmutz* (auch *moralischer*), namentlich *Fett, das an Gefässen, Händen u. s. w. hängen bleibt:* लेपान्परिमृज्य Āçv. Ça. 3,14,14. घाज्य° Kaṭh. Up. 2,3. 4. Çāṅkh. Ça. 7,5,11. Gobh. 1,16,21. स° Kāty. Ça. 7,5,17. सर्व° 26,6,15. Schol. 237,2. पिष्ट° *Mehlfleck, was von Mehl* oder *Teig hängen blieb* Kāty. Ça. 3,7,19. Schol. 204,17. 284,21. 285,3. Kauç. 18. गन्धो लेपश्च M. 4,111. 5,126. Jiǵ. 1,17. घृतद्योतलेप Kathās. 22,199. कृविर्लेप Sāy. zu ṚV. 1,52,5. उच्छिष्टलेपा: Buic. P. 1,5,25. °भागिन: M. 3,216. °भाज: Matsja-P. bei Kull. zu M. 5,60. Mārk. P. 31,1. 2. °संक्षिन् 4. रुधिर° *Blutfleck* MBu. 12,4813. न मे स्वभावेषु भवन्ति लेपास्तोयस्य बिन्दोरिव पुष्करेषु ॥ 14,791. घ° (घाकाश) 12,7977. सनघस्त्वं ग्रगमाघ न लेपस्तव विद्यते Mārk. P. 18,29. पापपुण्यालेपलक्षणा जीवन्मुक्ति: *kein Rest von* Maṇḍuc. in Ind. St. 1,20,14. — 4) *Speise* AK. 2,9, 56. Trik. H. an. Med. — Vgl. निर्लेप, पाद°, पिण्ड°, पिण्डी°, मुख°, लिङ्ग°, वस्त्र°.

1. लेपक am Ende eines adj. comp. von लेप; s. घ°.

2. लेपक (von लिप्) nom. ag. *Bossirer* AK. 2,10,6. Trik. 2,10,2. H. 922, Sch. Halāy. 2,436.

लेपकार m. *Maurer, Tüncher* R. 1,12,7. R. Gorr. 2,90,19.

लेपकामिनी f. = मञ्जनी Hem. 161. — Vgl. लेप्यनारी, लेप्ययोषित्.

लेपन (von लिप्) 1) m. *Olibanum, ostindischer Weihrauch* (तुरुष्क) Rāǵan. im ÇKDn. — 2) n. *a*) *das Anstreichen, Bestreichen, Aufstreichen* Āçv. Gṛhj. 2,3,3. Jiǵ. 1,188. चन्दनै: Kathās. 101,127. पाषाणे गन्धलेपनम् Spr. 4397. सुगन्धादि° Vet. in LA. (III) 8,22. भस्म° Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,4. Spr. 4853. कस्तूरी° Schol. zu Naish. 22,56. Am Ende eines adj. comp. (f. घा): गोशकृत्कृतलेपना MBu. 13,6792. — *b*) *das womit Etwas bestrichen wird, Salbe, Teig, Tünche* Çāṅk. Saṅk. 3,11,1. सुधामृत्तिक° MBu. 5,7477. पाण्डुमृत्तिक° adj. R. 2,91,41. सुधापाण्डुरलेपना adj. Hariv. 8939. मांसशोणितं° adj. vom Körper M. 6,76 (= MBu. 12, 12462). MBu. 3,13452. 11,107. — *c*) *Fleisch* H. ç. 127. पलल kann nicht vermuthet werden, da dieses im Text steht. — Vgl. भूमि°.

लेपिन् (von लिप् und लेप) 1) adj. am Ende eines comp. *a*) *beschmierend* —, *überziehend mit:* चूर्ण° H. an. 4,311. Med. ç. 33. — *b*) *beschmiert* —, *überzogen mit:* प्रभा° so v. a. *glänzend, strahlend* Ragh. 13,54. Vikr. 125. — 2) m. = लेपक *Bossirer* Çabdar. im ÇKDn.

लेप्य (von लिप्) 1) adj. *a*) *bossirt:* प्रतिमा Buic. P. 11,27,12. — *b*) *zu verunreinigen, zu beflecken* Maitrīup. 2,7. — 2) n. *das Bossiren* AK. 2,10,29. H. 922. Halāy. 2,436.

लेप्यकृत् m. *Bossirer* H. 922.

लेप्यनारी f. wohl *eine bossirte weibliche Figur* Med. n. 27. — Vgl. लेप्ययोषित्, लेप्यस्त्री, लेपकामिनी.

लेप्यमय (von लेप्य) adj. (f. ई) *bossirt* H. 1014. Halāy. 2,338.

लेप्ययोषित् f. = लेप्यनारी H. an. 3,338.

लेप्यस्त्री f. *ein parfümirtes Weib* Çabdar. im ÇKDn. — Vgl. लेप्यना-

री, लेप्यगोपित्.

लेय (aus λέων) m. *der Löwe im Thierkreise* Varâh. Bṛh. 1, 8.

लेलेया (vom intens. von 2. ली), davon ein gleichlautender instr. als adv. *schwank, in unruhiger Bewegung:* वङ्कलेव पृथिवी लेलयेवात्तरितम् लेलयेवासो यौः Çat. Br. 2, 2, 4, 16. लेलयेव हि यूः 3, 8, 3, 20.

लेलाय् s. u. 2. ली.

लेलिह् (vom intens. von 1. लिह्) 1) adj. Bez. *gewisser parasitischer Würmer* (कृमि) Çiṅkh. Sâṅkh. 1, 7, 10. — 2) m. *Schlange* MBh. 1, 1318. Bhâg. P. 6, 12, 27. 10, 17, 12. — 3) f. या Bez. *einer best. Fingerstellung* (मुद्रा) Tantrasâra im ÇKDr. u. लेलिहाना.

लेलिहान 1) adj. s. u. dem intens. von लिह्. — 2) m. *a) Schlange* H. 1304. Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 1 v. u. (?). — *b)* Bein. Çiva's Çabdar. im ÇKDr. — 3) f. या Bez. *einer best. Fingerstellung* (मुद्रा) Tantrasâra im ÇKDr.; vgl. लेलिहा.

लेल्य nom. ag. vom intens. von 1. ली Vop. 26, 29.

लेवार m. N. pr. eines Agrahâra Râja-Tar. 1, 87.

लेश (von लिष् = रिष्) m. 1) *Partikel, Minimum, ein Bischen* AK. 3, 2, 11. Trik. 3, 2, 8. H. 1427. Hall. 4, 3. 5, 7. Sidd. K. zu P. 5, 4, 136. लेशेन वचनम् *kaum hörbare Aussprache* ṚV. Prât. 14, 5. Taitt. Prât. 10, 21. सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता वक्तव्याः Kâṭhân. Up. 2, 22, 5. यकारवकारयोर्लेशः Taitt. Prât. 1, 10. लेशवृत्तिः (derselben Laute) AV. Prât. 2, 24. सर्वस्मात्स्थूलुण्ठिताद्धितरतो लेशान् Spr. 3227. एष ते राजधर्माणां लेशः समनुवर्णितः MBh. 12, 2115. एतद्वै लेशमात्रं वः समाख्यातम् 3, 12674. एतद्वै लेशमात्रेण कथितं ते मया 13, 5529. Harîv. 9787. दृष्टो तदुपकारस्य लेशतो येन निष्कृतिम् *in ganz geringem Maasse* Kathâs. 121, 224. तत्रापि प्रमादं लेशतो दर्शयान् Verz. d. Oxf. H. 103, *b*, N. 2. लेशोक्त *ganz kurz gesagt, nur angedeutet* Suçr. 2, 556, 16. लेशादृष्टि Kuṭṭan. 46, 20. लेशानुबन्ध Ind. St. 10, 313. Sehr häufig am Ende eines comp.: दण्ड° *eine ganz geringe Strafe* M. 8, 51. तदवयव° Spr. 193. अर्थ° Kâm. Nîtis. 10, 24. घन° Kathâs. 36, 75. अणुत्वभाग° Bhâg. P. 3, 24, 49. अदृष्टामृतमतेर्लेशैः Schol. zu Naish. 22, 49. तमो° Sarvadarçanas. 164, 18. fg. 178, 15. ऐश्वर्य° 91, 10. धर्म° MBh. 3, 1268. वाच्य° 12, 5406. पुण्य° Bhâg. P. 3, 1, 9. 10, 48, 6 (am Ende eines adj. comp. f. या). सुख° 5, 5, 16. 5, 9, 38. Spr. 3282. 3984. कास्य° Bhâr. Nîtiç. 18, 113. क्लास° Bhâg. P. 5, 18, 16. विश्वास° Spr. 3102. दर्प° Kathâs. 46, 20. अपराध° 103, 8. भक्ति° Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 10. सरस्वती° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 503, Çl. 6. संस्कारलेशतम् Kap. 3, 88. स्वेदलेशाः *Schweisstropfen* Çiç. 37. घर्मुलेशाः Mṛcch. 105. Bhâg. P. 6, 16, 32. अमवारिलेशाः Kumâras. 3, 33. प्रालेय° *Hagel* Spr. 1914. zum Ueberfluss mit लव verbunden: मधुलव° 3520. अन्न° als Unterschrift eines von Speisen handelnden Abschnittes Vîrân. 6 so v. a. *Einiges über Speisen.* — 2) *ein best. kleiner Zeittheil,* = 2 Kalâ H. 136. — 3) Bez. *eines best. Gesanges* Harîv. 8464, wo mit der neueren Ausg. लेशाभिधानो zu lesen ist. — 4) Bez. zweier Redefiguren: *a) Anwendung der Vergleichung statt des directen Ausspruches:* न लेशो भण्यते वाक्यं यत्सादृश्यपुरःसरम् Sâh. D. 467. 434. Beispiel aus Veṇîsaṅh.: रुते भ्रुवति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । या साधा पाण्डुपुत्राणां सेवास्माकं भविष्यति ॥ ebend. Hierher wohl Verz. d. Oxf. H. 208, *b*, 19. — *b) Darstellung als Nachtheil, was sonst als Vorzug gilt, und umgekehrt:* लेशः स्याद्दोषगुणयोर्गुणदोषत्वकत्थनम् Kuvalaj. 133, *b* (162, *a*). Beispiel Spr. 3381. — 5) N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Suhotra, VP. 406.

लेश्या f. *Licht* Ind. St. 10, 281. 282 (hier लेश्य). 311; vgl. 261.

लेष्टव्य partic. fut. pass. von लिष्ट् P. 8, 2, 36, Sch.

लेष्टु (von लिष्ट् = रिष्ट्) m. *Erdkloss, Erdscholle* AK. 2, 9, 13. H. 970. सीता° MBh. 13, 2135 (°नेष्टु ed. Bomb.). लेष्णापैश्च लेष्टुभिः (लेष्णापैस्तथाश्मभिः die neuere Ausg.) Harîv. 2429. — Vgl. नेष्टु und लोष्ट.

लेष्टुघ्न m. *Egge* oder *ein anderes Werkzeug zum Zerschlagen der Erdschollen* Çabdar. im ÇKDr.

लेष्टुोद्दन m. dass. Bhar. zu AK. 2, 9, 12 nach ÇKDr.

लेसक m. *ein Reiter auf einem Elephanten* Çabdam. im ÇKDr.

लेह (von 1. लिह् P. 3, 1, 141. gaṇa पचादि zu 134. 1) nom. ag. *Lecker, Schlürfer:* मधुनो लेहः so v. a. मधुलिह् *Biene* Bhaṭṭ. 6, 82. — 2) m. *Leckmittel, Latwerge, Electuarium* Suçr. 1, 162, 6. 168, 9. 2, 81, 13. Verz. d. Oxf. H. 319, *a*, No. 736. *Speise* AK. 2, 9, 36, v. l. (für लेप) und H. 423. — 3) m. Bez. *einer der zehn Weisen, auf welche eine Eklipse erfolgen kann,* Varâh. Bṛh. S. 5, 43. 45. = 4) लेखम् in तीरलेखम् absol. Kauç. 30. — 5) f. ई *eine best. Krankheit des Ohrläppchens* Çiṅkh. Sâṅkh. 1, 7, 82.

लेखन (wie eben) n. *das Lecken* H. 424. मधु° Sarvadarçanas. 38, 3.

लेखिन् (wie eben) nom. ag. *Lecker, leckend;* s. मधु°.

लेखिन m. *Borax* ÇKDr. angeblich nach H.

लेह्य (von 1. लिह्) 1) adj. *woran man leckt, was man leckend geniesst:* यत्तु जिह्वायां निक्षिप्य रसास्वादेन निगीर्यते द्रवीभूतं गुडादि तल्लेह्यम् Schol. zu Bhag. 15, 14. भक्ष्य, भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य MBh. 1, 4997. 6659. 13, 5371. R. 1, 52, 24 (53, 23 Gorr.). 2, 30, 25 (47, 14 Gorr.). 91, 19 (100, 17 Gorr.). 5, 14, 13. Suçr. 1, 160, 12. 244, 17. Ragh. 5, 73. Kathâs. 45, 230. Pañkat. 61, 13. — 2) n. = अमृत *Nectar* Çabdam. im ÇKDr.

लैह्य m. patron. von लेख gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112.

लैखाधेय patron. von लेखाध und metron. von लेखाधू (vgl. P. 6, 4, 147) gaṇa प्रुधादि zu P. 4, 1, 123 nebst v. l.

लैगवायनि m. patron. von लिगु gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99.

लैगव्य m. desgl. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. f. लैगव्यायनी gaṇa लोहितादि zu 18.

लैङ्ग (von लिङ्ग) 1) n. Titel eines Purâṇa und eines Upapurâṇa Madhus. in Ind. St. 1, 18, 10. 19. VP. 284. Bhâg. P. 12, 7, 23. Mârk. P. S. 639, Çl. 3. Comm. zu Çvetâçv. Up. S. 239. 268. Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 2. 39, *a*, 39. 65, *a*, 40. °पुराण 104, *a*, 20. 270, *b*, 35. Vgl. लिङ्गपुराण. — 2) f. ई *eine best. Schlingpflanze,* = लिङ्गिनी Râjân. im ÇKDr.

लैङ्गिक (wie eben) 1) adj. *auf einem beweisenden Merkmale beruhend* Kaṇ. 3, 2, 1. 10, 1, 3. fehlerhaft लैङ्गीक Z. d. d. m. G. 7, 306. — 2) m. *Bildhauer* Schol. zu Kap. 1, 121; vgl. Wilson, Sânkhyak. S. 39. — Vgl. लिङ्गोपकित°.

लेष्, लेषति (गतिप्रेरणाक्षेपणेषु) Dhâtup. 13, 15, v. l.

लो 1) nom. ag. von लवय्; nom. लौम् P. 1, 1, 58, Vârtt. 2, Sch. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 3, 10.

लोक्, लोकते (दर्शने) Dhâtup. 4, 2. *erblicken, gewahr werden:* तं भैरवो

ऽलोकात Verz. d. Oxf. H. 237,a,2. — Wohl eine auf रुच्, रोक zurückgehende secundare Wurzel.

— caus. लोकयति (भाषार्थे oder भासार्थे) Dhâtup. 33,103. 1) *schauen, anschauen, betrachten* Sâj. zu Çat. Br. 14,6,9,11. मुक्त्वान्यत्र परस्परमलोकयन् LA. (III) 90,18. — 2) *erblicken, gewahr werden:* यत्तिकीतमपि नीमियमलोकयतोव रूक्ष दृष्ट्वापि Sâh. D. 60,16. गिरिदुर्गाण्यलोकयत् R. 2,36,28. *erkennen, inne werden:* ब्रगतो वर्तीकृमिति लोकय Liṅga-P. bei Muir, ST. IV, 325,10 v. u.

— अभि caus. *betrachten, mustern:* वसुधामभिलोकयन् von einer Höhe R. 6,2,7.

— अव 1) *sehen, die Fähigkeit des Sehens besitzen:* नोलूका ऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् Spr. 1688. — 2) *hinschauen, hinsehen:* विहगवलोकते तन्वी Sâh. D. 57,19. यावद्ऊर्ध्वमवलोकते Hit. 85, 15. — caus. 1) *aufschauen, hinschauen, hinsehen:* व्यक्तम्भक्त मरुमिक्षा मक्षिप्याश्चावलोकयन् MBh. 3,11110 (vgl. R. 2,97,6). यामीच्च त्रायदेवात्र न रात्रावलोकयन् Kathâs. 18,329. पुरस्कृत्य बलं राज्ञा योधयेदवलोकयन् Spr. 1796. Çik. 33,1. सकर्णावलोक्य च 6,13. 45,20. 92,12. 99, 13, v. l. 100,23. 101,20. Prab. 47,3. परिक्रम्यावलोक्य च Çik. 8,16. 22, 20,18. 31,6. 32,19. 46,8. 61,1. Dhûrtas. 78,14. प्रकाशं निर्गतस्तावद्वलोकयामि किमद्यविशिष्टं रत्नन्या इति Çik. 46,7. नेपथ्याभिमुखम् 3,6. Vikr. 3,6. Dhûrtas. 68,5. Prab. 47,1. पुर: Çik. 44,18, v. l. 63,15, v. l. Dhûrtas. 77,16. ऊर्ध्वम् 73,17. Mṛicch. 76,2. पार्श्वम् Çik. 103,9. सर्वत: 41,18. समन्तात् 7,23. 77,3. 94,5, v. l. R. 3,18,21. 35,77. Dhûrtas. 71,3. सयत: 74,8. 82,2. पश्चादनवलोकयन् *sich nicht umsehend* MBh. 12,261. पृष्ठतो नावलोकयन् dass. R. 3,30,30. 4,9,12. अवलोकित n. *das Hinschauen, Hinsehen:* सिंहानी परिवृत्यावलोकितम् Raghu. 4,72. न तिर्यगवलोकितं भवति ad Çik. 69,2. — 2) *hinsehen nach, sehen auf, ansehen, anblicken, beschauen, betrachten:* mit acc.: संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् Bhag. 6,13. Mârk. P. 39,31. अवलोकयमानो तु मुक्तो यत्र तौ दिशम् R. 2,52,93 (30 Gorr.). चतुरो चावलोकय (माम्) MBh. 7, 98. R. Gorr. 2,11,31. घर्मार्ताभ्यां दृष्ट्वा वसुधाम् 30,2. 6,99,5. रात्रानं मृगं चावलोक्य Çik. 3,2. 8,12, v. l. 10,23. परस्परमवलोकयत: 17,4. 33, 10. 103,17. 18,21. 23,5. 32,13. 37,4. 38,16. 77,11. 80,7. 98,22. 101,16. 108,19, v. l. 109,9. Çiç. 9,84. वेलावनानि जलधेरवलोकयितुं ययौ Kathâs. 22,177. Mârk. P. 61,22. Wilson, Kâśikâ. 278. Hit. 27,18. 89,3. दृमनकमार्गम् Pañcat. ed. orn. 19,23. Vet. in LA. (III) 11,6. मदीयं प्रयोगम् Mâlav. 23,20. मम बलानि तावद्वलोकयतु मन्त्री *mustern* Hit. 94,8. तदहं वृतिद्वारस्थ: तेत्रपालमवलोकयामि *hinsehen nach* so v. a. *achten auf* Pañcat. 249,4. निमित्तानि Varâh. Bṛ. S. 53,105. 68,1. 95,17. रूपमक्षरीयोग्यं वरमवलोकयत *sehet euch um nach* Z. d. d. m. G. 14,573,7. पाडुण्यगुणदोषांश्च नित्यं बुद्ध्यावलोकयेत् MBh. 12,2062. Varâh. Bṛ. S. 24,2. 34,99. मुनिमतानि 68,117. 106,2. Bṛ. 4,12. In der Astrol. *anblicken* vom *adspectus* planetarum Varâh. Bṛ. 2,12. 6,6. 19,4. 23,9. पाणिग्रहणकाले त्वं सूर्यभौमशनैश्चरै: । शुक्रचन्द्रस्पतिभ्यां च तव भार्यावलोकिता ॥ Mârk. P. 71,26. सुरपतिगुरुणावलोकिते Varâh. Bṛ. S. 5, 62. धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि देवैश्चाप्यवलोकिता । पत् u. s. w. von *den Göttern* (gnadig, *angeblickt* Mârk. P. 16,63. निधिनावलोकित: 68,16. 25. — 3) *erblicken, gewahr werden:* नैषावलोकयामास रात्रसं भुङ्क्त एव स: MBh. 1,6281. 13,2752 (नावलोकयत् mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,55,25. 3,39,11. 16. 24. Raghu. 8,37. 73. 11,67. 19,58. Kumâras. 3, 50. Çik. 99,16, v. l. 103,10. 109,3. Vikr. 21,3. Spr. 5322. प्रथममुनिकथितमवितथमवलोक्य मन्वविस्तरस्यार्थम् Varâh. Bṛ. S. 1,2. 32,5. 45, 14. Kathâs. 2,82. Prab. 111,7. Bhâg. P. 3,4,3. Mârk. P. 35,34. Pañcat. 36,20. 46,21. 53,10. 76,24. 93,5. Hit. 9,7. 10,1. 14,9. 22. 18,13. 22,2. 23,6. 27,1. 29,12. 35,4. 38,12. 43,21. 45,7. 120,16. 123,17. Vet. in LA. (III) 7,21. 8,12. 9,13. Z. d. d. m. G. 14,374,18. — Vgl. अवलोक fgg.

— समव caus. 1) *hinschauen, sich umsehen:* यथोपदिष्टेन पथा गच्छन्समवलोकयन् R. 3,17,3. *hinsehen nach, beschauen, betrachten, mustern:* सर्वा दिश: 4,1,3. योधान् Spr. 1796, v. l. — 2) *erblicken, gewahr werden* R. 4,60,18. Çik. 13. Kathâs. 43,366. Z. d. d. m. G. 14,573,23.

— आ 1) *hinsehen nach, schauen auf:* वन्मार्गमालोकते Śiç. D. 57,4. राज्ञा चक्रवाकमालोकते Hit. 89,2, v. l. आलोकितुम् Kathâs. 15,137. — 2) *erblicken:* आलुलोके Verz. d. Oxf. H. 225,b,24. Bhatt. 2,24. — caus. 1) *sehen, vor Augen haben:* मामनालोक्य न स्थाति Prab. 43,10. वणिगालोक्य निजे हृदि मोत्साहं परिचिन्तयकीतारम् so v. a. *denkend an* Spr. 1937. *hinsehen, hinschauen:* आलोकयन्ती दृशे प्रासादाद्बुद्धदात्मजान् MBh. 4,250. तदेत्यावलोक्य स्वयम् Kathâs. 45,209. सुलतणा सा वा न वेत्यालोक्यताम् 13,68. Sarvadarçanas. 39,5. *anblicken, ansehen, betrachten, beschauen* MBh. 3,2301. 4,470. Harîv. 9011 (आलोकयान). Mṛicch. 76,3. Ragh. 14,29. Çik. 38,16, v. l. 103,17, v. l. Vikr. 81. आलोकित: कुरबक: कुरुते विकाशम् ad Kumâras. 3,26. Spr. 1769. तृणमिव जगज्जालमालोकयाम: 1966. 2537. Kathâs. 18,125. 383. 46,89. Bhâg. P. 1,7,52. Wilson, Kâśikâ. 278. Hit. 33,5. Dhûrtas. 92,17. यथावदालोकितमार्गचारिन् Kâm. Nîtis. 15,59. श्रीकण्ठो मामुपेत्य वामालोकयति *schaut* (gnädig) *auf dich* Vop. 3,143. खड्गम् — प्राक्षिणोत्सारथे: कायमालोक्य so v. a. *zielend auf* Harîv. 13248. *untersuchen, prüfen, studiren:* पक्षवायामम् R. 4,43,21. सारापराधौ M. 8,126. तत्राण्यनेकानि Verz. d. Oxf. H. 99,a, No. 154. मतानि तेषाम् 175,b,9. 181,a, No. 412, Z. d. Varâh. Bṛ. S. 1,5. धिया 51,1. बुद्ध्या Kâm. Nîtis. 1,17. In der Astrol. *ansehen* vom *adspectus* planetarum Varâh. Bṛ. 4,2. 23,1. 7. आलोकित n. *Blick* Milatîn. 16,3. — 2) *erblicken, gewahr werden, erfahren, erkennen* Maitrâjup. 6,28. Dhatup. 1,15. MBh. 2,1817. 3,11024. 5,7531. 6,3824. 14,582. R. 2,34,4. 47,16. 53,9. 96,42. R. Gorr. 1,57,23. 3,51,43. 4, 19,1. 43,54. 44,122. 59,18. 5,13,28. 34,20. 6,14,5. Kâm. Nîtis. 13,52. Ragh. 6,2. 12,84. 16,83. Kumâras. 7,21. Spr. 1690. 1816. 3010. Ç.Ç. 9, 84. Kathâs. 3,76. 4,48. 68. सर्वमालोक्य. चञ्चलम् 5,126. 10,187. 12,28. 70. 131. 13,130. 15,116. 20,25. 21,86. 25,292. 26,106. 28,101. 32,80. 136. 39,239. 42,74. Râja-Tar. 1,87. 298. 3,61. 4,163. 409. Bhâg. P. 8, 8,35. Mârk. P. 66,12. 68,7. 109,32. 110,19. Prab. 68,18. Pañcat. 76, 23. Hit. 17,15. 23,7, 10. 39,20. 42,9. 110,18, v. l. Z. d. d. m. G. 14,573. 26. Dhûrtas. 83,3. यस्य वा दृष्टिमण्डले भिन्नविकृतानि त्रूपाण्यालोक्यन्ते Suçr. 1,118,10. fg. कतमो ऽयं मानुमानालोक्यते Çik. 99,16. शोच्या च प्रियदर्शना चेयमालोक्यते 38, v. l. बलात्तरालोकितया श्रोत्रत्रया MBh. 3, 16854. तद्दालोकितस्वप्रा *die denselben Traum gehabt hatte* Kathâs. 32,391. — आलोक्य Pañcat. 78,14 fehlerhaft für आलोड्य. — Vgl. आलोक fgg.

— समा caus. 1) *hinschauen* R. 5,55,17. *hinschauen auf, — nach, anblicken, anschauen* MBh. 2,775. सर्वा दिशः 3,16850. R. 3,79,1. *vor Augen haben, in Betracht ziehen* MBh. 8, 2158. Hariv. 6338. Sin. D. 45,19. Mâlav. P. 66,28. 133,7. समालोक्य मतान्येषाम् Verz. d. Oxf. H. 189,b,10. स्वमानसे समालोक्य (°लोच्य?) Pañkat. 1,6,3. समालोक्य v. l. für समालोच्य 12,3. — 2) *erblicken, gewahr werden* Spr. 4922. MBh. 7,864. R. 2,93,21. R. Gorr. 2,41,22. Bhâg. P. 3,19,3. Mârk. P. 78,25. Pañkat. 3,13 (ed. orn. 1,8). *erkennen als:* सकलार्थशास्त्रसारं समालोक्य विष्णुशर्मेदम् Pañkat. Pr. 3 (ed. orn. 1). — Vgl. समालोक fgg.

— उद् caus. *hinaufblicken zu:* भगवत्तमभिमुखमुल्लोकयमानाः Saddh. P. 4,3,b.

— परि caus. *sich umsehen, umherschauen* R. 5,10,6. *rings beschauen:* न तथा तु ज्ञानस्थानं सर्वतः परिलोकयन् 3,68,1.

— वि *anblicken, ansehen:* °लोकितुम् Bhâg. P. 4,20,21. *prüfen, studiren:* अनेकानागमपन्थान्विलोकितुम् Verz. d. Oxf. H. 100,b,5. — caus. 1) *hinschauen, hinsehen* Gorr. 1,2,17. R. 2,33,3. 97,6 (Gorr. 106,4; vgl. MBh. 3,11110). R. Gorr. 2,108,23. 5,8,23. 13,20. Spr. 2663. Ragh. 6,59. Çiç. 9,4. 11,19, v. l. 32,20. 33,4. 41,15, v. l. 44,18. 49,4. 50,3. 72,11. 75,3. 99,13. 105,12. Vikr. 12,20. Mâlav. 50,14. Kathâs. 37,157. Kâdab. 33. Prab. 6,1. 31,18. उद्घाटकोपकुट्यिं च तया व्यलोकि 67,9. Bhâg. P. 8,8,19. Pañkat. 235,24. fg. विलोकित n. *Blick* Çiç. 36. Kumâras. 4,23. Sin. D. 42,16. — 2) *hinsehen nach, ansehen, anblicken, beschauen, betrachten:* दिशो दश Hariv. 12368. R. 5,56,52. Spr. 2015. Verz. d. Oxf. H. 171,*a*,3. गगणाङ्का गतीं नदीम् R. 1,44,19. Ragh. 14,44. 19,40. Kumâras. 5,25. Spr. 2022. Çiç. 13,10. 15,12. 17,13. 22,10. 24, 18. 27,16. 44,1. 50,13. 57,21. 64,2, v. l. 83,23. 98,22, v. l. 103,3. 106, 15. 96. Vikr. 40,1. 18. Spr. 236. Varâh. Bṛh. S. 89,8. Kir. 5,17. Uttarar. 35, 20 (47, 14). Kathâs. 17, 88. 25, 230. 28, 179. 34, 164. 35, 138. Râga-Tar. 1,373. 4, 598. Bhâg. P. 2,9,7. 3, 20, 45. 4, 20, 22. 5, 25, 4. 5. 8,7,4. 8,28●8,16,3. Pañkat. 64,16. Hit. 21,20. 27,18, v. l. Ved. in LA. (III) 13,5. 11,6. 7. *sein Augenmerk richten auf, beobachten, prüfen* Kâm. Nitis. 16,40. मनीषया निर्मलया विलोकितं फलाय कर्म 13,58. *studiren* Verz. d. Oxf. H. 37,b, No. 92. *sehen auf* so v. a. *Rücksicht nehmen auf:* न खलु प्रयोजनं कारणं वा विलोक्य माया प्रवर्तते Prab. 15,11. — 3) *erblicken, gewahr werden* MBh. 8,2817. Hariv. 14608. R. 3,56,53. 4,1,6. 5,6,24. 13,26. 14,50. Ragh. 2,11. 11,17. Kumâras. 5,70. Ṛt. 1,9. Vikr. 8,17. Spr. 728. 811. 2543. 3010. Varâh. Bṛh. S. 29,1. 45,18. Kathâs. 3,8. 10,161. 216. 12,114. 17,145. 18,104. 245. 302. 19,24. 20,12. 24, 110. 26,190. 28,190. 29,174. 30,84. 31,47. 32,32. 52. 64. 77. 33,218. 37,14. 40,29. 59. 42,18. 47,90. 48,133. 49,206. Râga-Tar. 3,115. 118. 4,17. 19. 5,196. 6,230. Bhâg. P. 1,7,18. 11,31. 14,24. 3,10,5. 12,29. 19,7. 17. 22,17. 26,3. 3,1,16. 16,4. Mârk. P. 23,94. Pañkat. 1,7,68. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,23. Taitt. 1,1,2. Pañkat. 36,19. 46,7. Hit. 89, 13, v. l. 127,7. Ved. in LA. (III) 8,6. pass. so v. a. *sichtbar sein:* लग्नः कलिङ्गसेनाया देवस्य च प्रभावरुः । विवाहमङ्गलायेव किं नाम्नैव विलोक्यते ॥ Kathâs. 32,3. Kâdab. 32. — 4) *hinübersehen über* (acc.): वृत्तिं तत्र प्रकुर्वीत यामुष्टो न विलोकयेत् M. 8,239. — Vgl. विलोक fgg.

— प्रवि caus. 1) *hinschauen, hinblicken:* सर्वतः R. 1,9,39 (57 Gorr.).

betrachten, beschauen Kathâs. 40,55. 46,46. 71,101. *beobachten* (astronomisch): छायाग्रम् Golâdh. Praçnâdh. 47. *in Gedanken betrachten, erwägen* Kathâs. 120,86. — 2) *erblicken, gewahr werden, sehen* Kathâs. 52,7. 101,76. 108,120.

— सम् *zusammen blicken:* ते एते ज्योतिषी उभयतः संलोकेते *blicken einander an* Ait. Br. 4,15.

लोकँ m. Taik. 3,5,3. am Ende eines adj. comp. f. आ Ragh. 15,60. Spr. 4097. Varâh. Bṛh. S. 8,30. In den ältesten Texten finden wir regelmässig die Verbindung उ लोक, sogar am Anfange eines Pâda (RV. 3,2,9. 37,11. 5,4,11. 9,2,8). Im RV. erscheint das einfache लोक nur 8,89,12. 9,113,7. 9. 10,14,9. 85,20. 90,15. VS. 11,22 wird missverständlich उ in सु verändert, obgleich diese Sammlung vereinzelt (12, 35. 18, 52. 58) auch उ erhalten hat. Dieser Umstand führt auf die Vermuthung, dass उलोक die ältere Form des Wortes gewesen, लोक also durch Abfall des Anlauts entstanden sei. Vgl. Ind. St. 1, 351. Müller, Transl. l, lxxiv. उलोक weist auf उरोक, das auf उरु, वर् (vgl. उरु, वर, वरिमन्) zurückgeführt werden kann. Wer es vorzieht उरोक von रुच् abzuleiten, könnte उ als Rest der Praposition अव (vgl. अवकाश) betrachten. 1) *freier Raum, das Freie; Raum überh., Ort, Platz, Stelle:* देहि लोकम् *mache Platz* RV. 8,89,12. सीदं होतः स्व उ लोके 3,29,8. 10,13,2. उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि 3,37,11. 2,9. सुभा उ लोके 5,1,6. यस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् 10,14,9. VS. 2,30. पितृषदन 3,26. 6,6. देवं सोमेष ते लोकः 8, 26. लोकं पृण छिद्रं पृण 12,34. 19,34. 35,1. 2. 6. व्रतं च लोकं चोप्रेति so v. a. *freies Gebiet, freie Bewegung* AV. 4,11,9. 6,123,2. 12,2,1. 14, 2,13. 18,2,25. यत्रादर्धर्षदमानाय लोकम् 4,7. मधुमत् 9,1,23. ये पृथिव्यां पुण्या लोकाः 15,13,1. TS. 5,7,3,3. Ait. Br. 3,18. 1,24. Pañkav. Br. 17, 13,1. Çat. Br. 6,2,2,28. यावत् लोकं जयति *Strecke, Gebiet* 11,8,3,5. 13,2,7,13. 14,6,9,11. fgg. (vgl. Bṛh. Âr. Up. 3,9,10. fgg.). 9,4,3. आत्मा सर्वेषां भूतानां लोकः 4,3,29. जगतीनां लोके त्रिष्टुभः *statt der G.* Sharv. Br. 3,7. *Zwischenraum* Kâuç. 86. लोको ऽयम् *diese Stätte, dieses Land, das von uns bewohnte Land* AK. 2, 1, 6. Besonders in der Verbindung लोकं कृ oder उरुं लोकं कृ *Raum —, Luft —, Freiheit schaffen:* उरुं तस्मभ्यो अकृणोदु लोकम् RV. 7,33,5. 1,93,6. 2,30,6. 4, 17,7. 5,4,11. यो वो वृताभ्यो अकृणोदु लोकम् 10,30,7. 104,10. VS. 11, 22. 23,43. AV. 6,121,4. 9,2,11. 11,1,31. Âçv. Çr. 4,13,5. ज्योतिर्यदक्रे अकृणोदु लोकम् *machte Platz* RV. 9,92,5. ähnlich उरुं नो लोकमनु नेषि 6,47,8. AV. 18,2,20. — 2) *der grosse Raum, die Welt; Weltraum, jede imaginäre Welt* AK. 3,4,4,2. H. 1363. an. 2,16. Med. k. 33. Halâj. 1, 133. VS. 32,11. fg. AV. 8,9,1. 15. 11,5,7. 8,10. सूर्यः सप्तः सर्वा लोकान्यर्यति रश्मिन् 4,38,5. 10,9,10. 10,33. दिव्याः, पार्थिवाः 9,5,14. सूर्यवतः 18. TBr. 3,12,●,2. नापुत्रस्य लोको ऽस्ति *für den Sohnlosen ist die Welt nicht da* Ait. Br. 7,13. कौमारो लोको यत्रानिष्ट पुत्रः *Kinderwelt* AV. 12, 3,47. *Welt* im ausgezeichneten Sinne: *Himmel, Stelle im Himmel* Çat. Br. 2,6,4,7. 10,5,4,16. 11,2,3,19. न कृतघ्नस्य लोको ऽस्ति Weber, Kṛshṇaj. 225. लोकेभ्यः परिकृन्तति M. 4,219. लोकाञ्जयति 9,137. *Welten* von verschiedener Art und Zahl Çat. Br. 14,6,●,1. 7,1,36. fgg. 9, 1,18. Çâṇḍ. Br. 20,1. Kâṭy. 26,4. M. 4,181. fgg. पुष्कलाः 8,81. आत्म-

प्रभा: MBu. 3,2227. तेजोमया: 3,2454. M. 6,39. कामगमा: MBu. 3,12034. कौन्तेयाँल्लोकान्स्वं गमिष्यसि R. 2,74,9. त्रय: AV. 19,6,31. 12,3,20. Ait. Br. 1,5. Çat. Br. 13,1,2,3. 14,4,2,24. M. 2,230. 232. 11,261. 12,97. MBh. 1,3910. 7642. 3,10660. 13,312. R. 1,6,2. 2,96,45. 6,102,22. Spr. 1512. Variiu. Bṛh. S. 6,6. 26,4. °त्रयी Spr. 1079. उभौ लोकौ *Erde und Himmel* TBr. 3,1,2,5. MBh. 12,366. Mirkh. P. 22,36. P. 1,3,54, Schol. °द्वय Kâm. Nîtis. 7,55. 10,24. Râga-Tar. 5,184. सप्त इमे लोका: Mund. Up. 2, 1,8; MBh. 3,175. 13,5288. 5292. Ragh. 10,22. Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,11. 57,*a*,2 v. u. (daher Bez. *der Zahl sieben* Ind. St. 8,386. 395). घ्नयम् AV. 5,30,17. 8,8,8. 12,3,38. 19,54,5. VS. 19,46. Çat. Br. 13,5,2,2. 2,11, 2. M. 10,128. लोके ऽस्मिन् 7,3. 8,343. 9,24. 12,53. MBh. 3,2637. 2904. 3962. R. 1,1,2. 92. Spr. 5188. इमं लोकम्, मध्यमम्, ब्रह्मलोकम् M. 2,233. इहैवास्ते तु सा लोके 3,141. 10,138. 12,108. लोके so v. a. इह लोके *hier auf Erden* 1,11. 84. 4,137. 5,50. MBh. 1,6122. 3,2776. 2980. Spr. 1539. 3626. 4374. 4739. 5346 (Gegens. परत्र). Daçak. 96,7. लोके कृत्स्ने *auf der ganzen Erde* MBh. 3,2119. ततो दुर्गे च राष्ट्रे च लोके च सचराचरम्। घत्तरितगतांश्चैव मुनीन्देवांश्च पीडयेत् ॥ *die ganze Erde* M. 7,29. लोकं प्रव्रजति *er verlässt die Erde* Varâh. Bṛh. S. 69,36. इमे लोका: Ait. Br. 3,15. घसौ *jene Welt* AV. 12,5,38. 57. VS. 17,2. TS. 1,5,9,4. Ait. Br. 5,28. 8,2. Çat. Br. 1,2,5,17. 14,9,4,2. M. 10,128. पर AV. 6,117,3. Çat. Br. 14,6,2,2. M. 11,26. AK. 3,4,22 (30), 16. उत्तरे हिमवत्पार्श्वे पुण्ये सर्वगुणान्विते। पुण्य: तेम्यश्च काम्यश्च स पेरो लोक उच्यते ॥ MBh. 12,7010. पाँल्लोकान् Weber, Rikat. Up. 342. तृतीय AV. 6,117,3. तृतीये वा इतो लोके पितर: TBr. 1,3,10,5. परम AV. 19,34,5. Ait. Br. 1,21. 2,24. शुचि AV. 4,34,2. ज्योतिष्मत्त् 9,5,6. पुण्य 15. 19,54,5. VS. 20,25. पितृयान AV. 5,18,13. 6,117,3. देवयान ebend. नारक 12,4,36. स्वर्गे लोके Kaṭhop. 1,12. Çat. Br. 14,7,2,11. M. 3,140. 8,103. सोमसूर्यस्तृचरित Weber, Gjot. 110. जीवानाम् AV. 2,9,1. घमृतस्य 8,1,1. सुकृताम् und सुकृतस्य s. u. d. Ww. यमस्य AV. 6,118,2. पितृणाम् 8,29, 4. 12,2,9. 45. भद्रस्य 6,26,1. क्रूरकृताम् TBr. 1,4,9,5. पुण्यकृताम् (so ist zu lesen) MBh. 3,12025. घप्सरसाम्, वैश्वदेवस्य, घपाम् M. 4,122. ब्रह्मघ्न:, स्त्रीबालघातिन:, मित्रद्रुह:, कृतघ्नस्य 8,89. सप्तानां मरुतां लोकान्यसूनां च MBh. 13,5315. गच्छ लोकान्मकेन्द्रस्य R. 4,21,27. राजर्षि° 1,37,5. पितृ° Kaṭhop. Up. 2,2,1. मातृ° 2. धातृ° 3. स्वसृ° 4. सखि° 5. गन्धमाल्य° 6. घन्नपान° 7. गीतवादित्र° 8. स्त्री° 9. भर्तृ° M. 5,165. 9,29. उर्वशी° (so die ed. Bomb.) Bhâg. P. 2, 14, 44. 47. निरय° R. Gorr. 2, 15, 22. — 3) pl. und sg. *die Leute, die Menschen, das Volk* (auch im Gegens. zum Fürsten) AK. H. 501. H. an. Med. Halâj. 2, 139. लोकानां हितकाम्यया M. 12,117. लोकेषु यश: प्राप MBh. 3,2081. लोकेषप्रतिमो भुवि 2086. 13,6804. 15,900. Harîv. 4005. R. 1,2,39. R. Gorr. 2,108, 29. Spr. 311. 560. 1276. 1936. 2071. 2621. 4582. Kathâs. 12, 177. fg: Râga-Tar. 1,352. Bhâg. P. 3,14,11. Verz. d. Oxf. H. 156,*a*,23. 25. Pañkat. 246,2. Vet. in LA. (III) 1,3. सर्वे MBh. 13,871. R. 2,54,7. Spr. 3127. 4582. Pañkat. 236,25. सर्वलोकेषु R. 1,59,20. बन्धव: Spr. 4583. सर्वे पुरनिवासिनो राजसंनिधिलोकाश्च Pañkat. 26,20. लोका: स्त्रीषु रता: so v. a. *die Männer* Vet. in LA. (III) 30,9. गच्छलोका: Hit. 88,18. sg. Çat. Br. 11,5,2,1. Nir. 7,4. प्रिया भवति लोकस्य M. 8,42. 333. 9,326. 11, 84. R. 1,1,87. 3,1,9. Siddhânj. 38. Çik. 77. 192. ad 25,7. Spr. 1443. 2310, v. l. 2331. 2602. 2684. 3734. 4958. Ragh. 6,30. Kathâs. 10,113. 21,116. 29,179. 34,143. Râga-Tar. 5,262. Daçak. 66,8. Bhâg. P. 5,24, 8. Pañkat. 48,23. सर्वस्य लोकस्य Ragh. 4,8. Spr. 5207. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 45. fg. सर्वलोक: *Jedermann* MBh. 1,3031. Spr. 3380. Varâh. Bṛh. S. 4,8. Pañkat. 228,2. नगरलोक: Kathâs. 18,122. तीक्ष्णलोक: Tikshṇa's *Leute* Râga-Tar. 8,1742. लोकतो ऽपि कि ते रुद्रा: परिवाद: R. 2,36,30. पृष्टाश्च लोकतो बुद्ध्वा Kathâs. 43,139. सकललोकनन्दन Varâh. Bṛh. S. 8,47. लोकदेवो: Çik. 104. कृपणलोकमत Spr. 1012. 2680. लोकवद्व्याप्यत् Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 55. — 4) *Gemeinschaft, Gesellschaft:* सतां लोकात् — भ्रश्यतु R. 2,75,24. नर° so v. a. *die Menschen* R. Gorr. 2,1,42. Ragh. 6,1. रात्तस° R. 3,41,3. राज्ञ° Ragh. 5,64. नरदेव° 6,8. तिलिपाल° 7,3. नारवीर° Spr. 2476. पौर° Kathâs. 4,35. 12,185. नाग° 22,203. वणिग्लोक 29,107. ज्ञातिलोकतस् Varâh. Bṛh. S. 52,8. Pañkat. ed. orn. 38,13. Vet. in LA. (III) 9,18. वुरुस्व° 21,18. नृतिर्यक्सुरलोकभाषा H. 59. Im Bengalischen ist लोक geradezu zum Pluralsuffix geworden. — 5) *das gemeine Leben*, oft im Gegens. zur *Wissenschaft*, insbes. *der heiligen*, zum Veda. Nir. 1,2. लोकतस् so v. a. *wie üblich* Çâṃkh. Gṛhj. 4,19. M. 7,42. Varâh. Bṛh. S. 86,10. Bṛh. 2,3. लोके Sarvadarçanas. 92,14. °मतनिर्वर्कण Verz. d. Oxf. H. 251,*a*,3. लोके वेदे च प्रथित: Buâg. 15,18. विरुद्धो लोकवेदयो: MBh. 1,7258. लोकवेदविरुद्ध 7245. 8246. लोकवेदविरोधक 7257. °विरोधात् Nîlak. 164. एष धर्म: स्त्रिया नित्यो वेदे लोके श्रुत: स्मृत: Spr. 3004. लोकपूत neben वेदपूत Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 116. लोके वेदे च कुशल: so v. a. *in weltlichen Angelegenheiten* Kâm. Nîtis. 6,1. लोकवेदपधानुग Bhâg. P. 2,3,19. लोकशास्त्राभ्याम् 7,13,45. शास्त्रेषु लोकेषु च पत्प्रसिद्धम् Verz. d. Oxf. H. 195,*a*,6. °विद्याविरुद्ध 207,*a*,16. लोके im Gegens. zu काव्यनाट्ययो: H. 326. लोके *im gemeinen Leben* so v. a. *in der Sprache des Volkes*, im Gegens. zu वेदे. छन्दसि Schol. zu P. 3,1,43. 4,1,20. 3,22. 5,1,131. 3,1,118, Vârtt. — Vgl. घ° (घलोकान् neben लोकान् Bhâg. P. 3,5,8 erklärt der Comm. durch लोकालोकपर्वताद्बहिर्भागान्; vgl. auch 5,20,26), घङ्क°, घत्तरिक्ष°, घमा°, घर्वलोक, इन्द्र°, उरु°, चतुर्लोक, त्रन°, त्रीव°, तपो°, तल°, त्रि°, देव°, द्यौर्लोक, नर°, नृ°, पति°, पर°, पाप°, पितृ°, पुण्य°, पृथिवि°, पृथिवी°, प्रेत°, ब्रध्न°, ब्रह्म°, भू°, भूमि°, भूर्लोक, मध्य°, मध्यम°, मनुज°, मनुष्य°, मरुल्लोक, मर्त्य°, मृत्यु°, यद्यालोकम्, यम°, वि°, स°, समान°, स्वर्लोक, स्वर्ग°.

लोककण्टक m. *ein Dorn für die Menschen, ein schädlicher Mensch* M. 9,260. MBh. 3,8777. R. 1,14,31.

लोककर्तृ m. *Schöpfer der Welt:* Brahman R. 1, 2, 26 (25 Gorr.). 14, 12. Verz. d. Oxf. H. 47, *a*, No. 103, Z. 5. Vishṇu MBh. 3, 13886. 13958. Çiva 13, 1193.

लोककल्प 1) adj. *a) weltähnlich, in der Gestalt der Welt auftretend* Bhâg. P. 12, 4, 19. — *b) von den Menschen angesehen —, gehalten für* Bhâg. P. 10, 63, 36. — 2) m. *Weltperiode* Bhâg. P. 3, 11, 23.

लोककान्त 1) adj. *von Jedermann gern gesehen, Jedermann gefallend* MBh. 3, 2666. R. 2, 49, 7. — 2) f. घा *ein best. Heilkraut*, = सहि Râgân. im ÇKDa.

लोककार m. = लोककर्तृ Çiv.

लोककृत् 1) adj. *Raum schaffend, Luft machend, befreiend:* घयं सि-

न्युग्रो अभवद् लोककृत् RV. 9,86,21. मनीकं चिद् लोककृत् 10,133,1. AV. 13,3,25. TS. 1,1,13,1. TBa. 3,7,7,10. Âçv. Çr. 4,13,5. — 2) m. = लोककर्तर् MBu. 3, 2168. 13, 1103. R. 1, 43, 26. Mâlav. P. 47, 2. Verz. d. Oxf. H. 47,a, No. 103, Z. 9.

लोककर्तु adj. = लोककृत् 1): उ लो° RV. 9,2,8.

लोकक्षित् adj. *den Himmel bewohnend* Kaṭhop. Up. 2,24,5. 9. 14.

लोकगति f. *das Thun und Treiben der Menschen* Harîv. 7092. R. 7,26,53.

लोकगाथा f. *ein im Munde des Volkes lebender Vers* Sarvadarçanas. 2,1.

लोकगुरु m. *Lehrer der Welt, — des Volkes* R. 2, 101, 26 (110, 21 Gorr.). Bhâg. P. 4,2,7. 19,39. 20,17. 6,17,6. 7,4,29. सर्व° 4,19,3.

लोकचक्षुस् n. 1) pl. *die Augen der Menschen* Spr. 1608. — 2) *das Auge der Welt, die Sonne* Çabdam. im ÇKDa. m. nach Wilson und ÇKDa.

लोकचर adj. *die Welten durchwandernd:* नारद MBu. 2,269.

लोकचरित्र n. *der Hergang in der Welt* R. ed. Bomb. 1,9,10. लोकवृत्तान्त ed. Schl.

लोकचारिन् adj. = लोकचर: Çiva MBu. 13,1158.

लोकजननी f. *die Mutter der Welt*, Beiw. der Lakshmî Verz. d. Oxf. H. 183,b,2 v. u.

लोकजित्वन् 1) adj. *a) Gebiet gewinnend* Çat. Br. 14,4,1,33. — *b) den Himmel gewinnend* M. 4,8 (superl.). लोकजितं स्वर्गम् so v. a. स्वर्गलोकजितम् AV. 4,34,8. — 2) m. Beiw. eines Buddha AK. 1,1,4,8. H. 235.

लोकज्ञ adj. *die Welt —, die Menschen kennend* Spr. 4713. Davon °ज्ञा f. *Weltkenntniss, Menschenkenntniss* ebend.

लोकज्येष्ठ adj. *der vorzüglichste unter den Menschen*, Beiw. Buddha's Vjutp. 1. Hiouen-thsang II, 157.

लोकतन्त्र n. *Kenntniss der Welt, Menschenkenntniss* R. 5,48,8.

लोकतत्त्व s. u. तत्त्व 1) *d*).

लोकता f. in तल्लोकता, nom. abstr. von तल्लोक adj. *im Besitz seiner Welt seiend* Bhâg. P. 4,24,7. MBu. 7,6319 ist st. गत्वास्मि लोकताम् mit der ed. Bomb. गत्वा सलोकताम् zu lesen.

लोकतुषार m. *Kampher* Râjân. im ÇKDa.

लोकदम्भक adj. *die Leute betrügend* Spr. 4249.

लोकद्वार n. *das Thor zum Himmel* Kaṭhop. Up. 2,24,4. 3,6,5. Davon °द्वारीय n. N. eines Sâman (vgl. Kaṭhop. Up. 2,24,4) Schol. zu Kâtj. Çr. 9,1,10. 8,16. 10,1,2.

लोकधातर् m. *Schöpfer der Welt:* Çiva MBu. 13,1161.

लोकधातु m. Bez. *eines best. Theiles der Welt* bei den Buddhisten Vjutp. 8. 81. Wilson, Sel. Works II, 29. 32. fg. लोकधातवेश als Bed. von वर्ष AK. 3,4,20,226. — Vgl. सह°.

लोकनाथ m. 1) *Herr der Welten:* Brahman Çabdar. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 38,b, No. 93, Z. 16. ब्रह्मादय: Bhâg. P. 3,21,5. सुरेश्वरा: 9,18, 13. Vishṇu oder Kṛishṇa H. ç. 71 (falschlich लोकनाभ). MBu. 2,9. 16, 137. Bhâg. P. 2,7,18 (मल्लि°). Çiva Çiv. Kumâras. 5,77 (nach der Lesart im ÇKDa. स लोकनाथ: st. त्रिलोकनाथ:). die Sonne Verz. d. Oxf. H. 32,a,27. — 2) *Beschützer des Volks* als Beiw. eines Fürsten R. 2,24,19. 42,18. 100,15. 110,2. R. Gorr. 2,1,42. 21,14. 81,2. 7,83,11. Râjâ-Tar. 2,26. Bhâg. P. 3,15,4. — 3) *ein* Buddha H. ç. 80. N. pr. eines Buddha Târan. 1,1,14. Râjâ-Tar. 1,138. Wilson, Sel. Works II, 16. 18. 27. — 4) N. pr. des Verfassers der Padamañjarî Colebr. Misc. Ess. II, 37. °चक्रवर्तिन् N. pr. eines Commentators des Râmâjaṇa Ind. St. 1,468.

लोकनाभस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 963.

लोकनिन्दित adj. *von Jedermann getadelt* Sarvadarçanas. 78, 13. fg.

लोकनेतर् m. *Führer der Welten:* Çiva Çiv.

लोकप m. *Hüter einer best. Welt:* लोकपा ब्रह्मणो ये MBu. 1, 3651. *Welthüter*, deren acht Bhâg. P. 3,23,39.

लोकपङ्कि s. u. पङ्कि 3) und Ind. St. 10,41. 120.

लोकपति m. 1) *der Herr der Welt:* Brahman Vaṇîn. Bṛh. S. 74,4. Vishṇu Bhâg. P. 2,4,20. — 2) *Gebieter über das Volk, Fürst* R. 5,93, 23. Bhâg. P. 1,17,41.

लोकपथ m. *ein allgemeiner Weg, die gewöhnliche Art und Weise* MBu. 13,4898.

लोकपद्धति f. *ein allgemeiner Weg* Sarvadarçanas. 93,21.

लोकपाल m. 1) *Welthüter*, deren bei Manu und später vier oder acht angenommen werden, je nachdem vier oder acht Weltgegenden gezählt werden, LIA. I, 771. fg. Çat. Br. 14,7,2,24. Ait. Up. 1,3. 3,1. Kaush. Up. 3,8. Verz. d. B. H. No. 1232. fg. M. 5,96. 8,23. 9,315. MBu. 1,7854. 8176. 2,446. 3,1710. fg. 1714. 2127. 2132. 2139. 2164. 2171. 2180. 2182. 12024. 16179. R. 1,5,20. 19,26. 72,7. 2,23,22. 91,13. R. Gorr. 1,70,4. 3,34,11. 6,72,41. Ragh. 17,78. Vaṇîn. Bṛh. S. 43,37. 46, 10. 48,26. Mahânâr. Up. in Ind. St. 2,94. Nṛs. Tâp. Up. ebend. 2,107. Weber, Râmat. Up. 326. 351. VP. 153. 169. 226. Bhâg. P. 1,11,27. 3,6, 12. fgg. 4,17,11. Pañkat. 38,13. Çiva Çiv. — 2) *Hüter des Volkes, Fürst* H. 690, Sch. Hall. 2,266. Ragh. 2,75. Râjâ-Tar. 1,346. नर° Ragh. 6, 1. — 3) N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. II, 280. — 4) *das Hüten des Volkes* R. Gorr. 1,70,4.

लोकपालक m. 1) = लोकपाल 1) Bhâg. P. 3,18,26. — 2) = लोकपाल 2) Bhâg. P. 4,18,7.

लोकपालता f. nom. abstr. von लोकपाल 1) Mâlav. P. 108,18.

लोकपालत्व n. dass. Harîv. 605. R. 7,3,18.

लोकपितामह und सर्व° s. u. पितामह 1) *b*) und füge Bhâg. P. 3,10, 1 hinzu.

लोकपुण्य N. pr. einer Oertlichkeit Râjâ-Tar. 4,193.

लोकपुरुष m. *die personificirte Welt* H. 94, Sch.

लोकपूजित 1) adj. *allgemein geehrt.* — 2) m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 202,10.

लोकप्रकाशक n. Titel einer Compilation des Kshemendra Verz. d. B. H. No. 804.

लोकप्रकाशन m. *Erleuchter der Welt, die Sonne* H. ç. 9.

लोकप्रत्यय m. *allgemeine Geltung, Landläufigkeit* Kâç. Ça. 13,1,9.

लोकप्रदीप m. *Leuchte der Welt*, N. pr. eines Buddha Burn. Intr. 102.

लोकप्रवाद m. *ein allgemein gebrauchter —, landläufiger Ausspruch, — Spruch* R. 3,22,32. 59,18. 5,26,6. Hit. 11,6.

लोकप्रसिद्धि f. *allgemeine Geltung:* °प्रसिद्धया *nach der herrschenden Gewohnheit* Vaṇîn. Bṛh. S. 93,1.

लोकबन्धु m. *der allgemeine Freund*, Bez. *der Sonne* H. ç. 6. Çiva's Çiv.

लोकबान्धव m. *der allgemeine Freund*, Bez. *der Sonne* Verz. d. Oxf.

H. 184,*b*,12. Gaṭidn. im ÇKDa.

लोकबाह्य adj. *aus der menschlichen Gesellschaft ausgestossen* Gaṭidn. im ÇKDa.

लोकबिन्दुसार m. Name des letzten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften bei den Gaina H. 248.

लोकभर्तृ m. *Erhalter —, Ernährer des Volkes* R. 2,35,25. 5,36,37.

लोकभृत् adj. *Raum einnehmend* Çat. Ba. 7,2,1,5. 5,1,28.

लोकभावन adj. s. u. 1. भावन 1) *b*) und füge noch Bhâg. P. 3,14,40. 8,9,27 hinzu.

लोकभाविन् adj. = लोकभावन *die Menschen fördernd, den Menschen Heil bringend* R. 4,44,47.

लोकमय (von लोक) adj. (f. ई) 1) *räumig* Çat. Ba. 8,5,2,9. — 2) *die Welten in sich enthaltend* Harîv. 2156. 2798. Bhâg. P. 2,5,41.

लोकमातृ f. *Mutter der Welt* Siṅ. D. 241 (pl.). रोदसी लोकमातरौ Bhâg. P. 2,3,5. Lakshmî 6,19,6. AK. 1,1,1,23.

लोकमार्ग m. *der allgemeine Weg, die herkömmliche Art und Weise* Pañkat. ed. orn. 3,16.

लोकंपृण P. 6,3,70, Vârtt. 4. 1) adj. (f. घा) *die Welt erfüllend, überallhin dringend:* लोकंपृणैः परिमलैः परिपूरितस्य काश्मीरजस्य Bhâminîvilâsa 1,69 nach Aufrecht (Halâs. Ind. u. कृ). — 2) f. घा *a*) sc. इष्टका Bez. *der gewöhnlichen zum Bau des Feueraltars dienenden Backsteine, die mit dem allgemeinen Spruche* लोकं पृण VS. 12,34 *aufgesetzt werden, während diejenigen, die einen eigenen Spruch haben,* यजुष्मत्यः *heissen,* Çat. Ba. 6,1,2,25. 2,2,6. 7,1,1,33. 10,4,2,18. 8,8. TS. 5,2,2, 6. — *b*) sc. मन्त्र *der Spruch* लोकं पृण u. s. w. (VS. 12,34) Çat. Ba. 9,1, 2,19. 10,5,2,15. TS. 5,5,6,2. Kâṭy. Çr. 17,1,17. 6,3. 7,21.

लोकयात्रा f. *das gewöhnliche Thun und Treiben, Handel und Wandel* M. 9,25. 27. MBh. 1,49. 69. 3,11296. 12,3475. 13,582. 2199. Harîv. 6811 (लोकयात्रा ed. Calc.). R. 2,109,27. R. Gorr. 2,118,27. Kâm. Nîtis. 4,20. Mâlav. 68,17. Spr. 2310, v. l. 4661. Kâvjâd. 1,3. Kathâs. 6,52. 56. 60. Bhâg. P. 3,9,20. 5,6,12. 20,41. सकललोकयात्रास्तमियात् Sarvadarçanas. 26,16. तावेतौ तर्कनिर्णयौ लोकयात्रां वक्तः Comm. zu Nyâyas. 1,1,1 (S. 6, Z. 2). so v. a. *das tägliche Brod, Lebensunterhalt* Spr. 2679.

लोकयात्रिक adj. Med. j. 85 als Erklärung von देवयु.

लोकरक्षक m. *Hüter des Volkes, Fürst:* लोकरक्षाधिकार R. 6,86,25.

लोकरव m. *das Gerede der Welt* Spr. 1556.

लोकलेख m. *ein gewöhnlicher Brief, Alltagsbrief* Verz. d. B. H. No. 804.

लोकलोचन n. 1) *das Auge der Welt, die Sonne* Çârdar. im ÇKDa. (m. nach ÇKDa. und Wilson). Bhâg. P. 3,2,11. — 2) pl. *die Augen der Menschen* Kathâs. 18,92. Spr. 2745.

लोकवचन n. *das Gerede der Leute* Pañkat. 183,15.

लोकवत् (von लोक) adj. *die Welten enthaltend* Maitrâjaṇ. 6,5,6.

लोकवर्तन n. *das Verfahren der Menschen, die Art und Weise sich zu benehmen:* इत्थं प्रकृतेव नामेक्ष प्रधानं लोकवर्तनम् Kathâs. 64,42.

लोकवाद m. *das Gerede der Welt* AK. 3,4,26,119. MBh. 5,1086. R. Gorr. 2,20,6. 25,3. Ragh. 14,61. Kathâs. 86,12. Mârk. P. 50,96. 58, 65. fg. Daçak. 69,11.

लोकवार्ता f. *Gerücht* Verz. d. Oxf. H. 259,*a*,3.

लोकविकुष्ट adj. *worüber Jedermann aufschreit* M. 4,176.

लोकविज्ञात adj. *allgemein bekannt* Pat. in Ind. St. 5,151.

लोकविद् adj. *die Welt kennend*, Beiw. eines Buddha Vjutp. 1.

लोकविद्विष्ट adj. *allgemein verhasst* M. 2,57. Jâṇ. 1,130. R. 2,23,11.

लोकविधि m. 1) *Gründer der Welt* MBh. 12,13606. — 2) *die in der Welt geltende Ordnung* Bhâg. P. 7,2,37.

लोकविनायक m. pl. N. *einer best. Klasse von Krankheitsdämonen* Vâhni-P. im ÇKDa.

लोकविन्दु adj. *Raum —, Freiheit schaffend, — gewinnend* Pâṇkâv. Ba. 11,5,25.

लोकविश्रुत adj. *allgemein bekannt* M. 3,193. R. 1,5,6. 2,21,28. 98, 26. 110,22. R. Gorr. 2,54,22.

लोकविसर्ग m. *die Aufhebung der Welt:* °कृत् MBh. 12,13606.

लोकविस्तार m. *allgemeine Verbreitung* Kull. zu M. 7,33.

लोकवीर m. pl. *sämmtliche Helden der Erde* Bhâg. P. 9,10,6.

लोकवृत्त n. *die allgemeine Sitte* M. 4,11. Çâk. 65,17, v. l. Kathâs. 53,6.7.

लोकवृत्तान्त m. *der Hergang in der Welt* R. 1,8,14. Çâk. 65,17.

1. लोकव्यवहार m. dass. Kull. zu M. 9,27.

2. लोकव्यवहार adj. *allgemein gebraucht, gang und gäbe* P. 1,2,52, Schol.; vgl. M. 8,131.

लोकव्रत n. 1) *die allgemein verbreitete Weise, — Art und Weise zu leben:* वार्त्यलोकव्रतम् Bhâg. P. 8,3,7. सलोकव्रतं ब्रह्मचर्यादि Comm. — 2) Bez. verschiedener Sâman Ind. St. 3,232,*a*.

लोकश्रुति f. *allgemeines Bekanntsein, allgemeine Verbreitung* R. Gorr. 1,2,45.

लोकसंव्यवहार m. *Verkehr mit der Welt, Handel und Wandel* M. 8, 131. Mârk. P. 44,26.

लोकसंसृति f. *der Hergang in der Welt, Schicksal:* जीवलोकस्य लोकसंसृतीः Bhâg. P. 3,29,3.

लोकसंकर m. *eine Verwirrung —, ein Durcheinander in Bezug auf die Menschen, das Spielen einer falschen Rolle* R. 2,109,6.

लोकसंक्षय m. *der Untergang der Welt* MBh. 5,7203.

लोकसंग्रह m. 1) *die aus dem Verkehr mit Menschen gewonnene Erfahrung* Verz. d. Oxf. H. 265,*a*,16. Verz. d. B. H. No. 804. — 2) *das Gewinnen der Menschen* Bhâg. P. 10,78,31. 80,30.

लोकसंनि adj. *Raum —, Freiheit schaffend* VS. 19,48.

लोकसाक्षिक adj. *von der Welt —, von Andern bezeugt* und °कम् adv. *vor Zeugen* MBh. 1,37. 3,1207. 12,7903. 13,2233. R. 3,14,17.

लोकसाक्षिन् 1) m. *der Zeuge der Welt, der Zeuge von Allem:* पावक R. 6,101,28. ब्रह्मन् Verz. d. Oxf. H. 47,*a*, No. 103, Z. 10. fg. — 2) adj. = लोकसाक्षिक: ततो ऽन्तरीक्षे वागासीत्सुस्वरा लोकसाक्षिणी (°साक्षिकी?) Harîv. 5116.

लोकसात् (von लोक) adv. in Verbindung mit कृ *zum Gemeingut machen* Kathâs. 90,30 (fälschlich लोक-सात्कृत getrennt).

लोकसाधक adj. *Welten bildend, — schaffend:* ब्रह्मविष्णुमहेशाख्या यस्यांशा लोकसाधकाः Verz. d. Oxf. H. 9,*a*, No. 47, Z. 5.

लोकसामन् n. N. eines Sâman Lâṭy. 4,5,10.

लोकसिद्ध adj. *gewöhnlich, gemein* Sarvadarçanas. 3,14.

लोकसीमातिवर्तिन् adj. *die Grenzen des Alltäglichen überschreitend, ungewöhnlich, übernatürlich* Sin. D. 76,4. — Vgl. लोकातिग, लोकातिशय.

लोकसुन्दर 1) adj. (f. ई) *allgemein für schön geltend* R. 3, 40, 20. — 2) m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,17.

लोकस्थल n. *ein Fall des gemeinen Lebens* Kusum. 33,8.

लोकस्थिति f. *ein allgemein geltendes Gesetz* Spr. 1125, v. l. 3892. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 260.

लोकस्पृश् adj. = लोकसमि TS. 7,5,24,1. — Vgl. लोकस्मृश्.

लोकस्मृत् Maitrâyaṇ. 6, 35, v. l. für लोकस्पृश् der TS. = पृथिवीलोकस्य स्मर्ता Comm.

लोकहास्य adj. *ein Gegenstand des allgemeinen Spottes seiend;* davon nom. abstr. °ता Kathâs. 61,6.

लोकहित n. *das Heil der Welt* Bhâg. P. 2,1,1.

लोकाकाश m. *der Weltraum* Sarvadarçanas. 35,20; vgl. Colebr. Misc. Ess. I, 386.

लोकाक्षि m. N. pr. eines Lehrers Colebr. Misc. Ess. I, 17. 144. Ind. St. 1,233. VP. 282. Kull. zu M. 3,160. Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,37. 33,*b*, 5. लोकाक्षिन् s. — Vgl. लौकाक्त, लौकाक्ति, लौगाक्षि (die richtige Form).

लोकाचार m. *das gewöhnliche Thun und Treiben, Herkommen, die allgemeine Sitte* Spr. 132. 3711. Kull. zu M. 9,35.

लोकातिग adj. = लोकसीमातिवर्तिन् Sin. D. 237.

लोकातिशय adj. dass. Sin. D. 782.

लोकात्मन् m. *die Seele der Welt:* विष्णु R. 1,45,31.

लोकादि m. *der Anfang der Welt* so v. a. *der Schöpfer der Welt* MBh. 7,2863.

लोकाधिप m. *Oberherr der Welt* so v. a. *ein Gott* Açoḳâvad. 30.

लोकाधिपति m. *der Oberherr der Welt* Kaush. Up. 3,8. Weber, Rîmây. Up. 303.

लोकानुग्रह m. *das Heil der Welt, — des Volkes* Çik. 64,21. °कर्तृ Spr. 2681. fg. उभयलोकानुग्रह Çik. 193.

लोकानुराग m. *die Liebe der Menschen, die allgemeine Liebe* Spr. 3038.

लोकान्तर n. *die andere Welt, das Jenseits:* °सुख Ragh. 1,69. Râǵa-Tar. 3,473. लोकान्तरादिवायातं मेने धर्मं तदा जनः 1,330. Ragh. 6,45. लोकान्तरं गम् oder या *sich in's Jenseits begeben, sterben* R. 2, 103, 12 (111,17 Gorr.). Kathâs. 21,110. Spr. 5417. Bhâg. P. 4,28,18.

लोकान्तरिक adj. (f. या) *zwischen den Welten wohnend, — gelegen* Vâyup. 81. Burn. Intr. 81, N. 3. Lot. de la b. l. 832. fgg.

लोकापवाद m. *der Tadel der Welt, eine üble Nachrede* MBh. 7,5109. Ragh. 14,40. Spr. 2773. Prâçnottarâm. 26 in Monatsber. der Berliner Ak. d. Ww. 1868, S. 111. Râǵa-Tar. 1,266. Verz. d. Oxf. H. 138,*a*,6.7.

लोकाभिलषित 1) adj. *allgemein begehrt, — geliebt.* — 2) m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 3,21 (°लाषित gedr.). °लाषिन् Vâyup. 3.

लोकाभ्युदय m. *das Heil der Welt* Ragh. 3,14.

लोकायत adj. *materialistisch;* in Verbindung mit शास्त्र, मत, तन्त्र, oder n. (AK. 3,6,2,32) mit Ergänzung dieser Worte *der Materialismus, die Lehre des* Kârvâka gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. Taitt. 3,3, 171. Vie de Hiouen-thsang 223. Prab. 27,18. 87,16. Sarvadarçanas. 2, 1. यत एवार्थकामानुगैर्लोकैरायतं विस्तृतं लोकायतमित्यन्वर्थसंज्ञस्य नामधेयम् Âdavidâsuṃ. प्राग्णीत्र हि मीमांसा लोके लोकायतीकृता Kumârila bei Muir, ST. III, 209. m. *ein Materialist* Lot. de la b. l. 280. Nîlak. zu Hariv. 14068. Im Pâli soll लोकायत *eine erfundene Geschichte, Roman* bedeuten; vgl. Burnouf in Lot. de la b. l. 409 und लोकायतिक.

लोकायतन m. nach Colebr. so v. a. लोकायतिक Colebr. Misc. Ess. I, 404. wohl fehlerhaft für लोकायत.

लोकायतिक m. *ein Materialist* H. 863, Sch. Colebr. Misc. Ess. I, 402. fgg. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 7. zu Prâçnop. S. 232. bei Wind. Sancara 94,1. Verz. d. Oxf. H. 216,*a*, 3 v. u. Eine andere Bed. wird vielleicht das Wort MBh. 1,2889 (= Hariv. 14068) und Lot. de la b. l. 168 (vgl. 409) haben. Nîlak. zu MBh. 1,2889 erklärt लोकायतिकमुख्यैः durch: लोक एवायतत्ते ते लोकायतिकाः । तेषु लोकरञ्जनपरेषु मुख्यैः; zu Hariv. 14068 durch शास्त्रविद्भिः; vgl. लोकायत am Ende und लोकायतिक.

लोकायन als Beiw. von Nârâyaṇa wohl *zu dem die Welt hinstrebt, in dem die Welt aufgeht* Hariv. 8819. 12608.

लोकालोक 1) n. sg. und m. du. *die Welt und die Nichtwelt:* °विनाश MBh. 9,2741. लोकालोकान्तकरण 13,816. लोकालोकान्तरेषु 802. Mârk. P. 45,58 (wo wohl इहं st. इमं zu lesen ist). 54,2. लोकालोकयोरन्तराले Bhâg. P. 5,20,34. — 2) m. Bez. *des mythischen Gebirges, das die Welt von der Nichtwelt trennt, des Walles am Ende der Welt, der von der einen Seite hell, von der anderen dunkel ist,* AK. 2,3,2. H. 1031. Sinhâs. 13,16. Ragh. 1,68. Râǵa-Tar. 1,137. VP. 202. 226. Bhâg. P. 5,20, 34. 36. 38. 10,89,48. Verz. d. Oxf. H. 48,*a*, 1 v. u. *b*,7. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 571. Sây. zu Çat. Br. S. 1132.

लोकावेक्षण n. *die Sorge um das Volk* Spr. 2838.

लोकिन् (von लोक) adj. *eine Welt besitzend,* pl. *die Bewohner der Welten* Muṇḍ. Up. 2,2,2. *die beste Welt besitzend* (Comm.) Çat. Br. 11, 8,4,5. Kâṭh. Up. 2,17,2.

लोकेश m. 1) *Herr der Welt* Kaush. Up. 3,8. M. 5,97. R. 7,23,4,39. Bhâg. P. 3,6,20. 22. pl. 6,7,33. 8,9,4. 22, 34. Pañkat. 3, 11, 24. Bein. Brahmaṇ's AK. 1,1,4,11. H. 213. — 2) N. pr. eines Buddha Taik. 1,1,14. Burn. Intr. 557. Wilson, Sel. Works II, 27. — 3) *Quecksilber* Râǵân. im ÇKDa.

लोकेश्वर m. 1) *Herr der Welt* Çat. Br. 14, 7,2,24. MBh. 8, 1483. R. 4, 10, 13. Wilson, Sel. Works II, 23. fgg. — 2) N. pr. eines Buddha Taik. 1,1,15. Wilson, Sel. Works II, 17. fgg. °राज Burn. Intr. 100.

लोकेश्वरात्मजा f. Lokeçvara's *Tochter,* N. pr. einer buddh. Göttin Taik. 1,1,18.

लोकेष्टि f. N. einer best. Ishṭi Âçv. Çr. 2,10,19.

लोकैकबन्धु m. *der einzige Freund der Welt,* Beiw. Gotama's und Çâkjamuni's Wilson, Sel. Works II, 9.

लोकैषणा f. *das Verlangen nach dem Himmel* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 1, 149.

लोकोक्ति f. *ein landläufiger Ausspruch, Sprüchwort* Spr. 4258.

लोकोत्तर adj. (f. या) *über das Alltägliche hinausgehend, ungewöhnlich, ausserordentlich* (Gegens. लौकिक, सार्वलौकिक): धर्म Kathâs. 27,21. Wassiljew 140. स्थिति Râǵa-Tar. 1,158. स्वामिन् 4,233. कुल 426. किं न लोकोत्तरमभूदुपतेश्चक्रवर्तिनः 3,390. विद्या Verz. d. Oxf. H. 154,*b*, N.

1. नाम Ind. St. 16, 298. m. *ein aussergewöhnlicher Mensch* so v. a. *ein Fürst* Spr. 2703.

लोकोत्तरपरिवर्त Titel eines buddh. Sûtra Vâitp. 4.

लोकोत्तरवादिन् m. pl. Bez. einer buddh. Secte (wohl *die etwas Ungewöhnliches annehmen; ceux qui se prétendent supérieurs au monde* Burnouf) Vâitp. 210. Burn. Intr. 446. 452. Lot. de la b. l. 358. Hiouen-thsang I, 37. Vie de Hiouen-thsang 69. Wassiljew 227. 229. 234.

लोकोद्धार m. N. pr. eines Tîrtha: लोका यत्रोद्धृताः पूर्वं विष्णुना प्रभविष्णुना ॥ लोकोद्धारं समासाद्य तीर्थं त्रैलोक्यपूजितम् । स्नाता तीर्थवरे राजन् लोकानुद्धरते स्वकान् ॥ MBh. 3, 6014. fg.

लोक्य (von लोक) 1) adj. *a) Gebiet —, freie Stellung gewährend* Âçv. Gṛhj. 4, 8, 35. — *b) über die ganze Welt verbreitet:* तेजस् MBh. 13, 1971 nach der Lesart der ed. Bomb. लोक्य ed. Calc.). — *c) die Gewinnung des Himmels bezweckend:* ग्राणि Bhâg. P. 3, 14, 36. — *d) statthaft, ordentlich; üblich* Âit. Br. 2, 9. Çat. Br. 2, 5, 2, 16. लोक्या शतायुना 10, 2, 6, 7. स्वप्यात् — लोक्यं कृ 5, 2, 12. 11, 3, 3, 7. पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुः *ordentlich, richtig, wirklich* 14, 4, 2, 26. पत्न्यः पुत्रिणो लोक्याः (= पुण्यलोकार्हाः Nîlak.) कृतकृत्यास्तनुत्यजः MBh. 7, 696. युद्ध 12, 1983. *gewöhnlich, tagtäglich:* कर्मन् MBh. 5, 4103 nach der Lesart der ed. Bomb. लौक्य ed. Calc.). — 2) n. *freie Stellung:* स्पृणुयत्यु स्मास्मै तया पुण्यति लोक्यम्वेवाप्नोति Çat. Br. 2, 2, 2, 5. — Vgl. अ° गति MBh. 12, 1993).

लोक्यता f. nach dem Comm. *das Erlangen der besseren Welt* Çat. Br. 10, 3, 2, 13. — Vgl. अ°.

लोग्र m. *Erdkloss, Scholle:* इमं लोगं निदधन्मो अर्के रिषम् RV. 10, 18, 13. यद्वि लोगेन व्यभेदम् 28, 2. Çâṅkh. Br. 9, 3. Ça. 5, 13, 3. लोगेष्टका *ein aus einem Erdkloss bestehender Backstein* Çat. Br. 7, 3, 1, 13. 8, 3, 1, 11. 10, 4, 2, 14. Ist vielleicht auf √ रुच् zurückzuführen.

लोगाक्ष लोग + अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Mannes; s. लौगाक्षि. लोष्टाक्ष.

लोच् लोचते (दर्शने) Dhâtup. 6, 3. Verwandt mit रुच् und लोक्.

— caus. लोचयति (भाषार्थे oder भासार्थे) Dhâtup. 33, 104.

— आ *eine Betrachtung anstellen:* स च भगो मनसेदमालुलोचे *stellte im Geiste folgende Betrachtung an* Verz. d. Oxf. H. 238, *b*, 23. — caus. 1) *vor Augen führen, sehen machen:* स्वरूपमालोचयते च द्वयं परम् MBh. 12, 7416. — 2) *sich Etwas vor Augen halten, dem Geiste vorführen, erwägen, eine Betrachtung anstellen:* इति यदि शतकृत्वस्तन्नमालोचयामः Çântiç. in Çâṅkâv. S. 29. Comm. zu Kâṭj. Çr. 83, 3 v. u. 86, 1. आलोचयतो विस्तारमस्मिन्नं दक्षिणोदधेः Bhaṭṭ. 7, 40. मनसा त्रयीमालोचितवान् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 49. आलोच्य गिरिमुख्यं तं मागधं तीर्णमेव च । माधवाः — पार्श्वं मुदमवाप्नुवन् ॥ MBh. 2, 617. आलोच्य तामलिप्तीं तां दूराम् Kathâs. 13, 70. 18, 47. अनालोच्य प्रेम्णः परिणतिम् Spr. 98. 787. Hit. 119, 20. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 52. Siç. D. 73, 11. Mârk. P. 44, 23. परस्परमालोच्य प्रत्यूचुस्ते न किं च न R. 3, 1, 5. Kathâs. 6, 133. मुक्त्वा च सम्यगालोच्य Mârk. P. 44, 21. fg. आलोच्याज्ञापय 69, 54. तैः सहालोच्य यत्कार्यम् 135, 28. Pañcat. 1, 2, 13. 15, 30. Hit. 92, 21, v. l. एवमालोच्य *diese Betrachtung angestellt habend* Kathâs. 56, 369. इत्यालोच्य 5, 64. 16, 56. 18, 167. 190. 252. 333. 19, 23. 21, 81. 119. 22, 84. 26, 34. 114. 27, 70. 160. 28, 89. 135. 183. 29, 99. 30, 6. 32, 137. 36, 97. 37, 16. 39, 50. 206. 41, 25. 49, 80. Spr. 661. Vṛddha-Kâç. 10, 17. Mârk. P. 44, 32. Hit. 9, 8, v. l. 14, 17. 17, 17. 18, 16. 47, 19. 91, 19. 113, 14. मयैतदालोचितमस्ति यत् u. s. w. 114, 16. आलोचितशेषकार्य Kathâs. 15, 114. पान्थेनालोचितम् impers. Hit. 10, 10. 30, 17. 80, 20. 110, 16. अनालोचितकृतवध *ohne Ueberlegung* Pañcat. 239, 4. अनालोचितचेष्टित Spr. 3417. आलोचनीय Vedântas. (Allah.) No. 4. — Vgl. आलोचक fg.

— अन्वा caus. *sich Etwas vor Augen halten, dem Geiste vorführen, in Erwägung ziehen:* त्रयीविहितं सृष्टिक्रमं मनसा अन्वालोचयत् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 49.

— अवा *eine Betrachtung anstellen:* इत्थं नृपः पूर्वमवालुलोचे Bhaṭṭ. 1, 23.

— पर्या caus. *sich Etwas vor Augen halten, dem Geiste vorführen, in Erwägung ziehen, eine Betrachtung anstellen:* पक्षः सन्देवदत्तस्य प्रभाप्रभे पर्यालोचयति P. 1, 4, 39, Sch. Vop. 5, 15. लेखंकाराणि कार्याणि Bhaṭṭ. 6, 105. निगमाध्यायाश्च यत्नान् Kull. zu M. 4, 19. Kathâs. 52, 281 (ohne obj.). स्वमनसा पर्यालोचितवान् Pañcat. ed. orn. 36, 11. Siç. zu Âit. Br. 3, 32. एतत्पर्यालोच्य Vet. in L.A. (III) 27, 17. Verz. d. Oxf. H. 174, *b*, No. 395. fg. Kull. zu M. 2, 8. 9, 299. पर्यालोचित ders. zu 8, 77. — Vgl. पर्यालोचन.

— समा caus. dass.: यमूं वृत्तिं समालोच्य Uśânas. in der Einl. zu Uśanas. Çl. 7. तत्तत्सर्वम् Pañcat. 1, 1, 17. शम्भुना 12, 3. मुनिः सार्धम् 14, 43. इति Hit. 113, 14, v. l.

— उद् s. उल्लोच.

— निस् caus. *in Erwägung ziehen, eine Betrachtung anstellen:* निर्लोच्य Kathâs. 121, 180.

लोच n. *Thränen* Gaṭṭâdh. im ÇKDa. — Vgl. लोत.

लोचक 1) adj. *unvernünftig, dumm;* = निर्बुद्धि H. an. 3, 92. fg. Med. k. 130. fg. statt dessen निर्मिति Trik. 3, 3, 10. — 2) m. *a) ein dunkles Kleid.* — *b) Augenstern* Trik. H. an. Med. — *c) Lampenruss* Trik. 2, 6, 43. H. an. Med. — *d) Fleischklumpen.* — *e) ein best. Stirnschmuck bei den Frauen.* — *f) ein best. Ohrschmuck.* — *g) Bogensehne* मौर्व्या st. मूर्व्या in Med. zu lesen). — *h) Musa sapientum* H. an. Med. — *i) schlaffe Haut* H. an. *schlaffe Augenlider* Med. — *k) eine abgestreifte Schlangenhaut* Çabdar. im ÇKDa. — 3) f. लोचिका *ein best. Gebäck* Pâkaçâstra im ÇKDa.

लोचन (von लोच्) 1) adj. *erhellend, erleuchtend:* ज्योतिर्लोकस्य लोचनम् (= प्रकाशकम् Comm.) Bhâg. P. 3, 5, 33. — 2) m. N. pr. eines Autors Wilson, Sel. Works I, 168. — 3) f. आ N. pr. einer buddh. Göttin Trik. 1, 1, 19. Wilson, Sel. Works II, 12. 27. 35. fg. — 4) f. ई *eine best. Pflanze,* = मत्स्याक्षणिका Râgân. im ÇKDa. — 5) n. *a) Auge* AK. 2, 6, 2, 44. Trik. 2, 6, 29. H. 575. Halâj. 2, 364. MBh. 3, 2912. Suçr. 1, 113, 7. 120, 20. Ragh. 2, 19. 3, 41. Megh. 16. 28. 50. 101. 109. Çik. 36, v. l. Varâh. Bṛh. S. 38, 42. 68, 65. लोचनानन्द (so ist zu lesen) Kathâs. 12, 24. °विज्ञान Sarvadarçanas. 29, 6. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): ईषन्मीलित° Vet. in L.A. (III) 10, 9. भाष्यमाणे — न्यस्तलोचनः Râga-Tar. 3, 502. ततस्ततः प्रेषितवामलोचना Çik. 23. स्तब्ध° MBh. 3, 2214. ध्यानस्तिमित° Ragh. 1, 73. उपात्तसंमीलित° 3, 26. संरक्त° R. 1, 39, 15. क्रोधान्ध° Vet. in L.A. (III) 13, 3. मदविस्फुल° Bhâg. P. 3, 20, 29. मु° MBh. 3, 2147. पृथु° 2424. घायत° 2217. R. 2, 25, 24. मण्डल° Varâh. Bṛh. S. 68, 65. चारु° MBh. 1, 5960. Brahma-P. in L.A. (III) 51, 8. वाम° MBh. 3, 2690. Spr.

1520. राजीव° MBn. 3,1754. 5,7899. कमल° R. 1,9,69. उत्पल° Spr. 633. मधु° MBn. 4,485. मद्विधम्° Vaitân. Dhn. S. 58,36. सर्वस्य लोचनं शास्त्रम् Spr. 111. विद्या परं लोचनम् 2797, v. l. — *b*) Titel eines Werkes; s. लोचनकार. — Vgl. चारु°, चित्रलोचना, त्रिलोचन, भाल°, मेष°, लोक°, रवि°.

लोचनकार m. *der Verfasser des* Lokana Sin. D. 22,15. 97,14. Verz. d. B. H. No. 823.

लोचनपथ m. *der Bereich der Augen:* न याति °पथं कान्ता Spr. 1246.

लोचनाञ्जन 1) adj. *den Augen zuträglich.* — 2) f. आ *blauer Vitriol* (als Kollyrium gebraucht) Râǵân. im ÇKDn.

लोचनामय m. *Augenkrankheit* Trik. 2,6,16.

लोचनोड्डारक N. pr. eines Grâma Riśa-Tan. 8,1429.

लोचनोत्स N. pr. einer Oertlichkeit Riśa-Tan. 4,672. — Vgl. लवणोत्स.

लोचमर्कट m. = लोचमस्तक Svâmin zu AK. 2,4,2,30 nach ÇKDn.

लोचमस्तक m. *Hahnenkamm, Celosia cristata* AK. 2,4,2,30.

लोट्, लोटति (उन्मादे) Vop. in Dhâtup. 9,74. — Vgl. लोट्, लोड्.

लोट 1) s. उप°. — 2) f. आ *Sauerampfer* Râǵân. in Nigh. Pa.

लोटन n. nom. act. als v. l. von लोडन Dhâtup. 2,4.

लोटिका f. = लोटा *Sauerampfer* Dhanv. in Nigh. Pa.

लोटुल m. = अभिलोटक Uṇâdis. im Śabdakalpadr. ÇKDn.

लोठ्, लोठयति (धैर्ये पूर्वभावे स्वप्ने, nach Andern दीप्तौ) gâṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लोठ m. nom. act. von लुठ् Vop. in Dhâtup. 28,87.

लोठन m. N. pr. eines Mannes Riśa-Tan. 8,376. 432. 435. 1798 u. s. w.

लोड्, लोडति (उन्मादे) Dhâtup. 9,74.

लोडन n. nom. act. als Erkl. von वाध् Dhâtup. 2,4.

लोडा s. घड्ड°, घड्ड°, ग°, गा°, गि°.

लोणातृण n. = लवणातृण Râǵân. im ÇKDn.

लोणा (d. i. लवणा) f. *eine Art Sauerampfer*, = तुङ्गाम्लिका Râǵân. im ÇKDn.

लोणाम्ला (d. i. लवण + अम्ला) f. desgl. ebend.

लोणार m. *eine Art Salz* ebend. — Vgl. लवणागर.

लोणिका f. = लोणाम्ला Dhanv. in Nigh. Pa. *Portulacca oleracea* Baiyâpa. ebend. Suçr. 1,222,11. — Vgl. अम्ल°.

लोणितक m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,27.

लोणी (d. i. लवणी) s. अम्ल°.

लोत Uṇâdis. 3,86. 1) m. P. 7,2,9, Schol. *a*) *Thränen* Uǵǵval. H. ç. 88; vgl. लेत, लोत्र. — *b*) *Zeichen* Uǵǵval. — 2) n. = लोप्तृ *Beute, geraubtes Gut* Gaṇâdh. im ÇKDn.

लोत्र n. 1) = लोप्तृ *Beute, geraubtes Gut* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,172. Çabdar. im ÇKDn. — 2) *Thränen* (vgl. लोत) Uṇâdiṿṛ. im Śabdakalpadr. ÇKDn.

लोदी N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 218,*b*,1.

लोध 1) ṚV. 3,53,23 nach Nir. 4,12 so v. a. लुब्ध *verwirrt, confus*, was in den Zusammenhang schwerlich passt. Vielleicht *roth* und als m. Bez. *eines best. Thieres:* vgl. अधीलोधकर्णा TS. 5,6,16,1 und लोककर्ण. — 2) m. = लोध Ratnam. im ÇKDn.

लोध (= रोध) m. *Symplocos racemosa Roxb.* AK. 2,4,2,13. H. 1159. an. 2,150. Ratnam. 151. MBn. 1,7586. 2,801. 805. 3,2404. Hariv. 12678. R. 2,91,8 (103,8 Gorr.). 3,17,11. 4,41,16. 49,23. Suçr. 1,132,1. 2,342,3. Megh. 66. Ragh. ed. Calc. 2,29. 3,2. Çiç. 9,46. लोधामव Suçr. 1,238,14. °कल्क Kumâras. 7,9. °कषाय 17. — Vgl. पट्टि°, पट्टिका°, गुहा°.

लोधक m. dass.: °वृत Râǵân. im ÇKDn. — Vgl. पट्टि°.

लोप (von 1. लुप्) 1) m. *a*) *Abtrennung, Wegfall*, gramm. *Abfall* (eines Lautes, eines Suffixes); *Mangel, Verlust, Unterbrechung, Störung, das zu-Nichte-Werden:* आदि°, अत्त°, उपधा°, वर्ण°, द्विवर्ण° Nir. 2,1. Kâty. Çr. 19,7,6. ṚV. Pâr. 4,7. VS. Pâr. 1,141 u. s. w. AV. Pâr. 1,67 u. s. w. Taitt. Pâr. 2,5. P. 1,1,60 u. s. w. Vop. 2,5 u. s. w. सर्व° *das Fehlen* Kâty. Çr. 4,3,22. Çâṅkh. Çr. 3,19,2. प्रज्ञा° Ragh. 1,68. कार्य° Kesch. 31,9. धर्म° Sin. D. 652. जीवन° Verz. d. Oxf. H. 267,*a*,22. °वचन Lâṭy. 4,4,4. गुण° Çâṅkh. Çr. 3,20,16. भक्ति° Lâṭy. 5,1,14. व्यवहारस्य MBh. 12,4417. यज्ञादिक्रियाणाम् Pâṇâv. ed. orn. 57,2. स्मृतेः Mânn. P. 39,52. विद्यालोप *allgemeine Störung* MBh. 12,461. 2350. सर्व° *Verlust* MBh. 3,17241. स्मृति° 12,10140. Çik. 191, v. l. Mânn. P. 10,40. क्रिया° *Unterlassung, Verletzung* M. 3,63. 9,180. 10,43. Mânn. P. 62, 24. Brahma-P. in LA. (III) 55,16. धर्म° MBh. 1,1884. 1886. fg. 7773. 6, 5829. R. Gorr. 2,20,6. 30. 4,13,38. 5,14,56. Ragh. 1,76. धर्मक्रिया° Kâm. Nîtis. 14,44. पक्षक्रिया° Kathâs. 82,9. व्रत° Jâén. 3,236. M. 11, 203. Prâyaçcittenn. 15,*b*,6. स्मार्तकर्म° s. विधि° MBh. 3,17105. व्यवहार° *Unterbrechung, Störung* 12,2627. भवसंभवलोपहेतु *Untergang* Bhâg. P. 7,9,42. — *b*) *das Entwenden:* न्यास° MBh. 13,4517. — 2) f. आ = लोपामुद्रा Gaṇâdh. im ÇKDn. — Vgl. अलोपाङ्ग, विद्या°.

लोपक (wie oben) adj. *unterbrechend, zu Nichte machend:* विधि° MBh. 1,7772. — धारलोपक n. wohl Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 62,*a*,29.

लोपन (wie oben) n. *das Verletzen:* व्रत° M. 11,61. Jâén. 3,238.

लोपाक m. *eine Art Schakal* Trik. 2,5,7. H. 1291. Suçr. 1,203,1. 2, 61,20. 131,12. Vîrân. 6,30. — Vgl. लोपाश.

लोपाक m. desgl. Çabdam. im ÇKDn. लोपाकिका f. *das Weibchen* davon ebend. — Vgl. लोपाश.

लोपामुद्रा f. N. pr. einer angeblichen Gattin Agastja's AK. 1,1,2, 22. Trik. 1,1,90. H. 123. ṚV. 1,179,4 (als Verfasserin dieses Verses betrachtet; vgl. Mahîdh. zu VS. 17,11). MBh. 3,8363. fgg. 10092. 4,654. Hariv. 1390. 1748. 7737. Uttarar. 36,3 (48,1). Daçak. 117,2. Verz. d. Oxf. H. 69,*a*,17. °पति *der Gatte der* Lop. d. i. Agastja Halây. 2,238. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,3. °सत्कर *a*,1.

लोपाश m. *Schakal, Fuchs* (ἀλώπηξ) oder *ein ähnliches Thier:* लोपाशः सिंहं प्रत्यट्टमत्सा: ṚV. 10,28,4. VS. 24,36. — Vgl. लोपाक, लोमाश.

लोपाशक 1) m. N. pr. eines Mannes, der Unrath verzehrte, Scurrenn, Lebensb. 294 (64). लोपासक gedr. — 2) f. लोपाशिका *a*) *das Weibchen eines Schakals* Hit. 172. — *b*) *Fuchs* Hit. 193 (लोपासिका gedr.).

लोपिन् (von लुप् und लोप) adj. 1) *Einbusse bewirkend, beeinträchtigend:* धर्मार्थ° MBh. 5,1960. 4318. वासवधैर्य° Ragh. 3,3. — 2) *einem Ausfall unterworfen, einen Ausfall erleidend* P. 2,4,62, Vârtt. 7, Sch. *mit einem Ausfall von — versehen:* मध्यमपदलोपी समास: Comm. zu Amar. 6.

लोप्तृ (von लुप्) nom. ag. *Unterbrecher, Beeinträchtiger:* धर्मस्य

MBu. 7, 8240.

लोप्त्र (wie eben) n. *geraubtes* oder *gestohlenes Gut, Beute* AK. 2, 10, 26. H. 383. Hin. 138. Hall. 2, 184. Jiḍ. 2, 266. MBu. 1, 4308. fg. 16, 225.

1. लोप्य (wie oben) adj. *abzuwerfen, wegzulassen* (in gramm. Sinne) Vop. 7, 55. 82. 88. 9, 32. 46. Verz. d. Oxf. H. 169, *a*, 6.

2. लोप्य (von den Comm. mit उलप, उलुप zusammengestellt) adj. etwa *unter Buschwerk befindlich* VS. 16, 45. अ° ebend. Ind. St. 2, 42.

लोभ von लुभ् m. 1) *Gier, Habsucht:* मत्सर इति लोभनाम Nir. 2, 5. H. 430. Maitrjup. 3, 5. M. 2, 178. 3, 81. 179. 7, 49. 8, 118. 120. 213. 219. u. s. w. MBu. 3, 12039. 13707. R. 2, 58, 24. 3, 49, 10. Sucr. 1, 12, 19. 94, 14. Tattvas. 20. Jogas. 2, 34. Spr. 1137. 1263. 2685. fgg. 4960. AK. 2, 7, 52. Kathās. 18, 306. Bhāg. P. 1, 13, 37. Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 24. Hit. 10, 10. 32, 3. Sarvadarçanas. 37, 2. शङ्खम्° Daçarūp. 70, 3. Personificirt ein Kind der Pushṭi VP. 55. Mārk. P. 50, 26. des Dambha und der Māyā Bhāg. P. 4, 8, 3. — 2) *Verlangen nach* (gen. loc. oder im comp. vorangehend): कृपणानस्य MBu. 3, 2835. कङ्कणास्य Hit. I, 4. वने, फलेषु R. 4, 16, 24. Kathās. 121, 101 (म° adj.). अपत्य° M. 3, 161. राज्य° R. 2, 72, 14. गीत° Spr. 2998. आननस्पर्श° Megh. 101. Çik. 15, 16. Vet. in LA. (III) 20, 19. रूप° Kathās. 33, 188. प्रतिपन्नार्थलोभत: 18, 305. Hit. 10, 5. — Vgl. अ°, अति°, धन°, निर्लोभ.

लोभन (vom caus. von लुभ्) 1) adj. *verlockend, reizend.* — 2) n. *a) das Locken, Verlocken, der Versuch Jmd zu verführen* R. 2, 64, 1. R. Gorr. 1, 4, 52. नानार्थलोभनै: Kām. Nītis. 12, 16. — *b) Gold* H. ç. 161.

लोभनीय (wie eben) adj. *verlockend, reizend:* °तमाकृति MBu. 1, 3866. Inḍr. 3, 14 (दर्शनीयतमाकृति MBu. 3, 1830). रूप MBu. 13, 2308. Çik. 20. Mārk. P. 17, 2. लोभनीया हि मे दृष्टम् मृग: R. 3, 49, 31. आकृति° *verlockend —, reizend durch* Rāgh. 6, 38. Çik. 147. पिशिताशन° *verlockend —, reizend für* Sin. D. 197, 10. लोचन° Bhatt. 2, 13.

लोभायन m. patron.; pl. Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 58, 9. Vielleicht fehlerhaft für लौभायन.

लोभिन् (von लोभ und लुभ्) adj. 1) *gierig, habsüchtig* Taitt. 3, 3, 247. Rāja-Tar. 6, 66. Verz. d. Oxf. H. 135, *b*, 34. *gierig nach:* धन° Verz. d. Oxf. H. 28, *a*, No. 71. Cl. 1. स्त्री° Bhāg. P. 3, 11, 9. — 2) *verlockend, reizend:* दृष्ट्वाल्पितचेष्टितै: । स्त्रिय: पुरुषलोभिन्य: R. 4, 45, 107.

लोभ्य 1) adj. = लोभनीय. — 2) m. *Phaseolus Mungo* H. 1172.

लोम am Ende einiger comp. = लोमन् P. 5, 4, 75. 4, 1, 85, Vārtt. 8. Vop. 6, 24. 76. अग्नलोमै: TS. 5, 1, 6, 2. Nach Gaṇḍa. im ÇKDr. soll लोम n. *Schweif* bedeuten. — Vgl. अग्नलोमी. अतिलोम, अनु°, अग्नर्लोम. अव°, उडुलोमा: (unter उडुलोमन्), गोलोमी, निर्लोम, पाण्डुलोमा, प्रतिलोम, बर्हिर्लोम, व्याघ्र°, सु°.

लोमक gaṇa पत्रादि und कृशाश्वादि zu P. 4, 2, 80 und gaṇa तिकादि zu 4, 1, 154. = लोमन् in अ°, प्रति°, मृदु°.

लोमकर्णी f. *eine best. Pflanze,* = मोमकर्कटी Rāgān. im ÇKDr.

लोमकर्ण m. *Hase* H. 1296. — Vgl. रोमकर्णक.

लोमकागृक् n. N. pr. P. 6, 3, 63, Sch.

लोमकिन् (von लोमक = लोमन्) m. *Vogel* H. ç. 186.

लोमकीट m. *Laus* Kālak. 3, 133.

लोमकूप m. *Haargrübchen, Pore der Haut* Verz. d. Oxf. H. 311, *a*, 1 v. u. Paṇḍar. 2, 2, 35. 95. — Vgl. रोमकूप.

लोमगर्त m. dass. Çat. Br. 10, 4, 4, 2. 12, 3, 2, 5. — Vgl. रोमगर्त.

लोमघ्न n. *krankhaftes Ausfallen der Haare* Bhāvapr. im ÇKDr.

लोमघि m. N. pr. eines Fürsten Bhāg. P. 12, 1, 25.

लोमन् (= alterem रोमन्) n. Unādis. 4, 150. Kāç. zu P. 8, 2, 18. *Haar am Körper der Menschen und Thiere* (in der Regel mit Ausschluss der langen Kopf- und Barthaare, der Mähne und des Schweifes; nach H. 1244 aber auch *Schweif*) AK. 2, 6, 2, 50. H. 630. RV. 1, 163, 5. 6. AV. 4, 12, 5. 9, 6, 2. VS. 19, 81. आत्मन्यप्स्ये न वृकस्य लोमे 92. 20, 13. Kāṭh. 27, 2. Ait. Br. 2, 11. 14. 6, 29. TS. 5, 1, 2, 6. 6, 2. TBr. 1, 3, 10, 7. त्रेधाविहितं हि शिर: । लोमे रक्ष्यीरस्विं 2, 6, 3. Āçv. Çr. 2, 7, 6. लोमतंम् TS. 5, 1, 4, 3. 6, 1, 9, 3. अग्नस्य लोमनी TBr. 3, 9, 22, 1. Çat. Br. 1, 1, 4, 2. सिंह°, वृक°, 5, 5, 4, 18. नासिकयो:, कर्णयो: 12, 9, 1, 5. Kauç. 13. 26. 60. केशलोमानि Mahān. Up. 1, 1, 7. केशश्मश्रुलोमवपन Kāṭh. Çr. 22, 6, 13. Āçv. Gṛhj. 1, 18, 6. 4, 6, 4. MBu. 8, 644. तनुलोमकेशदशना M. 3, 10. नखलोमानि 4, 69. श्मश्रुलोमनखानि 6, 6. नखलोमा परिष्कार: Daçarūp. 94, 14. Spr. 1035, v. l. Kathās. 37, 127. Paṇḍar. 1, 6, 7. लोम्नी विवरेषु 2, 2, 39. यति° AK. 3, 4, 28, 123. यज्ञाविलोमपवित्र Kāṭh. Çr. 19, 2, 10. मेषादि° AK. 3, 4, 28, 52. Spr. 630. Rāja-Tar. 6, 364. Varāh. Bṛh. S. 26, 8. उत्तर° Ait. Br. 8, 6. अग्नर्लोमन् *die Haare nach innen gekehrt habend* Kauç. 81. अजातलोमी *die noch keine pubes hat* Gobh. 3, 1, 4. भरद्वाजस्य लोम N. eines Sāman Ind. St. 3, 227, *a*. Pañcav. Br. 13, 11, 11. — Vgl. असि°, दृढ°.

लोमन m. n. v. l. im gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31.

लोमपाद् m. N. pr. eines Fürsten der Aṅga MBu. 3, 9998. fgg. 12, 8609. R. 1, 8, 11. fgg. °पुर n. = चम्पा H. 977. — Vgl. रोमपाद्.

लोमप्रवाहिन् adj. = लोमवाहिन्. शरं °वाहिनम् (so die ed. Bomb. st. °वाहितम् der ed. Calc.) MBu. 6, 1919.

लोमफल n. *die Frucht der Dillenia indica* Rāgān. im ÇKDr.

लोममणि m. *ein Amulet aus Haaren* Kauç. 13.

लोमयूक m. *Laus* Kālak. 3, 34.

लोमवत् adj. = रोमवत् *behaart* TS. 7, 5, 22, 2. AV. 20, 133, 6. Çat. Br. 10, 1, 4, 11.

लोमवाहन scheinbar MBu. 6, 2829, wo aber mit der ed. Bomb. °वाहिनम् zu lesen ist.

लोमवाहिन् adj. = रोमवाहिन् *haarscharf:* von Pfeilen MBu. 4, 1330. 2026. 3, 7192. 6, 1975. 2829 (ed. Bomb. °वाहिनम् st. वाहनम् der ed. Calc.). 9, 1430. — Vgl. लोमप्रवाहिन्, लोमहारिन्.

लोमविवर n. = रोमविवर *Haargrübchen, Pore der Haut* Paṇḍar. 2, 3, 41.

लोमविष adj. *dessen Gift in den Haaren steckt:* व्याघादय: H. 1313.

लोमवेताल m. Bez. eines best. Damons Harīv. 9362. fälschlich लोमवेताव्र Vaij. beim Schol. zu H. 210.

लोमर्श (von लोमन्) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31 (लोमन v. l.). 1) adj. (f. आ) *a) behaart* (am Körper, *stark behaart, haarig* gaṇa लोमादि zu P. 5, 2, 100. Vop. 7, 32. fg. H. an. 3, 725. Med. ç. 26. fg. TS. 5, 1, 8, 1. 6, 2, 11, 3. TBr. 1, 6, 4, 4. Çat. Br. 11, 4, 1, 6. धान्यं कृत्वा तु पुरुषो लोमश: संप्रजायते MBu. 13, 5318. Varāh. Bṛh. 17, 11. Kathās. 64, 23. fg. Paṇḍar. 1, 6, 39. Ind. St. 2, 108. fg. कदाचिद्दन्तुरो मूर्ख: कदाचि-

लोमशो मुखी Sinduraka im ÇKDa. यलोमशो ऋङ्गे R. 6,23,11. मातिलोमशा MBu. 2, 2178. *Thierhaare enthaltend:* विष्ठा 3, 5445. *in wolligen Thieren* (Schafen u. s. w.) *bestehend:* ततो मे श्रियमावह लोमशौ पशुभिः सह Taitt. Up. 1,4,2. — *b) bewachsen mit Gras* u. s. w. Kâṭh. 22,13. Liṭ. 1,1,14. Gobh. 4,7,1. Schol. zu Kâtj. Çr. 7,2,15. — 2) m. *a) Widder, Schaf* Taik. 3, 3, 431. H. an. Med. — *b)* N. pr. eines Ṛshi Med. MBu. 1, 437. fg. 3, 1171. 1879. fgg. 11, 773. 12, 1894. 13, 3382. Hariv. 9569. Paṇḍar. 1,4,84. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,18. 19,*b*,2. 34,*a*,11. Verz. d. B. H. No. 457. — *c)* N. pr. einer Katze MBu. 12, 4934. — 3) f. या *a) Fuchs* (शृगाली) und *Affin* (मर्कटिका) H. an. — *b) Eisenvitriol* (काशीश) H. an. Med. — *c)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Nardostachys Jatamansi* (जटामांसी) Dec. AK. 2, 4, 4, 22. H. an. Med. Ratnam. 70. *Leea hirta Banks, Carpopogon pruriens* und = मर्कटी H. an. Med. *Sida cordifolia* und *rhombifolia* (घण्टिवला) H. an. = वचा Med. *Cucumis utilissimus Roxb.*, = गन्धमांसी und शणपुष्पी Râǵân. im ÇKDa. — *d)* N. pr. einer Çâkini H. an. Med. — 4) n. *ein best. Metrum* Ind. St. 8, 108. fg. — Vgl. तप्त°, पाण्डुलोमशा, कृमिलोमश und रोमश.

लोमशकर्ण m. *ein best. Höhlen bewohnendes Thier* Suçr. 1,203,1.

लोमशकाण्डा f. *Cucumis utilissimus Roxb.* Râǵân. im ÇKDa.

लोमशपर्णासी f. *Glycine debilis Lin.* Çabdar. im ÇKDa.

लोमशपुष्पक m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) *Hamilt.* Râǵân. im ÇKDa.

लोमशमार्जार m. *Zibethkatze* Râǵân. im ÇKDa.

लोमशवल्गण adj. (f. या) *am Leibe behaart* AV. 5,3,7.

लोमशसेवच्य und °सविच्य adj. *an den Hinterfüssen stark behaart (einen langen Schwanz habend* Mahidh.): °सक्थो VS. 24,1. °सक्थ्यो Çat. Br. 13,2,2,8; vgl. P. 6,2,199.

लोमशातन n. *ein Mittel zum Entfernen der Haare am Körper* Verz. d. Oxf. H. 322,*b*,26. fälschlich लोममातन ÇKDa. nach Gîvaṇḍa-P. 185.

लोमश्य (von लोमश) n. *Rauhheit* (घनौकुमार्य Comm.), Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Sibilanten* ṚV. Prât. 14,6.

लोममंकर्षण adj. *Haarsträuben verursachend:* सैप्रकार MBu. 3,16374. — Vgl. लोमकर्षण.

लोममातन s. u. लोमशातन.

लोममार m. *Smaragd* Çabdar. bei Wilson.

लोमसिका f. fehlerhaft für लोपाशिका oder लोमाशिका Verz. d. B. H. No. 807.

लोमकर्ष m. 1) = रोमकर्ष *das Sträuben der Härchen des Körpers, Riessin der Haut* AK. 3,4,1,18. MBu. 7,5014. 8,3927. — 2) N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,12.

लोमकर्षण 1) adj. (f. या) *Haarsträuben verursachend* d. i. *Grauen — oder grosse Freude erregend* MBu. 1,345. 486. 2,1062. 3,11935. 12143. 5,7268. 7,5012. 14,1808. 1852. Hariv. 14567. R. Gorr. 1,31,19. 3,30,2. 31,21. 5,27,6. 6,69,27. 7, 28,30. सर्वभूत° Uttarar. 32, 16 (42, 18). — 2) m. Beim. Sûta's, Schulers des Vjâsa, MBu. 1,2. 1026. VP. 276. Verz. d. Oxf. H. 54, *b*, 4. 82, *a*, No. 138. der Vater Sûta's so genannt 11, *b*, No. 30-65. — 3) n. *das Sträuben der Härchen des Körpers, Riessin der Haut* AK. 1,1,2,35. — Vgl. रोमकर्षण.

लोमकर्षणाक, f. °णिका (संज्ञा) Verz. d. Oxf. H. 36, *a*, 5 fehlerhaft für लोम°.

लोमकर्षिन् adj. = लोमकर्षण R. 4,40,67.

लोमकाहिन् adj. = लोमवाहिन् MBu. 1,3630. लोमवाहिन् von Nîlak. erwähnte v. l.

लोमकृत् 1) adj. *die Härchen am Körper entfernend.* — 2) m. *Auripigment* H. 1059.

लोमापर्णि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57, 27. wohl fehlerhaft.

लोमालिका f. *Fuchs* Taik. 2,3,8.

लोमाश m. *Schakal* oder *Fuchs* Vaǵas. Bṛh. S. 86, 22. Könnte der Etymologie nach *Haarfresser* (vgl. विष्ठा लोमशा MBu. 5,5443) bedeuten; wahrscheinlicher aber ein verdorbenes लोपाश.

लोमाशिका f. *das Weibchen des Schakals* oder *Fuchses* Vaǵas. Bṛh. S. 88,2 (लोमासिका alle Hdschrr.). 90, 2. — Vgl. लोममिका, लोपाशिका, लोमाश.

लोराय्, लोरायति (विलोचने) Gaṇaratnam. im gaṇa काण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लोल (von लुल्) 1) adj. (f. या) *a) sich hinundherbewegend, unruhig, unstät; unbeständig* AK. 3,2,2,24. 3,4,36, 207. H. 1435. an. 2,508. Med. l. 47. Hall. 4, 10. Sucr. 2, 333, 11 (अति°). शाहल Hariv. 3585. Râǵa-Tar. 3,225. Khandom. 68. खड्गलता: Kathâs. 50, 5. पातयत्र Daç. P. 3, 15, 38. उदकलोलविहंगम Raǵa. 9. 26. 16, 54. शैवाललोला मीना: 61. मरुत्सखि R. 5,9,13. लोलैर्लोचनवारिभि: Spr. 2692. रत्नांशुके पवनलोलदृशम् Mṛicch. 10,9. दोलान्दोलनलोलकङ्कण Prab. 40, 6. Sin. D. 55, 20. विद्युच्चपललोला त्रिवृता MBu. 3,10394. Kathâs. 25,106. चामरलोलकस्ता Hariv. 14652. Spr. 731. Milav. 73. Mâlatîm. 21, 8. लुठल्लोलालके Spr. 3233. Râǵa-Tar. 1,81. मदलोलात Hariv. 4353. 14831. सर्वतश्चलुर्वने लोलमपातयत् R. 4,7,11. 5,25,45. 6,93,25. 7,34,35. Çik. 23, v. l. Spr. 236. 630, v. l. Vaǵas. Bṛh. S. 70,19. Kathâs. 22,2. 35,11. 50,132. Daç. P. 4,3,7. 8,12,20. Mâk. P. 112,7. कटाल Spr. 2640. चपाङ्ग Megh. 28. श्रोत्रपुट Spr. 2691. °कर्णी so v. a. *Jedermann das Ohr leihend* Râǵa-Tar. 6, 193. कल्लोललोलां गतिम् Spr. 571. जलबिन्दु MBu. 12, 7140. 14,1378. मानुषं जलबिन्दुलोलचपलम् Spr. 217. रात्रयो MBu. 12,8146. Kumâṇ. 1,44. Raǵa. 6, 41. रम्भयो दोलालोला: Spr. 3033. सैपच्च विमुदिव लोला Kathâs. 22,28. Khandom. 69. घायु: कल्लोललोलम् Spr. 376. Daç. P. 4,23,27. स्वभाव R. 4,52,10. यौवनलालसा: Spr. 2072. कारिणाकानी जीवितमतिलोलम् Çik. 10. राज्ञ: स्वभावलोलस्य Râǵa-Tar. 5, 376. Mâlav. P. 51, 118. स्त्रिय: Kathâs. 64, 149. घ° von Çiva MBu. 13, 1224. यलोलकीर्ति Râǵa-Tar. 2, 64. — *b) Begehren empfindend, begehrend, verlangend —, lüstern nach* AK. 3, 4, 36, 207. H. ç. 103. H. an. Med. Hall. 2, 198. मनस् Kumâṇ. 3, 7. Spr. 133. Verz. d. Oxf. H. 26, *b*, 9. कथयितुम् Megh. 101. तस्यार्कस्य मनो लोलं यदासीत्काशीदर्शने Verz. d. Oxf. H. 70, *b*, 9. स्त्री ° 39, *a*, 3. Vaǵas. Bṛh. 17, 3. 18, 10. 24, 11. अन्योऽन्यलोलानि विलोचनानि Kumâṇ. 7, 75 (= Raǵa. 7, 20). तदधरामिष° Spr. 2877. 71. 3081. क्रोडा° Megh. 62 (unter घालोल zu streichen). Khandom. 54. केलिमुलोलम् (v. l. केलिषु लोलम्) Gît. 5, 11. — 2) m. N. pr. eines Mannes Mârk. P. 74, 18. 20. 33. — 3) f. या *a)* Zunge Taik. 3, 3, 406. H. 585. H. an. Med. — *b) Blitz* Spr. 3035, v. l. — *c) die unstäte Göttin des Glückes,* Lakshmî Taik. H. an. Med. Paṇḍar. 2,3,25. 5,24. N. der Dâkshâjaṇî in Utpalâvartaka Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,25. — *d)* N. pr. der Mutter des Daitja Madhu R. 7,61,2. — *e)* N. zweier

-Metra: α) *4 Mal 24 Moren* (vgl. रोला) Colebr. Misc. Ess. II, 136 (III, 10. — β) *4 Mal* – – ⏑ ⏑ – –, – – – ⏑ ⏑ – – (vgl. घनोला) Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 3). Kavidarp. 69. — Vgl. घा°, उल्लोल, कल्लोल, चाटु°, प्र°, मङ्गा°, रति°, लौल्य.

लोलघट (?) *Wind* H. ç. 170.

लोलता (von लोल) f. *Lüsternheit* Suça. 1,192,8. 331,19. *Verlangen:* रम्यवस्तुसमालोके लोलता स्यात्कुतूहलम् Sin. D. 130.

लोलत्व (wie eben) n. *Beweglichkeit, Unbeständigkeit:* शतह्रदानाम् Spr. 5054.

लोलन m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,50.

लोललोल (लोल + लोल) adj. *in steter Beweglichkeit seiend:* घराङ्ग Spr. 4368.

लोलालिका f. *ein Weib mit beweglichen Augen* Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,4.5.

लोलार्क (लोल + अर्क) m. *eine Form der Sonne* Verz. d. Oxf. H. 70,*b*, 8.10. fg. Vimâna-P. im ÇKDa.

लोलिका f. *Oxalis pusilla Roxb.* Gaṭiḍn. im ÇKDa.

लोलिम्बराज m. N. pr. des Verfassers des Vaidjagîvana Verz. d. Pet. H. No. 107. Verz. d. Oxf. H. 317,*a*, No. 734. लोलिम्ब° Verz. d. B. H. No. 976.

लोलुप (wohl aus लोलुभ entstanden) 1) adj. (f. घा) *Begierden habend, begehrlich, gierig nach* AK. 3,1,22. H. 430. Halâj. 2,198. Ragh. 19,24. Spr. 2753. Kathâs. 52,372. Bhâg. P. 3,19,13. 21,35. 32,40. 8,8,29. 12, 1,27. Mârk. P. 16,41. अति° Bhâg. P. 3,20,23. अ° (s. auch bes.) Jîvân. 3,59. MBh. 1,1970. 5,2446. Suça. 1,333,21. Bhâg. P. 7,11,28. In comp. mit der Ergänzung: अशन° Suça. 2,518,8. मधु° Ragh. 9,33. अभोग° 11, 87. घायवनभोग° 19,41. स्त्रीधन° Spr. 3743. 4728. Çiç. 1,40. 2,17. 7, 49. Kathâs. 19,41. 27,19. 40,51. 63,133. Bhâg. P. 5,14,6. Çâṅk. 10,78. Verz. d. Oxf. H. 128,*a*,11. Schol. zu Kirâ. Ça. 20,1,39. — 2) f. घा *Begierde, Verlangen:* अत्र MBh. 1,6730. st. नास्ति नासि ed. Bomb.) लोलुपः 12,12308 ist wohl auch नास्ति लोलुपा zu lesen. — Vgl. अ°, गन्ध°, प्र°, मधु°.

लोलुपता (von लोलुप) f. *Begierde, Gier nach* Bhâg. P. 3,20,23. अर्थ° Spr. 3394. परिणड° 2796. Bhâg. P. 12,6,65. Pañkat. ed. orn. 31,6.

लोलुपत्व (wie eben) n. dass. Schol. zu Bhâg. 16,2. स्त्री° Suça. 1,336, 4. अ° Çvetâçv. Up. 2,13.

लोलुभ (vom intens. von लुभ्) adj. (f. घा) = लोलुप AK. 3,1,22. H. 430. Halâj. 2,198. स्पर्श° Kathâs. 17,35. 20,105. परस्त्री° 101,308. 117,46.

लोलुव (vom intens. von 1. लू) nom. sg. Schol. zu P. 1,1,4. 2,4,74. Vop. 26,29.

लोलूय (wie eben) 1) nom. sg. Vop. 26,29. — 2) f. घा nom. act. P. 3,3,102, Sch.

लोलोर n. N. pr. einer Stadt Râga Tar. 1,86.

लोल्लट m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 212,*a*, No. 500. 286, *a*, No. 670.

लोशशरायणि (?) m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 1403.

लोष्, लोंष्टते (संघाते) Dhâtup. 8,5. *aufhäufen:* लोष्टते धान्यं लोकः Durgâd. im ÇKDa.

लोष्ट Uṇâdis. 3,92. 1) m. n. (n. Sindh. K. 249,*a*,3) = लोग *Erdkloss, Lehmklumpen* AK. 2,9,12. H. 970. Halâj. 2,431. TS. 5,2,8,6. Çat. Br. 3,2,3,20. 4,1,8,2. घश्मानमृत्वा लोष्टो विधंसते 14,4,3,3. Kâtj. 23, 6. Kâtj. Ça. 20,3,7. सीता° Gobh. 4,9,13. Kauç. 16. 47. 75. 77. घाकृति° etwa *geformte, feste Erdbrocken* 8. 21. 25. fg. 37. 60. 69. तिरस्कृत्योष्ठेत्काष्ठलोष्टपत्रतृणादिना M. 4,49. °मर्दिन् 71. 11,263. MBh. 13,6713. काष्ठलोष्टसधर्मिन् R. 4,60,24. 5,36,35. Suça. 1,105,12. 118,18. 2,133, 4. 270,2. Mṛkkh. 48,7. °गुटिका 79,20. Spr. 2238. Uttarar. 90,19 (117, 3). Varâh. Bṛh. S. 2,19. 30,6. 79,22. 91,3. 97,7. Râga-Tar. 3,398. मृल्लोष्ट M. 4,70. Verz. d. Oxf. H. 282,*a*,2. विश्वं येनेदं लोष्टवत्स्मृतम् लोष्ठवत् ed. Bomb.) Bhâg. P. 9,4,17. मणौ वा लोष्टे वा Spr. 309. परद्रव्येषु लोष्टवत् (पः पश्यति) 2173. सनलोष्टकाञ्चन adj. *dem ein Erdklotz und Gold gleich viel gilt* Ragh. 8,21. Mârk. P. 41,24 (लोष्ट्र gedr.) = 2) *ein best. als Marke verwendeter Gegenstand* Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 77, 21. fgg. zu Varâh. Bṛh. 12,19. — 3) n. *Eisenrost* Râgân. im ÇKDa. — 4) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,1306.

लोष्टक 1) m. = लोष्ट 1) Halâj. 2,431. Mṛkkh. 34,3. 47,3. पांसुलोष्टकैः Spr. 3008. तेनाद्यौ लोष्टकः कृतः so v. s. *zusammengehauen* Râga-Tar. 8,3013. Am Ende eines adj. comp.: अलोष्टका (अलोष्ठका ed. Bomb.) MBh. 12,3702. — 2) = लोष्ट 2) Utpala a. a. O. — 3) m. N. pr. verschiedener Männer Râga-Tar. 7,295. 8,202. 3097. 3408.

लोष्टघ्न m. *ein Werkzeug zum Zerschlagen der Erdklösse* Buhn. zu AK. 2,9,12 nach ÇKDa.

लोष्टधर m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,1078. लोष्ठ° gedr.

लोष्टन् = लोष्ट 1): लोष्टभिस् MBh. 3,2559.

लोष्टभेदन = लोष्टघ्न, m. AK. 2,9,12. H. 893. n. Halâj. 2,431.

लोष्टमय (von लोष्ट) adj. *aus Lehm gemacht, irden* M. 8,289.

लोष्टवत् (wie eben) adj. *mit Erdbröckchen vermengt* Suça. 1,243,1.

लोष्टश m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,1104.

लोष्टाल m. N. pr. eines Mannes Sabhâk. K. 184,*b*,2 (लोष्ठाल gedr.). — Vgl. लोगाल.

लोष्टु m. = लोष्ट 1) H. 970. — Vgl. लेष्टु.

लोष्ठ vielleicht nur fehlerhafte Schreibart für लोष्ट, z. B. Suça. 1, 171,6. 288,8. 2,489,9. Spr. 2173, v. l. Mârk. P. 41,24.

लोष्ठ und लोष्ठक wohl nur fehlerhafte Schreibart für लोष्ट, लोष्टक.

लोस्तानी N. pr.: लोस्तान्या लोस्तोन्या ed. Calc.) स्तूपकार्यकृत् Râga-Tar. 3,10.

लोहे 1) adj. *röthlich:* घत्र Çâṅkh. Ça. 14,13,1. 15,15,2. ह्यगेन सर्वलोहितानत्यम् Paiṭhînasi bei Kull. zu M. 3,272. वराह MBh. 1,3369 nach der Lesart der ed. Bomb. लोह ed. Calc.). Vgl. लोहित. — *b*) *kupfern* (Comm.): तुर Çat. Br. 2,6,3,3. *eisern* Kauç. 25. — 2) m. n. (n. AK. 3,6,3,23) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. *röthliches Metall, Kupfer* (nach den meisten Comm. der älteren Schriften); später *Eisen* und *Metall* überh. (acht लोहानि *Metalle* aufgezählt beim Schol. zu H. 1039) Naigh. 1,2. AK. 2,9,98. H. 1037. 1039. an. 2,601. Med. h. 8. Halâj. 2, 16. 21. 5,71. Çat. Br. 13,2,3,18. श्यामं वै मे लोहं वै मे *dunkles und rothes Metall, Eisen und Kupfer* VS. 18,13. अयोलोहलक्षणानि Kauç. 46. Lâṭj. 2,8,4. सुवर्ण, रजत, त्रपु, सीस, लोह Kâṭhâk. Up. 4,17,7. 6,1,3 (*Gold* nach Çâṅk.). घश्मनो लोहमुत्थितम् M. 9,321 (= MBh. 3,482. 12, 2010). 329. MBh. 14,303. Spr. 2771. 3952. Bhâg. P. 2,6,5. 24. 3,28,10. °परीता Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,15. लोहापलोहशोधनमारण Verz. d. B.

H. 290, 30. No. 969. °तुर Kiṭ. Ça. 5, 2, 17. Çiç. Gaṇ. 1, 28. Pân. Gaṇ. 2, 1. °कटक Schol. zu Kiṭ. Ça. 417, 20. °कील 336, 6. 366, 16. °पट्टिका 336, 6. 363, 7. Kaçç. 16. °भाण्ड Vaijn. Bṛh. S. 42, 11. °नाडी Suçr. 2, 325, 21. °खड्ग WebER, Kâṇḍas. 269. °शृङ्खल Mîn. P. 125, 13. °प्रतिमा AK. 2, 10, 33. Suçr. 1, 35, 13. fg. 96, 12. 111, 10. 228, 3. Riâ-Tan. 4, 298. Bhâg. P. 4, 11, 17. Verz. d. Oxf. H. 320, b, 10 v. u. Paṇḍat. 99, 25. 100, 23. Spr. 1042. 4267. °गन्धि Suçr. 1, 103, 9. 2, 18, 12. Vaijn. Bṛh. S. 54, 8. 39. Çiâo. Saṁh. 1, 7, 71. *Eisen* so v. a. *ein aus Eisen gemachter Gegenstand* Vaijn. Bṛh. S. 28, 5. 41, 6. 50, 26 (= 34, 117). तामलोहैः परिवृता निधयो ये so v. a. *in kupfernen und eisernen Behältern* MBh. 2, 2091. मीनस्तु सामिषं लोहमास्वाद्यति मृत्यवे so v. a. *eiserner Haken* Spr. 1221. — 3) m. *a) die röthliche Ziege* (vgl. लोहित्त): खड्गलोहामिषम् M. 3, 272. Jâṇ. 1, 239. — *b)* wohl *ein best. Vogel:* कैसकुक्कुरलोहानो शितेत चरितं नृपः Mîn. P. 27, 17. — *c)* pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2, 1033. LIA. II, 135, N. 1. — *d)* N. pr. eines Mannes गण नडादि zu P. 4, 1, 99. — 4) n. *Agallochum* AK. 2, 6, 2, 28. H. 640. H. an. Med. — Vgl. अ°, कृत्त° (auch Vaijn. Bṛh. S. 41, 7), तीक्ष्ण°, त्रि°, नील°, पीत°, मल्ल°, मुण्ड°, रवि°, सार°.

लोहक = लोह in षट्ट°, इन्दु°, त्रि°, पत्र°.

लोहकण्टक m. *Vanguiera spinosa* Roxb. Çabdar. im ÇKDa.

लोहकान्त m. *Magnet* Riâṇ. im ÇKDa.

लोहकार m. *Grobschmied* H. 920. Halâj. 2, 438. Vjutp. 96. R. Gorr. 2, 90, 23. Spr. 1138. 2432. f. ई Beiw. der Tantra-Göttin Atibalâ Kiâṇ. 3, 132.

लोहकारक m. dass. AK. 2, 10, 7.

लोहकिट्ट n. *Eisenfeil* oder *Eisenrost* Taik. 3, 3, 180. Riâṇ. im ÇKDa. Suçr. 2, 469, 6. 10.

लोहगिरि m. N. pr. eines *Berges* Verz. d. Oxf. H. 107, *a*, No. 163.

लोहघातक m. *Grobschmied* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1, 62.

लोहचारिणी f. N. pr. eines Flusses, v. l. für लोहनारणी, °नारिणी VP. 182, N. 18.

लोहचूर्ण n. *Eisenrost* Riâṇ. im ÇKDa. Vaijn. Bṛh. S. 76, 3. 77, 2.

लोहज n. 1) *Messing* H. 1049. — 2) *Eisenrost* Riâṇ. im ÇKDa.; vgl. लौहज.

लोहजङ्घ m. 1) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2, 1804. — 2) N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 12, 84. fgg.

लोहजाल n. *ein eisernes Netz, Panzerhemd:* (रथम्) लोहजालेन संवृतम् Harîv. 6882. स° (गजेन्द्र) Kîm. Nîtis. 19, 61.

लोहदन्तिन् m. *Diamant* Çabdaratn. bei Wilson.

लोहनारणी f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 326 nach der Lesart der ed. Bomb., °तारिणी ed. Calc.; vgl. VP. 182 und लोहचारिणी.

लोहारक m. N. pr. einer Hölle M. 4, 90. — Vgl. लोहचारक.

लोहद्रावित् 1) adj. *Kupfer* u. s. w. *zum Schmelzen bringend.* — 2) m. *Borax* Riâṇ. im ÇKDa.; vgl. द्रावकर und लोहबेधण.

लोहनगर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 27, 188.

लोहनाल m. *ein eiserner Pfeil* Taik. 2, 8, 52. H. ç. 142.

लोहपाश m. *eine eiserne Kette* Harîv. 4753.

लोहपुर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338, b, 31.

लोहपृष्ठ m. *Reiher* AK. 2, 5, 16. H. 1334.

लोहमय (von लोह) adj. (f. ई) *kupfern* oder *eisern* Çat. Bṛ. 13, 2, 2, 16. 18. 10, 3. Kâṭhaka Up. 6, 1, 5. Suçr. 1, 96, 12. Kathâs. 36, 148. 73, 131. Bhâg. P. 5, 26, 20. सर्व° Paṇḍat. 122, 10. धन्य° *aus anderem Metall bestehend* Halâj. 1, 131.

लोहमारक 1) adj. *Metall calcinirend.* — 2) m. *Achyranthes triandra* Roxb. (eine Gemüsepflanze) Taik. 2, 4, 32.

लोहमुक्तिका f. *eine rothe Perle* Vjutp. 138.

लोहमेखल 1) adj. *einen metallenen Gürtel tragend.* — 2) f. आ N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2636. 2639.

लोहयष्टी f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 149, *b*, 12.

लोहर N. pr. eines Gebietes Riâ-Tan. 4, 177. 6, 176. 8, 1834.

लोहरजस् n. *Eisenfeil* oder *Eisenrost* Vjutp. 188. Suçr. 1, 32, 21. 2, 68, 1.

लोहल 1) adj. *lispelnd, undeutlich redend* AK. 3, 1, 37. H. 349. an. 3, 681. Med. l. 128. Halâj. 2, 232. — 2) m. = शृङ्खलाधार्य H. an. = शृङ्खलाचार्य Med. *the principal ring of a chain* Wilson.

लोहलिङ्ग n. *Blutgeschwür* Vjutp. 220.

लोहवत् (von लोह) adj.: आ° *in's Röthliche spielend* Âçv. Gṛhj. 4, 8, 6.

लोहवर n. *das edelste Metall, Gold* Taik. 2, 9, 31.

लोहवाल m. *eine Art Reis* Vigân. 6, 2.

लोहशङ्कु m. N. einer Hölle M. 4, 90. Jâṇ. 3, 222. — Vgl. लोहशङ्कु.

लोहशोधण 1) adj. *Metalle verbindend.* — 2) m. *Borax* H. 944; vgl. लोहद्राविन्.

लोहसंकर n. *blauer Stahl* Riâṇ. im ÇKDa.

लोहाकर N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 372, *b*, No. 267.

लोहाकर्ण (लोह + कर्ण) adj. (f. ई) *rothohrig* Kiṭ. Ça. 22, 11, 29. — Vgl. लोध 1).

लोहाचल m. N. pr. eines *Berges:* °माहात्म्य Titel einer Schrift Mack. Coll. I, 82.

लोहाजव (लोह + अज) m. *die röthliche Ziege:* °वक्त्र m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2577.

लोहाण्ड (लोह + अण्ड oder आण्ड) adj. f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41.

लोहाभिसार m. Bez. *einer best. kriegerischen Cerimonie, welche am 10ten Tage nach dem* Nirâgana *stattfindet,* H. 789. = लोहाभिकार Bharata zu AK. 2, 8, 2, 62 nach ÇKDa.

लोहाभिकार m. = नीराजना AK. 2, 8, 2, 62.

लोहायस् n. *irgend ein mit Kupfer versetztes Metall* (nach den Comm. *Kupfer*) Çat. Bṛ. 5, 1, 4, 1. नैतदयो न हिरण्यं यल्लोहायसम् 2. Kiṭ. Ça. 15, 3, 22. कृष्णायस, लोहायस TBr. 3, 12, 6, 3. — Vgl. लौहायस.

लोहार्गल n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 60, *b*, 14. 61, *b*, 5. 14.

लोहि m. *eine Art Borax* (श्वेतटङ्कण) ÇKDa. nach einer Hdschr. des Riâṇ.

लोहिका (von लोह) f. *ein eiserner Topf* Taik. 2, 9, 8. Hin. 202.

लोहित् (von लोहित), °तति *roth werden, sich röthen* Vop. 21, 9.

लौहित (= älterem रौहित) Uṇâdis. 3, 94. 1) adj. f. लोहिता (Suçr. 1, 135, 1) und लौहिनी Vop. 4, 27. *a) röthlich, roth* AK. 1, 1, 4, 24. Taik. 3, 3, 180. H. 1393. an. 3, 290. fg. (wo wohl वर्णभेदे st. वलभेदे zu lesen ist, welches Wilson durch *a form of array* wiedergiebt). Med. l. 148. Halâj. 4, 48. Viçva bei Uṇâdis. AV. 6, 127, 1. 14, 2, 18. 15, 1. 7. 8. निर्याम TS. 2, 3, 4, 3. लोहिनी AV. 7, 74, 1. 10, 2, 11. त्वच् 13, 3, 21. तनू 34. गति-

का Ait. Br. 3,34. Çat. Br. 3,3,4,23. 14,3,2,3. Kin. 16,53. — Çat. Br. 5,4,2,2. 3,2,1. 5,6,2,11. °पिण्ड 14,6,11,3. °रस 13,4,4,10. °सूत्र Kauç. 85. यज्ञ 19. 35. 39. यज्ञत्व 48. लोहितोत्तीय Âçv. Çr. 9,7,1. Gaṇ. 2,9,7. रोमन् Çâṅkh. Gṛhy. 1,21. °वासु Gobh. 4,2,7. RV. Pariç. 17,9. M. 3,6. घना: MBh. 3,14269. लोहितादित्य R. 3,49,4. Hariv. 12794. भूमि Suçr. 1,135,1. लाता Ṛt. 1,3. Vaṛâh. Bṛh. S. 21,15. 65,2. Ind. St. 8, 273. कर्मन् Bhâg. P. 4,29,27. 5,19,19. Verz. d. Oxf. H. 173,b, No. 398. भास्कर: सर्वलोहित: R. 4,60,17. यति° Kumâras. 3,39. Çiç. 110. यतिमात्र° 29. मृदु° Maitrâjp. 6,30. — *b) kupfern, metallen* · पात्र Kauç. 20. स्वधिति AV. 6,141,3. Gobh. 3,6,6. — 2) m. *a) eine best. Krankheit der Augenlider* Çâṅkh. Sâṃh. 1,7,87. — *b) ein best. Edelstein* (nicht *Rubin*) Spr. 2693. — *c) eine Reisart* Râgân. im ÇKDn. Suçr. 1,228,10. — *d) Linsen* Çabdâm. im ÇKDn. — *e) Dioscorea purpurea* Râgân. im ÇKDn. — *f) ein best. Fisch, Cyprinus Rohita Ham.* — *g) eine best. Hirschart* Trik. Çabdân. im ÇKDn. — *h) Schlange* Dhan. im ÇKDn. — *i) der Planet Mars* H. an. Med. Viçva a. a. O. Vaṛâh. Bṛh. S. 6,8. Ind. St. 2,261. — *k)* N. pr. *α)* eines Nâga MBh. 2,360. — *β)* pl. einer Klasse von Göttern unter dem 12ten Manu VP. 268. = मुरान्तर Dhan. im ÇKDn. — *γ)* eines Mannes P. 4,1,18. °स्मृति Mack. Coll. I,19. pl. *seine Nachkommen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,11. Hariv. 1463 (st. लोहिता पामहू-ताश्च liest die neuere Ausg. लोहितायनपूताश्च, 1771 lesen beide Ausgg. लोहित्या:). — *δ) eines Flusses* (der Brahmaputra) H. an. Med. Viçva a. a. O. MBh. 13,7647. — *ε)* eines Meeres: लोहितस्योदधे: कन्या कू-रा लोहितगोत्रजा MBh. 3,14366. 14191. रक्तजले घोरं लोहितं नाम सा-गरम् । गत्वा R. 4,40,29; vgl. लोहितोदो वरुणालय: MBh. 3,14269. — *ζ)* eines Sees: लोहिते लोहितो die neuere Ausg.) ह्रदे Hariv. 9791; vgl. 9143 und LIA. I,155, N. — *η)* eines Landes MBh. 2,1025. — 3) f. लोहिता *a)* Bez. einer der sieben Zungen des Agni Gaṇeçaçiç. 1,14. — *b)* Bez. zweier Pflanzen: = वराह्रक्तासा und रक्तपुनर्नवा Râgân. im ÇKDn. — 4) f. लोहिनी *eine Frau von röthlicher Hautfarbe* Halâj. 4, 53. Gaṇeçm. im ÇKDn. — 5) n. *a) Kupfer, Metall* AV. 11,3,7. — *b) Blut* (auch m. nach gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 251,a,2 v. u.). AK. 2,6,2,15. H. 621. H. an. Med. Viçva a. a. O. AV. 3,7,17. 10,9,18. 11,3,25. VS. 39,9. 10. TS. 2,1,2,2. 4,2,1. यो लोहितं कार्ष्णं *wer Blut vergiesst* 6,10,2. TBr. 3,2,2,2. Ait. Br. 2,14. लोहितं डुकृञ् Çat. Br. 12, 4,2,1. 14,6,2,13. Kauç. 11. 13. 36. Kâṭh. Up. 6,5,2. M. 4,56. 8,284. MBh. 3,14366. R. 4,44,63. 5,14,18. Suçr. 1,121,13. Bhâg. P. 3,26,59. 67. Ved. in LA. (III) 4,7. सलोहिता दिशश्शासन् *so v. a. blutroth gefärbt* MBh. 3, 11399. — *c) Schlacht* H. an. — *d) Safran; rother Sandel;* = गोशीर्ष *(eine Art Sandelholz)* H. an. Med. Viçva a. a. O. = पत्तङ्ग, कुरिचन्दन und तृणकुङ्कुम Râgân. im ÇKDn. — *e) eine best. unvollkommene Form eines Regenbogens* Trik. — Vgl. घ°, घा° (auch Ṛt. 1,21), कान्त°, धूम°, नील° (adj. auch R. 2,96,20), वरुलोहित, वि°, सु°, लोहित्य, लौहित्य.

लोहितक (von लोहित, 1) adj. (f. लोहितिका und लोहितिनिका P. 5, 4,30, Vârtt.). 1) *röthlich, roth* P. 5,4,31. fg. *(vorübergehend roth und roth gefärbt).* MBh. 2,355 (= Hariv. 12658). °यज्ञ 3,2240. 7,1105. Hariv. 11817. R. 5,53,15. Suçr. 1,114,14 (लोहितिका). कोपेन P. 5,4,31, Sch. पट. शाटी 32, Sch. — 2) m. *a) Rubin* P. 5,4,30. AK. 2,9,93. H. 1064. — *b) eine Reisart* Suçr. 1,193,3. 11. — *c) der Planet Mars* Çabdam. im ÇKDn. — *d)* N. eines Stûpa Hiouen-thsang 1,140. — 3) f. लोहितिका *a) ein best. Blutgefäss* Suçr. 1,33,1. 2. — *b) eine best. Pflanze* Suçr. 2, 78,18. — 4) n. *Glockengut* Râgân. im ÇKDn.

लोहितकत्माष adj. *roth gesprenkelt* P. 6,2,3, Sch.

लोहितकूट N. pr. einer Oertlichkeit Hariv. 9143; vgl. 9791.

लोहितकृष्ण adj. *röthlichschwarz:* °वर्णा (यज्ञा) Çvetâçv. Up. 4,5. लोहितशुक्लकृष्णा v. l.

लोहितक्षय m. *Blutverlust* Suçr. 1,348,20.

लोहितक्षयक adj. *Blutverlust erleidend* Çâṅkh. Sâṃh. 1,7,102.

लोहितक्षीर adj. *rothe oder blutige Milch gebend* AV. 19,9,5.

लोहितगङ्ग N. pr. einer Oertlichkeit: मध्ये लोहितगङ्गस्य (सिन्धो: प्रदेशविशेषस्य Nîlak.) Hariv. 6874. लोहितगङ्गम् adv. *da wo die Gaṅgâ roth erscheint* P. 2,1,21, Schol.

लोहितगङ्गक N. pr. einer Oertlichkeit LIA. I, 535, N.

लोहितग्रीव adj. *rothnackig,* Bein. Agni's Mbh. P. 99,59.

लोहितचन्दन n. *Safran* AK. 2,6,2,36. H. 644. Hall. 2,388. Hariv. 7041.

लोहितचक्रु m. N. pr. eines Mannes; pl. Âçv. Çr. 12,14.

लोहितत्व (von लोहित) n. *Röthe* Med. j. 101.

लोहितध्वज 1) adj. *eine rothe Fahne habend;* vgl. लोहितकध्वज MBh. 5,2240. 7,1105. — 2) m. pl. Bez. einer best. Korporschaft (पूग) P. 5, 3,112, Sch.; vgl. लौहितध्वज्य.

लोहितपादेश m. N. pr. einer *Oertlichkeit* Verz. d. Oxf. H. 352,b,13.

लोहितपित्तिन् adj. *zum Blutsturz geneigt, daran leidend* Suçr. 2,471, 10. — Vgl. रक्तपित्तिन्.

लोहितपुर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,24. fg.

लोहितपुष्प adj. *rothblumig* Çat. Br. 4,3,10,2.

लोहितपुष्पक 1) adj. dass. — 2) m. *Granatbaum* Bhâvapr. im ÇKDn.

लोहितमुक्ति *eine rothe Perle* Lot. de la b. l. 320 fehlerhaft für °मुक्ता.

लोहितमृत्तिका f. *Röthel, rubrica* Ratnam. im ÇKDn.

लोहितवत् (von लोहित) adj. *Blut enthaltend* TS. 7,3,22,2.

लोहितवासस् adj. *ein rothes* (oder *blutiges*) *Gewand habend* AV. 1,17, 1. Kâṭy. Çr. 22,3,13.

लोहितशतपत्र n. *eine rothe Lotusblüthe* Bhâg. P. 5,24,10.

लोहितशबल adj. *rothscheckig* P. 2,1,69, Schol.

लोहितसारङ्ग adj. dass. Çat. Br. 3,3,4,23. Kâṭy. Çr. 7,9,21.

1. लोहितात (लोहित + 1. अत) m. *ein rother Würfel* (neben कृष्णात) MBh. 4,24.

2. लोहितात्त (लोहित + 3. अत) 1) adj. (f. ई) *rothäugig* Vâjîp. 203. Çat. Br. 14,9,4,13. Çvetâçv. Up. 4,4. M. 7,25. MBh. 1,2177. 3962. 7,3962. — 2) m. *a) eine Schlangenart* Suçr. 2,265,7. — *b) der indische Kuckuck* Çabdam. im ÇKDn. — *c)* Bein. Vishṇu's H. ç. 74. Çabdam. im ÇKDn. — *d)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2526. — *e)* N. pr. eines Mannes; pl. Âçv. Çr. 12,14. — 3) f. ई N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2640. 2642. — 4) n. *ein Theil des Armes und des Schenkels am Anschluss derselben an den Rumpf,* und f. (sc. सिरा) *ein an dieser Stelle liegendes Blutgefäss* Suçr. 1,345,9. 16. 346,12. 348, 20. 356,10. — Vgl. रोहितात.

लोहितागिरि (लोहित + गिरि) m. N. pr. eines *Berges* gaṇa किंशुलु-कादि zu P. 6,3,117.

लोहिताङ्ग m. 1) *der Planet Mars* AK. 1,1,3,27. H. 116. Halâj. 1,16. MBu. 6,36. 7,8877. 9,3113. Harîv. 12794. R. 2,41,10. 3,31,5. 5,18,7. 33,2. Vîkr. 142. Mârk. P. 52,11. — 2) *eine best. Pflanze*, = कम्पिल्लक Râgân. im ÇKDa.

लोहितानन 1) adj. *rothmäulig*. — 2) m. *Ichneumon* Râgân. im ÇKDa.

लोहितामुखी (लोहित + मुख) f. N. pr. einer Kuh le R. Gorr. 1,30,9.

लोहितायँ (von लोहित), °यति, °यते *roth werden, sich röthen* P. 3, 1,13. Vop. 21,9. आदित्ये लोहितायति (beim Untergange) MBu. 1,1173. 3,3012. 6,3269. 3450. 7,6100. Harîv. 3825. तेन (घम्बरेण) अधुना नूनमलोहितायि Naish. 22,49.

लोहितायन m. patron.; pl. Saṁhit. K. 184, *a*, 3. लोहितायनपूताश्च Harîv. 1465 nach der Lesart der neueren Ausg. st. लोहिता यामहूताश्च der älteren Ausg. Wohl fehlerhaft für लौ°.

लोहितायनि f. patron.: लोहितस्योदधेः कन्या धात्री स्कन्दस्य सा स्मृता। लोहितायनिरित्येवं कदम्बे सा हि पूज्यते ॥ MBu. 3, 14494. Man hatte लौ° erwartet; die Endung इ st. ई aus metrischen Rücksichten.

लोहितायस् n. *Kupfer* Taitt. 2,9,33.

लोहितायस् 1) adj. *aus röthlichem Metall gemacht* TBa. 1,3,6,5. — 2) n. (संज्ञायाम्) wohl *Kupfer* P. 5,4,94, Sch. Vop. 6,45. — Vgl. लोकायस.

लोहितार्ण m. N. pr. eines Sohnes des Ghṛtaprṣṭha Bhâg. P. 5,20,21.

लोहितार्द्र adj. *feucht von Blut, von Blut triefend*: शर MBu. 7,4900; vgl. रुधिरार्द्र R. 6,92,59.

लोहितार्मन् n. *eine best. Krankheit des Weissen im Auge: Auswüchse von rother Farbe* Suçr. 2,310,4.

लोहितावभास adj. *röthlich* Suçr. 1,61,13.

लोहिताशोक m. *rothblühender* Açoka Kathâs. 104,91.

लोहिताश्व adj. *rothe Rosse habend, mit rothen Rossen fahrend* MBu. 4,1738 लौ° ed. Calc.). Çiva Çiv.

लोहितास्य adj. *einen rothen, blutigen Mund habend* AV. 8,6,12.

लोहितार्हि m. *eine rothe Schlange* VS. 24,31.

लोहितिमन् (von लोहित) m. *Röthe* Çâṅku. Bh. 18,11. Gobh. 2,8,1. Schol. zu Kâty. Ça. 4,14,6.

लोहितीभू (लोहित + 1. भू), °भवति *roth werden, sich röthen* Vop. 21,9.

लोहितेर adj. = लोहित *rothbunt* P. 5,2,3, Sch.

लोहितोत्पल n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* Bhâg. P. 3,23,46.

लोहितोद P. 6,3,57, Vârtt., Sch. 1) adj. (f. आ) *rothes Wasser oder Blut statt Wassers habend* MBu. 3,14269. R. 4,44,65. — 2) m. Bez. *einer best. Hölle* Jâtîs. 3,223.

लोहितोर्णी adj. (f. ई) *rothwollig* VS. 24,4.

लोहित्य 1) m. *a) eine Art Reis* H. an. 3,302. — *b)* N. pr. eines Mannes H. an. Harîv. 12833 nach der Lesart der neueren Ausg.; लौ° ed. Calc. — *c)* N. pr. eines Flusses (der Brahmaputra) H. an. v. l. für लौहित्य Vaṁç. Bhp. S. 14, 6. 16,16. — *d)* N. pr. eines Dorfes (nach dem Comm.) R. 2,71,15 (73,13 Gorr.). — 2) f. आ N. pr. *a)* eines göttlichen Wesens: लोहित्या जनमाता Harîv. 9534 nach der Lesart der neueren Ausg. st. लोहित्यायनमाता der älteren. — *b)* eines Flusses MBu. 6,343 (VP. 184). — Vgl. लौहित्य und लोहित.

लोहित्यायनमातृ f. N. pr. eines göttlichen Wesens Harîv. 9534. लोहित्या जनमाता die neuere Ausg.

लोहिनिका s. u. लोहित्क: लोहिनी u. लोहित.

लोहिनीका (von लोहिनी) f. *rothe Gluth* TBa. 2,1,10,2.

लोहिन्य m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,12 wohl fehlerhaft für लौहित्य.

लोहोत्तम n. *das beste Metall, Gold* H. 1044.

लौकात (von लोकाति) m. pl. N. einer Schule: कौथुमलौकाताः gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. — Die richtige Form wäre लौगात.

लौकायतिक (von लोकायत) adj. subst. *ein Anhänger der Lehre des Kârvâka, ein Materialist* gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. H. 863. R. Gorr. 2,109,29. Hall in der Einl. zu Vîsavad. 53. Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 1,7. — Vgl. लोकायतिक.

लौकिक (von लोक) adj. (f. ई) *das gemeine Leben betreffend, ihm angehörig, darin vorkommend, gemein, gewöhnlich, alltäglich* (Gegens. वैदिक, आर्ष, शास्त्रीय) P. 5,1,44. VS. Prât. 1,2. अग्नि Kâty. Ça. 1,1,14. 3,27. 4,3,7. Kauç. 55. Jâgñ. 3,2. M. 3,282. ज्ञान 2,117. प्रेतकृत्या 3,127. यात्रा (vgl. लोकयात्रा) 11,184. दिवि देवा मनुष्येषु भूतसंघाश्च लौकिकाः MBu. 1,937. 12,3389. 12018. Harîv. 500. 2840. सलिल R. 1,42,18. समयाचार 2,1,16. 4,17,4. गिर् *die gewöhnlich gesprochene Rede* Kâm. Nîtis. 3,22. Kumâras. 7,88. कर्मन् Pâṇ. Gaṇ. 2,17. Spr. 4961. मति 3039. प्रवाद 3133. प्रव्रजित Tattvas. 47. प्रसिद्धि Nîlak. 164. 173. Ind. St. 1, 17,2. 3,286. fgg. 10,298. Prab. 110,11. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 8. 118. H. 1074. वाक्यं द्विविधं वैदिकं लौकिकं च Tarkas. 31. शब्द Râgân. Tam. 1,32. Bhâg. P. 5,14,18. 10,24,7. Mârk. P. 118,19. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, 10. 197, *b*, No. 460, Cl. 4. Schol. zu P. 2,1,3. 4,2,39. Siddh. K. zu 112. Vop. 26, 220. Kull. zu M. 1,21. Sâh. D. 37. Comm. zu Gaim. 1,3,26. Sarvadarçanas. 24, 20. 135, 15. प्रियतद्धिता दाक्षिणात्या यद्या लोकवेदयोरिति प्रयोक्तव्ये यद्या लौकिकवैदिकेष्विति प्रयुञ्जते Pat. in Mahâbh. ed. Ball. 34. लौकिकेष्वप्येतत् *in der gewöhnlichen Rede* Nir. 1,16. अ° (s. auch bes.) *ungewöhnlich, ausserordentlich* Vikr. 19, 6. Sâh. D. 37. 297, 5. 22. Bhâg. P. 10,23,38. Kusum. 4,1 v. u. Bhâsâp. 62. Schol. zu P. 2, 1,3. m. pl. *gewöhnliche —, alltägliche Menschen* (im Gegens. zu Gelehrten, Eingeweihten) Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 117. 318. Z. d. d. m. G. 7, 312, N. Sarvadarçanas. 38,7. *mit der Welt vertraute Männer* H. 947, Schl. Uttarar. 5, 8 (8, 2). *Menschen* überh. MBh. 13, 5849. n. sg. *was in der Welt vorgeht, die Gesetze der Welt, allgemeine Sitte*: यतो-कमो ऽपि सतां लौकिकज्ञा वयम् Çiç. 55,19. Mârk. P. 93,23. कुलटानां न सत्यं च न च धर्मो भयं दया। न लौकिकं न लज्जा स्यात् Pañkat. 1,14, 84. त्यक्त° *der die gewöhnlichen Beschäftigungen aufgegeben hat* Bhâg. P. 10,47,9. Am Ende eines comp. *zu der Welt — gehörig*: ब्रह्म° Jâgñ. 3,194. MBh. 13,7124; vgl. जीव°, मानुष°.

लौकिकत्व (von लौकिक) n. *Gewöhnlichkeit, Alltäglichkeit* Sâh. D. 48.

लौकिकविषयविचार m. *Betrachtung der alltäglichen Gegenstände*, Titel einer Abhandlung Verz. d. Oxf. H. 245, *a*, No. 614.

लौक्य (von लोक) 1) adj. *zur Welt gehörig, was in der Welt ist* AV. 11,7,2. 15,6,6. *über die ganze Welt verbreitet*: तेजस् MBh. 13,1971. *gewöhnlich, tagtäglich*: कर्मन् 3,4102; die ed. Bomb. des MBh. an beiden Stellen लोक्य. — 2) m. N. pr. eines Mannes Çâṅkh. Ça. 15,1,12.

लोगाति (von लोगात) m. patron.; N. pr. eines alten Lehrers und Verfassers eines Gesetzbuches Kâṭj. Çr. 1, 6, 24. Prâvarâdhj. in Verz. d. B. H. 38, 28. Ind. St. 1, 70. 80. 3, 432. 457. Verz. d. Oxf. H. 266, b, 5. 6. 268, b, 18. 270, b, 36. 279, a, 39. 310, a, 30. 336, a, 25. Verz. d. B. H. No. 1166. 1168. Sâṃk. K. 184, a, 4. Bhâg. P. 12, 6, 79. Hall 25. pl. Prâvarâdhj. in Verz. d. B. H. 59, 38. 60, 4 v. u. °भास्कर Bhâskara aus Laugâkshi's *Geschlecht*, N. pr. eines neueren Autors Hall 25. fg. 78. 81. 186. Nilak. 9. — Vgl. लोकादि.

लोठरथ m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8, 2252.

लोड्, लोडति (उन्मादे) Dhâtup. 9, 74, v. l. — Vgl. लोड्, लोढ्.

लोत्स n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 232, a.

1. लौम adj. von लोमन् gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75; vgl. P. 6, 4, 144.

2. लौमं adj. von लोमन् gaṇa शर्कराादि zu P. 5, 3, 107; vgl. P. 6, 4, 144.

लौमकायनं adj. von लौमक gaṇa पलादि zu P. 4, 2, 80.

लौमकायनि m. patron. von लौमक gaṇa तिकादि zu P. 4, 1, 154.

लौमकीय adj. von लौमक gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4, 2, 80.

लौमन्य adj. von लोमन् gaṇa संकाशादि zu P. 4, 2, 80. — Vgl. रौमण्य.

लौमशीय adj. von लौमश gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4, 2, 80.

लौमहर्षणक adj. von Lomaharshaṇa *verfasst:* लौमहर्षणिका संहिता Burnouf in der Einl. zu Bhâg. P. 1, xxxviii. लौम° Verz. d. Oxf. H. 36, a, 5.

लौमहर्षणि m. patron. von लौमहर्षण MBh. 1, 5.

लौमायनं 1) adj. von लौमन् gaṇa पलादि zu P. 4, 2, 80. Vgl. रौमायण. — 2) pl., pl. zu लौमायन्य gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98.

लौमायन्य m. patron. von लौमन् gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98.

लौमि m. patron. von लौमन् gaṇa वाह्वादि zu P. 4, 1, 96.

लौल्लाक् N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 7, 1252.

लौल्य (von लोल) n. 1) *Unruhe* Suçr. 1, 273, 9. *Unbeständigkeit:* धर्मलौल्येन संयुताः Harîv. 11311. वर्णा लौ° die neuere Ausg.; धर्मलोपेन Nilak., aber die Erklärung धर्मफलस्यकृत्या führt wieder auf die Lesart धर्मलौल्येन. — 2) *Lüsternheit, Gier, Verlangen* Suçr. 2, 261, 2. Kâm. Nîtis. 5, 14. Ragh. 16, 76. Spr. 54. 2353. 2565. Verz. d. Oxf. H. 38, b, 10. Mallin. zu Kumâras. 6, 30. लौल्ये स्थिता ब्राह्मणाः Ved. in LA. (III) 30, 8. लौल्यमेत्य — नर्तकीषु Ragh. 19, 19. स्वप्रनिवृत्त° adj. 7, 58. 18, 30. रक्तास्वादन° Pañkat. 35, 6 (31, 10 ed. orn.). स्त्री° adj. Buâd. Nâǵaç. 34, 92. इन्द्रिय° Bhâg. P. 7, 15, 19. Hall. 2, 244. मनो° so v. a. *Laune* Hit. 87, 1. अ° *das Fehlen aller Begierde, — alles Verlangens in den Besitz von Etwas zu gelangen* MBh. 3, 12506. 12, 11625. adj. *frei von aller Begierde:* कर्मन् 1, 1506. — Vgl. यति°, त्रिरूपा°.

लौल्यता f. = लौल्य 2): इन्द्रिय° Bhâg. P. 7, 15, 38.

लौल्यवत् (von लौल्य) adj. *gierig, habsüchtig:* यति° Kathâs. 22, 206.

लौश (von लुश) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 232, b. द्वितीयं लौशम् und लौशाग्र n. desgl. ebend.

लौह (von लोह) 1) adj. (f. ई) a) *kupfern, metallen* gaṇa राजतादि zu P. 4, 3, 154. Kâṭj. Çr. 7, 4, 24. 20, 7, 1. लौह, यावस 4. तुर Âçv. Gṛhj. 1, 17, 9. पिण्ड Jâǵñ. 2, 105. भाजन MBh. 3, 1129. 15, 728. यष्टि R. Gorr. 1, 60, 12. Suçr. 1, 23, 20. 65, 13. कुम्भ 2, 12, 9. नाटी 121, 9. पात्र Vaâs. Bṛh. S. 77, 2. प्रतिमा Bhâg. P. 11, 27, 12. Weber, Kṛshṇaǵ. 273 (fälschlich लोही die Hdschr.). निगड Mâlav. P. 14, 60. तुला Kathâs. 60, 248. — b) *von der rothen Ziege kommend:* चर्मन् Mâlav. P. 32, 7. — c) = लोह *roth.* कालशाकं च लौहं लोहं काञ्चनवर्णाभं पुष्पादिशाकम् Nilak.; wir verbessern लौहश्या° und verbinden लौहः mit छागः: चाप्यानन्त्यं छाग उच्यते MBh. 13, 4249. घण्टेन (घण्टेन ed. Bomb.) वापि लौहेन 4252. वराहस्य लोहस्य (लोहस्य ed. Bomb.) 1, 5369. — 2) f. आ *Kessel, ein metallener Kochtopf* Çabdâm. im ÇKDa. — 3) n. = लोह *Metall* AK. 2, 9, 99. Spr. 1263, v. l. 2771, v. l. Verz. d. B. H. No. 974. *Eisen* AK. 3, 4, 22, 56. Bhatt. 13, 34. — Vgl. त्रि°.

लौहकार m. = लोहकार Spr. 1138.

लौहचारक m. N. einer Hölle ÇKDa. nach den Purâṇa; vgl. लोहदारक.

लौहत्र n. = लोहत्र *Eisenrost* Ratnam. im ÇKDa.

लौहप्रदीप m. Titel einer über *Metalle* handelnden Schrift Verz. d. B. H. No. 974.

लौहभाण्ड n. *ein metallener Mörser* Çabdâm. im ÇKDa.

लौहभू f. *Kessel, ein metallener Kochtopf* Çabdâm. im ÇKDa.

लौहमल n. *Eisenrost* Râǵân. im ÇKDa.

लौहशङ्कु m. = लोहशङ्कु ÇKDa. nach den Purâṇa.

लौहशास्त्र n. *ein über Metalle handelndes Lehrbuch* Verz. d. B. H. No. 974.

लौहाचार्य m. *ein Lehrer der Metallkunde* ebend.

लौहात्मन् m. = लोहभू Çabdâm. im ÇKDa.

लौहायनं m. patron. von लोह gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99.

लौहायस (von लोहायस) adj. *metallen* Âçv. Gṛhj. 4, 3, 19. von *Metall und Eisen* Strenzler.

लौहि m. N. pr. eines Sohnes des Ashṭaka Harîv. 1473. 1776.

लौहित (von लोहित) m. Çiva's *Dreizack* Çabdâmṛtak. bei Wilson.

लौहितध्वज m. *ein Angehöriger der* Lohitadhvaǵa P. 5, 3, 112, Sch.

लौहिताश्व s. लोहिताश्व.

लौहितीकं (von लोहित) adj. *in's Röthliche schimmernd* P. 5, 3, 110. स्फटिक Schol.

लौहित्य (von लोहित) 1) m. a) patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. लौहित्याः Harîv. 1771 (st. dessen लौहित्याः 1463). — b) N. pr. eines Flusses (der Brahmaputra) Mahâ. j. 101. MBh. 2, 371. Harîv. 12830. R. 4, 40, 26. Ragh. 4, 81. Vaâs. Bṛh. S. 14, 6. 16, 16. Mârk. P. 58, 13. — c) N. pr. eines Meeres MBh. 1, 820. 2, 1100. 17, 33. Harîv. 12833. = सागर Çabdam. im ÇKDa. — d) N. pr. eines Berges MBh. 2, 1864 (nach Nilak.). Çatr. 1, 353. — e) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 8144. 13, 1732. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, a, 44. In dieser Bed. oder n. — 3) n. *Röthe* Med. विगतलौहित्ये सवितरि (vgl. u. लोहिताय) Suçr. 2, 160, 11. Sâh. D. 215, 16. fg. 297, 2. Schol. zu Kâp. 1, 59. — Vgl. लोहित्य.

लौहित्यायनी f. zum patron. m. लौहित्य P. 4, 1, 18.

लौहेय (लोह + ढक्) adj. *eine metallene Deichsel habend:* रथ P. 5, 3, 39, Sch.

त्यी, त्यिनाति (क्षेपणे) Dhâtup. 31, 31, v. l. für ली.

त्यी, त्यिनाति (क्षेपणे) Dhâtup. 31, 31, v. l. für ली.

त्वी, त्विनाति und त्वीनाति (गतौ) Dhâtup. 31, 32, v. l. für द्वी, द्रीं.

व *)

1. व 1) m. = वरुण Taitt. 1,1,75. H. an. 1,14. Med. v. 1. Verz. d. Oxf. H. 189,a, No. 431. *Wind* Med. und Verz. d. Oxf. H. a. a. O. = साह्वन Med. = वाहु, मघवण, कल्याण, बलवत्, वसति und वरुणालय Çabdar. im ÇKDa. = शार्दूल, वस्त्र, शालूक und वन्दन Nighaṇṭuçeshabhar. im ÇKDa. — 2) f. घा *going; hurting, injury; an arrow; weaving; a weaver* (f.) Wilson nach Çabdar. — 3) n. = प्रचेतस् Med. = वरुणावास ÇKDa. nach einem Tantra.

2. व indecl. = इव H. an. 1,14. Med. v. 1. Rasa. ed. Calc. 4,42 (bei Strenzler च st. व). MBh. 12,6597 wird मणीवोष्ट्रस्य in मणी व उ°, मणी वा उ°, aber auch in मणी इव उ° aufgelöst; vgl. zu P. 1,1,11. Mugdh. 81 ist वा anzunehmen.

वंश 1) m. Spr. K. 249,b,1 v. u. *a*) *Rohr*, besonders *des Bambus* (AK. 2,4,8,36. 3,4,44,45. 20,216. Taitt. 2,4,38. H. 1153. an. 2,554. Med. ç. 12. Hit. 176. 270. Halâj. 2,49; nach Râdh. im ÇKDa. auch *Zuckerrohr* und *Shorea robusta*); *die Sparren und Latten eines Hauses, die auf den Balken aufliegen; insbes. die in der Längenrichtung des Daches laufenden, welche die Orientirung des Hauses anzeigen* (vgl. प्राचीनवंश u. s. w.). Nir. 5,8. इन्द्रमुद्वंशमिव येमिरे RV. 1,10,1. AV. 3,12,6. 9,3,4. यद्या शालाये पलमी मध्यमं वंशमभिसमायच्छति TBr. 1,2,8,1. Çat. Br. 9, 1,2,25. Âçv. Gṛhj. 2,8,13. 9,1. Çâṅkh. Ça. 17,10,9. Kauç. 36. 41. 74. 93. 135. Ait. Ur. in Ind. St. 1,391. उदीचीन° Çat. Br. 3,1,1,7. उदग्वंश Kâty. Ça. 4,7,9. — घनमिन्दीवरश्यामं वंशं कनकभूषणम् MBh. 3,1731. वंशेश यामुनेः R. 2,53,8. प्रुव्वैर्वंशैः 14. Ry. 1,25. R. Gorr. 2,53,7. घनतिप्रोढवंशप्रकाश Megh. 77. Sûçr. 1,110,8. 187,1. 2,26,18. 331,6. °कारीर 1,224,4. Vishṇus. 6,100. Vaṇîn. Bṛh. S. 44,4. °पात्री Schol. zu Kâty. Ça. 609,2. डार्भर° Pâraṇ. 117,6. 7. Hit. 27,15. 32,9. वक्रवंशस्य सरलतम् Verz. d. Oxf. H. 153,b,22. वंशो नाम स्थूणासु निखिप्तस्तिर्यग्वेणुः Comm. zu Baudh. P. 11,8,32. *Querbalken, Querstrich, Diagonale* (= कोणात्कोणगतानि सूत्राणि Comm.) Vaṇîn. Bṛh. S. 33,57. 65. *Bambus* und zugleich *Stamm, Geschlecht* Spr. 679. 2397. 2429. — *b*) *Rohrpfeife, Flöte* H. 287. Duâr. im ÇKDa. Mṛicch. 49,2. Rasa. 2,12. Râja-Tar. 5,362. — *c*) *Rückgrat* Taitt. 3,3,432. H. an. Med. Halâj. 3,17. चापवंश: कूर्म: Vaṇîn. Bṛh. S. 64,1. 3. चापसमानवंशा: Elephanten 67,1. 6. Bhâg. P. 11,8, 22. — *d*) *Röhrknochen:* यष्टवंशवत् R. 5,32,14. वंशशब्देन दैर्घ्यं विवक्षितम् बाहू च नलकावूरू अङ्के चेत्यष्ट वंशका: । नलकावङ्गुल्याविति (!) तीर्थ: Comm. in der ed. Bomb. zu 5,35,19. — *e*) *der höhere mittlere Theil eines Schwertes* (खड्गमध्योच्छ्राय Comm.) Vaṇîn. Bṛh. S. 50,2. 4. — *f*) *ein best. Längenmaass*, = 10 Hasta Liṭâv. 1,6. — *g*) *Stammbaum* (nach der Aehnlichkeit der sich aneinander fügenden Glieder eines Rohres); *Stamm, Geschlecht* AK. 2,7,1. 3,4,28,216. H. 503. H. an. Med. Hir. 270. Halâj. 2,241. Çat. Br. 10,6,5,9. 14,9,8,14. Ind. St. 4,374. पितृ°, मातृ° Çâṅkh. Gṛhj. 4,10. विवृद्धार्यं स्ववंशस्य M. 9,128. MBh. 3,1856. fg. 1859. गोप्ता निषधवंशस्य 2478. उभौ वंशौ (d. i. des Vaters und der Mutter) Spr. 3089. R. 1,1,10. 92. 5,3. Rasa. 1,2. 2,33. वंशस्य कर्ता 64. 12,88. Megh. 6. Çiç. 12. 7,1. 91,13. शशिनस्तुल्यवंश: Spr. 1992. 2694. स त्रातो येन त्रातेन याति वंश: सुमन्वतिम् 3107. Vaṇîn. Bṛh. S. 68,3. 78,10. सहंशजात Kathâs. 21,98. Bhâg. P. 3,7,25. 10,26. 9, 22,48. Dhûrtas. 67,3. °क्षीण Hit. 10,20. Madhus. in Ind. St. 1,18,6. Verz. d. Oxf. H. 8,a,15. H. 252. *Geschlecht, Stamm* und zugleich *Bambus* Spr. 679. 2397. 2429. वंश ist nicht nur *Geschlechtsregister* (अभिज्ञानप्रतिबन्ध Kiç. zu P. 4,1,163), sondern auch *Lehrerliste*: वंशो द्विधा । विद्यावंशो जन्मवंशश्च Schol. zu P. 2,1,19. — *h*) *Sohn:* नृगस्य वंश: सुमति: Bhâg. P. 9,2,17. — *i*) *eine Menge gleichartiger Dinge* Taitt. H. an. Med. रथ° (s. bes.), स्पन्दन° Rasa. 7,36. नक्षत्र° Hariv. 10238 (pl.). R. Gorr. 1,62,22 (vgl. नक्षत्रगण 23). तीर्थ° MBh. 1,347. — *k*) *Tabaschir* Wilson nach Çabdar. — *l*) Bein. Vishṇu's (!) H. ç. 75. — 2) f. घा N. pr. einer Apsaras, einer Tochter der Prâdhâ, MBh. 1,2353. — 3) f. ई *a*) *Flöte* AK. 1,1,2,4. Çabdar. im ÇKDa. Pâṇḍar. 4,6,5. °रव Gît. 9, 11. — *b*) *Blutgefäss* H. ç. 128 (fehlerhaft तंशी). — *c*) *ein best. Gewicht*, = 4 Karsha Râjân. im ÇKDa. — *d*) *Tabaschir* Wilson nach Çabdar. — Vgl. घ°, घादि°, इन्द्रवंशा, उद्वंश, कर्ण°, तुङ्गवंश, नालवंश, नाना°, परि°, पृष्ठ°, प्राग्वंश, प्राचीन°, रघु°, रथ°, राज्ञ°, स°, सोम°, हरि°, वांशिक.

*) Was unter व nicht gefunden wird, suche man unter व.

वंशऋषि m. *ein in einem* Vaṁça-Brâhmaṇa (*Lehrerverzeichniss*) *genannter* Ṛshi Çaṁk. in der Einl. zu Bṛh. Âr. Up.

वंशक (von वंश) 1) m. = ह्रस्वो वंशः संज्ञायाम् P. 5,3,87, Sch. *a) eine Art Zuckerrohr* Ratnam. im ÇKDa. Suçr. 1,186,14. 20. — *b) ein Röhrknochen; s. u.* वंश 1) *d*). — *c) ein best. Fisch* Çabdam. im ÇKDa. — *d)* N. pr. eines Fürsten VP. 467, N. 14 (Vansaka gedr.). — 2) f. वंशिका *a) Flöte* Çabdam. im ÇKDa. — *b) Agallochum* H. 640. — 3) n. *Agallochum* Hân. 104.

वंशकठिन m. *Bambusdickicht* P. 4,4,72, Sch. वंशा वेणवः कठिना यस्मिन्देशे स वंशकठिनः Siddh. K. — Vgl. वंशकठिनिक.

वंशकण wohl m. *in der Luft umherfliegende Pflanzenfäden* Hân. 23 (nach ÇKDa. und Wilson n.).

वंशकर 1) adj. subst. *ein Geschlecht fortpflanzend, Stammhalter* MBh. 1,2758. R. 1,8,1. 39,8. Ragu. 18, 30. पौरवाणाम् MBh. 1,2601. कुरु° 13,1339. — 2) m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 7. — 3) f. आ N. pr. eines auf dem Mahendra entspringenden Flusses Mârk. P. 57,29; vgl. वंशधारा.

वंशकर्पूररोचना f. = वंशरोचना Râǵân. im ÇKDa.

वंशकर्मन् n. *Bearbeitung von Bambus, Korbmacherei u. s. w.:* °कर्मकृत् R. 2,80,3 (87,3 Gorr.). वंशचर्मकृतः ed. Bomb. st. वंशकर्मकृतः, welches der Comm. in वंशकृतः und चर्मकृतः zerlegt.

वंशकृत् 1) = वंशकर्मकृत् R. ed. Bomb. 2,80,3. — 2) *Begründer eines Geschlechts* Buǵ. P. 9,2,33; vgl. वंशकर 1).

वंशक्रमागत adj. *ererbt:* मित्र Spr. 583. Kim. Nitis. 7,31. — Vgl. वंशागत.

वंशतीरी f. *Tabaschir* H. 1154. Râǵân. im ÇKDa.

वंशगुल्म N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3,8151.

वंशचित्तक m. *Genealog* Hariv. 812.

वंशच्छेत्तर् m. *derjenige, welcher ein Geschlecht abschneidet, mit welchem ein Geschlecht ausstirbt,* Varâh. Bṛh. 23,6.

वंशज 1) adj. *a) aus Bambus gemacht:* पात्र Weber, Kṛshṇaǵ. 278. — *b) aus einer — Familie stammend, im Geschlechte — geboren, zur Familie — gehörend;* die Ergänzung im comp. vorangehend oder im loc. H. 713. स्व° Râǵa-Tar. 6, 230. समानय° 3, 117. राघव° R. 2, 90, 30. Ragu. 1, 31. Varâh. Bṛh. 11, 13. Verz. d. Oxf. H. 19, *b*, 3. *zum selben Geschlecht gehörend:* तदाभ्यं नृपः काश्यो वंशजः को ऽपि नाभवत् 122, *a*, 6. 7. — 2) m. = वेणुयव Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. आ *Tabaschir* Çabdam. im ÇKDa. — 4) n. dass. Suçr. 2,329,18. Vîçam. 6,15.

वंशतण्डुल m. = वेणुयव Râǵân. im ÇKDa.

वंशदला f. *eine best. Grasart,* = वंशपत्री Râǵân. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

वंशधर adj. subst. *ein Geschlecht erhaltend, Stammhalter* MBh. 2,1160. R. Gorr. 1,40,12. Kathâs. 9,66. 35,104. Buǵ. P. 1,12,12. 8,23,5. वंशराज्यधर Kathâs. 66,172. यदुवंशधराः so v. a. *dessen Nachkommen* Buǵ. P. 4,28,31. 12,7,16.

वंशधारा f. N. pr. eines auf dem Mahendra entspringenden Flusses VP. 185, N. 30. — Vgl. वंशकरा.

वंशधारिन् adj. = वंशधर Pâṇ. 4,8,39.

वंशनर्तिन् m. *Gaukler* VS. 30,21.

वंशनाडिका f. *eine Röhre aus Bambus* Kathâs. 29,145. °नाडी f. dass. 146.

वंशनाथ m. *Stammhalter:* पार्थिव° so v. a. *fürstlicher Sprössling* R. 4, 29, 26.

वंशनालिका f. *Pfeife, Flöte* Çabdar. im ÇKDa.

वंशनेत्र n. = इक्षुमूल Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. इक्षुनेत्र.

1. वंशपत्त्र n. 1) *Bambus-Blatt* Varâh. Bṛh. S. 50,7. 83,1. — 2) = वंशपत्त्रपतित n. Colebr. Misc. Ess. II,162 (XII,3).

2. वंशपत्त्र 1) m. = नल *Rohrschilf.* — 2) f. ई *a) eine best. Grasart* (वंशदला, शीर्णपत्त्रिका). — *b)* = नाडीहिङ्गु Râǵân. im ÇKDa.

वंशपत्त्रक 1) m. *a) Rohrschilf* (नल); *eine Art Zuckerrohr* (सेतेक्षु) Râǵân. im ÇKDa. — *b) ein best. kleiner Fisch* Çabdam. im ÇKDa. — 2) n. *Auripigment* H. 1038.

वंशपत्त्रपतित adj. *auf ein Bambus-Blatt gefallen* und als n. N. eines Metrums: *4 Mal* —⏑⏑—⏑⏑—⏑⏑—, ⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑— Varâh. Bṛh. S. 104, 40. Ind. St. 8,394. Colebr. Misc. II,162 (XII,3).

वंशपोत m. *eine Art Bdellium* (कणागुग्गुलु) Râǵân. im ÇKDa.

वंशपुष्पा f. *eine best. Schlingpflanze,* = सत्यदेवी Râǵân. im ÇKDa.

वंशपूरक n. = इक्षुमूल Râǵân. im ÇKDa.

वंशब्राह्मण n. *ein chronologisches Verzeichniss alter Lehrer* Ind. St. 4,371. fgg. Verz. d. Oxf. H. 382, *a*, No. 451. 264, *b*, 26. 270, *b*, 29.

वंशभार m. *eine Tracht Bambus* P. 5,1,50. — Vgl. वंशभारिक.

वंशभृत् m. *Stammhalter:* तितावन्धकवृष्णीनां वंशे वंशभृतां वरः MBh. 2,1322. भरत° Kathâs. 30,41.

वंशभोज्य adj. *dessen Genuss sich im Geschlecht forterbt:* राज्य MBh. 3,2038.

वंशमय (von वंश) adj. (f. ई) *aus Bambus gemacht* Schol. zu Kâty. Çr. 4,6,17. Nilak. zu Hariv. 11192. वंशमूलमयपात्र Weber, Kṛshṇaǵ. 279.

वंशमूलक n. N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3,6011. fg.

वंशराज m. 1) *ein hohes Bambusrohr:* केतुना वंशराजेन (वंशजातेन die neuere Ausg.) Hariv. 2439. — 2) N. pr. eines *Fürsten:* °कुल Lalit. ed. Calc. 22,18. 23,1.

वंशरोचना f. *Tabaschir* AK. 2,9,110. H. 1154. Vjutp. 135.

वंशलोचना f. dass. Çabdar. bei Wilson.

वंशवर्धन adj. *ein Geschlecht mehrend, — fortpflanzend* Vikr. 87, 20. राघव° R. 2,23,42. रघु° 46,33. 95,19 (104,20 Gorr.). 112,30.

वंशवर्धिन् adj. dass.: मम ह्ये वंशवर्धिनी MBh. 3,1859. Uttarar. 126, 7 (170,7).

वंशविस्तर m. *vollständige Genealogie* VP. bei Muir, ST. 4,217.

वंशशर्करा f. *Tabaschir* Râǵân. im ÇKDa.

वंशशलाका f. *ein Wirbel aus Rohr* H. 291.

वंशस्तनित n. v. l. für वंशस्थविल Khandom. 40.

वंशस्त्र n. oder °स्था f. (?) *ein best. Metrum,* = वंशस्थविल Ind. St. 8, 372. 378. Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,1). Çrut. (Bh.) 33.

वंशस्थविल n. *die in einem Bambusrohr befindliche Höhlung* und zugleich N. eines Metrums: *4 Mal* ⏑—⏑—⏑⏑—⏑⏑— Khandom. 40. Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,1). Çrut. 33.

वंशस्थिति f. *der Bestand eines Geschlechts* Ragu. 18,30. Vikr. 153.

वंशागत adj. *ererbt:* रिपु Kâm. Nitis. 8,66. — Vgl. वंशक्रमागत.

वंशाय n. *die Spitze eines Bambusrohrs:* °नृत्यादिदुर्घटव्यायाम Sis. in Ind. St. 2,86. = वंशाङ्कुर Riéan. im ÇKDa.

वंशाङ्कुर m. *Rohrschössling* Halâj. 3,42.

वंशानुकीर्तन n. *Verkündigung des Geschlechts, Genealogie* Verz. d. B. H. 128,a. राज्ञ°, यदु° ebend.

वंशानुक्रम m. *Reihenfolge im Geschlecht, Genealogie* Ragh. 18 in der Unterschr.

वंशानुग adj. 1) *am höheren mittleren Theil eines Schwertes sich hinziehend, — sich befindend* Varâh. Bṛh. S. 50,3. — 2) *von Geschlecht zu Geschlecht übergehend:* श्रिय: Spr. 2512.

वंशानुचरित n. sg. und pl. *die Geschichte der verschiedenen Geschlechter* als eines der fünf Lakshaṇa eines Purâṇa VP. bei Mcin, ST. 4, 217. Bhâg. P. 9,1,4 (वंश्यानु° ed. Bomb.). Verz. d. Oxf. H. 7,b,1 v. u. 8,a,15. Ind. St. 1,18,6.

वंशानुवंशचरित n. *die Geschichte der älteren und neueren Geschlechter* als eines der fünf Lakshaṇa eines Purâṇa H. 252.

वंशावती f. N. pr. gaṇa शरादि zu P. 6,3,120.

वंशाह्व m. = वेणुयव Riéan. im ÇKDa. unter d. l. W.

वंशिक (von वंश) n. *Agallochum* AK. 2,6,2,28. — वंशिका s. u. वंशक.

वंशिन् in स्व° zu *Jmds Geschlecht gehörig:* धन्या: खलु भवत्तो (die Opfer) ये हिंसातीनां स्ववंशिन: (स्ववंशजा: die neuere Ausg.) Hariv. 9669.

वंशिवाद्य n. *Flöte* Titusâdit. (s. u. फल्गक) wohl nur fehlerhaft für वंशी°.

वंशीधर 1) adj. *eine Flöte haltend:* Kṛshṇa Paṇḍan. 1,5,18. 12,28. — 2) m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. B. H. No. 638. Hall 8.

वंशीय (von वंश) adj. *zu Jmds Geschlecht gehörig:* (पार्थिवा:) वंशीया: सोमसूर्ययो: Bhâg. P. 12,2,25.

वंशीवदन m. N. pr. eines Scholiasten Colebr. Misc. Ess. II,46.

वैंश्य (von वंश) adj. gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54. 1) *zum Hauptbalken gehend, an den Hauptbalken sich ansetzend;* m. *Verbindungsstück, Querbalken* oder *-leisten* Bhâg. P. 11,8,32. वंशो नाम स्थूणासु निक्षिप्तस्तिर्यग्वेणु: । वैंश्यास्तस्मिन्नुभयतो निक्षिप्ता वेणव: Comm. — 2) *an das Rückgrat sich ansetzend; subst. ein Arm- oder Beinknochen* Bhâg. P. 11,8,32. — 3) *zur Familie gehörig,* m. *Familienglied, ein Vorfahr* oder *Nachkomme* Taitt. 3,7,1. H. 713. M. 1,61. 105. 3,37. Jâés. 1,60. 318. R. Gorr. 2,66,21. P. 4,1,163. Ragh. 1,66. 13,35. H. 539. Riéa-Tar. 1,190. 2,151. Bhâg. P. 1,12,18. 9,20,1. 21,21. वंश्यानुचरित 3,7,25. 9,1,4 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 12,7,9. 16. तद्वैंश्य *aus dessen Familie stammend* M. 7,202. स्व° MBh. 13,1370. Riéa-Tar. 3,331. पर° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,343, Cl. 7. विशाल° Kâm. Nitis. 1,2. प्रगृद्ध° Ragh. 1,69. विप्रगृद्ध° Riéa-Tar. 5,335. मरु° 337. भूपाल° 6,366. पितृ°, पति°, मातृ° Spr. 4337. अभिषिक्तवंश्या: क्षत्रिया राजन्या: P. 6,2,34, Sch. ब्रह्म° Bhâg. P. 9,20,1. ईल° MBh. 2, 569. R. 1,35,20. Riéa-Tar. 5,127. Accent eines auf वंश्य ausgehenden comp. gaṇa वर्ण्यादि zu P. 6,2,131. *zu derselben Lehrerliste gehörig* P. 2,1,19. — 4) *einem Geschlecht eigenthümlich:* गुणा: Ragh. 18,48. — 5) fehlerhaft für वश्य Kâm. Nitis. 4,63. — Vgl. राज्ञ°.

वंसग m. eine Bez. des *Stiers:* वृषा पृश्निर्व वंसग: कृष्टीरियर्ति ṚV. 1, 7,8. शिशीते वज्रं तेजसे न वंसग: 55,1. 58,4. 5,36,1. तिग्मशृङ्ग 6,16,39. 8,33,2. 10,102,7. 106,5. 144,3. AV. 18,3,36.

1. वक् = वच्. Davon विवक्वि (s. u. वच्), वक्वन्, वक्य.

2. वक् = वञ्च् *rollen, wälzen:* सहावक्रे रथ्येव न धेना: ṚV. 7,21,3. वङ्कू, वंङ्कते Dhâtup. 4,14 (कौटिल्ये). 21 (गतौ).

वैकल m. *die innere Baumrinde, Bast:* वैकलमस्तरमा दृढे TBr. 3,7, 4,2. यस्य वृक्षस्य प्रसव्या वैकला: स पूष्य: *linkslaufig* Çâṅkh. Br. 10,2. पर्ण° *Bast des* Palâça (sonst पर्णवल्क) Schol. zu Kâty. Çr. 305,7. — Vgl. वल्क, वल्वल.

वक्रनुक्राण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,4 v. u.

वक्रुश m. Bez. *eines best. im Land der Bäume wohnenden Thieres* (पर्णमृग) Suçr. 1,202,17.

वक्व्, वैक्वते (गतौ) Dhâtup. 4,27, v. l.

वक्वलिन् (aus वल्वलिन्) m. N. pr. eines Ṛshi Burn. Intr. 267.

वक्वास s. वक्वास.

वक्कुल m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 126. Burn. Intr. 391. fg., wo aber die Hdschr. वत्कुल liest. वकुल Lot. de la b. l. 2.

वक्तर् (von वच्) nom. ag. AK. 3,1,35 (= वाचदूक). H. 346 (= वदावद). Med. t. 53 (= वाग्मिन् und पण्डित) *sprechend, aussagend; Sprecher, Verkünder:* यस्मात: ṚV. 7,104,8. नकिर्वक्ता न दादृति *Niemand darf sagen, er solle nicht geben,* 8,32,15. 9,75,2. इति ब्रवीति वक्तरी (°रि Padap.) राणा: 10,61,12. AV. 2,1,4. Çat. Br. 14,7,1,26. Taitt. Âr. 7,11. Taitt. Up. 1,1. Kaush. Up. 3,8. Maitrâyaṇ. 6,11 (auch य°). ṚV. Prât. 13,1. M. 11,35. किं करिष्यति वक्तार: भ्राता यत्र न विद्यते Spr. 666. दुर्लभा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् 2014. 3679. Sin. D. 27. Bhâsâṇ. 83. दिनु शान्तासु वक्तारो मधुरम् (शकुना:) Suçr. 1,107,15. पुरा किल वेदमधीत्याध्येतारस्त्वरितं वक्तारो भवति so v. a. *Lehrer, Meister* Sarvadarçanas. 137,8. 9. एवं° *so sprechend* Kathâs. 83,31. स्फुट° Spr. 1623. वेदानाम् *Verkünder* MBh. 13,1339. Kâṭyâr. 1,22. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 2 v. u. 101,14. Sarvadarçanas. 138,17. 160,3. स्तुत्स्य R. 4,29,28. अप्रियस्यापि वचन: Spr. 175. 3283. प्रियम् 2319. धर्मम् Bhâg. P. 6,17,6. उत्तरोत्तर° MBh. 2,139. पद्यावृत्त° R. 3,44,2. प्रिय° 5,37,2. साधु अन्यार्थवक्ता Spr. 4389. पुराणसंहिता° Verz. d. Oxf. H. 9,b,12. तद्वक्तृ M. 12,115. Bhâg. P. 2,9,7. *Redner* so v. a. *ein beredter Mann* MBh. 2, 138. 1908. 3,1811. 15711. R. 3,75,41. Mṛkkh. 137,23. Spr. 934. 2447. Varâh. Bṛh. 17,9. सर्वेषु कार्येषु R. 1,70,16. उत्तरोत्तरयुक्तौ 2,1,3 (°युक्तीनां st. °युक्तौ च ed. Bomb.). विगृह्य वक्ता *ein guter Kampfredner* Suçr. 1,333,12. — Vgl. अति°, प्रिय°, ब्रह्म°.

वक्तव्य (wie eben) adj. 1) *zu sprechen, zu sagen, zu verkünden* H. an. 3,504 (= वचोऽर्ह). Med. j. 103 (= वचनार्ह). °प्रशंस Nir. 11,31. Çat. Br. 14,7,1,26. Prâçnop. 4,8 (*was gesprochen wird*). सर्वे स्वरा घोषवत्तो वलवत्तो वक्तव्या: Kâṭhân. Up. 2,22,5. तस्मात्सत्यं हि वक्तव्यम् M. 8,83. 104. MBh. 3,2733. R. Gorr. 1,74,4. त्वयि 3,35,26. 5,36,5. Çân. 67,5. Varâh. Bṛh. S. 1,8. 3,91. 24,4. 34,52. 65. 79. इयम् Kathâs. 32,57. 40, 7. 121,177 (य°). Riéa-Tar. 4,223. Bhâg. P. 3,6,12. Mârk. P. 23,84. 69, 80. तस्य दोषो न वक्तव्य: *so v. a. vorzuwerfen* Spr. 1854, v. l. तत्सत्तं वक्तव्यं वर्षम् *zu benennen* Varâh. Bṛh. S. 8,1. वाचं सवक्तव्याम् *die Rede mit dem was gesagt wird* Bhâg. P. 7,12,26. चरित्रे वक्तव्यवक्तव्ये *worüber*

sich viel sagen lässt Rigà-Tar. 5, 67. impers.: सर्वैरपि च वक्तव्यं न प्राज्ञापत्य पाण्डवा: MBu. 4, 87. M. 8, 13. R. ed. Bomb. 3, 40, 9. Sin. D. 2, 8. यामीति वक्तव्ये कः परिश्रमः *welche Mühe ist es zu sagen ich gehe?* Hariv. 4813. साधु भूयेति वक्तव्ये – साधवत्तिष्ठतिति वदन् *anstatt* साधु भूय *zu sagen* Rigà-Tar. 5, 17. नार्यं वक्तव्यस्य कालः *Zeit zu reden* Pañkat. 194, 23. — 2) *anzureden, zu dem man sprechen soll* (mit acc. der Sache): वक्तव्याश्चापि राज्ञानः सर्वे – युधिष्ठिरस्याश्वमेधो भवद्भिरनुमूयताम् MBu. 14, 2217. Hariv. 11301. R. 2, 27, 10. 32, 33 (49, 34 Gorr.). 58, 19. 3, 44, 9. Mṛicch. 53, 12. Çiç. 53, 10. Kathâs. 12, 96. Pañkat. 193, 14. अत्यमप्यप्रियं वाक्यं न वक्तव्यो R. Gorr. 2, 23, 14. 15. 5, 36, 5. माता च मम कौसल्या कुशलं चाभिवादनम् । अप्रमादे च वक्तव्या R. ed. Schl. 2, 38, 14. Vaṇîn. Bṛh. S. 44, 7. Bhatt. 7, 19. — 3) *tadelnswerth, übelberüchtigt; =* गर्ह्य, कुत्सित AK. 3, 4, 24, 161. H. an. (lies गर्ह्य st. गृह्य). Med. M. 8, 66. या केशाग्राग्रयोर्यामश्च वक्तव्यो (so die ed. Bomb.) वक्तुमिच्छसि MBu. 7, 9153. n. *Tadel, Vorwurf:* एको मे दृश्यते नाथोऽवदाक्यैर्वक्तव्यं यदिह मया कृता प्रियेति Mṛicch. 167, 12. — 4) *(verantwortlich, Rede und Antwort zu geben verpflichtet) abhängig, in der Gewalt von — stehend; =* अधीन AK. st. dessen falschlich क्षीन H. an. Med. कामवक्तव्यहृदया R. 3, 2, 25. — Vgl. पुनर्वक्तव्य, वचनीय, वाच्य.

वक्तव्यता f. nom. abstr. 1) von वक्तव्य 3): वक्तव्यतां या, गम् oder त्रज् *dem Tadel anheimfallen, sich einen Tadel zuziehen* MBu. 10, 86. Hariv. 4204. R. 7, 43, 6. so v. a. *Verantwortlichkeit:* दिवा वक्तव्यता पाले रात्रौ स्वामिनि तद्भवेत् । योगक्षेमे ऽन्यथा चेतु पाले वक्तव्यतामियात् ॥ M. 8, 230. — 2) von वक्तव्य 4): तस्य वक्तव्यतां यान्ति *gerathen in seine Gewalt* MBu. 12, 13877. मां तं तद्दर्शनाद्विप्र कामवक्तव्यतां गता Mârk. P. 61, 47. कामवक्तव्यतां नीतः 64, 7.

वक्तव्यत्व n. nom. abstr. von वक्तव्य 1): श्रवण° Nîlak. zu MBu. 1, 7308.

वक्ति (von वच्) f. *Rede* Bṛh. Âr. Up. 4, 3, 26 (वचस् Çat. Br.). — Vgl. उक्ति.

वक्कु nach Sây. *harte Worte führend* ṚV. 7, 31, 3; s. jedoch u. वच् influ.

वक्तृ am Ende eines adj. comp. von वक्तृ *Sprecher:* तद्वक्तृको वेदवाक्यार्थोपदेशः Comm. zu Kap. 1, 99.

वक्तृता (von वक्तृ) f. *Rednerei, Gewandheit in der Rede:* विना सत्यं च वक्तृता Çâṅk. 10, 189.

वक्त्र (von वच्, Uṇâdis. 4, 166. n. Siddh. K. 249, *b*, 3. m. (nicht zu belegen) und n. 250, *b*, 6. वक्त्र am Ende von Ortsnamen P. 4, 2, 126. 1) *Mund, Maul, Gesicht, Schnauze, Schnabel* AK. 2, 6, 3, 60. H. 372. an. 2, 432. Med. r. 84. Halâj. 2, 363. Çâradâ in Ind. St. 4, 107. M. 8, 272. MBu. 1, 5932. 12, 4272. R. 4, 9, 82. Âmṛitân. Up. in Ind. St. 9, 27. Suçr. 1, 116, 14. 120, 19. 155, 7. 187, 10. नेत्रवक्त्रविकारैः Spr. 310. वक्त्रामृत 775. कृस्तोष्यमं विना वक्त्रे प्रविशेय कदा च न भोजनम् 1745. Vaṇîn. Bṛh. S. 51, 22. 58, 9. 77, 25. fg. Kathâs. 18, 165. Pañkat. 264, 1. चन्द्रभ° MBu. 3, 2860. 3000. Mṛicch. 51. Spr. 2518. 2696. fg. Vaṇîn. Bṛh. S. 68, 56. 103. 69, 24. Daçak. 66, 5. 6. 8. 72, 11. मृगपति° Suçr. 1, 96, 18. गज° MBu. 3, 12247. Vaṇîn. Bṛh. S. 93, 2. 13. 94, 13. कराल° (उलूक) Pañkat. 158, 22. वक्त्रं कृ *den Mund —, das Maul aufsperren* R. 5, 56, 17. fg. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBu. 4, 185. R. 5, 17, 28. Ṛt. 3, 1. Kathâs. 28, 81. 43, 334. 124, 98. Kâdamb. 28. Verz. d. Oxf. H. 146, *a*, No. 310. — 2) *Spitze* (eines Pfeils): तीक्ष्ण° MBu. 7, 4952. — 3) *Schnauze eines Gefässes; s.* घ°. — 4) *Anfang:* कलि° Gaṇitâdhj. Prâṇjâdhaç. 11. — 5) *the initial quantity of the progression; the first term* Colebr. Alg. 32. — 6) = श्लोक *ein aus 4 X 8 Silben bestehendes Metrum* H. an. Colebr. Misc. Ess. II, 118. 137. Ind. St. 8, 313. 331. fgg. Kiṭâb. 1, 26. Sâh. D. 567. Prâṭiçâkh. 19, *a*, 7. — 7) *eine Art Zeug* (वस्त्रभेद) Med. — 8) *die Wurzel von Tabernaemontana coronaria R. Br.* (तगरमूल) Çabdam. im ÇKDn. — 9) *fehlerhaft für* वक्र in घय° Suçr. 2, 36, 1. — Vgl. घ°, घन्वन्तरसंधि° (unter घन्वन्तरम्, घय°, घयर°, दधि°, दन्त°, दृश°, पञ्च°, पार्श्व°, पूति° पूयु°, मरुा°, यत्र°, मूची° und मुख, वदन.

वक्त्रक am Ende eines adj. comp. = वक्त्र 1) Hariv. 14302. — Vgl. घय°.

वक्त्रायुर m. *Zahn* 2, 6, 29.

वक्त्रज m. *ein Brahmane (aus Brahman's Munde entstanden)* Taitt. 2, 7, 2.

वक्त्रताल n. = वक्त्रनाल Çabdar. bei Wilson.

वक्त्रतुण्ड m. Bez. Gaṇeça's Liṅga-P. bei Muir, ST. III, 161. Wilson, Sel. Works I, 267. fehlerhaft für वक्रतुण्ड.

वक्त्रदंष्ट्र s. वक्रदंष्ट्र.

वक्त्रदल n. *Gaumen* H. ç. 122 (falschlich वक्र°).

वक्त्रपट *Schleier;* am Ende eines adj. comp. f. घा Rigà-Tar. 6, 315.

वक्त्रपद्म H. 1251 zur Erklärung von तलिका, तलमास्क.

वक्त्रभेदिन् adj. *bitter (den Mund stechend)* H. 1389.

वक्त्रयोधिन् adj. *mit dem Maule kämpfend;* m. N. pr. eines Asura Hariv. 2652. VP. 148.

वक्त्ररुह *Schnauzhaar,* beim Elephanten Vaṇîn. Bṛh. S. 67, 10.

वक्त्ररोग m. *eine Krankheit des Mundes;* वक्त्ररोगिन् adj. *damit behaftet* Vaṇîn. Bṛh. 20, 1.

वक्त्रवास (वक्त्र + वास *Wohlgeruch*) m. *Orange* Rigân. im ÇKDn.

वक्त्रशोधन 1) adj. *den Mund reinigend.* — 2) n. *die Frucht der Averrhoa Carambola Lin.* Rigân. im ÇKDn.

वक्त्रशोधिन् 1) adj. *den Mund reinigend.* — 2) m. *Citronenbaum* (n. *Citrone*) Garjun. im ÇKDn.

वक्त्रासव m. *Speichel* Taitt. 2, 6, 18.

वक्र adj. s. v. a. वक्तव्य *auszusprechen, zu sagen* ṚV. 3, 26, 9. 8, 9, 2. स वक्रान्यनृता वेदति 3.

वक्रान् (von 1. वक्) n. nach Sây. so v. a. मार्गभूत ṚV. 1, 132, 2.

वक्रारिसत्य adj. nach Sây. *treu den Ordnern der heiligen Reden* d. h. *den* Stotar ṚV. 6, 31, 10.

वक्रय (von 1. वक्) adj. *verkündenswerth, preiswürdig:* प्र तं विवक्मि वक्रयो य ईयं गकृतो मक्मिा मत्यो अस्ति ṚV. 1, 167, 6.

वक्र (von 2. वक्) Uṇâdis. 2, 13. gaṇa न्यङ्क्वादि zu P. 7, 3, 53. n. Siddh. K. 249, *b*, 1. 1) adj. (f. घा) *a) gebogen, krumm, schief* (Gegens. ऋजु) AK. 3, 2, 21. Taitt. 3, 3, 364. H. 1436. an. 2, 432. Med. r. 66. Halâj. 4, 11. धन्वन् AV. 4, 6, 1. 7, 56, 1. वयस: पतौ Çat. Br. 10, 2, 4, 7. 10. 11, 7, 3, 2. Kâṭy. Çr. 17, 1, 16. 7, 21. MBu. 3, 10608. पक्ष Suçr. 1, 25, 21. 27, 15. धनुर्वक्र 94, 1. समिध् Gobhilagṛ. 1, 29. fg. नाडी त्रिवक्रा Suçr. 2, 182, 1. केतकी Spr. 5046. शिखा Vaṇîn. Bṛh. S. 11, 13. 33, 16. 47, 24. वंश Verz. d. Oxf. H. 135, *b*, 22. दारु AK. 2, 2, 14. H. 1009 दारु च वक्रासंस्थम् Halâj. 2, 145. बालेन्दु° Kumâras. 3, 29. Prab. 80, 9. नामा Verz. d. Oxf. H. 51,

b,22. अनामिका मध्यमा च 202,b,8. ध्रुवौ चान्नशशाङ्कवक्रे Varāh. Bṛh. S. 70,8. Spr. 3824. Çik. 9. नख Rāgān. 12,61. नितम्ब Vīcrp. 206. von Haaren sov.a. gelockt Bhāg. P. 1,19,27. 4,21,17. 5,2,14. °गति adj. sich schlängelnd Spr. 342. 3639. Ind. St. 8,368. °गामिन् dass. Harīv. 5774. वक्रं व्रजति Vop. 20,4. °भुवो मृगाः Kathās. 27,156. पन्थाः Megh. 28. यव° vorn gebogen, Bez. eines Blasenraumers Wīsn. 370. Sūçr. 2,36,4 (°वक्त्र gedr.). ग्र° Āçv. Çr. 3,1,17. Varāh. Bṛh. S. 68,51. अति° Verz. d. Oxf. H. 133,b,20. वक्र krumm, schief und zugleich hinterlistig Spr. 4962. fg. Kathās. 40,48. — b) rücklāufig, in rücklāufiger Bewegung begriffen: von Planeten: गति Bhāg. P. 3,17,14. Sūrjas. 2,12. °गते (v. l. °गतौ) यके 8,18. वक्रातिवक्रगमनाद्वक्रक इव यक्रः MBh. 8,711. °ग Varāh. Bṛh. 2,20. Ganitādhj. Upag. 3. 6. वक्रानुवक्रगा यस्राः Sūçr. 1,118,21. मघास्वङ्गारको वक्रः श्रवणे च बृहस्पतिः MBh. 6,81. Ind. St. 10,205. fgg. — c) prosodisch lang (wegen der Gestalt des Längezeichens) Ind. St. 8,215. — d) krumm so v. a. unredlich, hinterlistig, zweideutig: °मति MBh. 3,8442. उभे प्रज्ञे वेदितव्ये सम्यो वक्रा च 12,3686. °धी f. und adj. Bhāg. P. 4,3,18. fg. °वाक्य Çiç. 10,12 (vgl. Sin. D. 66,1). वचस् Spr. 730 (vgl. Th. III, S. 409). ग्रवधृष्टवक्रगा। गिरा Kathās. 17,141. 30,163. संदेश 47,6. Verz. d. Oxf. H. 142,a,10. ग्रवक्रचेतस् Kathās. 5,1. ग्रवक्रग ehrlich verfahrend Kathās. 27,156. वक्र hinterlistig, verschlagen, von Personen Spr. 2669. Sin. D. 215,16. fg. (= वामा). Spr. 4962. fg. Kathās. 40,48; an den drei letzten Stellen zugleich in der Bed. a). वक्र = क्रूर Taik. H. an. Med. — 2) m. a) der Planet Mars H. 116. H. an. Hālā. 1,46. Varāh. Bṛh. S. 104,4. Bṛh. 2,2. 4. 4,13. 9,3. 11,2 u. s. w. Ind. St. 2,261. Horāç. in Z. d. d. m. G. 4,318. der Planet Saturn Taik. Med. — b) N. pr. eines Fürsten der Kārūshā MBh. 2,575. — c) N. pr. eines Rākshasa R. 5,12,13. — d) pl. N. pr. eines Volkes (v. l. für वक्र, VP. 188, N. 62. — e) = रुद्र Dharan. im ÇKDa. — f) = त्रिपुरारि ebend. — g) = पर्पट Rāgān. im ÇKDa. — 3) f. घा a) Bez. eines best. musikalischen Instruments Lāṭj. 4,2,1. — b) (sc. गति) Bez. eines best. Stadiums in der Bahn des Mercurs Varāh. Bṛh. S. 7,15. fg. Ind. St. 10,205. fgg. — 4) n. a) Krümmung eines Flusses AK. 1,2,3,7. Taik. H. 1088. H. an. Med. Çabdâç. Up. 1,5 (nach dem Comm. adj.); vgl. वक्र 12). — b) Bez. eines partiellen Beinbruchs Wīsn. 190. Sūçr. 1,300,19. 301,10. — c) die rücklāufige Bewegung eines Planeten: कवा चाङ्गारको वक्रं श्रेष्ठायाम् MBh. 3,4341. 6,83 (wo श्रवणे zu lesen ist). Harīv. 4237. 9875. Varāh. Bṛh. S. 1,10. 2, S. 6, Z. 17. 6,1. 7,7. 13,21. 47,13. 97,1. Bṛh. 7,11. Golâdhj. 3,10. Ganitādhj. Sphuṭādhj. 44. Ind. St. 2,284. Bhāg. P. 3,22,14. — d) a species of the Anushṭubh metre Wilson; fehlerhaft für वक्त्र. — Vgl. ग्रष्ट°, कवाट°, कु°, त्रिवक्र, दृत्तवक्र (unter दृत्तवक्त्र), परि°, रोधो°, वाक्य.

वक्रकाष्ठ m. Judendorn Rāgān. im ÇKDa.

वक्रकण्टक m. Acacia Catechu Willd. Rāgān. im ÇKDa.

वक्रखड्ग m. ein krummer Säbel Wilson nach Çabdan., ÇKDa. angeblich nach Rāgān.

वक्रगीव m. Kameel (Krummhals) Taik. 2,9,29.

वक्रचञ्चु m. Papagei (Krummschnabel) Çabdan. im ÇKDa.

वक्रता f. nom. abstr. 1) von वक्र 1) a): नासिका वक्रतामेति Mīnāk. P. 43,25. धूलापवल्ली मुसुखी गावमगति वक्रताम् Spr. 2082. — 2) von वक्र 1) b) Sūrjas. 2,34. Ganitādhj. Sphuṭādhj. 41. — 3) das Schiefgehen so v. a. Schlechtgehen, Misslingen: लग्नेशे यदि वक्रो स्यात्तुनः कार्येषु वक्रता Gaṇeçadaiwaǵña im ÇKDa. unter वक्रिन्.

वक्रताल 1) m. v. l. für वक्रनाल Taik. 1,1,123 nach ÇKDa. — 2) f. ई dass. Çabdan. im ÇKDa.

वक्रतु m. N. pr. einer Gottheit Mīnāk. P. 80,6.

वक्रतुण्ड 1) adj. schiefmäulig Bhāg. P. 6,1,28. — 2) m. a) Papagei (Krummschnabel) Çabdan. im ÇKDa. — b) Bein. Ganeça's (wegen seines Elephantenrussels so benannt) Taitt. Ār. 10,1,5. Verz. d. Oxf. H. 79,a, No. 135. °स्तोत्र 299,b,17. वक्रतुण्डाष्टक 132,b, No. 243. Verz. d. Pet. H. No. 63; vgl. वक्रतुण्ड und वघ्रतुण्ड.

वक्रत्व (von वक्र) n. Krummheit und Falschheit Spr. 307. Falschheit und Zweideutigkeit Kathās. 92,12.

वक्रदंष्ट्र m. Eber H. ç. 184 (fälschlich वक्र°).

वक्रदृत्त m. Lesart der ed. Bomb. MBh. 2,577 st. दृत्तवक्र der ed. Calc.

वक्रदल s. वक्रपत्र.

वक्रनक्र m. 1) Papagei. — 2) ein boshafter Mensch खल, पिशुन H. an. 4,378. Med. r. 287.

°वक्रनाल n. Blasinstrument Taik. 1,1,123. — Vgl. वक्रताल und वक्रताल.

वक्रनास 1) adj. eine gebogene Nase —, einen krummen Schnabel habend R. 3,7,6. Spr. 2698. — 2) m. N. pr. eines Rathgebers eines Eulenkönigs Kathās. 62,89. fgg. Pañkat. 173,21.

वक्रनासिक m. Eule (Krummschnabel) Taik. 2,5 14.

वक्रपाद adj. krummbeinig Kathās. 123,164.

वक्रपुच्छ m. Hund (Krummschwanz) Taik. 2,10,6. — Vgl. वक्रलाङ्गूल, वक्रवालधि.

वक्रपुर n. N. pr. einer Stadt Kathās. 107,136.

वक्रपुष्प m. eine best. Pflanze, = वक्र Çabdan. im ÇKDa. Butea frondosa (पलाश) Rāgān. im ÇKDa.

वक्रभणित n. = केकोक्ति Taik. 3,2,7. — Vgl. वक्रोक्ति.

वक्रभाव m. das Gebogensein, Krummheit, das Sichschlängeln: तरुणीगति° Ind. St. 8,368. Schiefheit und zugleich hinterlistiges Wesen, Hinterlist Spr. 3209.

वक्रम m. = ग्रवक्रम Flucht Çabdan. im ÇKDa.

वक्रय m. = ग्र° Preis H. 868.

वक्रलाङ्गूल m. Hund Rāgān. im ÇKDa. — Vgl. वक्रपुच्छ, वक्रवालधि.

वक्रवक्त्र m. Eber Çabdan. im ÇKDa.

वक्रवालधि m. Hund H. 1278, v. l. — Vgl. चक्रवालधि und वक्रपुच्छ.

वक्रशल्या f. ein best. Strauch, = कुटुम्बिनी Rāgān. im ÇKDa.

वक्रशृङ्ग adj. (f. ई) gebogene Hörner habend Colebr. und Lois. zu AK. 2,9,68.

वक्राय n. eine best. Pflanze, = कवाटवक्र Rāyam. im ÇKDa.

1. वक्राङ्ग n. ein gekrümmtes Glied: वेगगम्भीरवक्राङ्गी (नदी) Harīv. 5777. Rāgān-Tan. 6,128 wohl fehlerhaft für वक्राङ्गि, wie die ed. Calc. liest.

2. वक्राङ्ग m. 1) Gans H. 1325; vgl. चक्राङ्ग. — 2) Schlange v. l. für वघ्राङ्ग ÇKDa. u. d. letzten W.

वक्राङ्घ्रि m. *Krummfuss:* तं °संयामे (so ist wohl zu lesen) क्रतम् *in einem Kampfe, bei dem man ihm ein Bein stellte, in einem hinterlistigen Kampfe* Rigà-Tar. ed. Calc. 6,128. वक्राङ्घ्रसंग्रामम् Troyer.

वक्रातप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,352 (VP. 188). चक्रातिः ed. Bomb.

वक्रि adj. *unwahr redend* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वक्रित (von वक्र) adj. 1) *gekrümmt, gebogen:* ईषद्वक्रितकंधर Spr. 1233. — 2) *eine rückläufige Bewegung angetreten habend, in rückläufiger Bewegung seiend* (von einem Planeten) Varàh. Bṛh. S. 6,2. Ind. St. 2,284, N. 1.

वक्रिन् (wie oben) 1) adj. *in rückläufiger Bewegung seiend* (von Planeten) Sûrjas. 2,34. Ind. St. 2,284, N. 1. Gjotistattva im ÇKDa. — 2) m. *ein* Buddha Çabdar. im ÇKDa.

वक्रिम (wie oben) adj. *gekrümmt, gebogen:* ईषद्वक्रिमकंधर Spr. 1233, v. l. wohl fehlerhaft.

वक्रिमन् (wie oben) m. *gaṇa* दृढादि zu P. 5,1,123. 1) *Krummheit, Schiefheit, das Sichschlangeln:* तरणीगति° Ind. St. 8,368. — 2) *Zweideutigkeit* Sâh. D. 40,11. गिराम् Git. 3,15.

वक्रीकर् (वक्र + 1. कर्) *biegen, krümmen:* °कृत *gebogen* Comm. zu Golâdh. 11,33.

वक्रीभू (वक्र + 1. भू) 1) *krumm —, schief werden* Suçr. 1,235,19. Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,23. — 2) *die rückläufige Bewegung antreten* (von Planeten) Nilak. zu MBh. 5,4841.

वक्रेतर (वक्र + इ°) adj. *gerade:* वक्रेतरागैरलकैः so v. a. *nicht gelockt* Ragh. 16,66.

वक्रोक्ति (वक्र + उक्ति) f. 1) *indirecte Ausdrucksweise* Kull. zu M. 3,133. Schol. zu Kap. 1,19. — 2) *ein zweideutiger Ausspruch, Wortspiel, Calembourg, Witzwort* Kâvjâdârç. 125,14. fgg. Sâh. D. 103. 641. 4,20. Kuvalaj. 181,*a*. Pratâpar. 87,*b*,2. Spr. 3233. Kathâs. 55,130. 92,12. 124,135. Râghavapâṇḍ. 1,41. Paṇḍat. 44,19. fg.

वक्रोक्तिजीवित n. Titel eines Werkes: °कार Sâh. D. 4,19. fg. Verz. d. Oxf. H. 210,*a*, No. 493.

वक्रोत्तक 1) m. N. pr. eines Dorfes Kathâs. 76,16. — 2) n. N. pr. einer Stadt Kathâs. 93,3. 25. 30. 108,23.

वक्रोष्ठिका (वक्र + ओष्ठ) f. *ein Lachen mit verzogenen Lippen* H. 297 (fälschlich वक्रोष्टिका).

वंक्य (von 2. वक्) adj. *sich drehend, rollend, volubilis; sich tummelnd:* नृम्णैः RV. 4,19,7. ऊर्गिर्न निर्वेर्वयत वक्या: 10,148,5.

वंक्यान् adj. dass.: क्षार RV. 1,141,7. vom Soma: ग्रमीर्त्रि वक्या रथ्ये यथाजौ 9,91,1. इनौ त इते वंक्षती ग्रभिष्रिया हिरण्ययी वक्रीरा घार्क्षाते 1,144,6. वयो वक्रीरा गौः 6,22,5.

वक्रारी s. u. वक्यान्.

वक्रास m. *ein best. berauschendes Getränk* Suçr. 1,189,15. वक्कस im Rigav. des Nirukta. — Vgl. वल्कस.

वक्, वंक्ति (रोषे, nach Andern संघाते) Dhâtup. 17,11. Vgl. 2. उक्. Im Veda finden sich davon nur die Perfectformen ववक्ष, ववक्तिव, ववक्तुस्, ववक्षे, ववक्षिरे; vgl. zu den u. 2. उक् angeführten Stellen noch RV. 1,64,3. 2,22,3. 24,11. 34,4. 3,7,6. 4,7,11. 8,12,4. fgg. 13,7. 77,5. 10,115,1. Ferner caus. *erstarken lassen, wachsen machen:* घर्कं नव त्राधतो नवतिं च वक्तयम् RV. 10,49,8.

वंक्षण (von वक्) 1) adj. (f. ई) etwa *stärkend, erfrischend:* सरस्वती सरयुः सिन्धुभिर्महो नरीरवसा यतु वक्षणीः RV. 10,64,9. — 2) n. etwa *Stärkung, Erfrischung* (वाक्यानि स्तोत्राणि Sây.): सुते सोमे सुतपाः शक्तमानि राध्यो क्रियास्म वक्षणानि पुत्रैः RV. 6,23,6. — Vgl. वीर°.

वक्षणा (vielleicht von वक्) f. pl. *der hohle Leib, Bauch; die Weichen:* यज्ञेन वक्षणा आ पृणाधम् RV. 1,162,5. 5,42,13. गर्भे माता सुषिते वक्षणासु बिभर्ति 10,27,16. AV. 7,114,1. 9,4,1. 8,16. सा वः प्रजां जनयद्वक्षणाभ्यः 14,2,14. Kauç. 36. der Kuh RV. 3,30,14. 6,72,4. 8,1,17. 10,49,4. der Berge 1,32,1. des Himmels 134,4. *Bett der Flüsse* (daher वक्षणाः unter den नदीनामानि Naigh. 1,13) 3,33,12; hierher nach Sây. auch 10,28,5. — Dunkel ist नू मन्वान एषां देवो अग्का न वक्षणाः (= वक्षणेन Sây.) RV. 5,52,15. — वक्षण n. = 2. वक्षन् Çabdar. im ÇKDa. Vgl. लोमशवक्षण, 2. वक्षस् und वक्षण.

वक्षणि (von वक्) adj. etwa *stärkend:* इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः RV. 8,32,4.

वक्षणेस्थ adj. RV. 5,19,5 nach Sây. so v. a. वक्ष्यः स्थितः.

वक्षथ (von वक्) m. *das Erstarken, Kräftigung, Wachsthum, Zunahme:* यन्नूनेन वृक्ता वक्षथेन RV. 4,5,1. सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषाम् 7,33,8. 10,99,12. चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथः 115,1.

1. वक्षस् (von वक्) Uṇâdis. 4,220. 1) n. vielleicht *Stärke:* यत्किमिन्द्रो रोधो वक्षो अर्वतः *ich* Indra *bin Schutzwehr und Kraft des* Ath. RV. 10,48,2. — 2) m. *Ochs* Uggval.

2. वक्षस् (wie वक्षणा) Uṇâdis. 4,219. n. (auch pl.) *der obere Theil des Leibes, Brust* Nir. 4,16. AK. 2,6,2,29. H. 602. Halâj. 2,372. 388. 398. 1,27. वक्षस्सु रुक्मौ घर्धि येतिरे शुभे RV. 1,64,4. 166,10. 5,54,11. 7,56,13. ग्रयोर्णुते वक्षः 1,92,4. ग्राविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती 123,10. 124,4. 6,64,2. des Opferthiers Âit. Br. 2,6. 7,1. Çat. Br. 3,8,2,17. 25. des Pferdes MBh. 3,2787. — R. 2,96,24. 3,34,30. प्रणिवक्षतोरुकटीशिरोधर mit unregelmässiger Contraction 5,42,20. Suçr. 1,49,2. 86,15. 100,13. 234,8. Ragh. 3,61. 12,77. Çâk. 161. Varâh. Bṛh. S. 53,100. 58,116. Bhâg. P. 3,21,11. वक्षःस्थशुक्लवर्णादक्षिणावर्तलोमावली Weber, Kṛishṇaj. 272. वक्षःस्थविषदुःसह Kathâs. 19,47. Am Ende eines adj. comp.: पीन° R. 1,1,13. विपुल° 2,30,2. पृथु° 32,1. पृथुवक्षोजितनेत्रः d. i. पृथुवक्षा ग्रजित° MBh. 1,2506. पृथुपीन° Varâh. Bṛh. S. 69,14. विशाल° R. 4,2,11. कपाट° Ragh. 3,34. विन्ध्यतटव्यूढ° Râgat. 3,240. श्रीवत्साङ्कित° Varâh. Bṛh. S. 58,31. श्रीवत्स° dass. MBh. 3,13004. Weber, Kṛishṇaj. 274. 289. लक्ष्मीकौस्तुभ° Verz. d. Oxf. H. 220,*a*, No. 826. यन्नवान्समवलाः स्यात्पीनैर्वक्षोभिर्दुर्नतैः । वक्षोभिर्विषमैर्नीरन्ध्रैः Gîrvâṇa-P. 66 im ÇKDa. वक्षःस्थल Hariv. 13673. R. 1,45,43. Spr. 3167. Prasâd. 116,2. Bhâg. P. 2,7,25. Paṇḍar. 1,3,15. 2,4,5. Paṇḍat. 239,4.5. — Vgl. नि°, मरु°.

वक्षी f. nach Sây. *Flamme* (von वक्): ता ग्रस्य सन्धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः RV. 5,19,5.

वक्षु *der Oxus:* वक्ष्वाम्रिताः Varâh. Bṛh. S. 32,32, v. l. Ind. St. 10,212. Hiouen-thsang 1,23. 2,195. 283. Vie de Hiouen-thsang 61. 272. — Vgl. वङ्कु.

वक्षोयोव m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,252.

वक्षोज m. *die weibliche Brust* H. 603, Sch. Çabdan. im ÇKDa. du. Spr. 2696. Sin. D. 40, 4. 307, 7. — Vgl. उरोज, उरसिज, वक्षोरुह.

वक्षोमण्डलिन् m. (sc. हस्त) Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanz* Verz. d. Oxf. H. 202, *a*, 28.

वक्षोरुह m. = वक्षोज Daçar. 66, 8.

वक्षोरुह m. desgl. Tair. 2, 6, 26. Halâj. 2, 371.

वक्ष्यमाणत्व n. nom. abstr. von वक्ष्यमाण partic. fut. pass. von वच् P. 1, 2, 48, Sch.

वक्ष्, वंक्षति (गतौ) Dhâtup. 5, 16. — Vgl. वङ्क्.

वगला f. = वगलामुखी ÇKDa. nach einem Tantra.

वगलामुखी f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 90, *a*, 20. 23. 28. 94, *a*, 1. 2. *b*, 1. 96, *a*, 12. 15. *b*, 10. 99, *b*, 29. 30 (वगुला°).

वगाङ् m. = घवगाङ् Vop. 3, 171.

वग्नु (von वच्, Uṇâdis. 3, 33. m. *Ton, Ruf, Zuruf* Naigh. 1, 11. यर्वाचीनं नु ते मनो यावा कणोतु वग्नुना ṚV. 1, 84, 3. TBa. 3, 7, 9, 1. der Frösche ṚV. 7, 103, 2. 9, 14, 6. 30, 2. इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ 97, 13. 10, 3, 4. वाया पतिं वदति वग्नुना मुमत् 32, 3. der Würfel TBa. 3, 7, 12, 3. SV. II, 4, 2, 2. adj. = वाचाल Uṇâdis.

वग्वन् adj. etwa *schwatzhaft* ṚV. 10, 32, 2.

वग्वन् m. *Ton, Geräusch, Ruf* ṚV. 9, 3, 5.

वंघा f. *ein best. schädliches Thier* AV. 9, 2, 22. °पति 5, 30, 2.

वङ्क s. 2. वक्.

वङ्क (von वञ्च्) : वङ्कः पर्याणभागे ना नदीपात्रे च भङ्गुरे Med. k. 33. = नदीवक्र (vgl. नदीवङ्क) Buan. zu AK. nach ÇKDa. वङ्का f. = पर्याणस्यायभागः Tair. 2, 8, 17. — Vgl. कपोतवङ्का.

वङ्कक m. N. pr. eines Berges Kathâs. 48, 69.

वङ्कर m. = वङ्क *Biegung eines Flusses* Çabdan. im ÇKDa. u. नदीवङ्क.

वङ्कसेन m. *ein best. Baum*, = वक Tair. 2, 4, 29 (वङ्गसेन ÇKDa. nach ders.-Aut.). Med. t. 83. n. 15. — Vgl. वङ्गसेन.

वङ्कालकाचार्य m. N. pr. eines Astronomen (der in Prâkrit schrieb) Utpala zu Varâh. Bṛh. 13, 1.

वङ्काला f. N. pr. einer Oertlichkeit Râga-Tar. 3, 180.

वङ्किणी f. *eine best. Pflanze*, = कोलनासिका Hir. 223.

वङ्किल m. *Dorn* Tair. 2, 4, 5.

वङ्कु (von वञ्च् adj. *sich tummelnd* (gewöhnlich durch वक्रगामिन् erklärt) : इन्द्रो वङ्कू वङ्कुतराधि तिष्ठति ṚV. 1, 31, 11. Rudra 114, 1. यो वृणाग्वङ्कुराया (nach Sây. = वनगामिन् पुरोयम् 5, 43, 6. वङ्कू वातस्य पर्णिनौ 8, 1, 11.

वङ्क MBh. 2, 1846 fehlerhafte Lesart für वङ्गु: die ed. Bomb. liest वाल्हीचीनममुद्रवम् st. वङ्गनीरनिवासिनः.

वङ्क्य (von वञ्च्) adj. *biegsam*: काष्ठ P. 7, 3, 68, Sch. (angeblich = कुटिल). Vop. 26, 8.

वङ्क्रि (wie oben) Uṇâdis. 4, 66. m. f. i) *Rippe (gebogen)*, H. 627. Comm. zu Uṇ. 4, 67. vierunddreissig beim Ross ṚV. 1, 162, 18. sechsundzwanzig beim Rind Ait. Br. 2, 6. Çat. Br. 13, 3, 4, 18. Çâṅkh. Çr. 5, 17, 6. 16, 3, 24. वङ्क्री Schol. वानपार्श्ववङ्क्रिषु Bâlar. P. 5, 23, 6. — 2) = गृहदारु *ein rippenförmiger Balken am Hause, Rippe eines Daches* u. s. w. — 3) *ein best. musikalisches Instrument* Uṇâdis.

वङ्गण m. *Leisten, Weiche* AK. 2, 6, 2, 24. H. 613. Halâj. 2, 368. Jîv. 3, 97. Sṛçr. 1, 13, 20. 66, 13. 100, 13. चतुर्दशास्थां संघातः । तयोः त्रयो गुल्यक्षानुवङ्गणेषु 338, 19. °संधि 290, 7. 2, 112, 19. 212, 6 (Çârîr. Saṅh. 3, 5, 23). 463, 5. 313, 15. Varâh. Bṛh. S. 61, 16 (f. घा; vgl. jedoch v. l.). 18. — Vgl. वङ्गणा.

वङ्गु *der Oxus* MBh. 2, 1840. 13, 7648. Bâlar. P. 5, 17, 7 nach der Lesart im ÇKDa. (die uns zu Gebote stehenden Ausgg. चक्षुः; nach dem Comm. ist चतुस् das Thoma). Mâlav. P. 37, 18 रङ्गु gedr.). 39, 15. Nach Çabdam. im ÇKDa. ein Zufluss der Gaṅgâ. — Vgl. वक्षु.

वङ्ग्, वंङ्गति (गतौ) Dhâtup. 5, 17. — Vgl. वङ्क्.

वङ्गर 1) adj: वपुः सुकोमलं चालं (= चारु) नातिदीर्घं न वङ्गरम् Pâṇ. 1, 14, 60. — 2) m. N. pr. eines Mannes: °भाण्डीरघाः *die Nachkommen des* V. *und* Bh. gaṇa तिककितवादि zu P. 2, 4, 63.

वङ्ग्, वंङ्गति (गतौ. वञ्चे Vop.) Dhâtup. 5, 39.

वङ्ग 1) m. N. pr. eines Volkes (pl.) und des von ihm bewohnten Gebietes (sg.), *das eigentliche Bengalen* H. 937. an. 2, 48. Med. g. 22 (lies वङ्ग st. रङ्ग). LIA. I, 143, N. 1. gaṇa गहादि zu P. 4, 2, 138. P. 1, 2, 31, Schol. Vop. 7, 14. AV. Paric. in Ind. St. 10, 319. Weber, Nax. 2, 392. MBh. 1, 4220 (sg.). 5, 1986. 6, 353 (VP. 188). Hariv. 1602. 4957. 6607. 6631. 6650. 9147. 11201. 12831. R. 4, 40, 25. Ragu. 4, 36. Varâh. Bṛh. S. 3, 72. fg. 79. 9, 10. 10, 14. 14, 8. 16, 1. 17, 18. 32, 18. Mâlav. P. 38, 16. Prab. 87, 19. Verz. d. Oxf. H. 102, *a*, No. 138. 217, *b*, 19. 238, *b*, 28. 352, *b*, 9. Kathâs. 1, 6. 12, 8. 25, 1. 41, 2. 46, 7. 56, 15. °लिपि Lalit. ed. Calc. 143, 17. Der Name des Volkes wird auf einen gleichnamigen Sohn der Sudeshṇâ und des Dîrghatamas (Dîrghatapas) zurückgeführt MBh. 1, 4219. fg. Hariv. 1694. fg. VP. 444. Bâlar. P. 9, 23, 4. — 2) *Baumwolle*, m. H. an., n. Med. — 3) *Solanum Melongena*, m. H. an., n. Tair. 2, 4, 28. Med. — 4) n. *Zinn* (रङ्ग, त्रपु) AK. 2, 9, 106. H. 1042. H. an. Med. Halâj. 2, 17. *Blei* H. an. Med. — Verz. d. B. H. No. 969. 971. Verz. d. Oxf. H. 320, *b*, No. 760. — Vgl. अधि°, कु°, चीन°, वाङ्ग, वाङ्गक.

वङ्गत्र n. 1) *Messing* H. 1049. — 2) *Mennig* (सिन्दूर) Ratnam. im ÇKDa.

वङ्गनीवन n. *Silber* H. c. 160.

वङ्गन m. = वङ्ग 3) Çabdar. im ÇKDa.

वङ्गला f. Bez. einer Râgiṇî Halâj. im ÇKDa. वङ्गुला Wilson nach ders. Aut. — Vgl. भङ्गाली.

वङ्गपुलत्रत्र n. *Messing* ÇKDa. und Wilson nach H. 1049, wo aber zwei Namen: वङ्गत्र und पुलत्रत्र gemeint sind.

वङ्गसेन m. 1) = वङ्गसेन Med. j. 71. nach ÇKDa. soll auch Tair. 2, 4, 29 so gelesen werden, während die gedr. Ausg. वङ्ग° hat. — 2) N. pr. eines medicinischen Autors Verz. d. B. H. No. 974. Verz. d. Oxf. H. 311, *b*, 38.

वङ्गसेनक m. = वङ्गसेन 1) Ratnam. im ÇKDa.

वङ्गारि m. *Auripigment (ein Feind des Zinns oder Bleis)* H. 1039.

वङ्गाल 1) m. N. eines Sohnes des Râga Bhairava Saṅgîtaratn. im ÇKDa. — 2) f. ई N. der Gattin des Râga Bhairava Saṅgîtadâm. und Saṅgîtadarpaṇa im ÇKDa.

वङ्गालिका f. = वङ्गाली Saṅgîtaratnâkara im ÇKDa.

वङ्गिरि m. N. pr. eines Fürsten Bâlar. P. 12, 1, 30.

वङ्गीय adj. von वङ्ग 1) gaṇa गहादि zu P. 4, 2, 138.

वङ्गुला s. वङ्गला.

वैङ्गद m. N. eines Dämons ṚV. 1,53,9.

वङ्ग m. *ein best. Baum* Kauç. 7.

वच्, विवक्ति ved. (Schol. zu P. 2,4,76. 7,4,73), विवकि ṚV. 1,167, 7. 3,37,4. 7,67,1. विवक्तन: später वक्ति (परिभाषणे) Dhâtup. 24,55. Vop. 8,91. zu belegen nur der sg. des praes.: वक्ति, वति, वच्मि; Sidd. K. 134,a,11. fg. werden noch वक्तम्, वग्धि, वच्यात् und उच्यात् aufgeführt. perf. उवाच (प्र ववाच ṚV. 1,67,3), उवक्थ, ऊचिम, ऊचुस् P. 6,1,15. 17. Vop. 8,124. 9,23. ऊचे Vop. 9,56. ऊचिषे (प्र ववर्त्ते ṚV. 7, 100,6), ऊचिवंस्*); aor. अवोचत् P. 3,1,52. 7,4,20. Vop. 8,91. 125. 9, 56. वोचसि Bhâg. P. 9,14,12. वोचास 3,14,21. प्रवोचस् partic. 4,6,37. वोचाम, वोचेस्, वोचेम u. s. w., वोच, वोचतु, वोचत, अवोचत, अवोचाव, वोचे, वोचस, वोचेय, वोचेमहि: वक्ष्यति Kâr. 2 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10. वक्ष्यते, अवक्ष्यत् Nir. 3,7. वक्ता (s. वक्तृ): infin. वक्तुम्, वक्तवे ṚV. 7, 31,5. वक्तोस् Çat. Br. 1,5,2,10. प्रवोचे: उक्त्वा, उच्य MBh. 8,4574. pass. उच्यते, उच्यात्ते P. 3,4,96, Sch. अवाचि, उक्त. 1) *sagen, sprechen; nennen; hersagen, ansagen, verkünden:* यास्य ज्ञानत्तो नाम विहिवक्तन ṚV. 1,156,3. 166,1. सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः 4,33,6. यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते 5, 44,6. पितरं रुद्रं वोचत 52,16. 6,35,4. वक्ष्यतीवेदा गनीगन्ति कर्णम् 75, 3. 7,82,2. 87,4. मा त्वा वोचन्नराधसं जनासः AV. 5,11,7. 7,83,2. यावा यत्र मधुपुड्च्यते वरूत्र् wo *lauter Ruf erschallt* ṚV. 10,64,13. 11,6. अवंस् 1,40,6. देवनृष्टाच्यते भामिने गीः 77,1. नमः 31,11. स्तुतम् 4,5,11. स्तोत्रम् 6,34,5. 7,68,4. 9,97,7. यदुब्रवक्यानृतं किल्बिषं AV. 1,10,3. तं केतम् (उद्गीथम्) — उदृशाणिऽत्ल्यायोक्ता Kâṭh. Up. 1,9,3. mit doppeltem acc.: अग्निं मरुत्सामवीचाम सुवृक्तिम् ṚV. 10,80,7. इति मा भगवानवोचत् *hat mir gesagt* Kâṭh. Up. 1,11,4. ब्रूयादिति वोचेरिति वा Çat. Br. 4,5,9,10. 11,8,4,2. दुर्गे वै रुद्रोवोचत्: *du hast dich genannt* oder *von dir gesagt* TS. 5,2,4,2. 3. यद्य नु किमनुशिष्टो ऽवोचथाः *wie konntest du dich für unterrichtet ausgeben?* Kâṭh. Up. 5,3,4. — वैराग्यादिव वक्ति Spr. 3990. वच्मि 3739. वक्ति सामर्थ्यम् 1873. Kathâs. 4,77. Z. d. d. m. G. 14,370,13. वागुवाचाशरीरिणी R. 1,1,81. Ved. in LA. (III) 9,15. परस्परमथोचतुः MBh. 1,7725. इत्यूचे Prab. 36,7. Bhâg. P. 9,14,11. इत्यूचिरे Rîgâ-Tar. 1,166. LA. (III) 90,20. इत्यूचिवान् Kathâs. 18,55. 27,30. अवोचम् R. 4,9,13. Prab. 105,19. मैवं वोचः nach इति चेत् *so sollst du nicht reden* so v. a. *eine solche Behauptung wäre unrichtig* Sarvadarçanas. 7,15. 103,9. 127,7. 164,3. इत्यवोचत Kathâs. 32,26. वक्ष्यामि R. 1,1,9. Çiç. 22,21. वक्ष्ये MBh. 13,1119. R. 1,66,18. किमथ वोच्यते pass. impers. Kathâs. 18,308. अवोचि desgl. Daçak. 10,2. वक्तुम् AK. 3,1,38. वक्तुकाम Suçr. 1,115,20. वक्तुमनस् Pañkat. 77,2. उक्तवत् MBh. 3,2726. Kathâs. 18,272. 349. 40,6. पुनरुवाच *antwortete* Hit. 8,6. — अनुक्तं तया वच्मि MBh. 3,14025. सत्यं ब्रुवा वच्मि Spr. 3127. Kathâs. 18,373. वक्ति न स्वेच्छया किंचित् Spr. 410. मात्मत्सकाशे पुरुषाण्यवोचः MBh. 3,15689. प्रियाणि वक्ति Vaitân. Bhg. S. 78,3. उक्तानृतानि M. 4,145. देशधर्मान् u. s. w.

*) dat. ऊर्वये glauben wir zu उच् ziehen zu müssen nicht bloss in der dort bereits angeführten, sondern auch in folgender Stelle: तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत् *welchen der dazu Gewöhnte* d. h. *Geübte preisen soll durch die Generationen hin* ṚV. 1,103,1. शास्त्रे ऽस्मिन्नुक्तवान्मनुः 1,118. fg. 9,1. MBh. 2,1769. R. 2,30,4. 90,16. Çiç. 39. Rîgâ-Tar. 3,63. बहूनां मतं वक्ष्ये Vaitân. Bhg. S. 9,7. 11,28. 21,5. MBh. 14,1559. R. 1,58,19. Ragh. 1,9. Bhâg. P. 1,7,12. 3,28,1. Pañkat. 37,23. 77,14. उवाच वचः Ragh. 3,25. क एवं वक्ष्यते वाक्यम् R. 5,64,19. धनीतिर्नयशास्त्रस्य विस्तरेण वयोच्यताम् 1,8,29. Hit. 43,14. यो वा षड्विरसां सत्त्वे हितीयमरुहचिवान् *berichten über* Bhâg. P. 3,3,1. कथां वक्तुं प्रचक्रमे Kathâs. 21,53. सः पुण्ययोगं नियतं वक्ष्यते *verkünden* R. Gorr. 2,3,21. ऐन्द्रीं दिशि शास्तायां विरूपाक्षमभिधागमं वक्ति (ein Vogel) Vaitân. Bhg. S. 87,1. न तु वक्तुं समर्थो ऽहं स्वयमेवात्मनो गुणान् R. 4,7,3. तासां ह्रपं भारत नोत शक्यम् — वक्तुम् *beschreiben, in Worte fassen* MBh. 5,7207. वक्ष्यत्र तूत्तिकम् *erzählen* von Kathâs. 61,28. वक्ति न च प्रश्नमेकमपि पृष्टः *beantworten* Vaitân. Bhg. S. 2,1. संयोगादिर्द्विरुच्यते *wird zwei Mal ausgesprochen* d. i. *verdoppelt* VS. Prât. 4,97. पुनरुच्यते *wird wiederholt* Kull. zu M. 4,32. pass. *genannt werden, heissen, gelten für:* एतद्द्वादशमाब्दं देवानां युगमुच्यते M. 1,71. 77. 79. 86. Bhag. 2,25. P. 4,2,10, Sch. वात्तासौत्युच्यते बुधैः M. 3,109. MBh. 3, 16670. Çiç. 67,23. P. 6,2,66, Sch. statt des nom. auch der loc.: क्षेत्रे वाराहमुच्यते Trik. 2,9,2. *gelten:* एवामन्यतमाभावे दिव्यान्यतममुच्यते Jâjñ. 2,23. — *erzählen von*, mit abl. st. acc.: डुक्रिञः शैलराजस्य व्येष्ठपुत्रा वक्तुमर्हसि R. 1,37,2. — ङकारं ब्राह्मणास्योक्ता वेकारं च गरीयसः *sagen zu* M. 11,204. धर्मस्य परमं गुह्यं ममेदं सर्वमुक्तवान् *hat mir verkündet* 12, 117. 1,2. यानि यानि च कर्माणि तस्य वक्ष्यामहे वयम् *angeben* MBh. 4, 18. Rîgâ-Tar. 4,344. संतेषेणैव ते वक्ष्ये यन्मां पृच्छसि Harîv. 876. मा ब्रुवाधि तदेवोचत Kathâs. 19,34. — स तानुवाच *der sprach zu ihnen* M. 3, 8. MBh. 2,505. 3,2491. 5,5956. Harîv. 8933. R. 1,4,14. 2,40,11. 45. Ragh. 2,39. 3,43. Çiç. 13,22. 30,13. वक्तुं धीरस्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः Megh. 96. Spr. 632. Vaitân. Bhg. S. 43,1. Kathâs. 18,266. 23, 29. 26,181. 43,98. 46,203. Verz. d. Oxf. H. 235,a,24. Pañkat. 5,1. मदचनादुच्यतां सारथिः। सत्राणामनं रथमुपरुधायेति Çiç. 28,18. 30,15. Vikr. 81,5. acc. mit प्रति statt des einfachen acc.: कयापि संनिकृष्टप्रच्छन्नकामुकं प्रत्युच्यते Sâh. D. 20,15. तं प्रत्युक्तवती Pañkat. 186,1. — इदमूचुर्मरुत्मानम् *sprachen dieses zu* — M. 3,1. Bhag. 2,1. MBh. 1,3901. 5961. 3,2142. 2213. 2827. 5,6082. 7396. 7,6398. R. 1,1,80. 60,23. R. Gorr. 2,57,19. Ragh. 11,91. Pañkat. ed. orn. 2,5. तेनोच्यमानः — केतुमद्भिः R. 3,33,20. — उक्त a) *gesagt, gesprochen, besprochen, erwähnt* AK. 3,2,37. यथोक्तं पुरस्तात् Âçv. Grihj. 1,23,1. तदुक्तम् Kir. Ça. 4,3,15. उक्तं च यतः Pañkat. 32,12. 68,1. Ved. in LA. (III) 2,11. Kathâs. 4,65. अनुप्रस्रेत्युक्ते Kâty. Ça. 5,9,29. शंयोरुक्ते Çânkh. Ça. 5,20,7. एवमुक्ते नैषधेन MBh. 3,2137. Bhâg. P. 6,1,37. अनुक्तेनापि *auch wenn es nicht gesagt worden wäre* R. 3,14,21. यथोक्तेन Vikr. 29,19. सामेडितं द्विरुक्तम् AK. 1,1,5,12. अनृतं नोक्तपूर्वं मे R. 1,58,19. 4,6,22. एतदुक्तं द्विजानां भक्ष्याभक्ष्यमशेषतः M. 5,26. वेदोक्तमायुः 1,84. Kir. Ça. 18,6,7. भस्मनाद्भिर्मृदा चैव शुद्धिरुक्ता मनीषिभिः *angegeben, gelehrt* M. 5,111. उक्तविप्रेषु *erwähnt, genannt* 3,111. AK. 1,2,2,42. Vaitân. Bhg. S. 48, 38. P. 1,1,32, Sch. तस्मान्मेध्यतमं तस्य मूलमुक्तं स्वयंभुवा *erklärt für* M. 1,92. 2,230. उक्तो भवति यः पूर्वं गुणवानिति संसदि Spr. 1834, v. l. सा मारिष उक्तः *genannt* Vaitân. Bhg. S. 88,9. उक्तो ऽलंकारणी *besprochen* Kathâs. 61,28. एकोत्पलेन राज्ञा मद्यौ नीलोत्पलेनोक्तः *gemeint*

Vaish. Bṛh. S. 29, 9. n. *Wort, Rede* ÁV. 1, 30, 2. ṚV. 10, 27, 10. 125, 4. प्रतिकूलोक्तेः Spr. 1525. — *b) angeredet, zu dem gesagt worden ist:* स ऐन्द्रेण उक्त आस *ihm war von* Indra *gesagt worden* Śat. Br. 14, 1, 1, 19. AV. 12, 1, 55. M. 1, 60. 2, 193. देवोक्तस्य संमदि 8, 52. MBh. 1, 6179. 3, 2102. R. 1, 8, 2. Çik. 35. mit acc.: इत्युक्ता सिन्धुराजेन वाक्यं हृदयकम्पनम् MBh. 3, 15636. विप्रियमुक्तस्ते: R. 2, 71, 30. Spr. 1724, v. l. Kathās. 18, 247. धर्ष्युक्त *aufgefordert von* M. 8, 62. अनुक्त *unaufgefordert* Kathās. 18, 117. — 2) *Jmd Vorwürfe machen, seinen Unwillen gegen Jmd aussprechen;* mit acc. der Person Harıv. 5268. R. 3, 67, 20. 22. 4, 19, 21. — Vgl. अनुक्त, उक्त fgg., उरुक्त, पुनरुक्त, पुनरुक्ति.

— caus. वाचयति 1) *zu sagen —, zu sprechen veranlassen, sagen —, hersagen —, aussprechen lassen* Pāṇ. Gaṇ. 2, 2. वाच्यमानो ऽपि न ब्रूते Bhāg. P. 3, 30, 18. यतवाचं वाचयति ताऽपत्ति न वक्ति चेत् 11, 23, 36. एनमयं शान्तिं वाचयति Ait. Br. 8, 6. Çat. Br. 3, 1, 3, 24. 3, 8, 11. 5, 1, 5, 17. Kauç. 10. 11. 17. 43. ब्राह्मणान्गोत्रयित्वा वेदसमाप्तिं वाचयीत *für sich erklären lassen* Āçv. Gṛh. 1, 22, 18. 2, 9, 9. स्वस्त्ययनम् 3, 13. 4, 6, 19. वाचयामास रामस्य वने स्वस्त्ययनक्रियाम् R. 2, 25, 28. ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् AV. Paric. in Ind. St. 3, 19, N. 1. ब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्य MBh. 1, 6976. 7936. 15, 31. R. 2, 25, 28. स्वस्तिवाचितेषु ब्राह्मणेषु MBh. 3, 12313. वाचयित्वा पुण्याहम् 2, 1240. द्विजातीन्वाच्य पुण्याहं स्वस्ति चैव 3, 7100. मङ्गलम् Bhāg. P. 1, 12, 13. 10, 33, 10. आशिषः 6, 14, 33. आशिषं वाच्यमानो गुरुराशिषं प्रयुङ्क्ते P. 8, 2, 83, Sch. वाचयित्वा ततः स्वस्ति प्रयुक्ताशीर्द्विजातिभिः R. 6, 19, 47. mit Ergänzung von स्वस्ति oder eines ähnlichen acc. Jāṭ. 1, 243 (वाच्यताम् impers.). वाचयित्वा द्विजश्रेष्ठान् MBh. 3, 788. 16644. 8, 391. 14, 2037. R. 2, 6, 7 (3, 7 Gorr.). Mārk. P. 37, 21. Verz. d. Oxf. H. 31, *a*, 11. 15. Bhaṭṭ. 17, 1. — 2) (etwas Geschriebenes *reden lassen*) *lesen* Harıv. 1. 16161. Mṛicch. 42, 5. Çik. 17, 4, v. l. 37, 15. Viṣn. 26, 7. Milav. 70, 21. Kathās. 5, 69. 8, 19. 12, 93. 44, 188. 161. 56, 90. 65, 178. 102, 134. 124, 98. fg. Rāja-Tar. 2, 89. 3, 208. 235. 272. 323. 4, 576. 6, 30. 38. Mārk. P. 37, 22. Prab. 33, 11. 49, 8. Verz. d. Oxf. H. 12, *a*, 2 v. u. पदं मिथ्या वाचयति P. 1, 3, 71, Sch. — 3) *sagen, berichten* Daśkum. 34, 25 (परिभाषणे, v. l. संदेशे). वाचयीयमवोचत् Bhaṭṭ. 6, 46. — 4) *zusagen, versprechen:* ज्ञातकानां सकाशस्य स्वर्णनिष्कानवाचयत् (अथो दैवो ed. Bomb.) MBh. 7, 4352.

— desid. 1) *zu sprechen —, herzusagen —, zu verkündigen beabsichtigen:* तं विवक्षन्नगालक्ष्य MBh. 3, 12609. 4, 934. R. 4, 27, 10. Bhāg. P. 4, 9, 4. पुनर्विवक्षन्यदम् ṚV. Pāṛ. 11, 22. 14, 29. विवक्षता दोषम् Kumāras. 5, 81. Pāṇ. 3, 7, 3. Bhāg. P. 1, 5, 14. विवक्षमाणो भगवद्विभूतीः 3, 8, 8. विवक्षितं कानुक्रमनुतापं ज्ञनयति Çik. 38, 7. Milav. 21, 21. Bhaṭṭ. 8, 17. ब्रूहि यत्ते विवक्षितम् MBh. 5, 2585. 7481. R. 1, 55, 14 (56, 14 Gorr.). विवक्षितार्थं मे ब्रूहि 7, 39, 2, 2. वचो विवक्षितम् Rāja-Tar. 5, 481. — 2) pass. *gemeint sein:* शब्दानुशासनशब्देन च पाणिनिप्रणीतं व्याकरणशास्त्रं विवक्ष्यते Sarvadarç. 135, 10. fg. 87, 11. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 81. विवक्षित *was man im Sinne hat, gemeint, beabsichtigt:* शीघ्रमुक्ता यथाकामं यत्ते कार्यं विवक्षितम् MBh. 4, 332. R. 5, 15, 2. मद्यं चक्रुर्विवक्षितम् MBh. 6, 1405. न मे माया विवक्षिता 12, 3314. विदितं मम राजेन्द्र यत्ते हृदि विवक्षितम् 15, 781. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 268. Kull. zu M. 7, 33. 8, 317. Sarvadarç. 116, 20. 127, 4. 10. 136, 7. Schol. zu P. 1, 4, 34. 2, 4, 49. 5, 1, 12. Schol. zu Kāç. 1, 93. अविवक्षित *nicht ausdrücklich gemeint:* यथादानादिविशेषकथाभिरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात् Schol. zu P. 1, 4, 51. *was nicht zu urgiren ist, unwesentlich, worauf es nicht weiter ankommt* Çāṅk. zu Kaṭh. Up. S. 30. Schol. zu P. 1, 3, 20. 2, 3, 65. 3, 2, 109. Sāh. D. 9, 17. Comm. zu Nyāyas. 1, 53. विवक्षितत्व n. *das Gemeintsein* Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 268. Sarvadarç. 103, 10. अकारस्य विवक्षितत्वात् *so v. a. weil das* अ *wesentlich ist, in bestimmter Absicht gebraucht worden ist* Schol. zu P. 3, 2, 61. — 3) विवक्षित *in naher Beziehung zu Jmd stehend, zu Jmd haltend:* ततस्तान्भेदयित्वा तु परस्परविवक्षितान् (= बोधुमिष्टान् Nīlak.) MBh. 12, 3312. तमाज्ञाय प्रत्यनीकविवक्षितम् (प्रत्यनीका देवास्ते विवक्षिता ब्रह्मं प्रायणीया इत्यभिप्रेतं यस्य तत्तथाभूतं ज्ञात्वा प्रत्यनीकानां विवक्षितमिति वा Comm.) Bhāg. P. 3, 18, 26. विवक्षितांश्च द्विरदेन्द्रमुख्यांस्तुरंगमानपि *so v. a. Lieblingselephanten und Lieblingspferde* Kām. Nītis. 13, 48. — Vgl. विवक्षा fg.

— अवक्ष *herbeirufen, begrüssen, einladen:* अवक्षी वोचेय वसुनीतिमग्नेः ṚV. 1, 122, 5. अवक्षी देवाँ ऊचिषे 3, 22, 3. अवक्षी विवक्ति रोदसी 57, 4. 4, 1, 19. 6, 2, 11. 51, 3. अवक्षी सूनुर्न पितरा विवक्ति 7, 67, 1. 72, 3. 8, 64, 2. — Vgl. अवक्षावाक, अवक्षोक्ति.

— अति 1) *Jmd tadeln, Jmd Vorwürfe machen:* यथा मां नातिवोचत्ति (नातिरो ed. Bomb.) Bhāg. P. ed. Bomb. 3, 14, 21. — 2) *Jmd über die Gebühr tadeln oder loben:* यो नात्युक्तः प्राह्व ब्रूतं प्रियं वा Spr. 4906. — Vgl. अतिवक्तृ (auch in den Nachträgen), अत्युक्त, अत्युक्ति.

— अधि *sprechen —, hilfreich eintreten für* (dat.): अधि वोचा नु सुन्वते ṚV. 1, 132, 1. 2, 27, 6. 7, 83, 2. 8, 20, 26. ते नस्त्राधं ते ऽवत त उ नो अधि वोचत 30, 3. 48, 14. 56, 6. 10, 63, 11. VS. 6, 33. अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् 16, 5. — Vgl. अधिवक्तृ, अधिवाक.

— अनु 1) *aufsagen* (Opfergebete u. s. w.) *für Jmd* (dat. gen.), *die Opfereinladung an Jmd richten:* दधन्वे वा यदीमनु वोचद्ब्रह्माणि ṚV. 2, 3, 3. Ait. Br. 1, 12. fg. प्रजापतौ वै स्वयं क्रतौ प्रातरनुवाकमनुवक्ष्यत्युभये देवासुरा यज्ञमुपावसन्नस्मभ्यमनुवक्ष्यत्यस्मभ्यमिति स वै देवेभ्य एवान्वब्रवीत् 2, 15. 5, 34. 3, 45. 6, 33. TS. 1, 6, 10, 4. TBr. 3, 3, 9, 6. Çat. Br. 1, 5, 2, 16. सत्यम् 6, 2, 27. 3, 9, 3, 7. अन्वेवैतदुच्यते नेनु क्रूयते 1, 4, 3. Āçv. Çr. 1, 2, 1. येषां द्विजानां सावित्री नानूच्येत यथाविधि M. 11, 191. — 2) *Jmd* (acc.) *mit einem Spruche ansprechen:* अनूक्त Kaṭh. 47. fg. — 3) *Jmd Etwas aufsagen* so v. a. *lehren, mittheilen* Çat. Br. 2, 3, 4, 31. Bhāg. P. 1, 5, 30. अनूच्यतां तात स्वधीतं किंचिदुत्तमम् 7, 5, 23. — 4) mod. *nachsagen* (dem Lehrer u. s. w.) so v. a. *lernen, studiren:* यो ब्राह्मणो विद्यामनूच्य न विरोचेत TS. 2, 1, 2, 3. अननूच्य Kaṭh. Up. 5, 1, 1. एतद्धा एतैस्त्रिभिरायुर्भिरन्ववोचथाः। अथ त इतरदनूक्तम् TBr. 3, 10, 11, 4. पेरावरं यज्ञो ऽनूच्यते Çat. Br. 1, 6, 2, 4. 2, 4, 4, 4. 6, 1, 2, 2. अरण्ये ऽनूच्यमानत्वादारण्यकम् Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 3. auch act. in dieser Bed.: ब्रह्मानूचुः Bhāg. P. 3, 33, 7. अनूचानं (s. auch bes.) *der da studirt, Studirter, Gelehrter* Vop. 26, 132. 133. Ait. Br. 2, 2. Çat. Br. 10, 6, 2, 3. 11, 4, 1, 2. अनूचानविद् Kīrt. Ça. 7, 1, 18. Kumāras. 6, 18. अनूक्त (s. auch bes.) *studirt, gelernt* Āçv. Gṛh. 1, 22, 15. मया यथानूक्तमवादि ते क्रतौ: कृतावतारस्य सुमित्र चेष्टितम् *so v. a. wie es von mir gehört wurde* Bhāg. P. 3, 19, 32. — 3) *beistimmen, Recht geben:* प्रजापतिर्मनस एवानुवाच Çat. Br. 1, 1, 5, 11. — 6) *nennen:* मनुना क्रतुरित्यनूक्तः Bhāg. P. 2, 7, 2. —

Vgl. अनुवक्तव्य, अनुवचन, अनुवाक, अनुवाकया fg., अनूक्त fg., अनूचान, 1. अनूच्य. — caus. 1) *Jmd die Formel oder Einladung für — aussprechen lassen* Kâtj. Ça. 4,4,13. अग्नये 5,2,1. गूषाय 6,3,1. वायवे 9,9,14. mit gen. der Sache wozu 6. — 2) *einladen lassen auf, — zu Etwas* (dat.): स्तोकेभ्यः Kâtj. Ça. 6,6,13. सोमाय 7,9,15. 8,4,1. 26,6,21. — 3) *lesen* Çân. 17,4. 90,18. Vikr. 26,3. Mâlav. 8,13. Kathâs. 74,273. 76, 32. — Vgl. अनुवाचन. — desid. med. *zu lernen sich anschicken* Çat. Br. 4,6,2,2.

— अभ्यनु *in Hinblick auf —, in Beziehung auf —, über Etwas sagen, Etwas mit Worten bezeichnen:* तदेतदृषिः पश्यन्नभ्यनूवाच Ait. Br. 2,33. 3,12. 20. 8,6. यौ देवतामृगभ्यनूक्तौ Çat. Br. 6,5,1,2. पशूनेवैतदभ्यनूक्तम् 1,4,1,9. 24. 3,3,10. 7,3,4. 2,3,3,6. 5,1,1,5. 3,1,1,7. 4,1,1,17. 5,3,3. 6,1,10. इति मैत्रति दिशो अभ्यनूच्यन्ते 8,1,4,2. 13,3,4,5. Kâṭh. Up. 3,12,5.

— अप s. अपवक्तृ. अपवाचन.

— अभि 1) = अभ्यनुवच्; nur das partic. अभ्युक्त zu belegen. तदेष श्लोको ऽभ्युक्तः Çat. Br. 7,3,1,21. 3,32. 8,6,3,19. यजुषाभ्युक्तम् 10,2,6, 19. ऋषिणा 1,1,10. ऋचा 14,7,1,28. Mudg. Up. 3,2,10. Weber, Râmây. Up. 357. श्लोकेन Kauṣ. Up. 1,6. किरणयोगीति वा अभ्युक्ता Çat. Br. 6,3, 1,12. — 2) *Etwas zu Jmd sagen*, mit dopp. acc.: इदं तु वो कुरुराजो ऽभ्युवाच MBh. 2,1998. 3,360. 8709. 7,4230. R. Gorr. 2,31,8. इति रामो ऽभ्युवाच तान् 1,31,13. MBh. 4,1662. 8,3530. Bhâg. P. 4,17,9. *Jmd für Etwas erklären:* भूतं भव्यं भविष्यं च मार्कण्डेयो ऽभ्यवाच ह । यत्तौ वेत्थ यज्ञानां तपश्च तपसामपि ॥ (so die ed. Bomb.) MBh. 6,3039.

— आ *Jmd anreden, Jmd zurufen:* आ वो वोचे विदथेषु प्रयस्वान् RV. 7,73,2. इन्द्राय ब्रह्माण्योक्था 1,63,9. Çâṅkh. Br. 7,4.

— उद् s. उद्वाचन.

— उप *zusprechen, ermuntern, antreiben:* यत्तेमस्यत्ते उपवोचत्त भगवः RV. 1,127,7. उप यद्वोचे अध्वरस्य होता 5,49,4. तनूपानं पायवानं कण्वा-ना यदुपोचिरे AV. 5,8,6. — Vgl. उपवक्तृ, उपवाक fgg.

— नि 1) *reden, sprechen:* न्यवोचत् Bhâg. P. 3,17,29. — 2) *schmähen:* दुर्योधनं नैकृतिकं न्यवोचत् MBh. 9,3320. — Vgl. निवचन, निवाकु. — caus. *schmähen* Vikrp. 73.

— निस् 1) *aussprechen, mit Worten bezeichnen, ausdrücklich nennen, erklären:* यत्प्रथमे पदे देवता निरुच्यते Ait. Br. 4,29. अनिरुक्ता देवता निरवोचन् Çat. Br. 10,3,5,15. Nir. 10,5. तस्मात्सत्यं निरुच्यताम् MBh. 3,16892. नामधेयानि लोकेषु बहून्यस्य यथार्थवत् । निरुच्यते मरुद्भाञ्च विभुत्वाञ्च कर्मणस्तवा ॥ 7,9611. 13,7523. 12,236. ब्रूहि पुत्र यथा वेद पुरुषः शाश्वतो ऽव्ययः । अतश्चाप्रमेयश्च सर्वगश्च निरुच्यते ॥ 13740. यादवा यदुना चाद्य निरुच्यन्ते च केवलाः Harîv. 1898. वेदा निर्वक्तुकामाः Pâṇân. 1,12,38. यः निरुच्यमान प्रश्नं नेच्छेत् *(der) eine an ihn gerichtete Frage nicht beantworten will* M. 8,55. विदिर्ज्ञाने निरुच्यते *die Wurzel* विद् *wird durch* ज्ञान *erklärt* Kâm. Nîtis. 2,17. Verz. d. Oxf. H. 4, *a*, No. 30. मांसात्तु मेदसो जन्म मेदसो ऽस्थि निरुच्यते *die Knochen werden vom Fette abgeleitet* Harîv. 2179. निरुक्त *ausgesprochen, in Worte gefasst, erklärt; deutlich gesprochen* (Gegens. उपांशु): निरुक्तमेनः कर्मणो भवति Çat. Br. 2,3,2,20. अनिरुक्तः प्रजापतिः 14,2,2,21. Taitt. Up. 2,6,7. अयमेव स्वार्थो भगवत्या विष्णुभक्त्या स्वामिनो निरुक्तः Prab. 104,18. Bhâg. P. 5,12,9. 19,20. 6,4,28. fg. नान्यच्चदस्त्यपि मनोवचसा निरुक्तम् 7,9,48. 8,3,26. यतोऽरिष्टणी तु पर्यायैर्निरुक्ता च बह्वृचिनी MBh. 3,5267. Bhâg. P. 7,14,34. पश्चिरुक्तं निधनमुपेयुः Pâṇân. Br. 17,1,3. 11, 6,9. निरुक्त इन्द्र उपांशु प्रजापतेः Çâṅkh. Çr. 17,7,9. Çat. Br. 1,4,4,3. 4,1,2,16. 14,1,2,18. या पञ्चमी तौ निरुक्तानिरुक्तामिव गायेत् Sâṅkh. Br. 2,2. Pâṇân. Br. 7,1,3. Kâṭh. Up. 1,13,3. 2,22,1. von Versen, *welche die Götternamen ausdrücklich enthalten:* निरुक्तं वैश्वानरं पशुं Çâṅkh. Br. 19,1. Lâṭj. 1,4,5. अग्नेय्यावनिरुक्ते *Verse an Agni, in welchen aber sein Name nicht vorkommt,* Âçv. Çr. 2,14,32. *ausdrücklich genannt, — vorgeschrieben* Gaut. 1,22,27. तद्दिदं वचनं तेषां निरुक्तं वै *ist erklärt so v. a. hat sich bewährt, ist in Erfüllung gegangen* MBh. 9, 1316. — 2) *wegsprechen, durch Worte vertreiben:* शल्यान्निर्वोचमर्कं विषम् AV. 4,6,1. यक्ष्मान्नैर्ऋत्यः 5,30,8. 16. 9,8,10. — Vgl. निरुक्त (in der Bed. 2.): निरुक्तमस्य यो वेद Verz. d. Oxf. H. 30,*a*,18. मनिरुक्ता स्वमिष्टिताम् Bhâg. P. 12,6,38), निरुक्ति, निर्वक्तव्य fg., निर्वचनीय, निर्वाक, निर्वाच्य.

— परा *widersprechen, zurückweisen* (Gegens. अनु) Çat. Br. 1,4,4, 12. — Vgl. परावाक. परोक्ष्य.

— परि *besprechen* (mit einem Spruche): ब्राह्मणेन पर्युक्तासि AV. 4,19,2.

— प्र 1) *verkünden, melden, mittheilen, anführen, erwähnen; preisen; Jmd* (dat. gen.) *Etwas ankünden, lehren, praecipere:* मनिर्मह्यं देवेषु प्र वोचः RV. 1,27,4. 6,15,10. AV. 7,78,2. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचम् RV. 1,32,1. 167,7. अग्निर्मह्यं प्रेदु वोचन्मनीषाम् 4,3,3. प्र सा वोचि सुष्टुतिः 7,58,6. प्र नो वोचो ऽनागसो अर्यम्णो 62,2. 70,1. 86,4. प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट 8,90,15. 10,113,9. 139,6. गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे 3,95,2. AV. 2,1,2. Ait. Br. 6,24. तस्मा एतं राजसूयं यज्ञक्रतुं प्रोवाच 7,15. सूक्तम् Nir. 10,32. वेदान् Çat. Br. 3,2,4,3. 5,3,3,13. 10,4,2,1. Kâtj. Ça. 4,2,19. तस्मै क्षत्राय्यैव प्रवासो चक्रे Kâṭh. Up. 4,10,2. 8,8,4. M. 2,89. 3,22. 124. 266. 5,57. 7,36. 8,266. 9,56. Bhâg. 4,1,8,11. MBh. 1,6148. Harîv. 9622. R. Gorr. 1,4,75. 5,84,4. 88,8. Vârâh. Bṛh. S. 1,11. 11,53. 25,1. 41,1. 43,11. 45, 1. 46,1. 54,62. Kathâs. 1,60. Bhâg. P. 1,2,1. 4,1,12. ब्रह्म सनातनम् । नारदाय पुरा प्रोक्तम् (acc. partic.) 6,37. Mârk. P. 54,8. Brahma-P. in L.A. (III) 49,6. Pâṇân. 1,1,23. आत्मचरितवृत्तान्तं परस्परं प्रोचतुः Pâṇân. 116,1. प्रोमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह *praecepturus* Taitt. Up. 1,8. नैव तस्य वपुः शक्यं प्रवक्तुं नेष एव च *lässt sich nicht mittheilen, — beschreiben* MBh. 10,222. यथा बार्हस्पतः श्रीमान्युक्तः पुण्येन (so ist zu lesen) प्रोच्यते ब्राह्मणैः R. 2,26,9 (11 Gorr.). H. 19. प्रोक्त *verkündet, mitgetheilt, gelehrt, aufgeführt, erwähnt* M. 2,68. 3,110. 7,98. 12,126. P. 4, 2,64. 3,101. Einl. 1. Vârâh. Bṛh. S. 43,1. Bhâg. P. 2,9,43. 8,13,37. (धर्मं पशुधर्मः) मनुष्याणामपि प्रोक्तो येषु राज्यं प्रशासति *wird auch bei den Menschen erwähnt, soll auch bei den Menschen stattgefunden haben* M. 9,66. याः कर्दमसुताः प्रोक्ता नव ब्रह्मर्षिपत्नयः Bhâg. P. 4,1,12. संज्ञतः पशुरिति प्रोक्ते *wenn angezeigt ist* Kâtj. Ça. 6,5,22. *Jmd verrathen:* येषां प्रावोचः TS. 2,6,6,1. 3,5,2,1. — 2) *überweisen, überantworten:* मा नो अग्ने दुर्भृतये प्र वोचः RV. 7,1,23. प्र णः पूर्वस्मै सुविताय वोचत 8,27, 10. विशं राज्ञे Pâṇân. Br. 21,1,1. तेभ्यो ह पृथगावसथान्प्रोवाच Çat. Br. 10,6,4,2. — 3) *sagen, sprechen* MBh. 2,503. 5,7487. Kathâs. 3,18. Pâṇân. 4,14. 77,1. 96,25. अतः प्रोच्यते impers. 49,5. ममुद्र इत्येवं प्रो-

व्यते Prâçnop. 6, 3. कुमारिलस्वामिना प्रोक्तम् Prasn. 110, 9. तत्तत्प्रोच्य MBu. 3, 888. R. 1, 62, 16. Spr. 155. वाक्यम् Harîv. 7286. R. 1, 4, 9. Rîgat. 3, 367. न प्रावोचमकं किंचितिप्रियं यावदजीवियम् Bhatt. 15, 11. प्रोच्यमानमुतिभिः so v. a. *erschallend* Bhâg. P. 5, 2, 4. मन्त्रिप्रोक्तनिषेवित् *das was der Minister sagt* Vaitân. Bau. S. 74, 3. — तेभ्य एवं प्रवक्ष्यामि *so will ich zu ihnen sprechen* MBu. 4, 65. gewöhnlich mit acc. der Person: राज्ञा प्रोवाच भीमम् 3, 15673. 15788. 5, 7332. R. 1, 9, 46. Bhâg. P. 3, 23, 22. Bhatt. 7, 47. स्वागतं तु इति प्रोक्ता तैः MBu. 3, 2468. Spr. 1927. Çat. in LA. (III) 33, 15. mit dopp. acc.: तं प्रवक्ष्यामि भारतीम् R. 2, 64, 37. — b) *erklären für, nennen:* ते मणिमध्यं प्रोचुरिदम् Çaut. 17. प्रोक्त *genannt, erklärt für, geltend:* घापो नारा इति प्रोक्ताः M. 1, 10. 9, 128. Siddh. ed. Lass. 23. Çaut. 9. Vaitân. Bau. S. 88, 3. 7. Vet. in LA. (III) 8, 11. Taitt. 2, 4, 25. तपोमूलमिदं सर्वं दैवमानुषकं सुखम्। तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्त्यं वेददर्शिभिः॥ M. 11, 234. Bhag. 17, 18. Spr. 5398. H. 1242. काकपक्षाः प्रोक्ताः *die sogenannte Krähengerste* Spr. 2300. रणप्रोक्तेन कर्णेण *genannt Schlacht* Harîv. 5702. उदितं प्रोक्तमुद्गते (so ist zu lesen) d. i. उदित *bedeutet so* v. a. उद्गत Taitt. 3, 3, 150. — प्रोक्ता Pâṇ. 97, 11 ist eine falsche Form für प्रोच्य. — Vgl. प्रवक्तृ fg., प्रवचन fg., प्रवाक, प्रवाच्य (in der Bed. 1; b) auch Harîv. 7178), पुराणप्रोक्त. — caus. *verkünden lassen* Gobh. 1, 3, 19. — Vgl. प्रवाचन. — desid. scheinbar MBu. 12, 8767, wo aber mit der ed. Bomb. प्रविविक्षतः zu lesen ist.

— घनुप्र s. घनुप्रवचन.

— परिप्र *Jmd* (acc.) *schelten, Jmd Vorwürfe machen:* मा ब्राह्मणः परिप्रवोचन् Kâṭh. Up. 4, 10, 2.

— प्रतिप्र 1) *anzeigen, melden:* घग्नये प्रतिप्रोच्य व्रतमालभते TS. 1, 6, 3, 2. 3, 1, 8, 1. TBr. 3, 2, 2, 4. 8, 8, 1. तौ देव्यै घागतौ प्रतिप्रोवाच Çat. Br. 3, 2, 4, 22. — 2) *erwiedern, antworten* Ait. Br. 6, 34. गुरुणैवं प्रतिप्रोक्तः Bhâg. P. 7, 3, 29.

— संप्र 1) *zusammen erklären* Çâṅkh. Br. 7, 4. — 2) *Etwas verkünden, mittheilen* M. 8, 229. MBu. 1, 2601. 2, 488. 3, 144. 1838. 7, 2025. Harîv. 4564. Çaut. 1. Vaitân. Lâṭâyan. 1, 2 in Ind. St. 2, 277. Bhâg. P. 3, 26, 1. Mârk. P. 40, 1. Verz. d. Oxf. H. 7, b, No. 43, Z. 5. संप्रोक्त 14, a, N. MBu. 12, 7842. Pâṇ. 3, 9, 8. *nennen, angeben:* यादृशा धनिभिः कार्या व्यवहारेषु साक्षिणः। तादृशान्संप्रवक्ष्यामि M. 8, 61. R. 6, 3, 1. — 3) *zu Jmd* (acc.) *sagen:* पुत्रेण मम संप्रोक्तः (die ed. Bomb. hat eine andere Lesart) MBu. 6, 2235.

— प्रति 1) *verkünden, melden* ṚV. 1, 41, 8 (med.). — 2) *antworten, erwiedern* VS. 23, 61. मनोजग्न्मे क्रुद घा प्रत्यवोचत् ṚV. 8, 89, 5. स एकया पेष्टा दशभिः प्रत्युवाच Ait. Br. 7, 13. M. 1, 4. MBu. 3, 2164. 2245. 5, 7480. R. 3, 53, 61. 55, 23. Kumâras. 5, 40. Kathâs. 1, 34. Bhâg. P. 2, 4, 11. 3, 2, 1. Brahma-P. in LA. (III) 52, 11. उत्तरम् Râgat. 3, 47. तेऽपि श्लोकाः प्रत्युक्ताः Çat. Br. 12, 3, 2, 6. प्रातर्वः (acc.) प्रतिवक्ष्यामि Ait. Br. 3, 22. Çat. Br. 11, 5, 8, 7. Kâṭh. Up. 2, 22, 3. 5, 11, 7. MBu. 3, 2156. 2531. 2612. 3056. 5, 5432. 7377. R. 1, 9, 10. 42, 9. 52, 19. 63, 20. घप्रत्युक्ता तान्पीन् 74, 23 (76, 27 Gorr.; die ed. Bomb. hat eine andere Lesart). 2, 12, 63. 31, 18. 34, 9. 3, 53, 42. Kathâs. 17, 127. 18, 339. 20, 58. 22, 87. 238. 24, 15. 30. 28, 234. 32, 157. 33, 56. 34, 148. 40, 156. Bhâg. P. 1, 13, 34. Mârk. P. 21, 55. Bhatt. 5, 33. 46. 6, 90. 7, 57. प्रत्युक्त *Antwort empfangen habend* Ait. Br. 6, 34. एवं तयाहं वक्तोक्त्या प्रत्युक्तः Kathâs. 124, 135. तं कुद्धः प्रत्युवाचेदम् MBu. 2, 1226. 7, 1990. R. 2, 57, 19. वाक्यं प्रत्युवाच मरुत्पतिम् 1, 23, 1. 2, 68, 1. घद्धदे तु शुभं वाक्यं प्रत्युक्ते प्रवगर्षभैः 5, 1, 89. *beantworten:* प्रतिवक्तास्मि ते वचः MBu. 14, 1700. Nal. 1, 14. — Vgl. उक्तप्रत्युक्त, प्रतिवक्तव्य fg., प्रत्युक्त fg.

— वि 1) *kundmachen, anzeigen; deutlich machen, erklären, lösen* (eine Frage) ṚV. 1, 105, 4. 132, 3. 4, 1, 11. कद्व रुद्रं वि नो वोचः 5, 42. यस्ते स्विन्न स्विदस्ति तदेतया वि वोचः 6, 8, 12. 22, 4. 10, 11, 2. 28, 3. Kâṭh. Up. 4, 4, 3. तेषां (प्रश्नानां) नैकं च नाशकं विवक्तुम् 5, 3, 3. Çat. Br. 14, 6, 8, 1. 3. 9, 28. — 2) *bestreiten, anfechten:* नाहं वेदान्विनिन्दामि न विवक्ष्यामि कर्हिचित् MBu. 12, 9607. med. *verschieden oder gegen einander reden, sich streiten um:* वि तोके घप्सु तनये च सूरे ऽवोचत चर्षणिषो विवाचः ṚV. 6, 31, 1. — Vgl. विवक्तृ, विवाच्, व्युच्य, घविवाक्य.

— सम् *verkünden, mittheilen* Pâṇ. 1, 15, 8. Journ. of the Am. Or. S. 6, 561 (*to explain comprehensively* Hall). *sprechen, sagen* Kathâs. 3, 49. स्त्रियार्थे समुवाचेमां भारतीं भरतान्प्रति MBu. 4, 913. स्वं जनकं समुवाच *sagte zu* Pâṇ. 97, 12. *Jmd* (acc.) *zusprechen, Vorstellungen machen:* समुक्त Bhâg. P. 10, 30, 33. med. *sich unterreden:* सो नु वोचाव्हे पुनर्यतो मे मध्वाभृतम् ṚV. 1, 25, 17.

वर्च (von वच्) 1) nom. ag. *sprechend* gaṇa पचादि zu P. 3, 1, 134; vgl. कु°. — 2) nom. act. *das Sprechen, Sagen* in दुर्वच. — 3) m. a) *Papagei* H. an. 2, 59. Med. k. 9. — b) angeblich = सूर्य und कारण: वच: सूर्यः समाख्यातः कारणं च वचस्तथा। वर्चयन्ति वचं नित्यं वचार्चास्तेन ते मताः स्मृताः॥ Verz. d. Oxf. H. 33, a, 40. fg. मुनिर्वचयः (so ist zu lesen) b, 21. — 3) f. घा a) *Predigerkrähe* (सारिका) Taitt. 3, 3, 79. H. an. Med. — b) eine vielgebrauchte aromatische Wurzel, nach Einigen *Orris root, Veilchenwurzel* d. i. *Iris florentina*, nach Andern *Calmus* (श्वेतवच beng.). Keine von beiden ist in Indien zu Hause. Ausserdem wird sie als eine *Zingiberacee* bestimmt, entweder *Curcuma Zedoaria* oder die *Galgantwurzel* (*Alpinia Galanga*). Es scheinen verschiedene Wurzeln unter diesem Namen im Handel gewesen zu sein. ÇKDa. nennt solche aus Chorasan, Persien und vom Himavant stammend; dazu die मङ्गल्या oder °भरी वचा d. i. *Galgant*, ferner auch चोपचीनी d. i. جوب چيني *Chinawurzel*, hier wohl eine indische *Smilax, glabra* oder *lanceaefolia* bezeichnend; vgl. Roxb. 3, 792. — AK. 2, 4, 8, 21. Taitt. 3, 3, 200. 216. H. an. Med. Rajan. 24. Râgân. und Vaidjarn. in Nigh. Pr. Sarn. 1, 139, 5. 14. 144, 14. 145, 6. 146, 6. 374, 9. 11. हैमवती 2, 161, 21. Vaitân. Bau. S. 16, 30. 44, 9. 57, 1. सद्यःप्रज्ञाकरी वचा Spr. 3144.

वचःक्रम m. pl. *mannichfache Reden* Kathâs. 50, 163.

वचक्नु Unâdis. 3, 81. 1) adj. *beredt.* — 2) m. a) *ein Brahmane* Med. n. 125. Uśîval. — b) N. pr. eines Mannes Çâṅkh. zu Bau. Âr. Up. 3, 6, 1. fehlerhaft वचक्रु Colebr. Misc. Ess. 1, 70; vgl. वाचक्नवी.

वचण्टा f. *Predigerkrähe* Taitt. 2, 5, 22. वचण्टी nach Çabdar. im ÇKDa.; dieselbe Form soll nach ders. Aut. auch = वर्त्ति und शस्त्रभेद sein; bei dieser Gelegenheit wird bemerkt, dass in Med. sowohl वचण्टा als वरण्टा gelesen werde.

वचन (von वच्) 1) adj. a) oxyt. *redefertig* ṚV. 6, 39, 1. 49, 12. दक्ष, व°,

शक्तान् 10,113,9. — *b*) am Ende eines comp. *besagend, bedeutend, ausdrückend:* यभिप्रा° P. 3,2,112. भावकर्म° 6,2,150. AK. 3,3,2. H. 839. Sarvadarçanas. 49,6. 144,15. 160,8. 9. तद्वचनत्वात् *weil es das besagt* Kâç. Ça. 1,3,4. 2,8,4. 7,9,12. 8,3,35. — *c*) *ausgesprochen werdend:* रक्तो वचनो मुखनासिकाभ्याम् ṚV. Prât. 13,6. मुखनासिकावचनत्वमिह रक्तस्य विधीयते Comm. — 2) n. *a*) *das Sprechen* Sâṁkhjak. 28. *Aussprache:* यथवामात्रं वचनं स्वराणाम् ṚV. Prât. 14,4. समायाव्यानामन्ते संक्षिप्तावहवचनम् AV. Prât. 4,124. मुखनासिकावचनो ऽनुनासिकः P. 1,1,8. — *b*) *das Ansagen, Hersagen, Aussagen:* मन्त्र° Kâç. Ça. 1,7,9. 10,2,32. Lâṭj. 7,1,7. 5,7. संतानमुत्तमेन वचनेन Âçv. Ça. 5,20,5. 7. तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् (ein berühmter und in seiner Auslegung streitiger Satz; vgl. Nilak. 8) Kap. 1,1,3. — *c*) *Benennung, ausdrückliche Nennung, Bestimmung, Anführung:* पशुवचनात् *weil es* पशु *heisst* Kâç. Ça. 25,9,11. पथावचनम् *je nach dem Ausdruck* Nir. 1,3. यदेति वचनाद्धकुतिरिति Ait. Br. 7,9. Âçv. Ça. 1,1,26. Kâç. Ça. 1,5,12. 7,11. 22. 2,7,17. अ° 6,37. अवचने *wo nichts Besonderes bestimmt ist* 1,8,45. यत्तवचने *wenn* यत्त *im Text steht* 3,25. 7,5,23. गुणा° 20,7,20. °विरोधी *Bestimmung und widersprechende Bestimmung* 1,8,30. °प्रवृत्ती 4,3,4. इति वचनात् *weil es so heisst* Pân. Gaṇ. 2,2. Jâḍ. 3,226. P. 1,2,56. लिटः किद्वचनानर्थक्यम् *das Erklären des* लिट् *für* कित् Pat. zu P. 1,2,6. ईसो वङ्क्रीसो पुंवद्वचनम् Vârtt. zu P. 1,2,48. — *d*) *Aussage, Ausspruch, Worte, Rede* AK. 1,1,5,1. H. 241. द्वैधे बहूनां वचनं समेषु गुणिषु तथा। गुणिद्वैधे तु वचनं ग्राह्यं ये गुणवत्तमाः ॥ Jâḍ. 2,78. मुनि° Vaṁs. Bḥ. S. 46,99. गुरु° Sarvadarçanas. 97,1. 103,20. 160,19. स्मृति° Paṁkat. 164,20. इदं वचनमब्रुवन् M. 1,1. मनोवचनकर्मभिः 2,236. MBh. 3,2162. 2222. 2892. R. 1,8,17. 28. Megh. 4. 29. 96. Sarvadarçanas. 111,11. Paṁkat. 140,16. एतत्कार्यान्तमाणां कस्यांचिदालस्यवचनम् Hit. Pr. 6,9. 18,19. Vet. in LA. (III) 4,4. 7,1. वचनैरमृताम् Spr. 2700. तथ्य° *so v. a. Gelöbniss* Paṁkat. 5,1. परुष° *barsche Rede führend* Vaṁs. Bḥ. S. 23,17. यमत्यवचना नार्यः MBh. 1,3060. इत्युक्तावचनामेताम् 11,896. ईषत्प्रगल्भवचना Śiç. D. 100. — *c*) *Ausspruch so v. a. Rath, Geheiss:* वचनशतमवचनकरो नष्टम् Spr. 714. वृद्धानां वचनं ग्राह्यम् 2891. तदस्यापि वचनं संग्राह्यम् Paṁkat. 138,13. यस्य वचनात् Hit. 13,10. 62, 20, v. l. 72,14. काकवचनेन 23,9. नरेन्द्रवचनासक्ताः R. 1,7,9. योगो मे भर्तृवचनं न व्रीवितमिहात्मनः 3,48,16. ब्रह्मणो वचनात् MBh. 1,1152. 5574. 6013. 3,2652. 2853. 5,6047. R. 1,1,11. 56. 68. 11,13. 2,64,16. पितुर्वचननिर्देशात् 1,1,21. स्थास्यन्ति वचने तव (vgl. वचनेस्थित) *so v. a. sie werden dir gehorchen* 2,24,15. मया कर्तव्यं वचनं पितुः 14. Hit. 62,19. — *f*) वचनात् und वचनेन (selten) *so v. a. im Namen von:* धारोष्णं ब्रूहि कौसल्याम् — सीतायाः सुत मम च वचनात् R. 2,52,30. महवचनात् — वन्दी पादौ मरुत्मतः 38,13. MBh. 3,16149. 5,7510. Megh. 135,12. मम वचनादुच्यतां सारथिः Çiç. 28,18. 33,9. 39,15. 80,23. Vikr. 37,9. Megh. 99. Mârk. P. 66,24. भरतः कुशलं वाच्यो वाच्यो मद्वचनेन च R. 2,58,18. MBh. 4,229. — *g*) *Laut, Stimme:* वचनेन व्यवेतानां संयोगत्वं विरुध्यते Scholion AV. Prât. 1,101. तद्वचनं प्रत्यभिज्ञाय Hit. 14,20. मृगेतराभिः — धन्यामृतवत्सुवचनाभिः Vaṁs. Bḥ. S. 48,14. मधुरवचना सारिका Megh. 83. — *h*) *grammatische Zahl* P. 1,2,51. 2,3,46. Vop. 1,11. 24,6. — *i*) *trockener Ingwer* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. अ°, दृक्°, द्वि°, पर्याय°, पुनर्वचन, प्रतिकूल°, प्राग्वचन, प्रिय°, बकु°, बुद्ध°, भाव°, भिन्न°, मूल°, लोक°, विशेष°, सत्य°, सु°.

वचनकर adj. (f. ई) P. 3,2,20, Sch. *einen Rath befolgend, folgsam, gehorsam* Spr. 714.

वचनकारिन् adj. dass. MBh. 3,14867. पितुः R. 2,21,33. R. Gorr. 2,127,13.

वचनगोचर adj. *einen Gegenstand der Besprechung bildend* Bhâg. P. 5,3,12.

वचनग्राहिन् adj. *Jmdes Worte beherzigend, folgsam, gehorsam* Râmây. zu AK. 3,1,24 nach ÇKDr.

वचनपटु adj. *in der Rede geschickt, beredt* Vaṁs. Bḥ. S. 101,9. Paṁkat. 24,20.

वचनानुग (वचन + अ°) adj. *sich nach Jmdes Worten richtend, folgsam, gehorsam* Mân. P. 21,35.

वचनावत्त् (von वचन) adj. *redefertig* ṚV. 9,68,1.

वचनीकृ (वचन + 1. कृ) *dem Tadel aussetzen:* °कृत R. 7,47,4. Comm.: दोष ग्रार्यः। वचनीयो निन्द्यः कृतः.

वचनीय (von वच्) 1) adj. *a*) *zu sagen, zu sprechen, was gesagt werden darf:* किं वचनीयमत्र *so v. a. was soll man hierüber viele Worte verlieren?* Spr. 4200. न तानि वचनीयानि मया देवि तवाग्रतः R. 7,47,12. वादेष्ववचनीयेषु M. 8,269. — *b*) *zu benennen:* यस्य स वचनीयः स्यात् Nir. 1,12. — *c*) *Jmdes* (gen.) *Tadel unterliegend* Hariv. 5267. — 2) n. *Vorwurf, Tadel* R. 7,48,13. Kumâras. 4,21. 5,82. Uttarar. 21,11 (28,13). एष वचनीयान्मुक्तो ऽस्मि Çiç. 111,7. दृष्ट्वा निशाया वचनीयदोषम् Megh. 58,17. — Vgl. वक्तव्य, वाच्य.

वचनीयता (von वचनीय) f. *Tadelhaftigkeit* H. 270. Halâj. 1,147. Megh. 46,23. Spr. 595.

वचनेस्थित adj. *gehorsam, folgsam* AK. 3,1,24. H. 432; vgl. स्थास्यन्ति वचने तव R. 2,24,15.

वचस् m. 1) *Bösewicht.* — 2) *Hahn* (von वच्) Med. r. 209.

वचस्तु m. Çabdar. im ÇKDr. = शत्रु nach ÇKDr., *offence, fault* Wilson.

1. वचस् (von वच्) n. 1) *Rede, Wort, Sprache* AK. 1,1,5,1. H. 241. न मृष्यते वचः ṚV. 1,145,2. प्रणावहवचांसि मे 8. यन्मानं चिक्ये विभिर्दुर्वचोभिः 4,16,6. 8,39,2. वृक्तबर्हिषे मानुषे वचः 7,96,1. 8,50,1. यस्मेन्या वः पणयो वचांसि 10,108,6. नव 2,18,3. यद्रोघ 3,14,6. दैव्या 4,1,13. मधुमत्तम 5,11,5. त्रैष्टुभ 29,6. मनत 7,104,8. सप्तासश्च वचसो 12. उग्र VS. 5,8. 9,5. स्तोतुः AV. 6,2,1. 4,7,4. 5,13,1. Çat. Br. 6,1,3,15. वचोविपरिलोप (so zu verbinden; die Betonung in diesem Buche häufig fehlerhaft) 14,7,1,26. इन्द्रस्य Kauç. 6. Auffallend ist die Form वचस् am Ende eines Pâda für den instr.: दिवित्मता वचः ṚV. 1,26,2. नव्यसा वचः 2,31,5. 6,48,11. 8,39,2 (नव्यसा वचसा 6,62,5). द्रोघाय चिद्वचस् धानवाय 6,62,9 ist Tmesis für द्रोघवचसे. — मुनिवचोदृम् Vaṁs. Bḥ. S. 40,62. 71. 84, 110. मृगालो ऽब्रवीद्वचः MBh. 1,5581. 3,1804. तं तथेत्यब्रवीद्वचः 2825. 2104. R. 1,1,8. 36. Ragh. 2,41. उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः 3,25. अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्ति (तनय) Çiç. 176. रघुणा समीरितं वचः Ragh. 3,67. Spr. 2701. Kathâs. 18,300. 321. Paṁkat. 167,7. Hit. 12,1. Vet. in LA. (III) 88,7. यदृच्छतः MBh. 3,2646. अनर्थक AK. 1,1,5,16. Halâj. 1, 150. अनिबद्ध 139. वक्र Spr. 730. pl. Vikr. 50. ad Megh. 112. — 2) *Ausspruch so v. a. Rath, Geheiss:* वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्

Spr. 2702. वचसा मम *auf meinen Rath* Kathâs. 18, 137. कुरुष्व सत्यं मुक्तदो स्तिं वचः R. 5, 80, 28. कुरु तूर्णं वचो मम MBh. 1, 5938. 5944. 5, 6018. — 3) *Gesang* (der Vögel) Rt. 6, 21. fg. — 4) *ein Ausspruch des Schicksals, fatum:* कल्याणि सर्ववचसां वेदित्री सं प्रकोर्त्यसे wird eine Eule angeredet Varâh. Bṛh. S. 88, 42. — Vgl. आत्त°, दुर्वचस्, श्रुत°, द्वेष°, पुरुष°, प्रति°, प्रीति°, मङ्गल°, मत°, मधु°, यज्ञ°, सु°.

2. वचस् (von वच्) in अधोवचस् *nach unten taumelnd, zu Boden sinkend*, wonach u. d. Wort अधोवर्चस् zu ändern ist.

1. वचस am Ende eines comp. = 1. वचस्. यत्र पदाचार्यवचसं करोति *wenn er dem Geheiss des Lehrers folgt* Çat. Br. 11, 3, 2, 6.

2. वचसे (von 2. वचस्) adj. *schwankend*, vom Wagen ṚV. 1, 112, 2.

वचसांपति m. *der Herr der Worte*, = बृहस्पति *der Planet Jupiter* Varâh. Bṛh. 2, 3. Ind. St. 2, 261. Horâç. in Z. f. d. K. d. M. 4, 318.

वचस्कार adj. = वचनकार ÇKDa.

वचस्य (von 1. वचस्) वचस्यते *sich hören lassen, plaudern*, vom Geräusch des rinnenden Soma: पतिर्वचस्यते धियः ṚV. 9, 99, 6. Passivische Bedeutung (= स्तूयते) pflegt man nach Sâjaṇa's Vorgang anzunehmen in der Stelle: स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् 1, 33, 4. Da dieses gegen die Analogie und den Zusammenhang ist, kann man erklären: *er lässt im Walde sich vernehmen durch die sich beugenden* (Bäume d. h. *ihr Rauschen*), *lieblich den Menschen kündend seine Macht.* Der Dichter vermied auf वने ein वनेभिस् oder वनिभिस् folgen zu lassen. Wollte man वने in einer anderen möglichen Bedeutung fassen, so liesse sich übersetzen: *bei der* (Soma-) *Kufe lässt er sich hören durch den Mund seiner Verehrer* (indem er sie zu Gesängen u. s. w. begeistert). Dazu passt jedoch der folgende Pâda weniger. In keinem Falle ist aber hier an Anachoreten zu denken.

वचस्य adj. sollte wohl AV. 14, 2, 6 *nennenswerth, rühmlich* bedeuten, scheint aber eine irrige Variante zu sein (वचस्यु ṚV. 10, 40, 13).

वचस्यु (von वचस्) f. *Redelust, Redefertigkeit* Nir. 12, 18. विश्वे देवासो मम वृष्ण्यानि ते ऽवर्धयन्सोमपित्वया वचस्यवो *mit Somatrunkener Beredtsamkeit* ṚV. 10, 113, 8. यत्रि वृक्षो वचस्या जोहवीमि 2, 10, 6. 35, 1. स ऋषिर्वचस्यया 4, 36, 6. 6, 49, 8.

1. वचस्यु (wie eben) adj. *beredt* ṚV. 10, 40, 13. स्तोम 5, 14, 6.

2. वचस्यु (von 2. वचस्) adj. *schwankend, wackelnd:* घर्दा घौ मरुते वचस्यवे *dem wankenden Greise* ṚV. 1, 31, 13. विप्र 182, 3. नौ 2, 16, 7.

वचाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Verz. d. B. H. No. No. 386.

वचार्च m. *ein Verehrer der Sonne* (वच), *ein Magier* Verz. d. Oxf. H. 33, *a*, 41.

वचि = वचन 2) c) in वचिभेदान् Kiṭ. Ça. 5, 7, 24.

वचोग्रक 1) adj. *die Worte auffassend.* — 2) m. *Ohr* Gaṭâdh. im ÇKDa.

वचोयुज् adj. *auf's Wort sich schirrend*, von den Rossen Indra's ṚV. 1, 7, 2. 20, 3. 6, 20, 9.

वचोविद् adj. *redekundig* ṚV. 1, 91, 11. 8, 90, 16. विप्र 9, 64, 28. 91, 3.

वच्छल = वत्सल H. 1271, v. l.

वच्छिका s. दीर्घ°.

वञ्, वञ्चति (गतौ) Dhâtup. 7, 78. ववञ्जतुस्, ववञ्जिव Vop. 8, 58; vgl. व्रञ्. Auf eine Wurzel वञ् (उञ्, etwa mit der Bed. *hart sein* gehen वज्र, उज्र, वोजस्, वोज्मन् zurück. वञ्जयति MBh. 2, 1142 fehlerhaft für वर्जयति, wie die ed. Bomb. liest. वाञ्ज् s. bes.

वञ्जघाण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 39.

वञ्जहूण desgl. ebend. 339, *b*, 16. — Vgl. वज्रहूण.

वज्र (wohl desselben Ursprungs wie उज्र, वोजस्, वोज्मन्) Uṇâdis. 2, 28. m. n. (in der älteren Sprache nur m.) गण घर्घरादि zu P. 2, 4, 31. Sidd. K. 249, *b*, 4. 1) m. n. Indra's *Donnerkeil* Naigh. 2, 20. AK. 1, 1, 6, 12. 3, 4, 28, 115. 25, 186. Trik. 1, 1, 62. H. 180. an. 2, 453. Med. r. 82. fg. Halâj. 1, 36. 5, 68. Viçva bei Uṇâdis. 2, 28. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 42. विश्वहग्नं बाहोरिन्द्र यामि ṚV. 6, 23, 1. वृष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष 1, 32, 2. 51, 7. हिरण्यय 37, 2. 131, 3. 7. 132, 6. 3, 44, 4. यदिं वज्रेण मघवन्वि वृश्चः 4, 17, 7. योऽस्मिन्नस्मिन्नि वविष्टे वज्रम् 41, 4. शतास्मि 6, 17, 10. शतपर्वन् 8, 6, 6. R. 1, 40, 19. Bhâg. P. 6, 12, 8. षष्टास्मि Ait. Br. 2, 1. त्रिपर्धि AV. 11, 10, 27. 2, 3, 6. 4, 24, 6. Ait. Br. 4, 1. Çat. Br. 8, 5, 4, 10. पुरोगुरु Pañcav. Br. 8, 5, 2. Kaṭhop. 6, 2. MBh. 3, 1780. 1791. Râgat. 2, 42. Spr. 965. 2703. वज्राहतमकृतं भयं विरमति 2706. पौरुहूत Çiç. 48. वामनो भिनत्ति वज्रेण शिरांसि भृगुताम् Varâh. Bṛh. S. 9, 39. neben अशनि (vgl. वज्राशनि) 46, 84. Hariv. 7351. fg. वज्रमाहतेवोरुता: (लतवः) Varâh. Bṛh. S. 39, 3. Bhâg. P. 6, 11, 19. fg. वज्रमाहत इवाभवत् so v. a. *wie vom Blitz getroffen* Kathâs. 24, 180. aus den Knochen des Dadhjañk gezimmert MBh. 12, 13213. Bhâg. P. 6, 10, 13. pl. ṚV. 1, 80, 8. मुनेरिव निशितबाणान्वज्राणीव शतक्रतुः R. 5, 93, 16. सवज्रामिव तोयदो 6, 77, 16. सवज्रामिव पौलोमीम् 4, 39, 6. वाजु सवज्रं शक्रस्य कुक्षिस्थास्तम्भगत्प्रभुः MBh. bei Mallin. zu Râgh. 2, 42. Auch andern Gottern und verderblichen Gewalten wird eine solche Waffe zugeschrieben AV. 4, 28, 6. 5, 6, 2. dem Takman 5, 22, 6. 11, 10, 3. 12, 2, 9. einem Râkshasa MBh. 7, 4083. dem Viçvâmitra R. 1, 36, 8. dem Vishṇu Bhâg. P. 10, 59, 20. Magische Waffen, verderbliche Sprüche und dgl. werden auch वज्र genannt AV. 5, 134, 1. fgg. 133, 1. 11, 10, 12. fg. Çat. Br. 13, 7, 1, 10. 14, 1, 2, 3. वाक्कृति° Lâṭ. 2, 1, 10. साम° Sâmav. Br. 3, 8. Ait. Br. 3, 7. अभिचार° Kâm. Nîtis. 1, 4. namentlich ein Wasserstrahl: यवाम् AV. 10, 5, 10. Çat. Br. 1, 1, 4, 17. 3, 1, 2, 6. उद्° Kauç. 47. 49. Bez. des Manju ṚV. 10, 83, 1. 84, 6. den Donnerkeil denkt man sich in der Gestalt eines Andreaskreuzes (X): °रूपा Varâh. Bṛh. S. 33, 10. वज्राकार 68, 45. वज्राङ्कित 69, 29. °चिह्न 70, 2. ein वज्र ist das Attribut des 13ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 48. wird bei Zauberhandlungen gebraucht Wassiljew 193. — 2) n. in Verbindung mit वाच् oder वाक् so v. a. *ein Donnerwort:* वाग्वज्रं भरतेनोक्तम् R. 2, 103, 2 (111, 9 Gorr.). वाग्वज्राणि विमुञ्चति R. Gorr. 2, 63, 4. वाग्वज्रं विसर्ज्य Bhâg. P. 1, 18, 36. हिवावाग्वज्र 2, 7, 9. R. 2, 35, 4. das blosse वज्र hat dieselbe Bedeutung: प्रत्यक्षनिपुरं वज्रम् Siu. D. 362. Prâtiâkh. 21, *b*, 3. 33, *a*, 7. — 3) n. Bez. *einer best. Heeresaufstellung* M. 7, 191. MBh. 6, 701. 729. 3353. Kâm. Nîtis. 18, 49. 19, 51. °व्यूह Kâmâs. 48, 3. — 4) m. Bez. *einer best. Säulenform* Varâh. Bṛh. S. 53, 28. — 5) m. Bez. *einer best. Gestalt des Mondes* Varâh. Bṛh. S. 4, 19. — 6) n. Bez. *einer best. Art zu sitzen* (vgl. वज्रासन) Verz. d. Oxf. H. 94, *a*, N. 3. — 7) Bez. verschiedener Pflanzen: m. *Euphorbia antiquorum* H. 1140. *Asteracantha longifolia Nees* und *weissblühender* Kuça Râgân. im ÇKDa. = लेकुच Bhâvapr. ebend. n. *Myrobalane* Med. Viçva s. s. O. *Sesamblüthe* (vgl. वज्रपुष्प) Çabdar.

im ÇKDa. — 8) n. Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich die günstigen Planeten in den Häusern 4 und 7 stehen, die ungünstigen in 4 und 10*, Varâh. Bṛh. S. 20, 2. Bṛh. 12, 2. S. 14. — 9) m. Bez. *einer best. Zeiteintheilung* (योग) Med. Journ. of the Am. Or. S. 6, 236. 432. — 10) m. Bez. *einer best.* Soma-*Feier* Śrâuv. Bâ. in Ind. St. 1, 36. इषुवज्रौ P. 2, 4, 4, Sch. — 11) m. Bez. *einer best. Busse:* गोमूत्रयावकपान एको वज्राख्यः कृच्छ्रः Pâraçcittend. 9, *a*, 8. — 12) m. n. *Diamant (hart wie der Donnerkeil)* AK. 2, 4, 22, 186. H. 1065. H. an. Med. Viçva a. a. O. Śrâuv. Bâ. in Ind. St. 1, 40. fg. M. 11, 57. °समानसार MBu. 1, 7076. 12, 6387. 16, 141. Hariv. 4763. क्षतापि ते ऽङ्गे न व्रणं गमिष्ये वज्रं यथा मत्तिकया निगीर्णम् R. 3, 53, 59. 4, 41, 67. Suçr. 1, 228, 5. वज्रं वज्रेण भिद्यते Kâm. Nîtis. 8, 67. मणौ वज्रसमुत्कीर्णे Raghu. 1, 4. 6, 19. वज्रादपि कठोराणि — लोकोत्तराणां चेतांसि Spr. 2705. वज्राद्दृढकृतं भयं विरमति 2706. Varâh. Bṛh. S. 16, 28. 29, 8. 41, 8. 44, 27. Verz. d. Oxf. H. 31, *a*, 14. Râja-Tar. 3, 296. वज्रं न भिद्यते केनचिच्छित्त्वन्यान्मणींस्तु तत् 4, 51. Buâs. P. 3, 15, 29. 23, 18. fg. 3, 17, 12. Paṇḍar. 1, 4, 56. °परीक्षा Varâh. Bṛh. S. 80 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 10. — 13) n. *Stahl* ÇKDa. — 14) n. *eine Art Talk* Bhâvapr. im ÇKDa. — 15) m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* (कल्क) Varâh. Bṛh. S. 57, 6. — 16) n. = बालक, बालक H. an. Med. Viçva a. a. O. *a child or pupil* Wilson. — 17) m. N. pr. eines Sohnes des Aniruddha MBu. 16, 214. 249. Hariv. 9204. fg. VP. 440. 611. Buâs. P. 1, 13, 39. 16, 90, 37. eines Sohnes des Viçvâmitra MBu. 13, 231. eines Sohnes des Manu Sâvarṇa Hariv. Langl. I, 41 (was der gedruckte Text). N. pr. eines der 7 Daçapûrvin bei den Gaina (vgl. वज्रस्वामिन्) H. 34. eines Ṛshi Varâh. Bṛh. S. 21, 2, v. l. für वास्त्य; eines Ministers des Narendrâditja Râja-Tar. 3, 334. eines Sohnes des Bhûti (eines Tempelhüters) 7, 207. eines Fürsten Hiouen-thsang 2, 44. Vie de Hiouen-thsang 150. eines Häretikers 228. — 18) f. वज्रा *a*) *Cocculus cordifolius DC.* H. an. Med. Viçva a. a. O. *Euphorbia antiquorum* Med. — *b*) Bein. der Durgâ: वज्राङ्कुशकरी देवी वज्रा तेनोपगीयते Devi-P. 45 im ÇKDa. — *c*) N. pr. einer Tochter Vaiçvânara's VP. 147, N. 7. — 19) f. वज्री *eine Art Euphorbia* Med. — Vgl. इन्द्रवज्र (in den Nachträgen), इन्द्रवज्रा, उपेन्द्र°, कर्मवज्र, ज्ञान°, दान°, नीच°, लीला°, शैवाल°, शोण°, स्वर्ण°.

वज्रक (von वज्र) 1) adj. in Verbindung mit तैल Bez. *eines mit verschiedenen Species zubereiteten Oeles gegen Aussatz* Suçr. 2, 64, 5. 70, 14. — 2) n. *a*) = वज्रतार Hem. 220. Râgân. im ÇKDa. — *b*) Bez. *einer best. Himmelserscheinung* (उपग्रह) Gçorisattvaim ÇKDa. — Vgl. हि°, महा°.

वज्रकङ्कट m. Bein. Hanumant's H. 705.

वज्रकण्ट und °क m. *Euphorbia neriifolia* oder *antiquorum Lin.* Gaṇîm. im ÇKDa. Ausw. 16. 29. °कण्टक m. *Asteracantha longifolia Nees* Râgân. im ÇKDa.

वज्रकण्टकशाल्मली f. *ein Baumwollenbaum mit Stacheln von der Härte eines Diamants*, N. einer Hölle Buâs. P. 5, 26, 7. 21.

वज्रकन्द m. *ein best. Knollengewächs* Ratnam. im ÇKDa.

वज्रकपालिन् m. N. pr. eines Buddha Târân. 1, 1, 12.

वज्रकर्ण m. = वज्रकन्द Ratnam. im ÇKDa.

वज्रकालिका f. ein Name der Mutter Çâkjamuni's Târân. 1, 1, 12.

वज्रकाली f. Bez. einer त्रिनेत्रशक्ति Vâiṣṇ. beim Schol. zu H. 233.

वज्रकीट m. *ein best. Insect*, welches Holz und sogar Steine anbohren soll, = घुण Mallis. zu Çiç. 3, 58. Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, N. 4. — Vgl. वज्रदंष्ट्र.

वज्रकीलाय् (von वज्र + कील) *einen Donnerkeil darstellen:* मर्मोपघातिभिः प्राणैर्वज्रकीलायितं स्थिरैः Uttarâs. 22, 10 (30, 2).

वज्रकुक्षि N. pr. einer Höhle Burn. Intr. 222.

वज्रकूट 1) m. *a*) *ein aus Diamanten bestehender Berg* Buâs. P. 3, 13, 39. — *b*) N. pr. eines *Berges* Buâs. P. 5, 20, 4. — 2) n. N. pr. einer mythischen Stadt auf dem Himâlaja Kathâs. 44, 5. 65, 242.

वज्रकेतु m. Bein. des Dämons Naraka Kâlikâ-P. 38 im ÇKDa. वज्रकेतोः सुतश्चोग्रो दानवो ऽरिविदारणः । पातालकेतुर्विख्यातः पातालात्तस्संभवः ॥ Mârk. P. 21, 29.

वज्रतार n. *eine Art Aetzkali* Râgân. im ÇKDa.

वज्रगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21. Daçabhûm. 2. Saddharmap. 1.

वज्रगोप m. = इन्द्रगोप Dhanvân. in Nigh. Pr.

वज्रघोष adj. *wie ein Donnerkeil tosend* Raghu. 18, 20.

वज्रचञ्चु m. *Geier* Madanav. in Nigh. Pa.

वज्रचर्मन् m. *Rhinoceros (eine harte Haut habend)* Râgân. im ÇKDa.

वज्रच्छेदकप्रज्ञापारमिता oder वज्रच्छेदिका प्र° Titel eines buddh. Sûtra Schmidt und Böhtlingk, Verz. der tib. Hdschrr. 6. Burn. Intr. 7. 73. 465. 893. Lot. de la b. l. 338. Vie de Hiouen-thsang 310. Wassiljew 1. 3. 122. 145. 302. Die Schreibart वज्रच्छेदिक ist zu verwerfen.

वज्रजित् fehlerhafte v. l. H. 231 für वज्रिजित्.

वज्रज्वलन m. *Blitz* Kâm. Nîtis. 1, 4.

वज्रज्वाला f. 1) dass. Halâj. 1, 57. — 2) N. pr. einer Enkelin Vairokana's B. 7, 12, 23.

वज्रट m. N. pr. des Vaters des Uvaṭa (Ûaṭa) Verz. d. B. H. No. 36. 164. Verz. d. Oxf. H. 297, *a*, 27. 405, *b*, No. 10.

वज्रटोक m. N. pr. eines Buddha Târân. 1, 1, 23.

वज्रणाखा f. N. pr. P. 4, 1, 58, Sch. — Vgl. वज्रनख.

वज्रतार (von वज्र) m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* (कल्क) Varâh. Bṛh. S. 57, 7.

वज्रतुण्ड 1) adj. *einen Schnabel von der Härte des Diamanten habend:* गृध्राः (so die ed. Bomb.) Buâs. P. 5, 26, 35. — 2) m. *a*) *Geier.* — *b*) *Stechfliege, Mücke* Râgân. im ÇKDa. — *c*) Bein. Garuḍa's Târân. 1, 1, 43. H. 231. — *d*) Bein. Gaṇeça's (vgl. वक्रतुण्ड) Târân. 1, 1, 35. — *e*) *Cactus Opuntia* Madanav. in Nigh. Pa.

वज्रतुल्य m. *Lasurstein* (वैदूर्य) Dhanvân. in Nigh. Pa.

वज्रदंष्ट्र 1) adj. *Spitzzähne von der Härte des Diamanten habend:* श्वानः Buâs. P. 5, 26, 27. नारसिंह 18, 8. — 2) m. *a*) = वज्रकीट Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, N. 4. — *b*) N. pr. *a*) eines Râkshasa R. 5, 79, 6. 80, 3. 6, 33, 46. 69, 11. — β) eines Asura Buâs. P. 8, 10, 20. — γ) eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 65, 72. — δ) eines Löwen Paṇḍat. 87, 1.

वैज्रदंशिन adj. *den Donnerkeil in der Rechten haltend* ṚV. 1, 101, 1. 10, 23, 1. m. Bein. Indra's H. ç. 31 (fälschlich वज्रो द्°).

वज्रदण्ड adj. *einen mit Diamanten verzierten Stiel habend* Buâs. P. 8, 10, 13.

वज्रदण्डक n. *Cactus Opuntia* Dravidab. in Nigh. Pa.

वज्रदत्त m. N. pr. eines Sohnes des Bhagadatta MBh. 14, 2176. Hall in der Einl. zu Visavad. 52. श्री° N. pr. eines buddhistischen Autors Burn. Intr. 542.

वज्रदत्त 1) adj. *Zähne von der Härte des Diamanten habend.* — 2) m. *a) Eber.* — *b) Ratte* Çabdam. im ÇKDa.

वज्रदशन 1) adj. *Zähne von der Härte des Diamanten habend.* — 2) m. *Ratte* H. 1300.

वज्रदृक्नेत्र m. N. pr. eines Fürsten der Jaksha Vjutp. 89.

वज्रदेश m. N. pr. einer *Oertlichkeit* Verz. d. Oxf. H. 352, *b*, 16.

वज्रद्रु m. Bez. *verschiedener Arten von Euphorbia* AK. 2, 4, 2, 24.

वज्रद्रुम m. desgl. Çabdar. im ÇKDa.

वज्रद्रुमकेसरधर m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva Vjutp. 88.

वज्रधर 1) adj. *den Donnerkeil tragend;* m. Bein. Indra's Uddjoy. zu Upadis. 2, 22. Hall. 1, 32. MBh. 1, 7812. 3, 1780. 11905. 6, 3661. 15, 548. R. 2, 25, 32. 3, 18, 41. 43, 41. 53, 60. 54, 27. Ragh. 18, 20. Bhâg. P. 2, 7, 1. 8, 10, 18. 11, 9. 8, 11, 27. — 2) m. N. pr. eines buddhistischen Heiligen Taik. 1, 1, 21. Wassiljew 7. 125. 179. 188. — 3) m. N. pr. eines Fürsten Râga-Tar. 8, 540. 627.

वज्रधात्वी f. N. pr. der Gattin Vairokana's Wilson, Sel. Works II, 12. fehlerhaft für °धात्वीश्वरी, wie Vjutp. 105 eine Tantra-Gottheit heisst. Nach Sinhanad. 83 ist लोकधात्वीश्वरी ein Bein. der Mârîkî, der Gattin Vairokana's.

वज्रनख adj. *Krallen von der Härte des Diamanten habend:* नृसिंह, नरसिंह Taitt. Âr. 10, 1, 6. Nrs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 104. Bhâg. P. 8, 18, 8. — Vgl. वज्रणखा.

वज्रनगर n. Bez. der *Stadt* des Dânava Vagranâbha Hariv. 8559. — Vgl. वज्रपुर.

वज्रनाभ 1) adj. *eine diamantene Nabe habend:* चक्र MBh. 1, 8196. 8, 2852. 10, 625. 16, 60. R. 4, 43, 33. — 2) m. N. pr. *a)* eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2565. — *b)* eines Dânava Hariv. 199. 8353. fgg. 12933. — *c)* eines Fürsten Sin. D. 185, 1. eines Sohnes des Ukstha Hariv. 827. VP. 386. des Unnâbha Ragh. 18, 20. des Sthala Bhâg. P. 9, 12, 2.

वज्रनाभीय adj. *zum* Dânava Vagranâbha *in Beziehung stehend, von ihm handelnd* Hariv. 152. fgg. in den Unterschriften.

वज्रनिर्घोष m. *Donnerschlag* Hall. 1, 57.

वज्रनिष्कम्भ MBh. 5, 3595 fehlerhaft für वज्रविष्कम्भ.

वज्रनिष्पेष m. s. u. निष्पेष.

वज्रपञ्जर 1) Bez. *gewisser Gebete an die* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 18. — 2) m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 46, 38. 47, 38.

वज्रपत्त्रिका f. *Asparagus racemosus* Ausn. 15.

वज्रपाणि 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend;* m. Bein. Indra's Taitt. 1, 1, 37. Swapv. Bh. 5, 3. MBh. 1, 8771. 3, 11942. 8, 1639. R. 1, 19, 4 (12 Gorr.). 2, 74, 16. 3, 29, 23. 6, 92, 11. 111, 32. Ragh. 2, 42. Bhâg. P. 8, 11, 3. 9, 6, 19. — 2) adj. *dessen Donnerkeil die Hand ist,* von den Brahmanen: वज्रपाणिर्ब्राह्मणः स्यात्तत्रं वज्रमयं स्मृतम् । वैश्या वै दानवज्राश्च कर्मवज्रा पवीयसः ॥ MBh. 1, 6487. — 3) m. Bez. *einer Klasse von Genien bei den Buddhisten* Lalit. ed. Calc. 75, 13. Schiefner, Lebensb. 244 (14). Hiouen-thsang 1, 134. 2, 114. acht an der Zahl 1, 319. °धारणी 2, 114. — 4) m. N. pr. eines Dhjânibodhisattva Burn. Intr. 117. 538. 557. Wilson, Sel. Works II, 13. fg. 17. Wassiljew 186. fgg. 191. 198.

वज्रपाणित्व n. *das Halten des Donnerkeils in der Hand:* मरुत्वस्य Varâh. Bṛh. S. 58, 42.

वज्रपाणिन् = वज्रपाणि 1) Hariv. 1492. 9161.

1. वज्रपात m. *das Niederfallen des Donnerkeils, ein niederfahrender Blitz:* बाणान्वज्रपातसमस्वरान् R. 6, 92, 11. °क्षतशैलशिला Prab. 67, 10. °सदृशं वचः Pañkat. 240, 17. वचने °दारुणम् 66, 19. °दुःसहं वचनम् ed. orn. 59, 14. Am Ende eines adj. comp. f. घा Spr. 737.

2. वज्रपात adj. *wie ein Donnerkeil niederfahrend:* बाण R. 1, 28, 26.

वज्रपाषाण m. *eine Art Spath* Dravidab. in Nigh. Pa.

वज्रपुर n. Bez. der *Stadt* des Dânava Vagranâbha Hariv. 8556. — Vgl. वज्रनगर.

वज्रपुष्प n. 1) *ein Diamant von Blume, eine kostbare Blume* Wilson, Sel. Works II, 35. — 2) *Sesamblüthe* AK. 2, 4, 2, 56.

वज्रपुष्पा f. *Anethum Sowa* Roxb. Râgân. im ÇKDa.

वज्रप्रभ m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 35, 113. 122. 44, 6.

वज्रप्रभाव m. N. pr. eines Fürsten der Karûsha Hall in der Einl. zu Visavad. 53.

वज्रप्रस्तारिणी f. N. einer Tantra-Gottheit: °मन्त्राः Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 1. वज्रप्रस्ताविनीपूजाक्रम (sic) 95, *b*, 18.

वज्रबाहु 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend,* Indra: मनवे शासदव्रतान् घ्नन्वज्रबाहुः ṚV. 1, 103, 3. 2, 12, 12. fg. 4, 20, 1. Indra-Agni 1, 109, 7. Rudra 2, 33, 3. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 7. eines Fürsten von Orissa Mack. Coll. I, 24.

वज्रबीजक m. *Guilandina Bonduc* Râgân. im ÇKDa.

वज्रभूमि f. N. pr. einer Oertlichkeit Wilson, Sel. Works I, 293.

वज्रभूमिरत्नम् n. *ein best. Edelstein,* = वैक्रान्त Dhanv. in Nigh. Pa.

वज्रभृकुटि N. einer Tantra-Gottheit Vjutp. 105.

वज्रभृत् adj. *den Donnerkeil haltend,* m. Bein. Indra's ṚV. 1, 100, 12. 8, 17, 2. MBh. 1, 1151. 7457. 4, 1177. 1615. 5, 5421. Hariv. 3933. R. 3, 9, 19. Kathâs. 29, 13.

वज्रमणि m. *Diamant* Spr. 2920. 3328.

वज्रमण्डा f. Titel einer Dhâranî Burn. Intr. 543.

वज्रमय (von वज्र) adj. (f. ई) *diamanten, hart —, unverwüstlich wie der Diamant* Spr. 3043. Uttarab. 121, 10 (164, 6). Kathâs. 11, 68. 43, 407.

वज्रमित्र m. N. pr. eines Fürsten VP. 471. Bhâg. P. 12, 1, 16.

वज्रमुकुट m. N. pr. eines Sohnes des Pratâpamukuta Kathâs. 75. 62. Ver. in L.A. (III) 4, 23.

वज्रमुष्टि 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend,* m. Bein. Indra's R. 6, 72, 29. — 2) m. N. pr. *a)* eines Râkshasa R. 6, 18, 14. 39. 7, 5, 35. — *b)* zweier Krieger Kathâs. 10, 19. 109, 50. 55.

वज्रमूली f. *Glycine debilis* Lin. Râgân. im ÇKDa.

वज्रयोगिनी f. N. pr. einer Gottheit Wilson, Sel. Works II, 21. Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 14.

वज्ररथ adj. *dessen Donnerkeil der Wagen ist*, Bez. des Kriegers MBh. 1,6487; vgl. u. वज्रपाणि 2).

वज्ररद 1) adj. *Zähne von der Härte des Diamanten habend.* — 2) m. *Eber* Trik. 2,5,5.

वज्ररात्र n. N. pr. einer Stadt Kathâs. 44,55. 82.

वज्रलिपि f. Bez. *einer best. Schrift* Lalit. ed. Calc. 144,6.

वज्रलेप m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* Varâh. Bṛh. S. 57,9. Spr. 2704. °घटितेव (वज्रसार°घटितेव Daçak. S. 149,16) Mâlatîm. 77,2; vgl. वज्रलेवकृतिं विद्य मे कृत्यचुम्बलं Vikr. 47,18.

वज्रलेपाय्, °यते *den* Vâgralepa *genannten Mörtel darstellen, fest haften wie dieser:* परस्परास्यपवज्रप्रहारदोषो वज्रलेपायते Sarvadarçanas. 5, 13. fg. वज्रलेपायमानत्व 132, 22.

वज्रलोहक *Magnet* Dhanvan. in Nigh. Pr.

वज्रवध m. *forked or oblique [that is, cross] multiplication* Colebr. Alg. 363.

वज्रवरचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten von Orissa Mack. Coll. I, 24.

वज्रवल्ली f. *Heliotropium indicum* Hâr. 93.

वज्रवर्कू, °वाकू adj. *den Donnerkeil führend:* वृषणा: RV. 6,44,19.

वज्रवारक adj. ehrendes Beiwort einiger Weisen: जैमिनिश्च सुमन्तुश्च वैशंपायन एव च। पुलस्त्यः पुलहश्चैव पञ्चैते वज्रवारकाः ॥ ÇKDa. u. जैमिनि und सुमन्तु nach einem Purâṇa.

वज्रवाराही f. ein Name der Mutter Çâkjamuni's Trik. 1,1,14.

वज्रविद्राविणी f. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Wilson, Sel. Works II, 12.

वज्रविष्कम्भ m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3595 nach der Lesart der ed. Bomb., °निष्कम्भ ed. Calc.

वैज्रविस्रुत adj. *vom Donnerkeil getroffen* Çat. Br. 2,2,2,14.

वज्रवीर m. Bein. Mahâkâla's Wilson, Sel. Works II, 21.

वज्रवृत m. *Cactus Opuntia* Suçr. 1,138,21. Râǵa-Tar. 4,526. = मेकुण्ड Râǵân. im ÇKDa.

वज्रवेग m. N. pr. 1) eines Râkshasa MBh. 3,16405. 16407. 16423. fg. — 2) eines Vidjâdhara Kathâs. 65,58. fgg.

वज्रव्यूह s. u. वज्र 3).

वज्रशल्य m. *Stachelschwein* Râǵân. im ÇKDa.

वज्रशाखा f. N. eines von Vâgrasvâmin gegründeten Zweiges der Ǵaina Wilson, Sel. Works I, 337. fg.

वज्रशीर्ष m. N. pr. eines Sohnes des Bhṛgu MBh. 13,4145.

वज्रशुचि s. वज्रसूचि.

वज्रशृङ्खला f. N. pr. einer der 16 Vidjâdevî H. 239.

वज्रशृङ्खलिका f. *Asteracantha longifolia Nees* Râǵân. in Nigh. Pr. — Vgl. वज्रास्थिशृङ्खला.

वज्रसंहत m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,11.

वज्रसंघात m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* Varâh. Bṛh. S. 57,8.

वज्रसत्त्व 1) adj. *eine diamantene Seele habend* Wassiljew 188. — 2) m. N. pr. eines Dhjânibuddha Burn. Intr. 525. Wilson, Sel. Works II, 12. 37. 39.

वज्रसत्त्वात्मिका f. N. pr. der Gattin Vâgrasattva's Wilson, Sel. Works II, 12.

वज्रसमाधि m. Bez. *einer best. Vertiefung* bei den Buddhisten Hiouen-thsang I, 457. II, 180. Vie de Hiouen-thsang 140.

वज्रसार 1) adj. *a) hart wie der Diamant:* भुज R. Gorr. 1,41,20. हृदय 4,19,18. मुष्टि Bâlar. P. 3,19,25. 7,10,59. 10,44,8. °प्रहारसदृशो दारुणं वचः Pañkat. 58,10; vgl. वज्रसमानसार MBh. 1,7076. — *b) diamanten:* स्तम्भ MBh. 13,5251. — 2) *Diamant:* वज्रसाराञ्चल (वेश्मन्) MBh. 5,3576. °घटितेव (v. l. वज्रलेपघटितेव Mâlatîm. 77, 2) Daçak. S. 149,16. — 3) m. N. pr. zweier Männer Kathâs. 58,80. fgg. Râǵa-Tar. 5,226.

वज्रसारमय (von वज्रसार) adj. *diamanten, hart wie der Diamant:* शिरस् MBh. 2,718. शृङ्ग 13,833. हृदय 9,60. Spr. 4480. R. 2,61,9. Kathâs. 11, 84. °त्व n. 44,5.

वज्रसारीकर् *hart wie der Diamant machen:* कुसुमबाणान् °कोपि Çiç. 54.

वज्रसूचि und °सूची f. 1) *eine diamantene Nadel:* °सूच्यय (प्रतोद) MBh. 13,2786. — 2) Titel einer dem Çaṁkarâkârja zugeschriebenen Upanishad Colebr. Misc. Ess. I, 113. Ind. St. 1, 250. Hall 128. Verz. d. Pet. H. No. 4 (व्याप्त°). — 3) Titel eines Werkes des Açvaghosha, herausgegeben 1860 von A. Weber. Falschlich वज्रशुचि Burn. Intr. 215. 557.

वज्रसूर्य m. N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,17.

वज्रसेन m. N. pr. eines Fürsten von Çrâvasti Çatr. 10, 30. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 397,*a*, 4. 402,*a*, No. 203.

वज्रस्थान n. N. pr. einer *Oertlichkeit* R. Gorr. 1,66,21.

वज्रस्वामिन् m. N. pr. einer der 7 Daçapûrvin bei den Ǵaina Wilson, Sel. Works I, 336. fgg. 341. Çatr. 14,193. fgg.

वैज्रहस्त 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend:* Indra RV. 1, 173,10. 2,12,13. 19,3. 6,22,5. Indra-Agni 1,109,5. die Marut 8,7, 32. Çiva Çiv. — 2) f. आ *a)* N. einer der 9 Samidh Gṛihjas. 1,27. — *b)* N. pr. einer buddhistischen Göttin Wilson, Sel. Works II, 39. Kâlakârma 1,119.

वज्रहूण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 5. 6. — Vgl. वज्रहूण.

वज्रहृदय n. Titel eines buddhistischen Werkes Burn. Intr. 543.

वज्रांशु m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Hariv. 9193 nach der Lesart der neueren Ausg., वज्रानु ed. Calc.

वज्राकर 1) m. *eine Fundgrube für Diamanten* Rasen. 18,20. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 158.

वज्राकृति adj. *die Gestalt des Donnerkeils habend:* das Zeichen des Ǵihvâmûlîja Vop. 1,16.

वज्राख्य 1) adj. *den Namen* वज्र *führend:* व्यूह MBh. 6,701. चन्द्र Varâh. Bṛh. S. 4,19. कील्क 57,6. कृच्छ्र Prâjaçkittenḍ. 9,*a*, 8. — 2) m. *eine Art Spath* Dhanvan. in Nigh. Pr. Suçr. 2,70,10.

वज्राङ्गी f. N. einer Tantra-Gottheit Vjutp. 105.

वज्राङ्ग 1) m. *Schlange* Râǵân. im ÇKDa. v. l. वज्राङ्ग wohl richtiger. — 2) f. ई *Heliotropium indicum* Bhâvapr. im ÇKDa. *Coix barbata Roxb.* Çabdak. ebend.

वज्राचार्य m. *ein Diamant von Lehrer* und zugleich N. pr. eines best. *Lehrers* Wilson, Sel. Works II, 17. 20. 29. Burn. Intr. 527.

वज्रादित्य m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra Râǵa-Tar. 4, 42. 333. 393.

वज्राभ (वज्र + आभा) m. *eine Art Spath* Râǵân. im ÇKDr.

वज्राभ्यास m. *multiplication crosswise or zigzag* Colebr. Alg. 171.

वज्रामृता f. N. einer Tantra-Gottheit Vîrûp. 105.

वज्राय् (von वज्र), °यते *zum Donnerkeil werden:* पक्वानां हि वधे सूत वज्रायते तृणान्यपि MBh. 7, 439. Spr. 2507. मृदुगतिर्वातोऽपि वज्रायते Mânâv. 201 = Çiç. ed. Bomb. 8. 4.

वज्रायुध 1) adj. *dessen Waffe der Donnerkeil ist*, m. Bein. Indra's Hariv. 7351. Bhâg. P. 6, 11, 13. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 120, 14.

वज्राशनि m. f. Indra's *Donnerkeil* Taik. 1, 1, 62. Gaṇiku. in Verz. d. Oxf. H. 191, *b*, 1. °समस्वन R. 4, 43, 38. वज्राशनीनां संपाते, °विभूषित, °निपात 5, 7, 64. Oft werden वज्र und अशनि von einander unterschieden, z. B. Hariv. 7351. fg.

वज्रासन n. 1) *ein diamantener Thron* Burn. Intr. 387. Hiouen-thsang 1, 438. 460. Vie de Hiouen-thsang 139. fg. — 2) Bez. *einer best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, N. 1. 102, *b*, 13. 20. 234, *a*, 21.

वज्रानु s. u. वज्रांशु.

वज्राभिघ्रङ्गुला f. *Asteracantha longifolia Nees* Râǵân. im ÇKDr. Dieser Ausdruck wird wohl eher zwei Namen enthalten: वज्रघ्रङ्गुला und अभिघ्रङ्गुला; vgl. वज्रघ्रङ्गुलिका.

वज्राह्निका f. *Carpopogon pruriens* Râǵân. in Nigh. Pr.

वज्रिन्नित् m. *Besieger* Indra's (वज्रिन्), Bein. Garuḍa's H. 231.

वज्रिन् (von वज्र) 1) adj. *a*) *den Donnerkeil habend:* Indra RV. 1, 7, 2. 32, 1. 3, 46, 1. 5, 22, 4. 10, 22, 2. AV. 10, 4, 12. Indra-Agni RV. 6, 59, 2. Çiva MBh. 13, 981. — *b*) *das Wort* वज्र *enthaltend* Pâṇâv. Bh. 10, 6, 3. — 2) m. *a*) Bein. Indra's AK. 1, 1, 1, 33. H. 171. Med. n. 124. यः कामयेत वज्री स्यामिति Pâṇâv. Bh. 12, 13, 12. MBh. 4, 821. 8, 3053. 14, 266. R. 2, 23, 33. 64, 32. 4, 18, 11. 6, 30, 17. Hcat. 9, 24. Çiç. 193, v. l. Vikr. 5. Kathâs. 17, 18. Bhâg. P. 3, 1, 39. 5, 12, 3. unter den Viçve Devâḥ MBh. 13, 4258. — *b*) *ein Buddha* Taik. 1, 1, 8. Med. — 3) f. Bez. gewisser Iṣṭakâ TS. 5, 7, 8, 1.

वज्रिवस् voc. (vgl. P. 8, 3, 1) = वज्रिन् 1) *a*) RV. 1, 121, 14. 6, 37, 4. 45, 18. — Scheint eine Nachbildung von घृष्विवस्, हरिवस् zu sein.

वज्रीकरण (von वज्र + 1. कर्) n. *das zum-Donnerkeil-Machen*, unter den 18 संस्काराः कुण्डानाम् Verz. d. Oxf. H. 105, *b*, 3.

वज्रीभूत (von वज्र + 1. भू) adj. *zum Donnerkeil geworden* Sây. zu RV. 8, 14, 13.

वज्रेन्द्र m. N. pr. zweier Männer Râǵa-Tar. 3, 105. 331.

वज्रेश्वरी f. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Wilson, Sel. Works II, 39.

वज्रोदरी f. N. pr. einer Râkshasî R. 5, 25, 44.

वज्रोली f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* Verz. d. Oxf. H. 235, *a*, 23.

वञ्च्, वञ्चति (गतौ) Naigh. 2, 14. Dhâtup. 7, 7. वञ्चिता und वञ्चिवा P. 1, 2, 24. Vop. 26, 203. वञ्क्ता P., Sch.; wann der Palatal in einen Guttural übergeht P. 7, 3, 52. 1) *wanken, wacksln, krumm —, schief gehen* AV. 4, 16, 2. त्रीणी दृणैर्न वञ्चसि (fälschlich वञ्चयसि Çvetâçv. Up. 4, 3) 10, 8, 27. एकामेको शकुनिकाख्लगिति वञ्चति *watschelt* VS. 23, 22. कपोताय क्लिन्नयताय वञ्चते Çâṅkh. Ça. 12, 16, 3. विशो वै राष्ट्राय वञ्चन्ति Çat. Br. 13, 2, 9, 6. *gehen —, gelangen zu:* वञ्चन्नाप्त्वन्तितिम् Bhaṭṭ. 14, 74. वञ्चिताप्यम्बरं दूरम् 7, 106. — 2) *schleichen* (in böser Absicht) VS. 16, 21. — 3) pass. वर्ज्यते *a*) *sich schaukeln, sich drehen, rollen, wälzen; sich tummeln* (von Rossen): वर्ज्यते वां ककुहासः RV. 1, 46, 2. 184, 2. मनसा वर्ज्यमानाः *mit Bedacht sich tummelnd* d. h. *besonnen und doch eilig* 3, 6, 1. वर्ज्यन्ते ते वज्रिणः 2. वर्ज्यस्वे वृते न पक्वे शकुनः AV. 20, 127, 4. — *b*) übertragen: स्तोमासो मनसा वर्ज्यमानाः *in der Brust sich bewegend* RV. 10, 47, 7. इन्द्रं मतिर्हृद आ वर्ज्यमानाच्छा पतिं गिरति *hervordringend aus* 3, 39, 1. — 4) वञ्चते MBh. 12, 10934 fehlerhaft für वर्ज्यते (s. caus.), wie die ed. Bomb. liest.

— caus. 1) einem Feinde, einer Gefahr *ausweichen, entgehen, entrinnen, entwischen;* act. mit acc.: यद्धिं वञ्चयति P. 1, 3, 69, Sch. Vop. 23, 52. तदस्माभिरिमं पापं तं च पापं सुयोधनम्। वञ्चयद्भिर्निवस्तव्यं क्वचाचाचं क्वचित्क्वचित् MBh. 1, 5794. लयमास्थाय (so die ed. Bomb.) राधेयो भीमसेनमवञ्चयत् 7, 5767. 9, 3224. Hariv. 13424. Kathâs. 64, 35. वातायवेगवञ्चितसैनिक 75, 89. स शरान्वञ्चयामास R. 5, 40, 9. 7, 32, 45. Kathâs. 49, 147. fg. Bhâg. P. 3, 18, 15. 10, 37, 5. 67, 14. मृत्युम् MBh. 9, 2291. R. 7, 23, 2, 34. med.: वञ्चयानो पुनश्चैव चेरतुः MBh. 9, 3195. ववञ्चयत मायाश्च स्वमायाभिर्नरद्विषाम् Bhaṭṭ. 8, 43. — 2) *Jmd anführen, täuschen, hintergehen, betrügen;* med. Dhâtup. 33, 29. P. 1, 3, 69. Vop. 23, 52. Gîr. 8, 7. धूर्ता पञ्चयन्ते जनानज्ञान् Kathâs. 24, 79. 28, 175. 39, 174. 66, 52. मूर्खीस्वामववञ्चत Bhaṭṭ. 15, 15. act. MBh. 13, 1636. 2236. Hariv. 7755. Mṛicch. 120, 25. Ragh. 10, 17. 33. Spr. 2819. 4962. Pras. 15, 4. LA. (III) 86, 12. Bhâg. P. 8, 9, 21. कालं वञ्चयता तं तम् so v. a. *Zeit gewinnend* 9, 7, 14. वञ्चयितुम् Kathâs. 7, 89. मद्राजं च राज्ञानमायान्तं पाण्डवान्प्रति। उपकूलैर्वञ्चयित्वा वर्त्मन्येव सुयोधनः MBh. 1, 497. R. 2, 37, 21. 3, 44, 20. 47, 16. Ragh. 12, 53. Kathâs. 24, 200. 28, 184. 39, 171. Râǵa-Tar. 5, 303. Bhâg. P. 5, 26, 9. Pañkat. 33, 12. 95, 15. 169, 1. pass.: वञ्च्यते (so mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 12, 10934. Kathâs. 29, 82. 32, 167. 34, 228. 61, 203. Pras. 19, 15. 27, 8. मया भूतेन्द्रियग्रामो नोपभोगैरवञ्च्यत *wurde nicht betrogen um* Kathâs. 13, 133. वञ्चित *angeführt, getäuscht, hintergangen, betrogen* AK. 3, 1, 41. H. 442. MBh. 1, 3242. 3, 11064 (S. 571). 5, 7449. 7451. R. 2, 24, 11 (23, 10 Gorr.). B. Gorr. 2, 35, 28. 59, 19. 3, 33, 18. 41, 16. 4, 34, 30. 5, 38, 10. 79, 3. Megh. 28. Kumâras. 4, 10. 5, 49. Mâlav. 51. Spr. 434. 3282. Kathâs. 17, 155. 18, 178. 20, 134. 26, 90. 37, 221. 61, 22. Daçak. 72, 8. Pras. 38, 3. Bhâg. P. 1, 15, 5. 3, 23, 57. 4, 23, 28. 25, 36. 62. 5, 13, 17. 14, 30. 10, 31, 47. Pañkat. 199, 22. Hit. III, 1. Harsh. Anth. 528, Çl. 1 (wo के न त्वया वञ्चिताः zu lesen ist). अवञ्चित Kathâs. 30, 34. 34, 210. Die Ergänzung im loc.: ननु नाम स्त्रियः साध्यः प्रियभोगेष्ववञ्चिताः (°भोगे य die neuere Ausg.)। पतीनामपरित्याज्याः Hariv. 4790. im instr.: तैस्तैः पात्रैर्वञ्चिताः Spr. 784. 1337. Mârk. P. 23, 81. im abl.: स एव वञ्च्यते तेन ब्राह्मणाभ्रङ्कागतो यथा Spr. 336. यद्दं सुतप्राप्तेः सपत्न्या वञ्चितेतया Kathâs. 72, 75. तद्वञ्चितवामनेत्रा *darum betrogen* so v. a. *dessen entbehrend* Ragh. 7, 8. *in seinen Erwartungen getäuscht* so v. a. *überrascht* R. 2, 84, 16. — 3) वञ्चिता f. Bez. *einer Art Räthsel* Verz. d. Oxf. H. 204, *a*, 27. — 4) वञ्चयसि Çvetâçv. Up. 4, 3 fehlerhaft für वञ्चसि, wie AV. 10, 8, 27 gelesen wird.

— intens. वनीवञ्चीति, वनीवञ्च्यते P. 7, 4, 84. *sich drehen, sich tum-*

mein: ग्रवावचीत्सारथिरस्य केशी RV. 10,102,6.

— वच्छ् pass. *provolvi ad:* एवं हि वो मतिर्ममाच्छा मुत्रिङ् वध्यते RV. 1,142,4.

— वनु *nachwanken* TS. 7,4,22,1.

— वमि caus. *Jmd hintergehen, betrügen:* दुहित्रास्म्यभिवञ्चितः MBh. 3,7506.

— वा pass. *hervorrollen, hervorquellen* RV. 3,2,2. वा वंव्यस्व चम्वोः पूयमानः 97,2. 108,10.

— उद् *hinauswanken, hinausschleichen* TS. 7,4,22,1.

— उप caus. *Jmd in seinen Erwartungen täuschen:* °वञ्चित R. 2,52, 18. — Vgl. सूपवञ्चन.

— निस् *hintergehen:* शपथैः किं धूर्त निर्वञ्चने Spr. 668.

— परि *herumschleichen* VS. 16,21. TS. 7,4,22,1. — caus. *Jmd anführen, hintergehen:* °वञ्चित Hariv. 7107. Spr. 3193.

— सम् *schwanken* TS. 7,4,22,1.

वञ्चक (vom caus. von वञ्च्) nom. ag. 1) *der Andere anführt, Betrüger* AK. 3,1,47. Trik. 3,3,41. H. 376. an. 3,94. Med. k. 134. M. 9, 258. MBh. 2,527. 1207. 7,2598. स्युर्वञ्चका न वञ्चकः Spr. 1625. Kathâs. 39,121. Khandom. 153. प्रकाश°, प्रच्छन्न° M. 9,257. ग्रवञ्चकः परिक्षितः *ehrlich* Spr. 3288. in comp. mit dem Object: ज्ञ° Hariv. 7124. विश्वस्त° Kathâs. 26,240. धन्य° Çâk. 14,288. ज्ञगद्वञ्चक Verz. d. Oxf. H. 133,*b*,36. *Bösewicht* (खल) H. an. Med. — 2) m. *Schakal* AK. 2,5,3. Trik. H. an. Med. Hâ. 78. Hit. 22,6. 14. 40,20. — 3) m. *Moschusratze* गोस्तनकुल, गुरुवधु H. an. Med. — Vgl. ग्रात्म°, ज्ञगद्वञ्चक, बन्धु°.

वञ्चति m. *Feuer* H. ç. 109. — Vgl. वञ्चति.

वञ्चंय (von वञ्च् Unâdis. 3,113. m. *Betrüger* Uṇâval. = वञ्चना und कोकिल Unâdisûtr. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

वञ्चन (vom caus. von वञ्च्) n. *das Betrügen, Betrug, Täuschung* H. 379. Hall. 4,63. °प्रवणा वेश्याः Kathâs. 3,54. Spr. 213. °चतुना 4131. गुरुष्वपि वञ्चनम् Vet. in L.A. (III) 30,4. कार्यविक्रयकाले च सर्वः सर्वस्य वञ्चनम् । युगान्ते भरतश्रेष्ठ वित्तलोभात्करिष्यति ॥ MBh. 3,12062. fg. विश्रम्भप्रतिपन्नानाम् 2555. Mârk. P. 15,41. कामि° Spr. 1660. 1815. Kathâs. 22,114. परवञ्चनशीलिका 66,111. Çâk. 10,131. वञ्चनं कृ mit dem acc. der Person *Jmd anführen, betrügen* Pañkat. 1,10,17. काल° so v. a. *Zeitgewinnung* Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,29. वञ्चना f. dass.: वञ्चनां प्राप् *getäuscht werden* MBh. 1,3248. 3,15669 (वञ्चनम् Draup. 6,24). वञ्चनां लभ् R. 2,34,37. MBh. 1,3244. °योग 4,1860. 1563. 9,3816. 12, 167. नार्हसि वञ्चनाम् 14,2769. Hariv. 9707. °पण्डितत्व Mṛicch. 17,12. 26,8. Vaṃç. Bḥ. S. 104,5. Râja-Tar. 2,109. Siṃh. D. 525 (वञ्चनाकास्य° zu schreiben). लोकस्य Spr. 4669. Râja-Tar. 1,237. 6,139. pl. MBh. 12, 2026. Kathâs. 24,80. वञ्चनां कृ mit dem acc. der Person *Jmd anführen, betrügen* Pañkat. 2,5,9. 7,9. *Betrug* so v. a. *verlorene Mühe, verlorene Zeit:* स्वर्गाभिसंधिमुकृतं वञ्चनामिव मेनिरे Kumâras. 6,47. मन्यते स्म पिबतां विलोचनैः पद्मपातमपि वञ्चनां मनः Raghu. 11,36. शीलवञ्चना so v. a. *Verstoss gegen* Mṛicch. 18,20. An den folgenden Stellen ist es nicht zu entscheiden, ob वञ्चन oder वञ्चना gemeint ist, Kathâs. 7,37. 16,35. fg. 39,109. 56,269. — Vgl. मृत्यु°.

वञ्चनता f. = वञ्चन, घ° *Ehrlichkeit* Spr. 4262. Da in demselben Sprache auch समुत्साकता und विज्ञानता in der Bed. von समुत्साक und विज्ञान erscheinen, braucht ग्रवञ्चनता nicht als nom. abstr. von einem adj. ग्रवञ्चन *ohne Trug, ehrlich* gefasst zu werden.

वञ्चनवत् (wie eben) adj. *trügerisch* Nîl. 4,15.

वञ्चनीय (vom caus. von वञ्च्) adj. 1) *dem man entgehen —, entrinnen muss:* शत्रोर्विख्यातवीर्यस्य वञ्चनीयस्य विक्रमैः R. 6,69,5. — 2) *zu hintergehen, anzuführen* R. 5,9,33. Spr. 763.

वञ्चयितृ (wie eben) nom. ag. *Betrüger* Hariv. 13476. परेषाम् Vaṃç. Bḥ. S. 69,3.

वञ्चयितव्य (wie eben) adj. *zu hintergehen, anzuführen* MBh. 1,1788. n. impers. mit dem gen. des obj.: ग्राशावतां ग्रदृशतां च लोके किमर्थिनां वञ्चयितव्यमस्ति *darf man in der Welt Bedürftige u. s. w. hintergehen?* Spr. 3077.

वञ्चित्क von वञ्चित, part. praet. pass. vom caus. von वञ्च्, in पत्त°.

वञ्चिन् adj. *anführend, betrügend* in ग्रागत°.

वञ्चुक und वञ्चूक adj. *betrügerisch* Çabdar. im ÇKDa.

वञ्च्य part. fut. pass. von वञ्च् P. 7,3,63. Vop. 26,8. — Vgl. वञ्च्.

वञ्जरा f. N. pr. eines Flusses Paiçâcîtrend. 11,*b*,9.

वञ्जुल 1) m. *a)* N. verschiedener Pflanzen: *Dalbergia ougeinensis Rosb.* AK. 2,4,2,7. H. an. 3,683. Med. l. 129. *Calamus Rotang Lin.* AK. 2,4,2,10. H. 1137. H. an. Med. Hall. 2,16. *Jonesia Asoca Rosb.* AK. 2,4,2,45. H. an. Med. Râjân. (°द्रुम) im ÇKDa. — MBh. 13,2330. Hariv. 12674. R. 3,79,34. 4,1,12. 5,39,2. Suçr. 1,141,14. 2,39,11. 284, 7. 297,9. 378,16. Vaṃç. Bḥ. S. 54,50. 55,11. 95,16. Uttarar. 34,11 (46,1). Gîv. 1,42. 7,11. 11,2. Siṃh. D. 19,19. 329,13. — *b) ein best. Vogel* Hall. 2,99. R. 3,68,7. 4,13,8. Vaṃç. Bḥ. S. 48,6. 86,20. 98,1. — 2) f. वा *a) eine Kuh, die viel Milch giebt,* H. 1269. — *b)* N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,22. VP. 185, N. 80.

वञ्जुलक m. 1) *eine best. Pflanze* Bhâv. P. 3,2,16. °द्रुम Hariv. 12676. — 2) *ein best. Vogel* R. 2,74,18. 78,28. वञ्जुलकः कीर्त्यते खदिरचक्षुः Vaṃç. Bḥ. S. 88,5. 11.

वञ्जुलप्रिय m. *Calamus Rotang Lin.* Ratnam. im ÇKDa.

1. वट्, वर्टति Dhâtup. 9,13 (वेष्टने). 19,17 (परिभाषणे). वर्टयति 35,5 (ग्रन्थे, वेष्टने). 65 (विभाजने).

2. वट् ein Opferausruf: श्येनाय पर्वनि वट् TS. 3,2,8,1. नृषदे वट् 5,4. 8,1. वेट् statt dessen VS.

वट m. (?) Sidd. K. 249,*a*,3. 1) m. *Ficus indica* (vgl. न्यग्रोध) AK. 2. 4,2,13. 3,4,23,93. Trik. 3,3,100. H. 1132. an. 2,97. Med. l. 23. Hall. 2,41. MBh. 1,3218. 3,41. fg. 8307. 11570. 7,2382. 8,2021. 13,635. 4253. 5046. 5970. Hariv. 3114. 3752. 7965. 14650. R. 2,52,96 (33 Gorr.). Suçr. 1,314,4. 2,26,18. 193,1. 393,13. °क्षीर 67,9. Ragh. 13,53. Spr. 710. 3890. 4702. Vaṃç. Bḥ. S. 53,55. 54,96. 119. 124. 60,8. 85,3. Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,162. Weber, Râmây. Up. 289. Kathâs. 20,37. 25,216. 40,90. 49,154. 62,213. Râja-Tar. 3,430. 4,448. VP. 168. Weber, Kṛishṇaj. 256. Bhâv. P. 3,33,4. 4,6,31. 18,25. 5,16,25. 7,9,38. 8,2,12. Mârk. P. 54,21. 101,8. Pañkat. 1,1,12. 26. 40. 4,39. 43. 6,17. 7,31. 33. 68. Paṃkat. 9,13. fg. 23. 98,9. 104,17. 134,5. Hit. ed. Jones. 2357. Vet. in L.A. (III) 21,11. ad 13,17. Dhûrtas. 79,14. Gaṇâp. zu Siddhânta. 4. Verz. d.

Oxf. H. 17, *b*, No. 63, Çl. 5. अगस्त्य° N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 1,7813; vgl. अरुन्धती°, गृध°. Das f. वटी in मार्गवटी Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, N. 9. — 2) m. *ein best. Vogel* Bhâg. P. ed. Bomb. 3,10,21 (वक ed. Bomb. 23). 10,66,9. — 3) *Strick*, m. f. (ई) und n. AK. 2,10,27. Trik. 3, 3,100. 5,23. Med. m. Halây. 2,442. f. H. 928. वट im comp. Gaupap. zu Sâṁkhyak. 17. — 4) m. *Cypraea moneta, Otterköpfchen* Trik. 3, 3,100. H. an. Med. — 5) m. *Kügelchen, Pille* (गोल) H. an. वटी f. dass. Çârṅg. Saṁh. 2,7,1. गिरङ्गवटी Verz. d. B. H. No. 966. *Klösschen, Knöpfchen* (vgl. वटक) Bhâvapr. im ÇKDa.; vgl. u. तापस्तर 2). — 6) m. = भल्ल H. an. — 7) m. = साम्य H. an. — 8) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2536. — 9) f. ई *ein best. Baum*, = नदीवट Râjân. im ÇKDa. — 10) गाढा वटी Bez. *einer best. Lage im Spiel* Katurañga: नैकैका वटिका यस्य विद्यते खेलने यदि । गाढा वटीति विख्याता पदं तस्य न दुष्यति ॥ Tithjâdit. im ÇKDa. — Vgl. उपवट, कल्प°, गृध°, तो° (वट in dieser Zusammensetzung ist *Ficus indica*), नदी°, नभो°, प्राग्वट, भद्र°, मण्डल°, मुञ्ज°, रुद्र°, मधुवटी, मुद्गर्क°, रक्त°, सिद्ध°.

वटक m. AK. 3, 6, 3, 17. 1) *Klösschen, Knöpfchen* (gewöhnlich aus Mehl von Hülsenfrüchten gemacht, eingeweicht, gewurzt und in Oel geschmort); m. Trik. 2,9,14. H. 400. Suçr. 1,224,15. n. 233,6. m. oder n. P. 5,2,82, Vârtt. वटका f. Suçr. 2,468,12. वटिका H. ç. 98. Dhûrtas. 79,14 (von Lassen in वटिका geändert). अम्बिकावट:, तक्र°, माष°, मुद्ग° वटिका Bhâvapr. im ÇKDa. वटका, वटिका f. *Pille* Verz. d. B. H. 283 (XIII). वटिका Çârṅg. Saṁh. 2,7,1. वटकादिकल्पना Verz. d. Oxf. H. 315, *a*, No. 478. — 2) m. *ein best. Gewicht*, = 8 Mâsha Çârṅg. Saṁh. 1,1, 16. = 2 Çâṇa Verz. d. Oxf. H. 307, *b*, 3. — 3) वटिका f. *Schachfigur*; s. oben u. वट 10). — Vgl. काञ्जिकवटक unter काञ्जिक 1), खण्ड°, कामुन्दीवटिका.

वटकणिका s. u. वटकणीका.

वटकणीका f. *die kleinste Partikel vom indischen Feigenbaum* MBh. 12,7909, wo Nîlak. रेतो वटकणीकायाम् st. रेतो वटकणिकायाम् des Textes in der ed. Bomb. und st. रता वटकणीयानाम् der ed. Calc. liest.

वटकणीय s. u. वटकणीका.

वटकैकनी (von वटक) f. Bez. *einer best. Vollmondsnacht, in der Klösschen gegessen werden*, P. 5,2,82, Vârtt.

वटल (वट + 1. ल) P. 6,2,82. m. Schol.

वटतीर्थनाथ N. eines Liṅga: °माहात्म्य Mack. Coll. I,82.

वटपत्र 1) m. *eine best. Pflanze*, = सितार्जक Râjân. im ÇKDa. — 2) f. आ *eine Art Jasmin*, = त्रिपुरमाली Ratnam. im ÇKDa. — 3) f. ई *eine best. Pflanze*, = झावनी Bhâvapr. im ÇKDa.

वटपत्रतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 76, *b*, 40. fg.

वटर m. = चञ्चल, शठ, चोर, कुक्कुट, वेष्ट Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. वठर.

वटवती f. संज्ञायाम् gaṇa मधादि zu P. 4,2,86.

वटवामिन् adj. *in Feigenbäumen hausend*; m. *ein Jaksha* H. 194.

वटाकर m. v. l. für वाटक *Strick, Seil* Râmâçrama zu AK. 2,10,27 nach ÇKDa.

वटारक 1) m. *Strick* H. 928. वटारका f. ÇKDa. nach einem Purâṇa und Nîlak. zu MBh. 3,12776. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 3, 12776. 12,12460. Vgl. वराटक, वटाकर. — 2) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69.

वटारकमय adj. *aus einem Seil gebildet*: पाश MBh. 3,12782.

वटावीक m. = नामचोर *ein Mann, der sich eines falschen Namens anmaasst*, Çabdam. im ÇKDa.

वटि Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,117. P. 5,2,139. f. *Termite* Trik. 2,5,12. Hân. 110.

वटिक m. *Bauer im Schachspiel* ÇKDa. u. चतुरङ्ग. — वटिका s. u. वटक.

वटिन् m. dass. ebend. und Bhâvishja-P. bei Gold. I, 421, *a*, 2 v. u. adj. *stringed, having a string; circular, globular* Wilson.

वटिभ adj. von वटि P. 5,2,139.

वटी s. u. वट.

वर्तूरेण und मण्ड° adj. *breit* nach Sây.: छिन्धि वर्तूरिणा पदा मण्डूरिणा पदा ṚV. 1,133,2.

वटेश्वर (वट + ई) m. 1) N. eines Liṅga Râjâ-Tar. 1,194. fg. — 2) N. pr. zweier Männer Verz. d. Oxf. H. 143, *a*, No. 296. 144, *b*, No. 300.

वटेश्वरसिद्धान्त m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 286, *a*, 8. Verz. d. B. H. No. 1166. Weber, Ind. 103.

वटोदका (वट + उदक) f. N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 4,28,35.

वटु (वट) m. N. pr. eines Mannes Râjâ-Tar. 8,347. 570. 962. 969. — Vgl. नाग°.

वटुदेव m. desgl. Râjâ-Tar. 7,1310. वाटु° 1302.

वट्य adj. von वट gaṇa बलादि zu P. 4, 2, 80. subst. Bez. *eines best. Minerals* Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

वठ् (वठ्, वेठति (स्थौल्ये, पैन्ये) Dhâtup. 9,46.

वठर Uṇâdis. 5,39. = शठ Trik. 3,3,372. H. an. 3,530. = मन्द Trik. = मूर्ख Uṇâdis. = सम्वत्स H. an. = शब्दकार und वक्र Uṇâdiv. im Saṁkshiptas. nach ÇKDa. — Vgl. वटर.

वडभी und °भि f. *Söller* Trik. 2,2,5. Hariv. 4529. 4533. 8788. 8936. 16131 (die neuere Ausg. überall वलभी). R. 3,61,9. 5,14,33. Megh. 39. — Vgl. वलभी.

वडव 1) m. oxyt. nach dem Comm. *ein männliches, aber einer Stute ähnelndes Pferd, das deshalb den Hengst anzieht*, TS. 2,1,8,3. Diese Bedeutung hat sich ohne Zweifel erst aus dem f. वडवा *Stute* entwickelt. — 2) f. वडवा *a*) *Stute* AK. 2,8,3,14. Trik. 3,3,422. H. 1233. an. 3,711. Med. v. 49. fg. Halây. 2, 285. TS. 7,1,8,2. TBr. 1,8,8,3. 3,8,23,3. Çat. Br. 6,5,3,19. 11,1,6,2. 12,7,2,5. यस्यस्रो वडवां स्कन्देत् 13,3,6,1. 4,3,14. Kâty. Çr. 15,10,20. Kauç. 93. 110. MBh. 4,319. Hariv. 361. R. Gorr. 2, 17,24. Varâh. Bṛh. S. 46,53. 50,24. Kathâs. 37,162. Râjâ-Tar. 4,396. 5,280. Bhâg. P. 3,1,26. Pañkat. 232,16. eine Gattin Vivasvant's wird als *Stute* die Mutter der beiden Açvin Bhâg. P. 6,6,38. 8,13,9. fg. Mârk. P. 77,23. Daçak. 64,13. °सुता H. 181. — *b*) = कुम्भदासी Trik. H. ç. 113. H. an. Med. = स्त्रीभेद (नारीजात्यन्तर) und द्विजस्त्री (द्विजयोषित्) H. an. Med. = गृहदासी Mit. 268,15. = वेश्या Vaijâs. 50,15. — *c*) N. pr. einer Frau mit dem patron. Prâtithoji Âçv. Gṛhj. 3, 4, 4. Çâṅkh. Gṛhj. 4,10. AV. Paric. in Verz. d. B. H. 92, 6. N. pr. einer Gattin Vasudeva's, die als परिचारिका bezeichnet wird, Hariv. 1949. — *d*) N. pr. eines Flusses MBh. 3,14233. eines Wallfahrtsortes 8084. — Die älteren Texte schreiben häufig वडव, वडवा, die Bomb. Ausgg.

वडवा, die Hdschrr. in Malajâlim- und Grantha-Characteren वडवा. — Vgl. पारेवडवा.

वडवाग्नि m. *das am Südpol gedachte Höllenfeuer, welches kein Wasser des Meeres zu löschen vermag* (vgl. u. घोर्व), Taik. 1, 1, 68. H. 17. MBh. 3, 14149. Kathâs. 26, 189. — Vgl. वाडवाग्नि.

वडवानल m. 1) dass. Gorâkhaç. 3, 17. 23. Spr. 419. 2153. — 2) *ein best. Pulver, aus Pfeffer und anderen scharfen Stoffen, das die Verdauung befördert*, Çârṅ. Saṃh. 2, 6, 39.

वडवामुख s. वडवाकृत.

1. वडवामुख n. *das Stutenmaul* (vgl. u. घोर्व), Bez. *des Einganges zur Hölle am Südpol*, H. 1362. Hall. 3, 1. Âryabhaṭa, Siddh. 3, 13. MBh. 7, 9608 (wo die ed. Bomb. पिवत्तोयमयं liest). 13, 3230. Harîv. 2363. 3422. 3426.

2. वडवामुख 1) adj. in Verbindung mit अग्नि u. s. w. oder m. mit Ergänzung dieser Worte = वडवाग्नि Taik. 1, 1, 68. H. 1100. Hall. 1, 70. MBh. 1, 1220. 4, 1380. Harîv. 11415. R. 2, 59, 30. 4, 40, 50. fg. Kathâs. 26, 10. 21. 137. als Beiw. Çiva's MBh. 13, 1169. personif. als ein Maharshi, der mit Nârâyaṇa identificirt wird, 12, 13223. — 2) m. pl. N. pr. eines mythischen Volkes Varâh. Bṛh. S. 14, 17. Mârk. P. 58, 30.

वडवायक्त्र n. = 1. वडवामुख MBh. 13, 2909. °कृतभुज् Uttarar. 94, 14 (123, 1).

वडवाकृत adj. als Bez. einer Art von Sclaven Mit. 268, 4. वडवा गृहदासी तया कृतस्तत्पोषेण लोभेन gedr.) तामुद्वाह्य दासत्वेन प्रविष्टः 15. fg. वडवाभृत Vivâd. 43, 15.

वडविन् adj. von वडवा gaṇa ओत्कादि zu P. 5, 2, 116.

वडा f. = वट *Klösschen, Knöpfchen* Çabdam. im ÇKDr.

वडिका Duṛgâs. 79, 14 unnütze Aenderung von Lassen st. वटिका der Hdschr.

वडिश (so schreiben die Bomb. Ausgg.) m. (selten und von den Lexicogrr. nicht erwähnt) und n. *Angel, Haken zum Fangen von Fischen* AK. 1, 2, 3, 16. H. 929. Hall. 4, 79. MBh. 1, 1239. 3, 11495. 8, 3387. R. 3, 57, 7. Suçr. 1, 25, 1. Spr. 36. 2010. 2877. Bhâg. P. 3, 28, 34. *ein best. chirurgisches Instrument in Hakenform* Suçr. 1, 26, 13. Vishṇu. 25, 31. Nach Taik. 3, 3, 20 auch f. आ, nach Bhân. zu AK. auch f. ई ÇKDr. — Vgl. बलिश.

वडेरु m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 117, *b*, 13.

वडोमक N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 8, 1266.

वड्र adj. *gross* AK. 3, 2, 10.

वण्, वँणति (शब्दे) Duâtup. 13, 3. caus. aor. अवीवणत् und अववाणत् Nâma in Siddh. K. zu P. 7, 4, 3. Vop. 18, 3.

वण s. धिग्वण.

वणथलग्राम (wohl aus वनस्थल° entstanden) m. N. pr. eines Dorfes Verz. d. Oxf. H. 383, *a*, No. 462.

वणिकव्रत Verz. d. B. H. 135, *b*, 9 fehlerhaft für विजयदादशीव्रत; vgl. Verz. d. Oxf. H. 34, *b*, 12.

वणिक्कर्मन् (वणिज् + क°) n. *die Beschäftigung des Kaufmanns, Handel* Pañkat. 7, 9.

वणिक्क्रिया f. dass. Varâh. Bṛh. S. 69, 20.

वणिक्पथ m. = निगम AK. 3, 4, 22, 142. H. an. 3, 467. Med. m. 45. = विपणि AK. 3, 4, 22, 54. 1) *die Beschäftigung des Kaufmanns, Handel* M. 1, 90. 10, 47. MBh. 12, 11288. Harîv. 363. Kâm. Nîtis. 5, 78. — 2) *Kaufmannsladen* Çiç. 3, 38. अचेराभूतया भूमिर्यया रात्रौ वणिक्पथाः। अतिष्ठन्विवतद्वारा: Râǵa-Tar. 6, 7. — 3) *Kaufmann:* वणिक्पथा भिन्नवो यद्यार्णवे Bhâg. P. 8, 11, 25. 10, 42, 13. — 4) *die Wage im Thierkreise* Bhâg. P. 11, 12, 6.

वणिक्सार्थ m. *Handelskarawane* Bhâg. P. 5, 14, 1.

°वणिग्जन m. *Kaufmann*, coll. *Kaufleute* R. 1, 1, 96. Mâlav. 67, 21. Varâh. Bṛh. S. 15, 29. 16, 29. Mârk. P. 18, 3.

वणिग्बन्धु m. *die Indigopflanze* Çabdam. im ÇKDr.

वणिग्भाव m. *Kaufmannsstand, Handel* AK. 2, 9, 3.

वणिग्वर् m. *Kamesi* Çabdam. im ÇKDr.

वणिग्वृत्ति f. *Handel, Kram, Schacher* Spr. 664 (pl.).

वणिग्मार्ग m. = विपणि H. 988. — Vgl. वणिक्पथ.

वणिज् Uṇâdis. 2, 70. 1) m. *a) Kaufmann, Krämer* Nir. 2, 17. AK. 2, 9, 78. H. 867. an. 2, 76. Med. ǵ. 26. Hall. 2, 416. ṚV. 1, 112, 11. 5, 45, 6. AV. 3, 15, 1. M. 7, 127. 8, 169. MBh. 3, 2539. R. 1, 5, 16. 2, 36, 2. 48, 3. Varâh. Bṛh. S. 5, 29. 40. 9, 31. 10, 6. 7. 13, 5. 11. 13. Spr. 1937. 3980. Kathâs. 18, 292. 295. 27, 15. 61, 2. Bhâg. P. 7, 10, 4. Hit. 28, 1. 45, 6. वणिग्धन AK. 3, 4, 11, 46. — *b) die Wage im Thierkreise* Varâh. Bṛh. S. 1, 13. Ind. St. 2, 260. — *c)* N. *eines best.* Karaṇa (*eine astrologische Eintheilung der Tage*) H. an. Med. Varâh. Bṛh. S. 99, 7. — 2) f. *Handel* H. an. Med. M. 10, 79. — Vgl. f. पण्, पानवणिज्, पोत°, मरुवणिज्.

वणिज m. = वणिज् 1) *Kaufmann* Colebr. und Lois. zu AK. 2, 9, 78. unter den Beinn. Çiva's MBh. 13, 1223. — 2) *die Wage im Thierkreise* Varâh. Lagh. 1, 21 in Ind. St. 2, 282. — 3) N. *eines best.* Karaṇa Varâh. Bṛh. S. 99, 4.

वणिजक m. *Kaufmann* Med. r. 176.

वणिज्य (von वणिज्) n. *Kram, Handel* Kâç. in Siddh. K. zu P. 5, 1, 126. Taik. 3, 5, 20. Hall. 4, 76. वणिज्या f. dass. Mâdhava in Siddh. K. zu P. 5, 1, 126. AK. 2, 9, 80. Taik. H. 867. Hall. Çat. Br. 1, 6, 4, 21. Pañkav. Br. 17, 1, 2. MBh. 3, 11294. 12, 2356. Kathâs. 13, 68. 74. 27, 188. 29, 75. 194. 36, 75. 52, 318. 61, 3. Mârk. P. 30, 76. 57, 9. — Vgl. वाणिज्य.

वणट् (v. l. वणट्), वँणटति (विभाजने) Duâtup. 9, 43. वणटँयति (auch वणटाप्यति nach Durgâs. im ÇKDr.) dass. 32, 48. 35, 65. *vertheilen:* ज्ञातिभिर्वणट्यते नैव — विभाज्यते मरुधनम् Spr. 985. — Vgl. वणड्, वणट्.

वणट m. 1) *Theil* H. 1434. — 2) *der Griff einer Sichel* H. 892. — 3) *ein unverheiratheter Mann* (oder adj. *unverheirathet*) Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. वणड, वणठ.

वणटक m. *Theil* AK. 2, 9, 90.

वणटाल m. 1) *Schaufel.* — 2) *Schiff.* — 3) *eine Art Kampf* H. an. 3, 682. Med. l. 129. — वणठाल ÇKDr. nach denselben Autt., वणटाल Wilson nach H. an.

वणठ्, वँणठते (एकचर्यायाम्, एकचरे) Duâtup. 8, 9.

वणठ 1) adj. *a) verkrüppelt, verstümmelt* (खर्व). — *b) unverheirathet* H. an. 2, 108. Med. th. 8. — 2) m. *a) Diener* H. an. — *b) Lanze* H. an. Med. — Vgl. वणट.

वणठर m. 1) *die weibliche Brust.* — 2) = करीरकोष *(the sheath that envelopes the young bamboo* Wils.). — 3) *ein junger Schoss bei der*

Weinpalme. — 4) *Hundeschwanz.* — 5) = स्थगिकारज्जु (*a rope for tying a goat, etc.* Wils.; sollte er etwa कृगिका gelesen haben?) Med. r. 189. — 6) *Hund.* — 7) *Wolke* Wilson nach Rigan. — Die gedr. Ausg. der Med. schreibt वण्ठर्, ÇKDa. und Wilson व°.

वण्ड्, वँण्डते (विभाजने, v. l. वेष्टने) Dhâtup. 8, 18. वण्डँयति (विभाजने) 32, 18, v. l. — Vgl. वण्ट्, वण्ड.

वत्, वतति mit अपि *verstehen, begreifen:* अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम RV. 7, 3, 10. 60, 7. — caus. *verstehen —, begreiflich machen:* भद्रं नो अपि वातय मनः *wecke in uns einen guten Sinn* RV. 10, 20, 1. 25, 1. पित्रे पुत्रासो अप्ययवीवतन्नृतम् 13, 5. मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत नवेदा म ऋतानाम् RV. 1, 165, 12. — Vgl. स्वपिवात.

वतंस m. = श्रवतंस H. 654, Sch. an. 3, 747. Med. s. 36. *Kranz, reifenförmiger Schmuck* (auf dem Scheitel und am Ohre getragen) Pañcar. 3, 11, 4. Gîv. 2, 3. Kâdamb. 161. am Ende eines adj. comp. f. आ 50.

वतंसक m. dass. Kâdamb. 132.

वैतण्ड m. N. pr. eines Mannes Uṇâdis. zu Unâdis. 1, 138. P. 4, 1, 108. gaṇa शार्ङ्गरवादि zu 73. गर्गादि zu 105. शिवादि zu 112. वतण्डा: *die Nachkommen des* Vataṇḍa Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56, 36. तण्ड-वतण्डा: *die Nachkommen des* Taṇḍa und Vataṇḍa gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6, 2, 37. वैतण्डी f. *ein weiblicher Nachkomme des* Vataṇḍa P. 4, 1, 109. — Vgl. वातण्ड, वातण्ड्य.

वतरणी MBh. 3, 8148 fehlerhaft für वैतरणी, wie die ed. Bomb. liest.

वतायन m. Taitt. 3, 3, 4 wohl fehlerhaft für वा°.

वति f. nom. act. von वन् P. 6, 4, 37, Sch.

वत्र् f. = देवनदी, सत्यवान्, पयस् und अतिरोग Uṇâdis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa. — Vgl. रत्र्.

वत्रोका f. = श्रवत्रोका Bhâs. zu AK. 2, 9, 69 nach ÇKDa.

वत्स Uṇâdis. 3, 62. P. 7, 2, 9, Sch. 1) m. und f. आ (gaṇa अजादि zu P. 4, 1, 4) *Kalb, Junges; Kind* AK. 2, 9, 62. 3, 4, 30. 228. Taitt. 2, 9, 20. 3, 3, 450. H. 1260. an. 2, 389. Med. s. 10. fg. Hallây. 2, 109. Viçva bei Uṇâdis. RV. 1, 164, 5. 27. 2, 2, 2. वत्समिव मातरा संरिहाणे 3, 33, 3. गावो वत्सैर्वियुता: 5, 30, 10. घरीळ्ह 4, 18, 10. 8, 61, 5. वत्सो धारुरिव मातरम् AV. 4, 18, 2. 13, 1, 10. वत्सान्घातुको वृक: 12, 4, 7. 9, 4, 3. Ait. Br. 6, 3. Çat. Br. 1, 5, 2, 20. 7, 4, 1. 2, 2, 4, 1. वत्सं वाजं गोरभिर्जिघर्ति TS. 6, 4, 11, 4. °दक्ष्वी Çâṅkh. Br. 25, 15. Kâty. Ça. 22, 1, 20. स्त्री° Çâṅkh. Ça. 2, 8, 7. °तल्ली M. 4, 38. 9, 50. 11, 134. R. 2, 24, 9. Rag. 1, 84. Spr. 357. 2631. 2907. 4792. Varâh. Bṛh. S. 49, 11. Pañcat. 169, 25. सदृशवत्सा adj. Âçv. Gṛhj. 1, 13, 2. ग्रीव° Pân. Gaṇ. 3, 4. स° MBh. 1, 3942. R. Gorr. 1, 74, 29. Bhâg. P. 9, 15, 26. स° Jâtâ. 1, 170. वद्ध° R. 2, 40, 42. Rag. 2, 1. प्रोढ° H. 1267. Hallây. 2, 114. उरणकवत्स Bhâg. P. 5, 14, 3. वत्सविवृद्धिनिमित्तं तीरस्य पया प्रवृत्तिरासीत् Siddhântak. 57. *Kind, Sohn* R. Gorr. 2, 34, 16. Uttarar. 3, 15 (8, 9). वत्सैकरत्तम् *Kinder und Greise* gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6, 2, 37. वत्सा Kathâs. 25, 168. मनो: Bhâg. P. 3, 22, 18. वत्सया मद्रावत्या *so v. a. vom lieben Kinde* Mud. Kathâs. 104, 54. Prab. 104, 18. जीवद्वत्सा *deren Kind am Leben ist* Sûçr. 1, 371, 16. बालवत्सा *deren Sohn noch ein Knabe ist* MBh. 3, 16666. R. Gorr. 2, 42, 18. वत्स voc. *Kind* als Schmeichelwort Sin. D. 172, 3. MBh. 1, 691. R. 1, 39, 3. 63, 19. 67, 12. 2, 37, 16. 64, 29. Sûçr. 1, 3, 5. 13, 1. 119, 13. Rag. 2, 61. Çik. 109, 18. Vikr. 70, 10. Rîga-Tar. 3, 120. Prab. 19, 4. Bhâg. P. 4, 8, 11. 23. Mârk. P. 16, 7. Dhûrtas. 73, 10. 75, 10. Çuk. in LA. (III) 34, 7. वत्से voc. f. Kumâras. 5, 4. Çik. 51, 13. 17. 71, 16. 109, 21. Mâlav. 23, 11. Uttarar. 5, 14 (8, 9). Kathâs. 24, 29. 25, 167. 56, 26. Prab. 83, 5. Pañcat. 130, 4. अम्ब वत्सेति (संधिरार्ष: Comm.) Bhâg. P. 3, 22, 25. वत्साम् voc. pl. 14, 12. Sûçr. 1, 1, 15. — 2) m. *Jahr* (vgl. वत्सर) AK. 3, 4, 30. 228. Taik. 3, 3, 450. H. ç. 25. H. an. Med. Hallây. 5, 22. Viçva. — 3) *Brust*, n. AK. 2, 6, 3, 29. Taik. Med. und Viçva; m. H. 602 und H. an. unbestimmt ob m. oder n. Hallây. 2, 372. — 4) m. N. pr. verschiedener Personen: eines Sohnes oder entfernten Nachkommen Kaṇva's RV. 8, 6, 1. 8, 8. 9, 1. 11, 7. Pañcav. Br. 14, 6, 6. Çâṅkh. Ça. 16, 11, 20. Ind. St. 3, 460. eines Âgneja, Liedverfassers von RV. 10, 187. eines Kâçjapa Kathâs. 28, 74. 92. वत्सस्य क्षत्रियस्तस्य पुरा भ्रात्रा पलीपसा। नाग्निर्दहेत् रोमापि सत्येन जगत: स्पृश: ॥ M. 8, 116. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61, 36. fg. (36 ist वत्सभृगू उभौ zu lesen). P. 4, 1, 102. 117. Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 11. 53, *b*, 24. Verfassers eines Gesetzbuches 266, *b*, 9. 270, *b*, 36. 279, *a*, 40. Verz. d. B. H. No. 1166. eines Sohnes des Pratardana MBh. 12, 1795. 13, 1946. Hariv. 1587. 1597. 1741. 1733. VP. 408. = प्रतर्दन Bhâg. P. 9, 17, 6. eines Sohnes des Somaçîti 21, 28. Hariv. 1059. der Akshamâlâ Hall in der Einl. zu Visâvas. 12. des Urukshepa (vgl. वत्सवृद्ध) VP. 463. des Somaçarman Kathâs. 6, 9. वाध्र्यश्वत्सयो: Hariv. 1253. °गोत्र, °वंश Verz. d. Oxf. H. 100, *a*, 1 v. u. 370, *a*, No. 213. Colebr. Misc. Ess. II, 188. Hall 136. 173. pl. *die Nachkommen* Vatsa's P. 2, 4, 64, Sch. Vop. 7, 14. Âçv. Ça. 12, 10. Schol. zu Kâty. Ça. 1, 9, 3. Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 34. 405, *b*, No. 10. — 5) m. N. pr. eines Landes mit der Hauptstadt Kauçâmbî: वत्स इति ख्यातो देश: Kathâs. 9, 4. 30, 38. Schiefner, Lebensb. 234 (4). pl. als Bez. des Volkes und Landes MBh. 5, 7269. 8, 237. 13, 1951 (वत्सानां ed. Bomb.). Varâh. Bṛh. S. 14, 2. 8. 17, 18. 22. Kathâs. 30, 62. — Vgl. अनुपूर्व°, अप°, अभिवान्य° (vgl. Ind. St. 9, 309. fg.), कुत्स°, तिल°, त्रि°, नित्य°, पु°, पौण्ड्र°, मृत°, यम°, रुशद्वत्स, वि°, सक° und वात्स्य.

वत्सक (von वत्स) 1) m. *a) Kälbchen* M. 11, 114. Bhâg. P. 4, 9, 17. am Ende eines adj. comp.: मृतवत्सका यथा गौ: 10, 7, 24. — *b) Wrightia antidysenterica R. Br.* AK. 2, 4, 3, 47. Sûçr. 2, 371, 2. °वीज 431, 7. फलवर्च वत्सकस्य 433, 19. Çiñs. Saṅh. 2, 2, 35. 39. *der Same dieser Pflanze* Rigan. im ÇKDa. — *c)* N. pr. eines Sohnes des Çûra Bhâg. P. 9, 24, 28. 42. N. pr. eines Asura (vgl. वत्सासुर) 18, 43, 30. — 2) f. वत्सिका *Kalbe, Kälbin, eine junge Kuh* Jâtâ. 3, 272. — 3) n. *grüner (schwarzer) Eisenvitriol* Rigan. im ÇKDa.

वत्सकामा adj. f. *ihr Kalb liebend* H. 1271. Hallây. 2, 115.

वत्सगुरुकतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 10. fg.

वत्सतर (von वत्स mit dem suff. des compar.) m. und f. (ई) *das entwöhnte Junge, ein heranwachsendes Thier: junger Stier, Kälbin* (auch vom Ziegengeschlecht) P. 5, 3, 91. AK. 2, 9, 62. H. 1260. Hallây. 2, 109. TS. 1, 8, 13, 1. 20, 1. VS. 24, 5. Ait. Br. 1, 27. Âçv. Ça. 8, 14, 12. 9, 4, 6. 10, 2, 29. Kâty. 24, 2. Lâṭy. 4, 12, 11. गर्भिणय: *das erste Kalb tragend* 9, 4, 21. 12, 11. Kâty. Ça. 12, 5, 12. वत्सतरा: पञ्चवर्षा: vermuthlich Thiere, die nicht zur Begattung zugelassen werden, 22, 9, 12. वत्सतर्यस्त्रिहाय-

णेा Śrautas. 12. 23, 4, 6. Kauç. 12. 53. 72. M. 11, 127. MBh. 9, 2323. मेहानतां वत्सतरः स्पृशन्निव Ragh. 3, 32. वत्सतरवत्सतरीनिकाये: Paṇ. Kâś. 3, 3, 19. Bhâg. P. (hier auch Bez. *eines noch saugenden Kalbes*) 6, 11, 26. 10, 13, 24. 14, 31. 16, 11. वत्सतराणी (वत्सतर + णी) n. P. 6, 1, 89, Vârtt. 6. Vop. 2, 9.

वत्सत्व n. nom. abstr. von वत्स *Kalb* Bhâg. P. 4, 18, 20.

वत्सदन्त m. Bez. von *Pfeilen, deren Spitzen Zähnen eines Kalbes gleichen*, MBh. 3, 11724. 14893. 5, 4793. 6, 5022. 7, 4621. Harîv. 13224. R. 5, 20, 27. 73, 47. n. *eine einem Kalbszahne ähnelnde Pfeilspitze* Çiç. Pâdm. 80, 61 bei Aufrecht, Halâs. Ind. u. गाराच. °क Vîtop. 141.

वत्सनपात् m. N. pr. eines Bâbhrava Çat. Br. 14, 5, 5, 22. 7, 3, 28.

वत्सनाभ 1) m. *ein best. Baum* MBh. 13, 635. Harîv. 12677 (वमनाभ die neuere Ausg.). — 2) m. *ein best. vegetabilisches Gift* AK. 1, 2, 4, 11. H. 1196. Halâs. 3, 25. n. zu den कन्दविषाणि gezählt Suçr. 2, 232, 6. चत्वारि वत्सनाभानि 9. ग्रीवास्तम्भो वत्सनाभे पीतविण्मूत्रनेत्रता 253, 1. beim Gottesurtheil angewandt nach Kâś. und Pitâmaha; s. Z. d. d. m. G. 9, 674. — 3) n. Bez. *eines Loches von bestimmter Form im Holze einer Bettstelle* Varâh. Bṛh. S. 79, 32. 34. 36. — 4) m. N. pr. s. u. रत्ननाभ.

वत्सप m. 1) *Hüter von Kälbern* Bhâg. P. 3, 2, 27. 10, 13, 19. 27. — 2) N. eines Dämons: दुर्णामा तत्र मा गृध्रदृशिश उत वत्सपः AV. 8, 6, 1.

वत्सपति m. N. pr. eines Fürsten oder *Herr* —, *Fürst der* Vatsa Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

वत्सपत्तन n. *die Stadt der* Vatsa d. i. Kauçâmbî Trik. 2, 1, 14. H. 975.

वत्सपाल m. *Hüter von Kälbern* Harîv. 3615. Bhâg. P. 10, 11, 36.

वत्सपालन n. *das Hüten der Kälber* Paṇ. Kâś. 4, 1, 22.

वत्सप्रचेतस् adj. *auf* Vatsa — oder *auf die* Vatsa *achtend* ṚV. 8, 8, 7.

वत्सप्री m. N. pr. mit dem patron. Bhâlandana (Sohn Bhanandana's fehlerhaft in Mâṇḍ. P.), Liedverfasser von ṚV. 9, 68. 10, 45. fg. TS. 5, 2, 8, 6. Paṇḍav. Br. 12, 11, 25. Ind. St. 3, 459. 478. VP. 352. Mârk. P. 116, 7. fgg. — Vgl. वात्सप्र.

वत्सप्रीति m. = वत्सप्री Bhâg. P. 9, 2, 23. fg.

वत्सबन्धा Baudhây. 1, 12 fehlerhaft für बहुवत्सा, wie MBh. 1, 6120 gelesen wird.

वत्सबालक m. N. pr. eines Bruders des Vasudeva VP. 436.

वत्सभूमि 1) f. N. pr. eines *Landes, das Land der* Vatsa MBh. 2, 1084. 3, 13245. 5, 7351. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vatsa Harîv. 1597. 1733; vgl. VP. 409, N. 15.

वत्समित्र m. N. pr. eines Gobhila Ind. St. 4, 374.

वत्समुख adj. *ein Kalbsgesicht habend* P. 6, 2, 168.

वत्सर (वत्सर Uṇâdis. 3, 71) 1) m. *das fünfte* (auch *das sechste im sechsjährigen Cyclus*) *Jahr im fünf- oder sechsjährigen Cyclus* VS. 27, 45. 30, 15. TS. 5, 3, 7, 4. Pâr. Gṛhj. 3, 2. Weber, Nax. 2, 298. Ind. St. 1, 88. *Jahr überh.* AK. 1, 1, 3, 13. 20. 3, 4, 16, 95. Trik. 1, 1, 109. H. 158. Hiouen-thsang 1, 62. Maitrâjp. 6, 14 (n.). M. 9, 76. Jâǵñ. 1, 203. Varâh. Bṛh. S. 8, 16. 19. 39. 42, 12 (वत्सरार्ध). 86, 64. Bṛh. 7, 1. Spr. 1846. VP. 224. Bhâg. P. 3, 11, 13. 14. fg. 5, 22, 7. Mârk. P. 49, 17 (n.). 92, 20. Verz. d. B. H. No. 1166. द्यावत्सरम् Mârk. P. 30, 11. द्यावत्सरात्तम् Kathâs. 23, 20. °रात्मन् Kâṣṇ. 1, 2 v. u. Personificirt M. 12, 49. als Sohn Dhruva's und der Bhrami Bhâg. P. 4, 10, 1. 13, 11. unter den Beinn. Vishṇu's MBh. 13, 6999. — 2) m. N. pr. *a*) eines Sâdhja Harîv. 11537. मत्सर die neuere Ausg. — *b*) eines Sohnes des Kaçjapa Verz. d. Oxf. H. 56, *b*, 38. वत्साग v. l. — Vgl. अनु°, इडा°, इडत्सर, इडु°, परि°, प्रति°, सं°. Das Wort ist vielleicht auf वर्त् *sich drehen* zurückzuführen (vgl. Weber, Kṛṣṇaj. 351); dann wäre वर्त्सर die urspr. Form.

वत्सराज m. 1) *ein Fürst der* Vatsa MBh. 1, 7002. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 4. Kathâs. 11, 5. 17. 19. fgg. 30, 62. — 2) N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6, 346. Verz. d. Oxf. H. 341, *b*, No. 799. °देव N. pr. eines Dichters 124, *b*, 27.

वत्सराज्य n. *die Herrschaft über die* Vatsa Kathâs. 11, 1.

वत्सरादि m. *der erste Monat des Jahres, der* Mârgaçîrsha H. 132.

वत्सरान्तक m. *der letzte Monat des Jahres, der* Phâlguna Râǵân. im ÇKDh.

वत्सराणी n. = वत्सर + णी Vop. 2, 9.

वत्सल (von वत्स) 1) adj. (f. श्रा) P. 5, 2, 98. *a*) f. mit oder ohne Hinzufügung von गो, धेनु *eine Kuh, die zärtlich an ihrem Kalbe hängt*, H. 1271. Halâs. 2, 115. MBh. 7, 2410. 13, 2132. 3328. Spr. 4302. R. 2, 40, 42. 43, 17. 74, 9 (76, 14 Gorr.). 87, 8 (93, 9 Gorr.). R. Gorr. 2, 17, 11. 66, 28. 5, 67, 3. Bhâg. P. 3, 33, 21. 4, 18, 9. — *b*) *zärtlich, liebevoll* AK. 3, 1, 14. H. 478. MBh. 13, 6999 (Vishṇu). Suçr. 1, 371, 16. Uttarar. 36, 3 (48, 1). Bhâg. P. 4, 7, 38. अति° Kathâs. 18, 260. नाति° Mârk. P. 71, 24. सलल° Hit. 87, 12. नितान्त° Ragh. 8, 11. कैतव° *verstellter Weise* 48. Die Ergänzung im loc.: गावो वत्सेषु वत्सलाः Harîv. 4328. परेषु R. 2, 62, 7. दीनेषु Bhâg. P. 4, 30, 28. im gen.: रिपूणामपि R. 2, 21, 6 (18, 3 Gorr.). im acc. mit प्रति R. Gorr. 2, 19, 13. im comp. vorangehend: सुत° 63, 3. R. Scht. 2, 24, 16. Paṇḍar. 238, 7. दुहितृ° Kathâs. 13, 70. Bhâg. P. 3, 14, 13. भृत्य° 4, 8, 22. R. 2, 52, 53. भ्रातृ° 82, 20. MBh. 1, 5900. पति° 12, 1076. भर्तृ° R. 2, 52, 55. Spr. 4581. यशोदा° (रुरि) Paṇḍar. 4, 1, 18. Kathâs. 56, 220. पितृ° MBh. 3, 16071. गुरु° R. 2, 96, 33. द्विजातितनय° MBh. 3, 2478. सहस्रमत Ragh. 2, 69. भक्त° MBh. 4, 203. Kathâs. 42, 57. 50, 197. Weber, Râmat. Up. 356. Paṇḍar. 1, 4, 1. Sarvadarçanas. 54, 17. 56, 2. 57, 8. शरणागत° Kathâs. 21, 44. 30, 10. उपेत° Spr. 3957. अभ्युपपन्न° Mṛicch. 108, 5. प्रतिपन्न° Verz. d. Oxf. H. 209, *a*, 20. दीन° Bhâg. P. 1, 5, 30. 4, 17, 20. वत्सलो रसः *der zärtliche Grundton* (eines Kunstwerks) Sâh. D. 241. — *c*) *von ganzer Seele einer Sache ergeben, ein Freund von:* धर्म° MBh. 3, 2459. R. 1, 4, 15. 2, 27, 23. 28, 1. 53, 34. 113, 3. R. Gorr. 2, 21, 4. 4, 3, 7. Bhâg. P. 9, 1, 41. Paṇḍar. 222, 14. चारित्र° R. 2, 45, 19. सत्य° Bhâg. P. 9, 4, 11. — 2) m. *a*) *ein durch Gräser genährtes* (schnell verlöschendes) *Feuer* Trik. 1, 1, 69. — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge des Skanda MBh. 9, 2574. — Vgl. मित्र°, वात्सल्य.

वत्सलता f. 1) *Zärtlichkeit, liebevolle Gesinnung* Sâh. D. 241. उरु° Bhâg. P. 5, 7, 4. प्रजा° Râǵa-Tar. 5, 194. — 2) *Freude an einer Sache:* धात्रीकर्म° Uttarar. ed. Cow. 35, 5.

वत्सलत्व n. 1) = वत्सलता 1; R. Gorr. 2, 25, 8. Ragh. 5, 7. 14, 22. — 2) = वत्सलता 2): चापले Naish. 3, 55.

वत्सलय् (von वत्सल), °यति *Jmd* (acc.) *zärtlich machen* Çiç. 102, 7.

वत्सवत् (von वत्स) 1) adj. *ein Kalb habend:* गो Harîv. 3796. Bhâg.

P. 16,13,31. — 2) m. N. pr. eines der Söhne des Çûra Harîv. 1926. 1938.

वत्सविन्द् m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,24.

वत्सवृद्ध m. N. pr. eines Sohnes des Urukrija Bhâg. P. 9,12,9.

वत्सव्यूक् m. N. pr. eines Sohnes des Vatsa VP. 463. — Vgl. वत्सभूमि.

वत्सशाल (von वत्सशाला) adj. *in einem Kälberstalle geboren* P. 4,3,36.

वत्सशाला f. *Kälberstall* P. 4,3,36.

वत्साती f. *Cucumis maderaspatanus* Gaṭṭen. im ÇKDr. — Vgl. गवाती.

वत्साङ्क m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 130,a,5.

वत्सातीव adj. *durch Kälber seinen Lebensunterhalt gewinnend*, Beiw. eines Piṅgala Buhn. Intr. 360.

वत्सादन 1) adj. *Kälber fressend.* — 2) m. *Wolf* Râǵân. im ÇKDr. — 3) f. ई *Coccinia cordifolius Dec.* (*ihre Kinder aufzehrend*, so genannt, weil die Pflanze nur eine oder zwei von drei Beeren zur Reife bringt; vgl. Roxb. 3,812) AK. 2,4,2,1. H. 1157. Halâ. 2,160.

वत्साय् (von वत्स) *ein Kalb darstellen:* वत्सायन्ती Bhâg. P. 10,30,17.

वत्सार m. N. pr. eines Sohnes des Kaçjapa Verz. d. Oxf. H. 56, b, 38. — Vgl. ग्र°.

वत्सासुर m. N. pr. eines Asura Paṇḍar. 4,3,132. — Vgl. वत्सक 1) c).

वत्सिमन् (von वत्स) adj. *ein Kalb habend:* गावः ṚV. 7,103,2. als Beiw. Vishṇu's MBh. 13,6999 vielleicht *viele Kinder habend.*

वत्सिमर्मन् (wie eben) m. nom. abstr. gaṇa पृष्ठ्यादि zu P. 5,1,122. *die erste Jugend, kindisches Alter* Naish. 3,55.

वत्सीपुत्र und वत्सीपुत्रीय fehlerhaft für वा°.

वत्सीय adj. = वत्सेभ्यो हितः, z. B. गोदुह् P. 5,1,5, Sch.

वत्सेश m. *ein Fürst von Vatsa* Kathâs. 30,69.

वत्सेश्वर m. dass. Ratnâv. 3,2. Kathâs. 26,250. 30,39.

वत्स्य MBh. 13,1951 fehlerhaft für वत्स, wie die ed. Bomb. liest.

वद्मर् m. Pushkarasâdi's Schreibung für वत्सर् P. 8,4,48, Vârtt. 3, Sch.

वद्. वदति und °ते Dhâtup. 23,40 (व्यक्तायां वाचि). 34,34 (संदेशवचने, v. l. संदेशने, भाषणे). वदेत्, उदेयम् (AV. 3,20,10. 16,2,2), अभिवादात् 2. pl. imperat. (aus metrischen Rücksichten gedehnt) MBh. 3,10903. घनुवादेगुस् (aus metrischen Rücksichten gedehnt) 4,229; उवाद, ऊदतुस् Vop. 8,141. वेदतुस्, वेदिथ 2. ऊदिर्मे, ऊदे, ऊदाते, ऊदिरे; अवादीत् P. 7,2,3. Vop. 8,47. 141. (सम्) अवादिरन्; वदिष्यति; उद्यासम् Çat. Br. 1, 3,4,18. वदितुम्; उदित्वा P. 1,2,7. Vop. 26,204. °उद्य; pass. उद्यते, अवादि, उदिते. 1) act. a) *reden, sagen, sprechen:* यः पुरा सुते वदामि कानि चित् ṚV. 1,105,7. मूका वदन्तः 161,9. तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति 164,45. 5,55,3. वाचं चित्राम् 63,6. Ait. Br. 1,6. धर्मतं ṚV. 7,104,3. घविषेतनानि 8,89,10. 10,166,3. VS. 20,28. AV. 1,32,1. 5,47,2. 7,68,2. 8,11,3. 12,1,56. यदत्तेषु वदः 3,52. यद्वदिष्यन्वा करिष्यन्वा स्यात् Çat. Br. 2,4,4,11. 3,2,4,20. 4,3,7. Ait. Br. 5,14. Kaush. Up. 3,2. वदतां वरः MBh. 3,3019. R. 2,99,13. Bhâg. 1,59. वद मैनं समाचर Spr. 579. Vet. in LA. (III) 4,2. वद वन्ध्या कीदृशी नाम Spr. 855. MBh. 3,2183. त्रिर्वदामि R. 1,71,22. 2,28,4. Bhâg. 19,22. उन्मत्तस्येव वदतस्तस्य Râǵa-Tar. 5,81. अवादीस्त्वं वयसा यः प्रवृद्धः स वै राजन्माभ्यधिकः कथ्यते च MBh. 1,2379. Kathâs. 4,64. 5,92. 18,143. 340. 21,137. Hit. 15,1. 18. 18,1. 26,11. 27,5. Çiç. in LA. (III) 36,4. Bhaṭṭ. 7,96. भद्रमित्येव वा वदेत् M. 4,139. R. 1,55,26. 2,63,49. Spr. 471. 1163. Kathâs. 18,211. Daçak. 59,10. Paṇḍar. 63,21. Bhaṭṭ. 1,18. समप्येवं नले वद् MBh. 3, 2102. Çiç. 25,14. Paṇḍar. 67,22. मैवं वद MBh. 5,5985. मैवं वादीः Kathâs. 12,95. Sarvadarçanas. 79,22. 119,14. अन्यथा M. 8,103. MBh. 1, 913. Mârk. P. 64,16. मिथ्या 21,58. M. 8,59. Çiç. 125. मृषा M. 8,71. यदि यथा वदति तथा तमसि Çiç. 123. सर्वो जनो वदिष्यति यत् *dass* Paṇḍar. 48,14. किं वदामि यत् *so v. a. was brauche ich noch zu sagen, dass? dann brauche ich es kaum mehr zu sagen, dass* Spr. 2649. वदत यदि *ob* Spr. 711. किं प्रयच्छामि तुभ्यं द्रोण वदाशु तत् MBh. 1,5130. Spr. 2177. Bhâg. P. 7,10,69. Paṇḍar. 45,25. सर्वमेवाज्ञसा वद् M. 8,101. अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यसि Bhag. 2,36. इति वचनं युक्तमस्महितो वदेत् MBh. 3,16720. 2,2300. 5,7510. R. 2,47,3. 64,30. 5,29,17. 6,16,1. Spr. 1232. 5336. Bhâg. P. 3,25,35. Bhaṭṭ. 4,28. तथा सरु स्नेहवचनानि वदति Vet. in LA. (III) 20,2. 3. नानृतं वदेत् M. 3,229. 4,236. 8,36. 82. 97. Spr. 3389. यः साक्ष्यमनृतं वदेत् M. 8,93. 119. वद सत्यम् MBh. 3,2473. Kathâs. 4, 77. Brahma-P. in LA. (III) 56,12. नासत्यं नाप्रियं वदेत् R. 4,17,27. Vaṇîn. Bṛh. S. 75,6. तदवितथमवादीर्यन्मम त्वं प्रियेति Sîn. D. 43,9. गर्हितम् R. 3,51,23. अप्रस्तुतम् Paṇḍar. 36,23. व्याकुष्टः कुशलं वदेत् M. 6,48. तेभ्यो ऽभयं वदेत् Kauç. 49. स्वागतम् Kathâs. 18,253. स्वस्ति R. 1,4,21. कृणु इद्वृतिर्मूदिम ṚV. 1,161,1. 5,37,2. शमम् *so v. a. rathen zu* MBh. 3, 1111. fg. *zu Jmd sprechen, anreden;* mit acc.: मामेवं वदतु R. 1,65,22. Kathâs. 18,272. Daçak. 84,8. Bhaṭṭ. 5,55. वदेद्राज्ञीं च चेटीं च भवतीति विहूयकः Bhar. im Comm. zu Çiç. 3,2. व्याहारैरनुकूलाभिरभिभाव्य-वदत्तदा Harîv. 6973. mit dopp. acc.: यन्मां वदसि MBh. 3,1853. R. 1, 63,7. Bhaṭṭ. 5,96. Die Person im acc. mit अभि: वद मामभि MBh. 7, 93. im gen. Kathâs. 18,142. — pass.: ताभ्यामवादि impers. Râǵa-Tar. 1,219. 3,23. उदित a) *gesagt, gesprochen* AK. 3,2,57. H. an. 3,283. Mnu. 1.100. इत्युदिते impers. Kathâs. 26,98. सत्योत्तरा हेवास्य वागुदिता भवति Ait. Br. 1,6. धात्र्या प्रथमोदितं वचः Ragh. 3,25. उदितं प्रियं प्रति वचः Çiç. 9,69. पुष्पदत्तोदितो कथाम् Kathâs. 7,39. n. *das Gesprochene, Rede, Worte* H. ç. 81. Vaṇîn. Bṛh. S. 51,1. Bhâg. P. 4,7, 6. — β) *angeredet, angesprochen:* इत्युदितः स तया Kathâs. 26,183. Çiç. 9,61. Bhâg. P. 6,7,26. — b) *mittheilen, verkünden, angeben, besprechen, sprechen über:* यद्य मागधराजानो भाविन्यो ये वदामि ते Bhâg. P. 9,22, 44. यं वदन्ति तमोभूता धर्ममतद्विदः M. 12,115. ब्रह्म Harîv. 11140. Vaṇîn. Bṛh. S. 54,1. वदन्ती ब्राह्मवक्त्राणि पत्यौ Spr. 2712. यो गोत्रादि वदति स्वयम् H. 830. ब्राह्मणं को वदति प्राणैरिष्टतरं मम *Bericht erstatten über* R. 4,36,21. यदि नं च परपुरुषं वदसि *sprechen von* Paṇḍar. 37,24. आश्चर्यवद्वदन्ति तथैव चान्यः (एनम्) *spricht von ihm wie von einem Wunder* Bhag. 2,29. Ait. Ur. 3,13 (wohl वावदिष्यदिति zu lesen). उदित *mitgetheilt, verkündet, angegeben:* निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः M. 2,16. 1,79. 4,259. 8,214. 9,25. 31. 96. 250. 11,89. 12,113. उत्तरं सूत्रमभ्यूह्य स्वयमेव मयोदितम् Kathâs. 7,11. मन्त्रो मे गुरुणोदितः 49,239. Verz. d. Oxf. H. 65,b,21. Râǵa-Tar. 5,117. Bhâg. P. 5,1,10. 26,37. AK. 2,1,1. तदुदितं संकेतनम् Vet. in LA. (III) 20,14. श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मम् M. 2,9. 4,14. 155. 11,203. Jiân. 1,184. *gelehrt* so v. a. *recipirt, richtig;* compar. उदिततर so v. a. इष्टतर Çiksh. Bh. 19,2. — c) *ankündigen,*

णेयो ऽप्रवीता: 12. 23, 4, 6. Kauç. 12. 53. 72. M. 11, 137. MBh. 9, 2833. मेहन्तो वत्सतर: स्पृशन्निव Ragh. 3, 32. वत्सतरवत्सतरीनिकाये: Paṇ. Gaṇ. 3, 3, 19. Bhâg. P. (hier auch Bez. *eines noch saugenden Kalbes*) 6, 11, 26. 10, 13, 24. 14, 31. 16, 11. वत्सतराणी (वत्सतर + सण) n. P. 6, 1, 89, Vârtt. 6. Vop. 2, 9.

वत्सत्व n. nom. abstr. von वत्स *Kalb* Bhâg. P. 4, 18, 20.

वत्सदन्त m. Bez. von *Pfeilen, deren Spitzen Zähnen eines Kalbes gleichen*, MBh. 3, 11721. 14892. 5, 4793. 6, 5022. 7, 4421. Harîv. 13224. R. 6, 20, 27. 75, 47. n. *eine einem Kalbszahne ähnelnde Pfeilspitze* Çiç. Padbr. 80, 64 bei Aufrecht, Halây. Ind. u. सायक. °क Vaijay. 141.

वत्सनपात् m. N. pr. eines Bâbhrava Çat. Br. 14, 5, 5, 22. 7, 3, 28.

वत्सनाभ 1) m. *ein best. Baum* MBh. 13, 635. Harîv. 12677 (वननाभ die neuere Ausg.). — 2) m. *ein best. vegetabilisches Gift* AK. 1, 2, 1, 11. H. 1196. Halây. 3, 25. n. zu den कन्दविषाणि gezählt Suçr. 2, 252, 6. चत्वारि वत्सनाभानि 9. ग्रीवास्तम्भो वत्सनाभे पीतविण्मूत्रनेत्रता 253, 1. beim Gottesurtheil angewandt nach Kâty. und Pitâmaha; s. Z. d. d. m. G. 9, 674. — 3) n. Bez. *eines Loches von bestimmter Form im Holze einer Bettstelle* Varâh. Bṛh. S. 79, 32. 34. 36. — 4) m. N. pr. s. u. रत्ननाभ.

वत्सप m. 1) *Hüter von Kälbern* Bhâg. P. 3, 2, 27. 10, 13, 19. 27. — 2) N. eines Dämons: दुर्णामा तत्र मा गृध्रदृशिर्श उत वत्सप: AV. 8, 6, 1.

वत्सपति m. N. pr. eines Fürsten oder *Herr* —, *Fürst der* Vatsa Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

वत्सपत्तन n. *die Stadt der* Vatsa d. i. Kauçâmbî Trik. 2, 1, 14. H. 975.

वत्सपाल m. *Hüter von Kälbern* Harîv. 3615. Bhâg. P. 10, 11, 36.

वत्सपालन n. *das Hüten der Kälber* Paṇ. 4, 1, 23.

वत्सप्रचेतस् adj. *auf* Vatsa — oder *auf die* Vatsa *achtend* ṚV. 8, 8, 7.

वत्सप्री m. N. pr. mit dem patron. Bhâlandana (Sohn Bhanandana's fehlerhaft in Mâṇ. P.), Liedverfasser von ṚV. 9, 68. 10, 45. fg. TS. 5, 2, 8, 6. Paṇ. Br. 12, 11, 25. Ind. St. 3, 459. 478. VP. 352. Mârk. P. 116, 7. fgg. — Vgl. वात्सप्र.

वत्सप्रीति m. = वत्सप्री Bhâg. P. 9, 2, 23. fg.

वत्सबन्धा Baudh. 1, 12 fehlerhaft für वहवत्सा, wie MBh. 1, 6120 gelesen wird.

वत्सबालक m. N. pr. eines Bruders des Vasudeva VP. 436.

वत्सभूमि 1) f. N. pr. eines *Landes, das Land der* Vatsa MBh. 2, 1084. 3, 15245. 5, 7251. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vatsa Harîv. 1597. 1753; vgl. VP. 409, N. 15.

वत्समित्र m. N. pr. eines Gobhila Ind. St. 4, 374.

वत्समुख adj. *ein Kalbsgesicht habend* P. 6, 2, 168.

वत्सर (वत्सर Uṇâdis. 3, 71) 1) m. *das fünfte* (auch *das sechste im sechsjährigen Cyclus*) *Jahr im fünf- oder sechsjährigen Cyclus* VS. 27, 45. 30, 15. TS. 5, 5, 2, 1. Pâṇ. Gaṇ. 3, 2. Weber, Nax. 2, 298. Ind. St. 1, 88. *Jahr überh.* AK. 1, 1, 3, 13. 20. 3, 4, 16, 95. Trik. 1, 1, 109. H. 138. Hiouen-thsang 1, 62. Maitrâyaṇ. 6, 14 (n.). M. 9, 76. Jâṭâ. 1, 205. Varâh. Bṛh. S. 8, 16. 19. 39. 42, 12 (वत्सरार्ध). 86, 64. Bṛh. 7, 1. Spr. 1846. VP. 224. Bhâg. P. 3, 11, 12. 14. fg. 5, 22, 7. Mârk. P. 49, 17 (n.). 92, 20. Verz. d. B. H. No. 1166. सावत्सरम् Mârk. P. 30, 11. सावत्सरात्तम् Kathâs. 23, 20. °राज्ञन् Kâç. 1, 2 v. u. Personificirt M. 12, 49. als Sohn Dhruva's und der Bhrami Bhâg. P. 4, 10, 1. 13, 11. unter den Beinn. Vishṇu's MBh. 13, 6999. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sâdhja Harîv. 11537. मत्सर die neuere Ausg. — *b)* eines Sohnes des Kaçjapa Verz. d. Oxf. H. 86, b, 28. वत्सार v. l. — Vgl. घनु°, इरा°, इडत्सर, इडु°, परि°, प्रति°, सं°. Das Wort ist vielleicht auf वर्त् *sich drehen* zurückzuführen (vgl. Weber, Kâṭhaka 351); dann wäre वर्त्सर die urspr. Form.

वत्सराज m. 1) *ein Fürst der* Vatsa MBh. 1, 7002. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 4. Kathâs. 11, 3. 17. 19. fgg. 30, 62. — 2) N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6, 346. Verz. d. Oxf. H. 341, b, No. 799. °देव N. pr. eines Dichters 124, b, 27.

वत्सराज्य n. *die Herrschaft über die* Vatsa Kathâs. 11, 1.

वत्सरादि m. *der erste Monat des Jahres, der* Mârgaçîrsha H. 132.

वत्सरान्तक m. *der letzte Monat des Jahres, der* Phâlguna Râǵân. im ÇKDr.

वत्सराण n. = वत्सर + सण Vop. 2, 9.

वत्सरी (von वत्स) 1) adj. (f. सी) P. 5, 2, 98. *a)* f. mit oder ohne Hinzufügung von गो, धेनु *eine Kuh, die zärtlich an ihrem Kalbe hängt*, H. 1271. Halây. 2, 115. MBh. 7, 2410. 13, 3132. 3523. Spr. 4302. R. 2, 40, 12. 43, 17. 74, 9 (76, 14 Gorr.). 87, 8 (95, 9 Gorr.). R. Gorr. 2, 17, 11. 66, 28. 5, 67, 3. Bhâg. P. 3, 33, 21. 4, 18, 9. — *b) zärtlich, liebevoll* AK. 3, 1, 14. H. 478. MBh. 13, 6999 (Vishṇu). Suçr. 1, 371, 16. Uttarar. 36, 3 (48, 1). Bhâg. P. 4, 7, 38. पति° Kathâs. 18, 260. नाति° Mâlav. P. 71, 21. सरल्ल° Hit. 87, 12. नितान्त° Ragh. 8, 41. कैतव° *verstellter Weise* 48. Die Ergänzung im loc.: गावो वत्सेषु वत्सला: Harîv. 4328. पोषु R. 2, 62, 7. दीनेषु Bhâg. P. 4, 30, 28. im gen.: रिपूणामपि R. 2, 21, 6 (18, 8 Gorr.). im acc. mit प्रति R. Gorr. 2, 19, 13. im comp. vorangehend: सुत° 63, 3. R. Schl. 2, 24, 16. Paṇḍat. 238, 7. दुहितृ° Kathâs. 13, 70. Bhâg. P. 3, 14, 13. भृत्य° 4, 8, 22. R. 2, 52, 53. भ्रातृ° 82, 20. MBh. 1, 5900. पति° 12, 1076. भर्तृ° R. 2, 52, 55. Spr. 4581. यशोदा° (क्रीड) Paṇḍar. 4, 1, 18. Kathâs. 56, 220. पितृ° MBh. 3, 16671. गुरु° R. 2, 96, 33. हिमातिशय° MBh. 3, 2478. महत्सत्त्व Ragh. 2, 69. भक्त° MBh. 4, 203. Kathâs. 42, 57. 50, 197. Weber, Râmat. Up. 356. Paṇḍar. 1, 4, 1. Sarvadarçanas. 54, 17. 56, 2. 57, 8. शरणागत° Kathâs. 21, 44. 59, 10. उपेत° Spr. 3937. सम्युपपन्न° Mudrâ. 108, 5. प्रतिपन्न° Verz. d. Oxf. H. 209, *a*, 20. दीन° Bhâg. P. 1, 5, 30. 4, 17, 20. वत्सलो रस: *der zärtliche Grundton* (eines Kunstwerks) Sâh. D. 241. — *c)* von *ganzer Seele einer Sache ergeben, ein Freund von:* धर्म° MBh. 3, 2439. R. 1, 4, 15. 2, 27, 23. 28, 1. 53, 24. 113, 8. R. Gorr. 2, 21, 4. 4, 3, 7. Bhâg. P. 9, 1, 41. Paṇḍat. 222, 14. चारित्र° R. 2, 45, 19. सत्य° Bhâg. P. 9, 4, 11. — 2) m. *a) ein durch Gräser genährtes* (schnell verlöschendes) *Feuer* Trik. 1, 1, 69. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge des Skanda MBh. 9, 2374. — Vgl. मित्र°, वात्सल्य.

वत्सलता f. 1) *Zärtlichkeit, liebevolle Gesinnung* Sâh. D. 241. उरु° Bhâg. P. 5, 7, 4. प्रजा° Râǵa-Tar. 5, 194. — 2) *Freude an einer Sache:* धात्रीकर्म° Uttarar. ed. Cow. 35, 8.

वत्सलत्व n. 1) = वत्सलता 1) R. Gorr. 2, 25, 8. Ragh. 5, 7. 14, 23. — 2) = वत्सलता 2): चापले Naish. 3, 55.

वत्सलय् (von वत्सल), °यति *Jmd* (acc.) *zärtlich machen* Çiç. 102, 7.

वत्सवत् (von वत्स) 1) adj. *ein Kalb habend:* गो Harîv. 3796. Bhâg.

P. 10,13,31. — 2) m. N. pr. eines der Söhne des Çûra Harıv. 1926. 1938.

वत्सविन्द् m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,24.

वत्सवृद्ध m. N. pr. eines Sohnes des Urukrîja Bhâg. P. 9,12,9.

वत्सव्यूह m. N. pr. eines Sohnes des Vatsa VP. 463. — Vgl. वत्सभूमि.

वत्सशाल (von वत्सशाला) adj. *in einem Kälberstalle geboren* P. 4,3,36.

वत्सशाला f. *Kälberstall* P. 4,3,36.

वत्साती f. *Cucumis maderaspatanus* Gaṛtn. im ÇKDa. — Vgl. गवाती.

वत्साङ्ग m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 130,a,5.

वत्सादीव adj. *durch Kälber seinen Lebensunterhalt gewinnend*, Beiw. eines Piṅgala Bhâs. Intr. 360.

वत्सादन 1) adj. *Kälber fressend.* — 2) m. *Wolf* Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. ई *Cocculus cordifolius Dec. (ihre Kinder aufzehrend*, so genannt, weil die Pflanze nur eine oder zwei von drei Beeren zur Reife bringt; vgl. Roxb. 3,812) AK. 2,4,2,1. H. 1157. Hall. 2,460.

वत्साय् (von वत्स) *ein Kalb darstellen:* वत्सायन्ती Bhâg. P. 10,30,17.

वत्सार m. N. pr. eines Sohnes des Kaçjapa Verz. d. Oxf. H. 56, b, 38. — Vgl. ग्र°.

वत्सासुर m. N. pr. eines Asura Paṅkân. 4,3,132. — Vgl. वत्सक 1) c).

वत्सिन् (von वत्स) adj. *ein Kalb habend:* गाव: ṚV. 7,103,2. als Beiw. Vishṇu's MBh. 13,6999 vielleicht *viele Kinder habend.*

वत्सिमन् (wie oben) m. nom. abstr. gaṇa पृष्ठादि zu P. 5,1,122. *die erste Jugend, kindisches Alter* Naish. 3,55.

वत्सीपुत्र und वत्सीपुत्रीय fehlerhaft für वा°.

वत्सीय adj. = वत्सेभ्यो हितः, z. B. गोदुह् P. 5,1,5, Sch.

वत्सेश m. *ein Fürst von Vatsa* Kathâs. 30,69.

वत्सेश्वर m. dass. Rathâv. 5,2. Kathâs. 26,280. 30,39.

वत्स्य MBh. 13,1931 fehlerhaft für वत्स, wie die ed. Bomb. liest.

वध्सार m. Paushkarasâdi's Schreibung für वत्सार P. 8,4,48, Vârtt. 3, Sch.

वद्, वैदति und °ते Dhâtup. 23,40 (व्यक्तायां वाचि). 34,34 (संदेशवचने, v. l. संदेशने, भाषणे), वदेत्, उदेयम् (AV. 3,20,10. 16,2,2), अभिवादत 2. pl. imperat. (aus metrischen Rücksichten gedehnt) MBh. 3,10908. अनुवादेषम् (aus metrischen Rücksichten gedehnt) 4,229; उवाद, ऊदतुस्, वेदतुस्, वेदिथ 82. ऊदिर्मे, ऊदे, ऊदाते, ऊदिरे; अवादीत् P. 7,2,3. Vop. 8,17. 141. (सम्) अवादिरन्; वदिष्यति; उद्यामम् Çat. Br. 1, 3,3,18. वदितुम्; उदित्वा P. 1,2,7. Vop. 26,204. °उद्य; pass. उद्यते, अवादि, उदितै. 1) act. *a) reden, sagen, sprechen:* य: पुरा सुते वदामि कानि चित् ṚV. 1,105,7. सुता वदन्तः 161,9. तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति 164,45. 5,55,8. वाचं चित्राम् 63,6. Ait. Br. 1,6. सप्तत् ṚV. 7,104,3. अविचेतनानि 8,89,10. 10,166,3. VS. 20,28. AV. 1,32,1. 5,47,2. 7,68,2. 8,11,3. 12,1,56. पदनेषु वदा: 3,52. पठदिष्यन्वा करिष्यन्वा स्यात् Çat. Br. 2,4,4,14. 3,2,4,20. 4,2,7. Ait. Br. 5,14. Kaush. Up. 3,2. वदतो वा: MBh. 3,2019. R. 2,99,13. Raghu. 1,59. वद मौनं समाचर Spr. 579. Vet. in LA. (III) 4,3. वद वन्ध्या कीदृशी नाम Spr. 855. MBh. 3,2183. त्रिर्वदामि R. 1,71,22. 2,28,4. Raghu. 10,22. उन्मत्तस्येव वदतस्तस्य Râǵat. 5,81. अवादीस्त्वं वयसा य: प्रवृद्ध: स वै राजन्नाध्यधिक: काध्यते च MBh. 1,3579. Kathâs. 4,64. 5,92. 18,142. 340. 21,137. Hit. 15,1. 18. 18,1. 26,11. 27,6. Çuk. in LA. (III) 36,4. Bhaṭṭ. 7,96. भद्रमित्येव वा वदेत् M. 4,139. R. 1,55,25. 2,63,49. Spr. 471. 1103. Kathâs. 18,211. Daçak. 59,10. Paṅkât. 63,21. Bhaṭṭ. 1,18. समप्येवं नले वद MBh. 3, 2102. Çik. 25,14. Paṅkât. 67,22. मैवं वद MBh. 5,5985. मैवं वादी: Kathâs. 12,93. Sarvadarçanas. 79,22. 119,14. अन्यथा M. 8,103. MBh. 1, 913. Mâlav. P. 64,16. मिथ्या 21,58. M. 8,59. Çik. 125. मृषा M. 8,71. यदि यथा वदति तथा त्वमसि Çik. 123. सर्वो जनो वदिष्यति यत् *dass* Paṅkât. 48,14. किं वदामि यत् *so v. a. was brauche ich noch zu sagen, dass? dann brauche ich es kaum mehr zu sagen, dass* Spr. 2649. वदत यदि *ob* Spr. 711. किं प्रयच्छामि तुभ्यं द्रोण वदाशु तत् MBh. 1,5120. Spr. 2177. Bhâg. P. 7,10,69. Paṅkât. 45,25. सर्वमेवाज्ञसा वद M. 8,101. अवाच्यवादीश्च बहून्वदिष्यन्ति Bhag. 2,36. इति वचनं युक्तमस्मद्विधो वदेत् MBh. 3,16720. 2,2300. 5,7510. R. 2,47,3. 64,30. 5,29,17. 6,16,1. Spr. 1232. 5336. Bhâg. P. 3,25,35. Bhaṭṭ. 4,28. तया सह श्लेष्मवचनानि वदति Vet. in LA. (III) 20,3. 3. नानृतं वदेत् M. 3,229. 4,236. 8,36. 82. 97. Spr. 5389. य: साक्ष्यमनृतं वदेत् M. 8,93. 119. वद सत्यम् MBh. 3,2473. Kathâs. 4, 77. Brahma-P. in LA. (III) 56,12. नासत्यं नाप्रियं वदेत् R. 4,17,27. Vaitân. Bhâr. S. 73,6. तदवितथमवादीर्यन्मम त्वं प्रियेति Sâh. D. 43,2. गर्हितम् R. 3,51,23. अप्रस्तुतम् Paṅkât. 36,23. आकृष्ट: कुशलं वदेत् M. 6,48. तेभ्यो ऽर्थं वदेत् Kaçç. 49. स्वागतम् Kathâs. 18,353. स्वस्ति R. 1,4,21. हुणा इद्धुतिमूदिम ṚV. 1,161,1. 5,37,3. शमम् *so v. a. rathen zu* MBh. 3. 1111. fg. *zu Jmd sprechen, anreden;* mit acc.: मामेवं वदतु R. 1,65,22. Kathâs. 18,272. Daçak. 84,8. Bhaṭṭ. 5,88. वदेद्राज्ञीं च चेटीं च भवतीति विदूषक: Bhar. im Comm. zu Çik. 3,2. आशीर्भिरनुकूलाभिरुभावप्यवदत्तदा Harıv. 6973. mit dopp. acc.: पन्थां वदसि MBh. 3,1853. R. 1, 65,7. Bhaṭṭ. 5,96. Die Person im acc. mit अभि: वद मामभि MBh. 7, 93. im gen. Kathâs. 18,142. — pass.: ताभ्यामवादि impers. Râǵat. 1,219. 3,23. उदित *a) gesagt, gesprochen* AK. 3,2,57. H. an. 3,252. Med. t. 100. इत्युदिते impers. Kathâs. 26,98. सत्योत्तरा ह्येवास्य वागुदिता भवति Ait. Br. 1,6. धात्र्या प्रथमोदितं वच: Raghu. 3,25. उदितं प्रियं प्रति वच: Çiç. 9,69. पुष्पदन्तोदितो कवाग् Kathâs. 7,29. n. *das Gesprochene, Rede, Worte* H. ç. 81. Vaitân. Bhâr. S. 51,1. Bhâg. P. 4,7, 6. — β) *angeredet, angesprochen:* इत्युदित: स तया Kathâs. 26,183. Çiç. 9,61. Bhâg. P. 6,7,26. — *b) mittheilen, verkünden, angeben, besprechen, sprechen über:* अब मागधराजानो भाविन्यो ये वदामि ते Bhâg. P. 9,22, 44. यं वदन्ति तमोभूता धर्ममतद्विद: M. 12,115. ब्रह्म Harıv. 11140. Vaitân. Bhâr. S. 54,1. वदन्ती जारवृत्तान्तं पत्यौ Spr. 2712. यो गोत्रादि वदति स्वयम् H. 830. ज्ञातापुत्रं को वदति प्राणैरिष्टतरं मम *Bericht erstatten über* R. 4,56,21. यदि नं च परपुरुषं वदसि *sprechen von* Paṅkât. 37,24. आश्चर्यवद्वदन्ति तथैव चान्य: (एनम्) *spricht von ihm wie von einem Wunder* Bhag. 2,29. Ait. Up. 3,13 (wohl वावदिष्यदिति zu lesen). उदित *mitgetheilt, verkündet, angegeben:* निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधि: M. 2,16. 1,79. 4,259. 8,314. 9,35. 81. 96. 250. 11,89. 12,113. उत्तरं सूत्रमभ्यूह्य स्वयमेव मयोदितम् Kathâs. 7,11. मन्त्रो मे गुरुणोदित: 49,239. Verz. d. Oxf. H. 65,b,21. Râǵat. 5,117. Bhâg. P. 5,1,10. 26,37. AK. 2,1,1. तदुदितं संकेतनम् Vet. in LA. (III) 20,14. श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मम् M. 2,9. 4,14. 155. 11,203. Jâǵñ. 1,154. *gelehrt so v. a. recipirt, richtig:* compar. उदिततर *so v. a.* इष्टतर Çâṅkh. Br. 19,2. — *c) ankündigen,*

voraussagen, anzeigen: युगपत्प्राप्तौ परामर्शे वदन्ति Âçv. Gṛhy. 4,4,5. घृतमुक्तकुन्दाभ्यां कर्षाभं सर्षपान्वदेद्दर्शने: Varâh. Bṛh. S. 29,5. 5,77. 7,19. 46,23. 57. 68,1. स प्रत्यक्षं देवेभ्यो भागमवदत्परोक्षमसुरेभ्य: so v. a. *aussprechen, zusagen* TS. 2,5,4,1. Bhâg. P. 5,9,2. *besagen, bezeichnen:* केशादिशब्देभ्य: परा: पाशादय: शब्दा: केशनृपस्तं वदन्ति H. 568, Sch. यत्तःस्थे ऽङ्के (स्पष्टे) स्वप्नन उदित: *angedeutet* Varâh. Bṛh. S. 51,25. — *d) behaupten, annehmen:* शमार्धेन: कालगतिं वदन्ति MBh. 13,25. शतमेकाधिकमेके मरुत्समयरे वदन्ति केतूनाम् Varâh. Bṛh. S. 11,5. 21,5. 23,4. Prab. 112,15. Sarvadarçanas. 126,14. — *e) bezeichnen als, erklären für, nennen:* स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति AV. 11,1,7. TBr. 3,1,2,1. त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् Taitt. Up. 1,12. स्वभावमेके कवयो वदन्ति — येनेदं भ्रम्यते ब्रह्मचक्रम् Çvetâç. Up. 6,1. AV. Prâtiç. 3,65. M. 3,182. 213. 284. 4,221. 8,103. 9,172. 12,123. MBh. 3,8351. R. 5,52,18. Çâk. 38. 165. Çrut. 25. Spr. 2660. 2707. 2711. 2887. 3657. Kâr. zu P. 2,1,32. Varâh. Bṛh. S. 68,116. Bhâg. P. 2,4,21. 3,1,10. तदुपरागमिति वदन्ति लोका: 5,24,2. — *f) die Stimme ertönen lassen* (von Vögeln u. s. w.); *tönen, schallen, klingen:* वयो वदन्त: ṚV. 2,43,1. 10,146,2. Frösche 7,103,5. 6. यथा वदन्त्येव: — शालावृक: MBh. 3,15674. यथा वदन्ति शास्त्रार्था दिशि दिशि वै मृगपक्षिण: 16875. क्रूरम् 15669. सारसा: — वदन्ति मधुरा वाच: 11612. कशा कस्तेषु यद्वदान् ṚV. 1,37,3. यावा यत्र वदति 83,6. दुन्दुभि: AV. 12,1,41. वीणा: Kâm. 34,5. Kauç. 84. वृष्टि: Maitrâyaṇ. 6,22. — 2) med. *a) sagen, sprechen:* वदस्व यत्ते वाग्यम् Çat. Br. 4,3,2,1. 3,2,4,17. 4,2,17. 14,3,2,30. स कथं वदसे शत्रून्युध्यस्व गरुत्मते हि MBh. 9,1961. 1,4527. 5125. 3,16893. 4,287. 13,999. R. 5,59,18. Kathâs. 49,159. Mârk. P. 49,2. 134,22. प्रतिवाक्यं वदस्व MBh. 3,2732. सत्यं वदे 13722. वृषपर्वाणमवदत्त *sprachen zu* 11844. वदस्वैनं निदेशान्मम शासनम् R. 7,23,2,7. देवानां वामके वचनाद्वदे *ich spreche zu dir im Namen der Götter* Mârk. P. 66,24. *besprechen, sprechen über, mittheilen, angeben:* ब्रह्मवाद्यमवदेताम् TS. 2,5,8,3. वदस्व तद्भिषजो: Bhâg. P. 3,7,23. 10,2. 8,1,1. 5,12. 14,1. तद्वदध्वं वरान्सर्वे R. 7,36,9. वदस्वैनं तत्त्वतो मम *angeben* so v. a. *mit Namen nennen* Harîv. 9996. — *b) sich besprechen über* (loc.): देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे ṚV. 10,109,4. देवा ब्रह्मण्यवदन्त TS. 3,5,2,2. *sich streiten um:* मनश्च वै वाक्चाक्रन्दं ऊदाते Çat. Br. 1,4,5,5. — *c) sich nennen, sich ausgeben für:* तुरीये वैव संपद्यितारो वदन्ते Ait. Br. 2,25. — *d)* भासने P. 1,3,47. ज्ञाने ebend. und Vop. 23,29. wohl so v. a. *eine Autorität sein, hervorstechen, sich auszeichnen:* शास्त्रे वदते = भासमानो ब्रवीति oder सम्यग्बोधपूर्वकं वदति P., Sch. पाणिनिर्वदते Vop. लङ्कां समाविशद्रात्रौ वदमानो ऽरिदुर्गमाम् so v. a. *triumphirend* Bhaṭṭ. 8,27. — *e) sich bewerben um* (एत्वे) P. 1,3,47. Vop. 23,29. तेत्रे P., Sch. Vop. — Vgl. अनुदित, 1. उद्य, पद्योदित, वाद्य.

— caus. वादयति, °ते (संदेशवचने, v. l. संदेशने, भाषणे) Dhâtup. 34,34. med. P. 1,3,89. Vop. 23,58. 1) *Etwas sagen —, sprechen lassen:* घृतिवादं न प्रवदेत्त वादयेत्: MBh. 5,1370. *Jmd zum Reden veranlassen, — auffordern:* वादितो ऽपि न वदति Verz. d. Oxf. H. 156,*a*,24. — 2) *ertönen —, erklingen lassen, spielen* (ein musikalisches Instrument); act., selten med.: वीणाम् Çat. Br. 3,2,4,6. 13,1,5,1. TBr. 3,9,22,1. MBh. 3,1843. R. Gorr. 2,100,22. Spr. 1523. Kathâs. 11,3. 34,159. fg. 49,22. 32. Hit. 63,13. P. 8,1,59, Sch. वीणा वाद्यते वेणु: पूर्यते Comm. zu Nir. 2,1,15. वाद्यमेषु वाद्यमानेषु Kâty. Çr. 21,3,7. Çâṅkh. Çr. 17,3,13. 16. Lâṭy. 4,1,7. वादित्राणि M. 4,64. MBh. 3,12097. Bhâg. P. 3,24,7. घृतोद्यानि Kathâs. 34,171. 37,72. तूर्याणि Bhâg. P. 4,1,52. दुन्दुभयो नेदुर्दिवमानवादिता: 1,9,45. Kathâs. 37,64. 65,75. fg. Bhaṭṭ. 3,24. 15,4. घण्टाम् Pâṇḍav. 229,13. Hit. 59,17. 20. पर्यङ्कं साङ्गुलीयेन पाणिना । वादयन्निव Râja-Tar. 4,489. तलतालान् MBh. 3,12279. पाणिवादानि R. 2,65,4. सर्वतूर्यस्वनै: — वाद्यमानै: R. Gorr. 1,79,40. दृप्तवीणाम् so v. a. *mit den Zähnen klappern* Pâṇḍav. 94,4. med.: वादयते वेणुम् Gît. 5,9. पटहान् Mârk. P. 82,54. घण्टां वादयान: Pâṇḍav. 3,8,10. वादयानो नखान् Harîv. 10770. Statt des acc. ausnahmsweise der loc.: वीणायाम् Kathâs. 106,12. Ohne Ergänzung *musiciren:* गायन्नृत्यन्वादयंश्च MBh. 1,3206. 4,305. Harîv. 11029. R. 1,34,13 (35,13 Gorr.). 2,69,4. वादित n. *Instrumentalmusik:* गीतवादितरुदित Gorr. 3,3,23. MBh. 4,308. fg. Spr. 1766. Varâh. Bṛh. S. 33,23. Bṛh. 27 (25),9. वाद्यमान n. dass.: भेरीशङ्खमृदङ्गानां पणवानां सरुग्रश: । वाद्यमानं स (वाद्यमानानि die neuere Ausg.) Harîv. 6889. — 3) von *Jmd* (ein musikalisches Instrument) *spielen lassen:* ग्रन्थोवदद्वीणां पारिवादकेन Schol. zu P. 1,1,56, Vârtt. 2. 7,4,1, Vârtt. 3. 93, Vârtt. 1. — 4) *sprechen, hersagen:* नान्दीं च वादयामास प्रयुक्तो गद एव च Harîv. 8692. die neuere Ausg. liest नान्दि und Nîlak. fasst das Wort falschlicher Weise in der Bed. *eines musikalischen Instruments.* — Vgl. जलवादित.

— desid. *zu sagen —, zu sprechen beabsichtigen:* सत्यं विवदिषेत् Gorr. 1,5,27.

— intens. वावदीति P. 7,3,94, Sch. *laut reden, — tönen:* केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति (vgl. P. 2,4,74 Sch.) ṚV. 5,47,31. त्रिरुच्चा 39,6. 10,67,3. 68,1. AV. 5,126,3. 20,135,13. वावद्यमान Çat. Br. 1,7,4,19. 8,2,13.

— यच्छ् P. 1,4,69. Vop. 8,141. *begrüssend anreden, einladen;* act. ṚV. 1,38,13. 5,83,1. यच्छा च त्वेना नमसा वदामि 8,21,6. 10,88,14. Vikkh. 3,3. VS. 16,4. AV. 5,59,3. 142,3. 8,7,1. 12,1,27.

— अति act. 1) *übertönen, lauter oder besser reden, niederschwatzen, niederdisputiren:* दुन्दुभि: सर्वा वाचो ऽतिवदति TBr. 1,3,6,2. दृष्टं विशमिति वदति 8,2,2. घृतिवादेन देवा असुरानत्युग्यवेनानत्यायन् Ait. Br. 6,23. Çat. Br. 11,6,2,5. 14,6,6,20. Pâṇḍav. Br. 12,13,14. Swapn. Br. 2,3. एष तु घृतिवदति य: सत्येनातिवदति Kaṭh. Up. 7,16,1. वृद्धानातिवदेज्जातु (नाभिभवेज्जातु ed. Bomb.) MBh. 13,7578. — 2) *mehr sagen, überfordern:* यावद्दातारमभिमनस्येत् तन्नातिं वदेत् AV. 11,3,25. — Vgl. घृतिवाद, °वादिन्, अत्युद्य.

— अभ्यति act. = अति 1) Pâṇḍav. Br. 8,3,6.

— अधि act. *dabei —, dazu sprechen:* इमामगृभ्णावशनामृतस्येत्यधिवदति TBr. 3,8,2,2. Çat. Br. 7,1,1,14. 2,1,12. 3,1,24. — Vgl. अधिवाद.

— अनु 1) *nachsprechen,* (Laute) *nachahmen;* act.: चित्तं वा इदं मनो वाग्नुवदति Çat. Br. 3,2,4,16. पूर्वमेवोदितमनुवदति Kâṭy. 19,4. Ait. Br. 2,40. इति वाचं वदन्तीं सर्वे प्राणा अनुवदन्ति Kaush. Up. 3,2. Sin. D. 192,1. Sarvadarçanas. 28,10. गिरं न: — अनुवदति भ्रुक: Raghu. 5,74. तत्कूजितान्यनुवदद्भि: — गृध्रकपोतशतै: Sin. D. 41,9. *mit Worten begleiten:* सन्वेकी वदति यदेदति तत् ṚV. 2,13,3. *nachtönen:* अनुवदति वीणा P. 1,3,49, Schol. Als intrans. med. P. 1,3,49. Vop. 23,40. अनुवदते कठ: कलापस्य *der Kaṭha wiederholt die Worte des Kal.* P., Sch. घोषस्या-

त्ववदिष्टेव लङ्का पूतक्रतोः पुरः Lañkā *erklang wie* Indra's *Stadt* Bhaṭṭ. 8,29. — 2) act. *abermals sagen, auf Etwas zurückkommen, Etwas wiederholen* (um die Wichtigkeit desselben hervorzuheben) Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 34. Comm. zu Nyâyas. 1,1,1. 2,1,64. zu Gaim. 1,23. Bhâg. P. 11, 21,42. fg. Kull. zu M. 1,74. 2,6. 45. 3,25. fg. 6,87. 8,409. Sâh. D. 215, 1. — 3) *schmähen:* दत्तमनूद्य Bhâg. P. 4,4,24. — 4) *Jmd um ein Almosen ansprechen:* ये त्वानुवादेयुरवृत्तिकर्शिताः MBh. 4,229. Nîlak.: अनुवादे ऽयुः पूर्वं देहीत्युक्त्वा दत्तस्यैव तेत्रारामादेः प्रतिवर्षं पुनर्देहीति राज्ञवचनं पदाधिकारिणं प्रति तदनुवादस्तन्निमित्तं ये त्वां प्रति ब्रूयुः प्राप्नुयुः. — Vgl. अनुवाद् fg. — caus. *ertönen lassen, erklingen lassen:* श्रोतोद्यान् Harîv. 8688.

— अभ्यनु act. *in Beziehung auf Etwas sagen* Çat. Br. 10,4,1,9.

— अप med. P. 1,3,73. Vop. 23,58. 1) *seinen Unmuth auslassen gegen, tadeln, schmähen:* उत मे ऽपं वदेयुः TBr. 2,3,9,9. Çâṅk. Ça. 13, 16,1. नार्तो ऽप्यपवदेद्विप्रान् M. 4,236. MBh. 10,804. स्वं पुत्रमपवदति oder °ते P. 1,3,77, Sch. नृभ्यो ऽपवदमानस्य (so ist zu lesen) Bhaṭṭ. 8, 65. — 2) act. *Jmd* (acc.) *durch Reden zerstreuen* Pâr. Gṛhj. 3,10. अपवदेयुस्तानितिहासैः पुरातनैः Jâṅk. 3,7. — 3) act. *ausnehmen* (*eine Ausnahme machen*) Schol. zu AV. Paiṅg. 2,63. 101. 3,60. अपोप्य ṚV. Paiṅg. 4,18. अपोप्यत 11,5. — Vgl. अपवाद fg. — caus. 1) *Jmd tadeln, schmähen:* यद्येनमभिनन्देत यद्येनमपवादयेत् MBh. 12,8797. *Etwas tadeln, missbilligen:* तस्माच्चित्यं तमा तात पण्डितैरपवादिता (अपि वर्जिता ed. Bomb.) 3,1026. — 2) *ausnehmen* (*eine Ausnahme machen*): °वाप्य ṚV. Paiṅg. 1,10. 6,5. °वाप्यते 11,18.

— अभि 1) *Jmd anreden, begrüssen* Ait. Br. 3,35. 4,20. TS. 2,5,9,3. पूर्वो राज्ञो ऽभिवदति Çat. Br. 3,3,4,14. प्रियेण नाम्ना 13,1,6,1. इतर् इतरम् 14,3,2,18. 7,3,24. 9,2,1. अतिथीन् AV. 9,6,4.48. Kauç. 46. Kâṅkh. Up. 4,1,2. 5,1. Kaṭhop. 1,10. Kenop. 17. Çvetâç. Up. 3,21. M. 8,356. MBh. 1,5443. 8003. 3,907. fg. 10908 (अभिवादत). 15668. 4,223. 5,4320. R. 1,70,33. 2,110,21 (119,20 Gorr.). Kathâs. 45,99. जारं चौरेत्यभिवदन् *wer den Ehebrecher Dieb schilt* Jâṅk. 2,301. mod. MBh. 5,923. st. अभिवादे 3,1336 liest die ed. Bomb. अभिवादये. — 2) *in Bezug auf — sagen, erwähnen, Etwas* (mit einem Worte u. s. w.) *meinen:* तस्मै प्रजमिति पूर्वं कर्माभिवदति Ait. Br. 1,4. यत्कर्म क्रियमाणमृगभिवदति ebend. तान्देवो ऽभ्यवदत मम वा इदम् 3,34. 5,2. 6,15. 8,26. Çâṅkh. Ça. 16,3,12. अग्नीन्प्यूदे *er sprach auf die Feuer hinweisend* Kâṅkh. Up. 4,14,2. *aussagen, ausdrücken:* वाचा हि नामान्यभिवदति Çat. Br. 14,6,2,4. यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते Kenop. 4. *erklären für, nennen:* एतद्वै तदजरं गार्गि ब्राह्मणा अभिवदन्ति Çat. Br. 14,6,8,8. तद्विज्ञोः परमं पदमभिवदन्ति Bhâg. P. 5,23,1. *sprechen:* ते प्रकाश्याभिवदन्ति Prâṇop. 2,2. यो ऽनृतमभिवदति 6,1. प्रियां वाचमभिवदेत्सदा Mahâbh. Up. 1,2,6. — Vgl. अभिवदन, °वाद, °वादिन्, °वाप्य. — caus. 1) *Jmd anreden, begrüssen* (oft mit Ergänzung der Person); med. Liṭ. 2,3,15. गुरुं गोत्रेणाभिवादयेत Gobh. 2,3,11. MBh. 1,5166. 2,148. 3,1336 (nach der Lesart der ed. Bomb. und Ind. 5,20). 11528. 5,1693. Harîv. 10891. R. 2,64,29. R. Gorr. 1,78,2. 5,65,17. Mṛicch. 34,6. 145,10. 155,12. Çiç. 28,8. 64,15. Vikr. 80,2. 82,7. Mâlav. 13,5. 64,19. Prab. 116,12. P. 8,2,88, Sch. act. M. 2,117. 119. 122. 202. 205. 4,154. Jâṅk. 1,26. पदो MBh. 1,5128. 3, 3010. 4,1330. 14,2023. 2609. Harîv. 9066. 10882. fg. 10885. R. 1,70,33. 2,40,2. 54,11. 56,13,c. 103,47. 110,21 (119,20 Gorr.). R. Gorr. 2,39, 3. 5,33,29. 64,1. 6,104,9. Kathâs. 49,155. Hit. ed. Jonks. 1738. °वाप्य पादावाचार्यस्य Çiṅkh. Gṛhj. 2,7. M. 2,126. 212. 11,204. MBh. 1,7181. 3,2467. 3036. 11906. 13663. 16645. 14,2601. Harîv. 9066. 10881. 10884. R. 1,12,2 (1 Gorr.). 57,18. 70,13. 2,44,23. 50,6. 52,26. 92,30. R. Gorr. 1,34,3. Bhâg. P. 1,10,8. 13,36. °वादयितुम् R. Gorr. 1,26,4. °वादित MBh. 1,9003. 3,11907. 13,654. R. 2,90,5. Kathâs. 63,74. Bhâg. P. 5,3,16. *sich anmelden bei* (dat.): आचार्याय Çiṅkh. Gṛhj. 4,12. — 2) med. *Jmd* (acc.) *durch Jmd* (acc. oder instr.) *begrüssen lassen* P. 1,4,53, Vârtt. Vop. 5,5. — 3) *Etwas hersagen lassen:* आशिषमभ्यवादयत् Bhâg. P. 4, 12,28. — 4) *erklingen lassen, spielen* (ein musikalisches Instrument): वादित्राणि MBh. 3,14336. — Vgl. अभिवादक fg., °वादनीय.

— प्रत्यभि caus. med. *einen Gruss erwiedern* Mṛicch. 34,7. — Vgl. प्रत्यभिवाद fgg.

— समभि caus. *Jmd begrüssen:* मूर्ध्ना समभिवाद्य तम् MBh. 13,276. R. 2,115,8. वसुदेवस्य पादौ Harîv. 5735.

— अव 1) *durch Nachrede Abbruch thun, herabsetzen:* मा स्त्रियो ऽवदिष्मेति ब्रुवन्वद् हि श्रेयसः Ait. Br. 5,22. — 2) *unterweisen:* यस्माभिरप्यन्ये बोधिसत्त्वा अवदिताः (?) Saddh. P. 4,6,a. — Vgl. अवद् fgg., अववाद्.

— व्यव act. 1) *beschreien* Paṭṭâv. Br. 6,7,11. — 2) *zu reden beginnen, das Schweigen brechen* (nach Çaṅk.) Kâṅkh. Up. 4,16,2.

— आ *reden zu, anreden; ankündigen, aussprechen:* तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् ṚV. 1,11,6. 64,9. विद्यम् 117,25. 10,85,26. fg. सर्वतो नः शकुन भद्रमा वद् 2,43,2. वर्षमा वद् AV. 4,15,14. पयोमा वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः VS. 26,2. AV. 6,69,2. 12,1,29. 1,10,4. गोष्ठम् VS. 5,17. इषम् TS. 1,1,5,2. Çat. Br. 1,1,4,18. Liṭ. 3,11,3. 4,2,3.

— समा act. *einen Ausspruch thun* MBh. 3,16148.

— उद् *die Stimme erheben, sich hören lassen; aussprechen:* मण्डूक इवोदकात् ṚV. 10,166,5. पार्वतेयो पक्षानुधानामुहुर्दे-तामुपार्षण्वन् TBr. 3,2,5,9. Çat. Br. 1,1,4,17. 3,2,1,39. सोमामवित्र्या-येषमुहूर्दृक् AV. 5,20,1. — caus. *ausrufen lassen:* कविष्कृतम् Çat. Br. 1,1,4,11. *erschallen lassen* 4,3,3,19. Vgl. उद्वादन.

— प्रत्युद् caus. *dagegen erschallen lassen* Çat. Br. 1,1,4,13. 17.

— उप 1) *missliebig reden über* (acc.), *beschreien, berufen* AV. 15,2, 1. TBr. 2,3,9,7. Ait. Br. 2,31. तं क्षेम उपोदुर्दास्या वै तं पुत्रो ऽसि Çiṅkh. Br. 12,3. Liṭ. 10,7,4. — 2) *anreden* Ait. Br. 3,33. *bitten* Paṭṭâṅ. in Ind. St. 3,372,23. — 3) mod. *Jmd bereden, an sich zu locken suchen* (उपसोपायाम् und उपमल्लणे) P. 1,3,47. (प्रलोभे) Vop. 23,89. कर्मकारानुपवदते = उपमाल्लयति, कुलभार्यामुपवदते = उपच्कर्दयति P., Sch. कंचिन्नोपावदिष्टासौ Bhaṭṭ. 8,28. — 4) in der dunklen Stelle गुरुं क्षितमुपं निणिग्वदन्ति ṚV. 4,5,8 sieht Sây. उप zu क्षितम्. — Vgl. उपवाद fg.

— प्रत्युप *durch Reden beleidigen:* तेनो श्रीः प्रत्युपोदिता Paṭṭâṅ. Br. 16,7,2.

— नि caus. med. *erschallen lassen:* भेरीसहस्राणि शङ्खानामयुतानि च MBh. 5,7656. fg.

— निस् 1) *wegreden:* घायुर्मा निर्वादिष्टम् VS. 8,17. — 2) *hinausreden, hinausschallen lassen:* वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम् AV. 4,6,2. — 3) *seinen Unmuth gegen Jmd* (acc.) *auslassen, Jmd schmähen* MBn. 4,122. निर्वादैर्निर्वदेदेनम् 5,4618. med. 12,12361. — Vgl. निर्वाद.

— घभिनिस् *aussagen in Beziehung auf* (acc.): तत्रं वा एतदृक्घभिनिर्वदति यत्पञ्चदशम् Pañcav. Br. 11,11,9. 23,7,2.

— परा *wegsprechen* AV. 6,20,2. हिंयत्तम् Lāṭ. 3,11,2.

— घभिपरा *anreden* Çat. Br. 11,5,8,6. Çāṅkh. Br. 23,5.

— परि 1) *sich auslassen, einen Ausspruch thun* MBn. 12,4446. *bereden, besprechen, sich auslassen über* (acc.): गौ वाव तौ तत्पर्यवदताम् TS. 1,7,8,2. तदस्ति पर्युदितमिव Çat. Br. 3,1,3,2. Çāṅkh. Br. 6,4. प्रजापतिम् Pañcav. Br. 4,9,14. घादित्यमेव ते परि वदन्ति सर्वे AV. 10,8, 17. 12,4,49. — 2) *sich nachtheilig über Jmd auslassen, Jmd tadeln* Spr. 134. MBn. 12,4369. 13,4992. med. 3.14686.5,1338. — Vgl. परिवाद fgg.

— प्र 1) *herraussagen, reden, sprechen; aussagen, ansagen, verkünden:* प्रवदतो मेष्ठः Harīv. 5927. 7036. R. 3,22,37. विश्रब्धम् 4,8,16, 54,10. 63,28. 5,60,15. Bhāg. P. 1,17,21. 7,2,58. Pañcat. 143,21. *sprechen zu Jmd* (acc.) Bhaṭṭ. 7,24. *die Stimme ertönen lassen* (von Thieren und Vögeln): दृष्य दात्यूहको हृष्टः — प्रवदन्मन्मथाविष्टः स्वकान्तामनुतिष्ठति R. 3,79,12. Vaṛāh. Bṛh. S. 29,17. (घाप): घप्रवदत्यः *geräuschlos* Āçv. Gṛhj. 2,7,7. मन्त्रम् ṚV. 1,40,5. 7,33,14. वाचः 101, 1. 103,1. 8,97,3. 10,94,1. पुरा वाचः प्रवदितोर्निवर्तपत् (vgl. P. 3,4,16, Sch.) TS. 2,2,9,3. Ait. Br. 2,15. Çat. Br. 7,4,2,32. Kāṭy. Çr. 9,1,10. मर्त्य वचो यत्प्रवदन्ति विप्राः R. 5,28,3. मृषोद्यम् Bhaṭṭ. 5,60. त्वया प्रेरितं वचः Harīv. 13793. घतिवादे न प्रवदेत् MBn. 5,1270. शिवाश्चाप्यशिवा वाचः प्रवदन्ति मुहुस्त्वना: R. 6,16,11. घवर्षणे पां (ब्रह्मविद्यां) प्रवदेत ब्रह्मा Muṇḍ. Up. 1,1,2. ब्रह्म न प्रावदत्किंचित् R. Gorr. 2,45,4. 109,30. 6,102,34. Bhāg. P. 1,9,29. तस्यास्ततिप्रगाढ्यानं प्रवदन्त्व MBn. 3,2910. प्रवदन्वर्तुने सप्त्यम् 5,2545. यस्मै घावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् AV. 4, 24,3. 12,3,15. 18. प्राप्तं समरं सभयं प्रवदेत् Vaṛāh. Bṛh. S. 47,26. 93,11. 96,1. घक्षेषु कर्कटे लग्ने वाक्यतावित्दुना सह। प्रोच्यमाने (= उदयं गच्छति सति Comm.; vgl. Wasy. u. इ mit प्रोद्) R. 1,19,3. *aussagen so v. a. annehmen, statuiren:* ब्रह्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य Çvetāçv. Up. 3,21. Spr. 2843. ये ऽप्यङ्गनानां प्रवदन्ति दोषान् Vaṛāh. Bṛh. S. 74,5. — 2) *bezeichnen als, erklären für, nennen:* एतन्मीमांस्य मीमांसं प्रवदन्ति M. 5,55. सौव्ययोगो पृथग्वालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः Bhāg. 5,4. MBn. 3,5012. 5146. 13641. R. 5,32,18. प्रवदन्ति भरतस्तां नाथिकां विप्रलब्धाम् Comm. zu Gir. 7,2. Çaṅk. 43. Kār. 1 aus Kāç. zu P. 7,2,10. Spr. 1771. 2273. 2295. 2377. 3957. 4923. Vaṛāh. Bṛh. S. 15,29. 68,114. 88,22. Bhāg. P. 3,25, 31. Pañcar. 1,1,44. — Vgl. प्रवद fgg., प्रवाद, प्रवादिन्. — caus. *ertönen lassen, spielen* (ein musikalisches Instrument): वीणाम् Çāṅkh. Çr. 17, 14,8. प्रवादितैश्च वादित्रैः MBn. 1,5329. 5356. 5460. 4,1164. 5,2350. 7, 80. 3905. Harīv. 4725. Mīnāṃs. P. 106,61. Verz. d. Oxf. H. 32,5,14. ohne Ergänzung *musiciren:* प्रवादयद्विर्गन्धर्वैः Harīv. 12006. गन्धर्वान् — सुप्रवादितान् *schön musicirend* 11792. st. शङ्खाश्च मृदङ्गाश्च प्रवाद्यन्ति MBn. 12,1899 ist wohl शङ्खाश्च मृदङ्गाश्च प्र° zu lesen. — Vgl. प्रवादक.

— घनुप्र 1) *nachsprechen:* वाचं प्रेरितामनुप्रवदन्ति Ait. Br. 2,15. TS. 2,2,9,3. — 2) *aussagen über:* तामेता ऋचो ऽनुप्रवदन्ति Nir. 10,20.

— caus. *nachher ertönen lassen:* वीणाम् Çāṅkh. Çr. 17,14,8.

— उपप्र *mit der Stimme einfallen* AV. 4,15,14.

— विप्र act. med. *sich gegenseitig widersprechen:* विप्रवदन्ते संवत्सराः, मोहूर्ताः P. 1,3,50, Sch. Vop. 23,42. Bhaṭṭ. 8,30.

— संप्र *laut aussprechen:* पुरा वाग्म्यः संप्रवदितोः Pañcav. Br. 21,3, 5. *gemeinschaftlich die Stimme ertönen lassen:* संप्रवदन्ति कुक्कुराः Ind. St. 8,416. P. 1,3,46, Sch. Vop. 23,41. med. *sich unterhalten:* संप्रवदन्ते ब्राह्मणाः ebend. संप्रवदमानाज्ञानात् Bhaṭṭ. 8,28.

— प्रति 1) *zu Jmd* (acc.) *reden:* शिरः प्रति वामम्यौ वदत् ṚV. 1,119, 9. 8,45,5. मण्डूको मां प्रति वदतः Kauç. 96. — 2) *antworten* MBn. 13, 1452. Kathās. 88,59. Rāja-Tar. 3,1. Daçak. 63,5. mit acc. der Person Ragu. 3,64. Kathās. 14,85. 25,103. Bhaṭṭ. 2,28. राज्ञा च प्रत्यवादि सः 18,9. इति प्रत्युदिता (*zurückweisen* Comm.) वाग्मी दूता: Bhāg. P. 6,2. 21. — 3) *nachsprechen, wiederholen:* न चापि तत्प्रत्यवदन्यथोक्तम् Kaṭhop. 1,15. MBn. 5,4635. — Vgl. प्रतिवाद fg. — intens. partic. प्रतिवावदत् *widerredend* Ait. Br. 2,3.

— वि 1) act. *Etwas widerreden:* यस्ते रुजं विवदत् AV. 3,3,6. तद्भयं व्युदितम् *strittig* Çāṅkh. Br. 19,2. — 2) *sich mit Jmd in Wortstreit einlassen über* (loc.): med. P. 1,3,47, Sch. Vop. 23,41. TBr. 2, 3,5,3. Çat. Br. 1,3,4,27. 3,6,2,2. 10,1,4,10. 14,8,15,5. घक्षेष्वेषमे 9,9,7. Kāṭh. Up. 5,1,6. Kaṭh. Up. 2,14. पित्रा M. 3,159. MBn. 13. 4277. घसपत्नीकेषु सर्वेषु मिथो विवदमानयोः M. 8,109. 252. 9,191. 250. तस्या निमित्तम् R. 3,67,10. fg. Spr. 3068. Kathās. 24,182. 45,102. Bhāg. P. 9,14,11. Verz. d. Oxf. H. 50,a,4. 156,a,29. Bhaṭṭ. 8,28. Pañcat. 96,25 (विवद् ° zu lesen). 100,25. II, 10. यस्मात्तित्वयं (acc. st. loc.) विवदध्वं सभायाम् MBn. 2,2296. परस्परं विवदमानानामपि धर्मशास्त्राणाम् *sich gegenseitig widersprechend* Hit. 19,21. कृत्ये विवदमाने *strittig* R. Gorr. 2,79,9. Häufig auch act.: मिथो विवदतां नृणाम् M. 8, 178. 262. 290. MBn. 3,12695. R. Gorr. 2,109,37. शतं दद्यान्न विवदेदिति प्राज्ञस्य लक्षणम् Spr. 2935. 2938. Bhāg. P. 5,14,36. Verz. d. Oxf. H. 100,b, No. 156. 156,a, 30. इत्थं चारुमकुमिकया त्वेषांविवदतोः Pañcat. 183,6. शरीरमापदश्चापि विवदन्त्यविरंसत: MBn. 12,9479. *sich in Streit einlassen mit,* mit acc. der Person: न च तान्विवदेद्दीमानाकृष्टश्चापि तैः सदा Mānāṃs. P. 34,93. विवदिता: *im Streite liegend:* राज्यक्षेत्रोः MBn. 13, 356. — 3) *sich unterhalten:* एवं विवदतोस्तत्र कृष्णनारदयोः Harīv. 10481. — 4) *die Stimme ertönen lassen:* कृष्टो विवदमानश्च कोकिलो मामिवाकृपत् R. 3,79,10. — Vgl. विवाद. — caus. *einen Process einleiten, die Gerichtsverhandlung beginnen (antworten lassen* Sr.) Jiān. 2,13. — intens. *die Stimme laut, wiederholt erschallen lassen:* य इन्द्रं श्व देवेषु गोषेतिं विवावदत् (सपः) AV. 9,4,11.

— सम् 1) *zusammen sagen:* यत्र काग्नयः समूदिरे Kāṭh. Up. 4,10, 4. *sich unterreden mit* (instr.), *sich bereden über* (loc.): med.: इन्द्रं सं मरुद्भिः सं वदस्व ṚV. 1,170,5. उत स्वयं तन्वाइं सं वदे तत् 7,86,2. स्वेन क्रतुना *mit sich zu Rathe gehen* 10,31,2. AV. 6,109,2. 11,4,6. सावित्रे TBr. 3,10,9,5. TS. 2,5,4,5. इन्द्राग्नी उ देवैतत्समूहाते Çat. Br. 1, 2,4,11. 4,1,4,14. 3,1,2,10. 3,4,4,4. कुमारं ब्रातं संवदन्त उप वै मुमूषते *man sagt zu einander von dem Kinde: es lauscht* Ait. Br. 3,2. Nir. 11, 25. गृह्यपतेरेधारणयोः संवदते Çat. Br. 4,6,9,12. 14,7,1,1. मा मैतस्मि-

संवदिष्ठा: *versuche nicht mit mir darüber zu reden* 5, 1, 2. तवैव भीमसेनेन लोकः संवदते भृशम् MBh. 7, 5818. *act.*: राज्ञा न संवदेत् 4, 125. स्वधीः सह संवदेत् Spr. 1037. तयोः संवदतोरेवम् MBh. 5, 7033. 6, 5606. R. 1, 74, 13. 2, 89, 3. R. Gorr. 1, 26, 19. 76, 15. 7, 60, 1. Spr. 4413. Bhâg. P. 2, 20, 3. 12, 10, 7. इति तौ दंपती तत्र समेत्य समयं मिथः *so v. a. einen Pact schliessend* Bhâg. P. 4, 25, 42. यथासमुदितम् *nach Uebereinkunft* Çat. Br. 13, 5, 4, 27. — 2) *act. zusammen klingen*, von musikalischen Instrumenten AV. 4, 37, 4. — 3) *übereinstimmen, zustimmen:* देवं न संवदति Mṛicch. 165, 20. दैवं संवदते यदि Hariv. 7413. वदाप्याता च तस्यैषा संवदिष्यति मत्कथा Kathâs. 121, 218. यदि च कृतिनमेनं शक्तिदेवं स्वनाम्ना व्यथित समुदितेन स्वेषु विश्वाधरेषु ॥ *so v. a. gebräuchlich* 26, 279. — 4) *sprechen:* यदि ज्ञास्यामि वक्ष्यामि यद्यानघ तु संवदे MBh. 13, 480. भीष्मः समवदत्तत्र गिरं साधुभिरर्चिताम् 4, 915. एवं समुदितस्तेन *angeredet* Bhâg. P. 3, 24, 41. — 5) *bezeichnen als, erklären für, nennen:* मन्दाक्रान्तां तां संवदन्ति Çâñg. 42. — Vgl. संवदितव्य, संवाद. — caus. 1) *sich unterreden lassen:* संवादयेनं देवैः Çat. Br. 1, 8, 3, 20. *eine Unterredung über* (loc.) *hervorrufen*, med. Çiñkh. Çr. 17, 14, 2. Kâuṣ. Up. 4, 3. fgg.; vgl. S. 136. fg. — 2) *sich über Etwas einigen, einstimmen:* संवादयन्निव Kathâs. 107, 79. संवाद्यतां तत्सर्वेषाम् 50, 166. संवादितं *worüber man sich geeinigt hat* MBh. 1, 7931. — 3) *zutreffend angeben:* संवाद्य रूपसंख्यादीन् M. 8, 31. — 4) *Jmd zum Sprechen auffordern* Hit. 83, 1, v. l. — 5) *ertönen lassen* (ein musikalisches Instrument): तूर्याणि MBh. 1, 7056. वादित्राणि 7909. वीणाम् Kathâs. 21, 4. — Vgl. संवादन.

— उपसम् s. उपसंवाद.

— परिसम् *sich gemeinschaftlich über Jmd äussern:* तं रात्तसाश्च (so die ed. Bomb.) परिसंवदन्ति रायस्पोषः स विज्ञिगीषुरेकः MBh. 13, 7368.

— प्रतिसम् *sich unterreden mit* (acc.): ते न प्रति चन समवदत Âit. Br. 3, 33.

— विसम् *act. seiner Zusage untreu werden* M. 8, 219. *Einwendungen machen, widersprechen* Kull. zu M. 12, 110. तन्मन्दारवतीदेवीरूपं नात्र विसंवदेत् Kathâs. 101, 82. — Vgl. विसंवाद. — caus. 1) *Jmdes Unzufriedenheit erregen:* लक्ष्मणेन न विसंवादितः कश्चित् R. 6, 24, 27. — 2) *nicht bewähren:* यविसंवादितपौरुष Mâlav. P. 133, 16. रमणीयोक्तु यवकी विहिणा विसंवादिदो Çiç. 84, 21.

वद् 1) (von वद्) oxyt. nom. ag. *sprechend, Sprecher, Redner* gaṇa पचादि zu P. 3, 1, 134. Vop. 26, 30. AK. 3, 1, 35. H. 346. Vgl. एवा°, कटह्, कु°, प्रिय°, ब्रह्म°, मद्रा°, यद्, वशे°. — 2) N. des ersten Veda bei den Magiern Verz. d. Oxf. H. 33, *b*, 3. Reinaud, Mém. sur l'Inde 394. Weber, Lit. 144; vgl. विश्ववद्.

वदक = वद 1) in दुर्वदक.

वदन (von वद्) n. 1) *das Reden, Sprechen, Tönen* Çat. Br. 3, 4, 4, 3. सत्य° Kâṭy. Çr. 2, 1, 12. Çiñkh. Çr. 2, 3, 24. 18, 20, 1. पुरस्ताद्वदन Çat. Br. 4, 6, 8, 2. वदनादिव्यापार, वाग्वदन Çaṅk. zu Bâdar. Âṇ. Up. S. 83. — 2) = मुख u. s. w. AK. 2, 6, 3, 40. H. 572. Hall. 2, 263. *a) Mund, Maul:* वाक्सायका वदनान्निष्पतन्ति Spr. 2767. वदनैर्मधुगन्धिभिः R. 1, 9, 38 (36 Gorr.). Suçr. 1, 124, 10. °प्रिय 189, 12. °मदिरा Mṛicch. 76. Vaṭṭ. Bâdar. S. 67, 6. चुम्बाविरामे वदनं प्रमार्ष्टि 78, s. 93, 5. 7. Bhâg. P. 3, 9, 18. प्रगालिका मांसपिण्डगृहीतवदना *im Maule ein Fleischstück haltend* Pañkat. 226, 20. — *b) Gesicht* R. 2, 26, 10. Suçr. 1, 118, 14. 259, 5. Mṛicch. 40. Çiç. 29. Spr. 364. 2708. fgg. Vaṭṭ. Bâdar. S. 48, 10. 50, 6. 58, 47. 68, 104. Râga-Tar. 6, 55. Bhâg. P. 2, 1, 28. 5, 9, 19. पूर्णेन्दु° MBh. 3, 2480. Mâlav. 17. शशिप्रकाशवदना R. 5, 14, 21. विवृत्तवदना. Çiç. 43. प्रफुल्लित° Pañkat. 36, 2. 185, 23. प्रकृष्ट° R. Gorr. 2, 101, 26. प्रकृष्ट° 4, 8, 32. विषण्ण° MBh. 3, 14360. R. 1, 62, 3. विषादार्त° 2, 47, 3. विवर्ण° MBh. 3, 2105. R. 2, 26, 8. 87, 4. सापीतवर्ण° 76, 4. व्रीडाविनम्र° Kâraṇḍ. 8. प्रचण्ड° Daçâṅgak. 85, 1. सुवदना 79, 17. Mâlav. 65. Vikr. 29. Ṛt. 6, 20. Prab. 60, 8. कमलवदना Çaut. 18. अम्बुवदना *mit Thränen auf dem Gesicht* Bhâg. P. 1, 16, 19. 17, 3. किंचिच्चकार वदनम् *verzog ein wenig das Gesicht* 3, 33, 20. — *c) Vorderes, Spitze:* यङ्कुश°, ताम्रवद्° adjj. (शलाकायन्त्र) Suçr. 1, 25, 5. अधोवदना: कण्टका: H. 62. शृगालवदना बाणा: *Maul* und zugleich *Spitze* R. 6, 79, 69. fg. — *d) the first term, the initial quantity of the progression* Colebr. Alg. 32. — *e) the side opposite of the base; the summit* Colebr. Alg. 72. — Vgl. राज्ञ°.

वदनच्छद R. 5, 23, 15 fehlerhaft für रदनच्छद.

वदनदत्तुर m. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 12.

वदनरोग m. *Mundkrankheit* Vaṭṭ. Bâdar. S. 32, 18. — Vgl. मुखरोग.

वदनाण्यामिका f. *Schwäre des Gesichts*, Bez. einer best. Krankheit Verz. d. B. H. No. 963.

वदनाम्प (वदन + प°) m. *Mund- oder Gesichtskrankheit* Taik. 3, 3, 111.

वदनाम्ब (वदन + म्बा°) m. *Spatchel* Buddha. im ÇKDr.

वदनीभू (वदन + च्वि भू) *sich in ein Gesicht umwandeln:* नो सत्येन मृगाङ्क एष वदनीभूतः Spr. 1634.

वदत्त s. किं°.

वदत्ति und वदत्तै bei Uṇâdik. zu Uṇâdis. 3, 50 ein zur Erklärung von किं° erfundenes Wort.

वदत्तिक m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 45.

वदन्य adj. = वदान्य Sâh. zu AK. 3, 1, 6 nach ÇKDr. H. 351.

वदान्य Uṇâdis. 3, 104. 1) adj. (f. या) mit कृतादि componirt gaṇa श्येनादि zu P. 2, 1, 59. *a)* (von 1. यवदान mit Abfall des Anlauts; vgl. 3. दा mit यव) *freigebig* AK. 3, 1, 6. Taik. 3, 3, 220. H. 351. an. 3, 503. Med. j. 102. Halâj. 2, 211. Bala bei Mallin. zu Naish. 5, 11. Aâaja bei Uṇâdik. M. 4, 224. fg. MBh. 1, 7159. 3, 1135. 4, 16. 5, 1847. 14, 2695. R. 1, 1, 3. 60, 2. 2, 60, 17. 61, 2. 78, 15. R. Gorr. 2, 1, 15. Raghu. 5, 24. Spr. 2134. 2713. 3132. Vaṭṭ. Bâdar. 18, 3. Naish. 5, 11. Râga-Tar. 3, 258. Bhâg. P. 3, 1, 27. 4, 25, 41. 8, 19, 27. — *b) beredt* (als wenn das Wort von वद् käme) AK. 3, 4, 24, 152. Taik. Med. Bala und Aâaja a. a. O. *freundlich redend, liebenswürdig* H. H. an. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 13, 1391.

वदाम (aus dem pers. بادام) m. *Mandel* Râgân. im ÇKDr.

वदाल m. 1) *eine Art Weis* (s. पाठीन) Taik. 1, 2, 18. H. c. 195 (verschieden von पाठीन); vgl. चित्र°, वादाल. — 2) *Strudel* oder *Brandung* (कूलरुण्डक) Taik. 1, 2, 11.

वदालक m. = वदाल 1) Taik. 3, 3, 247. Buddha. im ÇKDr.

वदावद (von वद्) adj. *geschwätzig* P. 6, 1, 12, Vârtt. 2. Pat. zu P. 7, 4, 58. Vop. 26, 30. AK. 3, 1, 35. H. 346. — Vgl. यद्°.

वदावदिन् adj. dass. वदो (d. i. वद उ) वद वदावदी वदोरुः पटुः Lâṭy. 4, 1, 8.

वदि indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,27. bei Angabe eines Datums in Verbindung mit einem Monatsnamen so v. a. *in der dunklen Hälfte des —*: वैशाख° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,33,6. Nach Wilson (Kṛṣṇaś. 350) ist व oder richtiger व्व Siglum für वहुल und दि für दिन.

वदितृ (von वद्) nom. ag. *Sprecher*: अपूतायै वाचो वदितारः Ait. Br. 7,27. proparox. mit acc.: ज्ञानापवादान् P. 3,2,135, Sch. वदिता न लघीयसो ऽपरः स्वगुणान् *pflegt nicht von seinen Vorzügen zu reden* Spr. 3936. न पुरा भीमसेन त्वमोदृशीर्वदिता गिरः MBh. 2,2257.

वदितव्य (wie eben) adj. zu *sprechen, zu sagen*: सत्यम् Ait. Br. 5,14. वदितव्यम् impers. Sarvadarśanas. 44,13. 126,14. 156,9. 180,4.

वदिष्ठ (von वद् mit dem suff. des superl.) adj. *am besten redend*: वाग्वनस्पतीनाम् Pañcav. Br. 6,5,12.

वदिवास N. pr. einer Oertlichkeit Rāja-Tar. 6,278.

वद्री s. वधी unter वध.

वद्य (von वद्) n. am Ende eines comp. *Rede, Unterhaltung über* P. 3,1,106. सत्य° adj. *die Wahrheit redend* Bhaṭṭ. 5,60. — Vgl. ब्रह्म° (adj. *verächtlich, gemein* auch Bālar. P. 4,19,22. n. *Unvollkommenheit, Fehler* auch 3,9,1) und ब्रह्म°.

वध् eine defective Wurzel, die nach P. und Vop. nur im aor. und prec. vorkommen soll. Die ältere Sprache kennt ausserdem vereinzelt den potent. वधेयम् AV. 19,3,15 und वधेत् VS. 10,8, das Epos auch das fut. und die Special-Tempora des pass. अवधीत् P. 2,4,43. 7,2,10, Schol. Vop. 8,49. 9,9. वँधीम् (RV. 1,163,8. 10,28,7), अवधिष्म, वधिष्टम, वधिषुः; वध्यासम्, वध्यात्, वध्यासुस् P. 2,4,42. pass. aor. अवधि 7,3, 35. Vop. 11,7. 24,6. अवधिष्ट, अवधिषाताम्, अवधिषत P. 2,4,44. 6, 4,62, Schol.; pass. prec. वधिषीष्ट ebend. *schlagen* (eig. und auch den Feind, ein Heer), *zerschlagen, erschlagen, tödten*: दस्युम् RV. 1,33,4. 38,6. वृत्रम् 51,4. 104,8. यस्यावधीत्पितरम् 5,34,4. 33,9. 8,56,20. गाम् 90,15. AV. 9,2,11. मृत्यो मा पुरुषं वधीः 8,2,5. 10,1,29. Ait. Br. 7,26. धिया धिया त्वा वध्यामः TS. 2,6,6,1. 1,8,9,2. Çat. Br. 2,1,2,17. अमित्रान् वधीर्वनेव सुधितभिस्त्वैः 6,33,2. मा नो हार्दि त्विषा वधीः 8,68, 2. सत्यम् AV. 7,11,1. रुचिः 70,4. यज्ञम् Ait. Br. 2,31. वाचम् 6,33. सोमम् 3,32. TBr. 1,5,2,8. पथो वृत्रमशनिर्हरित्ती । एवाकृण्व क्रितवानृतेर्वध्यासमप्रति AV. 7,50,1. समाङ्घी शार्ङ्गो ऽवधीत् Çat. Br. 11,8,2,4. वध v. l. des AV. 6,6,3 für अध des RV. — एनाम् — पदावधीत् MBh. 4,461. 473. fgg. अवधीत्येन गर्भम् 1,211. 4075. मृगं व्याघ्रो ऽवधीत्तदा 5373. 3,15727. R. 1,2,18. Spr. 1378. Kathās. 23,250. 47,72. अवधीत्पापः स्वमेव स्वविषकृम् so v. a. *tödtete sich selbst* Rāja-Tar. 5,240. 248. LA. (III) 92,12. तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत् Spr. 4247. MBh. 1,5500. 3,15776. Kathās. 18,234. 121,207. Bhaṭṭ. 13,11. अवधिषुः 2. मा वधिष्ठा ब्रह्मणम् 6,41. वध्यास्त्वं रिपुसंहतीः 19,26. वधिष्यति u. s. w. MBh. 1,4801. 3,8695. 8798. 13543. 4,502. 13,64. Harīv. 8931. R. 2,31,31. 84,4. 3,49,31. Bālar. P. 1,17,11. 10,50. 48. Pañcat. 69,20. वधिष्ये u. s. w. MBh. 3,626. 5,4870. R. 7,67,26. य आकृत्येषु वध्यते Jāṭ. 1,323. MBh. 12,5204. 13,5715. Harīv. 8282. Spr. 964, v. l. 1423. 1609. 1946. 1930. 3826. 4605. Pañcat. 81,7. वध्यताम् MBh. 1,4316. वध्येत R. 2,75,29. वध्यमान MBh. 3,12115. 12227. 12251. 12865. 4,480. 6,3410. 4408. 5521. 8,939. 12,6648. R. 2,74,20. B. Gorr. 1,41,22. 7,29,23. वध्यति MBh. 13,5715. वध्यन्ति 3,8768. Spr. 1101. Harīv. 8281. वध्यामः R. 7,23,4,19. वध्यत् = वध्यमान MBh. 3,803. तेन सो ऽवधि Rāgat. 17,5. statt वध्यमान MBh. 5,22 und Bālar. P. 8,5,15 wird mit den Bomb. Ausgg. richtiger बा° gelesen; statt वध्यन्ते MBh. 14,360 ist mit der ed. Bomb. विध्यन्ते zu lesen. — Die Schreibung mit व findet sich VS. 9,38. 10,8; mehrmals im Çat. Br. und vereinzelt im AV. Die Bomb. Ausgg. schreiben stets व.

— caus. *erschlagen, tödten*: वधयिष्यामि MBh. 2,1383.

— desid. वीभत्सते wird P. 8,1,6 und Vop. 8,103 119 auf eine Wurzel बध् oder वध् zurückgeführt, der Dhātup. 23,4 die Bedeutung बन्धने (निन्दे च Vop.) beigelegt wird. Wir haben dieses desid. mit Westergaard zu बाध् gestellt.

— घप 1) *abhauen, spalten*: दारु RV. 10,146,4. — 2) *abschlagen* so v. a. *verjagen*: अरुं देवयज्ञनात् VS. 1,26. उग्रं वचः 5,8. तमः Çat. Br. 4,3,4,21.

— अभि *auf Jmd schlagen*: तं वीरं सिंहो मत्तमिव द्विपम् । मर्मस्वभ्यवधीत्क्रुद्धः पादाक्षीलैः सुदारुणैः ॥ MBh. 10,341. fg. तलेनाभ्यवधीत्कोशित्पद्मामन्यान् R. 5,40,12.

— समभि dass.: तं समभ्यवधीत् MBh. 7,6942.

— आ *zermalmen, zerstückeln*: दृषदं ज्रिरूणो RV. 8,61,4. *zerschellen*: ऊर्मिर्न नावमा वधीत् 64,9.

— अभ्या *schlagen auf*: (गङ्गा) सलिलेनैव सलिलं कविद्भ्यावधीत्पुनः R. Gorr. 1,45,17.

— उद् *zerreissen*: मा त्वा श्येन उदवधीत् RV. 8,42,2. मा त्वा समुद्र उदवधोन्मा सुपर्णः VS. 13,16.

— उप *anschlagen an*: यदा स्थूलेन पसमाणौ मुष्का उपावधीत् AV. 20,136,2. *erschlagen, tödten*: रक्षांस्युपावधीत् MBh. 12,2814.

— नि 1) *heften in* (loc.): दिव्युर्मस्मिन्नि वधिष्ट वज्रम् RV. 6,41,4. — 2) *niederschlagen, niederhauen, tödten*: तानि (अस्त्राणि) दण्डेन सर्वाणि न्यवधीत् R. Gorr. 1,37,13. सारथिम् MBh. 1,4121. 5472. 8,2597. Kathās. 50,22. 96,46. Rāja-Tar. 6,83. Bhaṭṭ. 1,2. 6,16.

— निस् *abspalten, abtrennen; zerspalten*: जायायै गर्भम् Çat. Br. 3,1, 2,21. दीक्षाम्, तपः TBr. 3,1,1,3.

— परा *spalten, zerreissen*: यत्तो शिक्वः परावधीत्तत्ता रुस्तेन वास्या AV. 10,6,3. य घासो कृत्ते लक्ष्मणि सर्दिगृदिं परावधीत् TS. 7,4,19,1.

— प्र *schlagen* (einen Feind): विस्रस्तास्तु प्रवध्यन्ते वलवत्तो ऽपि दुर्बलैः Spr. 1423, v. l.

— प्रति *zurückschlagen, abwehren*: तांस्तान् (भल्लान्) प्रत्यवधीद्दशभिर्दशभिः शरैः MBh. 7,1879.

— वि *zerstören*: पदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य RV. 1,103,8. वि द्विषो वधोत् 5,44,12. वि यो धृष्णो वधिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रमभित्रिया शवोभिः 6,17,1.

वर्ध (von वध्; in VS. und in Çat. Br. öfters वध geschrieben) 1) nom. ag. *Tödter, Mörder, Ueberwinder* H. an. 2,247 (= हिंसक). RV. 1,175, 4. 2,21,4. घर्मुन्वतः 1,101,4. 8,51,12. VS. 1,24. TS. 1,8,9,2 (oder zu 3) a). तस्य न हन्तास्ति न वधः Çat. Br. 3,3,4,3. — 2) m. *tödtliche Waffe*, namentlich Indra's *Geschoss* Naigh. 2,20. RV. 1,25,2. 32,5. भृष्टिमत् 52,

11. वध 35, 5. उग्र 133, 6. मा प्रणक्तस्य नो वधः 2, 23, 12. 28, 7. वृत्राय प्र वधं हरिभार 30, 3. शिरो दासस्य सं पिणग्वधेन 4, 18, 9. सहस्रभृष्टि 5, 34, 3. धारे गोरन्ना नृम्णा वधो वः 7, 56, 17. 9, 52, 3. 10, 89, 9. न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुः 117, 1. समरे वधानाम् AV. 5, 20, 5. 8, 8, 8. यो ऽभिदासान्मनसा यो वधेन 12, 1, 14. 22. Ait. Br. 2, 1. 4, 1. सैन्य° Çāṅkh. Gṛhj. 3, 9. — 3) nom. act. P. 3, 3, 76. 7, 3, 35. Vop. 26, 171. *a) das Erschlagen, Tödtung, Mord* Naish. 2, 9. AK. 2, 8, 3, 34. H. 370. H. an. मृळा नो रुद्रोत वधि विक्षिधात् RV. 10, 25, 3. सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य *wahrlich ich sage: es ist sein Untergang* (oder zu 2) 10, 117, 6. AV. 5, 14, 9. त्रायध्वं नो वधत्रिषाय्यो वधात् 6, 93, 3. 17, 1, 28. पौरुषेय VS. 13, 18. 1, 17. 9, 38. 30, 12. Çat. Br. 1, 6, 4, 21. 3, 5, 4, 9. 6, 8, 3. मृत्यु, वध 5, 4, 3, 1. वधाशङ्का 14, 6, 10, 3. शरीरस्य Kaiṣṇ. Up. 3, 10, 2. °काम Gaut. 4, 3, 7. यत्ते वधो ऽवधः M. 5, 39. H. 830. वधायाभिपपतिनान् MBh. 1, 5981. Milarim. 85, 3. वधप्रवृत्तस्य वधानुत्पादे प्रायश्चित्तम् Verz. d. Oxf. H. 87, *b*, 12. °प्रायश्चित्त 8, *a*, 41. वधस्य स्थानम् H. 930. क्षत्रियेण वधः — ज्ञानपूर्वकृतः R. 2, 64, 22. यो वन्यनवधक्लेशान्प्राणिनो न चिकीर्षति M. 5, 46. 49. 8, 104. 11, 126. 139. 141. MBh. 1, 6174. 7688. 3, 15735. 13, 530. R. 1, 1, 42. 3, 19. 14, 34. Rāgat. 2, 30. 12, 52. Vaṇiṣ. Bṛh. S. 9, 19. 11, 53. 30, 19. Kathās. 18, 387. Hit. 10, 20. Vet. in LA. (III) 27, 12. व्यधादाज्ञां ततो राज्ञा वधाय श्रुतिहृद्याम् LA. (III) 92, 8. कथं नु शस्त्रेण वधो महिषस्य विधीयते R. 2, 63, 26. नानुज्ञां मे युधिष्ठिरः प्रयच्छति वधे तुभ्यम् (= तव) MBh. 1, 5919. in comp. mit dem obj.: प्राणि° MBh. 12, 4295. M. 5, 48. घाततापि° 8, 351. 10, 49. 11, 56. 66. 68. 85. Jiṣṇ. 1, 72. R. 1, 1, 47. 61. 63, 29. Vaṇiṣ. Bṛh. S. 3, 30. 8, 18. 9, 21. 24, 34. 87, 44. रामेण रावणवधः Taik. 3, 2, 14. mit dem Werkzeuge: इषु° Çat. Br. 5, 4, 2, 2. शस्त्र° Spr. 2502. Auffallend ist es, dass sogar in den Gesetzbüchern वध sowohl *die Todesstrafe* als auch (und zwar häufiger) *eine Leibesstrafe* überh. bezeichnet, so dass nur aus dem Zusammenhange zu ersehen ist, welche von beiden im einzelnen Falle gemeint ist: अङ्गुली ग्रन्थिभेदस्य छेदयेत्प्रथमे पदे । द्वितीये कुलधर्माणौ तृतीये वधमर्हति ॥ M. 9, 277. तडागभेदके कन्यादूषणे सुहृद्वधेन वा 279. Jiṣṇ. 2, 286. ततः कुरुत मे वधम् Kathās. 28, 147. °मुक्त 150. विकृतं प्राप्नुयाद्वधम् M. 9, 291. 8, 130. 267. 320. fg. 338. 364. 366. 9, 249. 11, 100. Jiṣṇ. 1, 366. न कर्तव्यः प्रकाशं विविधैर्वधैः M. 8, 122. 310. Jiṣṇ. 2, 270. Spr. 4964. 4979. वध so v. a. वधभूमि *Richtplatz* Comm. in der Einl. zu Kāṭhar. — *b) Schlag, Verletzung:* ज्याघा: *durch die Bogensehne* Nir. 9, 15. — *c) Schlag* so v. a. *Lähmung:* सक्थ्नोर्हतयोः Suçr. 1, 236, 13. — *d) Vernichtung, Untergang* (von leblosen Dingen): तमसाम् Çiç. 163, v. l. मृगाक्षुद्रलभाण्डेभ्यः सस्यवधः Vaṇiṣ. Bṛh. S. 8, 4. पशुमस्य° 30, 18. 35, 5. देशनरेशसुभिक्ष° 30, 20. सर्वशास्त्र° MBh. 13, 2198. श्रियः Spr. 3634. धर्म° Harīv. 2897. — *e) Multiplication* Gaṇitādhj. Trirāçikādhj. 77. — Vgl. अ°, अये°, आत्म° (auch Vaṇiṣ. Bṛh. S. 87, 45), गो° (auch Jiṣṇ. 3, 224), तपुर्वध, दण्डवध, दूरेवध, देव°, पितृ°, पुरुष° (*Gattenmord* Vet. in LA. (III) 17, 2), ब्रह्म°, ब्राह्मण° (auch M. 8, 381), मद्रा°, मातृ°, मृगवधाजीव, राज्ञ°, शिशुपाल°.

वधक (wie eben) nom. ag. Uṇiṣ. 2, 36. P. 7, 3, 35. 2, 3, 54, Vārtt. 4, Schol. 1) *Mörder* Vaṇiṣ. Bṛh. S. 16, 12. Bṛh. 21, 10. Kathās. 3, 39. 43. Riç-Tar. 4, 101. क्षत्रियाति° MBh. 12, 1212. गुरुस्त्री° 1214. — 2) *Henker, Scharfrichter* Kathās. 64, 53. 72, 196. 88, 43. 124, 122. — 3) Bez. *eines best. Schlafrohrs:* कृत्वैनान्वधको वधैः AV. 8, 8, 2. Kauç. 16. Çat. Br. 3, 4, 3, 14; hierher gehört 2. वाधक.

वधकर्माधिकारिन् m. *Henker, Scharfrichter* Riç-Tar. 2, 79.

वधकाम्या f. *die Absicht zu tödten oder zu schlagen* M. 4, 165.

वधजीविन् adj. *vom Tödten* (des Viehes) *lebend, Metzger, Jäger* u. s. w. Jiṣṇ. 1, 164.

1. वैधत्र (von वध्) Uṇiṣ. 3, 105. n. *Geschoss, Mordwaffe:* सर्वाधेयामर्मणते नि शत्रूनविन्देयामर्पयितं वधत्रैः RV. 4, 28, 4. 8, 85, 17. vielleicht ebenso auch 9, 97, 54.

2. वधत्र adj. nach dem Comm. *vor Tödtung schützend* (त्र): दृढव्रतो वधत्रः स्यात्सर्वेषां मित्रमिव Pāṇ. Gaṇ. 2, 7.

वधदण्ड *körperliche Strafe* M. 8, 129.

वधना (von वध्) f. *tödtliche Waffe* RV. 7, 83, 4.

वधभूमि f. *Richtplatz* Comm. in der Einl. zu Kāṭhar. — Vgl. वध्यभूमि.

वैधस्, वैधस् (von वध्) n. *Geschoss*, namentlich Indra's Naigh. 2, 9. 20. RV. 1, 32, 9. 174, 3. 2, 34, 9. क्षत्रं वर्धन्वृषो मर्त्यस्य 4, 22, 9. 5, 32, 8. उग्रमिन्द्रो दानवाय वधर्यमिष्ट 7. यक्षं शुक्षस्य शवितो वधर्यमम् gen. st. dat. 10, 49, 3. वधर्दासस्य नीनमः 8, 24, 27. वधर्दासस्य दम्भय 22, 5.

वधर्य् (von वधर्), partic. f. वधर्यन्ती *die Geschoss Werfende* so v. a. *Blitz* RV. 1, 161, 9. *nach dem Blitzgeschoss* Indra's *verlangend* Sāy.

वधस् s. u. वधर्.

वधस्थली f. *Richtplatz; Schlachthaus* Taik. 2, 8, 39.

वधस्थान n. dass. Hir. 199; vgl. वधस्य स्थानम् H. 930 und वध्यस्थान.

वधस्न (von वधस्) Indra's *Geschoss;* nur im instr. pl.: विश्वस्य शत्रोरनने वधस्नैः *ich richtete meine Geschosse auf jeden Feind* RV. 1, 165, 6. मर्तमनुग्रतं व° 5, 41, 13. यो देवोई घनमयह° 7, 6, 5. उदुग्रमस्य नमयन्व° 9, 97, 15. Die erste Stelle ist u. नम् 2) zu streichen und unter 3) zu stellen und nach *biegen* beizufügen: (den Bogen, ein Geschoss) *richten auf* (gen.). Die zwei letzten Stellen gehören zu नम् caus. 2), so dass 4) ganz wegfällt.

वधस्नु (wie eben) adj. *ein Geschoss führend* RV. 9, 52, 3. SV. II, 2, 1, 11, 3 fehlerhafte v. l. zu RV. 9, 97, 15.

वधा indecl. v. l. für वधा im gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57.

वधाङ्क n. *Gefängniss* Taik. 2, 2, 7. *poison* bei Wilson (u. व°) Druckfehler für *prison*, wie die erste Ausg. liest.

वधिक *Moschus* Acsm. 6.

वधित्र n. *der Liebesgott, Geschlechtstriebe* Uṇādi. zu Uṇiṣ. 4, 172. — Vgl. वन्धित्र.

वधिन् am Ende eines comp. *den Tod findend durch* —; s. u. क्षुभ्र 1).

वधु f. = वधू *Weib; Schwiegertochter* Comm. zu AK.

वधुका f. = वधू *Weib* Bhar. im Dviçabd. nach Wilson.

वधुटी f. = वधूटी Hir. 146.

वधूं (von वध् = वह्) Uṇiṣ. 1, 55. f. 1) (*die Heimzuführende* und *die Heimgeführte*) *Braut, junge Ehefrau, Ehegemahlin; Weib* überh. AK. 2, 6, 1. 2. 3, 4, 18, 104. Taik. 2, 6, 1. 2, 3, 223. H. a. 503. 513. an. 2, 248. Mnu. dh. 14. fg. Hall. 2, 327. 339. Viçva bei Uṇādi. वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाते RV. 5, 37, 2. 47, 6. 74, 3. 7, 69, 3. यधित्वत्ता 8, 26, 13. 10, 27, 12. 85, 20. 107, 9. AV. 1, 14, 2. 4, 20, 3. यो कल्पयति वहतो वधूमिव

10,1,1. 14,2,9. 41. 3,6,14 (वधो die Hdschrr.). Âçv. Gṛhy. 1,7,8. 8,12. Gobh. 2,2,3. 5. °काले *zur Zeit, da sie Braut war*, R. 5,67,4. in Verbindung mit वर् Ragh. 7,4. 17. Çiç. 122. Kathâs. 34, 255. 44,106. 89, 106. 103, 189. 122, 54. Verz. d. Oxf. H. 336, *b*, 14. °गृहप्रवेश 86, *b*, 11. °प्रवेश 335, *b*, 17. Verz. d. B. H. No. 877. °बन्धुभिः Çiç. 92. Ragh. 1, 90. Kathâs. 3, 68. 18, 262. 294. प्रेष्य° MBh. 3, 15675. नाग° R. 2, 65, 24. 3, 55, 29. Varâh. Bṛh. S. 27, 4. 43, 5. Râǵa-Tar. 3, 338. Hit. I, 189. 39, 20. नारीणामुत्तमा वधूः R. 1, 1, 27. 5, 18. Mucc. 10. 19. 48. 66. Naish. 22, 67. Kir. 6, 45. *Weibchen eines Thieres:* व्याघ्र° MBh. 3, 15587. मृग° R. 3, 51, 14. Bhâg. P. 5, 8, 16. पिक° Kathâs. 56, 197. प्लवगस्य *eines Frosches* Hâlâ. 3, 40. am Ende eines adj. comp.: सवधूक Kathâs. 101, 262. — 2) *Schwiegertochter* (AK. 2, 6, 4, 9. 3, 4, 48, 104. H. 514. H. an. Med. Hâlâ. 2, 349. Viçva a. a. O.), überh. *die Frau eines jüngeren Verwandten* (z. B. *des jüngern Bruders, des Neffen*) MBh. 3, 16741. 16876. 12, 8408. R. 1, 71, 20 (73, 19 Gorr.). 22. 77, 10 (78, 8 Gorr.). R. Gorr. 2, 38, 30. Ragh. 1, 65. Kathâs. 90, 158. der ältere Bruder nennt sein Weib गुरु des jüngeren, der jüngere sein Weib वधू des älteren MBh. 1, 7726. के वधूः (!) Bhâg. P. 7, 2, 20. MBh. 3, 16152. — 3) यद्दान्मे पौरुकुत्स्यः पञ्चाशतं त्रसदस्युर्वधूनाम् RV. 8, 19, 36; nach Durga *Mädchen*, von Sây. nicht erklärt, also wohl im gewöhnlichen Sinne genommen. Es ist aber nicht wahrscheinlich, dass von geschenkten *Sclavinnen* in alter Zeit dieser Ausdruck gebraucht wäre; man kann daher vermuthen *Zugthier, zum Wagen gewohnte Stute;* vgl. वधूमत्. — 4) Bez. verschiedener Pflanzen: *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2, 4, 4, 21. Taik. 3, 3, 223. H. an. Med. Viçva; *Echites frutescens Roxb.* H. an. Med. *Curcuma Zerumbet Roxb.* Med. — Vgl. कुल°, गन्ध°, पुत्र°, धातृ°, वार°, स्वर्वधू, स्वर्ग°, स्वर्गि°.

वधूजन m. *Weib* Taik. 2, 6, 1.

वधूप्रायन m. *Fenster* Taik. 2, 2, 9. falschlich वधूप्रायन Wilson in der 2ten Ausg.

वधूटी (von वधू) f. 1) *ein junges Weib* P. 4, 1, 20, Vârtt. II. 512. Hâlâ. 2, 229. Mahâvîrac. 76, 2 v. u. गोपवधूटीडुकूलचौराय — कृष्णाय Bhâmin. 1. — 2) *Schwiegertochter* Taik. 2, 6, 3. H. 514, Sch. Hân. 146.

वधूदर्शं adj. *auf die Braut schauend:* ये पितरो वधूदर्शो इमं वक्तुमागमन् AV. 14, 2, 73.

वधूपथ m. *Brautweg* AV. 14, 1, 68.

वधूमत् (von वधू) adj. 1) *mit Zugthieren versehen, bespannt:* उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता वधूमतो दश रथासो अस्थुः RV. 1, 126, 3. हा रथो वधूमत्ता सुदासः 7, 18, 22. — 2) *zum Zug tauglich:* षळश्वो यातिष्विव ईन्द्रेते वधूमतः सनम् RV. 8, 37, 17. दशो धेनो रथिनो विंशतिं गा वधूमतो (वधूमतो Müller u. Aufrecht) मघवा मह्यं सम्राट् ददाति 8, 27, 8. उष्ट्राः AV. 20, 127, 2.

वधूयु (wie oben) adj. *heirathslustig, nach Weibern lüstern* RV. 3, 52, 3. 62, 8. 9, 69, 3. 10, 27, 12. सोमो वधूयुरभवत् 85, 9. AV. 14, 2, 42.

वधूसरा f. N. pr. eines Flusses, der der Sage nach aus den weinenden Augen eines *Weibes*, der Pulomâ, *sich ergossen haben soll*, MBh. 1, 904. Harîv. 9508. नदी वधूसरकृताह्वयाम् MBh. 3, 8884.

वधैषिन् adj. *mordsüchtig, die Absicht habend zu tödten* MBh. 1, 7670. निवातकवचानाम् 3, 12071.

वधोद्यत adj. dass. AK. 3, 1, 44.

वधोपाय m. *die Art und Weise Jmd körperlich zu züchtigen:* तम् क्रन्याच्चित्रैर्वधोपायैरुद्वेजनकरैर्नृपः M. 9, 248.

वध्र (वध्र) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 368 (VP. 192). richtiger वध ed. Bomb.

वध्य (von वध्; häufig वध्य geschrieben) adj. P. 3, 1, 97, Vârtt. gaṇa दण्डादि zu P. 5, 1, 66. Vop. 26, 7. 1) *zu erschlagen, zu tödten, den Tod verdienend, dem Tode verfallen;* überh. *zu züchtigen, körperlich zu strafen* AK. 3, 1, 45. यस्त्वा ज्ञघान् वध्यः सो अस्तु AV. 18, 2, 31. वध्यं हि प्रत्यञ्चं प्रतिमुर्चाते TS. 6, 3, 6, 3. तस्मादपि वध्यं प्रपन्नं न प्रतिप्रयच्छन्ति 5, 6, 3. 6, 5. Kâṭh. 11, 5. Çat. Br. 1, 2, 3, 2. यथाकामवध्य (*zu züchtigen* Sây.) Ait. Br. 7, 29. नेष मूर्ध्नि प्रभो वध्यो वध्य एष हि मर्मसु R. 6, 92, 41. यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः M. 5, 22. तस्य तस्यैव ते वध्याः MBh. 4, 496. 13, 43. R. 2, 97, 24. 3, 49, 43. Kathâs. 27, 147. LA. (III) 92, 11. मानुषात् R. 1, 14, 22. विषेण P. 4, 4, 91. वध्यो दण्ड्यश्च M. 8, 58. वध्यस्य मोक्षणे 9, 249. 10, 56. Jâtâ. 1, 338. Çiç. 155. Spr. 964. 4926. Ragh. 2, 30. Varâh. Bṛh. S. 51, 21. Kathâs. 60, 137. Râǵa-Tar. 3, 38. Daçak. 79, 7. Pañcat. 41, 14. 70, 4. Hit. 18, 19. Bhartṛ. 6, 117. मूषको ऽत्र त्रिभिर्वध्यो मार्जारेण त्रयो ऽपरे *kann getödtet werden, sein Leben ist bedroht* Kathâs. 33, 109. वयं ग्राम्याः पशवो ऽरण्यचराणां वध्याः Pañcat. 215, 6. m. *ein Feind, den man erschlägt*, H. 10. 221. — 2) *zu zerstören, zu vernichten, zu Grunde zu richten:* मुरामुरेरवध्यं हि पुरमेतत्तवाभवत् MBh. 3, 12257. Spr. 179. 3617. — Vgl. अ° (auch Bhag. 2, 30. सर्वभूतानाम् R. 3, 31, 1. Çiç. 157, v. l. अवध्यो ब्राह्मणो दण्डैः *keiner körperlichen Strafe unterliegend* R. 7, 59, 2. 34).

वध्यघ्न adj. *einen dem Tode Verfallenen hinrichtend, das Henkeramt verrichtend* MBh. 13, 3572.

वध्यता nom. abstr. von वध्य 1): स गच्छेद्वध्यतां मम *der soll von mir getödtet oder körperlich gestraft werden* MBh. 3, 2304. — Vgl. अ°.

वध्यत्व n. dass. H. 14.

वध्यपटह m. *eine Trommel, die bei der Abführung eines zum Tode Verurtheilten gerührt wird*, Mṛicch. 84, 2. 172, 20.

वध्यभू f. *Richtplatz* Kathâs. 5, 16. 28, 146. 64, 31. 77, 82. 112, 166.

वध्यभूमि f. dass. Kathâs. 88, 23. 112, 164. Hit. 63, 6. — Vgl. वधभूमि.

वध्यमाला f. *ein Kranz, der einem zum Tode Verurtheilten aufgesetzt wird*, Mṛicch. 176, 8.

वध्यशिला f. 1) *ein Stein, auf dem hingerichtet —, geschlachtet wird: Schlachtbank, Schafott* Kathâs. 22, 209. 60, 87. 90, 143. 149. Pañcat. 32, 2. ed. orn. 42, 10. — 2) Titel einer Schrift Sin. D. 184, 15.

वध्यस्थान n. *Richtplatz* Pañcat. 41, 15. Verz. in LA. (III) 22, 6. — Vgl. वधस्थान.

वध्या (von वध्) f. *Tödtung, Mord:* घात्म° MBh. 1, 6227. द्विजप्रवर° 12, 10163. ज्ञाति° 14, 2616. द्यूत° R. 5, 49, 2. — Vgl. ब्रह्म°.

वध्र 1) n. *ein lederner Riemen* Varâh. Bṛh. S. 45, 8. वध्री f. dass. Hâlâ. 2. 441 (वद्री). शतचर्मन् MBh. 1, 1406. Vgl. वर्ध, वर्धी, वरत्रा. — 2) f. ई vielleicht *Speckstreifen:* वराहवध्रीः सुकृता दधिसौवर्चलायुताः R. 5, 14, 43 der Comm. erklärt वराहस्य संस्थानविशेषान्; ed. Bomb. 5, 11, 16 liest वराहव्याधीणसकान्दधिसौवर्चलायुतान्. — 3) n. *Blei* (वध्र) Bhar. zu AK.

nach Wilson; vgl. वर्ध. — 4) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 nach der Lesart der ed. Bomb., वध्र ed. Calc. — Vgl. ग्रवध, गुप्क्त्रधा.

वधक *Blei* H. ç. 150, wo vielleicht so zu lesen ist st. बन्धक.

वधस्व s. u. वध्यश्व.

वधि (von वध्) adj. (*dem die Hoden zerschlagen sind*) *verschnitten, entmannt, unmännlich* (Gegens. वृषन्): वृत्रो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् RV. 1,32,7. वधयो निरिष्टाः 33,6. 2,23,3. 8,46,30. 10,102,12. AV. 3,9, 3. 5. 4,6,7. 8. वृषा तं वधयस्ते सपत्नाः 5,20,2. क्लीबं त्वाकारं वधिं त्वाकारम् 6,138,3. 16,6,11. fehlerhafte Schreibung बद्ध कोरति Çat. Br. 13, 8,4,18. 2,10. Die Synonyme क्लीब, निरिष्ट, वधि mögen verschiedene Arten dieser Verstümmelung bezeichnen. Vgl. मप्तवधि; वधी s. u. वध्र.

वधिका *Eunuch:* दर्शनीयः (als masc. behandelt) P. 1,2,52, Vârtt. 3, Sch.

वधिमतीं (f. von वधिमत् und dieses von वधि) adj. *einen unvermögenden Gatten habend* RV. 1,116,13. 117,24. 6,62,7. 10,39,7. 65,12.

वधिवाच् adj. *unmächtige Worte redend* RV. 7,18,9.

वध्र m. *Schuh, Pantoffel* Çârdûlavikr. bei Wilson (व ॰).

वध्र्यश्व (*verschnittene Rosse habend*) m. N. pr. eines Mannes RV. 6, 61,1. 10,69,1. 2. 4. Âçv. Çr. 1,5,21. Maitrâyaṇ. 1,4. MBh. 2,323. Harîv. 1783 (nach der Lesart der neueren Ausg., वध्रस्व ed. Calc.). mit dem patron. Â nûpa Pârâv. Br. 13,3,17. pl. *sein Geschlecht* Çâṅkh. Çr. 1, 7,3. Lâṭy. 6,4,13. Schol. zu Kâṭy. Çr. 107,15. 249,1. — Vgl. वाध्र्यश्व, व्रध्रश्व und andere Varianten VP. 454, N. 51.

वधती = वधूटी Vaijn. beim Schol. zu H. 512.

वधा indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. वन्, वनति Dhâtup. 13,19 (शब्दे). 20 (संभक्तौ). 19,42 (क्रियासामान्ये. व्याप्तौ. हिंसायाम्). 34,32, v. l. (अहोपकरणयोः, अहोपकननयोः, उपकृतौ अहोघाते शब्दोपतापयोः). वनोति und वनुते (याचने) 30,8. Abfall des न P. 6,4,37. fgg. Vop. 9,7. Von dieser nur in der klteren Sprache lebenden Wurzel verzeichnen wir folgende Formen: वनोमि. वनुयाम. वन्वे, वनुते, वन्वाते; वनत्ति, वनीति, वनतम् du., वनत, वनाम्, वनेम, वनेम (RV. 2,5,7) und वनेम, वनते, वनामहे, °हे, वनेमहि; वनान, वनन्य, वनन्मै, वनन्यम्, वन्ने; वनाम, वनीमहि und वनीमहि RV. 9,72,8 aus metrischen Rücksichten; वनिषत् AV. 20,132,6. 7. वनिषीष्ट, वनिषत्त TS. 4,7,14,1 st. वनुषत्त des RV.; वत्त 3. pl., वत्स्व; वावनम्, वावन्धि; वनिष्ये Çâṅkh. Çr.; infin. प्रवत्तवे; वन्वताम् 3. imp. falsche Form (st. मनुताम् des RV.) AV. 6,126,1. partic. वात und वनित s. bes. 1) *gern haben, lieben; wünschen, verlangen:* कीरेश्चिन्मन्यु मनसा वनोषि तम् RV. 1,31,12. वनोति हि सुन्वन्तमं परीणसः 133,7. 2,6,1. ब्रह्मा 3,8,2. वनिनो वत्त वार्यम् 1,139,10. विश्वेभिर्यद्वावनः पुक्र देवैस्तन्नो रास्व मन्म 4,11,2. वावन्धि पर्यून् 5,31,12. 65,1. यस्मै वयं यदावान तद्विद्मः 6,23,5. ज्ञनेस्य रातिम् 6,38,1. 8,13,33. मार्कीः ब्रह्महियो वनः 45,23. 10,61,4. मामित्किल त्वं वनाः AV. 1,34,4. 5,4,3. 8,2,12. 12,1, 58. इन्द्रस्य (नाम) वन्वे 8,82,1. तदग्निर्देवेभ्यो वनुतां वयमग्नेः परि Çat. Br. 1,9,4,19. Kâṭy. 23,6. Çâṅkh. Çr. 1,3,9. प्रियो यविष्ठोर्वनिषीष्ट मेधिरः RV. 1, 127,7. प्रत्नाये देवासो वनते मर्त्यो वः 5,41,17. — 2) *erlangen, verschaffen für; sich verschaffen:* यद्गिर्वन्ने सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् RV. 1,36,17. तत्रं नो यज्ञो वनताम् 162,22. राये वाजाय वनते मघानि 3, 19,1. 5,44,7. 65,4. वंसीमहि वाममं 6,19,10. वास्वः कुविदङ्गानि नः 7, 18,4. वंस्व विश्वा वार्याणि 17,5. यवं: 7,88,7. यथा वृष्टिं शतसवे वनेम 10,98,3. दक्षिणावद्वनुते 107,7. AV. 12,3,53. Çat. Br. 3,6,3,22. — 3) *bemeistern, bezwingen; siegen, gewinnen:* वीरेवीरिन्वनुयामा वयंताः RV. 1,73,9. 132,1. 2,21,2. इन्धानो यमिं वनवद्वनुष्यतः 23,1. स यन्ता वनवद्देव मर्तान् 5,3,3. समिद्धाग्निर्वनवत् 37,2. 6,19,6. एकः कृष्टीरवनोरार्याय 18,3. 7,21,9. वावन्मा नु ते पर्व्याभिवृत्ती 37,5. 83,4. रायं पेन वनामके *wodurch wir obenan kommen* 9,101,9. 10,38,3. अर्यक्तं पुनद्वद्वन्वान् *der es vermag* 27,9. — 4) *verfügen über, innehaben:* एको यद्वन्वे भूरेरीशानः RV. 1,61,15. युवं श्रियमश्विना देवता वसवः 4,44,2. स देवेषु वनते वार्याणि 5,4,3. 7,2,7. सोवर्ण्यं यो वनवत्स्वर्यः 6,33,1. यत्कूपते यद्वनुते यज्ञे वज्रेण विन्दते *was Einer erpflügt, besitzt und erhandelt* AV. 12,2,36. — 5) *bereit machen, sich anschicken zu:* स्तोमं यज्ञं चादरं वनेमा रयिमा वयम् RV. 2,5,7. धियम् 11,12. 8,61,1. *das Absehen haben auf, petere:* कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्वं कुत्समन्तेः परियासि वधैः 1,121, 9. वन्वानो यत्र सरथं ययाथ कुत्सेन *angreifend* 5,29,9.

— caus. वनयति und वा॰, mit Präpp. nur व॰ Dhâtup. 19,68. AV. Paipp. 4,23. Vop. 18,23. वा॰ Dhâtup. 34,33, v. l.

— intens. s. वनीवन्.

— अपि s. अपिवान्यवत्सा.

— अभि *erwünschen, erstreben:* अभीमेवन्वन्त्वभिष्टिमूतयः RV. 1,51, 2. — Vgl. अभिवान्यवत्सा.

— आ 1) *begehren, wünschen, erflehen* RV. 1,127,7. 5,41,17. वो वामस्य पुत्रणामा ववृत्रे मर्त्यानाम् *durch Bitten herbeirufen* 74,7. — 2) *verschaffen:* तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् RV. 1,140,11.

— नि s. 2. निवात und निवान्यवत्सा.

— प्र *gewinnen, siegen:* यत्कर्थं कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे RV. 1,131, 5. *haben:* प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम् 10,96,11.

— सम् caus. *geneigt machen, an Jmd gewöhnen:* गावो घृतस्य मातरो ऽमूं सं वानयन्तु (vgl. AV. Paipp. 4,23) मे AV. 6,9,3. — Vgl. संवनन.

2. वन् = 1. वन; nur im loc. und gen. pl. *Holzgefäss, Kufe:* श्येनो न वंसु पीदति RV. 9,57,3. 86,35. गर्भो वनानाम् *Sohn der Hölzer* d. i. Agni 10,46,5.

1. वन Nir. 8,3. 1) m. Sinne K. 249,a,8. a) *Baum, Wald* (AK. 2,4,1,1. 3, 4,18. 129. Taik. 2,4,1. H. 1110. an. 2,383. Med. n. 19. Halâj. 2,33) RV. 1, 54,1. 65,3. 3,51,5. गौरवनी गिरयो वृत्रकेशाः 5,41,11. नि वो वनी विक्ते 57,3. 60,2. यथा वनं यथा समुद्र एजति 78,3. 6,6,3. 31,2. 8,40,1. उदिद्धूनोति वातो यथा वनम् 18,23,4. Kaṇ. 76. Pân. Gaṇ. 2,15. wie अरण्य *das dem Menschen nicht gehörige, fremde Land:* मा नो दमे मा वन आ जुहूर्याः RV. 7,1,19. — वने वसेत् *im Walde* M. 6,1. 28. fg. 11,72. वनं गच्छेत् 6,3. वनेषु विहृत्य 33. चत्तीनां मिथो वने 8,236. विद्वन 10,107. 11,105. कृष्णानामोषधीनां ज्ञातानां च स्वयं वने 144. गहन MBh. 1, 5378. अन्तःपुरसमीपस्थ 3,2089. 2236. R. 1,1,24. 2,61,10. Raṅg. 1, 52. 2,17. 17,66. Spr. 2716. fgg. Vaṇîn. Bhm. S. 2,8. 24,15. अरण्ये वने ऽपि वा M. 8,356. अरण्यानि, वनानि, उपवनानि 9,265. Kathâs. 93, 86. neben कानन R. 3,68,12. 6,2,15. Spr. 3103. आसवणा R. 1,63,3. Spr. 3887. भूतगृ॰ Mṛicch. 37. उद्यान॰ Vet. in LA. (III) 5,1. Nicht nur von Bäumen, sondern auch von einjährigen Pflanzen, Rohrarten und sogar Lotusblüthen wird das Wort वन gebraucht. P. 8,4,6. नल॰ MBh. 6,

18,1,1. 14,2,9. 41. 8,6,14 (वधो die Hdschrr.). Âçv. Gṛhy. 1,7,8. 8,12. Gobh. 2,2,3. 8. °काले *zur Zeit, da sie Braut war*, R. 5,67,4. in Verbindung mit वर् Ragh. 7,4. 17. Çiç. 122. Kathâs. 34, 235. 44, 106. 89, 106. 103, 189. 122, 34. Verz. d. Oxf. H. 336, *b*, 14. °गृहप्रवेश 86, *b*, 11. °प्रवेश 335, *b*, 17. Verz. d. B. H. No. 877. °बन्धुभिः Çiç. 92. Ragh. 1, 90. Kathâs. 3, 68. 18, 262. 394. प्रेष्य° MBh. 3, 15675. नाग° R. 2, 65, 24. 3, 35, 29. Varâh. Bṛh. S. 27, 4. 43, 5. Riçja-Tar. 3, 388. Hit. I, 188. 39, 20. नारीणामुत्तमा वधूः R. 1, 1, 27. 5, 18. Mṛicch. 10. 19. 48. 66. Naish. 22, 47. Kir. 6, 45. *Weibchen eines Thieres:* व्याघ्र° MBh. 3, 13887. मृग° R. 3, 51, 14. Bhâg. P. 5, 8, 16. पिक° Kathâs. 56, 197. प्लवगस्य *eines Frosches* Hâlâs. 3, 40. am Ende eines adj. comp.: सवधूक Kathâs. 101, 262. — 2) *Schwiegertochter* (AK. 2, 6, 1, 9. 3, 4, 28, 104. H. 514. H. an. Med. Hâlâs. 2, 349. Viçva 3. a. O.), überh. *die Frau eines jüngeren Verwandten* (z. B. *des jüngern Bruders, des Neffen*) MBh. 3, 16741. 16876. 12, 8408. R. 1, 71, 20 (73, 19 Gorr.). 22. 77, 10 (78, 8 Gorr.). R. Gorr. 2, 38, 30. Ragh. 1, 65. Kathâs. 90, 158. der ältere Bruder nennt sein Weib गुरु des jüngeren, der jüngere sein Weib वधू des älteren MBh. 1, 7726. के वधूः (!) Bhâg. P. 7, 2, 20. MBh. 3, 16152. — 3) यदन्मे पौरुकुत्स्यः पञ्चाशतं त्रसदस्युर्वधूनाम् RV. 8, 19, 36; nach Durga *Mädchen*, von Sây. nicht erklärt, also wohl im gewöhnlichen Sinne genommen. Es ist aber nicht wahrscheinlich, dass von geschenkten *Sclavinnen* in alter Zeit dieser Ausdruck gebraucht wäre; man kann daher vermuthen *Zugthier, zum Wagen gewohnte Stute;* vgl. वधूमत्. — 4) Bez. verschiedener Pflanzen: *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2, 4, 4, 21. Trik. 3, 3, 223. H. an. Med. Viçva; *Echites frutescens Roxb.* H. an. Med. *Curcuma Zerumbet Roxb.* Med. — Vgl. कुल°, गन्ध°, पुत्र°, भ्रातृ°, वार्°, स्वर्वधू, स्वर्ग°, स्वर्गि°.

वधूतन m. *Weib* Trik. 2, 6, 1.

वधूप्रायन m. *Fenster* Trik. 2, 2, 9. falschlich वधूशयन Wilson in der 2ten Aufl.

वधूटी (von वधू) f. 1) *ein junges Weib* P. 4, 1, 20, Vârtt. II. 512. Hâlâs. 2, 329. Mahâvîrak. 76, 2 v. u. गोपवधूटीडुकूलचौराय — कृष्णाय Bhâsaṇ. 1. — 2) *Schwiegertochter* Trik. 2, 6, 3. H. 514, Sch. Hin. 146.

वधूदर्श adj. *auf die Braut schauend:* ये पितरो वधूदृशो इमं वहन्तुमागमन् AV. 14, 2, 73.

वधूपथ m. *Brautweg* AV. 14, 1, 63.

वधूमत् (von वधू) adj. 1) *mit Zugthieren versehen, bespannt:* उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता वधूमतो दश रथासो अस्थुः RV. 1, 126, 3. हा रथा वधूमन्तो सुदानवः 7, 18, 22. — 2) *zum Zug tauglich:* षळश्वो घातिविग्व ईन्द्रेते वधूमतः (सनम्) RV. 8, 87, 17. इयं धेनू रुचिनो विशन्तिं गा वधूमतो (वधूमत्तो Müller u. Aufrecht) मघवा मह्यं सम्राट् ददाति 6, 27, 8. उष्ट्राः AV. 20, 127, 2.

वधूयु (wie eben) adj. *heirathslustig, nach Weibern lüstern* RV. 3, 32, 3. 62, 8. 9, 69, 3. 10, 27, 12. सोमो वधूयुरभवत् 85, 9. AV. 14, 2, 42.

वधूसरा f. N. pr. eines Flusses, der der Sage nach aus den weinenden Augen eines *Weibes*, der Puloma, *sich ergossen haben soll*, MBh. 1, 904. Hariv. 9508. नदी वधूसरकृतालयाम् MBh. 3, 8684.

वधैषिन् adj. *mordsüchtig, die Absicht habend zu tödten* MBh. 1, 7670. निवातकवचानाम् 3, 12071.

वधोद्यत adj. dass. AK. 3, 1, 44.

वधोपाय m. *die Art und Weise Jmd körperlich zu züchtigen:* तम् कन्याश्चित्रैर्वधोपायैरुद्वेजनकैर्नृपः M. 9, 248.

वध्र (वध्र) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 (VP. 192). richtiger वघ्र ed. Bomb.

वध्य (von वध्; häufig वध्य geschrieben) adj. P. 3, 1, 97, Vârtt. gaṇa दण्डादि zu P. 5, 1, 66. Vop. 26, 7. 1) *zu erschlagen, zu tödten, den Tod verdienend, dem Tode verfallen;* überh. *zu züchtigen, körperlich zu strafen* AK. 3, 1, 45. यस्त्वा द्वयान् वध्यः सो यंस्तु AV. 18, 2, 21. वध्यं हि प्रत्यञ्चं प्रतिमुञ्चति TS. 6, 3, 6, 3. तस्मादपि वध्यं प्रपन्नं न प्रतिप्रयच्छेत् 3, 6, 3, 5. Kâṭh. 11, 5. Çat. Br. 1, 2, 3, 2. पवाकामवध्य (*zu züchtigen* Sây.) Ait. Br. 7, 29. नेष मूर्धि प्रणो वध्यो वध्य एष हि मर्मसु R. 6, 92, 41. एषार्घे ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः M. 5, 22. तस्य तस्यैव ते वध्याः MBh. 4, 496. 13, 43. R. 2, 97, 24. 3, 49, 43. Kathâs. 27, 147. LA. (III) 92, 11. मानुषात् R. 1, 14, 22. विषेण P. 4, 4, 91. वध्यो दण्डस्य M. 8, 58. वध्यस्य मोक्षणे 9, 249. 10, 56. Jîvân. 1, 358. Çiç. 155. Spr. 964. 4926. Ragh. 2, 30. Varâh. Bṛh. S. 51, 21. Kathâs. 60, 137. Riçja-Tar. 3, 38. Daçak. 79, 7. Pañkat. 41, 14. 70, 4. Hit. 18, 19. Bhatṭ. 6, 117. मूषको ऽत्र त्रिभिर्वध्यो मार्जारेण त्रयो ऽपरे kann getödtet werden, sein Leben ist bedroht Kathâs. 33, 109. वयं ग्राम्याः पशवो ऽरण्यचराणां वध्याः Pañkat. 215, 6. m. *ein Feind, den man erschlägt*, H. 10. 221. — 2) *zu zerstören, zu vernichten, zu Grunde zu richten:* मुरामुरैरवध्यं हि पुरमेतत्त्वया मरुत् MBh. 3, 12257. Spr. 179. 3617. — Vgl. अ° (auch Bhag. 2, 30. सर्वभूतानाम् R. 3, 31, 1. Çiç. 157, v. l. अवध्यो ब्राह्मणो दण्डैः *keiner körperlichen Strafe unterliegend* R. 7, 59, 2. 24).

वध्यघ्न adj. *einen dem Tode Verfallenen hinrichtend, das Henkeramt verrichtend* MBh. 13, 2572.

वध्यता nom. abstr. von वध्य 1): म गच्छेदध्यतां मम *der soll von mir getödtet oder körperlich gestraft werden* MBh. 3, 2304. — Vgl. अ°.

वध्यत्व n. dass. H. 14.

वध्यपटह m. *eine Trommel, die bei der Abführung eines zum Tode Verurtheilten gerührt wird*, Mṛicch. 84, 2. 172, 20.

वध्यभू f. *Richtplatz* Kathâs. 5, 16. 28, 146. 64, 51. 77, 82. 112, 166.

वध्यभूमि f. dass. Kathâs. 88, 33. 112, 164. Hit. 63, 6. — Vgl. वधभूमि.

वध्यमाला f. *ein Kranz, der einem zum Tode Verurtheilten aufgesetzt wird*, Mṛicch. 176, 8.

वध्यशिला f. 1) *ein Stein, auf dem hingerichtet —, geschlachtet wird: Schlachtbank, Schafott* Kathâs. 22, 209. 60, 87. 90, 143. 148. Pañkat. 32, 2. ed. orn. 42, 10. — 2) Titel einer Schrift Sîm. D. 184, 15.

वध्यस्थान n. *Richtplatz* Pañkat. 41, 15. Ver. in LA. (III) 22, 8. — Vgl. वधस्थान.

वध्या (von वध्) f. *Tödtung, Mord:* स्वात्म° MBh. 1, 6227. द्विजप्रवर° 12, 10163. ज्ञाति° 14, 2618. द्यूत° R. 5, 49, 2. — Vgl. ब्रह्म°.

वध्र 1) n. *ein lederner Riemen* Varâh. Bṛh. S. 43, 3. वध्री f. dass. Hâlâs. 2, 441 (वद्री). शतचर्मन् MBh. 1, 1406. Vgl. वर्ध, वर्धी, वरत्रा. — 2) f. ई vielleicht *Speckstreifen:* वराहवध्रीः सुकृता दधिसोवर्चलायुताः R. 5, 14, 22 der Comm. erklärt वराहस्य मेदस्थानविशेषान्; ed. Bomb. 5, 14, 16 liest वराहवाधीणसकान्दधिसोवर्चलायुतान्. — 3) n. *Blei* (वध्र) Bhâr. zu AK.

nach Wilson; vgl. वर्ध. — 4) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 nach der Lesart der ed. Bomb., वध्र ed. Calc. — Vgl. घवध्र, गुच्छवधा.

वधक *Dieb* H. ç. 159, wo vielleicht so zu lesen ist st. बन्धक.

वधस्व s. u. वध्यश्व.

वधि (von वध्) adj. (*dem die Hoden zerschlagen sind*) *verschnitten, entmannt, unmännlich* (Gegens. वृषन्): वृक्षो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् RV. 1,32,7. वधयो निरिष्टाः 33,6. 2,25,3. 8,46,30. 10,102,12. AV. 3,9, 2. 3. 4,6,7. 8. वृषा वं वधयस्ते सपत्नाः 5,20,2. क्लीबं वाकारं वधिं वाकारम् 6,138,3. 16,6,11. fehlerhafte Schreibung वद् करोति Çat. Br. 13, 8,4,13. 3,10. Die Synonyme क्लीब, निरिष्ट, वधि mögen verschiedene Arten dieser Verstümmelung bezeichnen. Vgl. सप्तवधि; वधी s. u. वध्.

वधिका *Eunuch*: दर्शनीयः (als masc. behandelt) P. 1,2,52, Vârtt. 3, Sch.

वधिमती (f. von वधिमस् und dieses von वधि) adj. *einen unvermögenden Gatten habend* RV. 1,116,13. 117,24. 8,62,7. 10,39,7. 65,12.

वधिवाच् adj. *unmächtige Worte redend* RV. 7,18,9.

वध्र m. *Schuh, Pantoffel* Çabdârthak. bei Wilson (व).

वध्र्यश्व (*verschnittene Rosse habend*) m. N. pr. eines Mannes RV. 6, 61,1. 10,69,1. 3. 4. Âçv. Çr. 1,5,21. Maitrâyaṇ. 1,4. MBh. 2,323. Harîv. 1783 (nach der Lesart der neueren Ausg., वधस्व ed. Calc.). mit dem patron. Ânûpa Pâraç. Bh. 13,3,17. pl. *sein Geschlecht* Çâṅkh. Çr. 1, 7,3. Lâṭy. 6,4,13. Schol. zu Kâṭy. Çr. 107,15. 249,1. — Vgl. वाध्र्यश्व, ब्राध्र्य und andere Varianten VP. 434, N. 31.

वधती = वधूटी Vaijp. beim Schol. zu H. 512.

वधा indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. वन्, वनति Dhâtup. 13,19 (शब्दे). 20 (संभक्तौ). 19, 43 (क्रियासामान्ये. व्याप्तौ. क्रियायाम्). 34, 33, v. l. (अहोपकरणयोः, अहोपक्लननयोः, उपकृतौ अद्घाते शब्दोपतापयोः). वनोति und वनुते (याचने) 30, 8. Abfall des न P. 6, 4, 37. fgg. Vop. 9, 7. Von dieser nur in der älteren Sprache lebenden Wurzel verzeichnen wir folgende Formen: वनोमि, वनुयाम, वन्वे, वनुते, वन्वानै; वनति, वनोति, वनतम् du., वनत, वनाम्, वनेम, वनेम (RV. 2,5,7) und वनेम, वनते, वनामहे, °हे, वनेमहि: वनान, वनन्य, वनर्म, वनन्वस्, वन्रे; वनाम, वनीमहि und वनीमहि RV. 9,72,8 aus metrischen Rücksichten; वनिषत् AV. 20,132,6. 7. वनिषीष्ट, वनिषत TS. 4,7,44,1 st. वनुषत des RV.; वस 3. pl., वनस्व; वावनस्, वावन्धि; वनिष्ये Çâṅkh. Çr.; infin. प्रवनध्वे; वनताम् 3. imp. falsche Form (st. मनुताम् des RV.) AV. 5,126,1. partic. वात und वनित s. hes. 1) *gern haben, lieben; wünschen, verlangen*: कीरेरिन्मन्वं मनसा वनोमि तम् RV. 1,31,12. वनोति हि सुन्वन्तंपरीणसः 133,7. 2,6,1. ब्रह्मा 3,8,2. वनिनो वन्त वार्यम् 1,139,10. विश्वेभिर्यहावनैः श्रुक्र देवैस्तनो रास्व मन्म 4,11,2. वावन्धि पत्नीम् 5,31,13. 65,1. यस्मै वयं यहावान तद्विद्वांसः 6,23,5. अनेस्य रातिम् 6,36,1. 8,13,33. मार्को ब्रह्माहियो वनः 45,23. 10,61,4. मामित्किल त्वं वनाः AV. 1,34,4. 5,4,3. 8,2,12. 12,1, 38. इन्द्रस्य (नाम) वन्वे 8,82,1. तदग्निर्विभ्यो वनुतां वयमग्नेः परि Çat. Br. 1,9,2,19. Kâṭy. 23,6. Çâṅkh. Çr. 1,5,9. प्रियो यमिधीर्वनिषीष्ट मेधिरः RV. 1,127,7. प्रताये देवासो वनते मर्त्यो वः 5,41,17. — 2) *erlangen, verschaffen für; sich verschaffen*: यज्ञिर्वव्रे सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् RV. 1,36,17. तत्रं नो यज्ञो वनताम् 102,22. राये वाजाय वनते मघानि 3, 19,1. 5,44,7. 63,4. वसीमहि वामम् 6,19,10. वस्वः कुविहनाति नः 7, 15,4. वस्व विश्वा वार्याणि 17,3. यवः 7,88,7. यया वृष्टि शतनवे वनेम 10,98,3. दक्षिणावते वनुते 107,7. AV. 12,3,53. Çat. Br. 3,8,2,22. — 3) *bemeistern, bezwingen; siegen, gewinnen*: वीरेवीरान्वनुयामा वोतारः RV. 1,73,9. 132,1. 2,21,2. इन्धानो यज्ञि वनवद्वनुष्यतः 25,1. स यन्ता वनवद्देव मर्तान् 5,3,5. समिद्धाग्निर्वनवत् 37,2. 6,19,8. एकः कृष्टीरवनोरार्याय 18,3. 7,21,9. वव्रन्मा नु ते यज्ञियासो अग्नयो 37,5. 83,4. रयिं येन वनामहे *wodurch wir obenan kommen* 9,101,9. 10,38,3. यर्णुक्षं युवन्नवद्वन्वान् *der es vermag* 27,9. — 4) *verfügen über, innehaben*: एको यद्वव्रे भूरेरीशानः RV. 1,61,13. युवं मित्रमघिना देवता वनः 4,44,2. स देवेषु वनते वार्याणि 5,4,3. 7,2,7. सोवंश्यं यो वनवत्स्वग्नेः 6,33,1. यत्कृपते पद्यन्ते यत्र वक्षेन विन्दते *was Einer erpflügt, besitzt und erhandelt* AV. 12,2,36. — 5) *bereit machen, sich anschicken zu*: स्तोमं यस्ते चादरे वनेमा रयिमा वयम् RV. 2,5,7. धियम् 11,12. 8,61,1. *das Absehen haben auf, petere*: कुत्सोयं यत्र पुरुहूत वन्वन् कुत्समनयत्तेः पर्यासि वधेः 1,121, 9. वन्वानो यत्र मरुद्भ्यो यवाय कुत्सेन *angreifend* 5,29,9.

— caus. वनयति und वा°, mit Präpp. nur व° Dhâtup. 19, 68. AV. Paipp. 4,92. Vop. 18,22. वा° Dhâtup. 34,33, v. l.

— intens. s. वनीवन्.

— अपि s. अपिवान्यवत्सा.

— अभि *erwünschen, erstreben*: अभीमेवन्वन्स्वभिष्टिमूतयः RV. 1,51, 2. — Vgl. अभिवान्यवत्सा.

— आ 1) *begehren, wünschen, erflehen* RV. 1,127,7. 5,41,17. को वामद्य पुरुणामा ववर्त मर्त्यानाम् *durch Bitten herbeirufen* 74,7. — 2) *verschaffen*: तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् RV. 1,140,11.

— नि s. 2. निवात und निवान्यवत्सा.

— प्र *gewinnen, siegen*: चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे RV. 1,131, 5. *haben*: प्र तै वन्वे वनुषो रुशंतं मदम् 10,96,11.

— सम् caus. *geneigt machen, an Jmd gewöhnen*: गावो घृतस्य मातरो ऽमूं म वानयन्तु (vgl. AV. Paipp. 4,93) मे AV. 6,9,3. — Vgl. संवनन.

2. वन् = 1. वन; nur im loc. und gen. pl. *Holzgefäss, Kufe*: श्येनो न वंसु पीपति RV. 9,37,3. 86,35. गर्भो वनाम् *Sohn der Hölzer* d. i. Agni 10,46,5.

1. वन Nir. 8,3. 1) n. Sidd. K. 249,a,5. a) *Baum, Wald* (AK. 2,4,1,1. 3, 4,28,129. Taik. 2,4,1. H. 1110. an. 2,333. Med. n. 19. Halây. 2,55) RV. 1, 54,1. 65,3. 3,51,5. गौर्वनो गिरयो वृत्रकेशाः 5,41,11. नि वो वनो विरुक्ते 57,3. 60,2. यथा वनं यथा समुद्र एजति 78,3. 6,6,3. 31,2. 8,40,1. उदिद्भूनोति वातो यथा वनम् 10,23,4. Kauç. 76. Pân. Gaṇ. 2,15. wie अरण्य *das dem Menschen nicht gehörige, fremde Land*: मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः RV. 7,1,19. — वने वसेत् *im Walde* M. 6,1. 28. fg. 11,73. वनं गच्छेत् 6,3. वनेषु विहृत्य 33. चत्तीनां मिथो वने 8,236. विज्ञन 10,107. 11,105. कृष्णानामोषधीनां ज्ञातानां च स्वयं वने 144. गत्वा MBh. 1, 3878. यतःपुरममीषस्य 3,2089. 2236. R. 1,1,24. 9,61,10. Raghu. 1, 82. 2,17. 17,66. Spr. 2716. fgg. Vaṇîn. Bṛh. S. 2,8. 24,15. अरण्ये वने ऽपि वा M. 8,356. अरण्यानि, वनानि, उपवनानि 9,265. Kathâs. 93, 36. neben कानन R. 3,68,12. 5,2,15. Spr. 3105. आम्रवण R. 1,63,9. Spr. 3887. भुक्तवृ° Megh. 37. उद्यान° Vet. in LA. (III) 5,1. Nicht nur von Bäumen, sondern auch von einjährigen Pflanzen, Rohrarten und sogar Lotusblüthen wird das Wort वन gebraucht. P. 8,4,6. नल° MBh. 6,

10,1,1. 14,2,9. 41. 3,6,14 (वधो die Hdschrr.). Âçv. Gṛhy. 1,7,8. 8,12. Gobh. 2,2,3. 5. °काले *zur Zeit, da sie Braut war*, R. 3,67,4. in Verbindung mit वर् Raghu. 7,4. 17. Çiç. 122. Kathâs. 34,255. 44,106. 89, 106. 103, 189. 122, 54. Verz. d. Oxf. H. 336, *b*, 14. °गृहप्रवेश 86, *b*, 11. °प्रवेश 333, *b*, 17. Verz. d. B. H. No. 877. °बन्धुभिः Çiç. 92. Raghu. 1,90. Kathâs. 3,66. 18,262. 294. प्रेष्य° MBu. 3,15675. नाग° R. 2,65,24. 3, 53,29. Varâh. Bṛh. S. 27,4. 43,5. Rîâ-Tar. 3,388. Hit. I, 188. 39,20. नारीणामुत्तमा वधूः R. 1,1,27. 5,18. Mucch. 10. 19. 48. 66. Naish. 22,47. Kir. 6,45. *Weibchen eines Thieres:* व्याघ्र° MBu. 3,15587. मृग° R. 3, 51,14. Bhâg. P. 5,8,16. पिक° Kathâs. 56,197. प्लवगस्य *eines Frosches* Hall. 3,40. am Ende eines adj. comp.: सवधूक Kathâs. 101,262. — 2) *Schwiegertochter* (AK. 2,6,4,9. 3,4,48,104. H. 514. H. an. Med. Hall. 2,349. Viçva 3. a. O.), überh. *die Frau eines jüngeren Verwandten* (z. B. *des jüngern Bruders, des Neffen*) MBu. 3,16741. 16870. 12,8408. R. 1, 71,20 (73,19 Gorr.). 22. 77,10 (78,8 Gorr.). R. Gorr. 2, 38, 30. Raghu. 1,65. Kathâs. 90,138. der ältere Bruder nennt sein Weib गुरु des jüngeren, der jüngere sein Weib वधू des älteren MBu. 1,7726. के वधूः (!) Bhâs. P. 7,2,20. MBu. 3,16152. — 3) *Mädchen, Jungfrau* RV. 8,19,36; nach Durga *Mädchen*, von Sây. nicht erklärt, also wohl im gewöhnlichen Sinne genommen. Es ist aber nicht wahrscheinlich, dass von geschenkten *Sclavinnen* in alter Zeit dieser Ausdruck gebraucht wäre; man kann daher vermuthen *Zugthier, zum Wagen gewohnte Stute;* vgl. वधूमत्. — 4) Bez. verschiedener Pflanzen: *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2,4,4,21. Trik. 3,3,223. H. an. Med. Viçva; *Echites frutescens Roxb.* H. an. Med. *Curcuma Zerumbet Roxb.* Med. — Vgl. कुल°, गन्ध°, पुत्र°, भ्रातृ°, वार°, स्वर्वधू, स्वर्ग°, स्वर्गि°.

वधूजन m. *Weib* Trik. 2,6,1.

वधूप्रायण m. *Fenster* Trik. 2,2,9. falschlich वधूशयन Wilson in der 2ten Ausg.

वधूटी (von वधू) f. 1) *ein junges Weib* P. 4,1,20. Vârtt. II. 512. Hall. 2,329. Mahâvîrac. 76,2 v. u. गोपवधूटीदुकूलचौराय — कृष्णाय Bâlabh. 1. — 2) *Schwiegertochter* Trik. 2,6,3. H. 514. Sch. Hân. 146.

वधूदर्शी adj. *auf die Braut schauend:* ये पितरो वधूदृशो इमं वहन्तुमागमन् AV. 14,2,73.

वधूपथ m. *Brautweg* AV. 14,1,63.

वधूमत् (von वधू) adj. 1) *mit Zugthieren versehen, bespannt:* उप मा यन्त्राः स्वनवेन दत्ता वधूमतो दश रथासो अस्थुः RV. 1,126,3. हा रथो वधूमता सुदानः 7,18,22. — 2) *zum Zug tauglich:* षळश्वाँ घातिथिरिन्द्रोते वधूमतः सनम् RV. 8,57,17. हयाँ अंधो रुचिनो विंशतिं गा वधूमतो (वधूमत्तो Müller u. Aufrecht) मघवा मह्यं सम्राट् ददाति 6,27,8. उष्ट्राः AV. 20,127,2.

वधूयु (wie eben) adj. *heirathslustig, nach Weibern lüstern* RV. 3,52, 8. 62,8. 9,69,3. 10,27,12. सोमो वधूयुरभवत् 85,9. AV. 14,2,42.

वधूयरा f. N. pr. eines Flusses, der der Sage nach aus den weinenden Augen eines *Weibes*, der Puloma's, *sich ergossen haben soll*, MBu. 1,904. Harîv. 9508. नदी वधूसरुकृतावगाम् MBu. 3,8684.

वधैषिन् adj. *mordsüchtig, die Absicht habend zu tödten* MBu. 1,7670. निवातकवचानाम् 3,12071.

वधोद्यत adj. dass. AK. 3,1,44.

वधोपाय m. *die Art und Weise Jmd körperlich zu züchtigen:* तम् कन्याश्चित्रैर्वधोपायैरुद्वेजनकैर्नृपः M. 9,248.

वध्र (वध्र) m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6,368 (VP. 192). richtiger वध ed. Bomb.

वध्य (von वध्; häufig वध्य geschrieben) adj. P. 3,1,97, Vârtt. gaṇa दण्डादि zu P. 5,1,66. Vop. 26,7. 1) *zu erschlagen, zu tödten, den Tod verdienend, dem Tode verfallen;* überh. *zu züchtigen, körperlich zu strafen* AK. 3,1,45. यस्त्वा द्वेष्टि वध्यः सो अस्तु AV. 18,2,31. वध्यं हि प्रत्यञ्चं प्रतिमुञ्चति TS. 6,3,6,3. तस्मादपि वध्यं प्रपद्य न प्रतिप्रयच्छति 3, 6,3. 8,3. Kâtj. 11,5. Çat. Br. 1,2,2,2. यथाकामवध्य (*zu züchtigen* Sây.) Ait. Br. 7,29. नेय मूर्ध्नि प्रभो वध्यो वध्य एष हि मर्मसु R. 6,92,41. यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः M. 5,22. तस्य तस्यैव ते वध्याः MBu. 4,496. 13,43. R. 2,97,24. 3,49,45. Kathâs. 27,147. LA. (III) 92, 11. मानुषात् R. 1,14,22. विषेण P. 4,4,91. वध्यो दण्ड्यश्च M. 8,38. वध्यस्य मोक्षणे 9,249. 10,56. Jîân. 1,258. Çiç. 185. Spr. 964. 4926. Ragh. 2,30. Varâh. Bṛh. S. 51,21. Kathâs. 60,137. Rîâ-Tar. 3,38. Daçak. 79,7. Pañkat. 41,14. 70,4. Hit. 18,19. Bhartṛ. 6,117. भूपको ऽत्र त्रिभिर्वध्यो मार्जारेण त्रयो ऽपरे *kann getödtet werden, sein Leben ist bedroht* Kathâs. 33,109. वयं माम्याः पशवो ऽरण्यचराणां वध्याः Pañkat. 215,6. m. *ein Feind, den man erschlägt*, H. 10. 221. — 2) *zu zerstören, zu vernichten, zu Grunde zu richten:* सुरासुरैरवध्यं हि पुरमेतत्त्वया मरुत् MBu. 3,12257. Spr. 179. 3617. — Vgl. अ°. (auch Bhag. 2, 30. सर्वभूतानाम् R. 3,31,1. Çiç. 157, v. l. अवध्यो ब्राह्मणो दण्डैः *keiner körperlichen Strafe unterliegend* R. 7,59,2. 34).

वध्यघ्न adj. *einen dem Tode Verfallenen hinrichtend, das Henkeramt verrichtend* MBu. 13,2572.

वध्यता nom. abstr. von वध्य 1): म गच्छेद्वध्यतां मम *der soll von mir getödtet oder körperlich gestraft werden* MBu. 3,2304. — Vgl. अ°.

वध्यत्व n. dass. H. 14.

वध्यपटह m. *eine Trommel, die bei der Abführung eines zum Tode Verurtheilten gerührt wird*, Mṛkkh. 84,2. 172,20.

वध्यभू f. *Richtplatz* Kathâs. 5,16. 28,146. 64,51. 77,82. 112,166.

वध्यभूमि f. dass. Kathâs. 88,28. 112,164. Hit. 63,6. — Vgl. वधभूमि.

वध्यमाला f. *ein Kranz, der einem zum Tode Verurtheilten aufgesetzt wird*, Mṛkkh. 176,3.

वध्यशिला f. 1) *ein Stein, auf dem hingerichtet —, geschlachtet wird: Schlachtbank, Schafott* Kathâs. 22,209. 60,87. 90,142. 148. Pañkat. 32, 2. ed. orn. 42,10. — 2) Titel einer Schrift Sin. D. 184,15.

वध्यस्थान n. *Richtplatz* Pañkat. 41,15. Vet. in LA. (III) 22,8. — Vgl. वधस्थान.

वध्या (von वध्) f. *Tödtung, Mord:* स्वात्म° MBu. 1,6227. द्विजप्रवर° 12,10163. ज्ञाति° 14,2618. द्यूत° R. 5,49,2. — Vgl. ब्रह्म°.

वध्र 1) m. *ein lederner Riemen* Varâh. Bṛh. S. 45,3. वध्री f. dass. Hall. 2, 441 (वद्री). शतवर्मन् MBu. 1,1406. Vgl. वर्ध, वर्धी, वार्त्रा. — 2) f. ई vielleicht *Speckstreifen:* वराहवध्रीः सुकृता दधिसौवर्चलायुताः R. 5,14, 43 der Comm. erklärt वराहस्य मेस्यानविशेषान्; ed. Bomb. 5,11,16 liest वराहव्याघ्रीणमकान्दधिसौवर्चलायुतान्. — 3) n. *Blei* (वध्र) Bhâv. zu AK.

nach Wilson; vgl. वर्ध. — 4) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 nach der Lesart der ed. Bomb., वघ्र ed. Calc. — Vgl. सवघ, गुरुक्षवधा.

वघक *Blei* H. ç. 159, wo vielleicht so zu lesen ist st. वन्धक.

वघस्व s. u. वध्यश्व.

वँधि (von वध्) adj. *(dem die Hoden zerschlagen sind) verschnitten, entmannt, unmännlich* (Gegens. वृषन्): वृक्षो वधिः प्रतिमानं बुधून् RV. 1,32,7. वधयो निरिष्टाः 33,6. 2,25,3. 8,46,30. 10,102,12. AV. 3,9, 2. 3. 4,6,7. 8. वृषा वं वधयस्ते सपत्नाः 5,20,3. क्लीवं वाकरं वधिं वाकरम् 6,138,3. 16,6,11. fehlerhafte Schreibung वद्ध करोति Çat. Br. 13, 8,1,15. 3,10. Die Synonyme क्लीव, निरिष्ट, वधि mögen verschiedene Arten dieser Verstümmelung bezeichnen. Vgl. सप्तवधि; वधी s. u. वध्र.

वधिका *Eunuch:* दर्शनीयः (als masc. behandelt) P. 1,2,52, Vârtt. 3,Sch.

वधिमतँी (f. von वधिमस् und dieses von वधि) adj. *einen unvermögenden Gatten habend* RV. 1,116,13. 117,24. 6,62,7. 10,39,7. 65,12.

वँधिवाच् adj. *unmächtige Worte redend* RV. 7,18,9.

वध्र m. *Schuh, Pantoffel* Çâṇḍilyak. bei Wilson (व ँ).

वँध्रश्व (*verschnittene Rosse habend*) m. N. pr. eines Mannes RV. 6, 61,1. 10,69,1. 2. 4. Âçv. Çr. 1,5,21. Maitrâyaṇ. 1,4. MBh. 2,323. Harîv. 1783 (nach der Lesart der neueren Ausg., वधस्व ed. Calc.). mit dem patron. Â nûpa Pâraśav. Br. 13,3,17. pl. *sein Geschlecht* Çâṅkh. Çr. 1, 7,3. Lâṭy. 6,4,13. Schol. zu Kâṭy. Çr. 107,15. 249,1. — Vgl. वाध्रश्व, व्रध्रश्व und andere Varianten VP. 434, N. 51.

वधती = वधूटी Vaijn. beim Schol. zu H. 512.

वधा indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. वन्, वँनति Dhâtup. 13,19 (शब्दे). 20 (संभक्तौ). 19,42 (क्रियासामान्ये. व्याप्तौ. हिंसायाम्). 34,33, v. l. (अद्वोपकरणयोः, अद्वोपकृन्तनयोः, उपकृतौ अद्वाघाते शब्दोपतापयोः). वनोति und वनुते (याचने) 30,8. Abfall des न P. 6,4,37. fgg. Vop. 9,7. Von dieser nur in der älteren Sprache lebenden Wurzel verzeichnen wir folgende Formen: वनोमि, वनुयाम. वन्वे, वनुते, वन्वानः वनति, वनोति, वँनतम् du., वनत, वँनाम्, वनेम, वँनेम (RV. 2,5,7) und वँनेम, वँनते, वँनामहे, °हे, वनेमहि: ववान, ववन्ध, ववर्म, ववन्वँम्, वन्वः वँनाम, वंसीमहि und वसीमहि RV. 9,72,8 aus metrischen Rücksichten; वनिषत् AV. 20,132,6. 7. वनिषीष्ट, वनिषन्त TS. 4,7,14,1 st. वनुषन्त des RV.; वत्त 3. pl., वँत्स्व; वावँनम्, वावन्धि; वनिष्ये Çâṅkh. Çr.; infin. प्रँवत्तवे: वन्वताम् 3. imp. falsche Form (st. मनुताम् des RV.) AV. 6,126,1. partic. वात und वनित s. bes. 1) *gern haben, lieben; wünschen, verlangen:* कोरेशिन्मत्ते मनसा वनोषि तम् RV. 1,31,13. वनोति हि सुन्वन्तमं पोणाः 133,7. 2,6,1. ब्रह्मा 3,8,2. वाननो वत्त वार्यम् 4,139,10. विशेविशेयज्ञावनः सुक्र देवस्तनो रास्व मन्म 4,11,2. वावन्धि पत्यून् 5,31,13. 65,1. यस्मै वयं यज्ञावान तद्विद्विष्मः 6,23,5. त्रसस्य रातिम् 6,38,1. 8,13,23. माको ब्रह्मद्विषो वनः 45,23. 10,61,1. मामित्किल त्वं वनाः AV. 1,34,4. 5,4,3. 9,2,13. 12,1, 38. इन्द्रस्य (नाम) वन्वे 1,82,1. तदग्निर्देवेभ्यो वनुतां वयमग्नेः परि Çat. Br. 1,9,4,19. Kâṭy. 23,6. Çâṅkh. Çr. 1,5,9. प्रियो यज्ञेषिधीर्वनिषीष्ट मेधिरः RV. 1,127,7. प्रत्नाये देवाजो वनते मर्त्यो वः 5,41,17. — 2) *erlangen, verschaffen für; sich verschaffen:* यज्ञिर्वन्वे सुवीर्यमग्निः कण्वाय सोभगम् RV. 1,36,17. तत्रं नो यज्ञो वनताम् 162,22. राये वाजाय वनते मघानि 3, 19,1. 5,44,7. 63,4. वंसीमहि वाममम् 6,19,10. वस्वः कुविदङ्गानते नः 7, 15,4. वंस्व विश्वा वार्याणि 17,5. यूयं: 7,88,7. यया वृष्टिं शतसनये वनेम 10,98,3. दक्षिणामं वनुते 107,7. AV. 12,3,53. Çat. Br. 3,8,2,22. — 3) *bemeistern, bezwingen; siegen, gewinnen:* वीरैर्वीरान्वनुयामा वोतारः RV. 1,73,9. 132,1. 2,21,2. इन्धानो यज्ञिं वनवद्वनुष्यतः 25,1. स यन्ता वनवद्देव मर्तान् 5,3,5. समिद्धाग्निर्वनवत् 37,2. 6,19,8. एकः कृष्टीरवनोरार्याय 18,3. 7,21,9. ववन्मा नु ते पर्याभूवती 37,3. 83,4. रायं पेन वनामहे *wodurch wir obenan kommen* 9,101,9. 10,38,3. अयुक्त पुनर्वद्ववन्वान् *der es vermag* 27,2. — 4) *verfügen über, innehaben:* एको पद्वत्रे भूरेरीशानः RV. 1,61,15. युवं मित्रमग्निना देवता वनथः 4,44,2. स देवेषु वनते वार्याणि 5,4,3. 7,2,7. सोवस्यं यो वनवत्स्वर्षाः 5,33,1. पत्कायते यद्वनुते यन्न वक्षत्ने विन्दते *was Einer erpflügt, besitzt und erhandelt* AV. 12,2,36. — 5) *bereit machen, sich anschicken zu:* स्तोमं यत्तं चादरं वनेमा रयिमा वयम् RV. 2,5,7. धियम् 11,12. 8,61,1. *das Absehen haben auf, petere:* कुत्सोग यत्र पुरुहूत वन्वं कुत्समनुत्तेः पारयासि वधैः 1,121, 9. वन्वानो यत्र सरथं ययाथ कुत्सेन *angreifend* 5,29,9.

— caus. वनँयति und वा°, mit Präpp. nur व° Dhâtup. 19,68. AV. Paipp. 4,23. Vop. 18,23. वा° Dhâtup. 34,33, v. l.

— intens. s. वनीवन्.

— यपि s. यपिवान्यवत्सा.

— यभि *erwünschen, erstreben:* यभीवन्वन्स्वभिष्टिमूतयः RV. 1,51, 2. — Vgl. यभिवान्यवत्सा.

— या 1) *begehren, wünschen, erflehen* RV. 1,127,7. 5,41,17. को वामद्य पुत्रणामा वव्ने मर्त्यानाम् *durch Bitten herbeirufen* 74,7. — 2) *verschaffen:* तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् RV. 1,140,11.

— नि s. 2. निवात und निवान्यवत्सा.

— प्र *gewinnen, siegen:* चकर्व कारमेभ्यः पृतनासु प्रवत्तवे RV. 1,131, 5. *haben:* प्र ते वन्वे वनुषो कर्णतं मदम् 10,96,11.

— सम् caus. *geneigt machen, an Jmd gewöhnen:* गावो घृतस्य मातरो ऽमूं सं वानयन्तु (vgl. AV. Paipp. 4,23) मे AV. 8,9,3. — Vgl. संवनन.

2. वन् = 1. वन; nur im loc. und gen. pl. *Holzgefäss, Kufe:* श्येनो न वंसु पीदति RV. 9,57,2. 86,35. गर्भो वनाम् *Sohn der Hölzer* d. i. Agni 10,46,5.

1. वँन Nir. 8,3. 1) n. Sidhu. K. 249,a,8. a) *Baum, Wald* (AK. 2,4,1,1. 3, 4,28,129. Taik. 2,4,1. H. 1110. an. 2,283. Med. n. 19. Hall. 2,55) RV. 1, 54,1. 65,6. 3,51,5. सौवर्नो गिरयो वृत्रकेशाः 5,41,11. नि वो वनो नियते 57,3. 60,2. यथा वनं यथा समुद्र एवति 78,8. 6,6,3. 31,2. 8,40,1. उदिद्धूनोति वातो यथा वनम् 10,23,4. Kaç. 76. Pân. Gaṇ. 2,15. wie यरण्य *das dem Menschen nicht gehörige, fremde Land:* मा नो दमे मा वन यो दुहूर्याः RV. 7,1,19. — वने वसेत् *im Walde* M. 6,1. 28. fg. 11,72. वनं गच्छेत् 6,3. वनेषु विहृत्य 33. चरन्तीनां मिथो वने 8,236. विजन 10,107. 11,105. कृष्णानामोषधीनां ज्ञातानां च स्वयं वने 144. गरुन MBh. 1, 5278. यत्तःपुरसमीपस्थ 3,2089. 2236. R. 1,1,21. 2,61,10. Raghu. 1, 52. 2,17. 17,65. Spr. 2716. fgg. Vaṇîn. Bṛh. S. 2,8. 24,13. यरण्ये वने ऽपि वा M. 8,356. यरण्यानि, वनानि, उपवनानि 9,265. Kathâs. 93, 86. neben कानन R. 3,68,12. 6,2,13. Spr. 3103. श्रामण R. 1,63,9. Spr. 3887. भुक्तत° Megh. 37. उद्यान° Ver. in LA. (III) 5,1. Nicht nur von Bäumen, sondern auch von einjährigen Pflanzen, Rohrarten und sogar Lotusblüthen wird das Wort वन gebraucht. P. 8,4,6. नल° MBh. 6,

18,1,1. 14,2,9. 41. 8,6,14 (वधो die Hdschrr.). Âçv. Gṛhy. 1,7,8. 8,12. Gobh. 2,2,3. 5. °काले *zur Zeit, da sie Braut war*, R. 5,67,4. in Verbindung mit वर् Rāgh. 7,4. 17. Çik. 122. Kathās. 34, 235. 44, 106. 89, 106. 103, 189. 122, 54. Verz. d. Oxf. H. 336, *b*, 14. °गृहप्रवेश 86, *b*, 11. °प्रवेश 335, *b*, 17. Verz. d. B. H. No. 877. °बन्धुभिः Çik. 92. Rāgh. 1, 90. Kathās. 3, 68. 18, 262. 294. प्रेष्य° MBh. 3, 13675. नाग° R. 2, 65, 24. 3, 55, 29. Varāh. Bṛh. S. 27, 4. 43, 5. Rāǵa-Tar. 3, 388. Hit. I, 188. 39, 20. नारीणामुत्तमा वधूः R. 1, 1, 27. 5, 18. Mṛicch. 16. 19. 48. 66. Naish. 22, 47. Kir. 6, 48. *Weibchen eines Thieres:* व्याघ्र° MBh. 3, 15587. मृग° R. 3, 51, 14. Bhāg. P. 5, 8, 16. पिक° Kathās. 36, 197. प्लवगस्य *eines Frosches* Hall. 3, 10. am Ende eines adj. comp.: सवधूक Kathās. 101, 262. — 2) *Schwiegertochter* (AK. 2, 6, 4, 9. 3, 4, 48, 104. H. 514. H. an. Med. Hall. 2, 349. Viçva 3. a. O.), überh. *die Frau eines jüngeren Verwandten* (z. B. *des jüngern Bruders, des Neffen*) MBh. 3, 16741. 16876. 12, 8408. R. 1, 71, 20 (73, 19 Gorr.). 22. 77, 10 (78, 8 Gorr.). R. Gorr. 2, 38, 20. Rāgh. 1, 65. Kathās. 90, 158. der ältere Bruder nennt sein Weib गुरु des jüngeren, der jüngere sein Weib वधू des älteren MBh. 1, 7726. हे वधूः (!) Bhāg. P. 7, 2, 20. MBh. 3, 16152. — 3) अद्यान्मे पौरुकुत्स्यः पञ्चाशतं त्रसदस्मुर्वधूनाम् RV. 8, 19, 36; nach Durga *Mädchen*, von Sāy. nicht erklärt, also wohl im gewöhnlichen Sinne genommen. Es ist aber nicht wahrscheinlich, dass von geschenkten *Sclavinnen* in alter Zeit dieser Ausdruck gebraucht wäre; man kann daher vermuthen *Zugthier, zum Wagen gewohnte Stute;* vgl. वधूमत्. — 4) Bez. verschiedener Pflanzen: *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2, 4, 4, 21. Trik. 3, 3, 223. H. an. Med. Viçva; *Echites frutescens Roxb.* H. an. Med. *Curcuma Zerumbet Roxb.* Med. — Vgl. कुल°, गन्ध°, पुत्र°, भ्रातृ°, वार्°, स्वर्वधू, स्वर्ग°, स्वर्गि°.

वधूतन m. *Weib* Trik. 2, 6, 1.

वधूप्रशयन m. *Fenster* Trik. 2, 2, 9. falschlich वधूशयन Wilson in der 2ten Ausg.

वधूरी (von वधू) f. 1) *ein junges Weib* P. 4, 1, 20. Vārtt. II. 512. Hall. 2, 329. Mālavikāg. 76, 2 v. u. गोपवधूटीडुकूलचौराय — कृष्णाय Bālabh. 1. — 2) *Schwiegertochter* Trik. 2, 6, 3. H. 514. Sch. Hār. 146.

वधूदर्शी adj. *auf die Braut schauend:* ये पितरो वधूदृशो इमं वहन्तुमागमन् AV. 14, 2, 78.

वधूपथ m. *Brautweg* AV. 14, 1, 68.

वधूमत् (von वधू) adj. 1) *mit Zugthieren versehen, bespannt:* उप मा यन्त्वाः स्वनवेन दत्ता वधूमतो दश रथासो वस्वः RV. 1, 126, 3. हा रथा वधूमता सुदानवः 7, 18, 22. — 2) *zum Zug tauglich:* षळश्वा घातिविग्व ईन्द्रेते वधूमतः सनम् RV. 8, 37, 17. हयो धुरि रविनो विंशतिं गा वधूमतो (वधूमत्तो Müller u. Aufrecht) मघवा मह्यं सम्राट् ददाति 8, 27, 8. उष्ट्राः AV. 28, 127, 3.

वधूयु (wie oben) adj. *heirathslustig, nach Weibern lüstern* RV. 3, 52, 3. 62, 8. 9, 69, 2. 10, 27, 12. सोमो वधूयुरभवत् 85, 9. AV. 14, 2, 42.

वधूसरा f. N. pr. eines Flusses, der der Sage nach aus den weinenden Augen eines *Weibes*, der Puloma, *sich ergossen haben soll*, MBh. 1, 904. Harīv. 9508. नदी वधूसरकृताकूपाम् MBh. 3, 8684.

वधेयिन् adj. *mordsüchtig, die Absicht habend zu tödten* MBh. 1, 7670. निवातकवचानाम् 3, 12071.

वधोद्यत adj. dass. AK. 3, 1, 44.

वधोपाय m. *die Art und Weise Jmd körperlich zu züchtigen:* तम् कन्याचित्रैर्वधोपायैरुद्वेजनकरैर्नृपः M. 9, 248.

वध्र (वध्र) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 (VP. 192). richtiger वध्र ed. Bomb.

वध्य (von वध्; häufig वध्य geschrieben) adj. P. 3, 1, 97, Vārtt. gaṇa दण्डादि zu P. 5, 1, 66. Vop. 26, 7. 1) *zu erschlagen, zu tödten, den Tod verdienend, dem Tode verfallen;* überh. *zu züchtigen, körperlich zu strafen* AK. 3, 1, 45. यस्त्वा घ्नन्ति वध्यः सो अस्तु AV. 18, 2, 31. वध्यं हि प्रत्यञ्चं प्रतिमुञ्चति TS. 6, 3, 6, 3. तस्मादपि वध्यं प्रपन्नं न प्रतिप्रयच्छन्ति 5, 6, 3. 6, 3. Kāṭh. 11, 5. Çat. Br. 1, 2, 2, 2. यथाकामवध्य (*zu züchtigen* Sāy.) Ait. Br. 7, 29. नैष मूर्ध्नि प्रभो वध्यो वध्य एष हि मर्मसु R. 6, 92, 41. यस्यार्थे ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः M. 5, 22. तस्य तस्यैव ते वध्याः MBh. 4, 496. 13, 43. R. 2, 97, 24. 3, 49, 18. Kathās. 27, 147. LA. (III) 92, 11. मानुषात् R. 1, 14, 22. विशेषा P. 4, 4, 91. वध्यो दण्डस्य M. 8, 58. वध्यस्य मोक्षणे 9, 249. 10, 56. Jāǵ. 1, 358. Çik. 155. Spr. 964. 4926. Rāgh. 2, 30. Varāh. Bṛh. S. 51, 21. Kathās. 60, 137. Rāǵa-Tar. 3, 38. Daçak. 79, 7. Pañcat. 41, 14. 70, 4. Hit. 18, 19. Bhatṭ. 6, 117. मूषको ऽत्र त्रिभिर्वध्यो मार्जारेण त्रयो ऽपरे *kann getödtet werden, sein Leben ist bedroht* Kathās. 33, 109. वयं ग्राम्याः पशवो ऽरण्यचराणां वध्याः Pañcat. 215, 6. m. *ein Feind, den man erschlägt*, H. 10. 221. — 2) *zu zerstören, zu vernichten, zu Grunde zu richten:* सुरामुरैरवध्यं हि पुरमेतत्खगै मरुत् MBh. 3, 12257. Spr. 179. 3617. — Vgl. अ° (auch Bhag. 2, 30. सर्वभूतानाम् R. 3, 51, 1. Çik. 157, v. l. अवध्यो ब्राह्मणो दण्डैः *keiner körperlichen Strafe unterliegend* R. 7, 59, 2. 24).

वध्यघ्न adj. *einen dem Tode Verfallenen hinrichtend, das Henkeramt verrichtend* MBh. 13, 2572.

वध्यता nom. abstr. von वध्य 1): म गच्छेद्वध्यतां मम *der soll von mir getödtet oder körperlich gestraft werden* MBh. 3, 2304. — Vgl. अ°.

वध्यत्व n. dass. H. 14.

वध्यपटह m. *eine Trommel, die bei der Abführung eines zum Tode Verurtheilten gerührt wird*, Mṛicch. 84, 2. 172, 20.

वध्यभू f. *Richtplatz* Kathās. 3, 16. 28, 146. 64, 51. 77, 82. 112, 166.

वध्यभूमि f. dass. Kathās. 88, 38. 112, 164. Hit. 63, 6. — Vgl. वधभूमि.

वध्यमाला f. *ein Kranz, der einem zum Tode Verurtheilten aufgesetzt wird*, Mṛicch. 176, 8.

वध्यशिला f. 1) *ein Stein, auf dem hingerichtet —, geschlachtet wird; Schlachtbank, Schafott* Kathās. 22, 209. 60, 87. 90, 143. 149. Pañcat. 32, 2. ed. orn. 42, 10. — 2) Titel einer Schrift Sāy. D. 184, 18.

वध्यस्थान n. *Richtplatz* Pañcat. 41, 18. Vet. in LA. (III) 22, 6. — Vgl. वधस्थान.

वध्या (von वध्) f. *Tödtung, Mord:* आत्म° MBh. 1, 6227. द्विजप्रवर° 12, 10163. ज्ञाति° 14, 2618. द्यूत° R. 5, 49, 2. — Vgl. ब्रह्म°.

वध्र 1) n. *ein lederner Riemen* Varāh. Bṛh. S. 45, 8. वध्री f. dass. Hall. 2, 441 (वद्री). शतवर्मन् MBh. 1, 1406. Vgl. वर्ध, वर्धी, वरत्रा. — 2) f. ई vielleicht *Speckstreifen:* वराहवध्रीः मुकुता दधिसौवर्चलायुताः R. 5, 14, 43 der Comm. erklärt वराहस्य संस्थानविशेषान्; ed. Bomb. 5, 11, 16 liest वराहवाधीणसकान्दधिसौवर्चलायुतान्. — 3) n. *Dill* (वध) Bhāv. zu AK.

nach Wilson; vgl. वर्ध. — 4) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 nach der Lesart der ed. Bomb., वध्र ed. Calc. — Vgl. अवध, गुरुक्वधा.

वधक *Biei* H. ç. 159, wo vielleicht so zu lesen ist st. बन्धक.

वधस्व s. u. वध्यश्व.

वधि (von वध्) adj. (*dem die Hoden zerschlagen sind*) *verschnitten, entmannt, unmännlich* (Gegens. वृषन्): वृक्षो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् RV. 1,32,7. वधियो निरष्टाः 33,6. 2,25,3. 8,46,30. 10,102,12. AV. 3,9, 2. 3. 4,6,7. 8. वृषा तं वधियस्ते मघोनः 5,20,2. क्लीबं तोकं वधिं ताकम् 6,138,3. 10,6,11. fehlerhafte Schreibung वद्ध करोति Çat. Br. 13, 8,4, 15. 3,10. Die Synonyme क्लीब, निरष्ट, वधि mögen verschiedene Arten dieser Verstümmelung bezeichnen. Vgl. सप्तवधि; वधी s. u. वध्.

वधिका *Eunuch:* दर्शनीयः (als masc. behandelt) P. 1,2,52, Vârtt. 3, Sch.

वधिमती (f. von वधिमत् und dieses von वधि) adj. *einen unvermögenden Gatten habend* RV. 1,116,13. 117,24. 8,62,7. 10,39,7. 65,12.

वधिवाच् adj. *unmächtige Worte redend* RV. 7,18,9.

वध्य m. *Schuh, Pantoffel* Çabdârthak. bei Wilson (व°).

वध्यश्व (*verschnittene Rosse habend*) m. N. pr. eines Mannes RV. 6, 61,1. 10,69,1. 2. 4. Âçv. Ça. 1,5,21. Maitrâyaṇ. 1,4. MBh. 2,328. Harîv. 1783 (nach der Lesart der neueren Ausg., वधस्व ed. Calc.). mit dem patron. Ânûpa Pañcav. Br. 13,3,17. pl. *sein Geschlecht* Çâṅkh. Ça. 1, 7,3. Lâṭy. 6,4,13. Schol. zu Kâty. Ça. 107,15. 249,1. — Vgl. वाध्यश्व, व्रध्नश्व und andere Varianten VP. 454, N. 31.

वधती = वधूरी Vaijn beim Schol. zu H. 512.

वध्रा indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. वन्, वनति Dhâtup. 13,19 (शब्दे). 20 (संभक्तौ). 19,42 (क्रियासामान्ये, व्याप्तौ, हिंसायाम्). 34,33, v. l. (अङ्घापकरणयोः, अङ्घापकरननयोः, उपकरणे अङ्घाघाते शब्दोपतापयोः). वनोति und वनुते (याचने) 30,8. Abfall des न P. 6,4,37. fgg. Vop. 9,7. Von dieser nur in der ältesten Sprache lebenden Wurzel verzeichnen wir folgende Formen: वनोमि, वनुयाम, वन्वे, वनुते, वन्वानः, वनक्ति, वनोति, वनतम् du., वनत, वनाम्, वनेम, वनेम (RV. 2,3,7) und वनेम, वनते, वनामहे, °हे, वनेमहि; वनान, वनन्व, वनन्मे, वनन्वेम, वत्रेः वनाम, वसीमहि und वसीमहि RV. 9,72,8 aus metrischen Rücksichten; वनिषत् AV. 20,132,6. 7. वनिषीष्ट, वनिषत्त TS. 4,7,14,1 st. वनुषत्त des RV.; वत्त 3. pl., वत्स्व; वावनम्, वावन्धि: वनिष्ये Çâṅkh. Ça.; infin. प्रवत्तवे: वन्वताम् 3. imp. falsche Form (st. मनुताम् des RV.) AV. 6,126,1. partic. वात und वनित s. bes. 1) *gern haben, lieben: wünschen, verlangen:* कीरेरिन्मत्ले मनसा वनेषि तम् RV. 1,31,13. वनोति हि सुन्वन्तमं परिषासः 133,7. 2,6,1. ब्रह्मे 3,8,2. वनेमा वत्त वार्यम् 1,139,10. विश्वेभिर्यहावनेः प्रक्र देवैस्तवो रास्व मन्म 4,11,2. वावन्धि पर्षून् 5,31,13. 65,1. अस्मै वयं पहावान तद्विविद्म: 6,23,5. जनस्य रातिम् 6,38,1. 8,13,33. मार्को अस्माद्विषो वनः 43,23. 10,61,4. मामित्किल त्वं वनाः AV. 1,34,4. 5,4,3. 8,2,12. 12,1, 38. इन्द्रस्य (नाम) वन्वे 6,82,1. तदग्निर्विभ्यो वनुतां वयमग्नेः परि Çat. Br. 1,9,4,19. Kâṭy. 23,6. Çâṅkh. Ça. 1,5,9. प्रियो अग्निर्धियावनिषीष्ट मेधिरः RV. 1,127,7. प्रज्ञाये देवासो वनते मर्त्यो वः 5,41,17. — 2) *erlangen, verschaffen für; sich verschaffen:* अग्निर्वव्रे सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् RV. 1,36,17. तत्रं नो अद्यो वनताम् 162,22. राये वाजाय वनते मघानि 3, 19,1. 5,44,7. 65,4. वसीमहि वामम् 6,19,10. वस्वः कुविहनाति नः 7, 15,4. वंस्व विश्वा वार्याणि 17,5. अर्वः 7,88,7. यया वृष्टिं शतसनवे वनेम 10,98,2. दृतिणाम्नं वनुते 107,7. AV. 12,3,53. Çat. Br. 3,8,2,22. — 3) *bemeistern, bezwingen: siegen, gewinnen:* वीरेवीरिन्वनुयामा वोतारः RV. 1,73,9. 132,1. 2,21,2. इन्धानो अग्निं वनवद्दनुष्यतः 25,1. स यन्ता वनवद्देव मर्तान् 5,3,5. समिद्धाग्निर्वनवत् 37,2. 8,19,8. एकः कृष्टीरवनोरायाय 18,3. 7,21,9. ववन्मा नु ते पत्याभिरुती 37,5. 83,5. रयिं येन वनामहै *wodurch wir obenan kommen* 9,101,9. 10,38,2. अर्यक्तं पुनतहवन्वान् *der es vermag* 27,9. — 4) *verfügen über, innehaben:* एको पहत्रे भूरेरीशानः RV. 1,61,13. युवं मित्रमग्निना देवता वनवः 4,44,2. स देवेषु वनते वार्याणि 5,4,2. 7,2,7. सोमस्यां यो वनवत्स्वर्धाः 6,33,1. यत्कृपते पहनुते यच्च वस्नेन विन्दते *was Einer erpflügt, besitzt und erhandelt* AV. 12,2,36. — 5) *bereit machen, sich anschicken zu:* स्तोमं यत्ते चादरे वनेमा रातिमा वसम् RV. 2,5,7. धियम् 11,12. 8,61,1. *das Absehen haben auf, petere:* कुत्सोय यत्र पुरुहूत वन्वं कुत्समनत्तेः परियासि वधैः 1,121, 9. वन्वानो अत्रं सरथं ययाथ कुत्सेन *angreifend* 5,29,9.

— caus. वनयति und वा°, mit Präpp. nur व° Dhâtup. 19,68. AV. Paipp. 4,93. Vop. 18,23. वा° Dhâtup. 34,33, v. l.

— intens. s. वनीवन्.

— अपि s. अपिवान्यवत्सा.

— अभि *erwünschen, erstreben:* अभीनंवन्वन्त्स्वभिष्टिमूतयः RV. 1,51, 2. — Vgl. अभिवान्यवत्सा.

— आ 1) *begehren, wünschen, erflehen* RV. 1,127,7. 5,41,17. को वामद्य पुरुणामा वव्रे मर्त्यानाम् *durch Bitten herbeirufen* 74,7. — 2) *verschaffen:* तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् RV. 1,140,11.

— नि s. 2. निवात und निवान्यवत्सा.

— प्र *gewinnen, siegen:* चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे RV. 1,131, 5. *haben:* प्र ते वन्वे वनुषो कर्णयं मदम् 10,96,11.

— सम् caus. *geneigt machen, an Jmd gewöhnen:* गावो घृतस्य मातरो ऽमूं मे वावनयन्तु (vgl. AV. Paipp. 4,93) मे AV. 6,9,3. — Vgl. संवनन.

2. वन् = 1. वन; nur im loc. und gen. pl. *Holzgefäss, Kufe:* श्येनो न वंसु पीरति RV. 9,57,3. 86,25. गर्भो वनाम् *Sohn der Hölzer* d. i. Agni 10,46,5.

1. वन Nir. 8,3. 1) n. Sinn. K. 249,a,3. a) *Baum, Wald* (AK. 2,4,1,1. 3, 4,28,129. Trik. 2,4,1. H. 1110. an. 2,283. Med. n. 19. Halâ. 2,53) RV. 1, 54,1. 65,3. 3,51,5. गौर्वनो गिरयो वृत्रकौशाः 5,41,11. नि वो वना जिहते 57,3. 60,2. यथा वनं यथा समुद्र एजति 78,8. 5,6,3. 31,3. 8,40,1. उदिद्धूनोति वातो यथा वनम् 10,23,4. Kâuç. 76. Pân. Gaṇ. 2,15. wie अरण्य *das dem Menschen nicht gehörige, fremde Land:* मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः RV. 7,1,19. — वने वसेत् *im Walde* M. 6,1. 28. fg. 11,72. वनं गच्छेत् 6,3. वनेषु विहृत्य 33. चत्वारो मिथो वने 8,236. विज्ञन 10,107. 11,105. कृष्णत्रानामोषधीनां त्रातानां च स्वयं वने 144. गरुत् MBh. 1, 5878. यत्तःपुरसमीपस्थ 3,2089. 2236. R. 1,1,24. 3,61,10. Rag. 1, 82. 2,17. 17,66. Spr. 2716. fgg. Vaṇîn. Bṛh. S. 2,8. 24,13. अरण्ये वने ऽपि वा M. 8,356. अरण्यानि, वनानि, उपवनानि 9,265. Kathâs. 93, 36. neben कानन R. 3,68,12. 6,2,15. Spr. 3103. साम्रवण R. 1,63,9. Spr. 3887. भुक्तर्क° Megh. 37. उद्यान° Ver. in LA. (III) 5,1. Nicht nur von Bäumen, sondern auch von einjährigen Pflanzen, Rohrarten und sogar Lotusblüthen wird das Wort वन gebraucht. P. 8,4,6. नल° MBh. 6,

4898. कीचकवेणूनाम् Kathâs. 46,98. पद्म° MBh. 7,1245. Ragh. 16,16. Spr. 4173. Kathâs. 46,169. Brahma-P. in LA. (III) 31,13. पङ्कज° R. Gorr. 2,57,5. उत्पल° 4,44,89.91. कुमुद° Ragh. 6,86. नीरज° Spr. 1629. इन्दीवर° 2840. घरविन्द° 3655. Bhâs. P. 1,16,33. कमल° Spr. 4323. Varâh. Bṛh. S. 43,5. *Menge* überh.: लतागृह्यनेपेता (नदी) R. 5,16,28. लूनबाहुवन adj. Kathâs. 27,143. Am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 1,1293. 3,16215. R. 1,41,14. 2,57,5. 4,2,12. Wann im comp. das न zu ण wird P. 8,4,4. fgg. Accent eines auf वन ausgehenden und mit einer Präp. anlautenden comp. 6,2,178. fg. वन als m. R. 5,30,21. — *b) Holz:* वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यो जायसे RV. 2,1,1. 3,9,2. नूर्पत्स्वग्निरुषो वनेषु 23,1. पुत्रे यो दग्धासि वनो 5,9,4. शुष्क 6,8,10. 33,3. 60,10. परिषुण्या वनं पार्थिव गिन्दन् 7,104,21. 8,43,3. शेपे वनेषु मातृभिः 49,15. 9,96,6. किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः 10,31,7. वनो वृश्चत्तः 28,3. — *c) (die aus Holz gemachte) Kufe des* Soma RV. 1,35,4. वने निषत्ते वन उन्नधम् 2,14,9. 8,33,7. 9,6,5. 7,2. सीदन्योना वनेषा 62,3. 78,2. 88,3. 90,2. सीदन्मृगो न महिषो वनेषु (zugleich Bed. 1) 92,6. सीदन्वनस्य जठरे 93,1. — *d) Wolke (die himmlische Kufe):* वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान RV. 5,85,2. घनघ्ने राज्ञो वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते *hält oben den Zipfel der Wolke* 1,24,7. वीळु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव पप्तिस्थुरम् *das Feste löst sich auf wie eine Wolke* 127,3. ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वनानि 171,3. Hierher und zu 3) dürfte auch RV. 3,6,7. 34,3. 7,7,2 zu ziehen sein. Unsicher ist der Text पस्पेदमा रुशो युक्षस्तुभे शना वनं स्वः AV. 6,33,1; vgl. die Varr. SV. Naigh. 1,3. Çâṅkh. Çr. 12,3,2. ganz entstellt ist सरस्वत्या धृषि वनाय चकृषुः Pâr. Gṛhy. 3,1 vgl. mit AV. 5,30,1. TBr. 2,4,8,7. — *e)* vielleicht *Kufe des Wagens:* तिष्ठं वनस्य मध्य आ RV. 8,34,18. — *f) Wasser* Naigh. 1,12. AK. 1,2,2,3. 3,4,18,129. H. 1069. H. an. Med. Hall. 3,26. °मुच् (इन्द्र) Ragh. 9,18. — *g) Aufenthaltsort* H. an. (गेह) und Med. (निवास, आलय). वकुलामादन° Naish. 3,22. — *h) Aufenthalt in der Fremde (im Walde?), Abwesenheit vom Hause* (प्रवास) H. an. — *i) Quelle* (प्रस्रवण) H. an. — *k) Cyperus rotundus* (v. l. घन und नव) Varâh. Bṛh. S. 77,29. — *l)* = रश्मि Naigh. 1,4. — 2) m. *a)* N. pr. eines Sohnes des Uçînara Bhâg. P. 9,23,2. — *b)* N. eines der zehn auf Schüler Çaṁkarâkârja's zurückgeführten Bettelorden, dessen Mitglieder ihren Namen das Wort वन anfügen (vgl. रामेन्द्र°) Verz. d. Oxf. H. 277, b, 15. Wilson, Sel. Works 1, 202. — 3) f. या *das Reibholz* (personificirt): वनो जज्ञान सुभगा विरूपम् (d. i. घर्मम्) RV. 3,1,13. — 4) f. ई *Wald* Bhâr. zu AK. nach ÇKDa. चन्दन° Sin. D. 79,14. — Vgl. घर्मि-पत्र°, उप°, चित्र°, तपो°, नड°, नृसिंह°, परशु°, पितृ°, पुष्प°, प्रमद°, प्रमदा°, प्रेत°, फलका°, फलको°, बिल्व°, बृह°, भानु°, भार्ग°, मधु°, महा°, मित्र°, मैत्रेय°, वेला°, श्वपचेषण, सत्तर्वण, कोटरा°, खदिर°, निर्वण, पुरगा°, प्र°, मिश्रका°, शर°, सारिका°, सिध्रका°, प्रतिवनम्, केलीवनी, शु°.

2. वन (von 1. वन्) n. etwa *Verlangen, Sehnsucht* in der Stelle: तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यम् Kenop. 31. Çâṅk.: तद्धस्य तत् किल तद्वनं नाम तस्य वनं तद्वनं तस्य प्राणिजातस्य प्रत्यगात्मभूतत्वाद्वननीयं संभजनीयम्.

3. वन indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

वनकचु m. *Arum Colocasia* Wilson.

वनकणा f. *wilder Pfeffer* Râǵân. im ÇKDa. u. वनपिप्पली.

वनकणुल (?) m. = वनशूरण Râǵân. im ÇKDa. u. dem letzten W.

वनकदली f. *wilder Pisang* Râǵân. im ÇKDa.

वनकन्द m. Bez. zweier *Knollengewächse:* = वनशूरण und धरणीकन्द Râǵân. im ÇKDa.

वनकपीवत् m. N. pr. eines Sohnes des Pulaha VP. 83, N. 6. Varianten घनकपीवत् und घनकपीवत्.

वनकरिन् m. *ein wilder Elephant* Wilson.

वनकाम adj. *den Wald liebend, gern im Walde weilend* Spr. 3066.

वनकार्पासी f. *die wilde Baumwollenstaude* Ratnam. 171. °कार्पासि aus metrischen Rücksichten Suçr. 2,438,8.

वनकुक्कुट m. *ein wilder Hahn* Wilson.

वनकुञ्जर m. *ein wilder Elephant* Bhâg. P. 4,6,30.

वनकाकिलक n. *ein best. Metrum:* 4 Mal ⏑⏑⏑⏑–⏑–, ⏑⏑⏑–⏑⏑, –⏑⏑– Khandom. 93. — Vgl. कोकिलक.

वनकोलि f. *wilder Judendorn* ÇKDa.

वनक्लर्त adj. etwa *in der Kufe brausend:* Soma RV. 9,108,7. वनप्रत v. l. im SV.

वनखण्ड n. *Wald* MBh. 3,13147. fg. fehlerhaft वनषण्ड R. 3,15,43. 5,15,31.

वनग MBh. 9,1334 fehlerhaft für वनप, wie die ed. Bomb. liest.

वनगज m. *ein wilder Elephant* MBh. 3,2539. 9,3229. R. 4,13,47. Megh. 20. Spr. 3199. 3603. 4345. Kathâs. 9,59. 12,18. Bhâg. P. 5,5,30. Pañkat. 80,6.

वनगव m. *Bos Gavaeus* (गवय) H. 1286.

वनगहन n. *Dickicht* Pañkat. 87,6. 96,5. 114,8. 228,12.

वनगुप्त m. *Später* Çabdârthak. bei Wilson.

वनगुल्म m. *Waldstrauch, ein wilder Strauch* MBh. 3,2543. P. 1,3,67, Sch.

वनगो f. *Bos Gavaeus* (गवय) Râǵân. im ÇKDa.

वनगोचर adj. (f. या) 1) *im Walde wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) M. 8,259. R. 2,30,14. 50,30. R. Gorr. 2,94,1. 98,2. 3,7,17. 76,34. 4,40,33. 41,5. 55. 46,6. 48,9. 51,2. 6,17,13. Bhâg. P. 4,26,5. — 2) *im Wasser lebend* Bhâg. P. 3,18,3. 10.

वनवर्ण n. *ein best. Körpertheil* RV. 10,163,5.

वनचन्दन n. 1) *Agallochum.* — 2) *Pinus Deodora* (देवदारु) Rasâ. Viçva im ÇKDa.

वनचन्द्रिका f. *Jasminum Zambac* (मल्लिका) Râǵân. im ÇKDa.

वनचम्पक m. *wilder Kampaka* Râǵân. im ÇKDa.

वनचर adj. (f. ई) *im Walde umherschweifend, — wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) Hall. 2,78. MBh. 4,2251. R. 1,1,42. 8,8. 9,3. 2,28,17. 32,24. 34,43. R. Gorr. 1,13,30. 2,15,38. 28,26. Suçr. 1,323,13. Megh. 19. Spr. 2746. Varâh. Bṛh. S. 15,3. 46, 66. Kathâs. 104,211. Kir. 6,29. Pañkat. 255,17. Bhâg. P. 10,33,8. fem. 47,60. Pañkar. 2,5,34. — Vgl. वनेचर.

वनचर्या f. *das Umherschweifen —, der Aufenthalt im Walde* R. Gorr. 2,28,31. 29,15. fg.

वनचारिन् = वनचर M. 8, 260. MBh. 1, 3994. R. 1, 16, 9. 2, 21, 31. 29, 3. 3, 14, 6. 30, 6. 4, 2, 4. 5. 9, 68. Śāṅ. 1, 136, 3. Mārk. P. 20, 44. तद्वनचारिन् R. Gorr. 1, 29, 6. कविता° R. Ein.

वनच्छाग m. *die wilde Ziege* Trik. 2, 5, 10. Hit. 81. *Eber* Çabdam. im ÇKDr.

वनच्छिद् adj. *der sich mit dem Fällen der Bäume im Walde abgiebt* Hariv. 3814. Bhatt. 9, 98.

वनज 1) adj. *im Walde geboren, Wäldner* R. 2, 54, 7. — 2) m. *a) Elephant* H. an. 3, 149. Viçva im ÇKDr. — *b) Cyperus rotundus Lin.* H. an. Med. ǵ. 28. = गुल्म Trik. 3, 3, 87. = वनशूरण Rāǵān. im ÇKDr. = तुम्बुरु Ausw. 24. *der wilde Citronenbaum* Rāǵān. im ÇKDr. u. वनबीजपूरक. — 3) f. या *Phaseolus trilobus* H. an. Med. *die wilde Baumwollenstaude:* = वन्योपादकी, अश्वगन्धा, गन्धपत्रा, मिश्रेया und *wilder Ingwer* Rāǵān. im ÇKDr. — 4) n. *eine blaue Lotusblüthe (im Wasser entstanden)* H. an. Med. वनजात Rāgān. 5, 73. वनजाती Hariv. 5145.

वनजीर m. *wilder Kümmel* Rāǵān. im ÇKDr.

वनतिक्त 1) m. *Terminalia Chebula Roxb.* Çabdam. im ÇKDr. — 2) f. या *eine best. Pflanze,* = श्वेतबुक्का Ratnam. 51. = शोभ्मा Hār. 95. — Vishn. 6, 78.

वनतिक्तिका f. *Clypea hernandifolia W. et A.* AK. 2, 4, 3, 3.

वनँद् (von 1. वन्) m. etwa *Verlangen, Sehnsucht;* pl.: या यन्मे मन्वँ वनद्: पनन्त RV. 2, 4, 3. nach Durga so v. a. वननीयस्य कविधो दातार:, nach Sāy. वनन्त: संभजन्त: oder für मवनदस् von नद्.

वनद् m. *Wolke (Wasser spendend)* Hār. 18. Çabdam. im ÇKDr.

वनदमन m. = धारणदमन Rāǵān. im ÇKDr.

वनदारक m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 57, 48.

वनदाह m. *Waldbrand:* वनदाहाग्नि R. 2, 85, 17.

वनदीप m. = वनचम्पक Rāǵān. im ÇKDr.

वनदीपभृ m. N. pr. eines Scholiasten Colebr. Misc. Ess. II, 57.

वनदेवता f. *eine Waldgöttin, Dryade* R. 1, 33, 15 (34, 13 Gorr.). Ragh. 2, 12. 9, 52. Kumāras. 3, 52. 6, 39. Çāk. 80. Kathās. 26, 175. 101, 237. Pañcat. 97, 22. Hit. 91, 20.

वनद्रुम m. *Waldbaum, ein im Walde stehender Baum* Spr. 2832, v. l.

वनद्विप m. *ein wilder Elephant* Ragh. 2. 38. Kathās. 11, 4.

वनधारा f. *Baumgang, Allee* Vikr. 60, 14.

वनँधिति f. etwa *Holzschicht* (auf dem Feueraltar): स्विधा यद्वनँधितिरप्यास्मूरौ यधरे परि रोधना गो: RV. 1, 121, 7.

वनधेनु f. *die Kuh das Bos Gavaeus* (गवय) Rāǵān. im ÇKDr.

वनन (von 1. वन्) 1) n. *Verlangen* Nir. 3, 5. — 2) f. वनँना etwa *Wunsch:* उन्मधं ऊर्मिर्वननी यतिष्ठिपत् RV. 9, 86, 40.

वननित्य m. N. pr. eines Sohnes des Raudrāçva Hariv. 1660. घनेषु die neuere Ausg. und Langlois.

वननीय (von 1. वन्) adj. *begehrenswerth* Nir. 3, 10. 4, 26. 6, 22. 11, 46. Çaṅk. zu Kenop. 31.

वनन्व्, वनन्वति *im Besitz —, vorhanden sein, suppetere:* नृहि मे यस्यद्या न स्वधितिर्वनन्वति (= काष्ठानि कृत्ति Sāy.) RV. 8, 91, 19. पार्थ: सुनेकं स्वधितिर्वनन्वति 10, 92, 13.

वनन्वत् adj. (nach dem Comm. so v. a. वननवत् und erklärt durch संभजनवत् oder संभक्तवत्) 1) etwa *innehabend, besitzend:* या वर्कसि पुरु स्पार्हं वनन्वति Ushas RV. 7, 81, 3. इन्द्रं वनन्वती मति: so v. a. *die Andacht hält* Indra *fest* 8, 6, 34. — 2) *im Besitz befindlich, zu eigen gehörig:* या पदमान्वनन्वत: मद्वयाकं रथे रुक्मम् RV. 8, 1, 31.

वनपँ m. *Waldhüter* VS. 30, 19. MBh. 9, 1334 nach der Lesart der ed. Bomb. (वनग ed. Calc.).

वनपन्नग m. *eine im Walde lebende Schlange* MBh. 3, 2409.

वनपर्वन् n. *Buch des Waldes,* Titel des 3ten Buches des Mahābhārata, das über den Aufenthalt Judhishṭhira's und seiner Brüder im *Walde* handelt.

वनपल्लव m. *Hyperanthera Moringa Vahl.* Gaṭāḍh. im ÇKDr.

वनपांसुल m. *Jäger* Çabdam. im ÇKDr. °पांशुल gedr.

वनपार्श्व m. *Waldgegend, Wald* R. 2, 91, 64. — Vgl. वनान्त.

वनपाल m. 1) *Waldhüter* R. 5, 39, 3. 62, 7. 63, 12. 15. वनपालाधिप 61, 7. 62, 10. — 2) N. pr. eines Sohnes des Devapāla Cat. 2, 637. des Dharmapāla Wassiljew 34.

वनपिप्पली f. *wilder Pfeffer* Rāǵān. im ÇKDr.

वनपुष्प 1) n. *Waldblume, Feldblume.* — 2) f. या *Anethum Sowa Roxb.* Rāǵān. im ÇKDr.

वनपुष्पमय adj. *aus Waldblumen gemacht, — bestehend:* माभरण Kathās. 101, 233.

वनपूरक m. *der wilde Citronenbaum* Rāǵān. im ÇKDr.

वनपूर्व m. N. pr. eines Dorfes Rāǵa-Tar. 8, 1440.

वनप्रतँ v. l. des SV. 1, 6, 2, 4, 3 für वनक्रत des RV.; = वने तीयते nach dem Comm.

वनप्रवेश m. *das Betreten des Waldes,* insbes. *der feierliche Gang in den Wald um Holz für ein Götterbild zu schneiden* Varāh. Bṛh. S. 107, 7. — Vgl. वनप्रवेश.

वनप्रस्थ 1) *ein hoch gelegener Wald* MBh. 13, 7244. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Rāǵa-Tar. 8, 1931. — Vgl. वानप्रस्थ.

वनप्रिय 1) adj. *den Wald liebend.* — 2) m. *der indische Kuckuck* AK. 2, 5, 19. H. 1321. — 3) n. *Zimmetbaum* Rāǵān. im ÇKDr.

वनफल n. *Waldfrucht* R. 1, 4, 18.

वनबर्बर m. *Ocimum sanctum Lin.* Rāǵān. im ÇKDr.

वनबर्बरिका f. *eine best. Pflanze,* = दोषाक्षोशी u. s. w. Rāǵān. im ÇKDr. °वर्वरका (?) *eine Art Basilicum* (तुलसी) Ausw. 18.

वनबर्हिण m. *ein wilder Pfau;* davon °त्व n. nom. abstr. Ragh. 16, 14.

वनबाह्लक m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 58, 50. °बाह्लक gedr.

वनबिडाल m. *eine Art wilder Katze, Felis Caracal* Wilson.

वनबीज, °क und °पूरक m. *der wilde Citronenbaum* Rāǵān. im ÇKDr.

वनभद्रिका f. *Sida cordifolia* Rāǵān. im ÇKDr.

वनभुज् m. *ein best. Heilkraut,* = ऋषभ Çabdam. im ÇKDr.

वनभू f. *Waldgegend,* pl. Spr. 311. Gīr. 1, 1. Rāǵa-Tar. 2, 131. Prab. 92, 16.

वनमक्षिका f. *Bremse* AK. 2, 5, 27. H. 1215.

वनमल्ली f. *wilder Jasmin* Çabdam. im ÇKDr.

वनमाल adj. *mit einem Kranze von Waldblumen geschmückt,* Beiw. Kṛshṇa's oder Vishṇu's Hariv. 10678. — Vgl. वनमालिन्.

वनमाला f. 1) *ein Kranz aus Waldblumen (Feldblumen),* insbes. der

4898. कीचकवेणूनाम् Kathâs. 46,98. पद्म° MBh. 7,1245. Ragh. 16,16. Spr. 4173. Kathâs. 46, 169. Brahma-P. in LA. (III) 31, 13. पङ्कज° R. Gorr. 2,57,5. उत्पल° 4,44,89.91. कुमुद° Ragh. 6,86. नीरज° Spr. 1629. इन्दीवर° 2840. अरविन्द° 3655. Bhâg. P. 1,16,33. कमल° Spr. 4323. Varâh. Bṛh. S. 43,5. *Menge* überh.: लतागृहवनोपेता (नदी) R. 5,16,23. लूनबाहुवन adj. Kathâs. 27,143. Am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 1,1293. 3,16215. R. 1,41,14. 2,57,5. 4,2,13. Wann im comp. das न zu ण wird P. 8,4,4. fgg. Accent eines auf वन ausgehenden und mit einer Präp. anlautenden comp. 6,2,178. fg. वन als m. R. 5,50,21. — *b) Holz:* स्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यो जायसे ṚV. 2,1,1. 3,9,2. तूर्णत्स्यग्निर्नो वनेषु 23,1. पुत्रो यो दग्धासि वनो 5,9,4. घृक्व 6,8,10. 33,3. 60,10. परिघ्नन्ति वनं पात्रेव भिन्दन् 7,104,21. 8,43,3. शये वनेषु मात्रा: 49,15. 9,96,6. किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः 10,31,7. वनो वृश्चत्तः 28,8. — *c) (die aus Holz gemachte) Kufe des* Soma ṚV. 1,55,4. वने निषत्तं वन उन्नमद्यम् 2,14,9. 8,35,7. 9,6,5. 7,3. सीदन्योना वनेषा 62,8. 78,2. 88,5. 90,2. सीदन्मृगो न महिषो वनेषु (zugleich Bed. 1) 92, 6. सीदन्वनस्य जठरे 95,1. — *d) Wolke (die himmlische Kufe):* वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान ṚV. 5,85,2. अवुध्ने राजा वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते *hält oben den Zipfel der Wolke* 1,24,7. वीळु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव यत्स्थिरम् *das Feste löst sich auf wie eine Wolke* 127,2. ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वनानि 171,3. Hierher und zu 3) dürfte auch ṚV. 3,6,7. 34,3. 7,7,2 zu ziehen sein. Unsicher ist der Text यस्येदमा रजो युजस्तुजे जना वनं स्वः: AV. 6,33,1; vgl. die Varr. SV. Naigh. 1,3. Çâṅkh. Çr. 18,3,2. ganz entstellt ist सरस्वत्या अधि वनाय चक्रुः Pân. Gaṇ. 3,1 vgl. mit AV. 6,30,1. TBr. 2,4,8,7. — *e)* vielleicht *Kufe des Wagens:* तिष्ठं वनस्य मध्य आ ṚV. 8,34,18. — *f) Wasser* Naigh. 1,12. AK. 1,2,8,3. 3, 4,28,129. H. 1069. H. an. Med. Halâj. 3,26. °मुच् (इन्द्र) Ragh. 9,18. — *g) Aufenthaltsort* H. an. (गेह) und Med. (निवास, आलय). वल्मीकसादन° Naish. 3,22. — *h) Aufenthalt in der Fremde (im Walde?), Abwesenheit vom Hause* (प्रवास) H. an. — *i) Quelle* (प्रस्रवण) H. an. — *k) Cyperus rotundus* (v. l. घन und नव) Varâh. Bṛh. S. 77,29. — *l)* = रश्मि Naigh. 1,4. — 2) m. *a)* N. pr. eines Sohnes des Uçînara Bhâg. P. 9,23,2. — *b)* N. eines der zehn auf Schüler Çaṅkarâkârja's zurückgeführten Bettelorden, dessen Mitglieder ihren Namen das Wort वन anfügen (vgl. रामेन्द्र°) Verz. d. Oxf. H. 277, *b*, 15. Wilson, Sel. Works I, 202. — 3) f. या *das Reibholz* (personificirt): वनी जज्ञान सुभगा विरूपम् (d. i. अग्निम्) ṚV. 3,1,13. — 4) f. ई *Wald* Bhâr. zu AK. nach ÇKDa. चन्दन° Sin. D. 79,14. — Vgl. घृतिपत्र°, उप°, चित्र°, तपो°, नड°, नृसिंह°, परशु°, पितृ°, पुष्प°, प्रमद°, प्रमदा°, प्रेत°, फलका°, फलको°, बिल्व°, बुद्ध°, भानु°, भार्ग°, मधु°, मल्ला°, मित्र°, मैत्रेय°, वेला°, श्रयेवण, श्रत्तर्वण, कोटरा°, खदिर°, निर्वण, पुरगा°, प्र°, मिश्रका°, शर°, सारिका°, सिंधका°, प्रतिवनम्, केलीवनी, सु°.

2. वन (von 1. वन्) n. etwa *Verlangen, Sehnsucht* in der Stelle: तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यम् Kenop. 31. Çâṅk.: तद्ब्रह्म ह किल तद्वनं नाम तस्य वनं तद्वनं तस्य प्राणिजातस्य प्रत्यगात्मभूतत्वाद्वननीयं संभजनीयम्.

3. वन indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

वनकचु m. *Arum Colocasia* Wilson.

वनकणा f. *wilder Pfeffer* Râǵân. im ÇKDa. u. वनपिप्पली.

वनकण्टुल (?) m. = वनशूरण Râǵân. im ÇKDa. u. dem letzten W.

वनकदली f. *wilder Pisang* Râǵân. im ÇKDa.

वनकन्द m. Bez. zweier *Knollengewächse:* = वनशूरण und घरणीकन्द Râǵân. im ÇKDa.

वनकपीवत् m. N. pr. eines Sohnes des Pulaha VP. 83, N. 6. Varianten घनकपीवत् und घनकपीवत्.

वनकरिन् m. *ein wilder Elephant* Wilson.

वनकाम adj. *den Wald liebend, gern im Walde weilend* Spr. 3066.

वनकार्पासी f. *die wilde Baumwollenstaude* Ratnam. 171. °कार्पासि aus metrischen Rücksichten Suçr. 2,438,8.

वनकुक्कुट m. *ein wilder Hahn* Wilson.

वनकुञ्जर m. *ein wilder Elephant* Bhâg. P. 4,6,30.

वनकोकिलक n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑–, ⏑⏑⏑⏑–⏑⏑, –⏑⏑– Khandom. 93. — Vgl. कोकिलक.

वनकोलि f. *wilder Judendorn* ÇKDa.

वनक्रत् adj. etwa *in der Kufe brausend:* Soma ṚV. 9,108,7. वनप्रत् v. l. im SV.

वनखण्ड n. *Wald* MBh. 3,13147. fg. fehlerhaft वनषण्ड R. 3,15,48. 5,15,31.

वनग MBh. 9,1334 fehlerhaft für वनप, wie die ed. Bomb. liest.

वनगज m. *ein wilder Elephant* MBh. 3,2529. 9,3229. R. 4,13,47. Megh. 20. Spr. 3199. 3603. 4345. Kathâs. 9,59. 12,18. Bhâg. P. 5,5, 30. Pañkat. 80,6.

वनगव m. *Bos Gavaeus* (गवय) H. 1286.

वनगहन n. *Dickicht* Pañkat. 87,6. 96,8. 114,8. 228,13.

वनगुप्त m. *Späher* Çârṅgadh. bei Wilson.

वनगुल्म m. *Waldstrauch, ein wilder Strauch* MBh. 3,2543. P. 1, 3,67, Sch.

वनगो f. *Bos Gavaeus* (गवय) Râǵân. im ÇKDa.

वनगोचर adj. (f. आ) 1) *im Walde wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) M. 8,259. R. 2,30,14. 50,30. R. Gorr. 2,94,1. 98,2. 3,7,17. 76,34. 4,40,32. 41,5. 55. 46,6. 48,9. 51,2. 5,17,15. Bhâg. P. 4,26,5. — 2) *im Wasser lebend* Bhâg. P. 3,18,2. 10.

वनकर्ण n. *ein best. Körpertheil* ṚV. 10,163,5.

वनचन्दन n. 1) *Agallochum.* — 2) *Pinus Deodora* (देवदारु) Roxb. Viçva im ÇKDa.

वनचन्द्रिका f. *Jasminum Zambac* (मल्लिका) Râǵân. im ÇKDa.

वनचम्पक m. *wilder Kampaka* Râǵân. im ÇKDa.

वनचर adj. (f. ई) *im Walde umherschweifend, — wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) Halâj. 2,78. MBh. 4,2231. R. 1,1,42. 8,8. 9,3. 2,28,17. 32,24. 34,43. R. Gorr. 1,13,30. 2,15,28. 28,26. Suçr. 1,323,13. Megh. 19. Spr. 2746. Varâh. Bṛh. S. 15,3. 46, 66. Kathâs. 104,211. Kir. 6,29. Pañkat. 233,17. Bhâg. P. 10,35,8. fem. 47,60. Pañkat. 2,5,24. — Vgl. वनेचर.

वनचर्या f. *das Umherschweifen —, der Aufenthalt im Walde* R. Gorr. 2,28,31. 29,15. fg.

वनचारिन् = वनचर M. 8, 260. MBh. 1, 5994. R. 1, 16, 9. 2, 21, 31. 29, 3. 3, 14, 6. 30, 6. 4, 2, 4. 5. 9, 65. Śāk. P. 20, 44. तद्वनचारिन् R. Gorr. 1, 29, 6. कपिता° R. Einl.

वनच्छाग m. *die wilde Ziege* Taik. 2, 3, 10. Hik. 81. *Eber* Çabdam. im ÇKDa.

वनच्छिद् adj. *der sich mit dem Fällen der Bäume im Walde abgiebt* Hariv. 3814. Bhatt. 9, 98.

वनज 1) adj. *im Walde geboren, Wäldner* R. 2, 54, 7. — 2) m. *a) Elephant* H. an. 3, 149. Viçva im ÇKDa. — *b) Cyperus rotundus Lin.* H. an. Med. ग. 28. = गुत्स्म Taik. 3, 3, 87. = वनप्रूरण Râǵan. im ÇKDa. = तुम्बुरु Ausn. 24. *der wilde Citronenbaum* Râǵan. im ÇKDa. u. वनवीजपूरक. — 3) f. या *Phaseolus trilobus* H. an. Med. *die wilde Baumwollenstaude; =* वन्योपादकी, घण्टागन्धा, गन्धपत्रा, मिश्रेया und *wilder Ingwer* Râǵan. im ÇKDa. — 4) n. *eine blaue Lotusblüthe (im Wasser entstanden)* H. an. Med. वनजात Rāgān. 5, 73. वनजाती Hariv. 5145.

वनजीर m. *wilder Kümmel* Râǵan. im ÇKDa.

वनतिक्त 1) m. *Terminalia Chebula Roxb.* Çabdam. im ÇKDa. — 2) f. या *eine best. Pflanze, =* श्वेतवुक्का Ratnam. 51. = भीष्मा Hik. 93. — Vīrān. 6, 78.

वनतिक्तिका f. *Clypea hernandifolia W. et A.* AK. 2, 4, 8, 3.

वनंदु (von 1. वन्) m. etwa *Verlangen, Sehnsucht;* pl.: या यन्मे अध्वं वनदुः पनन्त RV. 2, 4, 3. nach Durga so v. a. वननीयस्य कविधो दातारः, nach Sây. वनन्तः संभजन्तः oder für अवनदम् von नद्.

वनद m. *Wolke (Wasser spendend)* Hik. 18. Çabdam. im ÇKDa.

वनदमन m. = धरण्यदमन Râǵan. im ÇKDa.

वनदारक m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57, 48.

वनदाह m. *Waldbrand:* वनदाहाग्नि R. 2, 85, 17.

वनदीप m. = वनचम्पक Râǵan. im ÇKDa.

वनदीपभट्ट m. N. pr. eines Scholiasten Colebr. Misc. Ess. II, 57.

वनदेवता f. *eine Waldgöttin, Dryade* R. 1, 33, 13 (34, 13 Gorr.). Rāgān. 2, 12. 9, 52. Kumārās. 3, 52. 6, 39. Çiç. 80. Kathās. 26, 178. 101, 237. Pañcat. 97, 22. Hit. 91, 20.

वनद्रुम m. *Waldbaum, ein im Walde stehender Baum* Spr. 2832, v. l.

वनद्विप m. *ein wilder Elephant* Rāgān. 2, 38. Kathās. 11, 4.

वनधारा f. *Baumgang, Allee* Vikr. 60, 14.

वनंधिति f. etwa *Holzschicht* (auf dem Feueraltar): स्विध्मा यदग्निधितिरप्यात्मूर्ता अधरे परि रोधना गोः RV. 1, 121, 7.

वनधेनु f. *die Kuh des Bos Gavaeus* (गवय) Râǵan. im ÇKDa.

वनन (von 1. वन्) 1) n. *Verlangen* Nir. 5, 5. — 2) f. वनना etwa *Wunsch:* उन्मध्व ऊर्मिर्वननो अतिष्ठिपत् RV. 9, 86, 40.

वननित्य m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva Hariv. 1660. धनेयु die neuere Ausg. und Langlois.

वननीय (von 1. वन्) adj. *begehrenswerth* Nir. 3, 10. 4, 26. 6, 22. 11, 46. Çaṃk. zu Kenop. 31.

वनन्व्, वनन्वति *im Besitz —, vorhanden sein, suppetere:* नहि मे अस्याह्या न स्वधितिर्वनन्वति (= काष्ठानि कृत्ति Sây.) RV. 8, 91, 19. पार्थः सुनेकं स्वधितिर्वनन्वति 10, 92, 15.

वनन्वत् adj. (nach dem Comm. so v. a. वननवत् und erklärt durch संभजनवत् oder संभक्तवत्) 1) etwa *innehabend, besitzend:* या वर्क्षसि पुरु स्पार्हं वनन्वति Ushas RV. 7, 81, 3. इन्द्रे वनन्वती मतिः so v. a. *die Andacht hält* Indra *fest* 8, 6, 34. — 2) *im Besitz befindlich, zu eigen gehörig:* या यद्याञ्चनन्वतः अदघ्नाः रथे हिरण्यम् RV. 8, 1, 21.

वनपं m. *Waldhüter* VS. 30, 19. MBh. 9, 1334 nach der Lesart der ed. Bomb. (वनग ed. Calc.).

वनपन्नग m. *eine im Walde lebende Schlange* MBh. 3, 2409.

वनपर्वन् n. *Buch des Waldes*, Titel des 3ten Buches des Mahâbhârata, das über den Aufenthalt Judhishṭhira's und seiner Brüder im *Walde* handelt.

वनपलाश m. *Hyperanthera Moringa Vahl.* Gaṭâdh. im ÇKDa.

वनपांसुल m. *Jäger* Çabdam. im ÇKDa. °पांशुल gedr.

वनपार्श्व m. *Waldgegend, Wald* R. 2, 91, 64. — Vgl. वनान्त.

वनपाल m. 1) *Waldhüter* R. 5, 39, 3. 62, 7. 63, 13. 15. वनपालाधिप 61, 7. 62, 10. — 2) N. pr. eines Sohnes des Devapâla Çiç. 2, 657. des Dharmapâla Wassiljew 34.

वनपिप्पली f. *wilder Pfeffer* Râǵan. im ÇKDa.

वनपुष्प 1) n. *Waldblume, Feldblume.* — 2) f. या *Anethum Sowa Roxb.* Râǵan. im ÇKDa.

वनपुष्पमय adj. *aus Waldblumen gemacht, — bestehend:* आभरण Kathās. 101, 233.

वनपूरक m. *der wilde Citronenbaum* Râǵan. im ÇKDa.

वनपूर्व m. N. pr. eines Dorfes Râǵa-Tar. 8, 1440.

वनप्रर्त् v. l. des SV. I, 6, 2, 4, 3 für वनक्रत् des RV.; = वने तीयते nach dem Comm.

वनप्रवेश m. *das Betreten des Waldes*, insbes. *der feierliche Gang in den Wald um Holz für ein Götterbild zu schneiden* Varāh. Bṛh. S. 107, 7. — Vgl. वनसंप्रवेश.

वनप्रस्थ 1) *ein hoch gelegener Wald* MBh. 13, 7244. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 8, 1931. — Vgl. वानप्रस्थ.

वनप्रिय 1) adj. *den Wald liebend.* — 2) m. *der indische Kuckuck* AK. 2, 5, 19. H. 1321. — 3) n. *Zimmetbaum* Râǵan. im ÇKDa.

वनफल n. *Waldfrucht* R. 1, 4, 18.

वनबर्बर m. *Ocimum sanctum Lin.* Râǵan. im ÇKDa.

वनबर्बरिका f. *eine best. Pflanze, =* दोपाक्षोशी u. s. w. Râǵan. im ÇKDa. °बर्बरका (!) *eine Art Basilicum* (कुठेर) Ausn. 18.

वनबर्हिण m. *ein wilder Pfau;* davon °त्व n. nom. abstr. Rāgān. 16, 14.

वनबाष्पक m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 50. °बाष्पक gedr.

वनबिडाल m. *eine Art wilder Katze, Felis Caracal* Wilson.

वनबीज, °क und °पूरक m. *der wilde Citronenbaum* Râǵan. im ÇKDa.

वनभद्रिका f. *Sida cordifolia* Râǵan. im ÇKDa.

वनभुस् m. *ein best. Heilkraut, =* सुषम Çabdar. im ÇKDa.

वनभू f. *Waldgegend*, pl. Spr. 311. Gir. 1, 1. Râǵa-Tar. 2, 121. Prab. 92, 16.

वनमतिका f. *Bremse* AK. 2, 5, 27. H. 1215.

वनमल्ली f. *wilder Jasmin* Çabdar. im ÇKDa.

वनमाल adj. *mit einem Kranze von Waldblumen geschmückt*, Beiw. Kṛshṇa's oder Vishṇu's Hariv. 10678. — Vgl. वनमालिन्.

वनमाला f. 1) *ein Kranz aus Waldblumen (Feldblumen)*, insbes. der

von Kṛshṇa getragene, Çabdam. im ÇKDa. R. 2,96,31. 5,4,2. Ragh. 9,51. Varâh. Bṛh. S. 43,25. Kathâs. 39,107. 112. Çâṅk. 2,475. Verz. d. Oxf. H. 138,b,12. Bhâg. P. 1,11,28. 2,2,10. 3,8,31. 13,40. 28,15. 4,30,7. 5,3,3. 23,7. 6,4,37. 8,18,3. 20,32. Weber, Kṛshṇaj. 294. Paṅkar. 1,3,78. 4,4. 2,2,85. 4,6,2. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑ –⏑–⏑, ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑ (auch ohne Cäsur nach der 10ten Silbe) Colebr. Misc. Ess. II,162 (XIII,2). Ind. St. 8,422. — 3) Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 185,b,40.

वनमालाधर् 1) adj. *einen Kranz von Waldblumen tragend.* — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑–⏑–⏑⏑⏑–⏑–⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. II,162 (XII,11). — Vgl. मालाधर्.

वनमालिका f. 1) = वनमाला 1) Bhâg. P. 3,15,28. — 2) N. einer Pflanze, = वाराहीकन्द Aufn. 16. — 3) *ein best. Metrum*, = नवमालिनी Ind. St. 8,383. — 4) N. pr. eines Wesens im Gefolge der Rádhá Paṅkar. 2,4,44. — 5) N. pr. eines Flusses Hariv. 9514.

वनमालिन् 1) adj. *mit einem Kranze von Waldblumen geschmückt*, insbes. als Beiw. und Bein. Kṛshṇa's (Vishṇu's) AK. 1,1,1,16. H. 217. Med. n. 242. fg. Hâlâs. 1,24. MBh. 1,7930. 4,2350. 7,412. 9,2845. Hariv. 10386. Gîv. 7,31. Khandom. 115. Bhâg. P. 4,7,21. 8,47. 8,6,6. 10,35,24. 11,27,39. Paṅkar. 3,11,19. 4,1,28. 3,36. — 2) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Tüb. H. 13. — 3) f. °मालिनी *a*) = वाराही Med. wohl *eine best. Pflanze;* nach Wilson? *a female energy of* Kṛshṇa. — *b*) ein N. der Stadt Dvârakâ Taik. 2,1,14.

वनमालेशा (वनमालिन् + ईश) adj. f. *den mit Waldblumen Geschmückten* (Kṛshṇa) *zum Herrn* (*Gemahl*) *habend*, Bein. der Rádhá Paṅkar. 2,5,32.

वनमुच् 1) adj. *Wasser spendend* Ragh. 9,18. — 2) m. *Wolke* Çabdam. im ÇKDa.

वनमुद्ग m. *Phaseolus trilobus* AK. 2,9,17. H. 1173. Suçr. 1,197,13. f. आ dass. Râgân. im ÇKDa.

वनमूत m. *Wolke*, nach ÇKDa. ein von Bhar. zur Erklärung von क्षीमूत erfundenes Wort.

वनमूर्धन्या f. *eine best. Pflanze*, = कर्कटशृङ्गी Râgân. im ÇKDa.

वनमूलफल n. sg. *Wurzeln und Früchte des Waldes* Varâh. Bṛh. S. 42,3.

वनमृग m. *eine im Walde lebende Gazelle* R. 3,49,45.

वनमोचा f. *wilder Pisang* Râgân. im ÇKDa.

वनयितर् (vom caus. von 1. वन्) nom. ag.; superl. °तृतम zur Erkl. von वनीयस् Nir. 12,5. Comm. zu Bhâg. P. 1,19,36.

वनर् m. = वानर् Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDa.

वनराज m. *der König des Waldes* d. i. *der Löwe* H. ç. 183. Çabdam. im ÇKDa.

वनराजि und °राजी f. 1) *Baumreihe, ein sich lang hinstreckender Wald* Hâlâs. 2,56. पिप्पलानाम्, लोध्राणाम् MBh. 2,505. 3,11389. fg. 15372. आस्ती ते स्तिमिते सेने रक्ष्यमाणे परस्परम् । संप्रमुसे यथा नक्तं वनराज्यो सुपुष्पिते ॥ 7,487. 13,1993. Hariv. 3841. R. Gorr. 2,102,2. 3,22,22. 52,23. 55,45. 79,25. 4,13,9. 5,8,31. Kâm. Nitis. 14,35. Ragh. 1,38. 3,3. 9,44. 13,15. Çiç. 12,29. Spr. 2828. Râga-Tar. 4,150. Bhâg. P. 3,21,40. — 2) °राजी (so im Index) N. pr. einer Sclavin Vasudeva's VP. 439, N. 2.

वनराज्य n. N. pr. eines *Reiches* Varâh. Bṛh. S. 14,30.

वनराष्ट्र m. pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,29. °क Mârk. P. 58,49.

वनरुह् m. *Lotusblüthe* (*im Wasser wachsend*) Bhâg. P. 5,3,3. 17,18. 10,31,12.

वनर्गु (वनस् = 1. वन + 4. गु) adj. *im Holze —, im Walde — oder in der Wildniss sich umtreibend;* = वनगामिन् Nir. 3,14. मृगो यद्यो वनर्गुः von Agni, *der im Wasser und im Holze wohnt*, RV. 1,145,5. तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू 10,4,6. न स्तेनेन वनर्गुभिः AV. 4,36,7. daher = स्तेन Naigh. 3,24. तं वो स्तुवन्ति कवयः पशुषाधो वनर्गवः *Weise und Wilde* SV. Naigh. 4,9.

वनर्त्त m. *eine best. Pflanze*, = भृङ्गी Aufn. 24.

वनर्द्धि (1. वन + ऋद्धि) f. *ein Schmuck des Waldes* Bhâg. P. 4,6,19.

वनर्षद् (वनस् = 1. वन + सद्) adj. VS. Prât. 3,48. *auf Bäumen —, im Holze sitzend, —nistend:* वर्षः RV. 2,31,1. वनर्षदो वायवो न सोमाः 10,46,7.

वनलक्ष्मी f. 1) *ein Schmuck des Waldes.* — 2) *Pisang, Musa sapientum* Râgân. im ÇKDa.

वनलता f. *eine im Walde lebende Schlingpflanze* Bhâg. P. 10,35,9.

वनलेखा f. = वनराजि. नवनग° Çiç. 4,68.

वनवल्लरी f. *eine best. Grasart*, = निःशेणिका Râgân. im ÇKDa.

वनवह्नि m. *Waldbrand* H. 1101. Hâlâs. 1,70. Kathâs. 56,244.

वनवात m. *Waldwind* Çiç. 3.

1. वनवास m. 1) *das Wohnen —, der Aufenthalt im Walde* R. 1,17,18. 2,21,4. 47. 49. 22,29. 52, 57. R. Gorr. 2,13,34. 29,2. 4,4,5. Kâm. Nitis. 2,27. Çiç. 69,2, v. l. Spr. 3229. Mârk. P. 109,34. — 2) N. pr. eines Landes Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,27. fg. 340,*a*,18.

2. वनवास adj. *im Walde seinen Wohnort habend;* m. *Waldbewohner:* तरुभिर्वनवासबन्धुभिः Çiç. 85.

वनवासक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,366. °वासिक ed. Bomb. वानवासक VP. 192. in der 2ten Aufl. (II,178) वनवासक; als Varianten werden in beiden Ausgg. वानवासिक und वानवासिन् aufgeführt. — Vgl. वनवासिन्, वनवास्य, वानवासक.

वनवासन m. *Zibethkatze* Taik. 2,5,10.

वनवासिन् 1) adj. *im Walde wohnend;* m. *Waldbewohner* M. 6,27. R. 1,61,1 (63,1 Gorr.). 2,25,23. 52,48. 90,12. Kâm. Nitis. 2,28. Kathâs. 61,17. Hit. 49,12. — 2) m. *a*) N. pr. eines Landes im Süden Hariv. 5232. Varâh. Bṛh. S. 9,13. 14,12. 16,6; vgl. वनवासक, वनवास्य. — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: = सप्पा, मुष्कक, वाराहीकन्द, शाल्मलीकन्द und नीलमक्षिकन्द Râgân. im ÇKDa.

वनवास्य = वनवासिन् 2) *a*): वनवास्यन्नाधिपः Hariv. 5333 nach der Lesart der neueren Ausg., वनस्यास्य ज्ञ° die ältere Ausg. — Vgl. वानवास्य.

वनविरोधिन् m. N. *des zwölften Monats* Ind. St. 10,298.

वनवृन्ताकी f. *die Eierpflanze* (बृहती) Râgân. im ÇKDa.

वनव्रीहि m. *wilder Reis* H. 1176.

वनशूकरी f. *Mucuna pruritus Hook* (कपिकच्छु) Râgân. im ÇKDa.

वनशूरण m. *ein best. Knollengewächs* Râgân. im ÇKDa.

वनपृङ्गाट m. *Asteracantha longifolia Nees* AK. 2,4,3,17. °क m. Rigan. im ÇKDn.

वनशोभन (वन *Wasser* + शो°) n. *eine Lotusblüthe* Çabdat. im ÇKDn.

वनश्वन् m. 1) *Schakal* Trik. 2,5,7. 3,3,263. H. an. 3,412. Med. n. 205. — 2) *Tiger* Trik. 3,3,268. H. an. Med. — 3) *Zibethkatze* H. an. Med.

वनषण्ड s. u. वनखण्ड.

वनषद् adj. = वनसद्. Rudra Pin. Gaṇ. 3,15.

वनस् (von 1. वन्) n. etwa *Verlangen, Anhänglichkeit* oder *Lieblichkeit*: या पीकि वनसा सक् गार्वः सचत्त वर्तनिं यद्गोभिः RV. 10,172,1. nach Sây. = तेजस् oder धन. — Vgl. यत्त°, गिर्वणस्.

वनसं adj. von वन gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80.

वनसंकट m. *Linse* (मसूर) Çabdat. im ÇKDn.

वनसद् adj. *im Holze sitzend* VS. 17,12.

वनसङ्कट m. *ein dichter Wald* AK. 2,4,4,4.

वनसंप्रवेश m. *das Betreten des Waldes*, insbes. *der feierliche Gang in den Wald um Holz für ein Götterbild zu schneiden* Varâh. Bṛh. S. 59, 1. 14 und in der Unterschr. des Kapitels. — Vgl. वनप्रवेश.

वनसरोजिनी f. *die wilde Baumwollenstaude* Çabdar. im ÇKDn.

वनसारङ्गया f. *eine best. Schlingpflanze*, = वन्योपादकी Rigan. im ÇKDn. u. d. letzten W.

वनस्तम्ब m. N. pr. eines Sohnes des Gada Harîv. 9194. fg.

वनस्थ 1) adj. *im Walde sich aufhaltend*, m. *ein Waldbewohner* M. 5, 137 (= वानप्रस्थ). Spr. 4621. R. 2,38,17. 82,29. 3,48,18. Kîm. Nîtis. 2,38. Pañcat. III, 145. गज *ein wilder Elephant* Harîv. 8801. — 2) m. *Gazelle* Çabdat. im ÇKDn. — 3) f. या *eine best. Pflanze*, = यवतिक्ता Rigan. im ÇKDn.

वनस्थली f. *Waldgegend, Wald* Harîv. 3708. Ragh. 9,40. 15,8. Kumâras. 3,29. 31. Vikr. 79. Spr. 4387.

वनस्थान (?) N. pr. eines Reiches Wassiljew 59.

वनस्पति (वन + पति; vgl. द्यस्पति) m. VS. Prât. 2,17. 3,19. 140. 3,37. P. 6,2,140. 1) *Baum (der Fürst des Waldes)* (Trik. 3,3,183. H. an. 4,125. Med. f. 218. Hall. 2,22); *Stamm, Balken, Holz* RV. 1,28, 6. du. *Keule und Mörser* 3. 39,5. 90,8. 157,5. विश्वो वो मन्त्रमन्पते वनस्पतिः 166,5. 3,34,10. पाकस्को यद्वनस्पतीन्प्र स्मा मिनाति 5,7,4. व°, ओषधि 41,8. व°, ओषधि, वीरुध् AV. 11,6,1. 9,24. वनस्पतिं वन या स्वोषयदधम् RV. 10,101,11. Vâlakh. 6,4. AV. 1,12,3. 3,3,3. उच्छ्रयस्व वनस्पते wird ein *Pfahl* angeredet VS. 4,10. 13,7. Ait. Bṛ. 2,1.7,31. TS. 1,2,2,4. यस्त्वा शाले निमिमाय मंत्रभार् वनस्पतीन् AV. 9,3,11. यथा वार्तशाग्निर्वृक्षान्प्लाता वनस्पतीन् 10,3,14. Çat. Bṛ. 14,6,2,30. 4,6, 2,16. 5,6,3,3. 12,1,3,2. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठ वर्धते 13,2,2,4. 7,3,2. Agni heisst *Sohn der Bäume* RV. 3,23,25. AV. 5,25,7. *Herr der Bäume* 24,2. — M. 3,88. 4,39. 8,285. Jâân. 1,133. MBh. 1,1771. 3884. 4,469. Spr. 2714. R. 1,52,5. 2,53,24. R. Gorr. 2,53,6. 3,56,5. 5,21,4. Ragh. 12,21. Çiç. 50,8. Varâh. Bṛh. S. 29,1. 55,18. 79,39. Uttarar. 11,8 (15,11). Bhâg. P. 1,10,5. 4,18,29. पत्नी पुण्यवनस्पतेः *des Baumes «Verdienst»* Mârk. P. 24,21. In der Eintheilung der Pflanzen in व°, वृक्ष, वीरुध्, ओषधि u. s. w. *ein Baum, welcher Früchte trägt ohne in die Augen fallende Blüthen, ein grosser Waldbaum* (z. B. die Feigenbäume): पुष्पैर्या फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः। पुष्पिणः फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयतः स्मृताः॥ M. 1,47. Suçr. 1,4,17. वनस्पत्योषधिलतास्त्वक्सारा वीरुधो द्रुमाः Bhâg. P. 3,10,18. AK. 2,4,1,6. Trik. 2,4,3. H. 1116. H. an. Med. Hall. 2,24. — 2) *die Soma-Pflanze, der König der Pflanzen* RV. 1,91,6. VS. 10,23. 14,31. Çat. Bṛ. 3,8,2,33. Âçv. Gṛhy. 1,2,2. Bhâg. P. 3,13,15. — 3) *Bignonia suaveolens* Rigan. im ÇKDn. — 4) *der Opferpfosten* (unter den Âpri-Gottheiten) Nir. 8,10. RV. 1, 142,11. 188,10. 2,3,10. 10,110,10. VS. 21,36. Ait. Bṛ. 2,4.10. Çat. Bṛ. 3,8,3,33. TS. 6,3,11,4. Çâṅkh. Bṛ. 10,6. 19,6. Kâty. Çr. 8,8,18. 9,9,6. Bhâg. P. 2,6,23. Daher auch defectiver Ausdruck für *Opfer an den Vanaspati* Çat. Bṛ. 3,2,2,37. Kâty. Çr. 8,8,30. 19,4,3. 7. Çâṅkh. Çr. 15,1,37; vgl. auch Haug zu Ait. Bṛ. II,93. — 5) *Theile des hölzernen Wagens* Nir. 9,11. RV. 2,37,3. 3,53,20. 6,47,26. — 6) *hölzerne Trommeln* VS. 9,12; vgl. AV. 12,3,18. Kauç. 61. — 7) *ein hölzernes Amulet*: देवो व° AV. 3,85,1. 19,3,8. 11; in 4,3,11 scheinen die Worte किंकृ-दैवो वनस्पतिः unpassend eingeschoben zu sein. — 8) *ein Block, in welchen ein Gefangener gezwängt wird*, RV. 5,78,5; vgl. वृत्त 6. — 9) N. pr. eines Sohnes des Ghṛtaprishṭha Bhâg. P. 5,20,21.

वनस्पतिकाय m. *die Pflanzenwelt* H. 1201.

वनस्पतिमत्र m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 14,73,3.

वनस्या s. मत्तात°; वनस्यु s. गिर्वणस्यु.

वनस्रज् f. *ein Kranz aus Waldblumen* Bhâg. P. 3,8,24. — Vgl. वनमाला.

वनस्थलि N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,14.

वनस्पलि m. wohl *Löwe* Rigâ-Tar. 2,168.

वनस्पिप्पला f. *wilde Gelbwurz* Rigan. im ÇKDn.

वनस्पास m. *Saccharum spontaneum* Trik. 2,4,39. *wohlriechender Oleander* (कुरुण्टक) Rigan. im ÇKDn.

वनस्पासक m. *Saccharum spontaneum* Çabdar. im ÇKDn.

वनस्फुलिङ्गाशन m. *Waldbrand* Verz. d. Oxf. H. 181,a,21.

वनाखु (1. वन + आखु) m. *Hase* Trik. 2,5,9. Hîn. 184.

वनाखुक m. *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) Lin. Trik. 2,9,2.

वनाग्नि m. *Waldbrand* R. 5,52,10.

वनाज (1. वन + अज) m. *die wilde Ziege* H. 1278.

वनाटन (वन + अ°) n. *das Umherstreifen im Walde*, pl. Rigâ-Tar. 6,158.

वनाडु m. *eine blaue Fliegenart* Çabdat. im ÇKDn.

1. वनात्त (1. वन + अत्त) m. *Waldgegend, Wald*: पर्वतेश वनात्तेश काननेन्द्रेव शोभिताम् (भूमिम्) MBh. 3,11845. 9,1336. R. 2,30,14 (वनान्तः ed. Bomb. st. वनात्तेः). 54,39 (40 Gorr.). 4,37,9. 5,28,1. Ragh. 2,19. 58. 14,51. Kumâras. 5,56. Ṛt. 1,22. 26. 2,19. 24. Spr. 1966. विज्ञना वनात्ताः 2006. मत्तो वनात्तं गताः 2389. 2832. दृग्धं वनात्तं मृगाः (त्यक्तात्तं) 2883. °वासिन् (व्याध) 4131. Varâh. Bṛh. S. 69,26. °स्थ (नगर) Kathâs. 43,3. 103,241. 106,89. 113,59. 67. 73. Rigâ-Tar. 2,188. Bhatt. 9,106. °स्थली Spr. 2390. °भू Kir. 6,17 (Mallin.: अत्तशब्द स्वद्रूपवचनः, nach Utpala zu Varâh. Bṛh. S. ist अत्त hier = सभोग). — Vgl. वनपार्श्व.

2. वनात्त adj. *durch einen Wald begrenzt* Harîv. 3812.

वनान्तर n. *das Innere eines Waldes*: °रे *im Walde* R. 2,92,22 (101, 24 Gorr.). 4,24,29. Mârk. P. 109,21. °रात् *aus dem Walde* Ragh. 1,49. प्रविवेश °रम् *in einen Wald* Kathâs. 42,7. प्राप °रम् 50,309. °चर *im*

Walde umherstreifend VARÂH. BṚH. 18,7.

वनापग *Fluss:* महार्णवे समासाद्य वनापगशतैं यथा R. 7,19,16. वनं व्रजेत्तत्पूर्णनदीशतम् ग्रार्यो क्रूस्व: (ग्रापग st. ग्रापगा).

वनाब्जिनी (1. वन + ग्र॰) f. *eine im Wasser lebende Lotuspflanze* KATHÂS. 21,14.

वनामल m. *Carissa Carandas Lin.* (कृष्णपाकफल) ÇABDAM. im ÇKDR.

वनाम्बिका f. N. pr. der Schutzgottheit im Geschlecht Daksha's Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,5.

वनाम्र (1. वन + ग्राम्र) m. *eine best. Pflanze*, = केाशाम्र RÂǴAN. im ÇKDR.

वनायु m. 1) pl. N. pr. eines Volkes MBH. 6,363 nach der Lesart der ed. Bomb. (वातायन ed. Calc.). sg. N. pr. des von ihm bewohnten Gebietes ÇABDAR. im ÇKDR. ॰ज्ञा: (हया:) *Pferde aus* Vanâju H. 1235. HALÂJ. 2,284. MBH. 8,200. R. 1,6,21. ॰देश्या: RAGH. 5,73. — 2) N. pr. eines Sohnes des Purûravas MBH. 1,3149. HARIV. 1373. VP. 398, N. 1. — 3) N. pr. eines Dânava MBH. 1,2538. — Vgl. वानायु.

वनारिष्टा f. *wilde Gelbwurz* (वनहरिद्रा) RÂǴAN. im ÇKDR.

वनार्चक m. *Kranzwinder* (*Verehrer des Waldes*) ǴATÂDH. im ÇKDR.

वनार्द्रका f. *wilder Ingwer* RÂǴAN. im ÇKDR. वनार्द्रक n. *die Knolle;* s. u. मल्लार्द्रक.

वनालक्त n. *Röthel, rubrica* (*wilder Lack*) TRIK. 2,3,6.

वनालय m. *der Wald als Behausung:* ॰जीविन् *in Wäldern hausend* HARIV. 3815.

वनालिका f. *Heliotropium indicum* HIR. 95.

वनाली (1. वन + ग्रा॰) f. = वनराजि KHANDOM. 65.

वनाश्रम m. *das dritte Lebensstadium eines Brahmanen, der Aufenthalt im Walde* HARIV. 2538 nach der Lesart der neueren Ausg. (वन्याश्रम ed. Calc.).

वनाश्रमिन् m. = वानप्रस्थ *Anachoret, ein Brahmane im dritten Lebensstadium* BHÂG. P. 11,18,7.

वनाश्रय 1) adj. *im Walde lebend*, m. *Waldbewohner* R. GORR. 2,28,22. MÂRK. P. 109,31. 37. 43. 115,11. — 2) m. *Rabe* H. 1323. HALÂJ. 2,91.

वनाखिर m. *Eber* TRIK. 2,5,5.

वनि (von 1. वन्) UṆÂDIS. 4,139. 1) f. *das Heischen, Verlangen, Wunsch* AV. 5,7,2. 3. मा वनिं मा वाचं नो वीर्त्सीः 6. य ऋृतं वनिमायन्ति *welche um sie bittend kommen* 12,4,11. — 2) nom. ag. am Ende eines comp. P. 3,2,27. — 3) m. *Feuer* UǴǴVAL. — Vgl. ग्रादित्य॰, उपमाति॰, ऋतु॰, तत्र॰, धान्य॰, धारा॰, ब्रह्म॰, रायस्पोष॰, वसु॰, वृष्टि॰, विश्व॰, शत॰, सुम्नाा॰.

वनिका (von 1. वन) f. *Wäldchen;* nur in der Verbindung ग्रशोक॰ MBH. 1,3298. 3,16168. R. 1,1,71. R. GORR. 1,4,91. 3,62,32. 5,7,9. 22,19. 23,40. BHÂG. P. 9,10,30. ॰वनिक n. R. 6,112,53.

वनिकावास m. N. pr. eines Dorfes RÂǴA-TAR. 8,1879.

वनित (von 1. वन्) 1) adj. *geliebt, erwünscht, verlangt;* = प्रार्थित (याचित) und सेवित H. an. 3,292. MED. t. 130. — 2) f. ग्रा *a*) *Geliebte, Gattin; Mädchen, Frauenzimmer* AK. 2,6,1,2. 3,4,44,76. H. 503. H. an. MED. HALÂJ. 2,227. MBH. 7,2226. 12,12217. HARIV. 4094. R. 2,94, 24. 25 (103,25 GORR.). R. GORR. 2,104,15. 4,35,32. MṚKKH. 44,11. MEGH. 8. 33. 65. RAGH. 2,19. 9,37. 11,17. 14,51. KUMÂRAS. 1,10. ṚT. 3,15. 4, 18. VIKR. 44. 84. MÂLAV. 33. ÇÂK. 9,34. Spr. 142. 1610. 2087. 2671. 3320, v. l. 5327. VARÂH. BṚH. S. 24,32. 46,13. 50,9. 54,98. 68,12. 87,26. वनितादृत BṚH. 18,4. KATHÂS. 26,272. 37,235. RÂǴA-TAR. 1,375. BHÂG. P. 4,29,54. 5,1,38. 2,2. MÂRK. P. 17,23. 51,115. DHÛRTAS. 76,6. Verz. d. Oxf. H. 218,*b*,19. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 22. वनितासु द्वेष्टा *Weiberfeind* MBH. 5,1639. ॰द्विष् dass. 1719. VARÂH. BṚH. 18,1. *Weibchen* (eines Thiers): रथाङ्गनाम॰ KIR. 6,8. — *b*) *ein best. Metrum: 4 Mal* ◡◡—◡◡— COLEBR. Misc. Ess. II, 159 (I, 5). — Vgl. त्रिदशवनिता, नाक॰ (KIR. 5,27).

वनितृ (wie eben) nom. ag. *Inhaber, Besitzer:* (ग्रग्नि:) दाता यो वनिता मघम् ṚV. 2,13,3. — Vgl. वन्तृ.

वनितामुख m. pl. N. pr. eines Volkes (*Frauengesichter habend*) MÂRK. P. 58,30.

वनिताम्र n. N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 135,*a*, No. 254.

1. वनिन् (von 1. वन्) adj. 1) *heischend, verlangend:* वनिनो वस्त वार्यम् ṚV. 1,139,10. इन्द्रं समीके वनिनो हवामहे 8,3,5. — 2) *mittheilend, spendend:* die Marut ṚV. 1,64,12. der Wagen der Açvin 119,1. Fraglich bleibt 1,180,3.

2. वनिन् (von 1. वन) 1) m. *Baum* ṚV. 1,39,3. 58,4. 94,10. तष्टेव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि 130,4. 140,2. 6,8,5. वि यन्ति वनिनो न वया: 13,1. ग्रोषधीश्च वनिनश्च 7,4,5. 34,23. 35,5. विषूचीव यन्ति वनिनो न शाखा: 43,1. 10,91,6. ग्रवर्धयो वनिन: 138,2. उग्रो वृश्चग्रान्वनिनश्चकर्थ *du hast Bäume entwurzelt* 73,8. In dieser Stelle und 1,130,4 würde übrigens die Bedeutung *Wolke*, im Anschluss an वन 1) *d*), noch passender sein. *Baum* d. h. *Pflanze im ausgezeichneten Sinne*, der Soma: ग्रभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते ग्रक्षिता। पीत्वी सोमस्य वावृधे 3,40,7. — 2) adj. *im Walde wohnend*, m. *ein Brahmane im dritten Lebensstadium:* ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत् गृही भूत्वा वनी भवेत् वनी भूत्वा प्रव्रजेत् ǴÂBÂLA bei KULL. zu M. 6,33. गृहमेधी शरद्यस्तत्पयोर्दिश्यवाभ्यां यजेत वनी वर्षासु श्यामाकैरापत्कल्पे ऽन्यैः पुरातनैर्वा HÂRÎTA im ÇRÂDDHAḰINTÂMAṆI nach ÇKDR.

वनिन (von 1. वन) n. *Baum* oder *Wald:* ग्राप ग्रोषधीर्वनिनानि ṚV. 10,66,9.

वनिल (wie eben) adj. gaṇa काशादि zu P. 4,2,80.

वनिष्ठ (von 1. वन् mit dem suff. des superl.) adj. 1) *am meisten ausrichtend, — erlangend:* हूत ṚV. 7,10,2. — 2) *am meisten mittheilend:* त्वं वसु देवयते वनिष्ठ: ṚV. 7,18,1. — Vgl. वनीयंस्.

वनिष्ठु m. *Mastdarm* (स्थूलान्त्र) oder nach Andern *ein in der Nähe des Netzes liegender Körpertheil* (उलूकपतिसदृशो मांसविशेष: TBR. Comm. 2,672,18) ṚV. 10,163,3. AV. 9,7,12. 10,9,17. 20,131,12. VS. 19,87. 25,7. 39,8. AIT. BR. 2,7. ÇAT. BR. 3,8,3,25. 12,9,1,3. KÂTJ. ÇR. 1,8,21. 6,7,10. 9,4. ÇÂÑKH. ÇR. 5,17,9.

वनिष्णु UṆÂDIS. 4,2 fehlerhaft für वनिष्ठु; = ग्रपान UǴǴVAL.

वनीक = वनीपक SIDDH. zu AK. nach ÇKDR.

वनीपक = वनीयक H. 387, v. l. HALÂJ. 2,204 (v. l. वनीपक). GADÂDH. bei UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 4,139.

वनीय्, denom. von वनि), ॰यति *betteln, bitten* UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 4,139.

वनीयंस् (von 1. वन् mit dem suff. des compar.) adj. 1) *mehr erlan-*

gend: पूर्वः पूर्वो यजमानो वनीयान् RV. 5,77,2. वदन्ब्रह्मावदतो वनीयान् 10,117,7. — 2) am meisten mittheilend, — gebend Bhâg. P. 1,19, 36. वनयिता याचयिता वनयितृतमो वनीयान् अत्युदारतया याचेद्या इति प्रवर्तकः Comm. — Vgl. वनिष्ठ.

वनीयक m. *Bettler, Bittsteller* Uṇâdis. zu Unâdis. 4,139. AK. 2,1,49. H. 387. Hit. 38. Halâs. 2,104, v. l.

वनीवन् (vom intens. von 1. वन्) adj. *heischend:* वनीवानो मम हूताम् इन्द्रं स्तोमाश्चरन्ति RV. 10,47,7.

वनीवाहन (vom intens. von वह्) n. *das Hinundherführen* Cat. Br. 10,1,5,2. Kâty. Çr. 16,6,22. 25.

वनुं (von 1. वन्) nom. sg 1) *Nachsteller:* वनिन्द्र वनुंहन् RV. 4,30, 3. — 2) fraglich ob *Anhänger, Ergebener:* वनुं वा ये सुम्नुणी सुम्नुतो धुः RV. 10,74,1.

वनुष्य् (von वनुस्, °ष्यति *das Absehen haben auf, nachstellen, angreifen:* = कुध्यति Naigh. 2,12. = कृत्ति Nir. 3,2. RV. 1,132,1. इन्धानो अग्निं वनवद्वनुष्यतः 2,23,1. 26,1. 7,1,15. 4,9. दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति 7,82,1. 8,40,7. स्यूधो वनुष्यन्वनुषो नि बर्ह 6,6,6. यो द्रुणाशो वनुष्यता 9,63,11. mod. *verlangen, erlangen:* रयिं वनुष्यते मती 7,6.

1. वनुस् (von 1. वन्) adj. 1) *verlangend, eifrig; anhänglich, liebend:* प्र प्रेते अग्ने वनुषः स्याम RV. 1,130,3. अमृतस्य येगे वनुषः 3,27,11. सत्स्वं वनुषे पूर्व्याय 4,44,3. अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते रातिं दिवः 7,38,5. प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम् 10,96,1. — 2) *eifrig im feindlichen Sinne, Angreifer, Nachsteller:* नकिः वधर्वनुषो मर्त्यस्य RV. 4,22,9. 50,11. 6,6, 6. अर्वाचीनासो वनुषो युयुध्रे 6,25,3. वनुषामशस्तीः 68,6. 7,21,9. 56,19. 83,5. 97,9. वनुषो ऽभिमातिम् 8,25,15. सोदंतो वनुषो यथा *die* (beim Soma) *sitzen wie Kampfbereite* 9,64,29. 91,5.

2. वनुस् (von 1. वनुस्), वनुषते *erlangen:* दैव्या होतारो वनुषस् पूर्वे RV. 10,128,3. वनिषत्त TS. सनिषन् AV.

वनेकिंशुक m. pl. *Butea frondosa im Walde*, bildlich von *Dingen, die zu treffen man nicht erwartete*, Schol. zu P. 2,1,44. 6,3,9.

वनेतुका (वने, loc. von 1. वन, + तु°) f. *Pongamia glabra Vent.* (करञ्ज) Ratnam. im ÇKDa.

वनेचर adj. (f. ई) = वनचर *im Walde umherschweifend, — wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) MBh. 1,3579. 3,15390. 15641. 12,4636. Hariv. 1141. R. 2,37,26. 42,18. R. Gorr. 1,8,8. 2, 111,48. 3,47,2. 51,34. 79,47. 5,62,8. 6,109,22 (überall bei Gorr. fälschlich वने चर getrennt geschrieben). Kumâras. 1,10. Kir. 1,1. Mâlav. P. 37,7.

वनेजा adj. *hölzern:* वमतिर्वनेजाः RV. 6,3,3.

वनेज्य m. *eine Mango-Art* (वृक्षभेद) Râgân. im ÇKDa.

वनेवित्वक् m. pl. *Aegle Marmelos im Walde*, bildlich von *Dingen, die zu treffen man nicht erwartete*, P. 2,1,44, Schol.

वनेयु m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva MBh. 1,3700. Hariv. 1660. VP. 447. Bhâg. P. 9,20,5.

वनेराज् adj. *im oder am Holze prangend* RV. 6,12,3.

वनेवर्धू (वने + वधू) adj. etwa *im Holze schaltend:* यत्रं स्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट् RV. 10,61,20.

वनेसर्ज m. *Terminalia tomentosa W. und A.* Ratnam. im ÇKDa.

वनोद्देश m. *Waldgegend, eine Stelle im Walde* MBh. 1,5339. 3,15572. R. 2,56,9. 3,19,18. 50,12. fg. 4,26,7. Varâh. Bṛh. S. 48,5. Pañcat. 68, 10. Hit. 121,10.

वनोद्भव 1) adj. *im Walde entstanden, — befindlich:* मार्गाः MBh. 3, 2841. — 2) f. आ *die wilde Baumwollenstaude* Ratnam. 171.

वनोपप्लव m. *Waldbrand* Mucch. 17.

वनोर्वी (1. वन + उ°) f. *Waldgegend* Râga-Tar. 2,137.

वनोक = वनोकस् *Waldbewohner:* शैलद्रुमवनोकानाम् MBh. 5,4028. वनोका इव Bhâg. P. 5,19,25.

वनोकस् (1. वन + ओ°) adj. *im Walde wohnend;* m. *Waldbewohner, Anachoret, ein im Walde lebendes Thier* (insbes. *der Affe* AK. 2,5,3. H. 1292. Halâs. 2,76) MBh. 1,1119. 5,6039. 7110. 7,4166. 12,4277. Spr. 3861. Hariv. 4550. 4554. R. 1,63,23. 2,100,39 (108,40 Gorr.). R. Gorr. 3,49,39. 60,13. 4,1,16. 17,50. 5,26,5. 27,19. Çiç. 55,18. Râga-Tar. 3, 47. 4,168. Bhâg. P. 4,9,21. 5,19,7. 7,2,7 (so v. a. *Eber*). 9,9,25. स्थाणु° Çiva's *Wald bewohnend* Kumâras. 3,34.

वनोघ m. *dichter Wald*, N. pr. einer Gegend (eines Berges?) im Westen Varâh. Bṛh. S. 14,20.

वनोषधि f. *ein wild wachsendes Kraut* Verz. d. Oxf. H. 183, *a*, 14. 191,*b*,22. 192,*a*,32. *b*, No. 437. 193,*a*,26.

वनौकस् (von 1. वन्) nom. ag. *Inhaber, Besitzer:* रायो वनुषः RV. 3,30, 18. 7,8,3. — Vgl. वनितृ.

वन्तव (?) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,25.

वन्ति f. nom. act. von 1. वन् P. 6,4,39, Sch.

वन्द्, वन्दते (अभिवादनस्तुत्योः) Dhâtup. 2,10. ववन्दे, वन्दिषीमहि, वन्द्यते, वन्दि (ved.), वन्दितृ, वन्दितुम्, वन्दित्वा, वन्द्य (episch), वन्दिष्ये: act. (vgl. auch u. अभि): ववन्द RV. 6,51,12. 66,3. ववन्दिम 5,25,9. अवन्दताम् R. 1,31,31. 1) *loben, rühmen, preisen:* ब्रह्मणा RV. 1,24,11. नमोभिः 27,1. 82,3. वन्दारुस्ते तन्वं वन्दे अग्ने 147,2. 173,12. 3,54,4. 4. 57,6. अग्ने वन्दे तव श्रियम् 5,28,4. उत्तानहस्तो युवगुर्ववन्द 6,63,3. नामंत्या यो गर्भते वन्दते च 7,73,2. गिरा वन्दस्व मरुतो अके 8,20,20. यं स्तुतो राजा वन्दि वेधाः 10,61,16. 115,8. AV. 7,60,1. त्वं हि देव वन्दितो कृत्वा दस्योर्बभूविथ 1,7,1. Çâṅkh. Çr. 4,18,7. — 2) *Ehre erweisen, ehrfurchtsvoll begrüssen, Jmd oder Etwas seine Ehrfurcht bezeugen:* कुमारश्चित्पितरं वन्दमानं प्रति नानाम रुद्रोपयन्तम् RV. 2,33,12. (भवनमप्रमासाद्य) ववन्दे पृथुतामाप्तो पद्माम् MBh. 1,7982. 3,11917. 15795. 5, 7324. 12,6408. Hariv. 7902. 10997. fg. R. Einl. 1. 1,31,31. 2,32,2. 55, 19. 110,20. R. Gorr. 1,32,24. 71,20. 3,2,5. Kâç. 1,1. 13,72. 77. Vikr. 81,11. Spr. 411. Kathâs. 24,162. 45,240. Râga-Tar. 2,111. Bhâg. P. 3, 31,14. 6,16,16. 7,7,35. Bhatt. 19,27. Sarvadarçanas. 73,2. 101,17. वन्द्यते यद्वन्द्यो ऽपि तत्प्रभावो धनस्य च Spr. 1811. वन्द्यमानः सुरोत्तमैः R. 1,14,25. वन्दिभिर्वन्दितः काले बन्धुभिः सूतमागधैः R. Gorr. 2,96,9. Kathâs. 33,171. Bhâg. P. 3,28,23. Pañcar. 1,3,79. शिरसा वन्दनीयं तमवन्दत MBh. 13,2357. R. 7,44,11. 46,18. 48,20. Mṛicch. 66,20. Bhâg. P. 1,11,29. 19,11. 5,2,23. ववन्दे च पितरं पादयोः पतन् Kathâs. 45,128. ववन्दे चैनमभ्येत्य पादयोः 32,111. 45,155. पादयोश्च शिरसा ववन्दिरे 365. रामस्य ववन्दे चरणौ R. 2,100,37. 40,3 (39,3 Gorr.). 113,6. MBh. 3, 11907 (wo च वन्दा hat Anâ. 1,3 ववन्द). Hariv. 14106. Bhâg. P. 1,11,6. 10,6,37. Mâlav. P. 22,4. Gît. 7,42. ववन्दे चरणौ मूर्ध्ना MBh. 2,23. R. 2,

44,20. वन्दे वृत्ताग्र पुष्पितान् 3,55,43. शचीतीर्थम् ÇAK. 88,1. वन्दितुं मे-ध्याम् RÂǴA-TAR. 4,443. लिङ्गं भुवनवन्दितम् 3,445. मातृभिर्वन्दिताङ्गया 4,680. रुध्याम्बु ताक्ष्वीमङ्गात्रिदशैरपि वन्द्यते Spr. 2152. एकं हि सक-लान्वापि वेदान्प्राप्य गुरोर्मुखात् । धनुज्ञातो ऽथ वन्दित्वा दक्षिणां गुरवे ततः॥ *dem Lehrer den Lohn ehrfurchtsvoll gereicht habend* MBH. P. 28,14.

— caus. *Jmd Ehre erweisen, ehrfurchtsvoll begrüssen:* वन्दयित्वा R. 3,62,30. 4,25,19.

— धनु *Jmd Ehre erweisen* KÂM. NÎTIS. 5,62 (vgl. jedoch Spr. 433). — Vgl. धनुवन्दिन्.

— अभि *Jmd Ehre erweisen, ehrfurchtsvoll begrüssen, Jmd oder Etwas seine Ehrfurcht bezeugen* DAÇAK. 59,14. BHAG. P. 1,19,22. 2,6,34. 4,12,29. HIT. 18,17. अभिवन्द्य मूर्ध्ना मूर्धाभिषिक्तम् RAGH. 16,81. act. MBH. 14,2603. R. GORR. 1,34,2. VADDHA-KÂṆ. 13,20 (am Ende eines Çloka). पादौ चास्याभिवन्दितुम् R. 2,90,17. BHAG. P. 4,6,40. 5,3,16. 13,24. 8,23,6. विबुधैरभिवन्दिता (सरिद्वरा) Verz. d. Oxf. H. 65,*a*,2. अभिवन्द्य प्रभोर्लिङ्गम् RÂǴA-TAR. 3,225. — Vgl. अभिवन्दन.

— परि *loben, rühmen, preisen:* परि वन्द ऋभिः ṚV. 2,35,12.

— प्र *laut rühmen oder zu rühmen anfangen:* इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृ-तानि वन्दे दारु वन्दमानो विवक्मि ṚV. 7,6,1.

— प्रति *vor Etwas seine Ehrfurcht bezeugen:* भर्तुः प्रसादं प्रतिवन्द्य KUMÂRAS. 3,2.

— सम् *Jmd ehrfurchtsvoll begrüssen* BHAG. P. 3,7,19. शिरसा MBH. 1,3420.

वन्द् (von वन्द्) adj. *preisend;* s. देव°.

वन्दक m. *Schmarotzerpflanze* RATNAM. im ÇKDa. f. घा dass. HAPPA bei BHAR. zu AK. 2,4,2,62 nach ÇKDa. — Vgl. वन्द्रा, वन्द्राक.

वन्द्य m. = स्तोतृ und स्तुत्य ÇKDa. nach SIDDH. K.

वन्दैहार adj. fehlerhafte v. l. des SV. I,1,2,2,6 statt वन्दे दारुम् des ṚV.

वन्दैहीर adj. fehlerhafte v. l. des SV. I,1,2,2,1 statt मन्दहीर des ṚV.

1. वन्दन (von वन्द्) 1) m. proparox. N. pr. eines Schützlings der Açvin ṚV. 1,112,5. 116,11. 117; s. 118,6. पुत्रं वन्दनमृष्यदाडूंपवुः 10,39,5. — 2) f. घा P. 3,3,107, VÂRTT. 1. VOP. 26,194. *Lob, Preis* TRIK. 2,7,10. HIN. 133. HALÂ. 4,91. — 3) f. ई = नलि, जीवातु. कटी und माचलकर्मन् MED. n. 97; nach ÇKDa. soll in einigen Hdschrr. वटी statt कटी und याचन st. माचल gelesen werden. = गोरोचन RATNÂK. in NIGH. PR. Vgl. गो°. — 4) n. proparox. *a) Lob, Ruhm, Preis:* मघा मघ्युः प्र-णावद्वन्दनानि ṚV. 3,43,4. घर्मं हि वामृतवे वन्दनाय मामवृधत् Cit. in NIR. 4,17. — *b) Ehrenbezeugung, ehrfurchtsvolle Begrüssung:* कामं तु गुरुपत्नीनां युवतीनां युवा भवेत् । विधिवद्वन्दनं कुर्यादसावहमिति ब्रुवन् ॥ M. 2,210. यद्यार्के वन्दनाश्रेयान्कृता MBH. 2,2583. 3,12668. 5,824. शिरसा वन्दनार्हः 7030. पूजयामास तं देवं पाद्यार्घ्यासनवन्दनैः R. 1,2,28 (27 GORR.). गुरु° BHAG. P. 1,13,29. 2,4,15. 7,3,23. 10,2,40. MBH. P. 116, 52. Verz. d. Oxf. H. 103,*b*,25. तेषां विधिज्ञाप्योऽन्यवन्दनैः KATHÂS. 45, 226. कुर्याच्छुश्रूषोः पादवन्दनम् JÂÇ. 1,83. शिरसा पादवन्दनम् Spr. 3398. PRAB. 106,5. संध्या° VADDHAṬAS. (Allah.) No. 7. — *c)* = वदन ÇABDAK. im ÇKDa.

2. वन्दन 1) n. *a) Schmarotzergewächs* (wie *Flechten* u. dgl.): या मा लक्ष्मीः पतगालूरतुष्टाभिषस्कन्द् वन्दनेव (d. i. वन्दनमिव, nach AV. PAIṬ. 2, 86 वन्दन इव; vgl. WHITNEY zu d. St.) वृतम् AV. 7,115,2. — *b) eine Krankheit, die sich auf die Glieder setzt, Ausschlag, Flechten* und dgl.: यद्दि-ज्ञामन्पर्रुषि वन्दनं (= विषम् SÂY.) भुवदग्नेवत्तो पारि वृत्वो य देवेत् ṚV. 7,50,2. personif. als Dämon: न यातवे इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना (= स्तोमासि SÂY.) शविष्ठ वेद्याभिः 21,5. Vgl. तृष्ट° (*rauhen Ausschlag habend, schäbig*). — 2) f. घा *ein auf den Körper mit Asche u. s. w. aufgetragenes Zeichen:* ऐशान्यामाकरेद्भस्म भुवा वाथ भुवेण वा । वन्दनं कारयेत्तेन शिरःकण्ठांशकेषु च ॥ VASIṢṬHA im TITHYÂDIT. nach ÇKDa.

वन्दनमाला f. *ein zur feierlichen Begrüssung eines Ankommenden über dem Eingang eines Hauses angebrachtes Laubgehänge* HALÂ. 2,146.

वन्दनमालिका f. dass. H. 1008. Spr. 1168. वद्धाः प्रतिगृहद्वारं पत्र °काः PÎṆCAVIṂÇATIBRAH. 4,7 (nach AUFRECHT). द्वारदेशवद्ध° adj. f. PAÑCAT. 207,24.

वन्दनश्रुत् adj. *auf Lob —, auf Preis hörend* ṚV. 1,53,6.

वन्दनीय (von वन्द्) 1) adj. *dem Ehrfurcht bezeugt werden muss, ehrfurchtsvoll zu begrüssen* MBH. 7,2941. 12,12867. 13,2857. R. 2,58,18. Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,21. 187,*b*, No. 428, Z. 14. 199,*a*,18. — 2) m. *eine gelbblühende Verbesina* (पीतभृङ्गराज) RÂǴAN. im ÇKDa. — 3) f. घा = गोरोचना TRIK. 2,9,23.

वन्द्रा f. 1) *Schmarotzerpflanze* AK. 2,4,2,62. 3,4.18,115. TRIK. 2,4, 3. MED. d. 10. — 2) *Bettlerin* MED. — 3) = वन्दि oder वन्दी (व°) MED.

वन्द्राक m. *Schmarotzerpflanze* RATNAM. 273. VARÂH. BṚH. S. 43,13. °का f. dass. HAPPA bei BHAR. zu AK. nach ÇKDa. °की f. dass. ÇABDAK. im ÇKDa. SUÇR. 2,30,11.

वन्दारु (von वन्द्) 1) adj. P. 3,2,173. VOP. 26,162. *a) lobend, rühmend, preisend:* वन्दारुस्ते (वन्दारुष्टे VS. 12,42; vgl. VS. PRÂT. 3,72) तन्वं वन्दे अग्ने ṚV. 1,147,2. वचम् 5,1,12. — *b) der Ehrfurcht zu bezeugen pflegt, ehrfurchtsvoll* AK. 3,1,28. H. 349. PRAB. 81,5. Verz. d. Oxf. H. 127,*b*, No. 229. 139,*a*,7. in comp. mit dem obj.: पुरमथनपदारविन्दवन्दारुकरपल्लव DAÇAṬAS. 67,6. — 2) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 3,460. — 3) n. *Lob, Preis* ṚV. 4,43,1. अग्निर्वन्दारु वेद्यश्नो धातु 6,4,2.

वन्दितृ (wie oben) nom. ag. *laudator:* यथा निदो मुच्चथ वन्दितारम् ṚV. 2,34,15. 9,93,5. पितुष्टे अस्मि वन्दिता 10,33,7. वृ° ÇAT. BR. 6,8,2,9.

वन्दितव्य (wie oben) adj. 1) *zu loben* NIR. 7,16. — 2) *dem Ehrfurcht zu bezeugen ist, ehrfurchtsvoll zu begrüssen* R. 2,26,29 (31 GORR.). 31.

वन्दिन् (wie oben) nom. ag. *Ehrfurcht bezeugend:* यस्तोतुः स्तूयमा-नस्य वन्द्यस्यान्यवन्दिनः KUMÂRAS. 6,83. — Vgl. रात्र° und वन्दिन्.

वन्दिनीका f. ein N. der DÂKSHÂJAṆÎ Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,33. वन्दिनीया v. l.

वन्दिनीया s. u. वन्दिनीका.

वन्दीक (व°) m. ein N. Indra's H. ç. 30.

वैन्द्य (von वन्द्) 1) adj. P. 6,1,214. *a) zu loben, lobenswerth, preisenswerth* ṚV. 1,31,12. 79,7. 90,4. ग्रामा गावो वन्द्यासो नेतारः 108,2. 2, 7,4. घर्भूदिवः सविता वन्द्यो नु नः 4,54,1. रत्नेषु 10,4,1. 63,2. 110,3. AV. 6,98,1. 18,4,65. मुक्तवर्गुणः RÂǴA-TAR. 1,2. VADDHA-KÂṆ. 16,7. SIṂH. D. 213,9. — *b) ehrfurchtsvoll zu begrüssen, zu verehren, dem Hochachtung gebührt* (von Göttern und Menschen) R. 4,44,41. KUMÂRAS. 6,83. 7,54. ÇAUT. 44. Spr. 713. 1137. 1431. 1811. KATHÂS. 26,157. RÂǴA-TAR. 3,326. BHAG. P. 1,7,46. MBH. P. 76,23. Verz. d. Oxf. H. 16,*a*,11. PAṆ-

śiv. 1,10,7. पादे R. 2,58,13. Rāgn. 13,78. Bhāg. P. 10,6,37. Vop. 6,1. Sarvadarçanas. 98,14. रघुपतिपदानि Mucu. 12. जगतां वन्द्ये तव्हिलोः पद्मं पद्मम् Bhāg. P. 4,12,26. 3,15,28. — *c) zu berücksichtigen, zu beachten* Z. f. d. K. d. M. II, 425. — 2) m. N. pr. eines Mannes (andere Autt. st. dessen वध्यश्व); Verz. d. Oxf. H. 41,b,42. — 3) f. आ *a)* = वन्दा *Schmarotzerpflanze* Çabdak. im ÇKDn. — *b)* = गोरोचना Bhāvapr. im ÇKDn. — *c)* N. pr. einer Jakshi Kathās. 123,24. — Vgl. जगद्वन्द्य.

वन्द्यता f. nom. abstr. zu वन्द्य 1) *b)* Rāja-Tar. 1,283.

वन्द्रे Uṇādis. 2,18. adj. = पूजक Ujjval.

वन्धा indecl. gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61.

1. वन्धुर m. so v. a. वन्धुर ṚV. 1,34,9.

2. वन्धुर. अवस्युं शुभ्मं कावयं वधिं कृणवन्तु वन्धुरः AV. 3,9,3 und mit anderer Betonung: वन्धुरा कावयस्य 4.

वन्धुर n. parox. *Sitz des Wagenlenkers* oder *die Stelle am Ende der Gabeldeichsel* (Comm.); *Wagensitz* überh., *Wagengehäuse:* यद्धि वां स्थाम वन्धुरे रथे दस्रा हिरण्यये ṚV. 1,139,4. आ वन्धुरेव तस्थतुर्ऽरेणे 3,14,3. वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धाः 6,47,9. अक्षे तेष्टेव वन्धुरं पर्णयामि हृदा मतिम् 10,119,5. वन्धुरेषु, रथेषु 1,64,9. बन्धुर AV. 10,4,2. — MBn. 3, 14910 (= रथबन्धन Nīlak.). 6,19: 6 (सगुणबन्धुर: ed. Bomb.). 2659 (सौत्रबन्धुरेषे ed. Bomb., बन्धुर = रम्य Nīlak.). 7,1569. 1731. 6440. 8, 624. 1479. Harīv. 3657. 9288. 9319. Bhāg. P. 7,15,41. त्रिवन्धुरं (vgl. gaṇa त्रिचक्रादि zu P. 6,2,199, Vārtt.) ist der Wagen der Açvin ṚV. 1,47,2. 118,1. 2. 157,2. 183,1. 7,69,2. 71,4. 8,22,5. — 9,62,17. पञ्च° Bhāg. P. 4,26,1. 29,18. — Vgl. पूर्ण°, सप्र°, हिरण्य° und वन्धुर in den Nachträgen.

वन्धुरायु adj. *mit einem Wagensitz versehen* (Sāj.): der Wagen der Açvin यः सूर्या वर्कति वन्धुरायुः ṚV. 4,44,1.

वन्धुरीय, सौत्रवन्धुरीय MBn. 6,2659 falsche Lesart für सौत्रबन्धुरेय, wie die ed. Bomb. liest.

वन्धुरेष्ठा adj. *auf dem Wagensitz sitzend:* Indra ṚV. 3,43,1.

वन्ध्य, so schreiben die Bomb. Ausgg. des MBn. und Bhāg. P. statt वन्द्य in der Bed. 3).

वन्ना f. N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 154,a,30.

1. वन्य (von 1. वन्) s. चतुर्वन्य, यज्ञीतपुनर्वण्य.

2. वैन्य (वर्न्य nach gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80) 1) adj. *im Walde lebend, — wachsend* u. s. w., *silvestris* Mān. j. 53. रुद्र VS. 16,34. सिंह, गज, मृग u. s. w. MBn. 12,4288. Harīv. 3567. R. 2,24,17. 100,29. 107, 17. 3,62,34. Rāgn. 2,8. 37. 5,43. 50. 6,7. Spr. 2306. Varāh. Bṛh. S. 32, 28. 46,66. 91,1. fgg. 95,57. Kathās. 21,30. 22,78. Paṇḍar. 1,6,27. ओषधि, वृक्ष, फल, मूल u. s. w. MBn. 13,461. 2773. M. 6,12. R. 1,9,57. 2,31,26. 54,17. 56,30. R Gorr. 1,3,63. 2,28,32. Suçr. 1,197,18. 198, 14. Rāgn. 1,45. Spr. 3884. AK. 2,4,4,4. Rāja-Tar. 5,49. Bhāg. P. 4,8, 55. Paṇḍar. 1,6,16. रीति Harīv. 14803. संविधा Rāgn. 1,94. श्राद्ध Mārk. P. 96,19. सुख Paṇḍar. 216,10. तक्मन् etwa so v. a. *grünlich* (vgl. द्रुपाणि हरिता कृष्णपाणि) AV. 5,20,3. *hölzern:* योनि ṚV. 9,97,45. *im oder am Holz befindlich:* Agni TS. 5,5,9,1. 2. — 2) m. *ein im Walde lebendes —, ein wildes Thier* R. 2,56,2. Vārāh. Bṛh. S. 97,3. — *b) eine wild wachsende Pflanze:* वन्योऽयं (वंशोऽयं ed. Calc. 3) यामुनैः R. ed. Bomb. 2, 55,9. — *c)* Bez. verschiedener *wild wachsender Pflanzen:* = वनभूरणा, वाराहीकन्द und देवनाल Rāgān. im ÇKDn. — 3) f. *a)* ई nom. coll. von वन gaṇa पाशादि zu P. 4,2,40. *a) ein grosser Wald* AK. 2,4,2,4. Med. — *β) ein Ueberfluss an Wasser, Regenfülle, grosse Nässe* Mān. Kāmi-sūtra 4,16. fg. 11,6. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Physalis flexuosa* Ratnam. bei Wilson; = मुद्गपर्णी, गोपालकर्कटी, गुञ्जा, मिसेया, भद्रमुस्ता und गन्धपत्रा Rāgān. im ÇKDn. — 4) n. *a) im Walde Gewachsenes: Früchte und Wurzeln im Walde wachsender Pflanzen:* वन्येन जीवन् MBn. 12,330. R. 2,37,2. 63,26 (65,26 Gorr.). वन्ये ऽपि विविधे सति 46,10 (44,10 Gorr.). 84,17. 1,51,5. 3,52,51. 53,24. 76,17. °वृत्ति Rāgn. 1,88. 5,9. 12,20. वन्याशन Vārāh. Bṛh. 15,1. Kathās. 42,121. मितवन्यभुज् Bhāg. P. 4,8,36. Mārk. P. 115,16. — *b)* = वच Rāgān. im ÇKDn.

वन्याश्रम Harīv. 2538 fehlerhaft für वनाश्रम, wie die neuere Ausg. liest.

वन्येतर (2. वन्य + इ°) adj. *nicht wild, zahm* Rāgn. 5,47. निवासाः *Wohnungen, die von denen im Walde verschieden sind,* 41.

वन्योपाद्की f. *eine best. Schlingpflanze* Rāgān. im ÇKDn.

वंव Uṇādis. 2,28. = विभागिन् Ujjval.

1. वप्, वपति, उप्त Haare oder Bart *scheeren* Vop. 8,134. med. *sich scheeren:* ये ते शुक्राम: तो वपन्ति विपितासो अग्रेः *abgrasen* ṚV. 6,6,4. सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः nämlich केशान् AV. 6,68,1. fgg. पत्तुरेण वप्ता वपसि केशश्मश्रु 8,2,17. Çat. Br. 3,1,2,9. लोमानि 2,6,2,17. TS. 6,1,2,2. ते केशानग्रे ऽवपन्त । अथ श्मश्रूणि । अथोपपक्षौ TBr. 1,3,6,1. Āçv. Gṛhj. 1,17,7. 10. fgg. उत्तकेशश्मश्रु Kauç. 54. संवत्सरे वपते नापितकार्यं करोति Sāj. एकं एषाम् ṚV. 1,164,44.

— caus. *scheeren lassen, scheeren;* med. *sich scheeren lassen:* श्मश्रूणि वापयीत Āçv. Çr. 2,16,24. केशश्मश्रुलोमनखानि (प्रेतस्य) वापयन्ति 6,10,2. Gṛhj. 4,1,16. 6,4. Lāṭy. 4,4,18. 8,8,14. वापित = मुण्डित H. an. 3,293. fg. Med. t. 150.

— परि *rings scheeren* Kauç. 54. Pāṇ. Gṛhj. 2,1. अपर्यु॰ Āçv. Çr. 12,8,25. — caus. परिवापित *geschoren* AK. 3,2,35. — Vgl. परिवापण.

— प्र *abscheeren:* वपेव श्मश्रु वपसि प्र भूम ṚV. 10,142,4. देवभूरेतानि प्रवपे TS. 1,2,2,1. Pāṇ. Gṛhj. 2,1. — Vgl. प्रवपण.

2. वप्, वपति (बीजसंताने, तनुबीजसंताने) Dhātup. 23,34. अवपद्यासु P. 6,1,121. उवप, उवाप, उवपिथ P. 6,1,17. Vop. 8,134. ऊपे (आ वपे Kāç. zu P. 6,4,120), ऊपिषे, अवाप्सीत्, वप्स्यति (vgl. Kāç. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10) und वपिष्यति (episch), वप्तुम्, उप्त्वा, उप्यते, उप्त (auch उ-उप्त und वपित) P. 6,1,15. *hinstreuen, hinwerfen* (bes. den Samen), *säen:* वपन्ति मरुतो मिहम् ṚV. 8,7,4. यो भूम्या उपस्थे ऽवपद्यधन्वान् (वीरान्) *hinstreckte* 2,14,7. इम उप्ता मृत्युपाशाः *hier liegen* AV. 8,8,16. Kauç. 14. 16. अक्षानुप्त्वा *die Würfel werfend* MBn. 2,2033. पर्वम् ṚV. 1, 117,21. वपन्तो बीजमिव धान्याकृतः 10,94,13. 101,2. मा वः क्षेत्रे परबीजान्यवाप्सुः P. 6,4,75, Sch. Çat. Br. 1,6,4,3. 7,2,4,13. Lāṭy. 5,8,4. Kāty. Çr. 17,3,8. 21,4,4. इरिणे बीजमुप्त्वा M. 3,142. MBn. 3,1348. Vārāh. Bṛh. S. 53,87. 53,2. Kathās. 32,121. 39. 116. 119. 61,8. 71,266. यादृशं वपते बीजम् Spr. 2468. Kathās. 32,118. Mārk. P. 51,61. यादृशं तूप्यते बीजं क्षेत्रे Spr. 2469. उप्तानोप्यपेक्षेत् Verz. d. Oxf. H. 225,a,10. fg. उप्यमानं मुहुः क्षेत्रम् *besäet werdend* Spr. 3809. यस्यां (स्त्रियां) बीजं

मनुष्याऽ वपसि ṚV. 10,85,37. न तु विद्यामिरिणे वपेत् M. 2,113. उप्यते विषवल्लिवीजविषमाः लोकाः प्रियाप्याः Spr. 3808. उप्त *gestreut, gesäet:* कालोप्तानि बीजानि M. 9, 38. Spr. 130. 2315. 3809. MBh. 13,7603. R. 3,44,3. Kumâras. 2,5. Çiç. 91,14. 151. Varâh. Bṛh. S. 40,9. 55,26. Kathâs. 32,183. 39,120. Râja-Tar. 3,294. Bhâg. P. 1,15,21. Mârk. P. 49, 59. *gepflanzt* Varâh. Bṛh. S. 75,2. so v. a. *gespendet:* तेषु दानानि पात्रेषु Bhâg. P. 11,6,38. = निक्षिप्त 3,2,10. *bestreut, besäet, bedeckt:* भूप्रदेश Verz. d. Oxf. H. 325,*a*, 9. पत्रपुष्पाक्षताङ्कुरैः Bhâg. P. 1,11,13. पांसूप्त Kathâs. 98,25. अमवार्युप्त *übergossen* Bhâg. P. 10,44,11. उप्तित *gesäet* MBh. 3,14768. *aufschütten* so v. a. *auftämmen:* पथो यमाय कुर्म्यमवपन्यञ्च मानवाः AV. 18,4,55. — Vgl उप्त fgg. und पथोप्त.

— caus. *säen, stecken, pflanzen:* सरित्तीरेषु कुद्दालैर्वापयिष्यन्ति चौषधीः MBh. 3,13031. वापित *gesäet* H. an. 3,293. fg. Med. l. 150. Varâh. Bṛh. S. 55,28.

— अधि *aufschütten, aufstreuen,* med. TS. 1,6,*e*,2. *an sich auftragen, — anbringen:* अधि पेशांसि वपते नृतूरिव ṚV. 1,92,4.

— अनु 1) *bestreuen* Nir. 2,22. — 2) med. *zerstieben machen:* क्रव्यादमग्निरित्तिकादधं ह्यानु वपते नडम् AV. 12,2,30. pass. *stieben:* अनु स्वधा पमुप्यते पवे न चर्कृषद्यो ṚV. 1,176,2.

— अप *zerstreuen, zerstören, verjagen* ṚV. 1,133,4. यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपत् 2,14,6. 8,85,9. दस्यूनां सेनाम् AV. 8,8,5. 19,36,4. यातूनाम् TS. 3,3,*e*,3.

— अपि *bestreuen, überstreuen* AV. 12,3,22. भस्मना पदम् TBr. 1,4,*e*,6. 3,*e*,2. Çat. Br. 12,4,*e*,4. — Vgl. अपिवाप.

— अभि *bestreuen, bedecken:* स्वप्नेनाभ्युप्ता चुमुरिं धुनिं च ṚV. 2,15,9. अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त 7,56,3.

— आ 1) *einstreuen, hineinwerfen; legen in, beifügen, beimengen:* आ यौ तुर्याम् AV. 11,1,29. 12,3,25. सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु VS. 35,5. Çat. Br. 2,5,*e*,11. तण्डुलान् *e*,4. 3,2,*e*,14. घृतान्याणौ 5,4,*e*,6. अङ्गारान् *e*,6,*e*,9. स्थाल्यामग्निम् 11,5,*e*,12. पात्र्याम् Kâtj. Ça. 2,4,21. 21,4,21. Âçv. Gṛhj. 1,7,5. 15. तिलान् 4,7,11. Kauç. 11. 14. 18. 88. कथं भूतानि पुनरात्मन्यावपेय *wie kann ich in mich hineinschaffen?* Çat. Br. 10,4,*e*,3. *hinstreuen:* अभ्यश्च वपचेभ्यश्च वयोभ्यश्चावपेदुषि MBh. 3,105 (= Mârk. P. 20,23). *ausgiessen:* वर्षमावपतो मेघे वीतं निवपतो वरम् 17341. 17340. — 2) *einschieben, einfügen:* तान्यत्तरेणावापमावपेत्तम् Âçv. Br. 6,19. सूक्तमधिगो Çat. Br. 13,5,*e*,15. Liṭj. 4,4,1. 6,6,17. Âçv. Ça. 2,16,1. 9. 7,2,16. तस्मिन्नन्या देवता आप्यते Nir. 12,5. — 3) *vollschütten:* पांसुभिरावपेत्तम् Varâh. Bṛh. S. 54,120. — 4) *unter (Mehrere) bringen, mittheilen:* वं कल्याण वसु विश्वमोषिषे ṚV. 1,31,9. सोमं राजन्संज्ञानमा वपेभ्यः AV. 11,1,26. समर्दम् 32. *darbringen, veranstalten:* मघासु श्राद्धमावपन् MBh. 13,4259. — Vgl. आवपन fgg., आवाप fg., ओप्य. — caus. 1) *beimischen, beimengen* Suçr. 1,162,11. 164,1. 2,436,9. — 2) *kämmen, ordnen* (das Haar): केशानावापयन्ती MBh. 1,819. दन्तपत्रिकया वेणीकृपेण संयतं केशानां कारयन्ती Nîlak. — Vgl. आवापन.

— अध्या *darauf streuen* Çat. Br. 3,3,*e*,13. — Vgl. अध्यावाप.

— अन्वा *beifügen* Kauç. 80.

— पर्या dass. Çat. Br. 6,6,*e*,*e*.

— प्रत्या *wieder dazu werfen* Kauç. 21.

— व्या scheinbar in der Stelle उदधिं व्यावपति ved. Cit. beim Schol. zu P. 3,1,34. 4,7,94. fehlerhaft für उदधिं व्यावयति TS. 3,5,*e*,2.

— समा *zusammenwerfen, vermengen; hineinschütten* Ait. Br. 7,5. संभाराम्याज्यो वा चमसे वा समावपेयुः 8,17. यज्ञतौ Çat. Br. 2,6,*e*,16. Âçv. Gṛhj. 1,10,9. 11. समोप्तधान Liṭj. 8,8,18. Kauç. 82. fg. स्थाल्यामाज्यं समावपेत् Gṛhjas. 1,106. चरावाज्यम् 2,7. Suçr. 2,347,6. 419,21. — caus. dass. MBh. 1,1111. Suçr. 2,65,13.

— उद् 1) *ausschütten, herausschaffen; ausscharren, ausgraben; wegschleudern:* पदिद्दासी निधिमिवार्यगूळ्हमुद्दर्शताद्रू पथुर्वन्दनाय ṚV. 1, 116,11. 117,5. निखातं वसूदिद्दपति दाशुषे 8,55,4. 10,39,5. वलगम् *einen Zauber heben* TS. 1,3,*e*,1. Çat. Br. 3,5,*e*,12. लाङ्गलमुद्दिदेपतु गामविम् AV. 3,17,3. 6,109,3. Çat. Br. 7,2,*e*,11. VS. 11,63. उखाम् Çat. Br. 8,5,*e*,10. fg. Kâtj. Ça. 16,4,8. प्रपदेन पांसून् Âçv. Ça. 4,4,3. भस्म Çat. Br. 6,6,*e*,1. कविः Kâtj. Ça. 2,4,17. Kauç. 61. — 2) *hinzufügen* (?) Weber, Gaut. 70. — Vgl. उद्वपन, उद्वाप. — caus. 1) *ausgraben lassen* Çat. Br. 3,6,*e*,27. fg. — 2) *ausschütten, herausnehmen* Çiraṇ. Gṛhj. 3,1.

— उप *aufschütten, anhäufen; beschütten, bedecken, einscharren* (Gegens. वप् mit उद्): पन्यत्कृत्यस्यामेव तदुपोप्यते *das wird in die Erde verscharrt* Çat. Br. 2,3,*e*,9. उत्तरवेदिम् TS. 5,2,*e*,6. TBr. 1,6,*e*,7. *e*, 3. चात्वालाद्दिक्षान् TS. 6,3,*e*,1. 5,*e*,2. Çat. Br. 6,5,*e*,10. Pâraṇ. Br. 14,12,6. 25,10,5. अपूपानां यमधर्यूरावृत्कार उपोप्येत् (so die Hdschrr., der Comm. hat die richtige Form उपवपेत्) *in einen Maulwurfshaufen einscharrt* Liṭj. 5,3,2. 18,15,16.

— नि 1) *hinschütten, hinwerfen; auftämmen* (bes. den Opferwall): धाना उत्तरवेदौ Çat. Br. 4,4,*e*,12. सिकताः, ऊषान् TBr. 1,1,*e*,1. धिष्ण्या न्युप्यन्ते 3,3,*e*,1. Çat. Br. 3,6,*e*,21. Kâtj. Ça. 8,6,15. 9,7,6. 18,6,8. उत्तरवेदिम् Çat. Br. 7,1,*e*,6. पुरीषम् 8,7,*e*,1. Kâtj. Ça. 5,3,28. Çat. Br. 12,5,*e*,13. यावत्येव निवपत्यन्यस्यात्तावदुद्धन्यात् 13,8,*e*,20. *e*,1. *e*,2. खरो Kâtj. Ça. 26,2,16. बलिम् Gobh. 3,7,11. Âçv. Gṛhj. 4,6,3. यंप्रयु न्युप्तः (सोमः) VS. 8,37. Çat. Br. 4,6,*e*,5. 12,8,*e*,3. चर्मण्यानडुहे सोमम् Kâtj. Ça. 7,6,1. न्युप्य पिण्डान् M. 3,216. 218. न्युप्य चैव निवापं तं भूतेभ्यो ऽपि R. Gorr. 2,56,29. निवपते चाग्निपूर्वं (so die ed. Bomb.) वै निवापे MBh. 13,4388. एतुदं वदरोन्मिश्रं पिण्याकं दर्भसंस्तरे । न्युप्य R. Gorr. 2, 111,35. 112,11. सरत्कारमञ्जरीः Kumâras. 4,38. बीजं निवपता वरम् *säen* MBh. 3,17341. 17340. Varâh. Bṛh. S. 55,30. — 2) *zu Boden werfen:* धन्यं तं धरमन्नि वपन्तु सेनाः ṚV. 2,33,11. Naigh. 2,19. VS. 16,52. ṚV. 4,16,13. — Vgl. निवपन, निवाप fgg.

— उपनि *dazu hinwerfen:* संभारान् Çat. Br. 3,5,*e*,14. 4,1,*e*,*e*. — Vgl. उपनिवपन.

— परिणि und प्रणि P. 8,4,17. Vop. 8,32. 134.

— सनि *zusammenwerfen:* सघोन् Ait. Br. 4,20. TS. 5,2,4,1. Çat. Br. 6,7,*e*,13. 7,1,*e*,38.

— निस् *herausschütten, — schöpfen, — nehmen;* dahor *ausscheiden für* (dat. gen.), *zutheilen, vertheilen* (bes. Fruchtkörner, die zu Opferzwecken aus einer grösseren Masse *ausgesondert werden*): निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः ṚV. 10,68,3. AV. 3,6,14. यावावेत्तवं पुरोळाशं निर्वपन्ति दीक्षणीयमेकादशकपालं सर्वाभ्य एवैनं तद्देवताभ्यो ऽनुसवं निर्वपन्ति

Ait. Ba. 1, 1. यस्यै स्थाल्यै प्रायणीयं निर्वपेत् 11. क्षत्रियातिथ्यं निरूप्यते 15. रूपस्य TS. 1, 1, 10, 3. 6, 6, 3. 2, 2, 5, 1. नाहमभागो निर्वप्स्यामि *so lange ich ohne Theil bin, werde ich nicht Andern austheilen* TBa. 3, 3, 6, 5. Âçv. Ça. 3, 10, 10. नवानां सवनीयानिर्वपेयुः *von neuer Frucht* 12, 8, 26. क्षविः Çat. Ba. 1, 6, 2, 19. 2, 2, 4, 6. fg. चरुम् 18. ब्रह्मोद्दनान् 13, 3, 6, 6. व्रीह्यम् Kâtj. Ça. 1, 3, 23. 2, 5, 9. स्थालीपाकम् Âçv. Gṛhj. 2, 2, 2. 1, 10, 6. 7. Kauç. 2. 67. fg. बकुदेवतामिष्टिं निर्वपेत् Çâṅkh. Ça. 3, 6, 1. 13, 29, 14. — पात्रेत्रे निर्वपति यज्ञ बीजम् MBu. 5, 1338. निर्वपेदुदकं भुवि M. 3, 214. निर्वाप पवित्रेषु निवापम् R. Gorr. 2, 56, 28. (यज्ञस्य) अयमुद्धृत्य क्षमाय भूतले निर्वपिष्यति 4, 61, 10. ग्रुनाम् u. s. w. निर्वपेद्भुवि M. 3, 92. 72. 220. MBu. 3, 1455. 13, 3342. Mârk. P. 29, 20. पिण्डान् M. 3, 215. 247. 9, 110. पुरोडाशांश्चरूंश्चैव 6, 11. Bhâg. P. 4, 7, 17. 13, 35. चरुपुरोडाशान् 7, 12, 19. क्षविः 5, 19, 26. न च तत्स्वयममोघाधिधिवयन्न निर्वपेत् *wovon er nicht zuvor einen Theil* (für die Götter u. s. w.) *ausgeschieden und ihnen dargebracht hat* MBu. 3, 104 (= Mârk. P. 29, 16). अथ ते निर्वपिष्यन्ति (निर्वर्तयिष्यन्ति die neuere Ausg.) शत्रुसैन्यानि दानवाः Harîv. 13756. मायाकम्पनं तेन निरुवाप महागणम् Bhaṭṭ. 14, 86. आद्धम् *darbringen* M. 3, 281. Verz. d. Oxf. H. 40, a, N. 1. इष्टोः M. 4, 10. 11, 27. महायज्ञान् 6, 5. Bhâg. P. 11, 18, 7. यज्ञ नो निर्वपेत्कृषिम् (so die ed. Bomb.) *so v. a. und der nicht Ackerbau treibt* MBu. 5, 1292. निरूप्य fehlerhaft für निरूप्य M. 6, 38. Bhâg. P. 1, 15, 39. 8, 16, 51. 8, 23, 9. निरूप्यते fehlerhaft für निरूप्यते 4, 1, 61. — Vgl. निरूप्ति fg., निर्वपण, निर्वाप, निर्वाप्य, पशुनिरूप्तम. — caus. *ausseäen:* त्वया कीरङ्गोतिबीजं निर्वापितम् Pañcat. 85, 20. (für die Götter u. s. w.) *ausscheiden, austheilen:* घनिर्वाप्य समभन्वे मृतो ज्ञायति वायसः MBu. 13, 5163. — Vgl. 1. निर्वापण und das caus. von वा mit निस्.

— घनुनिस् *nachher herausnehmen, — vertheilen* u. s. w. TS. 2, 2, 8, 4. सौर्यमेककपालम् 3, 12, 2. 5, 2, 2. द्वादशसु रात्रीघनुनिर्वपेत् TBa. 1, 1, 6, 7. 5. पशौ पुरोडाशमनुनिर्वपन्ति *nach dem Thiere d. h. dessen Schlachtung findet eine Austheilung des P. Statt* Ait. Ba. 2, 8. Çat. Ba. 3, 8, 2, 1. 11, 1, 2, 1. 13, 3, 6, 1. स एतं वैमृधं पूर्णमासे ऽनुनिर्वाप्यमपश्यत् निरवपत् TS. 2, 3, 2, 1. — Vgl. घनुनिर्वाप्या.

— घभिनिस् *zutheilen zu einem Andern hin*, in doppelter Weise construirt. प्रणयणीयस्य निष्क्राम उदयनीयमभि निर्वपति *zu dem Rest des Pr. hin* TS. 6, 1, 3, 5. °निष्कासमुदयनीयेनाभिनिर्वपेत् Ait. Ba. 1, 11.

— परिनिस् s. परिनिर्वपसु.

— प्रतिनिस् *als Gegenwerk austheilen* u. s. w.: घधरकाल्या प्रति निर्वपेदार्तव्ये यजमाने TS. 2, 2, 6, 4. TBa. 1, 7, 3, 7. Kauç. 48.

— सनिस् *zusammen austheilen* Ait. Ba. 3, 48.

— परा *bei Seite werfen, — legen, beseitigen:* Leichname AV. 18, 2, 31. Pfeile VS. 18, 9. दत्तान् Çâṅkh. Ba. 6, 23. परा वा एष यज्ञं पशून्वपति यो ऽग्निमुद्धामयति TS. 1, 5, 3, 1. यद्वो क्रुद्धः परोवपं मन्युना पदवित्त्या (अग्नेः) 2, 2. परा वा एषो ऽग्निं वपति यो ऽप्सु भस्म प्रवेशयति 5, 2, 3, 5. Çat. Ba. 2, 3, 3, 3. 6, 6, 3, 1.

— परि *bestreuen:* पांसुभिः Lâṭj. 10, 15, 16. — Vgl. परिवाप, पर्युप्ति.

— प्र *ausstreuen, ausschütten, ausspritzen:* मित्रः प्र तमा सृजतमीमि RV. 10, 73, 5. वसून्यादाय समुद्रं प्रेप्यन्त Ait. Ba. 5, 11. व्रीह्यवयोः Pân. Gṛhj. 2, 13. इन्द्रं प्रोर्णोत्त प्रवपन्तमर्णवम् RV. 10, 115, 3. — शिरांसि पादपरलाणां वीरुधत्प्रवपन्मुहुः MBu. 3, 13725. वीरुधत्प्रवपञ्छतान् 5, 2109. 3, 1931. 5, 655. घतपूगान् 3, 1357. *bestreuen:* तत्रियान्प्रवपञ्छरैः 6, 5084. *hinwerfen auf, in:* प्रवपाणि (vgl. P. 8, 4, 16) शिरो भूमौ वानस्य Bhaṭṭ. 9, 98. प्रवपाणि वपुर्वक्त्रे 20, 36. — Vgl. प्रवपण. प्रवापिन्. — caus. *ausstreuen, ausschütten, ausspritzen:* प्रैवाग्रेण वाययति रेतः सोम्येन दधाति TS. 2, 4, 6, 1. 6, 6, 3, 1. Kâṭh. 11, 2. Vgl. प्रवापयितृ.

— घभिप्र med. *sich auf Jmd stürzen:* यं मृधो ऽभि प्रवपेरन् TS. 2, 2, 2, 1.

— प्रति 1) *einstecken, einlegen, einfügen:* मुकुटप्रत्युप्तमुक्ताकण Râǵat. 3, 329. दुर्नीतभर्तुरङ्केषु प्रत्युप्तामिव वल्लभाम् (वपश्यत्) 307. प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः Uttarar. 68, 1 (87, 3). *bestecken, belegen:* मौलिमत्तगतप्तनम्। प्रत्यूप्तः पद्मरागेण Raghu. 17, 23. मकरोरुत्प्रत्युप्त Daçak. 90, 8. — 2) *auffüllen:* भस्मना ग्रुनः पदं प्रतिवपेत् Âçv. Ça. 3, 10, 14. — 3) *hinzufügen* TBa. 1, 2, 6, 5. — Vgl. प्रतीवाप. — caus. *zugiessen* Suçr. 1, 33, 4.

— वि *zerstreuen, verwühlen:* व्युप्तकेश Bhâg. P. 4, 2, 14. 5, 10.

— सम् *einschütten, hineinbringen; zusammenthun:* Mehl in einen Topf VS. 1, 21. TS. 6, 1, 6, 4. घाहवनीयम् Âçv. Ça. 3, 10, 9. Çat. Ba. 6, 7, 3, 13. 7, 1, 1, 28. 12, 3, 3, 1.

वर्प (von 2. वप्) nom. ag. gaṇa पचादि zu P. 3, 1, 134. *Stenzler* VS. 30, 7.

1. वर्पन (von 1. वप्) 1) n. *das Scheeren, Rasiren* H. 923. an. 3, 411. Med. n. 120. Hall. 4, 36. Çat. Ba. 3, 1, 2, 1. TS. 2, 7, 19, 1 (°विधि Dez. dieses Anuvâka). M. 5, 140. 11, 151. Harîv. 7791. Bhâg. P. 1, 7, 57. Vop. 7, 91. घ° Pân. Gṛhj. 2, 1. केश° Âçv. Gṛhj. 1, 22, 23. Kâtj. Ça. 4, 7, 11. 13, 4, 6. 15, 8, 28. 22, 6, 13. केशश्मश्रु° Râǵa-Tar. 6, 100. — 2) f. ई *Barbierstube* H. 1000.

2. वपन (von 2. वप्) n. 1) *das Säen* H. an. 3, 411. Med. n. 120. °विधि Verz. d. Oxf. H. 325, a, 8. धान्य° 80, b, 25. बीज° Kâsik. 12, 5. Pân. Gṛhj. 2, 13. — 2) *das Aufstellen, Ordnen:* भाण्ड° Med. p. 14.

1. वपनीय (von 1. वपन) in केश°.

2. वपनीय (von 2. वप्) adj. *zu säen;* n. impers.: घायुरिच्छता न कदाचित्परज्ञायां वपनीयम् Kull. zu M. 9, 41.

1. वर्पा f. gaṇa भिदादि zu P. 3, 3, 104. *Eingeweidehaut, Netzhaut, omentum* (= मेदस् AK. 2, 6, 2, 13. H. 624. an. 2, 200. Med. p. 11. Hall. 3, 13) VS. 12, 103. ह्रार्षस्य 21, 41. 35, 20. पुरा नाभ्या घपिशसो वपामुत्खिदतात् Ait. Ba. 2, 6. 9. 12. fg. TS. 2, 1, 2, 4. वपामेकः (प्राणः) परिशये 6, 3, 2, 5. घयं वा एतत्पशूनां यद्वपा 6, 5. मेदसा वपया पत्नीधम् TBa. 2, 8, 2, 4. Çat. Ba. 3, 8, 2, 19. 26. 4, 5, 2, 1. वपायै 6, 13. वपाकृति Ait. Ba. 2, 14. °कोम Kâtj. Ça. 13, 4, 6. 24. Gobhil. 2, 81. वपाक्ते = वपाकोमाक्ते Kâtj. Ça. 20, 7, 16. 21, 2, 7. Das Ross hat keine वपा Çat. Ba. 13, 3, 2, 20. Kâtj. Ça. 20, 7, 7. वपा वपावतो जुहोति वसमुत्कर्तमवपाकानाम् Çat. Ba. 13, 7, 1, 9. Kâtj. Ça. 21, 2, 5. घप्यमाणा Âçv. Ça. 3, 4, 1. Gṛhj. 2, 4, 13. 4, 3, 26. वपया सप्तच्छिद्रया मुखं छादयति *das Todten* Kauç. 81. Kâtj. Ça. 25, 7, 36. वपामुत्खनति Kauç. 44. वपोद्धरण Pân. Gṛhj. 3, 11. M. 12, 63. Jâǵ. 3, 94. MBu. 1, 4572. 3, 10439. 7, 1976. 14, 2646. fg. R. 1, 13, 39. fg. (35. 37 Gorr.). वपाधिश्रयणी *die Bratspiesse für die Netzhaut* Z. d. d. m. G. 9, LXXV. वपाश्रपणी *die zum Ausbraten der Netzhaut dienenden Geschirre* Çat. Ba. 3, 6, 2, 10. 8, 2, 17. 28. TS. 6, 3, 6, 2. Kâtj. Ça. 6, 5, 7. 26. — Vgl.

अवपाक, प्रवप.

2. वपा (von 2. वप्) f. 1) *Aufwurf —, Haufen der Ameisen:* वल्मीकवपा TS. 5,1,2,5. TBa. 1,1,2,4. Âçv. Ça. 3,10,23. Çat. Ba. 6,3,2,5. Kauç. 8. — 2) *Höhlung, Loch* AK. 1,2,4,2. H. 1364. H. an. Med. Halâ. 3,2. Vgl. मत्कावप.

वपाटिका f. = वप° Suçr. 2,121,8.

वपावत् (von 1. वपा) adj. *mit einer Netzhaut versehen, — umwickelt u. s. w.:* वपावत्ते नाग्निना तप्तस्य RV. 5,43,7. VS. 20,37. Çat. Ba. 13,7,1, 9. Kâty. Çr. 21,2,5. Schwerlich richtig in RV. 6, 1, 3; vgl. ebend. 2,5.

वपिल (von 2. वप्) m. *Vater* Uṇâdis. im ÇKDa.

वपु f. N. pr. einer Apsaras MBh. 1, 4819. Mârk. P. 1, 42. fgg. Vgl. वपुस्. — प्रूरास्थिवपु MBh. 7, 661 fehlerhaft für प्रूरास्थिचय, wie die ed. Bomb. liest.

वपुन 1) m. *Gottheit* Çabdar. im ÇKDa. — 2) n. *knowledge* Wilson. — Fehlerhaft für वपुस्.

वपुर्धर (वपुस् + धर्) adj. 1) *Schönheit besitzend, mit Schönheit ausgestattet* MBh. 13, 2333. — 2) *verkörpert, leibhaftig:* तपस् Bhâg. P. 3, 18, 29.

वैपुष (von वपुस्) 1) adj. (f. ई) = वपुस्. यद्या न चित्रा वपुषीव दर्शता RV. 10, 75, 7. — 2) f. या = रूपवती (?) Bhâvapr. im ÇKDa. — 3) n. वपुषाय so v. a. वपुषे *zum Wunder, wunderbar zu schauen:* स्रोतारम् रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतम् RV. 3, 2, 15.

वैपुष्टम (superl. von वपुस्) 1) adj. *überaus wundersam, — schön* AV. 5, 5, 6. — 2) f. या a) *Hibiscus mutabilis Lin.* Garâdh. im ÇKDa. — b) N. pr. der Gattin Ganamegaja's MBh. 1, 1809. fgg. 3838. Harîv. 11236. 11245.

वपुष्टर s. u. वपुस् 1).

वपुष्मत m. N. pr. eines Fürsten von Kuṇḍina Mârk. P. 8. 656, Z. 6. aus metrischen Rücksichten वपुष्मतम् st. वपुष्मलम्.

वपुष्मत् (von वपुस्) 1) adj. a) *von schöner Gestalt, schön;* von Personen M. 7, 64. MBh. 1, 1149. 7695. 3, 16735. 13, 3862. R. 5, 2, 3. 7, 41, 19. Vaitân. Bâu. S. 2, 8. 3. 69, 15. Mârk. P. 60, 1. 98, 5. 132, 47. von Leblosem: मञ्चवाट Harîv. 4533. छत्र 10933. गिरि 12392. विमान R. 2, 64, 18. — b) *verkörpert, leibhaftig:* पुण्यमेचय Kir. 2, 56. — 2) *das Wort* वपुस् *enthaltend* Âçv. Ba. 5, 6. — 3) m. N. pr. a) eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Harîv. 11542. — b) eines Sohnes des Priyavrata VP. 162. 198. Mârk. P. 53, 13. 26. — c) eines Fürsten von Kuṇḍina Mârk. P. 134, 33. 57. 135, 9. — 3) f. वपुष्मती N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2629.

वपुष्य (von वपुस्, °र्यति etwa *sich wundern, bewundern:* देवासो अग्निं जनिमन्वपुष्यन् RV. 3, 1, 4. समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा 8, 31, 9.

वपुष्य (wie oben) adj. *wundersam, wunderbar schön:* सुधृष्टमे वपुष्यं न रोदसी RV. 1, 160, 2. (अग्निः) रोदसिप्रा वपुष्या विभावा 4, 1, 3. 12. 5, 1, 9. oxyt.: वर्षुर्वपुष्या सचतामियं गीः 1, 183, 2.

वैपुस् Uṇâdis. 2, 118. 1) adj. *wundersam, bes. wunderbar schön:* परि वामभ्रा वपुषः पतंगा वयो वक्तु RV. 1, 118, 5. स मे वपुश्चदृषदश्चिनोर्यो रयो विश्वकीन् 6, 59, 5. तदिन्मे कृत्महपुषो वपुष्टरम् *allerwunderbarst* 10, 32, 3. 8, 77, 1. देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम् 5, 62, 1. स्वर्ण दृभि मा वपुर्दृशये निनीयात् 7, 88, 2. Agni 8, 19, 11. 58, 13. इदं वपुर्निवचनं जनासः *das ist eine erstaunliche Rede* 3, 47, 5. compar. वपुष्टर AV. Paipp. 2, 83, Schol. इन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः RV. 9, 77, 1. 10, 32, 3. वपुष्टर betont 2, 3, 7 vielleicht nur aus Anlass des parallel stehenden विडुष्टर. superl. वपुष्टम s. bes. — 2) n. a) *Wunder, Wundererscheinung; ungewöhnlich schöne Erscheinung* oder *Gestalt, species* Naish. 3, 7. पुपूषतः सवपसा तदिदर्पुः RV. 1, 144, 3. भिये सुदृशो वपुरस्य मर्गाः 4, 23, 6. 44, 2. 5, 44, 8. वपुर्न तस्थिकितुषे चिदस्तु 66, 1. 8, 46, 28. दर्शत 7, 66, 14. 10, 140, 4. कृष्णेभिरक्षाग्ने रुशदिर्वपुर्भिरा चरतो यन्यान्या 1, 62, 3. 3, 1, 8. 18, 5. 39, 3. 55, 9. नानी चक्राते यम्याऽ वपूंषि तयोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत् 11. पुरुद्रयी 14. 57, 3. 4, 7, 9. AV. 5, 1, 3. 8. 6, 72, 1. dat. वपुषे *zum Wunder, wunderbar zu schauen* (wie θαῦμα ἰδέσθαι bei Homer): चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते RV. 1, 64, 4. 119, 5. 4, 23, 9. प्र वां वयो वपुषे ऽनुं पप्तन् 6, 63, 6. 5, 33, 9. 73, 3. बळित्था तद्वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः 1, 141, 1. स्वर्ण चित्रं वपुषे विभावम् 148, 1. — b) *schönes Aussehen, Schönheit;* = शस्ताकृति H. an. 2, 591. Med. s. 35. = भव्याकृति Viçva bei Uṇâdis. शिवमापुर्वपुरनामयम् Çiç. Gaṇ. 6, 6. Hierher etwa auch VS. 30, 14. बिभर्षि परमं वपुः MBh. 3, 2588. लोके स्वर्के वपुः 2997. वपुषा पुत्रः 13, 2819. वपुषाप्सरोपमा 2816. वपुःपुत्रधनाढ्या Harîv. 7881. MBh. 3, 2146. 2959. दिव्य° R. 1, 1, 54. Spr. 703. Kathâs. 4, 42. Suçr. 1, 378, 17. Çiç. 16. Weber, Rigat. Up. 286. (रथम्) ज्राज्वल्यमानं वपुषा R. 6, 19, 49. भ्राजमाना तवात्यर्थं दधार परमं वपुः (सभा) MBh. 2, 31. चान्द्रमस 12, 9083. — c) *Aussehen, Gestalt:* (रासभः) दर्शयन्दारुणं वपुः Spr. 3254. वृद्धवपुर्धारिन् LA. (III) 86, 12. कृत्वा श्येनवपुः Kathâs. 7, 39. लिखितवपुषो शङ्खपद्मौ Mudr. 78. धृतिवपुष्टेन लोकस्य विद्रुपमभूद्वपुः Harîv. 3907. परिघः सतडातुल्यवपुः Vaitân. Bâu. S. 30, 25. वपुषान्वितः *eine best. Gestalt habend, deutlich sichtbar* 26. — d) *Natur, Wesen:* सप्तानां लोकपालानां वपुर्धारयते नृपः M. 5, 96. तत्रभूद्वपुर्वत्तुरुषो नाम प्रजापतेः 10, 9. 12, 26. — e) *Leib, Körper* AK. 2, 6, 3, 21. H. 564. H. an. Med. Halâ. 2, 255. 272. Viçva s. a. O. दीप्यमानः स्ववपुषा M. 2, 232. मानुष MBh. 1, 5974. 3, 2798. मलसमाचित 2701. Suçr. 2, 158, 10. Çiç. 17. 38. Raghu. 2, 18. 47. कुब्जीभूत Spr. 4965. वपुर्ललाटम: स्वेद: Sin. D. 63, 5. वपुषि तनुता Duṇḍhas. 72, 10. मृणालगौर° Vaitân. Bâu. S. 38, 26. 64, 1. स्त्री° Bâu. 18, 3. 24, 1. धूसरतामवपुषी adj. f. Kathâs. 2, 51. einer Wolke Megha. 15. 33. 61. सिन्धोः Spr. 419. — f) *Wasser* Naish. 1, 12. — g) N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's VP. (II) 1, 109. Mârk. P. 50, 21. 37. — Vgl. पूर्ण°, मेघ°.

वपुस्तात् adv. von वपुस् AV. Paipp. 2, 83, Schol.

वपोदर (1. वपा + उदर) adj. *fettleibig* (Sây.): Indra RV. 8, 17, 3.

1. वपृ und वप्तृ (von 1. वप्) nom. ag. *Scheerer* RV. 10, 142, 4. AV. 8, 2, 17. TBa. 1, 5, 6, 3. Âçv. Gṛhj. 1, 17, 16. Pâr. Gṛhj. 2, 1.

2. वप्तृ (von 2. वप्) nom. ag. 1) *Säemann* Mân. 1. 53. M. 3, 142. 9, 54. MBh. 13, 4314. Mudrâ. 2, 3. — 2) *Befruchter, Erzeuger, Vater* Taitt. 2, 6, 7. H. 556. Med. Halâ. 2, 249. Vgl. प्रप्यातवप्तृक. — 3) m. = कवि Garâdh. im ÇKDa.

वप्तव्य (wie oben) adj. *zu säen:* यद्या बीजं न वप्तव्यं पुंसा परपरिग्रहे M. 9, 42. तत्र विद्या न वप्तव्या 2, 112. n. impers.: आयुष्कामेन वप्तव्यं न ज्ञातु परयोषिति 9, 41.

वप्य und वप्यक m. N. pr. eines Fürsten LIA. II, 34. fg. Journ. of the Am. Or. S. 5, 318.

वप्पदेवी N. pr. einer Fürstin Rāǵa-Tar. 3,289. वप्पदेवी 281.

वप्पिय m. N. pr. eines Fürsten Rāǵa-Tar. 4,490. 492. 688. °क 292.

वप्पीह m. *Cuculus melanoleucus* H. 1329.

वप्पदेवी s. वप्पदेवी.

वप्पनील N. pr. eines Landes Rāǵa-Tar. 8,1994.

वप्र (von 2. वप्) Uṇādis. 2,27. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. n. Sidd. K. 249,*b*,7. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) m. n. *Aufwurf von Erde, ein aufgeschütteter Erdwall* (zur Vertheidigung von Städten und Häusern); = चय AK. 2,2,2. Trik. 3,3,369. H. 980. an. 2,452. Med. r. 83. = प्राकार H. an. Hall. 2,432. Dharaṇi und Rantideva bei Uéval. Vaié. bei Mallin. zu Kir. 7,11. Sâdâna bei Mallin. zu Çiç. 3,37. °क्रीडा *die im Aufwerfen von Erde bestehende Belustigung* (eines Elephanten) Megh. 2. Mallin. zu Kir. 5,42. °क्रिया dass. Ragh. 5,44. भूकैलासाभ्रवप्रपङ्क (चित्रकृत्) 13,17. वप्राभिघात (so der Comm.) Kir. 5,42. वप्राणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् Bhâg. P. 10,36,2. प्राकारवप्रसंबाधा (पुरी) MBh. 3,16056. 4,296. 7,6904. 8,2035. 9,1795 (तीणवृत्ति: st. तोणवप्राम् ed. Bomb.). 13,1671. R. 5,9,15. 6,12,22. 37,13. Ragh. 1,30. Kumâras. 6,38. Çiç. 3,37. शिलावप्र Râǵa-Tar. 6,307. सेतुसेधवप्रप्राकार (so ist st. सेतुसेधवप्रप्राकारं च zu lesen) Mâlav. P. 49,13. प्रोत्तुङ्गवप्रप्राकारमालिनी (पुरी) 66,9. H. 62. उद्यान° Varâh. Bṛh. S. 5,77. MBh. 12, 3328. — 2) m. n. *ein hohes Flussufer*, = रोधस्, तट Trik. H. an. Med. Dharaṇi und Rantideva bei Uéval. Vaié. bei Mallin. zu Kir. 7,11. MBh. 1,3810. 6136. 13,1957. नदी° R. 2,53,23. Kir. 7,11. — 3) m. n. *Abhang eines Berges*, = सानु Hall. 3,24. Sâdâna bei Mallin. zu Çiç. 3,37. Kir. 5,36. 6,8. सुमेरुवप्र: Çiç. 3,37. — 4) *Graben:* धरा पयःपरिपूर्णवप्रा Varâh. Bṛh. S. 19,16. — 5) *Kugelzone* Goladhy. 3,39. °फल 61. °क्षेत्रफल dass. 60. — 6) m. n. *Feld (das besäet wird)*, = केदार, क्षेत्र AK. 2,9,11. Trik. 3,2,9. 3,369. H. 965. H. an. Med. Hall. 2,419. Dharaṇi, Rantideva und Vaié. a. a. O. — 7) m. n. *Staub* Trik. 3,2,9. 3,369. H. an. Med. — 8) n. *Blei* AK. 2,9,106. H. 1041; vgl. वर्ध. — 9) m. n. = निष्कुट, वनस्थ u., वाटिका (?) und पाटीर Gaṇḍav. im ÇKDr. — 10) m. *Vater* (vgl. 2. वप्तृ) Trik. 3,3,369. H. an. Med. Dharaṇi, Rantideva und Vaié. a. a. O. — 11) m. = प्रजापति Uṇādis. im Śabdakalpadr. nach ÇKDr. — 12) m. N. pr. *a*) eines Vjâsa VP. 273. — *b*) eines Sohnes des 14ten Manu Hariv. 495. वृद्ध die neuere Ausg. — 13) f. आ *a*) वप्रावत् adv. Kâṭy. Çr. 18,3,4. वप्रा = यज्ञियक्षेत्रकेदार Karka, = क्षेत्रवपन Mahidh. zu VS. 18,30. *wie bei einem Beete* d. h. *wie beim Ebnen, Herrichten des Platzes für das Feuer.* — *b*) *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Rozb. Râǵân. im ÇKDr. — *c*) N. pr. der Mutter Nimi's, des 21ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi, H. 40. — Vgl. रोधोवप्र.

वप्रक m. = वप्र 5) Goladhy. 3,39.

वैप्रि = क्षेत्र nach Nâgânanda bei Uéval. zu Uṇâdis. 4,66. = दुर्गति, समुद्र Uṇādis. im Śabdakalpadr. nach ÇKDr.

वप्सस् nach Sây. so v. a. वपुस्, रूप, was ganz unwahrscheinlich ist. उत स्या वो रुशन्तो वप्सो गोष्वियर्क्षु सर्गेषु पिन्वते नॄन् ॥ V. 4,181,8.

वध् (v. l. वध्, वैधति गतौ) Dhâtup. 15,49. अवधीत् P. 7,2,2, Schol.

वम् वैमति उद्गिरणे Dhâtup. 20,19. वैमिति ved. P. 7,2,34. अवमीत् s. अवाम, अवमतुस्, अवमिथ 6,4,126. Vop. 8,52. 126. वमुस्, वेमिथ Bhâṭṭ-Vṛtti in Sidd. K. zu P. 6,4,126. Vop. 8,52. 126. अवामि 11,7. 24,6. वमित्वा und वान्त्वा, वमित und वान्त 26,103. fg. *erbrechen, ausspeien; Etwas von sich geben, entlassen:* एतद्वो पणयो वमितुम् *sie werden das Wort ausspeien* d. h. *von sich thun wollen, bereuen* ṚV. 10,108,8. चतुःप्रस्रो ऽवमीद्गार एतत् 4,58,2. TS. 2,3,2,6. Çat. Br. 3,4,4,9. Sûça. 1, 38,21. 101,16. वमन्ता रुधिरं बहु MBh. 1,1170. Hariv. 15919 (अव° mit der neueren Ausg. zu lesen). R. 1,29,26. 3,8,9. Bhâg. P. 2,10,23. Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,30 (vgl. Mânk. P. 43,4). वेमुश्च केचिद्रुधिरम् Mânk. P. 82,57. ववमू रक्तम् Bhaṭṭ. 14,30. वमित्वा M. 4,121. वमतो पावकं मुखात् R. 3,29,6. मुखै: Spr. 4501. रक्तं चावमियुर्मुखै: Bhaṭṭ. 15,62. मुखतो वमत्यो वह्निमुल्बणम् Bhâg. P. 3,17,9. रक्तं त्रणैर्वमन् Kathâs. 71, 86. Bhaṭṭ. 9,10. समर्थस्तं क्रोधविषं वमतो MBh. 3,15658. घरणो वमतो ऽग्निं कृपातिभि: Bhâg. P. 4,10,26. नापीडिता वमत्युग्रैरन्तःसारम् — दुष्टव्रणा इव प्रायो भवन्ति नियोगिनः Spr. 1335. किमाग्नेयो यावा निकृत इव तेजांसि वमति Uttarâm. 109,12 (148,8). Spr. 3062. वमति वसुधा भस्मनिकरम् Varâh. Bṛh. S. 27,2. वक्रेतरायैरकै: — वारिलवान्वमन्ति Ragh. 16,66. हृदयनिकृतं भावाकूतं वमद्भिरिवेक्षणै: Spr. 230. मुकुलैर्मणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम् 247. partic. वान्त P. 7,2,16, Sch. 1) *ausgebrochen, ausgespien* AK. 3,4,58. Ait. Br. 3,46. M. 4,132. यत्रा स्वं वान्तमश्नाति श्वा वै नित्यमभूतये। एवं ते वान्तमश्नन्ति स्ववीर्यस्योपसेवनात् ॥ MBh. 5,1608. Mânk. P. 43,4 (vgl. Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,30). वान्ताशिन् M. 3, 109. Bhâg. P. 7,15,36. वान्ते wenn man vomirt hat Mânk. P. 34,70. 82. वान्त *was man von sich gegeben —, entlassen hat:* °वृष्टि (मेघ) Megh. 20. धारानिपातै: सक्तं किं नु वान्तशब्दो ऽयम् Spr. 1603. °भाव्य so v. a. *herausgefallen* Ragh. 7,6. — 2) *der vomirt hat* M. 5,144. Sûça. 2,138, 19. — Vgl. दुर्वान्त.

— caus. वामयति und वमयति (mit Präpp. nur वमयति) Dhârtup. 19, 63. *ausspeien machen, Erbrechen bewirken:* वा° Sûça. 1,42,13. 101,16. 158,11. 2,174,14. Verz. d. Oxf. H. 304,*b*,27. 307,*a*,29.

— अभि *bespeien, anspeien* TS. 6,3,2,4. Çat. Br. 3,8,2,11.

— आ, आवमत् Hariv. 15919 *fehlerhaft für* अवमत्, wie die neuere Ausg. liest.

— उद् *ausbrechen, ausspeien; Etwas von sich geben, entlassen* TS. 2,3,2,6. वक्त्राच्छोणितमुद्वमन् MBh. 3,15729. R. 3,29,3. कर्कोटविषं तीव्रं मुखात्सततमुद्वमन् MBh. 3,2838. वाष्पम्, ऊष्माणम् P. 3,1,16, Sch. क्रोधं स्फुलिङ्गमिव दृष्टिभिरुद्वमन्तम् Prab. 75,6. सा तत्संभृतो वह्नि। उद्वामेन्द्रसिक्ता भूर्विलमग्नाविवारगी Ragh. 12,3. (अनल:) उद्वाम च गङ्गायां तं गर्भम् Kathâs. 20,86. उद्वमन्प्रवयंश्चैव (*aus dem Köcher herausnehmend* nach Nîlak.) बाणान् MBh. 3,1931. तदस्ति न किमप्येको यदिदं नोद्वमन्ति स्त्रिय: von *sich geben* so v. a. *anstellen, vollbringen* Kathâs. 47,120. उद्वान्त *ausgespien, erbrochen* AK. 3,2,46. H. 1495. an. 3,253. Med. t. 101. उद्वमित dass. ebend. — Vgl. उद्वमन, उद्वान्त fg.

— निस् *ausspeien, auswerfen:* शोणितम् MBh. 7,3376. रोषन्नं वायुम् Hariv. 3661. सा (बडवा) तन्निरवमच्चक्षुर्भ्यां नासिकाभ्यां विवस्वत: 600.

— विनिस् dass.: रुधिरं श्वेताभि: स विनिर्वमन् R. 6,76,12.

— परा *wegspeien* Kâṭh. 11,1.

वर्म (von वम्) m. = वाम gaṇa श्वलादि zu P. 3,1,140.

वमथु (wie eben, m. 1) *Erbrechen* AK. 2,6,2,6. H. 469. an. 3,321.

Mbh. th. 23. Suçr. 1,21,16. 135,14. 245, 15. 2,470,17. — 2) *das vom Elephanten aus dem Rüssel gespritzte Wasser* AK. 2,8,2,3. H. 1223. H. an. Med. Halâj. 2,64. — 3) = काश (काम *Husten?*) H. an.

वमन (wie oben) 1) n. *a) Erbrechen* H. 469. an. 3,410. Med. n. 121. Suçr. 1,38,20. 75,20. 99,17. °द्रव्य *Brechmittel* 133,19. 152,3. 158,7. 160,9. — LA. (III) 13,19. Verz. d. Oxf. H. 307, *a*, 27. *das Vonsichgeben, Ausstossen, Entlassen:* स्वर्गाभिस्यन्दवमनं कृतेव Raghu. 15,29 = Kumâras. 6,37. — *b) Vomitiv* Suçr. 1,128,17. 160,12. Çârîr. Saṁh. 1,4,7. Kathâs. 64,17. 108,79. — *c)* = घर्घर H. an. Med. — *d)* = घाङ्कृति Viçva im ÇKDa. — 2) m. *a) Hanf* Râgân. im ÇKDa. — *b)* pl. N. pr. eines Volkes Mâns. P. 58,35. — 3) f. ई *Blutegel* Râgân. im ÇKDa.

वमनीय (wie oben) 1) adj. *auszubrechen, auszuspeien.* — 2) f. या *Fliege* Râgân. im ÇKDa.

वमि (wie oben) 1) f. (auch वमी) *Erbrechen, Uebelkeit* AK. 2,6,2,6. H. 469. Med. m. 29. Suçr. 1,119,16. 137,14. 201,17. 263,21. 2,279,2. 12. 423,9. 12. 491,13. 15. 19. 493,6. Vgl. यत्तर्वमि (wohl *Aufstossen*). — 2) m. *a) Feuer* H. ç. 167. Med. — *b)* = घूर्त Çabdar. im ÇKDa.

वमितव्य (wie oben) adj. *auszubrechen, auszuspeien* Kull. zu M. 11,160.

वर्मिन् (wie oben) adj. *auszubrechen —, auszuspeien pflegend* P. 3,2,187.

वम्म m. = वंश Çabdar. im ÇKDa.

वम्माग N. pr. einer Gegend: °देश Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,11.

वर्म 1) m. *Ameise:* पदक्युपनिक्किका पहवो यतिसर्पति RV. 8,91,21. 1,51,9. Hauffiger वर्मी f. Naigh. 3,29. Nir. 3,20. H. 1208. Halâj. 3,22. वमीभिः पुत्रमघुवो यदानम् RV. 4,19,9. VS. 37,4. TBa. 1,2,1,3. Çat. Ba. 14,1,1,3. 14. °कूट n. *Ameisenhaufen* H. 971. Halâj. 3,22. — 2) m. nach dem Comm. N. pr. eines Mannes RV. 1,51,9. 112,15. 10,99,5. ein Liedverfasser Vamra Vaikhânasa wird zu 10,99 angenommen. — Vermuthlich etymologisch verwandt mit वल्मीक, μύρμηξ und *formica.*

वमक m. *Ameischen:* वमकः पडिभरूपं सर्पदिन्द्रम् RV. 10,99,12. ein Kurzwaarenmann Naigh. 3,3.

वय्, वयते (गतौ) Dhâtup. 14,2. — वयति s. u. वा.

वय (von वा, वयति) nom. ag. f. वयी *Weberin:* उपासानक्ता वय्येव रण्वते । तन्तुं ततं संवयन्ती RV. 2,3,6. — Vgl. चतुर्वय.

वयन n. nom. act. von वा, वयति Vop. 26,171.

वयत् partic. praes. von वा, वयति; angeblich m. N. pr. eines Mannes Sây. zu RV. 7,33,2. — Vgl. वायत.

वयम् *wir* s. u. अस्म.

1. वयस् n. *Geflügel, Vogel,* namentlich *kleinere Vögel* AK. 2,4,2,232. H. 1316. an. 2,390. Med. s. 34. Halâj. 2,82. AV. 3,21,2. 5,39,1. सप्तशतं वयः 7,96,1. वयांसि हंसा या विदुर्यांश्च सर्वे पतत्रिणः 8,7,24. 11,1,2. हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि 24. 10,8. 12,1,5. TS. 3,1,4,1. पुनर्प्रवयांसि वयांसि 5,2,8,1. 5,2,2. वयो वा अग्निः 7,6,1. वयं एवैनं कृत्वा सुवर्गं लोकं गमयति TBa. 2,2,6,4. 3,2,2. निर्ऋतेर्वा एतन्मुखं यद्वयांसि यद्वयुनयः Âit. Ba. 2,15. 3,31. Çat. Ba. 1,5,4,5. 3,3,4,15. 4,1,2,26. श्येनो ऽग्निष्ठिका वयसां राजा 12,7,1,6. तार्क्ष्यो वैनतेयो राजा तस्य वयांसि विशः 13,4,2,13. Âçv. Gṛhy. 3,4,1. 10,9. Kauç. 29. 123. Mudg. Up. 2,1,7. Adbh. Ba. 6,6. hierher zieht Manu. auch वृकहर्यः VS. 23,11. fg. वयांसि M. 3,261. 6,51. 10,89. 11,240. MBh. 6,111. 13,1020. 14,1169. 2542. Hariv. 4940. R. 5,15,56. Kâm. Nîtis. 7,15. fg. Ragh. 2,9. Spr. 2419. 2784. Bhâg. P. 1,9,44. 2,1,36. Mârk. P. 26,32. 28,20. Pañcat. 1,14,3. im comp. M. 11,70. Ragh. 9,52. — Vgl. वि.

2. वयस् (von वी; vgl. वीति) n. *Mahl, Essen, Speise* Naigh. 2,7. वयं ते वयं इन्द्र प्र भरामसे RV. 2,20,1. वयो वर्कायारये 6,13,5. 1,127,5. गर्भं इन्द्रः सप्त्या वयश्च 178,2. कस्ते भागो किं वयः 6,22,4. 8,4,9. 33,7. स्वादोरभक्ति वयसः 18,1. ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति AV. 4,27,5.

3. वयस् n. 1) *Kraft, körperliche und geistige, Gesundheit;* besonders häufig mit dem adj. वसु verbunden; mit धा *verleihen,* mit dat. oder loc. der Person: गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः RV. 4,17,18. 5,8,5. 6,40,1. यथा ते पक्षस्तन्वे३ वयो धात् 4. यविष्ठ्य चिद्वयो दधत् 45,2. 7,58,3. वृकहर्यः शशमानेषु धेहि 3,18,4. मरुतो वृकहर्यो दधिर 5,53,1. 7,36,9. 9,94,4. 10,93,4. VS. 28,14. mit कर्तृ: वयोधा वयः कृणुहि शचीभिः RV. 8,44,9. वयः कृण्वानस्तन्वे३ स्वायै 5,4,6. — उन्मा ममन्द वतीयसा वयसा 2,33,6. वयांसि शिन्व वृक्तबर्हिष *die Kräfte* 3,3,7. 7,69,4. 8,76,2. नि शत्रोः पुष्यं नि वयस्तिरः 9,19,7. सुग्मिरमृतो यभवद्वयोभिः 10,45,8. सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि 120,5. चित्र 7,45,4. 9,68,10. उत्तम 2,1,12. 23,10. युवद्वयः 1,111,1. 10,39,8. परमाणय यहवः AV. 11,1,30. *Macht:* स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात् RV. 10,68,12. पुरुं तिरश्चा वयसा वृक्तबर्हिषम् 2,10,4. VS. 18,51 (= घृतेन Mahîdh.). वृकहर्यो हि भानवे ऽर्चा देवायाग्नये 5,16,1. 43,15. VS. 7,22. युगे युगे वयसा चेकितानः RV. 6,36,5. — 2) *Zeit der Kraft, jugendliches Alter; Altersstufe* überh., *Lebensjahre* Uṇâdik. zu Uṇâdis. 1,138. AK. 3,4,30,232. H. 365. an. 2,390. Med. s. 34. यावत्तावद्वयो प्रथमं मनुष्यस्तद्धि वयो वसानम् AV. 12,3,1. सम्वाभिर्वा वय उत्तरावत् 47. पञ्चौकोनवर्षो दम्यात्मा हि सर्वाणि वयांसि यद्वत्सं बिभर्ति तेन वत्सा यद्वत्सतरी तेन वयो यत्पयं वय आप्त तेन स्थविरा *er gebe eine trächtige Kalbin, denn sie repräsentirt sämmtliche Altersstufen: indem sie ein Kalb trägt, das Kalb; sofern sie eine Kalbin ist, die Jugend; weil sie selbst auf einer höheren Altersstufe steht, kann sie für alt gelten,* Kâṭh. 11,2; vgl. TBa. 3,12,5,9, wozu aus Âpastamba angeführt wird: एककादनप्रभृत्या पञ्चकादनेभ्यो वयांसि d. h. *von einem Jahre an bis zu fünfen vertheilen sich die Altersstufen* (der Thiere). सर्वाणि वयांसि दम्यात् *Thiere jeden Alters* Kâṭh. a. a. O. यद्न्येषां वयसो वीर्यं तद्वेन्वनड्वहोर्धाम Çat. Ba. 3,1,2,21. Hieran scheint sich die Redensart वयांसि प्रब्रूहि 3,2,3. Kâṭy. Çr. 7,8,13 zu schliessen, wo das Wort, wie man aus der Antwort entnehmen kann, allgemein gebraucht wird für *Stufe, Art* überhaupt: *sage an die Sorten* (welche du als Kaufpreis geben willst). वयसे वयसे नमः *jedem Alter* Pâr. Gṛhy. 1,2. गच्छति वयसः संस्थाम् *so v. a. sterben* Çat. Ba. 11,2,2,28. 12,9,1,11. त्रेधा विहितं पुरुषस्य वयः 8. — बालमप्राप्तवयसमज्ञातव्यञ्जनाकृतिम् *unerwachsen* MBh. 1,6136. वयसि प्राप्ते 3,2082. ऊढवयस् Bhâg. P. 4,9,66. वृद्धेन संपन्ना वयसा च MBh. 3,10026. Spr. 703. 2724. Bhâg. P. 3,21,27. 3,3,11. fg. वयसि स्थितः 11,28,11. अतिक्रान्तेन वयसा MBh. 3,16622. अतिक्रान्त° adj. R. 2,38,20. वयो गतम् Râja-Tar. 3,373. गत° adj. Spr. 815. वयोगते *wenn die Jugend dahin ist* 1610. गतर 1974. वयसि निर्गते R. Gorr. 2,20,30. विगतं वयः Bhâg. P. 1,13,20. गलित° adj. Ragh. 3, 70. वयसः पतनानस्य (प्रवमानस्य v. l.) Spr. 2723. वयसः स्थापनं (vgl. वयःस्थापन) कुर्यात् *Erhaltung der Jugend* Suçr. 1,167,8. न खलु वयस्तेजसो

देनु: *die Lebensjahre* Spr. 3251. नासौ वयसि निश्चयः (संस्थितिः) 1561. 1647. तुल्यशीलवयोयुक्ता MBh. 3, 2677. 2801. तुल्य° Pân. Gaṇ. 3, 3. समान° Bhâg. P. 3, 13, 27. तद्वयस् *in demselben Alter stehend* Kâṭ. Çr. 25, 9, 1. वयस्त्रिविधं बालं मध्यं वृद्धम् Suçr. 1, 129, 1. वयांसि तेषां स्तनपानबाल्यव्रतस्थिना यौवनमध्यवृद्धाः । यतीव वृद्धा इति Vaṇiç. Bṛh. S. 96, 17. M. 4, 18. Spr. 4993. 4997. Çiç. 1, 23. Suçr. 1, 124, 9. Kâm. Nîtiç. 4, 6. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते Kumâras. 5, 16. Vaṇiç. Bṛh. 26 (24), 2. व्यतीतपञ्चवर्षो ऽपि वयसा वत बुद्धिमान् Kathâs. 14, 45. द्वादशाब्दश्च वयसा 124, 204. वयःशतम् Bhâg. P. 3, 11, 22. दशार्ध° *fünf Jahre alt* 13, 30. वयो वर्षशतं येन प्राप्तमस्येदमष्टमम् Kathâs. 41, 33. द्रष्टव्यानि च तीर्थानि यावन्मे तमते वयः 93, 70. Bhâg. P. 5, 18, 13. 6, 7, 33. 9, 20. कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः 1, 6, 3. गतं च सकलं वयः Spr. 3604. निमेषमात्रमपि हि वयो गच्छन्न तिष्ठति 4470. तस्य पात्रास्त्वेव वयो यथो Râjat. 4, 131. तस्य °शिबिकादिषु । स्थानेषु क्रोष्टुमगधारमिकस्य वयो ऽगमत् 6, 183. किं देव समतिक्रान्तमागच्छति पुनर्वयः Kathâs. 40, 54. मन्दप्रज्ञस्य वयो मन्दायुषश्च वै । निद्रया क्रियते नक्तं दिवा च व्यर्थकर्मभिः Bhâg. P. 1, 16, 10. 2, 1, 3. परिवर्तितेन वयसा हंसा 5, 14, 29. ज्ञानवृद्धो वयोबालः R. 2, 45, 8 (43, 10 Gorr.). वयोऽनुरूपम् Kâm. Nîtiç. 7, 35. वयसो ऽन्ते Harîv. 1749. यावद्वै ब्रह्मणो वयः Pâṇḍar. 2, 3, 33. fg. वयोऽवस्था Suçr. 1, 129, 10. Spr. 3931. Bhâg. P. 5, 24, 13. अतिगम्भीरवयसः कालस्य 24. वृद्धा ज्ञानेन वयसैतामा R. 2, 45, 13. विद्याबयोवृद्ध Hit. 19, 3. वयसाधिकः Bhâg. P. 7, 2, 37. वयसान्वितः *bejahrt* MBh. 1, 934. वयोरूपसमन्वित *bei Jahren seiend* M. 8, 182. ताते तु वयसातीते *alt geworden* R. 2, 53, 12 (14 Gorr.). प्रभूत° *bejahrt* Spr. 1864. परिणतो वृद्धा वयसा च *reif an Jahren* R. 2, 43, 15. परिणत° adj. Paṇḍat. 197, 18. परिणतं (impers.) वयसा Kathâs. 103, 223. वयसः परिणामे Spr. 4966. वयःपरिणतिं प्राप्य Mâlav. P. 135, 7. नव *Jugend* Râgh. 2, 47. 6, 79. Spr. 1039. Bhâg. P. 3, 20, 32. 4, 27, 5. 8, 9, 2 (पव: bei Burn. Druckfehler). कृत्य Vikr. 42. प्रथम P. 4, 1, 20. R. 1, 48, 40. Suçr. 2, 27, 16. Vaṇiç. Bṛh. 8, 1. Paṇḍat. 33, 16. पूर्व Lâṭ. 9, 4, 5. MBh. 3, 1304. Spr. 347, v. l. 4569. मध्य 347. Bhâg. P. 1, 6, 2. केशोद्भ 3, 28, 17. मध्य Śâṅkhây. 215. द्वितीय P. 4, 1, 20, Vârtt., Schol. Hall. 2, 329. मध्यम Çat. Br. 11, 4, 4, 7. Kathâs. 104, 20. मध्य MBh. 3, 1304. Vaṇiç. Bṛh. 8, 1. प्रगल्भ Kumâras. 1, 52. उत्तर Kâṭ. Çr. 4, 1, 18. उत्तम Çat. Br. 11, 4, 4, 5. fgg. जघन्य MBh. 3, 1304. पश्चिम 5, 3062. Râgh. 19, 1. Hit. 28, 2. अवरम P. 4, 1, 20, Vârtt. कृत्य Vaṇiç. Bṛh. 8, 1. मत्त Râgh. 9, 79. 18, 25. — Vgl. अभि°, उद्वयस्, नीचा°, पूर्व°, प्र°, बृहद्वयस्, मध्य°, वृद्ध°, स°.

1. वयस् m. = 1. वयस् *Vogel* TS. 3, 1, 11, 3. वायस ṚV.

2. वयस n. am Ende eines comp. = 3. वयस्; s. उत्तर°, पूर्व°, मध्यम°.

वयसिन् am Ende eines adj. comp. = 3. वयस्; s. पूर्व°, प्रथम°.

वयस्क am Ende eines adj. comp. = 3. वयस्. अभिनववयस्का *in der ersten Jugend stehend* Hit. 50, 1. Vgl. मध्यम°.

वयस्कृत् adj. *Kraft gebend, gesund* —, *jung erhaltend* ṚV. 1, 31, 10. 3, 69, 8. 10, 7, 7. VS. 3, 18. 15, 5.

वयस्य (von 3. वयस्) 1) adj. *in gleichem Alter stehend*; m. *Altersgenosse, Freund* P. 4, 4, 91. AK. 2, 8, 4, 12. Trik. 2, 8, 25. H. 730. Hall. 2, 273. MBh. 12, 5163. Harîv. 13639. R. 1, 12, 22. 2, 69, 3 (71, 3 Gorr.). 103, 47. 3, 20, 2. 72, 28. 75, 64. 69. Kathâs. 32, 17. 35, 7. 36. 4. 59, 93. Bhâg. P. 4, 13, 41. 6, 14, 56. 7, 5, 54. 9, 10, 45. Mâlav. P. 23, 22. als Anrede Hit. 27, 5. im Drama Sâh. D. 171, 12. 15. 19. Çiç. 22, 15. 81, 8. Vikr. 11, 15. वयस्या f. *Altersgenossin, Freundin, vertraute Dienerin* AK. 2, 6, 4, 12. H. 329. Hall. 2, 332. R. 3, 58, 38. Mṛicch. 43, 16. Kathâs. 10, 145. 18, 20. 367. 28, 98. 37, 101. 45, 243. 104, 49. Sâh. D. 60, 1. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234. am Ende eines adj. comp. f. या Kathâs. 12, 62. — 2) f. या (sc. इष्टका) Bez. von *49 Backsteinen beim Bau eines Feueraltars, welche mit Sprüchen, die das Wort* वयस् *enthalten* (vgl. VS. 14, 9), *gelegt werden*, P. 6, 4, 137. TS. 5, 3, 4, 2. Kâṭ. 20, 10. Çat. Br. 10, 4, 3, 15. Kâṭ. Çr. 17, 8, 22.

वयस्यक m. *Altersgenosse, Freund* Kathâs. 10, 197. 47, 24. 64. 80, 201. 89, 92. 65, 86. 119, 47. 175.

वयस्यत्व n. nom. abstr. von वयस्य *Altersgenosse, Freund* MBh. 4, 2202. R. 4, 4, 18.

वयस्यभाव m. dass. R. 4, 6, 15.

वयस्वत् (von 3. वयस्) adj. *mit Kraft begabt, kräftig* ṚV. 2, 24, 15. 3, 54, 13. VS. 3, 18. Indra 7, 32.

वयःसंधि m. *Pubertät* Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 26; vgl. u. रोमालो.

वयःसम adj. *altersgleich* R. 7, 4, 29. 31.

वयःस्थ 1) adj. (f. या) *erwachsen, ausgewachsen;* = तरुण, युवन् AK. 2, 6, 4, 42. Trik. 3, 3, 198. H. 339. Med. th. 22. fg. = मध्यवयस् H. an. 3, 320. पित्रा पुत्रो वयःस्थो ऽपि सततं वाच्य एव तु MBh. 1, 1728. 4, 2339. Suçr. 1, 136, 17. यस्य MBh. 2, 1885. गो R. 1, 53, 20 (54, 23 Gorr.). *bejahrt:* परिम्लातो वयःस्थश्च षष्टिवर्षो ऽतिदान्वितः MBh. 1, 1958. *kräftig:* मांस Viçva. 6, 69. — 2) f. या *a) Altersgenossin, Freundin* (vgl. वयस्या) Med. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Emblica officinalis Gaertn.* AK. 2, 4, 2, 38. Trik. H. an. Med. Ratnam. 90. = ब्राह्मी AK. 2, 4, 5, 3. Trik. H. an. Med. = काकोली AK. 2, 4, 5, 9. Trik. H. an. Med. *Terminalia Chebula* oder *citrina* AK. 2, 4, 2, 39. Med. *Cocculus cordifolius DC.* H. an. Med. *Bombax heptaphyllum* H. an. = तोरुकाकोली Bhâvapr. im ÇKDn. = अत्यम्लपर्णी Râjân. — Suçr. 2, 389, 10. 393, 5. 536, 9. 14. — *c) kleine Kardamomen* H. an. Med.

वयःस्थान n. *Jugendfrische* Kâm. Nîtiç. 19, 7.

वयःस्थापन adj. *die Jugendfrische erhaltend* Suçr. 1, 2, 17. 175, 9. 180, 12. 182, 12.

1. वयी f. *Zweig, Ast* ṚV. 6, 7, 6. वत्सोभगानि वि यंसि वनिनो न वयाः 13, 1. वृक्षस्य 24, 3. 57, 5. 2, 3, 4. 5, 1, 1. 8, 13, 6. 17. 10, 92, 3. 134, 6. Çâṅkh. Gṛihj. 1, 15. bildlich ṚV. 1, 39, 1. वया इदन्या भुवनान्यस्य 2, 35, 8. 8, 19, 32. *Zweig so v. a. Geschlecht, Sippe:* पञ्चजन्यस्या मतिंदिं वयायाः 10, 124, 2.

2. वयी f. so v. a. 2. वयस्. इषा गोमीष्ट तव्यै वयाम् *kommet mit Labung — eine Stärkung für mich!* ṚV. 1, 165, 15. nach Sây. = वयम् *wir*, nach Mahîdh. = वयसाम् gen. pl.

वयाकिन् adj. nach Sây. von वयाक, demin. von 1. वया, *verästelt, surculosus:* Soma ṚV. 5, 44, 5.

वयावत् (von 2. वया) so v. a. वयस्वत्. वयावत्तं न पुष्यति तपोमघे शतायुषम् ṚV. 6, 2, 5. Hierher ziehen wir auch 1, 3, wo वयावत्तम् im Text steht.

वर्यु adj. nach Dunâ zu Nir. 4, 15 so v. a. *Gewobenes, Gewänder*

(von वा, वयति): उत मे प्रयियोर्वयियोः श्यावः प्रणेता भुवत् RV. 8, 19, 37. Es liessen sich gen. du. annehmen von प्रयी und वयी für प्रय्योस् und वय्योस् und letzteres könnte zu der in 3. वयस् enthaltenen Wurzel gezogen werden als Bez. *des jungen, kräftigen Rosses.*

1. वर्युन (वयुनं Unâdis. 3, 61) 1) n. *a) Richtzeichen, Merkzeichen:* अभूदिदं वयुनम् RV. 1, 182, 1. विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम् 3, 3, 4. मन्मावस्यवो न वयुनानि तक्तुः 2, 19, 8. अर्यतस्ता चरतो अन्यदन्यदित्या चकार वयुना ब्रह्मणस्पतिः *Ziel* 24, 5. पन्थाणि यत्र वयुनानि भोजना *wo viele Genüsse als Ziel winken* 10, 44, 7. समुद्रस्य वयुनस्य पत्मन् etwa *im Fluge nach der Kufe* (des Soma) *als Ziel* TS. 5, 5, 4, 3. — 2) *Regel, Bestimmung, Ordnung; Sitte:* व्यथयद्वयुना मर्त्येभ्यः RV. 1, 145, 5. तितीनाम् 72, 7. ज्ञतीनाम् 7, 75, 4. वर्कारिदस्य वारणं उरामथिरा वयुनेषु भूषति 8, 55, 3. Häufig वयुनानि विद्वान् und विश्वा व॰ वि॰ RV. 1, 132, 6. 189, 1. 3, 5, 6. 6, 15, 10. 75, 14. 7, 100, 5. 10, 122, 2. AV. 2, 28, 2. 4, 39, 10. 5, 20, 9. VS. 12, 15. Nir. 8, 20. instr. *nach der Regel:* अचिक्रद्वा गात्रा वयुना कृणोत RV. 1, 162, 18. यन्मातरिश्वोत वयुना चनानुषक् 10, 49, 5. Hierher vielleicht auch RV. 1, 144, 5. — 3) *(Bestimmtheit) Deutlichkeit, Unterscheidbarkeit, Helligkeit:* ता अंहत वयुनं विश्वमा रजः RV. 5, 48, 3. इळायास्पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट 3, 29, 2. Gewöhnlich pl.: अर्कानुषासो वयुनानि पूर्वथा 1, 92, 2. उषा उच्छन्ती वयुना कृणोति *macht, dass man sich zurechtfinden kann* d. h. *hell* 6. अकृनाद्गौ वयुनानि माघत् 2, 19, 3. 4, 16, 3. अविन्दः केतुं वयुनेष्वह्नाम् 6, 7, 5. 10, 46, 8. युवतिर्वयुनानि वस्ते *bestimmte Formen* 114, 2. ज्ञातिष्यामो न वयुनेषु धूर्षदः etwa *deutlich, leibhaftig* 2, 34, 4. — *d) Kenntniss, Wissen* (= ज्ञान Comm.) Bhâg. P. 3, 4, 31. 4, 23, 12. 5, 11, 15. 10, 8, 30. चतुरा वयुनेन nach dem Comm. so v. a. ज्ञानमयेन 13, 38. — *e) Tempel* Uṇâdis. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛçâçva von der Dhishaṇâ Bhâg. P. 6, 6, 20. — 3) f. धा *a) Kenntniss, Wissen* Bhâg. P. 4, 9, 8. — *b)* N. pr. einer Tochter der Svadhâ Bhâg. P. 4, 1, 63. — Vgl. अवयुन.

2. वर्युन adj. scheint zum Zweck der Etymologie im Anschluss an 3. वयस् gebildet zu sein: *lebenskräftig:* प्राणा वै देवा वयोनाधाः प्राणैरेवैतद् सर्वं वयुनं नद्धम् Çat. Br. 8, 2, 2, 8.

वर्युनवत् (von 1. वयुन) adj. *hell, klar:* इदं ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् RV. 4, 51, 1. स इत्सो ऽवयुने तंतन्वत्सूर्येण वयुनवच्चकार 6, 21, 3.

वयुनशस् (wie eben) adv. *je nach der besonderen Bestimmung, regelrecht:* इमं नो अग्ने अधरं क्षेत्रंवयुनशो यज RV. 6, 32, 12.

वयुनाविद् (वयुनऽविद् Padap.; vgl. RV. Prâtiç. 9, 7. VS. Prâtiç. 3, 96) adj. *der Regel kundig:* वि क्षेत्रा दधे वयुनाविदेकः RV. 5, 81, 1.

वयोगत 1) adj. *bejahrt* Âit. Ur. 4, 4. — 2) n. *das Dahinsein der Jugend* Spr. 1010.

वयोजू adj. *Kraft erregend, — erhöhend:* शुक्रासो वयोजुवः RV. 9, 25, 26.

वयोऽतिग adj. (f. आ) 1) *bejahrt, betagt* M. 7, 149. Mâṇ. P. 18, 10. — 2) *an kein Lebensalter gebunden:* सा सिद्धिर्गा वयोऽतिगा MBh. 12, 11881.

वयोधस् (वैयोधस् Uṇâdis. 4, 228) adj. s. v. a. वयोधा, mit welchem es in mehreren Formen zusammenfällt. सं धेमस्तु वयोधसः AV. 3, 1, 19. VS. 15, 7. Indra 28, 24. Çat. Br. 12, 9, 3, 16. Kâṭh. Çr. 19, 5, 23. Çiñkh. Çr. 7, 4, 3. = तरुण Uvvaṭa.

वयोधा 1) adj. acc. °धाम्, voc. °धस्, nom. pl. °धास्; fem. °धास्. *a) Kraft —, Gesundheit gebend, b) — befestigend, kräftigend:* रयिं RV. 1, 73, 1. 6, 6, 7. वृषभ (Indra) 3, 31, 18. 49, 3. 51, 6. 4, 17, 17. 5, 43, 12. 9, 90, 1. Agni 4, 3, 10. 8, 61, 4. भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः 10, 7, 7. पितुः 5, 75, 9. VS. 15, 52. वीरं RV. 2, 3, 9. Soma 8, 48, 13. 9, 96, 12. 110, 11. Tvashṭar 6, 49, 9. देवो देवाग्ं गणते वयोधाः AV. 5, 11, 11. 7, 41, 2. द्यावन् 12, 3, 14. 13, 2, 32. 18, 4, 38. 19, 46, 6. fem. 9, 1, 8. 18, 4, 50. TS. 4, 4, 12, 1. — 2) f. *Stärkung, Kräftigung:* °धायै Kauç. 24. °धै infinitivisch RV. 10, 55, 1. 67, 11.

वयोऽधिक adj. 1) *an Jahren überlegen, — älter* Vaṇiç. Bhâg. S. 86, 11. — 2) *betagt,* m. *Greis* M. 4, 141. नगरी मन्त्रीबालवयोऽधिका R. 2, 47, 10.

वयोधेय n. *Kräftigung* RV. 10, 25, 8.

वयोनाधं adj. etwa *Gesundheit befestigend, — zusammenhaltend* VS. 14, 7; vgl. Çat. Br. 8, 2, 2, 8.

वयोनागशर्म adj. SV. 1, 4, 2, 2 vermuthlich entstellt; vgl. VS. 5, 8.

वयोविध adj. *vogelartig* Çat. Br. 10, 1, 3, 1. 2, 4, 1.

वयोवृद्ध adj. *bejahrt* Râm. 4, 27.

वयोवृध् adj. *Kraft mehrend, stärkend:* Morgen und Nacht RV. 5, 5, 6. die Marut 54, 2. रयिं 8, 49, 11.

वयोहानि f. *das Altern* Daivat. 26, 23. 31, 24. 34, 9.

वर्य्य nach Sây. patron. des Turviti, aus dem Geschlecht des Vajja RV. 1, 54, 6. N. eines Asura: यामिः कर्कन्धुं वर्य्यं च शिन्वथ 112, 6. eines Gefährten des Turviti; Indra hilft beiden über einen Strom, indem er dessen Lauf hemmt: अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वर्य्याय च स्तुतिम् 2, 13, 12. अवनिं तुर्वीतये वर्य्याय तरत्तोम् अरमयः 4, 19, 6. Appellativ etwa *Gefährte, Genosse* in der Stelle: परिप्रयत्तं वर्य्यं सुषंमदं सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः 9, 68, 8. Diese Bedeutung würde überall passen.

1. वर् (वृ, वृञ्). वरते, वरत्ते, वराते, वरैत्त, वरधम्; वृणोति, वृणुते (वरणे) Daivat. 27, 8. वृणाति, वृणीते (वरणे) 31, 16. 20. ववार, ववर्थ ved. und ववरिथ P. 7, 2, 64. 88. Vop. 8, 89. ववृव, ववृम P. 7, 2, 13. Vop. 8, 37. ववृषे 16, 5. वव्रमहे P. 7, 2, 18. वव्रिवांसम् RV. 2, 14, 2 u. s. w. ववर्वृषम् gen. 1, 173, 3. अवारीत्, अवारिषम् (Brâhmaṇa), अवरिष्टाम्, अवारिषुम् P. 7, 2, 40. 42. Vop. 12, 3. ved. अवरुः, अवरुः, वरुः (RV. Prât. 1, 22. VS. Prât. 1, 164. P. 6, 4, 73, Schol.), अवरन्, अरन्, वरत्, वरुम् 1. sg. RV. 10, 28, 7. वर्धम्, वृधि, वर्तम्; अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवृत P. 7, 2, 40. 42. Vop. 8, 99. 12, 3. 16, 5. वरिष्यति und वरीष्यति, वरिता und वरीता P. 7, 2, 38. वरिषीष्ट und वृषीष्ट (वरीषीष्ट fehlerhaft) 39. 42. 1, 2, 12, Sch. Vop. 12, 3. 16, 5. वरितुम्, वरीतुम् und वर्तुम् (MBh. 4, 52), वृतो, वृतो RV. 1, 52, 6. वृत्त P. 7, 2, 11. Vop. 26, 89. In Betreff des Bindevocals s. Kâr. 1 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. Vop. 8, 60. *verhüllen, bedecken, umschliessen, umringen; zurückhalten, gefangen halten; abhalten, hemmen, wehren:* गाः RV. 1, 61, 10. अपः 2, 14, 2. न यत्ते शोचिस्तमसा वरत्त *einen Glanz wie deinen deckt man nicht mit Dunkel zu* 4, 6, 6. वृत्वा Çat. Br. 1, 1, 2, 4. सः*) स्वर्गस्य लोकस्य द्वारमवृणोत् *machte zu* Âit. Br. 3, 42. — RV. 1, 68, 6. न तु त्रेतो वरत्त 3, 32, 9. न ताढ्यः परि यत्तो वरत्त 16. 8, 77, 2. राधः 4, 31, 9. न तो वरत्ते अन्यया यदित्मनि स्तुतो मघम् 4, 32, 8. 42, 6. 5, 32, 9. 33, 7. 8, 24, 5. नकिर्यं वृणवते युधि 45, 21. 7, 32, 6. AV. 6, 7, 3. 10,

*) So in den von uns benutzten Hdschrr. und in der Ausgabe.

3,1. मघोनो वृत्रो वरंशस्तमीमि RV. 5,31,9. वारु unbetont, also als Verbum finitum behandelt, in AV. 10,4,2.4 ist, mit उग्रम्, ein dem Metrum widerstreitendes Anhängsel. — रेणुः — पृथिवीं चास्तरोतं च यो वेद सकृमावृणोत् *verhüllte* MBu. 3,10970. वरीतुम् Spr. 1432. सूर्याचन्द्रमसोर्मार्गं नक्षत्राणां गतिं तथा । शैलराजो वृणोत्येष विन्ध्यः *versperrt, hemmt* MBu. 3,8799 वारितुम् *abwehren* Bhatt. 9,24. वृतं *bedeckt, verhüllt, bezogen:* वर्षेण AV. 12,1,32. शिशुमोरामगणैर्मो नैरपि च चञ्चलैः । विभुदिरिव वितिमिराकाशमभवद्वृतम् ॥ R. 1,44,23 (45,18 Gorr.). क्रुदिनीं वेतसैर्वृताम् MBu. 3,2311. स्थाने वृतैर्वृतान्तरे H. 1118. राजमार्गं नरैर्वृतम् R. 2,26,2. 5,16. दैर्गत्यतमसा वृतः Spr. 2903. विषयप्येदैर्वृतम् Varāh. Bṛh. S. 19,15. 24,17. मृत्तिकालेपवमलाबुद्रव्यम् (कृतम् gedr.) Sarvadarçanas. 40,13. रथो वृतो द्वीपचर्मणा H. 755. धर्मचक्रमावृतं शठम् R. 4,16,16. *umringt, umgeben* RV. 4,42,3. निवेशनम् — दीप्तैः स्वैर्वीरैर्वृतम् MBu. 3, 2151. सप्तपर्णो वल्मीकवृतः Varāh. Bṛh. S. 54,29. सप्तैरेव त्रिभिर्वृतः M. 8,10. MBu. 1,5120. 3,2580. 5,164. R. 2,40,28. 54,10. 104,30. R. Gorr. 1,70,3. 3,43,16. 54,3. Varāh. Bṛh. S. 43,22. Kathās. 12,108. 23, 13. 45,127. Rāǵa-Tar. 6,182. Bhāg. P. 1,12,37. 2,9,16. 3,17,31. Prab. 86,10. Bhatt. 5,10. स्त्रीवृत M. 7,224. MBu. 1,8064. fgg. R. 1,63,28 (मरुद्गणावृत zu lesen). 2,39,35. Rāgat. 12,61. Varāh. Bṛh. S. 48,48. अवृत *nicht von Andern umgeben, allein* M. 4,57. वृत *eingeschlossen, zurückgehalten:* सिन्धवः RV. 4,19,5. 6,17,12. *erfüllt von so v. a. behaftet —, versehen mit:* दोषैः M. 8,77. वृतं राजगुणैः सर्वैरादित्यमिव रश्मिभिः R. 2,34,8. Bhāg. P. 1,11,13. कर्षेण मरुता (auch आवृत könnte angenommen werden) MBu. 5,7344. R. 3,11,13. शोकेन मरुता (वृत oder आवृत) 4,20,20. वितर्कैर्बहुभिः 61,21. लज्जा° (वृत oder आवृत) MBu. 3,1852. आगो° Kām. Nītis. 4,47. mit act. Bed. (nach dem Comm.) *umhüllend* Bhāg. P. 2,10,23. Vgl. ऊर्ध्ववृत.

— caus. वारयति, °ते (आवारणे) Dhātup. 34,8. ved. अवावरीत्, अवीवरत AV. 3,13,3. Bed. wie beim simpl. किमेनाग्निं प्रमर्मवारयेथाम् RV. 1,116,8. नकिर्देवा वारयन्ते न मर्ताः 4,17,19. 8,70,3. प्र नूनं धावता पृथक्नेक् यो वो अवीवरीत् *der ist nicht mehr, der euch gefangen hielt,* 8,89, 7. 10,27,5. AV. 4,7,1. यत्तरेवाष्माणं वारयध्वात् (vgl. P. 7,1,42) Ait. Br. 2,6. Çat. Br. 11,1,5,7. Âçv. Gṛhy. 3,11,1. तं वरणशाखावावारयत्त Pañcav. Br. 5,3,9. — छिद्रं च वारयेत्सर्वम् *verstopfen* M. 8,239. *Jmd abhalten, zurückhalten, abwehren, Jmd wehren;* act. MBu. 1,5350. प्रविशन्तं न मां कश्चित् — अवारयत् 3,2158. Harīv. 8217. R. 2,32,32. 45,22 (43,26 Gorr.). 96,41 (105,49 Gorr.). 5,61,3. 63,3. 6,99,26. Kām. Nītis. 4,48. Spr. 630. 3062. Kathās. 26,247. 37,148. 38,37. 40,13. 49,37. Rāǵa-Tar. 4,667. Prab. 22,2. 55,11. Bhāg. P. 4,14,49. 10,79,23. अनं वारयित्वा MBu. 3,2582. R. 5,80,7. Mārk. P. 37,111. वारयितुम् R. 2,23,30. 25,2. Rāǵa-Tar. 1,247. pass. MBu. 3,315. R. 1,1,49 (52 Gorr.). 2,34,22. 3, 42,46. 4,8,29. Rāgat. 14,51. Çik. 38,7. Spr. 974. Kathās. 16,17. 56,300. Rāǵa-Tar. 5,463. 6,2. Bhatt. 17,37. वारित MBu. 1,150. 2095. 4,675. 13,330. fg. Harīv. 8219. Spr. 1535. 1579. 4051. Gir. 3,3. Kathās. 31,67. Rāǵa-Tar. 4,231. 6,345. Bhāg. P. 3,20,36. Z. d. d. m. G. 14,372,20. Verz. d. Oxf. H. 99,a,13. न वारयेद्गां धायन्तीम् M. 4,59. विषालान्यप्यनं 8,240. वृकान् Rāǵa-Tar. 2,88. स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो हि वार्यते Rāgat. 19,49. चेतः Prab. 94,18. दृष्टिं तत्रापि वारयन् *so v. a. es vermeidend dahin zu sehen* R. Gorr. 2,16,40. *abhalten —, zurückhalten —, abwehren von,* mit abl. P. 1,4,27. पक्षेभ्यो गाम् Schol. शोकात् Vop. 5,20. धर्मात् MBu. 3,16686. त्रैलोक्यविनाशात् Harīv. 8219. दैशान् — सङ्गात् R. 5,34,18. मूत्रात्, पानात् Kām. Nītis. 16,15. युद्धात् Kathās. 20,93. पापात् 61,293. mit dopp. acc. (vgl. वारयितव्य): परमं स्थानं वार्यमाणो ऽसकृन्मया MBu. 13,1900. Geschosse *abwehren:* अस्त्रं वारयामास 5,7174. fg. शक्तीश्चर्मणा 7211. 6,2227 (वारयाण). R. 3,35,45. *Etwas zurückhalten, hemmen, verhindern, unterdrücken, beseitigen:* यदा वार्यते वेला लुब्धतोयं मकरालयम् MBu. 6, 3121. क्रोधो ऽयम् — न शक्यते वारयितुं वेलेव लवणाम्भसा R. 3,28,2. कोपाग्निम् Spr. 160. व्रतेन क्षुतभुक्तम्, क्षुत्तेन सूर्यातपम्, व्याधिं भेषजसंग्रहैः 2929. सुतकर्म गर्ह्यम् Bhāg. P. 3,1, 7. आप्यवेगम् R. 4,8,19. गतिम् Mālāv. 107,15. प्रसरम् Çik. 28. विनयवारितवृत्ति (मदन) 44. प्रवाहम् Sarvadarçanas. 25,5. सर्वानिन्द्रियकृतान्दोषान् Weber, Rāmat. Up. 344. fg. वातवर्षातपक्लिष्टान्सकलो वारयत्ति नः Bhāg. P. 10,22,32. संदेहम् Rāǵa-Tar. 6,331. मकालेयम् 340. *ausschliessen* Kâr. 8 aus Sindh. K. zu P. 7,2,10. Sindh. K. zu P. 2,2,11. *verbieten, untersagen:* सर्वाणि वादित्राणि MBu. 1,6976. घृतम् 3,599. *vorenthalten:* राज्यम् R. Gorr. 2,116,49. सर्वम् Spr. 4948. वारितवाम Kathās. 26,76. Rāǵa-Tar. 3,417. अवारितम् *ungehemmt, nach Belieben:* अवारितम्। सर्वं प्रवर्तते Kathās. 13,126. निदाघकाले पानीयं यस्य तिष्ठत्यवारितम् MBu. 13,3294. दीयतां भुज्यतां चेष्टं दिवारात्रमवारितम् 14, 2686. Vgl. दुर्वारित.

— desid. विवारियति und °ते, विवरीषति und °ते, वुवूर्षति und °ते P. 7,1,102. 2,11. Vop. 8,99. 12,3. 19,3.

— intens. वर्वर्मि P. 7,3,94, Schol.

— अनु *zudecken* · पलाशैः Çāṅku. Bh. 10,2. *überdecken, verhüllen, überschütten:* शरैर्घोरैस्तमेकमनुवव्रिरे MBu. 6,3349. *umringen, umgeben:* ताः कृष्णमनुवव्रिरे Harīv. 4093. R. Gorr. 2,43,12. — caus. med. *hemmen, hindern* Ait. Br. 10,2.

— अप *aufdecken, enthüllen, öffnen* RV. 1,7,6. बिलम् 32,11. गोत्रम् 51,2. व्रजम् 10,7. 10,28,7. वलम् 2,14,3. दुरः 1,121,4. ज्योतिः 2,11,18. 3,43,7. 4,2,16. अग्निनेत्रैः 5,45,1. (इन्द्रः) अप द्वारेव वर्षथः 8,5,21. 89,6. अपवृणवंश्च द्वाराणि R. ed. Bomb. 5,12,16. अपो (vgl. RV. Prāt. 7,33) वृधि परिवृतं न राधः RV. 7,27,2. 75,1. अपं कृत्वी निर्णिजं देव्यावः 1, 113,14. पक्ष्ये शिरो ऽपवृत्य Çat. Br. 14,1,4,16. अपावृत (vgl. RV. Prāt. 9,2) RV. 1,57,1. Vgl. अपा und अपवाक, अपवृति. — caus. *verstecken:* अपवारितशरीर Mālāv. 127,3. Mālatīm. 93,14. अपवारितम् = अपवार्य (s. d.) Sāh. D. 425. — Vgl. अपवारण fgg.

— अपि *verhüllen:* अपीव योषा जनिमानि वस्ते RV. 3,38,8 partic. अपिवृत *bedeckt, verhüllt, verschlossen* 1,121,4. 2,11,3. 10,32,8. — Vgl. u. वि 2).

— अभि, partic. अभीवृत *umgeben von, eingefasst in:* वप्रे प्रुष्णेरभीवृतम् RV. 3,44,5. अभीवृतं कृशनैः (रथम्) 1,33,4. दर्तीभामिः 8,39,3. उद्रा वज्रो अभीवृतः 89,9. घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते 6,70,4. 10,73,2. येन गोरभीवृता *bedeckt, beschritten* 1,164,29. स्वबलाभिवृत *umgeben von* R. 6,92,82. — caus. *Jmd zurückhalten, abwehren:* तमभ्यवारयत् MBu. 4, 1985. 6,3762 nach der Lesart der ed. Bomb. (संवारयिष्णुनभिवारयिता).

— आ *bedecken, verhüllen* Çvetâçv. Up. 6,10. Suçr. 1,168,15 (absol.). परा-

सेन मुखमावृत्य Çik. 69, 11. अध्यर्धमित्वावृचमूर्णोन्नतं पर्वतस्य सा पार्श्वे न्यवसदावृत्य R. 2, 98, 30 (107, 18 Gorr.). योगतारकामावृणोति वपुषा Varâh. Bhp. S. 24, 34. वल्ली मण्डपमावृणोति 55, 26. नीलघनीभूतसंघातैः सर्वमम्बरमावृणोत् MBh. 1, 1296. 1134. आवृणोन्मो मरुद्गणैः 3, 11959. धाराः — आवृण्वन्सर्वतो व्योम 12136. R. Gorr. 2, 65, 14. क्षमावस्त्रे लोहितप्राशनैः खगैः MBh. 4, 1715. Kathâs. 55, 137. आवव्रुर्बलदा व्योम MBh. 5, 7238. व्योमावृत्य 7194. तमसा लोकमावृत्य 1, 4232. 1105. 1152. 3950. R. 2, 92, 36. B. Gorr. 2, 102, 16. 5, 56, 8. 10. Bhâg. P. 1, 7, 20. वरीतुमिवाकाशम् Bhatt. 9, 24. धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च Bhag. 3, 38. *verstecken, verborgen:* वृत्तैरात्मानमावृत्य R. 4, 12, 12. 13, 28. Çik. 40, 21. आवृणोदात्मनो रन्ध्रम् Raghu. 17, 61. व्याघ्रेणागतमावृणोति कृसिनम् Spr. 396. Bilâh. 15. पन्थानम्, मार्गम् *einen Weg versperren:* आवृत्य R. 1, 26, 28. 2, 28, 20. 3, 74, 19. 7, 23, 4, 11. MBh. 3, 12222. Raghu. 7, 28. 12, 28. आवृण्वतो लोचनमार्गम् 39. द्वारम् *ein Thor besetzen* R. 4, 61, 39. 5, 7, 7. 6, 6, 11. 13, 12. 17, 16. fg. अग्निशालाम् *besetzen, in Beschlag nehmen* Kathâs. 72, 158. *einsperren in* (loc.): यातनादेहे आवृत्य Bhâg. P. 3, 30, 21. *umgeben:* कावेरीमावृत्य मलयो गिरिः R. 4, 41, 25. *erfüllen:* सर्वमावृत्य तिष्ठति Çvetâçv. Up. 3, 16 (= Bhag. 13, 13). Mârk. P. 45, 56. Bhâg. P. 8, 24, 21. तेषां तु रुदतां शब्दः क्षमावृत्य समन्ततः R. Gorr. 2, 111, 29. य आवृणोत्यवितथं ब्रह्मणा श्रवणावुभौ M. 2, 144. महीमावृत्य यशः R. 6, 104, 22. नात्युच्चैः स्थित आकाशे भूमिमावृत्य so v. a. *berührend* 13. *erfüllen* (einen Wunsch): कुविद्गर्भिः कामावर्तत् ṚV. 1, 143, 6. *abwehren:* आवत्रे सुपली तरुम् Bhatt. 14, 109. — आवृणोति MBh. 12, 4010 wohl fehlerhaft für अपावृणोति. आवृत्य परिक्रमम् M. 3, 214 fehlerhaft für आवृत्यपरिक्रमम्. — आवृत *bedeckt, umhüllt, umgeben, verhüllt, verborgen* AK. 3, 2, 40. H. 1476. तविषीभिः ṚV. 1, 51, 2. 55, 8. रक्षसा 164, 14. यज्ञेभिः 8, 26, 13. तृणैः AV. 9, 3, 17. तमसा 10, 1, 20. 2, 29. 31. 8, 43. 12, 1, 52. प्रजापतिरावृतो ब्रह्मणा वर्मणा 17, 1, 27. Çat. Br. 13, 6, 5, 1. 14, 5, 5, 18. आवृतास्तत्र तिष्ठन्ति पितरः Âçv. Grihj. 4, 7, 16. — द्वीपिचर्मावृते रथे *bedeckt, bekleidet, bezogen* AK. 2, 8, 2, 21. fg. क्षेमवर्णाम्बरावृत R. 1, 54, 22. Spr. 1210. चर्मावृतेव भूः 3206. वृतगुल्मावृत M. 7, 192. MBh. 3, 2404. R. 2, 56, 11. Varâh. Bhp. S. 44, 8. 54, 119. दीर्घलोमभिरावृतः Pañkat. 1, 6, 7. (नभः) अरुणतत्रतारामिरावृतम् R. Gorr. 1, 36, 16. ततत्रविन्दुभिः 3, 67, 8. कमिकुलशतैरावृततनुः Spr. 729. व्रणावृत R. 4, 59, 19. आवृतमर्वाङ्भी वाजैः Kathâs. 17, 147. महीं राष्ट्रावृताम् R. 2, 49, 12. उल्बावृतो गर्भः *umhüllt* Kaush. Up. 5, 9, 1. Bhag. 3, 38. Bhâg. P. 3, 31, 8. 4, 22, 37. वदनं कृत्तेन *verdeckt, verhüllt* R. 2, 26, 10. तृणैः कूपः 3, 32, 15. 4, 16, 17. Bhâg. P. 3, 31, 40. चतुस्त्विमिरपटलैः Spr. 4965. तमसा लोकः MBh. 3, 8779. R. 2, 63, 17. Kathâs. 47, 50. तुषारेण सूर्यप्रभा R. Gorr. 1, 50, 16. शैलपटलैर्नीलतलम् Hit. 80, 15. Varâh. Bhp. S. 24, 36. 32, 13. 43, 65. Bhag. 3, 39. Spr. 3844. Naish. 22, 41. Vedântas. (Allah.) No. 38. fg. घनावृता *unverhüllt* M. 4, 44. कुहूदिनी पर्वतावृताम् *umringt, umgeben* R. Gorr. 2, 73, 5. शैलस्य पादे सलिलावृते R. Schl. 2, 56, 15. ताराभिरुडुपतिः Bhâg. P. 3, 23, 38. भुजगावृतदेहा Varâh. Bhp. 27 (25), 23. सक्तिगणावृता MBh. 3, 2095. R. 2, 14, 29. Kathâs. 23, 7. Pañkat. 130, 20. मृगी अग्निः R. 3, 61, 1. ग्राम, वेश्मन् *umschlossen, mit einer Mauer u. s. w. umgeben* M. 4, 73. *geschlossen:* वेश्मन् Pañkat. 3, 15, 47. Râga-Tar. 5, 235. पुरद्वार R. 2, 88, 19. Daçak. 39. द्वारस्यावृतत्वात् Pañkat. 193, 18. राजधानी R. 2, 88, 20. किमर्थमावृता लोका ममेते *für mich verschlossen* MBh. 1, 8239. निर्धनेन ममैकेन कामुकेनावृतं गृहम् *besetzt, in Beschlag genommen* Kathâs. 12, 99. *gefangen gehalten* 72, 158. Bhâg. P. 3, 31, 13. 8, 2, 31. अनावृताः किल पुरा स्त्रिय आसन् *nicht eingeschlossen, frei, sui juris* MBh. 1, 4719. 4729. 3, 1858. Bhâg. P. 4, 20, 7. अनावृतद्वार् *offen, frei* Kathâs. 34, 197. अनावृतकथ R. Gorr. 2, 1, 8. अधार्मिकजनावृत *erfüllt, bewohnt* M. 4, 61. Varâh. Bhp. S. 3, 78. मूषकैः परिधावद्भिरावृतानि वेश्मानि R. 2, 33, 19. वेतालैः श्मशानम् Kathâs. 12, 48. सफेनलालावृतवक्त्रसंपुट *voll von* Ṛt. 1, 21. येनावृतं नित्यमिदं हि सर्वम् *erfüllt von* Çvetâçv. Up. 6, 2. Bhâg. P. 2, 6, 15. तेनेयमहिमा Raghu. 18, 39. आवृते हृदये राज्ञो गाढया भोगतृष्णया Kathâs. 40, 58. शैवैर्वृकुभिः R. 2, 72, 26. 75, 15. 4, 27, 9. ब्रह्मकृत्यया *behaftet mit dem Verbrechen eines Brahmanenmordes* 7, 80, 8. तैरेव भूतैः *versehen mit* (Gegens. परित्यक्त) M. 12, 20. मलिलोपप्रवेरासीत्पुनरेवावृता क्षितिः *heimgesucht von* Râga-Tar. 5, 70. आवृत m. Bez. *einer Mischlingskaste, der Sohn eines Brahmanen und einer* Ugrâ M. 10, 15. — Vgl. आवरण, आवृति, दुरावार. — caus. 1) *bedecken* Bhâg. P. 5, 17, 4. *verhüllen, verstecken:* आवार्य गुल्मैरात्मानम् MBh. 3, 2370. वृत्तेनावार्य (sc. आत्मानम्) R. 3, 67, 5. *erfüllen:* अथाकाशे मरुन्नादशब्दः प्रादुरासीद्रयानकः । आवार्य गगनं मेघो यथा प्रावृषि दृश्यते ॥ R. 1, 32, 11. — 2) *abhalten, zurückhalten, abwehren:* तं बाणमयं वर्म शरीरावार्य सर्वतः MBh. 1, 4102. तमावार्य बाहुना बाहुशालिनम् 2, 2431. 4, 469. 1598. 5, 5829. 7, 3131 (3123 liest die ed. Bomb. अभिकारयत्सु st. आवारयत्सु). *hemmen:* सारङ्गभिरपां संघातमावारयेत् Varâh. Bhp. S. 54, 118.

— अपा (eigentlich nur ein gedehntes अप, wie auch अपि und अभि im Veda vor वृ ihren Schlussvocal verlangern); vgl. ṚV. Pâr. 9, 2. *öffnen:* अपावृण्वानाः Lâṭj. 2, 10, 20. मुखमपावृणु Bhp. Âr. Up. 5, 15 = Îçop. 15 = Maitrâyaṇ. 6, 35. लोकद्वारमपावार्णु Kaush. Up. 2, 24, 1. द्वारमपावरीतुम् Vet. d. Oxf. H. 259, a, 12. मङ्क्षु मां तामपावृत्य R. 1, 67, 13 (69, 14 Gorr.). *offenbar machen, enthüllen:* उत्थितस्य शयनं विलासिनस्तस्य विश्वमृतान्यपावृणोत् Raghu. 19, 25. अपावृणोति st. प्रावृणोति und आवृणोति möchten wir lesen in der Stelle: यो ऽपावृणोत्यवितथेन वर्णान् कर्मणा an einer Stelle) MBh. 5, 1692. 12, 4010. अपावृत (s. auch bes.) *geöffnet, offen:* आस्य MBh. 5, 232. मुख R. 3, 43, 18. कर्णान्ध Bhâg. P. 3, 22, 7. द्वार MBh. 4, 228. Harîv. 2627. R. Gorr. 2, 96, 22. 3, 43, 40. 45, 3. 4, 5, 22. Kathâs. 32, 83. 108, 45. Spr. 4063. Bhâg. P. 3, 25, 20. 6, 9, 32. कवाट Kathâs. 81, 97. राजधानी R. Gorr. 2, 96, 22. चन्द्रपथ Harîv. 2623. धर्मपथ 14021. दिशः MBh. 13, 2091. लोकाः Bhâg. P. 3, 9, 30. 9, 3, 30. पयस् *offen* so v. a. *unbedeckt* MBh. 12, 8391. Harîv. 3413. *geoffenbart, enthüllt:* सत्य Bhâg. P. 3, 9, 15. 4, 3, 23. — Vgl. unter अप, अपावृत fg.

— उपा, °वृधि vod. P. 5, 4, 102, Schol. उपावृत *verdeckt* so v. a. *beschattet* (nach dem Comm.) Harîv. 6347 nach der Lesart der neueren Ausg., उपावृत ed. Calc.

— समुपा *öffnen:* द्वाराणि समुपावृणवन् R. 5, 13, 10. fehlerhaft für समया°; अपवृणवंश्च द्वाराणि ed. Bomb. 5, 12, 16.

— पर्या, °वृत *verhüllt, verdeckt* Milatim. 90, 7.

— प्रा (eigentlich ein gedehntes प्र; ṚV. schreibt im Padap. stets प्रावृत ohne Trennung; vgl. VS. Pâr. 5, 37 und unter अपि, अभि, अपा) *bedecken:* वस्त्रा प्रावृत्य सर्वम् AV. 11, 8, 15. प्रावारिणु: Bhatt. 9, 25. *umthun, anlegen* (ein Kleid u. s. w.): तदस्त्रमस्त्रज्ञः प्रावृणोत् MBh. 3, 2997. Mṛicch. 22,

22. वास एव यथा त्यक्तं प्रावृण्वानाः MBu. 3,4715. प्रावत्य कृष्णवासोसि 1,2032. Kathâs. 56,318. 412. Mârk. P. 40,14. Saddh. P. 4,19,b. अयं पटः प्रावरितुं न शक्यते Mṛicch. 33,16. — प्रावृणोति MBu. 3,1692 wohl fehlerhaft für अपावृणोति. — प्रावृत *bedeckt:* निर्णिजा रेक्णसा ṚV. 1,162,3. नीकाशेन 10,82,7. त्विषा AV. 12,5,3. तमसा 18,3,3. MBu. 13,7473. इषुजालेन R. 6,20,17. स्फाटिकप्रावृततला (शाला) 5,13,11. सिन्दूरेण प्रावृता (so ist schon des Metrums wegen zu lesen) पुरी Kathâs. 103,169. कुम्भ Gobh. 2,1,12. 19. अप्रावृता व्रजेत् Çat. Br. 7,5,2,41. Jâân. 1,136. Pâraṇ. Dh. 8,7,6. 7. वासमा 17,12,5. 19,7,1. वस्त्रार्ध° MBu. 3,2423. भयेन *erfüllt von* R. bei Muir, ST. IV,401 प्रभृता: ed. Bomb. 6,93,34. भयार्ता: Gorr.). *umgelegt, angelegt* (ein Kleid u. s. w.): वल्कल Kathâs. 32,107. अर्धपट 56,341. वस्त्रयुग 332. m. f. n. = निवीत AK. 2,6,2,15. — Vgl. प्रावर fgg., प्रावार fg., कण्टकप्रावृता, कुप्रावृत.

— व्या, व्यावृण्वान Bhâg. P. 1,11,38 nach Burnouf *sich verhüllend, sich verstockend;* die ed. Bomb. (37) liest aber व्यापृण्वान, welches der Comm. durch व्याप्रियमाण erklärt. व्यावृत *offen:* शास्त्रेषु व्यावृता बुद्धिः so v. a. *hell sehend* Ragh. 1,19, v. l.; man könnte auch व्यापृता vermuthen. व्यावृत्य MBu. 3,363 gehört zu वर्त्.

— समा 1) *bedecken, verhüllen:* ताम्यारिधानेन वासमा स समावृणोत् MBu. 3,2310. 2295. शिलावर्षेण सहसा मां समावृणोत् 858. मेघैर्भुजगनायम् 1,1185. तमः सूर्यम् R. 2,40,9. *umgeben, umstellen:* तदानीमिन्द्रस्तडिलं स्वसैन्येन समावृत्य Sây. zu ṚV. 1,11,5. *erfüllen:* स शब्दः प्रदिशः सर्वा दिशः खं च समावृणोत् MBu. 7,724. Mârk. P. 102,9. समावृत *bedeckt, besetzt mit, verhüllt* Kâuç. 125. नानागुल्म° (कानन) MBu. 4,870. R. 2,35,14. चैत्ययूप° 50,8. R. Gorr. 1,20,22. 2,12,36. 125,12. 4,33,8. 24. Kâm. Nitis. 16,4. नानोरग° (ह्रद) *erfüllt von, bewohnt von* R. 3,76,36. दृष्टि° (वन) Vaṇîn. Bhn. S. 19,1. चतुर्वर्ण° (जनपद) Verz. d. Oxf. H. 33,a,14. *bezogen, überzogen* (ein Sonnenschirm) Vaṇîn. Bhn. S. 73,3. सूर्यः — शरजालसमावृत *verhüllt* MBu. 5,7194. R. 2,69,11. R. Gorr. 2,40,12. लतागुल्म° R. Scul. 1,9,12. योगमाया° Bhâg. 7,25. मोहजाल° 16,16. धूर्मेण *gehüllt in* so v. a. *geschützt* MBu. 3,2336. प्राकारेण पुरी *umgeben* R. 3,54,15. प्रासादा ज्वलनेन 5,52,11. लीलादेहेन Verz. d. Oxf. H. 33,a,13. Pañcat. 2,2,81. सलीलगण° MBu. 3,2146. R. 2,48,2. 78,12. Mârk. P. 20,3. Pañcat. 1,10,55. Bhatt. 8,63. शशो नक्तञ्चरगणैः R. 4,42,16. — 2) *verstopfen, hemmen:* ततः शर्यातिसैन्यस्य शकृन्मूत्रे समावृणोत् MBu. 3,10339. तव लोकाः समावृताः *verschlossen für dich* 1,8242. — समावृत R. Gorr. 2,83,1 fehlerhaft für समावृत्त.

— उद् *weit öffnen, aufreissen* (die Augen): क्रोधादुद्वृत्य चक्षुषी MBu. 7,869. 4051. 8,601. उद्वृत्त fehlerhaft für उद्वृत्त in उद्वृत्तलोचन 7,5406. उद्वृत्तनयन 9,132. उद्वृत्ताक्षि Mârk. P. 4,62. Vgl. विवृत्य नयने unter वि 1). In der Stelle वरवृत्त आत्मानमुद्वृत्य *sich aufhängend* Pañcat. 135,3 ohne Zweifel fehlerhaft für उद्वध्य, wie eine Hdschr. liest.

— नि 1) *abwehren:* शरवर्षेण निवव्रार रणे करिम् R. 7,7,25. निर्वृत *zurückgehalten, festgehalten:* अवामृतो निर्वृताः सर्तवा अपः ṚV. 1,57,6. तेभ्यो निर्वृतं मितमद्य उद्वन्दनमीरयतम् 112,5. धापो देवेभिर्निर्वृता धातिष्ठन् 10,98,6. *umgeben, umringt* AK. 3,2,37. H. 1471. Hall. 4,27. — 2) *umzingeln:* षड्विंशद्धरिकोट्यश्च निवव्रुर्वानराधिपम् Bhatt. 14,29. — Vgl. अनिवृत, निवर, निवार. — caus. *Jmd zurückhalten, abhalten, abwehren* MBu. 1,6765. निवारयेयं येनेन्द्रं वर्षमाणम् 8172. 3,688. 741. 2264. 4,645. 5,5066. 7244. 7304. 7,4435 (न्यवारयत ed. Bomb.). R. 1,37,23. 2,37,20. 60,23. 70,27. R. Gorr. 2,91,20. 3,1,16. 42,59. 4,11,8. Mṛicch. 78,16. Ragh. 7,53. Kumâras. 3,56. 5,83. Çiç. 88,7, v. l. Spr. 1640. 3197. Kathâs. 12,14. 13,42. 25,179. 30,139. 42,115. Bhâg. P. 1,8,43. 5,1,30. 6,11,3. Mârk. P. 20,54. 24,37. Daçak. 62,12. fg. Pañcat. 29,8. 103,5. 164,5. 247,20. Vet. in LA. (III) 15,10. तन्माता कीर्तिसेनाया दासीः पार्श्वान्यवारयत् Kathâs. 29,84. यूतात् MBu. 6,3940. पापात् Spr. 1771. अकुशलात् 3223. मुनिव्रतात् Kumâras. 3,3. Kathâs. 12,37. 20,80. 28,139. 36,80. statt des abl. der acc.: तम् — निवारयामासुर्देवारेभिषेचनम् MBu. 5,5062. — चन्द्रं च सूर्यं च निवारयेत *in ihrer Bewegung aufhalten* MBu. 5,1880. शरीरस्य स्रोतांसि निवारणी चकार Nir. 2,16. समुद्रोर्मिनिवारिताः कीर्तयः सरितश्च Kumâras. 6,69. वर्षं न्यवारयन्मरुत्तं तत्र शरजालेन *abwehren* MBu. 5,7269. Kathâs. 47,65. मरोत्काम् R. 3,24,19. उष्णम् Ragh. 7,4. स्तनोत्तरीयेण शशिनो मयूखान् Spr. 2832. मेघं तृणैः 4623. विन्ध्याद्रिम् 1818. तव्येव सकामनिवार्य बुद्धिम् R. Gorr. 2,110,3. *Etwas hemmen, unterdrücken, einer Sache Einhalt thun:* अवश्यमावी कार्योऽयं यो न शक्यो निवारितुम् निवर्तितुम् ed. Bomb., = निवर्तयितुम् Nîlak.) MBu. 6,3844. रात्रिमूयम् Harîv. 11102. वृष्टिम् Vaṇîn. Bhn. S. 35,6. ad Çiç. 25,7, v. l. Râja-Tar. 1,183. 5,191. *verbieten, untersagen:* वादित्रगणम् MBu. 1,5352. न्यवारयत वादित्राणि कंसः सव्येन पाणिना Harîv. 4723. रामगमनम् R. Gorr. 1,24,20. Kathâs. 5,17. 10,57. 17,36. Pañcat. 28,19. Bhâg. P. 4,14,6. Kull. zu M. 2,99. *vorenthalten:* क्षणा केन निवार्यते Spr. 3293. *wegschaffen, entfernen:* बन्धनानि Kathâs. 10,147. 39,239. 64,37. रोगवेद्रव्यम् 12,71. श्रमयम् 29,158. अघम् Bhâg. P. 6,13,17. शेषम् Spr. 509, v. l. देववेषम् *ablegen* Kathâs. 12,189. in Verbindung mit आदाय *Jmd abführen, wegführen* MBu. 1,4961. *wegschaffen* —, *verbannen aus:* यूतम् u. s. w. राष्ट्रान्निवारयेत् M. 9,221. Râja-Tar. 3,6. — Vgl. निवारक fgg.

— उपनि caus. *Jmd zurückhalten* R. 5,61,19.

— प्रतिनि caus. s. प्रतिनिवारण.

— विनि caus. *Jmd zurückhalten, abhalten, abwehren* MBu. 3,11489. 16,85. R. Gorr. 2,80,14. 5,36,25. 72,10. Mṛicch. 83,12. Spr. 2692. Kathâs. 46,166. सन्नेरस्त्राणि MBu. 7,6195. Harîv. 10703. वातो ऽपि निशारंस्तत्र प्रवेशे निवार्यते MBu. 1,1756. *Etwas hemmen, unterdrücken, einer Sache Einhalt thun:* विनयम् Mâlatîm. 11,16. Râja-Tar. 3,103. *verbieten, untersagen* 315. *wegschaffen, entfernen:* व्याधिम् MBu. 3,13857 (vgl. Spr. 4137). R. 7,61,24. Kâm. Nitis. 14,54. जीर्णं सुधामयं प्राकारम् Râja-Tar. 1,105. *entfernen* so v. a. *des Amtes entsetzen:* सचिवान् 71. einen Fürsten 4,715. — Vgl. विनिवारण fg.

— सनि caus. *zurückhalten, abhalten, hemmen* MBu. 8,479. Harîv. 13333. R. Gorr. 2,14,21. स्वान्मेघान्संन्यवारयत् (इन्द्रः) Bhâg. P. 10,25,24. — Vgl. सनिवारण fg.

— निम्, partic. निर्वृत 1) *erloschen* Mârk. P. 100,19. परि° *ganz erloschen* Burn. Intr. 590. — 2) (*aufgedeckt*) *froh, zufrieden* M. 1,54. MBu. 3,3062. R. 1,59,3. 2,33,24. R. Gorr. 1,38,18. 2,38,34. 3,5,12. 66,11 (विवृत gedr.). Vikr. 71,12. Kathâs. 18,403. 19,100. 25,209. 39,218. 49,202. 73,330. Râja-Tar. 2,12. Hit. 30,6. Bhâg. P. 4,1,52. 31,30. 5,1,3. 6,2,

s. साधु° 3,2,4. प्रति° 1,6,12. सु° Kathâs. 32,191. 46,151. अ° Bâgav. 16,7. Spr. 3183. अनिर्वृत्य absol. Bhâg. P. ed. Bomb. 3,14,24. = मत्कृतां निर्वृतिमप्राप्य Comm. — Nach Çârdûlavikr. bei Wilson soll निर्वृत n. *Haus* bedeuten. — Vgl. निर्वृति. — caus. *abwehren* Prân. 81,7.

— परि *bedecken, umringen; zurückhalten, hemmen:* वज्रिवांसं परि देवीरदेवम् ṚV. 3,32,6. नेतमंकुः परि वरदघाणेः 4,2,9. परि वामरूपा वयं घृणा वरन्त आतपः 5,73,5. तम् — परिवव्रुस्तपस्विनः *umringten* MBh. 1,3.3,933.7,4767. R. Gorr. 2,39,39. 4,25,1. Pañkat. 63,21. °वृत्य R. 6,81,7. Kathâs. 45,291. Pañkat. 233,5. partic. 1; परीवृत ṚV. 1,144,2. गोत्रा 2,17,1. तमसा 23,18. 10,133,6. राधस् 7,27,2. AV. 10,8,21. 12,3,2. 17,1,26. Âit. Br. 3,23. मृगान् (*eine Art von Elephanten*) किरणेन परिवृतान् *bedeckt* Bhâg. P. 3,20,23. कोपपरीवृतात्तर *erfüllt von* Verz. d. Oxf. H. 260,a, N. Z. 3. तमस् *umgebend* ṚV. 4,43,3. — 2) परिवृत *bedeckt, umgeben* Çat. Br. 1,1,2,21. 11,4,4,11. Âit. Br. 2,3. वृत्र *besiegt* P. 4,2,10. H. 754. सुवर्णकिङ्किणीपरिवृतोरस्क *umhangen* Pañkat. ed. orn. 4,3. *verhüllt* MBh. 13,1447. मृत्पिण्डो व्रतलेखया *umgeben* Spr. 2243, v. l. दीपिकाभिः Vikr. 44. Varâh. Bṛh. S. 21,11. 34,51. 84. Bhâg. P. 3,32,9. पुत्रामात्य° Âçv. Çr. 10,6,10. मृत्योः Jâân. 1,114. 359. MBh. 2,1628. 3,1726. 5,6095. R. 1,51,21. 2,14,26. 34,10 (35,8 Gorr.). 50,19. Mṛkkh. 137,8. Ragh. 1,37. Çik. 112,14, v. l. Mâlav. 70, 23. Varâh. Bṛh. S. 44,26. Prân. 107,4. Pañkân. 4,1,45. Pañkat. 48,22. Vet. in LA. (III) 6,5. अपरिवृतं धान्यम् *nicht eingehegt* M. 8,238. 240. — Vgl. परिवार, परिवृत fg., अपरिवृत, नित्यपरिवृत. — caus. *umgeben, umfassen, umringen:* भोगैर्मिः AV. 11,9,5. तमसा 10,19. उच्छ्रायीभ्यां छदिः Kâty. Çr. 8,3,27. 6,12. Gobh. 4,2,2. Lâṭy. 5,8,15. शरवर्षैः MBh. 3,12127. 5,5961. रघुव्रतेन 8962. परिवार्यामृतं तस्थुः *umstanden* 1,1428. रणाजिरम् 5,7112. पुरीम् Harîv. 4999. गिरिं परिवार्य प्रदक्षिणम् 3819. शयानं शकुन्ताः समन्तात्पर्यवारयन् MBh. 1,2947. 5134. 5,21 (med.). 14, 1827. 17,27 (wo पर्यवारयन् st. पर्येवारयन् zu lesen ist). 28. R. 1,5,2. 2, 87,7. 92,14 (101,16 Gorr.). R. Gorr. 2,95,28. 108,28. 3,62,30. 4,25, 18. Spr. 2857. Kathâs. 12,20. 13,39. Râga-Tar. 5,79. तान्परिवार्यावतस्थिरे MBh. 1,5770. ते परिवार्योपविविशुः 3,464. 4,793. 5,6060. 7229. 7298. R. 1,36,10. 2,34,13. R. Gorr. 1,37,11. 6,2,35. 81,7. Kathâs. 28, 29. स्वबलैः परिवार्य (°र्धार्य ed. Bomb.) *umfassend* MBh. 3,7239. परिवारित *bedeckt mit, gehüllt in* (instr.): अस्त्रिभिः 3,2057. वैयाघ्र° 2,1854. 7,268. परिखा° (निवेश) *umgeben von* R. 2,80,18. वेदिका° (उद्यान) R. Gorr. 2,87,16. शङ्कुभिस्तीक्ष्णैः सर्वतः परिवारितः (परिघः) 3,32,12. शकुनैः MBh. 1,2949. ब्रह्मर्षिभिः 7681. 2,1629. 3,2606. 4,616. 5,7052. 8, 2301. R. 2,84,12. R. Gorr. 2,2,35. 123,19. 6,3,9. Kâm. Nîtis. 6,1. Çiç. 9,31. Spr. 2286, v. l. Kathâs. 6,67. 12,54. 20,90. Râga-Tar. 1,292. 4, 590. Bhâg. P. 5,20,40. Mârk. P. 37,14. Pañkat. 43,8. — Vgl. परिवारण.

— अभिपरि. कोपेनाभिपरीवृतः *von Zorn erfüllt* R. 7,38,23.

— संपरि *umgeben, umringen:* संपरीवृत AV. 10,2,23. यूथैः संपरिवृतो R. 5,21,6. — caus. dass.: युधिष्ठिरं संपरिवार्य — उपाविशन् MBh. 3,10234. 4,2111. 6,2586. 2670. 7,5339. 8,3808. R. Gorr. 2,67,25. 3, 28,33. वानरैः — लङ्का संपरिवारिता 6,37,91. क्षीरोदेन MBh. 6,410.

— प्र *abwehren:* दृळ्हेभिः प्रवृणोति भूर्णिः ṚV. 7,82,6. 9,21,2. प्रवृता Kathâs. 103,169 fehlerhaft für प्रावृता. Vgl. 2. प्रवर, 2. प्रवरण, प्रवार und प्रा. — caus. *abwehren* MBh. 3,10476. 6,2809.

— प्रति caus. *Jmd zurückhalten, abhalten, abwehren, Jmd wehren* MBh. 3,12119. 4,1821. 1896. 5,7128. 6,816. 7,1109. 8,1090. Harîv. 676. 6789. R. 3,49,32 (so v. a. *abweisen, widersprechen*). 4,33,3. Bhaṭṭ. 17,49. शिलावर्षं शरवर्षेण R. 1,28,16. MBh. 3,12217. प्रतिवारित 16613. R. 5, 36,37. Mâlav. 11. विवेशाप्रतिवारितः R. Gorr. 2,17,3. 32,37. M. 8, 360. n. *Verbot:* एतत्प्रतिवारिते R. 7,45,20. — Vgl. प्रतिवार fg. und प्रतिवार्य.

— वि 1) *aufdecken, eröffnen, öffnen; daher* (das Dunkel) *erhellen; offenbaren, kundthun;* häufig im Veda mit Dehnung वीवृ und im Saṁdhi वीवो ṚV. Prât. 1,23. AV. Prât. 2,44. ज्योतिषा वि तमो ववर्व ṚV. 1,91,22. 62,5. 7. व्युष्मदा काष्ठा अर्वते वः 63,5. गावो न व्रता व्युषा वीवर्तमः 92,4. 113,4. 9. 13. 5,45,1. 6,44,8. 4,1,15. वि पर्वतस्य वृण्वे 21,3. 51,2. 5,31,3. 6,62,11. 7,90,4. व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः 8,9,16. वि नो राये दुरो वृधि 9,45,3. 97,38. VS. 13,3 (P. 2,4,80, Sch.). 20,36. Çat. Br. 7,4,1,14. 11,1,1,2. द्वार व्यवारिषम् 5,3, 7. अङ्गुल्या मध्ये विवृणोति Kâty. Çr. 7,7,21. 10,7,4. — नाकारणं विवृणुयात्कवाटम् *das Schwert entblössen* Varâh. Bṛh. S. 50,6. कामं तु मे मारुतस्तत्र वासः प्रक्रीडितायां विवृणोतु *öffnen* MBh. 1,2935. विवृणु स्वमोकः Bhâg. P. 3,24,33. मञ्जूषां विवृतवान् Kathâs. 13,49. द्वारं विवृत्य 50,183. द्वारः स्वयं व्यवर्यत्त *öffneten sich von selbst* Bhâg. P. 10,3,50. विवृणोति मुखं यावत्तस्य Kathâs. 73,7. वक्त्रं व्यवृणुत (*den eigenen Mund*) R. 5,8,3. यस्तु कर्णौ विवृणुते 6,2,26. विवृत्य नयने *die Augen aufreissend* 5,24,33. 56,33. MBh. 1,6273. ममाप्येतद्धृदि संपरिवर्तते । अभिप्रायस्य पापत्वाद्भयं तु विवृणोम्यहम् *offenbaren, kund thun* MBh. 1,3697. 6932. R. 2,73,27. Ragh. 19,40. Mâlav. 45. Kumâras. 3,68. Râga-Tar. 1,132. 5,185. Bhâg. P. 3,9,20. 24. Verz. d. Oxf. H. 130, *b*, 18. 136, *a*, No. 259. Bhaṭṭ. 7,73. विवव्रुः Kumâras. 3,38. Raghu. 6,85. विवृणवानी पुरातनम् MBh. 13,518. Daçak. 135,2. तवागतज्ञानं विवृताः Saddh. P. 4,28,*b*. विवृतवान् Kathâs. 72,211. विवरीतुगात्मनो गुणान् Spr. 1823. धातुपाठे विवरितुम् *erklären, commentiren* Verz. d. Oxf. H. 175,*b*, No. 398. विवृत *aufgedeckt, entblösst* MBh. 1,2942. Daçak. 90,11. वसुधा विवृतामधिशेते *auf der nackten Erde* MBh. 11,457. प्रसुप्तायामि विवृते (so mit der neueren Ausg. zu lesen) dass. Harîv. 4823. तथा तैरवकीर्णस्य दिव्यैरस्त्रैः समन्ततः । न तस्य चाङ्गुलमपि विवृतं संप्रदृश्यते *unbedeckt, frei von Wunden* MBh. 4,2027. अविवृतघराणि *verborgen, ungekannt* Bhâg. P. 5,12, 15. एकायः स्यादविवृतो नित्यं विवरदर्शकः *seine Blössen nicht zeigend* Spr. 3835. *geöffnet, offen:* पात्र Âçv. Gṛhy. 3. 53 bei Stenzler. सदन् Kâṭhop. 2,13. मुख, आस्य, वक्त्र MBh. 3,12931. R. 5,8,10. 56,25. Çâk. 7. Kathâs. 18,224. Hit. 76,6. सर्व ऊष्माणो ऽयस्ता निरस्ता विवृता (so ist zu lesen; = विवृतप्रयत्नोपेताः Çâk.) Kâṭhân. Up. 2,22,5. कण्ठस्य खे विवृते संवृते वा ṚV. Prât. 13,1. ऊष्माणो विवृतं च AV. Prât. 1,31.34 (°तम). Ind. St. 4,118. fgg. Schol. zu P. 1,1,9. 8,4,68. द्वार R. 2,67,16. R. Gorr. 2,99,4. Kumâras. 4,36. Râga-Tar. 6,7. बिल R. 4,51,37. 52, 7. 57,21. गर्त Mârk. P. 21,9. आश्चर्यमिव पश्यामि यस्यास्ते वृत्तमीदृशम् । आचरत्या न विवृता सद्यो भवति मेदिनी ॥ *dass sich die Erde nicht auftut* R. 2,35,12. तस्याः शरीरे विवृतं प्रविश्य R. Gorr. 1,47,17. शतधा विवृतं कवचम् 3,34,18. शोकसागर 4,22,14. संसारवर्त्म विवृतं कः पिधातुं

तदीयार: Kathâs. 28, 182. दिता: *blossgelegte Zähne* Bhâg. P. 5, 6, 41. 10, 61, 37. °स्मयन *ein Lächeln, wobei man die Zähne zeigt,* Âçv. Çr. 12, 8, 3. *offen zu Tage liegend* MBh. 1, 2246. Varâh. Bṛh. S. 68, 111. Spr. 3305. यवसार *eröffnet, dargeboten* Bhâg. P. 5, 2, 6. विवृतम् *vor aller Augen* MBh. 13, 6225. विवृतज्ञान Pâṇ. Gaṇ. 2, 7. मरिं शक्नोति विवृते प्रत्याख्यातुं नराधिपम् *gerade heraus oder öffentlich* MBh. 4, 344. *enthüllt, kundgethan, offenbart, auseinandergesetzt;* = विस्तृत Mnd. t. 156. वेदा: Mundop. Up. 2, 1, 4. पौरुष Spr. 4464. मत्त MBh. 12, 36. यात्मन् Harîv. 4242. Raghu. 15, 93. Kumâras. 3, 11. Çiç. 44. Bhâg. P. 3, 24, 38. Pañcât. 2, 7, 20. Kull. zu M. 2, 220. Sarvadarçanas. 31, 15. 38, 12. 87, 1. 94, 3. 148, 19. वीवृत *kundgethan* Verz. d. Oxf. H. 21, *a*, 26. — 2) *verdecken, verhüllen, verstopfen:* वसनस्येव चिक्कणाणि साधूनां विवृणोति य: MBh. 3, 13735. विशेषत: पिदधाति Nîlak.; offenbar fehlerhaft für पिवृणोति (s. u. यपि). — विवृते: Harîv. 3926 fehlerhaft für विधृते:, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. विवर, विवरण, विवृता, विवृति.

— सम् 1) *zudecken, verhüllen, verbergen:* यश्मसंहिता धारा: संवृणव्य: समन्तत: MBh. 3, 10981. Mṛicch. 46, 18. Sây. zu ṚV. 1, 52, 5. रात्रौ लोचने संवृणोति Vikr. 47, 12. (शरा:) शलभा इव संवृण्वाना दिशो दश MBh. 7, 1339. वस्त्रेण संवृत्य मुखम् 2, 2628. संवृत्याकारमात्मन: Kathâs. 31, 88. व्याघातो हि महान्तो मे संवृतु नृप दुष्कृत: MBh. 4, 52. *verschliessen:* द्वाराण्येतानि यो ज्ञात्वा संवृणोति 5, 1484. संवृत *verdeckt, bedeckt, eingehüllt in, verhüllt* H. 1476. Hâlâs. 4, 58. यसंवृतो वा विचर्षणे जनेरियाभि संवृत: प्र मेमं इन्द्र मर्पतु *der Soma beschleiche dich, wie man verhüllt zu Weibern schleicht,* AV. 8, 17, 7. मलेन MBh. 3, 2699. विषेण 2623. उल्बेन Bhâg. P. 3, 31, 3. चर्मणा M. 11, 108. वाससा ऽर्धेन MBh. 3, 2335. वल्कलाजिन° R. 1, 1, 31 (33 Gorr.). 2, 75, 20. Jâtâ. 3, 199. Varâh. Bṛh. 27 (23), 16, 22. Bhâg. P. 4, 4, 24. मु° MBh. 1, 4934. 4940. नीलालकवृन्द° (यानन) Bhâg. P. 4, 25, 31. कासनै: कमलै: R. 4, 44, 14. पाण्डुकम्बल° (नौ) 2, 89, 12. यसंवृतो संस्तरणेन मेदिनीम् R. Gorr. 2, 8, 59. यसंवृतायां भूमौ *auf der blossen Erde* 9, 35. 5, 21, 4. चन्द्रलेखा नीलाभ्रसंवृता MBh. 3, 2671. तमसा सूर्य: R. 1, 74, 14. 4, 39, 9. Kâm. Nîtis. 16, 28. Pañcât. 1, 2, 63. Bhâg. P. 1, 7, 30. यङ्गुलिसंवृताधरोष्ठ Çiç. 73. मरुता मेखलेन मुसंवृत: *so v. a. umgürtet* R. 5, 24, 26. सौधप्राकार° *umgeben von* R. Schl. 2, 80, 19. 80, 19 (87, 22 Gorr.). 5, 56, 67. पुलिने ऽलसंवृते 4, 24, 30. Varâh. Bṛh. S. 54, 40. करसंवृतमध्या *so v. a. mit der Hand umspannt* R. 3, 32, 25. कंधरान्तर° 4, 10, 22. ब्राह्मणव्रतै: *umgeben von* MBh. 3, 571. 1017. 2070. 5, 2223. R. 2, 34, 16 (35, 14 Gorr.). 96, 3. R. Gorr. 1, 79, 26. 109, 11. 4, 13, 10. Vet. in L.A. (III) 5, 16. सखीभि: सह संवृता Harîv. 4599. *verborgen, versteckt, geheim gehalten* Kaush. Up. 1, 1 (n. *ein verborgener Ort*). गुरु MBh. 1, 5722. 4, 140 (मु°). 571. R. Gorr. 2, 101, 13. 5, 13, 25. 53, 4. 69, 2. Pañcât. 91, 2. भितुर्वृषण R. 3, 32, 14. °संवार्य Spr. 4464. Çat. Br. 14, 6, 8, 8. MBh. 1, 2246. R. 5, 40, 8. मत्त Kâm. Nîtis. 8, 9. Raghu. 1, 20. 7, 27. Çiç. 44. Vikr. 43, 3. Varâh. Bṛh. S. 68, 54. Kathâs. 54, 110. Bhâg. P. 1, 18, 17. 4, 16, 10. Verz. d. Oxf. H. 29, *a*, 6. मुसंवृत *sehr auf seiner Hut seiend* Mâlav. P. 32, 22. स्व° (मु°?) dass. M. 7, 104. *geschlossen:* संवृतायणवेदिका (so die ed. Bomb.) R. 2, 42, 23. कर Varâh. Bṛh. S. 68, 39. लज्जासंवृतलोचन MBh. 3, 1888. 6, 5833. छिद्र Spr. 4246. °सर्वकारक Bhâg. P. 8, 6, 16. कण्ठस्य ते विवृते संवृते वा ṚV. Paipp. 13, 1. संवृतो ऽकार: AV. Paipp. 1, 26. Ind. St. 4, 118. fgg. Schol. zu P. 1, 1, 9. 8, 4, 68. *eingeschlossen in:* घट° (याकाश) Schol. zu Kap. 1, 51. यर्गे पट: संवृत एव शेते *eingeschlossen so v. a. verwahrt, bei Seite gelegt* Mṛicch. 33, 17. क्लेशसंवृतचेतना *geschlossen so v. a. unthätig* R. 5, 30, 12. *besetzt, in Beschlag genommen* MBh. 3, 14870. fg. *erfüllt, voll von* Çat. Br. 14, 5, 5, 18. शैलैर्भूमि: R. 1, 54, 21 (55, 21 Gorr.). तिमिनाग° (क्रुद्) 2, 81, 16. भय° Bhâg. P. 10, 4, 35. युद्धाद्ब्राह्मणसंवृतात् *so v. a. von einem Kampfe, an dem auch Brahmanen Theil nehmen,* MBh. 1, 7118. *versehen mit, begleitet von:* तुल्याभिन्न° 3, 2677. धर्म° भारती) 4, 914. ब्राह्मणयं दुर्लभतरं संवृतं परिपन्थिभि: 13, 1920. *vielleicht so v. a. mit Allem wohl ausgerüstet* 1814, — 2) *zusammenlegen, in Ordnung bringen:* यावद्वस्त्रं च वेणौ च विस्रस्तां संवृणोम्यहम् Kathâs. 64, 38. पाशान्संवारितुम् Hit. 23, 11, v. l. med. etwa *sich sammeln,* — *vereinigen:* समियं वरुत्त ṚV. 1, 121, 15. — 3) *hemmen, abwehren:* संवरिषीष्टास्त्वं शत्रो: पराक्रमम् Bhaṭṭ. 9, 27. *Jmd abweisen, zurückweisen* Kathâs. 30, 22. संवृत *gehemmt, unterdrückt:* °मैथुन Harîv. 1365. यभिमुखे मपि संवृतमीक्षितम् Çiç. 44, v. l. *gedämpft* (= समान Comm.) ṚV. Paipp. 15, 10. — 4) यसंवृत Bez. einer Hölle M. 4, 81. — 5) संवृत vielleicht fehlerhaft für संभृत in der Stelle: वाजपेयसहस्राणां सहस्रैः सुसंवृतैः MBh. 7, 2386. — Vgl. संवर, संवरण. संवृति. — caus. *zurückhalten, abhalten, abwehren:* प्रविशन्तं वनं द्वारि गन्धर्वा: समवारयन् MBh. 3, 14868. यस्त्रैरस्त्राणि संवार्य 4, 2057. 13, 1981. Harîv. 6682. MBh. 3, 14994.

— यभिसम् *verdecken, verhüllen:* यर्कं च सहसा दीप्तं स्वर्भानुरभिसंवृणोत् MBh. 5, 7239. यभिसंवृत *bedeckt, verdeckt, verhüllt:* श्वेतच्छत्राभिसंवृत 7, 1501. सर्वं वाणाभिसंवृतम् Harîv. 8075. R. Gorr. 2, 125, 11. शोकजालेन महता वितते न 5, 18, 10. वस्त्रार्धेन MBh. 3, 2731. 2905. शैलो नीलारुणै 1, 6022. रश्मिभि: सूर्य: 7, 667. Spr. 2969. *umgeben von:* सागरेण R. 5, 9, 14. Pañcât. 3, 11, 14. कुरुभि: MBh. 5, 3239. 6, 2413. Harîv. 5071. 11406. R. 2, 42, 22 (41, 20 Gorr.). 3, 63, 13. 5, 53, 18. 6, 2, 32. 92, 53. *erfüllt von, besetzt mit, voll von:* निरन्तरमभूत्तत्र जनौघैरभिसंवृतम् MBh. 2, 911. यदोभिर्मकरावासै: 7, 400. विविधत्नाभिसंवृता (पुरी) R. 7, 70, 17. शोकाभिसंवृता 4, 19, 5. *verbunden —, versehen mit, im Verein mit:* वीरलक्ष्म्या MBh. 18, 5. इदं देवर्षिचरितं सर्वतीर्थाभिसंवृतम् (पठन्) 3, 8261. 13, 6765. किलकिलाशब्द: प्रभाजालाभिसंवृत: Harîv. 6813.

— समभिसम्, °समभिसंवृत *umgeben:* रघुवंशेन MBh. 6, 4497.

2. वर्, वृणोति, वृणुते (वरीषे) Dhâtup. 27, 8. वृणाति, वृणीते (वरीषे) 31, 16. 20. यवृणि 1. sg. ṚV. 10, 33, 4. (मा) वैरम्, वरत्त: ववार, वव्रे. ववर्थ, ववर्मैकै: यवरिष्ट, यवृत, वृत, यवृषाम्, यवृत्र 1. sg. ṚV. 4, 55, 5. यवृषत 3. pl., वुरीत ṚV. 5, 50, 1. 6, 14, 1. वरिषीष्ट: वरितुम्, वरीतुम्: वियताम्, वृत: *sich erwählen, vorziehen, wünschen; lieber wollen als* (abl., ausnahmsweise instr.), *lieben:* दूतम् ṚV. 1, 44, 3. होतारम् 58, 7. सोमम् 32, 3. योषावृणीत युवा पतीं 119, 8. वृणमव इत्ते वृणीमहे 114, 9. इषं वारमृतयो वरन्त 140, 13. 167, 2. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये 3, 9, 1. 12, 3. 36, 8. ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन् *vorziehen* 39, 7. यस्मा इदा वृणीष्व मध्यमं 4, 31, 11. सोमात्सुनादवृणीता वसिष्ठान् 7, 33, 2. 9, 88, 1. यशो वृणानः पवते 94, 1. कुरुश्रवणमावृणि मंहिष्ठं वाघतामृषिः 10, 33, 4. वो विशो वृणतां राज्याय AV. 3, 4, 2. यपक्रामन्पौरुषेयाद्वृणानो दैव्यं वचः 7, 105, 1. यामिः सत्यं भवति यद्वृणीषे 9, 2, 25. 10, 4, 21. भमन्नु प्र पूर्व्य इषं वुरीतावसे *Trank mag er sich wählen* d. h. *sich nehmen zur*

Genüge ṚV. 6,14,1. सा तवेत्यब्रवीत्सा वै वो वरं वृणा इति वृणीष्वेति Ait. Br. 1,7. 2,22. गवां त्रीणि शतानि त्वमवृणीथा मत् *waren dir lieber als ich* 7,17. TS. 2,5,1,3. Çat. Br. 11,5,1,12. 14,7,1,1. कानृत्विजो ऽवृथाः 10,3,4,1. Âçv. Gṛhj. 1,23,1. fgg. 24,1. VS. 28,12. act.: इन्द्रो वृत्रमवृणोत्प्र मायिनाममिनात् (doppeltes Wortspiel) I. *suchte den Vṛ. aus, ihn unter den Zauberern vernichtete er* ṚV. 3,34,3. — त्रीन्वरान्वृणीष्व Kaṭhop. 1,9. Kaush. Up. 3,1. MBh. 3,6000. Ragh. 2,63. 3,63. Kathâs. 22,189. Bhâg. P. 4,20,23. Mârk. P. 16,87. 91,34. वृणु त्वं वरमीप्सितम् MBh. 1,3391. R. 2,9,23. व्रियतामीप्सितो वरः Bhâg. P. 7,3,17. Mârk. P. 16,50. वरदं तं वरं वव्रे MBh. 1,498. वरं च मत्कंचन वृणीष्व Bhâg. P. 4,20,16. सा वव्रे मत्पराजयम् *erbat sich* MBh. 5,7377. R. 2,31,5. यदेव वव्रे तदपश्यदाहृतम् Ragh. 3,6. Kathâs. 15,1. Bhâg. P. 4,12,8. Weber, Râmat. Up. 344. स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनि चैव रूपाणि देही स्वगुणैर्वृणोति Çvetâçv. Up. 5,12. अन्यद्वृणीतम् MBh. 1,7639. अवृणोत्पाण्डवानामदासताम् 2,2698. ववार रामस्य वनप्रयाणम् Bhaṭṭ. 3,6. वृतं तेनेदम् Kumâras. 2,56. AK. 3,2,41. H. 1484. यन्मनोगतं मत्तः — वृणीहि Bhâg. P. 4,12,7. Kathâs. 7,57. Bhaṭṭ. 9,25. AK. 3,4,24,175. तद्वृणुष्व माम् *das erbitte dir von mir* Mârk. P. 24,4. वृणोमि धर्मं न महीमधर्मतः R. Gorr. 2,18,54. कामादर्थं वृणीते यः *zieht vor* MBh. 5,990 (eig. 995). अपक्रमणमेवातः (so die ed. Bomb.) सर्वकामैरहं वृणे R. 2,34,40. वव्रे यजेयमिति 32,41 (45 Gorr.). वव्रे पुत्रं मारुतविक्रमम् । द्विजप्रसादादिच्छेयम् 5,3,24. वव्रे स च प्रभुम् । देवदानवयक्षाणाम् — अवध्यो भवेयं वै *er erbat sich von* MBh. 3,13583. रामं वरीतुं परिरक्षणार्थम् Râma *um Schutz anzugehen* Bhaṭṭ. 1,17. अवरिष्टाक्षमक्षम्यं कपिं हन्तुम् *er bat* Aksha *den Affen zu tödten* 9,26. यक्ष्यमाण आरुणिं वव्रे (d. i. zum Ṛtvig) Kaush. Up. 1,1. अन्यानवृषि Ḱhând. Up. 1,11,2. MBh. 1,6914. वसिष्ठमवृतर्त्विजम् Bhâg. P. 9,13,1. वृणुयादेव चर्त्विजम् M. 7,78. वृत 2,143. 8,206. तां न वव्रे पुरुषः कश्चित् *es erwählte kein Mann sie* (zur Gattin), *es warb Niemand um sie* MBh. 3,8567. न च कश्चिद्वृणोति त्वाम् (so zu lesen) 16647. तेन चास्मि वृता पूर्वम् 5,5971. Bhâg. P. 4,27,20. पुत्रस्य कृते वव्रे वसुदत्तस्य कन्याम् *er warb für den Sohn um* Kathâs. 21,58. पितरं नो वृणीष्व *werbe beim Vater um uns* R. 1,34,29. नान्यं पतिं वृणे MBh. 1,3388. 3,2173. 2187. 10541. Ragh. 12,33. Kathâs. 20,118. 44,41. Bhâg. P. 3,14,12. 4,27,21. 6,6,39. स्वयं हि वृण्वते राज्ञां कन्यकाः सदृशं वरम् 9,20,15. 10,60,11. सकृद्वृतो मया भर्ता न द्वितीयं वृणोम्यहम् MBh. 3,16684. वृते नैषधे भैम्या 2225. 2242. 2963. Vikr. 101. श्रीश्च त्वां वृणुते पद्मा R. 2,70,12. वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः Spr. 3226. Kathâs. 66,109. तं शुक्रवृषपर्वाणौ । वव्राते वै यथा पुरा so v. a. *zum Schwiegersohn ersehen* MBh. 1,3185. तं पौरोहित्याय वव्रे 675. Bhâg. P. 7,5,1. देवा वव्रिरे ऽङ्गिरसं मुनिम् । पौरोहित्येन याज्यार्थे काव्यं तूशनसं परे ॥ MBh. 1,3188. पतित्वे 3,2208. Ragh. 16,24. सारथ्ये भोजने MBh. 3,2901. अत्रेरपत्यत्वं (°त्वे?) वृतः Bhâg. P. 1,3,11. यन्मे कन्यां स्वकन्यार्थे (so die ed. Bomb.) वृतवानसि so v. a. *an Tochter Stelle annehmen* MBh. 5,7502. असमञ्जं वृणीष्वैकमस्मान्वा so v. a. *wähle zwischen ihm und uns* R. 2,36,20. परान्वृणीते स्वान्द्वेष्टि *liebt* MBh. 5,4149. *Jmd zum Gnadenempfänger erwählen* so v. a. *Jmd* (acc.) *eine Gnade gewähren*: वरीतुं त्वां तु शक्नुयाम् Râǵa-Tar. 3,421.

— caus. वरयति, °ते (ईप्सायाम्) Dhâtup. 35,2. *sich erwählen*, — *ausbitten*, *Jmd um Etwas angehen*, *werben um*: वरं वरय MBh. 1,6429. R. 1,31,13. 43,17. Bhâg. P. 2,9,20. 7,10,14. Mârk. P. 19,13. Hit. 116,7. वरयस्व MBh. 2,2410. 3,16778. Hariv. 7972. कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम् Spr. 3864. खनित्रपिटके R. Gorr. 2,37,5. ज्येष्ठां हिमवतः सुतां गङ्गां वरयां चक्रिरे देवाः 1,37,17. सरथौ सधनुष्कौ च भीमसेनधनंजयौ । यमौ च वरये राजन्नदासान्स्ववशानहम् ॥ *ich erwähle mir als Gnade, dass sie im Besitz von Wagen u. s. w. seien*, MBh. 2,2411. *Jmd bitten um*, mit dopp. acc.; act. MBh. 13,1119. R. 1,36,16. R. Gorr. 1,40,12. 2,9,18. — तं च राजा यष्टुकामो वरयिष्यति sc. zum Ṛtvig R. Schl. 1,10,9. आचार्यं वरयेयं त्वामस्त्रार्थम् MBh. 3,12015. सहायं वरयामास मारीचम् R. 1,1,48 (52 Gorr). 10,13. तं भर्तारं वरयामास MBh. 1,3779. 3,2157. 2169. fgg. 2189. 2217. 2769. 2972. fg. वरयेथाः शुभे ऽद्य तम् (sc. भर्तारम्) 1,7004. 3,2180. R. Gorr. 1,35,42. तां न कश्चिद्वरयामास (sc. पत्नीम्) MBh. 3,16643. Spr. 4972. MBh. 13,112. med. 3,2241. वरयित्वा 1,6134. दंपती । वरयां चक्रतुः कन्यां दशार्णाधिपतेः सुताम् *sie warben um* sc. für den Sohn 5,7417. fg. नृपतेस्तनुजां शिखण्डिने वरयामास दारान् 7418. वरये त्वां महीपाल लोपमुद्रां प्रयच्छ मे 3,8571. 13,105 (act.). रामलक्ष्मणयोरर्थे त्वत्सुते वरये R. 1,70,44. सुताद्वयं पत्न्यर्थं वरयामहे 72,5. 6. R. Gorr. 1,72,34. 74,5. 8. 7,80,11. तं यज्ञाय वरयामास R. Schl. 1,11,2. पार्थिवस्त्वां वरयते नगोत्तम ध्वजार्थम् Varâh. Bṛh. S. 43,18. सख्ये R. 5,89,17. पतित्वे MBh. 3,2140 (med.). मैत्र्याद्वरयित्वा विदूषकम् Kathâs. 18,342. ओंकारो ऽथ वषट्कारो वेदाश्च वरयन्तु माम् so v. a. *mögen mir hold sein* R. 1,65,21. R. Gorr. 1,67,13. — वरयति ist eigentlich denom. von वर.

— अप *abfinden*: अप त्वा वृणे शतेन Lâṭj. 9,9,20.

— अभि *erwählen*: मया शाल्वपतिः पूर्वं मनसाभिवृतः MBh. 5,5971. Pańḱar. 3,9,14. बहूनि सहस्राणि ग्रामणीत्वे ऽभिवव्रिरे MBh. 12,4861. श्रेयो हि धीरो ऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते *erwählen vor* so v. a. *vorziehen* Kaṭhop. 2,2.

— आ 1) *erwählen*, *erwünschen*: अवः ṚV. 2,26,2. 41,19. 3,2,4. इषः 12,5. आ वो वृणे सुमतिम् 33,11. 37,9. 7,59,11. 97,2. यस्य त्वं सख्यमावरः 8,19,30. AV. 19,42,3. — 2) *Jmd Etwas zukommen lassen*: यां चानृते दक्षिणामावृणोति MBh. 13,4317. = प्रयच्छति Nîlak. mit Erwähnung einer Lesart आपृणोति.

— व्या *erwählen*: तां कन्यां व्यावृण्वन्पार्थिवाः MBh. 1,4413 nach der Lesart der ed. Bomb., व्यवृण्वन् ed. Calc.

— उद् scheinbar R. 2,11,9, wo aber mit der ed. Bomb. उद्धरस्व st. उद्वरस्व und ausserdem माम् st. मे zu lesen ist.

— निस् *auswählen*: निरेकमिद्वृणते वृत्रहत्ये ṚV. 4,19,1. TBr. 1,3,6,7. 6,1,10.

— परि *erwählen*: युवोः श्रियं परि योषावृणीत ṚV. 7,69,4. 4,41,7.

— प्र *erwählen*: प्र त्वा दूतं वृणीमहे ṚV. 1,36,3. 3,19,1. पूषणं युज्याय 8,4,15. प्र सुन्वानस्यान्धसो मर्तो न वृत तद्वचः *von dem gekelterten Tranke nehme er an* 9,101,13. पुरोहितस्यार्षेयेण प्रवरं प्रवृणीरन् Ait. Br. 7,25. TS. 2,5,11,9. Çat. Br. 1,3,5,3. 4,2,3. 2,5,2,30. 6,2,23. Kâtj. Çr. 9,8,8. यथाप्रवृतम् 16. आर्षेयाणि गृहपतेः प्रवरित्वा (falsche Form mit Anklang an प्रवरः प्रथमं वरित्वा Comm.) Âçv. Çr. 4,1,17. करोमि कामं कं ते ऽद्य प्रवृणीष्व यथेच्छसि MBh. 7,437. 3,17196. धर्मं तु यः प्रवृणीते 5,771. Bhaṭṭ. 20,23. यावन्न ते ऽङ्घ्रिमभयं प्रवृणीत लोकः Bhâg. P.

3,9,6. 31,15. यदा नान्यं प्रवृणुते वरम् MBh. 3,17186. प्रवृणोमि Bhāg. P. 3,4,19. प्रवव्रे 4,20,26. प्रवृत so v. a. *adoptirt als Sohn* 9,7,1. — Vgl. 1. प्रवर, 1. प्रवरण, प्रवृतकाम fg. — caus. I. प्रवारयति *erwählen* MBh. 3,10810. — II. प्रवारयति 1) *Jmd befriedigen:* ननु भोज्येषु पानेषु वस्त्रे भाभरणेषु च प्रवारयसि नः R. 2,77,15. — 2) *anbieten, ausbieten:* पण्यस्त्रीव प्रवारिता MBh. 5,6006. प्रचोदिता ed. Bomb. — Vgl. प्रवारण 1) und प्रवार्य.

— प्रति *erwählen:* रूपंरूपं वा प्रतिवना: प्रति मित्रा यवयत AV. 3,3,5.

— वि s. u. व्या.

— सम् *erwählen, aufsuchen:* कृतज्ञं वृद्धाश्रयं संवृणुते (pl.!) उनु संयद: Bhāg. P. 4,21,43.

1. वर (von 1. वृ) m. 1) *Umkreis, Umgebung, Raum* AV. 13,4,52. मा मानुषीरभि विशो वि भाति वेश्वानरो वावृधानो वरेण (oder *Wahl*) RV. 7, 3,3. वर: पृथिव्या: *auf dem Erdenrund* 3,23,4. 53,11. AV. 7,8,1. उभा स वरा प्रत्येति भाति च RV. 5,44,12. वरे देवानामवं स्पति TS. 2, 3,6,1. Vgl. वरस्, वरसद्. — 2) *das Hemmen:* न यो वराय मरुतामिव स्वनः सेनेव सृष्टा RV. 1,143,5.

2. वरे (von 2. वृ) nom. ag. (f. या) *wählend;* s. पतिंवरा. m. *Freier* (auch *Bräutigam, Geliebter, Gatte* H. 8. 516. Halāj. 2,242); *Freiwerber* RV. 1,83,2. 5,60,4. सरूपासो न योषणो वरे न योनिमासदम् 9,101,14. सूर्याया यश्विना वरा 10,85,8. 9. AV. 2,36,1. 5. 6. 14,2,1. Ait. Br. 4,7. Kauç. 24. ज्ञातं कृतमङ्गलं वरम् Çāṅkh. Gṛhj. 1,12. Dunkel ist: वरेभिर्वीरो अभि यु प्रमीदत: RV. 10,32,1. — M. 2,138 (Jāān. 1,117). 3,29. Jāān. 1, 58. इच्छान्योऽन्यसंयोग: कन्यायाश्च वरस्य च M. 3,32. 9,88. MBh. 3,16647. Hariv. 5948. सदृशं चावकृष्टं च प्राप्य कन्यापिता वरम् *einen Freier für die Tochter d. i. Eidam* (daher वर = जामातृ Taik. 3,3,363. H. an. 2,450. fg. Med. r. 63) R. 3,4,21. 32 (वरवत्). 36. Rāgat. 6,86. 7,4. 17. Çiç. 15,11. 88, v. l. Spr. 702. 2724. AK. 2,7,37. Kathās. 16,67. का वरस्य विचारणा 24,32. 26,152. 30,73. 34,255. 35,133. 44,106. 52,100. 79,27. fg. 89,106. 103,189. 122,54. Sin. D. 4,22. वरार्थ (= पतिकाम Comm.) Bhāg. P. 3,8,5. 14,12. 4,27,8. 9,6,43. 20,15. Pañcat. 129,15. LA. (III) 13,1. 20,14. 35,20. = विट, पिङ्ग H. an. Med. — Vgl. ज्येष्ठ°.

3. वर (wie oben) m. P. 3,3,58. (hier und da auch n., z. B. MBh. 1, 7644. 8,1764. 1767. Rāja-Tar. 3,67. an allen Stellen ist leicht eine Correctur anzubringen; sicher steht das n. MBh. 1,7645 und Varāh. Bṛh. S. 58,28). am Ende eines adj. comp. f. या. *Wahl, Wunsch; ein als Geschenk oder Lohn zu wählender Gegenstand: das Wünschenswerthe, Erwünschte; Wahlgabe, Lohn* Ind. St. 5,343. = वृति AK. 2,3,8. H. 1523. an. 2,150. Med. r. 63. = देवाहूतम् AK. 2,4,25,175. = देवतादेरभीप्सितम् H. an. Med. = वृत Taik. 3,3,363. n. = किंचिदिष्टि H. an. भाव्य: स्त्रीणां वर: (sc. पते:) स्मृत: Bhāg. P. 9,14,21. नातो वरान्तरम् Weber, Rāmāy. Up. 345. कश्चिदन्योपि रुचिरस्ते वरो भवेत् । यत्र वान्यो दिशं भूमेर्गच्छाव यदि मन्यसे MBh. 5,3382. पश्य यत्रैत्र कश्चित्ते रोचते वर: 3683. रोषो न स्याद्वरो मम *mein Wunsch ist, dass* 7,2058. Hariv. 4627. स्त्रीणां वरमनुस्मरन् Jāān. 1,81. वरं वृ *einen Wunsch wünschen, eine Bedingung machen:* इयं वरमरुणयो ददन्त RV. 1,140,13. भद्रं वै वरं वृणते 10,164,2. त्रयो वरा यत्तभांस्त्वं वृणीषे AV. 11,1,10. Ait. Br. 1,7,3, 32. Kaush. Up. 3,1. MBh. 1,3391. 3,6000. R. 2,9,25. Rāgat. 2,68. 3,63. Kathās. 22,189. 38,70. Hit. 116,7. वरं याच् M. 3,238. R. 1,1,32 (28 Gorr.). 2,107,5. R. Gorr. 2,8,24. 37,16. 3,53,6. प्रार्थय् Spr. 1530. Rāja-Tar. 3,67. 419. 5,182. Pañcat. 135,8. एकस्य वर: प्रार्थनीय: 137,19. वरं काङ्क्ष् R. 1,35,14. वराकाङ्क्षिन् Rāja-Tar. 3,394. याचध्वो मेव तद्वरणं वरम् 434. वरं ब्रूहि Vet. in LA. (III) 28,9. वराय चोदित: Bhāg. P. 4,12, 8. वरं दा *einen Wunsch thun lassen, eine Wunschgabe gewähren* AV. 20,135,10. TS. 7,1,6,5. त्रीन्वरान्दद्यात् 5,2,8,2. TBr. 2,2,4,5. Ait. Br. 8,9. Çat. Br. 2,2,4,4. Jāān. 1,306. MBh. 1,7644. 3,2079. 2235. 16897. 8,1764. 1767. 1769. R. 1,4,22. 2,26,21. 34,42. 107,4. 3,53,8. Kathās. 18,161. Rāja-Tar. 3,420. Bhāg. P. 4,19,40. वरं प्रदा R. 5,3,22. वरस्य गोत्रस्य दात्रे RV. 8,52,8. AV. 16,6,10. तत्संयुतो वरो Rāgh. 12,5. तस्य वरो ब्रह्मणायमाज्ञप्त: Varāh. Bṛh. S. 5,14. वरं लभ् *seines Wunsches —, einer Wunschgabe theilhaftig werden* MBh. 1,2410. 7643. fg. Varāh. Bṛh. S. 43,3. Bṛh. 28 (26),9. प्रभवो वरशापयो: *Wünsche zu gewähren und Flüche auszustossen* Bhāg. P. 4,14,27. प्रति वरम् *nach Wunsch, nach Belieben* RV. 2,11,21. 10,133,7. वरमा dass.: घृतस्य पिब सोमस्य वरमा सुतस्य 116,2. 1,88,2. प्रति प्र यातं वरमा जनाय 7,70,3. 65,4. 2,39,2. वैश्वानरो वरमा रोदस्योरापि: समाद् पित्रोरुपस्थम् A. *wohnt nach Belieben im Schooss der Welten oder seiner Eltern* (könnte aber auch zu वरम् gezogen werden) 7,6,6. वराय *zur Wahl, zur Befriedigung, nach Herzenslust:* का त उपेतिर्मनसो वराय 1,76,1. स्वाहा रसो मधुषेयो वराय 6,44,21. यो वो वराय दाशति 7,39,2. वराय मन्यवे *nach Wahl und Sinn* 8,71,3. 73,4. मदरात् *in Folge der von mir gewährten Wunschgabe* Kathās. 18,316. 27,105. so v. a. *Vorzug, Privilegium:* एष वरो वणिजामीदृशेषपराधेषमुभिरविशेष: Daçak. 82,10. — आदित्यं चरुं निर्वपति वरो दक्षिणा TS. 1,8,4,1. वरो दक्षिणा । वरो हि राज्यम् *denn das Erwünschte ist Herrschaft* TBr. 1,6,4,5. वरो दक्षिणा । वरेणैव वरं स्पृणोति । आत्मा हि वर: 3,12,4,7. In diesen und anderen Stellen erklären die Comm. unter Berufung auf Āpastamba das Wort durch गो. यस्यो निविद्धरो वरो वा nach Comm. *der Lohn für Nivid ist ein Ross oder ein Rind* Çāṅkh. Çr. 7,21,9; dazu vgl. तस्मादाऽऽहुरश्वं निविदो शस्त्रे दद्यादिति तदु खलु वरमेव ददाति Ait. Br. 3,11, wo Sāy. *und zwar das beste* erklärt; eher *und zwar lässt man wählen.* पञ्चदक्षिणा धेनुर्वरो वा nach Comm. *oder was er sich wünschen mag* Kāty. Çr. 8,7,29. 10,38. Liṭ. 4,12,13. Taitt. Ār. 2,16,3. Gobh. 3,2,31. साचार्याय वरं ददाति गोब्राह्मणस्य वरो ग्रामो राजन्यस्य Pāṇ. Gṛhj. 1,9.2,1. Çāṅkh. Çr. 1,4,13. Gṛhj. 1,24. Kauç. 94. 106. Kāty. Çr. 1,10,12. 3,6,2. Liṭ. 2,9. 15. Jāān. 1,81. so v. a. *Mitgift:* प्राप्तवरां कन्याम् Pañcat. 252,18. *Liebesgabe, Almosen* Varāh. Bṛh. S. 58,38. fg. — Vgl. काम°, दत्त (in der ersten Bed. auch R. 2,96,45), धारा°, स्वयं°.

4. वर (wie oben) 1) adj. (f. या) a) *(erwünscht) der vorzüglichste, beste, schönste* AK. 2,4,25,173. 175. 20,237. H. 1439. an. 2,450. fg. Med. r. 63. Halāj. 4,4. देवा ददतु पद्वरम् Çāṅkh. Çr. 12,19,1. वरो (vielleicht वरं) धेनुं कर्त्रे दद्यात् Kauç. 112. 136. पुत्रा: MBh. 1,2396. निघ्नमाना वरान्वरान् 7,1529. Hariv. 7904. भूषणानि R. 2,39,15. 68,9. दक्षिणा 56,14. भोगा: R. Gorr. 1,4,7. 3,52,40. कन्या: 4,25,26. 5,11,22. Varāh. Bṛh. S. 74,1. Rāja-Tar. 5,431. Bhāg. P. 1,12,14. 6,4,15. Mārk. P. 96,45. Pañcat. 1,6,22. एतत्तत्रभवतो वरम् *am Besten für* R. Gorr. 2,95,21. फलं

वरमध्यनीचम् Varâh. Bṛh. S. 88, 46. वराधममध्यमाः Bṛh. 23, 17. Häufig mit seinem subst. comp.: °वस्त्र Addhuta-Br. 6, 6 in Ind. St. 1, 40. °दक्षिणा Jâḍ. 1, 358. वरासनेषु MBh. 1, 7717. वराङ्गना 3, 2807. वरायुधानि 8811. वराश्वयान° R. 1, 5, 15. °वस्त्राणि 2, 30, 44. 78, 7. Ragh. 11, 54. AK. 2, 6, 2, 20. 3, 4, 24, 240. Spr. 4323. Kathâs. 16, 85. 18, 98. Prab. 85, 3. Kâdamb. 22. Bhâg. P. 1, 9, 33. Mârk. P. 61, 35. 65, 5. mit einem gen. pl. *der beste, vorzüglichste unter:* सर्ववेदविदाम् MBh. 1, 107. द्विपदाम् 3, 2233. 17341. भार्या च सुहृदां वरा 4, 44. 14, 1528. R. 1, 1, 1. सरितां वरा 35, 11. R. Gorr. 2, 23, 3. Ragh. 1, 59. 5, 23. Kumâras. 6, 18. Kathâs. 22, 187. Bhâg. P. 1, 3, 41. Mârk. P. 108, 10. mit einem loc.: नरेषु च नलो वरः MBh. 3, 2101. mit einem abl.: प्रमदाभ्यो वरा *die schönste unter den Frauen* 1, 950. सर्वद्रव्याच्च पद्मम् M. 9, 112. दशतश्चाप्युदाहरम् 114. स हुत्वादृशतो वराम् 8, 221. Häufig in comp. mit dem im gen. u. s. w. gedachten Substantiv: पापो नृपहरो ह्यनः (hierher nach dem Comm., eher jedoch नृपहर = नृपहन्; Çâṅku. Ça. 15, 19, 1 hat निपहर) Âit. Br. 7, 15. ग्रामवराः MBh. 1, 4965. रथवराः 3, 2294. नर° 2792. नृपेरो नरोधव 4, 238. R. 1, 1, 66. पुरुवरम् 6, 6. 7, 15. 9, 65. भूत° 29, 6. इक्ष्वाकु° 2, 42, 1. सरिद्वरा Ragh. 16, 71. तरुवराः Ṛv. 3, 10. Vikr. 119. Spr. 411. 564. 2186. 3053. Varâh. Bṛh. S. 19, 6. 44, 15. 48, 56. Kathâs. 17, 8. 24, 127. Râǵa-Tar. 5, 157. Bhâg. P. 3, 5, 40. Vet. in LA. (III) 1, 13. नरवरोत्तम N. 12, 38. नरवरश्रेष्ठ R. 2, 61, 3. 7, 104, 13. ein solches comp. am Ende eines adj. comp.: उत्फुल्लनानातरुवरासु वनभूमिषु Kathâs. 34, 52. — *b) vorzüglicher, besser:* स्मृतिः स्मृतिः क्रमशो वराः M. 3, 12. mit einem abl.: हिरण्यभूमिलाभेभ्यो मित्रलब्धिर्वरा यतः Jâḍ. 1, 351. सर्वेषाम् शतादपि वरः सुतः MBh. 1, 4030. 13, 1441. R. Gorr. 2, 80, 10. Spr. 3397. 4201. Kathâs. 78, 127. Prab. 52, 14. statt des abl. der gen.: कामो धर्मार्थयोर्वरः Spr. 3049. — 2) m. *a) eine best. Körnerfrucht,* = वरट Schol. zu Kâṭy. Ça. 102, 17. — *b) Bdellium* Çabdar. im ÇKDh. — *c) Sperling* Çabdaratnâk. bei Wilson. — 3) f. आ *a)* Bez. verschiedener Pflanzen und vegetabilischer Stoffe: *die drei Myrobalanen* Med. *Cissus kernandifolia* Râǵân. im ÇKDh. Ratnam. 14. *Asparagus racemosus* 15. *Cocculus cordifolius DC., Gelbwurz,* = आत्मगुप्ता, मेदा und विडङ्ग Râǵân. im ÇKDh. = रेणुका Çabdaś. im ÇKDh. — Suçr. 2, 104, 10. 227, 17. — *b)* Bein. der Pârvatî H. ç. 48. — *c)* N. pr. eines Flusses MBh. 6, 333 (VP. 183). — 4) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41. *a) Asparagus racemosus* AK. 2, 4, 2, 19. Taik. 2, 3, 376. H. an. Med. — *b)* Bein. der Khâjâ, der Gattin des Sonnengottes, Taik. 1, 1, 100. — 5) n. *Saffran* AK. 2, 6, 3, 25. Taik. 2, 3, 363. H. an. Med. Bhâg. P. 4, 6, 16. — Vgl. पृथुरा, बीजवर, बुद्धि°, ब्राह्मण°, मल्लि°, मकावरा, मेधावर, यशो°, लोक°.

वरवरा f. *eine best. Pflanze,* = चक्रपर्णी Çabdaś. im ÇKDh.

1. वरक (von 1. वर) m. *Mantel* H. ç. 136. n. *Zeug* (धौताधौतमाधारणवस्त्र) Çabdar. im ÇKDh. *Zelt* (पीताच्छादन?) Hir. 69.

2. वरक (von 2. वर्) m. 1) *Brautwerber* Çiṅku. Gṛhy. 1, 6. — 2) *Wunsch:* हितीयं वरकं वव्रे MBh. 3, 9303.

3. वरक (von 4. वर) m. 1) *Phaseolus trilobus* H. 1173. *eine best. Arzneipflanze,* = पर्पट Râǵân. im ÇKDh. Ausw. 6. *eine wilde Bohnenart* Mad. in Nigh. Pr. = शरपर्णिका Sidde. ebend. = तृण (तृणधान्यभेद) Râǵân. im ÇKDh. — 2) N. pr. eines Fürsten (Varianten: धनक, कनक) VP. 417, N. 9.

वरकल्याण m. N. pr. eines Fürsten Schiefner, Lebensb. 232 (2).

वरकाञ्चिका f. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Vîrân. in Nigh. Pr. *ein der* वराटिका *ähnliches Korn* Sidde. ebend.

वरकीर्ति m. N. pr. eines Mannes Paṇḍar. 120, 14.

वरकेतु m. Bein. Indra's Taik. 1, 1, 58. H. 173.

वरग N. pr. einer Oertlichkeit Hall 174.

वरघण्टिका und °घण्टी f. *Asparagus racemosus* Ausw. 16. 29.

वरचन्दन n. 1) *schwarzes Sandelholz* H. an. 3, 31. Med. n. 240. Hir. 104. — 2) *Pinus Deodora* (देवदारु) Roxb. H. an. Med.

वरज्ञ = वरेज्ञ P. 8, 3, 16.

वरज्ञानुक m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 2, 108. घटज्ञानुक ed. Bomb.

वरट Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 81. 1) m. *a) eine best. Körnerfrucht,* vermuthlich *der Same von Saffor* (*Carthamus tinctorius*) Schol. zu Kâṭy. Ça. 102, 5. 781, 3. — *b) eine Art Wespe* AK. 2, 5, 27. — *c) Gans* Med. t. 50. — *d)* Bez. *eines best. Handwerkers* R. Gorr. 2, 90, 16. zu den Mlekkha gezählt H. 934; vgl. वरूट, वरूड. — 2) f. आ *a) der Same von Carthamus tinctorius* Bhâvapr. im ÇKDh. u. Râǵân. in Nigh. Pr. — *b) eine Art Wespe* AK. 2, 5, 27. H. 1215. an. 3, 170. Med. — *c) das Weibchen der Gans* AK. 2, 5, 25. H. 1327. H. an. Med. Hall. 2, 96. Sâṅgîtapâṭhop. 32, 2. 4. — 3) f. ई *a) eine Art Wespe* Taik. 2, 5, 34. Med. Suçr. 2, 258, 3. 287, 19. — *b)* H. an. 3, 171 fehlerhaft für वट्टरी. — 4) n. *Jasminblüthe* (कुन्दपुष्प) Çabdar. im ÇKDh. — Vgl. रक्तवरटी und वरल, वरला.

वरटक m. = वरट 1) *a)* Schol. zu Kâṭy. Ça. 102, 7. 648, 8.

वरटिका f. dass. Bhâvapr. im ÇKDh.

1. वरण् (von 1. वर्) Uṇâdis. 2, 74. 1) m. *a) Wall* AK. 2, 2, 3. H. 980. an. 3, 224. Med. n. 66. *Damm* Hall. 3, 49. — *b) Crataeva Roxburghii R. Br.* (auch वरुण, सेतु genannt), ein heil- und zauberkräftiger, in ganz Indien vorkommender Baum, AK. 2, 4, 2, 5. H. an. Med. AV. 6, 85, 1. 19, 3, 1. fgg. 19, 32, 9. Kauç. 8. Pâraṇ. Gṛ. 3, 3, 9. 10. Harîv. 12677 (nach der Lesart der neueren Ausg., वरुण die ältere). R. 2, 94, 9. Suçr. 2, 449, 10. Kir. 5, 25. — *c) Kameel* Hir. 81. — *d)* Bez. *einer best. Verstärkung auf einem Bogen:* वरणा (वारणा ed. Bomb.) यत्र सौवर्णाः पृष्ठे भासन्ति दीप्तिताः MBh. 4, 1326. — *e)* Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1, 30, 7. वरुण ed. Bomb. — *f)* pl. N. pr. eines Volkes Kiç. zu P. 1, 2, 53. N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang II, 183. fgg. Vie de Hiouen-thsang 263; vgl. 2) *b).* — *g)* Bein. Indra's H. ç. 30; vgl. वराण. — 2) f. आ *a)* N. pr. eines Flusses bei Benares Med. Gibâlop. in Ind. St. 2, 74. Verz. d. Oxf. H. 46, *a*, 31. 71, *b*, 41. WebER, Râmat. Up. 344. 348. VP. 184 = MBh. 6, 338, wo aber die ed. Calc. वरुणासंगम् (वरुणा und असी), die ed. Bomb. वाराणसीम् liest; vgl. VP. (II) II, 182. — *b)* N. pr. einer Stadt P. 4, 2, 82. वरणानाम् (wohl der Baum gemeint) बहूदभवं नगरं वरणा (वरणाः Sidde. K.) Schol.; vgl. 1) *f).* — 3) n. *a) das Abwehren, Verbieten* H. 1539. — *b) das Umringen, Umgeben* (वेष्टन) Med.

2. वरण (von 2. वर्) n. *das Wählen, Wünschen, Werben* H. an. 3, 224. Med. p. 66. वर° Kâṭy. Ça. 1, 10, 2. 5, 4, 33. ब्रह्म° 8, 1, 6. 25, 11, 8.

Schol. 132,16. 133,3. योऽशानामूर्जितानाम् Verz. d. Oxf. H. 207,a,25. Kull. zu M. 2,143. 4,87. मित्र° Vaśiṣ. Bḍh. S. 99,6. क्रियतां वरुणो (so verbesserte Schlegel st. वरुणो) लोकपालानाम् *man wähle* sc. zu Gatten MBh. 3,2171. न च विप्रेषधोकारो विद्यते वरुणे प्रति। स्वयंवरः तत्रिगुणामितीयं प्रथिता श्रुतिः॥ 1,7067. Kathâs. 28,79. स्वयं कलिङ्गसेनाख्या वरुणाय समागता 31,61. Râja-Tar. 3,434. Verz. d. Oxf. H. 215,b,34. कन्या° R. 1,70 (72 Gorr.) in der Unterschr. वरुणो रोचयति मे 7,17,10. Vaśiṣ. Bḍh. 24,16. = पूजनादि Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. पुनर्वरुण.

वरुणक (von 1. वरुण) adj. *verdeckend, verhüllend* Śiśupâlav. 13.

वरुणमाला f. *der Kranz, den das Mädchen dem erwählten Bräutigam aufsetzt*, Kathâs. 56,278. — Vgl. वरुणस्रज् und वरस्रज्.

वरुणसी f. = वाराणसी Çabdar. im ÇKDr.

वरुणस्रज् f. = वरुणमाला Râja-Tar. 1,62; vgl. मत्कण्ठराजमौलिस्रक्-स्य मूर्ध्नि पपात च। तदेमस्थितया पृथ्व्या वरुणार्थमिवार्पिता॥ 7,1322.

वरुणावती (von 1. वरुण) f. vielleicht N. pr. eines Flusses AV. 4,7,1.

वरुणीय (von 2. वर) adj. *zu wählen, zu erwählen:* वर Kâṭhop. 1,27. पति Kathâs. 36,249. 107,86. Sarvadarçanas. 59,3.

वरुट s. शल्क°.

वरुण Uṇâdis. 1,138. m. AK. 3,6,2,18. Sidd. K. 249,b,16. 1) m. *a) Mensch. — b) Ausschlag im Gesicht. — c) eine Veranda* (अन्तरावेदि) Taitt. 3,3, 114. H. an. 3,135. Med. ḍ. 33. Viçva bei Uṇâdis. — Wilson nach Çabdârthan. ausserdem: *a heap of grass; the string of a fish hook; a packet, a package.* — 2) f. आ *a) eine Art Drossel* (माहिका) H. an. Med. ḍ. 36. Hir. 89. — *b) Dolch, Messer* H. an. Med. — *c) Docht* (वर्ति) Med.

वरुणक 1) m. *a) eine kleine Erdaufschichtung* Schol. zu Kâty. Ça. 688,20.23. — *b) der Sitz auf einem Elephanten.* — *c) Ausschlag im Gesicht* H. an. 4,32. Med. k. 202. — *d) Wand* H. an. — 2) adj. *a) rund* H. an. Med. — *b) gross, umfangreich.* — *c) elend* (कृपण). — *d) erschrocken* (भयसंपन्न) Çabdar. im ÇKDr.

वरुणडालु m. *ein best. Knollengewächs*, = फलपुष्प Taitt. 2,4,24.

वरुण्, °र्णति (गतौ) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

वरतनु 1) adj. (f. ऊ) *einen schönen Leib habend* Kâlakârak. 2,23. — 2) f. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑–⏑⏑–⏑–⏑– Ind. St. 8,418. Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VII,22; hier fälschlich mit Caesur nach der fünften Silbe).

वरतनु m. N. pr. eines alten Lehrers P. 4,3,102. Rasn. 5,1. Verz. d. Oxf. H. 18,b,9. pl. *seine Nachkommen* 19,a,25. — Vgl. वारतनवीय.

वरतिक्त m. *Wrightia antidysenterica* Râjân. im ÇKDr.

वरतिक्तक 1) m. N. zweier Pflanzen: *Asadirachta indica* und = पर्पट Dhanv. in Nigh. Pr. — 2) f. °तिक्तिका *Clypea hernandifolia W. et A.* Râjân. im ÇKDr.

वरतोया f. N. pr. eines Flusses (*schönes Wasser habend*) Çatr. 1, 55.

वरत्करी f. *ein best. Parfum*, = रेणुका Çabdaś. im ÇKDr.

वरत्रा (von 1. वर) f. Uṇâdis. 3, 107. *Riemen* AK. 2, 8, 2, 10. 10, 31. Taitt. 3,3,126. H. 915. 1232. an. 3,599 (वर्त्ति fehlerhaft für वर्द्री). Med. r. 191. Hall. 2,66. पुनर् वरत्रा बध्यताम् RV. 4,57,4. यथा युगं वरत्रया नह्यति 10,60,3. 101,5. 102,3. AV. 11,3,10. 20, 135,13. Âçv. Gṛhy. 2, 9,4. Varâh. Bḍh. S. 89,1. 95,42. Pârâśar. 128,9. 18. Kull. zu M. 8,289. Bhaṭṭ. 9,90. °काण्ड *Riemenstück* (*Stecken* nach dem Comm.) Kâty. Ça. 7, 6,27. वरत्र (wohl n.) Bhâg. P. 3,24,45. Die indischen Lexicographen führen *Elephantengurt* als besondere Bedeutung auf. — Vgl. दीर्घवरत्र, वैयाघ्रवरत्र, वाघ्र und वर्धी.

वरत्वच् m. *Asadirachta indica* Ratnam. 31.

वरद (3. वर + 1. द) 1) adj. *Wünsche thun lassend, — gewährend, bereit Wünsche zu erfüllen* AK. 2, 1, 7. H. 480. an. 3, 338. fg. (= प्रसन्न und शास्त्रचित्त). Med. d. 36. fg. (= प्रसन्न und समर्थक). von Göttern und Menschen Çvetâçv. Up. 4,11. MBh. 1,498. 1149. 6429. 5,7481. R. 1,14, 40. 31, 10. 35, 14. 2, 34, 42. 7,5,12. fg. Mṛicch. 47, 20. Kumâras. 6, 78. Mâlav. 76. Kathâs. 4,27. 20,55. 35,78. 52,403. 110, 86. Bhâg. P. 3, 9, 22. 4,8,51. Mârk. P. 16,87. fg. Weber, Kṛishṇaj. 295. f. °दा Taitt. Âr. 10,34. Kathâs. 6,79. 26,145. 53,175. Bhâg. P. 3,16,22. Pârâśar. 2,4,9. Verz. d. B. H. No. 901. = पार्वती H. ç. 49. — 2) m. *a)* N. des Agni im Çântika Gṛihyaśeṣa. 1, 9. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2566. — *c)* Bez. einer best. Manen-Gruppe Mârk. P. 96,45. — *d)* N. pr. eines Dhjânibuddha Wilson, Sel. Works II, 72. — *e)* N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 213,a, No. 505. — 3) f. दा *a) Jungfrau, Mädchen* H. an. Med. — *b)* N. pr. der Schutzgöttin in der Familie des Varatantu Verz. d. Oxf. H. 19, a, 25. — *c)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Physalis flexuosa Lin.* Bhâvapr. im ÇKDr. und Mad. in Nigh. Pr. *Polanisia icosandra* Râjân. im ÇKDr. = त्रिपर्णी Dhanvân. in Nigh. Pr. *Helianthus* Râjân. ebend. *Linum usitatissimum* und *Yam-Wurzel* Bhâvapr. ebend. — *d)* N. pr. eines Flusses MBh. 3, 8177. R. 4,41,13, v. l. Mâlav. 76. 88. LIA. I, 167. 174.

वरदचतुर्थी f. Bez. *des 4ten Tages in der lichten Hälfte des* Mâgha Verz. d. Oxf. H. 284,b,39. वरदा° wohl richtiger Wilson, Sel. Works, II, 184. fgg. und ÇKDr.

वरदत्त 1) adj. *in Folge eines Wunsches geschenkt, als Wahlgabe verliehen:* मन्त्रै: R. 5,44,16. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 106.

वरदराज m. N. pr. verschiedener Männer Hall 27. 83. 180. Gild. Bibl. 331. Verz. d. Oxf. H. 165,b, No. 367. 244,a, No. 606. 379,b, No. 394. 386,b, No. 509.

वरदराजीय adj. von Varadarâja *herrührend*, — *verfasst* Hall 27.

वरदर्शिनी R. 2,55,21 wohl nur fehlerhaft für वरवर्णिनी, wie die ed. Bomb. liest.

वरदाचतुर्थी s. वरदचतुर्थी.

वरदातर् = वरद 1); f. °दात्री Pârâśar. 2,4,9.

वरदातु m. *ein best. Baum*, = हरदातु Bhâvapr. im ÇKDr.

वरदाधीशयज्वन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 270,a, No. 213.

वरदान (3. वर + दान) n. 1) *das Gewähren eines Wunsches, das Verleihen einer Wunschgabe* MBh. 1, 7687. 7666. 3,12391. 12394. 12401. 12413. R. 2,34,26. 58,24. *das Ausbezahlen des Lohnes* Âçv. Çr. 3,12,6. — 2) N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8005. fg.

वरदानमय (von वरदान) adj. *aus der Gewährung eines Wunsches —, aus der Verleihung einer Wunschgabe hervorgegangen, darin bestehend* R. 2,77,13.

वरदानिक adj. dass. R. 2,107,7 (115,7 Gorr.).

वरदारु *Tectona grandis* Ratnik. in Nigh. Pa.

वरदारुक *eine best. Pflanze mit giftigen Blättern* Suçr. 2,251,16.

वरदाम्न् adj. = वरद 1) Bhâg. P. 3,21,7.

वरदुम m. *Agallochum* H. ç. 129.

वरधर्मकिर् (d. वर - धर्म + 1. कर्) *ein ausgezeichnetes Werk an Jmd (acc.) thun:* °कृत: R. Gorr. 1,74,16. statt dessen परो धर्म: कृत: 72,15 Schl.

वरपत्तिणी f. N. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 99,*b*, 18. 20.

वरपण्डित m. N. pr. eines Autors: श्री° oder पण्डितश्रीवर Verz. d. B. H. No. 566.

वरपर्णाख्य m. *Lipocercis serrata Trin.* Ratnam. im ÇKDa.

वरपाण्डा m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works I, 334.

वरपीतक *Talk* Ratnik. in Nigh. Pa.

वरपोत = श्रेष्ठशाक Siddh. in Nigh. Pa.

वरप्रद 1) adj. = वरद 1). — 2) f. आ Bein. der Lopâmudrâ H. 123.

वरप्रदान n. 1) = वरदान 1) MBh. 1,7724. Spr. 2730. Varâh. Bhp. S. 3,2. Hit. 116,10. Rasa. 2 in der Unterschr.

वरप्रभ 1) adj. (f. आ) *einen ausserordentlichen Glanz habend* Weber, Kṛishṇaj. 283. — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 13. fgg.

वरफल 1) adj. *die schönsten Früchte habend.* — 2) m. *Kokosnussbaum* Çabdâm. im ÇKDa.

वरबाल्हीक n. *Saffran* Comm. zu AK. 2,6,2,25. °वाल्हीक gedr.

वरम् (von 3. und 4. वर्) Gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. 1) वरं वरम् *nach Belieben:* तेषां व इन्द्रो रुचा वरं वरम् AV. 6,67,2. 11,9,20. 10,21. — 2) *vorzugsweise, lieber, besser* AK. 3,4,25,175. Med. r. 63. fg. *a*) in der ältesten Sprache construirt mit einfachem abl. oder abl. mit आ. पाकि क्षेमे उत योगे वरं न: RV. 7,54,2. प्र ते अग्नयो ऽग्निभ्यो वरं नि: शीर्ष्णुचत्त *besser als die andern* 1,4. मा वंक्षु योनाभिरासोषो वरं वक्षेसि स्रोषमनु 6,64,5. यद्भिना वर्क्ष्य: सृमिमा वरम् *wenn ihr zu (meinem) Opferherrn vorzugsweise kommt* 1,119,3. अये सप्तभ्य आ वरं प्रान्धे श्रोणं च तारिषत् *besser als sieben* (andere gekonnt hätten) 10,25,11. कुवित्तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं पयु: 2,3,5. (सप्तभ्य) देवान्मर्किभ्य आ वरम् *besser als deine Genossen* d. h. *wirksamer als die andern* Soma, *die von Andern gebrauchten Libationen* 9,43,2. 68,2. — *b*) mit praes. und imperat. so v. a. *es ist besser —, es ist am besten, dass, es wäre besser, wenn:* तस्माद्वरं सकाशं तं शकरालं समुद्धरे Kathâs. 5, 4. 40. 18,355. 24,60. 38,15. 114,87. तत्कश्चित्सूपकृद्वरम् । नये ऽत्र स्थाप्यताम् 20,193. 26,248. Kusum. 33, 15. mit Ergänzung des verbi finiti: अन्यत्र गतस्यापि मे कस्यचिद्दुष्टसत्त्वस्य मांसाशिन: सकाशान्मृत्युर्भविष्यति । तद्वरं भिक्षात् (genauer wäre भिक्षस्य) *darum ist es besser, dass es durch den Löwen geschieht* Pañcat. 90,16. वरमनेन शेषेण प्रियतमा मेलयिता 264, 3. — *c*) mit potent. so v. a. *eher könnte es geschehen, dass:* शठस्तु समयं प्राप्य नोपकारं हि मन्यते । वरं तमुपकर्तारं दोषदृष्टा च दूषयेत् ॥ Spr. 3051. Bhâg. P. 2,1,12. — *d*) in prädicativer Stellung: यस्ते सख्ये आ वरम् *der besser als deine Genossen ist* RV. 1,4,4. प्रतीचीं दिशामियमिद्वरम् AV. 12,3,9. Çat. Br. 3,9,3,16. शिष्यै: शतक्रतान्कोमानेक: पुत्रक्रतो वरम् (acc. st. abl.) Sharv. Bh. 4,1. घनात्मतमूर्क्षेभ्यो मृताजातो सुतो वरम् Spr. 35. वरमेक: (पुत्र:) कुलालम्बो 746. 1297. 1316. 2180. नरा न तमवेक्षन्ते तेनात्र वरमङ्गना: Varâh. Bhp. 8. 74, 12. Bhp. 7, 12. Kathâs. 43,89. वरं कूपशताद्वापी वरं वापीशतात्क्रतु: Spr. 2733. 2735. Bhâg. P. 5,19,23. शुष्कस्य व. s. w. तोरिव दरिद्रस्य न वरं जन्मिन: फलम् *der Nutzen ist nicht grösser als der eines verdorrten Baumes* Spr. 3006. — *e*) वरम् — न (न च, न तु, न पुन:, तदपि न, तथापि न) *α*) *eher —, lieber als:* या प्राणान्वरमर्पयन्ति न पुन: संपूर्णदृष्टे प्रिये Sîn. D. 54,22. वरं मरणमेवास्या मया तथापि नान्यस्य कोत्यूपायनाम् ॥ Spr. 1694. वरमाशीविषैर्दष्टं कुर्याच्च क्षेव दुर्जनै: 1618. खड्गिना वरमङ्के दृष्टो न तङ्कतुषा 342. नाहं — वरम् *nicht — vielmehr* Saṃskârapârijâ. 38,12. — *β*) *besser* (prädicativ) *als:* सावित्रीमात्रमाहो ऽपि वरं विप्र: सुयन्त्रित: । नायन्त्रितस्त्रिवेदो ऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी ॥ M. 2,118. वरं व्याघ्रक्रतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धनम् (so ist zu lesen) Mârk. 102. 7. Mrch. 6. Spr. 2726. fgg. 2738. 2746. 2748. 3101. 4196. 4968. fg. 4971. Kathâs. 19, 22. 33,36. Pañcat. 172,25. वरम् — न च Spr. 2734. 2737. 2739. 2744. 2750. 4970. वरम् — न तु 2732 2741. fg. 2745. 2747. 3768. वरम् — न पुन: 2730. 2740. Pañcat. 138,19. वरम् — तदपि न Spr. 2731. उचित: प्रणयो वरं विकृत्तुम् — उपचारविधिर्मनास्वनीनां न तु पूर्वाभ्यधिको ऽपि भावशून्य: Mâlav. 38. परमेकस्य सत्त्वस्य प्रदातुं जीवितं वरम् । न च विप्रसहस्रेभ्यो गोसहस्रं दिने दिने ॥ Spr. 1704. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि (instr. statt nom.) 2743. वरम् im Nachsatz wiederholt वरं पदर्धमाशेन तणमेकं हि जीवितम् । वरं न पदर्धेन कल्पकोटिशतान्यपि ॥ Spr. 2725. वरं प्रज्ञा शाला न च खलु वरं (so ist wohl zu lesen) दुष्टवयस: 2730.

वरमुखी f. *ein best. Parfum,* = रेणुका Çabdâm. im ÇKDa.

वरय् s. u. dem caus. von 2. वर्.

वरयात्रा f. *die feierliche Procession eines Werbers, — Bräutigams* H. ç. 107.

वरयितर् (von वरय्) nom. ag. *Werber, Bräutigam, Geliebter, Gatte* H. 517. Hall. 2,342.

वरयितव्य (wie eben) adj. *zu wählen* Nir. 1,7. MBh. 1,4124. 4369.

वरयु m. N. pr. eines Mannes MBh. 3,2731.

वरयुवति und °तो f. 1) *eine schöne Jungfrau.* — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ‖ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. II, 162 (XI, 12). Ind. St. 8, 421.

वरयोग्य adj. *einer Wunschgabe würdig* Mârk. P. 16,88.

वरयोनिक = केसर Nigh. Pa.

वररुचि m. N. pr. eines Dichters, Mediciners, Grammatikers und Lexicographen, der hier und da mit Kâtjâjana identificirt und unter den neun Perlen am Hofe des Vikramâditja aufgeführt wird, Taik. 2,7,25. H. 852. Hem. Anth. S. 1. Med. Anh. 1. Kathâs. 1,64. 2,70. 9, 2. Pañcat. 223,4. fgg. Colebr. Misc. Ess. II, 45. 53. Weber, Ind. Str. 2, 53. fgg. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 7. 20. Verz. d. B. H. No. 939. Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 18. 27. fg. 130,*b*, No. 320. 134, *a*, 34. 136, *b*, No. 332. 167, *a*, No. 371. 178, *b*, No. 408. 182, *b*, 3 v. u. 185, *a*, No. 421. Gild. Bibl. 384. Wassiljew 47. 49. 74. Ind. St. 4, 346. Udâjan. zu Uṇâdis. 1, 11. 37. °लिङ्गकारिका 2,109. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

वररूप 1) adj. *eine schöne Gestalt habend.* — 2) m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5, 13.

वरल 1) m. *eine Art Bremse* Çabdâm. im ÇKDa. — 2) f. आ *a*) dass. H. an. 3, 674. Med. l. 118. — *b*) *das Weibchen der Gans* H. 1327. H.

an. Med. Halâj. 2,96. — 3) f. ई = वारा Gaṇjan. im ÇKDa. — Vgl. व-रट. वारला.

वारलब्ध 1) adj. *als Wahlgabe erhalten.* — 2) m. *Michelia Champaka* (चम्पक) *Lin.* Taik. 2,4,18. *Bauhinia variegata* Râǵân. in Nigh. Pa.

वारवत्मना f. *Schwiegermutter* Hâs. 201. Çabdam. im ÇKDa.

वारवर्ण m. *Gold* (vgl. सुवर्ण): वारवर्णाभ Harîv. 4464.

वारवर्णिन् 1) adj. *eine schöne Gesichtsfarbe habend* MBh. 3, 8427. — 2) f. *a) ein schönfarbiges Weib, ein schönes —, ausgezeichnetes Weib* AK. 2,6,4,4. H. 507, Sch. an. 3,31. Med. n. 241. Hâs. 243. MBh. 1,6009. 3,1848. 1862. 2099. 2146. 2218. 2766. 4,485. 5,5969. 7026. 7206. 7886. R. 1,10,5. 2,96,36. 107,5. 3,53,30. 7,56,18. Spr. 2708. Mârk. P. 16,76. 75, 47. Vet. in LA. (III) 26,20. Bein. der Durgâ Çabdar. im ÇKDa. MBh. 6,797. der Sarasvatî und Lakshmî Çabdar. im ÇKDa. — *b) Gelbwurz* AK. 2,9,41. H. 418. H. an. Med. Hâs. — *c) Lack* H. an. Med. Hâs. — *d) ein best. gelbes Pigment* H. an. Med. — *e) eine best. Pflanze,* = प्रि-यङ्गु H. an. = फलिनी Med.

वारवासि m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 188, N. 40.

वारवाह्लीक s. वारवाल्लीक.

वारवृत *adj. als Wahlgabe empfangen* Ait. Br. 1,7.

वारवृद्ध m. Bein. Çiva's Taik. 1,1,46.

वारशिख m. N. pr. eines Feindes des Indra ṚV. 6,27,4. 5.

वारशीत *Zimmt* Râǵân. in Nigh. Pa.

वारसेणी f. *eine best. Pflanze,* = mahrattisch लघुमोरवेल d. i. मयूरव-ल्लि Nigh. Pa.

वारम् (von 1. वर्; vgl. 1. वर) n. *Weite, Breite, Raum,* εὖρος ṚV. 1,190, 2. या सद्म उभा व्युषि क्रो यक्षान्युर्पत: पर्षद् वारेभि: 5,62,1. पृङ्क्ष वारे-स्यमिता मिमाना 2. आ यः पप्रौ चर्षणीधृद्वारेभिः 10,99,1. 2. वि यद्वारेभि: पर्वतस्य वृण्वे *die Breiten, Seiten* 4,21,6.

वारसद् (1. वार + सद्) adj. *im Kreise sitzend* ṚV. 4,40,5.

वारसार्व ved. = दारिक Cóṇṇâl. zu Uṇâdis. 2,86.

वारसुन्दरी f. 1) *ein überaus schönes Weib* Ind. St. 8,420. Kâdamb. 22. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* — ◡◡◡—◡◡◡—◡◡◡— — Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 6). Ind. St. 8, 420.

वारसुरत (4. वार + सु°) adj. (f. आ) *eingeweiht in die Geheimnisse des Liebesgenusses* Spr. 2600.

वारसेन (?) N. pr. eines Gebirgspasses Hiouen-thsang II, 190.

वारस्त्री f. *ein ausgezeichnetes —, ein edles Weib* H. 673. Halâj. 2,224. 392. Spr. 2593. Harîv. 160.

वारस्या (von 3. वर) f. *Wunsch, Bitte:* वारस्या याम्यर्धिग् ṚV. 5,73,2. आ मर्हतो गृत्त गृणतो वरस्याम् 6,49,11.

वारस्रज् f. *der Kranz, den das Mädchen dem erwählten Bräutigam aufsetzt,* Râǵa-Tar. 2,148. — Vgl. वरणमाला, वरणस्रज्.

वारक्क N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,42.

वाराक 1) adj. (f. ई) P. 3,2,155. Vop. 26,47. 4,10. *elend, erbärmlich, jämmerlich, Mitleid erregend* (= शोच्य, शोचनीय) H. an. 3,92. Med. k. 129. Çabdam. (= घवर) im ÇKDa. von lebenden Wesen gebraucht Spr. 363. 429. 713. 740. 1327. 2667. 2825. Kathâs. 25,98. 27,61. 37,80. 45, 35. 46,161. 52,261. 53,2. 58,31. 60,117. 74,64. 94,40. Râǵa-Tar. 2,47. 4,116. Daçak. 70,6. 92,13. Paṇḍar. 30,9 (od. orn. 26,16). 41,4. 8. 16. 81, 18. 108,13. Z. d. d. m. G. 14,575,2. Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,25. 253,*a*, 19. das Gold so genannt Kathâs. 28,10. — 2) m. *a)* Bein. Çiva's Med. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,3. — *b) Schlacht* H. an. — *c)* = mahrattisch पितपापडा (nach Molesworth *Gardenia latifolia* und *Fumaria parvi-flora*) Dravjar. in Nigh. Pa.

1. वाराङ्ग (4. वर + 3. अङ्ग) n. 1) *der schönste Körpertheil: a) Kopf* AK. 3,4,3,27. H. 367. an. 3,131. Med. g. 44. R. 1,66,10. Varâh. Bṛh. 1,4. — *b) die weibliche Scham* AK. Taik. 2,6,21 (वक्राङ्ग fälschlich gedr.). H. 609. H. an. Med. Halâj. 2, 359. Kathâs. 17,144. 147. 28,177. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,46. — 2) *Hauptstück* Varâh. Bṛh. S. 47,2.

2. वाराङ्ग (wie oben) 1) adj. *in allen seinen Theilen schön:* °उपेत als Erklärung von सिंहसंकाश AK. 3,1,12. — 2) m. *a) Elephant* Taik. 2,8,34. 3,3,69. H. an. 3,131. Med. g. 44. — *b)* Bez. *des* Nakshatra-*Jahres von 324 Tagen* Weber, Nax. 2,281. — *c)* Bez. Vishṇu's ÇKDa. nach Vishṇu's Sahasranâmastotra. — 3) f. ई *a) Gelbwurz* Râǵân. im ÇKDa. — *b)* N. pr. einer Tochter Drshadvant's und Gattin Samâǵâti's MBh. 1,3767. — 4) n. *a) grober Zimmt, Kassiarinde* oder dgl. Taik. 3,3,69. H. an. Med. — *b) Sauerampfer* v. l. in Ratnam. nach ÇKDa. u. वाराङ्गिन्.

वाराङ्गक n. = 2. वाराङ्ग 4) *a)* AK. 2,4,6,22.

वाराङ्गना (4. वर + अ°) f. *ein schönes Weib* MBh. 3,2153. R. 2,30,15. 65,20. R. Gorr. 1,9,16. 2,100,31. Spr. 2624. Kathâs. 22,10.

वाराङ्गिन् m. *Sauerampfer* Ratnam. im ÇKDa. वाराङ्ग n. v. l.

वाराजोविन् m. *ein Astrolog* Colebr. Misc. Ess. II, 181.

वाराट 1) m. *a) Otterköpfchen* (als Münze gebraucht) Taik. 3,3,306. 323. H. an. 2,97. Halâj. 3,42. Spr. 1721. — *b) Strick* Halâj. 2,442. Ratnâk. bei Bharata zu AK. 2,10,27. — 2) f. ई = वाराडी As. Res. 3,77.

वाराटक m. und f. (वाराटिका) AK. 3,6,8,38. Taik. 3,3,16. 1) *Cyprea moneta, Otterköpfchen;* m. Taik. 2,9,28. 3,3,34. H. 1206. an. 4,31. Med. k. 201. Sin. D. 259,21. काणा° Spr. 439. = $^1/_{20}$ Kâkiṇi = $^1/_{10}$ Paṇa Verz. d. B. H. No. 828. वाराटिका Spr. 439, v. l. Kathâs. 121,31. Paṇḍar. 135,7. प्रयागे मृत्यते येन तेन मद्रा वाराटिका Subhaṭa im ÇKDa. = $^1/_{10}$ Paṇa Paiçâcikîttenḍ. 7,*a*,4. — 2) m. *Samenkapsel der Lotusblume* AK. 1,2,3,43. Taik. 3,3,34. H. 1165. H. an. (wo °बीजकोशे st. बीजेकोर zu lesen ist) und Med. — 3) m. *Strick, Seil* AK. 2,10,27. Taik. H. 928, v. l. H. an. Med. am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 12, 2488, wo aber die ed. Bomb. °वाराका liest. — 4) f. वाराटिका *Mirabilis Jalapa Lin.* Vaidja in Nigh. Pa. — 5) n. *ein best. Pflanzengift* Suçr. 2,252,2. — Vgl. कालवाराक, किं°.

वाराकरम्ब m. *Mesua Roxburghii Wight.* Çabdam. im ÇKDa.

वाराटिकि (वारातिकि gedr.) Prâvarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,32 fehlerhaft für वारार्टकि.

वाराडी f. N. eines Râga (?): °राग Gîr. S. 48. वाराडि° 47. eine De-finition desselben S. VIII. — Vgl. वराटी und देशीय°.

वराण gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80. m. 1) = वरण. वरूण *Crataeva Roxburghii* Çabdar. im ÇKDa. — 2) Bein. Indra's Taik. 1,1,57; vgl. 1. वरण 1) *g*).

वराणस 1) oxyt. adj. von वराण gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80. — 2) f.

ई *a*) N. pr. eines Flusses MBh. 6, 328 nach der Lesart der ed. Bomb., वरुणा und असी ed. Calc., वरणा und असी andere Ausg. — *b*) = वाराणसी *Benares* H. 974.

वरातृष्ट N. pr. Ind. St. 1, 80. 82.

वराहन n. = राक्षादन Çabdak. im ÇKDr.

वरानना (f. वर + आनन) adj. f. *schönantlitzig* R. Gorr. 2, 38, 16. 3, 51, 37. Weber, Kṛshṇaj. 290.

वराभिध m. *Sauerampfer* Rigan. im ÇKDr.

वराम m. *Carissa Carandas Lin.* Ratnam. im ÇKDr. करम्म v. l.

वराय् (von 3. वर) *eine Wunschgabe darstellen:* शक्रशापेन मम वरायितम् Kathâs. 121, 119.

वरारक n. *Diamant* H. 1065.

वरारणि in der Stelle: ददर्श रावणस्तत्र गोवृषेन्द्रवरारणिम् R. 7, 23, 32. Comm.: गोवृषेन्द्रो महावृषस्तस्य सात्मातरम्.

1. वरारोह (f. वर + आ°) m. *ein vorzüglicher Reiter;* = गजारोह *Reiter auf einem Elephanten* H. an. 4, 241. Viçva im ÇKDr. = अश्वारोह *Reiter* Viçva ebend.

2. वरारोह (wie eben) 1) adj. f. (आ) *schöne Hüften habend,* καλλίπυγος AK. 2, 6, 4, 4. H. 307, Sch. Halâj. 2, 384. MBh. 1, 7721. 3, 1861. 2362. 16646. R. 2, 40, 13. 96, 9. 3, 38, 14. 5, 16, 11. 53, 27 (lies वरारोहे). Bhâg. P. 4, 15, 5. 26, 13. 30, 13. 5, 18, 2; vgl. u. अश्वारोह 6). — 2) m. Bein. Vishṇu's H. ç. 68. wohl nur fehlerhaft für वराह. — 3) f. आ N. der Dâkshâjaṇî in Someçvara Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 22. — 4) f. आ *Hüfte* H. an. 4, 241.

वरार्थिन् adj. *um eine Wahlgabe bittend* Kathâs. 20, 100.

वरार्ह (f. वर + अर्ह) adj. (f. आ) 1) *überaus würdig, in hohem Ansehen stehend:* शचीपति R. Gorr. 2, 12, 35. नराधिपाः 3, 4, 32. 4, 29, 26. Buddha Vishṇ. 2. — 2) *überaus kostbar:* रत्नानि, आच्छादनानि Hariv. 4810. पाटके R. 4, 25, 25.

वराल und °क *Gewürznelke* Nigh. Pr. °क m. *Carissa Carandas Lin.* Çabdâmṛtak. bei Wilson.

वरालि m. 1) *der Mond.* — 2) *a division of music* (vgl. वराडी) Wilson nach Çabdâmṛtak.

वरालिका f. ein N. der Durgâ ÇKDr. und Wilson nach Taik. 1, 1, 52, wo aber die gedr. Ausg. वारा° liest.

वराशि s. वरासी.

1. वरासन (f. वर + 1. आ°) n. 1) *ein prächtiger Sitz, Thron* MBh. 1, 7717. Bhâg. P. 4, 15, 14. — 2) N. pr. einer Stadt; s. u. देवक.

2. वरासन (wie eben) 1) adj. *einen prächtigen Sitz habend.* — 2) m. *a) Thürhüter.* — *b) Bulle, Liebhaber* (पिङ्ग) Viçva im ÇKDr.

3. वरासन n. *Hibiscus rosa sinensis L.* Çabdam. im ÇKDr.

4. वरासन n. *a cistern, a reservoir* Wilson nach Viçva. fehlerhaft für वारासन.

वराह Vop. 26, 23. 1) m. *a) Eber, Schwein* AK. 2, 8, 2. Taik. 3, 3, 159. H. 1287. Med. h. 22. Halâj. 2, 71. विन्ध्यवराहे तिरो वर्हिमस्तो (daher als *Wolke* erklärt Naigh. 1, 10. 4, 2. Nir. 3, 4) RV. 1, 61, 7. 8, 66, 10. 9, 97, 7. क्रोष्टा वराहे निर्तक कर्तात् 10, 28, 4. 99, 6. वराहो वेद वीरुधम् AV. 8, 7, 22. 12, 1, 48. Rudra heisst der himmlische *Eber* RV. 1, 114, 5. TS. 5, 2, 4, 2. 7, 1, 5, 1. °विकृत *vom Eber aufgewühlt* TBr. 1, 1, 3, 6. Çat. Br. 14, 1, 2, 11. Kâṭy. 8, 3. Kâty. Çr. 26, 1, 2. पशूनां वा एष मन्युर्यद्वराहः TBr. 1, 7, 9, 3. Kâṭy. 25, 2. मेदुर Çat. Br. 5, 4, 3, 19. वराहोपानही *Schuhe von Schweinsleder* Kâty. Çr. 15, 6, 24. 25, 4, 18. Kâṭh. Up. 6, 9, 3. M. 3, 239. 270. 5, 14. 18. 11, 134. 154. 199. 12, 43. MBh. 3, 2409. 15330. 6, 4124 (als Banner; वाराह ed. Bomb.). वराहदूतनिस्वन 4, 353. R. 2, 110, 4 (119, 4 Gorr.). Suçr. 1, 46, 20. °वसा 84, 20. zu den अनूप gezählt 204, 11. °यूष Bṛ. 1, 17. Ragh. 2, 17. Çiç. 39. Spr. 3673. Varâh. Bṛh. S. 29, 14. 67, 1. 68, 104. 81, 23. Kathâs. 11, 44. fg. Verz. d. B. H. No. 897. Pañcat. 120, 14. °दानविधि Verz. d. Oxf. H. 38, *b*, 23. Am Ende eines comp. als *Ausdruck der Vorzüglichkeit* gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2, 1, 56. — *b) Rind* (als sanskritisirtes Fremdwort) Colebr. Misc. Ess. I, 314. — *c) Widder* Taik. — *d) Delphinus gangeticus* Rigan. im ÇKDr. — *e) Vishṇu als Eber* (hebt die Erde vom Grunde des Meeres mit seinen Hauern) Med. वराहेण कृष्णेन शतबाहुनोद्धृता भूमिः) Taitt. Âr. in Ind. St. 1, 78. R. 4, 43, 33. 5, 102, 13. Uttarar. 99, 21 (132, 6). Varâh. Bṛh. S. 43, 54. Rigan-Tan. 6, 106. Weber, Kṛshṇaj. 284. 294. Rimat. Up. 317. Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, 3. 42, *b*, 31. 129, *a*, 13. °प्रादुर्भाव 45, *a*, 4. 83, *a*, 24. °पूजायन्त्र 96, *a*, 3. °प्रयोग 94, *b*, 13. °प्रसाद 75, *b*, 30. °मतनिवर्हण 231, *a*, 2. °माहात्म्य Mack. Coll. I, 83. महा° Ragh. 7, 53. Pharn. 2, 3. Rigan-Tan. 4, 197. 7, 1332. आदि° 5, 105. यज्ञ° (vgl. यज्ञमूकर) MBh. 3, 15332. — *f) Bez. einer Truppenaufstellung in Form eines Ebers* M. 7, 187. — *g)* N. pr. *α)* eines Daitja MBh. 12, 8264 (वराहास्यः st. वराहो ऽस्यः ed. Bomb.). Hariv. 2434. 2630. 3115. 14284. Kathâs. 109, 50. — *β)* eines Muni MBh. 2, 112. — *γ)* = वराहमिहिर Ind. St. 2, 231. Verz. d. Oxf. H. 326, *b*, No. 772. 331, *b*, No. 782. 334, *a*, 2. Udâyat. zu Unâdis. 3, 86. 4, 155. 5, 3. — *δ)* eines Sohnes eines Tempelhüters Rigan-Tan. 7, 207. °देव 365. — *ε)* eines Berges Med. MBh. 2, 709. R. 4, 43, 36. Vgl. °शैल, वराहाद्रि. — *ζ)* eines der 18 Dvîpa Çabdam. im ÇKDr. Vgl. °द्वीप. — *η) ein best. Maass* Med. — *h) Cyperus rotundus Lin.* Taik. Med. = वाराहीकन्द Rigan. im ÇKDr. — *i)* Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325. — *k)* abgekürzt für वराहपुराण Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 2. — 2) f. ई = N. zweier Pflanzen, = भद्रमुस्ता und सूकरकन्द Rigan. im ÇKDr. — Vgl. दुर्वराह, नृ°, महा°, वाराह.

वराहक 1) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2159. — 2) f. वराहिका *Mucuna pruriens Hook.* Rigan. im ÇKDr. — 3) n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325.

वराहकन्द m. *Yamswurzel* Rigan. im ÇKDr.

वराहकर्ण (*Eberohr*) 1) m. *a) Bez. einer Art von Pfeilen* MBh. 6, 3700. 7, 7420. 8128. 8, 4547. R. 3, 34, 32. — *b)* N. pr. eines Jaksha MBh. 2, 398. — 2) f. ई *Physalis flexuosa Lin.* Rigan. in Nigh. Pr.; vgl. वा°.

वराहकर्णिका f. *eine Art von Geschoss* H. 787, Schol.

वराहकान्ता f. *Yamswurzel* Çabdam. im ÇKDr.

वराहकालिन् m. *Sonnenblume* Hir. 94.

वराहकान्ता f. *Mimosa pudica* Ratnam. im ÇKDr.

वराहदंष्ट्र m. N. *einer zu den* तुद्रोग *gezählten Krankheit* Çiva. Saṃh. 1, 7, 65. °दंष्ट्रा f. ebend. und Nigh. Pr.

वराहदत्त m. N. pr. eines Kaufherrn Kathâs. 37, 100.

वाराहदत्त् und दत्त° adj. *Eber-Zähne habend* P. 5,4,145.

वाराहद्वादशी f. Bez. *eines Festes zu Ehren Vishṇu's als Ebers am 12ten Tage in der lichten Hälfte des* Mâgha Wilson, Sel. Works II, 207.

वाराहद्वीप N. eines Dvîpa Viṣṇu-P. in VP. 175, N. 3; vgl. वाराह 1) *g*) ζ).

वाराहनामन् m. 1) *Mimosa pudica* Rathnam. im ÇKDa. u. वाराहक्रान्ता. — 2) *Fumeswurzel* Çabdam. im ÇKDa.

वाराहपुराण n. Titel *eines* Vishṇu *als Eber verherrlichenden* Purâṇa Wilson in der Einl. zu VP. XLIV. fg. Weber, Kṛshṇaj. 260. fgg. Verz. d. Oxf. H. 270, *a*, 40. Verz. d. Tüb. H. 15. Hall 163. — Vgl. u. वाराह.

वाराहमिहिर m. N. pr. eines Astronomen, Sohnes des Âdityadâsa, Varâh. Bṛh. S. 47, 3. 54, 125. 86, 4. 104, 64. Bṛh. 28 (26), 9. Siṅhâvali bei Utpala zu Bṛh. 7, 13. Navan. bei Haeb. Anth. S. 1. Pañkat. 50, 20. fg.

वाराहमूल n. N. pr. einer Oertlichkeit mit einer Statue Vishṇu's als *Ebers* Râja-Tar. 7, 1321. 8, 453. fg.

वाराहर्यु (von वाराह) adj. *auf Eber begierig, zu ihrer Jagd tauglich:* श्वा न्वस्य ज्मिथ्यदपि कर्णे वाराहयुः ṚV. 10, 86, 4.

वाराहयज्ञ m. Bein. Çiva's Çiv.

वाराहशैल m. N. pr. eines *Berges* Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 4. — Vgl. वाराह 1) *g*) ε).

वाराहसंहिता f. Titel eines Werkes Verz. d. Cambr. H. 43. 67. Weber, Kṛshṇaj. 225. fg.

वाराहस्वामिन् m. N. pr. eines mythischen Fürsten Kathâs. 48, 55.

वाराहाद्रि m. N. pr. eines *Berges* Mbh. P. 55, 13.

वाराहाय m. N. pr. eines Daitja MBh. 12, 8264 nach der Lesart der ed. Bomb.; die ed. Calc. hat zwei Namen (wohl richtiger): वाराह und अश्व.

वाराहु m. so v. a. वाराह. *Götterschaaren des mittleren Gebiets* Nir. 5, 4. यथेदृष्टान्विधावतो वराहून् ṚV. 1, 88, 5. सं वृत्रमाशयानं सिरासु मरो वज्रेण सिषपो वराहुम् 121, 11. Bez. von *Winden* Taitt. Âr. 1, 9, 4. Sây. zu ṚV. 2, 12, 13.

वरितर् nom. sg. von 1. वर् P. 7, 2, 34, Schol. — Vgl. वरीतर्, वरुतर्, वर्तर्.

वरिन् (von वर्) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens MBh. 13, 4358.

1. वरिमन् (von 1. वर्) und nom. abstr. zu उरु m. P. 5, 4, 157. *Umfang, Rund; Weite, Breite:* दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथे ṚV. 1, 55, 1. यथे म पो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोत् 6, 47, 4. AV. 4, 6, 2. 7, 14, 3. 9, 2, 20. 12, 3, 72. VS. 3, 5. 4, 30. 11, 29. 15, 10. 18, 4. Çiṅkh. Ça. 3, 14, 8.

2. वरिमन् und वरीमन् m. dass.: पणेः संख्याता वरिमा पार्थिवानि AV. 4, 25, 2. मही पृथिवी वरीमभिः ṚV. 1, 131, 1. 159, 2. वरिमता पृथिव्याः 3, 30, 2. 4, 54, 4. 10, 28, 2. 29, 7. अकारि वामन्धसो वरीमन् *im Kreis umher* 6, 63, 3. या वो सुम्ने वरीमन्सूरिभिः ष्याम् *in der Weite d. h. unbeengt* 11. 8, 71, 4. वरिमतः AV. 6, 99, 1.

3. वरिमन् und वरीमन् (nom. abstr. zu 4. वर्) m. eig. *Vorzüglichkeit;* concret so v. a. 2. वरिष्ठ *der vorzüglichste, beste, ausserordentlich:* अस्य वर्ष्मणः पुंसो वरिम्णः सर्वयोगिनाम् Bhâg. P. 3, 25, 2. वरीमभिः कर्मभिः 4, 15, 26.

वरिवस् (von 1. वर्) n. *Raum, Weite; Freiheit, Behaglichkeit, Ruhe* (= धन Naigh. 2, 10) VS. 15, 4. 5. TS. 5, 4, 8, 3. mit कर् (vgl. VS. Pair. 3, 32): युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ *hast befreit* ṚV. 1, 59, 6. यद्रोहो रात्न्वरिवः पूर्वे कः *hast aus der Bedrängniss befreit* 63, 7. 102, 4. 3, 34, 7. 4, 21, 10. 24, 6. कृधि यत्र वरिवो बाधितायै 5, 18, 14. 44, 13. 50, 3. कृधि वरिवस्कृधी नः *mache uns freie Bahn* zu 7, 27, 5. 48, 4. 9, 62, 3. 10, 52, 5. प्राच्यज्ञकर्मवृकः सूर्यस्य कुत्सायान्यद्वरिवो पार्थवे कः *freilassen* 5, 29, 10. VS. 5, 37. mit धा : मघवा मघवभ्ये वरिवो धात् ṚV. 4, 24, 3. को वो ऽध्वरे वरिवो धाति देवाः *wer schafft euch Raum? wer macht es euch behaglich?* 55, 1. 7, 47, 4. त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु 62, 6. mit विद् : पुनान इन्दुर्वरिवो विदत्प्रियम् 9, 68, 9.

वरिवस्कृत् adj. *Raum schaffend, befreiend* ṚV. 8, 16, 6. TS. 5, 3, 11, 1.

वरिवस्य् (von वरिवस्), °स्यति P. 3, 1, 19. Vop. 21, 18. 1) *Raum geben, einräumen, verstatten, frühmachen:* उरोरा नो वरिवस्या पुनानः ṚV. 9, 96, 3. तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः 1, 122, 2. 14. 5, 42, 12. 6, 20, 11. तपो उषा वरिवस्यन्तु देवाः 52, 15. 7, 56, 17. 8, 46, 10. उभे यथा नो अहनी सचाभुवा सदः सदो वरिवस्यातं उद्भिदं 10, 70, 1. — 2) *es Jmd behaglich machen, zu Jmdes Diensten sein, bedienen, pflegen* (परिचर्यायाम्) P. 3, 1, 19. Vârtt. 3. mit acc.: गुरून् P. 3, 1, 19, Schol. ब्राह्मणरितगात्रं शात्यन्धं दीर्घतमसं मामतेयं वरिवसितुमशक्नुवानाः स्वगर्भदासा ममो प्रदाकाय प्रचिक्रिपुः Sây. zu ṚV. 1, 158, 4. नो नमस्यन्ति ते बन्धून्वरिवस्यन्ति मानवाः Bhaṭṭ. 18, 21. अग्नीन्वरिवस्यन्यातुधानाः 17, 31. चर्मभस्त्रिका वरिवस्यमाना mit pass. Bed. *gehegt, gepflegt* Daçak. 76, 19. partic. वरिवस्यित und वरिवसित *gepflegt, gehegt* AK. 3, 2, 31.

वरिवस्या (von वरिवस्) f. *das Gewähren* u. s. w.: कुवे यहो वरिवस्या गृणानः ṚV. 1, 181, 9. *Dienstverweisung* AK. 2, 7, 34. H. 497. Hall. 1, 129. कृतिनो किं भवादृशेषु ये वरिवस्यां प्रतिपादयन्ति *sagt eine arme Hausfrau zu Bettlern, die sie um ein Almosen angehen,* Verz. d. Oxf. H. 255, *a*, 28.

वरिवोदा adj. *Raum —, Freiheit schenkend* VS. 17, 15.

वरिवोधा adj. *Raum —, freie Bewegung schaffend* ṚV. 1, 119, 1. 9, 1, 3.

वरिवोविद् adj. *Raum —, Freiheit schaffend; Behaglichkeit gewährend:* यद्रोहिण्या वरिवोवित्तरासत् ṚV. 1, 107, 1. 175, 5. कृधि 2, 41, 9. 9, 21, 2. 61, 12. 62, 9. 96, 12. 110, 11. यो अभीके वरिवोविद्यपाकः 10, 38, 4.

वरिशी f. = वटिशी = वडिश Çabdar. im ÇKDa.

वरिष m. = वर्ष m. Kaṇḍa bei Uṇâdi. zu Upâdis. 3, 62. वरिषाम् f. pl. = वर्षाम् Bharata im Dvirûpak. nach ÇKDa. वरिष n. = वर्ष *Jahr* Çabdar. im ÇKDa. Brahma-P. in LA. (III) 54, 2 (Conj.).

वरियाप्रिय m. *der Freund der Regenzeit,* Bez. des Kâṭaka Çabdar. im ÇKDa.

1. वरिष्ठ (superl. zu उरु) adj. *der weiteste, breiteste, umfassendste* AK. 3, 2, 61. H. an. 3, 177. Med. th. 15. Hall. 4, 14. ṚV. 4, 56, 1. धीति 5, 25, 3. 48, 3. 6, 37, 4. 41, 2. वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धाः 47, 9. तद्दार्यं वृणीमहे वरिष्ठे (= वर्षिष्ठे Nir. 5, 1) गोपरत्वम् 8, 25, 13. कृता वरिष्ठम् 86, 10. वरिष्ठामनु संवतम् VS. 11, 12. सूर्यो वरिष्ठो बलधिर्वि भाति TBr. 3, 7, 9, 1. अतीव (विमान) R. 5, 13, 6. Vgl. auch u. उरु, wo aber das Beispiel MBh. 14, 879 zu streichen ist.

2. वरिष्ठ (superl. zu 4. वर) 1) adj. *der vorzüglichste, beste* Taik. 3, 3, 105. fg. = वरतम H. an. 3, 177. Med. th. 15. = वत्स Aṅara im ÇKDa. इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठम् Muṇḍ. Up. 1, 2, 10. 2, 2, 1. Praçnop. 2, 3. ṚV.

Pair. 15, 4. MBh. 1, 2096. 2, 540. 3, 15594. 5, 3828. 6, 2276. Harıv. 11526. R. 2, 61, 15. अधमसमवरिष्ठानि Varāh. Bṛh. 13, 1. Mārk. P. 73, 13. 78, 4. Paṇḍar. 1, 7, 91 (fälschlich वरोष्ठ gedr.). Verz. d. Oxf. H. 47, a, No. 103, Z. 12. Schol. zu Gaṇ. 1, 2, 12. कः पुनरेषां वरिष्ठः Prāçnop. 2, 1. पुण्यकृताम् MBh. 1, 2096. ब्राह्मणो हिपदां श्रेष्ठो गोवरिष्ठा चतुष्पदाम् 3044. 3, 10599. 5, 511. 12, 5163. सर्वयज्ञानाम् 13, 2809. Harıv. 1032. 8812. R. 2, 3, 11. 5, 44, 13. 48, 15. 6, 6, 32. Bhāg. P. 1, 10, 1. 3, 25, 11. 5, 11, 1. आख्यान° *die vorzüglichste unter allen Erzählungen* MBh. 1, 18. 55. लोक° R. Gorr. 2, 108, 15. देव° 5, 7, 34. नृप° (so ist zu verbinden) Weber, Kṛṣṇaj. 230. mit einem abl. *besser als:* वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्यो ब्राह्मणस्य मुखे हुतम् M. 7, 54. Bhāg. P. 7, 9, 10. *unter Schlechten vornan stehend, der schlimmste, ärgste:* दोष MBh. 14, 479 (unter उरु zu streichen). पापकृताम् 3, 12590. — 2) m. *a) Rebhuka* H. an. Med. — *b) Orangenbaum* Rāǵān. im ÇKDa. — *c)* N. pr. *α)* eines Sohnes des Manu Cākshusha MBh. 13, 1315. — *β)* einer der 7 Weisen im 11ten Manvantara Mārk. P. 94, 19. — *γ)* eines Daitja Harıv. 12942. — 3) f. आ *Polanisia icosandra W. et A.* Rāǵān. im ÇKDa. — 4) n. *a) Kupfer* AK. 2, 9, 93. Trik. H. 1040. H. an. Med. — *b) Pfeffer* Trik. H. an. Med.

वरिष्ठक adj. = 2. वरिष्ठ 1) Paṇḍar. 1, 10, 1.

वरिष्ठाश्रम m. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 138, *a*, 14.

वरिष्ठिन Sūçn. 2, 107, 14 wohl fehlerhaft.

वरी f., pl. वर्यस् als Bez. für *Flüsse* aufgeführt Naigh. 1, 13; vgl. वार्, वारि. — Vgl. auch u. 4. वर.

वरीतर् nom. ag. von 1. वर् P. 7, 2, 34, Sch. — Vgl. वरितर्, वरुतर्, वर्तर्.

वरीतात m. N. pr. eines Daitja MBh. 12, 3264.

वरीदास m. N. pr. des Vaters des Gandharva Nārada Harıv. 1861.

वरीधरा f. *ein best. Metrum:* a. b. d: – – ⏑ – – ⏑ ⏑ – – ⏑ – –, c: ⏑ – ⏑ – – u. s. w. Hall in Journ. of the Am. Or. S. 6, 514.

वरीमन् s. 2. und 3. वरिमन्.

1. वरीयस् (comparat. zu उरु) adj. *weiter, breiter* Med. s. 62. n. so v. a. वरिवस्: adv. *weiter, ferner ab* RV. 1, 136, 2. प्र द्युक्षुनी मिनवामा वरीयः 5, 45, 5. अवेतम्बं कृणुता वरीयः *befreiet uns, schaffet uns Ruhe* 49, 5. 6, 69, 5. उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु 75, 18. यथातं इत पणयो वरीयः 10, 108, 10. fg. AV. 1, 2, 2. वरीयो यावया वधम् 20, 2. 2, 4, 7. 7, 50, 4. 51, 1 (वरिवः RV.). ब्राह्मणेभ्यो यशसे दत्ता वरीयः कृणुते मनः *macht freier* d. h. *erheitert* 9, 4, 19. परः पर एव वरीयस्तयो भवति Çat. Br. 3, 4, 4, 27 (vgl. Ind. St. 10, 419). — Vgl. auch u. उरु und पोवरीयस् 1).

2. वरीयस् (comparat. zu 4. वर) 1) adj. *vorzüglicher, besser; der vorzüglichste, beste* AK. 3, 4, 20, 237. H. an. 3, 754. Med. s. 62 (= श्रेष्ठ und अतियुवन् *überaus jung;* es ist nämlich अतियूनि च zu lesen). त्वं मे प्रियः पुत्रस्त्वं वरीयान्भविष्यसि *du wirst mir noch lieber werden* MBh. 1, 2492. यं दास्यति स मे पुत्रं स वरीयान्भविष्यति so v. a. *der wird mir lieb sein* 1780. ब्रह्मतपोविद्याचारवर्णाश्रमवतः *vorzüglicher an* Bhāg. P. 5, 26, 20. वरीयानेष मे प्रश्नः कृतः 2, 1, 1. 3, 1, 4. भूषणानि 23, 29. 5, 1, 2. मरुद्दशाम् 3, 1, 10. Beiw. Çiva's Çiv. — 2) m. *a)* Bez. eines Joga (विष्कम्भादि) H. an. Med. Journ. of the Am. Or. S. 6, 236. — *b)* N. pr. *α)* eines Sohnes des Manu Sāvarṇa Harıv. 465. — *β)* eines Sohnes des Pulaha von der Gati Bhāg. P. 4, 1, 38. — Vgl. पोवरीयस् 2).

वरीवर्द m. = बलीवर्द Rāmāṇ. zu AK. 2, 9, 39 nach ÇKDa.

वरीवर्त (vom intens. von वर्त्) adj. *rollend, kugelnd* AV. 8, 6, 22.

वरीषु s. रवीषु.

वरु N. pr. nach dem Comm. in RV. 8, 23, 28. 24, 28. 26, 2, wo die Verbindung वरो (वरो इति Padap.) मुषाय्यो vorkommt. Ein voc. ist aber unpassend und am nächsten liegt die Vermuthung, dass वरोमुषायम् trotz seiner unerklärlichen Form ein Wort und N. pr. ist. — Vgl. वरु.

वरुक m. *eine best. geringere Körnerfrucht* (कुधान्य) Suça. 1, 197, 1. 10.

वरुट m. Bez. einer Klasse von Mlekkha H. 934, v. l. für वरट. — Vgl. वरुड.

वरुड m. Bez. einer verachteten Mischlingskaste, die sich mit dem Spalten von Rohr abgiebt, Kull. zu M. 4, 215. Colebr. Misc. Ess. II, 184. Jama in Prāyaçcittatattva nach ÇKDa. मौचिकाच्छौण्डिकाज्जातो नटो वरुड एव च Parāçarapaddh. im ÇKDa. — Vgl. वरट, वरूट.

वरुण Uṇādis. 3, 53. Çiṅk. 2, 9. 1) m. *a) der Umfasser des Alls,* N. pr. eines Âditja, des obersten Herrn unter den Göttern des Veda, Naigh. 5, 4. 6. Nir. 10, 8. 12, 21. AK. 1, 1, 2, 56. Trik. 1, 1, 75. H. 188. Hālā. 1, 74. daher König genannt RV. 1, 24, 7. 136, 4. 2, 28, 9. 5, 40, 7. 7, 64, 1. 87, 6. विश्वस्य भुवनस्य राजा 5, 85, 5. यासीदिह्मा भुवनानि सम्राट् 8, 42, 1. 10, 132, 4. न एको वस्वो वरुणो न राजेति 1, 143, 4. त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये चं देवा ये च मर्ताः 2, 27, 10. क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा 4, 42, 1. 2. अयं देवानामसुरो वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राजः AV. 1, 10, 1. 3, 4, 5. श्रेष्ठमाते) देवेषु वरुणो पथा 5, 21, 2. TBr. 1, 1, 4, 5. 4, 10, 6. Ait. Br. 1, 24. 7, 14. वरुणो वै देवानां राजा Çat. Br. 12, 8, 2, 10. क्षत्रस्य राजा वरुणो ऽधिराजः TBr. 3, 1, 2, 7. राज्ञो वरुणस्य पत्नी MBh. 3, 15390. 16, 120. Suça. 1, 17, 6. घृतव्रत RV. 2, 1, 4. मायिन् 6, 48, 14. 7, 28, 4. 10, 99, 10. मुशंस 7, 35, 6. गम्भीरशंस 87, 6. वरुणस्य धामं 4, 5, 4. 7, 87, 2. 10, 10, 6. द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते 6, 70, 1. वरुणो धर्मपतीनाम् VS. 9, 39. Çat. Br. 5, 3, 3, 9. unter den 12 Âditja aufgeführt MBh. 1, 2523. Harıv. 176. 593. 11549. 12456. 12911. 14166. VP. 122. Bhāg. P. 6, 6, 37. Weber, Rāmat. Up. 304. 313. Verz. d. Oxf. H. 190, *a*, 31. daher = अर्क H. an. 3, 224. = सूर्य Viçva im ÇKDa. Dem Varuṇa besonders zugeeignet sind *a)* die Gewässer, *b)* die Nacht und *c)* der Westen. *a)* H. an. Med. q. 63. आदित्यैर्याति वरुणः समुद्रैः RV. 1, 161, 14. 2, 38, 8. 7, 34, 10. 49, 3. 8, 41, 2. 9, 90, 2. VS. 10, 7. AV. 3, 3, 3. 13, 2. 4, 15, 12. 5, 24, 4. अप्सु ते राजन्वरुण गृहा हिरण्ययो मितः (मिथः: die Hdschrr.; vgl. Âçv. Çr. 3, 6, 24) 7, 83, 1. अप्सु वै वरुणः TBr. 1, 6, 3, 6. TS. 3, 4, 3, 1. उदकपति MBh. 5, 3531. 9, 2733. fgg. अपो राज्ये मुराणां (उमु ed. Calc.) च विदधे वरुणं प्रभुम् (पितामहः) 12, 4497. Harıv. 259. 2462. fgg. 12492. 13107. VP. 153. वरुणः पाति सागरम् Verz. d. Oxf. H. 59, *b*, 22. 60, *a*, 41. fgg. वरुणो यादसामक्षम् sagt Kṛshṇa Bhāg. 10, 29. सलिलविकारे कुर्यात्पूजा वरुणस्य वारुणैर्मन्त्रैः Varāh. Bṛh. S. 46, 31. Varuṇa so v. a. *Ocean:* वरुणवद्गुरत्नः Varāh. Bṛh. 27 (25), 9. so v. a. *Wasser:* वश्याग्निवरुणः सूटः Kathās. 56, 228. °मतनिवर्तृणा Verz. d. Oxf. H. 230, *b*, 39. — *b)* वरुणेन् समुञ्जितं मित्रः प्रातर्युञ्जतु AV. 9, 3, 13. स वरुणः सायमग्निर्भवति स मित्रो भवति प्रातरुद्यन् 13, 3, 13. वरुणस्य सायम् TBr. 1, 5, 3, 3. यद्वै मित्रो रात्रिर्वरुणः Ait. Br. 4, 10. मित्रो ऽकरत्तनयद्वरुणो रात्रिम् TS. 5, 4,

8,3. — c) AK. 1,1,2,4. H. 169. Med. Halâj. 1,100. AV. 4,10,3. 12, 3, 37. 15,14,3. वरुणायेति पश्चात् Goen. 4,7,25. Çâṅkh. Çr. 6,3,3. इयं दिग्दक्षिणा राज्ञो वरुणस्य तु गोपतेः (vgl. 3532) । मदा मलिलराजस्य प्रतिष्ठा वादिरेव च ॥ MBh. 5,3801. प्रतीचीं वरुणः पाति पालयानः सुरान्वली 8,2103. Hariv. 12511. °पालिता दिक् R. 1,37,26 (38,29 Gorr.). 4, 45,4. Varâh. Bṛh. S. 54,3. 86,75. Çiç. 9,7. — Varuṇa ist Richter, der die Sünde straft und um Vergebung der Schuld angerufen wird; er ist allwissend RV. 5,85,7. 7,86,1. fgg. 89,3. विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया 10,11,1. घनेगान्सविता देवो वरुणाय वोचत् 12,3. VS. 6,22. AV. 4,16, 1. fgg. 5,11,4. 19,41,3. 9. घनंते क्रियमाणे वरुणो गृह्णाति TBr. 1,7,2,6. ईशे दण्डस्य वरुणः M. 9,245.244. Varuṇa's Schlingen; von ihm kommen Krankheiten, besonders Wassersucht, RV. 6,74,4. 7,88,7. AV. 2, 10,1. 4,16,6. 7. 14,1,57. 2,49. 18,4,70. ऐक्ष्वाकं वरुणो ग्रयात् Ait. Br. 7,13. Çat. Br. 2,3,2,20. 5,2,2,3. वरुणो वा एतं गृह्णाति यः पाप्मना गृहीतो भवति 12,7,2,17. वरुणो वा एतं गृह्णाति यो ऽप्सु म्रियते 13,3,2,3. वरुणेन यथा पाशैर्बद्ध एवाभिदृश्यते । तथा (राज्ञा) पापान्निगृह्णीयादनयेतादि वारुणम् ॥ M. 9,228. 229. पाशहस्तो विषाणस्तु रणे वरुण एव च । म्रियः प्रयातः सहसा मया (Râvaṇa spricht) सीते क्षयो पतिः ॥ R. 3,54,9. कैमाद्रुच्य पाशभृद्वरुणः Varâh. Bṛh. S. 58,57. Kaçjapa raubt ihm seine Kühe (Varuṇa heisst गोपति MBh. 5,3532. 3301; nach Nilak. soll गो hier = उदक sein) Hariv. 3148. fgg. ist ein Sohn Kardama's Verz. d. Oxf. H. 69, a, 41. Pushkara Varuṇa's Sohn MBh. 5,3533. Varuṇa ist Herr des Nakshatra Çatabhishaǵ Varâh. Bṛh. S. 98,5. Varuṇa's Späher (s. unter स्पश्) RV. 7,87,1. Mitra-Varuṇa 5,62. 64. 7, 36,3. 10,109,2. die Sonne ihr Auge 6,51,1. 7,61,1. 63,1. Indra-Varuṇa 4,41. 42. 6,68,5. 7,35,1. 82,1. fgg. 83,1. 84,1. fgg. 85,1. fgg. VS. 8,37. Agni-Varuṇa Çâṅkh. Br. 18,10. Kâty. Çr. 10,8,27. Agni heisst sein Bruder RV. 4,1,3. Jama-Varuṇa Gobh. 3,6,12. Vishṇu-Varuṇa Çâṅkh. Çr. 3,20,4. Agni mit dem Bein. Varuṇa Ait. Br. 7,9. Varuṇa unter den Devagandharva MBh. 1,2550. als Nâga 16,119 (वरुण ed. Bomb.). König der Nâga Lalit. ed. Calc. 249,13. 268,7. als Asura Hariv. 12943 (wohl fehlerhaft für करुण, wie die neuere Ausg. liest). bei den Ǵaina Diener des 20ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 43. — pl. etwa so v. a. *die Götter* (wenn in der Stelle kein Fehler vorliegt): सं ज्ञास्थेषा वरुणैः संविदानः AV. 3,4,6. Appell. so v. a. *Abtrünniger* nach Sây. in RV. 5,48,5. Weitere Nachweisungen giebt J. Muir in As. J. new s. I, 77. fgg. — *b*) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. ed. Bomb. 1,28,9. वरुण ed. Schl. — *c*) *Crataeva Roxburghii R. Br.* (s. 1. वरुण 1) *b*) AK. 2,4,2,5. Trik. 2,4,8. H. an. Med. Hariv. 12677 (वरुण die neuere Ausg.). R. Gorr. 2, 103, 9. 3, 79, 28. Suçr. 1, 137, 14. 145, 18. 157, 11. 220, 9. 222, 4. 2, 389, 8. °द्रुम Trik. 3, 3, 26. — 2) f. द्या N. pr. eines Flusses MBh. 6, 338 (वरणासी ed. Bomb. st. वरुणा und असी der ed. Calc.; andere Autt. वरणा und असी), Mârk. P. 61,5. — 3) n. MBh. 3,2171 fehlerhaft für वरण.

वरुणक m. = वरुण 1) *c*) MBh. 13,635. Suçr. 2,53,17. 80,15. Varâh. Bṛh. S. 54,50.

वारुणगृहीत adj. von Varuṇa *ergriffen*, *durch Krankheit bes. Wassersucht* TS. 2,1,2,1. 5,4,2,2. एता वा अपो वरुणगृहीता याः स्यन्दमानां न स्यन्दन्ते Çat. Br. 4,4,5,11. Kâṭy. 12,4. TBr. 1,6,4,1.

वरुणग्राह m. *Ergreifung durch* Varuṇa: ग्र° TS. 5,6,5,4. TBr. 1,6,2,2.

वरुणतीर्थ n. N. pr. eines heiligen *Badeplatzes* Verz. d. Oxf. H. 77, a, 24. fg.

वरुणत्व n. Varuṇa's *Wesen*, — *Natur* R. 7,36,12. 83,6.

वरुणदत्त m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,84, Schol. Lot. de la b. l. 2.

वरुणदेव adj. Varuṇa *zur Gottheit habend*; n. *das* Nakshatra Çatabhishaǵ Varâh. Bṛh. S. 32,20. v. l. °दैव.

वरुणदैवत dass. Varâh. Bṛh. S. 10,2.

वरुणद्रुत adj. Varuṇa *hintergehend* RV. 7,60,9.

वरुणपाश m. 1) Varuṇa's *Schlinge*, — *Fessel* TS. 2,1,2,3. 5,2,2,4. TBr. 1,3,2,7. 7,2,5. Çat. Br. 3,6,2,20. Ind. St. 3, 478. — 2) *Hafisch* (vgl. तसु) H. 1351, Schol.

वरुणपुरुष m. *ein Diener des* Varuṇa Âçv. Gṛhj. 1,2,5.

वरुणप्रघास 1) m. pl. *das zweite Viermonat-Opfer, das auf den Vollmond des* Âshâḍha *oder* Çrâvaṇa *fällt* (TS. Comm. II, 34), *zum Zweck der Lösung von* Varuṇa's *Schlingen*; so genannt nach dem dabei üblichen *Essen* von Gerste zu Ehren des Gottes. TS. 2,2,2,3. TBr. 1,4,2, 3. 10, 6. 5, 2, 4. 6, 2, 1. Çat. Br. 2,5,2,1. 3,1. 5,2,2,2. Kâty. Çr. 5, 1, 24. 2,8. Lâṭy. 5,1,1. Âçv. Çr. 2,17,1. — 2) sg. N. eines Ahina Çâṅkh. Çr. 14,7,6.

वारुणप्रशिष्ट adj. von Varuṇa *angewiesen*, — *geleitet* RV. 10,66,2.

वरुणभट्ट m. N. pr. eines Astronomen Colebr. Misc. Ess. II, 461.

वरुणमति m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 22.

वरुणमित्र m. Bein. eines Gobhila Ind. St. 4,374.

वरुणमेनि f. Varuṇa's *Zorn* TS. 5,1,5,3. 2,1. Kâṭy. 19,3. fgg.

वारुणराजन् adj. Varuṇa *zum König habend* TS. 2,3,2,1. 5,5,2,3. Çâṅkh. Çr. 4,21,10. Kauç. 135.

वरुणलोक m. Varuṇa's *Welt* Kaush. Up. 1,3. Varuṇa's *Gebiet* (*Wasser*) Tarkas. 7.

वरुणशर्मन् m. N. pr. eines Kriegers auf Seiten der Götter im Kampfe derselben mit den Daitja Kathâs. 48,18. 24.

वारुणशेयम् adj. nach Sây. *wehrfähige Nachkommen habend*; eher *als* Varuṇa's *Nachkömmlinge sich darstellend* RV. 5,65,5.

वरुणश्राद्ध n. Bez. *eines best. Todtenopfers* Verz. d. B. H. No. 1273.

वरुणश्रोतस s. वरुणस्रोतस.

वरुणसर्व m. Varuṇa's *Förderung*, — *Gutheissen* TBr. 1,7,4,3. 2,4. यो रात्रमूः स वै° 2,7,2,1. Çat. Br. 5,3,4,12. 4,2,2.

वरुणसेना f. N. pr. einer Prinzessin Kathâs. 44,44. 103. °सेनिका 101.

वरुणस्रोतस m. N. pr. eines Berges MBh. 3,3336 nach der Lesart der ed. Bomb., °श्रोतस ed. Calc.

वरुणाङ्कुर m. Varuṇa's *Sprössling*, patron. Agastja's, Varâh. Bṛh. S. 12,13. — Vgl. मैत्रावरुणि, वारुणि.

वरुणात्मजा f. Varuṇa's *Tochter*, Bez. *des Branntweins* AK. 2,10,33.

वरुणाद्रि m. N. pr. eines *Berges* Pârâç. 197,17. fg.

वरुणानी f. Varuṇa's *Gattin* P. 4,1,49. Vop. 4,23. RV. 1,22,12. 2, 32,8. 5,46,8. 7,34,22. AV. 5,46,1. pl. Kâṭy. 8,5. 19,3; vgl. TS. 5,5,4,1.

वरुणालय m. Varuṇa's *Behausung*, Beiw. und Bein. *des Meeres* R. Gorr. 1, 1, 75. 46, 21. 3,60,18. fg. 4,53,2. 6,39,11. 98,8. करुणा° ein

Meer der Barmherzigkeit Verz. d. Oxf. H. 110,a,27.

वरुणावास m. Varuṇa's *Wohnung* d. i. *das Meer* R. 5,71,28.

वरुणावि oder °विम् f. Bein. der Lakshmi: वरुणं वीक्ष्य दुःखार्तमाविर्भूतास्मि यदुवि। वरुणाविरिति ख्यातं नाम तन्मे भविष्यति ॥ Verz. d. Oxf. H. 76,b,37. fg.

वरुणिक, वैरुणाय und वरुणिल m. Hypokoristika von वरुणदत्त P. 5,3,84, Schol.

वरुणेश adj. Varuṇa zum *Herrn habend*; n. *das* Nakshatra Çatabhishaǵ Varāh. Bṛh. S. 15,22. °देश *die* Varuṇa zum *Herrn habende Gegend* d. i. *der Westen* Gaṇit. Çāṅkar. 8.

वरुणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,44.

वरुणोद (वरुण + उद *Wasser*) n. N. pr. eines Sees Mirz. P. 56,6.

वरुणोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 232,a,8.

वरुण्य adj. von Varuṇa *kommend, ihm gehörig* u. s. w.: मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्देवो वरुण्यादुत RV. 10,97,16. सर्वस्माद्वरुण्यात्प्रजाः प्रमुञ्चति Çat. Br. 5,2,5,16. 12,7,2,17. रज्जु 1,3,4,14. यन्धि 16. सये यवः 2,5,2, 1. 14,2,4,11. ओषधयो या कृष्टे ज्ञायन्ते 5,3,3,5. stehendes Wasser 4,12. 3,2,4,18. 8,4,3,5. 5,2,13.

वरुतर् = वर्तर् P. 7,2,34.

वरुत्र (von 1. वर्) n. *Ueberwurf, Mantel* Uṇ. zu Uṇādis. 4,172.

वरूल = सेभक Uṇādiv. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

वरूतर् (von 1. वर्) ved. nom. ag. P. 7,2,34. *Abwehrer, Beschirmer* RV. 1,169,1. त्वमिनो दाम्युयो वरूता 2,20,2. को वस्त्रात्रा को वरूता 4, 55,1. यभिष्टनुस्त्वावतो वरूता 7,21,8. रथानाम् P., Schol. वरूत्री P. 7,2, 34. VS. Pāṭ. 3,77. *Schirmerin, Schutzgenie*, Bez. gewisser göttlicher Wesen (sowohl sg. als pl.) RV. 1,22,10. 3,62,3. 5,41,15. 7,34,22. 38, 5. 40,6. VS. 11,61. 13,44. Çat. Br. 6,5,4,6. TS. 4,1,6,1. क्षेत्रा वै वरूत्रयः 5,1,2,2. — Vgl. तृष्णावरूत्री.

वरूथ (wie eben) Uṇādis. 2,6. 1) n. *Wehr, Schirm, Schild, Obdach* (Synonyme sind शर्मन्, वर्मन्, छर्दिस्): = गृह Nigh. 3,4. = वेश्मन् H. an. 3,319. fg. Med. th. 21. — RV. 1,23,21. भवा वरूथं गृणते भव शर्म 38,9. 116,11. 2,18,2. 4,35,4. 36,4. त्रायस्व नो ऽवृकेभिर्वरूथैः 7,19,7. 20,8. 53,2. पक्षो सूरिभ्यो उपमं वरूथम् 30,4. 8,27,9. वृषरुद्रं वरूथं मरुतां 18,20. 68,3. 10,61,17. VS. 11,10. Maitrāyaṇ. Up. in Ind. St. 2,96,2 (= श्रेष्ठ Comm.). त्रिवरूथ adj. *dreifach schirmend:* शर्मन् RV. 5,4,8. 8,43,2. AV. 7,6,4. तनूपान RV. 8,5,20. छर्दिस् 18,21. यधा स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव 6,15,9. 26,7. oxyt. Indra VS. 28,19. TBr. 2,6,10,5. — 2) m. n. *eine am Wagen zum Schutz angebrachte Einfassung* AK. 2,8,2,25. H. 758. H. an. Med. Hall. 2,294. सप्तारयो वितनवरूथः Çāṅkar. Ça. 17,5,1. MBh. 3,14910. 14917. Harīv. 9288. स° adj. MBh. 5,5243. 6,4823. सु° adj. R. 5,31,30. सप्त° adj. Buḍ. P. 4,26,2. सप्तधातु° 29,19. — 3) n. *Panzer* H. an. — 4) n. *Schild* (वर्मन्; daher *leather, skin* bei Wilson) Med. — 5) *Heer* Buḍ. P. 3,10,20. सुरोतर° 2,7,26. *Heerde:* यवि° 1,18,13. *Schwarm:* मधुव्रत° 3,28,28. 8,8,24. *Menge, Masse:* वक्त्रजटा° 5,2,14. — 6) m. *der indische Kuckuck* (पिक) H. an. — 7) m. *Zeit* (काल) H. an. — 8) = निशाराट्टक (?) Trik. 3,3,201. — 9) m. N. pr. eines Grāma R. 2,71,11 (73,9 Gorr.). — 10) m. N. pr. eines Mannes Mirz. P. 75,45.

वरूथप m. *Führer einer Schaar, Heerführer:* देवासुरवरूथपाः Buḍ. P. 8,7,16.

वरूथशस् adv. *schaaren-, haufenweise* Buḍ. P. 3,17,11. 4,3,12. 5, 1,8. 18,44,6.

वरूथाधिप m. *Heerführer:* यदूनाम् Buḍ. P. 3,1,28.

वरूथिन् (von वरूथ) 1) adj. *a) Schutzwaffen tragend* VS. 16,35. *mit einem Schutzbrett u. s. w. versehen:* रथ MBh. 5,4446. Harīv. 13469. R. 6,74,1. Rāgn. 9,11. सु° R. 6,86,4. स° = वरूथिन् Harīv. 2021. — *b) Schirm, Schutz gewährend* MBh. 5,1848. 8,1524. Harīv. 2592. इन्द्रस्य गृहाः Pāṇ. Gaṇ. 3,4. Çāṅkh. Gṛ. 3,4. — *c)* so v. a. रथवत् (wie die ed. Calc. liest) *zu Wagen sitzend* (Gegens. पदातिन्) Rāgn. 12,84. — *d)* am Ende eines comp. *von einer Schaar von —, von einer Menge von — umgeben:* ललना° von *einer Frauenschaar umgeben* Buḍ. P. 3,23,39. नीलालक° von *einer Menge schwarzer Locken umgeben* 20,21. — 2) f. वरूथिनी *a) Heer* AK. 2,8,2,46. H. 746. Hall. 2,302. MBh. 4,985. 5, 7447. R. 1,51,21. Rāgn. 12,50. 16,28. Çiç. 12,77. Kathās. 46,48. °पति *Heerführer* Buḍ. P. 8,15,28. — *b)* N. pr. einer Apsaras Mirz. P. 61,35. fgg.

वरूथ्य (wie eben) adj. *Schirm —, Schutz gewährend:* त्राता शिवो भवा वरूथ्यः RV. 5,24,1. शर्मन् 46,8. 8,47,10. छर्दिस् 6,67,2. विश्वानि वरूथ्या मनामहे 8,47,3. वचस् 90,5. शुचौ वरूथ्यदेशे (Glosse रमणीय) *an einem geschützten Orte* Çāṅkh. Gṛ. 1,2.

वरेत्र = वारत्र P. 8,3,16.

वरेण् nom. ag. von वरेण्यम् Puruṣhottamadeva bei Uṇ. zu Uṇādis. 3,98.

वरेण m. *Wespe* Wilson nach Gaṭiṇ.; vgl. वरोल. — वरेणा H. c. 53 wohl fehlerhaft für वरेण्या.

वरेण्य (von 2. वर्; वरेण्य Uṇādis. 3,98) 1) adj. *wünschenswerth, liebenswerth; vorzüglich, der vorzüglichste* AK. 3,2,7. H. 1438. Hall. 4,4. क्षेतर् RV. 2,7,6. दूत 8,91,18. राधस् 1,9,5. यवस् 5,22,3 वसु 6,16,33. मद् 1,175,2. सोम 3,40,5. वाज 2,4. वस्व 3,15,7. Bṛhaspati 3,62,6. Savitar 5,81,2. तत्सवितुर्वरेण्यं भगो देवस्य धीमहि 3,62,10. Agni 5,25,3. यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र युक्ता तदा भर 39,2. वृत्र हन्वो धीभवद्वरेण्यः 18,113,2. der Sonnengott Çvetāçv. Up. 5,4. विष्णु MBh. 1,24. 3,12930. यः सर्वलोकेषु वरेण्य एकः 5,655. 13,1123. 1375 (भरेण्य ed. Calc.). Harīv. 10408. Rāgn. 6,24. Kumāras. 7,90. VP. 20. Buḍ. P. 5, 18,23. 8,5,26. 10,36. 24,33. Mirz. P. 78,4. Verz. d. Oxf. H. 79,a,19. 21. भियत्रा वरेण्यः 187,b, No. 428, Z. 17. नाकसद्भाम् Bhaṭṭ. 1,4. — 2) m. *a)* Bez. einer best. Manengruppe Mirz. P. 96,45. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Bhṛgu MBh. 13,4146. — 3) f. या Bein. der Gattin Çiva's H. ç. 33. वरेणा die Hdschr. — 4) n. *Saffran* Rāǵān. im ÇKDa.

वैरेण्यक्रतु adj. *wohlgesinnt, einsichtig:* क्षेतर् RV. 8,43,12. वैरेण्यक्रतूरुमा देवीरवसे हुवे 10,9,12; vgl. AV. 6,23,1.

वरेण्यय्, वरेण्ययति denom. von वरेण्य Puruṣhottamadeva bei Uṇ. zu Uṇādis. 3,98.

वरेन्द्र Bez. eines Theils von Bengalen Colebr. Misc. Ess. II,179. Verz. d. Oxf. H. 87,b,38 (वा° v. l.). 338,b,22. 330,b,36. Wassiljew 34. वरेन्द्री Trik. 2,1,7. — Vgl. वा°.

वरेप् werben, *freien:* य ईं वहते स ईं वा वरेयात् RV. 10,27,11. वरेपम् absol.: यदर्यातं वरेयं सूर्यामुषं 85,18. येभिः सखीयो यन्ति नो वरेपम् 23.

— Vgl. 2. वर्.

वरेयु (von वरेय्) nom. ag. *Freier:* मर्या: ṚV. 10,78,4.

वरेश (3. वर + ईश) adj. *über Wunschgaben verfügend, Wünsche zu gewähren im Stande seiend* Bhāg. P. 2,9,20.

वरेश्वर adj. dass.: सर्वकाम° Bhāg. P. 3,9,40. m. Bein. Çiva's Cabdar. im ÇKDa.

वरोट n. = मरुवकपुष्प Cabdam. im ÇKDa.

1. वरोरु (4. वर + ऊरु) m. *ein schöner Schenkel:* हिरण्करप्रतिमैर्वरोरुभि: Vaitān. Bṛh. S. 68,4.

2. वरोरु (wie eben) adj. (f. °रु und ङी): *schöne Schenkel habend:* °रुम् nom. f. Vikr. 47,13. °रुम् acc. f. H. 3,52,53. °रु voc. f. Prab. 7,15. Bhāg. P. 4,3,24. 10,42,2.

वरोल m. *eine Art Wespe* Trik. 2,5,34. Hem. 217. f. ई *eine andere Art Wespe* Trik.

वर्क् (वृक्), वर्कते (घादाने) Dhātup. 4,18.

वर्कर Uṇādik. zu Uṇādis. 3,121. m. 1) *das Junge eines Thieres* AK. 2,10,23. Med. r. 211. *Ziege* Trik. 2,9,24. Med. = पशु H. an. 3,582. *Zicklein* H. 1276. Schol. zu Kāṭy. Çr. 976,6. — 2) *Scherz, Spass* H. 556. H. an. Med.

वर्करकर्कर vielf. adj. so v. a. *von allen Sorten* Spr. 1555.

वर्कराट m. 1) *Seitenblick.* — 2) *eine vom Fingernagel des Geliebten herrührende Verwundung auf der Brust eines Weibes* Trik. 3,3,103. H. an. 4,64. Med. k. 64. fg. — 3) *die Strahlen der aufgehenden Sonne* H. an. Med.

वर्करीकुण्ड N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 70,b,17.

वर्कुट m. *a pin, a bolt* Wilson nach Cabdārthak.

वर्ग (von वर्ज्) 1) nom. ag. *Abwender, Beseitiger:* वर्गो ऽसि पाप्मानं मे वर्ज्धि Kauṣ. Up. 2,7. Vgl. इषुवर्ग. — 2) m. am Ende eines adj. comp. f. घा Vaitān. Bṛh. S. 19,17. a) *eine gesonderte, der Gleichartigkeit wegen zusammengestellte Anzahl von Dingen; Abtheilung, Gruppe, Klasse, Verein* AK. 2,5,41. H. 1413. z. B. von Backsteinen, Versen Kāṭy. Çr. 16,7,25. 24,3,5. Liṭ. 10,14,4. समक M. 7,52. चतुर्विध Suçr. 1,5,7. 12. 70,8. 132,1. ṚV. Prāt. 16,7. 8. 52. Vaitān. Bṛh. S. 14,32. 53,49. 70, 2. 96,3. वर्गवर्गस्थै: काकै: *gruppenweise stehend* 95,8. षट्शतसाङ्ख्या गवां वर्गा: शतं शतम् MBh. 4,286. अप्सरसाम् Kumāras. 3,17. वर्गावुभौ देवमरीधराणाम् 7,53. दास° so v. a. *die Sclaven, Dienerschaft* M. 3, 246. 4,180. 185. बन्धुवर्गा: MBh. 3,2683. नृशंस° 5,1629. मित्र° 13,369. भृत्य° 2186. पौर° 15,439. 446. Harīv. 11015 (S. 790). R. 2,30,45. 45,2. Kām. Nītis. 3,39. Rāgat. 2,4. 11,7. Vikr. 3,9. Mālav. 67,11. Spr. 1940. 2542. 4645. AK. 2,6,2,30. 8,2,6. H. 514. Hālā. 2,353. Kathās. 4,20. 18,83. 26,145. Rāja-Tar. 1,308. Prab. 36,9. Bhāg. P. 4,25,42. 7,6,12. Pañcat. 33,14. Vet. in LA. (III) 1,13. Sarvadarçanas. 37,11. 100,23. आत्म°, पर° *die eigene —, die fremde Partei* Vṛddha-Kāç. 11,2. स्व° Pañcat. 192,23. fg. नक्षत्रवर्ग° Vaitān. Bṛh. S. 14,1. मृदुवर्गस्त्वनुराधाचित्रावैष्णेन्द्वानि 98,10. पञ्चेन्द्रिय° Bhāg. P. 5,14,1. संवत्सर° Weber, Nax. 2,283. fg. Häufig in comp. mit einem Zahlworte: त्रि° (s. auch bes.) *eine aus drei bestehende Abtheilung. — Gruppe, Trias* MBh. 5, 1484. 12,426. Pañcat. III,243. Daçak. 63,15. fg. Bhāg. P. 7,5,18. चतुर्वर्ग (s. auch bes.) Hit. I,8. पञ्च° (s. auch bes.) Spr. 4902. Verz. d. B. H. No. 875. षड्वर्ग MBh. 1,1948. Kathās. 20,124. नव° Kāṭy. Çr. 24,3,25. दश° 22,10,11. द्वादश° Verz. d. Oxf. H. No. 875. प्रतिवर्गम् Kāṭy. Çr. 9,4,20. *eine Reihe nach irgend einem Eintheilungsgrunde zusammengehöriger Wörter* AK. 2,1,1. 3,4,1,1. Taitt. 1,1,3. *Consonantenreihe im Alphabet* (es werden deren 7 angenommen; s. Böhtlingk, P. II, S. 325) ṚV. Prāt. 1,3. चकार° 4,4. 5,3. स्पर्श° 6,8. 14,7. VS. Prāt. 1,64. 3,92. 94. 4,92. AV. Prāt. 2,14. 38. Vop. 2,25. fg. काम्या वर्गा: Vaitān. Bṛh. S. 96,15. वर्गाष्टक (nach dem Comm. कचटतपयशलवर्गाणामष्टकम्) Weber, Rāmat. Up. 308. fg. — *b) Alles was zu Jmdes Gebiet gehört, — unter Jmd steht* (= परिषद्) Vaitān. Bṛh. S. 13,7. 15,22. 17,7. 32,12. क्षेत्रं पञ्चस्य स तस्य वर्ग: Bṛh. 1,9. 8,10. 23,5. क्षेत्रं क्षेत्राय देक्काणो नवांशो द्वादशांशक: । त्रिंशांशकश्च वर्गो ऽयं सर्वस्य स्व उदाहृत: ॥ Gāṅg. im Comm. zu 1,9; vgl. Vaitān. Lāṭ. 1,33 in Ind. St. 2,283. — *c)* = त्रिवर्ग d. i. काम, अर्थ und धर्म Bhāg. P. 4,21,29. — *d) Section, Abtheilung in einem Buche* AK. 3,4,24,46. Taitt. 3,2,24. *Unterabtheilung eines* Adhjāja *im* Ṛgveda *und in der* Bṛhaddevatā, Roth, Zur Lit. und G. d. V. S. Ind. St. 3,254. fgg. 1,112. fg. — *d) Quadrat, die zweite Potenz* Colebr. Alg. 8. 11. पञ्च° *das Quadrat von fünf* Vaitān. Bṛh. 7, 8. Gaṇitādhy. Sphuṭāṅkāḥ. 21. 28. Ind. St. 3,450. Vgl. मित्र°. — *e)* = बल Naiṣ. 2,9. — *f)* N. pr. eines Landes Schiefner, Lebensb. 235 (5). — 2) f. घा N. pr. einer Apsaras MBh. 1,7853. 2,394.

वर्गणा (von वर्गय्) f. *das Multipliciren* Vaitān. Bṛh. 7,12. 26 (24),9. — Vgl. संवर्ग.

वर्गपद n. *Quadratwurzel* Colebr. Alg. 9.

वर्गपाल m. *Beschützer seines Anhangs, — seiner Creaturen* MBh.2 1544.

वर्गप्रकृति f. *unbestimmte Aufgabe des 2ten Grades, affected square* Colebr. Alg. 112. 170. Goladhy. 13,2. Bhāskar. 1,33. fgg.

वर्गप्रशंसिन् m. *seinen Anhang —, seine Creaturen preisend* MBh. 5, 1539. Nīlak.: वर्गो वाजिनं पराग्भिव:.

वर्गमूल n. *Quadratwurzel* Colebr. Alg. 9.

वर्गय् (von वर्ग), °यति *multipliciren;* vgl. वर्गणा.

वर्गशस् (wie eben) adv. *nach Abtheilungen, gruppenweise* Bhāg. P. 4,9,68. 12,6,50.

वर्गस्थ adj. *sich zu einer Partei haltend, parteiisch:* न वर्गस्था ब्रवीम्येतत्स्वपतपरपतयो: MBh. 12,12040.

वर्गात्य m. *der letzte Consonant in den fünf ersten Consonantenreihen:* त्रयस्त्रयो वर्गात्या: so v. a. *die Mediae, die aspirirten Mediae und die Nasale* AV. Prāt. 1,13, Schol.

वर्गिन् (von वर्ग) adj. pl. zu *Jmdes Partei gehörend, Jmd untergeben:* परिचर्यावतो दारे ये च केचन वर्गिण: MBh. 12,3711. = समुदायाधिपतय: Nīlak.

वर्गीण (wie eben) adj. am Ende eines comp. zu *der und der Kategorie —, Sippe —, zu der Partei von — gehörend* P. 4,3,64. अर्धुन° Schol. — Vgl. महद्वर्गीण.

वर्गीय (wie eben) adj. am Ende eines comp. dass. P. 4,3,64. मण्डूकै स्ववर्गीयिम् Pañcat. 212,6. *zu der und der Consonantenreihe gehörig* P. 4,3,63. क° *ein Guttural,* प° *ein Labial* Schol. प्रथमोत्तमवर्गीय: स्पर्श: ṚV. Prāt. 4,11. चकार° 5,5. च° AV. Prāt. 2,11. त° 15. —

Vgl. ग्रर्घ°, महर्गीय und वर्ग्य.

वर्गोत्तम (वर्ग + उ°) adj. 1) *der letzte in einer der fünf ersten Consonantenreihen d. i. ein nasaler Laut* AV. Prāt. 1, 26, Schol. — 2) in der Astrol. *der vornehmste in seiner Klasse*, Bez. *des 1ten Neuntels in einem beweglichen Bilde* (Widder, Krebs, Wage, Steinbock), *des 5ten Neuntels in einem festen Bilde* (Stier, Löwe, Scorpion, Wassermann) *und des 9ten Neuntels in einem beweglichen und zugleich festen Bilde* (Zwillinge, Jungfrau, Schütze, Fische): वर्गोत्तमाश्चरगृहादिषु पूर्वमध्यपर्यन्तः — नवभागसंज्ञाः Varāh. Bṛh. 1, 14. 10, 3. 19, 9. 21, 7. 22, 4. Lassen, 1, 19 in Ind. St. 2, 281.

वर्ग्य (von वर्ग) adj. *zu einer Abtheilung, Partei u. s. w. gehörend* gaṇa दिगादि zu P. 4, 3, 54. m. so v. a. *Zunftgenosse, College* Mālatīm. 4, 6. am Ende eines comp. (hat den Ton auf der ersten Silbe) P. 4, 3, 64. 6, 2, 131. ग्रर्धर्चुन° Schol. कण्ठ° Vop. 26, 20. स्व° Āçv. Çr. 1, 2, 16. — Vgl. पार्°, महर्ग्य.

1. वर्च्, वर्चते (दीप्तौ) Dhātup. 6, 1.

2. वर्च्, वृणक्ति (वर्जने) Dhātup. 29, 24, v. l. — Vgl. वर्ज्.

वर्च m. N. pr. eines alten Weisen MBh. 3, 14164. = सुवर्चक Nīlak.

वर्चल s. सुवर्चला.

वर्चस् 1) n. *a) Lebenskraft, Lebhaftigkeit; Energie, vigor; Wirksamkeit, Regsamkeit, Nachdruck; die leuchtende Kraft im Feuer und in der Sonne;* daher in der späteren Sprache *Licht, Glanz* (= तेजस् AK. 3, 4, 30, 233. H. 101. an. 2, 390. Med. s. 34. Hall. 1, 65), *Farbe* (= रूप H. an. Med.). Das Wort ist sehr beliebt in den späteren Theilen des ṚV., im AV. und in der VS. ṚV. 1, 23, 13. सं मायो वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा 24. AV. 6, 5, 1. VS. 12, 7. वचो धा यज्ञवाहसे ṚV. 3, 8, 3. 24, 1. यशो यत्ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्सु 22, 2. या नः सोम सर्वा तनूर्वर्चसे भर 9, 65, 18. यशो पवस्व स्वर्वी यस्मे वर्चः सुवीर्यम् 66, 21. तत्राय वर्चसे बलाय 10, 18, 9. 85, 39. AV. 1, 35, 1. 2, 28, 5. 29, 1. 4, 10, 7. 6, 63, 1. 19, 58, 1. Çat. Br. 2, 3, 4, 18. दीर्घायुत्व, वर्चस् Kāty. Çr. 5, 2, 14. ममोपे वचो विकुवेदस्तु ṚV. 10, 128, 1 (Schol. zu P. 1, 2, 34). कृण्वता वर्चसा सूर्यस्य 112, 3. 159, 5. im Feuer Çat. Br. 4, 3, 4, 3. VS. 3, 19. 10, 7. कृक्वो वर्चसा वर्चस्वान् 13, 40. AV. 1, 9, 4. 14, 1. 2, 13, 2. 3, 4, 1. या मो प्राणेन सरस्वती वर्चसा गमेत् 13, 5. des Elephanten 22, 6. der Wasser 4, 8, 5. 6. यस्मिन्निन्द्र मरुत्वति वर्चोसि धेहि 22, 3. निर्ऋतिं तत्र नयति कृत्तिं वर्चः 5, 18, 4. 7, 82, 2. der Männer und Weiber 13, 1. वर्चस्तेजो बलमोजः 9, 1, 17. वर्चस्तेजः प्राणमायुः 18, 3, 36. 12, 1, 25. 14, 1, 35. fg. वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् 2, 52. काश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च 17, 1, 27. 18, 3, 10. वचो म इन्द्रो न्यनक्तु कर्त्तवेऽपः 12. 19, 33, 5. 37, 2. 20, 48, 1. 2. सहस्र° *tausenderlei Kräfte verleihend* ṚV. 9, 12, 9. 43, 4. तीक्ष्ण° *scharf wirkend* Sūçr. 2, 296, 1. तिग्म° (द्वान्तम) R. 5, 10, 19. MBh. 1, 1076. यविष्ठ° (रूप) *Glanz, Herrlichkeit* Bhāg. P. 3, 9, 3. 17, 25. यकृत्पाठ° 19, 27. ब्रह्म° 6, 7, 25. 8, 7, 14. सर्वेषाम् 24, 25. भूरि° 4, 24, 40. R. 2, 35, 18. रूपवर्चसा 3, 4, 11. देव° *einen göttlichen Glanz habend* R. Schl. 1, 4, 28 (3, 72 Gorr.). 2, 110, 20. Bhāg. P. 10, 74, 16. Verz. d. Oxf. H. 120, b, 2. भास्कर° Mārk. P. 105, 16. सूर्यपावक° MBh. 1, 19. ज्वलितानल° R. Gorr. 1, 76, 19. चन्द्रार्धाकार° 29, 14. ताराधिपति° 4, 54, 1. चन्द्र° Bhāg. P. 9, 15, 6. सप्तार्चि° R. 5, 40, 1. विद्युज्ज्वलित° 20, 37 (23, 33 Schl.). नवत्रपय° 3, 49, 1. खड्गो विमलाकाशवर्चसो 2, 31, 25. 3, 28, 22. सिंहकेसर° *Farbe* 4, 37, 34. चरणौ पद्मवर्चसौ 2, 60, 16. शश्वद्धरित° Bhāg. P. 3, 22, 30. संध्याधानीक° 6, 9, 12. विगलितमेघ° MBh. 1, 1182. — *b) Koth, stercus* Uṇ. zu Uṇādis. 4, 188. AK. H. 634. H. an. Med. Hall. 3, 13. 5, 49. वर्चो निचितं गुदे Sūçr. 1, 92, 19. 349, 9. वर्चोविवर्धन 178, 1. 2, 428, 6. वर्चो मुञ्चति 14. गाढवर्चस्त्व 1, 49, 20. बद्धवात° 198, 20. वर्चोनिरोध 2, 456, 4. बद्ध° (s. auch bes.) 48, 4. Rāja-Tar. 6, 120. पारावतस्य *Taubenmist* Sūçr. 2, 300, 12. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sohnes des Soma Med. MBh. 1, 2580. 2747. 18, 165. Hariv. 154. 12483. VP. 120. — *b)* eines Sohnes des Sutejas (Suketas?) MBh. 13, 2000. — *c)* eines Rākshasa (nach dem Comm.) Bhāg. P. 12, 11, 40. — Vgl. ग्र°, ग्रधो°, ग्रनून°, गूढ° (adj. *dessen Glanz verborgen ist* Bhāg. P. 1, 19, 28), दुस्म°, धूम°, पावक°, बद्ध°, भिन्न°, मित्र°, श्रेष्ठ°, समान°, सु°, सूर्य°, सोम°, कृत°, हस्ति°.

वर्चस n. am Ende eines comp. = वर्चस् 1) *a)*: चन्द्र° *Mondschein* Sūçr. 1, 113, 17. यत्तकज्वलनसमान° adj. *Glanz, Farbe* MBh. 1, 1180. सितोज्ज्वलोत्तमशृङ्ग° adj. R. Gorr. 2, 12, 38. पुरुषाशाग्निवर्चसाः ad Vet. 19, 11 in LA. (III). — Vgl. पत्य°, ब्रह्म° (auch Bhāg. P. 9, 16, 28), ब्राह्मण°, राज्ञ°.

वर्चस्विन् s. ब्रह्म°, सु°.

वर्चस्क m. n. gaṇa ग्रर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. Siddh. K. 249, *a*, 1. 1) = वर्चस् 1) *a)*: द्रुपवर्चस्कं प्रेत्य वै लभते नरः *Schönheit und Glanz* (so Nīlak.) oder *glänzende Schönheit* MBh. 13, 1708. सु° adj. *schön glänzend* (ग्रग्नि) Hariv. 13930. — 2) = वर्चस् 1) *b)* AK. 2, 6, 2, 19. H. 634. Hall. 3, 13. P. 6, 1, 148.

वर्चस्य (von वर्चस्, angeblich im Veda = वर्चस् Kāç. zu P. 5, 4, 30. 1) adj. *a) Lebenskraft verleihend:* ग्रायुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषम् VS. 34, 50 (vgl. Vaitān. Bṛh. S. 48, 74). AV. 19, 26, 4. Çāṅkh. Gṛhy. 3, 1. — *b) auf* वर्चस् *bezüglich* u. s. w. Kauç. 12. — *c) auf die Excremente wirkend* Sūçr. 1, 206, 2. 20. — 2) f. या (sc. इष्टका) Bez. von *Backsteinen, welche mit Sprüchen, die das Wort* वर्चस् *enthalten, gelegt werden*, Schol. zu P. 4, 4, 125. — Vgl. ब्रह्म°.

वर्चस्वत् (wie eben) adj. 1) *lebenskräftig, frisch; leuchtend:* वाच् AV. 9, 1, 19. VS. 8, 38. कृक्वो वर्चसा वर्चस्वान् 13, 40. किरण 34, 50. सूर्य P. 5, 2, 122, Schol. neben ग्रायुष्मत् TS. 3, 3, 8, 1. — 2) *das Wort* वर्चस् *enthaltend* P. 4, 4, 125, Schol.

वर्चस्विन् (wie eben) 1) adj. *lebenskräftig, frisch* AV. 3, 22, 3. तास्त्वं विधेहर्चस्व्युत्तरो हिरण्यो भव 5, 28, 10. 19, 40, 2. VS. 8, 38. यो वर्चस्वी कर्म चिकीर्षति शक्नोति वै तत्कर्तुम् *ein energischer Mann* Çat. Br. 3, 2, 3, 12. 3, 4, 1, 16. Āçv. Gṛhy. 1, 21, 4. MBh. 3, 1807. 2466. वर्चस्वितम Çāṅkh. Gṛhy. 3, 11. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Varkas und Enkels des Soma MBh. 1, 2586. Hariv. 154. 12483. VP. 120. — Vgl. ब्रह्म° (auch Bhāg. P. 4, 1, 3. 23, 32).

वर्चाय्, °यते denom. von वर्चस् (ग्रभूततद्भावे) gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 13. वर्चित Paṇḍit. 3, 10 fehlerhaft für चर्चित.

वर्चिन् m. N. pr. eines von Indra bekämpften Dämons: यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपत् ṚV. 2, 14, 6. 7, 99, 5. उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः 4, 30, 15. ग्रसेन्दासा उदव्रजे वर्चिनं शम्बरं च 8, 47, 21.

वर्चोगय m. *Verstopfung* Sūçr. 2, 193, 20.

वर्चोदा adj. *Kraft u. s. w. verleihend* VS. 2, 26. 3, 17. 4, 3. 7, 37. TS. 3,

2,8,1. 5,4,8,8.

वर्चोधा adj. dass. AV. 2,11,4. VS. 4,11.

वर्त्, वर्तति (वर्तने) Dhātup. 34,7. (परि) वर्तति, वृत्याम् 3. sg., वर्त्यात्; वृत्तो (वर्तने) Dhātup. 24,19. वर्क्, वर्क्तम्, (अप) अवर्क् AV. 13,2,9. वर्णक्ति (वर्तने, Vop. वृतो) Dhātup. 29,24. वर्णक्; वर्ज्जे (vgl. Dhātup. 24,19), वर्त्ते; ववर्त्, ववृते, ववर्त्युस्, ववर्त्तुर्; अवर्तम्, अवर्तीस्, वृति; वर्त्स्यति, °ते; pass. वृत्यते, वर्क्; influ. वर्तिषीय, वृत्सीस. 1) *wenden, drehen:* वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वाम् RV. 4,7,10. — 2) *abdrehen, ausraufen* (das Gras zur Streu am Altar): बर्हिर्न यत्सुदासे वृथा वर्क् RV. 1,67,7. 83,6. 142, 5. वृत्ते कृ यन्नमसा बर्हिरग्नौ 6,11,5.18,110,4. TBa. 3,6,12,1. — 3) *Jmd den Hals brechen* Naigh. 2,19. वृणक्पिप्रुं शुल्लमिन्द्रः RV. 6,18,8. तं कुत्सेषु शुष्णं दाशुषे वर्क् 26,3. — 4) *ablenken* (vom Wege); *beseitigen:* इमं क्षेत्रे मरुतस्तं न वृत्रहे (influ.) RV. 8,65,1. विशो वर्वर्तुरीणाम् *welche den Gott ab- d. h. zu sich lenken* 1,134,6. आराच्छत्रून्या वनानि वर्ति AV. 5,30,2. ववृत्युस्तत्यतः कामम् 8,68,5. पाप्मानं मे वर्तय Kauśik. 6,2, 7. — 5) med. *Etwas von Jmd* (gen. abl.) *abwenden, abspannen, vorenthalten, abhalten, abspenstig machen:* तेरेषां तामन्नमवृञ्जत TBa. 1,4,9,3. 3,6,4. पशून् 2,3,5,2. इन्द्रियम् TS. 2,1,4,5. पशूनां धातव्यस्य 5,4,2. 3,1,7,3. 5,1,6,2. 6,9,3. यत्रा वा इदं विष्णुः सत्रमवर्त्यत 7,1,5,5. Çat. Br. 1,5,2,9. 8, 6,3,2. प्राणान् 9,2,4,17. न रेषां विरुवे ज्यं इन्द्राग्नी वृङ्क्ते Ait. Br. 6,6. इष्टापूर्तं ते वृञ्जीय (वृञ्जीयं die Hdschrr.) 8,15. एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्यात्यमेधसः Kaṭhop. 1,8. यन्मे माता प्रलुलुभे विचरत्यवतिव्रता। तन्मे रेतः पिता वृक्ताम् (wohl वृङ्क्ताम् zu lesen) *halte fern von mir den Samen* (des Ehebrechers) M. 9,20. Bṛh. Âr. Up. 6,4,3 (vgl. Çat. Br. 14,9,4,3). — 6) med. *sich zueignen:* वृञ्जते पशून्स्त्रियो ऽर्वान्पुरुदस्यवो वृनाः Bhāg. P. 1, 18,14. 4,17,22. 5,1,16. — 7) med. *für sich erwählen:* यामामेकतमो वृङ्क्ते मनुष्याणां स्वर्गभूयणाम् Bhāg. P. 11,4,14.

— caus. वर्त्तयति (वर्तने) Dhātup. 34,7. aus metrischen Rücksichten bisweilen auch med. 1) *beseitigen, vermeiden, unterlassen, entsagen, verzichten auf;* mit acc. der Sache oder der Person Kaiṣṇ. Up. 2,22,1. RV. Prāt. 6,10. 15,8. क्रोधान्ते Liṭ. 3,3,23. दानाध्ययने Âçv. Gṛhy. 4, 4,17. मांसमैथुने Kāty. Çr. 2,1,8. Kauç. 73. 141. वर्तयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान्स्त्रियः। शुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम् ॥ M. 2, 177. 185. 3,50. 4,31. 127. 168. 186. 245. 6,14. 8,63. 10,83. Jiṭ. 1,23. 130. MBh. 1,3959. तीर्थानि पञ्च 7840. 2,1142. 13,5420. 5659. R. 2,41, 3 (40,3 Gorr.). धृष्टाचारमधर्मज्ञमस्वाधीनं नराधिपम्। वर्तयन्ति नरा दूरादरीयङ्कमिव द्विपाः ॥ 3,37,8. मृगं तं मक्षिणं वापि शार्दूलं मानुषं गजम्। नावर्तयमुपप्राप्तं तीक्ष्णशृङ्गः सुधान्वितः ॥ so v. a. *ruhig seiner Wege gehen lassen* 75,17. 4,13,20. 5,8,17. वर्तयेदात्मकर्मस्थं वर्तयेदनिलो ऽनलम् 23, 17. 36,4. 89,35. Kām. Nītis. 5,19. हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः Çiç. 135. Spr. 54. 550. 1353. 1729. 3060. 4098. 4765. 4827. Varāh. Bṛh. S. 53,86. भार्यां स्वर्गे ऽप्यवर्तयन् Kathās. 14,47. 27,186. Bhāg. P. 9,1,33. Pañcat. 60,19. वर्तयीत MBh. 3,13862. Spr. 4380. वर्तयेद्याः MBh. 3, 10583. यत्र वर्तयते राजा पापकर्त्रो धनागमम् M. 9,246. वर्तयित्वा Jiṭ. 1,138. pass.: तत एतानि वर्त्स्यते तीर्थानि MBh. 1,7845. वर्त्स्यते (lies वर्त्येत, der Comm. उत्क्षेत) विषदूषितम् Kām. Nītis. 7,9. वर्तयते सेवकः Spr. 3660. सा वर्त्स्यमाना च मनेः Kathās. 66,87. यस्माच्च वर्जितमिदं वनं ते मम Harīv. 1886. सज्जनैर्वर्जितः Spr. 727. वर्जितवक्त्रं रामम् (die ed. Bomb. hat eine ganz andere Lesart) R. 2,33,5. वर्जितं शयनीयं ते भर्त्रा केनाप्य केतुना R. Gorr. 2,74,15. — 2) pass. *um Etwas kommen, verlustig gehen einer Sache* (instr.): धर्मभागैर्न रिक्तो नित्यं वर्त्स्यते (die neuere Ausg. hat eine andere Lesart) Harīv. 10962. वर्जितं *dem es an Etwas gebricht, — fehlt, frei von, ohne Etwas seiend;* die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend: द्रव्यं भूयणैरपि वर्जितम् MBh. 3,2884. लक्षणैर्हीनैः 2784. रामेण R. 3,51,12. Varāh. Bṛh. S. 53,38. धृतिधि° Mārk. Up. 1,2, 3. आरात्त° (आद्द) M. 3,204. 4,176. Buāg. 4,19. 11,55. MBh. 3,1760. 4, 306. R. 1,1,87 (94 Gorr.). 2,27,11. 37,22. 60,18. 3,32,41. 5,90,17. Suçr. 1,69,5. Kām. Nītis. 10,21. Varāh. Bṛh. S. 19,20. 54,52. षष्टिः पञ्चवर्जिता *sechzig weniger fünf* 53. 71,14. 78,20. Bṛh. 20,2. Spr. 3339. 3431. 4823. Kīr. 5,47. Kathās. 52,112. 65,141. Rāja-Tar. 3,29. 6,279. Bhāg. P. 1,5,12. 4,6,32. 5,14,38. Mārk. P. 50,73. H. 409. 854. Schol. zu Kāty. Çr. 329,11. Sarvadarçanas. 69,20. भुक्ति° so v. a. *ungenießbar* Pañcat. 138,2. *ohne Etwas seiend* so v. a. *mit Ausnahme von, nicht einbegriffen* —: शतमात्मसिको भागो वस्त्राभरणवर्जितः Harīv. 6303. नान्यं प्रस्तास्यते कंचिन्मानवं पितृवर्जितम् R. 1,8,5. Spr. 3820. 4773. Varāh. Bṛh. S. 53,120. Bṛh. 11,3. दण्डं वधवर्जितम् Rāja-Tar. 4,105. 6,88. Schol. zu P. 1,4,17. 2,3,24. रसखण्डनवर्जितम् adv. *ohne dass die Lust unterbrochen worden wäre* Ragh. 9,35. — 3) *ausnehmen, ausschliessen, auslassen:* देवशब्दम् Liṭ. 8,9,3. वर्जयित्वा *mit Ausnahme von* (acc.) M. 3, 276. Jiṭ. 1,263. Harīv. 7191. 13986. R. 1,14,40. 59,11. 67,19 (69,20 Gorr.). R. Gorr. 1,76,17. 3,4,46. 4,36,14. Mṛicch. 123,11. Kathās. 8, 20. 50,93. Bhāg. P. 8,15,29. Kāç. zu P. 1,1,56. Schol. zu 1,2,53. 6,1, 158. वर्जितस्त्वङ्गमेकैकः Kathās. 1,36. एक एव तु वर्जितः। नोपानत्कूपो विक्रीतान्मद्यो वेणमनस्ततः ॥ Rāja-Tar. 6,18. आवर्जिते *mit Ausnahme von* आ AV. Prāt. 3,95. — Vgl. मानवर्जित.

— intens.: वरीवृत्तस्थावरेभिः *ablenkend mit den starken* (Rossen, um einzukehren, *devertens*) RV. 7,24,4; vgl. P. 7,4,65.

— caus. vom intens.: कर्णौ वरीवर्त्तयन्ती *die Ohren hinundher drehend* AV. 12,3,32.

— अधि act. *an oder über* (das Feuer) *rücken:* पुरोडाशम् Çat. Br. 1, 2,2,3. 4. 7.

— अनु s. अनुवृत्.

— अप 1) *abwenden, beseitigen, verscheuchen:* अप वृङ्क्ष शत्रून् AV. 3, 12,6. अपावृक्तमः 13,2,9. नेरुतूनपवृणक्ति Çat. Br. 4,3,1,8. — 2) *abdrehen, abreissen:* नापं वृञ्जाते (sc. तन्तून्) न गमातो ऽन्तम् AV. 10,7,42. यत्राधानमपं वृङ्क्ते चरित्रैः *carpit viam* RV. 10,117,7. — 3) (*abbrechen*) *beendigen, abschliessen, absolviren* Çat. Br. 1,4,4,22. 4,6,9,21. पात्राण्यनपवृक्तानि *nicht ausgebraucht* Schol. zu Kāty. Çr. 1066,13. 490,1. 493, 24. 528,19. द्वात्रिंशतमेकादशिन्यो ऽपवृज्यन्ते *werden abgemacht* d. h. *voll* Âpast. im Comm. zu TBa. 1,112,12. Weber, Ind. 45. — Vgl. अपवर्ग, अनपवृज्य. — caus. 1) *meiden, vermeiden, entsagen:* तदेरमपवर्तय (अपि वर्तय?) Mārk. P. 50,63. पुरस्तादेव भगवन्मैतदपवर्जितम् MBh. 12,3930. दूरापवर्जितवक्त्रैः शिरोभिः Ragh. 17,79. — 2) pass. *verlustig gehen, kommen um:* अपवर्जित *dem es an Etwas gebricht, — fehlt, frei von, ohne Etwas seiend;* die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend: षष्टिरपवर्जिताशीतिः Varāh. Bṛh. S. 53,7. रोमापवर्जितमुरः 70,

s. द्रुपमुखापवर्जितनन् 104,40. नयनापवर्जित Bhn. 23,12. — 3) *entlassen:* मुमनसो दिव्याः खेचीरपवर्जिताः so v. a. *wurden gestreut* Bhāg. P. 3,24, 8. — 4) *abtrennen, abreissen:* भल्लापवर्जितैस्तेषां शिरोभिः Raghu. 4,63. मदच्युता मतङ्गजेन मगिवापवर्जिता Kir. 1,29. — 5) *umstossen, umwerfen:* घटे ऽपवर्जिते Jāān. 3,300. कुम्भे Varāh. Bṛh. S. 53,111. — 6) *verstossen, ächten:* अपवर्जित (= संस्कारानर्ह Nīlak.) MBh. 13,2371. — 7) *überlassen, verleihen, geben, schenken:* यदि तावन्न गृह्णामि ब्राह्मणेनापवर्जितम् MBh. 12,7308. दक्षिणामपवर्ज्य 12276. Harīv. 1114. मह्यानां निष्काणां सहस्रमपवर्जय R. Gorr. 2,32,24. 27. सुकृच्छ्रात्मनः कामानीप्सितानपवर्जय 14. भीमापवर्जितं (भीमेनावर्जितं ed. Bomb.) पिण्डम् Bhāg. P. 1,13,21. अपवर्जितो वरो *verabfolgt* (nicht bloss gewährt) R. Gorr. 2,26,23. आहृमपवर्जयन् *darbringend* MBh. 13,4263. — 8) *abschliessen, beendigen* Lāṭ. 10,2,11. प्रतिज्ञाम् *sein Versprechen lösen* R. 1,44,49 (45,44 Gorr.). 51. — Vgl. अपवर्जन.

— व्यप s. व्यपवर्ग. — caus. *aufgeben, verlassen:* स तु सर्प इव त्वचं पुनः प्रतिपेदे व्यपवर्जितां श्रियम् Raghu. 8,13.

— समप caus. *überlassen, geben, schenken:* ते गावो चोऽकृवृत्तये राजन्यया समपवर्जिते MBh. 12,7296.

— अपि *Jmd* (loc.) *Etwas zuwenden:* मयि देवासो ऽवृत्रन्नपि क्रतुम् ṚV. 10,48,3. 120,3. सूममगभे दुघये ऽवंते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृत्रहत्ये *hinrichten auf* (loc.) 6,36,2.

— अभि s. अभीवर्ग.

— अव *abdrehen, abtrennen:* गर्भम् Kāṭh. 13,3. — caus. *wegschaffen, beseitigen* ṬBr. 1,4,6,5.

— आ 1) *zuwenden:* कुविदादस्य रुशतो गवां केतं परीवर्जते नः ṚV. 1, 33,1. — 2) *sich zuwenden, sich aneignen:* आ स त्रीणां सुकृतं वृङ्क्ते Śat. Br. 14,9,4,3. आवृत्तमन्यासां वर्चः ṚV. 1,159,6. आ नीवृक्तं मर्त्यं दभ्रचेताः 8,90,16. यथा वातरयो घ्राणमावृङ्क्ते गन्ध आशयात् Bhāg. P. 3,29,20. — 3) *Jmd* (abl.) *Etwas vorenthalten:* मा त्वायतः शंसमा वृक्ति (nach Sāy. von त्वशू देवाः ṚV. 1,27,13. — 4) *Jmd* (acc.) *geneigt sein:* तमेव दयितं भूय आवृङ्क्ते पतिमम्बिका Bhāg. P. 4,7,59. — caus. 1) *neigen:* कलशम् Śiṅ. 11,9. कुमारस्य शिरसि कलशमावर्ज्य Vīkr. 87,15. आवर्ज्य शाखाः Raghu. 16,19. दृष्टीः Mṛcch. 47. आवर्जित *geneigt, gesenkt* MBh. 1,5883. 2,1804. 7,1145. 2073 (12,9187). 7,6905. Harīv. 3720 (आवर्जितमुखस्कन्ध die neuere Ausg., = धामित Nīlak.). 6780. 8422. Raghu. 13,17. 24. Kumāras. 2,36. 3,54. 7,54. Spr. 3445. H. an. 4,24. Mud. k. 202. — 2) eine Flüssigkeit *neigen* so v. a. *ausgiessen:* आवर्जित MBh. 3,2936. कपिरावर्जितं क्षीतस्त्वगा विधिवदग्निषु Raghu. 1,62. 67. Kumāras. 5,34. 7,10. — 3) *aussaugen:* आवर्जितं मया वक्षो हृदयात्तव शोणितम् Nigh. 63,1. — 4) *darreichen:* तनयावर्जितपिण्ड Raghu. 8,26. भीमेनावर्जितं (so die ed. Bomb.) पिण्डम् Bhāg. P. 1,13,21. Raghu. 15,80. Spr. 229. चतुर्दिग्गावर्जितसंपदो विभूतिम् 6,76. — 5) *sich Jmd geneigt machen, für sich gewinnen:* सर्वत्रावर्जयामास नगरीवासिनो जनः Kathās. 24,104. तैं वाक्यमुदीरावर्ज्य 62,138. Daśak. 79,9. Çiṅ. in LA. (III) 37,15. मरीचिमावर्जितवतीव Daśak. 66,11. आवर्जित Ratnāv. 2,17. Nigh. 2,5. Kathās. 42,94. गुणैरावर्जितप्रज्ञम् 44,24. 52,363 (nicht अवर्जित). 66,115. 93,60. 97,11. Rāja-Tar. 5,303. Daśak. 51,5. Vgl. वर्त् mit आ caus. 6). — आवर्जित Harīv. 3799 wohl fehlerhaft für आवर्तित, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. आवर्जन, आवर्जित.

— अपा, partic. °वृक्त *beseitigt* oder *vermieden:* अपावृक्ता अरातयः ṚV. 8,69,8.

— प्रा *erfüllen:* प्रावृङ्क्ते पयसो जगत् Bhāg. P. 4,8,68.

— व्या *absondern, abtheilen:* तामग्न्याधाय व्यावृत्यामते Pāraśav. Bh. 10,3,9. 5,8. तां चतुर्धा व्यावृत्य गायेत् Sāṅkh. Br. 2,2. चतुरवनद्धं कृत्वा Comm.

— परिव्या *trennen von* so v. a. *retten vor:* परि वः सेन्याद्यद्व्यावृञ्जन्तु घोषिणः Çāṅkh. Gṛhj. 3,9.

— समा *an sich ziehen, sich aneignen:* तेनैव ब्रह्मणोभागौ राष्ट्रं परिगृह्णात्येकधा समावृङ्क्ते TS. 2,1,2,2. — caus. *neigen:* °वर्जित *geneigt, gesenkt:* केतु Kumāras. 6,7. नेत्र Raghu. 6,15.

— उद् *heraustrennen, austilgen:* उद्गौ ऽसि पाप्मानं म उद्वृङ्धि Kaṭh. Up. 2,7. — intens. *schwingen:* यष्टा पूषा शिथिरामुद्वरीवृजत् ṚV. 6,58, 2. ● उद्यच्छन् Sāy. = परित्यक्तवान् derselbe zu ṬBr.

— नि 1) *niederbeugen, hinunterdrücken; zu Fall bringen:* नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ṚV. 1,53,9. 54,5. 101,2. येनो पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्यै वज्रेण कुल्यमृणक् 2,17,6. वीरान् 14,7. वि दुर्योण ओषणाक्षधवाचः 5,29,10. 32,8. समत्तमेनं गृणते नि वृङ्धि 10,87,11. — 2) *wegwerfen:* तानियं प्रतिगृह्णीतात्पत्नी व्यवृञ्जन् Ait. Br. 6,35.

— अनुनि *versenken:* मृतं कवधे वृहमप्स्वनु दुर्गे नि वृणग्वमेवाकुः ṚV. 7,18,12.

— परा 1) *abwenden:* परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्रायेज्यवो नर्यवीः स्पर्धमानाः d. h. *sie flohen* ṚV. 1,33,5. — 2) *abdrehen:* त्वाष्ट्रस्य त्रीणि शीर्षा परा वर्क् ṚV. 10,8,9. — 3) *wegwerfen, beseitigen, verstossen, im Stiche lassen:* मा नः इन्द्र परा वृणक् ṚV. 8,86,7. परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति 6,47,17. मा नः परा वर्क् गविष्टिषु 59,7. मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्भाग्भृग्यया 8,64,12. पुत्रमसुवः परावृक्तम् 4,30,16. — Vgl. परावृज्.

— परि 1) *ausbiegen, ausweichen; umgehen, vermeiden; übergehen, verschonen mit* (instr.) ṚV. 1,124,6. 172,3. 183,4. परि सर्वेव ड्रितानि वृज्याम् 2,27,5. परि णो हेतो रुद्रस्य वृज्याः 33,14. 3,29,6. 31,17. 56, 4. 6,51,16. 75,12. परि हेयोभिरर्यमा वृणक्तु 7,60,9. क्वं न परि वर्जति 8,1,27. 45,10. 47,5. 10,142,3. शतमन्यान्परि वृणक्तु मृत्यून् AV. 1,30, 3. 6,93,1. यज्ञस्याणुम् TBr. 2,1,4,1. क्रमा VS. 13,11. देवता वा एतं परिवृञ्जन्ति यमनृतमभिशंसन्ति *meiden* Pāraśav. Bh. 18,1,11. इन्द्रे देवताः पर्यावृञ्जन् *verstiessen, ächteten* Ait. Br. 7,28. — 2) *umgeben, umschliessen:* वृङ्क्ते Bhāg. P. 5,20,7. — Vgl. परिवर्ग, °वार्य, °वृक्त fg. — caus. 1) *abhalten von, entfernen:* अङ्गादङ्गात्प्र व्यावय हृदयं (wohl हृदयात्) परि वर्जय AV. 10,4,23. — 2) *meiden, vermeiden:* अतिभोजनम् M. 2,57. दशैतानि कुलानि 3,6. 4,6. 72. 114. 206. 8,127. Jāān. 1,170. MBh. 2,1796. एवंविधां स्त्रीम् 13,518. देयाः किलतृणा गावः काम्यापि परिवर्जयेत् 3445. 14,578. R. 4,31,8. Manāu. 7,24. Spr. 2147. 2423. 4776. विप्रयं परिवर्जये MBh. 3,14025. परिवर्जितसंस्पर्शा Kathās. 30,45. *aufgeben, verlassen:* परिवर्ज्य गुरुं पाके यत्र राज्ञा दुर्योधनः MBh. 7,7272. R. 5,24,35. *Jmd übergehen, nicht berücksichtigen* Rāja-Tar. 5,90. परिवर्जित *verlassen, dem es an Etwas gebricht, — fehlt, frei von, ohne Etwas seiend;* die Ergänzung im instr. (abl.) oder im comp. vorangehend: त्वया R. Gorr. 2,49,12. पित्रा Kathās. 74,61. स्वगणमुत्कृष्टनिघृण: Bhāg. P. 5,8,6.

गद्या MBu. 14, 2486. गुणै: Spr. 5021. Rāǵa-Tar. 6, 101. संख्यया *ohne Zahl, unzählig* Pañcat. II, 62. शतद्वये वत्सराणामष्टभि: परिवर्जिते *zweihundert weniger acht* Rāǵa-Tar. 2 am Schluss. विषाण° Spr. 299. अन्याय° MBu. 13, 5353. धर्मार्थ° Spr. 3693. स्त्री° Vasiṣṭha Bṛh. S. 78, 12. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 543, 14. — 3) *umschlingen, umlegen:* कलसं च समालिङ्ग्य प्रसुप्ता भाति भाविनी । वसन्तपुष्पग्रथिता मालेव परिवर्जिता (परिवर्तिता ?) ॥ R. 5, 13, 50. — Vgl. परिवर्जक fgg.

— संपरि caus. *meiden, vermeiden* MBu. 12, 11027. 13, 7341.

— प्र 1) *hinwerfen*, das Barhis ṚV. 1, 116, 1. 7, 2, 1. प्र वीवक्ते सुप्रया बर्हिरेषाम् 39, 2. विप्रुतं रेभदुत्ति प्रवक्तम् 1, 116, 24. Çat. Br. 1, 3, 2, 14. पशूनां 8, 6, 23. 4, 4, 4, 7. 14, 1, 1, 10. Âit. Br. 7, 26 TS. 5, 1, 9, 2. — 2) technischer Ausdruck für *in* oder *an das Feuer setzen*, also auch *kalt oder glühend machen:* घर्मश्चित्तप्त: प्रवृत्ते य आसीदयस्मय: ṚV. 5, 30, 15. VS. 39, 5. उखाम् Çat. Br. 6, 6, 4, 22. 8, 1. 4, 10. 7, 1, 2, 6. 11, 5, 9, 11. 12, 3, 2, 3. 14, 1, 2, 15. 2, 2, 45. घर्मो वा एष यच्छीतः । घर्मरूक्ष: प्रवृज्यते । यद्ग्निक्षेत्रम् TBr. 2, 1, 2, 2. 3, 2, 8, 6. प्रवर्ग्यं प्रवृञ्जन्ति Pañcav. Br. 7, 5, 6. Kāṭh. 37, 7. Daher auch so v. a. प्रवर्ग्यं कर् Çat. Br. 14, 2, 2, 47. Çāṅkh. Br. 8, 3. Kāṭy. Çr. 26, 7, 32. Hiernach ist unter प्रवर्जन und प्रवृञ्जन zu ändern: *das Setzen in* oder *an das Feuer;* vgl. auch प्रवर्ग्य und प्रवृज्य.

— अनुप्र *hintennach werfen* Çat. Br. 1, 8, 2, 19. 9, 2, 17. 3, 3, 2, 5.

— प्रति *dagegen werfen* Kāṭy. Çr. 26, 4.

— वि caus. 1) *meiden, vermeiden* M. 2, 184. 3, 42. 167. 4, 42. 83 (= MBu. 13, 5023). 101. 144. 172. 5, 6. 11. 15. 48. 7, 45. MBu. 12, 8369. R. 4, 9, 23. Kām. Nītis. 5, 32. Spr. 3240. 3471. 4014. 5178. Māṛk. P. 34, 30. विवर्जयीत Spr. 4198. यतो ऽनुलूताव्याप्ता विवर्ज्यते Rāǵa-Tar. 4, 524. 5, 274. — 2) विवर्जित *verlassen von, dem es an Etwas gebricht, — mangelt, frei von, ohne — seiend;* die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend: राघवेण R. 2, 66, 19. दोषै: 53, 9. रिपुक्षयकलैर्: Vāmana Bṛh. S. 104, 15. Bhāg. P. 8, 3, 16. वर्षपङ्क्तिं सपणमासै: पञ्चभिर्वर्षैर्विवर्जिताम् Rāǵa-Tar. 1, 192. 348 (wo त्रिंशत्याङ्का zu lesen ist). शर्कराव-ङ्किवालुका° Çvetâçv. Up. 2, 10. सर्वेन्द्रिय° 3, 17 (= Bhag. 13, 14). काम° Maitrâyaṇ. 6, 34. Jāṭ. 2, 1. Bhag. 7, 11. 12, 18. MBu. 1, 7674. 3, 2616. R. 2, 52, 91. 66, 22. 72, 3. R. Gorr. 1, 49, 12. 5, 87, 14. Bhāg. 5, 19. Spr. 152. 172. 3564. 4192. 4973. 5338. AK. 3, 1, 21. H. 428. Vāmana Bṛh. S. 43, 10. 46, 99. 54, 58. Bṛh. 8, 4. Kathās. 45, 62. Rāǵa-Tar. 1, 344. 4, 688. 693. Bhāg. P. 3, 25, 24. 4, 9, 34. 8, 16, 51. Mārk. P. 16, 5. Verz. d. Oxf. H. 57, *b*, 7. Bhaṭṭ. 4, 23. अधमास्तु भगणाविवर्जिता: *vermindert um* Gaṇḍāḍhya. Bhāgaṇḍhya. 9. Prasaṅgaḍ. 17. Rāǵa-Tar. 1, 50. उपकारस्य भेदास्तु सर्वे मैत्रविवर्जिता: *mit Ausnahme —, mit Ausschluss von* Spr. 3820, v. l. Vāmana Bṛh. S. 86, 65. Śiśupāl. 72. मानविवर्जितम् adv. *ohne Ehre, ehrlos* Spr. 2079. fg. — 3) *verabreichen, geben:* पाहतं त्वयास्माकं विवर्जितम् Mārk. P. 133, 23. — Vgl. विवर्जन u. s. w.

— सम् med. *an sich stehen;* तृषु यद्वो समवृक्ता ग्रभै: ṚV. 7, 3, 4. मे यन्मित्रावरुणा वृत्र उक्थै: 10, 61, 17. यदाप उच्छुष्यन्ति वायुमेवापियन्ति वायुर्वै चैतान्सर्वान्संवृङ्क्ते Kauṣīt. Up. 4, 3, 2. यदहोरात्राभ्यां पापमकरोत्तं तदृङ्क्ते Kauṣīt. Up. 2, 7. act.: पाप्मानं मे संवृङ्क्ष्व ebend. *sich zueignen* Çat. Br. 1, 2, 5, 7. सर्वमेव देवा अमुराणां समवृञ्जत 7, 2, 24. 9, 2, 35. 5, 1, 2, 14. — Vgl. संवर्ग, संवर्जन, संवृज्. — desid. संविवृक्षते *sich aneignen wollen* Çat. Br. 12, 4, 4, 3.

वर्ज (von वर्ज्) adj. am Ende eines comp. (f. या) 1) *frei von, ermangelnd:* रुम° Bhāg. 2, 59. चतुर्लक्षण° MBu. 12, 7194. — 2) *mit Ausnahme von:* निर्यासा: मल्लकीवर्ज्या: (°वर्ज्या: ed. Bomb.) MBu. 13, 4716. नञ्समासक-र्मधारयसमासवर्जस्तत्पुरुष: Schol. zu P. 2, 4, 19. 1, 2, 45. रेफ° Vop. 2, 31. 3, 34. बकुवर्जा मंख्या 6, 22. — Vgl. वर्जम्.

वर्जक (vom caus. von वर्ज्) adj. am Ende eines comp. *meidend, vermeidend* MBu. 12, 261. — Vgl. मान°.

वर्जन (wie oben) n. 1) *das Meiden, Vermeiden, Aufgeben, Fahrenlassen* H. an. 3, 410. Med. n. 120. मधुमांसस्य MBu. 13, 1558. अधर्माणाम् Kām. Nītis. 13, 31. अनर्थस्य 34. याचास्य M. 5, 4. अनादेयस्य चादानादादेयस्य च वर्जनात् Spr. 3462. मांसस्य भक्षण° M. 5, 26. Jāṭ. 1, 178. परस्वादान° MBu. 14, 512. Kathās. 17, 84. Rāǵa-Tar. 6, 100. परस्त्री° Pañcat. 2, 7, 45. Vedântas. (Allah.) No. 6. Sarvadarçanas. 81, 10. fg. *das Vernachlässigen* (Gegens. पालन) Pañcat. 2, 7, 46 (वर्जने zu lesen). *das Weglassen* Âçv. Çr. 3, 14, 19. *das Ausschliessen, Ausnehmen* P. 1, 4, 88. 2, 1, 5. AK. 3, 5, 3. H. 1527. — 2) *das Tödten, Verletzen* H. 372. H. an. Med. Halāy. 2, 322. — 3) व्रतकस्यापि वर्जनम् Harîv. 7789 fehlerhaft für व्रतकस्यापवर्जनम् (*Beendigung, Beschluss*), wie die neuere Ausg. liest.

वर्जनीय (wie oben) adj. zu *meiden*, zu *vermeiden* Śaṅkar. Bṛh. 4, 1. Nir. 10, 41. M. 3, 166. MBu. 13, 2451. R. 2, 105, 25. 4, 43, 29. 5, 81, 16. Suçr. 1, 119, 18. Spr. 575. 3150. 3641. Mārk. P. 32, 19. Verz. d. Oxf. H. 85, *a*, 49. न जीवनं वर्जनीयम् *nicht zu vermeiden* Sarvadarçanas. 101, 9. अ° *unvermeidlich* Comm. zu Nyâyas. 2, 2, 27. अवर्जनीयत्व zu 2, 1, 22. अवर्जनीयता Sarvadarçanas. 2, 14.

वर्जम् (absol. von वर्ज्) adv. am Ende eines comp. *mit Vermeidung —, mit Ausnahme von:* भ्रूण° Kāṭy. Çr. 1, 1, 3. श्रोणि° 5, 8, 12. 10, 5. 9, 14, 3. 10, 3, 15. 12, 3, 21. Âçv. Gṛhy. 2, 5, 4. Çr. 5, 3, 5. Kauç. 34. 37. 67. ṚV. Prât. 1, 20 u. s. w. VS. Prât. 1, 131. AV. Prât. 2, 67 u. s. w. P. 5, 4, 158. Vârtt. 2 zu P. 1, 1, 72. Çiṅs. 4, 3. 13. M. 3, 45. 8, 277. 11, 117. Suçr. 1, 97, 3. Kām. Nītis. 2, 25. 7, 42. Raghu. 15, 98. Çiç. 49. 13. Uttarar. 26, 21 (35, 10). Vāmana Bṛh. S. 48, 81. Kathās. 52, 105. Sudbh. K. zu P. 1, 4, 7. मद्य° *mit Vermeidung* M. 10, 137. Suçr. 1, 7, 4. यमलवर्जम् Kumāras. 7, 72. पुनरुक्त° Vāmana Bṛh. S. 47, 28. als selbständiges Wort mit folgendem acc. in der Bed. *mit Ausnahme von* Verz. d. Oxf. H. 167, *a*, 25. — Vgl. वर्ज्.

वर्जयितर् (vom caus. von वर्ज्) nom. ag. 1) *Vermeider:* वर्ज्य° MBu. 12, 6741. — 2) *Ausschrieber:* वृष्टे: Sāy. (bei einer etym. Erklärung) bei Muir, ST. IV, 93, N. 87.

वर्जयितव्य (wie oben) adj. zu *vermeiden* Vāmana Bṛh. S. 89, 4.

वर्जिन् (wie oben) adj. *vermeidend:* पतितान्न° MBu. 5, 1557. Verz. d. Oxf. H. 30, *b*, 24, wo °वर्जी zu lesen ist.

वर्ज्य (wie oben) adj. 1) zu *meiden*, zu *vermeiden* M. 3, 124. 152. 161. 4, 69. 5, 9. MBu. 1, 3625. 3, 14730. 12, 4233. 6741. 15, 193. Spr. 894. Vāmana Bṛh. 18, 18. Mārk. P. 29, 2. 31, 29. 51, 27. 76. 71, 23. Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 21. — 2) am Ende eines comp. *mit Ausnahme von:* निर्यासा: मल्लकीवर्ज्या: (so ed. Bomb., °वर्ज्ञी: ed. Calc.) MBu. 13, 4716. व्यञ्जन-सात्वर्ज्यमन्नम् Mārk. P. 31, 46. ब्रह्मर्ज्यम् *mit Ausnahme von dir* Pañcav.

128,22 fehlerhaft für बहर्हसम्.

वर्ण (von 1. वृ) Uṇâdis. 3,10. m. n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) m. *Ueberwurf, Decke* AK. 2,8,2,10. H. 680. an. 2,152 (wo कुवायाम् st. कुव्यायाम् zu lesen ist). Med. ṇ. 26. Halâj. 2,158. = वेष *Kleid* 5,74; vgl. वर्णक 1). — 2) *Deckel, Lid:* षष्टिवर्णचतुष्कम् Jâṭâs. 3,99. — 3) m. (*Ueberzug*) *das Ansehen, das Aeussere, Farbe:* = रूप H. an. Med. Viçva bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,10. = श्वेतादि, शुक्लादि AK. 3,4,12,50. H. 1392. H. an. Med. Halâj. 5,74. Viçva a. a. O. कृष्ण, अरुण ṚV. 1,73,7. नक्तोषासा वर्णमामेम्याने 96,5. 113,2. सूर: 4,5,13. तव स्पार्हे वर्णे घा संदृशि श्रिय: 2,1,12. सुषुन्द 34,13. रुशत् 10,3,3. 9,97,15. गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि 104,4. 105, 4. 10,124,7. AV. 1,22,1. 2. 23,2. येनेदमन्य रोचते को अस्मिन्वर्णमाभरत् 11,8,16. भद्रं वर्णं पुष्यन् so v. a. *in schönem Aussehen glänzend* VS. 4,3. 26. पृश्नि Ait. Br. 5,23. लोहितकृष्णवर्णा Çvetâçv. Up. 4,5. M. 8,32. मेघ° MBh. 3,1831. पाण्डु° 2106. 12721. 9,2644. R. 1,53,20. 2,63,18. 91,73. 4,59,18. प्रसन्न° 5,56,4. Suçr. 1,30,12. 85,18. 313,4. 2,438,18. Mṛicch. 47. 50. 82. °प्रकर्ष Kumâras. 3,28. Varâh. Bṛih. S. 10,21. 11,6. Râǵa-Tar. 4,111. Bhâg. P. 2,7,11. 5,14,7. 8,24,43. fünf *Grundfarben* Suçr. 1,274,16. Anugîtâ Up. in Ind. St. 9,37. पञ्च° Kâty. Çr. 22,9,12. Schol. zu 23,3,6. वर्णतस् *der Farbe nach* ṚV. Prât. 17,8. 10. मुक्तवर्णास्य विक्रिया *Gesichtsfarbe* R. 2,35,24. 76,4. 4,3,26. MBh. 3,15677. Spr. 2048. das einfache वर्ण dass.: °प्रसाद Çvetâçv. Up. 2,13. M. 8,25. वर्ण पूर्वोचितं प्रकृत्य R. 2,35,2. 6,6,2. Spr. 2754. 4017. Ragh. 8,42. वर्णाढ्रपेपसंपन्न *eine angenehme, schöne Farbe* M. 4,68. गन्धवर्णरसान्वित 5,128. वर्णोपपन्ना नार्य: *eine schöne Gesichtsfarbe* MBh. 4,2366. neben राग *Farbe:* मञ्जिष्ठारागवर्णाभ Harîv. 11698. *Farbe zum Malen (Schreiben):* पश्य हि भरतो वर्णैर्वर्णयत्यात्मनस्तनुम् Spr. 4796. MBh. 13,5505. Çiç. 164. वर्ण m. = यक्षराग und चित्र H. an. m. n. = विलेपन Med. — 4) m. (*Farbe* so v. a. *Sorte*) *Art, Geschlecht, Gattung;* von Personen und Sachen (= भेद, m. H. an. m. n. Med. m. = गुण H. an. Med.): दास ṚV. 2,12,4. कृत्वी दस्यून्प्रार्यं वर्णमावत् 3,34,9. Pâraṇ. Br. 5,5,14. Çâṅkh. Çr. 8,25,6. असुर्य Ait. Br. 6,36. देवासो मन्यु दासस्य शमते न धा वेतन्सुविताय वर्णम् *sie mögen unsere Art zum Heile führen* (Sây. Abwehrer) ṚV. 1,104,2. वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम् 2,3,5. वर्णं पवित्रं पुनतो न आगात् Pân. Gaṇ. 2,2. Çâṅkh. Gaṇ. 2,2. अचेतयद्धियं इमा जरित्रे प्रति वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् ṚV. 3,34,5. यस्य वर्णं मधुघृतं कृतिं चिन्नवत्यद्रिभि: *dessen süsssaftige goldene Art man mit Steinen treibt* d. h. *bearbeitet* 9,65,5. असुर्यं वा एतत्साहणीं कृत्वा पशवो वीर्यमपक्रामन्ति *asurischen Charakter annehmend* TBr. 1,4,2,1. Pâraṇ. Br. 3,10,2. ṚV. 9,71,2. वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स: *das ist seine Weise* s. मृत्योर्वा एष वर्ण: । यद्धरिद्राकृष्ण: *eine Form des Todes* TBr. 1,7,8,1. TS. 2,3,4,3. 5,1. उभौ वर्णावृषिरुग्र: पुपोष *beide Arten* (Sây.) ṚV. 1,179,6. समानं वर्णमभि शुम्भमाना *in derselben Weise* 92,10. अयं पापं वर्णं कृते *er hält übles Wesen von sich ab* TS. 2,2,5,1. 4,11,6. सर्वान्वर्णानिष्टकानां कुर्यात् *alle Arten* 5,7,5,3. वर्णानुपूर्व्येण Kâty. Çr. 23,3,6. Pâraṇ. Br. 13,5,2. 14,9,3. मिश्रावर्ण विभक्ति *Arten der Gefässe* Suçr. 1,353,19 (so eine Berl. Hdschr., वर्णान die gedr. Ausg.). य एको ऽवर्णो बहुधा शक्तियोगाद्वर्णाननेकानिहितार्थो दधाति *mannichfache Erscheinungsformen* Çvetâçv. Up. 4,1. एक° *einartig* Bhâg. P. 8,5,29. अग्नि° *feuerartig* d. i. *glühend heiss* M. 11,90. fg. वाग्भिर्मन्त्रवर्णाभि: Mantra-*artig* Bhâg. P. 5,24,30. — 5) m. (*Menschenart*) *Kaste* AK. 2,7,1. 3,4,12,50. H. an. Med. Halâj. 2,227. 5,74. Viçva a. a. O. चत्वारो वै वर्णा: Çat. Br. 5,5,4,9. 6,4,4,13. Ait. Br. 8,4. Nir. 3,8. शौद्र Çat. Br. 5,4,4,9. Ait. Br. 8,4. सर्वाभावे प: कार्यो वर्ण: d. h. wenn *kein* Vaiçja *da ist, dann ein* Brâhmaṇa *oder* Kshatrija Liṭ. 4,3,6. 17. दैव्यो वै वर्णो ब्राह्मण: । असुर्य: शूद्र: TBr. 1,2,6,7. M. 1,2. 91. 107. 116. 2,18. 137. 3,20. 5,57. 8,123. fg. MBh. 13, 161. R. 1,6,16. 7,15. Suçr. 1,7,2. 104,20. 122,16. Çiç. 46. नृपतयो रक्षन्ति वर्णान् Varâh. Bṛih. S. 27,8. 33,14. 47,11. 52,1. 53,69. Bhâg. P. 1,16, 32. 9,14,48. द्वैजात M. 8,374. वर्णानां ब्राह्मणो गुरु: Spr. 868. °गुरु *ist* der Fürst Râǵa-Tar. 3,95. वर्णाश्रमा: Spr. 4973. Çiç. 63,15. fg. Ind. St. 1,20,34. Verz. d. Oxf. H. 8,a,20. fg. 10,b,22. Râǵa-Tar. 6,108. LA. (III) 86,15. P. 1,1,31, Schol. वर्णाश्रमगुरु Beiw. Çiva's Çiv. °धर्मा: M. 2,25. Verz. d. Oxf. H. 85,a,13. वर्णानां संकर: M. 9,67. वर्णानां व्यभिचार: 10, 24. उत्तम Spr. 443. अवर° M. 3,241. 9,248. न कश्चिद्वर्णानामपयमपकृष्टो ऽपि भवते Çiç. 107. निकृष्ट° MBh. 4,412. हीन° Spr. 2335. न्यून° Mâlav. P. 118,4. इते षट्शान्वर्णान् जनयति स्वयोनिषु *Zwischenkasten* M. 10, 27. प्रतिकूलं वर्तमाना वाक्षा वाक्षतरान्पुन: । क्षीणा क्षीणान्प्रसूयन्ते वर्णान्यञ्जदृशैव तु ॥ 31. Die vier *Kasten* mit vier *Farben* in Verbindung gebracht: ब्राह्मणानां सितो वर्ण: क्षत्रियाणां च लोहित: । वैश्यानां पीतको वर्ण: शूद्राणामसितस्तथा ॥ MBh. 12,6934. Ind. St. 16,10. — 6) (*eine Form oder Figur*) *Buchstab; Laut; Vocal; Silbe; Wort;* m. n. (das n. nicht zu belegen) = अक्षर AK. 3,4,12,50. H. an. Med. Halâj. 5,74. Viçva a. a. O. तेऽन्यत्रयो वर्णा अन्यावन्ताकार उकारो मकार इति Ait. Br. 5,32 (ein ganz spätes Stück). Çâṅkh. Br. 26,5. परिमिता वर्णा अपरिमितां वाचो गातमाप्नुवन्ति Âçv. Çr. 10,5,16. Liṭ. 7,11,19. अक्षरवर्णसामान्य Nir. 2,1. °लोप ebend. ता वर्णानां प्रकृतयो भवन्ति ṚV. Prât. 13,2. एके वर्णा ह्रस्वातिकाम कार्यान् 4. 14,29. VS. Prât. 1,34. 4,146. AV. Prât. 1,92. TS. Prât. 2,10. fg. P. 1,1,9, Schol. Vop. 1,1. स्वरव्यञ्जनात्मकवर्णोच्चारण Ind. St. 1,16,16. Bhâg. P. 8,16,32. Sarvadarçanas. 128, 22. 140,16. fgg. °बुद्धि *der mit den Lauten verbundene Begriff* 141,21. शब्दो वर्णात्मक: संस्कृतभाषादिरूप: Taitt. Up. Nîlak. 3,114. Buḍḍhaḷ. 163. Verz. d. Oxf. H. 88,b,5. 19. परमा वर्णसंपद् (व्याकरण) Harîv. 12178. सकार°, स° ṚV. Prât. 6,13. 9,2. AV. Prât. 1,37. 3,44. fg. 4,56. P. 6, 1,182. 2,90. 3,112. Çikṣ. 2,5. पीवर्णयो: P. 7,4,33. ऋ° AK. 3,4,20,125. Varâh. Bṛih. S. 89,15. 90,13. वर्णाष्टक 96,13. fünfundsechzig Laute VS. Prât. 8,30. dreiundsechzig Harîv. 16161. Çikshâ in Ind. St. 4,348. vierundsechzig ebend. °देवता: VS. Prât. 8,47. दीर्घवर्णात्त M. 2,32. संध्यक्षराणि संस्पृष्टवर्णान्येकवर्णवहन्ति: AV. Prât. 1,40. वर्णानामेकप्राणयोगा: संहिता *Silbe* VS. Prât. 1,188. दीर्घ Çaut. 15. ह्रस्व 19. वर्णपदवाक्यविविक्तता H. 71. AK. 1,1,5,20. Ind. St. 8,390, N. घनिवर्णा: पदं वाक्यम् Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489. Weber, Rîmây. Up. 308. fg. 335. अव्यक्तवर्णरमणीयवच:प्रवृत्ति (तनय) *unverständliche Worte* Spr. 3726. Vikr. 78,10. अलिखद्वर्णान्खड्गस्यांशुकपल्लवे । वध्यो ऽपि न हतो यस्मै स्मर्तव्यं तत्तवेत्यसौ ॥ Râǵa-Tar. 3,522. fg. 6,30. *ein musikalischer Ton:* शरवर्णा धनुर्वेणी शत्रुमध्ये प्रवादय *lass die Laute o Bogen, auf der die* (schwirrenden) *Pfeile die Töne darstellen, erschallen* MBh. 4,1161. वर्णा: (रा-

गा: ed. Bomb.) षड्विंशति: Pañcat. V, 44. neben स्वर von *Thierlauten:* पूर्णवर्णस्वराद्येमे प्रवदन्ति मृगद्विजा: R. 5, 73, 52. पूर्णवत्सुस्वराश्च ed. Bomb. 6, 4, 47. — 7) m. *Lob, Preis:* = स्तुति AK. 3, 4, 42, 50. H. an. Med. Halâ. 5, 74. Vîçva a. a. O. Lot. de la h. l. 314. परवर्णग्रहणेषु Spr. 3210. = गीतक्रम H. an. Halâ. उपात्तवर्णे (= प्रारब्धगीतक्रमे सति Mallin.) चरिते पिनाकिन: Kumâras. 5, 56. — 8) m. *Ruhm* H. an. Med. Halâ. Vîçva a. a. O. स्वभुजविक्रमलब्ध° Mṛicch. 67, 17. प्रज्ञार्जनलब्ध° Raghu. 6, 21. hierher wohl auch °कृपा Râga-Tar. 5, 80. — 9) *eine unbekannte Grösse* Colebr. Misc. Ess. II, 431. Alg. 324. — 10) *die Ziffer Eins* Ind. St. 8, 436. — 11) m. = व्रत H. an. Halâ. — 12) m. = शोभा Halâ. — 13) m. = स्वर्ण *Gold* H. an. — 14) m. = तालविशेष *ein best. Tact* H. an. — 15) n. *Saffran* H. 644. H. an. Halâ. 2, 388. — 16) f. आ *Cajanus indicus* Spreng. H. 1175. — Vgl. अवर्ण (als adj. in Çvetâçv. Up. *keine Erscheinungsform habend*), अग्नि°, अप°, अमीत°, उत्पलवर्णा, एकवर्ण, कुलवर्णा, ज्येष्ठवर्ण, त्रि°, दुर्वर्ण, द्वि°, धूम°, धृषद्वर्ण, पञ्च°, पावक°, प्रियवर्णी, बकुलवर्ण, मधु°, मत्त° (genauer *der Wortlaut eines Spruches* oder *Liedes;* vgl. noch Çâṅkh. zu Âçv. Up. S. 184. zu Bṛih. Âr. Up. S. 132. 146), यथार्क°, रक्त°, लब्ध°, वि°, स°, सम°, स्फुरुपद्वर्ण, हिरण्य°.

वर्णक (von वर्ण; m. f. AK. 3, 6, 8, 38. 1) *Maske, Ansug eines Schauspielers:* वर्णकेप्सादित: (könnte auch *Schminke* bedeuten; vgl. Spr. 4796) Buan. Nîtiç. 31, 78. 80. वर्णिका f. dass.: °परियत् Mâlatîm. 4, 11. Verz. d. Oxf. H. 143, *a*, 32. °परियत्त Prab. 3, 17. वर्णका = तात्तव (= प्रावारभेद *eine Art Ueberwurf, Mantel* Comm.) P. 7, 3, 45, Vârtt. 8. कृपणवर्णक adj. Daçak. 67, 8 (*Gesichtsfarbe* Benfey). — 2) m. f. n. (das n. nicht zu belegen) *Farbe zum Malen, — Bestreichen des Körpers;* = विलेपन AK. 2, 6, 2, 38 (n.). H. an. 3, 95. Med. k. 152 (f.). m. f. = नीलयादि Med. वर्णक Çâṅku. Gaṇ. 4, 15. MBh. 3, 14679. 4, 635. 13, 5039. 5237. 5506. Saṃk. 2, 152, 18. 392, 11. Mṛicch. 91, 10. Varâh. Bṛih. S. 48, 27. Kathâs. 20, 51. Weber, Kâmaṇḍ. 273. Mâlav. P. 15, 29. Daçak. 131, 10. Bhatt. 19, 11. वर्णिका Weber, Kâmaṇḍ. 273. Çiç. 142, v. l. वर्णका ebend. मृदितवर्णका adj. f. R. 5, 16, 21. वर्णिका *Dinte* Trik. 1, 1, 127. वर्णक n. *Auripigment* Ratnam. im ÇKDa. — 3) वर्णिका f. *Schreibstift, Schreibpinsel* Hîn. 269. — 4) etwa *Probestück:* वेधस: सर्वसौन्दर्यसर्गवर्णकसन्निभा von einem schönen Mädchen gesagt Kathâs. 28, 3. सर्वसुन्दरनिर्माणावर्णकायेव पठ्यते 106, 10. सरोवरम् — समुद्रनिर्माणे विधातुरिव वर्णकम् 46, 87. व्यधा भाविनिरयक्लेशवर्णिकाम् Râga-Tar. 4, 654. — 5) m. *eine best. Pflanze* (nicht चन्दन) Saṃk. 2, 324, 9. *Sandel,* m. H. an. f. Med. n. Çabdar. im ÇKDa. — 6) am Ende eines adj. comp. *Silbe* Çruv. 34. — 7) m. so v. a. *Kapitel, Abschnitt* Verz. d. Oxf. H. 221, *b*, No. 538. Verz. d. B. H. No. 612. — 8) m = चारण *ein umherziehender Schauspieler, — Sänger* H. an. Med. — 9) n. *Kreis* Çabdar. im ÇKDa. — 10) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* गण उपकादि zu P. 2, 4, 69. — 11) f. *vorzügliches —, gereinigtes Gold* (काञ्चनस्योत्कर्ष:) Med. — Vgl. पानीयवर्णिका, वारिवर्णक.

वर्णकदण्डक *Farbenstock* und zugleich N. *eines Metrums* Varâh. Bṛih. S. 104, 69; vgl. Ind. St. 8, 412. fg.

वर्णकमय (von वर्णक) adj. *mit Farben hergestellt, gemalt:* वर्णकमयीर्धातुमयीर्वा नक्षत्रप्रतिमा: Çântik. 5.

वर्णकवि m. N. pr. eines Sohnes des Kubera Trik. 1, 1, 80.

वर्णकिर्त adj. von वर्णक गण तारकादि zu P. 5, 2, 36.

वर्णकूपिका f. *Farbebehälter, Dintenfass* Trik. 2, 8, 27.

वर्णकृत् adj. *Farbe gebend* Suçr. 1, 190, 3.

वर्णक्रम m. 1) *Reihenfolge der Farben* Schol. zu Kâṭ. Çr. 23, 3, 6. — 2) *Reihenfolge der Kasten* Prab. 27, 14. — 3) *Buchstaben-Kramm;* s. u. क्रम 8).

वर्णगत adj. *algebraisch* Colebr. Alg. 271; vgl. वर्ण 9).

वर्णचारक m. *Maler* Çabdar. im ÇKDa.

वर्णज adj. *aus den Kasten entspringend, auf die Kasten Bezug habend:* सैकर = वर्णसंकर Varâh. Bṛih. S. 89, 1.

वर्णज्येष्ठ adj. *der Kaste nach höher stehend:* वर्णज्येष्ठा च या नारी वर्णहीनश्च य: पुमान् । तयोर्विवाहे मृत्यु: स्यात् षण्मासान्नात्र संशय: ॥ ÇKDa. nach dem Gesetzbuche *der Kaste nach am höchsten stehend* Spr. 4092, v. l. m. *ein Brahmane* Trik. 2, 7, 2. H. 812.

वर्णट m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 6, 91. 94. 96. 113.

वर्णतनु f. Bez. eines best. Liedes an die Sarasvatî Verz. d. Oxf. H. 105, *b*, 11.

वर्णता f. nom. abstr. von वर्ण *Kaste* MBh. 12, 6939.

वर्णताल m. N. pr. eines Fürsten Hall in der Einl. zu Vîsavad. S. 53.

वर्णतूलि f. *Schreibstift, Schreibpinsel* Çabdar. im ÇKDa. °तूली f. dass. Trik. 2, 8, 28. °तूलिका f. dass. Hîn. 212.

वर्णत्व n. nom. abstr. 1) von वर्ण *Kaste* Kull. zu M. 10, 57. — 2) von वर्ण *Laut* Naish. 2, 2, 50. — अन्य° nom. abstr. von अन्यवर्ण adj. *eine andere Farbe habend* Suçr. 1, 117, 15.

वर्णद 1) adj. *Farbe gebend.* — 2) n. *ein best. wohlriechendes gelbes Holz* (कालीयक) Gaṇîkân. im ÇKDa.

वर्णदातृ 1) nom. ag. *Verleiher von Farbe.* — 2) f. °दात्री *Gelbwurz* Râgân. im ÇKDa.

वर्णदूत m. *Brief (Buchstaben als Boten)* Trik. 2, 8, 28. Hîn. 54.

वर्णदूषक adj. *die Kasten verunreinigend* M. 10, 61.

वर्णदेशना f. Titel eines Wörterbuchs Colebr. Misc. Ess. II, 59. Uévâl. zu Unâdis. 1, 108. 3, 43. 4, 64. 139. abgekürzt देशना 1, 113. 2, 13. 4, 200.

वर्णद्वयमय (von वर्ण + द्वय) adj. (f. ई) *zweisilbig* Verz. d. Oxf. H. 239, *a*, 24.

वर्णन (von वर्णय्) n. *Beschreibung, Schilderung* Halâ. 1, 150. R. Gorr. 1, 4, 12. Suçr. 1, 8, 9. 9, 9. Spr. 3232. 3293. Kathâs. 17, 134. 19, 10. 38, 118. 42, 121. 71, 289. 124, 217. Sîç. D. 28, 9. Daçak. 70, 2. Râga-Tar. 1, 10. Buâlc. P. 16, 74, 30. Pañcad. 1, 9, 11. 11, 8. Pañcat. 187, 14. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 13, Cl. 50. in den Unterschrr. von MBh. 2, 7. R. Gorr. 1, 36. Çiç. 9. Buâlc. P. 3, 12. Verz. d. Oxf. H. 13, *a*, 10 u. s. w. 78, *b*, 15. fgg. 210, *b*, 1 v. u. *Angabe:* धनुक्रम° 11. 32. *b*, 39. वर्णना f. *Beschreibung, Schilderung* (*Lob, Preis* H. 269. Halâ. 1, 148) Vikr. 19, 9. Kathâs. 32, 167. 117, 12. Sîç. D. 436. 448. in den Unterschrr. von R. Gorr. 1, 5. fgg. 2, 103. fg. Verz. d. Oxf. H. 78, *b*, 14. *Angabe* Kusum. 5, 1 v. u. Am Ende eines adj. comp.: स्वयंवरवर्णनो नाम षष्ठ: सर्ग: *das Kapitel, in dem die Selbstwahl beschrieben wird,* Raghu. 6. 9 in den Unterschrr. Ṛtus. in den Unterschrr. वर्णन Suçr. 1, 353, 19 fehlerhaft für

वर्ण, wie eine Berliner Hdschr. liest.

वर्णनीय (wie oben) adj. *zu beschreiben, zu schildern, anzugeben* Buic. P. 3,22,39. Sin. D. 80,15. 208,8. Verz. d. Oxf. H. 110,*a*,18. Sarvadarç. 167,6. — शोणित° adj. von शोणितवर्णन *von der Beschreibung des Bluts handelnd* Suçr. 1,43,2.

वर्णपत्र s. वर्णपात्र.

वर्णपात्र n. *Farbenkasten* Çabdam. im ÇKDa. वर्णपत्र n. *Palette* Wilson nach dens. Aut.

वर्णपुष्प n. *die Blüthe vom Kugelamaranth* Halâj. 2,52.

वर्णपुष्पक m. *Kugelamaranth* Riâm. im ÇKDa.

वर्णपुष्पी f. *eine best. Pflanze*, = उष्ट्रकाण्डी Riâm. im ÇKDa.

वर्णप्रबोध m. Titel einer Schrift Hall 14.

वर्णप्रसादन n. *Agallochum* Riâm. im ÇKDa.

वर्णभेदिनी f. *Fennich* Ausw. 89.

वर्णमय (von वर्ण) adj. (f. ई) *aus (symbolischen) Lauten bestehend, mit ihnen in Verbindung stehend:* दीक्षा Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,29 und N. 4.

वर्णमातृ f. *Schreibstift, Schreibpinsel* ÇKDa. angeblich nach Hia.

वर्णमातृका f. Bein. der Sarasvatî Çabdar. im ÇKDa.

वर्णमात्रा f. *ein best. Metrum* Sin. D. 546.

वर्णमाला f. *das Alphabet*, insbes. *die zu Diagrammen verwandte Buchstabenreihe* Med. k. 183; vgl. u. मातृक 3) *f*).

वर्णय् (von वर्ण), वर्णयति P. 3,1,25 (= वर्ण गृह्णाति Comm.) Vop. 21, 17. Daitup. 35,33 (वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु, स्तुतिविस्तारमुक्ताम्युक्तिदीपने mit der v. l. °मुक्ताम्यत्युक्तिदीपने Kavikalp. im ÇKDa.). 32, 18, v. l. (वर्णने, प्रेरणे). 1) *bemalen:* यथा हि भरता वर्णैर्वर्णयत्यात्मनस्तनुम् Spr. 4796 (Jâân.). निर्यासबालुकाकल्कवर्णितफलक *mit Farben bedeckt* Daçar. 91,16. — 2) *beschreiben, schildern, darstellen, erzählen, berichten über, angeben;* act. MBu. 1,7402. गुणविस्तरम् 2,1226. 3,1173. 2064. 7, 5362. Hariv. 14210 (स्वात्मना चैव die neuere Ausg.). R. 5,76, 10. परदाराभिमर्शं तु को धर्म इति वर्णयेत् 84,8. Rt. 5,15. Kir. 5,18. Spr. 145. Variân. Bṛn. 1,12. Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 249. कथाम् Kathâs. 1, 26. 48. 2,53. 9,22. 10,210. 11,50. 12,77. 191. 13,93. 27,75. 163. 29,64. 32,146. 35,31. 46,5. 50,363. 411. Râja-Tar. 3,94. Buic. P. 1,3,28. 9, 28. 2,7,52. fg. 10,2. 3,1,3. 5,9. 22. 7,26. 10,10. 5,22,10. 8,5,6. 9,23, 18. 10,33,40. Mâlat. P. 84,5. Vedântas. (Allah.) No. 59. Schol. zu Kap. 1,103. Comm. zu RV. Prât. 10,14. P. 7,2,18, Schol. Sarvadarçanas. 36, 14. 95,10. med. Kathâs. 33,28. Buic. P. 3,26,2. 4,7,2. 25,46. 12,8,40. वर्णयित्वा Hariv. 14211. वर्णयितुम् Maitrâjup. 6,34 (गिरा). Kâtjâp. 39. Buic. P. 10,21,4. Hit. 93,20. वर्णितुम् R. 6,4,18. pass. MBu. 1,444. 3, 2187. 13,4723. Suçr. 1,312,6. Kathâs. 13,52. Râja-Tar. 5,67. वर्णित (= स्तुत u. s. w. AK. 3,2,59) MBu. 1,490. Gît. 3,10. Kathâs. 19,36. 30,188. 34,62. 42,60. 43,226. 73,16. 100,56. 103,95. Buic. P. 3,12,1. 14,6. 22,29. 4,13,5. 7,13,45. 9,10,3. Sarvadarçanas. 170,1. Sîs. bei Muir, ST. IV, 12. — 3) *betrachten:* वर्ण्यमानः पुरस्त्रीभिः Kathâs. 67,18. — 4) *ausbreiten:* मायूरस्त्रीपर्णानां वस्त्रं तस्याश्च वर्णितम् (= विस्तारितम् Nîlak.) MBu. 12,9817.

— अनु 1) *beschreiben, schildern, erzählen, berichten über, auseinandersetzen, mittheilen, angeben:* अप्रियं चाकृतं यस्यात्तदस्मै नानुवर्णयेत् MBu. 4,107. Buic. P. 3,9,39. 5,23,4. 26,3. 10,21,3. Verz. d. Oxf. H. 74,*a*,3. नाकुमिन्द्रः स एवाक्षा नाकुमित्यनुवर्णयन् *erklärend, sagend* Müller, SL. 236,9. °वर्णयितुम् Buic. P. 5,16,3. °वर्णितुम् 1,1,13. pass. 12, 5,1. °वर्णित MBu. 13,3438. Kathâs. 101,323. VP. bei Muir, ST. IV, 217. Buic. P. 1,3,9. 2,10,35. 3,15,46. 4,31,26. 7,9,12. Kull. zu M. 3, 53. °वर्णयितव्य Suçr. 1,13,19. 14,3. — 2) *loben* MBu. 12,2920.

— समनु *beschreiben, schildern, berichten über:* °वर्णित MBu. 12, 2115. 7138. 9470. Buic. P. 10,35,3.

— अभि dass.: °वर्णित MBu. 12,2150. Suçr. 1,180,6. — Vgl. अभिवर्णन.

— व्या *erzählen:* व्याचष्टे कथाम् Kathâs. 98,57.

— उप *beschreiben, schildern, erzählen, berichten über, mittheilen, angeben:* तांस्तानुपायानुपवर्णयन्ति MBu. 3,8732. 12,3224. 3226. Hariv. 6458 (इति वर्णयन् st. उपवर्णयन् die neuere Ausg.). Daçar. 3,44. Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,37. °वर्णितवान् Hit. 27,3. pass. Buic. P. 5,20,1. Verz. d. Oxf. H. 270,*a*,10. °वर्णित MBu. 1,364. 12,4121. R. Gorr. 1,74,11. 5,56,146. Kathâs. 17,167. 112,110. Buic. P. 1,18,9. 3,14,1. 4,13,1. 31,28. 5,19,31. 7,15,77. 8,3,30. Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,36. 270,*a*,2. °वर्णनीय 269,*b*,36. — Vgl. उपवर्णन.

— नि scheinbar Daçar. 73,3, wo aber निर्वर्ण्य zu lesen ist.

— निस् 1) *betrachten, genau ansehen* Mṛkkh. 134,3. Çik. 33,13. 66, 3. 104,1. Vikr. 10,3. Mâlav. 66. 73,18. Spr. 3010. Kathâs. 54,81. 55, 35. 84,10. 116,56. Prab. 74,3. Dhûrtas. 72,7. — 2) *beschreiben, schildern, darstellen* Suçr. 2,539,3. — Vgl. निर्वर्णन fg.

— विनिस् *betrachten, genau ansehen* Çik. 66,8, v. l.

— प्र *mittheilen* MBu. 12,12111.

— सम् 1) *mittheilen, erzählen* MBu. 4,106. Hariv. 7173. Kathâs. 25, 159. 26,29. Buic. P. 1,13,11. — 2) *loben* MBu. 4,121. Lot. de la b. l. 314.

वर्णयितव्य (von वर्णय्) adj. *zu beschreiben, zu schildern* Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 126.

वर्णराशि m. *das Alphabet* RV. Prât. Einl. Sarvadarçanas. 124,14.

वर्णरेखा f. *Kreide* Çabdar. im ÇKDa.

वर्णलेखा f. dass. Trik. 2,3,7.

वर्णलेखिका f. dass. Ratnam. im ÇKDa.

वर्णवत् (von वर्ण) 1) adj. gaṇa रूपादि zu P. 5,2,95. Schol. zu 124. — 2) f. °वती *Gelbwurz* Gaṇîn. im ÇKDa.

वर्णवर्ति f. *Farbenpinsel* Kathâs. 31,19. 117,24.

वर्णवर्तिका f. dass. Daçar. 92,1.

वर्णवादिन् m. *Lobredner* Vishṇ. 75.

वर्णविलासिनी f. *Gelbwurz* Ausw. 60.

वर्णविलोडक m. 1) *Plagiarius.* — 2) *ein Dieb, der in ein Haus einbricht*, H. an. 6,2. Med. k. 235.

वर्णविवेक m. Titel eines Wörterbuchs Ujjval. zu Unâdis. 1,3. 39. 47. 92. 96. u. s. w.

वर्णवृत्त n. *ein nach der Zahl der Silben gemessenes Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 96. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,4. 197,*a*, No. 457. Verz. d. B. H. No. 816. 1354.

वर्णव्यवस्थिति f. *die Institution der Kasten, Kastensystem* Gobhil. 3,42.

वर्णशिक्षा f. *Lautlehre* ṚV. Prāt. 14,30.

वर्णश्रेष्ठ adj. *der Kaste nach am höchsten stehend*, m. *ein Brahmane* R. 1.6,17 (30 Gorr.).

वर्णर्षि adj. von वर्ण gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80.

वर्णसंयोग m. *eine eheliche Verbindung innerhalb der eigenen Kaste, eine ebenbürtige Ehe* Mānn. P. 113,35.

वर्णसंसर्ग m. *Vermischung der Kasten durch unebenbürtige Ehen* M. 8,172.

वर्णसंस्कार m. *eine Versammlung, in der verschiedene oder alle Kasten vertreten sind*, Buhar. Nāṭyāc. 19,81. Daçar. 1,82. Sāh. D. 364. Prataparān. 21,5,4.

वर्णसंकर m. 1) *Vermischung* —, *Mischung von Farben* MBu. 12,6928. Spr. 2522. an beiden Stellen zugleich in der Bed. 2). — 2) *Vermischung der Kasten durch unebenbürtige Ehen* M. 8,353. 10,12. Bhāg. 1,41. MBu. 12,6935. Spr. 2522. Bhāg. P. 1,18,45. Mānn. P. 116,76.

वर्णसंकरिक (von वर्णसंकर) adj. *der durch eine unebenbürtige Ehe eine Vermischung der Kasten bewirkt* MBu. 12,3215.

वर्णसंघट m. *das Alphabet* P. 3,2,49, Vārtt. 3, Schol.

वर्णसंघात m. dass. ebend.

वर्णसमाम्नाय m. dass. VS. Prāt. 8,1. Kātyās. 7,10. Bhāg. P. 7,15,53. Verz. d. B. H. No. 708. H. an. 3,81.

वर्णसि Uṇādis. 4,107. *Wasser* Ujjval. — Vgl. पर्णसि.

वर्णस्थान n. *der bei der Aussprache eines Lautes besonders wirksame Theil des Mundes* Rāgān. 10,87. — Vgl. स्थान.

वर्णाङ्का f. *Schreibstift, Schreibpinsel* Çabdar. im ÇKDa.

वर्णाट m. 1) *Maler* H. an. 3,169. Med. t. 54. — 2) *Sänger* Trik. 3,3, 103. H. an. Med. — 3) = स्त्रीकृताजीव, स्त्रीकृतजीवन *ein durch die Frau seinen Lebensunterhalt gewinnender Mann* (st. dessen *an actor, a mime* Wilson) H. an. Med. — 4) *Liebhaber* (कामिन्) Trik.

वर्णात्मन् m. *Wort (aus Lauten bestehend)* Gaṇḍīn. im ÇKDa.

वर्णाधिप m. *ein einer Kaste als Regent vorstehender Planet* Gṛgarsaṃh. im ÇKDa.

वर्णान्यत्व n. *Wechsel der Gesichtsfarbe* Sāh. D. 167.

वर्णापेत adj. *der seiner Kaste verlustig gegangen ist* M. 10,57.

वर्णार्द्र m. *Phaseolus Mungo Lin.* Rājān. im ÇKDa.

वर्णाशा f. N. pr. eines Flusses VP. 184, N. 62. — Vgl. पर्णाशा.

वर्णाश्रमवत् (von वर्ण + आश्रम) adj. *den Kasten und den vier Lebensstadien eines Brahmanen angehörend* (eine Person) Bhāg. P. 5,19,10. 11,18,47.

वर्णाश्रमिन् adj. dass. Bhāg. P. 7,4,15.

वर्णि (nicht n.) *Gold* Ujjval. zu Uṇādis. 4,122.

वर्णिक m. *Schreiber* H. 484 fehlerhafte v. l. für वार्णिक. — ऐक° *einartig* von एक + वर्ण MBu. 3,11293; vgl. मात्र°. — वर्णिका s. u. वार्णिका.

वर्णिन् (von वर्ण) 1) adj. am Ende eines comp. P. 5,2,122. *a) das Aussehen von — habend:* कुमारो देववर्णिनौ R. 2,92,28. — *b) zu der Kaste der — gehörig:* ब्राह्मण° P. 5,2,122, Sch. श्रेष्ठ° *ein Brahmane* Kir. Nīlak. 2,19. — 2) m. *a) eine zu einer der vier Kasten gehörige Person* Jāān. 2,33. Spr. 303. Kir. Nīlak. 2,33. — *b) ein Brahmane im ersten Lebensstadium, ein* Brahmacārin P. 5,2,124. AK. 2,7,42. H. 308. an. 2,284. Med. n. 125. Hālā. 2,239. Rāgān. 5,19. Kumārās. 5,32. 65. Kathās. 24,91. Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 257. — *c)* pl. Bez. einer best. Secte Hall in der Einl. zu Viṣṇup. S. 53. — *d) Maler* H. an. Med. *e) Schreiber* dess. — *f)* vielleicht *eine best. Pflanze:* पलाशशार्ववर्णिनाम् (= लेखकानाम् Nīlak.) MBu. 12,3652. in der Verbindung सर्व° adj. (यूप) 14, 2630 erklärt Nīlak. वर्णिन् durch पलाशकाष्ठमय. — 3) f. *Weib* H. 304. Hālā. 2,326. *eine Frau aus hoher Kaste* Viṣṇu. 7,70. — Vgl. वरवर्णिन्, वरवर्णिनी.

वर्णिल adj. von वर्ण gaṇa पिच्छादि zu P. 5,2,100.

वर्णीभू (वर्ण + 1. भू) *sich zu einem articulirten Laute gestalten:* (वायु:) वर्णीभवन् ṚV. Prāt. 13,4. Schol. zu VS. Prāt. 1,9.

वर्णु Uṇādis. 3,38. m. 1) N. pr. eines Flusses und des daran angrenzenden Gebietes Ujjval. P. 4,2,103. gaṇa सुवास्त्वादि zu 77. gaṇa कच्छादि zu 133. gaṇa सिन्धादि zu 3,93. Vgl. वार्णव. — 2) *die Sonne* Uṇādis. im Saṃkṣiptas. nach ÇKDa.

वर्णेश्वरी f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,14.

वर्णोदक n. *farbiges Wasser* Rāgān. 10,70.

1. वर्ण्य (von वर्ण) 1) adj. *der Farbe zuträglich, Farbe verleihend* Suçr. 1,135,19. 184,16. 190,12. 2,352,16. — 2) n. = वर्ण *Saffran* H. 644, Schol.

2. वर्ण्य (von वर्णय्) adj. *zu beschreiben, zu schildern, was beschrieben —, geschildert wird* Sāh. D. 426. Verz. d. Oxf. H. 210,*b*,4 v. u. 211, *a*,8 und 2 v. u. वर्ण्यसम und अवर्ण्यसम m. (sc. प्रतिषेध) Bez. zweier Arten sophistischer Einwendungen Nyāyas. 5,1,1.4. Sarvadarçanas. 114,10.

वर्तृ, वर्तते Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). Dhātup. 18,13 (वर्तने). ववृते P. 7,4,66, Schol. वावर्तै, ववर्त्रन्; वर्तिथास् MBu. 5,4534. वर्तियीष्ट P. 7, 2,59, Schol. वर्तिष्यते und वर्त्स्यति, अवर्तिष्यत und अवर्त्स्यत् P. 1,3, 92. 7,2,59. Vop. 8,121. Aus metrischen Rücksichten erscheint das act. auch in anderen Formen; in der ältesten Sprache zu belegen: (मनु) वर्त्ति, (घा) वर्त, (घा) अवर्त्, ववर्त, वावर्तुम्, ववृत्युस्, (समा) ववर्त्ति, अवृतत् Çat. Br. 14,1,4,10. वर्तितुम्; वर्तित्वा Schol. zu P. 1,2,18. 26. वृत्त (s. bes.). 1) *sich drehen, rollen; sich rollend u. s. w. hinbewegen:* सुवृद्रथो वर्तते यन्नभि त्वाम् ṚV. 1,183,2. (रथ:) य इषा वर्तते मरुत् 8,5,34. चक्रं वर्तमानम् 4,28,2. 5,30,8. 40,6. AV. 5,14,5. 10,8,7. Lāṭ. 1,2,20. 5,5,13. Kāṭh. Up. 4,16,2. Würfel ṚV. 10,27,19. ते अवृत्रन्कामकातय: 8,81, 14. Çat. Br. 1,6,2,9. कृस्तवर्त (absol.) वर्तयति P. 3,4,39. Bhaṭṭ. 15, 87. पूर्ववद्वर्ततां रथि: Mānn. P. 10,73. तिर्यग्गूर्धमधश्चैव शक्तिस्ते शैल वर्तितुम् R. 5,7,6. यन्मूणि यानि त्रीतस्य वावृतु: AV. 5,19,12. *verlaufen* (von der Zeit): त्रेतायुगसम: काल: वर्तते Bhāg. P. 5,17,12. — 2) *vor sich gehen, einen Verlauf nehmen, von Statten gehen:* उदिते ऽनुदिते चैव समयाध्युषिते तथा । सर्वथा वर्तते यज्ञ: M. 2,15. पितृमेधाश्च केषांचिद्वर्तन्त MBu. 11,796. अग्निसंस्कारात्परा वर्तितरे क्रिया: Rāgān. ed. Calc. 12,36. R. 1,11,14. दमयन्त्या: पण: साधु वर्तताम् MBu. 3,2299. ततो युद्धमवर्तत 5,7164. Bhaṭṭ. 2,37. यावदेतद्वर्तते Ved. in LA. (III) 9,12. 16,8. 21,11. न च तद्वर्तते तथा Spr. 3801. एकाङ्गेनापि विकलमेतत्साधु न वर्तते Kir. Nīlak. 4,2. उपस्थाने वर्तमाने मनोरमे MBu. 3,1829. तस्मिंस्तथा वर्तमाने दारुणे जनसंक्षये 2550. mit einem instr. *in einer bestimmten Weise erfolgen, — sich verhalten, — auftreten:* (पादै:) एतैरुक्तैर्दोषै वर्तते सर्वाण्य-

न्यौरतो ऽत्पशः RV. Pariç. 17, 28. विषमाः समपर्यायैर्वर्तन्ते Liṭ. 6, 5, 21. अविकारेण 9, 7, 8. 10, 10, 18. भिन्नप्रिष्टा तु या प्रीतिर्न सा स्नेहेन वर्तते Spr. 1171. इतरेषु ससंध्येषु ससंध्यांशेषु च त्रिषु । एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥ so v. a. nehmen um Eins ab M. 1, 70. — 3) sich irgendwo befinden, weilen; da sein, vorhanden sein, sich finden, es giebt (von Personen und Sachen): एते राष्ट्रे वर्तमाना राज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः M. 9, 226. सर्वथा वर्तमानो ऽपि स योगी मयि वर्तते Bhag. 6, 31. क्व नु वर्तते MBh. 3, 2737. गृहस्थोपरि 5, 7251. R. 1, 18, 4. 70, 14. स्वे पथि 2, 21, 60. 26, 25. 4, 5, 5. Çiç. 29, 7 (वर्तिष्यते pass. impers.). 39, 13. 98, 15. 99, 6. Kathâs. 37, 155. Bhâg. P. 3, 28, 24. 4, 26, 16. Dhûrtas. 89, 5. Ver. in LA. (III) 7, 3. 31, 11. Bhaṭṭ. 7, 103. 8, 63. सत्पथे Harîv. 14023. कण्ठे प्रियासवः प्राणा वर्तन्ते भोजनं विना Râjâ-Tar. 4, 220. मूर्ध्नि oben an stehen Spr. 3213. मयि वर्तस्व bleibe bei mir MBh. 5, 6046. Spr. 3182. act. MBh. 1, 637. 3, 12171. 12412. अधनि वर्तन् 13. 350. 3210. R. 3, 62, 25. Spr. 4547. Mâlav. P. 50, 42. — नाराजके जनपदे प्रकृष्टनटनर्तकाः । उत्सवाश्च समाजाश्च वर्तन्ते राष्ट्रवर्धनाः ॥ Spr. 4413. पशवो ऽपि न वर्तन्ते नित्यं राष्ट्रे ऽराजके 4405. 4407. नहि त्वयोपमा काचित्तव मैथिलि वर्तते R. 5, 22, 13. एते पञ्चदश — गुणा भूतेषु पञ्चसु । वर्तन्ते MBh. 3, 13927. R. 3, 71, 10. Sarvadarçanas. 13, 14. 66, 13. 116, 13. Comm. zu Nyâyas. 1, 1, 11. पापमधिकं स्त्रीषु वर्तते Ver. in LA. (III) 23, 3. व्याकुलत्वं मे हृदि वर्तते Pañcat. 76, 12. fg. sonst bedeutet हृदि, हृदये वर्त् wie मनसि वर्त् am Herzen —, im Sinne liegen, im Kopfe herumgehen: यतो ऽन्यथा न मे वामो वर्तते हृदये क्वचित् MBh. 3, 2602. वाक्यं नारदेनोक्तं वर्तते हृदि नित्यशः 16715. इदं च मे मनसि वर्तते Çiç. 25, 21. 33, 12. Ver. 30, 5. Pañcat. 1, 7, 7. सत्यानन्दसमायुक्ते नावर्तेतां तदात्मनि (so ist wohl zu lesen) sie befanden sich nicht bei sich so v. a. sie waren ausser sich vor Freude Kathâs. 55, 184. sich bei Jmd (loc. gen.) vorfinden, da sein: गुरुशापकृतं रूपं यदिदं त्वयि वर्तते R. 1, 39, 4. आगतसंभ्रमे शक्तिस्त्वयि वर्तते Verz. d. Oxf. H. 80, a, 25. तपो यज्ञः श्रुतं शीलमलोभः सत्यसंधता । गुरुदेवतपूजा च एता वर्तन्ति भूमिदे (so lesen wir st. भूमिदं beider Ausgg.; Nîlak. giebt, um den acc. zu erklären, वर्तन्ति die Bed. von अनुसरन्ति) MBh. 13, 3126. मम चाकृतपुण्यायाः एकः पुत्रो ऽत्र वर्तते Kathâs. 18, 269. तवेदानीं नृपत्वं च न वर्तस्यति 316. एवमादिर्महागर्वस्तस्य संप्रति वर्तते Harîv. 15037. तदस्माकमप्यत्र विषये महत्कुतूहलं वर्तते Pañcat. 97, 10. योगक्षेमौ हि सीतायां वर्तेते (so die ed. Bomb.) लक्ष्मणावयोः so v. a. steht bei uns, hängt von uns ab R. 2, 53, 3. — 4) sich in einem best. Lebensalter, in einer best. Lage, in einem best. Falle, bei einer best. Beschäftigung befinden; einer Sache obliegen, sich Etwas angelegen sein lassen; mit loc.: वयस्याद्ये Bhâg. P. 1, 6, 2. पश्चिमे वयसि Hit. 28, 3. यौवने R. 4, 63, 13. व्यसने 3, 75, 18. प्रकृति विषादे Vikr. 9, 5. तृतीयायां प्रकृतौ वर्तता त्वया MBh. 2, 1434. जीविते वर्तमानः so v. a. lebend Spr. 992. वशे in Jmdes Gewalt stehen 4417. Pañcat. 3, 11, 10. निर्देशे MBh. 1, 637. मातुर्मते Daçak. 63, 5. यादेशे भगवतः Bhâg. P. 3, 13, 14. सतां क्रमे R. 2, 25, 3. उये तपसि वर्तन् MBh. 1, 1860. 4308. 5, 5083. मनुष्यधर्मे 15, 841. साक्षमे M. 8, 346. कर्मसु 9, 319. Bhag. 3, 22. Spr. 4641. M. 2, 5. लोभेषु Harîv. 204. उपकारे R. 3, 75, 10. Mâlav. P. 14, 86. अस्मिन् Spr. 3558. उद्दाक्षमक्रोत्सवे Kathâs. 14, 26. मुखोपभोगेषु 21, 17. रात्रिक्रियायाम् Pañcat. 63, 25. वैश्ववात्रस्य शमने Harîv. 10941. Ragh. 8, 20. मर्यादाव्यतिक्रमे Pañcat. 46, 21. न वर्ते प्रतिपक्षे so v. a. ich bin nicht in dem Falle es annehmen zu können R. 2, 50, 39 (47, 20 Gorr.). in einer best. Bedeutung stehen, eine best. Bedeutung haben: पुष्यसमोपस्थे चन्द्रमसि पुष्यशब्दो वर्तते Pat. zu P. 4, 2, 3. Schol. zu P. 1, 2, 15. सामर्थ्यमात्रे वर्तमानमीहूदत्तम् zu 1, 1, 19. — 5) leben von (instr.): क्रीतोत्पन्नेन (धनेन) Âçv. Gṛhj. 4, 4, 15. मत्स्यमांसेन Harîv. 5237. Vasiṣṭha. Bṛh. S. 15, 17. Kathâs. 4, 133. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 274. Bhâg. P. 4, 28, 36. 5, 8, 30 (°वोरुधा ब° zu trennen). mit einem absol.: यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः । तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः M. 3, 77. — 6) leben so v. a. sein Leben hinbringen; sich befinden, sich fühlen: मातामहकुले चापि यथा वर्तामहे वयम् । तथा पूर्वं भवाञ्छ्रेयेत्यनुमातुश्च मे श्रुतः ॥ R. Gorr. 1, 80, 20. कथं मे वर्तते बाला (तानि) पश्यन्ती मामपश्यती 4, 20, 17. त्यक्ता त्वया कथं वर्तयिष्यामि Kathâs. 53, 113. Spr. 4481. Bhâg. P. 1, 13, 42. 4, 28, 18. 21. पश्यतश्च ताम् । ममावर्तत तत्काले न ज्ञाने हृदयं क्वचम् Kathâs. 22, 108. शिशुर्यथा पितुरङ्के सुमुखं वर्तते MBh. 3, 1740. — 7) zu Werke gehen, verfahren, sich benehmen: तथा R. 2, 30, 38 (32 Gorr.). Spr. 1695. 3244. ततो ऽन्यथा M. 8, 397. Harîv. 9226. Suçr. 1, 7, 9. एवम् R. 1, 8, 10. एवंविधम् Kathâs. 12, 159. प्रतिकूलम् M. 10, 21. विधिपूर्वकम् Suçr. 2, 93, 7. कामतस् M. 9, 62. अनुव्रतम् MBh. 15, 678. साधु R. 4, 28, 11. उग्रम् Bhaṭṭ. 16, 7. mit einem absol.: यतः सभं न ते वचो ऽतिक्रम्य वर्तितुम् R. Gorr. 1, 60, 4. तस्य मतमुत्क्रम्य वर्तितुम् 2, 23, 9. यदि धर्मं पुरस्कृत्य पुत्र वर्तितुमिच्छसि 22, 1. gegen Jmd, mit loc.: पितृवन्नृषु M. 7, 80. 9, 108. MBh. 3, 1461. 5, 7079. 15, 678. R. 2, 18, 16. 41, 4 (40, 4 Gorr.). 52, 33 (49, 34 Gorr.). 58, 16. 73, 9. 104, 19 (ववृतिरे zu lesen). R. Gorr. 2, 58, 24. 4, 28, 11. 5, 36, 64. Spr. 1612. 2607. 4850. Prab. 106, 1. मातापित्रोर्गुरुषु च सम्यग्वर्तन्ति ये सदा MBh. 13, 2042. 1, 3259. गुरुवच्च स्नुषावच्च वर्तेयातां परस्परम् M. 9, 62. निर्वैरमुञ्छितास्तस्माद्वर्तधमितरेतरम् Kathâs. 50, 116. mit dat.: कथं च तस्मै वर्तेयम् MBh. 14, 140. mit acc. (!): पुत्रश्च पितरं मोक्षान्निर्मर्यादमवर्तत 7, 1392. वर्त् mit loc. der Person bedeutet auch in einem best. Verhältniss zu Jmd stehen, insbes. in einem unerlaubten geschlechtlichen: भार्यायां वर्तसे भ्रातुः त्वमधार्मिकः R. 4, 17, 38. mit सह verkehren mit: पापमित्रैः सह वर्तितुम् Spr. 2729. अवर्तितुम् mit abl. der Person gegen Jmdes Willen verfahren R. 2, 111, 6. verfahren —, zu Werke gehen mit (instr.) so v. a. an den Tag legen, äussern, anwenden, gebrauchen: धनेन वृत्त्या रूपेन प्रतिज्ञया R. 2, 109, 8. याम्यया वृत्त्या M. 8, 173. छलेनैव Kathâs. 45, 160. देशभाषेण (वेषभूषेण die neuere Ausg., वेशभूषेण Nîlak.) वर्तितम् Harîv. 8333. मित्रभावेन Spr. 4754. विभुत्वेन Çvetâçv. Up. 4, 4. घोरामोन्येन Ragh. 10, 26. पितृत्वेन Prab. 106, 1. आत्मानुमानेन Vikr. 63, 13. अनुकल्पेन M. 11, 20. घोरमा, मरुमा, मरुभा P. 4, 4, 27. दण्डेनैवारिशिरस्सु वर्तते देवः Mâlav. 61, 18. या त्वं । अभिषेकविघातेन पुत्रराज्याय वर्तसे R. 2, 23, 24. वर्ततीनां पराज्ञया so v. a. unter eines Andern Befehlen stehend 6, 98, 28. यावद्वर्त्स्यति पाञ्चाली पात्रेणानेन so v. a. gebrauchen MBh. 3, 202. वर्तेत ब्रह्मणा विप्रो राजन्यो रक्षया भुवः so v. a. obliegen Bhâg. P. 10, 24, 20. पुत्रात्मनेण so v. a. in der Gestalt eines Sohnes auftreten 1, 7, 45. — 8) mit dat. sich um Etwas kümmern, sich Etwas angelegen sein lassen: पुत्रराज्याय R. 2, 23, 24. शीलगुणाय 3, 37, 30. — 9) mit dat. gereichen zu: पुत्रेण किं पतत्यः पितृदुःखाय वर्तते Çuk. in LA. (III) 35, 13. — 10) in

einem gegebenen Augenblick da sein Bhag. 5,20. यत्रैकः प्रथममासं वर्तामि च भविष्यामि च Mudg. ST. IV, 298, s. अतीतानागता भावा ये च वर्तन्ति साम्प्रतम् Spr. 3412. प्रक्षणसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः 990. इयं च वर्तते सन्ध्या Brahma-P. in LA. (III) 55, 22. मम प्रसवसमयो वर्तते Pañkat. 74, 19. वर्तसे ऽद्य मघाः R. Gorr. 1, 73, 23. कालावस्था तदा शून्या न सा वर्तति साम्प्रतम् MBh. 3, 11229. सार्थं संप्रति वर्तते Spr. 1960. Ver. in LA. (III) 29, 19. कोपस्यायं न कालो मे साध्यमन्यद्धि वर्तते Kathis. 21, 77. अत्रक्षणयमत्रक्षणयं वर्तते Pañkat. 101, 1. वर्तमान *gegenwärtig*; n. *Gegenwart* Bhag. 7, 26. P. 3, 2, 123. 3, 131. Milav. 3, 13. Bhāg. P. 8, 13, 1. Sarvadarçanas. 7, 12. 9, 21. 10, 6. 50, 5. Hall. 5, 24. Vop. 5, 27. 25, 1. Pañkat. 48, 8. वर्तिष्यमाण *zukünftig* Sarvadarçanas. 10, 6. वर्त्स्यत् dass. Bhatt. 8, 67. — 11) *im gegebenen Augenblick noch da sein, am Leben sein* Uttarab. ed. Cow. 66, 2. Kathis. 18, 229. *bestehen:* तेनेदं वर्तते जगत् Spr. 3200. वर्तते ऽद्य मत्कान्यो: कात्स्न्यायापे ऽप्यनत्ययः। संगमो नगरोपान्ते स मुख्योपक्रमस्तयोः ॥ Rāja-Tar. 5, 98. *noch Geltung haben, fortgelten* so v. a. *aus dem Vorhergehenden zu ergänzen sein:* यत्रेति वर्तते Pat. zu P. 8, 3, 67. Kāç. zu 1, 1, 50. 57. 2, 39. Schol. zu 25. Comm. zu Nyāyas. 2, 1, 49. — 12) *das zur copula geschwächte sein:* तावेकनिश्चयो u. s. w. निरन्तरमवर्तेताम् MBh. 1, 7622. जुगुप्सिता च वर्त्स्यामि (*vartsyāmi die neuere Ausg.*) पतिपत्नीर्निराकृता Harīv. 4620. त्वदधीना वयं सर्वे वर्तामः सततं विभो Verz. d. Oxf. H. 80, a, 27. 58, b, 36. साम्प्रतं सा रुजास्वला वर्तते Ver. in LA. (III) 8, 9. 29, 14. Kumāras. 5, 65. Raghu. 19, 19. Kathis. 29, 137. 37, 221. Kāç. zu P. 1, 1, 56. Rāja-Tar. 6, 267. Pañkat. 69, 17. समापातः Ver. in LA. (III) 7, 14. fg. निरूपितमेव स्थानं वर्तते Hit. 26, 11, v. l. इष्टव्यो वर्तते स नः Kathis. 102, 45. लावाणके ऽस्माकं गतानां वर्तते चिरम् *es ist lange her, dass* 18, 123. इति मे वर्तते बुद्धिः *so ist meine Meinung* R. 5, 92, 9. mit einem absol.: सत्यमतीत्य कृतिनो कृतीश वर्तसे वाजिनः so v. a. *übertreffen an Geschwindigkeit* Çiç. 6, 5. — 13) *hervorgehen aus* (abl.), *entstehen in* (loc.): मुखतो ऽवर्तत ब्रह्म पुरुषस्य Bhāg. P. 3, 6, 30. fg. विशो ऽवर्तन्त तस्योर्वोः 32. — 14) trans. mit einem acc.: वृत्तिम् *ein Verfahren einschlagen, verfahren* (mit loc. der Person, selten mit प्रति) MBh. 1, 4833. 2, 152. 3, 14666 (वर्तामि). 15, 9. 11. 677 (वर्तसि). R. 2, 44, 5. 58, 18. 73, 8. R. Gorr. 2, 75, 25. 3, 1, 7. 10. 4, 17, 52. न लोकवृत्तं वर्तेत वृत्तिहेतोः M. 4, 11. संवृत्तिम् R. Gorr. 2, 109, 31. *anwenden, gebrauchen:* सर्वोपायम् R. Schl. 2, 82, 18. यत्रैकार्यायवर्तत Kathis. 106, 30. तद्विपर्ययम् Bhāg. P. 3, 21, 31. प्रिया खलु नो भवती मतो प्रियमवृतत् (*avavṛtat* Bṛh. Âr. Up.) so v. a. *erweisen* Çat. Br. 14, 1, 4, 10. किमिदं वर्तसे so v. a. *treiben, thun* R. 7, 25, 5. — 15) nicht hierher scheint zu gehören: भूम्यां वृक्षाय नो ब्रूहि पतः खनेम ते वयम् *wähle aus und sage, wo im Boden u. s. w.* (also वृक्षाय zu schreiben; = स्पष्ट्वा Mahidh.) VS. 11, 19.

— caus. वर्तयति Dhātup. 33, 108 (भाषार्थ, v. l. भासार्थ). अवीवृतत् und अवर्वर्तत् P. 7, 4, 7, Schol. Vop. 18, 4. वर्वृतत् ved.; aus metrischen Rücksichten auch med. 1) *in drehende Bewegung setzen, schwingen, rollen lassen, schleudern:* वर्तयते दिवो वधम् ṚV. 7, 104, 4. अग्निं 10, 95, 12. fg. यद्धि त्वं वृतयो पणिम् (SV. richtig पविम्) 156, 3. चक्रम् 2, 11, 20. कुस्तवर्ते (करवर्ते) वर्तयति P. 3, 4, 39. धन्यान्कुस्तवर्तमवीवृतत् Bhatt. 15, 37. तत्तन्मतं वर्तयत्यो MBh. 1, 809. दिनु चक्रमवर्तयत् Bhāg. P. 9, 20, 32. कुरुक्षेत्रे — निजचक्रवर्तिते (so v. a. वर्तितनिजचक्रे; वर्तित = पालित Comm.) 1, 16, 11. यो (वायुः) ज्योतींषि वर्तयति Çiç. 165. अयूणि so v. a. *Thränen vergiessen* MBh. 1, 4468. R. 2, 58, 21. 100, 37. 6, 24, 4. 41. 101, 3. Bhāg. P. 4, 28, 49. — 2) *drehen, drechseln:* त्वष्टा पद्वद्भं स्वया अवर्तयत् ṚV. 1, 85, 9. त्वष्टा ते वज्रं ववृतत् 6, 17, 10. गुटिकाम् Suçr. 2, 88, 20. = वर्तुलं करोति Sidd. K. zu P. 3, 1, 15. सो ऽमन्यत फलानीति मोदकांश्च सुवर्तितान् R. Gorr. 1, 9, 37. — 3) *Etwas vor sich gehen —, einen Verlauf nehmen —, von Statten gehen lassen, verrichten:* रोमन्थम् P. 3, 1, 15. Rāgān. 1, 52. द्यूतम् MBh. 2, 2508. यज्ञम् Harīv. 14378. इष्टिमैन्द्रीम् Bhāg. P. 3, 6, 26. पारायणम्, तुरायणम्, चान्द्रायणम् P. 5, 1, 72. संप्रति संभोगकामिप्रवृत्त्या वर्तितव्यमानः so v. a. *ersonnt* (°प्रवृत्त्यावर्जित° gedr.) Kuṭṭan. 23, 21. *herrichten, zurichten:* वर्तिते च सप्तद्वीपसमुद्रभूधरविचित्रे धरणीमण्डले Pañkat. 157, 24. सुवर्तित (शाल) MBh. 13, 2657. मरुन्मालम् so v. a. *an den Tag legen, äussern* 4, 671. नात्तवर्तयति घनत्सु त्रलदेघामन्द्रमुद्वर्त्रितम् so v. a. *erheben* Mālav. 153, 2. — 4) (eine Zeit) *verlaufen lassen, zubringen, verleben:* पुष्करे तु ततः शेषं कालं वर्तितवान् MBh. 1, 7976. काश्यप — अवर्तयत्समाः Rāgān. 19, 4. रात्रिं कथंचिद्देवेमौ सौमित्रे वर्तयामहे R. 2, 53, 4. कया वृत्त्या वर्तितं ते पूर्वं वयः Bhāg. P. 4, 6, 3. दुःखशोकवतीं लोके वर्तयिष्यामि बोधितम् *das Leben hinbringen* R. 4, 19, 11. दुर्गतिम् *ein armseliges Leben führen* R. Schl. 1, 59, 21. वृत्तिम् *ein Leben —, eine Lebensweise führen:* क्षत्र° Liṅg. 8, 12, 11. 10, 18, 11. मयि पञ्चत्वमापन्ने कां वृत्तिं वर्तयिष्यति R. 2, 63, 30. 7, 88, 3. *ein Verfahren einhalten* Liṅg. 8, 7, 10. — 5) intrans. *sein Leben hinbringen, ein Leben führen:* दीर्घकालं मम क्रोधादुर्वृत्त्या वर्तयिष्यति R. Gorr. 1, 61, 22. अनेन वृत्तेन M. 4, 260. मूढवृत्त्या 10, 98. कया वृत्त्या वर्तितं वयस्ते ऽद्य दिः तितिमाण्डलम् Bhāg. P. 1, 13, 8. एवं वर्तयन् Kaṭhop. Up. 3, 15. वर्तयामास मुदितो देवराडिव नन्दने MBh. 3, 2065. R. 1, 77, 15. 2, 74, 24. 7, 88, 3. *leben —, bestehen von* (instr.): भैक्षेण M. 2, 188. 11, 123. शिलोञ्छाभ्याम् 4, 10. 6, 30. fg. निन्दितैः कर्मभिः 10, 46. 50. कृच्छ्रैः Jāgn. 3, 50. MBh. 3, 2305. 4071. 13, 2595. 3236. 13723. Harīv. 1269. 3794. 11205. R. 2, 24, 2. Ragh. 12, 20. Kir. 2, 18. Spr. 5002. VP. bei Mudg. ST. I, 181, N. 12. Bhāg. P. 8, 19, 33. Mālav. P. 49, 28. 32. 60, 12. *am Leben bleiben:* भवत्या च परित्यक्तो न नूनं वर्तयिष्यति R. 2, 24, 11 (23, 10 Gorr.). 51, 12 (48, 12 Gorr.). 86, 13 (94, 14 Gorr.). R. Gorr. 2, 65, 29. 113, 16. 3, 51, 12. Kathis. 66, 104. — 6) *eine Begebenheit vorführen, erzählen:* किं भूयो वर्तयिष्यामि ते MBh. 1, 4539. आख्यानम् 3, 328. 5, 5121. 12, 8493. 13, 435. 508. 2248. 3034. 4652. 14, 640. Harīv. 4579. 8553. R. 1, 5, 4. Verz. d. Oxf. H. 8, a, 17. कृत्स्नं वो वर्तयिष्यामि दानस्य फलमुत्तमम् *auseinandersetzen, vorführen* MBh. 14, 2711. ब्रह्म *verkünden, lehren* Bhāg. P. 9, 16, 25. — 7) *einsehen, erkennen:* भावहितं क्रियाहितं द्रव्यहितं पथात्मनः। वर्तयन् (= आलोचयन् Comm.) स्वानुभूत्येक आश्रयन्नुपैति मुनिः ॥ Bhāg. P. 7, 15, 62. — 8) शिरः oder शीर्षम् bei den Juristen so v. a. *sich zu einer Strafe bereit erklären, wenn der Andere durch ein Gottesurtheil gereinigt wird,* Viṣṇu in Z. d. d. m. G. 9, 679. Jāgn. 2, 96; vgl. शीर्षकस्थ 95. — 9) mit dat. *sich kümmern um, sorgen für:* न्यायोपेतेभ्यः Çāṅkh. Gṛhy. 4, 8.

— desid. विवर्तिषते und विवृत्सति P. 1, 3, 92. 7, 2, 59. Vop. 8, 121. 19, 2. विवर्तिष्यते, विवृत्सिता, विवृत्सितुम् P. 7, 2, 59, Vārtt., Schol.

— intens. वरीवृत्यते, वरीवर्तीति, वर्वर्तीति, वरिवृतीति, वर्वर्त्ति, वरीवर्त्ति Schol. zu P. 7,4,90. fg. *rollen*, die Würfel: इरिणे वर्वृताना: RV. 10,34,1. वरीवर्त्यमानश्चरति Çat. Br. 14,1,4,10.

— वर्त्तय् caus. *herbeibringen:* वर्त्तया सुभाय वक्तीय देवान् RV.1,186,10.

— वर्तति 1) trans. *vorbeifahren, passiren bei* (acc.): कासलान् R. 2,50, 10. *übersetzen über* (einen Fluss) 71,13. *überschreiten:* सतीं गतिम् R. 2, 111,4. fgg. (act.). R. Gorr. 2,120,6. विधातृविहितं मार्गम् Spr. 2809. मर्यादां कोलीनाम् R. 5,87,12. *hinausgehen über:* यनेन्द्रियेण गृह्यते शब्दस्तस्य विषयभावमतिवृत्तो ऽर्थो न गृह्यते *jenseits von — gelegen* Comm. zu Nyâyas. 2,1,51. *hinübergelangen über eine Zeit* so v. a. *so lange leben:* षण्मासाद्यातिवर्तते Verz. d. Oxf. H. 51,a,34. *vorbeikommen bei* so v. a. *übertreffen:* वेदस्याध्ययनेन ब्रह्मचर्यान् MBh. 3, 11069 (S. 571). स्वर्गे संतानकुसुमान्यतिवर्तति (so die neuere Ausg.) Harîv. 8245. वान्धवक्लेशैः राज्यलोभो ऽतिवर्तते Kathâs. 41,10. शर्मिष्ठयातिवृत्तास्मि (mit pass. Bed.) MBh. 1,2451. वाग्विभवातिवृत्तवैचित्र्य (mit act. Bed.) Mâlatîm. 10,1. *überwiegen:* धन्योऽन्यं नातिवर्तते MBh. 3, 13028. Verz. d. Oxf. H. 49,b,10. *hinweggehen über* so v. a. *überwinden, widerstehen, entgehen, entrinnen, loskommen von:* समाध्या नातिवर्तते प्रमेहो व्रतमीं यथा । तारापिं तथा नातिवर्तते तवा दृष्ट्या गुदाद्भवा: ॥ Suçr. 2,32,7. 8. 406,14. यदातिवर्तितुं बाकुबलं नाशकुतो मम Kathâs. 121,67. एतन्मुखं मम R. 5,6,14. मृत्युम् Kauç. 13. ते मुक्त्वेमेतदतिवर्तन्ति Mund. Up. 3,2,1. दिष्टम् MBh. 5, 7342. दैवं पौरुषेण 13,1922. R. Gorr. 2,20,20. Daçak. 73,6. त्रीन्गुणान् Bhag. 14,21. Bhâg. P. 6,4,16. कालम् R. Gorr. 2,80,22. Bhâg. P. 8,21,20. स्वभावम् Spr. 4309. दोषम् MBh. 3,16679. भवितव्यम् Kathâs. 37,236. पूर्वकर्म 101,296. वेधात्रीर्वामता: Râga-Tar. 4,413. *hinweggehen über* so v. a. *versäumen, vergessen, unterlassen, verletzen:* यथा पुष्पाणि च फलानि च। स्वं कालं नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुराकृतम् Spr. 3394. समयम् MBh. 2,693. वेलां मकोदधि: R. Gorr. 2,30,20. 6,103,18. नियोगम् R. Scnl. 2,21,12. शासनं भर्तु: R. Gorr. 2,23,8. धर्मम् 30,20. 6,4,20. सत्यम् Kathâs. 98,53. *Jmd nicht beachten, keine Rücksicht nehmen auf Jmd, sich gleichgiltig verhalten gegen Jmd:* ऋतुस्नातां सतीं भार्याम् — अतिवर्तेत दुष्टात्मा R. 2,75,36. धातरं धार्मिकं श्रेष्ठम् MBh. 2,2258. तौ ममाभाग्य वैदेहि — कः पुमानतिवर्तेत मातादपि पितामहः R. 5,22,14. *sich vergehen gegen Jmd:* अपत्यलोभाद्या तु स्त्री भर्तारमतिवर्तते M. 5, 164. आत्माने नातिवर्ते: R. 2, 111,7. आत्मानं नातिवर्तस्व R. Gorr. 2, 120,7. यद्यहं कर्मणा वाचा शरीरेण च राघवम् । सतां नातिवर्तेयम् 6, 101,27. 103,18. अतिवृत्त *der sich gegen Jmd vergangen hat* 3,56,22. 5, 80,14. — 2) intrans. *a) vorüberstehen* MBh. 3,12168. — *b) verstreichen:* नातिवर्तेत तत्क्षणम् R. 1,32,2. संध्याकालो ऽतिवर्तते 44,62. 51,20 (48, 22 Gorr.). 80,20. 5,7,53. वयो यदतिवर्तते 75,5. Pañcat. 174,9. ed. orn. 49,18. तयो: प्रत्यक्षमन्योऽन्याकारदानेन u. s. w. कालो ऽतिवर्तते Hit. 25, 17. fg. 62,22. या पोडशाब्दात्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते *zu spät sein* M. 2,38. — *c) lassen von* (abl.): गौरवान्नातिवर्तते R. Gorr. 2, 62,31. यथा मे हृदयं नित्यं नातिवर्तति राघवात् 6,101,28. — *d)* अतिवृत्त *weit fortgelaufen* R. 3,50,6. *weit entfernt von:* तं नातिवृद्धो वयसा नातिवृत्तश्च यौवनात् । कथमल्पेन कालेन पृथिवीमटसि द्विज ॥ Mârk. P. 61,11. *längst vergangen:* °कथक Spr. 5321. — Vgl. अतिवर्तन, °वर्तव्य° (°वर्तव्य). °वर्तिन्. — caus. 1) *übertreten —, austreten lassen:* पुरीषम् Suçr. 2,516, 9. — 2) = simpl. 1) *Jmd nicht beachten, keine Rücksicht nehmen auf:* अतिवर्त्य तौ MBh. 10,235.

— अभ्यति *bei Jmd vorbeifahren:* एवमुक्त्वा तमात्र पिता पुत्रं रथेनाभ्यतिवर्तते (रथेनाभ्येत्य संयुगे ed. Bomb.) MBh. 7,1391.

— व्यति 1) trans. *übersetzen über, passiren:* सागरम् R. 5,36,3. *hinüberkommen über* so v. a. *entgehen, entrinnen.* दिष्टम् MBh. 8,1731. — 2) intrans. *a) verstreichen:* सा रात्रिर्व्यत्यवर्तत MBh. 3,16722. 7,2794. Harîv. 4419. R. 2,91,74 (100,73 Gorr.). R. Gorr. 2, 79,38. 4,8,48. 44, 109. 48,6. 50,3. 5,22,12. 76,15. 7,9,8. — *b) lassen —, weichen von* (abl.): सत्यात् R. Gorr. 2,62,30.

— समति *vorüberziehen bei* (acc.): इन्द्रियाणां वशानुगम् । यशः समतिवर्तते हंसः प्रुष्कं सरो यथा MBh. 5,1299. *entgehen, entrinnen:* विधिम् Harîv. 7404. पद्याभावम् Spr. 4389. Vgl. u. समभि.

— अधि 1) *hinrollen über* (loc.): अध्यू ष्वेषु पवयो ववृत्युः RV. 10,27, 6. — 2) *sich bewegen —, hinfliegen irgendwohin:* यतो यतो मरुतो ऽधिवर्तते ततस्ततः प्रेषितवामलोचना Çiç. 23. — caus. *hinrollen über* (acc.): अङ्गारम् (कपाले) TBr. 3,2,8,1.

— अनु 1) *nachrollen, sich nach —, entlang bewegen; folgen, nachgehen, nachwandeln, sich richten nach, nachstreben, sich hängen an:* अनु व्रतानि वर्तते कृविर्न्यान् RV. 1,163,3. सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चकेव वावृतुः 4,30,2. शुभे यातामनु रथा अवृत्सत 5,55,1. घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वाम् 62,4. अनु द्या रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम् 8,6,38. 10,37,3. AV. 7,24,1. यं क्रव्यादनुवर्तते *verfolgt* 12,2,37. 11,9,21. TBr. 1,7,4,7. Pañcav. Br. 12,6,8. Çat. Br. 4,5,4,9. सत्यं नो ऽनुवर्त्स्यति 7, 4, 2, 3. 4. 8,2,2,7. — वर्त्म Bhag. 3,23. MBh. 3,13690. अपध्यं मार्गम् R. 3,46,17. अपथपदवीम् Bhâg. P. 5,15,1. प्रजास्तमनुवर्तन्ते समुद्रमिव सिन्धवः Spr. 3899. MBh. 2,2052. 15,342. Harîv. 12070. R. 2, 24, 20. 30, 20. 88,15. 100,2. 7, 10, 5. Kumâras. 3, 26. Çiç. 35, 21. Spr. 148. Bhâg. P. 4,7,31 (°वर्तत्ती). 8,16,37. Sarvadarçanas. 177,13. छायेवानुवृत्ता *wie ein Schatten folgend* R. 3,12,11. यद्येष्टवादयः सद्गुणाद्यालंकारवदनुवर्तन्ते Vedântas. (Allah.) No. 148. ते ऽन्ववर्तन्पितॄन्सर्वे यशसा च बलेन च *so v. a. kamen ihnen gleich an* MBh. 3,15940. Bhâg. P. 1,12,18. सतः *nachgehen, in Jmdes Fusstapfen treten* (bildlich) R. 5,23,7. Spr. 2621. सत्तो ऽसतो (gen.) नानुवर्तसि MBh. 1,2580. अनुवर्तितुमिच्छसि मातरं सततं सुताः *nachgehen, sich halten zu, anhängen* R. 4,19,35. 2,9,39. MBh. 5,65. 14, 17 (act.). Harîv. 5632. Kathâs. 46,58. *Jmd willfahren* R. 5,84,9. Spr. 268. 2655. 2925. Kathâs. 33,14. वस्त्राभरणप्रेषणादिना Daçak. 86,14. Bhâg. P. 3,16,21. पित्रा मामनुवर्तता 4,30,15. अनुवृत्त *zu Willen seiend, gehorsam* Kathâs. 1,66. लोकानुवृत्त n. *Gehorsam des Volkes* Spr. 1314. छन्दोऽनुवृत्त n. *das Willfahren* 2676. *Jmd beipflichten* MBh. 1, 1799. Râgat. 14,42. अनुवृत्त *der sich einverstanden erklärt hat* MBh. 3, 14828. *Etwas befolgen, sich bekennen zu, sich richten nach, anhängen, einer Sache nachgehen, sich hingeben:* चार्वाकमतमनुवर्तमानाः Sarvadarçanas. 2,3. 154,1. 3. अहं तावत्स्वामिनश्चित्तवृत्तिमनुवर्तिष्ये Çiç. 23,14. तच्छीलमनुवर्त्स्यन्ति मनुष्याः MBh. 3,13109. विक्लवो दैवमनुवर्तते Spr. 2786. fg. 46 (II). स यत्प्रमाणं कुरुते लोकास्तदनुवर्तते 4829. कृपणानाममज्ञानां मा वृत्तिमनुवर्तिथाः MBh. 5.4534. R. 4,31,7. पितुर्यैतामहे वृत्तम् MBh. 3, 11633. R. Gorr. 2,14,10. दुष्कृतं पितुः R. Scnl. 2,106,15. अनुवर्तत्याः

स्वभावमिव योषितः Bhāg. P. 8,18,39. पितुर्नियोगम् R. Gorr. 2,18,49. सदृढम् 51. पेतामहीमाज्ञाम् 5,44,17. वाक्यम् 6,93,14. 7,59,22. Bhāg. P. 3,14.45. 4,4,19. 23,56. 5,4,14. धर्मम् MBh. 3,11686. 5,990 (elg. 995). R. Gorr. 2,18,22. 30,20. 5,7,4. M. 6,93. MBh. 3,14683. हिताध्यानुमतानुवृत्तधर्म Bhāg. P. 4,20,18 (= परेषाग्राह्य Comm.). अर्थधर्मौ परित्यज्य यः काममनुवर्तते R. 2,53,13 (15 Gorr.). पुरुषाणां च गार्हस्थ्यमनुवर्तताम् Mārk. P. 20,1. व्रतम् Çāṅk. zu Bādar. Ân. Up. S. 321. वेलाम्यम् Spr. 4626. शोकम् R. 4,6,13. क्रोधम् 6,101,16 (act.). गोत्रं यज्ञानुवर्तसे sich angelegen sein lassen Harīv. 2831. क्रोशम् ebend. अनुवृत्तस्तया भगीरथगृहे प्रसादः so v. a. an den Tag gelegt Uttarar. 124,2 (167,10). बलं धर्मो ऽनुवर्तते richtet sich nach, hängt ab von MBh. 12,4841. कृतः पुरुषकारस्तु दैवमनुवर्तते 13,316. स्वार्थस्तम् (कालम्) अनुवर्तते Spr. 3925. — 2) gerathen in, theilhaftig werden: सद्यो भयं नानुवर्तसि सत्तः Spr. 5117. — 3) nach und nach besetzen, — erfüllen: तत्पुत्रपौत्रनप्तॄणामनुवृत्तं तदन्तरम् Bhāg. P. 4,1,9. — 4) intrans. a) erfolgen, hinterher sich einstellen, — erscheinen Bhāg. P. 1,15,36. 7,2,47. स्पृहा मे जायते ऽत्यर्थं तुष्टिश्चाप्यनुवर्तते R. 3,49,8. अनुवृत्त Bhāg. P. 1,18,6. निशायामनुवृत्तायाम् 3,11,28. — b) fortdauern Bhāg. P. 3,11,33. Schol. zu Kāp. 1,19. Sarvadarçanas. 115,22. Geltung haben: अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेष्वनुवर्तते Spr. 3475. fortgelten so v. a. aus dem Vorhergehenden zu ergänzen sein Comm. zu Nyāyas. 2,1,58. — c) sich benehmen gegen (loc.): तथा न मेंज्ञा कन्यायां पुत्रयोश्चान्ववर्तत Mārk. P. 77,25. abwechselnd mit acc. und loc.: कथं स भगवान्मां भक्तन्वा स्वयमात्मनः। तस्मिन्वा ते ऽन्ववर्तन्त (der Comm. fasst अनु als adv. hinterdrein) प्रजाः पोराश्च ईश्वरे ॥ Bhāg. P. 9,11,24. — d) heimkehren R. Gorr. 3,35,40 wohl nur fehlerhaft für निवर्त्. — e) अनुवृत्त = वृत्त rund, voll: °मनोज्ञाङ्ग Pāṇ. 2,3,14. — Vgl. अनुवर्तन fg., अनुवर्तिन्, अनुवृत्ति, कालानुवृत्त. — caus. 1) fortrollen —, weiterrollen lassen: एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः Bhag. 3,16. — 2) med. (sich) schlicht hinstreichen: केशान् TBr. 1,3,8,1. — 3) verfolgen lassen AV. 11,10,13. — 4) nachfolgen lassen, anreihen an (loc.) Çikṣ. Ba. 10. Ça. 3,16,12. Âçv. Çr. 5,3,11. — 5) aus dem Vorhergehenden ergänzen Schol. zu P. 1,3,63. 7,1,36. 8,3,12. — 6) hineinlegen, hineinthun in (loc.): स्थिरायो घनुवर्तितांशः Bhāg. P. 3,31,16. — 7) anwenden: स चतुर्णामुपायानां तृतीयमनुवर्तयन् R. 4,54,6. — 8) Jmd (acc.) anhalten zu (loc.): लोकं धर्मे Bhāg. P. 4,16,4. — 9) versagen, versprechen: सावित्रीम् Pāṇ. Gṛhj. 2,3. besprechen Verz. d. Oxf. H. 269,5,39. beantworten: यच्चद्धर्ता ऽनुयुञ्जीत तत्तदेवानुवर्तयेत् MBh. 4,105. — 10) Etwas geschehen lassen R. 5,46,16. Etwas gutheissen, beipflichten: वनवासकृता बुद्धिर्मम धर्म्यानुवर्त्यताम् R. 2,21,49. — 11) auf Jmdes Gedanken eingehen, Jmd zu Willen sein: अनुज्ञानुवर्तित (= सेवित Comm.) Bhāg. P. 1,10,3. — 12) es Jmd (acc.) nachthun Çāṅk. zu Bādar. Âr. Up. S. 104.

— समनु nachgehen, folgen, sich richten nach Spr. 4363. Bhāg. P. 3,11,21. राज्ञावृत्तं किल लोकः कृत्स्नः समनुवर्तते R. Gorr. 2,118,9. सत्यम् R. Scut. 2,14,8. प्रयोज्ञनवती प्रीतिं लोकः समनुवर्तते 6,82,48. भूमिर्नग्नः u. s. w. कालं समनुवर्तते MBh. 3,11231. 11233 (act.). folgen so v. a. gehorchen R. 3,64,17. folgen so v. a. die Folge von Etwas sein Bhāg. P. 5,6,17. — caus. Etwas geschehen lassen R. 5,46,17.

— अप aus der Lage kommen, sich verdrehen: ग्रीवा Suçr. 1,235,19. vom Wege abkommen: मार्गम् M. 8,293. sich seitwärts wenden: मैनिवृत्यापवृत्य (अपमृत्य ed. Bomb.) च MBh. 7,1164. sich entfernen, sich fortbegeben 1,1784. रक्षांसि 13,4284. Rāgn. 6,58. 7,30. sich nur Seite begeben (?) R. ed. Bomb. 2,53,4. अपवृत्त abgerutscht: मध्यापवृत्तं ग्रहमण्डलम् Harīv. 3046. 4440. R. 6,93,12. सायक so v. a. abgeschossen 4,54,19. umgekippt: पद्मा शकटः Bhāg. P. 2,7,27. abhanden gekommen: पितृपैतामहं राज्यम् MBh. 7,3077. Oefters fehlerhaft für अपवृक्त (s. u. वर्ज् mit अप) absolvirt, z. B. पूपे विद्वद्भे ऽनपवृत्ते Çāṅk. Çr. 13,4,1. अपवृत्ते कर्मणि Gobh. 1,9,17. Kāty. Çr. 1,3,28. Âçv. Çr. 6,13,17. fehlerhaft für उपवृत्त MBh. 5,7164 nach der Lesart der ed. Bomb. Mallin. zu Kir. 12,50. Vgl. अपवर्त fg. — caus. 1) abwenden: अप ते वर्तया पथः RV. 2,23,7. तिर्यगापवर्तितदृष्टि Mālatīm. 24,15. — 2) dividiren: कुदिनानि हादृष्टभिरपवर्तितानि Comm. zu Gaṇitādhy. Grahagaṇādhy. 9. Līlāv. 4. 8. 15. auf einen kleinern Maassstab reduciren: इष्टापवर्तिता पृथ्वी Goladhy. 8,12.

— व्यप sich abwenden: चेतः कथं कथमपि व्यपवर्तते मे Mālatīm. 11,15. abstehen von (abl.) Uttarar. 94,5 (122,11).

— समप caus. wegtreiben: उषा अप स्वमुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिम् RV. 10.172,4.

— अपि caus. hineinschleudern in (acc.): कर्तम् RV. 1,121,13.

— अभि 1) sich begeben —, kommen nach, zu (acc.): सरमसनिं वाजमभिवर्तस्व रथ्य Âçv. Gṛhj. 2,6,5. संवत्सरः सर्वाणि भूतान्यभिवर्तते Çat. Br. 8,4,4,15. मधुराम् Harīv. 6442. वनम् R. Gorr. 2,43,4. 73,12. 7,21,9. ज्ञाक्रवीमभिवृत्तायाः (सरय्वाः) sich ergiessend in R. Scut. 1,26,10. hinzutreten zu 2,91,27 (100,26 Gorr.). sich Jmd nähern, an Jmd herantreten. भार्याम् MBh. 1,4486. चन्द्रमाः — रोहिणीं नाभ्यवर्तत Harīv. 12796. 2705. 1978 (act.). ये चैनमभिवर्तन्ते पाचिताः इतस्ततः R. 1,31,7. 3,31. 31. 52,15. 4,62,13. 6,99,43. मोस्वा मत्संभवा सोम्य धनौघैरभिवर्त्स्यते Harīv. 4482. losgehen auf Jmd (in feindlicher Absicht), überfallen, angreifen: दस्यून् RV. 5,31,5. MBh. 1,4114. 3,11318. 11732. 11963. 5,7243. 6,4. 2362 (act.). 2666. 9,787 (act.). Harīv. 11043 (S. 791). R. 6,2,48. 19,19. intrans. sich herbewegen, herbeikommen: इत एव Mālatīm. 98,21. Çiç. 8,23. 80,3. Mālatīm. 11,7. Prab. 13,9. 20,3. धारात् Rāgn. 2,10. sich hinbewegen: पतो पतो घटूरणो ऽभिवर्तते Çiç. 23, v. l. वक्रेण von einem Planeten Bhāg. P. 5,22,14. in freundlicher Absicht herankommen: संग्राममेवाभिमुखा अभ्यवर्तन्त R. 7,27,24. वो योद्धुमभिवर्तते 6,4,23. युद्धार्थम् 7,27,7. युद्धाय 75,11. संग्रामे 28,7. स्प्रष्टुं (यस्य ed. Calc.) राक्षसस्त्राणि — समरे नाभ्यवर्तन्त वेलामिव महार्णवः MBh. 4,378. sich hinwenden: तेषाम् मुखानि चाभ्यवर्तन्त येन याता तिलोत्तमा 1,7707. दीर्घाण्यानि दक्षिणां दिशमभिवर्तसे sich hinstrecken, sich hinziehen nach Uttarar. 32,18 (43,2). über Jmd kommen so v. a. sich Jmds bemächtigen: शङ्का मामभ्यवर्तत R. 3,56,162. — 2) überwinden: येनेन्द्रो अभिवावृते RV. 10,174,1.2. — 3) aufziehen (von Wolken) R. 2,91,25 (अभ्यवर्षत ed. Bomb.) = 100,23 Gorr. sich erheben, beginnen: रथिनां रथिभिश्च संप्रहारो ऽभ्यवर्तत MBh. 4,1050. anbrechen (von der Nacht) R. 2,48,26. 62,19. 85,14 (92,23 Gorr.). R. Gorr. 2,10,6. मैघ्या 1,29. 22. 2,95,23. sich erheben (von einem Geräusch u. s. w.): स्तुतिशब्दो ऽभ्यवर्तत (ववर्तत ed. Bomb.) R. Scut. 2,65,2. साधु साधिति शब्दश्च स-

त्तरीत्ते अभ्यवर्तत 3, 35, 98. — 4) *sich befinden:* पूर्वम् so v. a. *oben stehen* R. 6, 1, 8. *da sein:* समाप्येषा सदा — हृदि कामो अभिवर्तते MBu. 5, 6093. *Statt finden* Uttarar. 39, 3 (52, 17). न च धर्मो अभ्यवर्तत *vorhanden sein* R. Gorr. 2, 45, 4. — 5) *zuwenden:* तच्छीघ्रं दर्शनं मह्यमभिवर्तत्तु (= अभिवर्तयत्तु Comm.) कार्ष्णिः so v. a. *mögen vor mir erscheinen* R. 7, 53, 25. — 6) fehlerhaft für अति in der Bed. *besiegen* Hariv. 4152 (अति die neuere Ausg.). *verstreichen* MBu. 13, 2900. 14, 267. (सैनि ed. Bomb.). — Vgl. अभिवर्तिन्, °वृत्ति, अभीवर्त. — caus. 1) *überführen:* वर्तयत तपुषा चक्रियाभि तम् ṚV. 2, 34, 9. — 2) *überwinden:* यस्यौ देवा असुरान्यवर्तयन् AV. 12, 1, 8. अधि त्वा सोमो अवीवृतत् ṚV. 10, 174, 3. — 3) *zum Herrn machen über* (dat.): तेनास्मानभि राष्ट्राय वर्तय ṚV. 10, 174, 1.

— समभि 1) *sich Jmd nähern:* यवीयसः कथं भार्यां ज्येष्ठो भ्राता — समभिवर्तेत महतः सन् MBu. 1, 7361. *auf Jmd losgehen* 7, 1507. *heran-, herbeikommen* Hariv. 4934. 5007. — 2) *wiederkehren, sich wiederholen* Suça. 2, 495, 3. — 3) *anbrechen* (von der Nacht) MBu. 5, 5134. — 4) *sich verhalten:* तूष्णीम् R. 7, 13, 15. — 5) fehlerhaft für समति in der Bed. *vorüberziehen bei* MBu. 5, 1299 nach der Lesart der ed. Bomb. (richtig समति ed. Calc.). *entgehen, entrinnen* Spr. 4389, v. l. *vernachlässigen, unberücksichtigt lassen:* वयः MBu. 1, 6854. *davonlaufen* R. 2, 28, 8. *verstreichen* R. 1, 8, 10 (समभिवर्तत ed. Bomb.).

— अव s. अववर्तिन्.

— अभ्यव *sich zuwenden:* पद्मार्कितस्याग्नेरङ्गारा अभ्यवर्तेरन् TBr. 1, 1, 3, 2. — caus. *herwenden* Çat. Br. 3, 1, 2, 4. 4, 2, 5.

— न्यव scheinbar MBu. 7, 1046, wo aber mit der ed. Bomb. ये न्यवर्तत्त st. न्यववर्तत्त zu lesen ist.

— समव caus. *zuwenden, kehren gegen* Çat. Br. 3, 5, 2, 8. 9.

— आ 1) act. trans. *herbeiwenden, zurückwenden:* को अंधरे मरुत आ ववर्त ṚV. 1, 165, 2. 5, 63, 1. सो चु वर्त मरुतो विप्रमच्छ *wendet herbei* sc. den Wagen, also so v. a. *kommet her* 1, 165, 14. *umdrehen* Çāṅkh. Çr. 5, 10, 26. — 2) med. intrans. (im Veda das perf. act.) *herbeirollen, — kommen; zurückkehren* (auch so v. a. *wiedergeboren werden*); *sich wenden:* आ कृष्णेन रजसा वर्तमानः ṚV. 1, 35, 2. रथमावृत्य *beschreiten* (wenn überhaupt hierher zu ziehen; = अवस्थाप्य Sāj.) 56, 1. 164, 47. स आ ववृत्स्व दर्शय पृष्टिः 3, 32, 5. आवर्ते infin. 42, 3. भातरमा ववृत्स्व 4, 1, 2. रथैः 5, 77, 2. आ स्तोमासो अवृत्सत 8, 1, 39. VS. 10, 19. AV. 12, 2, 41. 52. Kauç 72. आवर्तता सेना *komme herbei* MBu. 3, 12589. 6, 2666. नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव। शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति॥ Spr. 1529. Kāṭh. Up. 4, 17, 9. Maitrāyp. 2, 5. घेनुरावृते वनात् *kehrte zurück* Rāgh. 1, 82. 2, 19. Kāṭh. Up. 4, 4, 5. Varāh. Bṛh. S. 5, 49. Bālār. P. 1, 15, 44. 4, 9, 25. 5, 13, 14. 14, 28. 7, 15, 47. 8, 19, 12. 9, 3, 20. 10, 53, 24. 88, 26. Mārk. P. 40, 14. पुनर् Çat. Br. 5, 5, 2, 4. 13, 1, 2, 4. Prāçnop. 1, 9. ved. Cit. beim Schol. zu Kāp. 1, 84. Bhāg. 8, 26. Kathās. 45, 112. Verz. d. Oxf. H. 50, b, 30. प्रयुद्धानां प्रबुद्धानां पुनरावर्तताम् MBu. 6, 1668. पुनरावर्तमानां च ददर्श सरितम् R. 5, 16, 22. इमं मानवमावर्ते नावर्तन्ते Kāṭh. Up. 4, 15, 6. सद्यो भूत्वा पराङावर्तत *sich wenden* Çat. Br. 3, 4, 4, 7. सव्येन Kāṭj. Çr. 3, 7, 18. प्रदक्षिणम् 6, 8, 18. Kauç. 6. दक्षिणम् MBu. 13, 462. ऐन्द्रीमावृतम् *einen Gang einschlagen* Kauṣṭ. Up. 2, 6. 9. आवृत्यावृत्य *sich beständig drehend* Mṛcch. 87. IV, 97. सर्वस्यावर्तमानस्य *der sich neigenden Sonne* R. 4, 22, 34. *zurückkehren* so v. a. *sich wiederholen, wiederholt werden* Âçv. Çr. 12, 10, 5. Çāṅkh. Çr. 6, 9, 4. 11, 16. 13, 19, 14. VS. Prāt. 4, 165. Sidd. K. zu P. 8, 2, 18. द्विर्द्विरावर्तम् Kāṭj. Çr. 19, 3, 20. 20, 2, 4. स संप्रहारस्तेषां मम च — आवर्तत *erneuerte sich* MBu. 3, 12100. *zurückkehren von* so v. a. *sich losmachen von:* मन्युवशात् 5, 1277. शीतवृत्त *hergewandt* Kāṭj. Çr. 15, 9, 14. *hergebracht* (Wasser) Ait. Br. 2, 20. Çāṅkh. Çr. 6, 7, 3. *zurückgekehrt* M. 7, 82. Kathās. 12, 34. 51, 65. 162. Bālār. P. 6, 1, 58. *sich drehend:* चक्र Maitrāyp. 6, 28. *umgewandt, umgekehrt* AV. 9, 7, 28. Kāṭh. Up. 2, 2, 2, 3. MBu. 13, 1057. *abgewandt* Kir. 11, 51. चतुस् Kāṭhop. 4, 1. Maitrāyp. 6, 1. आवृत्तमनाः समस्तात् Verz. d. Oxf. H. 256, b, 29. *umgebogen* Suça. 1, 24, 2. *zur Seite geschoben:* शिरसा किंचिदावृत्तमौलिना Hariv. 5763. *wiederholt* Çāṅkh. Çr. 12, 2, 25. 13, 16, 4. VS. Prāt. 4, 172. Comm. zu 173. न कृतस्त्र एव संदेशो अस्माकमावृत्तः Uttarar. 115, 16 (156, 14). — 3) आवृत्त fehlerhaft für आवृत *bedeckt* MBu. 6, 5491 (आवृता ed. Bomb.). = वृत Colebr. und Lois. zu AK. 3, 2, 41. — Vgl. आवर्त fgg., आवर्तिन्, आवृत्, आवृत्ति, अनावृत्त. — caus. वर्वर्तत्, वर्वर्तति, ववृत्तन 2. pl., ववृत्याम् u. s. w., ववृतीय, ववृतीत, ववृतीमहि, वर्तयध्ये. 1) *hinrollen lassen:* अश्मानं MBu. 3, 336. R. 2, 47, 16. *schwingen:* मुष्टिम् 6, 78, 21. — 2) *herwenden, sich wenden lassen, herführen, zurückführen:* अर्वागा वर्तया रथं ṚV. 4, 32, 15. आ ते मनो ववृत्याम मघाय 7, 27, 5. 30, 4. 42, 3. रथम् 48, 1. आ वृत्यू विप्रो ववृतीत कव्यैः 68, 4. 83, 4. 93, 6. 1, 107, 1. 152, 7. 2, 34, 14. 3, 43, 2. ते नो वसूच्या ववृत्तन 61, 16. 6, 68, 1. 8, 7, 33. 77, 4. 92, 11. 10, 10, 1. आ ते रथस्य पूषणा धुरं ववृत्युः 26, 8. 72, 3. VS. 23, 7. *herbeilenken* sc. den Wagen so v. a. *herbeikommen:* आ नो ववृत्याः सुवितायं ṚV. 1, 173, 13. med. MBu. 3, 15684. — AV. 7, 12, 4. TBr. 2, 1, 6, 1. तं प्रत्यङ्मावर्तयत्ति *sie drehen den* (Wagen) *nach Westen* Ait. Br. 1, 14. 3, 15. 7, 5. 8, 10. आदित्यम् Çat. Br. 7, 5, 1, 37. यज्ञम् 13, 2, 6, 2. रुविधाने उभयतः शालाम् Kāṭj. Çr. 8, 3, 21. दक्षिणेन चात्वालम् *aufstellen* 14, 3, 2. पशून् 16, 3, 12. अनावर्तयत्तः *ohne umzudrehen* Çāṅkh. Çr. 16, 1, 20. अभ्यात्मम् *gegen sich drehen* Liṭ. 2, 11, 19. Âçv. Gṛhj. 1, 20, 9. Kauç. 56. रथं तूर्णमावर्तयस्व *führe vor* MBu. 7, 75. आवर्तितैः शैवलैः *herangezogen, an sich gezogen* Milav. 153, 3. स्वमायया वर्तितलोकतत्त्वः (so nach dem Comm.) *herbeigeschafft* Bālār. P. 3, 21, 21. पशून् *zurückführen* MBu. 4, 1161. यज्ञान् 1782. 16, 238. मतमालिकाम् so v. a. *einen Rosenkranz abbeten* Kathās. 24, 102. *verdrehen, umstellen, umwenden:* जिह्वाम् MBu. 13, 4056. दिशः 1, 2930. कालपर्ययम् Hariv. 2831. इदमावर्तितं शुभम्। स्थण्डिले कठिने सर्वं गात्रैर्विमृदितं तृणम्॥ so v. a. *in Unordnung gebracht* R. 2, 88, 8. तस्मादावर्तितश्चैव कृतुरिन्द्रेण ते *gestört, zu Nichte gemacht* Hariv. 11252. — 4) *wiederholen:* षण्मासान् Âçv. Çr. 12, 6, 11. Kull. zu M. 11, 233. चतुस् *vier Mal* Kāṭj. Çr. 7, 8, 9. द्विस् Ind. St. 2, 442. Çaṅk. zu Kāṭh. Up. S. 56. Sāh. D. 637. आवर्तितम् (?) Hariv. 3799 nach der Lesart der neueren Ausg. (आवर्जितम् ed. Calc.). Kām. Nītis. 11, 64. — 5) *hersagen, hersprechen* R. 7, 88, 20. 109, 4. Bālār. P. 5, 18, 24. — 6) *herausziehen* so v. a. *gewinnen:* मनांसि MBu. 5, 117. सामदानविभेदैश्च प्रतिलोमानुलोमतः। आवर्तयत वैदेहीं बकुटाऽऽश्रमेऽपि॥ R. 3, 24, 34. आविसंवादनम् u. s. w. आवर्तयन्ति भूतानि Spr. 3028. vielleicht nur fehlerhaft für आवर्तयति, wie die ed. Bomb. an der ersten Stelle hat. — 7)

आवर्तित in der Stelle: मुध्मातमुतीत्पावर्तिते ऽयसि Vieun. 26, 2 vielleicht *ein wenig gebogen* (आ + वर्तित). — intens. *sich stets —, sich wiederholt bewegen:* आ वरीवर्त्ति भुवनेषत्तः RV. 1, 164, 31. AV. 10, 2, 7. आ ये वयो न वर्वृतत्यामिषि गृभीता बाह्वोर्मयि RV. 6, 46, 14. आवर्वततीः 10, 30, 10. किमावरीवः (nicht, wie Comm. und Neuere annehmen, von वर्) *regte sich Etwas?* 129, 1. AV. 5, 1, 8.

— अन्वा med. (das perf. im act.) *herbeirollen u. s. w.:* अनु वामेकः पविरा ववर्त RV. 5, 62, 2. *nach Jmd sich hinwenden, Jmdes Gang folgen:* सूर्यस्यावृतमन्वा वर्ते VS. 2, 26. Kaush. Up. 2, 8. 9. TS. 1, 6, 6, 2. अधर्युम् Liṭ. 1, 11, 6. दक्षिणान्बाहूनन्वावर्तत्ते so v. a. *kehren rechts um* Çat. Br. 2, 6, 3, 10. सव्यं बाहुम् Gobh. 3, 7, 13. — intens. *nachfahren:* अर्यमेतं त्रीषो वाधीनमन्वावरीवुः RV. 10, 31, 6. *sich entlang bewegen:* सर्वानृतूननु वायुरावरीवर्त्ति TS. 5, 3, 1, 2.

— अप *sich abwenden, sich trennen von:* अपावृत्य गार्हपत्यात्काव्यादा प्रेतं AV. 12, 2, 34. अप चक्रा आवृत्सत (अ° v. l.) Çâṅkh. Ça. 5, 13, 3. — Vgl. अपावृत्त (auch in den Nachträgen) fg. und अनपावृत्.

— अभ्या *sich herwenden zu* (acc.), *kommen zu; wiederkehren:* पुरा मैत्रावाधाद्भ्या ववृत्स्व नः RV. 2, 16, 8. सखे सखीयमभ्या ववृत्स्व 6, 1, 3. 31, 4. 43, 3. 6, 19, 3. 10, 83, 6. AV. 3, 17, 9. 7, 105, 1. 10, 3, 28. 11, 1, 22. VS. 12, 103. MBh. 5, 4128. अभ्यावर्त स्तोमा भवन्ति Pañcav. Br. 16, 4, 11. अभ्यावर्तस्व (उपावर्तस्व ed. Bomb.) ब्रह्म क्षत्रात्मनि विभूतम् *sich wenden an, seine Zuflucht nehmen zu* MBh. 5, 1679. act.: अभि व आवर्त्सुमतिर्नवीयसी *zu euch wandte sich* RV. 7, 59, 4. अभ्यावृत्त *zurückgekommen, zurückgebracht* VS. 8, 38. *hingekommen zu* (acc.) Çat. Br. 7, 5, 1, 7. *hingewendet zu* Kâṭy. Ça. 7, 4, 10. Vgl. अभ्यावर्त fgg. — caus. 1) *herwenden sc. den Wagen so v. a. herkommen:* कृतम ऊती अभ्या ववर्तति RV. 10, 64, 1. — 2) *wiederholen:* सावित्रीम् Çâṅkh. Gṛhj. 4, 8.

— उदा caus. *hinaustreiben, verdrängen:* उदितो गन्धर्वमवीवृताम AV. 14, 2, 26. श्रोतास्युदावर्तयति पुरीषं घातिवर्तयेत् *austreten machen* Suça. 2, 316, 9. — Vgl. उदावर्त.

— उपा 1) *sich hinwenden, herantreten, gelangen zu* (acc., auch loc.), *sich auf Jmdes Seite stellen, Jmd zufallen:* घर्तश्चिदा न उप वस्यसा वृदा गुवान् घा ववृधम् RV. 8, 20, 16. यूयाहिश्यत उपावर्तस उमेवाग्याय्युपावृताः Ait. Br. 2, 3. 3, 36. 7, 10. 23. पुनरेवैनं वामं वसूपावर्तते TBr. 1, 1, 3, 3. 6, 2, 3. यत्रान्वा इषमुपावर्त्स्यति TS. 2, 4, 3, 1. 5, 2, 4, 4. वृद्धिम् 4, 6, 5. उप न घा वर्तस्व *komme zu uns* 6, 1. 5, 1, 6, 6. Çat. Br. 1, 3, 4, 10. देवान् 1, 2, 1, 1. 2, 4, 3, 11. श्रोत्रः 4, 3, 3, 3. स पत्प्रातःसवन उपावर्त्स्यत् 4, 4, 18. यज्ञे 1, 5, 2, 7. पुरस्ताद्देवाः प्रत्यञ्चो मनुष्यानुपावृत्ताः 3, 1, 1, 6. उपावृत्य *hinzutretend* MBh. 4, 1936. R. Gorr. 2, 17, 24. तमेव मनसा ध्यायत्युपावर्तत्सरिद्वरा MBh. 1, 3330. अभ्यरोषमुपावृत्य *sich wendend an* Bhâg. P. 9, 5, 1. उपावर्तस्व (अभ्यावर्तस्व ed. Calc.) तद्ब्रह्म क्षत्रात्मनि विभूतम् *seine Zuflucht nehmen zu* MBh. 5, 1679 (nach der Lesart der ed. Bomb.). घर्तव्यो तस्य तच्छाद्मनुपावर्तेत्पितॄन् *zu Theil werden* 1, 3318. देववृष्टं यदा पयः । घर्षतावपि — उपावर्तेत मे Bhâg. P. 4, 18, 11. प्रदक्षिणमुपावृत्य *Jmd* (acc.) *die rechte Seite zuwendend* MBh. 2, 1631. 3, 4082. 12027. 4, 1784. 13, 6887. R. 1, 33, 17 (34, 15 Gorr.). R. Gorr. 1, 67, 19. 77, 55. 2, 35, 18. उम्भूमार्गादुपावृत्य *abbiegend* MBh. 3, 4084. *zurückkehren, heimkehren* 1, 7821. 2, 1018. 1046. R. 3, 25, 22. 4, 44, 122. 6, 97, 25. Çiç. 8, 14. Kull. zu M. 12, 124. उपावृत्त *gekommen zu:* वाम् (so die neuere Ausg. st. ताम्) Harîv. 5634. तस्मिन्यज्ञे R. Gorr. 1, 13, 7. *herangekommen:* उपावृत्तिकात् 4, 39, 14. संध्याकाल MBh. 3, 223. Bhâg. P. 4, 13, 33. 6, 14, 32. 9, 6, 30. 10, 1, 56. 33, 39. 79, 1. *zurückgekehrt, heimgekehrt* MBh. 14, 1546. 15, 806. R. 2, 55, 11 (10 Gorr.). R. Gorr. 1, 4, 35. 2, 24, 3. वनवासात् 57, 27. Ragh. 1, 49. Çiç. 46, 6. 7. Mâlav. P. 17, 8. ब्रह्मचर्याश्रमात् 28, 17. Daçak. 94, 8. — 2) *sich niederlassen:* उपावर्तावके (अपवर्तामके ed. Bomb., पद्माकर्षं चित् शयनं कुर्मः Comm.) भूमावास्तोर्य स्वयमर्जितैः R. 2, 53, 4. — 3) *Statt finden, geben:* यत्र धर्माधर्मौ सह कार्येण कालत्रयं च नोपावर्तते Çâṅk. bei Windischmann, Sanc. 127. — 4) उपावृत्त *sich wälzend* AK. 2, 8, 2, 18. R. 5, 26, 21. — 5) उपावृत्त Harîv. 6547 *fehlerhaft für* उपावृत्, *wie die neuere Ausg. liest.* — Vgl. उपावर्तन, उपावृत्. — caus. 1) *zuwenden:* आ वो धियो ववृत्युरध्रा उप RV. 1, 135, 5. तेभ्यो दशतयुपावर्तयेत् Çat. Br. 4, 5, 8, 16. Kâṭy. Ça. 10, 1, 19. — 2) *herbeiführen* Daçak. 94, 8. *zurückführen* MBh. 2, 2671. R. 2, 19, 13 (16, 13 Gorr.). R. Gorr. 2, 16, 16. 92, 19. 93, 4. 99, 32. Bhâg. P. 9, 15, 36. — 3) *herbiegen, herstehen:* घर्शः Suça. 2, 47, 9. *zurückziehen:* पादौ प्रक्षिप्य सा पूर्वं पावके — दग्धौ दग्धौ पुनः पादावुपावर्तयत (अपे ऽग्ये प्रसारितवती Nîlak.) MBh. 9, 2784. — 4) *sich erholen lassen:* अश्वान् MBh. 7, 3739. 3741. — 5) *Jmd von Etwas abbringen* MBh. 13, 504.

— अभ्युपा *sich hinwenden —, gelangen zu:* क्रीतस्य मनुष्यानभ्युपावर्तमानस्य Ait. Br. 1, 12. 4, 1. अवाग्यम् TS. 5, 4, 9, 2. अभ्युपावृतत् Çat. Br. 2, 2, 4, 13. 6, 4, 11. 4, 2, 5, 7. 8. 9, 1, 3, 19. °वृत्त *zurückgekehrt* R. Gorr. 1, 61, 10. 2, 65, 13.

— पर्युपा *zurückkehren:* °वृत्त R. 4, 29, 22.

— न्या caus. *Jmd von Etwas* (abl.) *abstehen machen, abhalten von:* रुरिणा दामोदरे न्यावर्तिते रणात् Kathâs. 50, 62.

— पर्या 1) *sich umwenden, sich abwenden:* पर्यावर्ते दुःषप्न्यात् AV. 7, 100, 1. मृत्यूर्यावृतः (°वृत्तः) 11, 4, 26. यच्छकुनाः पर्यावर्ते *wenn ich mich umdrehe* 12, 1, 34. TBr. 2, 1, 4, 7. 8. 6, 5. पत्नी पर्यावर्तमाने *sich drehend* 3, 11, 2, 4. यदा खलु वा आदित्यो न्यङ्ङिभिः पर्यावर्तते TS. 2, 4, 10, 2. 3, 2, 2, 1. Çat. Br. 2, 4, 2, 21. 3, 9. पुरुषः पराङ्पर्यावर्तते 14, 7, 2, 2. प्रमव्यम् Çâṅkh. Gṛhj. 2, 3. पर्यावर्त्येति गोत्रदर्शनात् Kull. zu M. 3, 217. पर्यावर्ताय रथेन वीरो भोगो यद्वा पादतलाभिमृष्टः MBh. 4, 2106. पर्यावव्रते ऽऽत्मनाय *er richtete seine Schritte zurück nach* 3, 10074. पर्यावर्दृष्टे तद्वाग्यापयन् *etwa es hat sich das Reich gewendet* RV. 10, 124, 4. परिऽआवर्त् Padap. — 2) *in den Besitz gelangen von:* प्रद्युम्नो यावत् — पर्यावर्तेद्धरोरोहो वज्रनाभमुताम् Harîv. 8599. — Vgl. पर्यावर्त fg. — caus. *umwenden, umdrehen* TS. 6, 4, 8, 1. Çat. Br. 6, 3, 3, 12. Kâṭh. Up. 1, 3, 2. — desid. *umdrehen wollen:* समानं चक्रं पर्यायिवर्त्सन् RV. 7, 63, 2.

— अनुपर्या *sich wenden in der Richtung von, nachfolgen:* दक्षिणां बाहुम् Çat. Br. 3, 3, 4, 17. इन्द्रस्यावृतम् TS. 1, 7, 6, 3. 5, 2, 3, 4. 7, 1, 3, 4. अनु वै श्रेयांसं पर्यावर्तते *man stellt sich hinter* Ait. Br. 2, 20. 3, 11. स एतमेव (सूर्यं) शस्त्रेणानुपर्यावर्तेत *er folge gleichsam dem Laufe der Sonne* 44.

— अपपर्या *sich wegwenden:* अपपर्यावृत्य पुरोच्छ्वासादभिपर्यावर्तमानो ब्रूयेत् Gobh. 4, 3, 12.

— अभिपर्या *sich zuwenden, sich drehen nach* oder *um* AV. 12, 3, 8. 15, 7, 4. वयांस्यन्यतरमूर्ध्वमभि पर्यावर्तन्ते *die Vögel drehen sich nach der*

einen (und anderen) Seite TBa. 1,2,6,3. प्रजापतिमभि पर्यावर्तत wandte sich gegen 2,1,6,5. यसो वे लोक इमे लोकमभिपर्यावर्तत drehte sich um Ait. Ba. 4,27. TS. 2,5,9,5. Âçv. Çr. 2,7,2. Lâṭj. 3,2,13. Gobh. 4,3,12.

— उपपर्या sich gegen Jmd wenden Çat. Ba. 2,2,4,4. उपपर्यावर्तत Kâṭh. 10,5 in Ind. St. 3,478.

— प्रतिपर्या sich in entgegengesetzter Richtung wenden Çâṅkh. Çr. 4,4,19. Kauç. 88.

— विपर्या sich zurückwenden Kauç. 1. — caus.: इदं राष्ट्रं वि पर्यावर्तयति ein Solcher wendet die Herrschaft um d. h. bringt sie in fremde Hände TS. 2,5,4,1.

— प्रा caus. zur Erscheinung bringen, bilden, schaffen: नदीं प्रावर्तयिता MBh. 8,4009. प्रावर्तयत्ति ते वर्णानाश्रमांश्चैव सर्वशः Harîv. 461. Aus metrischen Rücksichten statt प्रव°. — Vgl. प्रावर्तक.

— प्रत्या sich wenden gegen: प्रतीचीनः प्रति मामा वर्तस्व ṚV. 10, 98,2. zurückkehren, heimkehren Kâṭhâs. 15,91. 40,97. 57,112. Bhaṭṭ. 9,12. Hit. 43,21. 103,14. Râǵa-Tar. 6,206. निद्रां प्रियम् 4,481. °वृत्त zurückgewandt: °मुखी Spr. 3327. zurückgekehrt 388. Mṛch. 40. Râǵa-Tar. 4,340. 5,213. 233. निद्रां भुवम् 473. प्रत्यावृत्तः पुनरिव स मे ज्ञानकोविप्रयोगः Uttarar. 15,10 (21,8). wiederholt Vaṭân. Bṛh. S. 89,7. Vgl. प्रत्यावर्तन. — caus. zurücktreiben: वामूरुत्र प्रत्या वर्तयेमा ṚV. 5,47,21. Çat. Ba. 13, 1,6,3. 4,2,16.

— व्या 1) sich trennen; sich absondern, sich aussondern von (instr.): इमे जीवा वि मृतैरावव्रन् ṚV. 10,18,3. व्यावृत्तः स पाप्मना AV. 10,7, 40. TS. 5,2,6,4. स्व° TBa. 1,1,6,1. समाना सूतव एकेन पदेन व्यावर्तन्ते TS. 5,3,8,2. 7,1,10,1. 2. व्यावृत्य शरीरेणामृतो ऽमन् Çat. Ba. 10,4,3, 9. schied sich Pâṇḍav. Ba. 24,11,2. वाक्सृष्टा न व्यावर्तत sich sondern, distinct werden Kâṭh. 27,3. Lâṭj. 10,19,14. Z. d. d. m. G. 9, lxiii. स स पाप्मनो (abl.) व्यावर्तते Çat. Ba. 14,4,3,2. द्वौ वा एता यज्ञस्य पन्थाना यत्सर्वक्रियाश्चाहोरात्रेणेतो व्यावर्तेते sondern sich als Tag und Nacht Maitrâyaṇ. 6,1. पन्था व्यावर्तते द्विधा theilt sich MBh. 3,16855. sich öffnen Suçr. 2,332,17. °वृत्त geöffnet 193,5. °वृत्तैक (गिरि) gespalten, auseinandergehend Harîv. 3937. तद्बलमार्तमासीद्व्यावर्तमानं (आर्तरूपमावर्तमानं od. Bomb.) ददृशे भग्नतत् so v. a. sich auflösend MBh. 7,8145. sich abwenden —, sich losmachen von: व्यावर्तन्तान्योपगमात्कुमारी Ragh. 6, 69. व्यावृत्ता परस्त्रेभ्यः — तस्करता Ragh. 1,27. व्यावृत्तचेतसो ऽन्येभ्यो भावेभ्यः Kâṭhâs. 112,67. नैव बुद्धिश्च व्यावृत्ता तस्य Harîv. 7201. विषयव्यावृत्तात्मन् Ragh. 3,70. विषयव्यावृत्तकौतूहल Vikr. 9. बाह्यविषयव्यावृत्तेन्द्रिय Comm. zu Maitrâyaṇ. 6,1. abstehen, sich fortbegeben Spr. 2162. sich umwenden 2691. zurückkehren Çâṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 33. Râǵa-Tar. 1, 300.5,85. Verz. d. Oxf. H. 129,a,11. व्यावृत्य स्वधामं गतः Vet. in LA. (III) 8,20. 17,20. 18,20. °वृत्त Vaṭân. Bṛh. S. 3,5. Hit. 14,13. व्यावृत्तशिरस् umgewandt, abgewandt R. 5,13,33. verdreht Śârṅg. Ba. 4,4. (सा मृता) व्यावृत्तनेत्रभ्रमरा पक्ष्मिणीव हिमाकृता verdreht und abgewandt Kathâs. 52,152. sich absondern von so v. a. sich nicht vereinbaren lassen —, sich nicht vertragen mit: क्रमाक्रमौ स्थायिनः सकाशाद्व्यावर्तमानौ Sarvadarçanas. 9, 17. fg. Comm. zu Nyâyas. 2,2,2. Nîlak. 112. व्यावृत्त 216. Tarkas. 41. Z. d. d. m. G. 7,289, N. 3. Bṛihasp. 72. विपक्षव्यावृत्तत Sin. D. 122,10. — 2) auseinanderkommen so v. a. eine Streitsache zur Erledigung bringen: ते समावद्वीर्या एवासत्र व्यावर्तन्त Ait. Ba. 3,49. 36. — 3) sich weilen R. 4,19,2. — 4) sich neigen, von der Sonne: व्यावर्तत् MBh. 7,3660. zu Ende gehen, aufhören, zu Nichte werden: व्यावृत्ते ऽर्कनि (ऽर्यम्णि ed. Bomb.) 21. व्यावर्तमानं (so die neuere Ausg.) तु मरुद्वद्भिः पुण्यकीर्तिभिः। धृते पडुकुलम् Harîv. 4142. युगेष्वावर्तमानेषु धर्मो व्यावर्तते पुनः॥ धर्मे व्यावर्तमाने तु लोको व्यावर्तते पुनः। MBh. 3,11259. fg. व्यावृत्तसर्वेन्द्रियार्थ Pañkat. 5,4. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 148. व्यावृत्तगति (वायु) Kumâras. 2,35. — 5) व्यावृत्त vollkommen frei: आत्मन् Kap. 1,161. — 6) व्यावृत्त = वृत्त H. 1484. Colebr. und Lois. zu AK. 3,2,41. — Vgl. व्यावर्तन, व्यावृत्ति. — caus. 1) trennen, sondern von (instr.) TBa. 1,1, 6,1. पाप्मनो 3,8,6. तनुवः 3,7,8,5. मनश्च वाचं च Çat. Ba. 2,3,6,17. 8, 5,8,7. Kâṭh. Çr. 12,3,13. mit abl.: प्रकृतादयो हि गवादिकं सङ्घातरूपेभ्यः कृत्स्नगवादिभ्यो व्यावर्तयन्ति Sin. D. 10,15. Çâṅk. zu Kaṭh. Up. S. 9. bei Seite legen: दण्डम् R. 7,22,46. beseitigen Vikr. 154. Nîlak. 113. Ânandagiri zu Kaṭh. Up. S. 36. Sarvadarçanas. 5,9. 9,18. नेतद्वक्यं मम वचो व्यावर्तयितुमन्यथा so v. a. zurücknehmen MBh. 9,2046. यः कश्चन रघूणां हि परमेकः परंतपः। अपवादं इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वरः॥ einen Feind beseitigen, eine allgemeine Regel aufheben Ragh. 15,7. Jmd von Etwas abbringen R. 2,111,21 (120,24 Gorr.). व्यावर्तितुम् = व्यावर्तयितुम् Mâṇ. P. 42,1. — 2) zerstreuen, hierhin und dorthin werfen: ऊरुवातविनिर्भग्ना द्रुमा व्यावर्तिताः पथि MBh. 3,12447. — 3) umdrehen, umwenden: व्यावर्तये (so die ed. Bomb.) रथं तूर्णं नदीवेगमिवार्णवात् MBh. 8, 1050. वक्त्रम् Râǵa-Tar. 4,23. — 4) vertauschen Harîv. 4174. — 5) ersinnen, ordenken (?) Daçak. 98,7. — Vgl. व्यावर्तक. — desid. trennen wollen: व्याविवृत्सते Çat. Ba. 13,4,4,2.

— समा 1) wiederkehren, sich wiedervereinigen; heimkommen (insbes. vom Schüler, der die Lehrzeit beendigt hat): समावर्वर्ति विष्ठितो जिगीषुः ṚV. 2,38,6. समु प्रिया यावव्रन्सद्मन् 3,32,15. VS. 20,23. Âçv. Gṛhj. 3,5,15. 8,1. Kauç. 59. Gobh. 3,5,23. Pâr. Gṛhj. 2,5. Sâmav. Br. in Ind. St. 4,377. गुरुणा च समनुज्ञातः समावर्तेत वै द्विजः MBh. 13,6426. Kull. zu M. 3,2. गुरोस्तु यः। लब्ध्वानुज्ञः समावृत्तः AK. 2,7,10. M. 3,4. 8,27. Bâlac. P. 10,80,28. Kull. zu M. 3,213. 7,43. समावृत्ते (so zu lesen) ज्ञने heimgekehrt R. Gorr. 2,83,1. herantreten, herbeikommen MBh. 5, 7276. R. 5,6,7. यद्य समाववृते कुसुमैर्नवैः — मधुः Ragh. 9,24. हरीन्द्रेषु समावृत्तेषु सर्वशः MBh. 3,16282. नानादेशसमावृत्ताः 9,28. sich wenden gegen: प्रदक्षिणं समावृत्य स तौ ihnen die rechte Seite zukehrend R. 4,12, 23. — 2) von Statten gehen: तवापि लोके कर्माणि समावर्तन्ति (समापतन्ति hat Nîlak. gelesen) MBh. 12,1155. — 3) समावृत्त beendigt: °व्रत (समावृत्त° od. Bomb.) MBh. 1,3256. — Vgl. समावर्तन, समावृत्ति. — caus. heimtreiben: सं ते गावस्तम् घा वर्तयन्ति ṚV. 7,79,2. heimkehren lassen, entlassen (einen Schüler) Kaṭh. Up. 4,10,1.

— अभिसमा heimkehren TBa. 1,1,8,4. Kâṭh. 37,1. Çâṅkh. Gṛhj. 1,1. Kaṭh. Up. 2, 15.

— उपसमा dass.: सायं पशव उपसमावर्तन्ते TBa. 3,2,4,2. Çat. Ba. 3,9,4,3.

— उद् 1) zerspringen: तस्य मूर्धोदवर्त Çat. Ba. 4,4,3,4. — 2) umstürzen: तथा वृक्ष उन्मूलः प्रण्यत्युदवर्तते ऽचिरात् Bhâg. P. 2,19,40. — 3) ausgehen, ausfallen: नास्यास्माल्लोकात्प्रजोदवर्तते Çat. Ba. 14,5,4,3. — 4) in Wallung, in Aufregung gerathen: उदवर्तसमत्तकाले समुद्राणामिव

स्वन: Harıv. 13676. Bhāg. P. 10,13,56. *austreten* Suçr. 2,263,11. — 5) उद्वृत्त a) *angeschwollen* Suçr. 2,274,17. मेघ MBh. 9,469. स्तन Spr. 472 (*zugleich in Wallung gerathen*). *hervorragend:* सितोद्वृत्तोर्ध्वदंष्ट्रिन् (शितदंष्ट्रोर्ध्वधारिन् die neuere Ausg.) Harıv. 12340. — b) *in Wallung gerathen, aufgeregt:* उद्वृत्तोर्मि MBh. 1,1215. सलिलार्णव 7,4498. 5186. 8, 2509. R. 5,9,12. 6,75,15. Rāgh. ed. Calc. 7,56. Mārk. P. 9,17, °नक्र (समुद्र) Rāgh. 16,79. पाकोद्वृत्तेषु दोषेषु Suçr. 2,7,6. पवन 274,11. हृदय R. 5,76,17. Bhāg. P. 10,13,56,v.l. — c) *ausschweifend, ungebührlich sich benehmend, übermüthig:* उद्वृत्तं सततं लोकं राजा दण्डेन शास्ति वै MBh. 1, 1718. 3,1893. 13,4765. 7194. Spr. 3246. Vaṇ. Bṛh. S. 19,19. Rāja-Tar. 3,495. Bhāg. P. 10,41,38. पुत्र. गत्र Kām. Nītis. 7,6. अघ ते बलमुद्वृत्तं शमये ऽग्निमिवाम्भसा R. 4,9,78. अधर्म Rāja-Tar. 6,61. — d) fehlerhaft für उद्वृत्त *weit geöffnet, aufgerissen:* उद्वृत्तलोचन MBh. 7, 5406. उद्वृत्तनयन 9, 439. उद्वृत्तादि Mārk. P. 14,62. vielleicht auch als Bez. einer best. Stellung der Hände beim Tanze Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,25. — Nach H. an. 3, 253 ist उद्वृत्त = उत्तलित (d. i. उत्तुलित), परिभुक्त und उल्लिखित. — Vgl. उद्वर्त fgg. — caus. 1) *versprengen:* घृतं फेनेन नमुचेः शिरं इन्द्रोदवर्तयत् RV. 8,14,13. TBr. 1,7,8,7. मुक्तेनाग्निना कुद्धो लोकानुद्वर्तयन्निव MBh. 3,13608 (= Harıv. 699). 16283. दस्युसंघान् 5,1873. वेलामुद्वर्तयन्तीव (सागरा:) 6,106. Harıv. 10626. 13101. — 2) *hinausschwingen oder schleudern* Kāç. 16. — 3) *anschwellen machen:* उद्वर्तितेतरणा so v. a. *mit hervortretenden Augen* Kathās. 29,80. — 4) पद्भ्यामुद्वर्तितः *der mit den Füssen sich Bewegung macht* Suçr. 2,139,12. — 5) *salben* (vgl. उद्वर्तन): शवशरीरमुद्वर्तितम् Spr. 209. Sunīṣa. 75.

— समुद् *anschwellen:* समुद्वृत्त (मकोदधि) MBh. 2,1488. — caus. *anschwellen machen, in Wallung versetzen, aufregen:* समुद्वर्तितवेगानां सागराणाम् R. 6,19,20.

— उप 1) *darauf treten:* न चेदवघायादुपवर्तेत वा Āçv. Çr. 10,8,3. — 2) *herantreten, herankommen:* कालो नरवरश्रेष्ठ समीपमुपवर्तितुम् (समीपमुपगत्योपवर्तितुं ज्ञापयितुं प्रेषित इति शेष: Comm.) R. 7,104,13. उपस्युपवृत्तायाम् Bhāg. P. 10,70,1. *an Jmd herantreten* so v. a. *treffen, zu Theil werden:* उत्पद्यमिह लोके वै जन्मप्रभृति मानवम्। विविधान्युपवर्तन्ते दु:खानि च सुखानि च ॥ Spr. 3773. नाधर्मेणागमः कश्चिन्मनुष्यानुपवर्तते M. 4,31, v. l. — 3) *sich erholen:* मुक्ता कृच्छ्रान्यायपित्वोपवृत्ता:। पुनर्युक्ता MBh. 1,192. श्रान्तोपवृत्तैस्तुरगै: 5,7184. पीतोपवृता: (कृष्णा:) 7,4346. — 4) *zappeln:* उपवृत्तझठरशफरीकुल (सपवृत्त Comm.) Kir. 12, 50. — 5) आत्ममांसोपवृत्त von einem Todten gesagt wohl so v. a. *sich vom eigenen Fleische nährend* MBh. 12,3726. — 6) AV. 19,56,3 wird उपावर्तत (von वर्त् mit उपा) zu betonen sein. — Vgl. उपवर्त fg. und उपवृत्ति. — caus. 1) *hinstreichen* (die Haare) TBr. 1,5,8,7. — 2) *sich erholen lassen:* विपर्यासोपवर्तित (तुरग) Kathās. 94,17.

— समुप *sich benehmen, verfahren:* कामवृत्तो ऽन्वयं लोक: कृत्स्न: समुपवर्तते Spr. 2608, v. l.

— नि 1) *zurückkehren* (auch vom *Wiederkehren in dieses Leben, wiedergeboren werden*) AV. 10,1,17. मधोचीना नि वावृतु: RV. 1,105,10. यद्ध प्रसर्गे त्रिककुभिवर्तत 121,1. नि वर्तध्वं मानुषं गात 10,19,1. नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे 95,17. VS. 8,43. TS. 6,1,6,2. MBh. 2,42,2671. 3,8456. 15774. fg. 5,7874. 13,2756. R. 1,9,64. 2,40,47. 42,13. 45,14. वनात्तस्मात् 52,94. R. Gorr. 1, 9,63. 4,13,30 (पुनर्). 5,79,11. Kumāras. 4,30. Rāgh. 2,40. Çiç. 8,14, v. l. 70, 14. Vikr. 3. 60,2. Spr. 398. 2547. 3549. 5218. Vaṇ. Bṛh. S. 6,6. Kathās. 18,94. 32,48. 124. Daçak. 66,14. 90,6. गत्वा गत्वा निवर्तन्ते चन्द्रसूर्यादयो ग्रहा:। अद्यापि न निवर्तन्ते त्वालोकाकाशमागता: ॥ Sarvadarçanas. 40,21. fg. मनस: प्राप्यते क्षात्मा यमाप्त्वा न निवर्तते Maitrāyaṇ. 4,3. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,122. Bhāg. 8,21.15,6. Śiçup. 39. एतमधानं पुनर्निवर्तन्ते Kaṭh. Up. 5,10,8. सेतोर्गृहम् Rāgh. 3,67. 9,14. 11,57. पुरीं द्वारवतीं प्रति MBh. 3,788. 4,866. आश्रमाय R. 1,2,33. Bhāg. P. 3,17,1. 23,42. व्रजन्ति न निवर्तन्ते भेदोतीमि सरितां यथा। आयुरादाय मर्त्यानां तथा रात्र्यक्षनी सदा ॥ Spr. 2924. यायिन्यो न निवर्तन्ते सतां मैत्र्य: सरित्समा: *rückwärts gehen* 345. न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम् Çiç. 53, v. l. act. Bhāg. 13,4. MBh. 1,3242. 3,37. 15785. 16766. 16772. 16775. 16780. 16786. 12, 1911. Harıv. 4814. R. 1, 17, 21. 4, 43, 62. 7, 37, 8, 3. न्यावृतन्मनोभि: Bhaṭṭ. 3,17. निवर्त्यन् 6,5. निवृत्त MBh. 4,143. R. 2,24, 21. R. Gorr. 2,58,26. 3,50,28. 70,11. 76,24. Rāgh. 7,61. 9,82. nil Megh. 112. स्वगृहम् Pañcat. 95,23. Hit. 14,12. दृष्ट्वा निवृत्तमादित्यं प्रवृत्तं चोत्तरायणम् MBh. 13,7711. °हृदय 3,2852. °यौवन Rāgh. 8,5. — 2) *zurückkehren* so v. a. *abprallen:* क्षुण्णानमिव (घासाग्र) परशु: पातित: (निवर्तेत) R. Gorr. 2, 114, 32. निवृत्त: सागराच्छर: 3,43,24. — 3) *fortgehen aus der Schlacht* so v. a. *den Rücken kehren, fliehen:* रणान्निवृत्ते न च Bhaṭṭ. 5, 102. MBh. 3, 12115. चाक्रवे पे न्यवर्तन्त 7, 1046. निवृत्त 5,5964. धनिवृत्तयोधिम् 7, 5828. Bhāg. P. 5, 10, 23. — 4) *sich abwenden:* रामं मे ऽनुमता दृष्टिरद्यापि न निवर्तते R. 2, 42, 23 (41, 28 Gorr.). क्रिया चतुर्निवर्तते मनस्तु न कदा च न Kathās. 12,30. सर्वान्तःपुरवनिताव्यापारं प्रति निवृतहृदयस्य Mālav. 35. एनोनिवृत्तेन्द्रिय Rāgh. 5,22. स्वप्रनिवृत्तलौल्य 7,38. निवृत्तं कर्म im Gegensatz zu प्रवृत्त *eine jeglichem persönlichen Interesse abgewandte Handlung, eine Handlung, bei der man an keine Belohnung weder diesseits noch jenseits denkt*, M. 12,88. fgg. Bhāg. P. 4,4,30. 7,15,47. प्रवृत्तं च निवृत्तं च शास्त्रम् 4,29,13. *enden mit, bei* (abl.) Vaṇ. Bṛh. S. 102,7. — 5) *sich neigen* (von der Sonne): निवृतश्च दिवाकर: MBh. 3,16321. निवृत्ते किंचिदादित्ये R. Gorr. 2,54,4. — 6) *abstehen von Etwas* (abl.) so v. a. *Etwas einstellen, aufgeben:* न सामि निवर्तेत *er Āśre nicht in der Mitte auf* Çat. Br. 2,3,2,14. यज्ञात् Gobh. 1, 4, 30. Kenop. 19. 23. M. 1,52. सर्वमांसस्य भक्षणात् 5,49. 10,98. MBh. 5,7308. रोषात् R. 2,78,24. तपस: R. Gorr. 1, 65, 21. धनुष्कोशान्मृदुत्वाच्च 3, 69, 2. Spr. 2558. 4762. नृत्यात् Śiçup. 59. Vaṇ. Bṛh. S. 74,14. गृहान्मम Kathās. 12,100. 42,171. Bhāg. P. 3,8,21. प्रकृते: Mārk. P. 43,6. Pañcat. 162,8. तावदादाय निवर्तते Sarvadarçanas. 2,17. fg. act. MBh. 5,7310. 13,4655. R. Gorr. 1,65, 2. 7,13,32. Mārk. P. 113,27. न्यावृत्सन् Bhāg. P. 5,9,8. न्यावृतत् Bhaṭṭ. 1,18. निवृत्त MBh. 2,1770. R. Gorr. 2,35,21. प्रतिप्रहारात् Jāān. 3,48. परस्त्रीभ्य: MBh. 7,2762. 2764. 13,1661. Einschiebung nach Kām. Nītis. 3,91. Kathās. 22,232. Bhāg. P. 4,12,1. 19,15. Mārk. P. 114,1. मधुमांस° MBh. 7,2764. परपरिवाद° Spr. 174. 3215. चाकार° Pañcat. ed. orn. 41,13. निवृत्त so v. a. विरक्त *der der Welt entsagt hat* Bhāg. P. 3,16, 19. 7,13,25. — 7) *sich losmachen —, sich befreien von Etwas:* मृत्यो: MBh. 1,6760. पापात् Bhāg. 1,39. मोक्षात् R. 3,29,15. *sich lossagen von Etwas:* निवृत्तो ऽस्म्यस्य यात्रनात् MBh. 14,127. *sich lossagen von einem*

Kampfe so v. a. *einen Kampf vermeiden, verweigern:* न निवर्तेत संग्रामात् M. 7,87. समाहूतश्च न शक्यति निवर्तितुम् MBh. 2,1720. याहूतो न निवर्तेयम् 2047. याहूतो न निवर्तेयं समरं प्रति शत्रुभिः Harıv. 7327. *sich lossagen von Jmd* Daçak. 77, 6. *absehen von Etwas, keine weitere Rücksicht auf Etwas nehmen:* दोषात् Hit. 71, 22. *kommen um:* निवृत्तानां सुखात् R. Gorr. 2,53,2. — 8) *inne halten, verstummen:* इत्युक्त्वा सा न्यवर्तत Kathâs. 28,131. न्यवृतत् 128; statt dessen विरराम 128. — 9) *weichen, aufhören, vergehen, schwinden, sein Ende erreichen:* पानात्पिपासा निवर्तते Çat. Br. 10,2,6,9. TS. 7,2,2,3. Kauç. 94. सर्वे पाप्मानो ऽतो निवर्तन्ते Kâṭh. Up. 3,4,1. रसो ऽप्यस्य निवर्तते Bhag. 2,59. फलमेवास्य दैवस्य प्रतीपस्य निवर्तते R. Gorr. 2,20,32. निवर्तेत संतापः 114,32. मरुव्याधिः Suçr. 1,119,5. Bâlar. 9. इच्छा Spr. 935. वाञ्छा 2387. स्वभावो न निवर्तते 1032. दोषः 2276. 3186. प्रायः Râga-Tar. 6,339. संसृतिः Bhâg. P. 4,29,35. श्लोकः Çiç. in LA. (III) 35, 21. यावद्भुक्ते निवर्तने P. 1,3,35, Sch. Sarvadarçanas. 108, 8. 116, 8. तत्कार्ये निवर्तेत *der Process werde eingestellt* M. 8, 117. रेणुः *sich legen* Bhâg. P. 8, 10, 37. हेतुना तु निवर्तिष्यति केनचित् (मम वचः) so v. a. *seine Wirkung verlieren* MBh. 9,2047. न्यवर्तन्तातपत्राणि राज्ञामपगतोष्मणाम् so v. a. *wurden unnütz* Kathâs. 18, 71. यत्तिणयोत्सादितं (पूर्वं वनं) अद्यापि न निवर्तते so v. a. *zeigt heute noch Spuren davon* R. 1,26,31. निवृत्त *gewichen, aufgehört, vergangen, geschwunden:* घनाः R. 4,27,23. शिराकृता MBh. 3,16829. Bhag. 14,22. गृहवास R. 2, 44, 14. 31, 19. 66, 22. 6,22,17. निवृत्तसंताप Suçr. 2,169,15 (°संतापोय *ein Heilmittel von der Gattung der* Rasâjana 14; vgl. 1,10,3). Siṃhâs. 65. Kumâras. 1,52. Spr. 2717. Varâh. Bṛh. S. 8,5. 32,39. Kathâs. 21,121. Daçak. 65,17. Bhâg. P. 1,8, 27. 3,5,6. 25,41. Hâlâ. 2,244. यत्र वाचो निवृत्ताः Spr. 1427. Sarvadarçanas. 11,18. 109,1. 131,9. अप्रतेरिति वर्तते उताको निवृत्तम् *aufgehört zu gelten* so v. a. *nicht mehr zu ergänzen* Pat. zu P. 8,3,67. Schol. zu 1,2,38. इत उत्तरं गोत्राधिकारो निवृत्तः *zu Ende* zu P. 4,1,141. निवृत्ते ऽरुणि *vergangen, abgelaufen* MBh. 5,7235. R. Gorr. 2,57,4. चतुर्दशसु वर्षेषु निवृत्तेषु R. Scrr. 2, 52, 28. नीराजन Varâh. Bṛh. S. 45,11. 5,97. Bhâg. P. 3,14,36. निवृत्तकर्मन् R. 4,27,11. — 10) *unterbleiben, wegfallen, nicht eintreten:* प्रवरास्तु निवर्तन्ते Liṭ. 1, 12, 19. 2, 4, 15. 9, 16. Kauç. 63. 141. आत्मनस्त्यागिनो वैव निवर्तेतेदृक्क्रिया M. 5, 89. 11, 151. न निवर्तेत्क्रतुर्मम MBh. 1, 2137. निवृत्तयज्ञस्वाध्याया (वसुंधरा) 1, 7678. fgg. निवृत्तमांस so v. a. मांसनिवृत्त *kein Fleisch geniessend* Uttarar. 72,4. 5 (93,2). अनिवृत्तमांस s. निवृत्तदक्षिणा so v. a. *eine von einem Andern verschmähte Gabe* Çat. Br. 3,5,4,25. *abgehen, nicht zukommen:* ज्येष्ठता च निवर्तेत ज्येष्ठावाप्यं च यद्धनम् M. 11, 155. त्रयो धर्मा निवर्तन्ते ब्राह्मणात्क्षत्रियं प्रति । अध्यापनं याजनं च तृतीयश्च प्रतिग्रहः ॥ so v. a. *der Kshatrija hat drei Rechte weniger als der Brahmane* 10,77. निवर्तेरंश्च तस्मात्तु संभाषणसहासने । दायाद्यस्य प्रदानं च यात्रा चैव हि लौकिकी ॥ *kommen ihm nicht zu* 11, 184. यतो वाचो निवर्तन्ते so v. a. *wofür es keine Worte giebt* Taitt. Up. 2,4. — 11) *fortgehen zu, übergehen auf* (loc.): ऐश्वर्यधनरत्नानां प्रत्यमित्रे (so die ed. Bomb.) निवर्तताम् । दृष्टा (so die ed. Bomb.) हि पुनरावृत्तिर्नीविताम् MBh. 12,5090. — 12) *gerichtet sein auf:* अद्य वा ते मतिस्तत्र राजपुत्र निवर्तते MBh. 5,7016. एवं तस्य तदा बुद्धिर्मयस्यां न्यवर्तत *war der Art in Bezug auf* 3, 2347. — 13) परा निवृत्ते क्रिया Rasn. 12,56 fehlerhaft für पुनरावृत्ते क्रिया oder परा वर्तिरे क्रियाः, wie die v. l. hat. निवृत्त R. 2,54,4 und Paṇḍar. 110,20 fehlerhaft für निर्वृत्त (so die Bomb. Ausgg.). निवृत्तास्य Harıv. 13891 fehlerhaft für विवृतास्य, wie die neuere Ausg. liest. भस्म निवृत्तो भूमिम् Suçr. 2,35,20 wohl fehlerhaft für भस्मनिवृतां भू°. — Vgl. निवर्तक fgg., निवर्तिन्, निवृत्, निवृत्ति, नीवृत्, दुर्निवृत्त. — caus. 1) *nach unten drehen* (den Kopf) TBr. 2,2,10,7. — 2) *kürzen, zurückschneiden* (die Haare): स वै स्येव वर्तयते केशाम्र वपते Çat. Br. 5, 5, 3, 6. VS. 3,63. TBr. 1, 5, 8, 1. यो ह्यस्याः पृथिव्यास्त्वचि निवर्तयत्योषधीः 4. लोहितायसेन निवर्तयते 6, 5. केशाम्निवर्तयीत श्मश्रूणि वापयीत (so) Âçv. Çr. 2, 16, 23. — 3) *zurückkehren machen, — heissen, zurückführen, zurückbringen:* (यज्ञवः) मघा नेमिं नि वावृतुः ṚV. 8,46,23. पुनर्नेना नि वर्तय 10,19,2. AV. 6,77,3. TS. 3,3,10,1. साम्नैव परमेण धनंजयम् । न्यवर्तयत MBh. 1,7972. 3,16808. 15, 497. 499. R. 1,1,37 (40 Gorr.). वनाद्भरतम् 2, 73, 22. fg. R. Gorr. 1,79, 33. 13,20. Rasn. 2,3. Çiç. 24,7. Kathâs. 13,30. 39,171. 53,99. 72,179. Râga-Tar. 2,163. Paṇḍar. 208,25. ed. ors. 4,6. Bhaṭṭ. 15,21. वाजिराजो निवर्तितः Mâlav. 90. Rasn. 7,41. रघुम् 3,47. R. 2, 46, 31. 60, 3. घोरकृच्छ्राद्धनम् MBh. 1,7764. — 4) *zurückhalten, abhalten, abbringen, ablenken von* (abl.) MBh. 2,1770. 5,1729. 7120. 7333. 7350. R. 2, 27, 15. R. Gorr. 2,27,26. 35,21. Rasn. 3, 43. 5, 50. Çiç. 16,19. 40,1. Kathâs. 22,178. 28,140. Bhaṭṭ. 3,8. 6,40. तपसस्तम् MBh. 1,2920. 7644. 5,7311. देवत्यागात् Kathâs. 57,172. Bhâg. P. 4, 8, 32. अघरात्कन्दुकाच्च करम् Kumâras. 5,11. असत्कुलंकारनिवर्तितः शिलीमुखः 34. धूमो निवर्त्येत समीरणेन Rasn. 7,52. व्यूहम् R. 5,83,3. क्रियमाणानि विषयैरिन्द्रियाणि M. 6,59. Vedântas. (Allah.) No. 12. नगेन्द्रसक्तां नृपस्य दृष्टिम् Rasn. 2, 28. 7, 20. चित्तम् Mârk. P. 40, 3. शकुन्तलाव्यापारादात्मानम् Çiç. 19, 1. ततो हृदयम् 53. यस्मादसदीप्सितान्मनः Kumâras. 5,73. दैवं पौरुषेण R. 2,23,21. R. Gorr. 2,20,24. 1, 60,27 (58, 24 Scrr.). दैवं पुरुषकारेण को निवर्तितुमुत्सहेत् MBh. 5,7215. Spr. 2033. दैवं लोकान्निवर्तितुम् R. Gorr. 2,20,33. तन्निवर्तय लङ्केशाद्दण्डमेतम् 7,22,45. — 5) *aufgeben, fahren lassen:* युद्धे बुद्धिम् MBh. 6,5604. सद्यैव सकामनिवर्त्य बुद्धिम् R. 2,102,9. R. Gorr. 2,21,5. 22. 3,61,31. मतिं परदाराभिमर्शनात् 56, 15. मतिं रामात् 5,25,5. किमात्मयोगेन निवर्तितेन 4,29,24. तस्मान्निवर्त्य ममताम् Mârk. P. 76,38. मयि भावो निवर्त्यताम् 74,31. निवर्तिताखिलाहार Bhâg. P. 1,13,53. *vorenthalten:* वया समुग्धतो दातुं कार्यं सो ऽर्घ्यो निवर्तितः Mârk. P. 69,51. यस्ते समुग्धतः शापो द्वितीयः स निवर्तितः *unterdrückt* 112,24. *Etwas rückgängig machen* M. 9, 233. Jîv. 2, 31. — 6) *aufhören machen, entfernen, beseitigen:* प्रकृतिम् Çiç. Ça. 9,1,3. निन्दां स्तुत्या Rasn. 13, 57. Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 16. Kull. zu M. 8, 351. शर्वाम् Sarvadarçanas. 57,17. 116,3. — 7) *verschaffen, verhelfen:* रूपं निवर्तयाम्यद्य तव कान्तम् Harıv. 587. Mârk. P. 106,38. — 8) *vollführen:* यज्ञम् R. 1,42,25 (43,22 Gorr., निर्वर्तयामास ed. Bomb.). 62,22. सर्वम् 2,22,4. 24. पितुर्न्यवर्तयच्छ्रीमान्निवापम् R. Gorr. 2, 111,24. निवर्तितात्मनियम Bhâg. P. 3, 16, 28. — 9) = simpl. *abstehen von Etwas* MBh. 5,7370. R. 7,83,19. — Vgl. निवर्तक fgg., निवर्तनीय fgg. und दुर्निवर्त्य. — desid. s. निविवृत्सु.

— घनुनि caus. *zurückbringen:* राज्यंतरस्य योनिम् Ait. Br. 5,1,4.

— अभिनि *heimkehren, einkehren bei, wiederkehren:* मदनोद्यानयात्रा-

भिनिवृत्त *heimgekehrt von* Milatin. 13,2. देवानां गतिरभि नो नि वर्तताम् RV. 1,89,2. तं कृत्ये ऽभिनिवर्तस्व AV. 10,1,7. absol. यभिनिवर्तम् TS. 6,4,11,4. Çat. Br. 12,8,2,30. Kâṭj. 27,9. act.: पुष्पफलनमभिनिवर्तति *wiederholt sich* Snaḍv. Br. 5,7. — caus. 1) *wiederholen* Gobh. 2,9, 18. — 2) *aufhören machen, entfernen:* श्रमं मानसम् Hariv. 11267.

— उपनि 1) *wiederkommen, sich wiederholen:* येन मूत्रेण निविदमतिपन्येत न तत्पुनरुपनिवर्तेत वास्तुरूपेव तत् *das kann nicht wiederkehren, es ist abgethan* Ait. Br. 3, 11. 39. RV. Prâtiç. 11, 30. उपनिवर्तमिव वै पशवः सोमवसे रमन्ते Çâṅkh. Br. 11, 3. — 2) *umkehren* so v. a. *anders werden, sich bessern* MBu. 12, 2882. स चेन्नो परिवर्तेत wohl richtiger ed. Bomb. st. स चेन्नोपनिवर्तेत der ed. Calc. — caus. *wieder herbeiholen* Ait. Br. 7,3.

— अभ्युपनि *wiederkommen, sich wiederholen* Çâṅkh. Br. 11,3.

— परिनि *vorübergehen, vergehen:* क्लेशाः परिनिवर्तन्ते केषांचिदमोक्षिताः Spr. 3990.

— प्रतिनि 1) *umkehren, zurückkehren, rückwärts gehen* MBu. 1,6941 (°वर्त्यैव). 4,1659. 7,1809. R. 7,27,18. 30, 4. 70, 4. Uttarar. 94,11 (122, 17. fg.). Kathâs. 85,25. Pañkat. 163,3. यतिर्द्वियस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते Spr. 134 (II). यत्येति रजनी या तु सा न प्रतिनिवर्तते 3426. यथा नद्यो प्रतिस्रोतःप्लावि द्रव्यं प्रतिहतं प्रतिनिवर्तते Suçr. 1, 317, 8. von der Vorhaut 296, 15. °वृत्त MBu. 1,6761. 13,1884. रणात् Hariv. 9046. Çiç. 28. प्रवासात् ed. Cu. 72, 6. मूर्योपस्थान° Vikr. 5, 5. Varâh. Bṛh. S. 11, 31. Uttarar. 93, 17 (122, 1). Pañkat. 257, 9. दोष Suçr. 2,353,18. °गुणप्रवाक् Bhâg. P. 3, 28, 35. — 2) *entrinnen, entgehen:* दिष्टात् MBu. 12, 1153. — 3) *aufhören, sich legen:* यावत्प्रतिनिवृत्तगुणोर्मिषड्क Bhâg. P. 2, 3, 12. — Vgl. प्रतिनिवर्तिन्. — caus. *zurückkehren machen, zurückführen:* यतो यातो नरेन्द्राणां सेनाः प्रतिनिवर्तिताः R. 4,27,3. *rückwärts gehen machen, zurückwenden, abwenden:* मनः पथश्च निभाभिमुखम् Mallin. zu Kumâras. 5,5. दृष्टिं ततः Bhâg. P. 11,13,35.

— विनि 1) *zurückkehren, umkehren* MBu. 3,8451. 4,1646. 5,7085. 6, 4989. 14,356. Spr. 3781. R. 2,25,2. R. Gorr. 2,1,35. fg. 3,5,6. 5,39,14. 7,23,33. Varâh. Bṛh. S. 11,39. act. MBu. 4,1381. युद्धात् 5,7315. R. 4, 40,69. विनिवृत्त Jîân. 1,325. Varâh. Bṛh. S. 3,4. 6,4. 11,39. विनिवृत्तो करोम्यद्य (= विनिवर्तयामि) कृतकर्णायनास्त्रिकाम् R. 1,28,10. Raçn. 8, 49. विनिवृत्ते दिनकरे प्रवृत्ते चोत्तरायणे MBu. 13,7702. — 2) *sich abwenden:* अधःप्रकर्षाद्विनिवृत्तदृष्टिः R. Gorr. 2,32,39. रावणाद्विनिवृत्तात्मा 5, 57,12 (st. dessen fälschlich विनिवृत्तार्था 66,14). विनिवृत्तमतिर्युद्धाद्भव (विनिवृत्त° gedr.) Mâṅk. P. 134, 56. सप्तद्रुपविनिवृत्ता (प्रकृति) so v. a. *befreit von* Siddhânt. 65. — 3) *abstehen von* (abl.) so v. a. *aufgeben:* देवनात् MBu. 2,2046. युद्धात् 5,7313. शीलयज्ञदानात् Hariv. 11268 (act.). तपसः R. Gorr. 1, 65, 23. 67, 10. स्वधर्मचरणाद्विनिवृत्तः 5, 81, 30. — 4) *weichen, aufhören, verschwinden:* गुरोर्दुष्टात् — गौरवं विनिवर्तते R. Gorr. 2,62,24. विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः Bhag. 2,59. सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते M. 5,60. यत्र चारित्रशैथिल्यं तत्र प्राप्य विनिवर्तते R. 2,73,19 (विनिवर्तितम् ed. Bomb.). Suçr. 2,372,18. Saṅvadarçanas. 67, 6. हुताशनः *so v. a. erlischt* Spr. 1832. विनिवृत्तशरादुःखं MBu. 14,361. नद्यः प्रस्रवणानां च विनिवृत्ताः सदर्दुराः R. 4,29,13. °काम Bhag. 15,5. °शापा Kathâs. 59,170. इक्ष्वाकुवंशजो राजा विनिवृत्तः स्वकर्मकृत् *aufgehört zu sein* Hariv. 4237. सायन्तने सवनकर्मणि संनिवृत्ते *zu Ende gegangen* Çiç. 75, v. l. — 5) *wegfallen, unterbleiben* Lâṭj. 10, 10, 11. Pân. bei Kull. zu M. 5, 84. — Vgl. विनिवृत्ति. — caus. 1) *zurückkehren machen, — heissen, zurückführen:* सार्थं वनात् R. 2,82, 17. fg. (88,16 Gorr.). Milatin. 169,13. रथं संयुगात् R. 6,89,13. सैन्यम् *zurückziehen* MBu. 5,7297. — 2) *sich abwenden machen, ablenken:* तेजोभिरस्य विनिवर्तितदृष्टिपातैः Mâlav. 11. गमने तु कृतां बुद्धिं न ते शक्नोमि विनिवर्तयितुम् R. 2,24,30. — 3) *Jmd von Etwas abbringen:* रामाभिषेकसंकल्पात् R. Gorr. 2,8,32. तपसः Mârk. P. 76,16. — 4) *aufgeben, fahren lassen:* ऋणोत्साहम् R. 3,33,4. स्नेहम् Spr. 3012. — 5) *aufhören machen, beseitigen:* निक्षिप्तापदः Verz. d. Oxf. H. 171,b,45. R. ed. Bomb. 2,73,23. Bhâg. P. 4,7,39. 10,29,30. Çiç. 185. यस्मादपत्यकामो वै भर्ता मे विनिवर्तितः *so v. a. weil mein Gatte dahin gebracht worden ist, dass er keine Nachkommenschaft mehr wünscht* MBu. 13,4005. *Etwas rückgängig machen* M. 8,165. शापम् MBu. 1,1001. Mârk. P. 115,3. यात्राम् Varâh. Bṛh. S. 95,25. तत्कर्म कृत्वा विनिवर्त्य भूयः Çvetâç. Up. = प्रत्यवेक्षणं कृत्वा Çâṅkh.

— संनि 1) *umkehren, zurückkehren* MBu. 3,40. 12231. 6,2250. 7,1164. Hariv. 8133. 10003. R. 1,42,4 (43,4 Gorr.). 2,45,2 (43,2 Gorr.). 4, 12, 33. 37,26. 40,70. 41,77. Kathâs. 61,65. धर्को ऽस्तं सैन्यवर्तत Bhâg. P. 7,2,35. act. MBu. 3,746. R. Gorr. 1,42,10. 4, 10, 33. संनिवृत्त MBu. 6, 2250. 18,6. प्रवासात् Hariv. 8806. R. 3,30,26. Raçn. 7,64. 16,44. Varâh. Bṛh. S. 17,9. Bhâg. P. 10,77,21. — 2) *sich zurückziehen:* गतमभिमुखं संनिवृत्तं तथैव चतुः Mnch. 90. *so v. a. stocken* (vom Winde) Suçr. 1,261, 12. 265,10. Hariv. 2189 (संनिवर्तयेत् die neuere Ausg.). — 3) *abstehen —, ablassen von* (abl.): मारुतात् R. 3,33,2. 43,29. तपसः Mârk. P. 99, 10. कश्मलात् Bhâg. P. 8,12,25. — 4) *weichen, aufhören:* संनिवृत्तपरिश्रम Bhâg. P. 8,20,10. — 5) *verstreichen* MBu. 14,367 nach der Lesart der ed. Bomb. — Vgl. संनिवर्तन, संनिवृत्ति. — 1) caus. *zurückkehren heissen, zurückschicken, zurückführen* MBu. 4, 6. Hariv. 2189 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 3,30,25. Bhâg. P. 1,10,33. 10, 19, 8. धन्ये संबन्धिनो विप्र मृत्युना संनिवर्तिताः *heimgeschickt* so v. a. *fortgeführt* Mârk. P. 76, 38. — 2) *ablenken, abbringen:* नहि सत्यात्मनः — संनिवर्तयितुं बुद्धिः शक्यते R. 2, 34, 32. इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः प्रियेभ्यः (so die ed. Bomb.) संनिवर्त्य MBu. 7,2090. मित्रमकार्यात् 5,3818. रामं वनवासकृतोद्यमम् R. Gorr. 2,16,39. — 3) *aufhören machen, unterdrücken:* तं घोषम् R. 2,81,4. अतिप्रसक्तिमिन्द्रियाणाम् Spr. 3750.

— निस् 1) act. *herausrollen lassen, auswerfen* (Würfel aus dem Becher) MBu. 4,24, wo die ed. Bomb. निर्वर्त्स्यामि st. निर्वर्तयामि der ed. Calc. liest. — 2) *hervorkommen, hervorgehen, entstehen, sich entwickeln:* कृत्स्नपादशिरसो यत्र पिण्डका निर्वर्तन्ते Suçr. 1,322,8. 9. द्रव्येषु पच्यमानेषु येऽग्न्वर्बुपृथिवीगुणाः। निर्वर्तन्ते ऽधिकाः 149,19. fg. *sich entwickeln zu, werden zu:* तस्य मातस्य तातस्य तेजो रसो निरवर्तताग्निः Çat. Br. 10,6, 5,2. तदण्डं निरवर्तत Kâṭh. Up. 3,19,1. निर्वृत्त *hervorgekommen, hervorgegangen, entstanden:* नवयौवननिर्वृत्तस्तन Bhâg. P. 8,8,43. मुद्गलाद्वस्य निर्वृत्ते गोत्रं मौद्गलसंज्ञितम् 9,21,33. कर्मनिर्वृत्तैः फलैः Raçn. 17,18. P. 4,2,68. 4,19. 5,1,79. AK. 1,1,2,16. 3,2,30. H. 1487. Vop. 7,75. द्वापञ्चाशद्भेन कुर्गाणि राज्ञा निर्वृत्तानि *so v. a. erbaut, angelegt* Inschr. in

Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Cl. 13. कारणेन निर्वृत्तं (so die ed. Bomb.) कृत्रिमम् (वैरम्) Pañcat. 110,20. — 3) *erfolgen, zu Stande kommen:* निरवर्त्स्यत वेहार्त्ता सीतायाः Bhatt. 8,69. निर्वर्त्स्यत्यृतुसंघातः 16,6. देशो निर्वृत्तसंग्रामः R. 3,70,10. नियोगार्थे निर्वृते M. 9,62. 61. वाक्यार्थविचारणाध्यवसाननिर्वृत्ता हि ब्रह्मावगतिः Çaṅk. bei Wind. Sancara 108. नार्थो निर्वृत्तम् Bhatt. 7,33. — 4) *vollbracht werden, sein Ende erreichen:* निर्वर्तितास्य पाद्धिरितिकर्तव्यता नृभिः M. 7,61. एवं मरुत्सवस्तत्र निर्वर्तते स्म Kathās. 23,86. निर्वृत्त *fertig, zurechtgemacht* Kir. Ç. 22,3,50. *ausgewachsen:* फल Suçr. 1,158,13. 159,18. *vollbracht, beendigt, zu Ende gegangen, vergangen:* कार्ये कर्मणि निर्वृत्ते R. ed. Bomb. 5,41,5. °चूडक M. 5,67. वेश्मदेव 3,108. विवाह MBh. 1,4067. स्वयंवर 3,2242. दोहद Milav. 80. निर्वृतमात्रे दिवसे R. ed. Bomb. 2,54,4. Çiçup. Gaṇ. 1,18. 2,12. — 5) *zurückkehren*, fehlerhaft für निवर्त् MBh. 5,5861 (निवर्तिष्ये ed. Bomb.). Kathās. 26,114. Pañcat. 1,14,68. — 6) निर्वृत्त fehlerhaft für निर्वृत MBh. 1,775 (निर्वृता ed. Bomb.). Kām. Nītis. 4,20. — Vgl. निर्वृत्ति. — caus. 1) *herausbringen, herausschaffen:* षड्भागान् Çat. Br. 12,8,4,6. Kir. Ç. 25,11,35. यस्य निर्वर्तयिष्यन्ति शत्रुमांसानि दानवाः *fortschaffen, fortbringen* Harīv. 13736 nach der Lesart der neueren Ausg. *hinauslassen aus* (abl.) Rāja-Tar. 6,96, wo wohl निरवर्त्यत zu lesen ist. — 2) *hervorbringen, zu Stande bringen, bewirken:* einen Wagen ṚV. 10,135,5. मुखबाहूरुपादतः । ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत् ॥ M. 1,31. Vārtt. zu P. 3,2,1. ऋते वर्षाम्र कौन्तेय ज्ञातु निर्वर्तयेत्फलम् (क्षेत्रम्) MBh. 5,2824. 3,9993. Harīv. 3931. Sarvadarçanas. 22,1. सर्वभूतिम् R. 4,29,8. यभिलाषपूरणमुखम् Mālāv. 73. मदीयेन शरीरवृत्तिं देहेन निर्वर्तयितुम् Nāgān. 2,15. Çaṅk. zu Khānd. Up. S. 44. Bhāg. P. 1,17,25. — 3) *vollbringen, vollführen:* पितृयज्ञम् M. 3,122. R. ed. Bomb. 1,41,24. क्रियाः Nāgān. 11,30. Rāja-Tar. 1,73. समाधिम् Mṛicch. 9,14. मध्याह्नसवनम् Kathās. 69,167. शरीरचित्ताम् Jāṭ. 1,98. शौचम् MBh. 12,2. विवाहम् Harīv. 10900. R. 1,69,12. R. Gorr. 1,71,14. Nāgān. 3,33. Kathās. 14,32. 34,235. नियमाभिषेकम् Nāgān. 5,8. 14,7. सपर्याम् 16,39. शिरश्छेदकार्यम् 15,103. Vikr. 87,15. Kathās. 20,98. 220. Prab. 30,4. Bhāg. P. 6,7,36. 9,13,2. 4. Bhatt. 6,142. Pañcat. 98,18. यात्राम् Spr. 3686. प्रतिज्ञाम् R. 1,66,11. — 4) *zu Ende bringen, zubringen:* मङ्गलोदयं तदहो निरवर्तयत् Rāja-Tar. 3,247. — 5) *erfreuen, zufriedenstellen* Bhāg. P. 9,14,24. यनिर्वृत्य (von 1. वृ mit निस्) ed. Bomb. — Vgl. निर्वर्तक fgg.

— यभिनिस् *hervorgehen, sich entwickeln* MBh. 10,79. यभिनिर्वृत्त *hervorgegangen, entstanden:* एतन्नामाभिनिर्वृत्तं तस्य देशस्य MBh. 1,284. 367. 12,6930. 14,2858. Suçr. 1,31,18. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 45. 83. Schol. zu P. 6,4,126. यनभिनिर्वृत्तत्व zu 6,1,101. — Vgl. यभिनिर्वृत्ति. — caus. 1) *hervorbringen* Harīv. 11817. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 83. — 2) *vollbringen, vollführen:* गुर्वर्थम् MBh. 14,1666.

— उपनिस् caus. *Etwas erzeugen an* Suçr. 1,260,12.

— विनिस्, partic. विनिर्वृत्त 1) *hervorgekommen, hervorgetreten aus:* स्वशरीराद्विनिर्वृत्ताश्चत्वार इव वाक्यवः R. 2,1,5. — 2) *zu Ende gekommen, beendigt* Jāṭ. 2,31. — 3) fehlerhaft für विनिवृत्त Draup. 4,3 (MBh. 3,13613 विनिवृत्त). Mārk. P. 134,33.

— परा 1) *sich umwenden, umkehren, den Rücken kehren:* zurückkehren M. 3,217. R. 7,48,24. युद्धात्परावृत्य किं पलायसे MBh. 4,2101. परावृत्य स्वमेवाश्रममतुर्गृहम् Kathās. 63,26. Mṛicch. 119,13. Çiç. 54,7. 70,14, v. l. Milav. 13,21. 51,20. Kathās. 62,85. Daçar. 1,39. Sin. D. 425. परावृत्त M. 7,93. fgg. MBh. 3,11721. 4,1093. 7,1254. 7703. 9,3607. Çiç. 72,1. Kathās. 18,228. 72,373 (impers.). Bhāg. P. 7,5,34. Kusum. 28,4. Schol. zu Naish. 22,42. यधोघः (d. i. ब्लोघः) स परावृतः प्रतिकूलेन वायुना Kathās. 46,139. उपरि° *nach oben gewandt* Daçar. 91,3. यर्थं च परावृत्तं प्रवमनादकृतादिव *zurückgekehrt* Rāja-Tar. 1,330. रमायनपरावृत्तरूप Kathās. 40,72. परावृत्तं यौवनम् Prasāṅgar. 40,16. यपरावृत्तभागधेय so v. a. *Unglücksvogel* Vikr. 55,10. — 2) *sich abwenden von:* परावृत्तधियो स्वलोकात् Bhāg. P. 11,22,32. तत्तः परावृत्तधियः 33. *abstehen von:* परावृत्य मरणात् Kathās. 59,114. — 3) *schwinden, vergehen:* परावृत्तार्धरात्रे R. 5,13,23. परावृत्तगुणाधमे Bhāg. P. 3,33,37. — 4) परावृत्त *sich wälzend* AK. 2,8,2,18. n. *das Sichwälzen* H. 1245. — 5) परावृत्त Z. d. d. m. G. 7,311 fehlerhaft für पुरावृत्त. — Vgl. परावर्त fgg. und परावृत् fg. — caus. *bei Seite wenden:* परा दः पत्स्यो दृश नरो वर्तयथा गुरु ṚV. 1,30,3. *umkehren lassen* MBh. 7,9201 (परिवर्तय ed. Bomb.).

— पारि 1) *sich drehen, sich in einem Kreise bewegen; umwandeln:* चक्रम् ṚV. 1,164,13. कालचक्रवत्परिवर्तमानः Suçr. 1,19,20. चक्रवत्परिवर्तन्ते MBh. 13,2360. सुखदुःखे — चक्रवत्परिवर्ततः Spr. 3264. चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च 3261. MBh. 4,607. एवं संसारचक्रस्य परिवर्तं विदुर्बुधाः 11,162. रथस्त्रिचक्रः परि वर्तते रजः ṚV. 4,36,1. Çat. Br. 12,3,2,7. 14,7,2,20. रथमरुन्माणि पर्यवर्तन्त MBh. 3,12330. सैरो रथः Bhāg. P. 5,21,12. ज्योतींषि चन्द्रसूर्यौ च परिवर्तन्ति नित्यशः MBh. 5,5535. यधो विवस्वान्परिवर्तमानः Kumāras. 1,15. परिवर्तत मेदिनी MBh. 14,118. Gaurīçikh. Karmakhaṇḍa. 4. वज्रः मगत्तात्परिवर्तमानः Bhāg. P. 6,12,33. परिवर्तम् *im Kreislauf* Pañcat. Bṛ. 2,2,2. यस्मात्प्रपञ्चः परिवर्तते ऽयम् Çvetāçv. Up. 6,6. वेदिम् Çiçup. Ça. 17,15 f. देवम् Bhāg. P. 3,4,20. *sich wälzen:* भूमौ R. 5,94,10. 76,44 (act.). परिवृत्तोर्मि *rollend* 3,60,19. 5,93,20 (सधूम: zu lesen). 6,86,41. परिवृत्तनेत्र 2,65,46. 6,12,2. 39,16. परिवृत्तार्गल *umgedreht* Harīv. 3485. — 2) *umherreisen:* वनपदे Çat. Br. 14,5,1,20. *umhergehen, hinundhergehen, sich tummeln, sich hinundherbewegen* MBh. 4,2014. 6,2309. 8,3264. 14,228. 1296. Harīv. 5794. R. 1,9,42. Bhāg. P. 5,14,5. खेचरः MBh. 1,1498. नभसि यथा मेघाः श्येनादयो वायुवशाः परिवर्तन्ते Bhāg. P. 5,23,3. वदन्मूत्रं पुरीषं चाप्यपानः (so die ed. Bomb.) परिवर्तते MBh. 12,6871. प्राणो ऽस्य प्रथमं स्थानं वर्धयन्परिवर्तते (परिवर्धते die ältere Ausg.) Harīv. 2188. वनवासस्पृहा नित्यं हृदि मे परिवर्तते R. Gorr. 2,29,9. तस्याश्च भर्ता द्विगुणं हृदये परिवर्तते R. Schl. 1,77,27. यवमानकृतः क्रोधो मन्युर्मे (sc. हृदि) परिवर्तते 4,34,21. परिवृत्ततेजम् *nach allen Seiten verbreitet* Bhāg. P. 1,11,35. — 3) *sich umwenden, sich umkehren:* पृष्ठतः MBh. 1,7704 (act.). 4,2107. युद्धाय Harīv. 10387. R. 4,37,25. Mṛicch. 81,16. Nāgān. 4,72. Vikr. 12,18. Milav. 17,7. Spr. 1230. Sin. D. 60,9. Kathās. 64,35. Rāja-Tar. 4,429. Pañcat. 159,21. Hit. 47,19, v. l. 38,11. यदा च सर्वभूतानां छाया न परिवर्तते । यपराह्णगते समये Harīv. 12805. परिवृत्त MBh. 7,3248. परिवृत्तार्धमुखी Vikr. 17. यपसव्य° Varāh. Bṛ. S. 30,9. परिवृत्तो हि भगवान्मरुत्सार्गुर्दिवाकरः MBh. 13,7731 (vgl. 7702). प्रियया तदङ्गपरिवृत्तमाप्तुयाम् Milatim. 76,10. °सुजातबाहु Pañcat. 3,5,12. किरीट *umgedreht*

MBu. 7, 1369. पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखे किं परिवर्तते *kehrt schwer zurück* Çix. 172. *sich zurückwenden zu, sich zurückbegeben zu* (acc.) MBu. 12,896. — 4) अन्यथा *sich anders wenden, einen Wandel erfahren* Spr. 3409. नहि तावदतं किंचिदन्यथा परिवर्तते R. 4,21,15. Vikr. 132. auch ohne diesen Beisatz: देवदेवाः) न कल्पपरिवर्तेषु परिवर्तन्ति ते तथा MBu. 3,15462. म चेन्नो परिवर्तेत (so die ed. Bomb.) *wenn er sich nicht ändert, wenn er kein anderer Mensch wird* 12,2882. — 5) *verweilen, sich befinden:* शतं वर्षाणि तामिस्रे नरके M. 4,168. MBu. 13,1902. fgg. स्वगृहे R. 6,98,10. यद्धे तु परिवर्तन्ती सीता R. Schl. 2,96,17. व्याहितास्यस्य यो मृत्योर्दंष्ट्राये परिवर्तते Harîv. 10286. एवमेकत्वेन परिवर्तमानः Kapila 1,153. स्त्रीस्वभावात्तु मे बुद्धिः कारुण्ये परिवर्तते R. 6,95,33. Harîv. 11215. (act.). — 6) *währen, dauern:* योगशतपरिवृत्तैरन्योऽन्यकृत्यैः Çix. 193, v. l. — 7) *ablaufen, verlaufen, verfliessen:* परिवृत्तं युगम् Harîv. 6479. Verz. d. Oxf. H. 54,a, No. 104, Z. 6. परिवृत्ते ऽहनि MBu. 3,11347. Brahma-P. in LA. (III) 35, 15. 18. — 8) *schwinden:* किंचित्परिवृत्तधैर्य Kumâras. 3, 67. परिवृत्तभाग्या Milatîm. 164, 10. — 9) *sich benehmen, verfahren:* सम्यक् R. Gorr. 2,17,32. — 9) trans. *umdrehen, umwenden:* पादौ Mṛicch. 81, 18. — 10) परिवृत्त = परिवृत *umringt, umgeben* Hariv. 4,27. — Vgl. परिवर्त fgg. und परिवृत्त fgg. — caus. 1) *sich drehen lassen, in die Runde bewegen:* मन्दरः परिवर्त्यताम् MBu. 1,1143. परिवर्तित n. nom. act. Bâlar. P. 5,14,23. भूमाविदं च परिवर्तितम् *die Stelle, wo er sich auf dem Boden gewälzt hat,* R. Gorr. 2,96,2. यद्धर्मः पर्यवर्तयदुत्तान्पृथिव्या दिवः *wenn der Gharma Erde und Himmel umfuhr* (also oig. इमं पर्यवर्तयत्) TBr. 1,5,5,2. — 2) *umdrehen, umwenden:* रथम् MBu. 8, 4989. Mṛicch. 108, 19. वाहिनीम् MBu. 7, 9202 (auch 9201 nach der Lesart der ed. Bomb.). परिवर्तितवाहन Rasu. 9,25. नामूयमाननमितः परिवर्तयत्या Milav. 67. Kâty. Çr. 6,9,17. घृतपात्रम् Gorr. 2,10,9. पात्रम् Kathâs. 61, 191. किरीटं परिवर्तितम् MBu. 7, 1268. *umwerfen:* शकटम् Harîv. 3408. 3411. *verdrehen:* स तां वाचं गुरोः पत्न्या विपुलः पर्यवर्तयत् MBu. 13,2330. med. *sich umwenden, den Kopf herumwenden* TBr. 2,2,10,7. *zu sich umwenden machen:* पुरु सहस्रा परि वर्तयाते *so v. a. er zieht die Blicke vieler Tausende auf sich* RV. 5,37,3. — 3) *umwickeln, einwickeln:* पलाशवृत्तेनास्थीनि Kâty. Çr. 25,8 1. — 4) *umherbewegen* Maitrâyan. 6, 21. Harîv. 2187. — 5) *vertauschen, umwechseln, wechseln:* उग्रसेनस्य वै रूपं कृत्वा स्वं परिवर्त्य च Harîv. 4014. परिवर्तितवासस् Kâm. Nîtis. 7,45. Varâh. Bṛih. S. 77, 14. Kathâs. 110, 75. Mârk. P. 51, 13. कृतानं चाकृतान्नेन Kull. zu M. 9, 219. ein Document gegen ein anderes *vertauschen* so v. a. *erneuern* M. 8, 154. fg. — 6) *um und um drehen* so v. a. *zu Grunde richten, zu Nichte machen:* जगत् R. Gorr. 2, 20, 34. 2,69,27. 4,26,15. 5,18,33. प्रत्यूहाः परिवर्तिताः Mârk. P. 16,38. भयेन परिवर्तितसौकुमार्या Mṛicch. 9, 18. — 7) *um und um kehren* so v. a. *genau durchsuchen:* गुहाश्च विविधाकाराः संक्रमाः परिवर्तिताः R. 4,47, 13. — 7) med. *sich rundum* (das Haar) *schneiden* TBr. 1,5,8,1. 3. Çat. Br. 2,6,2,16. fg. 4,5. — Vgl. परिवर्तक fgg. — intens.: वर्वर्त्ति चक्रं परि द्याम् *dreht sich beständig* RV. 1,164,11.

— अनुपरि *sich wiederholen* Çat. Br. 14,9,4,19.

— विपरि 1) *sich drehen, sich im Kreise bewegen:* जगत् Bhag. 9,10. *sich wälzen:* भूमौ M. 6,22 (= MBu. 12,9294). R. 2,72,26. — 2) *umherfahren:* नावं न शक्यमारुह्य स्थले विपरिवर्तितुम् Spr. 4439. *umherwandern:* दशमकासर्गेषु विपरिवर्तमानेन मया Wilson, Sel. Sel. 8. 25. एवं हृदि सदा तस्य बुद्धिर्विपरिवर्तते *im Herzen herumgehen* R. Gorr. 2, 1, 19. — 3) *sich umwenden:* विभावसुः प्रज्वलितो वामं विपरिवर्तते MBu. 16,44. — 4) *sich umwandeln, sich ändern:* सा तु बुद्धिः कृताप्येवं पाण्डवान्प्रति मे सदा । दुर्योधनं समासाद्य पुनर्विपरिवर्तते ॥ MBu. 5,1568. — 5) *beständig heimsuchen,* mit acc.: दुःखं ह्यनान्विपरिवर्तते Spr. 4964. — Vgl. विपरिवर्तन, °वृत्ति. — caus. *umdrehen, hinunterführen:* चक्राणि Lâṭ. 10,5,13. *umwenden, abwenden:* विपरिवर्तिताधर Raghu. 19, 27. सव्यापसव्यं कृत्वा वेषं विपरिवर्त्य च *umdrehend, umwendend* MBu. 4,309.

— संपरि 1) *sich drehen:* चक्रम् Jâân. 3,124. MBu. 1,10. *sich drehen um* (acc.) 13,1091. *sich wälzen* 7,8146. *rollen* vom Auge Mârk. P. 43, 30 = Verz. d. Oxf. H. 51,b,32. हृदि *im Herzen herumgehen:* कार्यं मे काङ्क्षितं किंचिद्धृदि संपरिवर्तते MBu. 1,5316. 5687. 3,1436. 13,127. 2333. Harîv. 10087. R. 2,1,24. यद्यपि तन्मनसि संपरिवर्तते मे Kâdab. 11. — 2) *umkehren, heimkehren* R. Gorr. 2,93,12. — 3) *sich frei machen von* (abl.) Bâlar. P. 5,5,9. — 4) संपरिवृत्तनाभि Sûçr. 1, 277, 1 wohl fehlerhaft für संपरिवृत्त°. — caus. *herumführen:* रथादिमुच्य भ्रातान्कृपान्संपरिवर्त्य शीघ्रम् । पीतोदकास्तोयपरिप्लुताङ्गानचारयद्वै तमसाविदूरम् ॥ R. 2,45,33.

— प्र 1) *in eine rollende Bewegung gerathen, in Gang kommen:* स्वामिसेवकयोरेवं वृत्तिचक्रं प्रवर्तते Spr. 212. प्रवृत्तो ऽमृतरोरवः *so v. a. ist vorgefahren* Kâṭh. Up. 5,13,2. *in Umlauf kommen, sich verbreiten:* ततः प्रभृति एतत्पञ्चतन्त्रकं नाम नीतिशास्त्रं बालावबोधनार्थं भूतले प्रवृत्तम् Pañcat. 5, 13 (ed. orn. 2, 18). यः प्रवृत्तां श्रुतिं दूषयति MBu. 13,1662. — 2) *aufbrechen, sich auf den Weg machen, sich begeben:* प्रावृतदृक्षात् Bhatt. 15,7. इतः प्रवृत्तैव Milatîm. 91,11. R. 5,27,21. देवालयं स्त्री प्रयता प्रवृत्ता Varâh. Bṛih. 27 (23), 8. लोकान्समाकर्तुमिह प्रवृत्तः Bhag. 11,32. यो मत्यापप्रबुद्ध्यर्थमिह प्रवृत्तः Spr. 3340. वने प्रवृत्तामिव नीलकण्ठीम् R. 5,11,23. दक्षिणेन प्रवृत्ता वाताः Megh. 106. तावत्प्रावर्ततां तस्य चक्षुषी *so lange richteten sich seine Augen dahin* R. Gorr. 2,41,3. — 3) वर्त्मनि, वर्त्मना, पथा *auf einem Wege sich fortbewegen, auf dem Wege* (oig. und übertr.) *bleiben* R. 2,59,5. Daçak. 69,1. Kathâs. 41,57. घनेन प्रवर्तते न क्षातु Ragh. 17,54. — 4) *hervorkommen, heraustreten, auftreten, hervorbrechen, hervorgehen, entstehen, entspringen, zu Stande kommen, erfolgen, eintreten, geschehen:* तासामथद्भया शृङ्गाणि प्रावर्तन्त । ता एतास्तूपराः *es entstanden ihnen nicht eigentlich Hörner* (nur Erhöhungen) Âit. Br. 4,17. VS. 28, 19. धाराः Gorr. 4,7,2. त्वं हि त्रिपथगा देवो ब्रह्मलोकात्प्रवर्तसे R. Gorr. 2,32,20. ततः प्रवृत्ता सरयूः 4,44,32. कृतेर्वो रेणुरेवैः प्रावर्तत महानदी Harîv. 13814. तस्यास्त्वातु प्रवृत्तेन रुधिरौघेन R. 4,9,19. तस्य दृष्ट्यामवारितम् । घर्मं प्रवर्तते Kathâs. 13, 126. स्त्रीणां पुष्पम् Mârk. P. 51,42. सर्वेभ्यो हि — प्रवर्तन्ते क्रियाः सर्वाः पर्वतेभ्य इवापगाः Spr. 227. प्रवृत्ता वाणी मे मुखात् 4390. प्रवर्तते ऽन्यथा वाणी शाठ्योपरक्तचेतसः 137. यावत्सर्वज्ञनानन्ददायिनी वाक्प्रवर्तते *so v. a. ertönt* 4123. प्रवृत्तवात् 4389. Mârk. P. 72,27. तयोः संवदतोः नूनं प्रवृत्ता रुचिराः कथाः Bâlar. P. 3,20,5. प्रवृत्तो मे श्लोकः R. 1,2,21. 34. तत्तोत्स्वनाः कर्णसुखाः प्रवृत्ताः 5,11,9. प्रवृत्तास्तत्र ते ऽग्नयः 4,44,50. प्रवर्तमानं च न दृश्यते रजः *aufsteigend, sich erhebend* Çix. 169. रिपुः Kâm.

Nitis. 8,66. मत्तः सर्वं प्रवर्तते Bhag. 10,8. Śiksham. 23. यत्संकल्पितमेवेदं पदकात्प्रवर्तते R. 2,22,24. तस्य कामः प्रवर्तते मरुते ऽग्निरिवोत्थितः MBh. 1,4871. कामं प्रवर्तताम् 12,1064. कूरं प्रवर्त्स्यते 2,658. Verz. d. Oxf. H. 50,b,36. fg. उत्पाताः प्रावर्तंस्तस्य Bhatt. 15,26. धर्मकामार्थसिद्धिश्च कोशादेतत्प्रवर्तते Kām. Nitis. 13,22. Spr. 53 (II). 4835. Sarvadarçanas. 60,11. मरुत्रान्विग्नः R. 1,61,2. मरुत्रान्विमर्दः R. Gorr. 1,63,2. परिक्रामः Çic. 10,12. धनुषरं संस्मरणप्रवृत्तम् Kumāras. 3,3. Daçak. 94,11. प्रीतिं पूर्वप्रवृत्तां मे संवर्धयितुमर्हसि R. Gorr. 1,70,13. संमानश्चावमानश्च लाभालाभौ तथेदृशौ । प्रवृत्तानि निवर्तन्ते Spr. 3186. Çvetāçv. Up. 2,12. सम्यग्योगः प्रवर्तते Maitrāyan. 6,28. प्रजनं न प्रवर्तते M. 3,61. त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते 9,186. Bhag. 17,24. Hariv. 296 (act.). R. 3,71,13. 4,7,9. द्विविधः प्रवर्तते सर्गः Śiksham. 24. 52. Spr. 139. 2016. 4814. L.A. (III) 87,2. Schol. zu Kāty. Ça. 3,3,1. zu P. 1,4,59. Çāṅkh. Ça. 3,2,1. 3,1. 13,3,1. Sarvadarçanas. 164,16. fg. 20. Comm. zu Nyāyas. 2,1,43. गुरोरपत्र परीवादो निन्दा वापि प्रवर्तते Spr. 4029. 4421. 4785. Mārk. P. 16,35. प्रजासु ते कथिदपचारः प्रवर्तते Ragh. 15,47. प्रवृत्त zu *Stande gekommen, erfolgt, geschehen* MBh. 4,111. 5,7534. Hariv. 11137. Çik. 31,3. Bhāg. P. 1,10,3. *da seiend* R. 2,77,23. Spr. 318. कूपः प्रवृत्तपानीयः MBh. 13,3292. यथा दृष्टिः प्रवृत्ता मे so v. a. *wiedergekehrt* 3,16874. — 5) *beginnen, einen Anfang nehmen:* एवं प्रववृते युद्धम् MBh. 4,1846. R. 4,9,75. Ragh. 12,72. Kathās. 47,30. Rāja-Tar. 6,243. Mārk. P. 82,38. Prab. 87,10. पक्षः R. 1,60,8 (62,8 Gorr.). कर्म 61,8. यात्रामहोत्सवः Rāja-Tar. 1,222. Bhāg. P. 3,11,32. भूतम् MBh. 3,2298. 3035. 3037. 3047. क्षेमस्य R. 3,22,1. Vaitān. Bṛh. S. 8,37. Rāja-Tar. 3,168. कृतम् (युगम्) MBh. 3,13099. संध्या 1,6038. R. 1,25,2. प्रवृत्त *begonnen* Bhag. 1,20. MBh. 3,1843. 5,6088. 13,7702. 7711. R. 2,66,23. R. Gorr. 2,96,28. 3,67,10. 4,25,12. 5,89,11. Çik. 4,4. Mālav. 17,18. Vaitān. Bṛh. S. 8,28. Kathās. 4,23. 42,131. Rāja-Tar. 4,114. 5,329. Daçak. 77,11. Vop. 6,33. 38. — 6) *beginnen —, anfangen —, anheben zu;* mit infin.: तस्यामेव प्रववृते गन्तुं तद्वरुं दिशि Kathās. 26,12. मेघः प्रववृते ऽत्र धारासारेण वर्षितुम् 12,110. ततः प्रावर्तत जवाद्वक्तुं सागरगामिनी Rāja-Tar. 5,93. ब्रह्मविद्यां वक्तुं लब्धावसरा श्रुतिः प्रववृते Kaush. Up. Einl. प्रववृते देवं पूजयितुं हरम् Kathās. 11,67. 12,106. 13,31. 83. 129. 18,157. 22,201. 24,224. 26,134. 27,184. 29,75. 32,44. 33,136. 36,115. 126. 43,199. 52,162. 64,34. Bhatt. 14,95. यथाकस्मात्प्रववृते (impers.) तथा माध्या प्रेरयितुम् Kathās. 10,36. प्रवेष्टुं प्रवृत्तवान् 42,126. वातश्च तत्क्षणं वातुं प्रवृत्तो ऽभूत् 44,126. इमं पाययितुं लोकान्प्रवृत्ता भगिनी मम R. Gorr. 1,36,9. 5,11,9. R. Schl. 2,64,45. Ragh. 13,14. Çik. 126. Vikr. 90. Kathās. 2,79. 9,57. 13,129. 25,18. 26,127. 27,166. 29,192. Bhāg. P. 3,10,20. — 7) *sich anschicken zu, gehen —, sich machen an, sich hingeben;* mit dat.: क्रियाविघाताय Ragh. 3,44. उदारदारीपूरणाय Spr. 1785, v. l. Mālatīm. 4,4. Prab. 14,6. तदर्थव्याख्यानाय ब्राह्मणं प्रवर्तते Çaṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 267. तपसे Kumāras. 5,33. प्रकृतिस्थिताय Çik. 194. षडन्यः कर्मभ्यः MBh. 13,1866. मैथुनाय Bhāg. P. 9,20,36. mit अर्थम्, लोकस्य स्थितकामार्थं प्रवृत्ता भगिनी मम R. 1,35,9. उदकपानार्थम् Sāj. zu ṚV. 1,32,5. mit loc.: अन्याये M. 9,292. पैशुन्ये MBh. 13,5868 (act.). अकार्येषु Kām. Nitis. 1,60. क्रियायाम् Spr. 51 (I). अकुत्सिते कर्मणि 2717. क्रियासु Śiksham. 58. वाणिज्ये Kathās. 26,126. अस्मिन्नर्थे Daçak. 66,12. P. 3,2,134, Schol. अग्निहोत्रादौ Sarvadarçanas. 3,6. श्रवणे प्रवर्तमानता 56,12. मनस्तेषु प्रवर्तताम् so v. a. *richte sich darauf* MBh. 3,2165. Çik. 25,8. शंभुना साधनेन मुकुन्दे प्रवर्तते so v. a. *sein Sinnen und Trachten ist gerichtet auf* Vop. 5,24. निग्रहे ऽपि समर्थस्य तस्य पापस्य — प्रावर्तत न मे बुद्धिस्तदा R. 4,8,56. न तस्य कामः कामेषु पापकेषु प्रवर्तते MBh. 3,1877. प्रवृत्त *begriffen in, beschäftigt mit, hingegeben, obliegend:* परदाराभिमर्शेषु M. 8,352. वार्यर्गलाभङ्गे Ragh. 5,45. संगरे Sarvadarçanas. 41,6. häufig in comp. mit der Ergänzung: वेणुशय्याप्रवृत्त R. 5,13,47. कामकार° 2,22,8. कार्य° Kathās. 32,92. क्रूर° 39,231. होमकर्म° 45,42. 46,88. श्लक्ष्णक्रीडा° 56,248. प्रमद° 614. कुलस्त्रय° Prab. 12,12. Hit. 68,13. Pañcat. 248,7. धर्म° MBh. 14,75. न्याय° Kām. Nitis. 1,13. आर्य° R. Gorr. 2,126,6. वधप्रवृत्तस्य वधानुत्पादे प्रायश्चित्तम् so v. a. *einen Mord beabsichtigend* Verz. d. Oxf. H. 87,b,14. — 8) *sich an Jmd* (loc.) *machen, feindselig gegen Jmd auftreten, sich vergreifen an:* एते न (so ist zu trennen) वक्तुं मन्यते न प्रवर्तन्ति चापरे MBh. 13,2025. नाग्निरग्नौ प्रवर्तते R. 5,51,16. किम् — रात्रिंचरेषु गरुडः प्रवर्तते Ragh. 11,27. auch mit acc.: यांस्त्वं मोहादवमन्य प्रवृत्तः MBh. 3,15714. अन्योऽन्यम् so v. a. *unter einander Unzucht treiben* Spr. 4815. — 9) *verfahren, zu Werke gehen;* mit loc. der Person: मयि मिथ्या MBh. 3,2414. यथान्यायम् 5,7031. यथा R. 4,16,23. एवम् Kathās. 4,34. अन्यथा Mārk. P. 28,36. सर्वकार्येषु स्वेच्छातः Hit. 69,19. उत्क्रम्य हि स्थितिं देवीं (so die neuere Ausg.) प्रवर्तामि Hariv. 7258. Nyāyas. 1,1,24. Sarvadarçanas. 113,16. 121,4. एवं प्रवृत्तः so *verfahrend* MBh. 1,7662. Hariv. 3787. 7298. कामतम् M. 3,12. दिष्ट्या (so die neuere Ausg.) Hariv. 7304. साधु Kām. Nitis. 18,68. सु° Hariv. 3174. अ° *schlecht verfahrend* MBh. 13,6695. mit instr. *bei seinem Verfahren Etwas anwenden:* यया वृत्त्या Kām. Nitis. 5,80. वित्तेऽया Comm. zu Nyāyas. S. 3, Z. 1 v. u. मायया Bhatt. 9,56. धारणाभावेन Tattvas. 15. त्रिभिः कर्मभिः M. 4,9. गुणैः Bhāg. P. 1,5,16. वचाचैव प्रवर्ते ऽहम् so v. a. *ich richte mich nach deinen Worten* Kathās. 24,57. mit loc.: वाक्ये मघिणाम् Spr. 1358. mit abl.: मयि लोभात्प्रवर्तसे Hariv. 9227. क्षमात् Kathās. 32,93. — 10) *wirkend auftreten, seine Wirkung äussern; zur Geltung —, zur Anwendung kommen:* स्वभावः Bhag. 5,14. तस्यैवाज्ञा प्रवर्तताम् R. 2,38,20. Spr. 1383. Schol. zu P. 7,1,86. Comm. zu Nyāyas. 1,1,1 (S. 3, Z. 9). कुशलपदं प्रवीणे वर्तमानम् *die Bedeutung von* प्रवीण *habend* Sarvadarçanas. 172,18. 161,10. mit ablat.: कारणमस्त्यव्यक्तं प्रवर्तते त्रिगुणतः समुदयाच्च । परिणामतः Śiksham. 16. प्रवृत्तं कर्म *eine auf ein bestimmtes Ziel gerichtete Handlung, eine Handlung, von der man sich einen Vortheil verspricht* M. 12,88. fgg. Bhāg. P. 4,4,20. 7,15,47. 49. 4,29,13. *dienen —, verhelfen zu* (dat. oder mit अर्थम्) Comm. zu Nyāyas. 2,1,55. Sarvadarçanas. 152,11. fgg. — 11) *fortbestehen, fortwähren* Sarvadarçanas. 115,21. 168,9. mit einem partic. praes. *fortfahren Etwas zu thun:* वर्षस्तत्र प्रववृते तदा Hariv. 7706. भतयत्तः प्रवर्तते 15268. कूपः सुप्रवृत्तो नित्यशः so v. a. *stets in guter Ordnung befindlich* MBh. 13,3292. — 12) *werden zu* (nom.): कौशिकी परमोदारा सा प्रवृत्ता महानदी R. 1,35,8. — 13) *vorhanden sein, da sein* Bhāg. P. 2,9,10. द्रष्टुमेतां मम मक्षीमतीवेच्छा प्रवर्तते Mārk. P. 61,14. 133,1. यतो ममापि मक्षदुःखं प्रवर्तते Pañcat. 114,18. — 14) als transit. = caus. *vollbringen, vollführen:* एवंविधानि कर्माणि प्रावर्तत R. 7,36,20.

समहा कृसितं किंचिदुक्तं वापि कर्मणा । रुद्रस्यमरुत्स्य वा न प्रवर्तामि सर्वदा ॥ MBu. 13,5869. *zukommen lassen, gewähren:* कस्मिन्नहानि ब्राह्मणानां यथावत्प्रवर्तते पूर्ववत्तात वृत्तिम् 5,699. — 15) प्रवृत्त wohl fehlerhaft für अपवृक्त (= परिसमाप्त Comm.) Nir. 1, 9. für प्रवृत्त Âçv. Gṛhj. ed. St. 4,2,9. für प्रनृत्त Ind. 5,28 (MBu. 3,1844 richtig). Kathâs. 45, 332. — Vgl. प्रवर्त, प्रवर्तमानक, प्रवर्तितव्य (न पुनरेवं प्रवर्तितव्यम् Çik. 79,6), प्रवर्तिन्, प्रवृत्, प्रवृत्त (प्रवृत्ता N. pr. einer Unholdin Mân. P. 51,43, wo प्रवृत्ता st. प्रवृत्तं zu lesen ist), प्रवृत्ति. — caus. 1) *rollen machen, in Bewegung setzen; fortschleudern, fortschieben* u. s. w.: रथम् RV. 10, 114, 6. Çat. Br. 3, 3, 3, 17. Kâtj. Çr. 8, 4, 1. इत्यस्तार्क्षे देवः प्रवर्तयतु पुष्पकम् Uttarar. 36, 7 (48, 5). चक्रम् Bhag. 3, 16. राजचक्रम् MBu. 13,4262. प्र वर्तय दिवो यज्ञानम् RV. 7, 104, 19. Pâraçav. Br. 12, 6, 6. शुक्रम् Çat. Br. 1, 6, 3, 9. कटं पदा Gobh. 2, 1, 20. स्रुवः Kâtj. 26, 1. Lâṭj. 5, 8, 14. शाकटवीम् R. 3, 2, 11. Ragh. 13, 51. देवम् Suçr. 1, 159, 6. *senden, schicken* Prab. 46, 5. — 2) *in Gang —, in Umlauf bringen, verbreiten, einführen, einsetzen:* पूर्वैः प्रवर्तितं किंचित्कुले ऽस्मिन्नृषसत्तमैः । साधु वा यदि वासाधु तन्नातिक्रान्तुमुत्सहे ॥ MBu. 1, 4422. 13, 4604. मरुभाष्यम् Rîgh-Tar. 1, 176. 4, 487. धर्ममपूर्वम् R. 2, 21, 35. Viṣṇ-P. bei Muir, ST. I, 183. आचार्यैः — वेदार्थेभ्यो निष्कृष्य कर्माणि मुखावबोधनानीमानि विद्यास्थानानि प्रवर्तितानि Uvaṭa bei Muller SL. 98. संहिता यैः प्रवर्तिताः Verz. d. Oxf. H. 55, *a*, 5. Bhâg. P. 3, 8, 2. यात्रायागादि नागानाम् Rîgh-Tar. 1, 185. नीलोदितं विधिम् 186. तेन राज्ञा प्रवर्तिताः । स्वितत्रो वीतसंदेहा भास्वतेव दिनक्रियाः 4, 58. मेरुक्रोचितां व्यवकृतिम् 397. इत्येष तेन संबोधो गृहकृत्ये प्रवर्तितः 5, 175. 183. प्रवर्तिते ऽस्मिन्कर्माधनि कुमारिलेन L.A. (III) 92, 19. fg. Bhâg. P. 3, 24, 27. 5, 1, 21. मूर्खेण येन कायस्था दास्याः पुत्राः प्रवर्तिताः Rîgh-Tar. 5, 179. — 3) *entstehen lassen, bilden, hervorbringen, vollbringen, bewirken:* भुवनानि सप्त MBu. 3, 13931 = 12, 6921. सेतुम् *einen Damm errichten* Jâtâ. 2, 157. गोभिः प्रवर्तिते तीर्थे M. 11, 196. नदीम् MBu. 4, 2014. 6, 3236. 3301. 7, 502. Harîv. 9338. धनधर्मण्यती गोचर्मण्याः प्रवर्तिता MBu. 13, 3331. 632. Rîgh-Tar. 4, 506. बलार्थं प्रवर्तितम् Harîv. 4809. 12150. Ragh. 5, 37. युगमन्यत् MBu. 5, 1873. त्वया प्रवर्तिते मार्गे Harîv. 9727. रुधिरनिस्यन्दैस्वच्छरीरप्रवर्तितैः R. 3, 35, 31. गणम् Suçr. 2, 219, 17. ईदृशैर्धर्म्यवृत्तान्तैः प्रवर्तितकुतोदयः Rîgh-Tar. 5, 122. कर्माण्यारभान् R. ed. Bomb. 6, 6, 8 (5, 77, 9 Gorr.). प्रवर्तितलतालास्य Kathâs. 35, 5. लोकयात्रां प्रवर्तये (प्रवाक्ष्ये ed. Bomb.) so v. a. *ich bringe mein Leben zu* R. 2, 109, 27. व्यवकर्म so v. a. *ausgeben* Spr. 367. अन्यैः प्रवर्तितां तत्कथाम् *vorbringen, erzählen* Siṃh. D. 39, 5. राज्ञा तेन सर्वं प्रवर्तितम् *vollführt* Verz. d. Oxf. H. 32, *a*, 41. — 4) *an den Tag legen, bezeugen* R. 7, 30, 15. 33. Bhâg. P. 10, 47, 25. Mallin. zu Kumâras. 3, 24. — 5) *beginnen, unternehmen:* कर्म Kâtj. Çr. 25, 14, 8. संग्रामम् MBu. 7, 5930. Harîv. 10460. गिरियज्ञम् 3817. R. 1, 60, 3 (62, 7 Gorr.). Bhâg. P. 8, 18, 21. आद्यानि Harîv. 1000. वास्तुसंशमनीयानि मङ्गलानि R. 2, 56, 27. ग्रहदानोत्सवम् Kathâs. 112, 61. Milârip. 13, 2. — 6) *anwenden, gebrauchen:* तौ प्रावीवृततां क्षेतुं शस्त्रास्त्राण्यनेकशः Bhaṭṭ. 15, 90. — 7) *And zu Etwas veranlassen, bewegen:* तं पुत्रमाद्यादिदो प्रवर्त्य Kathâs. 80, 14. 106, 26. प्रवर्तयामि मुरतं (wohl मुरते zu lesen) पावदेतां 122, 57. ज्ञातारं कि रागादयः प्रवर्तयन्ति पुण्ये पापे वा Comm. zu Nyâyas. 1, 1, 18. Kusum. 37, 11. 13. — 8) = simpl. *verfahren, zu Werke gehen:* यो यथा वर्तते यस्मिंस्तस्मिन्नेव प्रवर्तयन् । नाधर्मं समवाप्नोति MBu. 5, 7079. — Vgl. प्रवर्तक fgg.

— अति॰प्र 1) *übermässig hervorkommen:* Bhat Suça. 1, 45, 18. fg. — 2) *stark sich äussern:* मार्जारनकुलादीनां विषं नातिप्रवर्तते Suça. 2, 269, 12.

— अनु॰प्र *hervorkommen entlang, nach:* ततो विषं प्र वीवृते पराचीरनु संवतः RV. 1, 191, 15. तं सामानु प्रावर्तत 10, 135, 4. अनुप्रवृत्त *folgend auf* (acc.) Bhâg. P. 1, 17, 32. 3, 2, 14. 25, 37. 4, 29, 54. 5, 1, 39.

— अभि॰प्र 1) *hinrollen, sich hinbewegen zu:* एतां ते दिशं रुद्रो ऽभिप्रवर्तताम् Âçv. Br. 8, 10. तच्चदि क्व वा एवं विद्वांसमृषी पर्वतावभिप्रवर्तेयाताम् Kaush. Up. 2, 13. यत्र भागीरथीं गङ्गां यमुनाभिप्रवर्तते *sich ergiesst in* R. 2, 54, 2. *sich in Gang setzen* Âçv. Gṛhj. 2, 6, 5. 3, 12, 5. — 2) *beschreiten:* गोरभिप्रवृत्ता Nir. 2, 9. अभिवृत्ता v. l. — 3) अभिप्रवृत्त *im Gange seiend, Statt findend:* नर्मण्यभिप्रवृत्ते (कर्मणि ed. Calc.) MBu. 8, 3464. — 4) अभिप्रवृत्त *begriffen in, beschäftigt mit* (loc.): कर्मणि Bhag. 4, 30. — Vgl. अभिप्रवर्तन. — caus. *rollen lassen, schleudern gegen:* वज्रमेनमभि प्रवर्तयति TS. 3, 2, 9, 1. mit dat.: प्र यच्चक्रमरण्वे सनता धृष्यवर्तयत् SV. Ârshâc. 2, 24.

— उप॰प्र caus. *hinschleudern, hinschieben* u. s. w.: शिष्टं सोमम् त्वष्टारुत्वनीयमुप प्रावर्तयत् TS. 2, 4, 12, 1. स्रुवः 6, 3, 8, 6. Kâtj. 20, 1.

— परि॰प्र caus. *herführen:* den Wagen RV. 10, 135, 1.

— प्रति॰प्र caus. *hinführen* Kauç. 14.

— सं॰प्र 1) *aufbrechen, sich fortbegeben:* एवं पितरि संप्रवृत्ते Bhâg. P. 5, 2, 1. — 2) *hervorkommen, hervorgehen, entspringen, entstehen:* शिक्षाध्यस्य धारणा सकलं संप्रवर्तते R. 4, 43, 37. मुखेभ्यो रुधिरं तीव्रं रुयानी संप्रवर्तत 6, 69, 45. MBu. 12, 8488. घनत्वम् 13, 4626. Harîv. 12243. Mân. P. 45, 18. दुःखं चतुर्भिः शारीरं कारणैः संप्रवर्तते Spr. 5045. Suça. 2, 493, 1. 524, 8. संवत्सरस्य पर्यन्ते निःश्वासः संप्रवर्तते । यदा MBu. 3, 13537. न हेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति *Entstandenes, Gekommenes, was da ist* Bhag. 14, 22. — 3) *beginnen, seinen Anfang nehmen:* संप्रवृत्ते तु संग्रामे MBu. 4, 1618. R. 6, 19, 2. Prab. 72, 6. संप्रवृत्ते मखोत्सवे MBu. 3, 3063. यज्ञो ऽसौ संप्रवर्तते R. 1, 32, 10. सायत्ने सवनकर्मणि संप्रवृत्ते Çik. 73. निशा R. 3, 5, 10. त्रेता Harîv. 12161. Bhâg. P. 1, 3, 24. 9, 14, 43. नो सम्यगेतेषु संप्रवृत्तेषु Vaṇis. Bhâṣ. S. 46, 29. Rîgh-Tar. 6, 271. नोत्सवाः संप्रवर्तन्ते *werden nicht unternommen, finden nicht Statt* R. 2, 114, 14. — 4) *beginnen —, anheben —, sich anschicken zu, sich machen an;* mit inf.: पतन्त्यमर्तेर्दिवितुं संप्रवृत्तः (संप्रमत्तः ed. Calc.) MBu. 8, 3309. mit dat.: स्थितिकरणाय संप्रवृत्तः Mârk. P. 104, 36. mit loc.: त्रैलोक्यस्य विनाशने MBu. 3, 8737. जगतो विसृष्टौ VP. bei Muir, ST. IV, 35. धर्मे संप्रवृत्तः *begriffen in* MBu. 5, 531. पूर्णि॰ 12, 2350. — 5) *verfahren, zu Werke gehen, sich benehmen* R. 4, 16, 23. Mârk. P. 134, 25. Siṃh. D. 339. — 6) मनसि *im Sinne herumgehen* so v. a. *Jmd nahe gehen* R. 5, 25, 10. — 7) संप्रवृत्त MBu. 14, 77 fehlerhaft für सम्यग्वृत्त, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. संप्रवर्तन, संप्रवृत्ति. — caus. 1) *in Gang —, in Umlauf bringen, verbreiten, einführen* MBu. 3, 11047 (S. 571). 13, 4601. कुपथपाषण्डम् Bhâg. P. 5, 6, 10 (med.). तोरमाणेन दीप्तारः स्वाज्ञताः संप्रवर्तिताः Rîgh-Tar. 3, 103. — 2) *beginnen, unternehmen:* संग्रामम् MBu. 7, 7737. क्रतून् Harîv. 2780. — Vgl. संप्रवर्तक.

— अभिसं॰प्र *beginnen:* संवत्सरे ऽभिसंप्रवृत्ते Vaṇis. Bhâṣ. S. 19, 6. —

caus. *wechseln, ändern* (?): ऋणाद्विरम् MBh. 1, 1184. *inter se confundere et turbare* Gild.

— प्रति *Jmd* (acc.) *zu Theil werden* M. 1, 44. — Vgl. प्रतिवर्तन, प्रतीवर्त und मन्दप्रतीवृत्त Siddhântaçir. S. 137. — caus. *schleudern gegen:* तमेषम् प्रति वर्तयो गोर्दिवो यज्ञानम् ṚV. 1, 121, 9.

— वि 1) *rollen, laufen, sich drehen:* चक्रं वि वावृते ṚV. 1, 164, 14. 166, 9. वि वर्तेते रथ्नी चक्रियेव 185, 1. 6, 9, 1. एवं द्वादशभिरेविवर्तते कालचक्रमिदम् H. 128. यूयं गावः पुरुधा विवृतः *sich schlängelnd, verfahren* ṚV. 10, 27, 21. *sich wälzen* MBh. 3, 11953 (ed.). Harîv. 10535. खड्गे R. Gorr. 2, 105, 16. *zappeln:* कालकाण्ठमुखकन्दरविवर्तमानमिव भूतग्रातम् Uttarâs. 105, 11 (143, 3). *sich krampfhaft bewegen* R. 4, 22, 25. *sich hin und her bewegen, hin und her ziehen:* विवर्तते (विवर्धते die neuere Ausg.) ज्वलधराः Harîv. 3822. R. 3, 30, 4. विवृत्त *sich nach allen Seiten drehend*, von Augen R. 2, 87, 2. 4, 21, 37. 5, 39, 16. Bhâg. P. 3, 8, 16. 7, 4, 13. Mârk. P. S. 655, Çl. 1. ज्वालं बाणमयं विवृत्तम् MBh. 5, 7209. विवृताक्ष *verdreht* R. 2, 63, 16. — 2) *sich abwenden, sich entfernen, fortlaufen; sich trennen, abscheiden* ṚV. 5, 53, 7. पुत्रा वि वावृते 10, 33, 9. AV. 10, 1, 19. पाप्मना Kâṭh. 12, 11. Çat. Br. 2, 2, 3, 17. 11, 2, 8, 3. यश्चो यत्राव वा ज्रिघेद्वि वा वर्तेत 13, 5, 4, 16. आपः Pârâṣ. Gṛ. 13, 9, 16. Kâṭy. Çr. 1, 8, 24. यत्रासौ केशान्तो विवर्तते *sich theilen* Taitt. Up. 1, 6, 1. *seinen Platz ändern* Suçr. 1, 26, 7. *sich wenden, sich umwenden:* तामितः पुरतश्च पश्चादन्तर्बहिः पतित एव विवर्तमानाम् Milârip. 24, 13. Râgân. 19, 38. Çiç. 39. Kathâs. 10, 120. 19, 114. अवाक् Mârk. P. 47, 26. विवर्तमाने तिमांशौ *zum Untergange sich neigend* MBh. 7, 3754. विवृत्त *umgewandt, gebogen:* °वदना Çiç. 45. त्रिक Râgân. 6, 16. पार्श्व Bhatt. 2, 16. कराल Bhâg. P. 3, 10, 12. *vom rechten Wege abkommen:* कस्मिन्नर्थे विवर्तसे (निवर्तसे ed. Bomb., = अश्नुते Nîlak.) स्थापयेतो न वर्त्मनि MBh. 5, 2861. — 3) *hervorkommen aus* (abl.) Çat. Br. 8, 4, 4, 25. 12, 4, 4, 2. — 4) *sich entfalten, sich entwickeln:* येनेशितं कर्म विवर्तते कृ Çvetâç. Up. 6, 2. जीवितं च शरीरेण ज्ञात्यैव सह ज्ञायते । उभे सह विवर्तेते उभे सह विनश्यतः ॥ Spr. 4082. यतः सर्वं प्रवृत्तिरूपं विवर्तते Verz. d. Oxf. H. 177, *a*, 8. Comm. zu Prân. S. 100, Z. 1. Kûlikop. in Ind. St. 9, 10. Sarvadarçanas. 140, 4. 146, 13. — 5) *sich an Jemand wagen:* त्वयाभिगुप्ते कौसल्ये न विवर्तेयुरस्त्रिकम् MBh. 3, 2428. — 6) व्यवर्तत R. 2, 42, 10 fehlerhaft für न्यवर्तत, wie die ed. Bom. liest. विवृत्त fehlerhaft für विवृत Kaṭh. Up. 2, 22, 5. विवृत्तदंष्ट्रा (विवृद्ध° die neuere Ausg.) *mit blossgelegten Zähnen, die Zähne zeigend* Harîv. 12949. विवृत्तास्य (निवृत्तास्य ed. Calc.) aus metrischen Rücksichten statt विवृतास्य 13891. विवृतोरुशिरोग्रीव R. 5, 10, 21 aber विवृतो° *unbedeckt* als विवृत्त *verdreht.* — Vgl. विवर्त u. s. w. — caus. 1) *umdrehen, umwenden:* वि चर्मणीव धिषणो वर्तयत् ṚV. 6, 8, 3. 7, 80, 1. 8, 14, 5. Comm. zu TBr. 1, 76, 6. *umherdrehen* MBh. 1, 209. 13, 2261. पराग्रः । वात्याभिर्विधति विवर्तितः Kir. 5, 39. Râgân. 4, 635. विवर्तित *sich windend:* मेरुकूटात्तेभ्यो निपतन्ती विवर्तिता (गङ्गा) Mârk. P. 55, 3. *umgedreht, umgewandt:* विवर्तिताञ्जननेत्र Kumâras. 5, 51. *verbogen:* नेत्र Suçr. 2, 199, 19. *verzogen:* भ्रू Çiç. 23. — 2) *entfernen, davongehen lassen; ausscheiden* ṚV. 5, 48, 3. AV. 10, 7, 26. अन्यत्रेषाम् वि वर्तय nämlich den Wagen 11, 2, 21.

— अतिवि caus. *zu weit von einander entfernen* so v. a. *zu stark umherscheiden* ṚV. Prât. 3, 18.

— अनुवि *entlang laufen:* धनु मातरं पृथिवीं वि वावृते ṚV. 8, 92, 2. — caus. med. *Jmd nachstellen* AV. 15, 7, 2.

— सम् 1) *sich zuwenden, sich einstellen, einkehren:* सं ते वयो वर्तताम् इन्द्र गव्युः ṚV. 8, 41, 2. AV. 6, 102, 1. मा सं वेतो मोप सृपः 9, 6, 3. *herankommen, sich nähern* R. 4, 39, 25. *auf Jmd* (acc.) *losgehen* MBh. 6, 5335. — 2) *congredi:* सं पत्निशो ऽवृत्रन्त पुष्टयः ṚV. 4, 24, 4. *sich zusammenthun* (in coitu): सो ऽस्तेराङ् घसंवर्तमानः शेते Çat. Br. 13, 4, 3, 9. Çâṅkh. Çr. 16, 1, 12. etwa *sich vereinigen, sich zusammenballen* Kauç. 33. संवर्तम् absol. Pârâṣ. Br. 14, 12, 7. — 3) *sich bilden, entstehen, hervorgehen:* शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ṚV. 10, 90, 14. 121, 1. 7. Çat. Br. 6, 1, 1, 10. 2, 1. Çâṅkh. Gṛhy. 1, 17. तेजसः समवर्तत गात्रेभ्यस्तस्य VP. bei Muir, ST. I, 25, N. 40. येन (भीमेन) भेमाः सुसंवृताः Harîv. 3243. सस्वेदा भृकुटी चोष्मा ललाटे समवर्तत MBh. 4, 466. तस्यात्तर्मनसि कामः समवर्तत Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 72. *sich ereignen, eintreten:* काः कथाः समवर्तन्त तस्मिन्वीरसमागमे MBh. 12, 1227. ततस्य तेन संवृत्तम् Râgân-Tar. 4, 271. यद्वृत्तं खलु संवृत्तम् Çiç. 71, 22. 68, 3. व्यवसितस्य मे संवर्धनं संवृत्तम् Vikr. 37, 2. तेषां कदाचित्संवृत्ता विचारो लोकहेतुना Verz. d. Oxf. H. 68, *a*, 35. तदस्या नासिकाछेदः स्वकर्मणापि संवृत्तः Pañcat. 41, 25. सुसंवृत्त Bhâg. P. 10, 87, 10. ज्ञायतामेव रजनी कल्यं सा समवर्तत R. Gorr. 2, 117, 1. 6, 14, 24. शनैर्मध्याह्नः समवर्तत Kathâs. 104, 203. Pañcat. 77, 13. यत्र पात्रामहोत्सवः संवृत्तः 43, 3. मद्याध्यक्षो विधिवत्स यज्ञः समवर्तत *begann, nahm seinen Anfang* R. Gorr. 1, 33, 3. — 4) *in Erfüllung gehen:* संवृत्ताः मनोरथाः R. Gorr. 1, 48, 25. — 5) *werden:* दारुणाः समवर्तन्त प्रजाः सर्वे प्रदर्शिणाः R. Gorr. 2, 40, 10. स्विन्नाङ्गुलिः संवृते कुमारी Râgân. 7, 19. इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः Bhâg. 11, 51. मर्त्या अमर्त्याः संवृत्ताः MBh. 1, 7280. 3, 2725. 2849. 5, 2334. R. 1, 45, 2. 63, 10. 3, 69, 9. 4, 42, 7. 63, 12. Çiç. 5, 11. 13. 6, 14, v. l. दृष्टदोषापि स्वामिनि मृगया केवलं गुण एव (गुणायैव v. l.) संवृत्ता 23, 6. 63, 7. 100, 18, v. l. 107, 1. Vikr. 65, 1. Kathâs. 14, 43. 49, 201. Râgân-Tar. 1, 145. Pañcat. 5, 13. 38, 19. 125, 24. — 6) *da sein:* तच्छ्रुतसंवर्तते Kaṭh. Up. 6, 13, 2. ब्रह्माग्ने समवर्तत Mânn. P. 45, 24. तत्र संवर्तते रात्रिः Harîv. 531. मृगया चैव नो गमुमिच्छा संवर्तते भृशम् MBh. 3, 14839. ग्रुमूषा भवतस्तथा । संवर्तताम् 13, 1423. ततस्तस्या मखाक्रन्दः पौराणां भवनेष्वभूत् । यद्वैव तस्य नृपतेः स्वगेहे समवर्तत ॥ so v. a. *so dass er auch im Palast des Fürsten hörbar war* Mârk. P. 22, 26. — 7) सुसंवृत्त MBh. 15, 191 fehlerhaft für सुसंवृत (*recht verborgen*), wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. संवर्त u. s. w. — caus. 1) *zusammenrollen:* उभे यत्समवर्तयत् । इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ṚV. 8, 6, 5. वासः संवर्तितम् Verz. d. Oxf. H. 230, *b*, 10. *ballen:* मुष्टिम् Harîv. 16025. *einwickeln, einhüllen:* संवर्तितमिवाकाशं जलदैः MBh. 1, 1298. संवर्तः कल्पान्तः स ज्ञातो ऽस्मिन् Nîlak. — 2) *herbeiwenden:* संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्तो ṚV. 5, 48, 2. संवर्तयति वर्तनिम् *bringt auf seine Strasse* 10, 172, 4. — 3) *rollen lassen* (die Augen): रोषसंवर्तितलोललोचन R. 5, 39, 22. 44, 20. 68, 10. *schleudern, werfen:* शैलाग्रान् R. 6, 19, 27. — 4) *zerknicken, zerbrechen:* यद्वा वायुस्तृणाग्राणि संवर्तयति सर्वशः MBh. 11, 54 = 260. संवर्तयन्तः शैलेषु वानरा विविधास्तरून् R. 4, 47, 6. 6, 93, 18. वासुदेवः प्रगृहीतचक्रः संवर्तयिष्यन्निव लोकलोकम् (सर्वलोकम् ed. Bomb.) MBh. 6, 2602. द्यौः सप्तसमुद्रान्तां संवर्तयतु वा मक्षीम् *zu Grunde richten* R. 4, 15, 3. — 5) *her-*

richten: चिताम् R. ed. Bomb. 5,113,112. *vollbringen, vollführen:* संवर्तयित्वा तत्कर्म R. Schl. 1,15,17. यत्तं संवर्तयितुम् 42,22. वार्त्तां नृणां पः वैश्यः समवर्तयत् Bhâg. P. 3,6,32. संवर्तयित्वा (अनुवर्णयित्वा die neuere Ausg.) तत्रस्थ माहात्म्यम् Harîv. 8042. कामम् *einen Wunsch erfüllen* R. 7,45,23. — *desid. intire velle feminam:* प इमां संविवर्त्सत्यपतिः स्व पतिं स्त्रियम् AV. 9,6,6.

— अभिसम् *entspringen:* कामस्तदग्रे समवर्तताधि ṚV. 10,129,4.

— अभिसम् *sich hinwenden zu:* मामभि ते मनः समेतु सं च वर्तताम् AV. 6,102,1. *sich anschicken —, beginnen zu:* वानरं सैन्यम् — संप्यातुमभिसंवृत्तो R. 6,1,15.

वर्त (von वर्त्) am Ende eines comp. P. 4,2,134 (am Ende von Ortsnamen); vgl. अन्धक°, कात्य°, बल्ल°, ब्रह्म°, य°. वर्तेन Verz. d. Oxf. H. 30,b,36 wohl fehlerhaft für वातेन, wie Aufrecht annimmt; मुखवर्तया R. 1,30,7 fehlerhaft für मुखवृत्तया, wie die ed. Bomb. liest.

वर्तक (wie oben) m. f. Taik. 3,5,18. 1) nom. ag. am Ende eines comp. *hingegeben, Jmd ergeben:* गुरु° R. Gorr. 2,107,19. — 2) m. *a) Wachtel* AK. 2,5,35. H. an. 3,93. Med. k. 153. MBu. 13,3502. Suçr. 1,200,20. Vishn. 6,46. 58. Spr. 1499. Hit. 85,11. fgg. — *b) Pferdehuf* AK. 3,4,1,11. H. an. Med. — 3) f. वर्तका *Wachtel* P. 7,3,45. Vârtt. 9. — 4) f. वर्तिका dass. Unâdis. 3,146. P. 7,3,45. Vârtt. 9. AK. 2,5,35. Taik. 2,5,31. Hâr. 184. im Mythus der Açvin ṚV. 1,112,18. ग्राह्यो वृकस्य वर्तिकामुखीके (ग्रमुक्तम्) 116,4. 117,16. 118,3. 10,39,13. MBu. 1,724. — 3,12437. Suçr. 1,73,7. 200,20 (verschieden von वर्तक). Verz. d. B. H. No. 897. Schol. zu P. 1,3,32. 70. Vishn. 6,46. गिरि° ebend. वन° Milatin. 135,8. Vgl. मास°. — 5) f. वर्तकी dass. Med. — 6) n. *eine Art Messing,* = वर्तलोह H. 1050.

वर्तजन्मन् m. *Wolke* Çabdam. im ÇKDa.

वर्तन (von वर्त् simpl. und caus.) 1) oxyt. nom. ag. P. 3,2,149, Schol. *a)* = वर्तिषु AK. 3,1,29. Med. n. 123. fg. — *b) in Bewegung setzend, Leben verleihend:* Vishṇu Harîv. 10416. एष दैनंदिनः सर्गो ब्राह्मस्त्रैलोक्यवर्तनः Bhâg. P. 3,11,25. — 2) m. *Zwerg* Med. — 3) f. ई *a)* = वर्तन n. Taik. 3,3,263. H. an. = जीवन Med. — *b)* = वर्तनि *Weg, Pfad* Uṇâdis. zu Unâdis. 2,107. AK. 2,1,16. Taik. 3,3,263. H. an. 3,411. Med. n. 123. j. 30. Halâj. 2,105. Çabdar. im ÇKDa. — *c) das Zerreiben, Mahlen* (= पेषण) Çabdar. im ÇKDa. *das Absenden* (प्रेषण) Med. — *d) Spinnwirtel* (तर्कुपीठ) Taik. 2,10,10. 3,3,263. H. an. Med. n. 123. fg. *Spinnrocken* (तूलनाला) Med. — 4) n. nom. act. Dhâtup. 18,19. *a) das Sichdrehen, Rollen* Nir. 13,12. — *b) das Drehen:* रज्जु° P. 8,3,89, Schol. — *c) das Fortrollen, Fortbewegen* Kâç. Ça. 3,4,2. Suçr. 1,25,15. — *d) das Umherschweifen, Umhergehen:* गृहमण्डलवर्तनैः *Rundgang im Hause* (einer Hausfrau) Bhâg. P. 7,11,26. 11,11,29. नियम्य सर्वेन्द्रिय-बाह्यवर्तनम् 6,16,32. — *e) das Verweilen, Aufenthalt:* तदुपासेष्वावयोर्वर्तनम् Uttarar. 12,9 (17,2). — *f) das Leben von* (instr.), *Unterhaltung des Lebens:* अवशिष्टेनान्नेन Mârk. P. 50,71. पक्वान्नकृत° Kathâs. 27,90. *Lebensunterhalt, Erwerb* AK. 2,9,1. Med. Spr. 718. Kull. zu M. 3,152. Hit. 98,5. 114,2. Pañkat. ed. orn. 6,11. लोक° *das Mittel, wodurch die Welt besteht* (u. d. W. ungenau wiedergegeben) Kathâs. 64,42. *Lohn* Hit. 1,40. 98,10. 99,18. — *g) Verkehr, Umgang:* असद्भिः सह Kâm. Nitis. 14,44. — *h) das Verfahren, Benehmen:* नीतिः शास्त्रेण वर्तनम् Sân. D. 489. अलक्तक° *das Verfahren mit Lack* so v. a. *das Färben mit Lack* Kir. 10,42. — *i) Spinnwirtel; Spinnrocken* Med.

वर्तनि (wie oben) Unâdis. 2,107 (वर्तनि) f. 1) *Radkreis, Radfelge; Radspur, Geleise:* चक्रस्य ṚV. 8,32,8. पर्णयं वधीस्त्रिभिरा वर्तनी नरं 1,83,5. वि वां रथो ऽसोन्दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् 7,69,2. °नी Ait. Br. 5,33. रुद्रविधानस्य TS. 5,4,12,3. Sâṅkh. Br. 1,5. — 2) *Wegspur, Weg, Bahn;* vollständiger पथो वं° ṚV. 4,45,3. 7,18,16. वार्तस्य 1,25,9. 140,9. 3,7,2. 5,61,6. या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतम् 10,63,5. 172,1. उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिम् 4. 144,4. AV. 7,21,1. *Bahn der Flüsse* ṚV. 4,19,2. TS. 2,3,10,2. पञ्चदशं° 4,3,2,1. क्षत्रस्य ṚV. 10,5,4. स्रुचा° *eine von einem Spahn gerissene Furche* (vgl. वर्त्मन्) Ait. Br. 8,8. द्वे वै यज्ञस्य वर्तनी Çâṅkh. Br. in Ind. St. 2,305. Kaush. Up. 4,16,1. fgg. — 3) *die Augenwimpern* (vgl. वर्त्मन्) Çat. Br. 14,5,2,3. — 4) *das östliche Land* (पूर्वदेश) Taik. 2,1,12. — 5) = स्तोत्र गण उक्थादि zu P. 5,1,160. — Vgl. कृष्ण°, गायत्र°, घृत°, रघु°, रुद्र°, वृत्रिन°, हिरण्य°. — वर्तनी s. u. वर्तन.

वर्तनिन् am Ende eines comp.: एक°, द्वि°, सहस्र° *ein-, zwei-, tausendräderig* Sharv. Bh. 1,4.5.

वर्तनीय (von वर्त्) adj. impers. *sich zu machen an, obzuliegen:* वर्तमानेषु कार्येषु वर्तनीयं विचक्षणैः Spr. 818.

वर्तमान (partic. praes. von वर्त्) adj. *praesens, was eben vor sich geht, gegenwärtig* Kâç. Ça. 1,10,1. 11,1,2; vgl. u. वर्त् 10).

वर्तमानता f. *das gegenwärtig-Sein* Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 39. Sarvadarçanas. 15,22. fg.

वर्तमानापेक्ष m. *eine Erklärung, dass man mit Etwas, welches im Augenblick vorgeht, nicht einverstanden sei,* Kâçik. 2,124. Beispiel Spr. 3940. — Vgl. भविष्यदापेक्ष und वृत्तापेक्ष.

वर्तर् (von 1. वृ) nom. ag. *der zurückhält, abhält, Abwehrer:* न ते वर्तास्ति राधसः ṚV. 8,14,4. 4,20,7. नास्य वर्ता न तरुता महाधने 1,40,8. 6,66,8. तविष्याः 5,29,14.

वर्तक m. 1) *Pfütze.* — 2) *Krähennest* H. an. 4,31. Med. k. 212. — 3) *Thürsteher* Taik. 2,8,24. — 4) N. pr. eines Flusses Med.

वर्तलोह n. *eine Art Messing* H. 1050.

वर्तव्य MBu. 12,3339 fehlerhaft für कर्तव्य (so die ed. Bomb.), 13,6515 für चर्तव्य (so die ed. Bomb.), Pañkat. 175,10 für वर्तितव्य.

वर्तस् m. *die Augenwimpern:* वर्तोभ्याम् VS. 25,1. — Vgl. वर्तनि 3).

वर्ति Unâdis. 4,118. वर्तिं 140. und वर्ती (von वर्त्) f. Sidd. K. 248, *a*, 8. *allerlei* (insbes. *länglich*) *Gerolltes.* 1) *Bäuschchen* oder *ähnliche Einlage in eine Wunde* Suçr. 1,16,7. पिचु° 54,18. 55,5. 6. 9. 2,3,18. 8,21. वाल° 2,23,15. fg. — 2) *Stengelchen, Paste, Pille* als Form für Heilmittel und Wohlgerüche, auch für Errhina, Suçr. 1,132,16. 133,16. अङ्गुष्ठमात्र 2,89,5. 130,6. 233,6. 14. 19. 325,11. 17. 339,16. 19. 347,7. 353,2. 387,10. 12. कृत्वा पायो विधातव्या वर्तयो मरिचोत्तराः *Stuhlzäpfchen* 456,5. 501,15. वर्तीकृत 331,6. Çiva. Saṅh. 2,7,1. रोपणी Verz. d. Oxf. H. 311,*b*, 24. = भेषजनिर्माण H. an. 2,192. fg. Med. t. 55. oxyt. = योगकर्मविधि Uṇâdis. zu Unâdis. 4,140. — 3) *Docht,* parox. Uṇâdis. zu Unâdis. 4, 118. Taik. 3,3,183. H. an. Med. वर्त्याधारस्नेक्योगाद्यथा दीपस्य संस्थितिः

Maitrâyaṇ. 6,36 = Spr. 4974. MBh. 4,716 (वर्ती). Suçr. 2,67,9. Varâh. Bṛh. S. 53,94. 84,1. Bṛh. S. 5,18. Kathâs. 34,98. Verz. d. Oxf. H. 267,b, 18. Bhâg. P. 5,11,3. *Zauberdocht* Pañcat. 241,s. 9. vollständig साधक° 2. सिद्धि° (so ist zu lesen) 6. — 4) *Lampe* H. an. Med. — 5) *die am Ende eines Gewebes hervorragenden Zettelfäden* (दशा, was auch *Docht* bedeutet) H. 667. Hâlâs. 2,396. — 6) *Wulst* oder *Stab, der um ein Gefäss läuft*, Kâty. Çr. 15,3,30. fg. — 7) *Zäpfchen, Polyp* oder dgl. *im Halse* Suçr. 1,308,6. 2,261,20. — 8) *der durch einen Unterleibsbruch gebildete Wulst* Suçr. 2,21,9. मूत्र° *Hodensackbruch* 134,14. — 9) *Schminke* AK. 2,6,2,35. H. 639. H. an. Med. पाणिनामृतवर्तिना — घालिप्य Kathâs. 55,67. *Augensalbe* H. an. Med. द्यममृतवर्तिर्नयनयोः Uttarar. 18,4 (24,12). Mâlatîm. 14,4. — 10) *Streifen*, = लेखा H. an. Med. यमुषश्चासितां सूर्यो धूमवर्तिम् Harîv. 12792. — Vgl. पिष्ट°, फल°, वर्षा°.

वर्तिका m. = वर्तक *Wachtel* Râgân. im ÇKDr. — Vgl. मान°.

1. वर्तिका s. u. वर्तक.

2. वर्तिका (von वर्ति) f. P. 7,3,45, Vârtt. 9, Schol. 1) *Stengel:* पलाश° MBh. 1,1443 nach der Lesart der ed. Bomb. statt °वृत्तिका der ed. Calc.; = दीर्घयष्टि Nîlak. — 2) *Docht* Kâlikâ-P. 68 im ÇKDr.; vgl. योगवर्तिका (lies °वर्तिका und verbessere *Zauberdocht*). — 3) *Farbenpinsel* Çiç. 86,17. अङ्गुलीत्रणमुखवर्तिक Râgân. 19,19. चित्र° Mâlatîm. 21,3. Vgl. वर्ण°. — 4) *Farbe* (zum Malen) Çiç. 142 fehlerhaft für वर्णिका. — 5) *Odina pinnata* (यज्ञभृङ्गी) Râgân. im ÇKDr.

वर्तितव्य (von वर्तृ) adj. 1) impers. *sich aufzuhalten, zu verweilen, sich zu befinden:* न वर्तितव्यं भवता कथं च न तेत्र मदीये Bhâg. P. 1,17, 31. 33. यस्माकं मध्ये त्वया न वर्तितव्यम् (so ist zu lesen) Pañcat. 175, 10. तद्धर्म्ये पथि वर्तितव्यम् *ihr müsst verbleiben auf* Kathâs. 45,374. यस्मदृशे वर्तितव्यं नित्यं त्रैलोक्यमालिना so v. a. *er muss uns gehorchen* 119,36. — 2) impers. *sich zu befleissigen, obzuliegen:* mit loc.: एवं त्वया वर्तितव्यं प्रजाक्षिते (beide Ausgg. प्रजाक्षितं) MBh. 15,254. रामस्य च मया सख्ये वर्तितव्यम् R. 5,56,48. — 3) impers. *zu leben, zu bestehen:* कथं नाम मया सुखोपायवत्त्या वर्तितव्यम् Pañcat. 197,20. — 4) impers. *zu verfahren, zu Werke zu gehen:* न वर्तितव्यमसांप्रतम् Spr. 1444. R. 2, 27,10. मातृवत् (d. i. मातरीव) 112,19 (122,27 Gorr.). तस्मान्मे सुतयोः कुक्षि वर्तितव्यं स्वपुत्रवत् MBh. 1,4893. Spr. 4830. Mârk. P. 77,12. mit gen. der Person statt loc.: यथा भर्तुर्वर्तितव्यं मृतं च मे R. 2,39,27. mit instr. der Weise, die Person im instr. mit सह: धानुकूल्येन दैवस्य वर्तितव्यं सुखार्थिना Spr. 3707. मया समयधर्मेण वर्तितव्यम् Pañcat. 26,3. 55,21 (ed. orn. 46,20). व्याजेन 147,15. — 5) wo *sich Jmd aufhalten* —, wo *Jmd verweilen darf:* धर्मेण सत्येन च वर्तितव्ये । ब्रह्मावर्ते Bhâg. P. 1,17,33. — 6) *welcher Sache man obliegen muss, zu beobachten:* कुमारे भरते वृत्तिर्वर्तितव्या च राजवत् so v. a. *du musst mit* Bharata *wie mit einem Könige verfahren* R. 2,58,17. — 7) *zu behandeln:* मायाचारो मायया वर्तितव्यः Spr. 4830, v. l.

वर्तिता am Ende eines comp. nom. abstr. von वर्तिन्. गुरुवर्तिता *das einem Aelteren gegenüber zu beobachtende Verfahren* R. 2,115,19.

वर्तित्व (wie eben) n. *das Verfahren wie gegen, das Behandeln wie:* नित्याभ्युत्तर° Kâm. Nîtis. 14,55.

वर्तिन् (von वर्तृ) adj. = वर्तिषु H. 389. 1) *irgendwo sich aufhaltend, verweilend, sich befindend, gelegen;* in comp. mit dem Orte: यकृत्प्रदेश° Suçr. 1,208,18. समीप° Ṛt. 1,16. Mârk. P. 74,24. Hit. 29,16. अन्तिक° Kathâs. 36,100. कृतासात्तिकवर्ति जीवितम् Bhâg. P. 8,22,11. दूरान्तर° Râgân. 13,31. समदेश° Çiç. 5,14. दूरस्त° Spr. 4885. सत्पथ° Varâh. Bṛh. S. 8,58. दुःखाम्भोनिधि° 74,3. कैलासोद्यान° Kathâs. 15,126. 17,9. 30. 91. 18,245. 336. 20,54. 101. 24,136. 26,210. 29,51. 37,222. 43,137. 45, 280. 46,153. 88,20. Râgâ-Tar. 1,62. 199. 4,464. 5,55. 209. 6,363. Bhâg. P. 5,14,48. Schol. zu Naish. 22,42. zu P. 5,3,19. Sarvadarçanas. 63,6. 8. बाणपात° *in Pfeilschussweite sich befindend* Çiç. 6,14. संबाध° *dicht zusammenstehend* Râgân. 12,67. कान्तं तेजस्विनां मध्ये वर्तिनं सङ्घचारिणाम् Kathâs. 103,61. प्रियेषु समयवर्तीनि विलोचनानि *ganz auf den Geliebten weilend* Mâlav. 66. *in einem best. Zeitpunkt liegend:* लग्नं मासषट्कान्तवर्तिनम् so v. a. *nach sechs Monaten erfolgend* Kathâs. 32,17. — 2) *in irgend einem Zustande, einer Lage u. s. w. sich befindend:* कन्यकाभाव° Kathâs. 22,30. क्लेश° 53,14. कृच्छ्र° Kâm. Nîtis. 8,64. स्त्रीलिङ्ग° *im Femininum stehend, ein Femininum seiend* Vop. 3,80. दारसंग्रह° so v. a. *verheirathet* R. 2,37,23. निदेश° so v. a. *Jmdes Befehlen gehorchend* MBh. 15,155. R. 4,38,39. 40,8. Kumâras. 3,4. Çiç. 139, v. l. Mâlatîm. 87,14. शासन° dass. Kathâs. 48,135. *einer Sache obliegend, begriffen in:* निमेष° so v. a. *blinzelnd, sich regelmässig schliessend* Râgân. ed. Calc. 3,43. गुणाढ्य° Râgân. ed. Sr. 3,27. व्यवसाय° Kâm. Nîtis. 18, 60. सधर्म° Bhâg. P. 5,26,27. 9,13,5. सदाचार° Pañcat. 40,20. — 3) *verfahrend, sich benehmend, zu Werke gehend:* राज्ञीव वर्तिना लोके R. Gorr. 2,113,7. जीव° *wie* MBh. 13,6217. गुरुवद्वर्ती d. i. गुराविव वर्ती R. 3,1,12. न्याय° *sich nach Gebühr betragend* M. 5,140. Jâgn. 3, 22. Spr. 2617. अन्याय° M. 7,16. लोकव्यतिरेकवर्तिनी पार्थिवता Kâm. Nîtis. 1,64. — 4) *sich nach Gebühr gegen Jmd benehmend:* गुरु° (s. auch bes.) MBh. 3,12432. 13,481. R. Gorr. 2,7,8. Mârk. P. 113,13. श्वश्रूश्वसुर° MBh. 13,5867. अ° *sich ungebührlich betragend* 13,3033. — Vgl. उच्छास्त्र°, कण्ठ°, गुण°, गुरु°, चक्र°, दूर°, पार्श्व° (auch Bhâg. P. 4,29,69), पितृ° (lies *gegen den Vater nach Gebühr sich benehmend*), पुरो° (auch Vikr. 72), पूर्व°, प्रतिकूल°, मण्डल°, मध्य° (auch Râgân. 5, 51), मातृ°, वश°.

वर्तिर m. = वर्तीर SidDh. in Nigh. Pa.

वर्तिर्तु (von वर्तृ) adj. P. 3,2,136. Vop. 26,142. = वर्तन AK. 3,1,29. = वर्तिन् H. 389.

वर्तिस् (wie eben) n. *Umgang, Umlauf, Rundweg* (nach Sây. *Wohnplatz*, nach Mahîdh. = मार्ग) ṚV. 1,34,4. यस्मिन्ना वर्तिरस्मदा रयिं नि येदधृतम् 92,16. 2,41,7. 5,75,7. परि कृ त्यद्वर्तियाथो रिषो न यत्परो नास्तरन्तुर्याय् 6,63,3. 7,69,3. 8,9,11. 35,7. 76,3. ता वर्तिर्याति त्रयुषा वि पर्वतम् 10,39,13. Alle diese Stellen reden von den Açvin. यमे वर्तिर्यन्ति पौरियन्मृतूयसे so v. a. *die wiederkehrende Reihe der Opfer durchlaufend* (vgl. περίοδος) ṚV. 10,122,6.

वर्तीर m. *ein der Wachtel* (vgl. वर्तक) *oder dem Rebhuhn ähnlicher Vogel* Suçr. 1,73,7. 200,20. — Vgl. वार्तीर.

1. वर्तु (von 1. वर्) s. दुर्वर्तु.

2. वर्तु (von वर्तृ) in त्रिर्वर्तु *dreifach.*

वर्तुल (wie eben) 1) adj. *rund* AK. 3,2,19. Tam. 3,3,182. H. 1467.

Halâs. 4, 68. Ind. St. 2, 262. Bhâg. P. 5, 16. 5. Weber, Kâtjây. 279. Verz. d. Oxf. H. 96, *b*, 12. Sidhân. K. zu P. 3, 1, 18. Vop. in LA. (III) 4, 13. Manâv. zu VS. 5, 22. Pâśkar. 1, 7, 24. 14, 17. वर्तुलाकार adj. 7, 15. 2, 2, 17. वर्तुलाकृत (wohl वर्तुलाकृति) dass. 1, 7, 16. — 2) m. *a*) *eine Erbsenart* Çârdam. im ÇKDa. — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâjuk beim Schol. zu H. 210. — 3) f. आ *Spinnwirtel* Hir. 213. — 4) f. ई *Scindapsus officinalis Schott.* Râśân. im ÇKDa. — 5) n. *a*) *Kreis* Colebr. Alg. 87. — *b*) *die Knolle einer Zwiebelart* Râśân. im ÇKDa. — Vgl. फल°.

वर्त्मक am Ende eines adj. comp. von वर्त्मन्. रक्त° adj. *rothe Augenlider habend*, m. *ein best. Vogel* Vîsân. 6, 15.

वर्त्मकर्दम ungenau als comp. behandelt; s. u. 2. कर्दम.

वर्त्मकर्मन् n. *die Kunst Wege zu bahnen* R. 2, 80, 5.

वर्त्मद m. pl. N. einer Schule des AV. Ind. St. 3, 277.

वर्त्मन् (von वर्त्) n. 1) *Radspur, Wegspur; Bahn* (auch bildlich) AK. 2, 1, 15. 3, 4, 28, 124. Taik. 3, 3, 225. H. 983. an. 2, 254. Med. n. 126. Halâs. 2, 105. वर्त्मन्येषामनु रीयते घृतम् RV. 1, 95, 3. AV. 5, 67, 1. ऋचस्य वर्त्मानसश्च पार्त्वे 12, 1, 47. TS. 6, 2, 9, 2. 6, 3, 1. Kâty. Çr. 3, 3, 31. उत्तरोत्तर° Çâṅkh. Çr. 4, 10, 3. 5, 6, 3. Âçv. Çr. 4, 4, 2. दक्षिणस्य स्रुविधानस्योत्तरस्य चक्रस्यास्तरा वर्त्मयाद्योः 9, 3. पृथग्वर्त्मन् Çat. Br. 10, 6, 1, 7. वर्त्मानि नवानि MBh. 3, 15683. 15689. 4, 874. R. 2, 59, 5. Çâk. 7. Mudr. 19. Râgat. 2, 30. हरेर्गृहीतवर्त्मा 9, 72. Kathâs. 21, 16. Vet. in LA. (III) 25, 7. उर्वशी° Vikr. 13, 20. शृगालवर्त्मना धावन् Hit. 41, 14. उल्लपिनी° 85, 3. भानोः Mudr. 40. Vaṇîn. Bṛh. S. 12, Anf. मार्गवर्त्मसु Ikṣu. 5, 26. स्यवर्स्य *Furche, Strich* TS. 2, 6, 4, 4. eines von der Stelle gerückten Gefässes TBr. 2, 1, 2, 5. केशेषु H. 371. *Weg, Rinnsal* von Flüssigem: स्रोतसो वर्त्मान्यवरुध्यन्ते *die Gänge werden verstopft* Suçr. 1, 328, 3. 2, 169, 9. रस° 445, 16. श्रोत्रवर्त्म (= श्रोत्रमार्ग) गतः so v. a. *zu Ohren gekommen* Spr. 401, v. l. चरणमसिवर्त्मसु *Schwerthiebe* Bhâg. P. 10, 69, 25. 7, 8, 23. — मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः Bhag. 3, 23. MBh. 1, 7246. प्राप्त° adj. 12, 194. त्रि° Nârâjaṇa 3, 12983. घलदृश्य° Bhâg. P. 2, 4, 12. 3, 15, 3. 4, 16, 10. 8, 3, 28. रेखामात्रमपि क्षुण्णादा मनोर्वर्त्मनः परम् । न व्यतीयुः प्रजास्तस्य Raghu. 1, 17. घटनुवर्त्मनाम् Vaṇîn. Bṛh. 1, 1. धर्म्ये वर्त्मनि तिष्ठतोः M. 9, 1. R. 2, 26, 1. गुरूपदिष्टेन वर्त्मना Weber, Râmat. Up. 336. Ind. St. 5, 165. साधु Bhâg. P. 4, 8, 37. सनातन R. 5, 11, 22. Spr. 3745. Kâm. Nîtis. 3, 37. Bhâg. P. 4, 2, 32. शास्त्रदृष्ट R. 5, 77, 13. न्याय्य (so ist zu lesen) 4, 33. सार्व 3, 35. श्रौत LA. (III) 87, 12. 92, 16. सृष्ट Pâśkar. 2, 8, 26. योगीन्द्रगुरु° 4, 4, 2. गृह्यमेधीय Bhâg. P. 4, 8, 20. निर्देश्यस्य Râm-Tâp. 3, 219. प्रच्यवबन्धर्मवर्त्मसु MBh. 14, 547. शास्त्र° Verz. d. Oxf. H. 105, *a*, 32. Bhâg. P. 3, 32, 32. निगम° 2, 7, 37. संसार° 4, 25, 6. Kathâs. 28, 182. अपवर्ग° Bhâg. P. 3, 25, 25. आत्म° 6, 39. मोक्षितचित्त° 4, 17, 26. विस्मृततत्त्व° 20, 28. व्याकरणवर्त्मसु 12, 4, 30. Mâlav. P. 120, 2. क्रमस्य *Art und Weise* RV. Prât. 11, 32. वर्त्मना am Ende eines comp. so v. a. *entlang, durch:* पङ्क° Spr. 498, v. l. मत्तेभभिन्नप्राकार° Kathâs. 13, 22. प्रतस्थे ऽम्बुधिवर्त्मना *zur See* 18, 293. 25, 40. 26, 7. 51, 129. स्थल° *zu Lande* Raghu. 4, 60. आकाश° *durch die Luft* Hit. 111, 8. व्योम° Kathâs. 44, 134. 52, 6. द्वार° *durch die Thür* Hit. 106, 21, v. l. तदाकार° Hit. ed. Johns. 2361. नद्यद्रिवनवर्त्मसु *über Flüsse, Berge und durch Wälder* Hit. 102, 1. Als masc. Daçak. 68, 11 ohne Zweifel fehlerhaft. — 2) *Rand:* व्रण° Suçr. 1, 66, 9. क्षुद्र° 88, 18. — 3) *Augenlid (runde Einfassung)* AK. 3, 4, 28, 124. H. an. Med. Halâs. 5, 6. AV. 20, 133, 6. Kauṣîtak. Up. 4, 15, 1. Verz. d. Oxf. H. 308, *a*, 14. fgg. Suçr. 2, 307, 12. fgg. ग्रन्थि° 1, 92, 14. °मण्डल 340, 13. 2, 303, 18. °पटल 18. °स्थ 300, 18. °भव 20. श्लेष्मज° *das Zusammenkleben der A.* 309, 11. 331, 11. वर्शी° *gewisse krankhafte Auswüchse an den A.* 308, 14. Wise 297. — Vgl. घनु°, कल्याणा°, कृष्ण° (*Feuer* Maitrâjup. 6, 35), क्लिन्न°, क्लिष्ट°, घन°, देव°, धूम°, नक्षत्र°, पार्थ°, पृथु°, प्रक्लिन्न°, प्रति°, बल्ल°, बिस°, मरुद्वर्त्मन्, मेघ°, रथ° (घानाक° so v. a. *bis zum Himmel mit seinem Wagen sich erhebend* Raghu. 1, 5), रात्र° (R. 2, 25, 39), श्याव°, सत्य°, सु°.

वर्त्मनि f. = वर्तनि Govardhana bei Uṇâdik. zu Uṇâdis. 2, 107.

वर्त्मबन्ध m. = वर्त्मविबन्धक Wise 297.

वर्त्मरोग m. *Krankheit der Augenlider* Suçr. 1, 35, 3. 36, 5. Verz. d. B. H. No. 934. Verz. d. Oxf. H. 308, *a*, 12. 16.

वर्त्मविबन्धक m. *eine Krankheit der Augenlider, bei welcher diese das Auge nicht ganz bedecken*, Suçr. 2, 307, 19; vgl. बन्धो वर्त्मनः 309, 1 und वर्त्मबन्ध.

वर्त्मशर्करा f. *gewisse Verhärtungen an den Augenlidern* Suçr. 2, 307, 17. 308, 13.

वर्त्मायास m. *Ermüdung von der Reise* Verz. d. Oxf. H. 20, *a*.

वर्त्मावरोध m. *Lähmung der Augenlider* Suçr. 1, 200, 14.

वर्त्र (von 1. वृ) 1) adj. *wehrend* Âçv. Gṛhj. 3, 11, 1. — 2) n. *Deich, Schutzdamm:* प्र ते भिनद्मि मेहनं वर्त्रं वेशस्या इव AV. 1, 3, 3. यति वा एता वर्त्रं नेदन्ति TS. 1, 6, 8, 1.

वर्त्स m. nach dem Comm. zu RV. Prât. 1, 10 *Wulst des Zahnfleisches (auf der inneren Seite des Kiefers)*. Es ist deutlich, dass dieses kein anderes Wort sein kann als das in vedischen Texten vorkommende वर्स्य; vgl. auch TS. Prât. 2, 18.

वर्त्स्य adj. von वर्त्स RV. Prât. 1, 10. richtig wäre वर्स्य्य. Als ein altes und unbekannteres Wort ist es in den Hdschrr. entstellt worden: vgl. Weber, Ind. Str. 2, 96.

1. वर्ध्, वर्धते (वृद्धे) Dhâtup. 18, 20. वर्धति, वर्धति, वृधानै, ववर्धत्तम्; ववर्धे, वावर्धुस्, वावृधाति RV. 1, 33, 1. वावर्धुस्, ववृधे, वावृधे, वावर्धस्व, वावृधानैः वर्धिष्यते und वर्त्स्यति, ववर्धिष्यत und ववर्त्स्यत P. 1, 3, 92. 7, 2, 59. ववर्धिष्ट und ववृधत् 1, 3, 91. वर्धयोर्मोक् VS. 2, 14. partic. वृक्त s. bes. 1) trans. act. *a*) *erhöhen, grösser machen, verstärken, gedeihen machen:* ये ते ग्रुभ्रे ये तविषीमवर्धन् RV. 3, 32, 2. तर्पम् 4, 53, 7. घृतिं घृतेन 5, 14, 6. तान्वर्ध भीमसंदृशः 56, 2. यस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति 1, 33, 1. इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः 8, 6, 35. AV. 18, 3, 10. Çat. Br. 1, 8, 1, 28. प्रियमवृधत् (ग्रवृतत् Çat. Br.) Bṛh. Âr. Up. 4, 5, 5. पराशृणि निर्जित्य स्वराष्ट्रे ववृधुः पुरा MBh. 1, 5540. — *b*) *(innerlich erhöhen) erheben, freudig erregen, ergötzen, begeistern;* von der Befriedigung und Erregung des Kraftgefühls gebraucht, in welche man die Götter durch die Huldigungen ihrer Verehrer versetzt denkt. Es ist nicht zulässig in den zahlreichen Stellen, wo dieses in der alten priesterlichen Sprache so beliebte Wort vorkommt, immer bei dem räumlichen Begriff stehen zu bleiben. Sây. zu RV. 1, 81, 1 sucht das Verhältniss mit den Worten auszudrücken:

स्तुत्या हि देवता प्राप्तबला सती प्रवर्धते. यज्ञेन वर्धत जातवेदसम् ṚV. 2, 2, 1. वर्धाद्यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद्ब्रह्म गिर उक्था च मन्म 6, 38, 4. स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति महे राधसे नृम्णाय 8, 2, 29. यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन 3, 5, 8. 10, 6. (मरुतः) ये त्वामवर्धन् 35, 9. 47, 4. त्वामग्ने विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम् 5, 13, 8. स्तोमैर्वर्धन्ति गीर्भिः शुम्भन्ति 5, 22, 4. 29, 11. 36, 5. त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्याम् 6, 1, 5. 7, 97, 8. यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवान् 10, 14, 3. ववृधन्त इन्द्रम् 4, 2, 17. वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयः P. 3, 4, 117, Schol. वर्धाय absol. (vgl. ग्रहाय unter ग्रभ् in den Nachträgen): ततस्तु भगवान्ब्रह्मा वर्धाय (वर्धाप्य die neuere Ausg.) स तु केशवम्। जगाम ब्रह्मलोकम् *durch Segenswünsche u. s. w. erfreut habend* Hariv. 10906. — 2) intrans. med. (in der älteren Sprache act. im perf., insbes. in der 3. pl., und die Form वृधति u. s. w.; in der späteren Sprache aor. fut. und condit. auch im act.; in der epischen Sprache aus metrischen Rücksichten häufig auch sonst act.) *a) wachsen, erwachsen; sich mehren, sich stärken, gedeihen; sich gross zeigen:* तोकं च तस्य तनयं च वर्धते ṚV. 2, 25, 2. वर्धतां गीः 3, 1, 2. तन्वा वावृधानः 34, 1. 7, 19, 1. जहि रक्षो महि चिद्वावृधानम् *sich gross machend* 4, 3, 14. 5, 42, 9. 6, 22, 6. 7, 104, 4. अर्चाम तद्वावृधानं स्वर्वत् *sich ausbreitend* 1, 173, 1. द्विर्यत्त्रिर्मरुतो वावृधन्त 6, 66, 2. ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासः। प्रैभ्य इन्द्रावरुणा भूतम् *als alle Götter, Männer und Frauen sich gross zeigten, da thatet ihr es ihnen zuvor* 6, 68, 4. देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरम् *blühend* 2, 3, 4. पूर्वीर्हि गर्भः शरदो ववर्ध 5, 2, 2. असो नु कमजरो वर्धाश्च 10, 50, 5. ता वृधन्तावनु द्यून्मर्ताय देवौ पुरो दधे *gross erscheinend, sich gross zeigend* 5, 86, 5. 1, 158, 1. 6, 66, 11. अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्तः 49, 11. VS. 38, 21. AV. 2, 28, 1. 5, 72, 2. सा नो भूमिर्वर्धयद्वर्धमाना *gedeihend lasse uns gedeihen* 12, 1, 13. 13, 1, 49. इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व Çat. Br. 1, 6, 2, 8. 11. 8, 1, 4. अन्नेन 2, 2, 1, 12. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठं वर्धते 13, 2, 2, 4. Lâṭj. 6, 5, 1. — सततं ववृधे मत्स्यः *wuchs* MBh. 3, 12757. ववृधे ऽन्तःपुरे शिशुः Hariv. 6437. ववृधिरे Ragh. 10, 79. Kathâs. 17, 71. 61, 267. Râǵa-Tar. 3, 110. अवर्धिषाताम् 6, 212. Bhâg. P. 8, 20, 21. 24, 17. Vet. in LA. (III) 19, 1. Brahma-P. ebend. 58, 6. निष्प्रत्यूहमवर्धन्त श्रुतिशाखाः समन्ततः 92, 18. सर्वे ववृधुरल्पेन कालेनाप्स्विव नीरजाः MBh. 1, 4865. 4864. Hariv. 803. वर्धन्तम् 6439. मार्जारो वर्धते चापि *wird dick und rund* MBh. 5, 5438. fg. शशिनं शुक्लपक्षादौ वर्धमानमिवौजसा R. 4, 54, 3. Varâh. Bṛh. S. 4, 31. Râǵa-Tar. 6, 292. Weber, Kṛshṇaǵ. 298. कलाभिः सोमस्य वर्धन्तीभिः Mârk. P. 64, 9. उल्का वर्धते Varâh. Bṛh. S. 94, 10. Bhâg. P. 1, 7, 30. दावाग्नेरिव वर्धतः (so ed. Bomb.) MBh. 3, 16072. ववृधे च महाभागो वयसानुदिनं तथा। गुणौघैश्च यथा बालः कलाभिः शशलाञ्छनः॥ Mârk. P. 63, 8. वयसा बुद्ध्या च 27, 1. पूर्णचन्द्रोदये पूर्णो वर्धते सागरो यथा R. Gorr. 2, 11, 18. 3, 30, 32. Bhâg. P. 8, 24, 41. सागरस्येव वर्धतः R. Gorr. 2, 105, 57. वेलया वर्धमानया Râǵa-Tar. 4, 539. तत्सेना नरनाथानां पृतनाभिः पदे पदे। कुल्यापगेव (so die ed. Calc.) कुल्याभिर्विशन्तीभिरवर्धत॥ 5, 140. वर्धते दिक्षु सर्वासु. — तद्राक्षसं सैन्यम् R. 3, 31, 42. भूमिं द्यां च ववृधिरे दानवाः *breiteten sich aus über* Hariv. 8066. वर्धता चैव वर्षेण 12773. वर्धमानाजिरैः *sich füllend* R. 5, 10, 4. कुलं वर्धते *vermehrt sich* M. 3, 57. अहान्येव वर्धन्ते *werden länger* Bhâg. P. 5, 21, 4. Spr. 2519. अवर्धमानश्चार्थः *sich nicht mehrend* Hit. 46, 8. धनम् *durch Zinsen wachsen* Jâǵń. 2, 44. वर्धमानमृणं तिष्ठेत् Spr. 4976. तस्य तद्वर्धते (राष्ट्रं) नित्यं सिच्यमान इव द्रुमः M. 9, 255. तेनायुर्वर्धते राज्ञो द्रविणं राष्ट्रमेव च 7, 136. येशा राष्ट्रं च 8, 302. धर्मः सत्येन 83. आयुर्विद्या यशो बलम् Spr. 3551, v. l. ववृधे कामः MBh. 3, 2148. अन्योऽन्यजयसंरम्भः Ragh. 12, 92. स्नेहः Pańḱat. I, 1. धर्मविजयः Râǵa-Tar. 3, 329. कीर्तिः Spr. 3167. शोकः R. 2, 62, 18. Spr. 110 (II). वर्त्स्यन्तावामयः स (d. i. परः *der Feind*) च 448. श्रद्धया वर्धते धर्मः R. 3, 43, 28. वीर्यम् 5, 3, 2. मदः Bhaṭṭ. 14, 13. क्षुच्चास्यावृधदश्नतः 15, 29. नूनमापूर्यमाणायाः सरय्वा वर्धते रवः *verstärkt sich* R. 4, 27, 12. धनक्षये वर्धति जाठराग्निः Spr. 781, v. l. अधर्मेण वर्धता Bhâg. P. P. 3, 11, 21. स प्रेत्येह च वर्धते *gedeiht, dem geht es wohl* M. 8, 172. 6, 34. नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं ब्रह्म वर्धते M. 9, 322. तथा ह्येता (प्रजाः) न वर्धेरन् MBh. 3, 1212. R. 3, 45, 15. तथा वर्धस्व भूपते। यथा रविर्यथा सोमो यथेन्द्रो वरुणो यथा 2, 11, 19. पुत्रवत्पाल्यमानास्तु महात्मना॥ ववृधुर्विषये तस्य Mârk. P. 116, 75. fg. वर्धस्वेत्याह राघवम् R. 7, 103, 7. कथं जीवेयुरत्यन्तं कथं वर्धेयुः MBh. 3, 344. सर्वतो वर्धति 5, 1702. वर्धिषीष्ठाः स्वजातेषु Bhaṭṭ. 19, 26. वृद्ध्वा *emporgekommen seiend* Spr. (II) 240. Kathâs. 10, 25. शिल्पानि मन्त्राश्च तथौषधानि — वर्धन्ति *gedeihen, haben guten Erfolg* Spr. 4398. अपि तपो वर्धते Çâk. 12, 20. Bhaṭṭ. 6, 68. Râǵa-Tar. 5, 461. दीयमानं तदा विप्रा वर्धतामिति चाब्रुवन् so v. a. *möge dir Segen bringen* MBh. 14, 1854. — *b) wachsen, in die Höhe gehen,* beim Gottesurtheil mit der Wage so v. a. *steigen* (in der Wagschale) Z. d. d. m. G. 9, 667. Mit. 145, 12. — *c) wachsen, gedeihen* mit acc. der Beziehung: स्वयं वर्धस्व तन्वम् *an deiner Person* ṚV. 7, 8, 5. 10, 98, 10. 116, 6. यस्तविषीं वावृधे शवः 23, 5. अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य 8, 3, 8. — *d) gehoben —, freudig erregt werden; sich ergötzen, — begeistern durch, an* oder *bei Etwas* (instr., auch loc.): त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा ṚV. 2, 1, 11. 11, 2. यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओको दधे 19, 1. स वावृधे नर्यो योषणासु 7, 95, 3. अग्ने वृधान आहुतिं जुषस्व 3, 28, 6. यः स्तोमेभिर्वावृधे 32, 13. सुते सुते वावृधे वर्धनेभिः 36, 1. अग्ने वर्धास इन्दुभिः 6, 16, 16. पीत्वी सोमस्य वावृधे 3, 40, 7. 47, 5. 51, 1. 53, 1. न रीषते (नः) वावृधानः परा दात् *wenn er freudig gestimmt —, befriedigt ist* 5, 3, 12. ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्षा आ 52, 7. 68, 4. 6, 37, 5. 44, 13. 69, 6. पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः *dabei ergötzt sich der Vater und (wächst) das Kind* 7, 101, 3. तुरस्पये 10, 96, 8. बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः 14, 3. AV. 1, 8, 4. 12, 1, 29. VS. 20, 43. इन्द्रं गृणीषे यस्मिन्पुरा वावृधुः शाशदुश्च ṚV. 2, 20, 4. रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः 34, 13. 5, 59, 5. 7, 60, 5. 8, 51, 10. शुद्धैरुक्थैर्वावृधांसम् 84, 7. 87, 8. बृहस्पतिर्नो हविषा वृधातु TS. 1, 2, 2, 1. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः *hat sich erregen lassen zu* ṚV. 1, 81, 1. mit gen.: ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः *an mir freue dich* 8, 6, 12. अस्य सुवानस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः 2, 11, 20. वृधन्तमधराणाम् 8, 91, 7. कारिणां वृधन्तम् (so vermuthen wir) *der Preisenden sich freuend* 2, 29. जम्भे रसस्य वावृधे *beim Schlucken* (eigentlich *im Rachen*) *freut sie sich des Safts* (*der Milch*) 1, 37, 5. 4, 23, 1. वृधस् und वृधत् Ausrufe in Opferformeln: *vergnüge dich* u. s. w. Âçv. Çr. 2, 3, 12. Kauç. 91. Aus der späteren Sprache gehören hierher Stellen wie: दिष्ट्या वर्धामहे पार्था दिष्ट्यासि पुनरागतः so v. a. *wir haben Grund uns zu freuen, geben wir uns der Freude hin, wir können uns glücklich schätzen* MBh. 3, 12286. वर्धसे दिष्ट्या जयो ऽयं प्रतिगृह्यताम् R. 6, 98, 6. Vikr. 8, 2. Pańḱat. 46, 9. वर्धसे दिष्ट्या क्षत्रधर्मेण R. 3, 35, 99. बलेन यशसा चैव वर्धस्व प्रज्ञया तथा 5, 33, 31. दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन

पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान्वर्धते Çiç. 103,14. Vira. 11,11. Mitâ. P. 110,3. दिष्ट्या वर्धसि धर्मज्ञ साध्वाद्य प्राप्तवानसि MBu. 2,1601. 1632. 5,542. 7, 6152. R. 7,1,38. वर्धय Mitâ. P. 18,17. वर्ध त्वमनया सार्धं धनपुत्रसुखान्विता 21,77. धर्मेण वर्ध तं नास्मान्क्लेसितुमर्हसि MBu. 1,7864. दिष्ट्या वर्धसि गोविन्द श्रीनिरूढसमागमात् Hariv. 10887. — 3) infin. वृधे zum *Wachsthum*, — *Gedeihen; zur Begeisterung, zum Ergötzen:* तं त्राता तमु नो वृधे भूः ṚV. 1,178,5. 4,2,18. 23,2. प्र शंसति नमसा वृतिभिर्वृधे 3,3,8. म क्षेता यस्य रोदसी पप्ता पक्षेभिः वृधे गृणोतः 6,10. 6,33,4. उतेदिं पृत्सु नो वृधे 46,3. 11. 8,3,1. 13,3. 27,4. घाषिं नेतामके वृधे 49,10. स्यामं मरुत्वता वृधे 52,10. 86,11. Vîtahav. 6,5. तुभ्यं तरन्ति दिव्या घापो वृधे AV. 11,2,24. Eben so वर्धसे . स्वे तोये मघोनां सहोना च वृधसे ṚV. 5,64,5. — 4) eine Verwechselung mit वर्त् ist vielleicht anzunehmen in folgenden Stellen: ततः समाप्तो ववृधे स राजन्दिवसान्बाहून् MBu. 1, 5972 (vgl. वर्तमाने समाप्तौ 6978). ततो विवाहो विधिवद्ववृधे मात्स्यपार्थयोः 1,3262. रामेण चेद्राजसेन्द्र वर्धते तव विग्रहः R. 3,41,3. ततो ऽभिषेको ववृधे शत्रुघ्नस्य 7,63,13. उत्सवाश्च समाजाश्च वर्धन्ते (v. l. वर्तन्ते) Spr. 4415, v. l. मन्त्रं हि वर्धते तस्य मैवाभवदतिणाम् MBu. 8,302. स्वजनेन वर्धमानेन R. 2,97,4. 3,34,4. पक्षविघ्नकरी पत्नी पुरा वर्धत (oder *an Macht gewinnen*) मायया R. Sch. 1,28,30. धर्मे ते वर्धतां बुद्धिर्मा चाधर्मे मनः कृथाः MBu. 3,15799.

— caus. 1) वर्धयति, ग्रवीवृधत् P. 7,4,8, Schol. a) *erhöhen, grösser —, wachsen machen, mehren, fördern:* वार्षं सहो वर्धया सुप्रमिन्द्र ṚV. 1, 103,2. वीरम् 118,2. इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति 2,11,1. 4. वाणीम् 8. वाचम् 9,97,36. ये वर्धयन्ति पृथ्वयं नित्याः 2,27,12. ग्रधा नो वर्धया गिरः 3,29,10. ग्रायुः 62,15. 5,11,5. ग्रोषधीः 62,8. (सरस्वती) पत्नी त्राता वर्धयन्ती 6,61,12. रयिम् 7,36,7. राष्ट्रम् AV. 3,19,5. mit gen.: स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय *lass den Lobsänger davon geniessen, sich daran ergötzen* ṚV. 3,36,1. — ज्ञातमात्रश्च यः सद्म इष्ट्या देवमवीवृधत् MBu. 1,2210. R. 5,56,53. स्वमांसं परमांसेन M. 5,52. एकैकं क्रमशोत्पिण्डं कृत्वे प्रक्षे च वर्धयेत् 11,216. वर्धितेन्धना (so die neuere Ausg.) Hariv. 7039. पूर्वं पयोधेः Spr. 1813. वर्धयन्ति तत्कूटानुद्भूतैर्धातुरेणुभिः Raçu. 4,71. श्रेष्ठः कुलं वर्धयति विनाशयति वा पुनः M. 9,109. रतिर्तं वर्धयेत् Spr. 233. fg. कीर्तिं कार्किन्या 3228. R. 1,7,7. Schol. zu Kîrân. Ça. 446,17. ग्रघाकृतिं *verlängern* M. 5,84. रात्रयो ब्रह्मणा वर्धिताः Schol. zu Naish. 22,57. महोत्सवः — भूरिवामरवर्धितः Kathâs. 23,86. शब्दं तोयसंरम्भवर्धितम् *verstärkt* R. 1,26,8. क्रमशो वर्धयंस्तपः M. 6,23. प्रीतिम् MBu. 1,4795. तेजो बलं च देवानां वर्धयन्ति स्त्रियं तथा 7661. शोकम् 3,2330. 15,811 (med.). 13,1722 (med.). R. Gorr. 2,38,28 (med.) 123,19. 7,99,18 (med.). 106,4. Kâm. Nîtis. 13,24. Spr. 3189. 4478 (med.). 4542. Mitâ. P. 16,55 (med.). Daçak. 87,8. LA. (III) 90,2. कर्म *fördern* MBu. 14,2300. वर्धिताशेषस्वानुसर्ग *blühend* Bhâg. P. 4,23,1. *grosssiehen, aufziehen:* शिशुम् ṚV. 10, 4,3. Hariv. 9222. Kathâs. 2,32. 27,103. 61,266. नारी नाम विषाङ्कुरैरिव लता देवैः सयं वर्धिता Spr. 75 (II). Çiç. 31, v. l. ये वर्धिताः कनकपङ्कुरेणुमध्ये कलहंसपोताः *aufgewachsen* Spr. 2320. ये वर्धिताः करिकपोलमदेन भृङ्गाः 2521. बालमन्दारवृतः Mâlav. 73. *Jmd gross machen, zur Macht verhelfen, in die Höhe bringen* AV. 2,6,1. 6,5,3. Çat. Br. 1, 6,3,13. MBu. 2,1622. वर्धयात्मानमात्मना Hariv. 3534. Spr. 438. 440. 862. 1375. 1829. Kâm. Nîtis. 5,69. fg. Rtâ-Tar. 4,493. तं जनपदे वर्धयेत्प्रयत्नेन *hegen, pflegen* Kâm. Nîtis. 4,56. med. mit medialer Bedeutung: प्रजा वर्धयमानः *sich seine Nachkommenschaft mehrend* ṚV. 1,125, 1. तन्वम् 10,39,5. वर्धित = पूर्ण und प्रसृत (प्रसित Mâlav.) H. an. 3,291. fg. Mâlav. 1. 149. — b) *erheben, freudig erregen, ergötzen:* सोमं गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामः ṚV. 1,91,11. 36,11. 190,1. ग्रस्मान्सु पृत्सु तरुत्रावर्धयो यो वृत्रहेन्द्रः 2,11,18. ब्रह्माण इन्द्रं मरुत्वन्तं वर्धयन्तो ग्रर्केरवर्धयन्नक्तये दस्रवा उ 5,31,4. 6,44,5. गीर्भिराभी रुद्रं दिवो वर्धया रुद्रमक्तौ 49,10. सूनृताभिः 1,123,3. क्षत्रस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति 8,80,4. AV. 4,9,3. वयस्कृतेण पयसम् 5,26,12. प्रजापतिं कविधा वर्धयन्ती TBr. 3,1,1,2. 2,1. कृत्तं त्रयाशिषा वर्धयित्वा Hariv. 5404. 9222. MBu. 14, 2650. R. 2,34,5. 6,5,17. 12,15. 7,23,3. 44,4. 6. Kathâs. 108,9. 110,119. पत्नीसंयाजविधिर्देवान्वर्धयानस्य R. 7,99,19, v. l. इष्ट्या देवीमवीवृधत् MBu. 1,2210 (eine von Nîlak. erwähnte Lesart). वावृधध्यै infin.: सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै ṚV. 1,61,3. 122,2. गीर्भिर्मित्रावरुणा वा० 6,67,1. 10,99,1. med. *sich erregen u. s. w.:* ग्रवीवृधन्त गोतमा इन्द्रं त्वे स्तोमवाहसः *begeisterten sich in dir* 4,32,13. ग्रस्तौढ्व स्तोम्या ब्रह्मणा मे ऽवीवृधध्वम् *ergötzet euch an* 124,13. ग्रवीवृधन्त पुरोडाशैः *thaten sich gütlich an* VS. 21,60. TBr. 2,6,18,2 (vgl. Âçv. Ça. 6,11,9). Çat. Br. 1,9,2,9. 10. — 2) वर्धापयति *freudig erregen* u. s. w. Hariv. 10886. 10906 (वर्धाप्य die neuere Ausg.). — वर्धित s. auch bes.

— desid. विवर्धिषते und विवृत्सति P. 1,3,92. 7,2,59. Schol. zu 1,2,10.

— intens. वरीवृध्यते, वरीवृधीति P. 7,4,90, Schol.

— ग्रति med. *hinauswachsen über* (acc.) Çat. Br. 1,8,1,3. ग्रतिवृद्ध (ग्रति + वृद्ध) *sehr gross:* प्रमाणेन R. 1,29,8. वन 5,17,6. *sehr heftig:* कोप MBu. 6,3768. वयसा *sehr alt* Mitâ. P. 61,11.

— ग्रधि med. *sich wohlbefinden bei* (loc.) ṚV. 9,75,1.

— ग्रनु 1) act. in der dunklen Stelle ग्रनु सुतासुमतिं वर्धदुर्वीम् ṚV. 5,62,5. — 2) med. *nachwachsen, heranwachsen, allmählich zunehmen* ṚV. 5,44,1. न वै त्रातं गर्भ योनिरनु वर्धते Çat. Br. 10,2,2,6. मकामीनो ऽन्ववर्धत *er wuchs zu einem grossen Fische heran* Bhâg. P. 8,24,31. क्षेत्रे ऽन्ववर्धत 6,14,36. — 3) ग्रनुवृद्ध in der Stelle वेदवादानुवृद्धानि वचांसि VP. bei Mull, ST. I, 147 fehlerhaft für ग्रनुवृत्त. — caus. *ausdehnen nach Etwas* Çat. Br. 10,2,2,6. *grosssiehen:* (शिशुम्) रसायनप्रयोगेण शीघ्रमेवान्ववर्धयत् (एव व्यवर्धयत् die neuere Ausg.) Hariv. 9220.

— ग्रभि 1) *heranwachsen, stärker —, grösser werden, zunehmen; sich ausdehnen —, hinauswachsen über* (acc.): विश्वा भुवना ṚV. 2,17,4. वर्धस्व पर्वतेभ्यो गोत्रा संधरे 5,44,5. त्रायां रसेनाभि वर्धताम् *übertreffen* AV. 6,78,1. 2. 1,29,1 (vgl. ṚV. 10,174,1, wo das Richtige). मरुद्भिर्द्युभ्यवर्धत *so gross er war, wuchs er noch* ṚV. 2,47,1. सपरिमितं वीर्यमभिवर्धते Çat. Br. 2,1,2,17. 13,4,2,2. — तत्पीत्वा तीरमेकाक्षा स कुमारो ऽभ्यवर्धत R. Gorr. 1,39,29. तीव्रः तीव्रो ऽपि शशो भूयो भूयो ऽभिवर्धते Spr. 788. (कामः) कविधा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते 1377. M. 9,218. भूते रागो भूयो ऽभिवर्धते MBu. 3,2235. सर्वप्राणिनां बलमभिवर्धते Sucr. 1,19,14. 128,8. MBu. 3,10857. ग्रभिवर्धति चाधर्मः Hariv. 2307. वार्यमाणस्य वाञ्छा हि विषयेष्वभिवर्धते Kathâs. 31,91. तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते R. 4,28,11. दातारो नो ऽभिवर्धन्तां वेदाः संततिरेव च *zunehmen, gedeihen* M. 3,259 (Jiân. 1,245). लोकः Kâm. Nîtis. 4,21. राजा त्रिवर्गेण *nimmt zu an, wird reicher an* M. 7,27. तपसा R. 1,65,10. —

2) fehlerhaft für अभिवर्त्: बलीयस्याभिवर्धत: *herankommend* R. 6,16, 19. ततः स कार्मुकी बाणौ समरे चाभिवर्धत 7,21,29. — Vgl. अभिवृद्धि. — caus. *stärker —, grösser machen, vermehren* AV. 4,29,1.3 (vgl. ṚV. 10,174,1.3, wo das Richtige). स्वकोशम् Jiḷ. 1,339. भाण्डागाराणुपाग्गारं प्रयत्नेनाभिवर्धयेत् MBu. 13,3339. प्रीतिम् 1,4793. 3757. 5,2939. धर्मम् 13,7590. R. Gorr. 1,78,14. *dehnen* Suçr. 1,38,7. *grossziehen:* धान्यस्तानभ्यवर्धयन् R. Gorr. 1,40,18.

— समभि *wachsen, zunehmen:* व्याघ्रेराघ्राकृतस्येव तेजः समभिवर्धते (°वर्धत ed. Calc., °वर्तत: die neuere Ausg.) Hariv. 13923. — caus. *grösser machen, verstärken, mehren:* रूपम् MBu. 3,583. कीर्तिम् R. 2,90,21 (99,27 Gorr.).

— आ 1) act. in der verdorbenen Stelle: एमेनमवृधन्नमृता मर्त्यं नेत्रेत्याय VS. 33,60, wo es heissen müsste *liessen heranwachsen;* TBr. 2,4,6,7 wird st. dessen अमन्थन् gelesen. — 2) med. *heranwachsen —, sich heranbilden zu* (acc. oder dat.): भीम आ वावृधे शवः ṚV. 1,81,4. आ त्रैत्रेयस्य ङत्तवौ युमद्दधत्त कृष्टयः 5,19,3. अपिं चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः 55,3.

— उद् *emporwachsen, hervorbrechen:* °उद्वृद्धराग Rāǵa-Tar. 1,252. vielleicht fehlerhaft für उद्वृत्त.

— नि scheinbar MBu. 4,1918, wo aber mit der ed. Bomb. व्यवर्धत zu lesen ist.

— परि 1) *heranwachsen, wachsen, zunehmen:* राजपुत्रः पर्याप्तं पर्यवर्धत Rāǵa-Tar. 3,107. सा परिवर्धमाना लब्धोदया चान्द्रमसीव लेखा Kumāras. 1,25. (डुक्ष्ञिता) परिवर्धते सरु शुचा नुकूदाम् Spr. 931. बलामः Suçr. 1, 152,16. प्रज्ञावत्सलता पर्याप्ता पर्यवर्धत Rāǵa-Tar. 3,194. परिवृद्ध *angewachsen, vermehrt* Kām. Nītis. 13,47. एकोत्तर° *der Reihe nach um eins zunehmend* Suçr. 1,153,13. *heftig:* राग Rāgu. 9,69. प्रसु Bhāg. P. 6, 14,47. *hoch gestiegen, zu grossem Ansehen gekommen* Hariv. 13807 (die neuere Ausg. लब्ध वृद्धः). — 2) fehlerhaft für परिवर्त् Hariv. 2188 (die neuere Ausg. richtig °वर्तते). एवं च स (मकोत्सवः) प्रतिदिनं परिवर्धमानः Kathās. 34,264. — Vgl. परिवृद्ध fg. — caus. 1) *aufziehen, grossziehen:* या सा बाल्यात्प्रभृत्यस्मान्पर्यवर्धयत MBu. 5,2956. Hariv. 11077. Rāgu. 13,62. अदितिपरिवर्धितमन्दारवृक्ष Çiç. 100,15. *anschwellen machen:* das Meer Rāgu. 13,3. Bhatt. 7,107. — 2) *ergötzen, erfreuen;* mit gen. (?) der Person Hariv. 8804. — 3) fehlerhaft für परिवर्तय् *umwandeln:* सर्वं तत्काञ्चनमयं कालेन परिवर्धितम् MBu. 7,2160. — Vgl. परिवर्धन fg.

— प्र 1) act. *erheben, ergötzen:* प्र वो स्तोमा गिरो वर्धन्त्विन्द्रा ṚV. 8,6,22. — 2) med. (ausnahmsweise act.) *heranwachsen, zunehmen, Kraft gewinnen* ṚV. 2,22,2. अग्ने मा त्वं प्रवर्धिष्ठाः MBu. 1,1244. Mārk. P. 68, 33. गजमात्रः प्रववृधे *er wuchs zu der Grösse eines Elephanten an* Bhāg. P. 3,13,19. न मे मन्युः प्रवर्धते MBu. 3,1072. प्रज्ञा तेजो बलं चतुरापुशैव प्रवर्धते M. 4,42. धर्मः 11,15. दुःखं भूयश्चापि प्रवर्धते Spr. 4676. Rāǵa-Tar. 3,127. प्रवर्धमानवैर 6,343. लोकानुग्रहकर्तारः प्रवर्धन्ते मरीचयः *gedeihen* Spr. 2682. पापान्प्रवर्धतो दृष्ट्वा कल्याणानवसीदतः MBu. 13,5915. तदतीव प्रवर्धते गृहम् 13,3222. प्रेद्धग्निर्ववृधे स्तोमेभिः *erregt werden* ṚV. 3,5,2. प्रवृद्ध (प्रवृद्धे P. 6,2,147) = उच्छ्रित AK. 3,4,44,87. = प्रौढ, एधित 3,3,26. H. 1495. = प्रमृत AK. 3,2,38. *aufgewachsen* Spr. 4032. शतशिरा शतनिषीष्ट प्रवृद्धः so v. a. *ausgetragen* ṚV. 4,18,1. प्रवृद्धो दस्युकर्मणि 1,66,3. *gross, hoch:* Indra 1,33,3. 165,9. 8,6,32. 12,3. 82,1. वृषभ 85,2. AV. 4,26,2. कृषि MBu. 3,15645. R. Gorr. 1,72,27 (70,38 Schl.). 2,119,28. मरुद्गुम 4,31,15. 5,16,20. MBu. 3,15703. प्राकार R. 3,54,15. नग 17,23. शिखर R. Schl. 2,56,10. 5,16,29. शृङ्ग 8,26. Vaṛāh. Bṛh. S. 12,6. लिङ्ग Suçr. 2,396,3. स्तनद्वय Kumāras. 1,40. तोयदाः *angeschwollen* R. 6,73,4. घोष Kumāras. 3,6. ऊर्मि Rāgh. 5,61. शम्भः प्रलयप्रवृद्धम् 13,8. सरित् Rāǵa-Tar. 4,650. 5,85. *gesteigert, heftig, stark:* वायु MBu. 4,1978. पवन्य Rāgh. 17,15. घटिनीरवांसि 7,37. अनङ्गकश्मल Bhāg. P. 3,14,15. तमस् R. 6,104,4. दर्प 1,14,43. कोप 3,72,2. तृष्णा Ṛt. 1,15. मनोरथ Kumāras. 7,24. आननचन्द्रकान्ति 74. स्नेह Kathās. 31,90. गर्व Rāǵa-Tar. 6,142. राग 333. कृपा Bhāg. P. 3,7,42. भक्ति 14,47. 16, 86,28. भाव 4,31,28. लोभ 21,66. निद्रा MBu. 1,5392. R. 3,23,39. 35,64. प्रवृद्धनक्तञ्चरणा रात्रौ: *zahlreich* Hariv. 12545. महाद्रुपातसंघात इव प्रवृद्धः Rāgh. 14,11. प्रवृद्धर्ण *viele Schulden habend* Rāǵa-Tar. 6,16. क्षितिः क्षितिपैरभिपालनप्रवृद्धा *blühend gemacht, zur Wohlfahrt gebracht* Vaṛāh. Bṛh. S. 19,14. *mächtig:* काल Bhāg. 11,32. *alt geworden* Kathās. 22, 159. वयसा *alt an Jahren* MBu. 1,3579. — 3) ein Verwechselung mit प्रवर्त् ist wohl in folgenden Stellen anzunehmen: प्रवर्धमानपृतनाः *heranrückend* Rāǵa-Tar. 6,232. घनात्कुलं प्रभवति घनाद्धर्मः प्रवर्धते *geht hervor* MBu. 12,226. अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रज्ञानो न प्रवर्धते प्रज्ञानं न प्रवर्तते M. 3,61). तस्मात्सर्वं प्रवर्धते Kām. Nītis. 4,56. चित्ते प्रवर्धते तापः Rāǵa-Tar. 4,618. सीतास्नेहप्रवृद्धेन बाष्पेण R. 4,5,15. प्रवृद्धनृत्य (v. l. प्रवृत्त°) Ṛt. 2,6. प्रवृद्धमत्सर Rāǵa-Tar. 5,33. प्रवृद्ध R. 4,9,83 fehlerhaft für प्रविद्ध, Rāǵa-Tar. 4,319 für प्रबुद्ध. — Vgl. प्रवृद्धि, अतिप्रवृद्ध (*sehr hoch von Wuchs* R. 3,10,20. 4,17,14), चोदप्रवृद्ध. — caus. *grossziehen* Kathās. 61,271. Mārk. P. 38,9. *vergrössern, stärken, mehren:* कुलवंशम् MBu. 13,3350. Hariv. 6308. काकिनीम् so v. a. *zulegen* Spr. 3228, v. l. मतिम् ṚV. 8,6,32. AV. 2,6,2. प्रवर्धयते चन्द्रमा दीर्घमायुः *verlängert* Nir. 11,6. 36. AV. 19,32,3. *Jmd erhöhen, zur Wohlfahrt befördern* Hariv. 11272. — Vgl. प्रवर्धक fg.

— अभिप्र caus. partic. °वर्धित *gedehnt* Suçr. 2,149,12. *in einen blühenden Zustand versetzt:* देश MBu. 1,4350.

— प्रतिप्र. °वृद्ध *verstärkt* (°वृत्त die neuere Ausg.) Hariv. 12124.

— संप्र *wachsen, sich verstärken, zunehmen:* श्रोमङ्गलात्प्रभवति प्रागल्भ्यात्संप्रवर्धते Spr. 3087. चत्वारि संप्रवर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् 3351. ज्ञातयः *gedeihen* 3309. °वृद्ध *aufgewachsen, gross geworden* MBu. 3,10629. 12738. (चन्दैः) स्थाणुदिक्संप्रवृद्धैः *zusammengeballt, angeschwollen* Vaṛāh. Bṛh. S. 24,24. शुक्ले पक्षे संप्रवृद्धे *wachsend, zunehmend* 4,22. प्रताप *zugenommen, verstärkt* Kām. Nītis. 15,8. यो विद्यया तपसा संप्रवृद्धः *reich an Jahren und an Askese* MBu. 1,3579. — caus. *Jmd zur Grösse verhelfen* R. 5,7,25.

— प्रति s. प्रतिवर्धिन्, welches Nīlak. durch प्रातिकूल्येन क्रेदिनी erklärt.

— वि 1) *heranwachsen, zunehmen, anschwellen, gedeihen:* (मरुतः) मक्ष्मा वि वावृधुः ṚV. 5,59,6. उर्विया वि वावृधे 1,141,3. स्तोत्रेण प उक्थिनो विवावृधे 9,108,8. Çāṅku. Ça. 5,11,16. द्वादशाहो यैरहोभिर्विवर्धते *verlängert werden* 13,14,10. Āpast. beim Schol. zu Kāty. Ça. 1,3,15.

— संवत्सरेणोस् वै त्राता विवर्धते Maitrâyan. 6,15. MBh. 1,2992. 4864 (ववृधुस्). गर्भः व्यवर्धत तदा शुक्ले तारापतिरिवाम्बरे 3,16628. R. 2,42, 2. 5,3,1. 35,33. 41,26. विवर्धती 1,27,7. Mârk. P. 43,54. इन्द्रशत्रो विवर्धस्व Bhâg. P. 6,9,11. 18. उदरेण विवर्धता MBh. 1,4530. विना मलयादन्यत्र चन्दनं न विवर्धते (प्रोक्षति v. l.) Spr. 2615. विवर्धमानैरमलमरित्सलिलैः Bhatt. 10,53. Vaitân. Bâḍ. S. 21,25. Verz. d. Oxf. H. 117, b, 9. चन्द्रोदये विवर्धन्तम् (सम्भ्रमं निधिम्) MBh. 8, 1804. बाले विवर्धते श्लेष्मा मध्ये पित्तमेव तु Suçr. 1,129,12. विवर्धमाना कवा Bhâg. P. 3,5, 13. धर्मः M. 9,111. कृच्छ्रः MBh. 3,2088. 4,1918 (व्यवर्धत st. न्यवर्धत ed. Bomb.). तथा भूमिकृतं दानं सस्ये सस्ये विवर्धते 13,3135. 7160 (विवर्धति). Harîv. 11307. R. Gorr. 2,63,18. 76,25. 3,43,38. 5,42,15. Suçr. 2, 309,18. 371,21. Spr. 1460. 1524. 2450. 2596. 3417. 4466. Verz. d. Oxf. H. 37,b, 9, v. u. अग्निः दैवम् Spr. 4782. विवर्धमानो वीर्येण समुद्र इव पर्वणि R. 1,55,20 (56,20 Gorr.). धनवीर्यैस्तं विवर्धस्व सुतेन च Mârk. P. 21,101. राष्ट्रम् gedeihen Spr. 3811. प्रजाः MBh. 1,4343. 7746 (व्यवर्धन्). Harîv. 49. 6452 (विवर्धितुम्). 8933. Spr. 4574. समागमेन पुत्रस्य साविध्या दर्शनेन च। चतुष्पदात्मनो लाभात्त्रिभिर्दिष्ट्या विवर्धसे ॥ so v. a. du kast Grund dich zu freuen, — dich glücklich zu schätzen MBh. 3,16880. fg. विवृद्ध herangewachsen, gross geworden Çvetâçv. Up. 3,11. MBh. 1, 6129. 7624. R. Gorr. 1,8,32. Kathâs. 2,71. 14,39. 34,87. Mârk. P. 45, 62. वृत्त R. Gorr. 2,117,13. ताः शाखा विवृद्धा शतयोजनम् 3,39,27. 5, 55,2. VP. bei Muir, ST. IV, 34. कर्पविवृद्धवक्त्र R. 4,6,24. MBh. 4,396. 13,1081. दृष्ट्वा gross Harîv. 12949 (nach der Lesart der neueren Ausg.). कबन्ध R. 3,74,14. Mṛicch. 92,10. गोधनानि gross, zahlreich Harîv. 3729. घर्वाः angewachsen Spr. 227. सत्त्व gesteigert Bhâg. 14,11. बुद्धि R. 3,28, 9 मन्यु 42. Kumâras. 3,71. तृष्णा 86. Raghu. 2,32. 3,60. Bhâg. P. 2,7,19. 3,9,25. 10,6. 18,19. 4,2,19. 21,31. शत्रु zu Macht gelangt MBh. 12,4207. Spr. 3734. — 2) sich erheben, entstehen: ततो कलकलाशब्दो व्यवर्धत MBh. 3,805. 14,2390. — विवर्धते Harîv. 3822 in der neueren Ausg. fehlerhaft für विवर्तते, wie die ed. Calc. liest. — Vgl. विवृद्धि. — caus. 1) grossziehen, gross machen Harîv. 4202. 9920 (शीघ्रमेव व्यवर्धयत् die neuere Ausg.). Kathâs. 24,2. 160. वृत्तम् Spr. 2349, v. l. Kumâras. 5,14. बालरूपम् Harîv. 9268. Etwas höher machen, erhöhen: समत्ताद्विवर्धयेतुत्यम् Vaitân. Bâḍ. S. 53.116. vermehren, vergrössern, verstärken, verlängern Çâṅkh. Çr. 16,20,9. भारम् Spr. 1107. मांसं रक्तं च Suçr. 2,307, 15. प्रीतिं तस्य MBh. 4,34. मदं च मदनं च Spr. (II) 93. अष्टवर्गम् Kâm. Nîtis. 5,79. Mârk. P. 34,12. 39,40. द्विकविवर्धित vermehrt um zwei Vaitân. Bâḍ. S. 72,2. 77,10. बलानि विवर्धयन्ति भूभृताम् so v. a. bewirken, dass manche Heere sich in Bewegung setzen, 30,28. Jmd fördern, Jmd zur Wohlfahrt verhelfen: मित्राणि MBh. 12,3441. R. 5,7,3. 6,11,20. प्रव्रास्तद्वरुणा नयो नभसेव विवर्धिताः Raghu. 17,41. तपसा च विवर्धितः den man an Askese hat gewinnen lassen R. Gorr. 1,67,4. — 2) ergötzen, erfreuen: विवर्धितश्च ऋषिभिर्देव्यैः कव्यैश्च MBh. 5,447. पितॄन्देवान्विवर्धयन् R. 7,99,18.

— अभिवि s. अभिविवृद्धि.

— प्रवि, caus. partic. प्रविवर्धित in hohem Grade gesteigert: °वित्तेच्छ Râja-Tar. 4,631.

— संवि gedeihen: संव्यवर्धत भोगांस्ते भुञ्जानाः MBh. 1,4977.

— सम् 1) act. erfüllen, gewähren: कामान्संवर्ध R. ed. Bomb. 2,25,42. — 2) heranwachsen, wachsen: सं जातरो वावृधुः सौभगाय ṚV. 5,60,5. पुमान्संवर्धतो मयि Çâṅkh. Gṛ. 1,17. यद्यामयः संववृधे Bhâg. P. 10,37,7. संवृद्ध aufgewachsen MBh. 1,113. 3,16667. 6,3980. Harîv. 4202. R. 1, 9,5. 2,61,3. R. Gorr. 2,58,5. 62,5. 80,5. 3,7,27. 22,29. 4,21,9. 5,3,28. Spr. 2721. Râja-Tar. 3,130. gross gewachsen, gross gezogen: वृत्त Spr. 418, v. l. grösser geworden, verstärkt: वह्नि 1653. डाकिनीनादसंवृद्धगृध्रवायसवाशित Kathâs. 18,147. MBh. 13,1077 (संरूढ ed. Bomb.). चतूराग Râja-Tar. 5,383. श्राद्धं चिरसंवृद्धम् blühend R. 1,55,27 (56,27 Gorr.). अतिसंवृद्ध sehr gross: श्रुन् 2,70,23. — caus. 1) grossziehen, aufziehen, ernähren, füttern MBh. 1,3613. 4364. 5089. Harîv. 99. R. 1,39,18. 2,53,20 (53,23 Gorr.). R. Gorr. 2,17,37. 64,7. 3,4,19. Spr. 1672. 1805. 5102. Kathâs. 27,5. 59,98. Mârk. P. 74,49. 99,35. Pañcat. 4,3,203. Daçak. 75,14. fg. Pañcat. 182,13. 188,19. Hit. 26,16. 58,10. 70,13. 113,7, v. l. Kull. zu M. 2,142. पाट्यान् aufziehen, pflegen Raghu. 5,6. 13,34. 14,73. Spr. 418. अग्निम् verstärken MBh. 3,258 (mit der ed. Bomb. संवर्धयन् zu lesen). R. 5,30,18. सूर्यः संवर्धयत्यग्निमग्निः सूर्यं स्वतेजसा Vish. 138. निर्वाणदीपस्य सेकः संवर्धयेच्छिखाम् beleben Spr. 2241. कोशम् vermehren, verstärken Kâm. Nîtis. 5,87. वर्षम् MBh. 1,8279. ज्ञपेति वाचा महिमानमस्य संवर्धयन्तो ऋषिषेव वह्निम् Kumâras. 7,43. पशः MBh. 2,1601. धर्मम् 13, 757. प्रीतिम् R. Gorr. 1,70,13. शोभाम् Kâm. Nîtis. 5,40. अनुग्रहम् Kumâras. 3,3. रागम् Spr. 622. pflegen: दण्डम् ein Heer Raghu. 17,62. मल्लीम् zum Gedeihen bringen Bhâg. P. 1,17,42. शारत्संवर्धिता मेदिनी so v. a. bepflanzt Vaitân. Bâḍ. S. 27,1. beschenken mit (instr.) R. Gorr. 2,84,13. Raghu. 4,37. verschönern 5,52 (संवर्धित zu lesen). — 2) = संवर्तय् erfüllen, gewähren: कामान् M. 11,242. R. 2,25,42 (संवर्ध यादि भो ed. Bomb.).

— अभिसम् wachsen: वनस्पतिः। वर्षपूगाभिसंवृद्धः so v. a. sehr alt MBh. 12,5805.

2. वर्ध्, वर्धयति Dhâtup. 32,111 (छेदनपूरणयोः). abschneiden: वर्धित abgeschnitten H. an. 3,391. Med. t. 149. वर्धापयति dass. Weber, Kṛishṇaj. 302. — Vgl. 2. वर्धक, वर्धकि, 2. वर्धन, वर्धापन.

3. वर्ध्, वर्धयति Dhâtup. 33,109 (भाषार्थ, v. l. भासार्थ).

वर्ध (von 1. वर्ध्) 1) adj. mehrend, verstärkend; erfreuend; s. नन्दि°, मित्र°. — 2) m. a) parox. das Gedeihenmachen, Fördern: वर्धामि वो वर्धायथो घृतस्नू ṚV. 10,12,4. — b) Clerodendrum Siphonanthus R. Br. Gaṇâdh. im ÇKDa. — 3) n. Blei H. 1041.

1. वर्धक (vom caus. von 1. वर्ध्) 1) adj. mehrend, verstärkend; s. अग्नि°. — 2) m. Clerodendrum Siphonanthus R. Br. AK. 2,4,8,8.

2. वर्धक (von 2. वर्ध्) 1) adj. abschneidend, scheerend; s. माष°, श्मश्रु°. — 2) m. Zimmermann R. Gorr. 1,12,6; vgl. वर्धकि.

वर्धकि (wie eben) m. Zimmermann AK. 2,10,9. 3,4,4. H. 917. Hâlâ. 2,132. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,118. MBh. 5,255. R. 2,80,2. त्रिदशानाम् MBh. 1,2592. Harîv. 162. — Vgl. देव°.

वर्धकिन् m. dass. Çârṅgâr. im ÇKDa. MBh. 13,1223. R. Gorr. 2,87,2. 7,91,24. Vaitân. Bâḍ. S. 43,22.

1. वर्धन (von 1. वर्ध्) oxyt. P. 3,2,149, Schol. proparox. (संज्ञायाम्) gaṇa नन्द्यादि zu 3,1,134. 1) adj. (ई) a) wachsend, zunehmend; =

वर्धिष्णु AK. 3, 1, 28. Mad. n. 121. (कृषिः) कर्माण्यारभते कर्तुं कीनाश इव वर्धनः *wie ein Getreide, der immer reicher und reicher wird*, MBh. 5, 2536. — *b) mehrend, stärkend; ergötzend, begeisternd; Wachsthumgeber, Mehrer u. s. w.*: इयं ते गीः सदमिद्वर्धनी भूत् RV. 10, 4, 7. यज्ञो हि ते इन्द्र वर्धनो भूत् 3, 32, 12. 5, 73, 10. 7, 22, 7. 8, 51, 4. कविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकणोरवध्यम् VS. 8, 46. यो वर्धन् योर्यधीनाम् RV. 7, 101, 2. स्तोमस्य 8, 8, 5. °नी राष्ट्रस्य Ait. Br. 8, 7. घोतसः Suça. 1, 175, 10. als Beiw. Çiva's *Wachsthumgeber* MBh. 13, 1332. In comp. mit dem obj.: पितामि° Suça. 1, 217, 21. विष° Spr. 489. वित्त° M. 10, 55. राशि° Spr. 4839. वर्ष° Uttarar. 66, 8 (85, 8). संतान° Jiân. 1, 90. मान° M. 9, 113. कीर्ति° MBh. 1, 121. कृच्छ्र° 3, 2154. कर्ष° Harîv. 6369. 14554. R. 1, 1, 17. 2, 45, 7. 3, 79, 24. 5, 80, 30. 86, 13. Spr. 4250 (fem.). Râga-Tar. 3, 187. Bhâg. P. 3, 4, 34. 19, 28. 5, 1, 28. 7, 1, 4. 8, 22, 28. Verz. d. Oxf. H. 20, *b*, 7. 68, *a*, No. 119, Z. 10. सत्त्व° *fördernd* Bhâg. P. 1, 7, 2. अपवर्ग° 3, 25, 12. पुर° *Wohlfahrt verleihend* Harîv. 8187. कुरु° *erfreuend* MBh. 1, 1739. 14, 402. केकय° R. 7, 38, 13. मनोनयन° *ergötzend* Bhâg. P. 3, 28, 16. 4, 8, 49. — 2) m. *a) Ueberzahn* Suça. 1, 303, 10. 304, 12. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2560. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Mitravindâ Bhâg. P. 10, 61, 16. — 3) f. ई *a) Besen* H. 1016. Hall. 2, 147. — *b) ein Wasserkrug von best. Form* H. 1021, v. l. an. 3, 411. Mad. Hall. 2, 162. Pañkat. 3, 6, 7. Glaspa P. 48 im ÇKDa.; vgl. वार्धनी. — 4) n. *a) Wachsthum, Zunahme*; = वृद्धि Taik. 3, 3, 249. H. an. Mad. इच्छन्ते मांसशोणितवर्धनम् MBh. 12, 12059. कुलस्य R. 1, 13, 55. यशसः 2, 74, 26. *das Gedeihen, Mächtigwerden* Spr. 1828. 2755. स्वपत° R. 6, 11, 11. — *b) Vergrösserung*: वेदि° Kâty. Ça. 8, 8, 22 यातानाम् Spr. 651. — *c) Stärkungsmittel; Ergötzung, Begeisterung* RV. 1, 10, 10. 52, 7. 80, 1. यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमः 2, 12, 4. 39, 8. 8, 81, 5. 10, 49, 1. यो भोजनं च दयसे च वर्धनम् 2, 13, 6. 3, 36, 1. 8, 1, 3. इदमुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् 1, 114, 6. 140, 3. Nir. 4, 19. — *d) das Aufziehen, Grosszichen*: बालयोः Kathâs. 21, 119. — Vgl. अग्र°, अशोक°, उक्थ°, कन्द°, कफ°, कमल°, कुल°, केश°, क्रोध°, क्षत्र°, गो°, चारुवर्धना. देववर्धन, घृत°, द्रव्य°, धर्म°, धान्य°, नन्द°, नन्दि°, नृप्ण°, पशु°, पुराड°, पुण्य° (als adj. *Verdienst mehrend* Harîv. 14534), पुष्टि°, प्रभाकर°, बल°, ब्रह्म°, भूमि°, भोग°, मति°, मित्र°, मेरु°, यज्ञ°, रक्त°, रति°, रत्न°, राज्ञ°, राज्य°, राम°, राष्ट्र°, लक्ष्मि° (unter लक्ष्मि), लिङ्ग°, वंश°, शंकर°, शंभु°, स्तोम°.

2. वर्धन (von 2. वर्धू) n. *das Abschneiden* AK. 3, 3, 7. Taik. 3, 3, 219. H. 372. an. 3, 411. Mad. n. 121. Hall. 4, 41. — Vgl. नाभि°.

वर्धनमूरि m. N. pr. eines Gaina-Lehrers Wilson, Sel. Works 1, 294.

वर्धनस्वामिन् m. Bez. eines best. Heiligthums (einer Statue) Râga-Tar. 3, 357. 6, 191.

वर्धनिका (von वर्धन) s. चतुर्वर्धनिका. Nach Vjutp. 206 ist वर्धनिका bei den Buddhisten *ein zur Aufbewahrung geheiligten Wassers dienendes Fläschchen* (abgebildet bei Pallas, Sammlung hist. Nachr. über die mongolischen Völkerschaften II, Pl. IX, Fig. 22). In dieser Bed. vielleicht nur fehlerhaft für वार्धानिका.

वर्धनीय (vom caus. von 1. वर्धू) adj. *zu mehren, zu verstärken*: मति R. Gorr. 2, 23, 12. गर्व Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 9, Çl. 33. *dessen Wohlfahrt zu fördern ist*: ज्ञातयो वर्धनीयास्तैर्य इच्छत्यात्मनः सुखम् MBh. 5, 1462. 7, 6121. Harîv. 5747.

वर्धमान (von 1. वर्धू) 1) adj. s. u. वर्धू. — 2) m. *Ricinus communis* (wegen seines *starken Wuchses* so genannt) AK. 2, 4, 2, 32. Taik. 3, 3, 249. H. an. 4, 188. Mad. n. 205. Hit. 108. Sçe. 2, 284, 7. — 3) m. *süsse Citronen* Râgân. im ÇKDa. auch f. आ ebend. — 4) Bez. *einer best. Figur* Varâh. Bṛh. S. 50, 3. 71, 5. 79, 31. 94, 3. Lalit. ed. Calc. 122, 20. 334, 18. — 5) m. n. *eine Schüssel von best. Form* Taik. H. 1024. H. an. Mad. Hit. 167. Hall. 2, 160. MBh. 7, 2920 (m.). तिलपूर्णानि वर्धमानानि 13, 3362. 4242. Suça. 1, 107, 5. — 6) m. n. *ein Haus, das nach der Südseite keinen Ausgang hat*, H. an. Hall. 2, 150. Varâh. Bṛh. S. 53, 38. 86. R. 5, 10, 1. चतुःशालं दक्षिणाद्वारकीनं तु वर्धमानमुदाहृतम् Matsja-P. 241 (nach Aufrecht). — 7) m. Bez. *einer best. Verbindung der Hände* Verz. d. Oxf. H. 66, *a*, 32. 202, *a*, 18. *b*, 24. — 8) f. आ *eine* Gâjatrî *mit 6, 7, 8 (8, 6, 8) Silben* RV. Prât. 13, 15. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 152 (1, 7). Ind. St. 8, 239. fg. — 9) n. *ein anderes Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 165 (VII, 2). Ind. St. 8, 356. fg. — 10) m. *eine Art Räthsel* (प्रहेलिका) Taik. H an. Mad. — 11) m. Beim. Vishṇu's Taik. 1, 1, 32. 3, 3, 249. H. ç. 68. H. an. Mad. — 12) m. N. pr. eines Berges und Districtes (das heutige Bardwân) Kûmârârka im Gjotistattva nach ÇKDa. Varâh. Bṛh. S. 14, 7. 16, 5. Bhâg. P. 5, 20, 21. Mârk. P. 59, 13. Kshitîç. 45, 4. 48, 7. n. N. pr. einer Stadt (vgl. वर्धमानपुर) Kathâs. 24, 19. Pañkat. 26, 10. f. आ desgl. Vet. in LA. (III) 23, 10. m. N. pr. eines Grâma Râga-Tar. 4, 269. m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 14. — 13) m. N. pr. verschiedener Männer: der 24te Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇî, = वीर H. 30. H. an. Colebr. Misc. Ess. II, 213. fgg. Wilson, Sel. Works I, 292 u. s. w. Çatr. 1, 10. 26. Verz. d. B. H. No. 1364. Verz. d. Oxf. H. 186, *b*, 18. Gelehrte, Kaufleute, Diener Hall 21. fg. 29. 65. 72. 83. Verz. d. B. H. No. 550. 687. fgg. Verz. d. Oxf. H. 137, *a*, 2. 162, *b*, 23. 243, *a*, No. 601. 279, *a*, 41. Bhâg. P. I, LXXVIII. Sarvadarçanas. 136, 16. Mâlav. 45, 10. Pañkat. ed. orn. 3, 11. Hit. 45, 6. नव्य° Verz. d. Oxf. H. 292, *b*, 8. — 14) f. ई Bez. *eines von* Vardhamâna *verfassten Commentars* Hall 21.

वर्धमानक (von वर्धमान) m. 1) *eine Schüssel von best. Form*, = वर्धमान AK. 2, 9, 32. MBh. 14, 1927. 2539. — 2) Bez. *einer best. Verbindung der Hände*, = वर्धमान Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 34. fg. — 3) Bez. *einer ein best. Gewerbe treibenden Person*: नटनर्तकगन्धर्वैः पूर्णकैर्वर्धमानकैः । नित्योद्योगैश्च क्रीडद्भिस्तत्र स्म परिरक्षिताः ॥ MBh. 7, 2199. = घारार्तिक-रुस्त (wohl घारात्रिकरुस्त) Nilak. — 4) N. pr. einer Gegend oder eines Volkes, = वर्धमान AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (56). — 5) ein Mannsname Mudrâ. 26, 9. Pañkat. 6, 8. — 6) N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 36. — Vgl. पिप्पली° unter पिप्पली 3) *b*) am Ende, wo noch hinzuzufügen ist Çiksh. Sañh. 2, 5, 2 und पिप्पलीवर्धमान Suça. 2, 417, 15.

वर्धमानद्वार n. *das nach* Vardhamâna *führende Thor*, N. pr. eines *Thores* in Hâstinapura MBh. 15, 443; vgl. वर्धमानपुरद्वार 1, 4905. 3, 10.

वर्धमानपुर n. N. pr. einer *Stadt* MBh. 1, 4905. 3, 10. Kathâs. 39, 3. 124, 103. Verz. d. Oxf. H. 155, *a*, 24. *b*, 18. Pañkat. 134, 2. Nilak. zu MBh. 1, 4905 erklärt °द्वार durch मुख्यद्वार, über °द्वारात् 3, 10 lässt er sich folgendermassen aus: वर्धमानपुरं नाम ग्रामविशेषः तदभिमुखं द्वारं त-

स्मात् वधु हिंसायाम् वर्धमानाः हिंसकाः तेषां पुरं कुत्सितमार्गेण निःसारिता इत्यन्ये.

वर्धमानपुरीय adj. aus Vardhamânapura gebürtig Kathâs. 123,140.

वर्धमाननति m. N. pr. eines Bodhisattva Râshṭrapâlapar. 2. Lot. de la b. l. 2.

वर्धमानमिश्र m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 45. Verz. d. Oxf. H. 173,b, No. 398.

वर्धमानेन्दु m. Titel eines Commentars zur Vardhamânî Hall 21.

वर्धमानेश (वर्धमान + ईश) m. Bez. eines Heiligthums (einer Statue) Râja-Tar. 2,133.

वर्धमाल m. N. pr. eines Brahmanen Tîrân. 3. 268.

वर्धयितृ (vom caus. von 1. वर्ध्) nom. ag. *Aufzieher, Grosszieher;* कन्या° Kathâs. 61,263.

वर्धापक (von 2. वर्ध्) 1) nom. ag. wohl *der die Cerimonie des Abschneidens der Nabelschnur vollbringt* H. an. 3,15. 5,41. Med. k. 61. r. 305. — 2) wohl *die bei dieser Cerimonie vertheilten Geschenke* H. an. 4,272. Med. r. 285.

वर्धापन (wie oben) n. 1) *das Abschneiden der Nabelschnur, die Feier an die Erinnerung dieses Tages; Geburtstagsfeier* an. überhaupt *jede Feier, bei der man Jmd langes Leben und Gedeihen anwünscht* (also mit Anknüpfung an caus. von 1. वर्ध्) Tithyâdit. im ÇKDr. Weber, Kâshmâḍ. 249. 299. 302. Vet. in LA. (III) 18, 8. Verz. d. B. H. No. 1038. एवं वर्धापनं वत्सस्यैते वै जन्मवासरे । व्यतीतेषु च मासेषु बालानां बालवृद्धये ॥ Skanda-P. पूजयेन्मातृपितरौ बालवर्धापने सति Bhavishjottara-P. वर्धापनं नाम प्रतिसंवत्सरं जन्मदिनेषु पुरुषस्य क्रियमाणमभ्युदयादिकं महाराष्ट्रदेशे प्रसिद्धम् Smṛtyarthasâgara (Citate im Glosser zu LA. nach Aufrecht). Schol. zu Kâṭy. Ça. 358, N. fälschlich वार्धापन Trik. 3,2,7. — 2) wohl = वर्धापक 2) Med. k. 200 (वर्धापणा gedr.).

वर्धापनक = वर्धापन 1) Pâraṇ. gṛ. orn. 49,16.

वर्धित (vom caus. von 1. वर्ध्) 1) adj. s. u. 1. वर्ध्. — 2) *eine Art Schüssel* M. 3, 224. = पूर्ण पिठरादियात्रम् Kull.

वर्धितृ (von 1. वर्ध्) nom. ag. *Stärker, Mehrer* ṚV. 9,97,39.

वर्धिन् (wie oben) am Ende eines comp. *mehrend, verstärkend:* मेधाग्निबल° Suçr. 1,225,10. भय° MBh. 3,11731. 5,7413. Harîv. 3855. R. 2,94,26 (103,27 Gorr.). 5,76,8. Spr. 3320, v. l. Buâc. P. 10,41,52. Vgl. केश°, बल°, भक्ति°, लिङ्ग°, वैश°. Ueberall nur im fem.

वर्धिष्णु (wie oben) adj. *wachsend, zunehmend* P. 3,2,136. Vop. 26, 142. AK. 3,1,28. Med. n. 121. संग्रामानन्दवर्धिष्णो विषदे Verz. d. Oxf. H. 117,a,20. Prân. 70,11.

वर्धमन् (wie oben) so v. a. वृद्धि in घस्र° *Leistenbruch* Vîrân. 25,26. वर्धमरोग Çârîr. in Med. Pr. वर्धमवर्धाधिकार Verz. d. Oxf. H. 357,a, 10 v. u.

वर्ध्र Uṇâdis. 2,37. P. 4,3,151. 1) m. *Gurt, Band eines geflochtenen Stuhls* AV. 14,1,60. ग्रासन्दी वर्ध्र्युता Çat. Br. 5,4,4,1. n. = वात्रा *Riemen* H. an. 2,453. Med. r. 83. वर्ध्री f. AK. 2,10,31. n. *Leder* Uṇâdis. — 2) n. *Blei* H. an. Med. — Vgl. मित्र°, वार्ध्र und वध्र.

वर्ध्रिका f. *Riemen;* als oxyt. vielleicht *ein Keil, der geschmeidig wie ein Riemen ist,* P. 6,1,204, Schol.

वैर्पणीति (वर्प = वर्पस् + नीति) adj. *in verstellter Gestalt auftretend oder listig handelnd* ṚV. 2,34,3.

वर्पस् n. 1) *a) verstelltes* oder *angenommenes Aussehen, Scheinbild; b) Bild* überh., *simulacrum;* = रूप Naigh. 3,7. = स्वरूप Uṇâdis. 4,200. (व्यवनाय) यधि पदर्प इत्ऊति धत्यः namlich dem Greise die Jünglingsgestalt ṚV. 7,68,6. मा वर्पो अस्मदप गूह एतन्मदन्यदूपः समिधे कृधि 100, 6. कृत्नमध्वं मरि वर्पः करिक्रतः 1,140,5.7. 6,3,4. एषो रु वो भूरि वर्पः करिक्रतावतो निष्कृतमार्गमिष्टः 3,38,9. सूरे उषाके तन्वं दधानो वि यत्ते चेत्यमृतस्य वर्पः 4,16,14. प्रत्यर्नीकमख्यं भुजे अस्य वर्पसः *um des Bildes inne zu werden* 5,48,5. 1,141,3. 2,97,17 (oder zu 2). — 2) *(Schein, Verstellung) Anschlag, List, Kunstgriff:* कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्पसा कं याथ ṚV. 1,39,1. अस्य मदे पुरु वर्पांसि विद्वानिन्द्रो वृत्राणि जघान 5,44,14. 1,117,9. 8,46,16. अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो ग्रं किमदेवो अभि वर्पसा भूत् 10,99,3. 11. 3,2. अनृत 100,7. — Vermuthlich mit μορφή verwandt. Vgl. घोर°, पुरु°, प्रतिनृति° *je nach Antrieb* oder *Anlass eine Gestalt annehmend*), भूरि°, क्रूरि°.

वर्फ्, वर्फति Kavikalpadruma im ÇKDr. (गत्याम्, वधे).

वर्फस् n. = वर्पस् Uṇâdis. 4,200, v. l.

वर्म am Ende eines adj. comp. (f. आ) = वर्मन् *Panzer* MBh. 9,2683.

वर्मक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1087.

वर्मकाण्डक m. *eine best. Arzneipflanze* Râgân. im ÇKDr. *Gardenia latifolia* oder *Fumaria parviflora* Dhanv. in Nigh. Pr.

वर्मकाया f. *eine best. Pflanze,* = चर्मकाया (°काशा) Çabdar. im ÇKDr.

वर्माण (von वर्मन्) m. *Orangenbaum* Trik. 2,4,12.

वैर्मणवत् (wie oben) adj. *gepanzert:* योधाः ṚV. 10,78,3.

वर्मन् (von 1. वृ) m. n. (zu belegen nur n.) Sidd. K. 250,b,12. 1) *Schutzrüstung, Panzer, Harnisch* (AK. 2,8,2,22. Trik. 2,8,49. H. 766. Halâj. 2,204); *Schutzwehr, Schirm* überh. (= गृह Naigh. 3,4): वर्म सीव्यधम् ṚV. 10,101,8. स्यूत 1,31,15. 140,10. 5,75,1. 8. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि 10. 19. 8,47,8. 10,107,7. AV. 8,5,7. 10. 14. 18. 19. 9,5,26. प्रज्ञापतेरावृता ब्रह्मणा वर्मणाहम् 17,1,27. वर्मेतदग्ने नह्यति Çat. Br. 1, 3,2,14. सुवर्ण adj. MBh. 1,1809. आमुञ्चतां च वर्माणि संधत्तं सुमहानभूत् 1093. वसुवर्मधर 3,17165. 17174. सर्वपारसव 4,1011. 5,5209. 7,7916. 8,644. R. 3,30,27. 5,80,32. Raghu. 4,56. Gîv. 4,3. Vaitân. Bṛh. S. 42,6. Bṛh. 27 (25),21. Râja-Tar. 3,405 (अयोवर्मनिपातिनः zu lesen). 406. धर्मे वदन्वर्म 5,195. Bhâg. P. 4,10,17. 26,3. 7,10,65. 9,10,27. वर्मादिभीषण Verz. d. Oxf. H. 86,b,22. वर्मभृत् Raghu. 7,43. AK. 2,8,2,34. दिव्यवर्मभृत् MBh. 3,17167. — शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसन् ṚV. 1,114,5. 7,31, 6. 9,67,14. अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व 10,16,7. AV. 5,6,12. 14,2,21. 19, 19,1. 30,2. Çat. Br. 6,3,1,31. 8,25. TS. 2,6,1,5. Kauç. 46. auf वर्मन् auslautende Kshatrija-Namen Pân. Gaṇ. 1,17. Jaina und VP. bei Kull. zu M. 2,32 (vgl. VS. 207). Ind. St. 5,310. Z. f. d. K. d. M. 1,226. 3,168. Wassiljew 208. buddhistische Namen 268. Ableitungen von solchen Namen Vop. 7,10. — 2) *Rinde* Vaitân. Bṛh. S. 51,3. — 3) Bez. *best. schützender Gebetsformeln:* नारायणाष्ट्य Bhâg. P. 6,8,2. fgg. Verz. d. Oxf. H. 105,a,23. वर्मर्क्ष b,1. Bez. *der mystischen Silbe* ह्रुम् Weber, Rikat. Up. 310. fg. — Vgl. म°, यपकार° (N. pr. Daçân. 59,1), यवत्ति°, यश्म°, आदित्य°, आर्ष°, इन्द्र°, कनक°, कल्याण°, काञ्चन°, कीर्ति°, कृत°, गोपाल°, चक्र°, चण्ड°, चन्द्र°, चित्र°, तीक्ष्ण°, दृढ°, देव°, धर्म°,

धृत°, नर°, निर्ऋति°, परि°, पुण्य°, पूर्ण°, प्रचण्ड°, प्रज्ञा°, प्रति°, प्रभाकर°, बल°, बकुल°, भद्र°, भद्दत्त°, भानु°, भास्कर°, भूति°, भोग°, मयूर°, महेन्द्र°, मित्र°, यज्ञ°, यशो°, रत्न°, राम°, लक्ष्मी° (लक्ष्मीवर्मदेव), विन्ध्य°, शंकर°, शत°, शार्दूल°, शूर°, सु°, सुभट°.

वर्मवत् (von वर्मन्) 1) adj. *gepanzert:* कृया: MBh. 6, 3975. — 2) n. *eine unbefestigte (?) Stadt:* प्राकारं (lies प्राकार) परिक्षीणं पुरं वर्मवदुच्यते Mîrk. P. 49,46.

वर्मकर (वर्मन् + कर) adj. *schon einen Panzer tragend, das Jünglingsalter habend* Ragh. 8,93. Kathâs. 33,122. — Vgl. कवचकर.

वर्माय्, वर्मायते denom. von वर्मन् P. 1,4,15, Schol.

वर्मि m. *ein best. Fisch* Râgân. im ÇKDa. Soça. 1,40,12. 200,6. 228, 12. Vâgbh. 6,54.

वार्मिक (von वर्मन्) adj. *gepanzert, geharnischt* gaṇa ओत्सादि zu P. 5,2,116.

वर्मित (wie eben) adj. dass. gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. AK. 2,8,2, 33. Taik. 3,3,224 (s. Corrigg.). H. 766. Hall. 2, 305. वाजिनो वर्मिताङ्गानाम् R. Gorr. 2,91,15.

वर्मिन् (wie eben) adj. dass. gaṇa ओत्सादि zu P. 5,2,116. ṚV. 6,27, 6. 75,1. 8,108,6. AV. 11,10,22. 19,30,1. VS. 16,35. Çat. Bn. 13,5,4, 16. fg. Pin. Gṛhy. 2,17. MBh. 1,1482. 7654. 7765. 5,1863. 5362. 7,2103. 8025. Harîv. 3582.

वर्मुष m. *ein best. Fisch* Râgân. im ÇKDa.

वर्य (von 2. वर) P. 3,1,101. 1) adj. *a) f. wählbar, um die man freien kann:* शतेन वर्या कन्या P. 3,1,101, Schol. Vop. 26,16. — *b) vortrefflich, ausgezeichnet, der beste* Vop. 26,16. AK. 3,2,7. H. 1438. Med. j. 39. Hall. 4, 4. TBn. 3, 9, 21,1. देवानां वर्यस्य *des besten unter den Göttern* Vop. 5, 23. gewöhnlich am Ende eines comp.: नर° *der beste unter den Männern, ein vorzüglicher Mann* MBh. 3,957. नरदेव° 12330. कुरुवृद्ध° 15,673. विप्र° Harîv. 14399 15074. R. 2,67,23. 4,29,28. Spr. 4540. Gorîbhr. 3,21. Daçak. 71,11. Bhâg. P. 1,5,9. 9,41. 11,33. 15,15. 16,1. 19,11. 2,7,45. 3,1,5. 5,4. 23,4. 4,10,20. Mârk. P. 61,36. 69,7. 72,2. सर्व° R. 7,23,2,67. कारण° Kir. 7,20. रथ° MBh. 2,928. 7,4622. 8,756. मल्ल° Pârâç. 3,7,1. पुरवर्यामयोध्याम् R. 2, 111,18. क्षेतृ° s. u. क्षेतृवर्य. — 2) m. *der Liebesgott* Med. — 3) f. या *ein Mädchen, das selbst den Gatten sich wählt* (wohl durch Missverständniss von 1) *a*) AK. 2,6,2,7. H. 511. Hall. 2,228. — Vgl. पतिवर्य.

वर्व *viell. eine best. Münze:* दद्यात्प्रकृष्टो नियुतं वर्वाणां राजघातिने Kim. Nîtiç. 19,18.

वर्वणा f. *eine Fliegenart* (नीला मक्षिका) AK. 2,5,26. H. 1214. — Vgl. तुद°.

वर्वरि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 53,*a*,32.

वर्वि Uṇâdis. 4,52. adj. = घस्मर Uṇâdivṛ.

वर्वूर m. *eine best. Pflanze,* = पुगलाह्य u. s. w. Râgân. im ÇKDa. — Vgl. शालवर्वूरक.

वर्ष्, वर्षयति Dhâtup. 26,116 (वर्णे).

वर्ष्मन् m. = zend. baroçman Verz. d. Oxf. H. 33,*b*,16. वर्स्म, वर्सम Reinaud, Mém. sur l'Inde 393. fg.

वर्ष्, वर्षति Dhâtup. 17,56 (सेचने, स्त्रिंसाक्लेशनयोश्च, दाने, प्रज्ञनैश्ये). वर्वर्ष, वर्वर्षीति, वर्षिष्यति: aus metrischen Rücksichten häufig auch med. वर्षते u. s. w.; वृषस्व u. s. w. s. u. सा: वर्षितुम्; वर्षित्वा und वृष्ट्वा; वृष्ट; *regnen;* das Subject ist, wenn das Verbum nicht unpersönlich gebraucht wird, der Regen, Parǵanja, Indra, der Gott, der Himmel, die Wolken u. s. w. वर्वर्षीर्विर्यमुडु यू गृभाय (पर्जन्य) ṚV. 5,83,10. यत्ते अधस्य विद्युतो दिवो वर्षति वृष्ट्यः 84,3. मही वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु AV. 4,15,4. तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः 8,1,8. 9,1,9. ईश्वरः पर्जन्यो ऽवर्षीत् (त्रिष्टुभ्: Hdschrr.) *es ist möglich, dass P. nicht regnet* Ait. Br. 3, 18. VS. 22,26. der Himmel Kâṭh. 25,10. स्तोकाः Çat. Br. 3,8,2,22. — पर्जन्यो वर्षतां वरः MBh. 4,43. पर्जन्यः पर्वते वर्षन् 10,74. 14,2359. R. 5, 36,43. Vârâh. Bṛh. S. 26,14. Bhâg. P. 1,10,4. समा द्वादश न ववर्ष सक्षात: MBh. 1,6621. वलवृत्रघ्ना 3,9992. वासव: 4,1498. Spr. 2367. Bhâg. P. 1,16,21. 3,2,33. 25,42. 5,4,2. तेत्रेषु वर्षति तदानुगुणं नरेन्द्रे Kathâs. 20,228. इन्द्रे वर्षमाणम् MBh. 1, 8172. 13,811. देवो न ववर्ष Nir. 2,10. MBh. 14,2860. R. 1,9,36. R. Gorr. 1,8,25. Soça. 1,170,4. Vârâh. Bṛh. S. 81,26. Kathâs. 5,72. वर्षते देव: Bhâg. P. 3,29,40. अधो वर्षाम हि वयं (die Götter) नरास्तूर्ध्वप्रवर्षिणः MBh. 12, 2167. अधो हि वर्षाम वयं मर्त्याश्चोर्ध्वप्रवर्षिणः। तोयवर्षेण हि वयं रुधिरवर्षेण मानवाः॥ Mârk. P. 16,40. वर्षन्निवाम्बुद: MBh. 14,1979. R. 5, 17,3. Spr. 1191, v. l. 1255. Bhâg. P. 8, 24,41. मेघो ऽत्र तावदागत्य वृष्टवान् Kathâs. 40,91. प्रारेभे वर्षितुं घन: 62,196. Pañkat. 94,3. वर्षमाणा घना इव MBh. 1, 5464. 4, 1902. 6,3268. R. 7,7,2. न तस्य वर्ष (subj.) वर्षति वर्षकाले MBh. 5,386. वर्ष भूत्वा वर्षतो काननेषु 14,269. गाङ्गमाश्वयुजे मासि प्रायशो वर्षति Soça. 1,170,2. 3. वर्षति गर्भ: Vârâh. Bṛh. S. 21,35. ववर्षू रुधिरौघासृक्क्षयविण्मूत्रमेदस: Bhâg. P. 4, 10, 24. नावर्षन्न समतपत् *es regnete nicht, die Sonne schien nicht* Ait. Br. 4,27. TS. 2,1,7,3. 4,10,1. सर्वानृतून्वर्षति 5,1,8,2. Çat. Br. 1,3,2,19. 8,3,11. वर्षिष्यत्येषम: पर्जन्यो वृष्टिमान्भविष्यति *es wird bald regnen,* P. *wird regenreich sein* 3,3,4,11. 7,2,4,5. 10,6,4,1. परमाढा एतत्स्थानाद्वर्षति यद्दिव: 11,1,6,16. Kâṭhân. Up. 2,3, 2. Vârâh. Bṛh. S. 23,5. तयैषा वर्षत्तं तया स्निग्धं तया घृणि तितिक्षध्वे *Regen, Kälte und Hitze* Çat. Br. 3,1,2,4. वर्षति *während es regnet, bei Regen* 7,5,2,41. Kâty. Çr. 18,6,25. Âçv. Gṛhy. 3,9,6. M. 4,38. 11,113. MBh. 4,171. Harîv. 12014. Bhâg. P. 9,2,4. वर्षयति TS. 2,4,10,1. यथा वा वर्षतो धारा वर्षेष्वेयाः स्म केनचित् *die Regentropfen* MBh. 3,10299. Mârk. P. 15,71. वृष्टी ṚV. 5,53,14. — मेघः प्रववृते तत्र धारासारेण वर्षितुम् Kathâs. 12,110. रुधिरधाराभिर्वर्षतो मेघा: R. 3, 30,4. प्रसूनवर्षैर्ववृषु: सुरस्त्रिय: Bhâg. P. 7,8,35. 1,10,16. उभावुभावतस्तीक्ष्णैः शरवर्षैरवर्षताम् MBh. 3,15731. किं मयोपार्जनवरतं व्यसनशतैर्वर्षति विधाता Pañkat. 145,14. रुवं न वसुधाराभिर्वर्षमाणो नृपाम्बुद: MBh. 13,420. — प्रावृषीव च पर्जन्यो ववृषे निर्मलं पय: 13,6871. तच्च मेघगतं वारि शक्रो वर्षति 2235. यस्मिन्हिरण्यं ववृषे मघवा परिवत्सरम् 12,915. दिव्या: सुमनस: पुण्या ववृषे पाकशासन: 14,2294. शोणितम् Harîv. 9969. कामान्सर्वान्वर्षतु वासवो वा MBh. 14,270. न तेषु वर्षते देवो भोमान्यम्भांसि VP. bei Muir, ST. I, 186, N. 4. MBh. 1,1419. वर्षध्वममृतं प्रभुम् (मेघाः) 1297. तैर्मेघैः सततासारं वर्षद्भि: 1300. 1420. R. 3,29,1. Bhâg. P. 1,14,16. 3, 19,19. उपकारं सुकृद्वर्गे यो ऽपकारं च शत्रुषु। नमेघो वर्षति Spr. 3796. नमो रक्तं गोष्पदप्रं ववर्ष Bhatt. 14,20. पुष्पवृष्टिमवर्षन् (तरुगणाः) R. 5, 16,17. कल्पवृतो ववर्ष स: । कनकं भूतले भूरि Kathâs. 22,94. यज्ञसेनः

शरान्घोरान्यवर्ष MBu. 1,5453. 3,7155. बाणामयं वर्षम् 7269. R. 6,73,17. मय्यवर्षत शरधाराः सहस्रशः MBu. 3,796. कूर्पन्ने वारि नेत्राभ्यो वर्षमाणा Harıv. 4744. ततो वसु तथार्घिभ्यो भृत्येभ्यश्च ववर्ष स (राजा) Kathās. 52, 330. लोकस्य पद्वर्षति चाशिषो ऽर्थिनः Bhāg. P. 4,4,15. 6,14,35. *beregnen:* भ्रातरो भ्रातरं युधि । शरैर्ववर्षतुर्घोरैर्मेघौ पर्वतमम्बुभिः ॥ MBu. 8, 2704. सेना वर्षन्ती शरवर्षैः 5,718. 6,2677. Māṛk. P. 21,32. 33,3. अन्योऽन्यं शरवर्षाभ्यां ववृषाते रणाजिरे MBu 6,1689. — वृष् mit act., neutr. und pass. Bed.: अप त्रिर्गोभ्यो वृष्टो देवः Schol. zu P. 1,4,88. 2,1,12. यद्यतुर्विंशत्यापि वर्षैरवृष्टे ऽपि पर्जन्ये न शुष्यति Pāṇkat. 51,16. गर्भः प्रसवे यदि न वृष्टः Vārāh. Bṛh. S. 21,33. यदि न वृष्टम् *wenn es nicht geregnet hat* 23,5. वृष्टे *wenn es geregnet hat* AV. 3,24,3. Vārāh. Bṛh. S. 22,1. 25,3. यद्यादर्के दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधावति *das als Regen niedergefallene Wasser* Kāṭhop. 4,14. R. 2,113,16 (124,16 Gorr.). देववृष्टं यथा पयः Bhāg. P. 4,18,11. वृष्टं तत् Vārāh. Bṛh. S. 23,3. प्राणिनो यदा वृष्टाः so v. a. wenn *es Thiere geregnet hat* 46,42. सुवृष्ट *ein schöner Regen* R. 6,109,60.

— caus. *regnen lassen:* पूर्वं वृष्टिं वर्षयन्न् ṚV. 5,55,5. द्याम् 63,3. 6. 9,96,3. den Parǵanja TS. 2,4,10,2. Indra MBu. 3,9991. ohne acc. Kaiṭh. Up. 2,3,2. Bhāg. P. 5,22,12. ये अद्रिरीशाना महतो वर्षयन्ति AV. 4,27,5. *Etwas als Regen herabfallen lassen:* कुसुमाघैर्वर्षितैः Vārāh. Bṛh. S. 46,41. *beregnen:* (तम्) धनैर्वृषन्बाणमहौघवृष्ट्या यथा गिरिं तोयधरा बलैघैः MBu. 6,3756. 8,713. वर्षित n. *Regen* Harıv. 206. 12407. वर्षण die neuere Ausg. an beiden Stellen. वृषायति *regnen lassen:* स पर्जन्यं शतंतवे वृषाय ṚV. 10,98,1. वर्षयते Daivīp. 30,33 (शक्तिवन्धने, प्रजनेऽपि). — Vgl. वर्षय्.

— अति *in Menge regnen:* देवे ऽतिवर्षति Bhāg. P. 2,7,32. अतिवृष्टाविवाम्बुदौ *heftig regnend* MBu. 7,8104 (nach der Lesart der ed. Bomb.). विद्याधरकिंनरसिद्धसैन्यैः — अतिवृष्टमुपुष्पचये Pāṇkar. 3,12,6.

— अनु *hinregnen über* AV. 4,15,4. मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु 7. TS. 7,5,44,2.

— अभि *beregnen, beschütten:* पर्जन्यमेनी उशती अभ्यवर्षीत् ṚV. 7,103, 2. 4. Parǵanja VS. 36,10. न वर्ष मैत्रावरुणो वत्सत्यमभि वर्षति AV. 5, 19,15. 11,4,5. 6. 17. Çat. Br. 3,1,1,5. 2,2,27. Pāṇkāv. Br. 15,9,9. 17, 7,2. TS. 7,5,44,1. नाराजके जनपदे — अभिवर्षति पर्जन्यो महीं दिव्येन वारिणा Spr. 4425. Bhāg. P. 5,4,3. सस्यानि मन्दमभिवर्षति वज्रशत्रौ Vārāh. Bṛh. S. 19,21. मेघसंघाः — अभ्यवर्षन्सुरगणान् MBu. 1,1128. Harıv. 8800 (med.). पुष्पवृष्टिर्दशगीवं पुनरेवाभ्यवर्षत R. 3,58,30. fg. कुसुमैरभ्यवर्षन् (तम्) Bhāg. P. 6,12,24. माल्यैः 10,18,32. वागमृतेन सः । अभिवृष्य महत्सस्यं कृत्स्नमेघस्तिरोदधे ॥ Raghu. 10,49. मांसरुधिरौघेन वेदीं तामभ्यवर्षताम् R. 1,21,5 (22,5 Gorr.). शोणितेन R. 6,11,28. भुवं कोष्णेन प्रस्रवेण Raghu. 1,84. स्तनौ दुःक्षीरमुविन्दुभिः MBu. 3,583 (med.). शस्त्रैः 13, 1980 (med.). यष्टिभिः 1,5464 (med.). 5492 (med.). शरैः 5,1840. 7311. 6, 1688. R. 3,31,6. 56,27. 6,75,45 (med.). Vikr. 54,7. Bhāg. P. 4,10,12. 8,10,26. उपायनैः Raghu. 15,48. कामैः R. 2,31,12. Spr. 2781. परिखारैः 4037. घनपायनेन MBu. 3,1810. घनवर्षेण 2,1101. *regnen:* यदा त्वमभिवर्षसि Prāçnop. 2,10. MBu. 1,6627 (med.). Harıv. 11320. R. ed. Bomb. 2,91,25 (med.). दृष्टे ऽभिवर्षति देवः Vārāh. Bṛh. S. 32,6. चैत्रासितसंभूता: (गर्भाः) कार्त्तिकशुक्ले ऽभिवर्षति 21,12. कुसुमैः MBu. 1,4062 (med.). घर्मबिन्दुभिः R. Gorr. 2,29,25. तोयैः MBu. 3,15732. घनैघैः Harıv. 6359 (med.). R. Gorr. 2,32,16. तस्य तस्य कामैघैः 1,54,6. mit acc.: रुधिरम् Harıv. 10603 (चाभ्यवर्षत die neuere Ausg. st. चाभ्यवर्षत der älteren). अखिलान्कामान् Bhāg. P. 10,82,29. तत्सर्वं कामधुगिदव्ये अभिवर्ष R. 1,52,23 (53,23 Gorr.). प्रबोधानृतमङ्गिवर्गे Çāṇ. 14,336. अभिवृष्ट *beregnet, worauf Regen gefallen ist, beschüttet* Āçv. Çr. 3,11,22. Suçr. 1, 129,9. 170,14. MBu. 3,12129. 5,4096. R. 4,29,14. Raghu. 7,66. Vikr. 79. Vārāh. Bṛh. S. 11,61. Kathās. 40,93. Bhāg. P. 8,7,12. माल्यैः MBu. 13, 2074. गदाभिः Harıv. 5386. प्रज्ञास्त्रभिः Raghu. 15,99. mit act. Bed.: अभिवृष्टाविवाम्बुदौ MBu. 7,8104. येषु मेघैरभिवृष्टं भूयस्तेषेव वर्षति प्रायः *es hat geregnet* Vārāh. Bṛh. S. 23,3. °वृष्टे 23,3. यद्याभिवृष्टम् (u. d. W. nicht genau wiedergegeben) *so weit als es geregnet hat* 23,4. गरुत्मताभिवृष्टे (so lesen wir mit der v. l.) पुनरिदम् so v. a. *aber es hat hier stark geregnet* Vikr. 123. — Vgl. अभिवर्षण fg. — caus. *beregnen, beschütten:* शरैः MBu. 7,8670. 1649. 7420. 8,655. प्रसूनवर्षैरभिवर्षितः Bhāg. P. 1. 11,28. 10,78,15.

— समभि *beregnen* Bhāg. P. 8,7,15.

— अव *beregnen* VS. 22,26. TBr. 3,7,2,3. Kāṭh. 35,19. Çat. Br. 12,4, 2,10. Kāṭy. Çr. 25,11,23. 12,6. — Vgl. अववर्षण.

— आ 1) *beregnen, beschütten* (mit Pfeilen) MBu. 4,1688. — 2) med. *sich* (ein Getränk) *einschütten:* (इन्द्रः) उरुव्यचा जठर आ वृषस्व ṚV. 1. 104,9. 3,32,2. 40,2. 60,5. 8,47,6. 9,24,10. 30,3. 10,96,12. 116,1. 4. वृत्रः सोमस्य वृषणा वृषेवान् 1,108,3. 8,68,11. पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् (scheint aus °वृषध्वम् entstellt zu sein) Āçv. Çr. 2,7,1. — Vgl. आवृष्टि.

— उद् *sich ausschütten* so v. a. *verschwenderisch austheilen:* उद्वावृषस्व und उद्वावृषाणौ ṚV. 8,50,7. 4,20,7. 29,3.

— निस् *ausregnen, aufhören zu regnen:* निर्वृष्टलघुभिर्मेघैः Raghu. 4,15. निर्वृष्टरमणीयेषु वप्रेषु Harıv. 3828. निर्वृष्टि° die neuere Ausg., निर्विष्टाः कृतविवाहाः तद्वद्रमणीयेषु Nīlak.

— परि *beregnen, beschütten:* त्वरायेव वानरान्पर्यवर्षत R. 6,75,47.

— प्र *zu regnen anfangen, regnen:* पर्जन्यः R. 5,93,39. Pāṇkat. 169, 7. सकृत्प्रातः MBu. 1,6630. Harıv. 2123. Bhāg. P. 8,14,7. देवः R. Gorr. 1,9,55. मेघः Kaiṭh. Up. 5,10,6. impers. Schol. zu P. 1,4,54. 2,3,5. विषये वासवस्तस्य सम्यगेव प्रवर्षति । रत्नैर्धनैश्च पशुभिः सस्यैश्चापि पृथिवीपतेः ॥ MBu. 13,97. यद्येष्टमस्त्रवर्षेण प्रवर्षिष्ये 7,9030. प्रवर्षति चान्द्रकाभिश्चकोरचञ्चूचुलुकान्प्रतीन्दुः Naish. 22,41. mit acc.: मेघाः क्रूराः क्रूरं प्रवर्षन्ति निम्नं रुधिरबिन्दुभिः R. 6,16,6. रसान्देवः प्रवर्षति MBu. 13,2236. 5,3553. प्रववर्षाथ पर्जन्यः मधुमाङ्गारवृष्टयः (acc.) Harıv. 8289. अखिलान्कामान्प्रजासु ब्राह्मणादिषु Bhāg. P. 12,89,65. शरव्रातान् MBu. 5,2121. ततः पृषत्कान्प्रववर्ष सूर्यो यथा रश्मिजालान्सनक्तात् 9,1036. *beregnen, beschütten:* क्षीरेन्द्रमिव धाराभिः प्रवर्षन्ति पयोधराः R. 3,31,9. शरैः परान्मेघ इव प्रवर्षन् MBu. 5,1851. क्षीमूताविव चान्योऽन्यं प्रववर्षुरक्षये 7,5710. प्रवृष्ट mit act. Bed.: मेघानां प्रवृष्टानाम् Harıv. 3028. प्रवृष्टस्थूलधाराभिर्मेघे ऽस्मिन् *als diese Wolke zu regnen anfing* Kathās. 36, 82. यदाम्रोर्ध्वं देवराजः प्रवृष्टः शरैः MBu. 1,150. अस्य पार्श्वे तरुः पुष्पैः प्रवृष्ट इव केसरैः R. Gorr. 2,105,6 = Uttarar. 116,20 (158,6). मेघो रत्नौघं प्रवृष्टः Kathās. 46,141. प्रवृष्टे *wenn es regnet* Vārāh. Bṛh. S. 25,3 Vgl. प्रवर्ष fgg., प्रावर्षिन्, प्रावृष् fg. — caus. *regnen machen* TS. 1,6,11,4.

Çat. Br. 1,5,2,16.

— अभिप्र *regnen:* वार्षिकाश्चतुरो मासान्यथेन्द्रो ऽभिप्रवर्षति Spr. 2781. *beregnen:* सप्त द्वीपानिमान्वर्षेण MBh. 13,4628.

— संप्र *zu regnen anfangen:* वारिधारासमूहेन संप्रवृष्टः शतक्रतुः MBh. 12,5478. संप्रवृष्ट n. *die gefallene Regenmenge* Varāh. Bṛh. S. 23,1.

— प्रति *beregnen, beschütten:* शीतेन प्रत्यवर्ष गुरुं तम् MBh. 5,7218.

— वि caus. dass.: पर्जन्य इव घर्मान्ते वृष्ट्या साद्रिद्रुमां नदीम्। आचार्यपुत्रस्तां सेनां बाणवृष्ट्या व्यवीवृषत् (so die ed. Bomb.) ‖ MBh. 8,5001.

— सम् *beregnen* TS. 7,5,22,1.

वर्ष (von वर्ष्) Uṇādis. 3,62. 1) am Ende eines comp. adj. (f. आ) *regnend:* देवो गिर्युपरिवर्षः Spr. 1183. काम° Bhāg. P. 3,21,21. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Taik. 3,5,11. Siddh. K. 249,b,6. n. (nur diese in der älteren Sprache) Pat. zu P. 2,3,56. *a) Regen* AK. 1,1,2, 12. 3,4,29, 226. H. 165. fg. an. 2, 570. Mān. sh. 24. वर्ष स्वेदे चक्रिरे रुद्रियासः RV. 5,58,7. 83,10. AV. 3,27,6. वर्षस्य सर्गाः 4,15,3. 6. fgg. 5,19,15. 11,4,5. 5,13. 12,1,53. TS. 2,4,9,1. VS. 16,64. यदा वर्षस्य तृप्तः स्यात् Āçv. Çr. 2,9,3. Nir. 2,22. Çat. Br. 1,5,2,19. 8,3,12. Kauç. 94. 98. Kāṭh. Up. 5,5,2. विद्युत्स्तनितवर्षेषु M. 4,103. MBh. 3,17341. 5,286. 6,4096. 13,2306. R. 1,20,16. 2,33,9. 77,25. 3,79,4. 4,39,2. 44, 84. Suçr. 1,21,11. Mṛicch. 75,6. Mucn. 36. ud Çiç. 193. Varāh. Bṛh. S. 93, 84. प्रबन्ध° *ein ununterbrochener Regen* 46,10. Kathās. 104,39. Rāja-Tar. 5,275. °पूगाः Bhāg. P. 3,17,26. 4,28,37. बाणमय MBh. 5, 7269. अस्त्राणाम्, अग्नेः, वायोः, अस्त्राणाम् 3,12142. मकाग्नलोघ° R. 1,9,66. गन्धाम्बु° H. 63. अङ्गारपांसु° Varāh. Bṛh. S. 46,41. पांसु° M. 4,115. रक्तो° R. 6,111,24. शिला° R. Schl. 1,28,15. fg. अस्त्र° 22. शर° MBh. 3, 15715. 5,5961. 6,4096. R. 3,31,9. पुष्प° 79,4. 5,17,3. मुधा° Kathās. 44,21. वात° m. *ein von Wind begleiteter Regen* Pañcat. III, 150. सौधोद्गतलाजवर्षाम् — राजधानीम् Rāgat. 14,10. Rāja-Tar. 2,119. — *b)* n. pl. *Regenzeit* AV. 8,2,22. 12,1,36. — *c) Wolke* H. an. Uṇādis. zu Uṇādis. 3,62. — *d) Jahr* Nir. 2,10. AK. 3,4,28,111. 29,226. 3,5, 16. H. 159. H. an. Med. Hall. 1,116. षष्ठी वर्षेषु *in sechzig Jahren* Ait. Br. 4,17. भूयांसि शतार्हवर्षेभ्यः पुरुषो जीवति Çat. Br. 1,9,3,19. यदो वर्षमकुर्म *in dem und dem Jahre* 2,2,3,7. 13,2,6,7. 8. 14,1,3,10. 13. Kāṭy. Çr. 4,2,17. Āçv. Gṛhy. 1,18,2. 19,1. 22,3. Kāṭh. Up. 3,16,1. M. 1,67. 2,52. 4,158. वर्षाच्चयोदशाद्ध्वम् MBh. 3,1999. 3,3006. 13,803. दश वर्षसहस्राणि R. 1,1,93. 31,10. 62,28. 63,9. 2,39,13. 3,53,10. Spr. 1074. 2367. Mucn. 1. Rāgat. 13,67. Varāh. Bṛh. S. 8,1. fgg. 12,17. 13,4. Kathās. 5,72. Rāja-Tar. 6,326. Bhāg. P. 3,15,1. Pañcat. 159,14. Vet. in LA. (III) 2,14. 8,17. बहून्वर्षगणान् M. 12,84. °पूगसहस्र Bhāg. P. 2,5,34. 4,12,42. वर्षे वर्षे *in jedem Jahre* M. 5,52. Weber, Kṛishṇaj. 307. आ वर्षात् *ein Jahr lang* Varāh. Bṛh. S. 45,16. वर्षात् *nach einem Jahre* 97,2. 8. वर्षेण *binnen eines Jahres* 97,1. masc. R. Gorr. 1,1,99. Rāja-Tar. 1,50. 193. 3,322. वर्षार्ध *Halbjahr* Varāh. Bṛh. S. 42,10. अर्धार्धात् *nach einem halben Jahre* 97,5. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) P. 5,1,55. fg. 4,1,22, Schol. युगस्य पञ्चवर्षस्य Weber, Gjot. 23. 36. अहिवर्ष *nicht zweijährig* Pāl. Gṛhy. 3,10. त्रि° Āçv. Çr. 9,4,10. पञ्च° Kāṭy. Çr. 22,9,13. तावद्वर्ष *eben so alt* Lāṭy. 9,12,12. पूर्णविंशति° M. 2, 212. 5,70. 9,74. MBh. 4,173. 13,2417. Spr. 4643. Varāh. Bṛh. S. 68, 107. Pañcat. 188,20. घनावृष्टिः शतवर्षा Bhāg. P. 11,3,9. पञ्चाशद्वर्षता *ein Alter von fünfzig Jahren* Āçv. Çr. 2,7,6. — *e) Tag* (?): अप्राप्तयौवनो बालो पञ्चवर्षमहस्तकम् R. 7,73,5. वर्षशब्दो ऽत्र दिनपरः। सहस्रसंवत्सरं सत्त्रमुपासीतेतिवत् तेन षोडशवर्षमित्यर्थ इत्येके। तेन किंचिन्न्यूनचतुर्दशवर्षमित्यर्थ इत्यन्ये Comm.; vgl. Comm. zu Kāṭy. Çr. 1,6,16. 25. fgg. — *f) Welttheil*, im System: *die zwischen Hauptbergen liegende Niederung* (deren in Gambudvīpa neun und auch sieben angenommen worden) AK. 2,1,6. Taik. 2,1,6. H. 946. fg. (vgl. Comm.). H. an. Med. वर्षाण्येषां (पर्वतानां) क्रमशिरु बुधा सप्तरे क्रोणिदेशान् Golâdh. 3,26. fgg. भारत, हैमवत u. s. w. MBh. 6,201. 288. fgg. VP. 167. fgg. (vgl. Muir, ST. 186. 189. 191. fg.). Bhāg. P. 1,16,13. 5,2,20. 4,2. 16,6. fgg. 20,20. Verz. d. Oxf. H. 41,a,33. Mārk. P. 53,22. 57,4. 5. Pañcar. 1,1,67. Çatr. 1,292. fg. = जम्बुद्वीप Med. und Uṇādis. a. a. O. — 3) f. आ pl. *a) die Regenzeit* Kāç. zu P. 1,2,53. AK. 1,1,2,19. H. 157. H. an. Med. Hall. VS. 10,13. 13,56. 21,25. AV. 6,55,2. TS. 1,6,2,3. 2,6,6,1. 5,6,10,1. TBr. 1,4,10,10. Çat. Br. 1,5,2,11. 2,1,3,1. 5. 2,3, 7. 9. Nir. 7,11. Kāṭh. Up. 2,5,1. Maitrāyaṇ. 6,33. M. 3,272. 281. 4,102. 6,33. Jāṭ. 3,53. Spr. 4182. MBh. 14,1284. R. 1,63,24. 4,27,13. Suçr. 1,19,3. 9. 20,5. 135,12. Varāh. Bṛh. S. 46,39. 55,9. 89,6. Bhāg. P. 4,23, 6. Mārk. P. 106,49. Bhatt. 7,1. Hit. 80,15. °समय Kathās. 19,65. Verz. d. Oxf. H. 123,a,26. °काल R. 4,29,1. Hit. 115,15. वर्षाशरदौ Çat. Br. 3, 3,2,7. 3. 12,3,2,34. 13,6,1,10. वर्षात्रयोदशी Jāṭ. 1,260. °रात्रि R. Gorr. 1,3,18 (fälschlich वर्षरात्रि 24 Schl.). वर्षारात्र m. Vop. 6,46. 51. R. 4,26,24. 7,64,10. वर्षा sg. 4,25,14. — *b) Regen:* विद्युत्स्तनयित्नुवर्षासु Çiñn. Gaṇ. 4,7. 6,1. *Regenmenge:* °निमित्त Varāh. Bṛh. S. 24, 10. °प्रश्न 28,1. घ° *Dürre* (?) MBh. 13,4579; vgl. 4527. — *c)* = कोटिवर्षा Comm. zu AK. 2,4,4,21. — 4) m. N. pr. eines Grammatikers Kathās. 2,46. fgg. 4,17. — Vgl. घ°, घति° (auch Varāh. Bṛh. S. 34,6), घक्ष°, उप°, कङ्कण°, कनक°, कोटिवर्षा, तारवर्ष, तिरो°, नाभि°, पीयूष°, पुष्प°, प्रकाश°, प्रतिवर्षम्, भारतवर्ष, मण्डल°, मध्या°, मेरु°, रत्न°, रुरि°.

वर्षक 1) (von वर्ष्) nom. ag. *regnend, als Regen herabfallend:* वृष वर्षके वसु यस्य स वृषण्वसुः Siddh. K. zu P. 1,4,18. — 2) *Sommerhaus* (?) Vaijay. 212. — 3) am Ende eines adj. comp. = वर्ष *Jahr:* पञ्च° *fünfjährig* MBh. 12,1119; vgl. द्वि°.

वर्षकार 1) adj. *Regen hervorbringend, — ankündend.* — 2) f. ई *Grille* H. 1216.

वर्षकर्मन् n. *die Thätigkeit des Regnens* Nir. 7,22. fg.

वर्षकाम adj. *nach Regen begierig:* वर्षकामेष्टि Āçv. Çr. 2,13,1. Kauç. 41. 98. Nir. 2,10. 9,6.

वर्षकृत्य 1) adj. *jährlich zu vollbringen* Verz. d. B. H. 148,1. — 2) n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 292,b,2. 3. 12.

वर्षकेतु m. 1) *eine roth blühende* Punarnavā Rāgān. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Sohnes des Kṛitumant Harīv. 1750. fg.

वर्षकोश m. 1) *Monat* H. ç. 21. Çabdam. im ÇKDa. — 2) *Astrolog* Çabdam. im ÇKDa.

वर्षगणितपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 874. fg. — Vgl. वर्षपद्धति.

वर्षगिरि m. *ein zur Bildung eines* Varsha *dienender Berg* Bhāg. P.

5,20,21. — Vgl. वर्षपर्वत, वर्षमर्यादागिरि.

वर्षघ्न adj. *den Regen abhaltend, vor Regen schützend* R. 7,34,9.

वर्षत adj. = वर्षेत P. 6,3,16. 1) von *Regen herrührend* Sin. D. 171. — 2) *vor einem Jahr entstanden, ein Jahr alt:* दुरित Weber, Rāmat. Up. 353.

वर्षण (von वर्ष्) 1) adj. (f. ई) *regnend:* मम° (घन) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 35. कर्कशाङ्गार° Hariv. 5528. पांसु° Bhāg. P. 10,79,1. पीयूषवृष्टिवर्षणी Verz. d. Oxf. H. 20,b,9. अस्त्र *eine Regen bewirkende Waffe* R. 1,29,16 (30,14 Gorr.). — 2) n. *das Regnen, Regenlassen, Ausgiessen* Taik. 1,1,83. H. 166. Hariv. 266 (nach der Lesart der neueren Ausg.). शारद 8087. 12497 (nach der Lesart der neueren Ausg.). मुचिरमूषरे वर्षणम् Spr. 209. Mālav. P. 104,21. P. 1,4,54, Schol. निःशब्दवर्षणमिवाम्बुधरस्य Rāgā-Tar. 3,252. अ° Spr. 3637. वर्षणाद्दृषभः Nir. 9,22. शस्त्रास्त्राश्माम्बु° Kām. Nītis. 17,53. घृततैलवसादि° Varāh. Bṛh. S. 97,10. रक्षोघ° Kathās. 46,146. अङ्गार° 101,127. अपात्र° *das Herabregnenlassen* (von Gaben) *auf Unwürdige* Spr. 144.

वर्षणि f. = वर्तन und कृति Uṇādis. im ÇKDa. = वर्षण und क्रतु Uṇādisūtras. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

वर्षतन्त्र n. Titel einer Schrift Ind. St. 2,252. Mack. Coll. I,123.

वर्षधर 1) adj. *Regen enthaltend;* m. *Wolke* H. an. 2,571. — 2) adj. *einen Welttheil* (वर्ष) *enthaltend, — einschliessend;* m. *ein solcher Berg* H. 947 (vgl. Comm.). Çatr. 1,293. 294. — 3) m. *der Gebieter über ein Varsha* Bhāg. P. 5,3,16. — 4) m. = वर्षवर *Eunuch (die Samenergiessung zurückhaltend)* Hall. 2,275. Çabdārthak. bei Wilson, R. 2,65, 7 (वर्षवर ed. Bomb.). Bhām. Nitsāç. 34,52. 55. 57. Kām. Nītis. 7,41 (वर्षवा Comm.). Mālav. 47,16. Pārāśar. 43,3. 53,2.

वर्षधार m. N. pr. eines Schlangendämons Vsuṭṭ. 87.

वर्षधाराधर adj. *regenschwanger:* मेघ Spr. 4623.

वर्षनिर्णिज् adj. *in den Schmuck —, in das Gewand des Regens gekleidet:* die Marut RV. 3,26,5. 5,57,4. Çāṅkh. Çr. 8,23,4.

वर्षप m. *Beherrscher eines Varsha* Bhāg. P. 5,20,20.

वर्षपति m. dass. Bhāg. P. 5,8,11. 20,31.

वर्षपद n. *Kalender* Ind. St. 2,256.

वर्षपद्धति f. Titel eines Werkes Mack. Coll. I,123. — Vgl. वर्षगणितपद्धति.

वर्षपर्वत m. = वर्षगिरि Hem. 26.

वर्षपाकिन् m. *Spondias mangifera* (s. आम्रातक) H. 1152.

वर्षपुरुष m. *Bewohner eines Varsha* Bhāg. P. 5,18,34. 20,22.

वर्षपुष्प 1) m. N. pr. eines Mannes Saṃgh. K. 185, *a*, 10. — 2) f. या *eine best. Schlingpflanze,* = सप्तदेवी Rāgān. im ÇKDa.

वर्षप्रावन् adj. nach dem Comm. *Regenfülle gebend* TBa. 3,6,12,1. die Ausg. schreibt im Comm. °प्रावाः.

वर्षप्रिय m. *ein Freund des Regens,* Bez. des Kāṭaka Taik. 2,5,17.

वर्षभुज् m. *der Beherrscher eines Varsha* Bhāg. P. 10,87,28.

वर्षमर्यादागिरि m. = वर्षगिरि Bhāg. P. 5,20,16.

वर्षमेदस् adj. *durch Regen fett* AV. 12,1,12.

वर्षय् 1) caus. von वर्ष्; s. das. — 2) denom. (vgl. वर्षिष्ठ, वर्षीयस्) *hoch u. s. w. machen* Sidd. K. 162,b,1.

वर्षवर (वर्ष so v. a. *Samenergiessung* und वर *Hemmung, Zurückhaltung* oder *hemmend, zurückhaltend*) m. *Eunuch* AK. 2,8,2,9. H. 728. Hariv. 3217. R. Gorr. 2,17,2. 67,5. 7,100,10. Daçar. 2,12. Ratnāv. 27, 7. Mālatīm. 16,16. — Vgl. वर्षधर 4).

वर्षवसन n. *der Aufenthalt der buddhistischen Mönche in festen Wohnungen während der Regenzeit* Burn. Intr. 285. वर्षावसन wäre die richtigere Form.

वर्षवृद्ध adj. *im —, durch Regen erwachsen* AV. 6,30,2. 12,3,19. VS. 1,16. Çat. Br. 1,1,4,19. Kauç. 61.

वर्षवृद्धि f. *Wachsthum der Jahre* Weber, Kṛishṇaj. 249. Bez. *der Feier des Geburtstages* ÇKDa.

वर्षशतिन् adj. *hundertjährig* Hariv. 4196.

वर्षाश m. *Monat (Jahrestheil)* Taik. 1,1,109. °क m. dass. H. ç. 21.

वर्षासक Hem. 28.

वर्षागम m. *der Anfang der Regenzeit* Varāh. Bṛh. S. 55,6.

वर्षाघोष (व°-+ घोष) m. *ein grosser Frosch* (महामण्डूक) Rāgān. im ÇKDa.

वर्षाङ्ग 1) m. *Monat (Jahrestheil)* Hem. 28. — 2) f. ई = पुनर्नवा Çabdār. im ÇKDa.

वर्षाचर adj. in der Stelle: वर्षाचरो ऽस्तु भृतकः (als Fluch) MBh. 13, 4527. st. dessen करोतु भृतको ऽवर्षाम् 4579.

वर्षाज्य (वर्ष-+ आ°) adj. *dessen Opferbutter der Regen ist* AV. 13,1,17.

वर्षाधिप m. *Jahresregent* Gaṇit. Praçnabdāç. 7. — Vgl. वर्षेश.

वर्षाधृत adj. *in der Regenzeit getragen:* Gewand Kāṭy. Çr. 4,6,18.

वर्षाबीज n. *Hagel* H. ç. 28.

वर्षाभव m. = रक्तपुनर्नवा Rāgān. im ÇKDa.

वर्षाभू Declin. P. 6,4,34. Vop. 3,59. *in der Regenzeit erscheinend.* 1) m. *a*) *Frosch* AK. 1,2,8,24. Taik. 3,3,290. H. 1354. an. 3,437. Med. bh. 18. — *b*) *Regenwurm* Taik. H. an. Med. — *c*) *Coccinelle* Rāgān. im ÇKDa. — 2) f. °भू *a*) *Froschweibchen* Hall. 3,40. Rūpamālā bei Bhar. zu AK. nach ÇKDa. — *b*) *Boerhavia procumbens* (s. पुनर्नवा) Taik. H. an. Med. Ratnam. 25. Suçr. 1,217,6. 218,21. 2,36,19. 80,14. 207,1. 416,12. Vgl. दीर्घ°, नील°, रक्त°. — 3) f. °भ्वी *a*) *Froschweibchen* AK. 1,2,8,24. — *b*) *Boerhavia procumbens* Amarāmālā und Bālavat nach ÇKDa.

वर्षाम्द m. *Pfau* Çabdārthak. bei Wilson.

वर्षाम्भःपारणव्रत m. Bez. *des Kāṭaka* Çabdārthak. bei Wilson.

वर्षार्चिस् m. *der Planet Mars* Çabdār. im ÇKDa.

वर्षालङ्घिका f. *Trigonella corniculata* Lin. Bhar. zu AK. 2,4,6,21. — Vgl. कोटिवर्षा und लङ्घिका.

वर्षाली indecl. in Verbindung mit अस्, कृ und भू gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61.

वर्षावसान m. (!) *Ende der Regenzeit, der Herbst* Rāgān. im ÇKDa.

वर्षावस्तु n. Titel einer Abtheilung des Vinaja bei den Buddhisten Vsuṭṭ. 211.

वर्षाशाटी f. bei den Buddhisten *ein nur in der Regenzeit getragenes Gewand:* °धीवर Vsuṭṭ. 207. °गत 196. °गोपक 216; vgl. वस्सिकसाटिका Mahāvy., Прагимокша-сутра 19,16.

वर्षासुत्र adj. *in der Regenzeit* (वर्षासु loc. pl.) *entstehend, — erscheinend* P. 5,3,1, Vārtt. 5.

वर्षाल्क m. *eine best. giftige Schlange* (अहि) Suçr. 2,265,19.

वर्षाह्वे f. *Frosch (in der Regenzeit rufend)* VS. 24,38.

वर्षाह्वा f. = वर्षाभू *Boerhavia procumbens* TS. 2,4,10,3.

वर्षिक in Ableitungen von auf वर्ष (वर्षा) auslautenden Zusammensetzungen: द्वादश° *zwölfjährig* Âçv. Çr. 12,5,13. fgg. — Vgl. त्रै°, द्वै°, पौर्व° und वार्षिक.

वर्षितर् nom. ag. von वर्ष् Nir. 4,3. 7,23.

वर्षिता (von वर्षिन्) f. *das Regnen, Spenden:* समयवर्षितया कृतकर्मणाम् Raçu. 9,3. कङ्कण° Râéa-Tar. 6,161.

वर्षिन् adj. 1) (von वर्ष्) *regnend, als Regen entlassend, ausschüttend, spendend:* काम° *nach Belieben regnend* Gobh. 3,2,19. निकाम° Varâh. Bṛh. S. 8,32. पर्यन्यु° MBh. 1,4238. समय° 5,2257. काल° Spr. 3997. सम्यग्वर्षिन् MBh. 4,931. यथेष्ट° Spr. 1915. चित्र° Harîv. 11145. विचित्र° Varâh. Bṛh. S. 5,74. गिर्युपरि (v. l. गिर्युदधि°) Spr. 1193. वक्रवारि° Ṛt. 2,3. सीकर° Harîv. 3802. धाराङ्कुश° Varâh. Bṛh. S. 32,21. प्रभूतस्थि° Râéa-Tar. 1,179. कारकासार° 239. शोणित° 4,278. मांसशोणित° R. 3,29,7. पुष्प° Bhâg. P. 8,8,27. 10,11,43. पूय° 3,17,13. शर्करा° Çiñçu. Gaṇ. 6,1. शर्कर° MBh. 4,1288. 16,2. शिला° (पर्वत) Raçu. 4,40. सङ्गार° (उल्का) MBh. 16,3. Harîv. 4260. पीयूष° Râéa-Tar. 3,411. Bhâg. P. 4,30,14. Pañkat. 3,14,34. प्रस्रवोत्पीड° (पूतना) Harîv. 3426. निर्यास° (वृक्ष) R. 2,96,11. मद° (करिन्) MBh. 8,652. बाण° Raçu. 12,50. MBh. 7,4382. Kathâs. 48,80. Mârk. P. 114,15. मोक्षन्यामृत° Râéa-Tar. 2,40. दर्शनामृत° Kathâs. 25,265. प्रेमरसासार° (चतुस्) 11,49. प्रेम° (चतुस्) 39,81. Verz. d. Oxf. H. 132,*a*,2. दुःख° Kathâs. 21,79. स्वर्ण° *Gold spendend* Râéa-Tar. 6,301. अपात्र° *Unwürdigen spendend* Spr. 1919. अस्थान° Daçak. 102,15. वर्षिणी वर्षमात्रेण शान्तशोका बभूव सा so v. a. *Thränen vergiessend.* — 2) (von वर्ष *Regen*) in साश्मवर्षिन् *mit einem Steinregen verbunden* Bhâg. P. 4,10,25. — 3) (von वर्ष *Jahr*): षष्टि° *sechzigjährig* MBh. 1,5885. दश°, शत° 13,394.

वर्षिमन् m. = वर्ष्मन्. वरिमा प्रथिमा, वर्षिमा द्राघिमा *Weite Breite, Höhe Länge* VS. 18,4.

वर्षिष्ठ adj. superl. *der höchste, oberste; der längste, grösste* (Gegens. घणिष्ठ, क्रधिष्ठ, क्रसीयस्); von Personen ṚV. 1,37,6. Ait. Br. 6,3. Agni ist वर्षिष्ठः तितीनाम् ṚV. 5,7,1. श्रेष्ठे वर्षिष्ठे देवते Çat. Br. 11,5,4,3. वर्षिष्ठः समानानाम् TBr. 2,7,15,2. वर्षिष्ठे क्षमिवेवयरि ṚV. 4,31,15. मूर्धन् 6,45,31. सानवि 9,31,5. नाके VS. 1,23 (वर्षिष्ठे अधि नाके nach P. 6,1,113 zu schreiben). 30,12. यो वर्षिष्ठमिर्भानुभिर्नक्षति द्याम् ṚV. 10,3,5. Berg AV. 4,9,8. तनू VS. 5,8. इषा ṚV. 1,88,1. 6,47,9. सुवीर्य 3,13,7. 16,3. रयि 1,8,1. रत्न 3,26,8. तत्र 5,67,1. अवस् 8,46,24. द्योत्र 66,3. धामन् 9,67,26. क्षत्र 3,56,2. अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि 4,22,9. व°, क्रसीयस् TS. 6,6,4,2. Çat. Br. 3,7,2,7. 6,2,1,19. Pfosten 3,3,4,1. Kâṭh. 25,10. शिप्र Çat. Br. 11,1,6,31. 5,2,2. Motrûm u. s. w. 3,2,4,19. 13,6,1,2. Çiñçu. Çr. 16,24,10. ṚV. Prâr. 17, 22. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठे (adv.) वर्धते *wächst am höchsten* Çat. Br. 13,2,2,4. वन *ein sehr grosser Wald* Bhâg. P. 10,20,25. Nach P. 6,4, 157 und Vop. 7,56 ist वर्षिष्ठ der superl. und वर्षीयस् der compar. zu बृह. Zu diesen beiden adjj. ist वर्ष्मन् als nom. abstr. des nicht vorhandenen pos. zu stellen und zu vergleichen das slavische врхъ *cacumen.*

वर्षिष्ठतत्र adj. *Oberherr:* Mitra-Varuṇa ṚV. 8,90,1.

वर्षीका f. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,107. 111. 113.

वर्षीण (von वर्ष) adj. nach einem Zahlworte so v. a. *—jährig* P. 5,1, 86. fgg. — Vgl. द्वि°.

वर्षीयि (wie eben) adj. desgl.: त्रि° *dreijährig* MBh. 13,4467. दश° Pañkat. 1,3,9. — Vgl. पञ्च°.

वर्षीयस् adj. compar. *der höhere, obere; der längere, grössere:* वयस् ṚV. 6,44,9. Haar AV. 6,136,2. प्राण 9,6,19. 15,11,3. यज्ञ VS. 6,11. क्रुस्याय च वामनाय बृहते च वर्षीयसे VS. 16,30. 23,47. इन्द्रः पृथिव्या वर्षीयान् 48. वर्षीयानिध्म इध्माहरति TBr. 1,6,8,6. 3,2,9,11. श्रेष्ठ Âpast. Bṛ. 3,9. क्रन्दम् 4,24. वर्ष्मेयं पुरस्तादर्षीयः पश्चाद्भसेयः TS. 2,6,4,3. 4,3. 5,3,4,3. Çat. Br. 6,5,3,9. 8,6,2,13. 7,2,17. दृष्टा: 11,4,1,3. 12,2,4,3. Kauç. 17. मही so v. a. *blühend* Bhâg. P. 10,20,7. घनुयत् *mächtig, gross* 3,9,34 (वर्षीयान् बृहत्तरः घत्यधिकः Comm.). Nach P. 6,4,157 und Vop. 7,56 compar. zu बृह; nach Âk. 2,6,4,43 und H. 340 *befahrt,* in welcher Bed. das Wort Paṇ. 16,4 und Daçak. 92,16 gebraucht wird. Vgl. वर्षिष्ठ und वर्ष्मन्.

वर्षु adj. nach Maṇḍan. *lang* oder *regenentsprosst;* ein Grashalm wird angeredet: वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिं धाः VS. 6,11. Dagegen liest TS. 1,3,6,2 und Kâṭh. 3,6 वर्षो यो व°. Wer kein Verderbniss des Textes zugeben will, der kann annehmen, वर्षु sei ein zu वर्षिष्ठ und वर्षीयस् gebildeter Positiv.

वर्षुक (von वर्षु 1) adj. (f. घा) *regnerisch, regenreich* P. 3,2,154. Vop. 26,146. वर्षुकः पर्जन्यो भवति TS. 5,4,4,4. 6,2,4. TBr. 3,3,4,2. Çat. Br. 7,5,2,37. अब्द *Wolke* Âk. 3,4,28,112. H. an. 4,142. Med. d. 51. Hal. 3,40. शौर्वर्षुका Bhatt. 2,37. घ° TS. 5,4,4,4. Çat. Br. 12,1,3,3. *regnend* so v. a. *regnen lassend;* s. रत्न°. — 2) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* gaṇa पस्कादि zu P. 2,4,63.

वर्षेण adj. = वर्षण P. 6,3,16.

वर्षेश m. *Jahresregent* Ind. St. 2,256. Verz. d. B. H. No. 868. 881. — Vgl. वर्षाधिप.

वर्षोपल m. *Hagel* Âk. 1,1,3,13. H. an. 2,399. Med. r. 12. Varâh. Bṛh. S. 81,24.

वर्षोघ m. *Regenstrom, Platzregen* Spr. 3156.

वर्ष्टर् (von वर्ष्) nom. ag. *Regner:* द्यौष्टर्बीजं वर्ष्टा पर्जन्यः पक्ता सस्यम् TS. 7,5,20,1.

वर्ष्म m. in der Stelle वर्ष्मो ऽस्मि समानानाम् Pâṇ. Gaṇ. 1,3 fehlerhaft für वर्ष्मास्मि; vgl. Ind. Str. 2,117.

1. वर्ष्मन् m. *Höhe, das Oberste:* यद्यं स यो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोत् ṚV. 6,47,4. 8,32,3. 10,63,4. उतामूं यो वर्ष्मभिर्य स्पशामि *mit meinem Scheitel* 125,7. AV. 7,14,3. zweifelhaft 20,127,2.

2. वर्ष्मन् n. 1) *Höhe, das Oberste; Oberfläche; das Aeusserste, Spitze:* पृथिव्याः ṚV. 3,8,3. 10,28,2. 70,1. VS. 5,16. दिवः ṚV. 2,3,9. 4,54,4. VS. 28,1. वर्ष्मन्वाष्ट्रस्य ककुदि मयस्व AV. 3,4,2. वर्ष्म क्षत्राणामयमस्तु राज्ञी 4,22,2. वाचः TBr. 1,3,6,2. छन्दसाम् 7,2,6. 2,7,2,4. TS. 3,4,8, 7. 5,2,4,5. तद्वर्ष्म सत्सम् स्यात् Çat. Br. 3,1,4,2. स्वर्गाणां लोकानाम् Kâṭh. 33,6. Pañkav. Br. 11,9,14. 19,10,10. सर्वं वर्ष्म समातानो विष्णुतामिव सूर्यः Âçv. Gṛh. 1,24,8. AV. 5,2,7 ist vielleicht वर्ष्मन् zu lesen.

यस्य वर्ष्मणः पुंसां वरिम्णः सर्वयोगिनाम् Bhāg. P. 3,25,2. 5,18,30. — 2) *Höhe, Grösse;* = प्रमाण AK. 3,4,28,126. H. an. 3,283. fg. Med. n. 126. कनूमतः MBh. 3,11275. गज° Rāgān. 4,76. पिशाचं तं वर्ष्मणा तालसंनिभम् Kathās. 2,5. वर्ष्मणा व्याप्तगगणो विन्ध्याद्रिरिव जङ्गमः ein künstlicher Elephant 12,8. Bhāg. P. 10,35,16. गुरुकारेण वर्ष्मणा (वर्चसा die neuere Ausg.) Harīv. 3924. गिरि° adj. Mārk. P. 14,54. MBh. 7,7898. पर्वतभोग° 1,168. 3,12287. 16,118. महापर्वतवर्ष्माभ 3,15631. गजाचल° R. Gorr. 1,20,10 मेरुपर्वत° Liṅga-P. bei Muir, ST. IV, 326,19. मेघसंघात° MBh. 1,5962. Hit. 2,7. भूरि° (तरु) Bhāg. P. 4,19,8. चलिताचलवर्ष्माणः पयोवाहाः Varāh. Bṛh. S. 32,17. अदुःखोदर° (सर्प) MBh. 1, 1443. — 3) *Körper, Leib* AK. 2,6,2,21. 3,4,28,112. 126. H. 564. H. an. Med. Hall. 2,855. Jāṭ. 3,38. 55. 107. शिलाशकल° (मूर्ख) Mṛicch. 115,5. Spr. 2507 (Conj.). 2641. Prab. 27,11. Bhāg. P. 5,4,2. 10,12,15. Pāṇḍav. 3,9,13. वर्ष्मावरण (गात्रावरण ed. Bomb.) MBh. 8,557. शत° (शतपर्व die neuere Ausg.) Harīv. 13433. — 4) *eine schöne Gestalt* H. an. Med. — Vgl. वर्षिष्ठ und वर्षीयस्.

वर्ष्मल (von वर्ष्मन्) adj. (मत्वर्थे) gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97.

वर्ष्मवत् (wie eben) adj. *mit einem Körper versehen* MBh. 12,7852.

वर्ष्य (nach P. 3,1,130 und Vop. 26,19 von वर्ष and zwar = वृष्य) adj. *pluvialis:* हूताः RV. 5,83,2. यवो दिव्यो यमत्रद्र्यो यभि 10,98,5. वर्ष्या सुक्रगात् *Regenwasser* Kātj. 103. घातपवर्ष्या घापः *Sonnenregenwasser* Āit. Br. 8,5. 8. Kāṭj. Ça. 15,4,35. वर्ष्यस्येव विद्युतः *der Regenwolke* RV. 10,91,5. parox. VS. 16,38. TS. 7,4,42,1.

वल्, वलते Dhātup. 14,20 (संवरणे = स्तुतौ Vop., nach Andern auch संचरणे); häufiger act. वलति. 1) *sich wenden, sich hinwenden zu:* ह्रदमिसरणाभमेन वलन्ती पतति पदानि किंयन्ति चलन्ती Gīt. 6,3. किंचिद्वलित्वा Vikr. 59,20. सुरतसागरघूर्णमानतिर्यग्वलत्तरलतारकदीर्घनेत्रा Kādab. 3. Verz. d. Oxf. H. 121,*b*, No. 214. प्रणयिनं परिरब्धुमथाङ्कना ववलिरे (= परिवृत्ताः Mallin.) Çiç. 6,38. यलिकदम्बकम् — वलते (= चलते Mallin.) ऽभिमुखं तव 11. यद्यापि विस्मयकरीम् — बुद्धिर्बलाद्वलति मे Kādab. 27. कृष्णमदये तस्मिन्नेवं पुनर्वलते बलात् Gīt. 7,40. चेतः पदं वलति शैलवनस्थलीषु Spr. 406, v. l. नले — यवलत (= यन्वरत्यत Comm.) या Naish. 3,8. वलित *gewendet, gebogen:* °कंधर Mālatīm. 16,19. Kathās. 39,133. 90,87. 112,152. °ग्रीव 116,55. Spr. 343. 531. वलितानन Kathās. 39,141. 74,236. °दृश् 117,164. 74,218. Spr. 236. Mālatīm. 16,9. वलितापाङ्गो Kathās. 104,21. Rāja-Tar. 5,181. 360. यनमवलितैरङ्गन्यासैः Śiç. D. 42,15. मुखेन वलितधुणा Kathās. 17,128. प्रियपरिरम्भणाभमवलितमिव कुचकलशम् Gīt. 12,5. चुम्बनवलिताधरे (वलित = संकोचित *gespitzt* Comm.) 7,22. भुजगैः — वलितशठरपृष्ठमात्रदृश्यैः Varāh. Bṛh. S. 24,13. एकैव मूत्रधारा वलिता 12,11. यवलिता कुरुताङ्गुलयः 68,36. यनतिवलिततनुतरोदर Daçak. 90,15. वाक्यैर्वलितं (impers.) कृपा *sie wandten sich* Spr. 2237. नितम्बयुग्मं वलितं चक्राकारम् Pāṇḍav. 1,14,33. वलित m. Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanze* Verz. d. Oxf. H. 202,*a*, 32. — 2) *hervorbrechen, sich äussern, sich zeigen:* चित्ताकुलतया वलद्बाधो राधाम् Gīt. 1,26. वलद्भू पुरनिस्वना Śiç. D. 116. वलितविलोचनत्रलधर Gīt. 4,5. — 3) वलित *begleitet von, verbunden mit:* त्रिवलिवलितशोभा Ṛt. 2,26 ग्रेयो रोमवलितः Pāṇḍav. 3,10,12. — 4) *verbergen, verstecken* (vgl. 1. वर्): वलते घनं लोकः Dhanañg. im ÇKDr.

— caus. *sich wenden —, rollen machen:* तनुतरांगतति मरुतो दलत्कुवलयं (adv.) वलयन्मरुद्वावौ Çiç. 6,3. = चालयन् Mallin. पद्मसूत्रवलितदोरक Schol. zu Naish. 22,53. वलयति und वालयति Dhātup. 19,56.

— आ s. u. वल्ग् mit आ.

— वि *sich abwenden:* स्विद्यति कूणति वेल्लति विवलति निमिषति विलोकयति निर्यक् । यत्तर्वन्दति चुम्बितुमिच्छति नवपरिणया वधूः शयने ॥ Kāvyāp. 134,10. यागते (प्रिये) विवलिते चतुः Spr. 1219.

— सम्, partic., संवलित *zusammengetroffen, zusammengekommen, gemischt —, verbunden mit:* तां वल्लभां रुक्मि संवलितां स्मरामि Kathās. 13 bei Hall. 229. संवलितं निषादैर्विप्रम् Çiç. 5,66. रथाङ्गपाणेः पल्लेन रोचिषामयिविषः संवलिताः — भासः Kir. 5,38. 48. सिन्दूरसंवलितमौक्तिकहारभाराम् Kathās. 15 bei Hall. 229. Spr. 988. Mālatīm. 73,4. Śiç. D. 46. Verz. d. Oxf. H. 14,*b*, 1. 233,*a*, 12. 241,*b*, No. 391. Mallin. zu Kir. 16,3. यद्या भूमिरुसवीजमात्रा तदैव प्रचुरपलिमफलव्रीहिस्तबकसंवलिता न भवति Koll. zu M. 4,172. दुःख° Schol. zu Prab. 29,11.

1. वर्ल (wohl von 1. वर्) m. Nir. 6,2. 1) *Höhle:* भिनद्बलस्य परिधीन् RV. 1,52,5. 2,11,20. 15,8. 24,3. 3,34,10. 8,14,7. 10,62,3. वलं रवेण दरयः 1,62,4. रुजद्दृढानि वि वलस्य सानुम् 6,39,2. 4,50,5. यो गा उदाजदपधा वलस्य 2,12,3. यप हि वलं वः 14,3. 1,11,5. 3,30,10. 6,18,8. यर्वाञ्चं नुनुदे वलम् 8,14,8. एषो यरोचिषेतो वलः 24,30. इन्द्रो वलं रैतिनारं दुघानां कोणेव वि चकर्ता रवेण 10,67,6. 68,5. 138,1. In keiner dieser Stellen ist man genöthigt die Personification zu einem Dämon anzunehmen, obschon dieselbe in mehreren zulässig wäre. येन सूर्यो वलमपोतपन्युषा AV. 4,23,5. देवा वै वले गाः पर्यपश्यन् वलं विरुज्य गा उदाजन् Ait. Br. 6,24. इन्द्रो वलस्य विलमपोर्णोत् TS. 2,1,5,1. यसुराणां वै वलस्तमसा प्रावृतो ऽप्सापिधान आसीत् Pāṇḍav. Br. 19,7,1. = मेघ Naigh. 1,10. — 2) *Decke* Schol. zu Kāṭj. Ça. 702, 2 v. u. — 3) als Personification von 1) ein von Indra besiegter Dämon, ein Sohn des Danâjus (der Anâjushâ) und Bruder Vṛtra's, H. 174. an. 2,500. Med. l. 37. Verz. d. Oxf. H. 182,*a*, 30. MBh. 1,2511. 3,12073. 12,8660. Harīv. 12961. fgg. 13044. fgg. 13187. 13222. 13268. 13271. 13630. fgg. Bhāg. P. 8,11,28. Verz. d. Oxf. H. 12,*b*, 3 v. u. Nicht nur die Calc., sondern auch die Bomb. Ausgg. schreiben regelmässig वल.

2. वल = वलि in शतवल Çārīr. Ça. 14,32,10. 14.

वलंकृत् adj. *Höhlenbrecher* RV. 3,45,2.

वलक 1) *Decke* Schol. zu Kāṭj. Ça. 694,20. 703,1. — 2) m. *Procession:* ब्रह्म° Kathās. 123,175. 191. 216. — 3) m. N. pr. *a*) eines Dānava (verschieden von Vala) Harīv. 202. 13222. = वल 13277. 13291. In beiden Ausgg. वलक geschrieben. — *b*) einer der sieben Weisen unter Manu Tāmasa Mārk. P. 74,59.

वलकेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tīrtha Verz. d. Oxf. H. 67,*b*, 11.

वलक्रम m. N. pr. eines Gebirges VP. 180, N. 3.

वलगँ (वल + 1. ग) VS. Pair. 5,38. n. *ein in einer Höhlung oder Grube verborgenes —*, überh. *ein verstecktes Zaubermittel* AV. 5,31,4. यौ ते वर्क्षिणि यौ श्मशाने तेत्रे कृत्यौ वलगं वौ निचख्नुः 10,1,18. 19,9,3 VS. 5,28. TS. 5,2,44,1. 2. Çat. Br. 3,5,4,3.

वलगर्क्न् adj. *verstecktes Zaubermittel vernichtend* VS. 5,23. 25.

वलगिंन् (von वलग) adj. *der sich mit verstecktem Zauber abgiebt* AV. 5,31,12. 10,1,31.

वलती f. = प्रासादापरि मण्डलिका, also = वलभि ÇKDn. nach einem Purâṇa.

वलद्विष् m. Vala's *Feind* d. i. Indra H. 174, Schol.

1. वलन (von वल्) 1) n. *das Sichwenden, Sichbiegen:* घास्य° Sin. D. 236. घपाङ्ग° Spr. 530. सविधमाङ्गवलना adj. 3233. ग्रग्रभुत्तालतातेपवलनै: Ratnâv. 40,12. *das Wallen, Wogen:* कर्मेमीणां विषमवलनै: Spr. 734. घलोलकीर्तिकल्लोलडुकूल° Râǵa-Tar. 2,64. — 2) n. und f. घा *Variation der Ekliptik* Sûrjas. 4,24. fg. Varâh. Bṛh. S. 5,13. Goladhjâj. 8,31. fgg. 9,3. fgg. Ganit. Kâlakrijâpâd. 21. fgg.

2. वलन = 1. वरण in काय°.

वलनाशन m. *der Tödter* Vala's d. i. Indra MBh. 5,288.

वलनिसूदन m. dass. Harîv. 3967. R. 1,47,8 (bei Schl. fälschlich बलिनिसूदन). Ragu. 9,3. — Vgl. वलवृत्रनिसूदन.

वलन्तिका f. Bez. *einer best. Art von Gesticulation* Vikr. 59,13. वलभिका v. l.

वलपुर n. Vala's *Burg* ṚV. Anukr.; s. Hopkins, Z. f. d. M. d. Sprache I, 288.

वलभि s. वलभी.

वलभिका f. 1) *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2, 258, 5. — 2) v. l. für वलन्तिका Vikr. 59,5.

वलभिद् m. 1) *der Spalter* Vala's d. i. Indra MBh. 1,1188. Ragu. 11, 51. Ṛt. 3,12. Çiç. 27,33. Kir. 5,43. Spr. 1043. Bhâg. P. 8,17,15. — 2) N. eines Ekâha für den, welcher um Heerdenbesitz opfert, Pañcav. Br. 19,7,1. 2. 25,1,1. 11. Âçv. Çr. 12,1,5. Çâṅkh. Çr. 14,11,10. Kâty. Çr. 22,10,21. Lâṭy. 9,4,9.

वलभी (hier und da auch °भि) f. 1) *First, Zinne eines Hauses, Söller* AK. 2,2,14. H. 1011 nebst Comm. Halâj. 2,148. Ind. St. 16,279. MBh. 1,796. 5003 (= उभयतो नमत्पत्ता स्तम्भशाला Nîlak.). Vikr. 43. Mâlav. 33. Çiç. 3,53. Varâh. Bṛh. S. 56,25. 57,4. Ratnâs. 87,12. Râǵa-Tar. 1, 369. Bhâg. P. 3,15,20. 3,10,17. 10,41,21. Z. f. d. K. d. M. IV, 166. Vgl. वडभी. — 2) N. pr. einer Stadt in Saurâshṭra gaṇa वारणादि zu P. 4,2,82. Daçak. 158,3. Bhatṭ. 22,35. Çatr. 14,284; vgl. वलभी.

वलम्ब N. pr. einer Gegend Verz. d. Oxf. H. 338,b,26.

वलय (von 1. वल्) Uṇâdis. 4,99. m. n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. Taitt. 3,5,12. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) m. n. *ein am Handgelenk von Männern und Frauen getragenes Armband* AK. 2,6,3,8. 3, 4,1,18. H. 663. an. 3,504. Med. j. 95. Halâj. 2,402. MBh. 4,53. 185. 1418. Harîv. 8678. R. 2,32,5. 5,13,67. मुक्ता° Suçr. 1,171,19. मृणाल° 2,284,13. कनक° Mṛkkh. 2. 61. fg. 77. Ragu. 13,21. घतमाला° 42. Uttarar. 82,10 (106,2). Kumâras. 2, 64. Çiç. 57. 61. 66, v. l. 133. Çiç. 9,8. Ratnâs. 9,67. 108,131. Spr. 77 (II). 490. 573. 2792. 3719. Bhâg. P. 1,15, 40. 3,15,40. 28,15. 27. 4,8,48. 10,18. 5,25,5. 6,4,38. 8,8,34. Sin. D. 84,1. 55,20. Mâlav. P. 88,15. Prab. 12,1. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26,16. Bhatṭ. 3,22 (= घवेध्यचिह्न Comm.). Wellen als *Armspangen* eines Teiches u. s. w. Varâh. Bṛh. S. 12,10. Spr. 344 (II). 477. — 2) m. n. *Kreis* Goladhjâj. 6,1. 3. Suçr. 1,36,10. Vikr. 140. *Umkreis, Rund, runde Einfassung:* भूमे: Mârk. P. 20,49. भू° (s. bes.), घवनी° Ratnâs. 103,238. पृथ्वी° 119,209. धात्री° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Çl. 16. दिग्वलय Çiç. 9,8. नभो° Bhâg. P. 5,22,8. मन्वान° Harîv. 3396. वेलावप्रवलया (उर्वी) *rundum begrenzt von* Ragu. 1,30. पृथिवी समुद्रवलया MBh. 14,100. Ratnâs. 10,199. ग्रातावलयभूमिषु Ragu. 4,65. काण्ठे त्रीणिलताप्रतानवलयेनात्यर्थमंपीडित: Çiç. 170. 32. वल्ली° (so ist zu lesen) Ratnâs. 123,61. — 3) n. Bez. *gewisser runder Knochen an Hand, Fuss, Seite, Brust* Suçr. 1, 339, 15. 17. — 4) m. *eine best. Krankheit des Schlundes* H. an. Med. Suçr. 1,306,14. 307,20. — 5) m. Bez. *einer best. Art von Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,45. — 6) m. pl. N. pr. eines Volkes AV. Paipp. in Verz. d. B. H. 93 (36). — वलया भूतरंगाभा: Harîv. 4298 fehlerhaft für वलयो ऽभ°, wie die neuere Ausg. liest. Vgl. कु°, दृग्वलय, भू°, लता°.

वलयवत् in लता° s. u. लतावलय.

वलयित (von वलय) adj. 1) *rundum eingefasst* AK. 3,2,40. H. 1474. Halâj. 4,27. मृत्पिण्डो (*die Erde*) ऽलरेखया वलयित: Spr. 2245. घकेरु-चन्द्रकातैर्वलयितचिकुरा Kâdamb. 112. पीतपरागपल्लवावलयितमूल Gît. 11,26. चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डकमण्डलवलयितकेश 2,3.5. — 2) *einen Kreis bildend* Mâlatîm. 75,21.

वलयिन् (wie eben) adj. 1) *mit einem Armband versehen* Bhâg. P. 3, 23,31. माङ्गल्यार्णा° Ragu. 16,87. कटकवलयिनौ *mit einem* कटक *und einem* वलय *versehen* P. 5,2,128, Schol. — 2) am Ende eines comp. *rundum eingefasst:* ज्योतिर्लेखा° Megh. 45. कुमावलीवलयिनो ऽलसंनिवेशा: Spr. 737.

वलयीकर् (वलय + 1. कर्) *Etwas zum Armband machen, als Armband verwenden* Kumâras. 5,66. Verz. d. Oxf. H. 239,b, No. 579.

वलयीभू (वलय + 1. भू) *zu einer ringförmigen Einfassung werden* Kir. 13,30.

वलवत् adj. *das Wort* वल *enthaltend* Ait. Br. 6,7.

वलवृत्रघ्न m. *der Tödter* Vala's *und* Vṛtra's d. i. Indra MBh. 13,2343.

वलवृत्रनिसूदन m. dass. MBh. 3,2126.

वलवृत्रहन् m. dass. MBh. 3,2240.

वलसूदन m. *der Vernichter* Vala's d. i. Indra Halâj. 1,52. MBh. 1, 1235. 7706. 13,278. 828. R. 1,47,2 (बलिसूदन falschlich bei Schl.). Brahma-P. in L.A. (III) 50,6.

वलहन्तृ m. dass. MBh. 7,1202.

वलाट m. *Phaseolus Mungo Lin.* (s. मुद्ग) H. 1172.

वलाराति m. Vala's *Feind* d. i. Indra AK. 1,1,1,35.

वलाहक (s. वलाहक in den Nachträgen) m. 1) *Wolke (Regenwolke, Gewitterwolke)* Naigh. 1,10. Varâh. Bṛh. S. 30,25. Verz. d. Oxf. H. 256, a,13. — 2) *Cyperus rotundus Lin.* (vgl. मेघ) Ausw. 10. — 3) *eine Schlangenart* Suçr. 2, 263, 7. — 4) *ein best. Metrum* Ind. St. 8, 408. fg. — 5) N. pr. eines Berges Ratnâs. 54,16. — Die Schreibart mit व ist die richtigere, da das Wort ursprünglich identisch mit वराह ist.

वैलि (von वल्) f. Çiṅk. 2, 2, Comm. Siddh. K. 248, a, 3 und वली. 1) f. (*ringsum laufende*) *Falte der Haut* (bei Menschen und Thieren), *Runzel* AK. 3, 4, 26, 197. Taitt. 3, 3, 101. H. an. 2, 501. Med. l. 35. fg. Vaiś. bei Mallin. zu Çiç. 3, 53. M. 6, 2 (= MBh. 12, 8887). जरा वली च मां तात पलितानि च पर्यगु: MBh. 1, 3467. 3493. वलीसंगतगात्र 3471.

वलीमण्डितनु Spr. 779. वलिभिर्मुखमाक्रान्तम् 1948. गात्रेषु वलगः प्राप्ताः 4011. Bhâg. P. 5,24,13. 9,3,14. 6,42. Suçr. 1,62,4. 129,8. वक्त्रं वलिभिर्विमुक्तम् 2, 132, 16. 236, 8. am Augenlid 338, 1. धर्म यत्र वलीज्ञातम् 334, 14. *Falte* im After 1,238,11. 260,5. 6. Çiñkh. Sâñkh. 1, 6, 5. 2, 9, 21. वलित्रय (vgl. त्रिवली) Kumâras. 1, 39. Kathâs. 84, 7. Spr. 2878. 3728. MBh. 4,294. Kumâras. 5, 24. Kathâs. 90, 45. Bhâg. P. 1, 19, 27. 4,21,16. 24,50. Varâh. Bṛh. S. 51, 8. 61, 15. 68, 22. 24. कलावलयः (beim Elephanten) 67, 2. वलयो ऽथतरंगाभाः (so die neuere Ausg.) Hariv. 4298. ब्रह्मवलि P. 6, 3, 12, Schol. *Falte* an einem Horn: त्रि°, पञ्च° Kâç. Çr. 7, 3, 29. in einem Bettuche Sin. D. 42, 11. — 2) वलि m. *Griff eines Fliegenwedels* H. an. Med. Hân. 265. Medin. 36. — 3) m. *Giebelbalken* Taik. H. an. Med. वली f. Vaij. — 4) f. वली *Welle* Vaij. — 5) वलि *Schwefel* H. an. — 6) वलि *ein best. musikalisches Instrument* H. ç. 85. — 7) वली Kathâs. 123, 61 fehlerhaft für वल्ली.

1. वलित partic. von वल्; s. daselbst.

2. वलित (von वलि) 1) adj. *gefaltet:* अप्रदक्षिण° Schol. zu Kâç. Çr. 988, 12. — 2) n. *schwarzer Pfeffer* H. ç. 100.

वलिन् (wie oben) adj. *mit Falten versehen, runzelig* gaṇa पामादि zu P. 5, 2, 100. AK. 2, 6, 4, 45. H. 456. Çâñkh. Çr. 18, 18, 8. — Vgl. पुव°.

वलिभ (wie oben) adj. dass. P. 5, 2, 139. AK. 2, 6, 4, 45. H. 456. दधाना वलिभं मध्यम् Bhaṭṭ. 4, 16.

वलिमत् (wie oben) adj. dass. Comm. zu AK. 2, 6, 4, 45. Bhâg. P. 10, 39, 48. — Vgl. वलीमत्.

वलिमुख m. = वलीमुख *Affe* Râmây. zu AK. 2, 5, 3 nach Wilson.

वलिर adj. *schielend* AK. 2, 6, 4, 49. H. 458.

वलिवएड m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 122, *a*, 15. fg.

वलिवाक (व° gedr.) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2, 109 nach der Lesart der ed. Bomb.; बलीवाक ed. Calc.

वलिश n. 1) = वटिश (वडिश) *Angel* Çabdar. im ÇKDa. — 2) *ein aus einem Gelenk hervorbrechender Sprosz* H. 1119.

वलिशार्न m. *Wolke* Naigh. 1, 10.

वलिशि und वलिशी f. = वटिश *Angel* Çabdar. im ÇKDa.

वली s. u. वलि.

वलीक (von वली) 1) am Ende eines adj. comp. *mit — Falten versehen:* त्रि° R. 5, 32, 12. Çiç. 3, 53. — 2) n. proparox. *ein vorspringendes Stroh- oder Schilfdach* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 25. AK. 2, 2, 14. Taik. 3, 3, 360. H. 1011. Hâlây. 2, 148. Çiç. 3, 53. — 3) n. etwa *Schilf, Büschel*, als Fackeln u. s. w. gebraucht Kauç. 25. 29. fg. 75. 77; vgl. Ind. St. 5, 370.

वलीमत् (von वली) adj. *gekräuselt:* ग्रलकाः Bhâg. 8, 53. — Vgl. वलिमत्.

वलीमुख 1) adj. *Runzeln im Gesicht habend.* — 2) m. *a*) *Affe* AK. 2, 5, 2. H. 1292. Hâlây. 2, 76. R. 5, 60, 10. 61, 1. — *b*) N. pr. eines Affen Kathâs. 63, 97.

वलीवाक (व° gedr.) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2, 109. वलिवाक ed. Bomb.

वल्क Uṇâdis. 4, 40. adj. *roth* oder *schwarz:* दामतूषाणि वल्कानानि Kâṭy. Çr. 22, 4, 20. Pâraskar. Bh. 17, 1, 15. Lâṭy. 8, 6, 20. Anupada 5, 4. Da das Wort nur in dieser Verbindung erscheint, wird es wohl eine spe-

cielle Bedeutung haben, etwa *Verbrämung, umlaufende Schnur* oder *Wulst.* Nach Uṇâdis. m. *Vogel* und *Lotuswurzel;* in der letzten Bed. n. nach Uṇâdis.

वल्क्. वल्कयति (परिभाषणे) Dhâtup. 32, 35.

वल्क Uṇâdis. 3, 42. 1) m. n. (n. nicht zu belegen) *Bast, Splint* AK. 2, 4, 4, 42. H. 1121. an. 2, 16. Med. k. 33. Hâlây. 2, 28. इन्द्रो वृत्रमकल्मलं तस्य (यो) वल्कः परापतत् तानि फाल्गुनान्यभवन् TBr. 1, 4, 2, 6. यत्पूतीकैर्वा पर्णवल्कैर्वीतरुज्यात् (*Splint* des Palâça dient zum Gerinnen) TS. 2, 5, 2, 5. 3, 7, 4, 2. द्रुमवल्कैः (बबन्धुः) R. 5, 44, 12. fg. शणवल्कैः 56, 138. तरुवल्कवासम् Râgat. 8, 11. °वासम् Kir. 1, 35. अश्मन्तकस्य Suçr. 1, 93, 15. तिन्त्रिकस्य त्वचं बाह्यामन्तर्वल्कविवर्जिताम् 166, 5. 2, 239, 11. घन्त्रन° Varâh. Bṛh. S. 57, 1. — 2) n. *Fischschuppe* H. an. Med. Çabdar. im ÇKDa. — 3) n. *Stück* (खण्ड) Viçva im ÇKDa. — 4) m. *ein best. Baum, eine Art* Lodhra (पठ्रिकालोध्र) Râgân. im ÇKDa. Pârâśar. 1, 7, 24. — 5) nom. ag. = वक्तृ *Sprecher* Çâñkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 139 bei der Erklärung von यज्ञवल्क. — Vgl. उरु°, दत्त°, पर्ण°, बल्क°, बृहद्वल्क, यज्ञ°, दृढवल्का, शिला°, वकल und वल्कल.

वल्कल m. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 127.

वल्कलक m. *Betelpalme* Râgân. im ÇKDa.

वल्कद्रु m. *Betelpalme* Râgân. im ÇKDa.

वल्कद्रुम m. *eine Art Birke* (भूर्ज) Râgân. im ÇKDa.

वल्कल 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. Taik. 3, 3, 11. (nur das n. zu belegen) = वल्क *Bast, Splint; ein Gewebe von Bast, ein aus Bast verfertigtes Gewand* AK. 2, 4, 4, 42. 3, 4, 4, 13. H. 1121. Hâlây. 2, 28. अस्तवल्कल Suçr. 1, 25, 10. 65, 14. 344, 8 (अत्वच्च v. l.). Jâṭâ. 2, 150. जटावल्कलधारिन् MBh. 1, 7626. 13, 352. R. 1, 1, 31. 2, 7. 2, 24, 35. 28, 13. 63, 27. 73, 10. 101, 24. R. Gorr. 1, 2, 8. 3, 77, 26. Kumâras. 5, 8. 6, 6. Raghu. 12, 8. Çik. 14. 18. 10, 6. Varâh. Bṛh. S. 51, 14. Spr. 1934. 2722. 2727. 2784. 3131. Bhâg. P. 5, 2, 10. Pañkat. 188, 13. Schol. zu Kâṭy. Çr. 880, 8. am Ende eines adj. comp. f. आ Kumâras. 5, 34. Kathâs. 32, 107. — 2) n. *Cassiarinde* Râgân. im ÇKDa. — 3) f. आ = शिलावल्का Râgân. im ÇKDa. — 4) m. N. pr. eines Daitja Bhâg. P. 2, 7, 34. 3, 3, 11. fehlerhaft für वल्वल, wie die ed. Bomb. an beiden Stellen liest. — Vgl. गन्ध°, दृढ°.

वल्कलतैत्र n. N. pr. eines *heiligen Gebietes* Verz. d. Oxf. H. 30, *a*, 13. °माहात्म्य Mack. Coll. I, 83.

वल्कलवत् (von वल्कल) adj. *ein Gewand aus Bast tragend* Raghu. 18, 35.

वल्कलिन् (wie oben) adj. *Bast habend, — liefernd:* शाखा Spr. 665. *ein Gewand aus Bast tragend* MBh. 1, 4622. Raghu. 14, 62.

वल्कलोध्र m. = पठ्रिकालोध्र Râgân. im ÇKDa.

वल्कवत् (von वल्क) 1) adj. *mit Bast —, mit Schuppen versehen.* — 2) m. *Fisch* Taik. 1, 2, 13.

वल्किल m. *Dorn* Çabdar. im ÇKDa.

वल्कुल n. = वल्कल *Bast* Çabdaṛ. im ÇKDa.

वल्गु, वेल्गति Dhâtup. 5, 38 (गतौ, खञ्जे). ववल्गुः aus metrischen Rücksichten auch med.; *die Glieder rasch bewegen, hüpfen, springen* (auch von leblosen Dingen): मंदिताग्र स्वाकृ वल्गति स्वाकृ VS. 22, 7. TS. 7, 1, 22, 1. वल्गमाना रथोत्तमाः MBh. 7, 4559. वल्गतुरंग Kathâs. 103, 157. Spr. 2399, v. l. कपयः *Affen* R. 6, 15, 18. MBh. 3, 16123. वल्गते

च शशक: Spr. 566. MBh. 13,748 (med.). वल्गमानमिव सिंहम् Harıv. 4698. वल्गतां भूतानाम् Kathās. 7,33. 22,175. शैलूषस्येव मे राज्यरङ्गे ऽस्मिन्वल्गतश्चिरम् Rāja-Tar. 2,156. 5,342 (वल्गन् mit der ed. Calc. zu lesen). Bhāg. P. 10,44,11. Mārk. P. 43,17. Bhaṭṭ. 13,28. त्व पुत्रो ववल्ग क् so v. a. *sprang vor Freude* MBh. 7,5430. यशोदा मधुपान्वक्तुं वल्गसे वङ्क दुर्मते 8,2018. समुद्रं वल्गसमिव वायुना 3,8802. ऊर्मयश्चात्र दृश्यन्ते वल्गन्त इव पर्वता: 12060. गच्छन्त्या: स्तनौ तस्या ववल्गतु: 1824. ववल्गुश्चापि कामांश्चित्कुण्डलान्यङ्गदानि च R. 5,13,41. वल्गु वल्गन्ति सूकरा: (so die v. l.) so v. a. *klingen schön* Spr. 553. वल्गित 1) adj. *hüpfend, springend:* वत्स Vārāh. Bṛh. S. 48,11. (वारणौ:) रणावल्गितै: (°गर्वितै: die neuere Ausg.) Harıv. 3469. *flatternd:* वल्गितास्त्रै: (बलिनां त्रै: die neuere Ausg.) 4992. °भु *sich hinundher bewegend* Kirāt. 2, 73. Bhāg. P. 10,35,2. so v. a. *klingend, wohlklingend:* योधानां वल्गितस्वन: Harıv. 14017. °कण्ठ Bhāg. P. 10,90,21. — 2) n. impers. statt des verbi finiti: कस्मादेतेव वल्गितम् *weshalb ist er vor Freude gesprungen?* Rāja-Tar. 3,104. — 3) n. *das Hüpfen, Springen, springender Gang* (eines Pferdes z. B.) AK. 2,8,8,16. H. 1245. 1247. MBh. 7, 3860. क्रीडत्य: प्लुतवल्गितै: R. 1,9,14 (13 Gorr.). Bhaṭṭ. 6,106. *Geberdenspiel* Bhar. Nāṭyaç. 20,12. 22. तद्वया च सभामध्ये वल्गितं ते वृकोदर *das Hüpfen vor Freude* MBh. 5,5476. Çiç. 2,27. विस्फुरन्मकरकुण्डल° *das Zittern, Hinundhergehen* Bhāg. P. 3,28,29.

— अभि *herbeihüpfen, herbeispringen* MBh. 6, 2255. *aufhüpfen, aufwallen* vom siedenden Wasser: उन्नीयन्त्यभि वल्गन्ति तप्ता: AV. 12,3,39.

— आ *die Glieder rasch bewegen, hüpfen, springen:* आवल्गमानं तं (महीं) रङ्गे नोपतिष्ठति कश्च न MBh. 4, 342. आवल्गित *hüpfend, springend* 9,600 (आवर्तित ed. Bomb.). विषाणावल्गितगति Harıv. 4103. प्लुतावल्गितयाद् (प्लुतवल्गित° die neuere Ausg.) 4302. *flatternd:* आवल्गितास्त्र (आवलिता° die neuere Ausg.) 4661. 4686 (बलिनां वरम् die neuere Ausg.).

— व्या *galoppiren* Uttarār. 92,2 (119,4). *hüpfen, sich rasch hinundher bewegen,* vom Busen Spr. 2921. व्यावल्गत्कपाल Prasāṇn. 3,13. व्यावल्गित *dahinfahrend:* पुरोवात MBh. 6,1666.

— परा *wegspringen:* परावल्गते स्वाहा TS. 7,1,13,1.

— प्र *die Glieder rasch bewegen, hüpfen, springen* MBh. 8,348. in der Nacht इच्छया ते प्रवल्गन्ति ये सत्त्वा रात्रिचारिण: 10,26. med. Harıv. 4703. 13591. प्रवल्गत्तमिवोर्मिभि: — सागरम् R. 5,74,29. °वल्गित *hüpfend, springend* Harıv. 4991. 5470.

— वि *hüpfen, springen:* माहेन्द्रेण विवल्गतीव धनुषा — अम्बरम् Mṛicch. 85,13.

— सम् *sich in wallende, rollende Bewegung setzen:* यत्प्रेर्षिता वरुणेनाच्छीभं समवल्गत AV. 3,13,2. TS. 5,6,4,2.

वल्गन (von वल्ग्) n. *das Hüpfen, Springen, Galoppiren:* तुरग° Rāgān. 9,51.

वल्गा f. 1) *Zaum, Zügel* Taik. 2,8,47. H. 1252. Halāy. 2,287. वाजी वल्गासु गृह्यते Mṛicch. 20,12. Rāja-Tar. 5,342. Schol. zu Kirāt. Ça. 14, 3,9. Dieses Wort ist wohl herzustellen in der Stelle: विप्रविद्धकुवावल्गा: (तुरगा:) MBh. 7,1217. विप्रविद्धकुथा नागा: ed. Bomb. — 2) N. pr. eines Frauenzimmers Rāja-Tar. 6,308. °मठ ebend.

वल्गु (von वल्ग्) Uṇādis. 1,20. 1) adj. *artig, zierlich, anständig, schmuck, lieblich, schön* (eig. *von angenehmer Geberde*) AK. 3,4,22,146. H. 1444. an. 2,48. Med. g. 23. Halāy. 4,4. सुष्टा वरेषु समनेषु वल्गु: das Weib AV. 2,36,1. die Açvin ṚV. 6,62,5. 63,1. 7,68,4. 8,76,6. सर्वे बर्हिरिदनार्यं स्तृणीत प्रियं कृदश्वत्थिया वल्गवस्तु AV. 12,3,33. °ब्रुव Harıv. 16252. मुख MBh. 3,15639. Spr. 3281. R. 2,26,10. वामकर Bhāg. P. 8,12,21. प्रकोष्ठ 3,15,40. 4,10,18. वलिवल्गूदर 1,19,27. 4,21,16. 24,50. °गति 8,8,7. °स्पन्दन 5,2,6. °स्मित R. 6,93,25. Bhāg. P. 10,6, 6. °हास 1,9,40. 11,37. उन्मिषित Rāgān. 3,68. °दर्शना AK. 3,4,2,33. बलेन चतुरङ्गेण वृत: परमवल्गुना MBh. 1,2817. नदीतीरेषु वल्गुषु R. 2, 91,51 (100,50 Gorr.). °द्रुम Kumārsaṃ. 149. insbes. von Rede, Stimme, Laut (daher unter den वाङ्नामानि Naigh. 1,11): एषा वाद्दिक्षिया वल्गुतमा वाग्या वनस्पतीनाम् *venustissima* Pāṇāv. Bṛ. 6,5,12. वचस् MBh. 3, 1160. शब्दा: 11565. °नाद् R. 1,30,16. 2,93,11. B. Gorr. 1,31,19. 66,9. वल्गु द्विजानां (so ist zu trennen) च रुतं शृण्वन् 2,98,16. 104,7. 11. 3, 76,7. 5,74,5. Rāgān. 19,13. AK. 3,4,22,162. Vārāh. Bṛh. S. 48,14. 70,7. 74,13. Kirāt. 3,110. °विचित्रजल्पै: Bhāg. P. 1,7,17. 16, 26. 3,21,43. 4,9,59. 25,31. 26,22. 6,18,27. 8,8,18. 24,25. साम्ना परमवल्गुना MBh. 1,3294. 3,13008. 5,3338. 8,3368. 13,657. 2312. 14,2602. वल्गुना साम्ना Bhāg. P. 4,28,51. adv.: अथ नाभी वदन्ति वल्गु वै गृहे ṚV. 10,62,4. वदते वल्गवत्र्ये 8,62,8. अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत AV. 3,30,3. कोकिलस्य वल्गु व्याहरत: R. 1,64,9 (66,10 Gorr.). 2,36,2. वल्गु वल्गन्ति सूकरा: (so die v. l.) Spr. 553. °वादिन् MBh. 7, 2255. °चलच्चरणनूपुर Bhāg. P. 8,8,45. अवल्गुकारिणी सत्सु *nicht schön handelnd an* MBh. 5,4522. फलत्यवल्गु Bhaṭṭ. 12,66. — 2) m. *a) Ziege* Taik. 2,3,70. H. an. Med. — *b)* N. einer der vier Schutzgottheiten des Bodhi-Baumes Lalit. ed. Calc. 347,8. — 3) vielleicht N. pr. einer Oertlichkeit *gaṇa* वरणादि zu P. 4,2,82. — 4) verwechselt mit फल्गु Spr. 4400, v. l. fehlerhaft für वर्ण (so die ed. Bomb.) MBh. 6,2138.

वल्गुक 1) adj. = वल्गु Aśoka im ÇKDr. — 2) m. *ein best. Baum* Pāṇāv. 1,7,24. — 3) n. *a) Sandel.* — *b) Gehölz, Wald.* — *c)* = पण n. Aśoka im ÇKDr. *Preis* Wilson.

वल्गुज m. und °जा f. so v. a. अवल्गुज Rāgān. in Nigh. Pr.

वल्गुजङ्घ 1) adj. *schöne Beine habend.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Viçvāmitra MBh. 13,251.

वल्गुपत्र 1) adj. *schöne Blätter habend.* — 2) m. *Phaseolus trilobus* Çabdār. im ÇKDr.

वल्गुपोदकी f. *Amaranthus polygamus* oder *oleraceus* (eine Gemüsepflanze) Dhanv. in Nigh. Pr.

वल्गुला 1) *Serratula anthelminthica.* — 2) *ein best. Nachtvogel* (दिवान्धा) Rāgān. im ÇKDr.

वल्गुलिका f. 1) *Kiste, Kasten:* वल्गुलिकान्तःस्थं दृष्ट्वा पटम् Kathās. 55,79. 101,74. कृष्ट्वा वल्गुलिकात: सा चित्रस्थौ तामदर्शयत् 78. — 2) *ein best. Nachtvogel* oder *eine Art Fledermaus* H. 1337.

वल्गुली f. *ein best. Nachtvogel* oder *eine Art Fledermaus* Dhanv. in Nigh. Pr. unter den प्रतुद aufgeführt Suçr. 1,201,19. Vārāh. Bṛh. S. 88, 2 (*Fledermaus* nach dem Comm.).

वल्गूय् (von वल्गु), °यति Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्). *gaṇa* कण्ड्वादि

zu P. 3, 1, 27 (पूजामार्गयोः). 1) *artig behandeln:* बृहस्पतिं यः सुभृतं बिभर्ति वल्गूयति वन्दने पूर्वभाजम् ṚV. 4, 50, 7. — 2) *frohlocken:* वल्गूयसी (= शोभमाना Comm.) विलोका इवा स्त्री न मसृणतीव का Bhaṭṭ. 5, 73. मसृणिष्यति यत्रेन्द्रो वल्गूयिष्यति (= हृष्टमना भविष्यति, शोभनो भ° Comm.) नो (= न) यमः 16, 31.

वल्भ्, वैल्भते *essen* Dhātup. 10, 31.

वल्भन (von वल्भ्) n. *das Essen* H. 423. Hall. 2, 170.

वल्मिक m. n. = वल्मीक *Ameisenhaufe* Çabdar. im ÇKDr.

वल्मिकि m. n. dass. Bhar. zu AK. nach ÇKDr.

वल्मी Harṣ. Anth. 238, 2 fehlerhaft für वल्ली; s. Spr. 1972.

वल्मीक (वै° Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 25) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. Taik. 3, 5, 13. 1) m. n. (das n. nicht zu belegen) *Ameisenhaufe* (vgl. वप्र) AK. 2, 1, 15. Taik. 2, 1, 18. H. 970. an. 3, 95. Med. k. 127. Hall. 3, 22. VS. 25, 8. TS. 1, 1, 2, 1. Çat. Br. 2, 6, 2, 17. 14, 7, 2, 10. Kâṭy. 19, 2. 31, 12. 35, 19. °संभूति Çârṅg. Gp. 5, 11. °वया s. u. 2. वया 1). °राशि Kaṭuc. 21. 25. fg. 31. M. 4, 48. धर्म शनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिकाः Spr. 4248. शनैः शनैः संचिनुयाद्धर्मं वल्मीकमृङ्गवत् Kaçikh. 33, 25 (nach Aufrecht). Jâṭ. 1, 278. 2, 151. MBh. 2, 1441. 4, 651. R. 3, 83, 9. Suçr. 1, 134, 18. 2, 173, 11. Çiç. 170. Spr. 82 (II). यज्ञस्य तयं दृष्ट्वा वल्मीकस्य च संचयम् 115 (II). 3611. 4746. Kâm. Nîtis. 14, 21. 32. 16, 18. Varâh. Bṛh. S. 35, 8. 43, 13. 46, 70. 48, 16. 54, 9. 12. (गृहम्) मूषकैः कृतवल्मीकम् Kathâs. 2, 49. Buic. P. 7, 3, 15. 28. 9, 3, 3. Mârk. P. 34, 68. 39, 49. Pañcat. 9, 7. ein beliebter Aufenthaltsort von Schlangen MBh. 7, 5590. 14, 1715. R. 3, 35, 12. Kathâs. 33, 43. fgg. Verz. d. Oxf. H. 90, *b*, 6 v. u. Pañcat. 170, 23. — 2) m. n. Bez. *einer best. Krankheit: Knoten an Hand und Sohle u. s. w. von wunden Stellen umgeben* Taik. 2, 6, 15. H. an. Med. Wils. 412. Suçr. 1, 92, 4. 291, 17. 292, 8. 293, 7. Çiṅgh. Saṅh. 1, 7, 65. Vgl. पाद्°. — 3) m. = मातपो मेघः und सूर्य Schol. zu Mṛcch. 15 (s. Schütz's Uebers.). — 4) m. N. pr. eines Mannes, des Vaters von Vâlmîki, Buic. P. 6, 18, 4. = वाल्मीकि Taik. 2, 7, 19. H. 846. H. an. — वल्मीकावः कविः Verz. d. Oxf. H. 140, *a*, No. 283. — 5) n. N. pr. einer Oertlichkeit Kathâs. 46, 31. 52. वल्मीकाय Mṛcch. 15 nach einem Schol. Bez. einer best. *Kuppe* des Râmagiri.

वल्मीकत्य (?) m. Bez. *des 41ten Tages* (कत्य) *in der dunkelen Hälfte im Monat* Brahman's; s. u. कत्य 2) *d*).

वल्मीकशौर्य n. *Antimonium* Râjân. im ÇKDr.

वल्मीकि m. = वल्मीक Çabdam. im ÇKDr.

वल्मीकूट n. *Ameisenhaufe* ÇKDr. angeblich nach H.; vgl. वमीकूट.

वल्यलय् und वल्यलय् s. u. फल्गूलय्.

वल्ल्, वैल्लते (स्तुतौ, संवरणे) Dhātup. 14, 21. (संवरणे) Verz. d. Oxf. H. 168, *b*. वल्लहिव्याधः Kathâs. 110, 87 fehlerhaft für वेल्लहि°.

वल्ल m. 1) *eine Weizenart* H. 1174. Hall. 2, 139. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 26. = क्षुद्र Çabd. zu Bṛh. Âr. Up. 6, 3, 13. °पुष्प Varâh. Bṛh. S. 80, 7. — 2) *ein best. Gewicht* Verz. d. B. H. No. 968. = 3 Guṅjâ Çiṅgh. Saṅh. 1, 1, 30. Liṅiv. im ÇKDr. = 2 Guṅjâ Colebr. Alg. (dies. Aut.). Vaidyakalpad. im ÇKDr. = 1½ Guṅjâ Râjân. ebend.

वल्लकरञ्ज m. so v. a. करञ्ज Aufr. 25.

वल्लकि s. u. वल्लकी 1).

वल्लकी f. gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41. 1) *eine Art Laute* (steht öfters neben वीणा) AK. 1, 1, 2, 3. H. 288. ç. 81. Hall. 1, 96. MBh. 7, 6663. 13, 3782. 5180. Harîv. 4635. Ṛt. 1, 8. Ragh. 8, 41. 19, 13. Çiç. 4, 57. Varâh. Bṛh. S. 76, 2. Kathâs. 49, 13. 34. 86, 78. Râja-Tar. 2, 126. वल्लकि aus metrischen Rücksichten R. 4, 33, 26. Vgl. चण्डालवल्लकी. — 2) Bez. *einer best. Constellation von der Gattung* संख्यायोग, *bei der alle Planeten in sieben Häusern stehen,* Varâh. Bṛh. 12, 10; vgl. वीणा. — 3) = शल्लकी *Boswellia thurifera* Râjân. im ÇKDr.

वैल्लभ Uṇâdis. 3, 125. Accent eines darauf ausgehenden Wortes gaṇa घोषादि zu P. 5, 2, 85. 1) adj. (f. या) *vor Allen lieb,* subst. *Liebling, Günstling, Geliebter, Geliebte* AK. 3, 2, 3. H. 515. fg. an. 3, 457. Med. bh. 18. Hall. 2, 312. प्रमदा वल्लभामिव R. 3, 35, 63. भृत्य Kathâs. 23, 32. भार्या 63, 21. Verz. d. Oxf. H. 15, *b*, No. 59. यात्ममदृशेतणावल्लभाभिर्हरिणाङ्गनाभिः Çiç. 26. Spr. 806. वल्लभातिथयो गृहाः Râja-Tar. 3, 224. प्रायेण हि नरश्रेष्ठ श्रेष्ठाः पितृषु वल्लभाः। मातृणां च कनीयांसः R. 1, 61, 18 (63, 20 Gorr.). कस्यास्ति को वल्लभः Spr. 2883. राज्ञः 4675. Kâm. Nîtis. 5, 19. सर्वत्रनस्य Varâh. Bṛh. S. 68, 117. Bṛh. 24, 10. Z. d. d. m. G. 14, 569, 9. Pañcat. 169, 25. श्रेयसामेकवल्लभः Buic. P. 4, 24, 77. वल्लभतरा Kâd. 27. यतिवल्लभा भार्या Kathâs. 36, 113. Mârk. P. 65, 11. राज्ञ° *ein Liebling des Fürsten* MBh. 2, 1207. Spr. 336 (II). 984. 1261. 1283. 1354. 1862. 1927. 2493. 2561. 3193. नृप° 1009. नरेन्द्र° Varâh. Bṛh. S. 46, 99. अस्मत्स्वामि° Prab. 9, 3. गण° (so die ed. Bomb.) R. 2, 81, 12. नैगमयूथ° 2, 106, 32. कृत्रिवल्लनवल्लभः Vet. in LA. (III) 1, 14. स्त्री° Spr. 1912. यङ्गना° Varâh. Bṛh. 17, 1. पतिवल्लभा Bṛh. S. 103, 8. प्राण° Pañcat. IV, 8. समस्तगुणवल्लभः *ein Liebling aller Vorzüge* so v. a. *mit allen Vorzügen ausgestattet* Verz. d. Oxf. H. 140, *a*, No. 280. गुण° R. 2, 81, 12. क्षिति° *Geliebter, Gatte* Râja-Tar. 5, 380. उमा° Sin. D. 19, 1. 43, 12. Pañcat. 129, 7. 8. Vet. in LA. (III) 20, 15. वल्लभा *Geliebte, Gattin* Ragh. 19, 16. Spr. 2791. 4030. Râja-Tar. 3, 9. 482. 507. Buic. P. 1, 14, 37. Kâd. 14. H. 185. Çuk. in LA. (III) 38, 3. Daçak. 90, 16. राजानो यङ्गवल्लभाः Kathâs. 47, 104. 22, 129. वल्लभतन *Geliebte* Ragh. 19, 24. Ausnahmsweise wird वल्लभ auch von Unpersönlichem gesagt: कापः कस्य न वल्लभः Spr. 700. यखिललोकवल्लभतमं शीलम् 2765. (धनिः) यमूलस्य वल्लभः Râja-Tar. 2, 126. Verz. d. Oxf. H. 12, *b*, 10. न मे ब्रह्मकुलात्प्राणाः कुलदेवाश्च चात्मनाः। न श्रियो न मही राज्यं न दाराश्चातिवल्लभाः॥ *lieber als* Buic. P. 9, 9, 13. रागेण — आवत्सवतःस्वत्सवल्लभेन 3, 8, 28. — *b*) *die Aufsicht über Etwas habend* AK. 3, 4, 22, 140. H. an. Med. यध्यक्षो ऽत्र गवाध्यक्षः Svâmin zu AK. nach ÇKDr. also wohl nur fehlerhaft für वल्लव *Kuhhirt.* — 2) m. *a*) *ein edles Pferd* (oder *Lieblingspferd*) H. an. Med. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Balâkâçva MBh. 13, 204. eines Lehrers (vgl. वल्लभाचार्य) Hall. 146. Wilson, Sel. Works II, 72. eines Grammatikers Verz. d. Oxf. H. 113, *b*, 5. 6. — *c*) pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 129; v. l. für मल्लव; यपरवल्लभाः MBh. 6, 370. die ed. Bomb. des MBh. liest वल्लवाः und यपरवल्लवाः. — 3) f. या N. zweier Pflanzen: = यतिविषा und प्रियङ्गु Aufr. 64. — 4) वल्लभी s. bes. — Vgl. यपर°, कुबेर°, दैवत्त°, पिक°, भवानी°, भू°, भूपाल°, भृङ्ग°, मुख°, मुहूर्त°, मृग°, राज्ञ°, राधा°, राम°, रोहिणी°, लक्ष्मी°, मातृगड-वल्लभा, यास्तिक°, वह्नि°.

वल्लभज्ञो m. N. pr. = वल्लभाचार्य Hall 93. 227.

वल्लभता f. nom. abstr. von वल्लभ *Liebling:* स्त्रीषु वल्लभतां याति *er wird ein Liebling der Weiber* MBh. 13,5154. यच्छक्यलभ्यमपि प्रार्थितो वल्लभतामेति सकललोकस्य Spr. 2272. राज्ञवल्लभतामेति *er wird ein Liebling des Fürsten* Pañcar. 4,6,17. तात° (s. die v. l.) Prab. 10,5. धृति° Pañcat. 221,5.

वल्लभदीक्षित m. N. pr. eines Lehrers, = वल्लभाचार्य Hall 145. 227.

वल्लभदेव m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,29.

वल्लभन्यायाचार्य m. N. pr. eines Autors Hall 71.

वल्लभपालक m. *Rosshirt* Trik. 2,8,47. Hir. 117. Buḍaipa. im ÇKDa.

वल्लभपुर n. N. pr. einer *Stadt* Ksmīr. 12, 4. eines Dorfes (ग्राम) 10,18. 18,8.

वल्लभशक्ति m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 10,17. 59.

वल्लभस्वामिन् m. N. pr. = वल्लभाचार्य Wilson, Sel. Works I, 368.

वल्लभाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* und Gründers einer Vishṇuitischen Secte Colebr. Misc. Ess. I, 196. Wilson, Sel. Works I, 54 u. s. w. Hall 93 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 38,*a*, No. 94. 274,*a*, No. 649. 387,*b*, No. 525.

वल्लभाष्टक n. *die acht Strophen* Vallabha's, Titel einer Schrift Hall 152. °विवृति Verz. d. Oxf. H. 274,*a*, No. 649.

वल्लभी f. N. pr. einer Stadt Kathās. 22, 60. 116. 125. 29, 78. 32, 44. Hiouen-thsang II, 162. 404. Vie de Hiouen-thsang 206. LIA. II, 409. 750. III, 501. fgg. In allen Stellen des Kathās. wäre metrisch auch वलभी möglich, dagegen erfordert das Metrum Bhaṭṭ. 22,35 die Schreibart वलभी (s. d.).

वल्लभेश्वर m. N. pr. eines Fürsten Ind. St. 8,330.

वल्लर n. s. u. वल्लुर.

वल्लरि und °री f. 1) *Ranke, Rankengewächs;* = मञ्जरि AK. 2, 4, 4, 13. H. 1122. Hall. 2,30. °री Varāh. Bṛh. S. 55,21. वल्लरीधरन् Pañcat. 229,16. निष्पाव° Mārk. P. 50,83. शय्या लतावल्लरी Spr. 3153, v. l. घनपायिनि संश्रितद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी Kumāras. 4,31. विष° Spr. 1549. भुजा° Śiç. 37,5. दीर्घवल्लरी Paṇcat. 3, 5, 21. Spr. (II) 185. गात्र° Paṇcat. 3, 5, 24. व्यालोलालक° Spr. 2629. — 2) *ein best. Metrum: 32 + 30 Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 154. — Vgl. अङ्गार°, गन्ध°, नाग°, वन°, सोम°.

वल्लापुर n. N. pr. einer *Stadt* Rāja-Tar. 7,220. 8,542. 544. 624. 1446.

वल्लि (selten und meist aus metrischen Rücksichten) und वल्ली f. 1) *Rankengewächs, Schlingpflanze* AK. 2,4,4,2. 3,4,44,69. 6,4,3. H. 1118. an. 2,509. Med. l. 38. Hall. 2,25. M. 1,48. 8,247. 330. 11,143. MBh. 1,6067. वृतगुल्मलतावल्ल्यस्त्वक्सारस्तृणजातय: 6,171. 13,2992. Mārk. P. 15,33. Varāh. Bṛh. S. 48,5. वल्ली वेष्टयते वृतं सर्वतश्चैव गच्छति MBh. 12,6833. 6841 (वल्त्येव st. वल्लीव ed. Calc.). Spr. 3528. 5305. लता वल्लीश्च गुल्मांश्च R. 2, 80, 6. 3,52,10. Suçr. 1,73,15. 80,14. 107,17. 199, 9. Varāh. Bṛh. S. 28, 13. 41,3. 43, 13. 48, 66. 55, 18. 22. 26. 95,37. 42. Mālatīm. 1,13. Spr. 1972. Kathās. 19,81. 69,7. Rāja-Tar. 1,371. Bhāg. P. 5,13,18. Pañcar. 1,7,20. Pañcat. 299, 9. Insbes. *eine Klasse von Arzneipflanzen* (विदारी, सारिवा, रास्ना, गुडूची) Suçr. 1,143,13. 146,5. 2,209,2. Bildlich: दीर्घवल्लि Git. 10,11. Prab. 12,1. भुजावल्लि (in ungebundener Rede) 81,15. भ्रूचापवल्ली Spr. 2082. विद्युद्वल्ली 421. मनोभव° Kathās. 17,73. मार° 72,286. लज्जा° Spr. 188. कर्म° Bhāg. P. 5,14,40. सर्वसंसार° Verz. d. Oxf. H. 120,*a*, 13. — वल्लिसिद्धि (?) 92, *b*, 32. — 2) Bez. *best. Pflanzen:* = घण्टापाटा H. an. Med. = कुसुमान्तर H. an. = कैवर्तिका und वन्ध्या Rāǵān. im ÇKDa. — 3) वल्ली Bez. der Theile einiger Upanishad Kaivop. S. 92. 109. 121. 132. 143. 159. Taitt. Up. S. 42. Verz. d. B. H. No. 368; vgl. आनन्द°, उत्तर°, ब्रह्मानन्द° (unter ब्रह्मानन्द 1), मध्य°, शिखा°. — 4) वल्लि *die Erde* Çabdam. im ÇKDa. — Vgl. अङ्गार°, अर्क°, कृष्ण°, चित्र°, धातु°, नाग°, नील°, पर्व°, प्रिय°, बदर°, बकुल°, फाणि°, ब्रह्म°, भद्र°, मधु°, मधुर°, मरुत्°, माधव°, मेष°, मोक्षण°, यज्ञ°, योजन°, रति°, राज्ञ°, वज्र°, विष°, सूर्य°.

वल्लिकण्टकारिका f. *Solanum Jacquini* Rāǵān. im ÇKDa.

वल्लिका demin. von वल्ली *Schlingpflanze;* s. अर्क°, धनुष्क°, कृष्ण°, नाग°, भद्र°, मोक्षण°, योजन°, रङ्ग°, चित्रवल्लिक.

वल्लिकाम्र *Koralle* Nigh. Pr.

वल्लिज m. *eine best. Pflanze mit giftiger Blüthe* Suçr. 2,252,1. *Pfeffer* Ausg. 24. *Tabaschir* Rāǵān. in Nigh. Pr. — Vgl. वल्लीज.

वल्लिदूर्वा f. *eine Grasart,* = मालादूर्वा Rāǵān. im ÇKDa.

वल्लिमत् (von वल्लि) adj. *mit einer Schlingpflanze versehen;* bildlich: घनस्तनभूवल्लिमद्वल्लवी (eigentlich adj. von घनस्तनभूवल्लि) Git. 2,19.

वल्लिराष्ट्र m. pl. N. pr. eines Volkes, v. l. für मल्लराष्ट्र VP. 188, N. 38.

वल्लिशाकपोतिका f. *eine best. Gemüsepflanze,* = मूलपोती Rāǵān. im ÇKDa.

वल्लिशूरण (°सूरण gedr.) m. *eine best. Pflanze,* = सत्यानपर्णी Rāǵān. im ÇKDa.

वल्ली s. u. वल्लि.

वल्लीकर्ण m. Bez. *einer best. Deformität des Ohres* Suçr. 1,35,16. तनुविषमात्यपालिर्वल्लीकर्ण: 36,5.

वल्लीज m. Bez. *einer Klasse von Pflanzen* (= मुद्गादिक Comm.) Varāh. Bṛh. S. 8, 13. 16, 25. *Pfeffer* Çabdar. und Rāǵān. im ÇKDa. — Vgl. वल्लिज.

वल्लीबदरी f. *eine Art Judendorn,* = भूबदरी Rāǵān. im ÇKDa.

वल्लीमुद्ग (वल्लिमुद्ग gedr., aber zwischen वल्लीबदरी und वल्लीवृत stehend) m. *eine Bohnenart* (मकुष्ठ) Rāǵān. im ÇKDa. वल्ली° Nigh. Pr.

वल्लीवृत m. *Shorea robusta* Rāǵān. im ÇKDa.

वल्लुर n. = शाद्वल und क्षेत्र (क्षत्र in Med. godr.) H. an. 3,598. Med. r. 212. = कुञ्ज, मञ्जरी und घनम्भस् H. an. = गह्वन und ओषध Med. Nach ÇKDa. sollen Viçva, Dhara. und Çabdar. वल्लर n. lesen. — Vgl. वल्लूर.

वल्लूर Uṇ. zu Unādis. 4, 90. m. f. n. Trik. 3, 5, 22. *getrocknetes Fleisch,* m. f. (आ) und n. AK. 2,6,2,14. Trik. 3,3,370. Med. r. 212. n. H. 624. an. 3,598. fg. M. 5,13. Jāṭ. 1,175. Suçr. 1, 41, 16. 70, 6. 103, 14. 2, 233, 11. 457, 15. Nach den Lexicographen ausserdem noch: *Schweinefleisch,* m. f. n. Trik. Med. n. H. an. n. = वनक्षेत्र, वाह्वन und ऊषर H. an. = नक्षत्र, गह्वन und उषर (sic) Trik. — Vgl. वल्लुर.

वल्लूरक m. Bez. *einer best. Deformität des Ohres* Suçr. 1,35,14. क्रूरस्ववृत्तसमोभयपालिर्वल्लूरक: 18.

वल्ल्या f. *Myrobalane* Hir. 92.

वेल्ल m. *Schössling, Zweig* TS. 7,3,19,1. Bhāg. P. 3,8,29. मुञ्ज° Cat. Bo. 3,2,1,18. शत° RV. 3,8,11. VS. 5,43. 12,100. AV. 6,30,2. शतव-

त्शो नाम यट: Bhāg. P. 5, 16, 25. सर्वेस° ṚV. 3, 8, 11. 7, 33, 9. 9, 5, 10. VS. 5, 43.

वल्क्, वैल्क्ते Dhātup. 16, 38 (प्राधान्ये). 40 (परिभाषणकिंसादानेषु, क्षादन st. दान v. l.; स्तुतिकिंसादानवासु Vop.). — caus. वल्कैयति 33, 97 (भाषार्थे oder भासार्थे).

— उप *mit einer Frage auf die Probe stellen, ein Räthsel vorlegen:* एतद्वस्सामुपं वल्क्यामसि (वलिक्यामके Lāṭy. 9, 10, 11) ता VS. 23, 51. med. Śat. Br. 11, 4, 3, 9. 12, 4, 3, 28. — Vgl. उपवल्क्.

— प्र dass.: प्रवल्क्काभिर्वे देवा असुरान्प्रवल्क्याभिनानत्यायन् Ait. Br. 6, 33. यच्च किं चित्प्रवल्क्तमादित्यकर्मैव तत् *räthselhaft* Nir. 7, 11. 13, 8. — Vgl. प्रवल्क् fg.

वल्वाङ् n. *die weibliche Scham* Taitt. 2, 6, 21 fehlerhaft für वराङ्.

वल्व (von 1. वल्) 1) adj. *sich versteckend, sich in sich zurückziehend:* वल्व ऊधनि ṚV. 1, 32, 3. वल्वासो न ये स्वना: स्वर्वस: 168, 2. त्यं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वल्वं मक्षार्दुघ: 5, 32, 8. — 2) m. *Höhle, Grube, Tiefe* Naigh. 3, 23. अस्मब्रह्मा: सुदुघा वल्व आहत: ṚV. 4, 1, 18. 5, 31, 3. 10, 8, 7. दुष्कृतौ वल्व आहनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम् 7, 104, 3. वल्वौ यन्तौ यव सा पदीष्ट 17.

वल्व्रि (wie eben) m. *Versteck, Hülle, Gewand; körperliche Hülle, Leib* Naigh. 3, 7. Nir. 2, 9. वल्व्रि वसाना: ṚV. 1, 164, 7. 29. रात्रीभि: कृष्टैरपमर्स्य वल्व्रे: 4, 42, 1. शये वल्व्रिरति सिक्तगादन् 10, 4, 4. इच्छन्वल्व्रिर्मविदत्पूषणस्य 5, 5. क्षिप्तो वल्व्रिम् 9, 69, 2. 71, 2. स्वे वल्व्रिं कुर्के धित्मय: 1, 46, 9. अभि नयो वल्व्रिणो क्षिता: 54, 10. ऋतुरुयो वल्व्रि प्रायुवतं दृषिमिव व्यर्वतात् 116, 10. 5, 74, 5. प्र वल्व्रेर्वल्व्रिरिक्त 19, 1. Daher angeblicher Liedverfasser von ṚV. 5, 19. — Vgl. वि°.

वल्व्रिवासस् adj. *eine Hülle oder Verkleidung umlegend* AV. 8, 6, 2.

वश्, वैष्टि Dhātup. 24, 71 (कान्ति). वैष्मि Naigh. 2, 6 (कान्तिकर्मन्). वैति, उश्मसि, श्मसि ṚV. 2, 31, 6. उशन्ति P. 6, 1, 16. वशन्ति ṚV. 8, 28, 4. विवष्टि (Schol. zu P. 2, 4, 76. 7, 4, 78), वर्वेति: यवशत्, वेशम्, वेशाम: यवर् Vop. 9, 6. उशानै, उशमान: उवाश, ऊशतुम् P. 6, 1, 17. Vop. 9, 6. वावशुन्, वावशे, वावशानै; वशीम् MBh. उशितवत् P. 6, 1, 16, Schol. 1) *wollen, gebieten:* समर्यो गा यवति यस्य वष्टि ṚV. 1, 33, 3. 2, 22, 1. 24, 8. नास्यो वष्मि विमुचम् 5, 46, 1. 8, 20, 17. 28, 4. तवेदमिन्द्र क्रतो यथा वश: 30, 1. 82, 10. 1, 165, 7. यदा दुग्धं वरुणो वष्त्यादित् 5, 85, 4. वं च सोम नो वशो जीवातुम् 1, 91, 6. यस्ते वष्टि ववति तत्। पद्दोऽयमसि वीरु तत् *wenn man Etwas von dir will, so befiehlst du es* 8, 45, 6. दशमीमुष: सुमनो वशेऽक (वसेऽक?) *gebiete, herrsche* AV. 3, 4, 7. mit dat. inf. वष्टि प्र देवान्यज्ञियो ṚV. 6, 11, 3. यथा त उश्मसीष्टये 1, 30, 12. 5, 74, 3. ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै 1, 154, 6. med.: इळस्पदे नैष्मादुशमान योनौ: *verfügend über, aufbietend* 4, 19, 4. — 2) *verlangen nach, begehren, gern haben, lieben:* इन्दवो वामुशन्ति हि ṚV. 1, 2, 4. यत्ते वष्टु 3, 10. 22, 6. स्तोमम् 21, 1. 2, 31, 7. 37, 1. मष्टनिम् 5, 61, 7. 7, 16, 11. पीतिम् 98, 2. मध्यम् 3, 31, 14. यावीण: सोम वो हि कं सखित्वनाय वावशु: 6, 51, 14. श्मे हि ते कारवो वावशुर्धिया 8, 3, 18. कृण्वं तवेदं क्रतभुग्वष्टि देव: (so die ed. Bomb.; Nilak. erwähnt die Lesart der ed. Calc. देवान्, wozu er प्रापयितुम् ergänzt) MBh. 1, 2106. मा धर्मान्सकलान्वशी: 3, 11002 (S. 569). नि:स्वो वष्टि शतम् Spr. 1626. यमी हि वीर्यप्रभवं भवस्य ज्ञपाय सेनान्यमुशन्ति देवा: Kumāras. 3, 13. भवनेषु रुमाधिकेषु पूर्वं क्षितिरक्षार्थमुशन्ति ये निवासम् Çiç. 179. Harīv. 4360. mit infin.: बाणाश्च मे तूणमुखादिसृत्य मुहुर्मुहुर्गन्तुमुशन्ति चेव MBh. 5, 1909. — 3) *mit Entschiedenheit seine Meinung an den Tag legen, statuiren, behaupten, annehmen, erklären für* (vgl. velle): स वा एष आत्मेक्षोशन्ति कवय: सितासितै: कर्मफलैरनभिभूत इह प्रति शरीरेषु चरति Maitrāyaṇ. 2, 7. भस्मन्यिष्टे (अर्के) भयमुशन्ति पण्डिता: Vasiṣṭh. Bṛh. S. 3, 29. पञ्चमं व्यथमुशन्ति शोभनम् 8, 36. 24, 31. 43, 62. Bṛh. 23, 3. 27 (25), 10. 33. Bhāg. P. 1, 5, 10. 40. 10, 8, 12. 12, 8, 46. दलीकृतं चक्रमुशन्ति चापम् so v. a. nennen Golādhy. 11, 15. — 4) partic. उशत्, उशान und वावशान *willig, gern, freudig, folgsam, verlangend* ṚV. 1, 12, 4. 61, 6. 101, 10. पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति 62, 11. 17, 17. 22, 9. या न ऊढ्र उशतो विभर्यादे पस्यामुशन्त: प्रकृतं शेपम् 10, 85, 37. 9, 2. 3, 33, 1. 4, 22, 3. 5, 32, 10. 10, 16, 2. AV. 14, 2, 52. उशन्क वै वात्रमवस: सर्ववेदसं ददौ Kāṭhop. 1, 1. या योनिमस्थादुशन्तमुशानं: ṚV. 3, 5, 7. 4, 23, 1. 6, 39, 2. सत्रोपसो यधृग् वावशाना: 3, 20, 1. 22, 1. 35, 9. स वावशान इह पाकि सोमम् 51, 8. 10, 89, 13. सोमं यन्ति मतयो वावशाना: 9, 97, 34. इदेन्दो रयिमस्मिन वावशान: *bereitwillig* 93, 4. 1, 113, 10. 7, 5, 5. 36, 6. Im Bhāg. P. erscheint उशत् (vgl. उशती in den Nachträgen) sehr häufig in der Bed. *reizend, lieblich* (= कमनीय Comm.): वाच उशतीं: 2, 7, 11. कथा 3, 13, 17. कीर्तिं 2, 7, 20. 4, 30, 11. उशद्दुकूल 8, 9, 17. उशत्तम 1, 3, 14. 7, 9, 16. उशतात्मना 7, 7, 24 wird durch शुद्धात्मना erklärt; उशद्विद्वत्तेजसा 4, 4, 34 durch देदीप्यमानेन; उशति 10, 8, 31 als voc. fem., als loc. (= स्वर्चिते) und auch als verbum finitum (= द्योतयति) erklärt. उशत् als partic. und Nom. pr. in folgender Stelle: सुयज्ञतनयो ऽभवत्। उपन्यो (उशतो die neuere Ausg., उशतो नामत: Nīlak.) यज्ञमक्लिलं स्वधर्ममुपतो (उशतो die neuere Ausg., = कामयानानाम् Nīlak.; wir würden Bed. 3) annehmen) वृ: Harīv. 1974. im folgenden Çloka liest die neuere Ausg. सूनुरोपत: statt पुत्र उपत: der älteren.

— caus. वशयति *in seine Gewalt bekommen, sich unterthan machen:* वशयेत्सकलान्मर्त्यान्विशेषेण महीपतीन् Verz. d. Oxf. H. 105, b, 24.

— intens. वावश्यते P. 6, 1, 20. Vop. 20, 13.

— अभि 1) *beherrschen:* वर्षेव वधीरभि वष्ट्योजसा ṚV. 2, 23, 3. — 2) *zustreben auf:* स हूतो विश्वेदभि वष्टि सुम्नं ṚV. 4, 1, 8. — 3) med. *begehren:* ऋणाणो अस्त्यभि वावशे व: ṚV. 2, 14, 9. — 1, 164, 23 hierher oder zu वाघ्.

— समा, समावशेत् Kām. Nītis. 4, 57 (auch im Comm.) fehlerhaft für समावसेत्.

1. वैश (von वश्) 1) m. a) *Willen, Wunsch, Belieben* P. 3, 3, 88, Vārtt. 3. AK. 3, 3, 8. 3, 4, 46, 91. Taitt. 3, 3, 422. H. 430. an. 2, 553. Med. ç. 12 (n. nach Med. und Çāśvar. im ÇKDh.). देवानां चित्तिरो वशम् ṚV. 10, 171, 4. तत्रियस्य वशे सति wenn *der Ksh. will* Çat. Br. 1, 3, 2, 13. यावदस्य वश: (= शक्ति: Comm.) स्यात् *so lange er mag* 5, 1, 4, 4, 5, 19. 6, 2, 2, 29. स्वं वशं चेरु: 3, 9, 2, 14. 13, 5, 2, 22. वश एतत्कुर्यात् Kāty. Çr. 10, 8, 29. वशां धनु ṚV. 1, 82, 3. 181, 5. पिबा सोमं वशां धनु 8, 4, 10. 10, 91, 7. तेन (पथा) पाकि वशां धनु 142, 7. धनु वशं (mit Abfall des Nasals und Verkürzung des Vocals) सुषामादि: 2, 24, 13. अथो वशानां भवथा सचा मिथा 3, 60, 4. Ait. Br. 3, 13. Ait. Up. 5, 2. आत्मनो वश: Spr. 1349. — b) *Befehl, Herrschaft, Gewalt, Botmässigkeit;* = प्रभुत्व und आयत्तता (आयत्तत्व) Taitt. H. an. Med. (n. nach Med. und Çāśvar.). वशा

हि मत्या वर्हणास्य राज्ञः AV. 4,10,1. सर्वो वशस्य पर्येतास्ति ṚV. 6,24, 8. वशं देवासस्तन्वी३ नि मामृजुः 10,66,9. सर्वं तदिन्द्र ते वशे 8,82,4. 9, 86,23. VS. 4,11. 31,21. TS. 6,3,2,6. Ait. Br. 4,3. Praçnop. 2,13. वशो बलवतां धर्मः MBh. 12, 4862. Bhâg. P. 1,6,7. 9,14. 3,29,44. 5,20,29. 6,3,1. 12,8. यथा तवेयं वसुधा वशे भवेत् R. 2,23,41. 3,55,18. Râm.-Tar. 4,143. न पुत्रो भार्या वा वर्तते वशे Spr. 4417. R. 4,17,34. Kathâs. 33,9. Pañkar. 3,11,10. बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् Spr. 1969. R. Gorr. 2,53,10. Kathâs. 120,30. Bhâg. P. 5,17,23. Mârk. P. 62,31. वशे स्थापयितुं प्रजाः M. 7,44. तं च देशं वशे स्थापयामास MBh. 1,663. R. 3,47,2. 9. 4,32,19. 7,20,19. Kâm. Nîtis. 8,33. Bhâg. P. 9,19,23. प्रमदाः कामिवशे संस्थिताः Vaitân. Bhp. S. 24,31. विषयेषु च सज्जास्याः संस्थाप्या ह्यात्मनो वशे Spr. 3663. वशे लभ् AV. 1,8,2. Çat. Br. 1,9,3,35. वशे कर् gaṇa मातादादि P. 1,4,74. वर्षेणैवैनं वशे कृत्वा लभते TS. 6,3,2,5. वशे कृतेन्द्रियग्रामम् M. 2,100. तं वशे कुर्वन्ति शत्रवः 9,174. R. 3,46,5. 55,7. 6,11,10. 7,87,4. Spr. 2737. Bhâg. P. 3,4,66. मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि AV. 3,8,6. य इदं वशे (const वशम्) नयत् Bhâg. P. 5,18,26. न मित्रं नयते वशम् (वशम् als indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57) AV. 5,19,15. ṚV. 10,84,2. परराष्ट्रे वशं नयन् Jâtâ. 1,341. एतदात्मन्येव वशं नयेत् Bhag. 6,26. Kâm. Nîtis. 11,16. Spr. 251. Ragh. 8,19. Râm.-Tar. 4,104. Bhâg. P. 3,27,6. 8,15,33. तानानयेद्वशम् M. 7,107. fg. 9,261. R. 3,62,34. Bhâg. P. 4,27,1. वशमुपनयते Çat. Br. 1,5,4,5. Bhâg. P. 5,2,6. येन वशं प्रणीताः 7,8,8. एवं मनः (acc.) कर्म (nom.) वशं प्रयुङ्क्ते 5,5,6. नान्यस्य मनो वशमन्विंयाय TBr. 3,12,8,3. वशमुपेताः Çat. Br. 4,3,4,12. Çâṅkh. Br. 30,9. Ait. Br. 8,9. यदा च गच्छत्यनुदातमन्तरं वशं पदादुदयस्य ṚV. Pâiṅg. 11,26. कामबाणवशं गता MBh. 3,1865. 5, 7237. R. 2,21,2. 30,19. 64,26. 78,4. 4,35,10. Spr. 331. Bhâg. P. 1,8,17. 5,1,61. निद्रावशमगमत् Pañkat. 38, 3. तयोर्न वशमागच्छेत् Bhag. 3,34. MBh. 3,1851. R. 2,53,8. 97,23. यदा वशमुपागतः (देशः) Jâtâ. 1,342. निद्रावशमुपागताः R. 5,56,94. वशमेष्यामः 2,52,18. MBh. 3,2295. Vaitân. Bhp. S. 43,35. Hit. I,32. निद्राया वशमेषिवान् R. 2,62,20. वशमुपैति Vaitân. Bhp. S. 45,11. समेति वशम् Bhp. 17,4. को न याति वशम् Spr. 748. 1017. 2246. Suçr. 1,158,5. Vaitân. Bhp. S. 34,17. क्षिप्रं कोपस्य वशं प्रयाति 68,110. वासो यथा रङ्गवशं प्रयाति MBh. 5,1269. वशमायाति Suçr. 1,149,14. कालसैनां वशं प्राप्ता R. 3,62, 37. Spr. 2756. Vet. in LA. (III) 26,19. पुनः पुनर्वशमापद्यते मे Kathop. 2,6. घनर्क्ववशमापन्ना MBh. 1,6160. R. 1,42,13 (43,13 Gorr.). 2,70,4. कामस्य वशमास्थितः 2,49,4. वशेन auf Geheiss, in Folge —, in Veranlassung von, zufolge, gemäss, vermittelst: इन्द्रोग° Çâṅkh. Çr. 10,8,33. स्तोम° Liṭy. 8,5,12. कालादि° Suçr. 1,131,9. भूमिराज्ञ° Jâtâ. 2,166. माहात्म्य° Spr. 3571. 3733. Vaitân. Bhp. S. 2,4. तिग्मांशुसंनिध्य° Ganit. Bhâgrahas. 15. Sarvadarçanas. 26,21. 46,11. 93,4. 132,10. 154,20. वत्सरो गुरु° ein Jahr zufolge Jupiters d. i. ein Jupiter-Jahr Vaitân. Bhp. S. 8,39. वशात् dass.: प्रकृतेः Bhag. 9,8. Spr. 3246. तपसः Brahma-P. in LA. (III) 49,20. विधेः Kathâs. 25,273. विधि° Mnch. 6. दैव° Dhûrtas. 90,12. Bhâg. P. 3,28,37. Pañkat. 160,17. 174,25. Spr. 2418. धर्म° ṚV. Pâiṅg. 12,9. Siddhântaç. 65. Verz. d. Oxf. H. 48,b,13. प्रकृतिभेद° Maitrâjup. 6,30. 35. ग्रहराज° Jâtâ. 1,386. कार्य° 2,3. R. 2,68,14. Spr. 2883. Kap. 1,30. Siddhântaç. 67. Ragh. 11,7. 15,11. दाक्षिण्य° Vikr. 2. 56. Spr. 665. 688. 775. AK. 2,7,42. Vaitân. Bhp. S. 5,9. 11. 51,38. 104,40. Goladhy. 5,9. Kathâs. 3,74. 21,82. 25,280. 21,22. 54,100. Râm.-Tar. 1,371. Dhûrtas. 68,13. 76,5. Pañkat. 32,24. 33,6. 148,10. 183,6. 252,14. 264, 23. cd. orn. 4,25. Hit. 44,2. Vet. in LA. (III) 11,2. Schol. zu Naish. 22,45. Sarvadarçanas. 29,18. 34,6. 86,17. 20. 92,22. चन्द्रवशात् । पञ्चनवते दिनशते so v. a. in 195 lunaren Tagen Vaitân. Bhp. S. 21,7. वशतम् dass.: कर्म° Spr. 2085. घट° in Folge der geographischen Breite Goladhy. 7,24. वश am Ende eines adj. comp. (f. घा): काल° in der Gewalt von — stehend MBh. 13,66. 1466. 16,111. प्रतिपक्षो दातृवशः R. 1,69,14. 3,61,4. 5,16,51. 7,24,11. निद्रा° Ragh. 5,67. Spr. 3197. 3347. सद्यः खेदवशो ऽभवत् Kathâs. 8,17. 18,240. 25,294. Bhâg. P. 1,13,39. 2,7,39. 5,23,3. 8,7,15. Ved. in LA. (III) 20,7. — c) die personificirte Herrschaft: ईशा वशस्य या ज्ञाया AV. 11,8,17. — d) = जन्मन् Geburt, Ursprung H. an. — e) Hurenhaus (vgl. वेशा) Taik. — f) N. pr. eines Schützlings der Açvin, mit dem Bein. Açvja ṚV. 1,112,10. 116,21. 8,8,20. 46,21. 22. 10,40,7. Vâlakh. 2,3. angeblicher Verfasser von ṚV. 8,46. abgekürzt so v. a. dessen Lied Çat. Br. 3,6,2,3. 3,3,2,19. Çâṅkh. Çr. 12,14,1. ṚV. Prâiç. 17,18. — g) pl. N. pr. eines Volkes Ait. Br. 8, 14. MBh. 1,6634. बहून् st. वशान् ed. Bomb. — 2) adj. (f. घा) unter Jmdes Befehlen stehend, unterthan, abhängig Taik. H. an. H. ç. 92. Med. सपुत्रां वशा तव Kathâs. 81,102. Bhâg. P. 8,12,43. तासां वशञ्च सततं स्त्रीणाम् Pañkar. 1,10,25. 14,30. fgg. Pañkat. 208,13. — Vgl. घ° (in der 2ten Bed. auch Maitrâjup. 6,30. Bhag. 8,19. 9,8. R. Gorr. 2,38,4. Spr. 251. 3056), ग्रात्म°, कर्म°, क्रोध°, तद्दश, पर°, पद्मावशम्, विवश.

2. वंश n. flüssiges Fett: केवलीन्द्राय दुदुक्षे हि गृष्टिर्वशं पीयूषं प्रथमं दुहाना AV. 8,9,24. यद्दशमत्सवत्सा वशाभवत्तस्मात्सा कुविरिव Ait. Br. 3,26. nach Sây. = मेदस्. Kâṭy. 13,3. — Vgl. वसा.

वशंवद् (von d. वश + वद्) adj. P. 3,2,38. Vop. 26,57. Jmdes Willen —, Herrschaft anerkennend: वशंवदं कर् Verz. d. Oxf. H. 258,b,21. महद्वशंवद 24. in Jmdes Gewalt stehend, ganz ergeben: मन्मथ° Sîtâ. D. 115. धर्म° Râm.-Tar. 6,109. लोभ° 4,395. 621. कृतघ्नत्व° so v. a. dem Gefühl der Dankbarkeit folgend 1,243. Spr. 3797. गुरुकार्यवशंवदत्वदम so v. a. sich grosser Freude hingebend, solche an den Tag legend Gît. 11,24. मृगमदसौरभभमवशंवदनवदालमालतमाल so v. a. ganz duftend nach 1,29.

वशंवदत्व n. das Jemand-zu-Willen-Sein, das Sichfügen in den Willen Anderer Ragh. 18,12.

वशकर् adj. sich unterthan machend, für sich gewinnend MBh. 13, 1192. (विद्या) सर्ववशकरी Spr. 2797, v. l.

वशका f. ein gehorsames Weib Çârdar. im ÇKDr.

वशकारक adj. zur Unterwerfung führend: भेद Spr. 1436.

वशक्रिया f. das sich-zu-Willen-Machen, Bezaubern AK. 3,3,4. H. 1498.

वशग adj. (f. घा) in Jmdes Gewalt stehend, unterthan, gehorsam: तव MBh. 4,225. 706. 14,2172. Hariv. 7796. R. 1,30,11. R. Gorr. 1,31,14. 2,34,10. Spr. 2393. 2554. प्रमदानां वशगा नराः Vaitân. Bhp. S. 24,32. धात्री वशगा करोति 43,32. Kathâs. 33,9. Pañkar. 1,14,93. Mârk. P. 61,56. मत्तम् MBh. 3,14687. कामस्य 4,391. विधेः Spr. 1431. मानव्याधेः 2834. काम° MBh. 4,269. R. 1,63,6. R. Gorr. 2,31,10. Vaitân. Bhp. 20, 9. श्रेष्ठ° R. 2,40,5. निद्रा° Suçr. 1,69,14. कुबेर° 353,11. भार्या° Kathâs. 22,233. मदनावेग° 113. दैव° Bhâg. P. 3,28,38. 6,14,20. स्वकर्म°

1,19,3. क्रोध° Pañcat. 36,21. वचन° 25,21. कामिनी° (शित्य) *die Geliebte in die Gewalt bringend* Pañcar. 1,11,21.

वशगत adj. dass. Bhāg. P. 4,20,26. मदन° Varāh. Bṛh. 24,12. निद्रा° Pañcat. 37,7. 8.

वशगत्व (von वशग) n. *Unterthänigkeit, Abhängigkeit von:* निजज्ञान° Bhāg. P. 4,31,20.

वशगमन n. *das in-die-Gewalt-Kommen* Nir. 10,40.

वशगामिन् adj. *in Jmdes Gewalt kommend, unterthänig —, gehorsam werdend* Mārk. P. 72,7.

वशंकार adj. *in seine Gewalt bringend:* सर्वभूत° Pañcar. 4,3,25. वशंकारः Ānand. 3,9 fehlerhaft für य शंकरः, wie MBh. 3,11943 gelesen wird.

वशंगम adj. *beeinflusst*, Bez. gewisser Saṁdhi, die eine Lautaffection mit sich führen, ṚV. Prāt. 4,5. Gobh. 4,8,3. — Vgl. य°.

वशतमा s. u. 1. वशा 1).

वशता (von वश) f. 1) *das in-der-Gewalt-Stehen, Abhängigkeit:* स्त्रियाश्च भर्तुर्वशतां समीक्ष्य MBh. 2,2212. चित्तं निजवशतामिदं नय Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,24. — 2) *das Gewalthaben über* (loc.), *Beherrschen:* शास्त्रे नृपे च युवतौ वशतावसक्ता Spr. 2977, v. l.

वशत्व in रिपु°, eig. nom. abstr. von रिपुवश *in der Gewalt des Feindes stehend* Varāh. Bṛh. S. 79,24 = 94,5.

वशन n. nom. act. von वश् P. 3,3,58, Vārtt. 3, Schol.

वशनी (1. वश + 2. नी) adj. *unterthan, leibeigen:* देवानां वशनीर्भवाति ṚV. 10,16,2.

वशवर्तिन् 1) adj. *in Jmdes Gewalt sich befindend, sich in Jmdes Willen fügend, unterthan, gehorsam:* यथा च पुष्कारस्थाताः पतत्ति वशवर्तिनः MBh. 3,2226. ब्राह्मणाः 2727. 4,549. 624. Hariv. 14647. कामस्य R. Gorr. 2,46,6. 3,40,10. 7,89,6. Rāja-Tar. 3,100. Bhāg. P. 5,14,1. 6,14,19. Mārk. P. 118,8. कैकेयी° R. 2,23,13. दुःख° 25,37. यत्न° 30,6. R. Gorr. 1,22,2. 4,39,34. Rāja-Tar. 5,466. — 2) m. Bez. einer Klasse von Göttern Mārk. P. 73,5. Lalit. ed. Calc. 342,18. 465,13. परनिर्मित° 49,4.

वशस्थ adj. *in Jmdes Gewalt stehend* Spr. 4843.

1. वशी (in der klassischen Sprache वेशा Çiṅ. 1,14) f. 1) *Kuh* (Med. c. 12), im engeren Sinne *die Kuh, welche weder trächtig ist, noch ein Kalb nährt;* die Comm. beschränken häufig den Begriff noch weiter auf *die unfruchtbare Kuh* (vgl. AK. 2,9,69. H. 1206. an. 2,353. Hālā. 2,114): वशाभिरुक्षभिः । षष्टपदीभिराकृतः *Kühe, Stiere und trächtige Thiere* ṚV. 2,7,5. 6,63,9. उक्षणो मयोभुवो वशा उत 10,87. 10,91,14. Āçv. Gṛhj. 1,1,4. AV. 4,24,4. 10,10,3. 12,4,1. fgg. im ganzen Liede werden वशा und गो abwechselnd gebraucht. तां देवा ब्रह्मीमांसत वशेयमवशेति । तामब्रवीद्वारद एषा वशानां वशतमेति (superl.) 42. परिवृक्ता पद्यासस्यपुरस्ये वशेव 7,113,2. VS. 2,16. 18,27. 28,33. TS. 2,1,4,4. 5. 3,4,9,2. Çat. Br. 5,4,5,23. सनवन्ध्या 2,4,4,14. 3,8,5,11. षष्टपदी 5,5,9,9. Kāṭh. 13,4. Ait. Br. 3,26. सूर्ते° *die schon ein Kalb gehabt hat* TS. 2,1,5,4 (Comm. *nach einem Kalbe unfruchtbar geworden*). Kāṭh. 37,5. 13,4. °चर्म Kāṭh. Ça. 13,3,13. 8,8,41. 14,2,6. — 2) in Verbindung mit धेनु (धेनुर्वशा) *Mutterschaf* TS. 2,1,2,2. TBr. 1,2,8,2. — 3) *Elephantenkuh* AK. 2,8,2,4. 3,4,26,219. H. 1218. H. an. Med. Hal. 52. Hālā. 2,70. Vikr. 110. Kathās. 6,110. 67,11. 68,18. 27. fg. वधूं साध्ववशाम् 67,114. — 4) *ein unfruchtbares Weib* Med. M. 8,28. — 5) *Weib, Weibchen* überh. AK. 3,4,26,219. H. 804. H. an. Med. Hālā. 2,227. — 6) *Tochter* H. an. Med. — Vgl. य°, उत्तवश, गोवशा.

2. वशा MBh. 7,1976 fehlerhaft für वसा.

वशाकु m. *Vogel* Çabdārthak. bei Wilson vielleicht fehlerhaft für वाशाकु.

वशागत in मार्ग° *am Wege gelegen* Kathās. 37,55. — Vgl. मार्गवशानुग fg.

वशाध्वक s. वसाध्वक.

वशातल m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1871 nach der Lesart der ed. Bomb., वशाति ed. Calc.

वशाति, वशातिक und वशातीय s. वसाति u. s. w.

वशानुग (1. वश + ग°) adj. *seinem Willen folgend:* स्वच्छन्देन Kāṭhās. in Ind. St. 9,13. *Jmdes Willen folgend, in Jmdes Gewalt stehend, unterthan, gehorsam:* तव R. Gorr. 2,34,4. 5,10,15. MBh. 1,6014. Mārk. P. 118,29. कालस्य MBh. 13,51. भर्तृ° R. Gorr. 2,13,19. यात्म° 16,3. परस्य° Spr. 2353. कामक्रोध° 3620. मदिन्द्रिय° R. 5,13,58. Bhāg. P. 5,9,3. Mārk. P. 99,17. — Vgl. मार्ग°.

वशान्न (1. वशा + यन्न) adj. *Kühe verzehrend* ṚV. 8,43,11.

वशापायिन् s. वसापायिन्.

वशामत् adj. von वशा gaṇa यवादि zu P. 8,2,9.

वशायात (1. वश + या°) adj. *in Folge von Etwas gekommen, — eingetreten:* प्राक्संस्कारवशायातवैरस्नेह Kathās. 23,51. — Vgl. मार्ग°.

वशारोह s. वसारोह.

वशि 1) oxyt. adj. VS. 28,33 nach Mahīdh. = कास. — 2) n. = वशित्व Çārdam. im ÇKDr.

वशिक adj. *leer* AK. 3,2,6. वसिक H. 1446. — Vgl. वशिन् 1) *d*).

वशितर् (von वश्) nom. ag. *seinen Willen habend, unabhängig* Bhāg. P. 11,15,27.

वशिता (von वशिन्) adj. *die übernatürliche Kraft Alles seinem Willen zu unterwerfen* H. 202. Bhāg. P. 11,15,16. Vishṇ. 24 werden zehn वशिता eines Bodhisattva aufgezählt: आयुर्वशिता, चित्त°, परिष्कार°, कर्म°, उपपत्ति°, अधिमुक्ति°, धर्म°, प्रणिधान°, ऋद्धि° und ज्ञान°.

वशित्व (wie eben) n. *Willensfreiheit, das eigener-Herr-Sein* Spr. 4332. MBh. 14,1053. Hariv. 13061. न राज्ञा तु वशित्वेन धनलोभेन वा पुनः । स्वयं कर्माणि कुर्वीति नराणामविवादिनाम् ॥ Kāṭh. bei Kull. zu M. 8,43. *Herrschaft über* (loc.): शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुले वशित्वम् Spr. 2977. प्रकृतिविकारेषु सर्वेषु Sarvadarçanas. 179,6. *die übernatürliche Kraft Alles seinem Willen zu unterwerfen* Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,18. 184,*a*,14. 191,*a*,20. 231,*b*,12. Mārk. P. 40,29. Pañcar. 1,1,49. 2,8,2. Vet. in LA. (III) 3,13. Gaupar. zu Siddhiyar. 23. *die Herrschaft über sich selbst, Selbstbeherrschung* Kumāras. 3,69. Mārk. P. 40,32.

वशिन् (von 1. वश) 1) adj. *a) gebietend; Herrscher:* गवां गोपतिर्वशी ṚV. 1,101,4. व्रतानाम् 3,23,3. जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी 4,53,6. 8,13,9. 86,3. वशी वशं नयसे 10,84,3. 85,26. 103,3. 132,3. AV. 4,24,7. 5,22,9. वशी सन्मेऽधपासि नः 6,26,1. 36,3. यद्गिः पृथिव्या वशी 86,2. VS. 17,51. Çat. Br. 14,7,2,24. तस्यै ब्रह्मताये कल्पते यत्रैवं विद्वान्यजमानो वशी भवति Ait. Br. 3,13. TS. 5,5,10,2. TBr. 3,7,12,1. Kaṭhop. 5,12. Çvetāçv. Up. 3,18. 6,12. Jiṅ. 3,69. Hariv. 1902. Varāh. Bṛh. 2,6. — *b*)

willig VS. 8, 50. वशा ह्येषा वशिनी गच्छति देवान् TS. 2, 4, 2, 2. *gehorsam* (richtiger वश्य, wie die v. l. hat) Ved. in LA. (III) 26, 6. — c) *sich selbst beherrschend, sich in der Gewalt habend* (= जितेन्द्रिय Comm.) Bhag. 5, 12. MBh. 1, 2551. 3, 12766. 14, 14. R. 1, 1, 10 (12 Gorr.). 6, 2. Spr. 3947. 4410. 5308. Kin. Nitis. 4, 15. Ragh. 2, 70. 8, 89. 15, 38. 17, 4. Kumâras. 4, 43. Çik. 47. Kathâs. 22, 47. 42, 14. Râga-Tar. 2, 3. 82. 3, 513. 4, 118. Liṅga-P. bei Muir, ST. IV, 330. — d) *leer* (eig. *verfügbar*), von Gefässen Kâty. Çr. 9, 13, 20. 10, 3, 6; vgl. वशिक. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛti Bhâg. P. 9, 13, 26. — 3) f. वशिनी a) *Schmarotzerpflanze.* — b) *eine Mimosa-Art* (s. शमी) Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. घ°, कर्म°, तनू°.

वशिमन् (von वशिन्) m. *die übernatürliche Kraft Alles seinem Willen zu unterwerfen* Mârk. P. 40, 32.

वशिर und वशिष्ठ s. वसिर und वसिष्ठ.

वशी (von वश्) s. उर्वशी.

वशीकर् (1. वश + 1. कर्), °करोति und °कुरुते *in die Gewalt bekommen, bezwingen, sich unterthan machen:* राष्ट्रमेव वश्यंकरः TBr. 1, 7, 8, 4. अजितात्मा हि विवशो वशीकुर्यात्कथं परान् Kathâs. 34, 192. Pañkat. 13, 5. med. Spr. 691. Kathâs. 72, 242. Râga-Tar. 3, 113. °कर्तुम् Spr. 2373. °कृत्य R. 1, 29, 3. Kin. Nitis. 12, 40. Kathâs. 19, 108. 26, 64. 27, 64. 37, 208. Pañkat. 13, 2. Sarvadarçanas. 178, 2. °कृत MBh. 3, 15659 = 4, 457. Hariv. 9793. Spr. 3077. 3201. 3745. Kathâs. 12, 89. 18, 100. 26, 48. 37, 28. 38, 33. Râga-Tar. 3, 58. 68. 169. Prab. 19, 9. 10. Bhâg. P. 7, 9, 22. Mârk. P. 19, 3.

वशीकार् adj. *in die Gewalt bekommend, bezwingend, sich unterthan machend* MBh. 13, 1195. इगत्त्रय° Pañkar. 3, 15, 35.

वशीकरण n. *das in-die-Gewalt-Bekommen, Bezwingung, das sich-unterthan-Machen* (insbes. durch Zaubermittel) Hall. 4, 31. Pân. Gaṇ. 3, 12. R. Gorr. 1, 31, 4. Spr. 3196. Kathâs. 12, 64. Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 2. 216, *a*, 10. 218, *b*, 20. युवतिमनसः Sin. D. 52, 13. Verz. d. B. H. No. 895. 914. सर्व° 904. नृप° Verz. d. Oxf. H. 78, *b*, 28. इगत्त्रय° Pañkar. 3, 13, 21. °मन्त्र P. 4, 4, 96, Schol.

वशीकार् m. dass. Jogas. 1, 15. 40. Kathâs. 12, 134. Sarvadarçanas. 169, 4. नृप° Çuk. ed. Bomb. S. 24.

वशीकृति f. dass. MBh. 5, 1020.

वशीक्रिया f. dass. Verz. d. Oxf. H. 230, *a*, 15.

वशीभू (1. वश + 1. भू), °भवति *in Jmdes Gewalt kommen, unterthan werden* Kin. Nitis. 3, 38. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 6, Cl. 17. °भूत *unterthänig, folgsam, gehorsam* Spr. 4856. Pañkar. 1, 14, 94. fg. *zur Macht gelangt* Lot. de la b. l. 288.

वशीर्यंस् s. वसीर्यंस्.

वशीर् m. *Scindapsus officinalis* Schott. Gaṇiḍu. im ÇKDa. — Vgl. वसिर्.

वशिक m. N. pr. eines Agrahâra Râga-Tar. 1, 345.

वश्मसा indecl. gaṇa ऊर्यादि zu P. 1, 4, 61. — Vgl. मस्मसा (मश्मषा).

वैश्य (von 1. वश) 1) adj. *in Jmdes* (gen.) *Gewalt stehend, sich in Jmdes Willen fügend, gehorsam, folgsam* P. 4, 4, 86. AK. 3, 1, 25. H. 432. MBh. 1, 3419. 3, 10093. 16013. 5, 783. 13, 1192. 4297. 4789. 14, 894. R. 2, 21, 56. 30, 9. 31, 10. R. Gorr. 2, 117, 13. 5, 78, 4. 7, 75, 7. Spr. 1783. 2319. 2947. 4572. 5102. Kin. Nitis. 4, 65 (nach der Lesart des Comm.). Kathâs. 11, 9. 12. 30, 70. 46, 242. 56, 268. Prab. 99, 8. Mârk. P. 39, 17. fg. 120, 13. Pañkat. 23, 2. 46, 20. 146, 24. 156, 10. Ved. in LA. (III) 26, 6, v. l. इन्द्रियाणि Kaṭhop. 3, 6. Hariv. 14714. R. 3, 13, 5. Spr. 2758. वश्यात्मन् Bhag. 6, 36. MBh. 5, 994 (S. 124). R. Gorr. 2, 1, 12. 4, 44, 120. Mârk. P. 16, 8. वश्याग्निचरुण Kathâs. 56, 393. ममैते विषया वश्या नाहमेतेषु वश्यः Sarvadarçanas. 169, 5. 6. मद्वश्य Hariv. 3922. R. Gorr. 2, 10, 24. Kathâs. 43, 71. इन्द्रियैरात्मवश्यैः Bhag. 2, 64. स्ववश्यैर्वाजिभिः R. 5, 19, 48. स्त्री° Pañkat. 223, 18. मनो° MBh. 14, 1451. मृत्यु° R. 3, 35, 73. शाप° 6, 37, 48. 98, 28. Mârk. P. 113, 9. समाधि° Kumâras. 3, 50. इन्द्रियाण्यवश्यानि Kaṭhop. 3, 5. किमवश्यं प्रियवचसाम् Spr. 684. मत्तान्वश्यान् vielleicht so v. a. nach *Wunsch zur Hand seiend* MBh. 2, 681. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Âgnidhra Mârk. P. 53, 34. रूप्य andere Autt. — 3) f. वश्या s. u. 4). — 4) n. *Macht, Gewalt:* धात्री वश्यं सागरान्ताभ्युपेति Vaṭṭ. Bṛh. S. 88, 18. वश्यार्थे heisst Agni कामदः Gṛhyas. 1, 10. *die übernatürliche Macht Andere seinem Willen zu unterwerfen; eine darauf gerichtete Zauberhandlung* Prab. 61, 16. Verz. d. Oxf. H. 97, *b*, 33. 98, *a*, 1. 6. 100, *a*, 40. 105, *a*, 11. 322, *a*, No. 764. Verz. d. B. H. No. 905. fg. सर्व° Verz. d. Oxf. H. 107, *a*, No. 163. auch वश्या f. 98, *a*, 3. — Vgl. स्ववश्यम्, कामवश्य, पर°, पार° (auch Verz. d. Oxf. H. 120, *a*, 23).

वश्यक (von वश्य) 1) adj. f. (घा) *folgsam, gehorsam* Çabdar. im ÇKDa. — 2) n. *eine Zauberhandlung, durch die man Gewalt über Andere zu erlangen beabsichtigt,* Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 17.

वश्यकर् adj. *Gewalt über Andere verleihend* Verz. d. Oxf. H. 267, *b*, 13.

वश्यकर्मन् n. = वश्यक 2) Verz. d. Oxf. H. 92, *a*, 27. 97, *b*, 29. 98, *a*, N. 1. Verz. d. B. H. No. 905.

वश्यता (von वश्य) f. *das in-der-Gewalt-Stehen, Unterwürfigkeit, Folgsamkeit, Gehorsam:* पितुर्मातुश्च R. 2, 30, 22. इन्द्रियाणाम् Jogas. 2, 55. VP. in Sarvadarçanas. 177, 17. वश्यतां गम्, इ *in Jmdes* (gen.) *Gewalt kommen* MBh. 1, 1613. Hariv. 3689. Spr. 2868. Kâdamb. 92. कृष्णा कुरुस्त्रीषु वश्यता Kathâs. 61, 308. राज्ञस्य वश्यतो याति R. 4, 35, 11. स्त्री° Hariv. 7266.

वश्यत्व (wie eben) n. dass. MBh. 5, 2591. नीतो मदनवश्यत्वम् R. 3, 13, 16.

वष्, वैषते (हिंसायाम्) Dhâtup. 17, 10.

वैषट् indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. चादि zu 1, 4, 57. ein Opferruf, vom Hotar am Schluss der Jâgjâ gesprochen, auf welchen der Adhvarju die Spenden in's Feuer wirft (vgl. 2. वट्, वौषट्). Ind. St. 10, 324. AK. 3, 3, 8. H. 1538. ṚV. 10, 115, 9. Hariv. 3291. Baudh. P. 2, 7, 38. mit einem dat. verbunden P. 2, 3, 16. Vop. 5, 16. कस्मै देव वषडस्तु तुभ्यम् VS. 11, 39. वषट्कृतेभ्यः AV. 7, 97, 7. Weber, Râmây. Up. 303. वषट्कृ *diesen Ruf aussprechen* gaṇa ऊर्यादि zu P. 1, 4, 61. वषट्कृ विद्वांस घा कृणोमि ṚV. 7, 99, 7. AV. 1, 11, 1. 8, 10, 20. घ्नन्येवैनोऽस्तद्वषट्कुरुते Ait. Br. 2, 12. 5, 9. Çat. Br. 1, 6, 1, 25. 7, 2, 12. 20. 8, 2, 16. वैषट्कृत *worüber der Ruf gesprochen ist* AK. 2, 7, 26. Halây. 2, 262. ṚV. 1, 120, 4. पिबेन्द्र स्वाकृ प्रकृतं वषट्कृतं क्षेत्रादा सोमम् 2, 36, 1. 1, 102, 13. तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् 10, 17, 12; vgl. Çâṅkh. Çr. 10, 21, 2. तो वषट्कृतो मत्तो मत्तेन हूयेते Çat. Br. 1, 2, 1, 26. 28. 1, 7, 2, 12. 14, 2, 2, 15. Kâty. Çr. 1, 9, 15. M. 2, 106. क्त्वोपि MBh. 1, 1294 = Mârk. P. 99, 63. यस्मै: *denen* वषट् *gesprochen ist* ṚV. 8, 28, 2. अनुवषट्कृ *einen* vashaṭ-*Ruf (auf den ersten) folgen lassen mit den Worten* सोमस्याग्ने वीहि oder ähnlich (Sis.)

Ait. Br. 2,29. Çâṅkh. Br. 13,6. अग्ने वीक्तीत्यनुवषट्करोति Çat. Br. 3,4,4, 23. 13,5,2,23. Çâṅkh. Çr. 5,10,19. 22. partic. Çat. Br. 4,3,4,21. 4,4,9. 14,2,2,17; vgl. अनुवषट्कार.

वषट्कर्तृ nom. sg. *Ausrufer* von वषट् Çat. Br. 4,2,4,29. 4,4,10. Âçv. Çr. 5,8,8. 9,28. Kâtj. Çr. 9,5,29.

वषट्कार m. *der Ausruf* vashaṭ H. 821. VS. 19,19. 20. 20,12. 21,53. AV. 5,26,12. 9,6,22. 10,3,22. Ait. Br. 5,33. येऽग्ने पञ्चामके समिधः समिधो यज्ञ यज्ञस्य व्यत्यङ्गे वेत्थेषटिति वषट्कारः Âçv. Çr. 1,3,15. 5,5,8. °क्रिया 2,19,17. Çat. Br. 1,5,4,11. 18. 20. 7,4,21. 13,1,4,3. TBr. 1,6,11,1. 4. 3,3,4,2. स्वाकाकारवषट्कारप्रदाना देवाः Kauç. 1. Kâtj. Çr. 1,2,6. 8,17. Âçv. Gṛhj. 3,11. Çâṅkh. Çr. 1,1,34. 36. 39. उच्चैस्तरां वा वषट्कारः P. 1, 2,35. Harîv. 14115. R. 1,53,14 (54,16 Gorr.). 65,21. 5,12,22. 6,102, 17. 7,90,9. Lalit. ed. Calc. 313,5. 6. Weber, Râmây. Up. 311. Bhâg. P. 3,1,15. am Ende eines adj. comp. f. घा MBh. 3,778. Nach dem Schol. zu Kâtj. Çr. 2,5,29 ist in allen Soma-Opfern der वषट्कार und अनुवषट्कार vorgeschrieben, nur bei einzelnen Graha der letztere untersagt. वषट्कार personificirt unter den 33 Göttern VP. 123, N. 27.

वषट्कारनिधन n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,232, b. Lâṭj. 2, 6,1. 10,12,12. Çâṅkh. Çr. 7,2,13. प्रजापतेर्वषट्कारनिधनम् Ind. St. 3,224,b.

वषट्कारिन् adj. = वषट्कार् Lâṭj. 2,6,1. 10,12,12.

वँषट्कृति f. = वषट्कार. य आहुतिं परि वेदा वषट्कृतिम् RV. 1,31,5. 7, 14,3. °कृति adv. 1,14,5.

वषट्कृत adj. impers. vashaṭ *zu sprechen* Ait. Br. 5,9.

वषट्क्रिया f. *eine von* vashaṭ *begleitete Opferhandlung* Mâṇ. P. 75,15.

वष्क्, वँष्कते (गतौ) Dhâtup. 4,27. v. l. für वस्क्.

वँष्टि (von वश्) *begehrend, begehrlich:* परि चिदष्टेयो दधुर्दस्तो राधो वष्टेयम् RV. 5,79,5.

1. वस् enklitischer acc., dat. und gen. pl. des Pronomens der 2ten Person VS. Paṭ. 2,5. P. 8,1,21. 24. fgg. acc. RV. 7,36,9. 37,1. dat. 1, 14,4. 20,5. 7,42,3. gen. 1,38,5. 39,4. 7,47,2.

2. वस् उच्छति, ओच्छत्, उषसन्, उर्वाम, ऊर्वे 2. pl. ऊषुम्, उषत्सत्, inf. वस्तवे RV. 1,48,2. *hell werden, — sein, leuchten* (vom Lichte des anbrechenden Morgens): उषासोषा उच्छाच्च नु RV. 1,48,3. 10,11,3. उषसो रेवदूषुः 3,7,10. उषसमुषसो विभातीः 4,2,19. 6,65,6. ओच्छत्सा रात्री *illuxit* 5,30,14. दूरे अमित्रमुच्छ *leuchte weg* 7,77,4. यया तदुच्छ गृणते *bringe durch dein Licht* 1,113,7. fehlerhaft scheint उक्तु st. उ-नत्तु zu stehen AV. 3,12,4. उषित = व्युष्ट Taitt. 3,3,102. = व्युषित H. an. 3,252. Med. t. 96. — Vgl. 1. उष, उषस्, 2. und 3. उषा, 2. उस्र.

— caus. *aufleuchten machen:* प्र चेतय रोदसी वासयोषसः RV. 1,134, 2. 6,17,5. 32,2. 7,91,1.

— अधि, अध्युषिते *bei Tagesanbruch* MBh. 8,1673.

— अप 1) *durch Helle vertreiben* RV. 1,48,5. उषा उच्छदप स्रिधः 7, 81,6. 104,23. AV. 2,8,2. चन्द्रमा वो अपोच्छतु 6,83,1. 14,2,48. 15,6,2. — 2) *erlöschen:* अपवास उषसामपं नेत्रियमुच्छतु AV. 3,7,7. — Vgl. अपवास.

— वि 1) *aufleuchten, in oder an das Licht treten* RV. 1,113,7. या व्यूर्युषीषु नूनं व्युच्छान् 10,43,3,55,1. यस्ता यदिन्द्र मृदिता व्युच्छान् 7, 30,3. प्रयमा कृ व्युवास AV. 3,10,1. 4. Çat. Br. 6,2,2,17. 7,2,4. न व्यवत्स्यत् *es wäre nicht Tag geworden* 4,3,4,10. Çâṅkh. Çr. 15,16,6. infin. loc.: व्युषि RV. 5,3,8. 45,2. तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च 7,81,2. 8,46,21. व्युष्ट *hell geworden:* व्युष्टायां रात्रौ Çat. Br. 12,7,2,3. Kâtj. Çr. 20,4,22. MBh. 1,1205. 3,11917. 4,452 (सुव्युष्टा रजनी मम). 7,2605. 12,1548. 13,335. R. 2,54,37. R. Gorr. 1,30,1. Bhâg. P. 3,2,3. 10,42,33. Pañkat. 130,7. n. = दिन, प्रभात H. an. 2,99. Trik. 1,1,103. = काल्य 3,3,102. Med. t. 28; vgl. सव्युष्ट. व्युषिते Çâṅkh. Çr. 2,7,3. — 2) *erhellen:* आदित्यो विवस्वानहोरात्रे विवस्ते (ganz unregelmässig der Etymologie wegen) Çat. Br. 10,3,2, 4. — caus. *hell werden lassen:* व्यैवास्मै वासयति *er lässt ihm Tag werden* TBr. 1,8,2,3 (nach dem Comm. zu 3. वस्). यो वासयद्व्यृतेन पूर्वीः RV. 6,39,4. इदं नो विवासयतम् TS. 6,4,8,3. TBr. 1,4,4,3. Pañkav. Br. 2,1,12. 12,9,8. 11,11.

— अभिवि *hell werden über* d. h. *nur Zeit von* (acc.): यदि पर्यायानभिव्युच्छेत् *über den* p. d. h. *ehe diese beendet sind* Âçv. Çr. 6,6,1. Pañkav. Br. 2,3,3. med. (°च्छेत vielleicht nur Schreibfehler für °च्छेत्) Çâṅkh. Çr. 13,10,4.

— परिवि *aufleuchten von — her* so v. a. *nach:* व्युच्छन्ती परि स्वसुः RV. 4,52,1.

3. वस्, वँस्ते (आच्छादने) Dhâtup. 24,13. P. 6,1,186. वसिध 2. imper. RV. 1,26,1. वध्वम् 2. pl. Kauç. 88. Çâṅkh. Çr. 4,5,2. वसत 3. pl. वसिष्टः वसान, ved. वावसानैः ववसेः वत्स्यसि (वत्स्यते *wäre nicht gegen das Metrum*) Harîv. 11206. वसिता und वस्ता Vop. 9,39. वसितुम्, वसित्वा: *anziehen, sich ein Gewand oder eine Hülle umlegen; eine Form der Erscheinung annehmen; sich in Etwas hineinmachen, eindringen in:* वस्त्राणि RV. 1,152,1. वासः 9,89,2. निर्णिजम् 1,23,13. द्रापिम् 9,86,14. AV. 13,3,1. यत्कम् RV. 1,122,2. 4,18,3. द्यावापृथिवी रोदसी वावसाने 10, 5,4. ज्योतिः 1,124,3. शोचिः 3,1,3. भिषजम् 2,10,1. 3,38,4. स्यार्का शुक्रा 1,133,2. यशः 164,47. 9,2,3. मिहम् 2,30,3. विद्युतम् 35,9. उस्राः 7,69, 3. ग्रभूर्यम् 3,38,7. वयांसि 55,14. यथा वसत मरुतः सु मायया 5,63,6. 32,9. सुपर्णो वस्ते *hüllt sich in Vogels Gewand* 6,75,11. वना वसानो वरुणो न सिन्धून् 9,90,2. आयुः 10,16,5. 53,3. वपूंषि 114,3. 136,2. नृम्णा 9,7,4. अमृतम् AV. 9,1,1. 3,17. 13,1,16. द्रप्सम् 14,1,56. ऊर्मिम् RV. 9,80,3. VS. 10,7. 13,31. 19,89. दिशः AV. 19,20,2. दिवो वर्ष्माणम् RV. 10,63,4. समानं नीळम् 5,2. Çat. Br. 10,3,2,4. 14,1,4,10. — स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च M. 1,101 (= Bhâg. P. 4,22,46). वस्ते वासश्च शोभनम् Spr. 537. Kathâs. 52,100. वल्कलम् Bhâg. P. 7,13, 39. चर्माणि वसीरन् M. 2,41. 6,6. यावावासो वसीमहि Spr. 270. न वसीतधौतवासः स्यात् च विधृतं क्वचित् Bhâg. P. 6,18,47. 19,2. मुनिवस्त्रावृतवस्त R. 2,37,7. वसनं ववसे Çic. 9,75. वसानः पांशुकम् Jâṭ. 2,238. MBh. 3,11976. 9,1794. 10,219. Harîv. 2903. 3595. (मातङ्गाः) वसाना विविधाः कुथाः 6926. R. 2,38,1. 90,2. 3,7,8. Ṛt. 3,22. Raghu. 12,8. Kumâras. 3,54. 7,9. Çiç. 180. Spr. 638. Kathâs. 71,22. कौशेयवाससी पीते वसानम् — अमूल्यमौल्याभरणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् Bhâg. P. 10,66,14. Bhaṭṭ. 4,10. कुशवीरे वसितुम् R. Gorr. 2,37,18. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,8, Cl. 28. वसित्वा मैथुनं वासः M. 4,116. 11,132. Bhâg. P. 10,15,45. 41,39. 65,30. Bhaṭṭ. 3,45.

— caus. *anziehen lassen, hüllen in, bekleiden mit;* med. *sich hüllen in:* नेत्रकः) वाससि न च वासयेत् *soll nicht die Kleider von Andern tra-*

gen lassen M. 8,396. वस्त्रेणेव वासया मन्मना प्रुचिम् RV. 1,140,1. गव्या वस्त्रेव वासयत इत् 8, 1,17. Âçv. Gṛhy. 1,19,11. Liṭ. 2,6,1. यद्गोभिर्वासयिष्यसे *wenn du in Milch dich kleiden willst* RV. 9,2,4. यदी गोभिर्वसायते (aus metrischen Rücksichten) 14,3. कदा स्तोमं वासयो ऽस्य राया 6,35,1. तं गीर्भिर्वासयामसि 9,35,5. 43,1. वासित = वस्त्रच्छन्न H. an. 3,295. fg.

— अधि *anziehen:* उतावि वस्ते सुभगो मघवृधम् RV. 10,75,5. — Vgl. 2. अधिवास und अधीवास.

— अनु *bekleiden, umfangen, (schützend) umgeben:* सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् RV. 6,75,18. इडैवास्मॉ अनु वस्तां व्रतेन AV. 7,27,1. प्राणः प्रजा अनु वस्ते पिता पुत्रमिव 11,4,10. 13,3,11. *sich bekleiden* Çâṅkh. Br. 25,15. Pâr. Gṛhy. 3,4.

— अभि *sich hüllen in:* पयोवसिरिनं मातरिश्वाभिवस्ते Kâṭy. 98. — caus. *bekleiden, bedecken:* पिता यत्सीमभि दूरेरवासयत् RV. 1,160,2. 9,75,5. गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि 104,4. भस्मना TS. 2,6,8,4. TBr. 3,2,8,7. Çat. Br. 1,2,3,16. fg. Kâṭy. Çr. 2,5,25.

— उप s. उपवासन.

— नि *anziehen über ein anderes Gewand* Kâṭy. Çr. 15,5,12. *umthun, anlegen:* खट्वेन) सर्धं वाससम्प्रिक्ष्य निवस्य (so die ed. Bomb. und N. 10, 19) च MBh. 3,2331. R. Gorr. 2,99,2. वासोभिर्बहुनाकल्पैर्यो वै निवसितः पुरा *gekleidet in* 108,32. *sich kleiden, sich aufputzen:* न्यवसिष्ट ततो द्रष्टुं रावणम् Bhaṭṭ. 15,7. निवद्धम् 3,44. — Vgl. 2. निवसन, 2. निवास, 2. निवासिन्. — caus. *anziehen:* वासः MBh. 3,2631. R. ed. Gorr. 2,38, 16. पीतैर्निवासिता वस्त्रैः *gekleidet in* 5,27,22. नानाकर्म° so v. a. *beschäftigt mit* MBh. 13,1235. Vgl. निवास (आच्छादने) Daśrup. 35,33 und 2. निवासन.

— प्रतिनि s. प्रतिनिवासन.

— सॅनि *umthun, anlegen:* प्रावारान् MBh. 5,745.

— परि 1) *anziehen* RV. 3,1,5. — 2) *umgeben, um Etwas her sein:* अहोरात्रे परि सूर्यं वसाने AV. 13,2,22.

— प्र *anziehen, umnehmen:* मृगाजिने प्रवस्ते R. 2,100,30.

— प्रति dass.: स ईं रेभो न प्रति वस्त उक्षाः RV. 6,3,3. — caus. *sich hüllen in* (instr.): यज्ञैः प्रतिवासितः MBh. 2,2469. 2502. 3,11262. 5, 330. 2147. 9,1792.

— वि 1) *die Kleider tauschen:* वाससी इव विवसानो ये चरावः TS. 1, 5,10,1. Âçv. Çr. 2,5,10. — 2) *anziehen, umlegen:* मनोरमे न व्यवसिष्ट वस्त्रे Bhaṭṭ. 3,20. — caus. *anziehen, umlegen:* विवास्यन्ती रुरुचर्माणि MBh. 2,2520.

— सम् *sich kleiden in:* समूधेषा वसत पर्वतानाः RV. 5,83,4.

— अभिसम् *umnehmen:* समानं तनूमभिसंवसानो AV. 12,3,52.

4. वस् (= 3. वस्) adj. am Ende eines comp. *gekleidet in:* प्रेतचीवर° Râgân. 11,16.

5. वस्, वँसति (निवासे) Daśrup. 23,36. उवास, ऊषतुँस् P. 6,1,15. 8, 3,60. Vop. 8,141. 3,24. ऊषिवँस् P. 3,2,108. ऊषुषाम् Bhaṭṭ. 6,135. अवात्सीत्, अवात्ताम् Vop. 8,141. अवात्सम् Kâṭh. Up. 8,7,3. वत्स्यति (वसिष्यति Bhâg. 12,6. R. 1,48,30. 2,30,39. so ist wohl auch Çâṅkh. 14, 140 zu lesen) P. 7,4,49. वस्ता Kâr. 6.9 aus Sarvad. K. zu P. 7,2,10. उषितॉ P. 1,2,7. 7,2,52. Vop. 26,102. 204. episch उष्टा (MBh. 3,4077. Miṅk. P. 44,13) und उष्य; वस्तुम्; pass. उष्यते; उषित P. 7,2,52. 3,3, 60. Vop. 26,102. aus metrischen Rücksichten in der klassischen Sprache häufig auch med.; in der älteren Sprache vom simpl. med. nur partic. perf.: वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा (या गतम्) *verweilend oder verweilt habend* RV. 1,46,13; und auch an dieser Stelle sind andere Erklärungen möglich. Medialformen in der älteren Sprache s. u. सम्. 1) *an einem Orte bleiben, Halt machen, übernachten; verweilen, sich aufhalten, wohnen; stehen bleiben bei Etwas:* कुहाभिपित्वं कृतः कुहोषतुः *wo übernachtet ihr?* RV. 10,40,2. वसोर्वरण्यान्याम् 146,4. शिरिणायां चिदकुना मघोभिरपरीवृतो वसति प्रचेताः 2,10,3. मा मे ऽग्नेशायां वात्सीत् *bleibe keine Nacht länger in meinem Besitz* Çat. Br. 5,3,1,13. मद्रेषु 14,6,2,1. गन्धर्वेषु Ait. Br. 1; 28. नेत्त्वेवास्मिं लोके ज्योगिव वसेयुः *sich nicht zu lange aufhalten* 4,21. तदन्यारभ्य वसति *inne halten* 5,10. क्व भगवो ऽवात्सीः *wo bist du so lange gewesen?* 8,24. कस्यां देवतायां वसव *bei welcher Gottheit stehet ihr?* Çat. Br. 12, 1,3,22. इयं विद्या न ब्राह्मण उवास *nahm nicht Aufenthalt* 14,9,4,11. ते ऽस्माद्रूषिवांसो ऽपप्रयन्ति *gehen weiter, nachdem sie über Nacht geblieben sind* 12,4,4,7. चन्द्रमा नक्षत्रे वसति 10,5,4,17. रात्रिम् 1,6,4,5. Çâṅkh. Çr. 18,23,21. Âçv. Gṛhy. 1,7,21. 3,9,3. mit Auslassung von रात्रि *Nacht:* यत्र दर्शोपित्वा प्रयाति *nach zehnmaligem Uebernachten* TS. 3,4,10,2. अरण्ये तिस्रो वसति Pâraṡ. Br. 16,6,3. 7. यो वनस्पतिष्ववसत् *die Nacht, welche er in den Bäumen zubrachte,* TS. 6,2,8,4. — उवास सार्वः सुमनस्केलामामाद्य पश्चिमाम् *machte Halt für die Nacht* MBh. 3,2526. वसति तत्र मार्गस्थाः सुरम्ये नगसत्तमे *übernachten* 12,5803. 13,1409. R. 2,38,4. Kathâs. 3,54. 56. Râǵa-Tar. 4, 219. इक्ष्वाग्व वसावके R. 2,50,12. अस्तु गत्वासि तं देशं वसाग्व सकृ मत्त्रिभिः *übernachte* 90,23. नास्यानभ्यन्गृके वसेत् M. 3,105. 100. 4,29. चित्तय तावत् केनापदेशेन सकृदप्याश्रमे वसामः Çâk. 27,2. Unterschied der Bedeutung von aor. und imperf. P. 3,2,110, Vârtt. तामवर्त प्रीतो रन्तौ तत्र *die Nacht zubringen* MBh. 3,11991. रात्रिं कवयत्नो पुरातनम् — ऊषतुः 3004. 5,6011. R. 1,33,1. 68,18. 2,34,34. 46,10. 80,6. R. Gorr. 1,71,25. fg. Kathâs. 18,255. 25,62. 42,50. इह कामाश्रमे राम सुखं वत्स्यामहे निशाम् R. 1,25,17. 76,14. R. Gorr. 1,48,21. तत्र तामुषित्वैकां रजनीम् MBh. 3,11025 (S. 570). R. 1,9,31. 31,20. 2,54,1. Bhaṭṭ. 3,45. तौ रजनीमुष्य R. 1,29,1. 48,8. 2,13,1. वत्स्यस्येकां निशां साकं मया चेत् Kathâs. 43,81. Bâlar. P. 3,14,39. एकाहं चोदके वसेत् M. 11,157. स तया वाग्यतः सार्धं त्रिरात्रं नैषधो ऽवसत् MBh. 3, 2203. सो ऽद्य रात्रौ वसतु तदृक्षे Kathâs. 18,322. 42,62. वसस्व मयि *bleibe bei mir* MBh. 3,2526. 2252. 2595. 2638. 2640. 2642. गुरौ M. 2, 164. 175. 4,1. गुरुकुले वसति स्म, स तत्र वसमानः MBh. 1,749. Inschr. bei Sir. zu RV. 1,125,1. ब्रह्मकुले Bâlar. P. 1,6,8. मातृकुले Bhaṭṭ. 3,24. मासार्धं न वस्तव्यं वसन्वध्यो भवेन्नरः so v. a. *ausbleiben, wegbleiben* R. 4,41,77. गृहे *sich aufhalten, wohnen, leben* M. 3,71. 4,60. 252. 5,102. 169. वने 6,1. 25. fg. 11,72. विषये 7,138. एवं सह वसेयुर्वा पथ्यया 9,111. शैलेषूपवनेषु च 10, 60. दूरतरे ग्रामात् 11,128. तावत्यब्दसहस्राणि तत्कर्ता नरके वसेत् 207. तथा तु तेषां वसतां तस्मिन्राष्ट्रे MBh. 1,6109. 3,1790. निषधेषु 2258. सुखं वत्स्यसि नो गृहे 2332. रम्यमावसथं तत्र कृत्वा रामः सलक्ष्मणः। उवास सीतया सार्धं R. 1,1,31. तस्यां वसत्यां वर्षाणि पञ्च पञ्च च — विश्वामि-

श्रमे 63, 9. Rāǵa-Tar. 1, 180. विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः Spr. 2980. वसन्ति ये तामलिप्तायाम् so v. a. *die Bewohner von* Tām. Varāh. Bṛh. S. 10, 14. Kathās. 30, 95. 31, 22. मध्ये लालितकादीनां दुर्वृत्तानां वसन्नपि — दुःसंस्काराच्च सो ऽग्रहीत् Rāǵa-Tar. 5, 228. Daçak. 66, 17. 76, 6 (lies ग्रवात्सम् st. ग्रवात्सम्). Pañcat. 68, 24. Vet. in LA. (III) 6, 20. 7, 6. med. MBh. 1, 4583. 2, 609. 2302. 2872. 3, 11658. 4, 13. विराघनगरे वत्स्यसे केन कर्मणा 19. 5, 3823. 13, 720. 5219. 14, 457. Harīv. 6017. R. 1, 25, 8. 30, 1. 2, 34, 13. 48, 21. 52, 27. 3, 75, 12. Verz. d. Oxf. H. 32, *b*, 32. Bhāg. P. 1, 17, 37. Saṃvād. P. 4, 10, *a*. pass. impers.: इक्ष्वाकुभिर्वत्से यावत्ते भर्तुरागमः Bhāg. P. 7, 7, 12. 9, 13, 11. 20, 14. Pañcat. 30, 24. तस्मिन्नरण्ये स भगवानुषित्वा परिवत्सरम् M. 1, 12. Spr. 1142. उष्ट्वा महालयागर्भे Mārk. P. 44, 13. उष्य तत्र यथाकामम् MBh. 3, 2232. 3030. 3032. R. 2, 52, 78. गमिष्यामि वनं वस्तुमहं वित्तः 19, 2. यामी सपत्नीनां वस्तुं मध्ये न मे तमम् 24, 17. 33, 11. 37, 18. 3, 52, 27. 53, 23. यतः संप्रति गच्छावो वस्तुमुल्लुषिनीं पुरीम् Kathās. 24, 85. 18, 376. दिवसेनैव तत्कुर्याद्येन रात्रौ सुखं वसेत्। यन्मासेन तत्कुर्याद्येन वर्षाः सुखं वसेत् ॥ *sich behaglich betten, behaglich leben* Spr. 4182. येन वृद्धः सुखं वसेत्, येनामुत्र सुखं वसेत् 4570. 4863. M. 6, 95. ग्रयमान उवास कृच्छ्रम् Bhāg. P. 9, 10, 9. नाहं कमण्डलावस्मिन्कच्छे वस्तुमिहोत्सहे spricht ein herangewachsener Fisch 8, 24, 18. *beiwohnen, geschlechtlichen Umgang haben mit* (loc.): विरोधिषु च वत्स्यन्ति (वरिष्यन्ति die neuere Ausg.) प्रमदासु नरास्तथा Harīv. 11167. *seinen Standort haben*, von Thieren: यत्रोदकं तत्र वसन्ति हंसाः Spr. 4776. मूले वसति चेत्पाणी 2210. 3198. Gīr. 1, 47. Kathās. 33, 44. चत्वारः प्राणिनस्तत्र वसन्ति स्म महातरौ 107. Hit. 14, 18, v. l. कस्तिनो लब्धनामानस्तुरंगास्तु मनोजवाः। गृहीतकण्ठे नृपतेर्वसेयुः स्वामरंजिताः॥ Kām. Nītis. 16, 8. *bleiben* so v. a. *nicht fortgehen* Spr. 3673. ग्रवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः 243. दृष्ट्वा च दूरतो व्याघ्रमुवास स सरस्तटे Pañcat. 1, 3, 69. दूरतम् *sich fern halten* Spr. 2257, v. l. नावसत्तत्र (नाग्मत्तत्र ed. Bomb.) तत्राग्य दृष्टिः MBh. 13, 1480. *sich irgendwo befinden, — sein:* स मृत्योर्वसते ऽन्तिके MBh. 12, 2515. पार्श्वतस् Spr. 404, v. l. यत्र तत्राश्रमे वसन् M. 3, 50. 12, 102. नमस्ये ऽहं पितॄन् श्राद्धे ये वसन्त्यधिदेवताः Mārk. P. 96, 13. पारिप्लवो वसंस्तत्र Harīv. 7706. मनवः तत्रविद्याश्च मायाश्चात्र वसन्ति R. Gorr. 2, 8, 44. वसति तत्राधरमधु (मुखाम्बुजे) Spr. 2379. यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे। मृत्युश्च वसति क्रोधे 2438. एते (गुणाः) यत्र वसन्ति 2773. यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति Varāh. Bṛh. S. 70, 23. तारुण्यं नयनयोः Spr. 3985. भूतिः मोक्षे धृतिः कीर्तिर्दाने वसति नाममे 5240. स्वर्गस्थितानामिह जीवलोके चत्वारि चिह्नानि वसन्ति देहे 3363. युगपत्सन्नासन्ने परस्परविरुद्धे नैकस्मिन्वस्तुनि वस्तुं युक्ते Sarvadarçanas. 45, 2. 3. सेवायाम् *in Jmdes Diensten stehen* Hit. ed. Journ. 2700 (सेवया ed. Schl. 127, 11). *sich halten zu* (loc.) कुशासने Verz. d. Oxf. H. 20, *a*, No. 65. fg. — 2) *liegen —, stehen bleiben, verbleiben:* तिस्रो रात्रीः क्रोतः सोमो वसति TBr. 1, 6, 8, 5. पारिमुषितो ऽवसत् *blieb gestohlen* TS. 5, 1, 9, 5. Çat. Br. 3, 2, 3, 3. क्रुत्रा वसति Kāṭh. Ça. 5, 4, 1. वसंतु नु नै इदम् TS. 6, 4, 3, 1. — 3) mit einem acc. *a) in einer Lage u. s. w. sich dauernd befinden, sich widmen, obliegen:* नाब्राह्मणो गुरौ शिष्यो वासमात्यन्तिकं वसेत् M. 2, 242. क्रुष्टो वासमुवास क्रु MBh. 5, 7516. चतुर्दश वने वासं वर्षाणि वसतो मम R. 2, 37, 5. R. Gorr. 2, 60, 7. वनवासम् R. Schl. 2, 73, 3. उदवासम् MBh. 13, 254. ग्रज्ञातवासम् 3, 2020. मुक्तवासम् R. 1, 17, 17. बहुदुःखवासम् Bhāg. P. 3, 31, 20. रात्रिवसतिम् MBh. 4, 96. fg. 109. 120. 126. fgg. Spr. 239, v. l. ब्रह्मचर्यम् Ait. Br. 5, 14. Çat. Br. 12, 2, 2, 12. 14, 8, 2, 2. Kaiv. Up. 4, 4, 3. 10, 1. 8, 7, 3. ब्रह्मचर्याश्रमम् Mārk. P. 28, 17. ग्राश्रममेष्टम् d. i. गार्हस्थ्यम् MBh. 12, 2339. वीरासनम् M. 11, 110. इदं वत्स्यामः (z. B. गार्हस्थ्यम् Comm.) Āçv. Gṛhj. 3, 10, 2. — *b) an einem Orte verbleiben:* नदीर्वनेषु चोषित्वा Vop. 5, 3. वस तौ पुरीम् R. Gorr. 2, 114, 24. — *c)* in der Stelle: ब्राह्मणे विप्रान्वसति पुद्गलेव च तत्रियान्। प्रदानकर्मणा वैश्यान् शूद्रान्परिचरेण च ॥ Harīv. 11968 ergänzt Nīlak. zum acc. ग्रधिष्ठाय; dem Zusammenhange nach muss वस् hier so v. a. *sich beschäftigen lassen (bekleiden?)* bedeuten. — 4) partic. उषित *a)* mit pass. Bed.: दिनमेकं मन्ये त्वया सार्धमिहोषितम् *zugebracht, verlebt* Brahma-P. in LA. (III) 36, 18. impers.: यत्रोषितं त्वया *wo du geweilt hast* MBh. 1, 3268. कौरागृहे Rāgn. 6, 40. Spr. 2445. 2928. — *b)* mit act. Bed. = स्थितवत् Taitt. 3, 3, 150. *α) Halt gemacht —, übernachtet —, verweilt —, sich aufgehalten —, irgendwo gelebt habend:* वेलातटेषूषितसैनिकाश्वः Rāgn. 18, 22. त्रिरात्रमुषितः *drei Nächte zugebracht habend* MBh. 3, 2306. एकरात्रोषितः कंचिदपश्यं ब्राह्मणं पथि 11945. ते त्रिरात्रोषिताः प्राप्ताः करवीरं पुरोत्तमम् *nachdem sie drei Mal übernachtet hatten* Harīv. 3652. पञ्चरात्रोषितो पत्रे 3720. R. 1, 68, 1 (70, 1 Gorr.). R. Gorr. 1, 75, 8. 2, 12, 1. 6, 106, 1. Kathās. 22, 102. वर्षाकालोषित R. 4, 29, 1. शर्वरीम् — तवाश्रमे। उषिताः स्मेकवसतिम् R. Schl. 2, 54, 36. सुखमस्म्युषितः MBh. 1, 3269. त्वयि 3, 1737. 2711. 3024. उषितो ऽहं त्वया सह *ich habe mit dir gelebt* (geschlechtlich) Brahma-P. in LA. (III) 37, 12. Bhāg. P. 1, 10, 27. सुखोषित *der die Nacht gut zugebracht hat* MBh. 3, 2002. R. 2, 92, 6. सुखोषितो ऽस्मि रजनीम् 5. ग्रज्ञातवासमुषिताः MBh. 4, 1. उषितास्मि तया बाल्ये पितुर्वेश्मनि 3, 6034. शम्बरस्य गृहोषितः Harīv. 9475. Rāgn. 14, 32. Mārk. P. 16, 20. दीर्घकालोषितस्तत्र गिरौ R. 2, 94, 1. सुचिरोषित *der lange bei Jmd gelebt hat* 32, 17. चिरोषित *lange abwesend gewesen* Bhāg. P. 1, 11, 10. 14, 39. परिसंवत्सरोषिताः *ein Jahr lang abwesend gewesen* MBh. 4, 2359. *ein Jahr lang gewartet habend* 1, 2260. 13, 4672. ग्रन्यत्रोषित *seinen Standort habend* Kām. Nītis. 17, 28. — *β) gestanden —, gelegen habend* (insbes. über Nacht), von Sachen: ग्रधोषितं कुसुमम् Varāh. Bṛh. S. 53, 95. त्रीणि दिनोषिते 30, 20. ग्रहराणि सप्तरात्रमुषितानि 54, 114. 55, 18. वर्षद्वयमुषितानि 42, 9. Suçr. 1, 158, 15. 2, 35, 19. शतं वत्सरानुषितं घृतम् *hundert Jahre alt* 1, 181, 16. 199, 19. चिरोषितं भक्तं पर्युषितं च Mārk. P. 34, 57. ग्रलोषित *im Wasser gelegen* Suçr. 2, 448, 13. — *γ) gefastet habend* (vgl. unter उप): ग्रग्निः पुरोधाश्चरोषितः स्नातः Varāh. Bṛh. S. 46, 15.

— caus. 1) वासयति, °ते: *a) über Nacht behalten, Quartier geben, beherbergen, wohnen lassen;* mod. P. 1, 3, 39. यदेनान्वासयते यदेभ्यो ऽशनं ददाति *wenn er sie beherbergt, wenn er sie speist* Çat. Br. 1, 7, 2, 5. MBh. 1, 5727. 3, 5972. 13, 2114. Bhaṭṭ. 8, 64. वत्सान्मातृभिः सह वासयेत *die Nacht über belassen* Liṅg. 5, 1, 3. Gobh. 3, 8, 7. act.: त्वयि रात्रिं वासयामासि ved. Cit. beim Schol. zu P. 7, 1, 46. ब्राह्मणो मे पिता पूर्वं वासयामास *beherbergen* MBh. 3, 1261. घृतिथीन् 12, 4057. 3, 982. ग्रधनावास्तिकांश्चीरान्विषये स्वे न वासयेत् 1, 5600. 4, 278. स्वगृहे 5, 7071. 13, 7116. Harīv. 8211. रामं वने वासयता *wohnen heissen* R. Gorr. 2, 91, 13. संयतां वासयेद्गृहे *er halte sie eingesperrt* M. 8, 365. परिभूतामधः शय्यां वासयेद्यभि-

चारिणीम् Jiǵ. 1,70. सदानमानसत्काराञ्ज्योत्स्निगान्वासयेत्सदा 338. वासयितुं गृहे MBh. 13,7382. R. 2,101,21. वासिताश्च महारण्ये वर्षाणीह त्रयोदश MBh. 5,611. कृतावासे वासितः Hit. 92,19. अद्यां वासिते सार्धे *für die Nacht Halt machen lassen* Kathâs. 64,21. अयोनौ यः समाकामेद्धकुभिर्वा वासयेत् so v. a. *mit Vielen den Beischlaf vollziehen lassen* Matsja-P. in Vivâdaǵ. 50,15. fgg. *über Nacht stehen lassen:* तिस्रो वासयित्वा Kauç. 7. — *b) warten lassen, hinhalten:* वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा नु इन्द्र वर्चसा सुवोधः ṚV. 7,37,6. *aufhalten:* रिपोर्बलम् Kîm. Nîtis. 18,22. — *c) bevölkern:* स्वराष्ट्रं वासयेद्राजा परदेशापवाहनात् Spr. 3361. — *d) bestehen lassen, erhalten:* ते यदिदं सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति Çat. Br. 11,6,3,6. 14,2,4,20. act. in derselben Verbindung Bṛh. Âr. Up. 3,9,3, v. l. bei Çaṅk. (vgl. jedoch Burnouf, Yaçna S. 344) und Kâṭh. Up. 3,16,1. यः सर्वाल्लोकानुदृह्यति विसृजति वासयति Atharvaç. Up. bei Muir, ST. IV,299,18. 27. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,93. — *e) stellen, setzen, an einen Ort thun:* मूर्ध्नि त्वा वासयेयं वै MBh. 4,265. स्वमेवंशमवासयत् (sc. तस्य शरीरे) Harîv. 1428. अघने मम — मणिरसनावसनाभरणानि — वासय Gît. 12,24. अनध्यायं मुखे वासयते so v. a. *beobachtet Stillschweigen, schweigt* Naish. 9,61. — *f) entstehen lassen, hervorrufen:* प्रकृतिः (wird so genannt) प्रकृष्टकरणाद्वासना वासयेत्यतः Sarvadarçanas. 66,11. — 2) वसयति *wohnen* (निवासे) Dhâtup. 35,54,c.

— *desid.* विवत्सति P. 7,4,49, Schol.

— अधि, अध्यूषिवंस् P. 3,2,108, Schol. (einen Ort) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen, einnehmen* (einen Platz), *bewohnen;* mit acc. P. 1,4,46. गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः Megh. 26. Ragh. 5,63. 13,79. Kumâras. 1,55. Kathâs. 24,93. Bhâg. P. 7,4,8. स राज्ञा ब्रह्मदत्तस्तु पुरीमध्यवसत्तदा । काम्पिल्याम् R. 1,34,16. R. Gorr. 1,27,26. Kîm. 5,21. 27. Uttarar. 42,3 (53,16). Kathâs. 30,42. Bhâg. P. 3,21,25. दण्डकामध्यवात्सीत् Bhaṭṭ. 5,6. तनुम् Ragh. 9,17. भास्करश्च दिशमध्युवास याम् 11,61. सहासनं गोत्रभिदाध्यवात्सीत् *nahm mit* Indra *denselben Sitz ein* Bhaṭṭ. 1,3. कथं पर्णवतीं भूमिमधिवत्स्यति मे स्नुषा *auf dem Erdboden liegen* R. Gorr. 2,62,13. Bhaṭṭ. 8,79. 15,69. partic. अध्युषित 1) *besetzt, eingenommen, innegehabt* (von einem Orte), *bewohnt:* भरताध्युषितं पूर्वं सो ऽध्यतिष्ठत्पुरोत्तमम् MBh. 1,3736. 3,2464. 12208. 13,2666. Harîv. 6413. R. 1,27,13. 31,21. 47,11. 2,49,9 (46,10 Gorr.). R. Gorr. 2,109,47. 7,23,4. Ragh. 4,46. 9,25. 14,20. Spr. 807. Varâh. Bṛh. 26,5. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 96. Kathâs. 34,254. 44,187. 73,318. Râǵa-Tar. 2,169. गोऽध्युषिता मही *Grund, auf dem Kühe sich aufgehalten haben,* Varâh. Bṛh. S. 53,98. महता परितापकृताध्युषिते — यमुनापुलिने so v. a. *wo ein — Wind weht* Pañkar. 3,12,4. अनुत्तमेनाध्युषितः (बाहुः) प्रियेण वीरेण *auf dem der Geliebte lag* R. 5,28,14. — 2) *geweilt —, zugebracht habend:* संवत्सरं चाध्युषिता राघवस्य निवेशने R. 3,53,3. चिरम् R. Schl. 2,30,3. *bewohnend:* द्वारकाम् Vop. 5,2. — 3) *dem man obliegt:* प्रमदाध्युषितां वृत्तिम् R. 3,1,7. — 4) अक्षाध्युषित n. (sc. नेत्र) *eine durch Genuss saurer Speise erzeugte Augenentzündung* Wise 293. Suçr. 2,305,8. 315,1. — Vgl. 1. अधिवास, समध्युषित. — *caus.* 1) *über Nacht liegen lassen:* अधिवास्यापरेद्युः पाटयित्वा Suçr. 1,32,9. अधिवासित Varâh. Bṛh. S. 26,1. — 2) *einweihen* (ein neues Götterbild): मूर्तौ (प्रतिमायां) मुनित्यगौ तैर्नागरकैः सम्यगेवमधिवास्य । दैवज्ञसंप्रदिष्टे काले संस्थापनं कुर्यात् Varâh. Bṛh. S. 60,15. — 3) *heimsuchen:* वैधव्येनाधिवासिता Harîv. 8398. — 4) *sich einverstanden erklären mit Jmd* (gen.), *Jmd willfahren* Lalit. ed. Calc. 6,9. Lot. de la b. l. 351. Burn. Intr. 250, N. 1; vgl. अधिवासना.

— अनु mit acc. P. 1,4,46. 1) *Jmd nachziehen, Jmd an einen Ort folgen;* mit acc. der Person MBh. 5,664. 12,6516. 10598. R. 2,37,26. 88, 23. 25 (96,27 Gorr.). अनूषितो गुरुं भवान्, अनूषितो गुरुर्भवता, अनूषितं (impers.) त्वया P. 3,4,72, Schol. — 2) *an einen Ort ziehen, zum Aufenthaltsort wählen:* ग्रामम् P. 1,4,46, Schol. मथुरामनूप्य Vop. 5,2. भूत्यं वनम् Bhaṭṭ. 3,75. अन्ववात्सीत्तं (अण्डेशं) ईश्वरः Bhâg. P. 3,20,18. — 3) *verweilen, irgendwo zubringen* (eine Zeit): सर्वमभोजनाः सर्वे वासिष्ठा इव ज्ञातिषु । पूर्णवर्षसहस्रं तु पृथिव्यामनुवत्स्यथ ॥ R. 1,62,17. अनुवसन्नपि *längere Zeit stehend, älter werdend)* न दुष्यति (अनुवासनः) Suçr. 2,198,8. — 4) अनुवत्स्यते MBh. 3,14758 fehlerhaft für अनुवत्स्यते, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. अनुवासिन्. — *caus.* (das Kalb bei der Mutter) *belassen* TBr. 1,6,7,3.

— समनु *obliegen, befolgen:* लोनाद्दोनं तथा धर्मं प्रजा समनुवत्स्यति Harîv. 11210 nach der Lesart der neueren Ausg.; समनुपत्स्यति die ältere Ausg.

— अस्तर् *drinnen stecken* Çiç. 3,9. निश्चित्य यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणः *der nicht mitten in der Arbeit stecken bleibt* MBh. 5,994. — Vgl. असक्रिय.

— अभि *verweilen, zubringen* (eine Nacht): सुखमभ्युषितो निशाम् R. 3,17,2. — Vgl. अभिवास.

— आ 1) *verweilen, sich aufhalten, wohnen:* अपामुपस्थे विभृतो यदावसत् ṚV. 1,144,2. आवसन्कृज्ञया सार्धं काम्पिल्ये MBh. 3,2014. गृहे Bhâg. P. 3,32,1. 7,10,47 (= 15,75). *nahe oder gegenwärtig sein:* दूराच्चिद्धा वसतो अस्य कर्णा ṚV. 6,38,2. — 2) *beziehen* (einen Ort), *zum Aufenthaltsort erwählen, bewohnen;* mit acc. P. 1,4,46. स्वाङ्गीव्यं देशम् M. 7, 69. Jiǵ. 1,320. लोकानावसते प्रभान् MBh. 3,8032. कथंविधं पुरं राज्ञा स्वयमावस्तुमर्हति 12,3228. 13,5074. षष्टिं वर्षसहस्राणि दिवमावसते स च 5180. पुरीं तां सुखमावसत् Harîv. 4904. 6548. 8160. 8977 (med.). 9167. R. 1,47,17. दैवतानि च यानि त्वां (पुरि) पालयत्यावसन्ति च 2,50,2. 54,42. 105,36. Varâh. Bṛh. S. 24,7. Bhâg. P. 6,13,15. नेते गृहान् — आवसन् so v. a. *wurden keine Haushalter, gründeten kein Haus* 4,8,1. आवसतात्स कुत्रः Vop. 5,2. गुरोस्तल्पम् *das Ehebett des Lehrers besteigen* so v. a. *mit der Frau des Lehrers Ehebruch treiben* Kâṭh. Up. 5,10,2. — 3) *zubringen* (eine Nacht): निशां तां सुखमावसत् Mârk. P. 123,24. — 4) *sich begeben in, antreten:* गृहस्थाश्रमम् M. 3,2. Mârk. P. 28,15. गार्हस्थ्यम् MBh. 12,2472. fg. राज्यम् *die Regierung antreten* R. 2,12,57. 42,21. — 5) *fleischlich beiwohnen:* प्रजो गुप्तमगुप्तं वा द्वेष्यातं वर्णमावसन् M. 8,374. — 6) statt मामा वसत्ति AV. 7,79,2 vermuthen wir मया वसत्तिः आवसित Kathâs. 54,124 fehlerhaft für आवासित. — Vgl. आवसति, आवास. — *caus.* 1) *beherbergen, bei sich wohnen lassen:* विनाशकामामकृतामित्रामावासयं मृत्युमिवात्मनस्त्वाम् R. 2,12,101. Râǵa-Tar. 3,161. — 2) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen:* इदमेवंविधं (नगरं) कस्माद्देवा नावासयन्त्युत MBh. 3,12188. R. Gorr. 1,35,4. 5. यथा हि शून्यां पथिकः श्रमाध्यावसेत् (so die ed. Bomb.) पथि । तथाप्यावासयिष्या-

मि गुरुपत्न्याः कलेवरम् MBh. 13,2295. प्रेमावासिता *in der die Zuneigung ihre Wohnung aufgeschlagen hat* Spr. 3270. — 3) *Halt machen, sich lagern* (für die Nacht): इक्ष्वाकावास्यते पान्थैः Kathâs. 124,183. fg. (राज्ञः) यावासिता नातिदूरे पद्मरस्य *machten Halt* Harîv. 8021. R. Gorr. 2,107,19. Kathâs. 47,2. 3. 54,134 (fälschlich यावसित gedr.). 123,268.

— अध्या 1) *beziehen, zum Aufenthaltsort wählen, bewohnen;* mit acc. MBh. 1,3512. 3,11215. 4,2278. 12,11986. यदा हि प्रून्यो पथिकः सभामध्यावसेत् (so die ed. Bomb.) पथि 13,2298. 5820. R. 1,70,2. R. Gorr. 1,35,44. बद्दृयमध्यावसन्तं मा मा रोत्सीः Bhatt. 8,80. *seinen Aufenthalt haben in, wohnen in;* mit loc. MBh. 13,5279. — 2) *sich begeben in, antreten, obliegen:* गार्हस्थ्यमध्यावसते MBh. 12,2339.

— उदा *hinaufziehen in,* zu: वनवासम् MBh. 13,205. उपावसत् st. उदावसत् ed. Bomb. — caus. *hinaufbringen, hinaufschaffen:* सर्पं तमुदावासयत् Bhâg. P. 10,16,1.

— उपा (aus metr. Rücksichten statt उप) *fasten* Weber, Kṛshṇaj. 228.

— समा 1) *Halt machen, sich lagern* (für die Nacht): तरोरस्तले Kathâs. 25,87. मागम् 28,120. 56,390. 57,73. 109,52. — 2) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen, bewohnen:* ग्राममम् R. 2,54,41. पुरम् Kâm. Nitis. 4,57 (Text und Comm. समावशेत्). Bhâg. P. 3,22,22. ब्रह्मकुलम् 5,14, 30. — caus. *Halt machen, sich lagern:* मलयाधित्यकायां समावासितो वर्तते चित्रवर्णो नाम राजा Hit. ed Jonas. 2147. Journ. of the Am. Or. S. 7,32,8. मलयपर्वतोपत्यकायां समावासितकटको (v. l. समावासितो) वर्तते Hit. 97,15. 39,8 (hier dieselbe v. l.).

— उद् caus. 1) act. und med. *aus seiner Stelle entfernen;* z. B. das Havis, das Feuer vom Altar (mit oder ohne अग्निम्) TS. 1,5,2,1. 2,2, 5,5. 6,2,5. TBr. 2,1,2,4. 2,1. 2,2. Çat. Br. 1,2,2,6. 2,2. 2,3,2,4. 11, 5,2,2. Kâty. Çr. 25,2,3. Ait. Br. 5,26. Kâty. Çr. 3,4,22. 4,2,23. Âçv. Gṛhj. 1,10,12. Kauç. 2. 61. 87. Kull. zu M. 11,41. संयावमनुद्हास्य Bhâg. P. 18,29,5. देवम् 3,16,43. (बर्हीन्द्रम्) हृदात्प्रसक्ष्योद्हास्य 10,26,12. Pâṇ. Kâr. 3,13,3. Weber, Kṛshṇaj. 307. fg. mit loc. des Ortes wohin: पृथिव्यां हृदयशूलम् TS. 6,4,4,5. स्वात्त्यमाज्यम् Çat. Br. 2,5,2,11. देवं स्वे धामि Bhâg. P. 6,19,19. 11,3,34. 27,47. Pâṇ. Kâr. 3,9,3. 11,27. 15,45. शिरः *abtrennen* Çat. Br. 12,7,2,3. *ausroden,* Bäume Âçv. Gṛhj. 2,7, 5. *fortgehen heissen:* पितॄन् Sâṅkh. K. 236,b,4. — 2) *verwüsten:* रक्षोद्हासितां नगरीम् Harîv. 9266. सदेवतगणाँल्लोकानुद्हासयति दर्पितः 3065. सर्वं देशमुद्हास्य Pâṇ. Kâr. 47.6. — Vgl. उद्हासन, उद्हास्य.

— पर्युद् caus. = उद् 1) AV. 12,3,35.

— समुद् caus. dass. Çat. Br. 2,6,2,7.

— उप 1) *verweilen bei* (acc.), *warten, abwarten:* देवासुरा यज्ञमुपाधमन्नस्मभ्यमनुवक्ष्यत्यस्मभ्यमिति Ait. Br. 2,15. याग्नीध्रे 36. गृहेषु Çat. Br. 1,1,4,7. यार्शिता एवाद्योपवसाम। कस्य वाद्देम्। कस्य वा श्वो भवितेति *wir wollen abwarten, wem es heute oder morgen gehören wird,* TBr. 1, 6,2,1. उपास्मिं ह्वो यक्ष्यमाणो देवता वसति TS. 1,6,2,2. यज्ञमेवारभ्य गृहीत्वोपवसति 6,4,2,1. Çat. Br. 3,6,4,26. यत्ते वयं पश्यन्त उपवसाव *dessen Erscheinen sehend wir bei dir bleiben wollen* 2,1,4,2. — 2) (*mit Essen zuwarten*) *sich enthalten, fasten* P. 1,4,48, Vârtt. mit acc. der Speise oder der Zeitdauer: यद्ह्याव्युपवसति TS. 1,6,2,3. पैर्णमासेन Çat. Br. 1,6,2,21. fgg. तद्दः 11,1,2,4. त्रिरात्रम् Çâṅkh. Gṛhj. 5,1. 10. पैर्णमासीम् Kâty. Çr. 2,1,1. Âçv. Gṛhj. 1,9,2. 13,2. त्रिरात्रोपोषितं Gobh. 4,8,12. Kauç. 94. 140. उपवत्स्यदुक्त 1. 8. med. Çâṅkh. Gṛhj. 2, 12. — उपवसेदिनम् M. 2,220. 5,20. 11,157. 213. 239. Jâṅ. 3,292. MBh. 13,136. R. Gorr. 1,45,1. Varâh. Bṛh. S. 105,8. Bhâg. P. 7,12,5. Weber, Kṛshṇaj. 226. त्रिरात्रमुपोष्य Jâṅ. 3,264. MBh. 3,4060. 5092. Spr. 4494. Varâh. Bṛh. S. 26, 14. Kathâs. 93,82. Bhâg. P. 4,9,71. 8,9,14. उपोषित *gefastet habend, nüchtern* Jâṅ. 2,97. MBh. 13,2259. 2264. 2267. 2276. Harîv. 7602. Râgat. 16,39. Kathâs. 33,186. 42,173. Pañkat. 199,12. ततो रात्रोपोषित Kathâs. 46,107. तं द्वादशाक्तमुपोषितम् 114,18. 115, 141. त्रिरात्रोपोषित Jâṅ. 3,302. MBh. 3,4086. Kathâs. 19,6. 21,142. Râja-Tar. 4,100. उपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् Râgat. 2,19. mit pass. Bed. *in Fasten zugebracht:* तिथि Weber, Kṛshṇaj. 222. n. *das Fasten* Spr. 4455. Mâlav. P. 16,61. उपोष्य *in Fasten zubringen* Weber, Kṛshṇaj. 227. fg. — 3) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen;* mit acc. P. 1,4,48. यामम् Schol. विकुण्ठम् Voc. 3,2. — 4) *sich zu Jmd* (acc.) *in die Lehre begeben* MBh. 3,2177. — 5) *antreten, sich widmen, obliegen:* तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्ति Mund. Up. 1,2,11. वनवासमुपावसत् MBh. 13,205 nach der Lesart der ed. Bomb. उदावसत् ed. Calc. किमिच्छकमुपोषिता Mâlav. P. 126,17. 19. — 6) उपवसित Âçv. Gṛhj. 1,14,7 bei Sr. fehlerhaft für उपावसित (von सा mit उपा), wie eine von uns verglichene Hdschr. liest; vgl. Çat. Br. 3,9,2,8. Andere schreiben ganz falsch उपवसथा, die Ausg. der Bibl. ind. उपवसिथा. — Vgl. उपवसथ, उपवस्तृ, उपवास, उपवासिन्, उपोषण fg. — caus. 1) *warten —, eine Zeit zubringen lassen* TS. 6,3,2,3. — 2) *fasten lassen* Pâr. Gṛhj. 1,14. R. 2,5,4 (4,4 Gorr.). अतिथिं नोपवासयेत् MBh. 12,7046 = 13,7576.

— समुप 1) *fasten:* समुपोषित *gefastet habend* MBh. 13,2273. Varâh. Bṛh. S. 105,16. Bhâg. P. 9,4,30. — 2) *antreten, obliegen:* तद्व्रतं समुपोषिता Mâlav. P. 126,9.

— नि 1) *verweilen, sich aufhalten, seinen Standort haben* (von Menschen und Thieren und bisweilen auch von Sachen), *wohnen* Nir. 10, 12. 21 (*ruhen* im Gegens. zur Bewegung). एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः M. 3,102. MBh. 3,1454. 4,276. यत्र — मासानष्टौ न्यवसत्सुखम् R. 3,15,26. केनापदेशेन सकृदप्याश्रमे निवसामः Çâk. 27,2, v. l. शूद्रस्तु यस्मिन्कस्मिन्वा देशे निवसेत् M. 2,24. 4,61. 5,43. 6,4. 11,78. Jâṅ. 2,184. Bhâg. 12,2. MBh. 1,5367. fg. 3,2022. fg. 3641. 13243. 16917. 4,148. 5,7539. 12,6316. Harîv. 3948. R. 1,9,70. 17,41. 48,30. 32. 2,27, 12. 16. 21. 98,30. 3,42,5. Spr. 1461. 3868. Çâk. 26. Varâh. Bṛh. S. 53, 84. Kathâs. 12,194. 16,8. 18,62. 22,151. 23,43. 26,62. Râja-Tar. 5,398. Prab. 25,12. 107,12. Daçak. 69,8. Bhâg. P. 4,8,43. 5,18,29. 18,20,22. शशकश्चन्द्रमण्डले Pañkat. 160,22. तत्र रात्रौ निवसन्ति पक्षिणः Hit. 9,4. 14,16. 18. 17,14. 22. 38,3. त्वयि ये च निवत्स्यन्ति देवगन्धर्वदानवाः R. 4, 43,45. इत्थं क्रियासु निवसन्त्यपि यासु तासु पुंसो स्त्रियः Kathâs. 27,205. निवसन्नरदारूणि लङ्घो वह्निः Spr. 169. इत्यलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः AK. 1,1,2,25. दूरे मार्गान्निवसति (बालमृगः) Spr. 1223. तत्रास्वस्यापि मे नित्यं हृदये त्वं निवत्स्यसि R. Gorr. 2,28,32. — med. MBh. 1,6435. 3,1453. 11430. 13702. 4,287. 324. 7,2400. R. 2,44,12. Bhâg. P. 8,24,18. Hierher könnte man ziehen (mit metrischer Dehnung, die jedoch vom Padap. nicht angenommen wird): न ते षडेवः प्र-

दिवो नि वासते *verweilt, hält aus* ṚV. 10,37,3. — 2) *bewohnen, innehaben:* स गतः स्वर्निवासं तं निवसन्मुदितः सुखी MBu. 1,3587. यमूनि पञ्च स्थानानि कलिः — न्यवसत् Bhāg. P. 1,17,40. — 3) *bewohnen* (geschlechtlich): रोहिणीं निवसति सोमः MBu. 9,2022. — 4) *sich dauernd in einer Lage befinden, sich unterziehen:* यज्ञातवासं न्यवसद्राजास्तस्य निवेशने MBu. 3,2653. कथं वनर्क्षे वनवासमात्मने निवत्स्यते (v. l. सक्ष्यते) क्लेशमिमम् 16699. — 5) न मे वैरं निवसते Harīv. 6049 fehlerhaft für न मे वैरं प्रवसति, wie die neuere Ausg. hat. — Vgl. निवसति fgg., निवस्तव्य. 1. निवास, निवासिन्. — caus. 1) *verweilen lassen, beherbergen, aufnehmen* (in seinem Hause): (तान्) न्यवासयत्स्वगेहेषु Bhāg. P. 10,45,16. 71,44. 75,28. पर्यङ्के *setzen auf* 81,17. — 2) *bewohnt machen, bevölkern:* संनिवासान् MBu. 12, 4366. — 3) *zur Wohnstatt wählen, bewohnen:* निवासयामास तदा लङ्काम् R. 7,3,21. — Vgl. 1. निवासन.

— अधिनि *zur Wohnstatt wählen:* सुरनदीम् Spr. 1001.

— सं *zusammen wohnen, — leben:* पादयोः संनिवसति Spr. 4874. ततः सतां संनिवसेत्समागमे 5116. *wohnen:* यस्मिन्संनिवसेत्पुरे MBu. 14, 561. R. in L.A. (III) 64,18 (in den drei Ausgg., die uns zu Gebote stehen, न न्यवसत्, nicht संन्यवसत्).

— निस् *ausleben, zu Ende leben:* वासमिमं निरूप्य MBu. 3,913. वने वासमिमं निरूप्य (निरूध्य ed. Calc.) 962 (nach der Lesart der ed. Bomb.). कृच्छ्रं वासम् 5,646. दुर्गवासम् 14,749. तस्मिन्गुरौ गुरुवासं निरूप्य 14, 749. — निर्वत्स्यामि 4,24 fehlerhaft für निर्वत्स्यामि, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निर्वास. — caus. 1) *aus seinem Wohnorte entfernen, vertreiben, verbannen:* पुरात् M. 9, 235. राष्ट्रात् MBu. 2,2644. R. 1, 39, 22 (40,20 Gorr.). राष्ट्राद्धनवासाय 2,21,4. वनम् 39,11. R. Gorr. 2,3,28. 18, 6. 81,18. 3,79,47. Spr. 2186. Rāgn. 14,67. Uttarān. 67,10 (112,6). Kathās. 4,68. 10,41. 23,25. 24,76. fg. 39,56. 232. 51,72. 57,118. Rāǵa-Tar. 1,115. 344. 3,288. 330. 6,242 (निर्वासिता देशात् zu schreiben). Daśak. 82, 14. Bhāg. P. 3,1,15. 4,8,65. *entlassen:* मुखनिर्वासितो वायुः 5,16,25. देवी निर्वास्यते कदा नु 3,31,17. — 2) *sich vertreiben, zubringen, verleben:* मृगयाविहारनिर्वासितसकलदिवस Z. d. d. m. G. 14, 574, 16. — Vgl. 1. निर्वासन, निर्वासनीय (auch Daśak. 82,12), निर्वास्य.

— परि *verweilen:* द्वादशरात्रं परिवसत्युषावदधिं विधत् Kāṭy. Ça. 22, 1,21. चतुर्दश हि वर्षाणि पर्युप्य विपिने वने R. Gorr. 2, 53, 18. 3, 15, 25. तया परिवसन्नेव राघवः सह सीतया *lebend* 29. एतान्यथावत्कृतप्रायश्चित्तानपि संसर्गितया न परिवसेत् *so v. a. er verkehre nicht mit diesen* Kull. zu M. 11,190. भर्ता रात्रकुले कार्यवशात्पर्युषितः *übernachtete* Pāraśar. 40, 18 (ed. orn. 30,13). गङ्गापर्युषित *an der Gaṅgā die Nacht zubringend* Mālav. P. 9,2. पर्युषित *über Nacht gelegen, — gestanden, gestrig,* überh. *abgestanden, alt, verdorben;* von Speisen und anderen Stoffen Gorr. 3, 5,4. M. 4,211. 5,24. Jāǵñ. 1,167. 169. Bhāg. 17,10. MBu. 12,1322. 13, 3048. Suça. 1,63,8. 81,6. 174,8. 191,9. 2,247,13. Verz. d. Oxf. H. 281, b, 43. Spr. 2883. Mālav. P. 34, 37. 35,1. पर्युष्टा वनमाला Bhāg. P. 11, 6, 11. दशरात्रपर्युषित *zehn Tage gestanden, — alt* Suça. 1,174,19. निशा° 2,414,14. 437,1. रात्रि° 1,158,18. रात्रौ मेमूत्रपर्युषितम् *über Nacht in Kuhharn gelegen* 2,72,9. पर्युषितं वाक्यम् *ein alt gewordenes* so v. a. *nicht zur Zeit gelöstes Wort* (= प्रतिज्ञातकालातिलङ्घिन् Nīlak.) MBu. 3,2665. अपर्युषितपाप *dessen Sünden nicht über Nacht bestehen* d. i. *alsbald gesühnt sind* (= निःशेषित Nīlak.) 1,6156. — Vgl. परिवसथ, परिवास. — caus. *über Nacht stehen lassen* Āçv. Gṛhj. 2,8,4.

— प्र 1) *(für die Nacht seine Wohnung verlassen) verreisen, sich entfernen:* प्र प्रेवासमेव वसतः ṚV. 8,29,8. दीक्षितविमितात् TS. 6,2,5,5. TBr. 3,11,8,2. गृहेभ्यः Çat. Br. 11,3,2,5. MBh. 4,129. संवत्सरं प्रोष्य Çat. Br. 14,9,2,6. पितरं प्रोषुषमागतम् 12,5,2,8. 2,4,4,6. VS. 3,42. Ait. Br. 7,2,12. भ्रात्रा प्रवसति Pāraśar. Br. 17,1,2. प्रवत्स्यन् Āçv. Ça. 2,5,1. वर्षगणं प्रावास Kaṭhop. Up. 4,4,5. प्रवासं चक्रे 10,2. अप्रोषिवान्गृहपतिः Çāṅkh. Ça. 8,24,3. प्रोष्यागच्छताम् ved. Cit. bei Mallin. zu Rāgh. 1,49. M. 9, 74. MBu. 3, 13084. 16811. Harīv. 8931. R. 7,72,12. Spr. 4816. Rāgn. 11,4. Bhāg. P. 1, 11, 32. प्रोषित von *Hause abwesend, in der Fremde weilend, verreist:* प्रोषितश्चेत्प्रेयात् Kāṭy. Ça. 25,8,9. 3,4,39 (स°). M. 9,75. fg. Jāǵñ. 1,84. MBu. 1,750. R. 2,72,2. 49. 76,6. 103,38 (111, 43 Gorr.). 106,7. R. Gorr. 2,17,32. Mṛicch. 84,2. Ṛt. 6,9. Megh. 97. Vaṇis. Bṛh. S. 78,6. 90,14. Kathās. 16,165. Kaṭh. Up. Einl. 2,6. Daçak. 59,9. Bhāg. P. 8,16,8. पतङ्गे प्रवसति *wenn die Sonne vom Himmel verschwindet, nicht mehr scheint* Vaṇis. Bṛh. S. 27,2. प्रोषित *untergegangen (Gestirn)*: इन्दुज 7,17. ने मे वैरं प्रवसति (so die neuere Ausg.) एकाह्नमपि *verschwinden, aufhören* Harīv. 6039. प्रोषितपत्रलेख *verschwunden, verwischt* Rāgh. 6,72. — 2) *verweilen, sich aufhalten:* प्रवत्स्यति सुखं वने R. 2,36,8. पत्र नित्यं प्रवसति (प्रभवति ed. Bomb.) स्वयं देवः प्रजापतिः MBh. 6,466. यत्र वरे पतिणी प्रवसति Gaṇḍav. zu Siṃhāsan. 4. — 3) = caus. *verbannen:* रामं वनवासे प्रवत्स्यति R. 2,41,6. — Vgl. प्रवसथ fg., °वस्तव्य, °वास, °वासिन्, अप्रोषिवंस्. — caus. *etwa entfernen* ṚV. 3,7,3. *Jmd aus seinem Wohnort vertreiben, verbannen* M. 8,123. 284. 352. 9,289. 10,96. Jāǵñ. 2,294. MBh. 1,5694. 6,4089. Harīv. 10311. R. 1, 70,28. 2,49,6. Kathās. 30,203. 56,306. 60,22. Rāǵa-Tar. 6,41. — सीर्घयात्राप्रवासितः Kathās. 73,232 fehlerhaft für °प्रवासतः. — Vgl. प्रवासन 1).

— अपप्र s. अपप्रोषित.

— विप्र *verreisen, in die Fremde ziehen, in der Fremde weilen:* विप्रोष्य *nach einer Reise* Gorr. 2,8,21. Çiṅkh. Gṛhj. 2,16. M. 2,132.217. स तत्र (व्रनपदप्रदेशे) बहूनि वर्षाणि विप्रवसेत् Saṃvn. P. 4,8,6. वनं विप्रोषिते मयि R. Gorr. 2,26,27. 32,38. चिरविप्रोषित *lange in der Fremde weilend, — gewesen habend* 111,43 (103,38 Schl.). MBh. 3,2712. Harīv. 4779. Kathās. 64,114. राज्यविप्रोषित so v. a. *ausserhalb des Reichs in der Verbannung lebend* MBh. 4,7. विप्रोषितकुमारं राज्यम् Rāgh. 12,11. भिक्षुभिर्विप्रवसिते *nachdem die Bettler fortgezogen waren* Bhāg. P. 1,6, 2. 3. — caus. *verbannen:* राष्ट्रात् M. 8, 213. Jāǵñ. 2,187. 270. MBh. 3, 1404. 5893. *verscheuchen, entfernen:* विप्रवासितवत्सम्प R. 2,74,30.

— प्रति *seinen Wohnsitz haben:* समुद्रकुक्षिमाश्रित्य प्रतिवसत्युत MBh. 3,12063. देवानामुपरिष्टाच्च गावः प्रतिवसन्ति वै 13,3805. Megh. 121,1. Pāṇ. 83,11. Pāraśar. 26,12. 32,28. 43,1. 53,18. 62,21. 77,9. Hit. 17, 32, v. l. 18,3. 26,13. 27,11. 59,14. 79,7. 110,2. Z. d. d. m. G. 14, 573, 3. 19. fg. Verz. d. Oxf. H. 153, a, 7. Vet. 8,17. fg. Daṇḍ. 77,11. Vedānt. (Allah.) No. 102. यत्रेमाः प्रजाः सर्वाः सुखं प्रतिवसेयुरिह MBh. 3, 921. R. 3,53,23. — Vgl. प्रतिवसथ, °वासिन्. — caus. *beherbergen:* एतान्गृहे न प्रतिवासयेत Spr. (II) 5. *anständig machen:* प्रति मर्तो अवास-

यो दमूना: RV. 3,1,17.

— वि 1) *sich auseinander, sich fortbegeben:* स्वर्गं पुराध्यवात्सीच्चत् Bhāg. P. 3, 2, 16. देव्ही इच्छन्तिनो विवसितुम् 31, 17. ब्रह्मचर्यम् *in die Lehre gehen* Kāṭhān. Up. 4, 4, 1. व्युषित *verreist, abwesend* Bhāg. P. 4, 28, 20. 6, 11, 26. — 2) *zubringen, verleben:* अरण्ये ते विवत्स्यन्ति चतुर्दश समाः R. 2, 23, 33. 89, 1. 92, 1. तपस्या सक्तिं व्युष्टिं शाश्वतीः समाः MBh. 1, 6628. तां व्युषितो रात्रिम् 3, 3009. अन्यथा व्युषिताः (सुषिताः ed. Bomb.) पूर्वम् 12, 4124. सा व्युष्टा रजनीं तत्र पितुर्वेश्मनि 3, 2721. — 3) *bewohnen:* इक्ष्वाकुव्युषिता R. 6, 112, 30. — व्युषित = उषित H. an. 3, 353. Med. t. 96. व्युष्ट = उषित Taik. 3, 3, 102. Med. t. 38. = पर्युषित H. an. 2, 99. — 4) Āçv. Çr. 11, 3, 1 ist st. वत्स्यत्तः zu lesen वर्त्स्यत्तः gegen die Ausg. und die Hdschrr. — Vgl. विवास. — caus. 1) *zum Hause —, zum Lande hinausjagen, verbannen* M. 8, 138. Jiñ. 1, 338. 2, 82. MBh. 1, 3675 (med.). 5917. पुत्रान्विवासयतः pass. 2, 2610. 3, 8895. 5, 3440. R. 1, 1, 23. 2, 13, 6. 24, 4. 33, 10. 36, 28. 43, 3. 9. 48, 26. 58, 22. 61, 23. 64, 4. R. Gorr. 1, 1, 26. 2, 20, 27. 33, 11. Daçak. 2, 21. Kathās. 4, 84. Bhāg. P. 9, 11, 13. Bhaṭṭ. 4, 35. *fortsenden, entsenden* MBh. 3, 8277. — 2) (eine Zeit) *mit Erzählungen —, mit Gesprächen zubringen:* रात्रिम् P. 3, 1, 26, Vārtt. 5, Schol. — Vgl. विवासन, विवास्य.

— निर्वि *zubringen, verleben:* द्वादशेमानि वर्षाणि वने निर्व्युषितानि नः MBh. 5, 3424.

— सम् 1) act. und med. *sich beisammen aufhalten, zusammen wohnen, mit Jmd verkehren:* देवा यमीवास्ये संवसन्तः AV. 7, 79, 1. 80, 1. संवसानाः स्वसारः RV. 4, 6, 8. 9, 26, 4. आभिः प्रजाभिरिह संवसेय TBr. 1, 2, 8, 21. Çat. Br. 13, 2, 6, 16. 13, 8, 4, 3. Liṭ. 4, 4, 22. Nir. 4, 27. संवत्सरं संवत्स्यथ Praçnop. 1, 2. M. 9, 77. तत्रं संवस्तुमर्हसि so v. a. *zusammenkommen* R. 5, 7, 27. तान्वशीकृत्य संवसेत् Kām. Nītis. 12, 40. Bhāg. P. 3, 2, 8. 6, 4, 24. न संवसेत्पतितैः M. 4, 79. 246. Jiñ. 3, 210. MBh. 12, 470. R. 5, 88, 2. Bhāg. P. 9, 14, 40. न च तैः सह संवसेत् Jiñ. 3, 13. 227. MBh. 4, 109. R. 3, 30, 13. Spr. 1037, v. l. mit acc. der Person M. 11, 190. Jiñ. 3, 299. — 2) *sich aufhalten, seinen Wohnsitz haben, leben:* तितौ च ये चाधस्तात्संवसन्ते MBh. 12, 11809. तथा संवसतस्तस्य मुनीनामाश्रमे सुखम् R. 3, 15, 28. स्वयंभौ नैव संवसेत् Verz. d. Oxf. H. 269, a, 33. — 3) *zubringen (eine Zeit):* तां समुष्य निशां कृत्स्नां प्रभाते प्रत्यबुध्यत R. 3, 12, 1. वार्षिकीं समुवास 7, 51, 2. क्षणमिव पुलिने यमस्वसुस्तां समुषितः — निशाम् Bhāg. P. 3, 4, 27. — Vgl. संवसथ u. s. w. — caus. 1) *zusammen wohnen lassen, zusammenbringen:* सोमम् मे गोभिर्वासयामसि RV. 9, 8, 5. प्रजा मयि संवासय । यशोऽहं पशुभिः सह TBr. 1, 2, 1, 13. Liṭ. 3, 6, 1. — 2) *beherbergen* MBh. 13, 7418.

— अधिसम् *sich beisammen aufhalten, zusammen wohnen:* तस्यां देवा अधि संवसन्त उत्तमे नाके इह मादयध्वम् TS. 3, 5, 4, 1 = TBr. 3, 1, 4, 12.

— अभिसम् *sich vereinigen um:* अग्निं गृहपतिमभि संवसानाः TBr. 3, 7, 4, 4. स कृत्तिकाभिरभिसंवसानः 1, 4, 1. Liṭ. 2, 9, 1.

6. वस् (wohl = 3. वस्) etwa *Wohnplatz* oder *Ansässiger:* वसौ (= वसतौ प्राणिनाम् Sāy.) राज्ञो वसतिं ज्ञानाम् *der Häuser (Angesessenen) Herrscher, der Leute Heimath* RV. 5, 2, 6. Es könnte auch वसौ angenommen werden.

7. वस् (वस्ते), वसिष, वाचसे (वक्षे Padap.), वस्तोस् *den Angriff oder Lauf richten gegen, losstürmen auf:* मध्ये वसिष सुविनग्नोर्वोः (nämlich दासस्य) *stoße mitten zwischen seine Schenkel* RV. 3, 59, 10. यावभिर्हि वावसानस्य नर्तथन् *indem er den Schleuderstein des Angreifenden oder Zielenden schnellte* 1, 51, 3. रायः सूनो सहसो वावसाना अतिं ससेम वृजनं नाँहः *dem Erwerb nachjagend* 8, 11, 6. इतो यविष्ठ्यगुं तूर्वाणां सिन्धो न दमे वयोसि वस्तोः *wehre dem gefrässigen Feuer, dass es nicht wie ein Löwe auf die Werke* (d. h. Geräthe, Besitzthümer) *im Hause sich stürze* 1, 174, 3.

— अनु *den Lauf richten nach:* सव्यामनुं स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति *er eilt nach der linken Seite* (wo der Anrufende sich denkt): *unsern Schmaus verschmäht er nicht* RV. 8, 4, 8.

8. वस्, वासयति (क्षेत्रच्छेदापकरणेषु, क्षेत्रन v. l. st. क्षेत्रः अवकरण und उपकरण v. l. st. अपकरण; वधे Vop.) Dhātup. 33, 70.

— उद् vgl. उद्वासन 2).

— नि, निवासित *um's Leben gebracht* Spr. 2440, v. l.

— निस् vgl. 1. निर्वासन 2).

— परि *rings abschneiden, ausschneiden:* यावदलोहितं तावत्परिवासय Āpast. Bn. 2, 16. औदुम्बरीम् Çat. Br. 3, 6, 3, 6. यूपम् 4, 17. वयाम् 9, 2, 19. Kāṭy. Çr. 6, 1, 23. 6, 13. मूलतः शाखाम् Manoh. zu VS. 1, 17. Schol. zu Kāṭy. Çr. 1, 3, 23. — Vgl. परिवासन.

— प्र vgl. प्रवासन 2).

9. वस्, वँस्यति (स्तम्भे) Dhātup. 26, 105.

वस nom. act. von 5. वस् in दुर्वस.

वसतिं (von 5. वस्) f. Uṇādis. 4, 60. 1) *das Haltmachen für die Nacht, Uebernachten; das Verweilen, Aufenthalt;* = वास, अवस्थान Taik. 3, 3, 102. H. an. 3, 293. Med. t. 151. न कंचन वसतौ प्रत्याचक्षीत Taitt. Up. 2, 10, 1. Çat. Br. 14, 9, 4, 5. तिस्रः — मार्गे वसतीरुषित्वा *drei Mal übernachtend* Rāgat. 7, 20. तस्य मार्गवशादेका बभूव वसतिर्यतः 15, 11. तवेह वसतिः कुतः *wie kannst du hier die Nacht über bleiben?* Sin. D. 332, 10. ग्रामणीर्ब्रजतो ब्रजस्य वसतिर्ग्रामे निषिद्धा पथा Spr. 1335. शर्वरीम् — तत्राश्रमे । उषिताः श्लोकवसतिम् (उषिता स्मो क्व ° ed. Bomb.) R. 2, 54, 36. निवेशनानां क्षेत्राणां वसतीनां च दातारः MBh. 13, 1672. एकान्ते *das Wohnen an einsamem Orte* Spr. 2279. रम्यं कूर्म्यतलं न किं वसतये 2589. Kathās. 115, 76. MBh. 3, 13282. अरण्ये 8, 4252. पितृमन्दिरे Spr. 5373. अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाप्याश्रमे Çiç. 47. आवासे नैकस्मिन्वसतिश्चिरम् Mālav. P. 28, 29. गर्भेषु Spr. 2734. चरिष्यामि — वनेषु वसतीः पुनः so v. a. *wohnen, sich aufhalten, leben* MBh. 3, 2044. यद्या राज्यात्परिभ्रष्टो वसामि वसतीरिमाः 5, 2020. 3, 455. त्वमित्वाज्ञातवसतिं चन्द्रो वसति वार्षिकीम् Harīv. 3371. उवास दुःखवसतिम् *ein Leben voller Leiden leben* MBh. 3, 16125. दुःखवसतिमिमां प्राप्तास्मि शाश्वतीम् 5, 7379. स पद्मे पद्मनाभस्य रोचयामास वसतिम् Harīv. 2927. गोलोक° adj. Pārāç. 4, 8, 22. तत्र स्कन्दे नियतवसतिम् Manu. 44. वसतिं कृ *sich niederlassen:* चक्रे वसतिं रामगिर्याश्रमेषु 1. Rājat. 2, 166. कृतवसतिरमुष्मिन्नेव तस्थौ पुरे सः Kathās. 29, 194. कृतवसतयो यत्र धनिनः *wo reiche Leute wohnen* Spr. 770. Pañcat. 122, 16. यस्यास्तोये कृतवसतयः — हंसाः Megh. 74. वसतिं यद् dass. Kathās. 10, 1 (für die Nacht). 24, 107. वसतिं बन्ध् dass. Rājat. 2, 97. — 2) *Nest* RV. 1, 25, 4. 33, 2. उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन् 124, 12. 8, 64, 6. 3, 3. विर्योनौ वसताविव 9, 62, 15. 18,

97,5. 127,1. AV. 6,83,1. — 3) *Aufenthaltsort, Wohnung, Haus, Behausung* AK. 3,4,14,69. H. 991. H. an. Med. ṚV. 1,31,15. 5,2,6. VS. 18,15. ब्राह्मणो वसतये नार्पयेद्ध्यात् TBr. 3,7,2,2. 2,3,5,4 (यावसति vom Comm. angenommen). Çat. Br. 6,8,2,12. 14. 13,4,2,17. Vikr. 137. Spr. 3684. यतेश्चरणाम् Megh. 7. रमण° 38. Kathis. 16,30. वसतिं निशाम्। प्रविवेश 98. 24,110. 28,139. 38,157. 45,180. 49,226. 53,72. 58,12. 79,21. 85. 86,103. Rāǵa-Tar. 3,331. 4,129. 431. 5,481. 6,237. Prab. 80,7. Naish. 4,29. जीवितेश° Ragh. 11,20. भुजंगमानाम् 6,27. Rāǵa-Tar. 1,203. Verz. d. Oxf. H. 38,b, No. 93. *Niederlassung* Mahāv. P. 49,17. fg. *ein Gaina-Kloster* Hall. 5,21. *Behausung* so v. a. *eine Stätte von, — für:* वसुसंपदाम् Kumāras. 6,37. सवज्ञाविक्लमित° Spr. 711, v. l. घर्मक° Kathis. 67,37. तच्चङ्का° Rāǵa-Tar. 4,93. शौर्यशृङ्गार° 5,233. Dhūrtas. 73,16. 83,2. — 4) *Nacht* AK. H. 142. H. an. Med. Hall. 1,108. न शेते वसतीरमर्षात् MBh. 3,14752. 13,804. तिसृणां (so die ed. Bomb.) वसतीनां हि स्थानं परमदुःखम् 3,16718. — Vgl. गर्भ°, दुर्वसति, पितृ°, प्रति°, रात्र°, सत्र°, सद्°.

वसतिद्रुम m. *ein Baum, unter dem man auf der Reise zu übernachten pflegt*, Ragh. 12,14.

वसतीवरी (von वसति) adj. pl. °र्यस् nämlich आपस् heisst *das am Vorabend des Soma-Opfers aus fliessendem geschöpfte Wasser, übernächtiges Wasser* Ind. St. 10,368. Âśv. Br. 2,20. TS. 5,4,2,1. Çat. Br. 3,6,4,26. 9,2,3. 16. 3,12. 4,25. Kāty. Çr. 8,9,7. 17. 9,3,12. 15. Lāṭy. 1,9,8. 3,4,4. Âçv. Çr. 4,12,8.

1. वसन (von 3. वस्) m. n. Sidd. K. 249,a,10. 1) n. *Gewand, Kleid; Tuch, Zeug* AK. 2,6,2,17. H. 660. = वस्त्र und क्षौम an. 3,410. Med. n. 121. नवो मातृभ्यो वसना जनयति ṚV. 1,95,7. Âçv. Çr. 4,4,6. तस्योरोर्वसनमपोच्छाद्य 5,6,10. Lāṭy. 2,6,1. 8,23. घाविक 8,6,20. घस्रत 9,8,4. Kauç. 54. शुचि Gobh. 2,8,2. तोमशाणाकार्पासोर्णा 10,5. कृष्ण° Kauç. 31. 83. Nir. 8,9. Kaṭh. Up. 3,3,5. Kaush. Up. 2,15. M. 2,174. वसनस्य दशा 3,4. जीर्ण 10,125. Sūçr. 1,168,14. MBh. 1,3104. 5,3332. R. 3,55, 14. 5,19,10. 36,37. Megh. 42. Vikr. 115. दिशो ऽपि वसनम् Spr. 1339. 4702. वसनं च वल्कलम् 2727. शीते ऽतीते वसनम् 2969. 2045. 3322. 4462. 4795. Varāh. Bṛ. S. 52,3. 104,27. Gīt. 1,12. Verz. d. Oxf. H. 103,b,24. पीत° adj. Bhāg. P. 10,16,9. कोशकार° Varāh. Bṛ. S. 27 (25), 21. विराग° MBh. 2,824. नानाविराग° R. 4,33,28. कुचयुग्मे विस्रस्तवसने Kathās. 55,119. मलिन° (उत्सङ्ग) Megh. 84. गले बद्ध्वा च वसनम् Pañcat. 1,8,14. du. *Ober- und Untergewand* R. 2,37,3. 39,6. 55,17. Çiç. 180. एक° adj. MBh. 1,5078. 3,2889. प्रावार° adj. MBh. 2,2071. चीर° adj. Harīv. 10248. R. 2,32,64. 75,12. 101,21. R. Gorr. 2,37,14. 81,18. 99,14. 4,1,3. Kathās. 4,69. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 1,5078. 3,2889. 7,896. 13,3865. R. Gorr. 1,65,7. 5,10,1. 13,35. 22,30. 34,15. Kām. Nītis. 7,49. AK. 2,6,2,17. H. 331. Kathās. 38,124. Pañcat. 3,7,37. उर्वी समुद्रवसना (v. l. °रमना) *meerumkleidet* Çiç. 68. विकल्प° adj. *gehüllt in* so v. a. (einer Lehre) *anhängend* Bhāg. P. 1,17,19. वसन n. und वसना f. = स्त्रोकटीभूषण Cardar. im ÇKDa. — 2) n. *Belagerung* Ind. St. 10, 165. 198. — Vgl. घर्म°, नील°, भद्र°, मुक्त°, वि°, सु° und दीलित° unter दीलित.

2. वसन (von 3. वस्) n. *das Verweilen, Aufenthalt, das Wohnen;* = निवास Cardar. im ÇKDa. घरण° MBh. 5,1680.

वसनमय (von 1. वसन) adj. (f. ई) *aus einem Stücke Zeug bestehend:* रशना Lāṭy. 8,11,23.

वसनवत् (wie oben) adj. *bekleidet:* उपेत्य वसनवतः स्वाकाराताभिः Gobh. 4,9,6.

वसनार्ण (1. वसन + घ्रण) n. P. 6,1,89, Vārtt. 6. Vop. 2,9.

वसनार्णव adj. (f. आ) *meerumkleidet:* मक्षो R. 7,11,16; vgl. समुद्रवसना unter 1. वसन 1).

वसन्त (von 2. वस्) Uṇ. 3,128. m. n. *gaṇa* सर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. *Frühling (die Licht bringende Jahreszeit)* AK. 1,1,2,18. H. 156. Hall. 1,113. ṚV. 10,90,6. 161,4. AV. 6,55,2. 8,2,22. 12,1,36. VS. 10,10. 21,23. TBr. 1,1,2,6. Çat. Br. 1,3,3,9. 13. 2,1,2,1. 3. fgg. वसन्ते दावाग्नयस्ति 11, 2,3,32. Kāty. Çr. 7,1,4. वसन्ते पर्वणि ब्राह्मण आधीत Âçv. Çr. 2,1,12. Gṛhy. 4,8,2. Kaṭh. Up. 2,5,1. Maitrāyaṇ. 6,23. मधुमाधवौ वसन्तः Sūçr. 1,19,2. 22,8. 135,12. Mṛicch. 2,4. Ṛt. 6,2. 3. 22. 29. fg. Spr. 1843. 2759. 4409. Varāh. Bṛ. S. 27,1. 86,26. Gīt. 1,26. Brahma-P. in LA. (III) 52, 20. Rāǵa-Tar. 3,163. Bhāg. P. 3,8,11. Verz. d. Oxf. H. 97,b,28. °वर्णन 129,b, 18. 349,a, No. 820. °विलास 129,b, No. 234. °व्रत 19,b, 23. fg. °सरुचरितमध्ययनं वसन्ताध्ययनम् Pat. zu P. 4,2,62. °समय R. 1,11,1. Ṛt. 6,19. Verz. d. Oxf. H. 123,a,27. वसन्तर्तुप्रवर्तन 142,a, No. 290. °काल R. 3,79,9. °मास Ind. St. 10,298. Personificirt (im Gefolge des Liebesgottes) Brahma-P. in LA. (III) 51,5. 52,20. Wilson, Sel. Works II,231. °योध *der Frühling als Kriegsmann* Ṛt. 6,1. — 2) m. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – ⏑⏑ – ⏑ Colebr. Misc. Ess. II,159 (I,10). — 3) m. Bez. *eines best.* Rāga Saṅgītadām. im ÇKDa. Gīt. S. VIII und 6. — 4) m. Bez. *eines best. Tactes* Saṅgītadām. im ÇKDa. — 5) m. *Durchfall* Cardar. im ÇKDa. — 6) m. N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 8,2338. — Vgl. सु°, वासन्त, वासन्तिक.

वसन्तक (von वसन्त) 1) m. *a) ein best. Baum, eine Art* Çjonāka Rāǵān. im ÇKDa. — *b)* N. pr. eines Mannes Kathās. 9,44. 10,218. 12,10. 21,3. 23,29. 34,113. 52,5. am Ende eines adj. comp. f. आ 16,48. — 2) f. वसन्तिका N. pr. einer Waldnymphe: °परिणय Mack. Coll. 1,111.

वसन्तकुसुम m. *Cordia latifolia* und *Myxa* Cardam. im ÇKDa.

वसन्तकुसुमाकर m. Bez. *einer best. Mixtur* Vṛddhājogatarāṅgiṇi im ÇKDa.

वसन्तगन्धि oder °गन्धिन् m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,16.

वसन्तघोषिन् 1) adj. *den Frühling ankündigend.* — 2) m. *der indische Kuckuck* Wilson nach Çabdārthak.

वसन्तज 1) adj. *im Frühling hervorkommend* u. s. w. — 2) f. आ *a) eine best. Schlingpflanze,* = वासन्ती Rāǵān. im ÇKDa. — *b) Frühlingsfest, ein Fest zu Ehren* Kāmadeva's Wilson.

वसन्ततिलक 1) n. *die Zierde des Frühlings:* फुल्लं वसन्ततिलकं तिलकं वनस्त्र्याः Kāraṇḍ. 65. als n. Bez. *der Blüthe des* Tilaka: °मुत्तिमूर्धज Varāh. Bṛ. S. 104,22. An beiden Stellen mit Anspielung auf das gleichnamige Metrum. — 2) n. und f. आ Bez. *eines best. Metrums: 4 Mal* – – ⏑ – ⏑⏑⏑ – ⏑⏑ – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 4). Ind. St. 8,387. Çrut. 37 (mit Cæsur nach der 8ten Silbe nach einer Lesart). — 3) n. Bez. *einer best. Mixtur* ÇKDa. nach Vṛttaratnāvalī. —

4) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 113,10.

वसन्ततिलकतन्त्र n. Titel eines buddhistischen Werkes, das sich handschriftlich in der Kais. Bibl. zu Paris befindet.

वसन्तदूत 1) m. *der Bote des Frühlings: a) der indische Kuckuck. — b) der Mangobaum. — c)* Bez. *des fünften* Râga. — 2) f. ई *die Botin des Frühlings: a) Gaertnera racemosa* (st. अभिगुप्त ist in Mad. अतिमुक्त zu lesen). — *b) Bignonia suaveolens* H. an. 5,24. fg. Mad. 1. 234. fg. — *c) eine der Premna spinosa ähnliche Pflanze* (गणिकारी). — *d) Kuckucksweibchen* Râgân. im ÇKDa.

वसन्तद्रु m. *der Mangobaum* Taik. 2,4,9. Çabdam. im ÇKDa.

वसन्तपञ्चमी f. Bez. *eines Frühlingsfestes am 5ten Tage in der lichten Hälfte des* Mâgha Verz. d. Oxf. H. 284,*b*, 37. Wilson, Sel. Works II, 191. fg. 209. 223. 227. 229.

वसन्तपुष्प n. *Frühlingsblume* Kumâras. 3,33.

वसन्तबन्धु m. *der Freund des Frühlings* d. i. *der Liebesgott* Daçak. 91,13. fg.

वसन्तभानु m. N. pr. eines Fürsten Daçak. 192,21.

वसन्तमहोत्सव m. *das grosse Frühlingsfest* Verz. d. Oxf. H. 139,*b*, 7. — Vgl. वसन्तोत्सव und वसन्तसमयोत्सव.

वसन्तमालिका f. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑–⏑⏑–⏑–⏑–⏑–, ⏑⏑ –⏑⏑–⏑–⏑–⏑– Ind. St. 8,363.

वसन्तयात्रा f. *der im Frühling stattfindende feierliche Umzug* Wilson, Sel. Works I, 323.

वसन्तराज m. N. pr. eines Grammatikers Verz. d. Oxf. H. 181,*a*, No. 412. Verfassers eines Çâkuna 399,*b*, No. 168. Ind. St. 2,252. Verz. d. B. H. No. 896. fg. 899. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 45.

वसन्तराजीय n. *ein von* Vasantarâga *verfasstes Werk* Hall in der Einl. zu Vâsavad. 44. fg. Mallin. zu Çiç. 2,8.

वसन्तलता f. N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 139,*a*, 21.

वसन्तलेखा f. desgl. Sin. D. 300,20. Râga-Tar. 7,957. 1592.

वसन्तविलास m. Bez. einer Form Vishṇu's Wilson, Sel. Works I, 141.

वसन्तव्रण *die Blattern* Taik. Ind. zu 2,6,15.

वसन्तशेखर m. N. pr. eines Kiṁnara Verz. d. Oxf. H. 128,*a*, 2.

वसन्तसख m. *der Freund des Frühlings* d. i. *der Liebesgott* ÇKDa. angeblich nach Hâlâ.

वसन्तसमयोत्सव m. *Frühlingsfest, die frohe Zeit des Frühlings* Kathâs. 122,8. — Vgl. वसन्तोत्सव und वसन्तमहोत्सव.

वसन्तसेन 1) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 33,88. — 2) f. आ ein Frauenname Mṛicch. 2,4. 9,16. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 37.

वसन्ता loc. neben ग्रीष्मे u. s. w. (etwa von वसन्त) *im Frühling* P. 7, 1,39, Schol. TS. 2,1,8,5. 4,1. TBr. 1,1,2,7. 4,10,10. Kâṭh. 10,2. 13, 1. 7. 21,7. 25,4. 34,9. 36,2. Çat. Br. 7,2,4,26 (hier oxyt.).

वसन्ताध्ययन n. = वसन्तसकथारितमध्ययनम् Pat. zu P. 4,2,63.

वसन्तोत्सव m. *das Frühlingsfest* Wilson, Sel. Works I, 25. II, 223. Çiç. 78,15. Kathâs. 4,49. 43,218. — Vgl. वसन्तमहोत्सव und वसन्तसमयोत्सव.

वसर्कन् (वस् [vgl. वासर्] + कन्) adj. als Beiw. des Windes (des Feuers oder der Sonne nach Sây.; vgl. auch zu TS. 2,1,11,1) etwa *früh treffend* d. h. *in der Morgenfrühe die Nachtunholde vernichtend:* मरुतो नः परिज्मा वसर्का मरुत वातः RV. 1,122,8.

वसवान (von वसु) m. *Güterbesitzer, Schätzebewahrer:* die Âditja heissen वस्वो वसवानाः RV. 1,90,2. वं (इन्द्र) सत्यो वसवानः सहोदाः 174,1. म न एनी वसवानो (irrig als voc. betont) रयिं दाः 5,33,6. 8,88, 8. मा रिषण्यो वसवान वसुः मन् 10,22,15.

वसव्य (wie oben) 1) n. *Güterbesitz, Reichthum* P. 4,4,140 nebst Vârtt. 2 und 3. Kâç. zu P. 5,4,30. RV. 2,9,5. वृङ्क्ते वसव्यम् 13,13. 4,55,8. 6,1,3. धत्ते धान्यं पत्यते वसव्यैः 13,4. 60,1. 14. 7,37,8. 56,21. 10,74,3. रुस्तो पणास्व वृङ्क्ष्वि वसव्यैः (so wird zu betonen sein) AV. 7, 26,8. — 2) adj. देवा वसव्याः wohl *die reichen;* so werden Agni, Soma und Sûrja angeredet TS. 2,4,6,1.

वसा und in TS. वसौ (bisweilen auch वशा geschrieben; vgl. 2. वश) f. gaṇa भिदादि zu P. 3,3,104. Vop. 26,192. 1) *Speck, Fett, Schmalz, adeps* AK. 2,6,2,15. H. 624. Hâlây. 3,18. VS. 6,19. 25,9. रसं दृष्ट्वा पशूनां पद्मसा TS. 6,3,11,1. 6,6,2. Çat. Br. 12,8,3,12. Kâṭy. Çr. 1,8,21. 6, 8,12. 8,8,24. Lâṭy. 5,4,16. °होमे TS. 6,3,11,1. Çat. Br. 3,8,3,13. 20. Âçv. Çr. 3,6,8. Kâṭy. Çr. 6,8,8. °प्रक्ष 19,4,12. 24. Maitrâjup. 3,4. M. 5, 135. Jâjñ. 3,94. 106. MBh. 1,5734. 5781. 8251. 8320. 3,12250. 7,1976. R. Gorr. 2,83,6. 88. 3,7,7. 4,44,65. Kâm. Nîtis. 19,60. Ragh. 15,16. Spr. 396. 3335. Vaitâl. Pañc. 8. 27,5. 46,40. 50,22. 55,20. 97,10. Kathâs. 34,70. 73,153. fg. Râga-Tar. 1,260. Prab. 5,7. 54,1. Bhâg. P. 5, 26,22. Mârk. P. 91,26. Pañkat. 1,3,33. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,3. Pañkat. 233,23. Nalod. 3,11. यत्तस्थं श्लेष्मजातं वसाख्यं स्त्रीणां विशेषतः Fett Soçr. 1,51,19. वराह° 84,20. शुद्धमांसस्य यः श्लेष्मः सा वसा परिकीर्तिता 327,10 (vgl. Manîpr. zu VS. 25,9); dazu aber v. l. einer Berl. Hdschr. ताप्यमानस्य वा श्लेष्मा मेदसः सा वसा मता also *ausgelassenes Fett, Schmalz.* 2,32,15.36,15.323,8. कुकुट° 364,14. Nach Çârîr. Saṁh. 3,1, 1 giebt es viererlei *Fette:* घृत, तैल, वसा und मज्जन्. *Gehirn* Kathâs. 25,104. 274. Oefters durch *Lymphe, Serum* und dgl. erklärt Wise 360. — 2) N. pr. eines Flusses MBh. 6,338 (VP. 184); vgl. चन्द्र°. — Vgl. महावस.

वसाकेतु m. N. *eines best. Kometen* Varâh. Bṛih. S. 11,29.

वसाढ्य 1) adj. *reich an Fett.* — 2) m. *Delphinus gangeticus* Taik. 1,2,24.

वसाढ्यक (वशा° gedr.) m. *Delphinus gangeticus* Çabdar. im ÇKDa.

वसाति (von 2. वस्) 1) wohl f. *Morgendämmerung:* वसातिषु स्म चरघो ऽसितो पेत्वाविव Citat in Nir. 12,2 (wo in der verdorbenen Erklärung रात्रयो zu bessern sein wird); nach Durga zu d. St. so v. a. अनपदाः; vgl. 2). — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2,53. MBh. 2,1781 (वशाति ed. Bomb.). 5,889 (वशाति ed. Calc.). 7609. 6,688. 2104. 2534. 7,3254. 8,2070. Varâh. Bṛih. S. 14,35. 17,19. Oefters वशाति geschrieben. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Ganamegaja MBh. 1,3746. des Ikshvâku Harîv. 664 (वशाति die ältere, शशाद् die neuere Ausg.). — Vgl. वासातक, वासात्य.

वसातिक m. pl. = वसाति 2) MBh. 7,6949 (वशा° ed. Calc.).

वसातीय adj. *zum Volk der* Vasâti *gehörig;* m. *ein Fürst der* Vasâti MBh. 7,1789. 1792. 1934, wo die ed. Bomb. पुनश्चैव वसातीयान् st. पुनर्व्रत्यवशा° der ed. Calc. liest.

वसादनी f. *Dalbergia Sissoo* (शिंशपा) Roxb. Dhanv. in Nigh. Pr.

वसापायिन् 1) adj. *Fett trinkend.* — 2) m. *Hund* Çabdam. im ÇKDa. वशा° gedr.

वसापावन् adj. *Fett trinkend* VS. 6,19.

वसामय (von वसा) adj. (f. ई) *aus Fett bestehend:* पिशितवसामय्यो नार्यः Spr. 2828.

वसामर् N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,3.

वसामेक् m. *Fettharnruhr* Çiâo. Sâṁ. 1,7,13.

वसामेकिन् adj. *die Fettharnruhr habend* Suçr. 1,273,1. 2,78,13.

वसारोक् m. *Pilz (auf Fett wachsend)* Har. 25. वशा° gedr.

वसावि oder °वी (von वसु) f. etwa *Schatzkammer.* वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्राग्निनो ग्रहं ददतुर्मघानि RV. 10,73,4.

वसि (von 3. वस्) Uṇâdis. 4,139. = वस्त्र *Gewand* Uéévat.

वसिक adj. *leer* H. 1446. — Vgl. वशिक, वशिन्.

वसितर् nom. ag. von 3. वस्: वसितृतम = घाच्कादयितृतम Çâṁk. zu Kâṭhâ. Up. 5,1,2. Zur Erklärung von वसिष्ठ gebildet.

वसितव्य (von 3. वस्, adj. *anzulegen, umzuthun:* वल्कलाजिनवस्त्राणि R. Gorr. 2,28,23.

वसिन् (von वसा) m. *Fischotter* H. 1330.

वसिर 1) m. *Scindapsus officinalis Schott.*, eine Schlingpflanze (= गुडूचिपर्णी); n. *die Frucht* AK. 2,4,3,16. Med. r. 209. fg. Ratnam. 77. Suçr. 1,137,15. 20. 145,17. 214,2. 2,52,19. *Achyranthes aspera* Mad. — 2) n. *Meersalz* AK. 2,9,41. H. 941. Med. — Wird auch वशिर geschrieben.

वसिष्ठ (superl. von वसु; vgl. वसीयस्) P. 5,4,163, Schol. 1) adj. *der treffliche, beste, angesehenste, reichste:* ज्येष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम् AV. 8,21,2. Agni RV. 2,9,1. 7,1,3. पुरोहित 10,150,3. Indra 2,36,1. 10,15,3. 95,17. पूर्वे तेषां वसिष्ठा भूयास्त TBa. 1,3,10,9. 2,3,1,2. TS. 2,2,11,6. घात्मा क्षुपद्भूतानां वसिष्ठः 6,2,3. प्रजापतिर्वै वसिष्ठः Çat. Br. 2,4,4,2. 14,9,2,7. 3,4. TBa. 3,1,1,7. Kâṭhâ. Up. 5,1,2. वसिष्ठो ऽस्मि वरिष्ठो ऽस्मि वसे वासगृहेष्वपि। वसिष्ठत्वाच्च वासाच्च वसिष्ठ इति विद्धि माम् ॥ MBh. 13,4484. — 2) m. N. pr. eines der hervorragendsten Ṛshi des Veda, Priesters des Königs Sudâs, Hauptverfassers des 7ten Maṇḍala des RV. Nach der Legende ein Sohn Mitra-Varuṇa's und der Urvaçî, oder aus dem zu Boden gefallenen Samen jener Götter entsprungen. Sây. zu RV. 7,33,11. Nachmals einer der sieben Ṛshi Paṇiç. zu Âçv. Çr. — RV. 1,112,9. 7,9,6. 13,4. 21. 22,3. 23,1. 26,5. 33,11. fgg. 59,3. 70,6. 86,5. 88,4. 10,65,13. TS. 3,1,2,3. 5,2,1. 7,4,2,1. Âçv. Gṛhy. 3,4,2. Pâraṇ. Br. 4,7,3. 15,3,24. Çat. Br. 5,4,4,3. 12,6,1,38. पाशा ग्रस्यो व्यशाश्यत्त वसिष्ठस्य मुमूर्षतः Bruchstück in Nir. 9,26. ein Prajâpati und Sohn Brahman's M. 1,35. MBh. 1,6638. Harîv. 41. 14072. 14148. R. 1,52,6. 65,22. Raçu. 1,64. VP. 49. Bhâg. P. 3,12,23. Mârk. P. 50,5. ein Sohn Varuṇa's Harîv. 1885. Brahmarshi Trik. 2,7,16. 20. R. 1,65,25. Vater Aurva's Harîv. 417. 14150. Vater von 7 Söhnen 422. 14151. VP. 83. Bhâg. P. 4,1,40. 8,1,24. Vater der Vater Sukâlin's M. 3,198. Gatte der Akshamâlâ oder Arundhatî MBh. 1,6638. der Ûrjâ VP. 83. Bhâg. P. 4,1,40. इत्याकूपा हि सर्वेषां पुरोधाः R. 1,57,21. इक्ष्वाकुकुलदैवतम् 70,16. sein Zwist mit Viçvâmitra MBh. 1,6710. fgg. 9,2965. fgg. R. 1,51. fgg. वसिष्ठवत्ते निषत्तस्य कोपः MBh. 1,2110. als Vjâsa VP. 272. Verz. d. Oxf. H. 32,*b*,3. einer der sieben Weisen (welche das Gestirn des grossen Bären bilden) H. 124, Schol. Harîv. 413. 430. Varâh. Bṛh. S. 13,3. 6. 9. 23,4. 38,3. Mârk. P. 78,74. Gesetzgeber M. 8,140. Jâjñ. 1,3. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,42. 264,*b*,30. 266,*a*,42. 270,*b*,37. 279,*a*,42. 341,*a*,40. 356,*a*,25. °पत्न Çat. Br. 2,4,4,2. Çâṅkh. Br. 4,3. Çr. 3,8,2. 11,1. °गोत्राः Varâh. Bṛh. S. 5,72. pl. *das Geschlecht Vasishṭha's* P. 2,4,65. Vop. 7,14. RV. 7,7,7. 12,2. 23,6. 33,1. fgg. 39,7. 80,1. 90,7. 10,122,3. Çat. Br. 12,6,3,41. Âçv. Çr. 12,13,1. Kâṭj. Çr. 19,6,3. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,32. fg. 61,1. Verz. d. Oxf. H. 268,*b*,19. Namen von Sâman sind: वसिष्ठस्याङ्कुशः, वसिष्ठस्यानुपदम्, वसिष्ठस्यापानः, वसिष्ठस्यामदग्न्यार्कः, वसिष्ठस्यासितम्, वसिष्ठस्य क्रोशम् Ind. St. 3,233,*a*. वसिष्ठस्य त्रैनिधम् ebend. Pañcav. Br. 8,2,3. 19,3,3. वसिष्ठस्य निवेष्टः, निह्नवः (vgl. वसिष्ठनिह्नव), पद्मम्, पद्मम्, पद्मासम्, पिप्पलि, प्राणः Ind. St. 3,233. वसिष्ठस्य प्रियम् ebend. Pañcav. Br. 12,12,9. fg. वसिष्ठस्य प्रेङ्खः, प्रवः, वीङ्कम्, वैराजम्, वैरूपम्, व्रतम्, व्रतोपदः, शकुलः, शुद्धाशुद्धीयम्, संक्रमम्, समत्तम्, सूक्तम् Ind. St. 3,233. वसिष्ठो ऽनुवाकः so v. a. वसिष्ठस्यानुवाकः Pat. zu P. 4,3,133. Das Wort wird häufig fälschlich वशिष्ठ geschrieben und auf वशिन् zurückgeführt; vgl. Comm. zu Bhaṭṭ. 1,15 und Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449. — Vgl. बृहद्वसिष्ठ, बृह° und वासिष्ठ.

वसिष्ठक m. = वसिष्ठ 2) Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449.

वसिष्ठतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,2 v. u.

वसिष्ठत्व n. nom. abstr. von वसिष्ठ 1) MBh. 13,4484.

वसिष्ठनिह्नव m. N. eines Sâman Lâṭj. 3,9,12. = वसिष्ठस्य निह्नवः Ind. St. 3,233,*a*.

वसिष्ठप्राचो f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,32.

वसिष्ठशक m. N. eines Sâman Ind. St. 3,233,*b*. Lâṭj. 1,6,32. Kâṭj. Çr. 26,3,13.

वसिष्ठसंसर्प m. N. einer Viertagefeier Kâṭj. Çr. 23,2,14. Âçv. Çr. 10,2,23.

वसिष्ठसंहिता f. Titel eines Werkes, = योगवासिष्ठ Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,11. 109,*b*,15. eines anderen philosophischen Buches 233,*a*, No. 363.

वसिष्ठसिद्धान्त m. N. eines der fünf Haupt-Siddhânta zu Varâhamihira's Zeit Colebr. Misc. Ess. II, 379 u. s. w. Ind. St. 2,251. fg. — Vgl. वासिष्ठ.

वसिष्ठहेनुम् wohl verdorbene Lesart VS. 39,8; vgl. dafür वोषिष्ठहनम् TS. 1,4,26,1.

वसीयस् (compar. von वसु; vgl. वसिष्ठ) adj. *besser, der besser daran ist, der sich wohler befindet; angesehener, reicher* (Gegens. पापीयस्): यो यज्ञस्यार्त्या वसीयान्स्यात् TS. 2,6,6,3. सः यो ऽस्मा ईशानाय वसीयो भवति 5,4,1. 3,1,6,3. नमस्कृत्य हि वसीयांसमुपचरन्ति 5,4,6,3. एषा वसीयांसं भागधेयेन बोधयति 10,3. इतो मे वसीयांसो ऽनिष्यन्ते *besseres als dieses* 6,5,6,1. TBa. 1,1,3,3. य एवं विद्वां विचिकित्सति। वसीय एव चेतपते 2,1,3,3. 3,1,1,9. VS. 18,3. बृहद्देवाबृहतो वसीयान् Âit. Br. 3,36. 8,26. Çat. Br. 3,4,4,27. 9,14. उपतापी वसीयान्भूत्वाभिक्रामति wenn er wohler geworden ist 8,3,3,1. ते देवाः पापीयांसो ऽभवन्वसीयांसो ऽसुराः *den Göttern ging es schlimmer, den Asura besser* Kâṭh. 24,9. Pañcav. Br. 7,10,1. 22,12,3. Gobh. 1,6,1. — Vgl. पाप° und वस्यस्.

वँसु Uṇâdis. 1,11. 1) adj. (f. वँस्वी) *gut, trefflich* (= साधु Çabdar. im

ÇKDn.): *zu Gute kommend, wohlthuend:* वसोर्मन्दानमन्धसः RV. 3,77,1. वस्वी ते यज्ञे सदृष्टिरियते मर्त्याय 6,16,35. वसुः शंसो नरां कारुधायाः 24,2. 44,15. 5,74,10. माकुर्यज्ञिन्द्र प्रयु वस्वोरस्मे भूवन्नभिष्टयः 10,22, 12. धीतयः 3,13,5. धी 10,172,2. शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना 9,81,3. देवो मर्तेर्वसुभिरिध्यमानः 5,3,3. वस्वी षु ते ब्रह्मन्त्रे यंस्तु शक्तिः 7,20,10. सूर्य Âçv. Gṛhj. 1,3,2. यत्त Çiñkh. Çr. 4,12,10. = स्वादु, मधुर *süss* H. an. 2,590. fg. Med. s. 5. = शुष्क *trocken* H. an. Vgl. वसिष्ठ und वसीयस्. — 2) m. *a*) Bez. *der Götter* überhaupt RV. 1,106,1. 143,1. 3,39,3. 57,2. 4,35,1. तमग्निमस्ते वसवो न्येवन् 7,1,2. 39,2. पन्थां देवयाना वसुभिरिष्कृताम् 76,2. 10,37,12. सूराद्यं वसवो निरतष्ट 1,163,2. 10,100,7. 87,2. या व्याप विश्वे वसवः सदन्तु 142,6. 110,3. VS. 6,18. Insbes. die Âditja RV. 2,27,11. 7,32,1. 2. 3,18,15. 17. Agni AK. 3,4,20,230. H. 1099. H. an. Med. Halâ. 1,62. 5,64. Viçva bei Mallin. zu Kir. 1,18. Vaiç. bei Mallin. zu Kir. 1,46. RV. 1,44,3. 143,6. 4,5,15. यद्यद्यं ते मन्ये यो वसुः 5,6,1. 24,2. वेश्वानरो वसुरग्निः 51,13. वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने 8,44,24. पुगात्ते सर्वभूतानि दग्धेव वसुरुल्बणः MBh. 7,6865. die Maruta RV. 5,53,5. 6,50,4. 7,56,17. Indra 1,110,7. 4,32,14. 7,31,3. 4. AV. 7,98,1. Ushas RV. 6,64,1. die Açvin 1,158,1. Rudra: मेषो देवानां वसुः 43,5. वसुरुत्तरिक्षसत् (nach dem Comm. Vâju; wohl collectiv zu verstehen) 4,40,5. Vishṇu MBh. 13,7023. वसुः पूर्वो वसूनाम् R. 6,102, 18. Kubera Viçva s. a. O. Kir. 1,18. वसोर्वसुपतेः Pâṇ. 3,7,7. Çiva Anekârthas. im ÇKDn. Indra Med. im Kalpadruma. Vasu als Herr des Nakshatra Dhanishṭhâ Vaijn. Bhg. S. 98,5. unter den Viçvadevatâ Verz. d. Oxf. H. 190,*a*,32. — *b*) eine Klasse von Göttern, gewöhnlich neben den Âditja und Rudra, auch mit den Viçve devâḥ (RV. 2,3,6. 10,125,1. AV. 1,9,1. 30,1) und den Aṅgiras (RV. 7,44, 4. AV. 2,12,4) genannt: unter die Götter des obersten Gebiets gezählt Naigh. 5,6. Nir. 12,41. ihr Haupt ist nach der ältesten Ansicht Indra, nach der späteren Agni; gaṇa पर्श्वादि zu P. 5,3,117. Vârtt. 2 zu 4, 1,177. AK. 1,1,4,5. 3,4,20,230. H. an. Med. Halâ. 5,64. RV. 1,45,1. 58,3. 2,31,1. 3,8,8. 6,62,8. 7,10,4. 35,6. 14. 8,35,1. 90,15. 9,67,27. 10,48,11. 66,3. Vâjas. 6,3. VS. 2,5. 22. 3,11. 11,55. 58. AV. 10,7,22. 9,8. 10,30. fg. 11,6,13. 13,9,11. Ait. Br. 3,42. 8,12. Bṛhaspati mit den Vasu AV. 5,73,1. — TBr. 1,5,11,2. 2,1,10,1. Kaṭhâ. Up. 3,16, 1. M. 11,221. Bhag. 11,6. 22. MBh. 3,1340. 2356. 13,7774 (वसूनेव mit der ed. Bomb. zu lesen). 14,2414. fgg. Hariv. 441. 3007. fgg. 11849. R. 3,52,13. Vaijn. Bhg. S. 48, 56. Pâṇ. 1,11,32. वसून्वदन्ति तु (वसु = पितृविशेष Med. im Kalpadruma) पितृवद्रुद्रांश्चैव पितामहान्। प्रपितामहांस्तथादित्यान् M. 3,284. Agni mit den Vasu AV. 19,17,1. TS. 2,1, 11,2. VS. 15,10. Ait. Br. 3,13. Çâṅkh. Br. 22,1. Çr. 3,6,2. 4,21,8. Taitt. Âr. 4,6,1. Kaṭhâ. Up. 3,6,1. 3. 4. वसूनां पावकश्चास्मि Bhag. 10,23. वसूनामिव कौबेरः MBh. 4,50. 5,3290. 13,914. वसवो वासवं यथा पर्युपासते R. 1,7,5. 4,25,34. 6,112,73. वसुः पूर्वो वसूनाम् ist Vishṇu 102,13. dreihundert und dreiunddreissig TS. 5,5,2,5. acht Ait. Br. 1,10. Çat. Br. 4,3,2,2. 6,1,2,6. 11,6,3,5. MBh. 1,2710. 3914. fgg. Hariv. 6497. Burn. Intr. 603. Agni, Erde, Vâju, Luft, Âditja, Himmel, Mond, Sterne Çat. Br. 11,6,3,6. Dhara, Dhruva, Soma, Ahan (Sâvitra, Âpas), Anila, Anala (Vâju), Pratjûsha, Prabhâsa MBh. 1,2382. 13,7094. fg. Hariv. 152. fg. Wenn, Rimat. Up. 312. VP. 120, Dhara (Manu die ältere Ausg.), Dhruva, Viçvâvasu (Vivasvant die ältere Ausg.), Soma, Parvata, Jogendra, Vâju, Nirṛti (Nikṛti die ältere Ausg.) Hariv. 11538. fgg. zehn Vasu, Indra der eilfte Kir. 28,3. Ind. St. 5, 240. fg. धर्मस्य वसवः पुत्राः MBh. 12,7540. die Vasu (möglicher Weise auch sg.) als Herren der achten Tithi Vaijn. Bhg. S. 99,1. ein Vasu mit Namen Vidhûma Karaṇa. 9,28. fgg. — *c*) Bez. *der Zahl acht* (wegen der *acht* Vasu) Vaijn. Bhg. S. 98,1. 2. Bhg. 12,1. Ganitas. Sparçaṇas. 23. Ind. St. 9,228. 302. 314. वसुत्रिगुणित, °गणार्धकोण Paṇkan. 3,7,7. वसौ = अष्टमे Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 150, Z. 10. — *d*) *Strahl* Naigh. 1,15 (vgl. Nir. 12,41). AK. 3,4,20,230. H. 100. H. an. Med. Halâ. 1,39. 5,64. Viçva und Vaiç. s. a. O. Kir. 1,46. Çiç. 9,10. — *e*) *die Sonne* Anekârthas. im ÇKDn. *der Mond* Med. im Kalpadruma. — *f*) *Strick, Seil, Gurt* (योक्त्र) Taitt. 3,3,447. H. an. Med. — *g*) *Dumm* H. 1114. — *h*) *eine best. Pflanze*, = वक AK. 2,4,3,62. Med. = पीतमुद्ग H. 1172. — *i*) *Teich, See* Comm. zu Up. 1,10. — *k*) *ein best. Fisch* Bhar. zu AK. nach Wilson. — *l*) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Bhâradvâga, Liedverfassers von RV. 3,80. fgg. unter den sieben Weisen Hariv. 467. Mârk. P. 94,8. Sohn eines Manu Hariv. 415. 465. ein Sohn Uttânapâda's 62. fg. ein Fürst der Kedi mit dem Bein. Uparikara (als नृप, राजन् bezeichnet H. an. Med.) MBh. 1,2324. fgg. 3, 11080 (S. 572). 12,12742. 12746. 13,328. 5630. 14,2328. fgg. Hariv. 1612. 1804. 3252. 3254. 6398. 8815. Vaijn. Bhg. S. 43,3. 9. 68. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,31. 80,*b*,40. Bhâg. P. 9,22,5. कृमीणामुद्भवो (क° od. Calc.) MBh. 5,2729. ein Sohn Ilina's MBh. 1,3708. Kuça's (vgl. अमावसु) R. 1,34, 3. 7. 8 (35,2. 6. 7. Gorr. das von ihm beherrschte Land führt denselben Namen: देशो ऽयं वसुनामासीदसोरामततेजसः). Bhâg. P. 9,15,4. Vater des Paila MBh. 2,1239. ein Sohn Vasudeva's Bhâg. P. 9,24,50. Kṛshṇa's 10,61,13. Vatsara's 4,13,12. Hiraṇjaretas' (zugleich Bez. seines Varsha) 5,20,15. Bhûtâgjotis' 9,2,17. fg. Naraka's 10,59,12. ein Konig von Kâçmira Verz. d. Oxf. H. 37,*b*,27. — 3) f. वसु *a*) *Licht, Glanz* (दीप्ति). — *b*) *ein best. Arzneimittel* (वैद्यौषध; lies वृद्धौ °) Çabdar. im ÇKDn. — *c*) N. pr. einer Tochter Daksha's, Gattin Dharma's und Mutter der Vasu Hariv. 145. 12449 (Gattin Manu's). 12479. VP. 119. Bhâg. P. 6,6,4. 10. — 4) f. वस्वी *Nacht* Naigh. 1,7. — 5) n. *a*) *Gut, Besitzthum, Habe, Reichthum* (gen. वँस्वस्, वँसाम् und वँसुनस् in der älteren Sprache) AK. 2,9,90. 3,4,20,230. H. 191. H. an. Med. Halâ. 1, 80. 5,64. RV. 4,17,11. वस्वो राशिम् 20,8. 6,35,2. स्तोतारं मघवन् वसो धाः 4,17,13. कदा नो गव्ये अश्व्ये वसो धाः 8,13,22. 7,94,9. वन्य 2,5,1. 8,90,6. वाम 5,19,15. himmlisches und irdisches *Gut* 1,113,7. 2,14,11. यमत 3,43,5. 6,45,20. 59,2. 3,14,3. 10,1. इते हि वस्व उभयस्य 6,19,10. वसुपतिर्वसूनाम् 4,17,6. 5,4,1. 6,32,5. 1,27,5. 109,5. तुर्यं धेनुः संवर्दुघा विश्वा वसूनि दोहते 134,4. यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च क्षितीनां वसु 176, 3. इन्द्रमुतये न वसुनः सिषासके 2,16,7. वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे 3,2. 4. वसूनां च वसुपतिं त्वाहुवे *Güter und Gut* 10,30,7. AV. 7,115,2. 9,4,3. 10,8,20. ग्रन्थयो विन्दते वसु 14,2,3. VS. 4,16. 6,7. 8. 18,15. या हविषतो वसु दत्ते Ait. Br. 4,6. Çat. Br. 1,6,4,5. 9,3,2,4. 14,7,2,29. संगमनो वसूनाम् Çiñkh. Gṛhj. 1,7. 3,3. 4. कोशा इव वसुना (संपूर्णाः) Maitrâjup. 3,4.

पित्र्यस्य वसुनः M. 9,162. 196. यच्चान्यन्मास्ति वसु किंचन MBh. 3,2161. 2276. 2297. 2309. 2036. वसु दत्त्वा च पुष्कलम् 2655. 13472. खण्डिते च वसूनि Spr. 2183. Kathâs. 23,26. Râga-Tar. 4, 692. Bhâg. P. 1,18,44 (वसाम्). 4,14,39. 10,6. 17,22. 3,4,6. 20,25. दिव्या Pâraskar. 1,11,36. वसुना नातियुष्टो ऽभवत् Daçak. 67,15. क्षितौ राज्यं वसूनि च MBh. 3,2488. वसुंधरा तस्य भवेत्सुतुष्टा धारा वसूनां प्रसृजतीव 13390. वसूनां विनोतः R. 2,23,39. धनं धान्यं वसूनि च 4,35,16. Kir. 1,12. 18. Bhâg. P. 2,7,9. 3,30,2. 9,24,52. Vet. in LA. (III) 9,12. वसुसंपूर्णा वसुधा MBh. 3,2238. वसतिं वसुसंपदाम् Kumâras. 6,37. Râga-Tar. 6,367. Varâh. Bṛh. S. 104, 10. Bṛh. 24,18. वसुकामो वसून् (यजेत) Bhâg. P. 2,3,2. Ragh. 9,16. क्रयाणकानि वसूनि *Güter, Waaren* Vet. in LA. (III) 18,21. बुभुजे ऽक्षव्यषट्सु *die sechs Güter* so v.a. *die sechs Sinnengebiete* Bhâg. P. 3,23,25. Als masc. (vgl. gaṇa सर्वादि zu P. 2, 4, 31, aber auch Siddh. K. 248, *b*, 12): वसवश्च वसून्दिव्यान् (दृष्ट्वा) Pâraskar. 1,11,32. — α) वसोष्पतिः m. etwa *der Genius der Besitzthümer*, über einem Todkranken angerufen, denselben bei seiner irdischen Habe zu erhalten: वसोष्पते नि रमय मय्येव तन्वं मम Cit. in Nir. 10,18, wofür AV. 4,1,2 gelesen wird: मय्येवास्तु मयि श्रुतम् *mir bleibe das Gehör!* Nach Mâdh. im Kâlanirṇaya soll वसु auch = निवास (also von 3. वस्) sein; wenn diese Bedeutung sich erweisen liesse, würde वसोष्पतिः mit वास्तोष्पतिः nahe zusammentreffen. — β) वसोर्धारा *Strom der Güter* heisst, nach dem Anfange eines Spruches वसोर्मे धारा, *eine Ghṛta-Spende beim* Agnikâjana AV. 12,3,41. TS. 5,4,6,1. 7,2,2. TBr. 3,11,9,2. 10,3. Çat. Br. 9,3, 2,1. 3,15. 10,1,5,3. Âçv. Çr. 4,8,30. Kâty. Çr. 15,5,1. Verz. d. B. H. No. 1127. वसोर्धाराकृतं हविः (वसोर्धारा = पात्रविशेष Nîlak.) MBh. 1,8146. Weber, Episod. 249. 299. 302. als Gattin Agni's Bhâg. P. 5, 6,13. als Bez. *der himmlischen Gangâ*: प्रासादा यत्र सौवर्णा वसोर्धारा (= मन्दाकिनी Nîlak.) च यत्र सा । गन्धर्वाप्सरसो यत्र तत्र यान्ति सकामदाः ॥ MBh. 13,3789. N. pr. eines Tîrtha 3,5018. — *b*) *Gold* H. 1043. Viçva im ÇKDr. °वर्मधा MBh. 3,17165. — *c*) *Juwel, Edelstein, Perle* (रत्न, मणि) AK. 3,4,20,230. H. 1063. H. an. Med. Halâj. 2,21. 5,64. Vaij. a. a. O. °मेखल Pâraskar. 3,7,7. — *d*) *ein best. Arzneimittel*, = वृद्धि H. an. Med. — *e*) *Wasser* Vaij. a. a. O. — *f*) = यश Med. = श्याम ÇKDr. nach derselben Aut. — Vgl. अतिता°, अत्तर्वसु, अर्वा°, आ°, आघृणि°, आभरद्वसु, आयद्वसु, इद्धसु, उपा°, चित्रा°, ज्येन्या°, त्वा°, दिवा°, धिया°, निर्वसु, परा°, पुनर्वसु, पुरा°, पुत्र°, पुरो°, प्र°, प्रभू°, बृहद्वसु, भरद्वसु, मना°, मयि°, महा°, मित्रा°, मुदा°, वाजिनी°, विदद्वसु, विभा°, विश्रा°, वृषण्वसु, शतद्वसु, संगद्वसु, स्वा°.

वसुक 1) adj. oxyt. in der Formel: वसुको ऽसि वेयस्पोषमसि u. s. w. TS. 3,5,2,5. 4,4,4,3. 5,3,6,3. Pâraskar. Bh. 1,10,17. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: *Calotropis gigantea* AK. 2,4,3,61. H. an. 3,96. Med. k. 152 (wo वमुकं zu lesen). *Agati grandiflorum* Desv. H. an. (lies शिवमल्ल°). Med. Ratnam. 76. *Adhatoda Vasika Nees* Roxb. 1,126. = वास्तूक Râgân. im ÇKDr. — Suçr. 1,137,15. 20. 145,17. 238,13. 2,82,19. — 3) n. *eine Art Salz* (रौमक) AK. 2,9,42. H. 942. Med. H. an. 3, 95. fg. (lies वमुकं st. वस्तुकं). = पांसव Râgân. im ÇKDr. — 4) m. Bez. *eines best. Tactes* Cit. beim Schol. zu H. 292.

वसुकर्ण m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâsukra, Liedverfassers von ṚV. 10,65. fg.

वसुकीट m. *Bettler* (*Geldwurm*) Taitt. 2,8,36. Hit. 38.

वसुकृत् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâsukra, Liedverfassers von ṚV. 10,20—26.

वसुक्र m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Aindra, Liedverfassers von ṚV. 10,27. fgg. °पत्नी von 28,1. Kauṣ. Âr. 1,3. — Vgl. वासुक्र.

वसुगुप्त und वसुगुप्ताचार्य m. N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 95, 17. Hall 196. 198.

वसुचन्द्र m. N. pr. eines Kriegers MBh. 7,7009.

वसुच्छिद्रा *f. eine best. Heilpflanze*, = महामेदा Râgân. im ÇKDr.

वसुजित् adj. *Güter gewinnend* AV. 5,20,10. 13,1,37.

वसुता (von वसु) f. *Reichthum* oder *Freigebigkeit*: वसूनि राजन्वसुता ते अश्याम् ṚV. 6,1,13.

वसुतात्ति f. dass.: अर्द्धा वोचेय वसुतातिमग्नेः ṚV. 1,122,5. युष्मानि पेषु वसुतातो (°ति zu °तात्) रारन् 12.

वसुत्ति f. *Bereicherung*: विद्मा भगं वसुत्तये ṚV. 8,30,7. स नो यन्य वसुत्तये (वात्तं ज्ञेयं) 9,44,6. Zur Bildung des Wortes vgl. भगत्ति, मघत्ति.

वसुत्वन् (von वसु) n. *Reichthum* ṚV. 10,61,12.

वसुत्वन् n. dass. ṚV. 7,81,6. 8,1,6. अर्वः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् 13, 12. उद्रीवे वज्रिन्नवतो वसुत्वना सदो पिपेथ दाशुषे Vâlakh. 2,6.

वसुद 1) adj. (f. धा) *Güter* —, *Reichthum verleihend* Varâh. Bṛh. S. 58, 19. die Erde MBh. 12,4231. Spr. (II) 538. Vgl. वसुदा. — 2) m. Bein. Kubera's Hariv. 4362 (विबुधोपमः die neuere Ausg.). — 3) f. धा N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,17. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2647. einer Gandharvî und Gattin Mâli's R. 7,5,11.

वसुदत्त 1) m. ein häufiger Mannsname P. 5,3,83, Vârtt. 5, Schol. Kathâs. 21,55. fgg. 22,60. 89. 29,124. 156. 32,43. 46,43. 47,13. 74,155. 93,31. — 2) f. धा ein Frauenname Kathâs. 77,49 (°दत्ता Druckfehler). 62. angeblich N. der Mutter Vararuki's 2,30.

वसुदत्तपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 29,124. 156.

वसुदा adj. *Güter gebend, freigebig* ṚV. 8,88,4. die Erde AV. 12,1,44. 19,55,2. — Vgl. वसुद.

वसुदान 1) adj. dass. AV. 5,82,2. Çat. Br. 14,7,3,29. — 2) m. N. pr. eines Fürsten von Pâñcurâshṭra MBh. 2,122. 1884. 1914. 6,2110. 7,5724. eines Sohnes des Bṛhadratha (vgl. Vasudâman) VP. 462. des Hiraṇjaretas und N. eines nach ihm benannten Varsha Bhâg. P. 5,20,15.

वसुदाम 1) m. N. pr. eines göttlichen Wesens Pâraskar. 3,7,27. — 2) f. धा N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2623.

वसुदामन् m. N. pr. eines Sohnes des Bṛhadratha Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,19. fg. — Vgl. unter वसुदान 2).

वसुदावन् adj. = वसुदा ṚV. 2,6,4. 27,12. सविता वसोर्वसुदावा TS. 1,2,2,2.

वसुदेय n. *das Schenken von Gütern, Freigebigkeit* ṚV. 1,34,9. 2,35, 7. 8,39,5. AV. 3,4,4. 13,4,36.

वसुदेव adj. *die Vasu zu Göttern habend, ein Verehrer der Vasu; Vasu zum Regenten habend*: 1) m. *a*) N. pr. eines Fürsten aus dem Stamme der Vṛshṇi, Vaters des Kṛshṇa, P. 4,1,114, Schol. AK. 1,1, 6,17. H. 223. Halâj. 1,27. MBh. 1,2428. 2764. 5905. 7,6031. 6034. 13,

6837. Hariv. 1923. 1947. 3163. fgg. 3308. fgg. 5090. 5254. 7903. fgg. 8144. 9083. Bhâg. P. 1, 11, 17. 9, 24, 23. 27. 29. 45. 51. Verz. d. Oxf. H. 27, a, 23. 48. 53, b, 28. 190, b, 15. Weber, Kṛshṇaj. 282. fgg. 288. fgg. 296. fg. 306. Wassiljew 215. — *b*) Beiw. Kṛshṇa's neben वासुदेव, वसुश्रेष्ठ u. s. w. Paṇḍar. 4, 8, 33. — *c*) N. pr. eines Fürsten aus der Kaṇva-Dynastie VP. 471. Bhâg. P. 12, 1, 18. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. — *d*) N. pr. des Grossvaters des Dichters Mâgha Verz. d. Oxf. H. 118, *a*, No. 194. — 2) n. Bez. *des* Nakshatra Dhanishṭhâ (वसु = धन) Varâh. Bṛh. S. 7, 11. °दैव v. l. — Vgl. वामुदेव.

वसुदेवत n. = वसुदेव 2) Varâh. Bṛh. S. 8, 22. f. आ dass. H. 114.

वसुदेवता f. *eine Gottheit des Reichthums, eine Reichthum verleihende Gottheit* Hariv. 7023. — Vgl. auch u. वसुदेवत.

वसुदेवब्रह्मप्रसाद m. N. pr. eines Autors Hall 102.

वसुदेवभू m. Vasudeva's *Sohn* d. i. Kṛshṇa H. 697.

वसुदेवात्मज m. dass. Paṇḍar. 4, 1, 17.

वसुदेव्या f. 1) *das* Nakshatra Dhanishṭhâ. — 2) Bez. *der 9ten* Tithi Çabdârthak. bei Wilson; vgl. Varâh. Bṛh. S. 99, 1, wo die Vasu als Herren der 8ten Tithi erscheinen.

वसुदैव n. = वसुदेव 2) Varâh. Bṛh. S. 7, 11, v. l.

वसुदैवत n. dass. Varâh. Bṛh. S. 15, 30.

वसुधरा f. N. pr. einer buddhistischen Göttin Burn. Intr. 542.

वसुधर्मन् m. N. pr. eines Mannes MBh. 8, 1079.

वसुधर्मिका f. *Krystall* Çabdârthak. bei Wilson.

वसुधा 1) adj. oxyt. *Güter schaffend, freigebig:* °तम VS. 27, 15. TS. 4, 1, 8, 2; vgl. AV. 5, 27, 6 (AV. Paipp. 4, 45). — 2) f. *a*) *die Erde; Land, Reich* AK. 2, 1, 3. H. 935. Hall. 2, 1. MBh. 3, 2238. R. 1, 3, 38 (°तले). 2, 34, 41. 37, 27. Çik. 192. Spr. 203. 484. 1886. Bhâg. P. 2, 7, 9. Varâh. Bṛh. S. 27, 2. 32, 3. 54, 2. भुक्ता सम्यग्वसुधाम् so v. a. *regiert* habend 69, 19. शास्ति वसुधाम् Bṛh. 11, 8. राज्ये सारं वसुधा वसुधायामपि पुरम् Spr. 2624. 4250. 4721. रुरुवसुधान्नेच्छान् Râga-Tar. 1, 116. मगधदेशे धर्मारण्यसंनिश्रितवसुधायाम् *Gegend* Hit. 49, 9. fg. गरुत्मवसुधाः *Gegenden* Râga-Tar. 2, 164. वसुधागम *Ertrag vom Boden* Varâh. Bṛh. S. 72, 6. क्षेत्र° *die Erde des Feldes* R. 3, 4, 17. समीक्ष्य वसुधां चरेत् *Erdboden* M. 6, 68. °रेणु MBh. 1, 6022. Megh. 43. °तलात् Çik. 25. °तले Kathâs. 43, 123. — *b*) *Anapaest* (was das Wort वसुधा ist) Ind. St. 8, 217.

वसुधाकूर्चिका f. *eine Dattelart* (भूकूर्चिका) Râgân. im ÇKDr.

वसुधाधर 1) adj. *die Erde tragend, — erhaltend:* Vishṇu MBh. 13, 6866. स धराधरः ed. Bomb. st. वसुधाधरः. — 2) m. *Berg* MBh. 1, 6032. R. 2, 54, 61 (42 Gorr.). Vikr. 16.

वसुधाधिप m. *Herr der Erde, — des Landes, König, Fürst* MBh. 3, 2233. 2397. 3009. 8, 3789. R. 1, 8, 2. 2, 35, 17. 42, 26. R. Gorr. 1, 21, 9. 3, 70, 12. 4, 17, 21. 38, 59. Ragu. 1, 32. 9, 9. 31. Spr. 2980. Kathâs. 39, 243. 91, 4. LA. (III) 90, 11. 92, 5. Mârk. P. 99, 1.

वसुधाधिपति m. dass. R. 3, 4, 28. Râga-Tar. 3, 344. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 505, Cl. 8.

वसुधाधिपत्य n. *Königthum* Spr. 406. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 27, 10.

वसुधान 1) adj. (f. ई) *Güter enthaltend, — aufbewahrend* AV. 11, 2, 4. 12, 1, 6. Nir. 9, 42. Kâṭhâ. Up. 3, 13, 1. — 2) n. *das Güterschenken* Nir. 9, 42. Mantrabr. zu VS. 21, 58.

वसुधापति m. *Herr der Erde, — des Landes, König, Fürst* Hariv. 8374. Spr. (II) 416.

वसुधापरिपालक m. *Hüter der Erde*, Beiw. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4, 8, 33.

वसुधापाल m. *Hüter der Erde, — des Landes, König, Fürst* MBh. 14, 2413.

वसुधार 1) adj. *Reichthümer bergend:* मुक्तानियोगिनो बाह्या वसुधारा मरौभुताम् Spr. 2220. — 2) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55, 7. — 3) f. आ N. pr. *a*) einer buddhistischen Göttin Taik. 1, 1, 19. Târan. 220. 247. 267. — *b*) eines Flusses Hariv. 12387. — *c*) der Residenz Kubera's Çabdam. im ÇKDr.

वसुधारा f. *ein Strom von Gütern, — Gaben;* pl. MBh. 15, 420. — Vgl. auch u. वसुधार.

वसुधारिन् adj. *Schätze bergend:* f. Bez. *der Erde* MBh. 3, 10942.

वसुधासुत m. *der Sohn der Erde, der Planet Mars* Varâh. Bṛh. S. 16, 15.

वसुधित ved. P. 7, 4, 45. वसुधितमघो नुक्षति Schol. wohl so v. a. *Güterbesitz.*

वसुधिति 1) adj. *Güter besitzend, — spendend:* die Açvin ṚV. 1, 181, 1. धनं कृते वसुधितौ जिहाते 3, 31, 17. 4, 48, 3. देवो देष्टरी VS. 28, 15. Nir. 9, 42. Çâṅkh. Ça. 8, 18, 5. वायुं नियुतः सचत स्वा उत श्वेत वसुधितिं निरेके (vgl. Sâyaṇa K. zu P. 7, 4, 45) ṚV. 7, 90, 3. — 2) f. *Güterspende:* स हि वेदा वसुधितिम् ṚV. 4, 8, 2.

वसुधेय n. *Güterspende* oder *Güterbesitz* in der Formel वसुवने वसुधेयस्य वेतु (वीताम्, व्यतु) VS. 21, 48. 28, 12. TBr. 2, 6, 14, 1. 3, 5, 9, 1. Çat. Br. 1, 8, 2, 16. 2, 2, 3, 25. Nir. 9, 48. fg. Çâṅkh. Ça. 1, 13, 1. fgg.

वसुनन्द m. N. pr. eines Fürsten Râga-Tar. 1, 339.

वसुनन्दक = लेखक Hîn. 150.

वसुनीति gaṇa दासीभारादि zu P. 6, 2, 43, Vârtt. 2. adj. v. l. zu वसुनीथ.

वसुनीथ adj. *Güter bringend:* Agni VS. 12, 44.

वसुनेत्र m. N. pr. eines Brahmanen Târan. 5. 93.

वसुनेमि m. N. pr. eines Schlangendämons Kathâs. 9, 80.

वसुंधर 1) adj. *Schätze bergend* Hariv. 7426. — 2) m. *a*) pl. Bez. der den Vaiçja entsprechenden Bewohner von Plaksha Bhâg. P. 5, 20, 11. — *b*) N. pr. eines Mannes Kathâs. 57, 7. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124, b, 30. Ind. St. 8, 389. — 3) f. आ *a*) *die Erde; Land, Reich* Vop. 26, 60. AK. 2, 1, 3. H. 935. Hall. 2, 2. रुरुत्यग्रहघोषेण पूरयंस्तां वसुंधराम् MBh. 3, 2114. 4, 554. R. 2, 88, 18. 110, 4. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 77. Ragu. 4, 7. Varâh. Bṛh. S. 18, 2. Râga-Tar. 1, 101. अर्धसंज्ञातमस्येव तोयं प्राप्य वसुंधरा *Land, Boden* MBh. 3, 3007. वसुंधरेवोप्तबीजा Çik. 151. नोल° Varâh. Bṛh. S. 34, 104. पिबत्यसृग्भूरि रणे वसुंधरा 36, 8. वसुंधरायां पतिता *Erdboden* R. 3, 68, 40. °पृष्ठे पतितः Paṇḍar. 101, 23. — *b*) Bez. eines Theilchens der Prakṛti Verz. d. Oxf. H. 23, b, 2. — *c*) N. einer buddhistischen Göttin Wilson, Sel. Works II, 13. 22. — *d*) N. pr. einer Tochter Çvaphalka's Hariv. 2083. einer Fürstin Daçak. 194, 15. — *e*) du. Bez. zweier Kumâri an Indra's Banner Varâh. Bṛh. S. 43, 40.

वसुंधराधर m. *Träger der Erde* d. i. *Berg* MBh. 7, 4891.

वसुंधराधव m. *Gatte der Erde* d. i. *König, Fürst* Rîâ-Tar. 7,1127.

वसुंधरेशा adj. f. *den Berger von Gütern* (Kṛshṇa) *zum Herrn habend*, Bein. der Rádhá Paṅkân. 2,5,27.

वैसुपति m. *Herr der Güter*, häufig mit dem Beisatz वसूनाम्: Agni ṚV. 2,1,11. 6,4. 5,4,1. वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने 8,24,24. Indra 1,9,9. 170,5. 3,30,19. 36,9. 4,17,6. Savitar 7,45,3. Kubera Paṅkân. 3,7, 7. *Herr der* Vasu, so wird Kṛshṇa genannt 4,8,33.

वसुपत्नी f. *Herrin der Güter:* वसूनाम् als Beiwort der Kuh ṚV. 1,164,27.

वसुपातृ m. *Beschützer der* Vasu: Kṛshṇa Paṅkân. 4,8,33.

वसुपाल m. *Hüter der Güter*, Bez. *des Königs* Buâc. P. 9,11,21.

वसुपालित m. N. pr. eines Mannes Daçak. 67,13.

वसुपूज्यरात् m. N. pr. des Vaters des 12ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi H. 37. — Vgl. वासुपूज्य.

वसुप्रद् 1) adj. *Güter verleihend* MBu. 5,3954. Çiva Çiv. — 2) m. Bez. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBu. 9,2565.

वसुप्रभा f. 1) Bez. einer der sieben Zungen des Feuers H. 1099, Schol. — 2) N. der Residenz Kubera's H. ç. 40.

वसुप्राण m. *Feuer* Çabdan. im ÇKDa.

वसुबन्धु m. N. pr. eines berühmten buddhistischen Gelehrten, Verfassers des Abhidharmakoça, Burn. Intr. 363. 571. Lot. de la b. l. 359. Hiouen-thsang I,105. 115. 269. Vie de Hiouen-thsang 83. 97. 114. Wassiljew 43 u. s. w. Schiefner, Lebensb. 310 (80). LIA. II, Anh. VIII (hier fälschlich °बन्ध). Târan. 4 u. s. w.

वसुभ n. *das unter* Vasu *stehende* Nakshatra Dhanishṭhâ Vaṛâh. Bṛh. S. 10,16. 15,21.

वसुभृत् m. N. pr. eines Gandharva Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 4.

वसुभूति m. ein Vaiçja-Name Kull. zu M. 2,32. N. pr. eines Brahmanen Wilson, Sel. Works I,298. Kathâs. 73,206.

वसुभृद्यान m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha Buâc. P. 4,1,41.

वसुमति m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 108,49.

वसुमती s. u. वसुमत्त्.

वसुमतीपति m. *Herr der Erde, — des Landes, König, Fürst* Rîâ-Tar. 4,218. 659.

वसुमत्ता (von वसुमत्त्) f. *Reichthum* MBu. 2,1695.

वसुमनस् N. pr. eines Mannes mit dem patron. Raṇhidaçva, Verfassers von ṚV. 10,179,3. ein Sohn Harjaçva's und Fürst von Kosala MBu. 2,333. 3,8504. 13302. 4,1768. 5,3954. 12,2536. fgg. 3465. fgg.

वैसुमत्त् (von वसु) 1) adj. *a*) *mit Gütern versehen, Güter enthaltend; begütert, reich:* रयि ṚV. 1,118,10. 123,3. 4,4,10. रयि 1,159,5. 4,34,10. भाग 10,11,3. पर्वत 2,24,2. Himmel und Erde 3,30,11. गृह Çâṅkh. Gṛhj. 3,4. वेश्मानि R. Gorr. 2,86,3. — ṚV. 9,69,8. 86,38. न दरिद्रो वसुमतः सखा Spr. 4295. Vaṛâh. Bṛh. S. 43,2. Bṛh. 13,9. वसुमत्तर MBu. 5,3954. — *b*) *von den* Vasu *begleitet:* Indra und Agni Âit. Br. 2,20. Kâty. Çr. 10,7,14. Çâṅkh. Çr. 6,7,10. TS. 2,2,4,5. 7,5,3,2. Kâṭh. 33,7. Âçv. Çr. 2,11,11. MBu. 2,447. वैसुमत्रण heisst Soma TS. 3,2,8,2. — 2) m. *a*) N. pr. eines Fürsten mit dem patron. Aushadaçvi (vgl. वसुमनस्) MBu. 1,3539. 3663. fgg. 2, 127. 5, 84. eines Sohnes des Manu Vaivasvata Mârk. P. 79,12. Buâc. P. 8,13,2. des Kṛshṇa 10,61,12. des Çrutâju 9,15,2. des Gamadagni 13. N. pr. eines Ministers des Dushjanta Çak. 80,23, v. l. — *b*) N. pr. eines Berges im Norden Vaṛâh. Bṛh. S. 14,24. Mârk. P. 58,41. — 3) f. वसुमती *a*) *die Erde; Land, Reich* AK. 2,1,3. H. 936. Hall. 2,1. MBu. 3,1688. 12,918. R. Gorr. 1,41, 21. 2,43,16. 3,20,16. 5,78,15. भवतु वसुमती सर्वसंपन्नसस्या Spr. 3997. Rag. 8,82. Çak. 24. Mâlav. 81. Vaṛâh. Bṛh. S. 27,8. 32,6. Râja-Tar. 4,7. Z. d. d. m. G. 14,574,23. Vop. S. 176. *Land, Gegend* MBu. 3,10323. *Erdboden* R. 3,10,7. पद्भ्यां स्पृशेदसुमतीं यदि सा Vikr. 79. °पृष्ठ *die Oberfläche der* (sphärischen) *Erde* Golâdh. 8,2. — *b*) Bez. zweier Metra: α) *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. II, 159 (II, 4). — β) *4 Mal* ––⏑⏑⏑– Ind. St. 8,366. — *c*) N. pr. einer Gemahlin Dushjanta's Çak. 59,13. fg. einer Brahmanenfrau Kathâs. 68,34.

वसुमय (wie eben) adj. (f. ई) *aus Gütern bestehend:* धारा Çat. Br. 9,3,3,4.

वसुमित्र m. ein gewöhnlicher Mannsname Sarvadarçanas. 18,4. N. pr. eines Fürsten MBu. 1,2677. eines Sohnes (Grosssohnes) des Agnimitra Mâlav. 70,23. 90. VP. 471. Buâc. P. 12,1,15. N. pr. eines berühmten buddhistischen Gelehrten Burn. Intr. 447. 566. fgg. Hiouen-thsang 94. fg. Wassiljew 49 u. s. w. Schiefner, Lebensb. 310 (80). LIA. II, Anh. IV. Târan. 60 u. s. w.

वसुर adj. etwa *werthvoll* oder *reich* (von वसु) Kâṭh. 12,11.

वसुरात m. N. pr. eines Mannes Mârk. P. 114,12. 15. Z. d. d. m. G. 14,566.

वसुरुच् adj. etwa *wie die* Vasu d. i. *wie Götter glänzend:* घादो के चित्पर्ण्यमानम् घाप्यं वसुरुचो दिव्या घन्वेनूषत ṚV. 9,110,6.

वैसुरुचि m. N. pr. eines Gandharva H. 183, Schol. AV. 8,10,27.

वसुरूप adj. Vasu-*artig*, unter den Beinn. Çiva's MBu. 14,205. im Piṇḍa-Opfer der Väter wird ein Ahnherr angeredet: एतः घमुकशर्मन् घमुकगोत्र वसुरूप Saṅsk. K. 236, *a*, 2.

वसुरेतस् *Feuer, der Gott des Feuers* (*Same der* Vasu oder *des Reichthums*) MBu. 1,1021. 2165. 3319. R. 7,31,7. वसुरेतःसुवर्चसम् unter den Beinn. Çiva's MBu. 14,206. auch वसुरेतस् allein (घग्नौ रेतःसेचनात् Nilak.) 7,2378.

वैसुरोचिस् Uṇâdis. 2,112 (parox.). m. N. pr. ṚV. 8,34,16. nach der Anukr. eine Abtheilung der Aṅgiras. वसुरोचिषः सूर्यवर्चसः साम Ind. St. 3,233, *b*. neutr. = यज्ञ Çâṅkhây.

वसुल m. 1) *ein Gott* (von वसु) Taiṭt. 1,1,5. — 2) oxyt. Hypokoristikon von वसुदत्त P. 5,3,83, Vârtt. 3, Schol.

वसुवन्, so v. a. वसुवनि in der unter वसुधेय angeführten Formel, wo der gen. von वसुवन abhängt, wie वसुपतिर्वसूनाम्. Nach dem Comm. *das Gewinnen von Gut*, oder auch voc. von वसुवनि, gegen den Ton und gegen den Sinn.

वसुवन n. *der* Vasu-*Wald*, Bez. eines mythischen Landes im NO. Vaṛâh. Bṛh. S. 14,31.

वसुवनि adj. *Gut heischend* oder *verschaffend:* स देवतो वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्धं पृच्छमान एति ṚV. 7,1,23. AV. 7,60,1 (v. l. VS. 3,61). 13,4,36.

वैसुवत्त् (von वसु) adj. *mit den* Vasu *verbunden:* Agni AV. 19,18,1.

वसुवाह् m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,44.

वसुविद् adj. *Gut verschaffend:* Agni ṚV. 1,45,6. 6,16,41. 8,23,16. VS. 3,38. TS. 1,6,2,1. und andere Götter ṚV. 1,46,2. 18,2. 91,12. 7, 41,6. Çiñkh. Çr. 2,15,3. Kauç. 78. 108. — ṚV. 1,164,19. त्रिन्वा धियो वसुविदः 3,49,12. 50,3. 10,42,3. 9,86,39. 101,11. AV. 18,4,48.

वसुवृष्टि f. *ein Regen von Gütern, — Schätzen* Verz. d. Oxf. H. 132, *b*, No. 242.

वसुशक्ति m. N. pr. eines Mannes Paṇḍat. ed. orn. 1,7.

वसुश्रवस् adj. etwa *durch Reichthum bekannt* oder *Reichthum strömend* (श्रवस् = स्रवस्) ṚV. 5,24,2. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

वसुश्री f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBn. 9,2632.

वसुश्रुत m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âtreja, Liedverfassers von ṚV. 5,3. fgg.

वसुश्रेष्ठ 1) adj. *der beste unter den* Vasu als Bein. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4,8,33. — 2) n. *Silber (das beste Gut)* Riḍan. im ÇKDn.

वसुषेण (वसु + सेना) m. ein anderer Name Karṇa's Trik. 2,8,18. MBn. 1,2776. 2782. 4404. 4411. 3,17165. fg. 5,4764.

वसुसार 1) m. N. pr. eines Mannes Tiran. 14. — 2) f. आ *die Residenz Kubera's* H. ç. 40; vgl. वसुधारा unter वसुधार und वस्वोकसारा.

वसुस्थली f. = वसुसारा Çabdam. im ÇKDn.

वसुस्रु m. *ein best. Baum,* = वक Ratnam. im ÇKDn. °क m. dass. Çabdam. im ÇKDn.

वसुहोम m. N. pr. eines Fürsten der Aṅga MBn. 12,4469. fgg.

वसूक 1) m. *ein best. Baum* (n. *die Blüthe*), = वक Dvitîjak. im ÇKDn. — 2) n. *eine Art Salz* H. 942. — Vgl. वसुक.

वसूतृ (वसु + तृ) adj. *Güter auftreibend:* इन्द्रं वसोवानं वसूतृवर्यम् ṚV. 8,88,2.

वसूत्तम m. *der Beste unter den* Vasu, Bez. Bhîshma's Bhâg. P. 1,9,9; vgl. LIA. 1,628.

वसूदेक m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,13. 19,*a*,33.

वसूमती (aus metrischen Rücksichten statt वसुमती) adj. f. *die Reiche* Harîv. 3288.

वसूयु (von वसु) *um Güter —, um Gaben angehen, nach Gaben verlangen:* या वां सुम्नाय तुष्टवद्वसूयात् ṚV. 8,8,16.

वसूयी adv. instr. AV. Paipp. 4,30. *mit dem Wunsche nach Gaben* ṚV. 1,97,2. 165,1.

वसूर्य (von वसूयु) adj. *Gut begehrend, erwerbslustig, begehrlich* ṚV. 1,49,4. 51,14. 62,11. दीधिति 186,11. धी 7,67,8. 2,11,1. 4,44,1. 5,29, 15. 7,1,6. ज़रितारः 32,2. 10,47,1. वसूयवो वसुपतिं क्षयाणाम् Vilakṣ. 4,6. वसूयव आत्रेयाः als Liedverfasser von ṚV. 5,25. fg.

वसोर्धारा und वसोष्पति s. u. वसु 3) *α*) *α*) *β*).

वस्क्, वस्कते (गतौ) Dhâtup. 4,27.

वस्क m. = अध्यवसाय Bucâpa. im ÇKDn.

वस्कराठिका f. *Scorpion* (कालिका) Hân. 135.

1. वस्तर् (von 2. वस्) in दोषा°. Wir bleiben bei der Erklärung *im Dunkel des Abends leuchtend* stehen (vgl. Sây. zu ṚV. 4,4,9. 7,15,15) und sehen eine Bestätigung derselben in der Formel: यदि सायम् दोषावस्तर्नमः स्वाहेति। यदि प्रातः। प्रातर्वस्तर्नमः स्वाहेति *spät leuchtender, früh leuchtender* Âçv. Çr. 3,12,4. Ein adv. वस्तर् ist sonst nirgends zu finden.

2. वस्तर् (von 3. वस्) nom. ag. 1) *Verhüller* nach Sây. तूर्णी वस्ता नैनिता मूर्यस्य ṚV. 3,49,4. Liesse sich zu 1. वस्तर् ziehen. — 2) *anziehend* (ein Gewand) Kauç. 107.

3. वस्तर् (von 3. वस्) nom. ag., superl. वस्ततम (zur Etymologie) *am meisten wohnend* Çat. Br. 8,1,4,6.

वस्तव्य (wie oben) adj. 1) impers. *zu verweilen, sich aufzuhalten, zu wohnen* MBn. 1,5787. 4,15. पराजितैरिह वस्तव्यं नैश द्वादश वत्सरान्। वने 1473. 13,6518. 14,888. कृतेन चापि शूरेण वस्तव्यं त्रिदिवे सुखम् Harîv. 8123. R. 1,76,13 (77,16 Gorr.). 2,26,38 (39 Gorr.). 27,4. 29,8. 101,24 (110,19 Gorr.). 111,26. R. Gorr. 2,26,24. 3,53,16. Spr. 96 (II). 994. 1375. 2928. तेषु साधुषु 4536. Vaitân. Bṛh. S. 2,12. Kathâs. 43,31. Prab. 115,7. Bâlar. P. 11,6,35. Paṇḍat. 63,19. गुरुकुले Sarvadarçanas. 124,2. *zu verweilen* so v. a. *auszubleiben:* मामाहूयं न वस्तव्यं वसन्वध्यो भवेत् R. 4,40,69. 41,77. — 2) *zuzubringen:* चतुर्दश हि वर्षाणि वस्तव्यानि वने त्वया R. 2,40,12 (39,17 Gorr.). MBn. 3,14837.

वस्तव्यता (von वस्तव्य) f. *Aufenthalt:* ये त्वया कीर्तिता देषा वने वस्तव्यतां प्रति R. 2,29,2.

वस्ति (वस्त die Bomb. Ausg. des MBn. und Vaitân. Bṛh. S.) Uṇâdis. 4,179. m. Sindh. K. 250,*a*,4. m. f. 251,*a*,12. Trik. 3,5,17. 1) m. *Blase. Harnblase* H. 606. AV. 1,3,4. 11,3,43. VS. 19,88. 23,7. TBr. 2,2,9,2. Çat. Br. 10,6,1,5. 12,9,1,3. Kauç. 14. 26. Kâṭhân. Up. 5,16,2. M. 8,284. Jâḍ. 3,94. Suçr. 1,48,13. 2,197,1. Vaitân. Bṛh. 1,4. Weber, Rîmây. Up. 342. °मूल MBn. 3,13965. 12,6871. °शोधन Suçr. 1,174,4. °पीडा 261,19. °कृच्छ्र 165,21. °व्यापद् Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,36. *die Gegend unterhalb des Nabels:* वस्तिर्नाभेरधः AK. 2,6,2,24. Med. f. 54. वस्तिः स्त्रियाः प्रशस्ता विपुला मृदो स्तोकं समुन्नता। रोमशा च सिराला च Kâçikâ. 37, 44 (nach Auparcey). Vaitân. Bṛh. S. 31,34. 32,6. — 2) *Klystierblase, Klystierbeutel;* auch *das Klystier* selbst Med. Suçr. 2,196,4. 13. 197, 15. 19. 198,2. 201,8. fgg. सप्तीर् 227,2. 20. वस्तिभिर्दीयते यस्मात्तस्माद्वस्तिर्विधीयते Çiñkh. Sâṃ. 3,5,1. 2. 7. °विधि Verz. d. Oxf. H. 304,*b*,29. °कल्प 307,*a*,30. वस्त्यर्थमौषधं दत्त्वा Kathâs. 64,18. वस्त्यौषधं गुदे मूर्ध्व दीयते न तु पीयते 18. वस्त्यादिदानप्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 282,*b*,23. fg. वस्ती (वास्ति) bei Selbstpeinigungen 234,*b*,6. fgg. — 3) sg. und pl. *Fransen* AK. 2,6,3,15. H. 667. Med. Hall. 2,296. — Vgl. अज्ञ°, इन्द्र°, उत्तर°, नेत्र°, वात°, सिद्ध°, स्नेह°, वास्तेय.

वस्तिक adj. als Bez. eines in einem ehrlichen Kampfe nicht anzuwendenden Pfeiles MBn. 7,8038. वस्तिकः शल्यदण्डसंधौ शिथिलस्तस्योद्धरणे शल्यं वस्तिमध्ये सञ्चरति दण्डमात्रं निःसरति। अन्ये वस्तक इति पठित्वा मृदुवर्तित इति व्याचक्षुः Nîlak.

वस्तिकर्मन् n. *Anwendung des Klystiers* Suçr. 1,196,3.

वस्तिकर्माष m. *Sapindus detergens Roxb., der Seifenbaum* Çabdar. im ÇKDn.

वस्तिकुण्डलिका f. *eine best. Blasenkrankheit* Çiñkh. Saṃ. 1,7,40. — Vgl. वातकुण्डलिका.

वस्तिबिल n. *Blasenöffnung* AV. 1,3,6.

वस्तिमल n. *Urin* H. 633.

1. वँस्तु (von 2. वस्) f. *das Hellwerden, Tagen; Morgen, Frühe* Naigh. 1,9. Nir. 3,15. 8,9. वस्तोरुषसः ṚV. 1,79,6. 7,10,2. दोषा वस्तोः 1,104,1. 179,1. 6,5,2. 39,2. 8,25,21. 10,40,4. वस्तोर्वस्तोः *alle Morgen* 1.8. एकस्या वस्तोः 1,116,21. वस्तोरस्याः *heute früh* 10,110,4. 6,4,2. प्रति वस्तोः 2,39,8. 4,45,5. 10,189,3. मदि ह्येतर्हि कुरुचर्यद्द वस्तोः 4,16,4. 1,177,5. VS. 28,12. तुभ्यो वस्तुभ्य राजसि ṚV. 8,19,31. 60,15. Vgl. auch u. 2. वस् infin.

2. वँस्तु (von 3. वस्) Uṇâdis. 1,76. u. AK. 3,6,2,13. 1) *Sitz, Ort:* व्रणा° Suçr. 1,83,7. 11. Vgl. कपिल°. — 2) *Ding, Gegenstand, ein reales Ding* AK. 3,4,15,38. Taik. 3,2,2. H. 168. स्रापणे प्रसारितं वस्तु P. 6,1,82, Schol. इष्ट Megh. 111. स्पृहावती केषु वस्तुषु Ragu. 3,5.5,18. अनास्था वाग्विषवस्तुषु Kumâras. 6,13. दर्शनीय Çik. 23,1. परिरक्षार्थ 8.175. सत्यानामपि वस्तूनां संकृतिः कार्यकारिका Spr. 237. अवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च 1713. स्वभावसुन्दरं वस्तु 3331. Varâh. Bṛh. S. 31,27. यस्यां (करिणिकायां) यस्ति च वस्तु किम् Kathâs. 29,10. 36,65. Mâlav. P. 81,63. स्त्रीवस्त्वेवोक्तम् Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 138. यन्नास्ति तदस्ति वस्त्विति मृषा ज्ञात्वद्विरास्तिके: Prab. 27,9. °धी 108,5. वास्तव Bhâg. P. 1,1,2. 2,6,4. 10,23. वस्तूनि पण्यानि 6,16,6. 8,6,25. 8,35. Pañcat. 1,11,12. Pañcât. 137,22. 253,19. Hit. 114,17, v. l. भद्य° Hit. ed. Johns. 1916. आद्य° Pañcat. 1,13,21. Nilak. 26. 259. Bâlar. 14. नित्यानित्यवस्तुविवेक Vedântas. (Allah.) No. 9. Sarvadarçanas. 13,4. 22,20. fgg. 35,1. 22. 44,10. वस्तुजातम् *die Dinge* 17,12. 53,10. नावस्तुनो वस्तुसिद्धिः *aus Nichts wird nicht Etwas* Kap. 1,79. अको वस्तुनि मात्सर्यमको भक्तिरवस्तुनि *was da ist, was nicht da ist* Kathâs. 21,49. अवस्तुनिर्बन्धपर Kumâras. 5,66. Kap. 1,20. Bhâg. P. 5,10,6. 7,4,33. Vedântas. (Allah.) No. 20. 79. प्रतिबुद्धवस्तु adj. *Realität* Bhâg. P. 3,28,38. क्रिया हि वस्तूपहिता प्रमोदते *ein würdiger Gegenstand* Ragu. 3,29. वस्तूनि so v. a. *Geräthe* Bhâg. P. 2,6,24. वस्तुपाणयः *die zu Etwas erforderlichen Dinge in der Hand haltend* 10,84,45. वस्तु am Anfange eines comp. so v. a. वस्तुतस् (s. bes.) *in Wirklichkeit* 5,18,37. — 3) *Sache, Angelegenheit, das worum es sich handelt:* यद्यपि सर्वगं वस्तु तत्रैव प्रतिपादितम् MBh. 1,70. वस्तुग्रशक्येषु समुद्यमश्चेच्छक्येषु मोहादमुद्यमश्च Kâm. Nîtis. 15,25. निर्वाहः प्रतिज्ञवस्तुषु Spr. 672. स्मरणं प्रियवस्तुषु 1217. न किंचित्कचिदस्तीह वस्त्वसाध्यं विपश्चिताम् 1351. सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः 273. ज्ञात° adj. Kathâs. 17,53. 22,191. 32,121. 60,226. 232. वस्तुनि व्यक्तिमागते Râjat. 1,231. वस्तु निर्णीयतां स्वयम् 6,27. क्षुद्रवस्तुषु MBh. 4,118. वक्तारः शास्त्रवस्तुषु Harîv. 13767. उदाहरणवस्तुषु Kumâras. 6,65. कस्मिन्नभिनयवस्तुन्युपदेशं दर्शयिष्यामि Mâlav. 16,12. पानभोजनवस्तुषु Spr. 402. कोपप्रसादवस्तूनि 749. भीतपरित्राण° 3172. — 4) *Stoff, Gegenstand* einer Rede u. s. w. Taik. 3,2,21. im Gegens. zu वाच् *Form der Rede* Spr. 3975. कालिदासग्रथित° (नाटक) Çik. 3,12. Vikr. 2.3,8. Mâlav. 3,9. Daçar. 1,11.51. Sâh. D. 5,9. 129,19. 257. fg. 281. °प्राधान्य Pratâpar. 7,a,5. 15,b,4. 20,a,2. °प्रतिवस्तुभाव 77,b,2. °घनि 15,b,4. 9. 16,a,2. 8. कथा° Râjat. 1,8. Verz. d. Oxf. H. 50,a, N. 1. °निर्देश *Inhaltsangabe* Sâh. D. 559. Kâvyâd. 1,14. — 5) bei den Buddhisten so v. a. *Statut* Wassiljew 85. — 6) वस्तुमम MBh. 13,5519 fehlerhaft für बधुमम, wie die ed. Bomb. liest. Bhâg. P. 3,4,27 liest die ed. Bomb. °पत्तिषु statt °वस्तुषु. — Vgl. प्रति°, भोग°, मङ्गल्य°, यथा°, युद्ध°, रङ्ग°.

वस्तुक n. = वास्तूक Çabdar. und Râjân. im ÇKDr. — In der Stelle यावाकृतिविशेषप्रत्ययादेनामनूनवस्तुकां संभावयामि Mâlav. 7,22 übersetzt Wilson das Wort durch *Herkunft;* wir vermuthen einen Fehler, etwa für °वस्तुभूतां.

वस्तुतस् (von 2. वस्तु) adv. 1) *von Seiten der* (erforderlichen) *Dinge, — Gegenstände:* विधिमत्त्व° Bhâg. P. 5,19,26. देशकालार्ह° 8,23,16. — 2) *in Wirklichkeit* Râja-Tar. 6,364. Wilson, Himat. Up. 287. Bhâg. P. 5, 18,5. 6,8,29. 7,13,5. Kull. zu M. 7,17. Sarvadarçanas. 17,1. 30,13. 94,6. 115,11. 177,9. Nilak. 25. 35. 240. 259. Siddh. K. zu P. 6,3,34. 7,1,52. Kusum. 19,9. Schol. zu AV. Prât. 4,35.

वस्तुता (wie eben) f. 1) *das Gegenstand-Sein:* परिरक्षावस्तुतां प्रया *zum Gegenstand des Gespöttes werden* Spr. (II) 305. — 2) *Wirklichkeit:* वस्तुतया *in Wirklichkeit* Bhâg. P. 7,10,49. 13,58. 77. 11,18,26. 28,32.

वस्तुत्व (wie eben) n. = वस्तुता 2) Kap. 1,21.

वस्तुधर्म m. *die Natur —, die wahre Beschaffenheit der Dinge* Kathâs. 57,129. pl. Sâh. D. 10,16. °त्व n. Kap. 1,44.

वस्तुपाल m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,21.

वस्तुबल n. *die Macht der Dinge* Sarvadarçanas. 15,2. — Vgl. वस्तुशक्ति.

वस्तुभाव m. *Realität, Wirklichkeit:* °भावेस् *in Wirklichkeit* Râja-Tar. 1,309 (st. मात्र ist mit der ed. Calc. भाव zu lesen).

वस्तुभेद m. *ein wirklicher —, ein wesentlicher Unterschied* Spr. 2139. Bhâg. P. 8,12,8.

वस्तुमत् (von 2. वस्तु) in उत्तम° *aus den vorzüglichsten Stoffen bestehend:* शय्यासनानि MBh. 1,7210.

वस्तुविचार m. *gründliches Urtheil,* personif. Prab. 70,6. fgg.

वस्तुवृत्त n. *das wirklich Vorgegangene, der wahre Sachverhalt* Râja-Tar. 6,59.

वस्तुशक्ति f. *die Macht der Dinge:* °तस् Spr. 947. pl. 238 (II). Gorâkhaç. 3,5. — Vgl. वस्तुबल.

वस्तुशासन n. *ein Original-Edict* Râja-Tar. 1,15. *donation de propriétés* Tr., *Schenkungsurkunde über Eigenthum* Lassen (IA. II, 19, N. 3).

वस्तुशून्य adj. *keine Realität habend, unwirklich* Jogas. 1,9. Verz. d. Oxf. H. 171,a,2.

वस्तूकी f. *eine Gemüseart,* = खेतचिल्ली Râjân. im ÇKDr.

वस्तूत्थापन n. in der Dramat. *das Erfinden von Dingen, das Vorführen unwirklicher Dinge* Bhar. Nâṭyaç. 20,38. Daçar. 2,54. Sâh. D. 420.

वस्तूपमा f. *ein Gleichniss, bei dem zwei Dinge schlechtweg ohne Angabe des tertium comparationis, welches als bekannt vorausgesetzt wird, mit einander verglichen werden;* Beispiel: राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव Kâvyâd. 2,16.

वस्त्य n. *Wohnung* AK. 2,2,4. geht vielleicht nur scheinbar auf 5. वस् zurück; vgl. पस्त्य.

वँस्त्र (von 3. वस्) Uggval. zu Uṇâdis. 4,158. u. Sidd. K. 249,b,3. m. (dieses nicht zu belegen) und n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. *Gewand, Kleid; Zeug, Tuch* AK. 2,6,2,17. 3,4,26,204. H. 666. Hall. 2,293. 5, 85. वसिष्व वस्त्राणि ṚV. 1,26,1. भद्र 134,4. 3,39,2. 5,29,15. 1,140,1. 152,1. 2,14,3. वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति 5,47,1. 6,47,23. 9,8,5. 96,1. AV. 5,1,3. 9,5,25. 12,3,31. 14,2,41. Çat. Br. 3,3,3,4. Kâṭy. Çr. 14,1,

20. 2,29. कृत° Kaçç. 47. 37. वधू° Âçv. Gṛhy. 1,8,12. एक° Gobh. 3,2, 42. Pân. Gṛhy. 3,10. M. 3,52. 9,219. 11,188. कौशवस्त्रवेष adj. 2,194. MBh. 3,2810. 2730. R. 2,32,16. 52,82. Varâh. Bṛh. S. 41,3. 46,15. तौम 55,108. पीत° Weber, Kṛshṇaj. 291. Vaṭ. in LA. (III) 8,22. 17,18. स्वनिते वस्त्रपर्णानाम् AK. 1,1,6,2. वस्त्रापकारक M. 11, 31. गोपीनां वस्त्रकरणम् Pañcat. 1,11,6. तहस्त्रमात्रः प्रावृणोत् MBh. 3,2997. सूक्ष्मवस्त्रमवतिष्य मुनिवस्त्राण्यवस्त्र कृ R. 2,37,7. °परिधान Verz. d. Oxf. H. 86, b, 13. fg. सूक्ष्मवस्त्रधर (जघन) MBh. 3, 1827. सितवस्त्रोष्णीषधर Varâh. Bṛh. S. 43,30. दिव्यवस्त्रधर Brahma-P. in LA. (III) 54,3. °धारण Verz. d. Oxf. H. 267,b,9. मृतवस्त्रभृत् M. 10,35. मूर्ध्नि अपि शोभते तावत्सभायां वस्त्रवेष्टितः Spr. 2225. वस्त्रेण वेष्टितः Weber, Kṛshṇaj. 278. °मंवीत 279. °गर्भित 276. °च्छन्न Vop. 4,21. Śâṅkhâs. 13,16. रामलक्ष्मणसंत्रासं वस्त्रं क्षितमिवात्यजत् R. 4,36,3. °भोग Verz. d. B. H. No. 590. पाण्डित्यवस्त्राणि Kathâs. 18,250. °च्छेद् das Zerreissen von Gewändern Varâh. Bṛh. S. 71 in der Unterschr. °विच्छेद् 107,8. वस्त्रस्यात्तः Halâj. 2, 395. वस्त्रास MBh. 3,2217. Spr. 688. Bhâg. P. 4,23,24. वस्त्राञ्चल Kathâs. 18, 181. Hit. 63,8. वस्त्रेणोक्त R. 4,9,24. वस्त्रयोर्युगम् ein Ober- und Untergewand AK. 2,6,3,14. चोनदेशवस्त्रमहस्त्रयुगमानि Kathâs. 43,75. fg. Weber, Kṛshṇaj. 255. °युगल Pañcat. 29,16. वस्त्राणां प्रवरा शाणी Zeug MBh. 3, 13027. चोनोद्भुके चोनदेशोद्भवो वस्त्रविशेषः Schol. zu Çiç. 33. कृत्रिमवृताः — नानावस्त्रसमावृताः R. 1, 9,6. पुत्रिका स्यादवस्त्रदत्तादिभिः कृता AK. 2,10,29. °पटोला Verz. d. B. H. No. 967. Suçr. 1,25,10. वस्त्राधारक Unterlage von Tüchern 2,92,3 (so ist auch 55,11 zu lesen und demnach die Anführung unter धारक zu streichen). °यूते वस्त्रम् Seihtuch Spr. 1232. °शोपनानि unter den 64 Kalâ Verz. d. Oxf. H. 217,a, 18. Am Ende eines adj. comp. f. आ M. 9,70. MBh. 1, 4267. एकवस्त्रा 2,2216. 3,2303. Spr. 3638. Kathâs. 21,114. — Vgl. अतवस्त्र, उत्तर°, नील°, नेत्र°, वि°, स्नान° und unter दशा 1) und युग 2).

वस्त्रक n. dass.: सूक्ष्म° MBh. 2,1892.

वस्त्रकर्णिम n. *Sonnenschirm* Taik. 2,8,32. *Zelt* (?) Hâs. 69.

वस्त्रक्षेपम् adv. *so dass das Gewand durchnässt wird*; s. u. क्षेप् caus.

वस्त्रगृह n. *Zelt* Taik. 2,6,34. 3,3,213.

वस्त्रग्रन्थि m. *Schurz* (नीवि) Taik. 3,2,14.

वस्त्रघर्घरी f. *Sieb, Seihtuch* Taik. 3,3,239.

वस्त्रदा adj. *Gewänder schenkend* ṚV. 5,42,8. वस्त्रद und अवस्त्रद MBh. 3,13400.

वस्त्रदानकथा f. Titel einer *Erzählung* Wilson, Sel. Works I, 283.

वस्त्रप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1871.

वस्त्रपञ्जल m. *ein best. Knollengewächs*, = कोलकन्द Râjân. im ÇKDa.

वस्त्रपुत्रिका f. *eine Puppe aus Zeug* Çabdam. im ÇKDa.

वस्त्रपेशी f. *Franse* H. ç. 136.

वस्त्रबन्ध m. *ein Tuch, das umgebunden wird*: स्त्रीकटी° als Erklärung von नीवी AK. 3,4,22,214.

वस्त्रभूषण m. *ein best. Baum*, = साकुकण्ड Râjân. im ÇKDa.

वस्त्रमय adj. *Gewänder oder Zeug abreissend*: तापु ṚV. 4,38,8.

वस्त्रय, वस्त्रयति denom. von वस्त्र P. 3,1,21. Mit सम् *anziehen*: संवस्त्र्य लालिके वस्त्रे Bhaṭṭ. 5,62.

वस्त्रयुगिन् (von वस्त्र + युग) adj. *in ein Ober- und Untergewand gekleidet* P. 5,4,13, Schol.

वस्त्रयोनि f. *der Stoff, aus dem ein Zeug bereitet wird*: त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिः AK. 2,6,3,12.

वस्त्ररङ्गा f. *eine best. Pflanze*, = कैवर्तिका Râjân. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

वस्त्ररञ्जन m. *Safflor* Râjân. im ÇKDa.

वस्त्रवत् (von वस्त्र) adj. *ein schönes Gewand habend, schön gekleidet* MBh. 5,904. स्त्रिता सभा वस्त्रवता Spr. 4075.

वस्त्रवेश m. *Zelt* Med. m. 11.

वस्त्रवेश्मन् n. dass. AK. 2,6,3,21.

वस्त्रान्तर n. *Obergewand, Ueberwurf* Kâtjâp. 13.

वस्त्रापथक्षेत्र n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 348, b, 10.

वस्त्रिन् (von वस्त्र) adj. = वस्त्रवत् MBh. 3,13400.

वस्न Uṇâdis. 3,6. m. n. *Kaufpreis, Werth* AK. 2,9,80. H. 868. an. 2, 282. Med. n. 18 (wo अवक्रय st. अविक्रय zu lesen ist). Viçva bei Uééval. भूयसा वस्नमचरत्कनीयः ṚV. 4,24,9. वस्नेव वि क्रीणावहा इषमूर्जम् VS. 3,49. यत्कृपते यद्दनते यच्च वस्नेन विन्दते AV. 12,2,36. P. 4,4,13. 5,1,51. 56. *Lohn*, n. Med. m. Viçva a. a. O. n. = धन, वस्न und मृति (d. i. भृति, H. an. = वसन und इदय Viçva im ÇKDa. = त्वच् Râmâçrama zu AK. nach ÇKDa.

वस्नन n. = कटीभूषण Çabdar. im ÇKDa.

वस्नय् (von वस्न) *feilstehen*: यदक्रेन्द्रामा वृषभो वस्नयन्ती ṚV. 6,47,21.

वस्नसा f. *Sohne*, = स्नायु, स्नसा AK. 2,6,3,17. Taik. 2,6,18. H. 631.

वैस्निक adj. = वस्नेन क्रीणति P. 4,4,13. = वस्नं करोति, वदति oder यावदति 5,1,51. etwa *des Preises werth* (wenn die Lesart richtig ist): इमो मे यूयं वस्निको ह्यथाय Pañcav. Br. 14,3,13.

वैस्य (von वस्न) adj. *werthvoll*: यस्य ṚV. 10,34,3.

1. वैस्मन् (von 3. वस्) n. *Decke*: यवव्ययन्नसितं वस्म ṚV. 4,13,4.

2. वैस्मन् (von 4. वस्) n. *Nest*: प्र पदयो न पतन्वस्मनस्परि ṚV. 2,31,1.

वस्य (von 3. वस्) adj. *anzuziehen*: स्नात° *nach einer Waschung* Kâtj. Çr. 7,2,18.

वैस्यइष्टि (वस्यस् + 1. इष्टि) f. *das Suchen* —, *Wünschen von Besserung*, — *von Wohlfahrt*: पश्या हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये ṚV. 1, 25,4. 175,1. युवं धियं दक्षसूर्वस्यइष्टये 8,75,2.

वैस्यस् = वसीयस् 1) adj. *besser, trefflicher; angesehener, reicher*: कृधि वस्यसो नः ṚV. 2,17,8. 4,2,20. 8,48,6. 80,4. VS. 3,58. सुतः सोमो यमुतादिन्द्र वस्यान् ṚV. 6,41,4. 7,32,19. स्त्री पुंसो भवति वस्यसी 5, 61,6. 8,20,18. यद्क्रोक्ता नो वस्यसा वस्यसोदिहि 10,37,9. TBr. 2,2,9, 10. वस्यो इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः ṚV. 8,1,6. यद्या वस्यसे प्रति प्रोच्यादेदं करिष्यामीति TBr. 3,2,8,4. TS. 6,5,10,3. 7,2,9,7. संसद् 4, 2,2. श्रेयान्वस्यसो जायस्व Taitt. Up. 1,4,3. — 2) n. *das Bessere, Beste; Wohlfahrt, Ansehen* ṚV. 1,31,18. 141,12. यस्मो च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ ṚV. 2,1,16. 9,2. 39,5. 6,44,7. 8,21,9. नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्ति 5,31,2. वस्य इच्छन् 1,109,1. AV. 6,47,3. 7,103,1. ṚV. 10,92,13.

वस्यस = वस्यस् in पाप°, श्रे°.

वस्योभूय n. *Besserung, Mehrung der Wohlfahrt* AV. 16,9,4.

1. वस्र (von 2. वस्) m. *Tag* Med. r. 84.

2. वस्र (von 4. वस्) n. 1) *Haus, Wohnung*. — 2) *Kreuzweg* Med. r. 84.

वस्वनन्त m. N. pr. eines Sohnes des Upagupta Bhâg. P. 9,13,38.

वस्वोकसारा und वस्वौकसारा f. 1) N. pr. eines Flusses MBh. 3,12906. 6,242. R. 2,94,25 (103, 26 Gorr.). — 2) Bez. von Kubera's Stadt H. 190. MBh. 7,2371. R. 5,9,61. Rāgn. 16,10. वस्वोकसारा विन्द्रस्य धनदस्य च ॥ नलिनीपुर्योः H. an. 5,42. fg. वस्वोकसारेन्द्रपुरे कुबेरनलिनीपुरे: Mān. p. 306. An den unter 1) aufgeführten Stellen steht नलिनी als Flussname neben वस्वोकसारा. — Vgl. वसुधारा und वसुसारा.

1. वक्, वंक्ति und वंक्ते (Naigh. 2,14 unter den गतिकर्माणि) Dhātup. 23,35 (प्रापणे). imperat. वोल्क्ष्व्, वोल्काम्, ऊक्षम् TS. वोढम् VS.; अवाट् 2. sg. अवात्तीत् Vop. 8,134. अवात्सुम्, वति, वक्तम्, वात्तीत्, वक्तम्, वक्तम्, (धा)वक्ति: अवोढ Vop. 8,126. 134. उवाक् P. 6,1,17. Vop. 8,134. ऊर्क्षुम्, ऊक्षे Vop. 8,134. ऊक्षिषे, ऊक्षिरे, ऊक्षिवम्, ऊक्षुषी: वक्ष्यति Kār. 6 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. वक्ष्यति MBh. 1,4796. 5053. Bhāg. P. 4,25,35. Pārāśar. ed. orn. 22,21. वोढा, वोढुम् P. 6,3,113. वोल्क्वे: ऊढा: pass. ऊह्यते. ऊढ P. 6,1,15. Hierher zieht Manjun. auch वंक्ष्व VS. 8,36, was vermuthlich eine Entstellung für वस्स्व oder वत्स्व (von 3. वस्) ist. Vereinzelt ist (नि) ऊहीत 3. sg. potent. 1) *führen, fahren; mit Gespann oder zu Schiffe bringen, — fortführen, den Wagen ziehen, die Rosse führen d. h. lenken:* रथेन वामम् RV. 7,71, 2. अश्वा उषसं वक्षत: 75,6. रथ: सूर्यं वहति 4,44,1. अहं वक्षन्ति मन्यवे (अश्वा:) 6,16,43. नौभि: 1,116,3. पतंगै: 4. अश्वै: 175,4. युङ्क्ते वक्षेषु धुरि वोळ्हवे 5,56,6. 1,116,3. 18. एको अश्वो वहति रथम् 164,2. इन्द्रं वहन्ति सोमपेयाय वक्षत: 3,14,12. अश्व ऊक्षिवान् Ait. Br. 3,17. Çat. Br. 6,6,3,3. Pāraśav. Gṛ. 13,12,14. AV. 6,82,2. Çat. Br. 1,4,4,15. Kāty. Çr. 15,4,32. TS. 1,3,6,2. वक्षते (die Füsse angeredet) पृणतो गृहान् AV. 1,27,4. वक्ष वायो नियुतो याह्यस्मयु: RV. 1,135,2. 7,90,1. — वहन्ति ये अश्वा: रथम् MBh. 3,1720. R. Gorr. 2,51,10. ते कृशा: — अवक्रन्माम् MBh. 5,7107. R. 2,45,11. R. Gorr. 2,41,13. कृशा: — वहन्ति देवमादित्यम् Bhāg. P. 5,21,15. पुरुषाणां शतान्यष्टौ मज्जयामष्टचक्रस्था गुर्वीमूढ: कथंचन R. Gorr. 1,69,4. उवाक् मां हिरण्यपुरमन्तिकात् । रथेन तेन मातलि: MBh. 3,12214. शीघ्रं मां वक्ष्व 13179. वक्ष मां वीरवान्प्रति 4, 1250. पदनेन रथेनैव त्वां वक्ष्यं पुरीं पुन: R. 2,32,51 (51,19 Gorr.). Harīv. 9136. ततो मामवस्सूतो वक्षे: MBh. 5,7181. Bhāg. P. 10,1,34 (mod.). तच्छिन्नवक्षद्वहनम् Vop. 8, 6. यामसज्जा वहन्ति Siddh. K. zu P. 1,4,51. नहि वोढुं रथ: शक्त: शरान्मम MBh. 1,8169. Agni *führt* oder *geleitet* die Gegenstände des Opfers zu den Göttern: स्वाहाकृतं वहति क्रव्यम् RV. 2,3,11. 3,29,4. 10,15,12. Ait. Br. 3,47. अत्याशो यज्ञं वहन्ति 2,20. VS. 29,2. कति पात्राणि यज्ञं वहन्ति TBr. 1,5,4,1. घाम्यम् AV. 5,8,1. घृतम् 7,109,2. 9,5,17. Çat. Br. 2,2,2,24. med. RV. 2,34,12. VS. 6,12. Kauç. 5. न च क्रव्यं वहत्यग्नि: M. 4,249. R. 5,7,63. Bhāg. P. 4,7,41 (mod.). क्रतव: Çiç. 1. यज्ञम् R. 3,80,19. त्रिस्रोतसं वहति यो (वायु:) गगनप्रतिष्ठाम् *dahin treiben* Çiç. 165. — 2) intrans. *fahren, zu Wagen durchlaufen, den Wagen lenken, am Wagen u. s. w. ziehen, dahinfahren;* med.: वहमाना रथेन RV. 5,31,9. 36,5. अश्वै: 7,45,1. य आशया वहते 5, 58,1. 60,7. 8,46,26. VS. 27,33. act.: ता रु त्यहतिर्द्रवित्नु: शश्वद्यो: 6, 62,3. वहस्य: *ein am Wagen ziehendes Pferd* M. 8,146. कथमत्यप्राणा वहन्तीमे रथा मम MBh. 3,2786. 2795. घालिखन्त इवाकाशमूढ: (रथा:) 4,1283. रथाश्च नागाश्च वहन्ति देशिता: Spr. 463. R. 2,74,12 (76,17 Gorr.). यानि: किंकरसंयुक्तैरुवाह मधुसूदन: *fuhr dahin* Harīv. 6932. वहते रथं मघवा सर्वसेन: *zieht* (in reisigem Zuge) RV. 5,30,3. अर्वाश्यं यामं वहमानमारात् 10,27,19. न नाभिरङ्गे रघयो वहन्ति *laufen, rollen* Spr. 2420. विपति वहतो नक्षत्राणाम् *dahin ziehen* Prab. 54,13. *dem Wasser entlang hinfahren, schwimmen:* वहता देवेन वहनेन च Kathās. 26,21. गङ्गा गच्छत तत्रासंवहतीं यो च पश्यथ । मज्जयाम् 15,10. प्रवाहे वहतायातं सौवर्णं पद्मपञ्चकम् 40,84. 59,4. — 3) pass. dass.: उह्यते ग्रावा यत्र सोमपेयं मुखो रथ: RV. 1,120,11. वहन्तुरुह्यमान: AV. 14,2,9. वाजिभिरुह्यमाना: MBh. 3,15672. उह्यन्तो वाजिभिर्द्रुतम् 1,5337. उह्यमान इव वारुणोचित: पादचारमपि न व्यभावयत् Rāgn. 11,10. पुरुषै: तितिभुजो पोग्यैरुह्यमाना: (so ist zu lesen) Rāja-Tar. 5,33. रथमुह्यन्तं दिव्यतुरगै: Harīv. 6198. स रथो धावते ऽत्यर्थमुह्यमानो रणे तदा। उह्यमानमिवाकाशे विमानं पाण्डुरैर्हयै: (so die ed. Bomb.) MBh. 7,757. उह्यमान इवाकाशे कालमेघेन चन्द्रमा: Harīv. 3757. पति विपत्युह्यमानेव (उल्का) Vaitān. Bṛh. S. 33,7. 24. तेन प्रवेन स एवाबुह्यमानो मरीतले *zu Schiffe fahrend* Mārk. P. 74,12. मोतसोह्यमानस्य (so ist zu lesen) *vom Strome getrieben werdend* Vikr. 24. मज्जयागतो गर्भस्तारैरुह्यमानक: MBh. 3,17151. वेदशास्त्राणवे घोरे उह्यमाना इतस्तत: Vers. d. Oxf. H. 91,a,2. गुणौघैरुह्यमान: Maitrāyaṇ. 3, 2. 6,30. — 4) *fliessen, mit sich führen* (von Flüssen): मरिष्यमानं वहसी: परि यन्ति RV. 2,33,9. 9,83,1. प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति 10,28,4. तिरश्चीरापो वहन्ति. Ait. Br. 4,25. वहन्ती: (sc. आप:) *fliessendes Wasser* TS. 7,4,18,1. 6,4,2,3. Kāṭh. 22,13. Kauç. 32. उदकमवहत् *stehendes Wasser* Āçv. Gṛ. 4,4,10. प्रत्यगूर्ध्वमवहन्यज्ञ: प्राञ्चुक्षा: सिन्धुसमा: MBh. 3,2993. 16,3. Harīv. 8287. 8297. द्यावाभूमी रोदसी: — वहन्ति पत्र वै नद्य: MBh. 13,3796. R. 4,41,55. परोपकाराय वहन्ति नद्य: Spr. 1734. 3921. Kathās. 39,37. Vers. d. Oxf. H. 120,a, 16. Bhāg. P. 7,4,17. Mārk. P. 99,6. वहति निकटे कालस्रोत: Spr. 1158. क्रन्दन्ते चोदकं तस्य वहत्यावर्जितं द्रुतम् *zufliessen* MBh. 3,2936. नद्यश्च सरितो वारि वहन्त्यो ब्रह्मसंभवम् 14,783. ऊर्ध्व: सर्वरसाम्बव्य: Bhāg. P. 4,19,8. तोयं वहति सिरा पश्चिमा Vaitān. Bṛh. S. 54,6. 19. 21. 36. 39. 66. 71. 73. यत्रोधं मुञ्चद्वहतु: *fliessen einen Thränenstrom fliessen* Bhāg. P. 4,9,48. (शिर:) ववाह ?) रक्तम् Mārk. P. 88,45. — 5) *wehen* (*dahinfahren* vom Winde): मन्दं वहति मारुत: R. 3,78,12. Spr. 3137. Gīt. 5,2. Śiç. D. 19,12. — 6) *heimführen, heirathen;* med.: ज्ञानी: RV. 1,167,7. 5,37,3. य ईं वहाते य ईं वा वरेयात् 10,27,11. MBh. 1,3377. 3384. act.: उभे ते एकशुल्केन वहेत् M. 8,204. 9,94. R. 1,73,36. Kathās. 45,257. 58,86. 84,65. Bhāg. P. 3, 3,4. 4,1,6. 6,6,31. 9,2,18. 24,22. वोढुम् 4,8,18. MBh. 13,5090. act. vom Weibe: ब्राया पतिं वहति वधूर्या सुमत् RV. 10,32,2. ऊढा *geheirathet, verheirathet* (*Gattin* H. 513) AK. 2,6,4,22. MBh. 5,7459. R. Gorr. 2,34,6. 53,16. Kumāras. 3,70. Kathās. 36,54. अनूढा R. 2,63,13. so v. a. *Concubine* Sin. D. 81. ऊढपूर्वा Çiç. 79,15. 110,17. देवोढा, आर्योढा M. 3,28. कायोढान्न ebend. aus metrischen Rücksichten statt कायोढान्न. अनूढ *unverheirathet* (vom Manne) AK. 2,7,55. H. 526. ऊढात्प्रभृति *seit der Verheirathung* (eines Weibes) MBh. 5,2961. Die Form वोढ (vgl. सोढ) in der Stelle: इदं भार्याशतम् — पुत्रार्थिना मया वोढम् (वोढुम्?) MBh. 3, 10482. — 7) *mit sich —, bei sich führen:* न स पथ्योदनं वहेत् Spr. 4816. यो हि क्षिप्त्वा छिद्रमेडं गत्रकन्थां वहेत् 2575. — 8) *zuführen:* गुरुसमीरणो गन्धमानापुष्पमवान्वहन् R. 2,94,14. दिव्यगन्धवहात् Kathās. 30,190. 53,34. निदाघकाले प्रालेयं प्राय: शैत्यं वहत्यलम् Spr. 1295. र-

सिको हि वहेत्काव्यं पुण्यामोदमिवानिलः so v. a. *in die Weite führen, verbreiten* Kathās. 8,10. *darbringen:* बलिम् Bhāg. P. 1,13,29. 3,21, 16. 5,1,14. 6,3,13. भागम् 9,3. *bringen* so v. a. *verschaffen, bewirken:* तेषां योगक्षेमं वहाम्यहम् Bhag. 9,22. मनोवाग्देहवस्तुभिः । प्रेयसः परमो प्रीतिमुवाह Bhāg. P. 3,18,47. दुःखनिवहम् 3,9,9. — 9) *wegführen:* (सरस्वती) वेगेनोवाह तं विप्रं विश्वामित्राश्रमं प्रति MBh. 9,2391. यद्वेः शृङ्गं वहति पवनः किं स्वित् Megh. 14. तं (तेणं) वहत्यनिलः शीघ्रम् R. 2,93, 14 (102,16 Gorr.). Mārk. P. 17,3. कुरुक्षेत्रभोम् MBh. 1,1796. उह्यमानः (ह्रदेन) 9,2886. ह्रदेनोढम् *vom Wasser fortgeschwemmt* M. 8,189. ऊढ *fortgeschleppt, geraubt* 9,270. — 10) *tragen:* पृष्ठेन MBh. 1,5888. 6053. Kathās. 22,140. स्कन्धेन Spr. 2764. 3924. मूर्ध्ना 2684. Megh. 17. शिरसा Spr. 1847. Kathās. 62,115. मूर्ध्नि 114 (med.). Bhāg. P. 8,20,18. 9,4,34. Bhatt. 14,91. वर्तसि Spr. 592. हृदि Kathās. 56,245. प्रदक्षिणयन् Bhāg. P. 3,13,40. तेषामहं पादसरोजरेणुम् — वहेयाधिकिरीटमायुः 4,21,42. मुखे निवद्धा निर्ऋतिम् Spr. (II) 576. धर्मराजं च भीम्यं च कृष्णां च यमजौ तथा । एको ऽप्यङ्गमलं वोढुम् MBh. 3,11019. fgg. 4,148. R. 3,4,26. 5,33,31. Kathās. 18,170. 22,142. यत्रारोहन्ति जेतारो वहन्ति च पराजिताः ein Spiel Bhāg. P. 10,18,21. fg. वहन्ति शिबिकामन्ये यान्त्यन्ये शिबिकागताः Spr. 4699. Bhāg. P. 5,10,2. 6. ये खेलगामी तनुवाट् वैवाट्: Kumāras. 7, 49. ह्रस्वत् Spr. 4780. कर्भाणी सहस्राणि कोशं तस्य — ऊहुर्दश MBh. 2, 1201. वाह्यैरुह्यमानौ तौ भूरैः R. 4,25,21. 5,73,45. गुह्यकैरुह्यमाना सा (सभा) MBh. 2,385. उह्यते स्म सुवर्णेन Hāsy. 198,17. fg. वसुधा तथोह्यते येन Bhatt. 2,29. यद्भाग्यप्रणयिनस्तनयान्वहन्ति Çiç. 176. शरीरमेको वहते ऽन्तरात्मा MBh. 12,6917. गर्भम् *eine Leibesfrucht tragen* Spr. 1596. (नावः) वहन्त्यो ऽनमाढ्यं तदा संपेतुरापुगाः R. 2,89,17. fg. (97,22. fg. Gorr.). तं ऽनमस्यत्यसंधं भगवति वसुधे कथं वहसि Spr. 484. Bhāg. P. 8,20,4. वहति भुवनश्रेणीं शेषः Spr. 2763. धन्योनिधिर्वहति दुर्वहवाडवाग्निम् 203, v. l. (II). Kathās. 25,100. कार्यधुरम् MBh. 8,1663 (med.). R. Gorr. 2,21,12. 36,14. भारं स वहते तस्य Spr. 4919. Bhatt. 3,51. 15,20 (भारम् st. परम् Comm.). Bhāg. P. 5,2,11. 8,6,34. चिरोढां धुरम् Raghu. 18,11. Rājat. 5,171. क्षत्रम् Spr. 4891. चायम् Megh. 72. Kathās. 22,92. (या चलका) वहति सलिलाद्गारमुद्वेपिभानैर्मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाधवन्द्यम् Megh. 64. कतोरु कवचं वहमानाः P. 3,2, 129, Schol. धर्मं वहन्धर्म Rājat. 5,195. रक्ताम्बुकम् Megh. 10,9. वसन्तपुष्पाभरणाम् Kumāras. 3,33. नानालिङ्गानि Rājat. 4,178. 1,2. शिरः so v. a. *den Kopf hoch tragen* Hāsy. 7105. शिरांसि गर्वितान्यूढुः 8321. मूर्धानम् — उन्नेतरां वहयति शैलराजः Kumāras. 7,68. वसुंधराम्, ग्रामपटलम् *tragen* so v. a. *regieren* Rājat. 1,101. 4,119. असुभिरुह्यमानाः *von den Lebensgeistern getragen* so v. a. *am Leben erhalten* Bhāg. P. 5, 26,22. — 11) *ertragen:* मनोभवम् Mārk. P. 18,41. *ertragen* so v. a. *nachsehen, verzeihen* Bhāg. P. 5,3,13. — 12) *an sich tragen, haben:* पद्मामुपान्तत्कलिलं वदनं वहसे MBh. 11,43. वहसि हि धनकार्यं पण्यभूतं शरीरम् Mṛicch. 13,15. पीयूषपूर्णकुचकुम्भयुगम् Kāvyād. 20. वीरकाण्डवल्ल्या Kathās. 47,52. दृशा बाष्पकलामुवाह Bhāg. P. 4,8,16. वहन्निव रविप्रभाः Rājat. 4,197. — 13) *sich unterziehen, sich hingeben; an den Tag legen, äussern:* घर्मम्, विषम्, तुलाम् *sich dem Gottesurtheil mit dem Feuer, dem Gift, der Wage unterwerfen* Jiān. 2,99 (vgl. Z. d. d. m. G. 9,677, N.). वहाम सर्वे विवशा यस्य दिष्टम् Bhāg. P. 5,1,11. भगवतो ऽनुशासनम् 20. दुर्वहं योगम् MBh. 13,1918. मानुषीं दीक्षाम् Harīv. 3735. नियमान् Bhāg. P. 3,16,7. सूर्याधिकारम् Mārk. P. 111,3. कष्टम् MBh. 1,2094. घधर्मम् R. 1,23,7. लज्जाम् Spr. 382 (II). खेदम् 568. पश्चात्तापम् 3055. चित्तामेकाम् Kathās. 11,7. 79,10. निद्राम् Bhāg. P. 3,9,19. संरब्धिसंकल्पकृतम् Raghu. 16,16. प्रीतिम् Harīv. 4189. जीविताशाम् 8091. मानम् 8315. वाल्लभ्यं केशवमयम् 8321. मानम्, मदनम्, मदम् 8433. धैर्यम् R. 5,33,41 (med.). शोभाम् Megh. 53. गर्वम् Spr. 820. द्विगुणरुचिम् 2026. निष्कृतिम् 2417. कान्तिम् 3225. Bhatt. 8,49 (med.). मरुद्दुःखम् Kathās. 66,142. प्राणान् Bhatt. 16,8. परमैश्वर्यधर्मम् Pañcat. 218,3. ज्वरम् Rājat. 4,536. दृष्टवातानुकारिताम् 1,352. विपत्तिमनवम् 4,717. ऊहुरास Bhāg. P. 2,7,25. ऊढवयम् = प्राप्तवयम् 4,9,66. — 14) *bezahlen:* मिथ्याभियोगी द्विगुणमभियोगाद्दहं वहेत् Jiān. 2,11. 292. — 15) *zubringen* (eine Zeit): वाहिः केनाप्युपायेन वहु त्वं नालिकाष्टकम् Rājat.-Tar. 4, 570. तत्राप्यहानि द्वित्राणि वहन्नेवाभवत् 290. — 16) वहन् (तन्मन्त्रं मरुत्सा वहन्) Harīv. 4433 fehlerhaft für ह्वयन्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. नवोढा, सहोढ, सूर्योढ.

— caus. वाहयति, selten °ते 1) *fahren lassen*, (den Wagen) *laufen lassen, lenken:* रथं वाहय (सूत) मे शीघ्रम् MBh. 4,1435. Harīv. 2433. 7300. 9359. R. 2,114,8 (125,18 Gorr.). 7,28,24. 29,7. (die Pferde) *ziehen lassen, lenken:* शनकैर्वाहयन्रथान् MBh. 7,6421. 8,688. मरुद्वाहयान् Rājat.-Tar. 4,227. Schol. zu Kir. Ç. 626,2 v. u. वाहयामास तानश्वान् *liess sie* (wie Zugthiere) *ziehen* MBh. 5,469. 13,4753. mit doppeltem acc. P. 1,4,52, Vārtt. 7. बलीवर्दान्यवान् Schol. (zu Wagen) *Etwas führen:* घर्षितविमानवाहितकाञ्चनकार्मुकवस्त्रकोटिचय Kathās. 43,250. (ein Schiff) *führen, lenken:* नावम् MBh. 1,2399. तरिम् 4014. Ohne acc. *fahren zu Wagen, sich vermittelst eines Vehikels irgendwohin begeben:* त्वरितं वाह्यताम् (impers.) wird dem Wagenlenker zugerufen R. 2,40,31. घधिष्ठाय च गां लोके भुञ्जते वाहयन्ति च MBh. 12,6705. घवाहयंस्ततः (आघावत्तस्तदा die neuere Ausg.) शीघ्रं बाणास्य पुरमन्तिकात् Harīv. 10476. दक्षिणेन च मार्गेण सह्यं दक्षिणमेव च । वाहयस्व महाभाग ततो द्रक्ष्यसि राघवम् ॥ R. 2,92,13 (in der ed. Bomb. wird ein Vers eingeschoben, so dass dort वाहयस्व in der Bed. *führen* mit वाहिनीम् zu verbinden ist). — 2) *Jmd lenken lassen;* mit dopp. acc.: वाहयन्वाह्यपार्थम् Vop. 5,5. — 3) *Etwas tragen lassen* P. 1,4,52, Vārtt. 5. भारं देवदत्तेन Schol. शैलान्कापिभिः Vop. 5,5. उष्ट्रवामीशतवाहितार्थ Raghu. 5,32. Rājat.-Tar. 5,274. Z. d. d. m. G. 14,571,7. 572,1. a. *Jmd tragen lassen*, zum *Tragen anstellen:* पशुवच्चैव तान्पृष्ठे वाहयामास MBh. 1,2152. न वाहयेद्बालान् Mārk. P. 34,34. *sich tragen lassen* so v. a. *reiten auf* (acc.): तुरगम् 121,3. Kathās. 12,135. ते वाहयन्तो ऽन्योऽन्यम् Harīv. 3749. तं च मणडूकैर्वाह्यमानं दृष्ट्वा Pañcat. 199,3. 4. क्रयारोहेण वाहितो किशोरीम् R. Gorr. 2,125,14. — 4) *tragen;* nur im pass. *getragen werden:* वहन्तो वाह्यमानाश्च Bhāg. P. 10,18,23. वाह्यमानमयःखण्डम् Kām. Nītis. 11,48. प्रतीयं कथ्यमाणो हि नोत्तरेदुत्तरेष्वहः । वाह्यमानो ऽनुकूलं तु ह्रदौघाद्यसनात्तथा ॥ so v. a. *sich treiben lassend, getrieben werdend* Spr. 1845. घनड्वाहित *getrieben von* Raghu. 19,47. वाह्यमानस्य तृष्णया Spr. 1440. — 5) *betreten:* न वाह्यते राजपथः शिवाभिः Raghu. 16,12. वाह्यदेधशेषम् so v. a. *den Rest des Weges zurücklegen* Megh. 39. — 6) *Etwas in Bewegung setzen, wirken —, arbeiten lassen:* सूनाः M. 3,68. दश सूनास-

कृमाणि यो वाक्यति मैत्रिकः 4,26. अमीन् Bhatt. 14,23. wird von Westergaard und Andern zu वाक् gezogen. — 7) *Jmd anführen, betrügen:* वाक्षिता वयमनेन Pañkat. 64,6. wird von Benfey auf वाक् zurückgeführt. — Vgl. दुर्वाक्षित.

— intens. वनीवाक्यते *hinundherführen* Çat. Br. 1,4,2,6. 5,8,1,1. fgg. दृतिषु दृधि वनीवाक्यते Çiñkh. Çr. 14,40,19. — Vgl. वनीवाक्न.

— अति 1) *hinüberführen über, vorbeifahren an:* स नौ वसुद्विष्यन्यति दुर्गहाणि RV. 6,22,7. Çat. Br. 13,8,4,6. मृत्युम् 14,4,1,12. Lâṭ. 3,5,1. — 2) *verbringen* (eine Zeit): स्वेनैव धनव्ययेन रममाणया मासमात्रमत्यवाक्षि Daçak. 62,10. — Vgl. अतिवाक्षु. — caus. 1) *betreten:* लोकातिवाक्षिते मार्गे Sarvadarçanas. 39,4. — 2) *versetzen:* अलकामतिवाक्ष्येव Kumâras. 6,37. — 3) *verstreichen lassen, glücklich über Etwas hinüberkommen:* अतिवाक्षितानि मया कथंचिदहनगर्हितानि Ragh. 13,28. रात्रयुत्रैः समं सख्यं कृच्छ्रादप्यतिवाक्यते Kathâs. 28,111. स शापस्तेन — अतिवाक्षित: 33,91. insbes. eine Zeit *verbringen:* त्रियामाम् Ragh. 9,70. क्षपाम् 19,47. तान्यहानि Kathâs. 5,78. 6,133. 12,184. 39,247. 51,209. 54,186. 66,62. 73,2. Riâ-Tar. 2,34. 3,159. 190. 4,447. 572. 6,47. Prab. 2,11. 68,6. Pañkat. 183,25. ed. orn. 52,24.

— व्यति med. (व्यतिक्रोरे) Vop. 23,55; vgl. P. 1,3,15, Vârtt. 2.

— समति caus. *verstreichen lassen, zubringen:* दिवसशेषम् Nigîn. 19,10.

— अधि *tragen:* पुरुषानधिवक्त: *eine Sänfte* Bhâg. P. 5,10,2. अध्यूढ (s. auch bes.) *aufgesetzt auf* (loc.) Ait. Br. 3,41. — Vgl. अधिवाक्न.

— अनु 1) *entlang führen:* पन्थाम् AV. 14,2,71. एणकुणाकं सेतसानूत्क्षानम् *vom Strome fortgetrieben werdend* Bhâg. P. 5,8,4. — 2) med. *nachschlagen, ähnlich werden* Kull. zu M. 3,7. — 3) *betreiben:* लोकयात्राम् Bhâg. P. 12,6,67. — Vgl. अनुवाक्.

— अप 1) *wegfahren, wegführen* MBh. 4,2085. तमारोप्य स्वरथे — अपोवाक् 6,2347. 5400. fg. रणात् Bhâg. P. 10,76,27. (रात्रस:) कीचकमपोवाक् वातवेगेन MBh. 4,462. Hariv. 10726. यज्ञपशुमपोवाक् Bhâg. P. 4,19,11. 10, 37,29. Çiñk. zu Kâṭh. Up. S. 31. नदी । अपोवाक् वसिष्ठं तु प्राचीं दिशम् MBh. 9,2393. वायुरपोवाक् तद्रज: 1,1479. अपोवाक् च वसिं उस्या माहृत: 2939. — 2) *wegtreiben, vertreiben:* नौरिवोत्काभिरपोह्यमानो मरुद्गण: R. 2,21,53. अपोढविघ्न Ragh. 13,22. — 3) *abwerfen:* अपोह्य वमनं स्वकम् MBh. 2,2389. *entfernen, wegschieben:* अनपोढार्गल Ragh. ed. Calc. 16,6. — 4) *aufgeben:* अपवक्ति Bhâg. P. 5,14,27. अपोढकर्मन् Ragh. 11,25. अपोढनेपथ्यविधि 16,72. तद्भग्नपोढपितृराज्यमकाभिषेक 13,70. आनुरं भावमपोह्य Bhâg. P. 6,18,19. नौकृदम् 9,6,44. — Vgl. अपवाक्. अपवाक्य und 1. ऊक् mit अप. — caus. 1) *wegfahren, wegführen, abführen:* रथं युद्धात् R. 6,88,36. 89,3. त्रिगर्तसेनापतिना स्वरथेनापवाक्षित: MBh. 7,4968. 9,2394. Hariv. 9233. 9237. 10728. 10844. R. 1,1, 51 (54 Gorr.). 2,9,13. R. Gorr. 1,42,2. 43,2. 2,6,26. 3,59,4. 66,25. 5, 32,27. 7,28,19. Mâlav. 67,19. Bhatt. 8,86. कङ्कालम् Riâ-Tar. 2,101. अपोवाक्षित (?) Bhâg. P. 10,76,32. — 2) *vertreiben, verjagen* Daçak. 68,9. 80,10. Pañkat. 231,5. 6. — 3) *sich aus dem Staube machen* Daçak. 75, 3. — Vgl. अपवाक्क, अपवाक्न.

— प्रत्यप *zurückdrängen, zurückstossen:* गृहीत्वा प्रङ्क्योस्तं च षष्टादश पदानि स: । प्रत्यपोवाक् भगवान् Bhâg. P. 10,36,11.

— व्यप (hierher oder zu 1. ऊक्) 1) *vertreiben, verscheuchen:* व्यपोढाश्च MBh. 3,2942. व्यपोढे च ततो घोरे तस्मिंस्तेजसि 7,8279. व्यपोह्य मातरिश्वानम् Bhâg. P. 6,18,66. अव्यपोह्यानिमित्तं हि कार्यं पत्क्रियते — तदनिष्टाय कल्पेत Kathâs. 32,42. — 2) *offenbaren, an den Tag legen:* तपो ते मानुषं कर्म व्यपोढम् MBh. 8,1610.

— अभि *hinfahren, herbei —, hinführen zu* RV. 1,118,4. रथो न मत्तिरभि वाति वाजम् 3,13,3. 6,21,12. 37,3. 8,32,9. (मामाशव:) अभि प्रयो वर्तन् 63,14. स्वर्गं लोकम् Çat. Br. 3,8,4,16. 4,1,4,25. Ait. Br. 6,9. 8, 24. घृतकुल्या मधुकुल्या: पितृन्स्वधा अभिवक्षन्ति Çat. Br. 11,5,6,4. ततो ऽभ्यवक्रव्ययो वैराटि: सव्यसाचिनम् । यत्रातिष्ठत्कपि: MBh. 4,1757. fg. Vgl. अभिवक्न, अभिवाक्, अभ्यूढि. — caus. *zubringen* (eine Zeit) fehlerhaft für अति Riâ-Tar. 1,333 (wo ausserdem zu lesen ist सत्रयोदशवासरा) und Pañkat. 3,7,23.

— आ *herbeiführen, bringen:* आङे वक् P. 8,2,91. अग्ने पर्वतेरिडा वक् RV. 1,22,9. ते न आ वहन्तसुविताय वर्णम् 104,3. 113,15. 3,38,1. देवान् 4,8,3. आ वां वहन्तु रथा: 14,4. आ को वक्त्तो मर्त्याय पत्नीम् (die Zeit des Opfers und dadurch dieses selbst) 5,41,7. रयिम् 42,18. उषसं स्वरावक्त्तीम् 80,1. 8,35,8. आ वहि महि न आ च सत्सि 10,3,7. AV. 3,24,7. 4,23,2. त्रयाम् 5,78,1. 12,2,42. Çat. Br. 1,4,2,16. fgg. येन पक्षा कव्यमा वो वहानि 3,4,26. VS. 18,59. सर्वाभ्यो दिग्भ्यो बलिमावक्त: Ait. Br. 7, 34. श्रियम् Taitt. Up. 1,4,2,1. med. RV. 7,71,2. 8,19,1. partic. आढ Çat. Br. 2,5,2,29. Âçv. Çr. 1,3,22. 3,10,19. आढा, अवोढा P. 6,1,95, Schol. — आवाक्षामावक्त् (so die ed. Bomb.) *zuführen* (die Braut) MBh. 13,2407. रुक्मं हिरण्यम् u. s. w. न ज्ञातु त्वयमावक्त् *bringe man nicht in's Haus* 4,535. तस्यार्घापुष्पमावक्त् R. Gorr. 2,80,11. किमस्य त आवक्त्ति *bringen, darbringen* Bhâg. P. 8,22,19. गुरवे प्रीतिम् *bringen, verschaffen* M. 2,246. 3,82. सुखम् MBh. 1,3253. 3,2820. 16709. नौभाग्यम् Hariv. 7153. त्रयम् R. 3,36,27. आपदं घोराम् 5,76,5. रुचिम् Vikr. 48. संगमं प्रियतमेन 128. Ragh. 11,73. ad Çiç. 54. Spr. 1474. 3112. 4436. 5285. Vaitân. Bdh. S. 6,4. 45,3. 77,35. Riâ-Tar. 6,248. Daçak. 64,17. Bhâg. P. 1,13,13. 7,15,28. 8,23,9. 9,1,38. 10,65,17. Pañkat. 3,15 (1, 10 ed. orn.) — 2) *heimführen* (als Gattin) MBh. 13,2443. 5079. 5088. Hariv. 120. — 3) *eintragen, bezahlen:* हिरण्यम् Jâgñ. 2,193. — 4) *fortführen:* तेन कृतापकारेण मैत्रावरुणिरोक्षत *wurde vom Flusse fortgetrieben* MBh. 9,2386. — 5) *sich ergiessen, fliessen:* अलक्तप्रतिविद्धस्य नस्त: शोणितमावक्त् MBh. 4,2209. — 6) *tragen:* नानाविचित्रकृतमण्डनम् Kâdab. 19. धुरम् *die Last der Regierung* R. 1,71,15. राज्यम् so v. a. *regieren* Hariv. 1963. — 7) *an den Tag legen, anwenden:* सर्गं उद्यमम् Bhâg. P. 3,9,29. मा रोदीर्धैर्यमावक् Miak. P. 52,5. — Vgl. आवक् fg., आवाक्. — caus. *herbeirufen:* ऋषिम् MBh. 1,4287. Hariv. 7787. insbes. die Götter zum Opfer u. s. w.: देवता: Çat. Br. 1,7,2,13. 2,6,4,22. 3, 5,2,13. Ait. Br. 1,2. Çiñk. Çr. 1,4,22. Gobh. 4,3,4. Âçv. Çr. 1,5,24. 4,8,6. Jâgñ. 1,229. 232. MBh. 1,2770. 4387. 4754. 4757 (med.). 15,824. Hariv. 7380. R. 1,13,9. R. Gorr. 1,13,36. Vaitân. Bdh. S. 48,21. fg. Weber, Rimat. Up. 325. Kshudrâk. 279. 289. Bhâg. P. 11,27,24. Pañkat. 3,13,2. — Vgl. आवाक्न.

— अन्वा *herbeiführen:* अनु त्रिशोकै: शतमावक्षन् RV. 10,29,2.

— अभ्या dass. RV. 1,134,7. 6,63,7. अभ्यावक्ति कल्याणं विविधं वाक्यभाषिता Spr. (II) 510.

— उद्ा *davonführen* Çat. Br. 3, 3, 2, 17. ततो मां सूतस्तूर्णमुदावहत् MBh. 5, 7177. *dahinziehen:* तुरगाः शिखण्डिनमुदावहन् so v. a. *ziehen den Wagen des* Çikh. 7, 969. 3, 15704. *hinaufführen:* घर्मरश्मिमुदावहन् 12, 12196. *heimführen, heirathen:* सुभद्रां भार्यामुदावहत् 1, 3330. fg. 6, 5601 (nach der Lesart der ed. Bomb.). R. 7, 4, 16.

— समुद्ा *hinausführen, hinausziehen:* पूर्वं तु बालाः समुदावहन्ति (so die neuere Ausg.) | वृद्धाश्च पश्चात्प्रतिमा नयन्ति Harıv. 8467. *davonführen, forttragen:* ततो हृत इति ज्ञात्वा तान्भक्तान्समुदावहत् (रात्तसः) R. 7, 69, 15. *dahinziehen* (am Wagen) *Jmd:* (अश्वाः) पुत्रं विराटराजस्य सत्वरं समुदावहन् MBh. 7, 966. *heimführen, heirathen:* अर्कं विचित्रवीर्यस्य हे कन्ये समुदावहम् 13, 2441.

— उपा *herbeiführen* RV. 1, 74, 6. 3, 35, 2. द्विबर्हसे द्विसमोदमुपावहन् Verz. d. Oxf. H. 235, a, 17.

— निरा *entführen* Pañcav. Br. 9, 4, 11. *holen:* नदीं हिरण्मयीमश्वाभिः कुष्ठे निरावहन् AV. 5, 4, 5.

— सना *zusammen herbeiführen, zusammenbringen, versammeln:* घर्मादीनृत्विजः समावहति TBr. 3, 8, 4, 2. Ait. Br. 8, 22. *herbeiführen:* (अग्निः) कदम्बसर्जार्जुनपुष्पभूतं समावहन्गन्धम् Harıv. 8790. med. etwa *sich zusammenfinden:* तावेकं संवहावहै Ait. Br. 8, 27. nach Sây. *sich Lebensunterhalt* (निर्वाहं) *verschaffen.*

— उद् 1) *hinausführen, hinausführen; hinausschaffen, hinaufheben* RV. 1, 50, 1. भक्षयमुद्वहेयुर्गणाः 7, 69, 7. अपः समुद्रादिवमुद्वहन्ति AV. 4, 27, 4. 13, 1, 36. 18, 2, 22. 19, 23, 1. Kaush. Up. 3, 5. *hinausschaffen* Ait. Br. 2, 19. TBr. 1, 1, 3, 5. श्यावाश्वमार्चनानसं मन्त्रमासीनं धन्वोद्वहन् Pañcav. Br. 8, 5, 11. यदीमाविदं रोहितावस्माचितं कूलमुद्वहतः *hinaufziehen* 14, 3, 13. कृपाः प्रयान्ति देवेशगृहदृक्षो नगस्तलम् Harıv. 13127. *herausziehen* (Pfeile aus dem Köcher) MBh. 3, 15657. 12, 128. उद्ववाह शरान्घोरान्रावणस्य सुतं प्रति R. 5, 70, 9. *aufheben:* उद्वहेयं भुजाभ्यां किं मेदिनीमम्बरे स्थितः 3, 35, 9. 5, 73, 36. 6, 36, 80. Bhâg. P. 10, 13, 22. *in die Höhe bringen:* पौरुषं वेषाम् MBh. 1, 3705. — 2) *wegführen* (die junge Frau aus dem Vaterhause) Gobh. 2, 2, 17. Pâr. Gṛhy. 1, 11. Râgân. 7, 32. 67. überh. *heimführen, heirathen:* नोद्वहेत्कपिलां कन्याम् M. 3, 5. 10. 13. 7, 77. Jâén. 1, 52. Ragh. 11, 54. Varâh. Bṛh. S. 70, 1. Kathâs. 26, 131. 34, 239. Bhâg. P. 3, 22, 15. 4, 30, 15. 5, 2, 22. 10, 52, 41. Mârk. P. 21, 31. 28, 18. 34, 77. fg. 113, 33. med. M. 3, 4. Kathâs. 36, 56. Bhâg. P. 10, 52, 42. Pañcat. 190, 1. उद्ववाह Bhaṭṭ. 2, 48. उद्वहा Kathâs. 45, 304. 75, 131. 89, 198. 92, 52. — 3) *zuführen, bringen:* रतिमुद्वहतादद्धा गङ्गेवौघमुदन्वति Bhâg. P. 1, 8, 42. बलिम् 10, 87, 28. द्विषां क्षेत्रम् 4, 10, 26. उद्वक्ष्यामि तांस्ते ऽर्हं कामान् 25, 36. — 4) *tragen:* स्कन्धेन Bhâg. P. 5, 8, 10. भारं शिरसा गुरुम् 4, 29, 33. ज्ञटाजूटैः 5, 17, 3. MBh. 7, 7963. R. 7, 34, 38 (med.). Ragh. 11, 66. आत्मानमुद्वोढुमशक्नुवन्त्यः 16, 60. Çiç. 9, 73. Hit. 127, 1. परिघं गुरुम् Bhaṭṭ. 9, 7. भारम् MBh. 3, 225 (med.). 336. R. 7, 68, 4. दारिद्र्यभारम् Spr. 446. राज्यभारम् Kathâs. 15, 4. गृह्यभारम् 22, 186. Bhâg. P. 7, 9, 42. राज्यधुरं गुर्वीम् MBh. 1, 4272. 3, 334. 4, 919. 8, 375. 13, 377. 7169. 14, 25. R. 5, 36, 65 (med.). 6, 112, 109 (med.). Kumâras. 6, 30. Pañcat. ed. orn. 22, 21. ज्ञटामण्डलम् Harıv. 4505. रजनाकलापम् Mṛicch. 11, 15. भूषणम् Ṛtus. 3, 7. वासांसि Bhaṭṭ. 3, 42. कौशेयकान्युद्वहते ऽजिनं च Varâh. Bṛh. 27 (25), 27. गार्हस्थ्यम् (als eine Last) MBh. 12, 324. गार्हस्थ्यं भारमारोपितम् | स्कन्धे Mârk. P. 29, 41. मरीम् so v. a. *regieren* Râga-Tar. 3, 329. राज्यम् dass. Kathâs. 86, 16. द्विधा विभक्तां श्रियमुद्वहन्तौ धुरं रथस्यावि संयकृतुः Milav. 89. मनसोद्वहतो भृशम् | दुःखान्यधारयन् MBh. 15, 137. पुत्रशोकं धैर्येणोद्वहते 150. R. Gorr. 2, 16, 46. महादेवस्य वचनमुद्वहन्मनसा *im Herzen tragend* so v. a. *eingedenk* Harıv. 8046. *halten* Spr. 846. सरोजमितरेण (करेण) चोद्वहन्ती Varâh. Bṛh. S. 58, 37. पद्ममुद्वहन्ती Kumâras. 5, 35. स्कन्धासक्तं हस्तमप्युद्वहन्ती MBh. 13, 426. लम्बं शिरस्त्रं वामपाणिना Râga-Tar. 5, 342. *festhalten* (Gegens. श्रथयत्) *aufgeben* Bhâg. P. 5, 14, 37. — 5) *an sich tragen, haben; äussern, an den Tag legen:* सत्यद्भुतरूपम् Bhâg. P. 7, 8, 18. स्कन्धमुद्वहति गोपतितुल्यम् Varâh. Bṛh. 27 (23), 5. Vikr. 130. मनोरथं यौवनम् Kumâras. 1, 19. श्रियमुद्वहति मुखं ते बालातपरक्तकमलस्य Vikr. 136. चित्तविषादविषदं च मलोत्तमत्वं च Milatim. 96, 4. 5. शतगुणीभूतामिवोत्कण्ठाम् Kathâs. 18, 371. नाकारमुद्वहसि Râga-Tar. 3, 252. तर्षोत्कर्षम् 478. प्रमादम् 6, 174. गर्वम् Sin. D. 56, 13. मानम् Spr. 2180. अच्युते तीव्रोधो भक्तिम् Bhâg. P. 4, 12, 11. 23, 27. 5, 17, 21. वासुदेवे रतिम् 4, 28, 39. प्रभूतमुच्छ्वासम् (so die ed. Bomb.) Pañcat. 141, 4. — 6) *zu Ende führen:* प्रारब्धम् Spr. 1913, v. l. — 7) उद्वह = ऊढ und पोवर (स्थूल) H. an. 3, 189. Med. dh. 7. — 8) उद्वहन् (वक्त्राच्छोणितम्) MBh. 3, 16139 fehlerhaft für उद्वमन्, wie die ed. Bomb. liest und wie schon Westergaard vermuthet hatte. — Vgl. उद्वह् fg. und उद्वाह्. — caus. 1) *verheirathen* (eine Tochter u. s. w.) MBh. 1, 2301. Spr. 512. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) Pañcat. 181, 5. 261, 5. — Vgl. उद्वाहय्.

— प्रोद् *äussern, an den Tag legen:* भूतेषु प्रोद्वहेद्यानुकम्पाम् Pañcar. 3, 10, 3. — Vgl. प्रोद्वाह्.

— समुद् 1) *hinaustragen, forttragen:* नरेन्द्रं दिवसस्यान्ते समुद्वहन्ति वाजिनः Bhaṭṭ. 3, 33. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) Jâén. 3, 261. R. 2, 107, 3 (115, 3 Gorr.). Bhâg. P. 10, 52, 24. — 3) *aufheben:* वज्रमात्मार्थं शिष्टम् MBh. 2, 718. कृच्छ्रादिव समुद्वहन् | पदानि 13, 171. — 4) *tragen:* ज्ञटाभारम् Harıv. 2825. 12306. मन्त्रिधुरम् Kathâs. 4, 136. तद्राज्यचिन्ताभारम् 86, 9. मालाम् MBh. 13, 952. दुःखानि 730. मनसा, हृदयेन *im Herzen tragen, eingedenk sein* Harıv. 8749. R. 7, 17, 16. — 5) *an sich tragen, haben, an den Tag legen, äussern:* चतुर्मनोज्ञं पीनं मेखलादामभूषितम् | समुद्वहन्ती वदनम् R. 7, 26, 16. शक्रकार्मुकरूपम् Varâh. Bṛh. S. 44, 25. स्वेदम् Verz. d. Oxf. H. 171, a, 1. विषादम् R. 6, 82, 22.

— उप 1) *herbeiführen:* हरी इवेषं वहतः (इन्द्रम्) RV. 1, 16, 2. 47, 8. गृहम् 49, 1. 8, 4, 14. 6, 42. 10, 32, 2. (रथः) य इन्द्रमानुपावहत् MBh. 2, 2064. न मे प्रीतिमुपावहत् *bringen, verschaffen* 13, 709. सर्वं तदुपवाह्यमुपोवाच प्रतिश्रुतम् Bhâg. P. 3, 23, 31. *Jmd zu Etwas bringen, verleiten:* मा त्वं भर्तारमसद्धर्ममुपावहः R. ed. Bomb. 2, 35, 28. Hierher oder zu 1. ऊह् उपोढ *herbeigeführt, bewirkt:* कुकर्मभिरुपोढापि लक्ष्मीः Râga-Tar. 6, 295. °राग Spr. 3807. °मद Daçak. 83, 11. *nahe gerückt, in der Nähe befindlich, nahe bevorstehend:* °बल Milav. 76. °पाणिग्रहणा Kumâras. 7, 4. ततो ऽप्युपोढा रजनी दिनत्यये so v. a. *brach ein* R. Gorr. 2, 116, 49. अनुपोढरागेण *mit nicht vorgeschobenem Riegel* Ragh. 16, 6 gehört zu 1. ऊह्. — 2) उपोढा *eine Hinzugeheirathete* d. i. *Nebengattin* R. 1, 13, 37. — उपोढ = ऊढ H. an. 3, 189. Med. dh. 7. — Vgl. उपवह्, उपवाहिन् fg.

— समुप 1) *mit sich führen, strömen lassen:* (नदी) शोणितं समुपावहत् MBh. 9, 2400. — 2) pass. *herannahen, einbrechen, beginnen:* रात्रिश्च समुपोह्यते Harıv. 7569. संयामे समुपोळ्हे Âçv. Gṛhj. 3, 12, 1. इन्दौ समुपोढे so v. a. *aufgegangen* Uttarar. 99, 14 (131, 14). könnte eben so gut zu 1. ऊह् gezogen werden.

— नि 1) *herunter —, hereinführen* zu (dat. oder loc.): रथेन नः शौर्योन्यश्विना वक्षतं यज्ञे अस्मिन् ṚV. 7, 69, 5. पत्नीर्निवृदाप 1, 112, 19. 116, 1. 10, 39, 7. त्रायाम् 1, 117, 20. 119, 4. अर्यम् 117, 9. ऊर्जम् 5, 65, 3. 18, 42, 8. Çat. Br. 12, 2, 3, 11. med.: पूता नो अर्वा न्युक्षत वाजी ṚV. 7, 37, 6. — 2) *fliessen:* यद्गमा निवक्ष्यतेना गुडकुल्या: MBh. 12, 10318. — 3) *tragen, erhalten:* जगन्निवक्षते (partic.) Gîv. 1, 16. — Vgl. निवक्ष, निवाक्ष. — caus. *in Bewegung setzen:* ऊर्ध्व चापि निवाक्षतौ (= प्रापयतु Nîlak.) प्राणा वै तेमरास्तथा Harıv. 5009. st. dessen प्रवाक्षताम् 3487.

— परिणि P. 8, 4, 17, Schol.

— प्रणि P. 8, 4, 17, Schol. प्रणयवाहीत् Vop. 8, 22. 134.

— निस् 1) *herausführen, retten aus* (abl.): aus dem Wasser ṚV. 1, 117, 14. fg. 5, 62, 6. दुरितात् AV. 12, 2, 47. *wegschaffen* 18, 2, 27. यानेन मृतम् Lâṭ. 8, 5. 6. *wegspülen:* शोध स्मा: सर्वा: प्रजा निर्वाहा Çat. Br. 1, 8, 4, 2. 6. — 2) *ausführen, zu Stande bringen:* कर्म Suçr. 1, 12, 21. — 3) *zu Stande kommen, gelingen:* तत्कर्म निर्वक्ष्येऽहं न: Kathâs. 32, 32. यदी विना योगो ऽपि न निर्वक्ष्यति Sarvadarçanas. 82, 11. *zu seinem Ziele gelangen, glücklich über Etwas hinwegkommen* Çiṅk. in L.A. (III) 37, 22. गृहस्थाश्रमेण सर्वाश्रमिणो निर्वक्ष्यन्ति Kull. zu M. 3, 77. — Vgl. निवृक्षि, निर्वक्षण fg., निर्वाह, निर्वाहिन्, निर्वाह्य, निर्वोढृ. — caus. *zu Ende bringen, verbringen:* बाल्यमनयम् Pañcat. 219, 14. *ausführen, vollführen, zu Stande bringen:* कुटुम्बकम् Kathâs. 66, 107. मैत्रीम् 35, 211. प्रतिज्ञामर्थम् 76, 42. प्रतिज्ञातं कार्यम् 123, 174. Hit. 106, 4. — Vgl. निर्वाहक fg.

— परा *wegführen, wegschaffen* zu (dat.) ṚV. 5, 61, 17. दु:खप्रयुक्तायाम् परा वक्ष् 8, 47, 14. AV. 16, 6, 3. 7. 11. परा च वर्तदुत पर्यदेनान् ṚV. 10, 61, 23. वियम् AV. 10, 4, 20. — Vgl. परावक्.

— परि act. P. 1, 3, 82, Schol. 1) *herumführen:* परि वामग्नी वक्ष्यभीके ṚV. 1, 118, 5. AV. 14, 1, 15. 12, 3, 3. सोमम् Çat. Br. 3, 2, 2, 17. 3, 8, 17. 4, 3. Kâṭy. Çr. 14, 1, 16. 15, 3, 42. 4, 3. Âit. Br. 1, 14. *umherschleifen:* कलान्यरिवक्षत: (नागा:) MBh. 7, 839. — 2) *herumfliessen:* आप: परिवक्षसी: TS. 7, 4, 44, 1. Âpast. in TS. II, 109, 6. — 3) *den Hochzeitszug oder die Braut führen* (vom Vaterhaus in das des Gatten); *heimführen, heirathen:* पमस्य माता पर्युह्यमाना ननाश ṚV. 10, 17, 1. अर्वन्योर्: पर्युह्यते 83, 13. तुभ्यमग्ने पर्यवहन्सूर्या वहतुना सह 38. Bhâg. P. 3, 21, 15. — Vgl. परिवक्, परिवाक्, परिवाहिन्.

— प्र act. P. 1, 3, 81. Vop. 22, 1. 1) *weiterführen, vorwärts ziehen* ṚV. 10, 94, 6. (सोम:) प्रोह्यमाणा: VS. 8, 35. Âit. Br. 1, 12. क्रविर्धाने 29. रथं देव प्रवक् Âçv. Gṛhj. 2, 6, 5. Çâṅkh. Çr. 3, 5, 3. कथं रथं त्वया रोनं प्रवक्ष्यति कृशोदरी: R. 2, 52, 43. R. Gorr. 2, 109, 35. *im Fliessen mitführen, wegspülen:* (गङ्गा) प्रवक्ष्यती शिला: R. 4, 44, 68. इदमाप: प्र वक्षत दुरितम् ṚV. 1, 23, 22. 10, 17, 10. VS. 6, 17. आपो मरीची: प्रवक्षतु नो घिय: Âçv. Gṛhj. 2, 4, 14. *hinfliessen, fliessen:* प्रवीरमुपउपायाणा: प्रावक्षद्बुधिरापगा: Kathâs. 116, 65. यस्यापि कुक्षवाक्ष्य: प्रवक्ष्युत्तरापथे Râja-Tar. 4, 306. प्रवक्ष्यन्तीनाम् Kull. zu M. 3, 162. *hinbrausen, wehen:* कालेन शीघ्रा: प्रवक्ष्यन्ति वाता: Spr. 3022. *zuführen:* तत्र दिव्यानि पुण्यानि प्रावक्ष्यवनस्तदा MBh. 13, 2888. घोषादम् Bhaṭṭ. 8, 52. *hinführen zu* (acc.): विषयान् MBh. 12, 11170. med. *davonfahren:* प्र यद्रथेषु मरुतो रथस्य ṚV. 1, 180, 9. प्रेतशोभिर्वक्षमाण घोरसा 10, 49, 7. 77, 6. — 2) *tragen:* राज्यधुराम् Bhaṭṭ. 3, 54. — 3) *an sich tragen, haben, an den Tag legen, äussern:* भीतिं तवापि Bhâg. P. 4, 9, 11. 12, 18. — प्रोक्ष *fortschiebend, ausnehmend* Vop. 6, 53, Anf. gehört zu 1. ऊह्. — Vgl. प्रवक् fg., प्रवाक्, प्रवाक्षिन्, प्रवोढृ, प्रोढ. — caus. 1) *fortführen lassen* so v. a. *wegschicken:* die Väter Âçv. Çr. 2, 7, 9. — 2) *im Fliessen entführen*, pass. *fortgeschwemmt werden:* स वेवं नैकधा क्षिप्त: तारनद्यां प्रवाक्ष्यते Mâṛk. P. 14, 68. — 3) *in Bewegung setzen, in Gang bringen:* ऊर्ध्व चापि प्रवाक्षतौ प्राणा वै तेमराणि च Harıv. 5487 (निवाक्षतौ st. dessen 5009). लोकयात्राम् R. ed. Bomb. 2, 109, 27. — 4) लोमप्रवाक्षिनम् MBh. 6, 1919 fehlerhaft für लोमप्रवाक्षिनम् (s. d.), wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. प्रवाक्षक, प्रवाक्षण.

— अतिप्र *darüber hinaus führen, — ziehen:* इन्द्र: Çâṅkh. Br. 11, 5.

— अनुप्र 1) *umherfahren, umherführen:* स मा रथेनानुप्रावक्षत् MBh. 3, 13305. 13307. — 2) *vorwärts kommen:* या देवानामपि पन्थामगन्म यक्षक्रीवाम् तदनु प्रवोळ्हुम् *quantum, tantum* ṚV. 10, 2, 3.

— अभिप्र *hinführen zu* Âit. Br. 6, 9.

— प्रति *entgegenführen:* मुग्धवक्षत्ति प्रति वामृतेन ṚV. 3, 38, 2. यान्यगन्धं प्रतिवक्ष्यमारुत: सुरभिर्वो Harıv. 13729. — प्रत्यस्य वक् शुभि: TS. 1, 3, 3, 1 ist aus VS. 3, 3 entstellt. — Vgl. प्रतिवाक्, प्रतीवाक्, प्रतिवोढव्य. — caus. *hinführen im Fliessen, hinschwemmen:* किमर्थं च सरिद्भ्रेष्ठा तमृषिं प्रत्यवाक्षयत् MBh. 9, 2388.

— वि 1) *entführen* ṚV. 4, 27, 3. क्षयो यमस्य वक्षतो वि सूरिभि: 10, 23, 3. *wegspülen, wegschwemmen:* लोहितापगा। गजाश्वनरदेहान्मा व्युवाक् पतितान्बहून् MBh. 8, 2379. — 2) *wegführen* (die Braut aus dem Elternhause) AV. 14, 1, 13. *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) überh.: यतो ऽदत्तां च पित्रा वां भद्रे न विवक्ष्यकम् MBh. 1, 2384. Kull. zu M. 3, 4. नैभिर्विवक्षेयु: *eheliche Verbindungen schliessen* Gobh. in Ind. St. 10, 21, N. 4. विवक्ष्यमिव: Bhâg. P. 5, 13, 13. med.: तौ देवविवाहे व्यवक्षेताम् *feierten eine Götterhochzeit* Âit. Br. 4, 27. Pañcav. Br. 7, 10, 1. *sich verheirathen:* विवक्षावहै Âçv. Gṛhj. 1, 7, 6. Çâṅkh. Gṛhj. 1, 13, 4. व्यूढा *geheirathet, verheirathet* Kathâs. 34, 6. 238. Bhâg. P. 10, 60, 48. Prab. 23, 14. — व्यूढ s. auch bes. und unter 1. ऊह् mit वि. Vgl. विवाक् u. s. w. — caus. 1) *verheirathen* (ein Mädchen) MBh. 6, 5601. Spr. 2908. Mârk. P. 51, 104. 134, 34. गान्धर्वविवाहेनात्मानं विवाक्ष्यिता Pañcat. 129, 9. तेनान्येन सह विवाक्षिता 262, 3. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen): राजपुत्रेण किं न तावद्विवाक्ष्यते Kathâs. 34, 228. 36, 54. विवाक्ष्य 49, 231. 52, 38. 53. 54. 84, 65. Vet. in L.A. (III) 18, 19. तेन गान्धर्वविवाहेन सा विवाक्षिता Pañcat. 46, 11. Kathâs. 124, 92.

— निर्वि, partic. निर्व्यूढ *ausgeführt, vollbracht* hierher oder zu 1. ऊह्. निर्व्यूढोद्वाहमङ्गल Kathâs. 35, 157. प्रतिज्ञात 38, 145. *verbracht* Râja-Tar. 3, 470, wenn °निर्व्यूढ gelesen wird.

— सम् 1) *zusammenführen; führen, hinüberführen* AV. 2, 30, 2. 5, 48, 1. 13, 2, 17. *ziehen:* सीदमानानि चक्राणि समूक्षुस्तुरगा भृशम् MBh. 8, 1116.

नृणां शतानि पञ्चाशत् — मञ्जूषामष्टचक्रन्थी समूक्षुस्ते कथंचन R. 1,67,4. MBu. 3,13188. *mit sich fortziehen, treiben;* vom Winde Cat. Bn. 2,1,8, 8. समुक्षमाणो वक्षुधा येन (वायुना) नीताः पृथग्घनाः MBu. 12,12405. pass. *getragen werden von, reiten auf* (instr.): गरुडेन समुक्षमाणः Bhāg. P. 8, 3,21. पक्षिभ्यां कूर्मः समुक्षते Hit. 112,3, v. l. — 2) *entlang fahren mit der Hand, streichen:* तस्याः पादौ कराभ्यां शनकैः संवावक्षतुः MBu. 3,11005. 1,6639 13,2760. Westergaard stellt diese unregelmässige Form (st. समूक्षतुम्) zu वाक्ष्. — 3) *an den Tag legen, äussern:* वासुदेवे समुवाक्ष भक्तिम् Bhāg. P. 9,5,25. — 4) समुक्षा *in Ordnung bringend* (कुटिलालकान् Bhāg. P. 10,43,3. केशान् 60, 26) gehört zu 1. ऊक्ष्. — Vgl. समूक्ष und 1. ऊक्ष् mit सम्. — caus. 1) *zusammenführen, sammeln:* तिप्रं संवाक्षतां व्रजः Harīv. 3496. सैन्यम् Rāja-Tar. 4,468. — 2) *fahren, lenken* (den Wagen u. s. w.), *hinfahren, hinführen:* सूतः संवाक्ष्यामास रथम् R. 6,79,7. Kathās. 56,378. MBu. 13, 3734. रथमास्थाय द्रुतमध्यानचोदयत् । संवाक्षयितवांश्चापि राजदाराम्पुरं प्रति ॥ 9, 1653. *heimführen* (eine Gattin) Ver. in LA. 17,14, v. l. *jagen, treiben:* सो ऽपि संवाक्षते लोके तृष्णया Spr. 540. — 3) *entlang fahren mit der Hand, streichen* R. 2,91, 52 (100,51 Gorr.). R. Gorr. 2,80,10 (med.). Çiç. 69. Kathās. 66,157. Bhāg. P. 10,38,39. Weber, Kṛshṇaj. 288. fg. Comm. zu Gīt. 12,3. — Vgl. संवाक्ष् fgg.

— अनुसम् *ziehend folgen:* प्रष्ठ्यो युक्ता अनुसंवक्षति AV. 10,8,3. *entlang führen:* तौ दिशो ऽनु वातः समवक्षत् TBr. 1,1,2,7.

2. वक्ष् oder वाक्ष् (= 1. वक्ष्) am Ende eines comp. *fahrend, ziehend, führend, tragend, haltend* u. s. w. P. 3,2,64. Declination 6,4,132. Vop. 3,102. fg. Bildung des fem. 4,9. P. 4,1,61. VS. Prāt. 4,56. उडुपतिवाडिवाम्बुदः Bhāg. P. 10,18,26. — Vgl. अनड्वक्ष्, अनो°, अप्सु°, इध्म°, इन्द्र°, गिर्वक्ष्, तुर्य°, दक्षिणा°, दित्य°, पक्ष°, पार्ष्णि°, पूर्व°, पूर्वाग्नि°, पृष्टि°, प्रष्ठ°, प्रेत°, भार°, भू°, मध्यम°, वज्र°, वीर°, विघ्न°, श्वेत°, सर°, सुष्टु°, सविर्वक्ष्, सुव्य°.

वक्ष् (von 1. वक्ष्) 1) adj. (f. या) *fahrend, führend, ziehend* u. s. w.: प्रतिस्रोतोवक्षा नदी *gegen den Strom fliessend* MBu. 9,2304. सर्वलोक°, परलोक°, पर° *hinfliessend in, nach* 8,3324. fg. 9,441. रणभूमि° *durchfliessend* 7, 895. वसामेदोवक्षाः कुल्याः *strömend, mit sich führend* 1, 2032. 8466. 3,8397. पुण्यवक्षा नद्यः 10744. 13,3166. R. 4,13,8. 44,93. Varāh. Bṛh. S. 40,48. सर्वगन्ध° (वायु) *führend, verbreitend* M. 1,76. MBu. 3,1764. R. 3,78,18. योगक्षेम° *bringend* 2,115,14. अनवरतसंचय° Varāh. Bṛh. S. 38,8. सर्वव्ययाः (oder zu घावक्) Rāja-Tar. 3,277. Spr. 1155. क्लेश° Bhāg. P. 4,21,31. अनर्घ° 10,70,39. न ता नदीशब्दवक्षाः *nicht den Namen* नदी *führend* Khandogapar. bei Kull. zu M. 4, 203. रज्जुयक्ष° (कैमयुग) *versehen mit* Kathās. 43,25. रक्षोघ्न° *habend* Mlak. P. 102,2. शीतयोग°, अग्नि° so v. a. *sich der Kälte —, sich dem Feuer aussetzend* MBu. 13, 6346. 6348. — 2) subst. वक्ष् P. 3,3,119. gaṇa भीमादि zu 4,74. वृषादि zu 6,1,203. a) m. n. *Schulter des Joch- oder Zugthieres* AK. 2,9,62. Trik. 3,3,459. H. 1264. an. 2,602. Med. h. 8. Hal. 2,112. AV. 4,11,7 (oder zu b). 9,7,3. VS. 25,3. TS. 7,3,16,1. Çat. Bn. 1,1,2,9. 2,2,3,28. 4,5,4,15. उक्षणो वक्ष्रे प्रत्यनक्ति Pāraṇ. Bn. 13, 12,15. Nir. 3,9. MBu. 4,49. Vgl. u. 1. शकृत्. — b) m. *der Theil des Jochwagens, welcher auf der Schulter des Thieres liegt, Schulterstück des Joches:* मध्यमेतदनड्वाहो यत्रैष वक्ष् आहितः AV. 4,11,8. वक्षा वा यात्रेयो रथस्य Çat. Bn. 5,4,2,18. — c) m. *Pferd* Med. — d) m. *Fluss* Trik. 1, 2,30. H. 1090. — e) m. *Wind* Trik. H. an. H. c. 170. Med. — f) m. *Weg* Trik. 2,1,18. — g) m. *ein best. Gewicht* (*Last*) = 4 Droṇa Candhārak. bei Wils. Verz. d. Oxf. H. 307,b,2. — h) nom. act. in दुर्वक्ष् und सुवक्ष°. — 3) f. या *Fluss* H. 1090. — Vgl. ग्रथी°, गन्ध°, ज्रगहक्षा, दारुवक्ष्, दुर्वक्ष्, धूर्वक्ष्, पीलु°, प्रावृत्काल°, मुनी°, मूत्र°, योग°, रस°, रुचि°, वारि°, सुख°, स्रोतो°, हुत°.

वक्षलिक्ष् adj. *die Schulter leckend:* गो P. 3,2,33.

वक्षित् (von 1. वक्ष्) f. nach Sis. *Fluss* ṚV. 3,7,4. — Vgl. स्रवत्.

वक्षित (wie eben) m. *Stier; ein Reisender* Uṇādis. im ÇKDr.

वक्षितिं (wie eben) Uṇādis. 4, 60. m. *Wind* Uṇ. *Stier; Geführte* Med. t. 149. — Vgl. वक्षतु.

वक्षती (wie eben) f. *Fluss* Çabdārthak. bei Wilson.

वक्षतुं (wie eben) Uṇādis. 1,79. m. 1) *Brautzug (der Zug in's Haus des Gemahls, sammt Geleit und Mitgift);* überh. *Hochzeit:* कन्यां इव वक्षतुमेतवा उ ṚV. 4,58,9. सूर्यायाः 1, 184, 2. वक्षतुः प्रागात् 10, 85, 13. 14. 20. 31. 38. त्वष्टा दुहित्रे वक्षतुं कृणोति 10, 17, 1 (AV. 3, 31, 5). पुंस इद्वो वक्षतुः परिष्कृतः 32,3. AV. 10,1,1. उह्यमाने 14,2,9. 12. यद्दुष्कृते विवाहे वक्षतौ च यत् 66. 72. तस्या एतत्सकलं वक्षतुमन्वाकरोद्यदेतदाग्नेयम् Ait. Br. 4,7. pl. *Gegenstände der Mitgift* TBr. 1, 5, 4, 2. — 2) etwa *Darbringung:* उभा कृण्वत्तौ वक्षतू मियेधे ṚV. 7,1,17. *Mittel der Darbringung,* nämlich स्तोत्र und शस्त्र nach Sis. — 3) *Stier* Med. t. 149. Uṇ. — 4) *ein Reisender* Med.

वक्षतु (वक्षत्, partic. praes. von 1. वक्ष्, + गो) adv. *zur Zeit wann die Stiere im Anspann sind* gaṇa तिष्ठद्वादि zu P. 2,1,17.

वक्षन (von 1. वक्ष्) 1) adj. *fahrend:* वाहिमान° Kathās. 43,242. 119, 196. *führend, auf seinem Rücken tragend:* राज्ञ° (नाग) MBu. 2,2076. — 2) n. a) *das Fahren, Führen:* कविषाम् Nir. 7,8. कव्य° (सोम) MBu. 2, 1148. *das Fliessen des Wassers* Nir. 6,2. *das Mitsichführen:* मणिकुमाण्ड° der Krähen Varāh. Bṛh. S. 93,12. *das Tragen:* धराभार° Spr. 3132. — b) *Schiff* Trik. 1,2,13. H. 876. Kathās. 25,58. 26,7. 128. — c) *der unterste Theil einer Säule* Varāh. Bṛh. S. 53,29. उद्वक्षन dass. Cit. beim Schol. — Vgl. चतुर्वक्षन्, पूर्वाग्नि°, सोम°.

वक्षनभङ्ग m. *Schiffbruch* Kathās. 25,58. 26,127. 54,87.

वक्षनीकृ (वक्षन + 1. कृ) *zum Vehikel machen* Kathās. 65,36.

वक्षनीय (von 1. वक्ष्) adj. *zu fahren, zu führen, zu ziehen, zu tragen* P. 4,3,120, Vārtt. 2, Sch. Vop. 26,35.

वक्षर्त्त (wie eben) Uṇādis. 3, 128. m. *Wind* Uṇ. *Knabe* Uṇādis. im ÇKDr.

वक्षराविन् adj. *wund vom Schulterstück des Joches:* घाता घात्ता सकणावक्षो वक्षराविणौ *matt, schulterkahl (abgerieben;* vgl. 1. मत्त), *jochwund* Ait. Br. 5,9. *unter dem Joche Schmerzenstöne ausstossend* Sis., indem er राविन्, welches wir zu 3. रु stellen, auf 1. रु zurückführt.

वक्षल (von 1. वक्ष्) 1) adj. oxyt. (f. या) *im Joch gehend, zugewohnt:* अनड्वक्षो Çat. Bn. 5,2,4,11. 13. — 2) n. *Schiff* Hit. 142. wohl nur fehlerhaft für वक्षन. — Vgl. गन्ध°, welches richtiger °वक्षल geschrieben wurde; vgl. वक्षलगन्ध.

वार्क्षित्र (wie eben) n. *Schiff* Uṇ. zu Uṇādis. 4, 172. Vop. 26, 169,

v. l. Taitt. 1,2,13. Giv. 1,8. Kull. zu M. 3,158. जगद्वीन्नवक्रित्रधृक् Paṇḍar. 4,3,37.

वक्रित्रक n. dass. H. 875.

वक्रित्रभङ्ग m. *Schiffbruch* Sin. D. 130,6.

वक्रिन् (von 1. वक्र) adj. *im Joch gehend, zugewohnt* TBr. 1,4,8,10. 6,1,6. fgg. 7,8,4. TS. 1,8,8,1. 2,1. 2,2,2,1. Kâty. Ça. 15,1,19.

वक्रिष्ठ (wie eben mit dem suff. des superl.) adj. 1) *am besten fahrend, — führend, — ziehend* RV. 1, 121, 13. 134, 3. 4, 13, 4. घा वो वक्रिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वासः 14, 4. 6, 47, 9. Paṇḍav. Br. 11, 1, 5. — 2) *am besten fahrbar* RV. 6,21,12.

वक्रीयंस् (von 1. वक्र mit dem suff. des compar.) adj. 1) *besser —, trefflich fahrend* RV. 1,104,1. Śaḍv. Br. 3,7. — 2) *fahrbarer* TS. 7,2,8,6.

वक्रि (von 1. वक्र) Uṇâdis. 4,51. m. 1) *Zugthier, Gespann* Naigh. 1, 14. Nir. 8,3. ये त्रा वक्रिस्ति वक्रयः RV. 1,14,6. अन्ना अन्यस्य वक्रयः 5, 57,3. Rosse 2,24,13. 37,3. 3,6,2. 7,73,4. 8,3,23. वक्रिर्वा धनुष्वान् TBr. 1,8,2,5. AV. 18,2,56. VS. 35,13. गौः पुक्का वक्री रथानाम् RV. 8,83,1. — 2) *Darbringer einer Gabe an die Götter*, daher namentlich Agni: वक्रिं चकर्त विदथे यजध्यै RV. 3,1,1. 20,1. 31,1. 2. 5,79,4. दिव्य 6,39, 1. तं होता मनुरिनो वक्रिरासा विदुष्टरः 6,16,9. तं होतारमधरस्य वक्रिं देवा अकृण्वत 7, 16, 12. 75, 5. 82, 4. 8, 43, 20. Agni 1, 60, 1. 76, 4. 3, 3, 1. 11, 4. 7, 7, 5. Hierher wohl घ° Nir. 3, 6. — 3) *der Fahrende (Reiter), Wagenstreiter;* daher von verschiedenen Göttern gebraucht: विशां वक्रिर्न विश्पतिः RV. 9, 108, 10. 1, 3, 9. वक्रिभिर्देववीतये सयावभिः 44, 13. Maruts 1, 6, 5. 10, 138, 1. Agni 8, 8, 12. Indra 2, 21, 2. AV. 12, 2, 47. Savitar u. s. w. RV. 1, 160, 2. यद्रोदसी ज्योतिषा वक्रिरातनोत् 2, 17, 4. 38, 1. *der fliessende* Soma 9, 9, 6. 20, 6. 36, 2. 65, 28. 89, 1. — 4) (im Anschluss an 2) N. *eines best. Feuers* Gṛihyâsaṅgr. 1, 8. *Feuer* (auch *der Gott des Feuers*) überh. AK. 1, 1, 6, 48. 3, 4. 2, 8, 1, 30. H. 1097. Med. n. 19. Hall. 1, 62. M. 11, 119. 246. 12, 101. MBh. 1, 2037. R. 3, 53, 60. Suçr. 1, 28, 10. 34, 14. 114, 10. Bṛ. 1, 27. Ragh. 2, 75. 3, 59. Çiç. 83. 174. Spr. 789. घृतं च वक्रिं च नैकत्र स्थापयेदुधः 887. 1399. 2765. 3006. °कोप *das Wüthen des Feuers, Feuersbrünste* Varâh. Bṛ. S. 8, 47. अतिप्रचण्ड 19, 7. °भय 95, 7. 56. °कृत् *Feuersbrunst verursachend* 13. Weber, Râmây. Up. 293. 302. Bhâg. P. 3, 1, 21. वेधुता इव वक्रयः 7, 10, 39. Mârk. P. 82, 66. 89, 23. Verz. d. Oxf. H. 27, *a*, 8. 47. 103, *a*, 29. 104, *b*, 14. °पूजा Verz. d. B. H. No. 1253. fg. °लोक 489. क्रोधतीव्रेण वक्रिना Brahma-P. in LA. (III) 57, 11. °कोप ad Çiç. 32, 8. — 5) *das Feuer der Verdauung* Varâh. Bṛ. 20, 4. — 6) Bez. *der Zahl drei* (*drei heilige Feuer*) Weber, Nax. II, 382. — 7) *Plumbago zeylanica Lin.* AK. 2, 4, 2, 60. Med. *Semecarpus Anacardium Lin.* Ratnam. 68. *Citronenbaum* Râgân. im ÇKDr. — Suçr. 2, 69, 18. 505, 21. — 8) mystische Bez. *des Buchstabens* र् Weber, Râmây. Up. 317. fg. — 9) N. des 8ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 51, *b*, 42. — 10) N. pr. *a*) eines Daitja MBh. 12, 8264. — *b*) eines Sohnes des Kṛishṇa Bhâg. P. 10, 61, 16. — *c*) eines Sohnes des Turvasu Harîv. 1830. VP. 442. Bhâg. P. 9, 23, 16. — *d*) eines Sohnes des Kukura Bhâg. P. 9, 24, 18. — Vgl. मख°, मेघ°, वन°, सु°.

वक्रिकन्या f. *eine Tochter des Feuergottes;* pl. Harîv. 7738.

वक्रिकर 1) adj. *das Feuer der Verdauung befördernd.* — 2) f. ई *Grislea tomentosa* Carâṇ. im ÇKDr.

वक्रिकाष्ठ n. *eine Art Agallochum*, = दारुगुरु Râgân. im ÇKDr.

वक्रिकुण्ड n. *eine Höhlung im Boden zur Aufnahme heiligen Feuers* Kâtyâs. 46, 56. 62.

वक्रिकुमार m. pl. bei den Gaina N. einer zu den Bhavanapati gezählten Klasse von Göttern H. 90.

वक्रिकोण m. *Südost* Paṇḍar. 2, 5, 21. — Vgl. अग्निकोण.

वक्रिगन्ध m. *das Harz der Shorea robusta* Carâṇ. im ÇKDr.

वक्रिगर्भ 1) m. *Bambusrohr.* — 2) f. घा *Mimosa Suma* (शमी) Roxb. Carâṇ. im ÇKDr.

वक्रिगृह n. *Feuergemach* Varâh. Bṛ. S. 53, 16. — Vgl. अग्निशाला.

वक्रिचक्रा f. *Methonica superba Lam.* Bâlav. im ÇKDr.

वक्रिचूड n. = स्थूणक (?) Aṣṭâṅg. 31.

वक्रिजाया f. Vahni's *Gattin* d. i. Svâhâ Sarvadarçanas. 170, 4.

वक्रिज्वाल 1) m. N. einer Hölle VP. 207. 209. — 2) f. घा *Grislea tomentosa Roxb.* Râgân. im ÇKDr.

वक्रितम (von वक्रि) adj. *am besten fahrend, — führend* VS. 1, 8. *am besten eine Gabe* (den Göttern) *darbringend* Praçnop. 2, 8.

वक्रिद् adj. (körperliches) *Feuer verleihend* Suçr. 1, 242, 8.

वक्रिदग्ध adj. so v. a. अग्निदग्ध Çânkh. Çr. 1, 7, 59.

वक्रिदमनी f. = अग्निदमनी Râgân. im ÇKDr.

वक्रिदीपक 1) m. *Safflor* Carâṇ. im ÇKDr. — 2) f. °दीपिका = घण्टापाटा Râgân. im ÇKDr.

वक्रिनाशन adj. (körperliches) *Feuer löschend* Suçr. 1, 176, 2.

वक्रिनी f. = ब्राह्मी Râgân. im ÇKDr.

वक्रिनेत्र m. Bein. Çiva's H. ç. 44.

वक्रिपुराण n. Titel eines Purâṇa, = अग्निपुराण Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 38. 279, *a*, 13.

वक्रिपुष्पी f. *Grislea tomentosa Roxb.* Râgân. im ÇKDr.

वक्रिप्रिया f. *die Gattin des Feuergottes* Harîv. 7738 nach der Lesart der neueren Ausg. (वाग्निप्रिया die ältere).

वक्रिबीज n. 1) *Gold* H. 1044. — 2) *Citronenbaum* Râgân. im ÇKDr. — 3) mystische Bez. *der Silbe* रम् Weber, Râmây. Up. 318.

वक्रिभोग्य n. *Schmelzbutter* (घृत) Carâṇ. im ÇKDr.

वक्रिमत् (von वक्रि) adj. *Feuer enthaltend:* पर्वत Tarkas. 29. davon nom. abstr. वक्रिमत्त्व n. 46.

वक्रिमन्थ m. *Premna spinosa* Gaṇîdh. und Râgân. im ÇKDr. — Vgl. अग्निमन्थ.

वक्रिमय (von वक्रि) adj. *aus Feuer bestehend* Kuvalay. 166, *a*.

वक्रिमारक 1) adj. *Feuer vernichtend.* — 2) n. *Wasser* Carâṇ. im ÇKDr.

वक्रिमित्र m. *der Wind* (*der Freund des Feuers*) Carâṇ. im ÇKDr.

वक्रिरस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 998.

वक्रिरेतस् m. Bein. Çiva's H. 197. Hall. 1, 12.

वक्रिरोहिणी f. so v. a. अग्निरोहिणी, *eine zu den* कुष्ठरोग *gerechnete Krankheit* Suçr. 2, 121, 16. 18. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 65.

वक्रिलोहक n. *Messing* Râgân. im ÇKDr.

वक्रिवधू f. *die Gattin des Feuergottes*, Svâhâ Carâṇ. im ÇKDr.

वक्रिवस् adj. *das Wort* वक्रि *enthaltend* Ait. Br. 6, 18.

वह्निवर्ण 1) adj. *feuerfarben.* — 2) n. *eine rothe Lotusblüthe* Çabdam. im ÇKDn.

वह्निवल्लभ 1) m. *Harz (ein Freund des Feuers)* Taik. 2,6,37. — 2) f. आ *die Gattin des Feuergottes* Paṇḍar. 3,14,30.

वह्निशाला f. *Feuergemach* (s. अग्निशाला) Mlar. P. 75,29.

वह्निशिख 1) n. *Safflor* AK. 2.9,107. *Saffran* H. 645. — 2) f. आ a) *Flamme* Manoh. in Ind. St. 2,7. मदन° Spr. (II) 340. — b) *Methonica superba Lam.* Rayman. 38. Riéan. im ÇKDn. *Gristea tomentosa Roxb.* Riéan. ebend. = फलिनी Dhan. ebend.

वह्निशिखर m. *Hahnenkamm, Celosia cristata* Çabdam. im ÇKDn.

वह्निशुद्ध adj. *rein wie Feuer:* वस्त्रयुग Paṇḍar. 2,4,24. वह्निशुद्धांशुक 1,7,47. 8,5. 11,9. 28. 12,19. 14,60. 2,4,4.

वह्निसंस्कार m. *die Verbrennung eines Todten* Kathās. 73,407. — Vgl. अग्निसंस्कार.

वह्निसख m. 1) *der Freund des Feuers d. i. der Wind* ÇKDn. — 2) *Kümmel (das Feuer der Verdauung befördernd)* Riéan. im ÇKDn.

वह्निसात्तिकम् adv. *so dass das Feuer Zeuge ist (war)* Kathās. 39,158. — Vgl. अग्निसात्तिक.

वह्नीश्वरी f. *die Herrin des Feuers,* Bez. der Lakshmi Paṇḍar. 2,5,31.

वह्न्युत्पात m. *eine feurige Lufterscheinung* H. 126.

वह्य (von 1. वह्) 1) m. *ein Vehikel* P. 3,1,102. Vop. 26,16. H. 739. Uéóval. zu Unâdis. 4,111. *Tragsessel* (der auf die Schultern von des Saumthiers gelegt wird), *Sänfte; Ruhebett* überh.: सा भूमिमा रोहाख्य वह्यं शाला वधूरिव AV. 4,20,3. रुक्मप्रस्तरण 14,2,30. Dieselbe Bedeutung ist zulässig in folgender Stelle: गवां शतानामश्वानामश्वानां साप्यानां वह्यानां महानसानाम् (सप्तदश सप्तदश दक्षिणाः) *hundert Rinder, Reisewagen, Rosse, Sättel, Palankins, Lastwagen* Âçv. Ça. 9,9,14. nach dem Comm. *Rosse zum Reiten und zum Zug.* — 2) f. आ *die Gattin eines* Muni Unâdis. im ÇKDn.

वह्यक 1) wohl m. Kâtj. Ça. 14,3,31 in demselben Zusammenhange gebraucht wie वह्य Âçv. Ça. 9,9,14. vom Comm. durch वाहन erklärt. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वह्यशीवन् adj. (f. °शीवरी) *in einer Sänfte oder in einem Ruhebette liegend* AV. 4,3,3. तल्प° ṚV.

वह्यस्क m. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

वह्यशय्य adj. = वह्यशीवन्. नारी: ṚV. 7,55,8. = वाहने शयाना: Sây. 1. वा indecl. VS. Pair. 2,16. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. 1) *oder* Nir. 1,4. AK. 3,4,22 (20),11. H. an. 7,14. Med. avj. 74. Halây. 5,57. in Verbindung mit वा werden die betonten Formen der Pronomina gebraucht P. 8,1,24. Vop. 3,143. स्तेनं राय तस्करं वा ṚV. 7,55,8. 104,9. यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम् 8,44,23. AV. 2,12,6. 8,7,1. 12,2,4. श्रीहीन्यवान्वा Kâtj. Ça. 1,9,1. 2,1,11. न वा 4,12,2. 5,4,22. दशम्यां तु द्वादश्यां वा M. 2,30.35. तेन चाहं न शक्तो ऽस्मि संयोढुं तस्य वा बलैः R. 1,22,22. 2,1,22. Çiç. 145. कुर्यादन्यत्र वा कुर्यात् M. 2,57. न क्षुष्यति ग्लायति वा *weder — noch* 98. 3,11. अल्पो ऽप्येव महान्वापि 22. 243. 4,22. 95. MBh. 3,2929. धर्मार्थौ यत्र न स्यातां शुश्रूषा वापि तद्विधा M. 2,112. सम्युदियात् — निशोचेद्वापि 220. एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः 141. MBh. 3,2625. 2657. Spr. (II) 687. अल्पमपि वा बहु M. 10,60. राजतैर्भाजनैः — अथो वा रजताञ्चितैः 3,202. पत्नीमीं रात्रिं तदाप्येकमकर्निशम् 4,97. नलं वा (gehört zum folgenden Worte) भीमपुत्रिकाम् MBh. 3,2659. यदत्र सत्यं वासत्यम् 2778. वर्धनं वाथ संमानः Spr. 2735. वेदान्वेदौ वा वेदं वापि M. 3,2.82. नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं वा समुत्सृजेत् । यमेध्यलिप्तमन्यद्वा लोहितं वा विषाणि वा ॥ 4,56. 5,33. 7,187. एकेन त्रिभिः पञ्चभिरेव वा 2,43. 224. 3,84. 267. Spr. 639. 4538. षष्टिंशदाब्दिकं तदर्धिकं (hier fehlt वा) पादिकं वा यत्कृणात्तिकमेव वा M. 3,1. सतामृताभ्याम् — मृतेन प्रमृतेन वा । सत्यानृताभ्यामपि वा ॥ 4,4. 51. न नृत्येदथ वा गायेन्न वादित्राणि वादयेत् 61. मद्यैर्मूत्रैः पुरीषैर्वा ष्ठीवनैः पूयशोणितैः 5,123. 7,70. नैनामीक्षेत चाम्लतीम् । नुवतीं शृण्वतीं वा न चासीनां यथासुखम् ॥ 3,43. लौकिकं वैदिकं वापि तथाध्यात्मिकमेव च 2,117. 10,109. R. 1,7,10. बालो वृद्धो वा वृद्धश्च Spr. 4627. न — नापि — वा R. 1,53,11. न — वा — न — न च — न — न च 1,6,8. न — न — नापि वा — न — न च — न — न 10. Vikr. 51. प्रमोद् मा (so die ed. Bomb.; es ist die prohibitive Partikel, nicht das Pronomen) वा यद्वा ते कार्यं तत्कुरु माचिरम् MBh. 5,7072. वा — वा *entweder — oder;* bei einer Disjunction zweier Sätze wird das Verbum des ersten Satzes betont VS. Pair. 6,20. P. 8,1,58. fg. उद्धो सिञ्चधमुर्वा पृणधम् ṚV. 7,16,11. 104,14. शक्तो वा विद्वा वो 1,31,18. तस्यं वा तं मनं इच्छा स वा तवं 10,10,4. अरुषे वा तान्प्रदर्दातु सोमु आ वो दधातु 7,104,9. यपते वैनं स यदि वा न यपते ऽथ पुत्रम् Âit. Bn. 2,7. 3,30. beide Verba betont: वृक्षेति वानुं वा मृह्यपते Çat. Bn. 5,1,2,18. 21. — अल्पं वा बहु वा M. 2,149. 208. 3,26. R. 1,6,25. नासीत्पुरे वा राष्ट्रे वा तस्करः *weder — noch* 7,14. Spr. 3054. किं वा काव्यरसः स्वादुः किं वा स्वादीयसी सुधा 3868. किं वा दुर्जनवेष्टितं न वा Hit. 73,22. आत्मतुल्यं सुवर्णं वा दद्याद्वा विप्रनुष्टिकृत् Jâén. 3,258. तपसा वा सुधा वापि MBh. 5,6009. प्राणि वा यदि वाप्राणि M. 4,117. लोभाद्वाथ भयाद्वापि Spr. 2689. अन्यो नरो वाप्यथ वापि नारी MBh. 3,15603. गौ विप्रमग्निं वा प्राशयेदप्सु वा क्षिपेत् M. 3,260. सभां वा न प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा समञ्जसम् 8,13. त्यक्त्वा वैनां गृहाणा वा Çiç. 122. पिपासया वा म्रियते याचते वा पुरंदरम् Spr. 514. मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्यति वने ऽथ वा 709. भिक्षते पेन वा न वा M. 7,86. नकिं स ज्ञायते वीरो नलो द्योवति वा न वा *ob — oder nicht* MBh. 3,2769. 2821. Çiç. 62. 115. Spr. 1694. Riéa-Tar. 3,403. पातालं यदि वा नीता वर्तते वा नभस्तले R. 4,5,5. मातरं वा स्वसारं वा मातुर्वा भगिनीं निजाम् M. 2,50. गच्छ वा तिष्ठ वा भद्रे यद्वापीच्छसि तत्कुरु MBh. 1,5961. मुण्डो वा जटिलो वा स्याद्व वा स्याच्छिखाजटः M. 2,219. व्यसने वाथ कृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तके R. 4,6,10. वा — यदि वा — यपि वा — वा M. 3,242. वा — वा — वापि Spr. 4624. वा — वा — वापि — वा M. 4,7. वा — वा — वापि — यपि वा 6,17. वापि — अथ वा — वापि 8,274. — उत वा, उता वा घ: या यापो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा स्वयंजाः ṚV. 7,49,2. 82,5. पाहि रीषत उत वा त्रिषंसतः 1,36,15. 3,4,6. AV. 4,8,5. 5,1,7. विश्वामातुरुत वो घा स्यालात् ṚV. 1,109,2. इह वा — उत वा प्रेत्य MBh. 1,6188. वाक्, कस्य वाहेदं कस्य वा गो भविष्यति TBr. 1,6,6,4. TS. 1,6,8,1. उ वा, यज्ञ वा कामयते Çat. Bn. 3,8,4,16. überzählig: यस्यस्य वा निर्शिति वेदिति वा ṚV. 5,15,11. — 2) *oder* so v. a. *entweder oder auch nicht, beliebig, facultativ* Taik. 3,4,6. Med. प्रतिषेधेति ब्रूयाद्वा Kâtj. Ça. 2,2,22. 1,9. 21. 7,6. 3,2,13. 4,27. 7,9. 8,7. ज्ञातदत्तस्य वा कुर्युः M. 5,70. ṚV. Pair. 1,5. 2,1. 4,11. 6,2. 7. 8. 15,8. 18. AV. Pair. 4,27. Çiñ. 1,9. 12.

16. 24. 2,25. 3,8. P. 1,2,13.35. AK. 3,4,12,50. — 3) = इव *wie* AK. 3,4,22(28),11. 3,5,9. H. an. Med. Halâj. Siddh. K. zu P. 1,1,11. यदैषि मनसा दूरं दिशो ऽनु पवमानो वा Pâr. Gṛhj. 1,4. यस्याद्य कर्म द्रक्ष्यसे मूढसत्त्व शतक्रतोर्वा दैत्यसेनासु संख्ये MBh. 3,15710. 4,1754. 5,3862. स तु दोलायमानो वा द्वैधीभावेन पाण्डवः 7,1211. 13,4312. R. 1,10,37. Mṛkkh. 77,2. Megh. 81. Ragh. 19,51. Spr. 2562, v. l. 2723. Mâlav. 87. Çiç. 3,63. 4,35. 7,64. 18,25. Kir. 3,13. मुखेन्दोश्चन्द्रिका वास्य शिशोर्मुग्धस्मितं बभौ Pârçvanâthak. 4,18 (nach Aufrecht). — 4) = एव H. an. Kull. zu M. 2,30. Kâtj. Çr. 1,1,4. 8,18. 10,2. 2,6,20. 29. 36. 3,1,7. 4,18. Spr. 4702. — 5) *selbst, sogar:* देवासुरगणान्वापि सगन्धर्वोरगान्भुवि । यैरमित्रान्प्रसह्याजौ वशीकृत्य जयिष्यसि R. 1,29,3. नरं वा पुरुषर्षभ । आनयस्व पशुं शीघ्रम् 61,8. नास्य वाच्यं भवेत्किंचित् लब्धव्यं वाधिगच्छति MBh. 10,85. वरमिह वा सुतमरणं न तु मूर्खत्वं कुलप्रसूतस्य Spr. 2742. नयनाभ्यां प्रसुप्तो वा जागर्ति नयचक्षुषा 4335. आगमनमपि तेषां न संभाव्यते भविष्यति वा so v. a. *gesetzt aber auch, dass* Pańḱat. 246,21. — 6) nach interrogativen und relativen pronomm. so v. a. *wohl, etwa:* के वा Megh. 55. Spr. 737. 3107. किं ते हिडिम्ब एतैर्वा सुखसुप्तैः प्रबोधितैः MBh. 1,3984. किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या Çâk. 105,7. काणेन चक्षुषा किं वा Spr. 753. 5233. कथं वा Çâk. 25. 56,3. नैतत्कर्तुं क्षमा वयम् । यो वा शक्तः स कुरुताम् Kathâs. 18,142. यत्र वा MBh. 1,7694. — 7) nach H. an. und Med. समुच्चये d. i. = च; nach Med. auch पादपूरणे. — Vgl. noch u. अथ 7) b), 1. क 1) e) und 3) d), 1. घ, 1. य 1) c) ζ), यद् 2) l), यदि 9).

2. वा, वाति Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). Dhâtup. 24,42 (गतिगन्धनयोः, गमनहिंसयोः Vop.). अवान् und अवुस् P. 3,4,111, Schol. अवासीत् 7,2,73, Schol. 1) *wehen:* तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजम् ṚV. 1,89,4. AV. 4,15,8. 16. 7,69,1. 12,3,12. Çat. Br. 2,2,2,6. यदा बलवद्वात्यत्युग्रो वातीत्याहुः 6,1,2,13. 10,3,5,14. यां दिशं वातो वायात् 11,5,2,11. वाते वाति 6,9. ṬBr. 2,3,9,4.5. वाति मारुतः R. 1,14,17. 65,13. 2,41,15. 3,54,12. Spr. 1769. Varâh. Bṛh. S. 27,7. 31,5. Bhâg. P. 1,14,16. 3,25,42. वान्गन्धवहः Bhaṭṭ. 2,10. मारुते वाति वा भृशम् M. 4,122. 11,113. Kâm. Nîtis. 7,38. Spr. 1914. वायुरवात् R. Gorr. 1,25,4. Bhaṭṭ. 8,61. 17,9. 74. ववौ MBh. 1,5882. 3,2995. 12041. 5,7206. R. 2,91,24. Ragh. 3,14. Kathâs. 55,109. Brahma-P. in LA. (III) 52,22. Bhaṭṭ. 7,1. अवासीत् 9,2. 15,26. वास्यति Megh. 43. नाशकन्मारुतो वातुम् Hariv. 90. Kathâs. 25,42. 44,136. — 2) *anwehen:* साध्वसाधूंश्चापि वातीह वायुः Spr. 5222. — 3) *Gerüche aushauchen, ausdünsten, sich verbreiten* (von einem Geruche): तस्मात्ते शणाः पूतयो वान्ति Çat. Br. 3,2,1,11. वाति गन्धः सुमनसां प्रतिवातं कथं च न । धर्मजस्तु मनुष्याणां वाति गन्धः समन्ततः ॥ Spr. 4982. अदनाद्धविरङ्ग वाति Bhâg. P. 5,2,13. Diese Bed. ist wohl mit गन्धन im Dhâtup. gemeint. — Vgl. 3. वा.

— अति *darüber hinaus wehen:* न भूमिं वातो ऽति वाति AV. 4,5,2.

— अनु *anblasen, anfachen, weiterwehen:* आदस्य वातो अनु वाति शोचिरस्तुर्न शर्याम् ṚV. 1,148,4. 4,7,10. 7,3,3. 10,142,4. वायुरस्य कामाननुवाति Kâṭh. 12,13. *nachwehen:* वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः AV. 12,1,51. TS. 5,5,2,3.4. अनुवाति शुभो वायुः सेनाम् *anwehen* R. 5,73,52. शिवश्चानुववौ वायुः *wehen* MBh. 5,2942. Bhâg. P. 10,35,21.

— अप *ausdünsten:* यदूवध्यमुदरस्यापवाति ṚV. 1,162,10.

— अभि *anwehen, herwehen:* शं न इषिरो अभि वातु वातः ṚV. 7,35,4. 10,169,1. पूतिरेनानभिववौ Çat. Br. 4,1,2,6. Kâṭh. 31,3. सुखो वातो ऽभिवाति माम् MBh. 4,2238. पुराभिवाति मारुतो यमस्य यः पुरःसरः 12,12080.

— अव *herabwehen:* न्यग्वातो ऽव वाति ṚV. 10,60,11. तपुर्जम्भो वन आ वातचोदितो यूथे न साह्वाँ अव वाति वंसगः *wird vom Lufthauch getragen in* 1,58,5.

— आ *herwehen:* द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः । दक्षं त अन्य आ वातु ṚV. 10,137,2.3. वात आ वातु भेषजम् 186,1. आवानावान्मातरिश्वा Kir. 5,36. यत्रामोदमुपादाय मार्ग आवाति मारुतः Bhâg. P. 8,15,18. आववुर्वायवो घोराः Bhaṭṭ. 14,97. *anwehen:* वायुर्भूत्वा सर्वा दिश आ वाहि TBr. 3,10,4,2.

— उद् *durch Luftzug erlöschen:* अग्निर्वा उद्वान्वायुमनुप्रविशति Ait. Br. 8,28 (Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. 321). Kauç. 72. — Vgl. 3. वा mit उद्.

— अनूद् im Winde (acc.) *verwehen:* यदा वा अग्निरनुगच्छति वायुं तर्ह्यनूद्वाति तस्मादेनमुदवासीदत्याहुर्वायुं ह्यनूद्वाति Çat. Br. 10,3,2,5 (Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 321).

— उप *anwehen* Çat. Br. 13,3,6,6. *anblasen:* यूयं तु मे सच्युपवात 4,1,2,7. — Vgl. उपवा und 3. वा mit उप.

— परिणि und प्रणि° P. 8,4,17, Schol.

— निस् 1) *wehen:* निर्ववुः शतशश्चैव वृष्टिवाताः सविद्युतः R. 4,29,11. — 2) *erlöschen:* निर्वास्यतः प्रदीपस्य शिखेव Çâk. Ch. 91,11. — 3) *sich abkühlen, gestillt —, erquickt werden:* तथा वपुर्जलार्द्रापवनैर्न निर्ववौ Çiç. 1,65. इति सर्वं समुन्नद्धं न निर्वाति कथं च न MBh. 9,259. त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम् Spr. 1086. Kathâs. 104,57. 117,31. — Vgl. निर्वाण. — caus. *auslöschen; ablöschen, von der Gluth —, von der Hitze befreien, kühlen; stillen, zur Ruhe bringen, erquicken:* यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः ṚV. 10,16,12. अग्नीन्निर्वापयां चक्रुः Ait. Br. 2,36. उदकेनास्थीनि Çâṅkh. Çr. 4,15,12. समिद्धं जातवेदसम् । वर्षैर्निर्वापयिष्यामो मेघा भूत्वा सविद्युतः ॥ MBh. 1,1608. 5857. 11,241. Hariv. 6227. Kathâs. 66,15. प्रदीपं पटान्तेन Mṛkkh. 16,7. 49,20. Burnouf, Intr. 589. Kathâs. 4,67. अनलप्रवेशेन शोकानलम् Prab. 90,20. क्षारं सर्पिषा Suçr. 2,47,11. 74,10. भस्मीभूतांल्लोकान् — जलयुक्तेन कर्मणा Hariv. 11343. अतिप्रबन्धप्रहितास्त्रवृष्टिभिस्तमाश्रयं दुष्प्रसहस्य तेजसः । शशाक निर्वापयितुं न वासवः स्वतश्च्युतं वह्निमिवाद्भिरम्बुदः ॥ Ragh. 3,58. प्रियसंदेशैः सीताम् 12,63. निर्वापितः कनककुम्भमुखोज्झितेन वंशाभिषेकविधिना शिशिरेण गर्भः 19,56. दग्धं चिराय मलयानिलचन्द्रपादैर्निर्वापितं तु परिरभ्य वपुर्न नाम Mâlav. 128,14. fg. अङ्गानि त्वमनङ्गतापविधुराण्येह्येहि निर्वापय Ratnâv. 65,9. पितरौ विप्रयोगाग्नितापितौ (acc.) निरवापयतां सद्यो दर्शनामृतवर्षिणौ (nomin.) Kathâs. 25,265. इति वाक्सुधया तस्याः कृती निर्वापितः 103,72. निर्वापय प्रसन्नेन लोचनेनामृतश्च्युता । दृष्ट्वा मां दुःखदावाग्निदग्धम् 101,304. Verz. d. Oxf. H. 31,a,42. स (अग्निः) मे निर्वाप्य सहसा चक्षुषी शाम्यते पुनः so v. a. *blendend* (= मन्दीकृत्य Nilak.) MBh. 5,3864. — Vgl. 2. निर्वापण fg.

— अनुनिस् *erlöschen nach* (acc.): निर्वाणमनुनिर्वाति तपनं तपनोपलः Spr. 1611.

— परिनिस् *vollkommen erlöschen, — zur Ruhe gelangen:* उल्केव परिनिर्वाति स्म Lalit. ed. Calc. 20,9. शाम्यामि परिनिर्वामि MBh. 12,6635. Vgl. परिनिर्वाण. — caus. *vollkommen zur Ruhe bringen:* परिनिर्वापयि-

तव्य Benfey, Intr. 593.

— परा *wegwehen:* परान्यो वातु यद्रपः ṚV. 10,137,2.

— प्र *wehen:* धूमस्येव वाते इव प्र वामि ṚV.10,123,5. वनाच्च वायुः सुरभिः प्रवायात् MBu.1,2936. वाताश्च प्रववुः 4809. 3,11996.6,731.7,328. 9039. 12,6333. 12081. Hariv. 4941. 8790. R. 2,71,28. 91,26. R. Gorr. 2,100,21. 3,22,15. 52,11. Bhâg. P. 3,9,15. 5,24,5. Pañcav. 169,6. vom Geruchen: गन्धो यस्याः कोशात्प्रवाति वै MBu. 1,6934. 6,133. R. Gorr. 2,100,23. 125,21 (114,10 Schl.). 4,13,21. 5,73,59. — Vgl. प्रवा, प्रवात (auch R. 5,26,1), प्रवाय्य.

— वि *vorwehen, auseinanderblasen; durchwehen:* वि वात वाहि पद्रपः ṚV. 10,137,3. मिमे न वातो वि के वाति भूमे 31,9. 1,28,6. व्यवाते ज्योतिरभूत् AV. 8,1,21. इमे वै सहास्तो ते वायुर्व्यवात् TS. 3,4,8,1. Çat. Br. 4,1,3,7. 10. Kâṭy. 13,2. 27,3. ततो लोकान्विवात्यसौ (वायुः) MBu. 12,13379. *nach verschiedenen Richtungen hin wehen:* विधग्वाताश्च विववुः 6,733. वायुर्विवाति कृदयानि रुरवराणाम् ṚV. 6,22.

— अनुवि *der Reihe oder der Länge nach durchwehen:* दिशः TBr. 2,3,9,6. 3,10,4,2.

— सम् *wehen* TBr. 3,11,8,2. MBu. 4,1288. 12,12393. 12401 (wo mit der ed. Bomb. संवाति st. संभाति zu lesen ist).

— अनुसम् *der Reihe nach (zusammen) anwehen:* दिशः TBr. 2,3,9, 6. 3,10,4,2.

3. वा, वायति Dhâtup. 22,24 (शोषणे). अवासीत्; auch med. in der Bed. von 2. वा; partic. वान (s. bes.) und वात. 1) *matt —, müde werden, sich erschöpfen, erliegen:* न वायसि सुन्वो देवगुप्ताः ṚV. 7,67,8. न ता वातोऽपि वायतः 8,31,6. वर्षादृग्निर्न वायति *wird nicht müde zu verzehren* 43,7. — 2) = 2. वा *wehen:* अभीक्षणवाता वायते धूमकेतुमवस्थिताः MBu. 6,97. — अवायत् MBu. 9,947 Druckfehler für अवारयत्.

— अति *heftig wehen:* अतिवायति *bei heftigem Winde* MBu. 12,12420.

— अभि, partic. °वात *matt, stech:* अभिवातासु गोषु या अनभिवाताः स्युः Liṭ. 3,5,3. = व्याधित Comm.

— उद् *matt werden, hinsterben,* vom Feuer so v. a. *in sich erlöschen* TS. 2,2,4,7. 5,7,3,1. यस्यैतच्चनोदे ऽनुहाते गार्हपत्य उद्वायेत् TBr. 1, 4,4,6. 3,2. पदा वा अग्निरुद्वायति Kauṣ. Up. 4,3,1. उद्वासीत् Çat. Br. 10,3,3,8. — caus. *ausgehen lassen:* आहवनीयमुद्वाप्य TBr. 1,4,4,7.

— उप *durch Vertrocknen ausgehen, eintrocknen:* नराशंसः Soma Pañcav. Br. 2,9,5. Çâṅkh. Çr. 13,12,10. falsch उपवायात् (als ob von 2. वा) st. °वायेत् Kâṭy. Çr. 25,12,10. 12. कलशमुपवायत्ते प्राणो ऽनूदस्यति Kâṭy. 33,16. °वात (Gobhn. वार्द्र) *trocken:* Holz Âçv. Gṛhy. 3,8,4. प्रतालितोपवात Kauç. 2.

— निस् *erlöschen:* निर्ग्नेयः शीतेन वायति TS. 6,2,3,7. — Vgl. 2. वा mit निस् simpl. und caus.

— प्र *wehen:* वर्धमाने कृतवके वाते चाग्नु प्रवायति MBu. 1,8431. नैव वाताः प्रवायन्ते Hariv. 10738. — Vgl. 2. वा mit प्र.

— अतिप्र *heftig wehen:* वायुनातिप्रवायता MBu. 12,12418.

— वि *wehen:* सर्वगन्धवहः शुचिर्वायुर्विवायमानः शरीरमस्पृशत् MBu. 12,13221.

4. वा Nebenform von 1. वन्. partic. वात *begehrt, erwünscht; angegriffen, angefochten:* अवस्युवात TS. 4,4,12,3. विवस्वद्वात 6. — Vgl. स°, इन्द्र°, देव° (auch TS. 3,2,11,1), 2. नि°, मनो°.

— desid. विवासति unter den परिचरणकर्माणः Naigh. 3, 5. mit आ *act. med. zu gewinnen —, herbeizuziehen suchen; Anklagen; lochen:* सुधिं देववीतये ṚV. 1,12,9. 84,9. मदाय होता विवासते वाम् 117,1. 152, 6. 173,1. द्यावापृथिवी 7,72,3. 100,1. 3,49,3. 9,86,14. VS. 6,23. एकायुरये विशं आविवासति ṚV. 1,31,5. AV. 8,21,1; vgl. SV. I, 4,2,4,3. आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः। इन्द्राय सिच्यते मधु ṚV. 9,39,5. नमसा 5,83,1. 6,16,46. मुखैः 1,41,3. 10,93,2. आकूतैः 7,94,11. हविषा 1, 58,1. 2,26,3. गीर्भिः 7,6,2. 8,13,1. उक्थेभिः 5,43,4. धीतिभिः 6,61,2. सुष्टुत्या 8,16,3. वचसा 8,62,5. कृवसा 66,11. मनो यो अस्य घोरमाविवासात् 7,20,6. 1,119,9. सुम्नम् 2,11,16. 33,6. 8,60,11. आविवासन्ती युवतिर्मनीषा 5,47,1. तव प्रणीतौ तव शूर शर्मन्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः 3,51,7. कृतं चिदेनो नमसा विवासे *ich suche zu begütigen* 6,51,8. = वर्धयामि, विनाशयामि Sây.

— अभ्या *in feindlicher Absicht sich nähern:* पराशरो हविर्मथीनामभ्याई विवासताम् ṚV. 7,104,21. = आगच्छताम् Sây., nach Dunâ *derjenigen Verehrer, welche Jâtu sind,* also *der falschen Verehrer.*

— उप *zu gewinnen suchen:* उप वो गीर्भिरमृतं विवासत ṚV. 6,15,6.

5. वा, वैयति und °ते Dhâtup. 23,27 (तन्तुसंताने): ववौ, उवाय, ववुस्, ऊवुस्, ऊयुस् P. 2,4,41. 6,1,16. 38. fgg. Vop. 8,124. 135. fgg. उवायिथ P. 7,2,61, Schol. वयिर्व्यैति; °वाय P. 6,1,41. Vop. 26,217. partic. ऊत (auch ऊत *gewebt, genäht* AK. 3,2,30. H. 1487) P. 6,4,2. *weben, flechten, künstlich aneinanderfügen,* auch Reden, Lieder u. s. w.: नाकं तसुं न वि जानाम्योतुं न यं वयन्ति समरे ऽतमानाः ṚV. 6,9,2. निर्णिजाम् 9,90, 4. वस्त्रा 5,47,6. MBu. 1,723. पटं वयन्त्यो 806. वयामि प्रत्यर्कं पञ्च कृष्टिकायुगलानि यत् Kâṭhaka. 32,99. इन्द्रायार्कमरिष्कृत्यै ऊतुः ṚV. 1,61,8. मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं मे 2,28,5. 38,4. 7,33,9. 10,53,6. 130,1. को अस्मिन्प्राणमवयत् AV. 10,2,13. VS. 19,80. 32. 39. TBr. 1,5,4,1. Çat. Br. 3,1,3,19. ज्ञातुर्वसुधामवुः सायका रज्जुवत्ततः *bewoben, gleichsam zu einem Gewebe machen* (आवृतवत्तः, व्याप्तवत्तः Comm.) Bhaṭṭ. 14,84. रज्जूत Kâṭy. Çr. 15,7,1. ऊत 7,9,27. Schol. zu 15,5,9. अव तुरीयेणोतया (wohl तुरीयेण ओतया gemeint) प्रोतया वयमात्मा सिनः *eingefasst —, steckend —, enthalten in* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 158. fg. — Vgl. ऊय्, अमोत, ओतु, 3. वान.

— caus. वाययति P. 7,3,37. Vop. 18,6.

— अप *ein Gewebe auflösen* ṚV. 10,130,1.

— आ *einweben, anfassen, reihen* (z. B. Perlen an eine Schnur), *durchziehen* AV. 10,8,37. वानेषु कायान् TBr. 3,9,4,1. 5. Çat. Br. 13,2,6,3. पुण्याण्यादायावयत्तः Kauṣ. Up. 1,3. देवतानां पशो मनास्योतानि Çat. Br. 3,8, 3,11. Ait. Br. 2,10. मणौ सूत्रमोतम् *ist durchgezogen* Pañcav. Br. 20,6,6. Çat. Br. 12,3,4,2. 14,6,6,1. 8,3. Kâṭy. Çr. 16,5,1. यस्मिन्द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैः Muṇḍ. Up. 2,2,5. यस्मिन्निदमोतं प्रोतं विश्वं शाटीव तन्तुषु Bhâg. P. 8,9,7. 10,15,25. प्राणैश्चितं सर्वमोतम् Muṇḍ. Up. 3,1,9. Maitrâyaṇ. 6,3. ओतप्रोतो ऽयम् MBu. 5,1789. — Vgl. अगावानम् und नस्योत.

— समा *anfassen, aufreihen:* आदित्य इमौ लोकान्सूत्रे समावयते Çat. Br. 7,3,2,13. 8,7,2,10.

— उद् *hinaufbinden, aufhängen:* शिक्योदुत Çat. Br. 5,3,4,28. आ-

दित्यं पञ्चभी रश्मिभिरुद्वयन् TBa. 1,2,4,2. Ait. Ba. 4,19.

— उप, °वाय P. 6,1,41, Schol. उपोत *eingestickt* (in den Köcher oder in eine andere Vorrichtung für Pfeile): °पक्रय Çāṅkh. Ça. 14,22,20. Liṭ. 8,5,8.

— निस्, निरुत P. 6,4,2, Schol.

— परि *durchweben:* यत्र क्व चित्तपरं पापपुरुषं धर्मराजपुरुषा वायका इव सर्वतो ऽङ्गेषु सूत्रैः परिवयन्ति Buic. P. 5,26,36. *umstricken, binden:* परिवयसे पशूनिव गिरा विबुधानपि 10,87,27. पर्युत *eingefasst* (mit Zierat): ein Wagen Çat. Ba. 13,2,2,8.

— प्र *daran weben* ṚV. 10,130,1. दिश्येव दिशं प्रवयति तस्मादिशि दिक्प्रोता TS. 5,7,2,4. हिरण्यम् Çat. Ba. 5,3,5,15. Kiṭ. Ça. 15,5,4. तस्मिन्यत्पुमर्थं प्रवयति Kaṭh. Up. 2,6. ग्रन्थं *daran knüpfen* Çāṅkh. Ça. 17,3,7. °वाय P. 6,1,41, Schol. Vop. 26,217. प्रोत *gereiht auf, gesteckt an, steckend an, in;* = उत H. 1487. = गुम्फित H. an. 2,181. = खचित Mṛch. 1. 37. मणिः सूत्र इव प्रोतः MBu. 3,1142. 8,1329. मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव Bhag. 7,7. सूत्रप्रोता दारुमयीव योषा so v. a. *Drahtpuppe* MBu. 3,951. 1446. शूले *gesteckt, gespiesst* 1,2421. 4316. Mālav. P. 16,27. शूल° Hariv. 14579. शूलाग्र° 14856. शूलान्त्र° Rāǵa-Tar. 2,87. शूलिका° Sṛṅg. 1,230,15. शृङ्ग° Hariv. 15438. शल्य° Ragh. 9,75. शास° Kathās. 21,15. Schol. zu Çiç. 32. हृदये प्रोतः शरः MBu. 5,852. रोप्याङ्कुरमुखप्रोतमुक्तासंतति Kathās. 18,47. प्रोतशूले स्रुते तस्मिन् Rāǵa-Tar. 2,80. प्रोतघने विषाणे Kumāras. 7,49. कारान् — शशिनस्तरुच्छिद्रप्रोतान् *steckend in* Spr. 3866. इषीकातूलमयी प्रोतम् *gesteckt in* Kaṭhās. Up. 5;24,3. यस्मिन्सर्वमिदं प्रोतं ब्रह्म स्थावरजङ्गमम् *enthalten in* Mṛtsiṅh. Up. in Ind. St. 9,20. Çat. Ba. 14,6,6,1. Āçvāy. 1,15. Buic. P. 3,15,6. ओतप्रोतमिदं यस्मिंस्तन्तुषङ्क यथा पटः 10,15,25. 9,9,7. MBu. 5,1789. एताभिः सर्वमिदमोतं प्रोतं च *durchzogen* Maitrāyaṇ. 6,3. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,158. fg. प्रोत *gewebtes Zeug, ein gewebtes Gewand,* m. H. 667. n. H. an. Med. — Vgl. 1. प्रवयण, प्रवाण fg.

— प्रतिप्र *weiter daransetzen* Çāṅkh. Ba. 11,3.

— प्रनिप्र *daranheften:* शिखाम् TS. 7,4,2,1.

— संप्र *verflechten:* प्रउगो Çāṅkh. Ba. 24,1. Ça. 16,7,18. 14,1.

— वि *flechten* Liṭ. 3,8,13. व्युत *geflochten, gewebt:* पत्र ṚV. 1,122, 2. रश्मिभिः Çat. Ba. 6,7,2,13. 14,1,2,11. वर्ष° 5,4,4,1. उरौ पवि व्युते (= विविक्ते Sāy.) तस्थुरुत्तः ṚV. 3,54,9.

— सम् *bewoben,* mit Figuren u. s. w.: तसुं ततं पेशसा संवयन्ती VS. 20,41. ṚV. 2,3,6. तर्वासमुत *mit Pflöcken zusammengesteckt* Çat. Ba. 3,2,1,2.

वंश 1) adj. von वंश ÇKDa. — 2) f. ई = वंशरोचना *Tabaschir* Rāǵān. im ÇKDa.

वंशकठिनिकं adj. = वंशकठिने व्यवहरति P. 4,4,72, Schol.

वंशभारिकं (von वंशभार) adj. *eine Tracht Bambus tragend* P. 5,1,30.

वांशिक (von वंश) 1) adj. dass. P. 5,1,30. — 2) m. *Flötenspieler* Gaṇiṅ. im ÇKDa.

वाःकिटि (वार् *Wasser* + किटि) m. *Meerschwein* Çabdārthak. bei Wilson.

वाःपुष्प (वार् + पु°) n. *Gewürznelke* Çabdārthak. bei Wilson.

वाक (von वच्) 1) m. a) *Spruch, Recitation, Formel im Ritus:* प्रति मिमीते त्रैष्टुभेन वाकम् । वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा ṚV. 1,164,24. स प्रत्नथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वृतणिः 8,52,4. वचोभिर्वाकैरुषसं यामि रातिम् AV. 19,3,4. तनो वाका (wohl वाकाँ) घाशिषो नो जुषन्ताम् VS. 17, 57 (TS. v. l.). वाकेधनुवाकेषु निषत्सूपनिषत्सु च MBu. 12,1613. — b) *Geschwätz, Gesumme:* वाका घृचितामिव नश्यतु AV. 8,25,1. — 2) n. N. eines Sāman Ind. St. 3,234,a. — Vgl. अच्छा°, अमृत°, ऋत°, चक्र°, चार्वाक, ज्रोष°, धार्°, नमो°, प्रशंस्यु°, वालि°, वली°, शंपु°, शंयोर्वाक, सत्य°, सिनी°, सूक्त°.

वाकारकृत् m. N. pr. eines Mannes Saṁsk. K. 184,a,1.

वाकिन 1) m. N. pr. eines Mannes P. 4,1,158. — 2) f. ई N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 89,b,8; vgl. राकिणी, लाकिनी.

वाकिनकायनि m. patron. von वाकिन P. 4,1,158.

वाकिनि m. desgl. ebend.

वाकु (von वच्) in कक°.

वाकुची f. *Vernonia anthelminthica* AK. 2,4,2,14. Suçr. 2,68,8. 150,19.

वाकोपवाक n. *Dialog;* s. u. वाकोवाक्य.

वाकोवाक्य n. *Dialog;* auch Bez. *gewisser Stücke der vedischen Ueberlieferung:* वाकोवाक्ये प्रश्नोक्ते वदन्ति Çat. Ba. 4,6,2,20. 11,5,6,8. वाककोकिलयोर्वाकोवाक्यम् (nach Pandit II,115 soll वाकोपवाकम् zu lesen sein) Siṁh. D. 314,16. Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489 (eine rhetorische Figur). वाकोवाक्यमधीते Çat. Ba. 11,5,7,5. Liṭ. 3,12,7. Çāṅkh. Gṛhj. 1, 24. Kauṣ. Up. 7,1,2. 4. Jiṅ. 1,45. Verz. d. Oxf. H. 54,b,6.

वाक्कलह (वाच् + क°) m. *Wortstreit* Prab. 55,11. fg.

वाक्कीर (वाच् + कीर) m. *der Bruder der Frau (Jabruder)* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. वारकीर.

वाक्केलि und °केली f. *ein Scherz mit Worten, eine witzige Unterredung* Daçar. 3,15. Siṁh. D. 321. 325. Pratāpar. 23,a,9. 27,a,8.

वाक्कलुष n. sg. *Rede und Blick* Jiṅ. 2,14.

वाक्कापल्य adj. *unbesonnen in der Rede, unüberlegt redend* M. 4, 177. MBu. 14,1251.

वाक्कापल्य n. *Unbesonnenheit in der Rede* Jiṅ. 1,112.

वाक्कूट n. *lügnerische Reden,* pl. Hariv. 4228 (die neuere Ausg. besser वाक्कूट्यैः). सवाक्कूटम् Kathās. 39,215. *Verdrehung der Worte seines Gegners in einer Disputation:* वक्तुरभिप्रायादर्थान्तरकल्पना वाक्कूटम् Naiṣaṁ. 1,1,53. 56.

वाक्कर्ष n. sg. copul. Zusammensetzung von वाच् mit कृष् P. 5,4, 106, Sch. Vop. 6,7.

वाक्किर्ष n. sg. copul. Zusammensetzung von वाच् mit किरि ebend.

वाक्पटु adj. *beredt* Spr. 1870. 2255. 2600. 4747.

वाक्पटुता f. *Beredsamkeit* Spr. 2825.

वाक्पति (paroxyt. VS., oxyt. nach P. 6,2,19) m. 1) *Herr der Rede* VS. 4,4. Kiṭ. 14,1. Taitt. Up. 1,6,2. Vishṇu Hariv. 12312. *Meister der Rede* so v. a. *ein beredter Mann* AK. 3,1,35. H. 346. — 2) *der Planet Jupiter* Colebr. Misc. Ess. I, 108. R. 1,19,2 (ed. Bomb. 18,9). Varāh. Bṛh. S. 4,22. 8,15. Bṛh. 9,4. 14,1. Ind. St. 2,261. 283. fg.

वाक्पतिराज m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,31. Rāǵa-Tar. 4,144. Ind. St. 8,194. 294.

वाक्पतीय n. *Herrschaft der Rede* (Comm.) TBa. 2,7,2,1.

वाक्यत्य n. dass.: ब्राह्मणास्य Kiṭu. 37,2.

वाक्यद्य m. *die Gelegenheit —, der geeignete Augenblick zum Reden:* घतीतवाक्यद्ये काले MBh. 2,1590. 3,2299.

वाक्यो adj. *Rede beschützend* Ait. Br. 2,27. TS. 3,2,10,1. 2.

वाक्यापाटव n. s. u. पाटव 2) a) und füge noch Verz. d. Oxf. H. 263, *a*, 26. Spr. 4978 und *Rauhheit der Stimme* hinzu.

वाक्पुष्टा f. N. pr. einer Fürstin Rāja-Tar. 2,11. वाक्पुष्टाख्या 57.

वाक्पुष्प n. pl. *Redeblüthen, schwungvolle Worte:* ऋषिभिर्देवतेश्चैव वाक्पुष्पैरर्चिताम् देवीम् Harıv. 10234. Kathās. 109,93. — Vgl. पुष्प 1) e).

वाक्प्रलाप m. *Redekunst, Beredsamkeit:* न ते तुल्यो विद्यते वाक्प्रलापे MBh. 3,10650.

वाक्प्रवादिषु adj. *als Redner auftretend* Âçv. Çr. 10,2,27.

वाक्य (von वच्) n. P. 7,3,67. Schol. zu 3,1,124. 7,3,52. Vop. 26,10. 1) *Ausspruch, Rede, Worte;* sg. und pl.: शृणु मे त्वम् — पठाक्यं मूषिको ऽब्रवीत् MBh. 1,5577. वाक्यमर्जुनमब्रवीत् 3,1723. सुहृद्वाक्यमिदं शृणु 2171. 2287. वाक्यमप्रतिनन्दन् 2279. 2743. 2910. 2977. तेन वाक्ये कृते सम्यक्प्रतिवाक्ये तथाकृते 2979. R. 1,1,8. 45. 2,20. 9,33. 32,18. °विशारद 53,8. 2,74,18. अतिक्रम्य तु महाक्यम् 1,62,16. Çiç. 22,12. उद्धृत Spr. 2375. तत्कीर्तिमस्तु भरतवाक्यम् Çiç. 113,6. वैद्यवाक्यस्य Suçr. 1,123, 20. इत्यादि मन्त्रिणां वाक्यं न लेभे तस्य वाक्यरम् Kathās. 40,55. सद्भाववाक्यानि न तानि तेषाम् Varāh. Bṛh. S. 74,5. अनिष्टमसत्प्रणीतम् 75,7. परुष 78,7. दुष्ट 104,19. प्रसृत° adj. Bṛh. 14,2. मधुर, प्रिय, सत्य Halāy. 1,141.146. LA. (III) 91,21. वल्गु° adj. Buāc. P. 4,26,23. Pārāç. 41, 17. Hir. 22,3. क्व गन्तव्यमित्यादिवाक्यैः पृष्टा Çuk. in LA. (III) 36,9. वेदान्तवाक्यजालैः Sarvadarçanas. 55,18. वेदान्तवाक्यजात 61,13. वेदवाक्यानि 72,19. 128,3. fgg. ब्राह्म° 144,2. गुरु° 91,17. श्रुतवाक्या MBh. 5,4196. इत्युक्तवाक्या Kathās. 48,130. मम वाक्याद्धाच्यो *in meinem Namen* Pārāç. 142,24. *Aussage vor Gericht:* उक्तवाक्यस्य सातिणः M. 8,108. *ausdrückliche Aussage* (Gegens. लिङ्ग *Andeutung*) Sarvadarçanas. 139,14. Verz. d. Oxf. H. 219,*b*, No. 525. *Ausdrucksweise* 207,*a*,18. °दोषाः 208, *a*, No. 489. *Gesang der Vögel:* वयांसि साधुवाक्यानि Harıv. 4940. — 2) *Disputation:* पञ्चावयवयुक्तस्य वाक्यस्य गुणदोषवित् MBh. 2,139. Comm. zu Nyāyas. 1,1,33.39. — 3) *Satz* (in grammatischem Sinne) Vārtt. und Pat. zu P. 8,1,20. Kāç. zu P. 1,1,14. AK. 1,1,8,3. 3,4,22,1. Tarkas. 49. Weber, Rāmat. Up. 335. H. 71. 242. Sāh. D. 6. Schol. zu P. 1,2,33. Sidd. K. zu P. 8,1,20. Vop. 3,143. 26,10. Sarvadarçanas. 41,20. 42,1. 70,8. 123,1. 135,2. *Satzglied in einem Syllogismus* Z. d. d. m. G. 7,307. — 3) *umschriebene Ausdrucksweise*, z. B. राज्ञः पुरुषः st. राजपुरुषः Schol. zu P. 1,2,46. उपोद्घातपत्यम् st. घोषगवः zu 4,1,83. 3,3,85. Sidd. K. zu 1,1,20. der Gebrauch von इच्छति mit einem infin. statt des desid. Sidd. K. 154,*a*,11. — Vgl. निर्वाक्य, प्रति°, प्रमाण°, महा°, मिथ्या°, सत्य°.

वाक्यकर adj. *Jmdes Worte —, Geheiss ausführend:* राज्ञ° (दूत) R. 2,72,10.

वाक्यकरणसिद्धान्त m. Titel eines mathematischen Werkes Macn. Coll. I,129.

वाक्यकार m. *der Verfasser eines* Vākja *genannten* Vedānta-*Werkes* Sarvadarçanas. 58,22. 59,10.

वाक्यगर्भित n. *Einschaltung eines Zwischensatzes* Prātiçāk. 62,*b*,8. 63,*b*,7.

वाक्यग्रह m. *Lähmung der Sprache* Suçr. 1,136,17.

वाक्यता (von वाक्य) f. in गद्द° (so ist wohl zu lesen) *das Stammeln* Suçr. 1,260,17.

वाक्यत्व (wie eben) n. *das Bestehen aus Worten:* वेदवाक्यानि पौरुषेयाणि वाक्यत्वात् Sarvadarçanas. 128,3. 4. *das Satz-Sein* Sāh. D. 8,19. 21. सानुनासिक° *nasale Aussprache* Suçr. 1,260,16. एक° *das Zusammenfassen in ein Wort* Schol. zu den Çivasūtrāṇi bei P.

वाक्यपदीय (von वाक्य + पद्) n. P. 4,3,88, Schol. Titel eines zu Pāṇini's Grammatik in Beziehung stehenden Buches des Bhartṛhari Sarvadarçanas. 136,15. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,9. 247,*b*,13. fg. Gold. Mān. 93. 237. Ind. St. 5,67. 158. fgg.

वाक्यपूरण adj. *den Satz ausfüllend* Nir. 1,9.

वाक्यप्रदीप m. fehlerhaft für वाक्यपदीय Colebr. Misc. Ess. II, 42. Verz. d. B. H. No. 763. Gold. Mān. 237.

वाक्यप्रबन्ध m. *fortlaufende Rede, Erzählung* Daçak. 35,1.

वाक्यभेदवाद m. Titel eines Werkes Hall 62.

वाक्यमाला f. 1) *Aneinanderreihung mehrerer Sätze* Kāvyād. 2,108. — 2) Titel eines Commentars zum Tattvavivekadīpana Hall 156.

वाक्यविवरण n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 618.

वाक्यवृत्ति f. desgl. ebend. Hall 106. 204. °प्रकाशिका und °व्याख्या 106.

वाक्यशेष m. *Satzergänzung* Nir. 12,22. Ind. St. 10,415. 418.

वाक्यसंयोग m. *grammatische Construction* Nir. 6,1.

वाक्यसंकीर्ण n. *Vermengung zweier Sätze* Prātiçāk. 62,*b*,8. वाक्यान्तरयोः कीर्णं वाक्यसंकीर्णमुच्यते 63,*b*,2.

वाक्यसार n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,14.

वाक्यसिद्धान्तस्तोत्र n. Titel eines Werkes Z. d. d. m. G. 1,201.

वाक्यसुधा f. Titel eines dem Çaṁkarâkârja zugeschriebenen Schriftchens Verz. d. Oxf. H. 225,*b*, No. 551. Hall 129. °व्याख्या 130.

वाक्यस्वर m. *der Accent im Satze* Verz. d. Oxf. H. No. 757.

वाक्याध्याहार m. *Ergänzung eines Satzes* P. 6,1,139.

वाक्यार्थ m. *der Sinn —, der Inhalt eines Satzes* Tarkas. 48. fg. Kāvyād. 2,43. Comm. zu VS. Prāt. 4,179. °गुणाः, °दोषाः Verz. d. Oxf. H. 208, *a*, No. 489. °विवेक (= महावाक्यविवेक) 222,*b*,11.

वाक्यार्थदीपिका f. Titel eines Commentars Hall 38.

वाक्यार्थोपमा f. *ein Gleichniss, in welchem die Aehnlichkeit zweier Dinge im Einzelnen durchgeführt wird*, Kāvyād. 2,43. Beispiele Spr. 4150 und 4341.

वाक्यालंकार m. *Schmuck der Rede, — des Satzes* AK. 3,4,22(26),16.

वाक्र (von वक्र) वाक्रं सुवात्रम् N. eines Sâman Ind. St. 3,234,*a*.

वाक्र्य n. nom. abstr. von वक्र gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वाक्सट् adj. in einer Formel TS. 3,2,10,1. nach dem Comm. ist वाक् so v. a. वाच्.

वाक्संयम m. *Hemmung der Rede, Bändigung der Zunge* Spr. 2766.

वाक्सङ्ग m. = वाक्यसङ्ग Suçr. 1,255,20.

वाक्सिद्ध n. *eine übernatürliche Vollkommenheit in Bezug auf die Rede* Pāñcar. 2,8,4.

वाक्स्तम्भ m. = वाक्यग्रह् Vicbn. 8, 9.

वागतीत (वाच् + अ°) m. Bez. *einer best. Mischlingskaste* Verz. d. Oxf. H. 22, *a*, 19. 21.

1. वागन्त m. *Ende der Stimme* d. h. *lauteste Stimme* Kâty. Çr. 7, 2, 31.

2. वागन्त adj. *mit* वाच् *endigend* Kâty. Çr. 9, 13, 22.

वागर m. = वाग्क, शाण, निर्णय, वाडव, वृक, मुमुक्षु, पण्डित, परित्यक्तभय H. an. 3, 599. fg. = गतातङ्क, मुमुक्षु, वातवेष्टक, विशारद, शाण, निर्णय, वाग्क Med. r. 214.

वागा f. *Zaum* Çabdâmrik. bei Wilson; fehlerhaft für वल्गा.

वागायन m. patron., pl. Saṁsk. K. 184, *a*, 5.

वागारु adj. *ein Kind mit falschen Hoffnungen täuschend* Çabdam. im ÇKDa.

वागीशानि m. *ein Buddha* Çabdan. im ÇKDa.

वागीशार्दित m. ein Mannsname P. 5, 3, 84, Vârtt. 3, Schol.

वागीन्द्र m. N. pr. eines Sohnes des Prakâça MBu. 13, 2003.

वागीश Vop. 2, 37. 1) adj. subst. *der Rede mächtig, ein Meister in der Redekunst* AK. 3, 1, 35. H. 346. MBu. 10, 292. am Ende von Namen grosser Gelehrten: कृष्णानन्द° Verz. d. Oxf. H. 95, *b*, 30. सिद्धान्त° 106, *b*, N. 261, *a*, 17. fg. Vgl. न्याय°. — 2) m. Bein. Brahman's Kumâras. 2, 3. Verz. d. Oxf. H. 75, *a*, No. 129. Bhâg. P. 3, 6, 28. — 3) m. *der Planet Jupiter* Çabdan. im ÇKDa. Varâh. Bṛh. S. 17, 27. 86, 1. Bṛh. 3, 7. — 4) f. आ Bein. der Sarasvati Verz. d. Oxf. H. 63, *a*, No. 113. Ind. St. 3, 398 (वागेशा gedr.). वागीशाया: Sîs. Comm. Einl.

वागीशत्व n. nom. abstr. von वागीश 1) Pâṇ. 3, 3, 56.

वागीश्वर 1) m. *a*) *ein Meister in der Redekunst* Gârgîp.-P. 196 im ÇKDa. सर्ववागीश्वरेश्वर heisst Vishṇu Pâṇ. 4, 3, 53. — *b*) Bein. Brahman's Çabdârthak. bei Wilson. — *c*) N. pr. eines Gina Trik. 1, 1, 28. Ind. St. 8, 467. Târân. 236. — *d*) N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. No. 1006. Verfassers des Mânamanohara Sarvadarçanas. 131, 3. Muir, ST. III, 191. 202. — 2) f. ई Bein. der Sarasvati Çabdârthak. bei Wils. Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 35. 106, *b*, No. 162. 214, *b*, No. 511. °मन्त्रा: 93, *b*, 3. °पूजाविधि 96, *a*, 1. — Vgl. वाद्°.

वागीश्वरकीर्ति m. N. pr. eines Lehrers Târân. 235. 238.

वागु N. pr. eines Flusses: °देवासंगम Verz. d. Oxf. H. 66, *a*, 2.

वागुजी f. = वाकुची Mur. zu AK. 2, 4, 3, 14 nach Wilson.

वागुज्जार m. *ein best. Fisch* Sucr. 1, 206, 6.

वागुण m. *Averrhoa Carambola Lin.* Çabdam. im ÇKDa.

वागुरा f. *Fangstrick, ein Netz zum Einfangen von Wild, Garn* Uéval. zu Uṇâdis. 1, 42. AK. 2, 10, 27. H. 928. Hall. 2, 442. मैत्रस्ता पृषती वागुरामिव (संप्रेक्ष्य) R. 2, 37, 9 (10 Gorr.). 4, 17, 16. भङ्क्त्वा बलाद्वागुराम् Spr. 923. Karmîs. 21, 16. 22, 49. 27, 150. 112, 74. Râja-Tar. 6, 182. वागुरा प्राप्त: Mâlav. P. 121, 23. Z. d. d. m. G. 14, 573, 23. °वृत्ति M. 10, 32. °बन्धजीवन MBu. 13, 2382. वनानि देवदारूणां मेघानामिव वागुरा: 3, 12373. 7, 3640. गजा: पदाता रथिनस्तुरगाश्च विशांपते। व्यतिष्ठन्वागुराकारा: शतशोऽथ सहस्रश: ॥ 6, 617. शर° 14, 2257. व्यतीत: सर्ववागुरा: 1, 4609. व्यसन° R. 3, 72, 27. दुर्जनवागुरासु पतित: Spr. 754. संसार° Prab. 102, 1. कर्म्मपृष्ठमुदुनाथरस्यय: सोत्पलं मधु मदालसा प्रिया। वल्लकी स्मरकथा रहः सखी वर्ग एष मदनस्य वागुरा ॥ Varâh. Bṛh. S. 76, 2.

वागुरि m. N. pr. eines Arztes Verz. d. B. H. No. 802.

वागुरिक (von वागुरा) m. *ein mit Netzen dem Wilde nachstellender Jäger* AK. 2, 10, 14. H. 928. Hall. 2, 441. Râgân. 9, 53.

वागुलि = पटि Mân. 1. 22.

वागुस m. *ein best. grosser Fisch* Hall. 3, 27.

वागृषभ m. *ein Meister (Stier) in der Redekunst;* davon °त्व n. *Meisterschaft in der Rede* R. 1, 1, 96.

वागोयान N. pr. einer Oertlichkeit Kshîrîç. 8, 19. 17, 1. 17. 21, 1.

वाग्गुण m. *Redevorzug*, deren 35 bei den Arhant's H. 65—71.

वाग्गुद m. *ein best. Vogel* Taik. 2, 5, 30. M. 12, 64.

वाग्गुम्फ m. pl. *Sprach-Gewinde* so v. a. *eine künstliche Sprache* Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234, Z. 10.

वाग्गुलि m. *Botenträger eines vornehmen Herrn* Çabdam. im ÇKDa.

वाग्गुलिक m. dass. Taik. 2, 8, 31. Hîn. 132.

वाग्घस्तवत् (von वाच् + हस्त) adj. *der Sprache mächtig und Hände habend* Spr. 1106.

वाग्दण्ड m. *Verweis* M. 8, 129. 12, 10.

वाग्दत्ता adj. f. *verlobt, versprochen* Kull. zu M. 5, 72.

वाग्दरिद्र adj. *wortarm, wortkarg* Çabdam. im ÇKDa.

वाग्दल n. *Lippe (Rede-Blatt)* Taik. 2, 6, 28.

वाग्दान n. *Verlobung* Kull. zu M. 5, 72. 152. 9, 69.

वाग्दुष्ट adj. *grob, Grobian* M. 3, 156. 8, 345. Spr. (II) 282. Hariv. 1189 (zugleich N. pr. eines Brahmanen). 7757 (अ°). Verz. d. Oxf. H. 281, *b*, 44. = व्रात्य Gaṇiḍ. im ÇKDa.

वाग्देवता f. *die Göttin der Rede*, Sarasvati Sîn. D. 1, 8. Tantras. im ÇKDa. °गुरु Ind. St. 8, 195. पुंभाव° Verz. d. Oxf. H. 177, *a*, 12.

वाग्देवत्य adj. *der Rede geweiht* Çiçup. Çr. 6, 11, 11. — Vgl. वाद्देवत्य.

वाग्देवी f. *die Göttin der Rede*, Sarasvati Taik. 1, 1, 27. 1. Spr. (II) 804. Prab. 86, 13. Râja-Tar. 5, 158. Verz. d. Oxf. H. 198, *b*, No. 467.

वाग्देवत्य adj. *der Sarasvati geweiht* M. 8, 105. — Vgl. वाद्देवत्य.

वाग्द्वार n. 1) *Eingang zur Rede:* कृतवाग्द्वारे वंशे ऽस्मिन्पूर्वसूरिभि: so v. a. *zu dessen Beschreibung vorangegangene Dichter mir den Eingang erleichtert haben* Râgân. 1, 4. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Wilson, Sel. Works II, 22.

वाग्बलि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 82, *b*, 3 (वाग्वलि, im Index aber वाग्बलि).

वाग्भट m. N. pr. verschiedener Gelehrten: Verfasser des Vâgbhaṭâlaṁkâra Verz. d. Oxf. H. 214, *a*, No. 509. der Kavikalpalatâ Verz. d. B. H. No. 822. ein berühmter Arzt, Verfasser des Ashṭâṅgahṛdaja 923. 929. fgg. 937. 940. fg. 958. 979. Verz. d. Oxf. H. 113, *b*, 42. 126, *a*, 19. 303, *a*, No. 741. fg. 311, *b*, 39. 316, *a*, 12. 317, *b*, N. 2. Ind. St. 1, 21, 4. Târân. 311. fgg. Verfasser der Çâṅkaravijâja Ind. St. 1, 467. Oefters वाग्भृ geschrieben. — Vgl. वृद्ध°.

वाग्भटालंकार m. Titel eines Werkes des Vâgbhaṭa Verz. d. Oxf. H. 214, *a*, No. 509.

वाग्भृ m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 211, *a*, No. 498. — Vgl. वाग्भट.

वाग्भृत् adj. *Rede tragend, — erhaltend* Çat. Br. 2, 1, 2, 6. 7.

वैग्मायन m. patron. von वाग्मिन् gaṇa यस्कादि zu P. 4, 1, 110; vgl. 6, 4, 144.

वाग्मिता (von वाग्मिन्) f. *Beredsamkeit* Kim. Nitis. 1, 21. Sin. D. 158.

वाग्मित्व (wie oben) n. dass. MBh. 12, 13872. Kim. Nitis. 4, 36. Rāga-Tar. 5, 174.

वाग्मिन् (von वाच्) 1) adj. *beredt* P. 5, 2, 124. Vop. 7, 24. AK. 3, 1, 35. H. 346. an. 2, 286. Med. n. 128. Vaij. beim Schol. zu Çiç. 2, 27. Çat. Br. 10, 3, 3, 1. Lāṭ. 1, 1, 7. M. 7, 64. MBh. 3, 2450. 13, 969. Harīv. 12699. R. 1, 1, 11 (12 Gorr.). 2, 26, 12 (14 Gorr.). Kim. Nitis. 4, 15. 12, 2. Ragh. 5, 52. Spr. 3016. 3229. 3953. Çiç. 2, 27. 109. Vaṇīm. Bhṭ. S. 2, 8. 3. Bhm. 14, 4. Kathās. 26, 284. 46, 125. Sin. D. 78. Rāga-Tar. 4, 261. Mīnāṃ. P. 20, 20. 118, 11. Bhāg. P. 4, 19, 25. Pañcar. 4, 3, 53 (Vishṇu). 6, 17. सु° R. 1, 13, 21 (17 Gorr.). स्खलद्वाग्मी (= स्खलद्वाच्) LA. 17, 6 vielleicht fehlerhaft für स्खलद्वाग्यो. — 2) m. *a) Papagei* H. ç. 194 (wohl वाग्मी st. वाल्मी zu lesen). — *b) der Planet Jupiter* H. ç. 13. H. an. Med. — *c)* N. pr. eines Sohnes des Manasju MBh. 1, 3697.

वाग्य adj. = वाग्दरिद्र Çabdam. im ÇKDr. = निर्वेद und कत्थ Aṃara ebend.

वाग्यत adj. *die Stimme an sich haltend, schweigend* Çāṅkh. Br. 27, 6. Gobh. 1, 4, 1. 6, 15. Âçv. Çr. 1, 12, 16. 4, 13, 1. Gaṇ. 1, 18, 7. 3, 7, 1. Kāṭj. Çr. 2, 2, 2. 7, 3, 9. M. 3, 236. 258. 9, 60. Jāṅ. 1, 31. 238. R. 1, 2, 10. 27. 2, 87, 19. R. Gorr. 2, 5, 4. Ragh. 11, 30. Bhāg. P. 3, 14, 21. 5, 23, 3. 6, 8, 4. Mīnāṃ. P. 34, 27.

वाग्यमन n. *das Schweigen* Kāṭj. Çr. 4, 12, 17. 20, 1, 11. Çāṅkh. Çr. 1, 12, 7. 2, 14, 6. Âçv. Çr. 1, 5, 33.

वाग्याम adj. = वाग्यत P. 3, 2, 40, Schol.

1. वाग्वज्र m. n. *ein als Blitz wirkendes Wort, Donnerwort* Çrutas. 10 in Ind. St. 4, 367. Andere Belege s. u. वज्र 2).

2. वाग्वज्र adj. *dessen Worte Blitze sind* Bhāg. P. 4, 13, 19.

वाग्वट m. N. pr. eines Autors Verz. d. Cambr. H. 56.

वाग्वत्त (von वाच्) adj. *mit der Rede verbunden* Ait. Br. 6, 7.

वाग्वलि s. वाग्वलि.

वाग्वाद m. N. pr. eines Mannes P. 6, 3, 109, Vārtt. 2.

वाग्वादिनी f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, No. 168, Z. 25.

वाग्विद् adj. *redekundig, beredt* R. 1, 1, 1.

वाग्विदग्ध adj. *redefertig, beredt;* davon °ता f. *Redefertigkeit, Beredsamkeit* Spr. 2817.

वाग्विधेय adj. *durch das* (blosse) *Wort zu bewerkstelligen* so v. a. *was man aus dem Gedächtniss hersagen kann* R. 1, 4, 8 (3, 48 Gorr.). वाचा विधेयम् (= विनापि पुस्तकं पाठयोग्यम् Comm.) ed. Bomb. 4, 12.

वाग्विन् (von वाच्) adj. *beredt:* वाग्वीव मह्यं प्र भरस्व वाचम् AV. 5, 20, 11.

वाग्विप्रुष् n. sg. copul. Zusammensetzung von वाच् + विप्रुष् P. 5, 4, 106, Schol.

वाग्विमर्ग m. *das Brechen des Schweigens* Gobh. 2, 3, 12. 3, 2, 29.

वाग्विमर्जन n. dass. Kāṭj. Çr. 4, 10, 6. 7, 4, 15. 12, 4, 26.

वाग्वीर्य adj. *stimmkräftig* TS. 6, 3, 4, 5.

वाघत् m. *der Gelobende, Veranstalter eines Opfers* (nicht der Priester, sondern der यजमान); = मेधाविन् Naigh. 3, 15. = ऋत्विज् 18. तमग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते RV. 4, 2, 15. 1, 3, 5. 31, 14. 40, 4. मूर्धा विश्वस्य वाघतः 8, 16, 12. होतारं त्वा वाघतो वृणते अघरेषु 1, 58, 7. 3, 2, 1. 3, 4. 5. इन्द्रेण युजा निःसृजन्त वाघतो व्रजम् 10, 62, 7. यद्भिर्वाघद्भिर्विरूपमाकृते 1, 36, 13. पुरुत्रा चिद्धि वां विरूपयते मनीषिणः। वाघद्भिरग्निना गतम् (= वाक्कारुभिः Sāj., vielmehr *die* म° *mit den* वा°) 8, 5, 16. 1, 88, 6. न सुषा न सुदा उत। नान्यत्त्वद्धोत वाघतः 8, 67, 4. मो षु वो वाघतोऽनारे अस्मन्नि रीरमन् 7, 32, 1. die Ṛbhu विष्टी शमी तक्षणिवेन वाघतः (वाघतो मेधाविनो वा Nir. 11, 16) 1, 110, 4. 3, 60, 4. Soma पुनानो वाघद्भिरर्मत्यैः 9, 103, 5. मंहिष्ठो वाघतामृतः 10, 33, 4. Die herkömmliche Zurückführung auf वह् (mit der Nebenform वघ् in वघू u. s. w.) befriedigt nicht; wir vergleichen εὔχομαι und voveo (für vogveo).

वाघातक s. घातक in den Nachträgen.

वाघेल N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352, *b*, 7.

वाङ्ग m. *das Meer* Taik. 1, 2, 9.

वाङ्ग् वाङ्गति (काङ्क्षायाम्) Dhātup. 17, 17. — Vgl. काङ्ग् und वाञ्छ्.

वाङ्ग m. *ein Fürst der* Vaṅga P. 4, 1, 170, Schol. Vaṇīm. Bhṭ. S. 11, 60. als Dichter Verz. d. Tub. H. 13.

वाङ्गक adj. *ein Verehrer der* Vaṅga *oder des Fürsten der* Vaṅga P. 4, 3, 100, Schol.

वाङ्गारि m. patron. Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 57, 4 v. u.

वाङ्घिधन adj. वाच् *zum Refrain habend* Nir. 1, 12. Lāṭ. 4, 7, 1. वाङ्घिधनं क्रौञ्चम् und — सौकृविधम् Namen von Sāman Ind. St. 3, 234, *a*.

वाच्यती f. N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 140, *b*, 3. Wilson, Sel. Works II, 16. 18. 22. 32.

वाच्यधु n. pl. *süsse Worte* Çiç. 68, 13.

वाच्यधुर adj. *süss in Worten, schöne Worte im Munde führend:* वाच्यधुरो विषरूपः Hit. 74, 20.

वाच्यनस् n. du. *Rede und Geist* Kaṭhop. 3, 13. M. 2, 160. वाच्यनसे n. sg. dass. P. 5, 4, 77. Vop. 6, 8. अवाच्यनसगोचर Vedântas. (Allah.) No. 2.

वाच्यय (von वाच्) P. 5, 4, 45, Vārtt., Schol. Sidd. K. zu P. 4, 3, 144. Vop. 7, 72. 1) adj. (f. ई) *aus Rede bestehend, auf der Rede beruhend, dessen Wesen die Rede ist, die Rede betreffend* Çat. Br. 10, 5, 3, 4. 14, 4, 3, 10. 5, 8, 3. पत्किंचिदवाच्ययम् VS. Pair. 8, 31. Jāṅ. 3, 189. कर्मन् M. 12, 6. तपस् Bhag. 17, 15. MBh. 3, 15330. कन्या R. 7, 17, 9. समुद्र Ragh. 3, 28. समृत Verz. d. Oxf. H. 173, *a*, No. 125, Z. 11. ज्योतिस् 210, *b*, No. 496, Z. 6. 14. स्तोत्र Pañcar. 4, 1, 11. तर्कादयः Prab. 101, 7. आदर्श Spr. (II) 934. Davon nom. abstr. °त्व n. Çaṅk. zu Kuṇḍ. Up. S. 17. — 2) f. ई *die Göttin der Rede, Sarasvatī* Çāṇḍiaṭmak. bei Wilson. — 3) n. *Redekunst, Redeweise* Sin. D. 1, 3. Vop. 5, 4. मितात्तर und ग्रमितात्तर RV. Pair. 12, 9. Ind. St. 8, 210. Kathās. 113, 23. गद्यं पद्यमिति प्राकृर्वाच्यमपि द्विविधं बुधाः Verz. d. Oxf. H. 198, *b*, 2 v. u. °भेदाः Taik. 3, 2, 22. द्विधा प्रयुक्तेन च वाच्ययेन सरस्वती तन्मिथुनं ननाव so v. a. *Rede* Kumāras. 7, 90.

वाच्यार्थ n. *Lieblichkeit der Rede, — der Stimme* Spr. 4978.

वाच्युष n. *Eingang einer Rede* AK. 1, 1, 5, 9. H. 262.

वाच् (von वच्) f. Uṇādis. 2, 57. P. 3, 2, 178. Vārtt. 1. Vop. 26, 71. 1) *Sprache, Stimme, Rede, Wort, Aussage; Laut, Ton* AK. 1, 1, 5, 1. 18. H. 241. an. 1, 7. Med. k. 9. Halāj. 1, 8. 5, 48. 68. 83. RV. 1, 164, 34. 37. वाचं वाचं जरितू रत्निनीं कृतम् 182, 4. 4, 57, 8. वाघो मतिं सहस: सूनवे भरे 1,

143,1. वि यदाचै कीस्तासो भरंते 6,67,10. 7,22,3. प्रवो देवत्रा वाचं कृणुधम् 7,34,9. इयर्ति वाचम् 2,42,1. उभे वाचौ वदति 43,1. प्र दूतमिव वाचमिम्ये 4,33,1. तिस्रो वाचः प्र वद 7,101,1. 8,3,3. प्रतीचीं त्रयभा वाचम् 10,18,14. यमु वागपि गच्छति AV. 2,12,8. 10,2,7. ये वाचाम्यक्तं वाचा सरस्वत्या मनोगुता 5,7,5. चतुरा मनसा वाचा 6,96,3. 7,70,1. वाचो मधु 12,1,16. VS. 3,47. सत्रिया RV. 1,190,2. नित्या 8,64,6. मधुमती AV. 3,30,2. धनुदिता 5,1,3. भर्गस्वती 6,69,3. देवी 8,1,3. विचतणवती Ait. Br. 1,6. धनुष्यमाना Çat. Br. 4,2,2,11. पूता 13,2,9,9. धयूता Ait. Br. 7,27. वाचं पच्छति Çat. Br. 2,4,4,6 (vgl. u. यम्). विमुञ्चेत Kâty. Çr. 2,4,7. वदेत् TS. 2,1,2,6. पुरा वाग्भ्यः प्रवदितोः Pañcav. Br. 21,3,5. Kâty. Çr. 8,1,10. पशूनां वाच आजानाति Pañcav. Br. 10,2,7. Âçv. Gṛhj. 3,10,9. वाग्देवेभ्यो यज्ञं वहति Çat. Br. 1,4,4,2. वाक्षे यामन्वसोः प्राणः TS. 5,5,9,2. वाग्ध्येवैतत्सर्वं यत्स्त्री पुमान्युंसकं वाचा ह्येवैतत्सर्वमाप्तम् Çat. Br. 10,5,1,3. सप्तधा वागवदत् Ait. Br. 2,17. त्रेधाविहिता Çat. Br. 10,5,1,2. der Stoine RV. 10,94,1. der Trommel AV. 5,20,1. 4. Pañcav. Br. 6,5,12. übertragen auf die Zunge Çat. Br. 8,5,4,1. 10,5,2,15. एषा वाव प्रत्यक्षं वाग्यज्ञिरूपा Pañcav. Br. 20,14,3. — तयो वाचं रतिं चैव कामं च क्रोधमेव च। सृष्टिं ससर्ज चैवेमो स्रष्टुमिच्छन्निमाः प्रजाः ॥ Sprache M. 1,23. 2,90. श्रेयस्क°, आर्ष° adjj. 10,45. Śikshâs. 26. 34. Baudh. P. 3, 26,13. मनुष्यवाचा Rasn. 2,33. यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः Rede, Worte Bhag. 2,42. मधुरा ब्रह्मणा M. 2,159. वेदवाग्बुद्धिसाङ्गत्य 4, 18. वाग्दण्डयोश्च पारुष्ये 8,72. वाचा दारुणया तिपन् 270. वाक्कृच्छ्रं वै ब्राह्मणस्य 11,33. पवित्रं विदुषां हि वाक् Rede, Ausspruch 11,85. सत्रेभी चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य 3,20. MBh. 1,5973. वाचं व्याजहार 3,2091. वाग्भिरभिनन्द्य 2223. 2055. R. 1,62,19. (भरतम्) तुष्टुवुर्वाग्विशेषज्ञाः स्तवैर्मङ्गलसंहितैः 2,81,1. सूनृता Spr. 1047. 2768. सत्यपूतां वदेद्वाचम् 1232. 1533. fg. वाचा दुरुक्तम्, वाक्कलतम् 2647. वाक्सायकाः 2767. वाग्यता नियताः सर्वे वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः। तां तु यः स्तेनयेद्वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः ॥ 4981. वागेवाविव संपन्नो Rasn. 1,1. वाग्वै परिगृह्य Dhûrtas. 85,9. प्रविशेत्यप्रणीताहाचम् Kathâs. 18,211. देवी ein königliches Wort Râja-Tar. 5,205. मन्ये वां विषये वाचां स्नातमन्यत्र च्छान्दसात् auf dem ganzen Gebiete der Rede Bhâg. P. 1,4,13. वाचां वैचित्र्यम् Hit. Pr. 2. ललितमधुरा वाक्प्रपत्ते पेशलविधातिनी Vet. in LA. (III) 30,5. वाचमाददे Rasn. 1,59. वाचं दा die Rede richten an (dat.) Çik. 132. वाचं न मिश्रयति पप्यपि मे वचोभिः 30. नियम्य वाचम् M. 2,185. 192. 4,49. मृदु° adj. 9,335. धनृत° adj. R. 1,6,15. वाग्बाहूदरसंयत M. 4,175. कर्मणा मनसा वाचा Spr. 2445. वाङ्मनःकर्मजैः पापैः 4977. मनोवाग्देहजैः कर्मदोषैः M. 1,104. 5,165. fg. 9,29. 12,3. मनोवाक्मूर्तिभिः 11,231.241. वाचि, चेतसि Spr. 1974. बालवृद्धातुराणां च सान्त्वेषु वदतां मृषा। ज्ञानीयादृस्थिरां वाचमुत्सिक्तमनसां तथा ॥ Aussage M. 8,71. 81. 103. वेदस्यापौरुषेयत्ववाचो युक्तिर्न युक्ता Behauptung Sarvadarçanas. 129,3. वाक्षात्र M. 4,30. Spr. 2769. Pañcat. 78,7. वाचं वा को विजानाति पुनः संभुत्य संभुताम् Stimme Jâtâ. 3,150. VS. Prât. 1,9. Vaitân. Bhp. S. 68,101. वाक्यकलया वाचा MBh. 3,2267. 2321. 2458. ब्रह्मणया वाचा 2771. 2940. दीनया वाचा 5,7327. वागुवाचाशरीरिणी R. 1,1,31. Weber, Kṛshṇaj. 320. LA. (III) 92,1. वाग्भूतत्र मानुषी R. 2,63,24. fg. इत्युक्ता विरराम वाक् Kathâs. 18,316. वाग्मानुषी Vaitân. Bhp. S. 46,92. पूर्वं धरति देवेषु पश्चाद्रक्षति मानुषान्। नाचादिता वाग्वदति सत्या क्षेया सरस्वती ॥ Oratelstimme 93. सारमाः — वदन्ति मधुरा वाचः Laute, Töne MBh. 3,11612. सारमाश्च मयूराश्च वाचो मुञ्चन्ति दारुणाः 6,62. शकुनिः पुत्र पुत्रेति भाषते। मधुरां करुणां वाचम् R. 2,96,12. शिवाश्चाप्यशिवा वाचः प्रवदन्ति मुहुःस्वनाः 6,16,11. पतिणां सुस्वरा वाचः Vaitân. Bhp. S. 22,6. Spr. 4683. eines Eccls Kathâs. 62,18. उलूकवाग्भिः Bhâg. P. 5,13,5. रूपाणि विविधा वाचो विमुञ्चन्ति मुहुर्मुहुः R. 3,51,20. — वाचा सत्ये कृते so v. a. wenn das Wort gegeben worden ist, wenn die Verlobung stattgefunden hat M. 9,69. वाचा तेनोपकोशा च प्राग्धर्मभगिनी कृता so v. a. ausdrücklich Kathâs. 4,96. इदं तु वाचा नियमो यस्मात् संबन्धिना त्वया 17,83. Man findet zahlreiche Allegorien, z. B. TS. 2,5,11,4. 6,4,7,3. Kâṭh. 12, 5. 27,1. Ait. Br. 5,23. Çat. Br. 1,4,3,3. 5,4,6. 3,2,4,5. 5,6,18. 6, 1,2,6. 7,5,2,6. am verbreitetsten die Legende von der Sendung der Vâk zu den Gandharva Ait. Br. 1,27. TS. 6,1,6,5. Çat. Br. 3,2, 4,3. Kâṭh. 24,1. वाचः साम N. verschiedener Sâman Pañcav. Br. 12, 5,12. Ind. St. 3,234,a. वाचो व्रतम् N. eines Sâman Ind. St. obend. वाचः स्तोमः N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 15,11,2. Kâty. Çr. 22,6,24. — 2) personificirt, übrigens in unbestimmter Weise als Vâk Âmbhṛṇî im Liede RV. 10,125. Anukr. Çat. Br. 14,9,4,33. als die Stimme des mittleren Gebietes, oft bei Comm. zur Erklärung gebraucht Naigh. 5,5. Nir. 11,27. 10,46. 12,10. = भारती, सरस्वती H. an. Med. प्रणम्य वाचम् Kathâs. 1,2. als Tochter Dakshа's und Gattin Kaçjapa's VP. 122, N. 19. — 3) defectiv für वाङ्विधन Lâṭy. 6,9,5. 7,8,5. 13,7. — Vgl. अ°, घरोघ°, अनृत°, अभय° (unter अभय 4, a), आप्त°, दुर्वाच्, निर्वाच्, पुरुष°, प्र°, प्रति°, प्रिय°, भद्र°, मधुर°, मित°, मिथ्या°, मृष°, सत्य°, सु°, सूक्त°.

वाच m. ein best. Fisch Râjân. im ÇKDa. eine best. Pflanze (मदन) Wilson. — Vgl. कोक°.

वाचंयम (वाचम्, acc. von वाच् + यम) 1) adj. (f. या) = वाग्यत die Rede —, die Stimme an sich haltend, schweigend P. 3,2,40. 6,3,69. Vop. 26,60. AK. 2,7,41. Trik. 3,3,232. H. 76. Halâ. 2,237. TBr. 3, 2,2,8 (या°). Ait. Br. 5,33. Çat. Br. 1,7,1,13. 2,2,2,20. 4,6,9,21. Çâṅkh. Br. 11,8. 27,6. Snâpr. Br. 1,8. Kâṭh. Up. 5,2,8. Kaush. Up. 2,3. 4. Pañcâr. 3,9,16. 14,57 (fem.). Sarvadarçanas. 39,7. m. so v. a. Muni Verz. d. Oxf. H. 253,b,19. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18,b,14. 19,a,28.

वाचंयमव्रत (von वाचंयम) n. das Schweigen Rasn. 13,44. °व्रत Spr. 3661.

वाचक (von वच्) nom. ag. (f. वाचिका) 1) sprechend, sagend: पद्यार्घस्य Spr. 467. धानं वल्गुवाचकम् (वल्गूनि वाचकानि यस्मिन् Comm.) Bhâg. P. 4,23,31. Sprecher, der Vortragende, Herager MBh. 18,213.229.231 (= Harîv. 16141. 16159. 16161). R. 7,111,7. Verz. d. Oxf. H. 30,b,19. Weber, Kṛshṇaj. 253. sprechend —, handelnd über, aussagend: ब्रह्मादीनां वाचको ऽयं मन्त्रः Weber, Râmat. Up. 288. सर्ववाच्यस्य ebend. und 291. Bhâg. P. 12,6,41. प्रणवं वाचकं मत्वा वाच्यं ब्रह्मेति निश्चितः Harîv. 14693. Weber, Râmat. Up. 341. सध्यात्म° (पर्वन्) MBh. 1,254. — 2) ausdrückend, bezeichnend Jogas. 1,27. शब्दो ऽपि वाचकस्तद्धर्मतो व्यञ्जकस्तया Sin. D. 31 (daher वाचकः = शब्दः AK. 1,1,5,2. Trik. 1,1,118). Verz. d. Oxf. H. 177,b, No. 403. 230,a,15. H. 14. Sarvadarçanas. 50,21. 51,7. 141,10. 146,11. क्रिया° RV. Prât. 12,8. सत्य्य° MBh. 1,7868.

5,2562. AK. 1,1,4,5. 2,4,22 (20),12. 3,5,15. Weber, Rîmây. Up. 354. H. 15. 568. Verz. d. Oxf. H. 22,*b*,44. fg. 201,*b*, No. 483. 230,*a*,14. Pâṇ. Gaṇ. 1,2,58. Kusum. 55,12. Vedântas. (Allah.) No. 97. Comm. zu Gaim. 1,1,2. सर्वार्थैकार्थवाचिका: Verz. d. Oxf. H. 56,*a*,3. 4. सर्वसृष्टिर्वाच्या शब्दसृष्टिस्तु वाचका (!) Weber, Rîmây. Up. 336. — Vgl. गुण°, पर्याय° (auch Sûçr. 1,320,18), प्रत्ययसमूहवाचका, स्वस्तिवाचक.

वाचकता f. nom. abstr. von वाचक *sprechend —, handelnd über:* वाच्य° (das suff. gehört zu beiden Wörtern) Bhâg. P. 2,10,36. von वाचक *ausdrückend, bezeichnend* Sarvadarçanas. 143,3.

वाचकत्व n. nom. abstr. von वाचक *sprechend —, handelnd über* Weber, Rîmây. Up. 332. von वाचक *ausdrückend, bezeichnend* Pat. zu P. 1,2,10. Sin. D. 11, 4. Sarvadarçanas. 140, 22. 141, 3. वर्णानां वाचकत्वे *wenn die Buchstaben dasjenige sind, was den Begriff ausdrückt*, 9. 142, 10. 143, 1. वाचकलक्षव्यञ्जकत्वेन (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) त्रिविधं शब्दज्ञानम् Prâtiçâkh. 8,*b*,3.

वाचकमुख्य Titel einer Schrift Hall 166.

वाचकाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* bei den Gaina Sarvadarçanas. 34,3. 37,14. fg. उमास्वाति° 38,3. 9.

वाचकूटी f. Colebr. Misc. Ess. I,144 wohl fehlerhaft für वाचक्नवी.

वाचक्नवी (auf वचक्नु zurückgeführt) f. N. pr. einer Lehrerin mit dem patron. Gârgi Çat. Br. 14,6,8,1. 8,1. Âçv. Gṛhj. 3,4,4. Çâṅkh. Gṛhj. 4,10. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 92,6.

वाचन (vom caus. von वच्) n. 1) *das Hersagenlassen* Kâty. Ça. 5,4, 33. 7,9,23. Lâṭy. 2,1,5. 6,12. °मन्त्र Comm. zu Âçv. Ça. 1,11,1. — 2) *das Hersagen:* गाथाया: Jâgñ. 3,310. प्रह्वेनानन्यचित्तेन पठितव्यं प्रयत्नत: । न कार्यासक्तमनसा कार्यं स्तोत्रस्य वाचनम् ॥ Vasishṭhatantra im ÇKDa. *das Lesen:* पुस्तक° Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,10. स्व° 186,*a*,6. वाचनाचार्य 4. No. 423. — 3) *das Ausdrücken, Bezeichnen:* अनेकार्थ° Sin. D. 705. — Vgl. पुण्याह° (unter पुण्याह), शान्ति°, स्वस्ति°.

वाचनक n. = प्रेक्षक Hit. 152. der Schol. zu Hit. 334 liest प्रेक्षनक und वायनक.

वाचनिक (von वचन) adj. *auf einer ausdrücklichen Angabe beruhend, ausdrücklich erwähnt* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 83. 100. 202. Schol. zu Kâty. Ça. 72,5 v. u. 88,12. 107,12. zu VS. Prât. 1,75. Siddh. K. zu P. 6,1,116. Verz. d. Oxf. H. 161,*a*, No. 354.

वाचमीङ्ख adj. *die Stimme in Bewegung setzend:* Soma RV. 9,35, 3. 101,6.

वाचयितृ (vom caus. von वच्) nom. ag. *der Etwas hersagen lässt, der Leiter einer Recitation* Saṅgîta K. 21,*b*,2. fgg.

वाचम्भवस् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 53,*a*,19. 28. wohl fehlerhaft für वात्सप्रवस्.

वाचस s. वि°, स°.

वाचस्पति m. = बृहस्पति *der Planet Jupiter* Çârdar. im ÇKDa. fehlerhaft für वचस्पति.

वाचस्पत m. patron. von वाचस्पति Çâṅkh. Br. 26,5.

वाचस्पति m. 1) *Meister der Rede*, pl. Bhâg. P. 4,16,2. 29,44. *Herr der Stimme* oder *Rede* Naigh. 5,4. Nir. 10,17. fg. Genius des menschlichen Lebens, das so lange dauert als die Stimme im Leibe ist, RV. 3,26,4. 10,166,3. VS. 7,1. 9,1. AV. 1,1,1. 13,1,17. Ait. Br. 5,25. TS. 2,6,8,1. प्रवदितैव वाचो भवत्यथो एनं वाचस्पतिरित्याहु: 7,1,10,3. Âçv. Ça. 1,7,2. Çat. Br. 1,8,1,15. 11,7,1,6. प्राण Śaṅkh. Br. 2,9. Âçv. Gṛhj. 3,3,4. Kauç. 41. Soma RV. 9,101,3. Viçvakarman 10,81,7. Prâjâpati Çat. Br. 5,1,1,16. Brahman Kumâras. 7,57. Bṛhaspati als *Herr der heiligen Rede* TS. 1,8,10,1. als *Meister der Redekunst*, Lehrer der Götter und Regent des Planeten Jupiter, AK. 1,1,1,26. H. 118. Hall. 1,47. उत्तरोत्तरपुंसो च वक्ता वाचस्पतिर्यथा R. 2,1,13. 5,31,49. Kumâras. 2,30. Paṇḍit. Pr. 2. Verz. d. Oxf. H. 253,*a*,11. Verz. d. B. H. No. 897. Bhâg. P. 6,7,8. Mârk. P. 123,14. Vop. S. 176. — 2) N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 83,*a*,34. eines Lexicographen, Philosophen u. s. w. Hîn. 273. Mân. Anh. 4. Schol. zu H. 106. 183. 222. 230. 972. 1194. 1214. Uddîpan. zu Unâdis. 3,22. 4,129. 233. Verz. d. B. H. No. 802. 843. Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,23. 182,*b*,3 v. u. 188,*a*,27. fg. 189,*b*, No. 433. 178,*a*,34. 247,*a*,37. 352,*b*, No. 835. Colebr. Misc. Ess. I,230. Phar. 20, 10. Sarvadarçanas. 148,19. 158,12. °निबन्ध Verz. d. B. H. No. 1176. वैद्य° Verz. d. Oxf. H. 314,*b*, No. 746. °गोविन्द 125,*b*, No. 218. °भट्टाचार्य 138,*b*, No. 272. °मिश्र 237,*b*, No. 570. 244,*a*, No. 606. 273,*a*, No. 646. fgg. 274,*a*, No. 650. 279,*a*,45. 289,*a*, N. 1. 292,*a*,5. 18. *b*,9. Verz. d. B. H. No. 608. 637. fg. 1403. Colebr. Misc. Ess. I,234. 262. 332. Hall 5 u. s. w. in der Einl. zu Vâsavad. 9. Sarvadarçanas. 165,22. 166,12. Gild. Bibl. 499.

वाचस्पतिकल्पतरु m. Titel eines Werkes, = वेदान्तकल्पतरु Hall 87. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,9.

वाचस्पत्य 1) adj. zum *Gott* Vâkaspati *in Beziehung stehend*, Beiw. Çiva's MBh. 13,1187. Nilak.: वाचस्पतिं देवपुरोहितमनुक्रान्ता: वाचस्पत्या: । पुरोहितकर्मकर्ता । बृहस्पतिर्हि वै देवानां पुरोहितस्तमन्वन्ये मनुष्याराज्ञो पुरोहिता इति ब्राह्मणे बृहस्पतिं य: मुमूर्षुं बिभर्तीति मत्स्यबृहस्पतिपदस्य व्याख्यानात्. — 2) adj. von Vâkaspati (dem Philosophen) *verfasst* Verz. d. Oxf. H. 289,*a*,1. — 3) n. *Beredsamkeit* Spr. 335. — Vgl. योग°.

वाचा f. 1) = वाच् *Rede, Wort; Göttin der Rede* Bhâgavat und Kâṇḍa bei Uddîpan. zu Unâdis. 2,57. Vop. 4,2. Taik. 1,1,116. Mân. K. 9. मनसा वाचा च Schol. zu Kâty. Ça. 207,2 v. u. तिसृभिर्वाचाभि: Paṇḍit. 221, 7. °शौच Spr. 4980. °सिद्धि Verz. d. Oxf. H. 99,*a*,10. — 2) MBh. 13, 6149 fehlerhaft für वचा, wie die ed. Bomb. liest.

वाचाट (von वाच्) adj. (f. आ) *geschwätzig* P. 5,2,125. Vop. 7,34. AK. 3,1,36. H. 347. M. 3,8. Kathâs. 102,148. Mârk. P. 34,76. Bhaṭṭ. 5,28. Ṭiṭṭ. Spr. (II) 408. — Vgl. वाचाल.

वाचारम्भण n. 1) nach Çaṅk. = वागालम्बन *ein Beruhen auf blossen Worten* so v. a. *eine Verschiedenheit dem blossen Namen nach* Kaṭh. Up. 6,1,4; vgl. Vedântas. (Allah.) No. 21. — 2) Titel einer Schrift Hall 137.

वाचाल (von वाच्) adj. (f. आ) *geschwätzig* P. 5,2,125. Vop. 7,34. AK. 3,1,36. H. 347. नावाचालो मृषाभाषी Spr. 1536. परवर्णने 5293. Kathâs. 40,34. Prab. 27,10. 111,15. = विकत्थन *grossprecherisch* Utpala zu Varâh. Bṛh. 18,9. *geräuschvoll:* किङ्किणीजाल° (लङ्का) R. 5,9,59. वाणेघनोर्वो Râja-Tar. 8,477. — Vgl. वाचाट.

वाचालता (von वाचाल) f. *Geschwätzigkeit* Spr. 411.

वाचालय् (wie eben) *geschwätzig machen:* ग्रमी मूकान्वाचालयितुमपि शक्ता यतिपतेः कटाक्षाः Verz. d. Oxf. H. 253, *a*, 14. fg. वाचालित *geschwätzig gemacht* Kathās. 24, 227. *geräuschvoll gemacht:* सार्थं वनस्पतिर्लोनैः खगैर्वाचालितो यया Rāǵa-Tar. 8, 476.

वाचाविरुद्ध adj. *mit dem Worte in Widerspruch stehend* so v. a. *nicht in Worte zu fassen, nicht mit Worten zu schildern* (= वाङ्मनशील Nīlak.); pl. Bez. einer Gruppe göttlicher Wesen MBh. 13, 1372. — Vgl. मनोविरुद्ध.

वाचावृत्त s. वाचावृद्ध.

वाचावृद्ध m. pl. N. einer Göttergruppe im 14ten Manvantara VP. (II) 3, 28. वाचावृत्त v. l. वावृद्ध in der 1ten Ausg. 269.

वाचोऽस्तेन (वाचाऽस्तेन Padap.) adj. etwa *der durch Rede heimlich Abbruch thut* RV. 10, 87, 15.

1. वाचिक (von वाच् P. 5, 4, 35. Vop. 7, 15. 1) adj. *durch Worte bewirkt, aus Worten hervorgegangen, in Worten bestehend* MBh. 12, 13490. कायिकं वाचिकं चैव मनसा मनुयार्जितम् । तत्सर्वं नाशमायाति 18, 203. कर्मदोषाः M. 12, 9. पारुष्ये दण्डवाचिके (das suff. gehört zu beiden Worten) 8, 6. वाकुप्रोवानेत्रसक्थिविनाश so v. a. *angedroht* Jāán. 2, 208. ग्रभिनय *in Worten bestehende Darstellung* so v. a. *Declamation* Sāh. D. 274. H. 283. Verz. d. Oxf. H. 102, *b*, 31. 200, *a*, 1. त्रि° *durch drei Worte bewirkt* Pāṇ. 222, 16. fg.; vgl. 221, 7. — 2) n. *Auftrag* AK. 1, 1, 5, 18. H. 276. Hir. 166. भृत्यमेकं वणिग्वेश्म प्राक्षिणोद्दत्तवाचिकम् Rāǵa-Tar. 6, 35.

2. वाचिक m. Hypokoristikon von वागाशीर्दत्त P. 5, 3, 84, Vārtt. 3, Schol.

वाचिकपत्र n. *Schriftstück, Contract* (लिपि, संवादपत्र) ÇKDa.

वाचिकलारक m. *Brief* Tāik. 2, 8, 25. Hir. 54.

वाचिन् (von वच्) adj. *behauptend, annehmend:* ज्ञातिशब्दार्थ° Sarvadarçanas. 145, 9. 10. प्रतिषेध° Kār. 4 aus Kāç. zu P. 7, 2, 10. *ausdrückend, bezeichnend:* क्रिया° AV. Paiṛ. S. 261 (II, 1). Sāh. D. 10, 15. Weber, Rāmat. Up. 291. Schol. zu P. 1, 1, 35. 4, 105. Vop. 4, 15. Sarvadarçanas. 87, 8. davon nom. abstr. वाचित्व n.: सत्ता° 144, 20.

वाची s. ग्रम्बु°.

वाचोयुक्ति (वाचम्, gen. von वाच्, + यु°) P. 5, 3, 21, Vārtt. adj. *beredt* Rāmāç. zu AK. nach ÇKDa.; aber f. *angemessene Rede* (*Art und Weise der Rede* Vāsuv. 76). °पटु *beredt* AK. 2, 1, 35. H. 346. Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 2, 27.

वाच्कृत्य MBh. 12, 535 fehlerhaft für वाक्कृत्य (वाक्यात्य ed. Bomb.).

वाच्य्, वाच्यति denom. von वाच् P. 1, 4, 15, Schol.

1. वाच्य (von वच्) 1) adj., P. 7, 3, 67. Vop. 26, 10. = गृण्य, वचोऽर्ह, क्षीण H. an. 3, 504. = कुत्सित, क्षीण, वचनार्ह Med. j. 54. *a) zu sprechen, zu sagen, zu verkünden, mitzutheilen, zur Sprache zu bringen, zu besprechen:* यद्या वाच्यमृतं वचस्तैः M. 8, 61. इदं ते नातपस्काय वाच्यम् Bhag. 18, 67. MBh. 1, 7460. 4, 932. Harīv. 14403. Spr. 439 (II). 1149. मात्र, पक्ष्य 4114. वचन 4343. शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि 5060. Varāh. Bṛh. S. 11, 6. 17, 27. 23, 1. 3. 24, 5. 27. 26, 12. 47, 2. 22. Kathās. 28, 135. 30, 21. 39, 109. 43, 30. 60, 152. Rāǵa-Tar. 1, 12. 3, 309. Pañcat. 83, 20. 24. Sāh. D. 216. ग्रनन्य° keinem *Andern zu sagen* Verz. d. Oxf. H. 28, *b*, 38. वाच्य ऊर्णोर्णुवद्भावः *auszusagen* Kāç. zu P. 3, 1, 22. Mārk. P. 38, 14. *aufzuführen, aufzuzählen* Tāik. 3, 3, 463. *was gesprochen wird:* ग्रहो ग्रव्यमहो वाच्यमहो गीतमविस्वरम् R. Gorr. 1, 3, 60. Buǵ. P. 7, 15, 57. *worüber gesprochen wird, wovon Etwas ausgesagt wird* Harīv. 4695. Weber, Rāmat. Up. 288. 291. 336. 341. ग्र° *was nicht in Worte zu fassen ist* Maitrjup. 6, 7. *was nicht gesagt werden sollte* Bhag. 2, 36. वाच्यावाच्ये हि कुपितो न प्रजानाति कार्हचित् MBh. 3, 1069. 12, 4220. R. Gorr. 2, 63, 10. 3, 35, 72. Kathās. 59, 36. वाच्यम् impers. *zu sagen, zu sprechen* Jāán. 1, 238. MBh. 1, 4630. 3, 254. 13787. 4, 1125. Spr. 2770. Vedāntas. (Allah.) No. 106. Pañcat. 97, 17. 236, 22. Vet. in LA. 9, 7. Sarvadarçanas. 43, 1. 82, 7. 167, 10. ग्रवश्यं च मया वाच्यं लेशमात्रेण — विष्णोरतुलवीर्यस्य *zu sprechen über* Harīv. 9787. — *b) anzureden, zu dem man sagen* —. — *sprechen soll:* ग्रायुष्मान्भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने M. 2, 125. ग्रवाच्यो दीक्षितो नाम्ना 126. Bhar. beim Schol. zu Çiç. 1. देवाश्च मुनयश्च भगवन्निति वाच्याः zu 52, 3. 22, 23. Sāh. D. 171, 13. 15. fg. 172, 11. fg. 15. 18. वाच्यश्च नन्दगोपः mit folgender oratio directa Harīv. 4209. Ragu. 14, 61. एवं वाच्यः सः Kumāras. 6, 21. Varāh. Bṛh. S. 28, 2. Kathās. 11, 60. 24, 116. 112, 49. Rāǵa-Tar. 4, 359 (भूया mit der ed. Calc. zu lesen). Daçak. 72, 16. Pañcat. 32, 11. 47, 25. mit einem acc.: श्रेयः MBh. 1, 7488. मृदु वचः 5, 67. 14, 2566. R. 2, 38, 18. 68, 6. 98, 15. पित्रा पुत्रो वयःस्थोऽपि मतं वाच्य एव तु । यद्या स्याद्गुणसंयुक्तः प्राप्नुयाच्च महत्पदः ॥ *anzuweisen* MBh. 1, 1728. — *c) zu benennen:* तेनैव नाम्ना तं देशं वाच्यमाकुर्मनीषिणः MBh. 1, 281. — *d) was noch zu sagen ist* so v. a. *nicht angegeben* Kīrṇ. Çr. 1, 10, 10. — *e) was ausgedrückt —, was bezeichnet wird, ausdrücklich gemeint* Sāh. D. 6, 17. fg. 10. fg. 27. 251. fgg. 687. 291, 9. Vop. 7, 15. Verz. d. Oxf. H. 177, *b*, No. 403. सर्वं गोशब्दस्य वाच्यः *gemeint mit* 230, *a*, 16. Vedāntas. (Allah.) No. 78. मरुवाक्य° 35. 94. Çaṃk. zu Kaṭh. Up. S. 10. 59. Nīlak. 42. Comm. zu Gaim. 1, 1, 17. Schol. zu P. 1, 2, 42. 4, 105. Siz. zu RV. 1, 154, 1. Sarvadarçanas. 54, 1. 13. 58, 6. 154, 10. — *f) zu tadeln, einen Tadel verdienend* H. 436. काले ऽदाता पिता वाच्यो वाच्यश्चानुपयन्पतिः Spr. 656. 5240. नृपतेः Jāán. 2, 40. वाच्याश्च यादवाः कृताः Harīv. 4206. R. 3, 64, 18. 5, 7, 2. गुणोपवाद्याः Mṛicch. 70, 19. Kathās. 33, 11. 71, 26. Buǵ. P. 10, 72, 20. न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः *darüber darf kein Tadel ausgesprochen werden* Çiç. 92. — *g) zu lesen* (vgl. caus. von वच्): वाच्यं ते शासनं पदे सूक्ष्मातरनिवेशितम् Mārk. P. 36, 8. — 2) n. *a) Hauptwort* (*das wovon Etwas ausgesagt wird*): वाच्यमित्युच्यते भेदं तल्लिङ्गं भजते तु यः । विशेषणात्मापन्नो वाच्यलिङ्गः स उच्यते ॥ Sarasvatīkaṇ. °वत् *wie das Hauptwort* so v. a. *im Geschlecht sich nach dem Hauptwort richtend, adjectivisch* Med. k. 12. j. 34. l. 130. वाच्य adj. *als Hauptwort gebraucht* Vop. 6, 16. Vgl. °लिङ्ग. — *b) Tadel, Makel, Fehler:* = दूषण Dhan. im ÇKDa. न तस्मिन्वाच्यमस्ति नः MBh. 1, 4511. परवाच्येषु निपुणः सर्वो भवति सर्वदा । ग्रात्मवाच्यं न जानीते 8, 2116. नास्य वाच्यं भवेत् 10, 85. R. Gorr. 2, 49, 27. नात्र वाच्यं मुमूर्षूणामपि विद्यते MBh. 15, 326. सर्वथा ते कृतं वाच्यं सीतामुत्सृज्य वने R. 3, 65, 14. परवाच्यानि गोपितुम् Spr. 1825. Ragu. 8, 71. वाच्यं परिमार्ष्टुम् 14, 35. निरुक्तवाच्यशल्य 42. निरस्य वाच्यं न गतः *hat sich nicht dem Tadel ausgesetzt* Çiç. 112. — *c)* = प्रतिवादिन् Dhan. im ÇKDa. — Vgl. ग्र°, दुर्वाच्य, पर°, भद्र°, स्वस्ति°, वक्तव्य und वचनीय.

2. वार्च्य (von वाच्) 1) adj. P. 4, 1, 55, Vārtt. 1. *der Stimme zugehörig* u. s. w. VS. 13, 55. — 2) m. metron. gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151. प्रज्ञा-

पति angeblicher Liedverfasser von RV. 3,38. 54—56. 9,84,

वाच्यता f. nom. abstr. von वाच्य 1) in der Bed. zu sagen, zu sprechen: ये चान्यमोदृस्तद्वाच्यतां हिताः so v. a. eine ungebührliche Art und Weise zu reden Bhāg. P. 4,2,20. in der Bed. wovon Etwas ausgesagt wird: वाच्यवाचकता (das suff. gehört zu beiden Wörtern) 2,10,36. — 2) in der Bed. zu tadeln: तथापि मे ऽत्र वाच्यता dessenungeachtet verdiene ich deshalb getadelt zu werden Vaitān. Bhār. S. 47,3. कास्मार्क तत्र वाच्यता Kathās. 45,167. दुर्लभा सत्त्ववाच्यता Kir. 11,53. वाच्यतां गम्, इ, पा, प्राप् in Tadel verfallen, sich Tadel zuziehen MBh. 2, 1657. Kām. Nītis. 10, 22 (wohl नैति st. नैव zu lesen). 11, 44. Spr. 2095. fg. 3125. Bhāg. P. 6,13,11. यति व्यालत्ववाच्यताम् Spr. 5143.

वाच्यत्व (von वाच्य) n. 1) das Gesagtwerdenmüssen, Nothwendigkeit einer ausdrücklichen Angabe Kāty. Ça. 5,4,4. 18,2,5. nom. abstr. von वाच्य wovon Etwas ausgesagt wird: वाच्यवाचकत्व (das suff. gehört zu beiden Wörtern) Weber, Rāmat. Up. 332. — 2) das Ausgedrücktsein, ausdrückliches Gemeintsein: मङ्गलस्य वाच्यत्वलक्ष्यते Sarvadarçanas. 157,10. शब्द° 146,4. लोकत्रयस्य पृथिवीशब्दवाच्यत्वम् Sāj. zu RV. 1, 134,1. Çāṅk. zu Kāṭhaka Up. S. 11. श्र° Sāh. D. 59.

वाच्यलिङ्ग adj. nach dem Geschlecht des Hauptwortes sich richtend, ein Adjectiv seiend AK. 2,7,26. 10,37. 3,4,9,42. Trik. 3,3,119. H. 600, Schol.

वाच्यलिङ्गक adj. dass. AK. 3,4,6,25. Trik. 3,3,88. Med. l. 4.

वाच्यलिङ्गत्व n. nom. abstr. von वाच्यलिङ्ग AK. 1,1,4,19. Schol. zu P. 2,4,18.

वाच्यवर्जित n. ein elliptischer Ausdruck Prātiçāk. 62,b,6. नोक्तं स्याद्यत्र वक्तव्यं तदाहुर्वाच्यवर्जितम् 61,b,7.

वाच्याय् (von 1. वाच्य), °यते erscheinen, als wenn es wirklich ausgedrückt wäre, Sāh. D. 115,10.

वाच्यायनि m. patron. von 2. वाच्य TS. 4,3,6,3.

वाज (vielleicht derselben Ursprungs mit उज, वेजस्, वेजस्, वज्र) m. VS. Prāt. 2,39. 1) Raschheit, Behendigkeit; Muth, namentlich des Rosses; auch im pl. gebraucht; = वेग H. 493. an. 2,76. fg. Med. ś. 13. Hall. 2,288. Varuṇa gab वाजमर्वत्सु पर्षं उक्थ्येषु RV. 5,85,2. मृक्षो वाजैभिर्मरुद्भिश्च शुभ्रैः। दधानो वज्रम् 4,22,3. VS. 2,13. वाजाय, अवसे, इषे, राये RV. 6,17,14. पणीमि वाजा वज्यानि 1,91,18. Çāṅku. Ça. 15,1,4. अग्नी नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् RV. 10,39,10. व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम् mögen den Muth (der Rosse Indra's) wecken 7,19,6. AV. 6,38, 3. स्तनं न मधः पीपयत्ता वाजैः RV. 1,169,4. 181,5. 6. männliche Kraft AV. 4,4,3. — 2) Wettlauf; Wettkampf, Kampf überh. Naigh. 2,17. हरिर्वाजाय मृज्यते RV. 9,3,3. ग्रामं वाजाय पार्तवे। हरिं क्रिणीत वाजिनम् 62,18. क्रिणो न मंसीरुभ वाजमर्ष 70,10. 82,2. यावाविन्द्रस्येन्दो प्रावो वाजेषु वाजिनम् 1,176,5. गन्ता वाजेषु सनिता धनं धनम् 2,23,18. 2,11,9. 10,6,6. वाजेषु सासह्यिंच 3,37,6. 42,6. 5,35,1. 86,2. 8,31,6. 46,9. वाजे वाजे कव्यो भूत् 6,61,12. वाजं वा मंस्यन्तं वाजजितं सं मार्ष्टि VS. 2,7. 14. सक्षन्ममत्तिं वाजमभिवर्तस्व एष देव Āçv. Gṛhy. 2,6,5. Lāṭy. 7,12,13. — 3) Preis des Wettlaufs: Kampfpreis, Beute: सिन्धो पदाजो अग्रियैत्वश्वस्त्वम् RV. 10,75,2. रथेन वाजं सनिषदस्मिन्वाजी 9. 8,90,1. वोतं इत्सनिता वाजमर्वा 6,33,2. देवाश्चित् 17,15. गमद्वाजं वाजपतिन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः 7,32,11. अर्वद्भिरत्नमुत सनोति वाजम् 6,60,1. अर्वद्भिर्वाजी भरते धना 1,64,13. 2,26,3. 31,7. मर्त्यं न वाजं सनिष्यन्तमञ्जे 3,2,3. स दृळ्हे चिदभि तृणत्ति वाजम् 8,92,5. 6,17,2. 3. 13,3. 4,17,9. VS. 5,37. Indra ist वाजानां पतिः RV. 6,45,10. 8,24,18. 81,30. Soma 9,31,2. Agni ist वाजस्य शतिनस्पतिः 1,143,1. 8,64,4. Mehrere dieser Stellen fanden eben so wohl unter 2) oder 4) Platz. — 4) Gewinn, Lohn; werthvolles Gut überh.: या नौ भद्रा परमेष्ठा वाजेषु मध्यमेषु। शिक्षा वस्वो अन्तमस्य RV. 1,27,5. प्रजावतो नृवतो गवेधुक्षो उषो गोअग्रां उप मासि वाजान् 92,7. अश्विनः, गोमतः 6,63,21. 23. 7,81,6. 8,2,24. शतिन् सहस्रिन् 1, 124,12. 2,2,7. नृमस् 4,8. इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनिता। अस्माभिः सु तं मंनुहि 8,70,8. विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे 10, 35,13. यस्मिन्नग्रात्ता अस्तनाम वाजम् 62,11. राये वाजाय वनते मघानि 3,19,1. 4,12,3. चित्र 22,10. पुरुश्चन्द्र 1,33,5. 3,27,1. पुरुद्रय 8,1,4. AV. 13,1,22. वाजमाप्नुयां स्वर्गं लोकम् Pāraṇ. Br. 18,7,1.12. — 5) nach den Comm. gewöhnlich Speise, auch Opferspeise; = अन्न Naigh. 2,7. H. 393. n. = पयस्या und सर्पिस् oder घृत H. an. Med. Manchmal sehr scheinbar, z. B. वी शर्धन्त उप यन्ति वाजाः RV. 7,1,3. सं पयांसश्चरन्ति यं से वाजिनः अवस्यवः 5,9,2. 43,2. वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु VS. 9,1 deutliche Entstellung aus वाचम्. 18,32. fgg. und Maitrāy. Am wenigsten Gewicht haben Stellen wie: घोषघः क्षत्रं वै वाजः TBr. 1,3,8, 1. अन्नं वै वाजः Çat. Br. 9,3,4,1. — 6) Wasser, n. H. an. Med. — 7) Laut, Ton diess. — 8) Renner, muthiges Ross am Wagen des Kriegers und der Götter: प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यसि RV. 5,84,2. उद्वाज इव गन्व्या अश्वस्वार्त्तः AV. 13,1,2. यो यु प्र याति वाजेभिः RV. 8,2,19. वाजाय प्रथमं सिषासन्तं 3,12. वाजो न साधुरस्तमेष्यक्तो 7,37,4. प्र यंसु वाजास्तविषीभिरग्नयः 3,26,4. इयो रथ्योः सयुजः प्रयुजो वाजान् 30,11. 4,3,13. 29,1. यूयमर्वन्तं भरताय वाजं धत्थ 5,54,14. स्थविरं 6,1,11. 37,5. 7,93,2. त इद्वाजेभिर्जिग्युर्मरुद्गणम् 8,19,18. 2,1,12. 6,61,4. — 9) Flügel H. 1317. H. an. Med. Hall. 2,84. — 10) die Federn am Pfeile AK. 2,8,3,55. H. 784. H. an. Med. Hall. 2,212. शोणितादिग्धवाजायाः (so die ed. Bomb.) शरः MBh. 7,5642. विचित्र° adj. Bhāg. P. 10,59,16. — 11) N. eines der drei Ṛbhu: der Behende, Muthige RV. 1,161,6. 4,33,3. 9. 34,1. 5,45,3. 6,50,12. 7,36,3. 10,23,2. pl. Bez. sämmtlicher Ṛbhu 3,34,4. 5. 35,6. 37,1. 7,37,1. 48,1. 10,93,7. — 12) N. pr. eines Mannes Çāṅku. Ça. 15,1,13 (zum Zweck einer Etymologie). eines Muni H. an. eines Sohnes des Manu Sāvarṇa Harīv. 465. — Vgl. गृध्र°, चित्र°, त्र्या°, तुवि°, दाश°, पत्र°, पुरु°, वर्धिण°, भरद्वाज, राधो°.

वाजकर्मन् adj. etwa kampfthätig v. l. des SV. 1,2,1,2,2 für °भर्मन्.

वाजकृत्य n. Kampfesthat, Wettkampf RV. 10,50,2.

वाजगन्ध्य adj. etwa eine Wagenlast von Gütern (Beute) bildend oder habend RV. 9,98,12. Nir. 5,15. गन्ध्य so v. a. गध्य von गन्धा = गधाः dieses bezeichnet einen Bestandtheil des Lastwagens Āpast. in TS. Comm. II,307,5. nach einer Glosse so v. a. कृदिम्. Versteht man darunter die Leitern oder Spangen des Wagens, welche die Last zusammenhalten, so ist गध्य so v. a. den Leitern gleich d. h. die Wagen füllend.

वाजघठर adj. RV. 5,19,4 nach Sāj. so v. a. कविर्घठर.

वाजजित् 1) adj. im Wettlauf —, im Kampfe siegend, Beute gewinnend VS. 2,7. 9,9. 18. बृहस्पतिना वाजजिता वाजं जेष्यम् TBr. 1,3,8,1.

3,7,6,4. Liṭ. 5,12,13. — 2) n. N. eines Sâman Pañcav. Br. 13,9,20. 15, 11,11. Liṭ. 9,5,14. Ind. St. 3,234,a. प्रजापतेर्वाजजित्‌ desgl. 224,b.

वाजजिति f. *siegreicher Lauf, — Kampf* Kiṭ. 14,1 bei Weber, Nax. 2,349.

वाजजित्यौ f. dass. TBr. 3,7,6,15.

वाजदा adj. *Behendigkeit —, Kraft verleihend* ṚV. 1,135,3. वाजदा (°धा) गव्यस्य गावः *kräftig* 3,36,3.

वाजदावन्‌ 1) adj. *Preis —, Güter verleihend* ṚV. 1,17,4. 8,2,34. — 2) f. pl. °दावर्यम्‌ N. eines Sâman Pañcav. Br. 13,9,12. 17. Liṭ. 6,11, 4. Ind. St. 3,231,b. 234,a. यदा° 230,a (der Artikel यदावाजदावर्य ist demnach zu verbessern).

वाजद्रविणस्‌ adj. *reichen Lohn findend* ṚV. 8,73,6; vgl. 5,43,9.

वाजपति m. VS. Pait. 3,37. *der Beute —, des Lohnes u. s. w. Herr:* Agni ṚV. 4,13,3. VS. 18,33. fg. Çiṅku. Ça. 7,10,13. Gobh. 3,10,17.

वाजपत्नी f. *des Lohnes u. s. w. Herrin:* धेनु Kauç. 114.

वाजपस्त्य adj. *ein Haus voller Güter u. s. w. habend, — verschaffend* Nir. 5,15. ṚV. 9,98,12. Pûshan 6,58,2. वाजपस्त्य TBr. 3,1,2,9.12.

वाजपेय m. und n. (n. AK. 3,6,2,31) *Kampf- oder Kraftrunk, ein Soma-Opfer für den nach der höchsten Stellung strebenden Fürsten und Brahmanen, dem Râǵasûja und Bṛhaspatisava vorangehend.* Im System eine der sieben Formen des Soma-Opfers Âçv. Ça. 6,11, 1. 9,9,1. fgg. Liṭ. 5,4,24. Ind. St. 10,352. Z. d. d. m. G. IX, LXXIV. — AV. 11,7,7. यो वाजपेयेन यजते। गच्छति स्वाराज्यम्‌। यथा समानानां पर्यैति TBr. 1,3,2,3. 2,1. यो वै वाजपेयः। स संवत्सरः 2,7,6,1. Ait. Br. 3, 41. Çat. Br. 5,1,1,13. 3,9. 2,2,12. Çiṅku. Ça. 15,1,1. बृहः° 3,14. fg. 5,6. Kiṭ. Ça. 6,1,33. 10,9,20. 14,1,1. ये ब्राह्मणा राज्ञश्च पुरस्कुर्वीरन्‌ वाजपेयेन यजेत Liṭ. 8,11,1.6. 12,6. MBh. 2,233. 3,8048. त्रयो युक्ता वाजपेये वदन्ति 10660. 13,4927. °समुत्थानि छत्त्राणि R. 2,45,22 (43,23 Gorr.). Verz. d. Oxf. H. 30,b,10. 266,b,40. Bhâg. P. 3,12,40. 4,3,3. °यज्ञिन्‌ TBr. 1,3,6,1. Pañcav. Br. 13,6,4. °यज्ञ Çat. Br. 5,1,2,4. °यूप 3,6,4,26. Çiṅku. Br. 10,1. °सामन्‌ Liṭ. 2,5,23. 3,1,24. °स्तोमयाग Verz. d. B. H. No. 317. Abgeleitet so v. a. यज्ञपेय Çat. Br. 5,2,4,13. so v. a. वाजाप्य, वाजं क्रतुना देवा इष्ट्वान्‌ TBr. 1,3,2,3. Abgekürzt so v. a. वाजपेये भवो मन्त्रः und वाजपेयस्य व्याख्यानं कात्य: Schol. zu P. 4,3,66, Vârtt. 2. 3.

वाजपेयक adj. *zum Vâǵapeja in Beziehung stehend, daher kommend, dabei dienend u. s. w.:* छत्त्राणि R. 2,45,22.

वाजपेयिक adj. (f. ई) dass. P. 4,3,68, Schol. Kiṭ. Ça. 18,5,4. 8. Ind. St. 3,388. छत्त्राणि R. Gorr. 2,43,24. दक्षिणा P. 5,1,95, Schol.

वाजपेयिन्‌ adj. *der den Vâǵapeja vollzogen hat* Verz. d. Oxf. H. 142, a, No. 290. — राम°.

वाजपेशस्‌ adj. *etwa kraft- oder lohngeschmückt:* कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम्‌ ṚV. 2,34,6. = धनैराग्निष्टम्‌ Sây.

वाजप्य m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

वाजप्यायनि m. patron. von वाजप्य gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. N. pr. eines Grammatikers Sarvadarçanas. 143,10.

वाजप्रमरुस्‌ adj. *etwa an Muth oder im Kampf überlegen:* Indra ṚV. 1,121,13.

वाजप्रसवीय adj. *mit den Worten* वाज *und* प्रसव *beginnend, sie enthaltend* (TS. 1,1038,7); n. *nämlich* कर्मन्‌ TBr. 1,3,3,3. Çat. Br. 5,2,3, 5. 9,3,4,1. TS. 5,4,6,1. Kiṭ. Ça. 18,5,1.

वाजप्रसव्य adj. dass. Kiṭ. Ça. 14,5. 21,12.

वाजप्रसूत adj. *zum Lauf u. s. w. aufgebrochen* oder *von Muth getrieben* ṚV. 1,77,4. 92,3.

वाजबन्धु m. *Kampfgenosse* oder N. pr. ṚV. 8,57,19.

वाजबस्त्य s. वाजपस्त्य.

वाजभर्मन्‌ adj. *etwa Preis —, Lohn gewinnend* ṚV. 8,19,30.

वाजभर्मीय (von वाजभर्मन्‌) n. भरद्वाजस्य °यम्‌ N. eines Sâman Ind. St. 3,227,b.

वाजभृत्‌ n. N. eines Sâman Liṭ. 6,10,3. भरद्वाजस्य वा° Ind. St. 3,227,b.

वाजभोजिन्‌ m. = वाजपेय Çabdar. im ÇKDa.

वाजभर्‌ 1) adj. *den Preis davontragend:* घासु ṚV. 1,60,5. 4,4,4. 10, 80,1. — 2) m. Sapti Vâǵaṁbhara angeblicher Liedverfasser von ṚV. 10,79.

वाजय्‌ (von वाज), वाजयति (यर्चतिकर्मन्‌ Naigh. 3,14. मार्गसंस्कारगत्योः, मार्गणासंस्कारयोः Dhâtup. 32,74) und वाजयति, °ते. 1) *wettlaufen, wettfahren, kämpfen;* überh. *schnell laufen, eilen:* मो नरः स्वश्वा वाजयन्तो रथेषु ṚV. 4,42,5. 17,16. त्वया वाजं वाजयन्तो जयेम 5,4,1. सपावानं धनेषु धने वाजयन्तमवसे हुवेम 5,33,7. 31,1. 60,1. 8,3,15. 11,9. सत्य 7,24, 5. हरी 2,11,7.19,7. प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्तः *wetteifernd* 8,89,3. यावयद्देष्यं कृणोषि वाजयन्‌यै *zum Eilen* 4,29,3. ता वां धियो ऽवसे वाजयन्तीः। रात्रिं न शंभुः 41,5. 3,62,5. 11. — 2) *zur Eile treiben, anspornen; anregen, zur Kraftäusserung bringen:* यामिं सत्तिं न वाजयामसि ṚV. 8,43, 25. Vilâsa. 5,2. तमिन्द्रं वाजयामसि वृत्राय हन्तवे 8,82,7. Pañcav. Br. 15,2,7. 14,8,5. तं वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः ṚV. 1,4,9. स वां धियं वाजयन्तीमतक्षत्‌ 109,1. 8,24,5. यामं न वाजयते हिन्वे अर्वा 4,7,11. वाजयाम्पूरिवाहौ 10,68,2. येन कृणोषि वाजयन्तं येन क्रिन्वत्यातुरम्‌ AV. 6,101, 2. यदिमा वाजयन्‌वद्मोषधीर्हस्ते आदधे ṚV. 10,97,11. wird in der Bed. विधूनने (*anfachen*) P. 7,3,33 als caus. von वा angesehen: वाजयति पक्षेण Schol.

— उप 1) *zur Eile antreiben, beschleunigen:* वयान्धावतः Çat. Br. 5, 1,3,21. — 2) (das Feuer) *anfachen* TS. 2,5,11,6. वेदेन TBr. 3,3,7,2. 3. Kiṭ. Ça. 3,1,12. 21,3,7. 26,4,2. — Vgl. उपवाजन.

वाजयु (von वाजय्‌) adj. 1) *wettlaufend, kampflustig; eilig* ṚV. 2,20,1. 5,10,2. Vilâsa. 5,3. रथ ṚV. 2,31,2. 5,10,5. 8,69,6. श्रवस्‌ 5. Ross 1, 12. 3,63,12. उतन्‌ 83,3. — 2) *eifrig, kräftig* ṚV. 2,35,1. — 3) *Beute oder Gut schaffend* ṚV. 7,31,3.

वाजरत्न 1) adj. *reich an gewonnenem Gut:* Ṛbhu ṚV. 4,34,3. 35,5. 43,7. राय: स्याम पतयो वाजरत्नाः 5,49,4. कदा धियः करसि वाजरत्नाः 6,35,1. 10,42,7. — 2) m. N. pr.; s. वाजरत्नायन.

वाजरत्नायन (von वाजरत्न) m. patron. des Somaçushman Ait. Br. 8,21.

वाजर्षि MBh. 2,219 fehlerhaft für राजर्षि, wie die ed. Bomb. liest.

वाजवत (von वाजवत्‌) m. N. pr. eines Mannes gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वाजवतायनि m. patron. von वाजवत gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वाजवत्‌ (von वाज) adj. 1) *aus Preis, Gut u. s. w. bestehend, damit*

verbunden u. s. w.: रयि ṚV. 1,120,9. 6,50,11. सुमति 1,31,18. TBa. 1, 4,8,10. — 2) *muthig:* इष: ṚV. 1,34,3. 6,60,12. — 3) *aus Rennern —, aus Streitrossen bestehend* u. s. w.: गोमत्ते वाजवत्ते सुवीर्यं रयिम् ṚV. 4, 34,10. 1,9,7. गोमत् हिरण्यवत् यशावत् वाजवत् 9,41,4. 86,18. — 4) *von dem oder den* Vâǵa *begleitet* u. s. w.: Indra ṚV. 3,52,6. 60,1. VS. 38,8. Âśv. Bṛ. 2,20. घर्म 1,22. श्रुधि ṚV. 3,60,5. die Açvin 8,35,15. Kâṭ. Ça. 10,3,9. 7,14. — 5) *das Wort* वाज *enthaltend* TS. 1,7,4,2. TBa. 3,3,9,1. सवन Pâśkâv. Bṛ. 18,6,7. 7,3. Kâṭ. 14,10. — 6) *mit Speise versehen:* der घर्म heist मधुमत् वा° पितुमत् Çâṅkh. Ça. 5,10,31. scheint eine Variation zu श्रुधि° वाज°, विधु° zu sein.

वाजश्रव m. N. pr. eines Mannes: वेनो वाजश्रवान्वय: VP. (II) 3,35, N. 3. — Vgl. वाजश्रवस्, वाजश्रव und वाजश्रवस्.

वाजश्रवस् 1) adj. वी° *mit Rennern eilend, wettlaufend:* Agni ṚV. 3, 2,8 (vgl. वाजसृत्). गोमघा यशसश्चन्द्रा वाजश्रवसो धियो धेनू: पृदाकव: 5,35,4. — 2) m. patron. N. pr. eines Mannes Çat. Bṛ. 14,9,4,33.

वाजश्रवसि m. patron. von वाजश्रवस् TBa. 1,3,10,2. 3,11,8,1. 3. Çat. Bṛ. 10,5,4,1. Kâtjây. 1,1.

वाजश्रुत adj. *für Schnelligkeit berühmt:* Ṛbhu ṚV. 4,36,5.

वाजस (wohl von वाजसा) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,234,a.

वाजसन adj. (f. ई) *zu* Vâǵasaneja *in Beziehung stehend:* Çiva MBu. 13,1187 (शाखाविशेषप्रवर्तको ऽध्युकर्मकर्ता Nîlak.). R. 7,23,4,44. Vishṇu MBu. 13,7034. वाजसन्यस्ता: (शाखा:) Bhâg. P. 12,6,74, v. l. für °संन्यस्ता:.

वाजसनि adj. *Beute —, Preis gewinnend; Muth —, Kraft verschaffend; siegreich:* Indra ṚV. 3,51,3. Soma 9,110,11. वाजसनिं रयिमस्मे सुवीर्यं प्रशस्तं धेहि 10,91,15. *Speise verleihend* Mahîdh. Einl. zu VS. Comm. als Beiwort Vishṇu's MBu. 12,1507 eben so erklärt.

वाजसनेय 1) m. patron. des Jâǵñavalkja Çat. Bṛ. 14,9,4,15. 4, 33. gaṇa ौनकादि zu P. 4,3,106. °संहिता N. des bekannten Jaǵus-Buches; °शाखा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,27,15. °ब्राह्मण Verz. d. Oxf. H. 270,b,29. Kull. zu M. 9,43. °गृह्यसूत्र Ind. St. 3,337. — 2) adj. *ein Anhänger des* Vâǵasaneja, pl. *seine Schule* Ind. St. 3, 262. fg. निर्दिश्य वाजसनेयानृषीन्सर्वान् Verz. d. Oxf. H. 262,a,2 v. u.

वाजसनेयक adj. *zu* Vâǵasaneja *in Beziehung stehend, von ihm verfasst* (m. *das von ihm verfasste* Brâhmaṇa), *ihm anhängend, zu seiner Schule gehörig* Kâṭ. Ça. 25,8,4. Lâṭ. 4,12,13. Schol. zu Kâṭ. Ça. 7, 4,7. 10,8,29. Ind. St. 1,83. 450. 3,266. 269. 3,73. Kull. zu M. 11,260. बृहदारण्यक Bṛn. Âr. Up. S. 1096. विप्रा: Verz. d. Oxf. H. 262,a,3 v. u.

वाजसनेयिन् m. pl. *die Schule des* Vâǵasaneja gaṇa ौनकादि zu P. 4,3,106. Hariv. 7994. 11140. Ind. St. 1,44. 53. 83. 283. 2,9. 4,140. 237. 309. 13,37. 76. 393. Verz. d. Oxf. H. 222,b,8. Verz. d. B. H. No. 879. 1023. fg वाजसनेयो ऽधर्यु: Schol. zu Kâṭ. Ça. 10,8,29. °सनेयि-संहिता = °सनेयसंहिता; °शाखा Verz. d. Oxf. H. 284,b,26. 270,b,39. °प्रातिशाख्य Ind. St. 5,103. fgg. °ब्राह्मणोपनिषद् Bṛn. Âr. Up. S. 2.

वाजसा adj. *so v. a.* वाजसनि. इन्द्रस्य वज्रो ऽसि वाजसा: VS. 9,5,6. धी ṚV. 6,53,10. गो°, नृ°, अश्व°, वाज° 9,2,10. 35,4. superl. 1,28,7. 78,3. 3,12,4. 8,5,5. 9,66,27. 98,1.

वाजसाति f. *Gewinn des Preises —, von Gütern; Kampf, Sieg* Naigh. 2,17. ṚV. 1,34,12. 110,9. अनु नु स्थाति रथं मघे सनये वाजसातये 2,31, 3. 3,30,22. 37,5. 5,33,1. 7. 35,6. 46,7. उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये 5,64,6. 6,15,18. वयं त्वा रथं न वाजसातये (यतुष्महि) 53,1. 66, 8. 8,20,16. 40,2. (त्वया युजा) अधि ष्णो वाजसातये 91,3. 10,21,4. 35,14. 63,14. अयं वाजी जयतु वाजसाता VS. 5,37. AV. 14,2,72.

वाजसामन् n. N. eines Sâman Ind. St. 3,234,a.

वाजसृत् adj. *wettlaufend:* इन्दुरत्यो न वाजसृत्कनिक्रत्ति ṚV. 9,43,5. वाजसृद्भ्य: सुरामञ्चान्करोत्ति *Wettläufer* TBa. 1,3,3,7. 6,7. 8,4. Agni TS. 2,2,3,5. — Vgl. वाजश्रवस्.

वाजसात्र m. N. pr. = वेन Verz. d. Oxf. H. 80,a,14. — Vgl. वाजश्रव und वाजश्रवस्.

वाजश्रव und वाजश्रवस् m. N. pr. = वेन VP. (II) 3,35, N. 3. वाजश्रवान्वय und वाजसात्र v. l.

वाजिकेश (वाजिन् + केश) adj. *eine Pferdemähne habend;* m. pl. Bez. eines fabelhaften Volkes Mârk. P. 58,27.

वाजिगन्धा f. *Physalis flexuosa Lin.* Râǵân. 36. Suçr. 2,206,14. 207,3. 449,1. — Vgl. अश्वगन्धा.

वाजिग्रीव adj. *einen Pferdehals habend;* m. N. pr. eines Fürsten MBu. 12,722; vgl. कृष्णग्रीव 720 und अश्वग्रीव 721.

वाजित (von वाज) adj. am Ende eines comp. *mit Federn von — versehen,* von Pfeilen: कङ्क° MBu. 6,3285. गृध्र° 14,2454. — Vgl. गार्ध्र°.

वाजिदत्त m. *Adhatoda Vasika* (वासक) *Nees.* Râǵân. 157. °क m. dass. AK. 2,4,3,33.

वाजिदैत्य m. N. pr. eines Asura, der sonst केशिन् genannt wird, Hariv. 4279.

वाजिन् (von वाज) adj. subst. 1) *rasch, muthig,* subst. *Ross des Streitwagens* Naigh. 1,14. Nir. 3,3. ṚV. 1,135,5. 162,1. 12. 163,5. रथे तिष्ठन्नयति वाजिन: पुर: 6,75,6. अश्व 7,7,1. 41,6. शकेम वाजिनो यमम् 2,5,1. 10,1. तं नो दात वाजिनं रथे 34,7. 8,43,23. श्येत 5,1,4. अत्य 30,14. अरुष 5,56,7. नावाजिनं वाजिनो हासयन्ति 3,53,23. उद्धर्षय वाजिनो वाजिनानि 10,103,10. des Indra 1,176,5. रथ *der rasche Wagen, Kriegswagen* 7,34,1. 9,22,1. AV. 13,2,7. die Sonne als *Ross* 1,1. Taitt. Up. 1,10 (nach Çaṅk.; vgl. u. वाजिनीवसु). रासभ ṚV. 1,34,9. 53,5. VS. 1,29. 9, 8. 13,48. Çat. Bṛ. 10,6,4,1. गावो वाजिनी: AV. 1,4,4. VS. 1,29. Später m. *Ross, Pferd* überh. AK. 2,8,2,12. 3,4,28,110. 28,176. H. 1233. an. 2,286. Hit. 52. Halâj. 2,281. 1,151. Çâṇḍaka in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. M. 8,209. Spr. 2771. 3746. MBu. 3,1720. 2822. 15072. Hariv. 11253 (wo mit der neueren Ausg. दृश्य वाजिनम् zu lesen ist). R. 1,54,12. 2, 39,13. 40,22. 91,8. 92,31. Ragh. 3,43. वाजिनीराजना 4,25. 67. Çiç. 6, v. l. 6,8. 8,14. Varâh. Bṛn. S. 2,22. 5,41. 18,5. 42,7. 66,1. Kathâs. 18,96. 26,25. 72,52. Râǵa-Tar. 5,143. Brahma-P. in LA. (III) 52,12. Pañkat. 218,7. Verz. d. B. H. No. 590. वाजिकर्मन् Verz. d. Oxf. H. 86, b,21. वाजिनी *Stute* Halâj. 2,285. Wie alle Worte für *Pferd* Bez. *der Zahl sieben* Goldâs. 7,29. — 2) *tapfer, kriegerisch;* subst. *Held, Krieger; Mann im lobenden Sinne* Nir. 3,3. ṚV. 2,24,10. 13. घा नो वाज्यभीषळिन्द्र नव्य: 7,4,8. 90,2. यशायसो वाजिनो गव्यत: 32,22. 8,16,4. Agni ṚV. 3,2,14. 5,16,48. VS. 29,1. Indra ṚV. 8,2,38. 3,2. AV. 5, 29,10. Marut 7,36,7. 8,20,16. Pûshan 6,55,4. विप्र 7,56,18. Bṛhas-

pati Lāṭy. 5,12,13. Ṛbhu ṚV. 3,60,7. 4,37,4. यस्यागृधद्देवने वाज्यर्यतः *der Würfel mit dem beutemachenden Krieger* verglichen 10,34,4. Ushas Naigh. 1,8. वाजिन वाजिनि *reisig* ṚV. 3,61,1. Sarasvatī 6,61,6. घृताची 3,6,1. superl. वाजिनितम 4,37,8. 10,115,6. — 3) *männlich, zeugungskräftig:* सोमाय वाजिने निर्वपेत्याः क्लीब्याद्विगीयात् TS. 2,3,8,4. तस्य ते वाजिपीतस्य भक्षयामि Āçv. Çr. 2,16,19. वाजी सोमं पीत्वा भवति TBr. 1,3,2,4. पुरुष Pāraṇ. Br. 13,9,13. शुष्म AV. 4,4,2. सो तोकं तनयं वाजि नो (so Sāy. und Padap.-Hdschr., Müller und Aufrecht lesen वाजिनो) दाः *männlich* ṚV. 6,13,6. तस्मात्स द्विरेता वाजी Ait. Br. 4,9. — 4) *mit Flügeln versehen:* तार्क्ष्येण स्तोत्रवाजिना *der die Stotra zu Flügeln hat* Bhāg. P. 4,7,19. m. *Vogel* AK. 2,5,33. 3,4,18,110. H. an. Halāy. 2,88. *ein best. Vogel:* वाजिपक्षिन् (प्राजिपक्षिन् Med. k. 116) = पालङ्क H. an. 3,63. — 5) *mit Federn versehen* (ein Pfeil): मु° Harīv. 13944. m. *Pfeil* AK. 3,4,18,110. H. an. — 6) वाजिनस् pl. *Renner,* Bez. göttlicher Wesen Naigh. 5,6. Nir. 12,43. nach Durga zu d. St. *Zügel,* wobei er auf Nir. 9,6 sich zu beziehen scheint; nach TBr. 1,6,3,9 Agni, Vāju, Sūrja. Es sind aber *die Rosse* oder überh. *Gespanne der Götter* zu verstehen (vgl. Manḍan. zu VS. 9,16). ṚV. 7,38,7. 8. 10,66,10. Āçv. Çr. 2,16,13. वाजिनो यन्ति देवाञ्चा वा वाजिनः Çāṅkh. Br. 5,2. Opfers auf die Ṛtu bezogen Çāṭ. Br. 2,4,4,22. Kāṭy. Çr. 4,4,23. Lāṭy. 4,12,18. पशवो वाजिनः Kāṭh. 36,4. वाजिनो साम (der Vers SV. I, 5,1, 3,9) Āçv. Çr. 9,9,8. Ind. St. 3,234,a. — 7) वाजिनम् pl. so v. a. वाजसनेयिनस् *die Schule des Vājasaneja,* so genannt, weil die Sonne als *Ross* dem Jājñavalkja die शतपथब्राह्मणानि पञ्चदश offenbarte, VP. bei Muir ST. 3,32 (VP. 281). Verz. d. Oxf. H. 55,a,30. fgg. — 8) m. *Adhadota Vasika Nees.* Çārṅgad. (Çārṅgaḍ. nach Wilson) im ÇKDr. — 9) वाजिनी f. a) *Stute* s. u. 1). — b) = अश्वगन्धा *Physalis flexuosa Lin.* ÇKDr. — Vgl. श्वेत°.

वाजिन 1) adj. *dem Vāgin gehörig* VS. 24,7. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 3,234,a. — 3) n. a) *Wettlauf, Wettstreit, Wetteifer:* नैमं किन्वन्त्यपि वाजिनेषु ṚV. 10,71,3. यद्वै क्लिष्टो भवति वाजिनाय 10. — b) *Schnelligkeit, Muth, Kraft:* अग्ने त्री ते वाजिना ṚV. 3,20,2. उद्धर्षय वाजिनं वाजिनानि 10,103,10 (vgl. AV. 3,19,6). 56,3. VS. 13,39. AV. 12,3,2. — c) *männliche Kraft:* क्षत्रस्य कास्मै वाजिनं नापच्छिद्यते Ait. Br. 1, 13. — d) *Molke* (erzeugt durch Einmischen saurer Milch in heissgemachte süsse; die festen Bestandtheile heissen घर्मिता) Taitt. 3,2,17. H. 831. VS. 19,21. 22. TS. 1,6,3,10. Çāṭ. Br. 2,4,4,21. 3,3,3,2. 3,5, 3,37. Kāṭy. Çr. 7,8,8. 9,12,1. 19,7,17. Lāṭy. 4,12,16. Āçv. Çr. 2, 16,15. °मत् 17. — e) *die Cerimonie mit der Molke für die Vāgin* Āçv. Çr. 2,16,13. 6,14,20.

वाजिनीवत् (von वाजिन्) adj. *rasche Rosse besitzend, damit fahrend,* (ἱππηλάτης): die Açvin ṚV. 1,120,10. Indra 5,36,6. AV. 3,3,6. 18,3, 54. TBr. 2,8,4,2. Ushas Naigh. 1,15. ṚV. 1,3,10. 48,6. 10. 92,13. 4, 53,2. 7,75,3. Sarasvatī 2,41,15. 6,61,3. 4. 7,96,3. Pit. Gaṇ. 1,7,3. Sindhu ṚV. 10,75,3. Wagen der Açvin 7,69,1. etwa *die Sonne* AV. 4,38,5. fgg. so v. a. वाजिन् 10,4,7.

वाजिनीवसु (वाजिन् + वसु) adj. so v. a. वाजिनीवत्: die Açvin ṚV. 2,37,5. 5,74,6. 8,5,2. 10,40,2. Indra 3,42,5. यद्वाजिनो रुरुचिरे वाजिनीवसुः 10,96,8. 1,2,3. *Kraft verleihend:* ऊर्धपवित्रो वाजिनीवस्वमृतमस्मि Taitt. Ār. 7,9 in Ind. St. 10,106 = Taitt. Up. 1,10, wo Çāṅk. वाजिनीव (= वाजवतीव d. i. सवितरीव) स्व° trennt.

वाजिनेय (von वाजिन्) m. *Helden-, Kriegersohn:* वं वाजी रेवते वाजिनेयो मरुद्भो वाजस्य गध्यस्य सातौ ṚV. 6,26,2.

वाजिपृष्ठ m. *Kugelamaranth* (घमान) Çārṅgad. im ÇKDr.

वाजिभ (वाजिन् + भ) n. *das Nakshatra Açvinī* Varāh. Bṛh. S. 23,9.

वाजिभक्त m. *Kichererbse* (*Pferdefutter*) Rāǵān. im ÇKDr.

वाजिभोजन m. *Phaseolus Mungo Lin.* (*Pferdefutter*) Rāǵān. im ÇKDr.

वाजिमत् (von वाजिन्) m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* (पटोल) Ratnam. im ÇKDr.

वाजिमेध m. *Rossopfer* MBh. 1,2181. Harīv. 8571. 11241. R. 1,8,2. 17,1. Bhāg. P. 1,12,35.

वाजिमेधिय m. pl. Bez. *einer Art* Ṛshi R. 3,39,31. nach dem Comm. *die nach Belieben Pferde- und Bocksgestalt annehmen können.*

वाजिराज m. *König der Rosse,* als Bein. Vishṇu's Pāraṇ. 4,3,169.

वाजिवाक्रम *ein best. Metrum:* 4 Mal – – – – – – – –, ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ – Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XVIII, 2).

वाजिविद्या f. Umschreibung von अश्वत्थ Suçr. 2,119,21.

वाजिशत्रु m. *eine best. Pflanze* Kālakarṇa 4,153. — Vgl. अश्वमार.

वाजिशाला f. *Pferdestall* AK. 2,2,6. H. 908. Halāy. 2,141. Rāǵa-Tar. 4,165. Verz. d. Oxf. H. 157,b, No. 341. वाजिवारणशाला: R. 1,12,11.

वाजिशिरस् adj. *einen Pferdekopf habend;* m. N. pr. eines Dānava Harīv. 13092. — Vgl. अश्वशिरस्, रुग्यशिरस्.

वाजिसनेयक adj. fehlerhaft für वाजसनेयक (वेद) Verz. d. Oxf. H. 56,a,15.

वाजीकर् (वाज + 1. कर्), °करोति *potent machen* Suçr. 2,154,3.

वाजीकर (von वाजीकर्) adj. *Manneskraft —, Potenz gebend;* n. *Aphrodisiacum* Suçr. 1,9,21. 12,4. 2,153,16. 154,17. 226,1. Verz. d. B. H. No. 993. Verz. d. Oxf. H. 309,a,28.

वाजीकरण (wie oben) adj. (f. ई) und n. dass. Suçr. 1,44,12. 148,6. 173,8. 2,149,4. 153,10. 11. 18. 156,21. Kām. Nītis. 7,56. Verz. d. B. H. No. 1006. Verz. d. Oxf. H. 309,a,30. fg. 311,b,28. 316,b,18. 319,b, No. 578. Madhus. in Ind. St. 1,21,6. °तन्त्र *die Lehre von den Aphrodisiaca* Suçr. 1,2,2. 19.

वाजीकार्य (wie oben) n. = वाजीक्रिया Verz. d. Cambr. H. 64.

वाजीक्रिया f. *der Gebrauch von Aphrodisiaca* Suçr. 2,154,3.

वाजीप in रायो°; s. रायोवाज.

वाजीविधान n. *die Anwendung von Aphrodisiaca* Verz. d. B. H. No. 1006. wohl fehlerhaft für वाजि°.

वाजेध्या f. nach Manḍan. वाज + इध्या (= दीप्ति): वाजिनं वा वाजेध्याये मे मार्ष्टि VS. 1,29. anders TS. Einen richtigen Sinn gäbe वाजेत्याये (इत्या) *dich den Renner mache ich blank zum Wettlauf.*

वाज्य m. patron. von वाज gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Ketu Ind. St. 4,372. 383.

वाज्रेय adj. von वज्र gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

वाञ्छ् (wohl auf 1. वन् zurückgehend), वाञ्छति Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). Dhātup. 7,20 (इच्छायाम्). zu belegen nur praes., potent., imperat., partic. praes. act. und pass., imperf. act. und pass. und partic. pract.

pass. वाञ्छित. 1) *begehren, wünschen, lieben, mögen;* mit acc.: विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु RV. 10,173,1. AV. 4,8,4. वाञ्छ मे तन्वं पोषै 6,9,1. वत्सं वै पशवो वाञ्छन्ति Çāṅku. Br. 25,15. क्षिप्राण्यस्य MBu. 2,508. सर्वेश्वरत्वम् 3,1925. 2227. fg. यूतम् 3037. 16772. Suçr. 1,343,19. 2,461,18. Çiç. 171, v. l. Spr. 802. 1012, v. l. 1675. 2322. 2618. 2779. यत एव हि वाञ्छन्ति मक्षिणः सायं नृपम् 3145. 3338. 3843. 3926. न घनं वाञ्छन्ति सन्तः Kathās. 12,83. 13,114. 18,264. 20,97. 25,283. 32,29. 102. 33,11. 41. 37,174. 39,230. 40,48. 49,229. 57,125. Sin. D. 57,7. Rāja-Tar. 5, 288. Prab. 110,14. Bhoj. P. 4,24,55. 5,4,17. 9,13,9. Mārk. P. 15,2. 96, 16. Vet. in LA. (III) 19,10. mit inf. Spr. 1072 (Conj.). 2920. Vaitān. Bṛh. S. 75,10. med. MBh. 3,11086 (S. 572). Kām. Nītis. 11,20. Spr. 2387. Bhoj. P. 4,18,10. Mārk. P. 29, 38. 66, 34. वाञ्छमाना Kathās. 33, 11. वाञ्छित *begehrt, gewünscht, erwünscht* (Vop. 26,131); n. *Wunsch:* यद्यो: Hariv. 16238. R. Gorr. 2,78,32. Bṛ. 2,29 (वाञ्छित gedr.). Spr. 2487. 2847. Vaitān. Bṛh. S. 68, 92. 87, 2. 89,12. Kathās. 13, 90. 18, 163. 33, 102. 105, 25. Hall. 2, 380. Prab. 48,17. Weber, Kṛshṇaj. 297. Bhoj. P. 1,9,29. 4,14,22. 8,20,10. Mārk. P. 74,28. वाञ्छितार्थाधिष्ठलाभ 96,18. Hit. ed. Johns. 2833. मम पूरय वाञ्छितम् Kathās. 22,32. न तस्य वाञ्छितं कुर्यात् Spr. 2496. Weber, Kṛshṇaj. 291. Bhoj. P. 4,3,14. यदि मे वाञ्छितं प्रयच्छसि Pañcat. 251,22. प्रार्थयस्व हृदयवाञ्छितम् 253,22. वाञ्छितसिद्धि Vikr. 28. Kathās. 19,4. °सँसिद्धि 30,56. यनुमत° 35,149. सँप्राप्ताखिलवाञ्छिता Mārk. P. 103,10. यमोघ° Bhoj. P. 3,4,29. — 2) *statuiren, behaupten, annehmen* (vgl. इष्, वप् und *velle*): केचित्यकेचात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् Vaitān. Bṛh. 1,3.12.

— यभि *begehren, verlangen nach:* लोकाञ्शाश्वतान् MBh. 1, 3675. 2, 2406. R. Gorr. 1,22,16. 3,59, 13. Spr. 306 (II). 380 (II). 1174. 1340. 2322, v. l. 2618, v. l. Vaitān. Bṛh. 27 (25),4. Kathās. 22,41. 25,297. 30,14. 33, 188. 38,70. 42,19. 90,44. Prab. 52,3. Mārk. P. 40,2. 61,73. 113,6. Pañcat. ed. orn. 60, 25. यभ्यवाञ्छत Kathās. 108,153. यभिवाञ्छित *begehrt, erwünscht;* n. *Wunsch* R. Gorr. 1,53,22. Kathās. 31,76. 71,16. Bhoj. P. 2,9,20. Mārk. P. 20, 26. 29, 3. 96,6. 7. Pañcat. 1,1,34. 2,3. mit inf. Mārk. P. 96,7. ममाभिवाञ्छितं सोतत् Kathās. 71,117. °सँसिद्धि 16,2. °सँप्राप्ति 25,72. यभिवाञ्छितानि Vaitān. Bṛh. S. 72,6. Vgl. यभिवाञ्छा. — caus. यभिवाञ्छयामि = यभिवाञ्छामि MBh. 12,2907.

— समभि *begehren* —, *verlangen nach* Vaitān. Bṛh. 27 (25), 7.

— सम् dass.: समवाञ्छन्नयाशिषः Bhaṭṭ. 17,53.

— यभिसम् dass.: यभि तेनं सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति Kenop. 31.

वाञ्छा (von वाञ्छ्) f. 1) *Verlangen, Wunsch* AK. 1, 1, 3, 27. H. 430. Hall. 4,25. Tattvas. 30. वाञ्छामपच्छम् Rāja-Tar. 3,268. °मात्रे ऽपि दर्शिते 4,233. ततो वाञ्छा प्रवर्तते, यतो वाञ्छा निवर्तते Spr. 2387. वाञ्छा निवर्तते नार्थैः 2772. यदि तेषु तवास्ति वाञ्छा 1016. 2773. Kathās. 36,297. पश्यास्ति वाञ्छा मच्छिष्यतो प्रति। वत्पुत्र्याः 11,27. वार्यमाणस्य वाञ्छा हि विषयेष्वभिवर्धते 31,91. ततो ऽस्य पृथ्वीराज्ये च वाञ्छा — उदपद्यत 18,178. राज्यस्य वाञ्छां कुरुते Mārk. P. 37,39. Vet. in LA. (III) 16,21. सर्ववाञ्छाप्रदात्री सर्वयोषितम् Verz. d. Oxf. H. 23,*b*, N. 3. °सिद्धि Rāja-Tar. 3,344. Verz. d. Oxf. H. 90,*a*, 12. °विच्छेदन Spr. 2772. स्व° Weber, Rimat. Up. 292. व्ययमानः स्ववाञ्छया Spr. 787. सुवर्णाश्च° Kathās. 23, 226. कृदि प्रविश्या तत्प्रत्यागमवाञ्छया 18, 230. 21, 89. 29, 116. Pañcat. 93,4. 193,16 (°वाञ्छया gedr.). am Ende eines adj. comp. (f. या) Çiç. 10, 69. Rāja-Tar. 2, 103. — 2) *das Statuiren, Annehmen:* उभयवाञ्छायाम् Sarvadarçanas. 41,13.

वाञ्छित 1) adj. *erwünscht*, n. *Wunsch* s. u. वाञ्छ्. — 2) m. Bez. *eines best. Tactes;* s. u. प्रतिताल 1).

वाञ्छिनी (von वाञ्छ्) f. *ein begehrliches, ausschweifendes Frauenzimmer* Taik. 2,6,5.

वाट् indecl. v. l. im gaṇa चादि zu P. 1,4,57. Opferruf, wohl auf die Wurzel वह् zurückgehend im Sinne von *nimm* oder *bringe;* vgl. 2. वट्, वषट्, यग्ने वाट्त्वाहा वाळिति Ait. Br. 3,22. VS. 2,18. 20. 18,38. 38, 6. Çat. Br. 1,8,3,25. 9,2,20. वाट्कार Kāty. Çr. 18,3,16.

1. वाट (von वट) adj. *aus der Ficus indica gemacht:* दण्ड M. 2,46.

2. वाट m. f. (वाटी) und n. AK. 3,6,3,42. 1) m. *a) Einzäunung, ein eingehegter Platz* Taik. 2,2,10. 3,3,272. H. 982. an. 2,98. Med. t. 27. Hall. 2,135. यस्ति वाटपरिक्षेपे वर्तते ग्रामः। तत्यया। ग्रामं प्रविष्ट इति Pat. in Mahābh. 321. 409. निवद्धवाटस्य शालेरिव Kathās. 34, 208. 62, 218. कण्टकी° Hariv. 3393. इक्षु° Vaitān. Bṛh. S. 19,6. ऋषि° R. 1,50, 4. 65,38. 7,93,3. 5. Kathās. 112,183. Bhoj. P. 10,11,13. समाज° MBh. 1,6960. Hariv. 4538. चमू° 8684. मञ्च° 4528. 4533. श्मशान° Mālatīm. 77, 7. क्रतुमेध° Bhoj. P. 8,18,23. वेश° Daçak. 80,16. प्राच्य°, प्रतीच्य° so v. a. *Bezirk* 138,13. fg. — *b) Weg* Taik. 2, 1, 19. 3, 3, 102. H. an. Med. — *c)* = वास्तु Taik. 3,3, 102. — 2) f. ई *ein eingehegter Platz, Garten* H. 1113. H. an. Vjutp. 132. Sin. D. 117. Bhoj. P. 1,6,11. Verz. d. Oxf. H. 17,*b*, No. 63, Çl. 5. Daçak. 108,12. प्रगाल° Hariv. 7964. — *b)* = कुटी Med. = कटी H. an. शून्य° *eine leere, verlassene Hütte* oder *ein verwilderter Garten* H. an. 2,96. — *c)* = वास्तु H. an. Med. — 3) n. = वरण, यङ्ग und यन्नभेद H. an. — Vgl. घतवाट, घनल°, इन्द्रवाटतीर्थ, काष्ठ°, गो°, चक्र°, पाण्ड्य°, पद्म°, रङ्ग°, इक्षुवाटी, कर्म°, गृह°, पुष्प°.

वाटक 1) m. *ein eingehegter Platz, Garten:* शाक° Kathās. 20,142. 161. चण्डाल° 112,65. 80. — 2) f. वाटिका *a)* dass. Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, 37. fg. 40. 44. Kālakānda 1,147. जीर्ण° Kull. zu M. 9, 265. वृत्त° Mṛicch. 46, 19. Çiç. 8,21. यशोक° R. 5,16,5. शाक° Kathās. 72,206. — *b)* = कुटी ÇKDr. angeblich nach Med. शून्य° *eine verlassene Hütte* oder *ein verwilderter Garten* Med. t. 24. — *c)* = वास्तु ÇKDr. angeblich nach Med., Wilson nach Çabdar. — *d)* = वाट्यालक Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. यम्रवाटिका, इक्षु°, गृह°, गृहवृत, पुष्प°, फल्गु°, भूतौर°, मुख° und यश्ववाटिक.

वाटधान m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,334 (VP. 189). 2405 (वार्धान ed. Calc.). 7,398. 8,3650. Vaitān. Bṛh. S. 14,26. 16,22. Mārk. P. 57,38. 58,44. als Brahmanen bezeichnet MBh. 2, 1190. 1749. 1826. m. sg. *ein Fürst der* Vāṭ. 1,2699. 5,86. n. sg. Bez. des Landes 600. Nach M. 10,21 stammt der वाटधान von ausgestossenen Brahmanen.

वाटीकार s. वाटीकार.

वाटमूल (von वट + मूल) adj. *an den Wurzeln der Ficus indica sich aufhaltend* Hariv. 7988; vgl. 7965.

वाटर n. wohl *eine Art Honig* (von der वटर genannten *Biene* herkommend) P. 4,3,119.

वाटयुङ्गा f. *Hecke, Einfriedigung* Hit. 174.

वैटाकवि m. patron. von वटाकु gaṇa वाकादि zu P. 4,1,96.

वाटीदीर्घ m. *eine Art Rohr* (इक्कट) Ratnam. im ÇKDr.

वाटीष s. ब्रह्म°, शृगाल°.

वाटु m. N. pr. eines Mannes Ksuriç. 5, 3.

वाटूक n. *geröstete Gerste* Çabdak. im ÇKDr. — Vgl. 3. वाट्य.

वाटूच m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7, 1303. 1310.

1. वाट्य (von वट) adj. *aus der Ficus indica gemacht* Suça. 1, 235, 20.

2. वार्ट्य (von 2. वाट, वाटी) und वाट्य adj. *erzogen, cultivirt:* घोषयघोषा वाट्याः पर्वतीया उत AV. 19, 44, 6. Nir. 2, 1. nach Durga zu d. St. von 1. भट्.

3. वाट्य 1) *geröstete Gerste* (vgl. वाटूक): °मण्ड (fälschlich वाग्य° geschrieben) *Gerstenschleim* Mad. in Nigh. Pr. Çabda. Sabd. 2, 2, 113; vgl. u. मण्ड 1) a). — 2) f. या = वाट्यालक Ratnam. im ÇKDr.

वाट्यपुष्पी f. *Sida rhomboidea* oder *cordifolia* Ratnam. 167.

वाट्याल m. und वाट्याली f. dass. Çabdar. im ÇKDr. वाट्यालक m. dass. AK. 2, 4, 3, 25. Taik. 3, 3, 402. Ratnam. 167.

वाडभीकार् (von वडभीकार्) m. patron. N. pr. eines Grammatikers TS. Pair. in Ind. St. 4, 245. 250. वाल्भी° 78; vgl. Whitney zu AV. Pair. 2, 6.

वाडभीकार्ण m. patron. von वडभीकार् gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151.

वाडव (von वडवा) 1) adj. von *der Stute kommend:* दधि Suça. 1, 177, 17. — 2) m. a) *Beschäler* P. 6, 2, 65, Schol. — b) *das am Südpol gedachte Höllenfeuer, welches kein Wasser des Meeres zu löschen vermag,* AK. 1, 1, 1, 52. Taik. 3, 3, 422. H. 1100. an. 3, 712. Med. v. 50. fg. Halâj. 1, 70. Spr. 794. 3214. Mârk. P. 99, 64. — c) *ein Brahmane* AK. 2, 7, 3. Taik. H. 812. H. an. Med. Halâj. 2, 236. P. 4, 2, 42. gaṇa ब्राह्मणादि zu 5, 1, 124. Spr. 832, v. l. (1, 324). Vaǵras. 258. Çaunaka in Alaṅk. K. 116, b, 5. — d) metron. (oxyt.) Kâr. zu P. 4, 1, 130. N. pr. eines Grammatikers Pat. zu P. 8, 2, 106. — 3) n. a) *Stuterei* (proparox.) gaṇa खण्डिकादि zu P. 4, 2, 45. AK. 2, 8, 2, 14. Taik. H. an. Med. — b) Bez. eines Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912. — c) *eine Art coitus* H. an. Med. — 4) m. n. *Unterwelt, Hölle* Taik. H. an. (m.) und Med.

वाडवकर्ण N. pr. eines Gràma im Nordlande; davon adj. °कर्णि P. 4, 2, 104, Vârtt. 9, Schol.

वाडवकृष्ण n. angeblich *das einem Beschäler gereichte Futter* P. 6, 2, 65, Schol.

वाडवकृष्णक m. *Haifisch* oder *ein anderes grosses Seeraubthier* Taik. 1, 2, 22.

वाडवकार्ष्य n. Sidd. K. zu P. 6, 2, 65.

वाडवाग्नि m. = वडवाग्नि *das am Südpol gedachte höllische Feuer* Spr. (II) 130. 203. Çiç. 11, 15. Paṇḍar. 1, 14, 100. Nigh. 65, 19.

वाडवानल m. dass. AK. 1, 1, 8, 52. Paṇḍar. 1, 14, 42. — Vgl. वडवानल.

वाडवेर्य m. (von वडवा) m. *Beschäler* gaṇa नडादि zu P. 4, 2, 37. Kâr. zu P. 4, 1, 120. H. 1257. Halâj. 2, 108.

वाडव्य (von वाडव) n. 1) *eine Gesellschaft von Brahmanen* P. 4, 2, 42. AK. 3, 3, 41. H. 1419. — 2) *der Beruf —, der Stand eines Brahmanen* gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5, 1, 124.

वाडव्यपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14, 9, 4, 30.

वाडुलि m. N. pr. eines Mannes oder *ein Bewohner von* Vaḍantsa (vgl. वैडोसक) Râga-Tar. 8, 1303.

वाडुलि m. angeblich patron. von वाग्वाद् P. 6, 3, 109, Vârtt. 2.

1. वार्ण m. = वाण *Röhre* so v. a. *Zitze* (vgl. वाण 6): दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम् *Einfältige und Kluge melken das Euter aus* RV. 4, 24, 9.

2. वार्ण m. 1) *Instrumentalmusik,* = वाद् Naigh. 1, 11. धर्मसो वाणं मरुतः RV. 1, 85, 10. दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् 9, 97, 8. वाणस्य सप्तधातुरित्सनः so v. a. *die sieben* वाणी 10, 32, 4. गार्भिर्वाणो घृयते सोभरीणाम् *die Opfermusik der Sobh. ist mit Milchtränken* (oder *Fleischspeisen*) *ausgestattet,* dadurch noch anziehender gemacht 8, 20, 8. को वाणं को नृतो दधौ *wer hat in den Menschen Musik und Tanz gelegt?* AV. 19, 2, 17. — 2) *eine Harfe mit hundert Saiten:* शतवत्तु TS. 7, 5, 9, 2. Kâṭh. 34, 5. Paṇḍav. Br. 5, 6, 12. 14, 7, 8. Kâtj. Ça. 13, 2, 20. Lâṭj. 3, 12, 15. 4, 1, 3. 6. 10. in वाणशब्दे M. 4, 113 wird das Wort sowohl als *Pfeil* als auch als *Laute* gedeutet.

वाणकि m. N. pr. eines Mannes; pl. Saṅsk. K. 134, a, 7.

वाणदण्ड bei Wilson und im ÇKDr. fehlerhaft für वानदण्ड.

वाणप्रस्थ AK. ed. Colebr. 2, 7, 3. Mânk. P. 119, 17. 133, 8. 11. Paṇḍar. 1, 10, 80 fehlerhaft für वान°.

वाणारसी f. Verz. d. Oxf. H. 135, a, N. fehlerhaft für वाराणसी oder वाणारसी.

वाणाशाल (वाण°) N. pr. einer Feste Râga-Tar. 8, 1668.

वाणारसी f. Çata. 14, 2 = वाराणसी; vgl. Weber, Bhagavati 222.

वाणि f. 1) *das Weben* AK. 2, 10, 29. H. 913. an. 2, 153. *fg.* man könnte वानि (von 5. वा) vermuthen; vgl. 1. वाणी. — 2) = 3. वाणी *Stimme, Rede* H. an. Lex. zu AK. 1, 1, 5, 1. — 3) *Woche* H. an. — 4) *Preis, Werth* (मूल्य) H. an.; vgl. वस्ना. — Vgl. अवर्वाणि, पर्°, प्रति°.

वाणिकाव्य v. l. für वालिकाव्य im gaṇa भौरिक्यादि zu P. 4, 2, 54.

वाणिज् m. 1) = वणिज् *Handelsmann* gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5, 4, 38. AK. 2, 9, 78. H. 867. VS. 30, 17. TBr. 3, 4, 1, 14. MBu. 12, 9340. 9397. im comp. mit dem Orte wohin oder mit der Waare, mit der man handelt (das vorangehende Wort behält seinen ursprünglichen Ton) P. 6, 2, 13. मद्र°, काश्मीर°, गो°, सस्य° Schol. Vgl. प्रेदिवाणिजा. — 2) *das am Südpol gedachte Höllenfeuer* Taik. 1, 1, 68.

वाणिजक m. 1) = वाणिज 1) Taik. 3, 3, 42. Med. ġ. 26. k. 203. MBu. 14, 4233 (= M. 3, 151, wo die v. l. gleichfalls वाणिजक hat). 6028. Harîv. 11148. R. Gorr. 2, 90, 26. Vasiṅ. Bpr. S. 31, 4. वाणिजकविध = वाणिजकानां विषयो देशः gaṇa भौरिक्यादि zu P. 4, 2, 54. धर्म° *mit seinen Tugenden Handel treibend* so v. a. *die Tugend des Vortheils wegen ausübend* MBu. 13, 7595; vgl. धर्मवाणिजिक und धर्मधन. — 2) = वाणिज 2) Med. k. 203.

वाणिजिक m. *Handelsmann* Colebr. und Lois. zu AK. 2, 9, 78. M. 3, 151 (वाणिजक v. l.). 8, 102. — Vgl. धर्मवाणिजिक.

वाणिज्य n. = वणिज्य *Handel, Handelsgeschäfte* Sidd. K. zu P. 5, 1, 126. AK. 2, 9, 2. 80. H. 864. 867. Halâj. 4, 76. M. 4, 6. 8, 410. 11, 62. Bhag. 18, 44. R. 7, 70, 11. Spr. 1960. 2085. Kathâs. 6, 33. 10, 107. 43, 70. Daç. P. 7, 11, 20. Mârk. P. 51, 54. Daçâvat. 76, 19. Paṇḍat. 7, 10. Hit. 46, 14. Vet. in LA. (III) 18, 22. वाणिज्या f. Kathâs. 43, 77.

वाणिज्यक in धर्म° = धर्मवाणिजक (s. u. वाणिजक 1) MBu. 3, 1164.

वाणिनी (wohl von 3. वाणी) f. 1) *Tänzerin* AK. 3, 4, 18, 114. H. an. 3, 413. Med. n. 96. Hân. 251. *ein ausgelassenes* oder *herumschies Weib*

AK. H. 510. H. an. Med. Hin. Hall. 2, 334. *ein verschlagenes Weib* Trik. 3,3,248. H. H. an. Med. Hin. Hall. in der Bed. *ein berauschtes Weib* Rāgān. 6,75. — 2) Bez. zweier Metra: *a) 5 Mal* ⏑⏑–⏑–⏑–⏑–⏑⏑ –⏑–⏑–⏑– – Ind. St. 8, 397. — *b) 6 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑–⏑⏑–⏑–⏑ –– Colebr. Misc. Ess. II, 162 (XI, 2). Ind. St. 8, 393.

वाणिता f. = वाणिनी 2. *a*) Ind. St. 8, 393.

वाणिभूषण s. वाणीभूषण.

1. वाणी f. *das Weben* Trik. 3,3,134. Med. g. 22. fg. — Vgl. वाणि.

2. वाणी f. = वाण *Rohr:* दृळ्हा चित्स प्र भेदति गुहा वाणीरिव त्रितः ṚV. 5,86,1. *Stäbe am Wagen* 1,119,5.

3. वाणी f. 1) *Musik*, pl. *ein Chor Spielender* (oder *Singender*), *concentus;* = वाच् Naigh. 1, 11. इन्द्रनिद्राधिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणीरनूषत ṚV. 1,7,1. 8,9,19. 12,22. 9,104,4. उक्थैः, वाणीभिः 8,9,9. नक्षद्दाणो मुष्टुता वाम् 6,63,6. प्राचन्वाणीः पुरुकृतं धमन्ती: 2,30, 10. मरुद्वती 7,31,8. 12. 2,11,8. 8,82,4. अभि वृषणमाकूपाणमवावशन्त वाणीः 90,2. वाघतः 1,88,6. 10,123,3. *sieben musikalische Stimmen, Instrumente* u. s. w. von den Comm. auf *sieben Metra, die Töne der Scala* u. s. w. gedeutet 1,164,24. 3,1,6. 7,1. 8,103,3. Vilakh. 11,3. — 2) *Stimme* überh.; *Rede, Worte* AK. 1, 1, 8, 1. Trik. 3, 3, 134. H. 241. Med. g. 22. fg. Hall. 1,8. निरभिन्यतास्य प्रथमं मुखं वाणी ततो ऽभवत् Bhāg. P. 3,26,34. बहूया 7,4,24. यशरीरा Kathās. 30,32. 36,29. यकाशगता 18,180. 182. Dhūrtas. 92,3. Pañcat. 186,17. मृगपक्षिणाम् R. 2, 71,24. मयूरस्य AK. 2,5,31. Hall. 2,87. यमृतवाणी adj. f. Çaut. 8. वीणावाणी adj. f. 15. पुंस्कोकिलसम° adj. f. Varāh. Bṛh. S. 105,11. *Sprache* H. 39. प्रवर्तते ऽन्यया वाणी शाठ्योपहतचेतसः *Rede* Spr. 367 (II). वाणयेका समलंकरोति पुरुषम् 735. नवनीतसमा वाणी कृता 1454. इक्षुरसोपमाम् 1622. मधुरा 2209. प्रवृत्तेव प्रयामीति वाणी वल्लभ ते मुखात् 4390. सत्यपूतां वदेद्वाणीम् Mārk. P. 41,4. LA. (III) 89,4. तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्या Varāh. Bṛh. S. 21,3. *beredte Worte, schöne Diction:* कवेः Uttarār. 132,8 (177,7). Kathās. 51,227. *die Göttin der Rede,* Sarasvatī R. 7, 10,42. Weber, Rāmāy. Up. 321. 361. Brahmavaiv. P. 2,78. Vop. S. 176. — 3) Bez. zweier Metra: *a) a. c. d:* ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑⏑–, *b:* ––⏑––– u. s. w. Hall in Journ. of the Am. Or. S. 6,514. — *b) ein aus lauter Längen bestehendes Metrum* Comm. zu Kiviān. 3, 86. — Vgl. माहेन्द्र°.

वाणीची f. vielleicht *ein best. musikalisches Instrument,* = वाच् Naigh. 1, 11. मुष्टुती वो वृषणवसू रथे वाणीच्यार्हेना ṚV. 8,75,4. = वाग्यूपा स्तुतिः Sāj.

वाणीभूषण n. Titel eines Werkes des Dāmodara über Prosodie Verz. d. B. H. No. 816. वाणिभूषण Colebr. Misc. Ess. II, 64. Mack. Coll. I, 103.

वाणीवत् (von 3. वाणी) adj. *redereich, wortreich* Pañcar. 2, 3, 92.

वाणीवाद् m. *ein best. Vogel* oder adj. *beredt, geschwätzig* als Beiw. von Papageien (वाणीवादाठकुकाधीव ed. Bomb.) MBh. 13, 2835.

वाणीविलास m. Titel einer Schrift Verz. d. Tüb. H. 13.

वाणेय m. *ein Trabant des* Bāṇa Harṣ. 11017 (S. 791).

वात् indecl. gaṇa वादि zu P. 1,4,57.

1. वात (von 2. वा) Uṇādis. 3,86. m. Trik. 2,3,3. 1) *Wind* Naigh. 5, 4. Nir. 10,34. AK. 1,1,2,38. Trik. 1,1,75. H. 1106. Hall. 1,75. ṚV. 1,28,6. 2,1,6. अयं चिहातो रमते परिज्मन् 38,3. 3,14,3. वातो न जूतः 4,17,12. 22,4. वातस्य पत्मन् 5,5,7. वातान्त्समीन्धुर्गणशो मरुद्भिः 58,7. प्र वाता वान्ति 83,4. 10,137,2. VS. 6,10. 9,7. न भूमिं वातो धूनोति वाति AV. 4, 5,2. 5,5,7. 12,1,51. fünf *Winde* TS. 1,6,4,2. Kāṭh. 32,6. वाते वाति Çat. Br. 11,3,6,9. शीत Çāṅkh. Çr. 16,4,2. वातं प्राणमन्वमनुव्रतात् Ait. Br. 2,6. Çat. Br. 3,4,2,7. 7,4,9. 14,6,2,13. यो वै प्राणः स वातः 5,2, 4,9. TS. 5,6,4,2. 4,2,5. प्रति वातम् M. 4,32. 9,34. मधूमाः सार्चियो वाता निष्पेतुरमकान्मुखात् MBh. 1,1127. R. 2,28,18. °वेग 60,16. 63,16. यमस्य ṚT. 1,10. Rāgān. 1,28. घाई° Çiç. 69. Spr. 2774. fgg. °व्यायतपातिनश्च तुरगाः 5155. Varāh. Bṛh. S. 9,38. 19,7. घनिचण्ड 32,24. Kathās. 18,121. वातस्य मण्डली Hall. 1,77. पत्त° M. 3,241. मलय° von *dorther blasend* Vikr. 23. निप्रा° Megh. 32. तुषाराद्रि° 106. तरंग° Vikr. 67,3. घति° Gaun. 3,3,22. वातेनोदरं पूरयित्वा *Wind* so v. a. *Luft* Hit. 23,7. — 2) *Wind* so v. a. *Furz:* सदा वातं च वाचं च क्षीवनं चाधरेच्छनैः MBh. 4,117. वातं (वातं ed. Bomb.) निष्क्षीवनं चैव कुर्वते चास्य संनिधौ 12, 2038. — 3) *Wind* oder *Luft als einer der humores des Leibes* (nach Belieben wechselnd mit वायु, मारुत, पवन, घनिल, समीरण) und *eine zu diesem humor in Beziehung stehende Krankheitserscheinung* Suçr. 1,4, 8. 58,14. 77,2. 2,33,3. 19. 37,12. °कफातिरिक्ता Varāh. Bṛh. S. 78,17. बद्धवातकफ Bṛh. 2,8. Spr. 775. वातेन नुन्नितः (vgl. वातक्षोभ) Kathās. 94,103. वातयक्ष्वादीनां शमनम् Pañcar. 4,1,42. — 4) *der Gott des Windes:* यस्य वातस्याश्वा ṚV. 1,174,8. 5,31,10. 41,4. 8,1,11. 10,22,4. 64,3. 168,1. 186,1. VS. 2,21. Çat. Br. 1,3,4,22. M. 11,119. MBh. 1, 5903. 3,11914. वाताः (= मरुतः) पञ्चाशदूनकाः Verz. d. Oxf. H. 190,*a*, 26. — 5) wohl N. pr. eines Volkes in वातपति und वाताधिप. — Vgl. 1. घ°, घनु° (घनुवातम् *vor dem Winde:* क्षेत्रस्य Âçv. Gṛhy. 2,10,4. पशुमवस्थाप्य Pār. Gṛhy. 3,15), याम°, दुर्वात, 1. नि°, पञ्चाहात, पुरो°, पूति°, प्रति° fg., बृहद्वात, महा° (auch R. 2,30,13), रुक्ष°, सूति°.

2. वात s. u. 4. वा.

वातक (von 1. वात) m. *eine best. Pflanze,* = घशनपर्णी AK. 2,4,8,15.

वातकण्टक m. Bez. *eines gewissen Schmerzes im Fussknöchel* Wise 255. Suçr. 1,82,11. 256,17. 360,9. Çārṅg. Saṃh. 1,7,70.

वातकर्मन् n. *das Farzen, Furz:* °कर्म प्रमुञ्चति Varāha-P. im ÇKDr.

वातकलाकल etwa *Knurren im Leibe;* davon वातकलाकलीय adj. *darüber handelnd* Verz. d. Cambr. H. 23.

वातकि m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

वातकिन् adj. *an der Windkrankheit* (s. वातव्याधि) *leidend* P. 5,2, 129. Vop. 7,22. fg. AK. 2,6,2,10. H. 460. Hall. 2,451.

वातकुण्डलिका f. *eine schmerzhafte Urinverhaltung, welche so dargestellt wird, als ob die Luft* (वात) *den Urin nicht aus der Blase lasse, sondern im Kreise drehe,* Wise 364. Verz. d. Oxf. H. 313,*b*, 18. fg. Çārṅg. Saṃh. 1,7,40. Suçr. 1,87,3. 2,523,11. 18. °कुण्डली 225,3.

वातकुम्भ m. *die Gegend unterhalb der beiden Erhöhungen auf der Stirn des Elephanten* (कुम्भौ) H. 1227.

वातकेतु m. *das Banner des Windes* so v. a. *Staub* Trik. 2,8,37.

वातकेलि m. 1) *leises Gemurmel* (कलालाप) H. an. 4,298. Med. l. 163. — 2) = पिङ्गानां दत्तलेखनम् H. an. = पिङ्गदत्तत Med.

वातकोपन adj. *den Wind* (als humor) *aufregend* Suçr. 1,214,3.

वातकर्ण m. patron. von वातकि gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

वातलेप m. *Aufregung des Windes (im Körper)* Kathās. 120,69; vgl. वातेन नुभित: 94,103.

वातलुडा f. = वात्या, पिच्छिलास्फोट, वामा und वातशोणित H. an. 4, 72. — Vgl. वातकुडा.

वातगणडा f. N. *einer best. Gesellschaft:* वातगणडाध्यया पर्षदा Rāśā-Tar. 7,995. adj. *zu dieser Gesellschaft gehörig* 1179.

वातगामिन् 1) *schnell wie der Wind gehend.* — 2) m. *Vogel* Çabdaratn. bei Wilson.

वातगुल्म m. 1) *Sturmwind* Trik. 1,1,77. — 2) *eine best. Krankheit* Mārk. P. 39,55.

वातगोप adj. *den Wind zum Hüter habend* AV. 2,12,1.

वातघ्न adj. 1) *dem Winde (als Humor) entgegenwirkend* Suçr. 1,153, 2. 2,108,13. 385,8. तैल P. 3,2,53, Schol. Kāśikā 2,126. — 2) m. N. pr. eines der Söhne des Viçvāmitra MBh. 13,353. — 3) f. ई a) Bez. verschiedener Pflanzen: = शालपर्णी, अश्वगन्धा und शिमूडीलता Rāśān. im ÇKDa. = बला Aṣṭāṅg. 33. — b) N. einer Schutzgottheit der Kinder Weber, Ind. Stud. 250.

वातचक्र n. *Windrose* Varāh. Bṛh. S. S. 7, Z. 2. Unterschr. in Adhj. 27. Verz. d. Cambr. H. 34. 36.

वातचोदित adj. *vom Winde geschenckt* ṚV. 1,58,5. 141,7.

वातज adj. *vom Winde (als Humor) veranlasst* Suçr. 2,303,3. Çiṅs. Saṃh. 1,7,70.

वातजव m. N. pr. eines Dämons Lalit. ed. Calc. 394,11.

वातजा adj. *aus dem Winde entsprungen* AV. 1,12,3.

वातजाम m. pl. N. pr. eines Volkes: °ग्रयोगा: MBh. 6,362; vgl. VP. (II) 2,173.

वातजित् adj. so v. a. वातघ्न Suçr. 1,214,13.

वातजूत adj. *windgetrieben, windschnell* ṚV. 1,38,4. 63,3. 140,4. 4, 33,1. 6,6,3. 8,43,4. 10,170,1. AV. 4,15,1.

वातजूति m. N. pr. eines Ṛshi; s. u. वातरशन.

वातज्वर m. *ein durch den Wind (als Humor) veranlasstes Fieber* Verz. d. Oxf. H. 318,b,5 v. u. Verz. d. B. H. No. 949.

वातण्ड m. patron. von वतण्ड gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. Schol. zu 108. f. वातण्डी 109, Schol.

वातण्डय m. patron. von वतण्ड P. 4,1,108. gaṇa गर्गादि zu 105.

वातण्डायनी f. zu वातण्डय gaṇa लोहितादि zu P. 4,1,18. Schol. zu 109.

वाततूल n. *in der Luft umherfliegende Flocken* Hit. 23.

वातत्राण n. *ein Schutz vor Wind* P. 6,2,6.

वातत्विष् adj. *im Winde stürmend* · die Marut ṚV. 5,54,3. 57,4.

वातथुटा bei Wilson fehlerhaft für वातकुडा.

वातधूत m. *das Banner des Windes* d. i. *Wolke* Çabdam. im ÇKDa.

वातनामन् m. Bez. *bestimmter Anrufungen des Windes, mit Libationen verbunden,* Comm. zu TS. II, 504,1. 513,14. TS. 2,4,9,1. 5,4,9,4. Kāṭh. 11,10. Çat. Br. 14,2,2,1. Kāty. Çr. 26,6,1.

वातनाशन adj. = वातघ्न Suçr. 2,53,7.

वातनिधम adj. *Wind blasend* Vop. 26,35.

वातपट m. *Segel:* प्रवहणो चलवातपटध्वजे Kathās. 101,174. — Vgl. मरुत्पट.

वातपति m. *Herr der* Vāta, N. pr. eines Sohnes der Sattrājit Hariv. 2077. MBh. 1,7000. — Vgl. वाताधिप.

वातपत्नी f. *Winds-Gattin:* दिश: AV. 2,10,4.

वातपर्याय m. *eine best. entzündliche Augenkrankheit* Suçr. 2,314,16.

वातपान n. *Windschirm,* vielleicht Bez. *eines Theiles des Gewandes* TS. 6,1,4,3.

वातपालित m. Bein. Gopālita's Uṇād. zu Uṇādis. 4,1.

वातपित्तज adj. *auf dem Winde (als Humor) und der Galle beruhend:* विकार Çiṅs. Saṃh. 1,7,19.

वातपित्तज्वर m. *ein vom Winde (als Humor) und von der Galle herrührend:* मातुनुङ्क्ष्व निर्यासं गुडाज्येन समन्वितम् । वातपित्तज्वरूलानि कृत्ति वै पानयोगत: ॥ Gāruḍa-P. 188 im ÇKDa.

वातपित्तज्वर m. *ein vom Winde (als Humor) und von der Galle herrührendes Fieber* Verz. d. Oxf. H. 318,b,4 v. u.

वातपुत्र m. *ein Sohn des Windes:* 1) *Schwindler,* = मरुद्भूत Mān. r. 296. = विट, घर Hit. 139. — 2) Bein. a) Bhīmasena's. — b) Hanumant's Mān.

वातपू adj. etwa *windlauter* AV. 12,3,37.

वातपोथ m. *Butea frondosa* AK. 2,4,2,10.

वातप्रमी (वातप्रमी Uṇādis. 4,1). Declin. Vop. 3,56. fg. Uṇādis. 4,1. 1) adj. *den Wind hinter sich lassend* ṚV. 4,38,7. — 2) m. a) *eine Antilopenart* AK. 2,5,7. H. 1295. Hall. 2,75. — b) *Pferd.* — c) *Ichneumon* Uṇādis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

वातपुलाक n. *Lunge* (फुप्फुस) Buḍḍhiv. im ÇKDa. *cholic, flatulence, borborygmi* Wilson nach ders. Aut.

वातबलास m. *eine best. Krankheit* Verz. d. Oxf. H. 306,b,18.

वातबहुल adj. *blähend:* धान्यानि Varāh. Bṛh. S. 15,13.

वातभक्षस् adj. von unbekannter Bed. in der Stelle: वातंधसा (vielleicht वाताधसा zu lesen) स्तनयंतेति वृद्धा AV. 1,12,1.

वातभत्र (वातम् + भत्र) adj. *den Wind treibend, windschnell* P. 3,2, 28, Vārtt. Vop. 26,30 (नामि d. i. संज्ञायाम्). मृगा: P., Schol. कदम्बकं वातभत्रं मृगाणाम् Bhaṭṭ. 2,17. m. *Gazelle* Gaṇād. im ÇKDa.

वातमण्डली f. *Wirbelwind* Trik. 1,1,80; vgl. वातस्य मण्डली Hall. 1,77.

वातमायस्, nom. °यास्, वातम् घायो: Padap., scheint eine Entstellung zu sein AV. 13,2,42.

वातमृग m. *eine Antilopenart* AK. 2,5,7. H. 1295.

वातय् (von वात), °यति (सुखसेवनयो:, गतिसुखसेवनयो:) Dhātup. 33,30. *Jmd Wind zufächeln:* वातयति व्यजनेन पतिं पतिव्रता Kāç. bei West.

वातयत्रविमानक n. *ein künstlicher, vom Winde getriebener (in der Luft schwebender) Wagen* Kathās. 43,44.

वातर् (von 2. वा) m. *Wind* Bhār. im Dvijapār. nach Wilson.

वातर adj. *windy, stormy; swift (as the) wind* Wilson.

वातरंक adj. = वातरंहस् MBh. 3,13190.

वातरंहस् adj. *windschnell* Naish. 2,15. der Wagen der Açvin ṚV. 5,77,3. 8,34,17. VS. 9,6. — MBh. 1,5840. 3,1720. 2795. R. Gorr. 2, 72,28. Bhāg. P. 3,19,9.

वातरक्त n. 1) *Wind (als Humor) und Blut* Suçr. 2,37,20. — 2) *eine*

aus der Verbindung beider Elemente entspringende Krankheit, die in den Extremitäten beginnt, Gicht Suçr. 1, 253, 8. 2, 37, 13. Çiṅkṣ. Saṁh. 1, 7, 69. Verz. d. B. H. No. 967. 972. 975. 996. Verz. d. Oxf. H. 337, a, No. 849. fg. Vgl. वातशोणित.

वातरक्तघ्न adj. *die* वातरक्त *genannte Krankheit verscheuchend*; m. *eine best. Pflanze*, = कुक्कुर Çabdak. im ÇKDa.

वातरक्तारि m. *der Feind der* वातरक्त *genannten Krankheit*, Bez. *des Cocculus cordifolius DC.* Çabdak. im ÇKDa.

वातरङ्ग m. *Ficus religiosa Lin.* Çabdar. im ÇKDa.

वातरज्जु f. pl. *Fesseln der Winde:* शीर्षण्यं मरुतामिवानीं शिखण्डिणीं प्रवतनं धुवस्य प्रचलनं त्रयाणं वातरज्जूनां निमज्जनं पृथिव्याः स्थानादपसरणं मुराणाम् Maitrâjop. 1, 4. वातरज्जूनां वातमयानां रज्जूनां शिशुमारचक्रबन्धनानां त्रयाणं छेदनम् Comm.

वातरथ 1) adj. *den Wind zum Wagen habend, vom Winde getragen:* गन्ध Buic. P. 3, 29, 20. — 2) m. *Wolke* Taik. 1, 1, 32.

वातरशन (वात + रशना) adj. *windgegürtet:* मुनयः ṚV. 10, 136, 2. श्रमणः Taitt. Âr. 1, 23, 2. 24, 1. 2, 7, 1. so v. a. *nackt*, m. *ein nackt einhergehender Mönch* (= दिग्वासस्, दिगम्बर Comm.). Buic. P. 3, 13, 20. 5, 3, 20 (°रमन Burn.). 11, 2, 20. m. sg. patron. der sieben Ṛshi: Ṛshyaçṛṅga, Etaça, Karikrata, Gûti, Vâtagûti, Vipragûti und Vṛshâṇaka ṚV. Anukr.

वातरमन s. u. वातरशन.

वातरावण m. = कवच, सायक, शरसंक्रम und निष्प्रयोजननर H. an. 3, 17. = उन्मत्त, निष्प्रयोजनपुरुष, काण्ड, करपात्र, कूट und परमंक्रम Med. p. 116. = सरलद्रुम Çabdar. im ÇKDa. m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3, 275.

वातरूपा f. N. pr. einer bösen Genie, einer Tochter der Likâ, Miṅk. P. 31, 114. fg.

वातरूष m. 1) *Sturmwind.* — 2) *Regenbogen* H. an. 4, 322. — 3) = उत्कोच *Bestechung* H. an. उत्कट (उत्कोच ÇKDa. und auch wohl Wilson) Med.

वातरेचक m. 1) *Windstoss:* ईरयतः (दारयतः die neuere Ausg.) पदातेर्यैः सुघोरान्वातरेचकान् Harîv. 13770. वातरेचकान् व्यजनीकृतान्वृतादीनीरयतः (also nicht दारयतः) Nîlak. — 2) *etwa Windmacher, ein leerer Schwätzer* (Gegens. वेदविद्) MBh. 12, 9749. वातरेचको भन्त्रायरनामा वर्णकोशः वातवेटक इति गौडाः पठन्ति व्याचक्षते च वातवशात् वेटकः भाषकः वेट परिभाषणे इति धातुः Nîlak.

वातरोग m. = वातव्याधि Râǵân. im ÇKDa. Suçr. 1, 9, 13. 173, 8. 201, 17. 2, 35, 12. Çiṅkṣ. Saṁh. 1, 7, 70. Verz. d. Oxf. H. 316, a, 3 v. u. Verz. d. B. H. No. 965.

वातरोगिन् adj. *an der* वातरोग *genannten Krankheit leidend* AK. 2, 6, 2, 10. H. 460. Hall. 2, 451. Vaṁç. Bṛh. S. 87, 11.

वातर्दि *ein aus Holz und Eisen bestehendes Gefäss oder Geräthe* Taik. 2, 9, 9. wohl richtiger वातर्दि ÇKDa. und Wilson nach derselben Aut.

वातर्दि s. u. वातर्दि.

वातल (von 1. वात) 1) adj. (f. आ) = वातुल H. an. 3, 683. *windig; luftig; den Wind* (als Humor) *befördernd; zu demselben disponirt* Suçr. 1, 53, 8. 76, 9. 173, 8. 177, 17. 187, 8. 197, 17. Verz. d. Oxf. H. 306, b, 11. योनि Bez. *eines best. Defects der weiblichen Geschlechtstheile* Wise 380. Suçr. 2, 396, 19. Çiṅkṣ. Saṁh. 1, 7, 102. — 2) m. *Kichererbse* Çabdak. im ÇKDa. — Vgl. घ°.

वातलमण्डली f. = वातमण्डली *Wirbelwind* Bâdar. im ÇKDa.

वातवत m. patron. von वातवत् Pâraṁâv. Br. 25, 3, 6. वातावत Âit. Br. 5, 29. Kauṣ. Br. 2, 9. Ind. St. 4, 373. — Vgl. वाघावत.

वातवत् und वातावत् (von 1. वात) adj. *windig, luftig:* वातवती गुहा P. 5, 2, 129, Schol. वातावहयन् TS. 2, 4, 2, 1. वृतिवातवतोरयनम् N. einer Feier Pâraṁâv. Br. 25, 3, 6. Kâty. Çr. 24, 4, 16. 25. 6, 25. Lâṭy. 10, 13, 21. Âçv. Gṛhy. 12, 3, 1.

वातवर्ष m. *Regen mit Wind* Pâraṁâr. III, 150. pl. Râǵa-Tar. 5, 278. — Vgl. वातवृष्टि.

वातवस्ति m. *eine best. Art der Harnverhaltung* Suçr. 2, 524, 6. Çiṅkṣ. Saṁh. 1, 7, 10.

वातविकार m. *eine durch den Wind im Körper erzeugte Affection, rheumatische Affection:* वातविकारेण वक्रीभूतः Verz. d. Oxf. H. 153, b, 23; vgl. वातोत्थविकार Verz. d. B. H. 279 (XXI).

वातविकारिन् adj. *an Unordnung des Windes* (als Humor) *leidend* Suçr. 2, 34, 4. 44, 13.

वातवृष्टि f. *Regen mit Wind* Varâh. Bṛh. S. 24, 24. 32, 25. 34, 12. — Vgl. वातवर्ष.

वातवेग 1) adj. *windschnell.* — 2) m. N. pr. eines der Söhne *a*) des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 2727. 4519. 8, 4263. — *b*) des Garuḍa MBh. 5, 3595.

वातवेटक s. u. वातरेचक 2).

वातवैरिन् m. *ein Feind des Windes im Körper*, Bez. *des Mandelbaums* (*der Mandel*) Râǵân. im ÇKDa.

वातव्याधि m. *Windkrankheit*, so heissen *die auf Wirkung dieses Humors zurückgeführten rheumatischen und nervösen Krankheiten, Lähmungen, Krämpfe* u. s. w. Râǵân. im ÇKDa. Wise 250. achtzig werden gezählt Çiṅkṣ. Saṁh. 1, 7, 70. — Suçr. 1, 119, 12. 120, 1. 249, 8. 2, 33, 7. 44, 1. Verz. d. B. H. No. 941. 967. 972. 975. 996. Verz. d. Oxf. H. 306, b, 4. 307, a, 10. 313, a, 33. 29. 357, a, No. 849. fg. — Vgl. महा°.

वातशीर्ष n. = वस्ति Râǵân. im ÇKDa.

वातशुक्रत्व n. Bez. *einer fehlerhaften Beschaffenheit des Samens* (auch beim Weibe) Miṅk. P. 31, 113.

वातशूल m. *rheumatischer Schmerz* Suçr. 1, 156, 10.

वातशोणित n. = वातरक्त 2) Suçr. 1, 82, 11. 156, 4. 360, 9. 2, 37, 8. Verz. d. Oxf. H. 306, b, 13. 307, a, 13.

वातशोणितिन् adj. *an der* वातशोणित *genannten Krankheit leidend* Verz. d. Oxf. H. 307, a, 13. fg.

वातश्विक Kiṁ. Nitis. 16, 12 vielleicht fehlerhaft für वाताश्विक *auf windschnellen Pferden eilend.*

वातश्लेष्मज्वर m. *ein auf die Wirkung des Windes* (*im Körper*) *und des Phlegmas zurückgeführtes Fieber* Verz. d. Oxf. H. 318, b, 3 v. u.

वातसख adj. von *Wind begleitet:* क्रताश Buic. P. 6, 8, 21.

वातसक् adj. (f. आ) 1) *dem Winde Trotz bietend:* नौ MBh. 1, 3639. — 2) *an Rheumatismus u. s. w. leidend* Çabdar. im ÇKDa. AK. 3, 4,

36, 198 liest Colebr. वातसद्, Lois. वातासद्.

वातसारथि m. *der Wagenlenker des Windes*, Bez. *des Feuers* Çabdaratn. bei Wilson.

वातस्कन्ध m. 1) *Windregion*, deren sieben angenommen werden, Hariv. 8349. R. 1, 47, 4. R. Gorr. 1, 48, 4. — 2) N. pr. eines Ṛshi MBh. 2, 295. — Vgl. वायुस्कन्ध.

वैातस्वन 1) adj. *wind-sausend:* Agni ṚV. 3, 91, 5. — 2) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 57, 13.

वैातस्वनस् adj. = वातस्वन; vom श्येन ṚV. 7, 36, 3.

वातकृत adj. vom *Winde* (als *humor*) *betroffen*, insbes. *eine Krankheit des Lides* Wise 298. Suçr. 2, 305, 3. 309, 13. — Buan. Intr. 187 (?).

वातकृत् adj. = वातघ्न Suçr. 1, 187, 1.

वातकृर adj. dass. Suçr. 1, 214, 11.

वातकुण्डा f. = वात्या, रक्तशोणित (!), पिच्छिलस्फोटिका und वामा योषित् Med. d. 40. fg. — Vgl. वातखुडा.

वातकेर्म m. *Luftopfer* (mit hohler Hand geschöpft) Çat. Br. 3, 4, 2, 1. 9. Kâṭy. 21, 12. Kâṭs. Çr. 18, 6, 1.

वातागार n. Bez. *eines Hauses mit einer Doppelhalle, von denen eine gegen Süden, die andere gegen Osten steht*, Varâh. Bṛh. S. 53, 39. 41.

वातागर gaṇa उत्करादि zu P. 4, 2, 90. davon adj. वातागरीय ebend.

वातार्यम् adv. *dem Winde voran* TS. 1, 7, 3, 2.

वाताट (वात + घट) m. 1) *Sonnenross* Taik. 2, 8, 42. — 2) *eine Antilopenart* (वातमृग) Çabdar. im ÇKDr.

1. वाताण्ड (वात + षण्ड oder षाण्ड) m. *Hodengeschwulst* Mâdhavakara im ÇKDr.

2. वाताण्ड (wie oben) adj. *mit Hodengeschwulst behaftet* Vjutp. 206.

वातातपिक (von वात + घातप) adj. *bei Wind und Sonnenschein vor sich gehend* Verz. d. Oxf. H. 309, *a*, 30; vgl. कुटीप्रावेशिक.

वातात्मज m. *der Sohn des Windgottes*, Bez. *des Affen* Hanumant R. 5, 38, 40. 50, 18. 6, 4, 12. 109, 11.

वातात्मन् adj. *das Wesen der Luft habend, luftig* Manon. zu VS. 19, 49.

वाताद m. 1) (वात + घद) *ein best. Thier* Vishn. 6, 50; vgl. वाताट. — 2) = वाताम *Mandelbaum* Bhâvapr. im ÇKDr.

वाताधिप m. = वातपति MBh. 2, 1120.

वाताधान् m. *Luftloch, rundes Fenster* Bhâg. P. 10, 14, 11. — Vgl. वातायन.

वातानुलोमन adj. *den Wind* (als *humor*) *in Ordnung bringend* Suçr. 1, 167, 2.

वातानुलोमिन् adj. dass. Suçr. 1, 176, 13.

वातापर् adj. = वातघ्न Suçr. 1, 177, 3.

वैातापि (वात + षापि, Padap. ohne Trennung) Vop. 26, 48. 1) adj. *windschwellend:* Soma als *der gährende* ṚV. 1, 187, 3. fgg. Götter: वर्ुणराजभ्यो वातापिभ्यः पर्जन्यात्मभ्यः TS. 3, 5, 6, 1. Indra: मातास्त इन्द्र सेमा वातापेर्ुवनश्रुतः Cit. in TBr. II, 419, 18. Çâṅkh. Br. 27, 4. — 2) m. N. pr. eines Asura, eines Sohnes des Hrâda (Bhâg. P.), den sein Bruder Ilvala in einen Bock verwandelte, von Brahmanen verspeisen und dann wieder aus ihren Bäuchen herauskriechen liess; zur Strafe wurde er von Agastja aufgegessen. MBh. 3, 8341. fgg. 12, 8389. R. 3, 16, 13. fgg. 49, 49. fgg. Varâh. Bṛh. S. 12, Anf. VP. 148. Bhâg. P. 6, 18, 14. Hariv. 215. 2287. 14290. Kathâs. 45, 377. Agastja führt die Beinamen: °द्विष् H. 122. °सूदन Taik. 1, 1, 89.

वातापिन् m. = वातापि 2) MBh. 1, 2537.

वातापिय 1) adj. = वातापि Naish. 4, 3. वातापिय्यमुदकं भवति वात एतदाप्याययति Nir. 6, 28. Soma ṚV. 1, 121, 8. überh. *anschwellend:* रयि 9, 93, 3. मरुत्व 10, 26, 2. — 2) n. *das Anschwellen, Gähren:* दीर्घं सुतं वातापियाय ṚV. 10, 105, 1.

वाताभ्र n. *eine vom Winde getriebene Wolke* Spr. 2775.

वाताम = वदाम, वादाम *Mandel* Ratnâk. in Nigh. Pr.

वातामोदा f. *Moschus* Çabdam. im ÇKDr.

वातायृ (von 1. वात), °यते *dem Winde gleichen;* partic. वातायमान *schnell wie der Wind dahinfahrend*, von Ross und Wagen MBh. 6, 2349. 4701. 4709. 5445. 7, 1787. 4681.

वाताय n. *Blatt* Çabdâmrtak. bei Wilson.

1. वातायन (von 1. वात) m. patron. des Aṇila und Ula ṚV. Anukr. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56, 36. sg. N. pr. eines Kämmerers des Dushjanta Çik. 81, 4. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 (वनायु ed. Bomb.) = VP. 192. einer Schule Ind. St. 3, 274.

2. वातायन (1. वात + अयन) 1) adj. *im Winde sich bewegend* Nir. 1, 4. °विमान MBh. 5, 3998. — 2) m. *Pferd* (*wie der Wind sich bewegend*) Taik. 2, 8, 42. — 3) n. *Luftloch, ein rundes Fenster* AK. 2, 2, 8. Taik. 2, 2, 9. H. 1012. Halâj. 2, 149. °गतानां स्त्रीणाम् R. 2, 57, 15. R. Gorr. 2, 14, 9. स्त्रियो वातायनार्धेन विनिःसृतास्याः Mṛkkh. 158, 15. Ṛt. 5, 2. Megh. 86. Raghu. 6, 24. 56. 13, 21. Kumâras. 7, 59. Kathâs. 3, 61. 18, 13. 165. 71, 97. Uttarar. 16, 11 (22, 13). Râga-Tar. 4, 567. Pañkat. 3, 7, 7. Pañkat. 46, 11. ed. orn. 49, 21. स्वगृहोत्तुङ्गवातायनगता Kathâs. 93, 18. कर्म्ववातायनाव्रूढ 103, 162. दृष्टवान्मल्लियौ निद्राम्। वातायनायात्पृच्छन्तौ ब्राह्मणातिथिमुन्मुखम् ॥ 5, 14. 33, 64. 37, 99. 58, 58. 120. ब्राल° R. Gorr. 2, 14, 16. Çiç. 11, 50. गवात° Sadukt. P. 4, 19, *a*. °रन्ध्रम् = 7 Truṭi = 1/7 शशरन्ध्रम् Lalit. ed. Calc. 169, 1 v. u. °च्छिद्ररन्ध्रम् Vjutp. 188. वातायन *a porch, a portico, a covered shed, a pavilion* Wilson nach Dharaṇîgâsa.

वातायनीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3, 275.

वातायु (von 1. वात) m. *Antilope* AK. 2, 5, 8. H. 1293.

वातारि m. *ein Feind des Windes (im Körper)* so v. a. *ein wirksames Mittel gegen denselben;* Bez. verschiedener Pflanzen: *Ricinus communis* Çabdar. im ÇKDr. Ratnam. 3. = शतमूली Çabdar. im ÇKDr. = पुत्रदात्री, शेफालिका, यवानी, भार्गी, सुकी, विडङ्ग, शूरण, भल्लातक und शतुका Râgân. im ÇKDr.

वातालो (1. वात + षा°) f. *Wirbelwind* Taik. 1, 1, 80. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 124. किं नामोत्पातवातालो बालकेभ्यो ज्ञातु वध्यते Spr. 1592.

वातावत und वातावत्त् s. u. वातवत und वातवत्त्.

वाताश (1. वात + अश) adj. vom *Winde* (von *der Luft*) *sich nährend;* m. *Schlange* Spr. 4132. — Vgl. पवनाश.

वाताशिन् (1. वात + अा°) m. *Schlange* Spr. 934. — Vgl. पवनाशिन्.

वाताश्व m. *ein windschnelles Pferd, Renner* Taik. 2, 8, 41. Hem. 160. Kathâs. 66, 174. 67, 12. 75, 89. 103, 120. 123, 14.

वाताष्ठीला s. u. अष्ठीला.

वातासद् adj. = वातसद् AK. 3, 4, 26, 198 (bei Lois.). Çabdar. im ÇKDr.

वातास (1. वात + घस) n. = वातरक्त 2) Verz. d. B. H. 278 (Çl. 41).

वाति Uṇâdis. 3, 6. m. *die Sonne; der Mond* Rabhasa bei Uǵǵval. *Wind* (von 2. वा) Sâmaśiva bei Bhar. zu AK. 1. 1, 2, 38 nach ÇKDa. वर्षावात्युष्णातिशीतकृत (दुःख) MBh. 12, 6078 fehlerhaft für वर्षवात्यत्युष्णातिशीतकृत, wie die ed. Bomb. liest.

वातिक (von 1. वात) 1) adj. (f. ई) *vom Winde* (als *humor*) *herrührend* P. 5, 1, 38, Vârtt. 1. व्याधि Suçr. 1, 20, 20. दोष 58, 16. 192, 3. घण्टारी 263, 1. 2, 130, 16. Mit. 224, 8. कफ° *bei dem* कफ *und* वात *vorwaltend*, Vaṭiṁ. Lagucâ. 2, 14 in Ind. St. 2, 286. — 2) adj. *windige Worte redend; m. Lobhudler, Schmeichler, Lobsänger* MBh. 3, 15327. fg. सिद्धचारणवातिकै: (पन्नगै: st. वातिकै: ed. Bomb.) 7, 6132. 7138. वातिकाश्चारणा: 9, 3090. 3404. — 3) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge des Skanda: कथकवातिको MBh. 9, 2569. — 4) m. *der Vogel* Kâṭaka (nach Pandit 1, 182. fg.) Sin. D. 286, 14. 21; vgl. वातीक.

वातिकाक्षण m. N. pr. eines zum See Mânasa führenden Passes MBh. 3, 10548. वातिकायण ed. Bomb.

वातिकायण s. वातिकाक्षण.

वातिग 1) adj. subst. *Probirer, Metallurg.* — 2) m. *Solanum Melongena* Med. g. 47.

वातिगम m. *Solanum Melongena* Çabdar. im ÇKDa.

वातिङ्गण m. dass. Taik. 2, 4, 27.

वातीक m. *ein best. Vogel* Suçr. 1, 200, 20. — Vgl. वातिक 4).

वातीकार्श (von 1. वात + 1. कर्श) m. *eine best. Krankheit* AV. 9, 8, 20.

वार्तीकृत n. dass. AV. 6, 109, 3. °नाशन adj. 44, 3.

वातीय (von 1. वात) 1) adj. *den Wind im Körper beförderud, blähend.* — 2) n. *saurer Reisschleim* Çabdaç. im ÇKDa.

वातुल 1) adj. *windig* Ind. St. 2, 238. *windige Worte redend, schmeichelnd* Spr. 2257. = उन्मत्त Bhar. zu AK. nach ÇKDa. — 2) m. Bez. *bestimmter blähender Hülsenfrüchte* (राजमाषप्रभृतय: Comm.) Vaṭiṁ. Bṛh. S. 16, 24. — 3) m. *Sturmwind* Taik. 1, 1, 77. — 4) n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109, *a*, 5. 33. वातुलोत्तर n. desgl. ebend. घादिवातुलतन्त्र 97, *a*, No. 131. — Vgl. बातूल.

वातुलानक N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 4, 313.

वातुलि m. *eine Art Vampyr* Hit. 185. — Vgl. तक्तूलिका.

वातूल (von 1. वात) 1) adj. gaṇa सिध्मादि (मत्वर्थे) zu P. 5, 2, 97. Vop. 7, 32. fg. = वातं न मरुते Vârtt. 10 zu P. 5, 2, 122. = वातासक (v. l. वातसक) AK. 3, 4, 26, 198. = माहतासक Med. l. 130. = वातल und माहतकृत H. an. 3, 668. = उन्मत्त Bhar. zu AK. nach ÇKDa. *Wind machend, prahlend, grossprecherisch* Râǵa-Tar. 5, 83. 86. — 2) m. *Sturmwind* P. 5, 2, 122, Vârtt. 10. Kiç. zu P. 4, 2, 42. Vop. 7, 35. AK. H. 1421. H. an. Med.

वातेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, *b*, 38.

वातोत्थ (वात + उत्थ) adj. = वातज Suçr. 2, 396, 11. Verz. d. B. H. 279 (XXI).

वातोदरिन् (von वात + उदर) adj. *an Unterleibsanschwellung durch Wind leidend* Suçr. 2, 86, 11.

वातोना f. *eine best. Pflanze*, = गोजिह्वा Râǵân. im ÇKDa.

वातोपधूत adj. *vom Winde geschüttelt, — getrieben* RV. 10, 91, 7.

वातोर्मी f. 1) *eine vom Winde getriebene Welle* Khandom. 31. — 2) *ein best. Metrum:* 4 Mal – – – –, ⏑⏑ – – ⏑⏑ – – Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 6). Ind. St. 3, 374. 372. Khandom. 31.

1. वात्य (von 1. वात) adj. *im Winde befindlich u. s. w.* VS. 16, 39.

2. वात्य s. सवात्य.

वात्या (von 1. वात) f. *ein heftiger Wind, Sturmwind, Wirbelwind* gaṇa पाशादि zu P. 4, 2, 49. Kiç. zu P. 4, 2, 62. AK. 3, 4, 26, 196. Taik. 1, 1, 80. H. 1421. Hall. 1, 77. Ragh. 11, 16. Kir. 5, 39. Kathâs. 17, 122. 69, 129. 72, 256. Spr. 843 (II). 1094. 5320. Bhâg. P. 3, 17, 5. 5, 13, 4. 14, 9. मरुद्वात्या प्रकुप्यति Vaṭiṁ. bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3, 86. इत्युक्ति° Kathâs. 56, 304. तद्वार्ता° 67, 56. — Statt वात्याकीर्ण° R. Gorr. 2, 41, 21 ist mit der ed. Bomb. und Schl. नात्याकीर्ण° zu lesen.

वात्याय् (von वात्या), °यते *einem Sturmwinde gleichen:* वात्यायमानन्नृपश्री Kathâs. 101, 167.

वात्स (von वत्स) 1) m. patron. Verz. d. B. H. 54, 2 v. u. Vaṭiṁ. Bṛh. S. 21, 2, v. l. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 234, *a*. Pañcav. Br. 14, 6, 5. 6. Liṭ. 7, 8, 2. — वात्सी s. bes.

1. वात्सक (von वत्स) n. *Kälberschaar* P. 4, 2, 39. AK. 2, 9, 60. H. 1417.

2. वात्सक (von वत्सक) adj. *von der Wrightia antidysenterica kommend:* फल Suçr. 2, 431, 19.

3. वात्सक adj. von वात्स्य P. 6, 4, 151, Schol.

वात्सप्र (von वत्सप्री) 1) m. patron. N. pr. eines Grammatikers Taitt. Prât. 10, 23. — 2) n. *a*) sc. सूक्त *das Lied* RV. 10, 45 = VS. 12, 18. fgg. bei Verehrung des Aukhja Agni verwendet, daher auch *die Cerimonie* selbst, TBr. 3, 2, 1, 6. Çat. Br. 6, 7, 4, 1. fgg. 8, 1, 3. Kâtj. Çr. 4, 12, 1. 16, 5, 21. 17, 1, 1. — *b*) N. eines Sâman Pañcav. Br. 12, 11, 23. Liṭ. 7, 7, 23. Ind. St. 3, 234, *a*. मरुत्° *b*.

वात्सप्रीय (von वात्सप्र) adj. *das Lied des* Vatsapri, resp. *die dazu gehörige Handlung enthaltend:* यज्ञ Çat. Br. 6, 7, 4, 13; vgl. Schol. zu Kâtj. Çr. 16, 6, 5. 17, 1, 2.

वात्सबन्धि (von वत्स + बन्धु) m. wohl Bez. *gewisser Sprüche*, sieben an der Zahl TS. 6, 1, 2, 5.

वात्सल्य (von वत्सल) n. *Zärtlichkeit, das Gefühl zärtlicher Liebe* R. Gorr. 2, 17, 11. 25, 8. Viku. 147. Cit. beim Schol. zu Çiç. 51, 16. Râǵa-Tar. 5, 21. Bhâg. P. 4, 6, 35. 9, 59. 19, 39. 22, 61. 5, 7, 5. 9, 11, 5. Mârk. P. 77, 31. Wilson, Sel. Works I, 164. als रस Gaupa beim Schol. zu H. 294. Taik. 1, 1, 126. घ° Suçr. 1, 372, 10. स्वभक्तेषु Sarvadarçanâs. 55, 5. घाश्रितानाम् (obj.) Hit. 16, 12, v. l. in comp. mit dem obj.: स्त्री° MBh. 5, 1557. भ्रातृ° R. 2, 115, 5 (126, 5. 6 Gorr.). शरणागत° Kim. Nîtis. 8, 10. पति° Ragh. 15, 95. पुत्र° Kumâras. 5, 14. प्रजा° Râǵa-Tar. 3, 472. भार्या° Pañcat. 221, 1. घाश्रित° Hit. 16, 12. भृत्य° 100, 6. जन्मभूमि° *Heimathsliebe* Spr. 389.

वात्सल्यता f. dass. mit dem obj. comp.: भागवतवात्सल्यतया Bhâg. P. 5, 3, 2.

वात्सशाल (von वत्सशाला) adj. *in einem Kälberstalle geboren* P. 4, 3, 36. — Vgl. वत्सशाल.

वात्सि (von वत्स) m. patron. des Sarpi-Arr. Bâ. 6, 24.

वात्सी f. zum patron. वात्स्य Schol. zu P. 4, 1, 16. 6, 4, 150.

वात्सीपुत्र m. *der Sohn der* Vâtsî: 1) N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,31. fälschlich वत्सी° geschr. Wassiljew 34. 61. 230. Târan. 292. 298. — 2) *Barbier* Taik. 2,10,3.

वात्सीपुत्रीय m. pl. *die Schule des* Vâtsîputra Vjutp. 210. Burn. Intr. 446. 569. fg. Lot. de la b. l. 337. 489. Wassiljew 57. 230. 233. 253. 262. 269. Târan. 4. 130. 271. fgg. 292. Oefters fälschlich वत्सी° geschr.

वात्सीमाण्टवीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,30.

वात्सीय m. pl. N. einer Schule P. 4,1,89, Schol.

वात्सोद्धरण adj. aus वत्सोद्धरण *gebürtig* gaṇa तक्षशिलादि zu P. 4,3,93.

वात्स्य 1) adj. von Vatsa *Kandelnd* Çiñku. Ça. 16,11,19. — 2) m. patron. von वत्स gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Schol. zu 4,1,103. 117. 5,1,127. 3,4,66. Vop. 7,1. 3. Çat. Br. 3,5,4,62. 10,6,5,9. 14,5,4, 22. Kâty. Çr. 1,1,11. 3, 6. 5,18. 4,3,18. MBh. 1, 2049. Varâh. Bṛh. S. 21,2. VP. 277. Bhâg. P. 12,6,57. Verz. d. Oxf. H. 54,b, N. 5. 55,a, 24. Schol. zu AV. Paitr. 2,6. pl. Bez. einer Völkerschaft MBh. 7,396. — 3) n. oxyt. nom. abstr. von वत्स *Kalb* gaṇa पृष्ठ्यादि zu P. 5,1,122.

वात्स्यगुल्मक m. N. pr. einer Völkerschaft Verz. d. Oxf. H. 217,b,20.

वात्स्यायन 1) m. patron. von वात्स्य gaṇa शार्ङ्गरवादि zu P. 4,1,73. Vop. 7,1. 9. Taik. 2,7,23. H. 833. Taitt. Âr. 1,7,2. Hall 20. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 9. 11. fg. Muir, ST. III, 210 (fälschlich वात्सायन). Verz. d. B. H. No. 1403. Verz. d. Oxf. H. 13,a,14. 109,a,7. 113,b,13. 167, a,39. 178,a,35. 215,a, No. 317. 256,a, N. 3. Madhus. in Ind. St. 1,24,7. Pañkat. 45, 9 (als Verfasser des Kâmaçâstra). f. वात्स्यायनी gaṇa शार्ङ्गरवादि zu P. 4,1,73. — 2) adj. (f. ई) zu Vâtsjâjana *in Beziehung stehend* Weber, Nax. 2,392.

वात्स्यायनीय adj. von Vâtsjâjana *verfasst;* n. *ein von ihm verfasstes Werk* Nyâyas. in den Unterschrr. des Comm. Verz. d. Oxf. H. 216, b,27. 218,a,14.

वाद् (von वद्) 1) nom. ag. *ertönen lassend, spielend:* भेरीशङ्ख° MBh. 6,33; vgl. वीणा°. — 2) m. a) *Ausspruch, Aussage, Angabe, Aeusserung:* वादेषववनीयेषु M. 8,369. यवांच्यवादीश्च बहून्वदिष्यन्ति Bhag. 2, 36. वादः प्रवदतामहम् sagt Kṛshṇa 10,32. एवं वादो (der Artikel एववाद zu streichen) मनीषिणाम् MBh. 1,7365. 3281. 2,3607. पूर्व, हितीय (so v. a. पूर्वपक्ष und सिद्धान्त) 13,7200. R. 7,23,1,66. fg. महान् 7,45,11. Bhâg. P. 4,4,28. 29,39. सम्येतरवादचञ्चु Spr. 1406. Bhâg. P. 3,5,14. न यत्र वादः worüber sich *Nichts sagen lässt* 4, 9, 13. Verz. d. Oxf. H. 62, a, 21. प्रज्ञावादांश्च भाषसे Spr. 722 (II). पिशुनवादेषु 2750, v. l. मा वद कैतववादम् Gît. 8,2. ब्राह्मण° Nir. 2,16. शास्त्रवादानतिक्रम्य R. 5,85, 11. मुतिस्मृतिवादाः Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 148. 277. इतिहासवादाः Milinda. 47,1. सौम्यवेदान्तवादोक्त Mâlav. P. 23,12. काल° *Angabe der Zeit* Çiñku. Ça. 18,21,19. °मात्रम् Lâṭy. 10,3,6. 7,7. 10,2. 4. पद्यभूयसो° 4,10,15. तद्वादात्तद्वादः *weil die Aussage von jenem gilt, gilt sie auch von diesem* Kap. 3,11. तत्त्व° Bhâg. P. 5,11,3. सत्य° Daçak. 90, 1. सत्त° Prab. 88,8. उच्चैर्वाद *ein hochfahrendes Wort* Uttarar. 101,20 (136,2). *Erwähnung, Nennung, das Sprechen über:* गुण° Bhâg. P. 3,6, 37. 21,17. यशित° 4,31,28. 5,3,26. नितिप्तवाद् adj. *der das Reden über Etwas eingestellt hat, kein Wort mehr sprechend* MBh. 1,7032. पुरुषस्य Harîv. 10797. न्यस्तवाद् dass.: गवां प्रति 10967. — b) *eine aufgestellte Behauptung, eine Theorie, die man vertheidigt,* Sarva. 1,150,3. Sarvadarçanas. 9,4. 26,21. 42,16. निर्गुण° 52,13. 63,11. 117,4. 146,19. 147,11. Madhus. in Ind. St. 1,13,16. fgg. 23,13. fg. Verz. d. Oxf. H. 109, b, No. 170. Schol. zu Kap. 1,37. Kusum. 37,16. Bhâg. P. 8,22,19. — c) *eine Unterhaltung über einen wissenschaftlichen Gegenstand, Disputation, Wortstreit* Colebr. Misc. Ess. I, 293. नानुशासनवादाभ्यां भिक्षां लिप्सेत कर्हिचित् M. 6,50. विप्रं निर्जित्य वादतः Jâṭ. 3, 292. MBh. 3,10602. 10612. fg. 10638. दुर्जनैः 3,1085. मनोः प्रजापतेर्वादं मर्त्येभ्यश्च बृहस्पतेः 12, 7366. 13,4678. वादाविवदतां 14,2629. सर्ववादविशारद Harîv. 14062. न च वादस्त्वया कार्यो वादिभिः सह 14467. R. 1,13,23. 7,53,15. Spr. 2075, v. l. Kathâs. 3,22. 18,133. 66, 6. 10. 13. fg. 64. fg. 72, 67. 70. 72. 211. Râja-Tar. 1,178. Prab. 111,9. Verz. d. B. H. No. 914. Verz. d. Oxf. H. 238,b,30. Madhus. in Ind. St. 1,18,24. Sarvadarçanas. 112,11. तत्त्वनिर्णयः कथाविशेषो वादः 114,3. Nyâyas. 1,1,42. Comm. zu 41. सीमा° *Grenzstreitigkeit* M. 8,253. — d) *Verabredung:* यस्यां च निशि चौर्यस्तेयवादः Daçak. 79,16. — e) *Laut, Ruf* (eines Thieres); *Klang, Spiel* (eines musikalischen Instruments): शकुनि° Âry. Bh. 2,15. वादीये गीते शङ्खवादानुवादि Pañkat. 248,11; vgl. वीणा. — Vgl. अनार्ष्य°, अनेकान्त°, अर्थ°, आशीर्वाद, एक°, कु°, गुण°, ज्ञान° दुर्वाद, धर्म°, धातु°, नास्ति°, पत्त°, पर°, पाणि°, पाप°, पूर्व°, प्रतिकूल°, प्रामाण्य°, प्रिय° (auch R. 1, 17, 27), ब्रह्म°, भक्ति°, भावप्रत्ययवादार्थ, मङ्गल°, माया°, मिथ्या°, मुक्ति°, मृषा°, लोक°, वाकोवाक्य°, वाग्वाद, वाणी°, वाद°, वीणा°, वेद°, सत्य°, साधु°, सान्त्व°, साम°, स्वयं°, हीन°, हेतु°.

वादक (vom caus. von वद्) nom. ag. *Spieler eines musikalischen Instruments:* शताङ्गानि च तूर्याणि वादकाः समवादयन् MBh. 1,7036. 7909. 5,5304. 13,756. 1586. Varâh. Bṛh. S. 10, 3. Kathâs. 123, 134. Bhâg. P. 10,18,13. वाद्य° 33,43. — Vgl. पाणि°, प्रियवादिका.

वादकथा f. Titel einer Schrift Hall 128.

वादन (vom caus. von वद्) 1) nom. ag. = वादक R. 1,19,12. — 2) n. a) *das Werkzeug, mit dem die Saiten gestrichen werden, Plectrum:* वेतस Kâty. Çr. 13,2,21. Çiñku. Ça. 17,3,14. Lâṭy. 4,2,7. वीणादि° AK. 1,1,3,6. H. 294. — b) *das Spielen eines musikalischen Instruments, Instrumentalmusik:* गीतवादनम् *Gesang und Musik* M. 2,178. कुशला नृत्यवादने MBh. 3,14856. Kathâs. 21,5. 49,18. वादनविधौ als Erklärung von वाद्ये Utpala zu Varâh. Bṛh. 18,1. in comp. mit dem musikalischen Instrumente: भाण्ड° M. 10,49. वीणा° Jâṭ. 3, 115. Kathâs. 47, 113. 49,33. वेणु° R. Gorr. 2,96,8. Verz. d. Oxf. H. 145,a,16. मृदङ्ग° u. s. w. Schol. zu P. 4,4,55. fg. am Ende eines adj. comp. f. घा R. 2,48,29. st. उच्चण्डवादनादण्डो° Râja-Tar. 2, 99 ist vielleicht उच्चण्डवादनाद्दण्डो° zu lesen.

वादनक n. = वादन 2) b): गीतवादनकप्रिय MBh. 12,10417.

वादनतन्त्रमालिका f. Titel einer Schrift Hall 159.

वादनदण्ड m. = वादन 2) a) Halâs. 1,98.

वादपरिच्छेद m. Titel einer Schrift Hall 49.

वादमक्षार्णव m. desgl. Hall 166.

वादयुद्ध n. *Wortstreit, Disputation* M. 12,46.

वादरङ्ग m. *Ficus religiosa* Taik. 2,4,6.

वादल 1) m. *Sittholz* Çabdam. im ÇKDr. — 2) n. *ein trüber Tag* H.

165, Schol.

वादवती f. N. pr. eines Flusses LIA. I, 167.

वादवाद 1) m. *ein Ausspruch über eine aufgestellte Behauptung:* अकोविदः कोविदवादवादान्वदसि Bhāg. P. 5,11,1. — 2) *einen Wortstreit —, eine Disputation hervorrufend:* तर्क Bhāg. P. 7,13,7.

वादवादिन् bei Wilson und im ÇKDa. fehlerhaft für स्याद्वादिन्.

वादान्य adj. = वदान्य Bhāg. im Dvitīyāk. nach ÇKDa.

वादाम m. = वदाम *Mandel* Rāǵav. im ÇKDa.

वैदायन m. patron. von वद gaṇa यस्कादि zu P. 4,1,110.

वादाल m. = वदाल *eine Art Weis* H. 1343.

वादि (von वद्) Uṇādis. 4,121. P. 3,3,108, Vārtt. 7, Schol. adj. = वाचक und विदम् Uṇādis.

वादिक (von वादिन्) adj. *redend, sprechend:* प्राज्ञ° *wie ein Kluger* MBh. 2,2288. *behauptend, annehmend, einer Theorie anhängend:* कुठ° 3,1314.

वादित s. u. dem caus. von वद्.

वादितर्कन (वादिन्+त°) n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 211,*b*,8.

वादितव्य (vom caus. von वद्) n. *Instrumentalmusik:* गीतेन वादितव्येन नित्यं मामनुयास्यसि MBh. 13,697.

वैदित्र (von वद्) Uṇādis. 4,170. n. 1) *ein musikalisches Instrument* AK. 1,1,3,5. H. 286. Kauç. 14. 16. न वादित्राणि वादयेत् M. 4,64. MBh. 1,5329. सर्ववादित्रनादैः 4941. 3,1766. 11918. R. Gorr. 2,12,12. 4,60,9. Varāh. Bṛh. S. 44,16. Bhāg. P. 3,24,7. 8,8,26. Weber, Kṛishṇaj. 270. Schol. zu Kāṭy. Çr. 697,8. — 2) *Musik, musikalische Aufführung:* गीतवादित्रे Kāṭhān. Up. 8,2,8. Pāṇ. Gaṇ. 2,7. MBh. 3,1794. 1796. 4,36. 12,10417. R. 1,9,8. 2,61,6. 114,9. R. Gorr. 2,125,19. Saṃ. 1,333,9. 2,146,8. Varāh. Bṛh. S. 46,91. 86,22. Bhāg. P. 3,22,28. 4,15,19. Weber, Kṛishṇaj. 302. 304. न गात्रलक्षवक्त्रवादित्रं कुर्यात् Saṃ. 2,143,3. मु° als m. pl. Hariv. 7018.

वादित्रवत् (von वादित्र) adj. *von Musik begleitet* Kāṭy. Çr. 21,3,11.

वादित्व s. सत्य°.

वादिन् (von वद्) nom. ag. 1) *redend, sprechend:* त्वास्मीति वादिनम् M. 7,91. Bhāg. 2,42. R. 6,94,4. Rāgh. 1,83. 11,69. Kathās. 18,107. 20, 83. 30, 105. 37, 179. 44, 102. Rāǵa-Tar. 2,87. 5, 425. 6, 52. 225. 337. Bhāg. P. 4,14,43. 7,3,40. 7,3. 8,10,47. Mālav. P. 22,13. 114,30. Sarvadarçanas. 64,4. त्वास्मीति च वादिनम् MBh. 3,729. 5,1037. R. 5,91,14. इति तं वादिनम् Kathās. 37, 228. 59, 115. 72, 145. 119, 161. तमेवं वादिनम् MBh. 1,1576. 7104. 13, 2315. R. Gorr. 1,67,17. Kumāras. 6,84. इत्येवं वादिभिः Mālav. P. 23,5. इत्येव वादिनम् Kathās. 73,271. तं तथा वादिनम् MBh. 1,219. तथाहं वादिनम् (von Spiegel als comp. gefasst) Jāṭ. 1, 225. वादिनं मृषा MBh. 4, 99. mit einem acc.: लोकनिश्चयम् *aussprechend* 12, 2389. Häufig am Ende eines comp.: धृष्ट° Hariv. 4628. पण्डित° Pañcat. I, 437. सहादिन् Maitrāyaṇ. 6,36. भूयो°, वरीयो°, कनीयो° Ind. St. 13, 419. पृथग्वादिन् Çat. Br. 3,7,3,2. घाकुनस्य° 9,3, 3,24. हत° R. 5,48,6. न्याय्य° (so ist zu lesen) 88,14. सुयुक्त° 2,60,22. प्रियशब्द° R. Gorr. 2,13,29. घनत° M. 3, 41. MBh. 4, 99. Spr. 3793. वितथ° Kathās. 26,96. 31,88. तथ्य° Bhāg. P. 8,11,11. गुरु° 4,10,24. *redend von, sich auslassend über:* स्वगुणोत्कर्ष° Sarvadarçanas. 64,5. Kathās. 6,27. Bhāg. P. 3,24,1. Pañcat. 37,22. नय° so v. a. *Lehrer, Kenner* Kām. Nītis. 8,33. संहिता° Verz. d. Oxf. H. 55,*a*,13. *verkündend, ankündend, anzeigend:* शर्वानुयङ्° Kathās. 23,11. भूमेर्भर्तृसंगम° 30,48. 34,69. 73. नक्तंचारिव° 69,67. वादिनी R. 2,36,3 vielleicht *Wahrsagerin* (= पराचित्तार्थकथनचतुरा Comm.). — 3) *der eine Theorie behauptet, — verficht, Anhänger einer Theorie, Vertreter einer Ansicht* Kap. 1,112. Suçr. 1, 130, 3. वादिप्रतिवादिनौ Schol. zu Kap. 1, 70. Sarvadarçanas. 114,3. 123,3. 26,3. 42,19. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 7. शब्द° Maitrāyaṇ. 6, 22. पक्षार्ध° Kap. 1, 25. Verz. d. Oxf. H. 259, *a*, 24. 34. Sarvadarçanas. 47,6. 62,10. fg. 116,14. 127,18. 130,5. 134,23. 135,3. — 3) *Disputant* MBh. 3,10602. Hariv. 14467. Kām. Nītis. 5,25. Rāgh. 12,93 (= कथक Mallin.). Spr. 606 (II). 1343. 2073. Kathās. 66,63. 72,68. fg. Rāǵa-Tar. 1,113. 178. Verz. d. Oxf. H. 140,*a*, No. 280. 259,*a*,14. fg. Daçar. 92,2. Bhāg. P. 6,4,31. Wilson, Sel. Works I, 304. — 4) *Kläger* Jāṭ. 2, 73. Kull. zu M. 8,254. — 5) *Töne hervorbringend, als Plectrum dienend* Çiksh. Ça. 17,3,10. — 6) *Alchemist* Kālāmṛita 3,232. — 7) पुरुष° so v. a. *einen männlichen Namen führend* R. 7,87,13. भो° *mit* bhos *angeredet* MBh. 3,12843. Hariv. 11140. आर्य° *mit* Ârja *angeredet* MBh. 3,12843; vgl. Weber, Ind. St. 1,181. — 8) in der Stelle न च विद्वेषेणाहं न चाहंकारवादिना । न चात्मविक्रिगोपुत्वाद्भूयेयामि ववो ऽमृतम् ॥ Hariv. 5904 ist वादिना so v. a. वादेन, das nicht zum Metrum passt. — Vgl. अग्नि°, अनेकान्त°, अन्य°, अर्क°, उत्तर°, सत°, कोण°, क्रिया°, जाति°, गुण° (auch MBh. 4,128), ग्राम्य°, दण्ड°, देहात्म°, धर्म°, धातु°, पूर्व°, प्रकाशि°, प्रतिकूल°, प्रत्यक्ष°, प्रिय°, बक्क°, बृहद्वादिन्, ब्रह्म°, भद्र°, मङ्गल°, मधु° (adj. Rāgh. 12,39, v. l.), मद्य°, मद्रा°, मिथ्या° (auch Kathās. 23,21), मृषा° (auch R. Gorr. 1,24,7), वाग्वादिनी, वेदवादिन्, सत्य°, क्षीण°.

वादिर m. *ein dem Judendorn* (बदरी) *ähnlicher Fruchtbaum* Çabdar. im ÇKDa.

वादिराज् (वादिन्+राज्) m. 1) *ein Fürst unter Disputanten, ein ausgezeichneter Disputant* Pañcat. 3, 14, 75. — 2) Bein. Maṅgueçr's Taik. 1,1,21.

वादिवागीश्वर m. N. pr. eines Autors Hall 44.

वादिश adj. = साधुवादिन् *Beifall zurufend* Çabdam. im ÇKDa. m. *a learned and virtuous man, a sage, a seer* Wilson nach ders. Aut.

वादीन्द्र m. 1) = वादिराज् 1) Hall 26. 67. Verz. d. Oxf. H. 173, *b*, No. 388. — 2) N. pr. eines Philosophen Verz. d. Oxf. H. 244,*a*, No. 606.

वादीश्वर m. = वादिराज् 1) Verz. d. Oxf. H. 140,*a*, No. 280.

वाडुलि m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,253 nach der Lesart der ed. Bomb. वाकुलि ed. Calc.

वैय (von वद्) P. 3,3,106, Schol. 1) adj. *zu reden*, n. *Rede:* वदस्व यत्ते वाक्यम् Âit. Br. 6, 14. Çat. Br. 2,3,4,6. 18. 4,3,3,1. — 2) adj. *zu spielen, zu blasen* (ein musikalisches Instrument): शङ्ख Verz. d. Oxf. H. 32,*b*,15. — 3) n. *Instrumentalmusik* H. 279. Halâ. 1,95. Liṅg. 4, 2, 3. Spr. 4889. Varāh. Bṛh. 18,1. Kathās. 39,247. 52,266. Madhus. in Ind. St. 1,22,5. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,26. 200,*b*, No. 476. 201,*a*, No. 479. fg. Verz. d. B. H. No. 1384. Daçak. 80,11. Bhāg. P. 8,15,21. Weber, Kṛishṇaj. 302. वल्लकी° Hariv. 4635. मुरजवाद्यराव Mālav. 21. शङ्खवाद्यराव Wa-

BER, KĀŚIKHAṆḌ. 266. RAGH. 16,64. वीणा° Spr. 3991. KATHĀS. 49,50. वेणु° PAÑKAR. 3,5,24. RĀJA-TAR. 5,464. स्वाङ्के पीठे च Spr. 4462. RĀJA-TAR. 5,417. — 4) n. (hier und da auch m.) *ein musikalisches Instrument* AK. 1,1,9,5. H. 286. HALĀY. 1,93. सस्वनुर्दैववाद्यानि R. GORR. 1,50,20. 5,13,1. वाद्यानि चित्राण्यपि वादयेत SUÇR. 2,259,5. °वादक BHĀG. P. 10,53,43. KATHĀS. 18,404. °शब्द PAÑKAT. 129,12. masc. R. 2,81,2. MĀRK. P. 66,26. 128,14. — Vgl. एकवाद्य, उदकवाद्य, अल°, पर्ण°, ब्रह्म°, मङ्गल°, मुख°, वंशि°.

वाद्यक = वाद्य 3) BHĀG. P. 10,12,34.

वाद्यधर m. *Musikant* BHĀG. P. 10,12,34.

वाद्यभाण्ड n. *ein musikalisches Instrument* H. an. 3,358. MED. r. 159. l. 74. °मुख AK. 3,4,25,188. HALĀY. 5,72.

वाद्यमण्ड m. *Gerstenschleim* fehlerhaft für वाट्य° MAD. in NIGH. PA. ÇĀÑC. SAṂH. 2,2,118.

वाधक die richtigere Schreibart für 2. बाधक; s. u. बधक 3).

वाधव n. nom. abstr. von वधू gaṇa उक्षान्नादि zu P. 5,1,129.

वाधवक n. (संज्ञायाम्) von वधू gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

वाधावत m. patron. v. l. für वातावत Ind. St. 1,213, N. 1. 2,293, N. 1.

वाधुक्य (von वधू) n. *das Heirathen, Heimführen eines Weibes* TAIT. 2,7,20.

वाधुल m. N. pr. eines Mannes SAṂK. K. 185,a,10.

वाधून m. N. pr. eines Lehrers Ind. St. 1,62.

वाधूय (von वधू) adj. *hochzeitlich*, n. *Hochzeitskleid, das dem Brahmanen geschenkt wird; bald wird das des Bräutigams, bald ein Kleid oder Kopftuch der Braut* verstanden (vgl. Comm. zu ÇĀṄKH. GṚHY. 1,14): वाधूयं वासो वधव्य वस्त्रम् AV. 14,2,41. fg. सूर्या यो ब्रह्मा विद्यात्स इद्वाधूयमर्हति RV. 10,85,24 (vgl. सूर्याविदे वधूवस्त्रं दद्यात् ĀÇV. GṚHY. 1,8,12). KAUÇ. 77. 79.

वाधूल m. N. pr. eines Mannes HALL 112. — Vgl. वाधील.

वाधूलेय m. patron.: कटकवाधूलेयाः gaṇa कार्तकौञ्जयादि zu P. 6,2,37.

वाधील m. patron. ĀÇV. ÇR. 12,10,10. — Vgl. वाधूल.

वाध्रिप (!) m. patron. PRAVARĀDHY. in Verz. d. B. H. 55,7.

वाधीणस m. *Nashorn* H. 1287. HALĀY. 2,72. घातमनो मरणे यातो वाधीणस (°नस ed. Calc.) इव द्विपः (द्विप्रः v. l.) MBH. 8,3324. वाधीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी (पितॄणाम्) 13,4248. MĀRK. P. 32,7. वराहवाधीणसकान् R. ed. Bomb. 5,11,16. NĪLAK. zu MBH. 8,3324: वाधीणसः मेषविशेषः यस्य नासापुटयोर्वधीसदृशं चर्म भवति। द्विपः द्राघ्यां वक्त्रकर्णाभ्यां पिबतीति। द्विप्र इति पाठे कृष्णग्रीवो रक्तशिराः श्वेतपत्रो विहंगमः स वै वाधीणसः प्रोक्तो याज्ञिकैः पितृकर्मणीति प्राज्ञाः॥ derselbe zu 13, 4248: वाधीणसः वध्या स्यूतनासिको मेषजातः। पक्षिविशेषो ऽन्यत्रेत्यन्ये: Comm. zu R. 5,11,16: वाधीणसः पक्षिविशेषः कृष्णग्रीवो रक्तशिराः श्वेतपत्रो विहंगमः। स वै वाधीणसः प्रोक्त इति विष्णुधर्मोक्तेः। क्रूरविशेषो वा। त्रिःपिबं लिन्द्रियत्नीणं श्वेतं वृद्धप्रजापतिम् (lies वृद्धमजापतिम् wie KULL. zu M. 3,271)। वाधीणसं च तं प्राकुर्याज्ञिकाः माद्धकर्मणीति स्मृतेः॥ मुक्तकर्णो च पानसमये ऽलं स्पृशति यस्य स त्रिःपिबः॥ — Vgl. वाधीणस, वाधीनस.

वाध्यश्व m. patron. von वध्यश्व RV. 10,69,5. ĀÇV. ÇR. 12,10,12. NIR. 8,22.

1. वान (von 2. वा) n. 1) *das Wehen* (गति) TAIT. 3,3,260. H. an. 2,285. MED. n. 20. VAIÇ. beim Schol. zu NAIṢ. 2,26. — 2) *Geruch, Wohlgeruch* H. an. VAIÇ. — 3) *Fluth* H. an.

2. वान (partic. von 3. वा) 1) adj. *eingetrocknet, trocken;* n. *getrocknete Frucht* AK. 2,4,4,15. TAIT. 3,3,260. H. 1130. an. 2,151. 385. MED. n. 20. HALĀY. 2,34. VAIÇ. beim Schol. zu NAIṢ. 2,26. घानन *ein trockener Mund* NAIṢ. 2,26. — 2) n. = गोतीरत्तं तवतीरम् RĀJAN. im ÇKDR. — Vgl. घ्र° 2).

3. वान (von 5. घा) n. 1) *das Weben* TAIT. 3,3,260. H. an. 2,285. MED. n. 20. SĀY. zu ṚV. 2,3,6. सूचीवानकर्माणि (सूचीकर्मन् beim Schol. zu BHĀG. P. 10,43,36) unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a, 8 (ebend. 11 liest der Schol. zu BHĀG. P. वाण st. वान). — 2) *Geflecht, Matte* TAIT. H. an. MED. — Vgl. तसु°.

4. वान (von 1. वन) n. *ein dichter Wald* NAIṢ. 3,6. H. 91, Schol.

5. वान n. *ein unterirdischer Gang, Mine* H. an. 2,285. Vielleicht bildlich vom *Blumenkelch* in der Stelle पुष्पवानकलस्वनाः (भ्रमराः) R. GORR. 2,36,13.

वानकौशाम्ब्यर्ये adj. von वन + कौशाम्बी gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97. °कौशाम्ब्येर्ये v. l.

वानदण्ड (3. वान + दण्ड) m. *Webstuhl* H. 913.

वानप्रस्थ 1) m. (von वनप्रस्थ) *ein Brahmane im dritten Lebensstadium, wenn er sein Haus aufgegeben hat und in den Wald gezogen ist; Einsiedler* AK. 2,7,3. TAIT. 2,7,3. 3,3,198. H. 807. 809. an. 4,134. MED. th. 29. HALĀY. 2,339. Ind. St. 2,287. M. 6,87. JIÑĀ. 2,137. 3,45. KAP. 6,2,2. MBH. 1,7633. R. 2,64,32. R. GORR. 2,52,26. NṚS. TĀP. UP. in Ind. St. 9,121. Verz. d. Oxf. H. 8,a,39. 83,a, 32. 85,b,37. 269,a,7. VP. 295. BHĀG. P. 7,12,16. fg. MĀRK. P. 28,22. 119,17. 135,3. PAÑKAR. 1,10,80. — 2) m. *Bassia latifolia* AK. 2,4,2,3. TAIT. 3,3,198. H. an. MED. *Butea frondosa* ROXB. H. an. RATNAM. 44. — 3) adj. (von वानप्रस्थ 1) *zum Einsiedler in Beziehung stehend, ihn betreffend;* m. (mit Ergänzung von आश्रम) *das dritte Lebensstadium eines Brahmanen, das Leben im Walde:* वन MED. m. 39. विधि HARIV. 7985. R. 3,18,31. MBH. 12,2325. MĀRK. P. 16,3. 44,38. 135,11. — Hier und da fälschlich वाण° geschrieben.

वानमन्तर m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Gaina, = व्यन्तर H. 91, Schol.; vgl. WEBER, BHAGAVATĪ 2,159. fgg.

वानर 1) m. *Affe* AK. 2,5,3. H. 1292. HALĀY. 2,76. M. 1,39. 11,135. JIÑĀ. 3,277. MBH. 1,2571. 3,12244. 9,202. R. 1,1,57. 16,18. 2,54,28. 55,33. SUÇR. 1,202,17. 333,18. VARĀH. BṚH. S. 68,104. 86,28. 42. SPR. (II) 107. BHĀG. P. 5,13,17. 14,30. PAÑKAT. 203,3. ÇĀkjamuni als *Affe* in einer früheren Geburt VAIJ. beim Schol. zu H. 233. am Ende eines adj. comp. (f. घ्नी) R. 6,19,52; vgl. निर्वानर. — 2) f. ई a) *Aeffin* MBH. 3, 15935. R. 1,16,6. R. GORR. 1,20,13. 4,19,4. 20,1. KATHĀS. 123,60. PAÑKAT. 206,18. — b) *Carpopogon pruriens* ROXB. CARDAR. im ÇKDR. ÇĀÑC. PADDH. 3,2,17. — 3) (von वानर 1.) adj. (f. ई) *den Affen gehörig, ihnen eigen* u. s. w.: वपुस् MBH. 3,11168. 12,1067. योनि 13,411. सेना R. 5,1, 14. 46,7. 6,1,6. 2,26:

वानरकेतन adj. *einen Affen zum Erkennungszeichen habend;* m. Bein. Arǵuna's (des Pāṇḍuiden) MBH. 14,2430. 2466.

1. वानरकेतु m. *Affenbanner* MBH. 5,4815. वानरराज ed. Bomb.

2. वानरकेतु = वानरकेतन MBu. 5,4688.

वानरप्रिय adj. *den Affen lieb*; m. Bez. *eines best. Baumes* (तीरिवृत) Ratnam. im ÇKDa.

वानरवीरमाहात्म्य n. *die Majestät der heldenmüthigen Affen*, Titel einer Legende (angeblich aus dem Skanda-P.) Mack. Coll. I, 83.

वानराज m. *eine wilde Ziege* ÇKDa. nach Hin. 81, wo aber nach den Corrigg. बालवास्य zu lesen ist.

वानराघात m. *Symplocos racemosa* Roxb. Çabdaç. im ÇKDa.

वानराष्टक n. *die acht Strophen eines Affen*, Titel einer Sammlung von acht Sprüchen, abgedruckt in Haas. Anth. S. 244. fg. — Vgl. वानर्यष्टक.

वानरास्य adj. *ein Affengesicht habend*; m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 188, N. 40.

वानरेन्द्र m. *Affenfürst*, Bein. Sugriva's Çabdar. im ÇKDa.

वानरेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,41.

वानर्यष्टक n. *die acht Strophen einer Affin*, Titel einer Sammlung von acht Sprüchen, abgedruckt in Haas. Anth. S. 242. fg. — Vgl. वानराष्टक.

वानल m. *eine Art Basilienkraut*, = वावय Çabdaç. im ÇKDa.

वानव m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6, 362 (= VP. (H) 2,173).

वानवासक 1) adj. (f. °वासिका) zum *Volke der* Vanavâsaka *gehörig*: वानवासिकाः स्त्रियः Verz. d. Oxf. H. 217, *b*, 20. — 2) f. °वासिका *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 86. 135. Ind. St. 8, 315. 318.

वानवासिक und वानवासिन् s. u. वनवासक.

वानवासी f. N. pr. einer Stadt Daçak. 192, 21.

वानवास्य m. *der Fürst von* Vânavâsî Daçak. 194, 5. 11 (hier fälschlich वानावास्य).

वानसि m. *Wolke* H. ç. 27 vielleicht fehlerhaft für वार्मसि; vgl. वारिमसि.

वानस्पत्य (von वनस्पति) 1) adj. *vom Baume kommend, hölzern*: सप्तर्क्षिरसि वानस्पत्यः VS. 1, 14. fg. प्रावाणः AV. 3, 10, 5. 12, 3, 18. चक्र Çat. Br. 5, 4, 3, 16. इष्टका 6, 1, 2, 30. TS. 5, 7, 2, 2. Gefäss Çat. Br. 14, 2, 2, 32. Pasuko: वानस्पत्यः संभृत उन्नियाभिः AV. 5, 20, 1. 21, 2. द्रव्य MBu. 3, 10294. 12739. R. 6, 96, 13. मात्य *ein Kranz von Baumlaub* Verz. d. Oxf. H. 43,a, N. 2. वानस्पत्यं द्रुमोपधम् Mâlav. P. 109, 70. zum *Baum* d. h. Jûpa *gehörig* TS. 6, 3, 11, 2. — Liṭ. 1, 2, 7. Âçv. Gṛhj. 2, 6, 6. 3, 8, 10. Soma Âit. Br. 7, 33. — Suça. 1, 336, 13. बलि so v. a. *an Bäumen* (Schlangen) *dargebracht* Bhâg. P. 10, 17, 2. als Beiw. Çiva's vielleicht so v. a. *unter Bäumen* —, *im Walde lebend* R. 7, 23, 6, 44. — 2) m. *Baum* AV. 3, 6, 6. 14, 2, 9. वानस्पत्योपधीश्चैव (वन° die neuere Ausg.) Harîv. 11979. 12804. neben वनस्पति vielleicht *Strauch*, *ein kleiner Baum*: वनस्पतीन्वानस्पत्यौ ग्रोषधीरुत वीरुधः AV. 8, 8, 14. 11, 9, 24. *Gewächs* überh.: यस्यां वृक्षा वानस्पत्यास्तिष्ठन्ति 12, 1, 27. nach AK. 2, 4, 1, 6. H. 1115 und Halâj. 2, 24 *ein Fruchtbaum mit* (in die Augen fallenden) *Blüthen*. — 3) n. a) *Baumfrucht* Çat. Br. 11, 1, 2, 2. 3, 1, 2. Âit. Br. 8, 15. M. 8, 339. — b) = वनस्पतीनां समूहः P. 4, 1, 85, Vârtt. 10, Schol.

वाना f. *Wachtel* Gal. im ÇKDa.

वानाम (वा नाम?), Einfluss auf den Ton eines verbi finiti गङ्ग गोत्रादि zu P. 8, 1, 27. 57.

वानायु m. 1) pl. N. pr. eines Volkes, = वनायु Çabdar. im ÇKDa. VP. 192, N. 92. °ज adj. Bez. *einer edlen Pferderace* AK. 2, 8, 2, 13. MBu. 6, 3974. 7, 1574. 4331 (die ed. Bomb. an allen drei Stellen वनायुज). R. Gorr. 1, 6, 24. 2, 106, 17. Verz. d. B. H. 292, 1 (चानायुज die Hdschr.). Vgl. वनायु. — 2) v. l. für वातायु H. 1293, Schol.

वानावास्य s. u. वानवास्य.

वानिक adj. vielleicht *im Walde wohnend* (von वन): वेश्यानर्पसकविदैवानिकदासीव्रतेन वा कीर्णम् Bhâr. Nîtiç. 18, 96.

वानीर m. 1) *eine Rohrart, Calamus Rotang Lin.* AK. 2, 4, 2, 10. H. 1137. Halâj. 2, 46. °फलमालिनी (नर्मदा) MBu. 3, 8355. °मालिनी (नदी, könnte auch N. pr. eines Flusses sein; = वेत्रपङ्क्तियुता Nîlak.) 8519. 12552. R. 3, 17, 7. 21, 15. 19. Mṛicch. 42. Râgân. 13, 30. Varâh. Bṛh. S. 55, 10. Gîr. 4, 1. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 25. °गृह Râgân. 13, 35. 16, 21. am Ende eines adj. comp. f. या MBu. 12, 3644. — 2) = चित्रक Hin. 265.

वानीरक m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) Roxb. Râgân. im ÇKDa.

वानीरज m. = कुष्ठ Râgân. im ÇKDa.

वानेय (von 1. वन) 1) adj. *im Walde lebend*, — *wachsend*, *silvestris* (vgl. वन्य) MBu. 3, 10015. मुनि 9, 2153. °पुष्प 15, 722. मात्य 13, 5033. वानेयमद्य वा कृष्टम् 3, 1957. fg. 14, 1270. R. 5, 34, 11. — 2) n. *Cyperus rotundus* AK. 2, 4, 4, 19.

वान्त 1) partic. s. u. वम्. — 2) m. Bez. eines Priestergeschlechts Verz. d. Oxf. H. 76, *b*, 39.

वान्ताद (वान्त + अद्) 1) adj. *Ausgebrochenes essend*. — 2) m. *Hund* Trik. 2, 10, 5.

वान्ताशिन् (वान्त + अा°) adj. = वान्ताद M. 3, 109. 12, 71. Bhâg. P. 7, 15, 36.

वान्ति (von वम्) f. *Erbrechen* Ratnam. im ÇKDa. Verz. d. B. H. No. 972.

वान्तिकृत् 1) adj. *Erbrechen verursachend*. — 2) m. *Vanguiera spinosa* Roxb. Wilson nach Çabdaç. वान्तिकृत् ÇKDa. nach ders. Aut., aber in der Reihenfolge vor वान्तिद्, also wohl nur Druckfehler.

वान्तिद 1) adj. *Erbrechen bewirkend*. — 2) f. या *Helleborus niger Lin.* (कटुकी) Çabdaç. im ÇKDa.

वान्तिकृत् s. u. वान्तिकृत् 2).

वान्दन m. patron. von वन्दन Âçv. Çr. 12, 11, 2.

1. वान्या f. *eine Kuh, deren Kalb todt ist*, TBr. 2, 6, 10, 2. — Vgl. सपि°, सभि°, नि°.

2. वान्या (von 1. वन) f. *ein dichter Wald* (वनसमूह) Çabdar. im ÇKDa.

1. वाप (von 1. वप्) m. *das Scheeren*: कृत° adj. *geschoren, dessen Kopfhaare geschoren sind* M. 11, 103.

2. वाप (von 2. वप्) 1) nom. ag. *Säer, Säemann*: बीज° MBu. 3, 1372. — 2) m. *Aussaat* P. 3, 1, 48. वापः क्षेत्रे न नश्यति MBu. 12, 10944. द्रोणाढकादिवाप adj. *besäet mit* AK. 2, 9, 10. H. 969. व्रीहि°, माष° adjj. P. 8, 4, 11, Schol. — Vgl. धान्य°, क्षारी°, बीज°, मूल° (wo *Steckr* d. i. *Pflanzer* st. *Steckr* zu lesen ist).

3. वाप = वाप in तन्तु°, तन्त्र°, सूत्र°, °दण्ड.

वापक s. पक्षिका°.

वापदण्ड m. = वापदण्ड Comm. zu AK. 2, 10, 28. nach ÇKDa. Lesart des Textes.

वापन (vom caus. von 1. वप्) n. *das Sichscheerenlassen* Âçv. Çr. 2, 16,

26. Gaṇ. 1,22,23. Çiṣṭ. Gaṇ. 4,7. कृत° adj. M. 11,78.

वायनि m. patron.; pl. Saṁh. K. 184,a,3.

वाय् s. u. dem caus. von 1. und 2. वप् und 2. वा (mit निस्). Es befremdet, dass वाययति (s. das caus. von 1. वप्) in Verbindung mit केशान् vom Schol. zu P. 7,3,38 auf वा zurückgeführt wird.

वायातिनार्मेध n. N. eines Sâman Ind. St. 3,234,b.

1. वायि Uṇâdis. 4,124. P. 3,3,108, Vârtt. 7. f. = वापी Uéâval. Buar. im Dvaitap. nach ÇKDa. Bhâg. P. 4,6,34.

2. वायि m. adj. von वापिन् gaṇa सुतंगमादि zu P. 4,2,80.

वायिका (von वापी) f. *ein länglicher Teich* Spr. 1693. 3728. Kathâs. 18,263. घम्बु° 63,71. am Ende eines adj. comp. 34,145.

वायिन् (von 2. वप्) adj. *säend:* व्रीहि°, माष° P. 8,4,11, Schol. — Vgl. बीज°.

वायी (von 2. वप् *aufdämmen*) f. 1) *ein länglicher Teich* Uéâval. zu Uṇâdis. 4,124. AK. 1,2,3,28. Trik. 1,2,28. H. 1093. Halâj. 3,62. M. 8, 248. 11,163. MBh. 2,1667. 3,2407. 8,1418. 1430. 14,1728. R. 2,68,19. 91,65. 3,61,17. Suçr. 1,22,21. 169,12. 2,483,3. Mṛicch. 74. Ṛt. 6,3. Spr. 1307. 2733. 2777. fgg. 4983. Vaṁç. Bṛh. S. 12,10. 68,49. Kathâs. 6, 109. 26,84. 63,72. Bhâg. P. 3,15,22. Pañcat. 247,14. °तुल्यविलोचन Verz. d. Oxf. H. 10,b, N. 6. °कूपतडागोत्सर्गविधि 35,a,3. °कूपतडागप्रतिष्ठादेश Verz. d. B. H. No. 903. am Ende eines adj. comp. वापीक Kathâs. 29,58. — 2) Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten in den Epanaphorae und Apoklimata stehen,* Vaṁç. Bṛh. 12,8. 14. — Vgl. मतङ्ग°, लोला°, स्वर्वापी.

वापीकृ adj. *Teiche meidend;* m. Bez. *des Vogels* Kâṭaka Trik. 2,5, 17. — Vgl. वप्पीकृ.

वापुर्य (von वपुस्) adj. etwa *wundersam* ṚV. 5,75,4.

1. वाप्य (von वप्) 1) adj. P. 3,1,126. Vop. 26,12. *hinzustreuen* (von 2. वप्) Kaṭṭ. 16. — 2) m. *Vater* H. ç. 116; vgl. वप्तृ, वप्र.

2. वाप्य (von वापी) adj. *aus Teichen kommend:* Wasser Suçr. 1,173, 12. Fisch 207,2.

3. वाप्य n. v. l. für व्याप्य = कुष्ठ die Erklärer zu AK. 2,4,4,14. nach ÇKDa. liest der Text वाप्य.

वाभट m. N. pr. eines Lexicographen Med. Anh. 4. vielleicht fehlerhaft für वाग्भट.

वाभि s. ऊर्ण°.

वाम् enklitischer acc., dat. und gen. du. des Pronomens der 2ten Person VS. Prât. 2,5. P. 8,1,20. 24. fgg. Das betonte वाम् scheint für द्यावाम् *wir beide* zu stehen: एकि वां विमुचो नपादघृणे सं सवावरे ṚV. 5,35,1. nach Sây. acc. von वा = स्तोतृ.

1. वाम (von 1. वन्, wie घूम von 1. घन्) 1) adj. (f. ई, in der späteren Sprache आ) *a) werth, lieb; gefällig, gut, schön;* = वननीय Nir. 4,26. 6, 31. 11,46. = वल्गु, चारु AK. 3,4,22,146. H. 1444. an. 2,336. fg. Med. m. 29. fg. Halâj. 4,4. इर्यः ṚV. 3,53,1. वसु 6,19,5. 8,1,31. गृणत्पति 6, 53,2. मतिधि 10,122,1. प्रणीति 69,1. 1,164,1. 7. 6,48,20. TS. 1,5,1,1. 2,2. TBr. 1,1,2,2. Kâṭh. 25,2. 6. पं वै गामश्वं पं पुरुषं प्रशंसन्ति वाम इति तं प्रशंसति Pañcav. Br. 13,3,19. निबध्य भ्रुकुटीं वामाम् Harîv. 7066. °भ्रू *eine Schönbrauige* Spr. 340. Sin. D. 34,7. प्रेषितवामलोचना Çiç. 23. वामनयना adj. Spr. 3194. वामाक्षी 2978. Kathâs. 26,263. H. 807. °नेत्रा Halâj. 2,226. मूक Çiç. Ça. 7,6,10. Bhâg. P. 3,25,36. °स्वभावा *schön, edel* 1,7,42. °भाषिणी *schön redend* R. 3,23,17. — *b) zugethan, strebend nach, versessen auf:* सत्त° Uéâval. zu Uṇâdis. 1,139. प्रायो वारितवामा हि प्रवृत्तिर्मनसो नृणाम् *nach Verbotenem lüstern* Kathâs. 26,76. वारितवामेन कामेन Riéa-Tar. 3,417. im Prâkṛt: पडिसिद्धवामा खु एसा ज्ञादी Çâk. 88,15, v. l. — 2) m. *a) die weibliche Brust* H. an. Med. — *b)* Bein. Çiva's H. an. Med. Bhâg. P. 4,3,8. bei den Çaiva Bez. einer der fünf Formen ihres Gottes, = वामदेवगुरु Sarvadarçanas. 83, 17. Bhâg. P. I, Einl. LXV. N. pr. eines Rudra Bhâg. P. 6,6,17. Könnte auch zu 2. वाम gehören. — *c)* Bez. *des Liebesgottes* H. an. Med. — *d)* N. pr. eines Sohnes des Ṛkṣa MBh. 13,7671. राम ed. Bomb. — *e)* N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Bhadrâ Bhâg. P. 10,61,17. eines Fürsten, eines Sohnes des Dharma, Verz. d. Camb. H. 7,6. eines Sohnes des Bhaṭṭanârâjaṇa Kshitîç. 5,8. — 3) f. आ *a) eine Schöne, ein schönes Weib, Weib* überh. (vgl. वनिता) AK. 2,6,2,3. H. 504. H. an. Med. Paṇḍan. 1,14,73. Sin. D. 55,2. — *b) eine Form der* Durgâ Devî-P. 45 und Kâlikâ-P. 11 im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 104, *b*,13. nach Çaṇḍikâtmak. bei Wilson auch Lakshmî und Sarasvatî. — *c)* N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2630. — *d)* N. pr. der Mutter Pârçva's, des 23ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî, H. 41. — 4) f. ई *Stute* AK. 2,8,2,14. H. 1233. Halâj. 2,285. H. an. Med. *Eselin, Kamelstute* (कारभी) und *das Weibchen eines Schakals* H. an. Med. Zu belegen nur in der Verbindung उष्ट्र° im pl. oder im comp. MBh. 2,1745. 1824. 3,5700. Râgân. 5,32. Nîlak. zu MBh. 2,1824: उष्ट्राः वाम्यः गर्दभाश्वसंकराः, der Schol. zu Rag. 5,32 erklärt das Wort durch *Kamele und Stuten;* eher als *Kamelstute* zu fassen; vgl. P. 6,2,49, wo beim Schol. wohl उष्ट्रवामी st. उष्ट्रवामिः zu lesen ist. — 5) n. *a) Werthes, Liebes:* Gut (= धन Med.) ṚV. 1,33,3. विश्वेहामा वो धनवत् 40,6. 48,1. स नो नेषद्धामं सुवितं वस्यो यच्छे 141, 12. 4,5,12. 7,71,2. 78,7. 8,72,4. 5. विश्वा वामानि धीमहि 92,8. 10, 20,8. 40,10. 76,8. रातिं वामस्य 140,8. AV. 4,25,6. गृहाः पूर्णा वामेन तिष्ठत 7,60,12. 14,2,9. धा वो देवास ईमहे वामम् VS. 4,5. 8,8. देवानाम् TS. 5,3,8,1. Ait. Br. 5,6. Çat. Br. 1,9,1,32. Âçv. Çr. 1,9,5. एतं हि सर्वाणि वामान्यभिसंयन्ति Kâṭh. Up. 4,13,2. 3. — *b) eine best. Gemüsepflanze, Chenopodium;* = वास्तूक Gaṇân. im ÇKDa. masc. Wilson nach ders. Aut. — *c)* वामेया adv. *gefällig, schön* ṚV. 3,9,7. — Vgl. अस्ति°, यत्त°.

2. वैम Uṇâdis. 1,139. 1) adj. (f. आ) *a) link* AK. 2,6,2,26. 3,2,34. H. 1466. an. 2,336. Med. m. 29. fg. Halâj. 4,71. Çat. Br. 14,6,11,3. Çiṣṭ. Gaṇ. 2,10. Gobh. 2,9,18. 4,1,2,3. Suçr. 1,27,3. 244,2. MBh. 1,7723. R. 2,42,4. 92,22. Manu. 76. 94. Çik. 133. Milav. 53. Spr. 2780. Riéa-Tar. 1, 2. Daçak. 94,9. Vet. in LA. (III) 10,4. Verz. d. Oxf. H. 103,a,25. 29. Weber, Rimat. Up. 292. चरणेनापि वामेन न स्पृशेयं कदा च न । रावणं किं पुनर्नीचं कामयेयम् R. 5,20,27. fg. वामं प्रास्पन्दतेकं नयनं वराङ्गाः (Glück verheissend) 28,12. Milatîm. 3,2. वाक्कुर्वामः परिवेपते स्म (beim Weibe Glück verheissend) R. 5,28,14. वामः सस्कन्धवासगुरुदुः (beim Manne Unglück verheissend) Kathâs. 49,130. वामश्चायं नदति मधुरं चा-

तक: *zur Linken stehend* Mnsn. 9. वामस्तस्याभवत्काक: (Unglück verheissend) Kathâs. 49,130. *an der linken Seite befindlich* Varâh. Bṛh. S. 5,93. 36,4. °किरीटिन् 58,57. यद्यिर्वामार्चि: *ein Feuer, dessen Flamme nach links geht,* (Unglück verheissend) MBh. 6,105. या वामाद्दक्षिणं यियो *von links nach rechts* (Unglück verheissend) Kathâs. 49,130. वामस्थ *zur Linken stehend* 39,139. वामेन *zur Linken* Spr. 3890. Râǵa-Tar. 5, 97. वामे *zur Linken* so v. a. *im Westen* Weber, Râmây. Up. 300. — *b) schief, verkehrt* Çabdaratn. bei Wilson. वामं (वक्रं यथा भवति तथा Comm.) चतुर्थ्यामभिवीक्ष्य *seitwärts* Bhâg. P. 4,2,8. *in entgegengesetzter Richtung —, anders verfahrend* Çiç. 93. *widerstrebend, widerspänstig, widerwärtig;* = प्रतीप, प्रतिकूल AK. 3,4,22,146. H. 1465. H. an. Med. Halây. 5,22. Bhatṭ. 6,17. स्त्री वामा *so v. a. spröde* Sin. D. 99. 40,13. विधि *ein widerwärtiges Geschick* Spr. 740. 781, v. l. 3786. Kathâs. 73, 163. शिवा वामेकशीमिनी *Widerwärtigin, Unheil* 124,108. धर्को वामेकवृत्तित्वं किमप्येतत्प्रजापते: 21,48. उद्दामित° Gît. 11,9. *hart, grausam:* काम Spr. 936 (II). 2834. Mârk. P. 10,28. कामस्य वामा गति: Gît. 12,11. *verkehrt* so v. a. *schlecht, böse:* वामशीला हि शत्रव: Kir. 11,21. = दुष्ट Uṇâdis. — 2) m. *Schlange* Çabdaratn. bei Wilson. *ein lebendes Wesen* Wilson angeblich nach Gaṭâdh. — 3) n. = वामाचार Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,18.

3. वार्म (von वम्) m. = वम गण श्वलादि zu P. 3,1,140. Vârtt. zu P. 7,3,34. Vop. 26,170.

वामक 1) adj. (f. वामिका) = 2. वाम. *a) link* Varâh. Bṛh. S. 51,26. Mâlatîm. 5,8. Kusum. 65,10. — *b) widerwärtig, hart, grausam:* वह्यस्तु चण्डिकादेव्या वामिका मूर्तय: स्मृता:। लक्ष्म्यास्तु वामिका मूर्तिरुक्ता दक्षिणेतरा ॥ Kâlikâ-P. 11 im ÇKDr. — 2) m. Bez. *einer best. Mischlingskaste* MBh. 13, 2022. — 3) m. N. pr. eines Ḱakravartin Vicitr. 92. — 4) wohl n. Bez. *einer best. Gesticulation* Vikram. 39,20.

वामकक्षायण m. patron. Çat. Br. 7,1,2,11. 10,4,4,11. oxyt. 6,8,9.

वामकेश्वरतन्त्र n. *N.* eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,11. *fg.* 109, *b*,2. 109,*a*,3. 32.

वामचूड m. pl. N. pr. eines Volkes Hariv. 12838 nach der Lesart der neueren Ausg. वामचूल die ältere.

वामचूल s. u. वामचूड.

वामजुष्ट n. = वामकेश्वरतन्त्र Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,3. 32.

वामतन्त्र n. Titel eines Tantra Wilson, Sel. Works I, 249.

वामतम् (von 2. वाम) adv. *von links, links* MBh. 7,3539. Suçr. 1,107, 11. Mṛicch. 14,6. Varâh. Bṛh. S. 32,9. 54,70. 86,37. 88,28. Verz. d. Oxf. H. 103,*b*,9. 156,*a*,28. कर् 24,*a*, N. 2. MBh. 12,12118.

वामता (von 2. वाम) f. 1) *Ungunst:* वैधाभ्य: (pl.) Râǵa-Tar. 4,612. — 2) *Sprödigkeit* Spr. 1230. 1761.

वामत्व n. = वामता 1): विधातु: Mâlatîm. 146,10.

वामदत्त (1. वाम Çiva + दत्त) 1) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 68, 34. *fgg.* — 2) f. या N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 112,169.

1. वामदेव m. 1) N. pr. eines Ṛshi, eines Sohnes des Gotama (ṚV. 4,4,11. 32,9. 12), Verfassers des 4ten Maṇḍala. ṚV. 4,16,13. AV. 18, 3,13. Ait. Br. 4,30. 6,13. Çat. Br. 14,4,2,22. Pâṇ. Gṛ. Bh. 13,9,27. Âçv. Gṛ. 3,4,2. Ind. St. 3,460. 478. *fg.* Ait. Up. 4,5. Kap. 1,158. 4, 20. Bhag. 1,1,30. M. 10,106. MBh. 2,208. 3,13160. *fgg.* 12,3464. *fgg.* Verz. d. B. H. No. 646. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,7. 33,*a*,3. 310,*a*,26. Verz. d. Cambr. H. 22,3. Kathâs. 109,5. *fgg.* Pâṇ. 1,10,64. Minister Daçaratha's MBh. 3,13951. R. 1,7,1. 11,6. 68,13. 2,67,2. R. Gorr. 1, 11,9. 19,9. 2,2,3. Weber, Râmây. Up. 302. 306. वामदेवस्य स्तोत्रम् Çiñkn. Ça. 18,13,10. pl. *sein Geschlecht* Âçv. Çr. 12,10. Verz. d. B. H. 60,32. Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,19. — 2) N. pr. eines Fürsten MBh. 2,1030. Hariv. 3021. 3502. — 3) *eine Form* Çiva's AK. 1,1,1,38. H. 195. Halây. 1,13. Hariv. 14842. Bhâg. P. 2,6,35. 3,12,13. VP. 51, N. 3. Verz. d. Oxf. H. 44,*b*,14. 74,*b*,17. 75,*a*,1 v. u. Wilson, Sel. Works II, 215. — 4) Bez. *eines best. Krankheitsgenius* Hariv. 9557. — 5) N. pr. eines neueren Autors Verz. d. Oxf. H. 135,*a*, No. 254. Gild. Bibl. 304. — 6) N. pr. eines Berges im Dvîpa Çâlmala Bhâg. P. 5,20,10. — 7) Bez. *des 5ten Tages* (Kalpa) im Monat Brahman's: s. u. कल्प 2) *d*).

2. वामदेव adj. (f. ई) zu Vâmadeva *in Beziehung stehend, von ihm verfasst, über ihn handelnd:* सावित्री Ind. St. 10,122. पर्वन् MBh. 1,333.

वामदेवगुप्ता m. bei den Çaiva Bez. einer der fünf Formen ihres Gottes Sarvadarçanas. 83,10.

वामदेव्य 1) adj. von Vâmadeva *herkommend* Çat. Br. 13,2,2,14. — 2) m. patron. von वामदेव Âçv. Çr. 12,10. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,21. — 3) n. N. verschiedener Sâman (nach P. 4,2,9 oxyt. oder perisp.) AV. 4,34,1. 8,10,13. 15,2,2. 4,2. VS. 12,4. TS. 2,6,2,2. TBr. 1,1,6,2. 2,1,5,7. Ait. Br. 3,46. Pañcav. Br. 7,8,1. 9,1,21. Âçv. Gṛ. 2,6,2. Liṭ. 2,10,1. Gobh. 1,9,27. 2,4,4. Kâṭh. Up. 2,13,1. 3. Ind. St. 3,234,*b*. महा° ebend. इक्वत् 209,*b*. द्विर्द्विकारम् 220,*b*. पञ्चनिधनम् 222,*a*. वस्तु 226,*a*. विराज् 236,*b*.

वामदेव्यविद्या f. Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. I, 326.

वामन् *gaṇa* पामन् zu P. 5,2,100. wohl nur ein zur Erklärung von वामन gebildetes Wort.

वामन 1) adj. *a)* oxyt. *gaṇa* पामादि zu P. 5,2,100. f. या *gaṇa* प्रियादि zu P. 6,3,34. Vop. 6,18. *klein gewachsen, zwerghaft;* m. *Zwerg* AK. 2,6,4,46. 3,2,19. Taik. 3,3,259. *fg.* H. 434. 1439. an. 3,413. *fg.* Med. n. 127. Halây. 2,456. ह्रस्व, वामन VS. 16,30. 24,1. 7. वामनो वर्की दक्षिणा। षष्टकी। तेनाग्नेय:। षष्टामन:। तेन वैष्णव: TBr. 1,6,4,6. TS. 1,8,4,1. 2,1,2,1. Âçv. Çr. 12,7,11. वामनो ह विष्णुरास Çat. Br. 1, 2,5,5. Spr. 4870. Bhâg. P. 5,24,18. 6,8,11. 18,7. 8,13,6. 18,24. कुब्जवामना यज्ञमाना ह्रस्वाश्च Snâpy. Bh. 4,3. Kâṭhâr. 5,3. MBh. 2,403. 3, 13736. 13843. 13856. 5,906. 13,2221. Hariv. 8394 (ग°). 12218. R. 2, 91,48. 3,10,19. 17,28. Suçr. 1,89,11. 322,13. Kâm. Nîtis. 7,41. 12,42. Ragh. 1,3. 10,61. Sin. D. 81. °विटपद्रुमा: Varâh. Bṛh. S. 54,19. वामनाधिरिव दीपभाजनम् *klein* Ragh. 19,51. दिनानि *kurz* Naish. 22,57. वामनी (गो) bei Colebr. und Lois. zu AK. 2,9,68 ist wohl eine falsche Form. — *b)* (vom vorhergehenden) *einem Zwerge eigen* u. s. w.: वपुस्, रूप *der Körper —, die Gestalt eines Zwerges* MBh. 3,8759. 12,12673. 13,6016. Hariv. 2279. 4159. 4166. R. 1,31,17 (32,13 Gorr.). Bhâg. P. 8,20,21. प्रादुर्भाव *die Erscheinung* (Vishṇu's auf Erden) *in der Gestalt eines Zwerges* MBh. 3,12847. Hariv. 2304. वामन n. *so v. a.* वामनं रूपम् Bhâg. P. 2,7,17. वामन in Verbindung mit पुराण (उपपुराण) oder

n. mit Ergänzung dieses Wortes *das vom Zwerge (Vishṇu) handelnde* Purâṇa 12,7,24. Mitr. P. S. 659, Çl. 4. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,3. 4. 59, *a*,10. 65,*a*,1 v. u. 79,*b*,36. Madhus. in Ind. St. 1,18,9; vgl. वामनपुराण. — *c*) vom *Weltelephanten* Vâmana *abstammend:* द्विप R. Gorr. 1,6, 26. — 2) m. *a*) Bein. Vishṇu's, der als *Zwerg* vom Daitja Bali sich so viel Land erbat, als er mit drei Schritten ausmessen würde, und darauf die drei Welten durchschritt, Taitt. 1,1,29. 3,3,259. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,12. MBh. 3,6072. 12,7543. 13,5879. Harîv. 2270. R. 1,31,3 (32,3 Gorr.). वामनाश्रम Râgân. 11,22. Gît. 1,9. Bhâg. P. 8,23,21. Weber, Kṛishṇaj. 294. Pâṇ. Gaṇ. 1,5,19. °प्रादुर्भाव Bhâg. P. 8,19 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 83,*a*,25. वामनावतार 14,*a*,10. 129,*a*, No. 232. वामनोत्पत्ति 78,*b*,17. als N. Vishṇu's zugleich Bez. eines best. Monats Vaiṣṇ. Bhâg. S. 105,14. übertragen auf Çiva MBh. 14,198. — *b*) Bez. *eines unter einer best. Constellation geborenen Menschen* Vaiṣṇ. Bhâg. S. 69,32. — *c*) Bez. *einer Ziege (Bocks) mit best. Merkmalen* Vaiṣṇ. Bhâg. S. 65,9. — *d*) *Alangium hexapetalum* Med. — *e*) = काण्ड H. an. — *f*) N. pr. des Weltelephanten des Südens (nach Andern des Westens) AK. 1,1,2,5. Taitt. 3,3,259. H. 170 (vgl. Comm.). H. an. Med. Hin. 147. Halâj. 1,104. MBh. 5,3561. 6,475. 2866. R. 1, 6,23. 7,31,36. Bhâg. P. 5,20,39. वामनेषी Taitt. 3,3,303. — *g*) N. pr. eines Schlangendämons H. 1311, Schol. MBh. 1,1551. 5,3626. Harîv. 230. — *h*) N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3595. — *i*) N. pr. eines Dânava Harîv. 197. — *k*) N. pr. eines der 18 Diener des Sonnengottes Vjâḍi beim Schol. zu H. 103. — *l*) N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,38. eines Sohnes des Hiraṇjagarbha Harîv. 14152. — *m*) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2105. ग्रन्थ ed. Bomb. — *n*) N. pr. verschiedener Männer Râga-Tar. 4,496. 6,155. 7,569. 594. 730. 1043. einer Autorität in der Mîmâṃsâ Hall 166. Verfassers der Kâvjâlaṅkâravṛtti Verz. d. Oxf. H. 200,*b*, No. 487. 210,*a*, No. 495. 211,*b*, No. 499. 212,*a*, No. 500. Sin. D. 6,13. der Kâçikâvṛtti Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,7. 126,*a*,30. 161,*b*,9. 162,*b*,24. 176,*a*,3. Med. Anh. 8. Uéóval. zu Uṇâdis. 1,52. Kull. zu M. 2,125. N. pr. eines Astronomen Ind. St. 2,251. 262. 274. eines buddhistischen Lehrers Târân. 4. 78. — *o*) N. pr. eines Berges MBh. 6,459. 462. — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras R. ed. Bomb. 2,91,45 (100,46 Gorr. रामणा ed. Schl.). Brahma-P. in L.A. (III) 50, 19. — 4) f. वामनी *a disease of the vagina* bei Wilson fehlerhaft für वामिनी. — 5) n. N. pr. eines nach Vishṇu, *dem Zwerge*, benannten Wallfahrtsortes MBh. 3,8108.

वामनक 1) adj. = वामन 1) *a*) Harîv. 8394. Vaiṣṇ. Bhâg. S. 67,9. Bhâg. P. 4,19. Bhâg. P. 4,5,18. — 2) m. *a*) = वामन 2) *b*) Vaiṣṇ. Bhâg. S. 69,31. — *b*) = वामन 2) *c*) MBh. 6,459. — 3) f. वामनिका N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2641. — 4) n. *a*) *die Gestalt eines Zwerges:* वामनकं कृत्वा Bhâg. P. 1,3,19. — *b*) = वामन 3) MBh. 3,8073.

वामनकाशिका f. = काशिकावृत्ति Colebr. Misc. Ess. II,249.

वामनजयादित्य m. = वामन + जयादित्य N. pr. des Verfassers der Kâçikâvṛtti Colebr. Misc. Ess. II, 40.

वामनत्व (von वामन) n. *Zwerghaftigkeit* Çiâḍ. Sâh. 1,7,70. °त्वं गम् *die Gestalt eines Zwerges annehmen* R. 1,31,6. कथं भगवता — वामनत्वं धृतं पूर्वम् Verz. d. Oxf. H. 45,*b*,5.

वामनद्वादशी Bez. *des 12ten Tages in der lichten Hälfte des* Kaitra, *eines Festtages zu Ehren Vishṇu's als Zwerges:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 58,*a*,23. fg.

वामनपुराण n. *das von Vishṇu als Zwerge handelnde* Purâṇa VP. Einl. XLVII. Verz. d. Oxf. H. 45,*b*,1. 84,*b*,3. 162,*b*,16. 270,*b*,40. 279,*a*,16.

वामनवृत्ति f. = काशिकावृत्ति Verz. d. Oxf. H. 161,*a*,13. °टीका 207, *b*, No. 488.

वामनव्रत n. Bez. *einer best. Begehung*, = वामनद्वादशीव्रत (s. u. वामनद्वादशी) ÇKDr.

वामनसूक्त n. Bez. *einer best. Hymne* Verz. d. Oxf. H. 398,*a*, No. 144. 405,*b*, No. 11.

वामनस्वामिन् m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,35.

वामनाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Verz. d. Oxf. H. 197,*a*, No. 460. 379,*b*, No. 394. 386,*b*, No. 509. Verz. d. B. H. No. 819.

वामनी (1. वाम + 2. नी) adj. *Güter bringend*, Beiw. des Purusha im Auge Kaiṣṇ. Up. 4,15,1.

वामनीकर् (वामन + 1. कर्) zum *Zwerge machen:* °कृत (विष्णु) Spr. 1053. *flach drücken:* गाढालिङ्गनवामनीकृतकुच 830.

वामनीति m. *Führer zum Guten* oder *des Guten:* भवा सुनीतिरुत वामनीतिः RV. 6,47,7.

वामनीय (von वम्) adj. 1) *mit Brechmitteln zu behandeln* Çiâḍ. Sâh. 3,3,2. — 2) *Erbrechen bewirkend* Suçr. 2,60,17. घृत 233,4. 11. Wise 180.

वामनेत्र 1) adj. (f. या) *schöndugig* Halâj. 2,326. — 2) n. Bez. *des Lautes* ई ÇKDr. nach dem Tantrâsâra.

वामनेन्द्रस्वामिन् m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 164,*a*, No. 360. fg.

वामभोजन् adj. *Liebes geniessend, des Guten theilhaft* RV. 3,55,22. 6,71,6.

वामभृत् f. N. einer Ishṭakâ (*Gutes bringend*) TS. 5,5,2,3. Kâṭh. 20, 6. Çat. Br. 7,4,2,35.

वाममार्ग m. = 1. वामाचार Verz. d. Oxf. H. 249,*b*,26.

वाममौर्य adj. *Werthes stehlend* TS. 6,2,2,5.

वामरथ m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. pl. *seine Nachkommen* Vârtt.

वामरथ्य m. patron. von वामरथ gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. ein Zweig der Âtreja Kâṭh. Ça. 10,2,21. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 89,6. 61,13.

वामरिन् H. ç. 178 fehlerhaft für वामरिन्.

वामलूर m. *Ameisenhaufe* AK. 2,1,13. H. 971. Halâj. 3,22. मुनयः प्रबुध्वामलूराङ्गाः Kâçikh. 22,19 nach Aufrecht.

वामलोचन 1) adj. *schöndugig*, f. आ AK. 2,6,2,3. Spr. 1520. MBh. 3, 2690. Râgân. 19,13. Mâlav. 35. Bhâg. P. 6,14,13. — 2) f. आ N. pr. einer Tochter des Viraketu Daçak. 24,5. 6.

वामशिव m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 97,22.

वामाक्षि n. Bez. *des Lautes* ई ÇKDr. — Vgl. वामनेत्र.

वामागम m. = 1. वामाचार Wilson, Sel. Works I, 251.

1. वामाचार m. *das Ritual der Çâkta von der linken Hand* Verz. d. Oxf. H. 250,*a*,2. 4.

2. वामाचार adj. *sich verkehrt benehmend, ein falsches Verfahren be-*

folgend Suça. 1,105,13. Pañkar. 2,6,8.

वामाचारिन् adj. *das Ritual der Çâkta von der linken Hand befolgend* Wilson, Sel. Works I, 250. 252. 254. fgg.

वामापीडन m. *Careya arborea Roxb.* oder *Salvadora persica Lin.* (s. पीलु) Çabdar. im ÇKDa.

1. वामिन् (von वम्) adj. *ausbrechend, ausspeiend:* सोम° TS. 2,3,8, 6. Çat. Br. 12,7,3,2. 8,10. Kâts. Ça. 19,1,2. 10. वामिनी योनिः *den empfangenen Samen wieder ausschüttend* Suça. 2,396,12. 397,1.

2. वामिन् (von 2. वाम) adj. = वामाचारिन् Wilson, Sel. Works I, 254. fgg.

वामिल adj. = वाम und दाम्भिक H. an. 3,583. Med. l. 130.

वामीयभाष्य n. Titel einer Schrift Ind. St. 1,470.

वामेतर (2. वाम + इतर) adj. *recht* (Gegens. *link*) Ragh. 2,31. 6,68.

वामोरु adj. *schöne Schenkel habend*, f. वामोरू P. 4,1,70. Vop. 4,30. MBh. 1,1903. 2,2988 (वामोरुः ed. Calc. °रूः ed. Bomb.). R. 2,96,23 (103,11 Gorr.). Ragh. 8,56. Mâlav. 53. Çiç. 8,24. Bhâg. P. 5,18,31. 8, 9,3. compar. f. वामोरुतरा und वामोरुतरा Vop. 7,49.

वाम्री f. N. pr. eines Frauenzimmers; vgl. वाम्रेय.

वाम्रेय m. metron. von वाम्री Pañkav. Br. 14,9,23.

1. वाम्य (von वम्) adj. = वामनीय 1) Çâñkh. Sraut. 3,3,3.

2. वाम्य adj. *dem* Vâma d. i. Vâmadeva *gehörig:* साम MBh. 3,12180. fgg.

3. वाम्य (von 2. वाम) n. *Verkehrtheit* oder *Widerspänstigkeit* Sâh. D. 551.

वाय (von वय) 1) m. patron.: वायस्य वैखानसस्य साम Ind. St. 3,234, b. — 2) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 234, b. 235, a. Pañkav. Br. 13,3,18. Lâṭj. 3,4,15. 6,10,2.

1. वाय (von 3. वा) am Ende eines comp. nom. ag. (P. 3,3,2) und act. s. तन्तु°, तन्त्र°, तुन्न°, वासो°. तिरश्चीन° m. *Querband* Ait. Br. 18,12,17.

2. वाय angebl. patron. von वि *Vogel* Nir. 6,26.

3. वाय = वी in पद°.

1. वायक (von 3. वा) nom. ag. *Weber, Näher* P. 3,1,145, Vârtt., Schol. सूच्या सूत्रं यथा वस्त्रे संसार्यति वायकः Spr. 5286. Katuls. 52,110. Bhâg. P. 5,26,26. 10,41,10. — Vgl. u. पट्टिकावायक.

2. वायक m. *Menge* Çabdar. im ÇKDa.

वायतेय (von वयत्) m. patron. des Pâçadjumna RV. 7,33,2.

वायदण्ड m. *Webstuhl* AK. 2,10,28 (nach ÇKDa. eine von Bharata erwähnte v. l. für वायदण्ड, wie der Text lesen soll). — Vgl. तन्तु°.

वायन n. *eine Art Backwerk* Taitt. 2,9,14. वायनक n. dass. Hir. 152 nach der Lesart des Schol. zu Hira 334. वायन *eine Art Räucherwerk* Vjutp. 143.

वायनिन् m. patron., pl. Saṃgr. K. 184, a, 3.

वायरज्जु (प्रतिकृतौ संज्ञायाम्) gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

वायव (von 1. वायु) adj. 1) (f. ई) *zum Winde —, zur Luft —, zum Gotte des Windes in Beziehung stehend, dem Winde gehörig —, geweiht, entsprungen u. s. w.:* श्येतवायवात्तरिता: सर्पा: Pân. Gaṇ. 2,14. मातर: स्कन्दस्य MBh. 9,2655. — 2) *nordwestlich*, f. mit oder ohne दिश् *Nordwest* Gaṇit. im ÇKDa. Âçv. Gṛhj. 4,9,3. Schol. zu Kâts. Ça. 412,9. Verz. d. Oxf. H. 76,b,10. Whitney zu Sûrjas. 8,19. — वायवीसंहिता vielleicht nur fehlerhaft für वायवीयसंहिता Verz. d. Oxf. H. 84,b,4. 5. — Vgl. ऐन्द्र°.

वायवीय adj. = वायव 1): परमाणव: Jâḍ. 3,104. Madhus. in Ind. St. 1,23,14. Suça. 1,151,15. पुराण Verz. d. B. H. 127, N. Verz. d. Oxf. H. 8, a, 2. 65, a, 33. स्कन्दपुराण 84, b, 34. °संहिता 270, b, 44. Verz. d. B. H. No. 648.

वायव्य 1) adj. P. 4,2,31. a) = वायव 1): पशूनीयंके वायव्यानारण्या-न्ग्राम्याग्र् ये RV. 10,90,8. पात्र (auch n. ohne diesen Beisatz) Bez. *gewisser wie ein Mörser geformter* Soma-*Gefässe* (Comm. zu TS. I, 477, 13) AV. 9,6,17. VS. 18,21. 19,27. 33. TS. 3,1,2,3. 6,3,2,3. स्थ्या-लीभिरन्ये यज्ञा गृह्यन्ते वायव्यैरन्ये 5,26,3. Kâṭh. 27,7. 9. Çat. Br. 3,6,3,10. MBh. 13,5266. वायव्यं श्वेतमालभते TS. 2,1,1,1. 3,1,6,1. पयस् Çat. Br. 2,6,2,6. स्रुच् 4,4,1,15. Ait. Br. 5,26. Kâṭj. Ça. 4,3, 7. 23,4,13. बलि Gobh. 1,4,10. Âçv. Gṛhj. 4,9,6. पशु Jâḍ. 3,287. गुण MBh. 12,6853. स्पर्श 14,1201. Suça. 1,151,4. 313,2. Vaitân. Bhp. S. 32, 8. भूकम्प 10. 27. 80,10. 46,64 (*in der Luft seiend*). वस्त्र MBh. 1,5265. 3,11964. 4,1876. 5,7173. R. 1,29,11. 56,10. 5,58,6. Vikr. 18. Uttarar. 105,13 (143,3). Kathâs. 14,29. पुराण Verz. d. Oxf. H. 79,b,36. — b) = वायव 2): धनरिपु Vaitân. Bhp. S. 27,6. दिश् 2, S. 7, Z. 14. 60, 3. Verz. d. Oxf. H. 103, b, 14. *Nordwest:* वायव्यपश्चिमान्तरे Vaitân. Bhp. S. 80, 21. नैर्ऋतवायव्यस्थो 5,86. वायव्ये 87,12. 93,4. Mân. P. 58,76. Weber, Rikat. Up. 308. वायव्यात् Vaitân. Bhp. S. 87,13. वायव्योत्पेरुदे: 24,24. वायव्या f. dass. 28. Mân. P. 34,101. H. 169, Schol. — 2) n. *das unter dem Gotte des Windes stehende* Nakshatra Svâti Vaitân. Bhp. S. 7,9. 107,4.

1. वायस (von 1. वयस्) Uṇâdis. 3,120. gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38. 1) m. a) *Vogel*, insbes. *ein grösserer* RV. 1, 164, 52. यथे वो वायसो दोषा दयमानो यबूबुधत् ved. Cit. in Nir. 4,17. Einschiebung nach RV. 5,51. — b) *Krähe* AK. 2,5,20. H. 1322. an. 3,735. Med. s. 37. Hall. 2, 90. यचाण्डालभूतपतितवायसेभ्यो ऽन्नं भूमौ निलिपेत् Âçv. Gṛhj. 4,9,8. M. 3, 92. Suça. 1,116,20. Kaçç. 95. Sharîr. Bh. 6,8. RV. Prât. 13,20. MBh. 3, 15746. 10,25. 40. यांसन्ति मम वायसाः। घनागतमतीतं च पञ्च संप्रति वर्तते 12,3062. R. 2,96,34. पदन्तरं वायसवेनतेयो: 3,33,58. किं न भक्षन्ति वा-यसाः Spr. 615. Suça. 1,202,15. Vaitân. Bhp. S. 95,17. °कृत in der Unterschr. ebend. Katuls. 18,147. 114,130. °पङ्क्ति: Verz. d. Oxf. H. 51, a, 34. Bhâg. P. 5,26,18. Pañkat. 140,16. fg. Hit. 9,6. 17,7. 13. 25,16. — c) *ein Fürst der* Yakshas gaṇa पर्णादि zu P. 5,3,117. — d) *Agallochum.* — e) *Terpentin* H. an. Med. — 2) f. ई a) *Krähenweibchen* H. an. परभृत इव नीडे रुतितो वायसीभि: Mṛicch. 108,2. Pañkat. 53,1. Hit. 67, 8. 13. — b) Bez. verschiedener Pflanzen: *Solanum indicum Lin.* AK. 2, 4,8,17. H. 1188. H. an. Med. Hin. 180. *Ficus oppositifolia* H. an. Med. = काकतुण्डी, काकनामन् und महाज्योतिष्मती Râgân. im ÇKDa. — Suça. 2,67,21. — 3) adj. (f. ई) a) *aus Vögeln bestehend:* श्येन्य: Nalod. 1,37. — b) *das Wort* वयस् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61. — Vgl. तीर्थ°, नगर°, निर्वायस.

2. वायस (von 1. वायस) 1) adj. (f. ई) *zu Krähen in Beziehung stehend, sie betreffend* u. s. w.: तीर्थ Bhâg. P. 1,3,10. विद्या (vgl. वायसविद्या) MBh. 12,3062. — 2) n. *Krähenschaar* P. 4,2,37, Schol.

वायसतीर n. *Krähen-Ufer*, wohl N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. °तीरीय P. 4,2,104, Vârtt. 9, Schol.

वायसतुण्ड adj. *krähenschnabel-ähnlich:* संधि *Kiefergelenk, processus coronoideus* Wise 57. Sçs. 1,340,16. 20.

वायसविद्या f. *Krähenauguralkunde*, Bez. des 93ten Adhj. in Vaitân. Bau S. 2 (S. 7, Z. 2). 107,11. Verz. d. Cambr. H. 36. Davon adj. वायसविद्यिक *sich damit beschäftigend, damit vertraut* P. 4, 2, 60, Vârtt. 3, Schol.

वायसादनी f. *Krähenfutter*, Bez. zweier Pflanzen: = काकतुण्डी und महाज्योतिष्मती Râǵân. im ÇKDa.

वायसान्तक m. *der Vernichter —, der Feind der Krähen* d. i. *die Eule* MBu. 10, 40.

वायसारति m. dass. AK. 2,5,15.

वायसाह्वा f. *die nach der Krähe Benannte*, Bez. zweier Pflanzen: = काकमाची und काकनामन् Râǵân. im ÇKDa.

वायसीकृ (1. वायस + 1. कृ) *in eine Krähe verwandeln:* त्वरमाणेन मूर्खेण मयूरो वायसीकृतः Spr. (II) 186.

वायसीभू (1. वायस + 1. भू) *in eine Krähe verwandelt werden:* °भूत Kathâs. 114, 131.

वायसेक्षु (1. वायस + इक्षु) m. *Saccharum spontaneum Lin.* Râǵân. im ÇKDa.

वायसोलिका f. *eine best. Arzneipflanze* Çabdar. im ÇKDa.

वायसोली f. dass. AK. 2,4,8,9. — Vgl. काकोली.

वायस्क Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4, 188 angeblich nach gaṇa पावादि zu P. 5,4,29.

1. वायु (von 2. वा) Uṇâdis. 1,1. m. 1) *Wind, Luft;* personif. *der Gott des Windes* (häufig mit Indra zusammen angerufen; s. RV. 1, 134. fg. 2,41. 7,90. 92) Naigh. 5,5. Nir. 10,1. AK. 1,1,8,37. H. 21. 1106. Halâj. 1,75. 5,61. 70. सोमः प्रक्रो वायवे ऽयामि RV. 7, 64, 5. इन्द्रो यो वायुना जयति गोमतीषु 4,21,1. प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वम् 5,41,6. Indra-Vâju 4,36,3. fgg. 7,90,7. 91,2. fgg. pl. RV. 8,7,3. 4,17. प्र वायवः पास्यर्थमोतिम् 2,41,14. यो दिशो वायुरिति तो दिशो वृष्टिरन्वेति Çat. Br. 3,2,3,3. श्रोवत्ति शून्या देवता न वायुः 14,4,3,23. यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः 4,1,3,19. TS. 2,1,4,1. 7,1,5,1. 5,10,2. °सम Pân. Gaṇ. 2,17. बलमाकारयामास पद्मयोर्जगतः लये MBu. 1,6030. यो न वायुर्नादित्यः पुरा पश्यति मे प्रियम् 3,2338. वायुना धूयमानो हि वनं दहति पावकः 2733. शीत Mnsm. 43. वायो सरति 54. षण्डवेग Vaitân. Bau. 8. 25,3. पूर्व 27,1. आग्नेय 2. दक्षिण 3. नैर्ऋत 4. वायव्य 5. उत्तर 7. ऐशान 8. शिव Bhâs. P. 3, 15, 38. ये वायवः सप्त MBu. 13, 1005. Harîv. 2479. 9494. आकाशात्तु विकुर्वाणात्सर्वगन्धवहः शुचिः। बलवाञ्जायते वायुः स वै स्पर्शगुणो मतः॥ *Luft* M. 1, 76. वायोर्विकुर्वाणाद्विरोचिषु तमोनुदम्। ज्योतिरुत्पद्यते 77. Verz. d. Oxf. H. 225, *a*, No. 849. यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः M. 3,77. वायोराकर्षणम् *das Einathmen von Luft* Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,26. उत्क्षिप्य वायुम्, वायुर्यकोतव्यः 27. तत्र श्वासो नाम बाह्यस्य वायोरभ्यन्तरानयनम् प्रश्वासः पुनः कोष्ठस्य बहिर्निःसारणम् Sarvadarçanas. 174,13. fgg. वायुं पीत्वा MBu. 13,360. भुजगो वायुमश्नाति Paṇḍat. 184,11. यत्र कन्यान्तःपुरे वायुं मुक्त्वा नान्यस्य प्रवेशो ऽस्ति 44,11. unter den fünf Elementen Nalâs. 1,1,13. Verz. d. Oxf. H. 240, *b*, 3. Sarvadarçanas. 106, 3. 176,1. fgg. °धातु 21, 6. वायुः क्षात् *Hauch* VS. Prât. 1, 6. Içop. 17. *fünf Winde* im Körper AK. 1,1,6,39. Siddhânt. 29. Harîv. 2479. 9494. Verz. d. Oxf. H. 225, *b*, No. 849. in der Medicin (wie वात u. s. w.) Sçs. 1,23,10. 48,4. 80,1. वायुनाक्रान्तदेहः so v. s. वायुरोगेणाक्रान्त° Kathâs. 64,14. — गाधा वायुगीताः M. 9,42. MBu. 1, 7682. वायुरुत्तरोत्तादभाषत 3, 2991. वायोरस्त्रम् 12020. Sçs. 1,19,18. Vaitân. Bau. S. 43, 44. 46, 64 (*Luftgott*). 53, 63. गन्धानां चैव सर्वेषां भूतानामशरीरिणाम्। शब्दाकाशवतां (काल st. आकाश die neuere Ausg.) च वायुरीशस्तदा कृतः॥ Harîv. 12493. 265. Fürst der Gandharva VP. 153, N. 1. ततः प्रभञ्जनो वायुर्बलवान् चोदितः। मा शब्द इति सर्वत्र प्रचक्रामाथ तां सभाम्॥ Harîv. 2911. Wagenlenker des Feuers 2480. Rasn. 3, 27. °मतनिवर्हण Verz. d. Oxf. H. 230, *b*, 39. Regent des Nakshatra Svâti Weber, Ǵjot. 94. Nax. 2, 300. 373. Hüter von Nordwest H. 169. pl. *die* Marut Kathâs. 115, 57. Mân. P. 128, 28. deren neunundvierzig H. ç. 5. sg. N. eines der Marut R. 1, 47, 5. Mir. 142, 13. eines Vasu Harîv. 11340. Weber, Rigat. Up. 312. — वायुप्रणोत्र Çat. Br. 4, 4, 4, 5. °चिति 8, 4, 4, 12. वायोरभिक्रन्दः N. eines Sâman Lâṭy. 7, 3, 11. Ind. St. 3, 235, *a*. वायोरनत्यम्, वादित्यम्, ऐषिरम्, परम्, पराणाम्, भासम्, विकर्म, व्रतम्, स्यरम्, स्वरम् und स्वार्यम् desgl. Ind. St. ebend. — 2) N. pr. eines Daitja Harîv. 2285. 14288. — 3) Bez. *des 41sten* Muhûrta Ind. St. 10, 296. — 4) mystische Bez. *des Buchstabens* य Weber, Rigat. Up. 317. fg. — Vgl. महा°.

2. वायु (von 3. वा) adj. *matt, müde:* ते वायवे मनवे बाधितायावासयन्युषसं सूर्येण RV. 7, 91, 1. Der Vers ist durch Missverstehen des वायवे an seine Stelle gekommen.

3. वायु (von वी) adj. 1) *appetens:* वायवः स्थाद्वायवः स्थ TS. 1, 1, 6, 1. VS. 1, 1. Kälber sind angeredet: *ihr seid Näscher, seid zudringlich;* deshalb trennt man sie von den Müttern. = गन्तारः Comm. zu TS. — 2) etwa (zum Genuss) *einladend, appetitlich:* वनर्पदो वायवो न सोमाः RV. 10, 46, 7. ये वायवं (d. i. °वः, nicht °वे, wie Padap. annimmt) इन्द्रमादनासः 7, 92, 4.

वायुक m. Hypokoristikon von वायुदत्त P. 5, 3, 88, Vârtt. 6, Schol.

वायुकेतु m. *Staub* Hit. 158. — Vgl. वातकेतु.

वायुकेश adj. etwa *flatternde Haare habend:* Gandharva RV. 3, 38, 6.

वायुगण्ड m. *Blähungen, Indigestion* Taitt. 2, 6, 14.

वायुगुल्म m. *Strudel* Taitt. 1, 2, 11.

वायुगोप adj. *den Wind zum Hüter habend* RV. 10, 151, 4.

वायुग्रन्थि m. *eine Verhärtung in Folge einer Störung des Windes im Körper* Mân. P. 39, 55.

वायुग्रस्त adj. vom *Winde gepackt, in einem best. krankhaften Zustande sich befindend* Vaitân. Bau. S. 87, 37 (= वातिलेन क्रोडीकृतः Comm.). Daçak. 92, 18.

वायुचक्र m. N. pr. eines der sieben Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBu. 9, 2222.

वायुज Paṇḍat. 44, 14 fehlerhaft; die ed. Bomb. liest सवाकुयुगलं चिरन्नार्जुनवत्त°.

वायुजाल m. N. pr. eines der sieben Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBu. 9, 2222.

वायुज (von 1. वायु) n. *der Gattungsbegriff Luft* Sarvadarçanas. 106, 8.

वायुदत्त m. N. pr. eines Mannes gaṇa प्रभ्वादि zu P. 4, 1, 122. सख्यादि zu 2, 30. 3, 3, 56, Vârtt. 6, Schol. Davon मैत्र und °दत्त्य adjj. 4, 2, 104,

Vârtt. 23, Schol.

1. वायुदत्तेय adj. von वायुदत्त gaṇa सप्त्यादि zu P. 4,2,80.

2. वायुदत्तेयी m. patron. von वायुदत्त gaṇa मुखादि zu P. 4,1,123.

वायुदार m. *Wolke* Taik. 1,1,32. Hin. 18.

वायुदिश् f. *die Weltgegend des Windgottes d. i. Nordwest* Vaitân. Bṛh. S. 31,4. 87,24.

वायुदीप्त adj. als Auguralausdruck von Thieren Vaitân. Bṛh. S. 80, 88. — Vgl. u. दीप्.

वायुदेव adj. Vâju zur *Gottheit habend*, n. *das* Nakshatra Svâti Vaitân. Bṛh. S. 60,21.

वायुदेवत adj. dass.. ज्ञासंवत्सर Weber, Ġjot. 35.

वायुदेवत्य adj. dass. Vaitân. Bṛh. S. 81,8.

वायुधारण adj. in Verbindung mit दिवस Bez. *gewisser Tage in der lichten Hälfte des* Ġjaishṭha Vaitân. Bṛh. S. 22,1.

वायुन (?) m. *ein Gott* H. ç. 3.

वायुनिघ्न adj. = वायुघ्नस्त Daçak. 93,2.

वायुपथ m. 1) *Windpfad*, Bez. *einer best. Region im Luftraum* Harîv. 13379. R. 4,60,8. 20. Vgl. वातपथ. — 2) N. pr. eines Fürsten Kathâs. 106,164. fgg.

वायुपुत्र m. *ein Sohn des Windgottes*, patron. 1) Hanumant's R. 1, 3,26. 4,4,11. 5,30. Weber, Râmây. Up. 361. fg. — 2) Bhîma's Duryodhana im ÇKDa.

वायुपुत्रय् (denom. von वायुपुत्र) Hanumant *darstellen*: °पुत्रापितं (impers.) तया संघाब्धिलङ्घने Râéa-Tar. 6,226.

वायुपुर n. N. pr. einer *Stadt* Wilson, Sel. Works II, 23.

वायुपुराण n. *das vom Windgotte geoffenbarte* Purâṇa, N. eines Purâṇa VP. Ind. XXII. fg. Verz. d. Oxf. H. 47,*a*, No. 103. 65,*b*,16. 67,*b*, No. 117. 84, No. 142. 182,*b*,3 v. u. 270,*b*,11. Verz. d. B. H. No. 1231.

वायुफल n. 1) *Hagel*. — 2) *Regenbogen* H. an. 4,297. Med. l. 163.

वायुबल m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBu. 9,2331. eines Kriegers auf Seiten der Götter im Kampfe gegen die Asura Kathâs. 48,17. 20.

वायुबीज ? Sarvadarçanas. 170,17.

वायुभक्त 1) adj. (f. आ) *nur Luft geniessend*, von *Luft lebend* MBu. 2, 298. 5,7347. R. Gorr. 1,45,3. 52,28. Bhâg. P. 4,8,78. 23,5. — 2) m. N. pr. eines Muni MBu. 2,108.

वायुभक्तक adj. = वायुभक्त Spr. 2131.

वायुभक्ष्य 1) adj. dass. R. Gorr. 1,65,29. 3,15,12. — 2) m. *Schlange* Râéân. im ÇKDa.

वायुभूति m. N. pr. eines der elf Gaṇâdhipa bei den Ġaina H. 31. Wilson, Sel. Works I, 298. 300.

वायुभोजन adj. *nur Luft geniessend*, von *Luft lebend* Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,1. Bhâg. P. 7,4,28.

वायुमण्डल 1) m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBu. 9,2221. — 2) n. *Wirbelwind* MBu. 12,6886.

वायुमत्त् (von 1. वायु) adj. P. 8,2,9, Schol. 1) *mit Wind verbunden* Kâç. Ça. 4,14,13. — 2) *das Wort* वायु *enthaltend* u. s. w. TS. 5,2,20, 7. 3,2,4. 5,2,2.

वायुमय adj. *die Natur der Luft* oder *des Windes habend* Çat. Bṛ. 14, 7,2,6. MBu. 12,6886.

वायुमरुत्स्तिपि f. N. einer mythischen Schrift Lalit. ed. Calc. 144,4.

वायुर adj. nach dem Comm. *windig* (von 1. वायु) Çat. Bṛ. 14,8,2,1.

वायुरुजा f. *Wind-Krankheit* so v. a. *Entzündung*: नेत्राभ्यां सरुजाभ्यां यः प्रतिवातमुदीक्षते। तस्य वायुरुजात्यर्थं नेत्रयोर्भवति ध्रुवम्॥ MBu. 12,3210.

वायुरेतस् m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Vater der Marut gelten, MBu. 9,2332.

वायुरोगा f. *Nacht* Gaṇîkâ. im ÇKDa. wohl fehlerhaft für वायुरा उषा (zwei Synonyme).

वायुलोक m. *die Welt des Windgottes* Çâṅkh. Bṛ. 20,1. Kaush. Up. 1,3.

वायुवर्त्मन् n. *der Pfad des Windes* so v. a. *Luftraum, Atmosphäre* H. 103, Schol. Çâṇḍaṇ. im ÇKDa. (angeblich m.).

वायुवाह m. *Rauch* (*den Wind zum Vehikel habend*) H. 1103.

वायुवाहन adj. *den Wind zum Vehikel habend*; m. Bein. Vishṇu's H. ç. 68. Çiva's Çiv.

वायुवाहिनी f. Bez. *desjenigen Gefässes, welches den Wind im Körper führen soll*, ÇKDa. nach dem Vâmakêça.

1. वायुवेग m. *die rasche Bewegung des Windes*: °सम R. 2,40,17.

2. वायुवेग 1) adj. *windschnell*. — 2) m. N. pr. *a*) eines der 7 Ṛshi, die als Vater der Marut gelten, MBu. 9,2221. — *b*) eines Fürsten MBu. 1,2699. 5,80. — 3) f. आ N. pr. einer Jogini Kâlâdâkâra 4,29.

वायुवेगपथस् f. N. pr. der Schwester Vâjupatha's Kathâs. 108,153. fgg.

वायुष m. *ein best. Fisch* Râéân. im ÇKDa.

वायुसंहिता f. Titel einer Schrift Hall 18. Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,46.

वायुसख m. *Feuer* (*den Wind zum Freunde habend*) Hall. 1,62.

वायुसखि m. dass. AK. 1,1,2,50.

वायुसूनु m. *der Sohn des Windgottes*, patron. Hanumant's R. 1,3, 31. 5,39,31. Weber, Râmây. Up. 301. 305.

वायुस्कन्ध m. *Windregion* Harîv. 13694 (वातस्कन्धान् die neuere Ausg.). Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,19. सप्तम Vaitân. Bṛh. S. 81,24. Comm. zu Gobhila. 4,1. — Vgl. वातस्कन्ध.

वायुस्तन् m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBu. 9,2231.

वायोधस adj. *dem* Vâjodhas (Indra) *gehörig* u. s. w. Kâç. Ça. 4,5. 15. 11,3,3. 6,11. 7,19.

वायोविग्धर्क (von 1. वयस्+विग्धा) m. *Vogelsteller* Çat. Bṛ. 13,4,2,12.

वार्य्य (von वर्य्य) m. patron. des Satjaçravas ṚV. 5,79,1. 2.

वार्व्यभिभूत adj. = वायुघ्नस्त Sarvadarçanas. 78,10.

वार्व्यास्पद n. *die Region der Luft, Luftraum, Atmosphäre* Dhanañgaṇa im ÇKDa.

वारु n. 1) *Wasser* Naigh. 1,12. Nir. 5,12. AK. 1,2,2,3. H. 1069. Hall. 3,26. उज्जा चक्रथुः पार्त्वे वाः ṚV. 1,116,22. कन्याइ वारवायती (nach dem Comm. zu 2) 8,80,1. तप्त VS. 5,11. वार्भ्यस् 22,28. मामनु प्र ते मनः पथा वारिव धावतु *Wasser im Rinnsal* 18,145,6. 2,4,6. दुदे पदेनेव दिव्यं घृतं वाः 18,12,3. 99,4. 105,1. AV. 3,13,3. Çat. Bṛ. 6,1,1, 9. Çâṅkh. Çr. 12,16,3. शिववार्विगाह्य Bhâg. P. 4,12,17. Naish. 3,51.

वाराम् Spr. (II) 346. Prab. 87,6. संसारवारी निधेः 103,14. वार्भिस् Bala. P. 3,13,17. 4,1,18. 8,18,31. मरुद्गिवार्धराः 4,24,63. 10,14,11. nom. pl. वारस् (m. oder f.) 4,31,15. — 2) *stehendes Wasser, Teich:* ग्रतौदप्रुक्वसा नाम वृत्रं वार्णा वातस्तविषीभिरिन्द्रः RV. 4,19,4. वारिन्मण्डूक इच्छति 9,112,4. 8,87,3. — Die Stellen RV. 1,132,3. 10,93,3 scheinen entstellt zu sein; über 4,5,3 s. u. 4. वार् 1). — Vgl. वारि, वार्वती.

1. वार m. = वाल 1) *Schweifhaar, insbes. Rosshaar,* ग्रौपद Nir. 1,20. P. 8,2,18, Vârtt. 2. ग्रत्यो न रघ्र्यो दोधवीति वारान् RV. 2,4,4. ग्रश्व 1, 32,12. AV. 10,4,2. ग्रश्व° P. 8,2,18, Vârtt. 2, Schol. — 2) *Haarsieb,* auch n. pl.: ग्रव्यो वारैः परिपूतः RV. 9,2,2. तिरो वारण्यव्यया 9,67,4. 103,2. 1,6. 16,3. 20,1. 30,3. 98,7. — Vgl. उद्वार, पुरु°, वीत°.

2. वार adj. nach dem Comm. *schwer zu bändigen:* Ross TBa. 1,1,3, 3. die Stelle schliesst sich an RV. 1,32,12 an.

3. वार (von 1. वर्) m. *das Zurückhalten, Abwehr;* s. तनु°, दुर्वार, वाण°.

4. वार (von 2. वर्) 1) m. *a) Kostbares, Schatz:* सुकृते वारमृण्वत्यग्निर्द्वारा व्यृण्वति RV. 1,128,6. 131,5. वि रुक्ष्यमग्निरानुषग्भगो न वारमृण्वति (vgl. 1,58,3) 5,16,2. वारं न देवः सविता व्यूर्णुते 9,110,6. Hierher ziehen wir षड्वारिंशाणामप वारिव (für वारमिव mit unregelmässig behandelter Elision) त्वन् 4,5,3. Incorrect sind wohl die Stellen 1,132,3. 10,74,2. Vgl. ग्रशस्त°, ग्रधद्वार, दाति°, पुरु°, भूरि°, विश्व°. — *b) der für Etwas bestimmte Augenblick, die an Jmd kommende Reihe;* = ग्रवसर und क्षण AK. 3,4,25,163. H. 1509. an. 2,434. Med. r. 66. fg. Halâj. 4,65. स वारो वक्रुभिर्यो वर्तयमुकोरो नरैः MBh. 1,6211. सो ऽयमस्मानुप्राप्तो वारः कुलविनाशनः 6218. कस्य वारो ऽय भोक्तने 6308. तस्य वारो ऽय संप्राप्तस्तत्र गन्तुम् Kathâs. 18,270. 22,208. एकदा शशकस्यागाद्वार एकस्य तत्कृते 60,96. ग्रथ कदाचिद्दृढशशकस्य वारः समायातः Hit. 67,21. Sin. D. 33,18. वारक्रमात् Kathâs. 113,10. °क्रमेण 18,268. स्ववारं समास्था so v. a. *seinen Platz einnehmen, an seinen Platz sich stellen* R. 2,80,3. मुरतवाररात्रिषु *in den zum Beischlaf bestimmten Nächten* Ragh. 19,18. — *c) Mal* (mit Zahlwörtern): कति कति न वारान् Spr. 5173. Prab. 60,4. वारांस्त्रीनन्यान् Kathâs. 43,124. Râéa-Tar. 3,332. 4,167. भूरिभिर्वारैः 5,20. वारमेकम् Kathâs. 30,136. °त्रयम् Pañcat. 1,4, 21. 9,38. वाराणां शतं भुङ्क्ते भूरिवारान् Schol. zu P. 5,4,17. Vop. 7,70. बहुवारान् Schol. zu Bhatt. 3,32. पञ्चमे वारम् Kathâs. 49,92. वारे तु पञ्चमे 43,125. Râéa-Tar. 3,333. त्रिवारम् Verz. d. Oxf. H. 102,*b*,4. सकृत्सैकवारे स्यात् AK. 3,4,22 (23),4. एकवारम् (s. auch bes.) *irgend ein Mal* Pañcat. ed. orn. 64,22. सर्ववारम् *alle auf ein Mal, alle zugleich* 58,18. दशवारञ्च *zehnmalig* Pañcat. 1,8,21. वारं वारम् *oftmals, häufig* Taik. 3,4,3. Spr. 738. Kathâs. 13,182. Hit. 67,12. 85,14. वारं वारेण dass. Taik. 3,4,3. Vgl. त्रि°, षड्°, सप्त°. — *d) der wechselnde (der Reihe nach von einem Planeten beherrschte) Tag, Wochentag* (vollständig दिव°, दिवस°) H. an. Med. व्रजति तमोभूते ऽस्मिन्मृष्टादौ भास्करादिभिः सृष्टैः। यस्मादिनप्रवृत्तिर्दिनवारो ऽर्कोदयात्तस्मात् ॥ Brahmas. सृष्टेर्मुखे धातृमये हि विश्वे यस्मिन् मृष्टेघिनपूर्वकेषु। दिनप्रवृत्तिस्तदधीश्वरस्य वारस्य तस्मादुदयात्प्रवृत्तिः ॥ Çâtâtapi nach Kern. °प्रवृत्ति Ganit. Madhyamâdh. 6, Comm. दिनवारप्रवृत्ति ebend. वारो भौमस्य Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,35. 86,*a*,33. *b*,30. 93,*a*,34. °व्रतानि 285,*a*,27. 332,*a*,13. 337,*a*,19. fgg. 4 v. u. Comm. zu Sâmas. 1,52. Sabha. K. 1,*b*. गुरु° *Donnerstag* Journ. of the Am. Or. S. 6,177. Vgl. कुल°, दिवस°, प्रतिमङ्गल° (*jeder Dienstag*), बुध°, बृहस्पति°, भौमारक°, भानु°, भौम°, मङ्गल°, रवि°, शनि°, शुक्र°, सूर्य°. — 2) f. या *Buhldirne:* तूर्याणि गणिका वाराः (तूर्याणि शतसंख्यानि ed. Bomb.) MBh. 6,3766; vgl. वारस्त्रन्यका u. s. w.

5. वार् 1) m. *a) Menge* AK. 2,5,39. 3,4,25,163. H. 1411. an. 2,434. fg. Med. r. 66. Halâj. 4,2. चापान्निर्यातो बाणवारः Pâñcavimçatim. 4,131 nach Aufrecht. — *b) eine best. Pflanze,* = कुब्जा Taik. 3,3,264. H. an. Med. — *c)* Bein. Çiva's diess. — *d) Pfeil* H. ç. 142. — *e) Thür, Thor* Med. — 2) n. *a) ein Geschirr für berauschende Getränke* (मदिरापात्र) H. an. — *b) ein best. künstlich zubereitetes Gift* H. 1314 (चार् v. l.). — Vgl. ग्रश्ववार (in der Bed. *Reiter* auch Râéa-Tar. 5,342. 458), मधु°, सिन्धु°, सिन्धु°.

1. वारक (von 1. वर्) nom. ag. *Zurückhalter, Abwehrer* Med. k. 131. न चास्ति तस्य वारकः MBh. 12,12079. 12110. ग्र° vielleicht *keinen Abwehrer habend, ungehemmt* Mârk. P. 49,17. — Vgl. कार°, मारिव्यसन°, वज्र°.

2. वारक = 4. वार् 2): वारकेण *der Reihe nach* Pañcat. ed. orn. 44,25.

3. वारक 1) m. *a) ein best. Gang des Pferdes* Med. k. 131. — *b) eine Pferdeart* (ग्रश्वविशेष) Viçva im ÇKDa. *Pferd* Wilson nach ders. Aut. — 2) n. *a)* = काष्टस्थान Hâr. 128. — *b) ein best. wohlriechendes Gras* H. 1158, v. l. für वालक. Brahmavaiv-P. 2,50.

4. वारक MBh. 14,1130 fehlerhaft für चारक *in Bewegung setzend,* wie die ed. Bomb. liest; Kathâs. 72,20 fehlerhaft für वार्धक *Alter.*

वारकन्यका (4. वार् + क°) f. *Buhldirne (ein umwechselndes oder ein zur Verfügung stehendes Mädchen),* neben गणिका Daçak. 78,11. fg. — Vgl. वारनारी, °मुख्या, °युवति, °योषित्, °वधू, °विलासिनी, °सुन्दरी, °स्त्री, वाराङ्गना und गणिका वाराः MBh. 6,3766.

वारकिन् m. 1) *Feind.* — 2) *ein scheckiges Pferd* (चित्राश्व). — 3) *ein von Blättern sich nährender Asket* (पर्णाशीविन् st. पर्णाशिव ÇKDa.). — 4) *das Meer* Med. n. 107.

वारकीर m. 1) *der Bruder der Frau* Taik. 2,6,8; vgl. वाल्कीर. — 2) = द्वारयालिन् (वारयालिन् ÇKDa.). — 3) = वाडव. — 4) = यूका. — 5) = रोलरोधिनी (वेणिबोधिनी ÇKDa.). — 6) नीराक्षितरूप Med. r. 288.

वारङ्ग m. *Vogel* Taik. 2,5,27.

वारङ्ग Uṇâdis. 1,121. m. *Heft, Griff* Uṇâval. Suça. 1,24,10. 101,1. 2. Vîcbh. 23,14.

वारट 1) n. *Feld* Taik. 2,9,2. *eine Menge von Feldern* Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. या = वरटा *das Weibchen der Gans* H. 1327. N. *eines zu den* विष्किर *gehörigen Vogels* Vîcbh. 6,47.

1. वारण (von 1. वर्) 1) adj. (f. ई) *a) abhaltend, abwehrend, hemmend* Med. t. 205 (= निराकृति). परवारण° *feindliche Elephanten abwehrend* MBh. 1,2822. 3,11097. 14,2184. Hariv. 4553. पर° R. 5,16,20. रश्मि° MBh. 13,4641. व्याघात° AK. 2,8,2,32. H. 776. ग्रशेषविघ्नोप° Kathâs. 67, 1. वारण: शक्रवारणः *der Allen Widerstand leistende Elephant Indra's* Hariv. 1700. वारि जले रणति घरतीति वारणः समुद्रोद्भव इत्यर्थः Nîlak. — *b) Abwehr betreffend* Suça. 1,8,17; vgl. 119,10. — *c) scheu, wild:* मृग RV. 8,33,8. 10,40,4. वृक 8,55,8. हरिणी AV. 5,14,11. न्यृण्वेन वनिनो मृष्ट वारणः (ग्निः) RV. 1,140,2. — *d) gefährlich:* ग्रघमुत RV. 10,185,2. रक्षांसि Satap. Br. 3,1. — *e) verboten:* बहु वारणं क्रियते Ait. Br. 5,

21. — 2) m. c) *Elephant* AK. 2,8,2,2. H. 1217. an. 3,224. Med. p. 67. Hall. 2,59. 1,151. M. 3,10. MBh. 1,2823. 2826. 6005. 3,2857. 6,1762 (वरवारण ed. Bomb. st. रणवारण). 3, 457. 14, 2184. 2227. R. 2,55,33. 63,21. 91,8. R. Gorr. 2,47,3. Sucr. 1,104,6. 107,3. 112,2. Mālāv. 2, 1. Rāgh. 12, 93. Kumāras. 5, 70. Spr. 227 (II). 692. 2771. 4984. Varāh. Bṛh. S. 79,7. 81,29. 94,14. Gīt. 12,24. Kathās. 6,110. 19,68. 27,173. 52,118. 61,172. Daçak. 115,14. Naish. 22,45. शक्र° Harīv. 1700. °पति Kām. Nītis. 19,62. Spr. 4036. वारणेन्द्र Pāṇḍav. 1,4,61. Bhāg. P. 1, 11, 19. 5,25,7. मनो° 4,7,35. यत्नकरण° Rāja-Tar. 1,231. am Ende eines adj. comp. f. या R. 2, 114, 2 (nach dem Comm. वारण = कवाट). वारणी (वारिणी gedr.) *Elephantenkuh* H. an. 3,75. — b) *Elephantenhaken* (s. अङ्कुश) Daçak. 115, 14. — c) *Panzer* Çabdar. im ÇKDa. — d) Bez. *einer best. Verzierung auf einem Bogen:* वारणा (वरणा ed. Calc.) पत्र नीवर्णाः पृष्ठे भासन्ति दंशिताः MBh. 4,1326. — 3) n. a) *das Abhalten, Abwehren* H. an. Med. P. 1,4,27. Vop. 5,10. 20. AK. 3,4,33 (36), 13. 3,5, 11. अक्षस्य वडवाग्नेः Kāv. Ça. 20,2,12. दैश° Nir. 1, 20. Sucr. 1,10,1. 20. MBh. 7,8762. सत्त्वानाम् Harīv. 10618. रौद्रवृष्टि° Pāṇḍav. 1, 6, 60. घोर्व° MBh. 1,179 in der Unterschr. पक्षीभार° Verz. d. Oxf. H. 28, *b*, 23. घाण्डुदानव° Schol. zu P. 2,1,2. 6,3,30. 35. अङ्कुश° *das Abhalten, Zurückhalten, Lenken mittels eines Hakens* H. 1231. Hall. 2,67. वारण = हस्तवारण Gaṇḍn. im ÇKDa. — b) *ein Mittel zum Zurückhalten:* न भवति विसतन्तुर्वारणं वारणानाम् Spr. (II) 227. — c) etwa so v. a. वर्मन्. त्रिधातु वारणं मघु ṚV. 1,1,10. — d) = कृत्ताल Ausn. 34. — e) N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 5,600. — Vgl. घातप°, उष्ट्र° (auch Rāja-Tar. 2,130. 3,63. 70), दिग्वारण, दुर्वारण, मत्त° (in der ersten Bed. MBh. 3, 11097), शर°.

2. वारण (von 1. वरण) adj. *aus dem Holze der Crataeva Roxburghii bestehend* Çat. Br. 13,8,4,1. 3. Kāṭy. Çr. 1,3,36. 21,3,31. 4,26. Kauç. 83. 85. etwa auch: निर्तिक्ति यो वारणमग्नमत्ति ṚV. 6,4,3.

वारणकृच्छ्र m. *eine im Trinken von Reiswasser bestehende Pönitenz (Elephanten-Pönitenz)*: मासं परिमितसक्तूदकपानं वा° Prāyaçcittapr. 9,a,5.

वारणकेशर m. = नागकेशर Sucr. 2,496,7.

वारणकुक्ष्य m. Bez. *einer best. Blume* MBh. 13,2831.

वारणबुसा f. *Pisang, Musa sapientum* AK. 2,4,4,1.

वारणवल्लभा f. dass. Taik. 2,4,27.

वारणशाला f. *Elephantenstall* R. 1,12,11.

वारणसाह्वय adj. in Verbindung mit पुर oder n. mit Ergänzung dieses Wortes *die nach den Elephanten benannte Stadt* d. i. Hāstinapura MBh. 1,4966. 3,11326. 5,6002. 14,1501. Harīv. 9596. 11067. — Vgl. गजसाह्वय, नागसाह्वय.

वारणस्थल n. N. pr. einer Oertlichkeit (*Elephantenstation*) R. Gorr. 2,73,8.

वारणानन adj. *ein Elephanten-Gesicht habend*, m. Bein. Gaṇeça's Kathās. 67,1.

वारणावत n. N. pr. einer acht Tagereisen von Hāstinapura an der Gaṅgā gelegenen Stadt LIA. 1,662. fg. MBh. 1,877. 2350. 3832. 3847. 5710. 5714. 5874. 5904. 5,924. 1989. 2895. Harīv. 2096.

वारणावतक adj. *in Vāraṇāvata wohnend*: ज्ञाति: MBh. 1,5770. 5825.

वारणाह्वय = वारणसाह्वय MBh. 3,15083. 15,1098.

1. वारणीय (von 1. वर्) adj. *abzuhalten*: घ° *unaufhaltsam, unwiderstehlich*: उदक MBh. 1,693. यत्न 4,2112. 5,1858. Kathās. 57,1. — Vgl. दुर्वारणीय und unter अवारण.

2. वारणीय (von 1. वारण) adj. *am Elephanten befindlich* u. s. w.: कर *Elephantenrüssel* Kathās. 57,1.

वारतन्तव m. patron. von वरतन्तु Pravarādhy. in Verz. d. B. H. 56,35 (चारतंतता: die Hdschr.).

वारतन्तवीय m. pl. *die Schule des* Varatantu P. 4,3,102. Ind. St. 1,68, N. (वार्तान्तवीय gedr.). 3,257 (वार्तन्तवीय). 274 (वार्तान्तवेय).

वारत्र n. = वरत्रा *Riemen* ÇKDa. und Wilson.

वारत्रक adj. (देशे) von वरत्रा gaṇa राजन्यादि zu P. 4,2,53.

वारधान m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2408. fehlerhaft für वाट्यधान, wie die ed. Bomb. liest.

वारनारी f. *Buhldirne* Kathās. 73,137. 122,69. am Ende eines adj. comp. °क 16,65. — Vgl. वारकन्यका, वारयोषित् u. s. w.

वारपाशि s. वारपाश्य.

वारपाश्य m. pl. N. pr. eines Volkes: वारपाश्यापवाह्या: MBh. 6,352. वारवास्यापवाह्या: ed. Bomb. वारपाशि Wilson in VP. 188 (2,165 in der zweiten Auflage). — Vgl. पाशिवाट.

वारबाण m. n. gaṇa सर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Taik. 3,5,13. = बाणवार *Panzer, Wamms, Jacke* AK. 2,8,2,31. Taik. 3,3,14. H. 767. an. 4, 87. Hall. 2,397. 5,9. Rāgh. 4,35. Çiç. 15,116.

वारबुषा f. = वारणबुसा Çabdar. im ÇKDa.

वारबृषा f. dass. Çabdar. im ÇKDa.

वारमुख्या f. *Buhldirne* AK. 2,6,1,19. H. 533. Hall. 2, 228. häufig in Verbindung mit वेश्या, auch अङ्गना MBh. 3,10020. 5, 3054. Harīv. 8668. R. 1,9,11. R. Gorr. 1,9,10. 79,41. Bhāg. P. 1, 11, 20. 9, 10, 36. 10,33,42. Daçak. 66,4. 5. Das m. etwa in der Bed. *Tänzer, Sänger* Mālav. P. 69,15. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारयितव्य (von 1. वर्) adj. *abzuhalten* von (acc.): न तद्वारयितव्यास्मि MBh. 1,3898.

वारयुवति f. *Buhldirne* Daçak. 59,13. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारयोषित् f. dass. Rāgh. 3,19. Kathās. 23,79. Sin. D. 60,14. Bhāg. P. 10,75,13. वारयोषिन्मुख्या: Daçak. 76,8.

वाररुच adj. von Vararuki *verfasst*: काव्य Pat. in Verz. d. Oxf. H. 160,*a*,36. ग्रन्थ P. 4,3,116, Schol. फुल्लसूत्र Weber, Hāla S. 238.

वारलक s. नन्दि°.

वारला f. 1) *eine Art Bremse* H. an. 3,674. Med. l. 118. — 2) *das Weibchen der Gans* H. 1327. H. an. Med. Hall. 2, 96. — Vgl. वरला, वारटा.

वारलीक m. *eine Grasart*, = बल्बजा Çabdar. im ÇKDa.

वारवत्या f. N. pr. eines Flusses MBh. 2,374.

वारवधू f. *Buhldirne* H. 533. Çiç. 11,20. Kathās. 82,32. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारवन्त् (von 1. वार) adj. *langschweifig*: Ross ṚV. 1,27,1.

वारवर्त्तीय (von वारवन्त्) n. N. eines Sāman P. 5,2,59, Schol. TS. 5,5,6,1. TBr. 1,5,12,1. 8,2,5. 3,7,14,2. Āçv. Çr. 6,8,12. Pāṇḍav. Bh.

13,10,4. 17,5,7. Lit. 7,4,8. 9,5,15. Ind. St. 3,235,a. वारवन्तीयाग्य n. und वारवन्तीयोत्तर n. ebend. इन्द्रस्य वारवन्तीयम् 208,b.

वारवाणि 1) m. a) *Flötenspieler* Taik. 1,1,124. *ein vorzüglicher Sänger* Çabdar. im ÇKDa. — b) *Richter.* — c) *Jahr* Agastipâla im ÇKDa. — 2) f. *Buhldirne* Taik. 2,6,3. °वाणी Çabdar. im ÇKDa.

वारवारण m. n. v. l. für वारवाण gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31.

वारवाल m. N. pr. eines Agrahâra Râǵa-Tar. 1,121.

वारवासि s. वारवास्य.

वारवास्य m. N. pr. eines Volkes: वारवास्यापवाह्या: MBh. 6,352 nach der Lesart der ed. Bomb. वारपास्यापवाह्या: ed. Calc. वारवासि Wilson in VP. (II) 2,165.

वारविलासिनी f. *Buhldirne* Kathâs. 12,78. 82,24. Spr. 3167. Sin. D. 8,13. Prab. 15,3. 37,8, v. l. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारसुन्दरी f. dass. Hir. 144.

वारसेवा f. *Hurerei, Hurenwirthschaft* Ganîbu. im ÇKDa.

वारस्त्री f. *Buhldirne* AK. 2,6,4,19. Halâj. 2,235. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वाराङ्गना f. dass. Spr. 3132, v. l. Kathâs. 21,7. Râǵa-Tar. 4,660. — Vgl. रङ्ग°.

वाराटकि m. patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138. Davon adj. वाराटकीय ebend.

वाराणसी f. N. pr. einer Stadt, das heutige Benares, Taik. 2,1,16. H. 974. Halâj. 2,133. gaṇa मद्रादि zu P. 4,2,97. Schol. zu 2,1,16. MBh. 1,4084. 3,8056. 5,1883. 13,694. von Divodâsa erbaut 1955. 5795. 14,141. Lalit. ed. Calc. 20,12. 331,13. Spr. 920. Kathâs. 3,27. 19,54. 37,97. 69,48. 53. Râǵa-Tar. 3,297. Prab. 19,8. Paiçâcikîtrnd. 11,b,2. Verz. d. Oxf. H. 10,a,9. 39,a,31. 46,a,32. 53,a,39. 64,a,7. 68,b, No. 120. fgg. 83,b, No. 141. 121,b, No. 214. Bhâg. P. 7,14,31. Pârâśar. 4,2, 17. Ver. in LA. (III) 4,21. Çiç. ebend. 34,16. Hit. 49,22. Kâmrîç. 17,8. °माहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 8,a,28. 42,a,6. 75,b,28. 85,a,8. °योपर्वतयोर्माहात्म्यम् 45,a,3. °नाथ Verz. d. B. H. No. 1242. Das Wort wird auf die Namen zweier Flüsschen nördlich und südlich von der Stadt, वरणा und असि oder वसी (auch नाशी), zurückgeführt; vgl. Gâbâlop. in Ind. St. 2,74. Verz. d. Oxf. H. 46,a,33. Sherring, Sacred city 34. Padma-P. Kâçikh. 5,58. Hall Introd. ebend. — Vgl. वाणारसी.

वाराणसेय adj. von वाराणसी gaṇa मद्रादि zu P. 4,2,97.

वारालिका f. Bein. der Durgâ Taik. 1,1,52.

वारावस्कन्दिन् adj. Bez. des Agni Lit. 1,4,4.

वारासन (वारु + 1. सासन) n. *Wasserbehälter* Taik. 2,9,7. Hir. 214. — Vgl. वाःसदन und 4) वरासन.

वाराह (von वराह) 1) adj. (f. ई) a) vom *Eber kommend*, zu ihm —, zu Vishṇu *als Eber in Beziehung stehend:* उपानह् *aus Schweinsleder gemacht* TBr. 1,7,9,4. Çat. Br. 5,4,3,19. Lit. 8,1,24. मांस *Fleisch vom Wildschwein* Jîv. 1,253. MBh. 2,97. R. 2,91,66 (100,64 Gorr.). Suçr. 1,205,7. Verz. d. Oxf. H. 60,a,18. Varâh. Bṛh. S. 81,23. रूप *die Gestalt eines Ebers* MBh. 3,1558. 5085. 10959. 13529. Harîv. 2135. 5862. Kathâs. 11,36. 26,179. Lîlâv.-P. bei Muir, ST. IV, 34. तनु Harîv. 12420. Bhâg. P. 3,18,20. Mârk. P. 88,18. वपुस् 21,36. 47,7. VP. bei Muir, ST. IV, 31. प्रादुर्भाव Harîv. 2131. 2226 (die ältere Ausg. fälschlich वाराह). ज्ञातक Kathâs. 72,120. शासन Verz. d. Oxf. H. 11,a, N. 1. पुर s. u. गङ्ग 5). क्षेत्र Kathâs. 39,37. Râǵa-Tar. 6,186. 204. कल्प Bhâg. P. 3,11, 36. Mârk. P. 46,44. Verz. d. Oxf. H. 21,b, N. 2. 24,b,19. 30,a,33. 52, a,11. 65,b,30. 67,b, No. 117. मन्त्र Weber, Rimây. Up. 314. 361. बीज 315. पुराण Madhus. in Ind. St. 1,18,9. VP. 284. Verz. d. B. H. No. 1170. Verz. d. Oxf. H. 35,a,1. 57,a, No. 105. 59,a,39. 63,a,42. 79,b,37. 101, b,47. 104,a,30. Mârk. P. S. 639, Çl. 3. वाराहाख्या संहिता Verz. d. Oxf. H. 82,a,34. गायत्री Colebr. Misc. Ess. II, 152. Ind. St. 8,239. fg. — b) von Varâhamihira *verfasst,* — *ausgesprochen:* संहिता Titel von Varâhamihira's Bṛhatsaṃhitâ in den Hdschrr. °तान्त्रिकमुकुन्दमत Verz. d. B. H. No. 880 = Verz. d. Oxf. H. 334,a,3. — 2) m. a) Vishṇu *als Eber* MBh. 3,10927 (vgl. aber 10941). 17305 (वराह ed. Bomb.). Pârâśar. 4,7,3. Weber, Kâmmâd. 294. 296. — b) *ein Banner mit dem Bilde eines Ebers* MBh. 6,4134 nach der Lesart der ed. Bomb. (वराह ed. Calc.). — c) *Dioscorea:* °कन्द *Yamswurzel* Suçr. 1,226,4. = d) N. pr. eines Berges (vgl. वराह) MBh. 12,13422 (वराह ed. Bomb.). Harîv. 12407. 12539. — e) pl. N. pr. einer Schule Ind. St. 3,258. — Die dem m. वाराह zugetheilten Bedd. H. an. 3,768. fg. kommen वराह zu, wie ohne Zweifel auch zu lesen ist. — 3) f. ई a) *die personif. Energie* Vishṇu's *als Eber* H. 201, Schol. an. 3,769. Med. h. 22. Mit. 142,10. Weber, Rimây. Up. 326. Verz. d. Oxf. H. 23,b,25. 25,b, N. 5. 71,b,13. 81, a,41. 184,a,5. 9. pl. unter den Müttern Skanda's MBh. 9,2556. — b) *Dioscorea* AK. 2,4,5,16. Taik. 3,3,80. H. an. Med. Varâh. Bṛh. S. 54, 57. Suçr. 2,33,9. 100,16. 103,19. °मूल *Yamswurzel* 139,5. कृष्णसर्पस्वरूपेण वाराही कन्दसंभवा 161,10. — c) N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 65,b,24. — 4) n. a) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8088; vgl. वाराहतीर्थ. — b) N. eines Sâman Ind. St. 3,235,b. — Vgl. महा°, वज्रवाराही.

वाराहक adj. von वराह P. 4,2,80.

वाराहकर्णी f. = वाराहकर्णी *Physalis flexuosa Lin.* Râǵân. im ÇKDa. Ausg. 37.

वाराहतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,7. 77,a,14. — Vgl. वाराह 4) a).

वाराहद्वादशी f. = वाराहद्वादशी Verz. d. Oxf. H. 58,a,26. fg.

वाराहपत्नी f. = वाराहकर्णी Râǵân. im ÇKDa.

वाराहाङ्घ्री f. *Croton polyandrum Roxb.* oder *Croton Tiglium Lin.* Bhâvapr. im ÇKDa.

वाराहीतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 93,b,12. 104,a, 21. 108,b,27. 109,a,26. 279,a,47. 292,b,11. Verz. d. B. H. No. 1312.

वाराहीय n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 93,b,12.

वाराह्या f. patron. von वराह P. 4,1,76, Schol.

1. वारि Uṇâdis. 4,124. n. 1) = वारु *Wasser* Naigh. 1,12. AK. 1,2, 3,3. H. 1069. an. 2,455. Med. r. 68. Halâj. 3,26. 5,68. यथा खनन्खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति Spr. 4779. Varâh. Bṛh. S. 54,58. निपतति वारि तदा नचिरेण vom *Regen* 28,8. 9,37. 23,3. न वार्यञ्जलिना पिबेत् M. 4,63. °स्थ 37. वार्यनिलाशन adj. 6,31. घटं पूर्णं परमवारिणा R. 2,64,3. Kathâs. 18,302. मेघस्थ MBh. 1,1136. वातास्त Halâj. 1,59. वेला वृद्धिश्च वारिण: 2,32. मृद्वारि *Erde und Wasser* M. 5,126. 134. मृद्वारिशुचि 106.

कुश° 11,148. चन्दन° R. 3,53,57. येन धौता गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः P. Einl. 2. समाप्लुताभ्यां नेत्राभ्यां शोकक्लेशाश्च वारिणा MBh. 3,2172. 2963. R. 2,30,24. 5,31,3. acc. वारिम् Hariv. 12035. — 2) *ein best. Parfum*, = क्रौवेर H. an. Med. — 3) allegorische Bez. *eines Metrums von 94 Silben* RV. Prāt. 17,6. Ind. St. 8,107. 111. — Vgl. नेत्र°, मद्°.

2. वारि f. 1) *ein Ort, wo Elephanten eingefangen oder angebunden werden*, H. 1229. an. 2,455. Med. r. 68. वारी AK. 2,8,2,11. Med. r. 67. Halāy. 2, 68. Dhan. im ÇKDa. वार्यर्गलाभङ्ग Rāgat. 5,45. — 2) *ein Gefangener* H. an. — 3) *Rede, die Göttin der Rede* H. an. Med. r. 68. — 4) वारी *Topf, Krug* Med. r. 67. Dhan. im ÇKDa.

3. वारि nach Manibh. adj. = वरणीय in der Stelle: एष मे देवेषु वसु वार्यायिष्यते VS. 21,61. es ist aber वार्यम् घा° aufzulösen.

वारिक s. नाग°.

वारिकण्टक m. *Trapa bispinosa Lin.* Trik. 2,4,30.

वारिकर्णिका f. *Pistia Stratiotes Lin.* Çabdar. im ÇKDa.

वारिकर्पूर m. *ein best. Fisch*, = इल्लिश Trik. 1,2,18.

वारिकुब्जक m. *Trapa bispinosa Lin.* Trik. 1,2,37.

वारिकोश m. = कोशवारि *das beim Gottesurtheil angewandte Weihwasser* Kathās. 119,39.

वारिक्रिमि m. = जलमक्षिका *Wasserfliege* Trik. 1,2,25.

वारिगर्भोदर adj. *regenschwanger:* घन Çiç. 166.

वारिचत्वर m. *Pistia Stratiotes Lin.* Trik. 1,2,35.

वारिचर 1) adj. *im Wasser lebend, Wasserbewohner:* पतिन् MBh. 12, 9015. खग R. 4,44,42. चक्राक्रमादिव्रजेर्वारिचरोक्तितैः Kathās. 72,40. m. *Fisch* Dhanañgaja im ÇKDa. MBh. 12,5953. Bhāg. P. 5,9,22. 8,6,30. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes (*Fischer*) Varāh. Bṛh. S. 14,14. Mārk. P. 58,25.

वारिचामर n. *Vallisneria (Blyxa) octandra Roxb.* Trik. 1,2,35. — Vgl. सम्बुचामर.

वारिज 1) adj. *im Wasser entstanden* u. s. w. — 2) m. *Muschel* H. 1204. Çabdam. im ÇKDa. MBh. 4,2188. 8,409. 2985. 3043. R. 7,7,28. *Muschel (Fisch* Nilak.) oder *Wasserrose* MBh. 1,3373. — 3) n. a) *Wasserrose* H. 1162, Schol. Rāgān. im ÇKDa. Spr. 2973. Çiç. 4,66. Kathās. 42,224. 43,62. Bhāg. P. 10,20,47. वारिजात Verz. d. Oxf. H. 29,a,1. — b) *eine best. Gemüsepflanze* (गौरसुवर्णा). — c) *Gewürznelke.* — d) *eine Art Salz* (क्षौणीलवण) Rāgān. im ÇKDa. — Vgl. वारिसंभव.

वारिजात adj. *im Wasser entstanden;* m. *Muschel* MBh. 8,1803.

वारिजावन् Vop. 26,69.

वारिजीवक adj. *durch Wasser seinen Lebensunterhalt habend* Varāh. Bṛh. S. 13,18.

वारित्स्कर m. *Wasserdieb:* 1) Beiw. der Sonne, *die mit ihren Strahlen das Wasser an sich zieht*, Mārk. P. 78,26. 105,8. 108,14. — 2) *Wolke* Çabdam. im ÇKDa.

वारिति adj. nach dem Comm. *am Wasser wachsend, Wasserpflanze:* देवं वर्किर्वारितीनाम् VS. 21,27. 28. 21,44. TBr. 2,6,14,5. Āçv. Çr. 3,6,13.

वारित्रा f. *Regenschirm* Trik. 2,10,13. — Vgl. जलत्रा.

वारिद 1) adj. *Wasser gebend* M. 4,229. *Regen gebend:* गर्भाः Varāh. Bṛh. S. 21,12. — 2) m. *Regenwolke* AK. 1,1,2,8. H. 164, Schol. Mṛkkh. 86,20. Spr. 1332. 1840. 2776. 4891. Uttarar. 93,8 (120,14). Wilson, Śiśupāl. S. 64. — 3) m. (wie alle Wörter für *Wolke;* vgl. AK. 2,4,8, 25) *Cyperus rotundus Lin.* Suçr. 2,224,16. Varāh. Bṛh. S. 51,18. — 4) n. = वाला Çabdar. im ÇKDa. = वाल *ein best. vegetabilisches Parfum* Wilson nach ders. Aut.

वारिद m. *der Vogel* Kāṭaka Wilson nach Çabdaratn.

वारिधर m. *Regenwolke* MBh. 3,12340. Mṛkkh. 84,14. Vikr. 73. Spr. 1335. 2522. 4812. Verz. d. Oxf. H. 117,b,6.

वारिधानी f. *Wasserbehälter, Wasserfass* Kathās. 27,91.

वारिधापयत्त m. patron. Āçv. Çr. 12,14,8.

वारिधार m. N. pr. eines Berges Bhāg. P. 5,19,16. VP. 180, N. 8.

वारिधारा f. *Wasserstrom*, sg. und pl. Vishṇ. 8. Mṛkkh. 91,4. Megh. 84. Spr. 737. Kathās. 9,89. 105,47. Prab. 26,6. am Ende eines adj. comp. f. घा Rāgat. 16,66.

वारिधि m. Vop. 26,182. *das Meer* Çabdar. im ÇKDa. Kir. 1,23. Spr. 177 (II). 2619. Kathās. 12,148. 18,301. 385. 22,218. 43,198. Rāja-Tar. 1,253. 3,71. पूर्व° 479. °सुता Gir. 12,27. sieben *Meere* Bhāg. P. 5,1,40. Bez. *der Zahl vier* (auch *der vierte*) Ind. St. 8,345. — Vgl. तीर°.

वारिन् (wohl von 2. वर्) nom. ag. in मूल° und काण्डवारिणो.

वारिनाथ m. *der Gebieter des Meeres: das Meer; Wolke; der Aufenthaltsort der Schlangen* Çabdaratn. bei Wilson.

वारिनिधि m. *das Meer* H. 1074, Schol. Çabdar. im ÇKDa. Spr. 1992. Kathās. 25,33. Rāja-Tar. 3,78. पूर्व° 337.

वारिप adj. *Wassertrinker, der das Wasser ausgetrunken hat* MBh. 13,7259.

वारिपथ m. *Wasserstrasse, Wasserverbindung:* वारिस्थलपथान्विता भूः Kām. Nītis. 4,32. *Wasserfahrt, Seefahrt:* इयं (नौः) वारिपथे युक्ता MBh. 1,5641. वारिपथोपजीविन् *vom Seehandel lebend, Seehandel treibend* Çiç. Cu. 136,11. प्रतिकृतौ संज्ञायाम् gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

वारिपथिक adj. *zu Wasser fahrend, — eingeführt* P. 5,1,77, Vārtt. 1.

वारिपर्णी f. *Pistia Stratiotes Lin.* AK. 1,2,2,37.

वारिपालिका f. dass. Çabdam. im ÇKDa.

वारिपूर्णी f. dass. Colebr. zu AK. 1,2,2,37.

वारिप्रवाह m. *Wasserfall* AK. 2,3,5. Çabdam. im ÇKDa.

वारिप्रश्नी (lies °पृश्नी) f. *Pistia Stratiotes Lin.* Çabdam. im ÇKDa.

वारिफल n. *die Frucht der Flacourtia cataphracta* Trik. 2,4,26. — Vgl. वारिवदन.

वारिबीज (?) Sarvadarçanas. 171,4.

वारिभव n. *Antimonium* Rāgān. im ÇKDa.

वारिमत् (von 1. वारि) adj. *wasserreich:* वन MBh. 3,16288.

वारिमय (wie eben) adj. (f. ई) *aus Wasser bestehend* MBh. 3, 13611. Hariv. 702. 2506. तदा मही वारिमयीव लक्ष्यते in Folge des vielen Regens Varāh. Bṛh. S. 9,36. *am Wasser haftend, dem Wasser eigen:* रस MBh. 12,6852. 14,1411.

वारिमसि f. *Regenwolke* Trik. 1,1,32.

वारिमुच् 1) adj. *Wasser (Regen) entlassend:* प्रभूत° Varāh. Bṛh. S. 3, 16. — 2) m. *Regenwolke* Çabdar. im ÇKDa. Rāgat. 4,86. Varāh. Bṛh. S. 3,16. 28,15.

वारिमूली f. *Pistia Stratiotes Lin.* Trik. 1,2,34.

वारिपत्र n. *Wasserwerk* Milav. 33. — Vgl. जलपत्र, तोयपत्र.

वारिरथ m. *Boot, Schiff* Trik. 1,2,12.

वारिराज m. *der Fürst der Gewässer*, Varuṇa Harîv. 2501.

वारिराशि m. 1) *Wassermenge* Raghu. 5,46. — 2) *das Meer* Trik. 1,2, s. H. 1074, Schol. Spr. 1823. 2486. Kathâs. 56,423. 63,98. 122,110. Paṅkat. 3,5,25.

वारिरुह 1) adj. *im Wasser wachsend.* — 2) n. *Lotusblüthe* Râgân. im ÇKDa. Harîv. 8817. Kir. 5,13. Kathâs. 33,58. Kâlâd. 25. — Vgl. कृमि°.

वारिलोमन् m. Bein. Varuṇa's (*bei dem Wasser die Stelle der Haare am Körper vertritt*) Gaṇîdh. im ÇKDa.

वारिवदन n. wohl nur fehlerhaft für वारिवदर Buâmpa. im ÇKDa.

वारिवर m. *Carissa Carandas Lin.* Gaṇîdh. im ÇKDa.

वारिवर्णक vielleicht *Sand* (vgl. पानीयवर्णिका) Weber, Kṛshṇaj. 267. *Wasserfarbe* Weber.

वारिवल्लभा f. *eine best. Pflanze*, = विदारी Râgân. im ÇKDa.

वारिवस्कृत् adj. von वरिवस्कृत् P. 5,4,36, Vârtt. 5. VS. 16,19.

वारिवह् adj. *Wasser führend, — strömend:* शिववारिवहा नदी R. 2,49,9. पम्पा रम्यवारिवहा 3,79,49. — Vgl. वारिवाह्.

वारिवालक n. = झर्वेर *ein best. Arseneimittel* Hir. 178.

वारिवास m. *Branntweinbrenner* H. 901.

वारिवाह् 1) adj. (f. घा) *Wasser führend, — strömend:* कूलातिक्रान्तवारिवाहाभिः सरिद्भिः Vaṇîn. Bṛn. S. 9,24. — 2) m. *Regenwolke* AK. 1,1,2,8. H. 164, Schol. Spr. 661. 2354 (vielleicht *der Regengott*).

वारिवाह्क adj. *Wasser zuführend, — bringend* Spr. 713.

वारिवाहन m. *Regenwolke* H. ç. 27. Çârdar. im ÇKDa.

वारिवाहिन् adj. *Wasser führend, — strömend:* सरित् Harîv. 9639.

वारिविन्दी f. *eine blaue Wasserrose* Ausn. 48 wohl entstellt aus अरविन्द.

वारिविहार m. = जलक्रीडा *Spiel im Wasser, wobei man umherhüpft und sich mit Wasser besprützt*, Raghu. 6,48.

वारिश 1) m. Bein. Vishṇu's (*der im Wasser Ruhende*) Trik. 1,1,32. — 2) n. N. eines Sâman (v. l. für वार्श) Ind. St. 3,233, *b*.

वारिषेण (s. वारि + सेना) m. N. pr. P. 8,3,99, Schol. eines Fürsten MBh. 2,831 (°सेन ed. Bomb.). वारिसेन N. pr. eines Gina Wilson, Sel. Works I, 321.

वारिसंभव 1) adj. *im Wasser entstanden, aus dem Wasser gewonnen:* मणि R. 5,37,8. 66,26. 67,9. — 2) m. *eine Rohrart* (यावनालशर). — 3) n. *a) Gewürznelke. — b) die Wurzel von Andropogon muricatus* (उशीर). — *c) Antimonium* Râgân. im ÇKDa. — Vgl. वारिज.

वारिसाम्य *Milch* Ausn. 67.

वारिसार m. N. pr. eines Sohnes des Kandragupta Buddh. P. 12,1, 12. LIA. II, 213.

वारिसेन s. वारिषेण.

वारी s. u. 2. वारि.

वारीट m. *Elephant* Çârdar. im ÇKDa.

वारीय् (von वारि), वारीयते *dem Wasser gleichen* Spr. 899.

वारीश (वारि + ईश) m. *der Herr der Gewässer, das Meer* H. 1073.

वारु m. *ein im Triumph geführter Elephant* (विजयकुञ्जर) Hir. 160.

वारुठ m. *Todtenbahre* Trik. 2,8,62.

वारुड m. = वरुड P. 5,4,36, Vârtt. 1.

वैारुडक (von वरुड) n. संज्ञायाम् gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

वैारुडकि m. patron. von वरुड Pat. zu P. 4,1,97.

वारुणी (वैारुण gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75) 1) adj. (f. ई) *a)* Varuṇa *gehörig, an ihn gerichtet, ihm geweiht, zu ihm in Beziehung stehend:* पाश AV. 6,121,1. 7,83,4. M. 8, 83. MBh. 2, 2222. R. 1,29,9 (30,10 Gorr.). 56,9 (57,10 Gorr.). Bhâg. P. 8,21,26. मैत्रं वा वरुण्यं रात्रिः TS. 2, 1,2,3. 5,1,6,1. TBr. 1,7,3,6. 2,7,8,1. Ait. Br. 1,13. 5,26. Çat. Br. 4, 4,5,15. वारुणं पत्कृत्स्नम् 5,2,5,17. 3,4,5. न्यग्रोधो वारुणो वृक्षः Gobh. 4,7,15. Kâṭhân. Up. 2, 22, 1. Maitrâyaṇ. 6, 14. AV. Paric. in Ind. St. 10, 320. Varâh. Bṛh. S. 5,22. 32,20. कम्प 27. 80,9. 81,7. शङ्ख MBh. 2,65. यन्त्र 5,7174. R. 1,56,6 (57,5 Gorr.). 5, 58, 6. Uttarar. 105,4 (142,10). Kathâs. 14,29. छत्र Râga-Tar. 2,148. व्रत Spr. 2751. fg. लोक MBh. 13, 908. वारुण्यो मातरः स्कन्दस्य 9,2555. गणाः Harîv. 10923. सैन्य 10924. 10929. 13924. पुर (प्रपुर die ältere Ausg.) 10928. तनु Verz. d. Oxf. H. 49, *a*, 10. माया 59, *b*, 23. स्नान 267, *b*, 23. सत्र M. 8, 106. Varâh. Bṛh. S. 24,8. 46,51. Mârk. P. 22,11. भूतानि so v. a. *Wasserthiere* MBh. 1,1132. 12,6807. Amṛtan. Up. in Ind. St. 3,34. मन्त्रिन् R. 7,23,49. पुरी Buddh. P. 5,21, 7.11. पुराण Madhus. in Ind. St. 1,18,16. Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 8. 65, *b*, 12. 80, *a*, 5. कर्मन् *eine Wasser betreffende Arbeit* (Graben eines Brunnens u. s. w.) Vâmn-P. im ÇKDa. — *b) westlich* (*unter* Varuṇa *stehend*), in Verbindung mit दिश् und वारुणी f. *Westen* AK. 3, 4, 22, 54. H. 169, Schol. H. an. 3,225. Med. ṇ. 68. Hall. 1, 101. Adbh. Br. in Ind. St. 1,37,1. दिशं पश्चिमां वारुणीम् R. 4, 43, 4. सिरा Varâh. Bṛh. S. 54, 46. 86, 22. वारुण्याम् 11,42. 54,37. नैर्ऋतीवारुणीमध्ये 86,21. 87,10. 36. 95,22. Spr. 792 (II). वारुणे *im Westen* Paṅkat. 2, 5, 32. वारुणी *Westen* und zugleich *Branntwein* Spr. 600. 4933. — *c)* zu Vâruṇi (Bhṛgu) *in Beziehung stehend:* भार्गवो वारुणी विद्या Taitt. Up. 3,6. उपनिषद् Ind. St. 1,75. fg. 2,208. 3,386. Verz. d. B. H. No. 132. — 2) m. *a) Wasserthier, Fisch:* पाद्माद्यं वारुणो (so vermuthen wir st. वर्हणो) योनिमप्यमनिशितं निमिषि झर्झराणः (सा गात्) *der regsame Fisch eilt seinem Standort zu* RV. 2,38,8. MBh. 13, 4210. — *b)* patron. Bhṛgu's (vgl. वारुणि) MBh. 13, 4142. pl. Varuṇa's *Kinder, — Leute, — Krieger* Harîv. 10925. fg. 14827. R. 7,23,37. 47. — *c) N. des 15ten* Muhûrta Ind. St. 10,296. — *d)* N. pr. eines Dvîpa; s. u. 4) *c*). — 3) f. ई *a) Westen; s. u. 1) b*). — *b) Bez. gewisser Schlangen* Âçv. Gṛhy. 2,3,3. Pâr. Gṛhy. 2,14. — *c)* Varuṇa's *Energie* person. als *seine Gattin* Taitt. Âr. 10,1,12. MBh. 2,388. 4,259. Harîv. 9332. Verz. d. Oxf. H. 81, *a*, 41. 98, *a*, 22. Paṅkat. 1,10,93. 11,38. H. ç. 32 (angeblich Çiva's Gemahlin). Varuṇa's *Tochter* (auch *Gattin*), die bei der Quirlung des Meeres aus demselben emportaucht und als *Göttin des Branntweins* gedacht wird, MBh. 5,3613. Harîv. 5412. 5417. 5420. fgg. R. 1,45,36 (46,36 Gorr.). VP. 76. 371. fg. Buddh. P. 3,8,20. 10, 65,19. — *d) Branntwein* AK. H. 903. H. an. Med. Hall. 2,175. M. 11, 146. MBh. 12,6087. 6720. Harîv. 5760. R. 2,114,10 (125,21 Gorr.). R. Gorr. 2,50,12. 5,70,16. 6,10,9. Suçr. 1,74,9. 2,391,15. 460,6. Kumâras. 4,12. Spr. 3355. Buddh. P. 1,15,22 (neben मदिरा, = यन्नमणी Comm.). 3,4,1. 8, 8, 30. 10, 10, 3. 19. Mârk. P. 17, 24. Verz. d. Oxf. H. 91, *b*, 10.

Paṇkar. 1,11,38. *Branntwein* und zugleich *Westen* Spr. 600. 4938. — *e*) Bez. *eines Festtages am 13ten Tage in der dunklen Hälfte des* Kârtika As. Res. 3,279 (nach Hamilton). — *f*) *eine best. Pflanze*, = गण्डदूर्वा H. an. Med. = दूर्वा Râǵân. im ÇKDa. = इन्द्रवारुणी Ausw. 34. — *g*) *das unter* Varuṇa *stehende* Nakshatra Çatabhishaǵ H. 114. — *h*) N. pr. eines Flusses R. Gorr. 2,70,12. Paiṇǵâśittkhd. 11,*b*,6. — 4) m. *a*) *Wasser* Râǵân. im ÇKDa. — *b*) *das unter* Varuṇa *stehende* Nakshatra Çatabhishaǵ MBu. 13,4266. Wilkins, Nal. 1,310. Vaṇîm. Bṛh. S. 7,6. 11. 15,29. 71,11. Garit. Bhagrahas. 6. Mârk. P. 33,15. 58, 48. — *c*) वारुणो खण्ड ist der N. eines der 9 Theile, in welche Bharatavarsha eingetheilt wird, Golâdhy. 3,41. auch द्वीप genannt VP. 175. Mârk. P. 57,6. — Vgl. इन्द्रवारुणी, बृहद्वारुणी, महा°, महेन्द्र°.

वारुणतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,38. — Vgl. वरुणतीर्थ.

वारुणप्रधासिक adj. von वरुणप्रधास Maç. in Verz. d. B. H. 72 (IV,1).

वारुणानी in वारुणान्याः साम Ind. St. 3,235,*b* wohl nur fehlerhaft für वरु°.

1. वारुणि (von वरुण) m. patron. Bhṛgu's Ait. Br. 3,34. Çat. Br. 11,6,1,1. Taitt. Up. 3,1. Satjadhṛti's ṚV. Anukr. Nikuñkuṇa's Ind. St. 3,459. Vasishṭha's MBu. 1,3926. Agastja's Taik. 1,1,89. H. ç. 16. MBu. 3,8775. eines Vaimateja 1,2548.

2. वारुणि f. = वारुणी *Branntwein* Haariv. 8432 (das Metrum verlangt eine Kurze).

वारुणीवल्लभ m. *Gatte der* Vârunî d. i. Varuṇa Çabdam. im ÇKDa.

वारुणीश m. *Herr der* Vârunî, Beiw. Vishṇu's Paṇkar. 4,3,127.

वारुणेन्द्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 104,*a*, No. 160.

वारुणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,1.

वारुण 1) *Unreinigkeit des Auges und des Ohres*, m. H. an. 3,186. m. n. Med. ḳ. 33. fg. — 2) *Giesskanne, Schöpfgefäss, Schöpfkelle* oder dergl. (सेकभाजन, सेकपात्र). m. H. an. m. n. Med. m. = नैसेचन Hem. 239. — 3) m. = गणेश्वरराज H. an. = पाणिनी राजक: Med. — 4) f. ई *Thürschwelle* Med.

वारुण adj. *dem* Varuṇa (nach Nilak. der Vârunî) *gehörig*: भवन MBu. 5,3835.

वारुड m. = धमि, शम्बल, पञ्जर, वस्त्राञ्चल, घर (in H. an. ist ऽरुरे st. रौ zu lesen) oder कपाट H. an. 3,190. Med. ḍh. 8.

वारुण्यायनि m. patron. von वारुण्य gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वारेन्द्र = वरेन्द्र Verz. d. Oxf. H. 87,*b*,39, v. l. Colebr. Misc. Ess. II, 183. °मन्दल M. ed. Calc. in der Unterschr. von Buch 3 und 12. वारेन्द्री Çabdam. und Ǵyotishatattva im ÇKDa. Das heutige राजशाही nach ÇKDa.

वारिवृत (वारि, loc. von वार् *Wahl*, + वृत) adj. *gewählt* TS. 2,3,4,3. 4. 6,2,9,1. TBr. 2,1,4,3. — Vgl. वरवृत.

वार्कखण्ड m. patron. von वृकखण्ड Gobh. 3,10,6 bei Weber, Nax. 2,337.

वार्कयादि m. patron. von वृकयाक gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146.

वार्कलम्भ (von वृकलम्भ) 1) m. patron. Maç. in Verz. d. B. H. 71. — 2) n. N. eines Sâman Lâṭy. 10,4,2. Ind. St. 3,235,*a*. वार्कलम्भाग्य n. und वार्कलम्भोत्तर n. ebend.

वार्कबन्धकि m. patron. von वृकबन्धु gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146.

वार्कलि m. metron. von वृकला gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. तौल्वलत्यादि zu 2,4,61. Çat. Br. 12,3,2,6. VS. App. LVI, 13. Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 55,29.

वार्कलेय m. metron. von वृकला oder patron. von वार्कलि (vgl. gaṇa तौल्वलत्यादि zu P. 2,4,61) Saṁsk. K. 183,*a*,10.

वार्कवखर्क m. patron. von वृकवखिन् gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146; vgl. P. 6,4,144.

वार्काक्रोणीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,21.

वार्काणी adj. f. nach Sây. so v. a. उद्कोर्निष्याया. इमां धियं वार्काणीं च देवीम् ṚV. 1,88,4.

वार्काणी f. zu वार्काण्य P. 5,3,115, Schol.

वार्काण्य m. *ein Fürst der* Vṛka P. 5,3,115.

वार्त (von वृत्त) 1) adj. (f. ई) *a*) *in Bäumen bestehend, aus Bäumen gebildet*: दुर्ग M. 7,70. Kâm. Nitis. 4,59. Mârk. P. 49,35. *Bäume betreffend*: सिद्धि 56,22. fg. *auf Bäumen wachsend*: कवक Kull. zu M. 6,14. — *b*) *hölzern* Kâty. Ça. 4,14,12. Gobh. 2,10,37. 3,1,11. MBu. 7,2329. Suça. 2,49,3. 136,15. Wilson, Megha. 273. 277. — 2) f. ई *die Tochter der Bäume*, Beiw. der Gattin der Praketas, MBu. 1,7266. Bale. P. 5, 4,15; vgl. Brahma-P. in LA. (III) 58,1. fgg. — 3) n. *Wald* Taik. 2,4,1. H. 1110. — Vgl. दण्ड°.

वार्क्ष्य (wie oben) 1) adj. = वार्त *hölzern* Suça. 1,99,3. Tirumâlâiy. im ÇKDa. wohl nur fehlerhaft. — 2) m. patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. — 3) n. *Wald* H. 1110. schlechte Lesart für वार्त.

वार्क्ष्यायणी f. zum patron. वार्क्ष्य gaṇa लोहितादि zu P. 4,1,18. v. l. तार्क्ष्यायणी.

वार्च m. *Gans* Vop. 26,35. angeblich = वारि चरति.

वार्चलीय adj. von वर्चल gaṇa कंशाम्बादि zu P. 4,2,80.

वार्त्रिनीवत m. patron. von वृत्रिनीवत् Harîv. 1969.

वार्त्रक adj. von वर्त्र gaṇa घूमादि zu P. 4,2,127.

वार्ध (वा°) n. nom. abstr. von वृद्ध (वृध) gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वार्णक m. pl. zum sg. वार्णक v. l. im gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111.

वार्णाक m. patron. von वर्णक v. l. im gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

वार्णव adj. von वर्ण gaṇa सुवास्त्वादि zu P. 4,2,77. कच्छादि zu 133. सिन्ध्वादि zu 3,93.

वार्णवक adj. desgl. gaṇa कच्छादि zu P. 4,2,134.

वार्णिक (von वर्ण) m. *Schreiber* H. 484. Çabdam. im ÇKDa.

वार्तक 1) m. *Wachtel* ÇKDa. wohl nur fehlerhaft für वर्तक. Vgl. वार्ताक. — 2) f. वार्तिका dass. ÇKDa. und Wilson nach Hem. 184, wo aber die gedr. Ausg. वर्तिका liest.

वार्तन adj. = वर्तनीषु भव: P. 4,2,135, Schol.

वार्तनार्त m. patron. von वर्तनात gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

वार्तसवीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,257. — Vgl. वारतसवीय.

वार्तमानिक (von वर्तमान) adj. *zur Gegenwart gehörend, jetzt lebend*: मनुष्या: Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 219.

वार्ताक m. = वर्तक *Wachtel* Bhâvapr. im ÇKDa.

वार्तातवेय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,274. — Vgl. वारतसवीय.

वार्तिक m. *ein best. Vogel* Vîçvan. 6,15. = वर्तिक Râǵân. im ÇKDa. — वार्तिक s. bes.

वार्तारि m. dasgl. Vicva. 6,48. — Vgl. वर्तारि.

वार्त्त (von वृत्ति) 1) adj. P. 5, 2, 101, Vârtt. 2. *was besteht:* a) *einen Lebenserwerb habend* H. an. 2, 193. fg. — b) *gesund* AK. 2, 6, 2, 3. 3, 4, 44, 78. Trik. 3, 3, 103. H. 474. H. an. Halâ. 2, 225. वार्त्तशरीरालाभे सद्वार्त्तायां घटेतात् Sarvadarçanas. 100, 19. — c) *gewöhnlich, mittelmässig:* प्रशस्त, वार्त्त, गर्हित Âçv. Gṛhj. 2, 8, 3. 5. — d) *werthlos, nichtig* (फल्गु, निःसार) AK. 3, 4, 44, 78. H. an. Med. t. 56. Sarvadarçanas. 160, 11. 165, 4. घ° 100, 19. — 2) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2, 321. — 3) f. घा a) *Lebensunterhalt, Erwerb, Gewerbe,* insbes. das des Vaiçja d. i. *Ackerbau, Viehzucht und Handel* AK. 2, 9, 1. 3, 4, 44, 78. 99, 124. H. 865. H. an. Med. Halâ. 2, 415. M. 9, 326. वार्त्ता कर्मैव वैश्यस्य 10, 80. वैश्यस्य तु तपो वार्त्ता 11, 235. Jâgñ. 1, 310. कच्चित्स्वनुष्ठिता तात वार्त्ता ते साधुभिर्जनैः । वार्त्तायां संश्रितस्तात लोको ऽयं सुखमेधते ॥ MBh. 2, 218. वार्त्तया धार्यते सर्वम्, त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिश्चेति विद्या विजानताम् 3, 11295. 12, 567. 2154. °मूलो ह्ययं लोकः 2569. R. Gorr. 1, 4, 6 (त्रयी वार्त्ता zu trennen). 2, 109, 24. Kâm. Nîtis. 2, 1. 2. 3. 4. 7. पाशुपाल्यं कृषिः पण्यं वार्त्ता वार्त्तानुजीविनाम् 14. वार्त्ता प्रत्या साधयति वार्त्ता वै लोकसंश्रयः 13, 27. Ragh. 16, 2. Varâh. Bṛh. S. 19, 11. Prab. 29. 7. पायीयसी Bhâg. P. 1, 14, 3. 3, 6, 21. 7, 32. 12, 42. 44. 30, 12. विविधा 7, 6, 26. 9, 46 (pl.). वैश्यस्तु वार्त्तावृत्तिः 11, 13. विचित्रा 16. वैश्यस्तु वार्त्तया जीवेत् 18, 24, 20. कृषिवाणिज्यगोरक्षा कुसीदं तुर्यमुच्यते । वार्त्ता चतुर्विधा 21. 11, 8, 31. 23, 6. Mârk. P. 49, 53. 57. 73. 75. 84, 9. ननु चतस्रो राजविद्यास्त्रयी वार्त्तान्वीक्षिकी दण्डनीतिरिति Daçak. 183, 5. Am Ende eines adj. comp.: फलमूलवार्त्त *lebend von* Varâh. Bṛh. S. 5, 77. 13, 17. घटि° 6, 1. 17, 13. पण्यनीति° 10, 17. शस्त्र° 16, 13. शस्त्रपुत्त° 87, 37. — b) *Kunde, Nachricht, Neuigkeit, Gerücht, Sage, Rede von Etwas* AK. 1, 1, 8, 3. 3, 4, 44, 66. 78. 99 (90), 16. H. an. Med. Halâ. 1, 146. 5, 98. संधाय्य वार्त्ताम् R. 3, 63, 26. ad Macn. 113. श्रुत्वा सांयामिकीं वार्त्तां भविष्यां स्वामिनं प्रति Spr. 3045. श्रुत्वा प्रदानवार्त्ताम् Kathâs. 3, 26. 38, 120. 42, 87. Bhâg. P. 1, 16, 11. धनदेववणिग्गेहवार्त्ताम् — वेत्सि किम् Kathâs. 64, 98. fg. Râga-Tar. 2, 114. उज्जयिनीवार्त्तां ज्ञातुम् Kathâs. 13, 46. तस्थौ च वार्तामन्विष्यन्म ततः पुत्रयोस्तयोः 42, 116. पत्युर्वार्त्तां विचिन्वती 56, 227. वार्त्तां को ऽपि न पृच्छति Spr. 4882. Kathâs. 5, 107. 6, 135. Vop. 3, 6 (pl.). वार्त्तां गत्वा विवृणोति कः Râga-Tar. 3, 185. वार्त्तां व्यसर्जयत् 6, 270. घटस्य वार्त्ताम् — कोतय *erzähle* von Bhâg. P. 3, 1, 45. कं शिशुघ्नस्य वार्त्तां कथयिष्यसि Pañcat. 95, 17. 233, 9. Hit. 64, 17. 79, 15. 83, 11. न काप्यन्या विद्यते वार्त्ता 100, 11. का वार्त्ता *was giebt es zu erzählen? was giebt es Neues?* 64, 16. 93, 19. अस्ति मरुती वार्त्ता 79, 16. Spr. 380. स्त्रीणां च कृपणे वार्त्ता न तिष्ठति कदापि हि 394 (II). 3062. 4205. Kathâs. 2, 52. 42, 119. Uttarar. 112, 1 (151, 6). अद्यापः क्वचिदप्येको ह्यस्तु मया वार्त्तापि नाकर्णिता Prab. 44, 10. कुशलिनो वत्सस्य वार्त्तापि नो Sîh. D. 63, 8. Râga-Tar. 1, 9. 49. 337. 4, 371. उत्तमश्लोक° *das Reden von* Bhâg. P. 2, 3, 17. 4, 30, 19. 11, 6, 46. 7, 35. Bhar. Nâṭyaç. 18, 47. 97. मिथ्या° Pañcat. 51, 21. °व्यतिकर 130, 7. घास्तां तावल्लुब्धकवार्त्ता 143, 24. 231, 21. तद्रूपिनाथ वटुवार्त्तया *unter vielen Erzählungen* Çâṅk. 10, 126. मनूनाम् *Geschichte* Brahmavaiv. P. bei Burnouf, Bhâg. P. I, XLVI. पुरातनी H. 259. मर्त्यागमुद्दिश्य वार्त्ता मुनिमुखान्मुखात्नां केवलं पण्डितानाम् *vom Aufgeben der Liebe kann nur bei — die Rede sein* (vgl. den Gebrauch von कथा) Spr. 2701. तत्र वार्त्ता शीलतृणस्य का 3309. 1690. Kathâs. 64, 159. का तु वार्त्ता तन्मोक्षणे 26, 169. Spr. 2355. (तस्य) साप्यायं राजपुरुषा वार्त्तयापि न चक्रिरे *so v. a. nicht einmal mit Worten, sie sprachen nicht einmal davon* Râga-Tar. 2, 69. मम — धनया वार्त्तयापि किं कार्यम् *was habe ich mit ihr zu schaffen, sei es auch nur mit Worten?* Z. d. d. m. G. 14, 571, 1 (*mit weltlichen Dingen mag ich mich nicht befassen* Aufrecht). Am Ende eines adj. comp.: पष्टरात्रिवार्त्ता Kathâs. 32, 89. शनैश्चरविंशतिवार्त्त Râga-Tar. 8, 236. उत्तमश्लोकवार्त्त *redend von* Bhâg. P. 1, 18, 4. — c) *Geruchsempfindung* Verz. d. Oxf. H. 231, a, 23. 26. — d) Bein. der Durgâ Devî-P. 45 im ÇKDa. — e) = वार्त्ताकु *Eierpflanze* H. an. Med. — 4) m. *Wohlergehen, Gesundheit* Trik. H. 474. H. an. Med. Jîvaṇa bei Mallin. zu Kir. 13, 24. सर्वत्र नो वार्त्तमवेहि Ragh. 5, 12. वार्तानुयोग 13, 71. स पृष्टः सर्वतो वार्त्तमाख्यत् (so die ed. Calc. 40) 15, 41. Çiç. 13, 68. Kir. 13, 34. — Vgl. गलवार्त्त, दुर्वार्ता, प्रति°, लोक°.

वार्त्ताक (wohl von वृत्त *rund*) m. *die Eierpflanze, Solanum melongena* (n. *die Frucht*) Uṇâdik. zu Uṇâdis. 3, 79. 4, 15. Trik. 2, 4, 27. Hariv. 7842. Suçr. 1, 72, 4. 157, 15. 221, 20. 228, 20. 2, 508, 9. Vicva. 6, 78. Auch वार्त्ताकी f. AK. 2, 4, 6, 2. Trik. 2, 4, 28. वार्त्ताकप्रभेदवाः Mârk. P. 32, 26. — Vgl. कटुवार्ताकी, तुङ्ग°.

वार्त्ताकिन् 1) m. = वार्त्ताक Bhar. zu AK. nach ÇKDa. — 2) वार्त्ताकिनी f. dass. Ausn. 57. Ratnam. in Nigh. Pa. Vgl. तुङ्ग°.

वार्त्ताकु Uṇâdis. 3, 79. m. dass. Trik. 2, 4, 27. Suçr. 1, 221, 5. 2, 36, 14. 129, 11. 368, 6. 551, 9.

वार्त्तापति m. *Herr —, Verleiher des Lebensunterhalts* Bhâg. P. 4, 17, 11.

वार्त्तायन (वार्त्ता + घ°) m. *Kundschafter, Späher* Trik. 2, 8, 25. H. 736.

वार्त्तारम्भ (वार्त्ता + घा°) m. *Gewerbe* M. 7, 43.

वार्त्तावह (वार्त्ता + वह oder धावह) m. *ein umherziehender Krämer (Neuigkeiten bringend)* AK. 2, 10, 15. H. 364.

वार्त्ताशिन् (वार्त्ता + घा°) adj. *Nachrichten essend* so v. a. von *Klatscherei lebend, Neuigkeitskrämer, Schwätzer;* = भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् H. 856.

वार्त्ताहर m. *Ueberbringer einer Nachricht, Bote* Trik. 3, 3, 431.

वार्त्ताहर्तृ m. dass. Bhâg. P. 4, 9, 38.

वार्त्तिक (von वार्त्ता und वृत्ति) = वृत्तौ साधुः gaṇa कथादि zu P. 4, 4, 102. = वृत्तिमर्घति वेद वा gaṇa उक्थादि zu P. 4, 2, 60. 1) adj. *ein Gewerbe betreibend, Gewerbsmann:* दुर्गतो वार्त्तिकवनो लोभात्किं नाम नाचरेत् Kathâs. 34, 76. — 2) m. *Kundschafter, Bote* Trik. 2, 8, 25. MBh. 10, 174. 300. — 3) m. *Giftarzt, Beschwörer;* = नरेन्द्र Halâ. 5, 54; vgl. वार्त्तिकेन्द्र. — 4) m. *ein* Vaiçja Râgân. im ÇKDa. — 5) m. = वार्त्ताकी *die Eierpflanze* Çabdar. im ÇKDa. — 6) f. घा = वार्त्ता *Erwerb, Gewerbe* MBh. 3, 17299 (vgl. 17401). am Ende eines adj. comp.: गोत्र° *so v. a. betreibend, obliegend* 12, 12027. देवेज्या° *das Gewerbe eines — treibend* so v. a. *nur daran denkend den Leib zu ernähren* Bhâg. P. 5, 5, 3. so wird wohl auch विद्याव्रतम्भक° MBh. 5, 2470 zu fassen sein; Nîlak. dagegen erklärt. विद्या मन्त्रयक्षादिरूपा व्रतम्भक बोषधिसाधनानि तद्वार्त्ताप्रियाः. — 7) n. *Ergänzungen und Berichtigungen zu einem Sûtra:* उक्तानुक्तदुरुक्तार्थचिन्ताकारि तु वार्त्तिकम् H. 256. वार्त्तिकमिति । सूत्रे ऽनुक्तदुरुक्तचिन्ताकारत्वं वार्त्तिकत्वम् Nîlak. bei Ballant. Mahâbh. 213. Co-

LEBR. Misc. Ess. I, 262. II, 49. 297. Verz. d. B. H. No. 217. Verz. d. Oxf. H. 257, a, 30. b, 3. fgg. Am bekanntesten sind die Vârttika Kâtjâjana's zu Pâṇini's Sûtra, Madhus. in Ind. St. 1, 16, 26 fgg. Schol. zu P. 3, 1, 20 in der ed. Calc. Sarvadarçanas. 145, 7; vgl. Böhtlingk, P. Einl. XLVI. fgg. तत्त्व°, प्रमाण°, बृहदारण्यक° (unter बृहदारण्यक), भट्ट°, महा°, योग°, राज°, सुरेश्वर°.

वार्त्तिककार m. *Verfasser von* Vârttika Weber, Rikat. Up. 284. Bez. Kâtjâjana's Comm. zu P. 7, 3, 59. 8, 3, 5. Verz. d. Oxf. H. 160, a, 24. Kumârila's 270, b, 42. श्लोक° *der Verfasser von metrischen* Vârttika (zu Pâṇini's Grammatik) Gold. Min. 95. fg. 102.

वार्त्तिककाशिका f. Titel eines Commentars Hall 171 (the title is dubious).

वार्त्तिककृत् m. = वार्त्तिककार Weber, Rikat. Up. 284. 342.

वार्त्तिकतात्पर्यटीका f. Titel eines Commentars des Vâčaspatimiçra Colebr. Misc. Ess. I, 262. Hall 27.

वार्त्तिकतात्पर्यपरिशुद्धि f. Titel eines Commentars des Udajanâćârja Colebr. Misc. Ess. I, 262.

वार्त्तिकोपज्ञा f. Titel eines Commentars, = वृत्ति Hall 207.

वार्त्तिकाभरण n. Titel eines Commentars Hall 172.

वार्त्तिकाश्व n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 235, b.

वार्त्तिकेन्द्र m. *Alchemist* Jogaśat. 5, 4. — Vgl. वार्त्तिक 3).

वार्त्रघ्न (von वृत्रहन्) VS. Pair. 3, 91. P. 6, 4, 135, Schol. (oxyt.). Vop. 7, 21. 1) adj. (f. ई) a) *auf den Schläger des* Vṛtra *bezüglich, ihn betreffend u. s. w.*: इन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि VS. 10, 8. Âpast. Bs. 1, 4. वार्त्रघ्नं वा एतद्धविर्यद्दीक्षणीयेष्टयः so v. a. *Siegesopfer* 2, 3. TS. 2, 5, 2, 4. TBa. 1, 6, 4, 7. वज्र TS. 5, 7, 2, 1. 6, 1, 6, 7. रोहिणी 7, 1, 6, 3. Çat. Ba. 3, 3, 4, 14. Kâṭj. 24, 1. माध्यंदिनभाग Âçv. Çr. 1, 5, 33. Çat. Ba. 1, 6, 2, 12. 3, 5, 2, 4. सोम Kâṭj. 27, 3. °लिङ्गोक्तेः Baudh. P. 6, 12, 34. — b) (oxyt.) *das Wort* वृत्रहन् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5, 2, 61. — 2) m. patron. Arǵuṇa's, der für *einen Sohn* Indra's gilt, Taitt. 2, 8, 17 (वार्त्राघ्न gedr.). Kaṭh. 15, 1. — 3) n. इन्द्रस्य वार्त्रघ्नम् und इन्द्रस्य सवर्गं वार्त्रघ्नम् Namen von Sâman Ind. St. 3, 208, b. 209, a.

वार्त्रतुर (von वृत्रतुर्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 235, b. Lâṭj. 7, 1, 1. 5.

वार्त्रहत्य (von वृत्रहत्या) 1) adj. *zum Schlagen des* Vṛtra *dienlich*: शत्रम् ṚV. 3, 37, 1. — 2) n. *das Schlagen des* Vṛtra Baudh. P. 6, 12, 33.

वार्द (वार् + 1. द) m. *Woiks* Çaṭa. 14, 336.

वार्दर n. s. बादर. Nach Viçva im ÇKDa. hat das Wort वार्दर die Bedd. कृमिज *Seide*, जल *Wasser* und धामबीज *Same der Mangifera indica*.

वार्दल 1) *ein trüber Tag, Regenwetter*; m. Taitt. 3, 3, 403. n. H. an. 3, 676. Med. l. 119. — 2) n. *Schwärze, Dinte* (मसि) H. an. *Dintenfass* Hem. 269. m. dass. Taitt. Mnn.

वार्दलिका f. gaṇa मधादि zu P. 4, 2, 56. Davon वार्दलीक्ती (vgl. P. 8, 2, 11) ebend.

वार्द्ध m. patron. von वृद्ध gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104.

वार्द्धक (von वृद्ध) 1) n. a) *vorgerücktes Alter, Greisenalter* AK. 2, 6, 2, 10. H. 340. an. 3, 97. Med. k. 156. Bala beim Schol. zu Naish. 1, 77 (लद्धात्र st. सद्धाय zu lesen nach Svenzler). MBh. 14, 2747. Spr. 4928. 4997. 5373. Râgat. 1, 8. Kumâras. 5, 44. Çiç. Sâlh. 1, 7, 16. Kathâs. 61, 116. 72, 20 (वारक gedr.). Weber, Kṛshṇaj. 222. 298. Mâlav. P. 109, 24. Pâṇ. 1, 3, 21. Prab. 24, 15. °भावे (so die ed. Bomb.) Pañcat. 93, 16. — b) *das Treiben eines Alten, Gebrechlichkeit eines Greises* H. an. Med. — c) *eine Versammlung von Alten* P. 4, 2, 39, Vârtt. 1. AK. H. 1416. H. an. Med. Bala a. a. O. — 2) adj. subst. *alt, ein alter Mann* Bala a. a. O. महर्षि° Naish. 1, 77.

वार्द्धक्य n. *vorgerücktes Alter, Greisenalter* Gaṇiṇ. im ÇKDa. MBh. 9, 2988 (वार्द्धक ed. Bomb.). वार्द्धिकभाव (!) Pañcat. 93, 16, v. l.

वार्द्धक्षत्रि (von वृद्धक्षत्र) m. patron. des Gâjadratha MBh. 3, 15376. 15581. 6, 752.

वार्द्धक्षेमि m. patron. von वृद्धक्षेम MBh. 1, 6989. 5, 3909. 7, 916.

वार्द्धायनि m. patron. von वार्द्ध gaṇa कुरितादि zu P. 4, 1, 100. — Vgl. u. वर्धापन 1) am Ende.

वार्द्धुष m. = वार्द्धुषि MBh. 13, 4228 (वर्धुषि M. 3, 180).

वार्द्धुष (wohl von वृद्धि) m. *Wucherer* AK. 2, 9, 5. H. 881. M. 3, 153. 180 (= MBh. 12, 4283). 4, 224 (= MBh. 12, 9432). Jâǵ. 1, 132.

वार्द्धुषिक m. dass. Sidd. K. zu P. 4, 4, 30 (auf ein erfundenes वृधुषि = वृद्धि zurückgeführt). AK. 2, 9, 5. H. 880. Hall. 2, 416. Âpast. 1, 18, 22. M. 4, 210. 220. 8, 102. 140. MBh. 12, 1320. 8316. 13, 1592. 4278.

वार्द्धुषिन् m. dass.: वार्द्धुषी भूत्वा MBh. 13, 4226.

वार्द्धुषी f. = वार्द्धुष्य *Wucher* MBh. 2, 225.

वार्द्धुष्य (von वार्द्धुषि) n. *Wucher* Taitt. 2, 9, 1. M. 11, 61. Jâǵ. 1, 161. 3, 235. Paraçârîtrkh. 3, b, 3. 40, b, 3.

वार्धनी (वार् + धा°) f. *Wasserkrug* H. 1021. — Vgl. वर्धन 3) b).

वार्धि (वार् + धि) m. 1) *das Meer* Taitt. 1, 2, 3. H. 17. Spr. (II) 345. Verz. d. Oxf. H. 129, a, 15. 131, a, 6. 254, a, 3. Baudh. P. 3, 17, 7. 34. — 2) Bez. *der Zahl* 100,000,000,000,000 H. 874.

वार्धिक्षार n. *eine Art Salz* (द्रोणीलवण) Râǵân. im ÇKDa.

वार्धेय (von वार्धि) n. dass. ebend.

वार्ध्र (von वर्ध) 1) adj. (f. ई) *zu Riemen bestimmt, geeignet*: चर्मन् P. 5, 1, 15, Schol. *aus Riemen bestehend* P. 4, 3, 151. — 2) f. und n. *Riemen* Râǵân. zu AK. 2, 10, 31 nach ÇKDa. तै शतेन वार्ध्रिभिराण्डयोरवघ्नम् Pañcav. Br. 2, 2, 22. वार्ध्रि नासाऽस्येति वार्ध्रिणसः Uṇâdival. zu Uṇâdis. 2, 27.

वार्ध्राणस s. u. वार्ध्रिणस.

वार्ध्रिणस m. P. 5, 4, 118. 8, 4, 3. Uṇâdival. zu Uṇâdis. 2, 27. *Nashorn* Taitt. 2, 5, 3 (°नस gedr.). *ein alter weisser Ziegenbock* (nach den Erklärern) M. 3, 271. Jâǵ. 1, 259. Nach Andern auch *ein Vogel mit schwarzem Halse, rothem Kopfe und weissen Flügeln* Uṇâdival. वार्ध्राणस Âpast. 1, 17, 26. 2, 17, 3. — Vgl. वाध्रीणस und वार्धीनस.

वार्धीनसि VS. Pair. 3, 89. 6, 28. adj. etwa *auf der Nase gestrichelt*, nach Mahîdh. *mit Zapfchen am Halse versehen* VS. 24, 35. — Vgl. वार्ध्रिणस.

वार्भट m. *Schiff, Boot* Hem. 142. वार्भर Taitt. 1, 2, 13. vielleicht nur fehlerhaft für वार्गट (वारि + गट); vgl. jedoch auch वाघट.

वार्गट (वार् + गट) m. *Krokodil* Taitt. 1, 2, 23. Hem. 76.

वार्मण (von वर्मन्) n. *eine Menge von Panzern* Sâmav. zu AK. 3, 3, 43 nach ÇKDa.

वार्मतेय adj. *aus* Varmatî *gebürtig* P. 4, 3, 94. वार्मतेयक gaṇa कच्छादि zu P. 4, 2, 95.

वार्म्मिकायणि m. patron. von वर्मिन् P. 4, 1, 158, Vârtt.

वार्मिकी n. nom. abstr. von वर्मिक gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128.

वार्मिण (von वर्मिन्) n. *eine Menge gepanzerter Männer* Sviḍir zu AK. 3,3,43 nach ÇKDa.

वार्मुच् (वार् + 2. मुच्) m. *Wolke* Çabdar. im ÇKDa. Bhâg. P. 10,24,9.

1. वार्य (von 1. वृ) 1) adj. *zurückzuhalten, aufzuhalten:* नास्मि वार्या MBh. 5,7275. 14,2442. राज्ञा भृत्यैर्वार्यः Spr. 2912. सर्वार्यः सर्वकार्येषु गमने केनचित् Harîv. 15067. कृतान्त इवावार्यः शरः R. 6,92,57. सर्वार्यं चक्रम् Harîv. 10805. सर्वार्यवेग R. 3,35,48. सर्वार्यवीर्य Spr. 609. सर्वार्यं सूर्यरश्मिभिस्तमः 371 (II). — 2) m. *Wall* (nach dem Comm.) R. 1,70,3. — Vgl. दुर्वार्य, निर्वार्य.

2. वार्य (von 2. वृ) P. 6,1,214. adj. 1) *zu wählen:* सत्रिवः P. 3,1,101, Schol. — 2) *kostbar, werth;* n. *Kostbarkeit, Gut, Schatz* Naish. 4,2. Nir. 3,1. वसु ṚV. 2,43,23. 10,45,11. अग्ने नो धेहि वार्यम् 3,21,2. व्यूर्णोती दाशुषे वार्याणि (उषाः) 5,80,6. des Savitar 1,24,2. 4,53,5. 5,48,5. यद्वरया देयते वार्याणि 49,3. 6,50,8. 7,17,5. 42,4. 1,5,2. 81,9. कृत्ते विधेद्वरुणा वार्याणि 114,5. तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपरत्वम् 8,25, 13.44,18. दानाय वार्याणाम् 60,11.9,63,20. परिप्रीता पन्यसा वार्येण 10, 27,12. 133,2. वार्यवत् st. वैर° anderer Texte Kâṭh. 23,8. 24,7. 27,3. 4,8 (Ind. St. 5,343).

3. वार्य (von 1. वारि) adj. *aquatisch* ÇKDa.

वार्यगन (वारि + ग°) n. *Wasserbehälter, Teich* u. s. w. (= जलाशय Comm.) Bhâg. P. 12,2,6.

वार्यामलक (वारि + आ°) m. *eine bes. am Wasser wachsende Myrobalane* R. 1,70,3, v. l. im Comm. der Bomb. Ausg.

वार्युद्भव 1) adj. *im Wasser entstehend, — wachsend.* — 2) n. *Lotusblüthe* Dhanañgaja im ÇKDa.

वार्युपजीविन् adj. *vom Wasser seinen Unterhalt habend;* m. *Wasserträger, Fischer* u. s. w. Varâh. Bṛh. S. 5,42.

वार्योकस् 1) adj. *im Wasser lebend.* — 2) wohl f. (vgl. जलौकस्) *Blutegel* M. 7,129. Suçr. 2,275,4.

वार्राशि (?) m. *das Meer* ÇKDa. nach einem Purâṇa.

वार्वट s. वार्वट.

वार्वणा f. = वर्वणा Çabdar. im ÇKDa.

वार्वती f. *Fluss* Naish. 1,18, v. l. für पार्वती.

वार्वर (वार्वर) adj. *im Lande der Barbaren geboren* gaṇa तक्षशिलादि zu P. 4,3,93.

वार्वरक (वार्वरक) adj. von वर्वर (वर्वर) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

वार्श (von वृश) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,235,b. Pâraśav. Bṛ. 13,3,11. fg.

1. वार्ष (von वर्षा) adj. (f. ई) *zur Regenzeit gehörig* u. s. w. VS. 13,56.

2. वार्ष (von वृष) 1) adj.: देवानां वार्षाणामार्षेयम् N. eines Sâman, = इन्द्रस्य वृषकम् Ind. St. 3,208,b. — 2) n. *a)* nom. abstr. von वृष gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122. — *b)* N. eines Sâman Ind. St. 3,235,b.

वार्षक n. N. eines der zehn Theile, in welche Sudjumna die Erde theilte, Vâmi-P., Siddhântaçiromaṇi nach ÇKDa.

वार्षगण (von वृषगण) m. patron. des Asita Çat. Br. 14,9,4,22. वार्षगणीम् *die Nachkommen des* Vârshagaṇa gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111.

वार्षगणीपुत्र m. N. pr. eines Lohrers Çat. Br. 14,9,4,21.

वार्षगण्य m. patron. von वृषगण gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Liṅg. 10,9,10. SV. Gîna Tüb. Hdschr. Nirukt. 2,9. 6,7. Ind. St. 4,372. MBh. 12,11782. Verz. d. Oxf. H. 237,b, No. 370.

वार्षद adj. von वृषद् v. l. im gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86 nach Uṇâdis. zu Uṇâdis. 5,21.

वार्षदंश adj. von वृषदंश v. l. für पृषदंश im gaṇa उत्सादि zu P. 4,1, 86 nach Uṇâdis. zu Uṇâdis. 5,21. *aus Katzenhaar verfertigt* (nach Nîlak.): प्रावार MBh. 2,1822.

वार्षपर्वाणी (von वृषपर्वन्) f. patron. der Çarmishṭhâ MBh. 1,3310. Harîv. 1604. Bhâg. P. 9,18,33.

वार्षभ (von वृषभ) adj. *dem Stiere eigen:* चासन Verz. d. Oxf. H. 11, a, N. 1 (चार्षभ die Hdschr., die Correctur von Aufrecht).

वार्षभाणवी (von वृषभाणु) f. patron. der Râdhâ Pâdmottarakh. 67 nach ÇKDa.

वार्षल (von वृषल) 1) adj. *einem Çûdra eigen:* कर्मन् Nîlakaṇṭha bei Kull. zu M. 7,2. — 2) n. *die Beschäftigung —, der Stand eines Çûdra* gaṇa युवादि zu P. 5,1,130.

वार्षलि (von वृषली) f. *der Sohn eines Çûdra-Weibes* gaṇa वाह्वादि zu P. 4,1,96.

वार्षशतिक (von वर्ष + शत) adj. *hundertjährig* P. 5,1,58, Vârtt. 5, Schol.

वार्षसहस्रिक (von वर्ष + सहस्र) adj. *tausendjährig* ebend.

वार्षाकप adj. von वृषाकपि Âpast. Bṛ. 6,32. Pâraśav. Bṛ. 20,9,2.

वार्षागिर (von वृषागिर्) m. patron. des Ambarîsha, Bṛihadaçva, Bhajamâna, Sahadeva und Suradhas ṚV. Anukr. pl. ṚV. 1,100,17.

वार्षायणि m. patron. von वृष gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154. — Vgl. वार्ष्यायणि.

वार्षाकर (वर्षा + आकर) n. N. eines Sâman Çat. Br. 14,3,2,26. Ind. St. 3,235,b. वार्षाकरात्र und वार्षाकरात्र n. desgl. ebend.

वार्षिक ved. und वार्षिक in der klass. Spr. (von वर्षा, वर्ष) P. 4,3, 18. fg. 1) adj. f. (ई) *pluvialis, zur Regenzeit gehörig* u. s. w. H. an. 3,96. Med. k. 150. आप: *Regenwasser* AV. 1,6,4. तक्मन् 5,22,12. सेतु VS. 14, 18. Çat. Br. 10,2,5,11. मास Ait. Br. 4,26. TS. 7,5,1,2. 24,1. Âçv. Çr. 4,12,1. Gṛihj. 3,5,19. Çat. Br. 5,5,2,4. नद AV. 4,19,1. Weber, Gloss. 113. वार्षिकाश्चतुरो मासान् Spr. 2781. 4037. MBh. 1,2313. 13,3657. Harîv. 4006. R. Gorr. 1,1,73. 4,25,12. 5,108,25. Bhâg. P. 10,38,12. मास Harîv. 3787. निदाघवार्षिको मास MBh. 7,1311. रात्रि R. 7,66,13. व्रीमूत MBh. 3,15782. 4,2025. धनुस् Râgân. 4,16. सप्त 12,25. चक्र Harîv. 2844. अग्निवाशातवसतिं चन्द्रो वसति वार्षिकीम् 3571. लिङ्ग Suçr. 1,21, 6. वासस् P. 4,3,13, Schol. वार्षिकी und वार्षिकोदका नदी *ein Fluss, der nur während der Regenzeit Wasser hat,* MBh. 5,7262. 7268. *sich auf die Regenzeit verstehend, sich mit der Bestimmung derselben abgebend* gaṇa वमत्तादि zu P. 4,2,68. — *b) auf ein Jahr ausreichend:* सस्य Jâtâ. 1,124. भिक्षा MBh. 12,6296. संचय 8892. 13,4464. *ein Jahr während* Mân. P. 69,53. *jährlich:* कर *Abgabe, Tribut* Harîv. 4209. Bhâg. P. 10,5,31. यात्रा Verz. d. Oxf. H. 70,b, 13. महापूजा 103,a, 14. Mârk. P. 92,11. सर्ववार्षिकपर्वसु Bhâg. P. 11,11,37. Häufig in comp. mit einem Zahlworte, *so und so viele Jahre während, — alt, — ausreichend, — jährig* P. 5,1,58. 7,3,16. त्रि° Pâraśav. 167,2. पञ्च° Âpast. beim Schol. zu Kâṭh. Çr. 541,6. MBh. 13,3587. सप्त° Pâraśav. 167,2. दश° R. 4,48,

12. Spr. 2182. द्वादश° MBu. 3, 8070. 8072. 10464. 8, 424. 13, 6550. 14, 2850. 2859. 15, 375. Harıv. 6244. VP. bei Muir, ST. I, 86, N. 58. Verz. d. Oxf. H. 29, b, 3. Bhâg. P. 9, 9, 22. Mârk. P. 97, 30. Pañcat. 50, 18 (wo mit der ed. Bomb. °वार्षिकनावृष्टि: zu lesen ist). त्रयोदश° MBu. 7, 9088. पञ्चदश° Pañcat. 101, 5. षोडश° Verz. d. Oxf. H. 261, a, 15. विंशति° Jâân. 2, 24. ऊनद्वि° M. 5, 68. बहु° Bhâg. P. 9, 7, 6. षड्वार्षिका (!) Verz. d. Oxf. H. 121, b, No. 213, Cl. 4. Auch mit Steigerung des Vocals im vorangehenden Worte; vgl. त्रै°. — 2) *eine best. Pflanze*, n. AK. 2, 4, 8, 16. H. an. Med. f. ई Râgân. im ÇKDr. — Vgl. दश°, द्वादश°, द्वि°, पञ्च°, पूर्व°, बहु°, मरुवार्षिका.

वार्षिका (von वार्षिक) 1) adj. *jährlich*: कर *Abgabe, Tribut* Bhâg. P. 10, 5, 19. — 2) n. *die Regenzeit*: वसिष्ठस्याश्रमे पुण्ये वार्षिकौ समुवास ह R. 7, 51, 2.

वार्षिला f. *Hagel* Çabdâm. im ÇKDr.

वार्षुक (von वर्षु) adj. *regnend* ÇKDr. und Wilson. Wohl fehlerhaft für वर्षुक.

वार्ष्टी adj. von वृष्टि gaṇa संकाशादि zu P. 4, 2, 80.

वार्ष्ण m. patron. des Gobala TBa. 3, 11, 9, 3. des Barku (oxyt.) Çat. Bra. 1, 1, 4, 10. 14, 6, 10, 5. wird von den Comm. auf वृष्णि, वृषन् und वृष्ण zurückgeführt.

वार्ष्णि m. patron. s. Weber, Ind. Str. 2, 380.

वार्ष्णिक m. patron. von वृष्णिक gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112.

वार्ष्णिवृद्ध adj. nach dem Comm. = वृष्णिवृद्धेषु ज्ञात: Kâtju. Bh. 7, 4 in Ind. St. 2, 309.

1. वार्ष्णेय (von वृष्णि) m. patron. Çâsha's TBa. 3, 10, 9, 15. Kokilâna's MBu. 6, 3716. Kṛshṇa's Bhâg. 1, 41. 3, 36. Pañcar. 3, 8, 7. 4, 3, 130. N. pr. des Wagenlenkers Nala's, der später in die Dienste Ṛtuparṇa's tritt, MBu. 3, 2251. 2292. 2297. 2640. f. ई 1, 4401. 5, 4914. 7, 2503. 12, 16. 14, 1539. 1546. m. pl. *das von* Vṛshṇi *abstammende Geschlecht*, — *Volk* 2, 1844. 5, 804. 16, 124.

2. वार्ष्णेय (vom vorhergehenden) adj. *zu* Kṛshṇa *in Beziehung stehend, ihn betreffend* MBu. 12, 7652. 7654.

वार्ष्ण्य (von वृष्णि) m. patron. Çat. Bra. 3, 1, 2, 4.

वार्ष्मण (von वर्ष्मन्) adj. *zu oberst befindlich* Kauç. 23.

वार्ष्यायणि (von वृष) m. patron. P. 4, 1, 155, Vârtt. N. pr. eines Grammatikers Nir. 1, 2. Verz. d. Oxf. H. 160, a, 28. — Vgl. वार्षायणि.

1. वाल (spätere Form für वार्; auch बाल geschrieben; die Bomb. Ausgg. des MBu. und Bhâg. P. वाल) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. Sinha. K. 250, b, 8. 1) m. *Schweifhaar*, bes. *Rosshaar* (*Schweif*); = कुत्तल, कच, केश, शिरोरुह AK. 2, 6, 2, 46. Trik. 3, 3, 401. H. 568. an. 2, 502. Med. l. 39. Hallây. 2, 375. = रोमन् H. ç. 127. = अश्वपुच्छ und श्वपुच्छ (अश्वस्य करिणश्च वालधि:) H. an. Med. अश्ववाला: TS. 5, 2, 4, 5. 7, 5, 25, 1. AV. 9, 7, 8. वालादेकमणीयस्कम् *feiner als ein Haar* 10, 8, 25. 3, 22. 10, 1. 12, 4, 7. Çat. Bra. 3, 4, 4, 17. 6, 2, 4. वालमात्रादसंभित्र: 3, 3, 4, 1. °दामन् 5, 3, 4, 10. Kâty. Ça. 15, 3, 30. गो: Gobh. 4, 8, 14. वालेषु काचाना-वेयति TBa. 3, 9, 4, 4. Nir. 1, 20. 11, 31. वाला: पशूनाम् M. 8, 224. MBu. 1, 1194. वालान्कृष्णान्युच्छसमाश्रितान् 1237. 13, 3348. 3798. R. 7, 37, 2, 27. Suça. 1, 28, 6. 18. 93, 16. 100, 4. 2, 90, 6. लक्केशवालरोमाणि (वाजिन:) ad Çik. 6, 3. कृष्ण° MBu. 1, 1192. काल° 1236. 7, 959. 8, 2348. सूक्ष्मलक्केशवाल (वाजिन्) Vasiṣṭh. Bpn. S. 66, 1. किरति वालान् (वाजिन:) 93, 11. 67, 3. Bhâg. P. 10, 12, 9. 37, 3. चमरीवालभार Megh. 34. Spr. 2636. देवे-शमर्ष: किल वालकेतो: मृष्ट: Vasiṣṭh. Bpn. S. 72, 1. Kathâs. 59, 42. वत्स-र्यास्त्रिरुत्पन्ना वाल: Ind. St. 8, 436. वाललेशो ऽपि व्याधाणां यत्स्याज्जी-वितरक्षणे Spr. (II) 1. Kathâs. 82, 41. 43. 45. 106, 25. fg. भ्रुव: 49, 21. श्म° 19. गोवाला: M. 8, 250. Jâân. 1, 185. 3, 60. °ग्रथिता P. 4, 3, 151, Schol. सुवाल adj. von einem Elephanten Vasiṣṭh. Bpn. S. 67, 7. बहुवालता च-मर्या: 72, 2. am Ende eines adj. comp. f. या gaṇa क्रोडादि zu P. 4, 1, 56. — 2) m. *Haarstich* VS. 19, 88. Çat. Bra. 12, 7, 3, 11. 8, 2, 14. Kâty. Ça. 14, 1, 27. 19, 2, 5. — 3) m. n. *eine Art Andropogon* (खीवेर; vgl. केश) AK. 2, 4, 8, 10. Trik. 3, 3, 401. H. an. Med. Ratnam. 121. Suça. 1, 72, 4. 238, 15. 344, 5. Vasiṣṭh. Bpn. S. 77, 7. — 4) f. या und ई gaṇa बह्वादि zu P. 4, 1, 45. *a*) वाला α) *Kokosnuss* (wegen ihrer *Fasern* so genannt). — β) *Gelbwurz* (vgl. शिफा). — γ) *eine Art Jasmin* Med. — *b*) वाली α) *eine Art Schmuck*. — β) = मेध्या H. an. Med. — Vgl. ऊर्धवाल, गोवाल, गो-वाल, दीर्घवाला, दुर्वाल, प्रवाल, मणिवाल, रज्जु°, लोक°.

2. वाल n. angeblich so v. a. पर्वन् (zur Etymologie von सिनीवाली). Nir. 11, 31.

वालक (von 1. वाल) 1) m. *Schweif eines Pferdes* oder *Elephanten* H. an. 3, 75. fg. Med. k. 129. — 2) m. n. *eine Art Andropogon* H. 1158. Med. Halây. 2, 467. R. Gorr. 2, 83, 30. Suça. 1, 139, 3. 2, 416, 19. 431, 3. 433, 15. 16. 21. Çârîr. Saṃh. 2, 2, 35. 37. Vasiṣṭh. Bpn. S. 77, 5. 9. 18. 23. — 3) m. f. n. *Fingerring* Med. k. 129. 157. — 4) m. n. *Armband* (vgl. वलय) ebend. — 5) f. वालिका *a*) *Sand* (vgl. वालुका) Trik. 3, 3, 35. H. an. Med. k. 129. — *b*) *eine Art Ohrschmuck* Trik. H. 656. H. an. Med. — *c*) *das Rauschen der Blätter* Trik. (wo पिञ्जोला st. पिञ्जे ना zu lesen ist). H. an. Med. — Vgl. वारि°.

वालखिल्य 1) adj. मन्त्रा: oder सूक्त: heissen die in der ṚV.-Saṃhitâ nach 8, 48 aufgenommenen eilf (oder nach Sây. zu Ait. Br. acht) Lieder Ait. Br. 5, 15. 6, 24. der Abschnitt wird in den Hdschrr. als वालखिल्यम् bezeichnet Âçv. Ça. 3, 2, 3. Çâṅkh. Br. 30, 4. 8. Pañcav. Br. 13, 11, 3. 14, 5, 4. Çâṅkh. Ça. 12, 6, 12. Roth, Zur L. u. G. d. V. 35. °खिल्या: Verz. d. Oxf. H. 56, a, 8. °खिल्याध्यायसंहिता Bhâg. P. 12, 6, 59. स° Kâraṇḍavûha in Ind. St. 1, 61. दृशतीं वालखिल्यकाम् 3, 270. — 2) m. pl. Bez. gewisser daumengrosser Ṛshi, die in Beziehung zur Sonne zu stehen scheinen, Sây. zu Ait. Br. a. a. O. Ind. St. 3, 236, a. Maitrâyaṇ. 2, 3. Taitt. Âr. in Ind. St. 1, 78. MBu. 1, 1285. fgg. 2863. 7683. 2, 427. 3, 174. 10903. 7, 8728. 12, 13564. 13, 442. 681. 4121. 5604. 6486. fgg. R. 1, 51, 27 (52, 26 Gorr.). 3, 10, 2 (नवे ऽन्ने प्राप्ते पूर्वसंचितान् त्यजन्ति: Comm.). 39, 30. 4, 40, 60. विरात्र — वाल-खिल्यैरिवाभ्युमान् Râgân. 13, 10. Kathâs. 12, 142. Bhâg. P. 3, 12, 43. 4, 1, 39. 5, 21, 17. 6, 8, 38. 12, 11, 49. Mârk. P. 18, 49. 52, 24. fg. 106, 52. Sar-vadarçanas. 99, 2. Verz. d. Oxf. H. 310, a, 30. °खिल्याश्रम 52, b, 27. fg. °कृता धर्मा: 266, b, 24. °खिल्येश्वरतीर्थ 67, a, 37. — 3) f. या Bez. *gewisser* Ishṭaka TS. 5, 3, 2, 5. Çat. Bra. 8, 3, 4, 1. 7. 10, 4, 2, 16. Kâty. Ça. 17, 9, 8. — Zur Etymologie vgl. Çat. Bra. 8, 3, 4, 1. Ait. Br. 6, 24. Als Eigenname vermuthlich so v. a. *eine kahle Stelle in den Haaren habend, glatzköpfig*, jedoch mit spottendem Nebensinn, da वाल eigentlich nicht von mensch-

lichen *Haaren* gebraucht wird. Häufig falsch वालि° und वालि° geschrieben.

वालधान (f. वाल + धान) n. *Schweif, Schwanz* TS. 7, 3, 66, 2. Kâṭy. Çr. 13, 3, 16. Lâṭy. 3, 11, 3.

वालधि m. 1) dass. AK. 2, 8, 2, 13. H. 1239. 1244. Halâj. 2, 286. वशस्य Lâṭy. 3, 9, 19. Sâṅkhây. Br. 5, 10. M. 4, 67. MBh. 7, 1574. 14, 1781. गो: 1, 2934. 13, 5969. सु° (गो) 1, 6662. Varâh. Bṛh. S. 61, 12. 15. शार्दूलस्य R. 2, 61, 19 (बलधि ed. Bomb.). Vgl. चक्रवालधि, दण्ड°, वक्र°. — 2) N. pr. eines Muni MBh. 3, 10736. fgg. (beide Ausgg. वालधि).

वालधिप्रिय 1) adj. *seinen Schweif lieb habend.* — 2) m. *Bos grunniens* Râǵân. im ÇKDr. u. चमर; vgl. उपलधिप्रिय und Spr. 2656.

वालन adj. von 1. वलन 2): मूत्र Gobhân. 9, 11.

वालपाश्या f. *eine Perlenschnur, mit der das Haupthaar gebunden wird,* AK. 2, 6, 2, 4. H. 655.

वालबन्ध m. *Schwanzriemen* MBh. 8, 976. Eine andere Bed. muss das Wort in Verz. d. Cambr. H. 63 haben.

वालबन्धन m. dass. MBh. 8, 1482.

वालभिद् in मल्ल° (wie st. मल्लवालभिद् zu lesen ist). Die Redespielereien dieses Namens hat die sechs ersten Vâlakhilja-Lieder zum Stoff.

वालम्भदेश m. *N. pr. einer Gegend* Verz. d. Oxf. H. 352, *b*, 14.

वालव (वालव, वालव) wohl n. N. eines Karaṇa Varâh. Bṛh. S. 99, 6. Kośapâṭha im ÇKDr. im Prâkrit Ind. St. 10, 280. — Vgl. 3. करण 3) m).

वालवर्ति f. *Haarbäuschchen* Suçr. 2, 23, 15. fg.

वैलवाय m. 1) *(Ross-) Haarwedel* P. 6, 2, 76, Schol. — 2) N. pr. eines Berges P. 6, 2, 77, Schol.

वालवायन 1) adj. *auf dem Berge* Vâlavâja *wachsend, — gewonnen werdend.* — 2) n. *Lasurstein* Taik. 2, 9, 29. H. 1063. Hir. 27. Halâj. 2, 20.

वालवासस् n. *ein härenes Gewand* M. 11, 92. Jâǵ. 3, 254.

वालव्यजन n. *ein Fliegenwedel aus Schweifhaaren* insbes. *des Bos grunniens* H. 717. MBh. 1, 5416. Harîv. 9580. R. 2, 91, 38 (100, 37 Gorr.). 5, 112, 78. Raǵat. 9, 66. 14, 11. Kumâras. 1, 12. Râǵa-Tar. 3, 386. Bâlar. P. 4, 15, 15. 10, 81, 17. am Ende eines adj. comp. f. घा Rasam. 16, 37.

वालव्यञ्जन fehlerhaft für °व्यजन H. 717, Schol. Sarvad. P. 4, 12, a.

वालकस्त m. *Schweif, Schwanz* AK. 2, 8, 2, 13. H. 1244. Halâj. 2, 286.

वालाली f. *eine best. Pflanze* (= केशपुष्पी?) Çabdâm. bei Wilson.

1. वालाय n. *die Spitze eines Haares (Schwanzhaares)* Çvetâçv. Up. 5, 9. als Maass = 8 Rathâs = 64 Paramâṇu Varâh. Bṛh. S. 58, 3. Mânâ. P. 49, 37.

2. वालाय adj. *eine haarfeine Spitze habend* Sâṅkhây. Br. 4, 4.

वालायपोतिका f. wohl *ein auf einem zugespitzten Pfahle, also gleichsam auf einer Haarspitze, balancirendes Boot* Ind. St. 10, 279.

वालावितु m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5, 225.

वालि m. 1) N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52, *b*, 27. — 2) eines Affen, = वालिन् Taik. 2, 8, 7. H. 704.

वालिक (वालिक) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 39.

वालिकाख्य (वा°, v. l. वाणिकाख्य) m. gaṇa भौरिक्यादि zu P. 4, 2, 54. वालिकाख्यविध von Vâl. bewohnt ebend.

वालिकायनि adj. von वलिक gaṇa पक्षादि zu P. 4, 2, 80.

वालिखिल्य s. u. वालखिल्य.

वालिखिल्य m. N. pr. eines Sohnes des Dravida Çatr. 7, 2.

वालिन् (von 1. वाल) 1) adj. *geschwänzt* oder *haarreich; ein Haar habend* d. h. *desselben bedürfend* (für eine Etymologie gebildet) Nir. 11, 31. — 2) m. N. pr. *a)* eines Daitja MBh. 2, 367. — *b)* eines Affen, Bruders des Sugrîva und Sohnes des Indra, Taik. 2, 8, 7. H. 704. MBh. 3, 11194. 4, 732. R. 1, 1, 61. 68. 3, 23. 16, 11. 5, 4, 48. 75, 63. 7, 34, 2. (वासवस्य) वालेषु पतितं वीर्यं वाली नाम ततोऽभवत् स: 37, 4, 37. Raǵat. 12, 58. Bâlar. P. 9, 10, 12. — 3) f. वालिनी *das Nakshatra Açvinî* H. 108.

वालिशिख m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 1553.

वाली in क्ली°.

वालु m. = एलवालु Uṇâdik. bei Wilson.

वालुक (von वालुका) 1) adj. *a) aus Sand gemacht:* °सेतु Spr. 5079. — *b) sandhaltig, sandartig.* — 2) m. *ein best. vegetabilisches Gift* H. 1197. — 3) f. ई *a) Sandbad.* — *b) Kampher* Çabdâm. bei Wilson. — *c) Cucumis utilissimus* (vgl. वालुङ्की) H. 1189. Halâj. 2, 54. Gaṇâdh. bei Wilson. — 4) n. = एलवालुक, कर्पूरवालुक AK. 2, 4, 4, 9. H. an. 3, 98. Med. n. 121.

वालुका f. (gew. pl.) *Sand* AK. 3, 4, 44, 76. H. 1089. an. 3, 75. 98. Med. k. 130. fg. Halâj. 3, 48. Çvetâçv. Up. 2, 10. M. 8, 250. MBh. 3, 10733. 13530. वालुकाश्विव मुद्रितम् Spr. 677 (II). 4767. Suçr. 1, 171, 21. Çiç. Sâṅk. 3, 2, 14. Sin. D. 64, 11. Pañkat. 205, 8. Daçak. 91, 16. वालुकार्णव *Sandmeer, Sandwüste* MBh. 17, 46. Râǵa-Tar. 4, 289. 291. वालुकाम्बुधि dass. 179. Am Ende eines adj. comp. (f. घा) R. 1, 2, 7. 2, 55, 31. 5, 16, 35. Harîv. 9005. fg. Varâh. Bṛh. S. 54, 83. 91. Scheinbar N. einer Hölle MBh. 13, 5491, wo aber mit der ed. Bomb. घोरवालुकं zu lesen ist. — Vgl. कर्म्भ° unter कर्म्भ 1) *a)* (MBh. 18, 80 liest die ed. Bomb. °वालुकास्तप्ता:), तप्तवालुक, ब्रह्मवालुक, रक्त°, स्थूलवालुका.

वालुकागड m. *ein best. Fisch* Hir. 190.

वालुकात्मिका f. *Sandzucker* Çabdâm. bei Wilson.

वालुकाप्रभा f. N. einer Hölle bei den Gaina H. 1060.

वालुकि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 234, *a*, 6. वालुकिन् Hall 16. भालुकि und वासुकि v. l.

वालुकेल n. *eine Art Salz* Suçr. 1, 227, 8.

वालुकेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, *b*, 29.

वालुङ्की f. = वालुकी *Cucumis utilissimus* Taik. 2, 4, 36.

वालूक m. = वालुक 2) H. 1197, v. l.

वालेय m. patron. Kâṭy. Çr. 16, 2, 21. — Vgl. वालेय (in der Bed. *Esel* Varâh. Bṛh. S. 86, 26. 88, 3 mit व geschr.).

वाल्क (von वल्क) adj. *aus Bast gemacht* AK. 2, 6, 2, 12. u. *Zeug —, ein Gewand aus Bast:* °वस्त्र Mârk. P. 15, 29.

वाल्कल (von वल्कल) 1) adj. *aus Bast gemacht.* — 2) f. ई *ein best. berauschendes Getränk* Taik. 2, 10, 15.

वैल्गव्य m. patron. von वल्गु gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105.

वाल्गव्यायनी f. zu वाल्गव्य gaṇa लोहितादि zu P. 4, 1, 15.

वाल्गुक (von वल्गु) adj. (f. ई) *recht sterlich* u. s. w. gaṇa मधुल्यादि zu P. 5, 3, 105.

वाल्मिकि m. v. l. für वाल्मीकि gaṇa गर्गादि zu P. 4, 2, 110.

वाल्मीकीय adj. von वाल्मीकि v. l. im gaṇa गर्गादि zu P. 4, 2, 105.

वाल्मीक 1) adj. von Vâlmîki *verfasst:* काव्य Brahmavaiv. P. bei Burnouf, Bhâg. P. I, xxiii. — 2) m. = वाल्मीकि Taik. 2, 7, 19. H. 846. MBh. 3, 2946. Hariv. 3283. R. 7, 71, 3. Weber, Rîmây. Up. 306. ein Sohn Kîrtigupta's Verz. d. Oxf. H. 341, *b*, No. 799.

वाल्मीकीय n. wohl = वल्मीक *Ameisenhaufe* Âpast. Bh. 6, 6 in Ind. St. 1, 40.

वाल्मीकि (von वल्मीक) m. N. pr. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 2, 110. einer der Söhne des Garuḍa MBh. 5, 3596. ein alter Ṛshi: वाल्मीकिवचो निभृतं स्ववीर्यम् 1, 2110. 2, 297. 12, 7531. Grammatiker TS. Pair. 5, 36. 9, 4. Verfasser des Râmâjaṇa Taik. 2, 7, 19. H. 846. Halâj. 2, 257. अपि चायं पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि। न कर्तव्याः स्त्रिय इति MBh. 7, 5019. Hariv. 3. R. 1, 1, 1. fgg. 2, 56, 13, 6. Râgat. 14, 15. VP. 273. Bhâg. P. 6, 18, 4. Weber, Rîmây. Up. 314. Saṁsk. K. 183, *b*, 11. Ksiṁîç. 1, 2. Madhus. in Ind. St. 1, 20, 25. Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 26 (°मुनि, °कवि). Verfasser des Jogavâsishṭha Hall 121. Ind. St. 1, 468. des Adbhutarâmâjaṇa ebend. des Gaṅgâshṭaka Verz. d. B. H. No. 1352. गौड° 973.

वाल्मीकीय adj. *zu* Vâlmîki *in Beziehung stehend, von ihm verfasst* u. s. w. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 2, 110. तपोवन Râgat. 15, 11. रामायण R. in den Unterschrr. der Sarga.

वाल्मीकेश्वर n. und °तीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, *b*, 25. 77, *a*, 15.

वाल्लभ्य (von वल्लभ) n. *das Beliebtsein, das in Gunst-Stehen:* राज्ञां° *beim Fürsten* MBh. 4, 687. नरेन्द्र° Vaṁiç. Bhâg. S. 53, 72. वाल्लभ्यमायाति जनस्य 85, 7. वाल्लभ्यं केशवमयं वहन्त्यः *so v. a. die Gunst Keçava's besitzend* Hariv. 8321. स्त्रविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वाल्लभ्यमिच्छताम् Suçr. 2, 153, 13. पूर्वोक्तं प्राप भूपतेः। वाल्लभ्यम् Kathâs. 20, 46. वाल्लभ्यं तस्य लेभिरे Râga-Tar. 6, 155. *Zärtlichkeit:* विविधप्रलापवाल्लभ्यानां निधिः 2, 1.

वाल्वद्विरि m. *Cucumis utilissimus* Bhâv. P. 126. — Vgl. वालुक.

वाव Çiṁ. 4, 15. adv. doppelt betont, vermuthlich Zusammenrückung zweier Partikeln, bekräftigend und dem Worte nachgesetzt, auf welches der Nachdruck fällt: *gewiss, gerade, eben.* Besonders häufig im ersten von zwei correlaten Sätzen, daher namentlich im Relativsatz gebraucht. Das Wort ist dem umständlichen Stil der Brâhmaṇa eigen; im Çat. Br. erst vom 6ten Buche an häufig. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8, 1, 64. एष वाव सो ऽग्निरित्याहुः *das ist gerade derselbe* Agni TS. 2, 2, 8, 5. 5, 4, 6. त्रीणि वाव सवनानि 3, 2, 8, 1. TBr. 1, 1, 10, 2. 2, 1, 2, 9. 10. Çat. Br. 1, 9, 3, 16. अस्यन्वान्वाव पशुर्जायते 6, 6, 2, 9. 4, 10. सतं वाव दीता मत्यं दीता Ait. Br. 1, 6. 13. 15. मरुद्भाव, अभ्यर्त्यं वा 3, 9. 15. यदि क वा यदि ब्रह्म इव जायाः पतिर्वाव तासां मिथुनम् 17. 5, 25. अग्निर्वाव पुरोहितः पृथिवी पुरोधाता 8, 27. एष वाव, एसो TBr. 1, 4, 6, 2. पुरुषो वाव सुकृतम् Ait. Ur. 2, 3. तव क वाव किल भगव इदम् *dir allerdings gehört dieses* Ait. Br. 4, 14. आदित्येन वाव सर्वे लोका मरीयन्ते Taitt. Up. 1, 5, 2. आस्मी वाव त उपनिषदमस्म Kenop. 32. नाम्नो वाव भूयो ऽस्ति Kâṁand. Up. 7, 1, 5. 3, 2. वाग्वाव नाम्नो भूयसी 2, 1. 3, 1. 4, 1 u. s. w. सर्वं वाव पितास्मि यो मत्तकृदस्मि Pâraṁav. Br. in Ind. St. 9, 40. एतावती वाव प्रजापतेर्वेदिर्यावत्कुरुक्षेत्रम् 1, 35. एष वाव देवतत्यः 10, 78. Maitrâjp. 2, 6. यमं वाव 1. इयान्वाव किल पशुर्यावती वया Ait. Br. 2, 18. एवं क वाव 4, 25. 8, 11. TBr. 1, 2, 8, 5. nach इति 6, 9, 9. 7, 6, 5. TS. 1, 3, 6, 5. nach इत्थम् 2, 6, 6, 5. पुरा क्रतु वाव 6, 1, 11, 6. यद्वाव, तदेव Ait. Br. 1, 2. परिं वाव, तर्क्षेव 27. यस्ये वाव, सेव 2, 6. यतरो वाव, स एव 3, 9. TBr. 1, 5, 11, 2. 12, 2. 3, 8, 14, 1. TS. 2, 6, 8, 1. 5, 6, 2, 1. यो क क्रतु वाव, स वा एषः Maitrâjp. 2, 1. यया वाव Vaṁiṁâs. (Allah.) No. 77. परिं वाव Bhâg. P. 2, 9, 3. 5, 1, 6. 5, 22. यदु क वाव 3, 15. तस्यामु क वाव 1, 24. इति क वाव 23. अथ क वाव 6, 9, 35. सयो क वाव (= तु वाव) Çat. Br. 11, 5, 4, 12. त्रयो क वाव पशवो ऽमेध्याः 12, 4, 4, 14.

वावदूक (vom intens. von वद्) adj. Vop. 26, 153. gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151. *sehr beredt, geschwätzig, streitsüchtig* AK. 3, 1, 35. H. 346. Vaṁç. bei Mallin. zu Çiç. 2, 27. Bhâgavṛtti bei Udâjan. zu Upâdis. 4, 41. MBh. 12, 598. Çaṁk. zu Bâd. Âr. Up. S. 308.

वावदूकत्व (von वावदूक) n. *Beredsamkeit* Paṁkâd. 1, 14, 107.

वावदूकी m. patron. von वावदूक gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151.

वावप m. *eine Art Basilienkraut* Çabdâ. im ÇKDr.

वावर्त् (वावृत्), वावर्त्यते Dhâtup. 26, 51. *wälzen:* वावृत्यमाना Bhaṭṭ. 4, 28. वावृत्त *gewälzt* AK. 3, 2, 11.

वावल्ल m. *ein bes. Pfeil* H. 780, Schol.

वावशि (vom intens. von 1. वश्) adj. P. 3, 2, 171, Vârtt. 4. Vop. 26, 154. *trefflich führend* ṚV. 9, 9, 5.

वावात (ववात Padap.) 1) adj. etwa *geliebt, Liebling* (vgl. 1. वन्): मे तें वावाता ऋतामिषं गोः ṚV. 4, 4, 5. उप ब्रह्मा वावाता वर्षणा कृते इन्द्रमुप सुत ववतः 3, 4, 11. — 2) f. घा *Favoritin*, nach den Comm. *diejenige Gattin eines Fürsten, welche der* महिषी, *der Gemahlin, nachsteht, aber der* परिवृक्ती *vorangeht.* सेना वा इन्द्रस्य प्रिया जाया वावाता प्रासह्या नाम Ait. Br. 3, 22. शची वावाता सुपुत्रा चादितिम् Çiṁkh. Gṛhj. 1, 12. TBr. 1, 7, 3, 3. Âçv. Çr. 10, 8, 12. Çat. Br. 13, 2, 6, 5. 4, 6, 5. 5, 3, 6. Kâṭj. Çr. 23, 1, 12. 3, 5. 5, 15. R. ed. Bomb. 1, 14, 35.

वावातर् (ववातर् Padap.) nom. ag. *der Anhängliche, Getreue:* वावातुर्यः पुरंदरः ṚV. 2, 1, 5. मघस्तुतिं वावातुः सप्त्या गंहि 16.

वावातु m. *Schiff* Çabdâ. im ÇKDr. — Vgl. वावट.

वावृद्ध s. वावावृद्ध.

वाश्, वाश्यते Dhâtup. 26, 54 (शब्दे). वाश्यति, वाशते. वाशति: ववाशिरे und वावशे (ved.); वावशती P. 7, 3, 87, Vârtt. 1. ṚV. 4, 50, 3. वावशानः; ववाशिरम् TBr. 3, 7, 8, 1. *blöken, brüllen* (von der Kuh), *heulen* (vom Schakal u. s. w.); auch vom Ruf grösserer Vögel: *krächzen; ächzen:* यस्याग्निहोत्री दुह्यमाना वाश्येत Ait. Br. 5, 27. धेनवो वावशानाः ṚV. 1, 72, 6. 3, 57, 3. तं (उक्षाणं) वावशानं मृगयः सचन्ते 9, 93, 4. ववावशस्त घीतयो वृषभस्याधि रेतसि 19, 4. 86, 21. Da von वाश् dieselbe reduplicirte Form gebildet wird, so wird mit dem Doppelsinn gespielt, z. B. 9, 97, 34 vgl. mit 35. — Çat. Br. 12, 4, 4, 12. Kâṭj. Çr. 25, 9, 12. Kauç. 63. vom Raubvogel Pâr. Gṛhj. 3, 5. Klagerufe: विभ्यस्यन्तो ववाशिरे Nir. 1, 10. मे विद्युता दधति वाशति त्रितः ṚV. 5, 54, 2. — वाश्यमान R. Gorr. 1, 27, 13. Vaṁiṁ. Bhâg. S. 90, 12. काका वाश्यन्ति R. 7, 6, 55. वाश्यत्यथ शिवाः 55. वाशते MBh. 2, 1547. 5, 4857. R. 3, 64, 4. Vaṁiṁ. Bhâg. S. 95, 42. वाशमान MBh. 1, 8433. 12, 4218. Spr. 4594. वीची कूवीति वाशति सारिकाः MBh.

16,33. Harıv. 1146. 9297. Mṛcch. 143,13 (वामति). Varāh. Bṛh. S. 46, 66. 88, 6. 95, 39. कुररीमिव वाशतीम् MBh. 3, 2331. 10437. हा हता: स्मेति वाशत्य: 10493. 6, 4826. Harıv. 1144. 1146. 4820. Varāh. Bṛh. S. 88, 21. 95, 33. 43. Mārk. P. 2, 44. ववाशिरे च दीप्तायां दिशि गोमायुवायसा: MBh. 6, 629. 4523. Raghu. 11, 61 (ed. Sr. ववासिरे, ed. Calc. ववाशिरे). Bhatt. 14, 11. 76. वाशिता Varāh. Bṛh. S. 95, 26. — Vgl. राश् und 1. राम्.

— caus. *blöken* —, *krächzen machen* ṚV. 9, 21, 7. क्रंसो यवो गवां विश्वस्यावीवशन्मतिम् 32, 3. धेनूर्वाश्रो अवीवशत् 34, 6. गा: 107, 26. क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवशत् *dröhnen machen* 86, 19. वर्मञ्चे मनवे वायवाशय: *hast dröhnen* d. h. *donnern gemacht* 1, 31, 4. med. *sich laut hören lassen:* यावा यत्र मधुयुजश्चते वृक्तद्वर्हीवशत मतिभिर्मनीषिण: 10, 64, 15.

— intens. *laut heulen, — krächzen:* पक्षापक्षेति सुभृशं वावाश्यते वयांसि च MBh. 6, 111. वावाश्यमान 12, 289 nach der Lesart der ed. Bomb. st. रारास्यमान der ed. Calc.

— अनु *ein Gebrüll u. s. w. erwidern:* वामे वाशित्वादो दक्षिणायार्थे ऽनुवाशते पातु: Varāh. Bṛh. S. 95, 26. कृत्स्यश्चाद्यो ऽनुवाशते 53, 107. mit acc.; pass.: ते ग्राम्यसत्त्वैरनुवाश्यमाना: 91, 2. शकुनो दीप्ते वामस्वेनानुवाशित: 86, 70.

— प्रत्यनु dass.: द्वाभ्यामपि प्रत्यनुवाशितास्ते मृगा: Varāh. Bṛh. S. 91, 2.

— अभि *blökend u. s. w. begrüssen, anbrüllen u. s. w.:* अभि वा न क्रीरुषसो ववाशिरे ऽग्निं वत्सं न स्वसरेषु धेनव: ṚV. 2, 2, 2. सुतासस्तैरभि वायुमिन्दुम् 9, 94, 2. 90, 2. 10, 123, 3. गृतसमदं कपिञ्जलो ऽभिववाशे Nir. 9, 4. अभिवाशत: MBh. 6, 53. 15, 1073. Varāh. Bṛh. S. 95, 39. — Vgl. अस्ताभिवाशिन्.

— उद् *wehklagend anrufen:* उद्वाश्यमान: पितरम् Bhatt. 3, 32.

— नि s. निवाश.

— प्र *ein Gekrächz erheben:* काकि: प्रवाशद्भि: Varāh. Bṛh. S. 95, 8.

— प्रति *Jmd* (acc.) *zubrüllen, zukrächzen:* प्रति गावो उषसं वावशन्त ṚV. 7, 75, 7. पदन्यच्छकुनश्च गर्दभाश्च प्रतिवाश्यते Pañcav. Br. 21, 3, 5. 6. Liṅg. 1, 8, 16. प्रतिवाश्य Varāh. Bṛh. S. 95, 39. fg. — Vgl. प्रतिवाश.

— सम् *zusammen blöken u. s. w.:* समुस्रियाभिर्वावशन्त नर: ṚV. 1, 62, 3. इळेव ग्नाता समवावशीताम् 181, 4. मं सिन्धुभि: कलशे वावशान: समुस्रियाभि: 9, 96, 14. — caus. *zusammen blöken lassen:* धेनू: Liṅg. 3, 6, 1.

1. वाशँ (von 1. वश) adj. etwa *botmässig, gehorsam* (= कास्त oder शब्दायमान Sāy.) ṚV. 8, 19, 31.

2. वैंश adj. entweder eben so oder zu 2. वंश, in einer Formel VS. 10, 4. TS. 2, 4, 7, 2. 6, 3. वैंशी 3, 3, 2, 1. — TBr. 1, 7, 8, 4.

3. वाश 1) m. patron. von वश Çiṅku. Ça. 6, 11, 22. — 2) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 236, a. Liṅg. 1, 6, 45.

1. वाशक (von वाश्) adj. *krächzend:* नानावाशककङ्कपतिरुचिर Mṛcch. 144, 11.

2. वाशक 1) m. *eine best. Pflanze,* = वासक Colebr. und Lor. zu AK. 2, 4, 8, 22. — 2) f. वाशिका dass. dies. zu AK. 2, 4, 8, 21. Varāh. Bṛh. S. 55, 22, v. l. (nach Kern).

वाशन (von वाश्) 1) adj. *krächzend, zwitschernd* u. s. w.: भृङ्गालीकोकिलकुक्षिर्वाशने: Bhatt. 6, 73. — 2) m. proparox. संज्ञायाम् gaṇa नन्द्यादि zu P. 3, 1, 134. — 3) n. *das Blöken* Comm. zu TBr. III, 518, s. 16. — Vgl. घोर°.

वाशव m. = वासव Dvijapar. in Verz. d. Oxf. H. 194, *b*, No. 449.

वाशा f. *eine best. Pflanze,* = वासक Çabdar. im ÇKDr. Kauç. 8. 39. — Vgl. वासा.

वाँशि Uṇādis. 4, 124. m. = अग्नि Ujjval.

1. वाशित (von वाश्) n. *Geheul, Gekrächz* u. s. w. AK. 1, 1, 6, 4. H. 1407. गोमायु° R. 3, 64, 10. शकुने: MBh. 9, 1797 (वासित ed. Calc.). Varāh. Bṛh. S. 88, 26. 29. 36. गृधवायस° Kathās. 18, 147. 121, 169. मयूरवासित Comm. zu Nyāyas. 2, 1, 36.

2. वाशित = वासित (von वासय्) Sch. zu AK. nach ÇKDr.

वाशिता (von वश् oder वाश्) f. 1) *eine rindernde Kuh:* अभिक्रन्दन्नूधो वाशितामिव (वासिताम् die Hdschrr.) AV. 5, 20, 2. पर्यर्षभाय वाशिता न्योचिक्क्रायति TBr. 1, 1, 9, 3. Ait. Br. 6, 18. 21. fg. Kāṭy. 13, 4. MBh. 1, 4114. 4, 512 (wo mit der ed. Bomb. वार्षभम् st. नार्षभम् zu lesen ist). 7, 5488. R. 7, 32, 52. Bhāg. P. 10, 46, 9. auch von andern weiblichen Thieren gebraucht, die nach dem Männchen verlangen; insbes. von der *Elephantenkuh* (*Elephantenkuh* überh. AK. 2, 4, 44, 78. Taik. 2, 8, 35. H. ç. 176. an. 3, 295. fg. Med. t. 152. Hin. 52) MBh. 1, 4109. वृकस्तो वासिताकेतोः समदाविव कुञ्जरौ 5344. 7092. 4, 751. 7, 314. 7102. 11, 642. R. 5, 23, 16. 7, 23, 24. Raghu. 19, 11. Bhāg. P. 8, 12, 32. von einer *Löwin:* वासितासंगमे पत्तौ सिंहाविव मरुत्वते MBh. 6, 5395. von *Gazellen:* वासिताभि: स्वद्वाभिर्मृगीभि: परिवारितम् (मृगम्) Mārk. P. 65, 21. *Weib, Gattin* überh. AK. H. an. Med. Halāy. 2, 226. कृत्वा साधीं च नारीं च व्यसनिनाञ्च वांसिताम् । भर्तव्यवेन भार्या च MBh. 12, 9532. यो भर्ता वासितातुष्टो भर्तुस्तुष्टा च वासिता 13, 5854. Im MBh. R. Raghu. Bhāg. P. Mārk. P. und bei den Lexicographen (nach ÇKDr. soll AK. वाशिता lesen, aber bei वासिता wird dasselbe gesagt) stets वासिता geschrieben.

वाशिन् (von वाश्) adj. *heulend, krächzend* u. s. w.: मण्डलै: काकगृध्राणामाकोणौ कृतवासिभि: (lies हृतवाशिभि:) Kir. Nītis. 16, 26. — Vgl. काक°, घोर°.

वाशिष्ठ s. वासिष्ठ.

वाँशी f. 1) *ein spitzes Messer,* bes. zum Schnitzen: वाशीमेको बिभर्ति हस्त आयसीम् ṚV. 8, 29, 3. मं शिशीत वाशीभिर्यासीभिरमृताय तक्षत 10, 53, 10. यज्ञन्मयीं 101, 10. der Marut 1, 37, 2. 88, 3. 5, 53, 4. यत्ते शिक्वः पराबधीत्तक्षा कृत्तेन वाश्या (वास्या die Hdschrr.) AV. 10, 6, 3. ṚV. 8, 12, 12. यदी घृतेभिराकुतो वाशीमग्निर्भरत उज्जावे च wenn Agni *sein Messer* d. h. *die spitze Flamme auf und ab bewegt* 19, 23. वाँसि Uṇādis. 4, 124. P. 3, 3, 109. Vārtt. 7, Schol. = छेदनवस्तु Ujjval. = काष्ठभेदिनी ders. zu 117. वासी Amar Taik. 2, 10, 3. H. 918. वास्यैकं (वास्यैकं ed. Calc.) तनुतो वक्तुम् MBh. 1, 4605. 5, 5250 (वाशी ed. Bomb., = काष्ठप्रक्ष्णं शस्त्रम् Nīlak.). — 2) angeblich *Stimme, Ton* Naigh. 1, 11. Nir. 4, 16. 19. — Vgl. किरण्य°.

वाँशीमत् (von वाशी) adj. *ein Messer tragend* Nir. 4, 16. die Marut ṚV. 5, 57, 2. Agni 10, 20, 6.

वाशुरा f. Uṇādis. 1, 29. *Nacht* Ujjval.

वार्य (von वाश्) Uṇādis. 2, 13. adj. (f. या) *blökend, brüllend; dröhnend; klingend, pfeifend:* das Rind ṚV. 1, 32, 2. 38, 3. 95, 6. 2, 34, 15. 8, 43, 17. 9, 13, 7. 34, 6. 77, 1. 10, 110, 4. वाश्येव वत्से सुमना दुरोणा येतु 149, 4.

भगवान्यरियाति दीनान्वासेव (वासेव ed. Bomb.) वत्सकम् *wie eine Kuh ihr Kalb* Bhâg. P. 4, 9, 17. धावन्तीभिश्च वात्राभिर्धेनुभिः स्ववत्सकान् 10, 46, 9. गिरः RV. 8, 44, 25. Winde 7, 3. 7. 1, 37, 10. — 10, 99, 1. compar. Kâṭy. 33, 4. — Nach Viçva bei Uṇâdi. m. *Tag;* n. *Haus, Wohnung; Kreuzweg;* dieselben Bedeutungen bei Wilson und im ÇKDr. angeblich nach Man., wo aber die gedr. Ausg. वस hat; vgl. वास.

वाष्टुका f. N. pr. eines Dorfes Râja-Tar. 8, 1262. 1491.

1. वाम् s. वाञ्.

2. वाम्, वामयति s. वामय्.

1. वाम (von 3. वन्) m. *Gewand, Kleid* Comm. zu AK. 2, 6, 3, 17. कृत्तवामाय MBh. 13, 852. चीरवल्कलवामधृक् Harîv. 12039. nur scheinbar Kâtyâs. 3, 71, wo वामस्थलकम् zu schreiben ist. Eine aus metrischen Rücksichten für वामम् eintretende Nebenform. — Vgl. 2. उद्दाम, कृति°, 2. गो°, घन°, 2. पट°.

2. वामं (von 3. वम्) m. n. Sidd. K. 249, b, 7. zu belegen nur m. 1) *das Haltmachen für die Nacht, Uebernachten; das Verweilen, Aufenthalt; Aufenthaltsort, Wohnung* AK. 2, 2, 3, 4, 44, 73. H. an. 2, 592. शिवं मृगव्यायवो न वामे RV. 5, 43, 14. Kâty. Ça. 15, 6, 21. 25, 1, 3. 13, 23. Âçv. Gṛhj. 1, 8, 7. Ça. 3, 14, 18. Çâṅkh. Gṛhj. 2, 12. दिवमात्ते परिव्याप्ताः — विकाशावमवेक्षेव वीरा वाममवेक्षयन् MBh. 1, 5014. व्ययमातेषु वामाय मैन्येषु 7, 2478. न्यग्रोधमेव वामार्थे कल्पयामासतुः R. 2, 52, 100. वाममाज्ञापयत् 5, 74, 20. अर्धं ज्ञगाम मुकुतं वामाय 7, 54, 18. वानार्वमाक्रोक् मक्षातरुम् Kathâs. 42, 43. घरं वामाय प्राविशं गुरुम् 71, 264. विविशुः सर्वतः पार्थे वामायेवाण्डजा द्रुमम् MBh. 7, 5020. ममाच्छात्तः कुरुते वासम् 11, 165. R. 1, 33, 20 (34, 18 Gorr.). तस्यान्तीरे तदा सर्वे चक्रुर्वासपरिग्रहम् 36, 8. कृत्वा तु शैलपृष्ठे तौ वासमेकां निशाम् 3, 77, 4. 1, 63, 8. 7, 66, 16. 71, 3. चक्रुर्वासं नाधनि *sie machten unterwegs nirgends Halt* 108, 1. कोरति वासं गिरिगह्वरेषु *seinen Wohnsitz aufschlagen* Spr. 2047. गर्भवासेषु कुर्वन्ति वासम् MBh. 11, 166. तत्र वासं न कारयेत् Spr. 1670. वासं चाभ्यकल्पयत् R. 2, 54, 17. समत्तस्य शैलस्य सेना वाममकल्पयत् 98, 29. R. Gorr. 1, 1, 15. अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु Varâh. Bṛh. S. 59, 11. गङ्गोपकण्ठे वासश्च विक्षितो हस्तिनापुरे Kathâs. 18, 63. यदि तावद्वने वासश्चरितव्यो MBh. 4, 1934. तस्मिन्गृहे नित्यमुषित्वा वासम् 13, 524. सर्वेषामाश्रमे वाममभ्यगात् R. 7, 66, 15. नन्दनवाममत्य MBh. 3, 12348. अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित् Spr. (II) 106. इहो वाममर्जुन रोचय MBh. 4, 8. mit einem loc. componirt P. 6, 3, 18. यामेषाम und याम° Schol. Gṛhyâsaṃgr. Jâṭ. 3, 297. गृहे MBh. 1, 1877. शरभङ्गाश्रमे R. 1, 3, 17. fg. वने 2, 32, 61. Spr. 337. 2183. 2730. काञ्चनपञ्जरे 2782. विदेशे 5373. ब्रह्मे Bhâg. P. 3, 2, 16. यमकङ्कर्भवासेषु वासः M. 12, 78. नरके Bhag. 1, 44. Bhâg. P. 3, 21, 32. स्वर्गे R. 2, 27, 20. पादमूले Bhâg. P. 7, 1, 37. तत्पदे Pañkat. 1, 4, 15. गुरोः कुले M. 2, 243. गुरौ 67. Kir. Nîtiç. 2, 22. दासीषु MBh. 2, 2230. नारीणां चिरवासो बान्धवेषु 1, 2999. Mârk. P. 77, 19. अरण्य° R. 2, 28, 23 (°वासे वसतः). 44, 6. पुर° 93, 12. परगृह° Uttarar. 20, 3 (27, 3). अन्यगेह° Spr. 1765. 3418. Rasik. 19, 2. स्वर्ग° Suçr. 1, 96, 4. स्वर्गवासकर *einen Aufenthalt im Himmel verschaffend* Harîv. 282. गोलोक° Pañkat. 1, 4, 24. सन्धतामिस्र° Kathâs. 4, 63. वासं वस् *sich niederlassen, sich aufhalten, wohnen, leben:* यस्तमर्के गते वासं कोऽन्यो तावद्वोषतुः R. 7, 51, 30. नाम्राह्मणे गुरौ शिष्यो वाममात्यन्तिके वसेत् M. 2, 243. चतुर्दश वने वासं वर्षाणि वसतो मम R. 2, 37, 5. अज्ञातवासं वसतो मद्रके MBh. 3, 2020. अज्ञातवासं न्यवसन्नास्तस्य निवेशने 2653. दुर्गवासं बहुधा निरूप्य *ein schwerer Aufenthalt* 12344. तस्मिन्गुरौ गुरुवासं निरूप्य 14, 749. उषित्वा सुखवासम् R. 1, 17, 17 (6 Gorr.). वसन्यकुटुःखवासम् Bhâg. P. 3, 31, 20. अनाश्रमे *das Leben ausserhalb der vier* Âçrama Jîv. 3, 241. Am Ende eines adj. comp. *seinen Aufenthalt habend, wohnend in:* ब्रह्म° Harîv. 4213. तमोवासानि (°वासीनि ed. Bomb.) दैवतानि R. 2, 32, 34. एक° *am selben Orte lebend* Spr. 856. गुरु° *beim Lehrer* MBh. 14, 917. सुख° *frohe Tage verlebt habend* R. 1, 17, 20 (9 Gorr.). — न तत्रास्ति शुको वासम् *Wohnstätte* MBh. 13, 269. Var. 23, 6. वासं विवेश *Haus* Harîv. 7679. दृश्यन्ते ब्राह्मणानां च वासाः R. Gorr. 1, 51, 4. Kathâs. 71, 82. Daçak. 74, 14. Vet. in LA. (II) 8, 20. Dhûrtas. 75, 10. Pañkat. 118, 23. Bhâg. P. 1, 16, 23. तौ तयसो वासौ यशसो तेजसामपि । श्रयौ *Stätte* MBh. 12, 13346. कासविलासवासवसति Dhûrtas. 73, 16. Vgl. अस्ते°, उद्°, कीर्ति°, गर्भ° (auch MBh. 11, 166. Kathâs. 29, 110), 1. गो°, ग्राम°, जल° (*im Wasser sich aufhaltend* auch R. Gorr. 2, 28, 26), तपो°, नाग°, पङ्क°, 1. पट°, बदरीवासा, विल्ववास, ब्रह्म°, भूत°, मर्कट°, मृगमादवासा, यथावासम्, वन° (adj. auch MBh. 14, 917), वारि°, वेश°, शयनीय°, सम्बुवासी. — 2) *Tagereise:* स गत्वा गणितान्यामान्मासाष्टौ R. 7, 71, 2. — 3) *Lage, Verhältniss:* नैर्विधेषु वासेषु भयमस्ति Harîv. 9933. — 4) = वासना *Vorstellung, falscher Schein:* भुजंगभोगवासेन मोणिसूत्रेण MBh. 4, 190.

3. वास m. *Wohlgeruch* Vikr. 38. Milavik. 148, 4. — Vgl. 3. पट°, भङ्गवासा, मुखवास (auch Çiç. 9, 52), वक्त्र°, सु° und वासय्.

वासःकुटी *Zelt* Çabdârthak. bei Wilson.

वासःपत्यूर्णी m. VS. Prât. 3, 37. *Kleiderwäscher* VS. 30, 12.

1. वासक = 1. वास am Ende eines adj. comp.: अप्रगुद्ध° *schmutzige Kleider tragend (in einem verrufenen Hause wohnend* Sr.) Jîv. 2, 266. सर्व° *vollständig gekleidet* (= सर्वस्याच्छादक Nîlak.) im Gegens. zu दिग्वासम् MBh. 13, 752. संवीतासित° Kathâs. 73, 283. पट° (so die ed. Bomb.) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2159.

2. वासक (von 2. वास) 1) n. *Schlafgemach* Kathâs. 5, 21. 15, 21. 17, 131. 18, 281. 22, 14. 24, 166. 30, 118. 115. 33, 13. 45, 317. 46, 249. 48, 138. 49, 117. 71, 50. 87. 157. 73, 187. 237. 120, 47. am Ende eines adj. comp. f. या 17, 66. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57, 46; vgl. वन°.

3. वासक (von 3. वास) 1) m. a) *Wohlgeruch:* मुख° = मुखवास Pañkat. 3, 9, 4. — b) *Gendarussa vulgaris Nees.*, ein hübscher Strauch in Gärten, AK. 2, 4, 3, 23. Aṣṭâṅg. 6. Suçr. 2, 69, 15. 208, 13. 222, 18. Çârṅg. Saṃh. 2, 1, 7. 2, 23. 59. °ज्ञ Suçr. 2, 505, 4. — 2) f. वासका f. dass. Gaṇîm. im ÇKDr. वासिका f. dass. AK. 2, 4, 3, 21. Çabdar. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 55, 22.

4. वासक m. = गानाङ्गविशेष ÇKDr. mit folgendem Belege aus Sâhityadîp.: मनोरमो ऽथ कन्दर्पशारुनन्दन एव च । चत्वारो (!) वासकाः प्रोक्ताः शंकरेण स्मरं पुरा ॥ केषांचिन्मते नामान्यपि पृथक् । विनोदो वरदश्चैव नन्दः कुमुद एव च । चत्वारो वासकाः प्रोक्ता गीतवाद्यविशारदैः ॥

वासकगृहं f. *Opferhalle* (यज्ञशाला) Çabdar. im ÇKDr.

वासकसज्जा adj. f. *im Schlafgemach bereit,* Bez. *einer Geliebten, die zum Empfang des Geliebten Alles in Bereitschaft gesetzt hat,* Daçak. 2, 23. Sâh. D. 112. 120. Gît. 6, 8.

वासकसज्जिका f. dass. Sin. D. 543. Prasiddh. 5,b,3.

वासगृह् n. *Schlafgemach* AK. 2,2,8. Hit. 140. MBh. 1,1874. Varân. Bṛn. S. 53,70. Spr. 3010. Gir. 6,3. 8. Katuîs. 5,30. 18,262. 26,272. 31, 71. 95. 42,67. 45,182. 289. 46,15. 49,112. 52,39. 55,1. 57,80. 64,1. 66, 45. 71,83. 73,353. 82,27. Kâuâp. 37. Kâuâp. bei Hâsy. 28. Çuk. in LA. (III) 33,14. am Ende eines adj. comp. f. घा Katuîs. 34,48. — Vgl. ज्ञात°.

वासगेह् n. dass. Gir. 11,16.

वासत m. 1) *Esel* Çabdar. im ÇKDa. — 2) *Terminalia Bellerica Roxb.* Aufn. 40.

वासताम्बूल (3. वास + ता°) n. *mit aromatischen Stoffen versehener Betel* Daçak. 88,3.

वासतीवर् adj. von वसतीवरी Kâty. Çr. 25,13,24. देवा: Ind. St. 3,458.

वासतेव 1) adj. = वसतौ साधु: P. 4,4,104. *Obdach gewährend* AV. 8, 10,4. वन Bhatt. 4,8. — 2) f. ई *Nacht* Trik. 1,1,105. H. 142. Halâj. 1,108.

वासदूषि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,a,11.

1. वासन (vom caus. von 3. वस्) n. 1) *Gewand, Kleid* Med. n. 127. fg. Viçva beim Schol. zu Gir. 7,26 (zu lesen वासनं वसने). कृत° *bekleidet* Gir. 7,26. Vgl. गो°, welches Nilak. durch बलीवर्दपोषक erklärt. — 2) *Hülle, Einschlag, Enveloppe:* °स्थं द्रव्यम् Jiân. 2,65. वासनं निलेपाधारभूतं संपुटादिकं समुद्रं मन्थ्यादियुक्तम् Vjavahârat. im ÇKDa.

2. वासन (vom caus. von 3. वस्) 1) m. *a) Wohnort* Çabdar. im ÇKDa. Viçva beim Schol. zu Gir. 7,26 (zu lesen वासनं वसने). Vgl. वन°. — *b) Wasserbehälter* Med. n. 127. fg. — *c)* = ज्ञान Dhar. im ÇKDa. Viçva beim Schol. zu Gir. 7,26. — 2) f. घा *a)* = भावना, संस्कार, अनुभूताद्यविस्मृति H. 1373. Halâj. 4,95. = प्रत्याशा (so ÇKDa.) und अज्ञान Med. *der vom Geiste empfangene und darin bleibende Eindruck, Vorstellung, Idee; falsche Vorstellung:* प्रकृतिः प्रकृष्टकारणाद्वासना वासयेत्यतः Sarvadarçanas. 66,11. Nilak. 62. 89. यस्मिन्नेव हि संताने आहिता कर्मवासना। फलं तत्रैव बध्नाति Sarvadarçanas. 23,13. fg. पूर्वजन्मानुभूतमरणदुःखानुभववासनाबलात् 168,6. 7. Çaṁk. zu Brahmas. 1,1,9. स्थिरा *feste Vorstellung, Ueberzeugung* 24,8. 41,1. 66,10. fg. 115,20. भेद° *die falsche Vorstellung, dass es eine Verschiedenheit gebe,* 16,16. 13,9. 17,4. 9. 10. 19,12. 14. 24,13. Kap. 2,3. Bilab. 11. Çaṁk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 16. 213. 238. 282. Baitsâkh. 102. Prab. 50,12. 93,3. Kusum. 15,14. fgg. Schol. zu Kap. 1,26. 58. Vedântas. (Allah.) No. 138. 141. Spr. 1973. Gir. 3,1. Katuîs. 23,30. 54,235. 94,135. 98,30. Râga-Tar. 3,121. 4,389. 6,168. 174. 235. Bhâg. P. 2,2,3. 10,4. 5,6,7. 11,5. 25,8. 9,24,61. 10,31,62. Brahmavaiv. P. bei Burnouf, Bhâg. P. I, xlvi. Mârk. P. 95,12. Pañkar. 1, 9,10. 15,19. 2,8,5. Sin. D. 89. 31,8. Verz. d. Oxf. H. 92,*a*, 34. 233, *a*, 7. Verz. d. B. H. No. 645. Kâçikh. 34,103 (dieses und die beiden folgenden Citate nach Aufrecht). Sarasvatîk. 1. Kullân. 1,115. विगलिताखिलवासनत्व Prab. 48,12. दुर्वासना Prasannar. 23. Vgl. दुर्वासना (*eine falsche Vorstellung*), 2. निर्वासन. — *b)* bei den Mathematikern so v. a. उपपत्ति *Beweis:* पूर्वार्धस्य वासना प्रागेवोक्ता Comm. zu Granikaa. 3. zu Pâṭîgan. 9. zu Bhâgaṇân. 12. fg. Golâdh. 5,37. वासना मतिमता — ऊना 10,6. Titel von Bhâskara's Bemerkungen zum Çiromaṇi Colebr. Misc. Ess. II, 324. 332. °भाष्य 220 u. s. w. °वार्तिक 376. 396. 432. fg. — *c) ein Metrum von 4 X 20 Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 157 (III, 43). — *d)* N. pr. der Gattin Arka's Bhâg. P. 6,6,13. — *e)* Beiw. der Durgâ Devî-P. 45 im ÇKDa.

3. वासनं adj. von वसन P. 5,1,27.

4. वासन (von वासय्) n. *das Parfumiren* Med. n. 127. Viçva beim Schol. zu Gir. 7,26 (wo वासनं — च धूपने zu lesen ist). वासना Mallin. zu Çiç. 9,52. — Vgl. मुख°.

वासनामय (von वासना) adj. *in Vorstellungen bestehend, auf Vorstellungen beruhend* Bhâg. P. 12,7,12. Davon °त्व n. Vedântas. (Allah.) No. 63.

वासन्त (von वसन्त) 1) adj. (f. ई) *a) vernus* P. 4,3,16. मासौ AV. 13,4, 1. गायत्री VS. 13,54. Agni TS. 7,3,14,1. मुन्यन्न M. 6,11. घर्क MBh. 12,2025. Mallin. zu Kumâras. 4,18. — *b)* = घवस्थि Med. t. 153. = विस्फोट H. an. 3,295. — 2) m. *a) Phaseolus Mungo Lin.* Trik. 2,9,3. *eine schwarze Varietät dieser Bohnenart* H. 1173. = मद्गवृक्ष Çabdar. im ÇKDa. — *b) Kameel* Trik. 2,9,23. H. 1234. H. an. Med. — *c) der indische Kuckuck* H. an. Râgân. im ÇKDa. — *d) der vom Malaja blasende Wind im Frühling* Trik. 1,1,77. — *e) Schranke* u. s. w. (विट्) H. an. — — 3) f. ई *a)* Bez. verschiedener *im Frühling blühender* Pflanzen P. 4, 3,43, Schol. *Gaertnera racemosa Roxb.* AK. 2,4,2,32. H. 1147. Med. t. 183. 183. Halâj. 2,33. Aufn. 40. *eine Jasminart* (यूथी) H. an. Med. = मागधी (wohl nur fehlerhaft für माधवी) H. an. *Bignonia suaveolens* H. an. Viçva im ÇKDa. = प्रहसन्ती u. s. w. Râgân. ebend. = नवमालिका Bhâvapr. ebend. — Gir. 1,26. — *b) das Frühlingsfest am Vollmondstage im Monat* Kaitra Trik. 1,1,109. — *c) ein best. Metrum: 4 Mal* — — — — — — — — — — — — Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 13). — *d)* N. pr. einer Waldgöttin Uttarâr. 28,12 (37,14). 33,2 (40,11); vgl. वासन्तक 2) *b*). — *e)* N. pr. einer Tochter des Fürsten Bhûmiçukla Tiran. 76. fg.

वासन्तक 1) adj. वौ° = वासन्त P. 4,3,46. — 2) f. वासन्तिका (von वासन्ती) *a) Gaertnera racemosa Roxb.* H. an. 4,96. — *b)* N. pr. einer Waldgöttin: °परिणाय (वस° falschlich gedr.) Mack. I, 111 (demnach ist वसन्तक 2) zu streichen); vgl. वासन्त 3) *d*).

वासन्तिक (von वसन्त) 1) adj. (f. ई) *vernus* P. 4,3,20. 5,1,96, Schol. ऋतु VS. 13,25. मासौ Ait. Br. 4,26. Âçv. Çr. 4,12,1. Çat. Br. 4,3,4,14. 5,5,4,14. Bhâg. P. 5,6,5. निशा R. 7,60,1. तरु Çiç. 78,18. वासन्तिकै = वसन्तमधीते वेद वा P. 4,2,62. — 2) m. *der Spassmacher im Drama* (विदूषक) H. 331. Halâj. 2,277.

वासपर्यय m. *Wechsel des Wohnorts:* क्रियतां °पर्ययः Varân. Bṛn. S. 43,17.

वासपुष्प m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,a,11.

वासप्रासाद् m. *Palast* Katuîs. 38,27.

वासभवन n. *Schlafgemach* Spr. 1230. Katuîs. 12,186. 51,188. im Prâkrit Daçâr. 75,5. 78,2. 82,1. — Vgl. वासगृह्.

वासभूमि f. *Wohnort* Hit. 17,21.

वासमुलि (wohl °मूलि) m. N. pr.; pl. Saṁsk. K. 186,a,11.

वासय् (von 3. वास), वासयति (Dhâtup. 35,32 उपसेवायाम्) und वासयते 1) *mit Wohlgeruch erfüllen, wohlriechend machen:* पुष्पवर्षाणि मुञ्चतो नगाः पवनताडिताः। शैलं ते वासयन्तीव मधुमाधवगन्धिनः॥ R. 7,26,10. यज्जलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम् Spr. (II) 118. Kusum. 65,10. Gir. 1,35. मुखमारुतैः Harîv. 8745. वस्त्रमापस्तिलान्भूमिं गन्धो वासयते

यवा । पुष्पाणामधिवासेन MBu. 3, 24. माल्यैर्वास्यमानम् 12, 10039. वासित = भावित (diese Bed. von भावित scheint dafür zu sprechen, dass man einen Zusammenhang von वासित in dieser Bed. mit dem caus. von 3. वस् annahm; auch वासना *Eindruck* u. s. w. wird durch भावना erklärt) AK. 2, 6, 2, 35. 2, 9, 46. H. 414. an. 3, 293. fg. Mān. t. 152. *wohlriechend gemacht, parfumirt* Kāuç. 11. 16. 19. 41. MBu. 1, 6965. 10, 332. 12, 10038. Harīv. 3535. 3708. 8420 (पुष्पोच्चयैः mit der neueren Ausg. zu lesen). Mṛicch. 20. Ṛt. 1, 4. 5, 5. Raghu. 4, 74. एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना । वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ॥ Spr. 331. Mālatīm. 148, 14. 153, 17 = Uttarār. 49, 2 (63, 4). Kathās. 63, 11. 73, 120. Bhāg. P. 3, 2, 24. 11, 27, 30. Mārk. P. 61, 25. 65, 5. Pañcat. 1, 14, 71. 2, 4, 36. Wilson, Sānkhyak. S. 130. लिप्तवासित (angeblich umgestellt) gaṇa राजदन्तादि zu P. 3, 2, 21. Bhaṭṭ. 5, 90. सुवासित Harīv. 4533. Ṛt. 1, 3. Pañcat. 1, 6, 37. 2, 4, 39. — 2) वासित *parfumirt, gesalbt* so v. a. *afficirt, gefärbt:* मैत्र्यादिचित्तपरिकर्मवासितान्तःकरण Verz. d. Oxf. H. 236, b, N. 4. घृतवासनया Śāṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 238.

— अधि 1) *mit Wohlgeruch erfüllen, wohlriechend machen:* तद्वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यवासयत् Bhāg. P. 10, 65, 19. मधुभिर्गन्धपुष्पैश्च स्वधिवास्य Verz. d. Oxf. H. 103, b, 2. 3. सर्वगन्धाधिवासित MBu. 1, 4919. 5, 2903. 13, 643. Harīv. 6036. 8381. R. Gorr. 1, 3, 17 (18 Schl.). 66, 11. 79, 29. 4, 27, 3. 5, 13, 18. Ṛt. 2, 17. Vikr. 127. — 2) *weihen:* अधिवास्यात्मनात्मानं (अधिवास्याथ चात्मानं die neuere Ausg.) विधिदृष्टेन कर्मणा Harīv. 5994. अधिवासितशस्त्र MBu. 5, 5125. Hierher gehört auch die unter 3. वस् mit अधि caus. 2) stehende Stelle. — 3) *afficiren, färben:* भावैरधिवासितं (= उपरञ्जितं Comm.) लिङ्गम् Sāṅkhyak. 40. Wilson, Sāṅkhyak. S. 130. — Vgl. 3. अधिवास und अधिवासन.

— अनु 1) *mit Wohlgeruch erfüllen, wohlriechend machen:* सुगन्धवातो दशयोजनं समन्तादनुवासयति Bhāg. P. 5, 16, 19. 24. 20, 24. पारिजातपुष्पस्य सैरभ्येणानुवासितः Harīv. 7038. — 2) *eine mit Riechstoffen gemischte ölige Einspritzung machen:* पयोमधुरकषायसिद्धेन तैलेनानुवासयेत् Suçr. 1, 367, 13. °वासित *der ein solches Klystier erhalten hat* 276, 19. — Vgl. अनुवास, °वासन, °वास्य.

— अभि, °वासित *wohlriechend gemacht* MBu. 12, 6349 fehlerhaft für अधिवासित, wie die ed. Bomb. liest.

— आ *mit Wohlgeruch erfüllen:* (नागाः) आवासयन्तो गन्धेन R. 2, 103, 10.

— सम्, partic. संवासित *riechend (stinkend) gemacht:* Athem Suçr. 2, 369, 13.

वासयष्टि f. *ein mit Querhölzern versehener aufrecht stehender Pfahl als Nachtquartier von zahmen Pfauen* Mṛicch. 77. Vikr. 43. Dieselbe Bed. hat पष्टिनिवास, wonach die Uebersetzung daselbst zu ändern ist.

वासयितृ (vom caus. von 3. वस्) nom. ag. wohl *Beherberger* oder *Erhalter:* यदहं हि सुधु राज्यस्य कृत्स्नस्यास्य सुमध्यमे । प्रभुर्वासयिता चैव MBu. 4, 420.

वासयितव्य (wie oben) adj. zu *beherbergen* MBu. 13, 5068.

वासयोग (3. वास + योग) m. *ein aus dem Gemisch verschiedener Stoffe zubereitetes wohlriechendes Pulver* AK. 2, 6, 2, 35. H. 637.

वासर् (von 2. वस्) Uṇādis. 3, 132. 1) adj. (f. ई) *früh erscheinend, morgendlich,* πάριος: प्र णो यच्छतादितिरुरुष्येव सूर्यो वासरागे ṚV. 8, 48, 7. प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्यशयत्ति वासरम् 6, 20. तौ वां धेनुं न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रिभिः *wie die Kuh am Morgen* 1, 137, 3. — 2) m. n. (eigentlich *Morgen*) *Tag* im Gegens. zur *Nacht; Tag* überh., *Wochentag* Naigh. 1, 9. AK. 1, 1, 2, 2. H. 138. an. 3, 600. Med. r. 215. Hall. 1, 106. नभ्य Çiṅkṣ. Gṛihy. 4, 7. वासरान्ते, निशान्ते Spr. 2989. निशावासरयोः Kathās. 71, 96. 42, 67. Mṛicch. 83, 1. Weber, Kṛishṇaj. 227. वासरावसाने Rāja-Tar. 2, 166. तपिणि वासरे Daçak. 86, 4. वासरप्रकरैस्त्रिभिः Kathās. 39, 89. व्यक्ते ऽपि वासरे Spr. 2903. 2319. परितापिषु वासरेषु Kām. Nītis. 7, 34. वसन्तोत्सववासरे Kathās. 4, 19. 93, 70. धन्यवासरे Rāja-Tar. 5, 156. चैत्रादिवासरे 6, 132. Varāh. Bṛih. S. 90, 1. 104, 61, a. Bṛih. 2, 11. masc. Spr. 3979. Kathās. 4, 22. 5, 80. 22, 259. 28, 185. 34, 130. 173. 51, 53 (विवाह°). Rāja-Tar. 1, 285. 4, 400. Prab. 68, 11. neutr. Mṛicch. 104. Spr. 634. Prab. 106, 13. Vet. in LA. (III) 18, 22. Varāh. Bṛih. S. 53, 19. 73, 26. 96, 1. *Tag* so v. a. *Reihe:* यद्य कदाचित्कस्यापि वृद्धशकस्य वासरः (वारः ed. Schl. 67, 21) प्राप्तः Bīr. ed. Jouns. 1420. — 3) m. N. pr. eines Schlangendämons (नाग) Mbh. राग st. नाग H. an. — 4) f. ई *Tagesgottheit* Kālikāpur. 2, 119. — Vgl. विन्दु°, बोध°, रवि°, प्रतिवासरम्.

वासरकन्यका f. *Nacht (Tochter des Tages)* H. ç. 17.

वासरकृत् m. *Tagmacher* d. i. *die Sonne* H. 97, Schol.

वासरकृत्य n. *Tagesverrichtung, die täglich zu einer bestimmten Zeit zu verrichtenden Cerimonien* Kathās. 103, 216. — Vgl. दिनकर्तव्य, दिनकार्य und दिवसक्रिया in den Nachträgen.

वासरमणि m. *das Juwel des Tages* d. i. *die Sonne* Hall. Anth. S. 510, Çl. 3.

वासरमङ्ग m. *Tagesanbruch* Bhaṭṭ. 13, 2.

वासरा H. an. 3, 601 fehlerhaft für वासुरा.

वासराधीश m. *der Herr des Tages* d. i. *die Sonne* Siṅh. D. 308, 18.

वासरेश m. 1) dass. Kathās. 28, 159. — 2) *der Herr* (Planet, Sonne, Mond) *eines Wochentages:* Çaunaka in Siddhântaçir. ed. Bibl. S. 34.

वैासव 1) adj. (f. ई) *a) von den* Vasu *stammend, zu den* Vasu *gehörig* u. s. w.: Indra AV. 6, 82, 1. अधिर्वसुभिर्वासवः Nir. 12, 11. die sieben Sonnenrosse (Comm.) TS. 1, 6, 12, 2. Kâṭy. 8, 16. Âçv. Çr. 4, 7, 4 (vgl. ṚV. 2, 5, 2). पङ्क्ति ṚV. Prât. 17, 6. — *b) das Wort* वसु *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5, 2, 61. — *c)* vom *König* Vasu *kommend, ihm gehörig:* वीर्य MBu. 1, 2359. — *d)* Indra (वासव) *gehörig* AV. Paipp. in Ind. St. 10, 320. शक्ति MBu. 3, 17214. 7, 6631. 7812. 8302. fg. अशनी 9, 531. अस्त्र Harīv. 10617. चमू Mṛicch. 44. — 2) m. *a)* Bez. Indra's (*das Haupt der* Vasu gaṇa पर्शादि zu P. 5, 3, 117) AK. 1, 1, 2, 38. H. 171. Hall. 1, 52. 5, 70. देवानामस्मि वासवः sagt Kṛishṇa Bhag. 10, 22. MBu. 3, 1777. 12047. 4, 1296. 5, 7072. 13, 328. विषये वासवस्तस्य सम्यगेव प्रवर्षति 13, 97. 14, 2363. Harīv. 261. R. 1, 3, 17. वसवो वासवं यथा (पर्युपासते) R. 1, 7, 5. 40, 7. 46, 20. 62, 26. 2, 25, 8. 40, 10. 63, 2. 4, 25, 34. Raghu. 3, 33. 5, 5. Çiç. 109, 16. Varāh. Bṛih. S. 9, 39. 17, 21. Çiç. 109, 16. Kathās. 11, 76. VP. 153. Prab. 24, 8. Burn. Intr. 131. Lalit. ed. Calc. 313, 10. — *b) ein Sohn des Fürsten* Vasu MBu. 1, 2365. — *c)* इन्द्रस्य वासवः N. eines Sâman Ind. St. 3, 208, a. — *d)* N. pr. eines Dichters Verz. d. Tüb. H. 13. — 3) f. ई *a)* patron. der Mutter Vjâsa's, die nach dem MBh. von der Apsaras Adrikâ, welche als Fisch den Samen des Fürsten Vasu verschluckt hatte, geboren ward, H. 847. MBu. 1, 2401. Bhāg. P. 1, 4, 14. 6, 18, die

heisst पितॄणां मानसी कन्या Verz. d. Oxf. H. 12, *a*, 24. 47, *b*, 19. — *b*) Vâsava's *Energie* Verz. d. Oxf. H. 81, *a*, 42. — 4) m. n. *das unter den Vasu stehende* Nakshatra Dhanishṭhâ Śâṅk. 9, 18. Vaitân. Bṛh. S. 71, 11. Weber, Nax. 2, 354. fg. Gjot. 34. fg. — 5) वासवं साम N. eines Sâman Kâṭh. Up. 2, 24, 3.

वासवज्ञ m. Indra's *Sohn*, Bein. Arǵuna's MBu. 4, 1674.

वासवदत्त 1) m. N. pr. eines Mannes Târân. 38. — 2) f. आ *a*) ein häufig vorkommender Frauenname Dubr. Intr. 146. Ratnâv. 12, 9. Kathâs. 11, 6. 79. 21, 34. 30, 65. Verz. d. Oxf. H. 153, *a*, 13. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 3. 36. Weber, Ind. Str. 1, 370. — *b*) *eine über* Vâsavadattâ *handelnde Erzählung* Schol. zu P. 4, 3, 87, Vârtt. Siddh. K. zu 4, 2, 60, Vârtt. 5. Titel eines Romans von Subandhu, herausgegeben von Hall in der Bibl. ind. 1859.

वासवदत्तिक adj. *mit der Erzählung von der* Vâsavadattâ *vertraut, sie studirend* P. 4, 2, 60, Vârtt. 5. Schol.

वासवदत्तेय m. metron. von वासवदत्ता P. 4, 1, 113, Schol.

वासवदिश् f. Indra's *Weltgegend d. i. Osten* Kathâs. 72, 27.

वासवावरज m. Indra's *jüngerer Bruder*, Bez. Vishṇu's H. 214, Schol.

वासवावास m. Indra's *Wohnstatt, der Himmel* H. ç. 1.

वासवि (von वासव) m. Indra's *Sohn* d. i. Arǵuna MBu. 5, 5115. 7, 745. 1209. 1250. 16, 143. patron. des Affen Vâlin R. 7, 34, 22.

वैासवेय 1) adj. von वासव gaṇa सख्यादि zu P. 4, 2, 80. — 2) (von वासवी) metron. Vyâsa's MBu. 1, 59.

वासवेश्मन् n. *Schlafgemach* Kathâs. 6, 133. 10, 110. 12, 88. 14, 32. 18, 279. 22, 104. 28, 129. 29, 94. 31, 73. 41, 1. 45, 230. 50, 157. 64, 44. 111, 50. 122, 19. Sin. D. 120. — Vgl. शय्या° und वासगृह.

वासवेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, 17.

1. वासस् (von 3. वस्) Uṇâdis. 4, 217. n. 1) *Gewand, Hülle, Kleid; Tuch, Zeug* AK. 2, 6, 3, 17. 3, 4, 25, 183. H. 666. Hall. 2, 392. fg. 395. ṚV. 1, 34, 1. रात्रो वासस्तनुते सिमस्मै 113, 4. 162, 16. 8, 3, 24. 10, 26, 6. 102, 2. रुशत् 7, 77, 2. विश्वरूप VS. 11, 40. कोश Çat. Br. 3, 2, 4, 8. कृष्ण 5, 17. शबल Âçv. Gṛhj. 3, 8, 9. Kaush. Up. 2, 15. VS. 2, 32. वाससोर्पनत्यति TS. 6, 1, 9, 7. 44, 2. TBr. 1, 1, 6, 11. वाससा प्रोर्णुवत्ति Ait. Br. 1, 3. यद्वासः पर्यधास्यत Çat. Br. 11, 5, 1, 4. 1, 3, 1, 14. 3, 1, 2, 13. वासोभिर्भूषो वेष्टितो वा विभूषितो वा भवति 5, 2, 1, 5. 2, 5. Kâṭh. Çr. 2, 6, 37. 3, 4, 39. 10, 2, 5. Kâṭh. Up. 5, 2, 2. वासश्च धृतमन्यैर्न धारयेत् M. 4, 66. वसित्वा मैथुनं वासः 116. परिधानेन वाससा MBu. 3, 2310. वासश्चेदं निवासये 2631. R. 4, 5, 14. Mṛcch. 60. 69. Kumâras. 7, 9. Spr. 738. 2771. वासो वल्कलम् 2784. 3183. वासश्चित्रदुकूलम् 2207. प्रसृतस्य न्यस्तं वाससश्चलक्रकम् (so ist zu schreiben) Kathâs. 3, 71. Bṛhc. P. 2, 1, 34. व्यालम्बिपीतवर° 3, 28, 24. स्नानमाचरेत् — न वासोभिः सकृ M. 4, 129. शीर्णानि 6, 15. Bhag. 2, 22. चिरवासांसि MBu. 3, 2167. विमुच्य वासांसि गुडेषु Ṛt. 1, 7. नववासांसि Spr. (II) 515, v. l. कज्जवासांसि Var. in LA. (III) 3, 21. वाससी *ein Ober- und Untergewand* Harîv. 7073 (वाससी ते die neuere Ausg.). R. 2, 90, 2. Mṛicch. 88, 8. Spr. 800 (II). 1934. Bṛhc. P. 1, 13, 23. Pañcat. 1, 9, 32. वासोयुग MBu. 3, 2632. वासश्च परिधायैकम् 4, 245. 1, 7719. वासःखण्ड Spr. 2783. कण्ठे वाबध्य वाससा *Tuch* M. 11, 205. वाससावेष्टपट्टले Kathâs. 61, 262. वाससाच्छादयामास einen Leichnam R. 4, 24, 23. (यूपाः) वासोभिरेकविंश-दिरेकैकं समलंकृताः R. Schl. 1, 13, 27. 29. कौपीन° Râǵa-Tar. 4, 180. अधो° *Untergewand* Uttarar. 82, 9 (106, 1). Am Ende eines adj. comp.: शुचिवासस् Âçv. Gṛhj. 2, 2, 2. R. 1, 6, 13. सुसूक्ष्माम्बर° MBu. 1, 5978. Suçr. 1, 105, 5. 6. पीतकौशेय° Khandom. 74. तडिद्वाससम् Bhâg. P. 1, 12, 8. रक्त° M. 8, 236. कृष्ण° R. 2, 69, 14. चीर° M. 11, 101. 105. R. 2, 37, 36. 72, 42. Bhâg. P. 1, 15, 43. द्रुमचीर° R. 2, 86, 22. चीरवल्कल° 73, 10. 3, 35, 15. वल्कल° 2, 101, 24. वल्कलाजिन° 63, 27. शीर्णमलवद्वासम् M. 4, 34. Kathâs. 18, 244. लघु° M. 2, 70. सकृत° R. 2, 91, 62. श्यामशुक्ल° 5, 13, 35. परिवर्तित° Kâm. Nîtis. 7, 45. वीत° Kathâs. 12, 169. सार्द्र° M. 6, 23. Brahma-P. in LA. (III) 49, 16. एक° *im blossen Untergewande* M. 4, 45. MBu. 3, 2202. सवासा जलमाप्लुत्य M. 5, 77. 11, 174. 222. पीतकौशेयवाससी f. R. 3, 38, 19. वरवाससाम् acc. f. MBu. 5, 4553 fehlerhaft für °वाससम्, wie die ed. Bomb. liest. मर्कटस्य वासः *Spinngewebe* H. an. 4, 149. अग्नेः oder समुद्रस्य वासः N. eines Sâman Ind. St. 3, 212, *b*. — 2) *das Kleid eines Pfeiles* so v. a. *die Federn am Pfeile:* कङ्क° adj. MBu. 7, 5612. बर्हिण° R. 6, 69, 3. कङ्कबर्हिण° MBu. 4, 1867. 6, 3478. Harîv. 9366. कलहंस° Bhâg. P. 4, 11, 3. दीर्घ° MBu. 4, 1361. — Vgl. अन्तर्वासस् (auch Bhâg. P. 9, 8, 6), उत्तर°, उद्वासस्, कृत्ति°, गार्ध्र°, दृत्त°, दिग्वासस्, दुर्वासस्, नील°, परि°, पीत°, बर्हिर्वासस्, भिक्षा°, मलोद्वासस्, मेघ°, रात्रि°, वह्नि°, वाल°, सु°.

2. वासस् (von 5. वस्) n. *Nachtlager:* यदा वयांसि वासो (= वासार्थं Çâṅkh.) वृक्षं संप्रतिष्ठन्ते Praçnop. 4, 7.

वाससज्जा adj. f. = वासकसज्जा Gaṇîbh. im ÇKDa.

वाससेनि (?) m. patron.; pl. Saṃhs. K. 186, *a*, 11.

वासा f. = वासक *Gendarussa vulgaris Nees.* H. 1140. an. 2, 593. 605. Hall. 2, 43. Çabdar. im ÇKDa. Suçr. 2, 163, 6. 473, 10. Çârṅg. Saṃh. 2, 2, 34.

वासागार n. *Schlafgemach* Taik. 2, 2, 8. Hall. 2, 140. Prab. 42, 12. Sarasvatîk. 2, 19 (nach Aufrecht). — Vgl. वासगृह u. s. w.

वैासातक adj. von *den* Vasâti *bewohnt* gaṇa रात्र्यादि zu P. 4, 2, 53.

वैासात्य (von वसाति) 1) adj. *dämmerig, der Morgendämmerung angehörig:* वासात्यो ऽन्य उद्यत उषः पुत्रस्तवान्यः Cit. in Nir. 12, 2. वासात्यौ चित्रौ द्यावापृथिवी *dämmerig und hell* (Erde und Himmel) Taitt. Âr. 1, 10, 2. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes, = वसाति MBh. 8, 2762.

वासाभृत् Z. f. d. K. d. M. 4, 342 fehlerhaft für वासोभृत्.

वासायनिक (von वास + अयन) adj. wohl von *Haus zu Haus gehend, Besuche machend:* न वयं वासायनिकाः कार्यचेष्टाकुलत्वात् MBh. 3, 13333. वासो विहाराय तदेव अयनं वासायनं तत्र भवाः Nilak.

वासाश्व m. N. pr. Verz. d. Oxf. H. 41, *b*, 42 fehlerhaft für वध्यश्व.

वासि s. u. वाशी 1).

वासिक s. कषाय°, द्रुप°, वन°; वासिका s. u. 3. वासक.

1. वासित s. u. dem caus. von 3. वस्.

2. वासित s. u. dem caus. von 5. वस्.

3. वासित s. unter वासस्.

4. वासित n. = ज्ञानमात्र H. an. 3, 295; vgl. 2. वासन 1) c).

5. वासित n. = वाशित H. 1407, v. l. Med. t. 152.

वासिता f. s. unter वाशिता.

1. वासिन् (von 3. वस्) adj. am Ende eines comp. *gekleidet:* कृष्ण° *schwärzlich gekleidet* Ait. Br. 5, 14. पाण्डर° MBh. 1, 1146. नील° (so ist statt लीन zu lesen) R. Gorr. 2, 8, 42. मलिन° 49. रौरवाजिन° MBh. 1, 7124. कौशेय° R. 2, 37, 9. पीतकौशेय° R. Gorr. 2, 37, 9. 3, 52, 19. 25. 5, 31, 3. रक्तकौशेय° MBh. 1, 7980. मक्षार्कौतीम° R. 5, 2, 16. चीरकाषाय° MBh. 3, 8588. काषाय° Harıv. 6942. चीर° R. 2, 38, 12. धौताङ्गमनीय° Daçak. 63, 13. — Vgl. यज्ञिन°, रक्त° (auch R. 5, 27, 17).

2. वासिन् (von 3. वस्) adj. *verweilend, sich aufhaltend, wohnend, lebend* (an einem Orte): तत्र R. 1, 23, 21. समानतीर्थे (nach P. 6, 3, 18 comp.) P. 4, 4, 108. in comp. mit dem Orte H. 10. आवसथ° Çat. Br. 12, 4, 4, 6. आचार्यकुल° Kâṭhaka Up. 2, 23, 1. पातालतल° MBh. 1, 1132. समुद्र° 7659. अयोध्या° 3, 2766. वाह्य° 13, 2572. विषय° R. 1, 7, 8. 2, 25, 21. नदीर-वासीनि (so die ed. Bomb.) दैवतानि 52, 84. Raghu. 15, 61. Kumâras. 5, 25. Çiç. 61, 7. Varâh. Bṛh. S. 101, 9. Kathâs. 25, 57. 61, 4. Râja-Tar. 3, 413 (वासी mit der ed. Calc. zu lesen). Spr. 4131. Prab. 53, 8. Mâlav. P. 46, 40. 76, 25. Pañcat. 2, 4, 7. 51. 4, 8, 38. fg. Çuk. in LA. (III) 37, 2. Çaṅkara-râma ebend. 87, 21. Verz. d. Oxf. H. 70, *b*, 12. Pañcat. 129, 14. तद्वत-वासिनः पतिणः Hit. 18, 8. भूतानां घनवासिनाम् MBh. 4, 1526. 5, 3701. धर्मैः सदामत्तकवासिभिः Harıv. 8372. धर्म° *unter Bienen* Râja-Tar. 3, 291. 422. छन्न° *verborgen* MBh. 4, 893. संवत्सर° *ein Jahr lang bleibend* Çat. Br. 14, 1, 1, 27. कल्प° *einen* Kalpa *bestehend* Bhâg. P. 4, 9, 20. ब्रह्मचारि° *als Brahmanenschüler lebend* TS. 6, 3, 10, 5. — Vgl. अत्त°, अन्त°, अम्बु°, अरण्य°, आश्रम° (auch R. 1, 4, 3. Çiç. 8, 13. fg. 16), कान्तार°, काम°, काम्बोल°, कोश°, क्षीण°, क्षुद्र°, खर्व°, गिरि°, गृह°, ग्राम°, ग्रामे°, चत्वर°, जल°, पर्वत°, पुर° (auch R. Gorr. 2, 13, 29. 4, 9, 6), प्रतिवेश°, बिल°, बिले°, मग्न°, मलय°, महाविकार° (unter महाविकार), वन°, सामन्त°, सुवासिनी, स्ववासिनी.

3. वासिन् (von 3. वास) 1) adj. *schön duftend.* — 2) वासिनी f. *eine weiss blühende Barleria* (शुक्लकिणटी) Çabdac. im ÇKDr.

4. वासिन् ungenaue Schreibart für वाशिन् in द्रुत° Kâm. Nitis. 16, 46. — Vgl. वस्त°.

वैासिनायनि m. patron. von वासिन् P. 6, 4, 174; vgl. 4, 1, 157.

वासिल adj. von वास gaṇa काशादि zu P. 4, 2, 80.

वासियुग्फ N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 9.

वासिष्ट n. *Blut*, schlechte Lesart für वासिष्ठ H. 621.

वासिष्ठ 1) adj. (f. ई) von Vasishṭha *stammend, von ihm verfasst, ihn betreffend, zu ihm in Beziehung stehend:* सूक्त Ait. Br. 6, 20. Ind. St. 1, 119. M. 11, 249. शप् P. 4, 3, 69, Schol. उपसर्ग Ind. St. 4, 330. चतुरक्ष Maçaka in Verz. d. B. H. 73 (VII, 6). आख्यान MBh. 1, 6650. वेष 5, 3728. गणित Verz. d. B. H. No. 939. सिद्धान्त Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 1. श्लोका: 22, 2. पञ्चरात्र Pañcar. 1, 1, 57. पुराण, उपपुराण Verz. d. Oxf. H. 80, *a*, 7. 83, *b*, No. 141. Ind. St. 1, 18, 17. fg. गोत्र 1, 276. शत *die hundert Söhne* Vasishṭha's R. 1, 59, 12. — 2) m. patron. Schol. zu P. 2, 4, 63. 4, 1, 114. Vop. 7, 1. 10. वासिष्ठो ब्रह्मा कार्य: TS. 3, 5, 3, 1. Çat. Br. 12, 6, 1, 41. Ind. St. 1, 39. 58. 214. 381. 3, 460. 474. 4, 373. Ait. Br. 8, 23. TS. 5, 6, 3, 2. Taitt. Âr. 1, 12, 5. Âçv. Çr. 12, 15, 2. Verz. d. Oxf. H. 53, *b*, 12. 267, *a*, 28. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57, 29. 58, 7. MBh. 1, 6393. R. 1, 59, 7. gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. Mâlav. P. 94, 14. H. 32, Schol. plur. MBh. 3, 970. Harıv. 422. 14151. R. 1, 59, 15. f. वासिष्ठी P. 4, 1, 78, Schol. — 3) f. ई N. pr. eines Flusses, = गोमती Taik. 1, 2, 32. H. 1085. MBh. 3, 8026. — 4) n. *a*) N. verschiedener Sâman P. 4, 2, 7, Schol. Ind. St. 3, 236, *a*. Pañcav. Br. 12, 8, 13. 15, 3, 32. Liṭ. 3, 6, 29. — *b*) Titel eines Werkes, = योगवासिष्ठ, वासिष्ठरामायण Verz. d. Oxf. H. 95, *b*, 13. 125, *a*, 39. fg. °सार 233, *a*, 17. °तात्पर्यप्रकाश Hall 121. — *c*) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 8026. — *d*) *Blut* H. 621. — Vgl. बृहद्वासिष्ठ, योग°.

वासिष्ठरामायण n. = योगवासिष्ठ Verz. d. Oxf. H. 104, *a*, 21. 108, *a*, 32. 125, *a*, 39. 353, *b*, No. 840.

वासिष्ठसूत्र n. N. eines Sûtra Ind. St. 1, 33.

वैासिष्ठायनि adj. von वसिष्ठ gaṇa कर्णादि zu P. 4, 2, 80.

वैासिष्ठिक adj. von वसिष्ठ. अध्याय P. 4, 3, 69, Schol.

वासी s. u. वाशी 1).

वासीफल n. *eine best. Frucht* Varâh. Bṛh. S. 80, 16.

वासु m. ein Name Vishṇu's Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1, 1. Taik. 1, 1, 29. Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 14. Pañcar. 2, 6, 26. Beruht auf einer künstlichen Erklärung von वासुदेव; vgl. VP. 9, N. 10 und Uṇâdis. a. a. O.

वासुक adj. von वसु gaṇa अश्वादि zu P. 5, 1, 39.

वासुकि m. N. pr. 1) eines Genius (empfängt बलि) Gobh. 4, 7, 25. Kauç. 74. वासुकिर्वेरुताः Rudra-Namen Taitt. Âr. 1, 9, 2. 17, 1. Fürst der Schlangen AK. 1, 2, 8, 5. Taik. 1, 2, 6. H. 1309. सर्पाणामस्मि वासुकिः sagt Kṛishṇa Bhag. 10, 28. MBh. 1, 1052. fgg. 1124. 1350. °ज्ञा नागाः 2148. 2549. 4, 41. 5, 3617. 3625. 13, 7119. Harıv. 227. 267. 4443. 6326. 9501. 11001. 12075. 12184. 12466. 12496. 12821. 14172. R. 1, 45, 19 (46, 21 Gorr.). 3, 36, 13. 4, 41, 32. 5, 78, 9. 6, 37, 64. 86, 32. Kumâras. 2, 38. Spr. 2131. Varâh. Bṛh. S. 81, 25. Lot. de la b. l. 3. Kathâs. 6, 13. 9, 80. 11, 3. 22, 203. 72, 34. 90, 100. VP. 149. 153, N. 1. Bhâg. P. 5, 24, 31. 8, 6, 22. Pañcar. 4, 1, 12. Verz. d. Oxf. H. 31, *a*, 38. 239, *b*, No. 579. वासु-केर्बहुद: 43, *b*, N. 4. — 2) eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 37. Hall 16.

वासुकेय m. = वासुकि Çabdar. im ÇKDr. °स्वसृ Bez. der Manasâ Çabdar. bei Wilson (ÇKDr. angeblich nach AK.).

वासुक्र adj. von Vasukra *verfasst:* सूक्त Çâṅkh. Çr. 17, 9, 5.

1. वासुदेव m. 1) patron. von वसुदेव P. 4, 1, 114, Schol. Çrâddha Harıv. 5321. 3639. 5674. fg. ein Fürst der Puṇḍra 6582. 15179. fgg. 15326. MBh. 1, 6393. 2, 384. 1096. insbes. Bez. Kṛishṇa's oder Vishṇu's AK. 1, 1, 2, 15. H. 215. Hall. 1, 23. P. 4, 3, 98. Taitt. Âr. 10, 1, 6. Bhag. 7, 19. वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि sagt Kṛishṇa 10, 37. 11, 50. 18, 74. Vasishṭha bei Müller, Sl. 55. Anuvâkânukr. in Ind. St. 1, 232. यस्तु नारायणो नाम देवदेवः सनातनः । तस्यांशो मानुषेष्वासीद्वासुदेवः प्रतापवान् ॥ MBh. 1, 2785. 6997. 7080. वसनात्सर्वभूतानां वसुत्वाद्देवयोनितः । वासुदेवस्ततो वेद्यः 3. 2562. वासुद्यासौ देवश्चेति वासुदेवः । तथा च स्मृतिः । सर्वत्रासौ समस्तं च वसत्यत्रेति वै यतः । ततो ऽसौ वासुदेवेति विद्वद्भिः परिगीयते ॥ Uṇâdis. a. a. O. MBh. 12, 12904. Harıv. 4183. fg. 5321. R. 1, 41, 2 (42, 2 Gorr.). 25. वासुदेवस्य भक्ता: Varâh. Bṛh. S. 69, 32. VP. 1, 9. 274. 643. Bhâg. P. 3, 26, 21. 5, 12, 11. Pañcar. 44, 19. यदा स भगवान्वासुदेवः परब्रह्माख्यः सिसृक्षुर्भवति । तदा तस्मात्संकर्षणाख्यो ऽशो निर्गत्य प्रकृतिपुरुषयोः क्षोभं जनयति Comm. zu Gobhil. 3, 1. त एते वासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धा

इति मूर्तिभेदा वैष्णवागमे विशेषतः प्रसिद्धाः ebend. Mahnus. in Ind. St. 1, 23, s. 6. Sarvadarçanas. 54, 14. fgg. 57, 15. Am Ende eines adj. comp. f. घा Paṇḍar. 3, 2, 4. neun schwarze Vâsudeva bei den Gaina H. 695. fgg. Vgl. प्रति°. — 2) *Pferd* H. ç. 178; vgl. लक्ष्मीपुत्र. — 3) N. pr. verschiedener Fürsten und Gelehrten u. s. w. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 4, Cl. 4. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 43. 124, *b*, 37. 132, *b*, 5. 135, *a*, No. 254. 237, *b*, No. 369. 292, *b*, 11. 321, *a*, No. 761. 384, *b*, No. 476. Verz. d. B. H. No. 265. 489. fgg. 940. Ind. St. 1, 470. Hall 7. 109. 112. 143. 182. 192.

2. वासुदेव 1) adj. (f. ई) *a*) zu Vâsudeva (dem Gotte) *in Beziehung stehend:* द्वादशात्र Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 112. — *b*) *von einem* Vâsudeva *verfasst:* पद्धति Verz. d. B. H. No. 266. — 2) n. N. einer Upanishad Ind. St. 3, 325. वासुदेवोपनिषद् Verz. d. Oxf. H. 390, *b*, No. 33.

वासुदेवक m. 1) *ein Verehrer des* Vâsudeva P. 4, 3, 98. — 2) *ein winziger* Vâsudeva, *Einer der dem patronymicum* Vâsudeva *Unehre macht* Harîv. 13184. 15327. *ein zweiter* Vâsudeva Mṛṣâṇ. 13, 4. 121, 16 im Prâkrit.

वासुदेवप्रिय m. *ein Freund* Vâsudeva's, Bein. Kârttikeja's MBh. 3, 14036.

वासुदेवप्रियंकरी f. *Asparagus racemosus Willd.* Râǵân. im ÇKDa.

वासुदेवगणि und वासुदेवगर्य adj. zu Vâsudeva's *Partei sich haltend* P. 4, 2, 104, Vârtt. 18, Schol.

वासुदेवानुभव m. Titel eines Werkes von Vâsudeva Verz. d. Oxf. H. No. 940.

वासुपुर (?) n. N. pr. einer *Stadt* Wilson, Sel. Works II, 23.

वासुपूज्य m. bei den Gaina N. pr. des 12ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî, eines Sohnes des Vasupûǵjarâǵ, H. 27.

वासुभद्र m. ein N. Kṛshṇa's, = वासुदेव H. ç. 69. Çârdam. im ÇKDa.

वासुमत् adj. *das Wort* वसुमत् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5, 2, 61.

वासुमन्द n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 236, *a*.

वासुरा f. = वासिता, रात्रि (वासतेय! Mahîdh.) und भू H. an. 3, 601 (वासरा gedr.). Mahîdh. r. 215. in der Bed. *Nacht* auch H. ç. 18.

वासुरायणीय (?) m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3, 274.

वासू f. *Mädchen* AK. 1, 1, 3, 14. H. 333. voc. वासु Daçak. 51, 14. 64, 1. 73, 6.

वासोद adj. *Gewand schenkend* M. 4, 231.

वासोदा adj. dass. ṚV. 10, 107, 2.

वासोभृत् 1) adj. *ein Kleid tragend:* माञ्जिष्ठ° Spr. 3359. — 2) *Hüfte* Vaṇîn. Bṛh. 1, 4.

वासोवार्ण adj. *Gewand webend* ṚV. 10, 26, 6.

वासोकम् n. *Schlafgemach* H. 995. — Vgl. वासगृह, वासागार.

वास्तव (von वास्तु) adj. (f. ई) *wirklich, wahr, real* Goldâms. 3, 53. Bîjan. 34. Bulg. P. 1, 1, 2. 11, 11, 2. Paṇḍar. 1, 14, 19. Mallin. zu Çiç. 3, 51 (Gegens. कृत्रिम). Schol. zu Kap. 1, 91. Kull. zu M. 2, 9. Wilson, Sânkhjak. S. 73. Kusum. 38, 12. Muir, ST. IV, 319, N. 284. P. 5, 1, 21, Vârtt., Schol. योषित् *ein wahres Weib, ein Weib wie es sein soll* Paṇḍar. 1, 14, 112. घ° Nilak. 97.

वास्तवत्व (von वास्तव) n. *Wirklichkeit, Realität* Sarvadarçanas. 34, 21. fg. Muir, ST. IV, 300, N. 265. Sin. D. 267, 11. घ° 13.

वास्तविक adj. = वास्तव ÇKDa. und Wilson.

वास्तवोषा f. *Nacht* Taitt. 1, 1, 105. किं तु वास्तवा (blosser Fehler für वासुरा) उषा इति नामद्वयमिति साधुपाठः ÇKDa.

वास्तव्य (von वास्तु) adj. P. 3, 1, 96, Vârtt. (irriger Weise auf वस् zurückgeführt). 1) *auf dem Platz bleibend, verlassen* (*werthloser Abfall*): यद्वै पशूनां वास्तव्यं क्रियते। तदनु रुद्रो ऽवचरति। यत्पूर्वमन्ववस्येत्। वास्तव्यमग्निमुपासीत *der nur ein Rest ist* (= लौकिक Comm.) TBr. 1, 4, 4, 7. TS. 5, 2, 8, 5. So heisst Rudra, *weil ihm die Reste* (des Opfers) *gehören*, Çat. Br. 1, 7, 3, 1. 7. 5, 2, 4, 13. 3, 3, 7. VS. 16, 39 (*zur Wohnstatt gehörig* Mahîdh.). — 2) *irgendwo ansässig;* m. *Einwohner:* इक्ष्वास्मि वास्तव्यो नगरे द्विजः Kathâs. 38, 107. 52, 320. 72, 157. Râǵa-Tar. 3, 362. 4, 622. 628. 5, 216. 248. 6, 15. ग्राम° MBh. 12, 4803. नानानगर° R. 2, 1, 30. नगर° Paṇḍar. 48, 25. तद्देशनित्य° Verz. d. Oxf. H. 142, *a*, No. 290. Râǵa-Tar. 4, 88. Hit. 34, 18. समीप° *Nachbar* Kull. zu M. 7, 69. — नीवार = वास्तव्य H. an. 3, 689. Med. r. 176. वास्तव्य Paṇḍar. III, 236 fehlerhaft für वस्तव्य; vgl. Spr. 2928.

वास्तिक (von वस्त) n. *eine Menge von Böcken* R. 2, 77, 2 (वा° ed. Schl. वा° ed. Bomb.).

वास्तु (von 3. वस्, Uṇâdis. 1, 77. 1) m. n. Taitt. 3, 5, 9. *Stätte; Hofstatt* (*Platz des Hauses und zugehöriger Raum*); *heimathliche Flur; Haus* Nir. 10, 16. Uṇâdis. 1, 77. AK. 2, 2, 19. Taitt. 2, 2, 5. 3, 3, 102. H. 989. an. 2, 195 (वास्तु स्याद्वस्तुपुर्गार्गृके सोमसुरङ्गयोः). Hall. 2, 135. fg. ता वो वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गाः ṚV. 1, 154, 6. सुप्रदान् इयो वास्तोधि लितः 8, 25, 5. मेयो वास्तु भूम्यो वर्षत्यम् AV. 7, 108, 1. Çat. Br. 1, 7, 3, 1. 7. 17. fg. वास्तु वै शरीरमयज्ञियं निर्वीर्यम् 2, 1, 3, 9. यज्ञस्य TS. 3, 1, 10, 3. Çâṅkh. Gṛhj. 2, 14. गृहदेवताः, वास्तुदेवताः Âçv. Gṛhj. 1, 2, 4. 2, 9, 9. Pân. Gṛhj. 3, 4. घ° TS. 3, 4, 10, 2. °संपादन M. 3, 255. वास्तूनि निर्ममे Harîv. 6418. सभावास्तूनि रम्याणि प्रेदृष्टुमुपचक्रमे MBh. 5, 3033. गृहवास्तूनि Harîv. 6601. °निवासाः Sûçr. 1, 16, 19. प्रशस्तवास्तुनि गृहे 69, 5. Verz. d. Oxf. H. 43, *a*, N. 2. 86, *a*, 16. 332, *b*, 20. 342, *b*, 22. Verz. d. B. H. No. 877. वास्तुत्रं वैरम् Spr. 5038. Kâm. Nîtis. 10, 15. °शमन R. 2, 56, 18. Verz. d. Oxf. H. 43, *a*, 8. वास्तूपशमन N. 2. वास्तुसंशमनीयानि मङ्गलानि R. 2, 56, 27. वास्तूपशम Verz. d. B. H. No. 1075. °शान्ति, °पद्धति, °प्रवेशपद्धति 1076. °कल्प, °काला: 1073. °स्थापन *Aufrichtung eines Hauses* 1074. °संग्रह तन्त्रम् Verz. d. Oxf. H. 298, *b*, No. 693. त्वेरविषये वास्तु किं न दोषः प्रकाशयेत् Spr. 2491. Verz. d. Oxf. H. 42, *b*, 35. °मध्ये M. 3, 89. MBh. 13, 4662. 7140. 16, 58. राष्ट्रपूर्वानवास्तूनाम् Paṇḍar. 3, 14, 77. Vaṇîn. Bṛh. S. 53, 11. 15. 20. 31. 37. 39, 14. 107, 6. °नर *der als Genius gedachte Prototyp eines Hauses* 53, 3. 67 (vgl. वास्तुपुरुष bei Kull. zu M. 3, 89). °बन्धन *das Kapitel über Hausbau* 87, 18. °देव Wilson, Sel. Works 2, 161. वास्तु auch *Gemach* Vaṇîn. Bṛh. 5, 18. 21. Als m. nur Bhâg. P. 10, 8, 31. 46, 44 (वास्तून् = देवस्त्यादीन् Comm.). — 2) m. N. pr. eines der acht Vasu Bhâg. P. 6, 6, 11. 15. — 3) m. N. pr. eines Râkshasa Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 21. — 4) wohl f. N. pr. eines Flusses (neben सुवास्तु) MBh. 6, 333 (VP. 183). LIA. II, 132, N. 4. — 5) n. = वास्तुक 2) Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. नापित°, पुर°, पृष्ठ°, यज्ञ° (auch Bhâg. P. 9, 4, 8), यथा°.

वास्तुक (von वास्तु) 1) adj. *auf dem Opferplatz als werthloser Abfall liegen geblieben:* वसु Bhâg. P. 9,4,6. 9; vgl. u. वास्तव्य 1) und वास्तुक. — 2) m. n. (*Hofunkraut*) *Melde, Chenopodium* Bhâv. zu AK. 2,4,8,23 nach ÇKDn. H. 1186. Soçr. 1,72,3. 73,9. 228,16 (m.). 2,342,20. 473,6. Vîsân. 6, 78. fg. Vgl. वास्तूक. — 3) f. ई *eine best. Gemüsepflanze,* = चिल्ली Râgân. im ÇKDn.

वास्तुकर्मन् n. *Hausbau* R. 1,3,15 (9 Gorr.). R. Gorr. 1,4,35. Varâh. Bṛh. S. 56,9.

वास्तुज्ञान n. *Baukunst* Varâh. Bṛh. S. 53,1.

वास्तुर्त adj. *die (verlassene) Stätte behauptend* VS. 16,39.

वास्तुपरीक्षा f. *Untersuchung des Platzes für den Hausbau* Âçv. Gṛhj. 2,7,1. 8,1.

वास्तुप्रदीप m. Titel eines über *Hausbau* handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,47.

वास्तुयाग m. *das vor dem Beginn des Baues eines Hauses veranstaltete Opfer* Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,22. °विधेस्तन्त्रम् 290,*a*, No. 695. °तन्त्र Gub. Bibl. 465. 479.

वास्तुविद्यै (vom folgenden) adj. *die Baukunst betreffend* u. s. w. गण गणपनादि zu P. 4,3,73.

वास्तुविद्या f. *Baukunst* गण गणपनादि zu P. 4,3,73. MBh. 1,3039. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 7, Z. 1. Verz. d. Cambr. H. 34. fgg. Wilson, Kalâsâs. 266. Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,12.

वास्तुविधान n. *Hausbau* Râgân. 16,39.

वास्तुविधि m. dass., Titel eines Werkes Mack. Coll. 1,133.

वास्तुव्याख्यान n. Titel eines Werkes über *Hausbau* ebend.

वास्तुशास्त्र n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,48. 341,*a*,40. fg. Ind. St. 1,467,3. Mack. Coll. I, 132.

वास्तुसंग्रह m. desgl. Mack. Coll. I, 133.

वास्तुसनत्कुमार desgl. ebend.

वास्तुक adj. *was auf dem Platze bleibt, Ueberrest* Ârv. Bh. 3,11. Rudra sagt: मम वै वास्तुकम् 34. 5,14. — Vgl. वास्तुक 1).

वास्तूक m. n. = वास्तुक 2) Udâtt. zu Unâdis. 4,41. AK. 2,4,8,23. Trik. 2,4,30. Suçr. 1,220,12. 20. 2,48,9. Dhanvant. 79,14. — Vgl. यज्ञ°, वरुण°, चुक्र°.

वास्तेय (von वास्ति) adj. (f. ई) *in der Blase befindlich* P. 4,3,56. AV. 11,8,28. उदक im Weltei Kâṭhân. Up. 3,19,2. *blasenähnlich* P. 5,3,101.

वास्तोष्पति (वास्तोस्, gen. von वास्तु, + पति) m. *der Genius der Hofstatt* Naigh. 5,4. Nir. 10,16. RV. 5,41,8. 7,54,1. fgg. 55,1. 8,17,14. 19, 61,7. AV. 6,73,3. Pân. Gaṇ. 3,4. M. 3,89 (fälschlich वास्तोष्पति und वास्तोः पति geschrieben). Verz. d. Oxf. H. 43,*a*, N. 2. Bhâg. P. 10,50, 54 (pl.). auf Rudra bezogen (vgl. वास्तव्य 1) TS. 3,4,80,2. unter den Namen Indra's AK. 1,1,8,38. H. 172. Hall. 1,52.

वास्तोष्पतीय adj. *dem* Vâstoshpati *gehörig* u. s. w. P. 4,2,32. TS. 3,4,80,2. कर्मन् Çâṅkh. Gṛhj. 3,4. Çâ. 2,16,1. Kauç. 8.

वास्तोष्पत्य adj. dass. P. 4,2,32. Kauç. 120. Anukr. zu AV. 5,9.

वार्क्ष (von वृक्ष) adj. *mit Zeug überzogen:* रथ P. 4,2,10, Schol. AK. 2,8,2,32. H. 754.

वार्क्ष ved. adj. von वास्तु P. 6,4,175.

वास्त्य desgl. ebend.

1. वास्य adj. in der Stelle ईशा वास्यमिदं सर्वम् Îçop. 1 nach Çâṅk. = आच्छादनीय *gehüllt werdend* (also von 3. वस्). — Vgl. प्रवम°.

2. वास्य (vom. caus. von 3. वस्) adj. *ansässig:* तेषु च यथानुरूपं वर्णा विप्राद्यो वास्याः (= निवासनीयाः Comm.) Varâh. Bṛh. S. 53, 65. — Vgl. 1. ग्रमा° und वन°.

3. वास्य = वासी *Axt* Nîlak. zu MBh. 1,4605. 5,8250.

वास्र m. *Tag* Taitt. 1,1,103. — Vgl. 1. वस्र und वास्र.

वास्रा s. u. वास्र.

वास्रदन n. = वासस्न *Wasserbehälter* Taitt. 2,9,7. Hir. 214.

1. वाकू, वाके dat. nach Sây. *der Fahrende:* एष स्तोमो मरुद्भ्य उग्राय वाके धृष्वयातवे धधायि RV. 7,24,5. Wir erklären das Wort lieber als dat. inf. von 1. वक्ष् mit metrischer Dehnung und der beim infin. häufigen Attraction: *um den Gewaltigen zu fahren.* Ueber das nom. ag. वाकू s. u. 2. वक्ष्.

2. वाकू, वाक्ने Daivor. 16,44 (प्रयत्ने). partic. वाक्त (verschieden von वाढ d. i. बाढ) P. 7,2,18, Schol.

— प्र *drängen, drücken:* प्रवाकस्व wird einer Kreisenden zugerufen Soçr. 1,368,13. प्रवाकेषा: शनैः शनैः 14. प्रवाक्यमाणा 2,47,4. 58,10. 440, 18. Hierher प्रवाक्तिका (s. u. प्रवाक्क). — caus. act. dass. Soçr. 2,187, 7. 241,8.

वार्क् (von 1. वक्ष्) 1) adj. (f. या) *ziehend* u. s. w.; *tragend:* केसरवाहिभार° Kathâs. 51,218. शिविका° Bhâg. P. 5,10,1. *fliessend:* नदीमुखतोवाक्याम् 6,5,1. *sich unterziehend, sich hingebend:* धर्म° MBh. 13, 7398. — 2) m. *a) Zugthier, Reitthier, Fahrkai* überh. RV. 4,57,4. 8. AV. 6,102,1. Kâṭhop. 1,26. वाक्यान्न पीडयेत् Kâmasûtra 7,9. fgg. तत्रियस्येव वाक्: MBh. 3,13190. यो वाक्यान्कुरुते मुनीन् 5,463. इन्द्रस्य वाह्निनो वाक्या रुस्तिनो ऽव रथास्तथा 486. Spr. 1570. यानं °विधुक्तम् Varâh. Bṛh. S. 46,60. Bhâg. P. 8,10,25. 9,15,21. मरुत्वन्द्र° 2,7,25. 6,11,10. 12. *Pferd* AK. 2,8,2,12. H. 1233. an. 2,602. Med. k. 9. Hall. 2,231. MBh. 1,6484. 2,2086. 3,943. 2535. 13003. 15609. 15727. 4,1643. 10,2. 12, 5041. 13,2505. Harîv. 5489. Râgân. 4,56. 5,73. 14,52. Kathâs. 59,131. 67,24 (°विद्याकुशलविद्). 73,92. Râja-Tar. 6,251. Prab. 79,8. Bhâg. P. 1,10,25. 14,13. 7,10,65. 8,10,40. *Stier* H. an. Med. Kuṇḍâs. 7,49. *Wagen:* मनोयुक्तमिव वाक्यम् Çvetâçv. Up. 2,9. MBh. 1,3680. 3,698. 11903. 13,905. Bhâg. P. 6,8,1. Am Ende eines adj. comp. (f. या) — zum *Fahren habend:* वृषभ° *reitend auf* MBh. 13,891. Harîv. 10692. सिंहवाहा 9428. हंस° Bhâg. P. 7,3,24. गरुड°, इभारि° 8,10,55. सिंह° 11, 14. विमान° *fahrend in* Harîv. 8586. — *b) Wind* Med. Çârdân. im ÇKDn. — *c) ein best. Hohlmaass* AK. 2,9,89. H. an. Med. = Droṇî Çâṅk. Saṅk. 1,1,21. = 4 Bhâra Bhân. zu AK. = 10 Kumbha Svâmin zu AK. nach ÇKDn. — *d)* bildliche Bez. des Veda Kuvalay. 105,*b*,4. — *e)* nom. act. *das Ziehen:* °मर्यादिता धुर्या: MBh. 12,9284. *das Fahren, Reiten* Spr. 3812. Kull. zu M. 4,172. Kathâs. 62,157. *das Tragen:* अतिभार° Hit. 81,12 (v. l. वाक्त्न). *Strömung:* गङ्गायमुनयोर्वाहो Kathâs. 93,81. चन्दनसंक्रवाक्निर्झर 90,38. — Vgl. अग्नि°, अज्र°, अम्बु° (*Wolke* auch Râja-Tar. 2,149. Daçak. 94,18. Bhâg. P. 2,1,31), अश्व°, इध्म°, इन्द्र°, उद्°, गन्ध°, ग्रह°, ग्रहे°, नौ°, पत्र°, पयो°, पोलु°, पुरुष°, पू-

प°, पोत°, बधु°, भाण्डि°, भार°, महद्रथ°, महद्वाह°, मित्र°, यज्ञ° (adj. auch MBh. 13,7169), युग्य°, यूप°, योग°, रक्षो°, रथ°, रथवाहन°, रा-ज°, वायु°, वारि°, विपथ°, शव°, शुक°, सार्थ°, स्कन्ध°, हव्य°, ह-स्ति°, होत्र°.

वाहक (vom caus. von 1. वह्) 1) nom. ag. (f. वाहिका) a) *Träger* Jâdh. 2,197. R. 4,24,21. Bhâg. P. 10,18,21. वाससां वाहिका राज्ञो धातुर्येष्टस्य मे भव MBh. 7,4867. शासन° *Träger, Ueberbringer* Kâm. Nîtis. 12,3. — b) *fliessen lassend, mit sich führend:* नद्यः शीततोयौघवाहिकाः Mârk. P. 59,8. — c) *in Bewegung setzend:* संसारचक्रवाहकस्य महामोहस्य Prab. 69,15. — 2) m. a) *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,288, 13; vgl. वाहकी. — b) N. pr. eines Mannes Mâlav. 8,13, v. l. — Vgl. जल°, ताम्बूल°, पथि°, रथ°, वारि°, श्वेत°, स्कन्ध°.

वाहकत्व (von वाहक) n. *das Amt eines Trägers* Bhâg. P. 7,8,52.

वाहतक m. N. pr. eines Mannes Mâlav. 8,13. fehlerhaft für वार्हतक.

वाहत MBh. 1,299 fehlerhaft für याहत, wie die ed. Bomb. liest.

वाहद्विषत् m. *Büffel (ein Feind des Ziehens oder Tragens)* AK. 2,5, 4. — Vgl. वाहारि.

वाहन (vom caus. von 1. वह्) 1) adj. *tragend:* महघू° (सिंह) Kathâs. 22,134. ग्रामात्° (कृप) 30,101. नागानां वाहना मेघाः 124,223.221. *bringend:* स्वप्रोत्तमः सत्यवाहनः Râgâ-Tar. 4,100. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,b,22. — 3) n. a) *Zugthier, Gespann, Reitthier, Vehikel* überh. AK. 2,8,2,26. 3,4,22,181. H. 221. 759. Halâj. 2,294. am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 3,11279. R. Gorr. 2,125,2. Kathâs. 20,164. गर्दभः सर्वेषां वाहनानामनाशिष्ठः Ait. Br. 4,9. Çat. Br. 1,8,2, 9. 2,1,4,6. 4,4,4,10. M. 7,75. 222. 8,113. 419. MBh. 3,2129. 13,282. 4855. 14,75. fg. R. Gorr. 2,86,2. 7,16,7. Kâm. Nîtis. 7,30. 12,44. 13, 31. 50. Spr. 3408. Varâh. Brh. S. 4,24. 9,43. 46,7. 27. 48,68. 90,8. 93, 12. Kathâs. 20,146. 30,137. 43,244. Naish. 22,45. Weber, Râmat. Up. 288. Bhâg. P. 6,12,17. Häufig in Verbindung mit बल so v. a. *Heer und Tross* M. 7,172. 9,313. MBh. 1,6652. 2,1074. 4,993. 2219. R. 1,53,6. R. Gorr. 1,16,11. 2,101,5. 5,9,51. 30,2. 73,4. Spr. 768. Mârk. P. 37, 9. दृष्टवाहनपूरुष Jâdh. 1,347. प्रययौ पुण्डरीकाक्षः शैब्यसुग्रीववाहनः *Ross* MBh. 2,35. 555. 4,319. श्रान्त° adj. R. 1,62,1. 68,1. 2,68,21. 71, 30. Ragh. 1,48. 9,25. Kathâs. 16,91. 18,106. Bhâg. P. 9,15,31. स्पृष्ट्वा तत्रियो वाहनायुधम् (प्रधयति) *Reitthier (Elephant oder Ross)* M. 5,99. MBh. 13,2724. Kathâs. 7,13. 12,134. यज्ञेश° Bhâg. P. 6,6,22. Pañkar. 1,1,76. Pañkat. 198,5. Hit. 120,16. Auch m.: कंसस्यैव स वाहनः Hariv. 3113. 5884 (n. in der neueren Ausg.). — *Wagen* Çat. Br. 9,4,2,11. R. Gorr. 2,109,35. 3,56,52. Spr. 4423. in comp. mit der Last (wobei das न in ण verwandelt wird, wenn र oder ष vorhergehen) P. 8,4,8. शरवाहण, दर्भ°, इक्षु° Schol. *Schiff* Verz. d. Oxf. H. 151,a,6. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) nach dem näher angegebenen Vehikel so v. a. *fahrend in, reitend auf:* स्यन्दन° Hariv. 4426. नाग° 10998. सिंह° Kathâs. 22,79. हंस° Bhâg. P. 7,3,16. गरुड 8,10,2. In der Stelle वन्यवाहनहृत्तर् Kathâs. 21,30 bedeutet das Wort *Thier* überh. — b) *Ruder* (Comm.) oder *Segel* R. 2,52,5. — c) nom. act. *das Ziehen, Tragen* (eines Zugthieres, eines Reitthieres oder Trägers) MBh. 5,473. 13,4755. शिबिका° R. 4,24,18. Pañkat. 83,19. 198,6. 253,13. Hit. ed. Johns. 1705. *das Fahren* Suçr. 1,119,2. 244,8. 277,10. *das Reiten* Kathâs. 62,158. 160. fg. Spr. 3174. *das Lenken* (der Rosse) MBh. 3,2625. — Vgl. उद°, कव्य°, क्रव्य°, जल°, डिम्ब°, देव°, नग°, नर°, नृ°, पत°, पवन°, पुरीष°, पुरीष्य°, पुष्प°, प्रवर°, प्रष्टि°, बधु°, बर्हि°, बर्हिण°, वीत्र°, भार°, भूत°, भूति°, मणि°, मधु°, महिष°, मृग°, मेघ°, यज्ञ°, यम°, रथ°, राज°, रुक्म°, वसु°, वाजि°, वायु°, वारि°, शालि°, शिखि°, श्वेत°, हरि°, हव्य°, होत्र°.

वाहनता f. nom. abstr. von वाहन 3) a) Kathâs. 119,162.

वाहनत्व n. desgl. Kathâs. 36,15. Çañk. zu Brh. Âr. Up. S. 25. Bhâg. P. 9,6,14.

वाहनप m. *Hüter der Zug- und Reitthiere* R. 2,91,53.

वाहनप्रज्ञप्ति f. Bez. *einer best. Zählmethode* Lalit. ed. Calc. 169,10.

वाहनिक (von वाहन) adj. *von Zugthieren u. s. w. lebend* gaṇa वेतनादि zu P. 4,4,12.

वाहनीकर् (वाहन + 1. कर्) *zum Vehikel machen* Kathâs. 18,390. 26,33. 62,156.

वाहनीभू (वाहन + 1. भू) *zum Vehikel werden* Kathâs. 117,21.

वाहनीय (vom caus. von 1. वह्) = वाह्य *Lastthier* Kull. zu M. 8,151.

वाहरिपु m. *Büffel* H. 1282. — Vgl. वाहद्विषत्.

वाहश्रेष्ठ m. *das beste Vehikel* d. i. *das Pferd* Râgan. im ÇKDr.

वाहस् (von 1. वह्) n. *Darbringung, Aufwartung* Naigh. 4,1. Nir. 4, 6 (erklärt als *Lob, das den Gott herbeiführt* oder *ihm die Soma-Bereitung verkündigt*). इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् RV. 3,30,20. जुष्ट 53, 8. 11,7. महस्यं 8,6,2. 10,29,2. (प्र यातु) घर्मेण हृदयेन वाहसा VS. 26,8. पचत° Çâñkh. Çr. 8,21,5. — Vgl. उक्थ°, गिर्वाहस्, नृ°, ब्रह्म°, यज्ञ°, रिप्र°, विप्र°, सिन्धु°, स्तोम°.

वाहस (वाहसे Uṇâdis. 3,119) m. 1) *Boa* AK. 1,2,1,5. H. 1305. an. 3, 756. Med. s. 36. Halâj. 3,20. TS. 5,5,14,1. — 2) *Quelle* (वारिनिर्याण). — 3) *eine best. Pflanze*, = सुनिषण्ण, सुनिषण्णक H. an. Med.

1. वाहिक (von वाह) gaṇa निष्कादि zu P. 5,1,20. m. 1) *Karren* u. s. w. — 2) *eine grosse Trommel* Dhar. im ÇKDr. — Vgl. भार°, वृष°.

2. वाहिक 1) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2084. fehlerhaft für वाह्लिक, wie die ed. Bomb. liest. — 2) n. *Asa foetida* Colebr. und Lois. zu AK. 3,4,1,9. fehlerhaft für वाह्लिक oder वाह्लीक.

वाहितर् (von 1. वह्) nom. ag. *Führer:* सर्वभूतानाम् MBh. 13,1227. = वोढर् Nilak.

वाहिता f. nom. abstr. von वाहिन् *fliessend:* प्रशान्त° Verz. d. Oxf. H. 229,b,10.

वाहित्थ n. *die Gegend unterhalb des* कुम्भ *oder* वातकुम्भ *beim Elephanten* AK. 2,8,2,7. H. 1227.

वाहित्र s. पोत°.

वाहिन् (von 1. वह्) 1) adj. a) *fahrend, ziehend:* तद्वन्धुरवाहिनो हयाः R. 2,52,13. R. Gorr. 2,51,10. — b) *dahinfahrend* (vom Wagen): शीघ्रैः शीघ्रवाहिना स्यन्दनेन MBh. 3,245. शीघ्र° Spr. 4423. — c) *fliessend:* दृतिपापथ° (नदी) Hariv. 9513. गङ्गां पातालवाहिनीम् Kathâs. 73,119. प्रतीप° 74,190. उत्पथ° Bhâg. P. 10,20,10. कलिन्दान्तर° Mârk. P. 78, 30. 108,19. सिरा पुरुषत्रयवाहिनी *in einer Tiefe von* — Varâh. Brh. S. 54,22. — d) *fliessen lassend, mit sich führend* (von Flüssen), *zufüh-*

rend (von Winden): रुधिरौघ° MBh. 8,3807. घृत° (गो) 13, 3523. घस्रवाहिनी (नदी) 3, 14274. पुण्यसंचय° Harıv. 12018. R. 1,36,22. R. Gorr. 2,54,29. 65,15. 3,59,20. Rîga-Tar. 1,260. Bhâg. P. 5,26,22. Mârk. P. 59,24. धमनी शब्दवाहिनी Suçr. 1,257,7. स्फारनीहारलव° (पवमान) Rîga-Tar. 3,168. 226. Çik. 55. चलच्छकटविप्रयाम् Pâṇân. 3,3,3. — *c) bringend* so v. a. *bewirkend:* रत्नानां शब्दवाहिनाम् Harıv. 2675. उद्वेग° Kathâs. 59,152. Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,11. तृष्णया भवबाहिन्या Bhâg. P. 7,13,23. — *f) tragend:* लगुड° Kathâs. 81,11. भार° Spr. 1376. 4780. Prab. 107,7. वागुरा° Rîga-Tar. 6,182. विप्रयवाहिन्या चक्ष्वा Pâṇân. 79,16. स्थूलकम्बल° Rîga-Tar. 5,460. — *g) an sich tragend, habend:* विग्रह° Rîga-Tar. 6,308. रोगनिश्वासवाहिना (°वायुना die neuere Ausg.) Harıv. 4748. कुसुमसौगन्ध्य° Spr. 1908. — *h) sich unterziehend, ausübend:* कर्म° MBh. 1,8114. सकूट° 13,3899. — 2) m. *Wagen* MBh. 3,3293. — 3) f. वाहिनी *a) ein reisiger Zug; Heer* AK. 2,8,2,46. Taik. 3,3,249. H. 745. an. 3,413. Med. n. 98. Halâj. 2,302. घर्मस्वती AV. 10,1,15. R. 2,36,3. 5,40,11. Ragu. 7,38. Spr. 692. 3272. Varâh. Bṛh. S. 47,25. Dhûrtas. 66,14. *Heer* und zugleich *Fluss* MBh. 6,2337. Rîga-Tar. 4, 134. Vîsâvad. 13,3. am Ende eines adj. comp. वाहिनीक Ragh. 13,66. — *b) eine best. Heeresabtheilung: 81 Elephanten, 81 Wagen, 243 Reiter und 405 Fussoldaten* AK. 2,8,2,49. H. 748. H. an. Med. MBh. 1, 291. — *c) Fluss* AK. 3,4,18,114. Taik. H. 1080. H. an. Med. MBh. 3, 17141. 6,341. R. 2,71,13. 89,3. Rîga-Tar. 4,203. *Fluss* und zugleich *Heer* 134. MBh. 6,2337. Vîsâvad. 13,3. — *d) Rinne* Schol. zu Kâṭy. Ça. 386,15. — *e)* N. pr. der Gattin Kuru's MBh. 1,3740. — Vgl. घम्बु°, कनक°, काष्ठाम्बु°, कुमार°, चतुर्वाहिन्, जय°, दण्ड°, नर°, पञ्च°, पुष्प°, प्रष्टि°, फेन°, भार°, मन्द°, मधु°, मल°, मातृ°, मेघ°, मेष°, यज्ञ°, योग°, रोम°, लोम°, वायु°, वारि°, वेग°, साधु°.

वाहिनीपति m. 1) *Heerführer* AK. 2,8,2,30. Halâj. 2,278. MBh. 4, 702. 834. 2160. 6,1932. R. Gorr. 2,109,28. 3,29,16. 4,7,24. 5,73,30. 89,71. Bhâg. P. 9,12,10. — 2) N. pr. oder Beiw. eines Dichters Verz. d. Tüb. H. 13.

वाहिनीश m. N. pr. eines Mannes Hall 6.

वाहिष्ठ adj. = वाहिष्ठ 1) *am meisten führend, — herbeiführend* Nir. 5, 1. रथ RV. 7,37,1. 8,26,4. स्तोम 8,45,30. 8,5,19. 26,16. यद्वाहिष्ठं तदृग्मे बृहदेव 5,25,7. — 2) *am meisten fliessend* RV. 8,26,18.

वाहुक m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 1,47, N.

वाह्य (von वह्नि) adj. *an Agni gerichtet, zu ihm in Beziehung stehend:* मन्त्राः Varâh. Bṛh. S. 46,24. पुराण Bhâg. P. 12,13,5.

वाह्लेय (wie eben) m. patron. Ind. St. 4,373.

वाह्य (von 1. वह्) 1) adj. *was gefahren u. s. w. wird* P. 3,1,102, Schol. Vop. 26,7. 28. P. 4,3,120, Vârtt. 2. Comm. zu 8,4,8. मनुष्य° (यान) *von Menschen gezogen* Ragh. 6,10. यद्वा वाह्यो ऽस्मि दुर्दुरैः *geritten werdend* Pañcat. III, 230. *getragen werdend* (Gegens. वाहक) Bhâg. P. 10,18,21. स्कन्ध° (शिविका) Harıv. 3385. — 2) n. *Zugthier* M. 8,151. Jâṭ. 2,177. Harıv. 4001. Varâh. Bṛh. S. 104,24. इन्द्र° Indra's *Reitthier* MBh. 9,1077. *Vehikel* überh. H. 9. 750. — 3) f. या N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,26. — Vgl. अनो°, पृष्ठ°, बाल°, राज्ञ°, स्त्री°.

वाह्यक (von वाह्य) n. *Wagen* AK. 2,8,2,20. H. 753.

वैंशकायनि m. metron. von वंशका gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वाशाकी f. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,288,1. — Vgl. वाशक.

वाशत्व (von वाश) n. *das Vehikel-Sein* H. 12.

वैंशस्क m. patron. von वंशस्क gaṇa बिदादि zu P. 4,1,104.

वाशस्कायनि m. patron. von वाशस्क gaṇa कुरितादि zu P. 4,1,100.

वैंशायनि m. patron. von वंश Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,111 (er hat also im gaṇa तिकादि nicht वंशका, sondern वंश gelesen).

वाशाश्व (वा° die neuere Ausg.) m. N. pr. eines Mannes Harıv. 1777. fg.

1. वि m. Uṇâdis. 4,133. nom. sg. विस् und वेस् (RV. 6,3,5. 1,173,1. 3,54,6. 9,72,5. 10,33,2), acc. विम्, gen. abl. वेस्; nom. und acc. pl. वयस् (RV. 1,104,1), विभिस्, विभ्यस्, वीनाम्. *Vogel* Nir. 2,6. AK. 2,5, 33. H. 1316. Halâj. 2,53. मा मार्भि पुत्र विमिव ग्रभीष्ट RV. 2,29,5. 38, 7. उत्ते वयश्चिदनपेतपासन् 6,64,6. यद्वा रथो विभिष्यतात् der Açvin 1, 46,3. 8,29,8. वयो ऽश्वाः *fliegende Rosse* 1,104,1. 117,14. 6,63,7. वीनां पदम् 1,23,7. पदं वेः 164,7. 3,5,5. 6. 7,7. 4,5,8. 10,5,1. माता पुत्रैरदितिर्धायसे वेः 1,72,9. 6,48,17. प्र सु ष विभ्यो विरस्तु 4,26,4. पर्णान् 8,5, 32. दृषद् 9,72,5. Pañcav. Br. 5,6,15. वयः पुरुषादः *die Pfeile* RV. 10, 27,22. धनं त्वा पलीरुदियर्ति वयसा विश्वे देवासो ग्रमदन्ननु त्वा nach dem Comm. *die fliegenden* Marut 1,103,7. 5,53,3. VS. 2,16. चतुष्पादो Vop. 23,6. नदेभ्यो ऽपि क्रूदेभ्यो ऽपि पिबत्यन्ये वयः पपः Spr. 1398. वीन् Bhatt. 9,24. भूतविग्रहः Spr. 3134. वङ्कवि व्रयति वनम् Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,132. — Vgl. राज्ञवि und 1. वयस्.

2. वि praep. gaṇa प्रादि zu P. 1,4,58. Vârtt. zu 84. Vop. 1,8. euphonischer Einfluss auf ein folgendes स VS. Pâṭ. 3,65. bezeichnet *Trennung* und *Abstand;* mit acc. elliptisch *hindurch:* यो वि दुरः पणीनाम् *der durch die Pforten der* P. (ging) RV. 7,9,2. मह्ना रजांस्यस्मिना वि घोषैः 1,181,5. (घृतम्) वि वारमव्यमाशवः *durch den Sieb* 9,13,6. कति स्विन्ना वि योजना *wie viele Rasten auch dazwischen sind* 10, 86,20. zufällige Schreibung: मनुषो नेकुषो वि ज्ञाताः (d. i. विज्ञाताः) 80,5. Die einheimischen Gelehrten geben dem Worte folgende Bedeutungen: प्रातिलोम्य Nir. 1,3. वि मेष्टे ऽतीते नानार्थे H. an. 7,15. वि नियोगे विशेषे च तथैव परिपूरणे ॥ निश्चये सकले केतावव्याप्तिविनियोगयोः । ईषदर्थे परिभवे शुद्धावलम्बने ऽपि च ॥ विज्ञाने Med. avj. 75. fgg. विशेषे गतौ व्याप्तौ und पालने Çâśvar. nach ÇKDa. विशेषवैचित्र्यनअर्थगतिदानेषु Durgâs. nach ÇKDa.

3. वि Verbalwurzel s. वी.

4. वि n. zu einer Etymologie gebildet, angeblich so v. a. अन्न Çat. Br. 14,8,12,3.

विंश (von विंशति) 1) adj. P. 5,4,142. *a) der zwanzigste* P. 5,2,56. Vop. 7,40. Bhâg. P. 1,3,22. — *b)* mit oder ohne भाग, खण्ड *ein Zwanzigstel* Jâṭ. 2,261. Varâh. Bṛh. S. 82,10. M. 8,398. 9,112. 10,120. am Ende eines adj. comp. f. या Weber, Ġjot. 104. — *c) von zwanzig begleitet, um zwanzig vermehrt:* शत *hundertundzwanzig* P. 5,2,46. Vop. 7,95. Varâh. Bṛh. S. 58,30. — *d) aus zwanzig Theilen bestehend* MBh. 12,9904. पुरुष (mit Zehen und Fingern) TS. 7,3,9,2. Pañcav. Br. 23,14,5. मार्भव (wegen des *20theiligen Stoma*) 13,5,7; vgl. Çat. Br. 13,5,8,1. n. *Zwanzigzahl, ein Zwanzig:* षट् योजनविंशानां प्रविता R. 4,43,12. योजनविंशानां सहस्राणि शतानि च MBh. 3,12876. सविंशे योजनशते *hundertund-*

zwanzig Jogâna R. 4,62,18. — 2) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 14, 68. VP. 332. — Vgl. त्रिंशद्दिश, वि°.

विंशक (wie oben) adj. P. 5,1,24. 6,4,142. 1) von *zwanzig begleitet, um zwanzig vermehrt:* सप्तभिः शतैर्विंशकेन (विंशत्या च besser ed. Bomb.) *siebenhundertundzwanzig* Bhâg. P. 4,27,16. शत so v. a. *zwanzig Procent* Jiéân. 2,38. — 2) *aus zwanzig Theilen bestehend* MBh. 12,11961. fg. गण Mâlav. P. 80,5. 7. m. *Zwanzigzahl, ein Zwanzig:* मोत्त° *zwanzig* (Çloka) *über* Hariv. 14346. Tîrân. 318.

विंशत् = विंशति *zwanzig:* विंशदर्णक Paṇḍân. 4,5,20. विंशच्छ्लोकीव्याख्या Verz. d. B. H. No. 1403. विंशदङ्क 907. — Vgl. एक°, पार°.

विंशतितम (von द्वि und दशन्) f. *ein Zwanzig* P. 5,1,59. AK. 2,9,84. Taik. 3,3,2. ṚV. 1,90,8. आ विंशत्या त्रिंशता याहि कृतिभिर्युक्तान: 2,18, 8. सप्त शतानि विंशतिश्च *siebenhundertundzwanzig* 1,164,11. 5,27,2. 6,27,8. 7,18,11. विंशतिं शता *zweitausend* 8,46,22. 21. 10,67,14. 23. Çat. Br. 2,3,2,20. 7,5,2,44. 10,4,2,16. द्वाभ्यां विंशती च VS. 27,33. Vaitân. Bhn. S. 7,13. 11,23. 21,30. 53,19. Bhâg. P. 7,6,7. यस्यां विंशतौ Sîddh. K. zu P. 5,2,45. घोरा विरेजुर्विंशतिर्दृशः R. 3,56,32. 2,70,5. MBh. 12,11963. Spr. 4631. AK. 2,9,87. Vaitân. Bhn. S. 23,7. H. 872, Schol. विंशतिश्च सहस्राणि Mârk. P. 46,36. विंशतिं वै सहस्राणि वर्षाणाम् R. Gorr. 1,44,6. नरकानेकविंशतिम् M. 4,87. 5,35. MBh. 3,8379 (विंशतिं zu lesen, eine von Nîlak. gekannte Lesart). विंशत्या वत्सरैः Râéa-Tar. 6,20. विंशतिर्घटानाम् H. 872, Schol. MBh. 12,11961. Weber, Gjot. 89. Vaitân. Bhn. S. 54,73. H. 127. °दोत्त Kâty. Çr. 23,2,15. °रात्र 24,2,1. 2. Maç. in Verz. d. B. H. 73 (IX, 3). °पद् Çiñkn. Ça. 12,17,6. °पशु 16,15,20. विंशत्यक्षर Çat. Br. 10,5,2,8. विंशत्यङ्गुलि 12,3,2,2. विंशत्योदन Kauç. 65. पूर्णविंशतिवर्ष M. 2,212. °हित्र 8,392. °भुज R. 3,36, 5. — Vgl. एक° u. s. w.

विंशतिक (von विंशति) P. 5,1,27. 32. adj. (f. आ) 1) *zwanzig Jahre alt* Vaitân. Bhn. S. 68,78. — 2) *aus zwanzig Theilen* (z. B. Silber) *bestehend* Ind. St. 8,101. 144. दशविंशतिको दमो *Geldstrafen von zehn und zwanzig* (Paṇa) Jiéân. 2,216. n. *Zwanzigzahl* Kâm. Nîtis. 19,21. — Vgl. वैंशतिक.

विंशतिकीन s. अध्यर्ध°, द्वि°.

विंशतितम (von विंशति) adj. *der zwanzigste* P. 5,2,56. Vop. 7,40. भाग *der zwanzigste Theil* Mîr. 246,14, wo विंशतितमो st. विंशतितमो zu lesen ist.

विंशतिप (वि° + 2. प) m. *das Haupt von zwanzig* (Dörfern) MBh. 12,3264.

विंशतिबाहु adj. *zwanzig Arme habend;* m. Bein. Râvaṇa's Bhaṭṭ. 8,104.

विंशतिम (von विंशति) adj. *der zwanzigste:* सर्ग Verz. d. Oxf. H. 83, a,27. भाग *der zwanzigste Theil* Mîr. 246,15.

विंशतिशत n. *hundertundzwanzig:* अह्नानि Çat. Br. 12,3,2,12. °शतेष्टक 10,4,2,2.

विंशतिसाहस्र adj. (f. आ) *zwanzigtausend* Hariv. 6927. R. 2,91,42. fg.

विंशतीश m. = विंशतिप M. 7,115. 117.

विंशतीशिन् m. dass. M. 7,116.

विंशत्यधिपति m. dass. MBh. 12,3265.

विंशद्बाहु = विंशतिबाहु R. 7,32,50.

विंशिन् (von विंश) 1) adj. *aus zwanzig bestehend* P. 5,2,37, Vârtt. 6. षड्विंश: Schol. Paṇḍav. Bh. 24,10,2. — 2) m. *a*) = विंशतिप M. 7, 119. — *b*) angeblich = विंशति ÇKDa. nach Siddh. K.

विंकन्धिका f. *Gequake* (nach dem Comm.): भेक° Mattasy. 6,22.

विंक 1) m. N. pr. eines Mannes Kshatriç. 5,8. — 2) n. *die Milch einer Kuh, die vor Kurzem gekalbt hat,* Çabdak. im ÇKDa.

विंकला f. N. pr. eines Frauenzimmers v. l. im gaṇa प्रुष्टादि zu P. 4,1,123.

विंककर (वि + ककर) m. *ein best. Vogel* VS. 24,20.

विंकङ्कट (2. वि + क°) gaṇa कुमुदादि 1. zu P. 4,2,80. m. *Asteracantha longifolia Nees.* Çabdam. im ÇKDa.

विंकङ्कटिक adj. von विंकङ्कट gaṇa कुमुदादि 1. zu P. 4,2,80.

विंकङ्कत (2. वि + क°) 1) m. *Flacourtia sapida Roxb.* dornig, aus dem Holze werden Opfergeräthe verfertigt, AK. 2,4,2,18. Râtnam. 205. TS. 3,5,2,2. 6,4,10,5. TBr. 1,1,2,12. 2,2,7. Çat. Br. 2,2,2,10. 5,2, 2,18. 6,4,10,3. Kâty. Ça. 26,2,10. 3,2. Sûça. 2,79,2. gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141. Râgân. 11,25. Vaitân. Bhn. S. 48,42. — 2) f. आ *Sida cordifolia* und *rhombifolia* (अतिबला) Râéân. im ÇKDa. — Vgl. वैकङ्कत.

विंकङ्कतीमुख adj. etwa *dornmäulig* AV. 11,10,3.

विंकच (2. वि + कच) 1) adj. *a*) *haarlos, kahlköpfig* Mân. K. 18. MBh. 1,6078. 3,15416. — *b*) *geöffnet* (von Blüthen) AK. 2,4,2,7. H. 1127. Mân. Hariv. 3829. 9016. Ṛt. 1,24. 2,25. 3,1. 28. Ragh. 9,36. ad Çiç. 19. Kir. 5,12. Spr. 2340. 4173. Kathâs. 42,224. Râéa-Tar. 4,245. Sin. D. 178,7. Prab. 60,6. Dhûrtas. 92,6. Bhâg. P. 5,17,13. Paṇḍân. 3,8,17. Verz. d. Oxf. H. 108,b,2. 130,b,5. — *c*) *strahlend, glänzend, prangend:* विंकचानना Kathâs. 34,102. भावविंकचैर्नेत्रैः Hariv. 4094. पुष्प° (द्रुम) MBh. 3,11602. पर्णभार Hariv. 12083. मरीचि° MBh. 1,1147. 7,5718. स्वरश्मिजाल° 8,661. हेम° 1,1412. 8,3788. क्षारविंकचौ स्तनौ 3,1824. शिखासङ्घ° (जटाभार) Hariv. 12306. — 2) m. *a*) *ein buddhistischer Bettler* Mân. — *b*) *eine Art* Ketu (*Komet*) Taik. 3,3,78. Mân. विंकचो यथा यद्: MBh. 8,690. deren 65 Vaitân. Bhn. S. 11,19. — *c*) N. pr. eines Dânava Hariv. 12933. — Vgl. उत्कच, ऊर्ध्वकच.

विंकचय् (von विंकच), °यति *öffnen* (eine Blüthe): सामीलितनयननलिनमुकुलपुगलमोपहिंकचय्य Bhâg. P. 5,2,5. विंकचित *geöffnet, aufgeblüht* Spr. 2601, v. l.

विंकचालम्बा f. Bein. der Durgâ H. ç. 56.

विंकचीकर् (विंकच + 1. कर्) = विंकचय् पद्माकरं दिनकरो विंकचीकरोति Spr. 1692.

विंकच्छ् adj. = कच्छ्रहित ÇKDa. nach der Smṛti.

विंकच्छ्र (2. वि + क°) adj. *keine Schildkröte habend, um dieselbe gekommen* Kathâs. 61,125.

विंकर्ट P. 5,2,29. 1) adj. (f. आ, nach gaṇa वल्कादि zu P. 4,1,45 auch विंकर्टी) Nir. 6,30. *a*) *das gewöhnliche Maass überschreitend, umfangreich, weit, gross* Taik. 3,3,102. H. 1430. an. 3,70. Mân. 1,33. Hariv. 68. विंकटोद्धपिण्डिक MBh. 1,6074. 7,7897. वर्त्म Çiç. 10,42. Khandon. 81. Knie Vaitân. Bhn. S. 68,6. ललाटत्व Prab. 85,13. विंकटास्यकोटर Bhâg. P. 10,37,2. Uttarar. 91,14 (118,6). An mehreren Stellen würde auch Bed. *b*) passen. — *b*) *ein ungewöhnliches Aussehen*

habend, ungeheuerlich, scheusslich, grauenhaft Taik. Med. घोराणि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे RV. 10,155,1. वामनैर्विकटैः कुब्जैः ततस्ता-तैर्मरारिवैः (भूतगणैः) MBh. 2,403. 3,2386 (nach Nilak. कट = तृणासन und विकट = तद्रक्षित). 15856. 6,4294. 10,289. 12,3748. 16,34. Hariv. 9551. 10396. 12218. 13052. R. 5,10,19. 21. 17,28. 6,11,43. 7,16,8. Sucr. 1,368,18. Mirk. P. 43,20. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,14. °विधुतुर् Gir. 4,8. परामरुन्नविकटं शेषम् MBh. 3,15815. विकटाकृति Kathis. 20, 107. भैरवरूप 105,88. क्रोधान्धकारविकटभ्रुकुटी Prab. 74,4. Sin. D. 221, 9. Verz. d. Oxf. H. 139,*a*,9. 141,*b*,33. घनलॅलाटसंपुटविकटान्तरमालिका Spr. (II) 1504. अतिविकटाभिः कर्णाटगोटलाटभाषाभिः Sarvadarçanas. 178, 11. fg. विकटो (so ist wohl zu lesen) भीतिम् Çatr. 14,231. विकटम् adv. *in grauenhafter Weise:* विकस्य Verz. d. Oxf. H. 117,*b*,8. परिक्रामति Uttarar. 111,15 (150,13). — *c) hervorstehende Zähne habend* (दशन) Dharm. im ÇKDa. — *d) über die Maassen schön* H. an. Hilar. 3,8. Viçva im ÇKDa. मणिसोपानविकटा (शाला) R. 5,13,11. Khandom. 120. — 2) m. *a) ein best. Baum,* = साकुरुण्ड Râǵân. in Nigh. Pr. — *b)* N. pr. einer der hundert Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2731. 6983. 6,3838. 8,2455. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2561. eines Râkshasa R. 5,12,13. 6,69,12. 7,5,39. einer mythischen Person Kathâs. 47,86. einer Gans 60,169. Pañkat. 76,7. Hit. 110,2, v. l. — 3) f. घा N. pr. der Mutter Çâkjamuni's Taik. 1,1,14. Med. einer Râkshasî R. 5,25,30. — 4) n. *a) weisser Arsenik* Vaidjabh. in Nigh. Pr. — *b) Sandel* Dhanv. ebend. — *c)* Bez. *einer best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 94,*a*, N. 2. — Vgl. अति°, उत्कट, प्रकट, संकट.

विकटग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Verz. d. Oxf. H. 135,*a*,29.

विकटत्व (von विकट) n. = पदानां नृत्यत्प्रापणम् Sin. D. 250,2.

विकटनितम्बा f. N. pr. einer Dichterin Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,39.

विकटवदन m. N. pr. eines Wesens im Gefolge der Durgâ Kathâs. 52,246.

विकटवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Daçak. 96,6.

विकटविषाण m. *Hirsch* Sidd. in Nigh. Pr.

विकटशृङ्ग m. dass. Mad. ebend.

विकटाक्ष 1) adj. *Grauen erregende Augen habend:* व्याघ्र Pañkat. 1, 3,68. — 2) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 45,234. 283. 46,39.

विकटानन 1) adj. *einen grossen* oder *scheusslichen Mund habend* Kathâs. 52,77. — 2) m. N. pr. eines der hundert Söhne des Dhṛtarâshṭra (= विकट) MBh. 1,4544.

विकटाभ m. N. pr. eines Asura Hariv. 12698.

विकण्टक (2. वि + क°) 1) adj. *dornenlos.* — 2) m. *Alhagi Maurorum Tourn.* Gaṭṭân. im ÇKDa. *Asteracantha longifolia Ness.* Râǵân. im ÇKDa. — विकण्टकैः MBh. 12,1585 fehlerhaft für विघट्टैः (so die ed. Bomb.) oder विघट्टैः (von Nilak. erwähnte Lesart).

विकण्टकपुर n. N. pr. einer *Stadt* Pañkat. ed. Bomb. IV, S. 20, Z. 5.

विकत्थन (von कत्थ् mit वि) 1) nom. ag. *der da prahlt, Prahler* MBh. 2,2345. 5,1638. 12,3161. Daçak. 2,5. Varâh. Bṛh. S. 75,7. Bṛh. 18,9. Rîǵa-Tar. 2,157. स्व° dass. R. 3,4,28. घ° MBh. 12,2010. 13,100. 2018 (अवि° mit der ed. Bomb. zu lesen). Rag. 14,73. Spr. 1919. 3137. Sin. D. 66. Mirk. P. 118,11. — 2) n. *das Prahlen, Prahlerei* H. 270. Hall. 1,145. MBh. 8,1961. 4,43 in der Unterschr. R. 6,36,75. Daçak. 4,68. Kiṿâs. 2,23. P. 5,1,134, Schol. Buḍ. P. 1,15,19. 3,18,10. यशस्कार्य-प्रतिज्ञान° Kathâs. 62,335. घात्म° Verz. d. Oxf. H. 185,*b*,6. विकत्थना f. dass. MBh. 12,5802. Daçak. 1,43. — Vgl. दुर्विकत्थन.

विकत्था (wie oben) f. *Prahlerei* MBh. 12,5886.

विकत्थिन् (wie oben) adj. = विकत्थन P. 3,2,143. MBh. 5,1718. fg. Bhaṭṭ. 7,11. घ° Spr. 2874.

विकथा f. gaṇa कथादि zu P. 4,4,102. — Vgl. वैकथिक.

विकद्रु m. N. pr. eines Jâdava Hariv. 5138. fgg. 6311. 6574.

विकनिकल्कि n. und विकविकल्कि n. in Verbindung mit प्रज्ञापतेः N. eines Sâman Ind. St. 3,223,*a*. स्किकविकनिक v. l.

विकपाल (2. वि + क°) adj. *der Hirnschale beraubt* Hariv. 3780.

विकम्पन (von कम्प् mit वि) 1) m. N. pr. eines Râkshasa Buḍ. P. 3,10,18. — 2) n. *Bewegung* (der Sonne) Ind. St. 10,274.

विकम्पित (wie oben) n. Bez. *einer best. Senkung des Tones* AV. Prât. 3,65.

विकम्पिन् (wie oben) adj. *zitternd:* विकम्पिकेशर Mirk. P. 63,15.

विकर (von 1. कॄ mit वि) gaṇa उत्कादि zu P. 4,1,86. संकरादि zu 2,80. m. 1) *Krankheit* Çârad. im ÇKDa. — 2) Bez. *einer best. Fechtart* Hariv. 13978. विष्कर die neuere Ausg. — Vgl. वैकर, वैकर्य.

विकरण (wie oben) 1) nom. ag. *eine Veränderung hervorrufend:* घाख्यातपदविकरणाः *diejenigen Wörter und Stellungen, welche ein Verbum finitum verändern* d. i. *das als Regel geltende Unbetontsein desselben aufheben,* Ind. St. 16,412. 420. Insbes. heissen so in der Grammatik (mit oder ohne प्रत्यय) *die zwischen Wurzel und Personalendungen stehenden stammbildenden Suffixe* Pat. zu P. 1,2,21. Schol. zu 3, 1,55. 6,1,193. 7,2,44. 8,4,30, Vârtt. 1. Sidd. K. 10,*b*,1. Verz. d. Oxf. H. 171,*b*,27. fgg. Schol. zu Bhaṭṭ. 7,93. लुग्विकरणात्वात् Schol. zu P. 3,2,142. 145. — 2) m. *a) das Verändern, Modificiren:* उपधाङ्गस्य कुर्वा-न्नेवंविकरणे सति wenn म oder न *einen Wandel erfahren* Ind. St. 4, 206. घर्थ° Nir. 1,3. — *b) störende Einwirkung:* विकरणाभावः कायनि-रूपेताणामिन्द्रियाणामभिमतदेशकालविषयापेतवृत्तिलाभः Sarvadarçanas. 179,4. 8; vgl. Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,21, wo fälschlich विकरणभावः gelesen wird.

विकराल (2. वि + क°) 1) adj. (f. घा) *ungeheuerlich, grauenhaft* Med. t. 55. MBh. 9,2601. मूर्ति Prab. 65,11. Mirk. P. 118,48. प्रस्फारित Pañkat. 218,1. — 2) f. घा Bein. der Durgâ H. ç. 57. Kathâs. 52,159.

विकरालता (von विकराल) f. *scheussliches Aussehen, Grauenhaftigkeit:* ततः प्रस्फारविकरो ऽयं मे ललाट एवं विकरालतां गतः Pañkat. 218,13.

विकरालमुख m. N. pr. eines Makara Pañkat. 205,7.

विकर्ण (2. वि + कर्ण) 1) adj. *a)* etwa *auseinanderstehende Ohren habend* (als gute Eigenschaft eines best. Hausthiers) AV. 5,17,13. — *b) keine Ohren habend, taub* Spr. 3915. — 2) m. *a) eine Art Pfeil* MBh. 7, 7420. 8,3758. Vgl. विकर्णिन्. — *b)* N. pr. eines Mannes P. 4,1,117. 124. MBh. 13,686. ein Sohn Karṇa's Hariv. 1704. Dhṛtarâshṭra's MBh. 1,2447. 2729. 3810. 4543. 4,1151. 5,791. Bhâg. 1,13. — *c)* pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 6,2105. Vgl. विकर्णिक. — 3) f. ई Bez. *einer best.* Ishṭaká TS. 5,3,3,3. Çat. Br. 8,5,4,9-7,3,9. 10,1,3,7. Kâṭ. Çr. 17,7,11. 20. — 4) n. N. eines Sâman TBr. 1,2,4,3. Ait. Br.

4,19. Âçv. Çr. 8,6,16. Lâṭy. 4,7,1. Ind. St. 3,236,b. मृत्योर्विकर्णभासे 229,b. — Vgl. वैकर्ण, वैकर्णि, वैकर्णेय.

विकर्णक m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâyu beim Schol. zu H. 210.

विकर्णिक m. pl. N. pr. eines Volkes, = काश्मीर H. 958. — Vgl. विकर्ण 2) c).

विकर्णिन् m. *eine Art Pfeil*, = विकर्ण MBu. 7,6488. R. 3,31,24. 34, 10. 56,37. 6,20,26. 73,47. — Vgl. कर्णिन् 1) c).

विकर्त (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. s. गो°.

विकर्तन (wie eben) 1) adj. *zerschneidend, zertheilend* Nir. 2,22. 6,30. — 2) m. a) *die Sonne (Zertheiler des Gewölks;* vgl. jedoch ṚV. 10, 85, 23) AK. 1,1,2,21. H. 97. Halâj. 1,33. Ganit. Grahâjanâḍh. 9. Uttarar. ed. Cow. 124,1 (विकर्तन die ältere Ausg.). Râǵa-Tar. 4,101. — b) *ein Sohn, der des Vaters Herrschaft an sich reisst*, Çabdârthak. bei Wilson. — 3) n. *das Zerschneiden, Zertheilen* Nir. 2,22. 3,21. 6,26. — Vgl. अधि°.

विकर्तृ (von 1. कर् mit वि) nom. ag. 1) *Umwandler, Umbildner* Çat. Br. 13,3,6,1. Pañkav. Br. 9,10,3. Pân. Gaṇ. 3,1. एष कर्ता विकर्ता च MBu. 3,12832. वै हि कर्ता विकर्ता च भूतानामिह सर्वशः 13503. 9,3529. 13,6990. Hariv. 12261, 12312. — 2) *der feindselig verfährt, Beleidiger* MBu. 3,1385 (निकर्तृ ed. Bomb.). R. 1,21,10.

विकर्तृ (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. s. गो°, welches Nîlak. sehr ungeschickt auf folgende Weise erklärt: गोविकर्ता गवां मरुतां बलीवर्दानामपि विकर्ता दमनेन विकृतिनेतृकः वृषभान्वा मरुद्बलान्नियन्तोप्यामीत्युपक्रमात्. Die ed. Bomb. schreibt, wie man sieht, richtig विकर्तृ, während sie im nom. ag. von 1. कर् das त nicht verdoppelt.

1. विकर्मन् (2. वि + क°) n. 1) *eine Einem nicht zukommende, unerlaubte Beschäftigung, — Handlung:* कर्मन्, विकर्मन्, अकर्मन् Bhag. 4, 17. Bhâg. P. 11,3,43. 45. पतनीयेषु विकर्मसु MBu. 3,14075. 5,2139. 12, 2277. 2289. 13,1645. 3450. 4531. Paṇḍaçâkhtrud. 30, a, 5. Bhâg. P. 3,14, 30. 5,5,4. 18,3. विकर्मक्रिया M. 9,226. विकर्मकृत् 8,66. Kathâs. 52,134. विकर्मनिरत Bhâg. P. 3,9,17. 10,70,26. विकर्मस्थ M. 4,30. 9,314 (= MBu. 13,3122). 225. 11,192. MBu. 3,12841. 13728. 5,797. 7,8848. 12, 2879. 2884. fg. 13,6209. Hariv. 11161. Kathâs. 52,113. Mârk. P. 31,29. — 2) वायोर्विकर्म N. eines Sâman Ind. St. 3,235, a.

2. विकर्मन् (wie eben) adj. 1) *einer Einem nicht zukommenden, unerlaubten Beschäftigung nachgehend:* विकर्माणश्च ये केचित्तान्युनक्ति स्वकर्मसु MBu. 3,13727. 12,2359. — 2) *sich jeglicher Beschäftigung enthaltend, nicht arbeitend* MBu. 13,341.

विकर्मिन् adj. = 2. विकर्मन् 1) MBu. 13,6201.

विकर्ष (von 1. कर्ष् mit वि) m. 1) *das Anziehen* (des Pfeils mittels der Sehne) R. 6,69,33. — 2) *das Auseinandersiehen, Zerlegen* (der Halbvocalverbindungen und dergl.) ṚV. Prât. 17,30. fg. Nidânas. 1,13 in Ind. St. 8,84. — 3) *Entfernung* Gobh. 1,5,7. Nir. 3,9. — 4) *Pfeil* Taitt. 2,8,53.

विकर्षण (wie eben) 1) nom. ag. a) *auseinandersiehend, spannend:* मरुच्चाप° MBu. 2,1527. — b) *fortnehmend, entfernend:* कालः पुंसो गुणविकर्षणः Bhâg. P. 1,13,26. गुरुमाधिविकर्षणम् 10,42,12. — 2) nom. act. a) *das Auseinandersiehen, Auseinanderrecken* MBu. 1,7109. 2,915. 4,356. Suçr. 1,25,16. Bhâg. P. 10,18,12. अङ्ग° Spr. 1885. *das Spannen* (des Bogens, der Bogensehne) MBu. 3,1357. 4,1386. Hariv. 4038 (mit der neueren Ausg. चापविक° zu lesen). R. Gorr. 1,69,15. Kir. 3,57. *das Anziehen* (eines Strickes) 4,15. — b) *das Auseinanderlegen:* पांसु° Bez. eines best. Kinderspiels MBu. 1,4279. *das Vertheilen:* वेद° Bhâg. P. 3,7,29. — c) *das Hinausschieben des Essens, Enthaltung von Speise* MBu. 13,1037. — d) *das Auseinanderthun* so v. a. *Ausforschen:* दूतेन नरेन्द्रस्तु कुर्वीतारिविकर्षणम् Kir. Nîtiç. 12,24.

विकल 2. वि + कला) 1) adj. (f. आ; nach gaṇa गौरादि zu P. 4,1, 41 विकलीं) *woran Etwas fehlt, mangelhaft, unvollkommen;* = विद्धल Gaṇar. im ÇKDr. = स्वभावहीन Bhâs. ebend. von *Krüppeln* MBu. 1, 1943. 6,4964. R. Gorr. 2,32,35. Spr. 1113. 1357 (II). 1590. 2518. Vaitân. Bhp. S. 5,38. 45,13. 95,7. Bhp. 18,6. Kathâs. 27,173. Mârk. P. 23, 109. 29,28. von Theilen des Körpers: °दर्शन Vaitân. Bhp. 18,13. °नयन 20,1. विकलेतरा 2. विकलेन्द्रिय M. 8,66. Jâtâ. 2,70. MBu. 7,6397. °करण Uttarar. 13,4 (18,1). 52,13 (68,3). दृष्टिर्गाढनिमीलिता न विकला नाभ्यन्तरे चञ्चला (मुक्तस्य) *nichts Unnatürliches zeigend* Mṛicch. 48, 23. मृतियुगले पिकरुतविकले *ermüdet, mitgenommen* Gît. 12,7. नष्टक्षीणविकलविकृतस्वरता Suçr. 1,118,8. अधिकविकलं द्रुपम् Daçarûp. 72,12. °रश्मि *schwach, unvollkommen* Spr. (II) 1168. किरणाः Vaitân. Bhp. S. 30,9. पर्जन्य Spr. 1737. आद्य *mangelhaft* Mârk. P. 97,33. बला Spr. (II) 1360. *vorübergehend unwohl, geistig niedergedrückt, in schlimmer Lage seiend* MBu. 5,3695 (विद्धल ed. Bomb.). Gît. 5,3 (विकलतर). 9,8. विषाद° Kathâs. 78,32. Brahma-P. in LA. (III) 53,7. तथा पुत्रभार्यादिषु विकलेषु सकलेषु वास्मैव विकलः सकलो वेति बाह्यधर्मानात्मन्यध्यस्यति Nîlak. 13. das, woran es Einem mangelt, steht im instr. oder geht im comp. voran (ein solches comp. ist ein Oxytonon nach P. 6,2,153): माषेण *woran ein Mâsha fehlt* P. 2,1,31, Schol. एकाङ्गेनापि विकलमेतत्साधु न वर्तते (राष्ट्रम्) Kâm. Nîtiç. 4,2. पुच्छ° *am Schwanze verstümmelt* Spr. 729. पत्त° *flügellahm* 1662. एकाक्षि°, पाद°, हस्ताद्यङ्ग° Kull. zu M. 8,274. माष° Schol. zu P. 2,1,31. 6,2,153. प्रसूति° *kinderlos* Çiç. 152. कालङ्ग° *fleckenlos* Spr. 2708. कुलकुशलशील° 3239. श्रवणविकलं नेत्रयुगलम् 4965. त्रिगुणज्ञान° Verz. d. Oxf. H. 89,a,25. कार्याकार्यविवेक° Sarvadarçanas. 78,13. वक्तृशक्ति° Kâç. zu P. 8,4,8. अविकल (s. auch bes.) *dem Nichts fehlt, vollkommen, vollständig* Kathâs. 29,24. Vaitân. Bhp. S. 2, Anf. 53,68. °पार्श्व 68,19. इन्द्रियाणि Spr. 1019. पुंस् *Seele* Bhâg. P. 7,2,24. °वृत्तः परिवेषः Vaitân. Bhp. S. 34,4. पक्ष Maitrâjup. 1,1. वाक्य MBu. 12,11943. अविकलं कृत्वा वर्णविन्यासम् *vollständig* Kathâs. 24,91. त्रयी Vaitân. Bhp. S. 19,11. फल 38,8. फलानामविकलदाता = अविकलफलदाता Bhp. 17,13. कल्याणिता Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Cl. 1. राज्य Bhâg. P. 2,4,2. — 2) m. N. pr. कलविकलवध (unter कलविकल in den Nachträgen कलविकल als ein Name gefasst) Verz. d. Oxf. H. 79,a,9. ein Sohn Çambara's Hariv. 9253. Lambodara's Bhâg. P. 12,1,22. Gîmûta's VP. 422, N. 22. — 3) f. आ a) *eine Frau, die nicht mehr menstruirt*, Çabdar. im ÇKDr. — b) *Secunde* Weber, Gjot. 106. Sûrjas. 1,23. 7,10. Ganit. Spashṭâdh. 67, Comm. 77. = 6 Prâṇa = $^1/_{60}$ Daṇḍa VP. 23, N. 3. — c) Bez. *eines best. Stadiums im Laufe des Mercur* Vaitân. Bhp. S. 7,15. fg. Ind. St. 10,

208. — 4) f. ई *eine Frau, die nicht mehr menstruirt*, Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. वैकल्य und सकल.

विकलता (von विकल) f. *Mangelhaftigkeit:* चतुर्विकलता *Krankheit der Augen* MBh. 1,8102. उन्मना विकलतां प्राप्नोति *ein krankhafter Zustand, Mangel an vollem Bewusstsein* Spr. (II) 615.

विकलत्व (wie eben) n. *Gebrechlichkeit* Suçr. 1, 352, 16. 353, 8. *Mangelhaftigkeit, Fehlerhaftigkeit:* दृष्टान्तस्य साधनविकलत्वात् *da der Vergleich ein mangelhafter Beweis ist* Sarvadarçanas. 48, 5.

विकलपाणिक adj. *eine lahme Hand habend* Halâs. 2, 455.

विकलाङ्ग adj. *der an irgend einem Theile des Körpers ein Krüppel ist* AK. 2, 6, 1, 46. H. 435. Halâs. 2, 282. MBh. 1, 1469. Varâh. Bṛh. S. 16, 35.

विकलीकर् (विकल + 1. कर्) *Jmd krank machen, mitnehmen* Gîv. 12, 8.

विकल्प (von कल्प् mit वि und 2. वि + कल्प) 1) m. = कल्पन, संधत्ति Man. p. 23. = धारणा, शङ्का, वितर्क u. s. w. Halâs. 4, 6. Am Ende eines adj. comp. f. या. a) *Wechsel, Wahl zwischen Zweien oder Mehreren, Zulässigkeit des Einen und Andern:* स्थानामनयोः Âçv. Çr. 1, 12, 3. 2, 2, 12. 3, 2, 14. विकल्पे प्रवृत्तम् *wo die Wahl ist, da geht das Angefangene weiter* Kâty. Çr. 1, 4, 14. संख्या° 8, 20. 4, 3, 25. Kâç. 63. विकल्पः शेषेण वा Çâṅkh. Çr. 7, 10, 8. दण्ड° *eine beliebige Strafe* M. 9, 228. Sûçr. 2, 560, 10. Varâh. Bṛh. S. 80, 79. वेति विकल्पः Schol. zu P. 1, 1, 44. 2, 4, 29. 8, 1, 91. AK. 3, 4, 29 (30), 4. 3, 3, 3. Trik. 3, 4, 6. Halâs. 5, 87. अनुनासिक° Schol. zu P. 6, 3, 76. विकल्पेन *nach Belieben* Çaut. 2. Bhâg. P. 7, 12, 11. व्यवस्थित *eine bedingte Zulässigkeit des Einen oder Andern* Schol. zu Kâty. Çr. 173, 8. 252, 4. 700, 14. zu P. 6, 4, 28. zu AV. Paiṅg. 4, 27. Dîpânn. 109, 9. ऐच्छिक *eine unbedingte* ebend. विकल्पस्तुल्यबलयोर्विरोधशास्त्रीयुतः *Alternative* Sin. D. 738. विरोधस्तुल्यबलयोर्विकल्पालंकृतिर्मता Pratâpar. 100, *a*, 3. संगमविरहविकल्पे Spr. 3101. Sarvadarçanas. 13, 1. 16, 3. °ज्ञाल *eine Menge denkbarer Fälle* 30, 3. पञ्च° 132, 16. 143, 3. — b) *Variation, Combination, Verschiedenheit, Mannichfaltigkeit:* द्वादशाक्ष° Kâty. Çr. 24, 7, 11. कार्तयज्ञे त्रयो विकल्पाः Lâṭy. 7, 10, 13. Suçr. 1, 5, 15. 14, 3. असंख्येयविकल्पत्वाच्छस्त्यानाम् 25, 20. 129, 4. 160, 14. योऽयमेके द्रव्यगणे चतुर्विकल्पेन भिद्यमानानाम् । षट्त्रिंशद् ज्ञायन्ते शतानि सप्तति विंशत्या ॥ Varâh. Bṛh. S. 77, 20. fgg. Bṛh. 12, 1. 13, 4. नामसंयोगानां चत्वारो विकल्पाः । तत्राकृतियोगा एको विकल्पः । आकृतियोगाः संख्यायोगाश्च विकल्पद्वयम् u. s. w. Utpala zu 12, 1. ग्राम्यमाणां विकल्पाश्च MBh. 12, 2441. विकल्पा द्यापदाम् 15, 245. मायाविकल्परचितैः स्वप्नैः Ragh. 13, 75. 17, 49. Mâlav. 29. Spr. 1012. Bhâg. P. 1, 17, 19. °रहित 6, 8, 30. 8, 12, 8. Verz. d. Oxf. H. 56, *a*, 26. घ° adj. Bhâg. P. 3, 9, 3. Weber, Râmây. Up. 349. षष्ट° *achtfältig* Sâṅkhyak. 53. Tattvas. 45. षष्टाविंशतिविकल्पा (शक्तिः) Gaudap. zu Sâṅkhyak. 49. अनेक° *mannichfaltig* Daçak. 63, 16. विकल्पाः Bhâg. P. 2, 9, 26 nach dem Comm. so v. a. विविधाः सृष्टयः. — c) *Nebenform:* कोरित्यकोरात्रविकल्पमेके वाङ्मात्रं पूर्वापरवर्णलोपात् Varâh. Bṛh. 1, 3. — d) *Verschiedenheit in der Auffassung, Unterscheidung:* धर्म° Nyâyas. 1, 1, 55. Bhâg. P. 6, 17, 30. 7, 13, 61. — e) *Unschlüssigkeit, Unentschlossenheit, Zweifel* MBh. 14, 1028. Ragh. 17, 49. Spr. 381 (II). 889. विकल्पो ऽत्र न कर्तव्यः 1622. 4591. Kathâs. 39, 137. 45, 62. 216. 46, 185. 72, 168. Gîv. 6, 11. Râǵa-Tar. 3, 219. Nîlak. 46. Bhâg. P. 3, 26, 27. 6, 9, 35. 7, 13, 42. 8, 20, 7. Vedântas. (Allah.) No. 47. Pañkat. 71, 20. Sarvadarçanas. 22, 20. 23, 3. 44, 12. 70, 19. 148, 17. घ° *sich nicht lange bedenkend* Kathâs. 24, 65. Pañkat. 88, 6. अविकल्पम् adv. *ohne sich zu bedenken* 45, 1. — f) *das Annehmen, Statuiren:* यत एतस्याः सप्तद्वीपविशेषविकल्पस्त्वया भगवन्ह्यनु सूचितः Bhâg. P. 5, 16, 2. — g) *falsche Vorstellung, Einbildung* Jogas. 1, 6. शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः 9. किमलयतत्त्वं गणयति विक्षिप्तकुताशविकल्पम् Gîv. 4, 15. Wassiljew 305 u. s. w. — h) *Berechnung:* बलाबल° Varâh. Bṛh. 24, 6. — i) *geistige Beschäftigung, das Denken* H. 1370, Schol. — k) *Zwischen-Kalpa, der Zeitraum zwischen zwei Weltperioden* Bhâg. P. 2, 8, 12. 10, 46. 3, 14, 11. — l) *ein Gott* (nach dem Comm.) Bhâg. P. 10, 85, 11. — m) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 366 (VP. 192) nach der Lesart der ed. Bomb. विकल्प्य ed. Calc. — 2) adj. *an dem eine Verschiedenheit wahrzunehmen ist:* फले विकल्पाः so v. a. *verschiedenen Lohnes theilhaftig werdend* Bhâg. P. 8, 9, 28. — Vgl. निर्विकल्प, स°, वैकल्पिक.

विकल्पक 1) nom. ag. vom caus. von कल्प् mit वि. a) *Vertheiler, Austheiler:* पक्वान्नलेह्यपानानां मांसानां च MBh. 3, 8451. — b) *Verfertiger, Zusammensetzer, Bildner:* षडशीतिश्च तस्यापि (d. i. याज्ञवल्क्यस्य) संहितानां विकल्पकाः Verz. d. Oxf. H. 55, *a*, 9. 33. *b*, 28. — 2) am Ende eines adj. comp. von विकल्प. घ° *der sich nicht lange bedenkt* MBh. 18, 226; vgl. निर्विकल्पक, स°.

विकल्पन (vom caus. von कल्प् mit वि) 1) nom. ag. *Verfertiger, Zusammensetzer, Bildner:* श्रेष्ठा कृष्णवर्णो स्रोते संहितानां विकल्पनाः Verz. d. Oxf. H. 55, *b*, 29. — 2) n. und f. या nom. act. a) *das Feststellen, der-Wahl-Ueberlassen* Kâr. zu P. 8, 3, 31 (n.). वाशब्दो ऽत्र चार्थे न विकल्पने Utpala zu Varâh. Bṛh. 23, 5. कालविकल्पना Pañkat. 3, 11, 12. — b) *Gebrauch einer Nebenform* Utpala zu Varâh. Bṛh. 1, 3 (f.). — c) *das Unterscheiden* Kuṭṭan. 39, 14 (n.). संकल्पः प्रत्युपस्थितविषयविकल्पनं शुक्लनीलादिभेदेन Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 286. परिग्राह्यमुकुमुनामेकस्यां प्रमदातनौ । कृपणः कामिनी भद्रय इति तिस्रो विकल्पनाः *verschiedene Auffassungen* Sarvadarçanas. 13, 6. 7. — d) *falsche Vorstellung, — Annahme, Einbildung:* माया लोकसृष्टिविकल्पना Bhâg. P. 10, 28, 6. — Vgl. निर्विकल्पन.

विकल्पनीय (wie eben) adj. *zu bestimmen, zu berechnen, auszumitteln* Varâh. Bṛh. 10, 1. 14, 3.

विकल्पवत् (von विकल्प) adj. *einen Zweifel habend, unschlüssig seiend* Vedântas. (Allah.) No. 85.

विकल्पसम m. Bez. *einer best. sophistischen Einwendung* Nyâyas. 5, 1, 1. 4. Sarvadarçanas. 114, 10.

विकल्पानुपपत्ति f. *die durch ein Dilemma hervorgehende Unhaltbarkeit* Sarvadarçanas. 13, 19. 70, 22. 101, 7. 105, 11. 110, 12. fg. 116, 19. 142, 11. 152, 17.

विकल्पासह adj. *ein Dilemma nicht aushaltend, durch ein Dilemma sich als unhaltbar ergebend;* davon nom. abstr. °त्व n. Sarvadarçanas. 11, 20. fg. 23, 17. 119, 6. 127, 21. 141, 12. 156, 1.

विकल्पिन् (von विकल्प) adj. *was man verwechseln kann, zum Verwechseln ähnlich:* नीलाशोकविकल्पिकेशनिकरः so v. a. *bei dem man die blauen Açoka-Blüthen als Kopfhaar ansehen könnte* Ṛt. 6, 34, v. l.

विकल्प्य (vom caus. von कल्प् mit वि) adj. 1) *zu vertheilen, einzutheilen* Vaśiṃ. Bṛn. S. 87,18. — 2) *zu bestimmen, zu berechnen* Vaśiṃ. Bṛn. S. 24,10. Bṛn. 23,18. 26,3.

विकल्मष (2. वि + क°) adj. (f. घा) *sündlos* R. 2,29,16.

विकल्य m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 366 (VP. 192). विकल्प ed. Bomb.

विकवच (2. वि + क°) adj. *panzerlos* MBh. 6,3237. 8,4096. Harıv. 13362. R. 2,34,19.

विकविकादिक s. विकंकिकादिक.

विकश्यप adj. *ohne Kaçjapa's vor sich gehend:* पक्ष Ait. Br. 7,27.

विकश्मार adj. = विकस्वर Bhar. zu AK. 3,1,30.

विकषा = विकसा = मञ्जिष्ठा Rājan. zu AK. 2,4,3,9. = मौसेरोहिणी Riśkan. im ÇKDa.

विकषार adj. = विकस्वर Bhar. zu AK. 3,1,30.

विकस 1) m. *der Mond* Taik. 1,1,37. — 2) f. घा *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) Roxb. AK. 2,4,3,9.

विकसन (von कस् mit वि) n. nom. act. विकसने in Verbindung mit 1. कृ gaṇa सादादि zu P. 1,4,74.

विकसुक (wie oben) adj. *berstend*, Beiw. des Agni AV. 12,2,13.

विकस्ति (wie oben) f. *das Bersten* TS. 5,4,3,7.

विकस्वर (wie oben) adj. (f. घा) *offen* so v. a. *aufgeblüht* Taik. 2,4,3. Çiç. 4,33. केसरपुष्प Knandom. 113. °चरणापद्म Verz. d. Oxf. H. 199, *a*, 16. *geöffnet*, von Augen: दृष्टिर्नृपालोकविकस्वरा Kathās. 18,18. पृथुप्रफुल्लोचनानि 54,53. vom Munde 108,120. Spr. 2668. *offen*, von Menschen AK. 3,1,30. H. 350. vom Tone so v. a. *klar ertönend* Daçak. 8,2. Bez. einer best. Redefigur Kuvalay. 126, *a*.

विकस्वरूप (!) m. N. pr. eines Mannes Saṃsk. K. 184, *a*, 10.

विकाकुद् (2. वि + काकुद्) adj. P. 5,4,146.

विकाङ्क्ष (2. वि + काङ्क्ष) adj. *kein Verlangen habend* MBh. 14,589.

विकाङ्क्षा (von काङ्क्ष् mit वि) f. *das Anstehen, Bedenken, Unschlüssigkeit:* दुःखोपायस्य मे वीर विकाङ्क्षा (= विसंवादः Nīlak.) परिवर्तते MBh. 7,2835. म मे विकाङ्क्षा (= इच्छाभावः Comm.) ज्ञायेत त्यक्तुं तौ पापनिश्चयाम् R. 2,73,16. कार्ये तद्विकाङ्क्षया 82,23.

विकाम (2. वि + काम) adj. *frei von Begierden* Vaśiṃ. Bṛn. 19,7.

1. विकार (von 1. कृ mit वि) m. *am Ende eines adj. comp.* f. घा. 1) *Umgestaltung, Umwandlung, Veränderung, Modification, Abart, veränderter —, abnormer Zustand;* im Ritual *die gestatteten Abänderungen der Grundform* (प्राकृतेष्वेव विशेषविधयो विकारा उच्यन्ते Comm. zu Âçv. Çr. 3,7,19); = विकृति, परिणाम AK. 3,3,15. Taik. 3,3,271. H. 1518, Schol. H. an. 3,502. Mān. r. 219. — Âçv. Çr. 2,1,34. तक्र° 14, 14. नित्या नैमित्तिका विकाराः 3,1,13. 7,19. प्रकृतेः Çiṅkh. Çr. 14,1,1. 4,6,6. 6,1,4. Kāty. Çr. 5,5,26. 6,7,22. वर्ण° Lāṭy. 7,11,19. 21. भाव° Nir. 1,2. 3. ṚV. Prāt. 2,2. 10,7. 11,21. 17,28. VS. Prāt. 1,133. 140. 4,22. 169. fg. TS. Prāt. 1,28. 56. Kaṇ. 2,2,29. वह्नेर्विकाराः समन्तात् *eine Veränderung an* MBh. 1,8141. घर्क° Vaśiṃ. Bṛn. S. 30,30. संध्या° 32,26. देव° *an einem Götterbilde* 46,13,17. वृष्टि° 46. 51. 72. 54,56. चन्द्रमाः सर्वविकारकोशः Bulg. P. 2,1,34. Gegens. स्वभाव MBh. 3,17113. R. 5,94,6. धनेः AK. 1,1,5,13. H. 1410. नेत्रवक्त्रविकाराः Spr. 848 (II). 2754. नयनभ्रूविकाराः R. 1,9,13 (14 Gorr.). मुख° Kumāras. 7,95. Pañcat. 287,22. वक्त्र° Vaśiṃ. Bṛn. S. 104,15. वक्त्रस्य 86. धूनेत्रादि° Sin. D. 127. गतिचेष्टा° R. 4,1,28. कटाक्षोष्ठ° 5,24,11. विकाराः सत्त्वा यस्य कुर्यक्रोधभयादिषु भावेषु नोपलभ्यते Cit. beim Schol. zu Çiç. 13,12. विधेर्हि मरालविकारम् *so v. a. nimm den dir sonst ungewöhnlichen Gang des Flamingo an* Gīt. 11,3. *Verwandlung, Gespenstererscheinung:* घण्टावेताल° Kathās. 18, 181. °घोरा 25,133. वसन्तकविकाराः Vasantaka's *Extravaganzen, ungewöhnliche Späße* 16,46. — 2) *Erzeugniss* P. 4,3,134. Kāṭyān. Up. 6,1, 4 = Vaḍḍhyūs. (Allah.) No. 121. सुरा° *was aus Surā bereitet wird* Suçr. 1,70,10. इक्षु° 137,2. 161,3. 229,1. यवान्न° 2,79,1. MBh. 8,2060. Vaśiṃ. Bṛn. 8,12. AK. 2,9,43. घृतस्य 99. H. 1039. P. 4,1,42, Schol. Mārk. P. 34,58. °भूत Kiç. zu P. 4,2,12. Vop. 7,19. भक्ष्यविकाराः *zubereitete Speisen* MBh. 13,21. — 3) pl. im Sāṅkhja *die 16 Derivate aus den 8 Prakṛti*, nämlich *11 Organe* (इन्द्रियाणि) *und 5 Elemente* (भूतानि) Sāṅkhjak. 3. Tattvās. 13. 16. Ind. St. 2,69. 9,17. Bhāg. 13,6. 19. MBh. 12,11552. Harıv. 14073 (विकाराश्च die neuere Ausg.). Suçr. 1,311,3. — 4) *die abgeleitete Form* (eines Wortes): धनान्विते ऽर्थे ऽप्रादेशिके विकारे Nir. 2,1. — 5) *Veränderung im normalen Zustande des menschlichen Körpers, Indisposition, Affection;* = रोग Taik. H. an. Med. Suçr. 1,5,7. 14,3. 23,10. 30,19. 34,15. 96,2. शिरसः 2,377,6. 186,4. 189,20. 307,16. 399,20. (विषम्) तल्लीनमविकारेण MBh. 3,541. R. 5,31,40. सान्निपातिक Kumāras. 2,48. षड्ङ° P. 2,3, 20. मोहादिविकारकारिन् Kull. zu M. 3,10. स्वाङ्गमविकारजम् Kār. zu P. 4,1,54. °व्रण Vop. 4,17. प्रहार° *eine durch einen Schlag bewirkte Wunde* Pañcat. 218,13. — 6) *Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung*, insbes. *Liebesregung:* विकारो मानसो भावः AK. 1,1,3,21. Halāy. 1,90. मनसः Çiç. 190. Spr. 5149. विकारं याति नो चित्तं विते कदा च न 4987. पद्मादिषु प्रबोधसंमीलनविकारवत्तद्विकारः d. i. आत्मविकारः Nīlak. 3,1,20. न च तौ चक्रतुः कंचिद्विकारम् (so ist wohl zu lesen) MBh. 13,2761. 2802. 3,2930. 2947. 2951. R. Gorr. 2,15,6. क्रूतेच्छाविकारसंवरणं षड्विधं कृत्वा Mṛcch. 30,19. Kumāras. 1, 60. Çiç. 66,4. Spr. 1123 (II). Bulg. P. 2,3,24. Sin. D. 51,4. 164. चित्तव्याधि° Spr. 4544. मन्मथ° Einl. zu Kādamb. मान्मथ Spr. 1103 (II). मन्मथ 2006. मन्मथव्यथा° Mīrāt. 14,8. Mārk. P. 17,2. रतिपरिरम्भणावलितविकारा Gīt. 7,14. Sin. D. 99. स° *verliebt* Gīt. 2,11. fg. — 7) *Wandel der Gesinnung, feindliche Gesinnung, Auflehnung, Abfall:* उपाध्यायेषु भृत्येषु भक्तेषु — ये त्वत्रास्त्यविकारास्ते वै निरयगामिनः MBh. 13,1650. Kathās. 50,119. विकारं याति पुत्रो हि Kām. Nītis. 9,54. Rāja-Tar. 8,21. — Vgl. घ°, घ्न° (in der Bed. *eine präparirte Speise* P. 5,1,2, Vārtt. 4), चित्त°, चेतो°, तमो°, निर्विकार (fügt *nichts Abnormes hinzu* und die Stellen Vaśiṃ. Bṛn. S. 44,28. Kathās. 33,3. Prab. 8,15. Schol. zu Çiç. 8,12 hinzu), धू°, रोग°, वात°, स°, विकृति und विक्रिया.

2. विकार m. *die Silbe* वि Bulg. P. 6,6,7.

विकारत्व n. nom. abstr. von 1. विकार Comm. zu Nirukt. 2,2,12. सुवर्ण° Çaṅk. zu Kulārn. Up. S. 60. घ्न° Vaḍḍhyūs. ed. 1829 S. 12,18. fg. (°विकारित्व bei Ballant.).

विकारमय (von 1. विकार) adj. *aus den Derivaten* (im Sinne des

Sāṁkhja) *bestehend* Weber, Rāmat. Up. 324.

विकारवत् (wie eben) adj. *Veränderungen zeigend:* मूर्तित्रय° *drei verschiedene Gestalten annehmend* Verz. d. Oxf. H. 75, *b*, 40. अ° *keine Wandelungen zeigend, stets sich gleich bleibend* Kāś. Nīti. 5, 3.

विकारिता (von विकारिन्) f. अ° *Unwandelbarkeit, Beständigkeit* Kāś. Nīti. 2, 30.

विकारित्व (wie eben) n. *Wandelbarkeit, Veränderung:* अप्र° Vedānt. (Allah.) No. 73. अ° *Unwandelbarkeit, Beständigkeit* Bhāg. P. 3, 26, 22.

विकारिन् (von 1. कृ mit वि oder von 1. विकार) 1) adj. *a) dem Wandel unterworfen, wandelbar, veränderlich, wechselnd* VS. Prāt. 1, 141. Sūçr. 2, 150, 3. मनस् MBh. 3, 13446. आत्मन् Schol. zu Kap. 1, 7. Prāṇ. 111, 16. Çiva. 95. यद्विकारिन् *worin sich umwandelnd* Bhag. 13, 3. यौवन *Gemüthsveränderungen —, der Liebe zugänglich* Mālatīm. 11, 10. *seine Gesinnung ändernd, untreu werdend, abtrünnig* Spr. 2758. mit gen. der Person Kathās. 17, 60. अ° *unwandelbar, unveränderlich:* सत्य MBh. 12, 8979 (यविकारितम्. 8986. Pāt. in Mahābh. S. 104. Mārk. P. 23, 40. Bhāg. P. 2, 29, 20. 7, 2. कङ्कमुखं प्रधानं स्थानेषु सर्वेषविकारि *ohne Aenderung aller Orten brauchbar* Sūçr. 1, 26, 9. so v. a. *keine Miene verziehend* Kathās. 16, 43. *treu bleibend, nicht abfallend* M. 7, 190. — *b) mit einer Affection behaftet, nicht normal* Sūçr. 1, 202, 13. चेतो ऽन्या गौर्वा विकारी भवति 324, 2. Vaṁç. Bṛh. S. 53, 121. — *c) eine Veränderung bewirkend, afficirend, entstellend:* सद्धित्तविकारिणी Spr. 3142. — 2) m. und n. Bez. *des 55ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vaṁç. Bṛh. S. 8, 39. Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 1. Weber, Gjot. 99. — Vgl. चेतो°, वात°.

विकार्य 1) adj. *was umgewandelt wird;* s. u. कर्मन् 6) *b*). अ° *unwandelbar, unveränderlich* Bhag. 2, 25. — 2) m. Bez. des Ahaṁkāra Bhāg. P. 2, 5, 30. विविधं कार्यमस्येति विकार्यो ऽहंकारः Comm.

विकाल (2. वि + काल) m. *Abend* H. 140. Śiv. 5, 52 (कि कालं MBh. ed. Calc. 3, 16830. विकालम् ed. Bomb.). Spr. 4347. R. Gorr. 2, 108, 9. Mārk. P. 35, 30. Pāṇḍ. V, 74. 238, 9. °चर्य Vishṇ. 70.

विकालक 1) m. dass. Taitt. 1, 1, 103. — 2) f. विकालिका *eine Art Wasseruhr* Taitt. 1, 1, 121.

1. विकाश (von काश् mit वि) m. *heller Schein:* शारदिशशीतरश्मिशत-साध्यविकाशकार Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 12, Cl. 44. विकाशः केषाचित् (जलमुचाम्) — विद्युदुदयैः Rājat.-Tar. 8, 1558. = प्रकाश Med. ç. 28. = व्यक्त H. an. 3, 727. = विज्ञन Med. = रूप H. an. — Vgl. वीकाश.

2. विकाश ungenaue Schreibart für विकास.

विकाशक, विकाशन und विकाशिता s. विकासक u. s. w.

1. विकाशिन् (von काश् mit वि) 1) adj. *a) glänzend, leuchtend:* चक्रं चन्द्रविकाशि Spr. 2696, v. l. — *b) erhellend, erklärend:* पिङ्गलसारविकाशिनी Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 197, *a*, No. 457. — 2) f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2636.

2. विकाशिन् s. विकासिन्.

1. विकाशिन् adj. von कश् mit वि P. 3, 2, 142.

2. विकाशिन् adj. = विकासिन् Bhaṭṭ. zu AK. 3, 1, 30 nach ÇKDr.

विकास (von कस् mit वि) m. 1) *das Erblühen, Aufblühen* Halāy. 2, 22. Spr. 337 (II). 2334. Çiç. 9, 41. Gīt. 1, 30. 2, 20. zu Kumāras. 3, 26. अविकासाभाव Kumāras. 3, 29. — 2) *das Sichöffnen:* नेत्र° Vaṁç. Bṛh. S. 58, 11. Śiv. D. 237. अनर्कासविकाशमुख Pañcat. 187, 1. 2. दृष्ट्वा सविकाशया Kathās. 10, 89. चेतो° *das Sichöffnen des Herzens* so v. a. *heitere Stimmung* Śiv. D. 75, 20. Çiç. 9, 41. मनस् Daçar. 4, 41. — 3) *Ausbreitung, Entfaltung* (Gegens. संकोच) Gīt. 11, 24. 12, 20. Çiç. 9, 53. Bhāg. P. 3, 7, 21. Mārk. P. 46, 12. Sarvadarçanas. 83, 4. ज्ञानशक्तिविकासानाम् Çaṁk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 171. दोष° Vikr. 35, 3. अकेकृति° Bilh. 10. — Vgl. निर्विकास, वैकासेय.

विकासक (vom caus. von कस् mit वि) adj. *öffnend:* बुद्धिविकासक *den Verstand öffnend, klug machend* Dhūrtas. 90, 11.

विकासन (wie eben) adj. *zum Aufblühen bringend:* सम्भोहरूविकासनपटिष्ठ Verz. d. Oxf. H. 170, *b*, No. 380, Z. 5. 6.

विकासिता (von विकासिन्) f. *Ausbreitung, Entfaltung:* संकोचविकासितया Çaṁk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 112.

विकासिन् (von कस् mit वि oder von विकास) adj. 1) *blühend* Spr. 660. Kṛishṇ. 51. 77. Pāṇḍ. 3, 5, 2. वत्स्यशाखिनः पत्रावलीः Rājat.-Tar. 8, 1567. चन्द्र°, सूर्य° H. 1163, Schol. — 2) *geöffnet, offen:* ईषद्विकासि नयनम् Śiv. D. 228. Daçar. 4, 70. घोणा Pāṇḍ. 3, 5, 20. von einem Menschen AK. 3, 1, 30. H. 350. — 3) *sich ausbreitend, — entfaltend:* ब्रह्मन् Spr. 1012. °पुण्यमति Verz. d. Oxf. H. 110, *a*, No. 173, Cl. 4. — 4) *eine grosse Ausdehnung habend, gross:* श्री Spr. 45, v. l. (II.). लक्ष्मी 4947. नृपतिसंपदः Kāś. Nīti. 5, 37. *reich an:* तस्य (eines Fürsten) नित्याप्रानलक्ष्मीविकासिनः प्रभवश्चामिताः Rājat.-Tar. 8, 1567. — 5) *den Zusammenhang aufhebend, lösend* (daher *lähmend*), z. B. als Eigenschaft geistiger Getränke und Gifte, durch welche die Glieder unbrauchbar werden, Sūçr. 2, 253, 16. 21. 477, 4. 8. विकासी विकसन्नेवं धातुबन्धान्विमोक्षयेत् 1, 247, 12. 182, 3. 188, 16. 191, 20. संधिबन्धांस्तु शिथिलान्यत्कोति विकासि तत् Çiva. Sarh. 1, 4, 20.

विकासिनीलोत्पल (von विकासिन् und नीलोत्पल), °लति *einer blauen Wasserrose in der Blüthe ähnlich sehen* Śiv. D. 294, 20.

विकिर (von 3. कृ mit वि) m. 1) *Reis u. s. w., der als Spende für verschiedene Wesen, die eine heilige Handlung stören könnten, hingestreut wird,* M. 3, 245. Mārk. P. 31, 12. — 2) *ein Vogel aus dem Hühnergeschlecht (Scharrer)* P. 5, 1, 150. AK. 2, 5, 33. H. 1316. Halāy. 2, 83. Āpast. 1, 17, 22. Vgl. विष्किर. — 3) *Brunnen* Taitt. 1, 2, 27.

विकिरण (wie eben) 1) n. *das Ausstreuen, Hinstreuen* Kull. zu M. 3, 235. — 2) Bez. eines Samādhi Vishṇ. 18.

विकिरिद्र adj. Bez. Rudra's VS. 16, 53 (विकिरिद् TS. विकिरिड Kāṇ.). nach Mahīdh. *Wunden abwendend,* nach Uvaṭa *Pfeile aussendend.*

विकीरण m. *Calotropis gigantea* (सर्क) AK. 2, 4, 2, 61.

विकीर्णरोमन् n. *ein best. Parfum,* = स्थौणेय Rājān. im ÇKDr.

विकीर्णसंज्ञ n. dass. ebend.

विकृति (2. वि + कृ°) 1) adj. *einen starken Bauch habend;* davon °त्व n. nom. abstr. Hariv. 661. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Ikshvāku (auch Grosssohnes des Ikshvāku und Sohnes des Kukshi) Hariv. 661. 664. fgg. R. 1, 70, 22 (72, 19. fg. Gorr.). 2, 110, 8. 9 (119, 8. 9 Gorr.). VP. 359. fg. Bhāg. P. 9, 6, 4. 6. fgg. Verz. d. Oxf. H. 49, *a*, 28.

Hall in der Einl. zu Visavad. 80.

विकृतिक adj. = विकृति MBu. 10,458.

विकृत्त (2. वि + कृत्त) adj. *ohne Mars* Varāh. Lagadé. 2, 9 in Ind. St. 2, 285. दिन *irgend ein Tag mit Ausnahme von Dienstag* Varāh. Bṛh. S. 60, 21.

विकृत्तरवीन्दु adj. *ohne Mars, Sonne und Mond* Varāh. Lagadé. 2, 9 in Ind. St. 2, 285.

विकृत्त (2. वि + कृ°) m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6, 2410.

विकृत्यादि gaṇa kṛśāśvādi zu P. 4, 2, 80.

विकृष्ठ (2. वि + कृष्ठ) 1) adj. *a) scharf, durchdringend, unwiderstehlich* Bhāg. P. 3, 16, 9. — *b) überaus stumpf,* अ° = विकुण्ठ *a)* Bhāg. P. 3, 31, 14. — 2) m. *a)* Bein. Vishṇu's MBu. 6, 774. Bhāg. P. 3, 16, 6. — *b)* = वैकुण्ठ Vishṇu's *Himmel* Bhāg. P. 2, 7, 21. 3, 15, 26. 34. 7, 9, 39. 11, 7, 18. Vop. 5, 2. Paṇḍar. 4, 8, 39. — 3) f. या N. pr. der Gattin Çubhra's Bhāg. P. 8, 5, 4. — Vgl. वैकुण्ठ.

विकुण्ठन m. N. pr. eines Sohnes des Hastin MBu. 1, 3788.

विकुण्डल (2. वि + कुं°) 1) adj. *keine Ohrringe habend:* कर्ण Hariv. 4766. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 15, *a*, No. 57.

विकुत्सा f. *heftige Schmähung:* एते सो पाण्डवाः सर्वे कुत्सयन्ति विकुत्सया (विवित्सया ed. Bomb.) MBu. 7, 9135.

विकुब्ज (2. वि + कुं°) adj. (f. या) *vom Buckel befreit* R. 1, 34, 30.

विकुम्भाण्ड (2. वि + कुं°) m. N. pr. eines Dānava Hariv. 12039.

विकुर्वण adj. unter den Beiww. Çiva's MBu. 13, 1244. कोऽतीति कुर्वा विगतः कुर्वा यस्माद्विकुर्वणः कर्मप्राप्य इत्यर्थः समासान्त आर्षः Nīlak.; aber = विकुर्वाण (partic. von 1. कृ mit वि) aus metrischen Rücksichten.

विकुर्वत् Uṇādis. 2, 13. m. *der Mond* Ujjval. — Vgl. विक्रान्त.

विकूत (von कूज् mit वि) m. *Gebrumme, Gesumme:* द्या° Hariv. 6836.

विकूजन (wie oben) n. dass.; s. मद्य°.

विकूट N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 9. त्रिकूट v. l.

विकूणिका f. *Nase* H. 580.

विकूबर (2. वि + कूं°) adj. *der Deichsel beraubt:* रथ MBu. 8, 638.

विकृत 1) adj. s. u. 1. कृ mit वि. Hinzugefügt könnte noch werden: *verändert, umgewandelt* (von Lauten) ṚV. Prāt. 10, 6. AV. Prāt. 4, 31. so v. a. *umgefärbt:* वासस् Pāṇ. Gaṇ. 2, 7. *hässlich:* मुख Spr. 2839. — 2) m. *a) Bez. des 24ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varāh. Bṛh. S. 8, 37. Verz. d. Oxf. H. 331, *b*, 2 v. u. — *b)* N. pr. α) eines Prāgāpati R. ed. Bomb. 3, 14, 7 (विक्रीत und विक्रान्त nach andern Autt.). — β) eines bösen Genius, eines Sohnes des Parivarta, Mārk. P. 51, 62. — 3) n. *a) Umwandelung, Veränderung* Vop. 15, 4. — *b) unseliges Schweigen aus Verlegenheit:* वक्तव्यकाले ऽप्यवचो व्रीडया विकृतं मतम् Śiç. D. 146. 125. statt dessen richtiger विकृत Daçak. 2, 30. 39. — Vgl. वैकृत.

विकृतत्व (von विकृत) n. *das Verändertsein, Umwandelung:* ब्रह्म विकृतत्वेन भासते Bālar. 18.

विकृतदंष्ट्र 1) *entstellte —, widerliche Spitzzähne habend.* — 2) m. N. pr. eines Vidjādhara Kathās. 47, 69. fgg.

विकृति (von 1. कृ mit वि) 1) f. *a) Umgestaltung, Umwandelung, Veränderung, Modification, Abart, veränderter —, abnormer Zustand* (Gegens. प्रकृति) AK. 3, 3, 15. H. 1518, Schol. H. an. 3, 302. Kāṭ. Ça. 1, 5, 4. 3, 5, 9. 4, 3, 22. Z. d. d. m. G. IX, LXVII. Gaut. 1, 2, 10. MBu. 3, 1288. तेन सर्वमिदं बुद्धे प्रकृतिर्विकृतिश्च या 5, 1382 = 12, 9667. 13, 54. Suçr. 1, 112, 13. मृणा प्रकृतिः शरीरिणी विकृतिर्नैवितमुच्यते बुधैः Spr. 4697. Bhāg. P. 5, 7, 5. वर्ण° Kār. zu P. 6, 3, 109. Varāh. Bṛh. S. 3, 2. लवण° *Veränderung im Zustande des Salzes* 28, 4. 30, 22. सस्ये दृष्ट्वा विकृतिम् 46, 37. सलिलाशय° 80. यशः 83, 39. प्रसूति° 97, 4. 13. प्रकृति° Spr. 4158. दोष° 4132. अवश्याम्बु° als Umschreibung von वेला *Fluth* AK. 3, 4, 26, 200. विकृतिं गम्, या, भज्, प्रपद् *sich verändern* Suçr. 2, 104, 15. Jāṭ. 2, 15. Hariv. 11311. Prab. 112, 9. Kumāras. 7, 34. *ein in best. Weise abgeänderter Vers* Cat. Bā. 6, 7, 2, 3. 8. 2, 2. 5, 2, 2, 34. Kāṭ. Ça. 15, 5, 9. *Verwandlung, Gespenstererscheinung* Kathās. 25, 150. — *b) Erzeugniss* P. 5, 1, 12. Vārtt. 1 zu 2, 1, 36. अश्म° AK. 3, 4, 14, 68. किलाटः कूर्चिका चेति लोरस्य विकृती उभे Halāj. 2, 169. H. 403. 405. पिष्ट° *aus Mehl Gemachtes* Suçr. 1, 70, 6. 233, 4. अन्न° *zubereitete Speisen* MBu. 13, 6694. — *c)* im Sāṁkhja so v. a. विकार 3) Sarvadarçanas. 3. Ind. St. 9, 17. Sarvadarçanas. 147, 14. 21. 148, 1. fgg. 149, 2. fgg. — *d) eine abgeleitete Form* (in der Grammatik) Nir. 2, 2. — *e) Gestaltung, Bildung, Entwickelung:* रेतसः Ait. Br. 2, 39. 6, 16. — *f) Missbildung* Suçr. 1, 319, 6 (वैकृत v. l.). — *g) Veränderung im normalen Zustand des menschlichen Körpers, Indisposition, Affection;* = रोग H. an. — *h) Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung:* स्वचेतो° Kumāras. 3, 69. विकृतिमेति मनो न येषाम् Spr. 1310. न च तौ विकृतिं गतौ MBu. 2, 1122. Uttarar. 100, 20 (133, 16). विकृतिमनया नीतः Prab. 15, 6. सकोप° adj. Kathās. 56, 1. — 2) *Wechsel der Gesinnung, feindselige Gesinnung, Auflehnung, Abfall;* = द्विष्ट H. an. Kim. Nitis. 17, 47 (wohl विकृतिं zu lesen). एवमुत्पादयेद्दोषं बालो ऽपि विकृतिं गतः Kathās. 14, 57. विकृतिं यगुः 22, 37. ये सुचिरमभज्ञन्यस्य विकृतिम् *die sehr lange eine feindselige Gesinnung gegen ihn hegten* 254. 31, 66. विकृतिं नी 60, 137. Paṇḍar. 85, 1. — *k) ein Metrum von 92 Silben* ṚV. Prāt. 16, 55. 58. Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XVIII). Ind. St. 8, 137 (*91 Silben*). 281. auch andere Metra so genannt 110. 402. — *l)* = मघादि H. an. = मघ्यादि ÇKDa. nach ders. Aut. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Gṛitsa VP. 422. — Vgl. अङ्ग°, विकार und विक्रिया.

विकृतिमत् (von विकृति) adj. 1) *einem Wandel unterworfen:* सङ्घानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः Çiç. 38. — 2) *afficirt, krank:* मदनेषु विकृतिमानङ्ग Naish. 2, 47.

विकृतोदर 1) adj. *einen entstellten —, hässlichen Bauch habend.* — 2) m. N. pr. eines Rākshasa R. 3, 29, 31.

विकर्त्त (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. *Zerschneider, Zerreisser* VS. 16, 21. v. l. प्रकृत्त TS. 4, 5, 2, 1.

विकर्षित, अ° = अविकृष्ट *nicht auseinandergehalten* (von Lauten) Schol. zu AV. Prāt. 4, 12; vgl. u. 1. कर्ष् mit वि 1).

विकेतु (2. वि + केतु) adj. *des Banners beraubt* MBu. 8, 4587.

विकेश (2. वि + केश) 1) adj. (f. ई) *a) wirrhaarig, struppig:* मद् AV. 6, 30, 2. मिथो विकेश्यौ वि चेताम् Bez. best. dämonischer Wesen 1, 28, 4. 11, 2, 11. 9, 7. 14, 2, 60. तारका *Haarstern* 5, 17, 4. — *b) haarlos, kahlköpfig* Dhan. im ÇKDa. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf.

H. 32,*a*,25. — 3) f. ई *a*) *Charpie* (पट्टवर्ति) Daśa. im ÇKDa. *a small braid or tress of hair, first tied up severally, and then collected into the* Veṇi *or larger braid* Wilson nach ders. Aut. — *b*) N. pr. der Gattin Çiva's in seiner Manifestation als Erde VP. 39. Mārk. P. 52,9.

विकेशिका f. *Charpie, Bausch auf eine Wunde* Suçr. 1,66,8.67,1.2.68,3.

विकोक m. N. pr. eines Sohnes des Asura Vṛka und jüngeren Bruders des Koka Kālakā-P. 21 im ÇKDa.

विकोच (von कुच् mit वि) m. *Fäulniss, Schmutz* Suçr. 2,363,1.

विकोश (2. वि + कोश) adj. (f. आ) 1) *aus der Scheide gezogen, entblösst* (von einem Schwerte u. s. w.) MBh. 3,2350. 6,1788. 7,373. 3090. 8,3504. Harīv. 2658. Rāgat. 7,45. Kathās. 112,153. 124,119 (fälschlich विक्रोश). Rāǵa-Tar. 3,50. 346. 8,5.484. 845. 849. — 2) *keine Vorhaut habend:* °मेढ्रन Kull. zu M. 11,49. — 3) *kein Wörterbuch —, keine Stellen aus Wörterbüchern enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 72,*b*,2.

विकोष s. विकोश.

विक्क m. *Elephantenkalb* Taik. 2,8,36. *ein zwanzigjähriger Elephant* H. 1220. — Vgl. पिक्क.

विक्रम (von क्रम् mit वि) m. 1) *Schritt* AK. 3,4,22, 142. H. an. 3, 473. Med. m. 54. Çat. Br. 1,7,3,23. 3,5,4,1. fgg. 12,9,3,5. Kāty. Çr. 13, 5,15. °त्रय MBh. 3,15844. R. Gorr. 1,32,7. 5,1,54. 2,45. 5,2. हितोपदेश° Çik. 163. Bhāg. P. 2,6,6. *Gang, Bewegung:* घाकूतिर्विक्रमो वाग्मो मृगतृष्णा धावति 4,29,20. 5,2,3. काल° 2,9,10. *Art und Weise zu gehen* R. 5,1,43. सु° adj. 1,1,13. गजेन्द्र° adj. MBh. 3,2454. 2468. R. 2,23,26. स्थिर° adj. Vāmn. Bṛh. S. 86,3. 9. पञ्च° *fünf Gangweisen habend* (रथ) Bhāg. P. 4,26,2. त्वरित° *eiligen Schrittes, — Ganges* Harīv. 3182. 4507. R. 7,107,3. शीघ्रविक्रमा Harīv. 3409. 9453. R. 2,39,12. द्रुत° Bhāg. P. 4,4,4. वाक्यं समर्थं नृपतेर्यथावदुवाच चानुक्रमविक्रमेण so v. a. यथानुक्रमेण allein d. i. *der Reihe nach* MBh. 1,7188. — 2) *kraftvolles —, muthiges Auftreten, Kraft, Muth* AK. 2,8,3,71. H. 739. H. an. Med. Hall. 4,38. 5,24. MBh. 1,5971. 7031. लभते क्षत्रियो विक्रमेण श्रियम् 13,312. R. 2,21,38. 3,4,48. 36,13. 4,8,7. 5,80,3.9 (pl.). Ṛt. 1, 14. Rāgat. 12,87. 93. Vikr. 11,11. Spr. 1906. 2298. 2825. 2948. 3139. 3937. Vāmn. Bṛh. S. 69,11. Bṛh. 11,9. Kathās. 18,343. Bhāg. P. 3,11, 27. 5,20,6. 9,1,5 (pl.). Hit. 81,4. III,1. नास्ति विक्रमेण so v. a. *dieses kann nicht mit Gewalt erreicht werden* Rāǵa-Tar. 8,1667. विक्रमं कर् *seine Kraft entwickeln, Muth an den Tag legen* MBh. 1,6004. Spr. 1046. Kathās. 12,39. am Ende eines adj. comp. (f. आ) MBh. 7,8280. Rāgat. 3, 55. 9,24. Rāǵa-Tar. 3,484. दृढ° R. 3,46,10. चण्ड° 5,39,24. सत्य° MBh. 3,2055. R. 2,72,34. सिंह° Rāǵa-Tar. 6,234. सु° MBh. 7,8224. ग्र° AK. 3,4,22,215. Kir. 2,15. — 3) *Intensität:* क्षया (*Tint*) युक्ता तेजोविक्रमैः सप्रतापैः *mit intensivem Glanze* Vāmn. Bṛh. S. 68,92. — 4) *das Bestehen* (= स्थिति Comm.): मैत्रवः सर्वभूतानां विक्रमः प्रतिसंक्रमः Bhāg. P. 2,8,21. — 5) *die unbetonte Silbe zwischen betonten* (oder *zwischen* प्रचय *und betonter*) TS. Prāt. 17,6. 19,1. — 6) *das Nichteintreten des* क्रम (gramm.) ṚV. Prāt. 11,29. Einl. 8 (= TS. Prāt. 24,5). — 7) *Nichtverwandlung des* Visarga *in einen* Ûshman ṚV. Prāt. 13,11. ग्र° 6,1. 11,22. 14,11. — 8) Bez. *des 14ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vāmn. Bṛh. S. 8,33. fg. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*,5 v. u. — 9) Bez. *des 8ten astrologischen Hauses* Vāmn. Bṛh. 1,16. — 10) *Fuss* Rāǵān. im ÇKDa. — 11) unter den Beinww. Vishṇu's MBh. 13,6938. — 12) N. pr. des Sohnes eines Vasu Kathās. 48,78. = विक्रमादित्य Harṣ. Anth. 1. LIA. 2,401. Verz. d. Cambr. Hdschr. 12. 15. Tārān. 3. 267. = चन्द्रगुप्त LIA. 2,401. 947 (ओ°). ein Sohn des Vatsapri Mārk. P. 118,4. des Kanaka Verz. d. Oxf. H. 148,*a*,4. — 13) N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 181,*a*,6. — यावत्य विक्रमम् M. 3,214 fehlerhaft für यावत्यधिक्रमम्. — Vgl. त्रि°, भीम°, मल्ल°, लघु°.

विक्रमक (wie oben) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2539.

विक्रमकेशरिन् m. N. pr. eines Fürsten von Pāṭaliputra Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,13. Kathās. 77,5. eines Ministers des Fürsten Mṛgāṅkadatta 69,18. 75,4.

विक्रमगुप्त m. N. pr. eines Fürsten von Vārāṇasī Kathās. 23,21.

विक्रमचरित n. und °चरित्र n. Vikrama's (d. i. Vikramāditja's) *Abenteuer*, Titel einer Sammlung von Erzählungen, = सिंहासनद्वात्रिंशत्पुत्रिकावार्ता Roer in Journ. As. 1845. VI, 278. fgg. Verz. d. Oxf. H. 152,*a*, No. 326.

विक्रमण (von क्रम् mit वि) n. 1) *das Schreiten, Schritt:* Vishṇu's ṚV. 1,15,3. VS. 10,19. Çat. Br. 5,4,2,6. MBh. 12,7544. Gīt. 1,9. त्रिषु विक्रमणेषु ṚV. 1, 154,2. 8,9,12. MBh. 3,485. 13501. fg. 5,296. Harīv. 14307. — 2) *kraftvolles —, muthiges Auftreten, Kraft, Muth:* पाण्डुर्जित्वा बहून्देशान्बुद्ध्या विक्रमणेन च MBh. 1,110. 12,1300. *übernatürliche Kraft* (bei den ekstatischen Pāçupata): °धर्मित्व Sarvadarçanas. 76, 12. fg. उपसंहृतकरणास्यापि निरतिशयैश्वर्यसंबन्धित्वं विक्रमणधर्मित्वम् 15. fg. — 3) *das Verfahren nach den Regeln des* Krama (gramm.): ग्र° ṚV. Prāt. 14,28.

विक्रमतुङ्ग m. N. pr. eines Fürsten von Pāṭaliputra Kathās. 35,55. fgg. von Vikramapura 53,86. fgg.

विक्रमदेव m. Bein. Kandragupta's LIA. 2,401.

विक्रमनिधि m. N. pr. eines Mannes aus der Kriegerkaste Kathās. 121,276.

विक्रमपुर n. Vikrama's (d. i. Vikramāditja's) *Stadt* d. i. Uǵǵajinī Hall 71.

विक्रमपति m. wohl = विक्रमादित्य Spr. 4210.

विक्रमपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathās. 53,86. Hit. 110,16. °पुरी Tārān. 247.

विक्रमबाहु m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 153,*a*,11.

विक्रमराज m. N. pr. eines *Fürsten* Rāǵa-Tar. 8,2453. °राजन् = विक्रमादित्य Hall 167.

विक्रमशक्ति m. N. pr. verschiedener Männer aus der Kriegerkaste Kathās. 10,17. 60. 46,155. 48,73. 49,43. 101,48. 120,69. fgg. 122,1. LIA. 2,804, N. 4.

विक्रमशील m. 1) N. pr. eines Fürsten Mārk. P. 75,32. — 2) N. eines buddhistischen Klosters Wassiljew 55. Tārān. 6 u. s. w.

विक्रमसिंह m. N. pr. eines Fürsten von Uǵǵajinī Kathās. 27,138. fgg. von Pratishṭhāna 58,2. fgg. = नारायणगुप्त LIA. 2,973.

विक्रमसेन m. N. pr. eines Fürsten von Uǵǵajinī Kathās. 30,72. fgg.

eines Fürsten von Pratishṭhâna 73,22. Verz. in LA. (III) 1,11. 12,10. 15,3. 32,7.

विक्रमस्थान n. *Spatzierplatz, ein Raum, in dem man auf und ab geht* Weber, Kṛṣṇaj. 266, N. 1.

विक्रमादित्य m. N. pr. verschiedener Fürsten, unter denen einer für den Besieger der Çaka und für den Gründer einer Aera (56 v. Chr.) gilt, Kathâs. 38,3. fgg. 120,39. fgg. Râǵa-Tar. 2,5. 6. 3,125. 474. Verz. in LA. (III) 1,11, v. l. Verz. d. Oxf. H. 132,*a*, N. 2. 134,*a*, 22. 137,*b*, No. 339. 166,*b*,20. 167,*b*,16. Journ. of the Am. Or. S. 6,517,*c*. Tîrân. 313. 318. Reinaud, Mém. sur l'Inde 79. fgg. LIA. 2,400. fg. 409. fg. 800. fgg. 904. Weber, Lit. 188. fg. 206. ein Dichter Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,10. 40. ein Lexicograph 182,*b*, 2 v. u. Mbh. Anh. 4. Hâr. 273. Uǵǵval. zu Unâdis. 1,93. fg. 2,15. 3,83. 126. 4,16. 56. 75. 139.

विक्रमादित्यचरित n. = विक्रमचरित Verz. d. Tüb. Hdschr. 17.

विक्रमार्क m. N. pr. eines Fürsten Çatr. 14,102. 286. = विक्रमादित्य in विक्रमार्कचरित्र Verz. d. Tüb. Hdschr. 17.

विक्रमिन् (von क्रम् mit वि) 1) adj. *a*) *schreitend, durchschreitend; unter den Beiww. Vishṇu's* MBh. 13,6958. — *b*) *muthig* MBh. 1,226. 4991. 6,2057. Harîv. 14496. R. 4,17,11. — 2) m. *Löwe* Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. त्रैलोक्य°, महा°.

विक्रमेश m. N. eines buddhistischen Heiligen Wilson, Sel. Works II, 19.

विक्रमेश्वर 1) m. N. pr. eines der 8 Vitarâga bei den Buddhisten Wilson, Sel. Works II, 32. — 2) N. pr. eines von Vikramâditja errichteten Heiligthums Râǵa-Tar. 3,474.

विक्रमोपाख्यान n. = विक्रमचरित LIA. 2,802, N. 1.

विक्रमोर्वशी f. *die durch Muth gewonnene* Urvaçî, Titel eines dem Kâlidâsa zugeschriebenen Dramas, Gild. Bibl. 303. fgg. 327. fgg.

विक्रय (von 1. क्री mit वि) m. *Verkauf* AK. 2,9,33. H. 872. AV. 3,15,4. Nir. 3,4. M. 3,53. 54 (= MBh. 13,2484). 7,127. 8,4. 9,96. 100. MBh. 13,2672. R. Gorr. 1,64,3. Spr. 2693. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,20. 87,*b*,27. 282,*b*,19. Vaǵas. Bṛh. S. 51,5. Mâlatîm. 72,10. Kathâs. 25,182. 43,72. Râǵa-Tar. 1,309. 4,397. 5,272. विद्या° Pañkat. 5,1 (ed. orn. 2,6). 121,21. 241,2. — Vgl. आत्म°, क्रय° (auch Vaǵas. Bṛh. 8,17. 17,7. Kathâs. 13,83. 86. Râǵa-Tar. 5,161), पण्य°, मांस°.

विक्रायक (wie oben) nom. ag. *Verkäufer:* प्राणि° MBh. 13,1601. केश° u. s. w. 1646. 1648. विक्रयिक ed. Bomb. an allen Stellen. — Vgl. विक्रायक.

विक्रयपत्र n. *Verkaufsurkunde, Kaufbrief* Râǵa-Tar. 6,30.

विक्रयिक (von विक्रय) m. *Verkäufer* Kîç. und Sindh. K. zu P. 4,4, 13. Uǵǵval. zu Unâdis. 2,44. AK. 2,9,79. H. 868. क्रतु° MBh. 12,1321. — Vgl. unter विक्रायक.

विक्रयिन् (von 1. क्री mit वि) nom. ag. *Verkäufer* H. 868. Çârdar. im ÇKDa. तस्य Jiǵñ. 2,170. in der Regel in comp. mit dem obj. P. 3,2,93 (vgl. Vârtt.). M. 2,118. 3,51. 4,215. 220. 9,291. Jiǵñ. 1,162. वेद° MBh. 3,13356. R. Gorr. 2,90,21. fg. मान° Kathâs. 43,86. प्राण° 52,112. Bâlar. P. 16,11,11. Pañkat. 1,6,46. — Vgl. घृत°, क्रतु°, क्रय°, पण्य°, फल°, मांस°, रस°, सोम°.

विक्रेय (wie oben) adj. *zu verkaufen* MBh. 13,2450. य° *was nicht verkauft werden darf* Verz. d. Oxf. H. 87,*b*,27. Kull. zu M. 11,59. fgg. (S. 338, Z. 13). — Vgl. विक्रेय.

विक्रर्म m. *der Mond* Vikramâditja bei Uǵǵval. zu Unâdis. 2,15. — Vgl. विकर्म.

विक्रान्त 1) adj. s. u. क्रम् mit वि. विक्रान्त heisst *derjenige* Saṁdhi, *welcher den* Visarga *unverändert lässt*, ṚV. Prât. 4,11. 24. — 2) m. *a*) *Löwe* Râǵân. im ÇKDa. — *b*) N. pr. eines Prâǵâpati (vgl. विकृत und विकीत) VP. 80, N. 2. eines Sohnes des Kuvalajâçva und der Madâlasâ Mârk. P. 23,9. 76,17. fgg. — 3) n. *a*) *das Geschrittene, Schritt* VS. 10,19. TBr. 1,1,8,10. — *b*) *muthiges Auftreten, Muth* Spr. 4861 (pl.).

विक्रान्तभीम Titel eines Schauspiels Verz. d. Oxf. H. 180,*a*,30.

विक्रान्ति (von क्रम् mit वि) f. 1) *das Schreiten* (*Beschreiten oder in Besitz-Nehmen*): देवानां विक्रान्तिमनु विक्रमते TS. 2,5,6,1. 5,3,3,4. TBr. 1,4,6,5. Çat. Br. 1,1,3,13. 9,3,9,3. 3,6,3,3. — 2) *Galopp eines Pferdes* Taitt. 2,8,45. — 3) *kraftvolles —, muthiges Auftreten, Kraft, Muth* Râǵa-Tar. 4,129. 8,676.

विक्रार्म (wie oben) m. *Schrittweite* TBr. 1,1,4,1.

विक्राय (von 1. क्री mit वि) nom. ag. *Verkäufer:* धान्य° P. 3,2,93, Vârtt., Schol.

विक्रायक m. dass. H. 868. Kull. zu M. 8,223. द्युति° MBh. 5,1491. — Vgl. विक्रयक.

विक्रिया (von 1. कृ mit वि) f. 1) *Umgestaltung, Umwandlung, Veränderung, Modification, veränderter —, abnormer Zustand* AK. 3,3,15. H. 1518. Çiç. 106,1. मुखवर्णस्य R. 2,33,24. भू° = भविकार् Kumâras. 3,17. गुणा न यान्ति विक्रियाम् Spr. 3314. यमतां सङ्गदोषेण साधवो यान्ति विक्रियाम् 747 (II). 3266. Suça. 1,128,3. *Verunstaltung:* प्रातिर्यं विक्रिया मया R. Gorr. 1,30,2. श्मश्रुप्रवृद्धनितानाननविक्रिय Ragh. 13,71. ब्रह्म° Bâlar. P. 9,1,17. स मेत्र इति विज्ञेयः शेषास्तु खलु विक्रियाः so v. a. *ein schlechter Rath, kein wahrer Rath* R. 5,86,18. सामसिद्धानि कार्याणि विक्रियां यान्ति न क्वचित् *zu Schanden werden* Spr. 942 (II). विक्रियायै न कल्पन्ते संबन्धाः सदनुष्ठिताः Kumâras. 6,29. दीपस्य so v. a. *das Verlöschen* Spr. 4974. अविक्रिय (f. या) *keine Veränderung erleidend, keinem Wandel unterworfen* Ragh. 10,17. Bâlar. P. 1,18,26. 7,7,19. *keine Veränderung im Aeussern zeigend, keine Miene verziehend, seine Gemüthsstimmung nicht verrathend* Kathâs. 31,88. *keine Verschiedenheit zeigend, ganz gleich* Râǵa-Tar. 5,362. विक्रिया *ungewöhnliche Erscheinung* Kathâs. 5,25. *Missgeschick* 4,605. 14,73. *Schaden:* रात्तसा दुष्टभावा हि यतन्ते विक्रियां वने *beabsichtigen Schaden zuzufügen* R. 3,49,36. — 2) *Erzeugnis:* पयसश्चैव विक्रियाः *alles was aus Milch bereitet wird* M. 5,25. Jiǵñ. 1,169. Mârk. P. 35,2. — 3) *Veränderung im normalen Zustande des menschlichen Körpers, Indisposition, Affection:* मारुत° R. 5,31,40. कम्पादि° Râǵa-Tar. 4,174. भावितविषवेगविक्रिय Daçak. 72,16. सन्धि° Suça. 1,300,14. — 4) *Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung:* विकारं यान्ति नो चित्तं वित्ते यस्य कदा च न Spr. 4987. आत्म° R. Gorr. 1,65,14. चित्त° 2,16,45. न चामीहिक्रिया यस्य प्राप्य स्थितमुत्तमम् MBh. 7,2438. R. 2,34,52. R. Gorr. 2,17,31. Ragh. 7,37. Kumâras. 3,34. 4,41. Spr. 3018. निर्विकारात्मके चित्ते भावः प्रथमवि-

क्रिया Siu. D. 126. Prab. 15,6. भङ्क्त्वा दर्पविक्रियाम् Rāǵa-Tar. 4, 378. Bhāg. P. 3,23,8 (pl.). 5,10,26. स्मरविक्रियम् Siu. D. 59,17. — 5) *Wechsel der Gesinnung, feindselige Gesinnung, Auflehnung, Abfall:* साधोः परुषितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् Spr. 3234. भवद्विधानामेव यास्यामो विक्रियां कथम् Harīv. 5750. Spr. 1447 (II). 3128. 3136. Kathās. 50,122. Rāǵa-Tar. 3,153. 6,238. 8,585. वर्ण° *eine gegen die Kasten an den Tag gelegte feindselige Gesinnung* Rāgat. 15,43. — Vgl. भूत°, रोग° (auch Vikr. 12), विकार und विकृति.

विक्रियोपमा f. *ein Gleichniss, welches einen Gegenstand als aus einem andern gemacht oder hervorgegangen bezeichnet;* Beispiel: चन्द्रबिम्बादिवोत्कीर्णा पद्मगर्भादिवोद्धृतम् । तव तन्वङ्गि वदनम् Kāvjād. 2,41.

विक्रीड (von क्रीड् mit वि) 1) m. *a) Spielplatz* Harīv. 12183. — *b)* N. pr. eines Schlangendämons Tāran. 190. — 2) f. आ *Spiel, Scherz* Bhāg. P. 10,44,13. — विक्रीडम् R. Gorr. 2,121,17 fehlerhaft für विक्रीतम्, wie die beiden anderen Ausgaben lesen.

विक्रीत 1) adj. s. u. 1. क्री mit वि. — 2) m. N. pr. eines Prāǵāpati R. 3,20,7. Andere Autoritäten विक्रत und विक्रात.

विक्रेतर् (von 1. क्री mit वि) m. *Verkäufer* AK. 2,9,79. Jāṭ. 2,170. 233. Harīv. 11114. Spr. 4935. Variāh. Bṛh. S. 42,6. Sāj. zu RV. 4,24,9. वाजि° *Pferdehändler* Rāǵa-Tar. 8,495. — Vgl. मांस°.

विक्रेतव्य (wie oben) adj. *zu verkaufen, verkäuflich* Kull. zu M. 10,83.

विक्रेय (wie oben) 1) adj. dass. AK. 2,9,83. H. 871. M. 10,85. Jāṭ. 2,255. MBh. 12,2932. 13,2433. Kathās. 75,177. Vop. 26,16. अ° *was nicht verkauft werden darf* MBh. 5,1402. Verz. d. Oxf. H. 282,*b*, 18. *nicht verkäuflich* R. 1,61,17 (63,19 Gorr.). — 2) *Verkaufspreis:* विक्रेयाष्टगुणो दमः Jāṭ. 2,246.

विक्रोश (von क्रुश् mit वि) m. *Geschrei, Hilferuf:* सविक्रोशम् adv. MBh. 14,1948.

विक्रोशन (wie oben) m. N. pr. eines mythischen Fürsten Kathās. 48,50.

विक्रोशयितर् (vom caus. von क्रुश् mit वि) nom. ag. zur Erklärung von कुशिक Nir. 2,25.

विक्रोष्टर् (von क्रुश् mit वि) nom. ag. *der da aufschreit, einen Hilferuf erschallen lässt:* अकारणेन Jāṭ. 2,234. *wer ohne Ursache schimpft* Stenzler.

विक्लव 1) adj. (f. आ) = विकल AK. 3,1,44. H. 448. Hālār. 2,231. *benommen, befangen, seiner nicht ganz mächtig, kleinmüthig, verwirrt* MBh. 3,12992. R. Gorr. 2,39,35. Spr. 2786. fg. 4671. Mṛcch. 38. Çiç. 82, 20. 95,13. Kathās. 114,120. Bhāg. P. 4,28,47. प्रकृति° *schüchtern* 5,8, 2. 6,9,29. मति° Harīv. 7101. Prab. 91,5. मु° MBh. 13,6905. स° 1, 2070. Spr. 2787. Bhāg. P. 2,9,29. 8,12,37. 24,35. मद° R. 4,9,70. भय° Mṛcch. 11,2. Pañcat. 106,2. घनशब्द° *so v. a. erschrocken* Rāgat. 19,28. Kumāras. 4,11. शोक° Kathās. 76,13. श्रेक° MBh. 3,14362. R. Gorr. 2, 51,2. Kumāras. 6,92. प्रत्याख्यान° Çiç. 111,2, v. l. सहानेन वियोगविक्लवा Çuç. 12,63. Daçak. 93,10. वाक्य° R. 2,59,2. बाष्प° R. Gorr. 2, 52,14. Bhāg. P. 4,20,31. दूराध्वक्लम° *so v. a. erschöpft* Kathās. 72,121. vom Herzen, Gemüthe u. s. w.: अन्तरात्मन् MBh. 9,1670. आत्मन् Bhāg. P. 3,4,34. विक्लवां बुद्धिं कृत्वा R. 5,71,5. 7,68,19. श्रेकविक्लवया बुद्धया 5,36,7. हृदय Bhāg. P. 3,23,49. दुर्नयव्यक्तिविक्लवं हृदयम् Kathās. 21,94. वाग्यविवेकविक्लवधियाम् Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,33. अविक्लवधिया Bhāg. P. 8,22,32. अविक्लवमनस् 33. मृगयाविक्लवं चेतः *so v. a. unschlüssig* Çiç. 22,5. von Theilen und Functionen des Körpers, die eine gemüthliche Erregung u. s. w. verrathen: *verstört, entstellt, unsicher* u. s. w.: विक्लवानन R. 1,8,20. Çiç. 73. दीनविक्लवदर्शन R. 2, 65,28. दृष्टिपाताः Rāǵa-Tar. 3,38. अङ्गैरुत्कम्पविक्लवैः Kathās. 3,65 (vgl. उत्कम्पविक्लवा 33,172). यावत्स्वस्थो ऽस्ति मे देहो यावन्नेन्द्रियविक्लवः *so v. a. so lange meine Sinne gesund sind* Kiçlan. 7,38 (nach Aufrecht). अविक्लवा गतिः R. 6,23,16. प्रस्थानविक्लवगति Çiç. 100. श्रेकविक्लवगद्गदाः Harīv. 10293. वाक्यं मदविक्लवम् 3420. भयविक्लवया वाचा R. 2,34,5. 6,9,4. Bhāg. P. 3,31,11. बाष्पविक्लवं वचः R. 4,6,2. अविक्लवं वचः 2,21,50. 52,86. Bhāg. P. 3,33,2. 4,21,19. 8,22,1. 10,68, 20. बाष्पविक्लवभाषिणी R. Gorr. 2,57,30. Kathās. 53,142. Mārk. P. 21,66. — 2) m. *Befangenheit, Kleinmuth, Verwirrung:* किमिदानीमिदं देवि कोपाच्च हृदि विक्लवम् R. 2,44,22. गात° adj. R. Gorr. 2,123,7. गत° adj. 7,32,43. विगत° adj. Bhāg. P. 3,31,21. 7,9,12. अगात° adj. 6,12,3. सविक्लवम् adv. Mālav. 67,15. — विक्लव fehlerhaft für विप्लव (wie die neuere Ausg. liest) Harīv. 2885. — Vgl. वैक्लव्य.

विक्लवता = विक्लव 2): मा च विक्लवतां गच्छ R. 6,82,22. Kathās. 95,52. 101,288. मा स्म विक्लवतां कृथाः 18,272. *Verstümmelung, Entstelltsein:* रोगाणाम् R. 4,59,19.

विक्लवत्व n. dass.: मृदुत्वं च तनुत्वं च विक्लवत्वं तथैव च । स्त्रीगुणा ऋषिभिः प्रोक्ताः *so v. a. Schüchternheit* MBh. 13,541. एकपत्नाव्रय° *Unschlüssigkeit* Rāgat. 14,34.

विक्लवित (von विक्लव) n. *eine kleinmüthige Rede* Bhāg. P. 10,29,42.

विक्लिर्द adj. nach den Comm. *schweisstriefend* (vgl. क्लिद्), oder *dessen Zähne vorstehen*, oder *aussätzig* TBr. 3,9,18,3. Cat. Br. 13,3,6,3. Kāṭ. Çr. 20,8,16. Çāṅkh. Çr. 16,18,15.

विक्लिन्दु (vielleicht von क्लिद् mit वि) m. *eine best. Krankheit:* पदोरस्या अधिष्ठानाद्विक्लिन्दुर्नाम विन्दति AV. 12,4,5.

विक्लिष्ट s. u. क्लिश् mit वि.

विक्लो adv. in Verbindung mit कर्, भू und अस् gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. — Vgl. साक्लो.

विक्लेद (von क्लिद् mit वि) m. 1) *Feuchtigkeit* Suçr. 1,48,13. 2,383,1. MBh. 12,7747. नेत्ररागतविक्लेदैः 15,128. प्राप्य ततोपविक्लेदम् *so v. a. nachdem er sich in dieses Wasser gestürzt hatte* R. 7,110,26. — 2) *das Zerfliessen, Auflösung:* इन्द्रिय° *so v. a. Abnahme der Sinneskräfte* Bhāg. P. 3,20,41.

विक्लेदीयस् (wie oben mit dem suff. des compar.) adj. *mehr feuchtend* AV. 7,76,1.

विक्लेश (von क्लिश् mit वि) m. *Unklarheit*, Bez. eines best. Fehlers bei der Aussprache der Dentalen RV. Prāt. 14,7.

विक्लेर् (von क्लेद् mit वि) 1) adj. (f. आ) *ausgiessend:* वारि° Harīv. 13053. — 2) m. *a) Abfluss:* समुद्रस्य AV. 6,103,2. — *b)* unter den Beinn. Vishṇu's (Kṛshṇa's) MBh. 13,6939. Pāṇ. 4,8,17. — *c)* N. pr. eines Asura MBh. 1,2541. 2677. fg. Harīv. 2285. 12940. 14288.

विक्ता (ता + वि) f. nom. act. gaṇa कृत्रादि zu P. 4,4,62. — Vgl. वैक्त.

विक्लाम (von 1. क्ला mit वि) partic. n. *das Vergiommene, todte Kohle:*

श्राद्धनीयस्य ÇiÇiku. Ça. 4,13,1.

वितारे m. nach dem Comm. = विशिष्टो लक्ष्यवेधः *ein guter Treffer* TBa. 1,5,8,1.

वितार्व (von 1. तु mit वि) m. nom. act. P. 3,3,25. AK. 3,3,27. *Geschrei* Bhaṭṭ. 7,36 (pl.). nach Svâmin und Kaliṅga bei Bhar. zu AK. *Husten* ÇKDa.

वितिपात्कं (vom partic. praes. von 3. ति mit वि) adj. (das Uebel) *zerstörend* (nach Mahidh.) VS. 16,48.

वितित् scheinbar MBh. 13, 6360, wo aber mit der od. Bomb. ऽवित्तिः zu lesen ist.

वितिप्त s. u. 1. तिप् mit वि; davon °त्व n. *das Zerstreutsein* (an verschiedenen Orten): वेदवाक्यानाम् Uvaṭa bei Müller, SL. 98.

वितीपात्कं v. l. zu वितिपात्क TS. 4,5,9,2. Çatar. in Ind. St. 2,43.

वितीर (2. वि + तीर) m. *Calotropis gigantea* (अर्कवृक्ष) Râǵân. im ÇKDa.

वितुद्र (2. वि + तुद्र) adj. *relativ kleiner, einer kleiner als das andere:* वितुद्रगिव यत्तस्त्यम् Ait. Br. 1,21. वितुद्रा इव हि पशवः 5,6.

वितेय (von 1. तिप् mit वि) m. 1) *das Hinwerfen, Ausstreuen* Daiyup. 28,116. ज्वलाग्र° Mâlav. P. 31,14. 8,117. *Wurf:* इषुवितेयमतीत्य *die Entfernung eines Pfeilwurfs* VP. bei Kull. zu M. 4,151. *das Schleudern:* वज्र° und मरुा° zur Erklärung von तुवित Nir. 6,23. — 2) *das Hinundherbewegen:* पाद° Daiyup. 13,21. Vikr. 60,14. बाहु° R. 2,59,30. 7,32,41. Kathâs. 52,227. भुजोद्यु° R. 5,42,9. पक्ष° MBh. 4,1299. 12,6397. Harîv. 6960. 10397. Kathâs. 72,42. लाङ्गूल° Kumâras. 1,19. Ragh. 5, 45. कराल° Verz. d. Oxf. H. 130,a,24. Sîs. D. 301,18. भू° 210. वीचीतरंग° Sṛṅg. 2,84,14. Ragh. ed. Calc. 1,44. *das Hinundherstossen* R. 2, 78,26 (77,32 Gorr.). Bhâg. P. 10,44,4. P. 6,1,141, Schol. — 3) *das Sehnellen:* ज्या° Harîv. 13409. — 4) *das Gehenlassen, Gewähren eines freien Laufes:* इन्द्रिय° (Gegens. इन्द्रियसंयम) Bhâg. P. 11,18,22. चित्त° 19,42. — 5) *das Verstreichenlassen, Versäumen:* काल° H. an. 3,401. — 6) *Ablenkung der Aufmerksamkeit, Zerstreutheit:* चित्तस्य Verz. d. Oxf. H. 229,b,15. चित्तवितेयाः Jogas. 1,30. Uttarar. 38,20 (32,13). लयविक्षेपरहितं मनः कृत्वा सुनिश्चलम् Maitrâyaṇ. 6,34. Nyâyas. 5,2,1.20. Sarvadarçanas. 114,16. Vedântas. (Allah.) No. 135. 137. fg. Sâm. D. 149. — 7) bei den Vedântin Bez. *einer Fähigkeit* (शक्ति) *des Irrthums* (भ्रम), *vermöge welcher die Welt als real erscheint,* Vedântas. (Allah.) No. 36. 39. 41. Bîlar. 13. — 8) *Schmähung:* नानावितेपवचनैः Bhar. Nâṭyaç. 20,8. — 9) *Mitleid* Daçar. 4,41. — 10) *Himmelsbreite, gemessen auf einem Declinationskreise,* Sûryas. 1,70. Colebr. Misc. Ess. II, 406. विमण्डले षट्कस्थानं तस्य क्रान्तिवृत्ताग्रात्तिर्यगन्तरं स वितेपः Goladhy. 6,16, Comm. Ganit. Grahagaṇitadhy. 1. fgg. °वृत्त = क्षेपवृत्त *der Declinationskreis, auf dem die Himmelsbreite gemessen wird,* Goladhy. 6,14 (vgl. 13). Vgl. शर. — 11) *eine best. Krankheitsform* Verz. d. B. H. No. 934. — 12) *eine best. Angriffswaffe:* सकचग्रह° MBh. 5,5247. Nîlak.: कचग्रहवितेपः कचेषु गृहीत्वा येन शत्रुर्विक्षिप्यते तादृशः कलविङ्कग्रहतुल्यश्चिक्कणद्रव्याक्तोऽयो दण्डविशेषः । कर्मक्षेति पाठे यद्धशविशेषः. — Vgl. यङ्ग°, दृष्टि° (*das Hinundhergehenlassen der Augen* Çik. Ca. 16,1) und unter 1. तिप् mit वि (वितेपम् absol.).

वितेपण (wie oben) n. 1) *das Hinundherwerfen* Suçr. 1,85,6. गात्र° 252,18. रक्तो तवाङ्गी मृदुलो भुवि वितेपणाद्भुवम् *das Bewegen der Füsse* so v. a. *das Gehen* Kuvalay. 39,b. — 2) = वितेप 6) Vedântas. (1829) 20,9, wo die neuere Ausg. besser वितेप liest.

वितेपलिपि f. Bez. *einer best. Schriftart* Lalit. ed. Calc. 144,6.

वितेप्तृ (von 1. तिप् mit वि) nom. ag. *Zerstreuer, Vertheiler:* ग्रह° MBh. 1,1288.

वितेभ (von 1. तुभ् mit वि) m. 1) *heftige Bewegung:* वीरोद्° Harîv. 13122. Spr. 1449. वीचि° Ragh. 1,13. — 2) *das aus-der-Ruhe-Kommen, Aufregung, Verwirrung:* उत्तमः क्षोभवितेभं तमः सोढुं नरीतरः Spr. (II) 1173. रिपुवितेभकारक MBh. 7,6794. Verz. d. Oxf. H. 261,a,2. वै° TBa. 3,7,6,7.

वितेभण (wie oben) m. N. pr. eines Dânava Harîv. 198.

वितेभिन् (wie oben) adj. *in Aufregung —, in Verwirrung versetzend;* s. रक्षोवितेभिणी.

विख adj. *nasenlos* Bhar. im Dviroûpak. nach ÇKDa. — Vgl. विखु, विख्य, विघ्र, विघ्रु, विघ.

विखण्डिन् (von खण्ड्य् mit वि) adj. *zertheilend, schlichtend:* वैर° Verz. d. Oxf. H. 133,a, No. 244.

विखनन (von खन् mit वि) n. *das Aufgraben* Nir. 3,17.

विखनस् m. Bein. Brahman's Bhâg. P. 10,31,4.

विखाद (von खाद् mit वि) m. etwa *das Verzehren* (vgl. खाद): Indra heisst विखादे सम्रिः ṚV. 10,38,4.

विखानस m. N. pr. eines Muni Comm. zu Çiç. 26. — Vgl. वैखानस.

विखु adj. = विख Kâç. zu P. 5,4,119. Bharata im Dviroûpak. nach ÇKDa.

विखुर m. *ein* Râkshasa Trik. 1,1,74.

विखेद (2. वि + खेद) adj. *von der Erschlaffung befreit, munter* Bhâg. P. 1,17,21.

विघ्र्य adj. = विख P. 5,4,119, Vârtt.

विघ्र्याति (von घ्र्या mit वि) f. *Berühmtheit* R. 5,66,15.

विघ्र्यापन (vom caus. von घ्र्या mit वि) n. *das Bekanntmachen, Verkünden* Gautama in Mit. 47,11.

विघ्र्ये und विघ्र्ये s. u. घ्र्या mit वि 1).

विघ्र adj. = विख Kâç. zu P. 5,4,119. H. 450.

विघ्रु adj. dass. H. 450.

विगणन (von गणय् mit वि) n. *das Besahlen, Abtragen* Trik. 2,9,2. Hit. 157. P. 1,3,36. Vop. 23,28.

विगत s. u. गम् mit वि. — विगतदंड adj. *von den Gegenständen befreit;* m. *ein* Buddha H. ç. 80.

विगतभय 1) adj. *furchtlos.* — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Karuṇa. 10,7. fgg.

विगतरागधज m. N. pr. eines buddhistischen Lehrers Târan. 63.

विगतार्तवा adj. f. *die Regeln nicht mehr habend* AK. 2,6,2,21.

विगतशोक m. N. pr. eines jüngeren Bruders (oder Enkels) des Açoka Burn. Intr. 360. Târan. 2. 40. 48. fgg. — Vgl. वीतशोक.

विगर्द in der Stelle: प्रतीत्या शत्रूंन्विगर्देषु वृश्च ṚV. 10,116,5.

विगन्ध (2. वि + ग°) adj. (f. घा) *übelriechend* Suçr. 1,136,13. 247,13. Vaṭṭa. Bṛh. S. 86,79.

विगन्धक 1) m. *Terminalia Catappa* (जुङ्गी). — 2) विगन्धिका f. *eine*

best. Pflanze, = कपुया Rāǵan. im ÇKDn.

विगन्धि adj. = विगन्ध Spr. 728. Vasiṃ. Bṛn. S. 48, 4.

विगम (von 1. गम् mit वि) m. *das Fortgehen, Verschwinden, Aufhören, zu-Ende-Gehen, Abwesenheit:* संयोगविगमो Bhāg. P. 1, 13, 40. मुकुन्द° 10, 42, 24. स्वधातु° 2, 7, 49. धनु° 3, 9, 15. कारण° Mahān. 36. पर्याद° Vasiṃ. Bṛn. S. 12, 10. पवन° 28, 4. तिमिर° Kathās. 47, 121. चारुनृत्य° Rāgat. 19, 15. नीलोत्पात° Ṛt. 6, 22. ईति° Mālav. 93. केतु° Spr. 2691. साधस° Khaṇḍan. 82. नृत्तिपयामा° Kull. zu M. 4, 229. बाल्य° 8, 27. उपाधि° Schol. zu Kap. 1, 158. 160. Kusum. 46, 20. ज्यालोकालम्भ° so v. a. *Vermeidung* Jāān. 3, 157. — Vgl. दिवस°, रात्रि°.

विगमचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Tīrthak. 2. 126. fg.

विगर्भा (2. वि + गर्भ) adj. f. *von der Leibesfrucht befreit* MBh. 5, 3808.

विगर्क् gaṇa पुष्करादि zu P. 5, 2, 135. — Vgl. विगर्हिन् 2).

विगर्कण (von गर्क् mit वि) n. *das Tadeln, Tadel:* वसुदेव° Harīv. 4253. R. Gorr. 2, 75 in der Unterschr. Schol. zu Kir. Ça. 1, 4, 4. लोके चैव विगर्कणम् प्राप्तम् R. Gorr. 2, 68, 19. नारदो गच्छेत्त्वयोक्तो महिगर्कणम् *da hast übel von mir zu Nārada gesprochen* MBh. 12. 5846. विगर्कणां कर् *tadeln* 5, 7556. auch विगर्कणा f.: विगर्कणा परमदुरात्मना कृतां सक्ते य: 12, 4220.

विगर्हिन् 1) adj. (wie oben) *tadelnd:* सर्वलोक° MBh. 12, 9702. कामयोग° (so die neuere Ausg.) Harīv. 11688. — 2) विगर्हिणी Bez. *einer an* विगर्क् *reichen Localität* gaṇa पुष्करादि zu P. 5, 2, 135.

विगर्ह्य (von गर्ह् mit वि) adj. *tadelnswerth, tadelhaft;* von Personen und Sachen M. 4, 72. Bhāg. P. 3, 14, 25. 6, 7, 36. यति° 11, 8, 31.

विगर्ह्यता f. nom. abstr. von विगर्ह्य. विगर्ह्यतां प्रया *sich dem Tadel aussetzen* Rāǵa-Tar. 6, 276.

विगाढ्र (von गाह् mit वि) nom. sg. *der sich hineinbegiebt in* (gen.): वनस्य Bhaṭṭ. 9, 29.

विगाथा (2. वि + गा°) f. *eine Abart des* Ārjā- oder Gāthā-*Metrums* Colebr. Misc. Ess. II, 154.

विगान (von 2. गा mit वि) n. *böser Ruf* H. 270. Hālās. 1, 147. an. 4, 46.

विगामन् (von 1. गा mit वि) n. *Schritt* ṚV. 1, 138, 4.

विगाहिन् (von गाह् mit वि) 1) adj. *sich eintauchend:* Agni ṚV. 3, 3, 5. — 2) m. nom. act. s. दुर्विगाहि.

विगाहन (wie oben) 1) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 5, 2732. — 2) n. nom. act. s. अत्तर्विगाहन.

विगाह्य (wie oben) adj. *intrandus:* भूतैरुच्चावचैरपि । गङ्गा विगाह्या सततम् Spr. 4674. — Vgl. दुर्विगाह्य.

विगीति f. *eine Abart des* Ārjā-*Metrums,* 29 + 29 *Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 154.

विगुण (2. वि + गुण) adj. (f. घा) 1) *woran Etwas mangelt, unvollkommen, mangelhaft:* वैदिकानि कर्माणि MBh. 12, 2689 (Gegens. सपिगुण 2677). Kir. Ça. 1, 2, 13. श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात् Spr. 3050. 4968. 5093. आज्ञा so v. a. *ein Befehl, der nicht ausgeführt wird,* Rāǵa-Tar. 4, 502. विधि so v. a. *ein widriges Schicksal* Spr. 923, v. l. Die Ergänzung, woran es mangelt, geht im comp. voran: धर्मविगुणा: क्रिया: Rāǵa-Tar. 4, 60. विवेकाविगुणा: क्रिया: 5, 352. — 2) *qualitätlos* Bhāg. P. 3, 24, 43. 7, 9, 45. 8, 12, 7. — 3) *der Vorzüge baar, schlecht:* von Menschen MBh. 5, 1465. 12, 10655. R. 4, 31, 3. 5, 86, 16. 6, 100, 9. Spr. 3097. Çiç. 9, 12. विगुणोऽपि पुत्रेषु न माता विगुणा भवेत् Mān. P. 77, 32. 106, 25. सु° MBh. 4, 1561. *was seine Eigenschaften verändert hat, verdorben, schlecht;* von den humores im Körper Suçr. 2, 370, 7. 464, 11. 523, 16. Çārṅ. Saṃh. 1, 2, 4. — तद्विगुणै: MBh. 8, 667 fehlerhaft für तद्विगुणै:, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. वैगुण्य.

विगुणता (von विगुण) f. *Verdorbenheit:* वाग्वै: Suçr. 2, 529, 16.

विगुल्फ adj. *reichlich:* विगुल्फं वर्हिराज्यं च Āçv. Gṛhy. 4, 1, 17. सोम्यं विगुल्फं निर्वपेयु: Ça. 12, 8, 35. विगुल्फाममाकरेत् विफ°) Kāṭh. Ça. 21, 3, 10. — Vgl. unter गुल्फ् in den Nachträgen.

1. विगृह्य (von ग्रह् mit वि) adj. in der Gramm. *was besonders —, selbständig für sich erscheint* (im Pada-Text) AV. Paiṭ. 4, 78.

2. विगृह्य (wie oben) absol. *aggressiv* Kām. Nītis. 11, 2. fgg. °गमन 4. °यान 3. विगृह्यासन 14.

विघ्न s. u. विघ्न्.

विघ्नं gaṇa भृधादि zu P. 4, 1, 123. सुतंगमादि zu 2, 80. adj. nach Dhṛv. zu Naiṣ. von 1. गृ mit वि; nach Naiṣ. 3, 15 so v. a. मेधाविन्. पौरुषं विघ्नमस्तृतमिन्द्रं पृच्छ ṚV. 4, 4, 4. ता विघ्नं धेये ब्रठरे पणध्ये 6, 67, 7. Nach P. 5, 4, 119, Vārtt. AK. 2, 6, 2, 46. H. 450 und Hālās. 2, 455 *nasenlos* (vgl. विघ्न u. s. w.). — Vgl. वैघ्न, वैघ्नेय.

1. विघ्नक् (von घ्नक् mit वि) m. am Ende eines adj. comp. f. घ्ना. 1) *Trennung, Sonderstellung* Nir. 1, 4. बालद्व्याब्दक्° beim zweimonatlichen Fötus Bhāg. P. 3, 31, 3. — 2) *Trennung, Eintheilung;* = प्रविभाग Taitt. 3, 3, 460. = विभाग Med. h. 23 (statt विभागे ता ist वि° ना zu lesen). कल्पलताग° (= अवान्तरकल्प Comm.) Bhāg. P. 2, 10, 47. — 3) *Vertheilung,* namentlich von Flüssigem (z. B. Soma) Ind. St. 10, 381. Kir. Ça. 9, 4, 12. 16. 12, 5, 16. 22, 10, 3. — 4) in der Gramm. *Sonderstellung eines Wortes, Selbständigkeit desselben* (Gegens. zur *Composition*) ṚV. Paiṭ. 4, 15. 5, 16. 25. 7, 2. विघ्नक् पृथक् उकार: प्रवते u. *wenn es ein eigenes Wort ist, wird gedehnt* 8, 1. 4, 12 (स°). AV. Paiṭ. 4, 3. Comm. in der Einl. zu 4. zu 4, 27. S. 202 (9. 10.). *grammatische Auflösung eines zusammengesetzten Wortes:* वृत्त्यर्थबोधकं वाक्यं विघ्नक्: Schol. zu P. 2, 1, 3. 1, 2, 44. Çārṅ. zu Kuiṇḍ. Up. S. 14. घविघ्नेऽ नित्यसमास: Schol. zu P. 2, 1, 3. = व्यास, विस्तार AK. 3, 3, 22. Taitt. H. 1432, Schol. Med. Hālās. 5, 19. — 5) *Uneinigkeit, Zwist, Hader, Streit, Krieg* AK. 2, 8, 2, 18. 2, 73. Taitt. H. 735. 796. Med. Hālās. 2, 299. M. 7, 169. fgg. 184. तदा कुर्वीत विघ्नक्म् *einen Krieg eröffnen* 170. सपीणां देवतानां च सदा भवति विघ्नक्: MBh. 13, 319. Harīv. 2865. R. Gorr. 1, 46, 32. 3, 74, 12. Rāgn. 9, 47 (pl.). 19, 33. सकारण° Spr. 3 (II). 864 (II). 3202. Vasiṃ. Bṛn. S. 30, 9. 46, 76. 47, 7. 86, 63. Bhāg. P. 3, 15, 32. 4, 2, 3. Mārk. P. 69, 26. यदुपुंगवै: Harīv. 15873. R. 3, 41, 3. 6, 87, 7. Spr. 4086. 4617. विघ्नक् कृतं कृतं ऽनेन त्वया सक् मयापि च R. Gorr. 2, 18, 16. Vasiṃ. Bṛn. S. 87, 33. Pāṇḍav. 78, 20. 149, 14. तै: सार्धम् R. 6, 82, 51. स्त्रीभि: साकम् Vasiṃ. Bṛn. S. 89, 11. अस्योपरि विघ्नक् कर्तुम् Pāṇḍav. 78, 21. करोति विघ्नक् कामी कामिषु Bhāg. P. 3, 31, 29. वालिसुग्रीव° zwischen R. 1, 3, 23. Vasiṃ. Bṛn. S. 104, 21. सुरदानव° Bhāg. P. 9, 14, 3. घसुरगण° mit MBh. 1, 1185. Suçr. 1, 89, 16. 290, 5. Kathās. 19, 79. Pāṇḍav. ed. orn. 56, 1. स्थल° *ein Kampf auf festem Lande* Spr. 4611. निघ्नने वद्वा वघोवि-

ग्रहम् *Wortstreit* Sin.-D. 73, 10. Gegens. सन्धि M. 7, 56. Jiñ. 1, 346. MBh. 17, 87. R. 1, 7, 11. Rāja-Tar. 4, 142. 6, 189. Daçak. 65, 5. Bhāg. P. 8, 6, 38. Hit. 4, 3. Vet. in LA. (III) 29, 12. Gegens. घनुग्रह् AK. 3, 3, 12. Rāja-Tar. 5, 247. *Kampf der Planeten* Sūrjas. 7, 22. ग्रविग्रहेण धर्मेण so v. a. *unbestreitbar* Rāja-Tar. 4, 76. Nach den Lexicographen (in Med. ist श्त्रियौ zu lesen) in dieser Bed. auch n., welches wir nur durch R. 6, 34, 19 belegen können. — 6) *individuelle Form, — Gestalt; Leib, Körper* AK. 2, 6, 3, 21. Trik. H. 563. Med. Hall. 2, 355. Maitrjup. 6, 7. Weber, Rāmāy. Up. 288. 298. 337. 354. Nilak. 67. Rāja-Tar. 2, 105. 4, 647. Bhāg. P. 4, 9, 33. 5, 12, 1. 17, 22. विकृत° 8, 10, 12. Pāṇḍar. 1, 3, 43. देवीं त्रिविधविग्रहाम् Verz. d. Oxf. H. 210, *a*, No. 495. राज्ञ्या: (so ist zu lesen) पङ्गा विग्रहवाहिनी Rāja-Tar. 6, 308. विग्रहं ग्रह् *eine Gestalt annehmen* Bhāg. P. 4, 7, 24. 30, 33. °ग्रहण Sarvadarçanas. 129, 2. °परिग्रह् 13. मानुषं विग्रहं कृत्वा *menschliche Gestalt annehmend* R. 5, 2, 15. MBh. 1, 2903. प्रमदाविग्रहं कृत्वा R. 2, 91, 49 (100, 48 Gorr.). 5, 61, 45. उपात्तविग्रह् Bhāg. P. 1, 9, 10. नृकेसरि° adj. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 3, 84. पुरुष° MBh. 13, 850. 14, 2771. Harīv. 5954. 15539. R. 2, 30, 3. Suçr. 2, 393, 20. 394, 3. Spr. 2313. Pāṇḍar. 4, 1, 17. त्रिपाद्विग्रहे धर्मे सधर्मे पादविग्रहे so v. a. *dreifüssig, einfüssig* Harīv. 2626. 11303. 11318. 14025 (unter 2. पादविग्रह् ungenau wiedergegeben). दिव्यशरीरास्ते न च विग्रहमूर्तय: MBh. 3, 15461. कालपाशेन सीताविग्रहरूपिणा R. 5, 47, 35. विग्रह्योरभेदम् *Leiber* Spr. 190 (II). नलिनीपत्रेण — घावतविग्रहा Vikr. 102. Raghu. 3, 39. 9, 52. Kathās. 13, 104. तस्मै दातुं स्वविग्रहात् । धनुश्चा प्रदेहि भोक्तुं पदा Rāja-Tar. 1, 133. श्वासापूरित° *sich aufgeblasen habend* 4, 574. विसर्पल्लिङ्ग° 652. 5, 240. नग्न 733. Bhāg. P. 2, 1, 38. पुलकाञ्चित° Brahma-P. in LA. (III) 53, 7. मुक्ताकेश° *Körper einer Statue* Rāja-Tar. 4, 201. *Form, Gestalt* eines Regenbogens Kir. 5, 13. — 7) im Sāṁkhja unter den Synonymen *der Elemente* Tattvas. 16. — 8) *Verstörung, Schmuck:* मङ्गलैर्ग्रहविग्रह: R. 3, 18, 39. MBh. 4, 1338. गदया ग्रहविग्रहेण 7, 9240. मङ्गल्यमणि° (श्राभरण) R. 5, 45, 3. देव्या: पुत्रो भवेत् — तत्मकुण्डलविग्रह: MBh. 3, 5027. — 9) unter den Beiww. Çiva's MBh. 13, 1017. = विशिष्टानुभवरूप, निष्कलशक्तिमात्र Nilak. — 10) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2552. — Die H. an. 3, 770 dem Worte विग्रह् gegebenen Bedeutungen kommen संग्रह् zu. Vgl. तनुविग्रह, पदविग्रह, प्र°, महासंधि°, स° und वैग्रहि.

2. विग्रह् (2. वि + ग्रह्) adj. von Râhu *befreit:* शशाङ्क R. 6, 39, 16.

विग्रहण (von ग्रह् mit वि) n. 1) *das Aussondern* (?): पवित्रस्य Pāṇḍav. Bh. 6, 6, 12. — 2) = 1. विग्रह् 3) TS. 6, 4, 2, 2. Kāṭy. Çr. 10, 7, 11. — 3) *das Ergreifen, Packen:* बाहो: (subj.) MBh. 11, 337.

विग्रहपालदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Colebr. Misc. Ess. II, 280. fg.

विग्रह्य (von 1. विग्रह्) *streiten, kämpfen:* कथमनेन बलवता कृतसर्पेण सार्धं भवान्विग्रहणिंतुं समर्थ: Hit. ed. Jonas. 1417. fg.

विग्रहराज m. N. pr. verschiedener *Fürsten* Rāja-Tar. 6, 335. 340. 342. 345. 7, 74. 139. 8, 1933. 2490. — Vgl. सिंहराज.

विग्रह्यवत् (von 1. विग्रह्) adj. *einen Körper habend, verkörpert, leibhaftig:* देवता Nilak. 68. काल Maitrjup. 6, 16. स्त्री MBh. 1, 7695. 2, 881. धर्म 1280. 3, 16640. 4, 2269 (= R. 1, 23, 10 = 24, 11 Gorr.). R. 2, 113, 17. R. Gorr. 1, 67, 20. 5, 31, 46. 7, 39, 8, 22. Suçr. 2, 259, 16. Milav. 13.

विग्रहव्यावर्तनी f. Titel eines Werkes Tāran. 302.

विग्रहवार् (1. विग्रह् + व°) n. *Rücken* Çabdak. im ÇKDr.

विग्रहिन् (von 1. विग्रह्) adj. *Krieg führend:* तस्माद्र विद्वानतिविग्रही (so ist zu lesen) स्यात् Kām. Nītis. 9, 74. m. *Minister des Krieges* R. ed. Gorr. Bd. VII, S. 341.

विग्रहीतव्य partic. fut. pass. von ग्रह् mit वि in der verdorbenen Stelle Hit. 72, 10.

विग्रह्य (von ग्रह् mit वि) absol. *in Abtheilungen, successiv* u. s. w. TS. 5, 4, 9, 2. TBr. 2, 3, 8, 1. Çat. Br. 6, 3, 2, 5. Âçv. Çr. 5, 9, 20.

विग्राह्य (wie oben) adj. *mit dem man Krieg führen muss* Hit. 116, 22.

विग्रीव (2. वि + ग्रीवा) adj. nach Sāj. *dessen Nacken durchhauen ist* RV. 7, 104, 24. AV. 4, 18, 4. etwa *dem der Hals umgedreht ist.*

विग्लापन (vom caus. von ग्लै mit वि) n. *Ermüdung* Çat. Br. 14, 7, 2, 33.

विघट्टन (vom caus. von घट् mit वि) n. *das Trennen:* कोकयूनोर्विघट्टनसंघटनकौतुकी कृत्र: Sin. D. 122, 8. 22. *das Zerstreuen, Vernichten:* तमो° Prab. 80, 6.

विघट्टन (von घट् mit वि) 1) adj. *öffnend:* स्वर्गद्वार° Harīv. 13339. — 2) f. श्रा *Trennung* Nalod. 4, 45. — 3) n. *a) das Rütteln, Erschütterung* Suçr. 1, 37, 6. 2, 476, 14. — *b) das Zersprengen:* वैरिवारणघटासंघट्ट° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 543, 2. — *c) das Lösen, Auffinden:* रशना° Ragh. 19, 27.

विघट्टिन् (wie oben) adj. *reibend:* धन्योऽन्यकेयूर° Ragh. 16, 36.

1. विघन (von घन् = हन् mit वि) P. 3, 3, 58. m. 1) etwa *Stämpfel, Keule:* स्या: स्वस्तिर्विघन: स्वस्ति: TS. 3, 2, 4, 1 (v. l. द्रुघन: AV. 7, 28, 1). — 2) N. eines Ekāha TBr. 2, 7, 10, 1. Pāṇḍav. Bh. 19, 18, 1. 19, 1. Kāṭy. Çr. 22, 11, 23. Âçv. Çr. 9, 7, 32. Çāṅkh. Çr. 14, 39, 8. Liṭ. 3, 4, 23. Mâç. in Verz. d. B. H. 73 (V, 7. 8).

2. विघन (2. वि + घन) 1) adj. *sehr dick:* पर्णाविघनं चर्म ग्रपगिता Çāṅkh. Gṛhj. 1, 2. — 2) *wolkenlos:* विघने *bei wolkenlosem Himmel* MBh. 5, 2937.

विघनिन् (von 1. विघन) adj. wohl *eine Keule tragend:* Indra-Agni RV. 6, 60, 5. *zerschlagend* Sāj.

विघर्षण (von 2. घर्ष् mit वि) n. *das Reiben:* गात्र° als Bed. von कण्डूयन् gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3, 1, 27.

विघस (von घस् mit वि) P. 3, 3, 59, Schol. (vgl. 6, 2, 144). 1) m. n. *Speiseüberreste* AK. 2, 7, 28. H. 834. Halāj. 2, 171. विघसो भुक्तशेषम् M. 3, 285 (= MBh. 3, 106). MBh. 12, 8866. 8890. Harīv. 7146. Uttarar. 93, 18 (121, 7). विघसाश MBh. 3, 1267. 11470. 12, 310. विघसाशिन् M. 3, 285 (= MBh. 3, 106). MBh. 12, 305. 310. fg. 8018. 8866. 13, 4402. 4410. करोति विघसं बहु *macht grosse Speiseüberreste* so v. a. *hält ein üppiges Mahl* 3, 111. 12, 316. 319. *das Essen* (als v. l. von निघस) Çārad. im ÇKDr. — 2) n. *Wachs* (vgl. मधूच्छिष्ट) Rāgān. im ÇKDr.

विघात (von हन् mit वि) m. 1) *Schlag:* (काका:) घमया च तुण्डपक्षेक्षणविघातैर्वनानभिभवत: Varāh. Bṛh. S. 93, 9. — 2) *das Zerbrechen, Abbrechen:* शस्त्रस्य न शिलासु भवेद्विघात: Varāh. Bṛh. S. 30, 25. — 3) *das Zurückschlagen, Abwehr:* शर° MBh. 6, 3562. गदाया: R. 3, 35, 45. — 4) *Verderben:* स्वजातोप° Spr. 3326. शत्रुनिचयस्य Varāh. Bṛh. S. 82, 5. Pāṇḍav. 42, 12. 136, 23. ed. orn. 40, 15. — 5) *Aufhebung, Entfernung, Hemmung, Stockung, Unterbrechung, Störung:* तुतिपपाता° MBh. 1, 1231.

तपो° 7629. दोषस्य 3,13304. अभिषेकस्य R. 1,3,12. 2,23,24. परिश्रम° 96,5 (105, 5 Gorr.). R. Gorr. 2,18,11. fg. 5,81,42. तव विश्रामहेतोर्हि तवैव रघवाहिनाम्। परस्परविघातार्वं तमं कृतमिदं मया॥ *des beiderseitigen Hemmnisses wegen* 6, 89, 20. 7, 63, 21. Naiṣaḥ. 1, 1, 51. Siśupāl. 51. Śuçr. 1, 51, 21. 80, 1. 136, 9. 2, 63, 16. 201, 14. 304, 18. 474, 16. 513, 21. 514, 3. Kām. Nītis. 10, 4. 7. 8. 19, 3. Rāgat. 3, 44. 11, 1. 16, 82. Kumāras. 3, 33. AK. 1, 1, 2, 12. Vikr. 85, 12. Vaṛāh. Bṛh. S. 12, Anf. 87, 34. 104, 26. Bhāg. P. 4, 29, 71. 5, 12, 13. 6, 5, 37. 11, 23. यदि प्राप्तिं विघातं च ज्ञानन्ति सुखदुःखयोः 11, 10, 19. 12, 4, 6. Mārk. P. 39, 86. 103, 12. Pañcat. 172, 26. Comm. zu VS. Prāt. 4, 16. संयोगाविघात AV. Prāt. 1, 104. Siśupāl. 45. Kām. Nītis. 11, 13. Kathās. 1, 11. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 273. Comm. zu Naiṣaḥ. 4, 1, 68. P. 3, 1, 8, Schol. अविघात adj. *ungehemmt* Bhāg. P. 1, 6, 32. विघात im Comm. zu AV. Prāt. 4, 107 fehlerhaft für निघात. — Vgl. दत्त°.

विघातक (wie oben) adj. *aufhebend, hemmend, unterbrechend, störend:* देवमत्र विघातकम् Bhāg. P. 3, 12, 50. धर्मार्थकाममोक्षाणां यदत्यन्तविघातकम् 4, 22, 34. इषुवेग° MBh. 7, 3268. Schol. zu P. 7, 1, 13. 4, 46.

विघातन (wie oben) 1) adj. *zurückschlagend, abwehrend:* सर्वशस्त्र° (यन्त्र) MBh. 13, 854. — 2) n. *das Hemmen, Unterbrechen, Stören* R. 5, 89, 34. 7, 45, 21. Śuçr. 2, 319, 20.

विघातिन् (wie oben) gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5, 1, 124. adj. 1) *schlagend, bekämpfend:* अरि° MBh. 3, 9279. Harīv. 4823. R. Gorr. 1, 19, 32. Pañcar. 1, 6, 49. *verletzend:* ललितमधुरा वाकप्रत्यये पेरानविघातिनी Vet. in LA. (III) 30, 5. — 2) *aufhebend, entfernend, hemmend, unterbrechend, störend* Mān. n. 245. R. Gorr. 1, 23, 22. अघोघ° Kathās. 69, 158. 120, 29. Kār. zu P. 6, 4, 82.

विघन lässt sich als partic. von 1. घन् ansehen: *träufelnd, besprengt* (= रसोपेत Sāy.) RV. 3, 34, 6.

विघ्न (von हन् mit वि) 1) nom. ag. *Zerbrecher, Zerstörer:* त्रिपुर° MBh. 14, 205. — 2) m. (im Epos auch n.) *Hemmung, Hemmniss, Hinderniss* P. 3, 3, 58, Vārtt. 4. AK. 3, 3, 19. H. 1509. Hālās. 2, 246. Kāvç. 135. विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं (ohne Zweifel कर्माविघ्न° zu lesen; vgl. अविघ्नमिति *glückliches Gelingen ohne Hinderniss* Varāh. Bṛh. S. 95, 61) विनियोजितः Jāṭ. 1, 270. तस्य यत्तस्य R. 1, 11, 16 (12 Gorr.). राज्य° 2, 22, 30 (19, 22 Gorr.). 63, 27. 3, 35, 26 (n.). 5, 7, 21. 6, 82, 95. 98. मूर्तो विघ्नस्तपस इव Çiç. 32. 111. Spr. 243 (II). स्वर्गद्वारस्य 1038 (II). विघ्नभयेन, विघ्नविक्षुब्ध, विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः 1013. प्रज्ञापालनविघ्नाय नृः 4718. Uttarar. 27, 9 (35, 19). Vaṛāh. Bṛh. S. 79, 23 = 98, 4 (n.). 104, 5. 9. Kathās. 45, 89. °कुल Daçar. 2, 13. वृष्टि° so v. a. *Dürre* H. 166. पुण्यकर्मणि Rāgat. 4, 62. Brahma-P. in LA. (III) 30, 2. 9. महान्विघ्नो प्रवृत्तो ऽयम् R. 1, 61, 3. तपसो हि महाविघ्नो विश्वामित्रमुपागमत् 63, 8. काममोहाभिभूतस्य विघ्नो ऽयं प्रत्युपस्थितः 12. घोरं विघ्नमापतितं महत् 5, 36, 40. इत्येवं विघ्न उत्पन्नः 54. को हि मे भोक्तुकामस्य विघ्नं कर्तुमिहार्हति MBh. 1, 5979. गमने ऽस्याः क्षणविघ्नमाचरन्त्या Vikr. 17. तपोविघातार्थमघो देवा विघ्नानि चक्रिरे MBh. 1, 7629. 3, 2226. R. 1, 22, 18. 49, 2. 2, 23, 40. 6, 82, 67 (n.). Mārk. P. 20, 45 (n.). Pañcat. 168, 3. रक्षोभि म इष्टिविघ्नमुत्पादयन्ति Çiç. 28, 13. विघ्नानयोक्ति 52. निर्विघ्ना विघ्नाः R. 3, 77, 9. पिण्डविघ्नानपाकर्तुम् Rāgat. 2, 152. °नाश Pañcar. 1, 7, 99. am Ende eines adj. comp. (f. आ): प्रतिकृतविघ्नाः क्रियाः Çiç. 13. Kathās. 19, 3. अविघ्नतम् *ohne Hinderniss* Rāgat. 4, 157. — 3) m. ein Name Gaṇeça's (vgl. विघ्नजित् u. s. w.) Weber, Rāmat. Up. 321. 361. — Vgl. सु°, सप°, निर्विघ्न, महा°.

विघ्नक am Ende eines adj. comp. in der Bed. von विघ्न 2) LA. (III) zu 4, 8.

विघ्नकर् adj. *Hindernisse bewirkend, — in den Weg legend, hemmend, störend* Vaṛāh. Bṛh. S. 49, 7. Weber, Rāmat. Up. 361. तपो° R. 2, 32, 46.

विघ्नकर्तृ nom. ag. dass. MBh. 3, 2553. Pañcar. 1, 14, 4.

विघ्नकारिन् adj. dass. H. an. 4, 192. Mān. n. 245. R. 5, 29, 24. = घोरदर्शन *furchtbar anzusehen* H. an. Mān.

विघ्नकृत् adj. dass. RV. Prāt. 5, 26. गमनस्य Vaṛāh. Bṛh. S. 93, 28. यज्ञ° 89, 17. प्रस्थान° Jāṭ. 2, 197. Spr. 1786. शील° Rāgat. 3, 496.

विघ्नजित् m. *Besieger der Hindernisse*, ein Name des Gottes Gaṇeça Kathās. 1, 2. 21, 1. 30, 180. 55, 169. 75, 1. 102, 2. 105, 2. — Vgl. विघ्ननायक, विघ्नराज u. s. w.

विघ्नतर्जित adj. von विघ्न + तर्ज gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. vielleicht ist im gaṇa विघ्न। तर्ज zu lesen, so dass विघ्नित und तर्जित so bilden wären.

विघ्ननायक, विघ्ननाशक und विघ्ननाशन m. = विघ्नजित् Çārdar. im ÇKDr.

विघ्नय् (von विघ्न), °यति *hemmen, hindern, stören:* घर्षान् Spr. 3893. स्वप्नेव तस्य विघ्न्येत (so ist zu lesen) सिद्धिश्चिन्ताध्वया धिया Rāgat. 8, 2623. विघ्नित (vgl. u. विघ्नतर्जित) *gehemmt, gehindert, gestört:* राज्याभिषेक Pañcat. 168, 7. °कर्मन् Spr. 2221. °दृष्टिपात Kumāras. 3, 31. गुरुत्वघनोद्वहनविघ्नितपक्षाभिः — मृगेक्षणाभिः Vaṛāh. Bṛh. S. 48, 14. °समागमसुख Spr. 1403. Duṛgās. 74, 16. विघ्नितेच्छ Rāgat. 19, 27. Kathās. 77, 60. °यत्न 82, 47. मार्गाश्चाविघ्नितायगाः Rāgat. 6, 7. Rāgat. 12, 53. सु° R. 1, 62, 12.

— सम् dass.: ताम्बूलानयनव्यग्रेण रक्षाग्रेषो ऽपि संविघ्नितः Spr. (II) 1363.

विघ्नराज m. = विघ्नजित् AK. 1, 1, 2, 33. H. 207, Schol. Hālās. 1, 18. Kathās. 20, 101. Pañcar. 1, 11, 23. Wilson, Sel. Works II, 23.

विघ्नवत् (von विघ्न) adj. *mit Hindernissen verknüpft:* प्रार्थितार्थसिद्ध्यः Çiç. 41, 11.

विघ्नविनायक m. = विघ्नजित् Verz. d. Oxf. H. 31, *a*, 28.

विघ्नकर्तृ m. desgl. Spr. 4710. Verz. d. Oxf. H. 126, *b*, 8.

विघ्नकारिन् m. desgl. Taik. 1, 1, 56.

विघ्नाधिप m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 121, *b*, No. 214. Taik. 1, 1, 1.

विघ्नासक m. desgl. Kathās. 73, 378. 114, 2.

विघ्नेश m. desgl. H. 207. Kathās. 20, 83. Verz. d. Oxf. H. 31, *a*, 28. 249, *a*, 9. Bhāg. P. 8, 7, 8.

विघ्नेशवाहन m. Gaṇeça's *Reitthier*, Bez. *einer Rattenart* (महामूषक) Rāgān. im ÇKDr.

विघ्नेशान m. = विघ्नेश. °कान्ता Bez. *des weissblühenden* Dūrvā-*Grases* Rāgān. im ÇKDr.

विघ्नेश्वर m. = विघ्नेश Kathās. 20, 62. 84. 104, 1. Verz. d. Oxf. H. 101, *a*, 35.

विङ् m. *Pferdehuf* Taik. 2, 8, 46.

1. विच्, विनक्ति, विङ्क्ते Dhātup. 29, 5 (पृथग्भावे). वेवेक्ति 23, 12. विवेक्ति; erhält nicht den Bindevocal इ Kār. 2 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. durch

Schutingen oder *Worfeln aussondern* (Getraide von der Spreu u. s. w.): überh. *sondern:* एवं न दग्ध्वा विवेक्ति *wie Getraide sondert du mit deiner Zunge* (*der Flamme* d. h. *nimmst nur das dürre Gras und lässt Anderes stehen*) RV. 7,3,4. nach Sây. = भक्षयसि oder व्याप्नोषि. प्र मे विविक्था मविदन्मनीषाम् 3,37,1. जीवितेन विवेच च (तान्) *trennte vom Leben* so v. a. *beraubte des Lebens* Bhaṭṭ. 14,103.

— अप dass.: वातो ऽपाविनक् AV. 11,3,4. तुषं पलावानप तक्षिनक्तु 12,3,19. Çat. Br. 1,1,4,22. अपविवेक्ति Kauç. 61.

— अप्य *in* (ein Gefäss) *aussondern* Çat. Br. 1,1,4,22.

— प्र s. प्रविच्.

— वि 1) *durch Schütteln und Blasen sondern:* वायुर्वो वि विनक्तु VS. 1,16. Çat. Br. 1,1,4,22. व्यविवेचम् (sc. व्रीहीन्) absol. Âçv. Çr. 2,6,7. *durchschütteln:* (मरुतः) वि विञ्चन्ति वनस्पतीन् RV. 1,39,5. *sichten:* दुर्भान् Kauç. 90. *scheiden, trennen:* विविच्य संध्यतराणामकारं प्रावयेत् Âçv. Çr. 1,5,9. mit instr. oder abl.: वि विच्यध्वं पक्षियास्तुषैः *sondert euch* AV. 11,1,12. मुद्गा घूयमाना वल्कसेन विविच्यते Çat. Br. 12,8,1,16. पाप्मना Çâṅkh. Br. 18,4. ज्योतिरादिरिवाभाति संघातान्न विविच्यते Bhâg. P. 7,1,9. विवेनच्मि दिवः सुरान् *so v. a. brachte sie um den Himmel* Bhaṭṭ. 6,36. — 2) *unterscheiden:* श्रेयश्च प्रेयश्च विविनक्ति धीरः Kaṭhop. 2,2. प्रकृतिपुरुषौ विविच्य Schol. zu Kap. 1,103. Bhâg. P. 4,4,20. *nach seiner Eigenthümlichkeit erkennen:* विविनक्ति न शौचं पः MBh. 1,6272. Suçr. 1,123,19. Bhâg. P. 10,87,20. *entscheiden:* प्रश्नम् MBh. 2,2243. fg. — 3) *untersuchen, prüfen, erwägen:* क्रियते चेद्विविच्यैव तस्य श्रेयः कारस्त्रियम् Spr. 4277. Kathâs. 73,344. Prab. 114,18. Bhâg. P. 3,26,72. कृत्तिलीलाभिधानेयं यथाबुद्धि विविच्यते Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92. 193,*b*,3. 222,*a*, No. 340. 246,*a*, No. 619. — 4) *offenbaren, kund thun:* विवेक्तुं नाहमिच्छामि त्वाकारं विदुरं प्रति MBh. 1,7396. यत्तर्गतमभिप्रायम् 13,5906. — partic. विविक्त 1) *gesondert, unterschieden* Kap. 3,63. शरीरादात्मनि विविक्ते, प्रधानात्पुरुषे विविक्ते Schol. zu Kap. 1,58. गोसरूपाणि वर्णशो विविक्तानि MBh. 3,13305. अविविक्तपरिव्यय *ohne einen Unterschied zu machen* Bhâg. P. 5,26,17. — 2) *abgesondert, isolirt;* = असंपृक्त H. an. 3,297. fg. Med. t. 153. विविक्तेश विविक्तेश गङ्गे: Kâç. Nîtis. 16,4. चित्ता° so v. a. *ganz in Gedanken vertieft* MBh. 13,1483. *einsam;* n. *Einsamkeit, ein einsamer Ort;* = विजन, रहस् AK. 2,8,1,22. 3,4,14,35. H. 742. H. an. Med. देश M. 3,206. Bhâg. 13,10. R. 1,30,5 (51,5 Gorr.). Mârk. P. 51,43. प्रदेश Pârâç. 150,21. कूर्मपृष्ठ Spr. (II) 622. अवकाश R. 2,34,21. 56,13. 4,24,30. Kathâs. 8,13. 30,76. 50,105. Daçak. 67,6. 69,6. Bhâg. P. 5,8,28. Mârk. P. 96,11. तद्विविक्तमिदम् Mṛicch. 60,5. निषेवते विविक्तम् Çiç. 102. 107, v. l. °सेविन् Bhâg. 18,52. Bhâg. P. 3,28,3. 4,22,22. 5,5,12. विविक्तासन Spr. 2175. °ग Kathâs. 17,1. 33,149. °शरण Bhâg. P. 3,27,8. 7,15,30. विविक्ते M. 4,258. MBh. 3,1870. 12,540. 16,105. Vikr. 40,5. Kathâs. 7,75 (गत्वा). Prab. 105,12. Bhâg. P. 1,4,15. 2,1,16. 3,24,26. 7,5,48. विविक्तेषु M. 3,207. — 3) *frei von:* स्वल्पेन खलु कालेन विविक्तं पृथिवीतलम् । भविष्यति नरेन्द्राणैः शतशो विनिपातितैः ॥ Harîv. 4986 (vgl. 3465). पांसुविविक्तवात Kumâras. 1,23. — 4) (von allem Ungehörigen getrennt) *rein, lauter* AK. 3,4,14,35. H. an. Med. Suçr. 1,151,17. संकल्प Spr. 1726. °दृष्टि Bhâg. P. 1,4,5. मेध्यविविक्तवृत्ति 3,1,19. °मार्ग 8,26. °चरित 16,21. विविक्ताध्यात्मदर्शन 20,28. 4,24,31. °चेतस् 1,19,12. 3,5,40. von Personen M. 11,6. MBh. 13,6202. Bhâg. P. 5,19,12. n. *Reinheit, Lauterkeit:* प्रज्ञाबुद्धिविविक्तात् Mâlav. P. S. 658, Z. 6 v. u. — 5) *klar, deutlich:* विविक्ताकारदर्शन (तालवन) Harîv. 3725. °दर्शनस्थाने (एकान्तदर्शने तादृशस्थाने Comm.) रहस्ये च Kâm. Nîtis. 5,36. — 6) = विवेकिन् H. an. Med. — 7) MBh. 5,7152 fehlerhaft für विपक्त, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. विविक्ति, विविचि, विवेक u. s. w. — caus. 1) *sondern* Suçr. 1,78,5. धर्माधर्मौ व्यवेचयत् M. 1,26. — 2) *untersuchen, prüfen, erwägen* Pâṇḍar. 3,1,12. Sin. D. 278,7. Verz. d. Oxf. H. 126,*a*,5. 246,*a*, No. 618.

— प्रवि *untersuchen, prüfen, erwägen:* प्रविविच्यते Verz. d. Oxf. H. 222,*a*, No. 340. — partic. प्रविविक्त 1) *einsam* R. 2,54,31. 63,25 (63,25 Gorr.). प्रविविक्तेषु *in der Einsamkeit* Spr. 3094. — 2) *fein:* विविक्ताकारतर Çat. Br. 14,6,11,4. °भुज् Mâṇḍ. Up. 4 (vgl. Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. Weber, Rimât. Up. 338. Vedântas. Allah. No. 66). °चक्षुस् *ein feines —, scharfes Auge habend* MBh. 12,389. — Vgl. प्रविवेक.

2. विच् s. व्यच्.

विचकिल m. *Jasminum Zambac* H. 1148. Med. l. 164. Hall. 2,31. Bez. *einer anderen Pflanze,* = मदन Med. विचिकिल in beiden Bedd. H. an. 4,293.

विचक्र (2. वि + चक्र) 1) adj. *radlos* Ait. Br. 6,30. MBh. 7,946. — 2) m. N. pr. eines Dânava Harîv. 15380. 15384. 15864.

विचक्षण (von चक्ष् mit वि) 1) adj. (f. आ) Schol. zu P. 2,4,54, Vârtt. 3. 4. Uddâlak. zu Uṇâdis. 2,122. Vop. 26,29. *a) conspicuus, sichtbar, scheinend, ansehnlich:* यस्य ग्रेता विचक्षणा त्रिणो भूमीरधिक्षितः RV. 8,41,9. ऋभ्व 10,11,4. Soma 9,12,4. 51,5. 66,22. 70,7. 106,5. AV. 18,2,19. 10,3. Çâṅkh. Çr. 6,8,14. die Sonne RV. 1,50,8. 10,37,3. auch wohl 1,164,2. Çâṅkh. Çr. 5,9,20. Savitar RV. 4,53,2. Indra 1,101,7. 4,32,22. यसो वै सोमो राजा विचक्षणश्चन्द्रमाः Çâṅkh. Br. 4,4. 7,10. प्रतीक Pin. Gaṇ. 3,15. Viele dieser Stellen liessen sich auch zu *b)* ziehen. — *b) sehend, scharfsichtig,* daher auch *einsichtig, klug, erfahren, bewandert, weise* AK. 2,7,5. H. 341. Hall. 2,178. चतुर्विचक्षणं वि लोकेन पश्यति Ait. Br. 1,6. पार्थिवस्त्रिमसुरभवद्विचक्षणः RV. 1,112,4. यं विचक्षणः सोमं सुषाव 4,45,5. Bṛihaspati 2,23,6. 10,92,15. Prâçnop. 1,11. यतन्द्रितान्, दक्षान्, विचक्षणान् M. 7,61. 9,71. Bhag. 18,2. MBh. 4,123. 8,4817. R. 1,1,16. R. Gorr. 1,45,42. Suçr. 1,122,21. Ragh. 5,19. Spr. (II) 313. 479. 989. 1464. Vaṇîn. Bṛh. S. 22,5. 38,5. 68,98. Kathâs. 51,135. 94, 29. Bhâg. P. 1,5,16. 10,81,37. Mârk. P. 34,110. 116,22. Verz. d. Oxf. H. 50,*a*,15. die Ergänzung im loc.: परिग्रहानुग्रहणे R. 2,1,19. कृत्स्नासु विद्यासु कलासु च Kathâs. 59,29. im comp. vorangehend: सर्वपण्य° M. 8,398. गुणदोष° 9,169. धर्माधर्म° 10,106. 108. MBh. 4,745. परिक्राम° Harîv. 7696. 14212. R. 2,109,27. R. Gorr. 2,67,7. Ragh. 9,35. 13,69. Spr. 984. 1276. 1874. 3241. Kathâs. 6,69. 24,91. 33,3. 43,22. Râjat. 4,664. 668. Bhâg. P. 3,23,9. 8,11,48. महाविचक्षणेन ज्ञानेन 5,3,13. स्व° M. 3,115. 8,150. Spr. 398 (II). 3083. (दृश्यः) निशास्वविचक्षणाः *nicht gut sehend* 3193. सु° Kâm. Nîtis. 10,11. Spr. 3266. — 2) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Tâṇḍja Ind. St. 4,373. — 3) f. आ *a) Floriditum indicum Lehm.* Râjân. im ÇKDr. — *b)* Bez. *des Thrones Brahman's* Kaush. Up. 1,3. 5. — 4) विचक्षणम् enklitisch gaṇa गोत्रादि

zu P. 8,1,27. 37. — Vgl. कृन्त° und कृन्द्र°.

विचक्षणात्व (von विचक्षण) n. *Einsicht, Klugheit, Weisheit* MBu. 3,10619.

विचक्षणांमन्य adj. *sich für klug haltend* Sarvadarçanas. 46,14.

विचक्षणावत् (von विचक्षण) adj. *auf Augenschein beruhend, dem Augenschein entsprechend:* वाच् Âit. Br. 1,6. nach späterer Auffassung *mit dem Worte* विचक्षण d. h. *Einsichtiger verbunden* Lâṭ. Câ. 7,5,7 und Manu im Comm. zu d. St.; vgl. विचक्षणात्त Lâṭ. 3,3,14. Eine Variation jener Stelle in Çâṅkh. Br. 7,3 lautet: यत्र यमिच्छेद्विचक्षणावत्या वाचा तस्य नाम गृह्णीयात् *dessen Namen nenne er in Verbindung mit einem auszeichnenden Worte* (etwa आयुष्मत्, पूषन्, विन्दयिन् Comm.). Vgl. u. चनसित und Ind. St. 10,20.

विचक्षस् (von चक्ष् mit वि) m. *Lehrer* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,222.

विचक्षुस् (2. वि + च°) 1) adj. a) *augenlos, blind* MBu. 12,2450. — b) = विमनस् Taitt. 3,1,17. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Harîv. 9038 (निचक्षुस् die neuere Ausg.). Verz. d. Oxf. H. 40,b,8. 9.

विचक्ष्य (von चक्ष् mit वि) adj. *conspicuus:* मिमीते पत्नीमनुपविचक्ष्यम् RV. 3,13,30.

विचक्षु m. N. pr. eines Fürsten MBu. 12,9467 nach der Lesart der ed. Bomb. विचक्ष्यु ed. Calc.

विचक्ष्यु s. विचक्षु.

विचतुर् (2. वि + चतुर्) adj. P. 5,4,77. Vop. 6,29. *verschiedene Vier-Acten* (von Halbversen) *enthaltend* Çâṅkh. Çr. 18,23,15.

विचन्द्र (2. वि + च°) adj. (f. या) *mondlos:* शर्वरी R. 6,112,46.

1. विचय (von 1. चि mit वि) m. *Sichtung* so v. a. *Aufzählung* (vgl. 1. विचेय): छन्दसाम् Ind. St. 8,83. fg. 120.

2. विचय (von 2. चि mit वि) m. *das Suchen, Nachforschen* R. Gorr. 1,4,78. 4,31,4. 52,8. 5,15,7. Ragh. 16,75. Uttarar. 11,2 (15,4). *das Durchsuchen* R. Gorr. 1,4,77. 5,10 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 344,a,4.

विचयन (wie oben) n. *das Suchen* AK. 3,3,30. Verz. d. Oxf. H. 193, a,31. *das Durchsuchen* 344,a,3. 4.

विचयिष्ठ (von 1. चि mit वि und dem suff. des superl.) adj. *am meisten wegräumend:* पुरु दाशुषे विचयिष्ठो वनेः RV. 4,20,9; vgl. 8,67,8.

विचर् (von चर् mit वि) adj. *zu weichen pflegend, wankend, gewichen seiend von* (abl.): न त्वं धर्मं विचरं मंस्यपेक्ष मत्तश्च ज्ञानासि युधिष्ठिराञ्च MBu. 5,813.

1. विचरण (wie oben) n. *Bewegung* Suçr. 1,207,8.

2. विचरण (2. वि + च°) adj. *fusslos, der Beine beraubt* MBu. 7,779.

विचरणीय (von चर् mit वि) adj. impers. *zu verfahren:* न गर्वमासाद्य स्वप्रभुत्वया विचरणीयम् Pañcat. 20,3. besser न प्रभुत्वमासाद्य सगर्वतया वि° ed. orn. 22,20.

विचर्चिका (von चर्च् mit वि) f. (*Uebersetzung*) *eine der Formen des sog. kleinen Aussatzes: Räude, Grind* AK. 2,6,2,4. H. 404. Wise 261. Suçr. 1,268,5. 269,8. 292,9. 360,10. 2,118,21. Vaṭṭ. Bṛh. S. 32,14. — Vgl. चर्म°.

विचर्ची f. dass.: पामाविचर्च्यौ Suçr. 1,294,18.

विचर्मन् (2. वि + च°) adj. *schildlos* MBu. 7,5761.

विचर्षण s. u. विचर्षणि.

विचर्षणि (2. वि + च°) adj. *sehr rührig, — rüstig:* यं देवासो ऽवथा स विचर्षणिः RV. 4,36,5. स्तोतृ 8,13,6. Indra 2,22,3. 41,10. 12. 6, 45,16. 46,3. Agni 1,78,1. 3,2,5. 11,1. die Marut und Andere 1,64,12. 5,63,3. 1,35,9. Soma 9,11,7. 40,1. 62,10. falsche Bildung विचर्षण Taitt. Âr. 7,3,1 (Taitt. Up. 1,4,1).

विचल (von चल् mit वि) adj. (f. या) in der Verbindung mit अ° *sich nicht von der Stelle bewegend, nicht wankend, nicht abschweifend, beharrlich, beständig:* अव्यभिचारिविचले स्थिते Mârk. P. 22,43. स्थितिर्धर्मे MBu. 1,638. 12,7549. 11388. अविचलेन्द्रिय *nicht abschweifend, im Zaume gehalten* Bhâg. P. 4,12,14.

विचलन (wie oben) n. 1) *das Wandern von Ort zu Ort* Bhâg. P. 10, 8,4. — 2) *das Kundthun seiner Vorzüge, Prahlerei* Bhar. Nâṭyaç. 19,93. Daçar. 1,42. Pratâpar. 22,a,7. 42,b,6.

विचाचलि (vom intens. von चल् mit वि) adj. *beweglich, unstät;* s. अ° und vgl. P. 3,2,171, Vârtt. 4, Schol.

विचार (von चर् mit वि) m. 1) *Verfahren; besonderes Verfahren* so v. a. *einzelner Fall* Âçv. Çr. 1,5,33. Lâṭ. 3,3,7. 11,1. 10,10,15. 13,1. विचारास्तत्र (कारितास्तत्र ed. Bomb.) बद्ध्वा विक्रिताः शास्त्रदर्शनात् R. 1,13,44. hierher vielleicht °चिद् als Beiw. Çiva's MBh. 13,1188. — 2) *Wechsel der Stelle:* देवता° Gobh. 3,10,2. — 3) *Ueberlegung, Erwägung, in-Betracht-Ziehung, Prüfung, Untersuchung;* = प्रमाणैर्वस्तुतत्त्वपरीक्षणम् P. 8,2,97, Schol. Taik. 1,1,114. VS. Prât. 2,53. विचारश्च विवेकश्च वितर्कश्च MBu. 12,7142. वेदतत्त्वार्थ° Harîv. 14433. विषमसलिलतुलाग्रिप्रार्घिते मे विचारे Mâlav. 136,3. Kâm. Nîtis. 13,48. 15,57. °मार्गप्रस्थितेन चेतसा Kumâras. 5,42. यस्तिकस्ति° Spr. 826 (II). 948. 1583. 1976. 2891. 4391. Gîv. 2,15. Kathâs. 34,213. 36,56. Râja-Tar. 3,511. 6,193. 208. Prab. 73,12. Sin. D. 202. Çaṅk. zu Kâṭhaka Up. S. 31. Bhâg. P. 6,9,35. Vop. 8,119. Pañcat. 1,14,93. Verz. d. Oxf. H. 44,b,25. 68,a, No. 119. 88,b,4. 178,a,1. fgg. 223,b, No. 544. Verz. d. B. H. No. 896. Dhûrtas. 93,8. Pañcat. I, 417. Hit. 104,7, v. l. 127,10. Gaṇar. zu Siddhânt. 69. Schol. zu P. 1,1,9. zu Kap. 1,70. Madhus. in Ind. St. 1,19,14. 21. Sarvadarçanas. 122,13. fgg. 125,7. Wassiljew 251. 256. स्वगृहे को विचारो ऽस्ति *Bedenken, Anstand* R. 1,73,13 (75,14 Gorr.). विचारं कुरुषे कथम् Mârk. P. 75,51. Kathâs. 32,16. °दोलामारोक्ष्यत् *sich langer Ueberlegung hingeben* 9,87. विचारार्हं पुनस्तस्य मत्तस्याभूच्च मानसम् 13,19. न चैवं लभते नारी विचारं मारमोक्षिता 36,88. 40, 51. प्रवादमोक्षितः प्रायो न विचारक्षमो जनः 24,218. अनुरागान्धमनसो विचारसहता कुतः 17,51. °पतित 33,21. °पर Z. d. d. m. G. 14,573,5. °मूढ Ragh. 2,47. Hit. 116,10. °वन्ध्य Râja-Tar. 3,513. °प्रून्यत्व 4,336. अ° *Mangel an Ueberlegung* 235. Vet. in LA. (III) 12,10. अविचारम् *ohne Bedenken* MBh. 9,2376. अविचारानुमतेन Daçak. 74,14. अविचार adj. *nicht überlegend:* चित्तं पोषितम् Kathâs. 65,42. किं न ज्ञानासि यदात्तमविचारतया धियः 5,88. त्वया मुक्तविचारया Kumâras. 7,83. — 4) *wahrscheinliche Vermuthung:* विचारो युक्तवाक्यैर्यदप्रत्यक्षार्थसाधनम् Sin. D. 447. 434. — Vgl. निर्विचार (auch Kathâs. 40,22. 46,74), मुक्ति°, रात्रिपद°, वस्तु° und unter मन्त्रवाक्य 2).

विचारक (vom caus. von चर् mit वि) nom. ag. 1) *Führer* Verz. d. Oxf. H. 211,a, No. 498. दुर्ग° R. 2,79,18. — 2) *Späher* R. 4,45,18. — 3) *erwägend, in Betracht ziehend:* ब्रह्मविचारकशास्त्र Sarvadarçanas.

159,18. चक्रे कालाकालविचारकम् Verz. d. Oxf. H. 88,a,36.

विचारचिन्तामणि m. Titel eines grammatischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 161,b,9. 162,b,24.

विचारण (vom caus. von चर् mit वि) 1) n. *das Wechseln der Stelle* Suçr. 1,131,15. — 2) *das Ueberlegen, Erwägen, Bedenken, Reflexion, Erörtern;* n. VS. Paiṭ. 6,20. आनुर्वधविचारणे R. 4,58,3. गुणदोष° 5, 1,61. 29 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 44,b,28. 224,a,7. Prab. 106,18. Buic. P. 12,13,18. अविचारणात् *ohne Bedenken* R. 3,28,27. Häufiger विचारणा f. AK. 1,1,4,11. H. 251. 1373. Hall. 1,10. Vop. 8,103. Gaṇarasāṅgr. 1,94. Suçr. 1,312,17. पूर्व° Spr. 1071. ब्रह्म° Spr. (II)1738. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 315. zu Kâṭhân. Up. S. 315. वस्तु° Prab. 20,12. नित्यानित्य° 100,3. Sarvadarçanas. 29,13. का वस्य (obj.) वि° Kathâs. 24,32. न मे ऽत्रास्ति वि° *Bedenken* MBu. 13,1964. R. Gorr. 1, 74,22. 7,104,19. न ते कार्या वि° MBu. 13,127. 1,4373. 3,8635. 14,800. नात्र कार्या वि° 3,1854. 2558. Harîv. 14419. 14964. R. 1,2,33. 7,45,20. 65,21. Kûrma-P. in Sarvadarçanas. 72,12. मा ते वि° MBu. 7,2082. Mṛkkh. 144,3. Hit. 31,22. Unbestimmt ob n. oder f.: वा विचारणार्थे Nir. 1,4. Spr. 4733. Windischmann, Sancara S. 108.

विचारणीय (wie eben) adj. *worüber man lange nachzudenken braucht, einer langen Erwägung bedürfend* Mṛkkh. 149,12. अ° Bâgh. 14,46. Verz. d. Oxf. H. 257,b,15. Prab. 104,17.

विचारभू f. *Gerichtshof* Taik. 1,1,72.

विचारमञ्जरी f. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works I, 282.

विचारमाला f. desgl. Hall 133.

विचारयितव्य adj. = विचारणीय Kull. zu M. 2,10.

विचारवत् (von विचार) adj. *mit Ueberlegung verfahrend* Çatr. 14,168.

विचारशास्त्र n. *die Wissenschaft (das Lehrbuch) der Erörterung,* insbes. *der Abwägung gesetzlicher Vorschriften unter einander;* es ist ein anderer Name für मीमांसाशास्त्र, insbes. पूर्व°. Verz. d. Oxf. H. 185, b,41. Comm. in der Einl. zu Gaim. Sarvadarçanas. 123,14. fg. 124,4. 125,6. fgg. 126,12. धर्म° 124,3.

विचारित s. u. dem caus. von चर् mit वि. Nach gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36 ist विचारितं adj. von विचार.

विचारिन् (von चर् mit वि) adj. 1) *umherstreichend* RV. 5,84,2 (nach dem Comm.). यथाकाम° MBu. 5,7352. R. 2,25,2. मम कालविचारिणः Harîv. 4009. इलस्थल° (so die ed. Bomb.) MBu. 12,6128. सर्वत्रग° Harîv. 3447. 3726. 4600. 10914. 14536. R. Gorr. 2,21,17. 7,18,29. Mânn. P. 131,6. *durchlaufend:* नभसो ऽर्ध° Varâh. Bṛh. S. 11,31. — 2) *verfahrend:* मायाशत° so v. a. *anwendend* MBu. 3,3867. — 3) *wandelbar, wechselnd* Âçv. Çr. 3,7,24. — 4) *ausschweifend* Spr. (II) 1330, v. l. — 5) *erwägend, prüfend:* कार्याकार्य° Mṛkkh. 61,5. तृणातृण° Çiva MBu. 12,10391. — Vgl. अरू°, भ°.

विचारु (2. वि + चारु) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Buic. P. 10,61,9.

विचार्य adj. 1) = विचारणीय. नात्र विचार्यमस्ति *hier braucht man sich nicht lange zu bedenken* MBu. 1,7080. किं विचार्यमतः परम् 12, 6377. न विचार्यं कथं च न 13,5100. 14,1864. नेतत्ते विचार्यं वचनं मम Mânn. P. 69,18. अ° 19. Kathâs. 32,116. 75,139. — 2) schlechte v. l. für विचाल्य MBu. 15,213 in der ed. Bomb.

विचाल (von 1. चल् mit वि) m. 1) *das Auseinanderrücken, Zertheilen:* अधिकरण° P. 5,3,42. — 2) *Zwischenraum* H. 1460.

विचालन (vom caus. von 1. चल् mit वि) adj. (f. ई) *zu Schanden machend, aufhebend, vernichtend:* तस्यामीन्मानसो बुद्धिस्तदा धैर्यविचालनी R. 3,4,9.

विचालिन् (von 1. चल् mit वि) adj. *die Stelle verlassend:* कूटस्थैर्विचालिभिर्वर्णैः *unwandelbar* Pat. in Mahâbh. S. 104. *weichend von* (abl.): धर्माद्विचालिनः Kathâs. 72,119.

विचाल्य (vom caus. von 1. चल् mit वि) adj. *von der Stelle zu rücken:* अविचाल्याश्च ते ते स्युरचला इव नित्यशः MBu. 15,213. अविचार्य ed. Bomb.

विचि f. = वीचि *Welle* Bhar. zu AK. 1,2,3,5 nach ÇKDa. Auch विची Dvirûpak. im ÇKDa. Nach H. an. 2,7 hat विची auch die andere Bedd. von वीचि.

विचिकित्सन (vom desid. von 4. चित् mit वि) n. *zweifelndes Ueberlegen, das Im-Zweifel-Sein über Etwas:* यस्मिन्प्रेत (loc.) इदं विचिकित्सनम् Çāṅk. zu Kaṭhop. 1,29.

विचिकित्सा (wie eben) f. *zweifelnde Ueberlegung, ein obwaltender Zweifel in Betreff von* AK. 1,1,3,12. H. 1373. Hall. 4,6. TBr. 2,1,3, 2. Çat. Br. 2,2,3,9. 10,6,3,2. 14,4,3,9. Kâṭhân. Up. 3,14,4. Kaṭhop. 1, 20. Taitt. Up. 1,11,3. 5. Kaush. Br. bei Müller, SL. 106. Mâlat. 42,11. Kathâs. 82,3. Buic. P. 3,9,37. 11,21,3. Verz. d. B. H. No. 1016. Nilak. 228 (Sarvadarçanas. 162,17). Lot. de la b. l. 443. विचिकित्साबीज Nir. 1,5. ज्ञातविचिकित्सा adj. Kathâs. 43,87. — Vgl. निर्विचिकित्स.

विचिकित्स्य (wie eben) adj. *unter Zweifeln zu überlegen, zu zweifeln:* यत्र खेद न विचिकित्स्यम् Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,163.

विचिकित्स s. विचिकित्स.

विचिकीर्षित (vom desid. von 1. कर् mit वि) partic. *mit dem man eine Veränderung vorzunehmen wünscht* Buic. P. 11,29,24.

विचित्त् (von 1. चि mit वि) adj. *sondernd, sichtend* VS. 4,24.

विचिति (von 2. चि mit वि) f. 1) *das Suchen, Nachforschen:* नल° Nalod. 1,2. — 2) *Prüfung, Untersuchung* oder *Sichtung, Aufzählung* (von 1. चि mit वि; vgl. 1. विचय) in छन्दो° (auch in den Nachträgen).

1. विचित्त s. u. 4. चित् mit वि.

2. विचित्त (2. वि + चित्त) adj. *besinnungslos* Suçr. 2,489,4. Accent eines mit वि° anlautenden comp., dessen zweites Glied ein adj. ist, gaṇa विस्पष्टादि zu P. 6,2,24.

विचित्तता (von 2. विचित्त) f. *Besinnungslosigkeit* Siṅ. D. 177.

विचित्त्य (von 1. चि mit वि) adj. *zu sichten* TS. 6,1,9,1.

विचित्र (2. वि + चित्र) 1) adj. (f. आ) Accent eines mit वि° anlautenden comp., dessen zweites Glied ein adj. ist, gaṇa विस्पष्टादि zu P. 6,2,24. *a) vielfarbig, bunt, schillernd:* °माल्याभरणः MBu. 3,2114. °वेषाभरणाः R. 1,9,22. 2,39,17. °वालुकतल 33,21. 91,21. रुक्मबिन्दु-विचित्राभ्यां चर्मभ्याम् 100,21. 3,49,3. 61,11. Spr. 2207. Varâh. Bṛh. S. 3,39. 12,11. 24,14. 43,57. 64,1. 2. Ind. St. 2,238. 278. Buic. P. 1,6,12. 2,1,36. 3,23,14. — *b) verschiedlich, mannichfaltig, verschiedenartig:* मृगयानस्य निष्कृतिः M. 11,98. विचित्रायुधयाणाय: MBu. 3,12092. वस्त्रानि 16743. विचित्रार्थपद (आख्यान) R. 1,4,28 (3,73 Gorr.). 2,95,3. 7,20,

12. Spr. 731. 1253 (II). संसार 1623 (II). Rāǵa-Tar. 2, 113. Spr. 3276. 3339. 4990. Bhāg. P. 1, 7, 17. 3, 1, 37. 7, 24. 18, 19. 22, 20. 26, 5. 4, 14, 21. 7, 1, 10. Śiś. D. 100. Nīlak. 114. विचित्राध्याय Verz. d. Oxf. H. 325, a, 31. विचित्रम् adv.: उपकूजिता Bhāg. P. 5, 2, 4. विचित्रविकृताननाः Kathās. 46, 201. विचित्रकृत्रिमाणि Pañkat. 2, 1, 24. नानाविचित्रकृतमण्डन Kād. 19. — c) *seltsam, absonderlich, wunderbar:* यत्पद्भुतमिदं लक्ष्य विचित्रमाभाति मे MBh. 3, 12029. वस्तुशक्तयः Spr. 238 (II). 1019. किमत्र विचित्रम् Gīt. 8, 8. Kathās. 49, 241. Rāǵa-Tar. 3, 261. Śiś. D. 722. Verz. d. Oxf. H. 230, a, 40. विचित्रा हि सूत्रस्य कृतिः पाणिनेः Kāç. zu P. 1, 2, 35. n. *eine Gattung des Paradoxon:* विचित्रं पत्रशोद्दिग्रीतः फलेच्छया Kuval. 107, b. z. B. नमसि मर्त्यलोकादपि लब्धुं समुद्यतिम् ebend. Prabodhak. 91, b, 3. — d) *(durch Abwechselung) reizend, prächtig, schön:* गृहाणि R. 1, 6, 26. जलपत्तनमन्दिर Ṛtus. 1, 2. लता: Spr. 1039 (II). शय्या 1391. वत्सलता Pañkat. 1, 10, 94. कथा so v. a. *unterhaltend, amüsant* Kathās. 18, 68. 40, 115. 63, 5. 69, 185. Hit. 8, 18. 26, 22. °वाक्यगुण so v. a. *Beredsamkeit* Spr. 4713. सर्वत्र विचित्रं च न शक्यं बहु भाषितुम् 2766. कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम् 1884. विचित्रं गायति R. 3, 79, 12. — 2) m. N. pr. a) eines Fürsten MBh. 1, 2697. — b) eines Sohnes des Manu Raukja (Devasāvarṇi) Harīv. 489. Mārk. P. 94, 31. Bhāg. P. 8, 13, 31. — c) eines Reihers Hit. 120, 10. — 3) f. ई *Koloquinthe* Rāǵān. im ÇKDa. — 4) n. Sidd. K. 249, b, 1. — Vgl. वैचित्र्य.

विचित्रक (von विचित्र) 1) adj. *wunderbar* Çabdārthak. bei Wilson. शम्बुकेतो विस्तीर्णा ऽतिविचित्रकः Pañkat. 2, 2, 32. — 2) m. *eine Art Birke* (भूर्ज) Rāǵān. im ÇKDa. — 3) n. *Wunder* Çabdārthak. bei Wilson.

विचित्रकथ (वि° + कथा) adj. *dessen Erzählungen unterhaltend sind;* m. N. pr. eines Mannes Kathās. 69, 20.

विचित्रता (von विचित्र) f. 1) *Mannichfaltigkeit, Abwechselung* Śiś. D. 621. — 2) *Absonderlichkeit, eine wunderbare Erscheinung* Spr. 2853, v. l.

विचित्रदेह m. *Wolke* Çabdar. im ÇKDa.

विचित्ररूप adj. *mannichfaltige Formen annehmend* MBh. 12, 11232.

विचित्रवर्षिन् adj. *verschiedentlich* — d. i. *nicht allerwärts* —, *nur hier und da regnend* Vaitān. Bṛh. S. 5, 74.

विचित्रवीर्य m. N. pr. eines Sohnes des Çāṁtanu (Çāṁtanu) und der Satjavatī, mit dessen Gattin Vjāsa Dhṛtarāshṭra, Pāṇḍu und Vidura zeugte, MBh. 1, 94. 2441. 3808. fgg. 4069. 4126. fgg. 5906. Harīv. 970. 1825. 3009. VP. 439. Bhāg. P. 9, 22, 30. 23. °सू f. *die Mutter Vikitravirja's* d. i. Satjavatī Trik. 2, 8, 11. — Vgl. वैचित्रवीर्य, वैचित्रवीर्यक.

विचित्रसिंह m. N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 7, 104.

विचित्राङ्ग 1) adj. *einen vielfarbigen Körper habend.* — 2) m. a) *Pfau* Çabdar. im ÇKDa. — b) *Tiger* Çabdār. im ÇKDa.

विचित्रापीड m. N. pr. eines Vidjādhara Kathās. 48, 115.

विचित्रित (von विचित्र) adj. *bunt gemacht, vielfarbig: verziert, geschmückt:* शक्ति MBh. 3, 7210. अलंकृतस्तु स गिरिर्नानाद्रुमैर्विचित्रितैः। बभौ रत्नमयैः कोशैः संवृतः 14, 1755. नभस्ताराविचित्रितम् R. Gorr. 2, 62, 30. 3, 28, 31. 49, 35. मरुतम् — तोयैः प्रवलैर्विचित्रितम् 5, 80, 31. 6, 83, 40. Bhāg. P. 4, 6, 10. 8, 2, 3. Pañkat. 1, 7, 55. भवनं करिणामुतशावविचित्रितम् Vaitān. Bṛh. S. 104, 28. Khaṇḍak. 119. वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय कुसुमायुधाय Spr. 2937.

विचित्रा (विचित्रा) s. u. विचित्र.

विचित्तन (von चित् mit वि) n. *das Denken an Etwas:* यौर्ध्वदेहिकधर्माणामानीयुक्तो विचित्तने MBh. 12, 7383. य° 3, 69.

विचित्तनीय (wie oben) adj. *in Betracht zu ziehen, zu beobachten* Vaitān. Bṛh. 18, 30.

विचित्ता (wie oben) f. *Gedanken, Sorge:* यस्माकं तु विचित्तेयं कथं सागरलङ्घनम्। स्यादिति R. 4, 62, 3. विचित्ताज्ञान° MBh. 14, 1240 fehlerhaft für विचित्राज्ञान°, wie die ed. Bomb. liest.

विचित्तितर् (wie oben) nom. ag. *der an Etwas denkt:* कामानामविचित्तिता MBh. 5, 2446.

विचित्त्य (wie oben) adj. *in Betracht zu ziehen* Vaitān. Bṛh. S. 5, 17. 23, 1. 44, 18. 96, 12. *zu beobachten* 89, 18. *woran man denken muss:* हृदि Bhāg. P. 10, 69, 18. *worauf man seine Gedanken, seine Sorge zu richten hat:* किमत्र विचित्त्यम् Prasāṅ. 84, 3. *auszudenken, ausfindig zu machen:* सभ्युपाय Daçak. 79, 8. य° *auf den man keine Aufmerksamkeit richten kann, unhäuflich, ohne alle Aufsicht seiend:* °दृग्यहिषा (घस्रिव die andere Rec.) R. Gorr. 2, 96, 22. — Vgl. दुर्विचित्त्य.

विचिन्वत्कर्मन् (von विचिन्वत्, partic. praes. von चि mit वि) adj. *sichtend, unterscheidend* (nach Manuss.) VS. 16, 46. Ind. St. 2, 43.

विचिन्वारा s. u. विचित्तितर्.

विचिलाक m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2, 288, 13.

विचीरिन् Harīv. 14839 fehlerhaft für विचारिन्, wie die neuere Ausg. hat.

विचूर्णन (von चूर्णय् mit वि) n. *das Zerreiben* Suçr. 2, 2, 1.

विचूर्णि = चूर्णि Çāṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 88.

विचूलिन् adj. *keinen Haarbüschel auf dem Scheitel habend* Harīv. 11138. — Vgl. चूलिन्.

विचेतस् (von चेतस् mit वि) f. 1) *Lösung:* कृणवन्संचेतं विचेतमुक्षिष्टये ṚV. 9, 84, 2. — 2) du. N. zweier Sterne AV. 2, 8, 1. 6, 100, 2. 122, 3. N. des 17ten Nakshatra TS. 4, 4, 10, 2; vgl. Journ. of the Am. Or. S. 6, 337.

1. विचेतन (von 4. चित् mit वि oder 2. वि + चेतन) adj. s. य°.

2. विचेतन (2. वि + चेतना) adj. (f. या) *bewusstlos, nicht das volle Bewusstsein habend, geistesabwesend* MBh. 3, 10050. 11078 (S. 372). Harīv. 4939. R. 1, 32, 18 (33, 16 Gorr.). 74, 15. 2, 75, 7. 85. R. Gorr. 2, 45, 32. 65, 45. 3, 26, 15. 40, 34. 42, 42. 43, 24. 64, 6. 68, 21. Spr. 911 (so v. a. *entseelt*). 2970 (so v. a. *unvernünftig, dumm*). Kathās. 17, 27. Bhāg. P. 6, 1, 63. Pañkat. 1, 14, 64. 78. Pañkat. 43, 11.

3. विचेतन (von einem nicht vorhandenen denom. विचेतय्) adj. (f. ई) *bewusstlos machend:* नृणामेव विचेतनी Pañkat. 2, 8, 10.

विचेतयितर् (vom caus. von 4. चित् mit वि) nom. ag. *sichtbar machend, unterscheidend* Ait. Br. 6, 135.

विचेतर् (von 1. चि mit वि) nom. ag. *Sichter* Çat. Br. 3, 3, 3, 8.

विचेतव्य (von 2. चि mit वि) adj. *zu suchen:* सीता R. 4, 44, 116. *zu durchsuchen:* मही MBh. 3, 16215. R. 4, 40, 27. 41, 74. 44, 31. *zu untersuchen, zu prüfen:* इन्द्रियाणि च कर्ता च विचेतव्यानि भागशः MBh. 12, 10500. बलाबलम् R. 5, 82, 11. *ausfindig zu machen:* उपाय Kathās. 102, 16.

विचेतस् (2. वि + चेतस्) adj. 1) *in die Augen fallend:* Wasser ṚV. 1,

63,1. — 2) *verständig, klug:* Menschen RV. 7,7,4. 8,13,20. Götter 1, 45,2. 190,4. 10,132,6. अग्निरङ्ग विवेताः स प्रचेताः 79,4. 2,10,1. 4,7,3. Indra 6,24,2. 8,46,14. die Açvin 5,74,2. — 3) = दुर्मनस्, विमनस्, भ्रान्तमनस् H. 435. *nicht bei vollem Bewusstsein seiend, ausser sich seiend* Harıv. 9878. R. 2,47,18. 48,28. R. Gorr. 2,80,24. 4,16,52. Bhâg. P. 8, 11,6. 10,11,43. 19,4. — 4) *unvernünftig, dumm* MBh. 3,1945. Spr. 4558.

विवेतो (von विवेतस्) adv. in Verbindung mit कर्, भू und अस् P. 5,4,51, Schol.

1. विवेय (von 1. वि mit वि) adj. *zu siehten, zu sondern, zu zählen* (so v. a. *gering an Zahl*): °तारका Ragu. 3,2.

2. विवेय (von 2. वि mit वि) 1) adj. *zu suchen:* ज्ञानकात्मज्ञा R. 4,41, 24. *zu durchsuchen:* शालयः 40,32. — 2) n. *Untersuchung, Nachforschung:* विवेयं कर् *eine Untersuchung anstellen* R. 4,47,7.

विवेष्ट (2. वि + वेष्टा) adj. *regungslos* R. 2,63,49.

विवेष्टन (von वेष्ट् mit वि) n. *Bewegung der Glieder:* शरीरस्य MBh. 12,413. 10549. सिन्धुनीरविवेष्टनैः eines Pferdes Ragu. 4,67.

विवेष्टा (wie eben) f. 1) dass. s. निर्विवेष्ट. — 2) *das Auftreten, Gebahren, Benehmen, Betragen, Treiben* MBh. 5,767. 12,542. Kâm. Nîtis. 15,32. Bhâg. P. 10,30,2. Vgl. दुर्विवेष्ट.

विवेष्टित (wie eben) n. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) = विवेष्टा 1) Ragu. ed. Calc. 4,67. मन्दविवेष्टिता ein Blutegel Suçr. 1,41,19. नयनभ्रूविवेष्टितैः R. 1,9,48. — 2) = विवेष्टा 2) Jâân. 1,337. MBh. 3,2928. R. 6,109,4. Ragu. 7,5. 17,76. अनङ्ग° Vikr. 28. विधि° Kathâs. 52,332. 99,40. Brahma-P. in L.A. (III) 49,6. Bhâg. P. 1,5,13. Pañkat. 95,16. 98,3. — विवेष्टित Harıv. 10200 in beiden Ausgg. fehlerhaft für विवेष्टित.

विविर्क m. *ein best. Vogel* RV. 10,146,2.

विविन्द m. *Palast* H. 1015. — adj. s. u. विविन्दस् 1) a).

विविन्दक m. dass. AK. 2,2,10. Halâj. 2,150.

विविन्दस् (2. वि + विन्द्°) 1) adj. a) *nicht metrisch*, f. nämlich ऋच् Ait. Br. 5,4. Çat. Br. 10,3,2,12. RV. Pâr. 17,7. pl. विविन्दाः VS. 23,34. — b) *verschieden im Metrum* Ait. Br. 1,31.25. Kâtj. 25,1. Pañkav. Br. 2,8,24. Âçv. Çr. 6,5,14. Lâtj. 6,9,3. — 2) n. *ein best. Metrum* Gâyatrî in Ind. St. 8,279, N.

विविर्दक m. = विविन्दक Rîsâm. zu AK. 2,2,10 nach ÇKDa.

1. विविष्काय (1. वि + काया) m. *Schatten von Vögeln* AK. 2,6,2,26. f. या dass. Bhâg. P. 10,12,8.

2. विविष्काय (2. वि + काया) 1) adj. (f. या) *alles Farbenspiels —, alles Glanzes bar, kein Ansehen habend;* von einem Menschen Bhâg. P. 1,14, 24. von einer Kuh 10,19.20. गृक् Kathâs. 2,49. निशीथस्था पद्मिनी 18,48. मुखाङ्गनासार्ग 43,186. — 2) m. = मणि Bhâr. zu AK. nach ÇKDa.

विविष्कायता (von 2. विविष्काय) f. *Mangel alles Glanzes, — alles Ansehens:* धनुश्चक्रेण शिरसा कामन्नपेक्षरो ऽपि तम्। नमन्विविष्कायतां भेजे यतदा न तदद्भुतम्॥ Kathâs. 19,118. रत्नादीपास्तत्कान्तिजिता विविष्कायतां ययुः 28,4.

विविष्कायय् (wie eben), °यति *des Glanzes berauben:* राक्षसमननसंभूतं तमो विविष्काययेद्दिधुम् Spr. (II) 1172.

विविष्कायीकर् (2. विविष्काय + कर्) dass. Kathâs. 48,61.

विविष्कृति (von 1. स्कृद् mit वि) f. 1) (*das Abschneiden*) *Unterbrechung, Störung, Hemmung, Aufhebung* Taik. 2,3,184 (= क्षेप, विनाश). H. an. 3,303. Med. t. 130. यज्ञस्य TBr. 3,2,8,1. 7,6,2. वृत्य° Gobh. 4,8,12. 9,9. दिनकररथमार्गविविष्कृतये ऽभ्युद्यतं चलत्कङ्कम् (विन्ध्यस्य) Varâh.Bhp. S. 12,6. वंशस्य *des Geschlechts* 68,2. सत्समागम° Kâm. Nîtis. 14,44. संताप° Spr. 794. संसार° 1403. — 2) *eine ungewöhnliche, absonderliche, piquante Auffassung* oder *Darstellung* Sâh. D. 41,2. 228,1. 253,4. 264, 8. 711. Kuvalaj. 127,b. — 3) *eine durch ihre Einfachheit reizende Toilette* Bhâr. 3,5 beim Schol. zu Nalod. 2,55. Daçak. 2,36. Sâh. D. 125.138. Pratâpar. 55,b,6. H. 507. — 4) *Schminke* Taik. 2,6,40. Med. Çiç. 164. — 5) *Hausgrenze* (गेहावधि) H. an. — 6) = षड्कार H. an. = कारभेद Med.

विविष्कृत s. u. 1. स्कृद् mit वि. Davon °ता f. *Auseinandergerissenheit:* न चातिरमतो वस्तु हृतं विविष्कृतां नयेत् Daçak. 3,39 (Sâh. D. 139,20).

विविष्कृत्र (von 1. स्कृद् mit वि) m. 1) *das Zerspalten, Zerhauen:* कवच° Verz. d. Oxf. H. 117,a,21. *Brechung, Theilung:* पातस्य विविष्कृत्रं वारिवाहजाले मुरधनुषः Kir. 7,16. — 2) *Ausrottung, Vertilgung, Vernichtung:* दायाद° Râjat. 8,1020. वैरि° 1249. सर्ग° Kathâs. 20,70. धर्मसङ्घाते: Pañkat. ed. orn. 45,1. — 3) *Trennung:* लालितानां स्वजनाताना् von Spr. 2666. Kâdamb. 78. प्रिय° Sâh. D. 147. कान्तायाः कान्तविविष्कृत्रो मरणादतिरिच्यते Brahmavaiv. P. Gaṇapatikh. im ÇKDa. — 4) *Unterbrechung, Hemmung, Störung, Aufhebung:* श्लोकस्य विलापरुदितस्य च MBh. 12,5741. कुचरणास्मरणा° 13,774. श्वासप्रश्वासयोः Jogâs. 2,49. Sarvadarçanas. 174,13.18. 175,1. संप्रदाय° 127,18. Râjat. 5,139. Kâm. Nîtis. 10,5.14. पिण्ड° Ragu. 1,66. कथा° Vikr. 60,6. 120,23. Varâh. Bhp. S. 4, Z. 7. वृत्ति° Pañkat. ed. orn. 45,1. Sâh. D. 8,22. 139,7. 215. 319. Çiç. beim Schol. zu Çiç. 98. Devar. bei Roth, Nir. LI. Kuçm. 52,10. पिपासा° Kull. zu M. 5,128. स्वार्थ° so v. a. *Beeinträchtigung* Kâm. Nîtis. 17,57. सै° Çat. Br. 6,4,3,10. 9,5,1,44. Sarvadarçanas. 127,16. fg. अविविष्कृत्रेन *ununterbrochen* 115,21. अविविष्कृत्रकृता गिरः MBh. 8,2514. तेन सार्धमविविष्कृत्रस्थानम् Pañkat. 1,1,21. — 5) *Unterschied, Verschiedenheit* Çaṅk. zu Bhp. Âr. Up. S. 159. Bhâg. P. 2,10,8. प्रतिशरीरं जीवविविष्कृत्रः Sarvadarçanas. 45,12. धातुविविष्कृत्रैः so v. a. *mit verschiedenen Erzen* MBh. 3,11090. — 6) gramm. *Einschnitt, Brechung* RV. Pâr. 6,12. VS. Pâr. 4,160. = यति *Cäsur* Ind. St. 8,363. — Vgl. पद्°, पाठ°.

विविष्कृत्रन (wie eben) 1) adj. *trennend, unterbrechend:* मेधिबन्ध° Suçr. 1,156,7. — 2) n. a) *das Abhauen* Varâh. Bhp. S. 59,14. — b) *das Beseitigen, Aufheben:* वाञ्छा° Spr. 2772. — c) *das Unterscheiden* MBh. 5,799.

विविष्कृत्रिन् (wie eben und von विविष्कृत्र) adj. 1) *zerstörend, vernichtend* MBh. 12,10989. Pañkat. 4,3,109. — 2) *abgebrochen, unterbrochen, mit Zwischenräumen versehen:* (वारिमुचः) सोपानविविष्कृत्रिनः Varâh. Bhp. S. 28,15.

विव्युति (von 1. च्यु mit वि) f. 1) *das Abfallen* (eig. und übertr.) Kâmas. 53,88 (wo nach Kern कुबलयरजस्सु गुण° zu lesen ist). — 2) *Trennung* von (abl.): तनयाभ्याम् MBh. 3,2865. — Vgl. गर्भ°.

विष्, विष्कायति (गतौ) Dhâtup. 28,129. P. 3,1,28. Die Erweiterung des Stammes kann auch in den allgemeinen Temporibus eintreten 31. विष्कायति ist auch caus. von 1. का mit वि (s. Nachträge) und denom. von विष्काय (s. विष्कायय्). विष्, विष्कयति (भाषार्थ oder भासार्थ) Dhâ-

tup. 33,100.

1. विज्, विनक्ति (भयचलनयोः) Dhātup. 29, 22. विजते (auch विजति: s. u. उद्), विविजे, अविजे 1. sg. अभि विक्त 3. sg. अविजिष्ट Vop. 13,8. der Wurzelvocal wird vor dem Bindevocal nicht verstärkt nach P. 1, 2,1. partic. विक्त, später विग्न. *sich schnellen, losfahren*, ἀΐσσειν. a) *emporschiessen*, von der Wasserwoge (vgl. αἴγες): ऊर्ध्वः समुद्रो विजते Çat. Br. 7,1,1,14. Çâṅkh. Br. 3,1. — b) *zurückfahren, flüchtig davonsellen* Ait. Br. 3,1. आपोभ्यः 7,19. गौरो न तेषारविजे व्यायोः R.V. 10,51, 6. AV. 8,7,15. यावे नपं विजमाना 12,1,37. — partic. विग्न *in Aufregung gerathen, aufgeregt, gemüthlich erregt, bestürzt* Raghu. 14,68. Kathâs. 22,178. 24,32. 30,112. 33,117. 42,32. 45,256. 46,97. 199. 48,119. 52, 52. 53,68. 59,20. 61,65. 66,97. 106,186. — Vgl. वेग.

— caus. 1) *schnellen*: यथा वेगमवेजयत् Pañcat. Ba. 14, 5, 15. वातो ऽतिमात्रं प्रवेो समुद्रानिलवेजितः so v. a. *verstärkt* MBh. 12,12388. — 2) *in Aufregung* —, *in Unruhe versetzen*: काश्चित्सवत्साः पतिता गावः शोकरवेजिताः (°वीजिताः die neuere Ausg., welches Nîlak. durch चलिताः oder भीताः erklärt, also auf विज् zurückführt) Harîv. 3915. Raghu. 8,39. 19,35.

— intens. *zusammenfahren, entfliehen*: त्वष्टा चित्तव मन्यव इन्द्रं वेविज्यते भिया R.V. 1, 80, 14. भरण्यदि विरतो वेविजानः 4,26,5. स मघ या पुंवते वेविजान इत्त्राशानोरस्तुर्मनसार्द विज्युया 9,77,2. — Vgl. वेविज्र.

— अभि *umkippen, umschlagen*: नावा भातीत्यभि विक्र अग्निः R.V. 1, 182,15. — Vgl. अभिवेग.

— आ, partic. आविग्न *in Aufregung gerathen, bestürzt* MBh. 3,12057. 7,1406 = 3664. 8541. Harîv. 13572. °चेतस् Kathâs. 32,18. घनाविग्नमनस् (घनुद्विग्न° die neuere Ausg.) Harîv. 4234. — Vgl. आवेग. — caus. *in Aufregung versetzen, beunruhigen*: स रामलक्ष्मणौ — शरैः — भृशमावेजयामास R. 6,20,3.

— समा, partic. °विग्न *in Aufregung gerathen, bestürzt*: भय° R.5,56,11.

— उद् 1) *aufschnellen, heraufschlagen*: यथा वेगात्: पृथगुद्विजन्ताम् AV. 4,15,3. — 2) *schaudern, zusammenfahren, zurückschrecken, sich scheuen*; die Person oder die Sache, vor der man zurückschrickt u. s. w., im abl. oder gen., selten instr.: शयानस्य हि ते भूमौ कस्मादेवोद्विजते वपुः Harîv. 4815. यस्मादेवोद्विजते लोको लोकादेवोद्विजते च यः Bhag. 12,15. तेजसस्तपसश्च कोपस्य च महात्मनः । त्वमप्युद्विजसे यस्य MBh. 1, 2922. 2929. 2933. 2,2221. उद्वेजते मे हृदयम् 3,2332. 14660. 4,361. गवां मूत्रपुरीषस्य नोद्विजेत कथं च न 13,3748. 4815. R. 2,76, 8. 5,29,22. Spr. 10 (II). 1258 (II). यथास्य वाचा पर उद्विजेत 1554. 4465. 5187. तेन जीवितादुद्विजमानेन Milindap. 51,1. Pañcat. III, 191. Bhâg. P. 4,11,32. 5,9,3. 24,3. 7,9,43. 8,22,3. उद्विजिते 10,43,18. यस्मान्नोद्विजिष्टास्वम् Bhaṭṭ. 6,69. act.: न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् Bhag. 5,20. MBh. 1,2933. 3,560. 3585. स्वकर्माभिर्मकाव्यालैर्नोद्विजन्ति 11,170. मरणात् 13,3707. 14,1299. R. 5,35,17. 6,3,15. Spr. 2939 उद्विजन्तः Bhâg. P. 6,9,20. 7,9,13. उद्विग्न P. 7,2,14, Schol. *zusammenfahrend, schaudernd, zurückschreckend, erschrocken* MBh. 5, 7191. तस्य दुश्चरितैः 13,3144. भयोद्विग्न R. 1,9,12. R. Gorr. 1,42,1. 3,50, 4. Varâh. Bṛh. S. 5,38. R. 1,6,11 (19 Gorr.). 2,74,16. 3,1,1. 4,9,28. तव 6, 95,4. Suçr. 2,384,2. (पक्षिणः) क्रोशन्ति भृशमुद्विग्ना विषपन्नगदर्शनात् Kâm. Nîtis. 7,11. Raghu. 16,56. Spr. 853 (II). 1401 (II). 2628. Kathâs. 28,132. 32,11. °शङ्किना 45,262. 281. 292. 51,206. Bhâg. P. 5,2,13. सङ्गात् 8, 30. 9,6,32. Mârk. P. 23,2. मनस् R. 3,74,11. °मानस, °मनस् MBh. 5, 6040. R. 7,44,21. Bhâg. P. 1,13,30. 5,24,29. Hit. 4,12. °धी Bhâg. P. 8,16,8. °चित्त 4,5,9. 7,4,33. °चेतस् Mârk. P. 74,4. °हृदय R. 4,1,3. Bhâg. P. 1,14,24. °यज्ञनकटाल Mṛicch. 9,20. °दृश् Bhâg. P. 4,5,12. 10,6. °लोचन 8,8,13. स्पर्शोद्विग्नो यदि Suçr. 1,253,10. °वर्णा तापसम् *eine Aufregung verrathend* Daçak. 59,7. घनुद्विग्न MBh. 12,5309. 13,1093. दुःखेनोद्विग्नमनाः Bhag. 2,56. — 3) *zurückschrecken vor* so v. a. *ablassen, abstehen von*: नाथमुद्विजितुं कालः स्वामिकार्याद्ववादृशाम् Bhaṭṭ. 7, 92. न पुनः कञ्चिदुद्विजिष्यति चामत्कात् Çat. 14,224. — 4) *in Schrecken jagen*: कञ्चिन्नोग्रेण दण्डेन भृशमुद्विजसे प्रजाः MBh. 2,178. — Vgl. 1. उद्वेग und निरुद्विग्न. — caus. *in Schrecken jagen, schaudern machen, scheu machen*: उद्वेजिता वृष्टिभिः Kumâras. 1,6. इमे मार्जारिका उद्वेजयन्ति नः MBh. 1,3427. 13,3047. 3439 (med.). 14,1299. 2533. Harîv. 8747. R. 3, 1,18. 5,29,12. 34. Mṛicch. 141,13. Spr. (II) 1056. 1261. fgg. (I) 1649. 4239. 4467. Kathâs. 74,157. Râjat. 1,254. 4,667. 6,277. Daçak. 63, 10. 68,14. Bhâg. P. 5,18,15. 26,33. 9,8,16. Pañcat. 209,23. 222,7. ed. orn. 64,13. उद्वेजयति जिह्मायं कुर्वन्निमिचिमी कटु: *erschrecken, zusammenfahren machen* Vikr. 10,5 (vgl. Suçr. 1,155,5). जलेन *durch kaltes Wasser einen Bewusstlosen beleben (schaudern machen)* Suçr. 2,22,14. उद्वेजयति मूर्ध्नो ऽपि चरणं काण्टकाङ्कुरः so v. a. *belästigen, quälen* Spr. 2827. Kumâras. 1,11. Spr. 1526. — Vgl. उद्वेजन fg.

— पर्युद् *schaudern vor* (acc.): दुःखस्यानुचिता दुःखं वने पर्युद्विजिष्यति R. 2,66,9.

— प्रोद्, partic. प्रोद्विग्न *eine Unruhe an den Tag legend*: °तारायतलोललोचना Bhâg. P. 8,12,30. — caus. *in Schrecken jagen* MBh. 13, 6715. Bhâg. P. 10,38,14.

— समुद् *zusammenfahren, zurückschrecken*: समुद्विविजिरे MBh. 6, 632. समुद्विग्न = उद्विग्न 5,7188. R. Gorr. 2,67,21. 5,91,10. Brahma-P. in L.A. (III) 50,2. Bhâg. P. 7,5,5.

— प्र *davon stürzen*: सिन्धवः प्र विविजे नवेन R.V. 10,111,9. भूमा रेजन्ते सर्धनि प्रविक्ते *weichend, Einsturz drohend* 6,30,5. — caus. 1) *abschnellen, schleudern*: शरैः सुप्रवेजितैः MBh. 7,3590. — 2) *verscheuchen* MBh. 4,1032.

— वि, partic. विविग्न *sehr erschrocken* Raghu. 7,48. 18,12. Kumâras. 1,57. Kathâs. 46,5. 117,145. Râjat. 5,339. Bhâg. P. 8,19,10. Mârk. P. 136,10. — caus. *in Schrecken jagen* Harîv. 568. प्रतोदितः st. विवेजितः die neuere Ausg., Nîlak. erwähnt eine Lesart विरोजितः.

— सम् *zusammenfahren, entfliehen*: यथा मृगाः संविजन्ते पुरुषादधि AV. 5,21,4. 6. 8,7,13. 11,9,12. मा भेर्मा सं विक्थाः VS. 1, 23. 6,35. — संविग्न 1) *aufgeregt, bestürzt, erschrocken, scheu*: शोक° Bhag. 1,47. MBh. 3,2777. R. 2,72,18. रोष° 5,56,131. घनर्थदुःख° R. Gorr. 2,10, 12. भय° 3,48,1. 5,38,1. MBh. 3,2561. 5,7187. Harîv. 1209. 10780. R. 2,30,2. Bhâg. P. 3,15,3. 20,21. 4,28,46. 6,13,4. 7,4,21. 10,68,49. Bhaṭṭ. 9,1. सु° MBh. 14,129. R. 7,80,8. भयसंविग्नया वाचा *aufgeregt, unsicher* MBh. 1,6763. बाष्पसंविग्नया गिरा Harîv. 3666. — 2) *beweglich, hinundhergehend*: पूरकेरकसंविग्नवलि° Bhâg. P. 4,24,50. — 3)

gefallen: कूप° Bhâg. P. 3, 19, 7. सलिला ed. Bomb. — Vgl. संवेग. — caus. *erschrecken:* मा नः सोम सं वीविजो मा वि वीभिषवाः ṚV. 8, 68, 8.

2. विष् f. nach Sis. so v. a. *flüchtiger Vogel* oder *erschreckend;* es scheint ein Spielausdruck zu sein: सप्तीर्व कृत्वविषे धामिनाना ṚV. 1, 92, 10. 2, 12, 5.

3. विष्, वेवेक्ति, वेविक्ते (पक्षभावे) Dhâtup. 25, 12. P. 7, 4, 75. Vop. 10, 9. erhält keinen Bindevocal Kâr. 2. 9 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. — Vgl. 1. विच्.

विसग्ध s. u. 1. सद् mit वि und vgl. वैसग्धक.

विसञ्जप (vom intens. von सप् mit वि) adj. *flüsternd* Nir. 5, 33.

विसट (2. वि + सटा) adj. *nicht in Flechten gebunden:* Haar Çiksh. Gaṇ. 1, 28. विसटीकृ *aufflechten:* केशान् P. 3, 1, 21, Schol.

विसन (2. वि + 1. सन) adj. *menschenleer, einsam* AK. 2, 8, 1, 22. 3, 4, 44, 55. H. 742. Hall. 4, 23. वन M. 10, 107. 11, 103. MBh. 1, 3396. 3, 2384. R. 1, 9, 26. 63, 6. 2, 26, 24. 29, 21. 5, 28, 2. Suçr. 1, 241, 7. Spr. 2006. Kathâs. 10, 164. Brahma-P. in LA. (III) 49, 7. subst. *ein einsamer Ort:* निन्ये विसनम् Vop. 24, 13. विसनासेविनी Kathâs. 71, 93. विसने *an einem einsamen Orte, fern von allen Menschen, ohne Zeugen, im Geheimen* MBh. 1, 4666. 2, 1790. 3, 2748. 14, 150. R. 2, 33, 28. R. Gorr. 2, 114, 34. Spr. 4208. Varâh. Bṛh. S. 43, 16. Bṛh. S. 5, 16. Kathâs. 4, 114. 10, 178. 12, 143. 13, 3. 16, 7. 23, 1. 27, 132. 29, 3. 32, 157. Râga-Tar. 4, 31. 282. Bhâg. P. 1, 6, 21. 7, 9, 44. Pañkat. 58, 3. 225, 23. Hit. 87, 22. Vet. in LA. (III) 7, 13. विसनेषु Mâlav. P. 118, 12. विसनं कृ *alle Zeugen entfernen:* यत्र विसनं कृता Kathâs. 38, 33. 40, 100. 75, 172. रात्रा विसनं कृतम् Vet. in LA. (III) 3, 9.

विसनता (von विसन) f. *Menschenleere, Einsamkeit:* देशस्य Sîn. D. 20, 14.

विसनन (von सन् mit वि) n. *das Zeugen, Gebären* H. 341.

विसनीकृ (विसन + 1. कृ) *alle Zeugen entfernen* R. Gorr. 2, 68, 46. Kathâs. 102, 118. von *einer geliebten Person trennen:* यदृक् विसनीकृता R. 7, 48, 6.

विसन्मन् (2. वि + सन्°) m. Bez. *einer Mischlingskaste, des Sohnes eines ausgestossenen* Vaiçja M. 10, 23.

विसन्या (von सन् mit वि) adj. f. *die gebären soll* Pân. Gaṇ. 2, 7 in Z. d. d. m. G. 7, 537.

विसपिल adj. = पिच्छिल Hall. 3, 56. विसवल v. l. — Vgl. विस्रल.

विसर्य (von 1. सि mit वि) 1) m. a) *Streit um den Sieg; Sieg, Uebermacht; Besiegung, Eroberung* AK. 2, 8, 3, 78. H. 803. an. 3, 805. Med. j. 103. ṚV. 10, 84, 4. AV. 10, 2, 5. विसर्यमुपयत्तैः *in den Kampf ziehend* TS. 1, 5, 1, 1. TBr. 1, 1, 6, 1. Çat. Br. 2, 2, 3, 2. 4, 3, 3, 13. 13, 2, 2, 13. Kshudr. 14. धनित्वो विसर्यो यस्मादृश्यते युध्यमानयोः Spr. 294 (II). संदिग्धो विसर्यो युधि 3166. 2438. M. 10, 119. विसर्यमवाप्य MBh. 1, 1187. विसर्याभिषेचितः 1989. विसर्याभिषेक Verz. d. Oxf. H. 43, a, 23. MBh. 1, 7633. तद्युद्धे विसर्यं चात्मनो मरुत् (s. u. मरुत्) 7, 3650. R. 2, 40, 9. विसर्यमुक्तस्तैः (विसर्यं पृष्टस्तैः ed. Bomb.) 71, 30. Kumâras. 3, 19. Ragh. 12, 44. Çiç. 48. स भवान्विसर्याय प्रतिष्ठताम् 93, 11. Varâh. Bṛh. S. 4, 31. 18, 5. 73, 2. नृपति° 36, 2. Bhâg. P. 2, 10, 4. 6, 11, 20. धर्म° *der Sieg des Rechts* Râga-Tar. 3, 329. धन्यविहिषाम् *Besiegung* Kathâs. 34, 192. कामादि° Prab. 70, 5. 73, 16. Pañkat. 168, 23. दिशाम् *Eroberung* Bhâg. P. 9, 11, 13. त्रैलोक्य° MBh. 1, 7625. 7641. R. 1, 46, 14 (पुत्र mit der ed. Bomb. zu lesen). 4, 10, 4. पृथिवी° MBh. 4, 127. Kathâs. 17, 47. विश्व° Bhâg. P. 3, 9, 28. — b) *der Gewinn, das Eroberte, Beute* Kir. Ça. 29, 4, 27. — c) bildliche Bez. *des Schwertes* H. ç. 143. MBh. 12, 6304. *der Strafe* 4629. — d) *Götterwagen* (विमान) H. an. — e) Bez. *einer best. Stunde des Tages* (मुहूर्त) R. 1, 73, 8. *der 17ten* Ind. St. 10, 296. die Geburtsstunde Kṛshṇa's Harîv. 3320. Weber, Kṛshṇaj. 236. 257. 262. — f) Bez. *des 5ten Monats* Ind. St. 10, 298. — g) Bez. *des 27ten (1ten) Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8, 38. Verz. d. Oxf. H. 331, b, 2 v. u. Weber, Ġjot. 24. 99. Journ. of the Am. Or. S. 6, 180. — h) Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19, 44. — i) Bein. Jama's Çârad. im ÇKDa. — k) N. pr. verschiedener Männer: ein Sohn Ġajanta's (eines Sohnes des Indra) Harîv. 8914. 8920. Vâsudeva's 1936. Kṛshṇa's Bhâg. P. 10, 61, 12. ein Diener Vishṇu's 3, 16, 2. 8, 21, 16. Padmapâṇi's Wilson, Sel. Works 2, 24. ein Sohn des Svarokis Mârk. P. 66, 5. 6. ein Muni Harîv. 9373. ein Fürst MBh. 1, 226. ein Sohn Dhṛtarâshṭra's (?) 7, 6881. ein Krieger auf Seiten der Pâṇḍava 7012. einer der acht Rathgeber Daçaratha's R. 1, 7, 3. 7, 39, 8, 26. Weber, Rimây. Up. 302. Bein. Arǵuna's Taitt. 2, 8, 16. H. ç. 137. H. an. Med. MBh. 4, 176. 804. 1276. 1281. 12, 896. 14, 2422. 2477. Bhâg. P. 1, 9, 38. 39. ein Sohn Ġaja's Harîv. 1514. fg. VP. 390. Bhâg. P. 9, 13, 23. Kâṅkshu's (Kuṅkshu's) Harîv. 758. fg. VP. 373. Samǵaja's VP. 412. Sudeva's Bhâg. P. 9, 8, 1. 2. des Purûravas 15, 1. 3. des Bṛhanmanas (oder Grosssohn desselben) Harîv. 1707. fg. VP. 445. fg. Bhâg. P. 9, 23, 11. ein Sohn des Jaǵñaçri 12, 1, 25. VP. 473. einer der 9 weissen Bala bei den Gaina H. 698. einer der 5 Anuttara 94, Schol. der 20te Arhant der zukünftigen Avasarpiṇi 56. Vater des 21ten Arhant's der gegenwärtigen Avas. 38. Diener des 8ten Arhant's der gegenwärtigen Avas. 42. ein Sohn Kalki's Kalki-P. 13 im ÇKDa. Kalpa's Kalkî-P. ebend. ein Fürst von Kaçmîra Râga-Tar. 2, 62. — 7, 1493. 8, 506. 520. 670. 673. 691. 1162. 1268. 1267. Buan. Intr. 377, N. 1. 399, N. 2. Verz. d. Oxf. H. 16, b, 14. 154, a, 22. fg. — l) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 353 (VP. 188). — m) N. pr. eines Hasen Kathâs. 62, 32. Hit. 82, 17. fg. — n) N. des Wurfspiesses Rudra's, personif. MBh. 3, 14551. 14553. — 2) f. या a) *eine best. Pflanze* Suçr. 2, 373, 20. 415, 21. Varâh. Bṛh. S. 48, 39. = कृ-शोतकी Ġaṭâdh. im ÇKDa. = वचा Ratnam. ebend. = जयन्ती, शेफालिका, मञ्जिष्ठा, *eine Art* Çami, यग्रिमन्थ und त्रैलोक्यविसया Râǵân. ebend. — b) Bez. *einer best.* Tithi H. an. Med. N. *der 3ten, 8ten und 13ten* Tithi Varâh. Bṛh. S. 99, 2. *der 12te Tag in der lichten Hälfte des Monats* Çrâvaṇa (an dem Kṛshṇa geboren wurde) Bhâg. P. 2, 18, 6. *der 10te Tag in der lichten Hälfte des Monats* Âçvina (ein Festtag zu Ehren der Durgâ) As. Res. 3, 261 nach Haeberl. *die 7te Nacht im* Karmamâsa Ind. St. 10, 296. — c) N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, a, 31. 95, a, 8. im Gefolge Kubera's (विसय ed. Bomb.) MBh. 2, 415. Bein. der Durgâ H. ç. 52. H. an. MBh. 4, 194. 6, 793. Harîv. 3271. 9426. Gattin Jama's Ġaṭâdh. im ÇKDa. eine Freundin der Durgâ Taitt. 1, 1, 54. H. 205. H. an. Med. Wilson, Sel. Works 2, 38. die Mutter des 2ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi H. 39. eine Tochter Da-

kṣha's R. 1,23,14 (24,15. 17 Gorr.). Mutter verschiedener Suhotra's MBu. 1,3736. 3832. Bhâg. P. 9,22,30. — *d*) N. des Kranzes von Kṛshṇa MBu. 8,3855. — *e*) N. *einer der* Kumârî (*kleines Flaggenstöckchen*) *an Indra's Banner* Vaṃś. Bṛh. S. 43,40. — *f*) N. pr. eines Speers R. 1, 29,12 (30,13 Gorr.). — *g*) Bez. eines best. Zauberspruchs Bhaṭṭ. 2,21. — 3) n. *a*) *die* (giftige) *Wurzel der* विजया *genannten Pflanze* Suçr. 2, 251,15. — *b*) N. pr. eines heiligen Gebietes in Kaçmîra Kathâs. 51, 48. 66,5; vgl. विजयक्षेत्र. — 4) adj. *siegreich* H. ç. 151. *zum Siege führend, Sieg verkündend:* चापं विजयं महत् MBu. 8,2326. निमित्तानि विजयानि (विजयाय ed. Bomb.) बहूनि 7,2998. — Vgl. त्रैलोक्यविजया, दिग्विजय (auch Bhâg. P. 9,11,23), पवन°, प्र°, मध्वाचार्य°, विशाल°.

विजयक adj. = विजये कुशलः गण साकर्यादि zu P. 5,2,64.

विजयकण्टक m. *ein Dorn für den Sieg* so v. a. *Andern den Sieg erschwerend, — streitig machend;* Bein. eines Fürsten Journ. of the Am. Or. S. 6,518, *g*.

विजयकुञ्जर m. *Siegeselephant* so v. a. *ein königlicher Elephant* Taik. 2,8,35. Hem. 160.

विजयकेतु m. N. pr. eines Fürsten der Vidjâdhara Hall in der Einl. zu Vâsavad. 40.

विजयक्षेत्र n. = विजय 3) *b*) Kathâs. 39,36. Râja-Tar. 1,278. — Vgl. विजयिक्षेत्र.

विजयचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Journ. of the Am. Or. S. 6,548,6. Colebr. Misc. Ess. II, 286.

विजयच्छन्द् m. *ein aus 504 Schnüren bestehender Perlenschmuck* H. 639. Vaṃś. Bṛh. S. 81,31.

विजयडिण्डिम m. *Siegestrommel* Verz. d. Oxf. H. 257,*b*,21.

विजयतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 73,*b*,15.

विजयदत्त m. ein Mannsname Kathâs. 25,75. 254. N. pr. des Hasen im Monde Paṇḍar. 160,23.

विजयदुन्दुभि m. *Siegestrommel;* davon nom. abstr. °ता f. Raghuv. 9,11.

विजयदेवी f. ein Frauenname Wilson, Sel. Works I, 299.

विजयद्वादशी f. Bez. *des 12ten Tages in der lichten Hälfte des Monats* Çrâvaṇa Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,13.

विजयनगर n. N. pr. einer grossen *Stadt* in Karṇâṭa LIA. I, 168. IV, 168. fgg. Wilson, Sel. Works I, 332. fg. 335. Verz. d. Oxf. H. 213, *a*, No. 503. Buchanan in Bhâg. P. I, LX, N. Z. f. d. K. d. M. I, 103. fg.

विजयनन्दन m. N. pr. des 11ten Kâkravartin in Bhârata H. 694.

विजयपत्त (von 1. जि mit वि) 1) m. Bein. Indra's Uçîvat. zu Unâdis. 3,128. — 2) f. ई AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (56) wohl fehlerhaft für वैजयन्ती. — Vgl. वैजयत्त.

विजयपाल m. N. pr. eines Fürsten Râja-Tar. 8,206.

विजयपुर n. N. pr. verschiedener *Städte:* 1) Bejapur, Stadt und District im Dekkhan nördlich von der Kṛshṇâ LIA. I, 168, N. 1. — 2) in Khandesh. — 3) in der Nähe von Mirzâpur Colebr. Misc. Ess. II, 249. — 4) an der Kanoujkî im nördlichen Hindustan.

विजयपूर्णिमा f. Bez. *einer best. Vollmondsnacht* Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,29.

विजयप्रशस्ति f. Titel eines Werkes Hall 161. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 18.

विजयभाग adj. *Spielglück gebend* TBr. 3,7,4,6.

विजयमर्दल m. *Siegestrommel* Taik. 1,1,120. Hem. 72.

विजयमल्ल m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 7,732. 761. 820. 822. 836.

विजयमालिन् m. N. pr. eines Kaufmannes Kathâs. 72, 254.

विजयमित्र m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 7,366.

विजयरक्षित m. N. pr. eines Autors; s. u. पतञ्जलि 1) und पैष्टिक 1).

विजयराज m. N. pr. zweier Männer Râja-Tar. 7,1067. 8,2228.

विजयलक्ष्मी f. N. pr. der Mutter Veṅkaṭa's Verz. d. Oxf. H. 196,*b*,24.

विजयवत् adj. von विजय; विजयवती f. N. pr. einer Tochter des Schlangendämons Gandhamâlin Kathâs. 72,83.

विजयवर्मन् m. N. pr. eines Kshatrija Kathâs. 52,339.

विजयवेग m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 25,292.

विजयश्री f. 1) *Siegesgöttin* Spr. 5327. Kumâras. in Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,33. — 2) N. pr. eines Frauenzimmers Hall 23.

विजयसप्तमी f. Bez. *eines best. 7ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 42. — Vgl. विजयासप्तमी.

विजयसिंह m. N. pr. verschiedener Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 20. LIA. II, 737, N. 784. Râja-Tar. 7, 581. 584. 823. 833. 888.

विजयसेन 1) m. N. pr. eines Kriegers Kathâs. 104, 25. fgg. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers Lalit. ed. Calc. 331,17.

विजयाकल्प m. Titel eines Buches Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,13.

विजयादशमी f. Bez. *des 10ten Tages in der lichten Hälfte des Monats* Âçvina, an welchem das Bild der Durgâ, am Ende ihres Festes, in's Wasser geworfen wird, Verz. d. Oxf. H. 285,*a*,23.

विजयासप्तमी f. Bez. *eines 7ten Tages in der lichten Hälfte eines Monats, der auf einen Sonntag fällt,* Tithâdiv. im ÇKDa.

विजयिक्षेत्र n. N. pr. eines *heiligen Gebietes* in Orissa LIA. I, 187, N. 1. — Vgl. विजयक्षेत्र.

विजयिन् (von 1. जि mit वि) adj. *siegreich, Sieger* Jâḍ. 3, 223. MBu. 1,834. 5,7040. 6,3221. 7,3889. Harîv. 11039. 15752. R. Gorr. 2,1,33. 2,35,111. 6,98,20. 7,1,19. 22,1. Raghuv. 7,68. Spr. 1800. 3167. 4611. Gît. 7,22. Kathâs. 109,146. Mâlav. P. 18,17. वादेषु विजयावताम् Verz. d. Oxf. H. 261,*a*,18. समर° Spr. 2087. धर्म° *des Rechtes wegen* Raghuv. 4,48. fem. Verz. d. Oxf. H. 110,*a*,23. neutr.: आचार्यके विजयि मान्मथम् Mâlatîm. 16,4. *Besieger:* घरि° Mâlav. P. 22,45. 129,18. *Eroberer:* जगतां त्रयाणाम् Prasannar. 78,2. त्रिलोक° Spr. 2186. दिग्विजयिन् Bhâg. P. 9,10,15. पुर° Vishṇu Pur. 25,15.

विजयिन adj. = विजिल Rîjan. zu AK. 2,9,46 nach ÇKDa.

विजयिष्ठ (von 1. जि mit वि mit dem suff. des superl.) adj. *am meisten siegend* P. 6,4,154, Schol.

विजयीन्द्र mit dem Bein. यतीन्द्र N. pr. eines Autors Hall 113.

विजयेश m. Bez. eines best. Heiligthums Râja-Tar. 1,28. 103. fg. 2, 123. 5,46.

विजयेश्वर m. dass. Râja-Tar. 1,113. 131. 316. 2,62. 125. 4,693. 6,98.

विजयैकादशी Bez. *des 11ten Tages in der dunklen Hälfte des* Phâlguna Wilson, Sel. Works II, 209. fg.

विजयोत्सव m. *Siegesfest,* das zu Ehren Vishṇu's am 10ten Tage in

der lichten Hälfte des Âçvina gefeiert wird, ÇKDa. Verz. d. B.H. No. 1181.

विन्नर् (2. वि + नृ) adj. *nicht alternd* Çat. Br. 14, 7, 2, 28. Khând. Up. 8, 7, 1. Maitrâyaṇ. 6, 4. 25. Kaṭhâs. 41, 11. — 2) m. *Stengel* Çabdâmbh. bei Wilson. — 3) f. धा N. eines Flusses in Brahman's Welt (*das Alter fern haltend*) Kauṣh. Up. 1, 3. 4.

विन्नरम Maitrâyaṇ. 6, 13 wohl fehlerhaft für विन्नरण्य.

विन्नर्नर् (2. वि + नर्°) adj. *gebrechlich* VS. 30, 15. विन्नर्नरीकर् *gebrechlich machen:* पुरा नरा वलेवरं विन्नर्नरीकरोति ते MBu. 12, 12054.

1. विन्नल (2. वि + नल) adj. *wasserlos:* नलधर Hariv. 3822. तोयाशय Varâh. Bṛh. S. 19, 20. विन्नले (= अवृष्टिकाले Comm.) bei Dürre Agni-Pur. 6, 10 in Ind. St. 1, 41.

2. विन्नल adj. fehlerhafte v. l. für विन्नित H. 414.

विन्नत्य (von नत्य् mit वि) 1) m. *ein ungerechter Vorwurf:* व्याकृयासूयया गूढमानमुद्रान्तरालया। यद्यहिंषि करोतीक्ति र्विन्नत्यो विदुषां मतः॥ Uddâlakâmânâṃ im ÇKDa. f. dass.: अवज्ञानृतदुष्टोक्ति र्विन्नत्या Mârk. P. 31, 30. — 2) f. धा N. einer bösen Genie Mârk. P. 31, 30.

विन्नवल s. u. विन्नपिल.

विन्नाका v. l. für विज्ञाका Verz. d. Oxf. H. 124, b, N. 4.

विन्नाति (2. वि + ज्ञा°) adj. *zu einer anderen Klasse gehörig, ungleichartig, heterogen* Kusum. 7, 9. Kull. zu M. 9, 198. — Vgl. वैज्ञात्य, सज्ञाति.

विन्नातीय (2. वि + ज्ञा°) adj. dass. Kap. 1, 23. Nilak. 180. Kusum. 6, 14. 7, 11. 16, 11. Vedântas. (Allah.) No. 123. Madhus. in Ind. St. 1, 22, 24. Sarvadarçanas. 61, 18. Kull. zu M. 1, 2. 3, 43. तद्विज्ञातीय Sâh. D. 219, 3. Schol. zu Kap. 1, 104.

विन्नानक (von 1. ज्ञा mit वि) adj. *kennend, vertraut mit:* दुःखानामविन्नानकः MBu. 13, 5334.

विन्नानि (2. वि + 1. ज्ञान) adj. *fremd:* विन्नानिर्यत्र ब्राह्मणो रात्रिं वसति पापया AV. 5, 17, 18. Wollte man übersetzen *ohne Weib*, so müsste man die Sitte der Ueberlassung des Weibes an den geehrten Gast annehmen, für welche sonst keine Belege bekannt sind.

विन्नानिवंस् partic. perf. für विन्नज्ञिवंस् (von ज्ञन् oder ज्ञा) ṚV. 10, 77, 1.

विन्नानु s. ज्ञानु°: die neuere Ausg. liest मव्यज्ञानु विन्नानु च.

विन्नापक N. pr. einer Gegend gaṇa कच्छादि zu P. 4, 2, 133. — Vgl. वैन्नापक.

विन्नापयितर् (vom caus. von 1. ज्ञि mit वि) nom. sg. *der zum Sieg hilft* Kâṭh. 13, 5.

विन्नामन् (von ज्ञन् mit वि) adj. *verwandt* so v. a. *entsprechend, correspondirend* (z. B. Glieder wie die Arme, Füsse): यद्विज्ञामन्यृषि र्वर्नृन् भुवत् ṚV. 7, 30, 2. विज्ञामि या यपचितः स्वयंनसः AV. 7, 76, 2. धिष्ण्याः Çat. Br. 3, 6, 2, 1.

विन्नामातर् m. wohl so v. a. ज्ञामातर् ṚV. 1, 109, 2. nach Nir. 6, 9 *ein uneigentlicher Tochtermann*, im Süden nenne man so *den Mann, der sein Weib durch Kauf erlangt hat* (weil er nicht von tüchtiger Qualität sei Durg.).

विन्नामिन् adj. *blutsverwandt* oder überh. *verwandt* (Gegens. मन्नामिन्) ṚV. 10, 69, 12.

विन्नावन् (von ज्ञन् mit वि) adj. Schol. zu P. 3, 2, 75. 6, 4, 41. VS. Prât. 5, 6. *leiblich, eigen:* स्यात्रः सूनुस्तनयो विन्नावा ṚV. 3, 1, 23.

विन्नावत् (wie eben) adj. f. °वती *die geboren hat* AV. 3, 3, 13.

विन्निगीत und विन्निगीर्य s. 2. गा mit वि.

विन्निगीषा (vom desid. von 1. ज्ञि mit वि) f. *das Verlangen zu siegen, — zu besiegen, — zu erobern* R. 4, 9, 58. 61. Kâm. Nitis. 8, 55. 10, 40. पाण्डवान् MBu. 8, 413. सुरलोकाय R. 7, 104, 15. तत्तद्रत्ताविन्निगीषया *aus Verlangen zu überwinden, unnütz zu machen* Kaṭhâs. 36, 71. °विवर्जित als Erklärung von साम्नून, वेदरिक AK. 3, 1, 21 und H. 428 beruht auf einer ungeschickten Auffassung von P. 8, 2, 49; vgl. Schol. zu 5, 2, 67.

विन्निगीषावत् (von विन्निगीषा) adj. *zu siegen —, zu besiegen verlangend* Nilak. zu MBu. 1, 7096.

विन्निगीषिन् (wie eben) adj. dass.: मन्योऽन्यविन्निगीषिणो MBu. 1, 7096.

विन्निगीषोष (wie eben) adj. (चतुर्धर्चेषु) gaṇa उत्कादि zu P. 4, 2, 90.

विन्निगीषु (vom desid. von 1. ज्ञि mit वि) adj. *zu siegen —, zu besiegen —, zu erobern verlangend, eroberungssüchtig* Çârdam. im ÇKDa. M. 7, 155. MBu. 1, 2302. Hariv. 3840. R. 3, 22, 7. 4, 17, 11. 5, 80, 10. Suçr. 1, 122, 3. Kâm. Nitis. 8, 3. 4. 6. Ragh. 1, 7. Vârâh. Bṛh. S. 15, 16. 16, 39. Spr. 2885. 3911. Hit. 94, 13. 119, 20. fg. रिपुबल° Kaṭhâs. 47, 121. वसुधराम् MBu. 1, 4448. संसार° 3, 126. *der in einer Disputation den Sieg davonzutragen wünscht* Sarvadarçanas. 115, 4.

विन्निगीषुता (von विन्निगीषु) f. *das Verlangen Eroberungen zu machen* Kaṭhâs. 18, 34. fg.

विन्निगीषुत्व (wie eben) n. dass. Kâm. Nitis. 8, 40.

विन्निग्राकृषिषु (vom desid. des caus. von ग्रह् mit वि) adj. *Jmd* (acc.) *in einen Kampf zu verwickeln beabsichtigend* Bhaṭṭ. 4, 24.

विन्निघत्सु (2. वि + निघत्सा) adj. *dem Hunger nicht unterliegend, nicht hungrig werdend* Çat. Br. 14, 7, 2, 28. Khând. Up. 8, 7, 1 (fälschlich °वि° gedr.). Sarvadarçanas. 55, 1 (°घत्सा fälschlich Wilson, Sel. Works 1, 45).

विन्निघांसु (vom desid. von हन् mit वि) adj. *zu schlagen —, zu tödten beabsichtigend* (mit acc. der Person) MBu. 3, 14371. 14373. fg. Bhâg. P. 10, 17, 5. *zu vernichten, zu entfernen wünschend:* दुःखम् MBu. 5, 741.

विन्निघृत्षु (vom desid. von ग्रह् mit वि) adj. *zu kriegen —, Feindseligkeiten anzufangen begierig* Râja-Tar. 8, 1997.

विन्निज्ञासा (vom desid. von 1. ज्ञा mit वि) f. *das Verlangen zu erfahren, — kennen zu lernen, Erkundigung* Çat. Br. 14, 6, 6, 1. MBu. 12, 11921. तद्विज्ञासया 1, 4391. Bhâg. P. 1, 9, 16.

विन्निज्ञासितव्य (wie eben) adj. *was zu erfahren —, kennen zu lernen man wünschen muss* Khând. Up. 7, 16, 1. 17, 1.

विन्निज्ञासु (wie eben) adj. *zu erfahren —, kennen zu lernen begierig* R. 5, 56, 75. तव von dir MBu. 12, 3108.

विन्निज्ञास्य (wie eben) adj. = विन्निज्ञासितव्य Çat. Br. 14, 4, 3, 15. fg. Jîv. 3, 191. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. 8. 290.

विन्नित adj. s. u. 1. ज्ञि mit वि; n. *Gewonnenes; Sieg* Çat. Br. 1, 5, 3, 21. 4, 2, 3, 7. 3, 3, 5. 16. Lâṭy. 9, 10, 7.

विन्नितारि (वि° + अरि *Feind*) m. N. pr. eines Râkshasa R. 6, 35, 15.

विन्नितास (वि° + असु) m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu Bhâg. P. 4, 9, 18. 22, 54.

विन्नितासु (वि° + असु) m. N. pr. eines Muni Kaṭhâs. 69, 101. fgg.

विजिति (von 1. जि mit वि) f. *Kampf; Sieg:* देवा विजितिमुत्तममारुरैर्व्यत्तयत्त TS. 2, 4, 2, 3. 5, 1, 10, 2. Ait. Br. 1, 24. 8, 9. Çat. Br. 2, 2, 4, 18. 5, 2, 2, 7. Kâtj. Çr. 19, 5, 4. Âçv. Çr. 11, 3, 11. पुण्यलोक° *Gewinnung* Maitrâjop. 6, 26. क्षिति° Kirâm. 3, 35. विजिति als Genie MBu. 12, 8418.

विजितिन् (von विजित) adj. *siegreich* Ait. Br. 2, 31. घ° 7, 18. — Vgl. गेके°, गोष्ठे°.

विजित्वर (von 1. जि mit वि) 1) adj. (f. घा) *siegreich:* पृतना Kumârâs. in Verz. d. Oxf. H. 116, *b*, 33. — 2) f. घा N. pr. einer Göttin; so ist wohl zu lesen st. विचित्वारा und विचिन्वरा Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 32. fg.

विजित्वरत्व n. nom. abstr. von विजित्वर 1) Verz. d. Oxf. H. 256, *a*, 38.

विजिन adj. = विजिल Râjân. zu AK. 2, 9, 46 nach ÇKDa.

विजिपिल adj. dass. H. 414, Schol.

विजिल adj. = पिच्छिल, विजिविल, विज्जल AK. 2, 9, 46. H. 414.

विजिविल adj. dass. H. 414.

विजिषीर्षु (vom desid. von जि mit वि) adj. *sich erinnern wollend* MBu. 3, 14875.

विजिह्म (2. वि + जिह्म°) adj. *krumm, gebogen:* °धु (विजिह्मध्रु gedr.) Suçr. 2, 538, 4. °शिख Kir. 6, 2. °नयन so v. a. *seitwärts gerichtet* Ragh. 19, 35. — Vgl. व्याजिह्म.

विजिह्म Suçr. 2, 338, 4 fehlerhaft für विजिह्म.

विजीवित (2. वि + जीव°) adj. (f. घा) *leblos, todt* R. Gorr. 2, 17, 40. 6, 23, 37.

विजु m. *am Leibe des Vogels derjenige Theil, wo die Flügel ansitzen,* Ait. Âr. 1, 17.

विजुल m. *die Wurzel von Bombax heptaphyllum* Râjân. im ÇKDa.

विजृम्भ (von जृम्भ् mit वि) m. *Ausreckung:* भू° *das Verziehen der Brauen* Bhâg. P. 2, 1, 30. 3, 31, 28. 9, 10, 4. 10, 47, 15.

विजृम्भक (wie eben) 1) m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 46, 69. — 2) f. विजृम्भिका *das Schnappen nach Luft, Gähnen* Suçr. 2, 288, 21.

विजृम्भण (wie eben) n. 1) *das Gähnen* Suçr. 2, 254, 15. — 2) *das Aufblühen* Ragh. 16, 47. — 3) *Ausdehnung, Ausbreitung:* पर्यन्तभूधरनिकुञ्ज° Mâlatîm. 144, 20. भ्रुवो: *das Verziehen der Brauen* Bhâg. P. 7, 5, 49.

विजृम्भित 1) adj. s. u. जृम्भ् mit वि. — 2) n. a) *das Hervorbrechen, Manifestation, die Folgen:* नवानङ्ग° Kathâs. 4, 13. Sarvadarçanas. 68, 15. निर्वाणौत्तो° adj. Râjat. 5, 147. कपालकुण्डलाकोपस्य Mâlatîm. 87, 3. घघोरघण्टवध° 170, 12. शाप° Kathâs. 67, 104. तस्यैदं मे विजृम्भितम् 73, 161. तदज्ञानविजृम्भितमेव Mallin. zu Kir. 5, 22. — b) *That,* = चेष्टा Mud. 1. 219. वीर° *Heldenthat* Mâlav. 92.

विजृम्भिन् (von जृम्भ् mit वि) adj. *hervorbrechend, sich manifestirend:* कलभकुम्भविजृम्भिबल (s. die Corrigg.) Verz. d. Oxf. H. 259, *a*, 17.

विजेतर् (von 1. जि mit वि) m. *Sieger, Besieger, Eroberer* Kâm. 13, 5. MBu. 7, 6046. कृष्णपाण्डवयो: 1, 8296. Hariv. 10633. 14088. Kumârâs. in Verz. d. Oxf. H. 116, *b*, 38. मदमुचां वारणानाम् Uttarar. 48, 12 (62, 14). पुराम् Çiva Kir. 5, 35. दुष्टिर्मम MBu. 1, 7172. *Sieger in einer Disputation* 13, 2196.

विजेतव्य (wie eben) adj. *zu besiegen:* वीर MBu. 7, 6237. Kathâs. 38, 7. Sâh. D. 234. इन्द्रियाणि MBu. 12, 7093. 9008.

विजेन्य (विज्जेन्य Padap.) adj. *fern* (von विजन) nach Sây.: यामिष्टे वर्तिर्वृषणा विजेन्यम् ṚV. 1, 119, 4. Liesse sich als partic. fut. pass. von वि् fassen: *flüchtig zu durchlaufen.*

विजेय (von 1. जि mit वि) adj. *zu besiegen:* शत्रूणामविजेयो भविष्यसि Kathâs. 107, 131.

विजेयविलास m. Titel eines Buches Colebr. Misc. Ess. I, 14. 23. Sollte nicht विजेय° zu lesen sein?

विजेष (von 1. जि mit वि) m. *Sieg:* °कृत् *Sieg bewirkend* ṚV. 10, 84, 5.

विजेषम् adj. nach Sây. (die Götter) *ergötzend* ṚV. 8, 22, 10. Könnte als Gegens. zu सजोषम् gefasst werden.

विज्ञ 1) m. ein Mannsname Râjat.-Tar. 7, 321. fgg. 332. 337. 349. 366. °राज 8, 2327. — 2) f. घा ein Frauenname Râjat.-Tar. 8, 3444. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 21.

विज्ञान adj. = विज्जल Râjân. zu AK. 2, 9, 46 nach ÇKDa.

विज्ञानागम् m. N. *eines nach* Vigâ *benannten* Vihâra Râjat.-Tar. 8, 3444.

विज्जल 1) adj. = पिच्छिल *schleimig, schmierig* H. 414. म्लेच्छातकस्य बीजानि निष्कुलीकृत्य भावयेत्प्राज्ञ: । घट्टेल्लाविज्जलाद्रि: Varâh. Bṛh. S. 53, 29. — 2) f. घा ein Frauenname Râjat.-Tar. 8, 290. 369. — 3) n. *eine Art Pfeil* Trik. 2, 8, 53.

विज्जलपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 327, *b*, 7. = विज्जलविड.

विज्जलविड n. = विज्जलपुर Verz. d. Cambr. H. 53. 56.

विज्जाका f. N. pr. einer Dichterin Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 41. 269, *a*, 13. fg. विज्ञाका und विज्झिका v. l.

विज्झिका f. = विज्जाका Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, N. 4. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 21.

विज्झिल adj. = विज्जल Çârdar. im ÇKDa.

विज्झुल n. *Cassia-Rinde* Râjân. im ÇKDa.

विज्झूलिका f. *eine best. Pflanze,* = क्षतुका Râjân. im ÇKDa.

विज्ञ (von 1. ज्ञा mit वि) adj. *kundig, eine richtige Einsicht habend, gelehrt* AK. 3, 1, 4. H. 341. MBu. 2, 2333. 14885 (Çiva). Spr. 660. 1678, v. l. (Th. III, S. 372). 2042, v. l. 2935, v. l. Verz. d. Oxf. H. 257, *a*, N. 3. LA. (III) 90, 9. Paṇḍân. 1, 1, 81. घति° Verz. d. Oxf. H. 141, *a*, 20. विज्ञाभिमानिन् *sich für gelehrt haltend* Bhâg. P. 6, 16, 61. नीत्यर्थ° MBu. 2, 2609. Bhâg. P. 1, 17, 38. प्रबोधयति माविज्ञम् (मामज्ञम् ed. Bomb.) 4, 28, 20. घविज्ञता *Dummheit* Spr. 2206. — Vgl. चन्द्र°, मक्षा°.

विज्ञप्ति (vom caus. von 1. ज्ञा mit वि) f. *Gesuch, Bitte an Jmd* (gen.), überh. *die Anrede eines Niederen an einen Höheren:* विज्ञप्तिर्मे ऽस्ति Kathâs. 13, 183. fg. आगता देव विज्ञप्त्यै कापि स्त्री 23, 13. 6. घग्र्य गच्छामि विज्ञप्त्यै तातस्याहं भवत्कृते 26, 70. स च तस्य न संप्राप विज्ञप्त्यवसरम् 55, 16. 57, 3. महिज्ञप्तिमिमां शृणु 60, 112. 66, 114. 84, 32. Râjat.-Tar. 4, 639. 6, 42. 8, 212. विज्ञप्तिं कर् *an Jmd* (gen.) *ein Gesuch richten, einem Höher Stehenden Etwas melden:* तत्कृते Kathâs. 1, 57. 12, 164. 20, 20. 26, 65. 35, 80. 49, 61. 72, 254. 77, 81. Râjat.-Tar. 8, 2137. *Meldung* überh. Naish. 6, 76.

विज्ञप्य (wie eben) adj. *dem man zu melden hat* Kathâs. 17, 88. — Vgl. विज्ञाप्य.

विज्ञबुद्धि f. = ज्ञबुद्धि Çârdar. im ÇKDa.

विज्ञातर् (von 1. ज्ञा mit वि) nom. ag. *Erkenner, Begreifer, Kenner* Çat. Br. 14, 5, 4, 16. 6, 5, 1, 2, 31. 7, 1, 30. Kaush. Up. 3, 8. MBu. 12, 4401.

14,634. धर्मस्य 2,2321. पुराणशास्त्र° Spr. 4747, v.l. ग्र° unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13,7000. unwissend Nir. 2,2.

विज्ञातवीर्य adj. von bekannter Kraft TBr. 2,4,1,2.

विज्ञातव्य (von 1. ज्ञा mit वि) adj. was erkannt wird, zu erkennen Kaush. Up. 1,7. R. 7,16,24. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 189. ausfindig zu machen MBh. 4,892. zu erkennen als, zu betrachten als Vaṁç. Bṛh. S. 43,69. 54,2. वृक्षस्यैका शाखा यदि विनता भवति विज्ञातव्यं शाखातले जलम् so v. l. da kann man versichert sein, dass unter dem Zweige Wasser ist, 58. 68,14. 33. — Vgl. विज्ञेय.

विज्ञाति (wie eben) f. 1) Erkenntniss Çat. Br. 14,6,5,1. Bṛh. Âr. Up. 4,3,20 (विज्ञानात् st. विज्ञाते: Çat. Br.). — 2) N. einer zu den Gaja gezählten Gottheit Verz. d. Oxf. H. 56, b, 32. — 3) N. des 23ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 52, a, 3.

विज्ञान (wie eben) 1) n. a) Erkenntniss, richtige Erkenntniss, Kenntniss, Wissen AK. 1,1,4,13. H. 310. an. 3,415. Med. n. 128. AV. 7,13,2. 15, 2,1. TS. 3,3,8,5. 4,4,1. 5,7,4,4. Çat. Br. 3,3,4,11. 8,7,2,10. 10,3,5, 13. 14,5,4,17. दर्शन, श्रवण, मति, विज्ञान 5,4,5. 14. 7,4,30. Kaush. Up. 3,3. Taitt. Up. 2,5. Maitrâyaṇ. 6,13. नित्यं सविज्ञानुर्विज्ञाने जगत् Nir. 2,2. M. 4,20. MBh. 3,16771. विदितविज्ञान: परेषां धर्मादिज्ञान् 5,3984. Kap. 1,42. 90. Suçr. 1,30,6. 125,11. एतदेव हि विज्ञानं यदात्मपरावेदनम् Spr. 909 (II). 1169. °निधि 1302. परस्परं °संघर्षिणो: Mâlav. 13,13. 34. Pâṇ. 50,11. बुद्धिर्विज्ञानरूपिणी Bhâg. P. 2,10,32. विज्ञानं स्वयम्भासि प्रमाणं बाधवर्जितम् Sarvadarçanas. 32,15. निरवशेषशास्त्रविषयं मन्यतो ऽर्थतश्च निश्चितज्ञानं विज्ञानम् 76,9. दिव्य Kathâs. 26,60. Çuk. in LA. (III) 32,5. °शक्ति Verz. d. Oxf. H. 223, No. 549. Bhâg. P. 2,1,35. °घनै Çat. Br. 14,5,4,12. Sarvadarçanas. 2,8. शरीरस्य Kenntniss des Körpers Suçr. 1,9,12. विज्ञानेष्वपि चास्त्राणाम् MBh. 1,8033. दुष्टस्य 12,2845. व्याकाव्यकरण° Siṁhâs. 2. आत्म° Kâm. Nîtis. 2,7. प्रयोग° Çiç. 2. शास्त्र° Spr. 1037. Bhâg. P. 1,2,20. Mârk. P. 16,33. Sin. D. 158. Paṁcat. 44, 17. 186,11. लोचन° eine Erkenntniss durch's Auge Sarvadarçanas. 29, 6. किं विज्ञानं विज्ञानासि auf welche Kunst (विज्ञान = शिल्प, कला H. 900. = कार्मण H. an. = कर्मन् Med.) verstehst du dich? Kathâs. 12,75. 52,95. 98. fg. 79,14. 83,21. Wissenschaft von Etwas, Lehre Suçr. 1,8, 10. 11,3. Verz. d. Oxf. H. 308, a, 37. 44. b, 9. 10. 13. 36 u. s. w. profanes Wissen neben ज्ञान M. 9,41. Bhag. 3,41. 7,3. MBh. 14,600. R. 1,24,16 (25,16 Gorr.). 3,11,13. Kathâs. 77,8. Bhâg. P. 3,24,17. 4,1,63. Ueber den Begriff विज्ञान bei den Buddhisten s. Burn. Intr. 488. 502. fg. 511. 636. fgg. Lot. de la b. l. 476. 512. fgg. Wassiljew 102 u. s. w. Sarvadarçanas. 19,8. 20,13. 22,10. 23,23. H. 233, Schol. अविज्ञानात् ohne es zu wissen, ohne es gewahr zu werden Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. M. 2,220. MBh. 5,5443. Harîv. 3687. R. 4,57,21. ग्र° keine Kenntniss von Etwas habend Kathâs. 24,61. — b) die Fähigkeit der Erkenntniss, richtiges Urtheil: दु:खोपकृतविज्ञाना MBh. 11,743. कृतविज्ञानबुद्धि R. Gorr. 1,65,13. विज्ञानं हि मम श्रेष्ठम् 3,75,44. बुद्धिविज्ञानसंयुक्त 4,1,23. °संपन्न 34,27. Vaṁç. Bṛh. S. 78,13. मु° adj. Spr. 4622. das Organ der Erkenntniss, = मनस् Bhâg. P. 11,28,20. — c) das Verstehen unter Etwas, das Halten für, das Erkennen als, das Annehmen P. 5,4,120, Vârtt. 3. 8,2,48, Vârtt. 2. Schol. zu 6,1,131 (im 2ten Theile) und 8, 2,62. Bhâg. P. 3,9,28. — 2) m. N. pr. eines Sâdhja Harîv. 11536 nach der Lesart der neueren Ausg., विधान die ältere. — Vgl. सर्व°, दुर्विज्ञान, हय°.

विज्ञानक = विज्ञान 1): वाक्यार्थविज्ञानकमूल्यवादै: Verz. d. Oxf. H. 239, a, 5.

विज्ञानकन्द m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 260, b, No. 628.

विज्ञानकाय m. Titel eines buddh. Werkes Burn. Intr. 448. Târan. 296.

विज्ञानकेवल adj. = विज्ञानाकल Sarvadarçanas. 86,5.

विज्ञानकौमुदी f. N. pr. einer buddh. Frau Verz. d. Oxf. H. 71, a, 18.

विज्ञानता f. = विज्ञान Kenntniss: शास्त्रेषु Spr. 4202.

विज्ञानदेशन m. ein Buddha H. ç. 79.

विज्ञानपति m. Herr der Erkenntniss Taitt. Up. 1,6,3.

विज्ञानपाद m. Bein. Vjâsa's Çaṁkarâbhar. bei Wilson.

विज्ञानभैक्षुक m. N. pr. eines Gelehrten Hall 198.

विज्ञानभिक्षु m. N. pr. eines Gelehrten, = विज्ञानपति Hall 2. 4. 7. 8. 10. fgg. 92. Verz. d. Oxf. H. 238, a.

विज्ञानभैरव Titel eines Werkes Hall 197.

विज्ञानमय (von विज्ञान) adj. aus Erkenntniss gebildet, — bestehend Çat. Br. 14,5,4,16. 7,1,7. 8,6. Mund. Up. 3,2,7. Taitt. Up. 2,4. 5. 8. Vedântas. (Allah.) No. 49. Bhâg. P. 11,29,38. Kathâs. 50,207.

विज्ञानमातृक adj. dessen Mutter die Erkenntniss ist; m. ein Buddha H. 235.

विज्ञानपति m. N. pr. = विज्ञानभिक्षु Hall 2. 10. 92.

विज्ञानयोगिन् m. N. pr. = विज्ञानेश्वर Colebr. Misc. Ess. I, 103.

विज्ञानललित Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 341, b, N.

विज्ञानवत् (von विज्ञान) adj. mit Erkenntniss ausgestattet Kaṁd. Up. 7,8,1. Kauṣîd. 3,6. Maitrâyaṇ. 6,5. 13. Çaṁk. zu Kaṁd. Up. S. 3. Kathâs. 41,10. 45,299. LIA. III, 390. ग्र° Kauṣîd. 3,5.

विज्ञानवाद m. die Theorie (der Jogâkâra), nach der nur die Erkenntniss Realität hat (nicht die Objecte der Aussenwelt), Verz. d. Oxf. H. 239, b, 6. 7.

विज्ञानवादिन् adj. der da behauptet, dass nur die Erkenntniss Realität habe (nicht die Objecte der Aussenwelt), ein Jogâkâra Wassiljew 289. °वादिनय Sarvadarçanas. 19,13. °वादिवाद 117,4.

विज्ञानाकल adj. bei den Çaiva (eine Einzelseele) an der nur noch मल haftet Sarvadarçanas. 85,13. 14. fg. 86,12. — Vgl. विज्ञानकेवल.

विज्ञानाचार्य m. N. pr. eines Lehrers Gild. Bibl. 411. Verz. d. Oxf. H. 232, a, No. 562.

विज्ञानानन्त्यायतन n. N. einer buddhistischen Welt Burn. in Lot. de la b. l. 812.

विज्ञानामृत n. Titel eines Commentars Hall 92.

विज्ञानिक adj. angeblich = विज्ञ Burn. zu AK. 3,1,4 nach ÇKDa. — Vgl. वैज्ञानिक.

विज्ञानिता (von विज्ञानिन्) f. Kennerschaft, das Vertrautsein: सर्व° Kâm. Nîtis. 8,9.

विज्ञानिन् (von विज्ञान) adj. Wissen von Etwas habend, mit Wissen verfahrend: यदि राज्ञा कृता धेनुरियं विज्ञानिना मता Mârk. P. 112,16. sich auf eine Kunst verstehend Kathâs. 30,104. 79,9. 12. 15. एवं° 83,

28. ज्ञानिविज्ञानिनो Ver. in LA. (III) 31,19.

विज्ञानीय (wie eben) am Ende eines comp. *die Lehre von — behandelnd* Sarva. 1,48,2. विय° 2,231,9. 306,16. 307,13. Verz. d. Oxf. H. 304,a,2. 7. 8. 11. 23. 36. 305,b,2. 7. 308,a,12.

विज्ञानेश्वर m. N. pr. eines Gelehrten Gild. Bibl. 459. fgg. Verz. d. B. H. No. 1028. 1128. 1403. Verz. d. Oxf. H. 262,b, No. 632. 279,a,43. 336,a, No. 842. fgg. Hall 175. 177. 183. 192.

विज्ञापन (vom caus. von 1. ज्ञा mit वि) n. *eine Mittheilung —, ein Gesuch, das ein Niederer an einen Höheren richtet,* Kathis. 31,58. 103, 127. कृत° adj. 27,20. f. या dass. Ragh. 17,40. Kumāras. 7,93.

विज्ञापनीय (wie eben) adj. 1) *mitzutheilen, zu melden:* (तव) क्रियानिष्ठं वा सर्वविशेषो विज्ञापनीयः स्यात् Bois. P. 6,9,41. — 2) *dem* (von einem Niederen) *eine Mittheilung zu machen ist:* त्वया पुनरपि विशङ्कमयैव राज्ञा विज्ञापनीयो देव u. s. w. इति Daśak. 86,9. fgg.

विज्ञाप्य (wie eben) adj. 1) *mitzutheilen, zu melden:* विज्ञाप्यं कुरु मे MBh. 6,3965. भूयतां मम विज्ञाप्यम् Harīv. 4510. 10064. 10347. R. 4,35, 31. 6,33,20. 7,36,34. 39,4,27. 2,11. Prab. 31,4. Bois. P. 6,16,46. 8, 6,14. Pañcat. 19,6. 10. ed. orn. 53,18. 56,25. — 2) *dem* (von einem Niederen) *eine Mittheilung zu machen ist:* अवश्यं तु मया सर्वं विज्ञाप्यस्ते नराधिप *ich muss dir Alles mittheilen* MBh. 7,4247. तौ हि दुःखार्तौ विज्ञाप्यौ वचनाद्धि मे 9,3599. 14,2368. R. Gorr. 1,80,21. 2,58,17. 20. 49,32. 5,66,25. Kathis. 121,263.

विज्ञाय (von 1. ज्ञा mit वि) adj. s. बल°.

विज्ञेय (wie eben) adj. 1) *zu erkennen, erkennbar* Cat. Bh. 14,7,1,20. 3,23. Mānp. Up. 7. Bois. P. 10,80,31. Sarvadarśanas. 73,1. विज्ञेयमनुमेयमिति सेयं विरुद्धा भाषा 22,11. विज्ञेयानुमेयत्वाद् 13. MBh. 12,3340. आगमिष्यामि यं ग्रन्थं विज्ञेयस्तेन 3,12778. R. 4,1,21. रक्षेः परुषैर्योगाः श्मश्रुभिरल्पैश्च विज्ञेयाः Varāh. Bṛh. S. 68,57. स्वस्तिक° R. 2,89,12. fg. रूपविज्ञेयसारमाः 3,22,23. Ragh. 4,62. परमविज्ञेयः सतां धर्मः Spr. 3284. सु° Kathop. 1,21. य° M. 1,8. 12,29. Bhag. 13,15. — 2) *was man zu wissen hat:* शतं चैवात्र विज्ञेयं श्लोकाः पञ्चाशदेव तु so v. a. *man wisse, dass* R. Gorr. 1,4,60. फलकुसुमसंप्रवृद्धं वनस्पतीनां विलोक्य विज्ञेयम्। सुलभत्वं द्रव्याणाम् Varāh. Bṛh. S. 29,1. तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विदद्भिः सप्तमे पदे M. 8,237. इत ऊर्ध्वं वक्ष्यमाणाः प्रत्यया भूतकालिके धात्वर्थे विज्ञेयाः Schol. zu P. 3,2,84. — 3) *zu erkennen —, anzusehen als, zu halten für:* स ब्रह्मेति विज्ञेयः Kaush. Up. 1,7. बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च। भागो जीवः स विज्ञेयः Śvetāśv. Up. 5,9. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः M. 2,10. 91. स विज्ञेयो जितेन्द्रियः 98. 171. 8,132. Jiān. 1,95. MBh. 2,2122. Harīv. 9970. R. 5,77,12. 86,18. Spr. 809 (II). उन्मत्त इति विज्ञेयः 1501, v. l. (II). 4511. Cāut. 2. 36. Bhar. beim Schol. zu Çiç. 9,6. Varāh. Bṛh. S. 5,47. 11,15. 14,16. Bois. P. 3,11,1. — Vgl. दुर्विज्ञेय, भाग°.

विज्य (2. वि + 3. या) adj. *nicht bescheint:* धनुः VS. 16,10. विज्यं कृत्वा मरुद्धनुः R. 3,6,10. Bois. P. 5,2,7. — Vgl. विषाणाज्य und सज्य.

विज्वर (2. वि + ज्वर) adj. (f. या) 1) *fieberfrei* Kathis. 71,128. — 2) *frei von Seelenschmerz, wohlgemuth, guter Dinge* MBh. 3,15472. 16917. 5,271. 8,1669. R. 1,1,34 (39 Gorr.). 46,14. R. Gorr. 1,46,35. 7,6,21. 81,14. Rāja-Tar. 8,2003. Bois. P. 3,14,18. 5,13,1. 9,5,10. fg. — Statt विज्वरा ज्वरया त्यक्ता Harīv. 10918 liest die neuere Ausg. richtig विज्वरा जरां त्यक्ता.

विज्ञामर n. *das Weisse im Auge* Çabdaratn. bei Wilson und ÇKDa. ohne Angabe einer best. Autorität. विज्ञामर Wilson in der 2ten Aufl.

विज्ञोली f. = पङ्क्ति, श्रावली *Reihe* u. s. w. Taik. 2,4,1.

विट्, वेटति Dhātup. 9,29 (शब्दे). = विड् Vop. in Dhātup. 9,30.

विट m. AK. 3,6,2,17. 1) = पिङ्ग Taik. 3,1,6. 3,104. H. 331. an. 2, 98. fg. Med. t. 27. Hir. 228. = वातपुत्र 139. = वेश्यापति Halāy. 2,337. *ein leichtsinniger Geselle, ein Schwindler* Kathis. 6,51. 54. 32,167. Prab. 36,9. in der Umgebung eines leichtsinnigen Frauenzimmers so v. a. *Galan, Hurenjäger* Bhar. Nāṭyaç. 18,46. 96. 34,103. Daçar. 2,8. 3,44. 49. Sin. D. 21,4. 50,1. 77. fg. 83. 312. fg. Prasādhan. 5,a,7. 20,a,6. Mudrār. 11,4. Spr. 918. 1406. 5219. 5336. Çiç. 4,48. Daçak. 61,6. Pañcat. 186,1. 199,9. Var. in LA. (III) 20,12. in der Umgebung eines Fürsten so v. a. *Schranze, Schmarotzer, Speichellecker* Mudrār. 9,16. fgg. 67, 17. Spr. 726. 1393 (II). 2532. 2760. 4675. Rāja-Tar. 1,358. fg. 2,67. 3, 152. 4,662. 667. 5,202. 331. 367. 376. 400. 6,153. 155. 158. 167. 224. Mālav. P. 68,26. Am Ende eines comp. als tadelnder Ausdruck gaṇa क्षमूच्यादि zu P. 2,1,33. — 2) *Maus* Taik. 3,3,104. H. an. Med. Hir. 228. — 3) *Acacia Catechu Willd.* (s. खदिर) dioss. — 4) *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDa. — 5) *eine Art Salz* (s. विड) Taik. H. an. Med. Hir. — 6) N. pr. eines Berges dioss. — 7) = प्राचक्षोल्क (?) Taik. — 8) = विटप Bhar. im Dvijapar. nach ÇKDa.

विटक m. pl. N. pr. einer Völkerschaft, wohl = लम्पाक Varāh. Bṛh. S. 16,2.

विटङ्ग m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) *Taubenhaus, Vogelhaus* AK. 2,2,15. H. 1010. Halāy. 2,148. R. 2,80,20. R. Gorr. 2,87,23. Çiç. 3,55. Bois. P. 9,10,17 (am Ende eines adj. comp. f. या). तोरणविटङ्कस्थं कनकमत्तम् 5,39,19. शालाविटङ्केर्वृताणां क्रियमाणैरितस्ततः Harīv. 3538. (द्योतमम्) मनोरमोत्तरकर्कमयैर्विटङ्कैर्विभूषितम् MBh. 12,1585 nach einer von Nīlak. erwähnten Variante. मनोरमविटङ्कवत् (भारतद्रुम) 1, 38. — 2) *die höchste Spitze;* im Prākrit: मरुविटङ्को Mālatīm. 166, 2. — 3) *Verzierung, Schmuck:* धवलकविटङ्ककपोल (= धवलकालंकृतकपोल Comm.) Bois. P. 10,33,16. पार्थ्यकिरीटकूटकुण्डलकिरीटविटङ्कचेष्टो (विटङ्क = मुकुट Comm.) 3,15,27. — 4) घण्ट° Bois. P. 5,2,10 nach dem Comm. = नितम्ब.

विटङ्कक m. n. = विटङ्क 1) Çabdam. im ÇKDa.

विटङ्कपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathis. 25,25. 38. 26,115. 82,16.

विटङ्कित adj. in den zwei unter टङ्क mit वि aufgeführten Stellen ist nach genauerer Erwägung doch auf विटङ्क zurückzuführen; der Comm. erklärt das Wort an der ersten Stelle durch अलंकृत, an der zweiten durch शोभित, also *verziert, geschmückt.*

विटप Uṇādi. 3,145. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Taik. 3,5,14. Sindh. K. 249,a,12. 1) m. n. (das n. nicht zu belegen) *Ast, Zweig, Ranke;* = विस्तार AK. 2,4,1,14. H. 1124. an. 3,446. Med. p. 22. Halāy. 2,26. = शाखा H. an. Med. = पल्लव Taik. 3,3,279. H. an. Med. प्रवृद्धविटपैर्वृक्षैः MBh. 1,2850. कुरूणां विटपेषु 3,11536. सस्कन्धविटपैर्द्रुमैः 16391. 4,314. R. 4,18,23. विटप, शाखा, अङ्कुर MBh. 12,9118. R. 3, 79,7. 5,20,21. Ragh. 8,46. Kumāras. 6,41. Çiç. 31. Ven. 59,2. Çiç. 4,

45. 56. Daçak. 201,1. 2. Siṅ. D. 50,1. Bhâg. P. 4,6,32. 25,18. 5,2,4. 16,18. 17,13. 24,10. 7,2,9. कुमुद° Spr. 3195. बाह्वभिर्विटपाकारैः Rāgh. 10,11. Spr. 217 (II). 2780. विस्फुरद्भू° Bhâg. P. 3,2,18. धुकुटि° 5,9,19. Am Ende eines adj. comp. f. आ Vikr. 27. — 2) m. n. (das n. nicht zu belegen) *Busch, Strauch* AK. 2,4,2,9, 133. Trik. H. 1120. H. an. Med. Halâj. 2,35. वनं सवृतविटपम् MBh. 1,3882. R. 2,52,95 (32 Gorr.). Mṛicch. 92,13. Kâm. Nîtis. 14,31. Ṛt. 1,24. Çiç. 33,1. Vaṇîn. Bṛh. S. 19,20. 54,49. 95,18. Bṛh. 3,7. Gît. 7,28. Paṇḍar. 184,21. — 3) m. *Calotropis gigantea* (आदित्यपत्त्र) Râǵân. im ÇKDn. — 4) n. *der Raum zwischen Scham und Oberschenkel, Perinaeum* H. 613. Suçr. 1,345,17. 346,12. वङ्क्षणावृषणयोरन्तरे विटपं नाम 348,21. 349,2. 4. — 5) m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 6) m. = पिट्ठ d. i. = विट 1) Trik. H. an. = विटाधिप Med. — Vgl. प्रतिविटपम्, वैटप und उलप.

विटपशस् (von विटप) adv. *in Zweige, nach Zweigen:* वेदद्रुमं विटपशो विभक्तिर्यात स्म Bhâg. P. 2,7,36.

विटपिन् (wie eben) 1) adj. *mit Aesten —, mit Zweigen versehen:* वृत्त (daneben शाखिन्) MBh. 1,1775. — 2) m. a) *Baum* AK. 2,4,1,5. 3,4,28,171. H. 1114. Halâj. 2,22. R. 2,97,19. Çiç. ed. Cu. 8,9. Kathâs. 73,27. Spr. 1094. 4033. 4869. L.A. (III) 89,17. Bhâg. P. 5,2,4. 17,13. 24,10. — b) *Ficus indica* Râǵân. im ÇKDn. — Vgl. कल्प°.

विटप्रिय m. *eine Art Jasmin* (मुद्गरवृक्ष) Râǵân. im ÇKDn.

विटभूत m. N. pr. eines Asura MBh. 2,367.

विटमालिका m. *ein best. Mineral* H. 1035.

विटलवण n. = विड्लवण ÇKDn. ohne Angabe einer best. Art.

विटि f. *gelber Sandel* Çabdam. im ÇKDn.

विटिकण्ठीरव (so im Index) m. N. pr. des Vaters des Grammatikers Varadarâǵa Verz. d. Oxf. H. 166,a,23.

विट् am Ende eines adj. comp. = विष् *Schmutz, Unreinigkeit, faeces:* कर्ण° Suçr. 2,368,13. — Vgl. भिन्न°.

विट्कारिका (3. विष् + का°) f. *ein best. Vogel* Buçaiṇa. im ÇKDn. — Vgl. विष्टारिका.

विट्कुल (2. विष् + कुल) n. *das Haus eines* Vaiçja Âçv. Çr. 2,2,1.

विट्खदिर (3. विष् + ख°) m. *Vachellia farnesiana W. u. A.* AK. 2,4,2,30.

विट्गर (3. विष् + गर) m. *Hausschwein* AK. 2,10,23. H. 1281.

विठ्ठल, विट्ठलदीक्षित, °भट्ट, विट्ठलाचार्य, विट्ठलेश्वर und विट्ठलोपाध्याय m. N. pr. verschiedener Gelehrten Hall 134. 145. 147. 150. 152. fgg. 174. 187. 200. 205. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 41. Verz. d. Oxf. H. 161, No. 355. 341,a, No. 798. 384,a, No. 473. विठ्ठल, विट्ठल und विष्ठल Verz. d. B. H. No. 692. 734. 738. 1168. 1346. विठ्ठल, विट्ठल ist *eine Form* Vishṇu's, unter welcher er im Dekkhan, vorzüglich in Pundarpur, verehrt wird.

विट्पण्य (2. विष् + प°) n. *Waare, die ein* Vaiçja *zu verkaufen pflegt,* M. 10,85.

विट्पति (2. विष् + पति) 1) *Herr des Volkes, Fürst* MBh. 3,10804. — 2) *Haupt der* Vaiçja. वैश्यः षष्ठ्यन्तविट्पतिः स्यात् Bhâg. P. 4,23,32. विशो पश्वादीनां वैश्यादीनां वा पतिः स्यात् Comm. — 3) *Schwiegersohn* Gaṇiḍ. im ÇKDn. M. 3,148. Schol. zu Kâṭj. Çr. 422,1 v. u. 423,1. — Vgl. विश्पति.

विट्शूद्र (2. विष् + शूद्र) n. sg. *die* Vaiçja *und* Çûdra R. Gorr. 1,6,21.

विट्शूल (3. विष् + शूल) m. *eine best. Form der Cholik* Suçr. 2,463,16.

विट्सङ्ग (3. विष् + सङ्ग) m. *Stockung der faeces* Suçr. 2,428,12.

विट्सारिका (3. विष् + सा°) m. *ein best. Vogel,* = कुणपी Hir. 85. — Vgl. विट्कारिका.

विट्सारी f. dass. Trik. 3,3,276.

विठङ्ग (?) adj. *bad, vile* Wilson.

विठर = वाग्मिन् Uṇâdis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDn.

विठ्, वैठति (आक्रोशे) Dhâtup. 9,30, v. l. Uṇâdis. 1,130. — Vgl. विर्, विर्.

विड n. *eine Art Salz* AK. 2,9,42. H. 942. Suçr. 1,33,9. 157,8. 226,20. 2,125,15. °लवण (vgl. विड्लवण) 89,13. masc. MBh. 13,4365. Nach Wilson auch *a part, a fracture, a bit* (!).

विडगन्ध n. = विड्लवण Wilson nach Ratnam. विडन्ध ÇKDn. nach dens. Aut.

विडङ्ग Uṇâdis. 1,120. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. n. (n. wohl nur *die Frucht*) *Embelia Ribes* AK. 2,4,2,25. H. an. 3,131. Med. g. 47. m. *die Frucht,* dem schwarzen Pfeffer ähnlich, ein Wurmmittel (vulgo वावडिंग) Suçr. 1,136,15. 138,17. 139,5. 144,12. 214,19. 2,70,17. °सार 1,161,10. Çârṅg. Saṃh. 3,13,58. Vaṇîn. Bṛh. S. 55,7. 15. 76,3. auch विडङ्गा f. ÇKDn. nach Bhâvapr. — 2) adj. = यमिन् H. an. Med.

विडम्ब (von डम्ब् mit वि) 1) adj. *Jmd nachahmend, Jmds Benehmen annehmend:* नृ° Bhâg. P. 10,23,37. 35,6. — 2) m. a) *Verspottung, Verhöhnung* Spr. 2226. Siṅ. D. 261,19. — b) *Entweihung, Entwürdigung* (einer Sache), z. B. eines Leichnams durch wilde Thiere, indem diese ihn fressen, Vaṇîn. Bṛh. 25 (23),13.

विडम्बक (wie eben) nom. ag. *Entweiher:* ग्राम्यायसदो रोते खल्वाम-मविडम्बकाः Bhâg. P. 7,15,39.

विडम्बन (wie eben) 1) nom. ag. *Jmd nachahmend, Jmdes Benehmen annehmend* Bhâg. P. 10,70,40. — 2) n. und f. आ nom. act. a) *das Nachmachen, Nachäffen, das Spielen einer Person, das dem Scheine nach Etwas Sein, das dem Scheine nach Annehmen einer Erscheinungsform;* insbes. von einem Gotte, der menschliches Aussehen und Benehmen annimmt: नवेक्ष्मानस्य नृणां विडम्बनम् Bhâg. P. 1,8,29. fg. मर्त्य° 3,1,42. 10,3,31. 23,45. मो खेद्यत्पतेदत्रास्य जन्मविडम्बनं पदमुदे-वोरे 3,2,16. 9,15. अहो विभूमन्नरितं विडम्बनम् 14,28. 10,84,17. मा-यामत्स्य° 8,24,1. भेत्रे भीतिविडम्बनम् 10,30,22. तदत्यत्तविडम्बनम् 74,3. 80,45. वद कस्य कुले जन्म मायायामुविडम्बनम् (so ist zu schreiben, d. i. मायया यमु° und letzteres = यमु + वि°) sc. कुरे: Verz. d. Oxf. H. 26,b,17. fg. कुरुते ऽर्चाविडम्बनम् so v. a. *scheinbare, falsche Verehrung* Bhâg. P. 3,29,21. प्रीयते ऽमलया भक्त्या किरिट्यादिविडम्बनम् *alles Andere ist nur Schein, — Maske* 7,7,52. धन्योधर्मकता मैत्री यावदर्थविडम्बनम् 10,47,6. Mudr. ST. IV, 319, N. 284. कोरति विडम्बनाम् *äfft nach* Spr. (II) 494. — b) *Verspottung, Verhöhnung; Spott, Hohn; Schimpf:* लभते विडम्बनम् *erntet Spott ein* Spr. (II) 453. प्राप्तं सर्वैर्विडम्बनम् Kathâs. 41,32. न विडम्बनशीलाकम् 81,94. वेदेषु Paṇḍar. 1,2,19. कृष्णानुयक्तो विद्वान् लब्ध्वा च जन्म भारते । न भजेत्कृष्णपादाब्जे तदत्यत्तविडम्बनम् ॥ 2,2,65. रघुनाथसुतस्य शोचनं विडम्बनम् *Schimpf* Hit. 99,18. Prab. 43,12. विडम्बनं कर् *Jmd* (acc.) *verspotten, verhöhnen* Brahmavaiv. P. 2,73. In

dieser Bed. häufig das f.: शरा: कुर्वन्ति नार्यो पार्थ काम्य विडम्बना MBh. 7,3853. Mṛicch. 89,11. इयं च ते ऽन्या पुरतो विडम्बना पत् u. s.w. Kumâras. 5,70. Kathâs. 94,124. 115,12. का वा पूर्वे विडम्बना 81,94. व्रणगमे जीर्णरसं च मादृशा कुभोगतृष्णाव्यसनं विडम्बना 103,225. 104,120. विडम्बनामाप्नोति Spr. 2565. एतेषां मकाशाद्विडम्बनां प्राप्य मरिष्यसि Pañkat. 220,14. स प्राप नटस्येव विडम्बनाम् Râja-Tar. 5,207. विडम्बनां कुर्वन्ति Pañkat. 125,25. तिस्रः पुंसो विडम्बना: Spr. 1743. 3032. — c) *Entwürdigung, Entwürdigung* (einer Sache): चार्वधिष्ठानवक्त्रत्वं नृत्यमन्यद्विडम्बनम् Mâlav. P. 1,36. ग्रसति वपि वारुणीमद: प्रमदानामधुना विडम्बना Kumâras. 4,12. रत्नं व्रजचरणविडम्बनां सहते Spr. 2078. तस्मात्कृतं चरणापातविडम्बनाभि: (चरणापात als obj. aufzufassen) 3247. दर्दुरव्रलघनं सोऽत्रपणस्य महाविडम्बना Râja-Tar. 8,1576. प्रोक्तान्यथाकरणमस्य (des Betels) विडम्बनैव so v. a. *Missbrauch* Vaṇîs. Bṛn. S. 77, 37. — Vgl. कु°.

विडम्बिन् (wie eben) adj. 1) *nachmachend, den Schein von Etwas annehmend:* सृष्टा° Uttarar. 91,14 (118,6). — 2) *verspottend, verhöhnend* so v. a. *übertreffend:* वक्रं चन्द्रविडम्बि (Conj.) Spr. 2696. स्तनयुगलं श्रीफलश्रीविडम्बि Vikramâṅ. 31. नारीरमरस्त्रीविडम्बिनी: Kâvjâd. 3, 109. — 3) *entweihend, entwürdigend, Unfug treibend mit Etwas:* सत्त° so v. a. *ein Charlatan von Astrolog* Vaṇîs. Bṛn. S. 2,18.

विडम्ब्य (wie eben) n. *ein Gegenstand des Spottes* Bhâg. P. 10,47,12.

विडायतनीय (von 2. विष् + आयतन) adj. Bez. einer Vishṇuti Liṅ. 6,6,7.

विडाल u. s. w. s. u. विडाल in den Nachträgen. विडाली f. *eine best. Pflanze,* = विदारी Râgân. im ÇKDr.

विडीनक n. s. u. डी mit वि.

विडु m. AK. 2,8,2,5 fehlerhaft für विडु.

विडुल m. bei Wilson und im ÇKDr. fehlerhaft für विडुल.

विडौजस् m. Bein. Indra's AK. 1,1,4,26. Çiç. 193, v. l. Als zwei Worte in der Bed. *der Vaiçja und sein Gewerbe* Bhâg. P. 3,5,41.

विडौजस् m. Bein. Indra's H. 171. Halâj. 1,54. Ragh. 3,59. 14,59. Çiç. 193. विडौजसामामनानि Çaṇ. 1,27.

विड्गन्ध (3. विष् + गन्ध) n. = विड्भुवण Ratnam. im ÇKDr. विडगन्ध Wilson nach ders. Aut.

विड्ग्रह (3. विष् + ग्रह) m. *Constipation* Çârṅg. Saṁh. 1,7,70.

विड्घात (3. विष् + घात) m. *eine best. Hautkrankheit* Çârṅg. Saṁh. 1,7,40.

विड्ज (3. विष् + ज) adj. *auf Mist wachsend* Jâṭ. 1,171.

विड्जिह्व m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,2487. 2817. 2862. 3000.

विड्बन्ध (3. विष् + बन्ध) m. *Stockung der faeces:* म° Suçr. 2,437,16.

विड्भङ्ग (3. विष् + भङ्ग) m. *dünner Stuhlgang, Diarrhoe* Suçr. 2,228, 11. 279,4.

विड्भुज् (3. विष् + 4. भुज्) adj. *Excremente fressend:* पक्षिन् M. 12,56. m. so v. a. *Mistkäfer* oder *ein anderes von Mist sich nährendes Insect* Bhâg. P. 11,27,54.

विड्भेद (3. विष् + भेद) m. = विड्भङ्ग Suçr. 2,252,17. 259,4. 309,20.

विड्भेदिन् (3. विष् + भे°) 1) adj. *laxirend* Suçr. 1,224,17. — 2) subst. = विड्भुवण Âçvn. 48.

विड्भोजिन् adj. = विड्भुज् Pañkat. 1,10,77.

विड्भुवण (3. विष् + भु°) n. *ein best. Salz,* = विड Ratnam. im ÇKDr.

विड्वराह (3. विष् + व°) m. *Hausschwein* Gaṭiḍm. im ÇKDr. M. 5,14. 19. 11,154. Jâṭ. 1,176.

विण्ड्, विण्डयति (तित्याम्) Dhâtup. 32,116, v. l.

विण्मूत्र (3. विष् + मूत्र) n. sg. und du. (dieses selten) *Koth und Urin* M. 4,49. 77. 103. 132. 5,134. 11,150. Verz. d. Oxf. H. 267, *b*, 2. 282, *a*, 22. fg. रेतो° n. sg. M. 4,222.

वितंस m. = वीतंस Bhaṭṭ. zu AK. 2,10,26 nach ÇKDr.

वितण्ड m. 1) *a sort of lock or bolt with three divisions or wards* Çabdârṇav. bei Wilson. — 2) *Elephant* Wilson. — वितण्डा s. bes.

वितण्डक m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 266, *b*, 25.

वितण्डा f. AK. 3,6,2,9. 1) *Chicane in der Disputation, wobei der Streitende seinen Gegner zu widerlegen bemüht ist, ohne dadurch für seine Behauptung eine Stütze zu gewinnen,* gaṇa कयादि zu P. 4,4,102. H. an. 3,186. Med. k. 36. fg. Hir. 228. Nyâyas. 1,1,1. 44. Sarvadarçanas. 114,4. 5. Madhus. in Ind. St. 1,18,25. Prab. 111,9. एवमेतत्र चाप्येवमेवं चैतत्र चान्यथा। इत्यूचुर्वस्तुतत्त्वे वितण्डां वै परस्परम्॥ MBh. 2,1310. 7,3023. कुशास्त्राध्ययनेन वितण्डावादेन चाधीतवेदानां नाशनम् Pâṇḍaçâṇḍîpend. 3,*a*,4 (4,*a*,5). °त्व n. Comm. zu Nyâyas. 1,1,1. — 2) *Arum Colocasia Lin.,* = शाकभिद् Taik. 3,3,116. = कच्वीशाक (so ist auch in H. an. zu lesen) Med. H. an. — 3) = कारवीरी H. an. Med. Hir. — 4) = शिलाजय H. an. Med. — 5) = दूर्वा Hir. — Vgl. वैतण्डिक.

वितत s. u. 1. तन् mit वि; davon °त्व n. *grosser Umfang:* देहस्य Harîv. 12375 = Mârk. P. 47,10 = VP. bei Muir, ST. IV, 32,13.

वितताध्वर् adj. *dessen Opfer gerüstet ist* AV. 9,6,27.

वितति (von 1. तन् mit वि) f. 1) *Ausdehnung, Länge:* विटप° Bhâg. P. 5,16,13. — 2) *Ausbreitung, Verbreitung:* यशोवितत्यै Bhâg. P. 9,10, 15. कस्यास्ति नाशो मनसो वितत्या *durch Ausbreitung* so v. a. *durch Ueberschreitung der Schranken* Spr. (II) 1608. — 3) *grosser Umfang, Fülle, Menge:* वंशवितति so v. a. *Rohrdickicht* Kir. 12,18. प्रसून° *Blumenstrauss* Spr. (II) 1087. मोक्ष° Bhâg. P. 11,8,29.

वितत्करण (2. वि + तद् - क°) n. ग° bei den ekstatischen Pâçupata *das Verrichten allgemein für unziemlich geltender, ihnen aber anders erscheinender Handlungen:* कार्याकार्यविवेकविकलस्येव लोकनिन्दितकर्मकरणमवितत्करणम् Sarvadarçanas. 78,13. fg. — Vgl. वितद्वारण.

वितत्य m. N. pr. eines Sohnes des Vibhvja MBh. 13,2001.

वितथ (2. वि + तथा) 1) adj. (f. आ) *a) unwahr, falsch* AK. 1,1,8,23. 3,3,15. H. 265. Halâj. 1,144. य: प्रश्नं वितथं ब्रूयात् M. 8,94. साक्ष्य 118. Jâṭ. 2,53. प्रतिज्ञा MBh. 1,6342. R. 6,85,9. प्रमाण 2,116,47. वाच् Ragh. 9,8. Bhâg. P. 4,15,22. प्रौढि Spr. (II) 1162. °वादिन् *Unwahrheit redend* Kathâs. 26,96. 31,82. वितथाभिनिवेश M. 12,5. Jâṭ. 3,124. वितथेन *falsch* M. 8,273. ग° (s. auch bes.) *nicht unwahr, ganz wahr, richtig* MBh. 12,4010. R. 5,31,15. Ragh. 5,26. 15,93. Mâlav. 9,16. Vaṇîs. Bṛn. S. 1,2. वार्ता (so v. a. *ehrlich*) 19,11. Bhâg. P. 5,3,17. 8,17,22. Mârk. P. 15,81. तद्वितथमवादीर्यन्मम प्रियेति Śiç. D. 43,9. इत्यवितथं वदन् Kathâs. 24,162. °संस्कृतप्रभाषिन् *richtig* Suçr. 2,532,4. याज्ञामवितथां कर् so v. a. *erfüllen* Spr. 745, v. l. अवितथेन *der Wahrheit gemäss* MBh. 5 1692. अवितथम् dass. 3,11946. R. 1,2,27. Kathâs. 28,191. — *b) unnütz, vergeblich:* बाण MBh. 8,1062. पुत्रजन्मन् Harîv. 1730. आशा R.

2,73,33. प्रयत्न Rāgat. 2,42. 7,14. इच्छा Kathās. 43,395. Bhāg. P. 6,10, 29. 7,2,48. 9,20,35. 39. तद्धितवं कुर्यात् so v. a. *annulliren* M. 9,33. अ° *nicht vergeblich*: °क्रिय (zu schreiben तथावि°) R. 2,47,5. अवितथेक्षित Bhāg. P. 5,18,6. 8,7,8. अतिवितथ Gir. 7,5. — 2) m. *a*) N. pr. eines Sohnes des Bharadvāga Hariv. 1730. fgg. Bein. Bharadvāga's VP. 449. Bhāg. P. 9,21,1. — *b*) N. eines mythischen Wesens, dem bei der Eintheilung eines Hauses in Felder ein best. Platz gehört, Varāh. Bṛh. S. 53,44. 53. 63.

वितथता (von वितथ) f. *Unwahrheit, Falschheit*: °तां गम् *zur Lüge werden* Hariv. 7326.

वितथीकर् (वितथ + 1. कर्) *unnütz machen, vereiteln* Kumāras. 6, 72. आशान् MBh. 5,3923. 14,2003.

वितद्वाषण (2. वि + तद् + भा°) n. अ° bei den ekstatischen Pāçupata *das Reden von allgemein für Unsinn geltenden, ihnen aber anders erscheinenden Worten*: व्याकरणार्षकादिशब्दोच्चारणमवितद्वाषणम् Sarvadarçanas. 78,14. fg. — Vgl. वितत्करण.

वितर्डु f. N. pr. eines Flusses Uṇṇ. zu Uṇād. 4,102.

वितन s. आदर-वितना.

वितनितर् (von 1. तन् mit वि) nom. ag. *Verbreiter*: यशो° Bhāg. P. 4,12,20.

वितनु (2. वि + तनु) adj. 1) *überaus schmal* MBh. 13,1849 (वितन्वी f.). — 2) *körperlos* Kāvyād. 3,60. m. *der körperlose Gott d. i. der Liebesgott* Gir. 10,10. — 3) *ohne Wesenheit* TS. 6,6,8,2.

वितत्तसाय्य (von तंस् mit वि) adj. *zu schütteln, in rasche Bewegung zu bringen*: समत्सु ṚV. 6,18,6. मेरि 43,18. यन्त्र: 8,6,22. 57,11.

वितन्त्री (2. वि + त°) f. (nom. °स्) *eine verstimmte Saite* (= विषमबद्धा त° Mallin.) Kumāras. 1,46.

वितमस् (2. वि + त°) adj. *frei von Finsterniss, nicht verdunkelt, licht* MBh. 3,11869. Rāgat. 9,16.

वितमस्क adj. (f. आ) dass. MBh. 12,11391. 13,4874. Varāh. Bṛh. S. 3,51. 30,10. Schol. zu Naish. 22,56.

वितर् (von 1. तर् mit वि) adj. *weiter führend*: ein Pfad Çat. Br. 14,7,2,11.

वितरण (wie eben) n. 1) *das Weiterleiten, Uebertragen*: दोषावितरण Suçr. 1,283,12. — 2) *das Spenden, Spende* AK. 2,7,29. H. 386. Hālās. 2,264. वित्तेन किं वितरणे यदि नास्ति Spr. 2791. अलमुचि — वितरणविमुखे 4064. 4105. वरविसरूपा वितरणम् 4323. सज्जने वितरणी: Verz. d. Oxf. H. 127,b, No. 228. प्रियवितरणी: *durch Geschenke des Geliebten* Khandom. 92. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Cl. 17.

वितरणाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Wilson, Sel. Works I, 201.

वितरम् (von 2. वि mit dem suff. des compar.) adv. *weiter, ferner* (von Raum und Zeit) Nir. 8,9. भद्रा ह्यसुर्या वितरं व्युच्छ ṚV. 1,123,11. 124, 3. 2,33,2. वितरं वि क्रमस्व 4,18,11. रोदसी वितरं वि ष्कभायत् 5,29,4. 6,1,11. 10,110,4.

वितराम् (wie eben) adv. *weiter weg* Çat. Br. 1,4,2,23.

वितर्क (von तर्क् mit वि) m. 1) *Vermuthung*: यो नो कुमारावित्र कात्तिकेयो द्वावग्निनेयाविति मे वितर्क: MBh. 1,7033. Kumāras. 1,41. Varāh. Bṛh. S. 74,5. Mālatīm. 20,3. मा वितर्कैर्वृकुभिर्वितम् R. 4,61,21. वक्रवितर्कमन्यत्तरं प्रविश्य Kathās. 28,190. बहून्कुर्वन्वितर्कान् 52,219. इत्यनेकवितर्कोपव्याकुल: 87,12. वितर्कपदवीं नैव समारोहति Prab. 110, 9. Rāga-Tar. 6,83. इन्दोर्वितर्कात् *weil er den Mond darin vermuthete* Spr. 2013. — 2) *ein auftauchender Zweifel* Jogān. 1,17. Sarvadarçanas. 164,22. Bhāg. P. 5,9,35. संगमविरहवितर्के (st. dessen °विकल्पे Spr. 3101) Ver. in LA. (III) 21,4. = संशय H. an. 3,98. Med. k. 157. Hālā. 4, 6. ऊहे वितर्के 5,90. AK. 3,4,22(20),3. 14. *eine fragliche Sache*: वितर्का हिमादय: Jogān. 2,34. 33. — 3) *das Hinundherüberlegen, Erwägung*; = ऊह H. 322. H. an. Med. संदिग्धात्कल्यनान्यत्वं वितर्क: परिकीर्तित: Pratāpar. 34,b,5. Sāh. D. 169. 74,16 (= तर्क 202). 237. Verz. d. Oxf. H. 208,b,8. कस्मै प्रदेयेति महान्वितर्क: Spr. 966. 1047 (II). 3321. वितर्क: समभूत्तेषां त्रिपथगीशेषु को महान् Bhāg. P. 10,89,1. Wassiljew 251. 256. — 4) N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarāshṭra MBh. 1,3747. — Vgl. दुर्वितर्क. निर्वितर्क, स°.

वितर्कण n. = वितर्क Çārdār. im ÇKDn.

वितर्कवत् (von वितर्क) adj. *eine Erwägung enthaltend*: द्वयं वाक्यं वितर्कवत् Daçār. 1,36 = Sāh. D. 367.

वितर्का (von तर्क् mit वि) adj. *in Betracht zu ziehen, zu erwägen* Bhāg. P. 2,4,19. — Vgl. दुर्वितर्क.

वितर्तूरम् (vom intens. von 1. तर् mit वि) absol. *abwechselnd* ṚV. 1,102,3.

वितर्दि f. *eine Terrasse im Hofe eines Hauses zum Aufenthalt und Lustwandeln* AK. 2,2,15. H. 1004. R. ed. Gorr. 2,12,32. R. ed. Bomb. 2,80,20, v. l. im Comm. Çiç. 3,55. वितर्दी f. Çārdār. im ÇKDn.

वितर्दिका f. dass. Hālā. 2,144. Rāga-Tar. 8,2685.

वितर्द्धि f. dass. ÇKDn. angeblich nach AK. वितर्द्धी f. Bhār. zu AK. nach ÇKDn. वितर्द्धिका f. Çārdār. im ÇKDn.

वितल (2. वि + तल) n. N. einer der sieben Unterwelten Ārṣ. Up. in Ind. St. 2,178. VP. 204. Bhāg. P. 2,1,27. 5,40. 5,24,7. 17. Verz. d. Oxf. H. 74,a,45. 231,a,24. Pāṇḍār. 2,2,45. fg. Vedāntas. (Allah.) No. 70.

1. वितस्त partic. zur Erklärung von वैतस. वैतसो वितस्तं भवति Nir. 3,21. उपलीणं (also auf तस् zurückgeführt) तद्भवति प्रागनुस्मरणात्स्त्रिया: Durga.

2. वितस्त = वितस्ति in त्रिवितस्तं adj. TBr. 1,5.10,1.

वितस्तदत्त (वितस्ता + दत्त; vgl. P. 6,3,63) m. N. pr. eines buddhistischen Kaufmanns Kathās. 27,15.

वितस्ता (nach Çānt. 3,8 auch वैतस्ता) f. N. pr. eines Flusses, *Hydaspes* der Griechen, *Bihat* heut zu Tage, ṚV. 10,75,5. Nir. 9,26. MBh. 2,372. 3,5031. 12910. 6,324 (VP. 181). 8,2055. 13,1694. Hariv. 9512. Suçr. 2,169,4. Varāh. Bṛh. S. 16,27. Prāyaçcitt. 11,b,4. Kathās. 27, 10. 37,54. धन्ये नाम वितस्तेति वहन्ती यत्र वाङ्क्षवी 39,37. 63,55. Rāga-Tar. 1,103. 163. fg. 4,391. 5,88. fgg. नीलगा सरित् 91. 271. 6,305. Bhāg. P. 5,9,18. Mārk. P. 57,17. 74,6. Verz. d. Oxf. H. 348,b, No. 818. Davon nom abstr. °त्व n. Rāga-Tar. 1,29.

वितस्ताष्य (वितस्ता + आख्या) n. N. pr. der Behausung des Schlangendämons Takshaka in Kāçmīra: काश्मीरेषेव नागस्य भवनं तलकस्य। वितस्ताख्यमिति ख्यातम् MBh. 3,5032.

वितस्ताद्रि m. N. pr. eines *Berges* Rāga-Tar. 1,102.

वितस्तापुरी f. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 239,a,23.

वितस्ति (wohl von 1. तन् mit वि) Uṇād. 4,181 (oxyt.). m. f. (das

m. nicht zu belegen) *Spanne*, als Maass verschieden definirt: *wirkliche Spannbreite; Länge vom Handgelenk bis zur Fingerspitze; zwölf* Aṅguli AK. 2,6,3,35. 3,4,1,7. Trik. 2,2,3. H. 395. Hall. 2,383. Hiouen-thsang I, 60. Çat. Br. 10,2,3,3. 3,11. 14. Âçv. Gṛhj. 4,1,11. Kauç. 85. Karaṇavaibha in Ind. St. 3,280. Maitrîn. Up. ebend. 2,92. Varâh. Bṛh. S. 26,9. Râja-Tar. 4,600. Mârk. P. 49,38. fg. Bhâg. P. 2,6,15. Pañkar. 3,12,3. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*, N. Accent eines auf वि° ausgehenden comp. mit vorangehendem Zahlworte P. 6,2,31.

वितान (von 1. तन् mit वि) 1) m. n. *Ausbreitung, Ausdehnung, grosser Umfang* AK. 3,4,18,116. H. an. 3,614. Med. n. 130. Hall. 5,62. इरा-देतद्भुतवितानम् Nilak. 178. लता° so v. a. *ein Netz von Schlingpflanzen* R. Gorr. 2,36,15. 20. 87,9. 3,21,13. 5,4,4. 17,10. Varâh. Bṛh. S. 27,3. Verz. d. Oxf. H. 187,*b*, No. 428, Z. 15. वल्ली° dass. Çiç. 11,28. विपिन° *ein dichter Wald* Gît. 5,5. *Menge, Fülle, Masse:* ज्योत्स्ना° R. 5,11,1. 3. दिनकरस्य भासाम् Çiç. 11,43. सम्भ्रमचं वितानैः 4,2. मेघ° Spr. 2072. क्लान्ति° so v. a. *grosse Abspannung* 1769. परिपूरितमुरत° *die mannichfaltigen Arten von Liebesgenuss* Gît. 2,16. — 2) m. *Ausbreitung* d. h. *gesonderte Aufstellung der drei heiligen Feuer: diese Feuer selbst* Ind. St. 9,216. Âçv. Çr. 1,1,1. Kâty. Çr. 25,7,15. Pâr. Gṛhj. 3,8. Gârâla bei Kull. zu M. 5,84. यज्ञवितानम् Kauç. 137. Als Devatâ im SV. Ind. St. 3,236,*b*. — 3) m. n. *das in's-Werk-Setzen, Ausführung, Entwickelung, Entfaltung:* लोक° Bhâg. P. 3,26,32. यज्ञस्य च वितानानि 7,30. यज्ञ° 1,17,33. 3,1,33. उरुगार्हमेध° 5,11,2. नानाकर्म° 3,9,24. भक्ति° 25,21. योग° 5,22,4. वेदवितानमूर्ति (वेदैर्वितन्यते स्तूयते मूर्तिर्यस्य Comm.) 3,13,26. — 4) m. n. *Opferhandlung* AK. H. 820. H. an. Med. Hall. 2,259. 5,62. MBh. 5,1282. 13,7374. उत्तमवितानयाजिन् Çiç. 14,10. Bhâg. P. 2,1,37. 3,16,8. वितानाग्नि 10,69,24. 74,54. 83,39. — 5) m. n. *Traghimmel, Baldachin* AK. 2,6,3,21. Trik. 3,3,258. H. 681. H. an. Med. Hall. 2,155. 5,62. MBh. 1,6961. 6,2664. 8,2636. Harîv. 6938. Mṛicch. 92,8. Ragh. 9,50. 17,26. 19,39. Vikr. 76. Çiç. 3,50. Spr. 2054. 2156. Varâh. Bṛh. S. 72,4. Kathâs. 8,4. 73,338. 74,285 (am Ende eines adj. comp. f. घा). Râja-Tar. 4,652. Bhâg. P. 7,4,10. 8,15,20. 10, 70,44. 81,30. Weber, Kṛishṇaj. 270. 272. Pañkar. 3,7,6. 13,8. Sadukt. P. 4,12,*a*. Bhaṭṭ. 3,101. — 6) m. oder n. *ein best. Verband für den Kopf* Suçr. 1,65,18. 66,3. — 7) n. Bez. *einer Klasse von Metren* H. an. Med. Ind. St. 8,329. fgg. 367. Colebr. Misc. Ess. II, 119. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑– 139 (III, 7). — 8) n. *Gelegenheit* H. an. Hall. 5,62. — 9) f. घा N. pr. der Gattin Sattrâjaṇa's und Mutter Bṛhadbhânu's Bhâg. P. 8,13,36. — 10) adj. = तुच्छक, तुच्छ (तुत्थ st. dessen H. an.) AK. Med. = रिक्त Trik. = शून्य H. an. Hall. 5,62. = मन्द (नत्त st. dessen Med.) AK. H. an. घ° *nicht leer* Çiç. 3,80. वितान im Gegens. zu प्रनुदित so v. a. *niedergeschlagen* Ragh. 6,86. — Vgl. मेघ°, वैतान und वैतानिक.

वितानक m. n. 1) = वितान 5) *Traghimmel, Baldachin* Çabdam. im ÇKDr. Kathâs. 48,99. am Ende eines adj. comp. 57,80. R. Gorr. 2,87, 23. 3,61,12. — 2) m. *ein best. Baum,* = माड *Caryota urens Lin.* (liefert den Palmwein) Râjân. im ÇKDr.

वितानकल्प m. Titel eines zum AV. gehörigen Pariçishṭa Karaṇavaibha in Ind. St. 3,279.

वितानमूलक n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* Râjân. im ÇKDr.

वितानवत् (von वितान) adj. *mit einem Traghimmel versehen* Kumâras. 7,12.

वितानय् (wie eben) *einen Traghimmel darstellen:* मेघैर्वितानाय्यते (pass. impers.) Mâlatîm. 148,7.

वितामस (2. वि + ता°) adj. *licht, hell* Kathâs. 111,99.

वितापितृ s. u. 1. तन् mit वि 5).

वितार (2. वि + तारा) adj. *sternenlos* Gaut. 3. *ohne Stern* so v. a. *ohne Kern* (ein Komet) Varâh. Bṛh. S. 11,24.

वितारिन् (von 1. तॄ mit वि) adj. s. घ°.

वितिमिर (2. वि + ति°) adj. (f. घा) *frei von Finsterniss, licht, hell* MBh. 1,1255. 3,1716. 2865. 5,331. 13,6366. R. 1,76,28 (77,84 Gorr.). 3,43,21. 4,39,2. 43,59. 53,3. 5,18,24. 7,21,9. Bhâg. P. 4,2,5. 30,5. 8, 1,36. 9,1,29. 10,38,33. वितिमिरे जाते *nachdem es hell geworden war* MBh. 1,1479.

वितिलक (2. वि + ति°) adj. *keinen mit Farbe aufgetragenen Fleck habend* (auf der Stirn): वक्त्र Bhâg. P. 4,26,25.

वितुङ्गभाग (2. वि + तुङ्ग-भाग) adj. *anderswo als auf dem Höhepunkt stehend:* क्रियमे (भानि) वितुङ्गभागे Varâh. Bṛh. 18,1.

वितुद् (von 1. तुद् mit वि) m. N. pr. eines gespenstischen Wesens Taitt. Âr. 10,69.

वितुन्न (wie eben) n. *eine best. Pflanze,* = मुनिपणक, मुनिषण्ण AK. 2,4,5,14. Med. n. 129. = शैवाल Med. f. घा *Flacourtia cataphracta Roxb.* Râjân. im ÇKDr.

वितुन्नक (von वितुन्न) 1) *Loch im Ohr für den Ring* Ratnam. in Nigh. Pa. — 2) *Flacourtia cataphracta Roxb.*, m. AK. 2,4,4,14. Med. k. 213. neutr. H. an. 4,33. f. वितुन्निका Râjân. im ÇKDr. — 3) *Koriander*, m. AK. 2,9,37. H. an. neutr. Med. Ratnam. 48. — 4) *blauer Vitriol*, n. AK. 2,9,101. H. 1052. masc. Med.

वितुल m. N. pr. eines Fürsten der Sauvîra MBh. 1,5336. विपुल ed. Bomb.

वितुष (2. वि + तुष) adj. *enthülst* Gobh. 4,2,8. वितुषीकर् *enthülsen* Sây. zu Çat. Br. 1,1,4,22.

वितुष्ट (2. वि + तुष्ट, partic. von तुष्) adj. *ärgerlich, verstimmt* Pañkar. 1,4,30.

वितूस्तय् (von 2. वि + तूस्त), °यति = तूस्तानि विस्रंसि Vop. 21,17. 1) *entflechten, aufflechten:* केशान् P. 3,1,21, Schol. — 2) vom *Staube befreien:* वि° पन्थानं वातः Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,86.

वितृण (2. वि + तृण) adj. *grasios* Bhaṭṭ. 2,13.

वितृतीय (2. वि + वि°) 1) adj. Bez. einer Art des Takman AV. 5, 22,13. — 2) n. *Drittel* Çat. Br. 6,5,2,12. 17. 10,2,4,5. 9. Kâty. Çr. 16,3,30.

वितृप्तक (von वितृप्त, partic. von तर्प् mit वि) adj. *gesättigt:* कामानामवितृप्तकः *der sich an den Genüssen noch nicht gesättigt hat* Spr. 5115.

वितृप्तता (wie eben) f. *Sättigung* Mârk. P. 49,19.

वितृष् (2. वि + तृष्) adj. *frei von Durst* Bhâg. P. 4,6,26. घ° *dessen Durst nicht gestillt worden kann* 29,40.

वितृष (2. वि + तृषा) adj. *frei von Durst:* घ° *dessen Durst* —, *Ver-*

langen nicht gestillt werden kann Bhâg. P. 10,51,39.

वितृष्ण (2. वि + तृष्णा) adj. (f. या) *frei von Durst, nicht durstig* MBh. 12,8109. *kein Verlangen empfindend, nicht begehrend:* मति Bhâg. P. 1, 9,32. दृष्टानुश्रविकविषय° Jogas. 1,15.

वितृष्णता (von वितृष्ण) f. *das Nichtverlangen, Nichtbegehren, Zufriedenheit* Spr. (II) 1278.

वितृष्णा (2. वि + तृष्णा) f. 1) *das Nichtverlangen, Nichtbegehren* Bhâg. P. 5,5,10. कुरु तनुबुद्धिमनस्सु वितृष्णाम् Spr. 4732. — 2) *ein heftiges Verlangen* Bhâg. P. 10,7,2.

वितोय (2. वि + तोय) adj. (f. या) *wasserlos* Harîv. 3466. Varâh. Bṛh. S. 54,109. Bhâg. P. 5,13,6.

वितोला f. N. pr. eines Flusses Râǵa-Tar. 8,932.

1. वित्त (von 1. विद्) adj. 1) *erkannt:* वित्तात्मन् Jâân. 3,173. — 2) *bekannt, berühmt* P. 8,2,58. Vop. 26,101. AK. 3,1,9. Trik. 3,3,185. H. 1493. an. 2,195. Med. t. 58. तेन P. 5,2,26. Vop. 7,74. श्रोत्रियार्ताभ्युपपत्ति° Daśak. 60,3.

2. वित्त (von 3. विद्) 1) adj. a) *erhalten, erworben* H. 1490, Schol. व्यस्य वित्तं वेदो रुरुत्सि Çat. Br. 12,8,3,1. AV. 12,5,1. Ait. Br. 3,23. — b) *ergriffen —, getroffen —, befallen von:* रुजो° Kauç. 37. श्रद्धा° Çat. Br. 14,7,3, 28. पिपासया Ait. Br. 2,19. — c) *genommen, geheirathet* (ein Weib) Çat. Br. 6,5,3,1. Kâty. Çr. 16,3,21. — 2) n. a) *Fund* Ait. Br. 3,23. — b) *Habe, Besitz, Gut, Vermögen, Geld* Naigh. 2,10. P. 8,2,58. Vop. 26,101. AK. 2,9,90. Trik. 3,3,185. H. 191. an. 2,195. Med. t. 58. Halâj. 1,80. ṚV. 5,42,9. वित्ते रमस्व 10,34,12. VS. 18,11. 14. Nir. 2,24. ऋतावानमृतायवः। पावर्दस्य वित्तम् TBr. 1,4,7,7. यद्देवानां वित्ते वेद्यमासीत् TS. 1,5,9,2. 6,2,4,3. Ait. Br. 3,43. Çat. Br. 1,9,1,20. 6,6,3,4. 13,5,4,24. वित्तेषणा 14,6,4,1. 7,3,26. तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् Taitt. Up. 2,8. M. 8,36. 140. 9,198. fg. 10,88. 11,20. °काम adj. MBh. 1,5124. बहु वित्तं मयार्जितम् 3,2023. °संचय R. 2,39,14. R. Gorr. 2,32,23. Suçr. 1,126,16. Spr. (II) 772, v. l. भार्या तीर्णेषु वित्तेषु (ज्ञानीयात्) 954. 993. 998. 1307, v. l. ऊष्मा वित्तज्ञ: 1328. Spr. (I) 883. 1316. 1503. 2384. 2790. fg. 2950. 4344. 4922. fgg. Çiç. 188. Varâh. Bṛh. S. 5,46. 19,19. वित्तीसि 50,19. भूरि 52,3. Râǵa-Tar. 1,78. 202. 6,150. Prab. 21,7. Bhâg. P. 1,8,27. 3,31,41. 5,13,11. 8,16,51. 9,23,28. 10,50,41. Mârk. P. 92,37. Hit. 43,7. Paṅkat. 6,6. पुस्तकानां च लेखनाय लेखकानां वित्तं प्रदत्तमास्ते 237,1. म° Lâṭj. 9,1,14. दानपतेः सुवित्तेः *überaus reich* Spr. 4289. — Vgl. पित्र्° (n. *väterliches Vermögen* Varâh. Bṛh. S. 68,39), प्रथम°, भ-ग°, यथावित्तम्, वेलावित्त.

3. वित्त (von 5. विद्) adj. = विचारित P. 8,2,56, Schol. AK. 3,2,49. H. 1475. an. 2,195. Med. t. 58.

वित्तक (von 1. वित्त) adj. *bekannt, berühmt:* तच्चिकित्स्य° Daśak. 61,4.

वित्तकाम्यया instr. *aus Habsucht* AV. 12,3,52.

वित्तगोपृ m. *der Hüter der Reichthümer*, Bein. Kubera's MBh. 8,4661.

वित्तजानि adj. *der ein Weib genommen hat* ṚV. 1,112,15.

वित्तद 1) adj. *Besitz verleihend.* — 2) f. या N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2646.

वित्तर्ध adj. *reich* VS. 30,11.

वित्तनाथ m. *der Herr der Reichthümer*, Bein. Kubera's Kathâs. 34,79.

वित्तनिचय m. *grosser Reichthum*, pl. Mârk. P. 120,17.

वित्तप 1) adj. (f. या) *Reichthümer hütend:* यक्षिवित्तपा Bhâg. P. 10, 8,42. — 2) m. Bein. Kubera's Harîv. 13820. R. 7,3,35. Kathâs. 95, 8. Bhâg. P. 5,10,18.

वित्तपति m. *der Herr der Reichthümer*, Bein. Kubera's M. 5,96. MBh. 7,8444. Harîv. 13882. Râǵa-Tar. 8,1912.

वित्तपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 98,49.

वित्तपाल m. *der Hüter der Reichthümer*, Bein. Kubera's R. 7,11,25. — Vgl. वैत्तपाल्य.

वित्तपेटा (so die ed. Bomb.) und वित्तपेटी f. *Geldkörbchen, Geldbeutel* Paṅkat. 126,2.

वित्तम s. u. 2. विद्.

वित्तमय (von 2. वित्त) adj. (f. ई) *in Reichthümern bestehend* Kâtjây. 2,3.

वित्तमात्रा f. *eine Summe Geldes* Paṅkat. 32,24 = 29,2 ed. orn.

वित्तय्, वित्तयति (त्यागे) Vop. in Dhâtup. 35,78. eine aus der Bedeutung (वित्तममुत्सर्गे) der Wurzel व्यय् durch fehlerhafte Trennung gebildete Wurzel.

वित्तर्द्धि (2. वित्त + ऋद्धि) f. *ein grosses Vermögen* Mârk. P. 84,32. 121,4.

वित्तवत् (von 2. वित्त) adj. *wohlhabend, reich* Âçv. Çr. 2,2,1. MBh. 3, 3060. 5,3923. Spr. 2329. 2386. Varâh. Bṛh. 13,1. Bhâg. P. 7,13,16. 14, 19. Paṅkat. 8,3.

वित्ताढ्य (2. वित्त + आ°) adj. dass. Spr. 2809.

वित्तायन adj. (f. ई) VS. 5,9 s. Mahîdh. zu d. St.

वित्तार्थ (1. वित्त + अर्थ) m. *Sachkenner* Trik. 3,3,446.

1. वित्ति (von 1. विद्) f. *Bewusstsein* Sarvadarçanas. 19,1. = ज्ञान H. an. 2,195. fg.

2. वित्ति (von 3. विद्) f. im Mantra oxyt., sonst paroxyt. (so in VS. und Çat. Br.) nach P. 3,3,94. 96. 1) *das Finden, Habhaftwerden:* यु° Kâṭh. Up. 1,11,2. *das in-Besitz-Gelangen, Erwerb;* = लाभ H. an. 2,195. fg. Med. t. 57. VS. 18,14. वित्तिं वेत्स्यमानः Çat. Br. 4,1,2,5. 7,3,4,19. 14, 9,4,19. Çiñkh. Gṛhj. 1,15,12. Kauç. 20. 106. — 2) *Fund* Ait. Br. 3,23. Hiernach dürfte die Stelle भरता: मह्यनी वित्तिं प्रयन्ति 2,25 richtiger *sie suchen auf* zu erklären sein, als *sie treten in den Sold*, wie u. d. W. भृत nach Sây. übersetzt wurde. — 3) *das Gefundenwerden, Vorhandensein;* = संभव H. an. st. dessen falschlich संभाव Med. — 4) ein Ausdruck des Lobes am Ende eines comp. gaṇa मतल्लिकादि zu P. 2,1, 66. भित्ति v. l. — Vgl. यु°.

3. वित्ति (von 5. विद्) f. = विचार H. an. 2,195. fg. Med. t. 57.

4. वित्ति m. N. pr. eines göttlichen Wesens Verz. d. Oxf. H. 56,b,30.

वित्तेश (2. वित्त + ईश) m. *der Herr der Reichthümer*, Bein. Kubera's M. 7,4. Bhâg. 10,23. Harîv. 13822. Kathâs. 73,48. Mârk. P. 104, 37. °पत्तन Râǵa-Tar. 1,202.

वित्तेशय (2. वित्त + ई°) m. 1) *Besitzer von Reichthümern* Varâh. Bṛh. 14,3. Mârk. P. 126,8. — 2) Bein. Kubera's Kathâs. 38,181.

वित्त्व n. nom. abstr. von 2. विद्ु in ब्रह्म°.

वित्त्यज् (von त्यज् mit वि) s. यु°.

वित्रप (2. वि + त्रपा) 1) adj. *schamlos.* — 2) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5,36.

वित्रास (von 1. त्रस् mit वि) 1) adj. *in Schrecken versetzend:* त्रैलोक्य° (नाद्) Harîv. 14361. — 2) m. *das Erschrecken, Schreck* AK. 1, 1, 2, 21. Sûçr. 1, 374, 13. Bhâs. P. 16, 50, 17. Kathâs. 20, 245. हिंसा वित्रासकारी 67, 33. in comp. mit dem subj.: सुग्रीव° R. 4, 1 in der Unterschr.; mit der Veranlassung zum Schreck: गङ्गावतरणवित्रासवेपमान Kathâs. 10, 90. विषाग्नि° 46, 93. सिंहव्याघ्रादि° 100, 9.

वित्रासन (vom caus. von 1. त्रस् mit वि) adj. (f. ई) *in Schrecken versetzend:* सुकृतिनाम् Harîv. 6806. R. 6, 36, 34. सर्व° 92, 19.

विर्वलण (von वल् mit वि) adj. etwa *rüstig* ṚV. 5, 34, 6. = तनूकर्तृ Sây.

वित्सन m. *Stier* Çabdak. im ÇKDa.

विथ्, वेथते (याचने) Dhâtup. 2, 32. — Vgl. वेध्, विध्.

विथक् indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37.

विथुर (von व्यथ) Uṇâdi. 1, 40. 1) adj. (f. आ) *schwankend, taumelnd:* प्रेषामन्तेषु विथुरेव रेजते भूमिः ṚV. 1, 87, 3. 168, 6. 186, 3. समेषां विथुरा शर्वांसि कृणुहि 6, 23, 3. 46, 6. धृतविद्धा विथुरेणा चिदस्त्री von *dem taumelnden* d. h. *trunkenen Schützen*, nämlich Indra 8, 85, 2. AV. 7, 95, 1. वधिर्यथासंहिन्वतो न साधुः 16, 6, 11. यदुल्लपे यद्विथुरं क्रियते *hinfällig, unsicher* Âçv. Bh. 2, 7. Vgl. अ° (auch Âçv. Çr. 3, 1, 17). — 2) m. *a) Dieb.* — *b) ein Râkshasa* Uddâlak.

विथुर्य (von विथुर), विथुर्यति *taumeln* ṚV. 10, 77, 4.

विथ्या f. *eine best. Pflanze,* = गोविन्दा Çabdak. im ÇKDa.

1. विद्, वेत्ति (ज्ञाने) Dhâtup. 24, 56. Im Veda: विर्दे, वित्तात्, वित्तम्, विद्याम्, वैदत्, वेदथम्, वेदति, अवेत्, वेत् (अवेस् aus den Saṃhitâ nicht zu belegen; über वेस् s. unter 1. विष् und वी): वेद्, वेत्थ, विदथुस्, विर्मे, विर्दे, विदुस्, विर्हस् (s. bes.). In den Brâhmaṇa u. s. w.: विद्मसि Çâṅkh. Ça. 15, 27, 3. वित्थ 2. pl. Çat. Br. 13, 4, 3, 17. वेत्तु 1, 3, 3, 1. 3, 1, 2, 22. AV. 12, 3, 12. वेदानि, वेदाव: विदां चकार, विदांमक्रन् TBr. 1, 3, 10, 3. P. 3, 1, 42. अवेदिषम्, वेदिष्यति, वेदिष्यते (Kâṭh. Up. 1, 9, 3); विदित्वा, वेदितुम्; विद्य eine verdächtige Form AV. 1, 32, 1 (vgl. Journ. of the Am. Or. S. 5, 411); विदेत् VS. 5, 9 angeblich (nach Mahîdh.) hierher. Bei den Grammatikern: वेत्ति und वेद (mit der Bedeutung eines praes.), वेत्थ u. s. w. P. 3, 4, 83. Vop. 9, 17. विद्म = विर्हस् P. 7, 1, 36. Vop. 26, 189. AK. 3, 4, 21, 226. अवेस् und अवेत् 2. sg. P. 3, 2, 75, Schol. अवित्तम् u. s. w. Vop. 9, 21. अविदुस् P. 3, 4, 109. auch अविदन् Vop. 9, 20. विदां कुर्वन्तु P. 3, 1, 41. Vop. 9, 18. fg. विवेद und विदां चकार P. 3, 1, 36. auch विदां बभूव Vop. 9, 21. विविर्हस् P. 7, 2, 63, Schol. अवेदिषुस् P. 3, 1, 43, Schol. विदित्वा P. 1, 2, 5. Vop. 19, 16. 20, 207. Die in der späteren Sprache vorkommenden Formen wird man im Verlauf des Artikels verzeichnet finden. 1) *Etwas* oder *Jmd kennen lernen, erkennen; wissen, begreifen, sich auf Etwas verstehen, Etwas* oder *Jmd kennen, wissen von Jmd* (acc.): in der ältesten Sprache mit acc. und gen.: वेददर्विहान् ṚV. 5, 30, 2. स वेद देव आनमं देवान् 4, 8, 3. 8, 24, 21. वेद वातस्य वर्तनिम् 1, 25, 9. 43, 9. विदा देवा अघानामपाकृतिम् 8, 47, 2. त्वष्टा गावां वेत् 10, 53, 9. AV. 3, 9, 3. प्रत्यक्षम् 10, 7, 24. 14, 1, 57. VS. 31, 18. Âit. Br. 2, 1. 7, 1. TS. 5, 3, 8, 1. Âçv. Gṛhj. 1, 5, 5. 15, 8. य एवं वेद stehende Formel in den Brâhmaṇa, z. B. TS. 5, 2, 10, 3. Çat. Br. 10, 6, 1, 1. इत्यस्मेतद्भगवतो वेदानि Kâṭh. Up. 1, 9, 7. विदां चकार 2, 12. अवेदिषम् Prâṇkop. 6, 1. अवेदीत् Kenop. 13. विदाम Çvetâçv. Up. 6, 7. एष वेद निधीनाम् ṚV. 8, 29, 8. विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः 1, 131, 4. 4, 42, 7. न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयम् 5, 48, 5. Çat. Br. 13, 4, 3, 17. — यो न वेत्त्यभिवादस्य विप्रः प्रत्यभिवादनम् M. 2, 126. विद्याम् MBh. 3, 2800. रामो रेममाणं न वेत्ति *hat keine richtige Vorstellung von* Spr. 2631. 2674. देवो वेत्ति तु नो कुलः Kathâs. 43, 231. सुता वेत्त्यधुना प्रभुः *so v. a. weiss, was jetzt zu thun ist,* 110, 6. तदेवो वेत्त्यतः परम् 113, 106. वेत्सि Çak. in L.A. (III) 34, 2. वेत्सि Kathâs. 12, 130. वित्त्व M. 8, 80. विदन्ति MBh. 7, 3378. Bhâg. P. 7, 9, 49. विद्धि Bhag. 4, 34. विद्धि यथा *wisse, dass* MBh. 3, 15681. एतद्विदुस्: M. 4, 91. 125. Râǵa-Tar. 3, 54. यो वेदैनम् M. 11, 264. fg. 12, 106. MBh. 3, 1651. 2346. आत्मैव हि नलं वेद (st. dessen वेत्ति 2904) या चास्य तदनन्तरा। नहि वै स्वानि लिङ्गानि नलः शंसति कर्हिचित् ॥ 2905. R. 4, 10, 36 (mit der Bed. eines perf.). Spr. (II) 1319. Ragh. 2, 43. Naish. 22, 55. वेत्त्व Bhag. 10, 15. MBh. 1, 4258. 3, 16893. यथा विद Kathâs. 31, 76. विदुम् Bhag. 10, 14. MBh. 1, 6164. 3, 15593. शास्त्राणि सर्वाणि विदां करोतु Spr. 3016. विदां कुर्वन्तु 1883 (II). Sarvadarçanas. 118, 32. fg. Bhatt. 6, 4. विज्ञात् M. 7, 67. 8, 56. 9, 298. 332. Spr. 1438. 1569. न नो विज्ञातमुपोधनः MBh. 1, 6040. कथं विद्यो नलं नृपम् 3, 2203. न वो विदुर्जनाः (so ist mit Nîl. und der ed. Bomb. zu lesen) 2621. R. 2, 46, 31. अविदत् Bhâg. P. 3, 3, 17. विवेद wirkliches perf. Harîv. 8461. Kathâs. 34, 161. विविदुस् Bhatt. 14, 49. विदां चकार 50. नावेदिषुर्दिशः R. 1, 74, 14. अवेत् (!) Verz. d. Oxf. H. 255, *a*, 19. विदितवानसि Harîv. 4873. वेत्स्यामि u. s. w. MBh. 2, 1768. 3, 2778. 16968. Kathâs. 33, 34. 36, 124. Verz. d. Oxf. H. 59, *a*, 35. Bhâg. P. 3, 24, 38. श्रुतवते विदित्वास्य M. 7, 135. 202. तान्विदित्वा सुचरितैर्गूढैस्तत्कर्मकारिभिः 9, 261. एवम् Bhag. 2, 25. MBh. 1, 6118. 5, 7515. 12, 1304. Varâh. Bṛh. S. 21, 4. 50, 10. वेदितुम् Bhag. 18, 1. एतद्विज्ञानि वे° MBh. 1, 1660. 6817. 3, 807. 1507. 2983. 13553. 5, 6056. 12, 10440. 13, 3548. 3624. 14, 2400. Harîv. 24. R. 3, 7, 18. 4, 59, 23. Kumâras. 3, 30. Çiç. 153. Bhâs. P. 1, 5, 16. 2, 8, 2. 8, 9, 31. 10, 70, 38. वेत्तुम् MBh. 13, 3628. R. 2, 105, 8. mit infin. *verstehen:* न वेत्ति रामः परुषाणि भाषितुम् 12, 104. Ragh. 6, 30. Spr. 1558. 1648 (II). med.: विबुधे R. 1, 57, 5. 3, 75, 38. विदत्ते (वदत्तम् od. Bomb.) MBh. 12, 1349. वेत्स्यते MBh. 4, 25. R. 4, 27, 18. 5, 94, 11. pass.: साधु विद्यते Vet. in L.A. (III) 31, 10. — 2) *in Jmd* oder *in Etwas Jmd* oder *Etwas erkennen, kennen als* (oft so v. a. *erklären für, nennen*): कथं मां वेत्सि चाण्डालम् MBh. 13, 1880. fg. तपोधनं वेत्सि न मानुषस्त्वितम् Çiç. 76. अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः *rein wissen* 123. धनलोकात्तिमधो प्रतिष्ठां विद्धि त्वमेनं निकृतं गुरुणाम् *wisse dass* Kaṭhâs. 1, 14. अविनाशि तु तद्विद्धि Bhag. 2, 17. 13, 19. 18, 21. MBh. 1, 6012. 3, 2156. 2222. 2423. 2611. 2823. R. 1, 61, 17. 2, 30, 6. 40, 7. 3, 41, 3. Mâlav. 97. Ragh. 1, 79. 11, 76. Spr. (II) 1603. अन्यथा मां मृतं विद्धि Kathâs. 7, 91. 49, 202. तं मां वित्तास्य सर्वस्य स्रष्टारम् M. 1, 33. Kumâras. 6, 80. वेत्थ Kathâs. 35, 137. तद्धे पुरासत्प्रातं ब्राह्मं पुण्यमकर्विदुः M. 1, 73. 75. 2, 22. 3, 24. 9, 44. Ragh. 3, 49. Spr. 1392. 4162. 4639. 4675. भारताप्यं तु वर्षं तेमवतं विदुः Taitt. 2, 1, 3. 7, 3. यमेव तु शुचिं विद्या नियतं ब्रह्मचारिणम् M. 2, 115. तमपीह गुरुं विद्यात् 149. 3, 23. 4, 104. Kâr. zu P. 1, 1, 14. विवेद Râǵa-Tar. 8, 1335. न चैनं विविदुर्देवं कतलपणकाकृतिम् Kathâs. 20, 132. एतस्मान्मां कुशलिनमभिज्ञानदानाद्विदित्वा Megh. 111. Ragh. 3, 43. med.: वेदते Çvetâçv. Up. 3, 6. विद्धे MBh. 1, 3895. statt des zweiten acc. der nom. mit इति, z. B. शि-

खण्डीति च तौ विदुः MBu. 5,7407. R. 4,57,8. स्तेन इत्येव तं विदुः Spr. 4918. Vop. 24,8. मौ विदित्वा कृतेति *wenn er erfährt, dass* R. 3,55,52. — 3) *merken, beachten; eingedenk sein:* मरुत्सु RV. 2,35,2. विष्णुर्मे मत्स्य देवाः 1,23,24. 103,1. 2,32,2. 3,39,1. 5,12,3. 39,2. यौ वित्ताद्विषः 5,60,6. मनोनाम् 8,5,37. 48,6. 7,72,2. AV. 5,123,8. VS. 6,2. Çat. Br. 4,3,2,19. स हि नेत्रमवेत्तवं AV. 19,10,22. Ait. Br. 2,19. सो ऽवेदिन्द्रो वायुमुद्दे ब्रवतीति Indra *merkte, dass* Vâju *Sieger sein werde,* 25. 3,20. Çat. Br. 3,6,2,6. 11,6,2,5. न वेत्ति विभवं स्वम् *achtet nicht auf* Spr. (II) 585. — 4) *wahrnehmen, bemerken:* तस्यासारं विदित्वा R. 1,48,17 (49,17 Gorr.). Çik. 14,4. स तु तद्यावन्नमविदन् Kathâs. 37,214. स्वं तु नाङ्गभेदं विवेद सः 39,156. mit einem zweiten acc.: तौ विदित्वा चिरगताम् MBu. 1,5962. न विवेद तयोरन्तरुभयोः प्रियमत्यन्तविलुप्तदर्शनम् Kumâras. 4,2. 7,54. न विवेद गतां निशाम् Kathâs. 64,49. Râja-Tar. 3,147. 405. 5,95. नात्मानं विविदुर्विबुधनियुधिः Raghu. 9,60. विदां चकार Bhatt. 6,1. — 5) *erfahren, zu geniessen haben:* विद्यामवसो वो अस्य RV. 2,27,5. हुतार्चस्ते विद्याम नव्यसः Vikkam. 2,9. या न वेत्ति सदा पुंसो चतुराणां रतिक्रमम् Var. in L.A. (III) 16,20. न वेत्ति दुःखमण्वपि Spr. 4762. न दुःखमुचितं किंचिदात्मा वेद यथा तनः MBu. 4,21. दुःखं वनवासस्य वेत्स्यति R. 2,52,90 (29 Gorr.). न विवेद दुःखम् Raghu. 14,56. नाविदद्दयम् Bhâg. P. 4,27,18. तद्दीर्घकालं वेत्तासि *so v. a. daran wirst du lange denken müssen* R. 7,36,34. वेत्ति न वेदनाम् *empfindet keinen Schmerz* Jâtâ. 3,120. गन्धरसान् Suçr. 2,369,11. 373,2. — 6) *glauben, wähnen, annehmen, voraussetzen:* मृतो ऽयमिति न वेत्ति Var. in L.A. (III) 21,4. दार्ढ्यं स्वयशसो विदन् Râja-Tar. 6,172. विदित्वेति (= इति वि°) 8,2003. mit einem zweiten acc. *so v. a. halten für:* य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् Bhag. 2,19. Suçr. 1,113,12. Spr. (II) 519. 926. (I) 4266. यं मां वेत्सि Râja-Tar. 1,138. विद्वन् 3,150. विदन्ति Spr. 2125. विवेद Râja-Tar. 4,22. 215. — 7) *wissen wollen, prüfen* Çat. Br. 12,4,1,3. 9,2,4. तौ वेद (2. sg. imper.) *so v. a. erkundige dich nach ihr* MBu. 3,2688. — 8) विदितं *kennen gelernt, gekannt, bekannt als* Kâr. zu P. 8,2,56. Vop. 26,131. AV. 4,27,7. यो विदितावियुतामसिक्नीं 28,2. यद्देवेर्विदितं पुरा 6,12,3. Çat. Br. 7,2,2,11. 9,1,2,17. 11,5,3,3. Nir. 11,23. P. 5,1,43. MBu. 3,2691. 5,3984. तुल्यम् 7043. 7116. तव 7258. 12,4297. R. 1,2,37. 68,6. 2,33,17. R. Gorr. 1,70,2. 3,35,28. 37,22. 4,9,66. 10,14. 5,18,31. विदितागम Suçr. 1,242,1. वंशे भुवनविदिते Mâgh. 6. Çik. 7,17. 40,4. 108,16. सा बाला पार्वतीति मे विदितम् 53. विदितार्थ 111,12, v. l. Vikr. 63,3. Kathâs. 3,74. Prasn. 3,6. 22,10. Bhâg. P. 3,15,30. विदितात्मन् R. 1,43,3. 2,58,18. 103,22. 4,18,19. तच्चैकस्याः स्वभार्यायाः स चक्रे विदितं तदा Kathâs. 19,34. सोमेत्रिर्मम विदितः प्रधानमित्रम् R. 2,107,19. Pañkat. I,458. रामो नो विदितो यो ऽयं यथा च वसुधां गतः *wir wissen von Râma* R. 3,30,22. त्रेतायुगे प्रसूतो ऽसि विदितो मे ऽसि नारदात् *ich weiss durch Nârada von dir, dass* Harîv. 6483. विदितो मन्ये न ते ऽकै राघवं (राघवे?) यथा *du weisst nicht, wie ich zu Râma stehe,* R. 2,73,11. विदितो भवानाश्रमसदामिहस्त्वः *haben erfahren, dass* Çik. 28,11. विदितं भवतामेतद्यथा *es ist euch bekannt, dass* R. 2,2,3. R. Gorr. 1,72,14. 4,9,10. Kumâras. 4,36. विदितं वाद्य वाज्ञातं पितुर्मे सैंविधोपतम् *mit oder ohne Wissen meines Vaters* MBu. 3,2954. यैविदित Çat. Br. 10,6,2,4. 11,5,2,9. 14,4,2,28. R. 1,7,19. 2,31,7. 96,8. गृहादविदितः पित्रोः प्रायाद्गन्तुमिच्छतः *ohne Wissen der Eltern* Kathâs. 123, 194. 188 (wo अविदितो st. अवेदितो zu lesen ist, wie schon das Metrum zeigt). अविदिते पितुः *ohne Wissen des Vaters* MBu. 5,5971. तस्मादविदितं तस्य गन्तव्यं क्रोधनस्य नः *ohne sein Wissen* Kathâs. 39,167. मैंविदित Çat. Br. 10,6,4,10. MBu. 4,70. ब्रवं सुविदितं कुर्यात् M. 12,105. विदित = बुधित AK. 3,2,37. H. 1496. an. 3,297. Med. t. 159. = श्रुत H. an. = धर्षित Med. = प्रतिज्ञात (Colebr. संविदित st. विदित) AK. 3,2,53. Vgl. 1. वित्त. — 9) *fehlerhaft für* 3. विद्, *z. B.* नाविदन्धृतिमात्मनः (नाविन्द्° ed. Bomb.) MBu. 7,8885. विघाडकुसुवर्णकम् (विन्धा° ed. Bomb.) 13,5384.

— caus. वेदयते (चेतनाख्यानविवासेषु Dhâtup. 33,34. वेदन st. चेतन und विवास, निवेदन, परिवादन und वाद st. विवास v. l.) und seltener वेदयति. 1) *ankündigen, mittheilen, melden:* आचार्याय Âçv. Çr. 3,14,3. Gaut. 1,22,10. 12. 24,7. 30. Çat. Br. 14,6,11,6. Kâṭhân. Up. 3,7,2. M. 11,21. तिप्रमाणमनं मह्यं तस्य मे वेदयस्व तत् MBu. 14,1335. वेदयानो भयं घोरम् 6,3207. Vaitân. Bâu. S. 21,2. वेदयितुम् R. Gorr. 2,16,46. वेदित Râja-Tar. 3,251. acl. Jâtâ. 3,242. MBu. 4,1462. Harîv. 10297. उपस्थितं भयं घोरं पतिणो वेदयन्ति ते R. Gorr. 1,76,14. ब्रवा गुप्तो च काकुत्स्थो वेदयस्व नृपाय ते *melden, dass* 69,27 (67,26 Schl.). बलं साग्रमवेदयन् R. Schl. 2,82,25. यः साधयत्तं क्रन्देन वेदयेद्वनिकं नृपे *so v. a. anklagen, dass* M. 8,176. — 2) *lehren, erklären* Çânku. Ça. 4,21,26. Nir. 3,2. 11. 6,27. सर्पेरतपरिप्लुतस्यैतदार्षं वेदयते 9,8. — 3) *kund thun so v. a. zeigen, anwenden:* वेदयामास मान्धाता दिव्यं पाशुपतं महत्। तदस्त्रम् R. 7,23,8, 32. — 4) *kennen:* अवेदयानो नष्टस्य देशं कालं च तत्त्वतः। वर्णं रूपं प्रमाणं च M. 8,32. MBu. 1,3626. कृतं च क्रेष्यमाणं च काले वेदयते सदा 2,175 (vgl. R. Gorr. 2,109,5). 13,7389. 14,986. वेदितवान् R. 7,35,12. नाकृतात्मा वेदयति धर्माधर्मविनिश्चयम् MBu. 3,14048. 4,1531. Harîv. 11293. 12287. नासौ वेदितवान्धनैर्विरहितं विभ्रब्धमुक्तं जनम् *weiss nicht, dass* Mṛicch. 52,3. *halten für:* पन्नो वेदयसे प्रियम् MBu. 4,734. ब्राह्मणो वृषलाज्जातं वेदयतीव माम् 13,1886. समुपागतं सुतं सुमनसो वेद्य *nachdem er erfahren hatte, dass* R. Gorr. 2,34,29. *erkennen, wahrnehmen:* पदेष्यते येन वेदनेन ततस्तो न भिद्यते यथा ज्ञानेनात्मा वेद्यत्ते तैद्य नीलादयः Sarvadarçanas. 16,11. fg. परस्य सुखं वेदयति P. 3,1,18, Schol. — 5) *fühlen, empfinden:* ब्रवा हि स्पर्शान्वेदयते Çat. Br. 14,6,2,9. येन वेदयते सर्वं सुखं दुःखं च जन्मसु M. 12,13. सुखम् P. 3,1,18, Schol. दुखम् MBu. 12,6912. वेदये न च संयुक्तान् शब्दस्पर्शरसानहम् R. 2,64,67. — 6) वेदयति MBu. 13,5186 *fehlerhaft für* रमयति, wie die ed. Bomb. liest; अवेदितो Kathâs. 1,23,188 *fehlerhaft für* अविदितो, wie auch das Metrum zeigt.

— desid. विविदिषति P. 1,2,5. Vop. 19,16. *zu wissen wünschen, erkennen —, kennen lernen wollen* Nir. 2,5. Çat. Br. 11,5,2,1. 14,7,2, 25 (= Vedântas. [Allah.] No. 8. Kull. zu M. 12,87). Bhâg. P. 2,9,41. Sarvadarçanas. 56,14. भगवन्तं वा अहं विविदिषाणि Kâṭhân. Up. 1,11,1. विवित्सतां नः Bhâg. P. 10,64,8. अवाप्तविवित्सित 1,13,1. यावत्स कर्मयोक्तादृमार्गं विवित्सति *sich erkundigen nach* Kathâs. 102,64.

— desid. vom caus. s. विवेदयिषु.

— सनु *wissen, vollständig kennen* RV. 1,34,2. 164,18. अन्वेषामवेदं जनिमानि 4,27,1. पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः 10,17,5. देवाननुविद्वान्

Çat. Br. 1,5,4,6. AV. 12,2,38. 52. यत्पश्येको ऽनुवेदैषां भावानां वेद संस्थितिम् Jiśn. 3,104.

— समनु caus. *in Erinnerung rufen* Ait. Br. 3,20.

— अभि caus. *melden* R. Gorr. 2,4,22.

— व्यव *unterscheiden können* Çat. Br. 1,6,4,19.

— सा *gut kennen, genau wissen:* कम्प्रकृन्दसो योगमा वेद ṚV. 10,114,9. Vgl. साविद्, साविदम्. — caus. 1) *anreden, einladen; ankündigen* ṚV. 4, 36,2. 7. 10,151,1. Çat. Br. 5,3,5,31. *kund thun, mittheilen, melden, anzeigen* Jiśn. 2,5. 6. MBh. 1,3820. 15,1033. Harıv. 9128. R. 1,1,60. R. Gorr. 1,19, 1. 2,3,5. 7. 4,39,43. 5,56,133. Kumâras. 6, 21. आत्मनः सुमहत्कर्म ब्रणीरावेद्य Raghu. 12, 55. Çiç. 112,15. शयनगृहमार्गमावेदय (v. l. आदेशय) 72,12, v. l. 94,2, v. l. Vikr. 82,18. Mâlav. 10,7. Spr. 1755. Varâh. Bṛh. S. 12,15. Kathâs. 3,70. 18,76. 23,72. 25,69. 280. 26,50. 278. 29,29. 39, 164. 52,5. Prasn. 78,9. 83,9. Bhâg. P. 1,13,12. 3,4,19. 7,8,2. 10,41,18. Hit. 97,13. आत्मानम् *sich anmelden, seinen Namen nennen* Kathâs. 22, 110. पुरोगावेदितात्मानमभ्यगात्स पुरोक्षितम् *angemeldet von* 24,123. 50, 164. Râja-Tar. 3,116. 371. 5,450. राज्ञे यावेदयथ मां संप्राप्तम् *meldet, dass* R. 1,20,5 (21,4 Gorr.). 7. R. Gorr. 2,3,18. 34,28. Çiç. 30,4. Bhatt. 3,49. यावदावेद्यते राज्ञे स्तुतः कर्णो ऽर्जुनेन वै MBh. 8,4992. *Jmd* (acc.) *benachrichtigen:* यावेदित Raghu. 5,28. Râja-Tar. 1,224. — 2) *Jmd Etwas anmelden* so v. a. *anbieten, darbringen:* तस्यार्घ्यमासनं चैव गां चावेद्य MBh. 3,16696. तनयेयमनावेद्य राज्ञो देया कथंचन मे Kathâs. 15,66. यावेदितापि सा पित्रा न तेनात्ता मरीभृता 33,62. 91,11. — Vgl. यावेदक fgg.

— समा caus. *kund thun, melden* MBh. 2,14. Kâm. Nîtis. 18,68.

— नि *kund thun, zu Jmd sprechen:* न्यवेदिषुः Bhâg. P. 10,30,2. °वेदितुम् = °वेदयितुम् MBh. 2,1724. Çiç. 60,18 (°वेदयितुम् v. l.). Vgl. निविद्. — caus. 1) *Jmd* (dat. gen. loc.) *kund thun, melden, sagen, berichten, ankündigen, mittheilen, anzeigen* M. 2,226. 3,109. 7,117. Jiśn. 2,20. 172. 3,288. MBh. 1,2371. 3224 (med.). 5171. 6476 (med.). 7685. 2, 1722. fg. 3,1869. 2103. 3265. fg. 2292. 2756. 2920. 3227. 11994. 16697. 5,5965. 6042. 7229. 7432. R. 1,1,72 (°वेदयिता). 76 (81 Gorr.). 9,40. 39,1. R. Gorr. 1,80,26 (med.). 4,27,22. 5,15,37. fg. 6,84,31. Raghu. 1, 95. 2,68. 10,30. 15,65. Çiç. 50,17. एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् Spr. 1367 (II). 3287. 4083. Varâh. Bṛh. S. 38,4. 54,105. 68,89. 86, 5. Kathâs. 4,16. 71. 11,19. 14,7. 18,193. 241. 367. एवं विज्ञपदत्तेन तेन तत्र निवेदिते 25,251. Mârk. P. 72,17. Kathâs. 27,194. 32,15. Râja-Tar. 3,305. 4,373. fg. Prasn. 64,16. 83,8. Bhâg. P. 1,7,41. 4,6,2. 13,49. Mârk. P. 21,26. Pañcat. 43,28. 68,22. 81,17. 96,21. 98,2 (°वेदयमास ed. Bomb. st. °वेदयिता). 228,4. Hit. 40,11. Vet. in LA. (III) 6,4. तन्ममाग्रे निवेदय 6,15. 7,15. न्यवेदयत्तामस्वस्थाम् *meldete, dass* MBh. 3,2109. 2139. 2275. 5,7457. R. 1,18,1. R. Gorr. 1,12,25. 4,39,43 (med.). 5,3,20. 80, 65. Râja-Tar. 3,231. निवेदयसि तां नगस्वरूपिणीम् so v. a. *nennen* Çaut. 14. *Jmd anmelden* Ait. Br. 1,10. Çat. Br. 3,2,4,39. MBh. 3,1833. 11547. 13,1414. Harıv. 8843. Çiç. 7,18, v. l. 101,11. Kathâs. 38,7. 45, 265. ततः प्रविष्टो ऽहं शिष्यौरग्रे निवेदितः 6,66. आत्मानम् *sich anmelden (indem man seinen Namen nennt)* R. 2,54,12 (med. = 14 Gorr.). Kathâs. 26,151. 32,111. कथमिदानीमात्मानं निवेदयामि। कथं वात्मापराधं करोमि Çiç. 13,21. — 2) *Jmd Etwas anmelden* so v. a. *anbieten, übergeben* Ait. Br. 3,9. Çat. Br. 3,3,4,17. Âçv. Grhj. 4,7,27. Gorr. 2,10,42. मेतं गुरवे M. 2,51. 3,253. सर्वस्वम् 11,116. Jiśn. 1,27. 2,307. MBh. 1,703. 2369. 3,16645. 12,6346. देवेभ्यो ऽग्रम् 13,3369. Harıv. 6302. R. 1,25,19. 46,10. 2,84,16. 3,63,26. 7,1,13. Suça. 1,240,7. Raghu. 15, 76. Kathâs. 26,203. 75,174. Râja-Tar. 5,52. Bhâg. P. 4,22,44. 3,6,3. 10,38,38. Mârk. P. 97,15. Weber, Kṛshṇaj. 297. 309. Pañcat. 2,4,22. fg. 25. 28. fgg. 3,8,16. Daçak. 76,14. Pañcat. 174,16. राज्ञे दस्यून् so v. a. *überantworten* MBh. 1,4315. 5,5436. R. 2,78,8. आत्मानम् *sich zu eigen übergeben, sich zur Verfügung stellen* Çat. Br. 11,5,4,1. M. 4,252. fg. Jiśn. 1,166. मम कृत्ते निवेदिता (सीता) *übergeben* R. 7,45,10. — 3) न्यवेदयत् MBh. 14,2678 fehlerhaft für न्यवेशयत्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निवेदक fg., निवेदिन् fg.

— अतिनि caus. *Jmd Etwas anbieten* Pañcat. 3,9,4. vielleicht fehlerhaft für अभिनि°.

— विनि caus. 1) *kund thun, berichten, melden* MBh. 5,7344. R. 1,1, 72 (77 Gorr.). Kathâs. 71,55. *Jmd anmelden* MBh. 1,4006. — 2) *Jmd Etwas anbieten, übergeben* Çârṅga bei Kull. zu M. 3,236.

— संनि caus. 1) *kund thun, berichten, melden* MBh. 1,4064. 5,155. R. 6,112,69. 7,31,12. चिरं गतं पुनः कन्या पित्रे तं संन्यवेदयत् *meldete, dass* MBh. 1,3224. — 2) *anbieten:* आत्मानम् so v. a. *sich Jmd zur Verfügung stellen* R. 2,56,13, g.

— निस् caus. *kund thun, an den Tag legen:* धिगस्तु खलु दारिद्र्यमनिर्वेदितगौरवम् (धनिवेदित°?) Mṛicch. 50,9.

— परि *genau wissen,* — *kennen,* नित्यं वेत्थ Hor.: य आकूतिं परि वेदा वषट्कृतिम् ṚV. 1,31,8. 6,1,9. निर्ऋतिरिति त्वाहं परि वेद AV. 5, 84,1. Vgl. परिवेद und 1. परिवेदन (st. dessen पदवेदन ed. Bomb.). — caus. med. Nir. 14,21. Bisweilen fälschlich für परिदेवय्, z. B. MBh. 7, 2615, wo die ed. Bomb. पर्यदेवयत् st. परिवेदयन् der ed. Calc. liest; st. परिवेदित R. 2,39,40 (38,50 Gorr.) hat die ed. Bomb. परिदेवन; vgl. 3. परिवेदन.

— प्र *kennen, wissen:* नक्षि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थाम् ṚV. 10,71,6. 15, 18. AV. 8,9,10. 9,1,6. 7. MBh. 12,8944. स (योगः) तु दुःखं प्रवेदितुम् 889. प्रविदिषम् *wissend, wissentlich verfahrend; kundig* ṚV. 1,147,5. 7, 33,12. TBr. 3,6,6,4. AV. 5,26,1. 11,1,31. 12,2,55. Vgl. प्रविद्, प्रवेत्तृ (in den Nachträgen), प्रवेद, प्रवेदिन्. — caus. 1) *kund thun, verkünden, berichten;* med. Taitt. Up. 1,5,1. R. 4,3,2. वारेः प्रवेदिते तत्र MBh. 7, 2612. — 2) *eine richtige Erkenntniss haben* Muṇḍ. Up. 1,2,9. — Vgl. प्रवेदन, प्रवेद्य.

— अनुप्र, partic. *genau kennend:* पन्थामनु प्रविद्वान् ṚV. 10,2,7.

— प्रतिप्र caus. *verkünden, zu wissen thun* TS. 3,1,4,1.

— प्रति *merken, erkennen:* प्रति त्वादितिर्वेत्तु VS. 1,14. 16. — caus. 1) *zu wissen thun, ankünden, melden* MBh. 3,2275. 4,712. 5,7549. 6, 2984. 12,9288. 9291. R. 2,46,26. 57,23. 4,61,50. 5,37,27. विदर्भान्सं-प्राप्तमृतुपर्णं त्वना राज्ञे प्रत्यवेदयन् (so ed. Bomb. und N. 21,1) *meldeten, dass* MBh. 3,2863. 15669. 14,2535. R. 5,32,24. 35,14. रामस्य स्यन्दनम् *anmelden* so v. a. *melden, dass der Wagen bereit stehe,* 2,46,33 (44,27 Gorr.). नावं गुरुत्व 52,6. *Jmd anmelden* MBh. 5,973. R. 7,105,6. *Jmd mit Etwas bekannt machen,* mit zwei acc.: याचनां प्रतिवेदिताः 2,45,

15. — 2) *Jmd Etwas anbieten, zur Verfügung stellen, übergeben* ṚV. 1, 102, 4. AV. 6, 119, 3. 12, 3, 44. Kauç. 42. परिचर्या स्वको तस्मै MBn. 3, 2018. व्यलमानं पायसम् 13, 7424. वत्कलं तस्मै R. 4, 2, 9.

— संप्रति caus. *zu wissen thun, verkünden* MBh. 1, 3627. 4, 2313.

— वि *unterscheiden, wissen* ṚV. 1, 185, 1. 10, 12, 3. — caus. विवेदयामास Inscr. 3, 52 fehlerhaft für निवे°.

— सम् med. P. 1, 3, 29, Vârtt. 1. Vop. 23, 14. संविदते und संविद्रते P. 7, 1, 7. Vop. 9, 42. 1) *zusammen wissen, wissen, kennen;* act. ṚV. 5, 34, 3. तं वो स्वप्न तवा मं चित्र AV. 6, 46, 2. साम्ना साम 10, 8, 11. 11, 6, 9. संविद्वान् 1, 25, 1. न केतुराणं संविद्यात् Verz. d. Oxf. H. 50, a, 15. संविदस्तच्छ्लिम् Buâtr. 3, 37. med.: के न संविद्रते यद्या 8, 17. 18, 29. संवेत्स्यसे *du wirst kennen lernen* Verz. d. Oxf. H. 71, a, 37. संविदित *erkannt:* लग्ने क्रयाम्बुपस्थसंविदिते Vaṇîn. Bṛh. S. 2, 2. *bekannt:* यस्तु वः संविदितो यद्या Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 27, 5. पञ्चाच्छिष्यमकाशातु कालः संविदितो मया *erfuhr ich* Harîv. 1036. सर्वे संविदिता (नो विदिता die neuere Ausg.) देवाः प्राग्युग्मिर्न च दृश्यते so v. a. *durchsucht* 10350. — 2) *empfinden (schmecken u. s. w.):* यो वा रसाम्र (so ist zu lesen) संवेत्ति Suçr. 1, 113, 11. — 3) *einverstanden sein:* इच्छाम्यहं वरमस्मै प्रदातुं तन्मे विप्राः संविदध्वं (man hätte संविद्धुम् oder संविन्द्धम् von 3. विद् erwartet) यद्यावत् MBh. 1, 3114. mit einem acc.: ते यद्यदशनास्तस्य संविदन्ति तथैकताम् 12, 10033. सर्वेषामेव नः सर्वमेतत्संविदितं यद्या *wir sind alle darin einverstanden* R. 5, 82, 5. व्यसनानास्तावत्संविदितं गच्छ *im Einverständniss mit* Milav. 43, 17. संविदित = ऊरीकृत u. s. w. AK. ed. Colebr. 3, 2, 58 (विदित Lois.). — 4) *ermahnen:* एवं संविदिते भर्त्रा Bhâg. P. 3, 14, 29. — caus. 1) *Jmd zur Erkenntniss bringen, erleuchten* Prâçnop. 5, 3. — 2) *kund thun, verkünden* MBh. 4, 2177. — 3) *erkennen, wahrnehmen:* समवेत्यत्त च हिंसः Buâtr. 17, 63.

— अनुसम् *zugleich mit Etwas —, in Folge von Etwas wissen* AV. 10, 7, 17. 20.

— अभिसम् *wissen, kennen:* यं त्वा कोतारं मनसाभि संविदुः AV. 3, 21, 5.

— प्रतिसम् s. प्रतिसंविद् fgg.

2. विद् (= 1. विद्) 1) nom. ag. *wissend, kennend, sich verstehend auf, vertraut mit Etwas, Kenner:* एवं यो वित् Kaṭhop. 6, 18. विदो वरः Sarvadarçanas. 119, 1. Buâg. P. 1, 5, 40. 3, 4, 16. 11, 16. 8, 19, 29. सु° 10, 19. Ueberaus häufig in comp. mit einem obj. P. 3, 2, 64. कार्यतत्त्वार्थ° M. 1, 3. ग्रहोदाहर° 78. धर्म° 2, 61. 245. सर्वधर्म° 8, 63. वेदार्थ° 3, 186. MBh. 3, 2074. 2078. गद्यपाम° 13733. R. 1, 1, 1. 15. 68, 22. 2, 72, 34. Çaṅk. 5. Râgn. 1, 94. Spr. 123 (II, 3340. AK. 2, 7, 16. Vaṇîn. Bṛh. S. 69, 21. 81, 36. Bṛh. 14, 4. Kathâs. 48, 20. Râga-Tar. 4, 245. 498. 5, 380. Buâg. P. 2, 2, 27. Hit. 15, 12. superl.: वेदवित्तम M. 5, 107. अध्यात्म° Jâán. 1, 199. योग° Buâg. 12, 1. शास्त्र° MBh. 1, 3101. Kâm. Nîtis. 9, 78. 12, 18. Kathâs. 34, 194. Buâg. P. 4, 13, 24. 7, 14, 24. Vgl. 1. अग्रविद्, एवं°, क्रतु°, क्षेत्र°, 1. ज्योतिर्विद्, तद्विद्, देव°, दैव°, निमित्त°, नीवा°, पुरा°, पुराण°, पूर्व°, प्रकल°, बहु°, ब्रह्म°, भूत°, भृगवङ्गिरो°, मति°, मनो°, मन्त्र°, मर्म°, मृदु°, योग°, वचो° u. s. w. — 2) m. *der Planet Mercur* (vgl. सु) Vaṇîn. Bṛh. 2, 2 (Z. f. d. K. d. M. 4, 318). — 3) f. *das Wissen, Erkenntniss:* शक्तो वा यत्ते ब्रह्मा चकृमा विदा वौ ṚV. 1, 31, 18. तद्विदे, प्रतितद्विदे Kaush. Up. 1, 2.

3. विद् विन्दति, °ते Dâtṛ. 28, 128 (लाभे). P. 7, 1, 39. Accent Siddh. K. zu P. 6, 1, 186. अविदम्, विर्दत्, विर्दस्, विर्दाम्, विर्दान्, विर्दतम्, विर्दन्, अविदाम, विर्दासि, विर्दन्ति: विदे 3. sg. वित्से, विर्दत्त: अवेस् parallel mit अविदम् Âit. Br. 2, 30. विदेयम् VS. 7, 46. Schol. zu P. 3, 1, 86. विदेम AV. 10, 6, 33. विदेय VS. 4, 28. विदेष्ट 3. sg. AV. 2, 36, 3. अवित्सि 1. sg. विवेद, विवेदिव, विविर्दथुम्, विविदुस्, विविदत्: विविदे, विवित्से, विविदे, विविदिरे: विविदंस् und विविर्दवंस् P. 7, 2, 68. Vop. 26, 134. वेत्स्यति und °ते: वित्वा, वेत्तुम्, वैत्तवे AV. 2, 36, 7. partic. वित्त (s. bes.) und विन्न P. 8, 2, 58 (vgl. Kâr.). Vop. 26, 98. Ueber die Anfügung des Bindevocals gehen die Meinungen der Grammatiker auseinander Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. 1) *finden, habhaft werden, antreffen, sich aneignen, erwerben, theilhaftig werden:* नष्टम् ṚV. 8, 68, 6. शत्रुम् 1, 176, 1. 10, 54, 2. वसु 2, 13, 11. 3, 1, 3. 55, 20. गातुम् 2, 21, 5. रम्भो चिदत्र विविदे हिरण्यम् 15, 9. 22, 4. भगम् 2, 30, 7. रयिम् 9, 19, 6. सुते स विन्दते युधः *der macht Erwerbungen ohne Kampf* 8, 27, 17. नैव ते मनो हृदयं चाविदाम *gewinnen* 10, 10, 13. न देवेषु विविदे मर्डितारम् 4, 18, 13. सूर्यं विवेद नमसि नियर्त्तम् 3, 39, 5. देवान् 8, 48, 3. मक्तिवमग्ने वसुङ्ग वित्से *du besitzest* 10, 4, 4. 54, 4. वातात्ते प्राणमविदम् AV. 8, 2, 3. 18, 2, 31. लोकम् 35. पद्मस्तेन विन्दते 12, 2, 35. पुत्रं विन्दस्व 3, 23, 4. 5. वीरं विदेय VS. 4, 23. प्रजाम् TBr. 1, 1, 4, 6. Âit. Br. 7, 13. यद्यप्सु विन्दति *man findet Etwas im Wasser, es ist Etwas dort zu erholen* Çat. Br. 2, 1, 4, 5. Kaṭhop. Up. 1, 2, 9. 4, 3. 4, 1, 7. 5, 13, 1. 8, 3, 2. Kaush. Up. 4, 9. Çvetâçv. Up. 1, 9. Kenop. 12. तं मार्गमाणा भर्तारम् — न विन्दाम्यमरप्रख्यं प्रियं प्राणेश्वरं प्रभुम् MBh. 3, 2894. यद्या धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् Spr. 2312. मार्गम् Kumâras. 1, 5. यज्ञसंभारान् Buâg. P. 2, 6, 22. सख्यम् 4, 28, 25. पद्मान्युत्तरांश्च MBh. 13, 254. वेदम् Jâán. 3, 192. अविन्दंस्तपसा सत्यम् M. 8, 109. वेदनाम् Jâán. 3, 142. सुखम् Buâg. 5, 21. धनिम् 11, 24. सिद्धिम् 18, 45. MBh. 1, 2636. बहून्दोषान् 3, 1935. रतिम् 2107. प्राणयात्राम् 2314. दुःखम् 2377. फलम् 7072. 5, 1383. 7079. 7, 5885 (अविन्दन् od. Bomb. st. अविदन् der ed. Calc.). शर्म R. Gorr. 2, 71, 23. 5, 34, 14. Spr. (II) 577. 836. (I) 4169. इमं च लोकं परमं च Kâm. Nîtis. 3, 37. Sâh. D. 5, 7. भद्राणि Buâg. P. 1, 18, 42. 2, 4, 16. 4, 13, 43. 5, 13, 1. 18, 22. Mârk. P. 33, 18. विन्द्यात् (vgl. u. 10) MBh. 3, 8123. 8144. 8153. 13, 5284 (विन्द्यात् fälschlich ed. Calc.). med.: तद्विन्दत Buâg. P. 3, 8, 19. 4, 29, 77. न दिशो ऽविन्दत so v. a. *fand sich nicht zurecht in den Weltgegenden* MBh. 13, 535. राज्यम् Spr. 4261. पयः 4917. फलम् Buâg. 5, 4. सुखम्, दुःखम् MBh. 1, 3584. 3, 2344. 6016. R. 3, 62, 28. 5, 32, 36. Spr. 4944. Buâg. P. 2, 2, 2. 3, 5, 2. 12, 19. 4, 18, 4. 23, 20. 24, 77. तत्स्वरूपताम् 7, 1, 27. 11, 2. 9, 18, 48. Mârk. P. 34, 8. 100, 36. विन्दते 3. pl. MBh. 3, 16988. विवेद Râgn. 14, 56. Mârk. P. 75, 39. वेत्स्यति MBh. 2, 2415. 3, 8503. वेत्स्यध्वम् 1, 1111. वेत्तुम् 3, 1312. विद्य = लब्ध AK. 3, 2, 54. Trik. 3, 3, 263. H. an. 2, 286. Med. n. 20. *gefunden* Jâán. 2, 131. Vgl. अविद्य°, कोष्टुविद्या, मत्स्य°, शृगाल°. विदित (= लब्ध Nîlak.) MBh. 3, 15621. — 2) *Jmd* (dat.) *Etwas verschaffen:* यद्या ज्योतिर्विदासि नः ṚV. 3, 35, 1. 8, 45, 3. लोकं मे यजमानाय विन्द् Kaush. Up. 2, 24, 5. — 3) *aufsuchen, sich zuwenden:* इह क्रतुं विदः ṚV. 1, 42, 7. विद्मस्य वाचमविदन्मनीषाः 92, 9. यद्धा तमग्न विन्दसु AV. 5, 7, 3. Çat. Br. 11, 5, 8, 1. देवा विविदाना *(wissend Sây.)* इव समुत्पतन्त्योदो ऽकै कस्यिष्ये ऽदो ऽकै गमिष्यामीति *die Götter machen sich auf, diesem und jenem*

sich zuwendend: das will ich thun u. s. w. Ait. Br. 3, 28. नवी देवस्य मर्ज्यायं विन्दसे *suchst dir aus zum Freund* RV. 8, 21, 14. भोगमन्नं विन्दति *er sucht vergebens nach Speise* MBu. 5, 337. राज्ञानं प्रथमं विन्देत्ततो भार्यां ततो धनम् Spr. 2616. — 4) *empfinden:* शीतोष्णं च न विन्दति (गर्भः) Spr. (II) 694. *halten für:* स्वाहतीर्वाम्बु विन्दते (I) 2914. — 5) *treffen; betreffen, befallen:* मा ते भयं जरितारं विदत् RV. 1, 189, 4. 2, 42, 1. 10, 146, 1. भीः Çat. Br. 11, 4, 3, 1. येभिर्वृत्रस्य विवेद मर्म 3, 32, 4. 5, 32, 8. तृषाविदज्जरितारम् 7, 89, 4. 50, 1. AV. 1, 20, 1. 12, 4, 4. 5. 8. तं यदि दर्प एव विन्देत् Ait. Br. 6, 26. याज्ञः Çat. Br. 3, 5, 3, 25. पाप्मा 12, 7, 3, 10. — 6) *zu Stande bringen, zu machen wissen, erreichen:* भेदस्य विद्कर्धतो विन्द रन्धिम् RV. 7, 18, 13. न शत्रुरस्ति विविदे त्वया ते 21, 6. 8, 46, 11. 1, 71, 7. अविन्देथामर्यचितिं वर्धत्रैः 4, 28, 4. उत यत्रो विविदे श्येनो अत्रं *es gelang ihm die Elle* (des Flugs) 26, 5. सर्वैर्यज्ञैरात्मानं संपश्यं विदे Çat. Br. 10, 2, 6, 15. वसुभिर्यतिं यं विदे *den er machen kann* RV. 2, 14, 6. 3, 51, 9. — 7) *ein Weib —, zum Weibe nehmen:* सोमः प्रथमो विविदे RV. 10, 85, 40. विन्देत सुतां ममेताम् MBu. 1, 7192. 13, 2320. M. 9, 69. Bhâg. P. 3, 24, 37. विन्दते 3. pl. MBu. 1, 4090. ततो वेत्स्यति मे सुताम् 13, 209. mit Hinzufügung von भार्याम्, दारान्, योषितम् *Gattin:* काशिराजस्य सुतां भार्यामविन्दत Harîv. 1912. M. 9, 85. 93. विन्दत्ति MBu. 1, 4090. विन्दा *verheirathet* Spr. 4928. Jîân. bei Kull. zu M. 9, 178. *einen* (Mann) *finden, heirathen* (vom Weibe): या पूर्वं पतिं विन्दाद्यान्यं विन्दते ऽपरम् AV. 9, 5, 27. 11, 5, 18. 14, 2, 22. पत्सा पतिमविन्दत MBu. 3, 2344. M. 9, 90. zum *Sohne* (mit und ohne सुतम्) *bekommen:* यं विन्देत्सदृशात्सुतम् 136. कविर्धानमविन्दत Bhâg. P. 4, 24, 5. — 8) pass. (med.) *gefunden werden, vorhanden —, da sein;* विद्यते (विद्यते सत्तायाम् Dhâtup. 20, 26) selten im Veda (RV. 5, 44, 9. AV. 13, 49, 7. VS. 20, 26), später gewöhnlich für *es giebt, ist da, es besteht,* insbes. mit der Negation Lit. 8, 5, 15. पशुभ्यो न विद्यते Çâṇḍ. Ça. 17, 1, 18. न तस्य कार्यं करणं च विद्यते Çvetâç. Up. 6, 8. नहि वः शत्रुर्विविदे RV. 1, 39, 4. त्मना देवेषु विविदे मितज्ञुः 7, 7, 1. या वनं विदे वसु 10, 23, 2. 1, 100, 10. 8, 82, 32. 9, 99, 7. पुरा विविदे किमु नूतनाम: *bestehen sie längst oder sind sie neu?* 8, 27, 1. ते विद्रे मार्तस्य धाम्नः *sie gehören zu* 1, 87, 6. स्वर्यद्विदे 4, 16, 4. सुमतिविदे कृतौ 7, 8, 2. स विद्वान्प्रवसन्विदे (als Antwort auf die Frage किं स्विद्विद्वान्प्रवसति) *er entfernt sich wirklich* Çat. Br. 11, 3, 4, 6 (लाभाय Comm.). Die Redensart यथा विदे *wie es geht, wie es so ist* d. h. *wie gewöhnlich* und *so gut als möglich:* दध्रक्ष चिद्दस्मा धनु दुर्यथा विदे RV. 1, 127, 4. सकृन्निधो य° 132, 3. ततनु तनुष पूर्व्य य° 8, 13, 14. 29. इन्द्रमर्च य° 58, 4. Vâlakh. 1, 1. RV. 9, 86, 32. सोमो जैत्रस्य चेतति य° 106, 2. AV. 12, 3, 34. — यज्ञान्यदस्माकं विद्यते धनम् MBu. 1, 7070. 3, 2034. बुद्धा समो यस्य नेहो न विद्यते 15711. Spr. 1373. 1496. 1670. विनिपातो न विद्यते M. 4, 146. मानुषे विद्यते क्रिया 7, 205. 8, 183. 201. 9, 210. Bhag. 2, 16. 31. 3, 17. 4, 38. 16, 7. MBu. 1, 6142. 3, 2571. 13699. R. 2, 22, 25. 39, 5. R. Gorr. 2, 17, 41. 4, 37, 23. 6, 82, 9. Spr. (II) 404. 670. 1296. (I) 1318. 1307. 4995. Kathâs. 25, 243. 26, 192. Mâlav. P. 30, 18. L.A. (III) 7, 8. 17, 16. विज्ञातमेव भगवन्विद्यते पठितापि नः 86, 11. विद्यते Spr. 4996. विद्येत M. 11, 7. Kathâs. 24, 189. स्वर्गे विद्यस्व Bhatt. 20, 33. विद्यति MBu. 4, 239. विद्यत्ति R. 6, 86, 17. विद्यते भोक्तुम् *es ist Etwas da zum Essen* P. 3, 4, 65, Schol. विद्यते तत्रभवान्वृषलं याजयिष्यति *geschieht es wirklich —, ist es möglich, dass?* 3, 146, Schol. विद्यमान *da seiend, vorhanden* P. 3, 2, 126, Vârtt. 4, Schol. AK. 3, 4, 24, 86. Spr. (II) 427. (I) 1102. 2793. °मति adj. 3220. P. 4, 1, 57, Schol. 1, 2, 45, Vârtt., Schol. अविद्यमान M. 2, 248. 11, 116. Bhâg. P. 4, 29, 35. अविद्यमानवत् *als wenn es nicht da wäre* P. 8, 1, 72. 3, 1, 3, Vârtt. विद्म Kâr. zu P. 8, 2, 36. = स्थित Taitt. 3, 8, 262. H. an. 2, 336. — 9) partic. विदान and विदानं *vorhanden, bestehend, da seiend; gewöhnlich, gewohnt:* तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानः *den wirklichen* RV. 5, 21, 2. इन्द्राग सोमाः प्रदिवो विदानाः 3, 36, 2. न वावृधे धस्ति विदानः 1, 165, 9. स हि वीरो दिवेदिवे सदृङ्विदानः 10, 111, 1. दुर्गेषु पविक्रदिदानः 6, 21, 12. या मे दत्तं स्वर्यं लोकं विदाने 10, 13, 2. नि कुत्सो कुत्सयदने विदानः श्रमदत् 2, 9, 1. उषासानक्ता पुरुधा विदाने 1, 122, 2. यदी विदानः 8, 45, 27. वृषेव यूथे विदानः AV. 5, 20, 3. शुधा न तन्वो विदाना RV. 5, 80, 5. 1, 169, 2. विदानासो जन्मनो वाजरत्नाः *von Haus aus seiend* 4, 34, 2. विदाना अस्य योजनम् *welche die Zurüstung dafür bilden, — ausmachen* 9, 7, 1. 10, 77, 6. विप्राः समुद्रान्पति मज्जता पे वाचा जिता मेधया वा विदानाः (= पण्डिताः Nîlak.) MBu. 3, 10575. — 10) विन्द्यात् fehlerhaft für विद्यात् (wie die v. l. häufig hat) von 1. विद् Vârân. Bân. S. 3, 23. 5, 71. 83. 8, 7. 46, 35. 41. 53, 57. 58, 1. 78, 3. 86, 78. 96, 3. Bân. 1, 18. 11, 9. 20; vgl. noch v. l. zu Vârân. Bân. S. 46, 83. 68, 24. Es ist hierbei jedoch zu bemerken, dass MBu. 3, 2874 auch विन्दति in der Bed. von वेत्ति gebraucht wird.

— desid. *zu finden wünschen:* नष्टं विवित्सते पशुम् Çâṅk. zu Bân. Âr. Up. S. 190.

— intens. partic. *sich befindend:* नरोषितममिये वेविदानाः RV. 3, 54, 4.

— अधि (eig. *überheirathen*) *die erste Frau* (acc.) *durch eine zweite Frau* (instr.) *hintansetzen:* कीर्तिं श्रिया प्रणयिनीं लब्ध्वाधिविवेद सः (सम्राट्) Râjat. 5, 135. *die erste (früheren) Frau (Frauen) hintansetzen* (von der neuen Frau) so v. a. *als Nebenbuhlerin auftreten* von (acc.): अधिविविदुरमात्यैराकृतास्तस्य तस्य यूनः प्रबमपरिगृह्णतो श्रीभुवौ राजकन्याः Raghu. 18, 52. अधिविन्ना *eine durch eine Nebenbuhlerin hintangesetzte Frau* AK. 2, 6, 4, 7. H. 527. M. 9, 83. Jîân. 1, 74. अधिविन्नत्वा 2, 148. अधिवेत्तव्या *durch eine zweite Frau hintansetzen* 1, 73. M. 9, 80. 82. अधिवेद्या dass. 81.

— अनु 1) *auffinden, habhaft —, theilhaftig werden* RV. 1, 6, 5. 2, 12, 11. 3, 9, 4. 5, 40, 9. ज्ञायाम् 10, 109, 5. अमृतम् AV. 4, 23, 6. 10, 1, 19. Çat. Br. 1, 1, 4, 1. 2, 5, 10. 14, 4, 3, 18. Kâṭh. Up. 3, 4, 3. 7, 1. अनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसि TBr. 3, 12, 3, 2. TS. 2, 5, 3, 6. तथा पुराकृतं कर्म कर्तारमनुविन्दति Spr. 2312. भद्रम् Bhâg. P. 4, 14, 24. अन्वविन्दत med. 8, 8, 19. 10, 8, 47. 11, 7, 20. शारद्वतीं ततो भार्यां कृपो द्रोणोऽन्वविन्दत so v. a. *ehelichte* MBu. 1, 5114. *nach Jmd finden* TS. 7, 1, 6, 1. pass. *vorhanden —, da sein:* स घा विद इन्द्रो गवेषणः RV. 1, 132, 2. त्रयोदशो मासो नानुविद्यते Ait. Br. 2, 12. अनुविद्त *aufgefunden, vorhanden* Çat. Br. 14, 7, 3, 11. 12 (= Ânandâçr. in Ind. 2, 76). 17. Ait. Br. 1, 2. TBr. 1, 2, 1, 3. RV. 4, 18, 1. — 2) *finden* so v. a. *halten für:* इन्द्रकिरणमनुविन्दति खेदमधीरम् Gît. 4, 2. — Vgl. अनुविति (auch TBr. 3, 12, 3, 3). — desid. अनुविवित्सति *aufsuchen wollen* TBr. 3, 12, 3, 3.

— अभि 1) *auffinden:* अयः Çat. Br. 11, 1, 6, 16. अभ्यविन्दत् MBu. 13, 4945. शर्म 2, 1933. त्रातारं नाभ्यविन्दत R. 5, 68, 13. — 2) *kennen:* ये

धर्ममभिविन्दते MBh. 3,13698.

— आ 1) *kabhaft werden, sich verschaffen:* आर्हं पितृन्सुविदत्रां अविति RV. 10,15,3. ओषधीः 97,7. शंसमाविदे inf. etwa *um des Flehens (der Menschen) dich anzunehmen* 10,113,3. — 2) *zu erfahren haben:* माकूमा विदे भूनमपेः RV. 2,27,17. मा मघ्युः भूनमा विदे 8,45,36. — 3) pass. *vorhanden sein:* उतो हि वां पूर्व्या धीवविद्रे सत्यवाचः RV. 3,54,4. partic. etwa *vorhanden, in einer Formel,* धाविद्म् genannt, धीविन्न TBr. 1,7,6,6 (vgl. TS. Comm. II, 132) und धीवित्त VS. 10,9. nach Mah. = धावेदित, ज्ञापित, nach Sây. = लब्धवत्.

— उप s. उपविद्.

— निस् 1) *herausfinden, aussondern:* सनो बन्धुमदिति निरविन्दन् RV. 10,129,4. — 2) med. *sich entledigen,* mit gen.: यद् स्वस्यास्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः RV. 1,120,12. mit acc.: पाणिदत्यं निर्विद्य वाक्येन तिष्ठासेत् *die Gelehrsamkeit von sich thuend* Çat. Br. 14,6,8,1. — 3) pass. (*sich ausserhalb von Etwas befinden*) *überdrüssig werden, Nichts mehr wissen wollen von;* mit abl.: निर्विद्यते ऽर्थात् MBh. 12,3858. 6602. गृहात् Bhâg. P. 4,13,46. 6,5,41. विविधेभ्यश्च लौकिकात् MBh. 12,3889. कामात् 3834. निर्विद्य निरुपादत्तः Bhâg. P. 4,30,18. mit instr.: निरविद्यत जीवितेन MBh. 6,5344. दास्येन Spr. (II) 1373. mit acc.: निर्विद्यते ततः कृत्स्नम् MBh. 14,530. ohne Ergänzung: उपमेदा ना चनागच्छन्निर्विद्यमेव Çâṅkh. Br. 9,1. सा च निर्विद्यती पुनः MBh. 3,14792. Bhâg. P. 2,1,11. 5,13,6. 7,9,25. 11,20,9. निर्विद्य absol. 1,4,12. 4,13,48. MBh. 12,3854. 6602. Naish. 3,126. partic. निर्विण्ण (bisweilen fälschlich निर्विन्न geschrieben) P. 3,4,29, Vârtt. Vop. 26,88. fg. *überdrüssig,* mit abl.: तत्रभावात् MBh. 1,6692. जीवितात् 7,5378. Kathâs. 86,108. Çâṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 196. Bhâg. P. 3,25,7. 4,13,18. 47. mit instr.: देहेनानेन MBh. 6,5348. P. 3,4,29, Vârtt., Schol. Kathâs. 5,125. Pâṇkat. ed. orn. 42,3. mit gen.: मत्स्यमांसानाम् (मत्स्यमांसादनेन ed. Bomb. 54,19) Pâṇkat. 51,28. 137,1. mit loc. Kâm. Nîtis. 18,42. Bhâg. P. 11,20,27. die Ergänzung im comp. vorangehend Kathâs. 30,98. 40,27. Râga-Tar. 3,502. Pâṇkat. 3,14,16. ohne Ergänzung *der Sache überdrüssig, von Nichts mehr Etwas wissen wollend, an Allem verzagend* Bhag. 6,23. Spr. (II) 86. 937. 1373. (I) 1145. Râga-Tar. 3,164. 6,262. Bhâg. P. 5,13,7. 6,12,30. 7,10,2. 9,6,26. 19,1. Sarvadarçanas. 42,20. Mârk. P. 74,6. 133,25. अति° 20,47. सु° 123,22. Bhâg. P. 8,7,7. अ° *gutes Muths* Spr. (II) 301. R. 3,43,7. Kathâs. 82,52. Râga-Tar. 3,159. — Vgl. निर्वेद्. — caus. *Jmd zur Verzweiflung bringen:* निर्वेदयित्वा तु परं कृत्वा वा MBh. 12,2658.

— परिनिस्, partic. °र्विण *in hohem Grade überdrüssig:* स्त्रीभावे MBh. 5,7375. °चेतस् *an Allem verzagend* 16,276.

— परि 1) *umfangen:* पाशैः परिविद्धः AV. 8,112,3. — 2) *vor dem älteren Bruder* (acc.) *heirathen:* यश्च परिविद्यते *und diejenige, welche ein jüngerer Bruder heirathet, bevor der ältere verheirathet ist,* M. 3,172. या चैव परिविद्यते dass. MBh. 12,6108. Vgl. परिविण, परिवित्त (oxyt. TBr. 3,2,8,12), परिवित्ति u. s. w. — 3) *genau kennen:* यद्देहेदितव्यं त्रिदशेस्तदेव परिविन्दति Harîv. 12318.

— प्र *finden, erfinden* RV. 3,57,1. नो यकृ प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये 10,86,2. In einer Worterklärung: मा त इदं पुष्टं कञ्चन प्रविदत etwa *vernachlässigen* Çat. Br. 1,9,1,3.

— प्रति 1) (*dazu*) *finden:* स देवेषु न प्रत्यविन्दत् *fand keinen zweiten unter den Göttern* Âit. Br. 4,5. वाचो मिथुनम् Pâṇkav. Br. 21,13,2. — 2) med. *sich gegenüber befinden:* स ऋतं भागं प्रतिविदान (= जानन् Comm.) आस्ते यत्प्राशित्रम् *sitzt gegenüber* Çat. Br. 1,7,4,13. — 3) *kennen lernen:* विश्वावसोस्तु तनयाद्गीतं नृत्यं च सामं च। वादित्रं च यथान्यायं प्रत्यविन्दद्यथाविधि ॥ MBh. 3,8420. *Etwas wissen von* (acc.): पाण्डवानप्रतिविन्दमानः 1,7169. — 4) in der Stelle नास्त्यदेयं मे त्वामस्य प्रतिविद्यते B. Gaut. 1,21,22 trennen wir प्रति von विद्यते und verbinden es mit त्वाम्: विद्यते neben अस्ति ist tautologisch.

— वि intens. *aufsuchen, suchen:* रक्षसो विवेविदत् RV. 9,68,3. इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत् 86,9.

— सम् med. 1) *finden, kabhaft werden, sich erwerben, zusammengewinnen:* पतिम् RV. 10,145,1. भोजनम् 1,83,4. समरीरिदाम् VS. 6,36. सर्वां पृथिवीम् Çat. Br. 1,2,5,7. 11. गोपतिं गोतमस्तत्र तपसा समविन्दत MBh. 1,3090. सुखम् Bhâg. P. 11,9,2. pass. संविद्यते *sich finden, da sein* Sadukt. P. 4,10,5. — 2) *sich zusammenfinden mit* (instr.): सं वित्स्वाङ्गैः AV. 8,2,3. सं तैः पशुभिर्विदे 4,36,3. शरीरमस्य सं विदाम् 5,30,13. सं मे प्राणा विद्रे Âit. Br. 1,17. Çat. Br. 3,5,4,17. partic. संविदानं *zusammen mit, zugleich; verbunden, vereint; einträchtig* RV. 7,44,4. पभिः पितृभिः संविदानः 10,14,4. 30,13. fg. 162,1. 8,48,12. समानेन क्रतुना संविदाने *vereinigt durch,* — *in* 3,54,6. AV. 2,28,2. 4,15,10. 12,1,48. VS. 12,61. Çat. Br. 3,8,4,12. 14,5,2,4. Kauç. 99. 124. यत्र शत्रूञ्जिघ्यते संविदाने RV. 5,75,4. AV. 11,2,14. ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावतं वचः *ihr alle miteinander* RV. 10,97,14. AV. 3,4,7. देवैः सक्रं सं° 5,29,2. अ° Çat. Br. 10,6,2,2. Kâṅkh. Up. 8,7,2. — intens. partic. dass.: सं मस्मना वायुना वेविदानः RV. 5,19,2.

— यभिसम् med. *zusammentreffen:* मुखं यज्ञानामभि संविदाने (= कथपत्त्यो Mahîdh.) VS. 29,6.

4. विद् (= 3. विद्) adj. am Ende eines comp. *findend, gewinnend; verschaffend;* s. अन्न°, 2. अश्व°, अरुर्विद्, एकधन°, कुरुचिद्विद्, गातु°, गो°, व्रत°, ज्ञाति°, 2. ज्योतिर्विद्, तेजो°, द्रविणो°, नाथ°, पशु°, प्रजा°, मित्र°, रयि°, वसु°, स्वर्विद्.

5. विद्, विन्ते (विचारणे) Dhâtup. 29,13. erhält keinen Bindevocal इ Kâr. 3 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10. *halten für:* न तृणेऽसीति लोको ऽयं मां विन्ते निष्पराक्रमम् Bhatt. 6,39. partic. विन्न Kâr. zu P. 8,2,36. = विचारित AK. 3,2,49. H. 1475. an. 2,256. Med. n. 20. = ज्ञात Trik. 3,3,262.

1. विद् (von 1. विद्) 1) adj. = 2. विद् am Ende eines comp.: चतुर्वेदविदेर्विप्रैः Verz. d. Oxf. H. 31,a,16. विदम् am Ende eines adv. comp. gaṇa शरदादि zu P. 5,4,107. Vop. 6,63. Vgl. को°, त्रयी°, द्वि°. — 2) nom. act. in दुर्विद्.

2. विद् m. N. pr. eines Mannes P. 4,1,104. gaṇa अश्वादि zu 110. pl. *die Nachkommen des* Vida Kâç. zu P. 1,1,62. Schol. zu 2,4,64. Vop. 7,14. Âçv. Çr. 12,10,9 (विद् die Ausg.). Schol. zu Kâtj. Çr. 155,11. विदकुल = वेदकुल P. 2,4,64, Vârtt., Schol. — Vgl. वैद्, वेदायन, वैदि.

विदंश m. = अवदंश Râgân. im ÇKDa.

विदतिण (2. वि + द°) adj. *nach einer anderen Gegend als nach Süden gerichtet* Kâm. Nîtis. 16,23.

विदग्ध gaṇa वाह्लादि zu P. 4,2,80. 1) adj. s. u. दह् mit वि: *geschickt, gewandt, pfiffig* Halâj. 2,230. 334. सौवत्सर Weber, Gjot. 110. Kirâṇ. 1,89. — 2) m. oxyt. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 11,6,3,3. 14,6,9,1. 10,17. Verz. d. Oxf. H. 55,*a*, 34. — Vgl. वैदग्धक, वैदग्धी, वैदग्ध्य.

विदग्धचूडामणि m. N. pr. eines verzauberten Papageien Kathâs. 77,6. Ver. in LA. (III) 15,17. 22,17.

विदग्धता (von विदग्ध) f. *Klugheit, Gewandtheit:* विश्रामप्रतिपन्नानां वचने का विदग्धता Spr. 2855. 2817 (सा विदग्धता v. l.). वाचि Mâlatîm. 2,19.

विदग्धमाधव n. N. pr. eines Lustspiels Verz. d. Oxf. H. 145,*a*, No. 305. Verz. d. Tüb. H. 24. Wilson, Sel. Works I, 138. 167.

विदग्धमुखमण्डन n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 213,*a*, No. 514. gedruckt in Hall. Anth. 269. fgg.

विदण्ड (2. वि + दण्ड) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,6992.

विदत्र s. दुर्विदत्र und सु°.

विदथ (von 1. विद्) Uṇâdis. 3,116. 1) n. *a*) *Weisung, Gebot; Anordnung, Ordnung* Nir. 1,7. 3,12. 6,7. 9,2. विदथमा वद् *Weisung geben, entscheiden, zu gebieten haben:* सुवीरासो विदथमा वदेम RV. 1,117,25. वशिनी त्वं विदथमा वदासि *als Gebieterin schalten* 10,85,26. fg. यथा यमस्य सादने सासति विदथावदन् (wohl so gegen Padap.) AV. 18,3,70. °धा निचिकात् 5,20,12. RV. 4,38,4. होता विदथानि प्रचोदयन् 3,27,7. साधन् 1,18. 10,92,2. प्र नु वोचं विदथा ज्ञातवेदसः *das Walten des* Agni 6,8,1. AV. 4,23,1. वह्निनवर्तानिं सकन्यिषर्पि विदथे RV. 1,31,6. यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छमत्रे VS. 23,57. — *b*) (*Ansage, Aufgebot*, concret *was auf Ansage u. s. w. sich sammelt, coetus*) α) *Versammlung einer Gemeinde u. dgl., Verein, Rathsversammlung:* विदथेषु प्रशस्तः *im Rathe geachtet* RV. 2,27,13. बृहद्दिव विदथे सुवीराः 17. 1,4. उभे वि विदथे कविरुत्तशर्धति हूत्यम् *zwischen der Götter- und Menschengemeinde* 8,39,1. विदथस्य धीभिः तत्रं रोदसी दधाते *den Vorsitz in der Göttergenossenschaft* 3,38,5. यस्मिन्देवा विदथे मादयन्ते 10,12,7. 5,63,2. AV. 17,1,15. drei Ordnungen derselben: त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेयाम् RV. 2,27,8. 6,51,2 (= स्थानानि Sây.). 7,66,10. 8,39,9. 3,38,6. — β) *Versammlung zum Gottesdienst; Festgenossenschaft; Feier;* = यज्ञ Naigh. 3,17. अस्मिन्नो अद्य विदथे देवा मादयध्वम् RV. 6,52,17. 3,54,2. 7,84,2. या कृणवः प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम 5,29,13. अग्निं होतारं विदथाय जीजनन् 10,11,3. 1,60,1. 3,1,1. त्रिरा दिवो विदथे सप्त देवाः 56,8. 2,4,8. 39,1. AV. 1,13,4. RV. 7,21,2. VS. 22,2. 34,2. — γ) (*kriegerisches Aufgebot; zusammengehöriger Schaar*) *Zug, Geschwader, ordo*, insbes. der Marut: गणो यज्ञं विदथेषु (vgl. ebend. व्रातं व्रातं गणं गणम्) *turmatim* RV. 3,26,6. क्रीळन्ति विदथेषु घृष्वयः 1,166,2. 83,1. 167,6. यत्तमृक्ते विदथे येतिरे नरः 5,59,2. 7,57,2. वेर्म पृक्षे विदथे *so v. a. in geordnetem Kampfe* 18,13. यदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा दधत्रे 93,5. — 2) m. *a*) = योगिन् H. an. 3,333. Med. th. 24. — *b*) = प्राज्ञ H. an. = कृतिन् Med. — *c*) N. pr. eines Mannes nach Sây. RV. 5,33,9.

विदथिन् (von विदथ) m. N. pr. eines Mannes P. 6,4,165. — Vgl. वैदथिन.

विदथ्य (wie eben) adj. *in eine Versammlung —, in eine Gemeinde —, in einen Rath tauglich u. s. w.:* वोरं सादन्यं विदथ्यं सभेयम् (vgl. अरण्य-गां) RV. 1,91,20. सभावती विदथ्या 167,3. यः सभेयो विदथ्यः सुत्वा यज्ञाय पूर्वपः AV. 20,128,1. RV. 7,36,3. 4,21,2. Agni 3,34,1. 6,8,5. Wagen der Açvin, *festlich* 10,41,1. सो अग्निर्विदथ्याः सभेतु 7,40,1. या विश्वाचीर्विदथ्यासनक्त *die gemeine und die festliche Flamme* 43,3.

विदद्रथ (विदत्त, partic. von 3. विद्, + रथ) m. N. pr.; s. वैदद्रथि.

विदंदसु (विदत्त् + वसु) adj. *Güter gewinnend* RV. 1,6,6. 3,34,1. 5,39,1. 8,55,1. Âit. Br. 2,27. Pâśkav. Br. 3,3,3. 6. 11,4,3.

विदत्त (2. वि + दन्त) adj. *der Zähne —, der Fangzähne beraubt;* von einem Elephanten Hariv. 3822. 4679.

विदन्वत् m. N. pr. eines Bhârgava Pâśkav. Br. 13,11,10.

विदभृत् m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,118. gaṇa गर्गादि zu 4,1,105. — Vgl. वैदभृत, वैदभृत्य.

1. विदर (von 1. दॄ mit वि) 1) m. *das Bersten, Zerreissen* AK. 3,3,5. H. 1488. — 2) n. *Cactus indicus Roxb.* (wohl *die Blüthe*) Çabdâ. im ÇKDr.

2. विदर (2. वि + दर) adj. (f. आ) *frei von Spalten, — Löchern:* भू Kâm. Nîtis. 19,10; vgl. निर्दरणा 12.

विदरण (von 1. दॄ mit वि) n. *das Bersten, Spalten* Varâh. Bṛh. S. 5,61 (vgl. मध्य°). भुवः 97,9.

विदर्भ 1) m. pl. N. pr. eines Volkes und des von ihm bewohnten Landes, südlich vom Vindhja mit der Hauptstadt Kuṇḍina, AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (56). MBh. 3,2076. 2092. 2772. 2852 (an den beiden letzten Stellen nach der Lesart der ed. Bomb., °दर्भा ed. Calc.). 6,351 (VP. 187). 12,2812. R. 4,41,16. Raghu. 5,60. Varâh. Bṛh. S. 14,3. Mârk. P. 58,17. sg. das Land: विदर्भो नाम जनपदः Daçak. 180,9. विदर्भाधिप MBh. 3,2409. विदर्भाधिपराजधानी Raghu. 5,40. विदर्भाधिपति Bhâg. P. 10,53,16. °राज R. Gorr. 1,40,2. Naish. 1,30. °पति Milav. 77. °भू Naish. 2,16. Verz. d. Oxf. H. 213,*b*, No. 307. °नगरी MBh. 3,2094. 2780. Hariv. 5842. — 2) m. sg. *ein Fürst der* Vidarbha (vgl. वैदर्भ.: कन्या विदर्भस्य MBh. 3,2102. °तनया 2412. °सुत Naish. 1,82. °राजधानी Verz. d. Oxf. H. 238,*a*, 28. — 3) m. sg. N. pr. eines Mannes Hariv. 9369. Bhâg. P. 4,28,38. ein Sohn Gjâmagha's Hariv. 1988. fg. 6588. VP. 422. Bhâg. P. 9,23,38. 24,1. ein Sohn Ṛshabha's 5,4,10. — 4) m. = वैदर्भ *Krankheit des Zahnfleisches* Çiva. Saṃh. 1,7,76. — 5) f. आ N. pr. *a*) einer Stadt, = कुण्डिन H. 979. MBh. 3,2772. 2826. fgg. 2852 (an allen Stellen m. pl. die ed. Bomb.). Hariv. 6588. — *b*) eines Flusses Hariv. 9311. — *c*) einer Tochter Ugra's und Gattin des Manu Kâkshusha Mârk. P. 76,47. — Vgl. दधि°, दशी° und वैदर्भ, वैदर्भि.

विदर्भजा (वि° + जा) f. patron. der *Gattin* Agastja's Taitt. 1,1,91.

विदर्भि m. N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 1,441. Çaṃk. zu Praçnop. 1,1, wo वैदर्भि nicht auf विदर्भ, sondern auf विदर्भि zurückgeführt wird.

विदर्भी कौण्डिन्य m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,38.

विदर्व्य adj. *ohne Haube* (दर्वि), von einer Schlange Çâṅkh. Gṛhj. 4,18.

विदर्शिन् adj. बुद्धिं सर्वलोकविदर्शिनीम् R. Gorr. 2,116,27. °निदर्शनीम् Scul. °निदर्शनीम् (= संमताम् Comm.) ed. Bomb.

विदल s. विदल. In der Bed. 1) Varâh. Bṛh. S. 86,76 (darauf wird geschrieben). — सो ऽयं स्कन्धो विदलो ऽध्यूढः Kauṣ. Âr. 2,3. Gṛhjas. 1,28.

विदलन (von दल् mit वि) n. 1) *das Bersten:* der Erde Kathâs. 74,

279. — 2) *das Aufreissen, Spalten:* यथा नखविदलनादिना तण्डुलनिष्पत्तिः Sarvadarçanas. 123,9. मत्तेभकुम्भविदलनकृतश्रम (सिंह) Spr. 2093.

विदलीकृत (auch R. 3,57,22. 4,47,18. 49,4) s. वि°.

विदश (2. वि + दशा°) adj. *keine Verbrämung habend:* वस्त्र Mân. P. 34, 55.

विदा f. nom. act. von 3. विद् nach gaṇa भिदादि zu P. 3,3,104. Vop. 26,192. *Kenntniss* H. an. 2, 224. Med. d. 14. *Verstand* Taik. 1,1,114. H. an. Med.

1. विदान partic. s. u. 3. विद् 9).

2. विदान (von 3. दा mit वि) n. *das Zertheilen* Çat. Br. 14,8,2,1.

विदाय m. *Erlaubniss zum Weggehen* nach ÇKDa. in der Stelle: विदायं देहि संप्रीत्या तणं मे (?) प्राणवल्लभे Brahmavaiv. P., Ganmakhanda.

विदायिन् (von 1. दा mit वि) adj. *verleihend, bewirkend:* विघ्ननाशाय विघ्नस्थितिविदायिने Çatr. 1,1.

विदार्य (von 3. विद्) adj. *zu finden* RV. 10,22,5.

विदार (von 1. दॄ mit वि) 1) m. *a) das Zerreissen, Zerspalten, Zerklaffen;* = दारण H. an. 3,603. Med. r. 218. Vop. 8,137 (als Bed. von खन्). 16,5 (als Bed. von दॄ). वल्लीविदारकुठारिका Spr. (II) 494. — *b) Kampf, Schlacht* H. an. Med. — *c) Abzugsgraben* (उलोच्छास) Med. — 2) f. ई *a) eine best. Pflanze* und *ihre Wurzel* P. 4,3,166, Vârtt. 2, Schol. AK. 2,4,2,20. *c) Batatas paniculata Chois.* AK. 2,4,2,25. H. an. (°इक्षु-गन्धयोः st. °इक्षुदण्डयोः zu lesen). Med. Ratnam. 73. Suçr. 1,53,10. 137, 4. 143,12. °कन्द 223, 2. 8. 274,1. °कन्दक Med. n. 211. विदारि Suçr. 1,145,21. — *β)* = विदारीगन्धा *Hedysarum gangeticum* H. an. Med. — *b) eine Art von Abscessen* H. an. Med. — *c)* विदारि N. einer Unholdin: ऐशान्यादिषु कोणेषु संस्थिता बाह्यतो गृहस्यैताः। चरकी विदारिनामाथ पूतना रात्तसी चेति ॥ Varâh. Bṛh. S. 53,88. — Vgl. कोविदार und तीरविदारी.

विदारक (vom caus. von 1. दॄ mit वि) 1) adj. *zerreissend, zerspaltend, zerfleischend:* प्रचण्डगजकुम्भ° (सिंह) Spr. (II) 1193. — 2) m. = कूपक AK. 1,2,2,10. H. 1088. *Vertiefung in einem ausgetrockneten Flusse, in der das Wasser zurückgehalten wird;* nach Andern *ein Stein — oder Baumstamm im Wasser.* — 3) f. विदारिका *a) Hedysarum gangeticum* Çabdar. im ÇKDa. Suçr. 1,292,8. 294,11. Varâh. Bṛh. S. 76,5. 9. — *b) eine Art von Abscessen* Suçr. 1,92,7. 93,3. 273,12. 274,1. 2,118, 10. 132,14. — Vgl. तोयविदारिका.

विदारण (wie oben) 1) adj. *zersprengend, aufreissend, zerreissend, verwundend, zerbrechend, zerspaltend, zerschmetternd* Harîv. 11942. 12538. Vicva. 6,182. घसृरपुरविदारणाः सुराः MBh. 1,1434. तनुत्राखि° (इषु) 8,1822. पत्तानीक° (योध) 5,5154. तिमिरवारणपूय° (von der Sonne und vom Löwen) 7,3409. सरि° (वस्त्र) R. Gorr. 1,30,12. Mân. P. 20, 2. 21,29. कूदय° (वचन) R. Gorr. 1,22,20. शत्रुहृदय° 3,32,13. Git. 1,29. Bâlc. P. 10,79,4. मल्लियस्य विदारणी (विदारिणी ed. Bomb.) शक्तिः MBh. 3,14609. — 2) m. *Pterospermum acerifolium Willd.* Çabdaç. im ÇKDa. — 3) n. *a) das Zersprengen, Aufreissen, Zerreissen, Verwunden, Zerbrechen, Zerspalten, Durchbohren, Zerschmettern;* = भेदन, भेद् H. an. 4,88. Med. q. 108. Daîvîp. 31,23 (als Bed. von दॄ). = क्षति Schol. zu Çiç. 39. प्राकारकर्म्मादि° Kâm. Nîtis. 15,12. दन्तभङ्गो हि नागानां मार्ग्यो गि-रिविदारणे Spr. 2137. 2144. व्यूहानाम् Harîv. 8331. MBh. 8,4214. R. 4, 54,13. *fg.* मणीनाम् *das Durchbohren* Kull. zu M. 9,286. पृथिवी° R. 1, 40 (41 Gorr.) in der Unterschr. Suçr. 1,85,9. गुद° 2,58,17. प्रेरोहिशाखिनां शाखास्कन्धसर्वविदारणम् *das Abhauen* Jâtâ. 2,227. Âçvamedha in Journ. of the Am. Or. S. 6,558. चम्पारण्य° *das Verwüsten* Inschr. ebend. 504, Cl. 14. = मारण Çabdar. im ÇKDa. — *b) das Aufreissen* so v. a. *Aufsperren:* des Mundes Çañk. zu Kaiṭh. Up. S. 33. zu Bṛh. Âr. Up. S. 23. 51. — *c) Schlacht, Kampf* H. an. masc. und fem. Med. — *d) das Abweisen, Zurückweisen:* तेन विद्याधरास्तांस्तान्वरानुद्दिशतो बहून्। पितुर्विदारणं कृत्वा कन्येवाप्याप्यकं स्थिता ॥ Kathâs. 26,62. — *e)* = विडम्बन, विडम्ब H. an. Med. — Vgl. सनीक°, मर्म°.

विदारि s. u. विदार 2).

विदारिगन्धा s. विदारीगन्धा.

विदारिन् (von 1. दॄ mit वि oder von विदार) 1) adj. *zersprengend, zerspaltend, zerreissend* u. s. w.: गिरिभृङ्ग° MBh. 9,882. मल्लियस्य विदारिणी (so ed. Bomb., विदारणी ed. Calc.) शक्तिः 3,14609. रुरुविदारिणी Bein. der Durgâ Kathâs. 53,171. — 2) f. विदारिणी *Gmelina arborea Roxb.* Râǵân. im ÇKDa.

विदारीगन्धा f. *Hedysarum gangeticum* AK. 2,4,4,3. Ratnam. 9. Suçr. 1,53,10. विदारिगन्धा 57,18. 369,16. 376,18. 2,35,20. °कषाय 86,11.

विदारीगन्धिका f. dass. H. an. 4,194.

विदारु m. *Eidechse, Chamäleon* Hin. 218.

विदासिन् (von दस् mit वि) adj. स्व° *nicht versiegend:* क्रूद Âçv. Gṛhy. 1,5,5. 2,6,9. Gobh. 4,5,22. Bhâg. P. 1,3,26. 8,24,22. fg. — Vgl. अविदस्य.

विदाह (von 1. दह् mit वि) m. *das Brennen, Hitze:* auch als Thätigkeit und Wirkung der Galle im Körper Suçr. 1,20,8. शोणितस्य 79, 12. 285,1. 2,183,17. 431,12. शोफो विदाहमाप्नुयते 80,11. als Krankheit der Galle Çârîr. Sâṃ. 1,7,71.

विदाहवत् (von विदाह) adj. *hitzig* Suçr. 1,199,11.

विदाहिन् (wie eben oder von 1. दह् mit वि) adj. *hitzig, brennend;* von Speisen Bhâg. 17,9. Suçr. 1,80,6. 177, 6. 243, 3. 2, 314,21. स्व° 1, 39,7. 173,16. अविदाहित्व 188,17. कोष्ठविदाहिन् 155,16. *ein hitziger Ort* Kâṭy. Ça. 22,3,3. Lâṭy. 8,5,3.

विदि f. Siddh. K. 247,b,15. *die Wurzel* 1. विद्. विदिर्ज्ञाने निरुच्यते Kâm. Nîtis. 2,17.

विदिक्कङ्क (विदिश् + चङ्क) m. *ein best. Vogel,* = कपिञ्जल Çabdaç. im ÇKDa.

विदित 1) adj. s. u. 1. विद्. — 2) f. या N. pr. einer Göttin, die die Befehle des 13ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî ausführt, H. 45.

विदिय m. = विदग्ध 2) *a)* und *b)* ÇKDa. nach Çabdaç. und einer Hdschr. der Med.

विदिश् (2. वि + 2. दिश्) 1) adj. *nach verschiedenen Richtungen gehend* Kâṭy. Ça. 1,8,13. — 2) f. oxyt. *Zwischengegend (Südost* u. s. w.) AK. 1,1,2,7. H. 167. Hâlây. 1,102. VS. 6,19. Sharîr. Bh. 4,4. Çiç. Gṛhy. 1,7. MBh. 2,1394. 3,1861. 2852. 12114. 13,1545. Harîv. 9367. 11000. R. Gorr. 1,77,31. 4,39,29. 6,90,28. Sûryas. 3,33. Varâh. Bṛh. S. 5,33. 11,28. 30,16. 35,4. 86,75. Kathâs. 22,86. Weber, Rikat. Up.

314. Prab. 117,6. Bhâg. P. 4,17,16. 5,8,32. Mârk. P. 50,46.

विदिशा f. 1) = विदिश् 2) MBh. 12,10454. Harîv. 2243. — 2) N. pr. eines Flusses und der daran gelegenen Stadt (Bilsa heut zu Tage) LIA. II, 943. Varâh. Bṛh. S. 16,32. Fluss MBh. 2,271. 6,333 (VP. 183). Milav. 76. Mârk. P. 57,20. P. 4,2,70, Schol. Stadt Megh. 25. Ragh. 15,36. Mâlav. 46,1. 67,19. Kathâs. 33,106. 71,72. an der Vetravatî Kâd. in Z. d. d. m. G. 7,383. — 3) = विदेश (?) *Fremde* Spr. 2639 (die ed. Bomb. des Paṇḍav. hat hier ganz andere Lesarten). — Vgl. वैदिश.

विदीर्णैय m. *ein best. Vogel* (= श्वेतवक Comm.) TS. 5,6,22,1. TBr. 3,9,9,3.

विदीर्घपु (von 1. धी mit वि) adj. s. घ°.

विदीर्घिति (2. वि + 2. दी°) adj. *strahlenlos* Varâh. Bṛh. S. 3,31.

विदीपक (von दीप् mit वि) m. *Laterne:* रथे रथे पञ्च विदीपकाः (विदिपिकाः ed. Calc.) MBh. 7,7295.

विदु 1) m. *die zwischen den beiden Erhöhungen auf der Stirn des Elephanten befindliche Gegend* AK. 2,8,2,5 (विदु fälschlich Lois.). H. 1226. Auch विद्दू Comm. zu AK. nach ÇKDr. — 2) m. oder f. N. pr. einer Gottheit des Bodhi-Baumes Lalit. ed. Calc. 421,16. — 3) m. N. pr. eines Brahmanen Târan. 62.

विदुद्द vielleicht = Vendidad Bhavishja-P. in Verz. d. Oxf. H. 33,b,3.

विदुर् (von 1. विद्) 1) adj. *klug, verständig, weise* P. 3,2,162. Vop. 26,152. AK. 3,1,30. H. 349. an. 3,602. Med. r. 217. = नागर H. an. Med. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vjâsa von einer Çûdra-Frau, jüngeren Bruders des Dhṛtarâshṭra und Pâṇḍu, H. an. Med. MBh. 1,95. 2213. 2245. 2426. 2442. 2721. 3808. 4301. 4335. 5313. 12,1476. 13,751. Harîv. 1826. Spr. (II) 721. VP. 439. Bhâg. P. 1,13,1. 3,22,24. °वाक्यानि Verz. d. Oxf. H. 266,b,26. विदुराक्रूरवरद Beiw. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4,1,30. विदुरागमनपर्वन् heissen die Adhjâja 200 — 206 im 11ten Buche des MBh.

विदुरता f. nom. abstr. von विदुर 2) MBh. 13,752.

विदुल 1) m. Bez. *zweier Calamus-Arten* AK. 2,4,2,10. fg. H. 1137. Med. l. 132. Hâlâj. 2,46. Suçr. 1,144,18. 2,480,11. विदुलस्येव तत्पुष्पं मोघं व्रणयितुः स्मृतम् MBh. 13,5120. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers MBh. 1,338. 509. 3,4494. fgg. 13,461.

विदुषितर und विदुषीतर s. u. विद्दस्.

विदुष्कृत (2. वि + दु°) adj. *frei von Uebelthaten, — Sünden* Kâuç. Up. 1,4.

विदुष्टर s. u. विद्दस्.

विदुष्मत् (von विद्दस्) adj. *reich an Kennern, — Gelehrten* Vop. 7,27. S. 176.

विद्दस् (von 1. विद्) adj. *aufmerksam, sich merkend* RV. 1,71,10. 7,18,2.

विदूर (2. वि + दूर) 1) adj. (f. आ) *weit entfernt* Çâṅkh. Ça. 1,1, 23. विदूरात्तरभाव Ragh. 13,48. देश Kathâs. 21,115. Râga-Tar. 1,135. Bhâg. P. 2,4,14. श्यामो ऽपि विदूरवत् 4,16,11. Verz. d. Oxf. H. 132, b, No. 243. नगो गिरा विदूराय मनसश्चेतसामपि *weit entfernt von so v. a. nicht zu erreichen für* Bhâg. P. 8,3,10. भर्तृस्नेह° *so v. a. Nichts wissend von* 4,14,25. Gewöhnlich ohne subst. im acc. abl. oder loc.: विद्दूरम् *in weiter Ferne* (Gegens. समक्षिकम्) TBr. 3,9,4,2. Çat. Br. 1,4, 4,23. 6,4,18. 3,9,4,21. Çâṅkh. Br. 26,1. Gir. 11,25. Bhâg. P. 8,12,23. विदूरात् *aus —, in weiter Ferne* Harîv. 6644. Ragh. 13,38. Bhâg. P. 7, 6,16. 8,2,23. विदूरतस् dass. R. 4,38,35. Milaviku. 61,12. Kathâs. 12, 6. 34,34. 69,58. 121,160. विदूरे *in weiter Ferne, weit weg* R. 4,58,14. इव Kathâs. 61,78. 85,23. कृ *entfernen* Spr. 2792. Am Anfange eines comp.: °जातायां लतायां *fern wachsend* MBh. 3,296. स्वरे विदूरसंश्रवम् *aus weiter Ferne hörbar* R. 3,66,26. °क्रमण Spr. 2998. °गमन Kathâs. 26,31. °गा *sich weit verbreitend:* गन्ध H. 1390. *weit entfernt* Verz. d. Oxf. H. 256,b,42. Vgl. घ° (adj. auch Kumâras. 7,41. घविदूरे auch R. Gorr. 2,47,5. 53,5. Bhâg. P. 5,2,6. 7,5,46). — 2) m. N. pr. *a)* eines Sohnes des Kuru MBh. 1,3792. fg. nach der Lesart der ed. Bomb. विद्दूरथ ed. Calc. — *b)* eines Berges oder einer Gegend, von wo der Lasurstein herkommen soll, P. 4,3,84. Mallin. zu Çiç. 3,65. °भूमि Kumâras. 1,34. विदूराद्रि Gaṇiun. im ÇKDr. विदूरशब्दो नगरविशेषस्य पर्वतविशेषस्य वालवायस्य वाचकः Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,60; vgl. वैदूर्य und वैडूर्य.

विदूरज n. *Lasurstein* Çabdâtmak. bei Wilson. — Vgl. वैदूर्य und वैडूर्य.

विदूरत्व (von विदूर) n. *weite Entfernung:* विदूरत्वात् = विदूरात् Harîv. 6828.

विदूरथ m. N. pr. eines Muni Varâh. Bṛh. S. 48,64. eines Sohnes des 12ten Manu Harîv. 484. Mârk. P. 94,26. eines Fürsten Harîv. 5017. 5081. 5498. 6643. Verz. d. B. H. 189 (46. fg.). Bhâg. P. 2,7,34. aus Vṛshṇi's Geschlecht MBh. 1,6999. 7015. 7,408. पौरवदायादो विदूरथसुतः 12,1791. ein Sohn Kuru's MBh. 1,3792. fg. (विदूर ed. Bomb.). दालिभात्पौरो भूमन् Mârk. P. 109,10. ein Sohn Bhagamâna's und Vater Çûra's Harîv. 2032. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,35. ein Sohn Suratha's und Vater Ṛksha's (Sârvabhauma's) Harîv. 1816. VP. 437. Bhâg. P. 9,22,10. ein Sohn Kitraratha's 24,17. Vater Sunîti's und Sumati's Mârk. P. 116,8. 10. fgg. wird von seiner Gattin getödtet Kâm. Nîtis. 7,54. Varâh. Bṛh. S. 78,1 (Kull. zu M. 7,153). Spr. 1353. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

विदूरय् (von विदूर), °यति *weit forttreiben* Spr. 2776, v. l.

विदूरविगत adj. Bhâg. P. 5,1,26 nach dem Comm. = पत्यत्न von *niedrigster Herkunft.*

विदूरीभू (विदूर + 1. भू) *sich entfernen:* °भवतः समुद्रात् Ragh. 13,18.

विदूषक (vom caus. von 1. दुष् mit वि) 1) nom. ag. *Verunglimpfer* H. an. 4,33. Med. k. 214. ब्रह्मब्राह्मणयज्ञपुरुषलोक° Bhâg. P. 5,6,11. — 2) m. *Spassmacher, lustiger Geselle;* = पिङ्ग u. s. w. Trik. 3,1,6. = चाटुकर Med. — Spr. (II) 736. Daçak. 61,6. insbes. *die lustige Person im Schauspiel, der nur an Essen, Trinken und Späße denkende Gefährte des Helden* H. 331. H. an. Sâh. D. 77. 79. 85. Harîv. 3693. Çiç. 20,1. u. s. w. Vikr. 13,1 u. s. w. Mâlav. 27,12 u. s. w. Dhûrtas. 87,6 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 139,a, No. 274. — 3) m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 18,109. fgg.

विदूषण (wie eben) adj. *beschimpfend, verunglimpfend:* मतिं धर्मविदूषणाम् (!) R. 5,87,25.

विदृति (von 1. दृ mit वि) f. *die Naht auf dem Kopfe* Âpast. Up. 3,12.

विदृश् (2. वि + दृश्) adj. *blind* Varâh. Bṛh. S. 4,3.

विदेर्घ m. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 1,4,4,10. fgg. — Vgl. विदेघ.

विदेव (2. वि + देव) *widergöttlich, ungöttlich:* रक्षस् AV. 12, 3, 43. 20, 136, 14. *ohne Götter:* यज्ञ Kâṭh. 26, 9.

विदेश (2. वि + देश) m. *Fremde* (Gegens. स्वदेश, स्वविषय): विदेशे प्रेतः Kaṭṭ. 80. M. 8, 167. MBh. 3, 17140. R. 5, 33, 36. को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशः स्मृतः Spr. 736. गच्छति विदेशम् 2340. 3223. वासो विदेशे 3373. को विदेशः सविद्यानाम् 1926 (II). भजते विदेशमधिकेन क्षितिः Çiç. 9, 18. Kathâs. 21, 118. 25, 70. 36, 74. 43, 39. मा गा विदेशम् 49, 215. विदेशं अज्ञान् 56, 309. गुणिनो न विदेशो ऽस्ति 61, 121. Râǵa-Tar. 4, 603. °ग Varâh. Bṛh. 5, 7. Pañcat. V, 84. Kathâs. 33, 207. °गमन 20, 148. Spr. 1191. विद्या बन्धुजनो विदेशगमने 2797. 4239. °निरत Varâh. Bṛh. 12, 11. °वासिन् 101, 9. °वास Vet. in LA. (III) 19, 19. °स्थ Âçv. Gṛhj. 1, 12, 2. M. 3, 75. MBh. 4, 2139. 13, 5888. R. Gorr. 1, 11, 7. Varâh. Bṛh. 5, 1. Verz. d. Oxf. H. 87, *b*, 8. 272, *b*, No. 644. संप्रसारण *anderwärts vorkommend* P. 6, 1, 37, Schol.

विदेश्य (von विदेश) adj. *auswärts befindlich* AV. 4, 16, 8.

1. विदेह (2. वि + देह) adj. *körperlos, vom Körper befreit, verstorben* H. an. 3, 769. Mṛcch. h. 24. MBh. 3, 8874. 6, 3445. शिरोगणाः 11, 432. R. 7, 55, 21. 57, 20. Bhâg. P. 9, 13, 11. 13. Jogas. 1, 19. Verz. d. Oxf. H. 42, *a*, 35. °कैवल्यप्राप्ति Maṇḍan. in Ind. St. 1, 20, 17. °मुक्ति (Gegens. जीवन्मुक्ति) WebER, Rîmây. Up. 337. Colebr. Misc. Ess. I, 370. Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 28. °मुक्त्यादिकथन Titel einer Abhandlung 237, *a*, No. 568. Hall 13. — Vgl. मक्ता° 2).

2. विदेह (= विदेघ) 1) m. *a*) pl. N. pr. eines Volkes, nördlich vom Ganges im heutigen Tirhut mit der Hauptstadt Mithilâ, Taik. 2, 1, 3. H. 946. यत्तत्रा निषधं नीलं च विदेहाः 1538, Schol. कोसलविदेहानां मर्यादाः Çat. Br. 1, 4, 1, 17. 14, 6, 11, 6. 7, 2, 20. काशिविदेहेषु Kâṭhâ. Up. 4, 1. AV. Paric. in Verz. d. B. H. No. 93 (56). MBh. 1, 4552. 2, 1062. 6, 353 (VP. 188). Harîv. 1980. 12832. R. 1, 68, 14 (70, 16 Gorr.). R. Gorr. 1, 71, 7. 4, 40, 25. Varâh. Bṛh. S. 3, 41. 71. Mârk. P. 57, 44. Verz. d. Oxf. H. 238, *b*, 27. Daçak. 95, 8. gaṇa धूमादि zu P. 4, 2, 127. Burn. Intr. 421. Târan. 14. °राज R. 2, 88, 7. विदेहाधिपति Harîv. 4968. Ragh. 12, 26. विदेहाधिप ein Mediciner (vgl. u. *b*) Sucr. 2, 302, 8. °नगरी = मिथिला Ragh. 11, 36. °नगर Hall 46. विदेहाः यज्ञ ते च द्विविधाः पूर्वे चापरे च H. 946, Schol. पूर्व° Vaṭṭ. 81. पूर्वविदेह (das Land) Lalit. ed. Calc. 21, 9. पूर्वविदेहा नव पोत्तनसहस्राणि 170, 15. पूर्वविदेहलिपि 141, 5. — *b*) *ein Fürst der* Videha (vgl. वैदेह) H. an. Med. ब्राह्मक WebER, Rîmây. Up. 331. als N. pr. Bhâg. P. 2, 7, 44. Râǵa-Tar. 8, 612. ein Mediciner (vgl. विदेहाधिप unter *a*) Verz. d. B. H. 290, 1. Verz. d. Oxf. H. 314, *b*, No. 746. 358, *a*, 6. — 2) f. आ Bez. der Stadt Mithilâ Taik. 2, 1, 15. H. 975. Hâlây. 2, 132. Schiefner, Lebensb. 233 (5). — Vgl. अपर°, मक्ता° und वैदेह.

विदेहक (von 2. विदेह) 1) m. N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 306 (76). — 2) n. N. pr. eines Varsha Çatr. 1, 292.

विदेहत्व (von 1. विदेह) n. *Körperlosigkeit* R. 7, 86, 7. विदेहत्वं प्राप्तः *so v. a. gestorben* MBh. 1, 3803. 3817.

विदोष (2. वि + 1. दोष) adj. *frei von Schuld, keines Vergehens schuldig:* अ° Lâṭ. 6, 5, 3.

विदोह (von 1. दुह् mit वि) m. *verkehrtes oder übermässiges Melken* (*Ausmelken*). पशिर्गस्य कर्मणः TBr. 3, 3, 1, 3. सोमपीथस्याविदोहाय Pañcav. Br. 18, 2, 12.

विद्ध s. u. व्यध्.

विद्धक (von विद्ध) m. *eine Art Egge* Kâṭṭ. 9, 14 (s. u. मादे).

विद्धकर्णी m. und °कर्णा f. *Clypea hernandifolia* W. u. A. Bhâr. im Dvitîyâbh. nach ÇKDr. °कर्णी f. dass. AK. 2, 4, 3, 3. °कर्णिका f. dass. Çabdar. im ÇKDr.

विद्धत्व (von विद्ध) n. *das Behaftetsein* Comm. zu Kâṭṭ. Up. 8. 31.

विद्धपर्कटी f. *Pongamia glabra* Vent. Hit. 101.

विद्धशालभञ्जिका f. Titel eines Lustspiels von Râǵaçekhara Wilson, Sel. spec. of the Theatre of the Hindus II, 351. fgg. Verz. d. Oxf. H. 140, *b*, No. 284. Sâh. D. 201, 8. Comm. zu Kuval. 37, *b*. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 20.

विद्धि f. nom. act. von व्यध् P. 6, 4, 2, Schol.

विद्मन् (von 1. विद्) n. *Aufmerksamkeit; Wissen, Kenntniss:* घोषेर्हि विद्मनी निदो देवा मर्तमुरुष्यति RV. 6, 14, 5. 1, 110, 6. यो देव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विद्मना विगाति *beobachtend* 7, 4, 1. 3, 87, 2. पृच्छामि विद्मने (infinitiv) न विद्वान् 1, 164, 6. 10, 88, 18.

विद्मनापस् (विद्मना + अपस्) adj. *geschickt —, sorgfältig zu Werke gehend* RV. 1, 31, 1. 111, 1. AV. 7, 47, 1. Nir. 11, 33.

विद्मिसार m. N. pr. eines Fürsten VP. 466. fehlerhaft für बिम्बिसार.

1. विद्य (von 3. विद्) n. *das Finden, Erlangen* in पति°, पुत्र°.

2. विद्य (von विद्या) am Ende eines adj. comp., z. B. अ° *ungelehrt* Spr. (II) 684. अन्यस्त° Ragh. 1, 3. कृत° (s. auch bes.) *der Studien gemacht hat, im Besitz einer Wissenschaft, gelehrt* MBh. 1, 3279. Spr. (II) 813. 1863. Kathâs. 7, 60. 22, 154. घर्षितविद्य 26, 251. प्राप्त° Varâh. Bṛh. 14, 3. Çiç. in LA. (III) 34, 10. तद्विद्य *ein Kenner davon, Sachkenner* Kîm. Nîtis. 1, 33. 2, 1. Vgl. noch दुर्विद्य, निर्विद्य, बहु°, भूयो°, यथाविद्यम्.

विद्यमानत्व (von विद्यमान; s. u. 3. विद्) n. *das Vorhandensein, Dasein* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 33. अ° ebend.

विद्या (von 1. विद्) f. P. 3, 3, 99. Vop. 26, 186*z* 1) *Wissen, Wissenschaft, Lehre* (Hir. 196); namentlich *die in drei Kapitel zerfallende vedische Lehre* AV. 6, 116, 1. 11, 7, 10. 8, 23. यो ब्राह्मणो विद्यामनूच्य न विरोचते TS. 2, 1, 3, 5. 5, 1, 2, 2. Ait. Br. 8, 23. त्रयी (s. auch u. त्रय) TBr. 3, 10, 11, 5. Bhâg. P. 5, 9, 8. त्रिधातु Çat. Br. 5, 5, 5, 6. 10, 2, 6, 15. 11, 3, 2, 3. 4, 6, 2, 8. 4, 2, 2, 3. सर्वासां विद्यानां वाग्रेकायनम् 14, 5, 4, 11. °कर्मणी 7, 2, 3. विद्यायाम्यस्ति प्रीतिः Vedakunde Âçv. Gṛhj. 1, 1, 4. 3, 9, 1. विद्यान्ते *am Ende der Lehrzeit* 4. Kauç. 67. 74. °प्रकर्ष Nir. 1, 5. विद्यातः पुरुषविशेषो भवति 16. 14, 3. 9. °स्थान *Disciplin, Wissenszweig* 1, 13. — MBh. 3, 2587. विविधाः R. 1, 33, 14. विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम्। असूयकाय मां मा दाः M. 2, 114. अनभ्यसनशीलस्य विद्येव तनुतां गता R. 5, 19, 22. घर्षकरी Spr. 1791. अनवद्या 2016 (II). विद्याधनं यस्य तस्येव धनं भवेत् M. 9, 206. यत्नात्समवत्प्राप्तो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् Spr. (II) 94. कामधेनुगुणा विद्या ह्यदैव फलदायिनी। प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम् ॥ 1651. 1974. का विद्या कविता विना 1710. विद्या रूपं कुरूपाणाम् 1919. वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्यातो बुद्धिरुत्तमा (I) 2749. विद्या ददाति विनयम् 2793. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम् 2797. विद्या खलस्य विवादाय, साधोर्ज्ञानाय 2800. विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य हे

विद्ये प्रतिपत्तये। धात्रा कास्याय वृद्धत्वे हितोपाद्दियते मदा। 2801. संगमयति विद्वेव नरं दुर्धर्षं नृपम् 3100. सर्वद्रव्येषु विद्वेव द्रव्यमाहुरनुत्तमम् 3210. विद्या मित्रं प्रवासे 4999. विद्या मरुत्तं मित्रम् 5002. °रत्नं सहजकविता 5000. सर्वविद्यामुखं व्याकरणम् Kathâs. 4, 22. न च विद्या विना राज्ञां प्रतिपत्तिः केवलबुद्धया लभ्यते Pañkat. 243, 19. तत्र विद्या न वक्तव्या M. 2, 112. fg. शुभा विद्या स्त्रीनादपि समाप्तुयात् Spr. 3030. शुभा विद्यामादत्तेऽवराद्दपि 3032. विद्यामभ्यसनेनेव प्रमादयितुमर्हसि ताम् Ragh. 1, 88. विद्याभ्यासे Spr. (II) 1793. सद्भ्यस्त° Pañkat. 244, 1. पूर्वाधीत° 243, 25. विद्या नाधिगता कलङ्करहिता Spr. 2796. घटापत्रे प्रतिपादिता 2803. देहि विद्यामनुप्राणाय MBh. 3, 3026. °दान Verz. d. B. H. No. 1218. Verz. d. Oxf. H. 35, a, 44. 87, a, 32. °प्रदान 85, a, 20. °मद Spr. 2798. विद्यानां पारदृश्वा Ragh. 1, 23. विद्यान्तग *der sein Fach gründlich versteht* Vasiṣ. Bṛh. S. 68, 99. °गाह् 68, 43. विद्याभीप्सिन् Kathâs. 2, 4. विद्यार्थिन् Spr. (II) 1649. (I) 5001. विद्यास्वभिविनीतानाम् (so ed. Bomb.) MBh. 13, 378. °विनीत R. 1, 7, 4. °समृद्ध M. 3, 98. °वृद्ध Spr. 2802. Sarvadarçanas. 3, 6. °हीन M. 4, 141. Pañkat. 213, 21. विद्यानुयायिन् M. 9, 204. रत्नो° Çiçup. Ça. 16, 2, 19. सर्प° u. s. w. Çat. Br. 13, 4, 3, 9. विष°, पुराण° u. s. w. Âçv. Çr. 10, 7, 5. fgg. सूदसन्दर्शनविद्याभ्याम् Kathâs. 56, 338. vier *Wissenschaften* (आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता und दण्डनीति) Ragh. 3, 30. Kir. 2, 6. vierzehn (षडङ्गो वेदश्चत्वारो मीमांसान्वीक्षिकी तथा। धर्मशास्त्रं पुराणं च H. 253. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 9. fgg. Naish. 1, 4. achtzehn (ausser den eben genannten noch आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व und शासन oder अर्थशास्त्र, Mallin. zu Naish. 1, 5. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 12. 22, 10. bei den Buddhisten Ind. St. 3, 131. vierundsechzig (hier so v. a. कला) Verz. d. Oxf. H. 217, a, 20. fg. Bei den Pâçupata *Wissen* überh., gleichviel ob richtiges oder falsches, Sarvadarçanas. 76, 17. तत्र पञ्चगुणो (so ist zu lesen) विद्या। सापि द्विविधा बोधाबोधस्वभावभेदात् 18. — 2) *Zauberkunst; Zauberspruch:* मन्त्राः पुंदेवता ज्ञेया विद्याः स्त्रीदेवताः पुनः Verz. d. Oxf. H. 103, a, 8. जीवनी MBh. 1, 3241. fg. मृतसंजीवनी Vet. in LA. (III) 14, 21. बलातिबलयोर्विद्ययोः Ragh. 11, 9. Kathâs. 10, 95. 18, 218. 227. 240. 377. 33, 170. 178. 37, 136. 38, 54. 42, 32. 34. fg. 38. 45, 280. 290. 52, 161. षडुत्तरी Burn. Intr. 225. Pañkar. 2, 4, 47. — 3) *die Wissenschaft* personif. Harîv. 14035. mit der Durgâ identificirt Çabdak. im ÇKDr. unter den Verfasserinnen von Zaubersprüchen und Gebeten Verz. d. Oxf. H. 101, b, 2. — 4) *Premna spinosa* Çabdar. im ÇKDr. — 5) mystische Bez. *des Buchstabens* ई Weber, Rânây. Up. 318. — 6) *Glöckchen* (vgl. °मणि) H. ç. 134. — Vgl. अ°, अङ्ग°, आत्म°, तर्क°, धनुर्विद्या, नक्षत्र°, नीति°, प्राण°, ब्रह्म°, भूत°, मधु°, मन्त्र°, मन्त्रा°, मूल°, यज्ञ°, रथ°, राज्ञ°, वास्तु° und वेद.

विद्याकर (विद्या + आ°) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Cambr. H. 67. °वाग्वैभवेन् Verz. d. Oxf. H. 292, b, 11. fg.

विद्यागण m. pl. Bez. gewisser buddhistischer Schriften Târân. 241.

विद्यागम (विद्या + आ°) m. *Erlangung von Kenntnissen, Erlernung von Wissenschaften* Spr. 2423. R. Goas. 2, 1, 10.

विद्यागुरु m. *Lehrer einer Wissenschaft*, insbes. *der heiligen* M. 2, 206. Bhâg. P. 3, 13, 28.

विद्यागृह n. *Schulhaus, Collegium* Kîp. in Z. d. d. m. G. 7, 583, 1 v. u. — Vgl. विद्यावेश्मन्.

विद्याचक्षण (°चन bei Vop.) und विद्याचक्षु adjj. *gelehrt* P. 5, 2, 36, Schol. Vop. 7, 71.

विद्यातीर्थ n. 1) *Wissen als Badeplatz, Bad der Wissenschaft:* °तीर्थे विमलमतयः कल्मषं तालयन्ति Spr. 4998. — 2) N. pr. eines *heiligen Badeplatzes* MBh. 3, 8030. — 3) Bein. Çiva's Verz. d. Oxf. H. 222, a, No. 540. 244, b, No. 606. 252, b, No. 626. 263, b, No. 656. fg. Sîs. in der Einl. zu ṚV. u. s. w.

विद्यात्व n. *der Begriff* विद्या Kâm. Nîtis. 2, 17.

विद्यादल m. *eine Art Birke* भूर्ज, *auf deren Rinde geschrieben wird*, Çabdam. im ÇKDr.

विद्यादायाद m. *der Erbe einer Wissenschaft* P. 6, 2, 8, Schol.

विद्यादेवी f. bei den Gaina Bez. einer Klasse göttlicher Wesen, deren sechszehn angenommen werden, H. 238. fgg.

विद्याधर 1) adj. *im Besitze einer Wissenschaft* —, *von Zaubersprüchen seiend.* — 2) m. *a)* Bez. einer Klasse von Luftgenien, die im Gefolge Çiva's erscheinen, im Himâlaja ihren Sitz haben und *im Besitz der Zauberkunst stehen*, AK. 1, 1, 1, 6. Trik. 1, 1, 61. Halâs. 1, 87. Harîv. 3930. R. 1, 16, 10. 5, 83, 26. 32. Sûrjas. 12, 31. Varâh. Bṛh. S. 9, 27. 38. 12, 6. 13, 8. Ragh. 2, 60. Spr. 807. Uttarar. 103, 1. fgg. (139, 1. fgg.). Kathâs. 1, 13. 17. 18, 216. 220. 232. Verz. d. Oxf. H. 69, a, 32. 92, b, 40. Vet. in LA. (III) 22, 20. Brahma-P. ebend. 49, 18. Târân. 69 u. s. w. विद्याधराङ्गना Kathâs. 13. 35. विद्याधरी f. MBh. 4, 238. R. 1, 16, 5. Uttarar. 103, 15 u. s. w. (140, 6 u. s. w.). Kathâs. 22, 58. 93, 8. 103, 13. Prab. 62, 10. 101, 13. Bhâg. P. 3, 23, 37. fg. Hit. 63, 16. 108, 5. विद्याधरकुलाल Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87, a, 11. fg. — *b)* N. pr. verschiedener *Gelehrter* Mallin. zu Kir. 4, 38. Hall in der Einl. zu Vâsav. 46. Verz. d. B. H. No. 166. Verz. d. Oxf. H. 122, a, 3. 4. 136, a, No. 259. 137, b, No. 340. °गच्छ 132, a, N. 3. विद्याधराचार्य 93, b, 14. — *c) ein best. Metrum: 4 Mal* – – – –, – – – – – – – – Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VII, 26). — 3) f. ई *a)* s. u. 2) *a).* — *b)* N. pr. einer Tochter des Fürsten Çûrasena Kathâs. 56, 81. — Vgl. रङ्ग° und वेताधर.

विद्याधरत्व n. *der Stand eines* Vidjâdhara Kathâs. 24, 14. 26, 168. 108, 122.

विद्याधरपिटक Vie de Hiouen-thsang 159 ohne Zweifel fehlerhaft für धारणीपिटक, wie Hiouen-thsang II, 38 gelesen wird; nach dem Index soll dieses letztere falsch sein.

विद्याधररस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 993.

विद्याधरीभू (विद्याधर + 1. भू) *zu einem* Vidjâdhara *werden:* °भूत Kathâs. 25, 262. 26, 224. 108, 96.

विद्याधरीविलास m. Titel einer Schrift Verz. d. Cambr. H. 67.

विद्याधरेन्द्र m. *ein Fürst der* Vidjâdhara Râga-Tar. 1, 218. so v. a. कपीन्द्र als Bez. Gâmbavant's MBh. 13, 630. Hiervon °ता f. nom. abstr. Kathâs. 44, 20.

विद्याधार (विद्या + आ°) m. *ein Behälter von Wissen, ein überaus grosser Gelehrter* Mikatin. 41, 2.

विद्याधिदेवता f. *die Schutzgottheit der Wissenschaften:* Sarasvatî Pañkar. 1, 12, 32.

विद्याधिप m. *das Haupt der Wissenschaften*, wohl Beiw. Çiva's

Weber, Rimat. Up. 305.

विद्याधिराज m. N. pr. eines *grossen Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 235, *a*, 3.

विद्याधीशवटेश्वर m. N. pr. eines *grossen Gelehrten* ebend. 177, *b*, 13.

विद्याध m. = विद्याधर 2) *a*) Buic. P. 2, 6, 13. 10, 37. 3, 10, 26. 7, 4, 6. 10, 83, 41. 11, 16, 29.

विद्यानगर n. N. pr. einer *Stadt* Colebr. Misc. Ess. I, 301. Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 35. Tiran. 86. 264. 267. Burnouf in Buic. P. I, LX, N. Mack. Coll. II, 30. °नगरी Inschr. bei Colebr. Misc. Ess. II, 263, Çl. 13.

विद्यानन्द (विद्या + आ°) m. 1) *die Wonne am Wissen* Verz. d. Oxf. H. 223, *a*, 1. 3. — 2) N. pr. eines Autors über die Lehre der Gaina Sarvadarçanas. 38, 12. °निबन्ध Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 14.

विद्यानाथ m. N. des Verfassers des Pratâparudrîja Pratâpar. 2, *b*, 1. °भट्ट Verfasser der Vedântakalpatarumañgarî Colebr. Misc. Ess. I, 333.

विद्यानिधि m. N. pr. oder Beiw. eines *grossen Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 212, *a*, 20.

विद्यानिवास m. N. pr. verschiedener Männer Hall 22. 34. 46. 49. 58. 66. 79. 84. Verz. d. Oxf. H. 174, *b*, No. 395. fg., Z. 9. 175, *a*, 38. 239, *a*, No. 577. °भट्टाचार्य 38, *b*, 11. fg. 246, *a*, No. 618. Hall 184.

विद्यानुलोमालिपि (?) f. Bez. *einer best. Art zu schreiben* Lalit. ed. Calc. 144, 10.

विद्यापति m. N. pr. verschiedener *Gelehrter* Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 42. 279, *a*, 49. 292, *b*, 13. Wilson, Sel. Works I, 168. °ठक्कुर Hall in der Einl. zu Vâsavad. 24.

विद्याप्रवाद् n. Titel des 10ten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften der Gaina H. 248.

विद्याभट्ट m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 1170.

विद्याभरण (विद्या + आ°) m. N. pr. des Verfassers der nach ihm benannten विद्याभरणी Hall 206.

विद्याभृत् m. = विद्याधर 2) *a*) Çaṃk. 2, 602.

विद्यामणि (°मनि gedr.) m. = विद्या *Glöckchen* H. ç. 134.

विद्यामय (von विद्या) adj. *aus Wissen bestehend, im Wissen aufgehend* MBh. 12, 8573. 14, 1456. Buic. P. 11, 11, 7.

विद्यामरुभार m. Bein. Çiva's Çiv.

विद्यामात्रासिद्धि f. Titel einer buddhistischen Schrift Hiouen-thsang I, 286. Vie de Hiouen-thsang 115. 122. 191. 218. 261. °त्रिदशशास्त्रकारिका 101.

विद्यामृतवर्षिणी f. Titel eines Commentars Hall 91.

विद्यारण्य m. N. pr. und Bein. verschiedener *Gelehrter*, insbes. des Mâdhavâkârja, Colebr. Misc. Ess. I, 33. 63. 78. fg. 96. Verz. d. B. H. No. 629. fgg. Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, 32. 124, *b*, 42. 223, *a*, No. 541. Ind. St. 1, 471. Wilson, Sel. Works I, 203. Burnouf in Buic. P. I, LX. Hall 18. 98. 133. Mack. Coll. II, 30. °तीर्थ Hall 2. 12. भारतीतीर्थ° Verz. d. Cambr. H. 20.

विद्याराजाकार m. Titel einer ganz neuen Compilation Verz. d. Oxf. H. 260, *b*, 7.

विद्यारम्भ (विद्या + आ°) m. *Beginn der Studien:* प्राप्ते तु पञ्चमे वर्षे विद्यारम्भं च कारयेत् Cit. bei Mallin. zu Raghu. 3, 28. Verz. d. Cambr. H. 63. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 7. क्षुद्धनुर्विद्यारम्भ 22.

विद्याराज m. *Fürst des Wissens, — der Zaubersprüche* Wassiljew 189. 194. 197. Bein. Vishṇu's Paṛâç. 4, 3, 56. N. pr. eines buddhistischen Heiligen Wassiljew 175.

विद्याराशि m. Bein. Çiva's Çiv.

विद्यार्णवदीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, No. 108.

विद्यार्थप्रकाशिका f. desgl. ebend.

विद्यालंकारभट्टाचार्य m. N. pr. eines Autors ebend. 174, *a*, No. 390.

विद्यालय N. pr. einer Oertlichkeit ebend. 231, *b*, 15.

विद्यावंश m. *Lehrerverzeichniss, ein Verzeichniss, das die Lehrer in einem Wissenszweige in chronologischer Folge aufführt*, Schol. zu P. 2, 1, 19.

विद्यावत् (von विद्या) adj. P. 8, 2, 9, Schol. Vop. 7, 28. *gelehrt* Inds. 4, 3 (विद्यगा st. विद्यावान् MBh. 3, 1803). Spr. 1932. 2799. 4713. Paṛ. 35, 10. Verz. d. Oxf. H. 33, *b*, 11. 261, *a*, 18. Râga-Tar. 2, 39. Schol. zu Kât. Çr. 39, 23.

विद्यावागीश m. *ein Meister in der Wissenschaft und im Worte*, als Beiw. eines grossen Gelehrten Hall 39. 72. Verz. d. Oxf. H. 175, *a*, 23.

विद्याविद् adj. *gelehrt* Kim. Nîtis. 8, 57. Râga-Tar. 3, 111.

विद्याविनोद m. N. pr. verschiedener *Gelehrter* Verz. d. Oxf. H. 150, *b*, No. 320. 181, *b*, No. 413. 279, *a*, 49. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 116. citirt im ÇKDa. u. वंश und त्रप्स्य.

विद्याविरुद्ध adj. *mit der Wissenschaft im Widerspruch stehend*; davon °ता f. nom. abstr. Sin. D. 576.

विद्याविशारद m. N. pr. oder Bein. eines *Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 212, *a*, 10.

विद्यावेश्मन् n. *Schulhaus, Collegium* Râga-Tar. 1, 42. — Vgl. विद्यागृह.

1. विद्याव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284, *a*, 39.

2. विद्याव्रत m. wohl Bez. *einer Art von Zauberern* Tiran. 189.

विद्याव्रतस्नात adj. *der das Veda-Studium und die Gelübde absolvirt hat:* वेद° M. 4, 31. विद्याव्रतस्नातक Pân. Gaṇ. 2, 5. Gobh. 3, 5, 12. — Vgl. विद्यास्नात.

विद्यासागर m. *ein Meer von Wissen* als Beiw. eines grossen Gelehrten Verz. d. B. H. No. 217. 613. Hall 90. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 47.

विद्यास्नात adj. *der das Veda-Studium absolvirt hat* MBh. 13, 2019. R. 2, 82, 10. °क Pân. Gaṇ. 2, 5.

विद्युच्छत्रु (1. विद्युत् + शत्रु) m. N. pr. eines Râkshasa (nach dem Comm.) Buic. P. 12, 11, 41.

विद्युज्जिह्वा (1. विद्युत् + जिह्वा) f. 1) *eine best. Pflanze mit giftiger Wurzel* Suçr. 2, 231, 14. — 2) N. pr. einer Râkshasî Kathâs. 25, 196.

विद्युज्जिह्व (1. विद्युत् + जिह्वा) 1) adj. *eine blitzähnliche Zunge habend:* कृतान्त R. 7, 23, 1, 74. — 2) m. *a*) N. pr. eines Râkshasa MBh. 6, 4063. R. 5, 12, 9. 14. 6, 69, 13. 7, 12, 2. 23, 18. — *b*) N. pr. eines Jaksha Kathâs. 72, 41. 43. — 3) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2626.

विद्युज्ज्वाल (1. विद्युत् + ज्वाला) m. N. pr. eines Schlangendämons Schiefner, Lebensb. 272 (42).

1. विद्युत् (1. द्युत् mit वि) P. 3, 2, 177. 1) adj. *blinkend, blitzend:* वर्ष्म विद्युतामिव सूर्यः Âçv. Gṛ. 1, 24, 8. ṚV. 1, 23, 12. 105, 1. die Marut

168,8. 5,32,6. *blitzende Waffe* 54,11. Wasser- und Regen: गोरिव विद्युतं तृषाणा सवनाय गातन 7,69,6. धारा 9,84,3. Âçv. Gṛhj. 2,4,14. यतो यमस्य विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः RV. 5,84,3. वर्ष 10,91,5. पुरुष VS. 32,2. — 2) f. AK. 3,6,4,3. *a) Blitz* AK. 1,1,2,11. Taik. 1,1,84. H. 1104. Med. t. 156. Halâj. 1,60. RV. 1,32,13. 38,8. 2,35,9. 3,1,14. 5,10,5. पतयन्ति विद्युतः 83,4. विद्युन्न दविद्योत् 6,3,8. 10,95,10. °तो द्योतते: 7, 33,10. दिवो न विद्युत्स्तनयन्त्यभ्रे: 9,87,8. 10,99,2. AV. 9,2,14. *fg.* 10, 1,23. 7,39,1. मा नो वधीर्विद्युता शस्यम् 7,11,1. विद्युद्दा यशानि: Çat. Br. 6,1,2,14. यथा द्योतिः 7,5,2,49. 11,4,4,1. 4,5,2,4. विद्युत्स्तनयित्नुवर्षा: Çiṅkh. Gṛhj. 4,7. Kâṭhân. Up. 5,22,2. AV. Paipp. in Verz. d. B. H. 93 (39). M. 1,38. 4,102. 106. 5,95. MBh. 1,1134. 3,1717. 2033. 2584. R. 1,63,5. Suçr. 1,7,17. 17,3. 22,17. 89,20. Râgân. 1,36. Mṛicch. 39. 79. 113. Vaitân. Bṛih. S. 3,33. 5,93. 22,5. 28,13. विद्युत् — तरतरस्यना सकृमा । कुरिलविशाला निपतति 33,3. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,1. Bâlar. P. 2, 6,5. तत्र विद्योतत स्म विद्युत: 9,11,31. विद्युज्ज्योतिस् Ved. in LA. (III) 1,12. विद्युत्कम्प Mṛicch. 96. विद्युद्दामन् 28. विद्युद्दाम्नी Spr. (II) 1098. विद्युल्लता Kathâs. 23,41. 31,223. मेघसंघा: सविद्युत: MBh. 1,1128. Bâlar. P. 2,19,19. Auch n. MBh. 7,9569. Schol. zu Snâpv. Br. 1,2. — *b) Morgenröthe* Med. — *c)* pl. Bez. der Töchter des Prâgâpati Bahuputra: बहुपुत्रस्य विदुषश्चतस्रो विद्युत: स्मृता: (गुता: die neuere Ausg.) Harîv. 179. — *d) ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑–, – – ⏑ – – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. II, 161 (VIII, 10). — 3) m. N. pr. eines Asura Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,41. — Vgl. सृष्टि°, सु°.

2. विद्युत् (2. वि + 2. द्युत्) adj. *glänzlos* Med. t. 156.

विद्युता (von 1. द्युत् mit वि) f. N. pr. einer Apsaras (daneben विद्योता) MBh. 13,1425.

विद्युताक्ष (विद्युता = 1. विद्युत् + अक्ष *Auge*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2564. — Vgl. विद्युदक्ष.

विद्युत्केश (1. वि° + केश) m. N. pr. eines Râkshasa R. 7,4,17. fg.

विद्युत्केशिन् m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,20.

विद्युत्त (von 1. द्युत् mit वि) adj. *aufblitzend*; n. *das Aufblitzen* Çat. Br. 14,5,2,10.

विद्युत्पताक m. N. einer der sieben Wolken, die am Ende der Welt die Erde überschwemmen werden, Verz. d. Oxf. H. 347,*b*,33.

विद्युत्पर्णा f. N. pr. einer Apsaras Vâyu beim Schol. zu H. 183 (विद्युच्पर्णा falschlich geschr.). MBh. 1,2357. 4818. Harîv. 14162.

विद्युत्प्रभ (1. वि° + प्रभा) 1) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,8968. eines Fürsten der Daitja Kathâs. 115,3. — 2) f. आ N. pr. einer Grosstochter des Daitja Bali Kathâs. 10,39. einer Tochter eines Fürsten der Râkshasa 25,208. eines Fürsten der Jaksha mit Namen Ratnavarsha 26,213. pl. Bez. einer Gruppe von Apsaras MBh. 5,3844.

विद्युत्प्रिय 1) adj. *dem Blitze lieb.* — 2) n. *Messing* H. 1049.

विद्युत्य (von 1. विद्युत्) adj. *fulmineus* VS. 16,38. P. 4,4,110, Schol.

विद्युत्वत् (von 1. विद्युत्) 1) adj. *blitzreich* (von Wolken) Schol. zu P. 1,4,19 und 3,2,10. Vop. 7,28. MBh. 1,1411. 8,1681. 3133. Mṛicch. 65. — 2) m. *a) Gewitterwolke* Kumâras. 6,27. — *b)* N. pr. eines Berges Harîv. 12943. R. 4,41,44 (hier falschlich विद्युद्वत् geschrieben). — Vgl. विद्युन्मत्.

विद्युद्द (1. विद्युत् + दत *Auge*) m. N. pr. eines Daitja Harîv. 12934. Vgl. विद्युताक्ष.

विद्युद्द्योता (1. विद्युत् + द्योत) f. N. pr. einer Tochter des Fürsten Vasantasena Kathâs. 33,55. fgg.

विद्युद्धस्त (1. विद्युत् + हस्त) adj. *eine blitzende Waffe in der Hand haltend*: die Marut RV. 8,7,23.

विद्युद्धन्त (1. विद्युत् + घन्त) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 114,140. 115,5. fgg.

विद्युद्रथ (1. विद्युत् + रथ) adj. *in blitzendem Wagen fahrend* RV. 3, 14,1. 54,13.

विद्युद्वत्त् s. u. विद्युत्वत् 2) *b*).

विद्युद्वर्चस् (1. विद्युत् + व°) m. N. pr. eines göttlichen Wesens MBh. 13,4358.

विद्युन्मत् (von 1. विद्युत्) adj. *blinkend, blitzend*: रथ RV. 1,88,1. — Vgl. विद्युत्वत्.

विद्युन्मरुत् (1. विद्युत् + म°) adj. etwa τερπικέραυνος RV. 5,54,1.

विद्युन्माल (1. विद्युत् + माला) m. N. pr. eines Affen R. 4,33,13.

विद्युन्माला (wie oben) f. 1) *ein Kranz von Blitzen* R. 4,12,17. Vaitân. Bṛih. S. 23,3. Kathâs. 44,180. Ind. St. 8,367. Kâdambar. 17. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* – – – –, – – – – Çâk. 13. Colebr. Misc. Ess. II, 159 (III, 2). Ind. St. 8,367. Kâdambar. 17. — 3) N. pr. *a)* einer Jakshi Kathâs. 49,166. 170. fgg. — *b)* einer Tochter Suroha's, Königs von Kîra, Kathâs. 44,46. 174. 178.

विद्युन्मालिन् 1) adj. *blitzbekränzt*: पर्जन्य Spr. 4425. — 2) m. N. pr. *a)* eines Asura MBh. 7, 9557. 8,1395. 1412. Verz. d. Oxf. H. 41,*b*,3. — *b)* eines Râkshasa R. 6,18,16.

विद्युन्मुख n. Bez. *einer best. Himmelserscheinung* (उपग्रह) Gjotishattva im ÇKDn. u. वज्रक.

विद्युल्लेखा (1. विद्युत् + ले°) f. 1) *Blitzstreifen, Blitzstrahl* Mṛicch. 1, 7. Vikr. 76. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* – – – – – – – Colebr. Misc. Ess. II, 159 (I, 2). Ind. St. 8,366. — 3) N. pr. einer Kaufmannsfrau Kathâs. 69,125.

विद्येश (विद्या + ईश) m. 1) *Herr des Wissens*, Beim. Çiva's Çiv. — 2) bei den mystischen Çaiva Bez. *einer best. Klasse von Erlösten* (मुक्तात्मन्): davon °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 86,9.

विद्येश्वर (विद्या + ई°) m. 1) = विद्येश 2) Sarvadarçanas. 81,13. 85, 20. 86,2. 89,1. — 2) N. pr. eines Zauberers Daçak. 45,11.

विद्योत् ungrammatischer abl. von 1. विद्युत् dem Gleichmaass der Formel zu Liebe: मृत्यो: पाहि विद्योत्पाहि VS. 20,2. eben so st. dessen दिद्यौत् TS. 1,8,22,1. TBr. 1,7,8,2; vgl. VS. 10,17.

विद्योत (von 1. द्युत् mit वि) 1) adj. *blitzend, blinkend* Bâlar. P. 3,14, 24. 8,7,17. — 2) m. *a) Gebitz, Glanz*: मुक्तामणि° Harîv. 2901. Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,143. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Dharma von der Lambâ und Vaters des Stanajitnu (*Donners*) Bâlar. P. 6,6,5. — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras (daneben auch विद्युता) MBh. 13,1425.

विद्योतक (vom caus. von 1. द्युत् mit वि) adj. *erhellend, erleuchtend*: वेदार्थ° Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,13.

विद्योतन (von 1. द्युत् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. *erhellend, erleuchtend* Dhûrtas. 67, 2. — 2) n. *das Blitzen* Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 23.

विद्योतयितव्य (vom caus. von 1. द्युत् mit वि) adj. *was erhellt —, erleuchtet wird* Prâçnop. 4, 8.

विद्योतिन् adj. *erhellend, erleuchtend:* सूर्य° Verz. d. Oxf. H. 1, *b*, 19.

विद्र n. = छिद्र Çabdar. im ÇKDa. aus विद्रधि geschlossen.

विद्रय n. Name eines Sâman Ind. St. 3, 236, *b*.

विद्रधि 1) adj. nach Nir. 4, 15 so v. a. विद्र, nach Sây. so v. a. विद्रध, व्यूह. विद्रधे नवे दुपदे यजीके RV. 4, 32, 23. — 2) m. *eine best. Krankheit* (vgl. विद्रधि) AV. 6, 127, 1. 3. 9, 8, 20.

विद्रधि (wohl von 1. दृ mit वि) m. (nach AK. f.) *eine Art von gefährlichen Abscessen* (äusserlich und innerlich vorkommend) AK. 2, 6, 2, 7 (विदुधि Lois.). H. 471. Suçr. 1, 31, 18. 52, 18. 61, 3. 92, 6. 20. 121, 10. 279, 11. 298, 9. 299, 16. 2, 96, 13. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 54. Varâh. Bṛh. 23 (21), 8. Verz. d. B. H. No. 972. 975. Verz. d. Oxf. H. 234, *b*, 4. 306, *a*, 38. 32. *b*, 39. fg. 313, *b*, 12. 316, *b*, 5. पित्त° Suçr. 1, 280, 12. 2, 24, 15. कर्ण° Wise 287. — Vgl. गल° (auch Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 79. 86), रक्त°.

विद्रधिका (von विद्रधि) f. *ein in Verbindung mit Harnruhr vorkommender Abscess* Suçr. 1, 273, 13. 274, 2. Wise 362.

विद्रधिनाशन m. *Hyperanthera Moringa* Trik. 2, 4, 10.

विद्रव (von 1. द्रु mit वि) m. 1) *Flucht* AK. 2, 8, 2, 79. Trik. 2, 8, 59. H. 802. an. 3, 712. Med. v. 51. Hân. 99. सैन्यस्य MBu. 7, 4092. 9, 1644. R. 1, 3, 30 (28 Gorr.). 6, 93, 1. Varâh. Bṛh. S. 34, 18. 47, 25. 94, 9. Râǵa-Tar. 8, 1020. — 2) *Entsetzen, Bestürzung* Bhâr. Nîtiç. 18, 18. 58. 64. 19, 63. 88. Daçar. 1, 40. fg. 2, 34. 3, 58. 60. Sâh. D. 171. 377. 349. Pratâp. 22, *a*, 5. 41, *a*, 2. — 3) *das Ausfliessen, Schmelzen* ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut. — 4) *Tadel* Çabdar. im ÇKDa. — 5) = धी *Verstand* u. s. w. H. an. Med.

विद्राव m. = विद्रव 1) Çabdaratnâk. bei Wilson.

विद्रावण (vom caus. von 1. द्रु mit वि) 1) adj. *in die Flucht jagend:* मदमत्तवारणचमू° वेधस्विन् Spr. 1772. — 2) m. N. pr. eines Dânava Harîv. 200 (°मकालुरो die neuere Ausg.). — 3) n. *a) das in-die-Flucht-Schlagen* Khandok. 129. — *b) das Fliehen:* कंसविद्रावणकरी MBu. 4, 180.

विद्राविन् adj. 1) *fliehend, davonlaufend* MBu. 6, 2299. — 2) wohl *zum Schmelzen bringend* in वज्रविद्राविणी.

विद्राव्य adj. *in die Flucht zu jagen, zu vertreiben:* वनचारिणः R. 5, 81, 26. धनपा मुद्रयापि तुद्येयद्वा विद्राव्याः Sarvadarçanas. 29, 17.

विद्रिय s. द्र°.

विद्रुति f. = विद्रव 1) *Flucht* Med. v. 51.

विद्रुधि AK. 2, 6, 2, 7 ed. Lois. fehlerhaft für विद्रधि.

1. विद्रुम (2. वि + द्रुम) 1) *Koralle (ein absonderlicher Baum)* AK. 2, 9, 92. Trik. 2, 9, 30. H. 1066. an. 3, 473. Med. m. 53. nach den Lexicographen masc., welches wir nicht zu belegen vermögen; als neutr. erscheint es MBu. 3, 14222 und Suçr. 2, 328, 13. — MBu. 1, 7943. 2, 1102. 4, 1827. 6, 406. 450. 13, 2873. Harîv. 7880. R. 1, 74, 5. R. Gorr. 2, 12, 32. 4, 41, 57. 5, 19, 12. Suçr. 1, 228, 8. 239, 17. 2, 166, 15. Mṛkkh. 159, 8. Raghu. 13, 18. Kumâras. 1, 45. Bâlar. 6, 16. Khandok. 80. Varâh. Bṛh. S. 12, 2. 16, 14. 29, 5. 104, 15. Kathâs. 70, 117. Verz. d. Oxf. H. 57, *b*, 6. Bâlar. P. 2, 15, 22. 23, 17. fg. 4, 25, 16. 7, 4, 9. 8, 15, 16. Mâlav. P. 23, 103. 68, 33. Pañkat. 3, 12, 13. °च्छवि Çiva Çiv. — 2) m. = वृक्ष II. an. = रत्नवृक्ष Med. — 3) m. *Schoss, Trieb, junger Zweig* Âçvalâjana im ÇKDa.; vgl. प्रवाल (richtiger प्रवाल).

2. विद्रुम (wie oben) adj. *baumlos* MBu. 9, 289. Varâh. Bṛh. S. 12, 2.

1. विद्रुमच्छाय (1. वि° + छाया) adj. *korallenfarbig:* अधर Spr. (II) 1470.

2. विद्रुमच्छाय (2. वि + द्रुम - छाया) adj. *keinen Baumschatten gewährend:* मरुमार्ग Spr. (II) 1470.

विद्रुमदण्ड *Korallenstock;* davon nom. abstr. °ता f.: (कारः) तन्वन्विद्रुमदण्डताम् so v. a. *eine fünfstufige Koralle bildend* Kathâs. 105, 2.

विद्रुमलता f. 1) *Korallenstock:* विद्रुमलतारक्तादुलिप्रेषणाय: (so ist zu schreiben) शार्ङ्गिणः पाणयः Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, No. 289, Z. 4. — 2) *ein best. wohlriechender Staff,* = नली AK. 2, 4, 4, 17. Ausw. 43.

विद्रुमलतिका f. = विद्रुमलता 2) Râǵân. im ÇKDa.

विद्वंस् (partic. zu वेद von 1. विद्) 1) adj. = विदत् P. 7, 1, 36. Vop. 26, 139. *aufmerkend; wissend, kundig; verständig, kenntnissreich, gelehrt* AK. 1, 1, 2, 12. 2, 7, 1. 3, 4, 8, 36. 80, 236. H. 341. an. 2, 502 (= ज्ञ, प्राज्ञ, आत्मविद्). Med. s. 38 (= प्राज्ञ, पण्डित, आत्मविद्). Hall. 1, 99. 2, 177. RV. 6, 21, 11. 7, 28, 1. सर्वाणि नर्याणि विद्वान् 21, 4. 1, 24, 13. 70, 6. विद्वांसाविद्वांसः पच्छेदविद्वान् 120, 2. वसूनानि 152, 6. 4, 1, 4. सविद्वाँ यजत्र विद्वांसे करांसि 19, 10. 5, 41, 7. कवेर्न विद्वाँ यजसि स्वयं धुरं 46, 1. 6, 34, 1. AV. 9, 3, 3. VS. 6, 26. यदेनो विद्वांसकार wissentlich 8, 13. AV. 7, 108, 1. mit gen. AV. 2, 1, 2 (vgl. VS. 32, 9). 33, 3 (vgl. TS. 3, 2, 8, 3). एवं विद्वान् 3, 10, 30. 9, 6, 24. TS. 7, 4, 8, 1. Çat. Br. 1, 5, 4, 6. 10, 6, 4, 10. त्रैयम्बिय 14, 9, 2, 15. ब्राह्मण Kâṭy. 94. M. 1, 97. 103. 2, 1. 3, 51 u. s. w. MBu. 3, 2477. 2988. R. 1, 1, 3. 7, 18. 8, 6. Çik. 2. Spr. (II) 686. fg. 1940. (I) 2793. 2805. fgg. 3351. 3353. 4988. 5003. fgg. Varâh. Bṛh. S. 5, 65. 68, 66. Çiva Çiv. mit acc.: ब्रह्ममतौ *kennend* Bhâg. P. 10, 72, 42. mit loc.: शास्त्रेषु *bewandert in, vertraut mit* Verz. d. Oxf. H. 11, *b*, 1 v. u. in comp. mit dem obj.: वेदतत्त्वार्थ° M. 3, 96. वेद° 9, 334. 11, 4. 76. MBu. 1, 2025. 3, 17203. 5, 6054. R. Gorr. 2, 17, 4. 24, 17. 6, 96, 10. Pañkat. 1, 1, 64. सर्वार्थ° R. 4, 4, 20. विश्व° Verz. d. Oxf. H. 11, *b*, 2 v. u. दिव्यास्त्र° MBu. 3, 1427. शस्त्रास्त्र° R. 2, 27, 3. R. Gorr. 2, 64, 13. Raghu. 16, 81. तुलाधारण° Jâǵ. 2, 100. यतहीर्य° *dessen Mannheit nicht kennend* Bhâg. P. 5, 17, 10. Unregelmässige Formen im Epos: दिव्यास्त्रविदुषौ nom. du. MBu. 4, 1847. विदुषम् nom. pl. 3, 15850. वेद° 12958. Varâh. Bṛh. S. 16, 24. अध्यात्म° MBu. 3, 12966. सर्वास्त्र° 8284. ब्रह्म° 12, 10397. f. विदुषी Vop. 4, 12. compar. विदुष्टर RV. 2, 3, 7. 16, 4. 4, 7, 8. 5, 13, 10. 7, 16, 9. 10, 70, 7. compar. f. विदुषितरा, विदुषीतरा und विदुषितरा Vop. 7, 49. superl. विदुष्टम als Beiw. Çiva's Çiv. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Harîv. 1263. — Vgl. अ° (auch Spr. (II) 686. fgg. (I) 2807), अनेवं°, एवं°, ब्रह्म°.

विद्वज्जन (विद्वंस् + जन) m. *ein kenntnissreicher —, ein gelehrter Mann* Spr. 1051. 1125. 2291. 2806.

विद्वत्ता (von विद्वंस्) f. *Gelehrsamkeit* Harîv. 8760. Spr. (II) 1011. (I) 1802. Râǵa-Tar. 4, 493.

विद्वद्ज (wie oben) n. dass. Spr. 2804.

विद्वन्मण्डन (विद्वंस् + म°) n. Titel einer Schrift Hall 152. 154.

विद्वन्मनोरञ्जिनी f. Titel eines Commentars zum Vedântasâra Gîn.

Bibl. 421. Hall 101.

विहन्मोदतर्पिणी f. Titel einer Schrift Gir. Bibl. 291. fgg. Verz. d. B. H. No. 543. Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629.

विहर्त्र (von 1. विह्) adj. *klug, listig* ṚV. 10,159,1. AV. 10,1,9.

विहिंस् (1. हिंस् mit वि) m. *Feind* Jâṇ. 1,162. MBh. 8,230. Rāgn. 3, 69. Kâm. Nītis. 13,70. Spr. (II) 613. 689. 1843. (I) 1051. 4170. Kathās. 19,72. 112. 34,192. Rāja-Tar. 6,245. Prasn. 104,11. Bhāg. P. 3,17,29. 6,9,11.7,1,15. Daçak. 94,2. विबुध° MBh. 1,4601. 3,8798.4,1723. Bhāg. P. 4,7,32. 20,22. मृति° LA. (III) 92,8. — Vgl. अशिमि°, ब्रह्म°, मधु°.

विहिंस्र s. u. 1. हिंस् mit वि; davon °ता f. *das Verhasstsein:* न च विहिंस्रतां लोके गमिष्यामो मरीचितां MBh. 1,7041.

विहिंसि (von 1. हिंस् mit वि) f. *Hass, Feindschaft* Kâm. Nītis. 5,31.

विहेस् (wie eben) m. 1) *Hass, Feindschaft, Abneigung* AK. 1,1,2,28. H. 730. AV. 5,21,1. Kāty. Ça. 25,14,17. पार्घेषु (Gegens. भक्ति) MBh. 7, 7180. Kathās. 24,227. 39,203. 42,87. 63,171. Rāja-Tar. 2,69. 76. 4,87. Bhāg. P. 4,2,3. राज्ञो (obj.) ऽसंमतवृत्तीनां विहेयो बलवानभूत् Bhāg. P. 6, 14,43. fg. देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु। धर्मे मयि च 7,4,27. विहेसं विसस्रं कर् *gab auf* 4,20,18. विहेसं कर् *gegen Jmd* (loc.) *Feindschaft an den Tag legen* 2,1. स्वजनजननविहेसकरणा (दारिद्र्य) *verhasst machend bei* Mṛicch. 8,19. विहेसं चाधिगच्छति *macht sich verhasst* M. 8,346. Spr. (II) 219. विहेसमच्छति Bhāg. P. 5,13,14. विहेसं स कदाचिन् गच्छति Mārk. P. 72,40. लोकविहेसमागताः Kâm. Nītis. 6,10. कम्पनाधिपतो राज्ञ्या विहेसो ऽयाकि *Hass fassen* Rāja-Tar. 6,238. अन्न° *Widerwille gegen Speisen, Appetitlosigkeit* Suçr. 1,120,14. 121,7. °कर् 116,3. — 2) °कर्मन् und विहेस allein *eine Zauberhandlung* oder *eine Zauberformel, durch die man Hass und Feindschaft zu erregen bezweckt,* Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,22. 30. 34. 37. 98,*a*,1. 4. 5. — 3) *stolze Gleichgiltigkeit auch bei Erreichung von Erwünschtem:* विहेसो ऽभिमतप्राप्तावपि गर्वादनादरः Bhām. 3,3 beim Schol. zu Nalod. 2, 55. — 4) Bez. *einer Sippe feindseliger Geister:* विहेसश्च तथा गणः (मरुद्वेगस्तथापरः die neuere Ausg.) Harīv. 12868. — Vgl. घ°.

विहेसक (wie eben) adj. *hassend, sich feindlich verhaltend gegen:* धर्म° MBh. 13,3568.

विहेसण (von 1. हिंस् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. proparox. *verfeindend* ṚV. 8,1,2. — 2) f. ई N. einer bösen Genie, einer Tochter Duḥsaha's, Mārk. P. 51,6. विहेसिणी st. dasselbe 117. हेसणी 47. — 3) n. *a) das Hassen, das Hegen einer feindseligen Gesinnung:* तस्य (obj.) MBh. 3,2305. ब्राह्मणानां परीवादो मम विहेसणं मरुत् 13,6066. नास्तिवादार्थशास्त्रं हि धर्मविहेसणं परम् Harīv. 1303. — *b) das sich-verhasst-Machen, ein Mittel sich verhasst zu machen:* दानिणो सुभगत्वहेतुर्विहेसणं तद्विपरीतचेष्टा Varāh. Bṛh. S. 75,5. विहेसणं परमं जीवलोके कुर्याद्वः पार्थिव याच्यमानः *sich verhasst machen* MBh. 3, 13257. — *c) eine Zauberhandlung, durch die man Hass und Feindschaft zu erregen bezweckt,* Verz. d. Oxf. H. 94,*a*,14. 322,*a*, No. 764 (Verz. d. B. H. No. 905).

विहेसवीर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 248,*a*,8 (Hall 167).

विहेसम् (2. वि + हेस्) adj. *der Feindschaft entgegentretend* ṚV. 8,22,2.

विहेसिता (von विहेसिन्) f. *Hass, Feindschaft:* गृह्णन्विहेसितां Rāja-Tar. 6,170.

विहेसिन् (von 1. हिंस् mit वि) 1) nom. sg. *Hasser, Feind:* अस्माकम् Prasn. 31,11. Spr. 1371. मार्° Rāja-Tar. 3,7. ज्ञातिसमान° Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629. धर्म° MBh. 13,6740. शरच्चन्द्रविहेसिवक्त्रारविन्द *hassend, anfeindend so v. a. wetteifernd mit* Çaṃk. 30. — 2) f. विहेसिणी N. einer bösen Genie, einer Tochter Duḥsaha's, Mārk. P. 51,117; vgl. विहेसण 2).

विहेष्टर् (wie eben) nom. ag. *Hasser, Feind* Kirāt. 3,132.

विहेष्य (wie eben) adj. *verhasst, odiosus:* समस्त° Rāja-Tar. 8,1388.

1. विध्, विर्धति (विधाने) Dhātup. 28, 36. विर्धेम (als परिचरणकर्मन्) Naigh. 3,5. धेविधत्, विर्धत्त्. 1) *den Göttern* (dat.) *dienen, Ehre erweisen; sich hingeben:* वं पायुर्दमे यस्ते ऽविधत् ṚV. 2,1,7. 9. कथा विधात्यप्रचेताः 1,120,1. यो वो घामभ्यो ऽविधत् 2,27,13. वाघते, विधते 4,2, 13. 7,75,6. 1,136,5. 8,5,22. 10,40,8. Indra als विधत्त् bezeichnet 8, 67,7. यद्ब्रह्मन्वाचमस्यो विधेम TBr. 1,2,4,3. med. ṚV. 8,19,16. Mit instr. der Sache: ऊर्जा ṚV. 2,6,2. स्तोमैः 9,3. गिरा 24,1. कृत्वैः 26,5. 38,12. समिधा 7,14,3. मतिभिः 8,23,23. नमसा 1,114,2. AV. 10,4,23. Bhāg. P. 3,13,41. कविर्या ṚV. 10,121,1. fgg. oft im AV. TBr. 3,1,4,3. Çvetāçv. Up. 4,13. Mit acc. der Person VS. 8,25. नक्तंत्रमस्य कविर्या विधेम TBr. 3, 1,4,3. — 2) *dienend* oder *ehrend hingeben, widmen;* mit acc.: नमउक्तिम् ṚV. 1,189,1. घाकृतिम् 8,23,21. यज्ञम् 3,4,2. वर्तः 8,30,3. यस्ते सोमाविधन्मनः 9,114,1. कविः AV. 6,97,1. तस्मै नमो भगवते नु विधेम तुभ्यम् Bhāg. P. 3,9,1. घृग्मं त एना कविर्या विधेम etwa *wir wollen dir Muth geben* ṚV. 8,85,3. med.: रत्नं 3,3,1. Die Formel वाचस्पते विधे नामन्। विधेम ते नाम। विधेस्तमस्माकं नाम्ना यो गच्छ् erklärt Sāy. Vâkaspati, *Ordner, Beherrscher! Deinen Namen wollen wir preisen* (oder *dir wollen wir Opferspeise zurüsten*). *Gieb uns* (Ruhm oder Nahrung). *Durch* (unsere) *Opferspeise geh zum Himmel!* Man könnte etwa erklären: Vâkaspati, *Huldiger genannt* (für विधिनामन्), *wir huldigen deinem Namen! Huldige in unserm Namen* (den Göttern), *geh zum Himmel!* Çāṅkh. Ça. 10,18,12.

— उप *huldigen:* उप घ्रक्षन्तमद्रयो विधन्वित् ṚV. 1,149,1.

2. विध्, विन्धते *leer werden von, mangeln einer Sache* (instr.), *viduor:* अर्घं वो वत्सो मतिभिर्न विन्धते ṚV. 8,9,6. (इन्द्रः) य उक्थेभिर्न विन्धते Vāitān. 3,3. mit Acc. der Ergänzung: न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ṚV. 1,7, 7. durch विन्दामि erklärt Nir. 4,16. — Vgl. विधवा, विधुर.

3. विध् s. व्यध्.

4. विध् (von व्यध्) nom. ag. am Ende eines comp. in मर्मा°, मृगा°, श्या°, हृदया°; vgl. P. 6,3,116.

5. विध्, वेधति v. l. für विद्ध् Dhātup. 2,32. fg.

विध m. = विमान, कृत्स्यन्न, प्रकार, वेधन (von व्यध्), सद्धि Rabhasa und Açaja bei Bhān. zu AK. nach ÇKDa. — Vgl. विधा.

विधन (2. वि + धन) adj. *besitzlos, arm* Varāh. Bṛh. S. 68,70. Bhām. 12,18. fg. 18 (16),7. 21 (19),2. — Paṇḍit. II, 136 falsche Lesart; vgl. Spr. (II) 2189.

विधनता (von विधन) f. *Armuth* Spr. 1145.

विधनीकर् (विधन + 1. कर्) *besitzlos —, arm machen:* खूतेन विधनीकृतः Kathās. 24,58.

विधनुष्क (2. वि + धनुस्, adj. *bogenlos* MBh. 7,7702. 14,2456.

विधनुम् adj. dass. MBu. 8,4517. 10,805.

विधन्वन् adj. dass. MBu. 7,5756.

विधमचूटा (वि°, 2. imperat. von धम् mit वि, + चूटा) f. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72.

विधमन (von धम् mit वि) 1) adj. *ausblasend:* वक्रे: Suçr. 1,178,9. — 2) n. *das Zerblasen* u. s. w.: °शील als Erklärung von विधु Nir. 14,18.

विधमी (wie eben) f. Bez. einer Unholdin AV. 1,18,4.

विधरण (von धृ mit वि) adj. (f. ई) 1) proparox. *zurückhaltend, hemmend:* सेतु Çat. Br. 14,7,2,24; vgl. विधृति. — 2) *erhaltend:* विधरणी Çat. Br. 14,9,2,3. — विंधरणी AV. 9,7,4.

विधर्तर् (wie eben) 1) *Vertheiler, Ordner; Träger, Erhalter* RV. 2,1, 3. 28,4. 7,7,3. पुत्रमदितेर्यो विधर्ता 7,41,2. व्रतानाम् 56,24. AV. 10,8, 36. 13,4,3. VS. 13,10. 17,82. — 2) विधर्तरि loc. infin. zu धृ mit वि. यस्य हिता विधर्तरि । स्तोतृणं वम्रः प्रति धापि *zu halten* RV. 8,59,2. स्वर्षं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति *um zu vertheilen* 9,47,4.

1. विधर्म (2. वि + धर्म) m. *Unrecht, Ungesetzlichkeit:* °स्य MBu. 12, 8397. R. 5,47,30. वैरं विधर्माप्तिः Vaṇiṇ. Bṛn. 8,16. = धर्मबाध Bhāg. P. 7,15,13. 12. 3,28,2. Mānn. P. 113,30. Pañcat. 1,2,41. 2,7,40. °तस् *auf ungerechte Weise* MBu. 12,3163.

2. विधर्म (wie eben) adj. 1) *ungesetzlich:* विधर्मे पवि वर्तते MBu. 5, 2889. यतेषु देषा बरूवो विधर्मा: सुनास्वया 8,2508. — 2) *keine charakteristischen Eigenschaften besitzend, qualitätslos* (= निर्गुण Nilak.): Kṛshṇa MBu. 12,1508. — Vgl. वैधर्म्य.

विधर्मक adj. = 2. विधर्म 1): विधर्मकाणि कुर्वन्ति MBu. 7,8989 nach der Lesart der ed. Bomb., विधर्मिकाणि ed. Calc.

1. विधर्मन् (von धृ mit वि) 1) m. *Halter, Erhalter; Anordner* RV. 5,17,2. AV. 16,3,2. — 2) n. *a) das Umfangende: Behälter; Grenze:* क्षिप्वानो बाबमिष्यसि पवमान विधर्मणि RV. 9,64,9. 4,9. 97,40. 100,7. 109,6. रतस्रो विधर्मणि *innerhalb* 86,30. 6,71,1. पश्यन्नधस्य चतसा विधर्मन् *in seinem Kreise* 10,123,8. परमं वा रतदहर्विधर्म Pañcat. Bṛ. 15, 1,2. संगत्या विशो रतना विधर्मणायज्ञैरीयते नृन् *Zusammenhalt* RV. 10, 46,6. — *b) Capacität, Umfang:* समुद्रो अस्मिन् विधर्मणा AV. 16,3,6. — *c) Vertheilung, Anordnung, Verfügung:* तवेमा पत्वं प्रदिशो विधर्मणि RV. 9,86,29. 1,164,36. 3,2,3. नि यद्यामाय वो गिरिर्नि सिन्धवो विधर्मणे येमिरे 8,7,3. SV. I,5,2,2,2; vgl. AV. 7,22,1. — *d)* N. eines Sâman Ind. St. 3,236,*b*. प्रजापतेर्विधर्म desgl. 224,*b*.

2. विधर्मन् (2. वि + धर्मन्) adj. *gegen das Gesetz verfahrend* MBu. 3,12860.

विधर्मिक MBu. 7,8989 fehlerhaft für विधर्मक.

विधर्मिन् (von 2. वि + धर्मन्) adj. *gegen das Gesetz verfahrend* MBu. 7, 9114. Harîv. 1510. Mārk. P. 34,82. 35,34. *ungesetzlich:* वाच् MBu. 3,17293.

विधव् (von 2. विधु) विधवति *dem Monde gleichen:* विधवति मुखाब्जस्य: Sāh. D. 273,15. सविता विधवति Kāvyâd. 139,13.

विधवता (von विधवा) f. *Wittwenstand* Vaṇiṇ. Bṛn. 24 (22),14.

विधवन (von 1. धू mit वि) n. *das Abschuttlein* Nir. 3,15.

विधवयोषित् f. *Wittwe* Vaṇiṇ. Bṛn. S. 16,21. — Vgl. विधवा.

विधवा (von 2. विधु; vgl. Roth in Z. f. vgl. Spr. 19,223) f. *Wittwe* (häufig auch adj. in Verbindung mit स्त्री, योषित्, नारी u. s. w.) Nir. 3, 15. AK. 2,6,4,11. Trik. 2,6,4. H. 530. Hālā. 2,332. कस्ते मातरं वि-धवामचक्रत् RV. 4,18,12. को वो नपुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ 10,40,2. पुत्रं के कृधि पुत्रमञ्जिना शतं पुत्र विधत्तं विधवासुरुभ्यः *viduum cultorem* (wir vermuthen Dehnung aus विधवम्, wodurch sich auch ein masc. *Wittwer* ergäbe) 8. — Śāṅkh. Br. 3,7. M. 8, 28. 9,60. 62. 64. °वेदन 65. 175. °गामिन् Jāṭ. 2,231. MBu. 1,6153. 9, 1787. Harîv. 7918. R. 2,21,60. 42,21. 66,11. 19. R. Gorr. 2,34,8. 4,18, 27. 6,8,8. Spr. 4493. Vaṇiṇ. Bṛn. S. 86,79. 103,1. 6. 10. Bṛn. 24 (22),9. Pañcat. 186,18. °धर्म Verz. d. Oxf. H. 83,*b*,35. 277,*b*,6. विधवास्त्री (vgl. dagegen विधवयोषित्) Spr. (II) 1265. मेदिनी *ihres Gatten* d. i. *ihres Fürsten beraubt* R. 2,51,12. 86,13 (94,14 Gorr.). लङ्का Bhāg. P. 9,10, 28. — Vgl. स° (auch Kāç. 72. Harîv. 7811. R. 1,1,88), वैधवेय, वैधव्य.

विधस् m. = वेधस् = ब्रह्मन् Uṇâdik. im ÇKDa.

विधा (1. धा mit वि) f. 1) *Verhältniss, Maass; Weise, Art;* = प्रकार AK. 3,3,88,101. Trik. 3,3,222. H. an. 2,249. Med. dh. 17. यज्ञस्य Çat. Br. 2,6,4,13. 4,1,2,25. देवानां वै विधामनु मनुष्याः 6,7,2,2. 10,2,2,6. 11. 4,3. 6,1. 10. यस्यैषा विधा विधीयते TS. 5,3,4,7. pl. in einer Formel VS. 14,7. Âçv. Gṛhy. 2,2,4. यया कया च विधया *auf irgend eine Weise* Taitt. Up. 3,10,1. न च विधाहयरक्षितं विधातारं संभवति Nilak. 161. Kuṭṭan. 21,10. 38,14. चतस्रो विधाः Sarvadarçanas. 147,13. Kuvalay. 48,*b*,5. = भेद 49,*a*,1. Häufig am Ende eines adj. comp. त्रातिविध *mannichfaltig* Kaurâp. 30. उक्तविधम् Schol. zu Naish. 22,48. ऐकशत° Çat. Br. 10,2,6,3. nach भौरिकि u. s. w. (das comp. ein proparox.) so v. a. *voll* von P. 4,2,54. Vgl. अनेकविध (auch Paribhâshâ zu P. 1,1,30. Kathâs. 24,17. Pañcat. 61,10), अष्ट° (auch Spr. (II) 1091), अस्मद्विध, एक°, एवं°, कति°, गुण°, चतुर्विध, तथा°, तद्विध, तादृग्विध, त्रि°, त्वद्विध, दश°, दुर्विध, द्वि°, नव°, नाना°, पञ्च°, पञ्चविध, बहु°, भवद्विध, महिध, यथा°, यद्विध, युष्मद्विध, वणा°, वि°, षट्विध, स°, सप्त°, सु°; विधा auch als adv. in त्रि° (s. u. त्रिविध) und द्वि° (in den Nachträgen). — Die Lexicographen kennen noch folgende Bedeutungen: विधि AK. 3,4,18,104. H. an. कर्मन् Trik. 3,2,1. H. 1497. वेतन oder मूल्य AK. 2,10,38. H. 362. H. an. Med. सद्धि (hier wohl nur eine Verwechselung mit ऋधि; vgl. AK. 3,3,10) H. an. Med. *Elephantenspeise* (vgl. विधान) H. an. Med. (hier ist गजाशने zu lesen). वेधन (also von व्यध् oder eine blosse Verwechselung mit वेतन) Trik. 3,3,222.

विधातर् (von 1. धा mit वि, nom. ag. 1) m. *Vertheiler, Verleiher; Festsetzer, Ordner, Urheber, Schöpfer* u. s. w. Naigh. 3,15 (= मेधाविन्). 5, 5. Nir. 11,11. RV. 10,82,2. 3. 167,3. विधातारा वि ते देष्णवसा: 4,55, 2. दैव्यः (प्रजापति Sây.) 6,50,12. 9,81,5. AV. 3,10,10. 5,3,9. Çâṅkh. Gṛhy. 2,14. Pâr. Gṛhy. 2,9. zur Erklärung von वेधस् Nir. 10,6. — सं नस्त्राता विधाता च *du bist unser Retter und Verfüger* sagen die Götter zu Agastja MBu. 3,8809. विधाता (= विहितकर्मणामनुष्ठाता Kull.) शासिता वक्ता मैत्रो ब्राह्मण उच्यते M. 11,35. mit विधातर् spricht König Dilîpa den Vasishṭha an Raghu. 1,70. अद्यतन° *der Vorkehrungen trifft für* MBu. 12,8920; vgl. अनागत° (auch MBu. 12,4346. Spr. (II) 268). तपसः फलानाम् *Verleiher* Kumâras. 1,58. प्रसिद्धनेपथ्यविधेः *Ausführer* Kumâras. 7,36. नदीनद° *Urheber* Pañcat. 4,8,45. H. 3. जगताम् *Schöpfer* Pañcat. 1,2,34. 6,38. 12,3. जगद्विधातर् 10,14. *der Schöpfer, Bestimmer der Geschicke der Menschen,* Brahman AK. 1,1,4,13. H.

212. an. 3,303. Mnc. t. 157. MBh. 3,12328. Hariv. 3307. 4588. Spr. 544 (II). 2418, v. l. विधातृविहितं मार्गं न कश्चिदतिवर्तते 2809. विधात्रा रचिता रेखा ललाटे 2810. 2971. 3340. 4147. 4273. Rāgat. 1,35. 6,11. 7,22. Vārāh. Bṛh. S. 53, 3. Milavim. 18, 7. Kathās. 26, 82. 30, 134. 35, 139. विधुर 123,339. Rāja-Tar. 2,89. 4, 333. 8,1771. प्रतिकूल Prasn. 44,14. Bhāg. P. 3,8,13. 7,2,33. 8,2,21. Dhūrtas. 91, 12. Pañcat. 138, 23. विपरीत so v. a. *ein widerwärtiges Geschick* Spr. 5401. विधाता वेधसाम् *der Schöpfer unter den Schöpfern* Kumāras. 2,14. एवं विधातारः प्रसीदन्ति Çiç. 110,13. = प्रजापति, काल, भुवनप्रणेतृ Jayadeçvara in Z. f. d. K. d. M. 4,343. 345. Vidhātar als Herr der 2ten Tithi (Brahman ist Herr der ersten) Vārāh. Bṛh. S. 99,1. Vishṇu so genannt H. ç. 70. Bhāg. P. 3,1,12. Çiva 4,5,11. Çiv. der Liebesgott H. an. Med. Dhātar und Vidhātar als verschiedene göttliche Wesen neben einander MBh. 3,10419. 13591. R. 2,25,3 (21 Gorr.). Bhāg. P. 5,23,5. Mārk. P. 51,38. unter den Âditja Bhāg. P. 6,6,37. als Söhne Brahman's MBh. 1,3614. Bhṛgu's VP. 59. 82. Bhāg. P. 4,1,43. Mārk. P. 52,14.16. — 2) f. विधात्री *a) festsetzend, bestimmend, vorschreibend* Comm. zu Kāṭ. Ça. 23, 13. *Urheberin, Schöpferin:* धातुः Pāṇ. Gaṇ. 2,4,7. त्रिभुवन° Tantras. im ÇKDa. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge der Durgā Wilson, Sel. Works II, 39. — *c) langer Pfeffer* (पिप्पली) Çabdar. im ÇKDa.

विधातव्य (wie eben) adj. 1) *festzusetzen, zu bestimmen:* देशो ऽयं स विधातव्यो यत्र नः संगतिर्भवेत् Hariv. 13748. — 2) *herbeizuschaffen, zu besorgen:* आसनानि च दिव्यानि यानानि शयनानि च । विधातव्यानि पाण्डूनाम् MBh. 1,5738. fg. — 3) *zu erweisen, zu veranstalten, in's Werk zu setzen, zu verrichten:* त्वया रक्षा विधातव्या कृष्णायाः फाल्गुनेन च MBh. 4,30. मयि यत्ना: Hariv. 298. नोपदेशो विधातव्यो मूर्खस्य Spr. 1651. तस्य पूजा 1968. उपासनम् Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 58 und zu Kaṭha Up. S. 50. किमेतस्य विधातव्यमस्माभिः *was sollen wir für ihn thun?* Kathās. 62, 81. तैरवश्यं विधातव्यं व्यलीकं किंचिदेव नः so v. a. *die werden uns gewiss einen Schabernack spielen wollen* R. 5,41,10. न राजपुत्रस्य कृते चिन्ताधुना त्वया विधातव्या so v. a. *du musst dir keine Sorgen machen* Kathās. 24, 4. — 4) *was man sich angelegen sein lassen muss, worauf man bedacht sein muss:* मया क्रीडे विधातव्यं भवता पठितं भवेत् MBh. 1,1621. भवता पठितव्यं तत्: श्रेय: 5,2285. इह कीर्तिर्विधातव्या सा च युद्धेन नान्यथा 9,369. तवा मया विधातव्यं (impers.) विश्राम्यति यथा कपि: R. 5,7,4. MBh. 3,1802 (विधातव्यं mit der ed. Bomb. zu lesen). Pañcat. 85,8. — 5) *zu gebrauchen, anzuwenden:* कर्मण्येषा यष्टी विधातव्या Sarvadarçanas. 135,18. बिन्दुप्रवेशको नेह विधातव्यो Sāh. D. 193,4. तस्मादमी (नियोगिनः) विधातव्याः *zu verwenden, anzustellen, einzusetzen* Spr. 1593.

विधातृका (von 2. वि + धातृ) adj. zur Erklärung von विधवा Nir. 3,15.

विधातृभू (विधातृ + 2. भू) m. Bein. Nārada's Tāṇḍ. 2,7,17. — Vgl. विधिपुत्र.

विधात्रायुस् (विधातृ + आयुस्) m. *eine best. Blume,* = सूर्यशोभा Çabdar. im ÇKDa.

विधान (von 1. धा mit वि) 1) adj. (f. ई) *regelnd:* यज्ञो विधान्यमेकाष्टकायाम् TS. 3,3,8,4. — 2) m. N. pr. eines Sādhja Hariv. 11536. विज्ञान die neuere Ausg. — 3) n. *a) Ordnung, Maass; Festsetzung, Bestimmung, Vorschrift, Regel, das zu beobachtende Verfahren, Art und Weise des Verfahrens:* सामाम् RV. 10,138,6. यथा विधानं विदुषां भूषणाम् 4,51,6. तिस्रो भूमीरुपरा: षड्विधाना: *eine Ordnung von Sechsen bildend* 7,87,5. Kāṭ. Çr. 1,2,19. 7,8. 9,5. अकृतक्रिया हि विधानम् *die Regel verlangt* Liṭ. 10,7,15. स्तोम° 5,2,1. RV. Prāt. 4,7. 6,4. 11,12. 21. तमेको ऽस्य सर्वस्य विधानस्य स्वयंभुवः । अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभो ॥ *der von Svajambhu eingesetzten Ordnung* M. 1,3. सर्वं विधानं पाञ्चयज्ञिकम् 3,286. दैवमानुष 7,205. यज्ञदानतपःक्रियाः — विधानोक्ताः Bhag. 17,24. ज्ञातकर्माणि सर्वाणि पुंवद्विधानयुक्तानि *wie sie für ein männliches Individuum festgesetzt sind* MBh. 3,7407. 12,493. 495. 14,318. ददर्श भारतं सैन्यं विधानं विश्वकर्मण: so v. a. *nach* Viçvakarman's *Vorschrift aufgestellt* R. 2,91,28. Kām. Nītis. 15,48. Kathās. 61,269. Bhāg. P. 5,3,2. शक्यादेर्योर्विधाने *die für — geltenden Bestimmungen* Ind. St. 1,102. एतद्विधानं विशेषं विभागस्यैकयोनिषु M. 9,148. Kār. zu P. 2,1,32. Kām. Nītis. 19,28. Varāh. Bṛh. S. 43,12. Pañcat. 1, 4,86. मृत्यो: so v. a. *der gesetzmässige Tod* MBh. 1,7639. 7643. सर्वशास्त्रविधानज्ञ *die Bestimmungen aller Lehrbücher* 13,2499. शास्त्रविधानोक्तं कर्म Bhag. 16,24. सामान्य° Bhāg. P. 8,20,11. सप्तिगादि° *die für — geltenden Bestimmungen* Ind. St. 1,36,17. सप्तिप्रश्न° M. 1,115. MBh. 1, 49. Bhāg. P. 1,8,20. Mārk. P. 119,17. भावार्थे त्वतलादीनां विधानात् *weil die Suffixe* त्व, तल् u. s. w. *vorgeschrieben sind, als Regel gelten* Sarvadarçanas. 144,20. 126,1. अस्यैवेदं स्वरविधानम् Kāç. zu P. 1,2,35. Schol. zu P. 1,2,34. 2,1,13. 6,4,93. विधानमिदमाचरेत् *eine Regel befolgen* M. 7,113. 226. एतद्विधानमातिष्ठेत् dass. 8,244. विधानेन *nach der Regel, — Vorschrift* R. 4,36,4. अनेन विधानेन M. 7,181. 8,228. 9,69. 128. Varāh. Bṛh. S. 48,87. रात्तसेन विधानेन (उपयेमे) Bhāg. P. 10,52,18. शास्त्रोक्तविधानेन Pañcat. 34,11. पाकयज्ञविधानेन *nach den für — geltenden Bestimmungen* M. 11,118. Bhāg. P. 3,10,29. Mārk. P. 75,16. देशकालविधानेन so v. a. *am rechten Orte und zu rechter Zeit* Spr. 4215. देशकालविधानज्ञ R. 4,40,16. Bhāg. P. 3,20,16. संख्याविधानात् *nach mathematischer Regel, mathematisch* Varāh. Bṛh. S. 12,14. विधानतस् *der Vorschrift gemäss* Jāān. 1,234. R. 1,72,21. 2,26,13. R. Gorr. 2,56,29. 5,72,6. Mārk. P. 16,37. 69,54. Weber, Kasaṇā. 296. अविधानतस् M. 9,144. 12,7. सुविधानतस् *genau nach der Vorschrift* Kām. Nītis. 13,76. वेदस्मृतिविधानतस् M. 6,89. R. Gorr. 1,19,29. विधानेस् = विधानेन, विधानतस् MBh. 14,291 (निवापेस् ed. Bomb.). R. 2,83,26. — *b) Methode, Verfahren, Recept* (in der Medicin) Suçr. 1,159,17. 2,12,18. 31, 9. 105,7. 227,6. °स्थ 299,19. *Regime* (des Essens) 486,12. — *c) Bestimmung, Schicksal:* सर्वानर्थां सुखं दुःखं विधानमनुवर्तते MBh. 12,850. 852. 6755. Spr. 3186. 3271. — *d) das Treffen von Anordnungen, — Verfügungen, Ergreifen von Massregeln:* स्वयं शास्ति यत्ने विधानम् MBh. 14, 280. °स्थ R. 1,38,4. कृत्वा विधानं मूले M. 7,184. MBh. 5,6089. करिष्यामो विधानं ते येन त्वं वर्तयिष्यसि Hariv. 1269. R. 1,11,17. विधानं द्विगुणं कृत्वा 5,17,2. Pañcat. 1, 14, 8. तस्माद्विधाय नगरे विधानं सचिवैः सह MBh. 3,7473. R. 7,21,3. विधानमनुतिष्ठन्तं प्राणिनो यस्य यादृशम् 2. बालिश्य° 4,12 in der Unterschr. पुर° 5,12 in der Unterschr. रक्षाविधानं मनसा स संचिन्त्य MBh. 13,2267. अनागतविधानं च कर्तव्यम् Spr. (II)270. R. 3,30,11. अनागतविधानं च तस्यार्थे प्रविधीयताम् 4,14,29. अद्यस्तन°

M. 11,16. — *e) Mittel:* तदस्ति किंचिदस्य दुरात्मनः प्रतियेधविधानम् Pañcat. 238,11. — *f) das Aufstellen:* लिंगपत्र° Jiñ. 3,240. — *g) das Schöpfen, Bilden* Ragh. 6,11. 7,14 (= Kumâras. 7,66). Spr. 2858. — *h) das Veranstalten, Ausführen, Anrichten:* यदानुमन्यसे कालं यस्मिन्देशे यथा यथा । तथा तथा विधानाय स्वयमाज्ञापयस्व माम् ॥ MBh. 1, 5346. महायज्ञ° M. 1,112. वैवाहिके ऽग्नौ कुर्वीत गृह्यं कर्म यथाविधि। पञ्चयज्ञविधानं च 3,67. ऋषयज्ञविधानेषु Mârk. P. 51,59. चान्द्रायणविधानेवं वर्तयेत् M. 6,20. अभिषेकविधानं संहृत्य R. 2,22,11. यात्रा° Varâh. Bṛh. S. 51,7. रात्रियुद्ध° R. Gorr. 1,4,108. दुर्गकर्म° 110. प्रायश्चित्तविधानानि चक्रुः 13,4. प्रतिकार° Ragh. 8,40. नेपथ्य° 14,9. Çiç. 3,6. प्रज्ञातेम° Ragh. 18,8. प्रस्तुतविधानाय Prab. 18,15. क्षेपता° Schol. zu Kap. 1,96. वेदिस्वस्तिविधानानि *Herrichtung* R. 2,56,29. — *i) Aufzählung, Einzeldarlegung* Suçr. 2,559,12. — *k)* in der Dramatik *Veranlassung sowohl zur Freude als auch zum Leid* Sâh. D. 338. 346. Pratâpar. 21,a,5. — Nach den Lexicographen hat विधान u. folgende Bedeutungen: विधि AK. 3,4,18,102. Trik. 3,2,1. H. an. 3,417. fg. प्रेरणा, सन्नियर्तन, धन, चेतन, उपाय, प्रकार H. an. कृत्तिकवल oder कारिकवल (vgl. विधा) H. an. Hâ. 191. विधान mit कृत u. s. w. componirt gaṇa क्षेपणादि zu P. 2,1,59. — तथाविधान Hit. 101,12 fehlerhaft für तथाविध (wie die v. l. hat); देवविधानं MBh. 6,3030 fehlerhaft für देवो विधानं, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. षाड्गुण्यविधान, सन्धिविधान, पाद°, यथाविधानम् (auch Kaṭhân. Up. 8,15), रुद्रविधान, वास्तु°, साम°.

विधानक (von विधान) n. 1) *die für Etwas geltenden Bestimmungen, die bei Etwas zu beobachtende Regel:* यत्नयाम् Ind. St. 3, 270. Pañcân. 2,4,1. (तस्मै) ददौ सुलोचनामस्त्रमर्पितं सविधानकम् so v. a. *nebst Anweisung zum richtigen Gebrauch desselben* Kathâs. 49,181. — 2) = व्यवहार Çabdar. im ÇKDr.

विधानकल्प m. Titel einer Schrift Ind. St. 3, 279.

विधानग m. *ein gelehrter Mann* (पण्डित) Çabdar. im ÇKDr.

विधानपारिजात m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1403.

विधानमाला f. desgl. Mack. Coll. I, 28.

विधानसप्तमी f. Bez. *des 7ten Tages in der lichten Hälfte des* Mâgha Wilson, Sel. Works II, 200.

विधायक (von 1. धा mit वि) nom. ag. 1) *vorschreibend, eine Vorschrift enthaltend* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 58. Schol. zu Kâtj. Çr. 9,11, 16. विवाहविधायकशास्त्र Kull. zu M. 9,65. Schol. zu P. 1,2,43. पक्षस्य विकल्पविधायकनेतद्वचनम् zu 3,3,119. सविधायकत्व n. Schol. zu Kâtj. Çr. 9,11,16. — 2) *Einsetzer:* पञ्चकृत्य° Verz. d. Oxf. H. 90,b, No. 147, 2. 8. चतुर्वेद° Pañcân. 4,3,153. — 3) *Gründer, Erbauer, Stifter:* ऋषस्वामिपुरस्य Râjat. 1,169. 4,80. 6,186. — 4) *verrichtend, ausführend, an den Tag legend:* नवायाम° (so ist vielleicht zu lesen) Râjat. 6,266.

विधायिन् (wie eben) nom. ag. 1) *regelnd, vorschreibend, eine Vorschrift ertheilend in Betreff von:* विधिर्विधायकः Naiṣ. 2,1,62. विधेरपि विधायिनीं वाणीम् LA. (III) 89,3. गुणवृद्धि° (पाणिनि) Râjat. 4, 634. भूतनिष्ठा° 636. An den beiden letzten Stellen zugleich *bewirkend.* — 2) *Gründer, Erbauer, Stifter:* पुरत्रय° Râjat. 1,168. 3,27. 295 (वि° st. वि° zu lesen). 6,169. — 3) *verrichtend, ausführend:* वैश्यैः पण्यवृत्तिविधायिभिः (वैश्यवृत्तिमनुष्ठितैः die neuere Ausg.) Harîv. 402. तादृक्कार्य° Kathâs. 42,113. बलिकर्म° Râjat. 1,181. 6,11. स्वाज्ञा° 1,156. Kathâs. 52,236. इच्छा° 80,150. पत्किंचनविधायिता (so ist zu schreiben) Râjat. 1,354. 3,213. पत्किंचनविधायित्व 4,610. — 4) *bewirkend, verursachend:* नानादुःख° Harîv. 14596. कोप° Spr. 2662. सिद्धि° Verz. d. Oxf. H. 99,b,16. प्रव्राजकाद्° Râjat. 4,294. गुणवृद्धि° 634. भूतनिष्ठा° 636 (vgl. u. 1). मानतति° 5,235. प्रतिनादविधायिता H. 65. — Vgl. प्राय°.

विधार (von धृ mit वि) m. etwa *Behälter:* सप्तोक्षाणो हि पवमान सूर्ये विधारे शकुनस्य पर्णैः RV. 9,110,4.

विधारण (wie eben) 1) adj. *scheidend, trennend:* सेतुं विधारणं पुंसाम् Bhâg. P. 4,2,30. — 2) n. *a) das Anhalten:* रथ° Kathâs. 56,276. *das Verhalten, Unterdrücken:* व्यञ्जन° *eines Consonanten in der Aussprache* AV. Prât. 1,48. कोप° MBh. 2, 2577. वेग° *der Ausleerungen* Suçr. 1, 48,17. 258,5. 290,18. 2,513,5. रेतस: 186,19. des Athems Jogas. 1,34. Kap. 3,33. — *b) das Tragen:* गङ्गापि तं गर्भमसह्यती विधारणे MBh. 9, 2458. गोवर्धन° Harîv. 16330. Kâraṇḍ. 97. Bhâg. P. 10,26,14. उष्ट्रकाष्टकलङ्गास्विलोमवस्त्र° Mârk. P. 51,10. शीर्णोपानद्विधारण 24. — *c) das Ertragen:* वेग° MBh. 6,4926. न ते शक्तास्मि तेजसो ऽस्य विधारणे 13,4076.

विधारयितर् (wie eben) adj. etwa so v. a. विधर्तर् VS. 17,82.

विधारयितर् (wie eben) nom. ag. zur Erklärung von विधर्तर् Nir. 12,14.

विधारयितव्य (wie eben) adj. *was erhalten —, aufrechterhalten wird* Prâçnop. 4,8.

विधारिन् (wie eben) adj. *verhaltend, unterdrückend:* वेग° Vîrân. 8,10.

विधावन (von 1. धाव् mit वि) n. *das Hinundherlaufen* Nir. 3,15.

1. विधि (von 1. धा mit वि) P. 3,3,92, Schol. 1) m. *a) Anordnung, Anweisung, positive Vorschrift; gesetzliches Verfahren; Regel, Methode;* = नियोग H. 1520. = विधिवाक्य H. an. 2,249. fg. = विधान AK. 3,4, 18,102. H. an. Med. dh. 17. = कल्प AK. 2,7,39. H. 839. H. an. Med. Hall. 5,40. — P. 3,3,161. Kâtj. Çr. 1,5,17. 4,3,8. सवन° 24,7,26. मन्त्र° Lâṭj. 1,1,2. 6,3,1. 10,8,9. Kauç. 1. Pân. Gṛhj. 2,6. स्वाध्याय° Âçv. Gṛhj. 3,2,1. Kauç. 141. मन्त्र, विधि, सूर्यवाद Müller, SL. 170. विधिर्विधायकः Naiṣ. 2,1,62. धर्मार्थसाधकव्यापारो विधिः Sarvadarçanas. 77,17. Gegens. निषेध Bhâg. P. 3,20,37. Sarvadarçanas. 5,11. प्रतिषेध 29,13. अपवाद Njâja zu P. 3,3,20. द्वयोर्विभाषयोर्मध्ये विधिर्नित्यः Vop. 2,3. — आगम° Sarvadarçanas. 28,7. Râjat. 1,183. 186. मीमांसस्य भत्तपादवर्जने *Vorschrift in Betreff* M. 3,26. 8,188. 201. 9,169. Jiñ. 1,92. 178. व्रतानां विविधो विधिः M. 11,161. Bhâg. P. 2,8,21. 3,7,22. संस्कार° M. 1,111. प्रायश्चित्त° 116. 5,146. 8,221. 278. यथोदितेन विधिना 4,100. अनेन विधिना 3,281. 5,169. 6,81. 8,178. विधिना *nach der Vorschrift, rite* M. 2,107. 4,193. R. 1,8,16. 2,25,28. 72,33. Ragh. 3,65. AK. 2,7,5. Kathâs. 26,207. सविधिना Mund. Up. 2,1,7. M. 5,33. Spr. (II) 1682. Kathâs. 14,5. 103,146. °कृत Çiç. 1. नैत्यकं विधिनास्थितः M. 2,104. 5,36. 11,36. एतमेव विधिं कृत्स्नमाचरेयुरपमध्ये 217. एतमेव विधिं कुर्यात् 188. विधिं हित्वा 5,30. 9,63. शास्त्रविधिमुत्सृज्य Bhag. 16,23. 17,1. त्यक्तविधि adj. Bhâg. P. 9,6,9. व्युत्तो विधिः Ragh. 3, 45. निमित्तनैमित्तिकयोरयं विधिः *Gesetz, Ordnung* Çiç. 189, v. l. *eine grammatische Vorschrift,*

— *Regel* P. 1,1,57. 72. विधिं कर् 57, Schol. स्थान° AV. Pair. 1, 41. P. 1,1,56. 6,13. 2,1,1. 8,2,2. गणित° *mathematische Regel* Vaitân. Bḍh. S. 11,2. — विधयस्त्रयः (nach Nîlak. der अपूर्वविधि, नियम° und परिसंख्या° der Mîmâṁsaka) Harîv. 9490. — *b) Verfahren, Weise, Art;* = प्रकार् H. an. Bhâg. P. 2,10,46. प्राजापत्य M. 3,30. रात्तस 33. गान्धर्वेण विवाहविधिना Çiç. 110,14. गान्धर्वविधिना Kathâs. 18,220. देवता: पूजयामास पेरुणा विधिना MBh. 3,2719. विधिना मन्त्रयुक्तेन Spr. 2812. उशनेणा विधिना Harîv. 1857. क्रोडादिविधिज्ञ R. 3,42,47. विधिना येन MBh. 3,11943. रुतेन विधिना 4,59. Vaitân. Bḍh. S. 40,12. Pañcat. 121, 18. भवद्विधिना 215,3. यथोचितेन विधिना Hit. 42,3. वया निरर्थकाविध्यो: *nicht die rechte Weise* AK. 3,4,22(28),9. अद्भुतविधि adj. *auf eine wunderbare Weise verfahrend* Kathâs. 18,267. यस्य को विधिर्भूतात्मनो येन u. s. w. Maitrâyaṇ. 4,1. को ऽयं विधि: *was ist das für eine Art?* so v. a. *wie geht das zu?* Vikr. 72. को ऽयं ते ऽनुचितो विधि: Râǵa-Tar. 3, 422. किं वास्मिन्नर्थे संदेहप्रवृत्तिर्न विधि: *ist nicht die Art* Hit. 10,11, v. l. 89,6. 94,3. गुणदोषावनिश्चित्य विधिर्न प्रतिषेधो Spr. (II) 2115. — *c) Mittel, Weg zu Etwas:* संभावणार्थं च मया ज्ञानवया निश्चितो विधि: R. 3,56,96. तस्याधिगमे Kumâras. 5, 59. वत्कूलोद्भूतये 6,82. उद्धारण° Pañcat. 138,15. स्थले गच्छतस्ते को विधि: Hit. 117,7, v. l. यमेवं कुरुते विधिम् *wenn er diesen Weg einschlägt* Mârk. P. 116,44. कनकक्षरिणाच्छत्रविधिना Uttarar. 13,2 (17,14). अध्वविधिना गोमत्तमचलं प्राता: *mittels des Weges* so v. a. *indem sie den Weg entlang gingen* Harîv. 5339. — *d) Act, Handlung, Ausführung, Veranstaltung, Geschäft;* = कर्मन् Taitt. 3,2,1. रात्रावेष विधि: कार्य: Râǵa-Tar. 4,104. व्यवहारविधौ Jiǵ. 2,30. मण्डन° Çiç. 133. दुग्धवल्लगोद्दविधौ (so v. a. °भेदे) Spr. (II) 544. वादिदर्पज्वरशमनविधौ 606. कौशित्यातविधौ कोरति 1610. अभ्युद्यम° 1876. 2054. (I) 1233. 1859. अलंकारविधये 3106. Vaitân. Bḍh. S. 79,19. शिर:कृन्तन° Spr. 4147. योग° Ragh. 8,22. सर्ग° Vikr. 9. प्रसाधन° 22. Mâlav. 40. Çiç. 9,78. आहारनीहार° H. 58. यज्ञ° Vaitân. Bḍh. S. 44,14. Gît. 1,13. निर्वासन° Kathâs. 12,97. रुता° 34,72. विवाहविधये बुद्धिं व्यधादात्मेच्छास्तयो: 34,104. Prab. 8,5 (pl.). Daçâkum. 83,13. Pañcat. 117,11. 260,17. Hit. 16,14. नेपथ्य° Kumâras. 7,36. शृङ्गारविधिं विधाय Pañcat. 36,15. सकलकार्यविधौ समर्थ: Spr. (II) 1431. विघ्नेश° *der von Gaṇeça kommende Act* so v. a. *Hinderniss* Bhâg. P. 3,7, 8. किं नु स्वप्नो मया दृष्ट: को ऽयं विधिरिहाभवत् so v. a. *Ereigniss* MBh. 3,2497. सामासिद्धा हि विधयो न प्रयान्ति पराभवम् so v. a. *facta* Spr. 3241. तं विधिं (= सत्कारं Comm.) लब्धा so v. a. *Behandlung* R. 2,91, 38. कर्तव्यस्तदृतो विधि: so v. a. *darauf bezügliche Vorbereitungen* 52, 61. — *e) ein feierlicher Act, Cerimonie:* वैवाहिक M. 2,67. यौपनायनिक 68. Râǵan. 1,34. 2,16. सापत्तन 1,56. सौम्य 2,23. दोषार्थ° 66. गोदान° 3,33. पारलोक° (= पिण्डोदकादिकर्मन् Mallin.) Kumâras. 4,38. मात्य° Vaitân. Bḍh. S. 43,56. नीराजना° AK. 2,8,2,62. Pañcat. 158,5. H. 789. अग्नेरुत्सव° Spr. 2792. मङ्गल° Daçak. 60,10. fg. — *f) Schöpfung* Kir. 7,7 (pl.). Kumâras. 3,28. — *g) Schicksal* AK. 1,1,4,6. 3,4,22,102. H. 1379. H. an. Med. Hall. 1,66. शुभावह AK. 1,1,4,5. अहो ममोपरि विधे: संरम्भो दारुणो महान् MBh. 3,2562. 13,343. यम, मृत्यु, काल, विधि R. 3,69,20. वैरिन् Mnch. 100. Spr. (II) 2060. पराङ्मुख (I) 2028. 2813. fg. Çiç. 43. Kathâs. 18,267. 32,57. Râǵa-Tar. 2,92. Mârk. P. 8,183. विधेर्वशात् Kathâs. 25,273. °वशात् Mnch. 6. Spr. (II) 645; vgl. दैवो विधि: *ein Gebot der Götter* (I) 4487. दैवविधिषु 3256. — *h) die Zeit* Taitt. 3,3,222. H. an. Med. Hall. 5,40. — *i) Schöpfer:* जगताम् Pañcat. 1,2,11. 10,32. 14,8. जगद्विधि 10,48. 86. Brahmavaiv. P. 2,24. ohne weiteren Beisatz *der Schöpfer* d. i. Brahman AK. 1,1,2,12. Taitt. H. 212. H. an. Med. Hall. 1,6. Çiç. 42. Spr. (II) 945. 1180. 1345. (I) 1970. 2838. Naish. 22,57. 57. Pañcat. 1,2,13. 9,39. Vishṇu Hall. 1, 25. — *k) Arzt* Râǵân. im ÇKDa. — *l) Elephantenspeise* (vgl. विधा, विधान) Gaṇiṅ. im ÇKDa. — 2) f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,34. — Vgl. दुर्विधि, पथा°, लोक°, वास्तु°, कृत°.

2. विधि (von 1. विध्) m. etwa *Huldiger* Ait. Br. 5,25 (vgl. u. 1. विधु). N. Agni's beim Prâjaçittika Gaṇas. 1,8.

विधिकर adj. (f. ई) *Jmdes Vorschriften befolgend, — Befehle ausführend; Diener:* सर्वे स्वामी विधिकरास्तव Bhâg. P. 7,9,13. 8,36. 10,31,8.

विधिकृत् adj. dass. Bhâg. P. 7,10,48 = 15,76.

विधित्व (von 1. विधि) n. *das Vorschrift-Sein* Sarvadarçanas. 126,9.10.

विधित्सा (vom desid. von 1. धा mit वि) f. 1) *Beabsichtigung, Wunsch, Verlangen* MBh. 1,3682. 5,1636. 12,3882 (wo die ed. Bomb. साधनेन च liest). नास्ति सर्वविधित्सानां गतपूर्वो ऽस्ति कश्च न Spr. 4393. व्यथितस्य विधित्साभि: 3040. Mârk. P. 38,10. वैरस्यात्त° MBh. 5,2639. प्राणोत्क्रान्ति° Kathâs. 72,290. ब्रह्मविद्या° Çaṁk. zu Bḍh. Âr. Up. S. 268. निद्राज्ञानाभिप्रेतार्थ° Bhâg. P. 3,3,2. श्रेयो° 10,82,2. आत्म° *Selbstsucht* Spr. (II) 145. — 2) *der Wunsch Jmd zu Etwas zu machen:* मुक्तिप्रतिमल्ल° Râǵa-Tar. 8,1636. — Vgl. निर्विधित्स.

विधित्सु (wie eben) adj. *beabsichtigend, im Sinne habend;* mit acc.: कालक्षम् MBh. 3,699. 5,2063. 8,1198. Harîv. 16274. Kir. 10,17. Prab. 25,12. Râǵa-Tar. 8,2313. तेभ्यं ज्ञानाय Bhâg. P. 3,16,24. अनत् 7,9,29. प्रियं प्रियाया: 3,3,5. आतिथ्यम् *Jmd Gastfreundschaft zu erweisen* wünschend Kathâs. 101,26.

विधिदर्शिन् m. *Beisitzer; eine Person, die darauf zu achten hat, dass Alles nach Vorschrift geschieht,* AK. 2,7,15.

विधिदृष्ट adj. *vorschriftmässig:* कर्मन् MBh. 3,3026. 11924. R. 1,49, 20. यज्ञ Bhag. 17,11; vgl. विधियज्ञ.

विधिदेशक m. = विधिदर्शिन् Çabdar. im ÇKDa.

विधिनिरूपण n. Titel einer Schrift Hall 60.

विधिपुत्र m. Brahman's *Sohn*, patron. Nârada's Pañcar. 1,1,11. — Vgl. विधातृभू.

विधिपूर्वकम् adv. *vorschriftmässig, rite* M. 2,173. 3,84. 96. 99. 216. 4,101. 6,5. R. 1,9,29. 2,28,14. Suçr. 2,93,7. श्र° Bhag. 9,23. 16,17.

विधियज्ञ m. *ein vorschriftmässiges Opfer* M. 2,85. fg.

विधियोग m. 1) *Beobachtung einer Vorschrift, — Regel:* यत्नेन °योगेन M. 8,211. — 2) *Fügung des Schicksals:* °योगात् Spr. 3227. °योगतम् Kathâs. 25,48. 26,264 (°योगत्र: gedruckt). 30,84. 49,193. 51,61.

विधिरसायन n. Titel einer Schrift Hall 194. °मुखोपयोगिनी f. Titel eines Commentars zu derselben ebend. °दूषण m. Titel einer *Widerlegung* derselben 195. Verz. d. Tüb. H. 17.

विधिवत् (von 1. विधि) adv. *vorschriftmässig, rite, auf gehörige Weise, wie es sich gebührt* Mund. Up. 1,1,3. M. 1,58. 2,40. 145. 216. 3,

29 u. s. w. MBn. 3,1770. 2794. 11924. R. 1,2,11. 28. 8,22. Rāgn. 1,62. 3,29. Çiç. 64,11. ad 191. Spr. 1405. 5418. Variān. Bṛn. S. 43,5. 29. 46, 16. 59,10. fg. 68,1. LA. (III) 89,14.

विधिवपु m. Brahman's *Gattin* d. i. Sarasvatī Verz. d. Oxf. H. 259,b,21. fg.

विधिवाद् m. Titel zweier Schriften Hall 60.

विधिविवेक m. Titel einer Schrift Hall 87.

विधिशोणितीय (von विधि + शोणित) adj.: अध्याय Titel eines Abschnitts in der Karakasaṃhitā Verz. d. Cambr. H. 23.

विधिषेध (विधि + सेध = निषेध) m. du. *Gebot und Verbot:* निवृत्ता विधिषेधतः Bhāg. P. 2,1,7.

विधिसार् m. N. pr. eines Fürsten Bhāg. P. 12,1,5. fehlerhaft für बिम्बिसार्.

विधिस्वरूपवादार्थ m. Titel einer Schrift Hall 60.

1. विधु (von 1. धू mit वि) m. *Schlag* (des Herzens): शीर्णः कृपालानि हृदयस्य च यो विधुः AV. 9,8,22.

2. विधु (विऽधु Padap.) Uṇādis. 1,24. 1) adj. विधुं दृक्षाणां समने बहूनां पुवानं सन्तं पलितो जगार ṚV. 10,55,5. nach SV. Comm. so v. a. विधारयितृ, विधातृ; eher würde sich die Ableitung von 2. विध् empfehlen: *vereinsamt* (so v. a. विधुर). Die Nir. 14,18 angenommene Deutung auf den *Mond* kann richtig sein. — 2) m. *a) der Mond* AK. 1,1, 2,18. 3,4,28,102. H. 105. an. 2,230. Med. dh. 16. Halāy. 1,43. Viçva bei Uṇṇval. °लय M. 3,137. °मण्डय Verz. d. Oxf. H. 30,b,7. Spr. (II) 457. °परिधेस 986. 1323. (I) 1813. 3018. वक्र° 3143. 3227. Gīt. 4,5. 7,21. Wilson, Rimat. Up. 324. विधूदय Kṛṣṇāṇ. 257. Kāçikā. 59,33 (nach Aufrecht). Ind. St. 2,261. Naish. 22,47. Vop. 5,30. °प्रिया ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut. — *b) Kampher* (wie alle Namen des *Mondes*) Med. Viçva a. a. O. — *c)* ein N. Vishṇu's AK. 1,1,4,17. 3,4,28,102. H. 216. H. an. Med. Viçva a. a. O. — *d)* ein N. Brahman's Çabdar. im ÇKDa. — *e) ein Rākshasa* (vgl. विधुर) Viçva a. a. O. — *f) Wind* Uṇādiv. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa. — *g)* = घायुघ m. ÇKDa. nach ders. Aut. *an expiatory oblation* Wilson. — *h)* N. pr. eines Fürsten (v. l. für विप्र) VP. 465, N. 9.

विधुकान्त m. Bez. *eines best. Tactes* Saṅgītaratnākara im ÇKDa. unter रूपकान्त im Suppl.

विधुति (von 1. धू mit वि) f. 1) *das Schütteln, Hinundherbewegen* Nigān. 51,4. वदन° Spr. 3033. Mālatīm. 1,8 (pl.). भुजविधुतिभिः Bhāg. P. 10,33,8. — 2) *Vertreibung, Entfernung* Bhāg. P. 4,22,38.

विधुदिन n. *ein lunarer Tag* Ganit. Grahiāṇ. 2. 17.

विधुनन (von 1. धू mit वि) n. = विधूनन Gaṇiān. im ÇKDa.

विधुंतुद (विधुम्, acc. von विधु *Mond* + तुद) P. 3,2,35. Vop. 26,35. m. Bez. Rāhu's AK. 1,1,2,28. H. 121. Halāy. 1,19. Spr. (II) 457. 1323. (I) 2848. Gīt. 4,5. Kāçikā. 59,33 (nach Aufrecht).

विधुयज्ञार m. *Schwert* Çabdam. im ÇKDa.

विधुमास m. *ein lunarer Monat* Ganit. Bhāgaṇiān. 13.

विधुर 1) adj. (f. धा) a) *der Deichsel beraubt* (oder überh. *mitgenommen, beschädigt*): रथ MBn. 6,1890. — *b) allein stehend*, insbes. vom *geliebten Gegenstande getrennt* Megh. 113. Kumāras. 4,32. Vikr. 102. Gīt. 7,2. Naish. 3,50. Rāga-Tar. 8,636. अविधुरो भवति als Erkl. von मिथुनीभवति Çāṅk. zu Kaṭh. Up. 2,13,2. — *c)* am Ende eines comp. *frei von, ermangelnd:* कलङ्क° Verz. d. Oxf. H. 130,b,28. सर्वावधारण° Prab. 20,13. द्रविण° Bhāg. P. 5,8,20. प्रियार्थ° 14,15. 6,16,36. व्याधिशोभयविधोपाधिविधुरः संबन्धः Sarvadarçanas. 4,9. 17,1. 35,9. 17. 179,20. 180,1. Kusum. 32,7. यस्मद्विधुरा von *uns entfernt, — abgesondert* Kathās. 39,55. — *d) woran Etwas fehlt, mitgenommen, in einem kläglichen Zustande sich befindend;* = विकल Taik. 3,3,271. H. an. 3, 604. Med. r. 217. क्लेश विधुरयोर्वैः MBn. 7,6177. दुर्दाववह्निविधुराणि काननानि Spr. (II) 1059. वपुर्व्याध्याधिविधुरम् (I) 2847. यङ्गानि — घनङ्गतापविधुराणि Sin. D. 155,14. त्रपया विधुरं (= विलत Mallin.) वपुः Çiç. 9,77. स्वभेद° (मण्डल) Rāga-Tar. 2,7. तस्यो विधुरविच्छाया निशीथस्येव पद्मिनी Kathās. 16,48. गृहे विधुरस्थिति 2,48. विधुरायुस् Bhāg. P. 7,2,54. Kusum. 42,7. — *d) niedergedrückt, niedergeschlagen:* विरहविधुरा भार्या Megh. 8. Spr. (II) 987. (I) 1894. स्मरार्ति° Kathās. 17, 74. नैराश्य° 52,44. आक्रन्द° 56,27. 61,128 (wohl बन्ध° zu lesen). Spr. 1163, v. l. Uttarar. 60,5 (78,1). Rāga-Tar. 8,1210. हृदयमतिविधुरम् Gīt. 9,8. नैराश्यदुःखविधुरं (adv.) पश्यन्तीम् Kathās. 18,328. *freudig erregt:* मधुरमधुविधुरमधुप Spr. 3224. — *e) widerwärtig, widrig, ungünstig:* विधुरं ब्रुवन् so v. a. *Unfreundliches, Unangenehmes* Kathās. 33,33. दृशः — व्यसनशतसंपातविधुराः Spr. (II) 284. विधि, दैव, विधातृ 423. (I) 923 (die ed. Bomb. des Pañcat. bestätigt unsere Vermuthung). 1072. Kathās. 29,196. 74,104. 123,339. Rāga-Tar. 8,1592. 1771. Pañcat. 42, 13. n. *Widerwärtigkeit, Ungemach;* = कष्ट und प्रत्यवाय Vaiç. bei Mallin. zu Kir. 2,7. = प्रत्यवाय Halāy. 5,38. विधुरं किमतः परम् Kir. 2,7. विधुरे ऽप्यस्मिन् Kathās. 21,101. °वार्तास्तगत 26,145. Hit. 50,8. विधुरेषु Spr. 925. Kathās. 103,139. — 2) m. *ein Rākshasa* (vgl. 2. विधु) H. ç. 36. — 3) f. धा *a) geklärte Milch mit Zucker und Gewürz* (रसाला) H. an. Med. — *b)* Bez. *zweier Gelenke* (स्नायुमर्मन्): द्वे विधुरे (was auch n. sein könnte) Suçr. 1,345,12. 17. — 4) n. *a) Widerwärtigkeit* s. m. 1) *e).* — *b)* = वैकल्य Taik. 3,3,271. — *c)* = विश्लेष Taik. Halāy. Vaiç. a. a. O. = प्रविश्लेष AK. 3,3,20. H. an. = परिश्लेष Med. — Für die erste Bed. des adj., wenn sie sich bewährte, müsste man eine Zusammensetzung von 2. वि mit धुर् annehmen; die übrigen Bedd. liessen sich auf 2. विध् zurückführen. Gegen diese Herleitung könnte aber die erst von uns erschlossene und den späteren Indern unbekannte Bedeutung von 2. विध्, das späte Erscheinen von विधुर und das adj. उद्धुर geltend gemacht werden. — Vgl. वैधुर्य.

विधुरता (von विधुर) f. 1) am Ende eines comp. *das Ermangeln, Nichtbesitzen:* शक्तिविधुरतया (so ist zu lesen) चिरमविरतक्लेशमनुभूतवान् Verz. d. Oxf. H. 109,b, No. 170. — 2) *Mangelhaftigkeit, kläglicher Zustand:* गतिषु Daçak. 72,11.

विधुरत्व n. = विधुरता 1) a): समस्तदुःखबीज° Sarvadarçanas. 74,5.

विधुरय् (von विधुर), °यति 1) vom *Geliebten trennen:* मामरुरु विधुरयति मधुरमधुयामिनी कापि रुचिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी Gīt. 7,6. विधुरिता (= विरहविकला Comm.) Kuval. 140,a. — 2) *sich widerwärtig zeigen:* लभ्यं मयो विधिविधुरितैर्नान्यतो न स्वतो ऽपि so v. a. *die bösen Streiche des Schicksals* Rāga-Tar. 8,1038.

विधुरीकर् (विधुर + 1. कर्) *niederschlagen, niederdrücken:* मानेनेव विशीर्णेन वाससा विधुरीकृता Kathās. 21,41. मातुश्च पाप्मभिर्विधुरीकृतः Rāǵa-Tar. 6,289.

विधुवन (von 1. धू mit वि) n. *das Schütteln, Hinundherbewegen* AK. 3,3,4. H. 1522.

विधूत 1) adj. s. u. 1. धू mit वि. — 2) n. *Zurückweisung, an den Tag gelegte Unlust* Bhar. Nāṭyaç. 19,59. कृतस्यानुनयस्यादौ विधूतं रूपरिग्रहः 76. विधूतं स्यादरतिः Daçar. 1,30. अनिष्टवस्तुवितेपो विधूतम् Pratāpar. 21,b,1. 32,a,6.

विधूनन (von 1. धू mit वि) n. 1) *das Schütteln, Hinundherbewegen* AK. 3,3,4. H. 1522. P. 7,3,35. शिरःकर° Sin. D. 142. महाह्वाम्भोधि° *das Wogen* Verz. d. Oxf. H. 116,b,1 v. u. — 2) *das Zurückweisen, Verschmähen:* रतेः Daçar. Comm. S. 23, Z. 5. शीतोपचार° Z. 3.

विधूप (2. वि + धूप) adj. *ohne Räucherwerk, wo nicht geräuchert wird:* सूतिकागृह Mān. P. 51,105.

विधूम (2. वि + धूम) 1) adj. (f. आ) *nicht rauchend:* Feuer Gaṇar. 1. MBh. 1,4111. 5220. 5,2945. R. 3,34,20. 4,33,31. 5,3,5. 49,23. 7,20,27. 42,3. Suçr. 1,114,10. Kathās. 28,77. अग्नेः शिखा R. 2,114,5 (123,5 Gorr.). विधूमे *wenn kein Rauch mehr* (aus der Küche) *zu sehen ist* M. 6,56. MBh. 14,1377. Mān. P. 41,6. — 2) m. N. pr. eines Vasu Kathās. 9,23.

विधूम (2. वि + धूम) adj. *ganz grau:* तुरगरेणो° Bhāg. P. 1,9,34.

विधूरता Verz. d. Oxf. H. 109,b, No. 170 *fehlerhaft für* विधुरता.

विधृति (von धृ mit वि) 1) f. *a) Sonderung, Scheidung; Scheidewand:* लोकानाम् AV. 4,35,1. 19,54,3. VS. 23,9. 37,12. अर्धनाम् TS. 1,5,11,3. दिशाम् 5,2,8,5. वाचः VS. 11,66. TS. 1,3,9,2. धर्मस्य Pāśup. Bh. 15,5,36. तत्रस्य विशस्य Çat. Br. 1,3,4,10. 3,2,2,6. Kāṭhaka-Up. 2,4,1. *das Entfernthalten:* पापवस्यसस्य TBr. 1,3,2,5. Pāśup. Bh. 7,5,2. Çat. Br. 18,3,2,9. 13,3,7,4. — *b)* du. Bez. *zweier Halme, welche eine Scheidewand zwischen* Barhis *und* Prastara *andeuten,* TBr. 3,7,6,7. Çat. Br. 1,3,4,10. 2,6,4,16. ऐतव्यौ विधृतौ 3,6,2,10. 4,4,18. Kāty. Çr. 8,1,14. — 2) m. *a)* N. eines Sattra Kāty. Çr. 24,2,28. Āçv. Çr. 11,5,2. Maç. in Verz. d. B. H. 74 (IX, 8). — *b)* N. pr. α) eines göttlichen Wesens: देवा वैधृतयो नाम विधृतेस्तनयाः Bhāg. P. 3,1,23. — β) eines Fürsten Bhāg. P. 9,12,3.

विधृष्टि (von धर्ष् mit वि) f. in einer Formel Çāṅkh. Çr. 8,24,13.

विधेय (von 1. धा mit वि) adj. 1) *zu verleihen, zu verschaffen:* धामौ (प्रज्ञानां) प्राणपरीप्सूनां विधेयमयं किं मे Bhāg. P. 8,7,38. — 2) *was vorgeschrieben —, angeordnet wird* Pāṇ. Gaṇ. 2,6. — 3) *festzusetzen, mit Bestimmtheit auszusagen, zu statuiren* Vaṭṭ. Bṛh. S. 93,49. Bṛh. 24 (22),1. 16. Kām. Nītis. 19,27. Sin. D. 374. 214,4. — 4) *zu verfertigen, zu construiren:* क्रान्तिवृत्तं गृहाङ्गम् Golādhy. 5,11. तत्रायतसमूत्रेखा शीर्षाभिधाना विधेया: so v. l. *zu ziehen* 11,9. *zurechtzumachen:* तत्रया किमपि पाथेयं मम योग्यं विधेयम् Pañcat. 183,20. *zu vollbringen, zu machen, zu thun:* किमत्र विधेयमन्यत् *was ist hierbei Anderes zu thun?* Spr. (II) 1937. किमधुना मया विधेयम् Pañcat. ed. orn. 56,12. Çik. 29, 21, v. l. Hit. 41,15. 58,4. 101,18. तथ्ययायं विनश्यति तन्मया विधातव्यम् 92,6. विधेयं यत्तत्त्वम् Spr. 2847. नृपस्तृणम् 3080. यदो न वा-

प्रणयिनां प्रणयो विधेयः *an den Tag zu legen* (II) 941. कुतो हि भीतिः सततं विधेया 1792. विश्वासलेश इह नैव बुधैर्विधेयः (I) 3102. कोपः Rāǵa-Tar. 6,225. यस्मिन्नात्मसंदेहे प्रवृत्तिर्न विधेया Hit. 10,11. वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयः *mit wem soll man nicht wohnen und Umgang haben?* Prāçnottarāh. 17. विधेय n. *das zu Thuende, Obliegenheit:* पातालं कुर्या प्रातर्वो विधेयम् Rāǵa-Tar. 8,2139. °ज्ञ Spr. 3221. — 3) *aufzustellen:* गृह्याणि च प्रवेश्यान्तर्विधेयः स्याद्धुताशनः MBh. 12,2644. — 4) *fügsam, lenksam, sich in Jmdes* (gen.) *Willen fügend, abhängig von* AK. 3, 1,24. H. 432. MBh. 5,697. 878. 5051. Harīv. 8731. R. 2,30,9. 55,25. 4, 14,23. 6,98,28. Spr. (II) 2141. Vaṭṭ. Bṛh. 17,5. तस्य राज्ञः परमविधेयाः (परमं विधेयं विधेयं कार्यं येषां ते प° Comm.) *sich ganz in seinen Willen fügend* Daçar. 3,6. विधेयात्मन् Bhag. 2,64. स्त्री° R. 4,14,23. कृपाः, इन्द्रियाणि MBh. 5,4336. 1154. Kir. 11,33. स्त्री° *in der Gewalt des Weibes stehend, von ihr abhängig* R. Gorr. 2,22,8. 50,9. 6,82,118. Upala zu Vaṭṭ. Bṛh. 18 (16),5. स्त्रीविधेयनवयौवन Ragh. 19,4. भृत्यविधेयधी Rāǵa-Tar. 8,852. विटवन्द्यादिचाटुकारविधेयधी 5,331. आज्ञा° *den Befehlen gehorsam* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28,5. निद्रा° *in der Gewalt von — stehend, übermannt von* Ragh. 7,59. करुणाविधेयचेतस् Prab. 25,18. त्रया° Rāǵa-Tar. 8,768. — Vgl. तवा° (besser wohl तया विधेयानाम् zu trennen und विधेय in der Bed. *fügsam* aufzufassen), पञ्च°, वारिविधेय.

विधेयता f. nom. abstr. 1) zu विधेय 2) *das Vorgeschriebensein, Gebotensein;* Gegens. निषिद्धता Prāyaçcitt. im ÇKDa. — 2) zu विधेय 6): अविधेयेन्द्रियः पुंसो गौरिवेति विधेयताम् Kir. 11,33. स्तनपरीरम्भारम्भे विधेहि विधेयताम् Gīt. 10,10. निन्ये °ताम् Rāǵa-Tar. 3,417. निन्यिरे दीर्घनिद्राविधेयताम् 1,55.

विधेयत्व n. 1) *Brauchbarkeit, Anwendbarkeit:* धनुषश्चाविधेयत्वात् *und weil der Bogen nicht gebraucht werden konnte* MBh. 16,241. — 2) nom. abstr. zu विधेय 3) Sin. D. 214,11. — 3) nom. abstr. zu विधेय 6): मन्मथस्य शराणां च विधेयत्वं गमिष्यसि *du wirst in die Gewalt der Pfeile des Liebesgottes gelangen, wirst ihnen erliegen* R. 3,38,19.

विधेयिता f. Kām. Nītis. 19,7 *fehlerhaft für* विधेयता in der 2ten Bed.

विधेयीकर् (विधेय + 1. कर्) adj. *in Jmdes Gewalt bringen, abhängig machen:* °कृत Mālatīm. 16,14.

विधेयीभू (विधेय + 1. भू) *sich fügen in:* आज्ञाप्रवणविधेयीभूय Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,17.

विध्मापन (vom caus. von ध्मा mit वि) adj. *zerstreuend:* स्तम्भसंघातबन्ध° Viṣṇ. 10,12.

विध्य (von व्यध्) adj. *zu durchbohren, zu erschiessen:* घ° MBh. 16,96.

विध्यपराध (1. विधि + घ°) m. *Verfehlung gegen die Regel* Āçv. Çr. 3,10,1. Çāṅkh. Çr. 3,19,1.

विध्यपाश्रय (1. विधि + अपा°) m. *das Halten an der Vorschrift, das genaue Beobachten der Vorschrift* Bhar. Nāṭyaç. 19,4.

विधेस (von धंस् mit वि) m. 1) *das Zusammenstürzen, Umfall:* प्राकारागार° MBh. 12,8392. प्रपदेवविप्रेकोद्वालपसभाः — भङ्क्ता विधंसमानीताः (तैः) Mārk. P. 14,65. — 2) *Verderben, Untergang, das Schadennehmen:* घतृता याति विधंसम् Spr. (II) 375, v. l. तेषां चकार विधंसम् (विघ्नं स die neuere Ausg.) Harīv. 8222. मुरारिविधंसकारिन् Verz. d.

Oxf. H. 57,b,4. सस्याम्बुदगामि° Varāh. Bṛh. S. 17,17. सस्यानामीतिभिः 5,34. दत्तयज्ञ° Buḍ. P. 4,3 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 8,a,24. व्याधि° so v. a. *das Weichen einer Krankheit* Suçr. 2,348,16. *ein erlittenes Unrecht* (= अपकार Mallin.) Kir. 3,16. so v. a. *das Entehrtwerden, Geschändetwerden* (eines Frauenzimmers). मद्विधंसाय Kathās. 13,141. नैतासामस्ति विधंसः 43,75. — Vgl. रोम°.

विधंसक (vom caus. von धंस् mit वि) nom. ag. *Schänder:* स्वसुः Kathās. 106,166.

विधंसन (wie oben) 1) nom. ag. *verderbend, vernichtend, zu Grunde richtend, verscheuchend:* शत्रु° R. 7,25,12. पक्ष° MBh. 13,906. दुःखौघ° Spr. 2046. प्रविलसत्तन्मान° Verz. d. Oxf. H. 129,a,3 v. u. — 2) n. *das Zerstören, Vernichten, Verderben, zu-Grunde-Richten:* वैत्य° R. 5,38 in der Unterschr. मधुवन° 60 in der Unterschr. शत्रूणाम् MBh. 3,17472. शत्रु° R. 3,28,9. 32 in der Unterschr. दत्तयज्ञ° Verz. d. Oxf. H. 12,b, 14. 75,b,19. fg. शक्तयशो° 79,a,3. 4. पापौघ° 244,a, No. 606. कर्मबन्ध° Buḍ. P. 5,9,3. °मुद्रा Vjutp. 106. *das Schänden, Entehren:* देवी° Kathās. 5,38. — Vgl. काल°, मद्य°.

विधंसिन् 1) adj. *a) zu Grunde gehend:* एकान्त° (पिण्ड) Rāgat. 2,7. — *b) verderbend, vernichtend, zu Grunde richtend:* वृषभासुर° Paṇḍar. 4, 1,32. भूतिकुलज्ञातिप्यातावनिपालगणाप° Varāh. Bṛh. S. 32,18. सस्यानाम् 8,16. स्वबान्धववधूवेधव्य° Spr. (II) 1624. 1721 (Conj.). *Schänder, Entehrer:* प्रगुद्धान्त° Kathās. 71,303. — 2) f. विधंसिनी Bez. *eines best. Zauberspruches* Kathās. 109,22. — Vgl. कोला°, क्षण° (in der ersten Bed. auch Spr. 941), तन°.

विधस्त s. u. धंस् mit वि; davon विधस्तता f. *das Entehrtsein:* भार्या-विधस्तता (अविधस्तता anzunehmen) Kathās. 73,77.

विन् Verbalwurzel in der Bed. von कान्ति zur Erklärung von वेन angenommen von Mahīdh. zu VS. 7,16.

विनंशिन् (von 1. नश् mit वि) adj. *verschwindend* (nach Mahīdh.) VS. 9,20. 18,28. व्यभिग v. l. in TS. — Vgl. वैनंशिन.

विनङ्मर्म m. du. *die Arme* nach Naigh. 2,4. अन्वस्मै द्यावेमभरद्विनङ्मसः RV. 9,72,3.

विनज्योतिस् Kathās. 72,301 wohl fehlerhaft für विनयज्योतिस्.

विनत 1) adj. s. u. नम् mit वि. In der Bed. *cerebral geworden* auch AV. Paipp. 4,32. — 2) m. *a) eine Ameisenart* Kāç. 116. — *b)* N. pr. α) eines Sohnes des Sudjumna VP. 350; vgl. विनताश्व und विनय. — β) eines Affen R. 4,31,29. 33,14. 39,37. 6,2,48. 75,64. — γ) einer Oertlichkeit an der Gomatī R. 2,71,16. könnte in dieser Bed. auch n. sein. — 3) f. आ *a)* sc. पिटका *ein best. Abscess bei Harnruhr* Wise 362. Suçr. 1,273,12. 18. Çiraṇ. Saṃh. 1,7,15. H. an. 3,300. Med. l. 157. — *b)* N. pr. α) proparox. der Mutter Suparṇa's (Garuḍa's, auch Aruṇa's u. s. w.), einer Tochter Daksha's und Gattin Kaçjapa's, H. an. Med. Hall. 1,119. Verz. d. B. H. No. 93. MBh. 1,1074. fgg. 2520. Hariv. 170. 224. 11521. 11536. 12447. 12469. R. 2,23,31. 3,20,32. Varāh. Bṛh. S. 48,37. Kathās. 22,181. fgg. 90, 97. fgg. VP. 122. 149. Buḍ. P. 6,6,31. fg. Mārk. P. 104,6. Verz. d. Oxf. H. 31,a,44. 70,b,30. °सूनु m. *der Sohn der* Vinatā d. i. Aruṇa, der Wagenlenker der Sonne, H. 102. — β) eines weiblichen Krankheitsdämons, = शकुनिग्रह MBh. 3,14480. — γ) einer Rākshasī R. 5,25,19. — Vgl. गो°, वैनतीय, वैनतेय.

विनतक (von विनत) m. N. pr. eines Berges Vjutp. 102.

विनताश्व m. N. pr. eines Sohnes des Sudjumna Hariv. 631. VP. 350, N. 6; vgl. विनत 2) *b)* α) und विनय 2) *c)*.

विनति (von नम् mit वि) f. *Verneigung:* गुरुषु Spr. 1891, v. l. Kṣemendra. 150. कृत° adj. Kathās. 45,103.

विनद् (von नद् mit वि) 1) m. *a) Geschrei* R. 4,12,24. — *b) Alstonia scholaris R. Br.* Çabdam. im ÇKDr. — 2) f. आ Bez. einer Çakti Paṇḍar. 3,2,6. — 3) f. ई (wohl 2. वि + नदी) N. pr. eines Flusses MBh. 6, 335 (VP. 183); v. l. वेनदी.

विनदिन् (wie oben) adj. *tosend, donnernd:* पयोधर MBh. 3,15811.

विनमन (von नम् mit वि) n. *das Zusammen-, Niederbeugen* (Gegens. उन्नमन) Suçr. 1,25,16. 84,13. 365,14.

विनम्र (2. वि + नम्र) adj. (f. आ) *sich neigend, gesenkt, herabhängend:* शाखाभुज Kumāras. 3,39. क्रोडाविनम्रवदना Kādamb. 3. 28. Varāh. Bṛh. S. 78,12. °कंधर Buḍ. P. 10,13,64. °भुजा Daçar. Comm. 77,3. °देवासुर-मौलि Verz. d. Oxf. H. 187,a, No. 427, Z. 3. *geneigt* so v. a. *gesenkten Hauptes* 116,b,3 v. u. Kathās. 28,40. 63,85. *unterwürfig, demüthig* 20,335.

विनम्रक (von विनम्र) n. = तगरपुष्प Rāgān. im ÇKDr.

विनय (von 1. नी mit वि) 1) adj. *entfernend* ṚV. 2,24,9. — 2) m. *a) Zucht, Erziehung, Unterweisung, Dressur;* = शिक्षा H. an. 3,507. Med. j. 104. = शास्त्रसंस्कार H. 432, Schol. — Spr. 2819. शास्त्रास्त्रविनयेषु Mālav. P. 20,5. न तस्य विनयः कृतः न तस्याधि° ed. Bomb. तस्य अविनयः न कृतः न नाशितः Nīlak.) so v. a. *man konnte ihn nicht eines Bessern belehren* MBh. 4,675. विनये चैव युक्ता वारणवाजिनाम् R. 2,1, 20. अज्ञानी प्रकृतिं वेत्ति विनयं चापि सर्वशः MBh. 4,218. — *b) Zucht* so v. a. *gutes —, gesittetes Benehmen, Anstand; bescheidenes Benehmen;* = वैनयिक P. 5,4,34. = प्रणति H. an. Med. धैर्यार्थे विनयः सदा Sin. D. 134. = इन्द्रियजय H. 432, Schol. — R. 1,9,62. R. Gorr. 1,1,28. 9,60. 53,1. 3,70,21. काङ्क्षते विनयः प्राप्तः 77,10. नयश्च विनयश्च 4,16, 28. 5,66,17. अभिनवसेवकविनयैः काश्चिदवञ्चितो नास्ति Spr. (II) 488. प्रथित° adj. (I) 2978. वनस्था अपि गृह्यानि विनयात्प्रतिपेदिरे 4621. Rāgat. 3,34. 6,79. Çiç. 28. 44. Mālav. 81. Varāh. Bṛh. S. 15,10. Bṛh. 13,1. Kathās. 17,56. 34,159. Rāja-Tar. 4,81. संपन्नो विनयेन R. 2,42,5. °संपन्न 1,1,25. विनयान्वित 52,10. च्युत° adj. Varāh. Bṛh. S. 104,63. गुरु-विनयवृत्ति *dem Lehrer u. s. w. gegenüber* Spr. (II) 1871. पित्रोश्च विनयात्: Çuk. in LA. (III) 35,11. 6. प्रज्ञानं विनयाधानात् Rāgat. 1,24. विनयावलोक Buḍ. P. 5,2,6. प्रबोधविनयौ Rāgat. 10,72. लक्ष्मीविनयौ Kathās. 25,171. °ज्ञ MBh. 12,2539. R. 2,37,1. 40,10. 84,11. विनयावनता स्थिता MBh. 3,2467. Kathās. 24,18. तेभ्यो ऽधिगच्छेद्विनयम् M. 7,39. विनयं समालम्बते Spr. 3168. नयश्च विनयं विना Çāṅg. 10,187. अकीर्तिं विनयो हन्ति Spr. (II) 28. निर्धनो विनयं याति 1020. कुलस्य विनयो विभूषणम् 1487. मदेन विनयो कृतः 1674. विद्या ददाति विनयम् (I) 2795. जितेन्द्रियत्वं विनयस्य कारणम् 972. ज्ञायते विनयः श्रुतात् 3038. सकलगुणभूषा च विनयः 4323. विनयं राजपुत्रेभ्यः शिक्षेत 5006. Am Ende eines adj. comp. f. आ 1675. विनयोपपन्न (आत्मा) *gut gezogen* Varāh. Bṛh. S. 93,12. अ° (s. auch bes.) *ungebührliches Benehmen:* °भवनम् (स्त्रीयम्) Spr. (II) 1038. (I) 1934. Varāh. Bṛh. S. 19,8. Kathās. 20,183. 27,

68. Sin. D. 181. द्रोहविनय Rîga-Tar. 6,247. adj. (f. या) *sich ungesittet betragend* Schol. zu Kap. 1, 66. Personificirt ist der Vinaja ein Sohn der Kriyâ VP. 35. Mân. P. 50,26. der Laggâ 27. Bei den Buddhisten ist विनय *die über die Disciplin handelnde Lehre* Burn. Intr. 37. fgg. — c) N. pr. eines Sohnes des Sudjumna (vgl. विनत und विनताश्व) Mân. P. 111,15. — 3) f. या *Sida cordifolia* H. an. Med. (wo बलायां st. कलायां zu lesen ist). Ratnam. 167. — Vgl. दुर्विनय, स° und unter मृगीशासक.

विनयकर्मन् n. *Unterweisung, Unterricht* Ragh. 10,30.

विनयनुद्रक Titel eines buddhistischen Werkes Wassiljew 18. 89. Târan. 294. °वस्तु Burnouf, Intr. 365.

विनयग्राहिन् adj. *lenkbar, fügsam* AK. 3,1,24.

विनयज्योतिस् m. N. pr. eines Muni Kathâs. 72,301 (विनयज्योतिस् gedr.).

विनयता f. = विनय 2) b) Spr. 4202.

विनयदेव m. N. pr. eines buddhistischen Lehrers Wassiljew 234.

विनयन (von 1. नी mit वि) 1) adj. *entfernend, verscheuchend:* तृष्णा° MBh. 15,35. यशस्म° Mahân. 53. — 2) n. *das Unterweisen, Unterrichten:* लिपिज्ञानवचनकौशलेषु Daçak. 60,13. — Vgl. मनो°.

विनयपत्र n. = विनयसूत्र Burn. Intr. 36. 539.

विनयपिटक bei den Buddhisten *der Korb* (d. i. *Sammlung*) *der über die Disciplin handelnden Schriften* Burn. Intr. 35. fg. 448.

विनयवत् (von विनय) 1) adj. *wohlgesittet:* सविनयवती भार्या Spr. (II) 691. — 2) f. °वती ein Frauenname Kathâs. 69,103. Daçak. 118,3. Pañkat. 129,3.

विनयवस्तु n. Titel einer Abtheilung der über Vinaja handelnden Bücher bei den Buddhisten Wassiljew 89.

विनयविभाषाशास्त्र n. Titel eines buddhistischen Werkes Hiouen-thsang 1,177. Vie de Hiouen-thsang 93.

विनयसूत्र n. bei den Buddhisten *das über die Disciplin handelnde Sûtra* Burn. Intr. 36. 38. 539.

विनयस्थ adj. *fügsam, lenkbar* H. 432.

विनयस्वामिनी f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 24,154.

विनयादित्य (विनय + या°) m. Bein. Gajâpîḍa's Rîga-Tar. 4,516. °पुर n. N. pr. einer von ihm gegründeten *Stadt* ebend.

विनयितृ (von 1. नी mit वि) nom. ag. etwa *Erzieher, Unterweiser:* Vishṇu MBh. 13,7004.

विनयिन् (von विनय) adj. *gesittet, sich gut —, bescheiden betragend* Kân. Nîtis. 1,63 (विनयं st. विनयी der Comm.). Spr. 3167, v. l. Verz. d. Oxf. H. 257,b,7. a. Rîga-Tar. 2, 84. Bhâg. P. 1,15,38 nach der Lesart der ed. Bomb. (विनियतम् st. विनयिनम् Burn.). Pañkat. 1,1,29.

विनर्दिन् (von नर्द् mit वि) adj. *brüllend*, Bez. einer Sâman-Sangweise Kâṭhân. Up. 2,22,1.

विनशन (von 1. नश् mit वि) n. *das Verschwinden:* सरस्वत्याः, सरस्वती° und mit Ergänzung des Flussnamens *der Ort, wo die Sarasvatî verschwindet*, Pañkav. Br. 25,10,1. Kâtj. Çr. 24,3,30. Liṭ. 10,15, 1. MBh. 3,10538. M. 2,21. MBh. 3,5052. 8090. 10694. 9,2113. fgg. Harîv. 9320. Bhâg. P. 1,9,1. 10,71,21. 79, 23. Verz. d. Oxf. H. 79,b, No. 136, Z. 9. H. 951. = कुरुक्षेत्र Taitt. 2,1,14.

विनश्वर् (wie eben) adj. *verschwindend, vergänglich* AK. 3,4,22,101. कलेवर Spr. 2160. Çatr. 3,3. फल Sarvadarçanas. 56,15. स° Spr. 3130. हियौ सैन्यं विननाश विनश्वरम् so v. a. *so dass es nicht mehr gesehen ward* Rîga-Tar. 6,247.

विनश्वरता (von विनश्वर्) f. *Vergänglichkeit* Sarvadarçanas. 98,9.

विनश्वरत्व n. dass. Sarvadarçanas. 81,22.

विनष्ट s. u. 1. नश् mit वि; विनष्टक s. बाल° (unter बालविनष्ट).

विनष्टतेजस् adj. *dessen Energie verschwunden ist, kraftlos* AV. 19,34,3.

विनष्टि (von 1. नश् mit वि) f. *Verlust:* मकृतौ Çat. Br. 14,7,2,15. Kenop. 13. सुहृद्विनष्टि Bhâg. P. 3,1,21.

विनस (2. वि + 2. नस्) adj. (f. या) *der Nase beraubt* Gaṭâdhn. im ÇKDr. Bhaṭṭ. 5,8.

विना praep. P. 5,2,27 (oxyt.). स्वरादि zu P. 1,1,37. *ohne, mit Ausnahme von, bis auf* (excl.) AK. 3,3,8. H. 1527. Nal. 7,32. Hall. 5, 90. mit acc. instr. und abl. P. 2,3,32. Vop. 5,7.10.21. 1) mit vorangehendem acc.: कार्यं कर्म विना दैवं स्थास्यति MBh. 13,317. पौरास्ते रा-घवं विना । शोकोपहतनिश्चेष्टा बभूवुर्हतचेतसः ॥ *ohne* Râma so v. a. *weil er nicht da war* R. 2,47,1. 1,19,22. 5,26,25. Çiç. 146, v. l. Spr. (II) 667. 1710. (I) 1439. न विश्रामं विना शत्रुर्देवानामपि सिध्यति 1468. 2614. 2821. स्वज्ञातीयं विना वैरी न जय्यः 3325. 4148. Pañkat. 230,5. Çiç. in L.A. (III) 35,15. 38,2. H. 529. Sarvadarçanas. 81,11. आरण्यानां च सर्वेषां मृ-गाणां माहिषं विना । स्त्रीलिंगं चैव वर्ज्यानि *mit Ausnahme von* M. 5,9. स्वस्ति स्यादपि वैदेह्या रक्षोभ्यो रक्षणं विना R. 3,64,4. सेवावृत्तिविदो चैव नाभ्यः पार्थिवं विना Spr. 2799. Vaṇîn. Bṛh. S. 3,6. 48,32. स्थानं विनात्यम् 77,22. Bhâg. P. 4,24,55. H. 946. P. 1,1,30, Schol. त्वयापि कर्तव्यो नामतोयो युधं विना *so v. a. wenn es nicht zum Kampfe kommt* Kathâs. 27,144. प्रशान्तम् । विनोपसर्पत्यपरम् *so v. a. einen Andern als* Bhâg. P. 6,9,21. तान्प्रदेशमात्रं विना परिलिखन्ति *bis auf die Entfernung eines Pr., so dass der Zwischenraum eines Pr. bleibt* Çat. Br. 3,3,4,5. — 2) mit folgendem acc. AV. 20,136,13 (Conj.). विनान्योऽन्यं न भु-ञ्जाते MBh. 1,7623. काकः सर्वरसान्भुङ्क्ते विनामेध्यं न तृप्यति Spr. 1458. 2315. 2818. 2821. Vaṇîn. Bṛh. S. 95, 46. Hit. 1, 40. Bhâg. P. 3,29,13. 31,15. विना नारायणं देवं सर्वे *alle mit Ausnahme von* MBh. 1,1141. वां वृणीघ्वं विनास्य श्रीवितम् 3,16773. 4,533. विना मलयमन्यत्र चन्दनं न विवर्धते Spr. 2615. विना वज्रमणिं मुक्तामणिर्भेयः कथं भवेत् 3325. सर्वं तत्समवर्णयत् — विना षड्कुलतयम् Bhâg. P. 1,13,11. — 3) mit vorangehendem instr. MBh. 1,6141. R. 1,9,22. 2,52,50. Spr. 1541. 2021. 2315. 2330. 3053. Ragh. 1,22. Vikr. 10. AK. 2,6,4,11. Vaṇîn. Bṛh. S. 54,37. Sarvadarçanas. 81,9. वृद्धापि विना Ragh. 2,14. वैदेह्या तं विना-गतम् R. 3,65,1. न दर्शनं विना भ्राहमाक्लान्तेर्हृदन्मनः *mit Ausnahme von* M. 3,282. Jâṭ. 2,25. इमं नान्यो मया विना वेत्ति *kein Anderer als ich* Kathâs. 5,25. न कोऽपि विना चौरं घातयेद्धार्मिको नृपः *so v. a. wenn nicht das Geraubte da ist* M. 9,270. ज्ञातयो वा हरेयुस्तद्गतास्तैर्विना नृपः *wenn diese nicht da sind* Jâṭ. 2,264. — 4) mit folgendem instr. M. 11,202. MBh. 1,6152. Siṃhâs. 41. 52. Spr. 1630 (II). 1458. 1460. 1933. 2819. fg. Çiç. 146. Vaṇîn. Bṛh. S. 28,7. 46,42. 49,8. 54,93. H. 412. Bhâg. P. 6,13,1. विना वा तैः M. 4,252. विनाप्यर्थैः Spr. 2822. विना तु तैः H. 1115. न विना पार्थिवो भृत्यैः Spr. 1459. न तदस्ति विना य-

त्स्यान्मया भूतं चराचरम् Bhag. 10, 39. — 5) mit vorangehendem abl. Varāh. Bṛh. 93, 5. स्थाणवादिभ्यो यथा विना क्रिया Siddhānta. 42. — 6) mit folgendem abl. Varāh. Bṛh. S. 44, 17. 74, 2. Bhāg. P. 6, 12, 11. विनाप्यस्मत् Çiç. 2, 9. लाभो ऽभ्यधिको भोगादिना पूर्वक्रमागतात् *Erwerb gilt mehr als Genuss, ausser wenn dieser schon von den Vorfahren stammt* (Stenzler) Jiṅ. 2, 27. न च लाभादिना सतः *bevor dieses geschehen ist* M. 4, 82. — 7) mit der Ergänzung componirt: सत्य°, गति° u. s. w. Spr. 2614. Subhāṣ. 135, 26. — 8) als adv. und ausserdem überflüssig: न तदस्ति विना देव यत्ते विरचितं दृशे *es giebt Nichts, wobei du nicht wärest*, Harīv. 14966.

विनाकृ (विना + कृ) *trennen von, berauben;* °कृत *getrennt von, beraubt, gekommen um, ermangelnd;* = विरचित Taitt. 3, 1, 19. Hir. 206. die Ergänzung im instr.: भृत्यैः MBh. 4, 322. R. 2, 53, 8 (10 Gorr.). 103, 11. R. Gorr. 2, 17, 40. 5, 21, 17. 26, 5. 34. Kām. Nītis. 13, 88. Kumāras. 4, 21. Kathās. 13, 122. 32, 271. मुखैः R. 3, 19, 3. चेतनेन 7, 55, 20. Varāh. Bṛh. S. 104, 1. भुक्तिरागमेन विनाकृता Jiṅ. 2, 29. im abl.: न ते ऽपवर्गः सुकृताद्विनाकृतः (Nīlak. verbindet विना mit सुकृतात् und erklärt कृत durch निष्पादित) MBh. 3, 16709. im comp. vorangehend: पतिराज्य° MBh. 3, 2398. 2356. 2867. 16459. 16800. R. 2, 53, 15 (17 Gorr.). 4, 61, 27. 5, 16, 19. Varāh. Bṛh. S. 19, 19. Kathās. 16, 45. 35, 35. तृप्तिपामा° *frei von* 29, 125. ohne Ergänzung *allein stehend* R. 5, 31, 38.

विनाकृति (von विनाकृ) f. *Ausschliessung:* °कृत्या so v. a. विना *ohne*, mit instr. Spr. (II) 1360 (Conj.).

विनाट m. *Schlauch* Śat. Br. 5, 3, 2, 6. Kātj. Çr. 15, 3, 42.

विनाटिका f. *ein best. Zeitmaass*, = $^1/_{60}$ Nāḍikā Weber, Gjot. 105. fg. Z. d. d. m. G. 9, 667. fg. Mit. 145, 3.

विनाटी f. dass. Weber, Gjot. 106. Z. d. d. m. G. 9, 667. fg. Journ. of the Am. Or. S. 6, 149. Mit. 145, 4. Varāh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 3.

विनाथ (2. वि + नाथ) adj. (f. आ) *des Beschützers beraubt* R. 5, 35, 45.

विनादिन् (von नद् mit वि) adj. *aufschreiend:* हाहाकार° MBh. 9, 1636.

विनाभव (वि° + भव) m. *das Getrenntsein, Trennung von:* अप्रियैः सद्भिः संवासः प्रियैश्चापि विनाभवः Spr. (II) 476. R. 2, 94, 3 (विनाभवः zu schreiben). ध्रुवो ह्येषां विनाभवः 103, 23. रामस्य विनाभवम् वैदेह्या 7, 50, 4.

विनाभाव (von विनाभू) m. अ° *Unzertrennlichkeit, Zusammengehörigkeit* Sāh. D. 13, 1. Sarvadarçanas. 4, 14. धूमधूमध्वजयोः 21. 5, 14. 7, 6. fgg. Comm. zu Nyāyas. 2, 2, 2. Z. d. d. m. G. 7, 307. Verz. d. Oxf. H. 18, *a*, 38. विनाभावम् absol. s. u. विनाभू.

विनाभाविन् (wie eben) adj. अ° *unzertrennlich* Comm. zu Nyāyas. 2, 2, 1. Davon अविनाभाविन् m. nom. abstr. Schol. zu Kāp. 1, 112.

विनाभाव्य (wie eben) adj. अ° *unzertrennlich, nicht ohne etwas Anderes anzuwenden* Weber, Rāmat. Up. 292.

विनाभू (विना + 1. भू) *getrennt werden:* °भूय (auch विना भूत्वा), °भावम् (absol.) P. 3, 4, 62, Schol. °भूत *getrennt von* (instr.), *beraubt* MBh. 3, 3092. R. 3, 79, 20. चेतनेन 7, 55, 17.

विनाम (von नम् mit वि) f. = नति *Umbeugung eines dentalen Lautes in einen cerebralen* VS. Prāt. 4, 130. AV. Prāt. 4, 34. 114. P. 8, 2, 16, Vārtt. 1.

विनायक (von 1. नी mit वि) 1) m. *a) Führer, Lenker:* राजेव कर्ता भूतानां राजा चैव विनायकः (विनाशकः MBh. 12, 3411) । राजा मनुष्येषु यमर्ति राजा पालयति प्रजाः ॥ R. 7, 59, 2. 4. MBh. 13, 7135. गणेश्वरविनायकाः 7103. = गुरु *Lehrer* Taitt. 3, 3, 41. H. an. 4, 82. fg. Med. k. 212. — *b)* Bein. Gaṇeça's, *des Entferners der Hindernisse*, AK. 1, 1, 1, 33. H. 207. H. an. Med. Hall. 1, 18. Jiṅ. 1, 270. Atharvāç. Up. bei Mitra, ST. 4, 298. Varāh. Bṛh. S. 46, 12. Kathās. 20, 55. 39, 139. 50, 147. 179. 51, 1. 70, 125. Rāja-Tar. 3, 252. Vet. in LA. (III) 1, 3. Verz. d. B. H. No. 1127. 1254. 1275. fg. Verz. d. Oxf. H. 36, *a*, No. 78. 45, *a*, 7. 46, *a*, 44. 78, *b*, 6. 14. 36. 277, *a*, 6. Sāh. K. 124. — *c)* pl. Bez. einer Klasse von Dämonen: रात्रयः, पिशाचाः, भूताः, विनायकाः MBh. 12, 10477. Harīv. 10697 (विघ्नानि st. भूतानि die neuere Ausg.). Varāh. Bṛh. S. 39, 9. Wassiljew 193. प्रेतभूतविनायकाः Bhāg. P. 2, 10, 38. विचरन्ति निर्भया विनायकानीकपमूर्धसु 10, 2, 33. विनायकाः विघ्नहेतवः तेषामनीकानि स्तोमास्तानि पान्ति Comm. Vgl. Verz. d. Oxf. H. 79, *a*, 33, wo von 56 Vināyaka's d. i. Gaṇeça's die Rede geht. — *d)* pl. Bez. gewisser über Waffen gesprochener Sprüche R. Gorr. 1, 31, 11. — *e) ein* Buddha AK. 1, 1, 1, 9. 3, 4, 1, 6. Trik. H. 234. H. an. Med. — *f)* Bein. Garuḍa's Trik. H. an. Med. — *g) Hinderniss* Taitt. H. an. Med. — *h)* = घनाघ (?) Taitt. — *i)* N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. II, 174. Verz. d. B. H. No. 53 (S. 12). 109. Verz. d. Oxf. H. 130, *b*, No. 320. 134, *a*, No. 249. °पण्डित 124, *b*, 43. 293, *b*, No. 717. Verz. d. B. H. No. 1092. °भट्ट 80. fg. Verz. d. Oxf. H. 134, *a*, No. 249. — *k)* N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 17. — 2) विनायिका f. Gaṇeça's *Gattin* Çāradān. im ÇKDa. — Vgl. भूत°, लोक°, विघ्न°.

विनायकचतुर्थी Bez. *eines best. vierten Tages*, eines Festes zu Ehren Gaṇeça's, Verz. d. B. H. 135, *a*, 1. अविघ्न° st. dessen Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 35.

विनायकशयनचतुर्थी f. Bez. *eines best. vierten Tages, an welchem Gaṇeça's Bild gebadet wird*, Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 34 (Verz. d. B. H. 134, *b*, 1 v. u.).

विनायिन् (von 1. नी mit वि) adj. P. 3, 2, 78, Schol. — Vgl. अ°.

विनारुका f. *eine best. Pflanze*, = त्रिपर्णिका Rāǵān. im ÇKDa.

विनाल (2. वि + नाल) adj. *des Stengels beraubt:* नलिन MBh. 7, 1567. 8, 615.

विनाश (von 1. नश् mit वि) m. *das Verlorengehen, Verschwinden, Aufhören, Verlust, Vernichtung, Untergang* AK. 3, 3, 22. TS. Prāt. 1, 87. मतिप्रणाशः Vikr. 85. Bhāg. P. 4, 22, 27. तस्य (धर्मस्य) नाशे विनाशे वा MBh. 3, 1299. Jiṅ. 2, 165. मम सर्वविनाशाय R. Gorr. 1, 77, 11. धर्म° Varāh. Bṛh. S. 3, 21. 53, 90. Kathās. 19, 14. Spr. 1297. Pañkat. 145, 18. बीज° Varāh. Bṛh. S. 5, 24. वृष्टि° 17, 4. तीर्थ° 23. धन° 47, 12. नरपतिदेश° 46, 82. कर्मणाम् Spr. 3146. तदावरण° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 35. बुद्धि° Hit. 55, 6. दुष्टाचार° L.A. (III) 87, 15. अपमृत्यु° Pañkat. 187, 7. दोष° Dhūrtas. 90, 10. तं यस्तु द्वेष्टि संमोहात् — तस्य क्षिप्रं विनाशाय राजा प्रकुरुते मनः M. 7, 12. MBh. 1, 6182. 3, 12193. Kap. 1, 44. Sāṅkh. 1, 365, 10. R. 1, 3, 34. 41, 4. 2, 40, 9. Spr. 2631. 5258. Milav. 8, 14. Kathās. 30, 125. Bhāg. P. 3, 6, 30. 14, 7. Mārk. P. 112, 12. Vet. in LA. (III) 19, 20. Pañkat. 175, 3. Gegens. संभूति Īçop. 14. संभव Bhāg. P. 7, 2, 26. उत्पत्ति Kap. 2, 22. स्थित्युत्पत्तिविनाशहेतु Sāṅkh. 1, 194, 17. 249, 12. पुरस्याविनाशाय MBh. 5, 7470. उपस्थितविनाशा (वसुंधरा) 4078. विनाशमेवा-

पीतो भवति Kâṭhaka-Up. 8,11,1. विनाशं व्रजति M. 3,179. 4,71. 8,346. व्यगमत् Verz. d. Oxf. H. 54,b,30. एष्यसि Pañcat. 162,12. यास्ति R. 2,44, 13. उपयास्यति 48,22. R. Gorr. 2,69,7. Pañcat. 184,19. अभ्येति Spr. (II) 1532. अवाप्स्यति Mârk. P. 16,30. कर्तुम् Bhâg. 2,17. Varâh. Bṛh. S. 4,27. निन्ये 43,7. दासीगर्भविनाशकृत् Jâṭ. 2,236. वाक्प्रयोक्तानेत्रभक्षिय-विनाशे वाचिके so v. a. *Verletzung* 208. विनाशोन्मुख so v. a. *reif* AK. 3,2,41. — Vgl. ज्ञगद्विनाश.

विनाशक (vom caus. von 1. नश् mit वि) adj. *verschwinden machend, vernichtend, zu Grunde richtend* P. 3,2,146. रात्रेर्वं कर्ता भूतानां रात्रेव च विनाशकः (विनायकः R. 7,59,2,4) । धर्मात्मा यः स कर्ता स्याद्धर्मात्मा विनाशकः ॥ MBh. 12,2411. लोक° R. 5,51,14. मूलाविद्या° Pañcar. 4, 3,54. मत्स्यस्य सिद्धस्य Ver. in LA. (III) 3,15. Sarvadarçanas. 108,18. वृत्तादि° (अशनि) Kull. zu M. 1,38. als Erklärung von भेदक 9,280. 285. Vielleicht fehlerhaft für विनायक 1) c) in der Stelle: चतुर्थं वायुमार्गं तु शीघ्रं गत्वा परंतप । वसति यत्र नित्यस्था भूताश्च सविनाशकाः R. 7,23,4,6.

विनाशन (wie eben) 1) adj. (f. ई) dass.: चन्द्रस्य (राहु) MBh. 1,2674. शत्रूणाम् Harîv. 1944. स्त्रियः Spr. (II) 750. मायानाम् Bhâg. P. 3,19,22. परव्यूह° MBh. 3,2430. 12288. 4,864. 8,4207. Harîv. 8469. R. 3,31,48. आत्मवंश° 3,87,24. Gîv. 1,20. Pañcar. 4,1,34. लोकाद्भय° Spr. 1542. स्वर्गकीर्तिलोक° Jâṭ. 1,356. शोकदुःख° MBh. 1,7559. 3,15529. 4,1119. बलदर्प° R. Gorr. 1,77,12. 5,82,9. 84,12. 6,79,20. कृत्याव्याधि° Suçr. 1,17,20. 64,19. 189,3. Bhâg. P. 3,22,22. 4,30,22. Pañcar. 2,1,8. 3,6, 10. 4,3,175. Verz. d. Oxf. H. 62,a,15. — 2) m. N. pr. eines Asura, eines Sohnes der Kâlâ, MBh. 1,2543. — 3) n. *das Verschwindenmachen, Verscheuchen, Vernichten, zu-Grunde-Richten:* भयस्य Kathâs. 46, 146. क्षाण्डवस्य MBh. 1,8305. बालस्य 13,63. R. 1,21,10. 2,71,32. 74, 4. R. Gorr. 1,4,91. 7,102,4. सर्प° MBh. 1,1204. प्राण° 5,7174. लोक° Harîv. 10627. Kâm. Nîtis. 10,4. R. 7,103,9. Mârk. P. 21,96. वेद° Verz. d. Oxf. H. 54,a, No. 104, Z. 10. उन्मूल° *mit der Wurzel* Prab. 69,18. बन्ध° (so die ed. Bomb.) *Gefangenmachung und Vernichtung* MBh. 12, 4207. — Vgl. चित्त°, पाप°, पित्त°, मूल°.

1. विनाशान्त (विनाश + अन्त) m. *Tod* MBh. 12,12332. Spr. (II) 315.

2. विनाशान्त (wie eben) adj. *mit Verlust endend:* संयोग Spr. 3113.

विनाशित्व (von विनाशिन्) n. *Vergänglichkeit* Kuṭṭan. 48,14. Wilson, Sânkhjak. S. 42. Comm. zu Kap. 1,44. धै° Çat. Br. 14,7,1,23. fgg.

विनाशिन् (von 1. नश् mit वि und von विनाश) adj. 1) *verschwindend, zu Grunde gehend, vergänglich:* उत्पत्त्यनन्तरम् (विगुण) P. 5,1,114, Schol. मात्राः M. 1,27. MBh. 12,7301. Spr. 1443 (II). 3216. Varâh. Bṛh. S. 11, 42. Mârk. P. 46,29. Sarvadarçanas. 111,19. अश्व श्वो वा Spr. (II) 944. प्रतिक्षण° 233. क्षण° Kathâs. 72,130. अविनाशिन् Çat. Br. 14,7,1,15. Bhâg. 2,17. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 328. Verz. d. Oxf. H. 62,a,4. Pañcar. 1,8,32. — 2) *verderbend, vernichtend, zu Grunde richtend:* अन्योऽन्यं च विनाशिनौ MBh. 12,3967. कुलस्य R. Gorr. 2,9,38. नृपस्य Kathâs. 29,55. कथामिमाम् — क्षाण्डवस्य विनाशिनीम् so v. a. *vom Untergang handelnd* MBh. 1,8097. Gewöhnlich in comp. mit dem obj.: परानीक° MBh. 6,3535. 7,3423. 12,3927. Harîv. 9424. शोक° MBh. 3,2459. रोगारोग्यसुभिक्ष° Varâh. Bṛh. S. 4,27. कार्य° Spr. (II) 186. आत्मस्मृति° Bhâg. P. 3,4,12. 10,58,16. Pañcar. 1,7,39. Verz. d. Oxf. H. 260,b, No. 629. Kull. zu M. 8,352. — Vgl. मलविनाशिनी.

विनाश्य (vom caus. von 1. नश् mit वि) adj. *zu verderben, zu vernichten, zu Grunde zu richten:* यदि नाके विनाश्यस्ते MBh. 12,6604. Kathâs. 5,119. Kuṭṭan. 48,13. fg. विवादाध्यासितानि ज्ञानानि उत्तरोत्तर-कार्यविनाश्यानि Sarvadarçanas. 108,12. fg. स्व° MBh. 15,926. Schol. zu Kâtj. 2,245.

विनाश्यत्व (von विनाश्य) n. *Vernichtbarkeit:* बुद्धेर्बुद्ध्यन्तरविनाश्यत्वे Sarvadarçanas. 108,12. संचितकर्मणामेव ज्ञानविनाश्यत्वागमात् Nîlak. 31.

विनासक (von 2. वि + नासा) 1) adj. *nasenlos* Gaṇiṇ. im ÇKDr. — 2) f. विनासिका *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,287,20.

विनासादृशन (2. वि + ना° - दृ°) adj. *der Nase und der Zähne beraubt* MBh. 7,1370. विनेमिदृशन ed. Bomb.

विनाक् m. = वीनाक् Çabdar. im ÇKDr.

विनिकर्तव्य (von 1. कर्त् mit विनि) adj. *zu zerhauen, niederzumetzeln:* नामित्रो विनिकर्तव्यो नातिच्छेद्यः कथं च न MBh. 12,3571. Nîlak. führt das Wort auf 1. कृ mit विनि zurück: निकृत्या वञ्चयितव्यः.

विनिकार (von 1. कृ mit विनि) m. *Beleidigung, Kränkung* MBh. 7,685.

विनिकृत्तन (von 1. कर्त् mit विनि) adj. *zerhauend, niedermachend:* मुरारि° (धनुस्) MBh. 3,14319.

विनिक्षण (von निक्ष् mit वि) n. *das Durchbohren* Nir. 4,18.

विनिक्षेप्य (von 1. क्षिप् mit विनि) adj. *zu werfen in* (loc.): अम्भसि Spr. 1268.

विनिगड (2. वि + नि°) adj. *von Fussketten befreit:* विनिगडीकृत Daçak. 89,17.

विनिगमक (vom caus. von 1. गम् mit विनि) adj. *eine Alternative entscheidend, für den einen oder andern Fall den Ausschlag gebend* Schol. zu Kâv. 1,38. Kuṭṭan. 37,8.

विनिगमना (wie eben) f. *das Entscheiden einer Alternative, das Ausschlaggeben für den einen oder andern Fall* Dâjabh. im ÇKDr. (Nachträge).

विनिगूहितृ (von 1. गुह् mit विनि) nom. ag. *Verheimlicher, Geheimhalter:* रहस्य° Spr. 4253.

विनिग्रह (von ग्रह् mit विनि) m. 1) *das Getrennthalten, Trennung* Nir. 1,2. 5. 7. — 2) *das Niederhalten, Zurückhalten, Verhalten, Einhalten; einer Person:* भवतः (subj.) Bhâg. P. 3,22,3. पितुः (obj.) R. Gorr. 2,20,46. द्विषताम् 5,43,5. MBh. 3,17460. 15011. 5,2234. अरि° 3,17464. 8,1518. Harîv. 2577. आत्म° Bhâg. 13,7. 17,16. पञ्चवर्ग° MBh. 12,2600. प्राण° Verz. d. Oxf. H. 237,a, No. 568. वृष्टेः Varâh. Bṛh. S. 4,12. मूत्र° Suçr. 2,514,4. निश्वास° s. वेग° 304,17. लोभस्य क्रोधस्य च MBh. 3, 13987. 12,6938. पाप° M. 9,263. यौवराज्याभिषेकस्य R. Gorr. 2,19,12. — 3) *Restriction, Einschränkung*, als Bed. von एव Mîm. 3vj. 77. von मात्र 88.

विनियाक्ष (wie eben) adj. *niederzuhalten, zurückzuhalten:* द्विषाः, वृषभाः MBh. 4,33. बाहुभ्याम् 12,1139.

विनिघ्न adj. = घ्न, निघ्न *multiplicirt* Ganit. Sparshâdhik. 68. Grahajuddh. 1.

विनिद्र (2. वि + निद्रा) 1) adj. (f. द्रा) a) *frei von Schlaf, wach, nicht schlafend* MBh. 3,16399. 16814. 10,146. 12,10444. Ragu. 5,66. Spr. 1559. चित्ता° Kathâs. 20,32. 43,66. 45,200. 64,48. 71,96. 119. Bhâg. P. 3,27,14. 7,4,22. Pañcar. 4,3,148. °करण MBh. 1,8695. *im wachen*

Zustande geschehend: सुस्पष्टो विनिद्रो ऽनुभवो हि मे Kathâs. 81, 61. — 2) *aufgeblüht* H. 1129. कुमाल्ल Harîv. 15771. Kumâras. 5, 80. Spr. 1600. Khandom. 103. Verz. d. Oxf. H. 187, *b*, No. 428, 3. Paṅkar. 3, 5, 3. *geöffnet* von Augen: यतो विनिद्रे सरसा विलोचने कोरामि न Vikr. 132. — 2) m. Bez. eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches R. 1, 30, 6.

विनिद्रक (von विनिद्र) adj. *wach, erwacht:* सुप्त° Kathâs. 106, 36.

विनिद्रत्व (wie eben) n. *das Wachsein* H. 319.

विनिद्रासु adj. Râga-Tar. 8, 2139 fehlerhaft für निद्रिद्रासु *schlafen wollend, schläfrig* vom desid. von 2. द्रा mit नि.

विनिनीषु (vom desid. von 1. नी mit वि) adj. *zu leiten —, zu ziehen beabsichtigend:* प्रजा: Ragu. 9, 23.

विनिन्द् (von निन्द् mit वि) 1) adj. *spottend* so v. a. *übertreffend* Paṅkar. 1, 3, 78. 14, 59. — 2) f. या *das Schmähen, Lästern:* महाद्विनिन्दा Bhâg. P. 4, 4, 13.

विनिन्दक (wie eben) adj. *verspottend:* वेद° Mâns. P. 10, 38. Verz. d. Oxf. H. 10, *a*, N. 4. *spottend* so v. a. *übertreffend* Git. 2, 6.

विनिपात (von 1. पत् mit वि) m. 1) *Fall, Sturz,* = निपात Mud. t. 218. = अवपात d. i. अवपात (ÇKDa. dagegen liest अवमान) H. an. 4, 126. in übertr. Bed. so v. a. *Unfall, Ungemach;* = दैवतो व्यसनम् H. an. = दैवादिव्यसन Mud. व्रतां वृक्षतां चैव विनिपातो न विद्यते M. 4, 146. MBh. 3, 231. 4, 622. नैकान्तविनिपातेन (= अत्यन्ताभिनिवेशेन Nîlak.) विचारेण कथा न 12, 2359. 8091. Çiç. 70, 1. 2. Mâlav. 69, 5. °गत Spr. 752 (II). 2932. Paṅkat. 92, 5. 203, 2. Kull. zu M. 4, 145. °प्रतिक्रिया Kathâs. 15, 113. °प्रतीकार Paṅkat. 92, 4. Hit. 119, 18. Kull. zu M. 7, 147 (विनिपात: falschlich). so v. a. *Tod* M. 8, 185. क्रोधो हि सर्वतपसो विनिपातहेतु: *das zu Schanden Werden* Spr. (II) 1977. — 2) *das Fehlgehen:* धर्मविनिपातं स्मृतिं च Çâṅkh. Gṛhj. 2, 10.

विनिपातक (vom caus. von 1. पत् mit वि) adj. *zu Schanden machend, vernichtend:* श्रेयसाम् (रोष:) MBh. 12, 13881.

विनिपातिन् (von 1. पत् mit वि) adj. *fehlgehend:* धर्मेषुविनिपातिन: Âpast. 2, 29, 5.

विनिवर्कण (von 1. वर्क् mit वि) adj. *niederschmetternd:* द्विषताम् MBh. 3, 879. मुरारि° 9, 2364. 2528. An der ersten und letzten Stelle विनिवर्कण, an der zweiten विनिर्वर्कण ed. Calc.

विनिवर्कृ (wie eben) adj. dass.: शत्रुमित्र° MBh. 3, 16091. विनिव° ed. Calc.

विनिमय (von 3. मा mit वि) m. 1) *Tausch, Vertauschung* H. 869. Hall. 2, 418. अविक्रितशेषेषां विनिमय: Âpast. 1, 20, 14. विनिमयं कृ MBh. 3, 17195. Kathâs. 73, 349. MBh. 13, 3465. 3466. Colebr. Alg. 38. Ragu. 1, 26. Mâlav. 51. Çiç. 7, 65. Kathâs. 80, 48. 50. Sin. D. 734. Bhâg. P. 1, 1, 1. 5, 26, 28. Kâç. zu P. 1, 2, 60. द्रव्य° Durvip. 31, 1 (°विनमय gedr.). कार्य° *Reciprocität* Mâlav. 9, 8. — 2) *Verpfändung* Mud. k. 128. Çabdam. im ÇKDa. विक्रयेण विनिमयेर्दत्ता गोर्मासलादके। व्रतं चान्द्रायणं कुर्याद्यदि सात्ताद्यदी भवेत् ॥ Gobhila in Prâyaçcittav. nach ÇKDa.

विनिमेष (von 1. मिष् mit वि) m. *das Schliessen* (der Augen): नयनविनिमेष (als Zeichen) Kir. 12, 26.

विनियम (von यम् mit वि) m. *Beschränkung:* वैश्यस्य वर्तमानस्य वैश्यायाम् — शूद्रायां चापि — तयोर्विनिमय: स्मृत: *eine Beschränkung auf diese beiden* MBh. 13, 3552.

विनियोक्तृ (von 1. युज् mit वि) nom. ag. 1) *der Jmd an Etwas* (loc.) *stellt, — Etwas thun heisst:* तेषु तेषु हि कृत्येषु विनियोक्ता मरेश्वर: MBh. 3, 1325. Sidd. K. zu P. 1, 4, 98. मा (मूर्ति:) त्रिविधा विधात्री धर्मिधात्री विनियोक्त्री च *die specielle Anordnung enthaltend, die Unterscheidung angebend* Kâç. Ça. Comm. 23, 13. fg. — 2) *Verwender:* आदाता सम्यगर्थानां विनियोक्ता च पात्रवित् Kâm. Nîtis. 4, 17.

विनियोग (wie eben) m. 1) *Vertheilung:* सत्क्रियाणाम् Nir. 1, 8. — 2) *Anstellung an ein Geschäft* (loc.), *Beauftragung mit Etwas; die Einem angewiesene Beschäftigung:* अनेनेदं तु कर्तव्यं विनियोग: प्रकीर्तित: Âdityak. im ÇKDa. साध्ये महाक्रतोस्य MBh. 1, 542. अतश्च विनियोगे ऽस्मिन्भवत्तो विनियोजिता: R. 3, 60, 38. 5, 90, 26. °प्रसादा हि किंकरा: प्रभविष्णुषु Kumâras. 6, 62. विनियोगं च भूतानां धातैव विदधात्युत MBh. 12, 8528. Mâṅk. P. 48, 41. — 3) *Anwendung, Verwendung, Gebrauch* (z. B. eines Verses im Ritual), überall bei Comm. Taitt. Âr. 10, 33. 35. Gaim. 1, 32. व्युत्क्रान्तो विनियोगस्तु: Harîv. 13014. गुणानां बलानां च पराणाम् Ragu. 17, 67. Wenis, Râmây. Up. 292. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 53. 206 (द्व°). 266 (pl.). 269. 273. Paṅkar. 1, 3, 13. 2, 5, 22. 3, 14, 1 (pl.). 4, 5, 9. S. 238. 278. Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 25. 106, *b*, No. 161. fg. 219, *b*, No. 525. 229, *a*, No. 561. तद्वाक्शेषविनियोगं कुर्यात् Kull. zu M. 3, 253. धनस्य संग्रक्षणे विनियोगे च zu 9, 11. 11, 20. Dudaras. 84, 16. P. 1, 3, 33, Schol. Hit. 98, 15. कदापि तावदेवंविधे कर्मण्येतस्य देवस्य विनियोग: श्राव्य: 99, 13. शब्द° Comm. zu Nâiṣaṅ. 2, 1, 55. पृथिव्यादीनां यथाविनियोगं (*wie sie der Reihe nach angewandt —, aufgeführt worden sind*) गुणा इन्द्रियाणां यथाक्रममर्था विषया इति zu 1, 1, 14. — 4) *Relation, Correlation* Nîlak. 193. VS. Paiṅ. 6, 21. P. 3, 1, 61. Ind. St. 10, 415. 417. Madhus. ebend. 1, 14. 15. fg. यद्यसंबन्धबोधको विधिर्विनियोगविधि:। व्रीहिभिर्यजेत समिधो यजतीत्यादि: 19. fg. — 5) als Erklärung von यथिकार 8) Kâç. zu P. 1, 3, 11. — 6) = घर्षणं पल्ले H. 1520. wohl = 3).

विनियोगमंत्रक् m. Titel eines zum SV. gehörigen Pariçishṭa Ind. St. 1, 59.

विनियोज्य (von युज् mit वि) adj. *anzuwenden, zu verwenden, zu gebrauchen:* प्राप्तशौचस्तत: पात्रे विनियोज्यो विधानत: Mâns. P. 16, 57. न तत्र दण्डो बुधेन विनियोज्य: Spr. 3243.

विनिर्गम (von 1. गम् mit विनिस्) m. 1) *das Hinausgehen, Fortgehen:* अनीकात् M. 7, 2198. R. Gorr. 2, 14, 22. गृहात् Varâh. Bṛh. S. 28, 9. स्वनगर्या: Kathâs. 70, 2. 100, 32. Bhâg. P. 10, 1, 65. यत्तर्गृहगता: काश्चिद्देवाप्यो लब्धविनिर्गमा: 29, 9. MBh. 13, 6213. यमुविनिर्गमकाले Khandom. 36. लिङ्ग° (लिङ्गाहिनिर्गमे ed. Bomb. = लिङ्गशरीरनाशे सति Comm.) Bhâg. P. 3, 27, 29. बहिर्मरुद्विनिर्गम: so v. a. *das Ruchbarwerden* Mâṅk. P. 27, 5. 6. — 2) *das letzte Drittel eines astrologischen Hauses* Varâh. Bṛh. 22 (20), 6.

विनिर्घोष (von घुष् mit विनिस्) m. *Klang, Laut:* यद्यशनेर्विनिर्घोषो वज्रस्येव च पर्वते MBh. 3, 1565. कलहंसविनिर्घोषै: 13, 5271.

विनिर्जय (von 1. जि mit विनिस्) m. *Besiegung:* पाण्डवानाम् MBh. 3, 15188.

विनिर्णय (von 1. नी mit विनिस्) m. *Entscheidung, ein maassgebender Ausspruch in Betreff von Etwas* (gen.): कार्याणाम् M. 1, 114. कार्य° 8,

s. शौचस्य 5,110. निस्तस्य घनस्य 8,196. सीमावाद° 253. सीमा° 258. 266. 282. दण्ड° 304. इदं तदिति वाक्यं ते प्रोच्यते स विनिर्णयः MBu. 12, 11936. दुःखस्य 14,595. Harıv. 9078 (निर्विर्णय die ältere Ausg.). R. 5, 18,17. 6,13,6. Kir. 2,12. Kathâs. 6,25. Verz. d. Oxf. H. 44,b,20. 45,a, 1. 2. 49,b,3. 65,a,13. 80,b,7. Bhâg. P. 1,3,10. Mârk. P. 121,14. Pañkat. 3,11,17. LA. (III) 87,16.

विनिर्दहनी (von 1. दह् mit विनिस्) f. *ein best. Heilmittel* Suçr. 2,468,19.

विनिर्देश्य (von 1. दिश् mit विनिस्) adj. *anzuzeigen, zu verkündigen:* नृद्वयम् Varâh. Bṛh. S. 5, 56. 17,12. 21,11. 46, 44. 53,104. 108. 54,86.

विनिर्बन्ध (von बन्ध् mit विनिस्) m. *das Bestehen auf —, Beharren bei Etwas:* वैर° so v. a. *hartnäckige —, ununterbrochene Feindschaft* MBu. 1,1166. वनवासविनिर्बन्धं नोपसंहरते यदा Mârk. P. 109,46.

विनिर्बाढ (2. वि - निस् - बाढ) m. Bez. *einer best. Art des Kampfes mit dem Schwerte* Harıv. 15979.

विनिर्भय (2. वि + नि°) m. N. pr. eines Sâdhja Vâhni-P. im ÇKDa.

विनिर्भाग m. N. eines Kalpa Lot. de la b. l. 227.

विनिर्मल (2. वि + नि°) adj. *überaus rein, — lauter:* सुविनिर्मलचेतस् Harıv. 15468. ज्ञाननिर्मल° die neuere Ausg.

विनिर्माण (von 3. मा mit विनिस्) n. 1) *das Ausmessen:* ब्रह्माण्ड° MBu. 1,237. 520. so heissen die 10 ersten Adhjâja des 6ten Buches im MBu. — 2) *das Bilden, Bauen; Bau:* मौक्तिकरत्नलोमाङ्ग° Kathâs. 96, 49. नियम्यतां विनिर्माणं पदान्यत्र विधीयताम् Râga-Tar. 4,59. 509. स्त्रीरत्नसार° adj. *erbaut, verfertigt aus* Pañkat. 1,7,48. ईप्सितेच्छा° adj. *nach seinem Wunsch verfertigt* 51.

विनिर्मातृ (wie eben) nom. ag. *Bildner, Schöpfer:* ब्रह्मदण्ड° MBu. 13,1247. देवासुर° 1257.

विनिर्मिति (wie eben) f. *Bildung, Schöpfung, Erbauung:* शरीर° Râga-Tar. 2,1. धर्मस्वामि° 4,696.

विनिर्मुक्ति (von 1. मुच् mit विनिस्) f. *Befreiung von:* दोष° Verz. d. Oxf. H. 212,a,23. Wilson, Sânkhjak. S. 25.

विनिर्मोक m. 1) dass.: गात्रबन्ध° MBu. 14, 340. R. 5, 87, 21. — 2) *Anschluss von* (= व्यतिरेक ÇKDa.): दिवाकरवारविनिर्मोक Gjotistattva im ÇKDa.

विनिर्याण (von 1. या mit विनिस्) n. *das Hinausgehen, Auszug, Aufbruch* R. Gorr. 1,4,116.

विनिर्वरुण MBu. 9,2364 fehlerhaft für विनिवर्तन.

विनिवर्तन (von वर्त् mit विनि) n. 1) *Rückkehr, Heimkehr* MBu. 3, 15979. R. Gorr. 2, 89, 5. Kâm. Nitis. 19, 25. Bhâg. P. 10, 39, 37. *abgeschossener Geschosse* MBu. 3,1690. — 2) *das Zuendegehen, Aufhören* Comm. zu Daçar. 3,15.

विनिवर्तिन् (wie eben) adj. *umkehrend:* अ° *nicht umkehrend sc. in der Schlacht* Spr. 4499.

विनिवारण (vom caus. von 1. वर् mit विनि) n. *das Zurückhalten, Abhalten:* रक्षसाम् R. 3,66,22. 4,22,38. स सचिवैरशक्यविनिवारणः Kathâs. 112,84.

विनिवार्य (wie eben) adj. *zu verdrängen:* तन्मुद्रयेयं मन्मुद्रा विनिवार्या Râga-Tar. 4,416.

विनिवृत्ति (von वर्त् mit विनि) f. *das Weichen, Aufhören:* प्रसङ्ग° M. 8,368. स्वाद्नाम् Harıv. 11143. शूल° Suçr. 2,365,16. Sârkhjak. 35. 68. Rasa. 6,74. Daçar. 3,15. Rasa. 6,74. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 271. *das Unterbleiben* Pân. Gaṇ. 2,17.

विनिवेदन (vom caus. von 1. विद् mit विनि) n. *das Anmelden:* द्वारि मद्विनिवेदनम् Kathâs. 38,145.

विनिवेश (von 1. विश् mit विनि) m. 1) *das Aufsetzen, Aufstellen, Auflegen:* किसलयशयनतले कुरु कामिनि चरणनलिनविनिवेशम् Gît. 12,2. स्विन्नाङ्गुलिविनिवेशो मलिनः so v. a. *die schmutzigen Spuren der aufgelegten schwitzenden Finger* Çik. 142. *das Hinstellen in einem Buche* so v. a. *Aufführen:* ग्रन्थशिष्टानां पाशानामत्ते विनिवेशः Sarvadarçanas. 81, 1. — 2) *angemessene Vertheilung* Schol. zu Âçv. Çr. 2,1,11. 2,13. 4,1. 11,16. zu Lâṭj. 1,9,7. 3,1,15. 5,1,19.

विनिवेशन (vom caus. von 1. विश् mit विनि) n. *das Aufrichten, Aufstellen, Erbauen:* श्रोत्रेयब्रह्मविष्णूनां वृषदुद्धस्य च व्ययात्। — विनिवेशनम् Râga-Tar. 3,355.

विनिवेशिन् (von 1. विश् mit विनि) adj. *gelegen:* विषये बकबकुलानि कूलोपकण्ठविनिवेशिनि (°विनिवेसिनि gedr.) नर्मदायाः Kathâs. 6,166.

विनिश्चय (von 2. चि mit विनिस्) m. *eine feste Meinung, feststehende Ansicht, feste Bestimmung, Entscheidung; fester Entschluss:* इति विनिश्चयः M. 8,277. Jâgn. 2,233. Spr. 1550. Verz. d. Oxf. H. 47,b,33 (विचिश्चयः gedr.). 80,b,22. इति शास्त्रविनिश्चयः 84,b,16. R. 5,81,40. विनिश्चयेनाभिगतो ऽस्मि ते MBu. 3,16700. 5,293. 5127. तस्य ज्ञेते विनिश्चयः R. 2,63,18 (67,11 Gorr.). मत्स्यपतो विनिश्चयम् Bhâg. P. 8,3,17. मत्स्यः सुविनिश्चयलक्षणः R. 5,81,18. विनिश्चयं कृत्वा MBu. 1,7670. तं चित्तयित्वा विनिश्चयम् 3260. कर्तव्यस्य Sund. 3,10 (च निश्चयम् st. विनिश्चयम् MBu. 1,7687). कार्यस्य R. 3,44,8. 5,37,31. ग्रामस्त्रुवव्याधिभावाभाव° MBu. 1,64. स्वधर्मार्थविनिश्चयज्ञ 3,15700. निश्चित्यार्थविनिश्चयम् 5,7013. एतद्विनिश्चयं विचिनोतु 6088. 12,6938. कुरु मूल्यविनिश्चयम् bestimme 13,2687. 14,950. 1322. R. 2,75,64. अर्थसूक्ष्म° 4,21,14. 34,4. 40,12. 5,56,2. Suçr. 1,160,10. Kathâs. 33,183. Bhâg. P. 2,8,16. रोग° Verz. d. B. H. No. 954. Sarvadarçanas. 32,16. Kusum. 27,19. — Vgl. अर्घ°, पाप° (f. या R. Gorr. 2,8,5), प्रमाण°, रूपविनिश्चय.

विनिश्चल (2. वि + नि°) adj. *unbeweglich:* तस्थौ विनिश्चलः Kathâs. 62,153. चित्रारम्भ° *unbeweglich wie* Vikr. 4. चित्तमोक्षविनिश्चलेन मनसा Spr. (II) 2292.

विनिश्चायिन् (von 2. चि mit विनिस्) adj. *entscheidend, endlich bestimmend:* संपूर्णार्थ° Sarvadarçanas. 42,20. 43,4.

विनिष्कम्प (2. वि + नि°) adj. *unbeweglich* Amṛtan. Up. in Ind. St. 2,32.

विनिष्पात (von 1. पत् mit विनिस्) m. *das Hervorstürzen, Vordringen:* कृतमुष्टिविनिष्पातानभिघ्नष्टाङ्गसंधन so v. a. *Faustschläge* Bhâg. P. 10,58,25.

विनिष्पाद्य (vom caus. von 1. पद् mit विनिस्) adj. *zu Stande zu bringen, auszuführen:* पाद्यकर्म विनिष्पाद्यं तादृगद्रव्यमुपाहरेत् Mârk. P. 121,14.

विनिष्पेष (von पिष् mit विनिस्) m. *das Auseinanderreiben:* तपेर्भुजविनिष्पेषाद्भयोर्बलिनोस्तदा। शब्दः समभवद्घोरः MBu. 3, 443. 1610. 4, 759. घोरवज्रविनिष्पेषस्तनयित्नु so v. a. *Donnerschlag* 8,4106.

विनिवेसिन् s. विनिवेशिन्.

विनीत 1) adj. s. u. 1. नी mit वि. — 2) m. a) *Kaufmann, Krämer*

H. an. 3, 299. Med. t. 134. — *b*) *Artemisia indica* (दमनक) Rágán. im ÇKDa. — *c*) N. pr. eines Sohnes des Pulastja Viśu-P. in VP. 83, N. 8.

विनीतक m. n. = वेनीतक Rágán. zu AK. 2,8,2,26 nach ÇKDa.

विनीतता (von विनीत) f. *Wohlgezogenheit, Sittsamkeit, bescheidenes Betragen, Bescheidenheit* Kám. Nítis. 4,8.

विनीतत्व (wie oben) n. dass.: स्वाभाविके विनीतत्वं तेषां विनयकर्मणा । मुमूर्छ Ragu. 10,30. Spr. 1448 (wo so zu lesen ist).

विनीतदेव m. N. pr. eines buddhistischen Gelehrten Vjutp. 90. Tiran. 198. 272.

विनीतप्रभ m. desgl. Vie de Hiouen-thsang 101.

विनीतमति m. N. pr. zweier Männer Kathás. 72,24. 101,138.

विनीतसेन m. N. pr. eines Mannes Târan. 159.

विनीति (von 1. नी mit वि) f. *Bescheidenheit* Spr. 4146.

विनीतेश्वर m. N. pr. eines göttlichen Wesens: प्रशान्तश्च विनीतेश्वरश्च Lalit. ed. Calc. 6,20. प्रशान्तश्च प्रशान्तविनीतेश्वरश्च st. dessen 4,16; vgl. noch Foucaux's Uebersetzung 401.

विनीय (von 1. नी mit वि) m. = वत्स P. 3, 1, 117. Vop. 26, 20. — Vgl. विनेय.

विनील (2. वि + नील) adj. *dunkelblau* H. 49.

विनीवि oder °नीवी (2. वि + नी°) adj. f. *des Schurzes entkleidet* Bhâg. P. 10,21,12.

विनुत्ति (von 1. नुद् mit वि) f. 1) *Verstossung, Vertreibung* Kâṭh. 26, 1. 27,8. — 2) Abhibhûti und Vinutti heissen zwei Ekâha Âçv. Çr. 9,8,19. Çâṅkh. Çr. 14,8,16. 38,4. 15,11,12.

विनुद् (1. नुद् mit वि) f. *Stoss* RV. 2,13,3.

विनेतर् (von 1. नी mit वि) m. 1) *Erzieher, Unterweiser, Lehrer* Med. t. 157. MBh. 3,12584. fg. 11,660. R. 3,55,37. 39. Spr. 5204. Ragu. 6,39. 8,90. 14,23. 15,69. Ragh. ed. Calc. 1,71. Mâlav. 14,23. 67. पराक्रमे R. 5,32,7. *Zähmer, Abrichter:* दुष्टिगवाश्वोष्ट्राणाम् Kull. zu M. 3,162. — 2) *Fürst, König* Med.

विनेत्र (wie oben) m. *Unterweiser, Lehrer:* सद्विनेत्राय (कृष्णाय) Hariv. 10675.

विनेमिदशन (2. वि + ने° - द°) adj. *der Radfelge und der Zähne* (wohl *ein best. Theil des Wagens*) *beraubt* MBh. 7,1570 nach der Lesart der ed. Bomb.

विनेय (von 1. नी mit वि) adj. P. 3,1,117, Schol. 1) *zu verscheuchen, zu entfernen:* व्याधिः श्रमः Hariv. 4698. — 2) *zu erziehen, zu unterrichten* Sin. D. 6,1. Sarvadarçanas. 22,9. m. *Schüler* H. 79. — 3) *zu züchtigen, zu strafen* Bâhaspati in Dâyabh. 90,4. ज्योतिर्ज्ञाने तथोत्पातमविदित्वा तु ये नृणाम् । भावयत्यर्थलोभेन विनेयास्ते ऽपि पातकैः ॥ Gjotishatattva im ÇKDa.

विनोक्ति (विना + उक्ति) f. in der Rhetorik *ein Ausspruch, der da besagt, dass Etwas erst ohne ein Anderes einen Werth oder ohne ein Anderes keinen Werth habe; conditio sine qua non* Sin. D. 702. Kuvalaj. 60,*a*. Prâtâpar. 86,*a*,2. — Vgl. सहोक्ति.

विनोद (von 1. नुद् mit वि) m. 1) *Vertreibung, Verscheuchung:* श्रम° Vasiṣṭh. Bṛh. S. 53,88. Kathás. 91,2. — 2) *Vertreibung der Sorgen u. s. w. Unterhaltung, Amüsement* H. 926, Schol. H. ç. 115. Hall. 4,35. Mṛicch. 43,17. षड्जनानां विनोदाः Megh. 85. Çik. 38. अविनोददीर्घयामा रात्रिः Vikr. 45. विनोदाय Kathás. 15,125. 37,117. लोकानाम् Ver. in LA. (III) 1,3. तस्या विनोदार्थम् Kathás. 17,62. ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः 20, 46. 23,73. 33,35. Bhâg. P. 3,16,24. जलक्रीडादिभिर्विचित्रविनोदैः 5,17, 18. Mârk. P. 20,10. 18. 65,15. विनोदतम् Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, N. 8. स्वात्मविनोदाय Kathás. 13,52. Prab. 3,16. लोकात्मविनोदाय (°विधानाय *gedr.*) Einl. zu Kâdamb. चेतोविनोदाय Kathás. 28,7. तद्विनोदोपपादिन् 29,1. Çuk. in LA. (III) 32,6. °स्थान Çik. 80,22. 81,21. 86,17. °पात्र (oder विना उदपात्रम्) Bhâg. P. 4,22,17. °मृग 5,1,33. अध्वविनोदाय *zur Unterhaltung auf der Reise* Kathás. 75,58. Häufig in comp. mit dem, was die Unterhaltung bildet, woran man Vergnügen findet: श्रमभर° Ṛit. 3,24. अभिनवनलिनीविनोदलुब्ध Spr. (II) 487. काव्यशास्त्र° 1711. गात्रकाण्डू° 2054, v. l. (I) 2280. Gîr. 12,9. विलपन° Uttarâr. 56,17 (73,10). दानैकविनोदासक्तचेतस् Kathás. 35,34. कथा° 61,330. 62,337. 64,164. 69,86. Verz. d. Oxf. H. 122, *b*, 18. 132, *b*, 8. Bhâg. P. 4,29,30. 5,8,17. Paṅkat. 4,8,115. Paṅkat. 5,6 (ed. orn. 2,10). 147,14. Çuk. in LA. (III) 32,18. Am Ende eines adj. comp.: माया° *sich vergnügend an* Bhâg. P. 5,24,8. 6,29,41. Verz. d. Oxf. H. 199, *a*, 17. — 3) Bez. *einer best. Umschlingung Liebender:* नायको नायिकाया दक्षिणपादं वामपादं वा स्वमध्यदेशे स्वदक्षिणपादं वामपादं वा नायिकामध्यदेशे निधाय वक्षसि वक्षः श्रोत्रं श्रोत्रं दत्त्वा पदक्षिप्यति तत् Kâmaçâstra im ÇKDa. — 4) *eine Art Palast* Jukticalpataru und Bhavishjottara-P. im ÇKDa. — 5) Titel eines über Musik handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201, *a*, No. 479. — Vgl. निर्विनोद, मदन°, रात्रविनोदताल und राधा°.

विनोदन (wie oben) n. = विनोद 2) Kathás. 51,207. 104,191. Sin. D. 117. Râga-Tar. 3, 164. °शतैः Vikr. 38. कृत्रविनोदनार्थम् Hariv. 8409. मार्ग° *eine Unterhaltung auf Reisen* Kathás. 83,4.

विनोदवत् (von विनोद) adj. *unterhaltend, ergötzlich:* शुकानां गिरः Kathás. 59,150.

विनोदिन् (von 1. नुद् mit वि) adj. 1) *vertreibend, verscheuchend:* श्रम° Çik. 69. उत्कण्ठा° Kathás. 72,294. — 2) *Sorgen u. s. w. verscheuchend* so v. a. *unterhaltend, ergötzend:* कथा Kathás. 49,2. 59,21. 78,4. हृदयस्य 10,3. चेतो° 12,32. वृन्दावन° Paṅkat. 2,4,7. 5,24.

विन्द m. N. pr. eines göttlichen Wesens Mârk. P. 80,8.

विन्दु s. 3. विद्.

विन्दे (von विन्दु) 1) adj. *findend, gewinnend* P. 3,1,138. Vop. 26,35. Vgl. गो°, चारु°, भद्र°, मित्र°, वत्स°. — 2) m. *a*) Bez. *einer best. Stunde des Tages* R. 3,73,16 (68,13 ed. Bomb.). — *b*) N. pr. neben मनुविन्द, Söhne Dhṛitarâshṭra's MBh. 1,2729. 4543. Fürsten von Avanti 2, 1114. 3,2503. 7,3691 (vgl. 3682). Hariv. 5016. 5497. 8020. 8099. Söhne Gajasena's VP. 437.

विन्दक m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,650.

1. विन्दु *Tropfen* u. s. w. s. बिन्दु.

2. विन्दु (von 1. विद्) nom. ag. *Kenner* P. 3,2,169. Vop. 26,160. AK. 3,1,30. Trik. 3,3,209. H. 349. an. 2,234. Med. d. 10. fg. Hir. 262. = वेदितव्य Çabdar. im ÇKDa.

3. विन्दु (von 3. विद्) adj. am Ende eines comp. *findend, suchend, gewinnend, verschaffend* (= दातर् Âgastjâla im ÇKDa.): माय °Paṅkat.

Bs. 14,11,22. — Vgl. गो°, लोक°.

विन्दुप्रतिष्ठानमय (von वि° + प्रतिष्ठान) adj. (f. ई) *den Anusvâra zur Grundlage habend* Verz. d. Oxf. H. 110,a, No. 173, Cl. 4.

विन्दुल (von विन्दु) m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,287,20 (वि° gedr.).

विन्ध् s. 2. विध्.

विन्ध Mân. P. 57,52 fehlerhaft für विन्ध्य.

विन्धचुलक MBu. 6,369 fehlerhaft für विन्ध्यचुलिक oder °चुलुक.

विन्धपत्री f. *eine best. Pflanze*, = त्वरापत्री (unter welchem Worte im ÇKDa. nach derselben Aut. als Synonym विल्वपत्री genannt wird) Çabdân. im ÇKDa. Die richtige Form wird wohl विद्धपत्री oder विल्व° sein.

विन्धम (!) m. *der Mond* ÇKDa. angeblich nach Taik.

विन्ध्य 1) m. *a)* N. pr. des Gebirges, welches die indische Halbinsel von Ost nach West durchzieht, AK. 2,1,3,3. Taik. 2,1,6.3,4. H. 948. 1029. an. 2,381. Mân. j. 54. किमत्रहिन्ध्यगोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि। प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ M. 2,21. MBu. 1,7625. 7716. 3,2318. 14, 1173. Hariv. 3261. 3275. 3211. 9499. 11448. 12008. 12399. R. 4,2,12. 41,10. Suçr. 1,172,6. 2,169,3. Çiç. Bâu. 1,1,38. विन्ध्यस्तरेत्नागारम् Spr. 2833. Mâlav. 19. Ry. 2,28. Milav. 56. Varâh. Bṛ. S. 12,6. 16,10. 43,35. 69,30. VP. 174. Mân. P. 57,11. Verz. d. Oxf. H. 39,b,15. °पर्वत R. 1,6,22. विन्ध्याद्रि Rucim. 12,31. Varâh. Bṛ. S. 16,12. Kathâs. 12,8. Râja-Tar. 4,153. 161. Vet. in L.A. (III) 31,5. 6. विन्ध्याद्रिनिवासिनः Verz. d. Oxf. H. 82,a, No. 138, Z. 10. विन्ध्याचल Varâh. Bṛ. S. 12, Anf. °वन R. 4,48,2. विन्ध्याटवी Varâh. Bṛ. S. 16,3. Kathâs. 7,25. 10,115. 18,96. 42,97. Hit. 34,19; vgl. मध्यविन्ध्याटवि. °तरुच्युतत्वम् Râja-Tar. 3,240. विन्ध्यनिवासिनः (so ist zu lesen) Mân. P. 57,52. विन्ध्यान्तरवासिनः *die Bewohner des inneren* Vindhja Varâh. Bṛ. S. 14,9. Der Vindhja, eifersüchtig auf den Meru, weil die Sonne um diesen sich bewegt, erhebt sich um der Sonne den Weg zu versperren, MBu. 3,8781. fgg. Verz. d. Oxf. H. 69,a, 7. fgg. — *b*) = व्याध *Jäger* H. an. Med. — 2) f. या *a*) *Averrhoa acida* Lin. H. an. Med. — *b*) *kleine Kardamomen* H. an. — Vgl. निर्विन्ध्य, प्रति°, बलि°.

विन्ध्यकन्दरा *Vindhja-Schlucht*, N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,b,19.

विन्ध्यकवास m. N. pr. eines Mannes Wassiljew 219.

विन्ध्यकूट m. Beiw. Agastja's Taik. 1,1,89. H. ç. 16.

विन्ध्यकेतु m. N. pr. eines Fürsten der Pulinda Kathâs. 101,284.

विन्ध्यचुलिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6,369 nach der Lesart der ed. Bomb. विन्धचुलक ed. Calc. विन्ध्यचुलुक VP. 193.

विन्ध्यचुलुक s. विन्ध्यचुलिक.

विन्ध्यनिलया f. *eine Form der* Durgâ H. ç. 49. — Vgl. विन्ध्यवासिनी.

विन्ध्यपर m. N. pr. eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 37,22.

विन्ध्यपालक m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 126.

विन्ध्यमूलिक m. pl. desgl. ebend.

विन्ध्यमौलेय m. pl. desgl. Mân. P. 57,47.

विन्ध्यवत् (von विन्ध्य) m. N. pr. eines Mannes Mân. P. 21,34.

विन्ध्यवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Cl. 12. Z. f. d. K. d. M. 1,226.

विन्ध्यवासिन् 1) adj. *den Vindhja bewohnend.* — 2) m. Bein. Vjâdji's H. 852. Hall 166. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 46. Verz. d. B. H. No. 974. Verz. d. Oxf. H. 182,b, 2 v. u. Vgl. विन्ध्यस्थ. — 3) °वासिनी f. mit oder ohne देवी *eine Form der* Durgâ Colebr. Misc. Ess. II, 249. Wilson, Sel. Works I, 253. II, 78. Kathâs. 2,2. 3,38. 6,78. 7,24. 23,38. 42,117. 172. 52,161. 165. Verz. d. Oxf. H. 19,a,7. 97,a,2 v. u. Daçak. 142,6. 197,11; vgl. विन्ध्यकैलासवासिनी Hariv. 10246 und विन्ध्ये देवीं धराधरवासिनीम् Râja-Tar. 3,394.

विन्ध्यशक्ति m. N. pr. eines Fürsten der Javana VP. 477.

विन्ध्यसेन m. N. pr. eines Fürsten VP. 466, N. 12. विन्ध्यिमार् v. l.

विन्ध्यस्थ 1) adj. *im Vindhja sich aufhaltend.* — 2) m. Bein. Vjâdji's Taik. 2,7,24. Verz. d. B. H. No. 974; vgl. विन्ध्यवासिन्.

विन्ध्याधिवासिनी f. *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 39,b,18. — Vgl. विन्ध्यवासिनी.

विन्ध्यावलि (विन्ध्य + या°) f. N. pr. der Gattin Bali's und Mutter Bâṇa's Bâlar. P. 8,20,17. 22,19. °ली ÇKDa. nach einem Purâṇa. विन्ध्यावलीपुत्र m. metron. Bâṇa's Taik. 2,8,22.

विन्न partic. s. u. 3. und 5. विद्.

विन्नाग m. N. pr. eines Fürsten Râja-Tar. 5,129.

विन्यप (von 2. यप् mit विनि) m. *Stellung, Lage:* करण° TS. Prât. 23,2.

विन्यस्य (von 2. यस् mit विनि) adj. *aufzusetzen, zu stellen auf:* भद्रासनं विन्यस्यं वर्मणामुपरि Varâh. Bṛ. S. 48,46.

विन्याक m. = विद्धवृत Çabdâk. im ÇKDa.

विन्यास (von 2. यस् mit विनि) m. 1) *das Hinsetzen, Hinstellen, Anlegen* (am Körper): यस्थाने भूषणादीनाम् Sin. D. 143. *Setzung, Bewegung, Stellung* (der Glieder des Körpers): निःशब्दपद° Kathâs. 88,16. Bâlar. P. 5,2,5. द्रुतपद° 6. करचरणोरःस्थलविपुलवक्त्रसगलवदनाग्रवपव° 5,31. सुकुमारतयाङ्गानाम् Sin. D. 144. अङ्ग° Paitâmah. 56,b,2. Als Erklärung von विन्यप Comm. zu TS. Prât. 23,2. — 2) *Anordnung, Eintheilung, Ordnung:* एतावाँल्लोकविन्यासो मानलक्षणसंस्थाभिः Bâlar. P. 5, 20,38. भुवन° Verz. d. Oxf. H. 8,a,28. fg. वर्ण° 88,b,19. नक्षत्रविन्यासाद्विषयाः समवस्थिताः Mân. P. 54,22. वेणोः स्यात्केशविन्यासः so v. a. *Haartracht* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,48. — 3) *Vertheilung, Ausbreitung:* कर्म वाग्वैखरीनं (so ist zu lesen) विन्यासरूपम् Kull. zu M. 1,18. concret: तं दर्भविन्यासं भित्त्वा so v. a. *das ausgestreute* Darbha-*Gras* MBu. 13, 3945. हंसमारसविन्यासैर्यमुना सातिशोभना (विन्यासैः = उपवेशनस्थलैः Nilak.) so v. a. *zerstreute Gruppen von* Hariv. 3833. — 4) *das Errichten, Gründen, Anlegen:* ग्रामसंघोष° Mân. P. 49,43. — 5) *das Zusammenfügen* (einer Rede u. s. w.): वर्णा वचनविन्यासः Sin. D, 303. प्रबन्ध° (= रचना Comm.) Vâsavad. 9. स्फुटार्थपदविन्यासः शिष्टानां प्रतिपत्तये Verz. d. Oxf. H. 182,a, 17. ब्रिग्वेद्य नीतिविन्यासान्मूर्खान्सर्वत्र वर्जयेत् wohl so v. a. *king thusend* MBu. 3,11310. — 6) *das Ausstossen von Worten der Verzweiflung* (= निर्वेदवाक्यच्युतपत्ति) Sin. D. 356. — Vgl. यत्तर°, बल°.

1. विष्, वेवेष्टे (Dhâtup. 10,6 वेष् कम्पने), विषार्ते, घ्रैवेषिष्ठाम्, विविषे; *in schwingender, zitternder Bewegung sein, beben:* वेवेष्टि भिषसो मृळो RV. 1,80,11. चक्रं न वृत्तं वेवेष्टे मनो भिया मे 5,36,3. वेवेष्टि मती 9,71,3. 10,11,6. AV. 10,10,23. गृळा मा विविक्षीत मा वेवेषम् (वेविषुम् Lit.) VS. 3,41. TBr. 3,7,6,2. न इद्विविक्षे महतः *fangen an sich zu re-*

gen, zu schütteln RV. 3,32,4. यतो विपान एतति 8,6,29. प्रक्रामन्वेपते sittert Suçr. 1,256,14. Çik. 70,15. किमार्त इव वेपते मकल इव विम्बाधः ad 69,2. Spr. 1230. मनः कदलिकेवाग्याप्यरहो वेपते Paas. 65,18. पर्वताग्राणि वेपन्ते R. 6,16,4. मन्मत्तप्रकृणात् — तेषां पापानि वेपन्ते कोटिघ्नमकृतानि च so v. a. welchen gleichsam erschrocken Pañkan. 1,13, 13. प्रवेपत Kathis. 19,103. वेपमान Bhag. 11,35. MBh. 2,2339. 3,522. 2174. 2207. 2611. 2840. 2975. 5,6042. 12,4236. R. 1,64,5. 2,26,6. 60, 1. 62,6. 63,49. 92,18. 3,53,62. Ragh. 11,68. Kathis. 19,90. Daçak. 94, 16. Pañkat. 45,8. 93,2. 94,4. वेपन्ती MBh. 3,1864. 10989. R. 1,63,13. — Vgl. विप्र, वेपथु u. s. w.

— caus. वेपयति, विवेपयति, प्रवीविपत्; sittern machen, schwingen, schütteln: शिप्रे RV. 8,65,10. 12,2. AV. 5,22,10. चक्रं न वृत्तं व्यतीं-रवीविपत् RV. 1,155,6. सिन्धोर्ऊर्मावधि वेना प्रवीविपन् 9,73,2. विपयंस्ति वर्हिः 7,21,2. वेपयन्मणडलं भुवः Bhâg. P. 3,21,33. 3,4,47. वातवेपित Kathis. 111,10. Bhâg. P. 10,20,6. भुजवीर्यवेपित 8,7,10. वेपितकंधरा Mâlav. P. 1,41. मनो मदनवेपितम् Bhâg. P. 5,1,62. सवेपितम् mit Zittern (also wohl von वेप् simpl.) Spr. (II) 1637.

— उद् in unruhige Bewegung gerathen, erzittern, erschrecken: उद्वेपमाना मनसा चतुर्या हृदयेन च धावन्तु) AV. 5,21,2. Kâṭh. 31,3. TBr. 3, 2,8,7. उद्वेपते मे हृदयम् MBh. 5,2028. नरकस्तिगात्रेहृद्यमानैः 8,4900. Vgl. उद्वेप. — caus. erschrecken (trans.) AV. 9,8,6. 11,9,12. 18. 13,3,1.

— परि zittern: बाकुर्वामः परिवेपते स्म R. 5,28,14.

— प्र erzittern: यः शीतेन प्रवेपते Suçr. 1,113,2. प्रावेपत भयोद्विग्ना प्रवाते कदली यथा MBh. 5,498. प्रावेपत सुसंत्रस्तः 13,2325. R. 5,21,1. शिरोभिः पतिताः सर्वे प्रावेपन्त पयोगगाः Hariv. 3830. भयात्प्रवेपे R. 2,8, 8. प्रवेपमान MBh. 4,459. Kumâras. 5,27. Brahma-P. in L.A. (III) 57,20. Daçak. 72,14. नागाश्चाष्टमुखास्तत्र प्रावेपन्ताभितोऽद्रिताः (प्रवेपुरतितोऽद्रिताः die neuere Ausg.) Hariv. 10392. हृदयेन प्रवेपती MBh. 3,16786. 13, 4614. Hariv. 4744. Bhâg. P. 3,14,36. Vgl. प्रवेप fgg. — caus. erschüttern: पर्वतान् RV. 1,39,5. 3,26,4. 8,7,4. in schwingende Bewegung setzen, erzittern machen: प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुः 9,96,7. प्रवेपयञ्छत्रुसंघान् MBh. 5,707. प्रवेपित in eine zitternde Bewegung versetzt, erzitternd: धारणैस्तीक्ष्णैर्व्यवच्छेदप्रवेपितैः R. 6,79,35. बाकुरेकः प्रवेपितः 5,27,28. प्रवेपिताङ्ग MBh. 4,2095. Bhâg. P. 10,44,28.

— अभिप्र sich in Bewegung setzen gegen (acc.), bedrohen: यं मृधो ऽभि प्रवेपेरन् TS. 2,2,3,4. 5,2,1.

— संप्र erzittern: संप्रावेपन्त धन्विनः MBh. 5,2975. 6,5789 (संप्रा° ed. Bomb.).

— वि zittern, zucken: das Auge Kaçç. 38.

— प्रवि caus. partic. °वेपित: als verbum finitum wurde zum Zittern gebracht, erzitterte R. 7,19,22.

— सम् zittern: ते समवेपन्त गावो वै शिशिरे यथा MBh. 7,6645. संवेपमाना यवभृवादुदायन्ति zitternd (vor Kälte) Çâṅkh. Br. 19,2.

2. विप् (= 1. विप्) 1) adj. innerlich erregt, begeistert; = मेधाविन् Naigh. 3,15. वैश्वानराय विपो रत्ना विधन्त RV. 3,3,1. उशिग्देवानामसि सुक्रतुर्विपाम् 7. 10,5. वि तन्वते विपश्चितो ऽयो विपो जनानाम् 8,1,4. प्र गायत वृकणाय विपा गिरा mit begeistertem Liede 5,68,1; daher unter den Wörtern für वाच् Naigh. 1,11. Hierher etwa auch RV. 10,61,8. Vgl. विप्र. — 2) f. (eigentlich schwank) Ruthe, Gerte; dünner Stab, Schaft (des Pfeils u. s. w.): विपा वराकमयोग्रयया कृत् RV. 10,99,6. अस्तृणाद्बर्हणा विपः 8,52,7. न पिस्पशति तन्विं सुजातस्य विपः 6,19,12. विपो न यस्यातपो वि पदेष्वक्तिः सुदितः 44,6 (vgl. 24,3). विपामग्रेषु धीतयः। अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः vorn an den Schäften ist Schimmer (धीतयः = दीतयः; vgl. 3. धी und 2. दी), wie Feuer strahlen die Geschosse 8,6,7. विपो न शुम्भा नि युवे जनानाम् wie Ruthen fasse (und knicke) ich 19,33. अधीता विपो न रायो अर्यः wie (werthlose) Ruthen oder Reiser 4,48,1. Bei der Soma-Bereitung die Stäbe, welche den Boden des Trichters bilden und das Seihtuch tragen: एष देवो विपा कृतो ऽति ह्वरांसि धावति RV. 9,3,2. पूताः सोमासो विपा 22,3. अया चित्तो विपानया रुचिः पवस्व धारया bald an diesem, bald an jenem Stabe bemerkbar, rinne ab in gelbem Strahle 65,13. अक्रो वेपस्यसुराय निर्णिजं विपामग्रे महीयुवः 99,1. Nach Naigh. 2,5 so v. a. Finger. Die Commentatoren erklären विप् 1) und 2) mit मेधाविन्, स्तोतृ, वेपयितृ, पालक, व्याप्त u. s. w. Zu vergleichen ist etwa lat. vepres.

3. विप्, वेपयति (तेपे) v. l. für व्याप् Dhâtup. 32,95. Hierher zieht Benfey प्रवेप्यमान, wie die v. l. Pañkat. ed. orn. 3,13 st. प्रवेष्यमान hat, in der Bed. vorausgabt werdend. Wir wagen es nicht einer solchen verdächtigen Wurzel das Wort zu reden.

विपक्तिम (von 1. पच् mit वि) adj. gereift, reif: °ज्ञानगति Bhatt. 1,16.

विपक्व (2. वि + पक्व) adj. (f. आ) 1) gar gekocht, gar gemacht, gar, gekocht überh.: अशन AV. 5,29,6. मांसान्यपःसर्पिषि वा विपक्वान् Vaitân. Bau. S. 76,4. अङ्गारेषु विपक्वं मांसम् Hall. 2,168. सर्वद्रव्याण्यग्न्यवकृतानि सम्यक् मिथ्या विपक्वानि गुणं दोषं वा जनयन्ति Suçr. 1,149,5. fg. तैल 58,3. 2,20,17. 21. 359,18. कल्क° 39,10. 89,12. — 2) gereift, reif (von Früchten): यच्च तप्तं तपस्तस्य विपक्वं फलमश्नुते: Kumâras. 6, 16. — 3) gereift so v. a. zur vollkommenen Entwickelung gelangt, vollkommen ausgebildet: °प्रज्ञ Nir. 3,12. °बुद्धि MBh. 12,7791. धिया योगविपक्वया Bhâg. P. 3,6,33. बहुजन्मविपक्वेन सम्यग्योगसमाधिना 24, 28. सुविपक्वयोगैः 10,84,26. अविपक्वबुद्धि 1,18,42. अविपक्वकरण Jâin. 3,141. अविपक्वभाव Çârîr. 79. — 4) geglüht, verbrannt so v. a. vollkommen vernichtet: अविपक्वकषाय Bhâg. P. 1,6,22. 11,18,41. — 5) nicht geglüht: लोकुचं यथा क्षेम विपक्वं (= पाकक्षीनं Nîlak.) न विराजते MBh. 12,7712.

1. विपत्त (2. वि + पत्त) m. 1) der Tag des Uebergangs von einer Monatshälfte in die andere Kâty. Çr. 4,3,23. — 2) Widerpart, Gegner, Feind AK. 2,8,3,11. H. 729. Hall. 2,300. Hariv. 3013. Kâm. Nîtis. 5, 40. Ragh. 17,75. Spr. 1946. 2824. Kathâs. 6,129. 9,19. 11,8. 27,144. 44,7. 45,380. 46,327. 58,119. 63,168. 75,61. Râga-Tar. 3,303. 4,327. 5,257. 8,848. 1042. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Pl. 22. Paas. 2,12. Bhâg. P. 4,10,20. 11,26. 7,5,26. 8,22,8. Mâlav. P. 23,14. 27,18. 48,16. परस्परविपत्तौ तौ 71,27. Pañkat. 171,10. fg. 210,18. Hit. 91,11. 109,7. Kull. zu M. 7,106. Nebenbuhlerin Ragh. 19,20. 22. °रमणी Spr. (II) 1379. — 3) eine entgegengesetzte Behauptung; Gegenbeispiel Tarkas. 39. 41. Bhâsâp. 72. Sarvadarçanas. 12,12. 17,15. Sîm. D. 122,10. Schol. zu Kap. 1,84. 113. Kuvam. 16,12. 28,16.

2. विपत्त (wie oben) adj. der Flügel beraubt R. 4,60,24.

विपक्षभाव m. *Feindschaft* Raghu. 3,62.

विपक्षमूल m. N. pr. des Hauptes einer best. Secte Verz. d. Oxf. H. 248, a, 11.

विपक्षम् (2. वि + प°) adj. *an beide Seiten des Wagens gehörig* (Sây.): Indra's Rosse ṚV. 1,6,2. Da dieses eine müssige Bezeichnung wäre, verstehen wir lieber: *die Seiten* (des Wagens) *vertauschend* d. h. *eben so wohl rechts als links gehend.*

विपक्षीकर् (2. विपक्ष + 1. कर्) *der Flügel berauben:* °कृत्य शरभान् Kathâs. 94,11.

विपक्षीय (von 1. विपक्ष) adj. *feindlich:* °नृपोद्यम Bâlar. P. 10, 53, 20.

विपञ्चिका f. = विपञ्ची *die indische Laute* Çârṅgad. im ÇKDa.

विपञ्ची (wohl 2. वि + पञ्चन्) f. 1) *die indische Laute* AK. 1, 1, 2, 2. H. 287. Med. k. 17. Hall. 1,96. Kathâs. 49,20. Sin. D. 98, 2. am Ende eines adj. comp. f. °का R. 5,13,43. — 2) *Belustigung, Spiel* (केलि) Med.

विपण (von 1. पण् mit वि) m. 1) *Verkauf, Handel* AK. 2,9,33. H. 872. विपणेन जीवतः M. 3, 152. घर्षेन तु समो ऽनर्घो (so die ed. Bomb.) यत्र लभ्यते नादृतः । न तत्र विपणः कार्यः (विपणः प्रतिज्ञा न कार्यः न निर्बन्धः Nîlak.) MBh. 3,1229. निवृत्तविपणापणा (वसुधा) 1,7674. समृद्धविपणापणा 13, 1956. मैत्तिसविपणापणा R. Gorr. 2, 125, 10. — 2) *Wette:* प्राणयोर्विपणे कृते MBh. 5,1201. fg. — 3) *ein Ort, an dem Handel getrieben wird: Kaufladen, Kaufhof, Markt* H. 1002. प्रपासु विपणीष्वेव गद्येदृशं समाविशेत् (so die ed. Bomb.) MBh. 12,2648. विपणापणवत् 14, 1761. Mârk. P. 49,50. — 4) *Markt* als bildliche Bez. *der Rede, des Organs der Rede* oder *der Energie der Thätigkeit* (क्रियाशक्ति) überh. Bâlar. P. 4, 25, 49. 28, 56. 36. 29, 11. — 5) unter den Beinn. Çiva's MBh. 13,1185. = निर्व्यवहार, दानादिरहित Nîlak.

विपणन (wie oben) n. *das Verkaufen, Handel* Mallin. zu Çiç. 5,24.

विपणि (wie oben) f. Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4,117. Çiksh. 3, 7, Comm. 1) *Verkauf, Handel* AK. 3, 4, 13, 54. M. 10,116. °जीविका MBh. 5, 2627. °जीविन् Harîv. 3809. — 2) *ein Ort, an dem Handel getrieben wird: Kaufladen, Kaufhof, Markt* AK. 2, 2, 2. H. 988. an. 3, 226. fg. Med. g. 78. Hall. 2,141. विपणयापणपण्यानाम् MBh. 9, 2000. Mṛicch. 130, 23. °स्थपणा (पूः) Ragh. 16,41. मत्स्यो विपणिमध्यगः Kathâs. 5,16. 19,23 (fälschlich विपिनि gedr.). 24. 36,184. 112,164. तपःपणेन स (वरः) क्रेतव्यः सुतीर्थविपणौ क्वचित् Kiçlan. 59,60 (nach Aufrecht). विपणौ Dvirûpak. im ÇKDa. Kathâs. 6,47. 20,165. 43,10. 62,209. fg. विपणीं (विपणीः Mallin.) Çiç. 5,24. — 3) *Handelsartikel, Waare* H. an. Med.

विपणिन् (wie oben) m. *Handelsmann, Krämer* H. an. 3,569. Çiç. 5,24.

विपताक (2. वि + पताका) adj. *der Fahne —, des Banners beraubt* MBh. 8,876.

विपत्ति (von 1. पद् mit वि) f. *das Missrathen, Misslingen* (Gegens. संपत्ति, सिद्धि) Spr. (II) 415. घर्ष° R. Gorr. 2,16,47. मस्य° Vaṇîs. Bâlar. S. 40,10. फल° Çâṅk. zu Bâlar. Âr. Up. S. 221. कर्म° Sûçr. 1, 105, 1. Spr. 713 (II), v. l. कार्य° 1364. कार्यकाल° so v. a. *Ungunst* Kâm. Nîtis. 12,31. *Unfall, Ungemach, Unglück* R. Gorr. 2, 29, 5. Kâm. Nîtis. 9, 7. विपत्तेः प्रतीकारः 11,56. जन्मत्रयाविपत्तिमरणम् Spr. (II) 931. 1346. 1676. समानव्यविपत्तिकाले 766. प्रत्यासन्नविपत्तिकाले (I) 1824. संपत्तेश्च विपत्तेश्च दैवमेव हि कारणम् 3184. संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता 3187. Râja-Tar. 3,84. नृपविपत्तिकर् Vaṇîs. Bâlar. S. 30,25. विपत्तिषु Spr. 933. प्रायेण साधुवृत्तीनामस्थायिन्यो विपत्तयः 1685. क्षताः (तुण्यन्ति) परविपत्तिषु 4133. 5008. भीता इव हि धीराणां यान्ति दूरे विपत्तयः Kathâs. 37, 43. *das Zugrundegehen, Verderben, Untergang:* किंसखेक° adj. (नलिनी) Raghu. 8, 45. वानराणाम् R. 4, 56, 7. 8. शरीरस्य 7, 75, 4. भक्तभर्तृकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम् Spr. 2009. Kathâs. 18, 270. 42, 114. Pañcat. 125, 12 (pl.). *Tod:* तव विपत्तौ MBh. 1, 4029. Raghu. 19, 56. सा विपत्तेः Spr. (II) 2122. Kathâs. 66, 84. Râja-Tar. 4, 370. Mâlav. P. 110, 14. *das Verschwinden, Aufhören:* दृष्टानिष्ट° MBh. 12, 9140. = विपद्, आपद् AK. 2, 8, 2, 50. H. 478. an. 3, 302. Med. t. 159. = पातना H. an. Med. — Vgl. गर्भ° (auch Vaṇîs. Bâlar. S. 5, 85).

विपल (?) *eine best. Krankheit* Verz. d. B. H. No. 963 (22, b).

विपत्मन् (von 1. पत् mit वि oder 2. वि + पत्मन्) adj. etwa *durchfliegend* ṚV. 1,180,2.

1. विपथ (2. वि + पथ) 1) m. (AK.) n. (H.) *Abweg* AK. 2,1,17. H. 984. °गति प्रयाति ते MBh. 1, 1257. सत्पथं कथमुत्सृज्य यास्यामि विपथं पथः 12, 13858. विपथे सार्वलौकिना R. 2, 66, 4. विपथनाभ्रितः 3, 45, 7. विपथावपात Spr. 2522. — 2) *eine best. grosse Zahl* Vyutp. 179. Mél. asiat. 4, 638. — Vgl. वैपथिक.

2. विपथ (wie oben) m. n. *ein für ungebahnten Weg tauglicher Wagen* AV. 15, 2, 1. Kâṭy. Çr. 22, 4, 14. Pañcav. Br. 17, 1, 14. Liṭ. 8, 6, 9. Anupadas. 5, 4 in Ind. St. 1, 44, 1. °वाहो *einen solchen Wagen ziehend* AV. 15, 2, 1.

विपथि adj. *auf Abwegen gehend* ṚV. 5, 52, 10.

विपद् (1. पद् mit वि) f. गण संपदादि zu P. 3, 3, 108, Vârtt. 9. *das Misslingen* (Gegens. संपद्, सिद्धि): नेत्रवस्ति° Suçr. 1, 10, 5. *Unfall, Ungemach, Unglück* AK. 2, 8, 2, 50. 3, 4, 24, 131. 10, 123. H. 478. विपदा धैर्यं कृतम् Spr. (II) 1674. संपद्विपदौ प्रायः कस्यापि नहि स्थिरे स्याताम् 2040. (I) 931 (pl.). मरुद्भिः स्पर्धमानस्य विपदेव गरीयसी 2144. तन्निकषपाषाणे तु तेषां सुहृदां विपत् 2200. 2235 (pl.). विपदि धैर्यम् 2825. विपदि न यस्य विषादः 2826. विपत्संनिहिता तस्य 3278. Vaṇîs. Bâlar. S. 53, 90 (pl.). 75, 9 (pl.). घन° 79, 23. 93, 6. 96, 11. उत्तीर्णरोग° adj. Kathâs. 17, 43. मरुत्तौ दैवादुपेता विपत् Prab. 75, 12. Bâlar. P. 1, 9, 15. 4, 20, 12 (pl.). सर्वविपद्विमोक्षण 2, 10, 34. स्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम् Mâlav. P. 91, 27. विपत्काले Hit. 13, 19. सुलभविपदो प्राणिनाम् Megh. 99, v. l. *Tod:* सिंहादव्यपहिपदे नृसिंहः Raghu. 18, 34. — Vgl. दुर्° und व्यापद्.

विपदा f. = विपद् Rîsâm. zu AK. 2, 8, 2, 50 nach ÇKDa.

विपदी f. गण कुम्भपद्यादि zu P. 5, 4, 139.

विपन्न 1) adj. s. u. 1. पद् mit वि. — 2) m. *Schlange* Trik. 3, 3, 268. H. an. 3, 418. Med. n. 132.

विपन्नता (von विपन्न) f. *die Lage eines Unglücklichen, das Zugrundegehen* Vaṇîs. Bâlar. S. 51, 22. °तां गताः R. Gorr. 2, 80, 24.

विपन्यु (von पन् mit वि) und विपन्यया instr. *mit Bewunderung, — Jubel, freudig; auf wunderbare Weise:* देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया ṚV. 10, 72, 1. देवैर्धृतं विपन्यया धाः 3, 28, 5. प्र शर्धं मार्त प्रथमं विपन्या 4, 1, 12. यद्गिर्वृत्राणि जङ्घनद्भविष्णुर्विपन्यया 8, 16, 34. 1, 119, 7. Çâṅku. Çr. 18, 3, 2.

विपन्यु (wie oben) adj. VS. Pâiṭ. 5, 27. 1) *bewundernd, rühmend, ju-*

beind: विप्रास: RV. 1,22,21. 102,5. 138,3. 2,20,1. 3,10,9. 7,94,6. सो अर्वद्भि: सनिता स विप्रेभि: स शूरै: सनिता कृतम् 8,19,10. यद्भिना रुद्रामरुद्भि: । वयं गोभिर्विप्रेभि: 8,22,11. 76,6. 9,3,3. धिय: 86,17. — 2) *bewundernswerth:* die Açvin RV. 8,8,19. die Marut 5,61,15.

विपराक्रम (2. वि + प°) adj. *ohne alle Energie, keines muthigen Auftretens fähig* MBh. 6,4665.

विपरिणाम (von नम् mit विपरि) 1) *Veränderung, Umwandelung, Vertauschung* Sadd. P. 4,26,*b*. अग्निहोत्राख्याहुति° Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 277. किमक्षि° Pat. bei Gold. Mîn. 173,*a*. Kîç. zu P. 3,3,90. Kull. zu M. 4,189. — 2) *das Reifen:* फल° Durgâsiṃha zu Naigh. 1,20 bei Muir, ST. II, 175.

विपरिणामिन् adj. *sich verändernd, — umwandelnd:* पञ्चमहाभूतद्रव्यतया Kull. zu M. 1,27.

विपरिधान (von 1. धा mit विपरि) n. *Vertauschung* Kaṭç. 17.

विपरिध्वंश (von 1. ध्वंस् mit विपरि) m. 1) *das Misslingen, Missrathen:* कार्याणाम् MBh. 5,1419. — 2) *das Kommen um, Verlust:* सस्याय° MBh. 3,54.

विपरिलोप (von 1. लुप् mit विपरि) m. *Verlust* Çat. Br. 14,7,1,33. Çaṃk. zu Bâdar. 2,1,34 (nach Ânandâśr. S. 121, die Ausg. in der Bibl. ind. विलोप).

विपरिवत्सर m. *Jahr* Weber, Naksh. 2,286. — Vgl. परिवत्सर und वत्सर.

विपरिवर्तन (von वर्त् simpl. und caus. mit विपरि) 1) adj. (f. ई) *umkehren machend:* विद्या Kathâs. 46,121; vgl. परिवर्तन 1). — 2) n. *das Sichwälzen* R. Gorr. 2,96,14.

विपरिवृत्ति (von वर्त् mit विपरि) f. *Umkehr, Wiederkehr:* स्मरण° Prab. 72,14.

विपरीत (s. u. 3. इ mit विपरि) adj. *verkehrt* Hall. 4,72. RV. Prât. 14,14. 17. 18,23. Sâṃkhjak. 2. 10. 11. Ind. St. 8,338. fg. पादमेकमूरौ कृत्वा द्वितीये कटिसंस्थितम् । नारीषु रमते कामी विपरीतस्तु बन्धक: ॥ Ratimañjarî im ÇKDa. °क्रीडा Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,29. °प्रसूति Weber, Kṛshṇaj. 302. विपरीता sc. सतोबृहती *ein best. Metrum* RV. Prât. 16,38. sc. विष्टारपङ्क्ति desgl. Ind. St. 8,98. Bez. *einer best. Stellung der Finger* Verz. d. Oxf. H. 235,*a*,24. विपरीता = कामुकी Dhanañjaja im ÇKDa. — Vgl. वैपरीत्य.

विपरीतक (von विपरीत) adj. *verkehrt* Spr. 2999. पादमेकमूरौ कृत्वा द्वितीये स्कन्धसंस्थितम् । कामिन्या: कामयेत्कामी बन्ध: स्याद्विपरीतक: ॥ Smaradîpikâ im ÇKDa.

विपरीतता (wie oben) f. *Gegentheil:* गुरुत्वं विपरीतता (d. i. लाघवं) वा Spr. 1346.

विपरीतपद्या f. *die umgestellte* Pathjâ, Bez. eines best. Metrums Colebr. Misc. Ess. II, 138 (IV, 3).

विपरीतवत् (von विपरीत) adv. *auf verkehrte Weise* Spr. 4216.

विपरीताख्यानकी f. *die umgestellte* Âkhjânakî, Bez. eines best. Metrums Colebr. Misc. Ess. II, 164 (VI, 7). Ind. St. 8,360.

विपरीतादि adj.: वक्त्र *ein best. Metrum* Ind. St. 8,345.

विपरीतान्त adj.: प्रगाथ *ein best. Metrum* RV. Prât. 18,9.

विपरीतोत्तर adj.: प्रगाथ *ein best. Metrum* Ind. St. 8,101. 143.

विपर्णक (2. वि + पर्ण) m. *Butea frondosa* Çabdâm. im ÇKDa.

विपर्यय *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 179. 181. Mél. asiat. 4,638.

विपर्यक् (von पर्यञ्च्, यञ्च् mit परि) adv. *verkehrt:* काश्चियद्विपर्यग्धृतवस्त्रभूषणा: Bhâg. P. 10,41,25. — Vgl. पर्यक्.

विपर्यत्त, °त्ति Harîv. 12108 falsche Lesart für विसर्पत्ति, wie die neuere Ausg. liest.

विपर्यय (von 3. इ mit विपरि) 1) adj. *im umgekehrten Verhältnisse stehend:* तद्रात्र्याहाणि विपर्ययाणि Bhâg. P. 5,21,5. *im Gegensatz stehend zu* (gen.) 6,1,35. *verkehrt:* नृणां विपर्ययेक्षा (निष्पत्तिक्रियाणामीक्षणम् Comm.) 7,11,9. कर्मन् 9,1,17. *verkehrt zu Werke gehend* 5,14,33. — 2) m. = व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, वैपरीत्य AK. 3,3,23. H. 1501. Hall. 4,44. *a) Umlauf:* सूर्यस्य Weber, Gjot. 93. — *b) Umwälzung* R. 7,11,18. *Untergang der Welt* 7,4. — *c) Umstellung, Vertauschung, Wechsel; umgekehrtes Verhältniss, Gegentheil:* षट्कविपर्यय, पक्ष° Âçv. Ça. 3,3,6. आदि° Nir. 2,1. स° 5,26. 6,1. आप्यत्त° 2,1. P. 3,1,123, Schol. Lâṭ. 6,5,29. Çâṅkh. Ça. 4,6,3. नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा Bhâg. P. 6,8,5. आलिङ्गने चैव (so die ed. Bomb.) चैव चक्रतुस्ते विपर्ययम् MBh. 3,11061 (S. 571). विपर्ययं न कुर्वीत वासस: 13,5040. Harîv. 535 (विपर्यय: die neuere Ausg.). वायो: *Veränderung des Windes* Varâh. Bṛh. S. 21,13. गन्धरस° 46,50. सोम° AV. Paric. in Ind. St. 16,319. वर्ग° AV. Prât. 2,28. द्रव्य° Jâṭ. 3,63. प्रियाप्रिय° 64. समुद्रगानूपविपर्यये ऽपि Kumâras. 7,42. वेष° Pañkat. 37,3 (33,9 ed. orn.). हेतु° Soṃç. 2,154,16. 413,2. लिङ्ग° Weber, Râmat. Up. 336. Bhâg. P. 9,1,27. द्रव्य° als Bedeutung von क्री Vop. 16, Anf. क्रियाकारकफलभेदादिविपर्ययेण Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 16. विपर्ययो न तेघस्ति Mârk. P. 53,37. संधिविपर्ययौ *Friede und sein Gegentheil* d. i. *Krieg* M. 7,65. संयोगविपर्ययौ *Verbindung und Trennung* Râgân. 8,88. RV. Prât. 6,12. 11,24. 14,25. 27. MBh. 3,2286. 5,1646. R. 2,22,20. Spr. 4364. 4912. 5152. Soṃç. 1,118,8. 236,3. 2,538,12. Kâm. Nîtis. 16,34. Varâh. Bṛh. S. 15,32. 21,27. 26,12. 40,14. 86,71. 88,24. Bhâg. P. 1,19,38. तद्विपर्यय: 4,5,25. 6,1,40. 8,21,21. अति° Kathâs. 52,255. विपर्ययं या *in seinen Gegensatz umschlagen* Spr. (II) 1294. विपर्यय so v. a. *Nichts von alle dem Vorhergehenden* M. 3,49. प्रभावस्य so v. a. *Ohnmacht* Râǵa-Tar. 1,160. रात्रे: so v. a. *Tag* Kîr. 11,44. स्वप्न° so v. a. *Wachen* Soṃç. 1,245,7. 2,304,18. संज्ञा° R. ed. Bomb. 5,46,33. Kumâras. 6,44. माया° Râgân. 1,32. क्षय° 11,86. कीर्ति° 14,33. सदाचार° Râǵa-Tar. 4,28. सत्यधर्म° R. 1,23,2. 7,106,13. बुद्धि° *eine entgegengesetzte Ansicht* Bhâg. P. 7,5,9. विपर्यये *im umgekehrten Falle* RV. Prât. 1,20. 2,3. 16,38. M. 4,235. R. Gorr. 2,31,20. 3,45,9 (विपर्यये न zu schreiben). Soṃç. 1,124,2. Spr. (II) 1006. Çâk. 71,12. विपर्ययेण dass. RV. Prât. 14,16. MBh. 12,1734. 13,491. विपर्ययात् dass. Varâh. Bṛh. 4,3. — *d) ein Umschlagen zum Schlimmern, Verschlimmerung, schlimme Wendung:* लक्ष्म्या विपर्यये R. 2,22,29. कार्यमेति विपर्ययम् *nimmt einen schlechten Ausgang* Spr. 4771. काल° *ungünstige Zeit* MBh. 2,2525. रूप° *Entstellung der Gestalt* M. 11,48. R. 3,75,20. भाग्य° *ein schlimmes Los, Missgeschick* 72,28. Vikr. 63,19. Spr. 2586. Râǵa-Tar. 1,198. 4,332. 619. दशाभाग्य° R. 5,75,17. 7,30,31 (hier भाग st. भाग्य). विधि° *ein widerwärtiges Geschick, Unglück* Vikr. 69,9. सर्व° *eine Verkehrung der Vermögensverhältnisse, Verlust des Vermögens* Spr. 1804 (II). 4190. लङ्घा° *der Unfall* (= ना-

श Comm.) *mit* Lañkâ R. 7,6,30. प्रवरुणा° Mṛicch. 106,8. गर्भ° R. 1, 47, 2. *Elend, Unglück* R. 6,23,26. Bhâg. P. 4, 12, 4. 7,2,47. — *e) Verkehrtheit, perversitas:* विपर्यस्ता मतिः पुत्रे विश्वासो वैरिसंश्रिते। जायते क्षीणभाग्यानां को नाम न विपर्ययः ॥ Râga-Tar. 8,1259. अयुक्तो ऽयं कुलस्यास्य विपर्ययः R. ed. Bomb. 1,21,2. Bhâg. P. 4,6,43. 7,13,25. कृता विपर्ययम् Kathâs. 62,203. प्रज्ञा° R. 5,51,6. बुद्धि° Kathâs. 61,151. मति° Râga-Tar. 2,45. कर्म° *ein verkehrtes Thun* Spr. 1595. — *f) das Wechseln der Ansicht, das in Widerspruch Gerathen mit sich selbst* R. 2,34,48. विचारस्यान्यथाभावः संदेहात्तु विपर्ययः Sâh. D. 456. 434. Beispiel: मत्वा लोकमदातारं संतोषे यैः कृता मतिः। त्वयि राजनि ते राजन्न तथा व्यवसायिनः ॥ 179, 9. 10. — *g) eine verkehrte Ansicht, — falsche Auffassung, Irrthum:* सीमाज्ञाने नृणां वीक्ष्य नित्यं लोके विपर्ययम् M. 8, 249. Kap. 1,56. विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् Jogas. 1,8. Tarkas. 52. यतस्मिंस्तदुद्धिर्विपर्ययः Sarvadarçanas. 166, 16. Vedântas. (Allah.) No. 142. Bhâg. P. 3,7,10. 4,14,29. 7,12,10. अविपर्ययात् *ohne Irrthum, ganz sicher, ohne allen Zweifel* Sâhityad. 64. विपर्ययः संशयो ऽविपर्ययादसंशयात् Comm. — *h) das Vermeiden, Entgehen* (= परिहार Comm.): मूलस्य R. 7,63,31. — *i) das Währen, Dauern* (?): यावन्मोक्षविपर्ययात् R. 6,21,35. — *k) Bez. gewisser Formen des Wechselfiebers* Wise 232. Suçr. 2,404,4.

विपर्यस्त adj. *umgestellt, verkehrt* Ind. St. 8,319. 10,420. *entgegengesetzt*, mit abl. Sâhityad. 23. Andere Belege s. u. 2. यस् mit विपरि.

विपर्याण (2. वि + प°) adj. *entsattelt* Kathâs. 94,17. विपर्याणीकृ *entsatteln:* °कृत 81,20.

विपर्याय m. = विपर्यय *Gegentheil* Bhar. zu AK. 3,3,23 und Kullûkabhaṭṭa im ÇKDr.

विपर्यास (von 2. यस् mit विपरि) m. = विपर्यय AK. 3,3,23. H. 1301. Halâj. 4,44. = प्रपञ्च AK. 3,4,8,29. 1) *das Umwerfen:* eines Wagens Gobh. 2,4,3. Pâr. Gṛihj. 1,10. — 2) *Umstellung, Versetzung an einen andern Ort:* मेरोः MBh. 7,8899. — 3) *Ablauf:* युगस्य MBh. 7,424. — 4) *Vertauschung, Verkehrung, Wechsel; umgekehrtes Verhältniss, Gegentheil:* कर्म° Çâṅkh. Çr. 5,10,13. सचाम् 13,1,6. Âçv. Çr. 1,12,31. 4, 8,11. Kâty. Çr. 5,8,17. 9,5,11. 12,1,17. क्षत्रमाहात्म्य° Suçr. 1,253,2. P. 2,3,36, Vârtt. 5. H. 69. Ind. St. 10,421. विपर्यासं प्राप् MBh. 3,13233. विपर्यासं यातो घनविरलभावः तितिरुरुणाम् Uttarar. 35,12 (47,6). दशा° 78,5 (96,18). न च कुर्याद्विपर्यासं वासतोः Mârk. P. 34,54. Kathâs. 20,79. नाम° MBh. 3,13486. शीतोष्ण° Varâh. Bṛih. S. 46,39. 97,4. Hariv. 1451. रूपस्य R. 7,2,22. धर्मवृद्धिः तपाक्रम उदगतो। दक्षिणेतो विपर्यासः *das umgekehrte Verhältniss* Weber, Gjot. 29. Sâhityad. 19. 43. Varâh. Bṛih. S. 41,13. पाद° Kathâs. 98,54. आत्म° (= अन्यथाभाव Comm.) Bhâg. P. 7,2,25. करोत्यतो विपर्यासम् *er thut das Gegentheil davon* 7, 41. 11,3,18. स्त्रीपुंसयोर्विपर्यासचेष्टितम् Sâh. D. 507. स्तुति° so v. a. *Tadel* Râga-Tar. 4,633. — 5) *ein Umschlagen zum Schlimmern, schlimme Wendung:* भाग° (wohl भाग्य° zu lesen; vgl. u. विपर्यय 2) *d*) MBh. 7, 1352. — 6) *Unglücksfall* so v. a. *Tod* (= दैववियोग Comm.) R. 7,108, 9. — 7) *Verkehrtheit* Râga-Tar. 4,635. मति° *eine falsche —, irrige Meinung, Irrthum* 3,42. Pañkat. 129,3. — 7) *eine im Geiste vorgehende Verwechselung:* मुखदुःख° Spr. 3242. *eine verkehrte Ansicht, — falsche Auffassung, Irrthum* Bâlarâm. 126. Bhâg. P. 3,26,30. — विपर्यासम् absol. s. u. 2. यस् mit विपरि.

विपर्व (2. वि + पर्वन्) adj. *gelenklos* d. i. *ohne verwundbare Stelle* ṚV. 1,187,1. erklärt durch विपर्वन् Nir. 9,25.

विपल (2. वि + पल) *ein best. Zeitmaass, ein best. Theil eines* Pala Siddhântaç. 4,8.

विपलायिन् (von पलाय् mit वि) adj. *fliehend* Spr. 4499.

विपलाश (2. वि + प°) adj. *blattlos, der Blüthenblätter beraubt:* अम्बुज Hariv. 4772.

विपवन (2. वि + प°) adj. (f. आ) *windlos:* संध्या Varâh. Bṛih. S. 30,7.

विपश्च (von 1. पू mit वि) adj. *vollständig zu läutern, — reinigen* P. 3,1,117, Schol. — Vgl. विपूय.

विपशु (2. वि + पशु) adj. *des Viehes beraubt* Varâh. Bṛih. S. 19,7.

विपश्चि adj. = विपश्चित् TBr. 3,12,3,4.

विपश्चित् (विपस् + 2. चित्) 1) adj. *begeistert, seherisch;* überh. *sinnig, weise, klug, verständig, seine Sache kennend* AK. 2,7,4. H. 342. Halâj. 2,177. विश्वो यो विपश्चितो ऽति ख्यः ṚV. 8,54,9. धीरासो हि ष्ठा कवयो विपश्चितः 4,36,7. वि तन्वते विपश्चितो ऽयं विपो जनानाम् 8,1,4. 3,3. 43,19. 1,164,36. 5,81,1. वाचम् 9,64,28. 16,3. 18,177,1. ब्रह्मौनहिंस्यात्तपसा विपश्चित् AV. 8,9,3. Çat. Br. 3,3,2,12. 11,5,5,7. (अग्निः) पिता पशूनामसुरो विपश्चितान् ṚV. 3,3,4. विपश्चितं पितरं वक्वानाम् 26,9. 27,2. Mitra-Varuṇa 5,63,7. Indra 1,4,4. 8,13,10. 67,1. Soma 9,12,3. 22,3. 33,1. 86,26. 96,22. 101,13. die Sonne AV. 13,2,4. यत्रेतशेभिरीयसे भ्राजमानो विपश्चिता VS. 4,32. die Seele Kaṭhop. 2,18. — सर्वेषां तु विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता। मन्त्रयेत्परमं मन्त्रं राज्ञा M. 7, 58. 81. Bhag. 2,60. R. 2,21,31. R. Gorr. 2,78,6. 3,30,11. 6,20,7. Raçi. 3, 29. Spr. 947 (II). 1100. 1150. 1351. 2122. 4693. 5339. 5347. Varâh. Bṛih. S. 5,17. 43,49. 56,30. Bhâg. P. 1,18,22. 2,10,38. 4,24,68. 5,1,18. 5,7. 6,5,9. Mârk. P. 13,11. Sarvadarçanas. 58,1. 129,10. सेवा° *erfahren in* Kâm. Nîtis. 5,57. अ° Kâç. 73. Bhag. 2,42. — 2) m. N. pr. *a)* des Indra unter Manu Svârôkisha VP. 260. Mârk. P. 67,3. Verz. d. Oxf. H. 85,*a*,3. — *b)* eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,22. fehlerhaft für विपश्यिन्.

विपश्चित adj. = विपश्चित् Hariv. 6194.

विपश्यन (von 1. पश् mit वि) n. bei den Buddhisten *richtiges Erkennen u. s. w.* Wassiljew 141. 144. 172. 254. 319. Hier und da fälschlich वैपश्यन geschrieben.

विपश्यिन् (wie eben) m. N. pr. eines Buddha H. 236. Wilson, Sel. Works I, 290. II, 5. 8. 13. fg. 22. Burn. Intr. 222. 317. Lot. de la b. l. 503. Wassiljew 187. — Vgl. विपश्चित् 2) *b*).

विपस् (von 1. विप्) n. *Erregung, Begeisterung* in विपश्चित् und विपोधा.

विपांसुल (2. वि + पांसु°) adj. (f. आ) *frei von Staub* MBh. 3, 12897 (°पांशुला od. Calc.).

विपाक (von 1. पच् mit वि) 1) adj. *reif:* साति ṚV. 1,168,7. — 2) m. *a) das Kochen,* = पचन Med. k. 158. — *b) das Reifen, Fruchttragen,* insbes. *das Heranreifen der Frucht der Werke; die Folgen;* = परिणाम Taitt. 3,3,43. H. an. 3,99. = कर्मणो विसदृक्फलम् Med. = भवितव्यता Halâj. 1,126. फलस्य Kir. 4,26. Varâh. Bṛih. S. 46,20. Bhag. 9,

1. 22. 9, 8. Sarvadarçanas. 168, 15. कर्मणाम् Jiñ. 3, 181. MBh. 8, 2163. 13, 6661. 6666 (mit der ed. Bomb. विपाकं कर्मणां zu lesen). Spr. (II) 318. 2122. (I) 5000. Mâlav. P. 71, 12. Verz. d. Oxf. H. 151, a, 12. कर्मण: R. 2, 64, 57. Jogas. 1, 24. 2, 13. MBh. 5, 967. Harîv. 7347. ब्रह्मात्तरूपातकानाम् Rasa. 14, 62. पुण्यानाम् Spr. 1484. विधे: 2407. सुकृत° Gît. 5, 12. Bhâg. P. 3, 10, 9. 4, 5, 9. 24, 41. 5, 25, 15. 10, 71, 10. — MBh. 3, 13787. Uttarar. 38, 11 (32, 5). 75, 4 (96, 14). Kathâs. 37, 145. विपाकवारुकं कस्य नाम्नवाक्यावधीरणम् 36, 94. °काल Râjâ-Tar. 6, 93. Pañcar. 1, 15, 18. दशा° ein resultirender Zustand Milavim. 149, 4. °दारुणो राज्ञो रिपुरत्यो ऽपि in den Folgen, in der Folgezeit Spr. 2827. भुक्त्वा य: सुकृतं शास्त्रं मर्त्यो न प्रतिपद्यते । विपाकान्ते दुरन्तेयं किंपाकमिव भक्षितम् ॥ 5092. योगविपाकतोऽन्या in Folge des Joga, durch die Wirkungen des Joga Bhâg. P. 4, 9, 2. वाग्वर्कसंयोग° 5, 16, 21. 7, 15, 50. भक्षितस्य विषस्येव विपाक: R. Gorr. 2, 65, 10. — c) Verdauung; Verarbeitung und Umwandlung der in den Körper aufgenommenen Heilstoffe (so v. a. पाक): द्रव्यं चतुर्विपाकश्च त्रिधा ज्योतिर्विधीयते MBh. 12, 8923. 7412. Harîv. 11337. घर्कपत्रै: — तीव्रविपाकै: 1, 716. 14, 999 (घ°). Sucr. 1, 5, 17. 75, 5. 147, 2. 149, 4. fgg. यदुपयुक्तं चिराद्विपच्यते विष्टभ्नाति वा स विपाकदोष: 171, 4. 183, 5. ब्राह्मरेणाग्निना योगाग्यदुदेति रसान्तरम् । रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृत: Vishn. 9, 20. fg. — d) Unglücksfall, Unfall: गोवृषाणाम् Jiñ. 3, 284. = दुर्गति H. an. — e) = स्वाद् Mad. = स्वादु H. an. — Vgl. घ°, कटु°, कर्म°, दुर्विपाक दैव° auch Uttarar. 20, 5 (27, 5). 121, 8 (164, 4). दुर्विपाक adj. schlimme Folgen habend 22, 4 (29, 5).

विपाकश्रुत n. Titel des 11ten der 12 heiligen Bücher der Gaina H. 244. Wilson, Sel. Works I, 285.

विपाकिन् (von 1. पच् mit वि oder von विपाक) adj. reifend, Früchte tragend, Folgen habend: संप्रत्यसाविरुं पाप्मन: पत्नमनुभवत्युयं पाप: (so die v. l.) प्रतीपविपाकिन: Milavim. 83, 8. fg.

विपाट m. 1) N. pr. eines Mannes MBh. 7, 1433. — 2) MBh. 4, 1666. 1668 fehlerhaft für विपाठ (so die ed. Bomb.).

विपाटक (von पट् mit वि) adj. wohl aufschliessend so v. a. bringend: नक्तंचरितयं शुभाशुभविपाटकम् Mâlav. P. 58, 10.

विपाटन (wie oben) n. 1) das Spalten Nir. 9, 26. — 2) das zu Grunde-Richten: राष्ट्र° Râjâ-Tar. 3, 328. अन्योऽन्य° 5, 264.

विपाटल (2. वि + पाट°) adj. roth: °नेत्र Ṛt. 4, 14. कोपविपाटलद्युतिमुख Sin. D. 136, 10 (Ratnâv. 30, 5 कोपविषाण्डुरप्रतिमुख).

विपाठ 1) m. eine Art Pfeil Taitt. 2, 8, 52. Hir. 5. MBh. 1, 1582. 3, 13732. 4, 168. 1331. 1666. 1668 (fälschlich विपाट ed. Calc. an den zwei letzten Stellen). 5, 1868. 7, 1644. R. 6, 20, 27. — 2) f. आ ein Frauenname Mâlav. P. 75, 16.

विपाण्डव Ṛt. 2, 13 fehlerhaft für विपाण्डुर, wie die v. l. hat.

विपाण्डु (2. वि + पाण्°) adj. weisslich, bleich Sucr. 1, 95, 13. Çiç. 9, 2. Kir. 5, 6. Kathâs. 87, 21.

विपाण्डुता (von विपाण्डु) f. das Bleichsein: विपाण्डुतां या bleich werden Ṛt. 4, 10.

विपाण्डुर (2. वि + पाण्°) adj. = विपाण्डु Ṛt. 2, 13 (nach der richtigen Lesart). Çiç. 4, 5. Sin. D. 136, 7 (Ratnâv. 30, 3). Ind. St. 2, 238. Nâish. 20, 15.

विपात adj. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5, 1, 124. पावादि zu 4, 139. — Vgl. वैपात्य.

विपातक adj.: पशु gaṇa पावादि zu P. 5, 4, 29.

विपातन (vom caus. von 1. पत् mit वि) n. das Flüssigmachen, Schmelzen: क्षेत्र° P. 7, 3, 39.

विपादिका (von 2. वि + पाद्) f. 1) eine Art des Aussatzes Sucr. 1, 269, 9. Çiñc. Sâm. 1, 7, 64. Blasen u. s. w. an den Füssen, = पादस्फोट AK. 2, 6, 2, 3. H. 465. °कृते दास्यानीतं पञ्चाशतो घृतम् Râjâ-Tar. 8, 187. विपादिकां व्यादधाति P. 1, 3, 20, Schol. — 2) Räthsel Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. वैपादिक.

विपान (von 1. पा mit वि) n. das Wegtrinken VS. 19, 72. Çat. Br. 12, 7, 2, 4. Pañcav. Br. 14, 11, 26. — विपानानि MBh. 12, 9270 fehlerhaft für निपानानि, wie die ed. Bomb. liest.

विपाप्मन् (2. वि + पाप्मन्) 1) adj. (f. आ) fehlerfrei, sündenlos Çat. Br. 14, 7, 2, 28. R. 1, 36, 22. 7, 59, 2, 63. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 6, 333 (VP. 181).

विपाप्मन् (2. वि + पा°) 1) adj. fehlerfrei, sündenlos TBr. 2, 3, 3, 1. MBh. 1, 6781. R. Gorr. 2, 74, 54. सभा frei von Leiden MBh. 2, 33. — 2) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens MBh. 13, 4355.

विपार्श्व (2. वि + पार्श्व°), instr. विपार्श्वेन wohl so v. a. zur Seite, dicht bei R. Gorr. 2, 70, 18. Die beiden anderen Ausgg. lesen विपाशो चापि st. विपार्श्वेन च.

विपाल (2. वि + पाल) adj. keinen Hüter habend: पशु M. 8, 240. 242.

विपाश् f. (nom. °पाट्) N. pr. eines Flusses im Pandshab, Hypanis und Hypasis der Alten, Bijas heut zu Tage; soll früher Urugiṛâ geheissen haben. Nir. 2, 24. 9, 26. 28. AK. 1, 2, 2, 32. H. 1086. Ṛv. 3, 33, 1. 3. 4, 30, 11. P. 4, 2, 74. gaṇa कुञ्जादि zu 1, 98. शिवादि zu 112. Vop. 6, 62. Am Ende eines adv. comp. °विपाशम् gaṇa शरदादि zu P. 5, 4, 107. — Vgl. विपाशा, वैपाश, वैपाशायन.

विपाश gaṇa घरोरुणादि zu P. 4, 2, 80 1) adj. (2. वि + पाश) keine Schlinge habend: Varuṇa Harîv. 2693. R. 3, 54, 9. von den Fesseln befreit Ait. Br. 7, 16. MBh. 1, 6749. 3, 10544. 13, 192. — 2) f. आ = विपाश् AK. 1, 2, 2, 32. H. 1086. MBh. 1, 6780. 2, 271. 3, 10543. 6, 333 (VP. 181). 8, 2055. 13, 193. 1710. 1733. 4838. Harîv. 9306. R. 2, 68, 19. R. Gorr. 2, 85, 15. Varâh. Bṛh. S. 16, 21. Kathâs. 74, 190. Mâlav. P. 57, 18 (विपासा gedr.). 22. Verz. d. Oxf. H. 39, b, 9. Paiçâcikatrikaṇḍ. 11, b, 4.

विपाशन (von पाशय् mit वि) n. das Losbinden Nir. 4, 3. 9, 26.

विपाशिन् adj. ohne Strang (पाश) nach Nir. 11, 48 in Ṛv. 4, 30, 11.

विपासा s. u. विपाश 2).

विपिन Uṇâdis. 2, 32. 1) n. Sidd. K. 249, a, 8. Wald AK. 2, 4, 2, 1. H. 1110. Hall. 2, 35. MBh. 1, 2949. 3569. 3, 1511. 2730. 2960. 12424. Harîv. 14611. R. 2, 47, 6. Kir. Nîtiç. 14, 22. Raghu. 4, 31. 9, 72. Vikr. 57, 18. Spr. 1442 (II). 4723. Gît. 1, 32. 45. Kathâs. 22, 137. 37, 57. Prab. 73, 8 (विलास°). Bhâg. P. 1, 6, 14. 4, 28, 47. 5, 2, 7. 7, 2, 50. 9, 10, 11. Mâlav. P. 127, 3. am Ende eines adj. comp. (f. आ): यति° Kir. 5, 18. सुविपिना MBh. 3, 16235. — 2) adj. dicht: वन Bhâg. P. 9, 15, 28.

विपिनतिलक n. ein best. Metrum: 4 Mal ⏑–⏑–⏑–⏑–– Colebr. Misc. Ess. II, 161 (X, 10).

विपिनाय् (von विपिन) *wie ein Wald erscheinen, zum Walde werden:* आवासो विपिनायते Gîr. 4,10. Spr. (II) 1081.

विपीडम् (von 2. वि + पीडा) adv. *so dass kein Schaden, kein Leid erwächst (erwuchs):* तस्मिन् — विपीडं सम्यगमहीं शासति Raçu. 18,28.

विपुंसक (2. वि + पुंस्) adj. *nicht recht männlich, unmännlich* Kâm. 13,5. 7.

विपुंसी (wie oben) f. nach dem Comm. *ein Weib mit männlichem Aeusseren* Pân. Gaṇ. 2,7 (°पुंयो die Hdschr.).

विपुच्छ् (von 2. वि + पुच्छ्), °यते *den Schwanz hinundher bewegen* P. 3,1,20, Vârtt. 3.

विपुत्र (2. वि + पुत्र) adj. (f. आ) *des Sohnes —, des Kalbes beraubt* R. Gorr. 2,38,4.

विपुरीर्य (2. वि + पु°) adj. *vom Unrath befreit* Çat. Br. 12,5,2,5. Kâṭy. Çr. 25,7,18.

विपुरुष (2. वि + पु°) adj. *menschenlos:* कृता रथान्विपुरुषान् MBh. 5,2051.

विपुल 1) adj. (f. आ) *gross, umfangreich (breit, dick), stark, intensiv;* = महत्, विशाल, बृहत्, पृथु u. s. w. AK. 3,2,10. H. 1430. an. 3,682. Med. l. 131. Hall. 4,14. = अगाध H. an. Med. neben पृथु Pân. Gaṇ. 2,6. कुक्षिराष्ट्र MBh. 4,12. सागरानूपविपुला मही Hariv. 6363. वन R. 1,2,11. पुलिन Ṛt. 1,27. Spr. 2828. Pañcat. 3,12,4. द्रुद् MBh. 3,2351. सरस् Bhâg. P. 8,2,14. स्रोतांसि R. Gorr. 2,65,15. शमी MBh. 1,481. पृश्निनी R. Gorr. 2,57,3. वल्ली Spr. (II) 494. छाया MBh. 1,5896. सभा 2, 33. श्रोकस् Bhâg. P. 8,24,18. पताका R. 2,64,9. प्रास MBh. 1,1169. रथ्या: *gross, breit* R. 1,19,12. लोका: Spr. 1342 (II). आकाश 2085. नक्षत्रमार्ग MBh. 3,1767. तारका, अक् Vaṇîn. Bṛh. S. 11,17. 28. 13,7. 17, 10. 11. 20,8. 21,17. षोडशकरस्तोच्छ्रायं दशविपुलं तोरणं कार्यम् *breit* 44, 3. *dick* 58,22. fg. शिरसि तनुर्विपुलश्च मध्यदेशे (संधिः) Mṛicch. 51,19. नकुल *gross* AK. 3,4,28,172. मूर्ति Vaṇîn. Bṛh. S. 6,13. सटा MBh. 7,7904. अस्थि Suçr. 1,301,12. °श्रोण R. 5,73,12. वाहु Bhâg. P. 5,5,21. भुज 25, 5. अंस R. 1,1,11 (13 Gorr.). Vaṇîn. Bṛh. S. 68,24. श्रोणि Hit. 3,7. MBh. 3,2971. Spr. (II) 1633. नितम्बदेशे Milav. 42. वक्षस् R. 2,30,2. उरस् 111,12. त्रिषु (d. i. उरसि, ललाटे und वदने) विपुल: Vaṇîn. Bṛh. S. 68, 84. कर्ण 59. नेत्र. ईक्षण. दृष्टि MBh. 1,3977. R. 2,87,2. R. Gorr. 2,30,2. 3,21,3. दण्डनीति *umfangreich* 1,4,6. नीतिशास्त्र 79,20. रचना Vaṇîn. Bṛh. S. 1,2. 104,64. Verz. d. Oxf. H. 21,*a*,32. 79,*b*,2 v. u. प्रभा *intensiv* R. 4,39,8. दीधिति Vaṇîn. Bṛh. S. 3,10. करा: *sich weit ausbreitende Strahlen* Bṛh. 2,20. वृष्टि *viel Regen* Vaṇîn. Bṛh. S. 24,29. कोश *reicher Schatz* R. 3,61,27. वल *zahlreich* Prasaṇ. 3,7. धनौघ R. 2,80,4 (87,3 Gorr.). धनौघ Spr. 5010. धनागम M. 8,347. R. 2,48,4 (45,7 Gorr.). Spr. 1887. धन 1992. 5044. वित्त 2524. वसु Kathâs. 23,26. आय *grosse Einnahme* R. Gorr. 2,100,52. लाभ *Gewinn* Vaṇîn. Bṛh. S. 42,4. पृथ्वीविपुलदानक Pañcat. 2,7,20. भोगा: Spr. 4704. R. 3,43,29. विपुलार्थभोगवत्त: Vaṇîn. Bṛh. S. 68,67. गुणा: *viele* Spr. 2487. गुणविपुलेषु कुलेषु R. 4,41,79. पूर्वसुकृत Spr. 2051. वृत्ति Suçr. 2,395,12. श्री R. 3,34,28. 6,93,22. Spr. 3176. संलापो विपुलोदय: Râja-Tar. 3,142. धर्म MBh. 1,1715. धर्मावाप्ति R. 2,51,5. 86,6. वृद्धि 3,4,18. कर्मन् *bedeutend* MBh. 4,21. Hariv. 9327. R. 5,59,5. व्रत MBh. 1,5126. विपुलोच्छ्रय् R. 2,96,24. 4,1,24. तपस् MBh. 13,207. यशस् R. 3,45,8. ख्याति Râja-Tar. 5,153. मर्द MBh. 1,6121. आयास Prasaṇ. 92,13. श्रम Bhâg. P. 3,21,11. लोभ 3,9,6. शोक R. 2,66, 21. 3,69,21. प्रीति 2,79,2 (75,19 Schl.). शाप Bhâg. P. 4,27,22. प्रसाद 3,28,21. रुज् Çaut. (Bh.) 5. दण्डधारण MBh. 3,2344. आशय Râja-Tar. 4,341. बुद्धि MBh. 2,925. °बुद्धि adj. Suçr. 1,14,4. °प्रज्ञ MBh. 3,11285. °मति Vaṇîn. Bṛh. S. 51,44. Spr. 1104. 2829. fg. Kathâs. 53,197. °हृदय Spr. 2829, v. l. सत्त्व R. Gorr. 2,64,10. वंश so v. a. *vornehm* MBh. 1,2313. कुल R. 3,1,12. गुरु MBh. 13,3784. काल *lange Zeit* Hariv. 2954. स्वन, नाद, ध्वनि so v. a. *laut* MBh. 1,6037. 3,393. 8679. 5,3812. R. 6,101,24. Vaṇîn. Bṛh. S. 19,18. स्तुवन्ति यान्तं विपुलैर्वचोभि: Hariv. 13125. अतिविपुल Spr. (II) 1435 (ख). अतिविपुलतर (पृष्ठ) Gîr. 1,6. सुविपुल Vaṇîn. Bṛh. S. 48,79 (सिद्धि). MBh. 3,2302 (श्री). सुविपुलोच्छ्रय् R. 1,7,5. प्रणादा: MBh. 1,5340. शङ्खशब्द Hariv. 13221. Das unbelegte पुल mit derselben Bed. wie विपुल ist aller Wahrscheinlichkeit nach erst aus diesem geschlossen worden. — 2) m. N. pr. *a)* eines Fürsten der Sauvîra MBh. 1,5536 (nach der Lesart der ed. Bomb., वितुल ed. Calc.). eines Schülers des Devaçarman 13,2248. 2262. fgg. 7671. eines Sohnes des Vasudeva Bhâg. P. 9,24,45. — *b)* eines Berges Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,10. Hiouen-thsang II, 23. im Westen (Osten VP.) des Meru Med. VP. 168. Mârk. P. 54,20. fg. 56,13. = सुमेरु und हिमालय Duâr. im ÇKDa. — 3) f. आ *die Erde* (vgl. पृथ्वी, मही) H. 938. H. an. Hall. 2,1. — *b)* N. der Dâkshâjanî auf dem Berge Vipula Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,10. — *c) eine best. Varietät des* Ârjâ-*Metrums* Med. Colebr. Misc. Ess. II, 134,*a*. Ind. St. 8,296. fgg. 300. fg. 303. आदि°, मुख°, अन्त्य°, अघन°, उभय°, महा° 297. 300. fg. *eine best. Varietät des* Vaktra 339. Colebr. Misc. Ess. II, 158 (IV, 5). म°, र°, न°, त°, म°, य°, स° ebend.

विपुलता (von विपुल) f. *Grösse:* यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलताम् Çiç. 9.

विपुलत्व (wie oben) n. *Breite:* विपुलत्वेन so v. a. *im Durchmesser* MBh. 6,482. 486.

विपुलपार्श्व m. N. pr. eines Berges Vjutp. 103.

विपुलमति 1) adj. s. u. विपुल 1). — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Rishṭapâlap. 2.

विपुलय् (von विपुल) *verbreiten:* यशो विपुलयंस्तव Bhâg. P. 4,8,69.

विपुलरस 1) adj. *überaus saftig.* — 2) m. *Zuckerrohr* Çabdaratn. bei Wilson.

विपुलस्कन्ध 1) adj. *breitschultrig.* — 2) m. Bein. Aruṇa's H. ç. 9.

विपुलाम्बा f. *Aloe perfoliata Lin.* Râgân. im ÇKDa.

विपुलिनाम्बुरुह (2. वि + पु° - अम्बुरुह) adj. (f. आ) *keine Sandbänke und Wasserrosen habend:* सरित् Kir. 5,10.

विपुलीकर् (विपुल + 1. कर्) *ausbreiten, einer Sache einen grösseren Umfang geben:* त्वमेतद्विपुलीकुरु (भागवतम्) Bhâg. P. 2,7,51.

विपुष्ट (2. वि + पुष्ट) adj. *schlecht genährt, ausgehungert* Spr. 2409.

विपुष्प (2. वि + पुष्प) adj. *blüthenlos:* तरु Spr. 5027.

विपूय (von 1. पू mit वि) m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) Rosb. P. 3,1, 117. Vop. 26,20. Duârr. 6,60. nach einer anderen Lesart adj. als Beiw. von मुञ्ज in der Bed. *reinigend;* zu bemerken ist, dass auch पवित्र als Kuça-*Gras* erklärt wird.

विपूयक (2. वि + पूय) adj. *nicht mit Eiterung verbunden* Suçr. 1,270, 11; vgl. jedoch Wise 261.

विर्पक्कस् (von पर्च् mit वि) adj. etwa *unvermischt, lauter* (= सर्वतो व्याप्तम् Sây.): दद्मनो यस्मा घृतं विपक्कत् ṚV. 5,2,3.

विर्पच् (wie oben) adj. *sich nicht berührend, gesondert* VS. 9,1. TS. 3,1,9,2.

विपच s. विपच्.

विपचु (2. वि + पचु) 1) v. l. für विपच anderer Bücher Çiñkh. Çr. 14,72, 3 in Ind. St. 1,35. — 2) m. N. pr. eines zu den Vṛshṇi gehörenden Fürsten (neben पचु) MBh. 1,6998. 7,409. समर्पणामथार्धं च विपचुर्नाम पार्थिव: 12,10810. Harîv. 5078. 6626. 6633. fgg. 8058. 10298. 10386. 11008. ein Sohn Kitraka's (so auch die neuere Ausg. des VP.) und jüngerer Bruder Pṛthu's 1920. 2087. VP. 435 (विपच्य ein Fehler bei Wilson).

विपोधा (विपस् + 2. धा) adj. *Begeisterung machend* ṚV. 10,46,5. = मेधाविनो धर्ता Comm.

विप्र (von 1. विप्) Uṇâdis. 2,28. 1) adj. subst. *innerlich erregt, begeistert;* gewöhnliche Bez. *desjenigen, welcher vor dem Altar dem frommen Drang Worte leiht: Dichter, Sänger, Vorbeter* u. s. w. Nâigh. 3,15. Unter allen Synonymen ist im ṚV. dieser Ausdruck am häufigsten gebraucht. येषां ब्रह्माणि विप्रा विधेमेवयत्ति ṚV. 7,43,1. मति 66, s. 8, 23,24. ये त्वा नूनमनूनर्त्ति विप्रा: die Marut 8,47,4. यविष्ठो वा यद्विधद्विप्रो वेन्द्र ते वच: 8,50,9. वामीळ्विप्रतमं कवीनाम् 10,112,9. 9, 31,7. मा त्वा विप्रा नि रीरमन्यजमानासो अन्ये 2,18,3. कृतस्य ब्रह्मतुर्विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम् 10,40,14. प्र विप्राणां मतयो वाचं ईरते 9,85,7. वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो: 10,42,1. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति 1,164,46. येषिष्ठो यद्भिरसो विप्र: 6,11,3. विप्रा उक्थेभि: कवयो गृणन्ति 3,34,7. 1,129,2. 11. इन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्रा: 7,31,11. ऋषि 1, 162,7. 4,26,1. 7,22,9. 10,108,11. sieben 3,7,7. 31,5. 4,2,15. 6,22,2. ऋषिर्विप्राणाम् 9,96,6. VS. 9,1. Çat. Br. 1,4,2,7. TS. 2,5,9,1. *Priester* Vaitân. Bṛh. S. 44,21. neben पुरोहित 29,10. *Priester* Brahmaṇ's 60,19. — 2) adj. überh. *geistig belebt: scharfsinnig, klug;* auch Bez. von Göttern ṚV. 5,51,2. 6,51,2. 68,2. 7,88,4. 6. die Açvin 6,50,10. 7,44,2. Indra 4,19,10. 5,31,7. Savitar 5,81,1. Soma 9,66,3. bei Agni, der häufig so heisst, z. B. 3,2,13. 5,1. 14,5. 4,8,3. 9,39,2 könnte die Beziehung auf sein *priesterliches* Amt, also Bed. 1) gemeint sein. विप्र: स उच्यते भिषक् ṚV. 10,97,6. — 3) adj. subst. *gelehrt, ein gelehrter Theolog:* ये वै ब्राह्मणा: प्रमुखवासो ऽनूचानास्ते विप्रा: Çat. Br. 3,3,3,12. TS. 2,3,9,1. vgl. Schol. zu Çiç. 128: जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेय: संस्कारैर्द्विज उच्यते । विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभि: श्रोत्रिय उच्यते ॥ — 4) m. *ein Brahmane* überh. AK. 2,7,4. 3,4,2,32. 40,117. Taik. 2,7,2. H. 812. Hall. 2,236. M. 1,96. 109. 2,37. 42. 150 u. s. w. (fast eben so häufig wie ब्राह्मण gebraucht). Jiân. 1,91. MBh. 1,6119. 3,11914. R. 1,8,12. 61,6. 2,32,2. 82,31. Spr. 1705 (II). 1399. 2631. 4334. 5013. fgg. Suçr. 1,15,6. 111,10. Vaitân. Bṛh. S. 3,25. 5,32. 98. 30,17. 33,13. Weber, Rînây. Up. 362. Kathâs. 4,110. 18,107. 403. Brahma-P. in LA. (III) 56, 6. Dhûrtas. 76,6. Pañkat. 138,2. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 12,3241. विप्रा *f. eine Frau aus der Brahmanenkaste* Gotama bei Colebr. Misc. Ess. I,120. M. 8,378. 10,12. Bhâg. P. 5,1,65. Pañkat. 1,4,42. 44. — 5) m. Bez. gewisser göttlicher Wesen: साध्या विप्रा पक्षा रक्षांसि Âçv. Gṛhj. 3,4,1. — 6) m. *der Mond* Dhanvaṇ. in Nigh. Pr. — 7) m. = भाद्रपद् ebend. — 8) m. *Ficus religiosa* Râjân. in Nigh. Pr. = शिरीष Mkh. ebend. — 9) m. *Proceleusmaticus* Colebr. Misc. Ess. II, 131. — 10) m. N. pr. eines Sohnes des Çishṭi VP. 98 (विप्र Harîv.), des Çrutasâgara (Śrutasâgara) 465. Bhâg. P. 9,22,46. — Vgl. श्र° und वेपिष्ठ.

विप्रकर्ष (von 1. कर्ष् mit विप्र) m. gaṇa क्षेत्रादि zu P. 5,1,64. 1) *das Wegschleppen, Fortführung:* द्रौपद्या: MBh. 3,55. — 2) *räumliche Entfernung* Vish. 66,10. Daçak. 4,47. — 3) *zeitliche Entfernung:* काल° *Zeitintervall* AV. Paipp. 2,39. चिरकालविप्रकर्षात् *weil eine lange Zeit dazwischenliegt* Prab. 24,15. — 4) *Abstand, Contrast, Unterschied:* बहु° P. 5,3,55, Vârtt. 3. यन्येषां कर्म सफलमस्माकमपि वा पुन: । विप्रकर्षेण (= कर्मकरणात्ते Nîlak.) बुध्येत कृतकर्मा यथाफलम् ॥ MBh. 3,1247. स्वगुणैरेव गर्जन्ति विप्रकर्षं परैर्जनात् Spr. (II) 924. — 5) in der Gramm. *Auseinanderreissung —, Trennung zweier Consonanten durch Einfügung eines Vocals* Varar. 3,58 bei Lassen, Institt. linguae pracr. S. 87. — Vgl. वैप्रकर्षिक.

विप्रकार (von 1. कर् mit विप्र) m. *Zufügung eines Leides, Beleidigung* AK. 3,3,15. H. 441. Hall. 4,84. MBh. 1,2344. स बाधते प्रजा: सर्वा विप्रकारै: (विविधै: प्रकारै: Nîlak.) 3,15981. 5,31. 7,5369. ब्रह्मगाव तदाप्स्यातु तमा°?) विप्रकारं मुरेतरै: 8,1429. 13,4212. विप्रकारान्प्रयुङ्क्ते स्म मुञ्चन्मम वेश्मनि 7495. R. Gorr. 2,22,5. तपस्विनाम् 3,10, 19. 6,13,29. am Ende eines adj. comp. f. आ Kir. 3,55.

विप्रकाश am Ende eines comp. = प्रकाश *den Schein von Etwas habend, aussehend wie, ähnlich:* यमर° Harîv. 6138.

विप्रकाष्ठ (विप्र + का°) n. *das Holz der* (weichen) *Brahmanen* d. i. *die Baumwollenstaude* Râjân. im ÇKDn. *Thespesia populneoides Wall.* Nigh. Pr. nach dens. Aut.

विप्रकीर्ण s. u. 3. कर् mit विप्र. m. (sc. कृस्त) Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanze* Verz. d. Oxf. H. 202,a,26.

विप्रकीर्णत्व (von विप्रकीर्ण) n. *das Zerstreutsein:* शाखानाम् Kumâra bei Müller, Sl. 105.

विप्रकृत् (von 1. कर् mit विप्र) adj. *Jmd* (gen.) *ein Leid zufügend* Bhâg. P. 6,17,11.

विप्रकृति (wie oben) f. *Abänderung:* नोक्तं विप्रकृतिं नयेत् *das einmal Ausgesagte soll er nicht abändern* Jiân. 2,9.

विप्रकृष्ट s. u. 1. कर्ष् mit विप्र und füge daselbst noch für die Bed. *entfernt* Hall. 4,8 hinzu.

विप्रकृष्टक adj. = विप्रकृष्ट *entfernt* AK. 3,2,18.

विप्रकृष्टत्व (von विप्रकृष्ट) n. *Entfernung* MBh. 3,1747.

विप्रकृति (von कल्प् mit विप्र) f. *besondere Veranstaltung* Kâty. Çr. 25,4,16.

विप्रचित् m. N. pr. eines Dânava, Vaters des Râhu, Bhâg. P. 6, 18,12. — Vgl. विप्रचित्ति.

विप्रचित (विप्र + चित) gaṇa मतंगमादि zu P. 4,2,80. — Vgl. वैप्रचिति und मुनिचित.

विप्रचित्त MBh. 6,3021 fehlerhaft für विप्रचित्ति, wie die ed. Bomb. liest.

विप्रचित्ति (विप्र + चित्ति) 1) adj. *scharfsinnig* TBr. 3,10,9,3. — 2)

m. N. pr. a) eines Lehrers Bṛh. Âr. Up. 2, 6, 3. 4, 6, 3. Verz. d. Oxf. H. 18, b, 15. 19, a, 39; vgl. विप्रचित्ति. — b) eines Dânava, Vaters des Râhu u. s. w. MBh. 1, 2330. 2640. 2, 365. 6, 4212. 5031 (विप्रचित्त ed. Calc.). 12, 3661. 6146. 7545. Harîv. 204. fg. 213. 264. 2281. 12463. 12502. 13695. 13059. 13193. 13883. fgg. 14282. VP. 147. fg. Bhâg. P. 6, 6, 30. 35. 10, 19. 7, 2, 3. 8, 10, 19. Mârk. P. 18, 18.

विप्रचन (विप्र + चन) m. 1) *Priester* oder coll. *die Priester* MBh. 3, 13687. — 2) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Saurâki Kâṇ. 27, 5 in Ind. St. 3, 477, 2 v. u.

विप्रचित्ति m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14, 5, 5, 22. 7, 3, 28. Verz. d. Oxf. H. 18, b, N. 3. — Vgl. विप्रचित्ति 2) a).

विप्रचूत (विप्र + चूत) adj. von *den Betern getrieben* ṚV. 1, 3, 5.

विप्रचूति m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâtaraçana, Liedverfassers von ṚV. 10, 136, 3.

विप्रणाश (von 1. नश् mit विप्र) m. *das Verlorengehen, spurloses Verschwinden:* अविप्रणाशः सर्वेषां कर्मणामिति निश्चयः so v. s. *kein Werk bleibt unbelohnt (ungestraft)* MBh. 13, 923.

विप्रता (von विप्र) f. *der Stand —, die Würde eines Brahmanen* Spr. 4713. विप्रतामुपयान्ति गाम *wurde Brahmane* VP. 4, 19 bei Mcln, ST. I, 53, N. 45.

विप्रतारक (vom caus. von 1. तॄ mit विप्र) m. *Schakal (Betrüger; vgl.* वञ्चक) H. an. 3, 112.

विप्रतिकूल (2. वि + प्र°) adj. *widerspänstig, widersetzlich:* पुत्राः Bhâg. P. 7, 4, 45.

विप्रतिपत्ति (von 1. पद् mit विप्रति) f. 1) *Verkehrtheit der Wahrnehmung, Sinnestäuschung* u. s. w. Suçr. 1, 112, 11. 114, 13. 117, 14. — 2) *Widerspruch:* वमन्यित्वचने रौद्रे शौचे चर्तनुमिच्छसि । इयं विप्रतिपत्तिस्ते (= विपरीता बुद्धिः Nîlak.) यदा वं पिशिताशनः ॥ MBh. 12, 4091. — 3) *das Auseinandergehen von Meinungen, Meinungsverschiedenheit:* व्याहतमेकार्थदर्शनं विप्रतिपत्तिः (= व्याघात, विरोध, असद्भाव) Comm. zu Nyâyas. 1, 1, 23. Kâç. Ça. 1, 4, 9. Lâṭ. 6, 1, 19. Vaṃç. Bṛh. S. 9, 7. Kull. zu M. 9, 33. Verz. d. Oxf. H. 244, b, No. 609. गुणवताम् Kull. zu M. 8, 73. Comm. zu TBr. 1, 168, 2 v. u. वादि° Kap. 1, 112. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 7. आचार्य° Gauḍap. zu Sâṃkhyak. 8. Verz. d. Oxf. H. 269, b, 39. परस्पर° Nîlak. 71. Kull. zu M. 7, 120. धर्मविशेषे Schol. zu Kap. 1, 139. श्रुतुर्नाप्यायां विप्रतिपत्तिराचार्याणाम् Weber, Gjot. 36. Kull. zu M. 8, 7. द्वयोर्ग्रामयोर्मर्यादां प्रति विप्रतिपत्तावुत्पन्नायाम् zu 245. Windischmann, Sancara 93, 1 v. u. Sarvadarçanas. 116, 20. 129, 7. कार्यकारणभावे चतुर्धा विप्रतिपत्तिः 149, 15. द्वितीय°, तृतीय°, तुरीय° Kusum. 21, 3. 4. 25, 3. 43, 3. गणादि° Kull. zu M. 7, 151. सविप्रतिपत्त्या *ohne alle Meinungsverschiedenheit, einstimmig* Comm. zu ṚV. Prâṭ. 3, 12 (Sûtra 20). *Conflict zwischen zwei Auffassungen, Antinomie* Sarvadarçanas. 113, 15.

विप्रतिपन्न s. u. 1. पद् mit विप्रतिः in der Bed. *nicht übereinstimmend* ṚV. Prâṭ. 17, 12.

विप्रतिषेध (von सिध् mit विप्रति) m. 1) *das Wehren, Einhaltthun:* क्रव्याद्य इव भूतानामदान्तेभ्यः सदा भयम् । तेषां विप्रतिषेधार्थं राजा सृष्टः स्वयंभुवा ॥ MBh. 12, 7990. — 2) *Widerspruch, Widerstreit, Gegensätzlichkeit, Conflict zweier Aussprüche* Çâṃk. Ça. 13, 14, 3. 5. ग° Lâṭ. 6, 3, 11. 8, 5, 10. उभयोः कार्ययोर्विप्रतिषेधः Çiç. 2, 6. Nyâyas. 3, 1, 57. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 38. Gauḍap. zu Sâṃkhyak. 8. विप्रतिषेध उत्तरं बलवद्लोपे VS. Prât. 1, 159. विप्रतिषेधे परं कार्यम् P. 1, 4, 2. विरोधो विप्रतिषेधः । यत्र द्वौ प्रसङ्गावन्यार्थावेकस्मिन्प्राप्नुतः स विप्रतिषेधः Kâç. ग्रहणा (abl.) ण्यङ्ण्यञोः (nom.) विप्रतिषेधेन *die Suffixe* ण्यङ् u. s. w. *gehen in Folge des Conflictes zweier Bestimmungen dem Suffix* ग्रण् vor P. 4, 1, 170, Vârtt. 2. 158, Vârtt. 2. 3, 2, 36, Vârtt. 3. 3, 16, Vârtt. 1. 4, 2, 39, Vârtt. 3. पूर्व° *ein Conflict zweier Bestimmungen, bei dem die vorangehende die folgende aufhebt*, 8, 1, 2, Vârtt. 2. Kâr. zu 7, 2, 90. Schol. zu 3, 4, 21. 6, 1, 208. 2, 3, 16, Vârtt. 1. 4, 2, 39, Vârtt. 2. पर° *ein Conflict zweier Bestimmungen, bei dem die folgende die vorangehende aufhebt*, Schol. zu 2, 2, 35, Vârtt. 1. — 3) = प्रतिषेध (wie 1.) *Aufhebung, Verneinung* Nyâyas. 2, 1, 14.

विप्रतिसार (von सॄ mit विप्रति) m. 1) *Reue* Râjam. zu AK. 1, 1, 3, 35 nach ÇKDn. H. 1378. an. 5, 43. Halâs. 4, 31. चेतसि सविप्रतिसारे Çiç. 10, 20. — 2) *Ingrimm, Zorn.* — 3) *Schandthat, Schlechtigkeit* H. an. — Vgl. विप्रतीसार.

विप्रतीप (2. वि + प्र°) adj. *sich widersetzend, widerspänstig, feindselig:* पुत्र MBh. 5, 2027. चेतांसि 2754. दुरुक्तं विप्रतीपं वा रूक्षसाञ्चपलात्मया । यन्मयेदृक् कृतं किंचित् 6, 3880. प्रस्तुतविप्रतीपविधि Kusum. 64, 18.

विप्रतीसार m. = विप्रतिसार. 1) *Reue* AK. 1, 1, 3, 35. Trik. 1, 1, 132. H. 1378, Schol. — 2) *Ingrimm, Zorn.* — 3) *Schandthat, Schlechtigkeit* Med.

विप्रत्यय (2. वि + प्र°) m. *Misstrauen* MBh. 12, 4137, Bhâr. Nîtiç. 18, 72. Spr. (II) 406.

विप्रत्व (von विप्र) n. *der Stand —, die Würde eines Brahmanen* Jâân. 2, 304. Verz. d. Oxf. H. 276, a, 4 v. u. Bhâg. P. 5, 9, 2. *eines gelehrten Brahmanen* Cit. beim Schol. zu Çiç. 128.

विप्रदारु m. *getrocknete Früchte, Wurzeln* u. s. w. Çabdâm. im ÇKDn.

विप्रदेव (विप्र + देव) m. N. pr. eines Fürsten LIA. II, 924. eines Hauptes der Bhâgavata Verz. d. Oxf. H. 248, a, 18.

विप्रपात (von 1. पत् mit विप्र) m. 1) *eine Art von Flug* Pañkat. ed. Bomb. II, 53. — 2) *Abgrund* MBh. 12, 6688.

विप्रप्रिय (विप्र + प्रिय) 1 adj. *bei den Brahmanen beliebt* R. im ÇKDn. — 2) m. *Butea frondosa* Râjân. in Nigh. Pr.

विप्रबन्धु (विप्र + बन्धु) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Gaupâjana oder Laupâjana, Liedverfassers von ṚV. 5, 24, 4. 10, 37. fgg.

विप्रमठ (विप्र + मठ) m. *Brahmanenkloster* Kathâs. 18, 105. 25, 62.

विप्रमनस् (2. वि + प्र°) adj. *verstimmt, kleinmüthig:* असक्षु मन्यमानाश्च ते विप्रमनसो (नातिप्रमनसो st. ते वि° ed. Bomb.) ऽभवन् MBh. 6, 2860.

विप्रमन्मन् (विप्र + म°) adj. *begeisterte Andacht habend* ṚV. 8, 39, 1.

विप्रमाथिन् (von 1. मथ् mit विप्र) adj. *zermalmend, zerstörend:* विषयदन्तिन् Spr. 4572.

विप्रमादिन् (von 1. मद् mit विप्र) adj. *auf Nichts achtend, sich ganz gehen lassend* Spr. 4572, v. l.

विप्रमोक्ष (von मोक्ष् mit विप्र) m. *das Sichlösen:* सर्वग्रन्थीनाम् Kaṭhâr. Up. 7, 26, 2. Sarvadarçanas. 58, 15. *Befreiung von:* ततो दास्याद्विप्रमोक्षो भविता तव MBh. 1, 1319.

विप्रमोक्षण (von मोक्षय् mit विप्र) n. *das Sichlosmachen —, Sichbe-*

freien von: शतक्रतोः कल्मषविप्रमोक्षणमिदं पठन् Harıv. 11271. कृतघ्न-कर्म° Sarvadarçanas. 40,s. 9.

विप्रमोच्य (von 1. मुच् mit विप्र) adj. *zu befreien von* (abl.): पोरा ज्ञात्मकताद्दःखाद्विप्रमोच्या नृपात्मजैः R. 2,46,23 (44,23 Gorr.).

विप्रमोक्ष (von 1. मुक्ष् mit विप्र) m. *Begehung eines Fehlers, Versehen:* ब° Âçv. Çr. 1,2,12.

विप्रयाण (von 1. या mit विप्र) n. *Flucht* Çabdârthak. bei Wilson.

विप्रयोग (von 1. युज् mit विप्र) m. gaṇa क्षेत्रादि zu P. 5,1,64. *Trennung* AK. 3,3,28. H. 1511. M. 9,1. MBh. 1,6126. Megh. 10. Vaṛâh. Bṛh. S. 51,12. Daçar. 4,47. 53. संयोगा विप्रयोगान्ता ज्ञातानां प्राणिनां ध्रुवाः Spr. 3075. 3217. 5011. Kathâs. 9,89. चिर° Prab. 17,12. तत्रापि विप्रयोगश्च विचित्रो वां भविष्यति Kathâs. 25,284. Wilson, Sâṅkhyak. S. 51. mit instr.: प्रियैः M. 6,62. MBh. 1,6124. 12,850. R. 7,50,11. Megh. 113. mit gen.: घनिष्टसंप्रयोगात्च विप्रयोगात्प्रियस्य च Spr. (II) 307. Harıv. 10288. mit सह und instr. Vikr. 154. Die Ergänzung im comp. vorangehend: शोकं मैथिलीविप्रयोगजम् R. 5,75,16. Ragh. 13,26. Spr. 1081 (II). 1111. 1813. Kathâs. 13,194. *das Fehlen, Nichtdasein* Sân. D. 17,10. — Vgl. वैप्रयोगिक.

विप्रयोगिन् (von विप्रयोग) adj. *getrennt* (von einem geliebten Gegenstande) Kathâs. 104,77.

विप्रराज्य (विप्र + राज्य) n. 1) *Reich der Frommen* ṚV. 8,3,4. — 2) *die Herrschaft der Brahmanen:* °द् Pañcat. 4,3,87.

विप्रर्षि (विप्र + ऋषि) m. = ब्रह्मर्षि MBh. 5, 6069. 13, 331. R. 1,9, 37. 4,63,8. Bhâg. P. 3,14,22. 4,4,6. 5,1,2. 8,20,9. Brahma-P. in LA. (III) 57,18.

विप्रलम्बक Paar. 34,9 fehlerhaft für विप्रलम्भक.

विप्रलम्भ (von लभ् mit विप्र) m. P. 7,1,67, Schol. 1) *Täuschung, Betrug* AK. 1,1,2,36. H. 1519. Hall. 4,62. MBh. 3,1187. 5,7426. Kâm. Nîtis. 5,19. भूमिभृतैः स्मर कति कृताः स्वान्त ते विप्रलम्भाः Spr. (II) 1409. Uttarab. 64,10 (82,12). Daçak. 69,4. Kuvalaj. 151, *b*, 1 v. u. Kusum. 8,16. उपाध्यायात् *das Getäuschtwerden* (in seinen Erwartungen) *durch den Lehrer* MBh. 14,133. — 2) *Trennung eines liebenden Paars (getäuschte Erwartung)* AK. 3,3,28. Taik. 1,1,127. H. 1511. Ragh. 19, 18. Uttarab. 64,5 (82,7). Spr. 1460. Sân. D. 211. fg. 224. 231. 539. Bhânumatyâ sah 165,16. Verz. d. Oxf. H. 208, *a*, 30. Pratâpar. 19, *a*, 4. 38, *a*, 7.

विप्रलम्भक (wie eben) adj. *täuschend, betrügend, Betrüger:* पुमांस् Verz. d. Oxf. H. 264, *a*, 26. 27 (ब°). *b*, 22. Kathâs. 60, 34. Prab. 34,9 (fälschlich °लम्बक gedr.). Kull. zu M. 2,11.

विप्रलम्भन (wie eben) n. *Täuschung, Betrügerei:* ममाणी च तेषु तेषु कार्येषामुर्विप्रलम्भनानि (= वक्रत्यचरणानि Comm.) Daçak. 64,16. fg.

विप्रलम्भिन् (wie eben) adj. *täuschend, betrügend* Pañcat. 203,2.

विप्रलय (von 1. ली mit विप्र) m. *das Aufgehen in* (loc.): ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलयः कृतः Uttarab. 105,15 (143,8). *das Verlöschen:* शिखा विप्रलयं गताम् R. 2,114,5 (125,5 Gorr.).

1. विप्रलाप (von 1. लप् mit विप्र) m. 1) *Auseinandersetzung:* वचो ब्रूतालं विप्रलापानुवर्तनम् (so die ed. Bomb.) MBh. 6,3776. — 2) *sinnloses Schwatzen* H. an. 4,210. Med. p. 29. Suçr. 2,488,8. — 3) *Widerspruch, Widerrede* AK. 1,1,8,17. H. 276. H. an. Med. P. 1,3,50. — 4) *Täuschung, Betrug* Hall. 4,62.

2. विप्रलाप (2. वि + प्र°) adj. *frei von allem Geschwätz:* सत्य MBh. 3,260.

विप्रलुम्पक (von 1. लुप् mit विप्र) adj. *Raub verübend, auf eine unrechtmässige Weise sich Geld schaffend:* ein Fürst M. 8,309.

विप्रलोभिन् (von लुभ् mit विप्र) 1) adj. *lockend, verführend.* — 2) m. *eine best. Pflanze,* = किंकिरात Râjân. im ÇKDr.

विप्रवाद (von वद् mit विप्र) m. *eine abweichende Meinung:* विप्रवादाः सुबहवः श्रूयन्ते पुत्रकारिताः MBh. 13,2614.

विप्रवास (von 3. वस् mit विप्र) m. *ein Aufenthalt auswärts:* ज्ञातिभिः MBh. 3,15870. °मला: स्त्रियः 3,1525. R. Gorr. 2,50,20. 5,33,22. Bhâg. P. 6,8,13. गृहेभ्यः *ausserhalb des Hauses* Spr. (II) 252. पुर° R. 2,36,33. ब° Çiçup. Gnan. 1,17. Spr. (II) 1013.

विप्रवासन (vom caus. von 3. वस् mit विप्र) n. *das Verbannen* R. 2. 33,11. R. Gorr. 2,59,21. 7,50,7.

विप्रवाह्य (विप्र + वह° adj. *die Darbringung oder Huldigung der Sänger u. s. w. empfangend:* die Açvin ṚV. 5,74,7.

विप्रवीति m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 39. विप्रविति und विप्रवित्ति v. l.

विविप्रवीर (विप्र + वीर) adj. *begeisterte Männer habend:* Männer *begeisternd:* Soma ṚV. 9,44,5. 10,47,4. 5. गिरः 104,1. ज्ञातवेदस् 188,2.

विप्रव्राजिन् (von व्रज् mit विप्र) adj. *sich gern von Haus entfernend* Âçv. Gṛhy. 1,5,5. nach dem Comm. द्विप्रव्राजिनो *Zweien nachlaufend.*

विप्रशस्तक m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,34.

विप्रश्न (von प्रच्छ् mit वि) m. gaṇa क्षेत्रादि zu P. 5,1,64. *das Befragen des Schicksals* P. 1,4,39. — Vgl. वैप्रश्निक.

विप्रश्निक (von विप्रश्न) m. *Schicksalsbefrager, Astrolog* H. 483. Kiṭâb. in Ind. St. 3,470,3 (wohl तं वि° zu lesen). विप्रश्निका f. AK. 2,6,4,20. — Vgl. वैप्रश्निक.

विप्रसात् (von विप्र) adv. mit कर् *den Brahmanen Etwas* (acc.) *schenken* Ragh. ed. Calc. 11,85.

विप्रसारण (vom caus. von सृ mit विप्र) n. *das Strecken* (der Glieder) Suçr. 1,115,16.

विप्रस्राण (von स्रा mit विप्र) n. *das Welken, Verschwinden:* दुःखस्य MBh. 12,7949. — Vgl. प्रस्राण.

विविप्रानुमदित adj. *von Sängern bejubelt* TBr. 3,5,8,1. Çat. Br. 1,4,2, 7; vgl. auch u. 1. मद् mit अनु.

विप्रापण (vom caus. von आप् mit विप्र) n. Nir. 7,13. 9,26.

विप्राप्त adj. zur Erklärung von विस्तीर्ण Nir. 6,20. nach Durga so v. a. विस्तीर्ण.

विप्रापिक m. *ein best. Gemüse:* विप्रापिका मसूराश्च श्राद्धकर्मणि गर्हिताः Mârk. P. 32,11.

विविप्रिय (2. वि + प्रिय) adj. 1) *entzweit:* मिथः TS. 2,2,11,5. 6,2,8,1. Vgl. विप्रेमन्. — 2) *Jmd* (gen.) *unlieb, unangenehm:* n. sg. und pl. (selten) *etwas Unliebes, — Unangenehmes* H. 741. Hall. 4,64. नहि कस्य प्रियः को वा विप्रियो वा जगत्त्रये Spr. 4372. बलीपलित° *durch, in Folge von — unangenehm* Bhâg. P. 9,3,14. तत्तेषां विप्रियं भवेत् MBh. 1,6188. कर्मन् Bhâg. P. 1,7,14. 3,8,16. विप्रियं न मे कर्तव्यम् MBh. 1,1876. ब-

कार्यो विप्रियं सुमहन्मम 5930. 4,495. 14,178. R. 2,22,8. 26,33. 98,14 (107,2 Gorr.). 6,8,8. Rāgn. 8,31. Kumāras. 4,7. त्वमेव कृतवानस्या नवं विप्रियम् Spr. 1098. Bhāg. P. 6,5,42. मा कृथा रामविप्रियम् *was Rāma unlieb sein könnte* R. 3,42,38. °कर Kathās. 28,35. °कारिन् MBu. 1, 5979. प्रज्ञाविप्रियकारिन् Spr 2694. विप्रियं स्याचरन्मर्त्यो देवानां मृत्युमृच्छति MBu. 3,2166. विप्रियमन्यत्र (= अन्यस्यां) गूहमाचरति Śiś. D. 74. विप्रियं दा Bhāg. P. 1,14,11. वच् MBu. 1,1876. R. 2,62,9. R. Gorr. 2, 30,17 (pl.). 5,23,26 (pl.). 6,5,5. Bhāg. P. 8,9,23. दृश् R. 2,30,17. प्राप् 3,55,17. देवानां विप्रिये नित्यमृषीणां च स वर्तते Harīv. 6822. यस्माकं विप्रिये रतान् MBu. 7,2421. यदि स्यास्यति विप्रिये R. 2,21,10. Spr. 1776 (Conj.). विप्रियेषु स्थितास्माकम् MBu. 3,1893. — Vgl. अ°.

विप्रियंकर adj. *Jmd etwas Unliebes erweisend* MBu. 12,12955. — Vgl. प्रियंकर.

विप्रियत्व (von विप्रिय) n. *das unlieb —, unangenehm Sein* Comm. zu Bhāg. P. 1,7,16.

विप्रुष् (1. प्रुष् mit वि) f. (nom. विप्रुट्) Sidd. K. 247,*b*,2 v. u. *Tropfen* (Taitt. 3,3,209. H. 1089. Halāj. 3,55), *Krümchen, Fleckchen, mica:* घोटनानाम् AV. 9,5,19. VS. 25,9. TBr. 3,2,8,5. 7,6,21. Śāṅkh. Br. 4,2,8,1. 3,1,2,6. 13. 11,5,3,11. 14,2,1,14. 2,28. Kāty. Śr. 3,7,19. विप्रुड्भिः Āçv. Çr. 5,2,6. Kāty. Çr. 24,3,43. विप्रुषोदेव पावक्यो निपतन्ति नभस्तलात्। वर्षासु वर्षतः MBu. 13,5339. fg. न पिबति पयसो विप्रुषः पक्षसंस्थाः Spr. 2013. जल° Çiç. 8,46. स्वेद° 2,18. अमृतार्णवसमुद्र° Bhāg. P. 8,9,28. मणिविप्रुत्र° Paiśāçikatrānd. 19,*a*,3. पावक° *Feuerfunke* Spr. 4501. पाठे तु मुखनिष्क्रान्ता विप्रुषो ब्रह्मविन्दवः H. 839. मुख्याः M. 5,141. auch ohne diesen Beisatz von *den Tropfen, die beim Sprechen dem Munde entfallen,* 133. Jāṭ. 1,193. Mārk. P. 35,21. — Vgl. विप्रुष्.

विप्रुष wohl n. dass.: वक्त्राम्बुविप्रुषैः Mārk. P. 50,95. जलविप्रुषैः 51, 38. °वाकिन्या (so auch die ed. Bomb., eine Berl. Hdschr. soll विप्रुड्वा° lesen) चञ्चा Pañcat. 79,16. — Vgl. वाग्विप्रुष.

विप्रुष्मत् (von विप्रुष्) adj. *mit Tropfen versehen:* विषोदोर्मिमारुत Bhāg. P. 10,16,5. हिमनिकर° (das suff. gehört zum ganzen comp.) 4,25,18.

विप्रेक्षण (von ईक्ष् mit विप्र) n. *das sich Umschauen:* सिंह° adj. R. 4,2,7.

विप्रेक्षितृ (wie eben) nom. ag. *der sich umschaut:* सिंह Spr. 2691.

विप्रेत s. u. 3. इ mit विप्र.

विप्रेमन् (2. वि + प्रे°) m. *Entfremdung, Entzweiung* Āit. Br. 1,24. — Vgl. विप्रिय 1).

विप्रेषित s. u. 3. वस् mit विप्र.

1. विप्लव (von प्लु mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) das zu Grunde Gehen, Verlorensein, zu Schanden Werden:* त्रैलोक्यस्य Spr. 3120. व्रत° Bhāg. P. 2,7,32. भर्तृ° 4,13,49. शिलीमुखैः। विप्लवो ऽभूद्दुःखितानाम् 26,9. प्राण° 1,18,2. द्वापरे विप्लवं यान्ति पञ्चाः कलियुगे तथा। यथाक्रमं क्षीणा मर्त्या अल्पनामानि यत्रिषु च ॥ MBu. 12,8543. मन्त्रो न गच्छति विप्लवम् Spr. 1875. मन्त्र° 1349 (II). यज्ञ° Rāja-Tar. 1,184. विश्वामित्रमखस्य विप्लवकृतो नक्तंचरान् Verz. d. Oxf. H. 121,*b*, No. 213, Cl. 3. धर्म° MBu. 1,3872. Kathās. 89,72. बुद्धि° MBu. 2,868. सत्त्व° Rāgn. 8,41. भाग्य° 46. धैर्यविप्लवकारिन् Spr. 1053. शील° Kathās. 13,87. 29, 118. Rāja-Tar. 3,500. प्रतिज्ञात° 88. संकल्प° 89. व्रतलोप° Bhāg. P. 1,5,11. आत्मलोकावरणस्य 8,3,25. Sarvadarçanas. 17,6. *Verlust bei einem Geschäfte* Jāṭ. 2,260. अ° adj. Jogān. 2,26. — *b) Noth, Elend, Drangsal, Calamität:* सविप्लवे MBu. 13,4827. शास्त्रागमे Ver. in LA. (III) 30,9. हिंसातीनां च वर्णानां विप्लवे कालकारिते M. 8,348. MBu. 3, 13474. दिव्यमानुष° Daçār. 4,60. देश° Jāṭ. 3,29. Rāja-Tar. 5,471. राज्यदेशादि° Śiś. D. 278. Kathās. 91,5. तोय°, जल°, सलिल° *Wassernoth, Ueberschwemmung* Rāja-Tar. 1,159. 3,80. 93. तुहिन° 1,183. हुर्भिक्ष° 2,20. Kathās. 36,12. अग्नि° Rāja-Tar. 1,252. भिनु° 184. ग्रहण° Milav. 9,3. पक्षाग्नि° Kathās. 101,285. क्लेश° 136. विकल्प° Spr. 4391. नौविप्लवविप्लवा (so die neuere Ausg.) so v. a. *Schiffbruch* Harīv. 2885. — *c) Unruhen im Lande, Aufstand* AK. 3,3,14. H. 803. Halāj. 1,127. Rāja-Tar. 5,19. 8,531. 796. 883. 965. विप्लवोन्मुख 359. 2261. उर्वी शमितविप्लवा 1041. °स्पृश् 915. गोउपप्लव° 4,334. प्रज्ञाविप्लवशान्ति 715. 5,420. 8,993. राज्य° 6,334. 336. राष्ट्र° Spr. (II) 1221, v. l. — *d)* योनि° so v. a. *ein geschlechtliches Vergehen von Seiten einer Frau* Harīv. 7762. विप्लव allein so v. a. *Schändung —, Entehrung eines Frauenzimmers:* कृष्णः कृतो ऽमुना नूनं ममात्मपुरविप्लवः Kathās. 5,36. अनङ्गीकृत° (so ist zu lesen) 7,58. 20,120. प्रज्ञारक्षितविप्लवा 64,41. अविप्लवा (= साधी Nīlak.) MBu. 1,2070 nach der Lesart der ed. Bomb. (अविक्लवा ed. Calc.). — 2) adj. (f. आ) *verworren:* गिरः Bhāg. P. 7,8,12. — Vgl. चित्त°.

2. विप्लव (2. वि + प्लव) adj. *kein Schiff habend:* वणिजो नावि भिन्नायामगाधे विप्लवा (ऽविप्लवा ed. Bomb.) इव। अपारे पारमिच्छन्तः MBu. 9, 130 = 8,4838, wo beide Ausgg. विप्लवे lesen; vgl. अपारे भव नः पारम् प्लवे भव नः प्लवः 5,1559.

विप्लवना MBu. 12,11148 fehlerhaft für विक्लवता, wie die ed. Bomb. hat.

विप्लविन् (von प्लु mit वि) adj. *dahingehend, verschwindend:* कुरिणीव च राजश्रीरेवं विप्लविनी सदा Spr. 5393.

विप्लाव (wie eben) m. *Galopp* Çārṅgadh. bei Wilson.

विप्लावक (vom caus. von प्लु mit वि) adj. *zu Schanden machend, schändend:* वेद° (durch Mittheilung an unberechtigte Personen) Prab. 20, 14. धर्म° Çaṅk. 14,101.

विप्लाविन् adj. dass.: वेद° Paiśāçikatrānd. 47,*b*,3.

विप्लुति f. = विप्लव 1) *a*): विप्लुतिं गतः Suçr. 2,342,14.

विप्लुष् f. = विप्रुष् AK. 1,2,3,6 (nach ÇKDr. von Rāmāçrama erwähnte v. l., nicht Lesart des Textes, der विप्रुष् haben soll). पाठे विप्लुषो ब्रह्मविन्दवः 2,7,38.

विफ (2. वि + फ) adj. *ohne* फ (मफ *mit* फ) Prāṭiç. Bh. 8,3,7.

विफल (2. वि + फल) adj. (f. आ) 1) *keine Früchte tragend:* Baume Spr. 1395. 3046. Varāh. Bṛh. 3,7. — 2) *keinen Erfolg habend, seinen Zweck verfehlend, nutzlos, vergeblich:* विफलारम्भ Jāṭ. 1,273. शक्रशासन Harīv. 4126. विफलाश (निष्फलाश die neuere Ausg.) 9351. Kām. Nītis. 18,1. पारणा Rāgn. ed. Calc. 2,55. फल Kumāras. 7,66. Spr. 1223. 1393. 2989. परितोषकालाः 3012. Megh. 69. Varāh. Bṛh. 9,3. Gīt. 3,17. Kathās. 13,122. 21,30. भुज 42,79. 54,175. 58,48. Rāja-Tar. 4,304. 716. fg. Bhāg. P. 3,14,1. 8,5,17. fg. Mārk. P. 75,56. 95,23. Verz. d. Oxf. H. 259, *a*, 13. Prab. 73,6. Kusum. 8,15. Sarvadarçanas. 24,20. fg. *keinen Erfolg habend,* von einer Person so v. a. *nicht zum Ziele gelangend, dessen Hoffnungen vereitelt werden* Spr. 1689, v. l. für निराश. — 3) *keine Ho-*

den Abend R. 1,48,27 (49,27 Gorr.).

विफलता (von विफल) f. *Nutzlosigkeit:* दृष्टिर्विफलतां गता Spr. 2670, v. l. विधौ विफलतां नेष्यामि Pañkat. 244,8.

विफलत्व (wie eben) n. 1) *Fruchtlosigkeit* (eig.): भूर्तद्रुमस्य Spr. 1239. — 2) *Nutzlosigkeit:* विफलत्वमेति वक्तृसाधनता Çiç. 9,6.

विफलीकर् (विफल + 1. कर्) 1) *unnütz machen, vereiteln:* शोभां व्योम्नः प्रदेशे °चकार Kumâras. 1,42. सा लोकपालान् °चकार Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 22. किं °करुषे कुचकलशम् Gît. 9,3. तन्नया °कृतम् MBh. 1,4577. Hariv. 4172. आधानकाल Mân. P. 74,23. *Jmd nicht zum Ziele gelangen lassen, Jmdes Hoffnungen vereiteln:* राज्ञां °कृतम् R. 1,58,13. — 2) *entmannen* R. 1,48,29 (49,28 Gorr.).

विफलीभू (विफल + 1. भू) *nutzlos werden:* यस्य कोपप्रसादा °भवन्ति Spr. 1306. Pañkat. 174,12. fg. °भूत R. Gorr. 2,17,29. 38.

विफल्क s. u. विगुल्फ.

विफाण्ट adj. = फाण्ट. सर्वोषधिविफाण्टाभिर्द्रुः Gobh. 3,4,7; vgl. u. फाण्ट adj. am Ende.

विबद्ध (von बन्ध् mit वि) partic. gaṇa क्षण्यादि zu P. 4,2,80. davon °कै ebend.

विबन्ध (wie eben) m. = आकलन Taitt. 3,3,230. 1) *das Umspannen:* पादोदरविबन्धैः MBh. 7,5923. ° = पादान्यामुदरक्रोडीकरणैः Nîlak. — 2) *kreisförmiger Verband* Wasn. 172. Suçr. 1,63,13. 66,2. — 3) *Hemmung, Stockung, Verstopfung* (*des Leibes* AK. 2,6,2,6. H. 471): वृष्टि° Taitt. 3, 3,455. Suçr. 1,165,3. 189,8. 210,9. 217,17. वात° 2,202,13. 214,9. मूत्र° 228,10. 408,20. 437,17. °हृत् Vâsiṣṭh. 6,164.

विबन्धक (wie eben) s. वर्त्म°.

विबन्धन (wie eben) adj. *stocken machend, verstopfend:* वर्चो° Suçr. 1,209,10.

विबन्धु (2. वि + बन्धु) adj. *verwandtenlos* AV. 18,2,57. Bhâg. P. 3,1,6.

1. विबर्ह् (von 1. बर्ह् mit वि) m. *das Zerstreuen:* अविबर्हाय Çâṅkh. Br. 17,3. — Vgl. वीबर्ह्.

2. विबर्ह् (2. वि mit बर्ह्) adj. *keine Schwanzfedern habend:* षण्ढउ MBh. 7,4749.

विबल (2. वि + बल) adj. *schwach:* Planeten Varâh. Bṛh. 3,6. 4,17.

विबलाक (2. वि + बलाका) adj. *ohne Kraniche:* ह्रदाः Hariv. 3822. बलाका आकाशिकपातशनिः तद्रहिता विबलाकाः Nîlak.; vgl. u बलाक 1).

विबाण (2. वि + बाण) adj. *ohne Pfeil:* चाप Hariv. 4316.

विबाणास्य (2. वि + बाण - ज्या) adj. *keinen Pfeil und keine Bogensehne habend:* चाप Hariv. 3578.

विबाणधि (2. वि + बा°) adj. *keinen Köcher habend* MBh. 8,3192.

विबार्ध् (von 1. बाध् mit वि) 1) m. *das Zersprengen, Verjagen* u. s. w.: s. das folgende Wort. — 2) f. आ = विरोठन Taitt. 1,1,132. — Vgl. वैबाध.

विबार्धवत् (von विबाध) adj. *zersprengend, verjagend;* Beiw. des Agni TS. 2,4,8,3. Kâṭh. 10,7.

विबार्ली entweder adj. f. dem Sinne nach *überschwemmend* oder *reissend*, oder N. pr. eines Flusses RV. 4,30,12. = विगतबाल्यावस्था Sây., schon deswegen unwahrscheinlich, weil बाल nicht vedisch ist.

विबाहु (2. वि + बा°) adj. *der Arme beraubt* MBh. 8,4344.

विबिल (2. वि + बिल) adj. *ohne Loch,* — *Oeffnung:* कोश Kâṭy. 13,10.

विबुध (2. वि + बुध) 1) adj. subst. *sehr klug,* — *verständig; ein Kluger, Weiser* H. an. 3,348. Med. dh. 36. ब्रुवाः Pañkat. II, 47. °ज्ञन Spr. 2742. आपन्नाशाय विबुधैः कर्तव्याः सुहृदो ऽमलाः Spr. 965 (II, 3089. Kathâs. 63,103. Bhâg. P. 3,8,4. Vet. in LA. (III) 20,16, v. l. अविबुध-ज्ञन Spr. 2297 (II). — 2) m. *ein Gott* AK. 1,1,2,2. H. 89. H. an. Med. Halâj. 1,4. MBh. 1,1126. 1161. 7700. 3,2190. 13,1840. R. Gorr. 1,46, 38. Varâh. Bṛh. S. 2, Anf. 43,41. 46,17. 48,32. Gît. 10,15. Bhâg. P. 4, 24,12. विबुधर्षभ 4,1,22. विबुधाधिपत्य 3,7,18. विबुधानुचराः M. 12,47. विबुधेश्वराः MBh. 3,2186. °स्त्री Çiç. 171. °शत्रु Vikr. 3. °रिपु Prasannar. 81,9. °सख Buddh. 1,1. °मति adj. Kâm. Nîtis. 14,67. य° Kirâtârg. 2,322. — 3) m. *der Mond* ÇKDn. und Wilson angeblich nach Halâj. — 4) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Devamîḍha, R. 1,71,10 (73,9 Gorr.). des Kṛta VP. 390. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 340,*b*,6.

2. विबुध (wie eben) adj. *keine Gelehrten habend* (= विगतपण्डित Comm.) Kirâtârg. 2,322.

विबुधगुरु m. *der Lehrer der Götter* d. i. Bṛhaspati, *der Planet Jupiter* Varâh. Bṛh. S. 104,27.

विबुधतटिनी f. *der Götterfluss* d. i. die Gaṅgâ Spr. 5000.

विबुधत्व (von 1. विबुध) n. *Klugheit:* यस्मात्वा वरुणो लोका विबुधत्व-मवाप्नुयुः Verz. d. Oxf. H. 133,*a*, No. 328, Çl. 2.

विबुधप्रिया f. *die Geliebte der Klugen* oder *der Götter*, N. eines Metrums: *4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑–,⏑–⏑–⏑–⏑–– Colebr. Misc. Ess. II, 103 (XIII, 14). Ind. St. 8, 422.

विबुधराज m. *der Fürst der Götter*, Beiw. Indra's R. 4,32,19.

विबुधाधिप m. dass. MBh. 3,11948. 12018.

विबुधाधिपति m. dass. Varâh. Bṛh. S. 53,47.

विबुधावास m. *Wohnung* (आवास) *der Götter, Tempel* Riâ-Tar. 5,26.

विबुधेतर (1. विबुध + इ°) m. *ein Nichtgott, ein* Asura Bhâg. P. 8,22,6.

विबुभूषा (vom desid. von 1. भू mit वि) f. *der Wunsch sich zu entfalten* Bhâg. P. 3,3,9.

विबुभूषु (wie eben) adj. *sich zu entfalten wünschend* Bhâg. P. 2,5,21.

1. विबोध् (von 1. बुध् mit वि) 1) adj. *wachsam, aufmerksam* RV. 10, 133,4. — 2) m. *a) das Erwachen* Maitrâjan. 2,5. Daçar. 4,21. Sin. D. 178. Prâtiṣâkh. 53,*b*,7. — *b) das Erkennen:* तन्नात्म° Bhâg. P. 3,4,20. — *c)* in der Dramatik *das (aufmerksame) Verfolgen des Endzieles:* कार्यस्यान्वेषणं यत्तु विबोध इति स्मृतः Bhar. Nâṭjaç. 19,96. 66. विबोधः कार्यमार्गणम् Daçar. 1,46. 48. Sin. D. 393,556. — *d)* N. pr. eines Vogels, eines Kindes des Droṇa, Mân. P. 1,21. — Vgl. राग°.

2. विबोध (2. वि + बोध) m. *Unaufmerksamkeit* Çârdûlak. bei Wilson.

विबोधन (von 1. बुध् simpl. und caus. mit वि) 1) nom. ag. *Erwecker:* घटोद्भवो विबोधनम् etwa so v. a. *der zum Erwerb den Anfang macht* RV. 8,3,22. — 2) n. *a) das Erwachen:* सुखस्वप्न° adj. MBh. 1,3975. निबोधन ed. Bomb. — *b) das Erwecken:* कृष्णे: Mân. P. 81,32. विश्व-न्द्रिकानन्द° Verz. d. Oxf. H. 141,*a*,25.

विभक्त s. u. भक्त् mit वि. सु° *richtig —, glatt getrennt:* Wunde oder Schnitt Suçr. 1,15,10. 12.

विभक्तता (von विभक्त) f. सु° *schöne Vertheilung, Ebenmaass:* der

Glieder Sarva. 2,139,4.

विभक्तर् und विभक्तर् (von भज् mit वि) nom. ag. *Vertheiler:* शीर्षे शीर्षे वि भजाता विभक्ता ṚV. 7,18,24. मघानाम् 26,4. 1,22,7. 27,6. राय: 4,17,11. 10,147,5. विभक्ता भागम् 3,49,4. Çat. Br. 10,2,6,5. वेद° *Sonderer* so v. a. *Ordner:* Vjâsa Paṇḍar. 1,1,30.

विभक्ति (wie oben) f. 1) *Theilung, Sonderung; Unterscheidung, Modification* Ait. Br. 1,1. पशो: 7,1. TBr. 1,1,3,6. 8,5. इडाये TS. 1,7,4,1. Ait. Br. 6,5. Paṇḍav. Br. 10,9,1. 10,1. 11,1. °स्तुति Nir. 7,8, v. l. कालविभक्तय: M. 1,24. वर्णविभक्तय: MBh. 12,6767. — 2) *Abwandlung des Nomens, Casus;* bei Pâṇini *Casus- und Personalendung.* Im Ritual heissen speciell so *die Casus des Wortes* अग्नि *in den Jâgjâ-Formeln;* vgl. Comm. zu TS. I, 778. TBr. I, 125. Âçv. Ça. 2,8,5. 6. — TS. 1,5,2, 2. 3. TBr. 1,3,6,1. Çat. Br. 2,2,3,26. Paṇḍav. Br. 10,7,1. Çiñkh. Br. 1,4. Nir. 2,1. नाना° 6,24. नाम° 7,1. द्वितीया Âçv. Ça. 1,3,6. षष्ठी 6, 3. °प्रत्यय VS. Prâṭ. 3,13. °पदशस् 8,41. fg. AV. Paṇḍ. 2,51. 3,78. Çikṣ. beim Schol. zu 4,30. P. 1,4,104. 3,4. 5,3,1. 6,1,168. 3,132. 7,1,73. 2, 54. 8,4,11. Verz. d. Oxf. H. 163,*a*,21. *b*,3 v. u. 350,*b*,16. Sarvadarçanas. 136,1.10. ते विभक्तयस्ता: पदम् Naiṣadh. 2,2,60. विभक्तिकर्थी नामिकाख्यातिकी च Comm. Am Ende eines adj. comp.: सर्व° P. 1,1,33. °क 2, 45, Comm. Ind. St. 8,462. fg. — 3) *eine best. grosse Zahl* Vjutp. 179. Mél. asiat. 4,638.

विभक्तितन्त्र n. Titel einer Schrift Hall 57.

विभग्न s. u. 1. भञ्ज् mit वि und vgl. वैभग्निक.

विभङ्ग (von 1. भञ्ज् mit वि) m. 1) *Biegung:* भ्रू° so v. a. *das Zusammenstehen der Brauen* Ragh. 19,17. — 2) *Einschnitt, Furche:* वली° MBh. 4,391. Vâsavad. 3,2. विविधविकार° *Furchen auf dem Gesicht* Gîv. 11,24. शिलाविकिङ्किर्मृगराजशावस्तुङ्गं नगोत्सङ्गमिवाहरोह Ragh. 6, 3. — 3) *Unterbrechung, Störung, Vereitelung:* तृष्णाभोगो° Spr. 1891. वाग्विभङ्ग (°विभाग gedr.) so v. a. *Stummheit* Mârk. P. 72,23. आशा° adj. *dessen Hoffnungen vereitelt sind* Spr. 3054, v. l. — 4) Bez. bestimmter buddhistischer Schriften Târân. 318. Verz. d. Kop. H. 24,*a*. 45. fgg. (im Pâli). विनय° Vjutp. 43. विभाग(?) *Commentar* Wassiljew 89.

विभज्ञ *eine best. grosse Zahl* Vjutp. 181. Mél. asiat. 4,637.

विभजनीय (von भज् mit वि) adj. 1) *zu vertheilen:* अवशिष्टं धनं समं कृत्वा विभजनीयम् Kull. zu M. 9,112. — 2) *was gesondert —, unterschieden wird* oder *werden soll* P. 5,3,57, Schol.

1. विभज्य (wie oben) adj. 1) *zu theilen* Harîv. 12431. — 2) *was gesondert —, unterschieden wird* oder *werden soll* P. 5,3,57. — Vgl. विभाज्य.

2. विभज्य (wie oben) absol. *mit —, unter Vornahme einer Theilung:* °पाठ Hall. in Ind. St. 8,333. °वाद Bez. *einer best. buddhistischen Lehre* Târân. 198. °वादिन् *ein Anhänger dieser Lehre* 175. Vjutp. 210. Burn. Intr. 446. Lot. de la b. l. 337. Wassiljew 78. 230. 233. °व्याकरण (neben एकोश°, परिपृच्छा° und स्थापनीय°) Vjutp. 53. Die Schreibart विभाज्य ist fehlerhaft.

विभञ्जनु (von 1. भञ्ज् mit वि) adj. *zerbrechend* (trans.) ṚV. 4,17,13.

विभण्डक m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Kâçjapa Ind. St. 4,374. — Vgl. विभाण्डक.

1. विभय (2. वि + भय) n. *Gefühllosigkeit* Bhâg. P. 7,9,14.

2. विभय (wie oben) adj. *keiner Gefahr ausgesetzt* Bhâg. P. 5,20,19.

विभर्तृ m. N. pr. eines Fürsten Târân. 205. विभर्तृत Wassiljew 54.

विभव (von 1. भू mit वि) 1) m. Taitt. 3,5,5. am Ende eines adj. comp. f. या. *a) das Allenthalbensein, Allgegenwart* Kap. 7,1,22. — *b) Entfaltung:* जगदुदयविभवलयलीलं ब्रह्म Sarvadarçanas. 49,20. bei den Vaishṇava *Entfaltung des göttlichen Wesens, dessen Erscheinung in secundären Formen* 34,18. रामाद्यवतारो विभव: 20.55,15.57,10. — *c) Macht, majestas, hohe —, bevorzugte Stellung, Herrschaft;* = ऐश्वर्य Med. v. 51. = भूति Hall. 5,23. धनधान्यर्द्धिविभवै: शक्रवैश्रवणोपमै: R. Gorr. 1,6,2. सर्वर्द्धिविभवै: पूर्णास्तथा वर्धस्व भूयसे। यथा द्यौर्यथा सोमो यथेन्द्रो वरुणो यथा ॥ 2,11,19. वित्तर्द्धिविभवै: Mârk. P. 84,32. अविदितविभवो भवानीपति: Kir. 5,21. Prab. 54,10. Ragh. 8,68. Çiç. 94. Varâh. Bṛh. S. 69,17. विभवास्त्रैलोक्यराज्यादय: Spr. 1995. प्रज्ञा कुलं च विभवं (*Macht* oder *Vermögen*) च यशश्च कृत्ति 2974. Bhâg. P. 3,23,8. 5,16, 35. विभवाय नो भव 7,8,55. 9,23. fg. 9,4,15. भृत्यप्रेष्यजनेभ्यश्च विभवस्यानुव्रतः। शिल्पिभ्यश्चोपकारिभ्यो दद्यो राम: so v. a. *je nach ihren Stellungen* R. Gorr. 2,32,12. तत: प्रविशत्यौशीनरी चेटी च विभवतश्च परीवार: *und das Gefolge je nach seinem Range* Vikr. 30,18. Çiç. Cm. 92,8. Mâlav. 19,1. 45,21. 64,5. Prab. 27,1. तेषामभिजनकाले ऽर्थे विभव: *Macht —, Einfluss auf* Çiç. Ça. 1,16,5. 5,19,2. वसन्त° *die Macht des Frühlings* Mâlav. 80. वाग्विभव *die Macht der Rede* Ragh. 1,9. Mâlatîm. 16,1. परिपक्वबुद्धि° Sîn. D. 15,16. आत्मभाया° Bhâg. P. 2,6,35. स्मृति° Çiñkh. Gṛhj. 6,6. कर्म° Kathâs. 27,209. दृष्टि° Spr. 3318. मनसि प्रभविभवे *dessen Macht in — besteht* Gît. 3,6. *Macht, Stärke* eines Heeres R. 5,73,4. — *d)* sg. und pl. *Vermögen, Besitz, Geld* AK. 2,9, 91. Taitt. 3,3,431. H. 191. an. 3,713. Med. Hall. 1,80. विभवे सति M. 4,34. 11,38. Mârk. P. 29,39. MBh. 5,1728. 14,2791. तस्मै दास्यामि विभवान्मत्कलत्रानपि काङ्क्षितान् R. Gorr. 2,32,19. यो मे ऽस्ति विभव: कश्चित्तं विद्धाणय सर्वश: 29. उषित्वा रजनीं तत्र विभवैस्तेन पूजित: 98,9. Çiç. 105. Spr. (II) 231. 292. 585. 862. 1241. 1411. 2211. (I) 1078. 1903. 1933. 2784. 2938. 3153. स्थिर 3288. 4323. 4836. स्वल्प: 4867. 5017. मान्या सबला: (*die Weiber*) मानविभवै: Varâh. Bṛh. S. 74,4. तपयति विभवान् 104,5.7. परविभवपरिच्छदोपभोक्तर् Bṛh. 13,8. 18(16),4. Kathâs. 10, 130. 16,66. 18,287. 344. 405. 21,133. 23,176. 25,209. 28,115. 35,162. 121, 266. Râga-Tar. 1,175. 2,55. 4,688. कुमत्या विभवान्वयो Taitt. 3,1,9. H. 475. Bhâg. P. 1,11,13. °लव Spr. 970. Paṇḍat. 99,19. 234,7. °हीन Spr. 2287. 2728. मका° adj. 2830. मन्द° adj. Varâh. Bṛh. S. 15,24. गत° adj. Spr. 1292. गलित° adj. 2087. समानविभवा पुरी Kathâs. 23,80. न चास्ति विभव: कश्चिन्नाशाये येन ते नुधम् *ich habe Nichts, womit* Paṇḍat. III, 167. विभवतस् *nach den Vermögensumständen* Mârk. P. 34,26. यथा° (vgl. यथाविभवम्) dass. 71. — *e) Erlösung* Taitt. H. an. Med. मे भवान्सर्वलोकस्य भवाय विभवाय (विगतो भवो यस्मिन् तस्मै कैवल्यायेत्यर्थ: Comm.) च। अवतीर्ण: Bhâg. P. 10,10,38. — *f)* N. *des 21sten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,29. Verz. d. Oxf. H. 331, *b*,7 v. u. — *g)* in der Tonkunst *eine Art Tact;* s. u. दृढ 2) *a*). — *h) Vernichtung, Untergang* Vjutp. 150. लोक° 158. — 2) adj. *reich:* मेरोश्च विभवेषूत्तरेषु च (= दिव्यप्रदेषु Nilak.) MBh. 13,802. — Vgl. विभूति.

विभवमति (°मती?) f. N. pr. einer Fürstin Râga-Tar. 8,16 (°मत्याम्).

विभववत् (von विभव) adj. *vermögend, wohlhabend* Mṛicch. 33, 4. Hall. 2, 58.

विभस्मन् (2. वि + भ°) adj. *frei von Asche;* विभस्मीकरण *das Befreien von der Asche:* पुरोडाश° Schol. zu Kāty. Çr. 231, 6; vgl. भस्मीकर् u. s. w.

विभा (1. भा mit वि) 1) adj. *scheinend:* यदुप घोचद्भि: प्रथमा विभानाम् RV. 10, 55, 4. भा विभा उषा: स्वर्ज्योति: Çāṅku. Çr. 7, 9, 6. — 2) f. *a) Licht, Lichtstrahl* H. 100. Hall. 1, 38. — *b) Glanz, Schönheit* Sin. D. 277, 10. Nalod. 1, 48.

विभाकर (वि° + 1. कर) P. 3, 2, 21. m. 1) *die Sonne (Licht machend)* AK. 1, 1, 2, 20. H. 97. an. 4, 279. Mad. r. 298. Sin. D. 312, 2 (zugleich *König*). — 2) *Feuer* H. an. Mad. — 3) in der Astron. *das Maass des von der Sonne beleuchteten Theiles des Mondes* Gaṇit. Çṛṅgonnaty. 7. fg. — 4) *König, Fürst* Sin. D. 312, 2 (zugleich *die Sonne*).

विभाग (von भज् mit वि) m. 1) *Vertheilung, Austheilung, Zutheilung:* पितु: RV. 5, 77, 4. वसुन: 1, 109, 5. 7, 37, 3. 40, 4. 56, 21. पशो: Ait. Br. 7, 1. °धर्म *das Gesetz über die Erbtheilung* M. 1, 118. समस्तत्र विभाग: स्यात् 9, 120. 134. 205. 210. कथं तत्र विभाग: स्यात् 122. 148. 149. धर्म्य विभागं कुर्वीत 152. 216. 220. 8, 7. Jiṅ. 2, 114. 120. MBh. 1, 1355. fg. तस्माद्विभागं धातृणो न प्रशंसन्ति साधव: *die Theilung des Vermögens* 1359. R. 2, 101, 25 (110, 20 Gorr.). घायुर्दायविभागो नृणाम् Z. f. d. K. d. M. 4, 324. Rāja-Tar. 5, 111. पिक° *die Vertheilung der Geschwüre über den Körper* Varāh. Bṛh. S. 52, 10. कृतस्थानविभाग: adj. Bhāg. P. 8, 7, 5. — 2) *Eintheilung:* एकाशीतिविभागे *wenn man den* (Raum) *in 81* (Felder) *eintheilt* Varāh. Bṛh. S. 53, 42. भू° VP. 1, 4, 48 bei Muir, ST. 1, 184, N. 1. जम्बुद्वीपवर्ष° Bhāg. P. 5, 19, 31. कालस्य Gaṇit. Kālaṃ. 18 nebst Comm. Mīm. P. 46, 26. *Eintheilung eines Gebäudes, die Vertheilung der verschiedenen Räume in demselben* Daçak. 90, 6. — 3) *Antheil; Theil, Bestandtheil:* °भाज् Jiṅ. 1, 122. Paṅkat. 243, 20. कुम्भविभागमध्ये MBh. 4, 2093. मणिबन्धकनिष्ठिकयोर्मध्यविभागे ऽपि कर्भ: स्यात् Hall. 5, 7. कोटि° Paṅkat. 76, 19. ताभ्यां रूपविभागाभ्याम् Bhāg. P. 3, 12, 52. प्रकृतिविभागस्य त्रिगुणस्य Schol. zu Kap. 1, 127. त्रय्या एव विभागो ऽयं मैयमान्योतिको मता Kām. Nītis. 2, 3. शाखा वेदविभागे Taik. 3, 3, 52. रात्रिंदिवविभागेषु *zu den verschiedenen Theilen* (*Stunden*) *der Nacht und des Tages* Rāgān. 17, 49. काल° *Zeittheil* P. 3, 3, 137. — *Bruch, Zähler eines Bruchs* Colebr. Alg. 13. — 4) *Sonderung, Trennung, Unterscheidung; Verschiedenheit;* Gegens. समास Nir. 5, 27. संयोग Kaṇ. 1, 1, 6. 7, 2, 10. fg. Tarkas. 16. Bhāshāp. 3. Sarvadarçanas. 106, 16. 109, 3. 4. Schol. zu Gaim. 1, 13. समूह Sūçr. 1, 14, 1. — पादानाम् RV. Prāt. 17, 15. पद° Nir. 1, 17. 2, 7. 10. मर्यादामर्यादिनो: 4, 2. घट्टे: सङ्काम्बरव्यक्तविभागे: Kaṇāś. 6, 111. लक्ष्यमाणो विभागे च शनै: स्वपरसैन्ययो: 47, 54. 115, 56. तीरपरो° Spr. 2858. पद्मनी विभागार्थं दात्राद्याकारं कर्णादिषु पश्चिक्रं क्रियते P. 6, 2, 112, Schol. पूर्वसूत्रेण मरु विषयविभागो यदा स्यात् 80, Schol. प्रकृतिप्रत्यय° Sarvadarçanas. 135, 4. fgg. विभागो विभागत: 107, 3. 109, 10. 110, 3. 4. वृत्ति° Lāṭy. 8, 1, 15. मेध्यामेध्यविभागज्ञ Çāṅku. Gṛhy. 2, 3. क्रिया° Sūçr. 1, 81, 20. fg. 106, 16. Çāṅkh. Sāṅkh. 1, 3, 9. कार्यकारणविभागाद्विभागादैक्यरूपस्य Siddh. 15. कृत्याकृत्य° Spr. (II) 1880. कृताकृत° Kusum. 55, 14. निमित्तोपादानयो: Schol. zu Kap. 1, 41. गुणत्रय° Kumāras. 2, 4. गुणकर्मविभागयो: Bhāg. 3, 28. भूतानां विभागगर्भलक्षणमाह Sin. D. 37, 10. सांख्ययोगविभागज्ञ MBh. 2, 141. 14, 1392. धर्माणामविभागवित् 8, 3455. वर्णाश्रमविभागविद् Kām. Nītis. 2, 35. Bhāg. P. 3, 7, 29. स्वराणामुदात्तादीनामविभाग: Kāç. zu P. 1, 2, 33. देशकालयो: Kām. Nītis. 11, 56. देशकाल° 4, 17. Bhāg. P. 1, 9, 9. Paṅkat. 92, 4 = Hit. 110, 18. कालदेश° Sūçr. 1, 194, 10. युद्धभूमिविभागज्ञ Kām. Nītis. 18, 33. Vedântas. (Allah.) No. 59. Wassiljew 265. सिराधमनीस्नोतसामविभाग: *keine Verschiedenheit unter einander* Sūçr. 1, 363, 3. स विज्ञेयो विभागेन *nach seiner Verschiedenheit* MBh. 3, 11392. उदात्तानुदात्तस्वरितानामविभागेनोच्चारणम् *ohne Unterscheidung, auf gleiche Weise* P. 1, 2, 33, Schol. विभागेन *getrennt, abgesondert* Verz. d. Oxf. H. 238, b, 16. — 5) unter den Beinamen Çiva's R. 7, 23, 4, 49. — 6) fehlerhaft für विभङ्ग in वाग्विभाग Mīm. P. 72, 23. eben so in der Bed. *Commentar* Wassiljew 89 und in मध्यात्तविभागशास्त्र (s. d.). — Vgl. दिग्विभाग (Ṛt. 3, 22. Vikr. 8, 14. Varāh. Bṛh. S. 12, 15. Kathās. 16, 121. हिमाचलोत्तरादिग्विभागे Paṅkat. 241, 7), दुर्विभाग, देव°, नक्तञ्चकूर्म°, योग°.

विभागक adj. in वेद° *Sonderer —, Ordner des* Veda Paṅkar. 6, 8, 66. vielleicht fehlerhaft für विभाजक.

विभागत्व n. nom. abstr. zu विभाग 4) Sarvadarçanas. 111, 4.

विभागभिन्न n. = तक Ausw. 59.

विभागवत् (von विभाग) adj. *getrennt, gesondert, unterschieden;* davon nom. abstr. विभागवत्ता f.: शब्दा: प्रकृतिप्रत्ययविभागवत्तया बोध्यन्ते Sarvadarçanas. 135, 17.

विभागशस् (wie eben) adv. *Theil für Theil, in Theilen, in Theile, gesondert, getrennt* M. 12, 17. MBh. 4, 979. रूपस्य तस्य चाङ्गानि कल्पितानि वि° *wurden in Theile zerlegt* R. Gorr. 1, 13, 37. भूरीणि भूरिकर्माणि श्रोतव्यानि वि° Bhāg. P. 1, 1, 11. 9, 27. 5, 1, 11. 8, 14, 6. वर्णाश्रम° 1, 2, 12. क्रियाज्ञान° 3, 26, 21. गुणकर्म° Bhag. 4, 13.

विभागिक (wie eben) adj. am Ende eines comp. *auf die Unterscheidung von — bezüglich* Sūçr. 1, 10, 4.

विभागिन् (wie eben) adj. *getrennt, gesondert:* स्व° Verz. d. Oxf. H. 238, b, 15.

विभाग्य (von भज् mit वि) adj. *zu zerlegen, abzutheilen* Lāṭy. 8, 10, 4. 7, 6, 3. fgg. 7, 13. 19. — Vgl. विभाज्य.

विभाज (von भज् mit वि) adj. *vertheilend, zutheilend* Āpast. 1, 23, 2.

विभाजक (vom caus. von भज् mit वि) adj. *vertheilend, zutheilend* Harīv. 7430. *trennend, sondernd* Nilak. 238. विभाजकीभूत Verz. d. Oxf. H. 245, b, No. 616.

विभाजन (wie eben) 1) adj. *zutheilend, veranlassend:* घोणाञ्चतं मुखमपाङ्गविशालनेत्रं नेतद्विभाजनमकारणदूषणानाम् Mṛicch. 144, 18. fg. — 2) n. *das Sondern, Unterscheiden* Vājīp. 190.

विभाजम् ved. infin. von भज् mit वि P. 3, 4, 12, Schol.; vgl. u. भज् mit वि 1) Z. 4.

विभाजयितृ nom. ag. vom caus. von भज् mit वि P. 4, 4, 49, Vārtt. 3.

1. विभाज्य (von भज् mit वि) adj. *zu theilen, zu vertheilen* M. 9, 219. — Vgl. 1. विभज्य, विभाग्य.

2. विभाज्य in °वादिन् fehlerhaft für 2. विभज्य.

विभाण्ड 1) m. N. pr. eines Mannes MBh. 12, 1598. Vgl. विभाण्डक.

— 2) f. ई N. zweier Pflanzen: = नीलगोकर्णी Dhanv. in Nigh. Pr. = घावर्तकी Râgân. im ÇKDr.

विभाण्डक 1) m. N. pr. eines Muni mit dem patron. Kâçjapa, Vaters des Ṛishjaçṛiṅga, MBh. 3,9999. Hariv. 9571. R. 1,8,7. 10,13. 18, 13. Verz. d. Oxf. H. 10,b,8. 280,a, No. 636. Pâṇân. 1,10,63. Vgl. विभण्डक und वैभाण्डकि. — 2) f. विभाण्डिका *Senna obtusa Roxb.* Dhanv. in Nigh. Pr.

विभानु (von 1. भा mit वि) adj. *scheinend* ṚV. 8,91,2.

विभ्राज् (partic. praes. von 1. भ्राज् mit वि) adj. *glänzend;* m. N. einer Prâgâpati-Welt Ait. Br. 7,26. TS. 1,6,5,1. 7,5,1.

1. विभाव (von 1. भा mit वि) adj. *scheinend, leuchtend:* स्वर्ण्ण चित्रं वपुषे विभावम् ṚV. 1,148,1.

2. विभाव (von 1. भू mit वि) m. 1) viell. *Entfaltung* als Beiw. Çiva's Pâṇân. 1,8,17. — 2) *Bekanntschaft* H. an. 3,713. Med. v. 52. — 3) *ein von der Kunst dargestellter Gegenstand, sofern derselbe ästhetische Empfindungen erregt,* H. 326. fg. H. an. Med. रत्याद्युद्बोधका लोके विभावा: काव्यनाट्ययो: Sin. D. 61. 33. 40. 160. 117, 16. Daçar. 3, 28. 4, 1. 43. fg. Pratâpar. 48,b,1. Verz. d. Oxf. H. 213,a, No. 506. Schol. zu Nalod. 2,8.

विभावक adj.: तन्मणो ऽभिनिर्यातु विप्रेभ्यो ऽर्थविभावकः (द्रव्यार्जितमर्थं प्रदातुं तुमुन्प्रत्ययो क्रियायां क्रियार्थायामिति एवुल् Nîlak.; vgl. P. 3, 3,10] um *den Brahmanen Geld zu verschaffen* MBh. 3,1347. wohl fehlerhaft für विभावक.

विभावत्व n. nom. abstr. zu विभाव 3) Sin. D. 37.

विभावन् (von 1. भा mit वि) 1) adj. (f. विभावरी) *scheinend, leuchtend, glänzend:* Ushas ṚV. 1,92,14. 8,47,14. Naigh. 1,8. Agni 3,3,9. 5,3, 2. यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्नि: 10,6,2. तं पमेयाभवो विभावा 8,4. 91, 1. गङ्गा MBh. 13,1844. यशस्विनो मन्युमती कुले जाता विभावरी (= कुपिता Nîlak.) 5,4498. — 2) f. विभावरी a) (*die sternhelle*) *Nacht* AK. 1,1,8, 4. H. 142. Med. r. 298. Hâlây. 1,107. °मुखे MBh. 7,6832. R. 2,84,18. 5,16, 40. Kumâras. 5,44. Milav. 74. 82. Kathâs. 10,31. 12,184. 23,10. 39,213. 69,40. 71,238. Râga-Tar. 3,204. 8,2718. Bhâg. P. 4,8,71. — b) *Gelbwurz* (wie alle Wörter für *Nacht*) Med. *eine dem Ingwer ähnliche Pflanze* (मेदा) Ratnam. im ÇKDr. — c) *Kupplerin* Med. — d) = चक्रपोषित् Med. = वक्रपोषित् *ein hinterlistiges Weib* ÇKDr. nach ders. Aut., so auch Viçva bei Nîlak. zu MBh. 5,4498. — e) = विवादवस्त्रगुण्ठी Med. °वस्त्रगुण्डी ÇKDr. nach ders. Aut. — f) = नौकर्णनिरतस्त्री *ein geschwätziges Weib* Çabdar. im ÇKDr. — g) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Ind. St. 8,383. — h) N. pr. α) einer Tochter des Vidjâdhara Mandâra Miṅk. P. 63,14. 64,2. 66,6. — β) der Stadt Soma's Bhâg. P. 5, 21,7. — γ) der Stadt der Prakoṭas Bhâg. P. 3,17,26. — Vgl. राका-विभावरी.

विभावन (vom caus. von 1. भू mit वि) m. (!) und n. Siddh. K. 249,a,10. 1) nom. ag. *entfaltend* oder zur *Erscheinung bringend, offenbarend* Hariv. 15777 nach der Lesart der neueren Ausg. (प्रभावन die ältere). — 2) f. आ eine best. rhet. Figur: *das Vorführen von Wirkungen, deren wahre Ursachen man Einem zu errathen überlässt,* Sâh. D. 716. 5, 4. 105,14. Kâvjâd. 2,199. Kuvalay. 93 (117,b). Pratâpar. 91,a. Verz. d. Oxf. H. 208,b,3. Mallin. zu Kir. 5,26. Beispiele Spr. (II) 239 und 442. — 3) n. a) *das Entfalten, Erschaffen* Vishṇ. 147. विश्व° Bhâg. P. 4,8,20. = पालन Comm. — b) *das Offenbaren, an den Tag-Legen:* निजविद्यादि° Kull. zu M. 9,76. — c) *das Erwecken eines bestimmten Grundtons, einer best. Grundstimmung durch ein Kunstwerk* Sâh. D. 44. 25,10. — d) *das Wahrnehmen, Erkennen:* सम्यग्गृतविभावनात् M. 2,101. वर्ण° Vikr. 78,10. — e) *das Vorführen dem Geiste, das Nachsinnen über:* सततानुवृत्तभृत्यावमान° Kathâs. 1,66. 26,220.

विभावनीय (wie eben) adj. 1) *wahrzunehmen, zu erkennen* Miṅk. P. 102,12. — 2) *zu überführen,* als Erklärung von भाव्य Kull. zu M. 8,60.

विभावरी s. u. विभावन्.

विभावरीश m. *Herr der Nacht* d. i. *der Mond* Varâh. Bṛih. 8. 103,1.

विभ्रावसु (वि° + वसु) 1) adj. *glanzreich:* Agni ṚV. 3,2,2. 5,25,2. 8,43,32. 44,6. 24. VS. 17,53. Soma ṚV. 9,72,7. Kṛishṇa Hariv. 15777. — 2) m. a) *Feuer, der Gott des Feuers* AK. 1,1,4,51. 3,4 20,228. H. 1100. an. 4,333. Med. s. 63. Hâlây. 1,63. Bhâg. 7,9. MBh. 1,1243. 2, 1188. 3,2662. 7,602. 12,11598. 13,114. 4023. 6781. Hariv. 1881. 3004. 11330. 13930. R. 3,18,25. 75,65. 5,103,4. Râgat. 3,37. 10,82. Kumâras. 4,34. Spr. (II) 986. Bhâg. P. 2,3,3. 4,9,7. 7, 3,23. 8, 10, 31. 18, 22. 11, 26,31. Miṅk. P. 15,38. 99,48. — b) *die Sonne* AK. 1,1,2,32. 2,4,20, 228. H. 98. H. an. Med. AV. Pariç. 14,1 in Ind. St. 9,119. MBh. 1,62. 1178. 6,487. Bhâg. P. 10,46,8. Verz. d. Oxf. H. 62,a,17. — c) *der Mond* H. an. — d) *eine Art Perlenschmuck* H. an. Med. — e) N. pr. α) eines der acht Vasu Bhâg. P. 6,6,11. 16. — β) eines Sohnes des Naraka Bhâg. P. 10,59,12. — γ) eines Dânava Bhâg. P. 6,6,39. — δ) eines Ṛishi MBh. 1,1254. fgg. — ε) eines mythischen Fürsten auf dem Berge Gajapura Kathâs. 48,64.

विभाविन् adj. 1) *erscheinen lassend:* वर्ण° unter den Beiww. Çiva's MBh. 13,1219; vgl. das caus. von 1. भू mit वि. — 2) *Etwas enthaltend, das eine bestimmte Grundstimmung* (das Gefühl der Liebe u. s. w.) *erweckt,* Nalod. 2,8.

विभाव्य (vom caus. von 1. भू mit वि) adj. 1) *wahrzunehmen, vernehmbar, erkennbar, fassbar:* अविभाव्यतारकं नभ: Çiç. 9,12. Spr. 1882. नाविभाव्यो (= अगम्भीरो Nîlak.) गिरं सृजेत् MBh. 12,3491. अविभाव्यवाच् Râgat. 7,35. सनन्दनाद्यैर्मुनिभिर्विभाव्यम् (त्वाम्) Bhâg. P. 3,8,23. 10,64, 26. — 2) *annehmen, voraussetzen:* विभाव्यं (= विचारणीयम् Nîlak.) तस्य भूयश्च कर्म पापं दुरात्मन: MBh. 5,2843. Kâvjâd. 2,199 (= अनुसंधनीय Comm.). — Vgl. दुर्विभाव्य.

विभाषा (von 1. भाष् mit वि) f. 1) *Beliebigkeit, Zulässigkeit des Einen und Andern* Taitt. 3,4,6. न वेति विभाषा P. 1,1,44. विभाषेर्णो: 2,3,36. 3,80. °प्राप्त AV. Pariç. 1,2. विभाषया Pat. zu P. 6,1,14. द्वयोर्विभाषयोर्मध्ये विधिर्नित्य: Vop. 2, 5, Comm. विभाषामिच्छन्ति Sarvadarçanas. 136,4. 5. अपरे तु स्वपदविभाषामाहु: Schol. zu Kâç. Ça. 8,2,28. संपुङ्कपूर्वो ऽपि लघु: क्वचित्स्यात् वर्णास्तु प्रक्रादिगतो विभाषा (so v. a. विभाषया) Dâmodara in Ind. St. 8,224. नित्यं प्राप्ते वि°, अप्राप्ते वि° P. 8, 2,38, Schol. प्राप्त° 1,3,80, Schol. अप्राप्त° 43, Schol. व्यवस्थिता Siddh. K. zu P. 6,3,116. कोविदं सूत्रं व्यवस्थितविभाषायां व्याचष्टे Hâlây. in Ind. St. 8,222. Vgl. विकल्प 1). — 2) Bez. *einer Klasse von Prâkrit-Sprachen,* zu denen शाकारी, चाण्डाली, शाबरी, आभीरिकी und शाक्की

gezählt worden, Verz. d. Oxf. H. 181,a, No. 412. — 3) bei den Buddhisten Bez. einer Klasse von Schriften: *ausführlicher Commentar* Burn. Intr. 567. Wassiljew 47. 63. fg. 75. 77. 107. Tiran. 36. 294. Vie de Hiouen-thsang 63. 67. 106. °शास्त्र 50. 67. 174. Tiran. 36. Hiouen-thsang I, 113. 129. 175. 184. 269. अभिधर्म° 177. प्रकरणपादविभाषाशास्त्र 184. Vie de Hiouen-thsang 102. — Vgl. दुर्विभाष, महाविभाषाशास्त्र und वैभाषिक.

विभास (von 2. भास् mit वि) m. 1) N. einer der sieben Sonnen Taitt. Âr. 1,7,1. 16,1. fälschlich स° VP. 632, N. 6. — 2) N. pr. einer Gottheit Mân. P. 80,7. — 3) N. eines Râga Gîv. S. 31 und VIII.

विभास्कर (2. वि + भा°) adj. *ohne Sonne* Varâh. Laghuj. 2,9 in Ind. St. 2,285.

विभास्वत् (2. वि + भा°) adj. *überaus glänzend* Verz. d. Oxf. H. 28,b,40.

विभित्ति (von 1. भिद् mit वि) f. *Spaltung* Kâṭy. 11,5. Sharv. Bh. 3,8.

विभिन्दु (wie oben) 1) adj. *spaltend* ṚV. 1,116,20. — 2) m. N. pr. eines Mannes ṚV. 8,2,41.

विभिन्दुक m. (*der sich spaltende Fels*) N. pr. eines Asura (Comm.): मेधातिथिः काण्व्यो विभिन्दुकाद्यार्षेगी उदमृजत Pañcav. Br. 15,10,11.

विभिन्नदर्शिन् adj. = भिन्नदर्शिन् Mân. P. 23,38.

विभी (2. वि + 2. भी) adj. *furchtlos* MBh. 3,11153. 8,786.

विभीत m. = विभीतक Hall. 2,463. Çiç. Saṃh. 3,8,27. 11,3. 13,63.

विभीतक (spätere Form für विभीदक) m. f. (ई, nicht zu belegen) und n. Taik. 3,5,23. *Terminalia Bellerica Roxb.* (ein grosser Baum), n. *die als Würfel gebrauchte Nuss*; die Kerne berauschen, die Blüthe riecht widerlich. Wight Ill. I,91. Z. d. d. m. G. II,123. AK. 2,4,2,38 (m. f. n.). H. 1145. Hall. 3,66. Ratnam. 91. Çat. Br. 13,8,4,16. Schol. zu Sharv. Bh. 3,8. MBh. 3,2405. 2813. fgg. 11570. R. 2,91,47. 6,19,41. Suçr. 1, 32,16. 142,3. 8. 144,18. 167,5. 183,7. 2,77,16. 229,15. 468,11. Çiç. Saṃh. 2,1,20. 3,11,25. Varâh. Bṛ. S. 53,120. 54,24. 102. Verz. d. Oxf. H. 98,a,33. Brahma-P. in LA. (III) 31,20. — Vgl. वैभीतक.

विभीदक m. dass. ṚV. 7,86,6. 10,34,1. Kâṭy. Ça. 21,3,20. Sây. zu Çat. Br. 5,4,4,6. Gobh. 1,5,17. — Vgl. विभेदक.

विभीषण (vom caus. von 1. भी mit वि) gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. 1) adj. (f. षी) *schreckend, einschüchternd, Furcht erregend* ṚV. 5,34,6. रात्रस MBh. 1,3930. 6029. 6072. दूत 6,4295. 7,7903. Harîv. 13408. R. 5,1,20. Verz. d. Oxf. H. 10,b, N. 6. Vet. in LA. (III) ad 30,8. भीरु° MBh. 7,892. मु° R. 3,55,25. — 2) m. *a) Rohrschilf, Amphidonax Karka Lindl.* Rîgân. im ÇKDa. Ausg. 36. — *b)* N. pr. α) eines edlen Râkshasa, Bruders des Kubera und Râvaṇa, der von Râma nach Râvaṇa's Vertreibung als Beherrscher von Laṅkâ eingesetzt wurde, MBh. 2,611. 3,15896. fgg. Harîv. 10410. R. 1,1,79. 3,33. 3,23,33. 7,9,33. Kâm. Nîtis. 8,61. Ragh. 12,68. 104. Kathâs. 45,144. fgg. Weber, Râmat. Up. 299. fg. 302. 311. Râja-Tar. 3,72. 4,504. Bhâg. P. 4,1,37. Pañcat. 4,3,110. Verz. d. Oxf. H. 76,a,4. — β) zweier Fürsten von Kâçmîra: eines Sohnes des Gonarda Râja-Tar. 1,192. eines Sohnes des Râvaṇa 196. fg. — 3) f. षी N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2640. — 4) n. *a) das Schrecken, Einschüchterung* MBh. 3,15648. — *b) N. des 11ten* Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912.

विभीषा (wie oben) f. *die Absicht* (als wenn es vom desid. kâme) *Jmd zu schrecken*: यथावीर्यस्त्वया सर्पः कृतो ऽयं मद्विभीषया MBh. 1,938.

विभीषिका (wie oben) f. *Schreck, Einschüchterung, Schreckmittel*: विभीषिका वै गन्धर्व नास्त्रेषु प्रयुज्यते । यत्त्रेषु प्रयुक्तेषु फेनवत्प्रविलीयते ॥ MBh. 1,6462. विभीषिकाभिर्वल्गूभिर्भीषयन्सर्वपार्थिवान् 2,1222. 5,5570. न वै विभीषिकां कांचिद्भान्कुर्वन्ति पाण्डवाः । गुध्यन्ति ते यथान्यायं शक्तिमत्तश्च संयुगे ॥ 6,2913. Harîv. 13864. 16018. Kâm. Nîtis. 19, 3. Uttarar. 90,17 (117,1). दृष्ट्वा तास्ता विभीषिकाः Râja-Tar. 7,539. Pañcat. 160,17. 21. fg. कृत्वा शस्त्रविभीषिकाम् Spr. (II) 1889. — Vgl. भेट्°.

विभु (von 1. भू mit वि P. 3,2,180. Vop. 26,168) 1) adj. im Veda auch विभ्वी. f. विभ्वी und विभ्वरी; vgl. P. 4,1,47. *a) weit reichend, durchdringend; ausgebreitet, überall gegenwärtig* H. an. 2,312. Med. bh. 7. P. 3, 2,180, Schol. ज्योतिस् ṚV. 1,165,10. ज्योतिस् 8,90,12. याम 1,34,1. 10, 138,5. यं भगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे 4,7,1. 1,188,5. 10, 40,1. VS. 5,31. 22,30 (Kâṭy. 35,10). स घोतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु 32,8. Mund. Up. 1,1,6. Kâṭhop. 2,22. Maitrâjup. 6,7. Kâuṣîkop. in Ind. St. 3, 15. 19. Bhag. 10,12. R. 6,8,16. Varâh. Bṛ. S. 51,1. Balabh. 50. 93. Âkâça Taitt. 10. fg. Z. d. d. m. G. 8,24, N. 3 und 4 (विभ्वी). 28, N. 1. 26. Schol. zu Kap. 1,49. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Çl. 3. Sarvadarçanas. 51,13. तत्रित्यं विभु चेच्चैतन्यात्मनो विभुनित्यता 85,1. — *b) reichlich; nachhaltig*: रातिं ṚV. 5,38,1 (vgl. 1,34,1). मनीषाः 6,34,1. पोषं 5,5,9. घृतः 3,31,16. कामाः VS. 20,23. 18,10. ṚV. 2,24, 10. यज्ञं TBr. 3,9,22,1. Çat. Br. 13,3,3,2. — *c) vermögend, mächtig, wirksam, tüchtig*: Indra ṚV. 3,33,12. 8,85,11. die Marut 1,166,11. Agni 31,2. 65,10. 141,9. 5,4,2. द्रप्स 10,11,4. विश्पति 6,15,8. यज्ञाः 3,6,9. 7,48,1. VS. 22,19. MBh. 3,2118. 5,7202. R. 1,38,29. 77,29. 4, 1,4. 11,12. 5,89,8. Kumâras. 6,95. Bhâg. P. 4,1,48. विभो voc. MBh. 1, 6040. 3,1732. 5,6067. 7009. 13,2250. R. 1,62,14. 65,34. R. Gorr. 2, 66,29. 4,9,4. 36,9. 40,12. 5,83,17. Kathâs. 28,93. *vermögend, im Stande seiend* mit infin. Kir. 5,42. Bhâg. P. 5,18,22. 11,6,13. fg. (विभ्वी). *subst. Herr, Gebieter* Taik. 3,3,289. H. 359. H. an. Med. यमस्य Bhâg. P. 2,7,49. लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुः Varâh. Bṛ. S. 1,1. तेषां देवानाम् Mân. P. 74,38. तव Kathâs. 26,280. महिषु Pañcat. 202,10. स्वप्न° so v. a. *das Haupt* Varâh. Bṛ. 18,14. *Fürst* Ragh. 8,31. संगतो ऽहं विभोर्नित्यम् Spr. 3193. Kathâs. 19,39. तावतो ऽस्तश्च तत्सुतः । वर्षानभूद्विभुः Râja-Tar. 1,340. 351. — *d)* = नित्य H. an. — *e)* = दृढ Âçvalây. im ÇKDa. — 2) m. *a) der Mächtige, Allmächtige* als Bez. des höchsten Gottes: α) Brahman's Med. Bhâg. P. 2,9,6. 3,3,29; vgl. विभुद्यतुर्मुखः R. 7,5,12. — β) Vishṇu's oder Kṛishṇa's Çârdam. im ÇKDa. Bhag. 5,13. MBh. 3,13591. Bhâg. P. 1,2,30. 3,16. 5,16. 40. 8, 13. 7,8,34. — γ) Çiva's H. an. Med. MBh. 1,7297. Kumâras. 7,31. Spr. 3313. Kathâs. 7,111. 21,143. 39,153. — *b) Diener* (भृत्य) Taik. — *c)* ein N. der Ṛbhu (vgl. विभ्वन्), nur pl. ṚV. 7,48,1. ऋभुर्विभुभिः, विभ्वो विभुभिः 2. ये विभ्वो नः स्वपत्यानि चक्रुः 4,34,9. 36,3. — *d)* N. pr. (विभू nach P. 3,2,180, Schol., was aber nicht zu belegen ist) eines Gottes, eines Sohnes des Vedaçiras und der Tushitâ, Bhâg. P. 8, 1,21. eines Gottes unter Manu Sâvarṇi Mân. P. 80,7. des Indra unter Manu Raivata 75,72. Bhâg. P. 8,5,3. unter dem 7ten Manu

Verz. d. Oxf. H. 52, *a*, 41. N. pr. eines Sohnes des Vishṇu von der Dakshiṇâ Bhâg. P. 4,1,7. des Bhaga von der Siddhi 6,18,3. eines Bruders des Çakuni MBh. 7,6944 (mit der ed. Bomb. zu lesen: शकुनेर्भ्रातरो वीरा गवाक्षः शरभो विभुः । सुभगो भानुदत्तश्च प्रभाः पञ्च महारथाः ॥). eines Sohnes des Çambara Harîv. 9253. eines Sohnes des Satjakotu und Vaters des Suvibhu 1594. fg. VP. 409. eines Sohnes des Dharmaketu und Vaters des Sukumâra ebend. N. 14. eines Sohnes des Varshaketu (Satjaketu) und Vaters des Ânarta Harîv. 1751. VP. 400, N. 14. eines Sohnes des Prastâva von der Nijutsâ Bhâg. P. 5,15,3. — Vgl. वेभव.

विभुकेतु adj. *muthig* ṚV. 8,38,15.

विभुज्ञ nom. ag. von 1. भुज् mit वि; s. मूल°.

विभुत्व (von विभु) n. 1) *Allgegenwart, das Ueberallsein* Çvetâç. Up. 4,5. Nîlak. 119. Sarvadarçanas. 106,12. 124,14. Schol. zu Kap. 1,110. — 2) *Allmacht, unumschränkte Herrschaft* Prâçnop. 3,12. Siddhânjan. 12. Çiç. 42.

विभुप्रमित (auch Kauṣ. Up. 1,5) s. u. 1. मि mit प्र 1).

विभुर्मन् (von विभु adj. 1) etwa *überall ausgebreitet:* विभुमद्भो भुवनेभ्यो ṛṇं धाः ṚV. 8,85,16. = मरुत्वत्क Sây. — 2) *mit den* Vibhu (Ṛbhu) *verbunden:* Indra VS. 38,8. Âpast. Bh. 2,20. Âçv. Çr. 5,1,15. Kâty. Çr. 10,3,9.

विभुवरी (voc. विभुवरि) Kâṭy. 35,3 in Ind. St. 5,233 wohl f. zu विभ्वन्.

विभूतंगमा f. *eine best. grosse Zahl* Lalit. ed. Calc. 169, 4. v. विभूतागम Foucaux, विभूतंगम und विभूतगम Mél. asiat. 4,632.

विभूतद्युम्न adj. *dessen Glanz weit reicht* ṚV. 1,136,1. 8,33,6.

विभूतमनस् adj. zur Erklärung von विमनस् Nir. 10,26.

विभूतराति adj. *dessen Besitz reich ist* ṚV. 8,19,2.

विभूतागम s. विभूतंगमा.

विभूति (von 1. भू mit वि) 1) adj. *a) durchdringend:* सर्व विभूतये zur Erklärung von विश्वभुवे Nir. 11,9. — *b) reichlich:* मूनता ṚV. 1,30,5. ṛṣi 6,21,1. — *c) mächtig, wirksam:* ऊतयः ṚV. 1,8,9. die Marut 166, 11. Indra 6,17,4. Vîrabh. 1,6. *verfügend über* (gen.): विभूतिं राधसो मरुः Vîrabh. 2,6. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sâdhja Harîv. 11537. — *b)* eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,256. — 3) f. *a) Entfaltung, Vervielfältigung, reiche Fülle:* विभूतयस्तदीयानां पशूनाम् Ragh. 4,19. वीर्य° Kumâras. 2,61. कर्मकर्तृत्व विभूत्यै Çaṅk. zu Bhg. Âp. Up. S. 237. दिव्यौजविभूतिभिः Kathâs. 45,337. वाचः Bhâg. P. 4,24,43. Verz. d. Oxf. H. 208, *b*, 33. — *b) Manifestation einer Kraft, Machtäusserung* Nir. 4,23. Bhag. 10,7. 16. 18. fg. 40. Bhâg. P. 2,7,51. 9,12. 3,7,23. 8,5. 16. 9. 25, 27. 4,30,31. 5,4,1 (मरुत्°). 20,40. 6,16,38. 8,21,5. 10,72,3. 12,11,45. MBh. 12,9149. 13620. Sarvadarçanas. 96,13. मायाविभूतयः Bhâg. P. 2,7,39. पुरुष° 6 in der Unterschr. मनसः 5,11,12. मायागुण° 16,1. ममैव कामो भूतानां षड्वर्गासुविभूतयः 5,4,11. fg. विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा AK. 1,1,6,21. MBh. 13,1121. Colebr. Misc. Ess. 1,235. Verz. d. Oxf. H. 17, *a*, No. 61. 191, *a*, 18. 229, *a*, No. 561. Madhus. in Ind. St. 1,22. Kumâras. 2,11. Çaṅk. zu Bhg. Âp. Up. S. 248. Bhâg. P. 4,14,4. त्रिभुवनराज्य° MBh. 13, 771. *die Macht eines Herrschers, — eines grossen Herrn* Spr. (II) 1397. 2176. Ragh. 17,43. Kumâras. 7,39. प्रभूणां हि विभूत्यन्धा धावत्यविषये मतिः Kathâs. 17,128. Râjat. 8,2618. राज्ञविभूतयः (so die ed. Bomb.) Bhâg. P. 6,13,22. Pañcat. 203,1. Ver. in LA. (III) 30,6. सीता° *Entfaltung von Kraft, — Energie* R. 3,62 in der Unterschr. विद्या° *die Macht einer Zauberkunst* Kathâs. 52,23. महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः Spr. 2763. तपोविभूतयो ऽचिन्त्या द्विजानामुपलेभिरे Râjat. 1,166. वाग्विभूति Çaṅk. zu Bhg. Âp. Up. S. 291. — *c) ein glücklicher Erfolg:* यज्ञे MBh. 1,411. यज्ञ° 441. 2,1937. यज्ञविभूतीयम् R. 7,65,3. — *d) Herrlichkeit, Pracht:* पारिव्राजस्य Harîv. 7707. वार्तवी वीरुधाम् Ragh. 8,36. इन्द्रो: Vaṇîn. Bhg. S. 12,10. 104,42. Râjat. 8,2429. — *e) Wohlfahrt, Wohlergehen, Glück* H. 357. सोमलोके विभूतिमनुभूय Prâçnop. 5,4. MBh. 3,2800. यतिमानुषी 8312. वात्मनश्च विभूतये R. 5,89,31. Kâm. Nîtis. 1,67. Spr. 1490. 3023. Kathâs. 33,10. Bhâg. P. 1,16,24. 2,6,44. 3,33,3. 4,7,24. Siddh. D. 277. — *f) Glücksgüter, Reichthum* Kâm. Nîtis. 4,13. 14,67. Ragh. 6,76. 15,29. Spr. (II) 855. 2205. 2270. (I) 1193. 2584. Kathâs. 7,102. 20,45. 30,32. 34,128. 45,313. Râjat. 3,75. 4,388. 421. 709. fg. 5,18. 8,2430. Siddh. D. 276, 12. fgg. Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 8. 9. — *g) die Göttin der Wohlfahrt,* Lakshmi Bhâg. P. 3,16,20. महा° 28,26. — *h) Asche* (vgl. भूति) Wilson, Sel. Works I,196. 194. fg. 224. Pañcat. 1,8,9. Siddh. D. 19,1 (विभूति gedr.). — Vgl. महा° (auch Bhâg. P. 8,5,32 als adj.; als subst. s. u. 3) *b*) und *g*)) und विभव.

विभूतिचन्द्र m. N. pr. eines Autors Târân. 190.

विभूतिद्वादशी f. Bez. *eines best. zwölften Tages,* eines Festtages zu Ehren Vishṇu's, Verz. d. Oxf. H. 34, *b*, 9. 13. fg. 41, *a*, 28.

विभूतिमत् (von विभूति) adj. *kräftig, mächtig:* सत्र Brâhm. 10,41. उरस् Bhâg. P. 3,19,15.

विभूदावन् (विभू = विभु + दा°) adj. *reichlich gebend:* Prâgâpati TS. 3,5,8,1.

विभूमन् (von 1. भू mit वि) 1) etwa *Ausbreitung, Macht* in einer Formel TS. 3,3,5,3. — 2) m. concret als Beiw. Kṛshṇa's (vgl. भूमन्) so v. a. *in vielfacher Gestalt erscheinend* oder *allmächtig* Bhâg. P. 1,9,33. 3,14,28. 4,7,43 (च भूमन् st. विभूमन् ed. Bomb.). 11,18. 10,60,34. 61,3. 84,17. Der Comm. erklärt das Wort durch परिपूर्ण und ein Mal durch विगतो भूमा यस्मात्.

विभूरसि (eig. *du bist mächtig*) m. *eine Form des Feuers* MBh. 3,14234.

विभ्वसु (विभू = विभु + वसु) adj. *ausgebreiteten —, reichlichen Besitz habend* ṚV. 9,86,10.

विभूषण (vom caus. von 2. भूष् mit वि) 1) adj. *schmückend:* चरणौ पारस्परविभूषणौ R. 3,52,33. — 2) m. Bein. Mañjuçrî's Târan. 1,1,22. — 3) n. *a) Schmuck* AK. 2,6,3,3. Hâlâs. 2,402. सर्वविभूषणपरिच्छदा M. 9,78. MBh. 3,11912. खड्ग° 12066. R. 2,39,17. 3,3,22. Ragh. 16,80. शंखटविभूषणमणि Spr. (II) 929. वृथा शूरे विभूषणम् (I) 2890. Vaṇîn. Bhg. S. 16,28. 43,49. 78,3. Bhg. 21 (19), 3. 27 (25), 12. Kathâs. 21,82. Bhâg. P. 5,19,7. पाटलिपुत्राख्ये पुरे पृथ्वीविभूषणम् Kathâs. 17,64. 30, 38. ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता Spr. (II) 1487. विभूषणं शीलसमं न चान्यत् (I) 1137. महीपतीनां विनयो विभूषणम् 1709. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् 3340. am Ende eines adj. comp.: स° adj. MBh. 14,2667. तपनीय° *geschmückt mit* R. 3,67,18. श्राननं मकरकुण्डलविभूषणम् Bhâg. P. 4, 24,46. f. सा MBh. 3,12261. Kâm. Nîtis. 7,45. Kathâs. 18,55. 34,250.

— *b) schmuckes Aussehen, Glanz, Schönheit:* शोभा = द्वयोपभोगताद्रूप्येरङ्गानां विभूषणम् Daçan. 2,32. — Vgl. मकरविभूषणकेतन.

विभूषणवत् (von विभूषण) adj. *geschmückt* Mṛkkh. 61,2.

विभूषा (vom caus. von 2. भूष् mit वि) f. 1) *Anputz; Schmuck* Vaṛâh. Bṛh. 27 (25), 34. श्रीमद्विभूषोज्ज्वलित Kâm. Nîtis. 15,46. भयोत्सृष्ट° adj. f. Raghu. 4,54. घनमाल° adj. f. Spr. 3044. — 2) *schmuckes Aussehen, Glanz, Schönheit* H. 1512. Hariv. 2,410.

विभूषिन् (von विभूषा) adj. am Ende eines comp. *geschmückt mit:* सौम्यदंष्ट्रा° MBu. 13,890. ज्ञाम्बूनद° Harîv. 16183.

विभूष्णु (von 1. भू mit वि) adj. als Beiw. Çiva's wohl so v. a. *allmächtig* Çiv. — Vgl. भूष्णु.

विभृत्र (von 1. भृ mit वि) adj. *was sich hinundher tragen lässt*, z. B. das zarte Kind ṚV. 1,71,2. दशेमं त्वष्टुर्जनयत्त गर्भं विभृत्रम् 95,2. उताकृषाके चक्रे विभृत्रः (अग्निः) 2,10,2. या पुत्रासो न मातरं विभृत्राः (मरुत्सु) 7,43,3.

विभृवन् (wie eben) adj. *hinundher tragend* ṚV. 9,96,19.

विभेतव्य (von 1. भी mit वि) n. *zu fürchten* (impers.): भयात् Spr. 1029, v. l.

विभेतृ (von 1. भिद् mit वि) nom. ag. *Durchbrecher, Zerstreuer, Verscheucher:* तमसाम् (सूरुण) Spr. 3233.

विभेद (wie eben) m. 1) *Durchbohrung, Spaltung, das Durchbrechen* MBu. 8,1966. सप्ततल° R. Gorr. 1,4,63. भूधराणाम् Kir. 13,1. Vaṛâh. Bṛh. S. 5,34. — 2) *das Verziehen:* भ्रू° *der Brauen* Sâh. D. 196. — 3) *das Zerfallen, Zwietracht, Uneinigkeit:* यो नः सुमनसो गूढ विभेदं कर्तुमिच्छति MBu. 2,2158. सामदानविभेदैः R. 5,24,34. मित्राणाम् Vaṛâh. Bṛh. S. 10,12. राष्ट्र° 46,26. विभेदं पूर्ववत्प्रापदेवं निश्चलं पुनः Râjat. 6,239. — 4) *das Zerfallen in* so v. a. *Unterschiedenheit, Verschiedenheit:* कालो द्विविधो ऽवसर्पिण्युत्सर्पिणीविभेदतः H. 127. देशद्रव्यवयश्चेष्टाविज्ञानादिविभेदतः । भिन्ना गुणा वरस्त्रीणां नैका सर्वगुणान्विता ॥ Kathâs. 47,105. Verz. d. Oxf. H. 23,*a*,12. 81,*a*,30. 32. 197,*b*, No. 462, Çl. 4. Vaṛâh. Bṛh. S. 88,12. Buâg. P. 8,3,22. उपकारविभेदाः *verschiedene Arten von* Spr. 1348, v. l. Buâg. P. 3,13,37.

विभेदक (wie eben) 1) adj. *Etwas* (gen.) *von Etwas* (abl.) *unterscheidend:* विज्ञानवादस्य किं विभेदकं भवन्मतात् Verz. d. Oxf. H. 239,*b*,7. — 2) m. = विभीदक, विभीतक H. 1145, Schol.

विभेदन (wie eben) 1) adj. *durchbohrend, spaltend:* रत्नं मणिपूरविभेदनम् Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,21. अविभेदनाः परस्परम् *von Sternen* so v. a. *sich gegenseitig nicht verfinsternd* Vaṛâh. Bṛh. S. 20,4. — 2) n. *a) das Spalten, Zerbrechen* Nir. 9,8. घण्ड° MBu. 1,1089. — *b) das Entzweien, Verunreinigen:* मुखविभेदन MBu. 3,17447. Kâm. Nîtis. 12,23. सामा प्रदानेन विभेदनेन 9,76. सामदानविभेदनैः MBu. 12,2968. R. 4,54,11.

विभेदिन् (wie eben) adj. 1) *durchbohrend, zerreissend;* s. मर्म°. — 2) *vertreibend, verscheuchend:* स्मरणादेव सर्वेषामङ्गसां या (गङ्गा) विभेदिनी Harîv. 3190.

विभेद्य (wie eben) adj. *zu spalten, zu zerbrechen:* एकेषुणा विभेद्यानि तानि दुर्गाणि MBu. 8,1134.

विभंश (von 1. भंस् mit वि) m. 1) *Verfall* so v. a. *das Aufhören, Verschwinden:* सङ्गस्य MBu. 3,11254. नित्यक्रियाणाम् Mâlav. P. 69,38. समस्ताचार° 40,12. शील° Kathâs. 61,143. चित्त° so v. a. *Geistesstörung* MBu. 13,2840. — 2) *Fall, Sturz* in übertr. Bed.: घनेकमदान्धानाम् Buâg. P. 8,22,5. राज्यं चाप्ययविभंशम् MBu. 5,1566. देश° *Verfall, Ruin eines Landes* Vaṛâh. Bṛh. S. 45,7. — 3) *das Kommen um, Verlust:* राज्यविभंशदुःख Râjat. 1,375. स्वार्थ° Buâg. P. 11,21,21. सुखास्वादविभंस Mâlav. P. 24,11. — Vgl. मति°.

विभंशिन् (wie eben, adj. 1) *zerbröckelnd:* शैल° Çat. Br. 3,1,4,2. Kâtj. Çr. 7,1,13. Gobh. 4,7,1. — 2) *herabfallend, sich ablösend:* मन्दारपुष्पैः कर्णविभंशिभिः Mucc. 68.

विभम (von भम् mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. या. *a) das Hinundhergehen, das sich-hinundher-Bewegen, unstätes Wesen:* उच्चस्तमतकनर्दम° Mâlatîm. 13,12. मत्तभ्रमर° adj. (बिन्दुसरस्) Buâg. P. 3,21,41. पवनोद्धतवोचि° Spr. 2036. अकृत्रिमविभ्रमैः — घड़ुवैः Uttarar. 10,3 (14,6). मदविभ्रमलोचन adj. Vaṛâh. Bṛh. S. 58,36. चलितापाङ्गविभ्रमैः Râjat. 5,360. भ्रूलता° Mucc. 48. Ṛt. 3,17. सविभ्रम (वीक्षण) 1,12. तडित्तरलविभ्रमाः संपदः Râjat. 8,1898. घनसमयतडिद्विभ्रमाः भोगपूगाः Spr. (II) 993. वाताश्वविभ्रममिदं वसुधाधिपत्यम् 1,2775. — *b)* (*das Toben*) *Heftigkeit, Intensität, hoher Grad:* रति° Kâraṇḍ. 13. Kâdamb. 35. भूयो ऽपि मा कृथा क्रास्यविभ्रमम् Kathâs. 43,103. निवृत्तसर्वेन्द्रियवृत्ति° Buâg. P. 1,9,31. रोष° 3,10,13. शौर्यविभ्रमभरं विभ्रति (राजनि) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 12. कीर्तेः) विश्वबन्धविभ्रमा Kâdamb. 38. कर्मक्रियाविभ्रमाः so v. a. *buntes Gewirre* Spr. (II) 1721. सौन्दर्य° (I) 4791. 1265. गन्ध° Kâdamb. 143. दानविभ्रमाः *überaus grosse Schenkungen* Râjat. 8,72. — *c) Coquetterie, Buhlkunst:* स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु Mucc. 29. 72. Raghu. 8,58. 79. Spr. (II) 835. Kathâs. 47,110. Buâg. P. 4,27,1. 9,23,8. विलासस्मितविभ्रमैः Râjat. 3,365. Sâh. D. 113. सविभ्रमा Spr. 951. 3003. Ṛt. 6,23. — *d) Verwirrung, Unordnung, Störung:* पवनादीनाम् Sucr. 1,70,19. श्लेष्मादीनाम् 233,2. आकार° Sâh. D. 38,19. स्मृति° Bhag. 2,63. Spr. 5112. Daçaçl. 31,3 v. u. विभ्रमादिविमुक्तता वाचः H. 69. राज्य° R. 2,23,28. मत्स्य MBu. 12,2157. दण्डस्य so v. a. *falsche Anwendung der Strafe* M. 7,24. दण्डनीतेः Kâm. Nîtis. 2,8. — *e) Aufregung:* लोकस्य Vaṛâh. Bṛh. S. 33,11. न यस्य चित्तं बहिरर्थविभ्रमम् Buâg. P. 4,24,39. मनस्यर्थविभ्रमे 7,13,43. स कार्ष्णो बृहद्यौवनः । ज्ञानयामास नारीणां वीतस्त्रीणां च विभ्रमम् 10,55,9. तत्राभीषं पुत्राणां तव विभ्रमम् MBu. 3,258. स्व° *kaltes Blut, Besonnenheit* 4,1887. दुःख° *über, in Folge von* 14,321. राज्य° 5,1163. — *f) Verwirrung des Geistes* Pâṇḍar. 3,13,22. *Irrthum, Wahn;* = भ्रम Taik. 3,3,303. = भ्रान्ति Med. m. 52. Varâh. bei Mallin. zu Kir. 4,3 und Çiç. 15,94. प्रवृत्तविज्ञानविधूत° Buâg. P. 1,10,3. *Zweifel* H. an. 3,478. fg. Halâj. 4,6. Varâh. a. a. O. — *g) Trugbild, blosser Schein:* स्वप्रदर्शन° Çaṃk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 248. स्वप्न° Kathâs. 28,15. मिथ्येव विभ्रमो दृष्टस्त्वया 63,143. गते रात्रिविभ्रमे 70,77. यो ऽधर्मे धर्मविभ्रमः Buâg. P. 4,19,12. 17,29. लालापानमिवाकुष्ठे बालानां स्तन्यविभ्रमः Spr. (II) 2067. अमृत — हुतवाशगतवनविभ्रमं मदः Çiç. 15,94. बभार रत्नासर्यविभ्रमम् Râjat. 3,338. 5,332. भ्रमदनरविभ्रमभृत् Spr. 988. गङ्गाम्भोविभ्रमं दधुः Râjat. 3,365. विष्णुनो विभ्रमे दधुः Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,41. वितन्वानः प्रतिपदं प्रवाताराम्भविभ्रमम् Kathâs. 20,228. करो ऽतिताम्रो रामाणां तस्रोताउर्वविभ्रमम् । करोति Kâvjâd. 3,31. कुर्वन्काण्डनिर्भेघवर्षासमयविभ्रमम् Kathâs. 19,65. वलोत्रो करिकुम्भविभ्रम-

करीमत्युवतिं गवक्षतः Sin. D. 41, 13. प्रदीप्तानेकविवाकृवक्त्रविधमशालिन् Kathâs. 33, 155. Uttarar. 16, 16 (23, 3). मुखैः — व्योमगङ्गातरोत्पुष्परेणाम्युरुकविधमैः Kathâs. 14, 19. 29, 59. Çiç. 6, 16. 7, 47. Râga-Tar. 4, 172. विलासिनीविधमदत्तपत्रम् — केतकवर्कमन्यः — पाण्डुयामास so v. a. *als wäre es ein Ohrring* Raghu. 6, 17. Kumâras. 1, 4. विधमाभरणं भुवः Râga-Tar. 2, 14. अविधमः कोपः so v. a. *nicht erkünstelt* Çik. 69, 2, v. l. — A) *Anmuth, Schönheit* H. 1512. H. an. Halâj. 3, 27. Vaiç. a. a. O. einer Person Spr. 2185. नवप्रणय° Mâlatîm. 155, 3. Prab. 41, 1. गति° Raghu. 8, 57. Kumâras. 1, 34. वलोत्तानविधकुम्भविधमक्रीडा Spr. 2696. कृतप्रियादृष्टिविलास° Kir. 4, 3. कुसुमकृतस्मितचारुविधमा मालती Khandom. 52. Bhâg. P. 3, 13, 40. सविधमाङ्गवलना Spr. 3235. — c) in der Erotik *die Zerstreutheit eines verliebten Frauenzimmers*, insbes. *in Bezug auf die Toilette:* चित्तवृत्त्यनवस्थानं भृङ्गारादिसमो मतः Bharata beim Schol. zu Nalod. 2, 53. विधमस्वरया काले भूषास्थानविपर्ययः Daçar. 2, 36. Sin. D. 143. Pratâpar. 55, *b*, 9. H. 308. = क्लीव AK. 1, 1, 2, 21. Trik. H. an. Med. Halâj. 1, 89. — 2) f. आ *Ashes Alter* Çaṇḍar. im ÇKDn. — Vgl. चित्त°, दृष्टि°, पान° (auch Suçr. 2, 478, 11. 479, 8. Çâṅku. Saṅk. 1, 7, 27), मति° (auch Daçar. 1, 3. Verz. d. Oxf. H. 81, *a*, 23).

विधमवती (von विधम) f. im Prab. N. pr. der Dienerin des Mahâmoha 37, 9. fgg. nach dem Schol. so v. a. विधम (das als m. nicht passte) *Irrthum.*

विधमसूत्र n. Titel einer grammatischen Abhandlung des Hemakandra Verz. d. Oxf. H. 170, *b*, No. 380.

विधमार्क (विधम + अर्क) m. N. pr. eines Ḍâmara Râga-Tar. 7, 58.

विधमिन् (von धम् mit वि) adj. *sich hinundherbewegend:* रुरितिरागविधमी Khandom. 56.

विधाव् (1. धाव् mit वि) (nom. विधाट्) P. 3, 2, 177, Schol. 8, 2, 36, Schol. Vop. 3, 134. 1) adj. *strahlend* AK. 2, 6, 2, 2. ṚV. 10, 170, 1. fgg. — 2) m. angeblich N. pr. des Verfassers von ṚV. 10, 170, eines Sohnes des Sûrja, ṚV. Anukr.: vgl. Çâṅkh. Br. 18, 5.

विधात्र (von 1. धात् mit वि) m. N. pr. eines Fürsten Hariv. 1064. fgg. 1222. 1245. fgg. VP. 452 (विधात्र fehlerhaft). — Vgl. वेधात्र.

विधातव्य (2. वि + धा°) n. *Nebenbuhlerschaft, Feindschaft* Çat. Br. 1, 1, 2, 21. 4, 1, 5, 3.

विधात्रि (von धम् mit वि) f. *Irrthum, Wahn* Prab. 81, 5.

विधाष्टि (von 1. धाष् mit वि) f. *das in-Flammen-Gerathen:* घृतस्य ṚV. 1, 127, 1. = विधक्ष D. zu Nir. 6, 8.

विधु m. als Synonym von राजन् MBh. 3, 12705. वधु ed. Bomb.

विधेप (von धेप् mit वि) m. als Erklärung von विप्रमोक Schol. zu Âçv. Çr. 1, 2, 12.

विश्वतष्ट (2. विश्वन् + तष्ट) adj. von *einem tüchtigen Meister gebildet* im Sinne von *wohlgeschaffen, vollkommen; Meisterstück:* यं (इन्द्रं) नक्रतो धिषणे विश्वतष्टं धनं वृत्राणां जनयन्त देवाः ṚV. 3, 49, 1. वज्रः पत्रेनेव्यो विश्वतष्टः 5, 42, 12. यूयं राजानमिर्णं व्रताय विश्वतष्टं व्रतपया 58, 1. विश्वतष्टो विदथेषु प्रवाच्यो यं देवासो ऽवथा स विचर्षणिः 4, 36, 5.

1. विश्वन् (von 1. भू mit वि) so v. a. विभु. 1) adj. *weit reichend, durchdringend:* चित्रः प्रकेतो बृहदग्निरिश्वा ṚV. 1, 113, 1. 190, 2. यो (अग्निः) वि रोदसी रोदसी भाति विश्वा 10, 3, 6. — 2) m. N. eines der drei Ṛbhu (im Sinne von 2. विश्वन्) ṚV. 1, 161, 6. 4, 33, 3. 9. 34, 1. 36, 6. Ṛbhu, Açvin, Tvashṭar, Vibhvan 5, 46, 4.

2. विश्वन् (wie eben) adj. *tüchtig, geschickt; Künstler, Meister:* रथं इव वक्तो विश्वनेव (dat. für instr.) कृता ṚV. 8, 61, 13. विश्वनो चिदार्भपस्तरेभ्यः (सर्व) 10, 76, 5, wo nach Analogie der übrigen Pâda विश्वनशित् zu vermuthen ist.

विश्वावसु (विश्वन् + वसु) adj. etwa *die Reichen überbietend:* रयिं ṚV. 5, 10, 7. 9, 98, 1.

विसक्तास्त्र (2. वि + सक्तन् - अस्त्र oder आ°) adj. *des Markes und der Eingeweide beraubt:* शरीर MBh. 3, 8746.

विसण्डल (2. वि + म°) n. *ein Kreis, der die Bahn eines Planeten vorstellt,* Ganit. Grahagaṇitâdhjâjan. 2, Comm. Goladhjâj. Golâdh. 20. 13, Comm.

विसत 1) adj. s. u. सन् mit वि. — 2) N. pr. eines Ortes an der Gomatî R. Gorr. 2, 73, 13.

1. विसति (von सन् mit वि) f. 1) *eine abweichende Ansicht* P. 1, 3, 47. Vop. 23, 41. mit loc. *in Bezug auf* Sin. D. 6, 6. — 2) *Abneigung* R. 6, 7, 17.

2. विसति (2. वि + स°) adj. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. कुर्वादि zu 4, 1, 151. 1) *eine abweichende Ansicht habend.* — 2) *beschränkt, dumm.* — Vgl. वेसत्य.

विसतिता (von 2. विसति) f. *Beschränktheit, Dummheit* Spr. 954.

विसतिर्मन् (wie eben) m. nom. abstr. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123.

विसतिविकोरण m. Bez. *einer best. Vertiefung* (समाधि) Vâjtr. 19.

विसतिसमुद्घातिन् m. N. pr. eines Prinzen Lot. de la b. l. 12.

विसत्सर (2. वि + स°) adj. *keinen Neid —, keine Missgunst —, keinen auf Selbstsucht beruhenden Unwillen an den Tag legend* Bhag. 4, 22. MBh. 3, 12674. 13444. 12, 11469. 14, 2838. Spr. 4886. VP. bei Mor. ST. IV, 331. Bhâg. P. 1, 6, 27. 4, 8, 19. Pârâç. 4, 8, 27. Brahma-P. in LA. (III) 48, 19. Verz. d. Oxf. H. 9, *b*, 6. शत्रावपि Mânn. P. 9, 7.

विसवितृ (von 1. सव् mit वि) nom. ag. *Würger, Zerfleischer* Çâṅkh. Çr. 13, 3, 4.

विसद् (2. वि + सद्) 1) adj. *a) nüchtern geworden* R. 5, 64, 4. Pârâç. 37, 22. fg. — *b) brunstfrei:* ein Elephant R. 7, 7, 12. Spr. 2547 (zugleich in der Bed. *c*). — *c) von Hochmuth frei* MBh. 7, 8204. Hariv. 2594. R. 4, 36, 3. Spr. 2547. Bhâg. P. 1, 6, 27. 10, 26, 12. 43, 26. 87, 35. Mânn. P. 115, 4. — 2) m. N. pr. eines Schutzlings der Götter; die Açvin verhalfen ihm zu einem Weibe; Liedverfasser von ṚV. 10, 20. fgg., Sohn Indra's oder Prâgâpati's ṚV. Anukr. ṚV. 1, 51, 3. 112, 19. 117, 20. 8, 9, 15. 10, 20, 10. 21, 1. fgg. 23, 7. 39, 7. 65, 12. AV. 4, 29, 4. pl. ṚV. 20, 23, 6.

विसध्य (2. वि + स°) n. *Mitte:* तमसः ṚV. 4, 51, 3. सर्धन: 10, 179, 3.

विसनस् (2. वि + स°) 1) adj. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. = विचक्षुस् Trik. 3, 1, 17. *a) mit durchdringendem Verstande begabt* (nach Nir. 10, 26) ṚV. 10, 82, 2. — *b) nicht verständig:* कथा नूनं वां विमना उपस्तवत् ṚV. 8, 73, 2. N. pr. nach Sây. — *c) ausser sich seiend, bestürzt, entmuthigt, niedergeschlagen* AK. 3, 1, 2. H. 435. Jîân. 1, 272 (*zerstreuten Geistes* Stenzler). MBh. 3, 951. 2591. 4, 343. 5, 2184. 7058. 7, 5289. लाभेन च न कृप्येत नालाभे विमना भवेत् 14, 1278. R. 1, 66, 11. 2, 76, 14. R. Gorr. 2, 9, 33. 46. 29, 39. 3, 20, 14. 5, 15, 59. Uttarar. 3, 11 (5, 9). Kathâs. 6, 138. 18, 263. 19, 101. 42, 67. 45, 276. 53, 53. 56, 313. 59, 21. 63,

116. Verz. d. Oxf. H. 32,a,11. Bhâg. P. 3,17,7. 4,2,33. 13,21. 23,2. 25, 11. 26,14. 5,13,8. 9,1,27. 14,32. Pañkat. 1,2,8. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, Çl. 41. Pañkat. ed. orn. 41,8. उत्कण्ठा° Kathâs. 17,62. 28,5. 33,4. धृति° 7,5. — *d) abgeneigt:* प्रज्ञा न विमनास्तस्य R. 3,41,11. — 2) m. N. pr. eines Liedverfassers in VS. Ind. St. 1,294,1 (v. l. विश्वमनस्). — Vgl. वैमनस्य.

विमनस्क adj. (f. आ) = विमनम् 1) c) MBh. 7,8829. 12,13554. Harîv. 7262. 8727. 10355. R. 7,6,31. Bhâg. P. 7,10,60. 10,77,23.

विमनाय् (von विमनम्), विमनायते *ausser sich —, entmuthigt —, niedergeschlagen sein* Sâh. D. 224.

विमनिमैन् (wie eben) m. *Bestürztheit, Niedergeschlagenheit* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123; vgl. 5,4,155.

विमनीकर् (विमनस् + 1. कर्), °कृत *erzürnt, ausser sich gebracht* Spr. (II) 2299.

1. विमन्यु (2. वि + म°) m. *Sehnsucht, Verlangen* ṚV. 1,23,4.

2. विमन्यु (wie eben) adj. *frei von Unmuth, — Groll* Kumâras. 7,93. Bhâg. P. 5,3,3. 18.

विमन्युक (von विमन्यु) adj. *nicht grollend, Groll stillend* AV. 6,43,1.

विमय m. = निमय, विनिमय *Tausch* H. 870.

विमर्द (von मर्द् mit वि) m. 1) *Zerdrückung, Zerreibung, Reibung:* दिव्यपुष्प° MBh. 14,2799. 13,4708. AK. 1,1,4,19. H. 1391. शय्योत्तरच्छद-विमर्दकृशाङ्गराग Ragh. 5,65. त्रिमार्गगावीचिविमर्दशीत वायु 13,20. फले (कामस्य) पुनः परमाह्लादनं परस्परविमर्दजन्म Daçak. 65,8. *das Stampfen* (mit den Füssen): गवैः कृतं सरः सान्द्रविमर्दकर्दमम् ṚV. 1,20. संसर्पद्भुजिनी° Kathâs. 121,260. — 2) *feindlicher Zusammenstoss, Kampf:* तुमुल MBh. 1,4075. मद्रा° 3,847. त्वया सह 1632. 5,7303. 4,1296. 5,4260. लक्ष्मणः तत्रैवेन विमर्दमकरोद्वशम् 7,543. 8,1971. 15,238. Harîv. 13254. R. Gorr. 1,46,33. देवासुरविमर्देषु 3,36,8. 5,20,24. 6,18,1. 93,28. त्वया समम् 7,20,5. 32. Vikr. 87,1. °क्षमा भूमिः Uttarar. 102,21 (138,5). बाहु° *Faustkampf* Ragh. 7,49. सिंहशाव° *Balgerei* Çik. 105,14. — 3) *Aufreibung, Zerstörung, Verwüstung, Vernichtung* MBh. 3,631 (विमर्ड ed. Calc.). रक्षोगणनागानाम् Harîv. 6075. बलस्य R. 3,70,11. मकरासुर° 4,38,17. विद्याधरगण° Varâh. Bṛh. S. 9,27. धरि° Bṛh. 8,14. तनोः Pras. 74,10. वनस्थान° Ragh. 6,62. R. Gorr. 1,63,2. सस्य° Varâh. Bṛh. S. 5,61. 82. समर° *durch Krieg* 60. — 4) *Störung, Unterbrechung:* परिषत्कुतूहल° Mṛicch. 1,3. निद्रा° Hit. 50,18. — 5) *Berührung, Verbindung* Siddhânta. 46. — 6) *Abweisung, Zurückweisung:* कार्यार्थिनो विमर्दो (= कलह Comm.) हि राज्ञो दोषाय कल्पते R. 7,53,24; vgl. विदारण 3) *d*). — 7) *völlige Verfinsterung* Sûrjas. 4,15. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 13. — 8) *Cassia Sophora Lin.* (vgl. कासमर्द) Ratnam. im ÇKDr. — 9) N. pr. eines Fürsten Mârk. P. 74,5. — Spr. 2866 fehlerhaft für विसर्प oder विसर्ग. — Vgl. यद्°.

विमर्दक (wie eben) 1) adj. *aufreibend, zerstörend, vernichtend:* शत्रुसेन्य° Harîv. 13769. प्रमर्दक die neuere Ausg. — 2) m. *a) Cassia Tora Lin.* (vgl. चक्रमर्द) Râgân. im ÇKDr. — *b)* N. pr. eines Mannes Daçak. 70,12.

विमर्दन (wie eben) 1) adj. *a) zerdrückend, drückend:* पीनस्तन° (कर) Sâh. D. 113,15. — *b) aufreibend, zerstörend, vernichtend:* धरि° MBh. 1,5062. Harîv. 5390. 5686. राज्ञ° R. 1,74,17. परसेना° Kathâs. 113,19. शत्रु° Verz. d. Oxf. H. 106,a,25. दुर्गकोटि° Pañkat. 4,3,22 (S. 249). व्याधिसंघ° Verz. d. Oxf. H. 22,b,5. 6. — 2) m. N. pr. *a)* eines Râkshasa R. 6,74,1. — *b)* eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 48,78. — 3) n. *a) das Zerdrücken, Zerreiben* AK. 3,3,12. Kâtj. 1,8. लोष्ट° Âpast. 1,32,28. — *b) feindlicher Zusammenstoss, Kampf:* द्विषतोः Bhâg. P. 3, 18,20. घन्योऽन्यसैन्यविमर्दनैः Prab. 87,16. — *c) das Zerstören, Verwüsten, Vernichten:* परराष्ट्र° Spr. 4732. मेरोः, धर्मस्य MBh. 3,1413.

विमर्दिन् (wie eben) adj. *zerschmetternd, verwüstend, vernichtend:* नगतरुशिखर° (प्राकृत) Varâh. Bṛh. S. 3,9. शत्रुसंघ° Hit. 1,31 (शत्रुसंघावमर्दिन् MBh. 1,5905). Pañkat. 2,3,37. Verz. d. Oxf. H. 98,b,35. क्षम° *zu Nichte machend, entfernend* Çik. 69, v. l.

विमर्मघ्नज्ञीवित MBh. 8,876 fehlerhaft für विवर्म°, wie die ed. Bomb. liest.

विमर्श (von मर्ग् mit वि) m. 1) *Prüfung, Erwägung, Ueberlegung, Bedenken* Pañkat. Bh. 14,10,3. तत्र मे बुद्धिरत्रैव विमर्षे (besser विषये ed. Bomb.) परिमुह्यते MBh. 13,3682. सत्वं विमर्शेन R. 4,9,107. 53,22. विशेषापेक्षो विमर्शः संशयः Nyâyas. 1,1,23. प्रत्ययः स्त्रीषु मुह्यति विमर्श विदुषामपि Kathâs. 20,124. 105,19. Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 13. प्रविक्रीर्षुः स्म रोषेण विमर्शेन निवारितः Râjat. 3,510. विमर्शवशमापन्नः R. 6,101,22. विमर्शैर्बकुभिर्युक्तश्चित्तयामास 92,28. °युक्त MBh. 5,7814. तेषां त्रयाणां विविधं विमर्शं विबुध्य 12,2178. पञ्चानामेकपत्नीत्वे विमर्शो द्रुपदस्य च 1,291. विमर्शं संकराद्याने नार्यं कुर्यात्कदा च न 6271. कार्यस्य न विमर्शं च गन्तुमर्हसि R. 1,20,23. 5,89,72. Mâlav. P. 23,24. °शील Harîv. 1176. °च्छेदि (v. l. संशयच्छेदि) वचनम् Çik. 35,13, v. l. Sarvadarç. 169,6. य° adj. Kathâs. 61,185. स° adj. (f. आ) 39,40. 45,293. R. 6,99,37. सविमर्शम् adv. 20. Çik. 58,4. *Erörterung* Prab. 112,12. fg. Sarvadarç. 97,3. 158,6. — 2) *Intelligenz* Sarvadarç. 94,10. तस्य चिद्रूपत्वमनवच्छिन्नविमर्शत्वम् 9. unter den Beiww. Çiva's MBh. 13, 1235. — 3) in der Dramatik so v. a. *Knoten* Bhar. Nâṭjaç. 19,28. 35. 41. 88. Daçar. 3,54. Sâh. D. 321. 336. निर्विमर्श Daçar. 3,53. — Vgl. दुर्विमर्श, निर्विमर्श und विमृश. Häufig ungenau विमर्ष geschrieben.

विमर्शन (wie eben) 1) m. N. pr. eines Fürsten der Kirâta Verz. d. Oxf. H. 74,a,29 (mit ष geschrieben). — 2) n. *Prüfung, Erwägung, Untersuchung* H. 322. Bhâg. P. 5,1,11 (= ज्ञान Comm.). तत्त्व° 5,12,4. 7, 11,2. Verz. d. Oxf. H. 210,b, No. 497, Z. 6.

विमर्शिन् (wie eben) adj. *prüfend, erwägend, untersuchend* Sarvadarç. 90,19. सुतोद्वाह° Kathâs. 34,131. — Vgl. अलंकारविमर्शिनी, गणेश°, विवृति°.

विमर्ष (Gaṇîku. im ÇKDr.), विमर्षण und विमर्षिन् s. विमर्श u. s. w.

विमल (2. वि + मल) 1) adj. (f. आ) *rein* (auch in übertr. Bed.), *klar, blank* AK. 3,2,5. H. 1436. an. 3,664. Mân. L. 130. fg. Hall. 1,132. वारि, जल, उदक, नभांसि Çâkuni 58 in Ind. St. 4,369. R. 2,27,18. 48, 13. 63,15. Sucr. 1,173,1. Spr. 2520. 2936. Weber, Râmâjaṇ. 269. Varâh. Bṛh. S. 56,4. °क्षेत्रवर्ति 84,1. क्षेत्र Sucr. 1,229,18. पक्षिन्: R. 3,15,42. °पङ्कजा (नदी) MBh. 3,11069. नभस्, गगन, विषत् R. 4,39,3. 6,92,81. Râjat. 3,374. Sucr. 1,23,3. 113,19. Varâh. Bṛh. S. 21,14. 47,23. दिश: 28,4. R. 7,99,12. रात्रि MBh. 4,1068. त्विष: Çic. 9,18. विपाण्डिमलतापकम् Pañkat. III,147. भानि Varâh. Bṛh. S. 31,5. मूर्ति 3,27.

6,13. शशिन् R. 2,101,12. चन्द्रांशु° R. Gorr. 2,12,9. प्रभा सौरी 38,17. उदये विमलो रविः 2,21. विमले ऽभ्युदिते सूर्ये R. Schl. 2,54,1. प्रभाते विमले सूर्ये 86,21. प्रभाते विमले 1,26,1. 45,5 (46,5 Gorr.). प्रभातसमये भानुना विमले कृते WebER, Kṛshṇaj. 308. विमले so v. a. *mit Anbruch des Tages* MBh. 5,7247. यादित्यविमलो खड्गो R. 2,31,20. खड्गो य विमलाकाशवर्चसौ R. Gorr. 2,31,25. मूल 5,39,10. शक्ति MBh. 5,7278. स्फटिकं विमलं द्रव्यं *klar, durchsichtig* Sarvadarçanas. 144,3. विमलोभ *ein weisser Elephant* Çatr. 3,5. जलधराः Hariv. 3822. नेत्र, ईक्षण, दृष्टि R. 2,39,16. Spr. 2146 (II). 2209. नरेन्द्रपत्नी विमला बभूव सा तमोवृता सौरिव नष्टभास्करा R. Gorr. 2,8,60. घृतंवेदयः *rein, lauter* 4,41,14. कुल Spr. (II) 2199. Mâlav. P. 60,13. दान Gîrvâṇ.-P. 51 im ÇKDn. ब्रह्मन् Spr. 1736. ज्ञान Sarvadarçanas. 22,3. Bhâg. P. 4,25,5. मति 1,15,28. 3,4,25. Spr. 4998. बुद्धि Sûçr. 1,14,4. धी Pañcar. 3,9,1. शब्दशास्त्रं स्फुटपदविमलम् Spr. 1530. स्वाध्यायपद्म 3124. मु° 990 (वाक्ति). Sûçr. 1,188,3 (शर्करा). — 2) m. *a*) Bez. des *Mondjahrs* Weber, Nax. II, 281. — *b*) *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. 1,30,6. — *c*) *eine best. Vertiefung* (समाधि) Vjutp. 18. Lot. de la b. l. 269. — *d*) N. pr. eines Arhant H. an. des 5ten in der vergangenen Utsarpiṇî H. 31. des 13ten in der gegenwärtigen Avasarpiṇî 27. ein Devaputra und Bodhimaṇḍapratipâla Lalit. ed. Calc. 346,10. ein Bhikshu 1,10. ein Bruder des Jaças Schiefner, Lebensb. 18 (248). ein Autor mystischer Gebete bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,24. *b*,14. ein Asura Kathâs. 47,24. ein Fürst 56,82. ein Sohn Sudjumna's Bhâg. P. 9,1,41. Vater des Padmapâda Verz. d. Oxf. H. 235,*a*,9. — Kathâs. 80,11. — *e*) N. pr. einer Welt Lot. de la b. l. 161; vgl. 3) *c*). — 3) f. ई *a*) *eine best. Pflanze*, = चर्मकशा AK. 2,4,8,9. Med. — *b*) Bez. einer Çakti Weber, Râmat. Up. 325. fg. — *c*) N. der Dâkshâjanî in Purushottama Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,3. N. pr. der Gottheit im Garten Vimalavjûha Lalit. ed. Calc. 139,2 v. u. — *d*) N. pr. einer Tochter der Gandharvî MBh. 1,2632. — *e*) = भुवो भेदः Med. N. einer der 10 Erden bei den Buddhisten Vaijâs beim Schol. zu H. 233. Vjutp. 28. Daçabhûm. 32. विमलायां लोकधातौ Lalit. ed. Calc. 363,3. — 4) n. *a*) *mit Silber versetztes Gold* Râgân. im ÇKDn. — *b*) N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,18. fg. — *c*) N. pr. einer Stadt (vgl. विमलपुर) Kathâs. 110,2.

विमलक (von विमल) m. *ein best. Edelstein* Varâh. Bṛh. S. 80,4. °मणिपीताभ 5,57.

विमलकीर्ति m. N. pr. eines buddhistischen Gelehrten, Verfassers eines Sûtra, Wassiljew 152. 222. Hiouen-thsang I, 385. 387. Vie de Hiouen-thsang 135. 232. °निर्देश m. Titel eines Mahâjânasûtra Vjutp. 41.

विमलगर्भ m. 1) N. pr. eines Prinzen Lot. de la b. l. 268. fgg. eines Bodhisattva Vjutp. 22. — 2) Bez. einer Meditation Lot. de la b. l. 254.

विमलचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 53. fg. Târân. 2. 172. 193.

विमलता (von विमल) f. *Reinheit, das Hellsein, Klarheit:* ततः प्रभाते — सूर्ये विमलतां गते MBh. 5,7217. Varâh. Bṛh. S. 5,90. मति° Spr. (II) 2441 (Conj.).

विमलत्व (wie oben) n. dass.: सर्वज्ञतेव विमलत्वमपीह हेतुः Verz. d. Oxf. H. 259,*b*,27. fg.

विमलदत्ता f. N. pr. einer Fürstin Lot. de la b. l. 268. fgg.

विमलनाथपुराण n. Titel eines Gaina-Werkes Verz. d. Oxf. H. 372,6, No. 267.

विमलनिर्भास m. Bez. *einer best. Vertiefung* Lot. de la b. l. 269.

विमलनेत्र m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 14. eines Fürsten 268. fgg.

विमलपिण्डक m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1558.

विमलपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 86,86. — Vgl. विमल 4) *c*).

विमलप्रदीप m. Bez. *einer best. Vertiefung* (समाधि) Vjutp. 17.

विमलप्रभ 1) m. *a*) N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 363,24. eines Devaputra Çuddhâvâsakâjika ed. Foue. 279. ध्र° ed. Calc. 334,2. — *b*) N. einer Meditation Vjutp. 17. Lot. de la b. l. 254 (hier fehlerhaft f. ध्र). — 2) f. ध्रा N. pr. einer Fürstin Râga-Tar. 3,384.

विमलप्रभासप्रतिवेधराजगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabhûm. 2.

विमलबुद्धि m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 69,19.

विमलबोध m. N. pr. eines Commentators des Mahâbhârata Verz. d. B. H. No. 392. des Râmâjaṇa R. Gorr. I, CXXXI. 383. III, 469.

विमलभद्र m. N. pr. eines Mannes Târân. 229.

विमलभास m. Bez. *einer best. Vertiefung* Lot. de la b. l. 269.

विमलमणि m. *Krystall* Râgân. im ÇKDn.

विमलमणिकर m. N. pr. einer buddh. Gottheit Kâlâṅkara 3,140.

विमलमित्र m. N. pr. eines buddhistischen Gelehrten Hiouen-thsang I, 228. Vie de Hiouen-thsang 108. Târân. 225. Burnouf in Lot. de la b. l. 358.

विमलय् (von विमल), °यति *rein —, klar machen:* दिनमुखानि रविर्किंगनिग्रहैर्विमलयन् Ragh. 9,28. मलिनयितुं खलवदनं विमलयति जगत्ति देव कीर्तिस्ते Kuval. 131,*a*. विमलितरणभाल Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 16.

विमलत्रारुन m. N. pr. zweier Fürsten Çatr. 3,5. 14,318.

विमलवेगधृ m. N. pr. eines Fürsten der Garuḍa Vjutp. 88.

विमलव्यूह N. pr. eines Gartens Lalit. ed. Calc. 139,7.

विमलशीलगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabhûm. 2.

विमलसंभव m. N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 308 (78). विमलस्वभव (!) Târân. 300. — Vgl. विमलाद्रि.

विमलसरस्वति (wohl °ती) m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 48.

विमलस्वभाव m. N. pr. eines Berges Târân. 300 (°स्वभव gedr.). — Vgl. विमलसंभव.

विमलाकर (विमल + ध्रा°) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 71,67.

विमलाक्षनेत्र m. N. pr. eines zukünftigen Buddha Lot. de la b. l. 17.

विमलात्मक (विमल + ध्रात्मन्) adj. *dessen Natur rein u. s. w. ist, rein, hell, klar* AK. 3,2,5.

विमलात्मन् adj. dass.: चन्द्रमस् R. 3,35,52.

विमलादित्य (विमल + ध्रा°) m. *die klare Sonne*, Bez. *einer best. Form der Sonne* Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,7. 35.

विमलाद्रि (विमल + ध्र°) m. N. pr. eines *Berges* H. 1030.

विमलानन्दभाष्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 104,*a*,22.

विमलार्धक adj. angeblich = विमलात्मक Râjan. zu AK. 3,2,5 nach ÇKDn.

विमलाशोक N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8047.

विमलाश्मा f. N. pr. eines Dorfes Rāja-Tar. 4,711.

विमलीकर् (विमल + 1. कर्) *reinigen, läutern;* davon °करण *Reinigung, Läuterung*, Bez. einer der zehn Zurichtungsweisen (संस्कार, संस्क्रिया) eines Zauberspruches Çāṇḍilya in Sarvadarçanas. 170,11. संचित्य मनसा मन्त्रं ज्योतिर्मन्त्रेण निर्दहेत् । मन्त्रे मलत्रयं मन्त्री विमलीकरणं हि तत् ॥ 22. 171,1; vgl. Verz. d. Oxf. H. 98,*b*,15. fg. 23. fg.

विमलेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,16. 67,*b*,13.

विमलेश्वरपुष्करिणीसंगमतीर्थ n. desgl. ebend. 66,*a*,16. fg.

विमलोग्र n. N. eines Tantra ebend. 109,*a*,16.

विमलोदका f. N. pr. eines Flusses MBh. 9,2189. विमलोदा 2214.

विमस्तकित (von 2. वि + मस्तक) adj. *enthauptet* Wilson.

विमरुत् (2. वि + म°) adj. *überaus gross* Indral. 1,34. सुमरुत् st. dessen MBh. 3,1747.

विर्मरुत् (2. वि + 1. म°) adj. etwa *ergötzlich, lustig:* die Marut ṚV. 1,86,1. 5,87,4.

विर्मही adj. nach Sāy. *sehr gross* (sc. देवाः): इन्द्रमिद्धर्मकोनो मेधे वृणीत मर्त्यः ṚV. 8,6,44. könnte *erheiternd, begeisternd* (so v. a. *geistige Getränke*) bedeuten.

विमांस (2. वि + मांस) n. *schlechtes Fleisch* Jiḍ. 2,297.

विमातर् (2. वि + मा°) f. gaṇa सुधादि zu P. 4,1,123. *Stiefmutter:* विमातृज्ञ AK. 2,6,1,25. H. 346. Kull. zu M. 9,118. — Vgl. वैमात्रेय.

विमार्ग (von 1. मृज् mit वि) m. *das Schütteln, Balgerei:* विमार्गं कुर्वते वाह्लसूनोः TBr. 1,3,8,4. Çat. Br. 3,8,3,36.

विमार्गिन् (wie eben) adj. *niederschmetternd:* यथा लणं दृप्तमुखो लणान्तरविमार्गिनीम् । दैवस्येव गतिं तत्र तस्थौ शोचन्स तां प्रियाम् ॥ Kathās. 10,139.

1. विर्मान (von 2. मा mit वि) 1) adj. (f. ई) *durchmessend, durchstechend, von einem Ende zum andern reichend;* gewöhnlich in Verbindung mit रज्जसम्. रज्जसो विमानं सप्तचक्रं रथम् ṚV. 2,40,3. 3,26,7. 7,87,6. 10,95,17. 121,5. AV. 9,3,18. पन्थाः 4,2,3. Soma ṚV. 9,62,14. Gandharva 10,139,5. सङ्क्राम् 9,86,45. विमानं रुष दिवो मध्ये धास्त धायप्रिवाचोर्द्यावापृथिवी यत्तरित्रम् VS. 17,59. die Açvin MBh. 1,732 (विगतं मानं प्रमाणाधनं यतस्तो Nīlak.). — 2) m. n. gaṇa सर्वादि zu P. 2,4,31. Verz. d. Oxf. H. 191,*b*,4. Sidd. K. 249,*a*,10. *a) ein durch die Luft fliegender palastähnlicher Wagen der Götter* (in den Märchen überh. *ein durch die Luft fahrender Wagen*) AK. 1,1,4,43. 66. H. 89. 190. an. 3, 417. Med. n. 129. Hall. 1,83. MBh. 1,1257. 4649. 4831. 3,1743. 2184. 11920. 5,3616. 5180. R. 1,44,20. 70,3. 2,27,9. 64,48. R. Gorr. 1,5,10. 13. 3,48,6. 54,6. 5,13,2. 6,106,10. Suçr. 1,113,20. Ragh. 12,104. 13,1. Kumāras. 2,45. Vikr. 4,1. 11,17. Spr. 2180. Pañcat. III, 184. Kathās. 29,49. 46,132. fgg. °च्युतो ऽमर्त्यः Rāja-Tar. 4,72. Bhāg. P. 2,9,12. 3, 15,20. 16,31. 23,12. 27. fg. 4,3,6. 9,10. 56. 5,1,8. 17,4. 6,8,27. Mārk. P. 15,67. Pañcar. 1,7,46. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,26. नौ° *schiffförmig* Ragh. 16,68. विमानप्रतिमौ तत्र मयेन सुकृतौ सभाम् MBh. 1,132. 2,12. °प्रतिमः प्रासादः 13,2832. °प्रतिमं गृहम् Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,5. तारा° Ind. St. 10,312. fg. — *b) ein kaiserlicher Palast,* = सार्वभौमगृह H. an. Med. *ein siebenstöckiger Palast* Nīlakaṇṭha beim Schol. zu R. ed. Bomb. 1,5,16. *eine Kapelle von best. Form* Varāh. Bṛh. S. 56,17. शालगवाक्षकयुक्तो विमानसंज्ञस्त्रिसप्तकायाम: 22. — वातायन° MBh. 5,3998. R. 1,5, 13. 2,33,3. 59,13. R. Gorr. 2,59,13. 3,36,3. Mṛcch. 64. 70. Ragh. 17, 9. Kumāras. 7,40. °गृह R. ed. Bomb. 1,5,16. Heut zu Tage bezeichnet das Wort *eine Art Thurm;* vgl. Mrs. Manning, Anc. and Med. India I, 425. Diese Bed. kann das Wort in वप्तःपुरविमानेषु R. 5,52,8 haben. — *c) Schiff, Boot* (यानपात्र) Med. — *d) Pferd* Med. — 3) n. *a)* etwa *Ausdehnung* (wenn überhaupt der Text richtig ist): रज्ञसः ṚV. 10,123, 1. Vgl. घर्मि°. — *b) Maass, Maassstab:* वि मानमग्निर्वयुनै च वाघताम् ṚV. 3,3,4. Bez. einer der acht स्थान im Āyurveda Madhus. in Ind. St. 1,21,2. wohl *die Lehre von Maass und Gewicht.* — *c) das Messen:* वेदि° Çat. Br. 10,2,2,10. — Vgl. वैमानिक.

2. विमान (von मन् mit वि) m. *Geringachtung:* प्र° *Verehrung:* विप्राणाम् Harīv. 12039.

3. विमान (2. वि + 1. मान) adj. *der Ehre baar, entehrt, geschändet* Bhāg. P. 5,13,10.

विमानक 1) = 1. विमान 2) *a)* Kathās. 43,274. 46,31 (am Ende eines adj. comp.). वातपत्र° 43,44. पत्र° 201. — 2) = 1. विमान 2) *b)* R. 2, 80,20. nach dem Comm. *ein siebenstöckiger Palast,* eher *Thurm.*

विमानता f. nom. abstr. zu 1. विमान 2) *a)* Vikr. 137. Kathās. 119,72. — Hier und da fälschlich für विमानना, z. B. Spr. (II) 196, v. l. 446, v. l.

विमानत्व n. dass. Kathās. 119,79.

विमानन (vom caus. von मन् mit वि) n. und f. या. 1) *Geringschätzung, geringschätzige Behandlung, Beschimpfung:* विमाननात्तयोः (des Brahmanen und des Kriegers) MBh. 12,2779. स्वयूथस्य Kām. Nītis. 15,26. प्राप्ता विमाननाशोया: MBh. 14,443. उदधेरिव निम्नगाशतेघवतास्य विमानना क्वचित् Ragh. 8,8. Kumāras. 5,43. Spr. (II) 196 (Conj.). पूज्यानाम् 446 (Conj.). (I) 2125. Gegens. संमानना 4364. मया विमानना प्राप्ता Kathās. 25,2. सन्वभावि तदपे ऽपि ब्राह्मणैर्न विमानना Rāja-Tar. 4,640. 5,339 (mit der ed. Calc. विमाननावि° zu lesen). विमाननोत्तप्त° 6,277. मित्राणां चाविमानना Spr. 4714, v. l. Am Ende eines adj. comp.: वप्तर्ज्ञातविमानना Kathās. 15,72. यात्तविमानना 91,19. — 2) *das Versagen, Abschlagen:* दोहदविमानन Suçr. 1,322,13. दोहदे विमानना 21.

विमानपाल m. *Hüter eines Götterwagens* MBh. 5,4046.

विमानयितव्य (vom caus. von मन् mit वि) adj. *gering zu schätzen, zu beschimpfen* MBh. 12,4326.

विमानुष (2. वि + मा°) adj. *mit Ausschluss der Menschen* Varāh. Bṛh. S. 86,28.

विमान्य adj. = विमानयितव्य Çiç. 116.

विर्माय (2. वि + माया) adj. *der Zauberkraft beraubt* ṚV. 10,73,7.

1. विमार्ग (2. वि + मार्ग) m. *Abweg* (eig. und übertr.): चरन्विमार्गान् MBh. 5,1582. °स्थौ यक्षाविव 8,662. विमार्गे स्थितः R. 5,89,35. °प्रस्थित Çiç. 105. °गमन Suçr. 1,81,21. 263,7. °ग 2,401,4. °दृष्टि *in falscher Richtung blickend* 532,8.

2. विमार्ग (wie eben) adj. *auf Abwegen sich befindend* MBh. 13,341. धर्मात्मानो मरात्मानो विमार्गपरिपन्थिनः Mārk. P. 37,3.

3. विमार्ग (von 1. मृज् mit वि) m. *Besen* oder *Bürste* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

विमित s. u. 1. मि mit वि und दीर्घित°.

विमिश्रुन (2. वि + मि°) adj. *mit Ausschluss der Zwillinge* Vaitân. Bḍn. 1,10. Lagnoḍ. 1,20 in Ind. St. 2,282.

विमिश्र (2. वि + विश्र) adj. (f. श्रा) 1) *vermischt, vermengt, nicht gleichartig:* कृपा गजाः पदातांश्च विमिश्रा दन्तिभिर्हताः MBh. 6,4050. गतैर्गजा रथैश्चाः पदातांश्च पदातिभिः । रथे रथा विमिश्राश्च योधा युयुधिरे ततः ॥ Hariv. 3093. Vaitân. Bḍn. S. 77,5. 86,16. 98,11. Bḍn. 12,5. *vermischt —, versehen —, verbunden mit;* die Ergänzung *a*) im instr.: रु-सोत्तमैर्घृतम् MBh. 1,1139. सुनेन सोमेन विमिश्रतोयौ पयोष्णीम् 3,10290. Paṇḍar. 3,10,22. 11,8. पुंभिर्विमिश्रा नार्यश्च MBh. 8,1841. Hariv. 4998. Mârk. P. 57,15. रथौघानां शब्दो विमिश्रो दुन्दुभिस्वनैः MBh. 6,2428. 2898. 3869. Bhâg. P. 10,38,12. — *b*) im comp. vorangehend: घृतविमिश्र Sṛṅg. 1,285,7. 370,11. 2,109,1. MBh. 1,4951. 4954. Vaitân. Bḍn. S. 48,38. 54,119. 67,5. नीलोत्पल° (सस्) MBh. 13,3824. 4089. घर्करश्मिविमिश्रेषु शस्त्रेषु 7,2516. Bhâg. P. 1,19,6. वाचा शोककलुषविमिश्रया R. 5,33,17. श्रोत्राविमिश्रालसा Vaitân. Bḍn. S. 78,12. Gir. 5,18. — 2) *Bez. einer der 7 Theile, in welche die Bahn des Mercurs nach* Parâçara *getheilt wird,* Vaitân. Bḍn. S. 7,8.

विमिश्रक (von विमिश्र) adj. *gemischt, mannichfaltig;* so heisst ein Kapitel in der Jâtakâ Vaitân. Bḍn. 28 (26),4.

विमिश्रित (wie eben) adj. *gemischt:* °लिपि Bez. *einer best. Schrift* Lalit. ed. Calc. 144,10. fg.

विमुक्त 1) adj. s. u. 1. मुच् mit वि und vgl. अविमुक्त und वैमुक्त. — 2) f. श्रा = मुक्ता *Perle* Snâpv. Bh. 5,6.

विमुक्तता (von विमुक्त) f. *das Aufgehen, Verlorengehen:* घनस्य Kim. Nitis. 14,42.

विमुक्तसेन m. N. pr. eines buddhistischen Lehrers Târân. 127 u. s. w.

विमुक्ति (von 1. मुच् mit वि) f. 1) *das Lösen* (Gegens. युक्ति) Ait. Bḍ. 6,23. — 2) *das Vonsichlassen, Entlassen:* कृतप्राण° Kumâras. 3,59. — 3) *Befreiung, das Befreitwerden:* श्रात्म° Spr. 301 (II). 1275. Kathâs. 10, 146. कर्मणो विगर्हितात् Spr. 111 (II). देह° vom *Körper* Kumâras. 4,39. लोक° Mârk. P. 96,28. *Befreiung von den Uebeln der Welt, Erlösung* Taitt. Up. 3,10,2. Ragh. 10,24. Spr. 1769 (II). 4089. Prâçnottarap. 2. Bhâg. P. 3,23,57. 4,8,61. 5,5,3. 7,9,44. 8,3,19. 24,46. 10,9,30. Mârk. P. 41,26. 76,40. Paṇḍar. 4,3,134. Nilak. 34. Lot. de la b. l. 824. fgg.

विमुक्तिचन्द्र m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabḍûm. 2.

विमुख (2. वि + मुख) 1) adj. (f. श्रा) *a) das Gesicht abwendend, rückwärts gerichtet:* विमुखा बान्धवा यान्ति *kehren um, gehen heimwärts* Spr. 2238. यस्यार्थिनो वा शरणागता वा नाशाभिना विमुखाः प्रयान्ति 3034. Hariv. 3916. द्रुतं जगाम विमुखः 3750. विमुखाञ्छात्रवान्सर्वान्कारयिष्यति मे सुतः *in die Flucht schlagen* MBh. 1,2755. विमुखो ऽभवद्रणे 3491. 3,12109. 15741. 6,2909. 7,1765. fg. जगर्वितविषादविमुखा रणे Hariv. 11053 (S. 791). भीतान्यत्राणि सर्वाणि विमुखानि तणाग्यपुः Kathâs. 118,34. — *b) das Gesicht im Unmuth,* insbes. *in Folge einer vereitelten Hoffnung von Jmd* (gen.) *abwendend, abgewiesen, unverrichteter Sache abziehend:* यस्यार्थिनो न विमुखाः Spr. 3145. विमुखो ऽर्थो न याति मे Kathâs. 41,48. 123,263. दिवातिथौ तु विमुखे गते VP. bei Kull. zu M. 3,105. Mârk. P. 13,12. 15. — *c) sich abwendend von Etwas, grollend, einer Person oder Sache abgeneigt, Nichts wissen wollend von:* दुर्मना विमुखश्चैव परिचक्राम तां सभाम् MBh. 2,1665. न ते ऽहं विमुखाः Hariv. 10858. R. 3,41, 11. Milav. 44,5. Spr. 445 (II). Bhâg. P. 10,53,25. विधि *widerwärtiges Geschick* Spr. (II) 2310, v. l. घत्यन्त° 169. विमुखार्धमुत Vaitân. Bḍn. S. 104,29. दरिद्रभावाद्विमुखं मित्रम् *den Rücken kehrend* Spr. 1630. न नुदो ऽपि प्रथममुकृतापेक्षया संभवाय प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः *sich abwendend von* Mṛcch. 17. कुरे कुरो Verz. d. Oxf. H. 10,a, N. 3. Bhâg. P. 10,23,39. कुरोः कवायाम् 3,3,14. 32,18. विवाहे Kathâs. 43,254. साधूनामुपरि Spr. 2380. कृष्णात् *sich von Kṛshṇa abwendend* Bhâg. P. 3,1,13. 5,3. स्वजनवधात् *abstehend von* 1,9,36. भवतः प्रसङ्गात् — विमुखेन्द्रियाः 3,9,7. 4,2,21. 6,3,28. ततो विमुखचेतसः 7,9,42. Gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: सौधोत्सङ्गप्रणय° Megh. 28. समर° 50. स्तनित° (so v. a. *sich enthaltend*) 95. घन्यकार्य° Ragh. 19,47. व्यापारविमुखेन चेतसा Milav. 28,15. शास्त्र° Spr. 1802. Paṇḍat. 3,18. Sin. D. 3,19. 16,1. Spr. (II) 2063, v. l. (I) 1812. 3268. जलमुचि वितरणविमुखे (II) 2359. Kathâs. 30,8. घन्यपत्नी° 32,122. 191. 45,96. 112. 46,119. Prab. 16,5. Bhâg. P. 3,9,10. मघाज्ञा° 4,27,22. 7,9,10. Paṇḍar. 1,2,60. 6,49. 10, 11. 4,2,30. Verz. d. Oxf. H. 109,b, No. 170. करुणाविमुखेन मृत्युना so v. a. *kein Mitleid kennend* Ragh. 8,66. मनः परस्त्रीविमुखप्रवृत्ति 16,8. मुखं धैर्यविमुखम् so v. a. *ohne Bestand* Spr. 5319. — *d) ohne Mündung* (gemessen) Çârṅg. Saṅh. 3,11,100. — *e) des Gesichtes d. i. des Kopfes beraubt* Hariv. 2755. — *f)* Bez. eines best. Spruches (VS. 17,36. 39,7) Kâty. Çr. 18,4,24. 20,8,5. — 2) m. N. pr. eines Muni R. 7,1,3; v. l. विमुच. — ऽविमुखं MBh. 15,93 fehlerhaft für ऽभिमुखं, wie die ed. Bomb. liest.

विमुखता (von विमुख) f. *das Sichabwenden von, Abgeneigtheit gegen:* विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये Gir. 9,10. धर्मं प्रति Çiç. 66,2. बान्धवेषु° Sin. D. 23,9.

विमुखीकर् (विमुख + 1. कर्) 1) *Jmd in die Flucht schlagen* MBh. 6, 1969. 4181. 7,1719. Hariv. 9307. R. 7,23,35. 29,30. — 2) *Jmd ziehen lassen, abweisen* R. 1,68,6. 76,19 (77,31 Gorr.). — 3) *Jmd gleichgiltig gegen Etwas machen:* कोपविमुखीकृतगतसुकामा Kâmâd. 36. — 4) *versitzen, zu Nichte machen:* °कृतविक्रम R. 6,80,27.

विमुखीभाव (von विमुखीभू) m. *Abneigung* Gir. 10,18.

विमुखीभू (विमुख + 1. भू) 1) *den Rücken wenden, die Flucht ergreifen* Ragh. 3,48. — 2) *sich von Jmd abwenden, Nichts wissen wollen von Jmd:* सुहृद्: Spr. 1144.

विमुग्ध s. u. 1. मुह् mit वि; davon °ता f. *Einfältigkeit, Dummheit* Spr. 2858.

विमुच् (1. मुच् mit वि) f. *das Losspannen, Ausschirren; Einkehr* ṚV. 5,46,1. AV. 8,112,3. Kâty. Çr. 2,2,23. विमुचो नपात् *Sohn der Einkehr* heisst Pûshan, der zur glücklichen Ankunft hilft, ṚV. 1,42,1. 6,55,1.

विमुच (von 1. मुच् mit वि) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 12,7394. R. in Verz. d. Oxf. H. 122,7. — Vgl. विमुख 2).

विमुञ्ज (2. वि + मुञ्ज°) adj. *ohne Blattscheide:* ein Halm Car. Bh. 4,3,2,16.

विमुट् *eine best. hohe Zahl* Mél. asiat. 4,639.

विमुद्र (2. वि + मुद्रा) adj. *aufgeblüht* H. 1129.

विमूढ s. u. 1. मुह् mit वि; davon °क n. Bez. *einer Art von Posse*

Baiṣ. Nāyāç. 18,118. 127. vielleicht fehlerhaft für हिमूढक und dieses eine Variante von हिमूढक.

विमूति Sāy. D. 19,1 fehlerhaft für विभूति *Asche*.

विमूर्द्धन n. = मूर्द्धन 5): मत्तस्वार° Harīv. 4635.

विमृत s. u. मृड् mit वि.

विमूर्धन (2. वि + मू°) adj. *haarlos (auf dem Kopfe)* MBn. 10,389.

विमूल (2. वि + मूल) adj. *entwurzelt* (eig. und übertr.) Harīv. 3465.

विमूलन (von विमूलय्) n: *das Entwurzeln*: पुष्पन्मूल° Çāṅk. 14,332.

विमूलय् (von विमूल) *entwurzeln*; s. विमूलन.

विमृग (2. वि + मृग) adj. *kein Thier des Waldes habend*: मृगाय R. 7,77,1.

विमृग्य (von मृगय् mit वि) adj. *zu suchen, aufzusuchen*: दुरितृभिः पतयः समाः Bhāg. P. 3,23,52. मरुद्विमृग्यकैवल्य 7,10,48. 15,27. 76. 10, 47,62. 83,45. 11,2,53. 19,8. Pañkat. 3,3,2. Verz. d. Oxf. H. 256,a,30.

विमृज्वन् (von 1. मृज् mit वि) adj. (f. °मृज्वरी) *reinlich* AV. 12,1,29. 35. 37. Kauç. 137.

विमृत्यु (2. वि + मृ°) adj. *dem Tode nicht unterliegend, unsterblich* Kaṭh. Up. 3,7,1 (Sarvadarçanas. 54,22). Maitrāyaṇ. 6,4. 25.

विमृध् (von मर्ध् mit वि) nom. ag. 1) *Verächter, Feind*: विमृधो (gen.) वशी heisst Indra RV. 10,152,2. nachgebildet AV. 3,5,4. 22. — 2) *Abwehrer des Verächters*, technisch gewordener Beiw. Indra's mit Anknüpfung an die Worte des Liedes वि नः इन्द्र मृधो जहि VS. 8,44. Çat. Br. 4,6,4,4. 11,1,8,1. Kāṭy. Çr. 4,3,24. — Vgl. वैमृध.

विमृध् adj. so v. a. विमृध् 2): तनू des Indra TS. 2,4,8,1.

विमृश (von मर्ष् mit वि) m. = विमर्श *Prüfung, Erwägung, Ueberlegung, Bedenken* Bhāg. P. 3,16,36. 4,22,21.

विमृश्य (wie eben) adj. *zu prüfen, zu untersuchen* Bhāg. P. 10,85,23.

1. विमृष्ट von मर्ज् mit वि: s. das. विमृष्टोत्तरोसा (nach dem Comm. विमृष्ट so v. a. न्यून) *bei welcher der Raum zwischen den Schultern etwas eingesenkt ist* Çat. Br. 1,2,5,16.

2. विमृष्ट von मर्ष् mit वि; s. das. यविमृष्टविधेयांश m. N. einer Redefigur: *unmotivirte Bezeichnung einer kleineren Zahl durch Theilung einer grösseren*; Beispiel: व्यर्धाष्टार्धार्धवाहूनाममीषामोदृशी दृशाम्। कथं सङ्ग्रामके Prātiṣ. 61,a,8. b,4. यष्टार्धार्ध = हि.

विमोक (von 1. मुच् mit वि) m. 1) *das Ausspannen; Lösung, Beendigung*: तर्पस: TBr. 2,7,11,1. यदि यज्ञस्य ब्रह्मणा युज्येत ब्रह्मणा वै तस्य विमोक: 3,3,10,4. TS. 1,7,4,4. AV. 15,3,4. — 2) *Befreiung*: गवामिन्द्रेण Sāy. zu ṚV. 5,45,1. दु:खात् vom *Schmerz* Schol. zu Kap. 1,4. नहि ज्ञात्वार्तस्य ज्ञात्वविमोको ज्वलाभिषेकात् zu 85. *Befreiung von der Welt*, — von *der Sinnlichkeit* Sarvadarçanas. 59,11. विमोक: कामनाभिधङ्ग: 14.

विमोकम् (wie eben) absol. *so dass die Zugthiere gelöst* d. h. *umgespannt, gewechselt werden*: मध्यन्दिनसवनं विमोकं समभुवत्ति Çat. Br. 6, 7,4,12. TS. 7,5,4,5. Kāṭy. Çr. 18,6,18. Eben so उपावमोकम्: यद्येवानकुद्विवान्येरन्योरात्मतरैरात्मतरैरुपविमोकं यात्ति Ait. Br. 4,27. 6,26.

विमोकृ (wie eben) nom. ag. *der Abspannende* VS. 30,14. °क्री f. TBr. 3,7,14,1.

विमोक्तव्य (wie eben) adj. 1) *frei zu geben, den man laufen lassen darf*: यमित्रो न विमोक्तव्य: Spr. (II) 523. नार्हं गुणि विमोक्तव्य: MBn. 6,3927. — 2) *aufzugeben, was man fahren lassen muss*: क्रोधलोभौ R. 2,28,24. — 3) *zu werfen, zu schleudern, abzuschiessen*: यस्त्रं मनुष्येषु MBn. 1,5526. केशवाय शक्ति: 7,8298.

विमोक्य (wie eben oder von विमोक) adj. s. य°.

विमोर्त (von मोत् mit वि) m. 1) *das Sichlösen, Aufgehen*: नद्ध° Pāṇ. Gaṇ. 1,10,1 (Ind. St. 5,353). Gaṇ. 2,4,1 (Ind. St. 5,370). — 2) *Befreiung* (intrans.): ग्रात्म° R. 2,33,23 (25 Gorr.). 5,44,17. Rāǵa-Tar. 8,1698. सर्वविमोक्षाय so v. a. *damit Alle aus der peinlichen Lage herauskommen* MBn. 5,7452. तेभ्यो न विमोक्षमर्कसि *das Loskommen* —, *Sichbefreien* von 4,428. शापात् R. 6,82,166. वृत्रिनात् Bhāg. P. 4,8,31. ब्रह्मवधात् 6,13,15. ग्रन्धबन्ध° R. 5,44,15. पशुपाश° Mudr. ST. 4,300, 12. शापतमो° Kathās. 25,290. तदत्यन्तविमोक्षो (तद् = दु:ख) Upavarṣ: Nyāyas. 1,1,22. *Befreiung der Seele, Erlösung* Çat. Br. 14,7,4,16. 29. Bhag. 16,5. Weber, Rāmāt. Up. 349. Bhāg. P. 3,5,24. Vedāntas. (Allah.) No. 124. Lot. de la b. l. 347. 824. fgg. Vie de Hiouen-thsang 168. प्रतिपुरुष° Siddhānt. 56. पुरुष° 57. पुरुषस्य 58. Sarvadarçanas. 152,13. — — 3) *Befreiung* (trans.), *das Laufenlassen*: eines Diebes M. 8,316. — 4) *das Aufgeben, Fahrenlassen, Unterlassen*: स्थानकरण° VS. Prāt. 1, 90. प्राणिहिंसा° MBn. 13,6682. — 5) *das Entlassen, Fliessenlassen*: व्याप्य° MBn. 12,5753. so v. a. *Spenden*: वसूनाम् R. 2,23,39. *das Abschiessen* MBn. 1,5245. बाणानाम् R. 6,69,32.

विमोक्तर् (von मोक्तर् mit वि) nom. ag. *Löser*: सर्वबन्ध° R. 7,23,4.40.

विमोक्षण (wie eben) 1) adj. *befreiend von*: भवाप्यय° Bhāg. P. 4,9,9. मादृक्प्रपन्नपशुपाश° *befreiend von oder lösend* 2,3,17. — 2) n. a) *das Lösen, Aufbinden*: केश° Vaitān. Bṛn. S. 78,3. — b) *das Befreien, Befreiung* MBn. 14,2440. Rāǵa-Tar. 8,1864. तेभ्य: Verz. d. Oxf. H. 20,b,22. जीवस्य शरीरत: Bhāg. P. 10,70,39. पुरुषादात्मविमोक्षणम् Nīlak. 63. ब्रणद्रव्य° MBn. 1,335. 3,271 in der Unterschr. R. 7,30,11. Bhāg. P. 8, 2,30. करोतु मे विमोक्षणम् 3,19. या शरीरविमोक्षणात् *bis zur Befreiung vom Körper* M. 2,242. Bhag. 5,28. विषहिमोक्षण Spr. (II) 783. Bhāg. P. 8,10,34. पाशविमोक्षणं कुरु Pañkat. 107,24. पशुपाश° Verz. d. Oxf. H. 44,b,25. — c) *das Vonsichgeben —, Entlassen einer Leibesfrucht, Befreiung von der Leibesfrucht* MBn. 1,2369. ग्रण्ड° *das Legen von Eiern* Pañkat. 74,20. प्राण° *das Aufgeben der Lebensgeister* MBn. 11,201. यसृग्विमोक्षण *das Blutlassen* Suçr. 1,38,20. सायकस्य *das Abschiessen* R. 4,12,29.

विमोक्तिन् (von विमोक्त) adj. *der Erlösung theilhaftig geworden* MBn. 12,11494.

विमोघ (2. वि + मोघ) adj. *ganz vergeblich*: प्रयास: Bhāg. P. 6,10,28.

विमोचक (von 1. मुच् mit वि) adj. *lösend, befreiend von*: भवबन्ध° Verz. d. Oxf. H. 91,b,11.

विमोचन (wie eben) 1) adj. (f. ई) a) *ausspannend, lösend*: Pūshan (vgl. विमुचो नपात्) ṚV. 8,4,15. fg. — TBr. 3,7,14,1. गोपोमामग्नेर्विमोचनी Khādoṃ. 155. हृदयग्रन्थि° Bhāg. P. 5,10,16. — b) *befreiend*: Çiva MBn. 13,1173. नारीगर्भ° *die Weiber von der Leibesfrucht befreiend* Harīv. 15345. ग्रापहिमोचनी Kathās. 37,42. — 2) n. a) *das Ausspannen, Einkehr; das Befreien vom Dienst* ṚV. 2,37,5. 3,30,12. वाजिनो रासभस्य 53,5. 20. इह प्रयाणमस्तु वामिन्द्रवायू विमोचनम् 4,46,7. 5,53,7. TS.

7,3,4,3. Çat. Br. 1,8,2,27. Kâtj. Çr. 13,3,14. 18,6,17. — b) *Befreiung, Rettung:* यद्य वाक् करिष्यानि कुलस्यास्य विमोचनम् MBh. 1,6193. तोर्वयाक्° 1,216 in der Unterschr. मम दुःखाहिमोचनम् । यदा भवति R. 5, 37,24. पापाच्चात्मविमोचनम् Mâlav. P. 32,26. प्रभा बुद्धिर्विमोचनम् (so die neuere Ausg.) wohl so v. a. पापादात्मविमोचनम् MBh. 14,1048. — c) *das Aufgeben, Fahrenlassen:* देहस्यास्य MBh. 3,2489. — d) N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,7031. — Vgl. अग्नि°, दुर्विमोचन, रथ°.

विमोचनीय am Ende eines comp. *auf das Abspannen von — bezüglich:* रथ° (s. auch u. रथविमोचन) Çat. Br. 5,4,2,14. Kâtj. Çr. 15,6,23.

विमोच्य (von 1. मुच् mit वि) adj. *zu befreien* MBh. 3,14952.

विमोह् (von 1. मुह् mit वि) m. *Verwirrung des Geistes:* °द् Kathâs. 80,39. Bhâg. P. 2,9,9. 3,27,25. 7,2,37. महा° 5,5,27. मति° 2,7,37.

विमोहन (vom simpl. und caus. von 1. मुह् mit वि) 1) adj. *den Geist verwirrend* Bhâg. P. 11,24,6. लोक° 8,11,33. 9,14,23. — 2) n. a) *Verwirrung, das in-Unordnung-Gerathen* P. 7,2,54 (vgl. Dhâtup. 28,32); nach dem Schol. *das Verwirren, in-Unordnung-Bringen* (व्याकुलीकरण). — b) *das Verwirren des Geistes:* वैमानिक° Râm.-Tâp. 5,370. unter den acht महासिद्धि Prab. 61,16. — c) N. einer Hölle VP. 207. fg.

विमोहिन् (von विमोह) adj. *den Geist verwirrend* Kathâs. 62,164. ब्रुवताम् Bhâg. P. 4,20,30. 10,13,37. ब्रह्मचर्य° Kathâs. 104,97. Verz. d. Oxf. H. 29,a,37.

विमौन (2. वि + मौ°) adj. *das Stillschweigen brechend* Kathâs. 96,47.

विमौलि (2. वि + मौ°) adj. *mit keinem Diadem geschmückt* Harîv. 3446.

विम्लापन (vom caus. von म्लै mit वि) n. *das Welkmachen, Schlaffmachen, Erweichen:* eines Geschwürs u. s. w. Suçr. 1,63,17. 2,3,15. 106, 17. 112,3.

वियङ्ग (so oder noch wahrscheinlicher यवियङ्ग) = 2. यव्यङ्ग (in den Nachträgen) Vaitân. Bhn. S. 58,47 (vgl. v. l.).

वियच्चारिन् (वियत् + चा°) 1) adj. *im Luftraum wandelnd.* — 2) m. *eine Falkenart* (चिल्ल) Çabdam. im ÇKDr.

वियत् s. वियत्.

वियति (2. वि + य°) m. 1) N. pr. eines der 6 Söhne des Nahusha VP. 413. Bhâg. P. 9,18,1. — 2) *Vogel* Çabdâmrtam. bei Wilson.

वियद्र Vaitân. Bhn. S. 58,47 schlechte Lesart für वियङ्ग.

वियद्गङ्गा (वियत् + गा°) f. *die im Luftraum fliessende —, die himmlische* Gañgâ AK. 1,1,1,44.

वियद्भूति (वियत् + भू°) f. *Finsterniss* (wohl *die Asche des Luftraums*) Trik. 1,2,2. H. ç. 20.

वियत् 1) adj. s. u. 3. इ mit वि. In der Bed. *hingehend, vergehend:* वियन्निशमायुः Bhâg. P. 7,6,14. वियद्वित्त 9,21,3. वियतो गगनादिवोत्पमं विना दैवादुपस्थितमेव वित्तं भोग्यं यस्य यदा वियद्यं प्राप्नुवत् वित्तं भोग्यं यस्य Comm. — 2) n. Sidd. K. 251,a,7 (वियत् gedr.). a) *das sich Trennende, Aussinandergehende* als Bez. *des Zwischenraums zwischen den zwei Getrennten* (dem Himmel und der Erde; man vgl. Stellen wie: इदं वा अन्तरितं वियदिवो स्तनावभितः Pañcav. Br. 24,1,7. द्यावापृथिवी सहास्ताम् ते वियती अब्रूताम् TBr. 1,1,3,2. तयोर्वियत्योर्यो ऽन्तरेणाकाश आसीत्तदन्तरितमभवत् Çat. Br. 7,1,2,23. संयत् वियत् VS. 15,5 nach Mahîdh. *Tag und Nacht*), *Luftraum* AK. 1,1,2,2. H. 163. Halâj. 1,137. यौर्वियद्वनिस्त्रयो लोका यस्मे प्रतिष्ठिताः Schol. zu AV. Paipp. 4,105. वियति, तिति MBh. 1,1181. वियद्गत 1186. वियत्स्व 3216. वियद्भ्यगमत् 3,818. (प्राणाम्) वियच्चराणां वियति दृश्यते वस्त्वो व्रजाः 4,1864. वियतीव चन्द्रः 7,672. 1192. 1194. 13,1846. Harîv. 8053. 8055. R. 5,95, 31. 6,97,7. Sucr. 1,20,19. 152,14. वियत्पताका der Blitz Ṛv. 3,12. Ragh. 13,40. Çiç. 7. वियदुपचितमेघम् Spr. 2832. Vaitân. Bhn. S. 3,35. 11,39. 51. 12,3. वियति चरतां ग्रहाणाम् 17,2. 19,8. 15. 21,14. 24,14. 20. 97, 12. Pañcat. III, 147. Prab. 54,13. Ghaṭ. 9. Bhâg. P. 3,10,7. 8,10,24. भूमौ वियति तोये 10,41,3. Hit. 10,1. — b) *der Aether* (als Element) Bhâg. P. 3,6,32. 20,13. 32,9. 7,9,43. Verz. d. Oxf. H. 104,b,28. Sarvadarçanas. 148,20. 149,5. 176,7. — c) Bez. *des 10ten astrologischen Hauses* (= नभस्तल) Vaitân. Bhn. 11,20. 23(23),5.

वियन्मणि, वियत् + म°) m. *das Juwel des Luftraums* d. i. *die Sonne* H. an. 4,132. Mân. th. 30. Hit. 11.

वियम (von यम् mit वि) m. = वियाम P. 3,3,63 (vgl. 6,2,144). AK. 3, 3,18. = दुःख Svâmin zu AK. nach ÇKDr.

वियव m. *eine Art von Eingeweidewürmern* Suçr. 2,309,15.

वियवन (von 3. यु mit वि) n. *das Trennen* Nir. 4,25. वियावन v. l.

वियाङ्ग Vaitân. Bhn. S. 58,47, v. l. für वियङ्ग.

वियात s. u. 1. या mit वि.

वियातम् als वधकर्मन् Naigh. 2,19 und Nir. 3,10 auf यत् zurückgeführt, scheint nichts Anderes als 3. du. von 1. या mit वि zu sein: *sie durchfahren* d. h. *zerschneiden mit den Wagenrädern.*

वियातिमन् (von वियात) m. *Dreistigkeit, Unverschämtheit* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वियाम m. = वियम P. 3,3,63 (vgl. 6,2,144). AK. 3,3,18. = व्यायाम *Faden, das Längenmaass der ausgestreckten Arme* H. ç. 123.

वियावन n. s. वियवन.

वियास (von यस् mit वि) m. nach dem Comm. N. eines *Plagegeistes* in Jaina's Welt VS. 39,11. TS. 1,4,35,1. Taitt. Âr. 3,20.

वियुक्त s. u. 1. युज् mit वि; davon °ता f. *das Freisein von:* विषमादि° H. 69.

वियुत् Ait. 7,4,1 falsche Lesart für नियुत्.

वियुत partic. von 3. यु mit वि. du. fem. *die Getrennten* d. i. *Himmel und Erde* Naigh. 4,1. Nir. 4,25. ṚV. 3,54,7; vgl. 4,7,7.

वियुतार्धक (von वियुत + अर्ध) adj. *einen* Halâj. 1,141.

वियूथ (2. वि + यूथ) adj. *von seiner Heerde getrennt:* मातङ्ग MBh. 9,1928.

वियोग (von 1. युज् mit वि) m. = विरह u. s. w. H. 1511. Halâj. 4, 37. am Ende eines adj. comp. f. या Vikr. 153. Kathâs. 17,48. 1) *das Getrenntwerden, Trennung, das Kommen um, Verlustiggehen:* वियोगं प्राप्तवत्यरुम् sc. vom Gatten MBh. 3,2573. Vikr. 29,17. संनिधि° Mâlav. 63,10. प्रायो बन्धुभिरधनैव पथिकैर्योगो वियोगावहः Spr. 1974. संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् 3076. संयोगे च विप्रयोगास्ते 3113. Vaitân. Bhn. S. 103,8. एनवत्सुखदुःखौ त्यागवियोगाभ्याम् Kap. 4,5. Bhâg. P. 5,14,1. 9,13,9. सद्भिः *Trennung von Guten* Kîm. Nîtis. 14, 60. Vikr. 73. Spr. 2742. Kathâs. 17,23. 25,82. Bhâg. P. 7,2,25. Mârk. P. 22,38. 72,41. प्राणैः प्रयाति वियोगम् Vaitân. Bhn. 6,8. तस्याद्यतुर्दश समा वियोगस्ते भविष्यति Kathâs. 9,34. भर्त्रा सह MBh. 3,2605. Çiç. 12,

63. Paśkar. 30,22. ज्ञानपूर्वो वियोगो यो ऽज्ञानेन सह योगिनः Mâlav. P. 39,1. Gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: धव इति मनुष्यनाम तद्वियोगाद्विधवा Nir. 3,15. इष्ट° Maitrâyaṇ. 1,3. बन्धुप्रिय° M. 12,79. R. 2, 21,26. 29,3. 3,75,72. 5,95,33. Ṛt. 1,10. Megh. 78. 86. 107. Raghu. 12, 10. Kir. 5,51. Kathâs. 24,31. Spr. 1630 (II). 1111. गङ्गा° 4714. मणि° Sâṅkhy. Bh. 5,6. कर्म° Mîr. 47,10. fg. — 2) *das Sichentfernen, von-dannen-Gehen, Verlorengehen; das Fehlen:* विरूपास्य, अनिलस्य Spr. (II) 285. 1983. धनस्य 1289 (I). विषयाणाम् 668 (II). तव वियोगेन *weil du fehlst* R. 2,52,27. 7,93,34. यस्य तृणवियोगेन लोको व्याप्रियदर्शनः Bhâg. P. 1, 15,6. करणानाम् MBh. 5,5814. 3,13993. द्विजपाणि° 7,2364. Verz. d. Oxf. H. 80,*b*,8. दुःखसंयोग° Bhag. 6,23. मातृधात्रीवियोगतः *weil weder Mutter noch Amme da waren* Kathâs. 82,36. Sâh. D. 17,15. मनोवियोगात् *weil das Herz nicht dabei ist* Vaṛâh. Bṛh. S. 75,1. Kuṭṭan. 60, 4. 61,2. Bed. 1) und 2) lassen sich bisweilen nicht genau scheiden. — 3) *Subtraction* Gaṇit. Bhâgaṇâdh. 13, Comm. Śrîdhar. 5. Golâdhy. 7, 42. — 4) Bez. *eines best. astrol.* Joga Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,43.

वियोगता Kathâs. 55,181 fehlerhaft für वियोगिता.

वियोगपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 52,278. 291.

वियोगवत् (von वियोग) adj. *getrennt* (vom geliebten Gegenstande) Kathâs. 12,106.

वियोगिता (von वियोगिन्) f. *das Getrenntsein:* अन्योऽन्यस्य तिरश्चामप्यत्र कष्टा वियोगिता Kathâs. 111,21. अन्योऽन्य° 15,94. पत्नीपुत्र° 53,181 (वियोगता gedr.).

वियोगिन् (von वियोग) 1) adj. *a) getrennt* (vom geliebten Gegenstande) Kathâs. 16,46. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,29. fg. Naiṣ. 2,12. Mâlav. P. 51, 116. ताः शोच्या या वियोगिन्यो न शोच्या या मृताः सह 22,35. भर्त्रा 33. भार्या° Kathâs. 124,21. 72,19. — 2) *mit Trennung verbunden* so v. a. wo *Trennung Statt findet:* घ° MBh. 12,8816.

वियोजन (von 1. युज् mit वि) n. 1) *das Losmachen von, Befreien:* घासवः कर्णणी बन्धो निर्व्यस्तद्वियोजनम् Sarvadarśanas. 43,20. als Bed. von रिच् Dhâtup. 34,10. — 2) *Trennung:* कर्तुं न पुष्यते । मादृशानां प्रभोः पद्म्या विनाशो ऽथ वियोजनम् Kathâs. 32,125. इष्ट° von Spr. 4190 Mâlav. P. 92,4. — वियोजनैर्धनैः MBh. 12,8213 fehlerhaft für वियोजयेद्धनैः, wie die ed. Bomb. liest.

वियोजनीय (wie oben) adj. *verlustig zu machen, zu bringen um:* लिङ्गसर्वस्वाभ्याम् Kull. zu M. 8,374.

वियोज्य (wie oben) adj. *zu trennen:* पिङ्गलकः संजीवकात् Paśkar. ed. orn. 39,7.

वियोतृ (von 3. यु mit वि) nom. ag. *der da scheidet, trennt* RV. 4,55,2.

वियोध (2. वि + योध) adj. *der Streiter beraubt, ohne Streiter:* वाराणाः MBh. 6,2286.

1. वियोनि und °नी (2. वि + यो°) f. *ein thierischer Mutterleib, eine thierische vulva; eine thierische Daseinsform, Thier:* संभवः वियोनीषु M. 12,77. MBh. 3,13872. वियोनिमधिगच्छति Çânti 54 in Ind. St. 4, 368. वियोनिषु विमोह्यन्ति बीजानि पुरुषा यदा MBh. 12,8326. 8377. वियोनौ मैथुने रताः 13,6734. Harîv. 11167. °गर्भित Verz. d. B. H. 142,10 v. u. °ज *ein Thier* MBh. 7,9475. 13,5204. °जन्मन् *zur Mutter ein Thier habend* Mâlav. P. 73,15. वियोनि *Thier und Pflanze* Vaṛâh. Bṛh. 3,1. fgg. °जन्मन् *die Entstehung der Thiere und Pflanzen* ist der Titel des 3ten Adhjâja 28 (26),1.

2. वियोनि (wie oben) adj. 1) *seiner Natur widersprechend* Paśkar. Bh. 18,6,9. Kîrṇ. 14,10. — 2) *ohne vulva:* Weib Suçr. 1,290,16. neben अयोनि (= अप्रजातकुला Nîlak.) MBh. 13,5087 von Nîlak. durch स्त्रीनकुला erklärt.

विरक्त s. u. रञ्ज् mit वि. °भाव adj. *gleichgiltig gesinnt, Einem nicht mehr zugethan* Spr. (II) 196.

विरक्तासर्वस्व n. Titel einer Schrift Hall 17.

विरक्ति (von रञ्ज् mit वि) f. *Gleichgiltigkeit:* विरक्तिं या *gegen Jmd gleichgiltig werden, aufhören ihn zu lieben* Râjat. Tar. 3, 200. विरक्तिः संजाता मे सांप्रतमस्य देशस्योपरि Paśkar. 114,1. fgg. शास्त्रं प्रति मे महती विरक्तिः संजाता 143,15. विषये Prâçnottarâm. 2. अन्यत्र Bhâg. P. 3, 5,13. Insbes. *die gegen die ganze Aussenwelt eingetretene Gleichgiltigkeit eines Asketen* 1,16,28. 19,4. 3,26,72. 27,8. 7,10,42. 64. 11,9,25. तीव्रा und तीव्रतरा Verz. d. Oxf. H. 269,*a*,16.

विरक्तिमत् (von विरक्ति) adj. *gleichgiltig:* पत्तिज्ञातो Kathâs. 43,184. *verbunden mit der Gleichgiltigkeit gegen die ganze Aussenwelt:* ज्ञान Bhâg. P. 4,23,11. विज्ञान 12,10,26. समाधियोगार्जितपोविद्या° (das suff. gehört zum ganzen copul. comp.) 3,20,53.

विरक्तम् (2. वि + 2. रक्त°) adj. *ohne Râkshasa* Cat. Bh. 3,4,2,6. davon nom. abstr. विरक्तैस्ता 1,2,18. 2,8,13.

विरग *eine best. hohe Zahl* Vîṛûp. 179. Mél. asiat. 4,637. विराग v. l.

1. विरङ्ग (von रञ्ज् mit वि) m. = विराग; vgl. वैरङ्गिक.

2. विरङ्ग (2. वि + रङ्ग) n. *eine best. Erdart,* = काङ्कुष्ठ Râjân. im ÇKDa.

विरचना (von रच् mit वि) f. *das Anlegen, Anthun* (eines Schmuckes u. s. w.): पीनस्तनोपरि निपातिभिरर्पयन्ती मुक्तावलीविरचनापुनरुक्तभावैः (so ist zu lesen) Vikr. 153. नेपथ्य° Mâlatîm. 13,20.

विरचित 1) adj. s. u. रच् mit वि. = 2) f. घा N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 14,65.

विरज (2. वि + रज = रजस्) 1) adj. (f. घा) *a) frei von Staub, rein* (eig. und übertr., auch in der Bed. *frei von Leidenschaft*): पन्थाः MBh. 1,3678 nach der Lesart der ed. Bomb. अम्बर, वासस् Bhâg. P. 3,21,9. 23,20. 8,8, 45. 15,17. 10,38,31. गङ्गा MBh. 13,1849. यज्ञियो 1,722. Çiva 13,1261. von Menschen Bṛh. Âr. Up. 4,4,23 (विरज Çat. Br.). Muṇḍ. Up. 1,2,11. Sarvadarçanas. 55,22 (विरज Khând. Up. 8,7,1). Kaṭhop. 6,18. Bhâg. P. 3,4,7. 21,9. 4,13,15. Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,33. विरजेश्वरी wird Râdhâ genannt Paśkar. 2,3,34. ब्रह्मलोक Prâçnop. 1,16. लोका: MBh. 13,4871. 4877. 4880. 4884. Bhâg. P. 4,25,39. आत्मन् Çat. Br. 14,7,2,23. Bhâg. P. 1,13,48. 2,2,25. 4,2,35. मनस् 3,28,10. 12 (सु°). धी 10,87,19. धर्म 11,17,12. मन्त्र 3,15,15. ब्रह्मन् n. 14,31. 4,21,41. Muṇḍ. Up. 2,2,9. आनन्द Verz. d. Oxf. H. 26,*b*,29. — *b) f. nicht mehr menstruirend* Gaṇeç. im ÇKDa. — 2) m. N. pr. *a)* eines Marutvant Harîv. 11546. — *b)* eines Sohnes des Tvashṭar VP. 165. Bhâg. P. 5,15,12. fg. — *c)* eines Sohnes der Pûrṇimân, Tochter Kardama's, Bhâg. P. 4,1,14. — *d)* eines Schülers des Gâtûkarṇja Bhâg. P. 12,6,58. — *e)* pl. einer Klasse von Göttern unter Manu Sâvarṇi Bhâg. P. 8,13,12. — *f)* der Welt des Buddha Padmaprabha Lot. de la b. l. 42. — 3) f. घा *a) ein best. Hirsengras,*

Panicum Dactylon (दूर्वा) Hir. 93. MBu. 13, 6243. = कपित्थानी Rigan. im ÇKDa. — *b*) N. pr. α) einer geistigen Tochter der Manen Suvadha (Svasvadha) und Gattin Nahusha's Harıv. 995. fg. 1599. Verz. d. Oxf. H. 40, *a*, 3. — β) einer Freundin Kṛshṇa's, die wegen ihrer Furcht vor Rádhá in einen Fluss verwandelt wird, Verz. d. Oxf. H. 23, *a*, 3. dieser Fluss im Goloka Paṅkan. 1, 1, 26. 13, 30. 2, 1, 13. 2, 19. — γ) einer Rákshasí Verz. d. Oxf. H. 78, *b*, 7. — *d*) eines heiligen Gebietes: °क्षेत्र Verz. d. Oxf. H. 30, *a*, 14. 77, *b*, 26. fg. 289, *a*, 4. Mack. Coll. 1, 84. गुण्डनं चोपवासश्च सर्वतीर्थफलं विधिः । वर्जयित्वा गयां गङ्गां विशालां विरजां तथा ॥ Skanda-P. im Paiçáćittat. nach ÇKDa. — 4) n. N. pr. eines heiligen Wallfahrtsortes MBu. 3, 8148.

विरजप्रभ m. N. pr. eines Buddha Burn. Intr. 102.

विरजस् 1) adj. = विरज 1) *a*): घम्वर, वासस् MBu. 2, 287. 3, 2167. R. 3, 9, 4. 75, 54. Bhâg. P. 10, 34, 21. वायु R. 3, 78, 8. व्रतानि MBu. 3, 11295. पद्म Harıv. 11441. देश MBu. 3, 11856. लोका: 13, 4874. ब्रह्मसदन 14, 2794. von Personen 1, 2870. 5, 6099. यथा वमेनमा मुक्ता (so ed. Bomb.) विरजा: (विरजा ed. Calc.) ब्यातिमेष्यमि 7, 2108. 13, 3185. 14, 1152. Harıv. 7160. Rigan-Tan. 2, 120. 4, 200. Bhâg. P. 3, 20, 4. 10, 10, 28. — 2) m. N. pr. *a*) eines Schlangendämons MBu. 1, 1539. 5, 3632. — *b*) eines Ṛshi Harıv. 14153. Verz. d. Oxf. H. 52, *a*, 39. *b*, 29. unter Manu Kákshusha Harıv. 435. Mâk. P. 76, 54. ein Sohn des Manu Sávarṇa 80, 11. Nárâyaṇa's MBu. 12, 2209. fg. Kavi's 13, 4150. Vasishṭha's Bhâg. P. 4, 1, 41. Paurṇamása's VP. 82. Mâk. P. 52, 19. — *c*) eines Sohnes des Dhṛtaráshṭra MBu. 1, 4553. 7, 6928. — 3) f. Bein. der Durgá H. ç. 58. — Vgl. पाद°.

विरजस adj. = विरजस्. स्थान MBu. 3, 10821.

विरजस्क 1) adj. (f. घा) desgl.: मार्ग MBu. 14, 1540. Wind Harıv. 2880. 4941. 12688. Raǵa. 10, 74. वर्मन् MBu. 8, 1491. eine Person R. 6, 103, 10. लोक Bhâg. P. 1, 19, 21. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Sávarṇi Bhâg. P. 8, 13, 11.

विरजस्कर (वि° + 1. कर्) vom *Staube befreien, reinigen*: davon °करण n. nom. act. Comm. zu Kâty. Ça. 231, 3. — Vgl. विरजीकर्.

विरजस्तमस् adj. *nicht von den Guṇa Rágas und Tamas beherrscht* AK. 2, 7, 44.

विरजात (विरज + घत) m. N. pr. eines Berges im Norden des Meru Mâk. P. 55, 13.

विरजी (von विरजस्) indecl. in Verbindung mit घस्, भू und कर् *rein werden* und *rein machen* P. 5, 4, 51, Schol.

विरज्ञ m. Bein. Brahman's H. 211, Schol. Bhâg. P. ed. Bomb. 8, 5, 29. 6, 3. — Vgl. die folgenden Wörter und विरिञ्च fgg.

विरञ्चन m. desgl. H. 213, Schol.

विरञ्चि m. desgl. H. 211, Schol. Hall. 1, 7. Çiç. 9, 9. Spr. (II) 1087 (die urspr. Lesart). Verz. d. Oxf. H. 31, *a*, 3. 120, *b*, 2. Ind. St. 10, 203.

विरञ्च्य m. desgl. Bhâg. P. ed. Bomb. 7, 9, 18. 24 (= ब्रह्मणो भेगः). 11, 30, 38.

1. विरण s. घ°, was vielleicht richtiger zu fassen wäre als *nicht endendes Ergötzen* (von 1. रन् mit वि).

2. विरण n. = वीरण Çabdar. im ÇKDa.

विरत s. u. रम् mit वि und घविरत und vgl. वैरत्य. Davon °त्व n. *das Aufgehörthaben, Vorbeisein* Sin. D. 14, 18.

विरति (von रम् mit वि) f. 1) *das Aufhören; Schluss, Ende* AK. 3, 3, 38 (37). H. 1522. हिंसा° Rigan-Tan. 3, 80. स्फूर्जत्तः क्रोधवज्रेण दधति विरतिं तावदङ्गे विस्फुलिङ्गाः Prab. 36, 12. गतायां विरतिं निशि Kathâs. 101, 6. Spr. 776 (II). 1883. — 2) *Ende eines Pâda, Cäsur innerhalb eines Pâda* Çaun. 28. 31. 37. 40. — 3) *das Ablassen von, Sichenthalten, Entsagung* Spr. 2032. 2054. Prab. 71, 2. स्वेदनात् Çiku. Sâh. 2, 2, 19. तेभ्यः Vedântas. (Allah.) No. 11. घाकारे Spr. 1079 (II). धनेषु 2279. पराद्रोह° 2843. Kṛshṇa heisst Paṅkan. 4, 8, 19 विरतिः सर्वपापिनाम् *weil er die Bösewichter dazu bringt, dem Bösen zu entsagen.* घ° Jogas. 1, 30. — Vgl. घ°, प्रति°.

विरथ (2. वि + रथ) adj. *um den Streitwagen gekommen* MBu. 1, 207. 6467. 3, 730. 14918. 4, 1074. 14, 2456. R. 3, 34, 33. 35, 1. 56, 31. 4, 37, 12. 7, 7, 37. Kathâs. 47, 38. 48, 75. 50, 14. 74, 291. fg. Spr. 4681. Mâk. P. 116, 56.

विरथीकर् (विरथ + 1. कर्) *Jmd um den Streitwagen bringen*: °कृत्य Bhâg. P. 10, 66, 21. °कृत MBu. 6, 5466. 8, 2416. R. 3, 34, 35. Kathâs. 47, 81.

विरथीकरण (von विरथीकर्) n. *das Bringen um den Streitwagen*: घर° R. 3, 34 in der Unterschr.

विरथीभू (विरथ + 1. भू) *um den Streitwagen kommen*: °भूय Kathâs. 48, 100. °भूत 107.

विरध्य adj. als Beiw. von Çiva vielleicht so v. a. *an Nebenstrassen* (विरध्या) *seine Freude habend* MBu. 12, 10389. — Vgl. रथ्या 1) *c*).

विरध्या (2. वि + रथ्या) f. etwa *Nebenstrasse, eine schlecht unterhaltene Strasse* Mâk. P. 35, 25; vgl. Jâṅ. 1, 197, wo st. dessen रथ्या steht.

विरदावली s. विरुदावली.

विरप्श् (von रप्स् mit वि) 1) adj. (f. ई) *strotzend*: सूनृता विरप्शी गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे RV. 1, 8, 8. — 2) m. *Ueberschwang, Fülle*: गव्यैः RV. 4, 50, 3. 7, 101, 4.

विरप्शिन् (wie eben) adj. *vollsaftig, strotzend, vollkräftig*; = मरुत् Naigh. 3, 3. घर्मं विरप्शिनं मेध्यमयस्मं कृणु AV. 5, 29, 13. die Marut RV. 1, 64, 10. 87, 1. 166, 8. 3, 36, 4. 4, 17, 20. 20, 2. 5, 22, 6. 32, 1. 40, 2. 8, 65, 8. VS. 1, 28 (Vishṇu nach Mahîdh.). SV. Naig. 4, 11. Wagen der Sindhu (*das übervolle Bett*) RV. 10, 75, 9.

विरम (von रम् mit वि) m. 1) *das Aufhören, Nachlassen*: घूमस्य MBu. 12, 8663. दुःखस्य Bhâg. P. 3, 8, 2. von der Sonne so v. a. *Untergang* Çiç. 9, 11. — 2) *das Abstehen von, Sichenthalten*: घदत्तादान° MBu. 13, 6415. — विरमे ऽत्र Rigan-Tan. 4, 427 fehlerhaft für विरमेत्र; vgl. Spr. 2691. Vgl. विराम.

विरमण (wie eben) n. 1) *das Aufhören, Nachlassen*: घाश्रमवणविरमणात् Kâty. Ça. 20, 2, 3. विराट्विरमणाहिरात्रनाहिरात्रसाधनाद्वा Ind. St. 8, 57, N. 2. — 2) *das Abstehen von*: विषय° Sunâsîr. 39.

विरल 1) adj. (f. घा) = पेलव AK. 3, 2, 15. H. 1447. = तलिन AK. 3, 4, 28, 129. *a*) *auseinanderstehend, nicht dicht anschliessend, undicht*: स्तनौ R. 5, 23, 13. विरलाङ्गुली चरणौ Vaitân. Bṛh. S. 68, 3. 42. Verz. d. Oxf. H. 202, *b*, 4. 5. 9. Uttarar. 10, 6 (14, 4). दन्ताश्चाविरला मम R. 6, 23, 11. घरण्यं विरलद्रुमम् Harıv. 3487. Kathâs. 56, 20. भूर्विरलसस्यपुता

Vaṇîn. Bṛn. S. 19, 1. वृतेरविरले: MBn. 13, 4471. अविरलपत्रमंचया (शाखा) 1, 1383. अविरलकुसुमसंचय Mâlatîm. 14, 6. °सुरतस्वेदोद्गारा वधूवदनेन्दव: Spr. 1719. अविरला: कारा: *dichte Strahlen* Kathâs. 21, 12. अविरलच्छाया adj. *dichten Schatten gebend* MBn. 3, 11023. R. Gorr. 1, 49, 13. अविरलम् adv. *dicht* Uttarar. 33, 12 (44, 6). अविरलमिव दाम्ना पीणउरोकेण नद्ध: Mâlatîm. 60, 10. — *b) selten, wenig, nicht zahlreich:* प्रचार Prasn. 10, 6. 31, 7. °प्रयोग Sin. D. 218, 20. कलमाविरलं (adv. *ununterbrochen*) क्षणात्तु शकुनय: Uttarar. 53, 14 (89, 6). विरलभक्तिर्ज्ञानपुण्योपकार: Ragh. 5, 74. विरलातपच्छवि Çic. 9, 3. °पार्श्व Râga-Tar. 5, 56. वासरा: (Gegens. भूयांस:) 4, 336. कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्या: Spr. 2091. 3299. Kathâs. 36, 41. Râga-Tar. 4, 240. पुरुषस्तु विरलपात्रको भवति Vet. in LA. (III) 23, 3. संसारे ऽस्मिन्भवति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् *hier und da Einer* Spr. 2978. तं भुवनतिलकभूतं जनयति जननी सुतं विरलम् 2826. विरल: को ऽपि यो वेत्ति हृदयं कौमुमायुधम् Vet. in LA. 20, 19. — 2) m. *saurer Rahm* (दधि) Râgân. im ÇKDn. — Vgl. अ°, प्र°.

विरलजानुक (von वि° + जानु) adj. *auseinanderstehende Knie habend* H. 436.

विरलद्रवा (वि° + द्रव) f. *ein Gericht aus Körnerfrüchten mit Ghṛta* Gaṇîn. im ÇKDn. Suçr. 1, 229, 15.

विरलाय् (von विरल) *undicht gesäet sein, selten vorkommen:* सरला विरलायन्ते घनायन्ते कलिद्रुमा: Cit. bei Udâyan. zu Uṇâdis. 1, 108.

विरलिका (wie oben) f. *ein best. undichtes Zeug* Vjutp. 208.

विरलित (wie oben) adj. *nicht dicht angelegt:* अविरलितकपोलं जल्पतो: Uttarar. 12, 11 (17, 4).

विरलीकृत Harîv. 6231 fehlerhaft für विदलो° (वि°), wie die neuere Ausg. hat.

विरलेतर (विरल + इ°) adj. *dicht* Halâs. 4, 32.

विरव् (von 1. रु mit वि) m. *das Brüllen, Dröhnen* ṚV. 10, 68, 8. कोरो मुखायत: कृत्वा निशश्वासार्तमानस:) यस्य हस्तविरवात् Mârk. P. 122, 17. — विरव n. ebend. 126, 14 wohl fehlerhaft fur विवर. — Vgl. विराव.

विरश्मि (2. वि + र्° adj. *strahlenlos* MBn. 16, 4. Harîv. 3579. R. Gorr. 2, 39, 37. Vaṇîn. Bṛn. S. 13, 7.

विरस (2. वि + रस) 1) adj. *a) nicht mit Fruchtsaft gewürzt:* कृतान्न Âpast. 1, 18, 3. — *b) geschmacklos, schlecht schmeckend,* in übertr. Bed. so v. a. *einen üblen Nachgeschmack habend, einen Ekel bewirkend* MBn. 12, 9814. Suçr. 1, 176, 19. 190, 17. 191, 7. 4. 225, 14. Vaṇîn. Bṛn. S. 28, 4. 54, 122. Râga-Tar. 1, 216. (अधरमधु) किंपाकद्रुमपलमिवातीव विरसम् Spr. 2379. स्त्रीनिमित्तेन प्रयासेन किंपाकफलतुल्येन विपाकविरसेन Kathâs. 37, 145. असारविरसेषु भोगेषु 36, 105. विरतिविरसायासविषया: Spr. (II) 776. क्रियावसानविरसैर्विषयै: 1962. विरूपविरस: संगमरस: 2065. संसार (I) 1974. विभवास्त्रैलोक्यराज्याद्य: 1995. असारे संसारे विरसपरिणामे 2756. 2789. विषयरसा: परिणामविरसा: 3035. Verz. d. Oxf. H. 128, *b*, 16. निरन्वयविपर्यासविरसवृत्तय: Uttarar. 116, 4 (157, 6). विरसाध्मातहृदय *durch etwas Unangenehmes* Uttarar. ed. Cow. 18, 9 (विरसो दु:खम् Glosse). विरसम् adv. *auf eine widerliche Weise:* रटतो वायसा: Mṛicch. 137, 10. Bhatt. 2, 32. विरस *was gegen den guten Geschmack ist* Prâtiçâkh. 66, *a*, 6. — *c) keinen Geschmack an Etwas findend:* विषय° im Gegens. zu विषयलोलुप Kull. zu M. 2, 95. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBn. 5, 3632. — विरस MBn. 8, 4327 fehlerhaft für विवश, wie die ed. Bomb. liest.

विरसत्व (von विरस) n. *schlechter Geschmack, das Bereiten von Ekel:* परिणति° Spr. (II) 637. Prasn. 72, 15.

विरसाननत्व (von विरस + आनन) n. *übler Geschmack im Munde* Suçr. 2, 520, 17.

विरसास्यत्व (von विरस + आस्य) n. dass. Çârîr. Saṃh. 1, 7, 70.

विरसीभू (विरस + 1. भू) *einen Widerwillen bekommen, unangenehm berührt werden:* °भवन् Kâm. Nîtis. 5, 44.

विरह् (von रह् mit वि) m. = वियोग H. 1511. Halâs. 4, 37. 1) *das Getrenntsein, Trennung* (vom geliebten Gegenstande): न मे ऽस्य विरह: क्षम: MBn. 3, 16737. Mucn. 8. 12. 30. 83. 87. 89. 92. 109. 111. Spr. (II) 788. °विरस: संगमरस: 2065. (I) 2834. 3101. विरहो ऽपि संगम: क्वचु परस्परं संगतं मनो येषाम्। यदि हृदयं तु घटितं समागमो ऽपि विरहं विशेषयति ॥ 5019. Kathâs. 39, 80. Râga-Tar. 2, 36. Bhâg. P. 1, 2, 2. Vet. in LA. (III) 6, 1. 16, 6. 21, 3. Sarvadarçanas. 96, 16. पत्या vom *Gatten* Spr. 1765. पित्रा भर्त्रा सुतेनापि 4338. राज्ञो वासवदत्तया Kathâs. 15, 35. 67, 21. सीता° (könnte auch zu 2) gezogen werden, R. 2, 59, 29. इष्टजन° Çic. 60, 4. Vikr. 110. Mucn. 83. Bhâg. P. 3, 10, 30. — 2) *Abwesenheit, das Nichtdasein, Fehlen, Mangeln:* एषाम् (d. i. des Vaters, der Gattin oder der Sohne) Spr. 4538. R. 5, 33, 13. मम विरहजं दु:खम् *aus meiner Abwesenheit entstanden* Çic. 94. 180. किं यौवनेन विरहो यदि वल्लभाया: wenn *keine Geliebte da ist* Spr. 2791. 4113. Râga-Tar. 5, 372. Bhâg. P. 4, 10, 10. सपत्नो° Kathâs. 32, 178. वाग्विरहात् 43, 11. विवेक° Spr. 2641. स्वकाल° Vikr. 130. लोभ° Hit. 11, 3. आहार° 127, 3. प्रदोष° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 502, Çl. 1. Prasn. 17, 15. Sin. D. 8, 20. 218, 21. Sarvadarçanas. 16, 7. 96, 22. वृष्टि° Kull. zu M. 8, 23. शङ्का° Kusum. 28, 15. 37, 18. Bhâsâṃ. 68. am Ende eines adj. comp.: अनुचितनूपुर° (चरण) Mâlav. 61. *an dem — fehlt* so v. a. *mit Ausnahme* von Vaṇîn. Bṛn. S. 100, 2.

विरहिन् (von विरह्) adj. 1) *getrennt* (vom geliebten Gegenstande): चिरविरहिणोर्मूनो: Spr. 2298 (II). 2099. Gît. 1, 27. 31. Kathâs. 16, 73. 51, 68. 103, 241. 119, 154. Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 30. Gaspar. zu Siṃhâs. 12. मालती° *getrennt von* Mâlatîm. 144, 3. Kathâs. 67, 65. — 2) *abwesend* Spr. 1335. — 3) *frei von, sich enthaltend:* प्रवृत्तिनिवृत्त्योरन्यतरविरहिणा: Sarvadarçanas. 61, 3. 4.

1. विराग (von रञ्ज् mit वि) m. 1) *Entfärbung, Verlust der Röthe* Naish. 22, 55. — 2) *Entfärbung, Umfärbung* (eines Lautes, ein best. Fehler der Aussprache wie पड् ढा für पड् ढा) ṚV. Prât. 14, 5. — 3) *Aufregung, das Versetzen in Leidenschaft:* चित्त° P. 6, 4, 91. — 4) *Abneigung* (gegen Personen) Spr. 1156. Naish. 22, 55. तस्य (राज्ञ:) प्रकृतयो विरागं प्रतिपेदिरे Râga-Tar. 2, 142. 3, 500. 4, 381. 6, 198. 8, 687. 696. *Abneigung, Gleichgiltigkeit* (gegen Unpersönliches): गृह्यमेधेषु योगेषु Bhâg. P. 3, 3, 22. ज्ञातविराग ऐन्द्रियात् 25, 26. सर्वकामेभ्य: Spr. 2335. बर्हिर्ज्ञातविराग Bhâg. P. 3, 32, 42. इहामुत्रफलभोग° Vedântas. (Allah.) No. 9. 11. ohne Ergänzung *Gleichgiltigkeit gegen die Aussenwelt* Kap. 2, 9. Siddhânta. 23. Spr. 3011. Bhâg. P. 3, 23, 56. 4, 22, 26. 5, 5, 40.

2. विराग (2. वि + राग) adj. (f. आ) 1) von *mannichfacher Farbe,*

bunt: °वसन MBu. 2,334. 342. °वस्त्राभरण Harıv. 8423. नानाविराग-वसन R. 4,33,23. MBu. 8,456. 10,236. नानावर्णविरागाः पताकाः 7,3931. — 2) *frei von aller Leidenschaft, gleichgiltig* R. 1,7,7. Bhâg. P. 3,15, 47. 32,10. सर्वतस् *für Alles abgestorben* 29,3.

3. विराग *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 181. Mél. asiat. 4,637. — Vgl. विराग.

विरागता (von 2. विराग) f. *Gleichgiltigkeit gegen Alles* MBu. 15,936.

विरागवत् (von 1. विराग) adj. *gleichgiltig:* सर्वत्र *gegen Alles* Verz. d. Oxf. H. 256,b,35. fg.

विरागार्क (1. विराग + अर्क) adj. = वैरञ्चिक H. 490. Halâj. 2,214.

विरागित (von 2. विराग) adj. *eine Abneigung —, einen Widerwillen empfindend:* नावसत्तत्र तत्रास्य दृष्टौ रूपविरागिता MBu. 13,1480.

विरागिता (von विरागिन्) f. *Abneigung, Widerwillen:* यदेषा मय्यार्यपुत्रस्य स्नेहेऽभूय्य मुघैव मे । विरागितामूत् Kathâs. 43,207.

विरागिन् (von 1. विराग oder von रञ्ज् mit वि) adj. *eine Abneigung —, keine Neigung für Jmd oder Etwas empfindend:* नास्थाने क्रोधवत्तश्च न चाकस्माद्विरागिणः MBu. 12,6383. Spr. (II) 731, v. l. वेश्या योग 1083. Râéa-Tar. 6,334. यदलब्धे रागिणो लोका यदेषा लब्धे विरागिणः Spr. (II) 633. यो° R. 5,33,30.

1. विराज् (1. राज् mit वि) P. 3,2,61, Schol. 1) adj. *herrschend, an der Spitze befindlich; ausgezeichnet, prangend;* m. f. *Herrscher, Herrscherin* u. s. w.: विराजं गोपतिं गवाम् ṚV. 10,166,1. मम पुत्राः शत्रुसहो ऽथो मे दुहिता विराट् 180,3. सोमो विराजमनु राजति 9,96,18. विराट् समाट् 1,188,5. AV. 12,3,11. 14,2,15. VS. 20,5. 55. ज्योतिस् 38,27. Ait. Br. 3,14. eine der Wesenheiten Agni's TBr. 1,1,3,2. Çat. Br. 10,4,3,11. Beiw. der Sarasvatî MBh. 3,10638. देवो विराट् von der Sonne Verz. d. Oxf. H. 62,a,42. m. = क्षत्रिय *Herrscher, Fürst* AK. 2,8,4,1. MBh. 1,3148. 3,12704. Bhâg. P. 4,27,6. — 2) f. *Auszeichnung, hohe Stellung:* यत्सर्वरुद्रा वा एतस्य विराज्य याजिताप्तिः सर्वमभः TS. 1,7,6,7. परमायां विराजि प्रतितिष्ठत्तः Âçv. Çr. 11,4,8. Çat. Br. 11,4,3,18. Çâṅkh. Br. 18, 8. 19,5. Ça. 16,30,13. — 3) f. und später m. N. eines der Speculation angehörigen göttlichen Wesens: Tochter (Sohn) des Purusha (auch Purusha selbst) oder Prâgâpati, oder dessen Gattin; als Kuh bezeichnet, die durch ihre Schritte die Opferfeuer vertheilt u. s. w. In der Folge Tochter (Sohn) Brahman's, Mutter (Vater) des Manu Svâjambhuva oder des Brahman selbst. In den Brâhmaṇa zu phantastischen Allegorien gebraucht, unter Vermengung aller Bedeutungen des Wortes. ṚV. 10,90,5. AV. 8,5,10. 11. 9,1. 10,1. Die Sonne heisst वत्सो विराजः 13,1,31. TBr. 1,2,8,27. Çat. Br. 14,6,11,3. Kâṭh. 36,3. गौ मा हिंसीरदितिं विराजम् VS. 13,43; vgl. 17,3. विराजो दोहो ऽसि Âçv. Gṛhj. 1,24,20. fgg. Çat. Br. 1,5,2,20. Vâk Virâǵ, Tochter des Kâma, AV. 9,2,5. angeblich Agni TBr. 1,1,8,10. Prâgâpati selbst (Comm.) 4,2,5. विराजम् TBr. Comm. I,93,15. fgg. द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्धेन पुरुषो ऽभवत् । अर्धेन नारी तस्यां स विराजमसृजत्प्रभुः ॥ M. 1, 32. तपस्तप्त्वासृजद्यं तु स्वयं पुरुषो विराट् । तं मां वित्त 33. विराजः सोमसदः साध्यानां पितरः स्मृताः 3,195. स यात्मा वै वपश्च विश्वरूपः प्रजायतिः । विराजः सो ऽन्नरूपेण पशवमुपगच्छति ॥ Jâén. 3,120. Ind. St. 9,5 u. s. w. Sohn Vishṇu's, Vater des Purusha (= Manu) Harıv. 51. यद्वस्य धनुषोर्मध्ये स सूक्ष्मः पुरुषो विराट् 11709. Weber, Rimây. Up. 351. VP. 51. fgg., N. 3. 93. Bhâg. P. 2,6,15. 21. 41. 3,6,9. fgg. 26,51. Verz. d. Oxf. H. 23,b,10. 39,a,8. entsteht aus den fünf Elementen 226,a, No. 554, Çl. 7. = परमात्मन् als षड्वर् 300,a, No. 734. = कृष्ण, विष्णु MBh. 12,1309. Pâṅkar. 2,6,25. 4,3,46. = वैश्वानर, चैतन्य Vedântas. (Allah.) No. 72. als f. = पृथिवी nach Nilak. MBh. 7,2417. 2420. — 4) f. *ein best. Metrum,* als die achte zu den sieben gewöhnlichen Formen betrachtet (Çat. Br. 8,3,2,6. 10,1,2,9); in der Prosodik *ein um zwei Silben defectives Metrum* Nid. 7,13. ṚV. Prât. 16,13. 26. 32. 37. 17,2. 4. 25. 32. — VS. 14,18. Ait. Br. 1,5. 6. 2,37. *mit 50 Silben* TBr. 1,6, 8,4. Çat. Br. 3,5,4,7. *mit zehn* Ait. Br. 3,50. TBr. 1,2,4,1. 8,2,1. VS. 9,33. Çat. Br. 2,3,4,18. Âçv. Çr. 2,18,3. Kauṣ. Up. 4,3,5. Pâṅkar. 3,3,2. Vgl. Ind. St. 2. — 5) f. Bez. *gewisser Backsteine* (40 an der Zahl) VS. 13,24. 14,13. TS. 5,2,2,5. 5,4,1. Çat. Br. 8,5,4,5. Kâty. Çr. 17, 7,13. — 6) m. N. eines Ekâha Pâṅkav. Br. 19,2,1. Kâty. Çr. 24,4,48. Lâṭy. 9,4,2. Maçaka 5,1 in Verz. d. B. H. No. 72. — 7) m. N. pr. eines Sohnes des Priyavrata von der Kâmjâ Harıv. 59 (काम्यापुत्राश्च mit der neueren Ausg. zu lesen). des Nara VP. 165. — Vgl. भद्र°.

2. विराज् (1. वि + राज्) m. *der König der Vögel* Bhâg. P. 8,21,26.

विराज (von 1. राज् mit वि) 1) adj. *prangend:* भमराकुलदामविराजभुवं Pâṅkar. 3,12,13. — 2) m. a) *eine best. Pflanze,* vulg. ब्रीव्हाली Ausw. 24. — b) N. pr. α) eines Prâgâpati Harıv. 936. = विराज् 3): इन्द्राग्नी वदनाभ्यां पशवो मलसंभवाः । षोषध्यो रोमसंभूता विराजस्त्वं नमो ऽस्तु ते ॥ Vâmana-P. 83 im ÇKDr. — β) eines Sohnes des Avikshit MBh. 1,3741. — Vgl. वैराज.

विराजन्, f. °राज्ञी so v. a. विराज् 1) TBr. 3,11,3,1.

विराजन n. nom. act. von 1. राज् mit वि zur Erklarung von 1. विराज् Nir. 7,13. Ind. St. 8,57, N. 2.

विराजिन् (von 1. राज् mit वि) adj. *prangend:* स्वेनातिविराजिना (°राजता ed. Bomb.) MBh. 6,3585.

विराज्य n. = विराज् 2) *Herrschaft, Regierung:* वरूथ्यो वै नाम राज्ञा विराज्ये पुत्रं निधायोषित्वा Maitrâjan. 1,2. — Vgl. वैराज्य.

विराट् m. 1) N. pr. eines Fürsten der Matsja Bhâg. 1,4,17. MBh. 1,2717. 3585. 6986. 2,1272. 4,16. 5,5100. Harıv. 8071. 8098. Kâm. Nîtis. 17,56. Spr. 2638. Bhâg. P. 1,10,9. विराटनगर P. 6,2,89, Schol. MBh. 1,481. 3,17436. 4,1. fgg. °पर्वन् heisst das 4te Buch des MBh. — 2) N. pr. einer Gegend Çârdar. im ÇKDr. Vaṅiu. Bṛh. S. 16,12. Verz. d. Oxf. H. 338,b,35. 339,a,43. b,44 (विराट् gedr.). — 3) ein Boin. Buddha's Vjutp. 2. — Vgl. वैराट, वैराट्या.

विराटक 1) m. *eine Art Edelstein* (*aus Virâṭa kommend*), = राजपट्ट Taik. 2,9,30. H. 1066. — 2) f. घी *eine Tochter Virâṭa's* MBh. 14,1857.

विराट्काम (1. विराज् + काम) f. *ein best. Metrum* ṚV. Prât. 17,12. Ind. St. 8,107.

विराट्क्षेत्र (1. विराज् + क्षेत्र) n. N. pr. eines *heiligen Gebietes* Verz. d. Oxf. H. 19,b,11.

विराट्पूर्वा (1. विराज् + पू°) f. *ein best. Metrum* ṚV. Prât. 16,46. Ind. St. 9,131. 143.

विराट्वामदेव्यम् n. N. eines Sâman Ind. St. 3,236,b.

विराट्स्थाना (1. विराज् + स्थान) f. *eine best. Form der* Trishṭubh

RV. Prâtr. 16,43. Ind. St. 8,57. 131. 140. 143.

विराड्राज् m. N. eines Ekâha Çâkkn. Ça. 14,30,2.

विराड्रूपा f. *eine best. Form der* Trishṭubh RV. Prâtr. 16,45. Ind. St. 8,103. 131. 140. 251.

विराड्वर्ण adj. (f. घा) *die Form der* Virâǵ *habend* Çâkkn. Ba. 22,7.

विराणिन् (von 1. रण् mit वि) m. *Elephant* Çabdam. im ÇKDa.

विरातक 1) m. *Terminalia Arjuna* (अर्जुन) W. u. A. Ausw. 11. — 2) n. *die Frucht von Semecarpus Anacardium L.* ebend.

विरात्र (2. वि + रात्र) *Ende der Nacht:* विरात्रे प्रत्यबुध्यत MBh. 13, 4333. 3,16886. 16890.

विराध (von 1. राध् mit वि) m. N. pr. eines Râkshasa Hariv. 2334. R. 1,1,40 (43 Gorr.). 3,18. 3,7,13. 46,5. 5,18,29. 26,23. 56,24. 6,92,29. Ragh. 12,26. Mahâvîrâ. 72,7. 9. °हन् Bein. Vishṇu's (Râma's) Paṇ. 4,3,100. विराध auch N. pr. eines Dânava Hariv. 197.

विराधन (wie oben) n. 1) *das Misslingen* AV. 11,10,27. Nir. 7,13. Ind. St. 8,37, N. 2. — 2) = पीडा *das Anthun eines Leides* Çabdar. im ÇKDa.

विराधय nom. ag. vom caus. von राध् mit वि gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. — Vgl. वैराधय.

विराधान n. angeblich = विराधन 2) Çabdar. im ÇKDa. विषाधान v. l.

विराम (von रम् mit वि) m. 1) *das Aufhören; Schluss, Ende* Taitt. 3, 2,29. Çâkkn. Gaṇ. 4,8. Jogan. 1,18. Hariv. 12108. चुम्बा° Varâh. Bṛh. S. 78,8. Uttarar. 49,3 (63,5). घधर्मस्य Bhâg. P. 10,50,10. सुधां विना न प्रयुर्विरामम् *ruhten nicht* Spr. 2385. घधीघ भो इति ब्रूयाद्विरामो ऽस्त्रीति वारमेत् M. 2,72. Mṛkkh. 44,14. इजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् Gît. 5,14. *Ende eines Wortes, — eines Satzes, Pause:* पूर्वेण चेद्विरामः AV. Prâtr. 2,38. 4,79. विरामो ऽवसानम् P. 1,4,110. Vop. 2, 43, Comm. ईदूदृविराम *auf* ई *und* ऊ *auslautend* AK. 3,6,4,2. तुरुविरामक *auf* तु *und* रु *auslautend* 2,13. त्रिविरामं (?) दृशवर्ण षण्मात्रमुवाच पिङ्गलः सूत्रम् Ind. St. 8,216. घविरामम् *ohne Unterlass* Gît. 11,9. — 2) *Ende eines* Pâda, *Cäsur innerhalb eines* Pâda Çat. 16. 38. 42. — 3) *das die Abwesenheit eines* य *anzeigende Zeichen unterhalb eines Consonanten am Ende eines Satzes.* — 4) *das Abstehen, Sichenthalten* Vop. 5,20. — 5) neben राम unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13,6992. Paṇ. 4,8,43. Çiva's Çiv.

विरामता (von विराम) f. *das Aufhören, Nachlassen:* पिबतो ऽच्युतपीयूषं न मे ऽत्रास्ति विरामता Paṇ. 4,8,4.

विराव (von 1. रु mit वि) m. 1) *Geschrei, Gebrüll, Getöse* AK. 1,1,6, 2. H. 1400. कञ्जरैर्मुक्तो विरावः MBh. 3, 11133. 7, 3190. सैन्यस्य 4731. वनौकसाम्। विरावः शुश्रुवे घोरः समुद्रस्येव मथ्यतः॥ 1, 3223. रात्तसेन मुक्तो विरावः R. 7, 16, 29. वयसां विरावैः Ragh. 2, 9. मरुद्विरावा adj. (सेना, देवा) 16, 31. — 2) N. pr. eines Rosses MBh. 3, 8621. — Vgl. विरव.

विरावण (vom caus. von 1. रु mit वि) adj. *Geschrei —, Gebrüll verursachend* R. 1,14,47 (43 Gorr.).

विरावित् (von 1. रु mit वि) 1) adj. a) *schreiend, brüllend, Laute von sich gebend, tosend:* शृगालिनी प्रत्यादित्यम् MBh. 3, 14274. कुम्भाव° (eine Kuh) R. Gorr. 1,55,7. मद्दाराव° (in der Hölle Gemarterte) Mân. P. 14,12. जननीं का पुत्रेति विरावणीम् Kathâs. 22, 178. शकुनौ मधुरविरावौ Varâh. Bṛh. S. 53,109. 86,53. सम° 72. गम्भीरविरावि: पयोवाहा: 32,17. Kathâs. 107,24. — b) *ertönend, erschallend:* (रथ्याः) गायनैश्च विरावि[illegible]: R. 1,19,12. Varâh. Bṛh. S. 56,5. — 2) m. N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2739. 4552.

विरावेकू oder °वाकू (वि + वीर + मकू, माकू) adj. *Männer in sich fassend, — aufnehmend:* Jama's Himmel RV. 1,35,6; vgl. den Hades πολυδέγμων.

विरिञ्च (wohl von रिच् mit वि) m. ein Name Brahman's Taitt. 1,1, 23. H. 211. Mân. K. 18. Hall. 1,6. Kathâs. 7,34. 46,218. Bhâg. P. 1, 11,6. 18,21. 3,10,4. 19,1. 4,2,6. 14,26. 5,15,11. 6,3,14. 17,32. 10,60, 44. 63,26. Verz. d. Oxf. H. 31,a,4. ein Name Vishṇu's Mân. MBh. 12, 13253. Çiva's Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. die folgenden Wörter und विरञ्च u. s. w.

विरिञ्चता f. nom. abstr. von विरिञ्च Brahman Bhâg. P. 4,24,29.

विरिञ्चन m. ein Name Brahman's H. 213.

विरिञ्चि m. desgl. AK. 1,1,6,12. H. 211. Mân. K. 18. MBh. 1,1638. 12,11231. Kathâs. 9,24. 73,170. Spr. 1087 (Conj.). Bhâg. P. 1,2,22. 3, 13,32. Verz. d. B. H. No. 459,a. Verz. d. Oxf. H. 81,a,1. 2. Sarvadarçanas. 91,10. ein Name Vishṇu's Mân. Hariv. 14114. Çiva's Çabdar. im ÇKDa. Çiv.

विरिञ्चियादगुरु m. N. pr. eines Schülers des Çaṁkarâkârja Verz. d. Oxf. H. 248,a,2.

विरिञ्च्य m. ein Name Brahman's Bhâg. P. 3,5,23 (विरिञ्च ed. Bomb.). 7,9,13 (विरञ्च्य ed. Bomb.). 24 (विरञ्च्य ed. Bomb., = ब्रह्मणो भोगः Comm.). 36. 8,5,39 (विरञ्च ed. Bomb.). 8,6,3 (विरञ्च ed. Bomb.). 7,31 (विरिञ्च ed. Bomb.). 9,4,52. 10,9,20. 51,41. 11,19,13 (= ब्रह्मलोक Comm.).

विरिषित s. u. रिष्.

विरीस s. नि°.

विरुकमत् (2. वि + रुक°) 1) adj. *leuchtend:* रथ RV. 6,49,5. पद्मा 10,22, 4. घोजस् 1,127,8. *der Blitz oder Donnerkeil* 10,138,4. — 2) m. *ein glänzender Schmuck oder eine glänzende Rüstung* RV. 1,85,3.

1. विरुज् (2. वि + रुज्) f. *ein heftiger Schmerz, eine grosse Krankheit* Bhâg. P. 6,19,26.

2. विरुज् (wie oben) adj. *gesund* Varâh. Bṛh. 21 (19), 19. Text und Comm. निरुज्.

1. विरुज (von 1. रुज् mit वि) adj. *Schmerzen verursachend* Pân. Gaṇ. 2,6.

2. विरुज (2. वि + रुजा) adj. *frei von Schmerz, gesund* MBh. 8,4593 (निरुज ed. Bomb.). Bäume Varâh. Bṛh. S. 46,28. *schmerzlos* so v. a. *keine Leiden verursachend:* पन्थाः MBh. 1,3675 (विरुज ed. Bomb.).

विरुद n. (nach einem Citat im ÇKDa. auch m.) *ein Panegyricus auf einen Fürsten in Prosa und Versen:* गद्यपद्यमयी राजस्तुतिर्विरुदमुच्यते Sâh. D. 570. Verz. d. Oxf. H. 133,a, N. 1. वीर° ebend. No. 244, Z. 11. वीरातरमाला° 12. fg. 275,b,2. विरुदावलि und °ली *ein ausführlicher Panegyricus* Prabodhak. 19,b,1. इति विरुदावली (so ist zu lesen) वदति सती Z. d. d. m. G. 23,444,10. Verz. d. Oxf. H. 117,a,15. 126,a, N. 1. als Titel eines best. *Panegyricus* des Raghudeva 133,a, No. 244.

विरुदमणिमाला f. Titel eines best. *Panegyricus* Sâh. D. 211,3.

विरुदावलि, °ली s. u. विरुद.

विरुद्ध 1) adj. s. u. 2. रुध् mit वि. — 2) m. pl. Bez. einer Gruppe von Göttern unter dem 10ten Manu VP. 268. Bhâg. P. 8, 13, 22. — 3) n. (sc. रूपक) *ein best. Tropus, wobei einem verglichenen Dinge die dem Dinge, womit jenes verglichen wird, zukommenden Thätigkeiten abgesprochen, dagegen anders, diesem nicht zukommende zugesprochen werden*, Kâvjâd. 2, 84. Beispiel Spr. 4330.

विरुद्धता (von विरुद्ध) f. *das im Widerspruch-Stehen* Sarvadarçanas. 166, 14. येन लोकद्वये ऽपि (wohl °द्वयेनापि zu lesen: *Conflict mit*) विरुद्धता न भवति (येन लोकद्वयं न विरुध्यते ed. Bomb.) Paṇḍat. 260, 3. लोकद्वयाविरुद्धता 261, 6.

विरुद्धत्व (wie eben) n. 1) *Feindseligkeit, feindselige Gesinnung:* राज्ञ° von *Seiten des Fürsten* Râdâ-Tan. 2, 71. — 2) *das im Widerspruch-Stehen* Sarvadarçanas. 43, 20. Kuslm. 38, 15.

विरुद्धमतिकृत् adj. *eine entgegengesetzte Vorstellung erweckend*; n. Bez. *einer best. Redefigur, einer Art von Antiphrasis:* विपरीतार्थधीर्येन्याद्विरुद्धमतिकृन्मतम् Pratâpar. 61, *a*, 8. 62, *a*, 7. Beispiel: धम्मिकारमणस्याङ्गिसेवा व्यर्था कथं भवेत् । राज्ञामकार्यमित्राणां विनाशं समुपेयुषाम् ॥ Hier können die Worte धम्मिकारमण, अकार्यमित्र und विनाश zu einer verkehrten Auffassung Veranlassung geben.

विरुद्धार्थदीपक n. *eine best. rhetorische Figur, bei der von einem und demselben Subjecte zwei einander widersprechende Thätigkeiten in Bezug auf ein und dasselbe Object* (aber nur scheinbar) *ausgesagt werden* Kâvjâd. 2, 110. Beispiel Spr. (II) 666.

विरुद्धाशन (विरुद्ध + अ°) n. *der Genuss ärztlich verbotener Speisen* Sâṅkhj. 1, 75, 19.

विरुधिर (2. वि + रुधिर) adj. *blutlos* MBh. 3, 8746. 6, 4079.

विरूक्ष (2. वि + रूक्ष) adj. (f. आ) *rauh:* °पाण्डुरनखो वाणो Vârâh. Bṛh. S. 68, 3. von Reden: °वचनप्राय Bhâr. Nîtiç. 19, 30. अविरूक्षा वाणी R. 5, 23, 14.

विरूक्षण (von विरूक्षय्) 1) adj. *trocken* —, *rauh machend, adstringirend* Suçr. 1, 33, 1. 198, 1. 204, 15. Verz. d. Oxf. H. 304, *b*, 19. — 2) n. *a) das trocken-, rauh-Machen, Adstringiren* Suçr. 1, 151, 18. — *b) hartes Anfahren*, = नारुण Halâj. 1, 149.

विरूक्षय् denom. von विरूक्ष; s. विरूक्षण.

विरूढ s. u. 1. रुह् mit वि.

विरूढक (von विरूढ) 1) m. n. *angekeimte Körner* H. 1183. Sâmân. in Nigh. Pr. Suçr. 1, 233, 4. 235, 9. Vâgbh. 7, 29. 8, 41. — 2) m. N. pr. eines Lokapâla Vjutp. 83. eines Fürsten der Kumbhâṇḍa Lalit. ed. Calc. 266, 13. 378, 15. Lot. de la b. l. 3. 240. Vjutp. 89. eines gegen die Çâkja feindselig auftretenden Fürsten, eines Sohnes des Prasenagît Schiefner, Lebensb. 270 (40). Burn. Intr. 167. Hiouen-thsang I, 141. 305. Wassiljew 11. eines Sohnes des Ikshvâku Vjutp. 92. Schiefner, Lebensb. 233 (3).

1. विरूप (2. वि + रूप) n. *Missgestalt, Hässlichkeit:* °धृक् Harîv. 16006. Kathâs. 52, 75.

2. विरूप (wie eben) 1) adj. (f. आ) *a) verschiedenfarbig, verschieden gestaltet, verschiedenartig; mannichfaltig; verändert, verwandelt* RV. 1, 70, 7. Nacht und Morgen 113, 3. 5, 1, 4. 6, 49, 3. Agni 3, 1, 13. कृतानि 38, 9. समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः 7, 103, 6. 10, 169, 2. VS. 16, 23. 30, 22. सर्पाः TS. 5, 6, 8, 1. TBr. 3, 1, 8, 10. Pâraṇ. Br. 12, 4, 18. 14, 9, 8. Kauç. 101. पद्विरूपाचीर् मर्त्येषु RV. 10, 95, 16. ते विरूपा भवत विरूपा भवतेति भवत्त घापयन् *verwandelt euch* Ait. Br. 5, 1. die Âṅgiras Nir. 11, 17. RV. 3, 53, 7. 10, 62, 5. 6; vgl. u. 2) *c*). प्रकृति° *verschieden von* (Gegens. सरूप) Siddh. Kaus. 8. प्रत्यय *ein der Form nach verschiedenes Suffix* P. 3, 1, 7, Kâr., Schol. एकार्थानां विरूपाणाम् *gleiche Bedeutung aber verschiedene Form habend* 1, 2, 64, Vârtt. 16 in der ed. Calc. — *b) missgestaltet, unförmlich, hässlich* (Gegens. सुरूप, रूपवत्): पशु Kâṭhân. Up. 2, 15, 3. Personen MBh. 1, 4390. 3, 2749. R. 1, 59, 19. R. Gorr. 1, 6, 18. 3, 1, 21. 23, 16. 5, 10, 19. Spr. 1561. 1647. 4972. Varâh. Bṛh. S. 16, 23. प्रायो विरूपासु भवन्ति दोषाः 70, 22. Kathâs. 20, 119. 34, 96. 40, 26. 55, 46. 56, 248. 87, 33. 123, 162. विन्देद्विरूपा *eine Hässliche finde einen Mann* Bhâg. P. 6, 19, 26. Mârk. P. 34, 46. Çiva MBh. 12, 10260. कीटस्य तनुः 8, 1966. देहः Harîv. 10863. Varâh. Bṛh. S. 69, 39 (यति°). घाकृति Kathâs. 12, 69. रूप MBh. 13, 2166. R. 3, 75, 21. °रूप adj. MBh. 1, 5931. R. 3, 62, 38. 5, 14, 68. Mârk. P. 69, 30. पक्षौ *Flügel* R. 4, 60, 5. विरूपाद्भुतदर्शन Varâh. Bṛh. S. 46, 94. घतिविरूपफल (कस्तिन्) 67, 10. °तार् 11, 27. रेखा *eine hässlich aussehende Linie* 53, 103. — *c) um Eins* (रूप) *vermindert, minus Eins* Varâh. Bṛh. 7, 3. — 2) m. N. pr. *a)* eines Asura MBh. 2, 266. Harîv. 12697. — *b)* eines Sohnes des Dämons Parivarta Mârk. P. 51, 62. — *c)* eines Âṅgirasa RV. 1, 45, 3. 8, 64, 6. Liedverfasser von 8, 43. fg. 64. MBh. 13, 4148. Vater des Pṛshadaçva Pâravâdas. in Verz. d. B. H. 36, 16. fg. und Sohn des Ambarîsha VP. 359. Bhâg. P. 9, 6, 1. — *d)* eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10, 90, 34. — *e)* eines Fürsten Wilson, Sel. Works 2, 20. — *f)* zweier buddhistischer Lehrer Târân. 146. 162. 170. 192. 205. — 3) f. आ *a)* Bez. zweier Pflanzen: = घतिविषा und दुरालभा Râǵân. im ÇKDr. — *b)* N. pr. einer Tantra-Gottheit Kâlâṇ. 4, 30. — विरूपाय Kîn. 73 bei Wilson fehlerhaft für प्रकोपाय; vgl. Spr. (II) 1287. Vgl. वैरूप und वैरूप्य.

विरूपक (von 2. विरूप) 1) adj. (f. विरूपिका) *missgestaltet, hässlich* Vet. in LA. (III) 19, 3. कन्या Upâsanâtattva im ÇKDr. — 2) m. *a) der Hässliche*, als Bein. eines Mannes Daçak. 67, 13. 80, 23. — *b)* N. pr. eines Asura MBh. 12, 8268.

विरूपकरण (2. वि° + 2. करण) 1) adj. (f. ई) *verunstaltend:* द्वारा °करणी नृणाम् Bhâg. P. 9, 18, 36. — 2) n. *a) das Verunstalten:* einer Person R. 1, 3, 19 (13 Gorr.). R. Gorr. 1, 4, 50. 5, 56, 136. Bhâg. P. 10, 60, 56. — *b) das Zufügen eines Leides:* सर्वो ऽपि ज्ञेयो विरूपकरणे समर्थो भवति नोपकरणे Paṇḍat. 86, 3. 213, 23.

विरूपण (von विरूपय्) n. *das Verunstalten* R. 3, 24 in der Unterschr.

विरूपता (von 2. विरूप) f. 1) *Verschiedenartigkeit* Sarvadarçanas. 69, 1. — 2) *Missgestalt, Hässlichkeit* MBh. 1, 4265. मुखं तस्या विरूपतां यातम् R. 3, 61, 14.

विरूपय् (wie eben) *entstellen, verunstalten:* तं व्यरूपयत् Bhâg. P. 10, 54, 25. विरूपयितुम् Hit. 65, 1. विरूपित MBh. 13, 1481. R. 1, 1, 44 (48 Gorr.). 3, 24, 26. 36, 26. 40, 18. Nalod. 3, 18. बालधि° (धुर्य) M. 4, 67.

विरूपशक्ति m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 46, 66.

विरूपशर्मन् m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 40, 26. fgg.

विरूपाक्ष (2. विरूप + अक्ष *Auge*) 1) adj. (f. ई) *unförmliche Augen habend* Pân. Gaṇ. 3,6. R. 3,23,16. 5,12,35. Kumâras. 5,72. °तर् R. 6,76,43. — 2) m. N. pr. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. pl. *die Nachkommen des* Vir. Saṁh. K. 184,*a*,2. *a*) ein best. göttliches Wesen Çiṁkn. Gaṇ. 4, 9. 6,6. Bein. Çiva's AK. 1,1,6,28. Trik. 1,1,47. H. 197. Halâj. 1,13. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 84 (vgl. 23. 58). MBh. 1,569. 7970. 3,13801. 12,7531. 13,6727. 14,200. Hariv. 14842. 15419. R. 7,23,4,45. Kumâras. 6,21. Spr. 1228. Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 36. — *b*) ein Rudra Gaṇiṁ. in Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,36. MBh. 12, 7585. — *c*) ein Wesen im Gefolge Çiva's Hariv. 14849. 15422. — *d*) ein Jaksha Kathâs. 34,67. Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 36. fg. — *e*) ein Dânava MBh. 1,2533. 2658. Hariv. 12939. 14285. Bhâg. P. 6,6,30. — *f*) ein Râkshasa MBh. 3, 15372. 7,7905. 12,6356. R. 3,7,6. 5,12,12. 41,2. 29. 80,3. 83,1. 6,12, 20. 75,30. 76,43. 7,5,35. — *g*) ein Schlangenfürst Lalit. ed. Calc. 266, 19. 378,5. Burn. Intr. 167. Lot. de la b. l. 3. ein Lokapâla Vâyup. 83. — *h*) Verfasser von VS. 12, 30. — *i*) Lehrer der Hathavidjâ Verz. d. B. H. No. 647. (Verz. d. Oxf. H. 233,*b*, No. 566. Wilson, Sel. Works 1,214. Hall 16). — *k*) der Weltelephant des Ostens R. 1,41,13. fg. (42, 13 Gorr.). R. Gorr. 1,43,7. — 3) f. ई N. pr. der Schutzgottheit im Geschlecht der Devala Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,20.

विरूपाक्ष (2. विरूप + अक्ष) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 13,5667.

विरूपिन् (von 1. विरूप) m. *ein best. Thier*, = शाल्क Râjân. im ÇKDa.

विरेक (von रिच् mit वि) m. 1) *das Purgiren, Laxiren* Çârṅ. im ÇKDa. Suçr. 1,110,15. 193,14. 2,205,11. Çiç. Saṁh. 3,4,10. Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,22. 311,*b*,20. 337,*b*,24. संजात° und दृश° adjj. Kull. zu M. 5,144. — 2) *Laxir* Suçr. 1,128,16. 2,61,3. — Vgl. शिरो°.

विरेचक (vom caus. von रिच् mit वि) adj. *laxirend* ÇKDa. nach dem Vaidjaka.

विरेचन (wie oben) 1) adj. *öffnend:* मिरामुख° Suçr. 2,140,17. — 2) m. *ein best. Baum*, = पीलु Râjân. im ÇKDa. — 3) n. Dhûrtân. 29, 4 (als Bed. von रिच्). *das Laxiren* Çârṅ. im ÇKDa. Suçr. 1,99,17. 2,22, 2. 205,3. Verz. d. Cambr. H. 64,12. fg. Verz. d. B. H. No. 933. 935 (S. 284, XXIII). 938. 963. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 18. 304, *b*, 25. 307, *a*, 27. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 22. °द्रव्य *Laxirmittel* Suçr. 1,135,18. 152,3. 160,7. 14. — Vgl. मूल°.

विरेच्य (wie oben) adj. *zu laxiren* Suçr. 1,60,17. दुर्विरेच्य 2,435,19.

विरेफस् (2. वि + रेफस्) adj. *fehlerlos, tadellos* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,139.

विरेफ m. *Fluss* Dhanañdjaja im ÇKDa.

विरोक (von 1. रुच् mit वि) 1) m. *das Erglänzen, Leuchten:* उषसः RV. 3,5,2. *Lichtstrahl* H. 100. Halâj. 1,39. — 2) m. n. *Höhlung, Loch* Trik. 1,2,1. नासा° *Nasenloch* Çiç. 5,54. — Vgl. 1. रोक.

विरोकिन् (von विरोक) adj. *leuchtend:* (मरुतः) विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः RV. 5,55,2. 10,78,2.

विरोग (2. वि + रोग) adj. *gesund* Hariv. 7672.

विरोचन (von 1. रुच् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. *erleuchtend, erhellend:* सूर्यात्मर्वलोकविरोचनात् MBh. 12,13338. — 2) m. *a*) *die Sonne, der Sonnengott* AK. 1,1,2,31. 3,4,28,111. H. 97. an. 4,139. Med. n. 207. Hân. 11. Halâj. 1,36. MBh. 3,193. 5,4930. Râjân-Tar. 6,107. als Beiw. Vishṇu's zwischen रवि und सूर्य MBh. 13,7043. ज्ञपस्वामि° wohl *ein Heiligthum des Sonnengottes* Râjân-Tar. 5,448. — *b*) *der Mond* AK. 3,4,28,111. H. an. Med. MBh. 9, 2625. — *c*) *Feuer* AK. H. 1097. H. an. Med. — *d*) Bez. verschiedener Pflanzen: = रोहितक, श्योनाकप्रभेद und घृतकारञ्ज Râjân. im ÇKDa. — *e*) N. pr. eines Asura, eines Sohnes des Prahrâda (Prahlâda), Vaters des Bali und der Manthará (Dirghagihvâ) Trik. 2,8,21 (°सुत). H. an. Med. AV. 5,10,22. TBr. 1,3,9,1. Kaṁs. Up. 8,7,2. MBh. 1,2527. fg. 2,2315. 3,1135. fgg. 12,3660. 6146. 8154. 8262. 12943. Hariv. 189. 379. 2280. 2432. 12461. 13013. 13019. 13182. 13214. 13480. fgg. R. 1,27,19 (28,18 Gorr.). 6,36, 104. Kap. 4,17. Kathâs. 47,17. VP. 167. Bhâg. P. 5,24,18. 6,18,15. 8, 10,20. 13,12. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,16. — 3) f. आ N. pr. *a*) einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2648. — *b*) der Gattin Tvashṭar's und Mutter Viraǵa's Bhâg. P. 5,15,13. — Vgl. दुर्विरोचन, वैरोचन, वैरोचनि.

विरोचिष्णु (von 1. रुच् mit वि) adj. *glänzend, leuchtend:* ज्योतिस् M. 1,77.

विरोढृ (von 2. रुध् mit वि) nom. ag. *Kämpfer:* राज्ञाविरोढा *ein König, der nicht kämpft*, Spr. 1270, v. l.; vgl. noch MBh. 2,1958.

विरोद्धव्य (wie oben) adj. *mit dem man sich in Streit einlassen muss, — darf:* बलवो न विरोद्धव्या दुर्बया हि महाजना: Spr. 1954. impers.: विरोद्धव्यं न चास्मत्पक्ष्येण सुतशर्मणा Kathâs. 45,164.

विरोध (wie oben) m. 1) *feindseliges Auftreten, Feindseligkeit, Zwist, Hader, Streit* AK. 1,1,2,25. 3,4,26,151. H. 730. उत्तरोत्तरवाक्यं तु विरोध इति मंज्ञित: Bhar. Nâṭjaç. 19,92. 93. धनुरोधविरोधाभ्याम् MBh. 12,9930. विरोधाय *zum Streite* 1,2502. 4,1585. Hariv. 3271. Spr. 5185. Varâh. Bṛh. S. 8,31 (pl.). को विरोध: *wozu nützt das Streiten* Prab. 22,19. यत्तर् ° 86,19 (Gegens. साक्षित्व). पूर्व° Pañkat. 148,10. विरोधं नाधिगच्छति Spr. 4354. विधात्त Uttarar. 107,17 (146,1). °गमन Daçar. 1,42. नैसर्गिको ऽत्युत्समुत्ते विरोध: Rag. 6,46. देवानां दैत्यानां च Hariv. 238. यादवानाम् *mit* 3266. विरोधो वा स्नेहो वापोह् देहिनाम् Kathâs. 23,30. कुरुपाण्डवानां तीव्रो विरोध: Spr. (II) 1406. Varâh. Bṛh. S. 47, 13. Bhâg. P. 4,13,44. ततस्तयोर्मिथस्तत्र विरोध: समजायत MBh. 1, 3285. तेषां विरोधो ऽन्योऽन्यमुखयो Râjân-Tar. 4,687. विरोधं ज्ञपयामास तयो: R. 1,75,15. विरोधे तु मरुत्पुद्गमभवत् 16(77,19 Gorr.). विरोध: स्याद्यथा ताभ्यामन्योऽन्येन MBh. 1,7699. इष्टमित्रै: Varâh. Bṛh. S. 89,11. विरोधे देवदानवै: *zwischen den Göttern und den* Dânava MBh. 9,2949. भ्रात्रा ज्येष्ठेन — विरोधं गन्तुमर्कति Hariv. 7385. न विरोधो बलवता तमो रावण तेन ते R. 1,1,49 (53 Gorr.). Spr. 1950. मित्रै: सह विरोधे च प्राप्ते MBh. 3,1046. 13080. Mṛkkh. 98,14. कृत्वा विरोधं विषयस्थितानाम् (राजा) Spr. (II) 1760. विरोधं कुरुते चान्या दंपत्यो: *verwickelt sie in Streit* Mâlav. P. 51,29. Spr. (II) 1760 (die Uebersetzung demnach zu verbessern). Pañkat. 91,8. अकारणविरोधे च वयं तावत्र कुर्मके *einen Streit beginnen* Kathâs. 45,166. अन्योऽन्यं न कर्तव्यो विरोध: 50,114. यदुभि: Hariv. 8024. R. 6,11,14. पतिभि: सह Hariv. 15648. Râjân-Tar. 6,126. Pañkat. 162,14. ब्राह्मण° *Streit mit* MBh. 13,2108. 2162. Rag. 10,13. Spr. (II) 316. 2224. (I) 2147. Kathâs. 45,147. 49,66. Bhâg. P. 7, 5,47. पितापुत्र° *zwischen Vater und Sohn* Jâtân. 2,239. MBh. 13,2878.

Vaṇiṃ. Bṛn. S. 3,27. 5,21. 9,22. 11,10. 17,4. 53,11. परस्पर° Kathās. 15,140. सु° *freundliches Verhältniss:* क्रियतामविरोधस्तु राघवेण R. 6, 95,14. ब्रह्मक्षत्राविरोधेन पूजां च प्राप्नुयामकम् MBh. 13,1925. देवासुराणां सर्वेषामविरोधः Harīv. 8752. *feindliche Berührung* unbelebter Gegenstände: संप्रविरोधे wenn *die Strahlen* (zweier Planeten) *in feindliche Berührung mit einander kommen* Vaṇiṃ. Bṛn. S. 17,5. — 2) *(logischer) Widerstreit, Widerspruch. Unvereinbarkeit;* = विप्रतिपत्ति, व्याघात, असद्भाव Comm. zu Nyāyas. 1,1,23. सर्वद्रव्य° Kīrtiç. 1,4,16.5,5.4,3,9. 25,11,10. Kāṇ. 10,1,1. Kap. 1,36. 114. Jogas. 2,15. AK. 3,6,a,46. स्मृत्योः Jiṭ. 2,21. दैवं हि मानुषोपेतं भृशं सिध्यति — परस्पराविरोधाद्धि सिद्धिरस्ति न चेतरा: MBh. 5,7471. विसर्जयति यत्रेक्षे (Vogel) एकश्च प्रतिषेधति । स विरोधो ऽस्तु नो यातु: Vaṇiṃ. Bṛn. S. 86,54. चित्तचेष्टा° 104, 1. एकस्यैकस्य फलयोर्विरोधे Bṛn. 8,23. इति सति विरोधे वर्तमाने समाने Spr. 1443. Çāṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 30. 39. तर्क: Madhus. in Ind. St. 1,19,24. 26. 20,2. 3. स्ववचन° Śiç. D. 6,19. 718. तुल्यबलयो: 738. P. 1,4,2, Schol. Kull. zu M. 11,82. नहि विरोध उभयम् Bhāg. P. 6,9, 38. Vedântas. (Allah.) No. 90. Kuṭṭan. 17,2. 30,1. लोक° *das im Widerspruch-Stehen mit der Ansicht des Volkes* R. 2,38,29. Nīlak. 164. Siddh. K. zu P. 6,1,130. 7,2,10. Sarvadarçanas. 9,15. fg. 14,20. 16,1. 22,15. 42,15. 45,1. 61,20. 122,7. सु° (s. auch bes.) 89,2. विरोध unter den Arthâlaṃkâra Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,3. — 3) *Conflict mit* so v. a. *Beeinträchtigung:* प्राणविरोधेन *auf Kosten von* MBh. 3,16960. सु° *Abwesenheit eines Conflictes mit* so v. a. *Nichtbeeinträchtigung:* पितृद्रव्याविरोधेन *ohne Nachtheil für* Jiṭ. 2,118. 175. सविरोधेन धर्मस्य MBh. 1, 3270. Mārk. P. 27,4.109,8. धर्माविरोधेन 66,4. शरीरस्याविरोधेन MBh. 3,16959. स्वार्थावि° Spr. (II) 1460. 1684. Kām. Nītis. 14,39. Bhāg. P. 3, 7,32. 22,33. — 4) *das in Noth-Gerathen* (व्यसनप्राप्ति) Śiç. D. 350. *Widerwärtigkeit* Weber, Rāmat. Up. 336 (pl.). — 5) *Verkehrtheit:* कुर्वन्नाविधिना कर्म विरोधफलमश्नुते Kathās. 64,14. — 6) fehlerhaft für निरोध MBh. 14,373 (ed. Bomb. नि°). R. 1,76 in der Unterschr. चित्तवृत्ति° Ind. St. 1,22,19. fg.

विरोधक (vom caus. von 2. रुध् mit वि) 1) adj. *im Widerspruch stehend —, unvereinbar mit:* गुरुस्त्र्याश्रमिणास्तच्च यच्चकर्म विरोधकम् MBh. 12,353. धर्मे लोकवेदविरोधके 1,7257. — 2) subst. *Hemmniss:* कामक्रोध° adj. MBh. 14,765.

विरोधकृत् 1) adj. *Streit verursachend.* — 2) m. Bez. *des 48ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vaṇiṃ. Bṛn. S. 332,*a*,4; vgl. रोधकृत्.

विरोधक्रिया f. *Hader, Streit* Rāgat. 16,45.

विरोधन (vom caus. von 1. रुध् mit वि) 1) adj. *bekämpfend:* सर्वराज्ञ° MBh. 12,12960. — 2) n. = पर्यवस्था AK. 3,3,21. als Erklärung von रोदसी Nir. 6,1 (*das Zurückhalten* nach dem Comm.). *a) das Hadern, Streiten:* अन्योऽन्योपमर्दव्यवच्छेदरूपं विरोधनम् Prasannar. 42,*a*,9. Daçar. 1,43. मातापित्रो: *mit den Eltern* Kathās. 56,176. भृत्यानां चाविरोधनम् Kām. Nītis. 13,55. — *b) das Beeinträchtigen:* धर्मविरोधनात् (°विरोधवान् ed. Bomb.) R. 2,36,29. — *c)* in der Dramatik *das Innewerden der Gefährdung des Vorhabens* Śiç. D. 387.

विरोधमात् adj. *im Widerspruch stehend, entgegengesetzt;* mit instr. Śiç. D. 242.

विरोधवत् (von विरोध) adj. am Ende eines comp. *verbunden mit einer Beeinträchtigung von:* षड्दृष्टस्य संत्याग: — धर्मविरोधवान् R. 2, 36,29 nach der Lesart der ed. Bomb. सु° *Nichts beeinträchtigend* Mahān. P. 34,14.

विरोधाचरण (विरोध + आ°) n. *eine feindselige Handlung* AK. 3, 4,88,121.

विरोधाभास (विरोध + आ°) m. *ein scheinbarer Widerspruch* Prasannar. 89,*a*,6.

विरोधिता (von विरोधिन्) f. 1) *Feindschaft, Streit, Hader* Kathās. 50, 115. Śiç. D. 17,10. मतिमद्भि: सह Spr. (II) 2414. परापरपक्ष° Prasannar. 87, 15. — 2) *Widerspänstigkeit:* eines Pferdes Vaṇiṃ. Bṛn. S. 93,5. — 3) *das im-Widerspruch-Stehen, Entgegengesetztsein* Śiç. D. 242.

विरोधित्व (wie oben) n. *das Aufheben, Entfernen:* सातात्कारिभावे (obj.) सातात्कारिविशेषदर्शनस्यैव (subj.) विरोधित्वात् Comm. zu Kap. 1,80.

विरोधिन् (von 2. रुध् mit वि) 1) adj. *a) versperrend, hemmend, störend:* दस्यून्मार्गविरोधिन: Rāga-Tar. 8,827. स्वाध्यायस्य विरोधिन: M. 4,17. स्वाध्याय° Gobh. 3,5,17 Jiṭ. 1,129. प्रसव° Kull. zu M. 9,167. स्वर्गादिप्राप्ति° zu 2,161. इक् दु:खाय मत्सूति: परत्र च विरोधिनी Mārk. P. 121,33. क्षम° so v. a. *vertreibend* Çiç. 69, v. l.; vgl. Śiç. D. 180,1. सु° *nicht störend* so v. a. *wohlthuend* Spr. (II) 471, v. l. कर्म पूर्वकार्याविरोधि *nicht störend, nicht beeinträchtigend* 1883. — *b) feindlich, feindselig;* m. *Gegner, Feind* Hem. 2,300. MBh. 7,8263. °योधा: Rāga-Tar. 8,1761. 4482. P. 2,4,12, Vârtt. 2. Kumāras. 5,17. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,25, Çl. 7. अस्माकम् Kathās. 34, 227. Rāga-Tar. 4,86. परस्पर° Harīv. 11903. Spr. 4510. Prasannar. 86,17. सर्वप्राणि° Harīv. 10240. सर्वभूत° R. 6,9,14. सर्वभूताविरोधिन् *mit keinem Geschöpfe in Feindschaft lebend* Spr. 4094. मल्लिपैरविरोधिभि: Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,1. पापकर्म° *Feind von Missethaten* 15,*a*,6. सौगतानामार्यावविरोधिन: 254,*a*,6. ज्ञान° Vedântas. (Allah.) No. 21. Çāṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 96. कर्म° Sāy. zu ṚV. 6,33,3. देशकाल° so v. a. *keine Rücksicht nehmend auf Zeit und Ort* Spr. 3155. — *c) im Widerspruch stehend, entgegengesetzt* MBh. 3,10572. Kāṇ. 1,1,14. 3,1,9. 11. 9,2,1. Kuṭṭan. 49,13. Bhāg. P. 4,4,20. H. 16. धर्मश्चार्थश्च कामश्च परस्परविरोधिन: MBh. 3,17386. Rāga-Tar. 4,47. विद्या° Nīlak. 10. Sarvadarçanas. 47,13. 105,22. कर्म लोकहृदयविरोधि Spr. 4730. तर्केण वेदशास्त्राविरोधिना M. 12,106. — 2) m. Bez. *des 25ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vaṇiṃ. Bṛn. S. 8,37. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*,2 v. u. — 3) f. विरोधिनी N. einer bösen Genie, einer Tochter des Duḥsaha, Mārk. P. 51,5. 20. 69. 93. — Vgl. कफ°, वन°.

विरोधोक्ति (विरोध + उ°) m. *Widerspruch,* = विप्रलाप AK. 1,1,8, 17. P. 1,3,50, Schol. ननु च स्याद्विरोधोक्तौ AK. 3,5,14. H. 1542.

विरोधोपमा (विरोध + उ°) f. *eine auf Gegensätzen beruhende Vergleichung:* शतपत्रं दिवा शशी च्छन्नस्तदाननमिति त्रयम् । परस्पराविरोधीति सा विरोधोपमा मता ॥ Kāvyâd. 2,33.

विरोध्य (vom caus. von 2. रुध् mit वि) adj. zu *entzweien* MBh. 12,3056.

विरोपण (vom caus. von 1. रुह् mit वि) 1) adj. *vernarben —, heilen machend:* व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां तैलम् Çiç. 89. — 2) n. *das Pflanzen:* संक्रामण° *das Verpflanzen* Vaṇiṃ. Bṛn. S. 35,7.

विरोष (2. वि + रोष) adj. 1) *zornentbrannt* MBh. 3, 15782. सरोष ed. Bomb. — 2) *frei von Zorn* MBh. 3, 11894.

विरोह् (von 1. रुह् mit वि) m. 1) *das Ausschlagen* (von Pflanzen): पुष्प° Varāh. Bṛh. S. 46, 28. केद° Buic. P. 6, 9, 8. — 2) *Pflanzstätte* (in übertr. Bed.): केदं कलेवरमशेषरुजां विरोहः Buic. P. 7, 9, 25.

विरोहण (von 1. रुह् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. *vernarben* —, *heilen machend*: व्रण° Cik. 89, v. l. für विरोपण. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2150. — 3) *das Ausschlagen* (von Pflanzen) Nir. 6, 3. छिन्नस्य MBh. 12, 6337. पुष्प° Varāh. Bṛh. S. 46, 38. des Jūpa Kāty. Ça. 25, 9, 15. Çāṅkh. Gṛhj. 5, 8.

विरोहित (2. वि + रो°) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. — Vgl. वैरोहित und वैरोहित्य.

विरोहिन् (von 1. रुह् mit वि) adj. *ausschlagend, treibend*: शकाल° Sūçr. 1, 224, 21.

विल in der Verbindung अश्व °योनय: Kumārās. 6, 39 *equi e Vila oriundi* Stenzler. Nach Med. ist विल (s. u. बिल) ein N. des Pferdes Ukkaiḥçravas, welche Bedeutung hier passen würde.

विलत (2. वि + लत) adj. (f. आ) 1) *kein bestimmtes Ziel* (vor Augen) *habend*: विलतो वीतते दिश: Viçva. 7, 12. °दृष्टि Spr. 1749, v. l. — 2) = विस्मयान्वित AK. 3, 1, 26. = व्रीतापन्न H. 433. *beschämt, verlegen* Kathās. 36, 35. 39, 15 (स वि° zu lesen). 45, 248 (स वि° zu lesen). 46, 73. 72, 352. 108, 155. 124, 235. Pañcat. 147, 4. °मनस् 29, 15 (= 25, 22 ed. orn. विललानन ed. Bomb. 30, 5). व्रीडा° Cik. 132. दर्पभङ्ग° Kathās. 44, 60. सविलतम् adv. Pañcat. 209, 13. सविलतस्मितम् adv. Mṛicch. 90, 17. Pañcat. 19, 16. विलतस्मितम् (!) 215, 25.

विलतण (2. वि + ल°) adj. (f. आ) 1) *verschieden dem Charakter, dem Wesen nach, ungleich, unterschieden* Sūçr. 1, 61, 4. Bhāshāp. 113. Nilak. 160. Sāh. D. 24, 12. Sarvadarçanas. 13, 2. 69, 12. 76, 14. Kusum. 16, 10. रूर्म्ये धनिनां विलतणगृहम् Schol. zu Pāṇ. 7, 3. घत्यन्त° Manus. in Ind. St. 1, 16, 11. स्थानत्रय° Buic. P. 6, 16, 61. mit abl.: सर्वस्मादन्यो विलतण: Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9, 132. घतम् Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 16. 156. Sāh. D. 24, 10. Verz. d. Oxf. H. 231, *a*, 28. परस्पर° Siddhānt. 36. Sarvadarçanas. 142, 12. fg. भाषा पैशाची भाषात्रयविलतणाम् Kathās. 6, 4. 19, 106. Kumārila bei Müller, SL. 510. Çāṅk. zu Kaṭh. Up. S. 8. Manus. in Ind. St. 1, 14, 9. H. 1071. Sāj. zu ṚV. 3, 53, 23. 8, 14, 13. Sarvadarçanas. 81, 2. 3. 86, 16. 169, 19. Schol. zu Kap. 1, 23. 62. Kull. zu M. 5, 43. Hall in der Einl. zu Siddhāñj. S. 5. Nilak. 32. 166. त्रैलोकविलतणप्रकृति *anders als sie in den drei Welten vorkommt* Sāh. D. 55, 2. ग्रहिलतणो शिर: Rāja-Tar. 3, 337. *unter sich verschieden* so v. a. *mannichfach* Verz. d. Oxf. H. 188, *b*, 26. Buic. P. 5, 6, 6. 10, 46, 31. 11, 10, 3. — 2) *nicht näher zu charakterisiren, — zu bestimmen*: विलतणात्मन् Buic. P. 10, 70, 28. क्वापि als Erklärung von कापि Schol. zu Kāvjād. 2, 263. n. = घास्था केतुशून्या AK. 3, 3, 2. H. 1497. — घविलतण Kām. Nītis. 8, 14 fehlerhaft für घरिलतण, wie der Comm. liest. Vgl. वैलतण.

विलतणता f. nom. abstr. zu विलतण 1) Sarvadarçanas. 62, 15. विलतणत्व n. desgl. Bādar. 2, 1, 4.

विलतीकर् (विलत + कर्) *beschämen, verlegen machen*: °चकार Kathās. 66, 33. °कृत 6, 126. गत्या विलतीकृतरेसकासा Çaṅk. 21.

विलत्य adj. 1) = विलत 1): °दृष्टि (v. l. विलत°) Spr. 1749. — 2) = विलत 2) Mālav. P. 69, 62.

विलङ्घन (von लङ्घ् mit वि) 1) m. *a*) *das Hinüberspringen über*: सागरस्य MBh. 3, 16254. — *b*) *das Anspringen, Anprallen* Kir. 5, 29. — *c*) *das Jmd-zu-nahe-Treten, Beleidigung* Kir. 13, 55. महिलङ्घनात् *wegen der mir angethanen Beleidigung* Kathās. 34, 41. — *d*) *das Fasten*; sg. und pl. Sūçr. 2, 319, 1. 374, 3. 440, 19. — 2) f. घा *das Hinüberkommen über Etwas* so v. a. *Ueberwinden*: शक्तो न को ऽपि भवितव्यविलङ्घनायाम् Rāja-Tar. 8, 2281.

विलङ्घिन् (wie oben) adj. 1) *überspringend, überschreitend* (in übertr. Bed.): तपसा स्वमार्गविलङ्घिना Rāgān. 15, 33. प्रतीति: शब्दन्यायविलङ्घिनी Kāvjād. 1, 75. — 2) *anspringend, anstossend an*: नभोविलङ्घिभि: मेनारत्नैराशिभि: Kathās. 14, 13.

विलङ्घ्य (wie oben) adj. *mit dem oder womit man fertig werden kann, überwindbar*: घविलङ्घ्यया - ईर्ष्यया Kathās. 42, 161. Davon °ता f. nom. abstr.: दुष्प्रेक्ष्याणां भवत्येव नियमाद्राजभास्वताम् । भाग्यात्तेजस्विदिने ग्रननेत्रविलङ्घ्यता ॥ so v. a. *die Augen der Leute können den Anblick eines Fürsten und der Sonne ertragen* Rāja-Tar. 8, 2288.

विलज्ज (2. वि + लज्जा) adj. *frei von Scham, schamlos* Buic. P. 7, 4, 40. 11, 2, 39.

विलपन (von 1. लप् mit वि) n. *das Jammern, Wehklagen* Uttarār. 56, 17 (73, 10). Hit. 65, 20.

विलब्धि (von लभ् mit वि) f. *das Wegnehmen* Kṛshṇ. 7, 24.

विलम्ब (von 1. लम्ब् mit वि) 1) adj. *herabhängend*: °बाहु R. 5, 42, 20. — 2) m. *a*) *das Säumen, Zögern, Verzögerung*: विलम्बो मे ऽभवत्तत्र तेन न त्वरयागत: R. 6, 83, 44. गतिं प्रति मुच विलम्बम् Gīt. 11, 5. विकितविलम्ब 7, 2. Kathās. 32, 92. 34, 215. वन्मुखालोकनायेष विलम्बो हि कृतो मया 41, 49. देवस्यागमने जातो विलम्ब: 56, 105. तद्विलम्बो न कार्यो ऽस्य मया 124, 61. Buic. P. 4, 20, 23. Hit. 99, 12, v. l. केतो: सद्य सत्रेन कार्यस्य विलम्बायोगात् Sarvadarçanas. 141, 15. Kusum. 34, 14. प्रतिभुति° Rāja-Tar. 8, 1232. 1393. किं विलम्बेन R. 3, 35, 35. घलं विलम्बेन Daçar. 75, 10. Prab. 77, 17. घलमतिविलम्बेन 73, 11. कुतस्त्वं विलम्बादागतो ऽसि *so spät* Hit. 68, 4, v. l. घागतं तु विलम्बेन Kathās. 60, 99. विलम्बेन *zu spät* Rāja-Tar. 8, 1116. घ° Tarkas. 80. गमनप्रतिबोधयोरविलम्बार्थो चकारो *zeitliches Zusammenfallen* Mallin. zu Nāgān. 10, 6 bei Stenzler zu Kumārās. 3, 38. घविलम्ब adj. Verz. d. Oxf. H. 261, *a*, 30. सविलम्बम् adv. Rāja-Tar. 4, 372. Vgl. घविलम्बम् (auch Hariv. 16160) und माविलम्बम्. — *b*) N. *des 52ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* (vgl. विलम्बिन्) Verz. d. Oxf. H. 331, *b*, 1 v. u.

विलम्बक (wie oben) 1) m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 47, 33. — 2) f. विलम्बिका (*das Pausiren der Ausleerung*) *eine Form von Indigestion mit Verstopfung* Wise 330. Sūçr. 2, 464, 3. 502, 5. 518, 4. 6. Çāṅk. Sāṅ. 1, 7, 7. Viçva. 8, 28. Verz. d. Oxf. H. 312, *b*, 7; Verz. d. B. H. No. 935. *das letzte Stadium der Choleraerschöpfung* Mollesw. s. v.

विलम्बन (wie oben) n. *das Säumen, Zögern, Verzögerung*: न ते कार्यं विलम्बनम् Hariv. 15635. तव सदृं तमं मन्ये नोत्सुकस्य विलम्बनम् R. Gorr. 2, 16, 17. न कालो ऽस्ति विलम्बने 6, 8, 15. Hit. 99, 12. Gīt. 5, 17.

न कुरु गमनविलम्बनम् s. कलिङ्गसेनाविवाह° Kathās. 33, 2. समपस्ते कृतो यो ऽसौ तस्य कालविलम्बनम् *das Verstreichen* R. 4, 30, 10. घविलम्बनकारणात् im Gegens. zu चिरकारणात् MBh. 1, 5227. Auch विलम्बना f. R. 5, 82, 59. — Vgl. घ°.

विलम्बनोपर्ण n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 236, b. Pañcav. Br. 14, 9, 19. fg.

विलम्बित adj. *langsam, gemessen* s. u. 1. लम्ब् mit वि und füge noch hinzu Çikshâ 22 in Ind. St. 4, 269. Nir. in Manus. S. 772. विलम्बितम् adv. Çrautas. 35 in Ind. St. 4, 271. घविलम्बितम् Lâṭj. 6, 10, 18 ebend. 408, N. — Vgl. घ°.

विलम्बितगति adj. *einen langsamen Gang habend* und als f. N. eines Metrums: *4 Mal* ⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑–, ⏑⏑–⏑⏑–⏑–⏑– Varâh. Bṛh. S. 104, 16. Ind. St. 8, 394.

विलम्बिता (von विलम्बिन्) f. *Langsamkeit, Gemessenheit:* नातिविलम्बिता वाचः H. 70.

विलम्बिन् (von 1. लम्ब् mit वि und von विलम्ब) 1) adj. *a) herabhängend, hängend an:* नेत्र Suçr. 2, 358, 18. त्रण Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 56. बाहु° (भुज) Râgat. 16, 84. 18, 25. घना: Varâh. Bṛh. S. 30, 29. दिग्गजविलम्बिनः सलिलदाः 24, 19. शैलशिखरेषु विलम्बिबिम्बा मेघाः Mṛicch. 82, 21. दरीगृहद्वारविलम्बिबिम्बाः — जलदाः Kumâras. 1, 14. Kir. 5, 6. नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः Spr. 2029. श्रवणान्तविलम्बिना कदम्बेन Mṛicch. 88, 6. Kumâras. 2, 26. Çik. 143. भूमेः कण्ठविलम्बिनीव कुटिला मुक्तावली श्राङ्कवी Prab. 80, 3. प्राङ्गणाहारकवाटान्त° *sich lehnend an* Kathās. 15, 89. — 2) am Ende eines comp. *behängt mit, woran Etwas hängt:* प्रलम्बबाहूरुकरोरुजङ्घान्तरविलम्बिनाम् । घतां॰ *an denen die Arme u. s. w. schlotternd hängen* MBh. 3, 16348. नेत्रैरसुविलम्बिभिः *an denen Thränen hängen* Mâlav. P. 12, 23. घात्रन्मुक्तादामविलम्बिना वितानेन Bhâg. P. 10, 60, 3. 69, 10. 81, 30. 4, 9, 35. — *c) zögernd, säumend:* भवति विलम्बिनि Gît. 6, 3. so v. a. *widerstrebend* Çik. 173, v. l. — 2) m. n. N. *des 32ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* (vgl. विलम्ब) Varâh. Bṛh. S. 8, 29. Weber, Gjot. 99.

विलम्भ (von लभ् mit वि) m. *Freigebigkeit* AK. 3, 3, 38. H. 1519.

विलय (von 1. ली mit वि) m. P. 6, 1, 150, Vârtt. = प्रलय Çabdar. im ÇKDr. *das Verschwinden, Vergehen, zu-Nichte-Werden, Untergang:* वैदेह्याः Uttarâs. 127, 10 (172, 3). घनस्य Spr. 1280. गुल्म° Vishṇ. 25, 28. घगाहिलयाम्बु Bhâg. P. 7, 9, 32. विश्व° Prab. 112, 14. तन्त्राणाम् 114, 19. Bâlâr. 46. शील° Spr. 2731. कर्म° Çâṅk. 14, 96. घाकाशधर्माधर्मादि° Kusum. 25, 10. Gegens. उद्भव Bhâg. P. 3, 17, 24. विलयं गम् u. s. w. *verschwinden, zu Nichte werden, sein Ende finden:* घगच्छन्विलयं सर्वे तार्क्ष्ये दृष्ट्वेव पन्नगाः MBh. 3, 1033. रावणशराः — विलयं ययुः R. 6, 79, 75. दिवसो ऽनु मित्रमगमद्विलयम् Çiç. 9, 17. घाशा विलयं गता Spr. 1672. दृशो ऽसुराणाम् । पन्नागता विलयम् Mâlav. P. 84, 19. विलयं समुपाजग्मुः MBh. 1, 1131. विलयं व्रज् R. 5, 56, 117. 7, 106, 9. विलयं या Spr. 325 (II). 1371. Mâlav. P. 39, 62. पुण्ये विलयमास्थिते L.A. (III) 90, 19. घग्रमवर्षे विलयं गमयामास *zu Nichte machen* MBh. 1, 8280. विलयं पावकं शीघ्रमनयन् 8155. ईषद्विलय und सु° adjj. P. 6, 1, 50, Vârtt., Schol.

विलयन (wie oben) 1) adj. *auflösend* Suçr. 1, 31, 14. 148, 6. — 2) n. *das Verschwinden, Vergehen, Auflösung:* कफ° Suçr. 1, 135, 18. कफो विलयनं (so ist zu lesen) याति 2, 301, 11. *das Schmelzen* (intrans.) Kâç. 5, 2, 8.

विलला f. *eine best. Pflanze,* = श्वेतबला Râjân. im ÇKDr.

विललसन (von 1. लस् mit वि) n. *heiteres Spiel, frohe Ausgelassenheit* (eines Weibes) und zugleich *das Zucken* (des Blitzes) Mṛicch. 39. Daçâk. 91, 9.

विलात adj. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. f. घा gaṇa घजादि zu 4, 1, 4. — Vgl. वैलात्य.

विलातृ nom. ag. und विलातव्य partic. fut. pass. von 1. ली mit वि P. 6, 1, 51, Schol.

विलातिर्मेन् m. nom. abstr. von विलात gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123.

विलाप (von 1. लप् mit वि) m. *Wehklage* AK. 1, 1, 5, 16. H. 275. Hâlâ. 3, 17. MBh. 10, 168. R. 1, 3, 12 (7 Gorr.). 20, 24. 2, 21, 53. 41. fg. in der Unterschr. 105, 38. R. Gorr. 2, 53, 31. 4, 29 in der Unterschr. Râgân. 8 in der Unterschr. 12, 78. Gît. 1, 28. विरचितविविध° 7, 2. Mârk. P. 136, 6. Pañcât. 1, 7, 78. 12, 4. करुणविलापशब्द् Vet. in LA. (III.) 24, 20. fg. — Vgl. ब्राह्मण°.

1. विलापन (vom caus. von 1. लप् mit वि) 1) adj. *Wehklagen verursachend:* घस्त्र Harîv. 12734. R. 1, 56, 7 (57, 7 Gorr.). — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâyu im Comm. zu H. 210. Harîv. 9338. — 3) n. *a) das wehklagen-Machen:* महिलापनं सत्यव्र MBh. 12, 6612. = नाश Nîlak. — *b)* aus metrischen Rücksichten = विलपन *das Jammern, Wehklage* Bhâg. P. 1, 18, 39. 6, 14, 53. Pañcât. 1, 11, 6.

2. विलापन (vom caus. von 1. ली mit वि) 1) adj. (f. ई) *verschwinden —, zu Nichte machend, entfernend, auflösend:* कफमेदो° Suçr. 2, 140, 8. *schmelzend* (trans.): घाज्यवेलापनी sc. स्थाली *Schmelzpfanne* Çat. Br. 1, 9, 2, 1. 3, 1, 4, 17. 4, 4, 22. — 2) n. *a) Untergang, Tod* Bhâg. P. 1, 7, 12. — *b) das Schmelzen* (transit.) Madhus. in Ind. St. 1, 15, 3.

विलापिन् (von 1. लप् mit वि) adj. *klagend, jammernd* oder überh. *Töne von sich gebend:* कलविलापिकलापिकदम्ब Çiç. 6, 31.

विलापक (vom caus. von 1. ली mit वि) adj. *schmelzend, erweichend:* मनसो ऽपि विलापकः VS. 20, 24.

विलापन (बिल + घ°) n. *Höhle, Versteck unter der Erde* Bhâg. P. 5, 24, 16. वि° Burn. वि° ed. Bomb.

विलाल m. = यत्न Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. विलाल.

विलापिन् adj. von 1. लप् mit वि P. 3, 2, 144.

विलास (von 1. लस् mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. घा. *a) das Erscheinen, zum-Vorschein-Kommen:* सुरतरस° Ṛtus. 3, 24. मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूण° Gît. 1, 30. — *b) heiteres Spiel, Scherz, lustiges Treiben, Amüsement; Treiben* überh.; = लीला AK. 3, 4, 26, 201. H. an. 3, 736. Med. s. 38. तेन च मरुता विलासेनास्माभिर्विन्ध्याचले स्थातव्यम् Hit. 114, 18. °व्यय 98, 17, v. l. विलासाय *zum Vergnügen* Verz. d. Oxf. H. 153, *a*, No. 328, Z. 6. Z. d. d. m. G. 14, 574, 24. fg. 576, 5. Spr. (II) 1039. 1948. (I) 2657. Kathās. 75, 73. Bhâg. P. 3, 25, 36. निकृविलासविक्रम MBh. 4, 231. सविलासान्मदालसान् । मयूरान् 3, 11884. घम्भोधिनीवननिवासविलासो हंसस्य Spr. (II) 544. विधेः Kathās. 26, 18. 73, 334. वेधसः 72, 14. तारुण्यस्य Sin. D. 82, 12. तरुणयोषिल्लोचनानाम् Verz. d. Oxf. H. 120, *a*, 15. वचसां विलासाः *literärische Spielereien*

110, a, 31. वाग्विलास dass. 120, a, 13. 167, b, 18. Spr. (II) 433. लक्ष्मीविलासा: Uttarab. 113, 16 (134, 3). Rāǵa-Tar. 3, 259. फेणविलासप्रोज्ज्वलहासा *fröhliches Hinundherwogen* Kṣemendra. 119. सविलासम् adv. Rāǵa-Tar. 8, 807. Spr. 4139. — c) *gefallsüchtiges Gebaren eines Weibes, verliebte Gebärden* u. s. w. AK. 1, 1, 8, 31. H. 807. H. an. Med. (क्राव st. क्रार् zu lesen). Hall. 1, 89. Sin. D. 125. definirt 137. Bharata beim Schol. zu Nalod. 2, 35. Daçar. 2, 35. Gaǵadhara bei Hall in der Einl. zu Daçar. S. 20. — Harīv. 8760. Kumāras. 3, 5. 5, 13. Çiç. 35. Spr. (II) 416. 1123. (I) 1610. 1547. 2673. 3318. 3149. Vaṛāh. Bṛh. S. 78, 13. 104, 53. 63. Gīt. 1, 3. Kṣemendra. 35. Kathās. 24, 86. 49, 48. 52, 305. Rāǵa-Tar. 5, 260. 265. Prab. 40, 13. 101, 12. Bhāg. P. 1, 9, 40. 5, 17, 13. 24, 16. Mārk. P. 106, 60 (कुर्वन्त्यो zu lesen). Dhūrtas. 73, 16. Sarvadarçanas. 78, 12. *gefallsüchtiges Gebaren* überh.: सविलासाङ्गदर्शन Sin. D. 181. सविलासरूप Vaṛāh. Bṛh. 4, 2. Çiç. 9, 26. Bhāg. P. 3, 24, 64 (सुविलास° ed. Bomb.). — d) *Lebhaftigkeit*, eine der acht Vorzüge des Mannes, Daçar. 2, 9. fg. Sin. D. 89. 91. 277. Hierher könnte gezogen werden: यदि सुप्तस्य विधातविलासायीयमीदृशी । द्वयशोभास्य तत्कीदृक्प्रबुद्धस्य भवेत्सखी ॥ Kathās. 40, 175. — e) *erwachter Geschlechtstrieb, Geilheit* Bhar. Nāṭṣ. 19, 75. रत्यर्थेषा विलासः स्यात् Daçar. 1, 30. 29. Sin. D. 352. — f) *Anmuth, Liebreiz:* पद्म्यास° Bhāg. P. 3, 5, 44. 5, 2, 5. 18, 16. पद्मपङ्क्तयपलाशा° 4, 22, 39. — g) N. pr. eines Mannes (v. l. कर्पूर°) Hit. 81, 11, v. l. — 2) n. *ein best. Metrum* Ind. St. 8, 337. — Vgl. घनपु°, घार्या°, कला°, काशी°, ज्ञान°, दुर्गा°, प्रतिभा°, भगवद्भक्ति°, भामिनी°, भू° (auch Bhāg. P. 3, 8, 46. सधूविलासम् Mālatīm. 13, 6), मोललक्ष्मी°, यति°, राघव°, राम°, वाणी°, विज्ञेय° (विज्ञेय°?), विवेक°, शंकरचेतो°.

विलासक (von विलास) 1) adj. f. विलासिका *sich hin und her bewegend, hinundher tanzend:* पताका: MBh. 7, 2932. — 2) f. विलासिका *eine Art von Schauspielen* Sin. D. 332.

विलासकानन n. *Lustwald* Wilson und ÇKDr.

विलासदोला f. *Vergnügungsschaukel:* स्मर° Pāṇḍat. ed. orn. 49, 24.

विलासन n. = विलसन *heiteres Spiel, frohe Ausgelassenheit* MBh. 3, 1329 (विलसन wäre gegen das Metrum).

विलासपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathās. 40, 42. 98.

विलासभवन n. *Lusthaus* Rāǵa-Tar. 1, 292.

विलासमणिदर्पण m. *ein als Spielzeug dienender Spiegel aus Edelsteinen* Rāǵa-Tar. 4, 589.

विलासमन्दिर n. *Lusthaus* Wilson und ÇKDr.

विलासमेखला f. *ein als Spielzeug dienender* (kein eigentlicher) *Gürtel* Ragh. 8, 62.

विलासवत् (von विलास) 1) adj. am Ende eines comp. *mit Scherzen des — versehen:* विदूषक° Sin. D. 353. — 2) f. विलासवती a) *ein Frauenzimmer mit gefallsüchtigem Gebaren* Ṛt. 1, 12. Ragh. 9, 48. — b) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Verz. d. Oxf. H. 139, b, 2. 153, a, 13. fg. Hall in der Einl. zu Vāsavad. S. 37. Kād. in Z. d. d. m. G. 7, 583. — c) Titel eines Schauspiels Sin. D. 202, 8.

विलासवसति f. *Vergnügungsort:* लक्ष्मी° Kathās. 9, 5. साकूतकला° Dhūrtas. 83, 2.

विलासविपिन n. *Lustwald* Kṣemendra. 42. Prab. 73, 8.

विलासविश्रान्त (!) adj. = लुब्ध Gaṇḍīn. im ÇKDr.

विलासवेश्मन् n. *Lusthaus* Kathās. 94, 6.

विलासशय्या f. *Lustlager* Kathās. 103, 211.

विलासशील m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 40, 42.

विलासस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 539, 11.

विलासिका s. u. विलासक.

विलासिता (von विलासिन्) f. *die Rolle des Scherzenden* u. s. w. Harīv. 8759.

विलासित्व (wie eben) n. *Munterkeit, Fröhlichkeit, heiteres Gebahren* Mālav. 37. लक्ष्म्या: Rāǵa-Tar. 4, 16.

विलासिन् (von 1. लस् mit वि oder von विलास) 1) adj. P. 3, 2, 142. a) *glänzend, strahlend:* वक्त्रं चन्द्रविलासि Spr. 2696, v. l. वपोद्वयविलासिन्यो नार्य: MBh. 13, 5242. — b) *sich hinundher bewegend:* पताका: MBh. 3, 11700. — c) *munter, ein Freund der Fröhlichkeit, sich gern vergnügend, Genüsse liebend;* = भोगिन् H. an. 3, 119. Med. n. 210. — R. Gorr. 2, 34, 14. Ragh. 14, 30. Verz. d. Oxf. H. 153, a, No. 328, Z. 7 (विलाशिन् gedr.). कमललोलदृगञ्चल° *seine Freude habend an* 240, a, No. 382. गणिका° *sich vergnügend mit* Dhūrtas. 70, 10. — d) *coquettirend* Ragh. 6, 14. मुग्धवधूनिकर Gīt. 1, 28. चतुर्नर्तकीनाम् Kir. 10, 41. — e) *verliebt;* m. *Geliebter, Gatte* Kumāras. 4, 5. 9, 31. 42. 19, 25. Sin. D. 42, 20. मीललना° Verz. d. Oxf. H. 187, b, No. 428, Z. 18. विलासिनौ *ein liebendes Paar* Sin. D. 225. — 2) m. a) *Schlange* H. an. Med. — b) *Feuer.* — c) *der Mond.* — d) Kṛshṇa Med. — e) Çiva. — f) *der Liebesgott* Çāmbar. im ÇKDr. — 3) f. विलासिनी a) *ein munteres Frauenzimmer, ein anmuthiges Weib, Weib* überh., *Geliebte; ein leichtfertiges Frauenzimmer;* = नारी Rāǵān. im ÇKDr. = वेश्या Dhanañǵaya ebend. — MBh. 1, 3893. 3, 1830. 4, 401. R. 1, 10, 25 (37 Gorr.). 3, 24, 12. 52, 23. 5, 22, 18. 29. 37, 17. 6, 108, 32. Ṛt. 4, 2. Ragh. 6, 17. Kumāras. 7, 69. Çāṅk. 29. Mālav. 33. Çiç. 8, 70. Spr. (II) 488. (I) 2177. 2673, v. l. Vaṛāh. Bṛh. S. 48, 3. 10. 104, 22. Kathās. 6, 63. 38, 160. 42, 11. 52, 31. 285. 287. 53, 60. 58, 15. 49. 60, 172. Rāǵa-Tar. 3, 413. 4, 432. Prab. 2, 6. 37, 8. Sin. D. 18, 18. Mārk. P. 129, 9. सुरशत्रु° *Gattin* Verz. d. Oxf. H. 139, a, No. 276. Ragh. 6, 28. नवमल्लिका तरुणारु° 9, 41. राज° *Concubine* Kathās. 53, 58. Pāṇḍat. 136, 22. fg. — b) *ein best. Metrum* Ind. St. 8, 395. fg. — c) ein Frauenname Kathās. 44, 37. 46, 194. fg. — Vgl. पण्यविलासिनी, बुद्धि°, मत्त°, वर° (auch Kathās. 38, 19), रूढ़ि°.

विलासिनिका (von विलासिनी) f. *Geliebte, Gattin:* मुषलियुद्धि° Pāṇḍav. 3. 2, 5.

विलिख (von लिख् mit वि) s. घ°.

विलिखित Pāṇḍat. ed. orn. 34, 12 fehlerhaft für विलिखित.

विलिंगी f. *eine Schlangenart* AV. 5, 13, 7.

विलिङ्ग (2. वि + लिङ्ग) n. *das Fehlen aller Erkennungsmittel:* कर्म चेतद्विलिङ्गस्थम् so v. a. *aus dem man nicht klug zu werden vermag* MBh. 2, 845. मन्यस्विलिङ्गमन्यत्कर्मेत्यर्थ: Nīlak.

विलिप्त 1) adj. s. u. लिप् mit वि. — 2) f. या (2. वि + लि°) *eine Secunde,* $^1/_{3600}$ *eines Grades* Ganit. Kālamān. 18. Grahiras. 19 u. s. w. — 3) f. विलिप्ती Bez. *der Kuh in einem gewissen Stadium:* वि°, मूत-

वशा, वशा AV. 12,4,41. fgg.

विलिप्तिका f. = विलिप्सा Gaut. Sparshṭidh. 67.

विलिस्तेङ्का f. N. pr. einer Dânavî Kiṭ. 13,8.

विलीढि (von 1. लिह् mit वि) f. Bez. eines best. unholden Wesens AV. 1,18,4.

विलीन s. u. 1. ली mit वि. Davon विलीनय्, °यति *schmelzen* (trans.) P. 7,3,39, Schol. Vop. 18,15.

विलीयन (wie oben) n. *das Schmelzen* (intrans.) Comm. zu Âçv. Çr. 2,6,10.

विलुण्ठन (von 2. लुठ् mit वि) n. *das Plündern:* स्वर्गग्रामटिका° Siṃh. D. 3,2. 111,22. 214,3. *das Rauben, Stehlen:* मधूनाम् R. Gorr. 1,4,37.

विलुण्ठिका f. zu विलुण्ठक nom. ag. von 2. लुठ् mit वि; s. मुख°.

विलुप्य (von 1. लुप् mit वि) adj. *zerstörbar, zu Grunde zu richten:* अविलुप्यधैर्यनिधि *unverwüstlich* Spr. 5293 (die urspr. Lesart herzustellen).

विलुम्पक (wie oben) nom. ag. 1) *Räuber, Dieb:* वसो: (d. i. वसुन:) Bhâg. P. 1,18,44. — 2) *Zerstörer:* लोकस्य im Gegens. zu लोकपालो लोकानाम् MBh. 13,7349.

विलूरय् *zerkratzen:* मर्कटो तं भौतिकं कर्णनासिकादिषु विलूरयामास Kathâsaṃ. in Z. d. d. m. G. 14,572,18.

विलेख (von लिख् mit वि) 1) m. *Verwundung:* कृदय° Schol. zu Kâṭy. Çr. 25,3,2. 4,31. fg. — 2) f. आ *eine eingeritzte Linie* Suçr. 1,36,10. wohl *die Spur, die ein Rad einschneidet* in: क्षयातप° adj. zu कालचक्र MBh. 14,1237. क्षयातपो मेघमंतापो विलेखावृत्तधारो यत्र तत् Nîlak.

विलेखन (wie oben) 1) adj. *aufritzend, wund machend* Suçr. 1,198,21. 228,4. — 2) n. a) *das Einritzen, Ziehen von Furchen* Daśâṭup. 28,6. *das Zerkratzen, Verwunden:* नखैरकस्मात्परितः स्वधात्र्यङ्गविलेखनम् Verz. d. Oxf. H. 307,b,31. विलेखनमिवात्युग्रो (निकर्तनमिवात्युग्रं ed. Bomb.) लाङ्गलस्य पथा हरि: (न मृष्यति) MBh. 7,7634. — b) *der Lauf* (eines Flusses) Hariv. 12377.

विलेखिन् (wie oben) adj. *ritzend* so v. a. *sich reibend an, hinanreichend bis an:* (प्रासादै:) नभस्तलविलेखिभि: MBh. 1,6963.

विलेतृ nom. ag. und विलेतव्य partic. fut. pass. von 1. ली mit वि P. 6,1,51, Schol.

विलेप (von लिप् mit वि) 1) m. *Salbe:* अङ्ग° Bhâg. P. 10,42,1. — 2) f. ई *Reisbrei* AK. 2,9,30. H. 397. Suçr. 1,72,7. 229,10. 13. 2,229,20. Vishṇ. 6,30. Çâṅkh. Sâṅkh. 2,2,113.

विलेपन (wie oben) 1) n. a) *das Bestreichen, Besalben* AK. 3,3,27. Suçr. 2,455,21. Çâṅkh. Sâṅkh. 3,11,11. कृतधूपविलेपन: समुत्थाप्य: स्तम्भ: Vârâh. Bṛh. S. 53,113. कुर्वन्यृष्ठविलेपनम् Kathâs. 37,24. Verz. d. Oxf. H. 105,b,1. — b) *Salbe* AK. 2,6,3,35. H. 633. Hall. 2,390. पिंषे साधु विलेपनम् MBh. 4,261. Hariv. 6281. Spr. (II) 1910. 2215. (I) 1013. Vârâh. Bṛh. S. 12,16. 44,27. Kathâs. 37,5. 7. 85,21. 94,112. 104,36. Râjat. 2,106. Pañcar. 3,8,4. Pañcat. ed. orn. 52,25. Daçak. 89,13. Vet. in LA. (III) 21,4. Wilson, Sanskrit. S. 11. am Ende eines adj. comp. f. आ R. 5,81,52. Kathâs. 55,62. — c) vielleicht = विलेपनी *Reisbrei:* गोष्ठे ऽग्निमुपसमाधाय विलेपनं भुक्तपात् Gobh. 3,6,4. — d) Bez. *einer best. mythischen Waffe* R. 1,29,16. — 2) f. ई a) *Reisbrei.* — b) *ein hübsch gekleidetes Frauenzimmer* (चारुवेषस्त्री, सुवेषस्त्री) H. an. Med.

विलेपनिन् (von विलेपन) adj. *gesalbt:* अ° R. 1,6,9 (11 Gorr.).

विलेपिका f. 1) (von विलेपक und dieses von लिप् mit वि) *Salbe* in गण मक्ष्यादि zu P. 4,4,48. Vgl. वैलेपिक. — 2) = विलेपी *Reisgrütze* Hall. 2,165.

विलेपिन् (von लिप् mit वि und von विलेप) adj. 1) *salbend:* पृष्ठ° Kathâs. 37,25. — 2) *klebrig:* अ° Suçr. 2,176,14.

विलेप्य (von लिप् mit वि) 1) adj. *was gestrichen wird* so v. a. *aus Mörtel u. s. w. bereitet* oder *gemalt* Bhâg. P. 11,27,14. — 2) m. *Reisbrei* Çabdar. im ÇKDr. — 3) f. आ dass. H. 397, Schol.

1. विलोक (von लोक् mit वि) m. *Blick* Bhâg. P. 10,16,20.

2. विलोक (2. वि + लोक) = विज्ञन *Menschenleere:* °स्थ *nicht unter Menschen lebend* MBh. 13,5888.

विलोकन (von लोक् mit वि) n. *das Hinschauen, Hinsehen, Schauen, Blick* Suçr. 2,314,17. Siṃh. D. 180. Spr. 3149. Mâlatîm. 68,5. Mârk. P. 68,46. उत्फुल्ललोचन° Verz. d. Oxf. H. 161,a,6 v. u. Çiç. 1,29. सदय-करुणा Bhâg. P. 4,1,56. *das Anschauen, Anblicken, Betrachten:* धन्यो ऽन्यमवितृप्तो विलोकने Kathâs. 18,371. दिव्यान्योऽन्यवपुर्विलोकन 82, 407. Spr. 1572. 3400. *das Einsehen, Studiren* (eines Werkes) Verz. d. Oxf. H. 37,b, No. 92. *das Erblicken, Gewahrwerden:* सर्वलोक° Pañcat. 1,11,22. Kir. 5,16. Kathâs. 25,298. 26,89. कार्याकार्य° Spr. 2035. — Vgl. दिग्विलोकन.

विलोकिन् (wie oben) adj. *hinsehend, blickend:* कटाक्षार्ध° Kathâs. 37, 210. *anschauend, betrachtend:* मधूत्सव° 17,72. राजानन° 82,350. *erblickend, gewahr werdend:* जिनानन° Çatr. 1,48.

विलोक्य (wie oben) adj. *sichtbar* Mârk. P. 43,39. *was angeschaut wird:* यस्या: करातमात्रेण विलोक्यमपि वर्धते Verz. d. Oxf. H. 105,b,18.

1. विलोचन (von लोच् mit वि) 1) adj. *sehend machend, das Augenlicht verleihend* oder *sehend:* सदृशो: (विशो:) सूर्य: समुत्पन्न: सर्वप्राणि-विलोचन: Hariv. 14943. — 2) n. = लोचन *Auge* H. 573, Schol. Gaṇit. im ÇKDr. Hariv. 4311. Bṛ. 2,12. Ragh. 7,8. Kumâras. 3,67. fg. 4,2. Vikr. 132. Spr. (II) 1672. Vârâh. Bṛh. S. 12,10. 28,6. 11. 43,62. Gîr. 1,40. Naish. 22,47. Kathâs. 14,24. 18,223. Verz. d. Oxf. H. 257,a,3. Bhâg. P. 3,3,15. 14,14. Mârk. P. 132,23. साम्बु° adj. 22,20. Vârâh. Bṛh. S. 32,5. अम्बु° dass. 93,14. am Ende eines adj. comp. f. आ Kir. 5,33. Kathâs. 34,37 (साम्बु°). Mârk. P. 21,17. 63,3. Vgl. एक°.

2. विलोचन (2. वि + लो°) 1) adj. *die Augen verdrehend:* शत्रुर्मित्र-मुखो यश्च तिस्रप्रेती विलोचन: (= विपरीतदृष्टि: Nîlak.). — 2) N. pr. a) einer Gazelle Hariv. 1210. — b) eines Dichters Hall in der Einl. zu Vîrâvad. 21. — c) einer mythischen Person Kathâs. 47,80.

विलोचनपथ m. *Bereich der Augen:* °पथं चास्य न गच्छत्यनलंकृता *zeigt sich ihm nicht* Siṃh. D. 153.

विलोट m. nom. act. von लुट् mit वि; s. u. लुट्.

विलोटक m. *ein best. Fisch,* = नलमीन Çabdar. im ÇKDr.

विलोटन n. nom. act. von लुट् mit वि; s. u. लुट्.

विलोठ m. nom. act. von लुठ् mit वि; s. u. लुठ्.

विलोठक (von लुठ् mit वि) m. *Dieb;* s. वर्ण° und vgl. लुण्ठ् mit वि.

विलोडन (von लुड् mit वि) n. nom. act. Daśâṭup. 2,4. 3,5. 9,27. 16,

48. 20,18. 26,112. 31,40. *das Verrühren, Umrühren, Quirlen:* दधि° Khandom. 34. सिन्धु° Prayâpan. 93,b,3. *das in-Verwirrung-Bringen:* शत्रु° ebend.

विलोउयितर् (wie oben) nom. ag. zur Erklärung von विगाहर् Schol. zu Bhatt. 9,39.

विलोडित (wie oben) 1) adj. *verrührt, umgerührt.* — 2) n. = तक्र Râéâr. im ÇKDa. = दधि Ausn. 42.

विलोप (von 1. लुप् mit वि) m. 1) *Verlust, Unterbrechung, Störung, das zu-Nichte-Werden* R. 2,48,28 (45,26 Gorr.). साधु° (so ist zu schreiben) MBa. 5,812. धर्म° 12,3866. सविलोपेन धर्मस्य 5,3232. एतद्वृत्ति° Kâm. Nîtis. 5,65. 18,8. 9. 61. Kusum. 22, 6. 27,2. 38,20. 52,7. ग्र° ṚV. Prât. 11,28. Schol. zu 8. 10. — 2) *Raub:* स्वर्गरत्न° Harîv. 7628. — Vgl. लोप und विपरिलोप.

विलोपक (vom caus. von 1. लुप् mit वि) nom. ag. 1) *der Etwas zu Nichte macht:* धर्म° Harîv. 11179. कलिकाल° Paṇḍar. 4,3,159. — 2) *Plünderer:* राजकोश° MBa. 12,3058.

विलोपन (wie oben) n. 1) *das zu Nichte-Machen:* तस्य रावणसैन्यस्य कर्वन्दृष्टिविलोपनम् R. 6,90,27. — 2) *das Auslassen, Weglassen:* धर्मवादि° (so ist zu schreiben, d. i. धर्व-ध्वादि-) Sîm. D. 657. — 3) *das Zerpflücken:* केचिन्मात्स्यविलोपनैकनिपुणाः (es könnte auch die Bed. *Stehlen* angenommen werden; wahrscheinlich ist aber विलोपन nur Fehler für विलेपन) Spr. (II) 1902. — 4) *das Stehlen:* परारत्न° Harîv. 8212.

विलोपिन् (von लुप् mit वि) adj. *zu Nichte machend:* मद्राम° Raghu. 10,12. सौभाग्य° Kumâras. 1,3.

विलोपितर् (wie oben) nom. ag. *Dieb, Räuber* MBh. 13,2095.

विलोप्य (vom caus. von 1. लुप् mit वि) adj. *zu Nichte zu machen:* नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28, Çl. 4.

विलोभन (vom caus. von लुभ् mit वि) n. 1) *das Locken, Verlockung:* घटकृतस्य विलोभनात्तैर्मम Raghu. 8,68. Kir. 10,17. कन्या° Bhâr. Nîtiç. 18,69. °वस्तूनि Daçak. 188,4. — 2) *das Hervorheben von Vorzügen (wodurch man Jmd zu Etwas zu verleiten sucht)* Bhâr. Nîtiç. 19,71. 87. Daçak. 1,25. Sîh. D. 342. Prayâpan. 21,a,4.

विलोम (2. वि + लोमन्) 1) adj. (f. आ) = प्रतीप H. 1465. an. 3,472. Mân. m. 53. *a) wider das Haar —, wider den Strich —, in entgegengesetzter Richtung gehend, in verkehrter Ordnung laufend:* त्रिकवलनविलोमं वोढ्य दूरात्स्वदेशम् so v. a. *hinter sich* Râéâ-Tar. 1,374. — *b) widerspänstig:* ein Elephant Varâh. Bṛn. S. 94,12. — 2) m. *a) Schlange.* — *b) Hund.* — *c)* Varuṇa H. an. Mân. — 3) f. ई *Myrobalanenbaum* H. an. Mân. — 4) n. = अरघट्ट H. an. Mân. (hier fälschlich अरपट्न).

विलोमक adj. *verkehrt* Gaṇiân. im ÇKDa.

विलोमज adj. = विलोमजात VP. 435, N. 3.

विलोमजात adj. *gegen den Strich geboren d. i. von einer Mutter geboren, die zu einer höheren Kaste gehört als der Vater* Bhâg. P. 1,18,13.

विलोमनिधङ् m. *Elephant* Taik. 2,8,34. H. ç. 174. Hâr. 14.

विलोमत्रैराशिक *rule of three terms inverse* Colebr. Alg. 34.

विलोमन् 1) adj. *a)* = विलोम 1) *a)* Gegens. सलोमन् TS. 6,2,8,1. 7, 4,5,4. TBr. 1,5,44,4. Çat. Br. 1,3,3,23. 7,3,1,9. Pâraṇ. Gṛ. 19,8,6. पवनविलोमा कुटिलं याता (उल्का) *gegen den Wind gerichtet* Varâh. Bṛn. S. 33,29. रात्रिगुसंज्ञेषु विलोम जन्म (d. i. रात्रिसंज्ञेषु दिवा जन्म द्युसंज्ञेषु रात्रौ जन्म Comm.) Bṛn. 26(24),4. — *b) hoarios:* शिरस् Kathâs. 61,186. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 435. Bhâg. P. 3,24,18.

विलोमपाठ m. *das Hersagen in umgekehrter Ordnung d. i. von hinten nach vorn* Verz. d. Oxf. H. 106,a,34.

विलोमवर्ण adj. = विलोमजात ÇKDa. nach der Smṛti.

विलोमादरकाव्य n. Titel eines *Gedichts, das silbenweise auch von hinten nach vorn gelesen werden kann,* = रामकृष्णकाव्य Verz. d. Oxf. H. 132,a, No. 240.

विलोमित (von विलोमन्) adj. *verkehrt* Naish. 22,47.

विलोल (von लुल् mit वि oder 2. वि + लोल) adj. (f. आ) *sich hinundher bewegend, unruhig, unstät:* घण्टा Raghu. 7,38. रार 16,68. यष्टि Kumâras. 5,3. पल्लव 4,38. कमल Kathâs. 103,162. दोर्वल्लरी Paṇḍar. 3, 5,21. चलक Kathâs. 15,92. त्रिरुक्ता 22,63. Ṛt. 1,14. 19. Bhâg. P. 2,7, 38. Auge, Blick Ṛt. 2,9. Raghu. 7,11. 8,33. Kumâras. 5,13. Gît. 1,40. Kir. 8,45. Kâdab. 10. Khandom. 93. Kathâs. 37,14. चक्षुर्विलोललोचन Bhâg. P. 3,22,14. °तारक Spr. 1311 (II). 1635. त्रिलोलतिलकान्तैः सनेत्राम्भोभिराननैः Râéâ-Tar. 4,130. नदी Mârk. P. 77,6. शलभ, काम Spr. (II) 2303. यस्य चेतसि सदा मुरवैरी वल्लवीजनविलासविलोलः Khandom. 35. लक्ष्म्या विद्युद्विलोलया Kathâs. 113,48. यदि कुञ्जरकर्णात्तादपि पिप्पलपल्लवात्। यदि विद्युद्विलसिताद्विलोलं ललनामनः॥ Spr. (II) 421.

विलोलन (von लुल् mit वि) n. *das Hinundhergehen, unstätes Wesen:* °पैर्मारुतैः Paṇḍar. 3,5,3.

1. विलोहित (2. वि + लोहित°) m. *eine best. Krankheit* AV. 2,8,1. 12,4,4.

2. विलोहित (wie oben) 1) adj. *hochroth* (nach Mahîdh.) VS. 16,7. 52. क्रोधविलोहितात Harîv. 13164. Râgh. 16,77. पांसुविलोहितरूप (राङ्क) Varâh. Bṛn. S. 5,39. विग्रह der Sonne Mârk. P. 107,7. Beiw. Çiva's MBh. 7,2677. 8,1447. 10,236. 12,10259. 14,202. — 2) f. आ N. einer der sieben Flammenzungen Mund. Up. bei Mahîdh. zu VS. 17,79. मुलोहिता die gedr. Ausg. 1,2,4.

विल्ल *Asa foetida* Suçr. 2,433,1. — Vgl. बिल्ल.

विवंश m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. (2te Aufl.) 2,193, N. 3. die richtige Lesart ist wohl विविंश.

विवक्तर् (von वच् mit वि) nom. ag. *der Etwas richtig aufsagt, Berichtiger* Ait. Br. 3,33. — Vgl. दुर्विवक्तर्.

विवक्तव (von विवक्तर्) n. *Beredsamkeit:* संस्तवव्यक्त° adj. Râéâ-Tar. 4,498.

विवक्तृ (von वच् mit वि) adj. *beredt* ṚV. 7,67,3.

विवर्तन adj. etwa *spritzend* (von वद् = उद्, Beiw. des Soma: मधो मन्धसो विवर्तनस्य पीतये ṚV. 8,1,25. 21,5. 35,22. 45,11. Vâlakh. 1,4.

विवर्तसे Refrain in den Vimada-Liedern, ohne Bedeutung für den Zusammenhang, ṚV. 10,24. fg. nach Nir. 3,13 von वच् oder वक्, nach Naigh. 3,3 Synonym von मरुत्.

विवक्ता (vom desid. von वच्) f. 1) *die Absicht Etwas auszusprechen, auszudrücken* Çiksh. 8 in Ind. St. 4,106. तद्विषयदर्शनविवक्षया Çâṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 26. 83. 157 (°तस्). Sarvadarçanas. 41,11. fgg. 188,3. 4.

161,9. ज्ञातेः प्राधान्यविवक्षायामयमेकवद्भावः। द्रव्यविवक्षायां तु u. s. w. so v. a. *wenn gemeint ist* Schol. zu P. 2,4,6. वचनविवक्षार्थं विभक्त्यन्तानां पाठः so v. a. *um den Numerus hervorzuheben* zu 1,2,37. Verz. d. Oxf. H. 177,b,4. विवक्षाक्षये यदि *wenn man eine Verminderung ausdrücken will* AK. 3,6,2,7. इतिशब्दो लौकिकविवक्षाबोधनार्थः so v. a. *das Wort* इति *dient dazu um anzuzeigen, dass die allgemein gangbare Auffassung* (dieser Worte) *gemeint ist*, Schol. zu P. 2,2,27. Sidd. K. 87,a,13. *die Absicht Etwas zu verkünden, — zu lehren:* मोक्षधर्म° Bhâg. P. 11,2,16. — 2) *die Absicht Etwas zu sagen, — zu bemerken* so v. a. *Bedenken, Zweifel, das Anstandnehmen:* विवक्षा तत्र मे ऽस्तोयम् R. 5, 90,29. न मे विवक्षास्ति MBh. 1,3618. न तत्र वर्णेषु कृता विवक्षा न चापि शीले न कुले न गोत्रे 7197. किं ते विवक्षया 6,5456. R. 5,27,30. 46, 9. अलं विवक्षया 35,26. 89,64. भावं विज्ञातुमानो ऽहं प्रणयादिदमब्रुवम्। न चातेयात्र पाणिड्यात्र क्रोधात्र विवक्षया॥ MBh. 5,2782. अस्ति काचिद्विवक्षा तु तां मे निगदतः शृणुः। धृतराष्ट्र प्रति 15,562. R. 5,90,35. न तु तौ प्रसक्ते वक्तुमिष्टानिष्टविवक्षया *weil ich in Betreff des Angenehmen oder Unangenehmen im Zweifel bin* MBh. 1,4843.

विवक्षित s. unter dem desid. von वच्: = शोभन Halâj. 5,16. विवक्षितत्व (s. ebend.) *das Gemeintsein:* उभयत्राभ्याकारबुद्धिपरिणामस्यैव प्रतिबिम्बशब्देनात्र विवक्षितत्वात् Nilak. 50.

विवक्षु (vom desid. von वच्) adj. 1) *laut rufend:* सुपर्णाः AV. 2,30,3. — 2) *zu reden —, zu sagen —, zu verkünden wünschend;* ohne Ergänzung MBh. 14,1516. fg. Hariv. 2863. R. 4,2,16. Râga-Tar. 4,361. Bhâg. P. 2,10,19. 6,2,28. Mâlav. P. S. 657, Z. 4. Verz. d. Oxf. H. 200, a,1 v. u. Sarvadarçanas. 19,5. mit acc. der Sache: प्रियमुत्तमम् R. Gorr. 2,3,9. अप्रियम् 9,16. किम् 5,63,3. Bhâg. P. 10,79,24. Pañkat. ed. orn. 59,9. वचः Raghu. 2,42. Mârk. P. 51,14. किमप्यपरं पुनर्विवक्षुः Kumâras. 5,88. तत् Verz. d. Oxf. H. 269,b,25. स्मार्तधर्मम् 265,a,28. वेदार्थान् Hariv. 4138. विवक्षुरसि यज्ञान्यत्ते वक्ष्यामि so v. a. *zu fragen wünschend* MBh. 13,7161. mit acc. der Person: विवक्षू वै जनकेन्द्रं दिदृक्षू 3,10624. mit gen. der Sache: वेदार्थानाम् Hariv. 4138 (nach der Lesart der neueren Ausg.). भगवद्गुणानाम् Bhâg. P. 3,5,12. in comp. mit dem obj.: आशीर्वाद° MBh. 12,1408. 1416.

विवेचन (von वच् mit वि) n. *Berichtigung, Entscheidung, Erklärung* Çat. Br. 2,4,4,2.

विवत्स (2. वि + वत्स) adj. (f. आ) *des Kalbes —, des Jungen —, der Kinder beraubt* M. 5,8. MBh. 7,2748. Hariv. 3079. 4827. 9236. R. 2, 39,4. 41,7 (40,7 Gorr.). 43,17. 47,12. 74,9 (76,14 Gorr.). 25. R. Gorr. 2,48,13. 66,28. 6,8,12. Bhâg. P. 1,16,19. 17,3.

विवदन (von वद् mit वि) n. *Zank, Streit* MBh. 2,2218. Ueber die Bed. des Wortes bei den Buddhisten im Pâli s. Burnouf in Lot. de la b. l. 470 und Ind. St. 3,156.

विवदितव्य (wie eben) adj. *zu streiten:* न चात्रन्मसिद्धो विवदितव्यम् (impers.) Verz. d. Oxf. H. 264,b,13.

विवदिषु (wie eben) adj. म° *nicht zu Streit Anlass gebend* Âçv. Gṛhj. 2,7,2.

विवर्ध und वीवर्ध (von वृध् = 1. वर्ध्) 1) m. a) = पर्याकार AK. 2,4,2,2, 99. H. an. 3,249. Med. dh. 35. Halâj. 4,73. = भार H. 364. H. an. Med. (so ist st. भाव zu lesen). Halâj. *ein Schulterjoch zum Tragen von Lasten, Tragholz,* ἀναφορεύς: विवधवीवधशब्दावुभयतो बद्धशिक्ये स्कन्धवाह्ये काष्ठे वर्तेते Sidd. K. zu P. 4,4,17. द्वौ पिण्डौ कृत्वा वीवधे ऽध्याधाय Âçv. Gṛhj. 1,12,3. विवधप्रहृद्: VS. 15,5. स° und वि° so v. a. *was das Gleichgewicht hält, — nicht hält:* यद्न्यतः पृष्ठानि स्युर्विविवधं स्यान्मध्ये पृष्ठानि भवन्ति सविवधत्वाय TS. 7,3,8,2. 3,3. विवीवध Pañkav. Br. 4,5,19. उभयतोवीवध Kâtj. 27,10. सवीवधता f. *Gleichgewicht* Ait. Br. 8,1. Pañkav. Br. 14,1,10. fg. सवीवधत्व n. dass. 5,1,11. 22,5,7. — b) *Proviant, Vorrath an Getraide u. s. w.:* धान्यादेर्विविधः प्राप्तिः Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 2,64. Kân. Nitis. 13,87 (wo so zu lesen ist). 71 (in der Note die richtige Lesart). 11,15. fg. 15,5. 42. 16,39. 19,4. Spr. (II) 108. (I) 4118, v. l. der ed. Bomb. des Pañkat. Çiç. 2,64. — c) N. eines Ekâha Âçv. Çr. 9,8,12. — d) *Weg* AK. H. an. Med. — 2) f. वीवधा *Joch* so v. a. *Zwangsjacke, Fessel:* वृद्ध° *Joch der Alten* so v. a. *die Fesseln der althergebrachten Anschauungen* Sarvadarçanas. 110,18. — Vgl. उद्°, उद्क° und वैवधिक.

विवधिक und वैवधिक adj. (f. ई) *auf einem Schulterjoch tragend, Träger einer Last auf einem Tragholze* P. 4,4,17. — Vgl. वैवधिक.

विवर्त् adj. *das Wort* वि *enthaltend* Ait. Br. 6,7.

विवन्दिषु (vom desid. von वन्द्) adj. *zu begrüssen —, seine Ehrfurcht zu bezeugen wünschend:* पित्रोः पादौ Mârk. P. 23,1.

विवन्धिक bei Colebr. und Lois. zu AK. 2,10,15 fehlerhaft für विवधिक, wie ÇKDr. nach Sîkân. liest.

विवयन (von 3. वा mit वि) n. *Flechtwerk* Lâṭj. 3,12,7. Ait. Br. 8,3. मुञ्ज° Çat. Br. 12,3,2,6.

विवर् (von 1. वृ mit वि) m. n. 1) *Oeffnung, Loch, Spalte* AK. 1,2, 4,1. H. 1364. an. 2,422. Med. r. 219. Halâj. 3,2. ṚV. 1,112,3. in der Erde MBh. 1,1584. fg. दुर्योधनशापि मही प्रशास्ति न चास्य भूमिर्विवरं ददाति (wo er ungesehen wäre) 3,10242. कथं पतितवृत्तस्य विवरं नाशकद्दातुं पृथिवी मम 7,6312.*) धरण्यो विवरं मरुत् R. 4,8,43. 9,14. 51,3. H. 1364. Bhâg. P. 9,11,18. मही° R. Gorr. 2,28,14. सप्त भूविवराः Bhâg. P. 5,24,7. 9. 12,4,9. नाक° Prasn. 46,2. विन्ध्याद्रौ मायाविवरमन्दिरम् Kathâs. 29,14. सह्यस्य Hariv. 5335. 9739. Çiç. 166, v. 4. Varâh. Bṛh. S. 24,1. Bhâg. P. 3,17,3. श्वाविन्मूषक° Varâh. Bṛh. S. 48,16. Hit. 14, 17. fg. 25,16. Pañkat. 241,1. हारविवरः Maitrâyaṇ. 6,30. MBh. 3,2930. गवाक्ष° Raghu. 19,7. Spr. 1425. कृत्वाकुर्विवरम् (करण्डे) 2012. अण्डकटाह° Bhâg. P. 5,17,1. शरीर° R. 1,46,18. Bhâg. P. 3,31,17. लोभो विवरेषु Pañkat. 2,2,39. नेत्र° Raghu. 9,61. अस्थि° Bhâg. 1,96,18. 97,9. 264,5. अस्त्र° 277,14. विवराकृति 2,315,16. स्व° d. i. वायु° so v. a. *Nasenloch* Bhâg. P. 3,15,43. वदन° Spr. 4540. श्रुति° Varâh. Bṛh. S. 69,10. कण्ठ° P. 5,2,107, Vârtt. 1, Schol. यज्ञकार विवरं ताडकोरसि *eine klaffende Wunde* Raghu. 11,18. मनसि नृणां कुसुमायुधस्य विदधतौ विवरम् Bhâg. P. 5,2,6. स्तम्भ° *Spalte* Pañkat. 10,12. des Weibes Çiç. Br. 6,5. — 2) *Zwischenraum:* द्यावापृथिव्योः MBh. 7,236. Bhâg. P. 8, 20,21. 9,4,51. नभसः Nalod. 2,19. त्रिभुवन° Prasn. 3,8. ग्रहविवरेभ्यः Çiç. 166. दोर्दण्डखण्ड° Bhâg. P. 3,15,41. अङ्गुली° Raghu. 11,70. नेत्रक-

*) Vgl. Weber, Ueber das Râmâjaṇa S. 50. 78.

र्णयो: Vaṛāh. Bṛh. S. 58, 8. — 3) *Abstand, Verschiedenheit:* युवराज्ञम-स्ति° Vaṛāh. Bṛh. S. 53, 9. 14. Ganit. Bhāgānubh. 14. — 4) *offene Stelle* so v. a. *Blösse:* °दर्शक Spr. (II) 1401. रक्षेद्विवरमात्मन: (I) 1569. परो विवरानुग: 4464, v. l. MBh. 4, 1503. 1907. 6, 3333. 9, 3280. 10, 499. — 5) *Uebel, Schaden:* एतन्मरुत्ते विरवं (wohl विवरं) क्रियाकान्या भविष्यति Mārk. P. 126, 14. = दोष H. an. = दूषण Med. — 6) *das Sichäussern, Offenbarwerden:* विशेषबुद्धे: Bhāg. P. 5, 10, 13. = अवकाश Comm. — 7) n. *eine best. grosse Zahl* Lalit. ed. Calc. 168, 14. Vjutp. 180. 182. Mél. asiat. 4, 640. — Vgl. कर्ण° (auch Bhāg. P. 3, 9, 5), काष्ठ°, नाना°, निर्विवर, रोम°.

विवरण (wie eben) n. 1) *das Oeffnen, Eröffnen* MBh. 12, 3828. Suçr. 1, 25, 16. — 2) *Auseinandersetzung, Erörterung, Erklärung, Erläuterung* Hall. 2, 245. Brahmavaiv. P. 2, 28. गुण° Bhāg. P. 5, 9, 3. 6, 9, 40. Colebr. Misc. Ess. II, 7. Çañk. zu Kaṭh. Up. S. 1. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 12, Cl. 30. Verz. d. Oxf. H. 3, *b*, No. 24. 14, *a*, 7. *b*, 17. 19. 44, *b*, 32. 45, *a*, 19. 21. 174, *a*, 3. 176, *b*, No. 401. 207, *b*, 1 v. u. 219, *b*, No. 525. Kusum. 37, 3. Sarvadarçanas. 21, 13. fg. 61, 14. 90, 20. — Vgl. कायेनेति°, बोधचित्त°, बोधिचित्त°, मरुवाक्य° (unter मरुवाक्य 2), वाक्य° und विवृति.

विवरणतत्त्वदीपन n. Titel eines *Commentars* Hall 90. Verz. d. B. H. No. 622.

विवरणोपन्यास m. Titel eines *Commentars* Hall 202.

विवरनालिका f. *Flöte* Tāṇḍ. 1, 1, 123.

विवरिषु (vom desid. von 1. वर् mit वि) adj. *offenbar zu machen beabsichtigend:* वाक्षाम् Bhaṭṭ. 9, 26. Diese Bed. kämo von Rechts wegen nur विविवरिषु zu.

विवरुण adj. Varuṇa d. i. *den Tod abwehrend* AV. 8, 7, 10.

विवर्तन (2. वि + व°) adj. *der zum Schutz* (des Wagens) *dienenden Einfassung beraubt:* रथ MBh. 8, 623.

विवर्धन (2. वि + व°) adj. *glanzlos:* रात्तसराज्ञयोपेत: R. 5, 14, 58.

विवर्जक (vom caus. von वर्ज् mit वि) adj. *meidend, vermeidend, unterlassend:* परदार° MBh. 13, 6633. प्राणिघात° 6673.

विवर्जन (wie eben) n. *das Meiden, Vermeiden, Unterlassen, Aufgeben* Spr. (II) 2046. गुणत: संयक्ते कुर्याद्दोषतस्तु विवर्जनम् R. 5, 90, 12. ग्रामिषस्य MBh. 12, 166. मधुमांस° 13, 5610. Jiṭ. 1, 181. कार्याणाम् Spr. (II) 17. अकार्याणाम् MBh. 4, 414. स्तुतिनिन्दा° 12, 5942. Jiṭ. 3, 158. Spr. (II) 238. सदाचार° (I) 4236. 4319. 5045. Kathās. 27, 22. Bhāg. P. 7, 15, 22. *das Abstehen von* (abl.): विरोधात् Mārk. P. 51, 27.

विवर्जनीय (wie eben) adj. *zu vermeiden, zu unterlassen:* शोक, विलाप, रुदित R. Gorr. 2, 114, 23.

विवर्ण (2. वि + वर्ण) adj. (f. आ) 1) *farblos, entfärbt, nicht die natürliche, gesunde Farbe habend* Suçr. 1, 37, 1. 118, 9. 176, 19. Vaṛāh. Bṛh. S. 79, 29. 34. Sterne 13, 7. 17, 9. कर्यद्यचाप Harīv. 3577. °वर्ण 12204. विवर्णाङ्गी R. Gorr. 2, 28, 29. °देहा Rāǵa-Tar. 6, 21. मुख Kathās. 32, 86. °वदन MBh. 3, 2103. 2499. R. 2, 26, 8. 87, 4. R. Gorr. 2, 15, 15. 5, 26, 1. Spr. 2841 (Conj.). घोष Vaṛāh. Bṛh. S. 68, 32. कुनखिविवर्णा: 68, 41. 65, 10. पशात्ताप° Çiç. 106, 20. MBh. 3, 2514. 16022. 4, 145. 13, 4828. 14, 221. 2761. R. 2, 63, 17. 75, 7. R. Gorr. 2, 41, 4. Rāǵa-Tar. 3, 501. — 2) *zu einer Mischlingskaste gehörig* AK. 2, 10, 16. H. 932. Vaṛāh. Bṛh. S. 36, 2. Mārk. P. 41, 10 (विवर्णेषु zu lesen). — 3) *ungebildet, einfältig* H. 352. Hall. 2, 181. — Vgl. वैवर्ण्य.

विवर्णता (von विवर्ण) f. *Entfärbung, Wechsel der natürlichen, gesunden Farbe:* तेनाकृमेवं कृशता गतस्य विवर्णता चैव सशोकता च MBh. 2, 1933. बलग्लान्या विवर्णता Harīv. 11174. विवर्णता नयिष्यसि सीता शीतोज्झवायव: R. Gorr. 2, 33, 10 (9 Schl.). 3, 61, 45. स ज्ञगाम विवर्णताम् — इन्दुरिवोपसि Kathās. 105, 7. Sin. D. 167. यत्रास्य विषदग्धस्य Kām. Nītis. 7, 17.

विवर्णभाव m. dass. Rāgn. 6, 67.

विवर्णमणीकर् (विवर्ण - मणि + 1. कर्) an *Etwas* (acc.) *die Juwelen der natürlichen Farbe berauben:* कनकवलयं °कृतम् Çiç. 61.

विवर्त (von वर्त् mit वि) m. 1) etwa *der sich drehende,* eine Bez. des Himmels VS. 14, 23. TS. 5, 3, 6, 5. — 2) *das Sichabwenden,* = अपावृत्ति (so ist zu lesen) H. an. 3, 302. = अपवर्तन Med. t. 161. — 3) *Tanz* H. an. Med. — 4) *Umwandlung, Verwandlung:* कृतद्रुप° adj. Kathās. 16, 92. Uttarar. 28, 2 (37, 3). 68, 11 (88, 2). Mālatīm. 24, 8. लक्ष्मी° Dhūrtas. 74, 16. Bei den Vedântin *Entfaltung eines geistigen Urprincips* (*Gottes*) *zu der phänomenalen Welt* (im Gegens. zu परिणाम *die Entwickelung aus dem* प्रधान oder *der* प्रकृति): वेदान्तिन: सतो विवर्त: कार्यजातं न वस्तु सदिति Sarvadarçanas. 149, 17. सतो ब्रह्मतत्त्वस्य विवर्त: प्रपञ्च: 151, 7. °वाद् Madhus. in Ind. St. 1, 23, 14. Nīlak. 180. Wilson, Sânkhjak. S. 31. ब्रह्मणीव विवर्तानां विप्रलय: Uttarar. 105, 15 (143, 8). Naish. 3, 64. Daher so v. a. *der blosse Schein von Etwas:* रज्जुविवर्त: सर्प: so v. a. *eine Schlange, die in Wirklichkeit nur ein Strick ist,* Vedântas. (Allah.) No. 92. वस्तुविवर्तस्यावस्तुन: ebend. — 5) *Menge* H. an. Med. — 6) यत्रेर्विवर्त: N. eines Sâman Ind. St. 3, 202, *a*.

विवर्तन (von वर्त् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. *a) sich drehend, rollend* MBh. 12, 8946. निवर्तन = आयु:क्षपण Nīlak. — *b) umwandelnd, verwandelnd:* दक्षा योगं द्रुपविवर्तनम् Kathās. 16, 10. — 2) n. *a) das Rollen:* घर्माम्भोविसरविवर्तनै: Mālatīm. 23, 14. *das Sichwälzen:* शय्या-प्राप्तविवर्तनै: Çiç. 132. eines Pferdes ṚV. 1, 162, 14. Kathās. 81, 20. *das Zappeln:* आलात्तरुदर्तनविवर्तने । कुर्वन् 60, 187. *das Sichhinundherbewegen, Hinundherziehen* (von einem Ort zum andern): तामिस्रादिषु घोरेषु नरकेषु M. 12, 75. — *b) das Sichumwenden, Sichumdrehen, Sichabwenden* MBh. 5, 2651. Rāgn. 19, 22. Kir. 5, 40. Umâkh 7, 11. — *c) das Umdrehen* Suçr. 1, 25, 15. 300, 9. 301, 2. — *d) Wendung, Wendepunkt* TBr. 3, 9, 22, 2. — *e) Umwandlung, Verwandlung:* संघे: ṚV. Prât. ed. Müller 1, 3. कृतद्रुपविवर्तना Kathās. 13, 94. 33, 178. 105, 62. शब्दार्थ° Verz. d. Oxf. H. 188, *b*, 28. *Umschlag, Wechsel:* चक्रा-एटविवर्तनदारुण (विधि) Uttarar. 79, 7 (102, 4) = Mālatīm. 71, 8.

विवर्तिन् (von वर्त् mit वि) adj. 1) *sich drehend, sich im Kreise bewegend:* उपलोपविवर्तिभिरम्बुभि: Kir. 5, 15. *sich wälzend:* बिसिनोप-स्तरशय्या° Kathās. 55, 62. 95, 48. — 2) *sich abwendend, sich hinwendend zu:* मुखमंसविवर्ति Çiç. 73. — 3) *sich verändernd:* प्रतिक्षणविवर्तिनी। भवस्थितिरिवानित्यसंबन्धा विलासिनी Kathās. 52, 287. — 4) *sich irgendwo befindend, weilend:* नरा नरकान्तर्विवर्तिन: Mārk. P. 14, 36. क-ण्ठविवर्तिभि: प्राणै: Kathās. 21, 24. — घ° Śiv. 7, 13 fehlerhaft für घ-

निवर्तिन्, wie MBh. 3,16913 gelesen wird. Vgl. एकदेश°, पार्श्व°.

विवर्त्मन् (2. वि + व°) n. *Abweg:* राज्ञानं सज्जमानं विवर्त्मसु Kâm. Nîtis. 5,52.

विवर्धन (von 1. वर्ध् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. (f. आ und ई) *vermehrend, verstärkend, fördernd;* das obj. *a)* im gen.: यूथस्य (वृषभ) Vasiṣṭh. Bṛh. S. 61,17. आयुःश्रीबलकीर्तीनाम् Bhâg. P. 4,14,14. प्रजाम् 7,2,33. — *b)* im comp. vorangehend: यमराष्ट्र° (संग्राम) MBh. 9,533. मङ्गलौषधात्मविवर्धने (= वर्धन n. = छेदन n. Nîlak.) हरि 4,1689. ऐलवंश° 1,2753. 13,248. Harîv. 102. R. Gorr. 1,40,8. 7,29,38. Bhâg. P. 4,27,8. भोज° *das Geschlecht Bhoǵa's vermehrend* so v. a. *zum Geschlecht Bh. gehörig* (विवर्धन = छेदिन् Nîlak.) Harîv. 4323. मित्र° MBh. 13, 2974. दारपुत्रपौत्र° Verz. d. Oxf. H. 20,a, No. 63, Cl. 13. बीज° R. 3,49, 11. कपर्मेदा° Suçr. 1,177,4. 178,1. 196,15. 203,3. मोदकाल° (f. ई) MBh. 12,12430. बुद्धि° M. 1,106. आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीति° Bhag. 17,8. MBh. 1,335. 3,88. 2302. 2334. 11064 (f. ई). Harîv. 9861. R. 1,9,18 (f. आ). R. Gorr. 1,3, Einl. 2. 2,95,16. 3,79,9. 5,31,28. 7,26,7 (°विवर्धनम् adv.). Kâm. Nîtis. 14,36. Bhâg. P. 7,14,24. 10,86,41. 12,7,25. Verz. d. Oxf. H. 33,a,7. 262,b,1. Paṇḍar. 4,3,174. — 2) m. N. pr. eines Kriegers MBh. 2,116. — 3) n. *Wachsthum, Zunahme, das Gedeihen:* क्षत्रस्य MBh. 1,7511. स्वपक्षस्य 7513. नृणामायुर्विवर्धनम् R. 7,74,33. जठराग्नि° Verz. d. Oxf. H. 237,a, No. 568, Z. 11. प्रीति° Spr. 1217, v. l. — Vgl. धर्म°, ब्रह्म°.

विवर्धनीय (vom caus. von 1. वर्ध् mit वि) adj. *zu vermehren, zu fördern:* अर्था: Paṇḍar. ed. orn. 3,16. गुण Spr. (II) 1581, v. l.

विवर्धयिषु (vom desid. des caus. von 1. वर्ध्) adj. *zu vermehren beabsichtigend:* प्रजा: Harîv. 131. 133. Bhâg. P. 6,4,7. द्रोणमेक्ष्मानम् MBh. 10,299.

विवर्धिन् adj. am Ende eines comp. = विवर्धन. यमराष्ट्र° MBh. 6, 4717. वित्त° M. 8,140. शोक° MBh. 1,965. आयुर्वि° 3,16952. मङ्गल्य° 4,2016. चन्द्रादित्य° so v. a. *ihren Glanz vermehrend* 6,808. प्रीति° 15, 517. R. 2,63,13. Kathâs. 13,53. Paṇḍar. 2,8,8. 10. Ueberall fem. und am Ende eines Çloka, die v. l. hat hier und da विवर्धनी.

विवर्मन् (2. वि + व°) adj. *des Harnisches beraubt, keinen Harnisch habend* MBh. 3,2061. 6,22. 7,1386. विवर्मध्वजजीवित (so die ed. Bomb.) *des Harnisches, des Banners und des Lebens beraubt* 8,876. विवर्मायुधवाहना: (so die ed. Bomb.) 1234.

विवर्षण (von वर्ष् mit वि) n. *das Regnen,* von der weiblichen Brust so v. a. *reichliches Fliessen der Milch:* सप्रस्रवस्तन° Paṇḍar. 3,5,13.

विवर्षयिषु (vom desid. von वर्ष्) adj. *zu regnen im Begriff stehend:* मेघ R. 6,37,68.

विवर्ह adj. VS. 14,9.

विर्विवृत्र (2. वि + वृत्र) adj. *unverhüllt, bloss* RV. 10,99,5.

विवश (2. वि + 1. वश) 1) adj. (f. आ) *keinen eigenen Willen habend, seiner nicht mächtig, sich willenlos bei Etwas verhaltend, nicht aus eigenem Antriebe handelnd, ungern* oder *unwillkührlich Etwas thuend:* पाणिर्वध्यते वारुणीभिश्म् । विवश: M. 8,32. स वशे (so die ed. Bomb.) विवशो राज्ञा परेषामभ्य वर्तते MBh. 4,550. 7,1339. 8,4327 (mit der ed. Bomb. विवश st. विरम zu lesen). 13,35 (विवशं mit der ed. Bomb. zu lesen). Harîv. 8765. R. 2,76,22. R. Gorr. 2,83,42. 92,24. 3,35,51. 61, 8. 64,7. 5,35,42. 6,103,7. Raghu. 8,11. Kumâras. 4,1. Spr. 2346 (II). सोऽयोगं नरमाप्नोति विवशा: सर्वसंपद: 1585. Kathâs. 23,13. 28,70. 32, 84. 37,74. 40,88. 42,94. 84,49. Râǵa-Tar. 2,38. 6,51. Bhâg. P. 1,1,14. 3,9,15. 5,1,11. 13,18. 24,20. 8,1,9. 2,7. 12,8. 8,2,30. 11,10,17. कुर्वन्ति कस्य न मनो विवशम् Spr. (II) 1456. Râǵa-Tar. 2,82. 8,721. 1039. in comp. mit dem, was den Willen lähmt: क्लेश° Spr. 2744. स्मरावेश° Kathâs. 37,205. 43,80. Râǵa-Tar. 6,78. 8,1216. 1394. घोत्कण्ठविवशामीलितलोचन *unwillkührlich* Bhâg. P. 5,17,2. य° Maitrâyaṇ. 6,25. Nach den Lexicographen = अरिष्टदुष्टधी AK. 3,1,44. H. 438. Med. ç. 28. = अरिष्टदुष्टमति H. an. 3,727. = अवश्यात्मन् H. an. Med. = वश und विकल Trik. 3,3,431. — 2) m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. (2te Aufl.) 2,193, N. 3. nach anderen Lesarten विविंश, विविश, विवाश, विवास.

विवशता (von विवश) f. *Willenlosigkeit, das Nichtherrsein über sich selbst:* नीता भूतैरिव विवशताम् Râǵa-Tar. 8,1614.

विवशीकर् (विवश + 1. कर्) *Jmd willenlos machen:* स्मरेण °कृता Kathâs. 122,86. तिर्यक्त्वविवशीकृत 68,47. 72,4. Râǵa-Tar. 3,88. विवशीकृत von einem Wagen wohl so v. a. *in seinen Bewegungen gehemmt* MBh. 6,1890 (fehlt in der ed. Bomb.).

विवस् n. angeblich so v. a. धन Sây. zu RV. 1,187,7.

विवसन (2. वि + 1. वसन 1) adj. (f. आ) *unbekleidet, nackt* MBh. 9, 256. Spr. 4462. Mârk. P. 8,154. Çâṅk. 10,182. — 2) m. *ein* (*nackt einhergehender*) Gaina Sarvadarçanas. 24,18. Colebr. Misc. Ess. I, 380.

विवस्त्र (2. वि + व°) adj. (f. आ) *unbekleidet, nackt* MBh. 2,2230. 3, 2323. Vaiṣṇ. Bṛh. S. 86,30. Kathâs. 19,21. 20,110. 29,85. Bhâg. P. 2, 12,26. 3,14,30. 10,10,6. 22,19. Mârk. P. 35,34. Vet. in LA. (III) 11,5.

विवस्त्रता (von विवस्त्र) f. *Nacktheit* MBh. 2,2386. Kâm. Nîtis. 14,39.

विर्वस्वन् (von 2. वस् mit वि) adj. so v. a. विवस्वत्. अग्निर्मीधे विवस्वभि: (instr. pl. im Sinne eines adv.) Agni *entzünde ich, so dass es aufleuchtet,* RV. 8,91,32. n. etwa *das Aufleuchtende, zuerst vom Licht Bestrahlte* d. h. *Gipfel:* यद्दो पितो अकृणोर्विवस्व पर्वतानाम् 1,187,8. Vielleicht ist die Stelle verdorben, nach Sây. als gen. pl. zu fassen.

विर्वस्वत् und विर्वस्वत् (wie eben) 1) adj. *aufleuchtend, in's Licht tretend, Helle verbreitend, morgendlich:* विर्वस्वद्रुषमाणित्र राधः RV. 1, 44,1. चक्षस् 96,2. Ushas 3,30,12. Agni 7,9,3. सदने विवस्वत: so v. a. *am Feueraltar* 1,53,1. 3,34,7. 51,3. 10,12,7. 75,1. — 1,139,1. VS. 22, 30. Kâṭh. 35,10 bei Weber, Nax. 2,350. — 2) m. N. *des Gottes des aufgehenden Tageslichts, der Morgensonne;* in den Brâhmaṇa, VS. 8,5 und im Epos u. s. w. Âditja genannt; später ein Name *der Sonne* (AK. 1,1,2,30. 3,4,24,60. H. 96. an. 3,296. Med. t. 219. Hall. 1,33). यम: पूषा ऽर्यमा विवस्वान् AV. 19,2,32. भुवो विवस्वान्नन्वातताम ebend. विवस्वान्नो मघवं कृणोतु 3,61. अमृतत्वे दधातु 62. मा नो रीतिर्विवस्वत: पुरा नु जरसो वधीत् RV. 8,56,20. neben Varuṇa 10,63,6. AV. 11,6,2. Sohn der Aditi TBr. 1,1,9,3. Paṇḍav. Br. 24,12,4. die Götter heissen ज्ञानिम विवस्वत: RV. 10,63,1. यस्य योगे (des Wagens der Açvin) दुहिता जायते दिव उभे यन्नो मुहिने विवस्वत: 39,15. म शैवधिं नि दे-धिषे विवस्वति 2,13,6. आ विवस्वत इन्दु: कोशमचुच्यवात् 8,61,8 (vgl.

दिवः कोशम् 5,53,6). 6,39. Çat. Br. 3,9,4,7. 4,3,3,16. सखा वा घादित्यो विवस्वानेष एतेऽहोरात्रे विवस्ते 10,5,2,4. Kâṭy. 11, 6. विवस्वहात TS. 4,4,12,4. Agni ist sein Bote RV. 1, 58, 1. 4, 7, 4. 5, 11, 3. 8, 39, 8. 10,21,3. ebenso Mâtariçvan, der das Feuer bringt, 6,8,4; vgl. त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन घाविर्भव विवस्वते 1,31,2. Vivasvant ist Vater der Zwillinge Jama und Jamî und durch sie des Menschengeschlechts RV. 10,14,5. 17,1. 2. ततो विवस्वानादित्यो ऽजायत तस्य वा इयं प्रजा यन्मनुष्याः TS. 6,5,6,2. Çat. Br. 3,1,2,4. Daher wohl pl. विवस्वन्तः so v. a. मनुष्याः Naigh. 2,3. Vater des Zwillingspaares der Açvin Nir. 12, 20. RV. 10,17,2; vgl. वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा। मनुष्वच्छेषू घा गतम् *nachdem ihr, Açvin, bei* Vivasvant *die Nacht über euch aufgehalten* 1,46,13. Vater des Manu, welcher Vâlakh. 4,1 Manu Vivasvant st. Vaivasvata heisst (विवस्वत् = वैवस्वतमनु Âgâra im ÇKDa.). — Als Âditja, d. i. als Sohn Kaçjapa's und der Aditi, und als Vater Manu's (auch Jama's und der Jamunâ) MBh. 1,2523. 3136. 3760. Harîv. 176. 550. fgg. 594. 12912. 14167. R. 1,70,20. 2,110, 6 (119, 6 Gorr.). VP. 122. 266, N. 1. Bhâg. P. 6, 6, 37. fg. विवस्वत्सुत d. i. Manu Vaivasvata M. 1,62. unter den Viçve Devâḥ MBh. 13, 4356. als Pragâpati R. 3,20,9. VP. 50, N. 2. mit dem patron. Âditja als Liedverfasser von RV. 10, 13. Vivasvant als Verfasser eines Gesetzbuchs Verz. d. Oxf. H. 270, b, 43. als Astronom Verz. d. B. H. No. 835. ein Daitja MBh. 5,3686. Als N. *der Sonne* MBh. 3,16672. 6,5743. R. 2,39,18. Suça. 1,19,17. Ṛt. 1,18. Râgat. 10, 31. 17, 45. Vaitân. Bhp. 8. 24,22. 28,3. 44,23. Kir. 5,48. Spr. 1437. Pârç. 114,10. Mâlav. P. 34, 20. *der Sonnengott* Bhâg. 4, 1. 4. Spr. 2842. Vaitân. Bhp. 8. 53, 46. 53. *Gott* überh. AK. 3, 4, 44, 60. H. an. Med. — 3) die Commentatoren erklären das Wort häufig durch परिचरणावत्, यजमान, wohl wegen des Anklangs an घाविवासत्. Wirklich scheint es RV. 9 *den* Soma-*Priester* zu bezeichnen: नप्तीर्गिर्वो विवस्वतः प्रियो न मंमृज्ये पुवो *von den Töchtern* d. h. *den Fingern des V. gestreichelt oder geputzt* 9,14,5. 10, 3. 26,4. क्रिन्वतीः सप्त वाणयः। विप्रमाता विवस्वतः 66,3. यदी विवस्वतो धियो रुशं क्रिन्वन्ति पातवे 99,2. Vermuthen liesse sich: *der Morgendliche* d. h. *der mit Sonnenaufgang sein Werk Beginnende.* — 4) f. विवस्वती *die Stadt des Sonnengottes* Med. — Vgl. वैवस्वत.

विवक्ष (von 1. वच् mit वि) m. N. *eines der sieben Winde* MBh. 12, 12409. fgg. Harîv. 12787. Brahmâṇḍa-P. beim Schol. zu Çiç. 165 (विवक्षाप्य: zu lesen). *eine der sieben Zungen des Feuers* (als masc.!) Colebr. Misc. Ess. II, 398.

विवाक (von वच् mit वि) nom. ag. *ein Urtheil über Etwas abgebend:* यर्चिप्रत्यर्चिनोर्वचनं विरूढाविरूढं सभ्यैः सह विविनक्ति विवेचयति वा विवाकः Mit. im ÇKDa. — Vgl. प्रश्न°, प्राड्विवाक und मुख°.

विवाक्य (wie oben) s. घविवार्क्य (so zu betonen nach TS. 7,3,6,1.2).

विर्वाच् (2. वि + वाच्) 1) f. *widerstreitender Ruf, Streit* Naigh. 2,17. RV. 1,178,4. 8,45,29. 7,23,3. रुशत्त उ त्वा रुश्यं विवाचि तनूषु शूराः मघवन्मघोनाम् 30,2. — 2) adj. *gegen einander rufend, streitend:* त्वामग्ने विवाचो रुशत्ते चर्षणयः शूरसातौ RV. 6,33,1. 31,1. नुनुदे विवाचः 3,34,10. 10,23,5.

विर्वाचन (vom caus. von वच् mit वि) 1) nom. ag. (f. ई) *Schiedsrichter* RV. 10,139,2. सहिर्विवाचनः देवाः) TS. 1,5,10,2. — 2) n. *Zurechtweisung, Berichtigung, Entscheidung:* मृषा वाचो विवाचनम् TBr. 2,7,16,4. एष वः सहिवाचनम् Âit. Br. 7,18.

विर्वाचस (2. वि + वचस्) adj. *verschieden redend:* ज्ञन AV. 12,1,45. — Vgl. सवाचस.

विवाच्य (von वच् mit वि) adj. *zu berichtigen:* नास्मिन्नकृनि केनचित्कस्यचिद्विवाच्यमविवाक्यमित्येतदाचष्टे Âçv. Çr. 8,12,10.

विवात (von 2. वा mit वि oder 2. वि + 1. वात) adj. *heftig wehend:* वाताः Snâpv. Br. in Ind. St. 1,40,8 v. u.

विवाद् (von वद् mit वि) m. *Streit* (auch *wissenschaftlicher* und *vor Gericht*) AK. 1,1,3,9. Taik. 3,2,18. H. 262. Çârṅg. Gṛhy. 6,6. M. 4,131. 8,229. यस्मिन्यस्मिन्विवादे तु कोपस्तस्यं कृतं भवेत् 117. Jâgn. 2,4. MBh. 4,236. R. 5,28,49. मक्षिणां तेषां विवादमनुपश्यताम् 87,4. Kap. 1,139. Kâm. Nîtis. 5,25. Çiç. 106,10. Mâlav. 13,21. (छलस्य) विद्या विवादाय Spr. 2800. विवादे ऽन्विष्यते पत्रम् 2843. Varâh. Bhp. S. 16,29. Bhp. 21, 9. उभौ विवादसक्तौ तौ राज्ञायमुपजग्मतुः Kathâs. 19, 46. Verz. d. B. H. No. 493. Verz. d. Oxf. H. 98,a,2. P. 1,2,33, Schol. न कालो ऽर्थविवादस्य Pârâç. 143,12. घलं विवादेन R. 6,1,16. Kumâras. 5,52. प्रशमयसि विवादम् Çiç. 105. °शमन Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,330 (ebend. विवाद als n.). विवादे विनिर्जित्य M. 11,205. विजयी Kathâs. 66,61. मिथ्या यदैषा भविता विवादः Bhâg. P. 3,3,15. स्वामिपालयोः M. 8,5. Râgat. 7, 50. एतयोः परस्परविवादः Ver. in LA. (III) 17,5. एतैर्विवादान्संत्यज्य M. 4,181. Jâgn. 1,158. तेन चेद्विवादस्ते Spr. 2406. विवादः (so die neuere Ausg.) संस्थितः Harîv. 7333. त्वयि तिष्ठते विवादः Vop. 23,8. विवादं किल चक्रतुः Kathâs. 22,181. गुरुष्वेवं विवादं च न कुर्यात्केनचित्सह M. 4,139 (= Spr. 4584). MBh. 5,888. Spr. 1354. Ver. in LA. (III) 31,4. विवादं गताः 3. सद्भिर्विवादं मैत्रीं च — घावहेत् Spr. 3147. दासीवर्गेण विवादं न समाचरेत् M. 4,180. एषु स्थानेषु भूयिष्ठं विवादं चरतां नृणाम् 8,8. गुरुक्षेत्रतडागेषु u. s. w. समुत्पन्ने विवादे Spr. (II) 2188. उपकारस्य धर्मस्य विवादो नास्ति कस्यचित् Kathâs. 27,24. सीमा प्रति समुत्पन्ने विवादे ग्रामयोर्द्वयोः M. 8,245. सीम्नः Jâgn. 2,150. सीमा° M. 8,6. राजकुल° unter, zwischen Snâpv. Br. 6,3. R. 1,3,11 (5 Gorr.). स्त्री° mit Bhâg. P. 8,9,22. विवादानवसर् 6,9,35. °संवादभुवः 4,31. विवादास्पद Sarvadarçanas. 47,22. 119,10. °पद 123,7. विवाद्याध्यासित *dem Streite unterliegend, bestreitbar, worüber man streitet* 19,6. 48,10. 82,18. 108, 12. fg. Dhûrtas. 92,2. विवादानुगत dass. Mit. im ÇKDa. (fälschlich = विवादकर्तृ ÇKDa.). — Vgl. निर्विवाद, प्रश्न°.

विवादकल्पतरु m. Titel eines Werkes über *Rechtsverfahren* Verz. d. Oxf. H. 292,b,12.

विवादचन्द्र m. desgl. Mack. Coll. I,26. Verz. d. Oxf. H. 296,a, No. 718.

विवादचिन्तामणि m. desgl. Gild. Bibl. 499. Verz. d. Oxf. H. 273,a, No. 646. fg.

विवादताण्डव desgl. Mack. Coll. I,26.

विवादभङ्गार्णव m. desgl. Mack. Coll. I,27. Verz. d. Oxf. H. 296,a, No. 719. fgg.

विवादसोपान्य n. desgl. Verz. d. B. H. No. 1403.

विवादार्णवसेतु m. desgl. (aus dem Bṛhaddharmapurâṇa) Colebr. Misc. Ess. II,177.

विवादिन् (von वद् mit वि) nom. ag. *mit Jmd im Streite liegend* M. 8,69. 254. MBn. 3,12698. Kathâs. 79,45. अ° *nicht im Streite liegend mit* (अभि) Çat. Br. 3,9,3,2. *worüber Niemand streitet* MBh. 12,7132. — भीरुविवादिनः MBn. 3,13048 fehlerhaft für °विषादिनः, wie die ed. Bomb. liest.

विवाधान s. u. विराधान.

विवान (von 3. वा mit वा) m. 1) *das Flechten:* घासस्त्री° Kâty. Çr. 22,6,12. — 2) *Flechtwerk* Kâty. Çr. 26,2,6. Lâṭy. 3,12,1.

विवार (von 1. वृ mit वि) m. *die Oeffnung der Stimmritze* (bei der Aussprache eines Lautes), Gegens. संवार P. 1,1,9, Schol.

विवारयिषु (vom desid. des caus. von 1. वृ) adj. *zurückzuhalten —, aufzuhalten beabsichtigend*, mit acc.: सैन्यानीकम् MBh. 7,5219. 5238.

विवाश m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. bei Muir, ST. I,191, N. 11. nach anderen Lesarten विविंश, विविश, विवंश, विवश, विवास.

1. विवास (von 2. वस् mit वि) m. *das Hellwerden, Tagen* Âçv. Çr. 2, 18,9. °काले 4,13,1. सारात्रिविवासमाचष्टे *bis zum Tagesanbruch* P. 3, 1,26, Vârtt. 5, Schol.

2. विवास (von 3. वस् mit वि) m. *das Verlassen der Heimat, Entfernung aus der Heimat, Verbannung* (intrans.): यन्त्रकेतोर्विवासश्च पार्थस्य MBh. 1,432. 3,2776. 12,13330. विवासस्तवारण्ये R. 2,23,22 (20, 26 Gorr.). 63,2 (65,2 Gorr.). R. Gorr. 2,7,32. 33,15. 56,32. Varâh. Bṛh. S. 96,10. Buâ. P. 3,16,12. *das Getrenntsein von* (instr.): प्रियैर्विवासो बहुशः संवासश्चाप्रियैः सह MBh. 14,441.

3. विवास m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. 198. richtiger विविंश in der neuen Aufl.

1. विवासन (vom caus. von 2. वस् mit वि) 1) adj. *erhellend* Nir. 4,7. — 2) n. *das Erhellen* Nir. 12,41.

2. विवासन (vom caus. von 3. वस् mit वि) n. *das Bekleidetsein mit, das Gehülltsein in* (instr.): यन्त्रिणैः MBh. 12,500 = 14,323.

3. विवासन (vom caus. von 3. वस् mit वि) n. *das Entfernen aus der Heimat, Verbannen* R. 1,1,22 (23 Gorr.). 3,12 (6 Gorr.). 2,22,15 (19, 12 Gorr.). 38,10 (37,19 Gorr.). 54,20 (21 Gorr.). 58,26. 72,48. 73,4. 5,7,14. Uttarar. ed. Cow. 41,5 (प्रवासन die ältere Ausg.). Varâh. Bṛh. S. 46,53.

विवासनवत् adj. zur Erkl. von विवास्वत् Nir. 7,26.

विवासयितृ (vom caus. von 3. वस् mit वि) nom. ag. *Vertreiber* TBr. Comm. 3,361,15.

विवासस् (2. वि + 1. वास°) adj. *unbekleidet, nackt* MBh. 3,2313. Buâ. P. 3,10,47. 9,1,30. 14,22. 18,19.

विवास्य adj. *zu verbannen* M. 9,241. Jâjñ. 2,81. R. 2,36,24.

विवाह (von 1. वह् mit वि) 1) m. *Heimführung der Braut, Hochzeit, Heirath* AK. 2,7,35. Taik. 2,7,30. H. 317. Halâj. 2,240. AV. 12,1,24. 14,2,65. प्र वर्त्स्यसो विवाहमाप्नोति TS. 7,2,8,7 (वत्सीयांसं विवाहम् Paṭṭâv. Br. 7,10,4). Kâṭy. 25,3. देवविवाहं व्यवहेताम् Âpr. Br. 4,27. Âçv. Çr. 11,2,6. 12,5,1. 15,6. Gṛhy. 1,4,1. die Arten der Heirath 6, 1. fgg. Kauç. 75. 79. 84. साम्नः: Paṭṭâv. Br. 11,9,5. — M. 1,112. 5,152. 8,112. MBh. 3,13844. R. 1,3,10. 2,57,12. Hariv. 7,17. Varâh. Bṛh. S. 1,10. 2,S. 6, Z. 3. Buâ. P. 8,19,43. यस्य दमयन्त्याश्च MBh. 3,2220. विवाहं कारयामास दमयन्त्या नलस्य च 2231. विवाहं निर्वर्तयितुम् R. 1,69, 12. राजन्यविप्रयोः Buâ. P. 9,18,5. इत्येतेषामविवाहः *diese dürfen nicht unter einander heirathen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 53,6 u. s. w. विवाहः सदृशैः सह M. 10,53. समैर्विवाहं कुरुते Spr. 5180. कुमारेण सह विवाहः कृतः Ver. in LA. (III) 11,13. fg. कदाचिद्विवाहः संजातस्तद्गृहे Paṭṭâv. 20,19. विवाहोत्का Râjat. 1,68. °विधि M. 9,65. Varâh. Bṛh. S. 71,13. Verz. d. B. H. No. 1046. °योग Verz. d. Oxf. H. 215,b, 37. °प्रयोग 276,b,29. विवाहेतिकर्तव्यता 28. fg. °दीक्षा Raçn. 3,33. °काल Varâh. Bṛh. S. 43,37. 98,14. Bṛh. 28 (26),6. °समय Paṭṭâv. 188, 22. विवाहाग्नि Âçv. Gṛhy. 1,8,5. °चतुर्थीकर्मन् Verz. d. B. H. No. 1046. °गृह Kathâs. 34,254. अष्टौ स्त्रीविवाहाः *acht Arten der Heirath* M. 3, 20. 26. fgg. 9,167. Jâjñ. 1,58. fgg. Verz. d. Oxf. H. 85,a,26. fg. 268,b, 41. 276,b,28. गान्धर्वेण विवाहेन बह्व्यो राजर्षिकन्यकाः। भूयसे परिणीताः Çik. 71. इमां गान्धर्वेण विवाहविधिनोपयम्य 110,14. am Ende eines adj. comp. f. या Kathâs. 16,70. 24,32. 33,214. Kull. zu M. 9,97. — 2) m. in dem Verse Âpr. Br. 7,13 wird mit einem misslungenen Wortspiele von dem Asketen gesagt: *der Athem ist sein Brod, das Kleid ist sein Haus, sein eigenes Aussehen sein Goldschmuck*, पशवो विवाहाः *die Hausthiere seine Fahrgelegenheiten* (Sänften und dgl.) und zugleich *seine Hochzeit, der Freund ist sein Weib* u. s. w. Nach Sây. = विशेषेण निर्वाहकाः; es hat wohl ursprünglich विवाहः sg. gestanden. — 3) n. *eine best. grosse Zahl* Lalit. ed. Calc. 168,15. fg. Vjutp. 181. 184. — 4) m. als Name *eines Windes* in einem Citat beim Schol. zu Çik. 165 fehlerhaft für विवह्. — Vgl. कु°, दुर्विवाह.

विवाहनीया (vom caus. von 1. वह् mit वि) adj. f. *heimzuführen als Frau, mit der man Hochzeit zu machen hat:* यश्चैव तयावसाने विवाहनीया राजदुहिता Daçak. 53,2.

विवाहपटल m. n. Bez. *des Abschnittes in einem astr. Werke, der über die zu Hochzeiten günstigen Zeiten handelt*, Kern in der Einl. zu Varâh. Bṛh. S. 25. Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 1,10. zu Bṛh. 28 (26),6. Verz. d. Oxf. H. 338,a,16. शौनकीय° 19. Vgl. विवाहे लग्नपटलः Verz. d. Cambr. H. 63,23. fg. — Vgl. बृहद्विवाहपटल.

विवाहपटह m. *Hochzeitspauke* Mâlatîm. 172,21.

विवाहपद्धति f. Titel eines über *Hochzeiten* handelnden Werkes Verz. d. B. H. No. 1048.

विवाहवृन्दावन n. desgl. Verz. d. B. H. No. 873. Verz. d. Oxf. H. 336, a, No. 790. fg.

विवाहवेष m. *Hochzeitskleid:* कृतविवाहवेषा Raçn. 6,10.

विवाहहोम m. *Hochzeitsopfer:* °होमोपयुक्ता मन्त्राः Verz. d. Oxf. H. 398,a, No. 144.

विवाहिन् (von 1. वह् mit वि) adj. *heirathend, eine Ehe schliessend;* अ° *mit dem man sich nicht durch Heirath verbindet* M. 9,238. द्विविवाहिन् *mit Zweien durch Heirath verbunden;* davon °विवाहिता f. nom. abstr. Verz. d. Oxf. H. 87,a,24. fg.

विवाह्य (wie oben) adj. 1) *zu heirathen* (ein Mädchen): विवाह्यविवाह्यकन्यानिरूपण Verz. d. Oxf. H. 85,a,22. fg. विवाह्या Kathâs. 33, 190. 103,146. Kull. zu M. 3,5. यविवाह्या Spr. 1777. — 2) *mit dem*

man sich verschwägern darf, in dessen Familie man heirathen darf Lit.: 8, 2, 11. यविवाह्या हि राजानो देवयानि पितुस्तव MBh. 1, 3876. — 3) *verschwägert, durch Heirath verwandt* Jiân. 1, 110 (*Schwiegersohn* Strenge). MBh. 2, 1390. श्यालस्त्रविवाह्याश्च कौशिका बन्धवः स्मृताः Harîv. 1468 = 1772. nach dem Comm. = वैवाह्य *Gegenschwäher* Gorr. 4, 10, 20.

विविंश (2. वि + विंश) m. 1) N. pr. eines Sohnes des Ikshvâku (Vira) und Grosssohnes des Kshupa MBh. 14, 68. Mârk. P. 120, 14. fg. — 2) pl. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. (2te Aufl.) 2, 193.

विविंशति (2. वि + विंश°) m. N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 2447. 2729. 4543. 4, 1151. eines Sohnes des Vimça und Urgrosssohnes des Khanitra VP. 332. eines Sohnes des Kâkshusha und Grosssohnes des Khanitra Bhâg. P. 9, 2, 24. fg.

विविक्त 1) adj. und n. s. u. 1. विच् mit वि; विविक्ता s. u. विवक्ता. — 2) m. = वसुनन्दन H. an. 3, 297. = वसुनन्द Med. t. 153. fg.

विविक्तता (von विविक्त) f. 1) *Unterschiedenheit, Gesondertheit:* वर्णपदवाक्य° so v. a. *genaue Sonderung der einzelnen Laute, Wörter und Sätze bei der Aussprache* H. 71. — 2) *Isolirtheit:* प्रतीकारा नृपस्यायमनयत्न विविक्तताम् Râga-Tar. 3, 254. — 3) *Reinheit, Lauterkeit:* des Âkâça Suçr. 1, 313, 2 (vgl. 151, 17). — 4) *körperliches Wohlbehagen* Srçr. 2, 219, 8. Çiñkn. Saṁs. 3, 6, 10.

विविक्तत्व (wie eben) n. *Einsamkeit* Mṛicch. 98, 25.

विविक्तनामन् m. N. pr. eines der sieben Söhne des Hiraṇjaretas, Beherrschers von Kuçadvîpa, und des von ihm beherrschten Varsha dieses Dvîpa Bhâg. P. 5, 20, 15.

विविक्ति (von 1. विच् mit वि) f. 1) *Sonderung, Trennung* VS. 30, 13. विविक्ति v. l. im TBr. — 2) *richtige Unterscheidung* Sarvadarçanas. 74, 21.

विविक्तीकर् (विविक्त + 1. कर्) *leer machen:* यत्तःपुरोत्तमं °कृतं तया *aus dem die übrigen Bewohner von ihr entfernt worden waren* Kathâs. 74, 231. *allein lassen, verlassen:* (श्रमम्) सेकात्ते मुनिकन्याभिर्विविक्तीकृतवृत्तकम् Raghu. ed. Calc. 1, 52.

विविक्तीकृत् (von 1. विच् mit वि) adj. *unterscheidend* RV. 3, 57, 1.

विविक्षु (vom desid. von 1. विश्) nom. ag. Vop. 3, 151. nom. विविक्षु.

विविक्षु (wie eben) adj. *hineinzugehen beabsichtigend, — im Begriff stehend:* mit acc.: उद्यानम् Vikr. 24. नगरम् Râga-Tar. 8, 1160. 1367. घरण्याभ्यन्तरम् Kathâs. 94, 12. 109, 60. Bhâg. P. 9, 4, 50. 11, 18, 1. तमः 4, 21, 40. देवतालयम् Verz. d. Oxf. H. 239, *b*, 6. पतंगवह्निमुखम् Kumâras. 3, 64. वह्निम् Kathâs. 22, 241. Bhâg. P. 10, 89, 48. mit loc. Râga-Tar. 8, 1663.

विविचि (von 1. विच् mit वि) adj. P. 3, 2, 171, Vârtt. 2, Schol. *unterscheidend, sondernd:* Agni RV. 5, 8, 2. TBr. 3, 7, 2, 5. Âit. Br. 7, 6. Çat. Br. 12, 4, 2, 2. Âçv. Çr. 3, 13, 5. Indra Vilakh. 2, 6. विविचीष्टि Comm. zu TS. 3, 3, 11, 3.

विविच्च Râga-Tar. 4, 50 fehlerhaft für विविग्न (s. u. विज् mit वि), wie die ed. Calc. liest.

विविच्ये Taitt. Âr. 10, 58 in Ind. St. 2, 87 = विविष्टी.

विविति f. nach dem Comm. so v. a. विशेषलाभ *Gewinnung* (von 3. विद् mit वि) TBr. 3, 4, 2, 7. विविक्ति v. l. in VS.

विवित्सा (vom desid. von 1. विद्) f. *das Verlangen kennen zu lernen* MBh. 7, 9135 (nach der Lesart der ed. Bomb.; विकुत्सा ed. Calc.). Bhâg. P. 11, 7, 27. सर्वधर्म° 1, 9, 1. 3, 7, 40. 7, 13, 13. 10, 49, 14. 69, 19.

विवित्सु (wie eben) 1) adj. *kennen zu lernen, wünschend,* mit acc. MBh. 5, 2213. Bhâg. P. 3, 8, 3. 7, 13, 15. Pañkat. 3, 7, 2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 2721. 4544. 6, 2628. 8, 2446. 2451.

विविदिका bei Gaupâp. zu Sâṁkhjak. 50 fehlerhaft für विविदिषा.

विविदिषा f. = विवित्सा Gaupâp. zu Sâṁkhjak. 1. 50 (wo त्रिदण्डकमण्डलुविविदिषातो zu lesen ist). Wilson, Sâṁkhjak. S. 6. Einl. zu Kaush. Up.

विविदिषु adj. = विवित्सु Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 196. ध° Bhaṭṭ. 7, 99.

विविग्नुत् (2. वि + विज्°) adj. *bittslos:* ज्ञलधर् Harîv. 3822.

विविध (2. वि + विधा) 1) adj. (f. धा) *verschiedenartig, mannichfaltig, allerhand* AK. 3, 2, 43. H. 1469. सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः M. 1, 8. 39. गुच्छगुल्मम् 48. वधैः 8, 193. वधेन 310. MBh. 3, 1810. 1829. 2194. 12142. राज्य 7, 2231. R. 1, 9, 14. 35. 33, 14. 24. Suçr. 1, 117, 9. Varâh. Bṛh. S. 19, 15. 35, 1. 2. Spr. 660 (II). 2393. Kathâs. 20, 227. Bhâg. P. 4, 5, 3. 7, 6, 26. Brahma-P. in L.A. (III) 52, 2. Pañkat. 192, 23. विविधोपेत so v. a. विविध R. 2, 80, 5. विविधम् adv. 66, 2. 78, 6. — 2) m. N. eines Ekâha Çiñkn. Ça. 14, 28, 13.

विविन्द्य (2. वि + विद्°) m. N. pr. eines Dânava MBh. 3, 630.

विविवध s. u. विवध.

विविंश m. v. l. für विविंश VP. (2te Aufl.) 2, 193.

विवीत (von वी = व्या) m. *ein umzäunter Weideplatz* (= प्रचुरतृणकाष्ठा रक्ष्यमाणाः परिगृहीतो भूप्रदेशः Mit. im ÇKDn.) Jiân. 2, 160. 282. °भर्तृ *der Besitzer eines solchen Platzes (Aufseher des Ortsgebietes* Stenzler) 271. — Vgl. वीतक.

विवोवध s. u. विवध.

विवृक्ता (partic. von वर्ज् mit वि) adj. f. = दुर्भगा Bṛihaspatisaṁh. im ÇKDn. विविक्ता ÇKDn. nach Taik., die gedr. Ausg. 2, 6, 4 liest aber विरक्ता.

विवृत् in einer Formel VS. 15, 9.

विवृत 1) adj. s. u. 1. वृ mit वि. — 2) f. आ *a)* Bez. *einer best. Eruption* Med. t. 136. Bṛihatsaṁh. im ÇKDn. Suppl. Wise 412. Suçr. 1, 202, 7. 203, 1. Çiñkn. Saṁs. 1, 7, 65. Vgl. विवृता. — *b)* als Pflanzenname Suçr. 1, 144, 16 vermuthlich fehlerhaft, त्रिवृत् liest Wise 146.

विवृतता (von विवृत) f. *das Offenbarwerden:* न शशाक मनोगतम् । तं शोकं राघवः सोढुं स (sc. शोकः) विवृततां गतः R. 2, 26, 7.

विवृतात (विवृत + घत *Auge*) m. *Hahn* H. 1325. — Vgl. विवृत्तात.

विवृति (von 1. वृ mit वि) f. = विवरण *Auseinanderlegung, Erörterung, Erklärung, Erläuterung:* धर्म° (fälschlich °वृत्ति gedr.; vgl. Mél. asiat. 1, 282, Cl. 10) Verz. d. Oxf. H. 122, *b*, 37. पातक° 123, *a*, 8. 39. 49. 136, *b*, 8 v. u. सूत्र° 177, *b*, 15. 185, *b*, 8. 264, *a*, 18. Upala am Anfange und am Schlusse von Varâh. Bṛh. Sarvadarçanas. 90, 19. °विमर्शिनी f. Titel eines *Commentars* Verz. d. Oxf. H. 238, *b*, 33. न्यायमकरन्द°, मकरन्द° desgl. Hall 135. — Vgl. ह्रन्दो°.

विवृतोक्ति (विवृत + उ°) f. *offener —, unverhüllter —, deutlicher Ausdruck* (Gegens. गूढोक्ति) Kuval. 148, *a*.

विवृत्त 1) adj. s. u. वर्त् mit वि. — 2) f. आ Bez. einer best. Eruption Bulvapa. im ÇKDa.; vgl. विवृता.

विवृत्तात्त (विवृत्त + घत्त) 1) adj. die Augen verdrehend R. 4,21,37. — 2) m. Hahn Taik. 2,5,18.

विवृत्ति (von वर्त् mit वि) f. 1) Entfaltung Bnlc. P. 3,6,10. = विविधवृत्तिलाभ Comm., wo übrigens fehlerhaft विवृक्षि st. विवृत्ति gelesen wird. — 2) Hiatus RV. Pair. 2,1. 5. 28. 32. 44. 3,9. 14,26. VS. Pair. 1,119. 7,6. AV. Pair. 3,63. Çiksâ 15 in Ind. St. 4,113. Çiksh. Ça. 12, 3,6. विवृत्त्यभिप्राय m. ein unächter Hiatus RV. Pair. 4,26; vgl. 14,11. — 3) fehlerhaft für विवृति Verz. d. Oxf. H. 63, a, No. 111.

विवृद्धि (von 1. वर्ध् mit वि) f. Wachsthum, Zunahme, Vergrösserung, Vermehrung, Gedeihen Kit. Ça. 3,3,5. Çiksh. Ça. 7,19,20. Lit. 5,11, 11. वत्स° Sikshâs. 57. काय° MBh. 3,10639. gaṇa तुन्दादि zu P. 5, 2,117. ग्रैष्मिक° Varâh. Bṛh. S. 40,2. गर्भ° 21,18. 53,117. अङ्गुल° um drei Zoll 69,7. लोकानाम् Vermehrung M. 1,31. स्ववंशस्य 9,128. MBh. 1,6812. 7278. यमराष्ट्र° 7,2711. प्रज्ञा° Bnlc. P. 5,5,5. धान्यार्घतय° Fallen und Steigen des Preises Varâh. Bṛh. S. 7,1. 4. ऐचोरुभयविवृद्धि-प्रसङ्गादितोः श्रुतवचनम् das Längerwerden eines Vocals P. 8,2,106, Vârtt. लोकानाम् Gedeihen M. 3,263. Varâh. Bṛh. S. 30,15. 44,21. 49, 8. Bnlc. P. 3,22,15. Kull. zu M. 5,39. विद्यातपो° Zunahme M. 6,30. नृपतिलक्ष्मी° Varâh. Bṛh. S. 4,20. शोक° R. 3,79,15. °भाजा वयसा zunehmend Kathâs. 103,226. °द् Varâh. Bṛh. S. 13,9. °कर् 59,5. विवृद्धिं गम् Hariv. 10575. R. 7,5,8. या MBh. 1,3602. Hariv. 3910. Ragh. 18,48. Spr. (II) 1036. समुपैति Varâh. Bṛh. S. 24,11. अभ्युपैति 75,10. अभ्युवते Ragh. 13,4.

विवृक् (von 1. वर्क्, वर्क् mit वि) m. das Sichlosreissen, Sichverlieren (von Andern weg) Kâç. 75.

विवृक्त् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Kâçjapa, Liedverfassers von RV. 10, 163.

विवेक (von 1. विच् mit वि) m. 1) Scheidung, Sonderung, Trennung; Unterscheidung; = पृथगात्मता AK. 2,7,37. H. 79. = पृथग्भाव Med. k. 158. = एकान्त H. an. 3,99. — Suçr. 1,48,4. 2,176,13. कर्मणां च विवेकार्थं धर्माधर्मौ व्यवेचयत् M. 1,26. कर्मविवेकार्थम् 102, विवेकं कर्तुम् R. 5,13,64. वर्णदोषविवेकार्थम् VS. Pair. 1,26. स्थानप्रयत्न° P. 1,1,9, Schol. परात्मीय° Bhaṭṭ. 17,60. कार्याकार्य° Sarvadarçanas. 78,13. प्रकृतिपुरुष° 104,16. युक्तायुक्त° Spr. 5146. Nilak. 12,61. Sarvadarçanas. 81,12. अ° Kap. 1,55. °रहित nicht gesondert, aneinanderstossend: पयोघृतयुग Spr. (II) 1446. — 2) Untersuchung, Kritik, Prüfung; = विचार H. an. Med. प्रङ्कारविवेकतन्त्र Git. 12,28. शास्त्रसंभारविवेककृतनिश्चय Mârk. P. 20,4. दानप्रतिग्रहधर्म° Sarvadarçanas. 104,16. 59,10. fgg. वीणादिभिदाम् Verz. d. Oxf. H. 200,b,11. मेलानाम् 13. राग° 14. °पञ्चक d. i. तत्त्व°, भूत°, कोश°, हैत°, वाक्यार्थ° oder महावाक्य° 222, No. 540. 3) richtige Unterscheidung, — Einsicht; Verstand, Urtheilskraft: न विवेकं लभते मनुष्याणां वृत्तस्य रसो ऽस्मीति Kaṭhop. Up. 5,9,2. Kap. 3,47. 73. Sarvadarçanas. 33,21. विवेको दुःखनाशाय Spr. (II) 257. विवेकोदय 1443. 1466. 2391. निर्मलविवेकदीपक (I) 1020. °विरह 2641. 2844. fg. घन° (Conj.) 2971. विवेको नास्ति मूर्खाणाम् 3146. 4561. ईर्ष्या हि °परिपन्थिनी Kathâs. 5,16. °पदवीं प्राप्य 33,81. Râga-Tar. 4,27. Prab. 5,16. कृतो विवेकः Brahma-P. in LA. (III) 86,22. अ° Spr. 3226. Bnlc. P. 5, 13,22. 6,17,30. विवेकाभ्यय Verz. d. Oxf. H. 209,a,30. °तीर्थ 263,b,No. 636,fg. °विशद Râga-Tar. 2,113. °विगुण 5,352. °विभ्रान्त (°शून्य v. l.) Milav. 4,1. °रक्षित Spr. (II) 1446. Pañkat. 3,14. °धृष्ट Spr. 2982. प्राप्त° adj. Kap. 1,33. विगलित° adj. Spr. (II) 526. पात° adj. Sarvadarçanas. 101,4. अ° adj. Spr. 2730. Kathâs. 49,223. स° adj. 15,63. — 4) abgekürzter Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,a,30. 292,b,13. — 5) Wassertrog (जलद्रोणी) H. an. Med. — Vgl. अ°, काल°, जाति°, तत्त्व°, तिथि° (unter तिथि), धर्म°, निर्विवेक, प्रत्यक्तत्त्व°, प्रायश्चित्त° (unter 1. प्रायश्चित्त), भावना°, भावसार°, वर्ण°, विधि°, व्यक्ति°, शुद्धि°, साङ्ख्य°, संबन्ध°.

विवेकख्याति f. richtige Einsicht Jogas. 2,26. 28. Sarvadarçanas. 165, 16. 179,21.

विवेकचूडामणि m. Titel eines Werkes Nilak. 18.

विवेकज्ञ adj. eine richtige Erkenntniss habend Spr. 1056. 2221. 3123. धर्माचार° R. Gorr. 1,7,7.

विवेकज्ञान n. richtige Erkenntniss Sarvadarçanas. 118,2. 176,21. 179, 24. Nilak. 29. Verz. d. Oxf. H. 231,b,18; vgl. विवेकज्ञान 232,a,3. 4.

विवेकता fehlerhaft für विवेकिता (wie die v. l. hat) Spr. 1030; अ° s. u. 2. अविवेक.

विवेकधैर्याभ्यय m. Titel einer Schrift Hall 148. °विवृति ebend.

विवेकमार्तण्ड m. desgl. Hall 13.

विवेकवत् (von विवेक) adj. richtig urtheilend, eine richtige Einsicht habend Kathâs. 94,78. Mârk. P. 66,40.

विवेकविलास m. Titel einer Schrift Sarvadarçanas. 23,16.

विवेकसार n. desgl. Hall 98.

विवेकसिन्धु m. desgl. Hall 100. Verz. d. B. H. No. 1365.

विवेकाश्रम (विवेकाभ्यय?) m. N. pr. eines Mannes Hall 141.

विवेकिता (von विवेकिन्) f. richtige Unterscheidung, richtiges Urtheil, richtige Einsicht Spr. 1030 (fälschlich विवेकता). 2872. वेदशास्त्रार्थेषु Jiân. 3,156.

विवेकित्व (wie oben) n. dass. Spr. 1030, v. l. अ° Wilson, Sikshâs. S. 58.

विवेकिन् (von 1. विच् mit वि und von विवेक) 1) adj. P. 3,2,142. a) scheidend, sondernd, unterscheidend: स्वाद्व° Spr. (II) 407. युक्तायुक्त° 496. अ° Çâk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 289. — b) gesondert, getrennt: अविवेकि कुचद्वंद्वम् Kuval. 120, m. — c) untersuchend, prüfend, kritisch behandelnd Verz. d. Oxf. H. 238, a, No. 574. — d) richtig unterscheidend, — urtheilend, verständig Spr. (II) 748. (I) 1991. 2770. 4233. 5020. Kathâs. 58,140. Râga-Tar. 3,136. 6,97. 203. Mârk. P. 66,34. fg. 93,2. Pañkar. 1,6,59. Ind. St. 5,291, N. 3. Sarvadarçanas. 166,21. fg. Pañkat. 131,19. बुद्धि Kathâs. 39,108. अ° nicht richtig urtheilend, keine richtige Einsicht habend Spr. (II) 693. keine urtheilsfähige Männer besitzend: दुर्देश Kathâs. 24,225 (unter अ° zu streichen). — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Fürsten Devasena ÇKDa. nach dem Kâlikâ-P. — Vgl. अ°.

विवेकिर् (von 1. विच् mit वि) nom. ag. 1) der da sondert, — unterscheidet: युक्तायुक्त° Râga-Tar. 3,134. — 2) der da richtig urtheilt, eine richtige Einsicht habend Râga-Tar. 3,134. 5,5. Spr. 2888.

विवेकव्य (wie eben) adj. impers.: इति विवेकव्यम् *so ist es richtig aufzufassen* Kumārila bei Müller, SL. 96. Sarvadarçanas. 140,13.

विवेकत्व n. nom. abstr. zu विवेकर् 1): पात्रापात्र° Rāǵa-Tar. 3,317.

विवेक्य (von 1. विच् mit वि) adj. 1) *zu sondern, zu unterscheiden:* अपृथग्धर्मिणो ऽपृथग्विवेक्याः Maitrāyaṇ. 6,22. — 2) *zu untersuchen, zu prüfen, kritisch zu behandeln* Verz. d. Oxf. H. 200, *a*, 3 v. u.

विवेचक (wie eben) adj. 1) *sondernd, unterscheidend:* मुखदुःख° Nīlak. 21. — 2) *richtig unterscheidend, eine richtige Einsicht habend, verständig:* मनस् Spr. 1105. Personen Schol. zu Kap. 1,122 (Gegens. मूढ). Kuṭṭan. 2,16. Wilson, Sāṅkhyak. S. 47 (neben स°). Davon विवेचकता f. *richtiges Urtheil, richtige Einsicht* Rāǵa-Tar. 3,359. विवेचकत्व n. dass. Sarvadarçanas. 172,18. Sāh. D. 11,18.

विवेचन (wie eben) 1) adj. (f. ई) *a) unterscheidend:* प्रभाप्रभ° Bhāg. P. 5,3,7. — *b) untersuchend, prüfend, erörternd, kritisch behandelnd:* गुण° (परिच्छेद) Sāh. D. 253,16. न्यायमकरन्दविवेचनी Titel eines Werkes Hall 155. — 2) n. *a) das Unterscheiden:* दृष्टादृष्ट° Hariv. 15722. Vedānt. (Allāh.) No. 10. Sarvadarçanas. 33,21. auch f. ई in कार्याकार्य° Wilson, Sāṅkhyak. S. 47. — *b) Untersuchung, Prüfung, Erörterung, kritische Behandlung:* यस्य प्रग्रहस्तु कुरुते राज्ञो धर्मविवेचनम् M. 8,21. MBh. 12,1860. शिरोगद्° Suçr. 1,11,4. Verz. d. Oxf. H. 89, *a*, 15. 208, *a*, No. 489. *b*, 26. 209, *b*, 1 v. u. 210, *b*, No. 497. 245, *b*, No. 616. fg. 257, *b*, 20. fg. Sarvadarçanas. 104,13. fg. — *c) richtiges Urtheil* Pañcar. 2,3,3. — Vgl. कालतत्त्व°.

विवेदयिषु (vom desid. des caus. von 1. विद्) adj. *zu melden beabsichtigend:* विवेदयिषवः पार्थे तपस्युग्रे समास्थितम् *dass* MBh. 3, 1543 nach der Lesart der ed. Bomb.

विवेन (2. वि + वेन) s. अविवेनम्.

विवोढृ (von 1. वह् mit वि) m. *Gatte* H. 517.

विव्याधिन् (von व्यध् mit वि) adj. *mit Geschossen durchbohrend* AV. 1,19,1.

विव्रत (2. वि + व्रत) adj. *widerstrebend, widerspänstig:* अमी ये विव्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि AV. 3,8,6. die Rosse Indra's RV. 1,63, 2. 3,12,13. 10,23,1. 49,2. 55,2. 103,2. 4.

1. विश्, विशति Dhātup. 28,130 (प्रवेशने). विशते, अविक्षन्; विवेश, विविशे; ved. विवेक्षुस्, अविवेशीस् und विविक्ष्याम्; विविशिवंस् und विविक्षस् P. 7,2,68. Vop. 26,134. अविक्षत्, अविक्षत, अविक्ष्महि; वेक्ष्यति (vgl. Kāç. 5 aus Sīdd. K. zu P. 7,2, ∞), वेष्टा, वेष्टुम् P. 8,2,26, Schol. 1) *sich niederlassen, hineintreten in, eingehen in, — bei, sich hineinbegeben in* (loc. und acc.) Çat. Br. 8,6,2,5. 12. 14,8,12,2. सोमशम्वोः RV. 8,103,4. विविक्षुर्ब्राह्मणीतीरे *liessen sich nieder* R. 1,36,9 (37,10 Gorr.). अन्तःपुरे *eintreten in* MBh. 7,2774. मन्दिरे Kathās. 3,73. वासवेश्मनि 14,22. अवन्तीषु Rāǵa-Tar. 4,163. ग्राममध्ये Vārāh. Bṛh. S. 32, 25. नरकेषु Bhāg. P. 5,26,37. शलभो तीव्रदहने Spr. (II) 100, v. l. तेनैव पथा हृदि स्मरः Kathās. 3,59. भगवान्विशते हृदि Bhāg. P. 2,8,4. संसृतौ 2,33. विशामस्तस्यासः Kathās. 34,186. अतः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः Ratnāv. 27,8. विविशे ऽसरत् विभोः Bhāg. P. 1,6, 30. मध्येवारि Kathās. 18,302. mit acc.: अन्तःपुरम् M. 7,216. भवनं विविशाते MBh. 3,2117. गर्भभवनम् Kathās. 18,159. गृहम् 20,133. Vārāh. Bṛh. S. 53,135 (*Einzug halten*). Rāǵa-Tar. 3,175. Hariv. 3948. निवेशनम् R. 1,20,14. वेश्मानि 2,47,19. Kathās. 28,140. शय्यावेश्म Rāǵa-Tar. 4,423. आवसथम् R. 2,56,26. सुतावासम् Kathās. 18,227. सभाम् MBh. 2, 2051. R. 2,56,22. Rāǵa-Tar. 5,32. अविदत्सदः Bhatt. 11,45. रङ्गम् MBh. 3,2192. आश्रमपदम्, आश्रमम् 2466. R. 1,38,2. 4,13,20. पुरीम् Raghu. 12,18. Vārāh. Bṛh. S. 46,66. Kathās. 12,23. 18,115. Rāǵa-Tar. 5,216. पातालम् R. 1,44,3. वनम्, अरण्यम्, अटवीम् MBh. 3,2236. R. 1, 1,29. 2,74,29. R. Gorr. 2,42,6. 3,74,7. Raghu. 9,53. 12,9. Kathās. 25, 6. जन्मपादपान्, बिलानि Rāǵa-Tar. 4,175 (अविशत्). सरःकच्छम् 1,204. वनदुर्गाणि R. 4,18,15. Spr. 1446 (med., aber v. l. act.). अम्भोनिधिम् 849 (II). सरः 2591. नदीम् MBh. 3,10589 (विशस्व). जलम् Jīv. 2,105. नृपार्णवम् Hariv. 5971. स्खलनम् *so v. a. den Scheiterhaufen besteigen* R. 1,1,31. 6,101,22. Kathās. 49,161. Bhag. 11,29. वक्त्राणि ebend. R. 5, 56,17. भुजंगविवरम्भितम् der Mond Vārāh. Bṛh. S. 104,17. तमः Bhāg. P. 3,31,33. 4,19,34 (med.). 7,1,18. वराटपूपो विशतीव भूतलम् Ṛv. 1,17. जनमध्यम् MBh. 3,2518. हिषद्बलम् Spr. 2846. भुजान्तरम् Raghu. 19,38. Mucch. 100. यत्रो ऽत्तर्हृदयं विश्य तमो हंसि Bhāg. P. 3,11,6. मत्तिणा विशता मनः Rāǵa-Tar. 3,497. यमो हि नो सुरसंघा विशन्ति *eingehen —, aufgehen in* Bhag. 11,21. 18,55 (med.). MBh. 13,1015 (med.). Prab. 80, 15. विशन्ति तारामग्ना रविम् *so v. a. kommen in Conjunction mit* Vārāh. Bṛh. S. 20,1. सो ऽद्रिनाथाः — अपो ऽविशत् *versank in* Bhāg. P. 8,7,6. शरस्तस्य — अविशद्बलम् *drang in* Rāǵa-Tar. 5,217. स शब्दो यां च भूमिं च प्राणिनो अवणानि च । विवेश R. 2,91,27 (100,24 Gorr.). Kathās. 25,136. सर्वत्र याति पुरुषस्य बलाः स्वभावाः खिन्नास्ततो हृदयमेव पुनर्विशन्ति *gehen wieder zurück in's Herz* Mṛicch. 78,19. fg. Ohne Ergänzung *hineintreten* (in's Haus u. s. w.) Hariv. 3471. 4540 (*auf dem Schauplatze auftreten, erscheinen*). R. 1,9,57. Kām. Nītis. 6,11. निर्गच्छेयुर्विशेयुश्च राः 12,27. Spr. 288 (II). 1168. Kathās. 45,248 (विश, nicht आविश gemeint). वत्सेशनिकरम् 13,2. Rāǵa-Tar. 6,16. निर्गत्य न विशेद्यो मन्त्रं दत्तिदत्तवत् । वचः *kehrt nicht wieder zurück* Spr. 4472. — 2) *heimgehen, zur Ruhe gehen:* (सूर्यम्) विशन्तं जगदनु सर्वं विशति Çāṅkh. Br. 8,7. यद्देवासो अविक्षत RV. 10,136,2. — 3) *sich setzen* (vgl. उप): आसनानि R. 2,82,2. Hariv. 9051. परमासने 9080. — 4) *sich wohin begeben:* सेनयोरुभयोर्विविशुस्ते ऽयतो Bhāg. P. 8,10,12. अपे 26. राजमार्गम् Raghu. 6,10. सा परिक्रम्य वै मेरुं शम्बूमूलं पुनर्नदी । विशति Mārk. P. 54,30. *zuströmen*, von Heeresabtheilungen und Nebenflüssen Rāǵa-Tar. 5,140. *Jmd* (acc.) *zuströmen, zufliessen, zu Theil werden:* द्रविणाशयः । विविशुस्तं विशो नाथमुदन्वन्तमिवापगाः Raghu. od. Calc. 4, 70. उपदा विविशुः शश्वन्नात्सेकाः कोमलेशयम् Lesart bei Stenzler. सरित इव समुद्रं संपदस्तं विशन्ति Kām. Nītis. 2,44. उभयोरप्यलक्ष्या वै मार्गस्तं विशते नरम् Hariv. 14258. न विवेश च निद्रेनम् R. 4,26,9. मृत्योर्विशतः समं प्रजाः *so v. a. treffen* Bhāg. P. 4,11,20. *Jmd* (loc.) *zukommen:* स एष साक्षात्पुरुषः पुराणो न यत्र कालो विशते न वेदः 8,12,44. — 5) *in einen Zustand eintreten, gerathen in:* कश्मलम् R. Gorr. 1,49,29. आपदम् Spr. (II) 585. — 6) *an Etwas gehen:* दीक्षाम् R. 1,11,20. शिवदीक्षायाम् Bhāg. P. 4,2,29. *sich zu schaffen machen mit:* पशुभ्यः (zur Erklärung von वैश्य) MBh. 12, 6955. — 7) विष्ट *eingegangen in:* तमः Bhāg. P. 10,40,25. अस्मे क्षोमाणि सर्वाणि भूतानि विष्टानि *so v. a. ent-*

halten Çat. Br. 14,8,22,2. — Statt des sinnlosen ते विशतं मुरा पुक्ताः MBu. 7,1551 liest die ed. Bomb. ते विंशतिपदे पक्षाः.

— caus. 1) *eingehen machen in:* इत्येत्यमेतं शक्करीर्यजुर्हं वेशयामि वः AV. 3,13,7. — 2) *sitzen machen, — setzen:* तमवीविशदासने स्वे Bhâg. P. 10,69,14.

— desid. विविक्षति *hineinzutreten —, hineinzugehen beabsichtigen:* वरूथम् Bhâg. P. 1,17,43. वह्निम्, वह्निम् Kathâs. 110,6. 122,97: पाण्डवीयामिव चमूं कर्णमूलं विविक्षतीम् 90,18.

— वधि caus. *setzen auf:* कास्तां शय्यामधिवेश्य Bhâg. P. 10,48,6.

— अनु 1) *nach Jmd* (acc.) *hineingehen in* (acc.): पतिं साध्वी तमग्निमनुवेश्यति Bhâg. P. 1, 13, 25. — 2) *hineingehen, hineinfahren* überh. R. 4,37,32. Bhâg. P. 4, 9, 7. 10, 86, 45. वह्निम् Pañcat. 187, 25. अनुविष्टो भगवता Bhâg. P. 3,20,17. — 3) *Jmd* (acc.) *folgen* MBh. 1,796. — Vgl. अनुवेश. — caus. *setzen:* सैन्यं तस्मिन्नेवासने R. Gorr. 2,35,17.

— अप caus. *wegschicken:* अन्यत्र पापीरप वेशया धियः AV. 9,2,25.

— अभि, partic. °विष्ट *ergriffen —, in der Gewalt stehend von:* मदनाभिविष्ट R. 5,11,18. 23. — caus. *eingehen machen in, richten auf:* अव्यक्तवर्त्मन्यभिवेशितात्मा Bhâg. P. 3,8,33.

— आ 1) *eingehen, eintreten, sich niederlassen in* oder *unter* (acc.), *eindringen, fahren in, Besitz nehmen von:* नेदिद्ध पुरा नाष्ट्रा रक्षांस्याविशान् Çat. Br. 1,1,4,6. इन्द्रमिन्दो वृषा विश ṚV. 1,176,1. 5,7. 91,11. 9,85,7. 10,16,6. (अग्निः) घोषद्धीरा विवेश 1,98,2. यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वर्यस्य घोषधीरुरुधं आविवेश AV. 7,87,1. Çvetâçv. Up. 2,17. मातुः ṚV. 1,141,3. द्यावापृथिवी 3,32,10. मर्त्यान् 4,58,3. योनिम् 5,47,3. 6, 36,3. धर्मणेवा या नो गर्यमाविवेश 74,2. कृत्येषा पद्वती भूत्या ज्ञाया विशते पतिम् 10,85,29. अन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः 10,3. 125,6. मा नो रक्ष आ वेशीत् 8,49,10. VS. 4,13. 7,46. 12,105. 23,49. TBr. 3,1,4, 8. कुमारं जातं जघन्या वागाविशति *zuletzt fährt die Stimme in das Kind* Ait. Br. 3,3. 5,2. तामयं पृश्निर्वर्ण आविशत् 33. Çat. Br. 11,6,3,6. 12,3, 4,2. 14,4,2,26. 5,5,18. — गृहेष्वाविशतो पुंसाम् *so v. a. Haushalter* Bhâg. P. 4,30,19. शालायाम् 8,9,17. सभाम् Harîv. 6817. अन्तःपुरम् R. 2,70,27. R. Gorr. 2,14,21. Bhâg. P. 3,3,6. मन्दिरम् Kathâs. 20,224. अन्तर्गृहम् R. Gorr. 2, 3, 3. स्वं चित्तम् Bhâg. P. 3, 16, 31. mit Ergänzung von गृहम् u. s. w. R. 1,18,22. Kir. Nitis. 14,39. Bhâg. P. 10,64,16 (so v. a. *Aufnahme* im Gegens. zu अज्ञ). नगरम् Daçak. 69,10. Bhaṭṭ. 3,18. बिलम् MBu. 1,3379 (med.). 7294. गह्वरम् Râgat. 2,26. वनम् R. 2,43,6 (med.). Bhâg. P. 2,7,23. पातालम् Spr. 1756. जलम् M. 11,223. Spr. 2520. Bhâg. P. 3,13,26. सरः 23,25. समुद्रम् Râgat. 3,28. यो स्वर्गं क्षमाविश्य so v. a. *sich in die Luft erhebend* R. Gorr. 1,62,16. जगामाकाशमाविश्य 36,4. 4,63,24. 5,6,1. 89,43. गगनमाविश्य 3,31,25. वायुमार्गमथाविशत् 4,10,24. संवर्तको वह्निः — लोकमाविशते MBh. 3,12873. fg. परेताचरितां रविराविशते दिशम् *tritt ein in* R. 2,63,14. योनिं मानुषीम् MBh. 1,7300 (med.). कर्णं दक्षिणम् R. 5,56,27. Bhâg. P. 3,6, 14. देवावरणं विभिद्य ते (बाणाः) सात्यकेराविविशुः शरीरम् *drangen in* MBh. 7,4694. 4881. Bhâg. P. 4,10,17. 11,2. तदाविशन्ति भूतानि कर्माणि मद्गतानि सह कर्मभिः M. 1,18. यज्ञस्य सो ऽदधात्सर्गे तत्तस्य स्वयमाविशते 29. Bhâg. P. 3,6,2. 10,8. 26,33. Verz. d. Oxf. H. 47,a, No. 103, Z. 8. (पुरुषः) ब्रह्मतत्रमाविश्य 4,21,31. नाविशामि (so die ed. Bomb.) पुरस्त्रियम् *so v. a. geschlechtlichen Umgang haben* MBh. 12,2902. आविवेशैशभागेन मन आनकदुन्दुभेः Bhâg. P. 10, 2, 16. आविशन्ति च पं पक्षाः *fahren in, sich Jmdes bemächtigen* MBh. 3,14507. 2256. मामकात्तमाविशः 12, 2890. fgg. Harîv. 9478. संज्ञामथाविशद्य तया मिश्रीभूत सः 11237. कन्दर्पः — आवेष्टुमभ्ययात्तूर्णं कृतोद्वाहमुमापतिम् R. 1,25,18 (20, 11 Gorr.). Mârk. P. 51, 80. 101. सत्त्वमाविश्य भाषते R. 2, 33, 10. आविशत्यप्रमत्तो ऽसौ प्रमत्तं व्रतमत्तकम् Bhâg. P. 3,29,29. 5,13,2. मृत्युः MBh. 3,10450. Spr. 4924 (med.). क्रोधो नास्तमाविशत् R. 1,65,2. आवेष्टुं नास्तं कामो न क्रोधो दहशे मुनेः R. Gorr. 1,67,1. ततस्तौ मन्युराविशत् MBh. 1,7737. क्रोधः Mârk. P. 106,27. भयम्, भीः MBh. 3,11971. 5,7221. R. Gorr. 1,24,4. मोहः MBh. 1,216. काश्मलम् 4,1052. चिन्ता R. 2,63, 44. वेपथुः MBh. 5,7279. आविवेशोपसर्गस्तं तमः सूर्यमिवानुगम् R. 2,63,2. तस्मात्तौ नाविशत्वाशु ब्रह्महत्या 64,33. स्मृतिः 4,59,6. आविवेश महान्कोपो देवानाम् 6,92,72. वोरमाविशति प्रज्ञागराः Spr. (II) 500. शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति (I) 3022. लोकानाविशते पशः *dringt in* Bhâg. P. 3, 14, 11. — 2) *sich nahe herbeimachen zu, kommen:* स मा धीरः पाकमत्रा विवेश ṚV. 1,164,21. नर्मणा 3,31,5. आ नो इप्सा मधुमत्तो विशन्तु 10,98,4. VS. 34,50. ऊर्जा मा विश 3,22. — 3) *sich niederlassen auf, sich setzen:* आसनानि MBh. 5, 3. — 4) *in einen Zustand —, in ein Verhältniss eintreten, gerathen in:* निर्ऋतिम् ṚV. 1, 164, 32. इन्द्रस्य सख्यम् 2,36,2. व्रतम् 4,23,9. वं रात्रीव सुव्रतो गिरः सोमा विविशिथ 9,20,5. रूपाणि *Farben annehmen* 9,25,4. Kauç. 43. सुखम् MBh. 5, 29. मन्युम् 13,475. भयम् R. 7,22,41. शोकम् Kathâs. 9,20. उपशमम् Bhâg. P. 5,15,26. मुख्यताम् 4,22,33. राज्यम् *die Herrschaft antreten* R. Gorr. 2,41,19. —5) partic. आविष्ट a) in act. Bed. α) *hineingegangen, eingedrungen:* कर्णाविष्ट Bhâg. P. 11,30,3. Maitrâjan. 6,31. भोगिनः कञ्चुकाविष्टः *steckend in* Spr. 2074. पन्नगेषु पय आविष्टम् Kauç. 113. घर्घाविष्टया गिरा *mit halb stockender Stimme* Kathâs. 14,46. भगवत्याविष्टात्मा Bhâg. P. 4,31,3 (vgl. γ). आविष्टलिङ्गा जातिः *fest sitzend* so v. a. *constant* Pat. bei Gold. Mân. 155,b (nach Kâtj. pass.: आविष्टं लिङ्गं यया साविष्टलिङ्गा नियतलिङ्गेत्यर्थः). आविष्टलिङ्गत्व Comm. zu Bhâg. P. 4,7,37. — β) *sitzend auf* (loc.), von Vögeln Bhâg. P. 10,41, 22. *in der Luft schwebend* (= आकाशसंचर Comm.): वृक्ष R. 7,31,14. — γ) *ganz in Etwas steckend, einer Sache ganz hingegeben* (तत्पर) AK. 3, 1,9, v. l. — b) mit pass. Bed. α) *bewohnt, erfüllt von:* वकुलाविष्ट *dicht bewohnt* Ait. Br. 3,44. तैर्ईरात्मभिराविष्टमाश्रमम् R. 3, 1, 27. — β) *getroffen von:* मन्मथशराविष्ट R. 3,52,20. आविष्ट इव तत्रस्थदेवीदत्तेषुणाग्निना Kathâs. 16,80. — γ) *ergriffen von —, besessen von —, befallen —, überwältigt —, in der Gewalt stehend von:* कलिना MBh. 3,2270. आविष्टेयं मया बाला Harîv. 8729. मन्त्रेणाविष्टचेतनः R. Gorr. 2, 33, 11. fg. Mârk. P. 51, 100. ohne Ergänzung so v. a. *von einem bösen Geiste besessen* Taitt. S. 1,1,3. H. 491. Hit. 66. आविष्टा इव युध्यन्ते MBh. 6,1759. Harîv. 4311. R. 5,21,3. Kathâs. 17,130. 70,62. Prab. 78,10. क्षुधा R. 3,1,9. क्षुधा MBh. 3,2420. 12, 4374. Pañcat. 69,4. क्रूराविष्ट Mṛiç. Ça. 25,11,21. वेदनया (*Schmerz* und *Wissen*) Spr. 2896. कृच्छ्राविष्टचेतना MBh. 3,2106. मन्मथाविष्टहृदय Brahma-P. in L.A. (III) 54,10. उपद्रवाविष्ट Suçr. 1,120,2. मन्युना MBh. 5, 5996. 13,184. रोषेण मक्ता R. 2, 74,1. R. Gorr. 1,68,20. रोषाविष्टचित्त Pañcat. 186,2. कोपेन Mârk. P.

112,15. कोपाविष्ट Pañcat. 40,13. 55,7. Çuk. in LA. (III) 34,11. दुःखेन महता R. 1,57,7. Spr. (II) 1042. शोकदुःखाभ्याम् MBu. 3,2957. शोकाविष्ट Hit. 126,17. चिन्तया R. 1,55,8. भयेन महता MBu. 5,7446. कश्मलाविष्ट 7177. तमसा Harîv. 2518. Bhâg. P. 4,28,25. तपसा Harîv. 2522. अधर्मेण MBu. 13,1204. दोषैः R. Gorr. 2,109,66. विस्मयाविष्ट Bhag. 11, 14. MBu. 3,2231. कृपया 5,7159. करुणाविष्ट Râja-Tar. 2,43. कर्षेण महता R. 5,14,33. श्रवेन महता von *grosser Eile ergriffen* 3, 60, 1. त्वराविष्ट 2,111,44. क्षेरुपाशैर्वकुविधैराविष्टविषया त्रनाः *behaftet mit* MBu. 12,6480. Vgl. भूताविष्ट (auch Kathâs. 73,293). — 6) आविश्य Kathâs. 45,60 fehlerhaft für आवेश्य. — Vgl. आवेश fg. — caus. *eingehen machen, hineinbringen, hineinlassen; Jmd Etwas übergeben, mittheilen* u. s. w. AV. 4,30,2 (vgl. RV. 10,125,3). मेधाम् 6,108,3. 12,4,48. राष्ट्रे श्रियम् Âpr. Bh. 8,27. स्वस्त्यावेशितं पसः *ist glücklich hineingeschoben* Çâṅkh. Çr. 12, 24,6. ऊर्जं पुष्टं वसु AV. 7,79,3. तस्मिन्ना वैशया गिरः RV. 1,176,2. TS. 4,4,42,2. — द्वारःस्थेनावेशितः *eingeführt* Râja-Tar. 8,2120. आदित्यचन्द्रमा वायुः u. s. w. सर्वे ब्राह्मणमावेश्य सदान्नमुपभुञ्जते *in's Haus hineinlassen* so v. a. *bewirthen* MBu. 13,2115. fg. यो ऽन्यस्मिन् शरीरे योगयुक्तितः । यत्तःकरणमावेश्य (so ist st. आविश्य zu lesen) प्रविशेदिन्द्रियाणि च (die beiden acc. von आवेश्य abhängig) *hineinfahren lassen* Kathâs. 45,60. ध्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य Bhag. 8,10. उत्सर्पयन्नमून्मूर्ध्नि क्रमेणावेश्य Bhâg. P. 4,23,18. सदसच्चैव मयावेशितमात्मनि MBu. 12,12224. आवेश्य मामात्मनि Bhâg. P. 7,10,11. मय्यावेश्य मनः *so v. a. richten auf* Bhag. 12, 12. Bhâg. P. 1,9,23. 5,16,3. 7,1,29. आत्मन्यात्मानमावेश्य 1,9,43. 3,10, 4. तय्यावेशितचित्ता MBu. 13,1504. Ragh. 10,28. Bhâg. P. 5,9,6. 1,8. अधोक्षज आवेश्यतां मतिः 5,18,9. 20,25. आवेशितधियम् — भगवति 9,16, 11. 10,22,26. भारमावेश्य वन्धुषु *aufladen, übertragen* Harîv. 1621. त्वय्यावेश्य त्रयात्मयौ *anheimstellen* 10301.

— सम्वा 1) *eingehen, fahren in, sich Jmdes bemächtigen:* आत्ममृष्टमिदं विश्वमन्वाविश्य स्वशक्तिभिः Bhâg. P. 10,48,19. क्रौश्च क्रोधश्च बीभत्सुं तणेनान्वाविवेश क MBu. 1,5389. मोहः 7,1405. — 2) *nachgehen, folgen, sich nach Etwas richten:* यद्या क्रोवेक् प्रजा सन्वाविशन्ति यथानुशासनम् Kâṭh. Up. 3,1,5. तं धर्ममनुराः — नामृष्यत्त — विवर्धमानाः कमशस्तत्र ते ऽन्वाविशन्प्रजाः MBu. 12, 10800.

— सम्या *eingehen, eindringen —, fahren in:* घनीकम् MBu. 7,5812. तं वायुमग्निं सलिलं तयोर्वी नमं ततो ऽभ्याविशते शरीरी 12,7412. भयं नाभ्याविशेत्तत्र *Eingang finden* 4,933.

— उपा 1) *eingehen, eintreten in:* पर्णशालाम् R. 3,23,2. आश्रमपदम् Bhâg. P. 9,15,28. स्वधिष्ण्यम् 3,6,19. 26,30. प्रीतिश्च दुर्योधनमुपाविशत् *fahren in, kommen über* MBu. 1,5359. — 2) *gerathen in:* देवा भयमुपाविशन् R. Gorr. 1,65,21. — Ueberall Formen mit dem Augment, aber die Bedeutungen sprechen für उपा, nicht für उप.

— समुपा *sich an Etwas machen, beginnen:* दीक्षां च समुपाविश (समुपाकुरु ed. Bomb., समुदाकुरु = कुरु Comm.) R. 1,62,22.

— न्या *eingehen in* RV. 10,56,4.

— निरा *sich von Jmd* (abl.) *zurückziehen, — fern halten* MBu. 12,7127.

— प्रा *kommen zu:* दानाम् Çâṅkh. Çr. 7,18,9. — caus. *einlassen, hineinführen:* वधं प्राप्तौ (so die ed. Bomb.) मन्यते नौ प्रावेश्य शरवेश्मनि MBu. 8,647. त्वया प्रावेशयिष्ये Daçak. 122,8.

— व्या *eindringen —, sich vertheilen in:* पर्वतम् RV. 2,24,2. प्रजासु Çat. Br. 10,5,2,15.

— समा 1) *eintreten, betreten, eingehen —, fahren in, sich Jmdes bemächtigen:* राजवेश्म MBu. 1,7272. 3,2552. वनम् Harîv. 676. Bhâg. P. 5,8,9. यज्ञनम् 4,4,6. लङ्काम् Bhatt. 8,27. हंसकुलम् *sich begeben unter* Bhâg. P. 5,13,17. ब्रम्बूमार्गम् *sich begeben auf* MBu. 3,1032. योगपद्यम् Bhâg. P. 4,4,24. प्रयाग विषणांश्च पवोदेशं समाविशेत् (so ed. Bomb. st. समादिशेत् der ed. Calc.) *sich begeben zu* MBu. 12,2648. तान्बाणाः समाविशन् *drangen in* 3,12176. यदाणुमात्रिको भूत्वा बीजं स्थास्नु चरिष्णु च । समाविशति M. 1,56. सर्वलोकम् *durchdringen* Harîv. 9746. शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसमात्रं (acc.) समाविशत् Mârk. P. 45,54. fg. घतान् *fahren in* (von einem bösen Geiste) MBu. 3,2253. नलम् 2257. नाक्रम्य समावेष्टुं शक्यः काम पुनस्त्वया Spr. 4324. कुब्जाः केन कृता यूयं समाविश्य दुरात्मना R. Gorr. 1,35,23. नन्ददेवान्तरिक्षदत्तः समाविशत् Kathâs. 4,101. Mârk. P. 51,55. आत्ममायाम् Bhâg. P. 4,7,51. चतुरपि प्रजानामीयत्तमशापि समाविवेश *Finsterniss kam über* Harîv. 16032. ग्लानिश्चैनं समाविशत् MBu. 1,3142. दर्पः 3,8493. कोपः 11092 (S. 572). मोहः R. 4, 60,15. रजस्तमश्चैव MBu. 12,12280. प्रमत्तमर्था हि नरं समस्तात्यन्तयत्नयोगाश्च समाविशन्ति 10,561. लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् *einkehren* Spr. 1581. — 2) *sich niederlassen an einem Orte:* तस्मिन्देशे MBu. 13, 1971. *Platz nehmen auf, sich setzen:* शय्यामने (loc.). M. 2,119. R. 2, 87,21. आसनम् Spr. (II) 1478, v. l. — 3) *in einen Zustand eingehen, gerathen in:* कोपम् MBu. 13,2778. अहंकारम् 4752. — 4) *gehen an, obliegen:* तांस्तान्धर्मविधीन् R. 7,10,2. — 5) समाविष्ट *ergriffen —, überwältigt von:* क्लमाश्रम° Suçr. 1,121,10. शाप° R. Gorr. 1,28,12. मोहेन Spr. 4748. शराशोक° M. 6,77. भयशोक° MBu. 3,2278. तीव्रशोक° 2958. R. 2,66,8. मन्यु° R. Gorr. 1,60,7. कोपेन Kâm. Nîtis. 14,18. कोप° R. 1,60,11. क्रोध° 64,11. MBu. 1,5920. तीव्ररोष° 3,2297. रोषामर्ष° R. Gorr. 1,76,21. मदकाम° MBu. 1,7725. मन्मथ° 4,418. कामभार° R. 3,23,18. वाष्प° 2,93,1. कौतूहल° Verz. d. Oxf. H. 13,5,42. fg. सङ्ग° *erfüllt von* Bhag. 18,10. यद्यकर्म° *versehen mit* MBu. 14,800. गुण° Ver. in LA. (III) 2,1. सर्वभोग° Pañcat. 1,7,51. योगेन च समाविष्टो भरद्वाजेन so v. a. *unterwiesen in* von MBu. 13,1971. — Vgl. समावेश. — caus. 1) *hineingehen lassen:* das Glied Kauç. 79. प्रस्थं स्वस्मिन्समावेशयति कटाद्दः *nimmt in sich auf, enthält* P. 5,1,32, Schol. *an einen Ort bringen, — führen:* स्त्रीबालवृद्धानादाय — इन्द्रप्रस्थं समावेश्य Bhâg. P. 11,31,25. *eingehen lassen in* so v. a. *richten auf:* आत्मानमात्मनि MBu. 12,1590. तस्मिन्समावेशितचित्तवृत्तिः Ragh. 6,70. भगवति मनः Bhâg. P. 5,8,28. 9,19,28. 10,46,33. भगवति समावेशितसकलकारकक्रियाकलापः 5,1,6. — 2) *sich setzen heissen:* गातारो R. 7,94,9. — 3) *aufbürden, übertragen:* कथं दुरात्मनि समावेशयसे सर्वम् MBu. 2,1544. पौत्रे भारम् 3,9913. R. 1,71,14. तस्मिन्वाक्यम् R. Gorr. 1,44,3. Mârk. P. 53,12. यस्मिन्कृत्यम् Spr. 2421.

— उप 1) *Jmd* (acc.) *nahe treten:* उपो नमोभिर्वृषभं विशिम RV. 8,85, 6. — 2) *sich setzen* (auch vom *Niederlegen* der Thiere) Âpr. Bh. 7,5. 8,10. क्षेत्रपदने Çat. Br. 1,5,3,21. 13,4,3,1. Kauç. 79. उपविश्य दक्षिणं जान्वाच्य Kâṭh. Çr. 3,7,5. उपविश्योर्ध्वजानुः Çâṅkh. Çr. 1,5,5. Âçv. Gṛhy. 3,3,7. 3,2,2. Kaush. Up. 2,1. Bhag. 1,47. MBu. 3,464. 2864. 16810. 4,

97. 12, 13243. 13, 1274. R. 1, 2, 25. 2, 53, 28. 104, 26. 3, 49, 43. इदमासनम् यत्रोपविश्यताम् (impers.) Mṛicch. 73, 20. 88, 2. Çik. 13, 7. 38, 4. 110, 3. Vikr. 15, 3. Spr. 2032. Varâh. Bṛh. S. 48, 48. Kathâs. 18, 362. 24, 145. 45, 130. 252. 291. Râja-Tar. 2, 103. 3, 350. 454. Vop. 5, 21. Vet. in LA. (III) 5, 15. यस्याग्निहोत्रो दुग्धमानोपविशेत् Ait. Br. 5, 27. Çat. Br. 12, 4, 4, 9. 11. वानरा उपाविशन् R. 4, 39, 43. गरुत्मत्तः MBh. 4, 1052. उपविष्ट (auch st. des verbi finiti) *sich gesetzt habend, sitzend* H. 492. Hariv. 2, 231. Kâv. Ça. 1, 2, 7. MBh. 1, 2219. 3, 2427. 2890. 16658. 5, 6039. R. 1, 2, 30. 52, 3. 2, 54, 19. Çik. 37, 3. 81, 16. Kathâs. 18, 215. Vet. in LA. (III) 2, 1. 9, 1. Pañcat. 34, 25. Hit. 93, 21. सुखोपविष्ट MBh. 3, 2693. Hariv. 4369. R. 1, 52, 6. 5, 11, 18. Varâh. Bṛh. S. 83, 3. Hit. 8, 15. भूपविष्ट Buâs. P. 8, 12, 3. अस्तिकोपविष्ट Daçak. 67, 10. कूर्म्यतलोपविष्ट R. 5, 11, 18. जनमध्योपविष्ट Kathâs. 28, 8. उपविष्ट von Thieren Jâtâ. 2, 160. in der Thierfabel Pañcat. 53, 22. fg. 68, 21. von Vögeln 110, 9 (wo mit der ed. Bomb. °द्वार् zu lesen ist). Hit. 13, 5. सभायामुपविष्टवान् Vet. in LA. (III) 28, 14. — 3) *das Lager aufschlagen, Halt machen:* बलेनोपविवेश कु MBh. 3, 659. — 4) *sich zu Jmd* (acc.) *setzen:* तमार्तम् — उपाविशत्सा परिषत्समक्षात् R. Gorr. 2, 79, 40. *sich zu Jmd setzen so v. a. nicht von seiner Seite weichen um ihn zur Nachgiebigkeit zu zwingen* (vgl. प्रत्युप): द्रौपदी यत्र भर्तॄनुपाविशत् MBh. 1, 573. — 5) *sich zum Untergang neigen* (von der Sonne): तावदर्को ऽप्युपाविशत् Kathâs. 123, 171. — 6) *sich mit einem Weibe vermischen:* तयोपविवेश कु Buâs. P. 3, 14, 30. — 7) *sich einer Sache hingeben, obliegen;* mit acc.: प्रायम् Buâs. P. 1, 19, 5. उपविष्टास्तु ते सर्वे तस्मिन्प्रायं धराधरे R. 4, 56, 1. 20. प्रायोपविष्ट (s. auch bes.) Buâs. P. 1, 19, 18. 3, 1, 33. घनशनोपविष्ट Pañcat. 224, 15. das einfache उपविष्ट in derselben Bed. MBh. 12, 4258. 4262. Bhaṭṭ. 7, 75. — 8) उपविश्य Hariv. 4368 in beiden Ausgg. fehlerhaft für उपवेश्य. — Vgl. उपवेश *fg.*, उपवेशिन्, प्रायोपविष्ट *fgg.* — caus. 1) *Jmd* (acc.) *sich setzen lassen, sitzen heissen* Ait. Br. 3, 23. प्रुचो देशे Gobh. 4, 2, 24. Âçv. Gṛihy. 4, 7, 2. 8, 15. तल्पे Kauç. 79, 78. आसनेषु M. 3, 208. fg. Jâtâ. 1, 226. MBh. 3, 1775. Hariv. 4368 (उपवेश्य zu lesen). ऊरौ 8745. सङ्के R. Gorr. 2, 74, 5. Suçr. 1, 15, 7. Vikr. 28, 18 (उपवे° zu lesen; s. Anm.). 87, 13. fg. Kathâs. 26, 212. 28, 109. 38, 29. 80, 106. Mârk. P. 31, 37. Prab. 77, 15. Daçat. 89, 18. 92, 5. Vet. in LA. (III) 14, 7. *fg.* सर्वासनोपवेशित Çik. 97. 10. Ragh. 17, 10. — 2) *niedersetzen in, bringen an einen Ort:* (अनेन) गृहीतो दैवतपतिर्लङ्कायां चोपवेशितः R. 5, 78, 20. Buâs. P. 8, 9, 20. पुरुषपशुं भद्रकाल्याः पुरत उपवेशयामासुः 5, 9, 16. गुहादिषु 20, 24. एवं पारस्तात्तौ रोहात्परित उपवेशितः शाकद्वीपः 20, 24. — 3) उपवेश्य Pañcat. 147, 6 fehlerhaft für उपविश्य, wie die ed. Bomb. liest.

= अध्युप *sich darauf setzen* Gobh. 4, 10, 3. v. l. अभ्युप.

— अनूप *sich der Reihe nach setzen* Âçv. Çr. 5, 3, 24. Liṭ. 2, 4, 7. von *der kauernden Stellung* eines Thieres, das gebiert, Çat. Br. 7, 4, 2, 2.

— अभ्युप *sich darauf setzen* Gobh. 4, 10, 3 (v. l. अध्युप). पर्यङ्कम् MBh. 5, 3244. *sich setzen:* नातिदूरे Râja-Tar. 3, 177. 8, 1722.

— उपोप *sich neben einander setzen, zu Jmdes Seite sich setzen* (mit acc. der Person) Çâṅkh. Çr. 5, 9, 6. 8, 5, 3. 9, 3. Gobh. 3, 4, 24. Kâṭhâ. Up. 1, 10, 3. 4, 1, 3. 6, 1. MBh. 1, 2222. 4914. 3, 12321. 11777. उपोपविष्ट mit act. Bed. 1, 6959. R. 2, 1, 35. 104, 27. *fg.* mit pass. Bed. MBh. 5, 4644. R. 1, 4, 26. 5, 45, 11.

— समुपोप *sich setzen:* °विष्टा शयने Hariv. 7042.

— पर्युप *sich herumsetzen* Âçv. Çr. 6, 10, 13. Çat. Br. 3, 3, 4, 3. 4, 6, 8, 10. स्वं चमसम् Liṭ. 2, 11, 16. — Vgl. पर्युपवेशन.

— प्रत्युप *sich gegen Jmd* (acc.) *setzen so v. a. nicht von seiner Seite weichen um ihn zur Nachgiebigkeit zu zwingen* MBh. 2, 1156. 10, 389. आर्यं प्रत्युपवेक्ष्यामि यावन्मे न प्रसीदति R. 2, 111, 18 (120, 18 Gorr.). किं मां कुर्वाणं प्रत्युपवेक्ष्यसे 16 (°वेक्ष्यसि Gorr.). प्रत्युपविष्टो यश्च प्रत्युपवेशयते तावत्तौ कालम् *derjenige, der einem Andern Etwas abtrotzen will und derjenige, welcher die Veranlassung dazu giebt,* Âpast. 1, 19, 1. caus. (°वेश्य) auch R. 5, 80, 7 in der Bed. *Jmd* (acc.) *entgegentreten, Opposition machen.* — Vgl. प्रत्युपवेश.

— व्युप *da und dort sich setzen* Çat. Br. 13, 3, 3, 11.

— समुप 1) *sich zusammen setzen, sich setzen* überh. Çat. Br. 13, 4, 3, 2. Gobh. 3, 9, 15. Çâṅkh. Çr. 18, 21, 14. Kâṭhâ. Up. 1, 3, 2. मज्जेषु MBh. 1, 6970. नदीकूले 8479. 2, 2289. 3, 16884. R. 4, 31, 29. Kathâs. 50, 107. पद्यामनुचिता गन्तुं द्रौपदी समुपाविशत् MBh. 3, 10936. 1, 6342. घाम्नवत्स्य दक्षिणायाम् 2, 703. 3, 11990. आसने Vikr. 81, 14. चर्मणामुपरि Varâh. Bṛh. S. 48, 75. Kathâs. 12, 111. Prab. 106, 10. शयनं समुपाविशत् (पुनरागमत् ed. Bomb.) R. 2, 85, 15. समुपविष्ट MBh. 1, 7943. 13, 4288. Z. d. d. m. G. 14, 574, 11. Pañcat. 29, 18. Hit. 78, 1, v. l. — 2) *verschlafen* (eine best. Zeit): स भुक्तवान् — तदन्नममृतोपमम् । प्रीतश्च परितुष्टश्च तौ रात्रिं समुपाविशत् ॥ R. 7, 82, 1. — caus. *sich setzen lassen, sitzen heissen* Hit. 60, 6. *sich lagern lassen:* तटे सिन्धोर्बलम् Râja-Tar. 4, 534.

— नि med. P. 1, 3, 17. Vop. 23, 1. 1) *hineingehen, heimgehen* (in's Haus, Lager, Nest); *sich zur Ruhe begeben, sich legen; sich lagern:* न्यविक्षन्यतपिन्नवः ṚV. 8, 17, 13. 10, 127, 4. नि यामासो अविक्षत नि पद्वत्तः 8. 37, 2. 9. 1, 164, 22. मयि गोष्ठे निविशध्वम् Âçv. Gṛihy. 2, 10, 6. Çat. Br. 2, 3, 1, 8. 4, 1, 5, 2. न्यृण्या अर्कमभितो विविक्षे *sich lagern um* ṚV. 8, 90, 14. पद्मेन चैव व्यूढेन निविशेत M. 7, 188. MBh. 1, 3893. 6960 (act.). 3, 16864. 5, 7049. Hariv. 8047. वेश्मानि *hineintreten in* MBh. 1, 7566. संसारकारागृहे Spr. 1039. द्वारि Buâs. P. 3, 15, 29 (act.). रामशालाम् Bhaṭṭ. 4, 28. मकरालयम् 8, 7. कूर्मस्याङ्गानि कूर्मशरीरे Sarvadarçanas. 150, 20. शिलीमुखाः — न्यविशन्त रसातलम् *drangen in* R. 3, 31, 20. मही निविशते रविः *die Sonne dringt* (mit ihren Strahlen) *in die Erde* MBh. 3, 136. तौ चापि केशौ निविशेतां पद्मनाभकुले स्त्रियौ देवकीरोहिणौ च *gingen ein in* 1, 7308. Wilson, Sâṅkhyak. S. 62. क्षेत्रपदे *in den Bereich des Erkennbaren treten* Sarvadarçanas. 101, 7. देवस्यायत्वयो मतौ निविशते *dringt in den Geist* so v. a. *kommt zum Bewusstsein* Spr. 1973. — 2) *sich flüchten zu* (acc.) Buâs. P. 10, 2, 3 (act.). — 3) *sich setzen:* आसने Çiç. 1, 19. Râja-Tar. 6, 129. (मकरः) तीरोपान्ते न्यविशत् (richtiger निविष्टः ed. Bomb.) Pañcat. 205, 8. — 4) *hinuntersinken:* महीणौ निविशतौ भारैः Buâs. P. 8, 11, 34. etwa *versinken* ṚV. 10, 44, 6. — 5) *sich niederlassen so v. a. ein Haus gründen, heirathen* (vom Manne) MBh. 1, 1852. 1860. निवेष्टुकाम 13, 1391; vgl. unter निस् 2). — 6) *gegründet werden:* द्वारवत्यां निविशत्स्याम् MBh. 13, 2344. 2453 (निर्विश° ed. Calc. निवि° ed. Bomb.). Hariv. 2043 (निवसत्स्याम् die neuere Ausg., welches Nîlak. durch कृतनिवासायाम् erklärt). — 7) *sich hinwenden zu, sich*

richten auf: पापे निविशते मनः Spr. (II) 894. obliegen: स्वधर्मे M. 2,8. धर्मे MBh. 7,3073. तदा वर्णा यथाधर्मं निविशेयुः कथंचन 12,2933. — 8) zukommen (Gegens. abgehen): (गुणः) सत्त्वे निविशते ऽपैति Cit. bei Vop. zu 4,16. so v. a. zur Anwendung kommen Kir. Ça. Comm. 56,3 (act.). 57,24. 58,2. — 9) sich legen so v. a. sich beruhigen, aufhören: नि वो नु मन्युर्विशताम् ṚV. 10,34,14. der Wind 168,3. — 10) partic. निविष्ट a) zur Ruhe gegangen VS. 22,7. मनो निविष्टमनुसंविशस्व AV. 18,3,9. तस्यौ सुपर्णावधि यौ निविष्टौ TBr. 3,7,8,14. gelagert: बलम् MBh. 3, 661. Hariv. 4974. 9701. R. 2,84,1 (91,1 Gorr.). 99,1. 100,1. सागरं प्रति R. Gorr. 1,4,23. 4,40,1. 5,74,26. 75,3. Milav. 67,21. Kathâs. 46,54. 47,9. मुनिविष्टाश्च रतिणः aufgestellt R. 5,49,14. an einem Orte verweilend, sich aufhaltend Bhâg. P. 1,3,44. धर्मपथे R. 3,48,18. 5,11,18. — b) hineingegangen, eingedrungen Âçv. Gṛhj. 1,14,7. Bhâg. P. 5,11,14. ruhend in, auf, steckend an, in: तस्यं मे तन्वो बकुधा निविष्टाः ṚV. 10,51, 4. AV. 9,1,2. दक्षिणापाङ्गनिविष्टमुष्टि Kumâras. 3,70. मूल° Vishn. 26,9. °कर्णिक Sucr. 2,215,7. भाण्डागारायुधागारे निविष्टमभवन्मधु Hariv. 12806. वनानां भूमिर्निविष्टतृणातपा R. 3,22,21. विलोचनमत्तर्निविष्टामलपिङ्गताम् Kumâras. 7,33. काष्ठनिविष्टकौस्तुभ Bhâg. P. 8,18,3. यत्तर्निविष्टज्ञानदीधिति Mârk. P. 18,29. यस्मिन्नेतानि (Vorzüge) दृश्यन्ते न चाकार्याणि भारत । स्वभावतो निविष्टानि तत्पात्रं मानमर्हति ॥ MBh. 13, 2192. gerichtet auf: त्वदभिमुखनिविष्टोत्तानचक्षुःपुट Spr. 1428. सूर्यनिविष्टदृष्टि Raghu. 14,66. मुतिस्मृतिन्यार्यनिविष्टचित्त Hariv. 14057. साम्ये निविष्टचेतसाम् Kumâras. 5,31. सीतेयमिति निविष्टबुद्धिः R. 5,19,34. — c) gelegen: पुरो यमुनातीरे Hariv. 3061. ज्ञनपदः सरयूतीरे R. 1,5,5. 2, 53,35. 6,15,22. — d) sitzend: उदधेः कूले Raghu. 12,68 (निर्विष्ट Str.). ब्रह्मासन° Râja-Tar. 1,149. सास्थानभूमौ Ved. in LA. (III) 23,11. (मकरः) तीरोपान्ते निविष्टः setzte sich nieder Pañcat. ed. Bomb. IV, 1,9. — e) der sich häuslich niedergelassen hat, verheirathet: ग्र° MBh. 1, 7241. ग्रनिर्विष्ट u. परिविष्ण. — f) gegründet, angelegt: दिवोदासेन निविष्टा नगरीम् Hariv. 1356. 9597. यस्तु पूर्वनिविष्टस्य तडागस्योदकं हरेत् M. 9,281. — g) bezogen, eingenommen: सम्यङ्निविष्टदेशः M. 9,252. कृषिकरैः सुनिविष्टो ज्ञनपदः R. Gorr. 2,109,21. यत्तर्निविष्टपदं शाश्वम् Raghu. 9,33. — h) begonnen Ait. Br. 7,10. — i) obliegend, bedacht auf: स्वे स्वे धर्मे M. 7,35. पाण्डवार्थे MBh. 1,171. सर्वभूतप्रशमे 5,1090. शमे 13,3401. सत्ये Hariv. 9635. मयक्तिते R. 1,7,18. गुणे 20,24 (गुणैः versehen mit Gorr. 21,23). — Statt निविष्टं Hariv. 5171 liest die neuere Ausg. विचित्रं. Vgl. ग्रनिविशमान, निविष्टि, निवेश, निवेशन, निवेशिन्, निवेष्टव्य. — caus. 1) zur Ruhe bringen: निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ṚV. 1,35,2. Taitt. Br. 3,1,1,10. ṚV. 4,53,3. 7,45,1. — 2) Jmd in ein Haus führen, einquartiren: भार्यां स्वभवने MBh. 1,4424 (mod.). Hariv. 8983. R. 2,42, 28. लोहमये गेहे Kathâs. 56,145. मां निवेशयेह MBh. 3,15607. — 3) ein Haus beziehen lassen so v. a. verheirathen (einen Mann) Çik. 95. — 4) an einem Orte niedersetzen, hinstellen, an einen Ort bringen, — versetzen: यस्माच्चैवोद्धृतः स्थानात्तत्रैवायं निवेश्यताम् । सुग्रीवः R. 5,34, 8. नागान्पुरी तस्याम् Hariv. 1868. वेश्या निवेशिता द्वारवत्याम् 8308. तत्रत्यं स न्यवेशयत् । चातुर्वर्ण्यं निजे देशे धर्म्यांश्च व्यवहारिणः ॥ Râja-Tar. 1,117. 3,353. गन्धर्वनगरं निवेशय स्वे पुरे R. 7,100,18. मध्ये निजपरबलयोः रथं निवेश्य Bhâg. P. 1,9,35. काव्ये, नाट्ये in ein Gedicht, in ein Drama (Etwas) versetzen so v. a. es dort zur Erscheinung bringen Sâh. D. 32,1. — 5) aufstellen, errichten (ein Gebäude, ein Heiligthum u. s. w.): बन्धनानि सर्वाणि मार्गे M. 9,288. स्कन्धावारनिवेशे तेन चेह् निवेशिते R. 3,2,3. पर्वतम् Hariv. 12407. 12410. तत्र वेदीं च भूमिं च देवतायतनानि च । निवेश्य MBh. 13,452. विहारे बुद्धबिम्बम् Râja-Tar. 3,464. शिवलिङ्गानि 2,131. 4,276. Varâh. Bṛh. S. 56,14. यष्टेयं चर्मरत्नभस्त्रिका) देवतेव शुचौ देशे निवेश्यार्च्यमाना प्रातः प्रातः सुवर्णपूर्णैव दृश्यते Daçak. 76,10. fgg. anlegen, gründen (eine Stadt u. s. w.) Hariv. 1846. fg. 5169. 5211. 6392. R. 1,5,9. R. Gorr. 2,73,16. 7,11,48. fg. 70, 17. 79,17. Mârk. P. 66,10. न्यवेशयन्नामभिः स्वैस्ते देशांश्च पुराणि च MBh. 1,2365. वीरेण कृता: पञ्च निवेशिताः 3,8097. साश्रमम् R. 3,16,23. bevölkern, bewohnt machen: पुरीम् Hariv. 1542. 1546. 1591. R. 7,72,10. — 6) aufstellen (ein Heer): बलं ज्ञनस्थाने R. 3,60,31. लुब्धान्मण्डलेन Kâm. Nîtis. 16,7. sich lagern lassen: देशे समे सेनाम् MBh. 5,5170. R. 2,83,33 (90,36 Gorr.). 25 (med. Gorr. 38). 26 (39 Gorr.). निवेशयित्वा 89,23 (निवेश्य 96,34 Gorr.). 99,16. 5,74,20. 22. Kâm. Nîtis. 16,1. 40. Raghu. 5,42. 16,37. Çik. 18,28. Prab. 82,2. — 7) sitzen machen, Jmd setzen auf: तामङ्के R. 1,18,21. भूमौ 2,76,4. 4,7,14. Kumâras. 7,13. किमलयशयननिवेशिता Gît. 2,13. विष्टरे Râja-Tar. 4,555. — 8) stecken —, hineinsetzen in: शरीरे तैलद्रोण्याम् R. Gorr. 2,68,47. कन्यका मञ्जूषायाम् Kathâs. 15,38. वासकाक्षरे भुजम् 18,251. कलापचक्रेषु निवेशितानम् भोगिनम् Ṛt. 1,16. विमानं सप्तनिवेशितम् R. 3,61,14. क्षत्रवीर्ये चौरा तस्याः MBh. 13,337. निवेशितालःकुसुमैः शिरोरुहैः Ṛt. 5,6. यम्बुमध्याच्च वस्त्रं चीरनिवेशितम् । प्राप्तवान् Kathâs. 10,107. 61,25. (हृदि) कुकाव्यकव्याकृतयो निवेशिताः Spr. 2352. स्वे च इदं निवेश्य Bhâg. P. 3,5,6. — 9) schleudern —, abschiessen auf: भल्लान् —तव पुत्रे MBh. 8,3146 (mod.). शरान्मूर्ध्नि R. 5,42,7. — 10) aufstecken, aufsetzen, auflegen, anlegen: तं शूले M. 9,276. घण्टायै तार्ण्यस्तेन निवेशितः Râja-Tar. 4,199. R. 4, 43,33. स्तम्भस्य पृष्ठे ताम् Kathâs. 12,175. स्थलनिवेशिताटनी धनुषी Raghu. 11,14. वामे स्कन्धे भर्तुर्बाहुम् MBh. 3,16852. वदनं न्यस्ते Hariv. 7066. यङ्के चरणौ Çik. 69, v. l. वामं भुजमासनार्धे Raghu. 6,16. कां स्तनाग्रे Spr. (II) 1538. कण्ठनिवेशितहस्तयुगला Pañcat. 226,19. यङ्कुशं द्विरदस्य मूर्ध्नि, प्रतापं महेन्द्रस्य मूर्ध्नि Raghu. 4,39. 80. यधरोष्ठे ज्ञलज्ञम् eine Muschel an die Lippen setzen 7,60. नवचूतबाणे । निवेशयामास मधुर्द्विरेफामालगुणेव मनोभवस्य Kumâras. 3,27. धनुषि चूतशरम् Çik. 135. यस्त्रम् (sc. धनुषि) Mârk. P. 63,34. मूर्ध्नि निवेशिताः सर्वा एवाज्ञाः (als Zeichen grosser Ehrerbietung) Prab. 97,12. रत्नोत्तंसेषु राज्ञामाज्ञां न्यवेशयत् Râja-Tar. 5,138. Schmucksachen, Kleidungsstücke: रत्नानि तस्या गात्रे MBh. 1,7692. स्तनेषु तन्वंशुकम् Ṛt. 1,7. करीटतटनिवेशितं रशनाकलापम् Mṛicch. 11,15. कर्णेषु नीलोत्पलानि Ṛt. 3,12 (med.). मुतिमण्डले (loc.) कुण्डले (acc.) Gît. 12,20. Pañcat. ed. orn. 49,24. मुद्रामङ्गुलौ Çik. 84,14. मालां तस्मिन् Kathâs. 90,56. Raghu. 8,34. ईशस्य पदयुगे प्रसूनाञ्जलिम् Kusum. 1,2. पाशं शृङ्गे befestigen MBh. 3,12786. auftragen Zeichen u. s. w.: तिलकं गण्डपार्श्वे R. 5,37,5. सुवर्णरेखे कये निवेशिता Mṛicch. 48,12. चरणावनिवेशितौ रागलेखाम् Milav. 46. शासनं पट्टे सूक्ष्मात्तरनिवेशितम् Mârk. P. 36,8. नाम स्वकरस्तेन eigenhändig seinen Namen darunterschreiben Jâtâ. 2,86. चित्रे so v. a. malen Çik. 42. — 11) bringen —, versetzen auf: धर्म्ये पथि M. 8,228. मृत्युपथे

राज्यनाशि Rîâ-Tar. 6,313. दुरत्यये ऽधनि Bhâg. P. 5, 13, 1. 19. *ein setzen in* (ein Amt, eine Stellung): राज्ये MBh. 2, 1107. 9, 2300. Kathâs. 10, 217. 41, 58. Bhâg. P. 4, 10, 2 (निवेशयिता). पारमेष्ठ्ये पदे Pârâ. 16, 8. 8. 117, 18. कुशावत्यां कुशम् *als Fürsten einsetzen in* Râgat. 15, 97. Mârk. P. 86, 11. तेषु (वर्षेषु) सप्त रिक्थादान्वर्षपानिवेश्य Bhâg. P. 5, 20, 20. करे *so v. a. tributpflichtig machen* MBh. 2, 1039. कारनिवेशित Kâm. Nîtis. 17, 32; vgl. पौरिवं पृथिवी करवती प्रतिवर्षं निवेशिता Mârk. P. 53, 11. समये *so v. a. mit Jmd einen Vertrag schliessen* MBh. 1, 6397. — 12) *Jmd Etwas übertragen:* सधिकारं सचिवेषु Râgat. 19, 4. धूर्जगतः सचिवेषु निवेशिता Râgat. ed. Calc. 1, 34. योगंधरायणनिवेशितराज्यभार Kathâs. 20, 229. लक्ष्मीश्चन्द्रगुप्ते निवेशिता *die königliche Würde* 5, 123. भरते सा (प्रीतिः) निवेश्यताम् R. Gorr. 2, 43, 6. नाम *Jmd einen Namen geben* Kathâs. 23, 87. — 13) चित्ते, हृदये *Etwas dem Herzen einprägen, dem Geiste vorführen* Çik. 42, v. l. Bhâg. P. 3, 2, 15. Spr. 4272. Varâh. Bṛh. S. 85, 8. — 14) *richten* (den Blick, die Gedanken, den Geist u. s. w.) *auf Etwas* (loc.): दृष्टिं पाश्चात्याम् MBh. 1, 7141. Spr. 1004. 2257 (II). मयि बुद्धिम् Bhag. 12, 8. मनो ऽधर्मे Spr. 4364. M. 6, 35. fg. R. 6, 100, 23. Bhâg. P. 2, 2, 3. 7, 1, 31. Mârk. P. 41, 20. चेतसो निवेशितस्यात्मनि Maitrâyaṇ. 6, 34. आत्मानं कल्याणे MBh. 5, 1282. Bhâg. P. 1, 15, 33. ध्येये ध्यानम् Spr. 3313. — Vgl. निवेशन, निवेश्य. — desid. निविविक्षते P. 1, 3, 62, Schol.

— अधिनि caus. 1) *setzen über:* चतसृभाशास्त्वात्मयोनिना — अधिनिवेशिता ये हिरण्मयः Bhâg. P. 5, 20, 39. — 2) *Jmd veranlassen einer Sache obzuliegen, — sich zu widmen:* °वेशितकर्माधिकार Bhâg. P. 5, 1, 23.

— अभिनि mit acc. P. 1, 4, 47. Vop. 5, 2. 1) *eintreten in:* ग्राममभिनिविशते P. 1, 4, 47, Schol. (नदी) नदनदीपतिमभिनिविशति *ergiesst sich in* Bhâg. P. 5, 17, 5. अभिन्यवित्तथास्तं मे यद्येवाव्याकृता मनः *eindringen in* so v. a. *sich bemeistern* Bhaṭṭ. 8, 80. — 2) *sich in Etwas* (acc.) *versenken, sich ganz hingeben:* धर्मानभिनिविश्य Vop. 5, 2. (गणिका) यामेवं भवन्मनो ऽभिनिविशते Daçak. 78, 8. 9. ohne Ergänzung *auf seinem Kopfe bestehen:* ते चेदभिनिवेक्ष्यन्ति (°ते ed. Bomb.) नाभ्युपैष्यन्ति मे वचः MBh. 3, 2798. — 3) partic. °विष्ट a) *sich festgesetzt habend an einem Orte* Suçr. 1, 82, 13. *hartnäckig:* परस्परेणाभिनिविष्टरोषयोः MBh. 8, 4210. — b) *fest auf einen Punkt gerichtet, ganz mit Etwas beschäftigt, nur Eines vor Augen habend:* सर्वसूक्ष्माभिनिविष्टदृष्टि Bhâg. P. 3, 8, 13. अभिनिविष्टया दृशा मालतीमुखावलोकनविकस्तया Mîlatîm. 19, 2. अध्यतारं स्वभिनिविष्टधियः Vârâh. Bṛh. S. 19, 11. कार्याभियोगे ऽभिनिविष्टबुद्धिः R. 5, 51, 26. वित्तेषु नित्याभिनिविष्टचेताः Bhâg. P. 7, 6, 15. कृष्णपादाभिनिविष्टचेतस् 4, 12, 22. संरम्भमार्गाभिनिविष्टचित्त (der Comm. fasst संरम्भमार्ग in der Bed. eines abl.) 3, 2, 24. इष्टार्थाभिनिविष्टे मनः Mallin. zu Kumâras. 5, 5. अध्ययनश्रवणाभिनिविष्ट Tattvas. 37. माधवापकारं प्रत्यभिनिविष्टा भवामि Mîlatîm. 88, 2. अभिनिविष्टो ऽसि कष्टे *so v. a. versessen auf* Kathâs. 79, 4. पुनोरकार्याभिनिविष्टयोः Spr. 2414. — c) *durchdrungen von, in Beschlag genommen von:* मनोरथेनाभिनिविष्टचेतसः Bhâg. P. 10, 1, 41. गुरुभिर्लोकयात्रानुभावैः *reichlich versehen mit* Râgat. 2, 75. — Vgl. अभिनिविष्ट fgg. — caus. 1) *hineingehen lassen, führen in:* कालसूत्रसंज्ञके नरके Bhâg. P. 5, 26, 14. यदभिनिवेशितो ऽक्ष्णोरिन्द्रियैः — °विषयान्धकूपे 1, 38. दृषाणि चक्षुषा ज्योतिष्यभिनिवेशयेत् *eingehen lassen in* 7, 12, 28. — 2) *sich gegenüber setzen heissen:* मुनिमासने — अभिन्यवीविशत् Çiç. 1, 15. — 3) मनः, आत्मानम् *den Geist —, die Gedanken ganz auf Etwas* (loc.) *richten* Bhâg. P. 5, 8, 26. तदभिनिवेशितमनसम् 4, 29, 54. सर्वकामाभिनिवेशितात्मन् 1, 18, 45. — 4) *machen, dass Jmd einer Sache sein ganzes Herz zuwendet, Jmdes ganzes Verlangen auf Etwas richten:* धातरम् गोषु गोवृषसंकाशं मत्स्येनाभिनिवेशितम् MBh. 4, 891. प्रतिबन्धवत्सु विषयेषु Mâlav. 28, 7.

— प्रत्यभिनि scheinbar Mâlatîm. 88, 2, da hier प्रति mit dem vorangehenden acc. zu verbinden ist.

— उपनि, partic. °विष्ट 1) *belagernd, einschliessend:* mit acc.: लङ्कामुपनिविष्टे च रामे R. 6, 10, 26. — 2) *erfüllend,* mit acc.: इत्येतानि — सप्त वर्षाणि भागशः । भूतान्युपनिविष्टानि गतिमन्ति ध्रुवाणि च ॥ MBh. 6, 248. fg. — 3) *erfüllt von:* भारताद्दीनि वर्षाणि नदीभिः पर्वतैस्तथा । भूतैश्चोपनिविष्टानि गतिमद्भिर्ध्रुवैस्तथा ॥ Verz. d. Oxf. H. 48, a, 42. fg. — Vgl. उपनिवेशिन्. — caus. 1) *sich an einem Orte lagern lassen:* सेनाम् R. 7, 25, 52. — 2) *anlegen, gründen* (eine Stadt) Râgat. 15, 29.

— परिणि *sich rings niederlassen* Çat. Bṛ. 4, 3, 4, 11. 14, 1, 1, 7. 4, 1, 19.

— प्रणि P. 8, 4, 19, Schol.

— प्रतिनि, partic. °विष्ट *ganz mit Etwas beschäftigt, nur für Eines Sinn habend:* सीतायाम् R. 6, 11, 35. ohne Ergänzung so v. a. *auf seinem Kopfe bestehend, verstockt:* दैव MBh. 12, 3902. मूर्ख Spr. 1876. 2661.

— विनि, partic. °विष्ट 1) *wohnend in:* गिरिशिखरकन्दरीविनिविष्टा म्लेच्छजातयः Vârâh. Bṛh. S. 16, 35. — 2) *befindlich in, vorkommend:* नाटकादिषु Sâh. D. 199, 13. — 3) *aufgestellt:* मार्गे च दुर्गे च विनिविष्टसैन्यः Kâm. Nîtis. 15, 44. — 4) *aufgetragen:* गिरिधातु (ललाटे) R. 2, 96, 19 (105, 18 Gorr.). — 5) *angelegt:* तडागानि MBh. 2, 211. — Vgl. विनिवेशिन्. — caus. 1) *Etwas an einem Orte niedersetzen, hinstellen:* कुम्भाश्च विनिवेश्यन्तामुदयनेषु Harîv. 3863. Râgat. 5, 63. Kumâras. 1, 30. *irgendwohin verlegen* Rîâ-Tar. 5, 29. — 2) *aufstellen, errichten* (ein Bildniss u. s. w.): स्वविक्रारे भगवान्विनिवेशितः Rîâ-Tar. 4, 262. *anlegen* (eine Stadt) Kumâras. 6, 37. आरामान् Vârâh. Bṛh. S. 53, 1. — 3) *aufstellen* (Truppen) MBh. 7, 1494. Kâm. Nîtis. 16, 6. — 4) *sitzen machen, setzen auf:* नृपासने *auf den Thron* Rîâ-Tar. 5, 445. 6, 115. — 5) *stecken in:* अक्ष्णिमुखे कर्म् Spr. 2741. तनुलताविनिवेशितवियत् Râgat. 9, 52. — 6) *aufsetzen, auflegen, anlegen:* स्वकं ऊरौ निक्षिप्तौ दानवेश्वरौ Harîv. 2723. मदुरसि कुचकलशौ विनिवेशय Gît. 12, 5. शाटकम् — नितम्बे Spr. 2581. बन्धान्, संधीन् Suçr. 1, 68, 11. — 7) *anbringen, anwenden:* पाणिउत्यमस्थाने Spr. 1730. — 8) *bringen —, versetzen auf:* पथि विनिवेशितात्मनाम् Kâm. Nîtis. 3, 38. *Jmd anstellen:* सारथ्ये MBh. 5, 5253. करे *so v. a. tributpflichtig machen* 2, 1035. — 9) हृदये *in's Herz prägen:* हृदये कुशलैर्विनिवेशिता । शिक्षा Spr. 2605. — 10) *richten* (Blick, Gedanken) *auf Etwas:* गोविन्दे विनिवेशितां दृष्टिम् MBh. 14, 1528. मतिं पुरस्ताद् Harîv. 6415.

— संनि 1) *verkehren, Umgang haben mit:* याद्दशैः संनिविशते Spr. 4874, v. l. — 2) partic. °विष्ट a) *gelagert, Halt gemacht habend* MBh. 5, 5188. R. 5, 74, 25. 6, 7, 20. Kathâs. 39, 75. — b) *ruhend —, steckend —, enthalten in:* अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो ऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये संनिविष्टः Kaṭhop. 6, 17. Çvetâçv. Up. 3, 13. 4, 17. Bhag. 15, 15. Maitrâyaṇ. 6, 7. एको देवो बहुधा संनिविष्टः Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 160. Suçr.

1,97,13. 342,8. 347,15. Rāgh. 6,47. पङ्क्त्यादिसूत्र° P. 5,3,56, Schol. ग° R. 2,21,57. — *c) sitzend* MBh. 2, 2000. Hariv. 891. संनिविष्टोदम als Umschreibung von उत्थान AK. 3, 4,18,120. — *d) steckend —, gehängt an, angebracht:* °कर्णिक Suçr. 2,196,17. 297,4. — *e) sich befindend auf:* सत्पथे MBh. 3,12788. सनातने वर्त्मनि R. 5,11,22. — *f) in Jmdes Hand seiend* so v. a. *von Jmd abhängig:* बलावमर्दस्त्वयि संनिविष्टः R. 5,43, 11. — Vgl. संनिवेश. — caus. 1) *einführen* (in ein Haus u. s. w.), *einquartiren:* कृत्वं स्वपुरं संन्यवेशयत् (संप्रवेशयत् die neuere Ausg.) Hariv. 3845. तं पर्णशालायां वासार्थं संन्यवेशयत् R. 3,6,15. Kathās. 24,159. — 2) *niedersetzen, hinstellen:* तत्र तं गिरिम् R. 6,84,30. Hariv. 12404. 12406. त्वमिव — देवराजेन मैनाक परिघः संनिवेशितः R. 5,7,6. कैलवते पादे गर्भो ऽयं संनिवेश्यताम् *niederlegen* 1,38,17. — 3) *aufstellen:* Truppen MBh. 6,2407. *sich lagern lassen:* बलं द्वारकायाम् 3,663. R. 2,85, 15 (92,24 Gorr.). Kathās. 46,48. 103,103. — 4) *einbringen, hineinstecken, thun in:* घप्सु शरीरम् M. 11,202 (संनिवेश्य bei Lois. zu lesen). MBh. 13,227. Suçr. 2,55,16. तेषां लवणवान् — संनिवेश्यात्ममात्रासु M. 1,16. खं खेषु 12,120. रुद्रीन्द्रियाणि Çvetāçv. Up. 2, 8. Bhāg. P. 6,4,27. शिरश्चैव शरीरे संनिवेशितम् *hineingeschoben, hineingedrückt* R. 3,75,27. — 5) *schleudern, abschiessen auf* (loc.) R. 5,41,23. — 6) *anheften, anlegen:* ललाटे मणिम् Vikr. 73,8. — 7) *anlegen, gründen:* eine Stadt Hariv. 1544. — 8) *Jmd einsetzen in:* स्वराज्ये MBh. 3,4978. R. 7,54, 13. 100,18. तत्पदे चिरकाङ्क्षिते धातोः स्थान इवादेशे सुग्रीवं संन्यवेशयत् Rāgh. 12,33. — 9) *Jmd Etwas aufladen, übertragen:* तत्संनिवेशितधुरेण भर्त्रा Çiç. 95, v. l. द्विधा कृत्वा तपोवर्षं पुष्कराः संन्यवेशयत् Mārk. P. 53, 29. — 10) *richten auf* (loc.): मनः Bhāg. P. 9,9,15.

— अभिसंनि, partic. °विष्ट *in Jmd vereinigt* Çaṃk. zu Bādar. Âr. Up. S. 103.

— नि 1) *sich hineinbegeben in* (acc. und loc.): भर्तुरङ्कं (अङ्के ed. Calc.) निर्विशतीं भयात् Rāgh. 12,38. निष्क्रामतो निर्विशतो Bhāg. P. 4,4,1. तत्र 5,17,15. भवनम् 10,22,28. गर्तम् 25,22. गृहेषु (so v. a. *Hausvater werden*) 29,34. 5,1,18. निर्विशन्ति घना यस्य ककुदि 10,36,4. यौ (पुरौ) निर्विश्य समावसत् 3,22,32. पुलिनम् 10,32,11. 52,37. med. 3,18,1. 8, 19,10. 10,89,31. निर्विष्ट *hineingegangen, steckend in* 1,2,32. 3,16,24. 4,24,56. *sitzend* Rāgh. 12,68 (निविष्ट ed. Calc.). — 2) *ein Haus beziehen, heirathen* (vom Manne): निर्विशन् (lies निर्विशन्) *heirathend* und अनिर्विष्ट *nicht verheirathet* s. u. परिविश. — 3) *abtragen, bezahlen:* निर्विष्टं भर्तृपिण्डम् MBh. 8,627. अस्ति नूनं कर्म कृतं पुरस्तादनिर्विष्टं पापकं धार्तराष्ट्रैः 5,1816. — 4) *geniessen, Genuss —, Freude an Etwas haben; act. mit acc.:* प्रदोषान् Rāgh. 6,34. मधुम् 9,35. इन्द्रियसुखानि 19, 47. क्रीडारसम् Kumāras. 1,29. नगेन्द्रम् Megh. 63. आत्माभिलाषम् 109. शरदम् Rāgh. 2,140. नारीम् Kirāt. 3,109. निर्विश्य Rāgh. 4,51. 18,2. Pañcat. 4,1,45. शिरो निर्वेष्टुकामा Hariv. 7863. निर्विश्यतां यौवनश्रीः Rāgh. 6,50. तत्र निरवेशि निद्रामुक्षम् Daçak. 24,16. fg. निर्विष्ट *genossen* Rāgh. 6,38. 12,1. 13,60. 14,30. Spr. (II) 1087. — 5) निर्विशन्त्यो MBh. 13,2452 fehlerhaft für निवि°, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निर्वेश fg., निर्वेष्टव्य (statt der zweiten Bed. ist zu setzen *woran man Genuss haben kann*) und निवेश्य 3), wo die ed. Bomb., wie wir vermuthet hatten, निर्वेश्य liest.

— परि *umlagern:* रक्षांसि समन्तं देवान्पर्यविशन् TS. 2,4,1,2. TBr. 2, 2,10,5. तं पर्यविशन्य एवं वेद विन्दते परिवेष्टारम् (zu विष्) TS. 5,3,2, 2. 3. परिविष्टं शाकुपर्यं विद्यतः सोम् ṚV. 1,116,20. *belagern:* उत्तरं नगरद्वारमहं सौमित्रिणा सह । निपीड्य परिवेक्ष्यामि सबलो यत्र रामः R. 6,13,31. — Vgl. परिवेशस्, अपरिविष्ट und 1. विष् mit परि, welches häufig mit ष geschrieben wird. Hierher gehört wohl परिवेषण 2), welches auch in der ed. Bomb. mit ष geschrieben wird.

— प्र 1) *eingehen, eintreten; eindringen, sich verstecken; gerathen in; sich begeben zu, — unter:* mit acc. und loc.: गृहम् ṚV. 10,16,10. R. 2,42,22. Kathās. 12,101. 18,235. 64,54. Pañcat. 96,8. भवनम् M. 11, 187. वेश्म MBh. 3,2144. 2279. R. 2,26,5. प्रविशन्नेन्द्रभवने कपोतकः Variān. Bṛh. S. 46,68. वेश्मनि Rāja-Tar. 5,393. अश्वकुलानि Pañcat. 253, 21. गेहम् Spr. 990. मन्दिरम् Kathās. 18,399. 42,156. मठम् 18,106. 318. पर्णशालाम् Rāgh. 12,40. अन्तःपुरम् M. 7,224. बिलम् MBh. 1,8894. छिद्रम् Spr. 1884. पुरम्, नगरम् MBh. 1,8141. 3,2634. 2883. 3060. 5,7339. 13,7697 (med.). Hariv. 7459. R. 1,18,18. 2,51,19 (med.). 86,19 (med.). Rāgh. 2,74. Kathās. 18,118. Rāja-Tar. 5,451. नगरे MBh. 5,7099. R. 2,59,13. आश्रमपदम् 1,2,25. 2,64,7. सभाम् M. 7,143. 8,1. 10. Vet. in LA. (III) 2,4. रङ्गम् MBh. 3,2198. वनम् R. 2,35,32. 52,91. 74,37. 107, 16. 17 (med.). Çik. 32. श्मशानम् Kathās. 18,118. घृषः ṚV. 10,51,1. R. 5,15,37 (med.). समुद्रम् MBh. 1,3340 (med.). व्रलाशयम् Hit. 43,20. सरसि स्नातुं प्रविशति 12,2. रसातलं प्रविशते (विशेद्देवी die neuere Ausg.) पङ्के गौरिव दुर्बला Hariv. 12343. कृताशनम्, अग्निम् u. s. w. so v. a. *den Scheiterhaufen besteigen* MBh. 1,6908. 3,2363. 5,7288. R. 2,21,17. 47, 8. 66,12. 3,51,29. 41. 5,101,29. Variān. Bṛh. S. 74,16. Rāja-Tar. 4, 368. Mārk. P. 136,6 (med.). वह्निं Pañcat. 43,23. मध्यमग्नेः MBh. 3,2610. चितायाम् Vet. in LA. (III) 14,1. महाचमूम् MBh. 5,5267. चक्रव्यूहम् Kathās. 48,6. सार्धम् Bhāg. P. 5,13,19. विशो विशः प्रविविशिवांसम् AV. 4,23,1. प्रविशद्भिः सैन्यादीन् — घाङ्गैः Variān. Bṛh. S. 95,46. विहगान् — चटवृक्षे प्रविशतः Kathās. 20,26. यत्र, तत्र MBh. 1,8332. Spr. (II) 2136. Kathās. 18,76. 172. 325. Pañcat. 97,16. नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः Spr. (II) 1240. उत्तरापथम् Rāja-Tar. 5,214. उदीचीमाशाम् Bhāg. P. 1,15,44. पादमूलं मे 3,25,43. विहता प्रतिदिनमधो ऽधः प्रविशति Spr. 1802. वाल्मीकेरन्तरम् MBh. 3,2861. fg. मध्ये तयोः Pañcat. 35, 6. अन्तरे Kathās. 18,212. देवस्मितान्तिकम् 13,127. स्वैरं सुप्तस्य सत्सेवान्तिकं किं प्रविश्यते (so ist zu lesen) 45,247. अलंकारवतीपार्श्वम् 52, 21. मर्मसु शराण्याः MBh. 3,15631. मायकाः शरीराणि R. Gorr. 2,91,15. Rāgh. 3,54. भूछायां स्वयरूपेण भास्करमर्कायरूपेण प्रविशतोन्दुः Variān. Bṛh. S. 5,8. समुद्रमापः, कामा यम् Spr. (II) 971. रसैः पृथिवीम् TS. 3,5,7,1. तमः पाप्मानम् 2,1,10,3. 4,12,6. पुरुषो ऽयं प्राविशत् Ait. Br. 2,3. यमुना यत्तं प्राविशन् 6,4. पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वा 7,13. Çat. Br. 1, 1,4,16. 2,3,4,2. यद्येनद्वाकप्रविवेश Kaush. Up. 2,14. Bhāg. P. 5,17,13. घण्टामाबध्य कर्णयोः । मम न प्रविशेत्नाम विष्णोरिति विचिन्तयन् *der Name Vishṇu's komme mir nicht zu Ohren* Hariv. 14634. महामतिं प्रविशन्ति मदा लक्ष्म्यः सरित्पतिमिवापगाः Spr. 2882. प्रविश्य सर्वभूतानि यथा चरति मारुतः M. 9,306. आत्मनि प्रविशत्कर्म so v. a. *sich beziehend* Sarvadarçanas. 38,21. प्रविश्य मानुषास्य चित्तम् Kām. Nītis. 5,24. प्रविशन्निव चेतांसि 17,15. प्रविशेन्मतमेषां पृथक्पृथक् *dringen in* 11,69. बहुविकल्पमन्यत्तरम् *sich begeben in* Kathās. 28,190. चेतः (voc.) प्रविश

निर्विकल्पे समाधौ Spr.(II)77. प्रमाणकोटिम् *gelangen zu, erreichen* Sarvadarçanas. 128, s. 9. प्रविवेशेव स्वानि गात्राणि लज्जया *schrumpfte zusammen* R. 2, 98, 19. प्रविशन्तीमिवाङ्गानि Kathâs. 18, 175. Ohne Ergänzung *eintreten* (in ein Haus u. s. w.) Âçv. Gṛhj. 4, 4, 11. MBh. 3, 2143. 2032. Harîv. 8341. निर्गच्छेत्प्रविशेन्नापि Kâm. Nîtis. 7, 47. 14, 49. Çiç. 7, 11. Kathâs. 18, 211. Râja-Tar. 5, 388. Im Drama stehender Ausdruck für *das Auftreten auf der Bühne.* — 2) *sich geschlechtlich vermischen* (von beiden Geschlechtern): सतुकाले मनस्विनी । पत्नी द्रुपदराजस्य द्रुपदं प्रविवेश कृ MBh. 5, 7397. यो वा ब्रह्मनीं प्रविशेन्नरः im Traume Suçr. 1, 110, 9. — 3) *an Etwas gehen, obliegen, sich einer Sache hingeben:* दीक्षां प्रविश R. 1, 31, 28. fg. (32, 23 Gorr.). MBh. 14, 2880. वयं दीक्षां प्रवेक्ष्यामः संवत्सरगणान्बहून् Harîv. 300. — 4) *in Jmd hineingehen* so v. a. *in ihm aufgehen, gegen ihn verschwinden, vor ihm ganz in den Schatten treten:* तं घर्षुणं प्रविश्यसि वै सर्वे राजानः शस्त्रपोधिनः Harîv. 4039. — 5) partic. प्रविष्ट a) in act. Bed. α) *eingegangen, eingetreten, sich begeben habend unter, eingedrungen:* निवेशनम्, गृहम् MBh. 3, 2134. R. 2, 42, 29. Çiç. 34, 13. Kathâs. 18, 262. Bhâg. P. 1, 11, 39. Paṇḍat. 62, 24. गृहे Kathâs. 15, 32. पुरीम् R. 1, 17, 34. दुर्गम् Paṇḍat. 57, 11. छिद्रम् 21, 14. विवरम् Hit. 17, 4. 25, 16. कटकम् 44, 3. वनम् Bhâg. P. 3, 1, 1. दण्डके R. 3, 52, 17. आश्रमम् Çiç. 31, 12. अप्सु ṚV. 10, 51, 3. 7, 49, 4. जलम् Hit. 38, 10. त्रैलोक्यम् 17, 19. सर्पिषि ṚV. 10, 71, 3. महासार्थे MBh. 3, 2555. fg. म्लेच्छप्राणाञ्जनपदान् — सौगताः Prab. 87, 19. इह Çat. Br. 14, 4, 2, 16. तत्र R. 2, 21, 17. पुरुषे उक्तः Çat. Br. 1, 1, 2, 2. तस्मिन्वाक् 4, 14. प्रविष्टः सर्वभूतानि यथा चरति मारुतः Spr. 1869. यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेषु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानि Bhâg. P. 2, 9, 34. 7, 12, 18. पश्चार्धेन प्रविष्टः भूयसा पूर्वकायम् Çiç. 7. मध्ये तमः प्रविष्टम् so v. a. *der finstere Theil befindet sich in der Mitte* Vaitân. Bhn. S. 3, 51. क्षायामिवादर्शतलं प्रविष्टाम् Raghu. 16, 6. शेषेन्द्रियवृत्तिरासां सर्वात्मना चतुरिव प्रविष्टा 7, 12. लोलं मनः प्रविष्टाम् Kumâras. 3, 7. तिले च तैले च रुचिः प्रविष्टा घृते च दुग्धे च बलं प्रविष्टम् । स्त्रीणां वराङ्गेषु रतिः प्रविष्टा सर्वे पदा (= पदानि) वस्तिपदे प्रविष्टाः (so v. a. *verschwinden in*) || Spr. (II) 2363. हृदि प्रविष्टया तत्प्रत्यागमवाञ्छया Kathâs. 18, 230. एवं मध्यप्रविष्टेन मूर्खः प्राज्ञेन वञ्च्यते so v. a. *der sein Vertrauen gewonnen hat* 62, 162. वायु° *eingegangen in* Kaush. Up. 2, 14. राज्ये so v. a. *die Herrschaft angetreten habend* Bhâg. P. 9, 18, 2. वासुदेवप्रविष्टधीः so v. a. *versenkt in* 3, 33, 29. प्रविष्टाः स्मः पारमेष्ठ्यं सिद्धान्तम् so v. a. *eingeführt —, eingeweiht in* Prab. 57, 14. कर्मोदये बुद्धिमतिप्रविष्टाम् MBh. 3, 12725. विदुषां मते so v. a. *übereinstimmend mit* 12, 6677. Ohne Ergänzung *eingetreten* (sc. in's Haus u. s. w.) von Personen 3, 2158. 4, 1000. Kathâs. 18, 83. 192. 52, 33. Râja-Tar. 5, 58. *aufgetreten* (auf der Bühne) Vikr. 71, 11. कालपाश so v. a. *durchgezogen* Râja-Tar. 5, 13. घस्मु *eingedrungen* 271. तमम् Bhâg. P. 3, 17, 6. पादानिन्दोः — ज्ञालमार्गप्रविष्टान् Megh. 90. उन्मग्न नयनं यदतिप्रविष्टम् so *tief eingesunken* Suçr. 2, 353, 17. प्रविष्टे कलौ so v. a. *eingetreten, angebrochen* Vet. in L.A. (III) 30, 10. — β) *der an Etwas gegangen ist, sich an Etwas gemacht hat, beschäftigt mit:* नवकर्मणि Râja-Tar. 4, 58. — b) in pass. Bed. α) *worin man eingetreten ist, betreten:* प्रविष्टे ते मया वक्त्रम् R. 5, 56, 28. अप्रविष्टविषयस्य — अन्तकस्य Raghu. 11, 18. — β) *benutzt, womit man Geschäfte macht* Jâtâ. 2, 64. राज्ञो कृपणा-

वित्तैर्यत्प्रविष्टैः पुण्यते धनम् Râja-Tar. 4, 691. — Vgl. प्रवेश u. s. w. — caus. 1) *hereintreten lassen, an einen Ort bringen, niederlegen, hineinwerfen* u. s. w. AV. 9, 5, 23. यज्ञो कामान् TBr. 3, 7, 4, 1. अप्सु TS. 3, 4, 2, 3. 5, 2, 2, 4. तमसि Çat. Br. 1, 9, 2, 25. पत्नीः सदः Kâty. Çr. 6, 3, 15. प्रवेश्यमानं राजानम् (Soma) Lâṭy. 5, 6, 1. 1, 9, 3. गृहम्, निवेशनम्, वेश्म, आगारम् Âçv. Gṛhj. 1, 8, 3. MBh. 2, 2614. 3, 1789. R. 1, 68, 2. Suçr. 1, 18, 1. Kathâs. 4, 51. शुद्धान्तम् Çiç. 71, 13. यमसदने (°सदनम् ed. Bomb.) MBh. 7, 66. गेहे Kathâs. 4, 64. Bhâg. P. 3, 1, 6. गुहाम् Bhaṭṭ. 7, 33. पुरम् MBh. 1, 4427. R. 1, 10, 34. Raghu. 3, 62. पुरे Harîv. 3187. मठात्: Kathâs. 18, 112. यत्तःपुरात्तरम् 135. गृहमध्ये Paṇḍat. 237, 12. सरसि 256, 1. तेषु देशेषु MBh. 12, 2631. अप्सु शिलां बद्ध्वा Jâtâ. 2, 278. मृत्युवक्त्रम् Râja-Tar. 4, 293. द्वारवतीं पारिप्लवां वरदुमम् Harîv. 7664 (med.). यष्टिं पुरं पौरैः (*bringen lassen*) Vaitân. Bhn. S. 43, 24. अप्सु दण्डम् M. 9, 244. सपत्नशरमस्य शरीरे P. 5, 4, 61, Sch. पतंगिकानां पुच्छेषु वर्तिकां प्रवेशिता MBh. 1, 4332. तस्य पादौ च पाणी च शिरो ग्रीवां च सर्वशः । काये प्रवेशयामास पशोरिव पिनाकधृक् ॥ 4, 779. बृहद्बलस्तां मत्रपां प्रवेशयन्निव Râja-Tar. 4, 435. अर्थं (निधेः) कोशे M. 8, 38. प्रवेशितश्च तैः सर्पैः स कृष्णो गोगवन्धनम् Harîv. 3664. रामेषुभिर्दीर्घनिद्रां प्रवेशितः *versetzt in* Raghu. 12, 81. प्रवेशय मां पारमेष्ठ्यीं दीक्षाम् *einführen —, einweihen in* Prab. 57, 15. एतस्मिन्गुणे को हि प्रवेशयेत् so v. a. *beibringen* Kathâs. 40, 11. Ohne Angabe des Ortes *Jmd hineinführen* (in's Haus u. s. w.) MBh. 3, 2951. 2956. R. Gorr. 1, 75, 11. 6, 7, 42. Kâm. Nîtis. 14, 38 (मृगजातीः *vorführen*). Kathâs. 12, 68. Râja-Tar. 3, 205. 4, 560. 6, 321. 329. 336. Paṇḍat. 16, 2. प्रवेश्यतामेष समीपमाशु मे MBh. 4, 314. *hereinführen auf die Bühne, auftreten lassen:* यत्र पात्रं नैव प्रवेश्यते Bhar. beim Schol. zu Çiç. 8, 20. प्रतिपुरुषम् Mṛicch. 48, 14. प्रवेशय तौ Çiç. 27, 14. 29, 14. 61, 12. Mâlav. 10, 20. 65, 16. 18. Daçak. 80, 7. प्रवेशित *in seine Würde —, in sein Amt eingesetzt* Bhâg. P. 5, 24, 18. — 2) *in sein Haus führen* so v. a. *heirathen* (vom Manne) MBh. 5, 5983. — 3) *vorausgehen:* प्रभूतो ऽपि संचितो ऽर्थः प्रवेश्यमानो ऽञ्जनमिव नीयते Paṇḍat. ed. orn. 3, 13. — 4) = simpl. *hineintreten, hineingehen:* तल्लोकपथं स उ एष विभुः प्राविवेशत् Bhâg. P. 3, 8, 15. यष्टिं प्रवेशयन्तीम् (v. l. प्रविश्यमानाम्, प्रविशन्तीं भुवि) so v. a. *in die Stadt gebracht werdend* Vaitân. Bhn. S. 43, 28. — Vgl. प्रवेशन, प्रवेशयितव्य, प्रवेश्य. — desid. प्रविविक्षति *hineinzugehen —, einzudringen beabsichtigen:* शैलान् MBh. 3, 10336. सेनाम् 7, 4359. mit Ergänzung von सेनाम् 6, 139 = 12, 2767 (in der Calc. Ausg. fälschlich विवक्षतः). कृताशनम् R. Gorr. 2, 18, 17. — Vgl. प्रविविक्षु.

— अनुप्र 1) *eingehen, eintreten, eindringen, fahren in, sich begeben unter:* द्रव्याणि Çat. Br. 5, 1, 2, 19. 2, 4, 1. लोकान् 3, 1, 2, 6. विद्युद्वै विद्युत्य वृष्टिमनुप्रविशति *wird zu Regen* Ait. Br. 8, 28. TS. 5, 2, 8, 7. 5, 3, 1. यावयः पुरीष्याः प्रविष्टाः पृथिवीमनु 3, 3. Taitt. Up. 2, 6. Kaush. Up. 4, 20. सो ऽयं वीरो गुहामनुप्रविष्टः Kaṭhop. 1, 29. — गृहं गृहम् Kathâs. 86, 93. Daçak. 71, 3. Paṇḍat. ed. orn. I, 89. तान्बाणाः MBh. 3, 12178. सार्णीकरथानीकम् 9, 1387. म्लेच्छस्त्वगादीन् Suçr. 1, 36, 20. यतो न वेदा मनसा सहैनमनुप्रविशन्ति MBh. 5, 1622. Harîv. 3140. अप्सु Çaṅk. zu Bhâg. Âr. Up. S. 50. प्राणिव्रातम् 298. Bhâg. P. 3, 7, 21. देवम् Mus. ST. 4, 300, 24. वज्रं (nom.) दण्डकाष्ठम् (acc.) MBh. 1, 795. ज्ञातम् *fahren in* Mâlav. P. 31, 106. Kathâs. 62, 162. 121, 195. Paṇḍat. ed. orn. 57, 3. यस्या यस्यास्तु यो भा-

वस्तां तां तेनैव केशवः। अनुप्रविश्य भावस्तो निनायात्मवशम् Harıv. 8332. fg. Spr. 2443. नीतिशास्त्राणि *eindringen in* Pañcat. 201, 22. — घास्ये-नानुप्रविष्टो ऽहं शरीरे तव MBh. 3, 12941. पृथिवीम् Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 293. घप्सु 295. एतत् Bhâg. P. 3, 5, 6. 6, 2. 32, 10. 4, 24, 64. 5, 11, 14. 7, 9, 12. 30. Mârk. P. 46, 10. Çañk. zu Kâṭh. Up. S. 18. अन्योऽन्यानुप्रविष्ट *in einander befindlich* Suçr. 1, 313, 11. पथिकसार्थं विदिशागामिनमनुप्रविष्टः so v. a. *schloss sich an* Milav. 67, 19. अनुप्रविष्ट mit pass. Bed.: शैवो वेतालानुप्रविष्टः Kathâs. 73, 290. 121, 174. — 2) *nach Jmd in ein Haus, in ein Gemach treten, zu Jmd hereintreten;* mit acc. der Person MBh. 1, 396. 4278. 7762. 7800. Harıv. 6472. Râǵa-Tar. 5, 410. so v. a. *sich zu Jmd flüchten* MBh. 12, 4985. कृष्णस्यानुप्रविष्टाः *nach Kṛshṇa hereingetreten* Harıv. 8166. देव्यौ गीतापामनुप्रविष्टा *geflüchtet zu* Pârâç. 103, 9. — Vgl. अनुप्रवेश fg. — caus. *eingehen machen:* योनिम् MBh. 14, 487.

— अभिप्र *hineingehen in —, sich ergiessen in* (acc.), von einem Flusse Bhâg. P. 5, 17, 6. fgg. महागजो घात्तमभिप्रविष्टः *gerathen in* R. 2, 21, 53. st. निपानगम्भीरमभिप्रविष्टम् Harıv. 8799 liest die neuere Ausg. °गम्भीरमिव प्र°. — Vgl. घभिप्रवेश.

— प्रतिप्र *zurückkehren in:* नगरम् R. 2, 89, 9 (97, 14 Gorr.).

— संप्र 1) *eintreten —, hineingehen —, fahren in:* गरुत्मन् वेश्म Âçv. Grhj. 4, 6, 7 (°विष्ट). R. 3, 61, 3. कुटीम् 2, 123, 24. नगरम्, पुरम् MBh. 1, 3203. 3, 15140. 4, 1156. R. 5, 9, 45. स्वराष्ट्रम् Râǵa-Tar. 4, 342 (°विष्ट). येनैव संप्रविष्टः स पथा तेनैव निर्यपौ R. 7, 23, 8, 89. Vaṇiç. Bṛh. S. 91, 3. Râǵa-Tar. 6, 171. पूर्वाद्रिम् 4, 514. सरस्वती। देवस्य वदने साक्षात्संप्रविष्टा Kathâs. 6, 140. समुद्रम् MBh. 1, 3339. ग्रहम् 13, 2646. ज्वलितं जातवेदसम् 7, 2606. यदस्य वारिणः किंचिदपस्तत्संप्रवेक्ष्यति 14, 796. घदितिं देवाः सर्वे Harıv. 173 = VP. bei Mcin, ST. 4, 104. MBh. 13, 2291. गात्राणि (so die ed. Bomb.) गात्रैरस्याङ्गं संप्रवेक्ष्ये हि रक्षितुम् 2293. हिमाधाणीव संपेतुः संप्रविश्य परस्परम् (मातङ्गाः) MBh. 7, 838. मानसम् *in Jmdes Herz sich Eingang verschaffen* Râǵa-Tar. 8, 1614. ध्यानम् *in Gedanken gerathen* R. 7, 26, 32. — 2) *geschlechtlich beiwohnen* (vom Manne): पतिर्भार्यां संप्रविश्य Spr. 4492. 4659. — 3) *sich zu Jmd halten, verkehren mit:* धर्मान्वितान्संप्रविशेदृद्धिः कृतेक्ष दुष्कृतीन् MBh. 12, 4343. 4849. — 4) संप्रविश्य Râǵa-Tar. 6, 361 fehlerhaft für संप्रवेश्य: s. Spruch 5042. — Vgl. संप्रवेश. — caus. *eintreten lassen, hineinführen:* सभाम् Râǵa-Tar. 4, 555. स्वपुरम् Harıv. 5843 (nach der Lesart der neueren Ausg.). घाश्रमे R. 7, 50, 1. सर्वान् रातसेन्द्रस्य 5, 44, 19. Harıv. 4568. Râǵa-Tar. 8, 2138. संप्रवेशित *in's Land wieder eingelassen* im Gegens. zu निर्वासित *verbannt* 6, 342. व्यसने *in's Unglück bringen* Spr. 5042 (Conj.). — संप्रवेश्य Râǵa-Tar. 4, 225 fehlerhaft für संप्रविश्य.

— वि *eingehen in:* घन्यत्तरम् Maitrâyaṇ. 2, 6. — caus. scheinbar Harıv. 5910, wo aber mit der neueren Ausg. विवेशतुः (= विवि°) zu lesen ist.

— अनुवि *sich da und dort niederlassen, — einfinden:* त इदं तेत्रमा-विशन्तु त इदं तेत्रमनु विविशन्तु TS. 2, 4, 8, 2.

— सम् 1) *herbeikommen, sich anschliessen:* इमा नारीराविनं सूर्यया सं विशन्तु ṚV. 10, 18, 7. सं वो विशन्त्वोषधीरुतापः VS. 8, 25. — 2) *eintreten —, eingehen —, fahren in:* सुतलम् Bhâg. P. 10, 85, 24. घग्निमिद्धम् MBh. 1, 6741. Kathâs. 61, 12. परिचुम्बति संविश्य घमरभूतमङ्गरीम् R. 3, 79, 17. आपः पृथिवीं संविशन्तु *verlaufen sich in die Erde* Kauç. 103. गन्धर्वाप्सरापि यं दिव्याः संविशन्ति नरम् MBh. 3, 14503. बह्वीर्योनीः 13, 1923. आत्मानं तनुम् 12, 7171 (med.). यस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविवेश Muṇḍ. Up. 3, 1, 9. आत्मैव संविशत्यात्मनात्मानम् Mâṇḍ. Up. 12. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 134. विधिं क्षात्रं विषयो संविशन्ति *gehen auf* in MBh. 13, 3389. — 3) *sich niederlassen, — niederlegen, — zur Ruhe begeben* Çat. Br. 3, 2, 4, 20. 11, 6, 1, 7. 13, 4, 4, 9. पत्न्या Kâṭh. 14, 5. Lâṭ. 3, 4, 4. 5, 10, 6. Âçv. Grhj. 2, 3, 7. 9, 5. गृहेषु Çâ. 2, 5, 17. Ait. Br. 8, 28. चर्मणि वा स्वण्डिले वा Kâṭh. Up. 5, 2, 8. संवेश्यन् (so ist st. संवेश्यन् zu lesen) ज्ञापयि Kauṣh. Up. 2, 10. M. 2, 194. 4, 55. 76. 7, 225. Jâǵ. 1, 114. 230. MBh. 1, 688. 4299. शयनीये मया सह 4712 (med.). चरमं संविशति या प्रथमं प्रतिबुध्यते 2, 2177. 3, 13149. 13, 1456. 2745. R. 2, 53, 5. R. Gorr. 2, 8, 56. 53, 7. 4, 31, 2. 55, 16. 20. fg. 5, 92, 19. Suçr. 2, 165, 11. Kathâs. 56, 316. Bhâg. P. 4, 26, 11. 7, 13, 26. 10, 13, 46. शाढलोपरि 20, 30. व्याधितेन संविशेत् *er schlafe nicht mit Kranken* Jâǵ. 1, 138. शय्याम् *sich auf's Bett legen* R. 2, 46, 14 (44, 14 Gorr.). संविष्ट *zur Ruhe gegangen, schlafend, ruhend* MBh. 1, 692. 5924. तृणेषु R. 2, 86, 11. R. Gorr. 2, 48, 10. 94, 12. 5, 14, 13 (कस्तिन्). कुशशयने Râgh. 1, 95. उत्कृशाङ्गी° Kathâs. 42, 43. 54, 163. रत्नपीठे Verz. d. Oxf. H. 28, b, 33. Mârk. P. 34, 59. वृसी° Pârâç. 21, 2. — 4) *beschlafen:* संविशेदार्तवे स्त्रियम् M. 3, 48. Jâǵ. 1, 79. Mârk. P. 34, 81. — 5) *sich setzen zu* (acc.): संज्ञप्तमश्वम् Harıv. 11236. पैः संविष्टः Bhâg. P. 9, 11, 22. — 6) *sich mit Etwas* (acc.) *befassen:* दृष्टं श्रुतमसद्बुद्ध्या नानुध्यायेन्न संविशेत् (= उपभुञ्जीत Comm.) Bhâg. P. 9, 19, 20. — Vgl. संवेश fgg. — caus. *legen —, setzen auf, in; bringen in, nach:* तल्पे Kauç. 79. शयने MBh. 1, 4374. R. 2, 76, 5. शिबिकायाम् Harıv. 3385. R. Gorr. 2, 83, 8. पर्यङ्के R. Schl. 2, 34, 20. घासनेषु Pârâç. 24, 4. चितामध्ये R. 2, 76, 17. चितायाम् 6, 96, 9. तैलद्रोण्याम् 2, 66, 14. — 6, 96, 15. परं ब्रह्म व्रते Verz. d. Oxf. H. 68, b, 1. वाङ्म सत्यं च बुद्धौ संवेशितानि ते MBh. 12, 1556.

— अनुसम् *sich zur Ruhe begeben in der Richtung von, — im Gefolge von:* मनो निविष्टमनुसंविशस्व AV. 18, 3, 9. die Sonne एतां कुशीमनु संविशति TBr. 1, 3, 10, 7. Kauç. 103. सुप्तामनुसंविवेश *wenn sie schlief, legte er sich auch zur Ruhe* Râgh. 2, 24.

— घभिसम् *sich vereinigen mit —, bei* AV. 3, 3, 4. इमौ मेथिमभिसंविशाथम् 8, 5, 20. fg. आत्मनात्मानम् VS. 32, 11. इन्द्रं देवाः 13, 25. Çat. Br. 14, 4, 2, 19. TBr. 2, 7, 10, 3. 3, 1, 2, 7. Kâṭh. Up. 1, 11, 5. 3, 6, 2. यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति *aufgehen in* Taitt. Up. 3, 1. fgg. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 72. 100.

— उपसम् 1) *sich legen neben* (acc.): मल्लिकाशयम् Kâṭh. Çr. 20, 6, 14. — 2) = घभिसम् TBr. 2, 2, 10, 6. 3, 1, 2, 7. — caus. *sich dazu legen lassen:* पत्नीम् Kauç. 80. *daneben sitzen lassen* MBh. 14, 2648.

2. विश् (= 1. विश्; nom. विट् P. 8, 2, 36. Vop. 3, 149. 1) f. (in der 2ten und 3ten Bed. masc. nach Mbh.) a) *Niederlassung, Wohnsitz, Haus* (Bed. 1 und 2 nicht überall sicher zu scheiden): भवा पायुर्विशो घस्याः ṚV. 4, 4, 3. 37, 1. यज्ञस्य केत्यं मानुषीषु विक्षु 7, 67, 7. विश्पतिर्विशो मानुषीणाम् 6, 48, 8. विशश्च यस्या घतिथिर्भवासि स पत्नीनं वनवदेव मर्तान् *welches Hauses Gast du wirst, der Mann u. s. w.* 5, 3, 8. कमा क्षेमे चरति कासु विक्षु 6, 21, 4. प्रास्मै धेव पर्तनासु प्र विक्षु *draussen im Felde und daheim* 41, 3. 10, 91, 3. सं पद्यन्त पयोषोषधीषु विक्षु

7,56,22. 61,3. 70,3. वि तिष्ठध्वे मरुतो विच्विरुक्तं 104,18. = प्रवेश *Eingang* H. an. 1,15. Viçva im ÇKDa. — b) *Gemeinde* (zunächst *die kleinere Vereinigung innerhalb des Volks*); *Stamm, Volk;* = मनुज्ञ u. s. w. AK. 3,4,28, 216. H. 337. H. an. Med. ç. 13. Halls. 2, 176. यत्तरीयसे युष्मांश्च देवान्विश आ च मर्तान् RV. 4,2,3. स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते 2,26,3. विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनाम् 5,1,8. सं यद्विशो अयन्त शूरसाता 26,1. 3,60,11. पत्ये, गृहेभ्यः, यस्मै सर्वस्मै विशे AV. 14,2,27. युध्मः RV. 4,24,4. आर्यः 10,11,4. विशो मनुष्यान् 6,47,16. मानुषीः 10,80,6. मनुषो विशः 6,14,2. 8,23,13. दिवः 6,16,9. उभे विशौ 9,70,4 (vgl. Kiṭu. 11,6). दिव्या 88,7. दैवीः 3,34,2. AV. 6,98,2. VS. 17,86. दासीः RV. 4,28,4. 8,25,2. यदैवीः 8,85,15. यमिक्षवः 7,5,3. कृष्णा 8,62,18. Çat. Br. 5,1,2,5. 13,2,2,19. तस्मै विशः स्वयमेवा नमन्ते *die Unterthanen, Leute* u. s. w. RV. 4,50,8. 6,8,4. 10,124,8. 173,6. des Tṛṇaskanda 1,172,3. der Tṛtsu 7,33,6. VS. 8,46. यस्यै विशो राजा भवति Çat. Br. 5,4,2,3. एदं सदोदत्तु देवानः सर्वया विशा यजध्यै RV. 5,26,9. 8,28,2. विशो मरुतां *das Volk der* Marut 5,56,1. मारुतीः 8,12,29; vgl. TBr. 2,7,2,2. Çat. Br. 5,4,2,8. auch andere *Götterschaaren* 14,4,2,24. विशो न युक्ता उषसो यतन्ते *Mannschaft* RV. 7,79,2. देवविशः कल्पयितव्या इत्याकुस्ताः कल्प्यमाना अनु मनुष्यविशः कल्पन्त इति सर्वा विशः कल्पन्ते Ait. Br. 1,9. तत्र च बलं च राष्ट्रं च विशं च 8,24. TS. 2,3,12,1. तत्र वै यमो विशः पितरः Çat. Br. 7,1,1,4. 13,4,2,15. राज्ञः, विशः Kaush. Up. 2,9. वशानुगाश्चापि विशो ऽय कश्चित् MBh. 2,1996. सीमाधको विशाम् Bhāg. P. 2,3,4. यत्र दारापहरणं राज्ञेव कुरुते विशाम् Rāǵa-Tar. 4,29. लक्षणोत्सोकसां विशाम् 6,87. विशां पतिः (vgl. विश्पति und विट्पति) Bez. eines *Fürsten* MBh. 1,6119. 3,2103. 2112. 2477. 13039. 5,5960. Hariv. 14170 (fehlerhaft nom. st. voc. Mit. 142,8). R. 2,34,17. 61,15. 6,82,33. Ragh. 1,93. 3,66. 5,3. 10,51 (विशां पत्युः). Kathās. 25, 127. Rāǵa-Tar. 1,333. Bhāg. P. 4,8,6. 19,39. विशां नाथः Ragh. ed. Calc. 4,70. विशामीश्वरः Rāǵa Tar. 8,109. विशां वरिष्ठः MBh. 4,288. पूरुमर्कृत्तमं विशाम् Bhāg. P. 9,19,23. — c) *Volk in dem engern Sinne des brahmanischen Staates: die dritte Kaste* (später वैश्य genannt) AK. 2, 9,1. 3,4,28, 216. H. 864. H. an. Med. Halls. 2, 415. ब्रह्म, क्षत्रम्, विट् Çat. Br. 2,1,2,5. 3,7,2,3. 13,2,2,6. Pāraṇ. Gṛ. 18,10,2. Bhāg. P. 2,1, 37. ब्राह्मणानाम्, राज्ञाम्, विशाम् Kaṭh. Up. 8,14. ब्राह्मणस्य, राज्ञः, विशः M. 2,36. 38. 46. 3,13. 10,79. विशः स्त्री H. 897. विप्रः, क्षत्रियः, विशः, शूद्रः Varāh. Bṛ. S. 53,100. सस्यानि विशाम् M. 9,247. 10,120. ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् 9,155. क्षत्रियविशोः 8,282. ब्रह्मक्षत्रियविड्योनि 2, 80. क्षत्रविट्शूद्रयोनि 8,62. 9,229. शूद्रविट्क्षत्रियाणाम् 8,104. विट्शूद्रयोः 3,23. 8,277. स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध 11,66. विट्शूद्राः Varāh. Bṛ. S. 5,32. 8, 52. विप्रक्षत्रियविट्शूद्रकृत् 34,19. एको विट्पूर्णः MBh. 13,2620. विट्शूद्रद्विजन्मनाम् Mārk. P. 134,24. — d) *Besitz, Habe:* pl. Bhāg. P. 8,22,34. — e) विशां साम N. eines Sâman Ind. St. 3,236,5. — 2) nom. ag. in अनर्विश्. — Vgl. देव°, मनुष्य°.

3. विश् f. fehlerhaft für विष् *faeces* H. 634, Schol. Verz. d. B. H. 278, Cl. 12.

विश 1) nom. act. von 1. विश् in दुर्विश. — 2) am Ende eines comp. n. und f. या = 2. विश्. अमुरविशं कृ वै देवानभ्युदचार्यं यासीत् (wohl °चार्यासीत्) Ait. Br. 6,26; vgl. देव° und मनुष्य°. Am Ende eines adv. comp. विशम् gaṇa शरदादि zu P. 5,4,107. Vop. 8,62. — 3) m. N. pr. eines Mannes gaṇa सुधादि zu P. 4,1,132; vgl. वैशेय. — 4) ungenaue Schreibart für विस, z. B. Suçr. 2,162,17.

विशंवरा f. *eine kleine Hauseidechse* (पल्ली) Rāǵān. im ÇKDa.

विशकाल (2. वि + श°) adj. *in Stücke gegangen:* रथं चान्यैः सुबकुभिर्यत्रे विशकालं शरैः MBh. 7,8330. विशकालीकृ *zerstückeln, in Stücke brechen* 6,3653. 7,780. 1871.

विशकलित (von विशकाल) adj. *gesondert, getrennt* so v. a. *verschieden* Sin. D. 15,10.

विशङ्क (2. वि + शङ्का) adj. 1) *keine Scheu empfindend, unbesorgt:* यत्तःकरण Ragh. 2,11. प्राणत्याग° *sich nicht scheuend das Leben hinzugeben* R. 4,28,24. विशङ्कम् adv. *ohne Scheu* Daçak. 86,9. — 2) *keine Scheu —, keine Furcht verursachend, sicher:* पन्थाः Kām. Nītis. 15,18. — विशङ्का s. bes.

विशङ्कट adj. P. 5,2,28. f. आ und ई gaṇa अकृदादि zu 4,1,45. 1) *ausgedehnt, umfangreich* AK. 3,2,10. H. 1429. Halls. 4, 68. विशङ्कटो वत्तसि Bhatt. 2,30. °कटीरकस्थली Çic. 13,34. अटवी Kathās. 100,10. विसंकटोत्करदुष्परिचकपाटोरणार्गल° Pañcat. ed. orn. 3,7. — 2) *ungeheuerlich, scheusslich, grauenhaft:* दृष्टाकोटि° Mālatīm. 78,2. Kathās. 25,105. 114,107. 123,8. वेतालतालवाद्य° (रणोत्सव) 108,107. कोपाटोपविसंकटं वदत्स्यां मातरि Pañcat. 46,3. — Es liegt nahe der Schreibart विसंकट den Vorzug zu geben, da dieses sich einfach in वि + सं° zerlegt, aber Pāṇini's Schreibart durfte nicht unberücksichtigt bleiben. Dieselben Bedeutungen hat विकट.

विशङ्कनीय (von शङ्क mit वि) adj. *Misstrauen verdienend, verdächtig:* राज्ञन् R. Gorr. 2,19,22. मुखादिभ्यो ब्राह्मणादिनिर्माणे ब्रह्मणो न विशङ्कनीयम् Kull. zu M. 1,31.

1. विशङ्का (von शङ्क mit वि) f. *Bedenken in Bezug auf* (loc.), *Verdacht:* दमयत्यां विशङ्का तामुपाकर्षत् MBh. 3,2996. मयि ते मा विशङ्केयम् R. Gorr. 2,99,20. विशङ्का त्यज्यतामेषा 5,31,61. मनुष्यो ऽस्मि विशङ्का ते न कर्तव्यात्र कर्हिचित् Mārk. P. 21,53. — 2) *Besorgniss, Scheu, aus Besorgniss hervorgehendes Zögern:* परपुंसो विशङ्कया Mārk. P. 78,22 = 108,8. धर्मलोपविशङ्कया R. Gorr. 2,20,30. आत्मोद्भित्तिविशङ्कया Kām. Nītis. 8,64. मा विशङ्का कुरुष्व *trage kein Bedenken* MBh. 2,1037. अविशङ्कया *ohne alle Scheu, ohne Bedenken, ohne Zögern* 3,17038. 4, 2322. 14,111. Hariv. 3854. Mārk. P. 20,28. Çāṅkh. zu Bṛh. Ār. Up. S. 267. वीतविशङ्क adj. Bhāg. P. 10,38,19. स्वपिहि त्वं निर्गतविशङ्कः *unbesorgt* Pañcat. 124,12. अ° adj. *sich nicht bedenkend, nicht zögernd* MBh. 13,2747. सविशङ्केन मनसा 3,2171. सविशङ्का adj. R. 2,22,6. — Vgl. निर्विशङ्क (auch R. 5,16,27).

2. विशङ्का (2. वि + शङ्का) f. *Abwesenheit aller Besorgniss, — Scheu:* विशङ्कया *ohne alle Scheu, ohne Bedenken, ohne Zögern* Bhāg. P. 4,24, 67. 10,82,43.

विशङ्किन् (von शङ्क mit वि) adj. 1) *vermuthend:* व्रीमूतस्तनितविशङ्किभिर्मयूरैः Mālav. 20. वेद्यवृत्ताविशङ्किन् Kathās. 40,72. — 2) *befürchtend, besorgend:* नैवमस्मासु ते प्रीतिर्भवेदिति विशङ्किना Kathās. 14,4. सर्वनाश° 17,81. — अ° MBh. 8,3503 fehlerhaft für अविशङ्किन्, wie die ed. Bomb. liest.

विशङ्क (wie oben) adj. *Misstrauen verdienend, verdächtig:* स्त्रियः R. 6,101,8.

विशद् 1) adj. (f. या) *a) klar, hell, blank, heiter, rein;* = शुक्ल, पाण्डुर, शुचि u. s. w. AK. 1,1,4,22. Taik. 3,3,211. H. 1392. 1436. an. 3, 239. Med. d. 39. Hall. 1,132. अच्छस्फटिक° (सम्भस्) Megh. 52. निर्घातकाराग्रुटिका° (क्रिमाम्भस्) Ragh. 5,70. शीधु Spr. 3322. मद्य Sūçr. 2, 477, 3. Oel 1,182,3. Urin 2,82,13. वीर्य 1,148,9. व्योमन् Rāǵa-Tar. 3,375. प्रभा Çiç. 9,26. Ragh. 4,18. 9,38. चन्द्रपादाः Megh. 71. चन्द्रिका Ragh. 19, 39. दशनांशवः Kumāras. 6,25. °हारमयूख Bulg. P. 3, 28, 25. हिमाचल Kir. 5,12. मृङ्गेाच्छ्रपिः कुमुदविशदैः Megh. 59. स्फटिक° (नगेन्द्र) 63. वपुस् Git. 1,12. कदम्ब 2,8. कच AK. 2,6,2,49. H. 570. शस्त्र Bulg. P. 2, 10,14. Auge Sūçr. 2,141,17. कुमुदविशदानि प्रेक्षितानि Megh. 41. प्रीतिविशदैर्नेत्रैः Ragh. 17,25. विद्यासविशदी दृशम् Rāǵa-Tar. 8,1279. Mund Sūçr. 2,235,6. प्रसादविशदानन Rāǵa-Tar. 3,25. अधर Kumāras. 3,33. घोणस्ताम्बूलरागविशदः Çiç. 8,70. स्मित Kumāras. 1,45. Bulg. P. 4, 16,9. दन्तावभासविशदस्मितवक्त्रकान्ति Bṛ.3,18. स्वरूप ब्रह्मचर्य च MBu. 4,186. यतात्मन् Çiç. 97. आशय Bulg. P. 3, 5, 45. 4, 20, 10. कृत्यम् Kaivalyop. bei Muir, ST. 4,304. हृदय Spr. 4568. चेतस् 2071. विशदात्मन् 2680. 4232. यशस् Kathās. 22, 26. Bulg. P. 1, 18, 11. कीर्ति 8, 21, 4. Rāǵa-Tar. 8,1152. अनुवृत्ति Bulg. P. 3,4,12. नृपश्री Rāǵa-Tar. 4,272. °प्रश्न 5,79. विज्ञान Sarvadarçanas. 29,18. स्वरूपावभास 47,18. फलपङ्क्ति Mārk. P. 43,39. निम्नदीर्घवंशविशदप्रेङ्खत्पताकाकृति Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 506, Çl. 22. *rein, lauter,* von einem Menschen Kām. Nītis. 12, 34. — *b) klar, deutlich, verständlich;* = व्यक्त Taik. H. an. Med. Halāy. 4, 67. विशदपदुरवैः Pārāç. 3, 9, 14. उच्छ्वसित Ragh. 8, 3. निःश्वास (मुविशद) Mṛicch. 48, 22. शास्त्र Harīv. 13701 (विपद् die ältere, विशद् die neuere Ausg.). विवेकविशदा कथा Rāǵa-Tar. 2,113. भारतव्याख्या Verz. d. Oxf. H. 2,*a*, No. 14. fg. 161,*b*,25 (मु°). 237,*b*,21 (°तर). — *c) weich anzufühlen* MBu. 12,6856. 14,1416. von Speisen im Gegens. zu खर Pat. zu P. 7, 3, 69. Schol. zu P. 2,1,35. 4,2,16. H. 921, Schol. Sūçr. 1,246,21. der Südwind 76,14. von einem Geruch MBu. 12,6848. 14,1409. — *d) geschickt zu Etwas (geschmeidig):* नृत्यप्रयोगविशदौ चरणौ Mṛicch. 9,19. — *e)* am Ende eines comp. *behaftet mit:* कासश्वासादिदुःख° Sarvadarçanas. 101, 1. — 2) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Gajadratha, Bulg. P. 9,21,23. — Vgl. वैशद्य.

विशदय् (von विशद्), °यति 1) *rein machen:* den Mund Vīkan. 10,4. — 2) *klar machen, erläutern:* प्रतिज्ञातमेवार्थम् Schol. zu Gaim. 1,1,3.

विशदाय् (wie eben), °यते *klar —, deutlich werden:* जीवन्मुक्तस्य या तृप्तिः सा तेन विशदायते Verz. d. Oxf. H. 222,*b*,24.

विशदीकर् (विशद् + 1. कर्) 1) *klar machen, erhellen:* उडुनाथकरैर्विशदीकृतमुप्रसर Pārāç. 3,12,5. — 2) *erläutern, erklären* Verz. d. Oxf. H. 241,*b*, No. 591 (विषदी°).

विशन (von 1. विश्) n. *das Hineingehen in, Eindringen:* कपोतस्य सत्रविशनम् Vaitān. Bṛh. S. 88,12. वज्र° MBu. 3,14884.

विशफ (2. वि + शफ) adj. *keine oder verkehrte Hufe habend,* Bez. eines Unholds AV. 3,9,1.

विशब्द (2. वि + श°) im comp. *verschiedenartige Worte* Verz. d. Oxf. H. 188,*a*,3.

विशब्दन (von शब्दय् mit वि) n. *das Aussprechen von Worten* P. 7,2,33.

विशय (विशम्, acc. von 2. विश्, + 2. य) adj. *das Volk beschützend;* m. vielleicht N. pr. gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. — Vgl. वैशेयायन.

विशय (von शी mit वि) m. 1) *Ungewissheit, Zweifel* (vgl. संशय) P. 3, 3,39, Schol. Kāç. Ça. 4,3,7. Liṅg. 6,10,24. Anekārth. 7,10 in Ind. St. 13,5. Tirthāvatār im ÇKDa. — 2) = श्यामय Çabdak. bei Wilson.

विशयवत् (von विशय) adj. *unsicher, zweifelhaft* Nir. 2,1.

विशयिन् (von शी mit वि) adj. (neben विषयिन्) देशे gaṇa अकादि zu P. 2,1,134.

विशरि (von शृ mit वि) m. 1) Bez. eines Unholds AV. 2,4,2. — 2) एष वै मासो विशरि इति TS. 7, 5, 2,1. Kāṭh. 33, 7. = विशीर्ण Comm. — 3) *Mord, Todtschlag* AK. 2,8,2,34.

विशरण (wie oben) n. 1) *das Auseinanderfallen, Zerfallen* Bhārtṛ. 14, 13. 15, 9. Verz. d. Oxf. H. 167,*b*, 16 (?). — 2) *Mord, Todtschlag* H. 370; vgl. विशारण.

विशरद Kathās. 13,148 fehlerhaft für विशारद.

विशरीक (von शृ mit वि) adj. etwa *abbröckelnd,* Bez. des बलास AV. 19,34,10.

विशल्य (2. वि + शल्य) 1) adj. *ohne Spitze:* Pfeil VS. 16, 10. von *einer Pfeilspitze befreit, von einer Pfeilwunde geheilt* H. an. 3,307. fg. MBu. 3,16470. fg. 7,3708. 8, 4593. 13, 7761. 7763. R. 2, 63, 43 (65, 41 Gorr.). fg. 6,36,120. 71,21. 24. von *einem fremden Körper im Leibe befreit:* या विशल्यभावात् so v. a. *bis sie den Embryo los ist* Sūçr. 1,368, 16. überh. von *einem Schmerze befreit* MBu. 6,3341. — 2) f. या *eine best. Pflanze* Sūçr. 2, 110, 4. 275, 8. 517, 9. *ein gegen Pfeilwunden angewandtes Heilkraut* (vgl. विशल्यकरणी) MBu. 3,16470. R. 6,82,132. 136. = गुडूची AK. 2,4,3,1. H. an. Med. j. 106. = अग्निशिखा AK. 2,4, 8,2. Med. = दन्तिका, दन्ती AK. 3,4,26,157. H. an. Med. Ratnam. 34. = त्रिपुटा H. an. Med. = लाङ्गली H. an. = कलिकारी und अग्निमेदा Rāǵān. im ÇKDa. — *b)* N. pr. der Gattin Lakshmaṇa's H. an. — *c)* N. pr. eines Flusses MBu. 2,378. 3,8092. 12910. 13,7646. Verz. d. Oxf. H. 65,*b*,30. fg.

विशल्यकरण (वि + 2. क°) adj. *Pfeilwunden heilend;* f. ई Bez. *eines best. wunderthätigen Heilkrautes* MBu. 6,3540. R. 2,25,36. 6,71,33. 82, 112. Kathās. 39,90. 105,44.

विशल्यकृत् adj. dass.; m. *eine best. Pflanze,* = विशाली Ratnam. im ÇKDa.

विशल्यघ्न oder विशल्यप्राणकर् adj. heissen nach Sūçr. 1,347,3 *diejenigen Stellen des Leibes, an welchen eine Wunde tödtlich wird, sobald die Spitze* (einer Waffe u. s. w.) *ausgezogen wird.* Diese Definition scheint falsch zu sein; es sind *diejenigen Stellen* gemeint, *auf welchen ein Schlag lebensgefährliche Wirkung hervorbringt auch ohne dass ein fremder Körper* (शल्य) *in den Leib eindringt: die Schläfen und der Raum zwischen den Brauen* Sūçr. 1, 346, 2. 4. 11. 347, 3. 12 (°स्थानि Hdschr.). 348, 7.

विशल्यय् (von विशल्य), °यति *frei von einer Pfeilspitze oder überh. von einem Schmerze befreien* Kathās. 24, 228.

विशम्रमिषु Daçar. 22,14 fehlerhaft für विशिष्रमिषु.

विशसन (von शस् mit वि) 1) adj. (f. ई) *mörderisch, Tod bringend:* गदा MBu. 6,2775. 2798. 9,3166. तप 8, 2826. 10, 540. विशसने गूढागारे बन्धनेन वद्ध: Mṛicch. 98, 9. — 2) m. *Schwert* Trik. 2, 8, 54. H. ç. 144. MBu. 12, 6203. als solches bildliche Bez. *der Strafe* 4428. — 3) n. *a) das Schlachten, Zerschneiden* ṚV. 10, 85, 33. Suça. 1, 96, 12. *Metzelei* AK. 2, 8, 2, 33. H. 370. Hall. 2, 322. पुत्रशत्रुगणस्य MBu. 11, 304. मल्लविशसनं कृतम्। यादोगणमकालाद्दित्यदानवरक्षसाम् R. Gorr. 1, 42, 7. 43, 7. 5, 108, 4. so v. a. *Schlacht* MBu. 7, 661. 840. 12, 11293. Harîv. 5596. *Metzelei* so v. a. *grausame Behandlung* Uttarar. 74, 13 (96, 5). — *b)* N. einer Hölle VP. 207. fg. Bhâg. P. 5, 26, 7.

विशसितृ (wie oben) nom. ag. *Schlächter* P. 7, 2, 34, Schol. Ait. Br. 7, 16. M. 5, 51. Kull. zu M. 10, 105.

विशस्तृ (wie oben) nom. ag. dass. P. 7, 2, 34 (vedisch). ṚV. 1, 162, 19. MBu. 13, 5642. — Vgl. प्र°, विशास्तृ und वैशस्त्र.

विशस्ति gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5, 1, 124 vielleicht fehlerhaft für विशस्त; vgl. वैशस्त्य.

विशस्त्र (2. वि + शस्त्र) adj. *waffenlos* MBu. 8, 984.

विशस्पति (विश्, gen. von 2. विश्, + पति) m. *Herr der Niederlassung* u. s. w.: Indra ṚV. 10, 152, 2. Agni 141, 1.

विशाख (2. वि + शाखा) 1) adj. (f. घा) *a) verästet, gegabelt:* वीरुध: AV. 9, 7, 4. यूप TS. 2, 1, 9, 3. Çâṅkh. Çr. 16, 9, 26. वपाश्रपणी Kâty. Çr. 6, 3, 7. 6, 27. Gobh. 3, 10, 25. — *b) astlos:* पादप Harîv. 2753. — *c) händelos* Harîv. 2755. — *d) unter dem Sternbilde* Viçâkhâ *geboren* P. 4, 3, 34. — 2) m. *a) Bottler* H. an. 3, 114 (याचक). Med. kh. 12 (तर्वक). *Spindel* (d. i. तर्कु) Wilson nach Çabdam. — *b)* Bez. *einer best. Stellung beim Schiessen* (धन्विनो वितस्त्यन्तरेण पदे संस्थानम्) Bhar. zu AK. 2, 8, 2, 33 nach ÇKDr. — *c) Boerhavia procumbens Roxb.* (पुनर्नवा) Râǵân. im ÇKDr. — *d)* Bein. Skanda's AK. 1, 1, 1, 35. Trik. 3, 3, 51. H. 209. H. an. Med. Hall. 1, 19. MBu. 3, 14634. — *e) eine Manifestation* Skanda's, *die als sein Sohn aufgefasst wird,* MBu. 1, 2585. 3, 14334. 14532. fg. 9, 2457. fg. 13, 7036. Harîv. 157. 2966. Varâh. Bṛh. S. 46, 11. 48, 26. Kathâs. 20, 92. 50, 183. fg. VP. 120. Bhâg. P. 6, 6, 14 (st. स्कन्ध ist mit der ed. Bomb. स्कन्द zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 34 (?). — *f)* als *Manifestation* Skanda's N. *eines den Kindern gefährlichen Dämons* Suça. 2, 387, 6. 394, 8. Çâṅkh. Sâṅkh. 1, 7, 109. Verz. d. Oxf. H. 307, *b*, 25. — *g)* Bein. Çiva's MBu. 13, 1186. स्कन्द° (स्कन्ध° ed. Calc.) desgl. 907; vgl. स्कान्दविशाख P. 7, 3, 21, Schol. — *h)* N. pr. eines Devarshi MBu. 2, 295. eines Dânava Kathâs. 47, 18. eines Brahmanen Râǵa-Tar. 1, 304. — Schiefner, Lebensb. 270 (40). — 3) f. घा *eine best. Pflanze* Kâty. Çr. 25, 7, 17. = दूर्वा Comm. = कठिल्लक H. an. Med. — *b)* du. Bez. *des 14ten* (später *des 16ten*) Nakshatra Colebr. Misc. Ess. II, 338. Journ. of the Am. Or. S. 6, 335. fg. P. 1, 2, 62. AV. 19, 7, 3. TS. 4, 4, 10, 2. TBr. 1, 5, 2, 2. 7. 3, 1, 1, 11. Âçv. Çr. 2, 1, 10. AV. Paric. bei Weber, Nax. 1, 312. MBu. 3, 16070. R. 4, 33, 44. 5, 73, 56. Varâh. Bṛh. S. 4, 6. pl. MBu. 13, 4262. R. 2, 41, 11. Çik. 35, 21. Varâh. Bṛh. S. 10, 19. 11, 58. 101, 9. sg. vedisch nach P. 1, 2, 62. AK. 1, 1, 2, 23. Trik. H. 112. H. an. Med. Ganga bei Weber, Nax. 1, 309. MBu. 6, 95. 13, 3270. R. 6, 86, 42. Varâh. Bṛh. S. 6, 9. 15, 30. 102, 4. 105, 3. Mârk. P. 33, 12. Çaṅk. 14, 6. unbestimmt ob sg. oder pl. Mârk. P. 58, 33. im comp. Lalit. ed. Calc. 62, 14. fg. Vet. in LA. (III) 13, 11. Varâh. Bṛh. S. 6, 12. 9, 3. 32, 12. 47, 18. 55, 31. सविशाख 98, 1. — *b)* ein Frauenname Buan. Intr. 24, N. 1. Schiefner, Lebensb. 270 (40). Hiouen-thsang 1, 305. — 4) f. ई *eine gabelförmige Stange* Kâty. Çr. 13, 3, 13. Çâṅkh. Çr. 17, 1, 15. 10, 9. — 5) n. *Gabel, Verzweigung* Kâty. Çr. 8, 3, 33. Lâṭy. 1, 5, 19. 7, 7. 10. Dasselbe Wort vermuthen wir st. विशिख in der Stelle (सूतिकाया:) विशाखान्तरमन्यस्यात् *das Innere der Gabel* d. h. *zwischen den Schenkeln* Suça. 1, 368, 12. — Vgl. वैशाख.

विशाखक m. *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDr.

विशाखदत्त (विशाखा + दत्त; vgl. P. 6, 3, 62) m. N. pr. des Autors des Dramas Mudrârâkshasa Verz. d. Oxf. H. 143, *a*, No. 296.

विशाखदेव m. N. pr. eines Mannes Târan. 146.

विशाखयूप 1) m. N. pr. eines Fürsten aus der Pradjota-Dynastie VP. 466. Bhâg. P. 12, 1, 8. Verz. d. Cambr. H. 7. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit MBu. 3, 8386. 12854.

विशाखल n. *eine best. Stellung beim Schiessen* Çabdam. im ÇKDr.

विशाखिल (von विशाखा) m. N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 6, 32. fgg. Autor eines Kalâçâstra Verz. d. Oxf. H. 207, *b*, 33.

विशातन (vom caus. von शद् mit वि) 1) adj. (f. ई) *fällend, vernichtend:* परानीक° (शर) MBu. 7, 8081. वीर्य° Mârk. P. 116, 25. मृत्युपाश° Bhâg. P. 3, 14, 4. als Beiw. Vishṇu's (= संकर्तृ Nîlak.) MBu. 7, 2963. — 2) n. *das Fällen, Vernichten:* द्रोणानीक° MBu. 7, 488.

विशाद MBu. 8, 4407 fehlerhaft für विवाद, wie die ed. Bomb. liest.

विशाप (2. वि + शाप) 1) adj. von *einem Fluche befreit* Bhâg. P. 9, 9, 37. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52, *a*, 25.

विशाय (von शी mit वि) m. *die Reihe zu schlafen* P. 3, 3, 39. AK. 3, 3, 32. H. 1503. Hall. 4, 54.

विशायक m. *eine best. Pflanze;* s. u. विसाकर.

विशायिन् (von शी mit वि) adj. gaṇa यस्कादि zu P. 3, 1, 134.

विशारण (vom caus. von शॄ mit वि) n. *Mord, Todtschlag* H. 372. — Vgl. विशारणा, निशारण.

विशारद (wohl 2. वि + शा°) 1) adj. (f. घा) gaṇa दृक्षादि zu P. 5, 1, 123. *a) erfahren, kundig, vertraut* AK. 3, 4, 16, 98. H. 341. an. 4, 144. Med. d. 53. Hit. 224. Hall. 2, 178. die Ergänzung im loc.: संख्याने MBu. 3, 2833. रथमार्गेषु 8, 1983. नृत्येषु 14, 2642. भङ्गिसूचनविधौ Kathâs. 15, 143 (विशारद gedr.). im gen.: युद्धानामविशारद: MBu. 7, 5540. im comp. vorangehend: सर्वशास्त्र° M. 7, 62. मतिशालि° Jâtâ. 3, 115. युद्ध° Buas. 1, 9. मल्लबुद्धि° MBu. 1, 1597. प्रतिपत्ति° 8248. 2, 394. 3, 2485. 5, 5970. 13, 6772. R. 1, 2, 1. 53, 8. 2, 43, 18. 74, 18. 80, 1. R. Gorr. 2, 6, 15. 4, 9, 45. 51, 12. Suça. 1, 122, 12. 256, 3. Raghu. 8, 17. 9, 32. Spr. (II) 265. 1288. (I) 3073. 4413. Kathâs. 20, 116. 74, 237. Râǵa-Tar. 4, 265. Bhâg. P. 2, 3, 25. 9, 13, 27. ललनानुनयादि° 5, 2, 17. ohne Ergänzung MBu. 4, 1032. R. 5, 3, 70. Bhâg. P. 8, 23, 8 (= सर्वज्ञ Comm.). बुद्धि: सुविशारदा 11, 7, 26. परापवादेन विशारदेन *geschickt, gewandt, dem Zwecke entsprechend* 28, 23. स्तवेष्वार्षविशारदै: so v. a. *sinnvoll* MBu. 13, 6413. — *b) dreist, frech* AK. H. an. Med. — *c)* = श्वेत Âdjapâla im ÇKDr. — 2) m. *Mimusops Elengi Lin.* (बकुल) Râǵân. im ÇKDr. Acon. 48. — 3) f. घा *eine best. Pflanze,* = तुरङ्गवालभा Râǵân. im ÇKDr. — Vgl. विद्या°

und वैशारद्य.

विशारदिमन् (von विशारद) m. *Erfahrenheit, Vertrautheit* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

विशाल Uṇādis. 1,117. P. 5,2,28. 1) adj. (f. श्रा; nach gaṇa बह्वादि auch विशालीं, das aber nicht zu belegen ist) *umfänglich, weit, breit, gross* AK. 3,2,10. H. 1429. Med. i. 133. Hall. 4,14.68. स्वर्गलोक Bhag. 9,21. भूमि MBh. 2,638. R. 3,21,18. Mṛicch. 173,17. दृतिणा दिक् R. 4,41,8. भुवनत्रितयोदर Spr. (II) 840. कोसला: R. 2,50,1. उत्तरा: कुरव: 4,44,52. नियुतयोजन° (द्वीप) Bhāg. P. 5,16,5. 20,2. सलिल 3,8,14. सम्बुधि Kathās. 53, 187. शिला R. 2,94,20. पुर 4,43,8. 5,80,24. Mudr. 31. रथ्या, राजमार्ग R. 4,41,52. 5,10,20. पर्णशाला 2,100,18. अग्निशरण 3,6,4. भाजन H. 1026. कस्त° (कुण्डक) Varāh. Bṛih. S. 23,2. उल्का शिरसि विशाला 33,8. चन्द्र 47,17. तडिद्भमनेर्विशाले: 24,13. विद्युत्कुटिलविशाला 33,5. यूप TS. 2,1,8,5. Baum u. s. w. MBh. 13,4562. 14,1329. Hit. 9,3. 80,14. Bhāg. P. 3,2,19. मूल Harīv. 3612. Suçr. 1, 63,12. नौ Bhāg. P. 8,24,33. वर्मन् Gīt. 4,3. सपक्ष Kiṣn. 13,5. मूर्ति Varāh. Bṛih. S. 4,20. वत्सम् R. 4,2,11. Rāgat. 6,32. श्रोणी Harīv. 7894. जघन R. 3,52,32. Kāraṇḍ. 7. मृङ्गान्तर Rāgat. 2,21. ललाट Varāh. Bṛih. S. 68,71. वदन Bṛih. 17,5. Augen MBh. 1,7705. R. 3,26,26. Rāgat. 4,13. Mṛicch. 14,13. Pañcat. 3,5,9. बाहु MBh. 2,2623. पक्षौ *Flügel* Harīv. 12745. व्रण Suçr. 1,15,10. बल *Armee* Rājat-Tar. 8,1024. कन्दम् VS. 14,9. कुल, वंश *grosses, vornehmes Geschlecht* Spr. (II) 1466. 1734. (I) 2637. Kām. Nītis. 1,2. तृष्णा Spr. 1946 (II). 2722. बुद्धिर्विशाला Kṣīrasvāmin bei Uṇādis. zu Uṇādis. 1,117. Am Ende eines comp. *voll von:* सत्त्व°, रजो°, तमो° Siddhānjan. 54. विशालम् adv. Pāṇ. Bā. 12,13,11. — 2) m. *a) ein best. Thier* (मृग). — *b) ein best. Vogel* Med. — *c) eine best. Pflanze* Çabdar. im ÇKDa. — *d)* Name eines Skandha Kāṭ. Ça. 24, 2,16. Āçv. Ça. 11,3,8. — *e)* N. pr. des Vaters des Mahidāsa Aitareja Colebr. Misc. Ess. I,46 (विशल gedr.). eines Sohnes des Ikshvāku und Gründers der Stadt Viçālā (Vaiçālī) R. 1,47,13. fg. R. Gorr. 1, 46,10. 12. 48,14. fg. Sohn Tṛṇabindu's VP. 353. Bhāg. P. 9,2,32. Fürst von Vaidiça Mārk. P. 70,4. 123,20. 124,20. 125,4. ein Asura Kathās. 47,75. — *f)* N. pr. eines Gebirges Mārk. P. 59,12. — 3) f. श्रा *a) Koloquinthe* AK. 2,4,5,22. H. 1157. Med. Ratnam. 15. Suçr. 2,65,3. 77,14. *Basella cordifolia Lam.* und = मकेन्द्रवारुणी Rājan. im ÇKDa. — *b)* N. pr. eines Flusses und einer daran gelegenen Einsiedelei, nach den Comm. = बदरी MBh. 9,2189. 12,13390. 13,1730. R. 1,61,3. Bhāg. P. 4,12,16. 5,4,5. 11,29,47. — *c)* ein N. der Stadt Ujjayinī (auch N. pr. einer anderen Stadt; s. Uṇādis. s. a. O.) Trik. 2,1,16. H. 976. Med. R. 1,45,9. fgg. 47,13 (वैशाली Gorr.). Mudr. 31. Kathās. 93, 3. 104,22. — *d)* N. pr. einer Gattin Agastja's MBh. 1,3790. einer Tochter Daksha's und Gattin Arishṭanemi's Gāruḍa-P. 6 im ÇKDa. — 4) f. ई *eine best. Pflanze*, = घनमोदा Rājan. im ÇKDa. — 5) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. — 6) n. *a)* N. eines Sāman: वेनाविशाले Ind. St. 3,237,*b*. — *b)* N. pr. eines Wallfahrtsortes (wohl = बदरीतपोवन) Bhāg. P. 10,78,19. — Vgl. त्रिया°, वैशाली und वैशालायन fgg.

विशालक (von विशाल) 1) m. *a) Feronia elephantum Corr.* (कपित्थ) Ausw. 11. — *b)* ein N. Garuḍa's H. ç. 78. — *c)* N. pr. eines Jaksha MBh. 2,397. — 2) विशालिका f. *Odina pennata* Ratnam. 74.

विशालग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Mārk. P. 76,25. 37.

विशालता (von विशाल) f. *grosser Umfang* AK. 2,6,3,16. H. 1431. Hall. 4,101. Varāh. Bṛih. S. 4,3.

विशालतैलगर्भ m. *Alangium hexapetalum* Rājan. im ÇKDa.

विशालत्वच् m. *Bauhinia variegata* AK. 2,4,3,3.

विशालदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Schol.

विशालदा f. *Alhagi Maurorum* Ausw. 48.

विशालनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 378, *a*, No. 376. *b*, No. 379. 380, *a*, No. 398.

विशालनेत्र 1) adj. *grossäugig.* — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Vajrop. 21.

विशालनेत्रीसाधन n. Titel einer Schrift Taṇḍjur, Bd. 43, Bl. 434.

विशालपत्र m. *ein best. Knollengewächs* (कासालु) und = भीताल Rājan. im ÇKDa.

विशालपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 134,*a*,26.

विशालफलिका (von वि° + फल) f. *eine best. Hülsenfrucht*, = निष्पावी Rājan. im ÇKDa.

विशालविन्यस m. Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kām. Nītis. 19,44.

विशालाक्ष (विशाल + अक्ष *Auge*) 1) adj. (f. ई) *grossäugig* H. an. 4, 322. fg. Med. sh. 57. MBh. 3,2662. R. 1,1,18 (15 Gorr.). 2,61,3. 70,4. — 2) m. *a)* Bein. Çiva's Trik. 3,3,440. H. ç. 43. H. an. Med. Çiv. als Verfasser eines Çāstra MBh. 12,3093. 3201. Kām. Nītis. 8,28. Daçak. 180,11. — *b)* N. pr. eines der Söhne Garuḍa's MBh. 5,3894. — *c)* Bein. Garuḍa's Trik. H. an. Med. — *d)* N. pr. eines Schlangendämons Harīv. 9301. — *e)* N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛitarāshṭra MBh. 1,2726. 4549. 6,3201. 3204. — 3) f. ई *a) eine best. Pflanze*, = नागदन्ती Rājan. im ÇKDa. — *b)* N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2621. — *c) eine Form der* Durgā H. ç. 54. Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,10. 39,*a*,22. 71,*b*,11. 94,*a*,5. 96,*a*,12. — *d)* N. pr. einer Tochter Çāṇḍilja's Verz. d. Oxf. H. 28,*a*, No. 71. — 4) n. Titel *des von Çiva als* Viçālāksha *verfassten* Çāstra MBh. 12,2203. वैशालाक्ष ed. Bomb.

विशालिक, विशालिय und विशालिल m. Hypokoristica von Personennamen, die mit विशाल anlauten, P. 5,3,84.

विशालीय adj. von विशाल gaṇa उत्कारादि zu P. 4,2,90.

विशास्तृ nom. sg. = विशास्तृ Çiṣṭ. Ça. 15,21,9. Pāṇ. Bā. 25,18,4.

विशिका f. gaṇa कुत्सादि zu P. 4,4,62.

विशिर्तु (von शित् mit वि) adj. *mittheilsam* ṚV. 2,1,10.

विशिर्ख (2. वि + शिखा) 1) adj. *ohne Haarschopf, kahl* VS. 16,59. AV. 4,18,4 (proparox.). Gegens. सशिख Pāraçarīkshāt. (s. u. सशिख). यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव wo *die Pfeile fliegen jung und alt*, nämlich *befiedert und unbefiedert* ṚV. 6,75,17. — *b) ohne Spitze, stumpf:* Pfeile R. 3,67,18. 5,80,25. — *c) ohne Flamme:* Feuer R. Gorr. 2,40,11. 3,12,7. — *d) ohne Spitze* so v. a. *ohne Schweif*, von einem Kometen Varāh. Bṛih. S. 11,13. — 2) m. *ein stumpfer Pfeil, Pfeil* überh. AK. 2,8, 2,51. 3,4,2,20. H. 778. an. 3,114. Med. kh. 11. Hall. 2,311. MBh.

3,805. 12163. 12220. 14899. 4,1666. 5,7213. R. 3,26,21. 6,19,25. Rāgh. 5,50. Kathās. 48,25. Rāja-Tar. 5,221. 8,1420. 1581. Prab. 7,13. Bhāg. P. 1,9,38. 4,17,13. 19,21. 9,6,15. 10,83,26. मनसिज° Gīt. 4,2. 5,3. Kathās. 56,254. कराल° Gīt. 3,14. Spr. 1620 (II). दृष्टि° 1861. दुरुक्ति° Bhāg. P. 4,7,15. = तोमर *Spiess, Wurfspiess* Med. — 3) f. या gaṇa कृत्रादि zu P. 4,4,62. a) *eine kleine Schaufel* H. an. Med. Hin. 263. — b) *Strasse* AK. 2,2,2. H. 981. H. an. Med. Hall. 2,134. विशिखात्तराणि — अतिपपात वाग्भिः Śic. 15,104. — c) *Krankenzimmer* Suçr. 1,8,8. विशिखानुप्रवेशनीय vom *Eintritt in das Krankenzimmer* d. h. *in die Praxis handelnd* 29,18. 30,4. — d) *die Frau eines Barbirs* Çabdaratn. bei Wilson. — e) = नलिका Med. नालिका ÇKDa. nach derselben Aut. — विशिखात्तरम् Suçr. 1,368,12 wohl fehlerhaft für विशाखात्तरम्. Vgl. वैशिख.

विशिंश Uṇādis. 3,145. n. *Haus* Uǵǵval.

विशिप्रिय (von 2. वि + शिप्र) adj. etwa *ohne Backenstücke* d. h. *ohne Handhaben an den Seiten*, von Soma-Gefässen VS. 9,4.

विशिर s. विसिर.

विशिरस् (2. वि + शिर°) adj. 1) *kopflos* MBh. 8,4344. Harīv. 2783. von einem (fremden) *Kopfe befreit* MBh. 9,2205. — 2) *ohne Spitze, ohne Gipfel:* ताल Harīv. 13517.

विशिरस्क (wie oben) adj. *kopflos* MBh. 6,4167. 8,4096. 11,476.

विशिशासिषु (vom desid. von शंस् mit वि) adj. *zu schlachten bereit* Ait. Br. 7,17.

विशिशिप्रि (विशि ऽशिप्र Padap.) m. N. eines dämonischen Wesens RV. 5,45,6. = विगतकनु Sāy.

विशिष्य (von 2. वि + शिष्) adj. देवमातॄणां विशिष्यानां मखाः Ind. St. 3,458.

विशिष्यमिषु (vom desid. von अस् mit वि) adj. *auszuruhen beabsichtigend* Daçak. 22,14 (विशस्यमिषु gedr.).

विशिष्ट s. u. शिष् mit वि und वैशिष्ट्य.

विशिष्टचारित्र m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 182. 233.

विशिष्टचारिन् m. dieselbe Person ebend. 235.

विशिष्टता (von विशिष्ट) f. *Vorzüglichkeit, ein ausgezeichneter —, besserer Zustand:* मतिः — रति विशिष्टताम् (विशिष्टैः सह समागमात्) Spr. 3358.

विशिष्टत्व (wie oben) n. dass. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 47.

विशिष्टवैशिष्ट्यबोधारूढ्य n., विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचार m. und विशिष्टवैशिष्ट्यवाद m. Titel von Schriften Hall 42. fg.

विशिष्टाद्वैत n. *eine unterschiedene Einheit, eine Einheit mit Attributen* Wilson, Sel. Works I,43. °वादिन् Mādhavabhāshya im ÇKDa.

विशिष्टी f. N. pr. der Mutter von Çaṃkarâkârja Hall 167.

विशिष्य in der Stelle: स्थावरेभ्यो विशिष्टानि जङ्गमान्युपधारयेत् । उपपन्नं हि पञ्चेष्टा विशिष्येत विशिष्यया MBh. 12,8699. विशेष्यया ed. Bomb., welches Nīlak. in विशेष्य (= विशेषं कृत्वा) या trennt. Wir vermuthen, dass विशिष्येताविचेष्टया zu lesen sei: *dass Bewegung höher stehe als Nichtbewegung.* विशिष्य bei Wilson, Siddhânt. S. 131 und Sarvadarçanas. 158,18. fg. fehlerhaft für विशेष्य *zu specificiren, was specificirt wird.*

विशीत m. N. pr.; s. वैशीति.

विशीर्ण s. u. शॄ mit वि. Davon विशीर्णता f. *das Zerbrücktsein:* भुष्कस्य सर्वस्य विशेषादेरुद्विशीर्णता Kir. Nitis. 7,22.

विशीर्णपर्ण m. = निम्ब Rāgān. im ÇKDa.

विशीर्षन् (2. वि + शीर्ष°) adj. *kopflos* TBr. 2,3,8,1. Çat. Br. 4,1,5,15.

विशील (2. वि + शील) adj. *schlecht gesittet, einen schlechten Wandel führend* Spr. 3021. MBh. 13,4965.

विशुक m. *eine best. Pflanze,* = श्वेतार्क Agni. 6.

विशुण्डिल m. N. pr. eines Sohnes des Kaçjapa MBh. 3,8032.

विशुद्ध s. u. शुध् mit वि.

विशुद्धचारित्र m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 182.

विशुद्धता (von विशुद्ध) f. *Reinheit* Spr. (II) 2131.

विशुद्धत्व (wie oben) n. dass. Çaṃk. zu Kaṭha Up. S. 31.

विशुद्धसिंह m. N. pr. eines Mannes Vie de Hiouen-thsang 94.

विशुद्धि (von शुध् mit वि) f. 1) *das Reinwerden, Reinigung, Läuterung, Reinheit* (eig. und übertr.): काव्यमुवर्ण विशुद्धिमापाति Vaṃç. Bṛh. S. 106,4. मन्त्रामृविशुद्धि Suçr. 2,56,18. मेरु° 1,193,16. नृणामकृतचूडानां विशुद्धिर्नैगिकी स्मृता M. 5,67. 6,69. 9,9. 11,53. 72. 89. 131. तत्संसर्ग° 181. Jiǵñ. 1,189. 2,95. 3,34. त्वात्म° Bhag. 6,13. मनो° MBh. 3,2212. R. Gorr. 2,121,13. Rāgh. 1,10. 12,45. Kumāras. 5,79. Uttarar. 6,13 (9,17). Prab. 23,11. fg. Bhāg. P. 4,4,13. 5,7,7. 22,3. 6,9,6. 19,19. Mārk. P. 35,11. Bei den Pâçupata definirt als मिथ्याज्ञानादीनामत्यन्तव्ययोद्भः Sarvadarçanas. 75,9. 74,13. सु° Siddhânt. 2. Nīlak. 23. — 2) *Bereinigung —, Abtragung einer Schuld, Ausgleichung einer Rechnung:* उत्तमर्णाधमर्णयोरैक्यविशुद्धौ Gaupar. zu Siddhânt. 66. वैर° so v. a. *Rache* Rāja-Tar. 4,283. — 3) *vollkommenes Klarwerden, klare Erkenntniss* Bhāg. P. 2,9,4. 10,2. — 4) = सम Viçva im ÇKDa.

विशुद्धिचक्र n. *ein best. mystischer Kreis:* कण्ठे °चक्रं तु धूम्रवर्णं विराजते Verz. d. Oxf. H. 149,b,36.

विशुद्धेश्वर und °तन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 104,a, 22. 93,b,14. fg. Verz. d. B. H. No. 1057.

विशुष्क (2. वि + शुष्क) adj. P. 6,2,144, Schol. *ausgetrocknet, verdorrt, dürr:* द्रुम Kathās. 56,20. काष्ठ Ṛt. 1,15. वातातपविशुष्काङ्ग R. Gorr. 2,28,34. Mālatīm. 78,4. Personen MBh. 12,7926.

विशूचिक und विशूचिका s. u. विसूचिका.

विशून्य (2. वि + शून्य°) adj. (f. या) *ganz leer:* °विपणापणा R. Gorr. 2,68,52. 85,24. दिशः MBh. 8,4621.

विशूल (2. वि + शूल) adj. *ohne Spiess* Rāgh. 15,8.

विशृङ्खल (2. वि + शृ°) adj. *entfesselt, zügellos, unbändig, keine Schranken kennend;* von Personen Spr. (II) 1241. Kathās. 5,8. उद्दामचिरोन्माद° 73,280. गिलुपलम्पे लोको कृष्यम्नामीदृशृङ्खलः Rāja-Tar. 8,801. 813. 2233. त्रयोकोपशङ्कामिः 820. मनस् 2128. चेष्टित Kathās. 5,28. मुखरविशृङ्खलमेखला so v. a. *über alle Maassen geschwätzig, — tönend* Gīt. 2,16. °पदस्थिति Kathās. 38,115. राज्ञापद्या उपप्लवविशृङ्खलाः so v. a. *über die Maassen reich an* Rāja-Tar. 8,744. — Vgl. उद्दाम.

विशृङ्ग (2. वि + शृङ्ग) adj. 1) *eines Hornes oder der Hörner beraubt* Harīv. 4154. निःशृङ्ग die neuere Ausg. — 2) *des Gipfels beraubt:* पर्वत MBh. 7,6900.

विशेष (von शिष् mit वि) 1) m. (n. Pañkat. 117,8) mit कृत u. s. w. componirt gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2, 1, 59. am Ende eines adj. comp. f. आ, z. B. P. 1, 1, 49, Schol. a) *Unterschied, Verschiedenheit; Besonderheit, Eigenthümlichkeit; Art, Species, Individuum;* = जाति Halâj. 5, 88. = व्यक्ति H. 1515. यथा ज्ञानपदीयेषु विस्पातः पुरुषविशेषो भवति Nir. 1, 16. सोमो द्यूविशेषैरोषधिचन्द्रमा वा 11, 5. विधि° Kâty. Çr. 4, 3, 8. गुण°, फल° 1, 10, 11. Âçv. Gṛhj. 4, 8, 17. Jogân. 1, 22. ṚV. Prât. 13, 3. कर्म° 18. 17, 16. उपसर्गो विशेषकृत् 12, 3. P. 1, 2, 65. निर्विशेषो विशेषः Spr. 2722. Varâh. Bṛh. S. 1, 1. 73, 2. Kathâs. 96, 37. स्त्रियः प्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्च न M. 9, 26. 133. 139. MBh. 12, 6939. R. 2, 59, 17. Çiç. 100, 7. Spr. 1482. P. 4, 4, 38, Schol. को विशेषस्तदा तस्य वन्यैरन्यगरीकृतैः Spr. (II) 1580. पल्लवतः कल्पतरोरेष विशेषः करस्य ते Kuvalaj. 74, b. न मे विशेषः पुत्रेषु स्वेषु पाण्डुसुतेषु वा MBh. 1, 142. R. 2, 22, 17. R. Gorr. 2, 6, 32. पात्रस्य हि विशेषेण so v. a. *je nach der Würdigkeit der Person* Spr. 4325. पात्रापात्रविशेषेण 2088 (II). कर्मविशेषेण M. 11, 52. Varâh. Bṛh. S. 4, 4. 34, 2. यश्च शस्त्रम् u. s. w. पुरुषविशेषं प्राप्ता भवत्यपेयाश्च पेयाश्च *je nachdem sie diesem oder jenem zu Theil werden* Spr. (II) 735. अविशेषेण *ohne Unterschied* M. 8, 192. Bhâg. P. 5, 20, 6. अविशेषात् dass. Kâty. Çr. 1, 1, 3. 7. 3, 29. 5, 9, 20. 18, 6, 30. अ° adj. *nicht unterschieden* 7, 5, 23. ṚV. Prât. 13, 17. Spr. 4265. *Besonderheit*, Gegens. सामान्य Kap. 1, 2, 3. 5. Jogân. 1, 49. Nyâyas. 1, 1, 33. Tarkas. 4. Manus. in Ind. St. 1, 18, 28. 19, 5. Sarvadarçanas. 12, 21. 105, 3. 7. 22. Verz. d. Oxf. H. 240, a, No. 583. ज्ञानं नराणामधिको विशेषः Spr. (II) 1077. विशेषं ज्ञातुमिच्छामि मातृणां तव *das Eigenthümliche, das wodurch sie sich von einander unterscheiden* R. 2, 92, 18 (101, 20 Gorr.). अभिः शृगालाः सदृशाः फलेन विशेष एषां शिशिरे मृगाणिः Varâh. Bṛh. S. 90, 1. अर्घविशेषाः *die verschiedenen Preise* 42, 2. तपोविशेषाः M. 2, 165. दण्डविशेषाः 8, 119. Bhag. 11, 15. Kumâras. 1, 36. Pañkat. 113, 9. 114, 25. 247, 11. Hit. 25, 16. 26, 16. अत्त ist ein विशेष von वत्त; रै, धन, विद्या, अश्व, गो von स्व *Besitz;* पुष्यमित्र (N. pr. eines Fürsten) von राजन् *Fürst* Vârtt. zu P. 1, 1, 68 nebst Scholl. स्वरूपम्, पर्यायाः, विशेषाः *das Wort selbst, seine Synonyme und seine Species* Sidd. K. zu P. 4, 4, 35. Schol. zu 2, 4, 23. क्षण ist ein काल° *ein best. Zeittheil* AK. 3, 4, 22, 50. अहोरात्रात्तान्कालविशेषान् Bhâg. P. 4, 29, 54. अवस्था ist ein विशेषः कालिकः AK. 1, 1, 8, 7. यैर्वाभिधस्य रव्याशविशेषस्य *eine Art von Feuer* Râja-Tar. 3, 416. छन्दो° *ein best. Metrum* AK. 3, 4, 14, 74. नद° 3, 4, 103. अर्थ° *eine bestimmte Bedeutung* Vop. 21, 17. शृगाल° *ein besonderer Schakal* Pañkat. 63, 2. दृशा° Hit. 36, 5. तपस्वि° Ver. in LA. (III) 10, 7. अतिक्रम्य तांस्तान्विशेषान् so v. a. *mannichfache Gegenstände* Mṛicch. 58. प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः 63. ईशमशकवाताातपप्रभृतिभिर्विशेषैः Sûçr. 1, 67, 6. येन येन विशेषेण *auf jede beliebige Weise* Spr. 4893. Nicht selten steht विशेष im comp. vorn: °मण्डन *ein besonderer Schmuck* Çiç. 133. विशेषार्थ *eine specielle Bedeutung* P. 1, 4, 93, Schol. °नियम MBh. 2, 849. °गुण Nilak. 52. °वृत्ति Tattvas. 43. °लिङ्ग Kap. 1, 2, 17. °फल Varâh. Bṛh. S. 50, 20. °पक्षिवधप्रायश्चित्त *für das Tödten der einzelnen Vögel* Verz. d. Oxf. H. 281, b, 20. fg. Çâmb. zu Bṛh. Âr. Up. S. 109. fg. °दान Verz. d. Oxf. H. 83, b, 27. — b) *eine specifische Eigenschaft:* विशेषाः पञ्च भूतानाम् MBh. 14, 934. 1404. अविशेष आत्मनि Bhâg. P. 1, 10, 21. 4, 9, 13. — c) *ein auszeichnender Unterschied, Superiorität, Vorzüglichkeit:* संस्कारस्य beim Brahmanen M. 10, 3. राजन्यानाम् R. 3, 29, 3. प्राप्तुं विशेषं मनुजैः *einen Vorsprung vor anderen Menschen* Spr. 4319. ज्ञानात् Nilak. 31. विशेषार्थिन् (vgl. विशेषार्थिता *das Bedürfniss nach etwas Besserem* Pañkat. ed. orn. 6, 12. fg.) MBh. 1, 5094. विशेषोपचये 5229. यशकुबन्विशेषाय 14, 103. शोभाविशेषाय *zur Erhöhung der Schönheit* Râja-Tar. 8, 2123. विशेषं चैव कर्तास्मि so v. a. *etwas Aussergewöhnliches, Ungewöhnliches* MBh. 14, 2869. °करण *das Bessermachen* Milav. 5. प्रायः क्रियासु मन्दासपि दुष्करासु सोत्साहता (ein Wort) कथयति प्रकृतेर्विशेषम् Kathâs. 25, 296. ततः स ब्राह्मणं पं यमानिनाय पुरोहितः। विशेषेच्छानिभात्तं तं मद्धे न स माधवः॥ *unter dem Vorwande, dass er einen Vorzüglicheren wünsche,* 24, 140. तत्ते मकान्विशेषो भविष्यति *dann wird dir ein ganz besonderer Vorzug zu Theil werden* Pañkat. 162, 9. तेनोविशेष *ein ausserordentlicher —, vorzüglicher Glanz* Ragh. 2, 7. अनुभाव° 1, 37. प्रभा° 6, 5. रूप° 16, 1. आकृति° Çiç. 80, 7. 8. सत्क्रिया° 97, 2. प्रसाधनविधेः प्रसाधनविशेषः Vikr. 22. मणि° 142. इतोऽयात्क्रमशः पर्वणि पर्वणि यथा रसविशेषः Spr. (II) 1088. पात्र° (I) 1785. कविजनविशेषैः 3297. Râja-Tar. 4, 423. 5, 306. Auch voranstehend im comp.: °प्रतिपत्तिभिः *mit ausserordentlichen Ehrenbezeigungen* Ragh. 15, 12. °विक्रमरुचि Spr. 3159. विशेषेण *gar sehr, vorzüglich, vornehmlich, besonders, vor Allem, zumal* M. 7, 150. 11, 11. MBh. 3, 1855. 2126. R. 1, 77, 28. 4, 35, 12. Kir. Nitis. 11, 57. Spr. (II) 900. 2364. Çiç. 66, 5. Varâh. Bṛh. S. 90, 4. Kathâs. 24, 204. 33, 75. Mârk. P. 75, 35. Brahma-P. in LA. (III) 56, 16. Prab. 62, 9. Pañkat. 142, 15. विशेषात् dass. Çiç. 120. Spr. 1342. 2299. 2848. Kathâs. 72, 332. Pañkat. 109, 19. fg. विशेष im comp. vor einem adj. in der Bed. von विशेषेण oder विशेषात्: °पतनीय Jâén. 3, 298. पौवनोद्भेदविशेषकान्त Rasm. 5, 38. °दृश्य 6, 31. °रमणीय Vikr. 65, 18. °गर्हणीय Spr. 2813. विशेषभक्त्य Verz. d. Oxf. H. 281, b, 26. Hierher gehört auch das mit प्रभावात् gleiche Bedeutung habende विशेषात् *in Folge von:* अमृतास्वादविशेषाच्छ्रमपि शिरः क्लिामुरस्येदम् u. s. w. Varâh. Bṛh. S. 5, 1. — d) in der Med. *Unterschied in Beziehung auf das Befinden: Milderung, Erleichterung* Suçr. 2, 376, 8. 10. im Prâkrit Çiç. 41, 2. — e) in der Rhetorik *Specialisirung, Variirung:* यदेकं वस्त्वनेकत्र वर्ण्यते, z. B. यत्सर्वेऽपि पुरः पश्चात्सर्वदित्यपि सेव मे Kuvalaj. 110, a. — f) *ein unterscheidendes Sectenzeichen, Stirnzeichen* überh. (= तिलक) Hâr. 257. — g) Bez. *der Elemente* (महाभूत): महद्भ्यो विशेषाभ्यो लिङ्गम् Maitrâjan. 6, 10. Sâṅkhjak. 38. 41. 56. VP. bei Muir, ST. 4, 34. sg. *Erde als Element* Bhâg. P. 2, 5, 29. 3, 11, 39. 4, 24, 39. 5, 12, 9. Bez. *des Welteis:* एतदण्डं विशेषाख्यम् 3, 26, 32. = विराज् 2, 1, 24. 2, 28. विशेषाः = सूक्ष्मा मात्रापितृजाः सह प्रभूतैः Sâṅkhjak. 39. अविशेषाः = तन्मात्राणि 38. — 2) adj. *vorzüglich, ausserordentlich:* ग्रामेष्विशेषा फलपुष्पवृद्धिः Ragh. 2, 14. ed. Calc. wohl richtiger विशेषात्. — विशेषवेषम् MBh. 5, 7521 fehlerhaft für विवेश वेषम्, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. निर्विशेष, भगवद्विशेष, स°, वैशेषिक.

विशेषक 1) am Ende eines adj. comp. = विशेष 1) a). *Besonderheit:* सामान्यं सविशेषकम् Bâlar. 1. — 2) (vom caus. von शिष् mit वि) a) adj. *einen Unterschied bezeichnend, specialisirend* H. an. 4, 34. Med. k. 213. Kâd. 11, 17. — b) m. n. *Stirnzeichen* (s. तिलक) AK. 2, 6, 2, 24.

Taik. 3,2,23. 3,43. H. 653. H. an. Med. Hall. 2,336. R. 7,26,17. Çiç. 3,62. 10,84. Daçak. 91,6. am Ende eines adj. comp. Milav. 40. Spr. (II) 1035. Kathâs. 104,112. विप्रनष्टविशेषका R. 3,55,6. 58,45. — c) m. α) *eine best. Redefigur, in der zwei Gegenstände beim ersten Anblick als gleich, schliesslich aber doch als verschieden hingestellt werden*, Kuval. 143,b. 144,a (170). Beispiel Spr. (II) 1612. — β) N. pr. eines Gelehrten Tîrân. 149. — d) f. विशेषिका *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑– ⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. II,160 (VI,16). — e) n. *eine Verbindung von drei* Çloka, *durch welche ein und derselbe Satz durchgeht:* त्रिभिर्विशेषकम् Çâk. S. 84. 61. — Vgl. पत्र° (auch Ragh. 9,32).

विशेषकच्छेद्य n. unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a,2. wohl *die Kunst Stirnzeichen zu malen.*

विशेषज्ञ adj. *den Unterschied der Dinge kennend* so v. a. *Urtheilskraft —, Einsicht besitzend* Spr. (II) 105 (Gegens. अज्ञ). (I) 2985. Kathâs. 25,137. Hit. 129,9. वाग्विशेषज्ञ *sich auf mannichfache Reden verstehend, redefertig* R. 2,81,1. अविशेषज्ञता f. *Mangel an Urtheilskraft, Unverstand* Kathâs. 49,223.

विशेषण (vom caus. von शिष् mit वि) 1) adj. *unterscheidend, einen Unterschied ausdrückend, specialisirend;* n. *das näher Bestimmende, Attribut, Adjectiv, Apposition, Prädicat:* विशेषाः पञ्च भूतानां तेषां चित्तं विशेषणम् MBh. 14,1404. एतद्विशेषणं तात मनोबुद्ध्योर्यदुत्तरम् 3,12515. स मे भवान् शंसतु सर्वमेतत्सामान्यशब्देषु विशेषणेषु च 12,7374. तस्य स्वशब्दाकारस्य विशेषणम् P. 7,3,47, Schol. Tarkas. 26. कर्म° Sâṃ. 1,247, 4. Schol. zu Kâç. Ç. 1,4,19. 4,3,9. Vedântas. (Allah.) No. 96. 98. Sarvadarçanas. 62,19. 101,22. 104,9. 119,22. Verz. d. Oxf. H. 193,a,29. Vop. 3,9. Bhâg. P. 5,18,30. P. 1,2,52. 2,1,57. 3,35. Weber, Rimat. Up. 343. Vikr. 20,3. सविशेषणमाख्यातं वाक्यम् *ein Verbum finitum mit seinen Ergänzungen und näheren Bestimmungen heisst Satz* H. 242. विशेषणता Bhâsâp. 60. Kusum. 40,13. Verz. d. Oxf. H. 240,a, No. 381. — 2) n. *Art, Species* (= विशेष): नानाप्रकृतीर्नानायुद्धविशेषणैः MBh. 7, 1124. P. 2,2,8, Vârtt. 3. — 3) n. *das Unterscheiden, Unterscheidung* Sin. D. 4,1. 432. ककोरा नः वय इति विशेषणार्थः P. 3,1,8, Schol. 4,1, 2, Schol. Bhâg. P. 3,26,46. 33,25. Sarvadarçanas. 127,17. fg. *das Specialisiren, genauere Angabe* Verz. d. Oxf. H. 49,a,2. 56,a,13. किं स्यादिशेषणे Hall. 5,95. — 4) n. *das Bessermachen, Uebertreffen:* यस्य काव्यस्य कवयो न समर्था विशेषणे। विशेषणे गृहस्थस्य शेषास्त्रय इवाश्रमाः॥ MBh. 1,73. 653. — 5) n. = विशेषोक्ति Sin. D. 434. — Vgl. क्रिया°, निर्विशेषण.

विशेषणीकृ (विशेषण + 1. कृ) *zum Unterscheidenden machen:* हेतुविशेषणीकृतम् Kusum. 33,12.

विशेषतस् (von विशेष) 1) am Ende eines comp. *je nach der Verschiedenheit:* विद्या° M. 11,2. कर्मविद्या° 12,41. विशेषतस् so v. a. विशेषस्य *der Besonderheit* Kap. 4,1,4. धातुर्मनःशिलाद्यैर्गैरिकं तु विशेषतम् so v. a. *Röthel ist aber eine Species davon* AK. 2,3,3. अ° *ohne Unterschied* M. 9,125. R. 2,52,23. 77,22. Kathâs. 37,5. — 2) adv. = विशेषेण, विशेषात् *vorzüglich, vornehmlich, besonders, vor Allem, zumal* M. 2,226. 4,209. 5,21. 7,55. 8,333. 12,93. Jîân. 1,203. MBh. 1,5986. 3, 2173. 2360. 2636. 2638. 2777. 5,5441. 5972. 7399. R. 1,4,16. 10,36. 54, 11. 59,13. 2,21,60. 26,26. 31,26. 64,22. 81. 73,18. 4,6,18. 14,10. Spr. 2381. 3340. 5089. 5285. Vaṃs. Bṛh. S. 9,12. 11,9. 25,6. Kathâs. 12,48. 33,5. Prab. 9,3. 84,3. Bhâg. P. 1,17,41. 3,21,12. Pañcat. 47,7. Hit. 36,12. 57,13. 89,22.

विशेषता (von विशेष) am Ende eines comp.: घोषापित° (वाचः) nom. abstr. von घोषापितविशेष H. 70.

विशेषत्व (wie oben) n. *Unterschiedenheit, Besonderheit* Verz. d. Oxf. H. 49,a,16. *der Begriff der Besonderheit* (Gegens. सामान्यत्व) Kusum. 30,12.

विशेषमति m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 2. 12. eines Bodhisattva Rishṭapâlapar. 2.

विशेषमित्र m. N. pr. eines Mannes Vsuvr. 91. Târân. 204.

विशेषयितृ (vom caus. von शिष् mit वि) nom. ag. *der da unterscheidet, einen Unterschied macht* Med. k. 213.

विशेषवचन n. *Adjectiv, Apposition* P. 8,1,74.

विशेषवत् (von विशेष) adj. 1) *etwas Specielles nachgehend, etwas Besonderes thuend* MBh. 2,849. — 2) *mit specifischen Eigenschaften versehen* Bhâg. P. 3,26,10. — 3) *vorzüglicher, besser:* एते कृतं कर्म विशेषवदहं ततः। करिष्ये MBh. 1,5387. 12,12866. Hariv. 1032. mit instr. (pl.) MBh. 8,1525. — 4) *unterscheidend:* अ° *keinen Unterschied machend zwischen* (loc.) Jîân. 3,154.

विशेषविद् adj. = विशेषज्ञ Spr. 4755.

विशेषिन् (von शिष् mit वि oder von विशेष) adj. 1) *von Andern geschieden, individuell* Bhâg. P. 3,10,18. — 2) *zuvorthuend, wetteifernd:* परस्परविशेषिणः Hariv. 11899.

विशेषोक्ति (विशेष + उ°) f. *eine best. Redefigur: Hervorhebung der Verschiedenheit zweier im Uebrigen einander ähnlicher Dinge* Sin. D. 432. 106,11. Verz. d. Oxf. H. 208,b,21. Kuval. 98,a.

विशेष्य (vom caus. von शिष् mit वि) adj. *was unterschieden —, specialisirt wird;* n. *Substantiv, Subject* Tarkas. 26. Sarvadarçanas. 62,19. Vedântas. (Allah.) No. 96. 98. P. 2,1,57. 2,1,74, Schol. Vop. 3,145. Taik. 3,1 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 183,a,20. 191,b,27. 192,a,33.b, No. 437. Kusum. 26,2. 3. विशेष्यता 25,19. विशेषणविशेष्यता (das suff. gehört zu beiden Worten) Sarvadarçanas. 62,19. विशेष्यक am Ende eines adj. comp. Kusum. 29,19. Wilson, Sânkhjak. S. 47. Bhâsâp. 134.

1. विशोक (2. वि + शोक) m. *das Weichen des Kummers:* सुकृदं विशोकाय Bhâg. P. 1,10,7. 3,23,52.

2. विशोक (wie eben) 1) adj. (f. आ) *kummerlos d. i. sowohl keinen Kummer empfindend* als auch von *Kummer befreiend, Kummer fern haltend* Ait. Br. 7,13. Kâṭh. Up. 3,7,1 (Sarvadarçanas. 54,22. fg.). Maitrâjan. 6,25. Çâṅkh. Ç. 15,17,16. Kaivaljop. bei Muir, ST. 4,304. MBh. 2,291. 3,2303. 16884. 7,187. 2729. 13,80. 15,813. Hariv. 1155. 9021. R. 2,96,28 (105,27 Gorr.). R. Gorr. 1,1,94. 5,35,26. 6,95,20. Kumâras. 6,92. Kathâs. 119,198. Bhâg. P. 1,15,31. 3,24,34. 7,10,62. ब्रह्मन् n. 2,7,48. 8,12,7. नाक Kâṭh. Up. 2,10,5. लोका: MBh. 1,2659. Bhâg. P. 1,19,21. 4,14,15. 25,39. पुष्करिणी MBh. 3,12720. षड्राजयः Verz. d. Oxf. H. 117,a,38. सन्ततौ *keinen Kummer schildernd,* — *vorführend* Sin. D. 416. — 2) m. α) *Jonesia Asoka* (s. अशोक) Ausw. 6. — b) N. pr. α) eines Ṛshi Ind. St. 3,230,b. Verz. d. Oxf. H. 52,a,25. —

β) des Wagenlenkers des Bhîma MBh. 2,1234. 6,2825. 2827. 3355. fgg. 8,3336. fgg. — γ) eines Dânava Kathâs. 47,22. — δ) eines Gebirges Mân. P. 59,13. — 3) f. घा a) (sc. सिद्धि) Bez. *einer der Vollkommenheiten, zu denen man durch den Joga gelangt*, Sarvadarçanas. 168,19. सर्वभावाधिष्ठातृत्वादिरूपा (so ist zu lesen) विशोका सिद्धिः 179, 9. fg. विशोका वा ज्योतिष्मती (Jogas. 1,36) 14. Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,34. VP. 45, N. 5. — *b*) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2622. — 4) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,236,*b*. — Vgl. पारे°.

विशोकता (von 2. विशोक) f. *Kummerlosigkeit* MBh. 12,8315. Mân. P. 33,14.

विशोकदेव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,3.

विशोकदृश् f. Bez. *eines best. 12ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,18.

विशोकपर्वन् n. Bez. des 13ten *Buches* des MBh. bei dessen Eintheilung in 20 Bücher Ind. St. 2,138. Verz. d. B. H. No. 389. 397. Verz. d. Oxf. H. 2,*a*,8.

विशोकषष्ठी f. Bez. *eines best. 6ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34,*a*,39.

विशोकसप्तमी f. Bez. *eines best. 7ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 41,*a*,17.

विशोकीकृ (विशोक + 1. कृ) *vom Kummer befreien:* °कृत Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,4.

विशोड्वह्नि (?) neben शोढाग्निदंश (?) Kathâs. 46,121.

विशोधन (vom caus. von शुध् mit वि) 1) adj. *reinigend, wegwaschend:* मेतो°, शुक्र° Suçr. 1,182,12. वस्ति° 188,14. *purgantia* 2,22,8. मल° R. 1,20,19 (27,18 Gorr.). कामक्रोधादिनिःशेषमनोमल° Pañkat. 4,3,176. unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13,7017. घात्म° (Vishṇu) Bhâg. P. 5,18,2. — 2) f. ई *a*) *Croton polyandrum* Roxb. oder *Croton Tiglium* Lin. (*purgirend*) Râgân. im ÇKDa. — *b*) *die Residenz* Brahman's Çabdâmbudh. bei Wilson. — 3) n. *a*) *das Reinigen, Ausputzen:* मूत्रमार्ग° Suçr. 1,25,8. 16. 93,10. 156,2. der Bäume (durch Ausschneiden von dürren Zweigen u. s. w.): शस्त्रेण Vârâh. Bṛh. S. 55,15. *Reinigung* in kirchlichem Sinne M. 11,143. 156. 165. 200. Jâgñ. 3,34. — *b*) *Subtraction:* दानविशोधने *Addition und Subtraction* Vârâh. Bṛh. 26(24),11.

विशोधिन् (von शुध् mit वि) 1) adj. *reinigend;* davon विशोधित n. *das Reinigen:* दिव्यागाणाम् Spr. 4585. — 2) f. °शोधिनी *Flaridium indicum Lehm.* Râgân. im ÇKDa.

विशोधिनीबीज n. *Croton Jamalgota Hamilt.* Râgân. im ÇKDa.

विशोध्य (vom caus. von शुध् mit वि) adj. 1) *zu bereinigen, abzutragen;* n. *Schuld* Vop. 26,101. — 2) *zu subtrahiren:* बलाद्विशोध्यः — शुचः Gaṇḍ. 6,24.

विशोविशोष n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,236,*b*. Pañkav. Br. 14,4,36. Lâṭj. 6,11,8. 12,11. शपेर्वि° Ind. St. 3,201,*a*.

विशोष (von शुष् mit वि) m. *Trockenheit* Suçr. 1,67,7.

विशोषण (vom caus. von शुष् mit वि) 1) adj. *trocknend, trocken machend:* शुभ्रसागर° Bhâg. P. 3,28,32. शस्त्र MBh. 3,12139. व्रण° so v. a. *heilen machend* Çiç. 89, v. l. — 2) n. *das Trocknen, Trockenmachen* Suçr. 2,23,8. यशोवर्माद्रिवाहिन्याः (*Fluss und Heer*) तृणात्कुर्वन्विशोषणम् Râgat. 4,134. — Vgl. तालु°.

विशोषिन् adj. 1) *austrocknend, dürr werdend:* शस्यानामविशुष्क-विशोषिणाम् Ragh. 1,62. — 2) *trocknend, trocken machend* Suçr. 1,64, 9. 197,10. कफमेदो° 232,2. Verz. d. Oxf. H. 234,*b*,30.

विशोभम् adj. VS. Pair. 5,39. nach der Analogie von सत्योभम् falsch gebildet st. विडोभम्, etwa *volkwaltend* VS. 10,28.

विशकद्राकर्ष (वि° + शाकर्ष) m. *Hundezüchtiger* oder *Züchtiger eines Hundehalters* (Durga) Nir. 2,3. — Vgl. विशकद्रु.

विश्मन् m. nom. act. von विश् P. 3,3,90. Schol. zu 6,4,19 und 8,4,44. Vop. 26,180.

विश्पति (2. विश् + प°) m. AV. Pair. 4,60. *Haupt einer Niederlassung: Hausherr, Gemeindehaupt, Stammältester:* शुशुर्वान् RV. 1,37,8. सप्तपुत्र 164,1. विश्पतीव (VS. Pair. 4,23.36) 7,39,3. 55,3. 8,108,10. रेरिक्षते पुर्वाते विश्पतिः सन् 10,4,4. यत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ यनुं वेनति 135,1. TS. 2,3,4,3. Agni RV. 1,12,2. 26,7. त्वामग्ने दम आ विश्पतिं विशस्त्वा राजानमृञ्जते 2,1,8. 3,2,10. विशाम् 13,5. Indra 3,40, 8. विश्पतयः Bhâg. P. 10,20,24 nach dem Comm. entweder = राजानः oder वणिजां पतयः.

विश्पत्नी f. zu विश्पति AV. Pair. 4,60. RV. 2,32,7. 3,29,1. TBr. 1,2,6,13.

विश्पत्नी f. N. pr. eines Weibes, welchem die Açvin das abgerissene Bein wieder anheilen oder durch ein ehernes ersetzen, RV. 1,112,10. 116,15. 117,11.

विश्पत्नीवसु adj. nach Sây. = विशां पालयितृधनो, Bez. der Açvin RV. 1,182,1.

विश्य (von 2. विश्) 1) adj. *eine Gemeinde u. s. w. bildend, zur Gemeinde gehörig* u. s. w.: त्राः RV. 1,126,5. जन्य, विश्य 10,91,2. — 2) m. *ein Mann vom Volke* oder *von der dritten Kaste* AV. 6,13,1. VS. 18,48.

विश्यापर्ण adj. *ohne die Çâparṇa's vor sich gehend* Ait. Br. 7,27.

विश्रंसन s. विस्रंसन.

विश्रण n. = विस्राण Çârdar. im ÇKDa.

विश्रम (von श्रम् mit वि) m. = विस्राम Vop. 26,170. Bharata im Dvidûpak. nach ÇKDa. *Ruhe, Erholung:* कुटुम्बी पुत्रैरपकृतभरः कल्प्यते विश्रमाय Vikr. 42. धनुस्तात° adj. Çiç. 32,11, v. l. यविश्रमो ऽयं लोकतन्त्राधिकारः 60,19, v. l.

विश्रमण (wie oben) n. *das Ausruhen, Erholung* MBh. 12,8848. Kathâs. 101,64. Bhâg. P. 10,59,45 = 61,6.

विश्रम्भ (von श्रम्भ् mit वि) m. 1) *das Nachlassen* RV. Pâṭ. 3,1. — 2) *Vertrauen; vertrautes Benehmen, Vertraulichkeit;* = विस्राम्भ AK. 2,8,2,13. Trik. 3,3,290. H. 1518. an. 3,459. Med. bh. 20. Hall. 4,84. = प्रणय AK. 3, 4,23,138. 24,154. Trik. H. an. Med. — यविश्रम्भेण (यविश्रम्भे n. v. l.) गन्तव्यं विश्रम्भे धार्यतेन्मनः MBh. 12,6965. 14,1047. Bhâg. P. 3,23,2. 7,6, 30. विश्रम्भात्प्रियतामेति विश्रम्भात्कार्यमृच्छति। विश्रम्भेण हि देवेन्द्रो दितेर्गर्भमिधातयत् ॥ Spr. 2849. प्रेमविश्रम्भपेशलम् Kathâs. 29,8. प्रीतिविश्रम्भाजनम् Hit. 43,6. विश्रम्भेण प्रविश्यताम् R. Gorr. 1,75,14. विश्रम्भार्द्र (स्वैरालाप) Spr. 1836. दुष्टामात्येषु MBh. 5,1433. 12,5100. Spr. 1432. दर्शपूर्णमासादिवाक्येषु Çiç. zu Bṛh. Âr. Up. S. 184. विश्रम्भाद्यस्य Spr. 2580. यद्विश्रम्भात् Bhâg. P. 9,14,29. दैते ध्रुवार्थविश्रम्भं त्यज 6, 15,26. विश्रम्भं कुरु मे MBh. 1,6081. विश्रम्भास्ते न कर्तव्यास्तेषु R. 1,9, 50 (49 Gorr.). Spr. (II) 389. कृत° adj. Bhâg. P. 4,22,15. विश्रम्भं लभते R. 2,60,7. यप्राप्य विश्रम्भे प्रविजुषु Spr. (II) 483. तस्य विश्रम्भमाल-म्ब्य Kâm. Nitis. 9,63. यथा विश्रम्भमाप्नुयात् 64. विश्रम्भं ग्राम्मुः *fassten*

Vertrauen MBu. 5, 5424. विश्रम्भस्तु न गन्तव्यो बलवानाम् 3, 14825. पदा वापि विश्रम्भयेष्यति Kathâs. 12, 66. तस्य विश्रम्भास्पदं पयो 7, 81. एके न मनसो ऽङ्का विश्रम्भमनवस्थानस्य शठकिरात इव मृगच्छद्मते Bhâg. P. 5, 6, 2. नीत्वा विश्रम्भम् Kathâs. 104, 89. समुत्पन्नविश्रम्भा 1, 21. संज्ञात° 18, 215. आदधत्सर्वभूतेषु विश्रम्भं परमं प्रभुम्। शत्रवोपि सर्वेषु शीतरश्मिरिव प्रभुः ॥ MBh. 13, 2645. विधायालीकविश्रम्भमङ्गेषु *Vertrauen an den Tag legen* Spr. 3303. °संसृत Kâm. Nîtis. 18, 64. (मन्त्राः) सर्वविश्रम्भेषु वर्तन्ते विश्रम्भेषप्यतिशयम् *so v. a. was man nicht mit Vertrauen erwartet und was man vertrauensvoll erwartet* MBh. 12, 9648. भार्यायाः — कृतान्तविश्रम्भसुषः *Vertraulichkeit* Kathâs. 19, 30. (तम्) मन्त्रस्वैरकथाश्लेषु विश्रम्भेषु व्यवर्तयत् Râja-Tar. 8, 2069. विश्रम्भात् *vertraulich* MBh. 6, 3514. Harîv. 5269. Mṛicch. 55, 13. Kathâs. 31, 1. Bhâg. P. 3, 4, 24. 12, 29. 30, 33. °भृत्य *ein vertrauter Diener* Râja-Tar. 8, 2121. विश्रम्भालापाः *vertrauliche Gespräche* Hit. 21, 4. 25, 17. 29, 12. °कथितानि Çik. 33, 3. सविश्रम्भवयस्या *vertraut* Kathâs. 45, 243. सविश्रम्भाः कथाः *vertraulich* 13, 13. — 3) *ein scherzhafter Streit* (केलिकलह) Taitt. H. an. Med. — 4) *Tödtung* (वध) H. an. Viçva im ÇKDa. — Wird auch विस्रम्भ geschrieben, in den Bomb. Ausgg. aber nur ganz ausnahmsweise.

विश्रम्भण (von श्रम्भ् mit वि simpl. und caus.) n. 1) *Vertrauen:* गोपविश्रम्भणं गतः *er gewann das Vertrauen der Hirten* Bhâg. P. 10, 24, 35. — 2) *das Gewinnen des Vertrauens:* कन्या° Verz. d. Oxf. H. 215, *b*, 34. Daçak. 189, 16.

विश्रम्भणीय adj. *Vertrauen einflössend:* भूतानाम् Bhâg. P. 6, 2, 6.

विश्रम्भता f. = विश्रम्भ 1): विश्रम्भतां गम् *Vertrauen gewinnen* R. 5, 84, 5.

विश्रम्भिन् (von श्रम्भ् mit वि und von विश्रम्भ) adj. P. 3, 2, 143. 1) *vertrauend, Vertrauen setzend in:* गुण° Bhâg. P. 6, 5, 20. Sin. D. 284, 6. अ° *misstrauend* Bhaṭṭ. 7, 11. — 2) *Vertrauen geniessend* MBh. 1, 5345. Spr. 3851. — 3) *vertraulich:* कथा Kathâs. 17, 2.

विश्रयिन् adj. von श्रि mit वि P. 3, 2, 157.

विश्रवण (Nebenform von विश्रवस्) m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112. — Vgl. वैश्रवण.

वैश्रवस् (2. वि + श्र°) 1) adj. *berühmt* TBr. 3, 6, 2, 2. Çat. Br. 12, 8, 2, 26. Kâṭh. Ça. 19, 5, 3. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi, Sohnes des Pulastja und Vaters des Kubera, Râvaṇa, Kumbhakarṇa und Vibhîshaṇa, MBh. 3, 8358. 15885. 15889. 13, 7633. Harîv. 13858. R. 1, 22, 17 (23, 18 Gorr.). 3, 53, 30. 6, 38, 9. 7, 2, 31. fgg. Bhâg. P. 4, 1, 36. 7, 1, 43. 9, 2, 32. 10, 15.

विश्राणन (vom caus. von श्रण् mit वि) n. *das Verschenken, Verleihen* AK. 2, 7, 29. H. 387. an. 4, 191. Hall. 2, 264. धन्यायस्विनीनाम् Raghuv. 2, 54. वित्त° R. Gorr. 2, 32 in der Unterschr. निर्वाण° Kâçîkh. 7, 84 (nach Aufrecht). Nach H. an. auch = परित्याग und संप्रेषण.

विश्राणिक, चित्रविश्राणिक m. Titel des 32ten Sarga im 2ten Buche des R.; वित्तविश्राणन st. dessen Gorr.

विश्राति (von श्रम् mit वि) f. 1) *Ruhe, Erholung:* जीर्णस्यास्य शरीरस्य विश्रातिमभिरोचये R. 2, 2, 6. विश्रातिं लभ् Vikr. 20. संसारश्रान्तचित्तानां तिस्रो °भूमयः Spr. 3107. सेनाविश्रान्त्यै Kathâs. 20, 1. 22, 104. 51, 172. 61, 330. °कृत् 100, 14. Râja-Tar. 8, 1793. Sarvadarçanas. 96, 10. 14. °तम् Verz. d. Oxf. H. 238, *b*, 13. विश्रातिं लभतामिदं धनुः Çik. 39, v. l. — 2) *das zu Ende-Gehen, Aufhören, Nachlassen, Schluss:* विश्रातिं वासरो (so ist zu lesen) ऽप्यगात् Kathâs. 123, 210. Sin. D. 95, 7. 267. वाक्य° 291, 7. — 3) N. pr. eines Tîrtha ÇKDa. nach dem Vishṇu-P.; vgl. Verz. d. B. H. 144, 16.

विश्राम (wie eben) m. = विश्रम Vop. 26, 170. 1) *Ruhe, Erholung* Spr. (II) 1629. MBh. 3, 12902. Harîv. 5991. R. 1, 41, 15. 2, 2, 8. Mṛicch. 26. यन्मरणं सो ऽस्य विश्रामः Spr. 2646. Vaṇis. Bṛ. S. 32, 1. Kathâs. 37, 11. 62, 5. 63, 111. स्वात्म° Sin. D. 62, 19. 76, 6. Pañcat. 145, 9. Z. d. d. m. G. 14, 574, 17. Kull. zu M. 3, 101. विश्रामं या Spr. 2403. सविश्रामम् *ohne auszuruhen* (II) 694. विश्रामं लभतामिदं धनुः Çik. 39. रोगस्य विश्रामभूः *Ruhestätte* Spr. 2641. °वेश्मन् Harîv. 5965. — 2) *Ruhestätte, Ruheplatz* Harîv. 5336. Bhâg. P. 3, 23, 21. — 3) *das Aufhören, Nachlassen, Ruhe:* नैव रात्रिं न दिवसं न मुहूर्तं न च क्षणम्। रामरावणयोर्युद्धं विश्राममगमत्तदा ॥ R. 6, 92, 35. वाक्य° Uttarar. 80, 13 (103, 13). अवान्तरप्रकरण° H. 255. सविश्रामो ऽयं लोकतत्त्वाधिकारः Çik. 60, 19. सविश्रामदुःख 89, 10, v. l. — 4) *Cäsur* Çrut. 15. 19. 36. — 5) N. pr. eines Mannes Ind. St. 1, 60.

विश्राव (von श्रु mit वि) m. P. 3, 3, 25. 1) *Getose:* तोय° Bhaṭṭ. 7, 36. — 2) *Berühmtheit* AK. 3, 3, 28.

विश्रि m. 1) *Tod* Uṇâdis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa. — 2) N. pr. eines Mannes gaṇa गृष्ट्यादि zu P. 4, 1, 136. pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu 2, 4, 63. — Vgl. वैश्रेय.

विश्रुत 1) adj. s. u. श्रु mit वि. — 2) m. N. pr. eines Mannes VP. 379, N. 6. Daçak. 179. fgg.

विश्रुतदेव m. N. pr. eines Fürsten Tîrthak. 252.

विश्रुतवत् 1) *überaus gelehrt*, Beiw. Maru's, Vaters des Bṛihadbala, Harîv. 830. — 2) m. N. pr. eines Fürsten, Vaters des Bṛihadbala, VP. 387; vgl. u. 1).

1. विश्रुति (von श्रु mit वि) f. *Berühmtheit, Ruhm* Bhâg. P. 3, 25, 2. 10, 29, 32. विश्रुतिं गम् *berühmt werden* MBh. 5, 4361. — Vgl. लोक°.

2. विश्रुति (von श्रु = स्रु mit वि) f. *Verzweigung* (des Weges oder Wasserlaufes): विश्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वय्यन्ति श्रुतयः Çâṅkh. Ça. 9, 6, 6. Unter mystischen Namen der Kuh so v. a. *die nach den Seiten Ausströmende;* voc. °ति VS. 8, 43. °ते Pañcav. Br. 20, 15, 15.

विश्रम्भ (2. वि + म्रम्भ) adj. *schlaff:* ऐरावतास्फालनविश्रम्भमङ्गदम् Raghuv. 6, 73. विश्रम्भाङ्गम् adv. Spr. 3042. पतत्प्रकर्षं तत्प्राकृः प्रकर्षो यत्र विस्रम्भः Prasannâr. 64, *b*, 9.

विश्लेष (von श्लिष् mit वि) m. = वियोजन H. an. 3, 742. fg. = वियोग Med. sh. 45. = वियोग P. 1, 4, 24, Schol. = विधुर H. an. Med. Hall. 3, 38. 1) *Auflösung, Lostrennung, das Auseinandergehen:* भित्ति° Kathâs. 2, 49. गात्र° Çṛiṅg. 1, 37, 4. संध्यस्थि° 50, 2. संधि° 300, 15. 2, 268, 1. मलमायादिपाशानाम् Verz. d. Oxf. H. 7, *a*, No. 42. संधौ oder संधि° *so v. a. Hiatus* Sin. D. 575. 221, 13. fg. diese Bed. vielleicht auch Ind. St. 1, 47. — 2) *Trennung* (von einem geliebten Gegenstande): कान्ता° Spr. (II) 1851. Hass. Anth. 311, Çl. 5. Raghuv. 13, 23. Çik. 31. Kathâs. 16, 97. 28, 90. 38, 77. 51, 56. fg. 68, 18. 73, 439. 86, 57. Bhâg. P. 1, 15, 1. 5, 8, 22. — 3) in der Arithm. *Differenz* Ganit. Sundarabrah. 7. Golâdhy. 5, 2. 11, 46. — Vgl. चित्त°, रात्रिविश्लेषगामिन्.

विश्लेषण (von श्लिष् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. *auflösend* Suçr.

1,136,1. — 2) n. *a*) *Trennung:* पादविश्लेषणात्तम Buic. P. 3,4,5. — *b*) *das Auflösen* Suçr. 1,85,9.

विश्लेषिन् adj. 1) *auseinandergehend, sich lösend:* विश्लेषिमुक्ताफलपत्रवेष्ट Raçu. 16,67. गरुडापातविश्लेषि मेघनादास्त्रबन्धनम् ed. Calc. 12, 76. — 2) *getrennt* (vom geliebten Gegenstande): भवत्येव च संयोगाद्विरविश्लेषिणामपि Kathâs. 56,237.

विश्लोक (2. वि + श्लोक) 1) adj. *des Ruhmes baar* Ind. St. 8, 315. 317. — 2) m. *ein best. Metrum* ebend. Colebr. Misc. Ess. II, 86. 155 (II, 2, 2).

विश्व Uṇâdis. 1,151. VS. Prât. 2,39. Çiñ. 2,6. 1) adj. (f. श्वा) pronom. Declin. gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Vop. 3,9. *a*) *jeder, alle, sämmtlich, ganz* (in den Brâhmaṇa und später durch सर्व ersetzt) Naigh. 3,1. AK. 3,2,14. Taik. 3,3,421. H. 1433. an. 2,337. Med. v. 23. fg. Halâj. 4,38. विश्वगत् ṚV. 4,13,2. भुवन 14,2. विशः 5,17,4. द्रविण 28,2. मरुतः 31,10. विश्वस्य व्रतोः 32,7. तमस्य तोयसि यद्ध विश्वम् 4,5,11. दूतो विश्वेषाम् 9,2. विश्वस्य दूतम् 7,16,1. एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूरि 5,29,14. ओजस् 32,10. दुरिता 7,32,15. दूषणि 55,1. शक्र एणं पीपयद्विश्वया धिया 8,1,19. पिबा त्वस्यान्धसः इन्द्र विश्वासु (nämlich दिषु nach Sây., eher दिषु) 8,84,2. AV. 1,32,4. 15,3,11. यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा TBr. 2, 1,1,1. विश्वस्य जगतः MBh. 3,14145. विश्वे जगति R. 4,11,10. °विश्वंभरा Verz. d. Oxf. H. 139,*b*,3. त्वया सृष्टमिदं विश्वं धातर्गुणविसर्जनम् Buic. P. 10,16,57. °लोकेषु Spr. 5023. — *b*) विश्वे देवाः: sowohl *alle Götter* als *die so benannte Götterklasse;* s. u. 1. देव 2) *b*). In Stellen wie विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये *die göttlichen* Marut *insgesammt* ṚV. 1,23, 10. 19,3 hat man nicht nöthig eine besondere Benennung der Marut anzunehmen. देवानां वर्म विश्वे देवा नातिविध्यन्ति सर्वे *alle Götter insgesammt* AV. 8,5,19. Als eine best. Götterklasse Çat. Br. 14,4,2,24. Weber, Gjot. 94. Nir. 2,300. 374. MBh. 12,7540. Hariv. 14171. Ind. St. 8,257. fg. Vaitân. Bṛh. S. 43,47. विश्वेषां देवानामुद्देशीयम् und वि° दे° व्रतम् Namen von Sâman Ind. St. 3,237,*a*. Auch विश्वे allein ohne देवाः: AK. 1,1,2,5. H. an. (विश्वे सुरेषु zu lesen). Med. Bhâg. 11,22. MBh. 2,362. 3,1766. Hariv. 441. 7373. 11849. Vaitân. Bṛh. S. 98, 5. 99,1. Buic. P. 6,6,15. द्वादित्यविश्वे 3,14. पितृविश्वसोमाः: Vaitân. Bṛh. S. 8,22. Sie werden für Kinder der Viçvâ, einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's, angesehen Hariv. 147. 11541. 12479. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 240. VP. 120. Buic. P. 6,6,7. Bez. *der Zahl dreizehn* Goṭiḍâs. 11,23. Gaṇit. Spashṭâdh. 8. 12. — *c*) *Alles in sich enthaltend* oder *Alles durchdringend, überall seiend:* Vishṇu (Kṛshṇa) MBh. 6,2945. Weber, Kṛshṇaj. 289. 294. Seele, Intellect u. s. w. Maitrâjup. 2,5. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. 133. Weber, Râmat. Up. 293. 340. 360. Buic. P. 7,15,54. Vedântas. (Allah.) No. 73. fg. — 2) m. *a*) N. pr. eines Fürsten MBh. 1,2672. eines गङ्गाधिप Râjâ-Tar. 8,2477. — *b*) Bez. einer Klasse von Manen Mârk. P. 96,48. — *c*) = विश्वप्रकाश Verz. d. Oxf. H. 126,*a*,30. 136,*a*, No. 259. 182,*b*,48. 193,*b*,7. — 3) f. श्वा *a*) *die Erde* H. 935. — *b*) *eine best. Pflanze,* = अतिविषा, विषा AK. 2,4,2,18. H. an. Med. = शतावरी Râjân. im ÇKDr. = पिप्पली Çabdâs. ebend. — *c*) *trockener Ingwer* AK. 2,9,33. H. 420. Med. Halâj. 2,360. Suçr. 2,207,9. Çiñc. Saṅk. 2,2,17. 76. — *d*) Bez. *einer der Zungen des Feuergottes* Mârk. P. 99,55. — *e*) *ein best. Gestirn,* = विशाखा Jyotishmat. im ÇKDr.; nach ÇKDr. masc., aber das Citat lautet विश्वा विशाखे प्रोक्तम्. — *f*) N. pr. einer Tochter Daksha's, Gattin Dharma's und Mutter der Viçve Devâḥ MBh. 1, 2520. Hariv. 146. fg. 11525. 11541. 12480. 12479. VP. 119. fg. Buic. P. 6,6,4. 7. wird in Viçveçvara verehrt Verz. d. Oxf. H. 39,*a*,36. — *g*) N. pr. eines Flusses Buic. P. 5,19,18. — 4) n. *a*) *das All, Weltall* H. 1365. H. an. Med. AV. 9,7,4. Çat. Br. 14,9,2,5. Maitrâjup. 5,1. विश्वस्य कर्ता Mund. Up. 1,1,1. विश्वस्य मातरः Vaitân. Bṛh. S. 48,68. Çiñ. 1. Prân. 3,5. Vop. 5,10. Buic. P. 2,10,12. 4,7,21. 8,3,26. °संभव 3,17, 18. इदं विश्वम् 2,1,24. 4,6. 3,22,20. यस्य विश्वस्य Vaitân. Bṛh. S. 1,7. Kathâs. 22,90. विश्वमदः 240. विश्वत्रयेण यो मित्रं कर्तुं न शकितः पुरा (zur Erklärung des Namens Viçvâmitra) *die drei Welten* Mârk. P. 8,234. — *b*) *trockener Ingwer* AK. 2,9,38. H. an. Med. Ratnam. 92. Suçr. 2, 481,21. 504,9. — *c*) *Myrrhe* Dhanv. in Nigh. Pr. und Râjân. im ÇKDr. — *d*) mystische Bez. *des Vocals* ओ Weber, Râmat. Up. 317. fgg. — Wir vermuthen einen Zusammenhang von विश्व mit विषु.

विश्वक 1) adj. = विश्व 1) *c*) Weber, Râmat. Up. 341. — 2) m. proparox. N. pr. eines Mannes mit dem Bein. Kṛshṇîja, Schützlings der Açvin, welchem sie seinen verlorenen Sohn Vishṇâpû wiedergeben, ṚV. 1,116,23. 117,7. 8,75,1. 10,65,12. Liedverfasser von 8,75. Sohn Kṛshṇa's Anuka. ein Sohn Pṛthu's VP. 361, N. 14. — 3) f. घा *ein best. Vogel,* = गङ्गाचिल्ली Hit. 85.

विश्वकथा f. gaṇa कथादि zu P. 4,4,102. — Vgl. वैश्वकथिक.

विश्वकटु 1) adj. *schlecht, boshaft* (खल) Taik. 3,3,271. Med. r. 297. — 2) m. *a*) *Jagdhund* AK. 2,10,33. Taik. H. 1281. an. 4,279. Med. Hit. 221. Halâj. 2,127. Vgl. विश्वकट्टाकर्ष. — *b*) *Laut* H. an. Med.

विश्वकर्तृ m. *Schöpfer des Alls* Buic. P. 9,9,47. Çiva Çiv. Davon nom. abstr. विश्वकर्तृत्व n. Sarvadarçanas. 93,1.

विश्वकर्मन् (वि° + कर्मन्) adj. *Alles zuwegebringend:* सुभिषूरुक्मागमे विश्वकर्मणा धामभी ṚV. 10,166,4.

1. विश्वकर्मन् n. *jegliches Geschäft:* विश्वकर्मकृत् Maitrâjup. 5,1. विश्वकर्माध्याय Visâvad. 14.

2. विश्वकर्मन् Siddh. K. 239,*b*,2. 1) adj. *Alles wirkend, — ausführend, — schaffend:* Indra ṚV. 8,87,2. Ait. Br. 4,22. Âçv. Çr. 2,11,2. ṚV. 10,170,4. AV. 4,11,3. यस्यौ पक्षौ तन्वते विश्वकर्माणः 12,1,12. VS. 1,4. Prâjâpati 12,61. TS. 2,4,2,1. Çat. Br. 4,6,4,5. 9,2,2,2. Kauç. 139. Vishṇu (Kṛshṇa) MBh. 6,2944. 14,1485. 1573. त्वष्टा तवेवोत्तविश्वकर्मा Hariv. 13143. — 2) m. *a*) N. *eines weltbildenden Genius,* ähnlich dem Prâjâpati, oft auch nicht von ihm zu unterscheiden, Naigh. 3,4. Nir. 10, 26. ṚV. 10,81,2. 3. fgg. AV. 2,34,3. 35,1. fgg. 5,122,1. 12,1,60. VS. 5, 11. 8,54. 13,16. येनं प्रज्ञा विश्वकर्मा जजान 45. 55. 58. 15,16. 17,78. TBr. 1,1,2,3. 2,2,3. TS. 4,4,*,1. 5,5,5,1. 7,5,2. Çat. Br. 6,2,2,3. Çiñk. Br. 5,5. Kauç. 137. मनुत्पत्नेषु भूतेषु बभूव किल भूमितः । यशसः सर्वभूतानां विश्वकर्मेति विश्रुतः ॥ R. 4,44,49. Vaitân. Bṛh. S. 43,42. 46,12. *Baumeister* und *Künstler* (zugleich Prâjâpati genannt) *der Götter* AK. 3,4,20,111. H. 182. an. 4,192. Med. n. 245. Halâj. 1,94. MBh. 1,7688. fgg. 2,311. Hariv. 6512. fgg. (प्रजापतिसुत). 8937. fgg. 12149. 12385. 13178. R. 2,91,11. fg. (100,10. fg. Gorr.). 28. Kir. Nîtis. 19,6. Kathâs. 15,136. VP. 76. Buic. P. 6,9,52. Pañkat. 1,1,80. 11,13. Verz.

d. Oxf. H. 76,b,28. wann er schilft 46,a,44. fgg. Burn. Intr. 131. Aja ist Viçvakarman der Dânava MBu. 2,5. ein Avatâra des Viçvakarman Kathâs. 34,148. Viçvakarman als Verfasser eines Werkes über Baukunst Varâh. Bṛh. S. 56,29. 79,10. Verz. d. Oxf. H. 341,a,41. mit dem patron. Bhauvana Çat. Br. 13,7,1,14. Ait. Br. 8,21. Liedverfasser von ṚV. 10,81. ein Sohn des Vasu Prabhâsa und der Jogasiddhâ (योगसिद्धा adj. st. dessen MBu.) MBu. 1,2592. fgg. Harîv. 161. VP. 121. ein Sohn Vâstu's Bhâg. P. 6,6,15. Vater der Barhishmati 5,1,24. der Saṁgñâ Mârk. P. 77,1 (विश्वकर्मजा und विश्वकर्मसुता = संज्ञा Çabdar. im ÇKDr.). Gatte der Ghṛtâkî Verz. d. Oxf. H. 21,b,16. विश्वकर्ममाहात्म्य Mack. Coll. 1,84. विश्वकर्मपुराण 46. विश्वकर्मपुराणसंग्रह 166. Nach H. an. und Med. ist Viçvakarman auch N. pr. eines Muni. — *b*) Bez. *der Sonne* AK. H. an. Med. Mârk. P. 107,11. Vîsâvad. 14. — *c*) N. einer der 7 Hauptstrahlen der Sonne VP. 236, N. 3.

विश्वकर्मेश N. eines Liṅga Verz. d. B. H. 147,a,2.

विश्वकर्मेश्वरलिङ्ग n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 71,b,43.

विश्वकाय 1) adj. *dessen Körper das Weltall ist* Bhâg. P. 3,1,13. 19, 33. — 2) f. आ *eine Form der* Dâkshâjaṇî Verz. d. Oxf. H. 39,a,33.

विश्वकारक m. *Schöpfer des Alls:* Çiva Çiv.

विश्वकारु m. = विश्वकर्मन् *der Baumeister der Götter* Pâṇâr. 1, 10,46. 53.

विश्वकार्य m. N. eines der 7 Hauptstrahlen der Sonne VP. 263, N. 3. विश्वच्यर्चस् v. l. in der neueren Ausg.

विश्वकृत् 1) adj. subst. *Alles schaffend, Schöpfer des Alls:* Agni AV. 6,47,1. Çat. Br. 14,7,2,17. Çvetâçv. Up. 6,16. Varâh. Bṛh. S. 1,6. Spr. 4290. Bhâg. P. 3,12,27. 9,14,8. = ब्रह्मन् H. 6. — 2) m. *a*) *der Baumeister und Künstler der Götter*, Viçvakarman Hall. 1,84. Sund. 3,12 (विश्वविट् MBh. 1,7691). R. 5,22,12. Mârk. P. 77,28. 108,4. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Gâdhi Harîv. 1766.

विश्वकृत adj. wohl von Viçvakarman *verfertigt:* यान MBh. 5,7259.

विश्वकृष्टि adj. *bei allen Völkern oder Menschen wohnend, — erscheinend, allbekannt, Allen freundlich* u. s. w.: Agni ṚV. 1,59,7. die Marut 3,26,5. 10,92,6. nach Sây. auch 1,169,2. Dadhikrâ 4,38,2. Im Wesentlichen synonym sind: विश्वजिति, °चर्षणि, °जन्य, °मनुस्, विभ्वायु, विश्वानर.

विश्वकेतु m. 1) ein N. *des Liebesgottes* Gaṇiṣa. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,31. — 2) ein N. Aniruddha's (Sohnes des Kâma) AK. 1,1,1, 23 (dieses so wie das vorangehende ब्रह्मन् könnten auch zum vorangehenden Artikel कामदेव gezogen werden). Trik. 1,1,41. Gaṇiṣa. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,27.

विश्वकोश, °कोष m. = विश्वप्रकाश Verz. d. Oxf. H. 194,a,13.

विश्वक्षय m. *Untergang der Welt* Râjâ-Tar. 2,19.

विश्वक्षिति adj. = विश्वकृष्टि TBr. 1,5,1,5.

विश्वक्सेन s. विष्वक्सेन.

विश्वग m. 1) ein Name Brahman's ÇKDr. angeblich nach H. — 2) N. pr. eines Sohnes des Pârṣiman Bhâg. P. 4,1,14.

विश्वगत adj. *allgegenwärtig* Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,36.

विश्वगन्ध 1) adj. *überallhin Geruch verbreitend.* — 2) m. *Zwiebel* Râjân. im ÇKDr. — 3) f. या *die Erde* Çabdâs. im ÇKDr. — 4) n. *Myrrhe* Râjân. im ÇKDr.

विश्वगन्धि m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu Bhâg. P. 4,6,20.

विश्वगर्भ 1) adj. *Alles im Schooße tragend* AV. 12,1,43. Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Raivata Harîv. 5250.

विश्वगश्व s. विश्वगश्व.

विश्वगुणादर्श m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 150,a, No. 319.

विश्वगुरु m. *der Aelteste —, der Vater des Weltalls* Kumâras. 6,83. Çiç. Cu. 162,13. Bhâg. P. 3,15,26.

विश्वगूर्त adj. *allwillkommen:* स्वराळिन्द्रो दृम्ह या विश्वगूर्तः ṚV. 1,61, 9. 8,1,23. 59,3.

विश्वगूर्ति adj. dass.: die Açvin ṚV. 1,180,2.

विश्वगोत्र adj. *allen Sippen angehörig* Çat. Br. 3,3,3,5. 6,1,1.

विश्वगोत्र्य adj. etwa *alle Sippen um sich vereinigend:* eine Trommel AV. 5,21,3.

विश्वगोपतृ m. *Behüter des Weltalls:* Çiva Çiv. Vishṇu (Harîv. 14120) und Indra Çâṇḍilyuak. bei Wilson.

विश्वग्ज्योतिस् s. विश्वग्ज्योतिस्.

विश्वग्यन्धि m. *eine best. Pflanze*, = रुंसपदी Râjân. im ÇKDr.

विश्वग्लोप, विश्वग्वात und विश्वग्वायु s. विश्वग्लोप, विश्वग्वात und विश्वग्वायु.

विश्वंकर (विश्वम्, acc. von विश्व + 1. कर) n. *Auge (Alles bildend)* Çâṇḍilyuak. bei Wilson.

विश्वचक्र n. *Erdkreis:* °दान Bez. *einer best. grossen Schenkung (Gold in Gestalt des Erdkreises)* Verz. d. Oxf. H. 35,b,20. ohne दान 43,a,18.

विश्वचक्रात्मन् m. Beiw. Vishṇu's Mitâkṣ.-P. 259 nach ÇKDr.

विश्वंचतस adj. so v. a. विश्वचतस् AV. 18,1,17.

विश्वंचतस् adj. *allsehend:* die Sonne ṚV. 1,50,2. 7,63,1. Soma 9, 86,5. Viçvakarman 10,81,2.

विश्वचक्षुस् adj. *Alles sehend* oder n. *Auge für Alles* Maitrâyaṇ. 6,6.

विश्वंचर्षणि adj. so v. a. विश्वकृष्टि. Indra ṚV. 1,9,2. 2,31,3. 5,36,1. Agni 1,27,9. 3,2,15. 5,6,3. 14,6. Soma 9,1,2. Manju 10,83,4. वाजिन् 6,2,2. श्रवस् 10,93,10. Beiw. des Viçvamanas 3,23,2 (vielleicht ist aber °षणिम् zu lesen). वाजितुरं मर्त्यानां विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वाभगम् Vâlakh. 3,6. Naigh. 3,11.

विश्वजन् gaṇa प्रतिजनादि zu P. 4,4,99. *Jedermann, alle Welt:* विश्वजनस्य छायाम् (nach einem Vârtt. zu P. 6,1,76 छायाम् oder च्छायाम्) VS. 5,28. उर्वीमिमां विश्वजनस्य भूतिम् TBr. 1,2,1,4. °च्छत्र oder °च्छत्त्र P. 6,1,76, Vârtt., Schol. — Vgl. वैश्वजनीन.

विश्वजनीन (von विश्वजन) adj. *allerlei Volk enthaltend:* जन AV. 7, 48,1. *über alles Volk herrschend* 20,127,7. *aller Welt zu Gute kommend* P. 5,1,9. Bhaṭṭ. 2,48. 21,17. — Vgl. वैश्व°.

विश्वजनीय (wie oben) adj. = विशेषां जनाय हितः Pat. zu P. 5,1,9.

विश्वजन्मन् adj. von *allerlei Art* AV. 11,4,23.

विश्वजन्य (von विश्वजन) adj. *alle Menschen enthaltend; überall vorhanden, — bekannt, — beliebt, allgemein:* Himmel und Erde ṚV. 3,25,3. सुमति 57,6. VS. 17,74. इषः ṚV. 10,2,6. प्रुरुधः 1,169,8. मदाः 6,36,1.

राधस् 47,23. 10,67,1. उपन्यास M. 9,21.

विश्वजयिन् adj. *Besieger des Weltalls* Bhâg. P. 8,15,34.

विश्वजिच्छित्य (विश्वजित् + शित्य) m. N. *eines* Ekâha Pañkav. Br. 16,15,1. Çâṅkh. Çr. 12,6,1. 8. 9,5. Liṭ. 5,4,1. 8,4,10.

विश्वजित् 1) adj. *allbesiegend, allgewinnend* Ṛ. 2,21,1. 8,68,1. 9, 59,1. 10,170,3. AV. 4,11,5. 35,7. 17,1,11. Bhâg. P. 4,20,17. 7,4,7. — 2) m. a) N. *eines* Ekâha *in der Feier* Gavâmajana, *der 4te Tag nach dem* Vishuvant (Abhigit heisst *der 4te vor demselben*) AV. 11, 7,12. Âit. Br. 4,19. 6,18. 30. TS. 7,4,8,3. TBr. 1,2,2,2. 4,6,3. Çat. Br. 4,5,4,14. 12,1,2,2. Pañkav. Br. 4,3,19. 20,9,1. Kâty. Çr. 24,1,17. Âçv. Çr. 8,7,1. 9,9,6. 12,5,12. Liṭ. 4,6,13. Mâç. 2,6. M. 11,74. MBh. 1,3764.7,2366.9,2321. 13,4943. R. 1,13,45. Raghu. 4,86.5,1.6,76. Bhâg. P. 8,15,4. Kull. zu M. 11,1. विक्तिताध्ययनस्य फलाकाङ्क्षया विश्वजिन्याये न स्वर्ग एव फलं कल्प्यम् Comm. in der Einl. zu Gaim.; vgl. Colebr. Misc. Ess. I, 320. — b) Bez. *eines best. Feuers:* यस्तु विश्वस्य ज्ञगतो बुद्धिमाक्रम्य तिष्ठति। तं प्राजुरध्यात्मविदो विश्वजिन्नामपावकम्॥ MBh. 3,14145. — c) N. pr. α) eines Dânava MBh. 12,8265. — β) eines Sohnes des Gâdhi Harîv. 1766. — γ) eines Sohnes des Dṛḍharatha und Grosssohnes des Gajadratha Harîv. 1704. eines Sohnes des Gajadratha VP. 452. — δ) eines Sohnes des Satjagit Harîv. 1057. VP. 463. Bhâg. P. 9,22,47.

विश्वजिन्व adj. *allerquickend* Ṛ. 6,67,7.

विश्वजीव m. *Allseele* Bhâg. P. 5,15,11.

विश्वजूति adj. *alltreibend:* धेनु Ṛ. 4,33,8.

विश्वज्योतिष m. N. pr. eines Mannes (pl. *seine Nachkommen*) Pravaṅkhj. in Verz. d. B. H. 35,1. 2. — Vgl. विश्वज्योतिस्.

विश्वज्योतिस् 1) adj. *allglänzend.* — 2) m. a) N. eines Ekâha Kâty. Çr. 22,2,8. Pañkav. Br. 16,10,1. — b) N. pr. eines Mannes Sañsk. K. 186, a, 4; vgl. विश्वज्योतिष. — 3) f. Bez. *derjenigen* Ishṭakâ, *welche Feuer, Wind und Sonne repräsentiren sollen,* Çat. Br. 6,3,3,16. 10,4,3,14. 8,3,3,1. 7,1,9. TS. 5,3,3,2. Kâty. Çr. 17,9,3. 18,6,33. — 4) n. इष्टिश्वज्योतिस् N. eines Sâman Ind. St. 3,209,5. — Vgl. विघज्योतिस्.

विश्वञ् (विश्वक्) s. विघञ्.

विश्वतनु adj. *dessen Körper das All ist* Bhâg. P. 2,1,33.

विश्वतश्चक्षुस् adj. *der auf allen Seiten Augen hat* Ṛ. 10,81,2.

विश्वतस् (von विश्व) adv. von —, *an allen Seiten, allenthalben* Comm. zu AK. 3,3,13 nach ÇKDr. Ṛ. 1,31,5. 122,6. घर्मं कृणुहि विश्वतो नः 3,47,2. तपं विश्वतः शोचिषा 6,22,5. 7,12,1. 83,3. परि वो भूतु विश्वतः इयं मतिः 104,6. 2,43,2. 6,19,9. गिरिर्न विश्वतस्पृथुः 8,87,4. 2,1,12. AV. 7,30,2. VS. 12,10. 16,11. Kauç. 47. 68. विश्वतो ऽस्थिमये जाते — तितिमण्डले Rîgh-Tan. 5,272. विश्वतो भयात् *vor aller Gefahr* Bhâg. P. 10,31,3.

विश्वतस्पद् (°पाद्) adj. *allenthalben Füsse habend* Ṛ. 10,81,3.

विश्वतस्पाणि adj. *überall Hände habend* AV. 13,2,26.

विश्वतस्पृच adj. AV. 13,2,26 v. l. für विश्वतस्पद् des Ṛ.

विश्वतुर् adj. *Alles übertreffend:* युध Ṛ. 1,48,16.

विश्वतुराषाह् adj. dass. Harîv. 14119.

विश्वतृप्त adj. *durch Alles befriedigt:* Vishṇu Pañkar. 4,3,132.

विश्वतूर्ति adj. *Alles übertreffend:* Bhâratî Ṛ. 2,3,5.

विश्वतोधार (विश्वतस् + 1. धारा) adj. *nach allen Seiten strömend* VS. 17,68.

विश्वतोधी adj. *überallhin merkend* Ṛ. 8,34,6.

विश्वतोबाहु adj. *allenthalben Arme habend* Ṛ. 10,81,3.

विश्वतोमुख adj. *allenthalben Gesichter habend* oder *dessen Gesicht überallhin gewandt ist* Ṛ. 1,97,6. 10,81,3. AV. 10,8,27 (Çvetâçv. Up. 4,3). Bhâg. 9,15. Harîv. 14119. Bhâg. P. 3,25,40. 32,7. 33,25. unter den Namen der Sonne MBh. 3,157. °मुखम् adv. *nach allen Seiten hin* Bhâg. P. 4,28,41.

विश्वतोय adj. (f. या) *alles Wasser führend:* गङ्गा MBh. 13,1846. = विश्वप्रियतोया Nîlak.

विश्वतोवीर्य adj. *allenthalben wirksam:* वीरुध् AV. 6,32,2. die Sonne 3,31,7.

विश्वत्र (von विश्व) adv. *allenthalben, allezeit* Ṛ. 10,61,25. एतच्च मत्पितुर्देशे वृत्तं विश्वत्र विश्रुतम् *überall bekannt* Kathâs. 20,187.

विश्वत्र्यर्चस् m. N. eines der 7 Hauptstrahlen der Sonne VP. (II) 2, 297, N. विश्वकार्य die erste Ausg.

विश्वधा (von विश्व) ved. adv. P. 5,3,11. VS. Pair. 5,12. *auf alle Weise, allezeit* Ṛ. 1,141,9. 2,24,11. 5,44,1. SV. I,3,1,3,5 (°धा Ṛ.). Çâṅkh. Çr. 17,12,6.

विश्वदंष्ट्र m. N. pr. eines Asura MBh. 12,8264.

विश्वदत्त m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 10,158. 33,27.

विश्वदर्शत adj. *allsichtbar* Ṛ. 1,25,18. 44,10. 7,96,6. 9,65,13. सूर 66,22. 106,5. 10,140,6.

विश्वदानि adj. nach dem Comm. *allschenkend:* ततो यज्ञो जायते विश्वदानिः TBr. 3,3,9,10. 7,4,12.

विश्वदानीम् (von विश्व) adv. AV. Pair. 4,23. *allezeit, immer* Nir. 11, 44. Ṛ. 1,164,40. 4,50,8. 6,52,5. AV. 12,1,7. 18,3,54. Âçv. Çr. 2,5,9. — Vgl. इदानीम् und तदानीम्.

विश्वदावि adj. *allsengend* TS. 3,3,3,2.

विश्वदावन् adj. v. l. des AV. 4,32,6 für विश्वधायस् des Ṛ.

विश्वदाव्य adj. so v. a. विश्वदाव AV. 3,21,3. 9. 10,8,39.

विश्वदासा f. N. der 7ten Zunge des Feuers (v. l. für विश्वरूपी, विश्वरुची) Ind. St. 2,396.

विश्वदृश् adj. *allsehend* Bhâg. P. 4,20,32. Kusum. 53,6.

विश्वदृष्ट adj. *allgeschaut* Ṛ. 1,191,5. 6. 8.

विश्वदेव 1) m. pl. *alle Götter: die* Viçve Devâḥ P. 8,2,106, Schol. Ṛ. 6,51,7. 10,125,1. VS. 2,22. Harîv. 11294. °देवा दश स्मृताः Gaṇân. in Verz. d. Oxf. H. 190,a,24. im comp. Vaṅç. Brn. S. 44,6. — 2) adj. P. 6,2,106, Schol. 2,2,35, Vârtt. 1, Schol. gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,133. *allgöttlich:* Indra Ṛ. 3,37,2. Vâju 1,142,12. Bṛhaspati 4,50,6. Savitar 5,82,7. Soma 9,92,3. 103,4. Mahâpurusha Harîv. 14115. 14119 (विश्वेदेव die neuere Ausg.). Bez. eines best. Gottes: विश्वदेवेन देवेन (विश्वेदेवेन विश्वेशः die neuere Ausg.) सङ्गायुध्यत वीर्यवान् 13190. विश्वदेवभक्त = विश्वदेवानां (etwa *Verehrer der* Viçve Devâḥ) विषयो देशः gaṇa रैषुकार्यादि zu P. 4,2,54. — 3) f. या *Uraria logopodioides* Dec. Ratnam. im ÇKDr. Sucr. 1,39,21. 137,4. 317,11. = क्रुस्वगवेधुका Gaṇîn. im ÇKDr. *eine rothblühende Species von* दण्डोत्पल Ratnam. 166.

— Vgl. वैश्वदेव, वैश्वदेवक.

विश्वदेवता f. pl. *die* Viçve Devâḥ Gaṛiba. in Verz. d. Oxf. H. 190, *a*, 33.

विश्वेदेवनेत्र adj. von *den* Viçve Devâḥ *geführt* VS. 9, 35.

विश्वेदेववत् (von विश्वदेव) adj. *mit allen Göttern verbunden* AV. 19, 18, 10.

विश्वदेवस्तुत् m. N. eines Ekâha Âçv. Ça. 9, 8, 7.

विश्वेदेव्य adj. *auf alle Götter bezüglich, bei allen Göttern beliebt* u. s. w.: Agni ṚV. 1, 148, 1. 3, 2, 8. Bṛhaspati 3, 62, 4. Pûshan 10, 92, 13. क्राग 1, 162, 2. समुद्र 110, 1.

विश्वेदेव्यावत् adj. dass. ṚV. 10, 170, 4. °देव्यावती P. 6, 3, 131. VS. Pair. 3, 116. VS. 11, 61. Bṛhaspati 38, 9. Soma Kâṭy. Ça. 10, 5, 9. 7, 14. *mit den* Viçve Devâḥ *verbunden:* Indra Âṭv. Bṛ. 2, 20. Çâṅkh. Çr. 6, 7, 10. 9, 14.

विश्वेदेव adv. *die* Viçve Devâḥ *zur Gottheit habend;* n. *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ Vaṭṭu. Bṛn. S. 7, 2. वैश्वदेव v. l.

विश्वदेवत dass. Vaṭṭu. Bṛn. S. 71, 11.

विश्वेदोहस् adj. *Alles melkend:* धेनु ṚV. 6, 48, 13.

विश्वयज् s. विश्वयाज्.

विश्वेधस् und विश्वेधा (von विश्व) adv. *auf alle Art, allezeit* ṚV. 1, 63, 8. 141, 6. 174, 10. 4, 16, 18. 5, 8, 4. 7, 22, 7. 9, 79, 2. — Vgl. विश्वक्, विश्वका, विश्वाका.

विश्वधर m. N. pr. des Vaters von Harinâtha Verz. d. Oxf. H. 206, *b*, 9. 10.

विश्वधारण n. *die Erhaltung des Weltalls* Rîâ-Tar. 1, 139.

1. विश्वधा adv. s. विश्वध.

2. विश्वेधा adj. nach dem Comm. so v. a. विश्वं दधाति VS. 1, 2, v. l. für विश्वधायसम् der TS. — f. gaṇa कृत्रादि zu P. 4, 4, 62: vgl. वैश्वध.

विश्वधातृ nom. ag. *Allerhalter:* घापो देव्य ग्रपोषां विश्वधाय्यः Hariv. 7794.

विश्वधामन् n. *die allgemeine Heimath* Çvetâçv. Up. 6, 6.

विश्वेधायस् adj. *allnährend, allerhaltend* ṚV. 1, 73, 3. 3, 55, 21. 5, 8, 1. 7, 4, 8. पृथिवी 2, 17, 5. AV. 12, 1, 27. रयि ṚV. 3, 5, 15. 7, 12. — 10, 83, 6. 122, 1. 6. 176, 1. AV. 3, 22, 3.

विश्वधार m. N. pr. eines der 7 Söhne des Medhâtithi und eines nach ihm benannten Varsha Bhâg. P. 5, 20, 25.

विश्वधारिणी f. *die Erde* (*Alles tragend*) Çabdârthak. bei Wilson.

विश्वधावीर्य adj. *auf alle Art wirksam* AV. 5, 22, 3. 19, 39, 10.

विश्वधृक् adj. *Alles tragend, — erhaltend* Ind. St. 2, 99, N. 4.

विश्वधृत् adj. dass. ebend.

विश्वेधेन adj. *alltränkend* ṚV. 4, 19, 3. 6.

विश्वधेनु s. वैश्वधेनव, वैश्वधेनव.

विश्वनगर m. N. pr. eines Mannes Daçak. 70, 12. fgg.

विश्वनर adj. = विश्वे नरा यस्य सः P. 5, 3, 129. — Vgl. विश्वानर.

विश्वनाथ m. 1) *Allbeschützer, Allherrscher,* Bez. Çiva's Çabdak. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 128, *a*, 11. 141, *a*, 31. 146, *b*, 3. 149, *b*, N. 2. 257, *b*, 36. Verz. d. B. H. No. 1242. — 2) N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. I, 262. II, 37. 452. fg. Hall 23. 78. 113. 181. Verz. d. Oxf. H. 121, *a*, No. 212. 239, No. 576. fgg. 283, *b*, No. 663. fg. 333, *b*, No. 785. 337, *b*, No. 794. 341, *a*, 32. 378, *a*, No. 376. 380, *a*, 5. Verz. d. B. H. No. 245. 268. 680. 693. 700. 815. 823. Verz. d. Tüb. H. 13. Verz. d. Cambr. H. 42. 58. Kshitiç. 6, 17. 7, 9. °कविराज Sin. D. 8, 12. °चक्रवर्तिन् Wilson, Sel. Works I, 168. °तर्कालंकार Gild. Bibl. 414. °दीक्षित Verz. d. Oxf. H. 141, *a*, 14. °देव 341, *b*, N. Hall 17. °दैवज्ञ Verz. d. B. H. No. 971. °पञ्चाननभट्टाचार्य Bhâsuiparic. in der Unterschr. °पञ्चाननभट्टाचार्यतर्कालंकार Hall 73. °पण्डित 192. °भट्ट 176. °भट्टाचार्य Gild. Bibl. 416. Hall 22. 58. °राय Kshitiç. 26, 9. °सिंह Notices of Skt Mss. 41. — Vgl. भावाविश्वनाथदीक्षित.

विश्वनाथनगरी f. *die Stadt* Viçvanâtha's d. i. Kâçî Verz. d. B. H. No. 1342. °स्तोत्र ebend.

विश्वनाथीय adj. von Viçvanâtha *verfasst* Verz. d. Oxf. H. 239, *b*, 4.

विश्वनाभ m. ein N. Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 185, *a*, 4.

विश्वनाभि f. *der Nabel des Weltalls* Bhâg. P. 2, 2, 25.

विश्वेनामन् adj. *allnamig* AV. 7, 73, 2.

विश्वेतर (विश्वम्, acc. von विश्व, + तर) 1) adj. *Alles überwindend:* Buddha Vajrâ. 2. — 2) m. *a*) N. pr. eines Fürsten mit dem patron. Saushadmana Âṭv. Bṛ. 7, 27. 34. — *b*) als ज्ञातक Çâkjamuni's Vjâkh. im Comm. zu H. 233. Gîtagamâli 24.

विश्वपत m. N. pr. eines Autors mystischer Gebete Verz. d. Oxf. H. 101, *b*, 3.

विश्वपति m. *Herr des Alls:* Mahâpurusha Hariv. 14120. Kṛshṇa Weber, Kṛshṇaj. 295. N. eines Feuers MBh. 3, 14193.

विश्वपद् (°पाद्) in der Stelle विश्वपाद्यम् Hariv. 14120, wo aber die neuere Ausg. richtig विश्वपास्त्वम् liest.

विश्वपर्णी f. *Flacourtia cataphracta* Roxb. Rîâm. im ÇKDa.

विश्वपा adj. Decl. P. 5, 4, 140, Schol. Vop. 3, 42. *Alles schützend* Hariv. 14120 nach der richtigen Lesart (s. u. विश्वपद्).

विश्वपाचक adj. *Alles kochend,* Beiw. des Feuers Mârk. P. 99, 46.

विश्वपाणि m. N. pr. des 3ten Dhjânibodhisattva Burn. Intr. 117.

विश्वपातृ m. *Allschützer,* N. einer Gruppe von Manen Mârk. P. 96, 46.

विश्वपादशिरोग्रीव adj. *dessen Füsse, Kopf und Hals aus dem Weltall gebildet sind* Mârk. P. 42, 2.

विश्वपाल m. N. pr. eines Kaufmanns Verz. d. Oxf. H. 73, *b*, 22.

विश्वपावन 1) adj. (f. ई) *allreinigend:* घापः Bhâg. P. 8, 20, 18. धूप Pârâç. 2, 4, 29. — 2) f. ई ein N. der Tulasî Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, 27.

विश्वपिंश् adj. *allschmückend* ṚV. 7, 57, 3. *allgeschmückt:* रथ 75, 6.

विश्वपुंस् adj. *allgedeihlich* ṚV. 8, 26, 7.

विश्वपूजित 1) adj. *allgeehrt.* — 2) f. या ein N. der Tulasî Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, 27.

विश्वपेशस् adj. *allen Schmuck enthaltend, mit allem Schmuck ausgestattet:* रात्रि ṚV. 1, 48, 10. घिषम् 61, 10. मनु कृष्टे वसुधिती येमाते विश्वपेशसा 4, 48, 3.

विश्वप्रकाश m. *Allerheller,* Titel eines Wörterbuchs des Maheçvara Colebr. Misc. Ess. II, 38. Mud. Anh. 3. Verz. d. Oxf. H. 108, *b*, No. 169. 110, *b*, 17. 113, *b*, 7. 130, *b*, No. 333. 187, *b*, No. 428. 188, *b*, 37 und No. 429. 192, *a*, 18. 196, *a*, 22. *b*, 2. Verz. d. B. H. No. 802. fgg. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

विश्वप्रकाशिन् m. dass. Verz. d. Oxf. H. 323, *a*, No. 765.

विश्वप्रबोध adj. *allerweckend, allerleuchtend* Bhâg. P. 4, 24, 35.

विश्वप्रेी adj. heisst *der Abschnitt des* TBr. 3,11,8. — TBr. 3,11,9,9.

विश्वप्सैन् Uṇâdis. 1,158. m. = देव Uṇâdis. = वह्नि, चन्द्र, समीरण und कृतान्त H. an. 3,418. fg. = सूर्य Çabdar. im ÇKDr. = विश्वकर्मन् Uṇâdis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDr.

विश्वप्सा m. *Feuer* (*Alles verzehrend*) Taitt. 1,1,67.

विश्वप्सु adj. nach dem Comm. *allgestaltig:* ब्रह्मा ṚV. 6,35,2. त्वं विश्वप्सुं विश्ववीर्यम् 8,22,12. यज्ञ 10,77,4. — Vgl. विश्वाप्सु.

विश्वप्स्य adj. nach dem Comm. *allgestaltig* oder *allgenugsam:* वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्यस्य ṚV. 7,42,6. 8,86,18. धार्या विश्वप्स्या (von einem f. °प्स्री oder für °प्स्यया) VS. 12,10. der Wagen der Açvin यमि यहा विश्वप्स्या जिगाति ṚV. 7,71,4. विश्वप्स्याय (etwa n. zu *aller Sättigung*) प्र भरत्त भोजनम् 2,13,2.

विश्वबन्धु m. *ein Freund der ganzen Welt* Bhâg. P. 4,4,18.

विश्वबीज n. *der Same von Allem* Pâṇâd. 4,3,25.

विश्वबोध m. *ein Buddha* (*Alles wissend*) Taitt. 1,1,10.

विश्वभद्र = सर्वतोभद्र Kâlakâkṣa 4,20. 76.

विश्वभर्मन् adj. *allerhaltend, allnährend:* Agni ṚV. 4,1,19. Çâṅkh. Çr. 6,12,10.

विश्वभर्तृ m. *Allerhalter* Bhâg. P. 3,16,24. Kâlakâkṣa 3,93. 4,1.5,288.

विश्वभव adj. *aus dem Alles entsteht* Bhâg. P. 4,9,16. Weber, Kṛshṇaj. 289.

विश्वभानु adj. *allscheinend:* die Marut ṚV. 4,1,3. 8,27,3.

विश्वभाव adj. = विश्वभावन Bhâg. P. 10,81,13.

विश्वभावन adj. *der Alles werden lässt* VP. 2, N. 2. Bhâg. P. 1,11, 7. 2,7,50. 4,7,32. 28,63. Mârk. P. 42,2. Weber, Bhâgav. Up. 337.

विश्वभुज् 1) adj. *Alles geniessend, — verzehrend* Maitrâyaṇ. 3,1. Mahâpurusha Hariv. 14119. fg. Vishṇu H. ç. 73. Indra Verz. d. Oxf. H. 41,*b*, N. 4. — 2) m. *a*) N. eines best. Feuers MBh. 3,14146. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Indra MBh. 1,7304. — *c*) N. einer Gruppe von Manen Mârk. P. 96,13.

विश्वभुजा f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 71,*b*,11. fg. Verz. d. B. H. 146,*b*,1 v. u.

विश्वभू m. N. pr. eines Buddha H. 236. Vâyup. 3. Lalit. ed. Calc. 5,1 v. u. Burn. Intr. 222. Lot. de la b. l. 504. Wilson, Sel. Works I, 290. II, 5. 8. 13.

विश्वभूत adj. *das All seiend* Hariv. 14120.

विश्वभृत् adj. *allerhaltend, allnährend* AV. 4,11,5. 5,28,5. Maitrâyaṇ. 6,6. 13.

विश्वभेषज 1) adj. (f. ई) *alle Heilmittel enthaltend, allheilend:* यापः ṚV. 1,23,20. 10,60,12. 137,3. VS. 20,34. AV. 2,4,3. 4,10,3. 19,35,5. 39,5. 8. 9. — 2) n. *trockener Ingwer* (*Panacea*) AK. 2,9,36. H. 420. Hâlâ. 2,460. Ratnam. 92. Suçr. 1,165,6. 2,417,21.

विश्वभोजस् adj. *allmittheilend, allspendend, allnährend* ṚV. 5,41,4. 7,16,2. इयम् 6,48,13. पृथिवी AV. 4,35,3. 18,4,6.

विश्वमदा (विश्वम् + म°) f. N. einer der sieben Zungen des Feuers (*Alles verzehrend*) Çabdam. im ÇKDr.

विश्वमनस् 1) adj. *Alles merkend* ṚV. 10,55,8. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vjaçva, Liedverfassers von ṚV. 8,23—26. — ṚV. 8,23,2. 24,7. Pâṇâv. Br. 15,5,20.

विश्वमनुस् adj. so v. a. विश्वकृष्टि, die Marut ṚV. 8,46,17.

विश्वमय (von विश्व) adj. *das Weltall in sich enthaltend* Kathâs. 35, 102. Verz. d. Oxf. H. 196,*a*, No. 455.

विश्वमक्स् adj. *allgewaltig oder allergötzend:* विश्वे हि विश्वमक्सो विशे यज्ञेषु यज्ञियाः ṚV. 10,93,3. Çiṅkh. Çr. 4,10,3.

विश्वमहेश्वर m. *der grosse Herr des Alls* (Çiva): °मताचार Mack. Coll. I, 140.

विश्वमातर् f. *Allmutter* Kâlakâkṣa 2,126. 3,197. 4,96. 5,4. 91. 105.

विश्वमानव s. वैश्वमानव.

विश्वमानुष m. *die Gesammtheit der Menschen:* यस्ये ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति ṚV. 8,45,43.

विश्वमित्र m. ein Mannsname P. 6,3,130, Schol. — Vgl. विश्वामित्र.

विश्वमिन्व (विश्वम् + इन्व) adj. 1) *allbewegend, alltreibend:* स्तोम ṚV. 1,61,4. Pûshan 2,40,6. Agni 3,20,3. die Marut 5,60,8. Ushas 80, 2. Indra 7,28,1. — 2) *allwaltend, allenthaltend:* द्यावा ṚV. 1,76,2. 3, 38,8. 8,81,5. Thore 10,110,5. — Vgl. यु°.

विश्वमुखी f. N. der Dâkshâjaṇî in Gâlamâdhava Verz. d. Oxf. H. 39,*b*, 26.

विश्वमूर्ति adj. *allgestaltig* oder *dessen Leib das Weltall ist* MBh. 6, 2944. 2948. Hariv. 14114. Kumâras. 5,78. Bhâg. P. 1,8,41. 2,1,37. 3,4,27. 8,6,9. Mârk. P. 103,5.

विश्वमेजय (विश्वम् + ए°) adj. *allaufregend:* Soma ṚV. 9,35,2. 62,26.

विश्वमेदिनी f. Titel eines Wörterbuchs Verz. d. Oxf. H. 196,*b*,2.

विश्वमोहन adj. *allverwirrend* Pâṇâd. 4,3,24.

विश्वम्भर (विश्वम् + भर) P. 3,2,46. Vop. 26,60. 1) adj. (f. आ) *alltragend, allerhaltend:* die Erde AV. 12,1,6. das Feuer 2,16,5. Çat. Br. 14,4,2, 16. हरि Spr. (II) 1620. — 2) m. *a*) *eine Art Scorpion* oder *ein ähnliches Thier* Suçr. 2,257,17. 288,7. 290,2; vgl. विश्वम्भरक. — *b*) ein N. Vishṇu's AK. 1,1,1,17. H. 215. an. 4,278. Med. r. 297. Pâṇâd. 4,3,35 (S. 249). Khandom. 122. — *c*) ein N. Indra's H. an. Med. Gaṇḍa. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*, 29. — *d*) N. pr. eines Fürsten Kshîrîç. 6,3. — 3) f. आ *die Erde* AK. 2,1,2. H. 935. H. an. Med. Hall. 2,1. P. 3,2,46, Schol. Ragh. 15,81. 18,23. Uttarar. 5,2 (7,11). Spr. (II) 2393. Verz. d. Oxf. H. 139,*b*,3. Râga-Tar. 3,300. Pâṇâd. 3,11,21. Kâvjâd. 3,122.

विश्वम्भरक m. = विश्वम्भर 2) *a*) Varâh. Bṛh. S. 54,26.

विश्वम्भरशास्त्र n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,2 v. u.

विश्वम्भराभुज् m. *Geniesser der Erde* so v. a. *Fürst, König* Râga-Tar. 8,2192.

विश्वयशस् m. ein Mannsname Schol. zu P. 6,2,106 und 8,4,155.

विश्वयामति (विश्वया instr. adv. + मति) adj. *der überall seine Gedanken hat:* Indra ṚV. 8,57,1 (voc.). Padap. trennt in zwei Wörter.

विश्वयु m. *Wind, Luft* Çabdaratnâk. bei Wilson.

विश्वयोनि m. f. *Urquell —, Schöpfer des Weltalls* Çvetâçv. Up. 5, 5. MBh. 6,1960. Hariv. 4336. Kumâras. 2,62. 6,9. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*, No. 43. 239,*b*,2.

विश्वरथ m. N. pr. 1) eines Sohnes des Gâdhi Hariv. 1459. 1766. — 2) des Autors des Piṅgalaprakâça Colebr. Misc. Ess. II, 63.

विश्वराज् in den schwächsten Casus, विश्वाराज् im nom. sg. und vor

consonantisch anfangenden Casusendungen P. 6,3,123. Vop. 3,125.

विश्वाराधम् adj. *allgewährend* AV. 7,17,2.

विश्वरुचि m. N. pr. eines göttlichen Wesens MBh. 7,2418. eines Dânava Kathâs. 47,25.

विश्वरुची f. N. einer der 7 Zungen des Feuers Mund. Up. 1,2,4 (ed. Pol., विश्वरूपी in der Bibl. ind.). Manjuś. zu VS. 17,79.

1. **विश्वरूप** n. *allerlei Gestalten:* कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः पुनः M. 7,10. °प्रदर्शक Pañcat. 4,1,30. Weber, Rimat. Up. 302.

2. **विश्वरूप** 1) adj. (f. विश्वरूपा und विश्वरूपी) *a) alle Farben zeigend, vielfarbig, bunt:* यज्ञ RV. 1,162,2. Kâṭh. 13,1. धेनु RV. 3,1,7. 1,164, 9. 4,33,8. AV. 9,5,10. Kauç. 62. Daher auch ohne nähere Bestimmung f. *eine bunte Kuh* RV. 1,161,6. VS. 3,22. इडा TBr. 1,2,4,21. 4,3,1. 7, 6,7. pl. *das Gespann des* Bṛhaspati Naigh. 1,15. Stier RV. 3,56,3. Rosse 10,70,2. निष्क 3,33,10. Wagen des Savitar 1,35,4. 10,85,20. — 3,38,4. TS. 4,3,11,5. AV. 4,14,9. 5,59,3. 9,1,2. 5. Çat. Br. 1,6,3, 5. Kleid VS. 11,40. Çat. Br. 14,2,1,3. Himmel und Erde VS. 9,19. Feuer 12,41. Thore 29,8. — Maitrâjan. 6,8. — *b) vielgestaltig, mannichfaltig, verschiedenartig, allerlei:* घोषयीः RV. 5,83,5. 10,88,10. AV. 4,15,2. वाज RV. 10,67,10. पशवः 3,89,11. क्रिमयः AV. 5,23,3. इन्दु TS. 2,3,14, 2 (विपुरूप v. l. der VS.). VS. 16,25. वाच् Lâṭy. 4,1,3. MBh. 5,1684. Speise Çat. Br. 11,2,6,3. पशस् 14,5,2,4. *formenreich:* Tvashṭar-Savitar RV. 10,10,5. 3,55,19. *in mancherlei Formen erscheinend:* Bṛhaspati 3,62,6. die Aṅgiras 10,78,5. — Kâṭhân. Up. 5,13,1. Çvetâçv. Up. 1,5. 3. Taitt. Up. 1,4,1. Harîv. 14114. Bhâg. P. 6,4,28. Mârk. P. 23,42. विश्वे देवाश्च यत्तस्मिन्विश्वरूपस्ततः स्मृतः (शिवः) MBh. 7,9621. 13,589. Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,8. — 2) m. *a*) Bez. *best. Kometen* Varâh. Bṛh. S. 11,23. — *b*) ein N. Vishṇu's (Kṛshṇa's) Taitt. 1,1,29. H. 215. Hall. 1,21. Verz. d. Oxf. H. 183,*b*, No. 418. 190,*b*,11. 9,*b*,11. 37,*a*, No. 89. — *c*) N. pr. α) eines Sohnes des Tvashṭar, welchem Indra die drei Köpfe abschlägt, TS. 2,5,1. 6,3,5,4. Çat. Br. 1,6,3,1. 2,3,2. 5, 5,4,2. 12,7,1,1. RV. 2,11,19. 10,8,9. Ait. Br. 7,28. Ind. St. 3,459. 464. MBh. 12,13208. fgg. VP. 121. Bhâg. P. 5,7,1. 8,6,42. 7,23. 24. fgg. Schüler der Açvin Çat. Br. 14,5,4,22. 7,3,23. — β) eines Asura MBh. 2,366. Harîv. 12697. — γ) verschiedener Manner, insbes. Gelehrter Mân. Anh. 4. Verz. d. B. H. No. 802. Verz. d. Oxf. H. 151,*a*, 28. 162,*b*,25. 188,*a*,23. 227,13. 253,*a*,15. 257,*b*,14. 336,*a*,26. Hall in der Einl. zu Vâsav. 12. Colebr. Misc. Ess. II, 434. Wilson, Sel. Works I,154. Kull. zu M. 2,189. 4,215. 5,68. विश्वरूपाचार्य Verz. d. B. H. No. 616. 1045. Verz. d. Oxf. H. 236,*a*,4. 270,*b*,43. Hall 110. 227. निबन्धं च विश्वरूपकृतम् Verz. d. B. H. No. 1170. °निबन्ध 468 (*b*, 161). Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,31. fg. — 3) f. या Bez. gewisser Verse (z. B. RV. 5,81, 2) Ait. Br. 1,29. Sâṅkh. Br. 1,4. Lâṭy. 1,8,5. 12. 16. — 4) f. ई N. einer der 7 Zungen des Feuers Mund. Up. 1,2,4.

विश्वरूपक n. *eine schwarze Art Aloeholz* Râjân. im ÇKDr. Ausg. 16.

विश्वरूपतीर्थ 1) n. N. pr. eines *heiligen Badeplatzes* Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,29. — 2) N. pr. und ehrender Bein. eines Gelehrten Hall 200. Verz. d. B. H. No. 648.

विश्वरूपवत् adj. *in allerlei Formen erscheinend* R. 7,23,1,28.

विश्वरूपिन् 1) adj. dass. Harîv. 9547. Mân. P. 42,2. — 2) f. रूपिणी N. pr. einer Gottheit Verz. d. Oxf. H. 19,*b*,3.

विश्वरेतस् m. (sic) *der Same des Alls*, Bez. Brahman's Taitt. 1,1,26. H. 212. Vishṇu's Pañcar. 4,3,38 (S. 250).

विश्वरोचन m. *Colocasia antiquorum Schott.* Taitt. 2,4,32.

विश्वलोचन n. = विश्वप्रकाश Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, No. 255. °कार 185,*b*,41. fg.

विश्वलोप m. TS. 3,3,8,2. — Vgl. वैश्वलोप.

विश्ववद m. wohl = Viçpered Verz. d. Oxf. H. 33,*b*,3. Weber, Lit. 144.

विश्ववनि adj. *allgewährend:* Soma TS. 2,4,8,2.

विश्ववस् adj. *das Wort* विश्व *enthaltend* Çat. Br. 7,5,2,12.

विश्ववयस m. N. pr. eines Mannes वम्वोविश्ववयसो TS. 5,6,8,4. वम्भावि° Kâṭh. 29,7. लम्बावि° gaṇa वनस्पत्यादि zu P. 6,2,140.

विश्ववह्, °वाह् adj. nom. °वाट्, acc. °वाहम्, instr. विश्वोह्य, f. विश्वोह्री P. 6,4,132, Schol. Vop. 3,102.

विश्ववाच् f. *Allrede*, Beiw. des Mahâpurusha Harîv. 14118.

विश्ववाहिन् scheinbar Harîv. 11253, wo aber mit der neueren Ausg. दृश्य वा° zu lesen ist.

विश्ववार 1) adj. (f. या) *alles Werthe —, alle Schätze enthaltend, — gebend* u. s. w.: ऋषि RV. 1,48,13. 3,36,10. द्रविण 6,5,1. दीधिति 3,4, 3. घृताची 5,28,1. निपुत: 6,22,11. 7,91,6. शाला AV. 9,3,1. 2. Agni, Ushas, Indra und Andere RV. 1,30,10. 113,19. 3,17,1. 7,3,3. 10,4. 70,1. 9,88,3. 97,26. 10,149,4. AV. 7,79,1. 12,3,11. VS. 7,14. 27,13. oxyt. Çat. Br. 1,5,2,2. — 2) f. या N. pr. einer Frau mit dem patron. Âtreji, Liedverfasserin von RV. 5,28.

विश्ववार्य adj. = विश्ववार RV. 8,19,11. 22,12.

विश्ववास m. *der Behälter* von *Allem* MBh. 6,2949 nach der Lesart der ed. Bomb. विश्रावास ed. Calc.

विश्वविख्यात adj. *in der ganzen Welt bekannt:* °कीर्ति Sarvadarçanas. 113,5.

विश्वविज्ञपिन् adj. *Alles bestegend:* Kâma, Vishṇu Pañcar. 4,3,152.

1. **विश्वविद्** adj. *allkundig, allmerkend, allwissend:* वाच् RV. 1,164, 10. कविं विश्वविदुमर्मृरम् 3,19,1. 29,7. क्षेतृ 5,4,5. 10,91,3. Soma 9,27,3. 28,1. 97,36. TS. 5,6,8,6. Çvetâçv. Up. 6,16. MBh. 1,7691. Kâṭhân. 48,6.

2. **विश्वविद्** adj. *allbesitzend:* Himmel und Erde RV. 6,70,6. समुद्र 8,86,29.

विश्वविदंस् adj. *allwissend* Verz. d. Oxf. H. 11,*b*,3 v. u.

विश्वविभावन n. *das Erschaffen des Alls* Bhâg. P. 4,8,20.

विश्वविश्रुत adj. *in der ganzen Welt berühmt* Kathâs. 37,3.

विश्वविश adj. etwa *Alles im All seiend*, unter den Beinamen Vishṇu's Pañcar. 4,3,41.

विश्वविसारिन् adj. *sich überallhin verbreitend:* तेजस् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Cl. 23.

विश्ववृक्ष m. *der Baum des Alls*, unter den Beinamen Vishṇu's Pañcar. 4,3,31.

विश्ववृत्ति f. *eine allgemeine Handlungsweise* Kusum. 4,21. 8,15.

विश्ववेद m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 609.

1. विश्ववेदस् adj. = 1. विश्वविद्. क्षेतस् RV. 1,36,3. 44,7. हूत 4, 8,1. Agni 1,143,4. 147,3. 2,23,1. Götter überh. 10,66,1. 5. 93,7. Varuṇa und die Âditja 5,67,3. 8,18,11. 27,24. 25,3. 42,1. 47,3. Pûshan 1,89,6. VS. 10,9. die Marut 5,60,7. AV. 2,3,1. 6,92,1.

2. विश्ववेदस् adj. = 2. विश्वविद् etwa RV. 1,139,3. VS. 3,28. 7,45. Bhâg. P. 8,3,26 (nach dem Comm.).

विश्ववेदिन् adj. *allwissend;* m. N. pr. eines Ministers Mâlav. P. 118,28. fgg.

विश्वव्यचस् adj. *Alles in sich fassend, — aufnehmend* RV. 2,46,4. VS. 5,32. 13,56. 15,17. 18,41. AV. 9,7,15. 12,3,19. 53. TS. 1,1,8,1. 4,4,42,5. TBa. 1,5,6,5. 2,4,8,7.

विश्वव्यापिन् adj. *das All erfüllend* Weber, Rîmây. Up. 328.

विश्वशंभु m. N. pr. eines Lexicographen Verz. d. B. H. No. 808. Verz. d. Oxf. H. 185,b,42. H. 226, Schol.

विश्वशंभू adj. *Allen zur Wohlfahrt dienend* RV. 1,23,10. 160,1. 4. 6, 70,6. 10,81,7. सार्प: VS. 4,7.

विश्वशर्धस् adj. *in ganzer Schaar, vollzählig* RV. 8,34,8.

विश्वशारद adj. *alljährlich* oder *ein ganzes Jahr dauernd* AV. 3,8,6. 19,34,10.

विश्वश्रुच् adj. *allstrahlend* RV. 7,13,1.

विश्वश्वन्द्र (विश्व + श्वा°) adj. (f. श्वा) *allblinkend, bunt, schillernd:* श्वार्प: RV. 1,168,8. 3,31,16. इर्य: 10,134,3. रयि 9,93,5. वार्ता: 8,70,9.

विश्वषडाज्ञानबल n. Bez. *einer der 10 Kräfte eines Buddha* Buddh. Trigl. 8,b. Burnouf in Lot. de la b. l. 784.

विश्वसंवनन n. *ein Mittel Alle zu bezaubern* Spr. (II) 2752.

विश्वसख m. *Jedermanns Freund* Râgat. 18,23.

विश्वसत्तम adj. *der allerbeste:* Kṛshṇa MBh. 14,1485.

विश्वसनीय (von श्वस् mit वि) adj. *Vertrauen verdienend, — erweckend:* स्त्रिय: Weber, Kâtjây. 266. der Liebesgott und der Mond Çiç. 32,5. श्वायुधं मन्यवस्य Mâlav. 37. n. impers.: नहि विश्वसनीयं स्यात्पण्डकं दासस्थिते ऽधमे *man darf nicht trauen* Spr. 1510. तस्य Pañkat. 105,1. Davon °ता f. *das Einflössen von Vertrauen:* श्वहो दोषिमतो ऽपि विश्वसनीयतास्य वपुष: Çiç. 27,17. °त्व n. dass.: श्वविश्वसनीयत्वात्सख्यास्ते Mâlav. 52,17. — Vgl. विश्वसितव्य, विश्वास्य.

विश्वसंभव adj. *aus dem Alles entspringt:* महापुरुष Hariv. 14119. fg.

विश्वसह 1) m. N. pr. eines Sohnes des Dhjushitâçva (Abhjutthitâçva) Râgat. 18,22. VP. 386. des Havila (Aidavida) 383. Bhâg. P. 9,9,41. — 2) f. श्वा N. einer der 7 Zungen des Feuers Gâtjan. im ÇKDa.: vgl. विश्वरूपी und विश्वरुची.

विश्वसहाय adj. *im Verein mit (nebst) den* Viçve Devâḥ Hariv. 12614.

विश्वसात्तिन् adj. *Augenzeuge von Allem, allsehend* Pras. 113,7. 8.

विश्वसामन् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âtreja, Liedverfassers von RV. 5,22,1. eine Personification VS. 18,39.

विश्वसार 1) m. N. pr. eines Sohnes des Kshatraugâs Verz. d. Cambr. H. 7. v. l. विम्बिसार u. s. w. — 2) n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 93,b,18. 101,b,21. 104,a,23. Verz. d. B. H. No. 1335.

विश्वसारक n. *Cactus indicus* Roxb. (विदर) Çabdak. im ÇKDa.

विश्वसाह m. N. pr. eines Sohnes des Mahasvant Bhâg. P. 9,12,7. °साह्न् ed. Burn.

विश्वसिंह m. N. pr. eines Fürsten LIA. II,784.

विश्वसितव्य (von श्वस् mit वि) n. impers. *zu trauen:* तस्माद्विश्वसितव्यं च शङ्कितव्यं च केषुचित् MBh. 12,2994. 2272. Pras. 34,2. — Vgl. विश्वसनीय, विश्वास्य.

विश्वसुर्विद् adj. nach dem Comm. *Alles wohl verschaffend* RV. 1,48,2.

विश्वसृज् adj. *allgebärend* AV. 12,1,17.

विश्वसूत्रधृक् m. *der Baumeister des Weltalls:* Vishṇu Pañkar. 4,3,27.

विस्वसृज् (nom. °सृग्; °सृड् H. 212, Sch. °सृट् यत्र MBh. 7,1464 fehlerhaft für °सृग्यत्र, wie die ed. Bomb. liest) adj. *allschaffend,* m. *Schöpfer des Alls:* Bez. nicht näher bestimmter schöpferischer Wesen AV. 11,7,4. TBa. 3,12,9,2. Pañkav. Br. 25,18,1. fgg. प्रजापते विश्वसृजो वर्धन्य: (I) TBa. 2,8,8,4. Âçv. Çr. 2,14,12. Maitrâjaṇ. 6,8. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,86. M. 12,50. MBh. 7,1464. 14,1425. 1437. Ragh. 10,16. Kumâras. 1,50. 3,28. Çiç. 9,80. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 115. Bhâg. P. 1,3,2. 2,1,26. 9,17. 3,4,11. 5,9. 6,5. 7. 10. 10,27. 11,22. 18,3. 24,21. 4,2,34. 24,72. 6,3,15. 8,1,1. 3,26. 13,23. fg. 10,84,16. 85,6. 12,4,4. Pañkar. 2,2,95. विश्वसृज्ञामयनम् *eine best. Feier* Âçv. Çr. 12,5,19. Kâty. Çr. 14,5,25. Çâṅkh. Çr. 13,28,8. 14,72,1. Maçaka 11,10 in Verz. d. B. H. 74. °सृत् m. = ब्रह्मन् AK. 1,1,6,12. H. 212, Schol.

विश्वसृष्टि f. *die Schöpfung des Alls* Manu. P. 99,14.

विश्वसेन m. 1) N. des 18ten Muhûrta Ind. St. 10,296. — 2) N. pr. eines Lehrers Wilson, Sel. Works 1,338, N.

विश्वसेनराज् m. N. pr. des Vaters des 16ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 37.

विश्वसौभग adj. *alles Glück bringend:* Pûshan RV. 1,42,6. der Wagen der Açvin 157,3.

विश्वस्त 1) adj. s. u. श्वस् mit वि. — 2) f. श्वा *Wittwe* AK. 2,6,2,11. Trik. 2,6,5. 3,3,133. H. 530. an. 3,301. Med. t. 155. Halây. 2,232.

विश्वस्था f. 1) *Asparagus racemosus Willd. (sich überall findend)* Râgân. im ÇKDa. — 2) schlechte v. l. für विश्वस्ता *Wittwe* Colebr. und Lois. zu AK. 2,6,2,11.

विश्वस्पृश् adj. unter den Beinamen des Mahâpurusha Hariv. 14120. दिवस्पृश् die neuere Ausg.

विश्वस्फटिक m. N. pr. eines Fürsten von Magadhâ VP. 479.

विश्वस्फाटि, विश्वस्फाणि und विश्वस्फार्णि Varianten von विश्वस्फटिक VP. (II) 4,217.

विश्वस्फूर्जि m. = विश्वस्फटिक Bhâg. P. 12,1,34. °स्फूर्ति v. l. VP. (II) 4,217.

विश्वस्रुच् und विश्वस्रुका adv. *allezeit, immerdar* RV. 1,111,2. 160,5. 2, 12,15. 24,15. 35,14. 4,31,12. 5,1,3. 47,15. 7,21,2. दक्षत्वतीमि विश्वस्रुका 8,43,26. 44,22. 48,14. 10,91,6. इन्द्रो यस्मे सुमना यस्तु विश्वस्रुका 100,4. AV. 9,2,19. 12,1,17. 27. 19,30,2. — Vgl. विश्वघ, विश्वाहा.

विश्वहर्तृ m. *Zerstörer des Weltalls:* Çiva Çiv.

विश्वहेतु m. *die Ursache von Allem:* Vishṇu Pañkar. 4,3,122.

विश्वात adj. *überall Augen habend:* महापुरुष Hariv. 14119.

विश्वाङ्ग adj. *mit allen Gliedern versehen, vollständig:* विश्वैर्विश्वाङ्गै: सह सं भवेम AV. 12,3,10. विश्वाङ्गं त्वं युवतिर्बिभर्षि 19,49,3.

विश्वाङ्ग adj. *in allen Gliedern befindlich* AV. 9,8,4.

विश्वाची (विश्व + अञ्च्) Kāç. zu P. 6,3,92. 93, Vârtt. 3, Schol. 1) adj. f. etwa *allgemein:* घा विश्वाची विदथ्यामनक्तु ṚV. 7,43,3. विश्वाच्या धिया 9,101,3. स विश्वाचीरभि पष्टे घृताचीः 10,139,2. — 2) subst. f. *a)* eine Personification (nach der letzten Stelle) VS. 15,18. N. einer Apsaras Vaiji beim Schol. zu H. 183. MBh. 1,2035. 3172. 4321. 2,893. Harîv. 1636. 12475. R. 2,91,17. Brahma P. in LA. (III) 50,18. Mârk. P. 106,39. Vâyu-P. im ÇKDa. — *b)* *eine best. Krankheit: Lähmung der Arme und des Rückens* Suçr. 1,250,9. 359,6. 360,19. Çârṅg. Saṃh. 1, 7,70. 2,43,18. — Vgl. विधाच.

विश्वाजिन् (विश्व + अ°) m. N. pr. P. 6,2,106, Vârtt. 1.

विश्वातीत adj. *über Alles erhaben* Verz. d. Oxf. H. 196, *a*, No. 455.

विश्वात्मक adj. *das Wesen der Welt bildend* Pañc. 117,2.

विश्वात्मन् m. *die Allseele* Maitrâyaṇ. 3,1.6,6. MBh. 12,11232. 14, 1485. Kumâras. 6,1.38. Vaṃç. Bṛh. S. 1,1. Bhâg. P. 1,2,32. 8,20.41. 3,3,19. 4,6,3.7,38. 14,19. 20,19. 3,3,26. 5,16,37. Weber, Râmat. Up. 319. oft Vishṇu so genannt, daher als N. Vishṇu's aufgeführt Verz. d. Oxf. H. 185, *a*, 3. — विश्वात्मनस् so v. a. *dem ganzen Wesen nach, vollständig* (kennen) Harîv. 11293 nach der Lesart der neueren Ausg.

विश्वादृ (विश्व + 2. दृ) adj. *Alles aufsehend:* Agni ṚV. 8,44,26. 10,16,6. AV. 3,21,1. Çat. Br. 12,3,4,14.

विश्वादर्श (विश्व + आ°) m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1032. 1264.

विश्वाधायस् m. *ein Gott* ÇKDa. nach Sidon. K. — Vgl. विश्वधायस्.

विश्वाधार (विश्व + आ°) m. *die Stütze des Alls* Pañcar. 2,5,44. Weber, Râmat. Up. 330.

विश्वाधिप m. *der Herr des Alls* Çvetâç. Up. 3,4.

विश्वानर (विश्व + नर) VS. Pair. 3,92. 101. 5,37. AV. Pair. 3,9. P. 6,3,129. 1) adj. *auf alle Männer (Menschen) bezüglich, alle Männer umfassend, bei allen Menschen vorhanden* u. s. w. (vgl. विश्वकृष्टि) Naigh. 5,3.6. Nir. 7,21.23. 11,9. 12,20. Savitar ṚV. 1,186,1. 7,76,1. Indra 10,50,1. विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः 8,57,4. — 2) m. N. pr. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. मद्रादि zu 110. als Gottheit Ind. St. 3, 237, *a*. Vater des Agni Verz. d. Oxf. H. 69, *a*, 36. fg. ein neuerer Autor, = वल्लभाचार्य Hall 147. — Vgl. वैश्वानर.

विश्वानर m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 113,9. — Vgl. विश्वंतर.

विश्वापुस् (विश्व + पुस्) adj. VS. Pair. 3,100. *allgemeines Gedeihen schaffend:* रयि ṚV. 1,162,22.

विश्वाप्सु (विश्वऽप्सु Padap.) adj. ṚV. 1,148,1 nach dem Comm. so v. a. नानारूप, wohl = विश्वप्सु.

विश्वाभू (विश्व + 2. भू) adj. VS. Pair. 3,100. *in Allem —, allenthalben seiend* ṚV. 10,50,1.

विश्वामित्र (विश्व + मित्र) 1) m. VS. Pair. 3,101. 5,37. AV. Pair. 3,9. P. 6,3,130. 2,106, Vârtt. 1. 165, Vârtt. N. pr. eines berühmten Ṛshi, mit dem patron. Gâthina (Gâdhoja), öfters zusammen mit Ǵamadagni genannt, Hauptverfasser von ṚV. 3. Nir. 2, 24. Taitt. 2,7,20. H. 850. ṚV. 3,53,7. 12. 10,167,4. AV. 4,29,5. 18, 3,13. fg. Ait. Br. 6,13. 20. 7,16. fg. Çat. Br. 14,5,2,6. TS. 2,1,2,2. 5,2,8,4. Pañcav. Br. 14,3,12. Çâṅkh. Ça. 15,21,1. Âçv. Gṛhy. 3,4,2. तुर्यात्साप्तमभ्यागाद्विश्वामित्रः सत्राघनीम् । चण्डालकुस्तादादाय धर्माधर्मविचक्षणः ॥ M. 10,108. VP. 371. °प्रभृतयः प्राप्ता ब्रह्मत्वमव्ययम् MBh. 1,5432. 5,2907. fgg. 9,2296. fgg. 13,246. fgg. Harîv. 440. 725. fgg. 1457. fgg. 1766. fgg. 14148. R. 1,20,2. fgg. Spr. 2853. VP. 261. 400. 404. fg. Râǵa-Tar. 4,646. sein Zwist mit Vasishṭha MBh. 1,6710. fgg. 9, 2365. fgg. R. 1,51. fgg. VP. 373, N. 9. Verfasser eines Gesetzbuchs Ind. St. 1,22. 233. fg. 467. Verz. d. B. H. No. 1017. Verz. d. Oxf. H. 286, *b*, 20. 288, *b*, 40. 270, *b*, 44. 279, *a*, 52. Kull. zu M. 3,234. des Dhanurveda Ind. St. 1,21. °कल्प 470. ein medicinischer Autor Verz. d. Oxf. H. 311, *b*, 39. Schullehrer (दारकाचार्य) Lalit. ed. Calc. 142. 4. fgg. Gâhnava Pañcav. Br. 21,12,2. विश्वामित्रस्य संज्ञपः 1. dafür auch kurzweg विश्वामित्र m. N. eines Kâturaha Kâṭy. Çr. 23,2,14. auch = विश्वामित्रस्यानुवाकः Pat. zu P. 4,3,133. विश्वामित्रस्याब्देोकम् und विश्वामित्रस्यार्धः Namen von Sâman Ind. St. 3,237, *a*. pl. Viçvâmitra's *Geschlecht* ṚV. 3,1,21. 18,4. 53,12. 10,89,17. AV. 18,3,6. 4,34. Praváṇas. in Verz. d. B. H. 56,24. fgg. Etymologie des Namens MBh. 13, 4493. Mârk. P. 8,234. fg. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 6,334 (VP. 183); vgl. विश्वामित्रनदी 3,8362. — Vgl. वैश्वामित्र.

विश्वामित्रनदी f. N. pr. eines Flusses; vgl. विश्वामित्र 2).

विश्वामित्रप्रिय 1) adj. Viçvâmitra *lieb.* — 2) m. *a)* *der Kokosnussbaum* Çabdar. im ÇKDa. (sollte नारिकेल etwa aus कार्तिकेय verdorben sein?). — *b)* Viçvâmitra's *Freund*, Bein. Kârttikeja's MBh. 3,14635.

विश्वामृत adj. etwa *für allezeit unsterblich* Maitrâyaṇ. 6,9. = विश्वममृतयसि जीवयसि Comm.

विश्वायन adj. *überall hindringend, allwissend:* ब्रह्मन् Harîv. 11293. विश्वात्मनः die neuere Ausg., welches Nîlak. durch साकल्यात् *vollständig, ganz* erklärt.

विश्वायु (विश्व + आयु) 1) adj. so v. a. विश्वकृष्टि. Agni ṚV. 1,27,3. 67,6. 10. 68,3. 128,3. 6,4,3. Varuṇa 4,42,1. Indra 1,9,7. 6,17,9. 8, 2,4. 10,104,9. Soma 9,86,41. Pûshan 10,17,4. राधस् 1,57,1. 5,53, 13. मही 1,129,4. 6,33,4. सवितृ 34,5. तत्र 7,34,11. रयि 9,4,10. — 1,73,4. 3,31,13. 10,144,1. VS. 1,4. 22. 18,54. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Purûravas von der Urvaçî Harîv. 1373. 1414. zu den Viçve Devâḥ gezählt (wie Purûravas) MBh. 13,4259. Es könnte auch विश्वायुस् angenommen werden. — 3) n. *alle Leute:* मरुो दुरो घर्मं विश्वायु धायि ṚV. 4,28,2. 6,20,5. मुहुः परि प्रदक्षिणिद्विश्वायवे नि शिश्रयः 10,22,14. möglicher Weise auch 4,42,1; s. u. 1).

विश्वायुपोषम् adj. *allen Menschen Gedeihen schaffend:* रयि ṚV. 1,79, 2. 6,59,2.

विश्वायुवेषस् adj. *alle Leute erregend, — erschreckend* ṚV. 8,43,25.

विश्वायुस् (विश्व + आ°) n. in einer Formel *Gesammtleben, Gesammtgesundheit* TS. 4,4,2,2. Çâṅkh. Çr. 17,12,6. 11,5.

विश्वाराज् (विश्व + राज्) adj. (vor vocalisch anfangenden Casusendungen विश्वराज्) P. 6,3,128. Vop. 3,128. *allherrschend* TS. 1,3,2,1.

विश्वावसु m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,618. 622. 630.

विश्वावत् (von विश्व) adj. etwa *allgemein* in einer Formel TS. 3,5, 6,2. Beiw. der Gaṅgâ MBh. 13,1849. nach Nîlak. = विश्वमवत्ती पा-

लयत्ती.

विश्रावसु (विश्र + वसु) VS. Pair. 3,100. AV. Pair. 3,9. P. 6,3,128. 1) adj. *Allen wohlthuend:* Vishṇu MBh. 6, 2944. — 2) m. N. pr. a) eines Gandharva (Devagandharva) H. 289. Schol. zu 183. an. 4, 332. fg. ṚV. 10,63,21. fg. 139,4. 5. AV. 2,2,4. 14,2,35. VS. 2,3. TS. 6, 1,6,5. 22,5. Çat. Br. 3,2,4,2. 14,9,4,18. Pañcav. Br. 6,9,23. Âçv. Gṛhj. Paris. 1,25. Liedverfasser von ṚV. 10,139. — MBh. 1,943. 2555. 4814. 6478. 7011. 3,1773. 8389. 11080 (S. 572). 12048. 15036. 13,1080. Harîv. 11248. 12474. R. 2,91,16 (100,14 Gorr.). Kumâras. 7,43. Bhâg. P. 3,20,39. 22,17. 4,18,17. 7,4,14. 8,11,41. Mârk. P. 21,28. Verz. d. B. H. No. 1030. Verz. d. Oxf. H. 150, *a*, No. 319. 251, *a*, 44. — *b*) eines Sâdhja Harîv. 11536. — *c*) eines Marutvant Harîv. 11546. — *d*) eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Harîv. 11543. eines Sohnes des Purûravas (gehört zu den Viçve Devâḥ) VP. 398; vgl. विश्वायु. — *e*) eines Fürsten der Siddha Kathâs. 22,47. 167. 48,69. 90, 39. 50. Nigln. 23,16. — *f*) eines Manu Uéévar. zu Unâdis. 1,11. — *g*) eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 150, *b*, No. 320. — 3) m. N. *des 39ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,41. Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 2. — 4) f. *Nacht* H. an. — Vgl. वैश्रावसव्य.

विश्रावास (विश्र + घा°) m. *der Behälter von Allem* MBh. 6, 2949 (विश्ववास ed. Bomb.). Mârk. P. 23,42.

विश्राम (von श्रम् mit वि) m. *Vertrauen* AK. 2,8,1,28. 3,4,24,149. H. 1518. Hall. 4,34. 5,62. विश्रामः संपदां मूलम् Spr. 2857. विश्रामात्कथितम् R. 2,75,27. R. Gorr. 2,38,47. 3,66,2. °परम 5,34,21. Vikr. 71,13. नैतद्विश्रामकारणम् Spr. (II) 404. विश्रामोक्तिकतधी (I) 2858. विश्रामाय विहंगानाम् (subj.) Ragh. 1,51. किं तु मे नास्ति विश्रामस्तव चित्तमजानतः Kathâs. 33,122. पश्यसि मयि विश्रामः *zu mir* R. Gorr. 2,90, 30. Spr. (II) 900. (I) 1039. विश्रामं स्त्रीषु वर्जयेत् 1353. 2191. 5024. Kathâs. 20,3. Hit. 10,18. गुरुवेदान्तवाक्येषु Vedântas. (Allah.) No. 12. statt des loc. auch gen.: प्राणानामपि विश्रामो मम न स्यात् R. 5,53,6. तिरश्चाम् Spr. 1032. अन्योऽन्यस्य 5105. यागसुना सह Hit. 18,2. प्रमदाजन° Spr. (II) 316. विश्रामं तावदुत्पादयामि Hit. 17,16. 18,16. °प्रतिपन्न Spr. 2933. न जातु गच्छेद्विश्रामम् 1378. गन्तव्यो न तु विश्रामः R. 3,1,33. विश्राममागत्य 52,49. विश्रामोपगम Çiç. 14. यस्मिन्विश्राममायाति Spr. 5023. तस्य विश्रामं गत्वा Pañcat. 22,10. वैद्ये विश्राममेति Sucr. 1,95,19. विश्रामं स्त्रीषु न व्रजेत् Kâm. Nîtis. 7,30. बृहस्पतेरपि प्राज्ञो न विश्रामं व्रजेन्नरः Spr. 1986. यत्र मात्मके विश्रामः कृतः Hit. 12,10. यस्य वयसि त्वया विश्रामः कृतः 41,17. नखिनां च नदीनां च शृङ्गिणां शस्त्रपाणिनाम् । विश्रामो नैव कर्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ Spr. 1362. एकासतो न विश्रामः कार्यो विश्रामघातकैः (st. loc.) MBh. 12,5160. विदेशगमने चास्य सैव (भार्या) विश्रामकारिका *Vertrauen einflössend* Spr. 4239. उपजातविश्रामा Hit. 86,7. °पात्र 88,12. Verz. d. Oxf. H. 154, *a*, 14. विश्रामैकभू Kusum. 24,20. °घात *Missbrauch des Vertrauens, Verrath* Weber, Râmây. Up. 336 (zu lesen °घातजम् st. °घातनम्). °घातिन् *Verräther* R. Gorr. 2,79,17. Kathâs. 88,24. Pañcat. 1,6,45. 10,77. °घातक MBh. 12,5160. Spr. 1803. 2199. 2854. °कृत्तम् Mârk. P. 15,7. °कर्तृ MBh. 13,5466. राज्ञ° *ein vom König anvertrautes Geheimniss* Hit. 73,16. अ° (s. auch bes.) *Misstrauen* Spr. 1987. Daçak. 186,2. सर्वेषां कृतवैरा-णामविश्रामः मुखेदृशः MBh. 12,5160. अन्यस्मिन् Kusum. 21,10. मा कृथा मय्यविश्रामम् Kathâs. 73,265.

विश्रामदेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Verz. d. Oxf. H. 292, *b*, No. 708. Verz. d. B. H. No. 1403.

विश्रामन (vom caus. von श्रम् mit वि) n. *das Erwecken von Vertrauen:* तपोविश्रामनार्थम् *um bei ihnen Vertrauen zu erwecken* Pañcat. 165,15.

विश्रामस्थान n. *Bürgschaft:* °स्थाने चतुरः शशकानत्र धृत्वा Pañcat. 55,21.

विश्रावंकु, °वाकु (विश्र + वकु, वाकु) adj. VS. Pair. 3,100. 121. adj. *allüberwindend* ṚV. 3,47,5. 8,81,1. AV. 12,1,54. 13,1,28. TS. 4,4,6,1.

विश्रासिक (von विश्रासिन्) adj. *Andes Vertrauen besitzend:* मह्यं मे कश्चिदन्यो ऽस्ति विश्रासिकतरस्त्वया MBh. 1,3718.

विश्रासिन् (von श्रम् mit वि und von विश्राम) adj. 1) *vertrauend, Vertrauen habend* Kathâs. 60,88. अ° *misstrauisch* Spr. 1987. मयि Mucn. 111. — 2) *Vertrauen besitzend, zuverlässig* Kâm. Nîtis. 15,42.

विश्रास्य adj. 1) *worauf* oder *auf wen man sich verlassen kann, Vertrauen verdienend, — einflössend:* यद्भमेव हि ते कृत्ते (voc.) विश्रास्यः सर्वकर्मसु MBh. 4,521. राजा भवति भूतानां विश्रास्यो हिमवानिव 12,2075. 14,1299. सर्वजनेषु 13,5606. 5623. अमात्य R. 2,70,21. जनश्री Kathâs. 52,275. Daçak. 183,13. अ° MBh. 12,5552. Spr. 5158. Kathâs. 37,2. 62,46. 102,126. — 2) *dem man Muth zusprechen kann, Trost findend* Spr. (II) 1629.

विश्रोक्ष adv. = विश्रुक्ष VS. Pair. 3,101. 5,27. ṚV. 1,25,12. व्रता रक्षते वि° 90,3. 100,19. 160,3. 3,16,3. 4,42,10. 8,47,19. 73,8. 17. विश्रोकेदेति सूर्यः 10,37,3. 7. 53,11. AV. 3,15,8. 18,3,24.

विश्वेदेव 1) m. pl. die Viçve Devâḥ: विश्वेदेवानाम् Devala bei Kull. zu M. 3,208. विश्वेदेवैस् Bhâg. P. 6,7,3. 10,17. विश्वेदेवेभ्यस् Mârk. P. 29,17. विश्वेदेवेदेवा बुद्धिनिराशः (?) Verz. d. Oxf. H. 79, *a*, 2. — 2) adj. comp. संज्ञायाम् P. 5,4,155, Schol. als Beiw. Mahâpurusha's Harîv. 14115. 14119 nach der Lesart der neueren Ausg. (विश्वदेव die ältere). — 3) m. N. pr. eines Asura: विश्वेदेवेन विश्वेशः सङ्गयुध्यत Harîv. 13190 (nach der Lesart der neueren Ausg.).

विश्वेदेवृ m. *Historis* Çârdûlakarn. bei Wilson.

विश्वेभोजस् Unâdis. 4,237. m. als N. Indra's Uéévar. Nach dem Sûtra könnte man eben so gut विश्वभोजस् bilden, welches wirklich vorkommt.

विश्वेवेदस् Unâdis. 4,237. m. als N. Agni's Uéévar. Nach dem Sûtra könnte man eben so gut विश्ववेदस् bilden, welches belegbar ist.

1. विश्वेश (विश्व + ईश) 1) m. *a*) *der Herr des Weltalls* (Beiw. und Bein. Brahman's, Vishṇu's und Çiva's) Harîv. 13190 (nach der Lesart der neueren Ausg.). MBh. 6, 2944. R. Gorr. 1,67,16. Weber, Râmây. Up. 332. Kathâs. 11,32. 39,139. 47,46. Verz. d. Oxf. H. 160, *b*, 4. Bhâg. P. 1,8,41. Var. 25,32. Mârk. P. 23,42. 42,2. — *b*) N. pr. eines Mannes Hall 97. — 2) f. आ N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's VP. 119, N. 12. — 3) m. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 64, *a*, 5. °लिङ्ग 72, *a*, 14.

2. विश्वेश (wie eben) adj. *die* Viçve Devâḥ *zur Gottheit habend;* n. *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ Varâh. Bṛh. S. 9,33.

विश्वेशितृ (विश्व + ईश°) m. *der Herr des Weltalls* Spr. 1550.

1. विश्वेश्वर (विश्व + ईश°) 1) m. *a*) *der Herr des Weltalls,* = विश्वेश

Maitrâyaṇ. 3,1. MBh. 6,2944. 13,772. Weber, Rîmây. Up. 332. Râgat. 18, 23. Prân. 70,1. Bhâg. P. 2,2,14. 3,14,40. 6,8,20. 9,4,39. Weber, Kṛshṇaj. 289. 293. Sarvadarçanas. 96, 21. 97, 6. Verz. d. B. H. 147, b (98). °लिङ्ग ebend. (99). — b) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 133, b, 25. 226, b, No. 535. 228, a, 36. 262, b, No. 633. 274, b, No. 651. fg. 277, a, 3. Verz. d. B. H. No. 1403. Hall 6. 70. 162. 125. विश्वेश्वराश्रम 28. °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 380, a, No. 401. °पण्डित Hall 106. °पूज्यपाद 97. °भट्ट Verz. d. Oxf. H. 292, b, 15. °मिश्र 133, a, No. 244. °सरस्वती 543, c. Verz. d. B. H. No. 626. Ind. St. 1, 1. Hall 108. 119. 156. fg. = विश्वेश्वरानन्दसरस्वती 119. 145. Colebr. Misc. Ess. I, 337. — 2) f. ई a) *die Herrin des Weltalls* Verz. d. Oxf. H. 80, b, 31. — b) *eine best. Pflanze* Varâh. Bṛh. S. 48, 39. — 3) wohl n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39, a, 36. b, 27. — Vgl. भट्ट°.

2. विश्वेश्वर (wie eben) = 2. विश्वेश Varâh. Bṛh. S. 10, 15. 15, 19.

विश्वेश्वरदत्त m. N. pr. eines Mannes: °मिश्र Hall 2. 12.

विश्वेश्वरस्थान n. N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 13, 7649.

विश्वैकसार (विश्व - एक - सार) n. N. pr. eines heiligen Gebietes Râja-Tar. 5, 44.

विश्वौजस् (विश्व + ओ°) adj. *allkräftig* ṚV. 10, 55, 8. Çâṅkh. Çr. 16, 18, 4.

विश्वौषध (विश्व + ओ°) n. *Panacee d. i. trockner Ingwer* Râgân. im ÇKDr. Ausn. 21.

विश्वौस्री s. विश्वस्रु.

विश्व्या (von विश्व) adv. *irgendwo* ṚV. 2, 42, 1. = सर्वतस् Nir. 9, 4.

1. विष्, वेवेष्टि, वेविष्टे (व्याप्तौ) Dhâtup. 23, 13. P. 7, 4, 75. अवेवेट्, अवेविष्ट, वेविष्यात्, वेविषीत P., Schol. im Veda und in den Brâhmaṇa: विवेष्टि, विविष्मस्, अविवेस्, विवेत्, अविवेषीस्, विवेषम्, वेवेष्टि, वेविषति, वेविषाणा, वेविषत्; पर्यवेषत् episch; अविषत् und अवित्त Vop. 8, 38. 10, 9. विवेष, विविषुस्; वेत्यति (vgl. Kâr. 6 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10) P. 8, 2, 61, Schol. विष्टी; partic. विष्ट. 1) *wirken, thätig sein; zu Stande bringen, ausrichten, thun:* समो चिदस्तो न समं विविष्टः ṚV. 10, 117, 9. अस्मै वयं यदावान तद्विविष्मः 6, 23, 5. अविवेत् रपांसि 31, 3. 1, 69, 3. अर्यो दिवे दिवे विविषुरप्रमृष्यम् 6, 32, 5. अपांसि नर्याविवेषीः 4, 19, 10. तद्विविष्टि पत्न इन्दो जुनोषत् 9, 85, 12. 1, 27, 10. विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु 3, 30, 6. याभिर्विवेषो धीभिः 7, 37, 5. वेवेष्टि यज्ञम् Çat. Br. 1, 1, 2, 1. यस्ये कृत्या वेविषद्विषः ṚV. 8, 19, 11. ब्रह्मचारी चरति वेविषद्विषः 10, 109, 5. इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा अपो न मृष्टा अधवन्त नीचीः etwa so v. a. *unterstützt* von Indra 7, 18, 15. — 2) *dienend thätig sein* oder *ausführen, dienen:* तावत इन्द्र मतिभिर्विविष्मः ṚV. 6, 23, 6. यो भूर्यिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष 5, 77, 4. अन्यस्येवित् तन्वा विवेष 2, 35, 13. विष्टी शमीभिः सुकृतः सुकृत्यया 3, 60, 3. 1, 110, 4. 10, 94, 2. — 3) *fertig bringen* so v. a. *bewältigen, in die Gewalt bekommen:* नव यत्पुरो नवतिं च सद्यः । निवेशने शतत्मामविवेषीः *dass du 99 Festen an einem Tage, am Abend die hundertste gewannst* ṚV. 7, 19, 3. 21, 4. अहिं वज्रेण 4, 22, 3. यो अस्य पारे (du.) रजसो विवेष *beherrscht* 10, 27, 7. विवेष यन्मा धिषणा 3, 32, 14. अकृन्यहत्रं नर्यं विवेषाः 10, 147, 1. 76, 3. — 4) eine Speise *fertig bringen* so v. a. *aufzehren* Naigh. 2, 8. यन्ना वेविषत् ṚV. 10, 91, 7. न उद्वतो निवतो याति वेविषत् Agni 3, 2, 10. AV. 2, 12, 8.

— caus. *bekleiden:* ते वेषयित्वा स्त्रीविषेः साम्बम् Bhâg. P. 10, 1, 14.

— घा, hierher gehört घावेशन 3), welches demnach घावेषण zu schreiben wäre.

— उप *besorgen, bedienen:* उपविषेयंविष्टि नः TBr. 3, 3, 11, 1. Çat. Br. 1, 2, 2, 3. Unbestimmt lassen wir ṚV. 10, 61, 12. — Vgl. उपवेष.

— नि s. निवेष्य.

— निस्, निर्विषन् unter परिविषा fehlerhaft für निर्विशन्.

— परि, °वेविषाणि, °अवेविषम् P. 7, 3, 87, Schol. 1) *bedienen, aufwarten,* namentlich *Jmd* (acc.) *Speisen auftragen; Speisen zurüsten, anrichten:* दासा परिविषे (infin.) ṚV. 10, 62, 10. इमां देवता परि वेवेष्मीत्येनं परि वेविष्यात् AV. 15, 13, 3. 9, 6, 53. यदिति परिवेविषति Âçv. Br. 1, 17. TBr. 2, 1, 3, 9. कनीयो ज्यायांसं परिवेवेष्टि Kâṭh. 36, 7. पात्रैर्निर्णिज्य परिवेविषति Çat. Br. 1, 3, 1, 3. 5, 1, 26. 9, 2, 2, 3. 3, 41. Pâraṡ. Br. 15, 7, 3. पर्यवेषन्दिव्जातीस्तान् MBh. 14, 2551. 3, 3619. अवेद्व्रतचारित्रास्त्रिभिर्वर्णैः — मन्त्रवत्परिविष्यन्ते 13, 1618. fgg. (die ed. Bomb. an allen drei Stellen richtig प). परिविष्यमाण so v. a. *beim Essen seiend* Kâṭhân. Up. 4, 3, 5. अधो यद्या प्रार्थमेषुसं परिवेवेष्टि TBr. 2, 1, 2, 12. मन्त्रहीनं क्रियाहीनं पड्भाङ्गं परिविष्यते (so ed. Bomb.) MBh. 13, 1880. fg. अर्धमिङ्गं परिविष्यमाणाम् (lies परिविष्य°) Mârk. P. 51, 33. परिवेद्यमाणां विलोकाभ्यम् Bhâg. P. 3, 9, 23. अन्नं परिविष्टं परिवेद्यमाणं च Kâṭy. Çr. Comm. 364, 17. पक्वं परिविष्टमपो AV. 8, 122, 3. दृष्ट्वा निष्क्रा परिविष्टमादित् ṚV. 10, 68, 6. — 2) pass. *einen Hof bekommen* oder *haben* (von Sonne und Mond): परिविष्यते Sâṅkhây. Br. 3, 10. Hariv. 12792 (सततं परिविष्यते die ältere, अभीक्ष्णं परितप्यते die neuere Ausg.). आदित्ये परिविष्यमाणे Gobh. 4, 5, 25. परिविष्ट *mit einem Hofe versehen* MBh. 13, 952. fg. Varâh. Bṛh. S. 34, 9. 15. — caus. *Jmd* (acc.) *Speisen auftragen* M. 3, 228. MBh. 1, 7183 (परिवेष्य ed. Bomb. st. परिवेश्य der ed. Calc.). R. 1, 13, 19 (पर्यवेशयन् 16 Gorr.). R. Gorr. 2, 36, 31 (fälschlich °वेश्य). Bhâg. P. 10, 29, 6. — Vgl. परिविष्टि, परिवेष fgg. und परिवेष्टर् fg.

— प्र desid. s. प्रवीवित्सु in den Nachträgen.

— सम् 1) *zubereiten, beschaffen:* अधो संविविषो रयिम् ṚV. 8, 64, 11. — 2) *kleiden:* पिशाचवेषेण संविष्टः Hariv. 14633.

2. विष् (= 1. विष् 1) adj. *aufzehrend* in शरद्विष् *Dürres aufzehrend.* — 2) f. = व्यापन Man. sh. 24.

3. विष् (nom. विट्) f. Siddh. K. 247, b, 2 v. u. *faeces* AK. 2, 6, 2, 19. 3, 4, 20, 199. H. 634. Man. sh. 24. Halâj. 3, 15. Sûçr. 1, 107, 18. 2, 100, 1. विण्मूत्र (s. auch bes.) 1, 45, 15. 49, 21. Jâṭ. 1, 152. Bhâg. P. 5, 26, 22. 6, 18, 24. 7, 14, 13. मूत्रविट् M. 5, 135. विण्मध्ये Varâh. Bṛh. 25 (23), 8. Verz. d. B. H. No. 929, Çl. 42 (fälschlich विशि). — Vgl. विट्, विट्टारिका, विट्टुदिर, विट्टुर, विट्टूल, विट्टृङ्ग, विट्टारिका, विट्टारी, विट्तन्ध, विट्तृट्, विट्पात, विट्ट, विट्तन्ध, विडङ्ग, विडभुज् (auch Bhâg. P. 5, 5, 1), विडोद, विडोदन्, विडोभिन्, विट्यवण, विट्वराट् (auch Bhâg. P. 2, 3, 19), विण्मूत्र, कर्ण°, गो°, धातु°, नेत्र°, वह्न° und विष्ठा.

4. विष्, वैषति (सेचने) Dhâtup. 17, 47.

5. विष्, विष्णाति (विप्रयोगे) Dhâtup. 31, 54.

1. विष (von 1. विष्) m. 1) *Diener, Aufwärter, Besorger* ṚV. 8, 19, 11. 10, 109, 5. — 2) N. pr. eines Sâdhja Hariv. 11337 (n. A.).

2. विषे (wie eben; eig. *wirksam, bewältigend*) 1) n. Taik. 3, 5, 7. m. n. Siddh. K. 240, b, 6. zu belegen nur n. a) *Gift* AK. 1, 2, 1, 10. Taik. 1,

2,4.5. H. 1193 (m.). an. 2,571. Mnn. ch. 25. Hall. 3,19. 24. 5,75. ṚV. 1,117,16.191,11.7,50,3. विषमेभ्यो गवयवः 6,61,3. विषं गवां यातुधानाः पिबन्तु so v. a. *Milch soll ihnen zu Gift werden* 10,87,18. 22. केशी विषस्य पात्रेण यद्रुद्रेणापिबत्सह 136,7. AV. 4,6,2. fgg. 5,19,10. 6,90,3. Çat. Br. 2,4,2,2. 3,1,2,10. 10,5,2,20. विषेण तं समामोषधयो ऽकाः Pañcav. Br. 6,9,9. TBr. 2,1,6,1. M. 4,36 (pl.). 10,88. मधापातो विषास्वादः 11,9. विषमग्निं व्रतं रक्षन्नास्थास्ये MBn. 3,2163. 2622. तीक्ष्णा 2836. राघवे विषं क्षिप्त्वा (मुक्ता ed. Bomb.) R. 2,43,3. संमोक्षादिह् बालेन पथा स्यादहितं विषम् 63,11. R. Gorr. 1,46,31. Suçr. 1,2,16. 21, 14. तीव्राणि — उरुक्षति विषाणि नागः Çiç. 4,63. तीक्ष्णविषदिग्धेन शरेण MBn. 13,268. °दिग्धस्य भक्तस्य Spr. (II) 1506, v. l. °प्रदिग्ध Varāh. Bṛh. S. 78,1. 15,7. दुग्धमप्युरगे विषम् Spr. (II) 2088. मधु तिष्ठति जिह्वाये हृदि हालाहलं विषम् (I) 1182, v. l. 1023. माता यदि विषं दद्यात् 2167. नानाकारमपि प्रशाम्यति विषं गारुत्मतादृष्टमनः 2706. °क्षीनो नागः 2868. विषादप्यमृतं ग्राह्यम् 2869. fg. विविधैर्मल्लप्रयोगैर्विषम् (शक्तो वारयितुम्) 2929. पक्षदये विषमिव परिणामे ऽमृतोपमम् 4769. संमानाद्ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव 5187. Bhāg. P. 4,18,22. विषाग्नि *brennendes Gift* Ṛt. 1,19. Varāh. Bṛh. S. 12,12. विषाग्निया unter den Beiww. Çiva's MBh. 12,10336. विषानल Pañcar. 1,3,19. मदनविषानल Varāh. Bṛh. 24(22),7. घाल°, घार्तव°, दृष्टि°, मूत्र° u. s. w. Suçr. 2,257. fgg. जङ्गम, स्थावर 251,9. Verz. d. Oxf. H. 314,*b*,12. fgg. °रक्त 98,*a*,5. °परीक्षा 86,*a*,5. °प्रतिषेध 309,*a*,6. 11. 13. 18. 357,*b*,2. °तन्त्र 309,*a*,6. Verz. d. B. H. No. 946. स्थावरजङ्गमविषदान 963. °प्रयोग 905. विषोपविषसाधन 907. विषाणी शोधनम् 969. विषं स्तम्भयति Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,118. °लङ्घक *verpfiffet* Vet. in LA. (III) 9,11. fg. विषय° Bhāg. P. 5,1,22. कर्ण° *in's Ohr geträufeltes Gift* (uneig.) Spr. (II) 1546. दुरधीता विषं विद्या घरीर्णा भोजनं विषम् । विषं गोष्ठी दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणी विषम् ॥ (I) 1173. नामृतं न विषं किंचिदेका मुक्ता नितम्बिनीम् 1549. 2839. am Ende eines adj. comp. (f. घा): व्याली तीक्ष्णाहिविषा R. Gorr. 2,9,40. व्याली घोरविषा 34,9. 75,17. सविषाणामसानाम् Spr. 4985. विष = वत्सनाभ Rāgān. im ÇKDr. — *b*) *Wasser* Naigh. 1,12. AK. 3, 4,20,225. H. ç. 163. H. an. Med. Hierher ṚV. 10,136,1 nach Nir. 12,28. — *c*) mystische Bez. *des Buchstabens* म Weber, Rāmat. Up. 317. fgg. — 2) adj. *giftig* (f. घा) AV. 7,113,2 (im Wortspiel). — 3) f. घा *eine best. Pflanze* (= घति° u. s. w.) AK. 2,4,2,16. H. an. Med. Ratnam. 94. Suçr. 1,420,1. — Vgl. घ°, घघ°, घति°, उप°, दूषी°, दृग्विष, दृष्टि° (auch Kir. 14,25), नष्ट°, निर्विष, नेत्र°, प्रविषा, प्रतिविष, मन्द°, मरा° (हालाहल° R. 1,45,21), मूत्र°, लाला°, लोम°.

3. विष (nom. act. von 1. विष् in दुर्विष; nach Nilak. = दुःखेन वेष्टुं व्यातुं प्रवेष्टुमशक्याः.

4. विष n. fehlerhafte Schreibart für बिस Muṇḍ. zu AK. nach ÇKDr. *Myrrhe* Rāgān. im ÇKDr.

विषकाएकिनी f. *eine best. giftige Pflanze*, = वन्ध्याकर्कोटकी Rāgān. im ÇKDr.

विषकन्द m. *ein best. giftiges Knollengewächs*, = नीलकन्द Rāgān. im ÇKDr.

विषकन्या f. *Giftjungfrau, ein Mädchen, das angeblich dem, der ihr beiwohnt, den Tod bringt*, Kathās. 19,52. Mudrār. 42,16. Verz. d. B. H. 263, N. — Vgl. विषाङ्गना und Gutschmid in Z. d. d. m. G. 15,94. fg.

विषकृत adj. *vergiftet:* भक्ष्य R. 2,88,20 (96,23 Gorr.). 99,4.

विषकृमि (विष = 3. विष् + कृ°) m. *Misthäfer* Spr. 3015.

विषगिरि m. *Giftberg* AV. 4,6,7; vgl. 8.

विषघ्न 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) f. घ्नी *Cocculus cordifolius* Dc. (गुडूची) Çabdam. im ÇKDr.

विषघात m. *Giftarzt* R. Gorr. 2,90,24.

विषघातक adj. *durch Gift tödtend, Giftmörder* Varāh. Bṛh. S. 66,32.

विषघातिन् 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) m. *Mimosa Seerssa* (शिरीष) Roxb. Çabdam. im ÇKDr.

विषघ्न 1) adj. (f. ई) *Gift zerstörend;* m. *Antidoton* Suçr. 1,166,1. घगद् 240,6. 2,4,2. 251,5. 254,6. घगद, रत्न M. 7,218. उदक, मणि Kām. Nītis. 7,10. अङ्गुलीय Kathās. 10,50. 95. क्रिया Pañcar. 3,14,40. चित्ताविषघ्नो ऽगद् Spr. 2342. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: *Mimosa Seerssa* (शिरीष) Roxb. H. an. 3,416. Med. n. 133. Çabdam. im ÇKDr. = पलाश und विभीतक Rāgān. ebend. = चम्पक Gal. ebend. — 3) f. ई Bez. verschiedener Pflanzen: *Hingcha repens* Roxb. Trik. 2,4,31. *Ipomoea Turpethum R. Br.* und *Cocculus cordifolius DC.* H. an. Med. *Tragia involucrata Lin.* Ratnam. 69. = हरिद्रा, शालपर्णी und इन्द्रवारुणी Aṣṭāṅg. 55. = वनवर्वरिका, स्वल्पफला, भूम्यामली, रक्तपुनर्नवा, वृश्चिकाली und मरुकारञ्ज Rāgān. im ÇKDr. — °पान Pañcar. 3,14,42.

विषङ्ग (von सञ्ज् mit वि) m. *das Hängen an;* s. निर्विषङ्ग.

विषङ्गिन् (von विषङ्ग) adj. am Ende eines comp. *behaftet* so v. a. *gesalbt mit:* दिव्यानुलेपन° Pañcar. 3,11,5.

विषजल n. *Giftwasser* Bhāg. P. 10,31,3.

विषजिह्व 1) adj. *giftzüngig* Çat. Br. 1,1,4,18. — 2) m. *Lipocercis serrata Trin.* (देवताड) Ratnam. 62.

विषदुष्ट adj. *vergiftet:* शोणित Suçr. 1,93,1.

विषदृग्वर m. *Büffel* Çabdam. im ÇKDr. विषदृवर Wilson nach ders. Aut.

विषधि m. *eine Schlangenart* Çabdārthak. bei Wilson.

विषनाड n. = मृणाल Çabdam. im ÇKDr.

विषन्न s. u. सद् mit वि; davon °ता f. *Bestürzung* H. 312.

विषता (von 2. विष) f. *das Giftsein:* विषतां समुपैति *wird zu Gift* Çiç. 9,68.

विषतिन्दु m. N. zweier *Giftpflanzen:* = कारस्कर Rāgān. im ÇKDr. = कुपीलु Bhāvapr. im ÇKDr.

विषदृवर s. विषदृग्वर.

1. विषद् 1) n. *grüner (schwarzer) Eisenvitriol* Rāgān. im ÇKDr. — 2) f. घा = घतिविषा und वृद्धकोरेटी (vulg.) Aṣṭāṅg. 46.

2. विषद् fehlerhaft für विशद्.

विषदृष्टा f. *eine best. Pflanze*, = सर्वतोभद्रालता Ratnam. im ÇKDr.

विषदन्तक m. *eine Schlange mit Giftzähnen* Çabdam. im ÇKDr.

विषदर्शनमृत्युक m. *eine Fasanart (beim Anblick von Gift den Tod findend)* H. 1340. — Vgl. विषमृत्यु.

विषदायक m. *Giftmischer* R. 2,75,36.

विषदूषण adj. *Gift zerstörend* AV. 5,100,1. 10,4,24.

विषद्रुम m. 1) *Giftbaum* Spr. 2755. Rāga-Tar. 4,26. — 2) *ein best. Giftbaum*, = कारस्कर Rāgān. im ÇKDr.

विषधर m. *Giftschlange* AK. 1,2,4,7. H. 1303. Hit. 15. Halâj. 3,18. Spr. 2230 (II). 2860. 2866. Gîr. 1,19. विषधरी f. Harṣ. Anth. 810, Ç. 3.

विषधर्मा f. *Mucuna pruritus Hook.* Çabdâm. im ÇKDa.

विषधात्री f. N. pr. der Gattin Garatkâru's Çabdam. im ÇKDa.

विषधान m. *Giftbehälter* AV. 2,32,6.

विषनाडी f. *ein best. unheilbringender Zeitpunkt* (für die Geburt), *dessen Folgen durch eine Sühnungshandlung abzuwenden sind*, Saṃsk. K. 89,*a*,11. *b*,1. 11. 90,*a*,9. 10. 91,*a*,4.

विषनाशन 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) m. *Mimosa Seeresa* (शिरीष) *Roxb.* Hit. 94. Ratnam. 159.

विषनाशिन् 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) f. °नाशिनी *eine best. Pflanze*, = सर्पकङ्कालो Çabdâm. im ÇKDa.

विषनुद् 1) adj. *Gift vertreibend.* — 2) m. *Calosanthes indica Blum.* Çabdâm. im ÇKDa.

विषपत्रिका f. *eine best. Pflanze (giftige Blätter habend)* Suçr. 2,251,16.

विषपन्नग m. *Giftschlange* Kâm. Nitis. 7,11.

विषपर्वन् m. N. pr. eines Daitja Kathâs. 45,379.

विषपाद्प m. *Giftbaum* Kâm. Nitis. 14,30.

विषपुच्छ adj. (f. ई) *einen giftigen Schwanz habend* P. 4,1,55, Vârtt. 2.

विषपुट m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu P. 2,4,63.

1. विषपुष्प n. 1) *eine giftige Blüthe* Kathâs. 70,91. — 2) n. *die Blüthe der blauen Wasserrose* Çabdam. im ÇKDa.

2. विषपुष्प 1) adj. *giftige Blüthen habend.* — 2) m. *Vanguieria spinosa Roxb.* Rajavân. im ÇKDa.

विषप्रस्थ m. N. pr. eines Berges MBh. 3,8513.

विषभद्रा f. = बृहद्दन्ती Râǵân. in Nigh. Pr.

विषभद्रिका f. = लघुदन्ती Aufr. 16.

विषभिषज् m. *Giftarst* H. 474. Halâj. 2,488.

विषभुजंग m. *Giftschlange* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

विषम (z. वि + सम) P. 8,3,88. = स्थपुट Taik. 3,1,2. Hit. 124. विषमम् adv. P. 6,2,121, Schol. gaṇa तिष्ठद्वादि zu 2,1,17. 1) adj. (f. आ) *uneben:* कालः समविषमकरः Spr. (II) 1693. समं च विषमं चैव न प्राज्ञायत (so ed. Bomb.) किं चन MBh. 6,3644. Boden 3,651. fg. 7,1954. Harîv. 360. 362. Kâm. Nitis. 15,6. 19,14. Vaitân. Bṛh. S. 51,4. घनम् Suçr. 1,198,3. R. Gorr. 2,86,17. कापथ R. Schr. 2,108,7. लङ्का (मु°) 5,9,27. उपलविषमे विन्ध्यपादे Megh. 19. Bhâg. P. 5,9,12. नम्रा इव प्रवाहो विषमशिलासंकटस्खलितवेगः Spr. 1403. Pañkat. 188,9 (शिला st. शील zu lesen). Brust Vaitân. Bṛh. S. 68,29. Hände 70,22. Perlen 81,4. 6. 19. — *b) ungleich, unähnlich, verschiedenartig, wechselnd* Nir. 6,23. Ait. Br. 2,26. 6,13. TBr. 1,8,2,1. दक्षिणाः Çat. Br. 5,2,1,19. स्तोमाः 12,2,2,3. विषमर्च Çâṅkh. Gṛhj. 1,3. सत्वः Suçr. 1,23,3. Augen 115,7. °याकिन् 23,21. व्रण 68,6. 2,6,11. मा कृढ़ विषमं समम् M. 4,225. पुत्रभाग 9,215. Sâṅkhâj. 2,20. वृष्टि Vaitân. Bṛh. S. 8,50. नाभि 68,22. विषमबलयो मनुष्याः 25. 27. दत्ताः 70,21. Ind. St. 8,180. 309. 326. 468. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,16. Verz. d. Cambr. H. 78. स्वशिविकायां विषमगतायाम् Buddh. P. 5,10,7. 2. विषममुत्पते यानम् ebend. 8,23,8. 1,8,29. 3,15,32. 6,16,41. Daçak. 91,2. °रूप Nir. 11,23. 12,17. °रागता ṚV. Pârç. 14,4. स° (दृष्टि) Buddh. P. 3,15,29. — *c) unpaar, ungerade* (der Zahl nach) Spr. 1357. Vaitân. Bṛh. S. 50,1. 20. 78,23. 96,9. 102,7. 104,31. Bṛh. 4,11. Lâṭâyân. 1,9 in Ind. St. 2,279. H. 13. *was nicht mehr ohne Bruch getheilt werden kann* (z. B. 1 unter 2, 2 unter 3, 3 unter 4 u. s. w.): यत्राविकं सैकशफं न घ्रातु विषमं भवेत् । यत्राविकं तु विषमं ज्योक्तस्यैव विधीयते ॥ M. 9,119. — *d) worüber man nicht glatt hinwegkommen kann, beschwerlich, schwierig, schlimm, gefährlich, bösartig:* दशा Spr. (II) 962. (I) 2862. Kathâs. 24,137. 101,132. काल R. 2,88,18. ग्रीष्मविषमः कालः Râǵa-Tar. 8,1634. घनित्रविषमे मार्गे 2052. रात्रोपसेवन 2188. नयनविषमैर्विगुडदृशैः 1558. विषमा वामा विधेर्वृत्तयः Spr. 1240. रोग Suçr. 1,171,16. विष Spr. 2866. Mârk. P. 41,3. वायु MBh. 7,8622. वज्रापातविषमं भयम् Harîv. 5024. युद्ध 8871. व्यसन Mârk. P. 99,20. अटवी Kathâs. 20,20. भावः पर्वतसूक्ष्ममार्गविषमः स्त्रीणाम् Spr. (II) 75. विषविषमबाण 1129. विषवल्लीबीजविषमाः क्लेशाः 1312. शोकदुःख (I) 4270. कर्मोर्मिणी विषमवलने: (II) 1909. घसिधाराव्रत (I) 1859. विरूपविषमः कामः 2834. प्रवृत्ति *eine schlimme Nachricht* R. 5,33,42. कान्ताविश्लेषदुःखव्यतिकरविषमो यौवने योगभोगः Spr. (II) 1851. विद्या गुरुविनयवृत्त्यातिविषमा 1871. घतिविषमविषयविषवल्लाशय Bhâg. P. 5,1,22. 38. °लक्ष्मी so v. a. *Unglück* Vaitân. Bṛh. S. 84,27. कठिनविषमामेकवेणीम् *unbequem* Megh. 89. *schwer zu verstehen:* विषमोक्तयः Goldm. Anf. H. 256, Schol. नयने *gräßlich, fürchterlich* R. 5,24,18. von *bösen, gefährlichen* Thieren und Menschen: योषित्सर्प Spr. (II) 410. रूपाः 1357. त्रिस्रोगाः und खलाः (I) 2864. नक्र 2865. Fürsten und Berge 1176 (मु°). 2863. M. 7,27. Spr. (II) 55. ज्ञातयः 2443. स्त्रियः (I) 1393. विषधरतो ऽप्यतिविषमः खलः 2860. वाक्यवज्रविषमे ग्रने 2928. 3298. Râǵa-Tar. 4,358. 6,280. विरेरूपाविषमैः 8,2032. Vaitân. Bṛh. S. 5,41. सुहृत्सु विषमः Bṛh. 18,5. 21 (19),8. Bhâg. P. 7,1,1. 13,42. °धी *feindselig* Pañkat. 3,9,22. समविषममति Bhâg. P. 6,9,36. °चेतस् Spr. 1333. विषमाशया Râǵa-Tar. 6,198. नृशंसविषमक्रिय *schlecht, gemein* 5,350. विषमाचार R. 3,76,28. घविषममभिसमीक्षमाणयोः so v. a. *freundlich* Bhâg. P. 5,1,21. — *e) unpassend, falsch, unrichtig:* उपचार Suçr. 1,117,7. उपन्यास Sarvadarçanas. 50,9. दृष्टान्त Çâṅk. zu Brahmas. 1,1,5. — *f) unehrlich:* °व्यवहाराश्च विषमाश्चैव वृद्धिषु । लाभेषु विषमाश्चैव ते वै निरयगामिनः ॥ MBh. 13,1640. समैर्हि विषमं यस्तु चरेत् M. 9,287. — 2) n. *a) Unebenheit, rauher —, unwegsamer Boden, schlechter Weg* VS. 30,16. TS. 2,1,2,1. °सद् Çat. Br. 6,7,2,11. °लङ्घन Pân. Gaṇ. 2,7. Gobh. 2,4,2. Âçv. Çr. 12,6,8. समानि विषमाणि च M. 1,24. MBh. 1,4650. 5888. 3,13069. 14,181. Harîv. 361. R. 2,52,91. 79,13. R. Gorr. 2,67,4. 3,45,12. 4,41,12. Suçr. 1,134,18. विषमावतार Vikr. 10,9. Spr. (II) 2177. विषमं च पदे पदे (I) 2484. 5179. Bhâg. P. 4,17,4. so v. a. *Abgrund* M. 8,232. MBh. 3,2545. त्यक्त्वे विषमे देहमात्मनः R. 3,51,40. 4,60,22. पर्वतं °घोरम् Spr. 1740. 2731. गर्ताविषमे वा प्रपतितः Pañkat. 142,6. *rauhe Pfade* bildlich so v. a. *Noth, Bedrängniss, Ungemach:* दुर्गेषु विषमेषु च R. Gorr. 2,21,18. Spr. 3078. Kathâs. 123,339. विषमे Bhâg. 2,2. MBh. 5,1037. विषमे समुपस्थिते Spr. 2567. 2574. विषमे स्थितः R. 2,74,19. °स्थित Spr. 1312. 2720. °पतित 2396. — *b)* in der Rhetorik

Incongruenz, Unvereinbarkeit (zweier Begriffe, der Ursache und Wirkung u. s. w.) Prasiddh. 91,b,9. Kuvalay. 101. — c) भरद्वाजस्य विषमम् N. eines Sâman Ind. St. 3,227,b. — Vgl. वैषम्य.

विषमक (von विषम) adj. *etwas uneben, nicht recht glatt:* Perlen Vas. Bhn. S. 81,19.

विषमकर्ण adj. *ungleiche Diagonalen habend* (ein Tetragon) Colebr. Alg. 58.

विषमकर्मन् n. *dissimilar operation; the finding of the quantities, when the difference of their squares is given, and either the sum or the difference of the quantities* Colebr. Alg. 26. 324.

विषमखात n. *a cavity, the sides of which are unequal: an irregular solid* Colebr. Alg. 97.

विषमचक्रवाल n. *Ellipse* (math.) Ind. St. 10,274.

विषमचतुरस्र m. *ein Viereck mit ungleichen Winkeln, Trapez* Colebr. Alg. 58. 295. Ind. St. 10,274. 279.

विषमचतुष्कोण adj. dass. Ind. St. 10,274.

विषमच्छद (*Blätter von ungerader Zahl habend*) m. = सप्तच्छद AK. 2,4,2,3.

विषमज्वर m. *unregelmässiges Fieber* Suçr. 1,179,1. 188,20. 201,17. 204,1. Verz. d. B. H. No. 903. 965.

विषमत्रिभुज m. *ein ungleichseitiges Dreieck* Colebr. Alg. 295.

विषमत्व (von विषम) n. *Ungleichheit, Verschiedenheit* Maitrâjan. 5,2.

विषमनयन adj. *Augen von ungerader Zahl habend* d. i. *dreiäugig;* m. Bein. Çiva's Hâs. 8.

विषमनेत्र dass. H. 16. 196, Schol.

विषमत्र m. *Schlangenbeschwörer* Gaṇiku. im ÇKDa.

विषमपद adj. (f. घा) 1) *ungleiche Schritte habend, — setzend:* पद्वी Kir. 5,10. — 2) *ungleichflussig:* वृत्ती RV. Pâr. 16,36. Ind. St. 8,130. 143.

विषमपलाश m. = सप्तपलाश H. 16.

विषमपाद adj. (f. घा) *aus ungleichen* Pâda *bestehend* Ind. St. 8,102.

विषमबाण adj. *Pfeile von ungerader Zahl habend;* m. = पञ्चबाण *der Liebesgott* H. 229, Schol.

विषममय adj. = विषमादागतम् ÇKDa. nach Sidh. K.

विषमय (von 2. विष) adj. (f. ई, aus metrischen Rücksichten auch घा) *gifthaltig, giftig* Spr. (II) 346. 1989. (I) 2779.

विषमरूप्य adj. = विषममय ÇKDa. nach Sidh. K.

विषमर्दनिका und विषमर्दनी f. *eine best. Pflanze,* = गन्धनाकुली Râǵân. im ÇKDa. विषमर्दनी f. = नाकुली Ausw. 39.

विषमविशिख m. = विषमबाण Gaṇiku. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,32.

विषमवृत्त n. *ein Metrum mit ungleichen* Pâda Ind. St. 8,331. fgg.

विषमव्याख्या f. *Erklärung des Schwierigen,* Titel eines Commentars Hall 181.

विषमशिष्ट adj. *ungenau vorgeschrieben;* davon nom. abstr. °त्व n.: यत्र कामत एव चान्द्रायणतप्तकृच्छ्रयोर्विषमशिष्टत्वेन इच्छाविकल्पासंभवात् कामतश्चान्द्रायणमकामतस्तप्तकृच्छ्रमिति प्रायश्चित्ततत्त्वम् ÇKDa.

विषमशील m. Bein. Vikramâditja's Kathâs. 120,39. 121,49. 124, 36. nach ihm der 18te Lambaka benannt 1,9. — Pañkat. 188,9 fehlerhaft für विषमशिला.

विषमस्थ adj. (f. घा) gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. *an einem Abgrunde —, an einer gefährlichen Stelle stehend:* स्वादुफल Spr. 2861. *in Nöthen —, in bedrängter Lage seiend* MBh. 3, 2284. 2333. 2750. 5, 6001. R. 2,109,22. 88,20 (96,23 Gorr.). R. Gorr. 2,39,6. 3,19,6. Spr. (II) 1472. (I) 3170. Verz. d. Oxf. H. 31,b,38. — Vgl. समस्थ und वैषमस्थ्य.

विषमाक्ष m. = विषमनयन Bein. Çiva's Taik. 1,1,47. Çiv.

विषमायुध m. = विषमबाण *der Liebesgott* H. 227. Hall. 1,32. Spr. 2169.

विषमाशन (विषम + घ°) n. *ungleichmässiges Essen (bald viel bald wenig)* Vishn. 8,34. Spr. (II) 170 (hiernach die Uebersetzung zu verbessern).

विषमित (von विषम) adj. 1) *uneben —, unwegsam gemacht:* पङ्कविषमिततटाः सरितः Kir. 12,50. — 2) *ungleich gemacht, in eine schiefe Lage gebracht:* चतुस् Kir. 10,56. = कुटिलीकृत Mallin. — 3) *gefährlich —, feindselig geworden:* कालविषमितराजकुल Bâlar. P. 5,14,16.

विषमीकर् (विषम + 1. कर्) 1) *uneben machen:* den Boden MBh. 7,4710. — 2) *feindselig machen:* मैरेयदोषेण विषमीकृतचेतसाम् Bâlar. P. 3,4,2.

विषमीभाव (von विषमीभू) m. *Störung des Gleichgewichts:* विषमीभावमाविशति MBh. 6,184. st. dessen fehlerhaft विषयीभावमाचरति 3,13929.

विषमीभू (विषम + 1. भू) *ungleichmässig werden:* यस्मिन्नलक्षितक्लेशमतभूमिभागे मार्गे पदानि क्षलु मे विषमीभवन्ति Çik. 90.

विषमीय adj. von विषम *unebener Boden* gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. — Vgl. समीय.

विषमुच् adj. *giftspeiend:* वाच् Spr. 3283.

विषमुष्टि m. *eine best. Pflanze,* = केशमुष्टि Râǵân. im ÇKDa.

विषमुष्टिक m. = महानिम्ब (das auch = केशमुष्टि ist) Ausw. 16.

विषमृत्यु m. = विषदर्शनमृत्युक Taik. 2,5,22. Gaṇiku. im ÇKDa.

विषमेक्षण (विषम + ईक्ष°) m. = विषमनयन Bein. Çiva's Wilson.

विषमेण instr. von विषम als adv. gaṇa प्रकृत्यादि zu P. 2,3,18, Vârtt.

विषमेषु (विषम + इषु) m. = विषमबाण *der Liebesgott* H. 16.

विषमोन्नत (विषम + उ°) adj. *uneben und zwar bergig,* = स्थपुट H. 1468. Hall. 4,68.

विषय (von 1. विष्) P. 3,3,70 (nach dem Schol. von सि mit वि). m. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *Gebiet, Bereich, Reich;* = देश, उपवर्तन, जनपद, राष्ट्र P. 4,2,52. AK. 2,1,3,4,25,186. Taik. 3,3,220. H. 947. H. an. 3,506. Med. j. 105. Hall. 2,129. = धाश्य AK. 3,3,11. — M. 5,32. 7, 123. fg. 8,148. 387. MBh. 1,5937. कस्येष विषयो रम्यः R. 1,9,61. °रत्ना, धृष्टा विषयाद्राज्ञा 17,3. 47,22. 76,13. 2,35,11. 50,19. 59, 8. 92, 3. Spr. 2980. 3015. त्रस्तानां विषयादितः Kathâs. 23,78. Bâlar. P. 4,14,22. 9,23,5. न पुनरात्मगत्या मानुषाणामेष विषयः so v. a. *hier haben aber Menschen nicht von selbst ihren Aufenthaltsort gewählt* Çik. 104,14. यमस्य Jama's *Gebiet,* — *Reich* R. 3,55,52. मुरारि° 5,74,23. नग्न° Kathâs. 18,314. लङ्के विषये Râǵa-Tar. 5,31. लाटेषु विषये Vaṇiku. Bhn. S. 69,11. गौडविषये Hit. 27,22. 39,4. 17. 113,19. पाताल° R. 5,74,23. pl.: पुरं च विषयाश्च नः MBh. 1,7841. विषयेषु तपस्विनः R. 2,91,7. विषयान्दापयामि ते *Ländereien* Kathâs. 49,61. 53,193. 103,220. परिसरविषयेषु (= पर्यन्तदेशेषु) *in der nächsten Umgebung* Kir. 5,38. परस्परा-

सर्विषयौ हि तावुभौ बभूवतुः so v. a. *sie standen in einiger Entfernung von einander* R. 5,44,9. — 2) *Gebiet, Bereich* in übertr. Bed.; = गोचर Taitt. H. an. Mbh. चतुषोर्विषयः *Gesichtskreis, Sehweite* R. 5,24,17. चतुर्विषय (s. auch bes.) dass.: या चतुर्विषयाक्षेमं ददर्श पुनः पुनः MBh. 14,1887. चतुर्विषयमागतः R. 6,81,13. fg. Mṛicch. 109,12. चतुर्विषयातिक्रान्त Hit. 14,12. अचतुर्विषये (s. auch अचतुर्विषय) R. 2, 63,21. दृग्विषयोपगत Varāh. Bṛh. S. 104,32. दृष्टिविषये Rāgat. 15,79. नयन° s. bes. श्रवण° *Hörweite* Mṛicch. 101. ज्ञान° Çiṅkar. Çr. 13,5,1. MBh. 14, 396. मनो° Kumāras. 6,17. या विषये स्थिताः so v. a. *dazwischenliegend* ṚV. Pāiṅg. 17,2. गन्धस्य विषयः ist die Erde MBh. 14,299. रसस्य das Wasser 393. रूपस्य das Licht 394. स्पर्शस्य die Luft 396. शब्दस्य der Aether 398. जीवितव्य° so v. a. *Lebensdauer* Pāṇḍav. 4,16. fg. जीव° dass. ed. orn. 1,19. विषये *im Bereich* von so v. a. *in Bezug auf:* यत्र विषये *in Bezug darauf* MBh. 13,5632 nach der Lesart der ed. Bomb. Pāṇḍav. 64,12. 14. 114,20. स्त्रीणां विषये को ऽत्र संदेहः 27,18. युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः Mṛicch. 80. यको बुद्धिप्रागल्भ्यमस्य नीतिविषये Pāṇḍav. 112,19. तन्मयाप्यास्य मित्रविषये विश्रामः समुत्पन्नः 131,11. धनविषये त्वया संतापो न कार्यः 139,3. मन्ये स्त्री विषये वाचां स्नातमन्यत्र च्छान्दसात् Buiṅ. P. 1,4,13. परस्वविषये स्पृहा AK. 1,1,2,24. Sarvadarçanas. 84,7. 8. Am Ende eines adj. comp.: अल्पविषया मतिः *ein kleines Gebiet umfassend* Raṅgan. 1,2. — 3) *ein Gebiet, auf dem man sich heimisch fühlt, das man beherrscht, Jmdes Fach, — Sache;* = यस्य यो ज्ञातस्तत्र AK. 3,4,24,134. H. an. Med. सर्वत्रौदरिकस्याभ्यवकार्यमेव विषयः Viṅr. 39,14. एष प्रत्राजकस्त्रीणां विषयः Kāṭuis. 32,126. योगिन्या मत्समर्गो ऽयं नास्माकं विषयः पुनः 37,191. नात्रास्माकं गतिविषयः Pāṇḍav. ed. orn. 53,20. विषये सति वक्ष्यामि so v. a. *wenn ich es weiss* MBh. 13,2206. न त्वामविषये नियोक्ष्यामि कर्मं च न 2207. न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम Çiç. 55,20. — 4) *Wirkungskreis, Erscheinungsgebiet:* रवेरविषये so v. a. *wenn die Sonne nicht scheint* Spr. 1964. 2491. गुणासमुदायावाप्तिविषयां द्युतिम् so v. a. *sich in der Erlangung vieler trefflicher Eigenschaften manifestirend* 2822. अवकाशविषया निर्वृतिः *sich als Musse äussernd* 2879. — 5) *ein fest umgrenztes —, umschriebenes Gebiet:* छन्दसि विषये so v. a. nur im Veda Kāç. zu P. 1,2,36. संज्ञाविषये Schol. zu 39. am Ende eines adj. comp.: स्त्री° so v. a. *ein femininum tantum* Çiṅkar. 1,3,2,2. नपुंसकविषय *ein neutrum tantum* 3. स्त्रीविषय *stets auf* स्त्री (femin.) *ausgehend* 1,20. छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि *die unter diese Kategorie fallen* P. 4,2,66. — 6) *ein für Etwas geeigneter Boden, das am-Platze-Sein:* क इह परितापस्य विषयः Spr. (II) 325. सामादीनां मध्ये कस्यात्र विषयः Pāṇḍav. 227,22. — 7) *das Object eines Sinneswerkzeuges* (Laut u. s. w.) AK. 1,1,4,16. 3,4,24,134. H. 1384. H. an. Med. गन्धरूपरसस्पर्शशब्दाश्च विषयाः स्मृताः Jiṅān. 3,91. Amṛitan. Up. in Ind. St. 2,25. Çaṅk. ebend. 17,N. 2. Suçr. 1,311,1. Tattvas. 6. घ्राणो गन्धविषयं बुध्यते 14. Rāṅa-Tar. 2,3. Sarvadarçanas. 24,1. मूर्तिविषयगुणा (तनु d. i. आकाश) Çiç. 1. तमेकदृश्यं नयनैः पिबन्त्यो नार्यो न जग्मुर्विषयान्तराणि Kumāras. 7,64 = Raṅgan. 7,12. Wenn मनस् zu den इन्द्रिय gezählt wird, erscheinen sechs विषयाः: Nilak. 22. Colebr. Misc. Ess. 1,290. — 8) Bez. *der Zahl fünf* Varāh. Bṛh. S. 8,21. 77,23. 98,1. Bṛh. 1,13. 7,1. — 9) pl. *die Sinnesobjecte als Gegenstände des Genusses, die Sinnenwelt, Sinnengenuss:* इन्द्रियाणि कृपणाकुर्विषयांस्तेषु गोचरान् Kāṭuis. 3,4. इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु Spr. (II) 1113. क्षिप्यमाणानि विषयैरिन्द्रियाणि M. 6,59. विषयेषप्रसक्तिः 1,89. विषयेषु सज्जति 6,55. 7,30. Spr. (II) 808. विषयेषु प्रवृष्टानि (इन्द्रियाणि) M. 2,96. यथा यथा निषेवते विषयान्विषयात्मकाः 12,73. विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः Bhag. 2,59. विषयाणां मुखम् R. 1,9,8. समाराः Spr. (II) 776. स्वीकृताः (I) 1195. नोपभोक्तुं न च त्यक्तुं शक्नोति विषयाङ्गारौ 1652. Brahma-P. in LA. (III) 54,22. मनाकृष्टस्य विषयैः Raṅgan. 1,23. मम सर्वे विषयास्त्वदाश्रयाः 8,68. निषण्णेद्विषयेभ्यो ऽन्तान् Buiṅ. P. 2,1,18. विषयानिन्द्रियान्भुञ्जानः 7,4,19. °सङ्ग M. 12,18. विषयोपभोगा 33. विषयेषिन् Raṅgan. 1,8. °व्यावृत्तात्मन् 3,70. Viṅr. 9. निर्विष्टविषयसङ्गेन Raṅgan. 12,1. °लोलुप Kāṭuis. 40,81. विषयोपरम Siddhāṅ. 50. विषयासक्तमनस् Çiṅk. in LA. (III) 32,11. विषयासक्ति 33,15. विषयोपक्रम Verz. d. Oxf. H. 123,a,32. अविषयमनसां यतीनाम् Mālav. 1. उपरताशेषविषयं मनः Sin. D. 63,15. Ausnahmsweise sg.: पिबन्ति नाम विषयमसंख्याताः कुमारकाः Kālidāṅ. in Ind. St. 9,13. — 10) *Object* überh.: पूर्वविषयौ *Subject und Object* Sarvadarçanas. 69,11. MBh. 14,1373. fg. देहं इन्द्रियं विषयः Buiṅāṅ. 36. विषयो द्व्यणुकादिश्च ब्रह्मणोऽन्त उदाहृतः 37. दृष्टानुश्रविक° Jogas. 1,15. 2,54. विषयो ऽयं पुराणस्य यन्मां त्वं पृच्छसि *ein im Purâṇa behandelter Gegenstand* MBh. 1,1189. यत्र यत्र पुरुषस्य संदेहः स सर्वो ऽपि विचारशास्त्रस्य विषयो भविष्यति Sarvadarçanas. 127,10. fg. 159,1. In der Pûrvamîmâṅsâ ist विषय *der zu behandelnde Gegenstand* eines der 5 Glieder jedes Abschnittes oder Titels: ते च पञ्चावयवा विषयसंशयपूर्वपक्षसिद्धान्तसंगतित्रयाः 122,21. स्वाध्यायो ऽध्येतव्य इत्येतद्वाक्यं विषयः 23. fg. इषु° *der Gegenstand, auf den der Pfeil gerichtet wird, Ziel eines Pfeils* Çiç. 9,40. Häufig am Ende eines adj. comp. अन्य° *ein anderes Object habend, auf etwas Anderes gerichtet, — sich beziehend, Anderes betreffend:* दृष्टि Çiç. 30. कथाः Buiṅ. P. 3,15,28. मनस्य° 1,8,12. त्वयि मे ऽनन्यविषया मतिः 42. यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयशब्दो यथार्थाक्षरः *keinem Andern zukommend* Viṅr. 1. Kâçik. 2,331. इत्येवंविषया बुद्धिः Kull. zu M. 2,3. तद्विषया बुद्धिः Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 73. भगवद्विषया रतिः Sin. D. 7,13. Buiṅ. P. 1,6,4. 2,9,27. 5,2,10. Rāṅa-Tar. 5,185. मम तावदेवैव बुद्धिः पलायनविषया *nur auf Flucht gerichtet* Pāṇḍav. 247,6. अनुकरणमित्यादित्रिसूत्री स्वभावात्कृञ्विषया *bezieht sich auf* Siddh. K. zu P. 1,4,62. वयं तु तत्सर्गसर्गविषयाः so v. a. *beschäftigt mit* Buiṅ. P. 3,7,34. — 11) *ein sich zu Etwas* (gen. dat.) *eignendes Object:* (सा) पुंसामिष्टस्य विषयो मैथुनाय MBh. 4,932. 933. (गजः) नैव विषयो वाक्यस्य दाक्ष्यस्य वा Spr. (II) 1324. वराको वा राकुः प्रभवति चमत्कारविषयः 1126. विषयो राज्ञा बभूवानन्दशोकयोः so v. a. *war zugänglich für* Rāṅa-Tar. 8,1231. सकलवनानामविषयः so v. a. *unbeschreiblich* Mālatîm. 17,2. प्रभूणां हि विभूत्यन्धा धावत्यविषये मतिः so v. a. *nach Unerlaubtem* Kāṭuis. 17, 138. — 12) im Tropus *der eigentlich gemeinte Gegenstand,* im Gegens. zum Bilde; z. B. in der Figur: sie schaut mit klaren Augen-Lotusen ist Auge विषय, Lotus विषयिन् Kuvalay. 19,b. Prâṅâpar. 9,b,1. 78,a,9. — 13) verwechselt mit विषम in कान्तारविषयेषु R. 4,40,28. — Vgl. निर्विषय, बुद्ध°, यम°, स्व°, वैषय und वैषयिक.

विषयक am Ende eines adj. comp. = विषय. नैकमिन्द्रियं सर्वविषयकम्

Alles zum Object habend, auf Alles gerichtet Comm. zu Nyâyas. 3,1,56. इदं किंतत्त्वं पिदंपिदंविषयकम् so v. a. *betrifft* Siddh. K. zu P. 1,2,6. Schol. zu Gaim. 1,1,2. Verz. d. Oxf. H. 38,*a*, No. 94. Kusum. 32,5. 36,18. Davon °त्व n. nom. abstr. 32,13. Nilak. 168.

विषयग्राम m. *die Sinnenwelt* H. 1414. Hall. 5,25. Spr. (II) 1079.

विषयता (von विषय) f. *das Objectsein:* तान्बुद्धेर्विषयतां गतान् Sin. D. 32,4. Als nom. abstr. von einem auf विषय ausgehenden adj. comp. *das zum-Object-Haben, das Betreffen, das sich-Beziehen auf* Sarvadarç. 51,20. 52,16.

विषयतावाद् m. Titel einer Schrift Hall 42.

विषयतावादार्थ m. desgl. Hall 41.

विषयताविचार् m. = विषयतावादार्थ Hall 41. विषयविचार् Verz. d. Oxf. H. 245,*a*, No. 614.

विषयत्व (von विषय) n. *das Objectsein* Sarvadarç. 47,14. 164,15. Als nom. abstr. von einem auf विषय ausgehenden adj. comp.: दीधीवेव्योरुक्तविषयत्वात् *weil* दीधी *und* वेवी *nur im Veda erscheinen* Pat. zu P. 1,1,6. 2,6. *das zum-Object-Haben, das Betreffen, das sich-Beziehen auf:* प्रत्यक्ष° Sarvadarç. 47,6. 129,22. 130,1. निषेधविषयत्वेन *weil es der Verneinung unterliegt* 14,10. fg.

विषयलौकिकप्रत्यक्षकार्यकारणभावरहस्य n. Titel einer Schrift Hall 46.

विषयवत् (von विषय) adj. *objectiv:* को न्वर्थ भावः स्वप्ने विषयवानिव MBh. 12,7324. विषयवती प्रवृत्तिः *auf sinnliche Objecte gerichtet* Jogas. 1,35.

विषयवर्तिन् adj. *gerichtet auf* (gen.): नहि मे परदाराणां दृष्टिर्विषयवर्तिनी R. 5,14,57.

विषयवासिन् adj. *ein Gebiet bewohnend, Landesbewohner* R. 1,7,8. 77,24. 5,6,12. Çiç. 38,9 (im Prâkrit). अन्य° *in einem andern Lande wohnend* Pañcat. 129,14.

विषयसप्तमी f. *der Locativ in der Bedeutung von ein Bezug auf* Kiç. zu P. 1,1,57. Sin. D. 112,5.

विषयाज्ञान n. *das Nichterkennen der Objecte* so v. a. तन्द्रा *Abspannung* Râm. im ÇKDa.

विषयात्मक adj. *auf das Sinnliche gerichtet, den Sinnengenüssen frönend* M. 12,29. 73. Bhâg. P. 4,28,6. 7,6,18.

विषयाधिकृत m. *Gouverneur einer Provinz* Kathâs. 53,49.

विषयाधिप m. dass. Kathâs. 52,52. *Landesherr, Fürst* R. 5,81,19.

विषयानन्तर् adj. *unmittelbar angrenzend:* °त्वात् AK. 2,8,4,9. H. 732.

विषयान्त m. *Landesgrenze* MBh. 14,2142. 2176. R. 2,49,2. Kathâs. 14,15, wo विशयान्तं (विषयांतं) st. विषयं तं zu lesen ist.

विषयाभिमुखीकृति f. *das Richten* (इन्द्रियाणां *der Sinne*) *auf die Sinnenwelt* Verz. d. Oxf. H. 231,*b*, 22.

विषयायिन् m. 1) *Fürst.* — 2) *Sinnesorgan.* — 3) *ein an den Sinnengenüssen hängender Mann* (विषयासक्तपुरुष): *ein Materialist* (वैषयिकज्ञ). — 4) *der Liebesgott* Med. n. 244.

विषयिक von विषय am Ende eines comp.: समस्त° *aus dem ganzen Reich* Journ. of the Am. Or. S. 7, 45, 3 v. u. दार्ष्टि° (adj. von दृष्टिविषय) *im Bereich der Augen liegend, sichtbar* Nir. 7,8.

विषयित्व (von विषयिन्) n. *das Subjectsein* MBh. 14,1373.

विषयिन् (von विषय) gaṇa अर्शआदि zu P. 5,2,127 (देशे). 1) adj. *den Sinnengenüssen frönend, ein Genussmensch* H. an. 3,419. Med. n. 208. Jñân. 3,138. Spr. (II) 1942. (I) 1484. 1602. Kâç. 70 bei Weber; Çiç. 68, 14. Hit. 9,11. m. *ein Materialist* (वैषयिक) H. an. Med. = कामिन् *ein Verliebter* Taik. 3,3,261. — 2) m. *a) Fürst* H. an. Med. — *b) ein Untergebener:* एते विषयिणः सर्वे कृत्स्नस्य Pañcar. 1,14,10. — *c) Subject, das Ich* MBh. 14,1374. Çañk. zu Bhg. Âr. Up. S. 162. zu Brahmas. S. 7. Pañcar. 2,1,27. — *d) der Liebesgott* H. an. Med. — *e)* im Tropus *das Bild* im Gegens. zum eigentlich gemeinten Gegenstande (z. B. in Augen-Lotose ist Auge विषय und Lotus विषयिन्) Kuval. 19,*b*. Prabodhac. 9,*b*, 1. 84,*b*, 5. — 3) n. *Sinneswerkzeug* AK. 1,1,4,17. Taik. H. 1383. H. an. Med.

विषयीकृ (विषय + 1. कृ) 1) *verbreiten:* सर्वदिग्विषयीकृत *nach allen Weltgegenden verbreitet* Verz. d. Oxf. H. 18,*a*, 8. — 2) *zum Object machen* Vedântas. (Allah.) No. 109. 112. Kusum. 40,11. सकृत्प्रलयविषयीकृत Verz. d. Oxf. H. 136,*b*, No. 262. कथा कर्णविषयीकृता so v. a. *zu Ohren geführt* 153,*a*, No. 328.

विषयीकरण (von विषयीकृ) n. *das zum-Object-Machen* Çañk. zu Bhg. Âr. Up. S. 163. Kusum. 17,5. ख° Vedântas. (Allah.) No. 118.

विषयीभाव MBh. 3,13923 fehlerhaft für विषमीभाव.

विषयीभू (von विषय + 1. भू) 1) *zu Jmdes Bereich werden:* यदेतद्गगनम् पिङ्गलकनाम्नः सिंहस्य विषयीभूतम् Pañcat. 23,9. — 2) *zum Object werden* Çañk. zu Brahmas. S. 96.

विषयीय = विषय Kusum. 14,2.

विषरस m. *Gifttrank* Spr. (II) 1349; vgl. विषस्य रसः MBh. 3,1371.

विषवल्ली f. *eine best. Pflanze,* = विषा, अतिविषा Râgân. im ÇKDa.

विषवेग m. *Vergiftung als Krankheit* Verz. d. Oxf. H. 316,*b*, 18.

विषल n. = विष *Gift* Çabdâm. im ÇKDa.

विषलता f. = इन्द्रवारुणी Râgân. im ÇKDa.

विषलाङ्गल *eine best. Pflanze* Suçr. 2,70,10.

विषलाटा f. N. pr. einer Oertlichkeit Râga-Tar. 8,178. 1076. 1664. विषलाण्टा 691.

विषलाण्टा s. विषलाटा.

विषवत् (von 2. विष) adj. *giftig* RV. 10,85,24. AV. 8,10,29. Gobh. 4,9,16. MBh. 8,1822. 4418. *vergiftet:* खेटन Verz. d. Oxf. H. 304,*a*, 14.

विषवल्लरी f. *ein giftiges Rankengewächs* Spr. 1349.

विषवल्लि f. dass. Spr. (II) 1312. Kathâs. 124,131. °वल्ली Bâlar. 12,61.

विषविटपिन् m. *Giftbaum* Spr. 5303.

विषविद्या f. 1) *Giftkunde* Âçv. Ça. 10,7,5. — 2) *ein gegen Gift angewandter Zauberspruch* Bhar. zu AK. nach ÇKDa.

विषवृक्ष m. *Giftbaum* Spr. 1094 (II). 3079.

विषवैद्य m. *Giftarzt, Giftbeschwörer* AK. 1,2,4,12. Taik. 3,3,57. Milav. 46,23.

विषवैरिणी f. *eine best. Pflanze,* = निर्विषा Râgân. im ÇKDa.

विषशालूक m. *Lotuswurzel* Râgân. im ÇKDa.

विषशूक m. *Wespe* Buḍḍha. im ÇKDa. Suçr. 1,290,17.

विषशृङ्क्षिन् m. *Wespe* Hir. 217. — Vgl. विषसृक्कन्, वृषसृक्किन्.

विषसंयोग m. *Mennig* Ausw. 21.

विषसूचक 1) adj. *Gift verrathend.* — 2) m. *eine Hühnerart, perdix rufa* H. 1339; vgl. चकोर 1).

विषसृक्वन् m. *Wespe* Taitt. 2,5,24. — Vgl. विषसृङ्क्विन्, वृषसृक्वन्.

1. विषक् m. nom. act. von सक् mit वि in दुर्विषक्.

2. विषक् (2. विष + क्) 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) f. या Bez. zweier Pflanzen, = देवदाली und निर्विषा Riâns. im ÇKDn.

विषक्तर् 1) nom. ag. *Gift zerstörend.* — 2) f. °क्त्री Bez. zweier Pflanzen, = अपराजिता und निर्विषा Riâns. im ÇKDn.

विषक्र् 1) adj. *Gift entfernend:* विषक्राग्निमन्त्र, वृश्चिकादिविषक्र्-मन्त्र Verz. d. Oxf. H. 94,a,s. 9. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛshṭa Hariv. 1991. — 3) f. ई ein N. der Göttin Manasâ Çankar. im ÇKDn. Verz. d. Oxf. H. 24,b,38. auch f. या nach Çankar.

विषकृदय adj. *Gift im Herzen bergend:* वाग्मधुरो विषकृदयः Hit. 74,20.

विषह्य (von सह् mit वि) adj. 1) *tragbar:* अविषह्यं पृथिव्यापि तद्-बलम् MBn. 5,2491. अविषह्यं गुरुं भारं सैन्यभङ्गे समवोसृजत् 7,1515. Bhâg. P. 10,18,25. — 2) *erträglich,* अ° *unerträglich:* अविषह्यांशुरादित्यः R. 3, 12,8. तेजस् Raeu. 6,17. Bhâg. P. 10,51,36. व्यसन Kumâras. 4,30. यातेष Bhâg. P. 10,55,17. अविषह्यतमं दुःखम् R. 2,106,6. शोक R. Gorr. 2, 114,31. — 3) *ausführbar:* तावदेव भवेत्तव । विषह्यमेतदस्माकम् MBn. 2, 375. अ° *unausführbar:* कर्मन् 1,7300. न विद्यते ज्ञाम्बवतीसुतस्य रणे ऽविषह्यः (so ist zu lesen) हि रणोत्कटस्य 3,10271.10275.12062. तपस् 13,993. R. 3,18,44. अविषह्यतमं लोके विद्यते मे न किं च न 2,20,33. चतुर्यामविषह्याम् so v. a. *nicht sichtbar* MBn. 14,611. सीमा so v. a. *unbestimmbar* M. 8, 268. विषह्यं कर्तुम् *ausführbar* MBn. 3,12061. — 4) *bezwingbar,* अ° *unbezwingbar, unwiderstehlich:* रामस्य पौरुषं सुरासुरै-रप्यविषह्यमास्थे R. 4,10,26. धनुरात्तो Bhâg. P. 4,16,22. समुद्र MBn. 6, 1920. विषह्यं यं हि यो मेने सह् (स म ed. Bomb.) तेन समेषिवान् 3,16373. त्वं शत्रूणामविषह्यः पराक्रमे 8,1643. Hariv. 3744. R. 6,95,6. Bhâg. P. 4,24,63. 7,7,9. 8,15,25. 11,1,3. — Hier und da in der ed. Calc. des MBn. fälschlich विसह्य geschrieben. Vgl. दुर्विषह्य.

विषह्यता (von विषह्य) f. अ° *Unbezwingbarkeit, Unwiderstehlichkeit* Bhâg. P. 4,22,60.

1. विषा f. *eine best. Pflanze* s. 2. विष 3).

2. विषा Uṇâdis. 4,36. indecl. = बुद्धि Uéâvat.

विषाग्रज (2. विष + अ°) m. *der ältere Bruder des Giftes,* bildliche Bez. *des Schwertes* H. ç. 144.

विषाङ्कुर (2. विष + अ°) m. 1) *Giftschössling* Spr. (II) 73. — 2) *Lanze* Taitt. 2,8,55.

विषाङ्गना (2. विष + अ°) f. = विषकन्या Mudrâr. 42,19.

1. विषाण n. vielleicht = सवसान RV. 5,44,11.

2. विषाण m. n. *gaṇa* अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,a,6. 1) m. f. n. (das f. आ nur in der älteren Sprache zu belegen, in der späteren nur n.) *Horn* AK. 3,4,22,58. H. 1264. an. 3,226. Med. g. 77. fg. Harîr. 2,112. AV. 3,7,1. विषाणे वि व्य गुष्यितम् 3. 6,121,1. Ait. Br. 2,11. Çat. Br. 7,3,2,17. Pân. Gaṇ. 3,7. MBn. 1,3370. 3,17228. Hariv. 4103. R. 4,9,76. 79. Suçr. 1,99,9. 100,8. 363,1. Raeu. 9,62. Kumâras. 7,49. गो° Spr. (II) 253. 809. (I) 3250. क्षुद्र° Varâh. Bṛh. S. 50, 25 = 54,118. 57,7. 61,2. Kathâs. 40,8. Bhâg. P. 3,10,4. Mârk. P. 43, 34. अ° adj. Çat. Br. 5,1,2,8. त्रि° MBn. 6,70. गवां रूकविषाणीनाम् Bhâg. P. 9,4,33. °विषाणा adj. Mârk. P. 29,7. *Horn als Blasinstrument* Bhâg. P. 10,12,2. — 2) *Hauzahn des Elephanten,* m. f. n. AK. m. H. 1224. Halâj. 2,62. n. H. an. Med. nicht zu bestimmen ob m. oder n. MBn. 4,1707. 6,1762. 2870. 4676. fgg. R. 2,69,13. 3,32,20. 36,9. 5, 14,16. 6,3,44. 93,19. Varâh. Bṛh. S. 67,9. सु° adj. MBn. 3,15736. R. 3, 7,7. सु° MBn. 12,4230. चतुर्विषाण Hariv. 11853. Varâh. Bṛh. S. 58,42. n. vom *Hauzahn* Gaṇeça's Çiç. 1,60. Varâh. Bṛh. S. 58,58. *Hauzahn eines Ebers* H. an. Hariv. 2146. 16310. — 3) m. oder n. *Scheere eines Krebses* Pârâçar. ed. orn. 42,23. — 4) n. *Horn* so v. a. *Spitze:* des Mondes Varâh. Bṛh. S. 4,10. der Sonne bei einer Eklipse 5,12. केतुपताकाच्छ-त्रवज्रविषाणानि Suapv. Br. 6,10 in Ind. St. 1,41. स्वर्गाद्धुत्तुङ्गममलं वि-षाणं यत्र मूलिनः *der hornartig emporstehende Haarbüschel auf dem Scheitel* Çiva's MBn. 3,8233. *Spitze der Brust, Brustwarze* Bhâg. P. 5, 2,11. — 5) *Schlachtmesser* R. 1,13,35. कृपाण ed. Bomb. — 6) n. *Costus speciosus* oder *arabicus* Med. — 7) *Spitze* bildlich für *das Beste in seiner Art:* पौरुषम् । विषाणभूतं सर्वस्यां पृथिव्याम् MBn. 1,3735. धीविषा-णामलत्व so v. a. *Schärfe des Verstandes* Varâh. Bṛh. 28(26),7. — 8) f. ई Bez. verschiedener Pflanzen: = अजशृङ्गी, मेषशृङ्गी AK. 2,4,4,7. H. an. Med. = तीरकाकोली H. an. = ऋषभ und कर्कटशृङ्गी Ausw. 34. = तिन्तिडी Çabdâs. im ÇKDn. = वृश्चिकाली Riâns. im ÇKDn. — Vgl. कृष्ण°, गो°, निर्विषाणा, शश°, शशक°.

विषाणक 1) am Ende eines adj. comp. = विषाण *Horn:* मद्य° (उत्तन्) H. 1259. — 2) f. विषाणिकी *eine best. Pflanze* AV. 8,44,2. — 3) f. वि-षाणिका f. Bez. verschiedener Pflanzen: = मेषशृङ्गी Ratnam. im ÇKDn. = मातुला, कर्कटशृङ्गी und आवर्तकी Riâns. ebend. — Suçr. 1,144,16. 2,110,4. 174,12. 536,12. Wise 146 vermuthet *Asclepias geminata.* — Vgl. तीरविषाणिका und मेष°.

विषाणवत् (von विषाण) adj. *mit hervorstehenden Hauzähnen versehen;* m. *Eber* Hariv. 16311. — Kathâs. 71,148 ist wohl विषाद्यान् st. विषाणवान् zu lesen.

विषाणाग्र m. Bein. Gaṇeça's H. ç. 61.

विषाणिन् (von विषाण) 1) adj. a) *gehörnt* Kâç. 2,1,3. 3,1,16. क्षुद्र Hariv. 11852. MBn. 6,71. हेम° *vergoldete Hörner habend* 2,1928. वि-षाणित्व n. *das Gehörntsein* Comm. zu Kâç. 2,1,3. 3,1,16. — b) *mit Hauzähnen versehen:* गज MBn. 3,259. 9,879. — 2) m. a) *Elephant* Hir. 30. Hariv. 11852. Spr. 4616. Kâm. Nîtis. 14,34. Çiç. 4,63. — b) N. oder Beiname eines Volksstammes RV. 7,18,7. nach Sây. *Hörner in der Hand haltend.* — c) Bez. zweier Pflanzen: = ऋषभ und शृङ्गाटक Riâns. im ÇKDn.

विषातकी f. विषा विषातकासि AV. 7,113,2.

विषाद् (2. विष + 2. षद्) adj. *Gift essend:* eine Asuri Kiṣu. 25,4.

विषाद् (von सद् mit वि) m. 1) *das Schlaffwerden, Erschlaffen:* दोर्वि-षाद् Mâlatîm. 33,9. — 2) *Bestürzung, Niedergeschlagenheit, Kleinmuth, Verzagtheit, Verzweiflung* H. 312. प्रारब्धकार्यासिद्ध्यादेर्विषादः सत्त्वसं-क्षयः । निःश्वासोच्छ्वासकृत्तापसकृपान्वेषणादिकृत् ॥ Daçar. 4,29. उपाया-भावजन्मा तु विषादः u. s. w. (wie eben) Sâh. D. 197. Nir. 14,7. Maitrâyaṇ. 3,8. Bhâg. 1 in der Unterschr. 18,35. MBn. 1,7731. तेषां विषादो ऽज्ञा-

पत 3,13718. R. 1,3,13 (7 Gorr.). 2,47,2. 13. Suça. 2,259,19. fg. Kap. 1,138. Siddhânt. 12. Tattvas. 20. Ragh. 3,40. 5,14. Çik. 33,10. 90,20, v. l. 103, 9. 107,23. कर्यविषादाभ्याम् Milav. 50,20. Spr. (II) 1508. न विषादे मनः कार्यं विषादो विषमुत्तमम् (I) 1472. विपदि न यस्य विषादः 2826. °विस्मयावेशवश Kathâs. 18,240. Gegens. धैर्य 37,42. 45,297. Kâdab. 43. Sin. D. 107. Bhâg. P. 5,18,14. 6,12,6. 9,21,13. Vop. 8,126. कृत्त विषादे AK. 3,4,33(38),6. का विषादे 18. विषादे द्विस्त्रिरुक्तं वा न दुष्यति Cit. beim Schol. zu Çik. 5,5. मुह्यतां विषादः Vikr. 5,16. अपोद्धितुं विषादम् Ragh. 8,53. विषादं शमयन् Bhâg. P. 1,11,1. विषादमपनयतात् 3,9,24. ज्ञमुर्विषादम् MBh. 1,7677. 5,7286. R. 3,68,5. Kathâs. 18,223. Hit. 42,10. 128,17. Vet. in LA. (III) 7,21. विषादमुपयासि Spr. 1292. न तु कार्यो विषादस्ते R. 4,15,10. मा विषादं कृथा देवि भर्ता हि तव जीवति 6,23,26. Pañcat. 221,5. Kathâs. 12,28. कृतविषादा bestürzt 57,98. विषं लोकविषादकृत् R. Gorr. 1,46,21. अ° guter Muth MBh. 1, 7100. सविषादा bestürzt Pañcat. 129,13. सविषादम् adv. 107,19. Çik. 66,1. 67,20. Vikr. 30,12. Prab. 64,6. — 3) *Widerwille, Ekel:* विषादं कृ *einen Widerwillen an den Tag legen* Spr. (II) 807. विस्र = विषादजनक Schol. zu Prab. 96,1.

विषादन (vom caus. von सद् mit वि) 1) adj. *Bestürzung —, Verzweiflung bewirkend* R. 5,86,19. — 2) f. ई *eine best. Schlingpflanze,* = पलाशी Râgân. im ÇKDa. — 3) n. = विषाद 2) Bhâg. P. 12,3,30. *niederschlagende Erfahrung:* इप्यमाणविरूढार्थसंप्राप्तिस्तु विषादनम् Kuvalay. 139,a (133,b).

विषादवत् (von विषाद) adj. *niedergeschlagen, bestürzt, kleinmüthig* Kathâs. 25,21. 57,47. 85,39. auch wohl 71,143, wo विषाणवत् gedruckt ist.

विषादिता (von विषादिन्) f. = विषाद 2) Spr. (II) 750. Kathâs. 27, 84. 45,292. 119,189. न च कैसावलोकेतोः कार्या ते ऽत्र विषादिता 71,240. मा गमस्तं विषादिताम् 72,131. अ° *Unverzagtheit* Spr. 2360.

विषादित्व (wie eben) n. dass. Suça. 1, 312,21.

1. विषादिन् (von सद् mit वि oder von विषाद) adj. *niedergeschlagen, bestürzt, kleinmüthig, verzagend:* अलाभे न विषादी स्याल्लाभे चैव न हर्षयेत् M. 6,57. Bhag. 18,28. भीरुर्विषादिनः (so die ed. Bomb.) MBh. 3,13048. Spr. 2986. 4810. Kathâs. 53,36. अ° *unverzagt* MBh. 3,14073.

2. विषादिन् (2. विष + घा°) adj. *Gift schluckend* Spr. 2896.

विषानन (2. विष + आ°) m. *Schlange* Çabdam. im ÇKDa.

विषान्तक (2. विष + अ°) m. Bein. Çiva's (der das bei der Quirlung des Meeres entstandene *Gift verschluckte*) H. 197.

विषान्न (2. विष + अ°) n. *vergiftete Speise* Kathâs. 75,148. °परीक्षा Verz. d. Oxf. H. 85,b,31.

विषापवादिन् (2. विष + अ°) adj. *Gift besprechend* Çiva-Bh. 29,1.

विषापह (2. विष + अ°) 1) adj. *Gift vertreibend, — zerstörend:* मन्त्र M. 7,217. अगद Suça. 2,259,5. — 2) m. *a) ein best. Baum,* = पुष्पक Râgân. im ÇKDa. — *b)* Bein. Garuḍa's H. ç. 78. — 3) f. आ Bez. verschiedener Pflanzen: = इन्द्रवारुणी und निर्विषा Râgân. im ÇKDa. = मागधिका Bhâvapr. ebend. = अर्कमूला Çabdar. ebend. = सर्पकङ्कालिका Ratnam. ebend.

विषापहरण (2. विष + अ°) n. *das Vertreiben —, Unschädlichmachen von Gift* Verz. d. Oxf. H. 123,a,33.

विषाभावा (2. विष + अभाव) f. *eine best. Pflanze,* = निर्विषा Râgân. im ÇKDa.

विषामृत (2. विष + अ°) n. *Gift und Nektar,* Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 196,b,5.

विषामृतमय (von विषामृत) adj. (f. ई) *aus Gift und Nektar gebildet, das Wesen von Gift und Nektar habend:* कन्या Kathâs. 39,80.

विषाय् (von 2. विष) *zu Gift werden:* विषायते Spr. (II) 1492. (I) 2099. विषायति (II) 2434.

विषायिस् adj. von सा, स्यति mit वि Gaṇa अजादि zu P. 3,1,134.

विषायुध (2. विष + आ°) m. *Giftschlange (dessen Waffe Gift ist)* Hit. 15. Çabdar. im ÇKDa.

विषायुधीय (von 2. विष + आयुध) adj. *giftige Waffen habend; m. ein giftiges Thier* Varâh. Bṛh. S. 5,40.

विषार् (von 2. विष) m. *Giftschlange* Çabdar. im ÇKDa.

विषाराति (2. विष + अ°) m. *Feind —, Bekämpfer von Gift,* Bez. *einer Art von Steckapfel* (कृष्णधत्तूरक) Râgân. im ÇKDa.

विषारि (2. विष + अरि) m. *Feind —, Bekämpfer von Gift,* Bez. *eines best. Antidotes* Suça. 2,247,7. 250,18. nach Râgân. im ÇKDa. = मरुवच्छू und घृतकरञ्ज.

विषालु (von 2. विष) adj. *giftig* Wilson.

विषासहि (vom intens. von सह् mit वि) adj. *überwältigend, übermächtig* ṚV. 10,159,1. 166,1. 174,5. AV. 17,1,1 (vgl. 19,23,27). Çat. Br. 14,5,4,7. Kaush. Up. 4,2. 9.

विषास्य (2. विष + आ°) 1) adj. *Gift im Munde führend.* — 2) m. *Giftschlange* Hit. 15. Çabdar. im ÇKDa. — 3) f. आ *Tintenbaum* (s. मेषशृङ्गी) Çabdar. im ÇKDa.

विषास्त्र (2. विष + अ°) n. *ein vergifteter Pfeil* Taitt. 3,2,6.

विषित s. u. सि mit वि.

विषितस्तुक (वि° + स्तुका) adj. *mit aufgelösten Haaren* ṚV. 1,167,5.

विषितस्तुप adj. AV. 6,60,1 wohl fehlerhaft für °स्तुप *mit aufgelöstem Schopf.*

विषिन् (von 2. विष) adj. *vergiftet* Pañcar. 3,14,36.

विषीभू (2. विष + 1. भू) *zu Gift werden:* °भूतमम् Kathâs. 87,47.

विषु adv. *nach beiden —, nach verschiedenen Seiten;* nur in Ableitungen und Zusammensetzungen erhalten und vielleicht mit विस्र verwandt. Verdächtig ist das Wort in मुक्तविषूपमैः Pañcar. 3,3,10. Beim Schol. zu P. 5,4,77, Vârtt. wird ein ved. acc. विषम् neben विषुवम् aufgeführt.

विषुण (von विषु) 1) adj. P. 5,2,100, Vârtt. 2 (oxyt.). Nir. 4,19. *a) verschiedenartig:* चरत्पतत्रि विषुणं शतम् ṚV. 3,54,8. कुमारेको विषुणः सूनरो युवा vom *wechselnden* Monde 3,29,1. 7,21,5. — *b) abgewandt, abgeneigt:* घोरस्य सतो विषुणस्य चाहेः (मंदक्) ṚV. 4,6,6. मघोनस्ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् 5,12,5. सुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः 34,5. — *c)* loc. *absolt:* इष्मर्मपश्यं विषुणे चरन्तम् ṚV. 8,85, 14. — 2) m. = विषुव *Aequinoctium* Râmâçr. zu AK. 1,1,3,14 nach ÇKDa.

विषुणीक् adv. *nach verschiedenen Seiten hin:* धनोरधि विषुणक्ते व्यायन् ṚV. 1,33,4.

विपुदुंक् adj. so nach Sây. *allverletzend* so v. a. *Pfeil:* विपुदुंक्वेव पृत्तमूल्युर्गिरा RV. 8,26,15. Wir nehmen eine Entstellung des Textes an aus विपूकुक्वेव d. i. °कुक्म् इव; s. u. d. W.

विपुप n. = विषुव *Aequinoctium* Bhar. zu AK. 1,1,3,14 nach ÇKDa.

विपुरूप adj. *verschiedenfarbig, — artig* Nir. 11,23. घर्त्नी RV. 1,123, 7. 8, 58, 1. विपुरूपे पयसि सस्मिन्नूधन् 1,186,4. 3,15,4. 6,70,3. 10,10,2 (vgl. VS. 6,20. TS. 1,3,10,1). जन्मसु 64,5. इन्दु VS. 8,30. छन्दांसि TS. 5,3,6,2. पशवः 8.

विपुव m. n. = विषुवत् *Aequinoctium* AK. 1, 1, 3,14. H. 146. Dvirûpak. in Verz. d. Oxf. H. 194, *b*, No. 449. Weber, Ind. Stud. 77. विपुवे MBh. 3,13475. fg. Bhâg. P. 7,14,20. Mârk. P. 31,21. °समये Hit. 114,22. — Vgl. अल°, मल्ला° (मल्लाविपुवसंक्रान्तौ Hit. 114,22, v. l.).

विपुवत्स्तोम (विपुवत् + स्तोम) m. N. eines Ekâha Âçv. Çr. 10,1,3.

विपूवँत् und विपूवँत् (von विपु) 1) adj. (*an beiden Seiten gleichmässig Theil nehmend* u. s. w.) *die Mitte haltend, in der Mitte befindlich:* स्वादोरित्था विपूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः RV. 1,84,10. प्रवाकुक्सतः शिर एव विपुवान् Ait. Br. 4,22. विपुवतो भवति श्रेष्ठतामनुक्रमते so v. a. *diejenigen, deren Entscheidung den Ausschlag giebt* ebend. TS. 7,4,3,4. — 2) m. *Mittelstag* (in einer best. Jahresfeier), so vielleicht schon AV. 11,7,15. एकविंशमेतदुक्थ्यं यत्तिस्रो विपुवत्तं मध्ये संवत्सरस्य Ait. Br. 4,15. 22. 3,41. 6,18. Çat. Br. 10,1,3,3. 3,14. 28. 4,2. 2,3. Çâṅkh. Br. 25,1. 26,1. Pañcav. Br. 4,5,2. 5,9,10. Kâty. Çr. 24, 3, 20. 5, 9. 17. — 3) m. N. eines Ekâha Pañcav. Br. 20,3,2. Kâty. Çr. 23,1,15. Mâç. 2, 5 in Verz. d. B. H. 72. — 4) m. n. *Aequinoctium* AK. 1,1,3,14. Taik. 3,3, 246. H. 146. Dvirûpak. in Verz. d. Oxf. H. 194, *b*, No. 449. Weber, Ind. Stud. 77. fg. 108. 112. Jâén. 1,217 (neutr.). विपुवति MBh. 3,13477. विपुवत्पूर्णाशीतोप्सु (so ist zu schreiben) Râéa-Tar. 2,10. विपुवत्संक्रान्तौ Hit. ed. Jones. 2434. विपुवत्कर्ण Sâmav. 3,13. विपुवत्प्रभा 18. विपुवद्रा 7. विपुवद्दिन und विपुवद्दिवस Ganit. Spasht. 46. विपुवद्वलय *Aequator* Golâdh. 5, 10. 17. विपुवद्वृत्त (Bhâskarâkârjja im Arabischen LIA. Anh. zum Hilten und IVten Bde S. 38) n. dass. Comm. zu S. 10. विपुवन्मण्डल n. dass. ebend. Sâmav. 3,6. Ganit. Tripraçn. 13, Comm. — 5) m. *Scheitelpunkt, vertex* überh.: धूममारादपश्यं विपूवता परेनावरेण RV. 1,164,43. यत्नुमोषणं वितते सदन्नते विपूवति AV. 9,3,5. — Vgl. वैपुवत.

विपूकुक् adj. *nach beiden Seiten zerfallend, zweispältig:* विपूकुक्मिव धन्वना व्यस्याः परिपन्थिनम् so v. a. *zerschneide mit dem Pfeile in zwei Stücke* Âçv. Çr. 5,3,22. पराचद् दुर्कीर्दो ये विपूकुकः Lâṭy. 3,11,3. In RV. 8,26,15 vermuthen wir विपूकुक्वेव d. h. °कुक्मिव पक्षम् *in zwei Theile getheilt* nämlich *für jeden* Açvin *einen Theil.*

विपूचक = विपूचिका, loc. °के (aus metrischen Gründen) MBh. 12, 11268 nach der Lesart der ed. Bomb., विप्रूचिके ed. Calc.

विपूचि = विपूचीन Bez. *des überall hindringenden* Manas Bhâg. P. 4,29,16 (ed. Bomb. fälschlich विपूचीर्मनः).

विपूचिका (von विपूची) f. *eine best. Krankheit (Indigestion mit Auslerungen nach beiden Seiten* d. h. *nach oben und nach unten)* VS. 19,10. TBr. 2,6,8,5. nach Wise 330 *die Cholera in ihrer sporadischen Form.* Schierbeck, Lebensb. 224 (94). Soçr. 1,82,5. 2,219,19. 429,19. 518,2. fgg. Vîsn. 8, 8. 8. Verz. d. B. H. No. 935. 938. Verz. d. Oxf. H. 304, *a*, 23. 312, *b*, 6. Vaid. Bhr. S. 87, 44. Tattvas. 50. Spr. (II) 103. Kathâs. 70, 8. Pañcat. 138, 8. Râéa-Tar. 8, 88. ईर्ष्याविषविप्रूचिकाः 3, 512. Wird häufig fälschlich विसूचिका und विप्रूचिका geschrieben und Soçr. 2, 518, 8 auf सूची zurückgeführt.

विपूची s. विषूच्.

विपूचीन (von विषूच्) adj. *nach den Seiten hinaus gehend, auseinander fahrend, — stiebend* (Gegens. समोचीन) RV. 1, 164, 38. नेत्रियं विपूचीनमनीनशत् AV. 3,7,1. 8,6,10. सपत्नान्विषूचीनान्व्यस्यताम् VS. 17, 64. विपूचीनं रेतः परागिञ्चति *daneben, daran vorüber* TS. 5,2,3,3. 3,4. *sich überallhin verbreitend:* गन्ध्य Bhâg. P. 10, 15, 25. subst. Bez. *des überall hindringenden* Manas 4,25,55.

विपूवत्स् s. विपुवत्स्.

विपूवँत् (विपु + वत्) adj. *das Gleichgewicht haltend:* रघ RV. 2,40, 3. को वस्मिन्नापो व्यदधाद्विपूवते: *gleichmässig vertheilt* AV. 10, 2, 11. विपूवदिन्द्रो मरुतः कृत नुधः *neutral* d. h. *unbetheiligt an* RV. 10,43,3.

विपेठ s. u. सक् mit वि.

विपेषधी (2. विष + धो°) f. *Flaridium indicum Lehm.* (नागदन्ती) Ratnam. im ÇKDa.

विष्क्, विष्कयति (दर्शने) Dhâtup. 35,84, *b*, v. l.

विष्क m. *ein zwanzigjähriger Elephant* Çiç. 18,27 und Vaiç. bei Mallin. zu d. St. vielleicht nur fehlerhaft für विङ्क.

विष्कन्ध (2. वि + स्कन्ध) n. vermuthlich Bez. *einer Krankheit* AV. 1,16,3. 2,4,2. fgg. 3,9,2. 3. 4,9,5. 19,34,5. TS. 7,3,44,1.

विष्कन्धदूषण adj. *das* Vishkandha *verderbend* AV. 2,4,1. 3,9,6.

विष्कम्भ (von स्कभ्, स्कम्भ् mit वि) m. 1) *Stütze:* (धारयति) प्रपतिष्यदिवागारं विष्कम्भः साधु योजितः Soçr. 1,87,11. am Wagen Lâṭy. 1, 9,23. — 2) *Riegel* AK. 2,2,17. Schol. zu Raghuv. ed. Calc. 16,8. — 3) *ein Pfosten, um den sich der Strick des Butterstössels windet,* H. 1023. — 4) *Breite, Durchmesser;* = विस्तृति, विस्तार H. an. 3,488. Mitâkshar. 19. MBh. 6,401. 405. fg. 409. 483. 484. fgg. Harîv. 8990. उच्छ्रायो ऽङ्गुलतुल्यो द्वादशार्धेन विष्कम्भः Varâh. Bhr. S. 53,24. fg. 79,10. Mârk. P. 49, 44. H. 132, Schol. घत्तर° MBh. 6, 200. 453. Verz. d. Oxf. H. 48, *a*, 41. *Durchmesser eines Kreises* Colebr. Alg. 87. Âryabhaṭîya 2,7. 10. विष्कम्भार्ध *Halbmesser* 11. — 5) *Hinderniss* H. an. Med. (प्रतिविम्ब्य fehlerhaft für प्रतिबन्ध). Halây. 4,34. — 6) in der Dramatik *Vorspiel am Anfange eines Actes, in welchem der Zuschauer mit dem bekannt gemacht wird, was ihm zum Verständniss des Folgenden unumgänglich nothwendig ist,* Bhar. Nâṭyaç. 18,34. Daçar. 1,52. fg. Sâh. D. 309. Prat. 23, *b*, 7. Gaṅgâdhara in der Vorrede zu Daçar. 13. = रूपकावयव H. an. = रूपकाङ्गप्रभेद Med. Vgl. Böhtlingk in der Einl. zu Çiç. XII. fg. Bollensen in den Anmm. zu Vikr. S. 369. fg. — 7) *eine best. Stellung der Jogin* H. an. Med. — 8) Bez. *eines der 27 astr. Joga und zwar des ersten* H. an. Med. Colebr. Misc. Ess. II, 363 (hier fehlerhaft विष्कुम्भ). Sa$ik. K. 2, *a*, 3. — 9) N. pr. eines Gebirges Mârk. P. 54, 19. 55, 11. — 10) N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Harîv. 11543, wo vielleicht so zu lesen ist für विस्कुम्भुः Nikumbh Langlois, विष्टर die neuere Ausg. — 11) *Baum* Âdâra im ÇKDa. — Hier und da fälschlich विस्कम्भ geschrieben. Vgl. दण्ड°, वम्र°.

विष्कम्भक (wie eben) 1) adj. *stützend:* °काष्ठ *Stütze zum Tragen der Deichsel* Schol. zu Kâṭy. Çr. 7,9,25. — 2) m. = विष्कम्भ 6) Bhar. Nâṭyaç. 18, 35. Daçar. 3, 25. Sâh. D. 308. Gâgabhaṭṭa in der Vorrede zu Daçar. 13. Çik. 31,13. 46,4. Vikr. 36,14. Uttarar. 31,2. 73,9. 106, 9. Mâlatîm. 146,4. Prab. 13,15. 69,7. मिश्र° Mâlav. 8,11. — 3) f. विष्कम्भिका *Stütze zum Tragen der Deichsel* Schol. zu Kâṭy. Çr. 8,4,3.

विष्कम्भिन् (wie eben) 1) adj. unter den Beiww. Çiva's MBh. 13,1186. विष्कम्भो विस्तारस्तठान् Nîlak. — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Burn. Intr. 224. fgg.; vgl. सर्वनिवरण°. eine Tantra-Gottheit Kâlakâkra 4, 92.

विष्कर 1) m. *a) Riegel* AK. 2,2,17, v. l. — *b)* N. pr. eines Dânava MBh. 12,8265 nach der Lesart der Bomb. Ausg., विस्कर ed. Calc. — 2) n. Bez. *einer best. Fechtart* Harîv. 15978 nach der Lesart der neueren Ausg., विकर die ältere. — विष्कर H. ç. 191 fehlerhaft für विष्किर.

विष्किर (von 3. कॄ mit वि) m. *Scharrer*, Bez. *der Hühnervögel wie Haushuhn, Rebhuhn, Pfau, Wachtel* u. s. w. P. 6, 1, 150. AK. 2, 5, 33. H. 1316. H. ç. 191 (fälschlich विष्कर, als Syn. von *Hahn*). Hâlây. 2,88. Jâṭâ. 1,173. Suçr. 1,57,16. 184,13. 201,2. Vishn. 6,47. Uttarar. 31,1 (40,13). °रस *Hühnerbrühe* Suçr. 2,499,17. Çârîr. Sâṃh. 3,4,33. — Vgl. नख°, स्मर° und विकिर.

विष्ट s. वेष्ट.

विष्ट s. u. 1. विश् und 1. विष्.

विष्टकर्ण adj. *auf eine best. Weise am Ohr gezeichnet* P. 6,3,115.

विष्टप् *f. oberster Theil, Höhe, Oberfläche;* insbes. *die Höhe des Himmels*, parallel mit वर्मन्, सानु, पृष्ठ. Auf *Sonne* oder *Himmel* gedeutet Naigh. 1, 4. Nir. 2, 14. bei Sây. gewöhnlich mit स्थान umschrieben. सूर्णायामधि विष्टपि ṚV. 1,46,3. न्यर्बुदस्य विष्टपं वर्म्माणी बस्तस्तिरे 8, 32,3. घा यामि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः 34,13. पहासि रोचने दिवः समुद्रस्याधि विष्टपि 86,8. übertragen auf die Soma-*Kufe* 9,12,6. 107, 16. ऋतस्य 34,5. ऋतस्य सानावधि विष्टपि भात् 10,123,2. नाकस्य AV. 11,1,7. 18,4,4. ब्रध्नस्य 10,10,31. उग्रबध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गच्छति *die oberste Höhe, welche der Röthliche* d. h. *die Sonne erklimmt*, ṚV. 8, 38,7. VS. 18,51. TS. 7,5,6,5. Âçv. Çr. 11,3,7. Pâraṣkâv. Gṛ. 18,7,13.

विष्टप m. (dieses selten) und n. dass. Der acc. विष्टपम्, der auch hierher gehören könnte, ist für die ältere Sprache unter विष्टप् gesetzt. इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय ṚV. 8,80,5. ब्रध्नस्य 8,113,10. VS. 14,28. Ait. Br. 1,30. स्वर्गो वै लोको ब्रध्नस्य विष्टपम् 4,4,5,20. TS. 5,3,3,5. Çat. Br. 12,3,4,9. 13,1,7,3. Çâṅkh. Br. 17,3. masc. Pâraṣkâv. Gṛ. 19,10,12. 23,3,5. 19,3. — संवत्सरस्य त्रयोदशो मासो विष्टपम् *das Hervorragende* TBr. 3,8,2,3. शुषस्य *der Höcker* ebend. Çat. Br. 13,1,2,3. In der Stelle विष्टपमभिवृक्षति Çat. Br. 3,6,1,21 verstehen die Comm. *Verzweigung, Gabel des* Udumbara-*Zweiges* Schol. zu Kâṭy. Çr. 703,1. Mahîdh. zu VS. 5,28, also wohl *der oberste* (zugleich verzweigte) *Theil.* विष्टप n. = जगत्, भुवन, लोक *Welt* AK. 2,1,6. H. 1365. Hâlây. 1,133. ब्रध्नस्य M. 4,231, v. l. 9,127. °त्रय Ragh. 11,19. त्रयाणामपि विष्टपानाम् Kumâras. 3,20. °कारिन् (क्र) Spr. 3288. — Vgl. त्रि° und पिष्टप.

विष्टपु m. N. pr. eines Mannes गण शुभ्रादि zu P. 4,1,123. Vers. d. Oxf. H. 18,b,16. 19,a,12. — Vgl. वैष्टपुरेय.

विष्टब्धि (von स्तभ्, स्तम्भ् mit वि) f. *das Feststellen, Stützen* Anupada 3,11.

विष्टम्भ (wie eben) VS. Prât. 5,11. m. 1) *das Stützen:* पद्° *des Fusses* so v. a. *das Auftreten* Kir. 13,16. — 2) *Stütze* ṚV. 9,2,5. 86,35. 108, 16. AV. 13,4,10. VS. 14,9. 15,6. विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः TS. 4, 4,12,5. देवेन्द्रबल° MBh. 12,10343. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 327. — 3) *Stützen* d. i. *Haltpunkte* heissen *gewisse in den Singsang der Litaneien eingeschobene Silben* Pâraṣkâv. Gṛ. 12,10,7. Anupada 3,11. Nidânas. 3,12. — 4) *Hemmung, Unterdrückung:* = प्रतिबन्ध Mân. bh. 20. वृष्टिविष्टम्भकृद् Bhâg. P. 5,22,12. भयानो च स्वसैन्यानां सम्यग्विष्टम्भलक्षणम् Kâm. Nîtis. 18,40. *Stopfung, Obstruction* Suçr. 2,403,13. 509,19. वायु° 194,10. = प्रभेदो ऽमयस्य Mân. — 5) *eine best. Krankheit des Fötus* Çârîr. Sâṃh. 1,7,104. — 6) *das Ertragen, Trotzen, Widerstehen:* शीतोष्णवर्षपवनविष्टम्भविभिन्नसर्वत्वच् MBh. 12,7002.

विष्टम्भकर adj. *stopfend, hemmend:* त्रिदोष° Suçr. 1,210,17.

विष्टम्भन (vom caus. von स्तभ्, स्तम्भ् mit वि) 1) adj. (f. ई) VS. Prât. 5,11. *stützend* VS. 14,5. — 2) m. *das Hemmen, Zurückhalten, Unterdrücken:* उच्चामाविष्टम्भन Maitrâyaṇ. 2,2.

विष्टम्भयिषु (eine unregelmässige Bildung ohne Redupl. vom desid. des caus. von स्तभ्, स्तम्भ् mit वि) adj. *zu stützen* —, *zum Stehen zu bringen beabsichtigend:* ein fliehendes Heer MBh. 7,1746. संस्तम्भयिषु ed. Bomb.

विष्टम्भिन् adj. *stopfend, hemmend* Suçr. 1,51,21. 176,10. 178,10. 199, 20. Vishn. 6,36. 38.

विष्टर (von स्तॄ mit वि) VS. Prât. 5,11. 1) m. *Büschel von Schilf und dgl. zum Sitzen* (= कुशपूलक, दर्भासन nach den Comm.), = दर्भमुष्टि, कुशमुष्टि, बर्हिर्मुष्टि AK. 2,4,25,171. H. 835. an. 3,601. fg. Med. r. 216. — Âçv. Gṛ. 1,24,7. 8. Gobh. 4,10,3. 4. Liṭ. 1,2,2. Pân. Gṛ. 1,2. आसने विष्टरोत्तरे MBh. 3,1881. — 2) m. n. *Sitz* überh. P. 8,3,93. AK. Trik. 2,6,40. H. 684. H. an. Med. Hâlây. 2,155. विष्टरार्थं कुशाः Jâṭâ. 1,229. Mâlav. P. 31,40. दर्भिणायास्ततो दर्भा विष्टरेषु निवेशिताः MBh. 12,4339. काञ्चन 1,2213. R. 4,30,37. MBh. 3,2874. वरं तु विष्टरं कैशं कृष्णाजिनकुशोत्तरम् । प्रतिपेदे 15,739. fg. Harîv. 4448. Ragh. 8,18. 15, 79. °भाज् 5,3. Kumâras. 7,72. Vikr. 86,15 (m.). सूत्राम° Râǵa-Tar. 1, 100. 4,110. गजस्कन्धनिबद्ध 263. 555. 719. उत्तमश्लोकपद्माक्ष° Bhâg. P. 6,16,32. Pâraṣkâr. 3,6,2. हृदयाम्भोज° adj. Bhâg. P. 3,28,16. पुष्कर° Bein. Brahman's 19,31. Als neutr. Harîv. 14544. 15711. Çâṅk. 14,51. — 3) m. *Baum* P. 8,3,93. AK. Trik. 2,4,2. H. 1114. H. an. Med. Hâlây. 2,22. — 4) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Harîv. 11543 nach der Lesart der neueren Ausg. — 5) f. या *ein best. Gras*, = गुण्डामिनी Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. सिंह°, विष्टार und विस्तर.

विष्टरश्रवस् (विष्टर = विस्तर + स° ?) adj. *weitberühmt;* m. Bein. Vishṇu's oder Kṛishṇa's AK. 1,1,1,13. H. 218. Hâlây. 1,24. MBh. 12, 1370. 14,355. Harîv. 15883. 15932. Çiç. 14,12. Verz. d. Oxf. H. 72,a,32. Pâraṣkâr. 4,3,11. 8,33. Çiva Çv. विष्टरे उच्चत्यवते भूपते नित्यं तत्र वसतीति विष्टरश्रवाः Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4,226. विष्टराविव श्रवसी यस्य स

विष्टम्भवा: Mallin. zu Çiç. 14,12. Hier und da fälschlich °भवम् geschrieben.

विष्टराज्ञ *Silber* Ausw. 25.

विष्टराश्व (विष्टर + अश्व) m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu Harıv. 669. विष्वगश्व andere Autorr.

विष्टरूका f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णकेतकी Rāǵān. im ÇKDa. विष्टारूका v. l.; die richtige Lesart möchte विष्ठारूका *auf Mist wachsend* sein.

विष्टा s. u. 1. und 2. विष्ठा.

विष्टाप्त (विष्ट + आप्त Padap.) adj.: नेमर्धिता न पौंस्या वृषेव विष्टाप्ता ṚV. 10,93,13. das Metrum ist nicht in Ordnung.

विष्टार् (von स्तर् mit वि) m. 1) etwa *Streu* (des Barhis): यज्ञे विष्टार ओक्ते ṚV. 3,52,10. nach Sāy. als nom. pl. = विस्तृता: सप्त:, was unmöglich ist. — 2) *ein best. Metrum* (vgl. die folgenden Wörter) P. 3, 3,34. 8,3,94.

विष्टारपङ्कि f. *ein best. Metrum:* 8 + 12 + 12 + 8 *Silben* VS. 15, 4. TS. 4,3,12,3. ṚV. Prāt. 16,39. Colebr. Misc. Ess. II, 153 (V, 4; hier fälschlich विस्तार°). Schol. zu P. 3,3,34. 8,3,94. Ind. St. 8, 98. 249. निचृद्गा 97. द्विपदा und प्रवृद्धपदा 102.

विष्टारबृहती f. *ein best. Metrum:* 8 + 10 + 10 + 8 *Silben* ṚV. Prāt. 16,38. Schol. zu P. 8,3,94.

विष्टारिन् (von स्तर् mit वि oder von विष्टार) adj. heisst *eine best. Art von Odana und das Opfer desselben* AV. 4,34,1. fgg.

विष्टारूका f. s. विष्टरूका.

विष्टाव (2. वि + स्ताव) m. *Unterabtheilung der Perioden eines Stoma, Glied* Lāṭ. 2,6,6. 9. 8,1,18. 5,6. 6,16. 7,4. Schol. zu Pāṇ. Bā. 2,9,3.

1. विष्टि und विष्टिभिस् instr. pl. *wechselnd, vicibus:* पुर्वाना पितरा पुनर्विष्टाक्रत *wieder* ṚV. 1,20,4. सर्वत्ति नारीरपसो न विष्टिभि: 92,3. त्रिविष्टि adv. *dreimal* 4,6,4. 15,2. त्रिविष्टिधातु = त्रिधातु 1,102,8.

2. विष्टि (von 1. विष्) 1) f. *Frohne, Frohndienst, Zwangsarbeit:* तान्सर्वान्धार्मिको राजा बलिं विष्टिं च कारयेत् MBh. 12, 2673. Bhāg. P. 5,9,9. 10,1. 12,7. 7,8,55. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,13. = घासू AK. 1,2,8,3. H. 1358. an. 2,100. Med. t. 28. = मूल्य, वेतन H. an. Med. = कर्मन् Med. = प्रेषण H. an. = प्रेक्षण (d. i. प्रेक्षण, प्रेषण) Trik. 3,3,103. — 2) sg. (wohl f.) coll. *die Frohner, Zwangsdiener:* रथा नागा रुपाश्चैव पादाताश्चैव — विष्टिर्नावश्चराश्चैव (so ed. Bomb.) दैशिका इति चाष्टमम् ॥ षड्गान्येतानि — प्रकाशानि बलस्य तु। MBh. 12,2162. fg. 4483. विष्टिकर्मान्तिका: R. 2,82,19. Auch *der einzelne Frohner:* घुचरविष्टिसकृत्कार्य Kathās. 110, 142. = कर्मकार H. an. und zwar adj. Med. — 3) f. N. *des 7ten beweglichen* Karaṇa (s. u. 2. करण 3) m) Vaitān. Bṛh. S. 96,6. 98,13. 99,4. 7. 100,2. Çatr. 14,291. Schol. zu Kāṭy. Çr. 7,1,31. = भद्रा Trik. H. an. — 4) f. N. pr. einer Tochter des Sonnengottes von der Khājā Verz. d. Oxf. H. 34, *b*, 41. — 5) m. N. pr. eines der sieben Ṛshi im 11ten Manvantara Mārk. P. 94,20.

3. विष्टि (aus वृष्टि) f. = वर्षण *Regen* Viçva im ÇKDa.

विष्टिकार (2. वि° + 1. कार) m. 1) *Frohnherr, Zwingherr:* निर्विशेषा जनपदास्तदा विष्टिकारार्दिता: MBh. 3,13051. — 2) *Frohner, Zwangsdiener* Vaitān. Bṛh. 18(16),11.

विष्टिकृत् m. = विष्टिकार 2) Vaitān. Bṛh. 18(16),18. 21(19),7.

विष्टिर् (von स्तर् mit वि) f. *Weite* (vgl. उर्वी): पञ्चस्तभा विष्टिर: पञ्च संदृश: ṚV. 2,13,10. स संस्तिरो विष्टिर: सं गृभायति 1,140,7.

विष्टिव्रत n. Bez. *einer best. Begehung zu Ehren der Vishṭi, der Tochter des Sonnengottes* Verz. d. Oxf. H. 34, *b*, 40 (Verz. d. B. H. 136, *a*, 112).

विष्टीमिन् (von स्तीम् mit वि) adj. *nässend* VS. 23,29.

विष्टुति (von स्तु mit वि) f. *Recitationsweise (der Stoma)* VS. 19,28. Pāraṇ. Bā. 2,1,1. 2,1. 3,1. 4,1. Lāṭ. 8,2,20. द्वात्रिंशे स्तोमे तिस्रो विष्टुती: कुर्यात् 7,18. Sāṅkh. Bā. 3,2. 9. Verz. d. Oxf. H. 367, *a*, 24.

विष्ठल (2. वि + स्थल) n. P. 8,3,96.

1. विष्ठा (स्था mit वि) f. *Art (verschiedene Einzelne umfassend), Form:* गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा (oder विष्ठा:, jenes nach Padap.) *volucrum genera* AV. 12,1,8. देवानां विष्ठामनु यो चितस्ये *die verschiedenen Götter* TBr. 3,7,5,3. सं प्रेरते अनु वातस्य विष्ठा: ṚV. 10,168,2. बुध्ना उपमा विष्ठा: VS. 13,3. यत्तस्यै 23, 57. fg. Kauç. 3. दर्शन्तु ता वरुण यास्ते विष्ठा: *verschiedene Arten des Erscheinens* AV. 5,1,8. 7,3,1 (vgl. TS. 1,7,12,2). स्वर्गा लोका अमृतेन विष्ठा इर्षं दुक्षाम् *die Himmelswelten mit den Unsterblichen, die mancherlei* u. s. w. 18,4,4. त्रिवत्नी विष्ठया (die Hdschrr. haben विष्टया: vgl. jedoch Āçv. Çr. 4,12,2) स्तोमो यज्ञेषु (पिपर्तु) *mit den verschiedenen Tagen* TS. 4,4,12,1. 3.

2. विष्ठा f. = 3. विष् *faeces* AK. 2,6,2,19. H. 634. Hālā. 3,15. पितृपितामहप्रपितामहाश्च विष्ठायां जायते Parāçarāsi in Dāsabh. 273,3. 4. M. 3,180 (= MBh. 13,4282). 4,220 (MBh. 12,1320). MBh. 5,5446. 13, 1551. 4827. Suçr. 2,246,7. Çāṅkh. Sāṅh. 1,3,16. Spr. (II) 1111. यदि काको गजेन्द्रस्य विष्ठां कुर्वीत मूर्धनि। स स्वभावो हि नीचानां यो गजो गज एव स: ॥ Sarasvat. 122. तस्योपरि बलाकाया। विष्ठा कदाचिन्मुक्ताभूत् Kathās. 56,172. 70, 91 (pl.). Pāṇ. 1,2,43. 2,2,69. सुवर्णमयी विष्ठा विधाय Pāṇ. 102,16. विष्ठायां कृमिर्भूत्वा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28,12. Bhāg. P. 10,64,39. °कृमि Vaitān. Bṛh. S. 95,14. शु° M. 10,91. काक° Verz. d. Oxf. H. 223, *b*, No. 344. Hier und da fälschlich विष्ठा geschrieben. — Vgl. गो°, मुख°, वाजि°.

विष्ठाभू (2. वि° + 2. भू) m. *ein in Koth lebender Wurm* Bhāg. P. 3, 31,10. 24.

विष्ठावर्जिन् adj. nach Sāy. *an einer Stelle bleibend, sich nicht umhertreibend* Çat. Bā. 5,5,4,13.

विष्ण, dat. विष्णाय fehlerhafter dat. für विष्णवे. मूर्खो वदति विष्णाय बुधो वदति विष्णवे। नम इत्येवमर्थं च द्वयोरेव समं फलम् ॥ Pāṇ. 1,12,39.

विष्णापूं m. N. pr. des Sohnes des Viçvaka ṚV. 1,116,23. 117,7. 8, 75,8. 10,65,12.

विंशु Uṇ. 3,39. 1) m. *a*) N. des Gottes AK. 1,1,4,13. H. 214. Hālā. 1,31. 5,70. zum oberen Gebiet gezählt Naigh. 5,6. Nir. 12,18. sein Hauptwerk ist die Durchmessung des Luftkreises in drei Schritten; vgl. die Lieder ṚV. 1,154. fgg. 7,99. fg. उरुक्रम 1,90,9. 154,5. उरुगाय 3. 6. गिरिक्षित् 3. पर्वतानामधिपति: TS. 3,4,5,1. पृथुदंस्म 3,54,14. निषिक्वरी 7,36,9. शिपिविष्ट 100,3. 6. एष (s. u. 3. एष). विष्णुर्गोपा: पंरमं पाति पाथ: 3,55,10. मुषायद्विष्णु: पचतं सहीयान्विध्यद्वराहम् 1,61,7. Gefährte des Indra, namentlich beim Kampf gegen Ahi ṚV. 1,22,18. 186,4. 4,18,11. 6,20,2. TS. 2,4,12,2. 3,2,24,3. 6,5,4,3. इन्द्राविष्णू ṚV.

4,35,4. 7,99,5. 8,10,2. Indra trinkt bei und mit ihm Soma 8,3,9. 12, 16. 2,22,1. 3,56,4. 4,63,3. Die drei पद् oder विक्रमण desselben 5,3,3. 8,49,13. 9,9,11. 12,27. 1,22,16. 155,4. 5. VS. 2,25. 12,5. Çat. Br. 1,9, 3,10. Nir. 12,19. AV. 10,5,25. Sinîvâlî heisst seine Gattin 7,46,3; vgl. विष्णुपत्नी. Mit Âditja's zusammen genannt AV. 11,6,2. सादित्यानामहं विष्णुः sagt Kṛshṇa Bhag. 10,21. द्वादशो विष्णुरुच्यते । ज्ञघन्यजस्तु सर्वेषामादित्यानां गुणाधिकः MBh. 1,3834. 13,914. Harîv. 175. 260. 594. 11549. 12912. 14167. VP. 122. 153. Thürhüter der Götter Âit. Br. 1,30. der raumlich höchste Gott 1,1. TS. 5,5,4,4. यज्ञाविष्णू TS. 1, 1,22,1. AV. 7,29,1. 2. विष्णूवरुणा TBr. 2,8,4,5. विष्णुमुखा देवाः TS. 1, 7,5,4. — VS. 1,30. 2,6. 3. 5,31. 7,20. 8,17. 55. 57. AV. 5,26,7. 8,5, 10. 9,2,6. 12,1,10. 13,3,11. Vishṇu als Zwerg bei der Theilung der Erde zwischen Göttern und Asura (s. unter वामन) Çat. Br. 1,2,5,3; vgl. TS. 2,1,3,1. TBr. 1,6,1,5. sein abgeschlagenes Haupt wird zur Sonne Çat. Br. 14,1,1,10. Pâraṇ. Gṛ. 7,5,6. Herr des 11ten Lustrum im 60jährigen Jupitercyclus Varâh. Bṛh. S. 8,23. 26. कार्यो ऽष्णुर्यो भगवान्यतुर्भुजो द्विभुज एव वा विष्णुः । श्रीवत्साङ्कितवक्षाः कौस्तुभमणिभूषितोरस्कः ॥ 58,31. क्रान्ते विष्णुम् (संनिवेशयेत्) M. 12,121. विष्णुना सदृशो वीर्ये R. 1,1,15. शङ्खचक्रगदापाणिः पीतवासा जगत्पतिः 14,24. सुमेरुशृ 77,29. येन लोकास्त्रयः सृष्टा दैत्याः सर्वाश्च देवताः । स एष भगवान्विष्णुः समुद्रे तप्यते तपः ॥ MBh. 13,312. sein Schlaf Harîv. 2819. fgg. 8795. fgg. 12308. fgg. VP. 634. jüngerer Bruder Indra's (vgl. उपेन्द्र) Harîv. 2383. Vishṇu in der Götterdreiheit der zweite, der Erhalter der Welt; Gatte der Lakshmî (Çrî) und Sarasvatî, Vater des Liebesgottes, ruht auf dem Schlangendämon Çesha, Garuḍa sein Reitthier Spr. (II) 1404. hat seinen Sitz im Âhavanîja-Feuer Gobh. 1,7. steigt häufig auf die Erde herab (s. अवतार); als Zwerg Harîv. 12202. fgg. 12900. fgg. als Eber 12278. fgg. als Mannlöwe 12609. fgg. विष्णोरुपमर्णाम्, यज्ञायज्ञीयम्, व्रतम्, साम und स्वरोपः Namen von Sâman Ind. St. 3,237,a. Etymologien des Namens MBh. 5,3562. 3871. VP. bei Uṇâdi. zu Unâdis. 3,39. — *b*) angeblich so v. a. *Opfer* Naigh. 3,17. aus Stellen wie ṚV. 8,3,8 u. a. und zahlreichen Sentenzen der Brâhmaṇa abgeleitet. पशो वै विष्णुः Çat. Br. 1,1,2,12. 2,5,3. 14,1,1,15. TS. 6,2,4,2. Pâraṇ. Br. 12,2,3. पशुस्वरूपधृक् Bhâg. P. 4,1,4. — *c*) Bez. *des Monats* Kârttika (mit anderen Namen des Gottes werden die folgenden Monate bezeichnet) Varâh. Bṛh. S. 105,14. — *d*) Vishṇu mit dem patron. Prâgâpatja Liedverfasser von ṚV. 10,184. Vishṇu als einer der Söhne des Manu Sâvarṇa Mârk. P. 80,11. des Manu Bhautja 110,32. als Verfasser eines Gesetzbuchs Jâgñ. 1,4. Verz. d. Oxf. H. 266,b,1. 268,a,42. 269,a,1 v. u. 270,b,44. 279,b,1. 356,a,28. Verz. d. Cambr. H. 67; vgl. लघु°, बृहद्विष्णु, वृद्ध°. Vater des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 37. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 203,a, No. 494. 246,b, No. 622. 318,a,34. 321,a, No. 761. Verz. d. Cambr. H. 41. 43. Hall 26. °भट्ट 75. °पण्डित Colebr. Misc. Ess. II, 430. fg. विष्णूपाध्याय Notices of Skt Mss. 86. — *e*) = यमि Çabdam. im ÇKDa. — *f*) = वसुदेवता. — *g*) = गुरु Dharan. ebend. — 2) f. N. pr. der Mutter des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 40. — Vgl. भूत°, मरा° und वैष्णव.

विष्णुकन्द m. *ein best. Knollengewächs* Râǵân. im ÇKDa.

विष्णुकवि m. N. pr. eines *Dichters* Verz. d. Oxf. H. 150,b, No. 320.

विष्णुकाञ्ची f. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 251,b,27.

विष्णुकाञ्ची f. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149,a,3.

विष्णुक्रम m. Vishṇu's *Schritt: drei von dem Opferer zu machende Schritte zwischen* Vedi *und* Âhavanîja TS. 5,2,2,1. 7. Çat. Br. 1,9, 3,5. 4,2,6. 5,3,2. Kâty. Çr. 6,2,4. 17,1,1. Kauç. 6. Davon °क्रमीय adj.: सरू Çat. Br. 6,7,4,15.

विष्णुक्रान्त Vishṇu's Tritt: 1) m. *ein best. Tanz* Saṅgîtaratnâkara im ÇKDa. Suppl. unter त्रयक्रान्त. — 2) f. या *Clitoria ternatea Lin.* AK. 2, 4,2,22. Paṇḍan. 1,7,19. Saṅgît. K. 4,a,16. Çiṅkc. Saṅgît. 2,3,5. *Evolvulus alsinoides* Watson s. v. (auch विष्णुक्रान्ति). dunkle Çaṅkhapushpî Dhanv. in Nigh. Pr.

विष्णुक्षेत्र n. Bez. eines best. *Heiligen Gebietes* LIA. I, 187, N. 1.

विष्णुगङ्गा f. N. pr. eines Flusses LIA. I, 49.

विष्णुगाथा f. *ein Gesang zu Ehren* Vishṇu's, pl. Bhâg. P. 1,19,15.

विष्णुगुप्त m. 1) = विष्णुकन्द Râǵân. im ÇKDa. = कृष्णमूल Âṣṭâṅg. 42. — 2) ein Name Kâṇakja's Tantr. 2,7,22. H. 854. Kâm. Nîtis. 1,6. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 13. Bhâg. P. 7,7. 21,2. Spr. (II) 1848. Paṇḍan. II, 45. Daçak. 183,8. Verz. d. Oxf. H. 329,a,6. Verz. d. B. H. No. 865. Verz. d. Cambr. H. 54. ein Schüler Çaṅkarâkârja's Verz. d. Oxf. 248,a,2. N. pr. eines Buddhisten Kârṇîs. 49,177.

विष्णुगुप्तक n. *eine Art Rettig*, = चाणक्यमूलक Râǵân. im ÇKDa.

विष्णुगूढ m. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 86.

विष्णुगृह n. Vishṇu's *Wohnstatt*, ein N. von Tâmraliptâ H. 979.

विष्णुग्रन्थि m. Bez. *eines best. Gelenkes am Körper* Verz. d. Oxf. H. 233,b,22. — Vgl. ब्रह्मग्रन्थि.

विष्णुचक्र n. 1) Vishṇu's *Discus* R. 1,29,6 (30,6 Gorr.). 56,10 (57, 9). 3,36,9. — 2) Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88,a,33. auf der Hand: विष्णुचक्रं करे चिह्नं सर्वेषां चक्रवर्तिनाम् । भवत्यव्याकृतो यस्य प्रभावस्त्रिदशैरपि ॥ VP. 1,13 im ÇKDa.

विष्णुचन्द्र m. N. pr. eines Astronomen Verz. d. Oxf. H. 329,a, No. 780. Verz. d. Cambr. H. 30. Colebr. Misc. Ess. II,379 u. s. w.

विष्णुज 1) adj. *unter* Vishṇu d. i. *im ersten Lustrum eines 60jährigen Jupitercyclus geboren* Varâh. Bṛh. S. 46,11. — 2) m. N. des 18ten Kalpa (*Tages* Brahman's; s. u. कल्प 2) *d*).

विष्णुतत्त्व n. Vishṇu's *wahres Wesen* Sarvadarçanas. 73,20. °निर्णय m. Titel eines philosophischen Werkes 62,18. fg.

विष्णुतिथि m. f. Vishṇu's *lunarer Tag* d. i. *der eilfte* oder *zwölfte* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13, Cl. 52; vgl. Hall ebend. S. 22 und विष्णुदैवत्य.

विष्णुतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,9. 73,b,22.

विष्णुतैल n. Bez. *eines best. Oeles* Brahmavaiv. P. im ÇKDa.

विष्णुतत्त्व n. Vishṇu's *Wesen*, — *Natur* R. 7,85,15. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,155. Spr. 5061. Mârk. P. 40,14.

विष्णुदत्त 1) adj. von Vishṇu *gegeben:* विमान Bhâg. P. 8,17,4. — 2) m. ein Mannsname Kârṇîs. 25,64. 32,43. Sin. D. 171,1. Verz. d. Oxf.

H. 343,b,41. Bein. Parikshit's Bulc. P. 1,3,26. 9,21.

विष्णुदास m. Vishṇu's *Knecht*, N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 16,b,12. Notices of Skt Mss. 74.

विष्णुदेव m. N. pr. eines Mannes Hall 23.

विष्णुदेवाराध्य m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 244,a,No.606.

विष्णुदैवत adj. Vishṇu zur *Gottheit habend* Vishṇupurāṇ. im ÇKDa.

विष्णुदैवत्य 1) adj. dass. ebend. — 2) f. आ Bez. *des elften und zwölften Tages* ÇKDa.

विष्णुद्विष् m. *ein Feind* Vishṇu's, deren 9 aufgeführt H. 698. fg.

विष्णुद्वीप m. N. pr. einer *Insel* Wilson, Sel. Works 2,344.

विष्णुधर्म m. Vishṇu's *Gesetz*, — *Gesetzbuch* Verz. d. B. H. No. 180. 1176. Weber, Kṛshṇaj. 228. 239. Verz. d. Oxf. H. 279,b,2. विष्णुधर्मादित्यधर्माः शिवधर्माश्च u. s. w. unter den 18 Purâṇa 30,b,16.

विष्णुधर्मन् m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBu. 5,3598.

विष्णुधर्मोत्तर n. Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. II,324 u. s. w. Verz. d. B. H. No. 1025. 1162. fgg. Verz. d. Oxf. H. 87,b,25. 104,a,22. 268,a,20. 270,b,45. 279,b,2. Verz. d. Cambr. H. 43. 67. Weber, Kṛshṇaj. 222. 229. Titel eines Abschnittes im Mahâbhârata Verz. d. Oxf. H. 4,b, No. 33.

विष्णुधारा f. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 60,a,35. fg.

विष्णुनदी f. N. pr. eines *Flusses* Verz. d. Oxf. H. 65,a,1.

विष्णुपत्नी f. Vishṇu's *Gattin*, so heisst Aditi VS. 29,60. TS. 4,4, 12,5. 7,5,14,1. TBa. 3,1,2,6. Âçv. Çr. 4,12,3.

विष्णुपद 1) n. a) *Zenith, Scheitelpunkt* Nir. 12,19. Bulc. P. 5,17,2. — b) *Luftraum* AK. 1,1,2,2. H. 163. an. 4,144. Med. d. 53. Halâj. 1,137. MBu. 7,2353. Rasik. 16,28. *Himmel* Çiksh. Saṅgr. 1,3,28. Weber, Rimay. Up. 357. — c) N. pr. eines Tirtha MBu. 3,6073. Verz. d. Oxf. H. 60,a,36. °तीर्थ 73,a,18. auf dem Kailâsa MBu. 5,3861. ein Berg 12, 328. Hariv. 1696; vgl. विष्णोः पदम् R. Gorr. 2,70,18. — d) *das Milchmeer* Med. masc. H. an. — e) *eine Lotusblüthe* H. an. — 2) f. ई gaṇa कुम्भपदादि zu P. 5,4,139. a) ein N. der Gaṅgâ AK. 1,2,2,30. H. 1082. H. an. Med. Halâj. 3,51. MBu. 13,1851. Hariv. 7168. 7379. 8868. 8919. R. 3,78,29. Verz. d. Oxf. H. 12,b,25. 24,a,6. Bulc. P. 1,19,7. — b) ein N. der Stadt Dvârikâ H. an. — c) *der Eintritt der Sonne in die Zeichen Stier, Löwe, Scorpion und Wassermann* H. an. Med. Tithyâdit. im ÇKDa.

विष्णुपदति f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1112.

विष्णुपरायण m. N. pr. eines Verfassers von mystischen Gebeten bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,a,28.

विष्णुपर्णिका f. *Hedysarum lagopodioides* Roxb. Riâs. in Nees. Pa.

विष्णुपुत्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 36.

विष्णुपुर n. Vishṇu's *Stadt* Vop. 6,69.

विष्णुपुराण n. Titel eines Purâṇa (übersetzt von H. H. Wilson) Verz. d. Oxf. H. 62,b, No. 109. 113,b,44. 123,a,41. 182,b,1 v. u. 185,b,16. 42. 268,a,9. 38. 270,b,46. 279,b,3. Sarvadarçanas. 68,13. 173,20. 177,14. °क n. Paṇḍar. 2,7,32.

विष्णुपुरी 1) f. N. eines Berges im Himâlaja Ind. Bibl. 1,387. — 2) m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 37, No. 90. 38,b,13. 227,a, No. 557. Verz. d. Tüb. H. 13.

विष्णुप्रिया f. *Basilienkraut* Dhanv. in Nees. Pa.

विष्णुभक्त adj. *ein Verehrer* Vishṇu's Weber, Rimay. Up. 361. Verz. d. Oxf. H. 45,a,16. 85,b,14. 282,a,42.

विष्णुभक्ति f. Vishṇu-*Verehrung*, personif. als Joginî Paṇḍar. 31,6. °चन्द्रोदय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 274,a, No. 649. °रत्न n. desgl. 72,b,9. °लता f. desgl. Verz. d. B. H. No. 542.

विष्णुमत् (von विष्णु) 1) adj. Vishṇu *enthaltend*: गायत्री Paṇḍav. Bh. 13,3,1. — 2) विष्णुमती f. N. pr. einer Fürstin Kathâs. 9,8. — Vgl. विष्णुवत्.

विष्णुमत्स n. *ein an* Vishṇu *gerichtetes Lied* Verz. d. Oxf. H. 99,b, 43. 106,a,18. fg.

विष्णुमय (von विष्णु) adj. (f. ई) von Vishṇu *kommend, ihm gehörig, sein Wesen habend* u. s. w. Vop. 7,73. रूप Hariv. 2419. गणाः 12139. देव R. 7,110,13. रुद्र Hariv. 10665. MBu. 12,1695. VP. bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,39. Verz. d. Oxf. H. 248,a,37.

विष्णुमाया f. Vishṇu's *Trugbild, eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 23,a,33. Kâlikâ-P. 5 im ÇKDa.

विष्णुमित्र m. ein häufiger Mannsname, der als Beispiel wie Cajus angewandt wird, Kâç. 3,2,17. Weber, Nax. 2,319. Bulc. P. 5,14,24. Gaupâr. zu Siddh. 7. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 255,a, 14. eines Scholiasten des ṚV. Pârç. Einl.

विष्णुमिश्र m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II,47.

विष्णुयशस् m. N. pr. = Kalkin oder Kalki MBu. 3,12101. Hariv. 2387. Vater Kalkin's Bulc. P. 1,3,25. 12,2,18. Verz. d. Oxf. H. 23, b,19. Paṇḍar. 4,3,159, v. l. Kalki-P. 30 im ÇKDa. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 306.

विष्णुयामल n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 88,a,6 (°ज्ञामल gedr.). Ind. St. 2,252.

विष्णुरथ m. Vishṇu's *Vehikel* d. i. *der Vogel* Garuḍa AK. 1,1,8,25. Verz. d. Oxf. H. 190,a,22.

विष्णुरहस्य n. Vishṇu's *Mysterium*, Titel eines Abschnitts in Vasishṭha's Saṁhitâ Mack. Coll. 1,55. Verz. d. Oxf. H. 87,b,26. 273,b, 44. fg. 279,b,3. Weber, Kṛshṇaj. 223. 228. fg.

विष्णुरात m. N. pr. eines *Fürsten* Târan. 171. fg. 195.

विष्णुरात adj. von Vishṇu *verliehen*; m. Bein. Parikshit's Bulc. P. 1,12,17. 19,19. 2,8,37. 6,18,21. 8,24,4. 10,1,14. 80,3. 12,13,21.

विष्णुलिङ्गी f. *Wachtel* Taitt. 2,5,31. Hir. 184.

विष्णुलोक m. Vishṇu's *Welt* Weber, Kṛshṇaj. 307. Rîâ-Tar. 4, 507. VP. 213, N. 3. Paṇḍar. 1,3,38.

विष्णुवत् (von विष्णु) adj. von Vishṇu *begleitet* ṚV. 8,35,14. अहन् so v. a. *ein elfter* oder *zwölfter Tag* (vgl. विष्णुतिथि) Verz. d. Oxf. H. 48,b,7.

विष्णुवल्लभा f. 1) Vishṇu's *Geliebte* d. i. Lakshmi Tantras. im ÇKDa. — 2) *Basilienkraut* Riâs. im ÇKDa. = अग्निशिखा Çabdak. ebend.

विष्णुवाहनपेयिन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279,b,4.

विष्णुवाहन n. Vishṇu's *Vehikel, der Vogel* Garuḍa H. 230.

विष्णुवाह्य m. dass. Çabdar. im ÇKDa.

विष्णुवृद्ध m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* Âçv. Çr. 12, 12,3. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,35.

1. विष्णुशक्ति f. Vishṇu's *Energie* d. i. Lakshmi H. c. 76. Riâs-

4,35,4. 7,99,5. 8,10,2. Indra trinkt bei und mit ihm Soma 8,3,5.12, 16. 2,22,1. 3,36,4. 4,63,2. Die drei पद् oder विक्रमण desselben 5,3,3. 6,49,13. 8,9,12. 12,27. 1,22,16. 155,4. 5. VS. 2,25. 12,5. Çat. Br. 1,9, 3,10. Nir. 12,19. AV. 10,5,25. Sinîvâlî heisst seine Gattin 7,46,3; vgl. विष्णुपत्नी. Mit Âditja's zusammen genannt AV. 11,6,2. आदित्यानामहं विष्णुः sagt Kṛshṇa Bhag. 10,21. द्वादशो विष्णुरुच्यते । वयन्यतस्तु सर्वेषामादित्यानां गुणाधिकः MBh. 1,2521. 13,914. Harîv. 175. 260. 594. 11349. 12912. 14167. VP. 122. 153. Thürhüter der Götter Ait. Br. 1,30. der räumlich höchste Gott 1,1. TS. 5,5,4,4. अग्नाविष्णू TS. 1, 1,12,1. AV. 7,29,1. 2. विष्णूवरुणा TBr. 2,8,4,5. विष्णुमुखा देवाः TS. 1, 7,5,1. — VS. 1,30. 2,6. 8. 5,21. 7,20. 8,17. 55. 57. AV. 5,26,7. 8,5, 10. 9,2,6. 12,1,10. 18,3,11. Vishṇu als Zwerg bei der Theilung der Erde zwischen Göttern und Asura (s. unter वामन) Çat. Br. 1,2,5,3; vgl. TS. 2,1,3,1. TBr. 1,6,1,5. sein abgeschlagenes Haupt wird zur Soma Çat. Br. 14,1,1,10. Pâraṇ. Br. 7,5,6. Herr des 1ten Lustrum im 60jährigen Jupitercyclus Varâh. Bṛh. S. 8,22. 26. कार्षो ऽष्टभुजो भगवांश्चतुर्भुजो द्विभुज एव वा विष्णुः । श्रीवत्साङ्कितवक्षाः कौस्तुभमणिभूषितोरस्कः ॥ 58,21. क्रान्ते विष्णुम् (संनिवेशयेत्) M. 12,121. विष्णुना सदृशो वीर्ये R. 1,1,15. शङ्खचक्रगदापाणिः पीतवासा जगत्पतिः 14,24. समोरथः 77,29. येन लोकास्त्रयः सृष्टा दैत्याः सर्वाश्च देवताः । स एष भगवान्विष्णुः समुद्रे तप्यते तपः ॥ MBh. 13,312. sein Schlaf Harîv. 2819. fgg. 8705. fgg. 12308. fgg. VP. 634. jüngerer Bruder Indra's (vgl. उपेन्द्र) Harîv. 2383. Vishṇu in der Götterdreiheit der zweite, der Erhalter der Welt; Gatte der Lakshmî (Çrî) und Sarasvatî, Vater des Liebesgottes, ruht auf dem Schlangendämon Çesha, Garuḍa sein Reitthier Spr. (II) 1404. hat seinen Sitz im Âhavanîja-Feuer Gobh. 1,7. steigt häufig auf die Erde herab (s. अवतार); als Zwerg Harîv. 12202. fgg. 12900. fgg. als Eber 12278. fgg. als Mannlöwe 12609. fgg. विष्णोरुपमर्णाम्, साम्यदेवत्यम्, व्रतम्, साम und स्वरोपः Namen von Sâman Ind. St. 3,237,a. Etymologien des Namens MBh. 5,2562. 2571. VP. bei Uévat. zu Upâdis. 3,33. — *b*) angeblich so v. a. *Opfer* Naigh. 3,17. aus Stellen wie ṚV. 1,3,5 u. a. und zahlreichen Sentenzen der Brâhmaṇa abgeleitet. यज्ञो वै विष्णुः Çat. Br. 1,1,2,13. 2,5,3. 14,1,1,15. TS. 6,2,4,2. Pâraṇ. Br. 13,2,3. यज्ञस्वरूपधृक् Bhâg. P. 4,1,4. — *c*) Bez. *des Monats* Kaitra (mit anderen Namen des Gottes werden die folgenden Monate bezeichnet) Varâh. Bṛh. S. 105,14. — *d*) Vishṇu mit dem patron. Prâgâpatja Liedverfasser von ṚV. 10,184. Vishṇu als einer der Söhne des Manu Sâvarṇa Mârk. P. 80,11. des Manu Bhautja 110,32. als Verfasser eines Gesetzbuchs Jâgñ. 1,4. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,1. 268,*a*,42. 269,*a*,1 v. u. 270,*b*,44. 279,*b*,1. 356,*a*,28. Verz. d. Cambr. H. 67; vgl. लघु°, बृहद्विष्णु, वृद्ध°. Vater des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 37. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 203,*a*, No. 484. 246,*b*, No. 622. 318,*a*,34. 321,*a*, No. 761. Verz. d. Cambr. H. 41. 43. Hall 26. °भट्ट 75. °पण्डित Colebr. Misc. Ess. II, 450. fg. विष्णूपाध्याय Notices of Skt Mss. 86. — *e*) = अग्नि Çabdam. im ÇKDa. — *f*) = वसुदेवता. — *g*) = शुद्ध Duâr. ebend. — 2) f. N. pr. der Mutter des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 40. — Vgl. भूत°, महा° und वैष्णव.

विष्णुक्षत्र n. Bez. *des* Nakshatra Çravaṇâ Tîrthalexx. im ÇKDa.

विष्णुकन्द् m. *ein best. Knollengewächs* Râéân. im ÇKDa.

विष्णुकवि m. N. pr. eines *Dichters* Verz. d. Oxf. H. 130,*b*, No. 320.

विष्णुकाञ्ची f. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 251,*b*,27.

विष्णुकाञ्ची f. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,3.

विष्णुकर्मन् m. Vishṇu's *Schritt: drei von dem Opferer zu machende Schritte zwischen* Vedi *und* Âhavanîja TS. 5,2,2,1. 7. Çat. Br. 1,9, 3,5. 5,4,2,6. 6,6,4,3. Kâty. Çr. 6,2,4. 17,1,1. Kauç. 6. Davon °कर्मीय adj.: यज्ञ् Çat. Br. 6,7,4,15.

विष्णुक्रान्त Vishṇu's Tritt: 1) m. *ein best. Tanz* Saṅgîtaratnâkara im ÇKDa. Suppl. unter रथक्रान्त. — 2) f. या *Clitoria ternatea Lin.* AK. 2, 4,3,22. Paṇḍan. 1,7,19. Saṅgîta-K. 4,*a*,10. Çiśiḍ. Saṅgîta-Dâm. 2,5,3. *Evolvulus alsinoides* Watson s. v. (auch विष्णुक्रान्ति). *dunkle* Çaṅkhapushpî Dhanv. in Nigh. Pr.

विष्णुक्षेत्र n. Bez. eines best. *heiligen Gebietes* LIA. I, 187, N. 1.

विष्णुगङ्गा f. N. pr. eines Flusses LIA. I, 49.

विष्णुगाथा f. *ein Gesang zu Ehren* Vishṇu's, pl. Bhâg. P. 1,19,15.

विष्णुगुप्त m. 1) = विष्णुकन्द् Râéân. im ÇKDa. = कृष्णमूल Aufr. 42. — 2) ein Name Kâṇakja's Taik. 2,7,22. H. 854. Kâm. Nîtis. 1,6. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 5, Z. 13. Bṛh. 7,7. 21,3. Spr. (II) 1848. Paṇḍat. II, 43. Daçak. 183,8. Verz. d. Oxf. H. 329,*a*,6. Verz. d. B. H. No. 968. Verz. d. Cambr. H. 54. ein Schüler Çaṁkarâkârja's Verz. d. Oxf. 248,*a*,2. N. pr. eines Buddhisten Kâraṇḍ. 49,177.

विष्णुगुप्तक n. *eine Art Rettig*, = चाणक्यमूलक Râéân. im ÇKDa.

विष्णुगुरु m. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 86.

विष्णुगृह् n. Vishṇu's *Wohnstatt*, ein N. von Tâmraliptâ H. 979.

विष्णुग्रन्थि m. Bez. *eines best. Gelenkes am Körper* Verz. d. Oxf. H. 233,*b*,32. — Vgl. ब्रह्मग्रन्थि.

विष्णुचक्र n. 1) Vishṇu's *Discus* R. 1,29,6 (30,6 Gorr.). 56,16 (57, 9). 3,30,9. — 2) Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,33. auf der Hand: विष्णुचक्रं करे विद्धे सर्वेषां चक्रवर्तिनाम् । भवत्यव्याकुलो यस्य प्रभावस्त्रिदशैरपि ॥ VP. 1,13 im ÇKDa.

विष्णुचन्द्र m. N. pr. eines Astronomen Verz. d. Oxf. H. 329,*a*, No. 780. Verz. d. Cambr. H. 30. Colebr. Misc. Ess. II,379 u. s. w.

विष्णुज 1) adj. *unter* Vishṇu d. i. *im ersten Lustrum eines 60jährigen Jupitercyclus geboren* Varâh. Bṛh. S. 46,11. — 2) m. N. des 18ten Kalpa (*Tages* Brahman's; s. u. कल्प 2) *d*).

विष्णुतत्त्व n. Vishṇu's *wahres Wesen* Sarvadarçanas. 73,20. °निर्णय m. Titel eines philosophischen Werkes 62,18. fg.

विष्णुतिथि m. f. Vishṇu's *lunarer Tag* d. i. *der eilfte* oder *zwölfte* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13, Çl. 52; vgl. Hall ebend. S. 23 und विष्णुदैवत्य.

विष्णुतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,9. 73,*b*,38.

विष्णुतैल n. Bez. *eines best. Oeles* Brahmavaiv. P. im ÇKDa.

विष्णुत्व n. Vishṇu's *Wesen*, — *Natur* R. 7,85,18. Nṛs. Tîp. Up. in Ind. St. 9,135. Spr. 3061. Mîm. P. 48,14.

विष्णुदत्त 1) adj. von Vishṇu *gegeben:* विमान Bhâg. P. 5,17,4. — 2) m. ein Mannsname Kâraṇḍ. 25,64. 32,43. Sîm. D. 171,1. Verz. d. Oxf.

H. 343,b,41. Beim Parikshit's Bulc. P. 5,3,20. 9,21.

विष्णुदास m. Vishṇu's *Knecht*, N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 16,b,12. Notices of Skt Mss. 74.

विष्णुदेव m. N. pr. eines Mannes Hall 23.

विष्णुदेवाराध्य m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 244,a,No. 606.

विष्णुदैवत adj. Vishṇu *zur Gottheit habend* Vishṇudharmottar. im ÇKDa.

विष्णुदैवत्य 1) adj. dass. ebend. — 2) f. या Bez. *des elften und zwölften Tages* ÇKDa.

विष्णुद्विष् m. *ein Feind* Vishṇu's, deren 9 aufgeführt H. 696. fg.

विष्णुद्वीप n. N. pr. einer *Insel* Wilson, Sel. Works 2,344.

विष्णुधर्म m. Vishṇu's *Gesetz*, — *Gesetzbuch* Verz. d. B. H. No. 150. 1176. Weber, Kṛshṇaj. 228. 239. Verz. d. Oxf. H. 279,b,2. विष्णुधर्मादित्यधर्माः शिवधर्माश्च u. s. w. unter den 18 Purâṇa 30,b,16.

विष्णुधर्मन् m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3399.

विष्णुधर्मोत्तर n. Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. II,324 u. s. w. Verz. d. B. H. No. 1025. 1162. fgg. Verz. d. Oxf. H. 87,b,35. 104,a,28. 268,a,20. 270,b,45. 279,b,3. Verz. d. Cambr. H. 43. 67. Weber, Kṛshṇaj. 222. 229. Titel eines Abschnittes im Mahâbhârata Verz. d. Oxf. H. 4,b, No. 33.

विष्णुधारा f. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 60,a,35. fg.

विष्णुनदी f. N. pr. eines *Flusses* Verz. d. Oxf. H. 65,a,1.

विष्णुपत्नी f. Vishṇu's *Gattin*, so heisst Aditi VS. 29,60. TS. 4,4, 12,5. 7,5,14,1. TBr. 3,1,2,6. Âçv. Çr. 4,12,2.

विष्णुपद 1) n. a) *Zenith, Scheitelpunkt* Nir. 12,19. Bulc. P. 5,17,2. — b) *Luftraum* AK. 1,1,2,2. H. 163. an. 4,144. Med. d. 53. Halîs. 1,137. MBh. 7,2855. Raçu. 16,28. *Himmel* Çiç. Saṁh. 1,5,28. Weber, Rimat. Up. 357. — c) N. pr. eines Tirtha MBh. 3,6073. Verz. d. Oxf. H. 60,a,36. °तीर्थ 73,a,18. auf dem Kailâsa MBh. 5,3341. ein Berg 12, 928. Harîv. 1696; vgl. विष्णोः पद्म् R. Gorr. 2,70,13. — d) *das Milchmeer* Med. masc. H. an. — e) *eine Lotusblüthe* H. an. — 2) f. ई gaṇa कुम्भपद्मादि zu P. 5,4,139. a) ein N. der Gaṅgâ AK. 1,2,2,20. H. 1082. H. an. Med. Halîs. 3,51. MBh. 13,1851. Harîv. 7168. 7579. 8888. 8919. R. 3,78,19. Verz. d. Oxf. H. 12,b,35. 24,a,6. Bulc. P. 1,19,7. — b) ein N. der Stadt Dvârikâ H. an. — c) *der Eintritt der Sonne in die Zeichen Stier, Löwe, Scorpion und Wassermann* H. an. Med. Titsâstr. im ÇKDa.

विष्णुपदति f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1112.

विष्णुपरायण m. N. pr. eines Verfassers von mystischen Gebeten bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,a,28.

विष्णुपर्णिका f. *Hedysarum lagopodioides* Roxb. Rîgân. in Nigh. Pr.

विष्णुपुत्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 36.

विष्णुपुर n. Vishṇu's *Stadt* Vop. 6,69.

विष्णुपुराण n. Titel eines Purâṇa (übersetzt von H. H. Wilson) Verz. d. Oxf. H. 62,b, No. 109. 113,b,44. 123,a,41. 182,b,1 v. u. 185,b,16. 42. 268,a,9. 38. 270,b,46. 279,b,3. Sarvadarçanas. 68,18. 173,20. 177,14. °क n. Paṇḍar. 2,7,33.

विष्णुपुरी 1) f. N. eines Berges im Himâlaja Ind. Bibl. 1,387. — 2) m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 37, No. 90. 38,b,18. 227,a, No. 557. Verz. d. Tüb. H. 13.

विष्णुप्रिया f. *Basilienkraut* Dhanv. in Nigh. Pr.

विष्णुभक्त adj. *ein Verehrer* Vishṇu's Weber, Râmat. Up. 361. Verz. d. Oxf. H. 45,a,18. 85,b,14. 252,a,42.

विष्णुभक्ति f. Vishṇu-*Verehrung*, personif. als Yoginî Pârç. 31,6. °चन्द्रोदय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 274,a,No. 649. °रहस्य n. desgl. 72,b,9. °लता f. desgl. Verz. d. B. H. No. 542.

विष्णुमत् (von विष्णु) 1) adj. Vishṇu *enthaltend*: गायत्री Pâṇḍav. Bh. 13,3,1. — 2) विष्णुमती f. N. pr. einer Fürstin Kathâs. 9,8. — Vgl. विष्णुवत्.

विष्णुमित्र m. *ein an* Vishṇu *gerichtetes Lied* Verz. d. Oxf. H. 99,b, 42. 106,a,18. fg.

विष्णुमय (von विष्णु) adj. (f. ई) von Vishṇu *kommend, ihm gehörig, sein Wesen habend* u. s. w. Vop. 7,72. कल्प Harîv. 2419. गण: 12139. देव R. 7,110,12. रूप Harîv. 10663. MBh. 12,1685. VP. bei Uéval. zu Uṇâdis. 3,39. Verz. d. Oxf. H. 248,a,37.

विष्णुमाया f. Vishṇu's *Trugbild, eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 25,a,33. Kâlikâ-P. 5 im ÇKDa.

विष्णुमित्र m. ein häufiger Mannsname, der als Beispiel wie Cajus angewandt wird, Kâç. 3,2,17. Weber, Nax. 2,319. Bulc. P. 5,14,24. Gaupân. zu Sâṁkhjak. 7. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 235,a, 14. eines Scholiasten des ṚV. Pârç. Einl.

विष्णुमिश्र m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II,47.

विष्णुयशस् m. N. pr. = Kalkin oder Kalki MBh. 3,13101. Harîv. 2367. Vater Kalkin's Bulc. P. 1,3,25. 12,2,18. Verz. d. Oxf. H. 23, b,19. Paṇḍar. 4,3,159, v. l. Kalki-P. 30 im ÇKDa. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 306.

विष्णुयामल n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 88,a,6 (°डामल gedr.). Ind. St. 2,252.

विष्णुरथ m. Vishṇu's *Vehikel* d. i. *der Vogel* Garuḍa AK. 1,1,4,25. Verz. d. Oxf. H. 190,a,12.

विष्णुरहस्य n. Vishṇu's *Mysterium*, Titel eines Abschnitts in Vasishṭha's Saṁhitâ Mack. Coll. 1,55. Verz. d. Oxf. H. 87,b,26. 273,b, 44. fg. 279,b,3. Weber, Kṛshṇaj. 223. 228. fg.

विष्णुरात m. N. pr. eines *Fürsten* Târan. 171. fg. 195.

विष्णुरात adj. von Vishṇu *verliehen*; m. Bein. Parikshit's Bulc. P. 1,12,17. 19,29. 2,8,27. 8,18,21. 8,24,4. 18,1,14. 30,3. 12,13,21.

विष्णुलिङ्गी f. *Wachtel* Taik. 2,5,21. Hla. 184.

विष्णुलोक m. Vishṇu's *Welt* Weber, Kṛshṇaj. 307. Rîâ-Tân. 4, 307. VP. 213, N. 2. Paṇḍar. 1,3,33.

विष्णुवत् (von विष्णु) adj. von Vishṇu *begleitet* ṚV. 8,35,14. सरू so v. a. *ein elfter oder zwölfter Tag* (vgl. विष्णुतिथि) Verz. d. Oxf. H. 48,b,7.

विष्णुवल्लभा f. 1) Vishṇu's *Geliebte* d. i. Lakshmi Tantras. im ÇKDa. — 2) *Basilienkraut* Rîâx. im ÇKDa. = अग्निशिखा Çabdar. ebend.

विष्णुवाजपेयिन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279,b,4.

विष्णुवाहन n. Vishṇu's *Vehikel, der Vogel* Garuḍa H. 230.

विष्णुवाह्य m. dass. Çabdar. im ÇKDa.

विष्णुवृद्ध m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* Âçv. Çr. 12, 12,2. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,35.

1. विष्णुशक्ति f. Vishṇu's *Energie* d. i. Lakshmi H. ç. 76. Rîâ-

Tan. 3, 291.

2. विष्णुशक्ति m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 6, 126.

विष्णुशर्मन् m. häufiger Mannsname. N. pr. eines Autors mystischer Gebete bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101, *b*, 20. des Hauptes einer Bhakta genannten Secte 248, *a*, 17. des Erzählers des Pañkatantra und Hitopadeça 124, *b*, 44. Pañkat. Pr. 3. 4, 21. fgg. Hit. 7, 20. 45, 2. — Verz. d. Oxf. H. 152, *b*, 17.

विष्णुशिला f. = शालग्रामशिला Mahâtantra 5 im ÇKDa.

विष्णुशृङ्खल m. Bez. eines best. astr. Joga ÇKDa. nach dem Mîtsa- P. und Vishnudharmottara.

विष्णुश्रुत adj. von Vishṇu *erhört;* m. oxyt. als Mannsname P. 6, 2, 148, Schol.

विष्णुसरस् n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 60, *a*, 26.

विष्णुसर्वज्ञन m. N. pr. eines Lehrers Hall 161. fehlerhaft für °सर्वज्ञ. oder सर्वज्ञविष्णु, wie er Sarvadarçanas. 1, 6 genannt wird.

विष्णुसहस्रनामन् n. *die tausend Namen* Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 14, *b*, 11. ein Abschnitt des Mahâbhârata 4, *b*, N. 30. Hall 127. °नामभाष्य n. ebend. विष्णोः सहस्रनामस्तोत्रम् Verz. d. B. H. No. 420.

विष्णुसिंह m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 285, *b*, 2. 4.

विष्णुसूक्त n. *eine an* Vishṇu *gerichtete Hymne* Verz. d. Oxf. H. 398, *a*, No. 144. 405, *b*, No. 11.

विष्णुसूत्र n. *das von* Vishṇu *verfasste* Sûtra Ind. St. 1, 246.

विष्णुस्वामिन् m. 1) *ein Heiligthum (eine Statue) des* Vishṇu Râga-Tar. 5, 99. — 2) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 20, 115. 82, 3. 93, 33. 96, 4. Verz. d. Oxf. H. 153, *a*, 6. Sarvadarçanas. 101, 14. 102, 1. Wilson, Sel. Works 1, 34. fg. 119.

विष्णुक्रान्ता f. *Basilienkraut* Ausw. 42.

विष्णूत्सव (विष्णु + उ°) m. *ein Fest zu Ehren* Vishṇu's Vop. 2, 1.

विष्णूय् (von विष्णु), °यति *wie mit* Vishṇu *verfahren mit Jmd* (loc.) Vop. 21, 6.

विष्यन्द् m. *ein Gericht aus Weizenmehl, Ghṛta und Milch gekocht, auch ein zusammengesetzteres ähnliches Gericht* Sidden. in Nigh. Pr. wohl fehlerhaft für विष्यन्द. विष्यन्द् von स्यन्द् s. u. विस्यन्द्.

विष्यर्धस् (von स्पर्ध् mit वि) 1) adj. etwa *wetteifernd* ṚV. 1, 173, 10. 5, 87, 4. 8, 23, 2. — VS. 15, 5. — 2) m. N. pr. eines Mannes: विष्यर्धस घाङ्गिरसस्य साम Ind. St. 2, 237, *b*. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 2, 237, *b*.

विष्यष्प् (स्पश् mit वि) m. *Aufseher:* यभिक्रुतम् ṚV. 1, 189, 6.

विष्यिति n. etwa *Schwierigkeit, Gefahr* Naigh. 4, 2. = विप्राप्त Nir. 6, 20. पारं नो यस्य विष्यितस्य पर्षन् ṚV. 7, 60, 7. यति नो विष्यिता पुरु नो-भिरपो न पर्षथः 8, 72, 3.

विष्युलिङ्गक adj. *Funken sprühend:* त्रिः सप्त विष्युलिङ्गका वियस्य पुष्यमतन् ṚV. 1, 191, 12. nach Sây. *Zungen des Feuers* oder *Sperling;* vgl. विष्फुलिङ्ग.

विष्फार und विष्फाल s. विस्फार und विस्फाल.

विष्फुलिंङ्ग (dieses in den ältoren Schriften) und विस्फु° (von स्फुर् mit वि) m. 1) *Funke:* यग्नेः तुद्रा विष्फुलिङ्गा व्युच्चरन्ति Çat. Br. 14, 5, 4, 23. 9, 1, 12. Maitrâjan. 6, 26. Kaush. Up. 3, 3. 4, 20. MBh. 1, 1431. 4, 1685. Harîv. 11703. Gobhil. 1, 35. Suça. 2, 315, 9. Varâh. Bṛh. S. 32, 25. 33, 28. 46, 22. 47, 10. 60, 13. 84, 1. Bhâg. P. 3, 28, 40. 5, 8, 22. °मात्र Schol. zu Âçv. Çr. 3, 10, 9. am Ende eines adj. comp. f. घा MBh. 7, 3227. Harîv. 12764. विस्फुलिङ्गीभू *zu einem blossen Funken werden:* मध्याह्नार्को °बभूव Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 6, Cl. 14. Vgl. विष्फुलिङ्गक. — 2) *ein best. Gift* H. 1199. Hall. 3, 25.

विष्य (von 2. विष) adj. गण गवादि zu P. 5, 1, 2. *zu vergiften, den Tod durch Gift verdienend* P. 4, 4, 91. AK. 3, 1, 48.

विष्यन्द् (von स्यन्द् mit वि) m. *Tropfen:* सोमस्य MBh. 13, 3727. (विस्यन्द् ed. Calc.). प्रुक्तस्य विष्यन्दान् (so ist zu lesen; विस्यन्दात् ed. Calc. विस्पन्दान् ed. Bomb.). R. Gorr. 2, 94, 13 (विस्यन्द्).

विष्यन्दक N. pr. einer Oertlichkeit Pañkar. 1, 10, 44 (विस्य° gedr.).

विष्यन्दन (von स्यन्द् mit वि) n. *das Träufeln, der Zustand des Tropfbarflüssigen* MBh. 12, 9134 (विस्य° beide Ausgg.). Suça. 2, 37, 4.

विष्यन्दिन् (wie oben) adj. *tropfbarflüssig* Suça. 1, 224, 6 (विस्य° gedr.).

विष्व adj. = दिव्य Uṇâdis. im ÇKDa.

विष्वक् s. u. विष्वच्.

विष्वक्सेन (विष्वच् + सेना) 1) m. P. 8, 3, 99, Schol. 4, 1, 114, Vârtt. *a*) ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. 1, 1, 2, 14. H. 214. an. 4, 190. Med. n. 209. Hall. 1, 21. MBh. 6, 2944. Harîv. 1639. 14114. R. 6, 102, 14. Raghu. 15, 103. Çiç. 10, 55. Verz. d. Oxf. H. 250, *b*, 28. 30. fg. Bhâg. P. 1, 2, 8. 3, 13, 3. 16. 19, 4. 4, 9, 43. 20, 17. 22, 62. 6, 8, 27. 8, 13, 24. 11, 27, 43. Pañkar. 3, 9, 3. 4, 3, 41. विष्वक्सेनार्जुनौ (versteht) गण दानादि zu P. 2, 2, 31. neben रुद्रि unter den Namen Çiva's MBh. 13, 1168. — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Vishṇu's Weber, Rigav. Up. S. 288. Bhâg. P. 5, 20, 40. 8, 21, 16. Pañkar. 3, 11, 23. निर्माल्यधारी विष्वक्सेनस्तु विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः Kâlikâ-P. 82 im ÇKDa. ein Sâdhja Harîv. 13182. 13474. fgg. N. des 14ten (13ten nach ÇKDa.) Manu VP. 268, N. 8. ein alter Ṛshi Ind. St. 4, 377. MBh. 2, 300. ein Fürst R. Gorr. 2, 116, 31. ein Sohn Brahmadatta's Harîv. 1066. 1273. VP. 453. Bhâg. P. 9, 21, 25. Çambara's Harîv. 9231. — 2) f. घा *eine best. Pflanze,* = प्रियङ्गु, फलिनी AK. 2, 4, 2, 36. H. an. Med. Ratnam. 122. — Häufig fehlerhaft विश्व° geschrieben. Vgl. वैष्वक्सेन.

विष्वक्सेनप्रिया f. 1) Vishvaksena's *d. i.* Vishṇu's *Geliebte,* Lakshmî H. an. 6, 8. Med. j. 134. — 2) *eine best. Pflanze,* = वाराही, त्रायमाणा AK. 2, 4, 8, 16. H. an. Med.

विष्वगयन (विष्वच् + अय°) n. P. 6, 3, 92, Schol.

विष्वगश्व (विष्वच् + अश्व) m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu MBh. 1, 225 (*b*). 2, 1023. 3, 13517. 13, 3689. VP. 361. Die richtige Schreibart hat die Bomb. Ausg., विश्व° ed. Calc. des MBh. Derselbe Mann heisst anderwärts विष्टराश्व.

विष्वगेउ n. N. eines Sâman Kâṭh. 34, 6. Pañkav. Br. 18, 11, 1.

विष्वग्ज्योतिस् (विष्वच् + ज्यो°) m. N. pr. eines Sohnes des Çatajit VP. 103. die richtige Schreibart in der neuen Ausg.

विष्वग्युत् (विष्वच् + युत्) adj. P. 6, 3, 92, Schol.

विष्वग्लोप (विष्वच् + लोप) m. *allgemeine Störung, ein vollständiges Durcheinander* MBh. 12, 461. 2580. विश्व° ed. Calc.

विष्वग्वातं (विष्वच् + वात) m. *ein nach oder von allen Seiten blasen-*

der Wind TS. 4, 3, 2, 2. MBh. 6, 76. 7, 29. 1842. 8, 2601. Harıv. 7630. Spr. 5391. hier und da fälschlich विश्व° geschr.

विषग्वायु m. dass. Rîâv. im ÇKDa. (विश्व° gedr.).

विषञ्च् (विषु + अञ्च्) 1) adj. (f. विषूची) *nach beiden Seiten (allen Seiten) gewandt, auf beiden Seiten (überall) befindlich, (rechts und links) aus einander gehend; abgewandt, getrennt* von (abl. oder instr.) ṚV. 1,164,31. 3, 55, 15. व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः 2, 33, 2. 6, 74, 2. संसद् विषूची व्यनाशयः 8, 14, 15. दुरः 6, 30, 5. विषूचो अश्वान्युयुजान ईयते *Allen und drüben* 6, 59, 5. 10, 39, 7. Wagen der Sonne, *der in zwei Richtungen fährt*, 3, 75, 1. 7, 63, 2. 10, 27, 18. 90, 4. विषूचो अस्मच्छ्रवः पततु AV. 1, 19, 2. 27, 2. 8, 90, 1. यावंतोदिशः प्रदिशो विषूचीः *um uns her* 9, 2, 21. 13, 8, 6. 38, 2. TBa. 1, 2, 8, 1. विषूङ् प्रजया पशुभिरेति *wird getrennt von* TS. 1, 5, 9, 7. 2, 3, 2, 6. इषुमात्रं विषूङ्कुर्वधत *nach beiden Dimensionen oder nach jeder Richtung* 5, 2, 2. 6, 3, 4. 5, 1, 6, 1. विषूचस्तस्मात्पशून्दूधाति 2, 6, 4. विषूचः शत्रूनपबाधमानो *von allen Seiten kommend* TBa. 3, 1, 6, 12. Çat. Ba. 2, 4, 2, 5. 5, 5, 4, 5. एतं मात्रा विषङ्गं कुर्वन्ति 4, 5, 9, 10. 14, 4, 1, 3. Śrâuy. Ba. 2, 5. विषङ्न्या (नाड्यः) उत्क्रमणे भवन्ति *nach allen Seiten auseinandergehend* Kâṭh. Up. 2, 6, 6. दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता Kaṭhop. 2, 4. स्तोमाः *in umgekehrter Reihe folgend* Çâṅkh. Çr. 14, 38, 6. विषक्कृत्य *umherfliegend* Bhâg. P. 1, 9, 34. विषग्भुञ्जानोकशत *nach jeder Richtung laufend* 7, 8, 22. पशम् 3, 13, 8. 2, 6, 20. तमस् *allgemeine Finsterniss* AK. 1, 2, 1, 4. विषञ्च् ungenaue Schreibart. — 2) adv. विषक् *auf beiden Seiten, nach den Seiten, seitwärts; umher, nach allen Richtungen hin, allerwärts* AK. 3, 3, 13. H. 1529. Halâ. 3, 88. यत्र विषक्पतंत्रि दिग्वः ṚV. 10, 38, 1. वि° वि सृक्काणाः 1, 36, 16. 146, 3. 4, 4, 3. 12, 4. 6, 6, 3. युयोत् विषग्यप्तस्तनूनाम् 7, 34, 13. वि° विपत्ति वनिनो न शाखाः 43, 1. विषक्कस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् 10, 89, 4. AV. 3, 1, 4. विषग्भिन्धि *entzwei* 3, 6, 6. सर्वति *überallhin* H. 444. विषक्सम *allerwärts, überall* AK. 3, 3, 36. विषग्विलुप्तच्छद (तरु) Spr. (II) 2309. Gîr. 11, 11. 12, 29. विषग्वृतो भोगिभिः Sîs. D. 18, 21. विषगवलोकते 57, 19. विषगवलग 149. Vaṇîs. Bṛh. S. 11, 41. परीत Rîâ-Tar. 2, 37. Bhâg. P. 4, 22, 37. 6, 9, 13. 7, 3, 4. 8, 29. विषग्गमनवत् Vedântas. (Allah.) No. 84. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 6, Cl. 14. *rund um* mit gen. Bhâg. P. 10, 13, 8. विषक् Kâṭy. 11, 1. 12, 10 und häufig in späteren Schriften. — 3) f. विषूची *a*) = विषूचिका *die Cholera in ihrer sporadischen Form* Suçr. 2, 518, 4. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 7. auch fehlerhaft विसूची geschrieben. — *b*) N. pr. der Gattin Virâga's und Mutter von 100 Söhnen (darunter Çatajit) und einer Tochter Bhâg. P. 5, 15, 13. Vishvaksena (Vishṇu) fährt in den Mutterleib einer Vishûkî (विसूची Burnouf) 8, 13, 24.

विषण (von स्वन् mit वि) nom. ag. *Fresser* in नर°.

विषणन (wie eben) n. *Frass, Speise* Taitt. 2, 9, 18.

विषद्रीचीन (von विषद्रीच्) adj. *allseitig:* °सृष्टिस्थितिविलय Verz. d. Oxf. H. 143, *b*, No. 293.

विषद्र्यच् adj. = विषञ्च् P. 6, 3, 92. 95, Vârtt. Vop. 26, 79. AK. 3, 1, 34. H. 444. विषद्रीचीर्विलिप्तैन्यवीचीः (विषद्री° gedr.) *nach allen Richtungen gehend* Çiç. 18, 25. विषद्री (!) ved. fem. Kâç. zu P. 6, 3, 92. विषद्यक् adv. *nach den beiden Seiten hinaus, weg:* मा ते मनो विषद्र्यग्वि चारीत् ṚV. 7, 25, 1.

विषद्र्यच् nach Sîs. N. pr. eines Asura: ज्ञातं विषद्र्यो बलं विषेण ṚV. 1, 117, 16. — Vgl. विश्वाची.

विषाण (von स्वन् mit वि) m. *Essen* H. 424.

विसंवाद (von वद् mit विसम्) m. 1) *Wortbruch*, = विप्रलम्भ AK. 1, 1, 2, 36. H. 1319. Halâ. 4, 62. घ° MBh. 12, 9240. — 2) *Widerspruch, Nichtübereinstimmung:* फलैर्विसंवादमुपागता गिरः Spr. (II) 305. न चास्मिन्विधौ विसंवादः शङ्क्यः Daçak. 108, 9. कान्ति° Mâlav. 23. Kumârila bei Müller, SL. 107. Rîâ-Tar. 2, 115. नास्त्यालेख्यविसंवादस्तव Kathâs. 51, 146. 101, 81. सङ्ग Schol. zu ṚV. Prât. 3, 14. घ° Sarvadarçanas. 18, 7.

विसंवादक (vom caus. von वद् mit विसम्) adj. *sein Wort brechend:* घ° *seinem Worte treu bleibend* Spr. (II) 697.

विसंवादन (wie eben) n. *das Brechen des Wortes, Wortbruch:* घ° *das Worthalten* Spr. (II) 698.

विसंवादिता (von विसंवादिन्) f. 1) *das Brechen des Wortes:* घ° *das Worthalten, das Beharren bei dem einmal Gesagten* Kâm. Nîtis. 8, 9. — 2) *Widerspruch, Nichtübereinstimmung mit* (instr.) Sîm. D. 252, 16.

विसंवादिन् (von वद् mit विसम्) adj. *widersprechend, nicht übereinstimmend, — zutreffend* Rasar. 13, 67. Nîlak. 167. Rîâ-Tar. 2, 6. घ° *übereinstimmend, entsprechend, zutreffend* 1, 126. 5, 198. Mâlav. P. 125, 40. Daçak. 88, 12.

विसंशय (2. वि + सं°) adj. *keinem Zweifel unterworfen, ganz sicher:* परीक्षाकरण Spr. 4988.

विसंष्ठुल (2. वि + सं°) adj. *nicht fest stehend, wankend, schwankend* Kâvjâdâ. (1866) 105, 1. Çatr. 14, 244 (विसंस्थुल). Kusum. 24, 6. राज्य Rîâ-Tar. 1, 366. मति° Sîm. D. 339, 3.

विसंसर्पिन् (von सर्प् mit विसम्) adj. *auseinandergehend, sich verbreitend:* तिर्यग्विसंसर्पिनखप्रभेण (aufzulösen in तिर्यग्विसंसर्पिणी नखप्रभा यस्य) पादेन Raghu. 6, 15.

विसंस्थित (2. वि + सं°) adj. *nicht beendigt, unvollendet* Kâṭy. Çr. 11, 1, 27. Çâṅkh. Çr. 6, 13, 9. 7, 7, 4.

विसंस्थुल s. विसंष्ठुल.

विसंकट s. विशङ्कट.

विसंचारिन् (von चर् mit विसम्) adj. *hinundherschweifend:* मनस् MBh. 12, 7127. = विषयसंचारशील Nîlak.

विसंज्ञ (2. वि + संज्ञा) adj. (f. आ) *bewusstlos* MBh. 1, 6722. 2, 1927. 2240. 4, 2116. 7, 2767. 14, 2274. R. 2, 21, 34. 30, 26. 34, 18. 38, 5. 77, 11. 87, 3. 103, 42 (111, 49 Gorr.). 106, 33. Suçr. 1, 120, 16. 2, 193, 6. 542, 21. Kathâs. 96, 17.

विसंज्ञागति f. *eine best. hohe Zahl* Lalit. ed. Calc. 169, 3. richtiger विसंज्ञावती Vjutp. 184.

विसंज्ञित (von विसंज्ञ) adj. *des Bewusstseins beraubt* Harıv. 1014.

विसदृश (2. वि + स°) adj. *unähnlich:* विपाक = कर्मणो ऽविसदृशफलम् (so ist zu schreiben) *so v. a. entsprechend* Mân. k. 158.

विसदृश (2. वि + स°) adj. *unähnlich, ungleich, nicht entsprechend, unebenbürtig* ṚV. 1, 113, 6. Spr. 2178. Rîâ-Tar. 4, 294. Bhâg. P. 5, 26, 3. 9, 15, 3. Sîs. zu ṚV. 3, 53, 22. Gaupar. zu Sâṅkhjak. 55. Kull. zu M.

3,16. Schol. zu Kâtj. Çr. 67,24. Sarvadarçanas. 178,3. गो° Kusch. 30, 18. f. ई ebend. धा Bhâg. P. 5,25,15. — Vgl. वैसादृश्य.

1. विसंधि (2. वि + सं°) m. *Nebengelenk:* संधिविसंधय: Sadd. P. 4,5,a.

2. विसंधि (wie eben) adj. 1) *ohne Gelenke:* शरीर MBh. 3,8746. — 2) *nicht im Bündniss mit Jmd stehend* Kâm. Nîtis. 15,54. — 3) *ohne grammatischen* Saṁdhi, *wobei der* Saṁdhi *vernachlässigt ist* Verz. d. Oxf. H. 207,a,15. Prâtiçâkh. 62,b,4. 63,a,7.

3. विसंधि (वि = विसर्ग + सं°) m. *die euphonischen Regeln über den* Visarga Vop. 2 in der Unterschr.

विसंधिक (2. वि + संधि) adj. *ohne grammatischen* Saṁdhi, *wobei der* Saṁdhi *vernachlässigt ist* Kâç. 3,125.

विसंनाह (2. वि + सं°) adj. *ungespannt* M. 7,92.

विसमाप्ति (2. वि + स°) f. *Nichtvollendung* P. 2,1,60, Vârtt. 5.

विसर् (von सृ mit वि) m. 1) *Ausbreitung,* = प्रसर H. an. 3,605. Med. r. 219. — 2) *Fülle, Menge* AK. 2,5,39. H. 1411. H. an. Med. Hall. 4,1. Milâvîn. 23,14. Kâç. (1866) 79,9. Pârâç. 3,5,24. लावण्य° Kathâs. 13,139. — 3) *eine best. hohe Zahl* Vaitp. 179. 181. Mél. asiat. 4, 638. — Vgl. विसार.

विसरण (wie eben) n. *das Sichausbreiten:* eines Ausschlags Suçr. 1, 283,6. *das Welt-, Schlafwerden* (Gegens. संकोचन) 2,38,2.

विसर्ग (von सृज् mit वि) m. = त्याग H. an. 3,132. Med. g. 48. = मुक्ति Hall. 3,49. 1) *das Aufhören, Ende:* तासा घर्मा घर्मवत्ते विसर्गम् ṚV. 7, 103,9. पर्या विसर्गे घरुणेषु तस्थौ 10,5,6. व्रतादेशन° Pân. Gaṇ. 1,10. Çâkat. Gaṇ. 1,2. — 2) *Untergang der Welt* (= संहार oder विविध: सर्ग: Comm.) Bhâg. P. 8,7,30. — 3) *das Loslassen, Oeffnen:* मुष्टि° Kâtj. Çr. 7,4,17. 8,1,11. — 4) *das Loslassen, Wiederfreigebung:* der Stimme Çâṅkh. Çr. 2,14,10. 4,7,2. Gobh. 2,3,12. im Gegens. zu नियम MBh. 14,1434 (= उत्पत्ति Nîlak.). — 5) *das Entlassen* so v. a. *Verabschiedung:* तेजो° MBh. 13,4192. विष° Spr. 2866, v. l. des Wassers von Seiten der Wolken Rṭuv. 4,36. 16,38. — 6) *Entleerung* (das Geschäft des पायु) H. an. Med. Hall. Çat. Br. 14,5,4,11. 7,2,12. MBh. 14,1127. Harîv. 11797. Suçr. 1,311,2. Bhâg. P. 3,6,20. 5,11,10. 7,12,27. 11,12, 19. Mârk. P. 45,52. Tattvas. 14. Vedântas. (Allah.) No. 74. — 7) *Entlassung* (einer Person), *Verabschiedung:* प्राणोत्सर्ग विसर्ग वा मत्स्यैर्या-स्याम्यहं सह MBh. 13,2666. 5,6013. श्रमसर्वस्व भृत्यस्य 12,1238. einer Gattin M. 9,46. eines Gottes (Idols) Varâh. Bṛh. S. 43,36. — 8) *Befreiung, Erlösung* Bhâg. P. 6,9,31. — 9) *das Spenden, Schenken* H. an. Med. Uçanas bei Kull. zu M. 7,134. MBh. 2,2378. 13,1882. धमानाम् 2372. धन° R. Gorr. 2,83,21. श्राद्दानं हि विसर्गाय सताम् Rṭuv. 4,36. Rîâ-Tar. 6,263. धमादि° Kull. zu M. 3,235. — 10) *das Werfen, Schleudern, Abschiessen* Çâṅkh. Çr. 4,20,1. नानाशस्त्रविसर्गै: MBh. 1,1482. 8, 1283. Bhâg. P. 1,7,44. 10,59,21. विग्रुहिसर्ग Spr. 1238. लाज° *das Streuen von geröstetem Korn* Rṭuv. 7,22. 30,136. 31,224 (pl.). 103,193. शराङ्गविसर्गवीक्षितै: *das Schleudern von Blicken* Bhâg. P. 10,6,6. — 11) *das Schöpfen, Erzeugen* Bhag. 8,3. MBh. 2,1927. नवयोग 3,10666. Harîv. 53. 362. 1901 (sg. die neuere Ausg.). Bhâg. P. 3,8,22. 6,17,23. 9,8,21. लोक° 3,8,22. प्रजा° 2,9,18. 29. 4,30,15. 8,4,17. 12,2,22. गु-णापायविसर्गलक्षण 6,4,29. Neben सर्ग (*der primitiven Schöpfung durch* Brahman) so v. a. *secundäre Schöpfung, die Schöpfung im Einzelnen durch* Purusha Bhâg. P. 2,10,1. 2. 12,7,9. 12. — 12) *Schöpfung* in concretem Sinne, *Erzeugniss:* गुण° Bhâg. P. 5,1,7. 37. 7,9,12. so v. a. *Nachkommenschaft* 6,17. तेषां विसर्गाश्चत्वार: Harîv. 2090. — 13) *der Erzeugende, Hervorbringende, die Ursache* Bhâg. P. 7,9,22. — 14) *das männliche Glied* (= मेढ्र Comm.) Bhâg. P. 10,63,36. — 15) Visarga, *der am Ende von Wörtern erscheinende Hauch* (s. विसर्जनीय) H. an. Med. Çaut. 2. Ind. St. 3,215, N. 1. 10,438, N. 2. P. 1,1,9, Schol. 3,2, 70, Vârtt. 2, Schol. Verz. d. Oxf. H. 162,a,4. 164,a, No. 360. fg. 165, b, No. 367. 171,b,3. 4. 350,b, No. 824. Bhâg. P. 6,8,8. neben बिन्दु unter den Beinn. Çiva's MBh. 13,1241. विसर्गलुप्त n. *das Fehlen des* Visarga Prâtiçâkh. 62,b,6. लुप्तविसर्गक dass. 64,b,4. लुप्ताक्तविसर्गते Sin. D. 575. — 16) = घयमभेदो विभावसो: Med. *the southern course (of the sun)* Wilson. — Die Bed. *light, splendour* bei Wilson beruht auf einer falschen Auffassung von वर्चस् (*Ausleerung*) in H. an. — Vgl. गो°, लोक°, वाग्विसर्ग (*das Reden, Sprechen* Bhâg. P. 1,5,11 = 12,12,51).

विसर्गचुम्बन n. *Abschiedskuss* Rṭuv. 19,29.

विसर्गिक s. u. विसर्गिन् 2).

विसर्गिन् (von विसर्ग) adj. 1) *spendend, schenkend:* संचयान्न विस-र्गी स्यादहाना MBh. 12,4386. — 2) *schöpfend:* मतिं लोकविसर्गिणीम् MBh. 12,13522. °विसर्गिकीम् *auf das Schaffen der Welt gerichtet* ed. Bomb.

विसर्जन (von सृज् mit वि) 1) m. pl. N. pr. eines Geschlechts Bhâg. P. 11,30,18. — 2) f. ई Bez. *einer der drei Falten des Afters* (*die Entleerende*) Suçr. 1,288,11. — 3) n. proparox. *a) das Aufhören, Ende; das Aufhörenmachen, Entfernung:* दु:खस: ṚV. 5,59,3. व्रतस्य Çâṅkh. Çr. 2,13,7. Kauç. 42. 68. व्रत° Harîv. 14100. — Nir. 10,2. — *b) das Loslassen, Freiwerden:* der Stimme VS. 1,18. Çat. Br. 1,1,4,3. Kâtj. Çr. 4,10,6. 7,4,18. P. 8,3,110, Schol. — *c) das Entleeren:* घृतस्य ṚV. 8,61,11. — *d) das Verlassen, Aufgeben, Fahrenlassen;* = परित्याग Med. n. 206. दृषस्य, शस्त्राणाम् MBh. 7,9014. घनिष्टानां च (so ed. Bomb.) संसर्गादिष्टानां च विसर्जनात् 11,35. देह° Rṭuv. 5,25. — *e) das Entlassen, Verabschieden:* वसुवृष्टि° Rṭuv. 9,6. विण्मूत्रस्य M. 4,48. 102. — *f) das Entlassen, Verabschieden* (einer Person); = संप्रेषण Med. Jâṭ. 1,251. MBh. 3,2847. 5,6013. R. 1,3,18 (7 Gorr.). 27. R. Gorr. 1,2,21. 34. fg. 4,47. 2,51 und 122 in der Unterschr. Çiç. 97,10. Kathâs. 70, 62. Mârk. P. 30,10. Kull. zu M. 3,265. Verz. d. Oxf. H. 79,a,29. मृ-त्युप्रयाणे स्त्रीणां विसर्जनं दण्ड: Ver. in LA. (III) 11,16. *das Entlassen eines Gottes (eines Idols)* Verz. d. Oxf. H. 103,b,22. गो° *das Entlassen der Kühe aus dem Stalle, das Hinaustreiben derselben auf die Weide* Hall in der Einl. zu Vîsâvad. 30. — *g) das Spenden, Schenken* AK. 2,7,28. H. 386. Med. सक्तुप्रस्थ° Spr. 2462. — *h) das Schleudern, Abschiessen:* इषोकास्त्र° R. 2,96 (105 Gorr.) in der Unterschr. — *i) Erschaffung* ṚV. 10,129,6. concret *Schöpfung:* त्वया सृष्टमिदं विश्वं धा-तर्गुणविसर्जनम् Bhâg. P. 10,16,37. — Vgl. मल°, वाग्विसर्जन.

विसर्जनीय 1) am Ende eines comp. adj. von विसर्जन, z. B. व्रत° Çat. Br. 5,5,5,2. — 2) (von सृज् mit वि oder von विसर्जन) m. (sc. वर्ण) *der am Ende von Wörtern erscheinende Laut,* Bez. *des Hauches* (der nach

indischer Ansicht in den meisten Fällen primitiv ist und beim Zusammenstoss mit andern Lauten in स, र् u. s. w. übergeht) RV. Pair. 1,5. 17. 2,9. 4,8. 14,9. 10. 18,13. VS. Pair. 1,41. 71. 180. 3,5. 132. 4,33. 103. 112. 7,6. 7. 9. 8,24. AV. Pair. 1,5. 42. 2,25. fg. 40. 3,29. TS. Pair. 1,12. 13. P. 3,3,15. 24. Vârtt. und Pat. zu 37. Çiksh. Ça. 1,2,9.

विसर्जयितव्य (vom caus. von सर्ज् mit वि) adj. *was zum Abfer entlassen wird* Paasçnop. 4,3.

विसर्ज्य (wie oben) adj. *zu entlassen, zu verabschieden* MBh. 13,3442.

विसर्प (von सर्प् mit वि) m. gaṇa श्वेतादि zu P. 5,2,103, Vârtt. 1) *das Umsichgreifen:* विष° Spr. 2866, v. l. Uttarab. 17,3 (23,6). — 2) *Rose, Rothlauf und ähnliche Entzündungen* Râéan. im ÇKDa. Wise 270. Suça. 1,283,2. 6. 326, 8. 2, 100,13. Çiâo. Saṃh. 1,7,66. Verz. d. Oxf. H. 306,a,27. 307,a,5. 314,a,28. 316,b,10. 327,a,4 v. u. Verz. d. B. H. No. 975. °क्षत्रविषर्प Râéa-Tan. 4,653. Auch वीसर्प Suça. 1,165, 2. Vishn. 12,57. Verz. d. Oxf. H. 307,a,5. — 3) in der Dramatik *eine zum Unheil unternommene That:* विसर्पो यत्समारब्धं कर्मानिष्टफलदम् Sin. D. 485. 471. — Vgl. मन्द° und वैसर्प.

विसर्पण (wie oben) n. 1) *das Verlassen seines Standortes, das vom-Platze-Rücken:* सर्पाणुदद्यपत्तो ऽहं न समर्थो विसर्पणे R. 4,56,29. मेरोः MBh. 7,272 (= क्षेपण Nilak.). 8187. — 2) *das Sichausbreiten,* = प्रसर AK. 3,3,23. क्षत° Suça. 1,267,18. *Wachsthum, Zunahme* Vjutp. 172.

विसर्पि (wie oben) m. = विसर्प 2) Râéan. im ÇKDa. Hierher oder zu विसर्पिन् 2) Verz. d. B. H. 278, No. 929, Çl. 43.

विसर्पिका f. dass. Vaṛâh. Bṛh. S. 32,14.

विसर्पिन् (von सर्प् mit वि) 1) adj. a) *hervorschiessend, hervorkommend:* कदलीषण्डैः — तीरात्तीरविसर्पिभिः MBh. 3,11127. गुहामुख° (प्रतिशब्द) Kumâras. 6,61. Vikr. 16. 67,1. लाङ्गूलविक्षेपविसर्पिणीभि Kumâras. 1,13. मत्तेभगविसर्पिविक्रम *gegen grosse Schlangen hervortretend* Raghu. 11, 27. — b) *hinundherkreisend, — schwimmend, — sich bewegend:* रराज वसुधा कीर्णा विसर्पिभिरिवोरगैः (विसर्पद्भिरिवो° ed. Bomb.) MBh. 7, 7211. मेघाः 5,7652. प्लवाः R. 5,83,6. शैला इव विसर्पिणः 7,16,18. नौका च खलबिद्धा च प्रतिकूलविसर्पिणी Spr. 4483, v. l. मत्तीतल° so v. a. *Erdenwoller* Harîv. 12085. — c) *umsichgreifend, sich verbreitend* Suça. 1,257,11. 259,6. 286,10. 2,2,20. व्यसन R. 6,95,31. दूरविसर्पिदोष Kumâras. 7,53. मानविष Çic. 9,36. गन्ध Kâraṇd. 8. — 2) m. = विसर्प 2) Suça. 1,9,17; vgl. u. विसर्पि. — 3) f. विसर्पिणी *Ptychotis Ajowan Dec.* Ausw. 36. — Vgl. मन्द°.

विसर्मन् (von सृ mit वि) adj. *zerfliessend, flüchtig* RV. 5,42,9.

विसल n. = किसल *Blattknospe, junger Schoss* Taik. 2,4,4.

विसल्य und विसल्यक (2. वि + स) m. *eine best. Krankheit* AV. 6, 127,1. 2. 9,8,2. 20. 19,44,2.

विसल्या s. विशल्या.

विसामग्री (2. वि + स°) f. *das Fehlen von Mitteln* (= कारणाभाव Comm.) Kusum. 10,2.

विसार (von सृ mit वि) m. 1) *das Zerfliessen:* रसस: RV. 1,79,1. — 2) *Verbreitung, Ausbreitung:* वातविसारा इन्द्रियप्रिय: Nalod. 1,19. — 3) *Fisch (der Bewegliche)* P. 3,3,17, Vârtt. AK. 1,2,9,17. H. 1344. Halây. 3,35; vgl. वैसारिण.

विसारथि (2. वि + सा°) adj. *ohne Wagenlenker:* स्यन्दन Spr. 2873. विसारथिरूपध्वज *ohne Wagenlenker, Pferde und Banner:* रथ MBh. 5,2051.

विसारिन् (von सृ mit वि) P. 3,4,16. 1) adj. a) *hervorkommend:* गुहा° (घनगर्जित) so v. a. *widerhallend* Raghu. 13,28. — b) *umhergehend:* देवदत्त P. 3,4,16, Schol. — c) *sich verbreitend, umsichgreifend* AK. 3, 1,31. H. 390. परितो विसारिणा तेजसा Raghu. 3,15. विश्वविसारि तेजः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 23. गगनविसारिभिरंशुभिः Kir. 10,11. विसारिणेयो ज्वाला कृष्यभुजः Râéa-Tar. 8,982. — 2) f. विसारिणी *Glycine debilis Lin.* Râéan. im ÇKDa. — Vgl. अति° und वैसारिण.

विसिर (2. वि + सिरा) adj. (f. ई) *nicht mit* (hervortretenden) *Adern versehen:* जङ्घा Vaṛâh. Bṛh. S. 70,2 (विशिर gedr.).

विसिस्मापयिषु (vom desid. des caus. von स्मि mit वि) adj. *Jmd* (acc.) *in Staunen zu versetzen beabsichtigend, — im Begriff stehend* MBh. 7, 3448. 4700. 8,1912.

विसुकल्प m. N. pr. eines Fürsten Târan. 68.

विसुकृत् (2. वि + सु°) adj. *nichts Gutes thuend* Çat. Br. 14,9,4,4.

विसुकृत (2. वि + सु°) adj. *ohne gute Werke* Kâṭh. Up. 1,4.

विसुख (2. वि + सुख) adj. *freudlos, keine Freuden kennend* Vaṛâh. Bṛh. 20(18),1.

विसुत (2. वि + सुत) adj. (f. आ) *kinderlos* Spr. (II) 2617. Vaṛâh. Bṛh. 23(21),5.

विसुहृद् (2. वि + सु°) adj. *ohne Freunde* Vaṛâh. Bṛh. 18(16),17.

विसूचिका s. विषूचिका; विसूची s. u. विषच्.

विसूत (2. वि + सूत) adj. *des Wagenlenkers beraubt* MBh. 7,8125.

विसूत्र (2. वि + सूत्र) adj. *verwirrt, in Unordnung seiend:* °व्यवहारत्व Râéa-Tar. 8,774. 882. *verwirrt* so v. a. *bestürzt, ausser sich* 1300.

विसूत्रण (von विसूत्रय्) n. *das Verwirren, in-Unordnung-Bringen:* एक एको ऽकोशोघः पतनानां विसूत्रणम् Râéa-Tar. 7,1479

विसूत्रता (von विसूत्र) f. *Verwirrung, Unordnung:* इदं राज्यस्थितिरगादधिरोह विसूत्रताम् Râéa-Tar. 1,361. *Verwirrung* so v. a. *Verlust des klaren Bewusstseins:* स्वैरेव शस्त्रिभिः सर्वैर्निन्ये भूभृद्विसूत्रताम् 8, 809. 1662.

विसूत्रय् (wie oben) *in Verwirrung bringen:* विसूत्रित von Personen Râéa-Tar. 4,446. 7,1372.

विसूरण n. *Kummer* Vikr. 82 (im Prâkrit).

विसूरित 1) n. dass. Gaṇâdh. im ÇKDa. — 2) f. आ *Fieber* Çabdâmṛtak. bei Wilson.

विसूर्य (2. वि + सूर्य) adj. *der Sonne beraubt* Harîv. 12414 = R. ed. Bomb. 4,43,55.

विसृज्य (von सृज् mit वि) adj. *was hervorgebracht wird,* subst. *Wirkung* Bhâg. P. 7,9,22.

विसृत् s. unter सृ mit वि.

विसृमर (von सृ mit वि) adj. (f. ई) *sich ausbreitend, — weit verbreitend* AK. 3,1,31. H. 390.

विसृप् (abl. विसृपस्) s. u. सर्प् mit वि.

विसृमि (von सर्प् mit वि) f. *Ausbreitung:* श्लेष्मा शरीरे विसृमिं लभते Kâr. 2,4.

विसृमर adj. = विसृमर AK. 3,1,31. H. 390.

विसृष्ट s. u. सर्ज् mit वि.

विसृष्टधेन adj. etwa *Milchtrank strömend* ṚV. 7,24,2.

विसृष्टराति adj. *Gaben spendend* (Sis.) ṚV. 1,122,10.

विसृष्टवाच् adj. *das Schweigen brechend* Âçv. Çr. 1,12,30. 4,8,22.

विसृष्टि (von सर्ज् mit वि) f. 1) *das Loslassen, Schuss* Kâm. 28,2. *das Entlassen:* मुक्त° Vjutp. 192. — 2) *Schöpfung* ṚV. 10,129,6. 7. Çat. Br. 10,5,2,3. 14,4,2,12. Hariv. 114. Mârk. P. 102,19. पूर्व° Hariv. 25. 406. neben सृष्टि so v. a. *Schöpfung im Einzelnen* Brahmavaiv. P. bei Burnouf, Bhâg. P. I, xlvi. — 3) *Nachkommenschaft* Hariv. 1997.

विसोमं (2. वि + सोम) adj. (f. या) 1) *ohne Soma* Çat. Br. 11,7,2,3. — 2) *ohne Mond:* शर्वरी Spr. 3027.

विसोष्य (f. वि + सो°) n. *Leiden:* °भाज् R. 7,50,11.

विसौरभ (2. वि + सौ°) adj. *ohne Wohlgeruch:* कार्पोकार Kathâs. 54,55.

विस्कम्भ und विस्कुम्भ s. u. विष्कम्भ, विस्कार unter विष्किर.

विस्त m. *ein best. Gewicht: ein* Karsha oder *16 Mâsha Gold* AK. 2,9,87. H. 884. Paiçâcikatantra. 7, *a*, 8. am Ende eines adj. comp. f. या P. 4,1,22. — Vgl. कुरु°, त्रि°, बकु°.

विस्तार (von स्तृ mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. या. *a) Ausdehnung, Breite, Umfang:* = विस्तार Med. r. 216. उच्छ्रायायामविस्तारा: Verz. d. Oxf. H. 48, *a*, 41. Vârâh. Bṛh. S. 58,21. लोक° Bhâg. P. 1,3,3. यावासा बकुविस्तरा: R. 1,12,12. साकृतिविस्तरैर्मेधै: Mṛicch. 76, 20. खड्ग: सुविस्तर: MBh. 12,6187. eines Geschlechts 1,99. 2,870. बकु° adj. *weit verbreitet:* वैधर्म्य 3,13235. नास्त्यसौ विस्तरस्य मे (d. i. कृष्णस्य) Bhâg. 10,19. न्याय° so v. a. *der umfangreiche* Nyâya Kâm. Nîtis. 2,13. पुराण° Hariv. 6786. ग्रन्थविस्तरसंक्षेपमात्रम् (so ist nach Hall zu lesen) *ein blosser Auszug eines umfangreichen Werkes* Kathâs. 1,10. शास्त्रैर्मरुविस्तरै: Spr. (II) 1721. शब्दब्रह्मणि — उरुविस्तरे Bhâg. P. 4, 29,45. बकुविस्तरं कर् *sich stark ausbreiten* Spr. (II) 888. सुविस्तरं या von einer Schatzkammer 705. मनस: *das Weiterwerden* (unnöig.) *des Hersens* Daçar. 4,41; vgl. u. विस्तार 1) am Ende und विस्कार 2). — *b) Menge, Masse;* = समूह Çabdar. im ÇKDa. एककालं चोद्देतं न प्रमज्जेत विस्तरे M. 6,55. यज्ञसंभार° R. Gorr. 1,11,17. 2,81,32. देवायतनविस्तरै: 7,101,15. भूषण° Mṛicch. 152,10. विभव° 23,17. ग्रन्थ° Vârâh. Bṛh. S. 1,2,5. Maitrâjup. 6,34 (pl.). गुण° Spr. 2148. वस्तु° Daçar. 1,51. 3,25. Sîh. D. 314. *eine Menge von Menschen, eine grosse Gesellschaft* M. 3,125. fg. Bhâg. P. 7,15,3. 4. उभे पुरवरे रम्ये विस्तरैरुपशोभिते *mit einer Menge von Dingen* R. 7,101,14. चत्वार: मञ्जिला वेदा: सरहस्या: सविस्तरा: *mit den vielen dazu gehörigen Schriften* Hariv. 9491. ब्रह्माधीत्य सविस्तरम् Bhâg. P. 3,3,2. बकु° adj. *mannichfach, verschiedenartig:* पेषै: MBh. 2,99. पुष्पै: Hariv. 10981. उपपै: 7204. — *c) hoher Grad, Intensität:* विभूते: Bhag. 10,40. दीप्ति: कान्तेस्तु विस्तर: Daçar. 2, 23. सुविस्तरम् *überaus heftig:* विललाप MBh. 3,17291. Hariv. 4839. यत्नेन हि परिक्रुष्टं लक्ष्मणेति मु° R. 3,60,7. बकुविस्तरम् dass.: रुरुदु: MBh. 12 5745. — *d) Detail, das Ausführliche, die einzelnen und genaueren Umstände einer Sache; Specification, ausführliche —, umständliche Darstellung; Weitschweifigkeit* P. 3,3,32. AK. 3,3,22. 3,4,8,29. H. 1432. Med. Hall. 4,81. विस्तरेण समासेन यदुक्तमिह धार्यते यदिहातिभि: (ज्ञानम्) MBh. 1,37. तस्य शब्दस्य वक्ष्यामि विस्तरम् 12, 6858. तस्य विस्तरमाख्यास्ये मनोर्वैवस्वतस्य क् Hariv. 280. 288. 2451. श्रुतास्ते विस्तरा: सर्वे 11046. श्रुतविस्तर adj. *der die Details gehört hat* 4274. कुब्जाया: श्रुतविस्तरो 4497. श्रुत° R. Gorr. 2,62,3. लोकादन्विष्य विस्तरम् R. 1, 3,1. तस्य देशस्य विस्तरं व्याकर्तुमुपचक्रमे 33,25 (34,23 Gorr.). 37,28 (38,21 Gorr.). भूयतां विस्तरो राम सगरस्य 40,3 (41,3 Gorr.). 2,59,2. R. Gorr. 1,27,6. 45,36. 7,55,1. कार्य° 100,3. Suçr. 1,94,11. 229,8. 2, 531,14. Vârâh. Bṛh. S. 43,21. पठ्यते भृगुविस्तरे *im ausführlichen Werke* Kûlikop. in Ind. St. 9,15. समर्थनप्रपञ्चोक्तिरुक्तस्यार्थस्य विस्तर: Prâtiçâkh. 69, *a*, 6. अलमुक्त्वात्र विस्तरम् Kathâs. 22,118. Mârk. P. 53,8. Sîh. D. 407. Verz. d. Oxf. H. 50, *a*, 12. °शङ्क्या Sîh. D. 124. °भीरु Sarvadarçanas. 61,7. किं विस्तरेण Spr. 3096. कृतं विस्तरेण Sarvadarçanas. 105,16. अलमतिविस्तरेण Vikr. 3,6. Vârâh. Bṛh. S. 1,8. Prab. 2,2. विस्तरेण *ausführlich* Bhag. 10,18. MBh. 1,7619. 3,2475. 11941. 16662. 16899. 5,6012. 6042. R. 1,8,29. Vârâh. Bṛh. S. 47,1. 28. Mârk. P. 72, 17. Pañkat. 41,21. विस्तरात् dass. Vârâh. Bṛh. S. 60,22. Bhâg. P. 2,1, 1. Mârk. P. 16,12. 69,1. Pañkat. 1,3,1. सुविस्तरात् 4,2,6. बकु° adj. *sehr ausführlich:* कथा R. Gorr. 1,38,2. वाक्यमद्भुतविस्तरम् R. Schl. 1,21,1. व्याख्यां स्वल्पातिविस्ताराम् Verz. d. Oxf. H. 63, *a*, No. 111. यश्चिनोर्देवयोश्च सृष्टिरुक्ता सुविस्तरा *mit allen Details* 83, *a*, 16. सविस्तरम् adv. *ganz genau, ausführlich* Kathâs. 49,177. Pañkat. 114,20. सुविस्तरम् Pañkat. 2,7,30. Hit. 73,15. बकुविस्तरसंयुक्तमाख्यामयत राक्षसान् so v. a. *nach allen Richtungen hin, in allen Stücken* R. 3,31,35. — *e)* = प्रणय *Vertraulichkeit* u. s. w. Med. — *f)* = पीठ *Sitz* (vgl. विष्टर) Çabdar. im ÇKDa. — 2) adj. (f. या) *ausgedehnt, umfangreich:* कथा Sîh. D. 305; vgl. विस्तरता. — Vgl. अ°, न्यायमाला°, पुरार्ध°, मध्यान्तरविस्तरलिपि, विष्टर und विस्तार.

विस्तरक (von विस्तर), davon विस्तरकेण instr. *recht ausführlich* Pat. bei Gold. Mân. 91, *b*.

विस्तरणी (von स्तृ mit वि) f. Bez. einer best. Göttin: देवी विस्तरणी प्रिया मे) sagt ein Brahmane Mârk. P. 61, 65.

विस्तरतस् (von विस्तर) adv. 1) *der Breite nach:* यावामतो वि° Bhâg. P. 3,8,25. — 2) *mit allen Details, ausführlich* Suçr. 2, 302, 9. Vârâh. Bṛh. S. 1,10. Bhâg. P. 2,1,7. Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 11. Pañkat. 181,2.

विस्तरता (wie oben) f. *Ausbreitung:* स्वेदोद्गमो विस्तरतामुपैति Ṛt. 6,7.

विस्तरशस् adv. = विस्तरतस् 2) M. 9,230. Bhag. 11,2. 16,6. MBh. 1,2043. 6,771. Vârâh. Bṛh. S. 49,1. Bhâg. P. 3,29,2. Mârk. P. 1,17. 57, 2. 75,1. Verz. d. Oxf. H. 38, *b*, No. 93. 74, *a*, 5.

विस्तार (von स्तृ mit वि) m. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *Ausdehnung, Breite, Umfang* P. 3,3,22. AK. 3,3,22. 3,4,44,69. 88, 116. 22(23), 15. Trik. 3,3,369. H. 1432. an. 3,602. Med. r. 219. Hall. 4,81. 5,62. 99. Colebr. Alg. 97. 315. MBh. 1,337. 2,270. 1982. Hariv. 13793. R. 1,40,15 (41,20 Gorr.). R. Gorr. 2,108,18. 4,40,39. 41,51. 5,6,16. 18. 56, 17. fg. भग° Suçr. 1,125,21. Vârâh. Bṛh. S. 49,3. 6. 53,5. 11. 22. 56,11. fgg. 58,6. 26. Mudr. 18. Bhâg. P. 5,16,12. 20,2. 42. Mârk. P. 54,4. 8. नातिविस्तारसंकट Kâm. Nîtis. 16,3. अतिविस्तारविस्तीर्ण Pañkat. 245,25. लताविस्तारसंकुल *sich weit verbreitende Schlingpflanzen* Verz. d. Oxf. H. 17, *a*, No. 63, Cl. 4. कातन्त्र° *das umfangreiche* Kâtantra Colebr. Misc. Ess. II, 45. यापुरद्रव्यां प्रकामविस्तारफलं कृषिण्य: Rasn. 2,11. संकृत-

द्युतिविस्तारां ताराम् R. 2,114,7 (125,8 Gorr.). यस्य (विद्यकर्तुः) विस्तार एवैष लोकः *Ausbreitung* Harıv. 14587. Bhag. 13, 30. °गामिनी बुद्धिः *in's Weite schweifend* MBh. 13,4334. लक्ष्मीः, छाया) विस्तारमुपगच्छति *sich ausbreiten, wachsen* Spr. 2650. चमत्कारश्चितविस्तारवपुः *Weitwerden des Herzens* Sin. D. 23,14; vgl. u. विस्तर् 1) am Ende und u. विस्फार् 2). — 2) *Breite eines Kreises* so v. a. *Durchmesser* Colebr. Alg. 87. — 3) *Specification, eine Aufzählung* —, *Ausführung im Einzelnen* Jiáś. 3, 96. Suça. 1, 32, 5. षड्विधविस्तारो रसः so v. a. *der Geschmack zerfällt in sechs Arten* MBh. 12,6851. 14,1411. द्वादशविस्तारं तेजसो रूपमुच्यते 1414. विस्तारेण *ausführlich* R. 3, 4, 4 wohl nur fehlerhaft für विस्तरेण. — 4) *ein Ast mit seinen Zweigen; Strauch* AK. 2, 4, 4, 14. Tam. (स्तम्ब st. स्तम्भ zu lesen). H. 1124. H. an. Med. Halâ. 2,26. — Vgl. नक्षत्रकान्ति°, लोक°, विस्तर् und विष्टार्.

विस्तारिन् (von विस्तार्) adj. *sich ausbreitend, breit, umfangreich:* त्रैलोक्यात्तर° Harıv. 2634. पदे पदे सतां मैत्र्यः सरित्समाः Spr. (II) 940. वीत्र Daçar. 1,16. हिंसाकृत्रोद्भवाः सर्वे तावद्धिंस्तारिणश्च ते Mânn. P. 34,11. पदा Harıv. 14653. रक्तार्णव Prab. 81,11. पङ्क Mârk. P. 74,18. स्तनभार Spr. 2878. Uttarab. 116,14 (157,16). Milatîm. 131,10. दोम् 81,18. Kathâs. 100,18. भारत Verz. d. Oxf. H. 120,a,39.

विस्तीर्ण s. u. स्तर् mit वि.

विस्तीर्णकर्ण adj. *die Ohren ausgestreckt haltend* und zugleich *breitohrig*, Bez. des *Elephanten* Spr. 2053.

विस्तीर्णता (von विस्तीर्ण) f. *Geräumigkeit:* einer Burg Spr. 5028.

विस्तीर्णभिद् m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,17.

विस्तीर्णवती (von विस्तीर्ण) f. N. einer Welt Lot. de la b. l. 274.

विस्तृति (von स्तर् mit वि) f. 1) *Ausdehnung, Breite* Taik. 3, 3, 269. H. an. 3,488. 602. Med. r. 219. Âsiatt. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 538. — 2) *Durchmesser eines Kreises* Colebr. Alg. 87. Z. f. d. K. d. M. 2,427,1.

विस्थान (2. वि + स्थान) adj. *einem andern Organ angehörig* RV. Pâit. 4, 3.

विस्पन्द् s. विष्पन्द् und विष्पन्द्.

विस्पन्दन (von स्पन्द् mit वि) m. *das Erzittern:* तृण° MBh. 7,7993. प्रस्पन्दन ed. Bomb.

विस्पर्धा (von स्पर्ध् mit वि) f. *Wetteifer:* येषां व्रते उद्य विस्पर्धा बले बलवतामिव MBh. 5,1603. fg.

विस्पर्धिन् (wie eben) adj. *wetteifernd:* शक्र° MBh. 9,2645. चन्द्रविस्पर्धिना मुखेन 4,139.

विस्पष्ट (von स्पश् = पश् mit वि) adj. P. 6,2,24, Schol. *mit Augen zu sehen, offenbar, klar, deutlich, verständlich:* रुता MBh. 12,3088. विग्रहिस्पष्टपिङ्गाक्ष 1,1241. सिंहविस्पष्टविक्रम Harıv. 3105. विस्पष्टेन्दुमुखी Mâlav. P. 21,17. °कोप 116,57. विस्पष्टामर्षपूरित 123,39. विद्या 101, 18. Prab. 71,2. विस्पष्टार्थ M. 2,33. अविस्पष्टार्थ Nir. 1,15. स्व° von einer Rede AK. 1,1,5,23. Halâ. 1,141. विस्पष्टम् adv.: यद्वेतितासि विस्पष्टं नाम MBh. 3,16446. नाविस्पष्टमधीयीत M. 4,99. in comp. mit einem adj. (der Ton ruht auf der ersten Silbe des comp.) P. 6,2,24. — Vgl. वैस्पष्ट्य.

विस्पष्टीकर् (विस्पष्ट + 1. कर्) *klar —, deutlich machen;* davon nom. act. °करण n. Müller, SL. 170.

विस्पृक्क adj. Bez. *eines besondern Geschmacks* Vaṇin. Bṛh. S. 51,33.

विस्फार् (von स्फर् mit वि) m. P. 6,1,47, Schol. 1) *das Losschnellen eines Bogens und der dadurch bewirkte Laut* AK. 2,8,3,76. H. 1466. Halâ. 1,151. MBh. 3,16128. 4,162. 12,982. R. 5,39,17. 7,28,45. — 2) *das Aufklaffen, stark-weit-Oeffnen:* नयन° Sin. D. 28,10. विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु । विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः ॥ 207; vgl. u. विस्तर् 1) a) am Ende und unter विस्तार् 1) am Ende. — Hier und da विष्फार् geschrieben.

विस्फाल (von स्फल् mit वि) m. P. 6,1,47, Schol.

विस्फुट (von स्फुट् mit वि) adj. *aufgesprungen, klaffend:* विस्फुटीकर् *aufgesprungen —, klaffend machen:* °कृत Suça. 1,301,12.

विस्फुर (von स्फुर् mit वि) adj. *die Augen aufreissend* R. 3,73,3.

विस्फुलिङ्ग s. विष्फुलिङ्ग.

विस्फूर्जथु (von स्फूर्ज् mit वि) m. *das Tosen:* मरुद्भि° Râgân. 13,12 (विस्फूर्जित od. Calc.). *das Rollen des Donners* Kân. 5,2,9 (विस्फु°, v. l. अवस्फूर्जथु). uneig.: विपाक° *das Donnern —, donnerähnliche Erscheinen des Lohnes der Werke* Râgân. 14,62.

विस्फूर्जन (wie eben) n. *das Aufklaffen, stark-weit-Oeffnen:* तत्र कृसितं नाम कण्ठोष्ठपुटविस्फूर्जनपुरःसरमरुरुरुत्पादकासः Sarvadarçanas. 78,1. 2. विस्फु° gedr.

विस्फूर्जित 1) adj. und n. s. u. स्फूर्ज् mit वि. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons Vîrûp. 87.

विस्फोट (von स्फुट् mit वि) m. 1) *das Krachen:* अशनेः MBh. 4,163. 1426. 6,2882. — 2) *eine aufplatzende Blase, Brandblase, Beule* AK. 2, 6,2,4. H. 466, Schol. Z. d. d. m. G. 9,676. ÇKDa. Suppl. u. तप्तमाषक. Suça. 1,38,16. fg. Çiñâs. Saṃ. 1,7,63. Verz. d. B. H. N. 975. Verz. d. Oxf. H. 314,a,29. 33. 316,b,10. 337,a,4 v. u. अग्निदग्धस्य विस्फोटशान्तिः स्यादग्निना ध्रुवम् Spr. 2276. Kathâs. 83,18. Riâ-Tan. 8,1607. अग्निमयो गण्डस्योपरि विस्फोटः Mudrâ. 120,14; vgl. Çiç. 20,10.

विस्फोटक 1) m. a) = विस्फोट 2) Schol. zu Çiç. 20,10. Suça. 1,292,8. 293,19. 2,118,2. 188,9. *eine Art des Aussatzes* Çiñâs. Saṃ. 1,7,64. Pañkân. 3,14,47. Trikâṇḍ. bei Wilson, Sel. Works II, 222. — b) N. pr. eines Schlangendämons Vîrûp. 87. — 2) विस्फोटिका f. *Blase, Beule* Schol. zu Çiç. 20,10.

विस्फोटन (von स्फुट् mit वि) n. 1) *das Entstehen von Blasen:* दृग्धस्य Kân. 5,1,12. — 2) *lautes Brüllen:* वृत्र° Bhâg. P. 6,11,7.

1. विस्मय (von स्मि mit वि) m. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *Dünkel, Hochmuth* H. an. 3,506. Med. j. 104. तपः हरति विस्मयात् M. 4,237. तस्माच्च विस्मयः कार्यः पुरुषेषु महात्मसु Bhâg. P. 6,17,35. गतविस्मया 36. — 2) *das Staunen, das Gefühl der Ueberraschung, Verblüfftheit* AK. 1, 1, 3, 19. H. 303. H. an. Med. Halâ. 4, 60. 1, 91. वत विस्मये 5, 92. AK. 3, 4, 22 (23), 3. विविधार्थेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु । विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः ॥ Sin. D. 207. विस्मयो नः समुत्पन्नः MBh. 3,2472. विस्मयो मे महानभूत् 11965. Râgân. 10, 61. Çiç. 72,8. Vikr. 78,5. Daçar. 4,72. विषादविस्मयावेश Kathâs. 18,240. Riâ-Tan. 3,71. 4,577. न विस्मयो ऽसौ त्वयि विश्वविस्मये (adj.) यो मायया इदं समवे ऽतिविस्मयम् (adj.) Bhâg. P. 3, 13, 42. 4, 1, 28. °कारि चेष्टितम् Spr. (II) 2270. भयविस्मयकारिन् Çiç. in L. A. (III) 38, 6. Verz. d. Oxf.

H. 225,a,28 (pl.). प्रयाणे विस्मयः कृतः Spr. (II) 1238. 2582, v. l. नाम° 196, v. l. विस्मयात् cor —, *mit Staunen* Çiç. 100,23. Rîâ-Tar. 3,111. विस्मयान्वित AK. 2,1,26 (= विलत). MBu. 3, 2150. 2230. विस्मयो सर्वया क्षेयः प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम् Spr. 2880. विपत्काले विस्मय एव कापुरुषलक्षणम् Hit. 13, 19. पां विस्मयमागताः R. 1, 4, 14. Bhâsha-P. in LA. (III) 53, 4. विस्मयं परमं ययौ MBu. 3,2795. R. 1,2,1. Paṅkân. 1,6, 12. पां विस्मयमापयौ Rîâ-Tar. 3,452. 4,241. पां विस्मयमापन्नाः MBu. 3,2856. विस्मयं परमं चक्रे *geriet in Staunen* R. Gorr. 1, 35, 30. दाने तपसि च स. s. w. विस्मयो न च कर्तव्यः Spr. 1136. चकार — तेषु रक्तस्तु विस्मयम् *erregte Staunen* R. 5,40,11. ज्ञात° adj. 3,44,17. संजात° adj. Kathâs. 38, 98. ज्ञनित° adj. 28,189. आगत° adj. Harîv. 9975. गतविस्मयो ऽत्र Bulc. P. 3,1,42. स° adj. *erstaunt, überrascht* Rajat. 3,47. 5,29. 13,68. Kathâs. 22,130. 25,53. 154. 252. 26,91. 27,75. Rîâ-Tar. 4,268. 424. Paṅkat. 44,24. Hit. 84,18. सविस्मयम् adv. Çiç. 48,6. 52, 21. Kathâs. 18,390. Rîâ-Tar. 6,359. Paṅkat. 76,24. Hit. 14,22. सु° adj. Kathâs. 43,174.

2. विस्मय (2. वि + स्मय) adj. *frei von Dünkel*, — *Hochmuth* Bulc. P. 3,17,31.

विस्मयंकर adj. *Staunen erregend* MBu. 8,1306.

विस्मयंगम adj. dass.: °त्मना (so ed. Bomb.) MBu. 1,5887.

विस्मयन (von स्मि mit वि) n. *das Erstaunen:* लोकविस्मयनार्थाय Verz. d. Oxf. H. 53,b,29.

विस्मयनीय adj. *Staunen erregend:* °रूप MBu. 8,4490. fg.

विस्मयविषादवत् (von विस्मय + विषाद) adj. *erstaunt und bestürzt* Kathâs. 121,176.

विस्मरण (von स्मृ mit वि) n. *das Vergessen* Kap. 4,16. Çiç. 119.

विस्मर्तव्य (wie oben) adj. *zu vergessen* Kathâs. 10,119. 18,183. Rîâ-Tar. 3,208. Paṅkân. 4,2,23. Paṅkat. 176,2. 3.

विस्मापक (vom caus. von स्मि mit वि) adj. *in Staunen versetzend* Kaitanjakandrodaja 6,6.

विस्मापन (wie oben) 1) adj. (f. ई) *in Staunen versetzend* MBu. 7,3363. 6676. 7889. Varâh. Bṛh. S. 55, 16. Bulc. P. 1, 15, 5. 3,2,12. 23,21. — 2) m. *a) Gaukler.* — *b) der Liebesgott.* — *c)* = गन्धर्वनगर H. an. 4, 120. Med. n. 206. — 3) n. *a) das in-Staunen-Versetzen* Harîv. 7238. — *b) Wundererscheinung* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 5, Z. 2 v. u.

विस्मापनीय adj. *Staunen erweckend:* ज्ञात: Harîv. 7345.

विस्मापयनीय adj. dass. MBu. 7,4701.

विस्मारक (vom caus. von स्मृ mit वि) adj. *vergessen machend:* ज्ञगतस्तिग्मांशुविस्मारकाः (दीपकाः) Spr. 2178.

विस्मारण (wie oben) adj. dass. Bulc. P. 10,31,14.

विस्मित 1) adj. s. u. स्मि mit वि. — 2) n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – – – – – –, ⏑ – – – – – –, ⏑ – – – – – – – Colebr. Misc. Ess. II,163 (XIV,2). Ind. St. 3,399. 417. विस्मिता f. 423.

विस्मृति (von स्मृ mit वि) f. *das Vergessen, Vergesslichkeit, Vergessenheit:* नाम° Spr. (II) 196. कृत° Varâh. Bṛh. S. 78,7. विस्मृतिमभिनीय Uttarar. 93,21 (122,5). सत्यस° Bulc. P. 11,22,38. अनुभूताप्यविस्मृति H. 1373. विस्मृत्युल्लिखितपादप Kathâs. 65, 21. यया तस्य निशा भोगाः सर्वे विस्मृतिमाययुः 44,96. पञ्चत्रिंशन्महीपाला मया °सागरे Rîâ-Tar. 1,33. अनयत् — म तान्यद्यापि विस्मृतिम् 2,9.

विस्मेर (von स्मि mit वि) adj. *erstaunt* Çiç. 4,32.

विस्यन्द, विस्यन्दक, विस्यन्दन und विस्यन्दिन् s. u. विष्य°.

विस्र 1) adj. *muffig* (dem Geruch nach), *nach rohem Fleische u. s. w. riechend* AK. 1,1,4,21. H. 1392. Halâj. 3,9. Blut Suçr. 1,79,12. Çiâs. Saṅk. 3, 12, 12. andere Flüssigkeit Suçr. 1,84,6. Meerwasser 173,20. विस्राङ्ग 2, 384, 5. मीनोद्गरद्गरीवास्र° Kathâs. 74, 190. कूर्म विस्रपिच्छिलम् 82,7. लोकानां मलनिचयः सविस्रगन्धः Varâh. Bṛh. S. 28,5. कुंधरामिषं (घर्कताम्) तु गोक्षीरधाराधवलं क्षविस्रम् H. 57. im Prâkrit: विस्सगन्धी मच्छत्तन्धो Çiç. 74,10. — 2) f. स्रा *eine best. Pflanze,* = कुपुष्पा (?) Râjân. im ÇKDa.; vgl. 2. विस्रगन्ध 2). — 3) n. *Blut* H. 621.

विस्रंस (von स्रंस् mit वि) m. *das Sichauflösen, Schlaffwerden, Nachlassen:* स्व° Âry. Bh. 1,13. Paṅkâv. Bh. 16,3,7. Suçr. 1,51,3. 6. 16. बल° 2, 192, 10.

विस्रंसन (von स्रंस् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. *fallen machend, abwerfend, abziehend:* गोवि° (कर) MBu. 11, 693 (Sîm. D. 113, 16). — 2) n. *a) das Sichauflösen, Schlaffwerden, Nachlassen:* बलस्य Suçr. 1, 51, 3. दोष° 10. — *b) das Abwerfen, Herunterreissen:* वलन्मन्दार° Gît. 9, 11. — विस्रंसन fehlerhaft.

विस्रंसिन् (von स्रंस् mit वि) adj. *herabfallend, — rutschend:* किंचिद्विस्रंसिदूर्वाङ्कमधूकमाला Raghu. 6,25.

विस्रंसिका f. विस्रंसिकायाः काण्डाभ्यां (कर्णाभ्यां P. 8, 3, 110, Schol.) इत्येति Kâç. 15,1.

विस्रक adj. = विस्र 1): Blut Çiâs. Saṅk. 3,12,9.

1. विस्रगन्ध m. *ein muffiger Geruch:* स° Varâh. Bṛh. S. 28,5.

2. विस्रगन्ध 1) adj. *muffig riechend.* — 2) f. स्रा *eine best. Pflanze,* = कुपुष्पा (?) Râjân. im ÇKDa.; vgl. विस्र 2).

विस्रगन्धि 1) adj. *muffig riechend.* — 2) n. *Auripigment* H. 1059.

विस्रता (von विस्र) f. *muffiger Geruch:* des Blutes Suçr. 1,43,20.

विस्रत (wie oben) n. dass.: घृति° des Blutes Suçr. 1,84,19.

विस्रम्भ und विस्रम्भिन् s. विश्र°.

विस्राव (von स्रु mit वि) m. *Strom:* तं बालं पुपुषुः स्तन्यविस्रावैः MBu. 13,4098. शोणितविस्रावैः R. 7,21,35. Harîv. 13757. चक्रेलोधीरम्बुविस्रवैः 2980. am Ende eines adj. comp.: मकराधिर° MBu. 10,219. गैरिकतोयविस्रवे गिरेर्यथा वज्रकृतं मकाशिरः 8,4803.

विस्रावण (wie oben) n. *das Zerfliessen* Nir. 6,3.

विस्रावयिस्यम s. u. स्रु mit वि.

विस्रंस् (von स्रंस् mit वि) f. *das Zerfallen, Nachlass:* ज्ञासौ विस्रसामु लोकमेति TBr. 3,8,20,5. AV. 19,34,3, wo die Hdschrr. विस्रंसः betonen. Vgl. auch u. स्रंस् mit वि.

विस्रसा (wie oben) f. *das gebrechliche Alter* AK. 2, 6, 4, 41. H. 340. Halâj. 2,348.

विस्रस्त s. u. स्रंस् mit वि.

विस्रंस्य (von स्रंस् mit वि) adj. *aufzulösen:* ein Knoten TS. 6,2,9,4.

विस्रावण (vom caus. von स्रु mit वि) n. *das Blutlassen* Suçr. 1,20,16. 2,3,15. 250,13.

विस्राव्य (wie oben) adj. 1) *abfliessen zu lassen, was man abfliessen lassen kann:* ज्ञलं विस्रावयेत्सर्वमविस्राव्यं च दूषयेत् MBu. 12,2634. —

2) was da sergeht, flüssig wird; davon °ता f. nom. abstr.: खेदेना विषधानान्नो पात्यविस्राव्यतामिव । घिरेण पच्यते पक्वो भवेत्पर्युषितोपमः ॥ Verz. d. Oxf. H. 304, a, 14.

विस्रि m. N. pr. eines Mannes gaṇa मुखादि zu P. 4,1,123. — Vgl. वैस्रेय.

1. विस्रुति (von स्रु mit वि) f. das Ausfliessen: गात्रेभ्यः ततश्चास्य Vasiṣṭh. Bṛh. S. 88,20.

2. विस्रुति (von स्रु = स्रु mit वि) s. विस्रुति.

विस्रुक् (विऽस्रुक् Padap.) f. Nacht. 4,3. so v. a. Gewässer Nir. 6,3. मध्ये युवानौ विस्रुका क्षितः ṚV. 5,44,3. वृषा ह्येव रुरुक्षः सन्न विस्रुकः 6,7,6. etwa sprossend, austreibend; subst. Schoss, Reis (vgl. Sāj. zu der ersten Stelle).

विस्रोतस् (2. वि + स्रो°) n. eine best. hohe Zahl Vjutp. 179. Mél. asiat. 4, 638 (hier fälschlich विसोत).

1. विस्वर (2. वि + स्वर) m. Mission Pāṇḍar. 1,12,9.

2. विस्वर (wie oben) adj. 1) lautlos: तमस् Kūlikop. in Ind. St. 9,10. — 2) misstönend, einen falschen Ton von sich gebend, übel klingend: तूर्ण Vasiṣṭh. Bṛh. S. 46,62. नाद Harīv. 14761. रव 15899. स्वर R. 3,31,33. गीतमविस्वरम् 1,3,60. विस्वरम् adv.: रुराव MBu. 2,2096. 10,407. Harīv. 3693. R. 3,24,23. 29,3. 66,13. अविस्वरम् Mārk. P. 25,10. — 3) mit einer falschen Betonung gesprochen Çikshā 53 in Ind. St. 4,368. विस्वरम् adv. MBu. 13,1576. Kull. zu M. 2,110.

विस् in den folgenden compp. = विसस्.

विसग m. Luftgeher P. 3,2,38, Vārtt. 4. Vop. 26,61. 1) Vogel AK. 2,5,32. 3,4,2,20. H. 1316. Hālār. 2,82. MBu. 1,1118. 3,2416. 13668. R. 2,52,2 (49,2 Gorr.). 95. 96,13 (105,13 Gorr.). 43. 3,78,3. 5,16,24. Mṛcch. 29. Ṛt. 1,23. Spr. 2839. 2922. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 3,35. 5,35. 17,25. 24,1. 30,31. Bhāg. P. 4,18,24. मक्षा° Kathās. 26,26. am Ende eines adj. comp. (f. सा) R. 2,59,12. 3,29,12. Spr. (II) 1047. — 2) Pfeil Çabdar. im ÇKDa. MBh. 7,9021. — 3) die Sonne. — 4) der Mond Çabdar. im ÇKDa. — 5) Planet Duār. im ÇKDa. — 6) Bez. einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten (पञ्च) im 4ten und 10ten Hause stehen. Vasiṣṭh. Bṛh. 12,4. 13.

विसगालय (विसग + आ°) m. die Stätte der Vögel, Beiw. des Luftraums R. 5,3,60.

विसग m. Luftgeher P. 3,2,38, Vārtt. 3. 1) Vogel AK. 2,5,32. H. 1316. Med. g. 49. Hālār. 2,82. M. 9,35. R. 5,4,11. 16,19. 42. 35,29. Rāgān. 1,51. Spr. 2231. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 15,2. 17,26. 28,13. 30,7. Brahma-P. in LA. (III) 51,15. Bhāg. P. 3,33,15. 4,25,17. Pāṇḍar. 114,11. 157, 20. — b) Pfeil Med. Çabdar. im ÇKDa. MBh. 8,3343. — 3) Wolke. — 4) die Sonne. — 5) der Mond Çabdar. im ÇKDa. — 6) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2152. — Vgl. निर्विसग.

विसगक 1) m. Vogel Rāgān. beim Schol. zu Vāsavad. S. 10. — 2) विसङ्गिका f. Schulterjoch AK. 2,10,30. H. 364. Hit. 163.

विसगम P. 3,2,38, Vārtt. 2. Vop. 26,61. 1) adj. im Luftraum sich bewegend, den Luftraum durchziehend MBh. 3,15937. Harīv. 994. R. 7,13,37. Mārk. P. 109,67. — 2) m. a) Vogel AK. 2,5,32. H. 1316. Hālār. 2,82. M. 1,39. R. 2,96,14. 39. 3,73,2. Spr. 2060, v. l. (II). 3326. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 47,25. 97,7. Kathās. 26,37. Pāṇḍar. 79,28. Hit. 1,32.

विसगमा f. Harīv. 8709. fg. Am Ende eines adj. comp. (f. सा) MBh. 3, 2606. R. 2,114,4 (125,4 Gorr.). 5,21,14. Rāgān. 9,36. — b) die Sonne MBh. 1,6606. 3,17120. — c) pl. N. pr. einer Klasse von Göttern unter dem 11ten Manu VP. 208. Bhāg. P. 8,13,26. Mārk. P. 94,17. fg. — 3) f. सा Schulterjoch Hālār. 4,73. Çabdar. im ÇKDa.

विसगमिका f. Schulterjoch H. 364, Schol.

विसगराज m. der König der Vögel d. i. Garuḍa Hālār. 1,30.

विसगकृत् m. Vogeltödter, ein Vögeln nachstellender Jäger MBh. 12,5450.

विसगारि m. der Vögel Feind d. i. Garuḍa (?) Vaṃç. bei Wilson, Daçak. 93, N. 2.

विसत् f. = वेसत् Uṇādis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa.

विसति (von सन् mit वि) f. Verhinderung, Beseitigung Verz. d. Oxf. H. 256, b, 36. Sarvadarçanas. 82,7. 8.

विसनन (wie oben) n. 1) das Schlagen, Tödten (वध, हिंसा) H. an. 4, 191. fg. Med. n. 208. — 2) das Verhindern (विघ्न) Med. — 3) ein bogenförmiges Werkzeug zum Auseinanderzupfen von Baumwolle H. 912. H. an. Med.

विसर्तर् (wie oben) nom. ag. Zerstörer, Zertheiler: तमसः ṚV. 1, 173,3. पारकार्य° der eine fremde Sache zu Grunde richtet, — hintertreibt (neben स्वार्थसाधक) Spr. 4503.

विसर्तव्य (wie oben) adj. zu vernichten, zu Grunde zu richten Prab. 32,3.

विसर (von सृ mit वि) m. das Verlegen, Versetzen, Wechseln: कुटीर° Spr. (II) 2304. = विसोग ÇKDa. angeblich nach Hālār.; ohne Zweifel ein verlesenes विसर्ग.

विसरण (wie oben) n. 1) das Auseinandernehmen, Verbringen an einen andern Ort, Versetzen (= स्वस्थानाद्विभज्यान्यत्र नयनम् Sāj. zu Ait. Br. 4,3): des Feuers auf die Feuerstellen Liṭ. 2,2,3. 7,9. Mārk. P. 16,37. das Versetzen von Wörtern Ind. St. 8,30. 69. — 2) das Aufreissen, Aufsperren: आस्य° P. 1,3,20. — 3) das Hinundhergehen, Bewegung, das Lustwandeln Soṃç. 1,311,3. Spr. 1956 (II). 4821. Bhāg. P. 10,31,10. Pāṇḍar. 25,10. पाद° das Gehen, Schreiten P. 1,3,41. गदाविसरणेषु das Schwingen der Keule MBh. 7,397 = 9,601. — 4) das Spazierenführen: तत्तो° Gorr. 3,6,3. — Vgl. अधि°.

विसर्तर् (wie oben) nom. ag. 1) Entwender, Räuber: साध्यादीनाम् Jiṇ. 2,26. भार्या° (भार्याभिसर्तर्) MBh. 3,13761) Draup. 8,46. — 2) der sich einem Vergnügen hingiebt, sich amüsirt Rāgān. 16,72.

विसर्प (wie oben) adj. s. सविसर्पकतु.

विसर्प (2. वि + सर्प) adj. traurig: वक्त्र Bhāg. P. 4,26,28.

विसर्पक m. von unbekannter Bed. AV. 8,16,1.

विसर्व (von सु = सू mit वि) m. P. 3,3,72. Anrufung ṚV. 3,8,10. 10,128,1. 2. Ait. Br. 6,6.

विसर्वीय adj. das Wort विसर्व enthaltend Liṭ. Ça. 25,14,13.

विसर्ज्य und विसर्ज्य (von सृ = सृ mit वि) 1) adj. herbeizurufen, einzuladen, zu begehren: पुरुत्रा हि विसर्ज्यो बभूथ ṚV. 2,18,7. घर्मे सोमो यमुरेनो विसर्ज्यः 1,108,6. रात्तामग्ने विसर्ज्यो (VS. und TS. perisp.) दीदिवीह AV. 2,6,4. सपत्नयो विसर्ज्यो पवामसि VS. 8,46. यज्ञे देवि सरस्वति काव्ये विसर्ज्ये ved. Citat beim Schol. zu P. 8,1,72. — 2) m.

N. pr. des angeblichen Verfassers von ṚV. 10, 128 mit dem patron. Āṅgirasa ṚV. Anukr. Ind. St. 3, 459. ein Sohn des Varkas (vgl. मामग्ने वर्चो विकर्वेषस्तु ṚV. 10, 128, 1) MBh. 13, 2000. — 3) f. घा Bez. gewisser Ishṭaka TS. 5, 4, 11, 3. — 4) n. (sc. सूक्त) *das Lied* ṚV. 10, 128, *welches im Eingange das Wort* विकर्व *enthält:* स एतन्नमदग्निर्विकर्व्यमपश्यत् TS. 3, 1, 2, 3. Kāṭh. 34, 4. Pañcav. Br. 9, 4, 14. Lāṭy. 4, 10, 8.

विकस्त (2. वि + कस्त) 1) adj. *a) handlos* Caṇḍas. im ÇKDa. — *b) behend, geschickt, erfahren;* = पण्डित H. an. 3, 300. Med. t. 154. नानायुध° Harīv. 13238. — *c) ungeschickt, unerfahren:* अविकस्तः स्वविद्यासु संयुगे ऽस्त्र पराक्रमे R. 5, 81, 21. — *d) verwirrt, benommen, befangen* AK. 3, 1, 43. H. 366. H. an. Med. Halāy. 2, 337. रामापरित्राणविकस्तयोध्य so v. a. *ganz vertieft in, — beschäftigt mit* Rāgat. 5, 49. — 2) m. *Eunuch* Caṇḍas. im ÇKDa.; beruht wohl auf einer Verwechselung von पण्डित mit षण्ड.

विकस्तता (von विकस्त) f. *Verwirrung, Befangenheit:* तद्गीतद्रुपाभ्यां नीतं तस्य विकस्ततां (हृदयम्) Kathās. 52, 199. भेजे कन्या विकस्तताम् 90, 48.

विकस्तित (wie oben) adj. *verwirrt —, befangen gemacht:* प्रेम° Kathās. 104, 98.

विकॢ Uṇādis. 4, 36. indecl. = स्वर्ग Ujjvaladatta. Ein aus विक्रा u. s. w. geschlossenes Wort.

1. विक्रायम् (2. वि + क्रा°) adj. *kraftvoll, wirksam, stark, rüstig;* = मरुत् Naigh. 3, 3. = वज्रवत् Nir. 4, 15. = व्यायत् 10, 26. वाजिन् ṚV. 4, 11, 4. ये ते मदो घाकृन्सो विक्रायसः 9, 75, 5. 10, 92, 15. Soma 8, 48, 11. Ushas 1, 123, 1. Indra 3, 36, 3. Agni 6, 13, 6. 8, 23, 19. 24. Viçvakarman 10, 82, 2. die Marut Taitt. Ār. 1, 27, 7. ज्ञरदृष्टिः कृतवीर्यो विक्रायाः AV. 17, 1, 27.

2. विक्रायम् (von क्रा, क्रीते mit वि) 1) *das Offne, Freie* d. i. *die freie Luft, Luftraum,* m. n. AK. 1, 1, 3, 2. Med. s. 62. n. Taik. 1, 1, 31. 3, 3, 450. H. 163. an. 3, 736. Halāy. 1, 137. वाहीयते स्वच्छन्दया विक्रायः Spr. (II) 2248. पतमानं विक्रायसः Harīv. 8534. R. 4, 23, 1. लीनोदके विक्रायसि निदध्युः *in's Freie stellen* Pāṇ. Gaṇ. 3, 10. समिधः संनिदध्याद्विक्रायसि M. 2, 186. विक्रायसि गता पयो पानमुत्तमम् Harīv. 3345. गरुडेनाथ तस्थौ देवो वि° *in der Luft* 7556. स तया मुमुदे — विक्रायसि बलाकानां मालया तोयदो यथा R. 4, 12, 47. निरालम्बे विक्रायसि 6, 10, 4 Suçr. 2, 311, 20. विक्रायसा instr. als indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. H. 1326. Halāy. 1, 137. *durch die Luft* (gehen u. s. w.) MBh. 1, 1227. नेष्यामि त्वां वि° 3966. 3, 2310. 16159. R. 3, 44, 25. 54, 6. 55, 25. 60, 16. Çiç. 112, 14. Bhāg. P. 2, 2, 24. 3, 15, 12. 4, 19, 13. Vop. 26, 61. विक्रायस्तलम् Pañcat. ed. orn. 57, 17. विक्रायःस्थली Verz. d. Oxf. H. 129, *a*, 16. acc. विक्रायमम् haben wir zu विक्रायस gestellt. — 2) *Vogel,* m. AK. 2, 5, 33. Med. n. H. an. Halāy. 2, 81. unbestimmt ob m. oder n. (da es zum folgenden comp. gezogen werden kann) H. 1316. विक्रायः (?) शकुने पुंसि Taik. 3, 3, 450. — Vgl. वैक्रायस.

विक्रायस 1) = 2. विक्रायम् 1). m. Verz. d. Oxf. H. 184, *a*, 43. m. n. Mathurāja zu AK. nach ÇKDa. तस्मिन्विक्रायसे । घर्मे प्रणीयोपसमाधाय *in's Freie* Taitt. Ār. 1, 22, 9. विक्रमस्व विक्रायसम् *den Luftraum* MBh. 1, 2677. 5, 2457. यमलस्ते विक्रायसम् Harīv. 9528. — 2) m. = 2. विक्रायम् 2) Bhar. zu AK. nach ÇKDa.

विक्राय (von क्रा mit वि) m. und n. (dieses nur durch Bhāg. P. 2, 2, 22 zu belegen) gaṇa घर्षादि zu P. 2, 4, 31. 1) *Vertheilung, Versetzung,* z. B. von Wörtern Ait. Br. 6, 34. Lāṭy. 2, 1, 2. Schol. zu Çāṅkh. Çr. 12, 11, 6. — 2) namentlich *die gesonderte Aufstellung der drei heiligen Feuer; die getheilten Feuer selbst und der zwischen ihnen liegende Raum:* विक्रायं प्रपद्यते पूर्वेणोत्क्रमपरेण प्रणीताः Āçv. Çr. 1, 1, 4. 3, 1, 19. यदि पुरुषो विक्रायमन्वियात् *wenn er zwischen den Feuern durchgeht* 10, 10. 12, 6, 7. Kāṭy. Çr. 8, 10, 11. Schol. zu 1, 1, 20. 4, 15, 4. 5, 6, 41. Çāṅkh. Çr. 3, 4, 3. Ind. St. 1, 83. 5, 15. 9, 217. Bhāg. P. 4, 8, 14. Mārk. P. 51, 91. — 3) *Veränderung der Stellung, Erweiterung, Entfernung:* der Sprachorgane ṚV. Prāt. 14, 2. — 4) *das Sichbewegungmachen, Spazieren* AK. 3, 3, 16. H. 1500. an. 3, 603. Med. r. 220. Halāy. 4, 41. °शय्यासनभोजनेषु Bhāg. 11, 42. Siṃhāsan. 28. क्रीडाविक्राये नारीभिः सेव्यमानमितस्ततः Harīv. 10053. क्रीडाविक्रारम्याणि सानूनि Mārk. P. 61, 21. विक्राये सह कान्तेन क्रीडितं केलिरुच्यते Sāh. D. 153. पृष्ट्वा चैनं सुखं प्रश्नो विक्रारशयनासने R. Gorr. 2, 13, 10. Vaṇīs. Bhāṣ. S. 78, 11. स्थानासनविक्रारानाचरति Gaupān. zu Siṃhāsan. 23. दूरमन्यरचरणविक्रारम् adv. Gīt. 11, 3. — 5) *Unterhaltung, Vergnügen, Belustigung;* = लीला H. an. Med. स्थानासनविक्रारैः Jāān. 3, 51. तेस्तैर्विक्रारैर्वल्गुभिर्दैत्यानां कामरूपिणाम् । सभाः संक्रीडतां तेषामक्रेकमिवाभवत् ॥ MBh. 1, 7681. 15, 203. R. 3, 49, 39. Rāgat. 9, 66. Spr. 1594. विक्रारैकरस Kathās. 21, 3. 29, 37. Bhāg. P. 3, 12, 47. 5, 2, 6. 8, 9, 33. 8, 5, 49. Häufig in Verbindung mit घाकार *Essen* MBh. 3, 116. युक्ताकार° adj. Bhāg. 6, 17. घाकारे वा विकारे वा न कञ्चिदकरोन्मनः R. 3, 41, 13. Suçr. 2, 170, 13. मिथ्याकार° Çiç. Saṃh. 3, 1, 7. स्वेच्छाकारविकारं कुर्वाणाः Hit. 38, 8. Vedāntas. (Allah.) No. 146. °कालेषु MBh. 4, 1813. Harīv. 15775. विकारमभिक्रमतुः MBh. 1, 7716. वरं विकारः सह पन्नगैः कृतः Spr. 2729. कृत्वा विकारं ताभिः Pañcat. 1, 10, 53. स खलु मुखी विचरेदिमं विकारम् MBh. 12, 6889. सविकारं मुखं अगमुर्नगरं नगमसाद्यम् 1, 7855. °शीलता Suçr. 1, 335, 10. जल° *Belustigung mit —, im Wasser* MBh. 1, 4994. सम्भो° Rāgat. 16, 67. मृगया° Kathāsaritsāgara in Z. d. d. m. G. 14, 574, 16. पवनाभस्य योऽशान्तःपुरविकारः Daçak. 64, 11. fg. गृहीतकरि° Bhāg. P. 5, 1, 39. am Ende eines adj. comp. *seine Freude habend an:* लोककिंसा° R. 3, 28, 19. 51, 30. 5, 98, 25. Suçr. 1, 71, 1. Bhāg. P. 5, 9, 18. 10, 89, 28. मृगया° 26, 21. देवगन्धर्व° R. 7, 20, 18. — 6) *Erholungsort, Vergnügungsort, Belustigungsort* MBh. 1, 1582. 3, 10030. 11649. 12864. 7, 2846. 8, 1773. 12, 2006. सभाविकारभेत्तारः 13, 200. R. 2, 60, 12. R. Gorr. 2, 33, 20. Rāgat. 5, 41. 6, 73. Vaṇīs. Bhāṣ. 2, 12. Bhāg. P. 2, 2, 22 (neutr.). 3, 23, 39. 5, 13, 12. 9, 10, 17. 14, 24. 10, 76, 10. — 7) (Buddha's *Erholungsort*) *ein buddhistisches,* (oder Gaina-) *Kloster* H. 994. H. an. Med. Burn. Intr. 286. fg. 313. 630. Lot. de la b. l. 203. 206. Lalit. ed. Calc. 30, 12. Vie de Hiouen-thsang 220. Mṛicch. 177, 12. Kathās. 12, 149. 28, 7. 29, 37. 65, 132. 72, 99. Rājat. 1, 93. fg. 169. 4, 262. 5, 261. 427. 6, 127. Pañcat. 236, 8. Hit. 49, 10. विक्रारोद्देशक Vikramāṅkaṣ. 210. — 8) N. pr. eines Landes (= Bohar) Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, No. 117. — Nach den Lexicographen noch 9) = स्कन्ध H. an. Med. — 10) = वेतस Caṇḍas. im ÇKDa. — 11) *ein best. Vogel,* = बिन्दुरेखक Caṇḍaś. im ÇKDa. — Vgl. कच्छ°, निर्विकार, भद्र°, नि-

शा°, राज्ञ°, वारि°.

विकारक (von विकार) am Ende eines adj. comp. (f. विकारिका) 1) *Vergnügen findend —, seine Freude habend an:* गोवर्धन° Pāṇḍav. 4,8, 25. मन्यन्तर° 28. नदीनद° 45. वृन्दारण्य° 60 Beiww. Kṛshṇa's. — 2) *zu Jmdes Vergnügen —, Belustigung dienend:* यस्मद्विकारिकायाः — उद्यानवाटिकायाः Milatin. 104,9.

विकारक्रीडामृग m. *eine zur Belustigung und zum Spielen dienende Gazelle* Bhāg. P. 7,6,17.

विकारण n. = विकार *Unterhaltung, Vergnügen, Belustigung:* अन्नाङ्गन° adj. als Beiw. Kṛshṇa's Pāṇḍav. 4,8,10.

विकारदासी f. *eine zur Unterhaltung dienende Sclavin* Milatin. 8,4.

विकारदेश m. *Vergnügungsort* MBh. 1,8067. R. 3,65,19. Mlatin. P. 128,30.

विकारभद्र m. N. pr. eines Mannes Daçak. 189,7.

विकारभूमि f. *Vergnügungsplatz* Harīv. 6414. विकारोद्यानभूमिषु Spr. 4424.

विकारयात्रा f. *ein zum Vergnügen unternommener Gang* MBh. 13,19.

विकारवत् (von विकार) adj. 1) *im Besitz eines Erholungsortes u. s. w. seiend:* स्थानासन° (das suff. gehört zum ganzen comp.) M. 2,248. *mit einem solchen Orte versehen:* भक्ष्यभोज्य° (das suff. gehört zum ganzen comp.) von einem Berge MBh. 14,1761. — 2) am Ende eines comp. *seine Freude an Etwas habend:* क्रूराचार° M. 10,9.

विकारवारि n. *zur Belustigung dienendes Wasser* Rāgān. 13,38.

विकारशयन n. *ein zum Vergnügen bestimmtes Ruhebett* R. 2,30,11 (12 Gorr.).

विकारशैल m. *ein als Vergnügungsort dienender Berg* Rāgān. 16,26.

विकारस्थान n. *Vergnügungsort* Bhāg. P. 3,23,21.

विकाराश्रि (विकार + श्र°) n. dass. Bhāg. P. 3,24,5.

विकारावसथ (विकार + आ°) m. *Lusthaus* MBh. 1,5014.

विकारिन् (von कृ mit वि oder von विकार) adj. 1) *spazierend, einhergehend, sich bewegend:* राज्ञां तत्रोद्याने विकारिणाम् Kathās. 28,56. Gīt. 2,10. काम° MBh. 17,96. यथाकाम° 13,1935. देवारण्य° 1,7853. भवता मत्समीपविकारिणाज्ञप्तं भवितव्यम् Pāṇḍav. 30,28. सदैकस्थानविकारिणो कालं नयतः 43,2. हंसा जलविकारिणः R. 3,20,20. व्योमैकान्तविकारिणो विहगाः Spr. 2022. व्योम° Kathās. 46,179. पराकाश° (हंस) 54,30. तीरविकारिभिर्भल्लैः Rāga-Tar. 1,206. पङ्क्तिविकारिभिर्भुजैः R. 5, 74,29. धरातल° Verz. d. Oxf. H. 260,b, No. 629. गगन° (विधु) Spr. 3227. राज्ञस्तस्य बभूवाज्ञा तत्र स्वैरविकारिणी so v. a. *seine Autorität erstreckte sich von selbst bis dahin* Rāga-Tar. 4,339. देवीमद्रिमनुप्राप्तो ब्रह्मलोकविकारिणीम् so v. a. *die sich erstreckte bis* R. 2,105,33 देवीं गतिमनुप्राप्तो दिव्यलोकविकारिणीम् 114,21 Gorr.). मम देहविकारिणः so v. a. *von meiner Person abhängig* MBh. 3,12972. — 2) *sich vergnügend, — sich amüsirend, seine Freude an Etwas habend, einem Vergnügen ergeben:* मृगया° Çiç. 17,21. Rāgān. 18,34. वारि° 16,61. दार° MBh. 13, 6327. मनङ्गाङ्गविकारिणी *sich mit des Liebesgottes Körper vergnügend* so v. a. *des Liebesgottes Gattin* 4,389. मृगं मृगीयूथविकारिणम् Mlatin. P. 65,21. रति° MBh. 2,2026. काम° 15,965. कामचार° (स्त्रियः) 1,4712. स्वैर° Jāṭ. 1,328. स्वेच्छा° Kathās. 35,74. निःशङ्क° Rāga-Tar. 4,19. मिथ्याहार° *verkehrte Nahrung zu sich nehmend und verkehrten Vergnügungen nachgehend* Sucr. 1,232,21. किमाहार° Harīv. 11171. Die Bedeutungen sind oft schwer auseinanderzuhalten. — 3) *reisend:* घन Spr. (II) 2529, v. l. — Vgl. गगण°.

विकारिसिंह m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Cl. 3.

विकास (von कस् mit वि) m. *das Lachen, Gelächter:* रुग्मिविकासांश्च चकार (अकास die neuere Ausg.) Harīv. 8409. Pāṇḍav. 3,12,7. — Vgl. वैकासिक.

विकिंसक (von किंस् mit वि) adj. *Jmd ein Leid zufügend:* न तस्य कालो मृत्युर्वा न व्याधिर्न विकिंसकाः R. 7,23,8,64. प्राणि°, सर्वप्राणि° MBh. 3,13068. 12,4290. Pāṇḍav. III, 143. भूत° Bhāg. P. 11,10,27. घ° *Niemanden ein Leid zufügend* MBh. 3, 339. 5, 1247. 13, 5552 (सर्वयि-त्रावि° zu schreiben). भूतानाम् 12,2966. 13,4967. ब्रह्मस्वस्य *an Brahmaneneigenthum sich nicht vergreifend* R. Gorr. 1,7,10.

विकिंसता (nom. abstr. von विकिंस = विकिंसक) f. *das Zufügen eines Leides:* एतद्भूयमधर्मस्य भूतेषु हि विकिंसता MBh. 3,1296.

विकिंसन (von किंस् mit वि) n. dass.: सर्पाणाम् (obj.) Bhāg. P. 10,4, 42. 12,28. नानादैत्यविकिंसनम् (so ist zu lesen) Verz. d. Oxf. H. 78,b, 1. घ° Bhāg. P. 11,16,22.

विकिंसा (wie eben) f. dass. Taitt. 3,3,266. MBh. 3,1644. 12,2628. 10788. R. Gorr. 2,109,33. घ° MBh. 12,9421. Spr. 2317.

विकिंसिन् scheinbar Verz. d. Oxf. H. 78,b,1, da° विकिंसनम् zu lesen ist.

विकिंस (2. वि + किं°) adj. *Jmd ein Leid zufügend, Schaden bringend:* घर्मा घविकिंसाः Bhāg. P. 3,22,19.

विकित s. u. 1. धा mit वि.

विकितसेन m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 17,34.

विकिति (von 1. धा mit वि) f. 1) *das Verfahren* Āit. Br. 8,14. — 2) *das Bewirken:* क्षितिविधितिस्थितिविकितिव्रत *ein Gelübde die Erde zu erobern und ihren Bestand zu bewirken* Kāṭhān. 3,35.

विकित्रिम (von 1. धा mit वि) adj. *verrichtet:* कर्मन् Bhaṭṭ. 1,13.

विकीन s. का, व्रकाति mit वि.

विकीनता (von विकीन) f. *das Beraubtsein um, Ermangeln, Nichtbesitzen;* die Ergänzung im comp. vorangehend Harīv. 7277. Spr. 2298.

विकीनर m. N. pr. eines Mannes, erschlossen aus वैकीनरि (वै°), welches Andere auf वकीनर (व°) zurückführen. P. 7,3,1, Vārtt. und Pat.

विकीनित (von विकीन) adj. *beraubt —, gekommen um* (instr.): स मैत्रप्रवो वीरस्तैः सकर्षिर्विकीनितः (विकीनतः die neuere Ausg.) Harīv. 8718. — Vgl. कीनित.

विकुण्डन m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vāyu beim Schol. zu H. 210.

विकुर्वत्स (2. वि + कृ°) adj. *keine Opfer darbringend* ṚV. 1,134,6. *opfernd, anrufend* Sāy.

विकृत s. u. कृ mit वि; davon विकृतवत् adj. *das Wort* विकृत *enthaltend* Āit. Br. 5,18.

विकृत 1) adj. s. u. कृ mit वि. — 2) n. *unzeitiges Schweigen aus Verlegenheit* Daçak. 2,30. 39. H. 508; vgl. विकृत 3) b).

विकृति (von कृ mit वि) f. 1) *Ausdehnung, Erweiterung, Zuwachs, Zunahme:* विकृतिमियाय रुचिस्तडिल्लतानाम् Ku. 10,19. — 2) *Ver-*

gnügen, Belustigung Naish. 2,28.

विकृदय (2. वि + कृ°) n. *Muthlosigkeit* AV. 5,21,1.

विकेठक (von केठ् mit वि) adj. *Jmd weh thuend, verletzend* Vsuvr. 79. मतीव ज्ञात्यन्दुर्वाचो भवतोऽ विकेठकः (विकेटकः ed. Calc.) MBh. 1,3076.

विकेठन (wie eben) n. = विबाधा Taik. 1,1,132. = विकिंसा und विडम्ब (विडम्बन) 3,3,265. fg. H. an. 4,189. fg. (विकेउन) und Med. n. 207. = मर्दन H. an. Med. *das Wehthun, Verletzen, Belaidigen* Vsuvr. 24. 61. 127. 197.

विकेठा (wie eben) f. *Beleidigung:* मा च कोप विकेठ (d. i. विकेठां) मानुषाणाम् Lalit. ed. Calc. 57,9.

विकृदिन् (von 2. वि + क्रुद) adj. etwa *Tümpel oder Pfützen bildend (Gegens. ununterbrochen fliessend)*: आपः Kâṭh. 23,6.

विकुर्त् (von कु = कॄ mit वि) f. (*sich krümmend*) *ein schlangenähnliches Thier, Wurm* u. dgl. VS. 25,7.

विकृल (von कृल् mit वि; 1) adj. (f. आ) *erschöpft, mitgenommen, ergriffen, seiner nicht ganz mächtig, verwirrt;* = विक्लव AK. 3,1,44. H. 448. Hall. 2,231. विकृलास्मि कृतानेन कर्षिता बलिना बलात् MBh. 2,2341. 3,2375. 2455. 2577. 15795. 5, 2695 (nach der Lesart der ed. Bomb., विकल ed. Calc.). 7208. 6,31. 7,277. लीववत् 614. 9,616 (सु°). 13,4077. Hariv. 4764. R. 1,77,2. R. Gorr. 1,39,15. 3,35,35. 64,7. 68, 20. Suça. 2, 538,14. Rag. 8, 37. Kumâras. 4,4. Spr. (II) 1242. Kathâs. 15,91. 17,42. 18,93. विकृलाकुल 97. 223. 24,179. 28,159. 37,125. 39, 119. Râga-Tar. 4,448. 8,1147. 1768. Bhâg. P. 3,2,33 (अति°). 8,11,25. 9,14,32. Mârk. P. 124,19. पतिशोकेन R. 4,20,19. 58,10. भयेन Kathâs. 54,117. मद° R. 1,9,25.37. 3,23,25. Bhâg. P. 4,25,57. 5,9,19. Pañkat. ed. orn. 34,2. Kull. zu M. 3,34. शोकसंताप° R. Gorr. 2,15,7. 39,24. Kathâs. 12,105. 16,106. भय° MBh. 3,2552. Bhâg. P. 1,8,8. 17,39. रामागमन° R. Gorr. 1,78,2. अबलाविकृक्लेश° Spr. 1482. मदन° Sarvadarçanas. 96,16. स्मर° Verz. d. Oxf. H. 105,b,28. रामानुनय° R. Gorr. 2,120,21. अतिप्रमोदभर° Bhâg. P. 3,4,4. प्रीति° 8,17,3. प्रेम° 3,4,35. 4,9,43. 48. 7,15,78. प्रतिष्ठाविघ्न° Râga-Tar. 3,442. अमुकलाति° Bhâg. P. 4,4,2. पुलकाभु° 8,22,13. हृदयमत्तर्विकृलम् Mâlatîm. 142,5. °चेतना MBh. 13,4072. °चेतस् Kathâs. 9,49. मृगयाविकृलं चेतः Schol. zu Çiç. 22,5. कुरिकुणकविकृकविकृलहृदय Bhâg. P. 5,8,12. स्त्रीप्रेक्षणप्रतिसमीक्षणविकृलात्मन् 8,12,22. वडवा *erschöpft* R. Gorr. 2,17,24. विकृलास्तस्य (गिरेः) पार्श्वेभ्यः सर्वा दरघार्धदेहिनः — निश्चेरुः Hariv. 5330. क्रुदशोषविकृला शफरी Kumâras. 4,39. निमेषोन्मिष° (कालचक्र) MBh. 14,1237. विकृलाङ्ग Mârk. P. 134,58. मदविकृलाङ्ग Pañkat. ed. orn. 32,21. 33, 12. मदनविकृलमालसाङ्गी Kâdab. 1. मूर्छाविकृलतनु Pañkat. ed. orn. 57,20. °लोचना MBh. 13,4074. मदविकृललोचना Bhâg. P. 3,20,29. 8, 2,23. 9,17. कन्दुकविकृलाली 3,22,17. वाक्य MBh. 5,7190. शोकविकृलं वाक्यम् R. 4,36,21. वितव्याधिविकारविकृलगिरः Spr. 4544. संप्रश्रयप्रणयविकृलया गिरा Bhâg. P. 3,23,9. घ° *gekräftigt, munter:* ज्ञातीपवतेस्तुरगैर्लब्धतोयैर्विकृलैः MBh. 5,7164. चकर्तावकृलः शिरः *so v. a. wohlgemuth, ohne sich lange zu bedenken* Kathâs. 60, 89. ततस्मै प्रादादविकृलः 72,160. — 2) m. *Myrrhe* Rajan. 143. — Vgl. गन्ध°, परि°.

विकृलता f. nom. abstr. von विकृल 1) MBh. 3, 2680. Kathâs. 105, 11. विकृलत्व n. desgl. MBh. 7,1680. 9,618. Kâm. Nîtis. 14,39.

विकृलिन् (von कृल् mit वि) adj. = विकृल Verz. d. Oxf. H. 117,a,34.

1. वी, वेति Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). Dhâtup. 24,39 (गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु). वीर्यस्, व्यक्ति, अव्यन्, व्यन्, वयत्, अवेषन्, वेस् 2. und 3. sg. अविवेषीस्, विवाय; partic. वीत s. bes. 1) *verlangend aufsuchen, — herbeikommen, appetere; gern annehmen, — geniessen:* कृविय: प्रस्थितस्य वीतं कृयतं नृषेयाम् RV. 1,93,7. घृतस्य AV. 7,29,1. वीतं पातं पयस: 73,8. वीहि स्वमाकृतिं नृषाण: 6,83,4. वेषि कृव्यानि वीतये RV. 1,74,4. ब्रह्माणि 2,5,2. 7,15,6. अग्ने वोहि कृविषा यति देवान् 17,2. अधरम् 82,7. यद्ग विशो वे: 6,15,14. शिशुं न पिप्युषीव वेति सिन्धु: 1,186,5. 189,7. होतारं व्यन्ति वार्या पुरु 5,23,3. 6,1,4. 10,114, 1. उत ग्रा व्यन्तु देवपत्नी: 5,46,8. आज्यं नृषाणो वियन्तु TS. 1,5,2,2. आज्यस्य Çat. Br. 2,2,2,19 und oft in stehenden Formeln. अग्ने वे कौत्रम् Kâṭh. Ça. 23,3,1. व्यन् Pañkav. Br. 24,1,9. — 2) *ergreifen:* आयुधानि RV. 10,8,7. *unternehmen:* दूत्यम् 4,9,6. 7,8. — 3) *zu gewinnen suchen, verschaffen, herbeischaffen:* अग्निर्यं हर्मताय देवान् RV. 1,77,2. पतिं वोचे च वार्यम् 7,16,5. 3,8,7. भागं नो अत्र वसुमन्तं वीतात् 10, 11, 3. वोहि मनुकाम् 4,1,5. — 4) *heimsuchen, rächen:* मा भ्रातुरग्ने अनृजायिणं वे: nämlich *an uns* RV. 4,3,13. — 5) *losgehen auf, bekämpfen, anfallen:* तं मा व्यन्त्याध्योऽ वृको न मृगम् RV. 1,105,7. वेषी देवो युधये भूयसश्चित् 5,30,4. वर्धदुग्रो वृषभ ग्रूर्ध्वबाहु: 10, 28, 2. अग्निं वज्रेण शवसाविवेष: 4,22,5. दुव: 9,71,1.

— caus. वाययति und वापयति *befruchten* (vgl. u. प्र) P. 6,1,55. Vop. 18,17. वापयति वाययति वा गा: पुरोवातः। गर्भं याप्यतीत्यर्थः P., Schol.

— अति *überholen, überlegen sein:* वेत्यर्युजानिवान्वा अति स्पृधः RV. 5,44,7.

— अप *sich abwenden, abhold sein:* सुतसोमे न कामो अप वेति मे RV. 5,61,18. न घो वदिग्रपं वेति मे मनः 10,43,2.

— अभि, partic. अभिवीत *gesucht, begehrt:* दक्षिणा RV. 7,27,4.

— अव *aufsuchen:* अवं वेति सुतपं सुते मधु RV. 10,23,4.

— आ 1) *unternehmen, anstellen:* दूत्यम् RV. 1,71,4. य: प्रथमो दक्षिणामाविवाय 10,107,5. यस्मिन्ना कृष्टय: सोमपा: काममव्यन् 3,49,1. — 2) *herbeistellen:* प्रेषेहेषतो न सूरिरा RV. 1,180,6. आ यो विवाय सचथाय दैव्य इन्द्राय 136,3. आ यो विवाय सख्या सखिभ्य: 10,6,2. — 3) *ergreifen, packen:* तदपानेनाजिघृक्षत् तदावयत् Ait. Up. 3,3,10. — आ वेयति unter den अतिकर्माणः Naigh. 2,8.

— उप *zu Hilfe kommen:* आ नो देवानामुप वेतु शंसः RV. 10,31,1.

— उप *herzustreben:* अग्निनो यज्ञमुप वेतु RV. 5,11,4. 8,11,4. *anstreben, zu erstehen suchen:* शेषः RV. 10,16,5.

— नि intens. *eindringen in, sich stürzen unter:* उत स्मासु प्रथमः सरिष्यन्न वेवेति श्रेणीभी रथानाम् RV. 4,38,6. नि वेवेति पलितो दूत धीमु 3,55,9.

— प्र 1) *hinausstreben:* प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु RV. 7,42,1. — 2) *zustreben auf, eingehen in:* प्र होत्रया शिष्या वीवो अध्वरम् RV. 1,151,3. यज्ञातयो वृषभो न प्र वेति 10,4,5. *angreifen:* प्र प्र तान्दस्यूंरग्निर्विवाय 7,6,3. — 3) *impr., belegen, befruchten:* सद्य: प्रवीता वृषणं जजान RV. 3,29,3. घोषधीः प्र वीयसे AV. 11,4,3. 12,4,37. अनश्विनेन प्रजा प्रवीयसे TS. 5,1,2,1. पशवीः प्रजाः प्रवीयसे von *hinten* 3,2,4. 4,10,4. Kâṭh. 12,3. — Vgl. अप्रवीत, अप्रवीत, प्रवय्या (*zu belegen, zu befruchten*).

— प्रति *in Empfang nehmen:* प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु RV. 7,1,18. 2,36,4. वेत्यर्घयुः प्रति हव्यानि वीतये 8,90,10. प्रति तान्देवशो विहि *je für die einzelnen Götter* 3,21,5.

2. वी (= 1. वी) adj. in 2. ष°, देव°, पद°. m. = गमन Eilesbaras. im ÇKDa.

3. वी, वेति, conj. वयति; वेस्; imper. वीहि, विहि; partic. वीत; = यस् in einigen Bildungen P. 2,4,36. fg. Vop. 8,59. 1) *antreiben, in Gang setzen; erregen, erwecken* Nir. 10,1. वेति सूर्यम् RV. 1,35,9. व्यन्तु ब्रह्मणि पुरुशाक वाजम् *mögen den Muth wecken* 7,19,6. व्यन्तो विप्राय मतिम् VS. 9,4. वेति स्तोतव्य यज्ञम् 8,61,3. 4,17. विहि होत्रा यजीताः 4,48,1. भुवो वरुणो यदृताय वेषि 10,8,3. 1,141,6. यदीशानो ब्रह्मणा वेषि मे हवम् 2,24,15. — 2) *fördern —, führen zu* (mit 2. acc.): वीहि स्वस्ति मनितिं दिवो नॄन् RV. 6,2,11. (नू नो) वेषि रायः 4,5.

— अप etwa *abtreiben* in einer Worterklärung: पदेनया विद्वा अपवीयते Nir. 6,12.

— अभि *antreiben:* धेनुरभिवीता गौः, Çat. Br. 4,3,3,11.

— आ *antreiben, hertreiben:* आ यद्धरी इन्द्र विव्रता वेः RV. 1,63,2. आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यम् 8,21,10. — Vgl. 2. आवी.

— उद्, partic. उद्वीत *hinausgetrieben, weggejagt* AV. 12,5,18.

— प्र *antreiben; erregen, begeistern:* प्र विहि मनायतः RV. 2,26,3. एवा देवाँ इन्द्रो विश्वे नृम्न घोषवेन 10,49,1. — Vgl. 2. प्रवयण fg., प्रवायक, प्रवेतृ und प्रवेप.

4. वी (= 3. वी) adj. in 1. ष° (*nicht erregt, nicht begeistert*), अयवी अष्ट्रा° (s. Nachträge), तक्ष°, पर्ण°.

5. वी stellen wir auf Grund von RV. 10,33,3 auf in der Bed. (angeblich) *mit den Flügeln schlagen;* hierher vielleicht वि, वयस् *Vogel.* Intens. *flattern:* वेर्न वेवीयते मतिः *wie ein Vogel flattert* d. h. *bebt* oder *sagt mein Herz* RV. 10,33,3.

— यी Intens. *tropidare:* पुरास्य संवत्सरादूक यावेवीरन् *ehe ein Jahr vergeht soll man in seinem Hause versagen* TS. 3,2,9,5. — Vgl. वेवी.

6. वी s. व्या.

7. वी (= 6. वो, व्या) adj. in हिरण्य°.

8. वी f. zu 1. वि *Vogel* Colebr. und Lor. zu AK. 2,5,33.

9. वी = 2. वि in वीकाश, °तंस, °नाक, °बर्क, °मार्ग, °रुध् und °वध.

वैनीक Uṇâdis. 3,47. m. *Wind; Vogel* Ujjvaladatta = मनस् Uṇâdisûtra. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa.

वीकाश (von काश् mit वि) m. P. 6,3,123. 1) *das in's-Licht-Treten, Hellwerden;* = प्रकाश AK. 3,4,25,217. = स्फुट Halâj. 5,51. — 2) *Verborgenheit u. s. w.;* = रक्षस् AK. Halâj. — Vgl. 1. विकाश.

वीक्षण (von ईक्ष् mit वि) n. 1) *das Schauen* Kâç. 65. पशादुराणीरपि निपुणतमो वीक्षणादिक्रियासु Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 295. *das Anschauen, Anblicken:* गवां रविवीक्षणम् Varâh. Bṛh. S. 28,8. वीक्षणं राज्ञामीनाम् — नाचचार सः Rîâ-Tar. 3,155. पन्मुखवीक्षणैकविधुर Kuṭṭan. 42,7. अन्योऽन्यं कृतवीक्षणौ *sich gegenseitig anblickend* Bhâg. 2,905. *Betrachtung, Durchmusterung:* रथ्यालिवीक्षणनिवेशितलोलदृष्टि Spr. (II) 2497. unter den 18 संस्काराः कुण्डानाम् Verz. d. Oxf. H. 105,a,23. *Blick:* घर्घकटाक्षवीक्षणैः Spr. 3319. सस्मेरापाङ्गवीक्षणैः Pañkâr. 4,6,6. Bâlar. P. 6,18,27. 8,9,18. मुदित° adj. 6,14,37. कटाक्षवीक्षणा adj. f.

Varâh. Bṛh. S. 12,9. — 2) in der Astrol.: *aspectus planetarum* Varâh. Bṛh. 2,13. 3,5. 4,11. 19,4. 9.

वीक्षणीय (wie oben) adj. *anzuschauen, anzublicken, zu betrachten:* वरचरनयनैर्मणडलम् Spr. 1314. सुता नाहं त्वया वीक्षणीया Kathâs. 105, 80. *worauf man seine Aufmerksamkeit zu richten hat* Verz. d. Oxf. H. 223,b, No. 344, Cl. 2.

वीक्षा (wie oben) f. gaṇa कृच्छादि zu P. 4,4,62. *das Anschauen, Anblicken:* सीताशपथवीक्षार्थं सर्व एव समागताः R. 7,96,8. *Untersuchung:* न स्वपेन्न तथा गर्ते विना वीक्षां कदा च न Verz. d. Oxf. H. 268,a,40. सूक्ष्मदृष्ट्या वीक्षां चक्रे Pañkat. 62,12. *Einsicht, Erkenntniss* (= ज्ञान Comm.) Bâlar. P. 11,18,27. वीक्षापन्न *vor Staunen hinsehend, überrascht, erstaunt* H. 433. Hit. 152. — Vgl. वेक्ष.

वीक्षितर् (wie oben) nom. ag. *Beschauer:* तद्वी° Bâlar. P. 7,13,18.

वीक्षितव्य (wie oben) adj. *zu schauen, zu sehen:* (त्वया) पृष्ठतो वीक्षितव्यौ (impers.) च मुक्तवलितकंधरम् Kathâs. 39,132.

वीक्ष्य (wie oben) 1) adj. dass. H. an. 2,382. Med. j. 55. — 2) m. a) *Tänzer.* — b) *Pferd* Med. — 3) n. *Verwunderung, Staunen* H. ç. 88. H. an. Med.

वीक्षा f. *das Gehen* d. i. *eine best. Bewegung* H. 1500. Halâj. 4,41. — Vgl. वीङ्खा.

वीङ्ख n. N. eines Sâman Pañkav. Br. 14,6,9. Lâṭy. 3,4,13. fg. Ind. St. 3,237,b. 242,a (unter वैश्ल). गृत्समदस्य (वसिष्ठस्य) वीङ्खम् 215, a. 233, b.

वीङ्खा (von ईङ्ख् mit वि) f. 1) *eine best. Bewegung* H. an. 2,25. *des Pferdes* Çâṇḍar. im ÇKDa. *Tanz* H. an. — 2) = सैंधि Çâṇḍar. im ÇKDa. — 3) *Carpopogon pruriens Roxb.* H. an. — Vgl. वीक्षा.

वीच = 2. वीचि in अम्बु°.

1. वैचि f. *Trug, Verführung:* कर्तु यव यावनो वीच्या नॄन् RV. 10, 10,6. — Vgl. व्याच.

2. वीचि Uṇâdis. 4,72. f. Sudhâk. K. 247,b,1 v. u. m. f. AK. Med. 1) *Welle, Woge* AK. 1,2,2,3. Taik. 3,3,79. H. 1075. Med. k. 10. °मालाकुलस्य सागरस्य R. 5,74,25. नदीवीचिषु Megh. 102. 29. सरसि Ragh. 1,13. 12,100. पवनोद्धतवीचिविक्षिप्तमञ्जर Spr. 2030. को वा वीचिषु प्रत्ययः 2256. Varâh. Bṛh. S. 27,1. L.A. (III) 88,3. Prab. 97,19. Râga-Tar. 4,143. 511. रोमाञ्च° Kâdamb. 44. वीची Halâj. 3,31. H. an. 2,60 (विची gedr.). Hit. 205. समुद्रवीचीव Spr. 3180. Varâh. Bṛh. S. 56, 4. सर्वः शब्दो नदीवीचिः स्रोतोत्पन्नस्तु गृह्यते। वीचीतरंगन्यायेन तदुत्पत्तिस्तु कीर्तिता ॥ Bhâshâpar. 161. Am Ende eines adj. comp.: पवनोद्धूतवीचिना सागरेण R. 5,9,14. Ragh. 6,56. सरितः स्फुरद्विरिंगुलम्बस्खलद्वीचयः Spr. 1619. Kathâs. 39,141. °वीचिक 43,126. — 3) *eine best. Hölle:* नरके °संज्ञके R. 7,59,2,50. wohl उवीचि° zu lesen. — 3) = मुख Taik. H. an. Med. — 4) = अवकाश H. an. Med. — 5) = स्वल्प Taik. = अल्प H. an. — 6) = घालि H. an. — 7) = किरण Gaṇiṇ. im ÇKDa. — Vgl. अ°, महा°.

वीचिमालिन् m. *das Meer* H. 1073.

वीचीकाक m. *ein best. Vogel* Mân. P. 15,32.

वीज्, वीजते (गतौ) Dhâtup. 6,25. act. वीजति (med. s. u. परि) *befruchten:* (तम्) वीजन्ति वालव्यजनैः Harîv. 13092. वीजन्मारुत *anwehend*

13444. *besprengen:* तं विसंज्ञम् ज्ञलेनात्यर्थशीतेन वीज्ञत्तः पुण्यगन्धिना MBn. 7, 207. — caus. वीज्ञयति Dhūrtav. 35, 84, *q* (व्यज्ञने). *befächeln:* तम् प्रमार्ज्यमाना वीज्ञयन्ती च मूर्च्छितम् R. 2,61,2. शाखाभिः Suçr. 1,371,7. व्यज्ञनैः 2,36,6. पत्ज्ञेन Mṛicch. 134,11. Milarip. 63, 9. R. Gorr.² 2,35, 17. Kathās. 25,7. Rāja-Tar. 1,214. Bhāg. P. 10,60,7. प्रदीप्तमग्निं पवनस्तेषु वेश्मस्ववीज्ञयत् *anfachen* R. 5,50,9. wohl *blasen auf* so v. a. *durch Blasen einen Ton hervorbringen auf:* न वीज्ञयेत्वेणुमुखानज्ञत्र-गात्राणि Suçr. 2,145,3. pass.: वीज्ञ्यमानो गन्धमादनवायुना *angeweht* MBh. 3,11087. R. 3,78,28. Kumārās. 2,42. व्यज्ञनैः *befächelt werden* MBh. 5, 7108. 7,310. R. 2,26,11 (13 Gorr.). 42,15. Mṛicch. 83,3. Spr. 2034. Kathās. 20,178. Saddh. P. 4,12,*a* (fälschlich वीद्यमान gedr.). partic. वीज्ञित *befächelt:* व्यज्ञन° MBh. 13, 4252. Harīv. 3824. Kathās. 17,109. वासितानिल° *angeweht* (हिमवत्) Mālav. P. 61,25. Ghaṭ. 15. — Vgl. व्यज्ञ् und व्यज्ञन.

— घञ्, partic. °वीज्ञित *angeweht:* पुण्यगन्धवहैः पुण्यैर्वायुभिः MBh. 3,1764.

— अभि caus. *befächeln:* तं विप्रम् — क्लमापनयनार्थं स पत्ताभ्यामभ्यवीज्ञयत् MBh. 12,6347. चामरशतैरभिवीज्ञ्यमानः Ṛit. 3,4.

— आ caus. dass. Harīv. 4444.

— उद् caus. *anwehen:* उद्वीज्ञ्यमानो वायुना पुण्यगन्धिना MBh. 3,1757.

— उप *befächeln:* यं पुरा व्यज्ञनैरार्द्रैरुपवीज्ञन्ति योषितः MBh. 11, 201. — caus. dass. Çiç. 33,6. उपवीज्ञ्य 7. उपवीज्ञयति als Erklärung von उपपाज्ञयति Schol. zu Kāç. Ça. 28,4,2. पुण्यैर्मारुतैरुपवीज्ञितम् (वनम्) *angeweht* MBh. 1,1208. Mṛicch. 91,11.

— परि *befächeln:* यं पुरा पर्यवीज्ञन्त तालवृन्तैर्वरस्त्रियः MBh. 15,1060. 13,7772. — caus. dass.: व्यज्ञनं गृह्य राघवं पर्यवीज्ञयत् R. 6,112,23. Bhāg. P. 10,69,13. Mālav. P. 21,25. परिवीज्ञित *befächelt* R. 5,45,9. ह्रीमाणां करिणः प्राहुं तत्कर्णपरिवीज्ञिते (so die ed. Bomb., Nīlak. ergänzt देशे) *durchweht* MBh. 3,13471.

— सम् caus. *befächeln* Bhāg. P. 10,15,17.

वीज्ञन 1) n. (von वीञ्) *das Befächeln* Bhāg. P. 10,39,45. भेजे ज्ञान्त-घूमस्य वालव्यज्ञनवीज्ञनम् Rāja-Tar. 5,336. *das Zufächeln:* तदनु व्यजनं मदर्पितं त्वरयेदतिवातवीज्ञनैः Kumārās. 4,28. Kathās. 117,53. = व्यज्ञन *Fächer* H. 687, Schol. Sārasvata im ÇKDa. — 2) n. = वस्तु Sārasvata ebend. — 3) m. Bez. zweier Vögel: = कोक und चक्रवाक ebend.

वीज्ञया indecl. in Verbindung mit 1. कृ gaṇa मालादादि zu P. 1,4, 74. Hängt vielleicht wie वीज्ञरुहा mit वीज्ञ zusammen, in welchem Falle es mit य zu schreiben wäre.

वीट n. Siddh. K. 249, *a*, 3. वीटा f. *ein runder Kieselstein*, Spielzeug von Kindern MBh. 1,3130. fg. 3136. fg. 3161. als Kastelung im Mundo gehalten 15,1032. °मुख 692. VP. (2te Aufl.) 2,104. — Vgl. नाग°.

वीटि und वीटी f. = वीटिका ÇKDa. ohne Angabe einer Aut.

वीटिका (von वीटा) f. 1) *Kugel*, insbes. *geschnittene, mit Gewürzen bestreute und in ein Betelblatt gewickelte Arecanuss in Kugelform:* वासिताम्बूल° Daçak. 92,5. Kathās. 55,40 (am Ende eines adj. comp.). Rāja-Tar. 4,430. Vgl. पर्ण°. — 2) *die Bänder eines Mieders* Spr. (II) 2664.

वीड्, वीळयति, वीळयते act. *festmachen*, med. *fest —, hart sein* Nir. 9,12. यद्दीळयासि वोळ्हवे तत् Ṛ. 8,45,6. यदि पणय्वोळयस्वा वनस्पते 2,37,3. 3,53,19. VS. 6,25. Çiṅkṣ. Gaṇ. 1,13. partic. वीळित *hart, fest* Ṛ. 2,21,4. यस्मिन्दृळ्हास्रंदस वीळिता 24,3. 6,22,6. आयुध TS. 4,7,13,4.

वीडु, वीळु adj. f. वीडुी *hart, fest;* n. *das Feste, fester Verschluss* Naigh. 2, 9. Ṛ. 1,6,5. 39,2. 71,2. वीळोधिदिन्द्रो यो यमुन्वतो वधः 101,4. वोळ्हा सतीरुभि धीरा यतन्दन् 3,31,5. यत 33,17. 19. यंदम् 4,3, 14. येन दृळ्हा समत्स्वा वीळु चित्साळ्हीर्मरुतो 8,40,1. 66,9. Agni 8, 44,27. यद्रयः 77,3. VS. 6,25. AV. 1,2,2 (wohl fehlerhaft).

वीळुजम्भ adj. *der ein hartes Gebiss hat* Ṛ. 3,29,13.

वीळुद्वेषस् adj. *unbeugsam hassend, — verfolgend* Ṛ. 2,24,13.

वीळुपत्मन् adj. *unnachgiebig fliegend* Ṛ. 1,116,2.

वीळुपर्वि adj. *mit harter Schiene beschlagen:* Wagen Ṛ. 5,58,6. 8,20,1.

वीळुपाणि und वीळुपाणि adj. *harthufig* Ṛ. 1,38,11. 7,73,4.

वीळुरुस् adj. *nachhaltig glühend* Ṛ. 10,109,1.

वीळुसङ्ग adj. *festgliederig* Nir. 9,12. Ṛ. 1,118,9. Wagen 6,47,26. 8, 74,7. VS. 11,44.

वीळ, तदभि निवीळं पर्यषति पथा न व्यथेत Çiṅkṣ. Ça. 17,10,16 wohl fehlerhaft für निबाळं (zu बंहू).

वीणाय् s. उप°.

वीणा (वीणी Uṇādis. 3,15) f. 1) *Laute* AK. 1,1,2,3. H. 286. fg. an. 2,134. Med. p. 28. Halāy. 1,96. वाग्वनस्पतिषु वदति या दुन्दुभौ या तूणवे या वीणायाम् TS. 6,1,6,1. Çat. Br. 3,2,4,6. Kauç. 84. Kāṭy. 34, 3. Lāṭy. 4,2,1. Hāsyārṇ. in Ind. St. 1,396. Mahān. 84. Spr. (II) 738. Varāh. Bṛih. S. 69,29. शततन्त्री Çiṅkṣ. Ça. 17,3,1. सप्ततन्त्री MBh. 3, 10664. °भिद् विवेक: Verz. d. Oxf. H. 200,*b*,11. वीणेव मधुरालापा गान्धारी साधु मूर्च्छती MBh. 4,515. °शब्द Çiṅkṣ. Gaṇ. 4,7. वीणायाः क्वणितम् AK. 1,1,6,3. मृदङ्गवेणुवीणानां रम्यैः शब्दैः R. 1,5,19. वेणुवीणानिनादैः Weber, Kṛishṇaj. 287. वीणावेणुवादिधनिवत् Sarvadarçanas. 137,22. वीणाः प्रमुमुचुः स्वरान् R. 2,91,26. वाद्यते Çat. Br. 13,1,5,1. Pāṇār. 94,4. Hit. 63,13. संवादयन्वीणाम् Kathās. 21,4. उद्धता Kāṭy. Ça. 21,3, 7. वितुदन् (so ed. Bomb.) वीणाम् Bhāg. P. 4,8,38. °वाणी adj. Çaṅk. 15. महा°, पिशील° Lāṭy. 4,2,1. सवेणुवीणाम् adv. Varāh. Bṛih. S. 19,13. — 2) in der Astrol. Bez. *einer best. Constellation*, wenn nämlich *alle Planeten in 7 Häusern stehen*, Varāh. Bṛih. 12,17; vgl. वल्लकी. — 3) *Blitz* H. an. Med. — 4) N. pr. eines Flusses MBh. 6, 328 (VP. 182); वाणी ed. Bomb. — 5) N. pr. einer Jogini, = Saṃbhogajakshiṇī Verz. d. Oxf. H. 109, *a*, 40. — Vgl. घलावु° (unter घलावु 1), काण्ड°, दत्त°, राम°, सूत्र°, प्रवीण, वैणिक.

वीणाकर्ण m. N. pr. eines Mannes Hit. 27,13.

वैणागणगिन् m. *Musikmeister, Vorstand einer Bande* Çat. Br. 13, 4,3,3. 4,2. Çiṅkṣ. Ça. 16,1,29. Kāṭy. Ça. 20,3,2.

वीणागार्धिन् m. *Lautenspieler* TBr. 3,9,22,1. Çat. Br. 13,1,5,1. 4, 3,3. 11. 14. 3,5. Âçv. Gṛ. 1,14,6. Pār. Gṛ. 1,15. Kāṭy. Ça. 20,3,7. Çiṅkṣ. Ça. 16,1,29.

वीणातन्त्र n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,9. 10.

वीणादण्ड m. *der Hals einer Laute* AK. 1,1,3,7. Trik. 3,3,299.

वीणादत्त m. N. pr. eines Gandharva Kathās. 106,1. fgg.

वीणानुबन्ध m. *das obere Ende des Halses der Laute, wo die Saiten*

befestigt werden, Hir. 33.

वीणापाणि adj. *eine Laute in der Hand haltend*; m. Bein. Nârada's Paṇḍar. 1,7,9. — Vgl. वीणास्य.

वीणाप्रसेव m. *Dämpfer an der Laute* Taik. 3,3,285.

1. वीणाराव m. *Lautenton*; am Ende eines adj. comp. f. या Kathâs. 90,42.

2. वीणाराव adj. *wie eine Laute summend*; f. या N. pr. einer Fliege Paṇḍar. 81,5.

वीणार्ल adj. von वीणा gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97.

वीणावत्सराज m. N. pr. eines *Fürsten* Paṇḍar. 242,15.

वीणावत् (von वीणा) 1) adj. *mit einer Laute versehen*. — 2) f. वीणावती N. pr. P. 6,1,219, Schol.

वीणावाद् m. 1) *Lautenspieler* AK. 2,10,13. H. 924. VS. 30,20. Çat. Br. 14,5,4,9. 7,3,9. — 2) *Lautenspiel* Kathâs. 63,161.

वीणावादक m. = वीणावाद् 1) Çabdar. im ÇKDr.

वीणावादन n. *Plectron* AK. 1,1,2,6.

वीणावाद्य n. *Lautenspiel* Verz. d. Oxf. H. 217,a,9.

वीणाशिल्प n. *die Kunst des Lautenspiels* Paṇḍar. 1,11,29.

वीणास्य m. Bein. Nârada's Gaṭṭin. im ÇKDr. — Vgl. वीणापाणि.

वीणाहस्त adj. *eine Laute in der Hand haltend*: Çiva Çiv.

वीणिन् (von वीणा) adj. gaṇa व्रीह्यादि zu P. 5,2,116. *mit einer Laute versehen, die Laute spielend* Mahâv. 46. Kathâs. 86,14.

1. वीत (von 1. वी) partic. *begehrt, beliebt, gern genossen*: वीततमानि कृण्वा ṚV. 7,1,18. वीते घर्मे 9,82,3. इष्टं वीतमभिगूर्तम् 1,162,15. इष्टं च वीतं चभूत् Çiṅkh. Ça. 1,14,20. — Vgl. वीतकृव्य.

2. वीत (von 3. वी) partic. n. *das Lenken eines Elephanten* (mit den Füssen und dem Hakon) Taik. 3,3,184. H. 1231. an. 2,196. Mahâ. l. 38. Halâj. 2,67. Çiç. 5,47.

3. वीत (von व्या) partic. *verborgen*: तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम् ṚV. 4,7,6.

4. वीत (von 3. इ mit वि) partic. *vergangen, geschwunden, nicht da seiend, fehlend*: °हिरण्मय *der kein goldenes (Gefäss) besitzt*; davon nom. abstr. °त्व Rasik. 5,2. Andere Belege s. u. 3. इ mit वि. — 2) *abgängig, unbrauchbar*; von Pferden und Elephanten AK. 2,8,2,11. Taik. 3,3, 184. H. 1232. an. 2,196. Mahâ. l. 38. — 3) *beruhigt* (vgl. वीतराग) H. an. 3,3.

वीर्त 1) adj. *schlicht, geradlinig*: पृष्ठेव वीता (= कान्तानि Sây.) वृजिना च ṚV. 4,2,11. स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन् 9,97,17. — 2) f. या *Reihe* (nebeneinander liegender Gegenstände): दर्भ° (= दर्भराशि Comm.) Âçv. Gṛhj. 4,8,27. — Vgl. °पृष्ठ und वीवि.

वीतंस (von 1. तन् mit वि) m. *jedes zum Fangen und Aufbewahren von Wild und Vögeln dienendes Geräth: Netz, Käfig* u. s. w. AK. 2,10, 26. H. 931. Mahâ. s. 39. — Vgl. ववतंस und उत्तंस.

वीतक (von 3. वीत) m. = विवीत. ववीतके Jâṭ. 2,271.

वीतदम्भ (4. वीत + दम्भ) adj. *frei von Verstellung, — Heuchelei* H. 490.

वीतन m. du. *die zur Seite des Kehlkopfs liegenden Knorpeln* H. 387.

वीतपृष्ठ (5. वीत + पृष्ठ) adj. *schlichten Rücken habend* (als gute Eigenschaft des Rosses) ṚV. 1,162,7. 181,2. Rosse des Indra u. s. w. 3, 35,5. 5,45,10. 8,6,42. तन्वः VS. 19,44 (vgl. AV. 5,62,2. TBr. 1,4,8,2).

वीतभय (4. वीत + भय) adj. *frei von Furcht*: Vishṇu ÇKDr. (nach dem Viṣṇusahasranâmastotra). Çiva Çiv.

वीतभीति (4. वीत + भी°) 1) adj. *frei von Furcht*. — 2) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 44,144. 45,278. 49,1.

वीतराग (4. वीत + राग) adj. *frei von aller Leidenschaft, — allen weltlichen Begierden* MBh. 12,13684. Bhag. 2,56 (°त्यक्रोध). 8,11. Spr. (II) 1574. (I) 1313. Hit. 19,21. Vet. in LA. (III) 20,6. Sarvadarçanas. 64, 16. Çiva Çiv. m. Bez. *eines* Buddha Taik. 1,1,11. Wilson, Sel. Works II, 27. Beiw. acht bestimmter Bodhisattva und zugleich Bez. *ihrer Symbole* 13. 17. fg. Burnouf in Lot. de la b. l. 500. fg. Bez. *eines* Arhant's *der* Gaina H. 23. Halâj. 1,86. Pravacanasâr. 2,27 (nach Auufrecht).

वीतरागस्तुति f. Titel eines religiösen Gedichtes bei den Gaina Sarvadarçanas. 30,20.

वीतवत् adj. *ein* वीत (von 1. वी) *d. h.* वेतु, वीतम् *und andere Formen der Wurzel enthaltend* Âçv. Çr. 1,8,4.

वीतवार (5. वीत + 1. वार) adj. *einen schlichten Schweif habend*: Ross ṚV. 8,46,23.

वीतशोक (4. वीत + शोक) 1) adj. *frei von Kummer* Çvetâçv. Up. 2, 14. MBh. 3,12207. Davon nom. abstr. °ता f. Jâṭ. 1,265. — 2) m. = अशोक *Jonesia Asoka* Çabdam. im ÇKDr. MBh. 3,2508. — Vgl. वीताशोक.

वीतसूत्र n. = उपवीत Viṭhalâm. 157.

वीतहव्य (1. वीत + हव्य) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âṅgirasa, Liedverfassers von ṚV. 6,15. ṚV. Anukr. ṚV. 6,15,2. 3. 7, 19,3. AV. 5,137,1. Çâṅkh. Çr. 16,9,2. Taitt. Br. 2,7,15,5. Paṇḍar. Ba. 1,1,9. 25,16,3. ein Fürst (क्षेत्र), der die Brahmanenwürde erlangt, MBh. 13,1942. fgg. वीतहव्योपाख्यान Viṣṇusahasranâmâjâna in Verz. d. Oxf. H. 334,a,33. Sohn Sunaja's (Çunaka's) und Vater Dhṛiti's VP. 390. Bhâg. P. 9,13,26. unter den Beinn. Kṛishṇa's Paṇḍar. 4,8,43. pl. *die Söhne* Vitahavja's MBh. 13,1952. 1977. — Vgl. वेतहव्य.

वीतहोत्र MBh. 7,2136 fehlerhaft für वीतिहोत्र, wie die ed. Bomb. liest.

वीताशोक m. N. pr. = विगताशोक Burnouf, Intr. 360, N. 2. 415. fgg. 425, N. 1. Târân. 287.

1. वीति (von 1. वी) 1) f. im ṚV. oxyt., in den übrigen Schriften paroxyt. P. 3,3,96. *Genuss, Ergötzung, beliebtes Mahl* oder *Trank* (= भक्षण, भक्षन Taik. 3,2,9. H. an. 2,196. Mahâ. l. 59); *Genuss so v. a. Vortheil*; dat. gewöhnlich infinitivisch. यां गन्त रुविषो वीतये मे ṚV. 7,68, 2. 1,3,5. 13,2. यस्य वेषि कृव्यानि वीतये 74,4. 6. 135,1. 2. 4. 142,12. 5,26,2. 51,5. 8,16,10. आ वेक्षणि प्रयांसि वीतये देवान् 44. 7,16,4. 57, 2. 8,49,4. 20,10. 16. 82,22. 9,62,22. स न: शर्माणि वीतये यच्छतु 3,13, 4. 5,59,8. उत नो गोषणि धियं कृणुहि वीतये 6,53,10. instr.: प्र वीती होतारं दिव्यं निंगाति 6,6,1. वीती यो देवं मर्तो दुवस्येत् 16,46. वीत्यर्घ चनिष्ठया 9,9,2. 61,1. वीती जनस्य दिव्यस्य (सुवानः) 91,2. Vilâkh. 6,6. acc.: यज्यवे देवान् वीतिमन्धसा ṚV. 9,1,4. इन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्च 97,25. — H. an. und Mahâ. geben noch folgende Bedd. (vgl. die aus dem Daiçp. angegebenen Bedd. unter 1. वी.): गति, प्रजन, दीप्ति und धावन. Die Bed. *Glanz* könnte man versucht sein anzunehmen im comp. सुवर्णवीतिप्रतिमाः (स्त्रियः) R. ed. Gorr. 2,100,42; aber hier ist वीति

wahrscheinlich nur verlesen für रीति *Glockengut.* — 2) m. Bez. des Agni, daher genommen, dass die an ihn gerichteten Sprüche das Wort वीति enthalten, Ait. Br. 7,6. — Vgl. गौरी°, देव°, रथ°.

2. वैति (von 3. इ mit वि) f. *Scheidung:* वीत्यै TBr. 3,2,6,2. TS. 5, 1,8,3. Kâty. Çr. 25,11,33.

3. वीति m. = 3. पीति *Pferd* H. 1233. an. 2,196. Râǵa-Tar. 7,377.

वीतिन् m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁsk. K. 184,a,11.

वीतिराधस् (1. वीति + रा°) adj. *Genussgewährend:* Soma ṚV. 9,62,29.

वीतिहोत्र (1. वीति + होत्रा) 1) adj. *a)* (Götter) *zum Genuss oder Mahl ladend:* को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः ṚV. 1,84,18. घर्मंहोतिहोत्रं स्वस्ति 2,38,1. 8,31,9. Agni 3,24,2. 5,26,8. — *b)* etwa *zum Mahle geladen:* देवाः VS. 17,78. — 2) m. *a)* ein N. *des Feuers* AK. 1,1,1,43. H. 1098. an. 4,231. Mnu. r. 299. Hall. 1,64. Râǵa-Tar. 7,377. 1499. 8,1473. Bhâg. P. 5,1,25. °प्रिया und °दयिता so v. a. स्वाहा Pañcar. 2, 3,102. 3,8,13. — *b)* pl. Bez. *der Verehrer einer Form des Feuers* Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,10. — *c) die Sonne* H. an. Med. — *d)* N. pr. eines Fürsten MBh. 1,226 (elg. 231). eines Sohnes des Prijavrata Bhâg. P. 5,1,25. 34. 20,21. des Indrasena 9,2,20. des Sukumâra 17,9. des Tâlaǵaṅgha 23,28. VP. 418. pl. *seine Nachkommen,* ein zu den Haihaja gezählter Stamm, N. 20. MBh. 7,2486 (वीत° ed. Calc.). Harîv. 1893. eine Dynastie, aus der 20 Fürsten hervorgegangen sein sollen, VP. 467, N. 17. sg. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 11,*a*,15.

वीत्त partic. praet. von 1. दा mit वि AV. Pair. 3,11, Schol.

वीथि und वीथी (verwandt mit 3. वीत) f. 1) *Reihe* AK. 2,4,4,1. Trik. 3,3,197. H. 1423. an. 2,330. Med. th. 12. Hall. 4,36. वास्तपादप° Çiç. Cu. 45,3. चाण्डालागारवीथिषु Spr. 4967. क्रीडावसथवीथिषु Râǵa-Tar. 3,380. — 2) *Strasse, Weg* AK. 3,4,25,90. H. an. Med. MBh. 2,822. वीथीं कुर्वन् — द्रावयन्मम वाक्निोम् 5,2049. का वीथी भवतामिह 2982. 13,3248. 3510. मात्स्यापणानाम् Harîv. 4478. नगरापणवीथ्यन्तः Râǵa-Tar. 6,173. so v. a. घापण° *Marktstrasse* Çiç. 9,33. वीथ्यन्तरापणगत Vaṁç. Bṛh. 27425),19. Harîv. 4533. R. 5,20,10. 95,13. 6,92,3. Spr. (II) 1658. (I) 1191. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*, N. 1. Jayaneçvara in Z. f. d. K. d. M. 4, 315. Pañcat. 129,14. दरिद्र° Sadukt. P. 4,13,*a*. bildlich: छिन्नीभूताः कृतन्तस्य वीथयः Râǵa-Tar. 3,302. — 3) *Strasse am Himmel, eine drei Nakshatra umfassende Strecke einer Planetenbahn* Vaṁç. Bṛh. S. 9, 1. 5. 8. 9. VP. 266, N. 21. — 4) *Terrasse, der freie Raum zwischen Haus und Strasse* Taik. H. an. Med. Hin. 132. — 5) *Bildergallerie* Uttarar. 6,9 (वीथिका die neuere Ausg.). — 6) *ein best. einactiges Drama* H. 284. H. an. Med. Bhar. Nâṭyaç. 18,2. 59 (सवीथीक). 102. 20,36. Daçar. 1,8. 3,5. 6. 62. Sâh. D. 286. 433. 530. fg. नानारसानां चात्र मालाव्रपतया स्थितत्वाद्वीथीयं यथा मालविका (!) 532, Comm. Pratâpar. 20,*a*,1. 23,*a*,8. 24,*b*,9. — Vgl. यज्ञ°, उत्तर°, गज°, गो°, घन°, ग्रहण°, नक्षत्र°, नभो°, नाग°, पण्य°, पाद°, मृग°, रथ°, राज°, सुर°, सोम°, स्वर्वीथि.

वीथिका f. = वीथी Çârdar. im ÇKDa. 1) *Reihe:* तमालवनवीथिका adj. (भू) Kathâs. 73,30. — 2) *Strasse:* चत्वरापणवीथिकैः (वीथिकस्यान्त्रोत्तमार्थम् Comm.) R. 7,70,11. संवृतापणवीथिका adj. 2,41,21. — 3) *Terrasse, der freie Raum zwischen Haus und Strasse* Vaṁç. Bṛh. S. 53,30. am Ende eines adj. comp. f. Harîv. 12705. — 4) *Bildergallerie* (= चित्रपटगतपङ्क्ति Glosse) Uttarar. ed. Cow. 9,13. — 5) = वीथि 6) Bhar. Nâṭyaç. 18,103. — Vgl. पण्य°.

वीथीकर् *in Reihen aufstellen:* सुवर्णं °कृतम् (v. l. राशीकृतम्) MBh. 1,7364.

वीध्र (वैध्र Uṇâdis. 2,26) adj. = विमल AK. 3,2,3. H. 1436. Hall. 1,132. n. = नभस्, वायु, अग्नि Uṇâdiv. im Saṁkshiptas. nach ÇKDa. वीध्रे *bei hellem Himmel* (vgl. κελαινὸς αἰθήρ): वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तम् AV. 4,20,7. पद्वीध्रे स्तनयति प्रजापतिः 9,1,24. Kâṭy. 13,12. °बिन्दु *bei Sonnenschein gefallener Tropfen* Kauç. 46.

वैध्र्य (von वीध्र) adj. *zum hellen Himmel gehörig* u. s. w. VS. 16,33. ईध्रिय v. l. TS.

वीनाह् (von 1. नह् mit वि) m. *Brunnendeckel* AK. 1,2,2,26. H. 1092. MBh. 11,138. 146.

वीनाहिन् (von वीनाह्) m. *Brunnen* Hin. 41.

वीन्द्रर्क (2. वि + इन्द्र-अर्क) adj. *ohne —, mit Ausnahme von Mond und Sonne* Vaṁç. Lalit. 2,9 in Ind. St. 2,285.

वीप्सा (vom desid. von व्याप् mit वि) f. 1) *das durch das distributive ṣjen* (im Sanskrit durch Wiederholung des Wortes) *ausgedrückte Verhältniss* AV. Pair. 4,19. P. 1,4,90. 5,4,1. 8,1,4. AK. 3,4,22(23),6. — 2) *Wiederholung* (eines Wortes) Çaṁk. zu Kaṭhop. Up. S. 13. zu Bṛh. Âr. Up. S. 141. Schol. zu Kâç. 1,165. Verz. d. Oxf. H. 178,*a*, 11.

वीप्साविचार m. Titel einer Schrift Hall 60.

वीबर्ह् (von बर्ह् mit वि) m. *das Zerstreuen, Verjagen* AV. 2,33,7. — Vgl. विबर्ह्.

वीबृकोश m. *Fliegenwedel* (s. चामर) Çabdâmṛtak. bei Wilson.

वीमार्ग (von 1. मृज् mit वि) m. P. 6,3,122, Schol.

वीर् (zu derselben Wurzel wie 3. वयस्) Uṇâdis. 2,13. 1) m. *a) Mann: bes. ein kraftvoller Mann, Held;* pl. *Männer, Leute* Nir. 1,7. AK. 2,8. 2,45. H. 365. an. 2,457 (नट *Schauspieler* fehlerhaft für भट). Med. r. 68. Hall. 2,199. Viçva bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,13. ṚV. 1,18,1. 114,*a*. 4, 29,2. गोभिः, वीरैः 5,20,4. 61,5. 6,53,2. 7,32,6. मर्त्य 4,15,5. 8,23,19. नर्य 7,1,21. वस्तृ 2,42,2. सुषि 6,23,3. दाशेम 65,1. विदथ्य 7,36,8. रेवत् 7,42,6. AV. 2,26,1. 3,5,8. Çat. Br. 11,4,4,2. 14,8,22,1. Pañcat. Br. 19,1,1. यस्मि वो वीरः so v. a. *ich bin euer Anführer* Ait. Br. 7,27. सर्या वीरेण वीरवो ऽभि व्यामं पतन्यतः ṚV. 1,35,3. collect.: सर्घं वीरस्य 7,18,16. — मृगराजो वृकश्चैव वृद्धिमानपि मूषिकः। निर्जिता पक्षया वीरास्तस्माद्वीरतरो भवान्॥ MBh. 1,3589,3. 2152. fg. पशुपांश वीरान् 10081. वीरा रणे वीरतरेण भग्नाः 4,1673. 8,446. Harîv. 1945. 8402. R. 1,1,21. 2,27,3. Vaṁç. Bṛh. S. 101,11. यज्ञ, द्विप, वीर Rasa. 7,39. Spr. (II) 1282. 1833. 1947. Kathâs. 10,29. 47,93. Râǵa-Tar. 2,102. 5,234. 6,284. 349. प्रथम Prab. 70,6. 72,7. पयोधिगभीर° 74,6. 83,3. Bhâg. P. 4,10, 19. 17,33. fg. उत्थान° *ein Mann der That,* वाग्वीर *ein Mann des Wortes* Spr. (II) 1199. सैन्यं रुतवीरम् R. 2,82,38. पृतना रुतवीरेव R. Gorr. 2,51,3. नर° *ein heldenmüthiger —, ausgezeichneter Mann* MBh. 3,2732. नरवीरलोक so v. a. *die Menschenkinder* Spr. 2476. वीर = श्रेष्ठ H. an. Viçva a. a. O. = उत्तर (उत्तम?) Med. Am Anfange eines comp. als Attributiv P. 2,1,59. — *b) die Leute* so v. a. *die Mannschaft, Diener,*

Zugehörige u. s. w.: अमुरस्य वीरा: RV. 1,122,1. 2,30,4. 3,53,7. 56,8. 7,99,3. 10,10,2. 66,2. देवानाम् Çat. Br. 2,2,4,10. Kâty. Çr. 25,5,28. RV. 2,14,7. वीरेभिर्विरिन्वनवद्यनुष्पत: 25,2. 5,85,4. अस्माकं वीरा उ-त्तरे भवन्तु 10,103,11. मा न: प्रजां रीरिषो मोत वीरान् 10,18,1. Bhâg. P. 4,7,17. °समन्वित von *seinen Mannen umgeben* Spr. 4310. — *c)* Götter, namentlich Indra RV. 1,30,5. 40,2. 4,24,1. 6,21,1. 32,1. 7,90. 8,2.23. 10,28,12. नर्य 8,24,2. शिप्रिन् 8,32,24. Çat. Br. 1,6,4,2. die Açvin RV. 8,63,10. Vishṇu Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,82. 93. 143. 146. — *d) Mann so v. a. Gatte:* योषेव कृत्वीरा MBh. 6,560. कृत्वीरासु तत्रियासु 14,883. R. Gorr. 2,85,12. अवीरा *Wittwe* Bhâg. P. 6,19,25. °हीना स्त्री Mân. P. 35,31. — *e) männliches Kind, Sohn;* collect. *männliche Nachkommenschaft* RV. 2,32,4. 3,4,9. 36,10. 7,34,20. 92,3. स वीरैर्दशभिर्वि राजा: 104,15. 8,92,4. 10,80,1. AV. 3,23,2. VS. 4,23. 7,18. 29,9. TBr. 1,3,10,7. 2,8,14. तस्य चत्वारो वीरा अजायन्त TS. 7,1,1,1. Çat. Br. 2,2,4,10. Çâṅkh. Gṛhj. 1,5,9. Âçv. Gṛhj. 1,13,6. Kauç. 35. — *f) Männchen eines Thiers:* अश्व AV. 12,1,25. वत्स Çâṅkh. Çr. 2,6,6,7. — *g) der heroische Grundton* (रस) *in einem Kunstwerke* AK. 1,1,3,17. fg. H. 294. Med. Halâ. 1,92. Sin. D. 38,13. 234. R. 1,4,7. R. Gorr. 1,3,46. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,32. Mâlav. 77. — *h)* bei den Tântrika *ein Eingeweihter* (steht zwischen दिव्य und पशु) Rudrajâmala im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 89,*a*,29. 94,*b*,24. 95,*a*,10. 101,*b*,7. — *i) Feuer* Mukuṭa zu AK. nach Wilson; *Opferfeuer* Bharata zu AK. nach ÇKDr. und Wilson; eine aus वीरघ्न् geschlossene Bed. N. *eines best. Feuers,* eines Sohnes des Tapas MBh. 3,14168. — *k)* Bez. verschiedener Pflanzen und Wurzeln: = वराङ्कन्द, लताकरञ्ज, कर-वीर, वर्तुल Râjân. im ÇKDr. — *l)* N. pr. *a)* ein Asura MBh. 1,2541. 2659. ein Sohn Dhṛtarâshṭra's 2738. Bharadvâga's 3,14138. ein Sohn des Purusha Vairâga und Vater des Priyavrata und Utta-napâda Harîv. 38. ein Sohn des Gṛdhnima 1943. zwei Söhne Kṛshṇa's Bhâg. P. 10,61,13. fg. der letzte Arhant der gegenwärtigen Ava-sarpiṇî H. 28. 30. H. an. Verz. d. Oxf. H. 186,*b*,17. 19. Çâṅkh. 1,5. ein Sohn Kshupa's und Vater Viviñça's Mân. P. 120,13. Vater einer Lîlâvatî 123,17. ein Lehrer des Vinaja Wassiljew 80. — Kathâs. 54, 210. 225. — *β)* pl. eine Gruppe von Göttern unter Manu Târnasa Bhâg. P. 8,1,28. — 2) f. वीरा *a) eine Frau, deren Gatte und Söhne am Leben sind,* H. an. Med. Viçva a. a. O. — *b) ein berauschendes Getränk* Taitt. 2,10,15. H. an. Med. Viçva a. a. O. — *c)* Bez. verschiede-ner Pflanzen und vegetabilischer Stoffe: = वीरकोलो, तामल-की, एलवालु (एलवालुका) und रम्भा H. an. Med. und Viçva. = गम्भा-रिका (गम्भारी) H. an. und Viçva. = डुण्डिका und वीरविदारी H. an. Med. = गोष्पादुम्बरिका H. an. = मलपू Med. = काकोली, महाशता-वरी, गृहकन्या, ब्राह्मी und अतिविषा Râjân. im ÇKDr. = शिंशपा Rat-nam. ebend. — *d)* N. pr. der Gattin Bharadvâga's MBh. 3,14135. Kara-ṁdhama's Mân. P. 123,1. 125,1. 7. 129,24. — *e)* N. pr. eines Flus-ses MBh. 6,329 (VP. 183). वाणी ed. Bomb. — 3) N. = भृङ्गी H. an. Med. = भृङ्गराज Viçva a. a. O. = नल (नड ÇKDr.) Med. = नल H. an. = मरिच, पुष्करमूल, काञ्जिक, उशीर und घाटक Râjân. im ÇKDr. — Vgl. अ°, अरिष्ट°, आत्म°, उप°, सह°, एक° (in der ersten Bed. auch Rasa. 7,53–60), चतुर्वीर, दश°, दान°, धान्य°, निर्वीर, पुरु°, प्र°, प्रति°, बद्ध°, भूत°, मन्दहीर, महा°, लोक°, वज्र°, विप्र° (*ein heldenmüthiger Brahmane* Kathâs. 10,24), सतो°, सर्व°, सु°, स्पार्ह°, वीर्य, वैर und वैरेय.

वीरक (von वीर) 1) m. *a) Männchen* RV. 8,80,2. — *b)* = कारवीर *wohlriechender Oleander* Râjân. im ÇKDr. — *c)* pl. N. pr. einer Völ-kerschaft MBh. 6,2066. — *d)* N. pr. eines der 7 Weisen unter Manu Kâkshusha Bhâg. P. 8,5,8. eines Stadtaufsehers Mṛkkh. 99,14. 147, 25. 148,3. — 2) f. वीरिका N. pr. der Gemahlin eines Harsha Verz. d. Oxf. H. 372,*b*, No. 207.

वीरका s. u. वीरकरा.

वीरकर्मन् adj. wohl Bez. *des männlichen Gliedes* RV. 10,61,5.

वीरकर्मन् adj. *Mannesarbeit verrichtend* Nir. 10,19.

वीरकाणी f. N. pr. eines Dorfes Kshîrîç. 52,19.

वीरकाम adj. *nach Söhnen verlangend* Çâṅkh. Br. 8,5. Çr. 5,9,23. Âçv. Çr. 10,1,16.

वीरकुक्षि adj. *Söhne im Leibe tragend:* नारी RV. 10,80,1.

वीरकेतु m. N. pr. eines Mannes: पाञ्चालपुत्र MBh. 7,4893.4899. ein Fürst von Ajodhjâ Kathâs. 88,4. fgg. von Pâṭalî Daçak. 24,5.

वीरकेशरिन् m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,39.

वीरकुरिका f. *Dolch:* घाकृष्ट° adj. Kathâs. 20,127.

वीरगति f. *das Loos eines Helden,* Indra's *Himmel:* °गतिमाप्नुयात् MBh. 13,6360. °गतिं गत: Bhâg. P. 1,7,13.

वीरगवात, °गवात: MBh. 7,6944 fehlerhaft für वीरा गवात:; s. u. विष्णु 2) *d).*

वीरगोत्र n. *eine Heldenfamilie* Mân. P. 125,7.

वीरघ्नी f. *Männer tödtend* AV. 5,133,2. Vgl. वीरघ्न्.

वीरकरा f. N. pr. eines Flusses (*Helden bildend*) MBh. 6,333 (VP. 183). वीरकरा ed. Bomb.

वीरचक्रेश्वर m. ein N. Vishṇu's (*Herr eines Heeres von Helden*) Pâṇân. 4,3,70.

वीरचतुष्मत् adj. *das Auge eines Helden habend:* Vishṇu P. 7,23,4,83.

वीरचरित्र (°चारित्र?) n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1, 98.

वीरचर्य m. N. pr. eines Fürsten Târân. 227.

वीरचर्या f. *das Umherziehen eines Helden, das Ausgehen auf Aben-teuer* Kathâs. 83,30. 124,57. Râja-Tar. 3,337.

वीरजयन्तिका f. *Kriegstanz* H. 281.

वीरजात adj. wohl von *Mannesart, in Männern —, in Söhnen be-stehend:* वसु RV. 10,36,11.

वीरजित m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 54,136.

वीरण 1) m. N. pr. eines Prâgâpati MBh. 12,13587. fg. Harîv. 70 nach der Lesart der neueren Ausg. VP. 99, N. 1. 117. als N. pr. eines Lehrers 281, N. 3 fehlerhaft für वीरणिन्. — 2) f. ई *a) Andropogon muricatus:* °मूल H. 1158. Halâ. 2,467. — *b)* N. pr. einer Tochter des Prâgâpati Virâṇa Harîv. 69. VP. 99, N. 1; vgl. वीरणी. — 3) n. = विरिण *Andropogon muricatus* AK. 2,4,3,29. H. an. 4,331. Med. r. 290. Hit. 177. Suapv. Bh. 5,2. Gobh. 3,9,4. Vaitân. Bhp. S. 30,24. 34,17. तं ददार लीलया वीरणवत् Bhâg. P. 10,11,30. °स्तम्ब, °स्तम्बक MBh. 1, 1035. 1816. 1818. fg. R. 2,80,8 (87,10 Gorr.). — Vgl. वैरणक.

wahrscheinlich nur verlesen für रीति *Glockengut.* — 2) m. Bez. des Agni, daher genommen, dass die an ihn gerichteten Sprüche das Wort वीति enthalten, Ait. Br. 7,6. — Vgl. गौरी°, देव°, रथ°.

2. वीति (von 3. इ mit वि) f. *Scheidung:* वीत्यै TBr. 3,2,6,2. TS. 5, 1,5,3. Kâty. Ça. 25,11,33.

3. वीति m. = 3. पीति *Pferd* H. 1233. an. 2,196. Râǵa-Tar. 7,277.

वीतिन् m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁs. K. 184,a,11.

वीतिराधस् (1. वीति + रा°) adj. *Genuss gewährend:* Soma ṚV. 9,62,29.

वीतिहोत्र (1. वीति + होत्रा) 1) adj. *a)* (Götter) *zum Genuss oder Mahl ladend:* को मँसते वीतिहोत्रः सुदेवः ṚV. 1,84,18. ऋतावृधो वीतिहोत्रं स्वर्णरं 2,38,1. 8,31,9. Agni 3,24,2. 5,26,3. — *b)* etwa *zum Mahle geladen:* देवाः VS. 17,78. — 2) m. *a)* ein N. *des Feuers* AK. 1,1,1,48. H. 1098. an. 4,281. Med. r. 299. Hallây. 1, 64. Râǵa-Tar. 7,277. 1499. 8,1473. Bhâg. P. 5,1,25. °प्रिया und °दयिता so v. a. स्वाहा Pâṇḍar. 2, 3,102. 3,8,15. — *b)* pl. Bez. *der Verehrer einer Form des Feuers* Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,10. — *c) die Sonne* H. an. Med. — *d)* N. pr. eines Fürsten MBh. 1,226 (eig. 231). eines Sohnes des Prijavrata Bhâg. P. 5,1,25. 34. 20,21. des Indrasena 9,2,20. des Sukumâra 17,9. des Tâlaǵaṅgha 23,28. VP. 418. pl. *seine Nachkommen,* ein zu den Haihaja gezählter Stamm, N. 20. MBh. 7,2436 (वीत° ed. Calc.). Harîv. 1893. eine Dynastie, aus der 20 Fürsten hervorgegangen sein sollen, VP. 467, N. 17. sg. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 11,*a*,15.

वीत्त partic. praet. von 1. दा mit वि AV. Paipp. 3,11, Schol.

वीथि und वीथी (verwandt mit 3. वीत) f. 1) *Reihe* AK. 2,4,4,4. Taitt. 3,3,197. H. 1423. an. 2,220. Med. th. 12. Hallây. 4,36. बालपादप° Çiç. Ça. 45,3. चाण्डालागारवीथिषु Spr. 4967. क्रीडावसथवीथिषु Râǵa-Tar. 3,360. — 2) *Strasse, Weg* AK. 3,4,45,90. H. an. Med. MBh. 2,932. वीथीं कुर्वन् — द्रावयन्मम वाक्स्तोम् 3,2049. का वीथी भवतामिह 2982. 13,3248.3310. मात्स्यापणानाम् Harîv. 4478. नगरापणवीथ्यन्तः Râǵa-Tar. 6,173. so v. a. आपण° *Marktstrasse* Çiç. 9,32. वीथ्यन्तरापणगत Varâh. Bṛh. 27(25),19. Harîv. 4533. R. 5,20,10. 93,18. 6,92,3. Spr. (II) 1658. (I) 1191. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*, N. 1. Javaneçvara in Z. f. d. K. d. M. 4, 315. Pâṇḍar. 129,14. दरिद्र° Sadoon. P. 4,13,*a*. bildlich: खलीभूताः कृतज्ञत्वस्य वीथयः Râǵa-Tar. 3,302. — 3) *Strasse am Himmel, eine drei Nakshatra umfassende Strecke einer Planetenbahn* Varâh. Bṛh. S. 9, 1. 5. 8. 9. VP. 266, N. 21. — 4) *Terrasse, der freie Raum zwischen Haus und Strasse* Taitt. H. an. Med. Hir. 132. — 5) *Bildergallerie* Uttarar. 6,9 (वीथिका die neuere Ausg.). — 6) *ein best. einactiges Drama* H. 284. H. an. Med. Bhar. Nâṭyaç. 18,2. 89 (सवीथीक). 103. 20,36. Daçar. 1,8. 3,5. 6. 62. Sâh. D. 286. 433. 520. fg. नानारसानां पात्र मालाद्रूपतया स्थितत्वाद्वीथीपं यथा मालविका (!) 532, Comm. Pratâpar. 20,*a*,1. 23,*a*,8. 24,*b*,9. — Vgl. अज्ञ°, उत्तर°, गज्ञ°, गो°, घन°, ग्रारूढ°, नक्तञ्चर°, नभो°, नाग°, पण्य°, पाद°, मृग°, रथ°, राज्ञ°, सुर°, सोम°, स्वर्वीथि.

वीथिका f. = वीथी Çabdar. im ÇKDr. 1) *Reihe:* तमालवनवीथिका adj. भू) Kathâs. 73, 30. — 2) *Strasse:* चत्वरापणवीथिकैः (वीथिकस्यास्त्रीत्वमार्षम् Comm.) R. 7,70,11. संवृतापणवीथिका adj. 2,41,21. — 3) *Terrasse, der freie Raum zwischen Haus und Strasse* Varâh. Bṛh. S. 53,20. am Ende eines adj. comp. f. Harîv. 12705. — 4) *Bildergallerie* (= चित्रपटगतपङ्क्ति Glosse) Uttarar. ed. Cow. 9,18. — 5) = वीथि 6) Bhar. Nâṭyaç. 18,103. — Vgl. पण्य°.

वीथीकर् *in Reihen aufstellen:* सुवर्ण °कृतम् (v. l. राशीकृतम्) MBh. 1,7364.

वीध्र (वैध्र Uṇâdis. 2,26) adj. = विमल AK. 3,2,3. H. 1436. Hallây. 1,132. n. = नभस्, वायु, अग्नि Uṇâdiv. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr. वीध्रे *bei hellem Himmel* (vgl. ἠέλιος αἴθρη): वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तम् AV. 4,20,7. पद्वीध्रे स्तनयति प्रवार्षति: 9,1,24. Kâṭy. 13,12. °बिन्दु *bei Sonnenschein gefallener Tropfen* Kauç. 46.

वैध्र्य (von वीध्र) adj. *zum hellen Himmel gehörig* u. s. w. VS. 16,38. ईध्रिय v. l. TS.

वीनाक् (von 1. नक् mit वि) m. *Brunnendeckel* AK. 1,2,8,26. H. 1092. MBh. 11,138. 146.

वीनाक्षिन् (von वीनाक्) m. *Brunnen* Hir. 41.

वीन्द्रर्क (2. वि + इन्दु - अर्क) adj. *ohne —, mit Ausnahme von Mond und Sonne* Varâh. Laghuǵ. 2,9 in Ind. St. 2,285.

वीप्सा (vom desid. von व्याप् mit वि) f. 1) *das durch das distributive ajus* (im Sanskrit durch Wiederholung des Wortes) *ausgedrückte Verhältniss* AV. Paṛiç. 4,19. P. 1,4,90. 5,4,1. 8,1,4. AK. 3,4,29(28),6. — 2) *Wiederholung* (eines Wortes) Çaṅk. zu Kaṭhân. Up. S. 13. zu Bṛh. Âr. Up. S. 141. Schol. zu Kâṭ. 1,165. Verz. d. Oxf. H. 178,*a*,11.

वीप्साविचार m. Titel einer Schrift Hall 60.

वीबर्ह (von बर्ह् mit वि) m. *das Zerstreuen, Verjagen* AV. 2,33,7. — Vgl. विबर्ह.

वीबुकोश m. *Fliegenwedel* (s. चामर) Çabdâtharan. bei Wilson.

वीमार्ग (von 1. मृज् mit वि) m. P. 6,3,121, Schol.

वीर् (zu derselben Wurzel wie 3. वयस्) Uṇâdis. 2,13. 1) m. *a) Mann;* bes. *ein kraftvoller Mann, Held;* pl. *Männer, Leute* Nir. 1,7. AK. 2,8. 2,45. H. 365. an. 2,457 (नट *Schauspieler* fehlerhaft für भट). Med. r. 68. Hallây. 2,199. Viçva bei Uṇâdis. 2,13. ṚV. 1,18,4. 114,8. 4, 29,2. गोभिः, वीरैः 5,20,4. 61,3. 6,53,2. 7,32,6. मर्त्य 4,15,5. 8,23,19. मर्य 7,1,21. वस्तृ 2,42,2. मुषि 6,23,2. दाशुषे 65,4. विदथ्य 7,36,6. रेवत् 7,42,4. AV. 2,26,4. 3,5,8. Çat. Br. 11,4,4,2. 14,8,14,1. Pâṇḍav. Br. 19,1,1. अस्मि वो वीरः so v. a. *ich bin euer Anführer* Ait. Br. 7,27. सर्पा वीरेण वीरवो ऽभि व्यामं पतन्यतः ṚV. 9,35,3. collect.: घर्मं वीरस्य 7,18,16. — मृगराजो वृकश्चैव वृद्धिमानपि मूषिकः। निर्विता पञ्चया वीरास्तस्माद्वीरतरो भवान्॥ MBh. 1,5589.3,2153. fg. पशुपाय वीरान् 10081. वीरा रणे वीरतरेण भग्नाः 4,1672. 8,445. Harîv. 1945. 8402. R. 1,1,24. 2,27,3. Varâh. Bṛh. S. 101,11. अस्य, द्विष, वीर Ragh. 7,39. Spr. (II) 1282. 1833. 1947. Kathâs. 10,29. 47,98. Râǵa-Tar. 2,103. 5,234. 6,334. 349. प्रथम Pracâ. 70,6. 72,7. पयोधिगभीर° 74,6. 83,3. Bhâg. P. 4,10, 19. 17,35. fg. उत्थान° *ein Mann der That,* वाग्वीर *ein Mann des Wortes* Spr. (II) 1199. सैन्यं स्तवीरम् R. 2,82,28. पृतना स्तवीरेव R. Gorr. 2,51,5. नर° *ein heldenmüthiger —, ausgezeichneter Mann* MBh. 3,2732. नरवीरलोक so v. a. *die Menschenkinder* Spr. 2476. वीर = श्रेष्ठ H. an. Viçva a. a. O. = उत्तर (उत्तम?) Med. Am Anfange eines comp. als Attributiv P. 2,1,58. — *b) die Leute* so v. a. *die Mannschaft, Diener,*

Zugehörige u. s. w.: असुरस्य वीरा: RV. 1,122,1. 2,30,4. 3,53,7. 56,8. 7,99,5. 10,10,2. 66,2. देवानाम् Çat. Br. 2,2,4,10. Kâty. Çr. 25,5,28. RV. 2,14,7. वीरेभिर्वीरान्वनवद्वनुष्यत: 25,2. 5,85,4. अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु 10,103,11. मा न: प्रजां रीरिषो मोत वीरान् 10,18,1. Bhâg. P. 4,7,17. °समन्वित von *seinen Mannen umgeben* Spr. 4310. — *c*) Götter, namentlich Indra RV. 1,30,5. 40,3. 4,24,1. 5,21,1. 32,1. 7,90. 8,2,23. 10,28,12. नर्य 6,24,3. शिप्रिन् 8,32,24. Çat. Br. 1,6,4,2. die Açvin RV. 5,63,10. Vishṇu Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,82. 93. 143. 146. — *d*) Mann so v. a. *Gatte*: योषेव वृतवीरा MBh. 6,560. वृतवीरासु तत्रियासु 14,833. R. Gorr. 2,88,12. यवीरा *Wittwe* Bhâg. P. 6,19,25. °हीना स्त्री Mânav. P. 35,31. — *e*) *männliches Kind, Sohn*; collect. *männliche Nachkommenschaft* RV. 2,32,4. 3,4,9. 36,10. 7,34,20. 92,3. म वीरैर्दशभिर्वि पूणा: 104,16. 8,92,4. 10,80,1. AV. 3,23,2. VS. 4,22. 7,13. 29,9. TBr. 1,3,10,7. 2,6,14. तस्य ह यवीरा वीरा धेनायत्त TS. 7,1,8,1. Çat. Br. 2,2,4,10. Çâṅkh. Gṛhj. 1,5,9. Âçv. Gṛhj. 1,13,6. Kâṭj. 35. — *f*) *Männchen eines Thiers*: वृष AV. 12,1,25. वत्स Çâṅkh. Çr. 2,6,6. 7. — *g*) *der heroische Grundton* (रस) *in einem Kunstwerke* AK. 1,1,3,17. fg. H. 294. Med. Hall. 1,92. Sâh. D. 38,13. 234. R. 1,4,7. R. Gorr. 1,3,46. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,33. Mâlav. 77. — *h*) bei den Tântrika *ein Eingeweihter* (steht zwischen दिव्य und पशु) Rudrajâmala im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 89,*a*,29. 94,*b*,24. 95,*a*,10. 101,*b*,7. — *i*) *Feuer* Mukuṭa zu AK. nach Wilson; *Opferfeuer* Bharata zu AK. nach ÇKDr. und Wilson; eine aus वीरकृत् geschlossene Bed. N. *eines best. Feuers*, eines Sohnes des Tapas MBh. 3,14168. — *k*) Bez. verschiedener Pflanzen und Wurzeln: = वाराहकन्द, लताकरञ्ज, करवीर, घर्घुन Râjân. im ÇKDr. — *l*) N. pr. a) ein Asura MBh. 1,2341. 2659. ein Sohn Dhṛtarâshṭra's 2738. Bharadvâga's 3,14138. ein Sohn des Purusha Vairâga und Vater des Prijavrata und Uttânapâda Harîv. 38. ein Sohn des Gṛdhnima 1943. zwei Söhne Kṛshṇa's Bhâg. P. 10,61,13. fg. der letzte Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 28. 30. H. an. Verz. d. Oxf. H. 186,*b*,17. 19. Çârn. 1,5. ein Sohn Kshupa's und Vater Viviñça's Mârk. P. 120,13. Vater einer Lîlâvatî 123,17. ein Lehrer des Vinaja Wassiljew 80. — Kathâs. 54,220. 223. — β) pl. eine Gruppe von Göttern unter Manu Târnasa Bhâg. P. 8,1,28. — 2) f. वीरा *a*) *eine Frau, deren Gatte und Söhne am Leben sind*, H. an. Med. Viçva a. a. O. — *b*) *ein berauschendes Getränk* Taitt. 2,10,15. H. an. Med. Viçva a. a. O. — *c*) Bez. verschiedener Pflanzen und vegetabilischer Stoffe: = तीरकाकोली, तामलकी, एलवालु (एलवालुका) und रम्भा H. an. Med. und Viçva. = गम्भारिका (गम्भारी) H. an. und Viçva. = दुग्धिका und तीरविदारी H. an. Med. = गोष्ठोडुम्बरिका H. an. = मलपू Med. = काकोली, महाशतावरी, गृहकन्या, ब्राह्मी und यतिविषा Râjân. im ÇKDr. = शिंशपा Ratnam. ebend. — *d*) N. pr. der Gattin Bharadvâga's MBh. 3,14136. Karaṁdhama's Mârk. P. 123,1. 125,1. 7. 129,34. — *e*) N. pr. eines Flusses MBh. 6,329 (VP. 183). वाणी ed. Bomb. — 3) N. = भृङ्गी H. an. Med. = भृङ्गाटक Viçva a. a. O. = नल (नउ ÇKDr.) Med. = नत H. an. = मरिच, पुष्करमूल, काञ्जिक, उशीर und घार्घुक Râjân. im ÇKDr. — Vgl. अ°, घरिष्ट°, घात्म°, उग्र°, गुप्त°, एक° (in der ersten Bed. auch Rasa. 7,52–60), चतुर्वीर, दश°, दान°, धान्य°, निर्वीर, पुरु°, प्र°, प्रति°, बद्ध°, भूत°, मन्दहीर, मरुत्°, लोक°, वज्र°, विप्र° (*ein heldenmüthiger Brahmane* Kathâs. 10,24), सतो°, सर्व°, सु°, स्पार्ह°, वीर्य, वैर und वैरेय.

वीरक (von वीर) 1) m. *a*) *Männchen* RV. 8,80,2. — *b*) = काकवीर *wohlriechender Oleander* Râjân. im ÇKDr. — *c*) pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 8,2065. — *d*) N. pr. eines der 7 Weisen unter Manu Râkshusha Bhâg. P. 8,5,5. eines Stadtaufsehers Mṛkkh. 99,14. 147,25. 148,5. — 2) f. वीरिका N. pr. der Gemahlin eines Harsha Verz. d. Oxf. H. 372,*b*, No. 267.

वीरका s. u. वीरिका.

वीरकर्मन् adj. wohl Bez. *des männlichen Gliedes* RV. 10,61,5.

वीरकर्मन् adj. *Mannesarbeit verrichtend* Nir. 10,19.

वीरकाटी f. N. pr. eines Dorfes Kshîrîç. 52,19.

वीरकाम adj. *nach Söhnen verlangend* Çâṅkh. Br. 8,5. Çr. 5,9,23. Âçv. Çr. 10,1,16.

वीरकुक्षि adj. *Söhne im Leibe tragend*: नारी RV. 10,80,1.

वीरकेतु m. N. pr. eines Mannes: पाञ्चालपुत्र MBh. 7,4893.4899. ein Fürst von Ajodhjâ Kathâs. 88,4. fgg. von Pâṭali Daçak. 24,5.

वीरकेशरिन् m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,29.

वीरकुरिका f. *Dolch*: घाकृष्ट° adj. Kathâs. 20,127.

वीरगति f. *das Loos eines Helden*, Indra's *Himmel*: °गतिमाप्नुयात् MBh. 13,6560. °गतिं गत: Bhâg. P. 4,7,13.

वीरगवात, °गवात: MBh. 7,6944 fehlerhaft für वीरा गवात:; s. u. विभु 2) *d*).

वीरगोत्र n. *eine Heldenfamilie* Mârk. P. 125,7.

वीरघ्नी f. *Männer tödtend* AV. 6,133,3. Vgl. वीरकृत्.

वीरिका f. N. pr. eines Flusses (*Helden bildend*) MBh. 6,338 (VP. 183). वीरका ed. Bomb.

वीरचक्रेश्वर m. ein N. Vishṇu's (*Herr eines Heeres von Helden*) Pârâç. 4,3,70.

वीरचक्षुस् adj. *das Auge eines Helden habend*: Vishṇu P. 7,23,8,33.

वीरचरित्र (°चारित्र?) n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1, 98.

वीरचर्य m. N. pr. eines Fürsten Târân. 227.

वीरचर्या f. *das Umherziehen eines Helden, das Ausgehen auf Abenteuer* Kathâs. 83,30. 124,57. Râja-Tar. 3,337.

वीरजयन्तिका f. *Kriegsfahne* H. 281.

वीरजात adj. wohl von *Mannesart, in Männern* —, *in Söhnen bestehend*: वसु RV. 10,36,11.

वीरजित m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 54,138.

वीरण 1) m. N. pr. eines Prâgâpati MBh. 12,13337. fg. Harîv. 70 nach der Lesart der neueren Ausg. VP. 99, N. 1. 117. als N. pr. eines Lehrers 281, N. 5 fehlerhaft für वीरणिन्. — 2) f. ई *a*) *Andropogon muricatus*: °मूल H. 1138. Hall. 2,167. — *b*) N. pr. einer Tochter des Prâgâpati Virâga Harîv. 69. VP. 99, N. 1; vgl. वीरिणी. — 3) n. = विरिण *Andropogon muricatus* AK. 2,4,5,29. H. an. 4,281. Med. r. 290. Hir. 177. Suçr. Sû. 5,2. Gobh. 3,9,4. Vaṁç. Pur. S. 30,24. 34,47. तं ददार लीलया वीरणावत् Bhâg. P. 10,11,30. °स्तम्ब, °स्तम्बक MBh. 1,1035. 1816. 1818. fg. R. 2,80,3 (87,10 Gorr.). — Vgl. वीरणक.

वीरणार्क (von वीरण) gaṇa सङ्ख्यादि zu P. 4, 2, 80. m. N. pr. eines Schlangendämons MBn. 1, 2139.

वीरणिन् m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55, a, 26.

वीरतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95, b, 16. 101, a, 27. b, 1 v. u. 292, b, 16.

वीरतम (superl. von वीर) m. *ein überaus kraftvoller Mann, der grösste Held*: वीरतमाय नृणाम् (इन्द्राय) RV. 3, 52, 8. Agni VS. 15, 52. Çiṅkh. Ça. 3, 20, 4. 8, 17, 1. AV. 7, 25, 2. Hariv. 8402. am Ende eines adj. comp.: कृतवीरतमा क्षेया धार्तराष्ट्री महाचमूः MBh. 8, 433.

वीरतर (compar. von वीर) 1) m. a) *ein kraftvollerer Mann, ein grösserer Held* H. an. 4, 280. Med. r. 290. न ह्यन्ये वीरतरस्त्वत् (इन्द्र) RV. 8, 24, 15. वीरा रणे वीरतरेण भाताः MBh. 4, 1673. 1, 5589. 8, 448. — b) *Pfeil* Hem. 53. Buddhapr. im ÇKDa. — c) *Leichnam* H. an. Med. beruht wohl nur auf einer Verwechselung von शर mit शव. — 2) n. *Andropogon muricatus* AK. 2, 4, 8, 27. H. an. Med. Ratnam. 320 (= bengal. देधान d. i. *Andr. saccharatus Roxb.*). Gobh. 2, 7, 6. °शङ्कु Pân. Gaṇ. 1, 15. गोषो वीरतरादिकः Suçr. 2, 54, 21 scheint auf die Reihe 1, 137, 19 zu verweisen, welche aber mit वीरतरु (nicht वीरतर) beginnt; vgl. 138, 1.

वीरतरासन n. Bez. *einer best. Art zu sitzen* Muṇḍamâlâtantra 3 im ÇKDa. — Vgl. वीरासन.

वीरतरु m. *der Baum des Helden* (d. i. Arǵuna's; vgl. MBh. 7, 4228), *Terminalia Arguna* (s. धवन) AK. 2, 4, 2, 35. *Asteracantha longifolia Nees.* Ratnam. 75. = वीरतर *Andropogon muricatus* Bâlâpr. im ÇKDa. = बिल्वान्तरवृक्ष und भल्लातक Rîǵân. im ÇKDa. — Suçr. 1, 137, 19. 145, 16. 370, 21. 2, 96, 4. 431, 12. Schol. zu Pân. Gaṇ. 1, 15.

वीरता (von वीर) f. *Männlichkeit, Heldenmuth* VS. 7, 12. वीरतायाम् धनंजयसमो न क्षसि MBh. 7, 4228. Kathâs. 43, 99. 108, 207.

वीरत्व (wie oben) n. dass. Ind. St. 9, 155.

वीरदत्त m. N. pr. eines Mannes: °गुरुपतिपरिपृच्छा Titel eines Werkes Index des Kandjur S. 12.

वीरदामन् m. N. pr. eines Fürsten LIA. II, 757, N. 1.

वीरदेव m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 83, 7. Râǵa-Tar. 5, 468. LIA. II, 864, N. 3.

वीरधुम्न m. N. pr. eines Fürsten MBh. 12, 4672. 4687. fgg.

वीरधन्वन् m. *der Liebesgott* Çabdârthak. bei Wilson.

वीरधर m. N. pr. eines Wagners Pañkat. 185, 10. — Vgl. वीरवर.

वीरनाथ 1) adj. (f. आ) *einen Mann* —, *einen Helden zum Schutz habend* R. 5, 33, 29. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6, 110.

वीरनारायण m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 7, Cl. 19. 23.

वीरंधर m. 1) *Pfau.* — 2) *Kampf mit wilden Thieren.* — 3) *ein ledernes Wamms.* — 4) N. pr. eines Flusses Çabdârthak. bei Wilson.

वीरपट्ट m. *Heldenbinde* (um die Stirn) Râǵa-Tar. 5, 332. उष्णीषो वीरपट्टेन 7, 1491. 8, 846. 2019.

वीरपत्नी f. *eine best. Pflanze*, = विजया Rîǵân. im ÇKDa.

वीरपत्नी f. *Weib eines tüchtigen Mannes, — Helden* AK. 2, 6, 1, 16. H. 515. RV. 1, 104, 4. 6, 49, 7. Kauç. 6. MBh. 1, 3657. 7981. 5, 669. 3223. °व्रत Hariv. 2949. Milav. 91. Bulc. P. 4, 26, 24. Mâlav. P. 125, 7. रघु° Rgh. 14, 13.

वीरपर्ण n. = मुरपर्ण Rîǵân. im ÇKDa.

वीरपस्त्य adj. *zu eines tapferen Mannes Hof gehörig* RV. 5, 30, 4.

वीरपाण und °पान (vgl. P. 8, 4, 10) n. *Heldentrank, ein von Kriegern vor oder nach der Schlacht eingenommener Trank* AK. 2, 8, 3, 71. R. 4, 9, 72 (wo वीरपानं zu schreiben ist). °पाणक n. dass. H. 802.

वीरपाण्ड्य m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 128, a, 18.

वीरपान s. u. वीरपाण.

वीरपाल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8, 2183.

वीरपुर n. N. pr. einer *Stadt* im Gebiete von Kânjakubǵa Hit. 39, 13. einer mythischen *Stadt* auf dem Himâlaja Kathâs. 52, 169. 293.

वीरपुरुष m. *ein tapferer Mann, Kriegsheld* P. 2, 1, 58, Schol. Kathâs. 12, 3. Pañkat. 218, 2. am Ende eines adj. comp. (f. आ) Hariv. 3099. R. 2, 33, 27.

वीरपुष्पी f. = सिन्दूरपुष्पी Rîǵân. im ÇKDa.

वीरपेशस् adj. *den Schmuck der Männer (Söhne) habend* oder *bildend*: द्रविण RV. 4, 11, 3. 10, 80, 4.

वीरप्रजावती f. *Mutter eines Helden* Mârk. P. 125, 7. 126, 1.

वीरप्रभ m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 59, 25.

वीरप्रमोक्ष N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 8029.

वीरबलि m. Titel einer Schrift Hall 197.

वीरबाहु 1) adj. *Heldenarme habend*, unter den 1000 Namen Vishṇu's nach ÇKDa. — 2) m. N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 2728. 4551. 6, 2338. 2844. 7, 6935. verschiedener Fürsten und Männer aus der Kriegerkaste 3, 2708 (Gatte der Sunandâ). Kathâs. 13, 24. 52, 216. 58, 5. 61, 223. 84, 3. 112, 147. Verz. d. Oxf. H. 152, b, 27. N. pr. eines Affen R. 4, 33, 18. 6, 82, 20.

वीरबुक्क m. N. pr. eines der Gründer von Vigajanagara im ersten Drittel des 14ten Jahrhunderts n. Chr. Buanouf in der Einl. zu Bulc. P. I, LX, N. बुक्कमक्षीपति Sây. in der Einl. zum RV.-Comm. 3; vgl. बुक्कराय.

वीरभट m. N. pr. eines Fürsten von Tâmraliptî Kathâs. 44, 42.

वीरभद्र m. 1) *ein grosser Held* H. an. 4, 280. Med. r. 289. — 2) *ein zum Opfer bestimmtes Ross* diess. — 3) *Andropogon muricatus* diess. und Hîm. 177. — 4) N. pr. a) eines Rudra Mit. 142, 6. Weber. Râmây. Up. 304. 312. — b) eines Wesens im Gefolge Çiva's, das Daksha's Opfer zu Schanden macht, Vâlm. beim Schol. zu H. 210. MBh. 12, 10233. fgg. Verz. d. Oxf. H. 45, b, 24. VP. 65. fgg. Bulc. P. 4, 5, 17. Wilson, Sel. Works I, 212. Kathâs. 50, 73. 147. Pañkat. 1, 7, 74. 15, 7. °जित् unter den Namen Vishṇu's 4, 3, 74. °सुता Mârk. P. 123, 17. — c) eines Kriegers auf der Seite der Pâṇḍava MBh. 7, 7011. — d) eines Fürsten Hall 79. — e) eines Autors Hall in der Einl. zu Vîrabhadr. 11. Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 95, b, 16. Verz. d. Cambr. H. 54.

वीरभद्रक n. *Andropogon muricatus* Gaṇîkn. im ÇKDa.

वीरभवत् m. ehrendes Pronomen der 2ten Person mit dem Beiworte *Held*: तदर्घमेव चानीतो मया वीरभवानिह Kathâs. 10, 44.

वीरभानु m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 154, b, 3. eines Autors 143, a, No. 202.

वीरभार्या f. = वीरपत्नी AK. 2,6,4,16. H. 513.

वीरभुक्ति N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,35. 339,b, 12. 45. nach Aufrecht wohl fehlerhaft für तीरभुक्ति.

वीरभुज m. N. pr. zweier Fürsten Kathâs. 39,3. 20. 42,137.

वीरभूपति m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 371,b, No. 248.

वीरमत्स्य m. pl. N. pr. eines Volkes R. 2,71,5.

वीरमय (von वीर) adj. bei den Tântrika *dem Eingeweihten gehörig.* — *zukommend:* दिव्यवीरमयो (das suff. gehört zu beiden Wörtern) भावः कलौ नास्ति कदा च न। केवलं पशुभावेन मन्त्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम्॥ Mahânirvâṇatantra im ÇKDn. unter वीर.

वीरमर्दन m. N. pr. eines Dânava Harîv. 12943.

वीरमर्दल m. *Kriegstrommel* H. an. 4,131. °क (वीरमर्दनक gedr.) Med. kh. 26.

वीरमातृ f. *Mutter eines Mannes (männlichen Kindes), — Helden* AK. 2,6,4,16. H. 558. MBh. 5,3966. Bhâg. P. 9,14,40.

वीरमानिन् adj. *sich für einen Mann haltend* Bhâg. P. 9,14,28. 15,21.

वीरमार्ग m. *die Laufbahn eines Helden* MBh. 13,2967. Harîv. 4773.

वीरमित्रोदय m. Titel eines juristischen Werkes Gild. Bibl. 463. Verz. d. B. H. No. 1403.

वीरमिश्र m. N. pr. eines Juristen Ind. St. 1,238. fg. Verfassers des Vîramitrodaja Gild. Bibl. 463. मित्रमिश्र Verz. d. Oxf. H. 295,a, No. 713.

वीरमुकुन्ददेव m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 181,b, 6. — Vgl. मुकुन्ददेव.

वीरय् (von वीर), वीरयते Dhâtup. 35,49 (विक्रान्तौ). *sich männlich benehmen, sich tapfer beweisen:* इन्द्रमनु वीरयध्वम् ṚV. 10,103,6. 128,5. 1,116,5. VS. 11,68. TBr. 2,7,8,1. Nir. 1,7. act. in einer Etymologie so v. a. *bewältigen* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,93.

वीरयी (von वीरय्) instr. etwa *mit Kampfeslust* ṚV. 9,64,4.

वीरयु (wie eben) adj. *tapfer, kampflustig* ṚV. 8,81,28. 9,36,2.

वीरयोगवह् adj. *die einem Manne, einem Helden anstehenden Mittel anwendend* MBh. 13,6362. वीरयोगमह् *solchen Mitteln widerstehend* ed. Bomb.

वीररत्न n. *Mennig* Râgân. im ÇKDn.

वीरराघव m. N. pr. eines Mannes Hall 38.

वीरलेणु m. Bein. Bhîmasena's Trik. 2,8,18.

वीरललित n. *die natürliche, ungesuchte Handlungsweise eines Helden* (mit Anspielung auf ein Metrum gleiches Namens, das bei Anderen धीरललित heisst) Vaidjan. Bhâm. S. 104,41.

वीरलोक m. 1) *die Welt der Helden*, Indra's *Himmel* MBh. 6,116. 13,6362. R. 2,23,39. — 2) pl. *tapfere Männer:* कोऽयं वीरलोकानां समेतः कुरुवाङ्गले MBh. 6,160.

वीरवत्सल adj. etwa *Männer stärkend* ṚV. 5,48,2.

वीरवत्सा adj. f. *männliche Nachkommenschaft habend, Mutter eines Sohnes* oder *von Söhnen* Gaṇiân. im ÇKDn.

वीरवत् (von वीर) 1) adj. a) *Männer —, Mannschaft —, Söhne habend; männerreich:* सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम ṚV. 4,50,6. Ushas 7, 41,7. 80,3. Âçv. Bh. 7,18. तैस्ते तत्र वीरवन्त आसन् *jene hatten sie zu tapfern Kämpfern* 7,17. ग्राष्ट्र 8,9. वीरवन्तो भविष्यथ Bhâg. P. 9,16,38. स्त्रियः *Frauen, deren Männer am Leben sind,* 6,18,52. 19,18. *in oder aus Männern bestehend,* n. *Reichthum an Männern oder Söhnen* ṚV. 1, 190,3. रयि 2,11,13. 5,4,11. रत्न 7,75,3. पोष 1,1,3. प्रजा TBr. 3,1,4, 10. 8,2. मघोनीर्वीरवित्पर्यमाणाः ṚV. 6,65,3. वीरवद्धातु गोमत् 7,23,6. 9,9,9. 63,18. — b) *männlich, heldenhaft:* पशून् ṚV. 4,32,12. 5,79,6. अवन् 4,36,9. इष् 1,12,11. 8,43,15. 9,30,3. Soma 35,3. — 2) f. वीरवती a) *eine best. wohlriechende Pflanze,* = मांसरोहिणी Bhâvapr. im ÇKDn. — b) ein Frauenname Kathâs. 53,90. 151. 78,9. 73. — c) N. pr. eines Flusses MBh. 6,332 (VP. 183).

वीरवर m. *ein ausgezeichneter Held*, N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 53,89. fgg. 78,6. fgg. Hit. III, 90. 98,7. fgg. Vet. in LA. III) 23,15. fgg.

वीरवरप्रताप m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 181,9. Aufrecht scheint das Wort nicht als N. pr. gefasst zu haben.

वीरवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 116 (LXII). Kathâs. 19,33.

वीरवह् oder °वाह् adj. *Männer führend:* Rosse (°वाहस्) ṚV. 7,42, 2. Wagen 90,5.

वीरवाक्य n. *das Wort eines Helden, ein heldenmüthiges Wort* Miss. P. 63,12. Davon adj. °मय *aus solchen Worten bestehend:* वचस् Kathâs. 109,110.

वीरवामन m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 239,a,12.

वीरविक्रम m. N. pr. eines Fürsten Hit. 63,6.

वीरविद् adj. *Männer verschaffend* AV. 11,1,15.

वीरविप्रावक m. *ein Brahmane, der ein Opfer mit Gehilfen von Çûdra vollbringt,* H. 861.

वीरविरुद n. Bez. *einer best. künstlichen Strophe* Verz. d. Oxf. H. 133,a, No. 244.

वीरवृक्ष m. *Semecarpus Anacardium* Lin. AK. 2,4,2,23. H. an. 4, 333. Med. kh. 34. *Terminalia Arjuna (der Baum des Helden d. i. Arguna's;* vgl. वीरतरु) H. an. Med. = वित्तवातर Râgân. im ÇKDn. = वृक्षहात Ratnam. 320.

वीरव्यूह m. *eine muthigen Kämpfern zusagende Schlachtaufstellung:* °रणे रतः R. 6,70,38.

वीरव्रत 1) adj. *nach Mannesart verfahrend* so v. a. *seinen Vorsätzen treu bleibend* Bhâg. P. 5,17,2. 10,87,45. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Madhu von der Sumanas Bhâg. P. 5,15,13.

वीरशय्य m. *das (aus aneinandergelegten Pfeilen gebildete) Ruhebett eines gefallenen (oder verwundeten) Helden* Bhâg. P. 3,17,31. 6,10,39.

वीरशयन n. dass. MBh. 5,4249. 4260. 6,3763. 13,1780. 7689. 14,2366. Râga-Tar. 7,1497. 8,2116.

वीरशय्या f. 1) dass. MBh. 6,1880. 3725. Râga-Tar. 5,335. 7,1668. 8,2330. Bhâg. P. 10,44,44. — 2) Bez. *einer best. Art des Liegens bei Asketen* MBh. 13,356. 6313.

वीरशर्मन् m. N. pr. eines Kriegers Kathâs. 47,19. 52,43. fgg.

वीरशायिन् adj. *als gefallener Held auf einem* (aus Pfeilen gebildeten) *Ruhebette liegend* MBh. 13,2966. — Vgl. वीरशय.

वीरश्रुष्म adj. *männermuthig* ṚV. 1,53,3.

वीरशैव m. pl. Bez. einer Çiva'itischen Secte Wilson, Sel. Works I,

225. fgg.

वीरसरस्वती m. N. pr. eines Dichters Verz. d. T. H. 13.

वीरसिंह m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 292,*b*,16. verschiedener Fürsten 133,*b*,14. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,545,9. 7,8, Çl. 9. °देव 6,543,8. Verz. d. Oxf. H. 295,*a*, No. 713.

वीरसुख n. *die Freude eines Helden, — eines kriegerischen Lebens* (Gegens. ग्राम्यसुख) MBu. 5,3225.

वीरसू adj. *Männer gebärend, f. Mutter eines Sohnes* AK. 2,6,4,16. H. 538. RV. 10,85,44. AV. 14,2,43. Gobh. 2,7,12. Jiñ. 1,76. MBu. 1, 7353. 3,1389. 1402. 5,3223. वीरसूवेन (माता स्मृता) वीरसू: 12,9513. R. 2,51,18. 86,16 (94,17 Gorr.). Ragh. 14, 6. Mâlav. 91. Bhâg. P. 1,7, 45. 4,9,50 (°सुवम् gen.). 28,20. Spr. (II) 613. als masc.. वीरसूनां देशानां कुरुनाङ्गलम् *Helden erzeugend* MBu. 1,4360.

वीरसूत्र (von वीरसू) n. *das Gebären von Männern, — Söhnen* MBu. 12,9513.

वीरसेन (वीर + सेना) 1) m. N. pr. verschiedener Personen: Fürst von Nishadha und Vater Nala's MBu. 3,2067. 2072. 2466 (°सुतप्रिया = दमयन्ती). Fürst von Simhala Kathâs. 120,93. von Murala Daçak. 193,11. in Kâñjakubga Hit. 39,17. Verz. d. Oxf. H. 153,*a*, No. 328. Mörder seines Bruders Bhadrasena, Fürsten von Kalinga, Hall in der Einl. zu Vâsavad. 33. Heerführer Agnimitra's Mâlav. 9,10. 69, 1. 2. 70,12. ein Sohn Vigatâçoka's Târan. 2. 50. 52. 61. ein Dânava Kathâs. 47,17. — 2) n. *eine best. Pflanze*, = धारुक Râéan. im ÇKDa.

वीरसोम m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 329,*a*, No. 780.

वीरस्थ adj. *bei einem (tapfern) Manne befindlich:* पशव: Kâty. 12,8.

वीरस्थान n. 1) *Ort* oder *Stellung eines tapfern Mannes* (= ऋतवस्थान Comm.) Sâṅkh. Br. 4,5. — 2) Bez. *einer best. Stellung der Asketen:* (तपस्तेपे) स्थाणुभूतो महातेजा वीरस्थानेन (= वीरासनेन Nîlak.) MBu. 3, 10317. 12,11278. वीरासनं वीरशय्यां वीरस्थानमुपागत: 13,856 (= स्वर्गलोक Nîlak.). 2949. वीरशय्यामुपासद्भिर्वीरस्थानोपसेविभि: 6318 (= महारण्यं भीरुभिरप्रवेश्यम् Nîlak.). — 3) N. pr. einer dem Çiva geheiligten Stätte MBu. 7, 9609.

वीरस्थायिन् adj. *die* वीरस्थान *genannte Stellung einnehmend* MBu. 13,6560.

वीरस्वामिन् m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,15.

वीरहत्या f. *Männermord* Taitt. Âr. 10,10. M. 11,41 (वीर = पुत्र Kull.). Nrs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,117. Weber, Râmat. Up. 333.

वीरहन् adj. 1) *Männer tödtend, Todtschläger* VS. 30,5. वीरहा देवानां य: सोममभिषुणोति Pañkav. Br. 16,1,12. वीरहा वा एष देवानां यो ऽग्निमुद्वासयते (daher die Bed. 2) TS. 1,5,9,1. 2,2,5,5. TBr. 3,2,8,12. Kâty. 31,7. Pañkav. Br. 12,6,8. वीरहणं परेषाम् (feindliche) *Männer tödtend* (vgl. पर °) R. 3,55,28. 7,23,6,52. यदा वीरहणो MBu. 9,3238. — 2) *der das heilige Feuer hat erlöschen lassen* AK. 2,7,52. H. 855. Hall. 2,249. Manom. zu VS. 30,5.

वीरहोत्र m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,55.

वीरावलीमालाविरुद n. Bez. *einer künstlichen Strophe im Panegyricus* (विरुद) Virudâvalî, so genannt, weil die einzelnen Attribute des *Helden* (वीर) *in alphabetischer Ordnung* (वलीमाला) aufgezählt werden, Verz. d. Oxf. H. 133,*a*, No. 244.

वीराधन् (वीर + ध°) m. *die Laufbahn eines Helden* MBu. 13,6260. 6563. so v. a. *ein heldenvoller Tod* VP. (2te Aufl.) 2,104; vgl. महाप्रस्थान unter प्रस्थान 1).

वीरानक N. pr. einer Oertlichkeit Râéa-Tar. 5,213. fg. 8,411.

वीरापुर n. N. pr. einer *Stadt* Hall 123.

वीराम्ल m. = धमवेतस *Rumex vesicarius* Râéan. im ÇKDa.

वीराय् (von वीर) *den Helden spielen:* वीरायितमनेन (impers.) Utsarg. 109,6. 7 (148,3).

वीरारुक n. *eine best. Pflanze*, = धारुक, वीरसेन Râéan. im ÇKDa.

वीराशंसन (वीर + धा°) 1) adj. *Helden ankündigend.* — 2) n. *der Ort in der Schlacht, wo der Kampf am heftigsten wüthet*, AK. 2,8,2,68. H. 801.

वीराष्टक (वीर + ध°) adj. *aus acht Männern bestehend*, Bez. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBu. 3,14398.

वीरासन (वीर + 1. धा°) n. 1) Bez. *einer best. Art zu sitzen bei Asketen:* वामोरूपरि दक्षिणाङ्घ्रिं प्रतिष्ठाप्य स्थितिर्वीरासनम् Comm. zu R. 7,10,4; vgl. Mallin. zu Kumâras. 3,45. Comm. zu Ragh. ed. Calc. 13, 52. Verz. d. Oxf. H. 102,*b*,20. fg. — 11,*a*, N. 1. 234,*a*,16. रात्रौ वीरासनं वसेत् M. 11,110. MBu. 13,356. R. Gorr. 2,28,25. 108,13 (100,14 Schl.). 7,10,4. Ragh. 13,52. Sarvadarçanas. 174,5. °गत R. 7,23,28. MBu. 12,11271. 13,6315. °गति (wohl °गत zu lesen; °रत ed. Bomb.) 6560. — 2) = ऊर्धावस्थान *das Stehen auf einem erhöhten Platze* (nach dem Comm.) Bhâg. P. 5,9,14. an zwei anderen Stellen (1,16,17 und 9,2,3) nach dem Comm. *das Wachen bei Nacht mit einem Schwerte in der Hand*, welche Bed. auch 3,9,14 passen würde.

वीरिण m. (selten) und n. *Andropogon muricatus*, ein Gras mit wohlriechender Wurzel; die Halme von der Dicke eines Gansekiels werden 4 bis 6 Fuss hoch. Çat. Br. 13,8,1,15. यस्मिन्कुशवीरिणं प्रभूतम् Âçv. Grhj. 2,7,4. Kauç. 18. 26. Schol. zu Kâty. Çr. 8,3,26. °तूल Kauç. 25. कर्पूवीरिणवत् Kâty. Çr. 21,3,26. — Vgl. वीरण, दुर्वीरिण und वैरिण.

वीरिणी (von वीरिन् und dieses von वीर) f. 1) *Mutter von Söhnen* RV. 10,86,9. — 2) Beim. der Asikni, der Gattin Daksha's, MBu. 1,3131. Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,14. Kâlikâ-P. 8 im ÇKDa. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,306, Çl. 22; vgl. वीरणी unter वीरण und वैरणी. — 3) als N. pr. eines Flusses Matsjop. 5 fehlerhaft für चीरिणी, wie beide Ausgg. des MBu. lesen.

वीरुध् (रुध् = रुह् mit वि) f. (m. MBu. 1,1836) gaṇa न्यङ्कादि zu P. 7,3,53. Vop. 26,82. *Gewächs, Kraut* RV. 1,67,9. 141,4. 2,1,14. 35, 8. 10,40,9. 48,4. 91,6. 145,1. AV. 1,32,3. 34,1. 2,7,1. 5,4,1. 19,35,4. वीरुधां पति: 4,19,9. Soma RV. 9,114,2. der Mond MBu. 5,3289. fünf Reiche der Kräuter AV. 11,6,15. TS. 2,5,8,2. 3,12,6,2 (= वल्ली Comm.). — Jiñ. 3,36. शरीरमसि वीरुधाम् (धो) MBu. 1,3410. Harîv. 12181. Ragh. 8,36. Kumâras. 5,34. Çik. 106. Vikr. 38. Spr. 1946. Uttarar. 33,15 (44,10). Bhâg. P. 3,10,18. 4,18,8 (mit ओषधि wechselnd). 5,20,46. कूपे वीरुत्तृणावृते MBu. 1,3396. Râéa-Tar. 1,372. शुष्कपर्णतृणवीरुधा वर्तमान: Bhâg. P. 5,8,30. सुपक्वौषधीवीरुध: (जनपदा:) 1,8,40. सवनस्पतिवीरुध: — ओषधय: 10,5. 8,24,42. निवेश° Kir. 4,19. im System *kriechende Pflanzen und niederes Sträucher:* प्रतानवत्य: स्त-

म्बिन्यश्च वीरुधः Sūtra. 1,4,17. वृताणाम् — गुल्मवल्लीलतानां च पुष्पितानां च वीरुधाम् M. 11,142. गुल्मगुच्छतृणलताप्रतानौषधिवीरुधाम् Jṭḱ. 2,229. = गुल्मिनी AK. 2,4,1,9. H. 1118. Vaij. bei Mallin. zu Kir. 4, 19. = लता H. an. 2,250 (वीरुल्लतायां zu lesen). Med. dh. 36. = विटप diess. und Halāj. 2,35. = कत्त 3,47. AK. 3,4,29,221. = वल्ली Vaij. a. a. O. — Vgl. निर्वीरुध्.

वीरुध n. dass. AV. 6,21,2. वीरुधा f. dass. Çabdar. im ÇKDa. unbestimmt ob n. oder f.: वीरुधोषधिमानवान् Mārk. P. 17,13.

वीरुधि wohl f. dass.: वीरुधः Varāh. Bṛ. S. 54,37.

वीरेण्य (von वीर) adj. *mannhaft:* वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः मुशस्तिः RV. 10,104,10.

वीरेश (वीर + ईश) m. 1) *eine Form Çiva's*, n. *ein Liṅga desselben* Viraçvarastotra im ÇKDa. — 2) bei den ekstatischen Çaiva Bez. *eines Seligen auf einer best. Stufe* Sarvadarçanas. 88,5.

वीरेश्वर (वीर + ईº) 1) = वीरेश 1) Verz. d. B. H. 147,a,4. 6. 7. वीरेश्वरं लिङ्गं काश्याम् Kāçīkh. 10 im ÇKDa. °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 71, b,29. — 2) m. N. pr. eines Weisen im Gefolge Çiva's, = वीरभद्र Çaṅkarāṅk. bei Wilson. eines Mannes aus dem 17ten Jahrh. n. Chr. Verz. d. Oxf. H. 380,a,5. °भट्ट 246,a, No. 618. °मकाउकर Hall 94. — Vgl. मनोकर°.

वीरोक्त (वीर + उ) adj. *das Opfer unterlassend* H. 860.

वीरोपजीवक (वीर + उº) adj. *betrügerischer Weise, als wenn es sich um die Unterhaltung des heiligen Feuers handelte, um Almosen bittend* H. 860. वीरोपजीविक schlechte v. l.

वीर्त्सा (vom desid. von वर्ध् mit वि) f. *das Verwirklichenwollen* AV. 5,7,1.

वीर्य (von वीर) ved., वैर्य in der späteren Sprache Çiṅkh. 4,9. n. (nach Buhl. zu AK. auch वीर्या f. ÇKDa.) 1) *Männlichkeit, Tapferkeit; Kraft, Wirksamkeit, Energie* AK. 1,1,2,29. 3,4,24,156. Taitt. 1,1,129. H. 300. an. 2,382. Med. j. 40. RV. 1,55,3. नकीन्द्र को वीर्या परः 80,15. 163,3. अग्निः संनेति वीर्याणि 3,25,2. प्रुष्मेण, वीर्येण 4,50,7. 8,24,21. Çat. Br. 3,3,2,3. 12,7,2,2. AV. 1,7,5. 3,19,1. Ait. Br. 3,2. 4,2. Âçv. Gṛhj. 2, 6,3. Kenop. 18. विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ठं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः Spr. 3044. M. 11,31. fg. °संपन्न MBh. 3,2446. घर्ज्जितं स्वेन वीर्येण फलशाकम् Spr. (II) 580. विष्णुना सदृशो वीर्ये R. 1,1,18. 3,9. 55, 20. करामि वीर्यादुःखं ते 2,21,19. 36,4. 4,5,23. Spr. 2287. 2376. fgg. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः Raghu. 2,4. 3,62. समर्थये वीर्यमृङ्गमिव भग्नमात्मनः 11,73. Vikr. 16. Varāh. Bṛ. S. 46, 28. 63,3. 76,12. Kathās. 32,73. Bhāg. P. 6,17, 31. महावीर्यपराक्रम adj. MBh. 1,5028. प्रख्यातो बलवीर्येण 3,1807. व्याघ्रबलवीर्यान्वित (सूनु) R. 2,70,23. शौर्यवीर्यगुणोपेत (सेनाध्यक्ष) Spr. 3174. सत्त्ववीर्यगुणोपेत (नाग) R. 1,6,22. वीर्यमोजो बलम् Bhāg. P. 4,18, 15. शौर्य, वीर्य, धृति, तेजस् beim Krieger 7,11,22. शक्ति, बल, ऐश्वर्य, वीर्य (*vigour, which counteracts change, as that of milk into curds, and obviates alteration in nature*) und तेजस् bei Vâsudeva Colebr. Misc. Ess. I, 415. अतिवीर्या तपस्विनी R. 5,51,20. उत्कृष्ट° adj. Spr. (II) 1671. मदवार्य° adj. (der Liebesgott) 1554. समवीर्य adj. (I) 2495, v. l. भोगीव मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः Raghu. 2,32. रेतसः Ait. Br. 4,9. छन्दसाम् 1,6. वाचः Çiṅkh. Ça. 18,15,12. पद्मानलो दारुणि रुद्धवीर्यः Bhāg. P. 3,8,11. अग्नि° Suçr. 1,32,9. मेघज्ञ° 117,11. 147,2. 148,3. शीत°, स्निग्ध°, द्रुत°, उष्ण-वीर्यव 12. fgg. यत्कस्याश्च वीर्यं तत्क्रियते येन या क्रिया Vikr. 9,13. Çiṅkh. Sāṅkh. 1,2,12. धनुषः R. 1,33,10. धर्म° MBh. 13,4556. R. 1,3,4. तपसः 60,12. Çiv. 53. Brahma-P. in LA. (III) 49,17. तपो° 54,8. मन्त्र° Rāja-Tar. 4,602. योग° Bhāg. P. 5,1,12. विज्ञान° 10,19. तेषाममृतवीर्याणां रसानाम् MBh. 1,1138. *Kraft, Macht* eines Planeten Varāh. Bṛ. 2,21. 4,12. 15. वीर्यान्वित 25(23),9. °ग *eine Stelle einnehmend*, wo er (der Planet) *mächtig ist*, 15,1. — 2) *Mannesthat, Heldenthat:* इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार RV. 1,32,1. 131,4. 154,1. 3,12,2. 18,39, 3. तत्रिणो वीर्यं कर्तुमर्हति Ait. Br. 8,17. कृतवान्वीर्याणि Bhāg. P. 1,1, 20. 3,22. 7,10,69. 10,37,21. घनिरुद्धस्य वीर्याण्यो विवाहः क्रियताम् so v. a. *durch eine Heldenthat erreicht* Harīv. 10888. — 3) *männliche Kraft, Samen* AK. 2,6,2,13. 3,4,20, 229. Taitt. 3,3,317. H. an. Med. Hall. 3,16. 5,75. Çāṅkh. Sāṅkh. 1,5,25. तस्यां समभवद्गर्भो भृगुवीर्यसमुद्भवः MBh. 1,575.2389. वस्कन्दे वीर्यमम्भसि 9,2219. घघ्रौ तस्मिन्वीर्यं स्वमादधे Kathās. 20,81. 32,102. Bhāg. P. 2,10,13. fg. 3,5,26. तस्यां ससर्ज कतिधा वीर्यम् 21,4. 7,7,9. 8,17,23. 9,20,36. बादरायणवीर्यज्ञ 3,5,19. 8, 13,34. Mārk. P. 63,4. तदुदरे वीर्याधानं चकार मः Pārāç. 2,3,33. — 4) *Gift* Bhāg. P. 10,6,10. — Vgl. अ°, अमित°, उत्क्रय°, गो°, दृष्ट°, नाना°, नि°, निर्वीर्य, प्रति°, बल°, बहु° (adj. *kräftig, sehr wirksam:* ओषधयः MBh. 13,4699), बाहु° (auch MBh. 5,7033. R. Gorr. 2,82,24. Spr. 4633), मत्त°, महा° (adj. auch MBh. 1,5878. 12,4264), मुनि°, यज्ञ°, पद्मावीर्यम्, वाग्वीर्य, विचित्र°, विश्वतो°, विश्वधा°, शत°, सु° u. s. w.

वीर्यकाम adj. *männliche Kraft wünschend* Ait. Br. 1,3. Bhāg. P. 2,3,3.

वीर्यकृत् adj. *Mannesthat verrichtend:* Indra VS. 10,25 (gen. °कृतस्). TBr. 2,7,15,6 (gen. °कृतस्).

वैर्यकृत adj. nach dem Comm. *mit Kraft begabt* TBr. 2,7,12,3. vermuthlich entstellt.

वीर्यचन्द्र m. N. pr. des Vaters der Virâ, der Gattin Karaṁdhama's, Mārk. P. 123,1.

वीर्यतम (von वीर्य mit dem suff. des superl.) adj. (ungrammatisch st. वीर्यवत्तम) *der kräftigste, wirksamste, mächtigste:* सर्वेषां भूतानां नृसिंहः Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,94. घगद् Bhāg. P. 6,2,19.

वीर्यधर m. pl. Bez. der Kshatrija (*Energie besitzend*) in Plakshadvîpa Bhāg. P. 5,20,11.

वीर्यपण adj. (f. आ) *durch Heldenmuth erkauft:* eine Gattin Bhāg. P. 4,28,29. — Vgl. वीर्यशुल्क.

वीर्यपारमिता s. u. पारमिता.

वीर्यप्रवाद n. Titel des 3ten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften der Gaina H. 247.

वीर्यभद्र m. N. pr. eines Mannes Tīrān. 244.

वीर्यमत्त MBh. 3,16610 fehlerhaft für वीर्यमत्त, wie die ed. Bomb. liest.

वीर्यवत्तरत्व n. nom. abstr. vom compar. von वीर्यवत् Çaṅk. zu Kaṭhop. Up. S. 43.

वीर्यवत्ता (von वीर्यवत्) n. *Kraft, Macht* MBh. 4,1702.

वीर्यवत् (von वीर्य) 1) adj. *a) kräftig, wirksam, tüchtig, mächtig* Nir. 2,4. AV. 2,5,1. यो ब्राह्मणो बह्वृचो वीर्यवान्स्यात् Ait. Br. 2,36. 4,2. TBr. 2,1,4,8. Çat. Br. 1,2,4,6. 3,4,1. पशवः 8,2,4,19. Personen MBh. 1,5019. 3,16747. R. 1,1,2. 8,17. 2,55,15. 72,17. 96,44. 104,28. 4,9.

so. Bhâg. P. 2,3,3. 3,5,26. 4,6,42. 10,61,8. Planeten Varâh. Bṛh. 2, 21. वृक्षवल्लरपलमूलानि MBh. 12, 2680. शोषधानि Kumâras. 2,48. मुषल Mâns. P. 116,24. कर्मन् *Kraft erfordernd* Kâṭhâ. Up. 1,3,5. compar. वीर्यवत्तर *wirksamer* 1,10. superl.: प्रजापतिर्देवानां वीर्यवत्तमः Çat. Br. 13, 1,2,5. विद्या M. 2,114. — *b*) *samenreich* Kâṭhâ. 1,77 (zugleich in der Bed. *a*). — 2) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBh. 13,4336. eines der Söhne des 10ten Manu Harîv. 474. Mârk. P. 94,15. — 3) f. वीर्यवती N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2626. — Vgl. वीर्यावत्.

वीर्यवादिन् adj. *Samen fuhrend* Çânkh. Sâlin. 1,5,24.

वीर्यवर्धिकर adj. *Samen fördernd;* n. *ein Aphrodisiacum* Râjân. im ÇKDa.

1. वीर्यशुल्क n. *Männlichkeit* oder *Heldenmuth als Kaufpreis* (einer Gattin) Rasn. 11,47.

2. वीर्यशुल्क adj. (f. घा) *durch Männlichkeit* oder *Heldenmuth erkauft* oder *zu erkaufen:* eine Gattin MBh. 1,3829. 5,5955. 5967. 6006. R. 1, 66,15. 17. 67,23. 25. 68,6. — Vgl. वीर्यपण.

वीर्यसत्त्ववत् (von वीर्य + सत्त्व) adj. *Männlichkeit und Muth besitzend* MBh. 3,2678.

वीर्यसह् m. N. pr. eines Sohnes des Fürsten Saudâsa R. 7,65,10.

वीर्यसेन m. N. pr. eines Mannes Vîr. de Hioue-tsiang 113. — Vgl. वीरसेन.

वीर्यहारिन् adj. *die Manneskraft raubend;* m. N. eines bösen Geistes Mârk. P. 51,97.

वीर्यावत् adj. = वीर्यवत् 1) *a*) TS. 2,4,9,1. 5,2,4,3. TBr. 1,7,8,2. 2, 8,8,7. 3,1,9,4. Kâṭy. 27,5.

वीरु s. वीरु.

वीवध und वीवधिक s. विवध und विवधिक.

वीसर्प s. u. विसर्प 2).

वुड्, partic. वुडित als Umschreibung von मग्न *untergetaucht* Schol. zu Kâṭy. Çr. 20,8,16. — Vgl. व्रुड्, क्रुड् und क्राउन Schol. zu Kâṭy. Çr. 5,5,31. Weber, Hâla S. 259.

वुक्का (वुक्का) s. नील°, श्वेत°.

वुर्य° s. क्षत्र°.

वृक (von व्रश्च्) Çiñ. 2,7 (वृकी Uṇâdis. 3,41). 1) m. *a*) *Wolf* AK. 2,5, 7. H. 1291. Hall. 2,73. RV. 1,42,2. 103,7. ते मेधसाति पणयो वसूनि वृकस्य वर्तिं दुरितस्य पारे 11. 116,14. 2,29,6. 5,51,14. 7,38,7. 68,8. उतो न धूनुते वृकः 8,34,3. 55,8. 3,79,3. 10,39,13. रभस 95,14. AV. 7,95,2. 12,1,49. घघायु VS. 4,34. 19, 10. 92. Çat. Br. 3,3,4,10. 11,3,1,8. 12,7,1,8. °लोमन् 3,3,4,16. 12,9, 1,6. Kâṭy. Çr. 15,9,20. 19,2,23. Kâṭhâ. Up. 6,9,3. यन्नाविके तु मरुद्दे वृकैः, यो प्रसह्य वृको हन्यात् M. 8,235. यामुत्पुत्य वृको हन्यात् 236. वृको (भवति) मृगोभम् (कृत्वा) 12,67. वृकवच्चावलुम्पेत Spr. 2695. MBh. 1,5868. अवलुम्पनं कृत्वा 5586. 6,4357. °पद 12,4339. 12086. ज्वरामृत्यू हि भूतानां खादितौरो वृकाविव Spr. (II) 2350. Sucr. 1,202,9. Varâh. Bṛh. S. 70,22. 86, 27. 88,3. Râjâ-Tar. 2,85. 4,693. Bhâg. P. 1,18,8. 3,10,22. 4,6,21. 29,53. 5, 8,9. 15. 14,3. Pañkat. 19,13. Am Ende eines comp. *ein Wolf unter,* — von gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. — *b*) *Hund* Nir. 3,21. — *c*) *Schakal* Hit. 78. es könnte aber auch वृकधूर्त als ein Wort gefasst werden. — *d*) *Krähe* Viçva bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,41. beruht vielleicht nur auf einer Verwechselung von काक mit कोक. — *e*) *Eule* (पेचक) Viçva a. a. O. — *f*) = स्तेन *Dieb* Naigh. 3,24. — *g*) *ein Kshatrija* Rudrasa bei Bhar. zu AK. nach ÇKDa. — *h*) *Pflug* Nir. 6,26. यवं वृकेणाश्विना वपन्ता RV. 1, 117,21. यवं वृकेण कर्षथः 8,22,6. — *i*) = वह्नि Naigh. 2,20. — *k*) *der Mond,* nach einer Deutung RV. 1,105,18. Nir. 5,26. 21. — *l*) *die Sonne,* nach einer Deutung des Mythus von der aus einem Wolfsrachen befreiten Wachtel, Nir. 5,21. — *m*) *eine best. Pflanze,* = बक Çabdar. im ÇKDa. — *n*) *ein best. Räucherwerk,* = सारलद्रव und अनेकधूप Rudrasa bei Bhar. zu AK. nach ÇKDa.; vgl. वृकधूप. — *o*) N. pr. *α*) pl. eines Volkes MBh. 6,2106. Mârk. P. 57,32. VP. 193, N. 123. pl. zu वार्केण P. 5,3,115; vgl. 2,4,62. — *β*) sg. ein Fürst MBh. 1,6990. 13,3665. ein Sohn Ruruka's (Bharuka's Bhâg. P.) Harîv. 760. VP. 373. Bhâg. P. 9,8,3. Pṛthu's 4,22,34. 24,3. Çûra's 9,24,28. Vatsaka's 42. Kṛshṇa's 10,61,16. 90,33. VP. 391. ein Asura Bhâg. P. 7,2,18. 10,88,12. fgg. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,18. — 2) f. घा *eine best. Pflanze,* = धम्मवल्ली Ratnam. im ÇKDa. — 3) f. वृकी *a*) *Wölfin* RV. 1,116,16. 117,17. fg. 183,4. 5,51,6. 10,127,6. वृकीवारणमामाय मृत्युरादाय गच्छति MBh. 12, 6535 (9946. 12063). Spr. 4353. अवेर्वृकीव सुषायाः शर्म मीमानि खादति Kathâs. 29,68. — *b*) *ein Schakal-Weibchen* Nir. 3,21. — *c*) *Clypea hernandifolia W. et A.* Râjân. im ÇKDa. — Vgl. अवृक, द्रप्सवे°, माला° (शाला°).

वृककर्मन् m. N. pr. eines Asura Verz. d. Oxf. H. 19,*b*,31.

वृकक्षण m. N. pr. eines Mannes; vgl. वार्कक्षणि.

वृकगर्त N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. °गर्तीय P. 4,2,137. Schol.

वृकग्राह m. N. pr. eines Mannes gaṇa रेवत्यादि zu P. 4, 2, 146. — Vgl. वार्कग्राहिक.

वृकजम्भ m. N. pr. eines Mannes; vgl. वार्कजम्भ.

वृकतात् (von वृक) f. *Mord-* oder *Raubanschlag:* यो नो वृकतातिं मर्त्यो रिषण्यति RV. 2,34,9.

वृकति (von वृक) P. 5,4,41 (= वृक) 1) f. concret *Mörder, Räuber* RV. 4,41,4. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Gîmûta Harîv. 1992. Vṛkati und Vṛti als N. pr. zweier Söhne des Kṛshṇa Harîv. Lanci. II, 188 fehlerhaft für वृकनिर्वृति.

वृकतेजस् m. N. pr. eines Sohnes des Çishṭi Harîv. 68. VP. 98.

वृकदंश m. *Hund* H. 1280 schlechte v. l. für मृगदंश.

वृकदीप्ति m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Harîv. 9189.

वृकदेव 1) m. N. pr. eines Sohnes des Vasudeva Harîv. 1956. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter Devaka's und Gattin Vasudeva's Harîv. 1949. 1957. 2027. वृकदेवा VP. 436.

वृकदरस् adj. nach Sây. so v. a. संवृतद्वार. वृकदरसो यमुरस्य वीरान् RV. 2,30,4. man könnte वृकधरस् vermuthen.

वृकधूप m. 1) *Weihrauch* AK. 2,6,2,29. H. 648. an. 4,211. Med. p. 30. — 2) *Terpentin* AK. 2,6,2,30. H. an. Med.

वृकधूर्त m. *Schakal* 78 (es können auch zwei Namen des Schakals sein).

वृकनिर्वृति m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Harîv. 9188.

वृकबन्धु m. N. pr. eines Mannes gaṇa रेवत्यादि zu P. 4, 1, 146. — Vgl. वार्कबन्धविक.

वृकाय m. N. pr. eines Bruders des Karṇa MBh. 7,5942.

वृकल 1) m. N. pr. eines Sohnes des Çiśhṭi Harıv. 68. VP. 98. — 2) f. वृकली *a) ein best. Eingeweide* Çat. Br. 12,3,3,5. — *b)* N. pr. eines Frauenzimmers (könnte auch ein Appellativ sein) gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96; vgl. वार्कलि, वार्कलेय.

वृकवडिक m. N. pr. eines Mannes gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146. — Vgl. वार्कवडिक.

वृकस्थल n. N. pr. eines Dorfes MBh. 3,924. 2595. 2037. LIA. I,691. fg.

वृकाती (von वृक + घत *Auge*) f. *Ipomoea Turpethum R. Br.* Ratnam. im ÇKDr.

वृकाभिनँ (वृक + घ°) m. N. pr. eines Mannes P. 6,2,165; vgl. Kâr. 3 zu P. 4,3,60.

वृकार्यु (von वृक) adj. *raub- —, mordlustig* RV. 10,133,4.

वृकारति (वृक + घ°) m. *Hund (der Feind des Wolfes)* Çabdam. im ÇKDr.

वृकारि (वृक + घरि) m. dass. Rîâm. im ÇKDr.

वृकास्य (वृक + घस्य) m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁs. K. 184,*a*,2. sg. ein Sohn Kṛshṇa's Harıv. 9188. वृकास्य die neuere Ausg.

वृकाश्वकि m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁs. K. 184,*a*,11. man hatte वार्काश्वकि erwartet.

वृकास्य (वृक + घास्य) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Harıv. 9188 nach der Lesart der neueren Ausg., वृकाश्व die ältere.

वृकोदर (वृक + उ°) m. 1) Bein. Bhîmasena's Taik. 2,8,15. H. 707. Bhâg. 1,15. MBh. 1,2444. 5343. 5902. 5923. 3,13694. Bâlar. P. 1,7,13. 10,10. 9,22,28. — 2) N. einer Gruppe von Kobolden im Gefolge Çiva's Revânta. 29 in Journ. of the Am. Or. S. 6,523.

वृकोदरमय adj. von Vṛkodara d. i. Bhîmasena *kommend:* भय MBh. 5,2183.

वृक्क 1) m. *a)* du. *die Nieren* Vsudp. 100. AV. 7,96,1. 9,7,13. VS. 25, 8. Çat. Br. 3,8,3,17. Kâṭy. Çr. 6,7,6. 25,7,34. Kauç. 45. 81. Çâṅkh. Çr. 4,14,14. Âçv. Gṛhy. 4,3,21. 24. Jâim. 3,97. Çâṅkh. Sâṁkh. 1,3,28. — *b)* nach Sây. so v. a. *Abwender* nämlich der Krankheit RV. 1,187,10. — 2) f. घा = वृक्का = हृद् *Herz* H. 623.

वृक्कक m. du. = वृक्क *die Nieren* Jâim. 3,94.

वृक्ण s. u. व्रश्च्.

वृक्त s. u. वर्ज् und vgl. बाकुवृक्त.

वृक्तबर्हिस् adj. *derjenige, welcher das Gras zur Opferstreu ausgerauft* oder *abgeschnitten hat* so v. a. *zum Empfang der Götter gerüstet; opfernd, Opfer liebend* Naigh. 3,18. RV. 1,12,3. 3,2,6. 59,2. 5,9,2. 6, 68,1. 8,5,17. 7,20 (wohl वृक्तबर्हिषः zu betonen). 27,7. 76,3. 86,1. 10, 91,2. Ind. St. 10,400.

वृक्ति (von वर्ज्) f. s. नमो° und सु°.

वृक्का f. du. so v. a. वृक्क *die Nieren* TS. 5,7,10,1.

वृत्, वृँतते Dhâtup. 16,3 (वरणे). वृतते वरं कन्या *erwählt* Durgâd. im ÇKDr. Diese unbelegte Wurzel hätte als वर्त् aufgeführt werden müssen.

वृत्त Uṇâdis. 3,66 (von व्रश्च्). m. 1) *Baum* AK. 2,4,2,5. Taik. 2,4,2. H. 1114. Hâlây. 2,22. 24. RV. 1,164,20. 22. 2,14,2. निधिमत् 39,1. पक्व 4,20,5. 5,78,6. वि वृतान्रोहति 83,2. उप स्वेयाम शरणं न वृत्तम् 7,96,5. 10,31,7. निष्टक्षाण चर्मसे न वृक्तात् 68,8. 94,3. 127,4. सुपलाश 135,1. रुरिकेश VS. 16,17. 19. 51. 58. AV. 1,14,1. वृक्षामि ते कुलिशेनेव वृक्तम् 2,12,3. 5,43,1. 12,1,27. 31. Çat. Br. 1,3,3,10. वृक्ते नावे प्रतिबध्नीध 8, 2,6. 2,2,4,10. 6,2,17. 14,6,9,38. TS. 5,3,2,2. 3. Kâṭy. Çr. 1,3,18. Çâṅkh. Gṛhy. 1,3,23. Kauç. 79. Âçv. Gṛhy. 1,8,6. 2,6,9. Lâṭy. 1,1,11 (घ°). (पदा) वृक्ता: भवन्ति रुधिराणि Saṁpv. Br. in Ind. St. 1,40. Çvetâçv. Up. 6,6. M. 3,9. 4,120. 7,76. वृक्तगुल्मावत 192. वृक्षेघाकृत्य MBh. 3,2843. Raghu. 2,17. नदीकूले, नदीतीरे Spr. 1395. 4299. fg. नदीकूले पक्षा वृक्तो वृक्तं वा शकुनिर्यथा (त्यजति) 4298. वृक्तं तीर्णफलं त्यजन्ति विहगा: 2883. Varâh. Bṛh. S. 5,9. वृक्तगुल्मा लताश्च 29,14. 43,17. घात्मापराधवृक्षस्य फलानि Spr. 2644. मेध्य° M. 6,13. वृक्षोन्मिक्ता Spr. 2884. फलदानां वृक्षाणां छेदनम् M. 11,142. °च्छेदन Verz. d. Oxf. H. 281,*b*,32. fg. °भञ्जन 26,*b*,25. वृक्षोत्थापन 35,*a*,*b*. 40,*b*,41. वृक्षोत्सर्ग ebend. °रोपण 12,*b*,24. 86,*b*,18. fg. 87,*a*,34. fg. Verz. d. Cambr. H. 64,9. °रोपक R. Gorr. 2, 87,3. वृक्षरोपक M. 3,162. in comp. mit dem Namen des Baumes: कृत्तक° 6,67. मन्दार° Çiç. 100,16. पर्कटी° Hit. 18,7. शिंशिपा° Var. in LA. (III) 4,1,2. वट° 21,11. am Ende eines adj. comp. f. घा MBh. 1, 5330. 7,897. Raghu. 11,16. Im System *ein Baum, welcher* (sichtbare) *Blüthe und Frucht hat,* M. 1,47. Suçr. 1,4,17. die ganze Pflanzenwelt in fünf Klassen eingetheilt: वृक्षगुल्मलतावल्ल्यस्त्वक्सारास्तृणजातय: MBh. 6,171. 13,3992. *Pflanze* überh.: किंपाक° Spr. (II) 734. Hâlây. 5, 42 (कहीर). — 2) *Todtenbaum, Sarg* AV. 18,2,25. — 3) *Stab des Bogens* RV. 10,27,22. AV. 1,2,3. — 4) *Gestell* in einigen Compp. — 5) wohl so v. a. वृक्षक *Wrightia antidysenterica* Suçr. 2,434,7. — Vgl. घधिवृक्षमूर्ण, कल्प°, कौमुदी°, तीर°, गुण°, चैत्य°, दश°, दीप°, निर्वृक्ष, पूति°, बीज°, बोधि°, ब्रह्म°, भार°, भूत°, भृङ्ग°, मह्या°, रक्त°, राज°, सीमा°.

वृक्षक (von वृक्ष) m. 1) *ein armes Bäumchen* Kumâras. 5,14. घाराम° Raghu. 1,70. am Ende eines adj. comp. ohne den Nebenbegriff: घ° *baumlos* R. 4,44,35. Raghu. 1,51. f. घा R. 1,9,5. Vgl. गन्ध°, पाल° (in beiden compp. *Baum* überh.). — 2) *Wrightia antidysenterica* (ein mittelgrosser Baum, s. कुटज) Ratnam. 30. n. *die Frucht* Suçr. 1,182,15. 315,1. 431,11. 482,2. 2,52,6. 109,21. 135,5. 457,7.

वृक्षकन्द = विदारीकन्द *die Knolle von Batatas paniculata Chois.* Aufn. 48.

वृक्षकुक्कुट m. *a wild cock* Wilson.

वृक्षकेश adj. *bewaldet:* ein Berg RV. 5,41,11.

वृक्षखण्ड m. *Baumgruppe* Kîç. zu P. 4,2,35. वृक्षषण्ड R. 4,48,3. 5,10,14.

वृक्षघट m. N. pr. eines Agrahâra Kathâs. 82,3.

वृक्षचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Tîrthak. 2. 103. 126.

वृक्षचर m. *Affe (Baumwandler)* Dhanañg. im ÇKDr.

वृक्षच्छाय n. *Baumschatten,* f. घा *der Schatten eines einzelnen Baumes* (oder *zweier Bäume*) Bhâr. zu AK. nach ÇKDr.

वृक्षतक्क m. *dessen Amt es ist Bäume niederzuhauen* R. 2,80,2.

वृक्षतैल n. *Baumöl* d. i. *aus Baumfrüchten gewonnenes Oel* Schol. zu Kâṭy. Çr. 1,8,37.

वृक्षत्व (von वृक्ष) n. *das Baum-Sein, der Gattungsbegriff Baum* Sarvadarçanas. 8,3.

वृक्षदल n. *Baumblatt* R. 2,46,14.

वृक्षदेवता f. *Baumgottheit, Dryade* Pañcat. 97, 5.

वृक्षधूप m. *Terpentin* H. 648. an. 4, 211.

वृक्षनाथ m. *der indische Feigenbaum* (वट) Çabdar. im ÇKDr.

वृक्षनिर्यास m. *Baumharz, Gummi* M. 5, 6.

वृक्षपर्णा n. *Baumblatt* R. 2, 56, 32. R. Gorr. 2, 56, 21.

वृक्षपाक m. *der indische Feigenbaum* (वट) Çabdár. im ÇKDr.

वृक्षपाल m. = वनपाल *Waldhüter* R. 5, 39, 3.

वृक्षपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Tîrân. 232.

वृक्षबाष्पनिकेत s. वृक्षवास्पनिकेत.

वृक्षभक्षा f. *Schmarotzerpflanze* Bhâvapr. im ÇKDr.

वृक्षभवन n. *Baumhöhle* Çabdár. im ÇKDr.

वृक्षभिद् *Axt* H. 918.

वृक्षभेदिन् n. *eines Zimmermanns Meissel* AK. 2, 10, 34. H. 919.

वृक्षमय (von वृक्ष) adj. (f. ई) *aus Holz gemacht, hölzern* Çântik. 5.

वृक्षमर्कटिका f. *Eichhörnchen* ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वृक्षमूल n. *Baumwurzel* M. 4, 78. 6, 26. 44. 11, 78. 122. R. 2, 46, 19. 22. 50, 17.

वृक्षमूलता (von वृक्षमूल) f. *das Ruhen —, Schlafen auf Baumwurzeln* (eines im Walde lebenden Asketen) Kâm. Nîtis. 2, 39.

वृक्षमूलिक (wie oben) adj. *auf Baumwurzeln seine Ruhe haltend* Vsudev. 34. Buan. Intr. 309.

वृक्षमृदु (वृक्ष - मृदु - 2. भू) f. *eine Rohrart* (जलवेतस) Çabdár. im ÇKDr.

वृक्षराज् m. *der Fürst unter den Bäumen*, Bez. *des heiligen Feigenbaumes:* पिप्पलाज्जायते वह्निः पिप्पलो वृक्षराडृतः Pitâmaha in Mit. 148, 1.

वृक्षराज m. *der Fürst der Bäume*, Bez. des पारिजात Hariv. 7003.

वृक्षरुहा f. *Schmarotzerpflanze* AK. 2, 4, 2, 62. *eine best. Pflanze*, = अमृतस्रवा Râgân. im ÇKDr.

वृक्षवाटिका f. *Baumgarten* AK. 2, 4, 1, 2 (अमात्यगणिकागेहोपवन). Çiç. 8, 21.

वृक्षवाटी f. dass. H. 1113.

वृक्षवास्पनिकेत m. N. pr. eines Jaksha MBh. 2, 899 nach der Lesart der ed. Bomb., वृक्षवास्य° ed. Calc.

वृक्षश m. *Eidechse, Chamäleon* Wilson nach Çabdârthak.

वृक्षशायिका f. *Eichhörnchen* Suçr. 1, 202, 17.

वृक्षषण्ड s. वृक्षखण्ड.

वृक्षसंकर n. *Walddickicht* Kâm. Nîtis. 14, 21.

वृक्षसर्प adj. (f. ई) *Baumkriecher* AV. 9, 2, 22.

वृक्षसारक m. *ein best. kleiner Strauch*, = द्रोणपुष्पी Ausn. 16.

वृक्षस्नेह m. *Baumöl d. i. aus Baumfrüchten gewonnenes Oel* Schol. zu Kâtj. Çr. 1, 8, 37.

वृक्षाग्र (वृक्ष + अग्र) n. *Baumgipfel* R. 2, 98, 27.

वृक्षादन (वृक्ष + अ°) 1) adj. *am Baume fressend.* — 2) m. a) *eines Zimmermanns Meissel* AK. 2, 10, 34. H. 919. *Axt* Trik. 3, 3, 361. H. an. 4, 193. Med. n. 211. neben वाशी MBh. 5, 3250. — b) *der heilige Feigenbaum* (अश्वत्थ) und = मधुवृक्ष (?) H. an. Med. *Buchanania latifolia Roxb.* Dhan. im ÇKDr. — 3) f. ई *Schmarotzerpflanze* AK. 2, 4, 2, 62. Trik. H. an. Med. = विदारीगन्धिका H. an. = विदारीकन्दक Med. *eine best. Gemüsepflanze* Suçr. 1, 137, 19. 220, 6. 377, 14. 2, 59, 14. 322, 18. 431, 12.

वृक्षादनी f. = कामवृक्ष Ausn. 37.

वृक्षादिरुरुक n. und वृक्षादिवृरुक n. *Umarmung* Çabdam. im ÇKDr.

वृक्षादिवृष्ट n. Wilson nach Çabdârthak.

वृक्षाम्र (वृक्ष + अम्र) m. *Spondias mangifera* Çabdár. im ÇKDr. n. *die Frucht* AK. 2, 9, 35. H. 417. Hariv. 8440. Suçr. 2, 453, 7. Vâgbh. 6, 130.

वृक्षायुर्वेद (वृक्ष + आ°) m. *die Lehre von der Pflege der Bäume* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 7, Z. 3. Titel des 55ten Adhjâja in Varâh. Bṛh. S. und eines Kapitels im Âgneja-P. nach ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 125, a, 41. 324, b, No. 768 (von Surapâla). °योगाः unter den 64 Künsten 217, a, 13.

वृक्षारुक MBh. 7, 1372 fehlerhaft für वृन्दारक, wie die ed. Bomb. liest.

वृक्षार्का (वृक्ष + अ°) f. *eine best. Heilpflanze*, = मर्कामेदा Râgân. im ÇKDr.

वृक्षालय (वृक्ष + आ°) m. *Vogel (auf Bäumen wohnend)* Çabdam. im ÇKDr.

वृक्षावास (वृक्ष + आ°) adj. *auf oder in Bäumen wohnend; m. = वृक्षकोटरवासिन् ÇKDr. an ascetic, one who lives in the hollows of trees; a bird* Wilson.

वृक्षाश्रयिन् (वृक्ष + आ°) m. *Eichhörnchen* Râgân. im ÇKDr.

वृक्षीय adj. von वृक्ष gaṇa उत्करादि zu P. 4, 2, 90. एक° (s. auch u. एकवृक्ष) *von demselben Baume, von gleichem Holze* Kâtj. Çr. 2, 8, 1.

वृक्षेशय (वृक्षे, loc. von वृक्ष + शय) 1) adj. *auf Bäumen sich aufhaltend:* मयूराः Raghu. 16, 14. — 2) m. *eine Schlangenart (in Bäumen liegend)* Suçr. 2, 265, 21.

वृक्षोत्पल (वृक्ष + उ°) m. *Pterospermum acerifolium Willd.* Hall. 2, 44.

वृक्ष्य (von वृक्ष) n. *Baumfrucht* Çat. Bṛ. 1, 1, 2, 10. Kâtj. Çr. 2, 1, 12, v. l.

वृगल (von वर्ग) n. *Brocken, Stück:* पुरोडाश° Çat. Bṛ. 4, 3, 2, 1. Çâṅkh. Bṛ. 28, 4. Schol. zu Kâtj. Çr. 707, 14. Âçv. Çr. 5, 7, 7 (hier दृगल). सर्प° Çat. Bṛ. 14, 4, 2, 5.

वृचयी f. N. pr. eines Mädchens ṚV. 1, 51, 13.

वृचीवत् m. pl. N. pr. eines Geschlechts ṚV. 8, 27, 5. fgg. Pañcat. Bṛ. 21, 12, 2.

वृज् (nom. वृक्) so v. a. बल Naish. 2, 9. — Vgl. स्वा°.

1. वृजन (von वृज्) Uṇâdis. 2, 31. n. 1) *Umhegung, umfriedigter —, befestigter Platz; insbes. die abgeschlossene Cultusstätte;* = बल Naish. 2, 9. न वा उ मां वृजनैर्वारयन्ते ṚV. 10, 27, 5. मं चिद्य इन्द्रो वृजनं न भूमं 1, 173, 7. त्वं पुरं वृजनैरकर् 63, 3. वृजनेन वृजिनास्मं पिपेष 3, 34, 6. यतिं ब्रसेम वृजनं नाक्ः 6, 11, 6. 5, 54, 12. नदीनाम् *Bereich* 52, 7. यमुत्तिरो वृजने मानुषाणां शीरैस्तत्त 1, 60, 3. यत्परमे सधस्थे पञ्चावगे वृजने मादयासे 101, 8. 2, 24, 11. 3, 96, 7. मर्को घर्मत्रा वृजनेर विरप्शी *hier im Opferhof steht ein überschäumender Becher* 3, 36, 4 (wonach u. 1. घर्मत्र zu ändern ist). मरुद्भणो वृजने मन्म धीमहि 10, 66, 2. मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य गोपाः 1, 101, 11. 2, 2, 1. 9. 34, 7. 3, 77, 5. 82, 4. — 2) *geschlossene Niederlassung: Hof, Flecken, Dorfschaft,* auch *oppidum; sowohl die Mark als die Bewohner:* अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्यत्सूरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम ṚV. 1, 51, 15. 73, 2. 91, 21. 105, 19. मानुष 128, 7. घा यत्तनन्वृजने घनानाम् 166, 14. शीरदानु 165, 15. वयं राजभिः प्रवता घनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम *mit den Leuten unserer Gemeinde* 10, 42, 10. 9, 97, 10. प्र पक्षमेन्या वृजनं तिराते 7, 61, 4. 99, 6. घक्षाता वृजनां *fremde Orte* 32, 27. 10, 27, 4. विशेविशेवृजनेषु पामि d. h. *wo er sich auch niederlasse* 28, 2. प्र मन्त्व सभृणां वृकवत्तव वृजनां *mit der ganzen Gemeinde* 10, 176, 1. वर्धेणान्यः

शर्वमा रुत्ति वृत्रं सिषक्त्यो वृजनेषु विप्रः Varuṇa 6,68,3. 9,87,3. Es versteht sich, dass einzelne Stellen sowohl unter 1) und 2) passen; unentschieden bleiben RV. 5,44,1. 6,35,5. Vgl. व्रज. — 3) *der Luftraum* Uṇ. IV, 139. im Śabdakalpadr. nach ÇKDa. — 4) = निराकरण Uṇādis. im Śabdakalpadr. nach ÇKDa. — Vgl. im Zend vərəzéna und varəzâna.

2. वृजन n. शरयन्ती वृजने पर्षदीयत उत्पातयति पतिणीः die Ushas RV. 1,48,5. nach Sây. = ब्रह्मन्; wohl coll. *Dorf* so v. a. *die angesiedelten Menschen* (neben Thieren und Vögeln). Der Unterschied des Tones wäre also zufällig.

3. वृजन 1) adj. (f. वृजनी) so v. a. वृजिन Uṇādis. im ÇKDa. अरिष्टदुर्गो वृजनीषसः allegorisch, nach Sây. *in der Wolke* RV. 1,164,9. — 2) m. (*krauses*) *Haupthaar* Uṇādis. im ÇKDa. — 3) f. ई *Rank, Tücke:* अरिष्टासो वृजनीभिर्यिम *durch Ränke nicht versehrt* AV. 7,30,7 als v. l. zu RV. 10,42,10. Die Bed. von 1. वृजन wurde bereits nicht mehr verstanden. — 4) n. *eine böse That, Sünde* Uṇādis. im ÇKDa. H. 1381 (nach der Lesart des Schol.).

वृजन्य (von 1. वृजन) adj. *was in Dörfern u. s. w. wohnt:* घर्मा भुवद्वृजन्यस्य राजा RV. 9,97,22.

वृजि Siddh. K. 236,a,11. m. 1) pl. N. pr. einer Völkerschaft P. 4,2,131. Buan. Intr. 75. Tiran. 7. Schiefner, Lebensb. 289 (59). Hiouen-thsang 1,402. fgg. 2,360. fg. वृजिगार्कपत n. P. 6,2,42, Vârtt. 1. वृजि f. = व्रजभूमि ÇKDa. ohne Angabe einer Aut. — 2) N. pr. eines Mannes Lîl. II, 808. fg.

वृजिक adj. von वृजि 1) P. 4,2,131. = वार्ष्णो भक्तिरस्य 3,100, Schol.

वृजिन (von वृज्) Uṇādis. 2,57. 1) adj. (f. या) a) *krumm* (AK. 3,2,20. H. 1457. an. 3,421. Med. n. 134. Halâj. 4,11); *falsch, ränkevoll* (Gegens. ऋजु, वीत, साधु): पथि RV. 6,46,12. मार्ग 9,97,18. पृष्ठा 4,2,11. मुखानि AV. 7,36,4. Personen RV. 3,34,6. MBh. 3,13746. Bhâg. P. 7,8,55. घटकार Spr. (II) 810. — b) *unheilvoll:* वृजिनो गतिमाप्नोति MBh. 2,357. — 2) m. (*krauses*) *Haupthaar* AK. 3,4,18,111. H. ç. 117. H. an. Med. Halâj. 3,11. — 3) f. या *Ränke, Falschheit, Trug:* मा मो विदद्वृजिना हेष्या या AV. 1,20,1. 5,3,6. वृजानो v. l. TBr. 3,7,8,13. — 4) n. Siddh. K. 249,a,8. a) dass. Nir. 10,41. ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् RV. 4,1,17. ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति 23,8. 2,27,3. 5,3,11. 12,5. 7,104,13. 10,87,15. 89,8. AV. 1,10,3. 11,8,20. TBr. 3,7,7,6. तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु *dem werden zur Qual seine eigenen Ränke* RV. 6,52,2. सर्वं नो वृजिना शिशीहि 10,105,8. — b) *Vergehen, Schlechtigkeit, Sünde* AK. 1,1,4,1. H. 1381 (nach der Lesart der Hdschrr.). H. an. Med. Halâj. 3,8. सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि Bhag. 4,36. वृजिनान्तायति MBh. 5,1224. किमिदं वृजिनं सुधु कृतं वै कामलुब्धया 1,3425. 2,2582. कृत्वा वृजिनार्जनम् Spr. (II) 20. 1438. कश्चित्त्व वाचा वृजिनं हि किंचिदुच्चारितं मे मनसो ऽभिषङ्गात् MBh. 5,867. कश्चित्त्व वाचा वृजिनं कदाचिदकार्षं ते मनसो ऽभिषङ्गात् 13,4397. नहि मे वृजिनं किंचिद्दृश्यते ब्राह्मणोधिक् 389. R. Gorr. 1,67,5. 6,103,10. वृजिनादते Rāgat. 14,57. वृजिनादस्ति चेद्भीतिः Râśa-Tar. 6,27. वृजिनार्जितया श्रिया 137. शान्त° adj. 1,102. Bhâg. P. 3,15,19. 4,5,9. — c) *Leid, Unglück:* गौरवं कुलम्। वृजिनं नार्कृति प्राप्तुम् Bhâg. P. 1,7,46. महद्वृजिनच्छिद् 2,4,13. विधेहि तन्नो वृजिनाद्दिमोक्षम् 4,8,31. — d) = रक्तचर्मन् H. an. — Vgl. अ°.

वृजिनवत् (von वृजिन) m. N. pr. eines Sohnes des Kroshṭu, Sohnes des Jadu, Bhâg. P. 9,23,29. — Vgl. वृजिनीवत्.

वृजिनवर्तनि adj. *krumme Wege gehend, ränkevoll* RV. 1,31,6.

वृजिनाय् denom. von वृजिन; partic. वृजिनायत् *trüglich, falsch* RV. 10,27,1.

वृजिनीवत् m. N. pr. = वृजिनवत् MBh. 13,6823. Harîv. 1969. VP. 420.

वृण्, वृणोति, वृणुते Vop. in Dhâtup. 30,6 (भले). वर्णोति (प्रीणने) Pat. in Dhâtup. 28,40. Auf das caus. dieser letzteren Wurzel mit वि führt der Comm. व्यवीवर्णात् in der Stelle स्थाने रामायणकविर्देवीं वाचं व्य° Uttarar. 112,22 (152,9) zurück, indem er dieses Wort durch एतन्मरिश्रवर्णनेन प्रीतां चकार erklärt. Wir nehmen keinen Anstand jene Form von वर्णय् mit वि in der Bed. *in der Schilderung übertreffen* abzuleiten.

1. वृत् (von 1. वृ) 1) adj. *einschliessend* in घर्णो° und नदी°. — 2) f. *Begleitung, Gefolge; Heer:* कया शचिष्ठया वृता (न आ भुवत्) RV. 4,31,1. उभे वृतौ मघवन्त्सं ग्रयाति 5,37,5. पर्षाणुभे रोदसी नार्घसो वृतौ 10,65,5. वृतेव पत्तं बकुरिर्वसव्यैः 6,1,3. वयं ग्रयेम वृतम् 1,102,4. 4,17,9. घर्मुद्स्युधावृते प्रुर घासति सर्वभिः 8,45,3. सखा वृते इन्द्र पूरुपत्नीः 1,174,3.

2. वृत् (von वर्त्) 1) adj. am Ende eines adj. comp. in एक°, त्रि°, प-स°, पञ्च°, विंशु°, शु°. — 2) *Schluss, Ende;* bezeichnet im Dhâtup. (z. B. nach 19,79. 23,41. 28,105. 142. 31,32) den *Schluss* einer zu einer bestimmten grammatischen Regel gehörenden Reihe von Wurzeln, die in der Grammatik durch die erste Wurzel mit nachfolgendem आदि oder प्रभृति kurz angegeben wird. P. 7,2,59, Schol.

वर्त 1) partic. s. u. 1. und 2. वृ. — 2) n. so v. a. घन Naish. 2,10 (v. l. कृत); vielleicht aus वर्तंचय erschlossen.

वर्तंचय m. *erwählter —, erwünschter Wohnsitz*, zur Erkl. von वर्त Nir. 12,29.

वर्तंचर्ष (वर्तम्, acc. von 1. वर्त् + चर्ष) adj. *ein Heer sammelnd:* Indra RV. 2,21,3. sonach unter 2. चर्ष zu streichen; nach Sây. *Sammler des Erwünschten* oder *Feindeverderber.*

वर्तपत्रा f. *eine best. Pflanze,* = पुत्रदात्री Râgân. im ÇKDa.

वर्ती (von वर्त्) f. etwa *Fortschritt, Bewegung:* ता यन्नवत वयुनं वीरवर्तनीं समान्या वृतया विश्वमा रजः RV. 5,48,2.

वर्तार्चिस् (वृत + अ°) f. *Nacht* H. ç. 18.

1. वृति (von 1. वृ) f. *Einzäunung, Zaun, Hecke* H. 982. an. 2,198. Med. t. 38. Halâj. 2,135. वृतिं तत्र प्रकुर्वीत यामुष्टेा न विलोकयेत् M. 8,239. वृतिमप्याश्रितः शत्रुवध्यः Spr. 2885. वृतिमिव कुरुते कोऽवाणीं समन्तात् 3311. °भङ्गं कृत्वा Pañcat. 248,2. वृतिं चूर्णयित्वा 249,13. °हार 4. प्राचीरं प्राप्ततो वृतिः AK. 2,2,3. कुम्भा मुगस्तना वृतिः (so ist zu schreiben) 7,18. H. 824. उपवन° Megh. 24. कुरवकवृतेर्माधवीमण्डपस्य 76.

2. वृति (von 2. वृ) f. *Wahl, Erwählung, ein erwähltes Gnadengeschenk;* = वरण H. an. 2,198. Med. t. 38. = वर AK. 3,3,8. H. 1523.

3. वृति fehlerhaft für वृत्ति MBh. 1,3250 (वृति ed. Bomb.). Râśa-Tar. 5,193 (वृत्ति ed. Calc.). für irgend ein anderes Wort in der Bed. मही und रज्जु Med. t. 56 (das richtige वृति ebend. 38).

वृतिकर (वृतिम्, acc. von 1. वृति + 1. कर) 1) adj. *Hecken bildend.* — 2) m. *Flacourtia sapida Roxb.* Çabdar. im ÇKDa.

वर्त (partic. von वर्त्) 1) adj. a) *gedreht, in Schwung gesetzt:* Rad RV. 1,

155,6. 4,31,4. 5,36,3. — *b*) *rund* AK. 3,2,19. 3,4,44,81. Trik. 3,3,132. H. 1467. an. 2,197. Med. t 60. Halây. 4,61. वृत्तमिव हि शिग्रम् Cat. Bh. 7,5,4,28. Kâty. Ça. 17,5,3. °पुष्कर 1,3,38. 15,6,20. वृत्तपीनाभ्यां भुजाभ्याम् MBh. 3,1774. दीर्घवृत्तभुज R. Gorn. 2,32,3. वृत्तायतभुज 64,18. ऊरू 5,2,18. ऊरू 6,23,11. वृतानुपूर्वौ ऊरू Kumâras. 1,35. चारुवृत्तपयोधरा MBh. 3,2664. स्तनौ 4,392. R. 3,32,25. स्तनौ समवृत्तौ Bhâg. P. 4,25,24. °पार्श्व R. 3,23,15. तनुवृत्तमध्य Ragh. 6,32. Varâh. Bṛh. S. 34,4. 56,23. 26. 58,53. 67,7. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,9. 12. 151,*a*,9. — *c*) *erfolgt, geschehen, Statt gefunden habend:* किं वृत्तम् R. 5,71,18. Prab. 84,17. चिरवृत्तमपि स्रोतःप्रत्यक्षमिव दर्शितम् R. 1,4,16. यदवदानं कर्म वृत्तम् (so ist zu schreiben) AK. 3,3,8. संबन्धमाभाषणपूर्वमाहुर्वृत्तः स नौ संगतयोर्वनान्ते Ragh. 2,58. समाप्तः सुमखान्वृत्तः *fand Statt* R. 5,27,19. वृत्तं रक्षः प्रणयमप्रतिषेधमाने Çik. 119. Bhatt. 6,27. वैशसे वृत्ते Râga-Tar. 5,242. °संकेत 3,374. °चोल (°चूड ed. Calc.) Ragh. 3,28. यवृत्ततद्दिवारात्रा Kathâs. 33,214. वृत्तेन चैव मुक्तेन प्रवरुणेन *so v. a. frei geworden* 18,305. क्रोशान्द्वादशवर्षवृत्तान् *zwölf Jahre gewährt* MBh. 7, 6147. — *d*) *abgemacht, absolvirt:* एतद्वृत्तं पुरस्तात् Maitrâjp. 1,2. = अधीत P. 2,2,36. Taitt. H. an. Med. व्याकरणं P., Schol. वृत्तो गुणप्रकर्षेण *so v. a. sich zu eigen gemacht* Vop. 26,111. — *e*) *vorhanden, da seiend:* वृत्तोडुम् adj. = घोडस्वत् (वृत्त = अप्रतिरुत Kull.) M. 1,6. — *f*) *vergangen, verflossen, verstrichen, zu Ende gegangen* AK. 3,4,24,81. H. an. Med. घमावास्यायां वृत्तायाम् Kâṭh. Up. 2,8. उत्सवे वृत्तमात्रे MBh. 1,7552. 3, 1529. Harîv. 6714. वृत्ता रजनी R. 3,5,4. 68,27. 4,58,5. वृत्ते शरावसंपाते M. 6,56. Varâh. Bṛh. S. 24,11. 26,16. Hit. IV, 1. वर्तमान, वृत्त, वर्तिष्यमाण Sarvadarçanas. 10,6. वृत्ते भाविनि वा रणे AK. 2,8,2,71. H. 802. — *g*) *mit dem es vorüber ist, der dahin ist, gänzlich erschöpft* (= अस्त Comm.): प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा वृत्तो ऽशयत् TBr. 1,2,6,1. — *h*) *verstorben* H. an. Med. M. 3, 231. 9,193. 217. R. 2,51,18. 67,33. 73,1. 6. 77, 22. 86,18. R. Gorn. 2,95,11. 97,11. 3,65,5. अ° 6,8,10. — *i*) *verfahren seiend gegen* (loc.), *sich benommen habend:* स च तस्यां कथं वृत्तः R. 5, 56,2. सम्यग्वृत्तः सदा त्वयि MBh. 3,2284. 14,77 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Spr. (II) 1838. — *k*) = दृढ *fest* u. s. w. AK. H. an. Med. — *l*) = वृत *erwählt* AK. 3,2,11. H. 1484. H. an. Med. — 2) m. *a*) *Schildkröte* (rund) Râgân. im ÇKDr. — *b*) *eine Grasart*, = वृत्तगुण Râgân. im ÇKDr. u. d. letzten W. — *c*) *eine runde Kapelle* Varâh. Bṛh. S. 56, 18. — *d*) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1555 (वृत्तसंवर्तको mit der ed. Bomb. zu lesen). 5,3630. — *e*) fehlerhaft für वृत्र (so ed. Bomb.) MBh. 12,3660. — 3) f. या *a*) *ein best. Arzneistoff* (रेणुका) Râgân. im ÇKDr. — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: = क्षिप्तिकारिष्टा, प्रियङ्गु und मांसरोहिणी ebend. — *c*) = वृत्ता *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑, ⏑⏑⏑⏑– – – Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 10). Ind. St. 8,377. — 4) n. (m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31). *a*) *Kreis* Colebr. Alg. 87. Ganit. Traipâç. 8. वृत्तस्य मध्यं किल केन्द्रमुक्तम् Golâdh. 5,41. Z. f. d. K. d. M. 2,427. Weber, Rimây. Up. 308. fgg. 316. 324. *Epicykel* Sûrjas. 2,38. — *b*) *das Vorkommen, Erscheinen, Gebrauchtwerden:* बहुलमासौ नेषणुकं वृत्तमार्षमिव प्राधान्येन Nir. 2,24. 11,3. RV. Prât. 16,49. नकारस्योष्मवद्वृत्तम् *so v. a. die Verwandlung eines* न *in einen* Ûshman 10, 13. — *c*) *Erscheinung:* तृणाकमिति समस्तं विद्धि संसारवृत्तम् Spr. (II) 2031. किं° *eine Form von* किम् P. 3,3,6. 144. 8,1,48; vgl. यद्वृत्त. — *d*) *Ereigniss, Begebenheit* Sin. D. 339. Gaupar. zu Siddhânta. 39. चिरात्तदृश्यते वृत्तं किमेतत् *so v. a. was sieht man dort vorgehen?* Kathâs. 25, 101. न मार्गवृत्तमेतन्मे वाच्यं पितृगते त्वया 58,116. रात्रौ वृत्ते ममाग्र यत् 69,22. 32. रात्रि° 73,319. तया सर्ववृत्तं राजकुमाराग्रे कथितम् Z. d. d. m. G. 14,574,20. इङ्गुदी° *was sich bei der* Iṅgudi *zugetragen hat* R. 2,88 (96 Gorn.) in der Unterschr. — *e*) *Sache, Angelegenheit* R. 1,68,16. 70, 8. Kathâs. 12,137. — *f*) *Lebensart, Lebenswandel, Betragen, Benehmen, Handlungsweise, Thun und Treiben* AK. 3,4,24,81. 26,203. H. 838. 844. H. an. Med. Halây. 2,242. Cat. Bh. 14,7,3,1. Taitt. Up. 1,11,2. यत्नेन विप्रो वृत्तेन वर्तयन् M. 4,260. 5,166. 7,122. 135. 8,86. 187. 9,301. सतां वृत्तमनुष्ठिताः 10,127. Jâgñ. 3, 44. MBh. 3,1877. 12476. 13, 2167. R. 1, 2,35. वृत्तमीदृशम्। आचारलक्ष्या 2,35,13. 40,6. 102,1. कस्य पास्याम्यरं वृत्तम् 109,8. Kâm. Nîtis. 3,36. 13,58. शत्रौ 8,57. Spr. (II) 930. 1820. Kumâras. 6,12. बाल्यवृत्तानि (so ed. Bomb.) MBh. 3,16565. रजनी° 1569. उदार R. 1,2,45. प्रभेर्वृत्तेः Spr. 4256. मरुद्वृत्तम् 4859. पर्वता इव निष्कम्या वृत्ते मरुति तस्थुषः (तस्थिवांसो मरुद्वृत्ते निष्कम्या इव पर्वताः die neuere Ausg.) Harîv. 4136. महा° adj. R. 2, 112,5. स्वच्छ° adj. Kâm. Nîtis. 5,79. 18 (wo wohl eben so zu lesen ist). शुक्ल° adj. MBh. 14,2713. न्याय° adj. M. 7,32. R. 3,75,47. कल्याणवृत्ता 1,12. 53,54. रागवृत्तं चतुर्विधम् Spr. 1650. कुरु प्रियसखीवृत्तं सपत्नीजने Çik. 93, v. l. सापत्यपि सतीवृत्तं किं मुञ्चति कुलस्त्रियः Kathâs. 3,14. कामिजन°, स्व° Daçar. 65,17. पृथिव्याश्च तेनोक्तं वृत्तं नृपशतेरत् M. 9,303. उज्झितधैर्यवृत्तम् adv. Vikr. 147. लोभ° adj. R. 4,17,38. यद्वृत्ताः सन्ति राजानस्तद्वृत्ताः सन्ति मानवाः Spr. (II) 1652. यन्मातापितरौ वृत्तं तनये कुरुतः सदा *so v. a. was Mutter und Vater an einem Sohne thun* R. 2, 111, 9. — *g*) *richtiger Wandel, gutes Betragen, richtiges Benehmen* Âçv. Gṛhj. 4,7,2. विद्याचरणवृत्तशीलसंपन्न Kauç. 67. नष्टः खलु भारतानां धर्मस्तथा तत्रविदो च वृत्तम् MBh. 2, 2236. R. 2,33,11. 83,16. Spr. (II) 2351. 2593. (I) 2023. कुलं वृत्तेन रक्ष्यते 3134. 4345. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्। वृत्ततस्तु हतो हतः 5030. MBh. 3, 17394. शीलवृत्तेन R. 1,58,20. 77,24. °संपन्न M. 8,179. R. 1,48,26. 8, 103,6. श्रुतवृत्तोपपन्न M. 9,244. श्रुतवृत्ताढ्य R. Gorn. 1,79,16. वृत्ते स्थितस्याधिपतेः प्रजानाम् Ragh. 5,33. °हीन Spr. 4278. तत्रवृत्ते स्थितः MBh. 7,6741. — *h*) *Lebensunterhalt*, = वृत्ति H. an. Med. वृत्तानामेष (die neuere Ausg. richtiger वृत्तीनामेष) वो दाता भविष्यति नराधिपः Harîv. 335; vgl. 336. — *i*) *Rhythmus des Versschlusses* RV. Prât. 1,15. 17,13. 16. 22. — *k*) *ein Metrum mit bestimmter Silbenzahl* (auch *Metrum* überh.) AK. H. an. Med. Ind. St. 8,180. 289. 326. fgg. 468. Kâvjâd. 1,11. Çaut. 43. Sin. D. 366. कृत्त 220,15. Varâh. Bṛh. S. 34,99. 110. 104,2. 58 (hier zugleich *gutes Betragen*). 60. Bṛh. 1,2. — *l*) *ein aus 40 Trochäen bestehendes Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XV, 2). Ind. St. 8,400. — Vgl. आर्या°, इति°, उदीच्य°, एवं° (auch Jâgñ. 3,155), काम°, किं°, खण्डित°, गण°, गुरु°, छन्दो°, दुर्वृत्त, दृग्वृत्त, पाद°, पुरा°, पुरी°, पूर्व°, प्राग्वृत्त, भिन्न°, मङ्गलादेश°, मध्य°, मात्रा°, यवा°, यद्वृत्त (adj. *wie sich betragend* Spr. (II) 1652), राज° (auch MBh. 2,1950. R. 1,52,7 = 53,7 Gorn.), लोक° (*das Verfahren des grossen Haufens, der Unterthanen*) MBh. 2,1950. 4,90), वर्ण°, वस्तु°, विषम°, सद्वृत्त, साधु°, सु°.

वृत्तक 1) am Ende eines adj. comp. = वृत्त *Metrum* Sin. D. 339. —

2) m. = भाक्क (Comm.) Vasiṣ. Bṛh. S. 86,68; vgl. वृद्ध. — 3) n. *eine schlichte und dabei wohlklingende Prosa* Verz. d. Oxf. H. 199, *a*, 2. श्रीकण्ठादानां स्वल्पसमासं वृत्तकं मतम् 3. Beispiel 7. fgg.

वृत्तकर्करी (वृत्त *rund* + क°) f. *Wassermelone* Rāǵān. im ÇKDn.

वृत्तकौतुक n. Titel einer *Metrik* Verz. d. B. H. No. 815. Ind. St. 9, 166. 215.

वृत्तकौमुदी f. desgl. Colebr. Misc. Ess. II, 64, N. 2.

वृत्तक्षेत्र m. n. *Ausschnitt eines Kreises* Colebr. Alg. 96.

वृत्तगन्धि oder °गान्धिन् n. *eine gekünstelte Prosa mit metrischen Partien* Sāh. D. 566. Verz. d. Oxf. H. 199, *a*, 6. 16. 207, *a*, 6. Colebr. Misc. Ess. II, 133.

वृत्तगुण्ड m. *eine Grasart*, = दीर्घनाल Rāǵān. im ÇKDn.

वृत्तचेष्टा f. *Benehmen* MBn. 12, 4219.

वृत्ततण्डुल m. *Andropogon bicolor Roxb.* Rāǵān. im ÇKDn.

वृत्तत्व (von वृत्त) n. *Runde, Rundheit* Schol. zu Naish. 22, 46.

वृत्तदर्पण m. Titel einer *Metrik* Colebr. Misc. Ess. II, 64. fg.

वृत्तनिष्पाविका f. *eine best. Hülsenfrucht*, = नखनिष्पावी Rāǵān. im ÇKDn.

वृत्तपर्णी f. (*runde Blätter habend*) Bez. zweier Pflanzen: = महाशणपुष्पिका und पाठा Rāǵān. im ÇKDn.

वृत्तपुष्प m. (*runde Blüthen habend*) Bez. verschiedener Pflanzen: *Nauclea Cadamba Roxb.* Hin. 96. Rāǵān. im ÇKDn. = शिरीष, वाणीर, कुब्जक und मुद्गर Rāǵān. ebend.

1. वृत्तफल n. *Pfeffer* (*runde Frucht*) Rāǵān. im ÇKDn.

2. वृत्तफल 1) adj. *runde Früchte habend.* — 2) m. *Granatbaum* und *Judendorn* Rāǵān. im ÇKDn. — 3) f. या Bez. verschiedener Pflanzen: = वार्ताकी, शशाण्डुली und श्यामलता ebend.

वृत्तबन्ध m. *eine metrische Fessel:* वृत्तबन्धोक्तितं गद्यम् Sāh. D. 566.

वृत्तबीज 1) adj. *runden Samen habend.* — 2) m. *Abelmoschus esculentus W. und A.* Rāǵān. im ÇKDn. — 3) f. या *Cajanus indicus Spreng.* ebend.

वृत्तबीजका f. *ein best. Strauch*, = पाण्डुरफली Rāǵān. im ÇKDn.

वृत्तभूय adj.: यस्मिन्नाविन्दुमत्तं वृत्तभूयो तिरो धत्ताम् MBn. 1, 728. वृत्तं निर्वृत्तमुत्पन्नं विपदादि तस्य भूयं भावः । कृत्स्नप्रपञ्चात्मकाविर्त्यर्थः Nīlak. Verdorbene Lesart.

वृत्तमञ्जिका f. Bez. zweier Pflanzen: = श्वेतार्क und मोदिनी Rāǵān. im ÇKDn.

वृत्तमाला f. *ein Kranz von Metren, Metrik* Verz. d. B. H. No. 814. वृत्तमुक्तफलानां माला ebend.

वृत्तमुक्तावली f. Titel einer *Metrik* Verz. d. B. H. No. 814. Colebr. Misc. Ess. II, 64. fg. 73. Ind. St. 9, 226.

वृत्तरत्नाकर m. desgl. Verz. d. B. H. No. 810. fgg. Verz. d. Oxf. H. 110, *b*, 15. 197, *b*. fgg., No. 462. fgg. Mack. Coll. I, 115. Verz. d. Kop. H. 15, *b*. Colebr. Misc. Ess. II, 64 u. s. w. Ind. St. 9, 184. 206. fgg. 215. 218. °पञ्जिका 207. °टीका Verz. d. Oxf. H. 113, *a*, 13. °सेतु 198, *a*, No. 466.

वृत्तरत्नावली f. desgl. Gild. Bibl. 403.

वृत्तवत् (von वृत्त) adj. 1) *rund* MBn. 14, 1412. — 2) *einen guten Lebenswandel führend, tugendhaft* Jāān. 1, 89. MBn. 3, 13779. 4, 593. 12, 9721. 13, 3302. Hariv. 13235.

वृत्तशत n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279, *b*, 4.

वृत्तशालिन् adj. = वृत्तवत् 2) R. Gorr. 1, 72, 33.

वृत्तसाधिन् adj. *wegen seines Lebenswandels in gutem Rufe stehend:* क्षत्रिय MBn. 13, 3776.

वृत्तसादिन् adj. *guten Betragen zu Schanden machend, sich schlecht betragend, unsittlich* R. 2, 34, 37.

वृत्तस्थ adj. *im guten Lebenswandel verharrend, einen guten Lebenswandel führend:* शूद्र M. 11, 126. 129. 12, 110. Kathās. 73, 23; vgl. वृत्ते स्थितः Rāgh. 5, 33. तत्रवृत्ते स्थित: MBn. 7, 6741.

वृत्तातेप (वृत्त + आ°) m. *eine Erklärung, dass man mit etwas Geschehenem nicht einverstanden sei, nicht recht daran glauben könne,* Kāvjād. 2, 122. Beispiel Spr. (II) 238. — Vgl. वर्तमानातेप und भविष्यदातेप.

वृत्ताध्ययनर्द्धि f. *Vortrefflichkeit des Lebenswandels und der Studien;* als Erkl. von ब्रह्मवर्चस AK. 2, 7, 33. H. 838. वृत्ताध्ययनसंपत्ति f. dass. Hālā. 2, 242.

वृत्तानुवर्तिन् adj. = वृत्तस्थ R. Gorr. 2, 53, 12.

वृत्तान्त (वृत्त + अन्त) m. (n. wohl nur fehlerhaft ṚV. Anukr. bei Rosen zu ṚV. 1, 6, 3. Kathās. 2, 29. Pañcat. 30, 22) 1) *Geschichte, Vorfall, Begebenheit, Erlebnisse, Lebensumstände; Bericht über einen Vorfall u. s. w.*; = वार्ता AK. 1, 1, 5, 3. 3, 4, 44, 66. H. 260. an. 3, 304. Med. t. 160. Hālā. 1, 146. — Çikṣ. Bh. 26, 3. Kāṭj. Çr. 25, 14, 28 (pl.). न ब्राह्मणक्षत्रिययोरापद्यपि हि तिष्ठतोः । कस्मिंश्चिदपि वृत्तान्ते गृहा भोज्यापदिश्यते ॥ M. 3, 14. MBn. 1, 102 (pl.). दृष्ट्वा चैनं ततो ऽपृच्छन्वृत्तान्तं सर्वमेव तम् 3, 2182. वृत्तान्तमुत्तरं ब्रूहि 11, 3. इत्येवं मम वृत्तान्तः कथ्यतां को युवामिति Hariv. 14618. 16355. R. 3, 19, 16. 5, 64, 14. Spr. 2886. Raghu. 3, 66. 14, 37. Çiç. 108, 16. Sāh. D. 407. Kathās. 1, 65. 7, 29. आमूलतः सर्वं वृत्तान्तं तमवर्णयत् 12, 191. 13, 161. 18, 198. 25, 54. 28, 185. 72, 11. fg. 90, 96. Rāǵa-Tar. 1, 338. 349. 3, 15 (pl.). 323. 4, 77. 109. 338 (pl.). 5, 67. 6, 80. Prab. 20, 6. 84, 1. 88, 12. Pañcar. 1, 4, 45. Pañcat. 38, 22. 130, 4. 10. 236, 1. Hit. 17, 4. 30, 18. 123, 14. Vet. in L.A. (III) 8, 15. 9, 6. 11, 2. 4. Sāj. zu ṚV. 1, 114, 6. आशुश्रावं तं सूतं रामवृत्तान्तकारणात् um *Nachrichten von Rāma zu erhalten* R. 2, 38, 1. कथयामास भूयो ऽपि रामवृत्तान्तविस्तरम् Rāma's *Erlebnisse* 59, 2. ज्ञार° *die Erlebnisse mit dem Nebenmanne* Spr. 2712. उपकोशा° *Geschichte der Up.* Kathās. 4, 90. Sarvadarçanas. 71, 8. समर° Prab. 83, 9. रूप° Rāǵa-Tar. 1, 252. तद्वृत्तान्ता न दर्शिताः 4, 307. Prab. 25, 4. Hit. 68, 9. न कस्यचिदाख्येयो ऽयमस्मद्वृत्तान्तः Pañcat. 236, 3. स्वात्मवृत्तान्तः सर्वो निवेदितः 68, 21. तद्ब्रूहि निजवृत्तान्तं जन्मतः प्रभृति Kathās. 2, 28. स्व° 32. 7, 22. 34, 227. Sāj. zu ṚV. 1, 123, 1. रात्रि° *was sich in der Nacht begeben hat* Kathās. 18, 124. कुशल° *Nachrichten über* R. 3, 79, 23. कार्यवृत्तान्तमपृच्छत् *Bericht über* 5, 36, 1. स्वागमन° Verz. d. Oxf. H. 128, *b*, 13. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): सभापर्व बहुवृत्तान्तम् *mit vielen Geschichten* MBn. 1, 407. बहुवृत्तान्ता मिथिला *wo Vieles vorgefallen ist, von der man Vieles erzählt* 3, 13709. श्रुत° R. Gorr. 2, 5, 25. Kathās. 12, 186. ज्ञात° 18, 344. Rāǵa-Tar. 4, 437. अवगत° Çiç. 111, 4, v. l. विदित° Rāǵa-Tar. 3, 281. Prab. 113, 14. Kathās. 39, 88. उक्त° 82, 268. उक्तस्व° 21, 124. 123, 263. आख्यातवृत्तान्त 32, 122. यद्यावदधिगतनरपतिकोपाग्र्यशेषवृत्तान्त vollständige *Nachrichten über* Spr.

(II) 1704. — 2) *Hergang, die Art und Weise, wie Etwas vor sich geht, — geschieht:* लोकपर्यायवृत्तान्तं प्राज्ञो जानाति नेतरः Spr. 1424. रमणीयः किल दिनावसानवृत्तान्तो राजवेश्मनः Vikr. 37,10. = प्रकार AK. 3,4,24, 66. H. an. (wo प्रकाश wohl nur Druckfehler für प्रकार ist). = प्रभेद Med. = भाव Viçva im ÇKDr. Ausserdem noch folgende Bedd. bei den Lexicographen: कार्त्स्न्य AK. H. an. Med. प्रकरण AK. H. an. प्रक्रिया und प्रस्ताव Med. अवसर und एकान्त(वाचक) Viçva im ÇKDr. सद्वृत्तान्ताः Hit. 78,3 fehlerhaft für सद्वृत्ताश्च भूताः, wie die v. l. hat. — Vgl. प्रतिवृत्तान्तम् (*der Erzählung gemäss, wie berichtet wird* auch Râǵa-Tar. 1,159), प्राग्वृत्तान्त, यथा°, लोक°.

वृत्ति (von वर्त्) f. 1) *das Rollen* (von Thränen): स्तम्भितबाष्प° Çâk. 81, 3. उपरुद्धवृत्तिं बाष्पम् 90; vgl. अश्रूणि वर्तय् *Thränen vergiessen* unter वर्त् caus. 1). — 2) *Art und Weise zu sein, — zu thun, — zu leben, Verfahren, Benehmen:* आहिताग्नि° Lâṭj. 10,18,11. त्रैविद्य° 8,6,29. वैश्य° Çâṅkh. Gṛhj. 4,11. एषोदिता गृहस्थस्य वृत्तिर्विप्रस्य M. 4,259. प्रबलतमसामेवंप्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः Çâk. 183. Râǵa-Tar. 6,327. वशिनां हि परपरिग्रहसंश्लेषपराङ्मुखी वृत्तिः Spr. (II) 1806. सरितामिव नारीणां वृत्तिर्निम्नानुसारिणी (I) 2155. 2887. 5369. किं दत्तजीविकापि त्वमीदृशीं वृत्तिमाश्रिता Râǵa-Tar. 6,22. प्रमदाध्युषितां वृत्तिं सीता कच्चिन्न वर्तते R. 3,1,7. तस्यैवं वर्तमानस्य पूर्वेषां वृत्तिमन्वहम् Bhâg. P. 1,16,18. कां वृत्तिं वर्तयत्यसौ R. 7,88,3. तां वृत्तिमनुवर्तस्व 4,31,7. वयोबुद्ध्यर्थवाग्वेषश्रुताभिजनकर्मणाम् । आचरेत्सदृशीं वृत्तिमजिह्मामशठां तथा ॥ Jâǵń. 1, 123. शिष्यवृत्तिं समापन्नाः MBh. 15,40. इन्द्रस्तयोः स्वेच्छावृत्तिं न सहते Çuk. in LA. (III) 33,8. वर्तेत याम्यया वृत्त्या M. 8,173. R. 2,109,8. कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः Bhâg. P. 1,6,3. पूर्वराजर्षिवृत्त्या R. 2,23,27. नागरिकवृत्त्या संज्ञापयैनाम् Çâk. 60,2. प्रच्छन्नवृत्त्या Çuk. in LA. (III) 34, 10. मध्यां वृत्तिं समाश्रयेत् Spr. 2252. व्यपनयतु स वस्तामसीं वृत्तिमीशः Mâlav. 1. आसुरीं वृत्तिमाश्रित्य Bhâg. P. 4,26,5. आश्रयेद्वैतसीं वृत्तिं न भौजंगीं कथं च न Spr. 3175. Kathâs. 5,6. सैंहीं वृत्तिमुपाश्रितः Spr. 2757. *Verfahren —, Benehmen gegen Jmd;* mit loc.: विद्यागुरुष्वेतदेव नित्या वृत्तिः M. 2,206. रिपौ Spr. (II) 206. Ragh. 10,30 (pl.). Mâlav. 9,2. पितुर्भगिन्यां मातृवद्वृत्तिमातिष्ठेत् M. 2,133. गुरोर्गुरौ संनिहिते गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् 205. 247. श्रेयस्सु गुरुवद्वृत्तिं नित्यमेव समाचरेत् 207. समां वृत्तिमवर्तन्त तयोः MBh. 15,9. R. 2,44,5. 58,17. fg. 73,8. 104,19 (112,23 Gorr.). R. Gorr. 2,75,25. 3,1,10. 4,17,52. कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने Çâk. 93. am Ende eines adj. comp.: तद्विपरीत° Ragh. 2,53. पराधीन° Megh. 8. आश्रमविरुद्ध° Çâk. 177. मेध्यविविक्त° Bhâg. P. 3,1,19. नास्तिक° M. 3,150. वृषल° 164. बक° 4,30. ज्येष्ठ°, अज्येष्ठ° 9,110. मुनि° Ragh. 1,8. पतंग° Spr. 1950. वेतस°, भुजंग° 3176. नेमि° Ragh. 1,17. — 3) *ein gutes, achtungsvolles, liebevolles Benehmen, ein Gefühl der Achtung und Liebe für Jmd* (vgl. गुरोर्गरीयसी वृत्तिर्या च शिष्यस्य MBh. 13,5114); die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend: पितृ°, मातृ° MBh. 12,3996. गुरोः 3997. गुरु° 15,11. R. 2,30,36. 90,20. स कौरव्यः कुशली तात भीष्मो यथापूर्वं वृत्तिरस्त्यत्र कच्चित् MBh. 5,692. वृत्तिः = अस्मासु स्नेहः Nîlak. वृत्ति v. l. für वृत्त *guter Wandel* Spr. (II) 71. — 4) *allgemeiner Gebrauch, Regel* ṚV. Prât. 4,12. AV. Prât. 1,8. — 5) *Art und Weise des Verhaltens; Wesen, Natur, Art:* संध्यक्षराणि संस्पृष्टवर्णान्येकवर्णवद्वृत्तिः AV. Prât. 1,40. आन्तर्येण वृत्तिः 93. परोक्षगुणवृत्तयः Spr. (II) 1566. कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः । मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्यति वने ऽथ वा ॥ 1845. am Ende eines adj. comp.: भोगा भङ्गुरवृत्तयः (I) 2071. गुरु°, लघु° ṚV. Prât. 18,33. — 6) *Zustand:* सात्त्विकी, राजसी, तामसी Tattvas. 19. fg. — 7) *das Sichbefinden —, Vorkommen —, Erscheinen in, an:* अथ धर्मस्य कामादपक्रान्तस्य कुत्र वृत्तिः *wo befindet er sich?* Prab. 64,4. am Ende eines adj. comp.: नृभिर्गोधनैश्चापि वनवृत्तिभिः Hariv. 4285. उन्मार्ग° Kathâs. 22,239. समीप° (ed. Bomb. °वर्तिन्) Pańḱat. 67,35. गुणकर्ममात्रवृत्ति — असमवायहेतुत्वम् Bhâshâp. 22. 26. 164. नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषाः Tarkas. 4. पृथिव्योजलतेजो° (रूप) 13. 54. परोक्ष° so v. a. *abwesend* Spr. (II) 1566. — 8) *das Vorkommen, Dasein:* अनुष्टुभाम् Lâṭj. 8,1,13. 5,15. गुणत्वोपाधिना सकलद्रव्यवृत्तिः Sarvadarçanas. 105,5. अनन्यथासिद्धकार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम् Tarkas. 21. प्रतिहततमो° (अधिकार) Vikr. 20. व्रतापदेशोज्झितगर्व° (वपुस्) 53. — 9) *das Obliegen, Hingegebensein* (die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend) P. 1,3,33. Vop. 23,30. क्षत्रियस्य त्रये वृत्तिः समाहिता MBh. 2,1951. प्राणैरपि हिते वृत्तिः Mahavîrak. 92,15. सान्त्वधर्मार्थवृत्तिभिः Spr. (II) 1058. धर्म° (I) 5117. सेवावृत्तिविद् 2799. राग° Râǵa-Tar. 4,27. अद्रोह° 5,323. लब्धपरिपालन° Spr. (II) 1493. भोजनवृत्तिषु (I) 1303. जघन्यगुणवृत्तिस्थ (vgl. जघन्यगुणवृत्तिता MBh. 14,999) Bhag. 14,18. am Ende eines adj. comp.: शतैरक्ष्णामनिमेषवृत्तिभिः Ragh. 3,43. अशक्यारम्भ° Spr. (II) 713. धैर्य° 1519. मौन° 2247. द्रोह° 2399. Râǵa-Tar. 6,257. करुणा° Megh. 91. अनृशंस° R. 2,21,58. स्वबाहुं वः प्रतिकूलवृत्तिम् Bhâg. P. 3,16,6. — 10) sg. und pl. *Lebensunterhalt, Erwerb, Gewerbe, Mittel zum Leben* AK. 2,9,1. 3,4,24,75. Trik. 3,3,133. H. 864. fg. an. 2,198. Med. t. 59. Halâj. 2,415. Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 2,112. Einschiebung nach Nir. 6,5. Kâtj. Çr. 28,2,14. Lâṭj. 8,7,10. M. 1,113. 3, 286. आत्मनो वृत्तिमन्विच्छन् 4,252. ज्यायसी 10,95. वृत्तिमाकाङ्क्षन् 121. Jâǵń. 2,48. 281. MBh. 3,8452. असृजद्वृत्तिमेवाग्रे प्रजानां हितकाम्यया 13, 3706. 3710. कर्षकाणां कृषिर्वृत्तिः पण्यं विपणिजीविनाम् । गावो ऽस्माकं परा वृत्तिः Hariv. 3809. अन्नार्जनोपाया वृत्तयः भैक्षोत्सृष्टयथालब्धाभिधा इति Sarvadarçanas. 75,18. fg. 74,14. विपुला Suçr. 2,395,12. Kâm. Nîtis. 2,19.21. येन साधारणी वृत्तिः स शत्रुः Spr. 4453. वृत्त्यन्तराभावात् Kathâs. 20,23. Bhâg. P. 3,6,34. 12,35. 41. वृत्त्यर्थम् M. 2,141. 5,22. Spr. 2889. R. Gorr. 2,32,22. °हेतोस् M. 4,11. आत्मवृत्तये Jâǵń. 1,29. 216. M. 11, 7. दिने दिने स्वर्णशतं दीयते वृत्तये मम Kathâs. 53,83. तस्य वर्षं प्रति वृत्तये (so ist zu lesen) करभमेकं प्रयच्छति Pańḱat. 229,6. भैक्षेण व्रतिनो वृत्तिः M. 2,188. फलैः Spr. 2959. 5374. Çâk. 171. राज्ञो वृत्तिः प्रजागोप्तुरविप्राद्वा करादिभिः Bhâg. P. 7,11,14. अतो ऽन्यतमया वृत्त्या जीवन् M. 4,13. 10,83. Jâǵń. 3,39. कया वृत्त्या वर्तितं वश्चरद्भिः क्षितिमण्डलम् Bhâg. P. 1,13,8. वृत्त्या स्वभावकृतया वर्तमानः 7,11,32. शूद्रवृत्त्यापि वर्तयेत् (वैश्यः) M. 10,93. लिङ्गिवेषेण यो वृत्तिमुपजीवति 4,200. वृत्त्युपजीविन् Mârk. P. 14,71. मयि पञ्चत्वमापन्ने कां वृत्तिं वर्तयिष्यति R. 2,63,30. क्षत्रवृत्तिं वर्तयेत् Lâṭj. 8,12,1. वृत्तिं समास्थाय M. 4,2. वैश्यवृत्तिमातिष्ठन्ब्राह्मणः 10,101. पुरुषो यया वृत्तिं प्रपद्यते Bhâg. P. 3,6,21. जघन्यो नोत्तमां वृत्तिमनापदि भजेन्नरः 7,11,17. मूलफलैर्वृत्तिं कुरुष्व *sein Leben unterhalten —, leben von* Spr. 4544. Kathâs. 4,126 (act.). 20,143. 56, 75. वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः Spr. 2386. यश्चास्य कुरुते वृत्तिम् *einen Lebensunterhalt gewähren* MBh. 13,3447. केन वृत्तिं कल्प-

यसि *wovon ernährst du dich* 1,700. भैक्षेण 701. वृत्तिं धर्म्यां प्रकल्पयेत् *einen Lebensunterhalt anweisen* M. 7,125. 10,124. 11,22. स्त्रीणां प्रेष्यजनस्य च। प्रत्यहं कल्पयेद्वृत्तिम् 7,125. 11,22. विधाय वृत्तिं भार्यायाः 9, 74. fg. Suça. 2,394,17. Spr. 2304. Hariv. 336. वृत्तीनामेष (so die neuere Ausg.) वो दाता भविष्यति नराधिपः 335. स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्तिं हरेच्च यः Bhâg. P. 10,64,39. दत्त्वा दिवसवृत्तिं च तेषाम् Kathâs. 38, 33. 36,50. 33,34. वृत्तिं चास्य प्रादिष्टवान् 24,129. °कर्षित M. 2,34. 8,411. कालातिक्रमणं वृत्तेर्यो न कुर्वीत भूपतेः so v. a. *Sold* Spr. (II) 1697. वृत्तेर्निवायाः ततिः (I) 5373. °तीणा MBu. 13, 3012. °वैकल्य M. 10, 95. °भङ्ग Spr. 3380. °च्छेद् Kâm. Nîtis. 5,42. 15,4. °क्षाम Kusum. 24,5. कृतान्न° *Lebensunterhalt mittels des Feuers, Schmiedehandwerk u. s. w.*: जीवन्ति ये च कृतान्नवृत्त्या Vaitân. Bau. S. 5,35. Am Ende eines adj. comp.: क्षीण° M. 8,341. क्षत° R. 2,32,28. धर्मोपार्जित° Pañcat. 6,5. क्यूत° *lebend von* M. 3,160. उञ्छ° 8,260. R. 2,32,24. उञ्छशिल° Kusum. 24, 3. ऋयाचित°, कृष्याद्य°, सेवा° 4. वागुरा° M. 10,32. शस्त्र° 12,45. गो° Hariv. 4123. माल्य° 4479. वन्य° Bâlar. 1,88. 2,28 (wo mit der ed. Calc. °वृत्तिः zu lesen ist). पयोद्° Spr. (II) 914. घटश° (I) 2037. वार्ता° Bhâg. P. 7,11,15. 11,23,6. दास° *als Knecht seinen Unterhalt findend* Vaitân. Bau. 21,7. सं° *Mangel an Mitteln zum Leben, Nahrungssorgen* M. 4, 223. Spr. (II) 701. fg. °कर्षित M. 10,101. MBu. 4,229. — 11) *Wirkung, Thätigkeit, Function*: = प्रवर्तन Med. = परिणाम Comm. यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयोनौ उपशाम्यते। तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं स्वयोनौ उपशाम्यते॥ Maitrâyaṇ. 6,34. Kap. 2,31. इन्द्रिय° 33. वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः 33. °निरोध 3,31. Sâṅkhjak. 12. fg. 28. fgg. Colebr. Misc. Ess. I, 382. मनो नवद्वारनिषिद्धवृत्ति Kumâras. 3,50. इन्द्रियाणाम् 73. 7,64. Nîlak. 43. 47. 53. 58. 169. 223. 238. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः Jogas. 1,2. 3. 2,11. गुण° 15. 50. घीवृत्तयः Bâlar. 1. यत्तःकरण° 11. प्राणानाम् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 66. Prab. 41,3. 97,18. 99,1. Bhâg. P. 1,8,27. 9,31. 43. 3,5, 6. काल° 26. 6,27. 9,30. 12,2. 26,14. 22. 29. 29,23. 4,22,14. 53. 29,6. 5,14,8. 9. बुद्धेर्जागरणं स्वप्नः सुषुप्तिरिति वृत्तयः 7,7,28. विषमा वामा विधेर्वृत्तयः Spr. (II) 2955. भाग्यवृत्तयः Râja-Tar. 5,261. विनष्टवारित° (मद्न) Çiç. 44. — 12) *das Erscheinen —, Gebrauchtwerden eines Wortes in einer best. Bedeutung* (loc.), *die Function eines Wortes* Sin. D. 23. 32. 267. 271. दतिणशब्दस्य काले वृत्तिर्न भवति P. 5,3,28, Schol. दतिणा। उत्तर। इत्येताभ्यां दिग्देशकालवृत्तिभ्याम् obend. गुरुशब्दश्चात्र मुख्यया वृत्त्या पितरि वर्तते so v. a. *nach seiner Hauptbedeutung* Mit. III, 64, *a*, 15. Sin. D. 15,6. मुख्यार्थासंभवे च गौणी वृत्तिराश्रीयत एव Schol. zu Kâtj. Ça. 1,6,25. 4,3,25. Weber, Rimav. Up. 336. 345. तेरोव्यञ्जनपादवृत्तौ तुल्यवृत्ती *werden auf gleiche Weise gebraucht, sind gleichbedeutend* AV. Paitr. Comm. 154. — 13) *Art und Weise der Aussprache, — Recitation*: लेशवृत्तिरधिस्पर्शम् (यक्ष्मः) AV. Paitr. 2,24. द्रुता, मध्यमा, विलम्बिता ṚV. Paitr. 13,19. Çiksâ 22 in Ind. St. 4,269. — 14) im Drama *Stil, Charakter, genre*, deren vier angenommen werden: कैशिकी (hier und da fälschlich कौशिकी), सात्वती, आरभटी (die drei सर्ववृत्तयः) und भारती (शब्दवृत्ति); die Audbhaṭa nehmen noch eine fünfte Vṛtti an, ohne ihren Namen zu nennen; als Unterabtheilungen erscheinen मध्यमकैशिकी und मध्यमारभटी. AK. 3,4,14. 75. H. 285. H. an. Med. Bharata, Nâṭyaç. 18,4. fgg. 20,1. fgg. Daçar. 2,44. 55. fgg. Sin. D. 410. fgg. Pratâpar. 10,*a*,7. 24,*b*,1. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,51. 208,*a*, No. 489. Hierher wohl Kumâras. 7,91. — 15) *Alliteration, häufige Wiederholung desselben Consonanten*: रसविषयव्यापारवती वर्णरचना वृत्तिः Sin. D. 259, 8. 4. fünf Arten aufgeführt: मधुरा प्रौढा परुषा ललिता भद्रेति वृत्तयः पञ्च Hall in der Einl. zu Daçar. S. 22. — 16) = वृत्त *Rhythmus des Versschlusses* Ind. St. 3,84. 113. 150. — 17) *Wortart, Wortform*: °सामान्य Nir. 2,1. वृत्तयः पञ्च कृत् तद्धित समास एकशेष सनाद्यन्तधातु इत्येतद्रूपाः P. 2,1,3, Schol. तत्र वृत्तिश्चतुर्धा समासतद्धितकृत्सनाद्यन्तधातुभेदात् Vers. d. Oxf. H. 178, *a*, 8. fg. — 18) *Commentar* (zu einem Sûtra) AK. 3, 4, 8, 15. Taik. (विवृतौ zu lesen). H. 257. fg. H. an. Med. Vaṭs. a. a. O. गण उक्थादि zu P. 4,2,60. कथादि zu 4,102. R. 7,36,15. Çiç. 2,112. माधुरी (माधुरी) P. 4, 3, 108, Schol. Colebr. Misc. Ess. I, 331. Verz. d. Oxf. H. 257,*b*,19. सूत्रं वृत्तिर्विवृतिः Sarvadarçanas. 90,19. — Vgl. स°, आत्म°, ऋतु°, एकैक°. एवं°, तिति°, क्ति° (auch Râja-Tar. 3,198, wo mit der ed. Calc. so zu lesen ist), त्रि°, दुर्वृत्ति, देव°, धातु°, नद्य°, परोक्ष°, प्रति°, प्रतिकूल°, प्रत्यक्ष°, प्रयोग°, प्राचीन°, प्राच्य°, प्राण°, बहिर्वृत्ति, ब्रह्म°, भाग°, भाव° (unter भाववृत्त), भाषा°, भिक्षा°, भिन्न°, भेद°, भोजन°, मध्यमक°, मनो°, यज्ञा°, याम°, ऋण°, लिङ्ग°, वणिग्वृत्ति, वाक्य°, विश्व°, शरीर°, स°, स्व°, हृदय°, वार्तिक.

वृत्तिक am Ende eines adj. comp. (f. या) 1) = वृत्ति 7): सर्ववारवृत्तिको व्यानः H. 1109. — 2) = वृत्ति 10): सं° *keinen Lebensunterhalt gewährend*: देश Spr. (II) 699. प्रभु 700. — 3) = वृत्ति 11): मननवृत्तिकं मनः। मननमत्र निश्चयस्तद्वृत्तिका बुद्धिः Schol. zu Kap. 1,72. fg. Nîlak. 44. Sarvadarçanas. 164,8.

वृत्तिकार adj. (f. ई) *Lebensunterhalt gewährend* MBu. 13,3121. Suça. 1, 3,16. Kathâs. 27,112. Bhâg. P. 3,3,27. 4,16,22. 17,10. 8,19,20.

वृत्तिकार m. *Verfasser eines* oder *des Commentars* (zu einem Sûtra) Colebr. Misc. Ess. I, 297. Ind. St. 3,396. Siddh. K. zu P. 3,1,96. Schol. zu 1,4,3 in der ed. Calc. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,7. 210,*b*, No. 497. Verz. d. B. H. No. 757. Sarvadarçanas. 56,13. 21. 165,14. 168,2.

वृत्तिता f. am Ende eines comp. nom. abstr. eines auf वृत्ति ausgehenden adj. comp. 1) von वृत्ति 2): भिन्न° M. 12,33. MBu. 14, 999. सिंह° Kâm. Nîtis. 11,45. सदृश° Spr. (II) 1180. — 2) von वृत्ति 9): अघन्यगुण° (vgl. अघन्यगुणवृत्तिस्व Bhag. 14,18) MBu. 14,999. द्रोह° Râja-Tar. 4, 671. — 3) von वृत्ति 10): पयोमूलनीवारफल° Kâm. Nîtis. 2,27. अनायत्त° Spr. (II) 1451.

वृत्तित्व n. dass. 1) von वृत्ति 7) Bulâkipâr. 67. — 2) von वृत्ति 9): यस्यो वामैकवृत्तित्वं किमप्येतत्प्रलापते: Kathâs. 21,46. — दीर्घ° MBu. 13,5116 fehlerhaft für दीर्घदर्शित्व, wie die ed. Bomb. liest.

वृत्तिद् adj. (f. घी) *Lebensunterhalt gewährend, Ernährer* MBu. 13,3710. R. Gorr. 2,13,21. Bhâg. P. 3,13,7. 4,14,23. 18,30. 21,21. 23,2. 7,2,38. 15,15. Mâlav. P. 99,28.

वृत्तिदातृ nom. ag. dass. MBu. 13,5129.

वृत्तिन् am Ende eines adj. comp. 1) = वृत्ति 9) MBu. 13, 737. — 2) = वृत्ति 10): कृश° (so die ed. Bomb.) MBu. 13,1630. — Vgl. सु°.

वृत्तिमत् adj. 1) von वृत्ति 2): क्षिति° *das Verfahren der Erde befolgend* Bhâg. P. 4,16,7. — 2) von वृत्ति 9): इदानीमिदमुद्धार्यमिति वृत्तिमतः पुरा। मम *diesem obliegend* so v. a. *mit diesem Gedanken beschäftigt* LA. (III)

88,11. fg. — 3) von वृत्ति 10) *einen Lebensunterhalt habend* Bhâg. P. 8, 19,36. am Ende eines comp.: मूलव्यसन° M. 10,38. चण्डालसम° MBh. 13,2589. — 4) von वृत्ति 11) *eine Thätigkeit —, eine Function ausübend:* चित्तं यत्र शरीरे वृत्तिमत् Sarvadarçanas. 162,13. निरय° *dessen Function* निरय *ist* Schol. zu Kap. 1,65.

वृत्तिरक्षणा f. N. pr. einer der Gattinnen Rudra's Bhâg. P. 3,12,13 nach der Lesart der ed. Bomb.

वृत्तिसंग्रह m. Titel *eines gedrängten Commentars* zu den Sûtra Pâṇini's Colebr. Misc. Ess. II, 40.

वृत्तिस्थ m. *Chamäleon, Eidechse* Râǵân. im ÇKDa.

वृत्तिहरण adj. wohl *sich um den Lebensunterhalt bringend* Paramârthas. in Ind. St. 2, 175, N. 1.

वृत्तिहर्तृ nom. ag. *Jmd den Lebensunterhalt entziehend* MBh. 5,1346.

वृत्तेर्वारु (वृत्त + इ°) m. *Wassermelone* Râǵân. im ÇKDa.

वृत्तोक्तिरत्न (वृत्त - उक्ति - रत्न) n. Titel eines Commentars zum Piṅgala Colebr. Misc. Ess. II, 64.

वृत्त्य R. 3,46,7 fehlerhaft für वृत्त *Handlungsweise.*

वृत्त्यनुप्रास (वृत्ति + अ°) m. *Alliteration, häufige Wiederholung desselben Consonanten* Sâh. D. 635. Prâtiśâkh. 72,b,1. Schol. zu Kâvyâd. 1,56.

वृत्त्युपाय (वृत्ति + उ°) m. *Mittel zum Leben* M. 10,2.

1. वृत्य partic. fut. pass. von वृ P. 3,1,109. 101, Schol. Vop. 26,17. fg.

2. वृत्य partic. fut. pass. von वृत् P. 3,1,110, Schol.

वृत्र (von 1. वृ) Uṇâdis. 2,13. 1) *Bedränger, Feind, feindliches Heer:* a) n. gew. pl.: इन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम् RV. 7,48,2. 8,9,4. पुत्रं वृत्रेषु वज्रिणम् 1,7,3. यत्काव्ये दृशे वृत्राण्यप्रति नि सस्रुषाणि बर्हया: 1, 53,6. 48,13. 3,49,1. 4,17,19. 22,2. 24,10. स क्षेति वृत्रा समिथेषु शत्रून् 41,2. उभयानि 6,19,2. 26,2. वृत्रा, दस्यून् 29,6. वृत्रा, समित्रान् 33,1. उभयाँ अमित्रान्दासा वृत्राण्यार्या च 8. 46,1. 7,83,1. वृत्रेषु शूरा मंसते उषा: 34,2. 92,4. Vikkam. 1,3. — b) m. = अरि, रिपु AK. 3,4,25,166. H. an. 2,459. Med. r. 86. Halâj. 5,60. Viçva bei Uṇâdis. वृत्रान्ध्शरित् TS. 2,4,12,1. — 2) m. N. eines von Indra bekämpften und erschlagenen Dämons, der die himmlischen Wasser raubt; häufig Vṛtra Ahi genannt; ein Sohn Tvashṭar's von der Danâjus (Anâjushâ) AK. 3, 4,25,166. 31,240. Trik. 2,8,22. H. 174. H. an. Med. Halâj. Viçva a. a. O. RV. 1,32,5. 7. 51,4. 80,2. fgg. 121,11. 2,11,9. 13. अपो वज्रिवांसं वृत्रम् 14,2. 30,2. परिधिं नदीनाम् 3,33,6. नदीवृतम् 8,12,26. वृत्रेण यद्दर्हिणा बिभ्रदायुधा समस्थिवां: 10,113,8. 6. AV. 6,85,3. 134,1. 8,5,3. 12, 1,37. 28,128,13. Çat. Br. 1,1,3,4. MBh. 1,2541. 2680. बलवृत्रौ 3, 12073. 5,7024. 12,3660 (fehlerhaft वृत्त ed. Calc.). Harîv. 2286. 7302. 12803. 13185. बलो वृत्रहाता 13187. वृत्रासुर 13589. 14289. °नाश R. 2, 23,30. Vers. d. Oxf. H. 39,b,25. 71,b,31. Bhâg. P. 6,9,17. °नाशा: 10, 27. Mancherlei Legenden über ihn, z. B. TS. 2,1,4,5. 4,42,2. 5,1,2,3. 3,1,1. Ait. Br. 3,15. Çat. Br. 1,6,3,17. 4,1. 4,1,4,5. Çâṅkh. Br. 15,3. Pañcav. Br. 18,5,3. MBh. 5,378. fgg. 12,10002. fgg. 14,228. fgg. Harîv. 13387. fgg. Bhâg. P. 6,9,11. fgg. — 3) m. *Gewitterwolke* Naigh. 1,10. H. an. Med. Viçva a. a. O. AV. 3,21,2. वृत्राज्ञातो दिवाकर: 4,10,5. — 4) m. *Finsterniss* AK. 3,4,25,166. Trik. 1,2,2. H. ç. 19. H. an. Med. Halâj. Viçva a. a. O. — 5) n. so v. a. धन Naigh. 2,10. वित्त v. l. — 6) m. *Rad* (चक्र) Viçva. — 7) m. *Berg* H. an. Viçva; *ein best. Berg* Med. — 8) m. ein N. Indra's H. an. — 9) n. = धनि Comm. zu Uṇâdis. in Sidd. K. धनौ fehlerhaft für घने. — Vgl. बलवृत्र, बलवृत्रनिसूदन, बलवृत्रहन्.

वृत्रखादे adj. *den Vṛtra verzehrend:* Indra RV. 3,45,2. 51,9. 10,65,10.

वृत्रघ्न m. nach Sây. N. pr. eines Landstrichs an der Gaṅgâ: गङ्गायां वृत्रघ्ने ऽवघ्रात्यश्व पञ्चाशतं क्ष्यान् Ait. Br. 8,23. Offenbar dat. von वृत्रहन्. °घ्नी s. u. वृत्रहन्.

वृत्रतर compar. zu वृत्र. यद्धन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्र: RV. 1,32,5. nach Sây. so v. a. आवरणेन सर्वं तरति.

वृत्रतुर adj. *Feinde oder Vṛtra besiegend, siegreich:* Indra RV. 4, 42,5. 6,68,2. TS. 2,1,2,4. TBr. 2,8,2,5. Kâṭh. 13,3. दृळ्हं सूनो सहसो वृत्रतुरम् RV. 6,20,1. इयं न वृत्रतुरे वितु धारयम् 10,48,5. वज्र 99,1. VS. 6,31. — Vgl. वार्त्रतुर.

वृत्रतूर्य n. *Besiegung der Feinde, — Vṛtra's; siegreicher Kampf* Naigh. 2,17. RV. 1,106,2. 2,26,2. 6,13,1. 18,5. 8,7,24. 19,20. अपो यत्समुद्रमव वृत्रतूर्ये 10,66,5. इन्द्रो वृत्रमतरद्वृत्रतूर्ये TS. 2,5,2,6. VS. 1,12. TBr. 3,1, 2,1. Çâṅkh. Çr. 8,16,5.

वृत्रत्व n. nom. abstr. von वृत्र TS. 2,4,12,2.

वृत्रद्विष् m. Vṛtra's *Feind* d. i. Indra H. 174, Schol.

वृत्रनाशन adj. Vṛtra's *Tödter:* Indra Harîv. 7252.

वृत्रपुत्रा f. Vṛtra's *Mutter* RV. 1,32,9.

वृत्रभोजन m. *eine best. Gemüsepflanze,* = गण्डीर Râǵân. im ÇKDa.

वृत्रवध m. *das Erschlagen des* Vṛtra Nir. 7,10. Harîv. 2388. 7301. R. 4,38,4. Vers. d. Oxf. H. 12,b,18. 19,b, N. 6 (ein Schauspiel). 345, b,27. fg. Bhâg. P. 6,10. 12 in den Unterschrr.

वृत्रवैरिन् m. Vṛtra's *Feind* d. i. Indra Kathâs. 20,95.

वृत्रशङ्कु m. nach Comm. zu Kâty. Çr. 21,3,31 *Steinpfeiler* Çat. Br. 13,8,4,1.

वृत्रशत्रु m. Vṛtra's *Feind* d. i. Indra MBh. 3,1775. R. 4,11,12. Kumâras. 1,20. Varâh. Bṛh. S. 19,21. Kathâs. 31,75.

वृत्रहन् (वृत्र + हन्) adj. *den Feinden verderblich:* शवस् RV. 6,48,21.

वृत्रहत्य n. *Kampf mit den Feinden, — mit* Vṛtra RV. 1,52,4. 53, 6. स वृत्रहत्ये हव्य: 4,24,2. 6,47,2. 7,1,10. 10,48,5. 65,2. Çat. Br. 1, 6,4,12. Çâṅkh. Çr. 14,21,2. °हत्या f. Bhâg. P. 6,13,5. — Vgl. वार्त्रहत्य.

वृत्रहत्य m. dass. RV. 3,16,1.

वृत्रहन् 1) adj. °घ्नम् P. 8,4,12. °घ्ने, °घ्ना 2, Vârtt. 1. °घ्नी (im Epos), f. °घ्नी *Feindestödter, Vṛtra-Tödter, siegreich;* gewöhnlicher Bein. Indra's AK. 1,1,1,38. RV. 1,106,6. 2,70,7. वृत्रहा शूर सप्तये वसूनाम् 6,47,6. ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे 8,59,1. 10,49,6. AV. 3,6,2. 4,24,1. Çat. Br. 11,1,8,5. 13,3,4,9. MBh. 3,536. 1781. 9,655. Harîv. 13024. Râǵân. 3,63. Kumâras. 7,46. Varâh. Bṛh. S. 43,55. Bhâg. P. 3,7,18. Agni RV. 1,59,6. Sarasvatî 6,61,7. राजन् 1,91,3. वज्र 121,12. शंभु 6,17,4. शुभ्रै: 60,3. 4,42,9. 5,86,3. superl. °हन्तम RV. 1,78,4. 5,35,6. Agni 6, 16,48. 7,94,11. बृहदिन्द्राय गायत महतो वृत्रहन्तमम् 8,78,1. AV. 7,110, 1. Çâṅkh. Çr. 2,15,3. — 2) f. °घ्नी N. pr. eines Flusses Mâik. P. 57,19. VP. 185, N. 80. — Vgl. बलवृत्रहन् und वार्त्रघ्न.

वृत्रहन्तर m. *Tödter des* Vṛtra d. i. Indra MBh. 3,12816.

वृत्रारि (वृत्र + अरि) m. Vṛtra's *Feind* d. i. Indra Halâj. 1,32. Ka-

rnis. 27,62. 121,130.

वैवक् (von 2. वृ) adv. so v. a. वृथा: nach Sis. = पृथक्. वार्तघ्नता उप घर्वि । यतेते वृधगग्नयः RV. 8,43,4. 5.

वृथा (wie oben) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. 1) *zufällig, nach Belieben; ohne Weiteres, wie sich's fügt; lustig:* घा ग्नेनासो न पतिणो वृधा नरो दृव्या नो वीतये गत RV. 8,20,10. 1,58,4. 63,7. 88,6. उदपप्तन्नरुणा भानवो वृधा 92,2. 140,5. सद स्वगूर्ता दिव घा वृधा ययुः 168,4. वृधासृक्वत्पथिभिः (नदीः) 2,15,3. सूर्यस्तपति तप्यतुर्वृधा 24,9. नि ये रिणन्त्योजसा वृधा गावो न दुर्धुरः 5,56,4. AV. 20,127,3. RV. 6,12,5. वृधा पवित्रे सर्पति 9,16,7. 30,1. 64,17. 88,6. घृतैरिव धमा वृधा 22,2. वृधा पाजांसि कृणुते नदीषा 76,1. 88,5. 109,21. वृधा क्रीळन्त इन्दवः 21,3. 97,9. 10,26,7. 61,24. 93,13. तान्येके वृथैवापोस्यन्ति *werfen sie ohne Weiteres weg* TBa. 3,3,2,2. Śraḍḍh. Bh. 3,1. वृथोदकानि *das nächste beste Wasser* Śāṅ. Bh. 1,4,2,9. °मांस *das erste beste Fleisch, nicht näher geprüftes und als der Vorschrift entsprechend befundenes —, nicht nach der Vorschrift behandeltes —, nur zum eigenen Genuss dienendes Fleisch* 11,7,6,2. M. 4,213. 5,34. Jiñ. 1,167. MBh. 1,6032. Mārk. P. 34,56. Verz. d. Oxf. H. 281,b,35. °पक्व Gobh. 2,9,3. °पाकान्नभक्षणप्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 281,b,34. °कृसरसंयाव M. 5,7. Jiñ. 1,173. °प्रघ्न *nur zu seiner Befriedigung ohne Berücksichtigung der Götter* M. 5,38. वृथा = सविधौ AK. 3,4,22 (20), 9. H. an. 7,29. — 2) *unnützer Weise, für Nichts und wieder Nichts, vergebens, umsonst* AK. 3,4,22, (20), 9. 3,3,4. H. 1534. H. an. Med. avj. 37. स नाप्तदुष्कर्मभिरावास्यः । वृथैव स्यात् TBa. 3,2,8,8. तेनास्य तद्व्रतं संपद्यते Kauç. 68. न कुर्वीत वृथा चेष्टाम् M. 4,63. 8,111. MBh. 1,6032. 3,15551. 13,13334. R. Gorr. 2,6,12. तद्धनं च समुद्रस्य कथं तु (wohl नु zu lesen) न वृथा भवेत् 5,9,39. वृथा ज्ञातो मम श्रमः 15,1. Raṅg. 2,34. 5,56. 12,61. Çik. 72,10. 172. ad 54. Çiç. 3,53. Vaṇis. Bṛh. S. 104,53. Spr. (II) 46. 1446. 2033. वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम् (I) 2890. 5031. Kathās. 22,200. Bhāg. P. 1,7,31. P. 8,1,8, Schol. Sarvadarçanas. 70,7. संश्रुत्य च पितुर्वाक्यं न कर्तव्यं वृथा *für Nichts und wieder Nichts gesprochen haben, ein Wort unerfüllt lassen* R. 2,21,41. 7,65,35. गर्हितेन वृथा किं ते कत्थितेन च MBh. 1,5995. वृथा जन्म सपुत्रस्य 3,13353. वृथा जन्मानि चत्वारि वृथा दानानि षोडश 13353. 13357. Mārk. P. 121,10. °वाच् Gobh. 3,5,11. °सुत Nir. 11,4. वृथोक्त Mārk. P. 116,2. °ज्ञात M. 5,89. Spr. 1868. वृथोत्पन्न M. 9,147. वृथोच्छून Śiç. D. 214,3. वृथाया M. 7,47. वृथालम्भ 11,144. °छेद Jiñ. 3,276. °पाक MBh. 3,15552. °श्रम Pāṇ. 116,25. वृथाकार Spr. 1261. यत्र वृथाभिनिवेशः Hall. 4,99. °दान M. 8,159. Jiñ. 2,47. am Anfange eines adj. comp.: °लिङ्ग क्लिंमा MBh. 3,13059. °वादगतिस्मृति Bhāg. P. 3,5,14. वृथोद्यम 30,13. तेषां माता °प्रजा Mārk. P. 22,42. — 3) *verkehrt, falsch, unrichtig, unweise, mit Unrecht:* वृथा खलु मया मनसः संतापवृद्धिरुपेक्ष्यते Vikr. 55,20. यत्राद्दण्ड्येष्वपापेषु दण्डो वैधिर्यते वृथा Bhāg. P. 6,2,2. °ब्रूपनमावृत Harīv. 11151. °मार्गप्रदर्शिन् Kathās. 34,202. वृथाभिमान Spr. (II) 750. वृथाभिमानिन्, वृथोपदेशिन्, वृथानुष्ठान Weber, Ind. Stud. 111. am Anfange eines adj. comp.: °मति MBh. 2,594. वृथाचार 5,4149. °व्रत Harīv. 11187.

वृथात्व (von वृथा) n. *Vergeblichkeit* Śiç. D. 214,4.

वृथापेक्ष (वृथा + सक्) adj. *leicht bewältigend:* पक्षं पार्थिवैर्वि दस्यूपी-नावकृतो वृथाधाक् RV. 1,63,4.

1. वृद्ध (partic. von 1. वर्ध) 1) adj. P. 7,2,13, Schol. Der der Bedeutung nach entsprechende compar. ज्यायंस् und वर्षीयंस्, superl. ज्येष्ठ und वर्षिष्ठ P. 5,3,62. 6,4,157. Vop. 7,56. 58. zu belegen sind übrigens auch वृद्धतर und वृद्धतम. *a) erwachsen, gross geworden; gross, hoch u. s. w.;* = वृद्ध, प्रवृद्ध H. an. 2,261. Med. dh. 18. त्वं (इन्द्र) सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः RV. 1,5,6. वृद्धस्य चिद्वर्धतामस्य तनूः 6,24,7. वृद्धस्य चिद्वर्धतो यामिन्नतः 1,51,9. उत्सङ्गे वृद्धानां गुरुषु भवत्कीदृशः स्नेहः Vikr. 148. पर्वत RV. 5,60,3. येन वृद्धो न शवसा 6,44,3. घृतम 8,49,7. Indra 2,32,7. 4,19,1. AV. 11,8,34. VS. 18,4. क्रमवृद्धैर्दशोत्तरैः । तोयादिभिः *progressiv stets um das Zehnfache an Menge zunehmend* Buḍ. P. 3,26,52. यश्च तेन सुवर्णेन वृद्धकोशो ऽचिरेण सः । बभूव पुत्रको राज्ञा *angewachsen, vermehrt* Kathās. 3,24. वृद्धर्धनैः Hit. 115,3. Spr. (II) 630. fgg. शीतवृद्धतरायामात्त्रियामा यात्ति *länger geworden* R. 3,22,12. °वेग *stark, heftig, gross* Vaṇis. Bṛh. S. 27,6. — *b) herangewachsen* (im Gegens. zu *jung*), *alt, bejahrt* (subst. *Greis*) AK. 2,6,2,12. 42. Trik. 2,6,9. H. 339. H. an. Med. Hall. 2,348. वृद्धः समत्युत्तरवयस्कः Mit. I,23,a,3 v. u. Suçr. 1,129,1. 10. *über 80 Jahre alt* PrāyaçcittendUç. 2,b,4. — TS. 2,2,8,4. TBa. 1,7,8,3. Śraḍḍh. Bh. 4,6. Āçv. Gṛhj. 1,7,21. 14,8. 3,10,6. M. 2,150. 4,151. 179. 184. 7,26. 8,66. 71. 312. 330. 395. 9,230. 283. MBh. 1,6032. 6130. R. 2,1,10. 30,19. 59,20. 63,30. 37. 64,34. Raṅg. 9,75. 12,20. °सेवा Kām. Nītis. 4,6. °सेविन् 8,7. °सेविन् M. 7,38. वृद्धोपसेविन् Spr. (II) 504. 2836. (I) 4. न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः । यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः ॥ 1392. 1968. 2891. fg. 4624. 4627. Vaṇis. Bṛh. 24,11. Kathās. 18,355. वृद्धबाल n. MBh. 5,5428. 5436. अवृद्धबालकम् LA. (III) 92,9. ज्ञानवृद्धो वयोबालः *an Kenntnissen ein Greis, an Jahren ein Kind* R. 2,45,8 (43,10 Gorr.). घर्घवृद्धा AK. 2,6,6,17. अवृद्धा 19. वृद्धतम R. 5,1,97. वृद्धव्याघ्र Hit. I,4. वृद्धकुमारी P. 6,2,95, Schol. तापसवृद्धा Çik. 68,17 (vgl. gaṇa काडाराद्यि zu P. 2,2,38). कपिवीर° R. 5,60,20. कुरु° Bhāg. 1,12. कुल° Bhāg. P. 4,9,29. वीर° MBh. 1,4615. Daçak. 94,8. ग्राम° Mahān. 31. घोष° Raṅg. 1,45. ग्रुढात्त° Vikr. 43. घत्तःपुर° Kathās. 32,174. गुरु° 28,46. 96. कुलं सुवृद्धम् *ein sehr altes Geschlecht* Spr. (II) 1821. — *c) alt* so v. a. *erfahren, unterrichtet;* = पण्डित, प्राप्त, स u. s. w. AK. 3,4,22, 103. H. an. Med. Hall. 2,177. 186. नाप्राप्तकालो म्रियते सुतं वृद्धानुशासनम् MBh. 3,2570. 3038. Spr. 2619. Schol. 2 zu Bhaṭṭ. 1,27. — *d) hervorragend, sich auszeichnend durch* (die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend): ज्ञानेन वयसोत्तमा R. 2,45,12. त्रैविद्य° M. 7,37. MBh. 13,5103. यशो° 1,4692. विद्याशीलवयोज्ञान° R. Gorr. 1,80,14. कुलशील° 5,44,20. R. Schl. 2,1,9. Spr. (II) 688. प्रज्ञा°, धर्म°, विद्या°, वयसा (I) 1834. धन° 5178. Kumāras. 5,16. Hit. 19,3. श्रद्धा° R. 3,61,26. — *e) von grosser Bedeutung, wichtig* VS. Prāt. 1,169. — *f) freudig gestimmt, ergötzt, fröhlich; hochfahrend:* यस्मे वृद्धा यमज्यिक्व RV. 1,38,15. (मरुत्तिषु) वृद्धासु चिद्वर्धनो यासु चाकनत् *die freudigen Lieder, an welchen der Erfreuer* (Agni) *seine Lust haben mag,* 10,91,12. *stets* 5,20,2. 7,18,12. — *g)* in der Grammatik *gesteigert (zu* घा, ऐ *oder* घौ) AV. Prāt. 4,55. Liṅg. 7,8,5. Pushpas. 3,1. fgg. *in der ersten Silbe ein* घा, ऐ *oder* घौ *enthaltend* (oder *so behandelt, als wenn ein solcher Vocal dastände*)

P. 1, 1, 73. fgg. 4, 1, 148. 157. 171. 2, 114. 120. 141. 3, 144. Çiky. 2, 33. — 2) m. *ein älterer Nachkomme, ein einen älteren Nachkommen bezeichnendes Patronymicum oder Metronymicum* (z. B. गार्ग्य) im Gegens. zu युवन् (z. B. गार्ग्यायण) P. 1, 2, 65. fg. 4, 1, 166. — 3) m. *a) ein Bettelmönch unter den Çaiva* Vaṇ. Bṛh. 15, 1; vgl. वृत्तक 2) und वृद्धभावक. — *b)* = वृद्धदारक Rigân. im ÇKDa. — 4) f. धा N. pr. eines Weibes Ver. in LA. (III) 7, 5. — 5) n. *Benzoe* AK. 2, 4, 1, 10. H. an. Med. — Vgl. घृत°, तपो°, पर्जन्य°, ब्रह्म°, मद्°, मल्ल°, यज्ञ°, वयो°, वर्ष°, विष्णु°, वार्द्ध, वार्द्धक.

2. वृद्ध (partic. von 2. वर्धि) adj. *abgeschnitten, in seiner Wurzel vernichtet:* वृद्धं (= क्लिव Nilak.) राष्ट्रं तत्रियस्य भवति ब्रह्म तत्रं यत्र विरुध्यतीक् MBh. 12, 2782.

वृद्धक (von 1. वृद्ध) adj. *alt, bejahrt;* m. *Greis* Harîv. 13631. अमुक्तवत्सु गर्भिणीवृद्धकादिषु MBh. 13, 7238. — Vgl. वार्द्धक.

वृद्धकर्मन् m. N. pr. eines Fürsten VP. 384, N.

वृद्धकाक m. *Rabe* H. 1323.

वृद्धकात्यायन m. Kâtjâjana *der Aeltere* Ind. St. 1, 235. Dîjaṇ. 148, 13.

1. वृद्धकाल m. *Alter, Greisenalter* Spr. 2514. 5032.

2. वृद्धकाल m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 69, *b*, 17.

वृद्धकावेरी f. *die alte* Kâverî (N. pr. eines Flusses): °माहात्म्य Mack. Coll. I, 84.

वृद्धकृच्छ्र n. Bez. *einer best. Kasteiung bei alten Leuten* (neben शिशुकृच्छ्र) Verz. d. Oxf. H. 283, *a*, 12.

वृद्धकेशव m. *eine Form der Sonne* Verz. d. Oxf. H. 70, *b*, 7. Verz. d. B. H. 146, *b* (51).

वृद्धक्रम m. *das einem alten Manne gegenüber zu beobachtende Verfahren* MBh. 1, 7064.

वृद्धक्षत्र m. N. pr. eines Mannes; s. वार्द्धक्षत्रि. — Vgl. क्षत्रवृद्ध.

वृद्धक्षेम m. desgl.; s. वार्द्धक्षेमि.

वृद्धगङ्गा f. N. pr. eines Flusses Kâlikâ-P. im ÇKDa.

वृद्धगङ्गाधर n. (sc. चूर्ण) Bez. *eines best. Pulvers gegen Durchfall* Çârṅ. Saṃh. 2, 6, 22.

वृद्धगर्ग m. Garga *der Aeltere* AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93, 1 v. u. Verz. d. Oxf. H. 278, *a*, 15. Verz. d. Cambr. H. 33. fg. 37. Vaṇ. Bṛh. S. 13, 2. 48, 2; vgl. Kern in der Vorrede S. 33. fg.

वृद्धगार्गीय adj. von Garga (Gârgja?) *dem Aelteren verfasst* Kern in der Vorrede zu Vaṇ. Bṛh. S. S. 33. fg.

वृद्धगार्ग्य m. Gârgja *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 270, *a*, 30. 278, *a*, 17. Verz. d. B. H. No. 1166. Verz. d. Cambr. H. 66.

वृद्धगोनस m. *eine Schlangenart* Suçr. 2, 265, 12.

वृद्धगौतम m. Gautama *der Aeltere* Ind. St. 1, 235. Verz. d. Oxf. H. 270, *a*, 34. 278, *a*, 26. Verz. d. B. H. No. 1166.

वृद्धघाणक m. Kâṇâkja *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 131, *b*, No. 238. Z. d. d. m. G. 19, 322. Spr. (II) Vorwort S. XVI.

वृद्धता (von 1. वृद्ध) f. 1) *Alter, Greisenalter:* राज्ञां वृद्धतां प्राप्तः प्रमाणे परमे स्थितः MBh. 13, 157. — 2) *das Hervorragen:* ज्ञान° *durch Wissen* Prab. 105, 14.

वृद्धतिक्ता f. *Clypea hernandifolia* Rigân. in Nigh. Pr.

वृद्धत्व (von वृद्ध) n. *Alter, Greisenalter* AK. 2, 6, 2, 40. Rasa. 1, 32. Spr. 2801. Verz. d. Oxf. H. 150, *b*, No. 320. Pañkat. 226, 2. Sîs. zu RV. 1, 125, 1. *das Alter eines Planeten* so v. a. *die Zeit unmittelbar vor seinem Untergange* Ind. St. 5, 297.

वृद्धदार m. = वृद्धदारक Rigân. im ÇKDa. unter वृद्धदारक.

वृद्धदारक m. *Argyreia speciosa oder argentea* Sweet. AK. 2, 4, 8, 2.

वृद्धदारु n. dass. Rigân. im ÇKDa.

वृद्धदुह्न m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âbhipratârina Âsv. Bâ. 3, 4. Çâṅkh. Ça. 15, 16, 10.

वृद्धदूप 1) *Acacia Sorresa* (शिरीष) Roxb. — 2) *Terpentin* Dhanv. in Nigh. Pr.

वृद्धनगर n. N. pr. einer *Stadt* Ind. St. 1, 392. Verz. d. Oxf. H. 382, *b*, No. 451. 395, *b*, No. 121. fgg. 403, *a*, No. 3.

वृद्धनाभि adj. *einen hervorstehenden Nabel habend* AK. 2, 6, 2, 13. H. 458.

वृद्धपराशर m. Parâçara *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 260, *a*, 21. 34. 270, *b*, 5. 278, *b*, 26. Ind. St. 1, 407.

वृद्धप्रपितामह m. *der Vater eines Urgrossvaters* Çabdar. und Çabdâv. im ÇKDa.

वृद्धबला f. *eine best. Pflanze,* = महाबला Rigân. im ÇKDa.

वृद्धबृहस्पति m. Bṛhaspati *der Aeltere* Kull. zu M. 9, 181. Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 15.

वृद्धबौधायन m. Baudhâjana *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 17.

वृद्धभाव m. *Alter, Greisenalter* R. 2, 21, 19. R. Gorr. 2, 32, 43. 4, 58, 3. 62, 2. Spr. (II) 2825. Pañkat. 50, 3.

वृद्धभोज m. Bhoga *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941. Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 9. 49.

वृद्धमनु m. Manu *der Aeltere* Ind. St. 1, 58. 234. fg. Kull. zu M. 9, 137. Verz. d. B. H. No. 1028. 1176. Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 27. 279, *a*, 9. 16. 356, *a*, 22.

वृद्धमरुत् adj. *grossmächtig:* Indra RV. 6, 20, 3. 37, 5.

वृद्धयवन m. Javana *der Aeltere* Wilson, Sel. Works I, 284. Verz. d. Oxf. H. 331, *b*, 1. °ज्ञातक Ind. St. 1, 407.

वृद्धयाज्ञवल्क्य m. Jâgñavalkja *der Aeltere* Ind. St. 1, 234. Verz. d. B. H. No. 1166. Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 34. 356, *a*, 24.

वृद्धयोगतरंगिणी f. Titel eines Werkes ÇKDa. unter वसन्तकुसुमाकर.

वृद्धराज्ञ m. *Rumex vesicarius* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer best. Art.

वृद्धवयस् adj. *hochkräftig* RV. 2, 27, 13.

वृद्धवसिष्ठ m. Vasishṭha *der Aeltere* Colebr. Misc. Ess. II, 392. Ind. St. 1, 234. Verz. d. B. H. No. 1166. 1176. Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 38. 279, *a*, 43. 356, *a*, 28.

वृद्धवाग्भट m. Vâgbhaṭa *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 311, *b*, 38.

वृद्धवादसूरि m. Vâdasûri *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 152, *a*, N. 3.

वृद्धवादिन् m. N. pr. eines Mannes Hall 166.

वृद्धवाशिनी f. *Schakal* Nir. 3, 21.

वृद्धवाक्न m. *der Mangobaum* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer best. Art.

वृद्धविगीतक m. *Spondias mangifera* Çabdam. im ÇKDa.

वृद्धविष्णु m. Vishṇu (als Verfasser eines Gesetzbuchs) *der Aeltere* Ind. St. 1, 234. Verz. d. Oxf. H. 336, *a*, 28. Mit. 207, 13.

वृद्धवृक्ष adj. wohl so v. a. das folgende und danach zu verbessern AV. 7, 62, 1.

वृद्धवृष्णिय adj. von *hoher Manneskraft* TS. 4, 4, 12, 2.

वृद्धवैयाकरणभूषण n. Titel einer Schrift (*das ältere* Vaij.) Verz. d. B. H. No. 704. *fg.*

वृद्धशङ्ख m. Çaṅkha *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 49. *fg.*

वृद्धशर्मन् m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1, 3150. Hariv. 990. 1476. 1931. Bhâg. P. 9, 24, 36. VP. 384, N.

वृद्धशवस् adj. *hochgewaltig:* die Marut RV. 5, 87, 6. 8, 25, 19.

वृद्धशाकल्य m. Çâkalja *der Aeltere* Çik. 101, 6.

वृद्धशातातप m. Çâtâtapa *der Aeltere* Ind. St. 1, 234. Weber, Gjot. 49. 53. Verz. d. B. H. No. 1024. 1149. 1166. Verz. d. Oxf. H. 271, *a*, 1. 3. 279, *b*, 15.

वृद्धशोचिस् adj. *gewaltig flammend* RV. 5, 16, 3.

वृद्धशौनकी f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1248.

वृद्धश्रवस् 1) adj. *mit grosser Schnelligkeit begabt:* Indra RV. 1, 89, 6. VS. 10, 9. m. Bein. Indra's Uśanas zu Unadis. 4, 226. AK. 1, 1, 6, 37. H. 172. Hall. 1, 52. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 15. 19, *a*, 25.

वृद्धश्रावक m. *ein Çiva'itischer Bettelmönch* Vaṇîn. Bṛh. S. 51, 20. Lassen in Ind. St. 2, 287. — Vgl. वृद्ध 3) *a*).

वृद्धसंघ m. *eine Gesellschaft alter Leute* AK. 2, 6, 2, 40.

वृद्धसुश्रुत m. Suçruta *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 311, *b*, 40. *fg.*

वृद्धसूत्रक n. *in der Luft umherfliegende Baumwollenflocken* Hin. 23.

वृद्धसेन (वृद्ध + सेना) 1) adj. *grosse Wurfgeschosse tragend:* die Marut RV. 1, 166, 8. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Sumati's und Mutter der Devatâgit Bhâg. P. 5, 15, 2.

वृद्धहारीत m. Hârîta *der Aeltere* Ind. St. 1, 235. Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 70, *b*, 34. 336, *a*, 35.

वृद्धाचल (वृद्ध + अ°) n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 84, *a*, 6. 7.

वृद्धात्रि m. Atri *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 277, *b*, 33.

वृद्धात्रेय m. Âtreja *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941.

वृद्धादित्य m. *eine best. Form der Sonne* (आदित्य) Verz. d. Oxf. H. 70, *b*, 33.

वृद्धाप्त *Ehrenplatz* Burn. Intr. 402, N. 1.

वृद्धायु (वृद्ध + आयु) adj. von *hoher Lebenskraft* RV. 1, 10, 12.

वृद्धार्यभट (so ist zu lesen) m. Âryabhaṭa *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 326, *a*, N. 1.

वृद्धि (von 1. वर्ध्) 1) f. = वर्धन Taitt. 3, 3, 249. H. an. 2, 281. Med. dh. 18. = स्फाति AK. 3, 3, 9. H. 1502. = कर्ष H. an. = सम्पुटय und समृद्धि Med. = समूह Çabdar. im ÇKDa. = घन Rîgân. ebend. *a*) *Wachsthum, Gedeihen; Zunahme; Ergötzen, Begeisterung:* वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः RV. 1, 10, 12. VS. 18, 4. 23, 13. गर्भस्य Çat. Br. 10, 2, 2, 6. 7, 4, 2, 45. 13, 4, 2, 13. आ विंशतेर्वृद्धिः *bis zum 20sten Jahre wächst man* Suçr. 1, 129, 5. जन्मवृद्धितये M. 12, 124. वृद्धिर्हि परमा प्राप्ता MBh. 3, 11765. प्रभोः शरीरावयवैर्दिने दिने पुपोष वृद्धिम् Raghu. 3, 22. ययौ वृद्धिम् Kathâs. 22, 24. शनैर्वृद्धिमायियो 154. ता वयं क्रमशः प्राप्ता वृद्धिमत्र पितुर्गृहे 26, 55. 43, 151. आस्तां बालस्य संनद्धे धात्र्यौ तस्य वृद्धये Râja-Tar. 1, 77. स शिशुर्वृद्धिमनीयत 3, 77. Mârk. P. 25, 13. तद्वृद्धौ (d. i. लोमवृद्धौ) श्मश्रु पुंमुखे AK. 2, 6, 2, 50. सस्यस्य, सस्य° Varâh. Bṛh. S. 4, 16. 8, 26. 50. 22, 3. 46, 91. फलपुष्प° Raghu. 2, 14. चन्द्रवृद्धिक्षयवशात् *das Wachsen und Abnehmen des Mondes* MBh. 1, 1215. 9, 2735. R. 5, 3, 2. Raghu. 3, 16. Kumâras. 7, 1. Verz. d. Oxf. H. 48, *b*, 13. *das Wachsen, Anschwellen* (des Meeres, der Flüsse, des Wassers) MBh. 9, 2735. Schol. zu Kap. 1, 136. R. 1, 36, 12. Varâh. Bṛh. S. 46, 89. Wilson, Sâṅkhjak. S. 23. वेला वृद्धिश्च वारिणः Hall. 3, 52. 46. H. 1076. 1087. सम्भवाद्वृद्धस्य (zugleich *Gedeihen, Emporsteigen* einer Person) Râja-Tar. 2, 149. ते (नराधिपाः) न वृद्धा प्रकाशन्ते गिरयः समुद्रे यथा so v. a. *hervorragen* R. ed. Bomb. 3, 33, 6. *das Aufsteigen* (des Bodens) Varâh. Bṛh. S. 53, 117. कुलायं वृद्धिं नयति *vergrössert* Pañcat. 194, 14. द्रव्य° *Vermehrung* M. 9, 332. कोश° Râja-Tar. 4, 363. धर्म° Hit. 45, 7. रतिं वर्धयेद्वृद्धा Spr. (II) 631. त्रयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गः AK. 2, 8, 1, 19. देवद्रव्येण या वृद्धिः *Bereicherung* Spr. (II) 2941. *Gewinn* (I) 1474. लब्धवृद्धि (द्वाणि) *verstärkt, vermehrt* Bṛ. 1, 25. Varâh. Bṛh. S. 104, 55. तनुष्वाकं पतः पुनरप्येवं क्रमाद्गतो वृद्धिम् Kathâs. 45, 385. धातूनां तनवृद्धौ Suçr. 1, 45, 1. 48, 2. वृद्धिमाप्नोति मारुतः 152, 14. अधिकतरवृद्धिगामिनी शर्वरी so v. a. *länger werdend* R. Gorr. 2, 81, 33. आयुर्वृद्धि *Verlängerung* Pañcat. 187, 7. अर्घ° *Zunahme, Steigen des Preises* Jâtâs. 2, 249. Varâh. Bṛh. S. 17, 25. त्रयं वृद्धिं च षण्णाम् Jâtâs. 2, 258. M. 8, 401. स पुत्रपशुभिर्वृद्धिमश्नुते *eine Zunahme an* Spr. 4903. वृद्धौ *bei einer Zunahme an Zahl* Âçv. Grihj. 4, 7, 3. Jâtâs. 2, 244. शते दशपला वृद्धिः 179. द्विगुणोर्द्विगुणैर्वृद्धा Mârk. P. 54, 7. चतुर्वृद्धा Ind. St. 2, 347. एकवृद्धा Varâh. Bṛh. 21, 1. द्विगुणवृद्धा Pañcat. 88, 14. मासवृद्धा *um einen Monat länger* Jâtâs. 1, 258. षण्मासोत्तरवृद्धा *nach je sechs Monaten* Varâh. Bṛh. S. 5, 19. प्रज्ञा° *Wachsthum, Zunahme* Çat. Br. 11, 5, 2, 1. तपो° M. 2, 175. MBh. 1, 4. पाप्मनः Bhâg. P. 3, 24, 35. गुण° Râja-Tar. 4, 634. धर्म° 5, 243. व्याधि° Suçr. 1, 34, 16. वृद्धिं प्राप्य (रागः, शत्रुः) Spr. (II) 2380. *Zunahme an Macht und Glücksgütern, Wohlfahrt, Wohlergehen, Glück* VS. Prât. 1, 169. Jâtâs. 1, 217. 249. MBh. 3, 16880. R. 2, 34, 31. R. Gorr. 1, 75, 6. 2, 6, 19 (Gegens. दुःख). Vikramâ. 3, 4, 18. सत्परिग्रहो ऽपि मे वृद्धिहेतुः Mâlav. 22, 18. परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम् Çic. 15, 1. आपत्काले, वृद्धिकाले Spr. (II) 952. (I) 2012. 2682. 3222 (Gegens. व्यसन). Varâh. Bṛh. S. 4, 32. 10, 16. 13, 7. 19, 10. 33, 15. धर्मस्य देशस्य च 18, 4. गृह° 53, 116. personificirt (श्री°) als बोधिवृक्षदेवता Lalit. ed. Calc. 421, 16. — *b*) *Anschwellung* Suçr. 1, 82, 8. *des Scrotums* H. 470. Wise 371. Suçr. 1, 249, 10. *fgg.* 24, 19. 2, 111, 3. *fgg.* Çiksh. Sañgr. 1, 7, 48. Verz. d. B. H. No. 906. Verz. d. Oxf. H. 306, *a*, 29. 313, *b*, 33. — *c*) *Zins* (auf ein geliehenes Kapital) H. 881. H. an. Med. (कलान्तर zu lesen). Hall. 2, 417. P. 5, 1, 47. M. 8, 140. 143. *fg.* 150. *fg.* 153. *fg.* 157. 10, 117. MBh. 13, 1640. Jâtâs. 2, 37. सवृद्धिक adj. 63. — *d*) in der Grammatik *die höchste Steigerung eines Vocals, die Vocale* आ, ऐ *und* औ VS. Prât. 5, 29. P. 1, 1, 1. 3. 5, 1, 58. 7, 2, 1. 114. 3, 39. Râja-Tar. 4, 634. Sarvadarçanas. 157, 20. 167, 19. गुणवृद्धी oder वृद्धिगुणौ gaṇa राजदन्तादि zu P. 2, 2, 31. — *e*) *ein best.*

Heilmittel AK. 2,4,3,31. H. an. Med. Suçr. 1,140,9. 2,220,14. = शैलेय Rîgân. im ÇKDn. — *f*) abgekürzt für वृद्धिश्राद्ध Çâṅku. Gṛhy. 4,3. Âçv. Gṛhy. 2,5,13. Gobh. 4,3,34. — *g*) N. des 11ten astr. Joga (विष्कम्भादि ÇKDn.) Med. Kosaṇḍiva. im ÇKDn. — 2) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,46. — Vgl. घण्ट°, घस्र°, काम°, काल°, चक्र°, बुद्धि°, ब्रह्म°, भुक्त°, मनोज्ञ°, मूत्र°, वर्ष°, शक°.

वृद्धिक (von वृद्धि) 1) am Ende eines adj. s. u. वृद्धि 1) *c*). — 2) f. या *a*) = वृद्धि 1) *c*) Çârṅgad. im ÇKDn. — *b*) Bez. einer Art von Dryaden: स्त्रियो मानुषमांसादा वृद्धिका नाम नामतः । वृक्षेषु ज्ञातास्ता देव्यो नमस्कार्याः प्रजार्थिभिः ॥ MBh. 3,14329.

वृद्धिकर adj. (f. ई) *Wachsthum beförderend, Gedeihen bringend, mehrend, den Wohlstand vermehrend* Vaṃç. Bṛh. S. 41,9. 53,97. 59,13. 79,12. 94,14. क्षेममस्य° 5,22. पशु° M. 7,212. स्तन्य° Suçr. 1,225,6. बुद्धि° M. 4,19. सत्त्व° 259. प्रीति° Rîgâ-Tar. 5,367.

वृद्धिकर्मन् n. wohl so v. a. वृद्धिश्राद्ध Mârk. P. 51,58.

वृद्धिजीवक adj. vom *Wucher lebend* MBh. 13,5741. °जीवन od. Bomb.

1. वृद्धिजीवन m. *Wucher* Halâj. 2,417.

2. वृद्धिजीवन adj. vom *Wucher lebend* MBh. 13,5741 nach der Lesart der ed. Bomb.

वृद्धिजीविका f. *Wucher* AK. 2,9,4.

वृद्धिद adj. (f. धा) *Gedeihen bringend, die Wohlfahrt fördernd* Vaṃç. Bṛh. S. 33,37. 58,29. 63,1.

वृद्धिपत्र n. *eine best. Lanzette* Suçr. 1,26,11. 14. 20. 2,299,17. वृद्धिपत्रं तुराकारं क्षेत्रभेदनपाटने । सञ्चयमुद्यते शोफे गम्भीरे च Vâgbh. 26,6.14.

वृद्धिमत् (von वृद्धि) adj. 1) = उत्थित AK. 3,4,44,88. *zunehmend, wachsend:* छाया, मैत्री Spr. (II) 1004. दण्ड *Strafe* Jâṅ. 2,248. *zur Macht gelangt* Spr. (II) 3032. — 2) *die Vṛddhi genannte Steigerung eines Vocals bewirkend* AV. Prât. 4,55, Schol.

वृद्धिश्राद्ध n. *ein Manenopfer bei bestimmten freudigen häuslichen und anderen Anlässen* (heisst auch आभ्युदयिकश्राद्ध und नान्दीमुख°) Colebr. Misc. Ess. I, 187. Sâṃk. K. 23,*b*,9. Comm. zu Kâṭj. Çr. 330,8. zu Âçv. Gṛhy. 2,5,12. Verz. d. B. H. No. 139. 1245. Verz. d. Oxf. H. 40,*a*,14. 87,*a*,25. fg. 276,*b*,38. 286,*a*,No. 670. 288,*a*,No. 683. Verz. d. Cambr. H. 63.

वृद्धीभू (वृद्ध + 1. भू) *alt werden:* °भूत Kathâs. 72,320.

वृद्धोक्षन् (वृद्ध + उक्षन्) m. *ein alter Stier* P. 5,4,77. Vop. 6,41. AK. 2,9,61. H. 1258. Halâj. 2,110. Kumâras. 5,70.

वृद्धोद्यावन् (वृद्धि + या°) adj. vom *Wucher lebend* AK. 2,9,5. H. 880. Halâj. 2,416.

वृद्धोपवीविन् (वृद्धि + उ°) adj. dass. R. Gorr. 2,90,17.

वृध् (von 1. वर्ध्) adj. *froh, heiter, begeistert:* इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणाम् (ईशे) RV. 10,89,10. द्युषत् वृधं मघ्यार्य देवाः 1,167,4. इमं नरो मरुतः सश्चता वृधम् 3,16,2. Am Ende eines comp. auch in trans. Bed. *mehrend, stärkend.* Vgl. घना°, घाकृती°, ज्ञना°, ज्रह्व°, तत्र°, गिरा°, घृता°, तमो°, तुग्र्या°, त्वा°, दत्त°, देवा°, नमो°, पयो°, पर्वता°, मधु°, माहि°, यज्ञ°, रयि°, वयो°, सहो°, सु°.

वृधँ (wie oben) 1) adj. *a*) *sich ergötzend, — freund; begeistert:* स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः RV. 8,13,2,1. शूषेभिर्वृधो जुषाणो घर्के: 10,6,4. 7,91,1. Indra 10,89,11. 147,3. — *b*) *erfreuend,* verbal constr.: क्षेत्रा इन्द्रं वृधासः RV. 8,82,23. m. *Erfreuer; Förderer, Mehrer; Freund:* घसिं दधस्य चिद्वृधः RV. 1,81,2. सखीनाम् 7,32,25. वातानाम् 10,26,2. घसन्वतां विपृणः सन्वतो वृधः 5,34,6. 8,12,18. दृतस्य 8,13,2. 20,11. पर्व-नः 8,32,18. 72,2. सविता वृधश्च 6,34,5. 48,2. तं वेदग्निर्वृधावति (वधम्) 8,64,14. भुवन्यथा नो विश्वे वृधासः 1,186,2. यूयं हि ष्ठा नमस इद्वृधासः 171,2. घनाम् पस्त्य विधतो वृधासः 4,2,10. — 2) m. *Erfreuung:* वृषभिर्नो वृधाय हूयसे RV. 8,72,6. — Vgl. घ°, सत्या°, कवि°, त्वा°, देवा°, मरुद्घ, सदा°.

वृधत् Opferruf s. u. 1) वर्धँ 2) *d*).

वृधन्वत् adj. *eine Form der Wurzel* 1. वर्धँ *enthaltend* Ait. Br. 4,31. TS. 2,5,2,5. TBr. 1,3,4,3. Âçv. Çr. 1,5,35. 2,1,25.

वृधम् Opferruf s. u. 1) वर्धँ 2) *d*).

वृधमानँ (partic. von 1. वर्धँ) Uṇâdis. 2,87. adj. *wachsend; sich ergötzend* RV. 2,2,5. 4,3,6. 6,12,3. m. = पुरुष Uṇâdis.

वृधसानु m. = पुरुष, पक्ष und कृति Uṇâdis. im ÇKDn. — Vgl. वृधमान.

वृधासुँ (von 1. वर्धँ) adj. etwa *fröhlich:* सत्या वृधासू रोहिता घृतासू RV. 4,2,3.

वृधीकँ (wie oben) m. *Förderer, Erfreuer* RV. 8,67,4.

वृधीय am Ende eines comp. von वृध; s. इयो°.

वृधु (von 1. वर्धँ) m. N. pr. eines Zimmermanns M. 10,107.

वृध्य (wie oben) partic. fut. pass. P. 3,1,110, Schol. Vop. 26,17. fg.

वृन्त 1) n. *Stiel eines Blattes, — einer Blüthe, — einer Frucht* AK. 2, 4,3,15. H. 1127. an. 2,198. Med. t. 60. Halâj. 2,30. पलाश° Kâṭj. Çr. 25,8,1. 15. Çâṅku. Çr. 4,15,19. तालेरिव वृन्ताद्भ्रष्टैः MBh. 3,8716. °बद्ध मलफलम् 11,136. वृन्तादिव फलं पक्वं पतति ते Spr. 4646. मा त्वं वृन्ता-दिव फलं पातयिष्ये रथोत्तमात् R. 5,36,15. मालतीपुष्पवृन्ताग्र *das obere Ende der Röhre der Jasminblüthe* Suçr. 1,25,3. 94,3. 2,215,3. फलमिव वृन्तबन्धनात् 1,277,19. शाल्मलि° 2,436,21. 440,21. 338,18. दुण्डुक° 131,16. दाडिमपुष्प° 153,7. वृन्ताच्छ्वभ्रं करति पुष्पमनोकहानाम् (वायुः) Bâgh. 5,69. ad Çiç. 19. Mallin. 16,20. समेतु तेनासौ वृन्तेनेवार्तवो ल-ता Kathâs. 25,169. प्रसून° 89,8. Rîgâ-Tar. 2,83. *Stiel einer Schale* Kâṭj. Çr. 9,2,22. Schol. zu 1,3,36 (60, 5). — 2) n. *Brustwarze* H. an. Med. वृन्तोन्न° Med. k. 197. — 3) = वृन्ताक *die Eierpflanze:* °फल Suçr. 1,26, 20. 27,2. — 4) *ein best. kriechendes Thierchen (Raupe)* AV. 8,6,22. — 5) f. वृन्ता = वृत्ता *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑, ⏑⏑⏑⏑ – – – Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 10). Ind. St. 8,376. — 6) सवृन्त Buâs. P. 9, 11,28 fehlerhaft für सवृन्द. — Vgl. कामवृन्ता, कालवृन्त, कृष्णवृन्ता, ता-लवृन्त, त्रि°, दीर्घ°, नील°, फल्गु°, रक्त°, राग°, प्लक्ष°, स्तन°.

वृन्तक (von वृन्त) 1) am Ende eines adj. comp. (f. वृन्तिका): अवृन्तक *ohne Stiel* (eine Schale) Schol. zu Kâṭj. Çr. 24,4,40. Vgl. कृष्णवृन्तिका, दीर्घवृन्तक und नील°. — 2) f. वृन्तिका *Stiel:* पलाश° MBh. 1,1442. °वर्तिका ed. Bomb.

वृन्ताक m. = वार्ताकी *die Eierpflanze* Çabdar. im ÇKDn. f. ई dass. Rîgân. ebend. वृन्ताकविधि (?) Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,36. — Vgl. फल्गु-वृन्ताक, कण्टकवृन्ताकी, वन°.

वृन्तिता (von वृन्त) f. *eine best. Pflanze,* = कटुक Çabdâm. im ÇKDn.

वृन्दँ 1) n. Naigh. 4,2. Nir. 6,24. *a*) *Schaar, Trupp, Heerde, Schwarm, Menge* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,98. AK. 2,8,40. H. 1411. Halâj. 4,1. MBh.

4,599. गण° (in Çiva's Gefolge) 13,892. प्रेषितानाम् Mucn. 97. योगि° Spr. 1471. वादि° 1348. 3204. 5418. Çaut. 13. दिविषद्वन्दै: Gît. 7, 42. मखो° 12, 1. Verz. d. Oxf. H. 120, a, 37. 139, a, 7. Paṇḍat. 223, 2. Cur. in L.A. (III) 38, 7. स्व° Rāja-Tar. 3, 112. 5, 353. वानराणाम्, स्नातानाम्, स्नातमानाम् R. 6, 99, 24. मद्य° MBu. 6, 3666. गत्रानाम् Kumāras. 7, 52. AK. 2, 8, 2, 4. बिडाल° Spr. 1594. शृगाल° Paṇḍat. 64, 2. दंश° Spr. 1999. कलापिनाम् Kirâd. 2, 118. Bhâg. P. 4, 6, 19. Bhatt. 8, 10. बलि° Rāgat. 12, 102. नागेश्वराणाम् (Pflanzen) Paṇḍar. 1, 6, 22. वृष° MBu. 1, 8228. 8, 3006. घनानाम् *Wolken* Vaṇiṇ. Bṛh. S. 24, 18. मेघ° MBu. 1, 7580. 3, 8677. 5, 7111. 8, 2394. R. 1, 16, 33. 5, 55, 16. शब्द° Mucn. 64. Rāgat. 7, 66. 16, 25. शलद्° Bṛ. 3, 22. रश्मि° Kathās. 90, 5. धातु° R. 5, 54, 4. केश° AK. 2, 6, 2, 47. नीलालक° Bhâg. P. 4, 23, 31. कुटिलकुसल° 3, 28, 30. वृन्दं वृन्दं च तिष्ठताम् *schaarenweise, in Gruppen* R. 2, 57, 12. पद्य: तीर्वा वृन्देवृन्दं च *in abgesonderten Gruppen* Bhatt. 8, 31. वृन्दवृन्देन: *in abgesonderten Gruppen stehend* R. Gorr. 2, 4, 16. Als m. falschlich Ṛt. 1, 23, v. l. — 2) n. *eine Menge beisammen stehender Blüthen oder Beeren, Traube:* सवृन्दै: कदलीस्तम्भै: पूगपोतैश्च तद्विधै: Bhâg. P. 4, 9, 54. 21, 2. 9, 11, 28 (bei Burnouf falschlich सवृन्तै:). — 3) n. *eine best. hohe Zahl*, 100000 Çaṅkha = 100,000,000,000 R. 6, 4, 37. m. = 10 Arbuda = 1000,000,000 Gâyatrîya im ÇKDa. — 4) m. *eine Geschwulst* oder *Afterbildung in der Kehle* Wise 311. Suçr. 1, 92, 9. 306, 15. 308, 4. 2, 132, 14. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 79. — 5) m. N. pr. eines medicinischen Autors Verz. d. B. H. No. 940. fg. 958. Verz. d. Oxf. H. 315, b, No. 750. 316, a, No. 751. 357, a, No. 849. fg. °टीका 311, b, 39. — 6) m. unter den Gînaçakti Vaiṣṇ. zu H. 233; wohl fehlerhaft für वृन्दा. — 7) f. आ a) ein Name der Tulasî (*Basilienkraut*) Çabdar. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 24, a, 27. — b) ein Name der Râdhâ (Kṛshṇa's Geliebte) Paṇḍar. 2, 4, 7. 51. N. pr. der Gattin Gaḷaṃdhara's und einer Tochter des Fürsten Kedâra ÇKDa. — Vgl. एकवृन्द, गो°, ब्रह्मवृन्दा, मदवृन्द, महा°.

वृन्दार adj. von वृन्द gaṇa यष्मादि zu P. 4, 2, 80.

वृन्दशस् (von वृन्द) adv. *in Gruppen, heerdenweise* R. Gorr. 2, 57, 12. Harîv. 3884. Bhâg. P. 10, 35, 5.

वृन्दार (von वृन्द, wie मृङ्गार von मृङ्ग) adj. = वृन्दारक = मनोज्ञ Çabdam. im ÇKDa.

वृन्दारक (von वृन्दार oder वृन्द) Nir. 6, 34. P. 5, 2, 122, Vârtt. 4. Vop. 7, 32. fg. 1) adj. (f. वृन्दारका und वृन्दारिका P. 7, 3, 45, Vârtt. 11. Vop. 4, 7). P. 5, 4, 157. AK. 3, 2, 2, 62. *an der Spitze einer Schaar stehend, der beste —, der schönste in seiner Art;* = यूथपति Vaiṣṇ bei Bhar. zu AK. nach ÇKDa. = मुख्य AK. 3, 4, 4, 16. = श्रेष्ठ Trik. 3, 3, 34. H. an. 4, 34. fg. Med. k. 203. = त्रपिन् AK. = मनोरम H. an. = मनोज्ञ Med. वृन्दारक साध्व: Çat. Br. 14, 6, 11, 1. कुरुमध्येषु MBu. 5, 893. युवा वृन्दारका: भूय: 11, 551. am Ende eines comp. P. 2, 1, 62. गो° Schol. समस्तमुनिमनुजवृन्द° Verz. d. Oxf. H. 120, a, 37. fg. LA. (III) 88, 6. im Prâkrit: गोविन्दारघोत्ति भणिदस्स रिसहस्स परिस्समो णास्सदि Çâk. Cr. 93, 1. — 2) m. a) *ein Gott* AK. 1, 1, 1, 4. Trik. H. 88. H. an. Med. Hal. 1, 4. यो चक्रतुर्मा मघवन्वृन्दारकमिवाजरम् MBu. 3, 10330. Bhâg. P. 6, 10, 3. Mârk. P. 16, 35. Verz. d. Oxf. H. 11, b, 7 v. u. 146, b, 1. 199, a, 18. Verz. d. B. H. 282, 9. Çata. 1, 26. Pâñcavâṃçabr. 3, 228 (nach Aufrecht). — b) N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBu. 1, 4547. 7, 1610. वृन्दारकं (वृतारकं falschlich ed. Calc.) वीरं कुरूणां कीर्तिवर्धनम् 1872. — Vgl. गो°.

वृन्दारकाय् (von वृन्दारक) am Ende eines comp. *den besten unter — spielen, — vorstellen wollen:* मूढधीस्तद्दिदृक्षामि कविवृन्दारकायितुम् Verz. d. Oxf. H. 120, b, 12.

वृन्दारण्य n. = वृन्दावन Paṇḍar. 4, 8, 60. 64.

वृन्दावन (वृ° + वन) 1) n. N. pr. eines heiligen *Waldes* am linken Ufer der Jamunâ in der Nähe von Mathurâ, des Schauplatzes der Liebesspiele Kṛshṇa's mit Vṛndâ (= राधा und auch = तुलसी), Harîv. 3497. fgg. Rāgat. 6, 50. °विपिन Gît. 1, 33. 45. Verz. d. Oxf. H. 9, a, No. 47. 13, b, 37. 14, b, 20. 21, b, 10. 24, b, 45. 26, b, 37. 27, a, 44. 39, b, 14. 128, b, 27. 131, b, No. 239. 145, a, 20. 237, a, 23. 301, a, 34. Paṇḍar. 1, 1, 67. 7, 60. 2, 2, 62. 4, 7. 51. 4, 1, 27. Vop. 5, 6. Hall 70. °नगर Verz. d. Oxf. H. 26, b, 39. वृन्दावनेश Bein. Kṛshṇa's Paṇḍar. 1, 5, 21. वृन्दावनेश्वर desgl. Padma-P., Pâtâlakh. 9 und Padmottarakh. 67 im ÇKDa. वृन्दावनेश्वरी Bein. der Râdhâ ebend. वृन्दावनमाहात्म्य Verz. d. Pet. H. No. 18. °यमक Hall. Anth. 453. fgg. °शतक 430. fgg. °चम्पू Colebr. Misc. Ess. II, 136. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 218, a, N. 3. — 3) f. ई ein Name der Tulasî (*Basilienkraut*) Verz. d. Oxf. H. 24, a, 27. — Vgl. तुलसी°, विवाह°.

वृन्दिन् (von वृन्द) adj. am Ende eines comp. *eine Schaar —, eine Menge von — enthaltend:* सेनाम् पदातिनीं नागवतीं रथिनीमश्ववृन्दिनीम् MBu. 3, 5703.

वृन्दिष्ठ und वृन्दीयस् (von वृन्द) adj. superl. und compar. zu वृन्दारक P. 6, 4, 157. Vop. 7, 36. AK. 3, 2, 2, 62.

वृक्ष Uṇâdis. 4, 104. 1) m. a) N. pr. eines Mannes, Liedverfassers von ṚV. 5, 2. mit dem patron. Gâra (Anukr. Çâṭy. Br.), Gâna (Paṇḍav. Br. 13, 3, 12. D. zu Nir. 4, 18), Vaigâna (Sây. in Ind. St. 10, 32). वृक्षस्य ज्ञानस्य सभीवर्त: N. eines Sâman Ind. St. 3, 212, b. Vgl. वार्क्ष. — b) = वृष *Maus* oder *Ratte* Çabdar. im ÇKDa. — c) = वृष *Gendarussa vulgaris Nees.* Bhar. zu AK. 2, 4, 3, 22 nach ÇKDa. = घोषवि Uṇâdis. — 2) f. आ *ein best. Kraut* Uṇâdis. im ÇKDa. — 3) f. ई Paṇḍar. 21, 4 fehlerhafte Schreibung für वसी.

वृक्षद्वन (वृक्षत्, partic. von व्रश्च् + वन) *Bäume fällend, — spaltend* ṚV. 6, 6, 1.

वृक्षन m. = वृश्चिक *Scorpion* Râjân. im ÇKDa. unter वृश्चिक.

वृश्चिक Uṇâdis. 2, 40. 1) m. *Scorpion, Tarantel;* = घालि, डुण AK. 2, 5, 14. H. 1211. an. 3, 100. Med. k. 159. Hân. 218. Halâ. 3, 23. = मूककीट AK. 2, 5, 14. 3, 4, 4, 7. H. an. Med. = गोमयकीट und कर्कट Bhar. zu AK. nach ÇKDa. — ṚV. 1, 191, 16. AV. 10, 4, 9. 15. 12, 1, 46. Suçr. 1, 2, 15. 62, 1. 2, 257, 17. 293, 14. R. 2, 25, 16 (32 Gorr.). 28, 21 (10 Gorr.). वृश्चिकस्य विषं पुच्छम् Spr. (II) 2471. Vaṇiṇ. Bṛh. S. 30, 2. 54, 73. Bhâg. P. 3, 30, 27. 7, 9, 14. 8, 7, 46. 10, 46 (म° adj.). Mârk. P. 14, 73. वृश्चिकादिविषक्रमस्य Verz. d. Oxf. H. 94, a, 8. °लाङ्गुल Halâ. 3, 23. उद्विद्धवृश्चिकवद्गणा: Kusum. 22, 18. यद्या वा वृश्चिकस्य गोमयाद्वृश्चिकोद्भव: 23, 4. 5. P. 1, 4, 20, Schol. वृश्चिकी f. Trik. 3, 5, 19. — b) *der Scorpion im Thierkreise* H. 116, Schol. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 184, b, No. 419. Weber, Gjot.

102. Vaitân. Bau. S. 40, 1. 10. fg. 42, 9. Bau. 23 (21), 7. 27 (25), 22. fgg. Lacuvé. 1, 12 in Ind. St. 2, 280. Bhâg. P. 5, 21, 5. Mâlav. P. 58, 77. Verz. d. Oxf. H. 97, b, 32. — c) *ein best. Kraut* H. an. Med. *Boerhavia procumbens* Nigh. Pr. = मदन Bhâvapr. zu AK. nach ÇKDr. — d) = व्याल, व्यालिका Unâdisûtras. im Sarasvatîk. nach ÇKDr. — e) = घण्टाकर्णमाला Sârasundarî im ÇKDr. — 2) f. ई *ein best. Strauch*, = वल्लिपत्रिका Râjân. im ÇKDr. — Der Form nach liesse sich das Wort leicht auf व्रश्च् zurückführen, aber die Bed. liegt zu weit ab. — Vgl. पत्र°.

वृश्चिकपत्रिका f. *eine best. Pflanze*, = पूतिका Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. वल्लिपत्रिका.

वृश्चिकर्णी f. *Salvinia cucullata Roxb.* (घण्टाकर्णी d. i. घण्टु°) Râjân. im ÇKDr. — Vgl. वृषकर्णी, वृषपर्णी.

वृश्चिकाली f. *Tragia involucrata* (ihre Haare *stechen* wie die der Nessel) Ratnam. 69. Suçr. 1, 137, 6. 138, 13. 145, 18. 157, 16.

वृश्चिकेश (वृश्चिक + ईश) m. *der über den Scorpion im Thierkreise herrschende Planet* d. i. *Mercur* Vaitân. Bau. 5, 2.

वृश्चिपत्री f. = वृश्चिकाली Ratnam. im ÇKDr.

वृश्चीक m. *eine best. Pflanze* Suçr. 2, 416, 12. 531, 4.

वृश्चोर m. *eine weiss blühende* पुनर्नवा Ratnam. im ÇKDr.

1. वृष 1) m. P. 6, 1, 203. = वृषन्; in der älteren Sprache nur am Ende eines comp.: एक° bis दश° AV. 5, 16, 1. fgg. घृतवृषे *Hengst* Çat. Br. 14, 4, 2, 3. a) *Mann, Gatte:* स्ववृषं या परित्यज्य पापवृषे वर्षायते Kâtjân. 40, 93 (nach Anukr.). — b) *Stier* AK. 2, 9, 39. 3, 4, 29, 222. Taitt. 1, 1, 49. 2, 9, 19. H. 1236. 47. an. 2, 371. Med. sh. 25. Hall. 2, 108. M. 8, 242. 11, 136. MBh. 13, 3694. R. 3, 22, 18. 5, 11, 3. Bâlar. 2, 25. Kumâras. 5, 80. Vaitân. Bau. S. 24, 35. 48, 44. 76. Râjân-Tar. 4, 347. Bhâg. P. 3, 14, 23. 5, 9, 11. Hit. 58, 16. श्वेतवृषः M. 9, 123. व्रतवृषः Bhâg. P. 10, 35, 5. त्रिनयनवृषोत्खात Mudr. 53. ad 112. °रूपमुपर्णास्थाः Bhâg. P. 4, 1, 24. 9, 18, 9. Vaitân. Bau. S. 13, 2. 68, 31. °दान Verz. d. Oxf. H. 35, a, 36. °मोक्षण (vgl. वृषोत्सर्ग) 9. यज्ञ° *Bock* Bhâg. P. 3, 19, 6. — c) *der Stier im Thierkreise* AK. 1, 1, 2, 29. H. 116, Schol. H. an. Med. Weber, Nax. 2, 358, N. 1. Vaitân. Bau. S. 5, 36. 40, 1. 12. 42, 3. Bau. 1, 11. 14. 3, 3. 5, 5. Lacuvé. 1, 12. 20 in Ind. St. 2, 280. 282. Verz. d. Oxf. H. 40, a, N. 1. °राशि 339, b, 30. Weber, Kṛshṇaj. 224. °भवन Vaitân. Bau. 27 (25), 6. — d) *ein geiler Mensch* (— *Bock*), = शुक्रल AK. 3, 4, 22, 239. H. an. Med. in der Erotik Bez. einer der vier Arten von पुरुष (= पुंभेद H. an. Med.): बकुगुणबकुबन्धः शीघ्रकामो नताङ्गः। सकलरुचिरदेहः सत्यवादी वृषो ऽयम्॥ Ratnam. im ÇKDr. *ein kräftiger Mann* Anekârthak. im ÇKDr. — e) *die Gerechtigkeit oder Tugend als Stier*, = धर्म, सुकृत AK. 1, 1, 4, 2. 3, 4, 29, 222. H. 1379. H. an. Med. Halâj. 1, 125. वृषो हि भगवान्धर्मस्तस्य यः कुरुते कलम्। वृषलं तं विदुर्देवाः M. 8, 16. Bhâg. P. 1, 17, 2. 7. 18. 42. 3, 13, 15. Mâlav. P. 5, 21. Kâvâd. 2, 322. इमेव व्रतं स्त्रीणामयमेव परो वृषः *Pflicht, moralisches Verdienst* Kâtjân. 4, 30. न च मिथ्या विपुञ्जेत मेथुन्येत वृषेण च 60, 2 (beide Stellen nach Anukr.). — f) *der Beste in seiner Art;* gewöhnlich am Ende eines comp. गण व्याघ्रादि zu P. 2, 1, 56. AK. 3, 4, 29, 222. H. an. Med. कुरुचेदिवृषो MBh. 2, 1071. राज्ञ° 13, 3694. यदु° Harîv. 8088. दैत्य° 12948. रक्षो° 13131. दानव° R. 4, 9, 77. गण° 2, 26, 18. 5, 70, 2. द्विज° Bhâg. P. 3, 23, 10. वृषो ऽकुलीनाम् so v. a. *der Daumen* Çiçup. 43 in Ind. St. 4, 365. षट्टो वृषः 8, 259, N. 1. कृष्णाणि° Bhâg. P. 3, 28, 25. कलिमेव वृषो भूत्वा गवाम् so v. a. *sich in den Hauptwürfel verwandelnd* MBh. 3, 2359. दीव्यावो वृषणा 2360. — g) = वृष्य *Aphrodisiacum* Verz. d. Oxf. H. 303, b, 3. — h) Bez. verschiedener göttlicher Wesen: Vishṇu's oder Kṛshṇa's Taitt. 1, 1, 31. H. ç. 70. Vop. 5, 27. MBh. 12, 1507. Bhâg. P. 3, 16, 23. Çiva's MBh. 2, 1642. 12, 10272 (zwei Mal neben गोवृष). 14, 199. Indra's Mâlav. P. 79, 6 (pl.). der Sonne 107, 4. des Liebesgottes Anaṇgaharsh. im ÇKDr. des Regenten des Karaṇa Kâtushpada Vaitân. Bau. S. 99, 5. — i) N. pr. P. 4, 1, 155, Vârtt. c) des Indra im 11ten Manvantara VP. 268. Mârk. P. 94, 19. — β) eines Sâdhja Harîv. 11537. विष्ण die neuere Ausg. — γ) eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2566. — δ) eines Asura, = वृषभ Kirât. 2, 322. — ε) eines alten Fürsten MBh. 12, 8262. — ζ) zweier Söhne Kṛshṇa's Bhâg. P. 10, 61, 13. fg. — η) Bein. Karṇa's MBh. 3, 16995. 17166. 6, 3831. 8, 16. — ϑ) eines Sohnes des Vṛshasena (वसुषेण ist = कर्ण) und Grossohnes des Karṇa Harîv. 1710. — ι) eines Jâdava und Sohnes des Madhu Harîv. 1896. fg. VP. 418. eines Sohnes des Sṛṅgaja Bhâg. P. 9, 24, 41. — κ) eines der 10 Rosse des Mondes Vâjpr. beim Schol. zu H. 104. — l) Bez. verschiedener Pflanzen: *Gendarussa vulgaris* oder *Adhatoda* AK. 2, 4, 8, 2. H. 1140. H. an. Med. (व्याघ fehlerhaft für वास = वासक). *Boerhavia variegata* Ratnam. 157. = सुषेण AK. 2, 4, 4, 4. = मृद्वी (dass.) H. an. Med. वृष und यवास Kâtj. 30, 1. — Suçr. 1, 32, 15. 223, 8. 2, 224, 8. 330, 19. 415, 13. 416, 8. 418, 4. 498, 17. °पत्र Çârîr. Sâmk. 2, 1, 28. — m) N. *des 15ten Jahres im 60jährigen Jupiter-Cyclus* Vaitân. Bau. S. 8, 33. fg. Verz. d. Oxf. H. 331, b, 3 v. u. — n) *eine best. Tempelform* Vaitân. Bau. S. 56, 13. 26. *ein zum Aufbau eines Hauses besonders zugerichteter Platz* (वास्तुस्थानभेद Med.); vgl. u. गृह 4). — o) *Maus* oder *Ratte* AK. 3, 4, 29, 222. H. 1300. H. an. Med. eine auf einer falschen Erklärung von वृषदंश beruhende Bedeutung. — p) = शत्रु *Feind* Gaṇîkâ. im ÇKDr. — 2) f. ई *Gendarussa vulgaris* oder *Adhatoda* Halâj. 2, 43. *Salvinia cucullata Roxb.* AK. 2, 4, 8, 6. H. an. Med. *Mucuna pruriens Hook.* H. an. — 3) n. *Myrobalane* Ausw. 101. — Vgl. इच्छा° (auch Râjân-Tar. 4, 6), खरी°, गो°, निर्वृष, नील°, पृ°, प्रति°, मधु°, मही° (in der 1ten Bed. auch Râjân-Tar. 4, 227), 2. वार्षे und वार्ष्यायणि.

2. वृष m. N. pr. fehlerhaft für वृश Ind. St. 3, 212, b.

वृषक 1) m. a) *eine best. Pflanze*, wohl = वृष Suçr. 2, 207, 6. — b) N. pr. eines Kriegers, Sohnes eines Fürsten der Gândhâra, MBh. 1, 6985. 2, 1266. 5, 5808. 6, 3637. 7, 1203. 1205. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses: वृषकाकूया MBh. 6, 343. वृषकाकूटा (nach Wilson ist das comp. der Name) VP. 184; vgl. वृषसाकूया, वृषसाकूटा. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 237, b.

वृषकर्णी f. *eine best. Pflanze*, = सुदर्शना Ratnam. 227. — Vgl. वृषपर्णी, वृश्चिकर्णी.

वृषकर्मन् (वृषन्, वृष + क°) 1) adj. *Mannesthat verrichtend:* Indra RV. 1, 63, 4. 130, 10. *wie ein Stier verfahrend:* Vishṇu MBh. 13, 6961. — 2) m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1, 31, 6.

वृषकाम (वृषन् + काम) adj. *einen Mann begehrend* Kauç. 59.

वृषकर्त adj. यप्रवृद्धो वृषकर्तो गण: gaṇa प्रवृद्धादि zu P. 6,2,147.

वृषकेतन adj. *einen Stier zum Attribut habend;* m. Bein. Çiva's MBh. 3,11361. — Vgl. वृषकेतु, वृषध्वज, वृषभध्वज.

वृषकेतु m. 1) Bein. Çiva's R. 1,74,38. — 2) N. pr. eines Kriegers Verz. d. Oxf. H. 4,b,12. Verz. d. B. H. 112 (IV).

वृषक्रतु (वृषन् + क्रतु) adj. *männlich gesinnt:* Indra RV. 5,36,5. 6,45,16.

वृषखादि (वृषन् + खा°) adj. *grosse Spangen tragend* (wie Männer sie tragen): die Marut RV. 1,64,10. *mit Ohrringen geschmückt* nach Bollensen, Or. und Occ. 2, 461, Anm.

वृषगण (वृषन् + गण) m. N. pr. eines Ṛshi gaṇa गर्गादि zu P. 4,1, 105. नडादि zu 99. Verz. d. Oxf. H. 199,b, No. 471. Vâsishṭha Ind. St. 3, 237,b. pl. RV. 9,97,8. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 17. — Vgl. वार्षगण, वार्षगण्य.

वृषगन्धा f. *eine best. Pflanze,* = वस्तास्त्री Râǵân. im ÇKDr.

वृषचक्र n. Bez. *eines best. mystischen Kreises* Gjotishatîrtva im ÇKDr.

वृषच्युत (वृषन् + च्युत) adj. vom *Starken* d. i. Soma *erregt:* मदास: RV. 9,69,7. — Vgl. मदच्युत.

वृषजूति (वृषन् + जू°) adj. *Mannesdrang habend* RV. 5,35,3.

वृषण (wohl verwandt mit वृषन्) 1) m. n. (zu belegen nur m.) Sidd. K. 249,a,5. 6. Taitt. 3,5,13. du. *die Hoden* VS. 5,2. Çat. Br. 3,6,2,10. Kâtj. Çr. 25,7,30. Çâṅkh. Çr. 4,15,25. Nir. 14,7. Jâǵ. 3,97. 259. Harîv. 14274. R. 1,48,28 (49,28 Gorr.). R. Gorr. 1,50,6. Suçr. 1,273,6. 329,4. Varâh. Bṛh. 5,24. Paṇḍat. 136,1. plur. M. 8,282. MBh. 12,9377. Varâh. Bṛh. S. 61,16. Bhâg. P. 2,1,32. Vet. in LA. (III) 23,14. sg. *der Hodensack* AK. 2,6,2,27. H. 612. Hall. 2,360. पद्मनां वृषणौ क्षिप्त्वा MBh. 12,474. Bhâg. P. 9,19,10. शिश्नवृषणौ M. 11,104. लिङ्गवृषणौ Mârk. P. 39,30. unbestimmt ob du. oder sg.: शकलवृषणम् Kâtj. Çr. 8,7,5. मेण्ढ्रवृषणवेदना Suçr. 1,49,7. 125,18. °वातनित् Çârṅg. Saṃh. 2,1, 11. Varâh. Bṛh. S. 51,8. 52,6. वृषभ: स्थूलातिलम्बवृषण: 61,8. 68,9. वृषणाधस् Verz. d. Oxf. H. 102,b,17. Bhâg. P. 9,19,11. Paṇḍat. 10,12 (ed. orn. 6,7). म°, ग्र° adjj. R. 1,49,7. वृषणीकृत R. Gorr. 1,50,6. Vgl. तीक्ष्ण°. — 2) m. Bein. Çiva's MBh. 13,1196. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Madhu Harîv. 1897. des Kârtavîrja VP. 417; vgl. वृष्णि.

वृषणकच्छु f. *beissender Ausschlag am Hodensack* Suçr. 1,292,13. 297,19. Çârṅg. Saṃh. 1,7,63.

वृषणश्व (वृषन् + अश्व) P. 1,4,18, Vârtt. 3. 1) adj. *mit Hengsten fahrend:* रथ RV. 8,20,10. — 2) m. N. pr. *a)* eines Mannes RV. 1,51,13. Sâṅkh. Br. in Ind. St. 1,38. — *b)* eines Gandharva H. 183, Schol. (वृषणाश्व). — *c)* eines Rosses des Indra Taitt. 1,1,60. H. ç. 33. Verz. d. Oxf. H. 191,a,34.

वृषण्य (von वृषन्), वृषण्यति P. 7,4,36. *brünstig sein* (vom Manne und Weibe) RV. 9,5,6. कुविद्वृषण्यतोभ्य: पुनानो गर्भमादधत् 19,6. AV. 5,5,3. 6,9,1. 70,1.

वृषणाश्व s. u. वृषणश्व 2) *b*).

वृषण्वत् (von वृषन्) adj. 1) *mit Hengsten bespannt, — fahrend:* Wagen RV. 1,100,16. 182,1. Indra 173,5. मरुत्तु वातो यथा वृषण्वान् 122, 3. इषुं चेतद्वृषण्वत्यन्तरेषहणी etwa *unter Hengsten befindlich* 8,57, 18. — 2) *das Wort* वृषन् *enthaltend* TS. 2,5,6,4. Âit. Br. 4,31. 6,9. Çat. Br. 1,4,2,33.

वृषण्वसु (वृषन् + वसु) P. 1,4,18, Vârtt. 3. 1) adj. etwa *grossen Besitz habend, grosses Gut mit sich führend:* die Açvin RV. 2,41,5. 5,74,1. 8,26,1 u.s.w. Indra-Bṛhaspati 4,50,10. — 10,93,5. die Rosse Indra's 1,111,1. — 2) m. N. von Indra's Walde (वन) oder Garten (उद्यान) Taitt. 1,1,60. Verz. d. Oxf. H. 191,a,33. von Indra's Schatze (beruht auf einer Verwechselung von वन mit धन) Gaṇiṇ. im ÇKDr.

वृषत्व (von वृषन्) n. *Mannheit* RV. 1,54,2. instr. वृषत्वना 8,15,2. TS. 2,3,3,4.

वृषद् s. वार्षद्.

वृषदंश (वृषन् + दंश) m. 1) (*ein starkes Gebiss habend*) *Katze* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,40. Hall. 2,31. VS. 24,31. TS. 5,5,24,1. Paṇḍav. Bh. 2,2, 2. MBh. 6,39. Harîv. 9869. R. 5,9,47. Suçr. 1,203,1 (ein in Löchern wohnendes Thier). Varâh. Bṛh. S. 48,76. °मुख adj. MBh. 9,2474. 2586. — 2) N. pr. eines Berges MBh. 7,2853. — Vgl. वार्षदंश.

वृषदंशक m. = वृषदंश 1) AK. 2,5,6. H. 1301. Sin. D. 303,6. वृषदंशकक Mad. l. 132.

वृषदञ्जि (वृषन्ऽअञ्जि Padap.) vielleicht N. pr.; pl. voc. RV. 8,20,9. = वृषता सोमेन अञ्जन्त: Sây.

वृषदत् (वृषन् + दत्) adj. P. 5,4,15. *starke Zähne habend,* f. °दती AV. 1,18,4; vgl. वृषदंश.

वृषदत्त adj. dass. P. 5,4,145.

वृषदर्भ m. N. pr. eines Fürsten der Kâçi MBh. 2,237. 3,13262. fgg. (13321 beide Ausgg. बृहद्भ). 13,2047. fgg. ein Sohn Çibi's Harîv. 1680. VP. 444. pl. Harîv. 1681. वृषदर्भ und वृषाकपि unter den Beinn. Kṛshṇa's MBh. 12,1508. — Vgl. वृषादर्भ, वृषादर्भि.

वृषदेवा f. N. pr. einer Gattin Vasudeva's VP. (2te Aufl.) 4,98. वृकदेवा v. l.

वृषदु m. N. pr. eines Fürsten MBh. 2,324. हृषदु ed. Bomb.; vgl. सृषदु.

वृषद्वीप N. pr. einer *Insel* im südöstlichen Meere Varâh. Bṛh. S. 14,9.

वृषधूत (वृषन् + धूत) adj. von *Männern gerüttelt* (*ausgepresst*): पिब वृषधूतस्य वृष्ण: RV. 3,36,2. 43,7.

1. वृषध्वज m. *ein Banner mit einem Stier* Varâh. Bṛh. S. 58,42.

2. वृषध्वज 1) adj. *einen Stier im Banner habend.* — 2) m. *a)* Bein. Çiva's (vgl. MBh. 13,6401) AK. 1,1,1,29. H. 6. MBh. 2,481. 1640. 3, 7039. 13802. 5,7280. 13,922. R. 1,37,9 (38,9 Gorr.). R. Gorr. 1,56,13. 5,102,2. Râgat. 11,44. Kir. 13,28. Karmâ. 10,31. 52,383. Bâlar. P. 4, 4,23. 17,10. 7,10,60. Mârk. P. 23,61. 56,10. — *b)* N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 24,a,7. 8. 10. eines Verfassers von mystischen Gebeten bei den Tântrika 101,a,37. — *c)* N. pr. eines Berges Mârk. P. 58,11. — 3) f. आ Bein. der Durgâ Harîv. 10246.

वृषध्वाङ्क्षी f. *eine Cyperus-Art* (नागरमुस्ता) Râǵân. im ÇKDr.

वृषन् Uṇâdis. 1,156. acc. वृषणम् und वृषाणम् RV. 10,89,9. VS. 20, 40. Çat. Br. 1,2,5,15. nom. pl. वृषणस् und वृषाणस् Çat. Br. 13,3,8, 7. nach वृद्धो kein Abfall eines folgenden स P. 6,1,113. Ind. St. 5,50. fg. adj. *männlich;* m. *Mann; Männchen des Thiers.* Die Wortspiele, in welchen das Wort auf beliebige Dinge angewandt wird (z. B. RV. 2,

16,4—6. 5,36,5. 6,44,19. fg. 8,13,31—33. 33,10—12. 9,64,1—3. 10, 66,6. 7) zeigen, wie geläufig es den vedischen Dichtern für *alles durch kräftige Erscheinung Ausgezeichnete* war. In der späteren Sprache erscheint für वृषन् die schwächere Form वृष. 1) *Mann:* वृत्रो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् RV. 1,32,7. AV. 5,20,2. घष्पू नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः RV. 1,179,1. 2,16,8. 33,13. वृषा जज्ञानो वृषणं रणाय 7,20,5. 5,47,6. वृषणः पौंस्ये 4,41,6. वृषा शिप्रीः *männliches Kind* 5,44,2. 7,95,2. वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि 3,27,15. AV. 4,4,2. न वीरो नमते वृषा 5, 19,1. 6,86,1. VS. 8,10. वृषा वा शक्रो धेनुका सुदक्षिणा Ait. Br. 6, 3. Çat. Br. 1,1,4,18. 9,2,22. 7,2,11. 14,1,4,16. — 2) vom Ross: *Hengst* H. an. 2,286. fg. वाजी RV. 1,164,34. 7,69,1. 8,23,11. 46,29. VS. 23,62. वृत्य RV. 1,177,2. वाजिन् 2,43,2. AV. 19,27,1. Agni's RV. 4,2,2. 6, 9. Indra's 3,35,3. रथी 7,19,6. घर्चिकदृषणो पत्यध्वे 4,24,8. 7,71,3. घृतो वर्षभा वा वृषणः *Hengste oder Stiere* TBa. 3,8,21,1. die Sonne RV. 3,61,7. 7,88,1. Flammen Agni's 6,3,4. — 3) vom *Stier* H. an. AV. 5,20,3. 8,5,12. उक्षिप 1,12,1. RV. 9,74,3. वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत् 1,140,6. कुह 10,43,8. वृषभ 4,16,20. 5,1,12. वंसग 1,7,8. der Donnerkeil 10,89,9. — 4) von andern Thieren: Löwe RV. 3,2,11. Eber 10,67,7. Gazelle AV. 3,7,2. — 5) *gewaltig, gross, männlich;* von unbelebten Dingen: Donnerkeil RV. 1,131,3. 2,11,9. 9,106,3. Indra's Arme 8,50,18. Wagen der Götter 1,82,4. 157,2. 177,2. 5,75,1. Soma 1,175,1. 177,3. 3,36,2. 5,40,2. मद 6,24,1. 7,68,11. 8,2,1. 106,15. वृत्रः पोता 10,44,3. die Steine 5,31,5. 40,2. 7,21,2. स्तव 1,129,3. ऊधन् 4, 22,6. पर्वताः 3,54,20. मेघ 1,181,3. कृणोतं धूमं वृषणं सखायः 3,29,9. स्वन 5,87,5. AV. 5,13,3. रयि RV. 10,47,1. मणि AV. 19,31,2. ग्रुम्न RV. 4,24,7. 7,24,4. TBa. 1,2,8,21. — 6) Götter werden so bezeichnet, z. B. Indra (AK. 1,1,4,38. Taitt. 1,1,57. H. 172. H. an. Med. n. 135. Hall. 1,52) RV. 4,30,10. 5,36,5. 7,19,6. Rāgn. 10,53. 17,77. Kumāras. 3,61. 80. Agni RV. 1,100,1. 4. 7,3,3. die Marut 1,64,1. 12. 85,12. शर्ध 8,20,9. गण 83,12. Mitra-Varuṇa 1,151,3. 8,68,11. 7,60,9. die Açvin 1,112,24. 117,3. 7,70,7. Rudra 2,34,2. Vishṇu 1,154,2 und andere. In comp. mit *Erde, Land* so v. a. इन्द्र *Herr:* क्षिति° *Fürst, König* Rāgā-Tar. 1,273. द्यमा° 5,126. — 7) m. Bez. *eines best. Metrums* RV. Pāiṅg. 17,4. Ind. St. 8,107. 111. — 8) m. N. pr. eines Mannes Sāy. zu Çat. Br. 1,1,4,10. पाध्यो वृषा RV. 6,16,15. यं काण्वा मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा पशुस्तुतः 1,36,10; vgl. jedoch इति त्वोषस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक् 10,115,8. ein Āṅgirasa Ind. St. 3,237,*b*. Bein. Karṇa's Mbh. — 9) f. वृष्णी Schol. zu Liṭ. 2,7,26. — 9) n. N. eines Sāman Liṭ. 7,5,20. — Die Bedd. *pain, sorrow* und *insensibility from extrem pain* bei Wilson beruhen auf einer falschen Auffassung von Med. n. 135, wo nicht वेदनाज्ञानदुःखयोः, sondern वेदना ज्ञानदुःखयोः zu lesen ist; es sind nicht Bedeutungen von वृषन्, sondern mit वेदना (= ज्ञान und दुःख) beginnt ein neuer Artikel. Derselbe Fehler im ÇKDa. Vgl. त्रि° und रुत°. Da वृषन् niemals in Verbindung mit वर्ष् erscheint und diese Wurzel nur *regnen*, nicht aber *Samen ausspritzen* bedeutet, so muss die übliche Ableitung dahinfallen und statt dessen ein Zusammenhang des Wortes mit वर्ष्मन्, वर्षिष्ठ u. s. w. vermuthet werden. Dafür spricht besonders der Gebrauch unter 5). Vgl. auch Muller, Transl. 1, 121. fgg.

वृषनाभि (वृषन् + ना°) adj. *eine gewaltige Nabe habend:* Wagen RV. 8,20,10.

वृषनामन्, मघोने यस्य वृषनामं ग्रुधे RV. 8,97,54. Padap. ohne Theilung; dürfte entstellt sein.

वृषनाशन m. *Embelia Ribes* (विडङ्ग) Çabdam. im ÇKDa.

वृषन्तम superl. zu वृषन्, *gewaltigst, männlichst:* Indra RV. 1, 10, 10. 100,2. 5,35,3. 6,57,4.

वृषपति m. Bein. Çiva's (*Herr des Stiers*) H. 13. = षण्ड *a bull set at liberty* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वृषपत्निका f. *eine best. Pflanze,* = वस्तान्त्री Rāgān. im ÇKDa.

वृषपत्नी adj. f. nach Sāy. *den Regner* (पर्जन्य) *zum Gatten oder Herrn habend:* Wasser RV. 8,15,6. richtiger wohl *die einen tüchtigen Gebieter* (Vṛtra) *haben.*

वृषपर्णी f. N. pr. zweier Pflanzen, = खादुपर्णी Rāthān. im ÇKDa. = सुदर्शना Rāgān. ebend. — Vgl. वृषकर्णी.

वृषपर्वन् (वृषन् + प°) 1) adj. *gewaltige Gelenke habend:* Indra RV. 3, 36,2. — 2) m. *a) die Wurzel von Scirpus Kysoor* (काशेरु) *Roxb.* H. an. 4,191. Viçva im ÇKDa. — *b)* = भृङ्गारिन् H. an. = भृङ्गारुवत (!) Viçva im ÇKDa. — *c)* Bein. Çiva's Taitt. 3,3,260. H. an. Med. n. 246. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*. 3. Vishṇu's MBh. 13,6977. — *d)* N. pr. eines Dānava, Vaters der Çarmishṭhā, Taitt. H. an. Med. MBh. 1,2352. 2661. fg. 3183. fgg. 3,5044. Harīv. 201. 13079. 13190. 13229. 13703. fgg. 14285. VP. 147. Bhāg. P. 6,6,31. 10,20. 8,10,29. 9,18,4. 26. — *e)* N. pr. eines Rākshasa MBh. 3,11444. 11543. fgg. 12844. fg. Mārk. P. 134,5. — *f)* N. pr. eines Affen R. 5,9,63. — Vgl. वार्षपर्वणी.

वृषपाण (वृषन् + 1. पान) adj. *Männern zum Trunk dienend* RV. 1,51, 12. वृषपाणिन्द्र वृषपाणास इन्दव इमे सुताः 139,6.

वृषपाणि (वृषन् + पा°) adj. *gross-, starkhufig* RV. 6,75,7.

वृषप्रभर्मन् (वृषन् + प्र°) adj. *dem der starke* (Soma) *vorgesetzt wird* (vgl. R. 1,14,4): Indra RV. 5,[illegible],4.

वृषप्रषावन् (वृषन् + प्र°) adj. *mit Hengsten fahrend:* die Marut RV. 8,20,9.

वृषप्सु adj. nach Sāy. = वर्षणशील; etwa *starkes —, männliches Aussehen habend:* die Marut RV. 8,20,7. der Wagen derselben 10.

वृषभ (von वृषन्) Uṇādis. 3,123. im Wesentlichen so v. a. वृषन्. 1) adj. *gewaltig, männlich, tüchtig;* m. *Mann;* zuweilen mit वृषन् verbunden: वृषा शिप्रीवृषभः RV. 7,93,3. ये ते वृषणो वृषभासो इन्द्र (अत्याः) *Hengste* 1,177,2. वाजिन् AV. 7,80,2. Daher von verschiedenen Gegenständen gebraucht, für welche auch वृषन् vorkommt, z. B. den Soma-Steinen RV. 2,16,5. Donnerkeil 1,33,13. ग्रुम्न 6,19,9. Soma 2,16,6. 6,41,3. भानु 2,16,4. Besonders ist es gebräuchlich geworden, ohne dass im Veda die in einander fliessenden Bedeutungen sich überall scheiden liessen, für *a) Stier* (AK. 2,9,39. 3,4,29,222. H. 1256. an. 3, 459. Med. bh. 21. Hall. 2,108. 114. 5,21): उक्षिप RV. 5,58,6. वृषभस्येव ते रवः 1,94,10. 160,3. वार्धसे जनान्वृषभेव मन्युना 6,46,4. द्यावा रोदसी वृषभो रोरवीति Bṛhaspati 73,1. Parāṅga 7,101,1. 6. 4,3,3. 41,5. 5,8,3. 7,19,1. 8,49,13. द्यमा ते तुग्रं वृषभं वचानि 10,27,3. Soma-

Steine 94, 8. सहस्रशृङ्ग *der Stier mit tausend Hörnern:* die Sonne AV. 13, 1, 12. eben so nach Sây. RV. 7, 55, 7, wo nach dem Zusammenhang eher der Mond zu verstehen ist. — यदन्यगोषु वृषभो वत्सानां जनयेदकृतम् M. 9, 50. 122. °षोऽशा: (so ist mit der v. l. zu lesen) *fünfzehn Kühe und ein Stier* 124. 11, 116. 127. 130. श्वेत MBh. 2, 415. R. 2, 43, 12 (42, 11 Gorr.). °स्कन्ध adj. 3, 74, 26. MBh. 3, 17130. R. 5, 35, 26. Vaṁś. Bḍ. S. 61, 5. 7. 87, 22. Verz. d. B. H. No. 897. Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 34. Hit. 46, 13. Çiva's *Stier* Kathâs. 110, 52. मरु° R. 4, 41, 58. *der Stier im Thierkreise* Weber, Nax. 2, 338, N. 1. Vaṁś. Bḍ. S. 102, 1. Bḍ. 1, 13. 27 (25), 4. Bhâg. P. 5, 21, 4. — *b*) der *Stier* als Bild der Grösse, Macht u. s. w.: *der Stärkste, Grösseste, Erste, Beste; Anführer, Herr* u. s. w. H. an. Med. चर्षणीनाम् Agni RV. 6, 1, 8. Indra 18, 1. Bṛhaspati 3, 62, 6. तितीनाम् 1, 177, 3. 8, 32, 4. 7, 98, 1. 10, 187, 1. जनीनाम् 1, 177, 1. कृष्टीनाम् 7, 26, 5. मतीनाम् 6, 17, 3. AV. 13, 1, 33. पृथिव्या: RV. 6, 44, 21. 49, 6. सताम् 2, 1, 3. स्तियानाम् 7, 5, 2. 2, 30, 8. दिवो रजस: पृथिव्या: Vâlakh. 9, 8. घोषीणाम् AV. 7, 39, 1. मरुत्वत् Indra RV. 2, 33, 6. 6, 19, 11. 47, 3. य: पत्यते वृषभो वृष्ण्यानाम् Indra 22, 1. 1, 33, 10. 166, 1. 4, 17, 8. 5, 32, 6. वह्नी 7, 49, 1. Agni 1, 31, 5. 3, 4, 2. 15, 2. 4. 5, 12, 1. Mitra-Varuṇa 5, 63, 2. Bṛhaspati 1, 190, 1. 8. Vishṇu MBh. 13, 6977. Paṁkar. 4, 3, 91. उपमं मघोनां श्रेष्ठं च वृषभाणाम् Vâlakh. 5, 1. RV. 8, 82, 1. चर्षणिप्र AV. 4, 24, 2. — यत्र त्वमस्मान्वृषभो भर्ता भृत्यान् (so ed. Bomb.) न शाधि हि R. 2, 105, 8. वृक्षीनाम् MBh. 3, 1352. इक्ष्वाकु° R. 3, 71, 16. मुनि° 1, 21, 13 (20, 24 Schl.). नर° 2, 18, 56 (21, 62 Schl.). Spr. (II) 1038, v. l. मस्त्रि° Kathâs. 17, 170. 40, 8. गीर्वाण° Bhâg. P. 3, 16, 32. शार्दूल° R. Gorr. 1, 49, 2. — 2) m. *ein best. Heilkraut,* = ऋषभ, वृष AK. 2, 4, 4, 4. — 3) m. *Ohrhöhle* Uṇâdis. im ÇKDn. — 4) m. N. des 28ten Muhûrta Ind. St. 10, 296. — 5) m. Bein. eines Mannes Daçadju RV. 1, 33, 14. 6, 26, 4. N. pr. eines von Vishṇu besiegten Asura Harîv. 2360 (ऋषभ die neuere Ausg.). वृषभासुरविधंसिन् Kṛshṇa Paṁkar. 4, 1, 32. N. pr. eines der Söhne des 10ten Manu Mârk. P. 94, 15. eines Kriegers MBh. 6, 3997. eines Sohnes des Kuçâgra Harîv. 1807. fg. (ऋषभ die neuere Ausg.). des Kârtavîrja Bhâg. P. 9, 23, 26. N. pr. des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 29. Verz. d. Oxf. H. 186, *b*, 14. H. an. Colebr. Misc. Ess. II, 208. — 6) m. N. pr. eines Berges in Girivraǵa MBh. 2, 799. Harîv. Langl. II, 371 (die gedruckten Ausgg. 12394 ऋषभ). R. 4, 41, 58. Kathâs. 34, 16. Mârk. P. 55, 12. 56, 18. — 7) f. घा N. pr. eines Flusses MBh. 6, 339 (VP. 184). — 8) f. ई *a*) *Wittwe.* — *b*) *Mucuna pruriens* Wilson nach Çabdârthak. — Vgl. गो°, मङ्गल°, शत°, वार्षभ und ऋषभ.

वृषभकेतु adj. *einen Stier zum Attribut habend;* m. Bein. Çiva's Mahâk. 173, 14.

वृषभगति adj. *auf einem Stiere reitend;* m. Bein. Çiva's Hir. 8.

वृषभचरित adj. von *Stieren verübt:* दोषा: Vaṁś. Bḍ. S. 104, 10 mit Anspielung auf den Namen eines gleichnamigen Metrums (*4 Mal* ⏑⏑⏑ ⏑⏑–, – – – –, ⏑–⏑⏑–⏑–), welches sonst कारिणी genannt wird.

वृषभत्व n. nom. abstr. von वृषभ *Stier* Kathâs. 40, 9.

वृषभध्वज = वृषध्वज 1) adj. *einen Stier im Banner habend.* — 2) m. *a*) Bein. Çiva's Çabdârthak. bei Wilson; MBh. 3, 1634. 13, 2724. Harîv. 264. R. 1, 35, 13. R. Gorr. 1, 38, 19. 5, 89, 7. Râm. 2, 26. Kumâras. 3, 62. Kathâs. 110, 53. Weber, Rimâyaṇa Up. 344. Verz. d. Oxf. H. 38, *b*, No. 95. Verz. d. B. H. 146, *b* (62). — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's MBh. 13, 7103. — *c*) N. pr. eines *Berges* (vgl. वृषभ 6) Vaṁś. Bḍ. S. 14, 5.

वृषभवीथि f. Bez. *eines Neuntels der von Venus durchlaufenen Bahn;* es umfasst die Nakshatra Maghâ, Pûrvaphalguni und Uttaraphalguni Vaṁś. Bḍ. S. 9, 1.

वृषभस्वामिन् m. N. pr. eines Fürsten, Gründers des Geschlechts des Ikshvâku und Vaters des Dravida, Çaṁk. 6, 285. 7, 1; vgl. S. 28.

वृषभात्त (वृषभ + घत) 1) adj. *Augen eines Stiers habend* MBh. 6, 4383 (ऋषभात्त ed. Bomb.). R. Gorr. 2, 61, 22. — 2) f. ई *die Koloquinthen-Gurke* Rîgân. im ÇKDn.

वृषभाङ्क (वृषभ + घङ्क) m. Bein. Çiva's MBh. 13, 6725. 6339. R. Gorr. 2, 25, 36. — Vgl. वृषभध्वज, वृषाङ्क u. s. w.

वृषभाण m. N. pr. eines Vaiçja, Vaters der Râdhâ, Verz. d. Oxf. H. 23, *a*, N. 1. वृषभान ebend. und 25, *a*, 7. वृषभानु 131, *b*. 132, *a*, No. 239. Wilson, Sel. Works I, 175. — Vgl. वार्षभाणवी.

वृषभोज (वृषभ + घज) adj. *kräftige Nahrung* (oder Soma; s. unter वृषन्) *geniessend* RV. 2, 16, 5.

वृषभासा f. Indra's *Stadt* Taitt. 1, 1, 60.

वृषमणस् (वृषन् + मनस्) adj. *kräftig —, männlich gesinnt, muthig* RV. 1, 63, 4. 107, 7. 4, 22, 6.

वृषमणि (वृषन् + मन्यु) adj. dass. RV. 1, 131, 3.

वृषय् = वृषाय्; s. वृषयु.

वृषय Uṇâdis. 4, 100. m. = घाषय Ujjval.

वृषर्यु (von वृषय्) adj. *brünstig, ausgelassen:* घत्यो न पूषे वृषयु: कनिक्रदत् RV. 9, 77, 3.

वृषरथ (वृषन् + र्थ) adj. *einen gewaltigen Wagen habend:* घत्या: RV. 1, 177, 2. 5, 36, 3. 6, 44, 19.

वृषरश्मि (वृषन् + र° adj. *gewaltige Zügel oder Stränge habend* RV. 5, 44, 19.

वृषराजकेतन m. Bein. Çiva's Kumâras. 5, 84. — Vgl. वृषकेतन.

वृषल (von वृषन्) Uṇâdis. 1, 108. m. 1) *Männlein* so v. a. *ein geringer Mann, ein gemeiner Kerl;* der Kaste nach *ein* Çûdra (AK. 2, 10, 1. H. 894. an. 3, 684. Med. l. 134. Halâj. 2, 431. = घधार्मिक Gaṇiṇ. im ÇKDn.). f. ई P. 4, 1, 63, Schol. *ein gemeines Weib, ein Weib aus der Kaste der* Çûdra. सो घग्नेरत्ते वृषल: पपाद RV. 10, 34, 11. Nir. 3, 16. Çat. Br. 14, 9, 4, 12 (proparox.). Âçv. Gṛhj. 4, 2, 19. 21. Kauç. 91. Kâty. Çr. 14, 2, 30. Lâṭy. 4, 3, 2. नैको न वृषलै: सह यामातरं गच्छेत् Gobh. 3, 5, 20. M. 3, 164. 249. 4, 103. 140. 8, 16 (= MBh. 12, 3377). 11, 43. Jâán. 1, 224. MBh. 3, 12916. 13080. 13336. 8, 2093. 12, 2376. 13, 1587. 1882. R. 2, 82, 31. Spr. 3064. 3096. Uttarâs. 30, 10 (40, 1). Ind. St. 2, 262 (angeblich *Tänzer*). Bhâg. P. 1, 16, 21. 17, 1. 2. 2, 7, 38. 5, 9, 18. 9, 21, 7. 12, 1, 20. °पति 5, 9, 12. °रात्र 17. वृषली M. 3, 19. 191. 250. 11, 173. MBh. 13, 4281. पितृवेश्मनि या कन्या रज: पश्यत्यसंस्कृता । सविवाह्या तु सा कन्या जघन्या वृषली स्मृता ॥ Spr. 1777. Kathâs. 24, 10. स्ववर्षं (वृष so v. a. *Gatte*) या परित्यज्य परवृषे वृषायते । वृषली सा हि (v. l. तु) विज्ञेया

न शूद्री वृषली भवेत् ॥ Kâṭhân. 40,93 im ÇKDa. und bei Aufrecht, Uṇâd. S. 251. Bhâg. P. 3, 14, 19 (= वेश्या Comm.). 6, 2, 26. °पति Âpast. 1, 18, 22. M. 3, 155. MBh. 3, 12356. 5, 1345. Bhâg. P. 5, 26, 23. 6, 2, 38. Mârk. P. 31, 29. P. 6, 2, 18, Schol. °पुत्र und वृषल्याःपुत्र (als comp.) 3, 22, Schol. — 2) ein N. Kândragupta's (der ein Çûdra war) Mudrâs. 5, 13. 7, 5. 12. — 3) *Pferd* H. an. Med. (wo वाजिनि st. राजिनि zu lesen ist). — 4) *eine Art Knoblauch* Med. — Vgl. वार्षल und वार्षलि.

वृषलक (von वृषल) m. *ein elender* Çûdra Uttarâr. 32, 2 (42, 4).

वृषलत्वन् m. Bein. Çiva's Spr. 1413. Kathâs. 20, 68. — Vgl. वृषभाङ्क, वृषलाञ्छन, वृषाङ्क u. s. w.

वृषलता (von वृषल) f. *der Stand eines* Çûdra MBh. 14, 331.

वृषलत्व (wie oben) n. dass. M. 10, 43. MBh. 13, 2102. 2159. 14, 822.

वृषलाञ्छन m. = °वृषलत्वन् H. 13. 195, Schol.

वृषलोचन m. *Mars* oder *Ratze* (*Augen eines Stiers habend*) H. 1300.

वृषवस् (von वृष) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55, 4.

वृषवाह् adj. *auf einem Stiere reitend:* देवल Pâṇân. 1, 2, 69. 6, 48.

वृषवाहन adj. dass.; Beiw. und Bein. Çiva's H. 12. Hariv. 14400. Çiv.

वृषवृष n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 210, *b*.

वृषव्रत (वृषन् + व्रत) adj. *gewaltige Herrschaft führend* oder *Männer beherrschend:* Soma ṚV. 9, 62, 11. 64, 1.

वृषव्रात (वृषन् + व्रात) adj. *einen gewaltigen Haufen* oder *einen Männerhaufen bildend:* die Marut ṚV. 1, 85, 4.

वृषशत्रु m. *der Feind des* Asura Vṛsha, Bein. Vishṇu's Trik. 1, 1, 29.

वृषशिप्र m. N. pr. eines Dämons ṚV. 7, 99, 4.

वृषशील adj. zur Erklärung von वृषल Nir. 3, 18.

वृषशुष्म m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Vâtâvata Ind. St. 4, 373. — Vgl. वृषशुष्म.

वृषशुष्म 1) adj. *starkmuthig* ṚV. 4, 36, 8. — 2) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâtâvata Ait. Br. 5, 29. Kauṣ. Br. in Ind. St. 1, 215, N. 1; vgl. वृषशुष्म.

वृषषाड m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 38, 35. fg. — Vgl. वृकषाड.

वृषसर्व (वृषन् + सव) adj. *von Männern gepresst* oder *den Mann treibend:* Soma ṚV. 10, 42, 8.

वृषसाकृपा f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 342 nach der Lesart der ed. Bomb.

वृषसाकृा f. N. pr. eines Flusses (verschieden vom vorhergehenden) VP. 184, N. 77.

वृषसक्थिन् m. = वृषशृङ्गिन्, वृषसक्थिन् *Wespe* Çabdam. im ÇKDa.

वृषसेन (वृषन् + सेना) 1) adj. etwa *ein Männerheer habend* VS. 10, 2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des 10ten Manu Hariv. 475. Karṇa's 1710. MBh. 2, 324. 5, 5710. 7, 1121. 6941. VP. 446. Bhâg. P. 9, 23, 13. eines Urenkels Açoka's Burn. Intr. 430. Târân. 287.

वृषस्कन्ध adj. *Schultern eines Stieres habend* Raghu. 1, 13. 12, 34. Çiva MBh. 12, 10361.

वृषस्तुभ् s. स्तुभ्.

वृषस्य (von वृष), वृषस्यति *nach einem Manne —, nach einem Stiere verlangen, geil —, läufisch sein* P. 7, 1, 51 nebst Vârtt. Vop. 21, 5. वृषस्यन्ती *geil* AK. 2, 6, 1, 9. H. 527. Halâj. 2, 330. Suçr. 1, 319, 5. Ragh. 12, 34. Kathâs. 17, 139. Kull. zu M. 3, 191. 250. गो Hiṃsra bei Kull. zu M. 5, 5. लक्ष्मणां सा वृषस्यन्ती मरुतां गोरिवागमत् Bhaṭṭ. 4, 30.

वृषाकपायी f. *das Weib des* Vṛshâkapi P. 6, 1, 37. Vop. 4, 28. von den Comm. auf *die Morgenröthe* gedeutet Naigh. 5, 6. Nir. 12, 8. ṚV. 10, 86, 13. = श्री und गौरी AK. 3, 4, 24, 158. H. an. 3, 28. Med. j. 133. Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 24. 191, *a*, 23. = स्वाहा nach Bharata, = शची nach Svâmin zu AK. ÇKDa. Auch Bez. zweier Pflanzen: = शीवन्ती und शतावरी H. an. Med.

वृषाकपि (वृषन् + कपि) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 142. m. 1) *grosser Affe* oder *Mann-Affe*, nach den Comm. ein Sohn Indra's und auf *die Sonne* gedeutet, angeblicher Verfasser von ṚV. 10, 86. Naigh. 5, 6. Nir. 12, 27. ṚV. 10, 86, 1. किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः 3. 5. 12. 18. 20. fgg. einfach als कपि bezeichnet 5. Bez. *der Sonne* MBh. 3, 191. *des Feuers* H. 1098. an. 4, 211. Med. p. 30. Hit. 162. Hariv. 12202. Çiva's AK. 3, 4, 29, 132. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 5. MBh. 7, 9627. Kathâs. 50, 92. eines der 11 Rudra MBh. 13, 7091. Hariv. 166. Bhâg. P. 6, 6, 17. Verz. d. Oxf. H. 82, *b*, 25. fg. Vishṇu's AK H. 215. H. an. Med. Halâj. 1, 22. MBh. 12, 13348. 13, 6960. Hariv. 12374. 14114. Pâṇân. 4, 3, 48. Indra's Bhâg. P. 6, 13, 10. unbestimmt 8, 10, 21. — 2) Bez. *des dem* Vṛshâkapi *zugeschriebenen Liedes* Ait. Br. 5, 18. 6, 29. 32. Çâṅkh. Br. 30, 5. Âçv. Çr. 8, 3, 4. 12, 6, 13. 13, 1. — Vgl. वार्षाकप.

वृषाकार m. *Phaseolus radiatus* Roxb. Râjân. im ÇKDa.; vgl. 2. वृष्य 2).

वृषाकृति (वृष + आ°) adj. *Stiergestalt habend:* Vishṇu MBh. 13, 6961.

वृषात (वृष + घत्त) adj. *stierdüngig;* m. Bein. Vishṇu's H. ç. 70. Hariv. 14189.

वृषाघ्य (वृष + घाघ्या) m. Bez. *eines best. über Waffen ausgesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1, 31, 6.

वृषागिर् m. N. pr. eines Mannes (*eine gewaltige Stimme habend*); s. वर्षागिर्.

वृषाङ्क (वृष + अङ्क) 1) adj. *einen Stier zum Zeichen habend;* m. Bein. Çiva's Trik. 3, 3, 41. H. 195. an. 3, 100. Med. k. 139. Hit. 8. Halâj. 1, 12. MBh. 7, 2894. 2901. 8, 1486. Ragh. 3, 28. Kumâras. 3, 14. Bhâg. P. 8, 8, 1. — 2) adj. *tugendhaft, gut* (वृष = धर्म); = साधु H. an. Med. — 3) m. *Eunuch* H. an. Med. (hier °मरुच्छयोः st. °मरुच्चयोः zu lesen). — 4) m. *Semecarpus Anacardium Lin.* Trik. H. an. Med.

वृषाङ्ग m. *eine Art Trommel* (डमरु) Çabdar. im ÇKDa.

वृषाजन (वृष + अ°) adj. *auf einem Stiere reitend;* m. Bein. Çiva's Trik. 1, 1, 47.

वृषाणाक m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Trik. 1, 1, 50. Valpi beim Schol. zu H. 210. Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 12. — ÇKDa. und Wilson angeblich nach Trik. *eine Form* Çiva's.

वृषाण्ड (वृष + अ° oder आ°) m. N. pr. eines Asura (*Stier-Hoden habend*) MBh. 12, 8265.

वृषादर्भ m. = वृषदर्भ N. pr. eines Sohnes des Çibi Bhâg. P. 9, 23, 3.

वृषादर्भि m. desgl. MBh. 12, 3924. 3999. 13, 1415. fgg.

वृषाद्रि (वृष + अ°) m. N. pr. eines *Berges* im Lande der Kerala Verz. d. Oxf. H. 254, *b*, 35. 255, *a*, 4.

वृषान्तक (वृष + अ°) m. *der Vernichter des* Asura Vṛsha, Beiw. Vishṇu's Cabdam. im ÇKDa.

वृषामित्र (वृष + अ°) m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 3,997.

वृषायोदिनी (वृषन् + यो°) adj. f. *mit dem Manne sich ergötzend* Kiṣn. 12,8.

1. वृषाय् (von वृषन्, वृष, वृषायँते (वृषयते u. s. w. im Padapâṭha; vgl. RV. Pair. 9,30. VS. Pair. 3,111). 1) *in männliche Kraftorregung gerathen: brünstig werden;* überh. *begierig sein, losgehen auf;* mit acc. oder dat.: इन्द्रो वर्धते प्रवते वृषायते RV. 10,94,9. वृषायमाणो ऽवृणीत सोमम् 1,32,3. इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते 55,2. वृषायन्ते मरुते अत्यायं पृक्षे: 3,7,9. 32,5. तृषु यदन्ना वनिनो वृषायसे 1,58,4. 9,71,3. यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते 108,2. 10,21,3. ऊर्ध्वः स्कम्भो धरुण आ वृषायते 44,4. VS. 20,46. mit loc.: स्वयं यो मत्यें वृषायमाणः Kâṭhân. 40,93 nach ÇKDa. und Aufrecht. — 2) *wie ein Stier brüllen* MBh. 5,1958. Bhâg. P. 10,11,39.

— intens. Hierher scheint die unregelmässige Bildung वावृषाणौ zu gehören: दूर्यासस इव मरुतो वावृषाणाः *entbrannt auf reichen Beutegewinn* RV. 6,26,1.

— आ *brünstig werden:* आ वृषायस्व सप्तिभि वर्धस्व AV. 6,101,1.

— उद् *in Aufregung gerathen:* मन्दान उद्वृषायते RV. 9,47,1.

2. वृषाय्. In Einladungsformeln des Rituals findet sich ein आ वृषायते (°नीवृषत, °वृषायिषत VS. Pair. 5,35) mit der Bed. *zu sich nehmen, sich einschenken lassen* u. s. w., welches mithin dem आ वृषते (s. u. वर्ष्) des RV. entspricht und mit Ausnahme von Çat. Bra. 1,7,2,17 auf eine einzige Formel zurückgeht. Die auffallende Bildung mag aus falscher Analogie mit 1. वृषाय् entsprungen sein. यत्र पितरो मादयध्वै यथाभागमा वृषायध्वम् VS. 2,31. सोमोमदत्त आ वृषायिषत ebend. Âçv. Ça. 2,7,1. Kauç. 88. Çâṅkh. Ça. 1,17,15. 4,4,16. 19. Liṭ. 2,10,4.5. हविर्वृषस्व हविरावृषायस्व Çat. Bra. 1,7,2,17.

वृषायण (von 1. वृषाय्) m. *Sperling (der Geile)* Hir. 89.

वृषायुध् (वृषन् + युध्) adj. *Männer bekämpfend* RV. 1,33,6.

वृषारव (वृषन् + रव) m. (*wie ein Stier brüllend*) 1) *ein best. Thier* RV. 10,146,2. — 2) *Schlegel* (von Holz zum Klopfen, Trommeln) TBr. 2,5,8,6. घाएउयेरत्ते वृषारवो (sonst घरणो) Çat. Bra. 12,5,2,7. दृषदुपले वृषारवेणोद्यैः समाकृत्ति Schol. zu TS. 1,111,3.

वृषाललततायिन् Ind. St. 2,28, N. 1.

वृषाशील zur Erklärung von वृषल Nir. 3,18. — Vgl. वृषशील.

वृषाकार (वृष *Maus* + आ°) m. *Katze* Hir. 83.

वृषाक्षिन् m. als Beiw. Vishṇu's MBh. 13,6977.

वृषिन् m. *Pfau* Cabdam. im ÇKDa.

वृषिमन् m. nom. abstr. von वृष gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122.

वृषी fehlerhafte Schreibung für बृसी.

वृषीय् (denom. von वृष), वृषीयति Schol. zu P. 7,1,51. 4,36.

वृषेन्द्र (वृष + इ°) m. *ein stattlicher Stier* Bhâg. P. 4,4,4. 5. nach Burnouf N. pr. eines *Stiers*.

वृषोत्सर्ग (वृष + उ°) m. *Freilassung eines Stiers* (eine verdienstliche Handlung) Çâṅkh. Gṛhj. 3,11. Pâr. Gṛhj. 3,9. Verz. d. B. H. 90 (19). No. 1122. 1150. fg. Pañcat. 9,3. Verz. d. Oxf. H. 8,*b*, No. 46. 35,*a*, 3. 9. 42,*a*, 43. 273,*b*, 34. 276,*b*, 35. 277,*b*, 2. 289,*b*, No. 693. 290, No. 697. °परिशिष्ट 383,*b*, No. 466. Ind. St. 1,39.

वृषोत्सारु (वृष + उ°) m. Beiw. Vishṇu's H. ç. 66 (वृषोत्सारु).

वृषोदर (वृष + उ°) m. desgl. H. ç. 70. MBh. 13,6977.

वृष्ट m. N. pr. eines Sohnes des Kukura VP. 435. Varianten: वृष्टि वृष्टि, धृष्ट, धृष्टु.

वृष्टि (von वर्ष्) 1) f. oxyt. im RV. P. 3,3,96. in den übrigen Schriften meist paroxyt. *Regen* AK. 1,1,2,12. 3,4,29,238. H. 166. RV. 1,116, 12. यवो वृष्टीव मोदते 2,3,6. घन्वना यन्ति वृष्टयः 5,53,6. वृष्टिं वर्षयव 55,5. 59,5. सूर्यमक्षेणा वृष्ट्या गूळ्हो दिवि 63,4. 84,3. सध्वृष्टिरिवाजनि 7,94,1. मरुतां भुवः 101,5. दिव्या 152,7. गर्भस्त्वती 2,35,6. 10,74,3. पर्वस्व वृष्टिमा सु नः 9,49,1. पर्जन्यस्य AV. 3,31,11. 6,22,3. 54,1. समाविमी वृष्ट्याभ्युनत्ति Ait. Bra. 1,7. Çat. Bra. 7,4,2,23. 3,2,2,5. 12,1,1,3. घृतिरितो वृष्टिमुदीरयति TS. 2,4,10,2. 3. 3,3,6,1. TBr. 3,1,2,4. Kauç. 94. Maitrâyaṇ. 6,92. घादित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नम् M. 3,76. R. 1,8,24. 2,63, 16. 110,10. Suçr. 1,22,6. Raghu. 1,62. 2,14. 12,29. महत्यत्यौ यथा वृष्टिः Spr. 2128. यथा वृष्टिः समुद्रेषु 2800. 5032. Varâh. Bṛh. S. 3,27. 4, 11. 5,59. मरुती 8,48. पुष्टा 9,27. 24,24. विपुला 29. शोभना 29,11. 14. निम्रिक्त° 23,3. नु° 9,31. 24,29. 25,3. 34,14. प्राच्य° adj. Çiç. 193. Mârk. P. 91,43. Râja-Tar. 3,289. सर्व° Vikr. 154. वृष्ट्याम्बु AK. 2,4,12. °कर *Regen bringend* Varâh. Bṛh. S. 30,8. 11. 24. 95,17. 96,8. वृष्टिर्विनिपतः 4,13. °विकार 46,46. °नाश 47,12. °विनाश 17,4. °निरोध 93, 59. °विष्टम्भ Bhâg. P. 5,22,12. वात° (मेघ) Megh. 20. तुमुलकरका° 55. शक्तिशूलासिवृष्टिभिः MBh. 3,12121. Mârk. P. 88,29. सस्व° Raghu. 3,58. घभिवर्ष वं घनरोघवृष्टिभिः R. Gorr. 2,32,16. कुसुम° Bhâg. P. 4,1, 53. R. 2,91,28 (adj.). पुष्प° MBh. 1,1129. 3,2995. Raghu. 2,60. 12,94. H. 63. सनुपदवृष्टि° Bhâg. P. 2,7,28. स° adj. Hariv. 1,77. — 2) m. *a*) N. eines Ekâha Çâṅkh. Ça. 14,35,1. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Kukura VP. 2te Aufl. 4,97. Varianten: वृष्णि, वृष्ट, धृष्ट, धृष्टु. — Vgl. य° (auch Pañcat. 50,18; besser सनावृष्टि ed. Bomb.), दुर्वृष्टि, नक्तञ्°, व मु°, वात°, स्व° und वार्ष्ण.

वृष्टिकाम adj. *Regen wünschend* TS. 6,3,6,5. Çat. Bra. 1,3,2,19. 3,2, 13. Pañcav. Br. 2,8,15. fg.

वृष्टिघ्न 1) adj. *Regen verscheuchend.* — 2) f. ई *kleine Kardamomen* Cabdam. im ÇKDa.

वृष्टिमावन् adj. vermuthlich falsche Nachbildung von वृष्टिमन्. यत्तं वृष्टिमावानममृतं स्वर्विदम् Kiṣn. 40,12.

वृष्टिमन्त् adj. *im Regenhimmel wohnend* u. s. w.: Mitra-Varuṇa °यावा du. RV. 5,68,5. Âçv. Ça. 1,9,1. Himmel und Erde Çat. Bra. 1,9, 2,6. °यावस् pl. (इन्द्रवः) RV. 9,106,9.

वृष्टिभू m. *Frosch* Hir. 153. — Vgl. वर्षाभू.

वृष्टिमत्त् RV. und वृ° Çat. Bra. (von वृष्टि) 1) adj. *regnerisch, regnend:* Parǵanja RV. 5,6,1. 9,2,9. 10,98,5. Çat. Bra. 1,9,2,6. 3,3,4,11. MBh. 4,1598. 6,2804. 7,3153. Hariv. 12136. Wolken 2635. 3797. MBh. 13, 520. R. 5,40,7. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kaviratha Bhâg. P. 9,22,40.

वृष्टिमारुत m. von *Regen begleiteter Wind* Hariv. 3896.

वृष्टिर्वान adj. *Regen erlangend, — bringend* Nir. 2,12. RV. 10,98,7.

न प्रूहो वृषली भवेत् ॥ Kâçikâ. 40,93 im ÇKDa. und bei Aufrecht, Unidis. S. 231. Bhâg. P. 3, 14, 29 (= वेश्या Comm.). 6, 2, 36. °पति Âpast. 1, 18, 39. M. 3, 155. MBh. 3, 13356. 5, 1245. Bhâg. P. 5, 26, 23. 6, 2, 38. Mâlav. P. 31, 29. P. 6, 2, 18, Schol. °पुत्र und वृषल्या:पुत्र (als comp.) 3, 22, Schol. — 2) ein N. Kândragupta's (der ein Çûdra war) Mudrâs. 5, 12. 7, 5. 12. — 3) *Pferd* H. an. Med. (wo वाजिनि st. राजिनि zu lesen ist). — 4) *eine Art Knoblauch* Med. — Vgl. वार्षल und वार्षलि.

वृषलक (von वृषल) m. *ein elender* Çûdra Uttarâdh. 32, 2 (42, 4).

वृषलक्ष्मन् m. Bein. Çiva's Spr. 1413. Kathâs. 20, 68. — Vgl. वृषभाङ्क, वृषलाञ्छन, वृषाङ्क u. s. w.

वृषलता (von वृषल) f. *der Stand eines* Çûdra MBh. 14, 831.

वृषलत्व (wie oben) n. dass. M. 10, 43. MBh. 13, 2103. 2159. 14, 832.

वृषलाञ्छन m. = °वृषलक्ष्मन् H. 13. 195, Schol.

वृषलोचन m. *Maus* oder *Ratte* (*Augen eines Stiers habend*) H. 1300.

वृषवत्सू (von वृष) m. N. pr. eines Berges Mâlav. P. 55, 4.

वृषवाह् adj. *auf einem Stiere reitend:* देवल Pâṇâd. 1, 2, 69. 6, 48.

वृषवाहन adj. dass.; Beiw. und Bein. Çiva's H. 12. Hariv. 14400. Çiv.

वृषवृष n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 210, *b*.

वृषव्रत (वृषन् + व्रत) adj. *gewaltige Herrschaft führend* oder *Männer beherrschend:* Soma ṚV. 9, 62, 11. 64, 1.

वृषव्रात (वृषन् + व्रात) adj. *einen gewaltigen Haufen* oder *einen Männerhaufen bildend:* die Marut ṚV. 1, 85, 4.

वृषशत्रु m. *der Feind des* Asura Vṛsha, Bein. Vishṇu's Taik. 1, 1, 29.

वृषशिप्र m. N. pr. eines Dämons ṚV. 7, 99, 4.

वृषशील adj. zur Erklärung von वृषल Nir. 3, 16.

वृषशुष्ण m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Vâtâvata Ind. St. 4, 373. — Vgl. वृषशुष्म.

वृषशुष्म 1) adj. *starkmuthig* ṚV. 4, 36, 8. — 2) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâtâvata Ait. Br. 5, 29. Kâtj. Br. in Ind. St. 1, 215, N. 1; vgl. वृषशुष्ण.

वृषषाड m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 38, 35. fg. — Vgl. वृकषाड.

वृषसव (वृषन् + सव) adj. von *Männern gepresst* oder *den Mann treibend:* Soma ṚV. 10, 42, 8.

वृषसाक्षया f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 342 nach der Lesart der ed. Bomb.

वृषसाक्षा f. N. pr. eines Flusses (verschieden vom vorhergehenden) VP. 184, N. 77.

वृषसृक्किन् m. = विषसृक्किन्, विषसृक्कन् *Wespe* Çabdam. im ÇKDa.

वृषसेन (वृषन् + सेना) 1) adj. etwa *ein Männerheer habend* VS. 10, 2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des 10ten Manu Hariv. 473. Karṇa's 1710. MBh. 2, 324. 5, 5710. 7, 1121. 6941. VP. 446. Bhâg. P. 9, 23, 13. eines Urenkels Açoka's Buan. Intr. 430. Târan. 287.

वृषस्कन्ध adj. *Schultern eines Stieres habend* Râgat. 1, 12. 12, 84. Çiva MBh. 12, 10361.

वृषस्तुभ् s. स्तुभ्.

वृषस्य (von वृष), वृषस्यति *nach einem Manne —, nach einem Stiere verlangen, geil —, läufisch sein* P. 7, 1, 51 nebst Vârtt. Vop. 21, 5. वृषस्यन्ती *geil* AK. 2, 6, 2, 9. H. 527. Hâlâ. 2, 230. Soḍḍ. 1, 319, 8. Râgat. 12, 24. Kathâs. 17, 139. Kull. zu M. 3, 191. 250. गो Hiatra bei Kull. zu M. 5, 8. लक्ष्मणां सा वृषस्यन्ती मन्ये तां गोरिवागमत् Bhaṭṭ. 4, 30.

वृषाकपायी f. *das Weib des* Vṛshâkapi P. 4, 1, 37. Vop. 4, 25. von den Comm. auf *die Morgenröthe* gedeutet Naigh. 5, 6. Nir. 12, 8. ṚV. 10, 86, 13. = अदी und गौरी AK. 3, 4, 28, 158. H. an. 5, 28. Med. j. 133. Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 24. 191, *a*, 23. = स्वाहा nach Bharata, = शची nach Sâyaṇa zu AK. ÇKDa. Auch Bez. zweier Pflanzen: = जीवन्ती und शतावरी H. an. Med.

वृषाकपि (वृषन् + कपि) Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4, 142. m. 1) *grosser Affe* oder *Mann-Affe*, nach den Comm. ein Sohn Indra's und auf *die Sonne* gedeutet, angeblicher Verfasser von ṚV. 10, 86. Naigh. 5, 6. Nir. 12, 27. ṚV. 10, 86, 1. किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः 3. 8. 12. 18. 20. fgg. einfach als कपि bezeichnet 5. Bez. *der Sonne* MBh. 3, 191. *des Feuers* H. 1098. an. 4, 211. Med. p. 30. Hit. 162. Hariv. 12292. Çiva's AK. 3, 4, 20, 132. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 5. MBh. 7, 9627. Kathâs. 50, 92. eines der 11 Rudra MBh. 13, 7091. Hariv. 166. Bhâg. P. 6, 6, 17. Verz. d. Oxf. H. 82, *b*, 25. fg. Vishṇu's AK. H. 215. H. an. Med. Hâlâ. 1, 22. MBh. 12, 13243. 13, 6960. Hariv. 12374. 14114. Pâṇâd. 4, 3, 48. Indra's Bhâg. P. 6, 13, 10. unbestimmt 8, 10, 21. — 2) Bez. *des dem* Vṛshâkapi *zugeschriebenen Liedes* Ait. Br. 5, 15. 6, 29. 32. Çâṅkh. Br. 30, 5. Âçv. Çr. 9, 3, 4. 12, 6, 13. 13, 1. — Vgl. वार्षाकप.

वृषाकार m. *Phaseolus radiatus* Roxb. Râjân. im ÇKDa.; vgl. 2. वृष्य 2).

वृषाकृति (वृष + आ°) adj. *Stiergestalt habend:* Vishṇu MBh. 13, 6961.

वृषात (वृष + अत) adj. *stiermässig;* m. Bein. Vishṇu's H. ç. 70. Hariv. 14189.

वृषाण्य (वृष + आण्या) m. Bez. *eines best. über Waffen ausgesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1, 31, 6.

वृषागिर् m. N. pr. eines Mannes (*eine gewaltige Stimme habend*): s. वर्षागिर्.

वृषाङ्क (वृष + अङ्क) 1) adj. *einen Stier zum Zeichen habend;* m. Bein. Çiva's Taik. 3, 3, 41. H. 195. an. 3, 100. Med. k. 150. Hit. 8. Hâlâ. 1, 12. MBh. 7, 2394. 2901. 8, 1426. Râgat. 3, 23. Kumâras. 3, 14. Bhâg. P. 8, 8, 1. — 2) adj. *tugendhaft, gut* (वृष = धर्म); = साधु H. an. Med. — 3) m. *Eunuch* H. an. Med. (hier °मकुलयो: st. °मकुलयो: zu lesen). — 4) m. *Semecarpus Anacardium* Lin. Taik. H. an. Med.

वृषाङ्कल m. *eine Art Trommel* (डमरु) Çabdar. im ÇKDa.

वृषाञ्चन (वृष + अ°) adj. *auf einem Stiere reitend;* m. Bein. Çiva's Taik. 1, 1, 47.

वृषाणक m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Taik. 1, 1, 30. Vâîpi beim Schol. zu H. 210. Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 12. — ÇKDa. und Wilson angeblich nach Taik. *eine Form* Çiva's.

वृषाण्ड (वृष + अ° oder आ°) m. N. pr. eines Asura (*Stier-Hoden habend*) MBh. 12, 8365.

वृषादर्भ m. = वृषदर्भ N. pr. eines Sohnes des Çibi Bhâg. P. 9, 23, 3.

वृषादर्भि m. desgl. MBh. 12, 5934. 8399. 13, 4418. fgg.

वृषाद्रि (वृष + अ°) m. N. pr. eines *Berges* im Lande der Kerala Verz. d. Oxf. H. 254, *b*, 35. 255, *a*, 4.

वृषान्तक (वृष + अ°) m. *der Vernichter des Asura Vṛsha, Bein. Vishṇu's* Caṇḍ. im ÇKDa.

वृषामित्र (वृष + अ°) m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 3,997.

वृषामोदिनी (वृषन् + मो°) adj. f. *mit dem Manne sich ergötzend* Kiṭ. 12,8.

1. वृषाय् (von वृषन्, वृष), वृषायँते (वृषयते u. s. w. im Padapâṭha; vgl. RV. Pair. 9,30. VS. Pair. 3,111). 1) *in männliche Kraftorregung gerathen: brünstig werden; überh. begierig sein, losgehen auf;* mit acc. oder dat.: इन्द्रो वर्धते प्रवते वृषायते RV. 10,94,9. वृषायमाणो ऽवृणीत सोमम् 1,32,8. इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते 33,2. वृषायस्व मरुद्भ्यो वृषभो वृषायते 108,2. 10,21,8. ऊर्ध्वः स्कम्भो धरुणो वा वृषायसे 44,4. VS. 20,46. mit loc.: स्ववर्षं या परित्यज्य परवृषे वृषायते Kiṭṭin. 40,93 nach ÇKDa. und Aufrecht. — 2) *wie ein Stier brüllen* MBh. 5,1958. Bhâg. P. 10,11,29.

— intens. Hierher scheint die unregelmässige Bildung वावृषाणौ zu gehören: क्रूणामसि त्वा मृक्षो वाजस्य सातौ वावृषाणाः *entbrannt auf reichen Beutegewinn* RV. 5,26,1.

— आ *brünstig werden:* आ वृषायस्व शसिक्नि वर्धस्व AV. 5,101,1.

— उद् *in Aufregung gerathen:* मन्दान उद्वृषायते RV. 9,47,1.

2. वृषाय्. In Einladungsformeln des Rituals findet sich ein आ वृषायते (°वीवृयत, °वृषायियत VS. Pair. 5,35; mit der Bed. *zu sich nehmen, sich einschenken lassen* u. s. w., welches mithin dem आ वृपते (s.u. वर्ष्) des RV. entspricht und mit Ausnahme von Çat. Br. 1,7,2,17 auf eine einzige Formel zurückgeht. Die auffallende Bildung mag aus falscher Analogie mit 1. वृषाय् entsprungen sein. यत्र पितरो मादयध्वै यथाभागमा वृषायध्वम् VS. 2,31. सोमोदत्त आ वृषायियत ebend. Âçv. Çr. 2,7,1. Kauç. 88. Çâṅkh. Çr. 1,17,15. 4,4,16. 19. Liṭ. 2,10,4.5. रुविर्वृषस्व रुविरावृषायस्व Çat. Br. 1,7,2,17.

वृषायण (von 1. वृषाय्) m. *Sperling (der Geile)* Hir. 89.

वृषायुध (वृषन् + युध्) adj. *Männer bekämpfend* RV. 1,33,6.

वृषारव (वृषन् + रव) m. (*wie ein Stier brüllend*) 1) *ein best. Thier* RV. 10,146,2. — 2) *Schlegel* (von Holz zum Klopfen, Trommeln) TBr. 2,5,2,6. द्वाऽउपोत्ते वृषारवौ (sonst घरणौ) Çat. Br. 12,5,2,7. दृषदुपले वृषारवेणोद्यै: समाकृत्ति Schol. zu TS. 1,111,3.

वृषाललततायिन् Ind. St. 2, 28, N. 1.

वृषाशील zur Erklärung von वृषल Nir. 3,16. — Vgl. वृषशील.

वृषाकार (वृष *Maus* + आ°) m. *Katze* Hir. 83.

वृषाक्षिन् m. als Bein. Vishṇu's MBh. 13,6977.

वृषिन् m. *Pfau* Caṇḍam. im ÇKDa.

वृषिमन् m. nom. abstr. von वृष gaṇa पृच्छादि zu P. 5,1,122.

वृषी fehlerhafte Schreibung für वृसी.

वृषीय् (denom. von वृष), वृषीयति Schol. zu P. 7,1,51. 4,36.

वृषेन्द्र (वृष + इ°) m. *ein stattlicher Stier* Bhâg. P. 4,4,4. 5. nach Burnouf N. pr. eines *Stiers*.

वृषोत्सर्ग (वृष + उ°) m. *Freilassung eines Stiers* (eine verdienstliche Handlung) Çâṅkh. Gṛhy. 3,11. Pâr. Gṛhy. 3,9. Verz. d. B. H. 90 (19). No. 1122. 1150. fg. Pañcat. 9,3. Verz. d. Oxf. H. 8,*b*, No. 46. 35,*a*, 3. 9. 42,*a*, 13. 273,*b*, 34. 276,*b*, 35. 277,*b*, 2. 289,*b*, No. 693. 290, No. 697. °परिशिष्ट 383,*b*, No. 466. Ind. St. 1,39.

वृषोत्साह (वृष + उ°) m. Bein. Vishṇu's H. ç. 66 (वृषोत्साह).

वृषोदर (वृष + उ°) m. desgl. H. ç. 70. MBh. 13,6977.

वृष्ट m. N. pr. eines Sohnes des Kukura VP. 435. Varianten: वृष्टि वृष्णि, धृष्ट, धृष्णु.

वृष्टि (von वर्ष्) 1) f. oxyt. im RV. P. 3,3,96. in den übrigen Schriften meist paroxyt. *Regen* AK. 1,1,2,12. 3,4,22,226. H. 166. RV. 1,116, 12. पवी वृष्टेर्व मोदते 2,5,6. घन्वना यन्ति वृष्टयः 5,53,6. वृष्टिं वर्षयथ 55,5. 59,5. सूर्यमधेणां वृष्ट्या गूह्यो दिवि 63,4. 84,3. अधादृष्टिरिवाजनि 7,94,1. मयोभुवः 101,5. दिव्या 152,7. नभस्वती 3,25,6. 10,74,3. पर्वस्व वृष्टिमा सु नः 9,49,1. पर्जन्यस्य AV. 3,31,11. 6,22,3. 54,1. यमाविमौ वृष्ट्याभ्युनत्ति Ait. Br. 1,7. Çat. Br. 7,4,2,22. 8,2,3,5. 12,1,2,3. यद्गिरितो वृष्टिमुदीरयति TS. 2,4,12,2. 3. 3,3,4,1. TBr. 3,1,2,4. Kauç. 94. Maitrâyaṇ. 6,12. यादित्यादापद्यते वृष्टिर्वृष्टेरन्नम् M. 3,76. R. 1,8,24. 2,63, 16. 110,10. Suçr. 1,22,6. Râgan. 1,62. 2,14. 12,29. मरुत्स्वत्यो यवा वृष्टिः Spr. 2128. यथा वृष्टिः समुद्रेषु 2890. 5032. Vaṇîn. Bṛh. S. 3,27. 4, 11. 5,59. मरुती 8,48. पुष्टा 9,27. 24,24. विपुला 29. शोभना 29,11. 14. निष्क्रि° 25,3. सु° 9,21. 24,29. 25,3. 34,14. प्राप्य° adj. Çiç. 193. Mâlav. P. 91,18. Râjâ-Tar. 3,339. घर्ष° Vâsn. 154. वृष्ट्याम्बु AK. 2,4,12. °कर *Regen bringend* Vaṇîn. Bṛh. S. 30,3. 11. 24. 95,17. 96,5. वृष्टिर्विनियक्: 4,13. °विकार 46,16. °नाश 47,12. °विनाश 17,4. °निरोध 95, 39. °विघ्न्भ Bhâg. P. 5,22,12. वात्त° (मेघ) Mṛcch. 20. तुमुलकरका° 55. शक्तिशूलासिवृष्टिभिः MBh. 3,12121. Mârk. P. 68,29. शस्त्र° Râgan. 3,55. घभिवर्ष वै घनरलोघवृष्टिभिः R. Gorr. 2,32,16. कुसुम° Bhâg. P. 4, 1, 53. R. 2,91,25 (adj.). पुष्प° MBh. 1,1129. 3,2995. Râgan. 2,60. 12,94. H. 63. घनुयद्वृष्टि° Bhâg. P. 2,7,28. म° adj. Hariv. 1,77. — 2) m. *a*) N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 14,33,1. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Kukura VP. 2te Aufl. 4,97. Varianten: वृष्णि, वृष्ट, धृष्ट, धृजु. — Vgl. घ° (auch Pañcat. 50,18; besser घनावृष्टि ed. Bomb.), दुर्वृष्टि, नक्तञ्°, व मु°, वात°, स्व° und वार्ष्टी.

वृष्टिकाम adj. *Regen wünschend* TS. 6,5,6,5. Çat. Br. 1,5,2,19. 8,2, 12. Pañcav. Br. 8,8,18. fg.

वृष्टिघ्न 1) adj. *Regen verscheuchend.* — 2) f. ई *kleine Kardamomen* Caṇḍam. im ÇKDa.

वृष्टिमत्वन् adj. vermuthlich falsche Nachbildung von वृष्टिमत्. यत्ते वृष्टिमत्वानमृतं स्वर्विदम् Kiṭ. 40,12.

वृष्टिमत् adj. *im Regenhimmel wohnend* u. s. w.: Mitra-Varuṇa °त्वावा du. RV. 5,68,5. Âçv. Çr. 1,9,1. Himmel und Erde Çat. Br. 1,9, 1,6. °त्वावस् pl. (इन्द्रवः) RV. 9,106,9.

वृष्टिभू m. *Frosch* Hir. 153. — Vgl. वर्षाभू.

वृष्टिमत् RV. und वै° Çat. Br. (von वृष्टि) 1) adj. *regnerisch, regnend:* Parǵanja RV. 5,6,1. 9,2,9. 10,98,5. Çat. Br. 1,9,1,6. 3,3,4,11. MBh. 4,1893. 6,2804. 7,3153. Hariv. 12136. Wolken 2633. 3707. MBh. 13, 320. R. 5,40,7. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kaviratha Bhâg. P. 9,22,40.

वृष्टिमारुत m. von *Regen begleiteter Wind* Hariv. 3896.

वृष्टिवनि adj. *Regen erlangend, — bringend* Nir. 2,12. RV. 10,98,7.

VS. 38,6. TS. 2,4,10,3. Ait. Br. 2,20. 3,16. Çat. Br. 14,2,1,21.

वृष्टिवात m. = वृष्टिमारुत Harîv. 3897.

वृष्टिसैनि adj. = वृष्टिवनि TS. 4,4,6,2. Kâṭy. 22,5. Bez. gewisser Ishṭaká TS. 5,3,1,3. 10,1. Kâṭy. 22,6.

वृष्ण m. N. pr. eines Mannes Çâṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. 4,1,4 und Sây. zu Çat. Br. 14,6,10,8. — Vgl. वार्ष्ण.

वृष्णि Uṇâdis. zu Unâdis. 4,46. 1) adj. (neutr. वृष्णि) so v. a. वृषन् *gewaltig, männlich*; m. *Mann* u. s. w.: पूष्णे वृष्णिरजाति so v. a. *Anführer des Haufens*, Indra RV. 1,10,2. वज्र 8,6,6. शवस् 5,35,4. 8,3,10. पौंस्य 7,23. = पाषण्ड und वण्ड Çabdar. im ÇKDa. st. dessen fälschlich पाण्डव und चन्द्र Med. p. 28. *heretical, heterodox, a heretic, a sectary; angry, passionate* Wilson nach Çabdârthak. — 2) m. Sidh. K. 247,*a*,1 v. u. *a*) *Schafbock, Widder* AK. 2,9,77. Trik. 3,3,188. H. 1270. an. 2, 134. Med. Halâ. 2,124. VS. 14,9. TS. 3,3,2,4. 5,3,1,3. 7,10,1. वृष्णेः स्तुकाः Çat. Br. 3,5,2,18. Kâṭy. Çr. 5,4,17. 9,7,4. °पाल Daçak. 97,1 soll *Kukkhirt* bedeuten (वृष्णि = गो Aṅga ebend. in d. N.). — *b*) pl. N. pr. eines Geschlechts (= पाण्डव und माधव: क्षत्रियवैश्ययोः Uṇâdis.), zu denen auch Kṛshṇa gehört, häufig mit den Andhaka zusammen genannt, Trik. H. an. Med. P. 4,1,114. 6,2,34. वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि sagt Kṛshṇa Bhag. 10,37. MBh. 1,2483. 7000. 7963. 3,15654. वृष्णयान्धकाः सर्वे Harîv. 1898. 1907. Kâm. Nîtis. 14,62. Spr. 2235. 2630. Râga-Tar. 1,66. VP. 418. Bhâg. P. 1,3,23. 8,41. 11,13. 9,23,29. Verz. d. Oxf. H. 40,*a*,39. °वृद्धाः Ind. St. 2,308. °पुर MBh. 3,12582. sg. als N. pr. verschiedener Fürsten Harîv. 1908. 2000. 2080. VP. 416. 422. 424. 447, N. 13. 2te Aufl. 4,97. Bhâg. P. 9,23,28. 24,3. 6. 7. 11. 14. Vishṇu (Kṛshṇa) so genannt Trik. 1,1,29. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,10. Çiva MBh. 14,198. — *c*) *Lichtstrahl* Halâ. 1,39. H. 99, Schol. (व्यक्ति). Çabdârthak. bei Wilson. aus पृश्नि entstanden. — *d*) *air or wind*; Indra; Agni Wilson nach Çabdârthak. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 237,*b*. — Vgl. वार्ष्ण, वार्ष्णेय, वार्ष्ण्य.

वृष्णिक m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — Vgl. वार्ष्णिक.

वृष्णिगर्भ m. Beiw. Kṛshṇa's ÇKDa. angeblich nach Hir.

वृष्णिमत् (von वृष्णि) m. N. pr. eines Fürsten VP. 462. Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,11. *fg.* Verz. d. Cambr. H. 6.

वृष्णिय s. वृद्ध°; वृष्णिवृद्ध s. u. वृष्णि 2) *b*) und vgl. वार्ष्णवृद्ध.

वृष्ण्य (von वृषन्) 1) adj. *männlich, mächtig*: शवस् RV. 8,3,8. Vîlakṣ. 3,10. — 2) n. *a*) *Manneskraft, Muth, Macht* RV. 1,51,7. 54,8. प्र शत्रूणां वृष्ण्या रुज 102,4. वृष्ण्येभिः समोकाः 100,1. 108,8. 3,46,2. 4,19,20. 21,2. विश्वमधत वृष्ण्यम् 6,8,2. 8,6,31. 10,44,1. AV. 5,4,10. 6,89,1. Kauç. 68. — *b*) *männliche Kraft* so v. a. *Potenz* AV. 4,4,4. 5. 6,138,4.

वृष्ण्यावत् (von वृष्ण्य) adj. *manneskräftig* Nir. 10,11. RV. 5,83,2. वृषभ 6,22,1. TS. 3,5,6,2.

1. वृष्य (von वर्ष) adj. = वर्ष्य P. 3,1,120. Vop. 26,19.

2. वृष्य (von वृषन्, वृष) 1) adj. (f. घा) *auf die Potenz wirkend, der Potenz zuträglich* (n. *Aphrodisiacum* Râgân. im ÇKDa.) P. 5,1,7 nebst Vârtt. Sarva. 1,167,2. 174,13. 175,5. 205,6. 2,228,11. Vaṭîn. Bṛh. S. 16,28 (wo nach Kern mit der v. l. वृष्याम् st. मृष्टाम् zu lesen ist). 104, 63. Verz. d. Oxf. H. 216,*a*,10. Kull. zu M. 3,49. Daivapr. (s. u. कुण्डलिन् 3) *b*). अति° Vaṭîn. Bṛh. S. 76,2. घ° Sarva. 1,179,3. 187,13. वृष्य als Beiw. Çiva's MBh. 12,10373 wird von Nîlak. durch धर्मवृद्धिकर्तृ (वृषो धर्मस्तत्र स्थितः) erklärt. — 2) m. *Phaseolus radiatus* Rosb. H. 1171. — 3) f. घा = महौषधि Ratnam. im ÇKDa. = शतावरी und धात्रीफलवृक्ष Râgân. ebend.

वृष्यकन्दा f. *eine best. Pflanze* (*deren Knolle auf die Potenz wirkt*), = विदारी Râgân. im ÇKDa.

वृष्यगन्धा f. *eine best. Pflanze*, = वृहद्दारक Çabdar. im ÇKDa.

वृष्यगन्धिका f. *eine best. Pflanze*, = अतिबला Râgân. im ÇKDa.

वृष्यता (von 2. वृष्य) f. *Potenz, Zeugungskraft* Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,28.

वृष्यवल्लिका f. *eine best. Pflanze*, = विदारी Râgân. im ÇKDa.

वेकट 1) m. = जातताम्रपर्ण und मणिकार् H. an. 3,171. = वैकटिक, मत्स्यभेद und पुवन् Med. t. 51. = विटूषक Çabdar. im ÇKDa. — 2) interj. धिक्कृते Trik. 3,4,1.

वेक्, वेकयति (दर्शने) Dhâtup. 35,84,*b*. — Vgl. वेकण und वेल्.

वेकण n. = अवेकण M. 9,11, v. l.; vgl. Kull.

वेग (von 1. विज्) m. perox. im AV., oxyt. nach gaṇa उच्चादि zu P. 6,1,160. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *schnellende Bewegung, Ruck*, z. B. des Erdbebens AV. 12,1,18. त्रिपत्येकेन वेगेन पञ्च बाणशतानि यः MBh. 3,1018. दण्डं चिक्षेप सर्वप्राणेन वेगतः R. 2,32,36. — 2) *Andrang*: तेषामापततां वेगः करिणां दुःसहोऽभवत् MBh. 3,2540. Bhâg. P. 4,4,33. यो हि शत्रोर्विवृद्धस्य पूर्वं न सहते वेगम् MBh. 12,4207. 3,676. चकार कनुमान्वेगं तेषु रक्तास्तु विस्मयम् R. 5,40,11. *Andrang, Schwall* (des Wassers, der Fluth), *starke Strömung*; = प्रवाह् AK. 3,4,2,21. H. an. 2, 49. Med. g. 24. = श्लेष्मोल्लेप Trik. 3,3,70. — AV. 4,18,3. बहुर्मि° R. 2,52,75. 59,29. महावेगः समुद्र इव पर्वणि 80,4. महतेवाम्बुवेगेन 103,3. Sarva. 2,403,17. fg. स्रोतो° Spr. 4787. नदी वेगेन प्लुष्यति M. 8, 108. Spr. 4657. Çvetâçv. Up. 1,5. यथा नदीनां बह्वो ऽम्बुवेगाः Bhag. 11,28. महावेगा नदी MBh. 6,3519. 4716. 7,6907. R. 4,8,18. 14,7. Spr. (II) 599. 1700. (I) 1403. 2684. Çiç. 21,20. Bhâg. P. 5,17,7. *starker Erguss* von Thränen: घर्मवेगैः R. 2,40,47. 59,16. 31. 60,4. 4,5,17. 8,18. fg. 6,21,27. — 3) *heftige —, schnelle Bewegung, Ungestüm, Geschwindigkeit, Hast* AK. H. 494. H. an. Med. Halâ. 2,288. des Windes Spr. (II) 365. R. 1,54,6. 2,40,17. 41,12. 45,30. 60,16. R. Gorr. 2,52, 24. 3,72,8. 79,31. Bṛ. 1,22. 24. Mâlatîm. 127,12. Vaṭîn. Bṛh. S. 2,4. 25,5. Ratnâs. 26,12. von der *heftigen und schnellen Bewegung* geschwungener oder geworfener Waffen: गदया भीमवेगया MBh. 1,858. 3,1942. 16380. धनुर्वातवेगा गदा R. 3,35,45. गदयोरुवेगया Bhâg. P. 7,8, 25. महावेगमस्त्रम् R. 3,35,46. धनुर्विमुक्त° (बाण) Kir. 13,24. Halâ. 2, 315. ऊरु° MBh. 1,5882. R. 5,3,42. पाद° Spr. (II) 3014. भुज° MBh. 1, 5875. वेगेन प्रक्षिप्तं बाहुम् 6000. रथस्य Çiç. 5,13. 7,22. Vikr. 6,6. °सम्पन्नैर्हयैः R. 2,26,15. 93,11. Ratnâs. 18,89. 103. 293. Bhâg. P. 4,12,28. एण° 7,8,28. बृह° Vaṭîn. Bṛh. S. 27,6. सु° (v. l. सुवेष) Kâm. Nîtis. 7, 26. सुमहावेगा सौदामनी R. 6,80,24. वेगावतरण Çiç. 99,7. समरुवत्स वेगेन MBh. 3,2639. R. 1,54,8. 2,34,17. 68,18. 3,50,7. 75,6. Pañkat. 1,4, 62. Prab. 67,1. धावंस्ततो ऽतिवेगेन Râga-Tar. 3,406. खमुत्पतन वेगतः Ratnâs. 61,63. fg. Pañkat. 237,17. अतिवेगतम् Çiç. Sarva. 3,11,22.

मत्वा तमभ्येत्य सवेगमुवाच Pañcat. 89, 13. स तु केवलं वेगाढेगं (वेगाढेगतां ed. Bomb.) गच्छति 258, 21. मनोवचोवेगपुरोगव Geschwindigkeit Bhâg. P. 4, 30, 22. कृत्यं न कुरुते वेगात् in der Uebereilung Spr. 2048. — 4) heftiges Auflodern, Ausbruch (eines Schmerzes, einer Leidenschaft u. s. w.): क्रोधः R. 1, 56, 5. Bṛ. 1, 24. चिंतायाः R. 3, 75, 54. संनियच्छति यो वेगमुत्थितं क्रोधहर्षयोः Spr. 5160. प्रहर्ष° Bhâg. P. 1, 11, 18. 5, 7, 11. 7, 8, 35. अमर्षरोष° 5, 25, 6. शोक° R. 2, 57, 6. 5, 37, 27. शोकः मां संसाधयति वेगेन पवा कूलं नदीरयः 2, 64, 69. दुःख° Spr. (II) 431. कामक्रोधोद्भव Bhâg. 5, 23. मदवेगमत्ता गजेन्द्राः MBh. 1, 7006. वाचो वेगं मनसः क्रोधवेगं हिंसावेगमुदरोपस्थवेगम्। एतान्वेगान्विषहेत् 12, 9984. देहोपधमलानाम् Aufregung Suçr. 1, 372, 19. 2, 354, 9. 405, 19. fg. Anfall, Paroxismus einer Krankheit: °परित्यय 1, 46, 8. 96, 17. 131, 8. 237, 13. 2, 42, 8. 13. Wirkung eines Giftes: यस्य वेगैर्विना ह्रीर्येत् (विषम्) Jîân. 2, 111. विष° Mṛicch. 48, 8. Mâlav. 47, 6. Daçak. 72, 16. वेगोद्यं भुजंगशिशोर्विषम् Spr. 5063. sieben Stadien einer solchen Wirkung gezählt Suçr. 2, 255, 2. fgg. 267, 12. — 5) Drang zur Ausleerung Suçr. 1, 258, 8. 2, 111, 4. 144, 18. 313, 2. °विरोधिन् Çiñc. Saṁh. 3, 8, 4. die einzelne Ausleerung (nach unten oder nach oben) 3, 3, 10. 4, 10. = समुत्सर्ग Taik. — 6) Anstoss, Impuls: संयोगविभागवेगाः Kaṇ. 1, 1, 20. संस्कारस्त्रिविधो वेगो भावना स्थितिस्थापकश्चेति Tarkas. 54. Suçr. 1, 37, 9. प्राग्वेदकर्म° Nîlak. 31. — 7) die Frucht einer best. Gurkenart (मकाकालफल) Taik. Med. — 8) Bez. einer best. Sippe böser Geister Harîv. 12867. — Vgl. कपोतवेगा, गरुड°, चण्डवेग (वायु Varâh. Bṛh. S. 23, 5), नन्दि°, निर्वेग, पशु°, प्र°, भीम°, मरुत्°, मरुद्वेग, मरु°, मेघ°, वज्र°, वात°, वायु°, विनय°.

वेगग (वेग + 1, ग) adj. (f. घा) stark strömend, rasch fliessend: नदी Harîv. 5774.

वेगदर्शिन् m. N. pr. eines Affen R. 5, 73, 29. 6, 112, 63.

वेगन s. वेगान.

वेगनाशन m. = स्रेष्मन् Çabdar. im ÇKDr.

वेगनाश्यनाशकभावरूप्य n. Titel einer Schrift Hall 62 (°नासक° gedr.).

वेगरोध m. check, remora; obstruction of the natural excretions Wilson.

वेगवत् (von वेग) 1) adj. a) schwallend, heftig wogend: सरितां पतिः R. Gorr. 2, 11, 5. — b) ungestüm, hastig, rasch zu Werke gehend: वीरः शार्दूल इव वेगवान् MBh. 6, 4344. R. 3, 43, 24. वेगवाघावो पयो 50, 8. 5, 36, 56. Kir. Nitis. 18, 59. उग्र° MBh. 1, 1172. प्रवग R. 5, 7, 32. तुरंगम ein schnell laufendes Pferd Kir. Nitis. 16, 10. Kull. zu M. 8, 209. वायु heftig blasend, rasch dahinfliegend R. 5, 3, 35. 7, 35, 26. Ragh. 8, 34. Mâlav. P. 17, 3. घनिल im Körper Suçr. 1, 234, 9. गदा MBh. 3, 677. 8, 4225. चक्र 1, 1180. शर 3282. 3, 12105. 5, 7286. घृति° 3, 15655. वाडवीवात्यर्ववेगवान् überaus ungestüm Suçr. 2, 153, 17. यासारो वेगवान्वर्षः ein heftiger Regen H. 165. — 2) m. a) Leopard Mad. in Nigh. Pr. — b) N. pr. eines Asura MBh. 1, 2646. 3, 675. fgg. eines Vidjâdhara Kathâs. 105, 86. eines Sohnes des Kṛishṇa Bhâg. P. 10, 61, 13. eines Fürsten, Sohnes des Bandhumant, 9, 2, 30. VP. 383. N. pr. eines Affen R. 6, 2, 31. — 3) f. वेगवती a) eine best. Arsenikpflanze Suçr. 2, 172, 13. 173, 13: vgl. महा°. — b) ein best. Metrum Colebr. Misc. Ess. II, 164 (VI, 3). Ind. St. 9, 359. — c) N. pr. einer Vidjâdharî Kathâs. 105, 42. fgg. — d) N. pr. eines Flusses R. 4, 41, 16.

वेगवाहिन् 1) adj. schnell fliessend: गङ्गा R. Gorr. 1, 45, 8. schnell fliegend: शर Râjat. 5, 217. — 2) f. °वाहिनी N. pr. eines Flusses MBh. 2, 371. Mârk. P. 57, 23.

वेगवृष्टि f. ein heftiger Regen Taik. 3, 3, 329 (°वृष्टि gedr.).

वेगसर् (वेग + सर्) m. Maulthier H. 1253. f. ई Kathâs. 123, 256. 262. — Vgl. वेसर.

वेगातिग adj. MBh. 2, 893 fehlerhaft für वेलातिग, wie die ed. Bomb. liest.

वेगान wohl eine Corruption von ग्रामगेयगान Ind. St. 1, 30. वेगन Colebr. Misc. Ess. I, 82.

वेगानिल (वेग + घ°) m. ein heftiger Wind Vikr. 4.

वेगित (von वेग) adj. gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. 1) schwallend, heftig wogend: समुद्र शरवेगितम् (शरवेधनम् ed. Bomb.) MBh. 5, 2042. — 2) ungestüm, hastig, rasch zu Werke gehend, sich schnell bewegend, rasch fliegend: प्रद्रवन्ति स्म वेगिताः (गजाः) MBh. 1, 2843. 3, 3812. तच्छ्रुत्वा त्वरितः कंसो रक्षिभिः सह वेगितः। यादवगाम Harîv. 3333. शार्दूलानिव वेगितान् 5210. 13868. R. 4, 15, 23. सुपर्णगति° 26. 61, 44. सुपर्ण 63, 24. 5, 3, 19. 29, 24. 39, 25. पतंग इव वेगितः 56, 26. (वानराः) उत्पेतुर्गगनं शीघ्रं पवनेन इव वेगिताः 6, 112, 62. Bhâg. P. 8, 5, 16. Mârk. P. 127, 3. कंसः MBh. 8, 2048. मायक 3, 11727. 4, 399 (°वेगिताः mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 3, 26, 23. तोमरान् — शलभानिव वेगितान् MBh. 14, 2137. सु° (शक्ति) MBh. 6, 3677. घृति° von Planeten Sûrjas. 2, 10. — Vgl. प्र°.

वेगिन् (wie oben) adj. = वेगित 2) AK. 2, 8, 2, 41. 3, 4, 28, 120. Hall. 2, 203. MBh. 3, 3812. शार्दूलमिव वेगिनम् 8, 202. यक्ष Harîv. 13063. R. 5, 93, 20. Kir. Nitis. 18, 57. गङ्गा schnell fliessend MBh. 13, 1810. R. 2, 71, 60 श्लाघानि Kir. 8, 39. घृति° (श्लैष्य) Mârk. P. 74, 10. परम° (इषु) schnell fliegend MBh. 7, 8798. उद्धत° adj. von उद्धतवेग R. 2, 45, 30.

वेगिल (wie oben) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 47, 83.

वेगिकरिण (वेगिन् + कृ°) m. eine Gazellenart, = श्रीकारिन् Râjân. im ÇKDr.

वेङ्क m. pl. N. pr. eines Volkes im Süden der Halbinsel Bhâg. P. 5, 6, 3. 10.

वेङ्कट m. 1) N. pr. eines Berges im Lande der Drâviḍa Bhâg. P. 10, 79, 12. VP. 180, N. 3. °गिरि Colebr. Misc. Ess. I, 299. Verz. d. Oxf. H. 251, b, 26. वेङ्कटाद्रि Colebr. Misc. Ess. I, 299. वेङ्कटाचल Mack. Coll. I, 85. वेङ्कटेश्वर der auf dem Berge V. verehrte Vishṇu ebend. und 225. वेङ्कटाचलेश desgl. Verz. d. Oxf. H. 258, a, 27. °पति ein Fürst Kuvalay. 193, b (161, b). °नाथ ein Autor Sarvadarçanas. 53, 12. वेङ्कटेश्वरदीक्षित N. pr. eines Mannes Hall 70. वेङ्कटेश्वरदीक्षित desgl. 172. — 2) N. pr. verschiedener Gelehrter Verz. d. Oxf. H. 130, a, No. 236. 150, a, No. 319. 196, a, No. 455. 213, a, No. 505. वेङ्कटाचार्य Ind. St. 1, 466. Hall 112. 137. वेङ्कटाध्वरिन् Verz. d. Oxf. H. 150, a, No. 319. वेङ्कटाध्वरिप्रज्वन् Hall 176. — Vgl. प्रसन्नवेङ्कटेश्वरमाहात्म्य.

वेचा f. v. l. für वेता = वेतन Hall. 4, 43.

वेजनवत् adj. zur Erklärung von वाजिन्-Nir. 2, 28. 3, 3.

वेजानी f. Vernonia anthelmintica Willd. (सोमराजी) Çabdar. im ÇKDr.

वेट् ein Opferausruf VS. 17, 12. 18, 29. वेटार् m. Çat. Br. 9, 2, 1, 7. 3, 2, 14.

वेट gaṇa मधादि zu P. 4, 2, 86.

वेटक m. N. pr. des Vaters des Mâdhava Dev. zu Naish. Einl. — Vgl. वात°.

वेटवत् adj. von वेट gaṇa मधादि zu P. 4,2,86.

वेटाप्, वेटापति (विटीभावे) Gaṇaratnam. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

वेठ्, वेठति (धैर्त्ये स्वप्ने च) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27. वेव्, वेव्यति v.l.

वेड 1) n. = मान्द्रविच्छिन्नचन्दन Rigân. im ÇKDn. — 2) f. वेडा (वेडा) *Boot, Schiff* H. 877 (वेटी v. l.). Halâj. 3, 50.

वेढमिका f. *eine Art Gebäck* Bhâvapr. im ÇKDn.

वेण्, वेंणति und °ते (गतिज्ञानचित्तानिशामनवादित्रप्रकृणेषु) Dhâtup. 21, 13. — Vgl. वेन्.

वेण 1) m. a) Bez. *einer best. Mischlingskaste: der Sohn eines* Vaidehaka *von einer* Ambashṭhî M. 10, 19. वेणानां भाण्डवादनम् 49. 4, 215, v. l. (für वेण). Jâṇ. 3, 207. — b) N. pr. des Vaters von Pṛthu: वेणो विनष्टो ऽविनयात् M. 7, 41. 9, 66. Verz. d. Oxf. H. 12, *b*, 1 v. u. 13, *a*, 1. 39, *a*, 20. VP. 98. fgg. (वेन die neuere Ausg.). Bhâg. P. 2, 7, 9 (वेन ed. Bomb.). Die richtigere Lesart ist वेन. — c) N. pr. eines Vjâsa VP. 273. वेन die neuere Ausg. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 3, 8178. 8228. 12909. 14232. MBh. 6, 335 (VP. 183). Harîv. 5290 nach der Lesart der neueren Ausg. उत्पविन्यां वेणातटे Mṛicch. 175, 4. Vaitân. Bhn. S. 4, 26. 14, 12. 16, 9. 80, 6. Kathâs. 123, 204. Bhâg. P. 10, 79, 12. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 31; vgl. उप°, कु°, कृष्ण°, तुङ्ग°. — Vgl. वेण, वेण्य und वेन.

वेणातट m. pl. N. pr. eines Volkes AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56). wohl richtiger वेणातट (*an den Ufern der* Veṇâ *wohnend*) MBh. 2, 1117 nach der Lesart der ed. Bomb. वेण्वातट ed. Calc. वेणातटे in der Bed. *am Ufer der* Veṇâ Mṛicch. 175, 4.

वेणाविन् (von वेणु) adj. *mit einer Flöte versehen:* Çiva MBh. 13, 1172 nach der Lesart der ed. Bomb. वैणविन् ed. Calc.

वेणातट s. वेणातट.

वेणि (Uṇâdis. 4, 48. f. Sindh. K. 248, *a*, 2) und वेणी (von 3. वा) f. 1) *Haarflechte*, insbes. *das in einen einzigen Zopf zusammengeflochtene Haar der Weiber* (gewöhnlich ein Zeichen der Trauer) AK. 2, 6, 2, 49. H. 570. an. 2, 154. fg. Mân. g. 28. Halâj. 2, 375. Kâty. Ça. 7, 3, 26. न प्रोषिते तु संस्कुर्यान्न वेणीं च प्रमोचयेदिति कात्यायनः Schol. in der ed. Calc. des Raghuv. 14, 12. तस्या दीर्घवेणी सुसंयता। दृश्ये स्वसिता स्निग्धा कालो व्यालीव मूर्धनि॥ MBh. 3, 16190. दीर्घा वेणीं बिभ्रदानः (Arǵuna als Eunuch oder Zwitter) 4, 1261. 2150. Mṛicch. 18. Spr. (II) 112. Râǵa-Tar. 4, 1. Naish. 3, 27. नीलनागाभया वेण्या जघनं गतयैकया R. 5, 18, 11. तस्याः सुविपुला दीर्घा दृश्यते वेणी व्यालीव परिवर्तिनी 26, 2. वेण्यां ग्रथितमुत्तमं मणिरत्नम् 36, 73. 68, 30. गुम्फिता शिरसि वेण्यः Çiç. 14, 30. वेणीकृतशिरस् MBh. 4, 54. वेणीविकृतकेशान्त 575. fg. ऊर्ध्ववेणीधरा 9, 2652. वेणीभूतांश्च मूर्धजान् Bhâg. P. 3, 23, 24. 4, 28, 44. °मूल Vaitân. Bhn. S. 51, 40. शस्त्रेण वेणीविनिमुक्तितेन 78, 1 (Kull. zu M. 7, 153). वेण्यां शस्त्रं समाधाय Kâm. Nîtis. 7, 54. वेणीबन्धकपर्दिनी (पार्वती) Sin. D. 54, 1. विमुच्य वेणीम् MBh. 4, 301. मोक्ष्यते स्वर्गवन्दीनां वेणीबन्धान् so v. a. von *der Trauer erlösen* Raghuv. 10, 48. Kumâras. 2, 61. Mṛicch. 97. तस्याः पुरः (*Stadt*) — मुक्ता स्वयं वेणिरिवाबभासे Raghuv. 14, 12. एकवेणीधरा (vgl. u. एकवेणी) R. 5, 18, 21. एकवेणीधरा चेयं वसुधा वो प्रतीयते Harîv. 5399. एकवेणीधरत्व R. 5, 22, 8. एकनिबद्धवेणी adj. Harîv. 7042. das Wasser eines Flusses mit einem *Zopfe* verglichen: वेणीभूतप्रतनुसलिला सिन्धुः Mṛicch. 30. शतवेणिरम्यां वेणिं = प्रवाहं Schol. in der ed. Calc.) रेवाम् Raghuv. 6, 43. प्रयागे गङ्गायमुनासरस्वतीसंगमं त्रिवेणी ÇKDn. daher वेणी = प्रवाह H. 1067. H. an. Halâj. 3, 47. वेणि = शस्त्रमूल Gaṇâkar. im ÇKDn. das Schwert (कृपाण) als *Zopf* der रात्रयो Râǵa-Tar. 5, 449. — 2) वेणी abgekürzt für वेणीसंहार Sin. D. 132, 13. 144, 16. — 3) वेणी *Lipocercis serrata Trin.* (देवताड) AK. 2, 4, 2, 49. H. an. Med. — 4) वेणी *Damm, Brücke* H. an. — 5) वेणी N. pr. eines Flusses Mbh. Harîv. 9310 nach der Lesart der neueren Ausg. Kathâs. 49, 177. Bhâg. P. 5, 19, 18. सर्वाश्चैव तथाभीरा वेण्यास्तीरनिवासिनः Mârk. P. 58, 32. Verz. d. Oxf. H. 16, *b*, 16. — 6) वेणि = वाणि *das Weben* Colebr. und Lois. zu AK. 2, 10, 29. — Vgl. एक°, कु°, त्रि°, पञ्च°, पुष्प°, प्र°, द्यावेणिक.

वेणिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 2097. वैत्रिक ed. Bomb.

वेणिका (von वेणि) f. *eine geflochtene Binde:* रज्जुवेणिकापट्ट° Sucr. 1, 25, 10. = वेणी 1) Çabdam. im ÇKDn.

वेणिन् (von वेणि) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2154.

वेणिमाधव m. N. eines in Prajâga stehenden vierhändigen steinernen Idols ÇKDn. — Vgl. वेणीमाधवबन्धु.

वेणिवेधनी f. *Blutegel* Taik. 1, 2, 25.

वेणी f. 1) = वेणि; s. das. — 2) *Schafmutter* H. 1277. — 3) MBh. 15, 630 fehlerhaft für वेणु, wie die ed. Bomb. liest.

वेणीदत्त m. N. pr. des Verfassers der Padjavalî Hall in Journ. of the Am. Or. S. 5, 524 und in der Einl. zu Viçvan. S. 48.

वेणीदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 380, *a*, 5.

वेणीमाधवबन्धु m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 133, *b*, No. 255 (hier °मधव° gedr., im Index richtig °माधव°). — Vgl. वेणिमाधव.

वेणीर m. *eine best. Pflanze*, = यष्टि-Çabdâs. im ÇKDn.

वेणीसंवरण n. = वेणीसंहार Verz. d. Oxf. H. 146, *a*, No. 307.

वेणीसंहरण n. dass. Verz. d. B. H. No. 553.

वेणीसंहार m. *die Wiederherstellung der Haarflechte* (der Draupadî), Titel eines Dramas des Bhaṭṭanârâjaṇa Verz. d. Oxf. H. 145, *b*, No. 306. 146, *a*, No. 307. fgg. 203, *a*, No. 486. 208, *b*, 39. 209, *a*, 4.

वेणीस्कन्ध m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2154.

वेणु (AV. Çat. Bhâ. und वेणु Uṇâdis. 3, 38 und TS.) P. 6, 1, 215. m. 1) *Rohr, Rohrstab*, insbes. *Bambusrohr* AK. 2, 4, 8, 26. Taik. 3, 3, 138. H. 1153. an. 2, 155. Med. g. 29. Hit. 108 (वेणु gedr.). 176. Halâj. 2, 49. Viçva bei Uṇâdis. AV. 1, 27, 3. नड, वेणु, इक्षुका Çat. Bhâ. 1, 1, 4, 19. 2, 6, 3, 17. ते यथा वेणू संधाव्येते Kâṭy. 13, 12. वेणोः सुषिरम् TS. 5, 1, 6, 4. वेणुना विमिमीत ग्राम्येण वै वेणुः 2, 5, 2. °भार 7, 4, 10, 2. °यष्टि Çat. Bhâ. 2, 6, 1, 17. Kaṭh. 47. Kâṭy. Ça. 5, 10, 21. 18, 2, 10. 13. Âçv. Gṛihj. 3, 8, 20. M. 8, 247. ताडाः स्यू रज्ज्वा वेणुदलेन वा 299. Ind. St. 3, 398. °वैदलभाण्ड M. 8, 337. कीचकवेणूनां क्वाथा MBh. 2, 1858. 3, 12294. °स्फोट 4, 759. R. 2, 94, 8 (103, 8 Gorr.). 3, 17, 9. 4, 44, 76. 78. fg. °शय्या 5, 13, 47. 95, 8. Sucr. 1, 29, 6. 96, 11. वेणोः करीरात् 224, 7. 9. 12. 2, 5, 19. °त्वच् 504, 16. Raghuv. 12, 61. मलये ऽपि स्थितो वेणुर्वेणुरेव न चन्दनः Spr. (II) 349. संघातवान्यथा वेणुर्निर्विडः कण्टकैर्वृतः। न शक्यते समुच्छेत्तुम् (I) 3104. Vaitân. Bhn. S. 81, 1. 28. Kathâs. 46, 98. Bhâg. P. 1, 6, 12. 3, 4, 2. 8, 24. 4, 6, 18. °गुल्म 6, 1, 14. °व्राल LA. (III) ad 13, 17. यथा च वेणुः कदली नलो वा फलत्यभावाय न भूतये ऽऽत्मनः MBh. 3, 15647. तस्मा (so ed. Bomb.) देहेऽनुमिवात्मपुष्पम् R. 2, 38, 7; vgl. H. v. Rosen, Hortus Indicus Male-

baricus I, 28. fg. (angeführt von Stenzler in Z. f. d. K. d. M. 4,398. fg.): sexagesimo anno a satione, ut ferunt, haec arbor (das Bambusrohr) flores fert per unum fere mensem; proxime ante florem exortum, primum omnibus foliis spoliatur, et postquam defloruit, emoritur. — 2) *Rohrpfeife, Flöte* Taitt. 1,1,113. Çaṅkar. im ÇKDa. MBh. 1,7018. 14, 1762. 15,630 (वेणी ed. Calc.). गोपवेणुं वादयन् Harîv. 3603. 3073. R. 1, 5,19. 2,39,10. 4,33,26. Suçr. 1,107,9. Ragh. 19,35. Varâh. Bṛh. S. 19, 18. Gîr. 5,9. Ânandom. 34. Katâs. 17,107. Verz. d. Oxf. H. 145,a,37. 39. रणवेणु Bhâg. P. 3,2,29. 4,8,18. Weber, Kṛishṇaj. 270. 287. Mârk. P. 19,11. Pâṇ. 3,3,16. वेणुं धमन् 11,6. °वाद्यविशारद (Kṛishṇa) 4, 1,33. Brahmavaiv. P. 2,50. Pârâç. 20,7. Vop. 5,5. so vielleicht auch in: शतं वेणूञ्छतं भुनः शतं चर्माणि ज्ञातानि Vîtabh. 7,3. — 3) N. pr. einer Gottheit des Bodhi-Baumes Lalit. ed. Calc. 347,8. eines Fürsten Taitt. 3,3,188. H. an. Med. Viçva s. s. O. eines Sohnes des Çatajit VP. 416. pl. *die Nachkommen* Vaṇu's Âçv. Çr. 12,14,6. — 4) N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,8. — 5) N. pr. eines Flusses H. ç. 162. — Vgl. सङ्कार°, त्रि° (nach Nîlak. zu MBh. 3, 12294 = यत्कूबरयोः संधानार्थं त्रिशिखं दारु), भद्र°, वेणव, वैणविक, वैणुक.

वेणुक (von वेणु) gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138. oxyt. gaṇa सस्यादि zu ss. proparox. = क्रुस्वो वेणुः (संज्ञायाम्) 5,3,87, Schol. 1) m. *a) Rohrpfeife, Flöte* Harîv. 13599. — *b)* = वरुका, एला (Comm.) *Amomum* Bhâg. P. 4,6,16. — *c)* pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,45; vgl. वेणुप. — 2) f. का *eine best. Pflanze mit giftiger Frucht* Suçr. 2, 251,18. = एला *Amomum* Comm. zu Bhâg. P. 4,6,16. — 3) n. *ein Bambusrohr zum Antreiben eines Elephanten* (vgl. वेणुक) H. 1230. — Vgl. वेणुकीय.

वेणुकर्कर m. *Capparis aphylla* Roxb. (करीर) Taitt. 2,4,38.

वेणुकार m. *Flötenmacher* Vishṇ. 97.

वेणुकीय adj. (चतुर्वर्येषु) von वेणु gaṇa नडादि zu P. 4,2,91. वेणुकीया f. *ein mit Bambusrohr bestandener Ort* P. 5,4,153, Schol.

वेणुगध (!) m. *eine best. Pflanze* Mârk. P. 49,72.

वेणुज (वेणु + 1. ज) 1) adj. *im Bambusrohr entstehend:* वङ्कि Bhâg. P. 3,1,21. — 2) m. = वेणुयव Râjân. im ÇKDa. — 3) n. *Pfeffer* v. l. für वेणुन in Ratnam. nach ÇKDa.

वेणुजङ्घ (वेणु + जङ्घा) m. N. pr. eines Muni MBh. 2,113.

वेणुदत्त m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 218,a,10. वेन्यदत्त v. l.

वेणुदारि m. N. pr. eines Fürsten MBh. 3,13251. Harîv. 4966. 5015. 5087. 5496. 6071. 6724. 9152. वेणुदारिन् Sîm. D. 104,10.

वेणुदम adj. *auf der Flöte blasend*, m. *Flötenspieler* AK. 2,10,13. H. 925.

वेणुन n. *Pfeffer* Ratnam. im ÇKDa. वेणुज v. l.

वेणुनत्या f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Kâlikâkram. 3,133.

वेणुप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 3,4751 nach der Lesart der ed. Bomb. वेणुप ed. Calc.; vgl. वेणुक 1) c).

1. वेणुपत्र n. *das Blatt des Bambusrohrs* Verz. d. Oxf. H. 267,b,16.

2. वेणुपत्र 1) adj. *das Blatt des Bambusrohrs habend.* — 2) f. ई *eine best. Grasart*, = वंशपत्री Ratnam. 218.

वेणुपत्रक 1) m. *eine Schlangenart* Suçr. 2,265,13. — 2) f. °पत्रिका *eine best. Grasart*, = वेणुपत्री, वंशपत्री Suçr. 2,248,6.

वेणुबीज n. = वेणुयव Râjân. im ÇKDa.

वेणुमण्डल n. N. pr. des zweiten Varsha in Kuçadvîpa MBh. 6,453.

वेणुमत् (von वेणु) 1) adj. *mit einem Bambusrohr versehen* Jâṭ. 1,122. — 2) m. N. pr. eines Berges Harîv. 8951. — 3) f. °मती gaṇa मघादि zu P. 4,2,86. N. pr. eines Flusses Varâh. Bṛh. S. 14,23. Mârk. P. 58, 36. 39. — 4) n. N. pr. eines Waldes Harîv. 8955.

वेणुमय (wie eben) adj. (f. ई) *aus Bambusrohr bestehend:* यष्टि Varâh. Bṛh. S. 43,5.

वेणुमुद्रा f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* Pañcar. 2,4,18.

वेणुयव 1) m. *Same des Bambus* Bhâvapr. im ÇKDa. Comm. zu Kâty. Çr. 4,6,17. Ind. St. 2,300. Suçr. 1,73,6. 197,1. — 2) f. ई (sc. इष्टि) *eine Darbringung von Bambus-Samen* Çâṅkh. Çr. 3,12,2.

वेणुवन n. 1) *ein Wald von Bambusrohr* Spr. (II) 2092. — 2) N. pr. eines best. *Waldes* Vjutp. 102. Hiouen-thsang I, 351. II, 32. Wassiljew 42.

वेणुवाद m. *Flötenspieler* Ratnam. im ÇKDa.

वेणुवीणाधरा f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's (*eine Flöte und eine Laute haltend*) MBh. 9,2639.

वेणुस्वन m. N. pr. eines Nachkommen Jadu's Harîv. 1844. Bhâg. P. 9,23,21.

वेणुहोत्र m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛishṭaketu Harîv. 1596. VP. 409, N. 15. 2te Aufl. 4,36. fg. Mcin, ST. I, 53. — Vgl. वैनहोत्र.

वेणा s. कृष्ण°.

वेण्या f. N. pr. zweier Flüsse (wohl nur fehlerhaft für वेणा) Mârk. P. 57,24. 36. — Vgl. कृष्ण°.

वेण्वा f. N. pr. eines Flusses (fehlerhaft für वेणा) MBh. 2,371. Harîv. 5229. 5290 (die neuere Ausgg. वेणा an allen drei Stellen). 9510 (वेणी die neuere Ausg.). Mârk. P. 57,19. — Vgl. कृष्ण°.

वेण्वातट MBh. 2,1117 fehlerhaft für वेणातट.

वेत m. = वेत्र Râjân. im ÇKDa.

वैतन Unjâdis. 3,150. n. Sroun. K. 249,a,8. *Lohn* AK. 2,10,33. H. 362. Hall. 4,42. वेतनादिभ्यो जीवति P. 4,4,12. पणो देयो ऽवकृष्टस्य पटुत्कृष्टस्य वेतनम् M. 7,126. 8,215. fgg. Jâṭ. 2,196. यदि शिष्यो ऽसि मे वीर वेतनं दीयतां मम MBh. 1,5264. 6210. 2,193. fg. 196. 3,2629. 4,267. 6,3311 = 7,4445. R. Gorr. 2,109,41. Râjat. 6,48 (वेतान Ta. विताम od. Calc.). 84. 8,75. Bhâg. P. 5,9,9. मासं वेतनेन क्रीतः कर्मकरः P. 5,1,80, Schol. °दान 1,3,36, Schol. वेतनस्यानपक्रिया M. 8,214. वेतनस्थानम् s. वेतनादान 218. Verz. d. Oxf. H. 263,a,34. यस्मर्वी त्वया शीघ्रं कथयात्मवेतनम् Mârk. P. 8,84. लब्धे गीतस्य वेतनम् Spr. 3231. कर्म° Bhâg. P. 5,9,12. तृण° Mârk. P. 18,7. खात° 50,75. पर्याप्त° adj. Kâm. Nîtis. 16,7. दत्त° 4,65. कृत° *Lohn empfangend* 13,75. Jâṭ. 2, 164. दीनारलक्षेण प्रत्यर्कं कृतवेतनः Râjat. 4,494. गृहीतवेतना वेश्या Jâṭ. 2,202. उभय° von *beiden Seiten Lohn empfangend, Verräther, Spion* Kâm. Nîtis. 12,13. 17,22. Pañcat. 22,10. fg. Hit. 88,17. वेतन = जीविका *Lebensunterhalt* H. 365. = रूप्य *Silber* Çabdar. im ÇKDa. *Preis:* स्वसंचितानि स्वर्णानि विक्रीणानो ऽत्यवेतनैः Râjat. 8,61. — Vgl. निर्वेतन und वैतनिक.

वेतनभुज् adj. *Lohn empfangend*; m. *Knecht, Diener* Pañcat. 1,4,16. 2,8,5.

वेतनिन् adj. von वेतन am Ende eines comp.: कुप्य°, अतिक्रान्त° MBh. 3,657.

वेतसे Uṇâdis. 3,118. 1) m. *ein rankendes Wassergewächs, Calamus Rotang Willd.* (AK. 2,4,2,10. H. 1137. Halâj. 2,46. Ratnam. 214) oder *ein verwandtes, spanisches Rohr; Ruthe, Stecken:* क्रिणन्ति वेतसो मध्ये ग्रामम् RV. 4,58,8. यो वेतसं क्रिणन्तं तिष्ठन्तं सलिले वेद AV. 10, 7,41. 18,3,8. VS. 17,6. यत्सुत TS. 5,3,22,2. 4,4,3. Çat. Br. 9,1,2,22. 24. 13,2,2,19. Kâty. Çr. 20,2,2. Lâṭy. 4,1,7. Kauç. 8. 40. क्रुदिनीं वेतसैर्वृताम् MBh. 3,2511. 12361. 12, 4199. fgg. 5837. Suçr. 1,26,12. 2,72, 17. Racan. 9,78. °परिक्षिप्ते लतामण्डपे Çiç. 32,12. °गुरु 74. Varâh. Bṛh. S. 54,6. 86. 101. 119. 124. 55,10. 22. Bhâg. P. 8,2,16. मञ्जरीभिर्विराजन्ते नदीकूलेषु वेतसाः । वक्तुकामा इवाङ्गुल्या को ऽस्माकं महतो गणः ॥ Vikrama-P. 6 (nach Auvasear). °शाखा TBr. 3,8,4,2. TS. 5,4,4,3. Çat. Br. 3,1,2,20. 13,5,2,5. Kâty. Çr. 16,2,10. 20,8,2. °पुष्प Varâh. Bṛh. S. 29, 6. तस्य शिरः । छित्त्वा वेतसपत्त्रेण Mârk. P. 127,24. 134,52. सु° MBh. 3, 17386. am Ende eines adj. comp. (f. या) AK. 2,1,2. Gîv. 7, 9. — 2) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. dass. Taitt. 3,5,12. Çaunak. im ÇKDr. Karmâs. 121,162. °तरु Sin. D. 5, 3. — 3) n. *a) eine Lanzette in Gestalt eines Rotang-Blattes* Vîsân. 20,9. — *b)* N. pr. einer Stadt Karmâs. 2,41. — Vgl. यज्ञ°, वेतस.

वेतसक (von वेतस) 1) m. pl. N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 7,2098 nach der Lesart der ed. Bomb. वेतसक ed. Calc. — 2) f. वेतसिका desgl. MBh. 3,8034. — Vgl. वेतसक.

वेतसकीय adj. (चतुर्थ्यर्थेषु) von वेतस gaṇa नडादि zu P. 4,2,91. f. या *ein mit Rotang bestandener Platz* 6,4,153, Schol.

वेतसाम्र m. = यज्ञवेतस Gaṇiku. im ÇKDr.

वेतसिनी (f. von वेतसिन् und dieses von वेतस) f. N. pr. eines Flusses VP. 182, N. 13.

वेतसे m. N. pr. eines von Indra überwundenen Feindes RV. 6,20, 8. 26,4. pl. 10,49,4.

वेतस्वत् (von वेतस) P. 4,2,87. 6,1,161, Schol. adj. *mit Rotang bestanden* AK. 2,1,9. H. 934. als subst. N. pr. eines Ortes Pâṇâv. Bh. 21,14,20.

वेता f. = वेतन Halâj. 4,43.

वेतान Riâ-Tan. 6,48 fehlerhaft für वेतन.

वेताल 1) m. AK. 3,6,2,21. *a) Bez. eines Dämons, der von todten Körpern Besitz nimmt und sich derselben als Hülle bedient,* Hariv. 14533. Kâm. Nîtis. 17,52. Karmâs. 12,48. 18,151. 25,136. विक्रमस्यापि वेतालः (कन्याम्) Spr. 1430. Riâ-Tan. 1,292. 3,849. 851. 6,191. Bhâg. P. 2,10,39. 7,8,38. Verz. d. Oxf. H. 94,b,27. भूतवेतालमतनिवर्हण 251,a,45. Wilson, Sel. Works I, 26. Hit. 65,11. fg. Ver. in LA. (III) 4,14 u. s. w. Tirân. 228. °सिद्धि 208. Wassiljew 196. Verz. d. Oxf. H. 94,b,27. °साधन Karmâs. 26,235. °कर्मन् Varâh. Bṛh. S. 15,4. वेतालोत्थापन Riâ-Tan. 8,2188. Ind. St. 8,310, N. 4. वेतालाख्यायिका Verz. d. Oxf. H. 354,a,37. °पञ्चविंशति und °पञ्चविंशतिका *25 Erzählungen vom Vetâla* Gild. Bibl. 366. von Çivadâsa Cobeb. Misc. Ess. II, 87. Verz. d. Oxf. H. 152,b,3. von Gambhîradatta 152, a, No. 327. von Somadeva 84,b,9. Karmâs. 75. fgg. — *b)* N. pr. *α)* eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâlm. beim Schol. zu H. 210. Kâlid. P. 45. 49 nach ÇKDr. — *β)* eines Lehrers Bhâg. P. 12,6,58. — *γ)* = द्वारपालक Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. ई ein N. der Durgâ Hariv. 10240. — 3) वेताली indecl. in Verbindung mit कर् u. s. w. gaṇa ऊर्णादि zu P. 1,4,61. — Vgl. उच्चवेताली (Hariv. 9342), लोमवेताल, वैतालीय. Das Wort wird gewöhnlich in वेत = प्रवेत + ताल = प्रेतालय zerlegt und durch *in Verstorbenen hausend* übersetzt, wogegen zu bemerken ist, dass प्रवेत nicht = प्रेत ist.

वेतालजननी f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2631.

वेतालभट्ट m. N. pr. einer der 9 Perlen am Hofe Vikramâditja's Harâm. Anth. 1. ihm wird der Nîtipradîpa zugeschrieben obend. 528. fgg.

वेत्तृ (von 1. विद्) nom. ag. *Kenner:* स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता Çvetâçv. Up. 3,19. Bhag. 11,38. देवो हि वेत्ता परमं पदत्र MBh. 1, 7331. Hariv. 14188. वेदोपनिषदाम् MBh. 2,126. कालस्य 4,888. तत्रधर्मस्य 6,3732. अपि पक्षस्य वेत्तारो दत्तस्य सुकृतस्य च (त्रिदशेश्वराः) 13, 7097. Hariv. 2169. 7429. (क्षुद्रः) भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य Spr. 4780. Kâm. Nîtis. 18,36. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 4. Karmâs. 43,230. Pañkat. 3,7,2. यतीदृशदृण्ड° R. Gorr. 1,7,10. 3,53,41. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 1 v. u. 69,14. Bṛh. 14,8. Verz. d. Oxf. H. 40,a,26. 135, a, No. 254. 166,b, No. 370. 255,b, 20. यस्य पक्षस्य वेत्ता त्वं भविष्यसि जनार्दन so v. a. *Zeuge* MBh. 5,4784. *Empfinder:* यप्रिय° Kathâs. 1,10,2. als fut.: तदीर्घकालं वेतासि *daran wirst du lange Zeit denken müssen* R. 7,36,24.

वेत्र (von 3. वी) Uṇâdis. 4,166. m. *eine grössere Art Calamus,* etwa *fasciculatus,* zu Stöcken gebraucht, Riâm. im ÇKDr. Kauç. 40. MBh. 3, 2404. 12,8241. वेत्राद्रुमकृतावृता Hariv. 14432. पत्रोत्पन्ना मकावेत्रा भूतानां दण्डता पुनः 14804. R. 2,94,9. 3,17,9. °लताचयैः — सेतुं बबन्धुः 5,93,17. Suçr. 2,252,1. वेत्राग्र 328,6. °फल 1,157,8. 209,8. °करीर 157,12. 221,6. वेत्राय 222,2. वेत्रामव 238,11. °कीचकवेणूनां गुल्मानि Bhâg. P. 3,4,17. LA. (III) ad 13,17. वेणुवेत्राणि R. 5,95,8. °यष्टि *Rohrstab* (beim Kañkukin) Çiç. 100. °लता (beim Thürsteher) Pañkat. 16, 1 (13,6 ed. orn.). वेत्र so v. a. वेत्रयष्टि Varâh. Bṛh. S. 72,4. Bhâg. P. 10,12,2 (zum Treiben des Viehes). परिक्षावेत्रबाणविकल्पाः (so im Comm. zu Bhâg. P. 10,45,36) unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217, a, 11. भृङ्गवेत्रकर (Kṛshṇa) Pañkat. 4,8,113. beim Thürsteher Bhâg. P. 3,15,30. 7,5,16. °व्यासक्तकरस्त MBh. 9,1638. °पाणि Hariv. 5004. R. Gorr. 2,13,3. °कर्करपाणि 6,99,23. MBh. 6,4436. °हस्त Karmâs. 108, 2. 124,75. वामप्रकोष्ठार्पितवेत्र° Kumâras. 3,41. — वेत्र m. H. an. 2,449 und Med. r. 80 fehlerhaft für क्षेत्र. — Vgl. वैत्रक.

वेत्रकार m. *der Arbeiten aus dem* Vetra *genannten Rohre macht* R. Gorr. 2,90,16.

वेत्रकीय adj. (चतुर्थ्यर्थेषु) von वेत्र gaṇa नडादि zu P. 4,2,91. वेत्रकीया f. *ein mit* Vetra *bestandener Platz* 6,4,153, Schol. वेत्रकीयगृह N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 1, 6213. वेत्रकीयवन (वेत्र° ed. Bomb.) desgl. 3,615 (= एकचक्रा Nîlak.).

वेत्रग्रहण n. *das Ergreifen des Rohrstabs* so v. a. *das Amt eines Thürstehers* oder *einer Thürsteherin:* °ग्रहणे नियुक्ता Racan. 6,26.

वेत्रधर m. *Thürsteher (einen Rohrstock tragend)* H. 721, Schol. Halâj. 2,269. f. धरा Racan. 6,32.

वेत्रधारक m. dass. Taitt. 2,8,24.

वेत्रवत् (von वेत्र) 1) adj. Vetra *enthaltend, aus ihnen bestehend:* कीचकवेणुवेत्रवहिशालगुल्म (das suff. gehört auch zu den vorangehen-

den Wörtern) Bhâg. P. 8,2,19. — 2) m. N. pr. eines mythischen Wesens, eines Sohnes des Pûshan, Kathâs. 48,96. — 3) f. वेत्रवती Spadn. K. 230,a,6. a) *Thürsteherin* (vgl. वेत्रिन्) Çiç. 61,15. 90,10. Prasn. 70,7 und 73,19 nach der richtigen v. l. — b) eine Form der Durgâ Harîv. 9333. चित्ररथी die neuere Ausg. — c) N. pr. eines in die Jamunâ sich ergiessenden Flusses AK. 1,2,3,33. LIA. I, 84. MBh. 3,12907. 14221. 6,333 (VP. 181). 13,7647. Harîv. 9515. 12827. R. 4,41,11. Mâlav. 25. Vâmân. Bhâg. S. 16,9. Pañkatantra 11,b,6. Kâd. in Z. d. d. m. G. 7, 383. Mâlatîm. P. 57,20. — d) N. pr. der Mutter des Vṛtrâsura ÇKDa. nach dem Vâmâna-P.

वेत्रघ्न m. Bein. Indra's ÇKDa. angeblich nach AK. offenbar ein verlesenes वृत्रघ्न.

वेत्रावती f. N. pr. eines Flusses, = वेत्रवती (welches nicht zum Versmasse passte) Verz. d. Oxf. H. 10,a, N. 1. Rîâm. im ÇKDa.

वेत्रासन (वेत्र + 1. स्था°) n. *Rohrsitz, Rohrstuhl* H. 684. Hall. 2,156. Kumâras. 6,53.

वेत्रासुर (वेत्र + घ°) m. N. pr. eines Asura ÇKDa. nach dem Vâmâna-P. वैत्रासुर Verz. d. Oxf. H. 58,a,13. fg.

वैत्रिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2097 nach der Lesart der ed. Bomb. वैणिक ed. Calc.

वेत्रिन् (von वेत्र) 1) adj. am Ende eines comp. — *zum Rohrstock habend* Maitrâyaṇ. 6,28 (S. 153). — 2) *Stabträger, Thürsteher* H. 721. Rîâ-Tar. 6,3. 8,526.

वैत्रीय adj. (चतुर्थ्यर्थे) von वेत्र gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90.

वेध् वेधते (याचने) Dhâtup. 2,22. — Vgl. विध् und 5. विध्.

वेधिलेक N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,9. 10.

1. वेद (von 1. विद्) m. gaṇa वृषादि zu P. 6,1,203. 1) *Verständniss, theologische Kenntniss:* यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये। यो नमसा स्वध्वरः ṚV. 8,19,3. वेदेन रूपे व्यपिबत्सुतासुतौ प्रजापतिः VS. 19,78. Âpast. Bhâ. 7,18. — 2) *das heilige Wissen, überliefert in der dreifachen Form* (vgl. त्रयी विद्या) *der Ṛk, Sâman und Yagus* (dazu die Aṅgiras u. a.); später *die bekannten Sammlungen der Ṛk u. s. w.: die heilige Schrift;* sg. AK. 3,4,24,76. 28,117. 33,142. H. 249. Med. d. 15. Hall. 1,9. 5,83. AV. 7,54,2. 10,8,17. 15,3,7. त्रय Çat. Bhâ. 5,5,5,10. 13,4,3,3. Âçv. Gṛhy. 1,15,2. Nir. 1,2. 18. 20. वेदो ऽखिलो धर्ममूलम् M. 2,6. सर्वज्ञानमय 7. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः 10. 165. fg. वेदस्य संहिता 11,77. वेदं विद्वाव्य 198. त्रिवृत् 263. fgg. pl. AV. 4,35,6. 19,2,12 (वेदाः zu lesen). TS. 7,5,11,2. वेदा वा एते (*diese drei Berge sind* V.) यजुंषा वै वेदाः TBr. 3,10,11,4. Âpast. Bhâ. 5,22. 6,13. Çat. Bhâ. 11,3,3,7. 12,3,4,11. 14,7,3,6. 9,3,4. Âçv. Gṛhy. 3,4,1. 11,1. Çâ. 10,7. M. 2,97.5,4. R. 1,1,94. 4,4. वेदैः पश्यन्ति वै द्विजाः Spr. (II) 2084. सत्यप्रतिष्ठानाः 2093. वेदेषु शास्त्रेषु च (!) 2270. वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणम् 5034. (धातुः) मुखतो निःसृतान्वेदान्कृपयैवो ऽसिके ऽकरत् Bhâg. P. 8,24,8. वदानां सामवेदो ऽस्मि (sagt Kṛshṇa) Bhag. 10,22. प्रणवः सर्ववेदेषु (ist Kṛshṇa) 7,8. अधीत्य सर्ववेदान् MBh. 13,262. त्रयो वेदाः AK. 1,1,5,4. Hall. 1,8. Çat. Bhâ. 10,4,3,25. M. 2,77. 220. Mâlav. P. 23,36. त्रिवेदसंयोग Kâd. Ça. 25, 14,37. °त्रय M. 2,76. °त्रयी Spr. (II) 2955. वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि 3,2. एकवेदस्यात्तानाहेदास्ते बहवः कृताः (im Dvâpara) MBh. 3, 11233. 5,1663 (एकस्य वेदस्या° mit der ed. Bomb. zu lesen). चत्वारः H. 253. चतुर्धा वेद एव च (im Dvâpara) MBh. 3,11251. Harîv. 11516. 11668. fgg. 12436. Kathâs. 38,103. 118. व्यदधाद्यज्ञसंततये वेदमेकं चतुर्विधम् Bhâg. P. 1,4,19. अथर्वाङ्गिरसं वेदम् 6,6,19. आथर्वणो चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम् (= व्याकरण Comm.) Kâṭhân. Up. 7,1,2,4. चतुरो वेदान्सर्वाताभ्यानपञ्चमान् MBh. 3,2247. 5,1661. ऋग्यजुःसामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वार उद्धृताः। इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते ॥ Bhâg. P. 1,4, 20. पुराणं पञ्चमो वेदः Vers. d. Oxf. H. 65,a,13. द्वै° Çat. Bhâ. 14,7,1,32. पद्यवेदम् Kâd. Ça. 7,1,8. एक° adj. *einen Veda habend*, —, *kennend* MBh. 3,11244. 11252. 5,1662. द्वि°, त्रि°, चतुर्वेद 3,11251. fg. 5,1661. fg. Kathâs. 38,102. 118. Veda unter den Beinn. Vishṇu's ÇKDa. nach dem Viṣṇusahasranâmastotra. — 3) Bez. *der Zahl vier* Wurm, Nax. 2,382, N. 1. Gjot. 101. Çaur. 13. 15. 39. Vâmân. Bhâ. S. 77,24. Bhâ. 12, 1. Ind. St. 3,167. Sin. D. 264. — 4) *das Empfinden* Vop. 21,10. — 5) = वृत्त Mân. वित्त (vgl. 2. वेद्) v. l. nach ÇKDa. — Vgl. अथर्व°, आयुर्वेद, ऋग्वेद, क्षत्र°, गन्धर्व°, चतुर्वेद, त्रि°, दुर्वेद, धनुर्वेद, प्रतिवेदम्, ब्रह्मवेद, यजुर्वेद, रात्रि°, साम°.

2. वेद (von 3. विद्) m. *Habe, Besitz:* वेदं सवित्रा प्रसूतो मघोनाम् Âçv. Gṛhy. 1,15,1; vgl. u. 1. वेद 5).

3. वेदं m. gaṇa उत्कादि zu P. 6,1,160 (कारणे). *ein Büschel starken Grases* (Kuça, Muñga) *besenförmig gebunden, zum Fegen, Anfachen des Feuers u. s. w. gebraucht;* = पत्साङ्ग Nirukt. im ÇKDa. — AV. 7,28,1. VS. 2,21. TS. 1,7,4,6. 2,6,3,4. TBr. 3,3,7,3. Çat. Bhâ. 1,3,4, 11. 9,3,1. 16. 22. fgg. Kâṭh. 31,7. 32,6. M. 4,36. Âçv. Çr. 1,11,1. °शिरम् 3. °तृणानि 4. 5. 9. °स्तरण 3,6,22. Kâd. Ça. 1,3,23. 10,6. 2,5,25. मुञ्ज° 26,2,10. 5,15.

4. वेद 1) m. N. pr. eines Ṛshi Harîv. 9373 (वेदगार्ग्यो ऽग्रुमान् die neuere Ausg. st. वेदज्ञार्ग्यांग्रुमान् der älteren). ein Schüler Âjoda's MBh. 1,684. — 2) f. या N. pr. eines Flusses VP. 182, N. 13.

वेदक (vom caus. von 1. विद्) adj. (f. वेदिका) *kund thuend, verkündend:* पवस्या° (श्लोक) Râga-Tar. 4,549. मृतवेदिका Vâmân. Bhâ. S. 90,5. *zum Bewusstsein bringend* Sarvadarçanas. 17,1. 14. — वेदिका subst. s. bes.

वेदकर्तृ m. *Verfasser des Veda:* die Sonne MBh. 3,149. Çiva Paṇḍân. 1,9,15. Vishṇu 4,3,35.

वेदकार m. dass. Kuṭṭan. 37,2.

वेदकारणकारण n. *die Ursache der Ursache des Veda:* Kṛshṇa Paṇḍân. 1,12,75.

वेदकुम्भ m. N. pr. eines Lehrers Kathâs. 7,36.

वेदकौलेयक m. Bein. Çiva's Çabdârthak. bei Wilson.

वेदगर्भ 1) adj. (f. या) *den Veda im Schooose tragend:* देवा Verz. d. Oxf. H. 65,a,2. — 2) m. *a)* Bein. Brahman's Trik. 1,1,26. H. 211. Bhâg. P. 2,4,25. 9,19. 3,9,29. 12,1. 13,6. 32,12. 33,8. 8,17,26 (auf Vishṇu übertragen). 18,16. — *b) ein Brahmane* H. 813. — *c)* N. pr. eines Brahmanen Ksarîç. 2,8. वेदगर्व Colebr. Misc. Ess. II. 188. — 3) f. या Bein. der Sarasvatî Verz. d. Oxf. H. 110,a,32.

वेदगर्व s. u. वेदगर्भ 2) c).

वेदगार्ग्य m. N. pr. eines Ṛshi Harîv. 9373 nach der Lesart der neueren Ausg.; vgl. unter 4. वेद 1).

वेदगुप्त adj. nach dem Comm. so v. a. गुप्तवेद *der den Veda bewahrt hat*, Beiw. Kṛshṇa's, Sohnes des Parâçara, Bhâg. P. 2,22,31.

वेदगुप्ति f. *die Bewahrung des Veda* (durch die Brahmanen) ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वेदगुह्य adj. *im Veda verborgen:* Vishṇu Paṇḍar. 4,3,48. वेदगुह्योपनिषद् Çvetâçv. Up. 5,6.

वेदघोष m. *das vom Hersagen des Veda herrührende Gemurmel* Ind. St. 1,153, N. 1. — Vgl. वेदनिर्घोष und ब्रह्मघोष.

वेदचक्षुस् n. *der Veda als Auge:* ब्राह्मणा वेदचक्षुषा (पश्यन्ति) Spr. (II) 2084, v. l. *das Auge des Veda* so v. a. *ein Auge zur Erkenntniss des Veda* Verz. d. B. H. No. 287.

वेदजननी f. *die Mutter des Veda*, Bez. der Gâyatrî Kûrma-P. im ÇKDa. unter वेदमातृ.

वेदज्ञ adj. *Veda-kundig* M. 12,101.

वेदतत्त्व n. *das wahre Wesen des Veda:* वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ Spr. 2893.3033.

वेदतात्पर्य m. *die wahre Bedeutung des Veda* M. 4,92. °विद् 5,42. °विदस् 3,96.

वेदंता (von 2. वेद) f. etwa *Reichthum:* मेदंतां वेदंतां (instr.) वसो ṚV. 10,93,11.

वेदत्व (von 1. वेद) n. *das Veda-Sein, die Natur des Veda* Hariv. 11670.

वेददर्श m. N. pr. eines Lehrers des AV. Bhâg. P. 12,7,1; vgl. वेदस्पर्श.

वेददर्शन n. *das Vorkommen —, Erwähntwerden im Veda:* °दर्शनात् so v. a. *in Uebereinstimmung mit dem Veda* Sûrjas. 12,27.

वेददर्शिन् adj. *eine Einsicht in den Veda habend, denselben kennend* M. 11,234.

वेददान n. *das Mittheilen —, Lehren des Veda* Verz. d. B. H. No. 1218.

वेददीप m. *die Leuchte des Veda*, Titel von Mahîdhara's Commentar zur VS., herausgegeben von Albrecht Weber.

वेददृश् m. N. pr. eines Mannes, = वेदेश, वेदेशृ Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 46. Verz. d. Oxf. H. 136,a, No. 239.

वेददर्म m. N. pr. eines Sohnes des Paila Verz. d. Oxf. H. 27,b,4 v. u.

वेददनि m. = वेदघोष Comm. zu R. 7,2,17.

1. वेदन (von 1. विद् simpl. und caus.) 1) adj. *verkündend;* s. भग°. — 2) n. und वेदना f. (P. 3,3,107, Vârtt. 1; Vop. 26,194) a) *Erkenntniss, Kenntniss, das Wissen;* n. Nir. 3,12. 6,7. तत्त्वज्ञान° MBh. 1,71. B. Gorn. 1,80,16. आत्मपर° Spr. (II) 909. धर्म° Prab. 52,4. Kull. zu M. 1,68. Sarvadarçanas. 15,16. 16,11. 58,6. 22. ब्रह्मनामोरुवेदने M. 5,60. fem. या Taik. 3,3,262. H. an. 3,422. Med. n. 135. Spr. 2896 (zugleich *Schmerz*). — b) *das Kundthun;* n.: अवस्था° Rîâ-Tar. 3,180. — c) *Empfindung;* f. AK. 2,3,6. Hall. 5,33. Verz. d. Oxf. H. 231,a,22. fgg. वेदना स्पर्शनेन्द्रियजं ज्ञानम् 24. कर्तृ° P. 3,1,18. विन्दति वेदनां Jîân. 3, 143. eines der fünf Skandha bei den Buddhisten H. 233, Schol. Burnouf, Intr. 487. 499. 511. Hiouen-thsang I, 385. Colebr. Misc. Ess. I, 394. Sarvadarçanas. 20,11. 14. 16. 23,22. — d) *schmerzliche Empfindung, Schmerz;* n.: निर्वृतौ वेदनानि च MBh. 2,992. रुस्त° R. 7,37,8, 37. fem. Taik. H. 1370. H. an. Med. Hall. 3,4. वेत्ति न वेदनाम् Jîân. 3,130. MBh. 3,13638. शिरसि 16749. 16888. वेदनां सैनिकस्य 6,5816. शारीरा मानसाश्चापि (मानसा वापि ed. Bomb.) वेदना भृशदारुणाः 14,442. R. 3,57,25. Sûçr. 1,1,9. 16,2. 30,16. 2,6,5. Raçn. 8,49. Spr. (II) 1074. 1507. (I) 2872. 2896. Vasiṣ. Bpn. S. 78,20. तीव्र° AK. 1,2,2,3. H. 1338. मदन° Vikr. 22,12. विष° Kathâs. 38,111. 87,46. Bhâg. P. 3,30,19. 5, 26,9. 15. Pañkat. 44,2. 120,13. 121,3. 146,23. विरह° Vet. in LA. (III) 6,2. यति° Kathâs. 29,167. am Ende eines adj. comp. (f. आ): गाढ° MBh. 4,1949. Ragh. 12,99. Bhâg. P. 3,31,7. सवेदनम् adv. Daçak. 93, 11. der *Schmerz* personif. VP. 86. Mârk. P. 50,30. fg. — Vgl. प्रसववेदना (auch Pañkat. 228,14).

2. वैदन (von 3. विद्) 1) adj. (f. ई) *findend;* s. नष्ट°; *verschaffend;* s. पति°. — 2) n. a) *das Finden, Habhaftwerden:* गोविन्दो वेदनाद्वाम् MBh. 5,2572. — b) *das Heirathen* (von beiden Geschlechtern): उत्कृष्ट° M. 3,44. विधवा° 9,65. 10,24. Jîân. 1,62. — c) *Habe, Gut:* शत्रूणतामधिगा वेदनाकः ṚV. 1,33,15. अस्मभ्यमस्य वेदनं दाः 176,4. 4,30,18. 7,32, 7. 10,34,4. AV. 8,11,1. zur Erklärung von विदत्र (auch स्वे गृहे nach D.) Nir. 1,7. — Vgl. पति°, सु°.

वेदनावत् (von वेदना; s. u. 1. वेदन) adj. *Schmerz empfindend* MBh. 18, 32. *schmerzhaft* Sûçr. 2,6,10.

वेदनिधि m. N. pr. eines Mandes Verz. d. Oxf. H. 13,b,2. 64,b,15.

वेदनिन्दक (m. = नास्तिक Gaṇḍu. im ÇKDa. = बुद्ध ÇKDa. = बौद्ध Wilson) und वेदनिन्दा s. unter निन्दक und निन्दा.

वेदनिर्घोष m. = वेदघोष Vasiṣ. Bpn. S. 43,26. 60,10.

वेदनीय (vom caus. von 1. विद्) adj. 1) *bezeichnet werdend, ausgedrückt, gemeint:* तत्र केवला प्रकृतिः प्रधानपदेन वेदनीया मूलप्रकृतिः Sarvadarçanas. 147,13. कुर्वदूपादिपद° 11,19.20,4.28,2.54,14.58,2.74, 1.88,22. रत्नत्रयपदवेदनीयता 31,13. — 2) *empfunden werdend* Colebr. Misc. Ess. I, 384 (Wilson, Sel. Works I, 317). दृष्टादृष्टजन्म° Jogas. 2,12. प्रत्यात्म° Wilson, Sâṅkhjas. S. 9. अनुकूल°, प्रतिकूल° *als angenehm, als unangenehm* Tarkas. 53. Sarvadarçanas. 2,19. अनुकूलवेदनीयत्व n. 14, 13. प्रतिकूलवेदनीयता 103,18. 115,20. Verz. d. Oxf. H. 237,b, No. 369. प्रतिकूलवेदनीयत्व Wilson, Sâṅkhjas. S. 10.

वेदपथ m. *Weg des Veda* Bhâg. P. 5,26,15. 12,2,12. लोकवेदपथानुग 3,3,19. st. वेदपन्थाः 16,23 liest die ed. Bomb. देव पन्थाः (dieses = वेदमार्ग nach dem Comm.).

वेदपाठ m. *ein festgesetzter Veda-Text, Veda-Redaction* Ind. St. 3,400.

वेदपारग adj. s. u. पारग.

वेदपारायणविधि m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 132.

वेदपुण्य n. *das aus dem Studium des Veda hervorgehende moralische Verdienst* P. 6,2,132, Schol. M. 2,78.

वेदपुरुष m. *der personificirte Veda (mit allen seinen Theilen d. i. Hilfswissenschaften):* तत्तदङ्गाध्ययनाभावे वेदपुरुषस्य तत्तदङ्गवैकल्यं भवति Sâjaṇa in der Einl. zur Bṛhaddharmapurâṇa.

वेदप्रकाश m. Titel einer Schrift Hall 189.

वेदप्रदान n. *das Mittheilen —, Lehren des Veda* M. 2,171.

वेदप्रपद् f. Bez. *gewisser Formeln, in denen* प्रपद् *vorkommt* Kâṭj. 3.

वेदफल n. *der aus dem Studium des Veda hervorgehende Lohn* M. 1,103.

वेदबाहु m. N. pr. eines der 7 Weisen unter Manu Raivata Hariv. 430. Mârk. P. 75,72. eines Sohnes des Pulastja VP. 83, N. 8. des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,90,34.

वेदबीज n. *der Same des* Veda: Kṛshṇa Paṇḍar. 1,12,73.

वेदब्रह्मवर्च n. Veda-*Lehrzeit* Âçv. Gṛhj. 1,22,3. Pân. Gaṇ. 2,5.

वेदब्राह्मण m. *ein Brahmane, der den* Veda *kennt, ein Brahmane im vollen Sinne des Wortes* (Gegens. जातिब्राह्मण) Burn. Intr. 130. fg.

वेदभाष्यकार m. *der Verfasser des Commentars zum* Veda, Bez. Sâjaṇa's Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,25.

वेदभू m. Bez. eines best. göttlichen Wesens MBu. 13,7635.

वेदभृत् m. N. pr. eines Mannes Saṃsk. K. 184,*b*,3.

वेदम् am Ende eines comp. absol. von 1. und 3. विद् P. 3,4,29. fg. ब्राह्मणावेदं भोजयति *er speist so viele Brahmanen, als er nur kennt* 29, Schol. — Vgl. यज्ञावेदम्, समत्त°.

वेदमत्त m. pl. N. pr. eines Volkes Mark. P. 58,6.

वेदमय (von 1. वेद) adj. (f. ई) *aus heiligem Wissen bestehend, dasselbe enthaltend* Ait. Br. 1,22. नौ MBu. 3,12362. ब्रह्मा वेदमयो निधिः 12, 6780. ब्रह्मन् Harîv. 1321. Bhâg. P. 3,8,15. 13,43. 5,20,11. सर्व° 3,9,43.

वेदमातृ f. *die Mutter des* Veda, Bez. der Sarasvatî, Sâvitrî und Gâyatrî Taitt. Âr. 10,36 in Ind. St. 2,194. MBu. 5,7127 (pl.). 6,804. 12,7305. Harîv. 7022. 11516. Paṇḍar. 1,12,34. 36. Kûrma-P. und Devî-P. im ÇKDa.

वेदमातृका f. dass., Bez. der Sâvitrî Paṇḍar. 1,3,41.

वेदमालि m. N. pr. eines Brahmanen Verz. d. Oxf. H. 11,*a*,2.

वेदमित्र m. N. pr. eines Veda-Lehrers ṚV. Prât. 1,11. Müller, SL. 136. 143. Colebr. Misc. Ess. I, 15. VP. 277. Verz. d. Oxf. H. 405,*b*, No. 10. — 74,*b*,2.

वेदमुष्या f. *eine gefügsame Weise* Çârṅgadhar. bei Wilson.

वेदमुण्ड m. N. pr. wohl eines Asura: °वध Verz. d. B. H. 140(V,26).

वेदमूर्ति m. *eine Erscheinungsform des* Veda: der Sonnengott Mârk. P. 102,22.

वेदय nom. ag. vom caus. von 1. विद् P. 3,1,138. Vop. 26,38.

वेदयज्ञ m. *ein im* Veda *vorgeschriebenes Opfer* M. 2,183. MBu. 2,377. °मय adj. *aus solchen Opfern gebildet, solche Opfer enthaltend* VP. bei Muir, ST. 4,31. Mârk. P. 47,8.

वेदयितृ (vom caus. von 1. विद्) nom. ag. *Erkenner, Kenner:* वेत्ता वेदयिता (*qui scire facit* Sr.) चासि Kumâras. 2,18.

वेदरकर, वेदरुकर und वेदरुकर (dieses scheint die richtige Form zu sein; vgl. بيدارکر *Aufsucher*) m. Bein. Nṛsiṃha's oder Narasiṃha's, Vaters des Nârâjaṇa, der einen Commentar zu Buch XII. fgg. des Naishadhîjakarita verfasste, Naish. in den Unterschrr.

वेदरहस्य n. *die Geheimlehre des* Veda, *die* Upanishad MBu. 1,62.

वेदराज m. N. pr. Harîv. Lange. I, 106 fehlerhaft für देवराज; vgl. Harîv. 1993.

वेदराशि m. *der gesammte* Veda Kull. zu M. 1,21.

वेदवदन n. 1) *der Mund —, Eingang zum* Veda, Bez. *der Grammatik* Gobhil. im ÇKDa. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,24.

वेदवत् (von 1. वेद) 1) adj. *mit dem* Veda *vertraut* Pârask. bei Müller, SL. 129. Harîv. 13235. — 2) f. °वती *a*) N. pr. eines Flusses MBu. 6,324 (VP. 182). 13,7651. Mârk. P. 57,19. — *b*) N. pr. einer Tochter Kuçadhvaga's, die später als Sîtâ (auch als Draupadî und Lakshmî) wiedergeboren wird, R. ed. Bomb. 1,60,10. 7,17,9. 38. Verz. d. Oxf. H. 24,*a*,10. fgg. — *c*) N. pr. einer Apsaras Vishṇu beim Schol. zu H. 183. — *d*) Pârâç. 70,7 und 73,19 fehlerhaft für वेत्रवती, wie die v. l. hat.

वेदवाक्य n. *ein Ausspruch der heiligen Schrift* Sarvadarçanas. 72,19. 128,3. 4.

वेदवाद m. *ein Ausspruch der heiligen Schrift* und *das Sprechen über die heilige Schrift, theologische Unterhaltung:* °त Bhâg. 2,42. इति देवा व्यवसिता वेदवादाश्च शाश्वताः *Aussprüche des* V. MBu. 12,283. वेदवादानुयुगं क्रमसि so v. a. *theologische Unterhaltungen* 8502. 13,2140. VP. bei Muir, ST. 1,23. 147. 4,3. Bhâg. P. 4,2,22. 4,19. 5,11,2. 9,22, 16. 11,18,30.

वेदवादिन् adj. *der über die heilige Schrift zu reden versteht;* m. *Theolog* MBu. 3,14693. Bhâg. P. 1,5,23. 4,12,40. 7,3,13. Sarvadarçanas. 131,21.

वेदवास (1. वेद + 2. वास) m. *ein Brahmane* Çârṅgadh. im ÇKDa.

वेदवाक् adj. *dem Studium des* Veda *obliegend* MBu. 13,1369. = वेदपाठक Nîlak.; vgl. धर्मवाक् unter वाक् 1).

वेदवाहन adj. *den* Veda *tragend oder bringend;* Beiw. des Sonnengottes MBu. 3,149.

वेदविद्या (von वेदविद्) n. *Kenntniss des* Veda Mârk. P. 33,15.

वेदविद् adj. Veda-*kundig* Çat. Br. 14,6,2,4. Çâṅkh. Gṛhj. 4,1.4. M. 2,78. 3,179. 7,38 u. s. w. Weber, Ġiot. 110. Bhâg. 8,11. 15,1. 18. MBu. 3,2074. 2450. 5,6063. 7182. R. 1,5,21. 6,1. Çiç. Ca. 18,8. °वि° M. 4,192. वेदवेदाङ्गविद् R. 1,1,15. वेदविदम M. 5,107.

वेदविद्या f. Veda-*Kunde:* °विद्याधिगम Maitrâjup. 4,3. °विद् Kathâs. 27,164. °विद्यात्मक Mârk. P. 102,20. °विद्याधिप Paṇḍar. 1,8,24.

वेदविदंस् adj. = वेदविद् s. u. विदंस्.

वेदवृद्ध m. N. pr. eines Veda-Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*a*,14.

वेदवैनाशिका f. N. pr. eines Flusses R. in VP. 2te Aufl. II, 145. °वैनाशिका R. 4,40,21.

वेदव्यास m. *der* Veda-*Diaskenast*, = व्यास Taik. 2,7,19. H. 846. MBu. 1,76. 13,680. 1337. Harîv. 2364. Vaṃç. Bḍn. S. 46,12. Verz. d. B. H. 13,5. 9. No. 392 (S. 104). 804. 1343. Verz. d. Oxf. H. 3,*a*, No. 24. 9,*b*,14. VP. 272. Ind. St. 1,468. fg. 3,396. Paṇḍar. 2,1,13. 3,1,2.

वेदव्रत n. *eine im* Veda *vorgeschriebene Observanz:* °व्रतानां विधिः Titel eines Pariçishṭa des Kâtjâjana Verz. d. Oxf. H. 382,*a*,3. °परायण so v. a. *den* Veda *studirend und die Observanzen beobachtend* Vaṃç. Bḍn. S. 48,65.

वेदशब्द m. *ein Ausspruch des* Veda M. 1,21.

वेदशाखा f. Veda-*Zweig, — Schule* Ind. St. 1,16,13. Bhâg. P. 5,2,9. Verz. d. B. H. No. 1218. Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,4. 86,*b*,17. °प्रणयन 8, *a*,31. — Vgl. प्रतिवेदशाखम्.

वेदशास्त्र n. sg. *die im* Veda *vorgetragene Lehre* M. 4,260. 5,2. 12, 94. 99. fg. 102. 106. n. pl. *der* Veda *und andere Lehrbücher* Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,4. वेदशास्त्रार्णव s. वेदशास्त्रागमकथा: 11.

वेदशिर m. N. pr. eines Sohnes des Kṛçâçva Bhâg. P. 6,6,20. statt des erforderlichen acc. °शिरम् hat die ed. Bomb. den nom. °शिराः.

1. वेदशिरस् (1. वेद + शि°) n. *das Haupt des* Veda, Bez. einer mythischen Waffe Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,38. — Vgl. मनो°.

2. वेदशिरस् (wie oben) m. N. pr. eines Ṛshi MBu. 12,12759. Hariv. 430. 14153. VP. 82. Bhâg. P. 4,1,45. 6,15,14. 8,1,21. 8,3. Mârk. P. 52, 17. Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,33. 71,*a*,23. 82,*b*, N. 2.

3. वेदशिरस् (3. वेद + शि°) n. *der Kopf des* Veda *genannten Besens* Âçv. Çr. 1,11,2. = ज्ञानुसदृशः प्रदेशः Comm.

वेदशीर्ष m. N. pr. eines Berges Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,29.

वेदश्री m. N. pr. eines Ṛshi Mârk. P. 75,73. — Vgl. 2. वेदशिरस्.

वेदश्रुत m. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern unter dem 3ten Manu Bhâg. P. 8,1,24.

वेदस्मृति f. 1) = वेदघोष *das vom Hersagen des* Veda *herrührende Gemurmel* R. 7,2,17. — 2) *die heilige Schrift, der* Veda MBu. 3,11214. 6,802 (°महापुण्या दुर्गा). R. 4,3,4. °स्मृती aus metrischen Rücksichten 3,55,34. 56,31. Mârk. P. 21,31. — 3) N. pr. eines Flusses R. 2,49,9 (46,10 Gorr.).

1. वेदस् (von 1. विद्) n. *Erkenntniss:* उशिजो जग्मुरभि तानि वेदसा RV. 3,60,1. — Vgl. केत°, ज्ञात°, 1. विश्व°.

2. वेदस् (von 3. विद्) n. *Habe, Besitz* Naigh. 2,10. RV. 1,70,10. 81, 9. 2,7,6. 3,33,14. 5,2,12. स नो वेदो घमात्यं रयिं तु 7,15,3. 19,1. 8,76, 2. सुषुद्धा अस्य वि भजन्ति वेदः 10,27,10. AV. 5,20,4. 10. pl. RV. 1,89, 5. AV. 6,66,3. — Vgl. अनष्ट°, केत°, ज्ञात°, 2. विश्व°.

वेदस = 2. वेदस् s. सर्व°.

वेदसंस्थित adj. *im* Veda *enthalten* Mârk. P. 102,20.

वेदसंहिता f. *der ganze* Veda *nach irgend einer Redaction* M. 11, 238; vgl. वेदस्य संहिता 77.

वेदसंन्यासिक adj. *der das* Veda-*Studium und alle frommen Werke schon hinter sich hat und sich ganz dem beschaulichen Leben hingiebt* M. 6,86; vgl. 95.

वेदसमाप्ति f. *Beendigung des* Veda-*Studiums* Âçv. Gṛhj. 1,22,18.

वेदसार m. *das Beste im* Veda: Vishṇu Paṭṭân. 4,3,50. °शिवस्तव m. oder °शिवस्तोत्र n. Titel einer Sammlung von Strophen, die Çiva verherrlichen, Hall. Anth. 312. fgg.

वेदसिनी f. N. pr. eines Flusses VP. 182, N. 18. वेतसिनी v. l.

वेदसूत्र n. *ein zu einem* Veda *gehöriges* Sûtra MBu. 12,13069.

वेदस्तुति f. *Lob des* Veda, Titel des 87ten Adhjâja im 10ten Buche des Bhâg. P. °कारिका Hall 145.

वेदस्पर्श m. N. pr. eines Veda-Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,30. 33. वेददर्श v. l.

वेदस्मृता f. N. pr. eines Flusses, = वेदस्मृति MBu. 6, 324 (VP. 182).

वेदस्मृति f. N. pr. eines Flusses MBu. 13,7651. Bhâg. P. 5,19,18. Mârk. P. 57,19. VP. 176, N. 5. °स्मृती Vaṭṭân. Bḥg. S. 16,22.

वेदहीन adj. *mit dem* Veda *nicht vertraut* H. 836.

वेदायणी (1. वेद + य°) f. = सारस्वती Râjân. im ÇKDa.

वेदाङ्ग (1. वेद + 3. अङ्ग) 1) n. *ein Glied des* Veda so v. a. *eine Hilfswissenschaft zum* Veda; es werden deren sechs gezählt: Çikshâ, Kalpa, Vjâkaraṇa, Nirukta, Khandas und Gjotisha Siz. in der Einl. zum RV. Roth, Einl. zu Nir. XV. fgg. Madhus. in Ind. St. 1,13,5. 6. Nir. 1,20. RV. Prât. 14,30. M. 2,141. 4,98. MBu. 2,450. 12,7661. R. 5,32,9. Bâlâmbhaṭṭ. in Ind. St. 2,42. Sâmas. 1,3. Verz. d. B. H. No. 840. 882. Verz. d. Oxf. H. 386,*a*, No. 302. वेदवेदाङ्गपारग MBu. 3,2181. R. 1,7,1. Brahma-P. in L.A. (III) 48,16. वेदवेदाङ्गविद् R. 1,1,15. वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ Spr. 2993. 5033. °शास्त्राणि Weber, Gjot. 21. °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 137,3. fgg. Vgl. 3. अङ्ग 3). — 2) m. Bein. der Sonne MBu. 3,149. N. pr. eines der 12 Âditja Weber, Râmây. Up. 304. 313. — Vgl. मुण्ड°.

वेदाङ्गराय m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 258. Notices of Skt Mss. 87.

वेदाचार्य (1. वेद + आ°) m. Veda-*Lehrer* Ind. St. 3,396.

वेदात्मन् (1. वेद + आ°) m. *die Seele des* Veda: Vishṇu R. 6, 102, 17. Paṭṭân. 4,3,58. der Sonnengott Mârk. P. 102,20.

वेदादि (1. वेद + आदि) m. *der Anfang des* Veda: यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः nämlich das ओम् Taitt. Âr. 10,12,17. *das heilige* ओम् selbst: सावित्री वेदादिप्रभृतीनि च जपित्वा Çâṅkh. Gṛhj. 4,5. Weber, Râmây. Up. 335. °जपाय ओंकाराय 296. n. im Rudrajâmala nach ÇKDa. °बीज n. dass. ÇKDa. nach dem Râganiṛṇayatantra.

वेदाधिगम (1. वेद + अ°) m. Veda-*Studium* M. 2,3.

वेदाधिदेव (1. वेद + अ°) m. *der den* Veda *beschützende Gott:* Brahman Paṭṭân. 1,12,52.

वेदाध्यक्ष (1. वेद + अ°) m. *Aufseher über den* Veda, *Hüter des* Veda: Kṛshṇa Hariv. 10403.

वेदाध्ययन (1. वेद + अ°) n. Veda-*Studium* AV. Prât. 4,101. R. 1,50, 3. Spr. 1404. Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,5. Sarvadarçanas. 123,7. 124,2. 128, 7. वेदानध्ययन n. *das Unterlassen des* Veda-*Studiums* M. 3,63.

वेदाध्याय (1. वेद + अ°) adj. *den* Veda *studirend* P. 3,2,1, Schol.

वेदाध्यायिन् (1. वेद + अ°) adj. dass.: तत्तद्वेद°, सकल° Ind. St. 3,396.

वेदानुवचन n. s. u. अनुवचन 1) und vgl. Notices of Skt Mss. 58.

वेदान्त (1. वेद + अन्त) m. 1) *das Ende des* Veda Taitt. Âr. 10,12,17 (s. u. वेदादि). °ग = वेदपारग *der den* Veda *durchstudirt hat, vollkommen vertraut mit dem* V. MBu. 12,1224. 13,1749. *Ende des* Veda-*Studiums:* वेदान्तावभृथप्लुत 2,1908. — 2) *ein den Schluss eines* Veda *bildender Text, eine* Upanishad (H. 250. an. 4,127. Mân. d. 56. Hall. 1,9) und *die auf den* Upanishad *ruhende theologisch-philosophische Lehre* (*die* Uttaramîmâṃsâ): °विज्ञाननिश्चितार्थ Muṇḍ. Up. 3,2, 6. Çvetâçv. Up. 6,22. वेदान्तोपगते फलम् M. 2,160. वेदान्ताभिहित 6,83. वेदान्तं विधिवच्छ्रुत्वा 94. MBu. 13,1080. pl. 4,1593. सर्वे वेदान्ताः Nilak. 9. Ind. St. 1,19. 2,172. 208. 3,386. Vîra. 1. Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 10. प्रत्यक्षादिप्रमासिद्धविरुद्धार्थाभिधायिनः । वेदान्ता यदि शास्त्राणि वैदैः किमपराध्यते ॥ Prab. 20,17. fg. Sarvadarçanas. 61,19. वेदान्तयोस्तेन्तिरीयबृहदारण्यमंत्रयोः Verz. d. Oxf. H. 257,*b*, N. 6. °निष्ठ MBu. 13,2449. वेदैर्वेदान्तसाधनैः (so die ed. Bomb.) 14,348. °प्रणिहितधी Spr. 2031. °गम्य Mârk. P. 102,22. °रहस्यवेत्तृ Verz. d. Oxf. H. 253,*b*,20. °तात्पर्य Sarvadarçanas. 73,7. °वेदिन् Paṭṭân. 4,1,42. °कृत् Bhâg. 15,18. Kaivalyop. in Ind. St. 2,13. °कर्तृ Paṭṭân. 4,3,155. °वाक्य Madhus. in Ind. St. 1,15,25. fg. 19,18. Sarvadarçanas. 55,13. 61,12. fg. °वाद् 146,19. °वादिन् Tattvas. 22. वेदान्तो नाम उपनिषत्प्रमाणं तदुपकारी-

णि शारीरकादीनि च Vedântas. (Allah.) No. 3. 4. Colebr. Misc. Ess. I, 325. fgg. °शास्त्र Prab. 20,13. Madhus. in Ind. St. 1,13,3. Werke, die über den Vedânta handeln: °कतक Hall 154. 165. °कल्पतरु 87. Colebr. Misc. Ess. I, 333. Verz. d. Oxf. H. 277,a,13. 292,b,17. Verz. d. Tüb. H. 18. °कल्पतरुटीका ebend. °कल्पतरुपरिमल Hall 88. Colebr. Misc. Ess. I, 333. °कल्पतरुमञ्जरी ebend. °कल्पलतिका 337. Hall 132. Verz. d. B. H. No. 627. Verz. d. Oxf. 226,b, No. 555. °चिन्तामणि Hall 97. °तत्त्वदीपन 89. °दीप 93. Verz. d. Tüb. H. 18. °नयनभूषण Hall 96. °न्यायरत्नावली ब्रह्मादैतामृतप्रकाशिका Verz. d. Tüb. H. 18. °परिभाषा 19. Hall 100. Colebr. Misc. Ess. I, 335. Mack. Coll. I, 15. °पारिजात Hall 114. °प्रदीप 92. Wilson, Sel. Works I, 43. Verz. d. Oxf. H. 221, b, No. 536. °भाष्य 393, a, No. 90. Mack. Coll. I, 15. °रत्नमञ्जूषा Hall 114. °रहस्य 104. °शतश्लोकी 119. °शिक्षामणि 100. Colebr. Misc. Ess. I, 304. 336. °संज्ञाप्रक्रिया Hall 127. °सार (zwei Werke dieses Titels) 92. 93. 101. Gild. Bibl. 421. fg. Wilson, Sel. Works I, 43. Verz. d. B. H. No. 619. Verz. d. Oxf. H. 220,a, No. 553. Verz. d. Tüb. H. 19. °सारसंग्रह Hall 101. °सारसार 102. °सिद्धि 119. °सिद्धान्त 131. 143. °सिद्धान्तदीपिका 131. 138. °सिद्धान्तबिन्दु Colebr. Misc. Ess. I, 337. °सिद्धान्तमुक्तिमञ्जरी Hall 153. °सिद्धान्तमुक्तिमञ्जरीप्रकाश 154. °सुधारहस्य 96. °सूत्र 68. 86. 162. Colebr. Misc. Ess. I, 327. Gild. Bibl. 420. °सूत्रदीपिका Mack. Coll. I, 15. °सूत्रमुक्तावली Hall 93. Colebr. Misc. Ess. I, 334. °सूत्रव्याख्याचन्द्रिका ebend. °सौरभ Hall 114. °स्यमन्तक 103. वेदान्ताधिकरणमाला 98. वेदान्तार्थविवेचनभाष्य 100.

वेदान्तवागीशभट्टाचार्य m. N. pr. eines Gelehrten Hall 104.

वेदान्ताचार्य m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 130,a,23.

वेदान्तिन् m. *ein Bekenner der* Vedânta-*Lehre* Spr. 2808. Nilak. 70. Verz. d. B. H. 160, 16. No. 685. Verz. d. Oxf. H. 142, b, No. 291. Sarvadarçanas. 110,10. 149,17. Schol. zu Kap. 1,22. वेदान्तिमकरन्देव m. N. pr. eines Lexicographen Hall in der Einl. zu Visvap. 48.

वेदाप्य्, °यति denom. von 1. वेद P. 3,1,25, Vârtt. Vop. 21,16.

वेदाप्ति (1. वेद + आप्ति) f. *im Veda erlangte Kenntnisse* Brahma-P. in LA. (III) 57,2.

वेदाभ्यास s. u. अभ्यास 2).

वेदायन Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,26 fehlerhaft für वैदायन.

वेदार m. *Chamäleon, Kidechse* Taitt. 2,5,11.

वेदार्ण (1. वेद + अर्ण = वर्ण) N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149,a,3. 4.

वेदार्थ (1. वेद + अर्थ) m. *Bedeutung —, Sinn des* Veda Harîv. 11219. Verz. d. B. H. 287 (pl.). °विप्रभा 288. °विद् M. 3,186. °चन्द्र m. Titel einer Schrift (= °प्रदीप) Hall 187. °दीपिका Titel eines Commentars zu Kâtjâjana's Sarvânukramanî von Shadguruçishja Verz. d. B. H. No. 53. Müller, SL. 216. °प्रकाश Titel von Sâjaṇa's (Mâdhava's) Commentar zum ṚV. und andern vedischen Schriften Verz. d. Oxf. H. 390, a, No. 24. fgg. 405, a, No. 1. 361, a, No. 2—4. °प्रदीप Titel einer Abhandlung über die Mîmâṁsâ Hall 187. °संग्रह Titel eines Werkes des Râmânuǵa Sarvadarçanas. 51,19. Hall 116.

वेदावती f. N. pr. eines Flusses MBh. 6,336 (VP. 183).

1. वेदि (von 1. विद्) 1) m. *ein kluger —, weiser Mann* H. an. 2,234. Med. d. 15. — 2) f. वेदि *a) Kenntniss:* अ° *Unkenntniss* (nach Çaṁk. adj. *nicht wissend*) Bṛh. Âr. Up. 4,4,14. अवेदी st. अवेदिः Çat. Br. 14, 7,2,15. — *b) Siegelring* H. an. Med. — 3) f. वेदी Bein. der Sarasvatî Çârdar. im ÇKDr.

2. वेदि (Uṇâdis. 4,118. f. Sidd. K. 247,b,15) und वेदी (nach-vedisch) f. 1) *Opferbett, Opferbank, ein oberflächlich ausgegrabener und dann mit Stroh belegter Raum in dem Opferhofe, die Stelle des Altars vertretend.* In der Vedi sind die Feuerheerde angebracht. Vorschriften über die Einrichtung z. B. Kâtj. Ça. 2,6,1. *fgg.* Iod. St. 10,331. = परिष्कृता भूमिः AK. 2,7,17. H. 824. Halâj. 2,360. = परिष्कृतभूतल Med. d. 15. = अलंकृतभूतल H. an. 2, 234. = स्थण्डिलसितक Hem. 192. — ṚV. 1,164,35. 170, 4. 2,3,4. 5,31,12. 6,1,10. 7,60,9. 8,19,18. AV. 5,22,1. 10,9,2. 11,1,21. *fgg.* यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्याम् 12,1,13. 12,1,46. VS. 18, 21. 63. Ait. Br. 2, 22. Çat. Br. 1,2,5,7. 9. 10,2,3,1. *fgg.* Kâtj. Ça. 2,8,19. 7,6,10. चतुःस्रक्ति Çat. Br. 2,6,4,10. Kâtj. Ça. 5,8,21. वेद्यंस Çat. Br. 3,5,4,5. 6. Çâṅkh. Ça. 17,15,2. °श्रोणि Çat. Br. 5,1,5,28. Kâtj. Ça. 2,7,22. 5,4,9. 13,3,10. वेद्यन्तर 5,4,11. °करण 2,6,30. °लक्षण AV. Paric. in Verz. d. B. H. 90 (24). °साधन No. 1085. — MBh. 2,1313. Harîv. 11263. R. 1,21,5. प्रज्वाल तदा वेदिः 32,9 (33,8 Gorr.). 73,15. 2, 56,29. 100,18. R. Gorr. 2,99,3. 108,18. 3,43,9. यज्ञमध्यस्था 62,23. 77, 28. 5,21,13. वेद्यामिव हुताशनः 92,19. Raghu. 11,35. Çiç. 31,6. 75. 83. Varâh. Bṛh. S. 44,8. 14. 48,24. 36. 45. 75. 68,48. Nalod. 1,9. Häufig wird die weibliche Taille mit *der in der Mitte schmalen* Vedi verglichen Çat. Br. 1,2,5,16. 3,5,4,11. वेदिप्रतिममध्यमा R. 3,38,14. मध्यं च वेदिः Spr. (II) 1322. Kumâras. 1,39. Kâdab. 40. वेद्व्व मन्के किसा Dhûrtas. 82, 12. — 2) *eine überdeckte* Vedi-*förmige Terrasse im Hofraume,* = वितर्दि H. 1004. zu einer Hochzeit hergerichtet: कृतोपचारां चतुरस्रवेदीं तावेत्य Kumâras. 7,88. Kathâs. 44,78. वेदीमकार्यत्सो ऽत्र सद्रत्नस्तम्भकुट्टिमाम् 50,181. वेदीमारुक्ष 16,79. 45,312. 50,134. 71,167. विवाह° 103, 185. सज्जितवेदीकं रत्नदत्तगृहम् 123,177. — 3) *Gestell, Sockel, Unterlage; Bank* Mṛicch. 92,4. Bhâg. P. 10,41,21. वालुकावेदिमध्ये तु तच्छिद्रं स्थाप्य R. 7,31,43. ज्ञाम्बुनदमयी वेदी घने MBh. 4,1780. घासीनं सूर्यसंकाशे काञ्चने परमासने। रुक्मवेदीगतं देवं ज्वलन्तमिव पावकम् ॥ R. 3,36,4. 5. ऋणाग्निः — हूयते त्वमुरेस्तत्र रघवेद्यां सुसंस्कृतः Harîv. 13220. प्राग्द्वारवेदिविनिवेशितपूर्णकुम्भ Raghu. 5,53. विद्रुम° Bhâg. P. 3,23,17. 4, 25,16. मातङ्ग° *Sitz auf einem Elephanten* H. an. 4,32. Med. k. 202. — 4) वेद्यर्ध *die Hälfte einer* Vedi, Bez. eines mythischen Gebietes der Vidjâdhara auf dem Himâlaja: इह विद्याधराणां द्वौ वेद्यर्धौ स्तो हिमाचले। उत्तरो दक्षिणश्चैव नानातद्भङ्गभूमिगौ ॥ परतः किल कैलासाद्उत्तरो ऽर्वाक् तु दक्षिणः। Kathâs. 107,65. fg. 108,126. कुरु दक्षिणवेद्यर्धे चक्रवर्तित्वमात्मनः। उत्तरस्मिंस्तु वेद्यर्धे देहि तच्छ्वशुरार्पणे ॥ 50,100. 102. 44, 13. उभयवेद्यर्धचक्रवर्तिन् 109,142. मर्त्यो ऽप्युभयवेद्येकचक्रवर्ती (wohl °वेद्यर्धचक्रवर्ती zu lesen; Brockhaus trennt उभयवेद्यु एक°) भविष्यति 44,10. — 5) वेदी N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8025. °तीर्थ 6069. — Vgl. अन्तर्वेदि, अन्तरा° (so v. a. *Scheidewand* Raghu. 12,93), उत्तर°, उद्वेदि, बहिर्वेदि, ब्रह्म°, मध्य°, मरु°.

3. वेदि n. = अम्बष्ठा Çârdar. im ÇKDr. वेदिन् m. Wilson nach ders. Aut. वेदिक s. u. 3. वेदिका 3).

1. वेदिका f. von वेदक s. das.

2. वेदिका (von 1. वेदि) f. *Siegelring* Halâj. 5,37.

3. वेदिका (von 2. वेदि) f. 1) = 2. वेदि 1) Varâh. Bṛh. S. 70,10. — 2) = 2. वेदि 2) AK. 2,2,15. Halâj. 2,144. R. 5,14,14. पवाग्यलंकृतवेदिकामध्याधिष्ठितसिंहासन (so ist zu lesen) Pañcat. 138,6. am Ende eines adj. comp. (f. या) 129,17. मार्गलङ्घावेदिक Hariv. 4643. — 3) = 2. वेदि 3) MBh. 5, 3355. Hariv. 4531. धामप्रासादवेदिकायां क्रीडद्भिः पारावतैः Mṛicch. 79,23. Suçr. 1,107,14. घटस्य Hariv. 13095. 13166. स्यन्दनवेदिकास्थ *Bank* 13092. काञ्चनी 12024. उद्यानान् — वेदिकापरिमण्डितान् R. 2,80,12 (87,16 Gorr.). वेदिकाशैत्यसेव्यया: 5,15,13. 16,18. 72,15. सुवर्णवेदिकायुक्त (रथ) 6,75,27. देवदारुद्रुमवेदिकायामासीन: Kumâras. 3,44. Kathâs. 101,27. Pras. 26,5. Weber, Râmây. Up. 324, N. 1. वेदिक m. R. 5,17,2. 9,20. 16,39. Hariv. 9013. 16181. am Ende eines adj. comp. (f. या) MBh. 2, 90. 8, 4712 (सवेदिक mit der ed. Bomb. zu lesen). 18,267. Hariv. 16171. 16177. R. 3,61,10. 11. 4,41,67. 44,56. 5, 16,27. 6,100,22. R. ed. Bomb. 4,40,55. 7,15,37. चित्र° (केतु) R. Gorr. 4,40,54. — Vgl. यापण°.

वेदित्रा (2. वेदि + 1. त्र) f. Bein. der Draupadî Taik. 2,8,18. H. 711.

वैदितृ (von 1. विद्) nom. ag. *Kenner, Wisser* H. 349. ṚV. 8,92,11. यो वै तान्विद्यात्स ब्रह्मा वेदिता स्यात् AV. 10,7,24. Çat. Br. 14,6,8, 11. Nir. 13,12. MBh. 8,4376. Sidd. K. zu P. 4,2,60. वेदानाम् MBh. 5, 1672. सत्कलानाम् Spr. (II) 813. कर्मण: पापकस्य 1438. सर्व° MBh. 13, 1067. करुण° so v. a. करुणवेदिन्, कारुण्यवेदिन् (s. u. कारुण्य) *mitleidig* 9,1652. f. वेदित्री (सर्ववचसाम्) Varâh. Bṛh. S. 88,13.

वेदितव्य (wie eben) adj. *kennen zu lernen, zu erkennen, zu kennen, zu wissen* Çat. Br. 14,8,6,1. Nir. 2,21. 13,13. 14,9. Muṇḍ. Up. 1,1,4. 3,1,9. Çvetâç. Up. 1,12. Maitrâyaṇ. 6,10. Kauṣh. Up. 4,19. M. 10,40 (= MBh. 13, 3591). Bhag. 11,18. MBh. 1,306. 394. 3,12816. 13,1077. 14, 33. Hariv. 3768. 9776. Mallin. zu Kumâras. 7,88. Kâç. zu P. 1,3,11. Sarvadarçanas. 19,13. तस्य स्वमस्तोति स वेदितव्य: *von dem wisse man, dass* MBh. 5,1641. एवं वादी वेदितव्य: पाण्डवेयो ऽयमित्युत 6,12. पत्नी ऽनुरागी स हि वेदितव्य: Kâm. Nîtis. 15,38. Verz. d. Oxf. H. 179, a, No. 410. Sin. D. 31,18. Schol. zu P. 1,4,83 und 2,1,4. Sarvadarçanas. 136,21. fg.

वेदिता (nom. abstr. von वेदिन्) f. am Ende eines comp.: करुण° so v. a. *Mitleid* M. 7,211.

वेदित्व n. (wie eben) dass.: करुण° R. Gorr. 1,2,16. कारुण्य° R. Schl. 1,2,17.

1. वेदिन् (von 1. विद्) 1) adj. *a) kennend, sich verstehend auf;* am Ende eines comp.: षाड्गुण्यगुण° M. 7,167. ज्ञानविज्ञान° 9,41. नानास्वाध्याय° MBh. 9,2202. सात्म° 13,1068. 1073. वेदवेदाङ्ग° 15,968. लोकवृत्तान्त° R. 1,8,11. सन्योऽन्यवेदिन: Kâm. Nîtis. 12,34. चित्त° 27.7,62. परकर्म° 15, 8. काल° 19,21. Kathâs. 33,21. 69,73. कार्य° 18,402. तदभिप्राय° 27, 140. सदर्घ° Raghu. 8,27. पुरुषान्तर° Vikr. 36,10. कृत्य° Râjat. 4, 133. 5,288. Bhâg. P. 4,22,13. उक्त° 14,20,22. घतीतानागतवर्तमान° Pañcat. 48,8. Mâlav. P. 101,7. कारुण्य° so v. a. *mitleidig* R. 4,16,12. कर्ण° (so die neuere Ausg. st. कर्म° der älteren) *sich auf die Ohren verstehend* so v. a. *auf Einflüsterungen hörend* Hariv. 11186. सर्व° (von सर्व + वेद) *alle Veda kennend* 11059. वै° *keine Erkenntniss besitzend* Çat. Br. 14,7,3,13. पशव: Mâlav. P. 47,19. Bhâg. P. 3,10,19. — *b) empfindend:* गन्धरस° MBh. 12,6828. स्पर्श°, गन्ध° Bhâg. P. 3,29,29. प्राणभङ्गार्ति° Brahma-P. in LA. (III) 55,10. — *c) ankündend, verkündend:* भय° (काङ्क्ष) MBh. 6,53. R. Gorr. 1,76,10. अनिष्ट° 2,71,2. — 2) m. Bein. Brahman's Çaṇḍilyaṇ. bei Wilson. — 3) f. वेदिनी N. pr. eines Flusses R. Gorr. 2,73,5. — Vgl. करुण° (auch MBh. 3,13795. 15,150), गम्भीर° (चिरकालेन यो वेत्ति शिलां परिचितामपि। गम्भीरवेदी विज्ञेय: स गम्भो गत्रवेदिभि: ॥ Cit. beim Schol. zu Raghu. 4,39 in der ed. Calc.), निशा°, नीति°, ब्रह्म°, मर्म°, रात्रि°, विश्व°.

2. वेदिन् (von 3. विद्) adj. *heirathend:* मूढा° M. 3,16. — Vgl. कन्या°.

3. वेदिन् n. s. u. 3. वेदि.

वेदिमती (von 2. वेदि) f. N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. 118,2.

वेदिमेखला (2. वेदि + मे°) f. *die Schnur, welche die* Uttaravedi (nach dem Comm.) *abgrenzt,* Bhâg. P. 4,5,13.

वेदिषद् (2. वेदि + सद्) 1) adj. *auf —, an dem Opferbett sitzend:* Agni ṚV. 1,140,1. 4,40,5. समुद्रा रत्नानि VS. 2,29. TBr. 1,2,6,23. — 2) m. ein anderer Name des Prâcînabarhis Bhâg. P. 4,24,27. 26,14.

वेदिष्ठ (superl. zu वेदितृ) adj. *am meisten wissend* oder *verschaffend* ṚV. 9,2,24.

वेदीतीर्थ s. u. 2. वेदि 3).

वेदीयंस् (compar. zu वेदितृ) adj. *besser kennend* oder *findend* ṚV. 7,98,1.

वेदीश (1. वेदिन् + ईश) m. Bein. Brahman's Taik. 1,1,26.

1. वैदुक (von 1. विद्) adj. *wissend* TS. 5,1,8,3. Kâṭh. 19,5.

2. वैदुक (von 3. विद्) adj. *erlangend* TBr. 3,9,23,2.

वेदेश (1. वेद + ईश) m. N. pr. eines Mannes, = वेदधर Verz. d. Oxf. H. 136,a, No. 259. वेदेश्वर Hall in der Einl. zu Vâsavad. 40.

वेदेशभिक्षु m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 393,a, No. 90.

वेदेश्वर (1. वेद + ई°) s. u. वेदेश.

वेदोक्त (1. वेद + उक्त) adj. *im Veda erwähnt, — gelehrt:* कर्माणि Nir. 14,8. घायुस् M. 1,84. ऋषि: *im Veda enthalten* R. 2,56,30.

वेदोदय (1. वेद + उ°) m. *die Sonne* Taik. 1,1,28. H. ç. 8.

वेदोदित (1. वेद + उ° von वद्) adj. *im Veda erwähnt, — geboten:* कर्मन् M. 4,14. 11,203.

वेदोपकरण (1. वेद + उ°) n. *Hilfsmittel —, Hilfswissenschaft zum Veda* M. 2,105. Madhus. in Ind. St. 1,14,1. 2.

वेदोपबृंहण (1. वेद + उ°) n. *eine Zugabe —, Ergänzung zum Veda* R. 1,4,4. वेदोपबंहण ed. Bomb.

वेदोपनिषद् f. *eine* Upanishad —, *eine Geheimlehre des Veda* Taitt. Up. 1,11,4.

वेदोपबृंहण (1. वेद + उ°) n. *eine Ergänzung zum Veda* R. ed. Bomb. 1,4,6. वेदोपबृंहण Schl.

वेदोपस्थानिका (von 1. वेद + उपस्थान) f. *eine Aufwartung bei dem Veda* Hariv. 9661.

वेद्ध (von व्यध्) nom. ag. *Durchbohrer, Treffer* (eines Ziels): लक्ष्यं सर्वगतं चैव शरो मे सर्वतोमुख:। वेद्धा सर्वगतश्चैव Ind. St. 1,302, N. लक्ष्यस्य MBh. 1,7189. als fut.: लक्ष्यं यो वेद्धा स लब्धा मत्सुताम् 6985.

वेद्ध्य (wie eben) adj. *zu durchbohren, zu treffen* (ein Ziel): प्राणो धनु:

शेरा ह्यात्मा ब्रह्म वेद्यमनुत्तमम् ॥ यत्प्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ Mâṇ. P. 42,7. 8. bildlich so v. a. worin man eindringen muss: तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेद्धव्यं (मनसा ताडयितव्यं तस्मिन्मनःसमाधानं कर्तव्यम् Çaṅk.) Muṇḍ. Up. 2,2,2. — Vgl. वेध्य.

वेध् (denom. von वेद), वेधति (धैर्त्ये स्वप्ने च) v. l. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

1. वैध (von 1. विद्) adj. 1) *kundbar, berühmt:* रथ *Kriegsheld* ṚV. 2, 2,3. 8,19,8. 73,1. प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे 5,15,1. AV. 19,3,1. अग्निर्वन्दारु वेद्यश्नो धात् 5,4,2. — 2) *kennen zu lernen, zu erkennen, zu kennen, zu wissen, Gegenstand der Erkenntniss* Kâṭh. 30,1 in Ind. St. 3,462. स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता Çvetâç. Up. 3,19. तं वेद्यं पुरुषं वेद Praçnop. 6,6. Bhag. 9,17. 11,38. वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः 15, 15. MBh. 3,12468. 12471. 13493. 12,11765. 13,821. यं विदित्वा पुरा वेद्यं वेदितव्यं न विद्यते 1077. 6967. 7339. Harîv. 2175. 4873. 11681. Çiç. 12 (= प्रधान Comm.). Kumâras. 2, 15. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 209. Windischmann, Sancara 90. Bhâg. P. 2, 8, 22. Sin. D. 15.16. 116,19. 119,15. 339,9. Dûrgâs. 71,5. Sarvadarçanas. 17,1. 14. Pâṇ. 4,3,21. Sch. MBh. 12,11765. वेदावेद्य Pâṇ. 1,12,31. 75. Mâṇ. P. 102,22. वासुदेवस्ततो वेद्यः als V. zu erkennen MBh. 5,2362. Bhâg. P. 1,1,2. Sin. D. 56. Mâṇ. P. 51,45 (vielleicht वेद्यः zu lesen). मन्यु° anzusehen als Harîv. 7448.

2. वैद्य (von 3. विद्) adj. 1) *zu erwerben* in der Redensart वित्ते वेद्ये *Besitz und Erwerb* so v. a. *Habe und Gut* TS. 1,5,9,2. 6,2,4,3. VS. 18,11. — 2) *zu ehelichen:* सवेद्यावेदन M. 11,34.

3. वैद्य adj. von 1. वेद् gaṇa गवादि zu P. 5, 1, 2. MBh. 13,7389 das eine Mal von Nîlak. durch वेदप्रतिपाद्य erklärt.

वेद्यत्व (von 1. वेद्य) n. *Erkennbarkeit* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 209. Nîlak. 229.

वेद्यन्त (2. वेदि + यन्त) m. *Ende oder Rand des Opferbettes* Çat. Br. 3, 5,1,27. 5,1,5,13. 10,2,2,1. Lâṭ. 1,1,24. 2,2,25.

वेद्यभिः (von 1. विद्) f. instr. plur. adv. *merklich, offenbar; wirklich, in der That:* रायाणा महतो वेद्याभिर्नि केळा धत्त ṚV. 1,71,1. न रेवदसि सदुको वेद्याभिर्नि पर्वता निनर्थ 3,56,1. न यातवे इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः 8,9,1. यत्राहं तं वि तुर्वेद्याभिः 10,71,8. Nir. 2, 21. 13, 13. ebenso instr. sg.: यस्ते गोभिरुक्थेर्यैस्तेर्मतो निधिर्तिं वेद्यानट् ṚV. 6,13, 4. Unerklärt bleibt die Bedeutung des Wortes in शचीभिर्वेद्यानाम् 10,22,14.

वेद्यर्ध s. u. 2. वेदि 4).

वेध (von व्यध्) 1) m. *a) Durchbohrung* AK. 3,3,8. H. 1523. von Perlen Varâh. Bṛh. S. 81,22. मणि° Sarvadarçanas. 180,6. *das Treffen eines Geschosses* MBh. 8,3613. बाणवेधे परं पत्रमकोटात् 12,6300. *Durchbruch:* यत्र यत्र विवेदौघवेधं सलिलविप्लवे । तत्र तत्र वितस्तापाः प्रवाहाबृहतान्व्यधात् ॥ Râǵa-Tar. 5,95. — *b) Durchstich, Oeffnung* Schol. zu Kâṭh. Ça. 6,1,29. 30. शोणितेन सिरावेधादिसर्पता Suçr. 2,344,20. — *c) Tiefe, Vertiefung* Colebr. Alg. 97. 103. अङ्गुलमेकं नाभिर्वेधेन Varâh. Bṛh. S. 58,23. — *d) Fixirung des Standes der Sonne oder der Sterne* Varâh. Bṛh. S. 3,3 (vgl. Kern in der Uebers. z. d. St.). Gaṇit. Bhagrahas. 6, Comm. वेधेन यद्दृश्यानम् Goladhy. 11,13, Comm. Weber, Kṛishṇaǵ. 227. °बल्य Colebr. Misc. Ess. II, 325. — *e) Bez. eines best. Processes, dem das Quecksilber unterworfen wird,* Sarvadarçanas. 100,7. लोह° 13. देह° 14. — *f) ein best. Zeitmaass,* = 100 Truṭi = 1/3 Lava Bhâg. P. 3,11,6. VP. 22, N. 3. — *g)* N. pr.; s. u. वेधस् 3). — 2) f. या mystische Bez. *des Buchstabens* म Weber, Rikat. Up. 336. — Vgl. सर्व°, कर्ण°, मह्य°, हेम°, शब्द°.

वेधक (wie eben) 1) m. *a)* nom. ag. *Durchbohrer:* नासानाम् MBh. 13, 1651. von Perlen u. s. w. (= मणिमुक्तादिवेधकर्तृ Comm.) R. 2,83,14 (90,27 Gorr.). — *b) Kampfer* (vgl. भस्म°) Taik. 2,6,39. — *c) eine Art Sauerampfer, Rumex vesicarius* Râǵân. im ÇKDa. — *d)* N. einer Hölle, in welche Verfertiger von Pfeilen gelangen, VP. 208. — 2) n. *Koriander* Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. कृत°, चुक्र°, भस्म°.

वेधन (wie eben) 1) nom. ag. (f. ई). — 2) f. ई *a)* = कर्ण° ÇKDa. und Wilson nach Taik. 2, 8, 33, wo aber nach den Corrigg. कर्णवेधनी zu lesen ist. — *b) Bohrer* Çabdar. im ÇKDa. — *c) Trigonella foenum graecum* Bhâvapr. im ÇKDa. — 3) n. *a) das Durchbohren, Treffen mit dem Pfeile* MBh. 1,5522. कृत° adj. H. an. 2,558. Med. sh. 7. वेधन = विधा Taik. 3,3,232. — *b) das Behängen mit Etwas* (instr.): पाप्मना so v. a. *das Anhängen —, Anthun eines Uebels* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 88. — *c) Tiefe* Colebr. Alg. 97. समुद्रं शरवेधनम् MBh. 5,2042 nach der Lesart der ed. Bomb. — Vgl. कृत° (unter कृतवेधक), दृढ°, भस्म°, मत्स्य°, कर्णवेधनी, वेणि°.

वेधनिका (von वेधनी) f. *Bohrer* (zum Durchbohren von Perlen u. s. w.) AK. 2,10,34. H. 909.

वेधमय (von वेध) adj. (f. ई) *in der Durchdringung bestehend:* दीक्षा Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,30.

वेधमुख्य 1) m. = वेधमुख्यक Râǵân. im ÇKDa. — 2) f. या *Mosthus* ebend.

वेधमुख्यक m. *Curcuma Zerumbet Roxb.* AK. 2,4,4,22.

वेधस् (von 1. विध्) 1) adj. subst. *Verkörr, Diener der Götter; gläubig, fromm, getreu;* häufig parallel oder verbunden mit विप्र und कवि. = मेधाविन् Naigh. 3,15. = सृ H. an. 2,592. = बुध Med. s. 40. = विद्वस् Hir. 258. = पण्डित Viçva im ÇKDa. = विधातृ gewöhnlich bei den Comm. von 1. धा mit वि abgeleitet Uṇâdis. 4, 224. Es heissen auch Götter so und zwar nicht blos solche, die ein priesterliches Amt haben, wie Agni, Bṛhaspati, Soma (ṚV. 1, 65, 10. 5, 43, 12. 9, 26, 3. 102, 4), sondern auch manche andere. Das Wort scheint also von dem Begriff *pius* ausgehend eine allgemeinere Bed. *tugendhaft* überh., *tüchtig, brav* u. s. w. angenommen zu haben, wie das deutsche *fromm* den umgekehrten Weg machte. acc. auch वेधांस् ṚV. 9, 26, 3. 102, 4. या मे मखस्य वेधसो नवीयसो मन्म बुधि 1,131,6. मर्त्यो यज्ञा कवितमः स वेधाः Agni 3,14,1. वेधसे कवये वेद्याय 5,15,1. प्र वेधसश्चितयन्ति मनीषाम् 4, 6,1. 16,2. ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौंस्या 32,11. 7,26,3. अग्निं मन्वत्ति वेधसः 8,15,17. यदी वेधसः समिधे कृण्वते 25,6. 8,43,1. सोमं कवित्वेधा धीमि 40,3. सो चिन्नाम या विवासन्ति वेधसः 8. सोमं चिन्वन्ति वेधसः 9,26,6. 29,2. विप्रा वचोविदो वेधसः 64,23. 101,15. 10,10,1. 61,16. 86,10. 122,8. 177,1. हेतारं AV. 1,11,1. 22,2. 3,9,2. तया तदेधसो विदुः 5,18,14. यानि धर्मे कपालान्युपचिन्वन्ति वेधसः TS. 1,1,9,2. die Marut

RV. 1,64,1. 5,52,13. 54,6. Indra 4,42,7. 6,22,11. Rudra 7,46,1. Çiva MBh. 3,1638. 12253. 14,191. Harıv. 14879. die Açvin RV. 1,181, 7. Dharma MBh. 5,3196. superl.: धर्मिर्वेधस्तम ऋषिः RV. 8,14,2. die Bedd. *klug, verständig* hat das Wort Kir. Nir. 1,6. 66. Verz. d. Oxf. H. 47,b,32. — 2) auf der Herleitung des Wortes von 1. धा mit वि beruhen die Bedd. *a) vollbringend, verrichtend, zuwegebringend:* गम्भीर° Bhâg. P. 4,16,10. — *b) Autor* Râga-Tar. 4,117. Sarvadarçanas. 70,16. — *c) Schöpfer:* प्रथम d. i. Brahman Kumâras. 5,11. Mâlatîm. 14,4. कर्तारः कीर्तिकायस्य नाभूवन्कविवेधसः Râga-Tar. 1,45. so v. a. Prâgâpati MBh. 3,12812. Kumâras. 2,14. Bhâg. P. 4,7,7. Kathâs. 34,45. Purusha oder Purumâs 2,11. Bhâg. P. 4,17,33. Brahman AK. 1,1,1,12. 3,4, 1,8. H. 212. H. an. Med. Hall. 1,6. Bâgh. 1,23. 8,46. Kumâras. 2,16. 7,44. Spr. (II) 171. 1108. 2227. 2330. 2685. (I) 2667. 2460. 2895. fg. 4303. Kathâs. 20,66. 21,118. 28,3. 35,35. 37,131. 72,14. Râga-Tar. 2, 60. Naish. 22,48. Bhâg. P. 3,5,24. übertragen auf Vishṇu (Krishṇa) AK. 3,4,30,230. H. 217. H. an. Med. Hall. 1,25. Bhâg. P. 1,5,31. 2,4,24. 3,17,26. 3,19,29. 10,85,39. — 3) m. *die Sonne* Çabdar. im ÇKDa. — 4) *Calotropis gigantea* (श्वेतार्क) Çabdaç. im ÇKDa. — 5) N. pr. des Vaters von Hariçkandra; s. वेधस. N. pr. eines Sohnes des Ananta ÇKDa. nach dem Vâyu-P.; im angeführten Texte heisst es aber अनन्तस्य च पुत्रो ऽभूद्वेधो नाम महाप्रभुः. — Vgl. कु°.

वेधस 1) n. = ब्रह्मतीर्थ (= सप्तब्रह्ममूल ÇKDa.) Çabdaç. im ÇKDa. — 2) f. ई N. pr. eines Wallfahrtsortes Verz. d. Oxf. H. 18,a,29.

वेधस्यै instr. *in Verehrung* u. s. w.: कविर्वेधस्या पर्यैषि मार्ह्नम् RV. 9,82,2.

वेधित adj. = विद्ध (s. u. व्यध्) *durchbohrt* AK. 3,2,19. H. 1486.

वेधिल (von वेधिन्) n. s. शब्द°.

वेधिन् (von व्यध्) 1) adj. *durchbohrend, treffend* (mit einem Geschosse) Nir. 6,33. निमित्त° *das Ziel treffend* MBh. 5,3480. 6,1658. शब्दबाणाय° *nach dem blossen Gehör* (ohne das Ziel zu sehen) *mit der Pfeilspitze treffend* R. Gorr. 2,102,3. — 2) m. *eine Art Sauerampfer, Rumex vesicarius* Râgân. im ÇKDa. — 3) f. वेधिनी *a) Blutegel* Çabdar. im ÇKDa. — *b) Trigonella foenum graecum* Râgân. ebend. — Vgl. कोटि°, दूर° (auch Nir. 6,33), मर्म°, राधा°, लघु°, शब्द°, सत्त्व°.

वेध्य (wie eben) 1) adj. *zu durchbohren, zu durchstechen:* कर्णौ Vaiân. Dhn. S. 98,17. रज्ज Kathâs. 40,11 (अ°). Kull. zu M. 9,286. धारामुखेन वै चर्म नुत्प्रेण च कार्मुकम्। सूचीमुखेन कवचमर्धचन्द्रेण मस्तकम्। भल्लेन हृदयं वेध्यम् Çiâs. Padma. 80,64 bei Aufrecht, Hall. Ind. unter धारा. *aufzustechen* z. B. eine Ader Suçr. 1,14,20. 29,5. 92,16. 2, 270,18. — *b) nach dem Stande zu fixiren:* कौलेन रवेर्हृदयो वेध्यः Gaut. Bhâgân. 6, Comm.; vgl. वेध. — *c)* fehlerhaft für बन्ध्य (बंध्य) *anzubinden, anzuheften* im Citat beim Schol. zu Çiç. 80. — 2) f. या *ein best. musikalisches Instrument* H. ç. 87. — 3) n. *Ziel* H. 777. Hall. 2,312. प्राणो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म वेध्यमुत्तमम् Mbh. P. 42,7. — Vgl. ब्रह्मवेध्या, शब्दवेध्य und वेद्धव्य.

वेन्, वेनति Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). 14 (गतिकर्मन्). 3,14 (सर्वतिकर्मन्). Dhâtup. 21,13, v. l. (गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रयत्नेषु). 1) *sich sehnen, verlangen* RV. 1,25,6. 43,9. विद्वा कामस्य वेनतः 86,8. 9,97,33. 10,61,13. वेनन्ति वेनाः 64,3. हृदा न वेनन्तः 123,6. ऊर्धा अन्ये प्राणा वेनन्त्यवासो Sny. *hinaussehnen* Ait. Br. 1,20. पदा स्थानात्प्रच्युतो वेनसि त्मना *wenn du Heimweh empfindest* TBr. 3,7,12,1. प्रक्षिन्निषमाणो Sâyaṇ. *sehnte sich nach der Geburt* Çat. Br. 7,4,2,14. — 2) *neidisch sein auf Etwas:* चमसो नवेनस्रष्टा चतुरो ददृश्यात् RV. 4,33,6. यो अस्मध्रुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति 8,49,7. — Vgl. अवेनत्, 1. वन् und वेण्.

— अनु *anzulocken suchen:* उत माता महिषमन्ववेनद्मी वो वक्षति पुत्र देवाः RV. 4,18,11. यत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणो अनु वेनति 10, 135,1. 2. TBr. 1,3,5,2.

— अप *sich verschmähend abwenden:* अभि प्रेहि मा पप वेनः AV. 4,3,2.

— वि dass.: मा प्र देव मा वि वेनः RV. 5,31,3. 38,4. 75,7. 78,1. 5, 44,10. TBr. 2,4,2,4. — Vgl. अविवेनम्.

वेनी (von वेन्, Unâdis. 3,6. 1) adj. *sehnsüchtig, verlangend, begierig; liebend;* = मेधाविन् Naigh. 3,15. वेनो न प्रेणुधी रुवम् RV. 9,3,18. बृहस्पतिर्यजति वेन उक्थैः 1,139,10. 8,52,1. 10,123,1. अभि वेना अनूषत 9,64,21. वेना दुरुक्तयुतयो गिरिष्ठाम् 85,10. गिरो वेनानाम् 11.73,2. गिरिं न वेना अधि रोहतं तसा 1,56,2. वि सीमतः सुरुचो वेन आवः VS. 13,3. वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सत् 32,6. ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि 1,83,5. वेनी f.: तस्य वेनीरनु व्रतमुषस्तिस्रो अवर्धयत् 8,41,3. — 2) m. *a) Sehnsucht, Verlangen, Wunsch;* = यज्ञ Naigh. 3,17. अस्मिन्निषाड्मिन्द्रो दधाता वेनमादिशे RV. 9,21,5. वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः 4,58, 4. या पन्था वेना अदृक्षतामृतस्य 8,89,3. वेनन्ति वेनाः 10,64,2. 1,61,14. AV. 18,3,2. — *b) das mit den Worten* यमं वेनः *beginnende Lied* RV. 10, 123 Çâṅkh. Br. 8,5. — *c)* N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. RV. 10,93,14. Pravarâdhy. in Verz. d. B. 55,4. mit dem patr. on. Bhârgava Liedverfasser von RV. 9,85. 10,123. eines Fürsten, Vaters des Pṛthu, MBh. 1,227 (b.). 2140. 2,326. 12,2214. fgg. Harıv. 74. fgg. 293. fgg. VP. bei Uéâval. zu Unâdis. 3,6. Bhâg. P. 4,13,14. fgg. 7,2,16. 10,73, 20. Mârk. P. 27,13. eines Vjâsa Verz. d. Oxf. H. 80,a,12. पार्थववेनानाम् Pravarâdhy. in Verz. d. B. 55,5; vgl. वेण, wie das Wort öfters unrichtig geschrieben wird. — *d)* nach den Commentatoren ein göttliches Wesen des mittleren Gebiets Naigh. 5,4. Nir. 10,38. z. B. RV. 10,123,1. Indra Çâṅkh. Br. 8,5. die Sonne z. B. VS. 13,3. Nir. 1,7. Çat. Br. 7,4,2, 14; vgl. auch RV. 1,83,5. = प्रजापति Uéâval. ein Gandharva Sis. zu Mâṇḍûkîn. Up. in Ind. St. 2,84. Beziehung des Wortes auf den Nabel Ait. Br. 1,20. Sis. z. d. St. — 3) f. या *Sehnsucht* u. s. w.: सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः *unser Durst nach* Soma *kennt jeder* RV. 1,34,2. vielleicht nur Dehnung st. वेनम्. — Vgl. वैन्य und वेण.

वेनोविशाले n. du. N. zweier Sâman Ind. St. 2,237,b.

वेर्णा f. Unâdis. 3,5. N. pr. eines Flusses Uéâval. — Vgl. वेणा, वेण्वा.

वेर्य (von वेन्) 1) adj. *begehrenswerth, liebenswerth:* इमा मातानिं वेन्यस्य वाजिनः RV. 2,24,10. वर्धद्यशे वेन्यो व्यावः 6,44,5. — 2) m. N. pr. eines Mannes RV. 10,148,5. zweifelhaft 171,2.

वेप s. 1. विप्.

वेप (von 1. विप्) 1) adj. (f. ई) *schwingend, bebend:* वेपी वक्वरी यस्य नू गीः RV. 6,22,5. — 2) m. *das Beben, Zucken, Zittern:* यक्ति° Kâç. 58. यक्ष्म° Bhâg. P. 2,7,24.

वेपथु (wie eben) 1) m. *das Beben, Zucken, Zittern* P. 3,3,89, Schol.

(oxyt.). Vop. 26,178. AK. 1,1,3,38. H. 306. Halâj. 2,446. der Erde AV. 12,1,18. बाष्प° R. 2,59,27. वेपथुश्च शरीरे मे जायते Bhag. 1,29. हृदये MBu. 1,1393. मृत्युकाले हि भूतानां सद्यो जायते वेपथुः 13,5706. °परीत R. 2,65,14. Sûçr. 1,15,14. 256,1. Kâm. Nîtis. 7,25. 14,61. भय° Ragh. 19,28. °भृतो नववधूकरतः Çiç. 9,73. स्तन° Çiç. 29. Spr. 2016. Sâh. D. 56,16. 167. 232. Pratâpar. 50,b,3. Bhâg. P. 1,14,11. 3,19,22. 8,17,6. 10,30,17. संजातवेपथुभिरङ्गैः Vikr. 147. Bhâg. P. 4,4,2. 17,26. 28,14. स° adj. *zitternd* Kathâs. 25, 90. von *Zittern begleitet:* सवेपथूनि सुरतानि Kumâras. 4,17. Sûçr. 1,263,16. धृति° adj. *heftig zitternd* Brahma-P. in LA. (III) 57,19. — 2) adj. (l) *zitternd* Varâh. Bṛh. S. 17,9.

वेपथुमत् (von वेपथु) adj. *zitternd:* दृष्टि Çiç. 22. कर Mârk. P. 74,17. Spr. 2470 (II). 2671. धृति° Çiç. 9,77.

वेपनँ (von 1. विप् simpl. und caus.) 1) adj. *bebend, zuckend* TS. 2, 6, 8,6. 9,2. Çat. Br. 1, 5, 4, 2. Sûçr. 1,256,5. Herz Varâh. Bṛh. S. 68,28. Sterne 3,32. das Licht einer Lampe 84,1. — 2) n. a) *das Beben, Zucken, Zittern* Çaṅkar. im ÇKDa. °कर R. 7,23,4,42. des Auges Gorr. 3,3,27. Sûçr. 1,348,13. 365,15. Varâh. Bṛh. S. 46,23. गात्र° Pratâpar. 50,b,3. — b) *das Versetzen in eine schwingende Bewegung:* धनुषः R. 1,67,10. — Vgl. निर्वेपन.

वेपस् (von 1. विप्) n. *das Zucken, Beben, Zappeln; Aufgeregtheit;* = कर्मन् Naigh. 2,1. न वेपसा न तन्यतेन्द्रं वृत्रो वि बभीषयत् ṚV. 1,80,13. प्र शिक्षया भरते वेपो अग्निः 10,46,3. वेपसा स्तवानः 4,11,2. = धनवत् (vgl. रेपस्) Uṇâdis. im ÇKDa. — Vgl. गभीर°, गम्भीर°, गायत्र°, पुरु°, विश्वायु°.

वेपिष्ठ superl. zu विप्र. वेपिष्ठो अङ्गिरसां विप्रः ṚV. 6,11,3.

वेम (von 3. वा) m. *Webstuhl* Çaṅkar. im ÇKDa. सु° MBu. 1, 806. — Vgl. वेमन्.

वेमक m. wohl *Weber* Hariv. 11077. वेमकी *die Frau eines Webers* 11078. वेमको नाम स्वर्गस्थः काश्चिदृषिः Nilak.

वेमचित्र m. N. pr. eines Fürsten der Asura Buan. Intr. 168. Lot. de la b. l. 3. Schiefner, Lebensb. 263 (33). °चित्रिन् Lalit. ed. Calc. 299,13.

वेमन् (von 3. वा) Uṇâdis. 4,149. gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75. पामादि zu 5,2,100. m. *Webstuhl* AK. 2,10,28. H. 913. m. n. Uṇâdis. zu Uṇâdis. तुरीवेमादिकम् Tarkas. 22. n. VS. 19, 82. *Weberblatt* Comm. zu TBr. 2,670. — Vgl. वेमन, वैमन.

वेमनँ adj. von वेमन् gaṇa पामादि zu P. 5,2,100. — Vgl. वैमन.

वेयच्छला f. Titel eines Kapitels in der Sâmavedakhilâ Verz. d. Oxf. H. 387,a,20. fg.

वेर 1) m. n. *Körper* Trik. 3,3,372. H. 563. an. 2,459. Med. r. 86. Vgl. कुवेर. — 2) n. *Safran* Trik. H. an. Med. — 3) n. *die Kletpflanze* H. an. Med.

वेरक n. *Kampher* Hîn. 104.

वेरट m. (odor adj.) = मिश्रीकृत und नीच, n. = वारीफल (d. i. बदरीफल) H. an. 3,171.

वेराचार्य (वेरा°?) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

1. वेल्, वेलति (चलने) Dhâtup. 15,28. — Vgl. वेल्ल्.

— उद्, उद्वेलस् Milârtha. 140,2 fehlerhaft für उद्वेल्लस्.

2. वेल्, वेलयति (कालोपदेशे) Dhâtup. 35,28. denom. von वेला.

वेल 1) n. *Garten, Park* H. 1111. — 2) *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 180. 182. Mél. asiat. 4, 639.

वेला f. 1) *Endpunkt, Grenze* AK. 3,4,26,200. H. an. 2,310. Med. l. 41. Çat. Br. 2,4,4,6. 12. चात्वाल° 7,1,1,36. यागीय° 9,2,3,15. ते रेतःसिचेर्वेलयोपदधाति *an dem Punkte* d. h. *in der Entfernung der beiden* Rel. 7,5,1,13. 8,1,3,10. 5,1. 6,1,4. लक्षणानि कुरुते राज्ञां वेलार्थानि *Zeichen, welche die bestimmten Punkte* d. h. *Entfernungen* oder *Maasse bezeichnen,* Kâtj. Çr. 17,4,26. यत्र स्रोतोता कुरुधर्मवेला प्रेतस्ति MBu. 2,2236. यभिन्नवेलो गम्भीरावम्बुराशिर्भवानपि *Grenze* und *Küste* Spr. (II) 489. — 2) *Grenze des Landes und der See, Gestade, Küste* Trik. 3,3, 403. H. an. Med. Çâçvata bei Mallin. zu Kir. 3,60. वेलामिव समासाद्य व्यतिष्ठन् MBu. 1, 8260. ततः समुद्रः स्वां वेलामतिक्रामति 3, 12888. 4, 578. 6, 4784. तं निवारयामास तदा वेलेव मकरालयम् 14, 2206. Hariv. 786. मुमुचुः पुष्पसंघातं तोयं (so die neuere Ausg.; hiernach तोयवेला zu streichen) वेलेव वर्षति 12014. राज्यं च तव रत्नेयमक्षे वेलेव सागरम् R. 2,23,29. तवैव वचनं वप्तम्। नातिक्रामामहे सर्वे वेलां प्राप्येव सागरः॥ 67, 32. 112, 18. R. Gorr. 2, 11, 5. 30, 30. 122, 26. 3, 41, 25. 4, 41, 26. 5, 74, 16. 6, 93, 28. 103, 18. 108, 20. 7, 8, 1. Ragh. 1, 30. 8, 79. 10, 26. 13, 15. 16, 2. 27. 17, 27. 18, 42. Kumâras. 7, 26. 73. Spr. (II) 1993. Râga-Tar. 3, 511. Bhâg. P. 4, 31, 2. 9, 10, 12. 19, 45, 38. 78, 2. वेलातिगो (so die ed. Bomb.) ऽर्णवः MBu. 2, 895. वेलानिल *ein von der Küste blasender Wind* Ragh. 13, 12. 16. Râga-Tar. 4, 535. वेलालोलमरोर्मि *Wellen, die gegen die Küste rollen,* R. 5, 9, 12. °वीचि dass. Kir. 3, 60. वेलोर्मि dass. Râga-Tar. 8, 1594. तीरोद्वेलानिलय *Küstenbewohner* R. 4, 37, 38. °वन *ein an der Küste gelegener Wald* Hâlâs. 3, 32. MBu. 3, 16290 (°वल्ल ed. Calc.). Hariv. 5170. R. Gorr. 1, 43, 14. 5, 74, 14. 24. Kathâs. 19, 109 (वेलावनेषु zu schreiben). 22, 177. 230. Râga-Tar. 3, 31. उल्लघितवेलाद्रि 4, 512. वेलाद्रि Kathâs. 91, 4. °तट Ragh. 4, 44. 18, 22. Spr. 3253. Kathâs. 19, 91 (वेलातटान्ते). 22, 248. 67, 80. 83. भिन्नवेल इवार्णवः Hariv. 2465. उपगूढवेल Çiç. 9, 38. — 3) die personificirte *Küste* ist eine Tochter Meru's von der Dhâriṇî und Gattin Samudra's (*des Meergottes*) VP. 85, N. 11. — 4) *Zeitgrenze, Zeitpunkt, Zeitraum, Tageszeit, Stunde; Gelegenheit* AK. H. 1509. H. an. Med. संवत्सरवेलायाम् *binnen eines Jahres* Çat. Br. 7, 4, 2, 33. 11, 1, 6, 1. यस्यामेवैनं वेलायां पुरा पित्वयस्ति 4, 5, 7, 4. त्रत्यवेलां प्रोप्य *über die Dauer von* Çânku. Ça. 3, 4, 11. प्रातरनुवाक° 16, 18, 16. एतस्यां वेलायां प्राप्नोयुः *zu dieser Stunde* Lâṭj. 2, 2, 3. 3, 12. एव°, त्रीहि° 8, 3, 7. यागि° Âçv. Gṛhj. 4, 6, 5. संवेशन° Gobh. 4, 9, 11. Nir. 12, 13. संगव° Kâṭhân. Up. 2, 9, 5. तं मुहूर्तं तां वेलां दिवसं च युयोज ह MBu. 3, 16753. Sûçr. 1, 104, 17. इमामुग्रातयां वेलाम् Çiç. 32, 13. fg. वेलोपलक्षणार्थम् 46, 6. Varâh. Bṛh. S. 3, 18. °क्षीने पर्वणि *bei einer vor der bestimmten Zeit stattfindenden Verfinsterung* 34. 32, 27. Bṛh. 26 (24), 4. 11. 14. Kathâs. 30, 98. वेला व्यतिक्रान्ता ममाक्षारे कथं त्वया 60, 99. वह्निर्वेलां तदुल्लामत्यवाक्ष्यत् Râga-Tar. 4, 572. वेलातिक्रम Pâṇâd. 55, 5. 6. काश्चितवेलोपरि नागतः Çuk. in LA. (III) 37, 15. fg. घोरतमा Bhâg. P. 3, 14, 22. विचार्य वेलां प्रष्टव्यः Verz. d. Oxf. H. 155, b, 22. तासु वेलासु MBu. 1, 6445. यस्यां वेलायाम् 3, 16839. Mṛkkh. 24, 6. तां वेलाम् *zu dieser Stunde* MBu. 4, 735. वेलायाम् *zur rechten Stunde* gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. Bhâg. P. 8, 16, 8. संधि° M. 4, 58. प्रभात° R. 1, 28, 38. मध्याह्न° Pâṇâd. 10, 5. सप्तमन° 163, 20. पश्चिमा *Abendstunde* MBu. 3, 2536.

Harîv. 2975. किमद्य चिरवेलया समायातोऽसि *so spät* Pañcat. 207, 13. प्रकृष्टसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः Spr. (II) 2468. पुट° Harîv. 2465. फल° Spr. (II) 679. प्रत्यादेशवेलायाम् Çiç. 82, 8. तदुक्तं गुरुभिः सर्वप्रतिकारणवेलायाम् *bei der Gelegenheit als* Sarvadarçanas. 129, 17. क्षेम° Bhâg. P. 9, 16, 8. घातिघ्य° 10, 72, 17. गरुड° Kathâs. 22, 217. भिनु° 63, 88. अन्धः स्यादन्धवेलायाम् *wenn es gilt blind zu sein* Spr. (II) 360. mit infin. oder mit यद् und potent. P. 3, 3, 167. *fg.* वेलां प्रकृ *auf eine Gelegenheit warten, lauern* Râjat. 8, 824. सप्तवेलम् *sieben Mal* Çiç. 8, 11, 28. एकविंशति° 13, 24. अनुवेलम् *gelegentlich* Bhâg. P. 3, 16, 20. — 5) *die Essenszeit eines vornehmen Herrn* ईश्वरस्य भोजनम् Trik. 3, 3, 403. H. an. Med. *the food of* Çiva Wilson. — 6) = अन्तवेला *die letzte Stunde, Todesstunde:* स्वां वेलां प्राप्य Bhâg. P. 3, 18, 25. = अनिष्टमरण *ein sanfter Tod* H. an. Med. — 7) *die Zeit des Meeres so v. a. Fluth* (Gegens. *Ebbe*) AK. H. 1076. H. an. Med. Hall. 3, 32. 5, 53. Çiçupâla a. a. O. समुद्र° Maitrâyan. 4, 8. °दोलानिलचल (so ed. Bomb.) MBh. 1, 1214. क्रोधो ऽयं न शक्यते वारयितुं वेलेव लवणाम्भसा R. 3, 28, 2. Ragh. 12, 36. वेलया वर्धमानया Râjat. 4, 529. सा दृष्ट्वैवानिरुद्धं तमुषाः। सालाडुपागतम्। अमृतांशुमिवाम्भोधिर्वेलयाङ्गेऽवर्तत (so ist zu verbessern) || Kathâs. 31, 22. 43, 195. 123, 111. 226. Pañcat. 75, 24. पूर्णिमादिने समुद्रवेला चटति (so ed. Bomb.) 74, 22. Hit. 72, 9. युगान्तानिलसंक्षुब्धो मकरवेलाविवर्धनो MBh. 1, 8351. निवृत्तवेलः समय प्रसन्न इव सागरः R. 5, 87, 7. नदी° *starke Strömung eines Flusses* Spr. 2684, v. l. für नदीवेग. — 8) = रोग *Krankheit* Med. राग v. l. nach ÇKDa. — 9) *Zahnfleisch* Hir. 268. — 10) = वाच् *Rede* Viçva im ÇKDa. — 11) N. pr. *a*) der Gattin Buddha's H. an. Viçva im ÇKDa. — *b*) einer an einer *Küste* aufgefundenen Königstochter Kathâs. 67, 33. fgg. nach ihr der 11te Lambaka in diesem Werke benannt 1, 7. — Vgl. घकाल°, घतिवेलम् (auch MBh. 5, 952. घनतिवेलम् *in ganz kurzer Zeit* Bhâg. P. 4, 21, 39), अनुवेलम् (*gelegentlich* Bhâg. P. 3, 16, 20), घत्तवेला, उद्वेल, ऋतुवेला, कुलिक°, प्रतिवेलम्, भोजनवेला, लघ°, सु°.

1. वेलाकूल n. *Ufer* (und zwar *Flussufer*) Bhâg. P. 6, 5, 16.

2. वेलाकूल 1) adj. *an der Küste gelegen:* देश Bhâg. P. 10, 67, 5. — 2) n. = तामलिप्त Trik. 2, 1, 11.

वेलाय् denom. von वेला *gaṇa* कण्ड्वादि *zu* P. 3, 1, 27.

वेलायनि (wohl वै°) m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57, 29.

वेलावलि f. *a particular scale in Hindu music* As. Res. III, 78 nach Haughton.

वेलाविद्ध m. *Bez. eines best. Beamten* Râjat. 6, 78. 106. 127. 324.

वेलिका (von वेला) adj. f. *an der Küste gelegen:* भू Harîv. 8416.

वेलिभुक्प्रिय *wohlriechender* Âmra Çabdar. im ÇKDa. wohl fehlerhaft für बलिभुक्प्रिय.

वेलुच *eine best. hohe Zahl.* Vjutp. 180. Mél. asiat. 4, 640.

वेल्, वेल्लति (चलने) Dhâtup. 15, 22. *taumeln, schwanken, sich wiegen, wogen:* वेल्लति नवपरिणया वधूः Kâdaṃb. 154, 10. दिव्यामवारमसीववेल्लद्विद्याधर (वल्लद् gedr.) Kathâs. 110, 87. वेल्लद्बलाका घनाः Bâlar. D. 16, 5. वेल्लद्वैरवभूरिरण्डनिकरैः Uttarar. 93, 12 (121, 6). वेल्लद्वीचिर्मरुन्मरी Kathâs. 39, 144. 120, 11. वीचिवेल्लदुडुलता 71, 2. वातवेल्लल्लतालतालवृत्तैः 196. 109, 11. वातवेल्लद्ध्वज 60, 60. वेल्लद्भङ्गाडुकूला Râjat. 1, 57. 64. वेल्लित *wogend* AK. 3, 2, 36. H. 1481. an. 3, 305. Med. t. 161. कुसुमितलता Kâdaṃb. 98. *gebogen, gekrümmt* AK. 3, 2, 21. H. 1456. H. an. Med. Hall. 4, 11. किंचिद्वेल्लितोरुद्दण्डयुगल Daçak. 90, 12. केशान्वेल्लितायान् *sich kräuselnd* (vgl. H. ç. 117) MBh. 4, 244. भ्रूभङ्गवेल्लितवलीनिर्मोक्षतललाटभूः Râjat. 8, 2373. n. = गमन Med. *das Wälzen eines Pferdes* H. 1245. — Vgl. कुसुमितलतावेल्लिता.

— अनु partic. °वेल्लित *untergeschoben:* दक्षिणपादपार्श्वयोर्भागानुवेल्लितेतरचरणायतपृष्ठम् Daçak. 90, 10. — Vgl. अनुवेल्लित.

— उद् *sich aufrichten, sich erheben:* उद्वेल्लद्दनुरण्डखण्डनिकरा (उद्वेलद् gedr.) Mâlatîm. 140, 3. वायुः प्रावर्तताकस्माद्धातुमुद्वेल्लितार्णवः Kathâs. 120, 110. संभ्रमोद्वेल्लच्चमरीवालोघ 39, 42.

— वि *beben, zittern:* वाक्ष्य केशेषु शिरस्तस्य विवेल्लतः। प्रव्राजकस्य चिच्छेद खड्गेन Kathâs. 18, 174. 44, 152.

वेल्ल n. *eine best. gegen Würmer angewandte Pflanze* AK. 2, 4, 2, 34. — Vgl. कार°.

वेल्लक und वेल्लिका s. कार° unter कारवेल्ल und vgl. वेल्लिकाख्या.

वेल्लज n. *Pfeffer* AK. 2, 9, 35. H. 420. Hall. 2, 461.

वेल्लन (von वेल्) 1) n. *a*) *das Wogen:* वेलोर्मि° Râjat. 8, 1594. *das Wälzen eines Pferdes* Trik. 2, 8, 16. — *b*) *Walze* (zum *Walzen von Teig*) Bhâvapr. im ÇKDa. — 2) f. ई *ein best. Gras,* = मालादूर्वा Râjân. im ÇKDa.

वेल्लत्तर m. = वीरतरु Bhâvapr. im ÇKDa.

वेल्लवल्ल m. = केलिनागर Gaṇîdn. im ÇKDa.

वेल्लि f. = लता Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. वल्लि.

वेल्लिकाख्या f. *Trigonella corniculata Lin.* Çabdâv. im ÇKDa. वेल्लिका Wilson nach ders. Aut.; vgl. u. वेल्लक.

वेल्लितक (von वेल्लित) 1) m. *eine best. Schlange* (*kreuzweis gestreift*) Suçr. 2, 200, 7. — 2) n. *Kreuzung:* वेल्लितकेन बद्धा *kreuzweise, gekreuzt* Suçr. 2, 20, 9. वेल्लितकं (adv.) सीव्येत् 1, 93, 17.

वेल्लूर N. pr. eines Districts, das jetzige Vellore, Vâsiṣṭh. Dh. S. 14, 14 (hiernach कृष्ण° zu streichen).

वेविर्त् (vom intens. von 1. विश्) adj. *auffahrend, schnell* RV. 1, 140, 3.

वेषी, वेवीते (= वी) ved. Dhâtup. 24, 69. Conjug. P. 6, 1, 6. 7, 4, 58. Pat. zu P. 7, 2, 10. Vop. 9, 45. *fg.* वेव्यते P. 6, 1, 6, Schol. घावेव्य (absol.), घावेव्यते, घावेविता, घावेवीत 7, 4, 58, Schol. परिवेविषीधम् 8, 3, 78, Schol. — Vgl. वि und घावेव्यक *fg.*

1. वेश् (von 1. विश्) m. 1) (*abhängiger*) *Nachbar, Hintersass, Dienstmann:* वेश, घापि, भ्रातृ RV. 4, 3, 13. 5, 85, 7. यद्दे वेशं नृममायवे ऽकरम् 10, 49, 8. सद्मा घस्य वेशा भवन्ति Kâṭh. 31, 13. °यमन 32, 4. Hierher dürfte auch वैश (vgl. P. 3, 3, 16) gehören: वैशीं घग्ने घारयेद् VS. S. 56, 1 v. u. — 2) = वास्तु° *Zeit* MBh. 5, 5155. = गेह, गृह *Haus* H. an. 2, 334. Med. c. 13. — 3) *Prostitution, Hurenwirthschaft, Hurenhaus* AK. 3, 3, 1. H. 1003. H. an. Med. वेशेन जीवन् *Hurenwirth* (vgl. P. 4, 4, 12 nebst *gaṇa* वेतनादि) M. 4, 84. दशाश्वसमो वेशो दशवेशसमो नृपः 85. 9, 264. Kathâs. 17, 129. नक्षत्रैर्न्यायाद्भिरेव पुरुषा वेशमुपतिष्ठन्ति Daçak. 82, 6. 7. न वेशजाताः शुचयस्तथाङ्गनाः Spr. 1416. — 4) *Gewerbe* (zur Erklärung von वैश्य) Mnu. ST. 1, 6, 1; vgl. u. 1. विश् 6). — Vgl. घग्नि°, घश्व°, दास°, प्रति°, वस्त्र°, स°, घनुवेश्य, वैशिक.

2. वेश s. वेष.

वेशक (von 1. वेश) m. *Haus* Çabdar. im ÇKDa.

वेशकुल (1. वेश + कुल) n. sg. *Huren* Daçak. 82,6.

वेशत्व (von 1. वेश) n. *Nachbarschaft, Sassenschaft* Kîrṇ. 12,8.

वेशन (von 1. विश्) n. *das Hereintreten* Bulc. P. 10,12,26.

वेशनद् m. N. pr. eines *Flusses* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,4.

वेशन्त Uṇâdis. 3,126. m. *Teich* AK. 1,2,2,28. H. 1098. Hall. 3,52. वेशन्ती f. AV. 11,6,10. 20,128,8. 9. parox. TBa. 3,4,4,12. वेशन्तीय AV. 4,3,7. वेशान्ता Çat. Ba. 14,7,2,11 (= Bṛn. Âr. Up. 4,3,10. वेशान्त m. ed. Pol.). वेशन्त m. angeblich = सप्ति Uṇâdis. im ÇKDa. — Vgl. वैशन्त.

वेशभाव m. *Hurenart* Mṛicch. 120,21.

वेशयुवति (1. वेश + यु°) f. *Buhldirne* Bhar. Nâṭyaç. 18,48.

वेशयोषित् (1. वेश + यो°) f. dass. Harîv. 8309. Kathâs. 12,91.

वेशर s. वेसर.

वेशवधू f. = वेशयोषित् Harîv. 8426.

वेशवनिता f. dass. Spr. (II) 2570.

वेशवस्त् (von 1. वेश) adj. *ein Hurenhaus haltend, Hurenwirth* Koll. zu M. 4,84. fg.

वेशवार s. वेसवार.

वेशवास m. *Hurenhaus* Mṛicch. 13,12. fg.

वेशस् P. 4,4,131. m. = 1. वेश 1): कृतासौ अस्य वेशसौ कृताम: परि-वेशस: AV. 2,32,5. = वल P. 4,4,131, Schol.

वेशस s. यज्ञ°.

वेशस्त्री f. = वेशयोषित् MBu. 5,904 nach der Lesart der ed. Bomb. (वेश्मस्त्री ed. Calc.). Bhar. Nâṭyaç. 18,46. वेशकुलस्त्री° 49.

वेशास्त und वेशास्ता s. u. वेशन्त.

वेशि (aus dem griech. φασις) Bez. *des zweiten Hauses von demjenigen, in welchem die Sonne steht*, Varâh. Bṛn. 22(20),1. 23(21),7. Lagnâv. 9,6 in Ind. St. 2,234. f. ohne Angabe einer Bed. Siddh. K. 247,b,1 v. u.

वेशिक n. Bez. *einer best. Kunst* Lalit. ed. Calc. 179,5. — Vgl. वैशिक.

1. वेशिन् (von 1. विश्) adj. *hereintretend:* काम° Harîv. 4512. कामवे-शिन् *nach Belieben sich ein Aussehen gebend* würde auch passen; die neuere Ausg. hat eine ganz andere Lesart.

2. वेशिन् s. वेषिन्.

वेशी f. *Nadel* (nach Sây.): सर्वं सक्तीर्वेश्यावश्यत् RV. 7,18,17.

वेशीजाता f. *eine best. Pflanze*, = पुत्रदात्री Râjân. im ÇKDa.

वेशोभगीन und वेशोभग्य ved. adjj. von वेशस् + भग P. 4,4,132. 131.

वेश्मक adj. von वेश्मन् gaṇa मयट्यादि zu P. 4,2,80.

वेश्मकलिङ्ग (वेश्मन् + क°) m. *Sperling* Râjav. im ÇKDa. — Vgl. das folgende Wort.

वेश्मकुलिङ्ग m. = गृहकुलिङ्ग Suçr. 1,202,8.

वेश्मकूल m. eine best. Pflanze, = चचेण्डा Râjân. im ÇKDa.

वेश्मन् (von 1. विश्) n. 1) *Haus, Hof, Wohnung, Gemach* AK. 2,2,4. 3,4,28,53. H. 989. Hall. 2,136. 144. RV. 10,107,10. 146,3. AV. 5,17, 13. या वेश्मनि स गार्हपत्य: 9,6,20. Ait. Br. 8,24. Çâṅkh. Br. 27,6. Gṛhy. 1,12. राज्ञापारो विशं प्राचमापाप्येकवेश्मनैव श्रिणाति Çat. Ba. 1,3,2, 14. Âpast. 2,23,3. 3 (eines Fürsten). Kaṭhân. Up. 3,14. M. 4,73. 230. 5, 122. 9,65. 150. गृहस्य 11,13. MBa. 3,1324. 2144. 2155. 2279. 2721. सा-रुरोह मरुद्वेश्म 2868. 2882. R. 2,26,5. 32,24. 47,19. 77,3. Suçr. 2,4,10. Hasân. 14,18. Spr. (II) 2578. Varâh. Bṛn. S. 33,4. 53,6. 65,1. 11. 89,6. 9. 92,3. Kathâs. 18,261. 28,140. 29,169. Râjat. 4,73. तमग्निं संप-रिक्रम्य प्रविवेश स्ववेश्मवत् Paṇḍav. III, 172. Bulc. P. 3,23,26. पितृ° M. 9,172. Spr. 1777. मातृ° Verz. d. Oxf. H. 268,a,38. अन्य° M. 11,164. परवेश्मस्था AK. 2,6,2,18. परवेश्मगा Bulc. P. 3,11,9. भूपति° Hall. 2, 180. वेश्या° Râjat. 5,235. Prasn. 19,12. चाण्डाल° Spr. 1605. जतु° MBa. 1,7082. शिला° Megh. 26. विश्राम° Harîv. 3905. सर्ववेश्मनि M. 7,223. 8,69. — 2) *Haus in astrol. Sinne* Varâh. Bṛn. 17,4. — 3) Bez. *des 4ten astrol. Hauses* (= ὑπόγειον, also eig. *ein unterirdisches Gemach*) Varâh. Bṛn. 1,18. Lagnâv. 1,16 in Ind. St. 2,281. — Vgl. एक°, क्रीडा°, गर्भ°, देव° (auch Râjat. 5,167), पट°, पायुलालन°, प्रति°, बन्धन°, बलि°, मेघ°, रात्र°, लीला°, वस्त्र°, वास°, विद्या°, श्मशान° und वेश्मीय.

वेश्मनकुल (वेश्मन् + न°) m. *Moschusratte* Trik. 2,5,11. Çabdar. im ÇKDa.

वेश्मभू (वेश्मन् + 2. भू) f. *der Platz, auf dem ein Haus steht*, AK. 2,2,19.

वेश्मवास m. = वासवेश्मन् *Schlafgemach* Kathâs. 55,223.

वेश्मस्त्री f. MBu. 5,904 fehlerhaft für वेशस्त्री, wie die ed. Bomb. liest.

वेश्मास्त nach dem Comm. *das Innere eines Hauses;* am Ende eines adj. comp. f. या R. 2,42,23 (41,21 Gorr.).

वेश्य (von 1. वेश) 1) adj. parox. gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54. am Ende eines comp. gaṇa वर्ग्यादि zu 5,2,121. — 2) f. या a) *Hure* AK. 2,6,2, 19. 3,4,28,179. Trik. 2,6,5. H. 532. an. 2,283. Med. j. 55. Hall. 2, 335. M. 8,65, v. l. Jîân. 1,141. 2,292. R. 1,8,23 (24 Gorr.). R. Gorr. 1,79,41 (in Verbindung mit वारमुख्या). Megh. 36. Spr. (II) 316. 1110. 2993. (I) 2224. 2730. 2897. 3132. 3146. 4475. 5036. Varâh. Bṛn. S. 39, 2. 53,8. 87,15. Verz. d. Oxf. H. 216,a,7. 217,a,23. 282,a,41. Kathâs. 3,54. 12,93. 21,56. 57,58. Râjat. 4,664. 676. 5,293. 295. 6,74. Sîm. D. 111. 426. Mâlav. P. 16,20. Paṇḍar. 1,4,61. बलं वेषश्च वेश्यानाम् Brahmavaiv. P. im ÇKDa. unter बल. Prasn. 60,5. Dhûrtas. 65,11. °गण Çabdam. im ÇKDa. °जनसमाश्रय AK. 2,2,1. वेश्याश्रय H. 1003. °वेश्मन् Râjat. 5,235. Prasn. 19,12. °गृह Trik. 3,3,432. °पति Hall. 2,227. वेश्याचार्य H. 330. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,b,36. im comp. auch वेश्य Varâh. Bṛn. S. 104,32. Vgl. स्ववेश्या. — *b) Clypea hernandifolia Wight. et Arn.* Çabdar. im ÇKDa. — *c) ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 134, a. — 3) n. a) perisp. *Nachbarschaft, Verhältniss der Hörigkeit:* शुषस्वे न: सख्या वेश्या च मा त्वत्तेत्राणयरणानि मन्म RV. 6,61,14. (पुरो ध्यो:) वेश्यं सर्वताता *das zugehörige Gebiet* 4,26,2. — *b) Hurenhaus* H. an. Med.

वेश्यस्त्री f. = वेशस्त्री *Hure* Spr. (II) 2942.

वेश्याङ्गना f. dass. Verz. d. Oxf. H. 92,a,20.

वेश्वर m. = वेसर (वेशर) Bhâvapr. im ÇKDa.

1. वेष (von 1. विष्) m. 1) *das Wirken, Besorgen;* = कर्मन् Naigh. 2, 1 (v. l. वेश). कर्मणे वेषाय Kauç. 1. 58. Kâty. Ça. 4,2,12. — 2) *Tracht, Anzug, das durch Kunst erzeugte Aeussere eines Menschen* AK. 2,6,2,1. H. 635. an. 2,554. Med. ç. 13. fg. Hall. 2, 334. 5,74. am Ende eines

adj. comp. f. घा. °वाग्बुद्धिसाङ्ग्य M. 4, 18. वेषाभरणसंमुग्धाः (स्त्रियः) 7, 219. घलिङ्गी लिङ्गिवेषेण यो वृत्तिमुपजीवति 4, 200. Jiân. 1, 123. स्वतुल्यवेषालंकार Rtûa-Tar. 6, 153. Prab. 47, 4. वेषं सात्तिसमाधाय रक्तेनैकेन वाससा MBu. 1, 7719. स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः Kumâras. 7, 22. पद्मानामपदश° Çiç. 80, 6. वेषभाषानुकारणं न कुर्यात्पृथिवीपतेः Spr. 3037. वाग्वेषचेष्टितैः Daçar. 2, 46. Bhar. Nâṭyaç. 34, 35. Suçr. 1, 104, 16 (pl.). वेषोपचारकुशल Sin. D. 78. नरदेवो ऽमि वेषेण नटवत्कर्मणाद्विजः Bhâg. P. 1, 17, 5. बलं वेषश्च वेश्यानाम् Brahmavaiv. P. im ÇKDa. u. बल. °परिवर्तने विधाय Pañkat. 160, 15. °विपर्यय 37, 3. °च्छन्न Kathâs. 38, 74. °प्रच्छन्न 12, 58. कृत्वा वेषं च सैरन्ध्याः nahm die Tracht — an, kleidete sich als MBu. 4, 246. गोपानीं कृत्वा वेषमनुत्तमम् 280. Kathâs. 29, 99. 27, 196. राजपुत्रस्य वेषेण तस्थौ द्वारे 24, 90. कैरातं वेषमास्थाय MBu. 3, 1552. नानावेषधरैर्भूतैः 1554. किरातवेषसंछन्न 1555. समानव्रतवेषा 1556. नर्तन° 1571. Harîv. 3695. आर्ष° R. 1, 7, 6. मुनि° 4, 2, 9, 9. 48, 17. 2, 25, 14. 39, 1. 104, 28. गोप° Mṛicch. 15. प्रवासस्थकलत्रवेषा Râgat. 16, 4. Mâlav. 13. Spr. (II) 1634. उदीच्य° Varâh. Bṛih. S. 58, 46. Kathâs. 13, 146. वणिग्वेषं चकार सः 179. 12, 168. 27, 197. 29, 102. 43, 172. कार्पटिकवेषभृत् 38, 18. Rtûa-Tar. 3, 267. योषिद्वेषो मया कृतः Bhâg. P. 8, 12, 15. 47. पुरुषवेषा Kathâs. 27, 198. तरुणीवेषा (प्रावृष्) Spr. (II) 2503. उन्मत्त° MBu. 3, 2332. Kathâs. 12, 57. स्त्रीनाम्नवस्त्रवेषः स्यात् M. 2, 194. चारु° R. 2, 114, 13. ग्रभूतनानुष्ठितचारुवेषा Râgat. 14, 13. मनोज्ञ° 6, 1. प्रौढ° 1, 16. महा° Kathâs. 4, 19. यो नोद्वहं कुरुते ज्ञातु वेषम् Spr. 4907. घनुद्धत° Suçr. 1, 30, 2. विनीतवेषाभरण M. 8, 2. Çiç. 8, 12. Varâh. Bṛih. S. 2, S. 3, Z. 10. स्वभावदुर्गन्धिबीभत्सवेषा Prab. 71, 1. कश्मल° Durgâs. 75, 11. विधूत R. 5, 16, 21. घवधूत und घवधूत° Bhâg. P. 6, 15, 10. 1, 19, 25. 3, 1, 19. 5, 3, 29. 6, 6. नग्नां विकृतवेषाम् Kathâs. 12, 173. क्षण° beim Schauspieler Maitrâyaṇ. 4, 3. कृतानिसरणवेषा Vikr. 40, 17. कृतकौतुकमङ्गलवेषा Pañkat. 129, 17. शृङ्गारवेषा MBu. 5, 227. मृगया° Çiç. 24, 15. ein angenommenes Aeussere: वेषं विधा eine fremde (andere) Gestalt annehmen Bhâg. P. 2, 7, 37. वेषं गम् dass. 5, 20, 41. Aussehen überh. R. 3, 75, 15. गो° einem Stiere gleichend MBu. 4, 588. घव्यानि चैव मन्त्राणि वेषैस्तैस्तैः पृथग्विधैः Harîv. 11798. सतां वेषधरः R. 4, 16, 17. fg. घधर्मं धर्मवेषेण 2, 118, 6. वेषमाच्छाद्य so v. a. sich nicht zu erkennen gebend TBa. Comm. 1, 124, 3 v. u. प्रच्छन्नवेषेण dass. 129, 3. वेष am Anf. eines comp. als Ausdruck des Lobes (?) im gaṇa काष्ठादि zu P. 1, 8, 67 gehört vielleicht hierher. Als n. Pañkan. 1, 14, 56. Das Wort wird häufig, aber äusserst selten in den Bomb. Ausgg., mit श geschrieben. Vgl. कृतवेश, केश° (Haartracht Âçv. Gṛihj. 1, 17, 18. °वेषान् v. l.), पुं°, प्राग्वेष, भूतवेषो, रात्रवेष, विवाह°, सु°.

2. वेषं (wie oben) adj. wirkend, besorgend VS. S. 38, 2 v. u.

3. वेष m. fehlerhafte Schreibart für वेश Bhar. zu AK. 2, 2, 1 nach ÇKDa.

वेषकार (1. वेष + कार) m. als Erkl. von वेष्टन Trik. 3, 3, 261.

वेषण (von 1. विष्) 1) n. *Besorgung, Dienst:* परिविष्टो वेषणो दंसनाभिः RV. 4, 33, 2. घवे स्म यस्य वेषणे स्वेदे पविषु वृक्षति 5, 7, 3. — 2) m. *Cassia Sophora Lin.* Bin. 98. — 3) f. घा *Flacourtia cataphracta* Ratnam. im ÇKDa.

वेषदान (1. वेष + दान) m. *eine best. Pflanze,* = सूर्यशोभा (vgl. दिव्यवस्त्र) Çabdar. im ÇKDa. वेश° gedr.

वेषधारिन् (1. वेष + धा°) 1) adj. am Ende eines comp. *die Tracht —, den Anzug von — tragend:* तापसीवेषधारिणी R. 5, 18, 21. स्त्रीवेषधारी पुरुषः AK. 1, 1, 8, 11. — 2) m. a) *ein Asket der Tracht nach, ein heuchlerischer Asket* Çabdar. im ÇKDa. गङ्गापुत्रस्य कन्यायां वीर्येण वेषधारिणः। बभूव वेषधारी (so ist zu lesen) च पुत्रो योगी (युङ्गी ÇKDa. u. d. W.) प्रकीर्तितः ॥ Verz. d. Oxf. H. 22, a, 6. 7.

वेषवत् (von 1. वेष) adj. *gut angezogen, — gekleidet* Kir. Nitis. 5, 17. सुवेषवान् (besser) st. स वेषवान् Comm.

वेषवार = वेसवार H. 417. Râjân. zu AK. nach ÇKDa.

वैषसि und °सी adj. etwa *schön geschmückt* in einer Formel TS. 3, 5, 2, 5. 4, 4, 4, 3. 5, 3, 6, 2. Çat. Br. 3, 5, 6, 2.

वेषिन् (von 1. वेष) adj. am Ende eines comp. *eine Tracht —, einen Anzug habend:* विकृत° Bhâg. P. 3, 3, 5. क्रूर° *sich ein falsches Aussehen gebend* 7, 5, 27.

वेष्क m. *Schlinge zum Erwürgen* Çat. Br. 3, 8, 4, 13. Kâty. Çr. 6, 5, 19. — Vgl. वेष्ट.

वेष्ट्, वेष्टते Dutup. 8, 2 (वेष्टने); in der ältesten Sprache erscheinen auch Formen von विष्. 1) *sich winden —, sich schlängeln um:* यस्य मन्दाकिनी चिरमवेष्टत पादमूले Sin. D. 344, 5. *sich hängen —, kleben an* (loc.): मयि ते वेष्टतां मनः AV. 6, 102, 2. — 2) *sich kleiden* (*sich neu kleiden*): वेष्टमान इवोरगः R. 7, 86, 3.

— caus. aor. घविवेष्टत् und घववेष्टत् P. 7, 4, 96. Vop. 18, 2. partic. वेष्टित = वस्त्रयित, रुद्ध u. s. w. AK. 3, 2, 10. H. an. 3, 305. Med. t. 160. Hall. 4, 27. समन्ताद्वेष्टितः परिवृत उच्यते P. 4, 2, 10, Schol. 1) *überziehen, umwinden, umwickeln, umkleiden, bekleiden, umlegen, umstellen, umringen, umzingeln, einschliessen:* वासोभिर्यूयं वेष्टितः Çat. Br. 5, 2, 4, 5. 3, 4, 11. 11, 2, 6, 7. TBr. 1, 3, 7, 3. उष्णीषेण शिरो वेष्टयते Pân. Gaṇ. 2, 6. Âçv. Çr. 5, 12, 7. Liṭ. 2, 6, 2. Kâty. Çr. 25, 10, 7. Kauç. 16. वेष्टितशिरम् M. 3, 238 (= MBu. 13, 4288). वस्त्रेण वेष्टितं कृत्वम् Weber, Kâṇvaç. 278. वस्त्रवेष्टित Spr. 2225. पीताम्बरवेष्टित Varâh. Bṛih. S. 24, 18. वेष्टितः खरचर्मणा 74, 13. Bṛih. 27 (25), 1. वस्त्रेण वेष्टयित्वाङ्गितं शिरः Kathâs. 13, 152. घन्योऽन्यकेशपाशवेष्टितान्। कृत्वा 49, 149. सप्तावृत्त्यस्य पत्राणि तावत्सूत्रेण वेष्टयेत् Jiân. 2, 103. घास्यवेष्टितसर्वाङ्गो Harîv. 14379. कलशाः सितसूत्रवेष्टितग्रीवाः Varâh. Bṛih. S. 48, 37. Weber, Kâṇvaç. 302, N. 2. R. 3, 32, 12. घवेष्टयत्त लाङ्गूलं व्रणैः कार्ष्णायसैः पटैः 5, 49, 5. 56, 138. Rtûa-Tar. 2, 88. पाशवेष्टिताः 3, 24. 4, 1. (सर्पाः) वेष्टयत्तः परस्परम्। पुच्छैः शिरोभिश्च MBu. 1, 2036. 1800. fg. 8, 2591. Harîv. 11099 (S. 793). 10875. R. 7, 28, 30. Ragh. 11, 59. Kathâs. 63, 178. 65, 119. Varâh. Bṛih. 5, 2. fgg. 27 (25), 12. ग्रीवायां वेष्टयित्वैनं (sc. करेण) स गजो रुस्तुवेरुत MBu. 7, 1133. वाससावेष्टयद्बले (sc. तम्) Kathâs. 61, 262. मम। पुष्पदामा वेष्टयित्वा कण्ठे (कण्ठम्?) Harîv. 7241. वल्ली वेष्टयते वृतम् MBu. 12, 6833. हिमवेष्टयः। वेष्टयन्ति तान्घोरान्दैत्यान् Harîv. 2593. 2594. कोशकार इवात्मानं वेष्टयन् so v. a. sich einspinnen MBu. 12, 12149. Çiva zu Bṛih. Âr. Up. S. 259. पुच्छवेष्टिशाखाग्रैः rund um besetzt MBu. 2, 801. वेष्टितं मेरुशिखरैः सतोयमिव तोयदम् R. 5, 43, 12. मुञ्जकाष्ठैस्तृणैर्वेत्रैश्च सर्वतः पर्वतोत्तमम् Harîv. 3316. पितृवनमुनयोभिर्वेष्टितं मे शरीरम् Mṛicch. 157, 9. Varâh. Bṛih. S. 77, 2. Bhâg. P. 3, 30, 26. 10, 6, 38. Mârk. P. 45, 68. Verz. d. Oxf. H. 103, b, 29. Pañkat. 1, 7, 34. गोपगोपीकदम्बैश्च वेष्टिते (रासम-

एऽले) Pāṇ. 2,3,16. 3,15,37. भट्टैर्भूनन्दनो ऽत्र नः। ग्रवेष्टात Kathās. 73,161. गोमतं वेष्टयामासुः सागराः पृथिवीमिव Harīv. 5808. एवमेषा पुरी क्षिप्रं समन्ताद्वेष्टिता बलैः 3023. Kām. Nītis. 19,15. Rāgat. 11,32. Kathās. 29,117. 49,68. fg. Rāja-Tar. 8,817. 915 (ग्रवेष्टास zu lesen). 1106 वेष्टिता हिया zu lesen). Bhāg. P. 10,52,5. Bhaṭṭ. 15,61. 80. रात्रक्षेमः कुक्कुटेनागत्य वेष्टितः so v. a. *der Hahn versperrte ihm den Weg* Hit. 106,17. तमसा बकुलूपेण वेष्टिताः *umhüllt, eingehüllt in* M. 1,49. पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः *umgeben* —, *begleitet von* Spr. (II) 383. मायया वा एतत्सर्वं वेष्टितं भवति Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,109. ज्ञानं समोक्वेष्टितम् Pāṇ. 1,15,15. चित्तावेष्टिता LA. (III) ad 19,15. पतिणी पतत्तुल्याभ्यामक्षेभ्यां वेष्टिता निशा *eine Nacht mit den beiden angrenzenden Tagen* H. 144. — 2) *umwinden, umwickeln, umbinden, umlegen:* उष्णीषं वेष्टयामास मूर्धनि MBh. 7,2921. वेष्टितकर (कर *Russel*) 1,1366. वेष्टितश्मश्रु Rāja-Tar. 5,206. — 3) *winden* (einen Strick): तृणवेष्टिता रज्जुः (vgl. u. ग्रा) Kathās. 65,19. — 4) *zusammenschrumpfen machen:* यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः Śvetāśv. Up. 6,20. — 5) वेष्टित *a*) adj. s. u. 1), 2) und 3). — *b*) n. α) = लासक H. an. Med. — β) *quidam coeundi modus* dicus. — 6) वेष्टयते MBh. 12,6867 fehlerhaft für चेष्टयते, wie die ed. Bomb. liest; वेष्टितो R. 4,8,44 fehlerhaft für विष्टितो, wie die ed. Bomb. (4,9,41) liest. — Vgl. लतावेष्टित.

— घनु *klingen bleiben:* यस्तो यदमुक्त तस्योत्त्वमन्ववेष्टत Kāṭh. 12,4. — caus. 1) *überziehen, umwinden, überdecken:* लताभिरनुवेष्टितः MBh. 12,9118. R. 5,16,37. 17,2. — 2) *überdecken, auflegen, ausbreiten:* भित्त्यादिकमनुवेष्ट्य (भित्तिं *Matte*) उपविष्ट ग्रासीत Kull. zu M. 11,110. — ग्रप caus. *abstreifen* Pāṇ. Bh. 13,5,22.

— ग्रभि caus. *bedecken, zudecken:* (वस्त्रैः) तैस्ते तान्यभ्यवेष्टयन्। चर्माणि Kathās. 62,198. ग्रभिवेष्टयेत्तदनु कुम्भमुखं नवनिर्मलांशुकयुगेन Pāṇ. 3,7,33.

— ग्रा *sich ausbreiten über* (loc.): फेनस्तप्यते पद्भ्यामावेष्टमानः प्रवते so v. a. *das Wasser überziehend* Śat. Br. 5,1,2,3. — caus. 1) *umhüllen, umgeben, bekleiden, bedecken.* उत्तवेनाविष्टिः ṚV. 10,31,1. उष्णीषेण TS. 3,4,8,4. ग्राविष्टिता चर्मणा AV. 5,18,3. 28,1. उष्णीषेणावेष्य Śat. Br. 4,5,3,7. Kātj. 13,10. वेष्यं लोहितदर्भैः तत्रिर्यं शरपत्रैरावेष्य Vasiṣṭha bei Kull. zu M. 8,377. Suçr. 1,338,18. 339,2. 2,365,6. मूलान्यावेष्टितानि R. Gorr. 2,108,8. — 2) *winden* (einen Strick): तृणैरावेष्यते रज्जुः Spr. 1937. — 3) *einschliessen, auf einen engen Kreis beschränken:* गोपाल इव दण्डेन यथा पशुगणान्वने। ग्रावेष्टयत तौ सेनां भगदत्तस्तवा मुक्तः॥ MBh. 7,1189. *schliessen* (die Hand): ग्रावेष्टितकर 13,764. — 4) ग्रावेष्टयति TBr. 1,3,6,1 fehlerhaft für ग्राघेष्टयति. — Vgl. ग्रावेष्ट fgg.

— समा caus. *belegen, bedecken* Suçr. 2,109,6.

— उद् *sich in die Höhe winden:* क्ष्मा भुजाः — उद्वेष्टते विचेष्टते पतते चोत्पतति च MBh. 8,2044. 7,3166. 9,429. — caus. *loswinden, aufdrehen:* तन्त्रीम् Kathās. 49,21. उद्वेष्टनीया वेणौ Mṛcch. 89. *eröffnen, aufsiegeln:* लेखम् *einen Brief* Mālav. 70,17. — Vgl. उद्वेष्टन.

— उप caus. *umwinden, umbinden:* लतोपवेष्टित (वृत्त) Mṛcch. 115, 13. पाशोपवेष्टितगल Kathās. 23,181.

— नि caus. 1) act. med. *einfassen* (in die Hand), *zudeckend packen* AV. 10,5,36. 15,8,1. योनिम् Kāṭh. 13,4. 23,4. कृत्ते TS. 6,1,2,7. यद्या प्रतीघातेनानिवेष्ट्यमानो धापयेत् Śāṅkh. Br. 18,4. — 2) *umwickeln, umwinden:* लाङ्गूलेन निवेष्टिताङ्ग Vārāh. Bṛh. 27(25),36. wohl an beiden Stellen विवेष्टित zu lesen. — Vgl. निवेष्ट fg.

— उपनि *sich lagern um, umgeben:* गर्भमाप उपनिवेष्टते Śat. Br. 5,3,4,11.

— निस् caus. 1) *zurückstreifen:* शेष इव निर्वेष्टितः *entblösst* Nir. 5, 8. — 2) *abwickeln* so v. a. *abnehmen* um (acc.): एकैकस्मिन्मण्डले मुहूर्तस्य द्वौ द्वावेकषष्टिभागौ दिवसक्षेत्रस्य निर्वेष्टयन् (= कायन्) Ind. St. 10, 265, N. 2. — Vgl. निर्वेष्टन.

— परि caus. 1) *umhüllen, umwinden, umwickeln, umschlingen, umlegen, umstellen, umgeben, umringen,* Śat. Br. 5,3,3,24. सूत्रैः Śāṅkh. Śr. 4,15,31. मुखम् 7,13,2. वसनेन Liṭ. 2,6,1. दर्भेण Kauç. 21. 38. 79. Nir. 9,15. Suçr. 2,346,3. पाशैः फलदं परिवेष्य तम् MBh. 12,9119. रज्जुभिः Spr. 3342. कटैरागतैः (so ist zu lesen) Rāja-Tar. 4,268. भोगेन (सर्पस्य) MBh. 1,1802. 3,12403. तं परिवेष्टितवानस्मि Kathās. 65,122. भक्ताभ्याम् 74, 52. प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च यत्पार्श्वतो भवति तत्परिवेष्टयन्ति Spr. (II) 1066. वृक्षान् — लताभिः परिवेष्टितान् R. 3,17,12. 78,22. Vārāh. Bṛh. S. 93,37. सम्वृद्धोपः लोहदधिना परिवेष्टितः Bhāg. P. 5,20,2. Mārk. P. 54,7. प्राकारवलयपरिवेष्टित Pāṇ. ed. orn. 3,2. Harīv. 9017. ग्रादित्यः परिधैः परिवेष्टितः 9297. कृताशाचिःपरिवेष्टिता (लङ्का) R. 5,50, 20. शमीकोटरं वह्निभोज्यद्रव्यैः परिवेष्य Pāṇ. 97,25. तमश्चाण्डकटाहेन समन्तात्परिवेष्टितम् VP. bei Muir, ST. 1,193. सिताभ्रपरिवेष्टित (विद्युत्पुञ्ज) Kathās. 3,25. ग्रग्निं वस्त्रेण परिवेष्टयन् *zudeckend* MBh. 11,49. धूमेन परिवेष्टितम् *eingehüllt in* Harīv. 3635. भस्मना 15861. Vārāh. Bṛh. S. 12,12. शैलैः सर्वतः परिवेष्टितः *überschüttet* Harīv. 10202. सिताभिः *überzogen mit* Kathās. 97,22. पादपान्विविधैः खगैः परिवेष्टितान् *besetzt mit* Brahma-P. in LA. (III) 52,2. पत्राणि कण्टकाद्यैः परिवेष्टितानि Spr. 1690. ग्रखिलनिगमनिव्रगणपरिवेष्टित *umgeben von* Buḍa. P. 5,1,7. Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 102. गोत्रजाः। पक्षपा गृहमागत्य रात्रानं पर्यवेष्टयन् Kathās. 58,4. Verz. d. Oxf. H. 28,b,16. शत्रुभिः परिवेष्टितः Spr. 2286. Kām. Nītis. 13,72. 19,55. Rāja-Tar. 5,430. Kathās. 106,151. स्थानं तत्पर्यवेष्टयत् 69,64. 116,1. Pāṇ. 172,12. परिवेष्टित = वलयित u. s. w. H. 1474. — 2) *umwinden, umlegen:* ग्रग्रिष्टे रशनाः Kāṭj. Śr. 8,8,16. शाटीं परितः कट्यां R. 2,32,36. — 3) *zusammenschrumpfen machen:* य इमां पृथिवीं कृत्स्नां चर्मवत्परिवेष्टयेत् (समवेष्टयत् ed. Bomb.) MBh. 7, 368. 2309. 12,4078. — Vgl. परिवेष्टन, परिवेष्टना (in den Nachträgen), परिवेष्टितृ.

— संपरि, caus. partic. °वेष्टित *umwunden* Suçr. 2,440,21.

— प्र caus. *umwinden* TS. 6,6,8,3. प्रवेष्टितो रोमभिः *besetzt* —, *bedeckt mit* MBh. 3,10047.

— संप्र caus. *umwinden* Suçr. 2,341,14. Schol. zu Kāṭj. Śr. 8,3,16.

— प्रति *sich zurückschieben:* यङ्कारा एव प्रतिवेष्टमाना ग्रमित्राणामस्य सेनां प्रतिवेष्टयन्ति TS. 3,4,8,4. — caus. *zurückschieben* —, *streichen,* — *biegen* TS. 2. 3. O. die Zungenspitze VS. Prāt. 1,78. AV. Prāt. 1,22. Taitt. Prāt. 2,37.

— वि caus. 1) *wegstreichen, abziehen:* लवम् AV. 12,5,68. — 2) *umwinden:* सर्वभोगैर्विवेष्टितः Harīv. 10200 (beide Ausgg. विचेष्टितः). ना-

गौर्विवेष्टिन: 10225 (die neuere Ausg. विवेष्टित:). यङ्लुग्वपार्वतीदृष्टिपाशैरिव विवेष्टित: Kathâs. 1, 7. 71, 218. 72, 7. *umringen, einschliessen:* कोशम् Râǵa-Tar. 8, 2681.

— सम् *sich zusammenrollen, zusammenschrumpfen:* तावका दीनचेतस: । सर्पवत्समवेष्टन्त (सर्वत: समवेष्टन्त ed. Bomb.) MBh. 6, 4069. — caus. 1) *umwinden, umschlingen, einschliessen:* संवेष्य पाणिपादं च वाससा Kathâs. 64, 142. प्रायेण संवेष्टितसर्वगात्र: MBh. 3, 12357. संवेष्यमानं (so ed. Bomb.) मोक्षातसुभिरात्मज्ञै: 12, 12449. संवेष्यमाने लाङ्गूले (पटै:) R. 5, 49, 6. संवेष्टितवराभारा वीणासक्तेन बाहुना Harîv. 9610. मध्यस्थदेवावसथं संस्ता: समवेष्टयन् *einschliessen, umringen* Râǵa-Tar. 4, 325. *umhüllen, bedecken:* पयोदा नभस्तलम् । संवेष्टयिता MBh. 3, 12889. संवेष्टयबलीकानि शरवर्षेण 7, 1239. 8, 3725. तमोमरुद्रुक्षवराग्निवार्भूसंवेष्टिताण्डघट Buâs. P. 10, 14, 11. — 2) *umlegen:* उष्णीषम् Kâty. Ça. 15, 5, 13. — 3) *zusammenrollen:* संवेष्टितं कटम् Gobh. 2, 1, 20. — 4) *zusammenschrumpfen machen:* त्वं खोद कोपात्पृथिवीमयीमां संवेष्टये: MBh. 3, 10264. य इमां पृथिवीं कृत्स्नां चर्मवत्समवेष्टयत् (so ed. Bomb.) 7, 368. 12, 232. दिवं देवेन्द्र पृथिवीं च सर्वां संवेष्टयेस्त्वं स्वबलेनेव शक्र 14, 216.

— प्रतिसम् *zusammenschrumpfen:* प्रतिसंवेष्टते भूमिरग्नौ चर्माक्षितं यथा Spr. (II) 3101.

वेष्ट (von वेष्ट्) m. gaṇa उञ्छादि (कारणे) zu P. 6, 1, 160. 1) *Schlinge, Binde* Kâuç. 48. 73. कर्ण° *eine durch einen Elephantenrüssel gebildete Schlinge* MBh. 7, 1134. = वेष्टन Çabdam. im ÇKDa. — 2) *Zahnhöhle* Suçr. 1, 304, 1. 6. दन्त° (s. auch bes.) 2, 126, 8. — 3) *Terpentin* Ratnam. 41. Râǵân. im ÇKDa. *Gummi, Harz* überh. ÇKDa. nach dem Vaidjaka. — Vgl. कर्ण°, केश°, दन्त°, पत्र°, लक्ष्मो°, लता°, शाल्मली°, शिरो°, श्रो°.

वेष्टक (wie oben) 1) *Hülle* in अङ्गुलि° Bez. *eines best. Schmuckes der Finger, etwa Handschuh* MBh. 7, 3688; vgl. अङ्गुलिवेष्टन unter वेष्टन. — 2) n. *Kopfbinde, Turban* Çabdar. im ÇKDa. — 3) m. = परिमृक् 20) *doppelte Aufführung eines Wortes, vor und nach* इति (gleichsam *eine Einfassung* von इति) Comm. zu RV. Prât. 3, 14. zu VS. Prât. 4, 91. 177. 182. 187. — 4) m. *Boswellia serifera Savi.* Hân. 97. — 5) m. n. *Terpentin* Râǵân. im ÇKDa. n. *Gummi, Harz* überh. Çabdam. im ÇKDa. — 6) = प्राचीर, वृति ÇKDa. und Wilson nach H. 982, wo aber यावेष्टक steht. — Vgl. कर्ण°, दन्त°, वेष्टन°, शाल्मली°.

वेष्टन (wie oben) n. 1) *das Umwinden, Umschlingen, Umfassen:* यूप° Kâty. Ça. 14, 1, 20. 5, 33. Çân. Gṛhy. 3, 1. Schol. zu Kâty. Ça. 2, 7, 2. भोगिवेष्टनमार्गेषु चन्दनानाम् Ragh. 4, 48. Râǵa-Tar. 5, 343. कठिनतरदामवेष्टनलेखा: Vâsav. 3. वेष्टनं कर् *umwinden, einen Verband machen* Kathâs. 13, 135. *das Einschliessen, Umzingeln:* कोशाट्टालक° Râǵa-Tar. 8, 2644. कृत° *eingeschlossen, umzingelt* 1434. — 2) *Spanne:* द्वे वितस्ती तथा रुस्तो ब्राह्मतीर्थादिवेष्टनम् Mârk. P. 49, 39. — 3) *Schlinge, Binde:* दर्भ° Pârâśar. 147, 2. मुख° Sâj. zu Çat. Br. 3, 8, 4, 18. अङ्गुलि° (vgl. अङ्गुलिवेष्ट unter वेष्ट) Bez. *eines best. Schmuckes der Finger* MBh. 1, 5138. — 4) *Kopfbinde, Turban* Med. n. 135. MBh. 11, 801. 12, 2299. Ragh. 1, 43. 8, 12. Kâdamb. 132. Kathâs. 61, 184. *Diadem* Trik. 3, 3, 260. H. an. 3, 421. — 5) *Zaun, Hecke;* = वृति Med. गति Trik. wohl nur fehlerhaft für वृति. कनककदली° adj. Megh. 75. — 6) *das äussere Ohr* H. 374. H. an. Med. — 7) *eine Art Waffe* (शस्त्रभेद) H. an. — 8) *Pongamia glabra Vent.* H. an. — 9) *Bdellium* Çabdâ. im ÇKDa. — 10) = वेशकार (d. i. वेषकार) Trik. — Vgl. इक्षु°, 2. उद्वेष्टन, कर्ण°, नृ°, मूर्ध°, लता°, सूत्र°.

वेष्टनक (von वेष्टन) m. *quidam coeundi modus:* ऊर्ध्वगे पादमेकं च भुजान्तरेवेष्टयेन्मदि (eine Silbe zu viel) । कान्तकान्तामितां नारीं बन्धो वेष्टनक: स्मृत: ॥ Ratim. im ÇKDa.

वेष्टनवेष्टक m. desgl.: ऊर्ध्वे पादद्वयं नार्या भुजाभ्यां वेष्टयेन्मदि । कराभ्यां कण्ठमालिङ्ग्य बन्धो वेष्टनवेष्टक: ॥ Ratim. im ÇKDa.

वेष्टन्तिक s. पाद°.

वेष्टपाल m. N. pr. eines Mannes Târân. 130.

वेष्टवंश m. *Bambusa spinosa Roxb.* Çabdâ. im ÇKDa.

वेष्टव्य partic. fut. pass. von 1. विश् P. 8, 2, 36, Schol.

वेष्टसार m. *Terpentin* Râǵân. im ÇKDa.

वेष्टितक (von वेष्टित, partic. von वेष्ट्) s. लता°.

वेष्प Uṇâdis. 3, 23. m. *Wasser* Ujjval.

वेष्य = वेषण संपादी P. 5, 1, 100. 1) perisp. m. etwa *Kopfbinde* Vs. 1, 20. — 2) (von 1. विष्) adj. *was vollbracht —, zu Stande gebracht wird:* हस्त° *Handarbeit* Pârâśar. Bṛh. 6, 6, 13. — 3) adj. (von 1. वेष) *costumirt, masquirt:* नट P. 5, 1, 100, Schol.

वेस्, वेसति Naigh. 2, 6 (कान्तिकर्मन्). Dhâtup. 17, 70 (गतौ).

वेसन n. *eine Art Mehl:* दाल्यश्चणकानां तु निस्तुषा यन्त्रपेषिता: । तच्चूर्णं वेसनं प्रोक्तं पाकशास्त्रविशारदै: ॥ Bhâvapr. im ÇKDa.

वेसर 1) m. *Maulthier* Trik. 2, 8, 44. H. 1233. Hall. 2, 295. Bala beim Schol. zu Naish. 10, 8. Varâh. Bṛh. S. 16, 20. 86, 66. Bṛh. 8, 13. Çiç. 12, 19. — 2) n. zur Erklärung von वासर Nir. 4, 7. 11. — Vgl. द्विवेशरा und वेगसर.

वेसवार m. *eine als Zuspeise gebrauchte teigartige Masse aus zerriebenen Stoffen, Mehl oder Fleisch, mit Gewürzen bereitet; a condiment consisting of splitpease, coriander seed, turmeric, peppers etc. fried together* Molesw.; nach Suçr. 1, 231, 10 *fein zerriebenes Fleisch mit Ingwer, Pfeffer und Zucker gemischt und in Butter eingekocht.* Zahlreiche Recepte findet man in Nigh. Pr. s. v. — AK. 2, 9, 35. H. 417. Hall. 2, 166. MBh. 13, 2771 nach der Lesart der ed. Bomb. (nach der ersten Hälfte eingeschoben: वेसवारविकारांश्च पानकानि लघूनि च). Suçr. 1, 234, 20. सपिशित 21. विविधमत्स्यपिशित° 2, 38, 21. सर्पिर्मेदो° 429, 10. 19, 16. 42, 4. 96, 19. 182, 13. 321, 16. 389, 1. 12. Varâh. 6, 41.

वेक्, वेक्ति (प्रयत्ने) Dhâtup. 16, 42; vgl. 2. वाक्. = वेक्राय् Vop. 21, 8.

वेक्त् Uṇâdis. 2, 85. *eine Kuh, welche zu verwerfen pflegt,* AK. 2, 9, 70. H. 1266 (*eine Kuh, die nach dem Stier verlangt*). Hall. 2, 114 (*eine belegte Kuh*). VS. 18, 27. 24, 1. 28, 33. AV. 3, 23, 1. 12, 4, 37. fg. Ait. Br. 1, 15. Çat. Br. 12, 4, 4, 6. TS. 2, 1, 8, 3. am Ende eines comp. nach einer जाति P. 2, 1, 63. गो° Schol. — Vgl. उक्त°.

वेक्राय्, वेक्रायते denom. von वेक्त् (घभूतताद्भावे) gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 13. Vop. 21, 8.

वेक्रार m. N. pr. eines Landes (Behar) Matsjaçâkta 50 im ÇKDa. — Vgl. विक्रार 8).

वेङ्क्, वेङ्कति (चलने) Dhâtup. 15, 33, v. l.

वै postpositive Partikel (gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57), die das vorange-

hende Wort hervorhebt अवधारणे AK. 3,3,15. क्षेपे H. an. 7,15. पादपूरणे ebend. und AK. 2,3,3. संबोधने und अनुनये ÇKDa. angeblich nach Med.). Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,34. kommt in den Saṁhitâ selten, in den Brâhmaṇa und wo deren Stil nachgeahmt wird, so wie im Epos über die Massen häufig vor; in den Sûtra meist nur in der Zusammenstellung यमु वै. स वा एषः Ait. Ār. 2,9.14. स वै M. 1,76. 2,160. 10,18. MBh. 3,2642. 2731. 2903. 2956. 5, 5423. R. Gorr. 1,79,44. Bhâg. P. 1,2,6. 13,24. तद्वै M. 1,73. 3,170. 238. Bhâg. P. 3,9,4. ते वै M. 9,49. ते वा सप्तर्षयो ऽब्रुवन् Ait. Br. 2,19. तं वै Kâṭy. Çr. 7,8,4. MBh. 3,2921. तस्य वै 3099. तस्माद्वै Çat. Br. 1,1,2,1. ततो वै MBh. 5,7243. तत्र वै R. 1,9,31. Spr. 3150. यस्य वै MBh. 3, 2385. धनेनानेन वै 3042. केयं वै 1,5949. एष वै M. 3,147. 5,74. MBh. 3,2034. यो वै Ait. Br. 2,24. Spr. 1392. AK. 2,9,66. यद्वै किं च Ait. Br. 6,10. यद्वै R. 1,56,24. Bhâg. P. 4,1,30. यं वै 3,16,20. ये च वै R. 1,55,23. यत्र वै 9,11. R. Gorr. 1,51,4. 63,2. के वै भवतः MBh. 3,2136. कदा वै 2896. तं वै 2139. वयं वै 16880. R. 1,58,4. मम वा इदम् Ait. Br. 5,14. स्वयं वै MBh. 1,6156. सर्वं वै M. 1,100. कर्ता सुदासे यद्रुं वा उ लोकम् ṚV. 7,20, 2. इद्धा उ 1,105,2. 8,51,12. यद्धा उ 23,13. न वै 18,146,5. M. 11,26. Spr. 4350. fgg. 4335. Bhâg. P. 1,18,42. किं न वै MBh. 5,7116. उ खलु वै Ait. Br. 5,31. रु वै 30. 3,3. 16. 6,1. Kauç. 94. उ रु वै Bhâg. P. 5,2,19. रु स्म वै Ait. Br. 5,20. 6,14. एव वै 2,14. यमु वै 1,6. Gobh. 1,6,19. 8, 3. 4,1,13. Âçv. Gṛhj. 1,10,11. 12,2. इति, इत्यु वै TBr. 1,5,9,4. यपि वै Spr. 2201. तु वै M. 2,10. 22. वै (d. i. तु वै) gaṇa चादि zu P. 1,4,57. Vârtt. 1 zu P. 6,1,94. TS. 2,6,6,3. 3,2,9,2. Çat. Br. 3,4,3,12. 10,6, 4,3. 9. न्वै s. bes. प्रातर्वै Ait. Br. 2,15. पूर्वाह्णे वै M. 3,87. यद्य वै MBh. 1,3980. 3,2628. भूयो वै Kâṭy. Çr. 7,8,7. त्रिर्वै M. 11,77. दुःखं वै स निवत्स्यति MBh. 3,2623. यद्यासुखं वै जीव त्वम् 3052. मुदेवो नाम वै द्विजः 2660. 2744. अग्निर्वै देवानां क्षेता Ait. Br. 3,14. देवा वै यज्ञमतन्वत 2,11. यस्तो वै भवति बालः M. 2,153. आपो वै नरसूनवः 1,10. 2,231. 11,93. यमेध्यो वै पुरुषः, मेध्या वा आपः, पवित्रं वा आपः Çat. Br. 1,1,8,1. श्वा वै भवति निन्दकः M. 2,201. वाक्कलहं वै ब्राह्मणस्य 11,23. साकल्यो वै भवेद्भिक्षः 8,353. वेत्यपूर्वानिवान्वा यति स्पर्धः समर्यता मनसा सूर्यः कविः ṚV. 5,44,7. युवा वै श्रद्धासंपन्नो बुद्धिशाली न शक्यते (कर्तुम्) MBh. 1,5570. भ्राता वै परिगम्य रु 3,2507. पञ्च वै तेन मे दत्ता वराः 16397. विंशतिर्वै दिनानि 5,7247. सप्तर्षे देवा यद्यपत्त रात्रिमसुराः Ait. Br. 4,5. यमराज्ये निबोधास्मान् MBh. 3,2137. गोर्वै प्रतिधुक् Kâṭy. Çr. 7,8,8. ऋतुपर्णस्य वै काममात्मार्थं च कौरव्यकम् MBh. 3,2778. 2900. 1,2987. Comm. in der Einl. zu Kâtyâp. (गृह्णामि) शस्त्रं वै MBh. 5,7026. केनोपायेन वै R. 1, 9,17. मेदेषु वै ṚV. 7,20,4. वदतो वै वसिष्ठस्य R. 1,55,25. दक्षिणां वै दिशं प्रति 4,41,71. अवमन्येत वै भूत्वः M. 4,138. तथा नश्यति वै क्षिप्रम् 9,43. Spr. 2126. उच्छोषयति वै प्राणान् R. 2,64,65. नरो भवति वै ततः Miss. P. 13,23. घोषयामास वै पुरे MBh. 3,2804. R. 1,6,26. 62,25. यतितं वै मया पूर्वम् MBh. 1,6128. कदा नु खलु दुःखस्य पारं यास्यति वै प्रभो 3,2675. तस्माद्योत्स्यामि वै त्वया 5,7075. हैरण्वेनास्तु वै शान्तिः 3, 2037. वस वै मयि 2640. 2732. श्रवमास्थाय वै परम् 2702. R. 1,9,64. nach einem voc. MBh. 1,986 (zu schreiben आत्मनोरग वै कृतम्). Sehr beliebt ist वै am Ende eines Pâda M. 2,3. 8. 19. 3,268. fg. 12,90. MBh. 1,6153. 6198. 7699. 3,2167. 2249. fg. 2357. 2483. 2609. 2628. 2770. 2848. 2897. 2990. 16811. 5,5946. 5965. 5972. 5981. 7294. न स्त्रीभिः किंचिदन्यद्धि पापीयस्तरमस्ति वै 13,2213. R. 1,2,15. 8,14. 9,30. 33. 62. 57,19. R. Gorr. 2,12,14. 3,64,17. Spr. (II) 670. 2767. Brahma-P. in LA. (III) 56,4. Fehlerhaft für वेद् wenn Spr. (II) 1451.

वैंशतिकँ adj. von विंशतिक P. 5,1,27.

वैकंसेयँ m. metron. von विकंसा v. l. im gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

वैकक्ष (von 2. वि + कक्ष) n. *Obergewand, Ueberwurf* H. 672. Halâj. 2,255.

वैकक्षक (wie eben) n. *ein um die Schulter hängendes Blumengewinde* AK. 2,6,3,37. H. 652. Halâj. 2,398.

वैकङ्क (von 2. वि + कङ्क) m. N. pr. eines Bergos VP. 169. Bhâg. P. 5,16,27.

वैकङ्कतँ und वैँ° 1) adj. (f. ई) vom *Baume* विकङ्कत (*Flacourtia sapida Roxb.*) *kommend, an ihm befindlich, aus ihm verfertigt* gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141. इध्म AV. 5,8,1. TS. 3,5,2,3. 5,1,9,6. मन्थिपात्र 6,4,10, 6. संभार TBr. 1,1,3,12. Çat. Br. 1,3,3,20. सुव 5,2,4,15. 14,1,2,5. शकल 3,26. पात्राणि Kâṭy. Çr. 1,3,31. 2,8,1. Vaitân. Bṛh. S. 85,3. — 2) m. = विकङ्कत *Flacourtia sapida Roxb.* Çabdar. im ÇKDa.

वैकटिक (von विकट) m. *Juwelier* H. 910. Halâj. 2,433.

वैकत्व n. nom. abstr. von विकट adj. Sin. D. 249,15.

वैकथिकँ adj. = विकथायां साधुः gaṇa कथादि zu P. 4,4,102.

वैकयत gaṇa भोरिक्यादि zu P. 4,2,54. वैकयतँविध = वैकयतानां विषयो देशः ebend.

वैकरँ adj. von विकर gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86.

वैकरञ्ज (von 2. वि + करञ्ज) m. Bez. *einer Gattung von Schlangen*, von welcher drei Arten gezählt werden, ungiftig Suçr. 2,263,6. 266,1. 6. वैकरञ्जोदक 263,8.

वैकर्णँ (von विकर्ण) m. 1) du. N. pr. zweier Volksstämme: यो वैकर्णयोर्नराजा न्यस्तः ṚV. 7,18,11; vgl. विकर्ण 2) c). — 2) m. patron., wenn ein वात्स्य gemeint ist, P. 4,1,117. — 3) हिरण्यपर्णो वैकर्णिः स ता मन्मनसो करोतु Pân. Gṛhj. 2,4. nach dem Comm. Bez. *des Windes*; vgl. Ind. St. 5,309.

वैकर्णायन (so ist wohl zu lesen) m. patron. von विकर्ण Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,12.

वैकर्णिँ m. dasgl. Schol. zu P. 4,1,117. 124. gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61. Saṁs. K. 184,a,1.

वैकर्णेयँ m. patron. von विकर्ण, wenn ein Kâçjapa gemeint ist, P. 4,1,124.

वैकर्त (von विकर्त) n. *ein essbarer, nicht näher anzugebender Theil des Opferthiers* Ait. Br. 7,1.

वैकर्तन (von विकर्तन) adj. 1) Bein. Karṇa's MBh. 1,5655. 7094. 4, 990. 7,5419. Ursprung des Namens 1,2782. 4411. — 2) *der Sonne in Beziehung stehend, der Sonne eigen:* °शक्ति Râmâjaṇa 6,1. °कुल *das Sonnengeschlecht* Uttarar. 95,4 (विकर्तन° die neuere Ausg.). — 3) m. patron. Sugrîva's, *eines Sohnes des Sonnengottes*, Râmâjaṇa 6,1.

वैकर्यँ adj. von विकर gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

वैकल्प्य M. 8,95. MBh. 12,4361 und Râǵa-Tar. 3,277 fehlerhaft für वैकल्य.

वैकल्पिक (von विकल्प) adj. (f. ई) *beliebig, freigestellt, facultativ* Âçv.

Çe. 2,1,37. 7,1,17. Schol. zu VS. Pair. 1,75. zu Taitt. Pair. 22,7. zu P. 2,1,1. 4,3,31. 7,1,21. Kull. zu M. 2,6. 3,261. 11,92. Davon nom. abstr. °त्व n. Sidd. K. zu P. 4,4,110.

वैकल्य (von विकल) n. 1) *Gebrechlichkeit, Unvollkommenheit, Schwäche, Mangelhaftigkeit* MBh. 12,4361 (वैकल्प ed. Calc.). Suçr. 1,102,12. 353,7. 15. 2,37,18. 393,15. Hariv. 9588. Spr. 2898. शरीर° Hit. 121, 14. करणानाम् *der Organe* Suçr. 1,330,3. करण° Siddh. 47. Gaupar. zu 18. Vaih. Bhm. S. 53,68. Schol. zu P. 6,2,6 (wohl करणवैकल्य zu lesen). चक्षुर्वैकल्य so v. a. *Blindheit* Kathâs. 74,210. पाद° 64,143. Vaih. Bhm. S. 79,28. Râga-Tar. 8,689. 2169. एकचरण° Pañcat. ed. orn. 4,12. प्राण° Kathâs. 63,126. सर्वत्रापि वस्तुनि किंचिद्वैकल्यम् Mallin. zu Kumâras. 3,28. त्यज्यमानमकामानुर्विकृतैः स्वापदैरपि । गिरिर्वैकल्यमायाति Hariv. 5334. एकाङ्ग° Weber, Ind. St. 59. 111. सर्व° (°वैकल्प falschlich Lois.) M. 8,95. वृत्ति° 10,85. शक्ति° Spr. 2927. व्रत° Pañcat. 166,16. बुद्धि° 254,9. Kull. zu M. 8,67. उपलब्धि° dess. zu 66. आहार° *Mangel an Nahrung* Pañcat. 198,18. संकोच° *das Fehlen, Nichtdasein* Sarvadarçanas. 94,7. — 2) *Verstimmung, Kleinmuth, Verzagtheit* MBh. 7, 5412 (वैक्लव्य ed. Bomb.). Mârk. P. 70,23. fgg. 130,22. Râga-Tar. 3,277 (वैकल्प beide Ausgg.). अत्यन्त° Kull. zu M. 11,70. — 3) *Verwirrung:* चित्त° MBh. 10,112 (°वैक्लव्य ed. Bomb.).

वैकायन m. patron.; pl. Saṅgha-K. 184,b,8.

वैकारिक (von विकार; 1) adj. (f. ई) *auf Umwandelung beruhend, eine Umwandelung erfahrend; neben* तैजस (इन्द्रिय) und तामस so v. a. सात्त्विक Hall in der Einl. zu Siddhântak. S. 66. Bhâg. P. 5,17,22. 10,8, 38. अहंकार MBh. 14,1098. 1101. Suçr. 1,310,8. 9. Verz. d. Oxf. H. 104,b,24. Tattvas. 10. Bhâg. P. 2,5,24. 30. 3,5,29. fg. 26,24. Mârk. P. 45,38. 46. इन्द्रियाणि Tattvas. 15. 46. कर्मात्मन् 33. नेत्रत्व Bhâg. P. 7, 12,29. सर्ग 3,10,16. 25. Mârk. P. 45,48. Verz. d. Oxf. H. 82,b,14. देवा: (सृष्टय:) MBh. 12,13626. 14,1054. Bhâg. P. 2,5,30. 3,5,30. Mârk. P. 45, 49. Verz. d. Oxf. H. 104,b,24 (wohl अहंकारादेवा वै° zu lesen). पुरुष MBh. 12,13627. योनि 14,1066. निद्रा Suçr. 1,329,17. माया Bhâg. P. 10, 73,11. °बन्ध Tattvas. 46. बन्ध Wilson, Siddhântak. S. 145. Leib (bei den Gaina) Colebr. Misc. Ess. II,194; vgl. Weber, Bhagav. 2,171. fg. — 2) n. = विकार *Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung* R. 1,99,35.

वैकारिमत n. gaṇa राजदन्तादि (Composita mit Verstellung der Glieder) zu P. 2,2,31.

वैकार्य (von 1. विकार) n. *Umgestaltung, Umwandelung, Veränderung* MBh. 5,4891. Sch° Çiç. 37.

वैकालिक (von विकाल) adj. *abendlich;* °कम् adv. *in der Abendstunde* Ver. in LA. (III) 19,22.

वैकासेय m. patron. von विकास gaṇa प्रोष्ठादि zu P. 4,1,123.

वैकि m. patron. v. l. (für वैङ्कि) im gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 38,1.

वैकिर (von विकिर) adj. vielleicht *aus einem Brunnen kommend:* Wasser Suçr. 1,173,17.

वैकुण्ठायनीय adj. von विकुण्ठायन gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैकुण्ठ (von विकुण्ठ) 1) adj. und m. Beiw. und Bein. Indra's H. an. 3,173. Med. th. 16. Çat. Br. 14,5,4,6 (= अग्रमख Comm.). Kaush. Up. 4,2. 7. — 2) m. ein N. Vishṇu's (Kṛishṇa's) AK. 1,1,1,13. H. 213. H. an. Med. Hall. 1,22. MBh. 1,2505. 3,8755. 6,301. 13,6998. Hariv. 12563. Gît. 6 in der Unterschr. Pradj. 81,17. Bhâg. P. 1,15. 46. 8,44. 2,10,4. 3,14,47. 15,18. 14. 4,12,42. 13,4. 20,4. 8,5,4. 7,31. Weber, Kṛishṇaj. 249. 294. Pañcar. 1,5,30. fg. 2,2,33. 4,3,36 (S. 249). 8,38. Padma-P. 2,2. *eine Statue* Vishṇu's Râga-Tar. 6,305. 8,2435. — 3) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern H. ç. 5. Bhâg. P. 8,5,4. Mârk. P. 75,71 (entweder pl. zu lesen oder गण zu ergänzen). Verz. d. Oxf. H. 56,b,34. — 4) m. n. Vishṇu's Himmel Spr. (II) 1783. Bhâg. P. 3, 16,1 (विकुण्ठ ed. Bomb.). 8,5,5. 9,4,60. Wilson, Sel. Works I,16. 123. 145. 149. 156. 166. Vop. 26,129. Pañcar. 2,3,62. 4,8,39. Weber, Kṛishṇaj. 222. 230. °गति Pañcat. 48,3. Verz. d. Oxf. H. 13,b,18. 62,a,41. 250, b,32. स्वर्ग Pañcat. ed. orn. 56,21. °स्वर्ग 53,14. °लोक Verz. d. Oxf. H. 8,a,30. °भुवन 248,a,32. fg. — 5) m. Bez. *des 24ten Tages im Monat Brahman's;* s. u. कल्प 2) d). — 6) m. *ein best. Tact;* s. u. प्रतिताल 1). — 7) m. N. pr. des Verfassers eines Mantra im Kâṭh. Ind. St. 3,458. eines Lehrers Hall 7. 132. °पुरी 205. Verz. d. Oxf. H. 227,a, No. 337. Wilson, Sel. Works I,231. °शिष्याचार्य Hall 135. — 8) f. आ *die Çakti Vaikuṇṭha's (Vishṇu's)* Pañcar. 3,2,8. — Vgl. नित्य°.

वैकुण्ठत्व n. nom. abstr. von वैकुण्ठ 2) Hariv. 2379.

वैकुण्ठीय adj. zum *Himmel* Vaikuṇṭha *in Beziehung stehend:* गति Pañcat. 48,3, v. l. in der ed. Bomb.

वैकृत (von विकृति) 1) adj. = विकृत P. 5,4,37, Vârtt. 5. a) *durch Umwandlung entstanden, abgeleitet, secundär* (Gegensatz प्राकृत): Laute RV. Prât. 2,13. 6,4. Comm. zu Taitt. Prât. 5,22. 6,14. 7,2. 13,13. 14,4. 5. सर्ग VP. 37. Bhâg. P. 2,10,46. 3,10,13. 17. 25. Mârk. P. 47,33. fg. Verz. d. Oxf. H. 82,b,18. fg. यज्ञा: Bhâg. P. 10,84,31. माया: Siddhântak. 43 (वैकृतिक alle Autt. gegen das Metrum). — b) *auf Umwandlung beruhend, eine Umwandlung erfahrend* (= वैकारिक und सात्त्विक): अहंकार Siddhântak. 25. बन्ध Wilson, Siddhântak. S. 145. subst. so v. a. अहंकार MBh. 13,1090. — c) *entstellt, hässlich, widerwärtig:* = बीभत्स Bhar. zu AK. 1,1,3,19 nach ÇKDa. वेष MBh. 7, 9513. वेषवैकृत 2,840. — d) *nicht natürlich, künstlich:* कुलानि *nicht durch Zeugung, sondern durch Adoption u. s. w. fortgeführte Geschlechter* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 89,30. — 2) m. Bez. eines best. Krankheitsdämons Hariv. 9560. — 3) n. = विकृति. a) *Umwandlung, Veränderung, Entstellung, Verunstaltung, ein veränderter —, abnormer Zustand* P. 6,1,139. MBh. 3,10774. प्रायेण गतसत्त्वानां पुरुषाणां गतायुषाम् । दृश्यमानेषु चिह्नेषु परं भवति वैकृतम् ॥ R. ed. Bomb. 6,48,32 (23, 36 Gorr.). अङ्ग° R. Schl. 1,24,12. Suçr. 1,8,16. 43,9. 103,7. नेत्रादीनाम् 253,20. अश्मरि° 263,12. वैकृतापक्व 63,20. v. l. für विकृति 319, 16. Râga-Tar. 6,294. गर्भस्य Jâân. 3,163. स्वर° Verz. d. Oxf. H. 307, b,30. अधिकोद्गतविद्रुमानन° adj. Kathâs. 12,78. वागादि° Sâm. D. 75,30. वर्ण° *Ausartung der Kaste* Verz. d. Oxf. H. 47,b,10. 14. — b) *eine unnatürliche Erscheinung, portentum:* तत्प्रतीपपवनादि वैकृतं प्रेक्ष्य Rasav. 14,62. Vaih. Bhm. S. 21,26. 32,34. fg. दिव्यं परुषवैकृतम् 46,4. 10. 12. fg. 22. fg. 32. Râga-Tar. 3,505. — c) *entstelltes Wesen* so v. a. *Ver-*

änderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung MBu. 13,2322. R. 1,9,45 (44 Gorr.). श्रमगार्तिरिपुत्रासनुदादौ Spr. (II) 974. भय° Rîéa-Tar. 8, 1294. 1360 (am Ende eines adj. comp.). — *d) Wechsel der Gesinnung, Feindseligkeit, feindseliges Benehmen:* भवत: (so ist wohl zu lesen) प्रति MBu. 2, 884. fg. Hariv. 4274. शास्त्र° adj. Kathâs. 68,20. 70,72. कवास्मे वङ्क वैकृतम् 79, 2. अवैकृता adj. 123,24. Rîéa-Tar. 4,707. 6,215. 8,1644. 2497. — Vgl. अङ्ग°.

वैकृतवत् (von वैकृत n.) adj. *entstellt, krankhaft erregt:* द्वेषादि° Spr. (II) 3029.

वैकृति f. in बुद्धि° MBu. 10, 116 fehlerhaft für °वैकृत n., wie die ed. Bomb. liest.

वैकृतिक (von विकृति) adj. *der Veränderung unterworfen,* = नैमित्तिक Wilson, Sânkhjak. S. 141. fg. im Text 43 alle Ausll. fehlerhaft für वैकृत (so bei Lassen corrigirt), wie das Metrum zeigt.

वैकृत्य (von विकृत) n. 1) *Umwandelung, Veränderung:* मनस: R. 5, 14, 39. *zum Schlechtern, Verschlimmerung, Ausartung:* चातुर्वर्ण्यस्य Hariv. 11311. — 2) *eine unnatürliche Erscheinung, portentum* MBu. 16, 233. Varâh. Bhp. S. 46, 30. 58. — 3) *eine feindselige Gesinnung* R. 5, 85,22. — 4) = वीभत्सरस *Widerlichkeit* Çabdar. im ÇKDa.

वैक्रास (von विक्रास) n. *ein dem Diamant ähnlicher Edelstein* Rîâm. im ÇKDa.

वैक्रान्तक (von वैक्रान्त) n. *ein best. Mineral* Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761.

वैक्रिय (von विक्रिया) adj. *auf Umwandlung beruhend, einer Umwandlung unterworfen:* देह Wilson, Sel. Works I, 309. Çatr. 2, 399. °कारण Ind. St. 10, 312, N. 2.

वैक्लव (von विक्लव) n. *Befangenheit, Verwirrung, Kleinmuth* Bhâg. P. 1,11,33. Mârk. P. 61,34.

वैक्लव्य (wie eben) n. 1) dass.: शोकवैक्लव्यकारक MBu. 1, 890. वैक्लव्यं परमं गता 3,2944. 7,5412 (nach der Lesart der ed. Bomb., वैकत्थ्य ed. Calc.). Hariv. 11036 (S. 791). R. 3,27,5. 66,13. 4,6,6. 15,6. 5, 9,39. 6,21,33. 69,19. Mâlâv. 54,24. Spr. 4626. Çik. 81. 111,3 (am Ende eines comp. f. या). Milarîm. 142,7. Kathâs. 101,271. Bhâg. P. 1,6,19. 13,33. 42. 3,15,35. 4,26,18. 9,19,26. 10, 17, 25. 66,37. Mârk. P. 122, 18. मनो° MBu. 1,891. चित्त° 10,112 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Sâh. D. 76,2. इष्टनाशादिभिर्यत्तेवैक्लव्यम् 75,21. य° Kathâs. 18, 309. सवैक्लव्यम् adv. Milarîm. 164,7. Prab. 90,1. Verz. d. Oxf. H. 142,*a*, No. 290, Z. 6. — 2) *Gebrechlichkeit, Schwäche:* श्रावैक्लव्यमुक्तेन गात्रेण Bharata beim Schol. zu Çik. 60,11. wohl fehlerhaft für वैकल्य.

वैक्लव्यता f. = वैक्लव्य 1): साकं त्वदर्शनाद्राम कामवैक्लव्यतां गता R. 3,23,40.

वैक्ष adj. = वित्त शीलमस्य gaṇa कुत्सादि zu P. 4,4,63.

वैक्षरी f. Bez. *eines best. Lautes* Weber, Rîmây. Up. 335. fg. Comm. zu Bhâg. P. 10,85,9. Mahâbhâshja S. 26,1 v. u.

वैखान als Bein. Vishṇu's MBu. 13,7055.

वैखानस (von विखानस) 1) m. pl. Bez. *einer Art von* Ṛshi Pâśâv. Ba. 14,4,7. Taitt. Âr. 1,23,3. MBu. 1,7685. 13,4126. 4333. Hariv. 4353. R. 1,51,27. 3,10,2. 39,30. 4,40,60. 44,40. Kâraka, Einl. Bhâg. P. 3,12, 42. Verz. d. Oxf. H. 310,*a*, 30. शतं वैखानसा: Liedverfasser von ṚV. 9, 66. अङ्गिरस: Ind. St. 3,237,*a*. °मते स्थित: M. 6,21. वैखानसाध्वर MBu. 3,3331. °श्रौतसूत्र Ind. St. 9,175. °सूत्र Verz. d. Oxf. H. 270,*b*, 46. वैखानसाचार्य Ind. St. 1,82. Bez. *best. Sterne am Himmel* Varâh. Bṛh. S. 48,67. — 2) m. *ein Brahmane im 3ten Lebensstadium, der das Haus verlassen hat und in den Wald gezogen ist; Einsiedler* Taitt. 2,7,2. H. 809. Halâj. 2,239. Vaśiṣ. beim Schol. zu Bhâṭṭ. 3,46. = अकृष्टपच्यवृत्ति R. ed. Gorr. Bd. III, S. 467. — Ragh. 14,28. Çik. 6,17. Uttarar. 11,19 (16,5). 72,9 (93,5). Prab. 43,6. 44,7. Bhâṭṭ. 3,46. °सुमंमत (तपस्) Bhâg. P. 4,23,4. — 3) m. *patron. des* Vamra ṚV. Anukr. *des* Purushanman Pâśâv. Ba. 14,9,29. — 4) m. pl. Bez. *einer best. Vishṇu'itischen Secte* Wilson, Sel. Works I, 15. fg. Verz. d. Oxf. H. 248, *a*, 18. 31. वैखानसागम: Verz. d. B. H. No. 1025. — 5) N. pr. *eines Autors* (m.) *oder Titel eines Werkes* (n.) Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 279,*b*, 1. 5. — 6) adj. *zu den* Vaikhânasa *oder zu einem Einsiedler in Beziehung stehend, ihnen zukommend u. s. w.:* सूत्र MBu. 13, 7280 (वै मानसं ed. Bomb.). Hariv. 12832. R. 4,44,42. मानस् Ind. St. 3,237, *a*. TS. 7,1,4,2. Pâśâv. Ba. 14,4,6. Liṭ. 7,3,15. 9,13. मार्ग R. 2,52, 68. व्रत Çik. 26. तन्त्र *das* Tantra *der* Vaikhânasa *genannten Secte* Bhâg. P. ed. Burn. I, XCV.

वैखानसि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,3 v. u.

वैगलेय adj.: गण N. einer best. *Sippe* böser Geister Hariv. 12807.

वैगुण्य (von विगुण) n. *fehlerhafte oder mangelhafte Beschaffenheit:* स्पर्श° Suçr. 1,49,11. 91,6. घनित्व° 2,47,21. शिरस: 91,18. Kâç. Ça. 1,6,14 (य°). Comm. 133,14 (य°). दर्शपूर्णमासयो: Âçv. Ça. 12,4,14. स्थानकरण° Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 33. वर्णास्वरवैगुण्यरहित (वेद) Kull. zu M. 2,144. जन्मन: *Mangelhaftigkeit der Geburt so v. a. niedrige Herkunft* M. 10, 68. *Mangelhaftigkeit, Fehlerhaftigkeit, Schlechtigkeit* von Personen MBu. 1,1282. 9,2625. 12,10655. R. 3,45,9. Spr. 1854. *so v. a. Ungeschicklichkeit:* प्रातकस्य M. 8,293.

वैघ्रपि von विघ्रप gaṇa सुनंगमादि zu P. 4,2,80.

वैघ्रि von विघ्र ebend.

वैघ्रेय m. patron. von विघ्र gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

वैघस (von विघस) m. N. pr. *eines Jägers* Hariv. 1206.

वैघसिक (wie eben) adj. von *Speiseüberresten lebend* MBu. 14, 2353 nach der Lesart der ed. Bomb., वैश्वसिक ed. Calc.

वैघात्य n. nom. abstr. von विघातिन् gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैङ्कि m. patron. gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2, 4, 61. pl. 66, Schol. — Vgl. वेकि.

वैङ्कि m. patron. (प्राच्यगोत्र): pl. वैङ्कीया: P. 4,2,113, Schol.

वैङ्क्य N. pr. *eines Gebietes* LIA. II, 935.

वैचक्षण्य (von विचक्षण) n. *Erfahrenheit, das Bewandertsein, Geschicklichkeit* Brar. Nîtiç. 19,130. धर्मार्थकाममोक्षेषु कलासु च Spr. (II) 3122. मति° Daçak. 86,13.

वैचित्त्य (von 2. विचित्त) n. *Geistesverwirrung, Geistesabwesenheit* Dhûrtân. 26,38. Suçr. 2,230,13. Milarîm. 36,9. 46,12. 66,16 (an den beiden letzten Stellen fehlerhaft वैचित्र्य). Daçak. 4,74. Hier und da fälschlich वैचित्य geschrieben.

वैचित्र (von विचित्र) 1) n. *Seltsamkeit, Absonderlichkeit, Wunderbar-*

keit: कर्मणो गतेः Rîâ-Tar. 1,275. vielleicht nur fehlerhaft für वैचित्र्य. — 2) f. ई dass.: अहो सुन्दरनिर्माणवैचित्री काव्यसो विधेः Kathâs. 59,7. वचनवैचित्र्योपमाधार्यस्य Kull. zu M. 3,112. — Vgl. वैचित्र्य.

वैचित्रवीर्य (von विचित्रवीर्य) m. patron. Dhṛtarâshṭra's, Pâṇḍu's und Vidura's Kâṭy. 10,6 in Ind. St. 3,469. MBh. 1,3800. 7382. 3,14744. 5,31. 6,4726 वैचित्र्य° falschlich ed. Calc.). 11,46. 15,46. Hariv. 3010. Bhâg. P. 4,23,38. 10,49,17.

वैचित्रवीर्यक (wie eben) adj. Vikitravîrja *gehörig* u. s. w.: क्षेत्र Hariv. 1826.

वैचित्रवीर्यिन् m. = वैचित्रवीर्य MBh. 9,2319.

वैचित्र्य (von विचित्र) n. 1) *Mannichfaltigkeit, Verschiedenartigkeit* Kap. 3,31. Nîlak. 41. 114. Hit. Pr. 2. Spr. (II) 1375. Varâh. Bṛh. S. 80, 2. 88,15. Kathâs. 12,77. 94,136. Rîâ-Tar. 1,6. 8,2398. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 221. H. 70. Kusum. 4,21. 7,20. Sâh. D. 102,9. Bhâg. P. 5,26, 1. 6,1,46. — 2) *Seltsamkeit, Absonderlichkeit, Wunderbarkeit* Mâlatîm. 16,2. Sâh. D. 691. Kâç. zu P. 3,3,96. प्रभाव° Çâṅk. 3,1. भवत्स्वभाव° Rîâ-Tar. 8,1790.1792. — 3) fehlerhaft für वैचित्त्य Mâlatîm. 46,12. 66,16.

वैच्छन्दस adj. von विच्छन्दस् Lâṭy. 7,7,33. 9,6. 8,1,15.

वैद्युत (von विद्युत) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,19.

वैद्यग्धकि adj. von विदग्ध gaṇa वराहादि zu P. 4,2,80.

वैद्यन (von विद्यन), °देव N. pr. eines Fürsten, Verfassers der Prabodhakaumudikâ, Verz. d. Oxf. H. 166,*b*, No. 370.

वैद्यनन (von विद्यनन) adj. *zur Niederkunft in Beziehung stehend;* in Verbindung mit मास् oder m. mit Ergänzung dieses Wortes *der Monat der Niederkunft, der letzte Monat in der Schwangerschaft* Rîâ-Tar. 1, 74. AK. 2,6,1,39. H. 341. Hâlây. 2,344.

वैद्यन्य (von विद्यन) n. *Menschenleere, Einsamkeit* Rîâ-Tar. 8,1303.

वैद्यप्त (von विद्यप्त्, partic. praes. von 1. द्यु mit वि, oder von विद्यप्त) Vop. 7,32. fg. 1) m. *a*) Indra's *Banner* H. 178. Med. t. 220. MBh. 2,873 (Indra's *Palast* nach Nîlak.). 3,1721. — *b*) *Banner, Fahne* überh. AK. 2,8,2,67. H. an. 4,126. सवैद्यप्तास्य गजाः R. 2,89,20 (97,25 Gorr.). — *c*) Indra's *Palast* AK. 1,1,1,41. H. 178. H. an. Med. Lalit. ed. Calc. 67,12. 238,5. 260,6. Burn. Intr. 390. — *d*) pl. bei den Gaina Bez. einer Klasse von Göttern, einer Abtheilung der Anuttara, H. 94, Schol. — *e*) Bein. Skanda's H. ç. 62. H. an. गुह in Med. fehlerhaft für गुरु. — *f*) N. pr. eines Berges Hariv. 8993. 9736. तीरादस्य समुद्रस्य मध्ये रजतसप्रभः MBh. 12,13721. — 2) f. ई *a*) *Banner, Fahne* H. 750. H. an. Med. Hâlây. 2,303. MBh. 3,14531. 6,5234. 13,5276. Râgân. 6,8. Kathâs. 26,282. 81,35. Hit. 26,2. — *b*) *ein bes. Sieg verheissender Kranz* (माला, सज्) MBh. 1,2348. 7,1274. 9,2667. Bhâg. P. 3,17,21. 5,23,7. 8,8,15. 9,15,20. 10,21,5. 29,44. — *c*) Bez. zweier Pflanzen: *Sesbania aegyptiaca Pers.* H. an. Med. *Premna spinosa* H. an. Acuc. 42. Suçr. 1,137,16. 2,36,19. 77,21. — *d*) N. *der achten Nacht im* Karmamâsa Ind. St. 10,296. — *e*) Titel eines Wörterbuchs Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,7. 8. 126,*a*,20. 164,*a*,5. Stenzler, de Lexicogr. sanscr. principiis S. 18. fgg. Schol. zu H. 623. 827. °कार 316. 604. °कारक 323. 594. — *f*) Titel eines Commentars zu Vishṇu's Dharmaçâstra Stenzler in der Einl. zu Jîân. S. VI. Ind. St. 1,467. — *g*) N. pr. einer Stadt oder eines Flusses AV. Paric. in Ind. St. 93 (56). विप्त° wohl fehlerhaft. — 3) n. *a*) N. eines Thores in Ajodhjâ R. 2,71,30. — *b*) N. pr. einer Stadt R. Gorr. 2,8,12. 7,85,6. — Vgl. करिवैद्यप्तसो und प्रयोग°.

वैद्यप्तिक (von वैद्यप्ती) 1) m. *Fahnenträger* AK. 2,8,2,39. H. 764. — 2) f. का *a*) *Banner, Fahne:* मकरकेतोर्ध्वगहिद्वय° Mâlatîm. 13,19. — *b*) *eine Art Perlenschnur* Vikr. 12,17. fg. im Prâkrit. — *c*) *Sesbania aegyptiaca Pers.* AK. 2,4,2,46. *Premna spinosa* Râgân. im ÇKDa. Acuc. 16.

वैद्यपि (von विद्यप) m. N. pr. des 3ten Kakravartin in Bhârata, = मघवन् H. 692.

वैद्यपिक (wie eben) adj. (f. ई) *Sieg verleihend, — verheissend* Varâh. Bṛh. S. 48,74. सज् Hariv. 13086. कर्मन् 13733. संग्रामतूर्य Pâṇkâv. ed. orn. 57,14. वैद्यपिकीनां (वैद्यपिकानां im Comm. zu Bhâg. P. 10,45,36) विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,20.

वैद्यपिन adj. = विद्यपिन् dass.: ततो ऽपश्यत्स्त्वतं हारि प्रभुं वैद्यपिनं (वै द्य°?) गजम् MBh. 3,1752. विद्यपिनं Inḍr. 1, 29. विद्यपिनमेव वैद्यपिनं स्वार्थे तद्धितः Nîlak.

वैद्यर m. pl. N. einer Schule Müller, SL. 372, N. 14. वैद्यव Ind. St. 3,265.

वैद्यव s. u. वैद्यर und वैद्यवन.

वैद्यवन schlechte v. l. für पैद्यवन Spr. (II) 3109. वैद्यवन und वैद्यव Saṁsk. K. 185,*a*,9.

वैद्यात्य (von विद्याति) n. *Ungleichartigkeit, Heterogenetität* Sarvadarçanas. 114,1. Kusum. 6,14. 7,7. 13. 16,3.

वैद्यान m. patron. des Vṛça Pâṇkâv. Br. 13,3,12 nach Sây. Ind. St. 10,32. nach Weber ist वै Partikel.

वैद्यापक und वैद्यापकि adjj. von विद्यापक gaṇa कच्छादि zu P. 4,2,133. fg.

वैद्यि (wohl वैद्यि) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 5,159.

वैद्यानिक (von विद्यान) adj. *kenntnissreich, erfahren* AK. 3,1,4. H. 343.

वैद्यर्भ m. patron. von विदर्भ gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

वैदूलिक, ये रुद्रमुपक्रीवन्ति काली वैदूलिका नराः Verz. d. Oxf. H. 58, *b*,42. 59,*a*,1. गता वैदूलिकाभवम् 58,*b*,38.

वैदव m. patron. von वीदु Pâṇkâv. Br. 11,8,14.

वैडूर्य P. 4,3,84 (auf विदूर zurückgeführt) 1) n. (auch m.) *Beryll* (nicht *Lasurstein*) Taitt. 2,9,29. H. 1063. Hâlây. 2,20. Ind. St. 3,148. Adbh. Br. ebend. 1,40,8 und bei Weber, Omina 325. fg. MBh. 1,1330. 1429. 2,1893. मणिवैडूर्यलोचन (मार्जार) 12,4978. R. 2,91,29 (100,26 Gorr.). 72. °रुचिरच्छद 3,59,21. 4,41,67. 44,89. 5,75,38. 112,83. 7, 13,5. Suçr. 1,228,5. 240,17. 2,166,12. °वर्णा विमला च दृष्टिः 319,7. Kumâras. 7,10. Megh. 74. Çic. 3,45. Varâh. Bṛh. S. 10,21. 28,3. 29,5. 30,20. 37,1. 43,23. 46. 50,22. 61,14. 64,3. 80,4. 84,2. Bhâg. P. 4,25, 15. 10,3,10. Mârk. P. 23,103. Hiouen-thsang 1,482. Vie de Hiouen-thsang 145. Wassiljew 161. °मणि Hâs. 27. MBh. 13,3076. R. 3,49,2. 54,15. 6,106,22. वैडूर्योपलक Suçr. 2,336,16. In Verbindung mit मणि m.: मणिनेष्टा च वैडूर्यान्क्षेमवद्वान् MBh. 4,1275. P. 4,3,84, Schol. नर-वैडूर्य m. so v. a. *ein Juwel von Mensch* Bhâg. P. 10,55,31. Vgl. इन्द्रवैडूर्य. — 2) N. pr. der Gegend im südlichen Indien, wo *Berylle* vorzugsweise gefunden werden, Varâh. Bṛh. S. 14,14. °भू Rîâ-Tar. 4,200. N. pr. eines Berges: °पर्वत (मणिमय) MBh. 3,9343. 10306. Hariv. 9490.

12407. VP. 169. Bnlc. P. 5,16,27. Miaк. P. 55,9 (fehlerhaft वेदुर्य). 58, 24. Journ. of the Am. Or. S. 7,41. — 3) adj. (f. या) *aus Beryll gemacht* MBn. 4,24. शक्तिं कनकवैदूर्याम् (°वैदूर्यभूषिताम् ed. Bomb.) 6,3180. 7, 8498. R. 5,13,38. Suça. 2,324,17. Bnlc. P. 3,15,20. — Das Wort wird einer Volksetymologie zu Liebe in der Regel mit द् geschrieben.

वैदूर्यकान्ति 1) adj. *die Farbe des Berylls habend* Varâh. Bṛn. S. 10,21. स्निग्ध° 28,3. — 2) m. N. eines Schwertes Kathâs. 70,61.

वैदूर्यप्रभ m. N. pr. eines Schlangendämons Vâsuk. 87.

वैदूर्यमणिवत् (von वै° + म°) adj. *Berylle enthaltend* R. 4,50,30.

वैदूर्यमय (von वैदूर्य) adj. (f. ई) *aus Beryll bestehend, — gemacht* MBn. 6,198. R. 4,44,43. Spr. 3311.

वैदूर्यशिखर m. N. pr. eines Berges (*einen Gipfel von Beryll habend*) MBn. 3,8359.

वैदूर्यसङ्ग n. N. pr. einer mythischen Stadt Kathâs. 65,57.

वैण (von वेणु) m. *Rohrarbeiter* M. 4,215 (वेण v. l.). Jâǵ. 1,161.

वैणव (von वेणु) 1) adj. (f. ई) a) *aus Rohr (Bambusrohr) bestehend oder gemacht* P. 4,3,136. Çat. Br. 6,3,4,21. 4,4,5. TS. 5,1,4,4. दण्ड Âçv. Gṛhj. 3,8,20. Gobh. 3,4,22. AK. 2,7,45. H. 815. Hâlâ. 4,41. Verz. d. Oxf. H. 269,a,42. Bnlc. P. 12,8,33. यष्टि M. 4,36. MBn. 1,2350. 14, 1253. पात्र Wasan, Kâsikâ. 278. fg. Suça. 1,99,3. Pfeile MBn. 7,3672. निचय: *Vorräthe von Rohr* 12,3240. अग्नि *Feuer von Bambusrohr* Bnlc. P. 11,30,24. — b) *aus Hörnern des Bambus bereitet:* चक्र Kâṭy. Çr. 4,6,17. — c) *von einer Flöte kommend:* निष्पतो वैणव: शब्द: क्षणद्वीणासमो भवेत् Verz. d. Oxf. H. 235,b,38. — 2) m. a) *Flöte:* शङ्खवैणवनि:स्वने: MBn. 5,3143. — b) patron. Âçv. Çr. 12,14,6. — 3) f. ई *Tabaschir* Râǵân. im ÇKDr. — 4) n. a) *die Frucht des* Veṇu AK. 2,4,2, 18. — b) *eine Art Gold* (वेणुतोभव) H. ç. 162. — c) N. eines Sâman Ind. St. 3,237,b. — d) N. pr. einer Varsha in Kuçadvîpa Miaк. P. 53,25. eines heiligen Platzes Colebr. Misc. Ess. I, 157.

वैणविक (wie eben) m. *Flötenspieler* AK. 2,10,13. H. 925.

वैणविन् (von वैणव) adj. *mit einer Flöte versehen* MBn. 13,1172. वेणविन् ed. Bomb. und Nîlak.

वैणसोमक्रतवीय n. N. eines Sâman Ind. St. 3,237,b.

वैणहोत्र m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛshṭaketu VP. 409. वेनहोत्र die neuere Ausg. — Vgl. वेणुहोत्र.

वैणावत, वैणावताय प्रतिधत्स्व शङ्कुम् Liṭ. 3,10,9. es ist wohl *der Bogen* gemeint.

वैणिक (von वीणा) m. *Lautenspieler* AK. 2,10,13. H. 924. Kathâs. 63,160. 162. — Vgl. मृग°.

वैणुक (von वेणु) 1) adj. a) = वैणव साधु gaṇa गुडादि zu P. 4,4,103. — b) adj. zu वेणुकीया gaṇa वित्त्वकादि zu P. 5,4,133. — 2) m. *Flötenspieler* Çârdar. im ÇKDr. — 3) n. *ein Bambusstock zum Antreiben des Viehes (Elephanten)* AK. 2,8,2,9. Trik. 3,3,352.

वैणुकीय adj. von वेणुक gaṇa गहादि zu P. 4,2,138.

वैणुकेय Mân. m. 26 fehlerhaft für वैणुकेय.

वैणेय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,264.

वैण्य s. वेन्य.

वैतंसिक (von वीतंस) 1) m. *Vogelsteller* (*Fleischer* AK. 2,10,14. H. 930. Hâlâ. 2,440): इमाञ्छकुनकावाडान्कृत्ति वैतंसिको यथा MBn. 3,1296. निकृत्या वञ्चनायोगैश्चरन्वैतंसिको यथा 4,1563. 12,8803. Govardhana, Âryâsapt. 154,b (nach Benfey, der hier die gangbare Bed. annimmt). धर्म° (s. auch bes.) *der Tugend nachstellend* so v. a. *Tugend heuchelnd:* व्याजैर्धर्मं चरिष्यन्ति धर्मवैतंसिका नरा: MBn. 3,13022. 12,246. 8894. 14, 2836. R. 4,16,15. 36. द्यूत° wohl *zum Spiel verlockend* (u. d. W. anders erklärt) R. Gorr. 2,90,28. — 2) n. *hinterlistiges Nachstellen, — Fangen:* व्यलीकमपि पत्त्र (पत्त्रं ed. Bomb.) चित्तवैतंसिकं (= चित्तबन्धनं Nîlak.) तव MBn. 12,1133. — Vgl. द्यूत°.

वैतण्डिक (von वितण्डा) adj. *mit der Chicane in der Disputation vertraut* gaṇa कयादि zu P. 4,4,102.

वैतण्डिन् (wie eben) m. N. pr. eines Ṛshi Harîv. 9873.

वैतण्ड्य (wie eben) m. N. pr. eines Sohnes des Âpa VP. 120.

वैतथ्य (von वितथ) n. *Unwahrheit, Falschheit* Bnlc. P. 5,14,10. Gaupar. zu Miṇḍ. Up. S. 402. 406. 411. fgg. वैतथ्योपनिषद् Notices of Skt Mss. 49. — Vgl. द्वैतवैतथ्योपनिषद्.

वैतनिक (von वेतन) adj. (f. ई) *Lohn empfangend, für Lohn dienend, Söldling* P. 4,4,12. AK. 2,10,15. H. 361.

वैतरण (von वितरणा) 1) adj. (f. ई) a) *der über einen Fluss überzusetzen gedenkt:* यत्र वैतरणी नाम नदी वैतरणीवृता MBn. 5,3792. वितरणो: (वैतरणीनदीसंज्ञकनरकगामिभि: Nîlak.) ed. Bomb. — b) *über den Höllenfluss hinübergeleitend:* धेनु (die man Brahmanen schenkt) Colebr. Misc. Ess. I, 177. तां (वैतरणीं) तर्तुकामो यच्छामि कृष्णां वैतरणीं तु गाम् Verz. d. B. H. No. 1111. subst. f. mit Ergänzung von गो u. s. w.: 1020. वैतरण्यादिदान 1106. fg. Verz. d. Oxf. H. 87,a,36. — 2) m. patron. ṚV. 10,61,17. N. pr. eines Arztes, eines Sohnes des Çatadhanvan, Harîv. 2037. 8057. 8078. Suça. 1, 1, 8. Verz. d. Oxf. H. 358,a,5. — 3) f. वैतरणी a) N. pr. eines heiligen Flusses (in Kaliṅga) MBn. 2,373. 3,6034. 8148 (वतरणी in der ed. Calc. Druckfehler). 10098. 6,342 (VP. 184). Harîv. 7736. 9511. R. 4,44,68. Miaк. P. 57,24. Verz. d. Oxf. H. 46,b, N. 3. 77,b, 22. LIA. I, 83. — b) N. pr. des Höllenflusses AK. 1,2,3,2. H. 1086. an. 4,88. Med. g. 108. MBn. 1,6457. 5,3792. 6,2688 (मह्या°). 4719. 7,7730. 12,11138. 13078. 16, 142. 18, 84. R. 3, 59, 20. 7, 21, 14. Spr. (II) 1974. VP. 207. 209. Bnlc. P. 2,2,7. 5,26,7. 22. 7,9,42. वैतरणीनद्युत्तारिका गो: Ind. St. 1,39,8. Colebr. Misc. Ess. I, 177. भव° Bnlc. P. 7, 9, 41. वैतरणि Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,103. — c) N. pr. der Mutter der Râkshasa H. an. Med.

वैतरणि f. s. u. वैतरण 3) b) am Ende.

वैतस (von वेतस) 1) adj. (f. ई) *aus spanischem Rohr bestehend* oder *gemacht:* कर TS. 5,3,12,2. TBr. 3,8,20,4. Çat. Br. 12,8,2,15. 13,2, 2,19. 3,4,3. वाद्न Kâṭy. Çr. 13,2,20. *Korb aus Rohr* 19,2,11. — Kauç. 27. °शाखा: R. 2,55,18. यज्ञमेधस्य वैकस्य (पशस्य ed. Bomb.) वैतसो भाग इष्यते 1,13,42 (वैतसे करे निधाय ग्रहदातव्य इष्यते Comm.). वैतसी वृत्ति: *das Verfahren des spanischen Rohres* so v. a. *das Sichschmiegen, Sichfügen in die Verhältnisse* MBn. 4,1560. 12,4209. 15,231. Rasn. 4, 35. Spr. 3175. Kathâs. 5, 6. 69, 73. — 2) m. a) *Röhrchen*, nach Naigh. 3,29 und Nir. 3,21 euphem. so v. a. *das männliche Glied:* त्रि: स्म माह्नो: सवयो वैतसेन ṚV. 10,95,5. 4. — b) *Rumex vesicarius* Gaṇîn.

im ÇKDn.

वेतसक adj. von वेतसकीया gaṇa वित्वकादि zu P. 5,4,153.

वेतसेन m. patron. des Purûravas Bhâg. P. 11,26,35. वीता सेना स्त्रीभावं प्राप्ता यस्य तस्य स्त्रीभावं प्राप्तस्य पुत्रो वेतसेनः पुरूरवाः Comm. Aus dem missverstandenen instr. वेतसेन ṚV. 10,95,4 gebildet.

वेतस्त adj. von *der* Vitastâ *kommend, in ihr enthalten* Râǵa-Tar. 1, 28. 3,362.

वेतस्तिक (von वितस्ति) adj. *eine Spanne lang:* Pfeile (gebraucht, wenn der Feind unmittelbar vor Einem steht) MBh. 7,4920. fg. 8796. Harîv. 8488. 8491.

वेतकव्य (von वीतकव्य) 1) m. patron. Âçv. Çr. 12,10,10. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55, 9. 11. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 308, Cl. 32. Aruṇa Verfasser von ṚV. 10,91. ṚV. Anukr. plur. AV. 5,18, 10. 19,1. MBh. 13,1965. 1978. 2126. — 2) n. N. eines Sâman Pañcav. Br. 3,1,8. Liṭ. 7,2,1. 13. Ind. St. 3,237,5. वेतकव्यमोकोनिधनम् desgl. ebend.

वेताढ्य m. N. pr. eines Berges Çatr. 1,345. 2,349. vielleicht वेताढ्य (von वित्ताढ्य) zu lesen.

वेतान (von वितान) 1) adj. *auf die vertheilten Feuer bezüglich* u. s. w. Çâṅkh. Çr. 4,13,10. Pân. Gaṇ. 3,10. वेताने कर्मणि ततो MBh. 1,2427. 6387. 3,14953. Harîv. 13231. कर्म वेतानसंभवम् MBh. 3,15146. वेतानोपासना: क्रियाः Jâǵ. 3,17. व्रतयः M. 6,25. Çâṅ. 83. कल्प Verz. d. Oxf. H. 55,b,38. शाट्यायनक Çâṅ. Çr. 43,12. n. so v. a. वेतानं कर्म. नित्यानि विनिवर्तन्ते वेतानवर्जम् Pân. bei Kull. zu M. 5,85. °कुशल M. 11,37. °नित्य MBh. 12,2335. °स्थ 13,3515. वेताने समुपस्थिते 14,784. °कल्प AV. Paric. in Verz. d. B. H. 92 (49). °सूत्र, °प्रायश्चितसूत्र Ind. St. 3, 175. — 2) aus metrischen Rücksichten st. वितान *Tragbimmel, Baldachin* Bhâg. P. 3,23,19. = वितानसमूह Comm., was aber nicht richtig ist, da das Wort im pl. steht und ausserdem विचित्र vor sich hat. — 3) m. patron. Ind. St. 3,281. वेतायन v. l.

वेतानिक (wie eben) adj. = वेतान 1): कर्मन् Âçv. Gṛhj. 1,1,1. Çr. 1, 1,2. M. 7, 78. MBh. 13, 3067. Bhâg. P. 4, 1,61. 6,3,25. विधि 7,14,16. Çaunak. im ÇKDn. Feuer Kâtj. Çr. 1,1,16. Jâǵ. 1,97. अग्निक्षेत्र M. 6, 9. शाट्यायनक Çâṅ. 31,11. द्विज: *Brahmanen, welche die Vorschriften in Betreff der Vertheilung der Feuer beobachten,* Bhâg. P. 10,40,3.

वेतायन m. patron. Ind. St. 3,281. वेतान v. l.

वेताल adj. (f. ई) *zu den* Vetâla *in Beziehung stehend, sie betreffend:* कृत्यावेतालादिषु कर्मसु Varâh. Bṛh. S. 69,37. वेताली सुन्दरी *ein best. Metrum,* = वेतालीय Comm. zu Ghaṭ. 19.

वेतालकि m. N. pr. eines Lehrers des Ṛgveda VP. 278.

वैतालिक (von 2. वि + ताल) 1) m. *Barde, Lobsänger eines Fürsten* (sein Beruf ist es auch, die Tageszeiten anzugeben; im Drama erscheinen öfters ihrer zwei zugleich) AK. 2,8,2,65. H. 794. an. 4, 35. Med. k. 215. Halâj. 2,280. Prâtiçâkh. 28,a,9. MBh. 1,6940. 12,1356. R. Gorr. 2,12,26. 117,17. Çiç. 5,67. Çâk. 62,1. Vikr. 17,4. 88,2. Mâlav. 61,18. Ratnâv. 18,4. Vârâh. Bṛh. S. 87,12 (= नग्नाचार्य Comm.). Kathâs. 44, 185. Bhâg. P. 7,8,51. — 2) m. = खेटिताल Med. = खटताल H. an.; vgl. खेटिताल. Vielleicht ist षटताल zu lesen, womit *ein best. Tact* gemeint sein könnte. — 3) adj.: वैतालिकानां (man hätte वैतालिकीनां erwartet) विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Comm. zu Bhâg. P. 10, 45,36. व्यायामिकीनां st. dessen Verz. d. Oxf. H. 217,a,30.

वैतालिन् m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2569. Steht neben गीतवालिन्, geht also gleichfalls auf 2. वि + ताल zurück.

वैतालीय 1) adj. *zu den* Vetâla *in Beziehung stehend, sie betreffend* u. s. w.: कर्मन् Vârâh. Bṛh. S. 104,59. Ind. St. 3,310. — 2) n. *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 78. fg. 155. Ind. St. 3, 307. fgg. Vârâh. Bṛh. S. 104,54. 59. Verz. d. B. H. No. 814.

वेतुल (vielleicht von वितुल), वैतुलकन्य n. gaṇa चिरुणादि zu P. 5,2,128.

वेतृष्ण्य (von वितृष्ण) n. *Befreiung vom Durst, Stillung des Durstes:* आपः प्रदा भूमिगता वेतृष्ण्यं यासु गोर्भवेत् M. 5, 128. *das Freisein von einem Begehren, Stillung des Verlangens, Gleichgiltigkeit gegen Etwas:* स्वादुकामुककामानां वेतृष्ण्यं किं न गच्छसि MBh. 12, 11524. यत्प्रयुक्तो ब्रह्मन्परं वेतृष्ण्यं नाधिगच्छति 14,880. Râǵa-Tar. 3,257. Bhâg. P. 3,18,40. चतुरः (subj.) Sin. D. 168,11. गुण° *Gleichgiltigkeit gegen* Jogas. 1,16. Gaupar. zu Siṅhâs. 23. Sarvadarçanas. 39,9.

वैतपाल्य (von वितपाल) adj. *zu* Kubera *in Beziehung stehend, ihn betreffend* MBh. 7,9466.

वैत्रक adj. von वैत्रकीया gaṇa वित्वकादि zu P. 5,4,153.

वैत्रकीयवन n. N. pr. einer Oertlichkeit (= एकचक्रा Nîlak.) MBh. 3,115 nach der Lesart der ed. Bomb., वैत्र° ed. Calc.

वैत्रासुर m. N. pr. einer Asura Verz. d. Oxf. H. 58, a, 13. — Vgl. वेत्रासुर.

वेद (von विद्) 1) parox. m. patron. P. 4,1,104. Schol. zu 2,4,58. des Hiraṇjadant Âit. Br. 3,6 (वैद v. l.). Âçv. Çr. 12,10,9. Sarvasiddh. in Ind. St. 1,388. f. वेदी Schol. zu P. 4,1,15. 73. 5,2,4. वेद्य: स्त्रिय: (dagegen विद्या: von Männern) 2,4,64, Schol. — 2) oxyt. adj. von वेद 1) in Verbindung mit अङ्ग, लक्षण, संघ (und घोष nach dem Vârtt.) P. 4, 3,127, Schól. m. Bez. eines Trirâtra Âçv. Çr. 10,2,10. Kâtj. Çr. 23, 2,8. Liṭ. 2,2,4. 9,7,8. Maçaka in Verz. d. B. H. 73 (VI, 7).

वेदग्ध 1) n. = वेदग्ध्य Bharata im Dvidîpak. nach ÇKDn. Spr. (II)544, v. l. — 2) f. ई dass. Taitt. 1, 1, 129. Schol. zu Kâtj. Çr. 30, 21. Daçar. 1,3. Sin. D. 45,10. अहो निर्माणवैदग्धी विधातुः Dhûrtas. 91,13. Kathâs. 20,109.

वैदग्धक adj. von विदग्ध gaṇa वराहादि zu P. 4,2,80.

वैदग्ध्य (von विदग्ध) n. *Scharfsinn, Gewandheit des Geistes, Klugheit, Erfahrenheit, Pfiffigkeit* Daçar. 2,45. 4,80. Sin. D. 412. Prâtiçâkh. 3,a,7. पाणिउत्यवैदग्ध्ययोः Mâlatîm. 3,20. 18,7. 9. 129,7. Spr. (II) 990. (I) 2858. Kathâs. 1,12. 6,82. 47,114. 49,14. 54. 57,66. 82,4. 124,166. Râǵa-Tar. 3, 131. Verz. d. Oxf. H. 188, a, 1. Kull. zu M. 2, 159. दुग्धजलभेदविधौ (हंसस्य) Spr. (II) 544. कलासु Kathâs. 49,33. वाग्वैदग्ध्य Sin. D. 6,4. वचन° Kull. zu M. 3,116. तत्रवैदग्ध्यशीलवत् (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) Sin. D. 64. घ° Spr. 4437. am Ende eines adj. comp.: ग्राम्यवैदग्ध्यया परिभाषया Bhâg. P. 5,2,17.

वेदर्त adj. = विदत्त् (partic. praes. von 1. विद्) gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38.

वैदथिनँ m. patron. von विदथिन् P. 6, 4, 165. ṚV. 4, 16, 13. 5, 29, 11.

वैददृशि m. patron. von विददृश ṚV. 5, 61, 10. Pāśkāv. Br. 13, 7, 12.

वैदनृत a. N. eines Sāman Ind. St. 3, 238, a. wohl fehlerhaft.

वैदन्वत (von विदन्वत्) n. desgl. Pāśkāv. Br. 13, 11, 9. Lāṭj. 7, 1, 13. Ind. St. 3, 238, a. द्वाद्यम्, तृतीयम्, चतुर्थम् desgl. ebend.

वैदभृतँ m. pl. und वैदभृती f. patron. von विदभृत्. वैदभृतीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çāṭ. Br. 14, 9, 4, 22.

वैदभृत्य m. patron. von विदभृत् P. 6, 3, 108. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. der entsprechende pl. ist वैदभृतीः.

वैदम्भ neben दम्भ und यदम्भ unter den Beinn. Çiva's MBh. 13, 1192.

वैदर्भ 1) adj. (f. ई) *zu den* Vidarbha *in Beziehung stehend, ihnen zukommend* u. s. w.: Sprache Colebr. Misc. II, 67. — 2) m. a) *ein Fürst der* Vidarbha Ait. Br. 7, 34. MBh. 3, 8562. Harīv. 5013. Rāgat. 5, 62. 6, 3. 7, 37. Mālav. 8, 13. 9, 9. — b) pl. = विदर्भ (das Volk dieses Namens): वैदर्भयादवानाम् Harīv. 6723. Varāh. Bṛh. S. 9, 27. Mārk. P. 57, 47. Kiṣkiṇ. 1, 54. °भूभुज् Kathās. 56, 280. °देश Verz. d. Oxf. H. 352, b, 18. °रीति (vgl. 3) b) 199, a, 4. — 3) f. ई a) *eine Fürstin der* Vidarbha MBh. 1, 3770. fg. 3, 2146. 2261. 3002. 8333. 5, 3971. Harīv. 7731. R. 1, 34, 3. Bhāg. P. 4, 28, 29. 9, 20, 34. — b) (sc. रीति) *fliessende, wohlklingende und einfache Diction* Mud. bh. 21. बन्धयाकृप्यरहिता शब्दकाठिण्यवर्जिता । नातिदीर्घसमासा च वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥ Prāṭāpar. 11, a, 9. Sāh. D. 625. fg. Verz. d. Oxf. H. 204, a, 17. 207, a, 2. विदर्भादिषु दृष्ट्वात्तत्समाख्या । समग्रगुणा वैदर्भी N. 2. 208, a, No. 489. — 4) n. *eine zweideutige Redeweise* (वाक्यवक्रत्व) Mud. — Vgl. दत्त° (auch Suçr. 1, 92, 14. 304, 11).

वैदर्भक m. *ein Angehöriger der* Vidarbha, *ein Bewohner von* Vid. Verz. d. Oxf. H. 217, b, 22. वैदर्भको राजा *ein Fürst der* Vidarbha R. 7, 78, 3.

वैदर्भि m. patron. von विदर्भ Prāçnop. 1, 1. 2, 1. Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 57, 3 v. u. MBh. 13, 6255.

वैदर्व्य (von विदर्व्य oder विदर्वि) patron. Spielerei: श्वेताय वैदर्व्याय *dem Weissen, dem Sohne des Haubenlosen* Pār. Gṛhj. 2, 11. वैदार्व्य Çāṅkh. Gṛhj. 4, 18. वैदार्व Āçv. Gṛhj. 2, 3, 3.

वैदल s. वैदल (auch in den Nachträgen). Hinzuzufügen wäre m. *ein best. giftiges Insect* oder *Wurm* u. s. w. Suçr. 2, 287, 14. वैदलिक s. वै°.

वैदल्य (richtiger वै° von विदल) Titel eines Werkes Tiran. 302.

वैदापन m. patron. von विद gaṇa यस्कादि zu P. 4, 1, 110. Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 58, 36 (वै° fehlerhaft).

वैदार्व und वैदार्व्य s. u. वैदर्व्य.

वैदि m. patron. von विद् P. 4, 1, 104, Schol.

वैदिक (von वेद) adj. (f. ई) *vedisch, den* Veda *betreffend, dem* Veda *eigenthümlich, im* Veda *vorgeschrieben, mit dem* Veda *übereinstimmend* (Gegens. लौकिक und तान्त्रिक): वाक्यं द्विविधं वैदिकं लौकिकं च। वैदिकमीश्वरोक्तत्वात्सर्वमेव प्रमाणम् ॥ Tarkas. 51. श्रुति M. 2, 13. 7, 97. श्रुतिश्च द्विविधा वैदिकी तान्त्रिकी च Kull. zu M. 2, 1. निगम M. 4, 19. शापथ 8, 190. शब्द Sarvadarçanas. 135, 14. संप्रदाय 134, 13. मन्त्र (Gegens. तान्त्रिक) 169, 18. °छन्दःप्रकाश Notices of Skt Mss. 13. Schol. zu P. 1, 1, 16. 5, 1, 129. AK. 3, 6, 4, 36. वैदिकाध्ययनानि *Studium des Veda* MBh. 1, 4924. °प्रयोग Vop. 26, 220. ज्ञान M. 2, 117. प्रक्रिया Verz. d. B. H. No. 735. fg. 739. कर्मन् M. 2, 26. 6, 75. 12, 86. 88. MBh. 13, 5564. 14, 340. Kathās. 49, 226. Bhāg. P. 1, 4, 19. 7, 15, 47. Mārk. P. 61, 78. Wilson, Sel. Works 1, 251. कर्मयोग M. 2, 2. 12, 87. जुहोतियजतिक्रियाः 2, 84. संस्कार 67. यूपसत्क्रिया Kumārās. 3, 73. योग (Gegens. तान्त्रिक) Bhāg. P. 3, 6, 9. दीक्षा (Gegens. तान्त्रिकी) 11, 11, 37. केतु Harīv. 14214. वैदिकं वाप्युदाहरेत् *eine Stelle aus dem* Veda M. 11, 96. यज्ञार्थानां वित्तं स्वामी राजेति वैदिकम् *so v. a. so lautet die Vorschrift im* Veda MBh. 12, 2878. 2884. Kām. 5, 2, 10. प्रियतद्धिता दातिणात्या यथा लोकवेदयोरिति प्रयोक्तव्ये यथा लौकिकवैदिकेषिति प्रयुञ्जते Pat. in Mahābh. ed. Bāll. 34. वैदिक्यो ऽप्सरसः *im* Veda *bekannt* Harīv. 12476 (st. dessen दैविक्यः VP. 150, N. 21). *mit dem* Veda *vertraut* R. 7, 94, 3. Pāśkār. 1, 2, 14. Colebr. Misc. Ess. II, 188. — सवैदिक MBh. 8, 4712 fehlerhaft für सवेदिक, wie die ed. Bomb. liest.

वैदिश 1) m. *ein Fürst von* Vidiçā Harīv. 5021. 5502. Mālav. 72 (wo die v. l. वैविकानां nach Stenzler in वैदिशानां zu verbessern ist). — 2) m. pl. *die Bewohner von* Vidiçā Mārk. P. 57, 54 (वैदिशास्तथा zu lesen). — 3) n. N. pr. *einer an der* Vidiçā *gelegenen Stadt* P. 4, 2, 70, Schol. R. 7, 108, 10. fg. Mālav. 70, 22. Mārk. P. 124, 20. वैदिशाधिपति 123, 20. °पुर Verz. d. Oxf. H. 153, b, 38.

वैदुरिक adj. von Vidura *kommend; n. ein Ausspruch* Vidura's Bhāg. P. 3, 1, 10.

वैदुर्य Mārk. P. 55, 9 fehlerhaft für वैडूर्य (वैदूर्य).

वैदुल adj. von विदुल 1) Suçr. 2, 12, 20.

वैदुर्वँ adj. = विदंस् gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5, 4, 38.

वैदुष्य (von विदंस्) n. *Gelehrsamkeit* Riçā-Tar. 1, 12 (वैदु° Tr.). 6, 290. Comm. zu R. 7, 36, 45.

वैदूरपति m. pl. N. einer Dynastie Bhāg. P. 12, 1, 33.

वैदूर्य und die damit zusammengesetzten und davon abgeleiteten Wörter s. u. वैडूर्य.

वैदेशिक (von विदेश) adj. *aus der Fremde gekommen*, m. *Fremdling* MBh. 12, 4762. Kathās. 21, 135. 43, 142. 49, 44. Riçā-Tar. 3, 161. 5, 332. 8, 1049. Çārṅ. 10, 167. Pāśkāt. 184, 4. °निवासिनाम् R. 1, 12, 11 nach dem Comm. *fremder und eingeborener.*

वैदेश्य (wie eben) dass. Mṛkkh. 52, 2.

वैदेक 1) adj. (f. ई) *im Lande der* Videha *lebend, von dorther kommend:* गावः TS. 2, 1, 4, 5 (विशिष्टदेशसंबन्धिन्यः Comm.). Kāṭh. 13, 4. सप्त ebend. — 2) m. a) *ein Fürst der* Videha TBr. 3, 10, 9, 2. Çāṭ. Br. 11, 3, 4, 2. 6, 2, 1. 2, 1. 14, 6, 8, 2. Çāṅkh. Çr. 15, 29, 6. 9, 11. नमी साध्यो वैदेहो (streng genommen adj.) राजा Pāśkāv. Br. 25, 10, 17. MBh. 2, 122. मिथिलाधिप R. 1, 65, 27 (67, 29 Gorr.). 2, 30, 3. R. Gorr. 1, 72, 11. 7, 38, 2. यस्माद्विदेहात् (1. विदेह) संभूतो वैदेहस्तु ततः स्मृतः 57, 20. °सुता Rāgat. 14, 39. Uttarān. 72, 16 (93, 12). Varāh. Bṛh. S. 9, 21. VP. 389. Bhāg. P. 9, 13, 12. — b) pl. = विदेह 1) a) MBh. 6, 361 (VP. 192). Varāh. Bṛh. S. 9, 13. 16, 16. Comm. zu Āçv. Gṛhj. bei Müller, SL. 52. °स्थ MBh. 2, 1089. °देश Kathās. 19, 57. °राज Bhāg. P. 9, 10, 11. — c) Bez. einer Mischlingskaste: *der Sohn eines* Vaiçja *von einer Brahmanin* M. 10, 11. 17. 33. MBh. 13, 2362. Colebr. Misc. Ess. II, 183. treibt Handel, da-

her = वणिज् H. 868. Halây. 2,416. — 3) f. ई *eine Fürstin der* Videha P. 4,1,178, Schol. Marjâdâ MBh. 1,3776. Sitâ Trik. 2,8,1. 3,3,461. H. 703. Med. h. 24. R. 1,2,37. 2,88,16. 3,49,12. Raghu. 12,20. Uttarar. 10,11 (14,9). Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 295. यज्ञातशत्रुर्वैदेहीपुत्रः (वैदेही = मौर्या) Schiefner, Lebensb. 253 (23). Lot. de la b. l. 3. 304. 449. 482. °कुलं मगधेषु जनपदेषु Lalit. ed. Calc. 22,6. — *c) f. zu* वैदेह 2) *c)* M. 10,37. = वणिक्स्त्री Trik. 3,3,461. Med. — *d) Piper longum Lin.* (पिप्पली) AK. 2,4,3,15. Trik. H. 421. Med. Halây. 2,459. — *e) ein best. gelbes Pigment* (रोचना) Trik. Med. — वैदेकानाम् Lassen, Pentap. 66,21 fehlerhaft für वाह्लीकानाम् (वा°), wie MBh. 8,2056 gelesen wird.

वैदेहक (von विदेह) 1) adj. gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. zu Videha *in Beziehung stehend* u. s. w.: राज्ञ् *Fürst der* Videha MBh. 2,1087. — 2) m. *a)* pl. = वैदेह 2) *b)* Vaṁś. Bhâg. S. 32,22. Mârk. P. 58,6. — — *b)* = वैदेह 2) *c)* AK. 2,10,3. H. 898, v. l. M. 10,13. 19. 26. Jiân. 1, 93. MBh. 12,10869. 13,2571. Kull. zu M. 10,26. 48. fälschlich als *Sohn eines Çûdra und einer Brahmanin* erklärt Trik. 3,3,42. H. an. 4,36 (वेश्या fehlerhaft für वेश्या). Med. k. 215. वैदेहकानां स्त्रीकार्यम् M. 10, 47. वैदेहका = वणिज् *Kaufmann* AK. 2,9,78. Trik. H. an. Med. — *c)* N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 291 (61).

वैदेहिक m. = वैदेह 2) *c)* H. 898 (वैदेहक v.l.). Sîkân. zu AK. nach ÇKDr. M. 10,36. *Kaufmann* Kull. zu M. 7,154.

वैदेहिबन्धु (वैदेहि = वैदेही; vgl. P. 6,3,63) m. *Freund —, Gatte der* Sitâ d. i. Râma Ragh. 14,32.

वैद्य (von विद्या) gaṇa शरणादि (भवे und व्याप्याने) zu P. 4,3,73. gaṇa प्रज्ञादि (angeblich = विद्या) zu 5,4,38. 1) adj. *mit der Wissenschaft vertraut, sein Fach kennend* Âçv. Gṛhy. 4,8,15. नाविद्यानां तु वैद्येन देयं विद्याधने क्वचित् । समविद्याधिकानां तु देयं वैद्येन तद्धनम् ॥ Kâty. im ÇKDr. MBh. 1,6142. द्विजेषु वैद्याः श्रेयांसो वैद्येषु कृतबुद्धयः (vgl. ब्राह्मणेषु च विद्वांसो विद्वत्सु कृतबुद्धयः M. 1,97) 5,110. 1491. चिकित्सक 5156. 12,3200. R. 2,77,21. 5,88,4. — 2) m. *Arzt* AK. 2,6,3, s. 3,4,3,36. H. 472. Halây. 2,457. M. 4,179. चतुर्विधाः (विषशल्यरोगाकृत्याकृताः Nîlak.) MBh. 12,3654. 13,3820. R. 2,83,13 (90,14). 5,82,23. fg. Sucr. 1,14,12. 15,1. 30,4. 94,14. 122,13. 2,55,2. Ragh. 19,53. Spr. (II) 1299. 2601. (I) 1670. पानरत 2899. fg. वैद्यानामातुरः श्रेयान् 2901. राज्ञः प्रियंवदः 2902. Vaṁś. Bhâg. S. 5,41. 10,3. 15,26. 32,11. Kathâs. 18,248. Verz. d. B. H. No. 958. 973. Verz. d. Oxf. H. 315,a, No. 748. 316,a, No. 751. मैद्य Pañcat. 183,21. Als Mischlingskaste *der Sohn eines Çûdra von einer* Vaiçjâ MBh. 13,2621. *der Sohn eines Brahmanen von einer* Vaiçjâ Colebr. Misc. Ess. II, 180. वैद्यो अश्विनीकुमारेण ज्ञातश्च विप्रयोषिति । वैद्यवीर्येण प्रजायां बभूवुर्वल्वो जनाः ॥ Verz. d. Oxf. H. 22,a, 26. fg. वैद्यी *die Frau eines Arztes* P. 6,4,150, Schol. — 3) m.° *Gendarussa vulgaris Nees.* Çabdâm. im ÇKDr. — 4) f. या *eine best. Arzneipflanze,* = काकोली ebend. — 5) als N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,7108 fehlerhaft für रैभ्य, wie die ed. Bomb. liest. Lassen, Pentap. 67,13 fehlerhaft für वैद्य, wie MBh. 8,2069 gelesen wird. — Vgl. कु°, विष°, स्ववैद्य.

वैद्यक (von वैद्य) 1) m. *Arzt* Spr. (II) 1992. — 2) n. *Heilkunde* ÇKDr. Sucr. 1,311,20.

वैद्यकप्रयोगामृत n. Titel eines *medicinischen* Werkes; s. u. गङ्ग 8).

वैद्यकसर्वस्व n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 22,b,4.

वैद्यकसारसंग्रह m. desgl. ebend. 317,a, N. 1. — Vgl. वैद्यसंग्रह.

वैद्यकानन (so im Index, वैद्यकाननत्त im Text) N. pr. eines Mannes oder Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 182,b,1 v. u.

वैद्यग्रन्थ m. Titel *einer medicinischen Schrift* Mack. Coll. I, 134.

वैद्यचिन्तामणि m. N. pr. eines *medicinischen* Autors Verz. d. Oxf. H. 316,a, No. 751.

वैद्यजीवन n. Titel eines *medicinischen* Werkes Mack. Coll. I, 134. Verz. d. Oxf. H. 317,a, No. 754. Verz. d. B. H. No. 976.

वैद्यनरसिंहसेन m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 136,b, No. 332.

वैद्यनाथ 1) m. *eine Form* Çiva's Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,507, Cl. 29. n. N. eines Liṅga und des umliegenden Gebiets Wilson, Sel. Works I, 223. II, 220. fg. Verz. d. Oxf. H. 39,b, 18. 64,a, 8. b, 1. 102,a, No. 158. 149,b,4. Verz. d. B. H. No. 1242. °माहात्म्य Verz. d. Pet. H. No. 21. fg. °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 66,a,27. 39. fgg. 67,b,2. वैद्यनाथेश्वर n. 67,a,18. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Hall in der Einl. zu Vâsavad. 16. Ind. St. 2,252. 5,133. fg. Verz. d. Oxf. H. 124, b,46. 138,b, No. 272. 262,b, No. 632. Verz. d. Kop. H. 104,a. Verz. d. Pet. H. No. 81. Hall 83. 176. Notices of Skt Mss. 37. °सूरि 17. Weber, Nax. 2,338. Verz. d. B. H. No. 1169. °भट्ट Hall 175. पायगुण्डे 175. 207. Verz. d. Oxf. H. 165,b,2. aus der Familie Tatsat Hall 174. 183.

वैद्यबन्धु m. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* Çabdâm. im ÇKDr.

वैद्यभूषण n. Titel eines Werkes über *Arzneistoffe* von Râmânandasvâmin Nigh. Pr. Einl.

वैद्यमातृ f. *Gendarussa vulgaris Nees.* AK. 2,4,3,21.

वैद्यरत्न m. N. pr. des Vaters von Vaidjâkintâmaṇi Verz. d. Oxf. H. 316,a, No. 751.

वैद्यराज् m. *der Fürst unter den Aerzten,* Bez. Dhanvantari's, übertragen auf Vishṇu Paṇcar. 4,3,119.

वैद्यराज m. 1) Bez. Dhanvantari's R. Gorr. 1,46,20. — 2) N. pr. des Vaters von Çârṅgadhara Verz. d. Oxf. H. 318,b, No. 755.

वैद्यवल्लभ m. *Liebling der Aerzte,* Titel eines medicinischen Werkes des Çârṅgadhara Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 755.

वैद्यवाचस्पति m. N. pr. eines *Arztes* Verz. d. Oxf. H. 314,b, No. 746.

वैद्यविनोद m. Titel eines *medicinischen* Werkes Verz. d. B. H. No. 975.

वैद्यशास्त्र n. *ein Lehrbuch für Aerzte, Heilmittellehre* Verz. d. Oxf. H. 40,a, N. 2.

वैद्यसंग्रह m. Titel eines *medicinischen* Werkes Mack. Coll. I, 135. — Vgl. वैद्यकसारसंग्रह.

वैद्यसंदेहभञ्जन n. desgl. (*die Zweifel des Arztes beseitigend*) Verz. d. Oxf. H. 22,b,8.

वैद्यसर्वस्व n. desgl. Verz. d. B. H. No. 977.

वैद्यसिंही f. *Gendarussa vulgaris Nees.* Çabdâm. im ÇKDr.; vgl. वैद्यमातृसिंही AK. 2,4,3,21. womit sowohl वैद्यमातृ und सिंही, als auch वैद्यमातृ und वैद्यसिंही gemeint sein können.

वैयासिक MBh. 14,2852 fehlerhaft für वैधसिक.

वैयाधर् adj. (f. ई) *den Vidjâdhara eigen, zu ihnen in Beziehung stehend:* मरुास्त्र R. 1,29,14. 36,11 (37,9). पद् Kathâs. 26,108. 241. 42, 215. 52,62. लोक 258. पुरी 26,89. लक्ष्मी 34,123. 52,277. बल 66,189. योनि 22,58. ज्ञाति 162.

वैयानि m. patron. Anukr. zu Kâṭy. in Ind. St. 3,460.

वैयुर्त (von 1. विद्युत्) 1) adj. *dem Blitz zugehörig, von ihm kommend; blitzend, flimmernd* VS. 24,10. Feuer Çat. Br. 12,4,4,4. Kâṭj. Çr. 25,4, 33. वैद्युतो यदि वा वैयुतो ऽग्निः TBr. 3,10,8,1. Nir. 7,23. MBh. 3,149. 5,1830. 12,8787. R. 5,28,9. Sûrjas. 1,264,18. Bâgh. 17,16. Vîra. 154. Kathâs. 123,37. Spr. (II) 2364. Râǵa-Tar. 8,1172. Mallin. zu Kumâras. 4, 43. Bhâg. P. 7,10,59. 10,31,3. Mâlav. P. 99, 69. वैद्युतात्मना neben सूर्यात्मना Dîpa zu Nir. bei Mull, ST. 4,36. °त्विष् adj. MBh. 8,2772. °प्रभ adj. 13,3277. वैद्युतास्त्र Harîv. 9368. वैभव Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 25. व्यतिकर इव भीमस्तामसो वैद्युतश्च Uttarar. 90, 8 (125, 11). लोक Çat. Br. 14,9,4,18. Nir. 14,9. — 2) subst. (wohl n.) *Blitzfeuer:* घर्मोदुपचाप्वैद्युतैः Bhâg. P. 4,11,28. क्रमाते मेघवत्यर्चिरुः शुक्रं तद्वोत्तरम्। अयनं देवलोकं च सवितारं च वैद्युतम् ॥ Jîv. 2, 193. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Vapushmant Mâlav. P. 53, 27. — 4) m. pl. N. pr. einer Schule Ind. St. 3,273. — 5) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 57,18.

वैद्युत्नी f. (sc. सच्) *blitzähnlich* d. h. *den Gegner zerschmetternd* heissen die Abschnitte AV. 7,31. 34. 39. 108 Kauç. 48. — Vgl. विद्युत्वत्.

वैद्रुम (von 1. विद्रुम) adj. *aus Korallen gemacht, — bestehend* Sûrjas. 2,324,17. द्रुमाः Harîv. 12675. द्वार् Kathâs. 50,174. दण्ड (vgl. विद्रुमदण्ड) 70,96.

वैध (von 1. विधि) adj. (f. ई) *vorgeschrieben, ausdrücklich angeordnet* (Gegens. ऐच्छिक) Nîlak. zu MBh. 13,2456. Schol. zu Kâṭy. Çr. 890,1. Comm. zu TS. I,287,2. °त्व° Kull. zu M. 5,50. 55. 6,31.

वैधर्म्य (von 2. विधर्मन्) n. 1) *Ungesetzlichkeit, Ungerechtigkeit* MBh. 3, 13285. 5,374 (pl.). R. 2,31,24. 7,81,19. — 2) *Ungleichartigkeit* (Gegens. साधर्म्य) Kap. 1,1,4. 24. 2,1,22. 2,27. 5,2,19. Nyâyas. 1,2,59. 5,1,1. 2. 5. अन्योऽन्य° Kap. 1,125. fg. Sûrjas. 1,311,11. Kusum. 30, 16. Sâh. D. 647 (म°). 282,4. 300,13. Bhâshâp. 28. Gaupar. zu Siddhântak. 10. Kull. zu M. 4,172.

वैधव (von 2. विधु) m. *der Sohn des Mondes*, patron. Buddha's Vîra. 159.

वैधवेर्य (von विधवा) m. *ein von einer Wittwe geborener Sohn* gaṇa प्रौढादि zu P. 4,1,123. Çiç. 23,14 (वैधेय bessere Lesart).

वैधव्य (wie eben) n. *Wittwenstand* MBh. 5,3193. 8,4483. Harîv. 4256. 4794. 4843. 8856. R. Gorr. 2,68,19. 3,62,18. 4,18,29. 5,95,27. 7,24,30. 25,43. Bâgh. 12,6. Kumâras. 4,1. Spr. (II) 1624. (I) 1363. 2184. Kîr. 11,67. Weber, Kṛshṇaǵ. 307. Râǵa-Tar. 5,228. Kull. zu M. 9,72. बाल° Spr. (II) 1203. धवैधव्याशिषः (von Bopp und Benfey fälschlich als adj. gefasst) MBh. 3, 16725 (Sâv. 4, 12). 16878. 5, 362. Schol. zu Bhatt. 3,22.

वैधस (von वेधस्) 1) adj. (f. ई) *vom Schicksal herrührend:* लिपिर्ललाटे Spr. (II) 349. *von Brahman verfasst:* सिद्धान्त Verz. d. Cambr. H. 49. — 2) m. patron. des Hariçkandra Ait. Br. 7,13. Çâṅkh. Çr. 15,17,1.

वैधातकि (!) m. = वैधात्र Loss. zu AK. 1,1,6,46.

वैधात्र (von विधातृ) 1) adj. (f. ई) *von Brahman —, vom Schicksal herrührend:* वामता Râǵa-Tar. 4,412. — 2) m. *Brahman's Sohn*, patron. Sanatkumâra's AK. 1,1,6,46. — 3) f. ई *eine best. Pflanze*, = ब्राह्मी Râǵân. im ÇKDr.

वैधुर्य (von विधुर) n. 1) *das Alleinstehen, Verwaistsein:* रामप्रवासवैधुर्यदुःखं पुर्याः Kathâs. 103,121. — 2) *das Fehlen, Mangeln, Nichtdasein:* शक्ति° Verz. d. Oxf. H. 109, *b*, No. 170 (fehlerhaft वैधूर्य). पदार्थान्वय° Sin. D. 120, 12 = Kuval. 32, 4. — 3) *eine verzweifelte Lage* Kathâs. 26,198. Râǵa-Tar. 4,671.

वैधूमाग्नी f. N. pr. einer Stadt in Çâlva ÇKDr. nach Sîvân. K.

वैधृत (von विधृति) 1) m. *a*) Bez. *eines best.* Joga und zwar *eines* Pâta, wenn *nämlich Sonne und Mond bei gleicher Declination in demselben* Ajana (Uttarâǵana oder Dakshiṇâǵana) *stehen* und wenn *die Summe ihrer Länge 360° beträgt*, Ganit. Pâṭîâd. 8. °दिन Varâh. Bṛh. S. 100,2. — *b*) N. pr. Indra's im 11ten Manvantara Bhâg. P. 8,13, 26. वैधृति ed. Bomb. — 2) f. धा N. pr. der Gattin Âṛǵaka's und Mutter Dharmasetu's Bhâg. P. 8,13,27. — 3) n. वैधृतं वासिष्ठम् und वैधृतवासिष्ठ n. N. zweier Sâman Ind. St. 3,238, *a*.

वैधृति 1) = वैधृत 1) *a*) Sâṅkh. K. 1,*b*,2. 2,*a*,4. 15,*a*,10. Ǵyotishatt. und Kosmographie im ÇKDr. — 2) m. = वैधृत 1) *b*) Bhâg. P. 8,13,26 nach der Lesart der ed. Bomb. — 3) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern: देवा वैधृतयो नाम विधृतेस्तनयाः Bhâg. P. 8,1,29.

वैधृत्य = वैधृत 1) *a*): वैधृत्ये Kauç. 141.

वैधेय (von 1. विधि) 1) adj. (vom *Schicksal getroffen*) *dumm, einfältig;* m. *Dummkopf* AK. 3,1,46. H. 352. Hall. 2,181. Çiç. 23,14 (nach der richtigen Lesart). Vîra. 30,14. Râǵa-Tar. 5,412. 6,159. 276. 7, 295. 8, 1260. — 2) m. N. pr. eines Schülers des Yâǵñavalkja Viṣṇu-P. in Verz. d. Oxf. H. 55,*a*,22 (VP. 281, N. 8). pl. N. einer Schule Ind. St. 3, 262. 264. fg.

वैध्यत m. N. pr. des Thürstehers von Jama H. 186.

वैन (von वेन) m. patron. Pṛthi's Sûtra zu RV. 1,112,18. — Vgl. वैन्य.

वैनंशिनि (von विनंशिन्) patron. Spielerei: मुग्ध VS. 9,20.

वैनतेय adj. (चतुर्धर्चेषु) von विनता gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैनतेय m. 1) *ein Sohn der* Vinatâ Schol. zu P. 4,1,113. 120. pl. MBh. 1,2548 (alle aufgezählt). 13, 7644. metron. Garuḍa's AK. 1,1, 1,24. H. 221. 231. Med. j. 127. Hit. 10. Hall. 1, 30. Bhâg. 10, 30. MBh. 1,7668. 13,870. R. 1,14,28. 42,17. 3,53,58. 4,40,40. Bâgh. 11, 39. 16,38. Vîra. 6,7. Kathâs. 22,186. Nîlak. 44, 3. 59, 16. Paṇḍân. 1, 10, 70. 13, 15. Paṇḍat. 44, 14. metron. Aruṇa's H. 102, Schol. Mbh. Matsja-P. im ÇKDr. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5, 3393. f. वैनतेयी Schol. zu P. 4,1,15. — 2) pl. N. einer Schule Ind. St. 3,265.

वैनत्य (von विनत) n. *demüthiges Benehmen* MBh. 2,334.

वैनद् 1) adj. von विनद् gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses VP. 183, N. 50. v. l. für विनदी.

वैनभात m. patron. Saṅkṛt. K. 184,*b*,7. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,275.

वैनयिक (von विनय) adj. (f. ई) 1) *gutem —, gesittetem Benehmen entsprechend* P. 5,4,34 (= विनय). दण्डे वैनयिकी क्रिया (सायत्ता) M. 7,65. सर्वे वैनयिकं कृत्वा विनयज्ञः MBh. 12, 2888. बुद्धि R. 2, 112, 16. वैनयि-

ber = वणिज् H. 868. Hall. 2,416. — 3) f. ई *eine Fürstin der* Videha P. 4,1,178, Schol. Marjâdâ MBh. 1,3776. Sîtâ Taik. 2,8,1. 3,3,461. H. 703. Med. h. 24. R. 1,2,37. 2,88,16. 3,49,12. Ragh. 12,20. Uttarar. 10,11 (14,9). Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 295. वैदेहीपुत्र: (वैदेही = सीता) Schiefner, Lebensb. 253 (23). Lot. de la b. l. 3. 304. 449. 482. °कुलं मगधेषु ब्रजपदेषु Lalit. ed. Calc. 22,6. — *c*) f. zu वैदेह 2) *c*) M. 10,37. = वणिक्स्त्री Taik. 3,3,461. Med. — *d*) *Piper longum Lin.* (पिप्पली) AK. 2,4,3,15. Taik. H. 421. Med. Hall. 2,439. — *e*) *ein best. gelbes Pigment* (रोचना) Taik. Med. — वैदेहानाम् Lassen, Pentap. 66,31 fehlerhaft für वाह्लीकानाम् (वा°), wie MBh. 8,2056 gelesen wird.

वैदेहक (von विदेह) 1) adj. gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. zu Videha *in Beziehung stehend* u. s. w.: राजन् *Fürst der* Videha MBh. 2,1087. — 2) m. *a*) pl. = वैदेह 2) *b*) Vaitân. Bṛh. S. 32,22. Mârk. P. 58,8. — — *b*) = वैदेह 2) *c*) AK. 2,10,3. H. 898, v. l. M. 10,13. 19. 26. Jâśn. 1, 93. MBh. 12,10868. 13,2571. Kull. zu M. 10,36. 43. falschlich als *Sohn eines Çûdra und einer Brahmanin* erklärt Taik. 3, 3, 42. H. an. 4,36 वैश्या fehlerhaft für वैश्या). Med. k. 215. वैदेहकानां स्त्रीकार्यम् M. 10, 47. वैदेहक = वणिज् *Kaufmann* AK. 2,9,78. Taik. H. an. Med. — *c*) N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 291 (61).

वैदेहिक m. = वैदेह 2) *c*) H. 898 (वैदेहक v. l.). Sîmâs. zu AK. nach ÇKDr. M. 10,36. *Kaufmann* Kull. zu M. 7,134.

वैदेहिबन्धु (वैदेहि = वैदेही; vgl. P. 6, 3, 63) m. *Freund —, Gatte der* Sîtâ d. i. Râma Ragh. 14,38.

वैद्य (von विद्या, gaṇa शरीरावयवादि (भवे und व्याख्याने) zu P. 4, 3, 73. gaṇa प्रज्ञादि (angeblich = विद्या) zu 5, 4, 38. 1) adj. *mit der Wissenschaft vertraut, sein Fach kennend* Âçv. Gṛhj. 4,8,15. नाविद्यानो तु वैद्येन देयं विद्याधनं क्वचित् । समविद्याधिकानां तु देयं वैद्येन तद्धनम् ॥ Kâty. im ÇKDr. MBh. 1,6143. द्विजेषु वेद्या: मेधासो वेद्येषु कृतवृद्धय: (vgl. ब्राह्मणेषु च विद्वांसो विद्वत्सु कृतबुद्धय: M. 1, 97) 5,119. 1491. चिकित्सक 5156. 12,8200. R. 2,77,21. 5, 89, 4. — 2) m. *Arzt* AK. 2,6,2, 3. 3,4,2,36. H. 472. Hall. 2,457. M. 4,179. चतुर्विधा: (विषशल्यरोगकृत्याज्ञा: Nîlak.) MBh. 12,3654. 13,5820. R. 2,83,12 (90,14). 5,82,23. fg. Suçr. 1,14,12. 15,1. 30,4. 94,14. 122,12. 2,55,3. Ragh. 19,53. Spr. (II) 1299. 2601. (I) 1670. पानरत 2899. fg. वैद्यानामातुर: मेधान् 2901. राज्ञ: प्रियंवद: 2902. Vaitân. Bṛh. S. 5,41. 10,3. 15,26. 32,11. Kathâs. 18,249. Verz. d. B. H. No. 988. 973. Verz. d. Oxf. H. 315,*a*, No. 748. 316,*a*, No. 751. संहेय Pañcat. 183,21. Als Mischlingskaste *der Sohn eines Çûdra von einer* Vaiçjâ MBh. 13, 2621. *der Sohn eines Brahmanen von einer* Vaiçjâ Colebr. Misc. Ess. II, 180. वैद्यो ऽग्निनोकुमारेण ज्ञातश्च विप्रयोषिति । वैद्यवीर्येण मूढायां बभूवुर्वल्वो व्रना: ॥ Verz. d. Oxf. H. 22,*a*, 26. fg. वैद्यी *die Frau eines Arztes* P. 6, 4, 150, Schol. — 3) m. ° *Gendarussa vulgaris Nees.* Çabdâm. im ÇKDr. — 4) f. या *eine best. Arzneipflanze*, = काकोली ebend. — 5) als N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,7108 fehlerhaft für रैभ्य, wie die ed. Bomb. liest. Lassen, Pentap. 67,43 fehlerhaft für वेद्य, wie MBh. 8,2069 gelesen wird. — Vgl. कु°, विष°, स्ववैद्य.

वैद्यक (von वैद्य) 1) m. *Arzt* Spr. (II) 1992. — 2) n. *Heilkunde* ÇKDr. Suçr. 1,311,20.

वैद्यकप्रयोगामृत n. Titel eines *medicinischen* Werkes; s. u. मल्ल 5).

वैद्यकसर्वस्व n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 22,*b*, 4.

वैद्यकसारसंग्रह m. desgl. ebend. 317,*a*, N. 1. — Vgl. वैद्यसंग्रह.

वैद्यकानन्त (so im Index, वैद्यकाननन्त im Text) N. pr. eines Mannes oder Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 182,*b*, 1 v. u.

वैद्यग्रन्थ m. Titel *einer medicinischen Schrift* Macn. Coll. I, 134.

वैद्यचिन्तामणि m. N. pr. eines *medicinischen* Autors Verz. d. Oxf. H. 316,*a*, No. 751.

वैद्यजीवन n. Titel eines *medicinischen* Werkes Macn. Coll. I, 134. Verz. d. Oxf. H. 317,*a*, No. 754. Verz. d. B. H. No. 976.

वैद्यनरसिंहसेन m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 156,*b*, No. 332.

वैद्यनाथ 1) m. *eine Form* Çiva's Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,307, Çl. 29. n. N. eines Liṅga und des umliegenden Gebiets Wilson, Sel. Works I, 223. II, 220. fg. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*, 18. 64,*a*, 8. *b*, 1. 102,*a*, No. 138. 149,*b*, 4. Verz. d. B. H. No. 1242. °माहात्म्य Verz. d. Pet. H. No. 21. fg. °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 66,*a*, 27. 39. fgg. 67,*b*, 2. वैद्यनाथेश्वर n. 67,*a*, 13. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Hall in der Einl. zu Visâvas. 16. Ind. St. 2,252. 5,133. fg. Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 46. 138,*b*, No. 272. 262,*b*, No. 632. Verz. d. Kop. H. 104,*a*. Verz. d. Pet. H. No. 81. Hall 83. 176. Notices of Skt Mss. 37. °सूरि 17. Weber, Nax. 2,358. Verz. d. B. H. No. 1169. °भट्ट Hall 175. पायगुण्डे 178. 207. Verz. d. Oxf. H. 165,*b*, 2. aus der Familie Tatsat Hall 174. 183.

वैद्यबन्धु m. *Cathartocarpus (Cassia) fistula* Çabdâm. im ÇKDr.

वैद्यभूषण n. Titel eines Werkes über *Arzneistoffe* von Râmânandasvâmin Nigh. Pr. Einl.

वैद्यमातृ f. *Gendarussa vulgaris Nees.* AK. 2,4,3,21.

वैद्यरत्न m. N. pr. des Vaters von Vaidjâkintâmani Verz. d. Oxf. H. 316,*a*, No. 751.

वैद्यराज् m. *der Fürst unter den Aerzten*, Bez. Dhanvantari's, übertragen auf Vishṇu Paṇcar. 4,3,119.

वैद्यराज m. 1) Bez. Dhanvantari's R. Gorr. 1,46,30. — 2) N. pr. des Vaters von Çârṅgadhara Verz. d. Oxf. H. 318,*b*, No. 755.

वैद्यवल्लभ m. *Liebling der Aerzte*, Titel eines medicinischen Werkes des Çârṅgadhara Verz. d. Oxf. H. 318,*b*, No. 755.

वैद्यवाचस्पति m. N. pr. eines *Arztes* Verz. d. Oxf. H. 314,*b*, No. 746.

वैद्यविनोद m. Titel eines *medicinischen* Werkes Verz. d. B. H. No. 975.

वैद्यशास्त्र n. *ein Lehrbuch für Aerzte, Heilmittellehre* Verz. d. Oxf. H. 40,*a*, N. 3.

वैद्यसंग्रह m. Titel eines *medicinischen* Werkes Macn. Coll. I, 135. — Vgl. वैद्यकसारसंग्रह.

वैद्यसंदेहभञ्जन n. desgl. (*die Zweifel des Arztes beseitigend*) Verz. d. Oxf. H. 22,*b*, 8.

वैद्यसर्वस्व n. desgl. Verz. d. B. H. No. 977.

वैद्यसिंही f. *Gendarussa vulgaris Nees.* Çabdâm. im ÇKDr.; vgl. वैद्यमातृसिंही AK. 2, 4, 3, 21. womit sowohl वैद्यमातृ und सिंही, als auch वैद्यमातृ und वैद्यसिंही gemeint sein können.

वैयासिक MBh. 14,2333 fehlerhaft für वैषसिक.

वैद्याधर adj. (f. ई) *dem Vidjâdhara eigen, zu ihnen in Beziehung stehend:* मरुत्त R. 1,29,14. 56,11 (57,9). पद Kathâs. 26,103. 241. 42, 218. 52,62. लोक 252. पुरी 26,88. लक्ष्मी 34,122. 52,277. बल 66,189. योनि 22,88. ज्ञाति 162.

वैद्यानि m. patron. Anukr. zu Kâṭy. in Ind. St. 3,460.

वैद्युत् (von 1. विद्युत्) 1) adj. *dem Blitz zugehörig, von ihm kommend; blitzend, flimmernd* VS. 24,10. Feuer Çat. Br. 12,4,4,4. Kâṭy. Çr. 25,4, 32. वैद्युतो यदि वा वैद्युतो ऽसि TBr. 3,10,8,1. Nir. 7,23. MBh. 3,149. 5,1830. 12,8787. R. 5,28,9. Suçr. 1,264,18. Râgat. 17,16. Vikr. 154 Kathâs. 123,37. Spr. (II) 2364. Râga-Tar. 8,1172. Mallin. zu Kumâras. 4,42. Bhâg. P. 7,10,59. 10,31,3. Mârk. P. 99,69. वैद्युतात्मना neben सौर्यात्मना Durga zu Nir. bei Muir, ST. 4,56. °त्विष् adj. MBh. 8,3773. °प्रभ adj. 13,3277. वैद्युतास्त्र Harîv. 9368. वैभव Verz. d. Oxf. H. 117,a,25. व्यतिकर इव भीमस्तामसो वैद्युतश्च Uttarar. 96,8 (125,11). लोक Çat. Br. 14,9,4,18. Nir. 14,9. — 2) subst. (wohl n.) *Blitzfeuer:* घर्कोऽपचापवैद्युतैः Bhâg. P. 4,11,28. क्रमाते संभवत्यर्धरात्रः प्रुक्तं तद्वैद्युतरम्। अयनं देवलोकं च सवितारं च वैद्युतम् ॥ Jâtâ. 3,193. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Vapushmant Mârk. P. 53,27. — 4) m. pl. N. pr. einer Schule Ind. St. 2,273. — 5) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 57,13.

वैद्युदतो f. (sc. इष्टि) *blitzähnlich d. h. den Gegner zerschmetternd* heissen die Abschnitte AV. 7,31. 34. 59. 108 Kauç. 48. — Vgl. विद्युत्वत्.

वैद्रुम (von 1. विद्रुम) adj. *aus Korallen gemacht, — bestehend* Suçr. 2,324,17. द्रुमाः Harîv. 12675. द्वार Kathâs. 50,174. दण्ड (vgl. विद्रुमदण्ड) 70,96.

वैध (von 1. विधि) adj. (f. ई) *vorgeschrieben, ausdrücklich angeordnet* (Gegens. ऐच्छिक) Nîlak. zu MBh. 13,3456. Schol. zu Kâṭy. Çr. 890,1. Comm. zu TS. 1,257,3. °त्व° Kull. zu M. 5,50. 51. 6,31.

वैधर्म्य (von 2. विधर्मन्) n. 1) *Ungesetzlichkeit, Ungerechtigkeit* MBh. 3, 13233. 5,374 (pl.). R. 2,31,24. 7,81,19. — 2) *Ungleichartigkeit* (Gegens. साधर्म्य) Kap. 1,1,4. 24. 2,1,32. 2,27. 5,2,19. Nyâyas. 1,2,39. 5,1,1. 2. 8. अन्योऽन्य° Kap. 1,126. fg. Suçr. 1,311,11. Kusum. 30,16. Sâh. D. 647 (स°). 282,4. 300,13. Bhâshâp. 28. Gaupar. zu Siddh. 10. Kull. zu M. 4,172.

वैधव (von 2. विधु) m. *der Sohn des Mondes*, patron. Buddha's Vikr. 139.

वैधवेय (von विधवा) m. *ein von einer Wittwe geborener Sohn* gaṇa प्रभृति zu P. 4,1,123. Çiç. 23,14 (वैधेय bessere Lesart).

वैधव्य (wie eben) n. *Wittwenstand* MBh. 5,3198. 8,4482. Harîv. 4256. 4794. 4943. 8856. R. Gorr. 2,68,19. 3,62,18. 4,18,29. 6,95,27. 7,24,30. 25,43. Râgat. 12,6. Kumâras. 4,1. Spr. (II) 1624. (I) 1363. 2184. Kir. 11,67. Weber, Kâtjây. 307. Râga-Tar. 5,329. Kull. zu M. 9,72. बाल° Spr. (II) 1203. वैधव्याशिषः (von Bopp und Benfey fälschlich als adj. gefasst) MBh. 3, 16725 (Sîv. 4,12). 16872. 5,362. Schol. zu Bhaṭṭ. 3,23.

वैधस (von वेधस्) 1) adj. (f. ई) *vom Schicksal herrührend:* लिपिर्ललाटे Spr. (II) 549. von Brahman *verfasst:* सिद्धान्त Verz. d. Cambr. H. 49. — 2) m. patron. des Hariçkandra Ait. Br. 7,13. Çâṅkh. Çr. 15,17,1.

वैधातकि (!) m. = वैधात्र Lois. zu AK. 1,1,4,46.

वैधात्र (von विधातृ) 1) adj. (f. ई) von Brahman —, vom *Schicksal herrührend:* वामता Râga-Tar. 4,413. — 2) m. Brahman's *Sohn*, patron. Sanatkumâra's AK. 1,1,4,46. — 3) f. ई *eine best. Pflanze*, = ब्राह्मी Râgân. im ÇKDr.

वैधुर्य (von विधुर) n. 1) *das Alleinstehen, Verwaistsein:* रामप्रवासवैधुर्यदुःखं पुर्याः Kathâs. 103,121. — 2) *das Fehlen, Mangeln, Nichtdasein:* शक्ति° Verz. d. Oxf. H. 109,b, No. 170 (fehlerhaft वैधूर्य). पदार्थान्वय° Sâh. D. 120,11 = Kuval. 32,4. — 3) *eine verzweifelte Lage* Kathâs. 26,193. Râga-Tar. 4,671.

वैधूमायी f. N. pr. einer Stadt in Çâlva ÇKDr. nach Siddh. K.

वैधृत (von विधृति) 1) m. *a*) Bez. *eines best.* Joga *und zwar eines* Pâta, *wenn nämlich Sonne und Mond bei gleicher Declination in demselben* Ajana (Uttarâjaṇa oder Dakshiṇâjana) *stehen und wenn die Summe ihrer Länge 360° beträgt*, Ganit. Pitâmah. 8. °दिन Varâh. Bṛh. S. 100,2. — *b*) N. pr. Indra's im 11ten Manvantara Bhâg. P. 8,13, 26. वैधृति ed. Bomb. — 2) f. धा N. pr. der Gattin Ârjaka's und Mutter Dharmasetu's Bhâg. P. 8,13,27. — 3) n. वैधृतं वासिष्ठम् und वैधृतवासिष्ठ n. N. zweier Sâman Ind. St. 3,238,a.

वैधृति 1) = वैधृत 1) *a*) Sâṅkh. K. 1,b,2. 2,a,4. 15,a,10. Gâutamîyatantra und Kosumbharâdîpa im ÇKDr. — 2) m. = वैधृत 1) *b*) Bhâg. P. 8,13,26 nach der Lesart der ed. Bomb. — 3) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern: देवा वैधृतयो नाम विधृतेस्तनयाः Bhâg. P. 8,1,29.

वैधृत्य = वैधृत 1) *a*): वैधृत्ये Kauç. 141.

वैधेय (von 1. विधि) 1) adj. (*vom Schicksal getroffen*) *dumm, einfältig;* m. *Dummkopf* AK. 3,1,48. H. 332. Hall. 2,181. Çiç. 23,14 (nach der richtigen Lesart). Vikr. 30,14. Râga-Tar. 5,413. 6,189. 276. 7,298. 8, 1360. — 2) m. N. pr. eines Schülers des Jâgñavalkja Viṣṇu-P. (in Verz. d. Oxf. H. 55,a,33 (VP. 281, N. 5). pl. N. einer Schule Ind. St. 3, 262. 264. fg.

वैध्यत m. N. pr. des Thürstehers von Jama H. 186.

वैन (von वेन) m. patron. Pṛthi's Sis. zu RV. 1,112,15. — Vgl. वैन्य.

वैनंशिनि (von विनंशिन्) patron. Spielerei: मुग्ध VS. 9,20.

वैनतेय adj. (चतुर्धर्चेषु) von विनता gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैनतेय m. 1) *ein Sohn der* Vinatâ Schol. zu P. 4,1,113. 120. pl. MBh. 1,2148 (alle aufgezählt). 13,7644. metron. Garuḍa's AK. 1,1, 1,24. H. 221. 231. Med. j. 127. Hit. 10. Hall. 1,30. Bhag. 10,30. MBh. 1,7668. 13,870. R. 1,14,28. 42,17. 3,53,38. 4,40,40. Ragh. 11, 59. 16,88. Vikr. 6,7. Kathâs. 22,186. Nigh. 44,3. 89,18. Pârâç. 1, 10,70. 13,15. Pârâṣ. 44,14. metron. Aruṇa's H. 102, Schol. Mbh. Matsja-P. im ÇKDr. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3595. f. वैनतेयी Schol. zu P. 4,1,15. — 2) pl. N. einer Schule Ind. St. 3,265.

वैनत्य (von विनत) n. *demüthiges Benehmen* MBh. 2,824.

वैनद 1) adj. von विनद् gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses VP. 183, N. 50. v. l. für विनदी.

वैनभृत m. patron. Sâṅkh. K. 184,b,7. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,275.

वैनयिक (von विनय) adj. (f. ई) 1) *gutem —, gesittetem Benehmen entsprechend* P. 5,4,34 (= विनय). दण्डे वैनयिकी क्रिया (खायत्ता) M. 7,63. सर्वं वैनयिकं कृत्वा विनयज्ञः MBh. 12,2338. बुद्धि R. 2,112,16. वैनयि-

कीनां (वैनयिकानां fehlerhaft im Comm. zu Bulc. P. 18,48,36) विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217, a, 19. fg. — 2) zu *kriegerischen Uebungen dienend:* रथ H. 752. Hallâs. 2, 220.

वैनक्षेत्र s. वैणक्षेत्र.

वैनायक (von विनायक) 1) adj. (f. ई) von Ganeça *herrührend:* वदन-विधुतय: Milatim. 1,8. — 2) m. pl. Bez. einer Klasse von Dämonen, = विनायक 1) c) Bulc. P. 6,8,32.

वैनायिक m. *ein Buddhist* Taik. 3,1,22. fehlerhaft für वैनाशिक.

वैनाशिक (von विनाश) 1) adj. *a) vergänglich,* = क्षणिक H. an. 4,36. Med. k. 214. m. *an astrologer* (!) Wilson. — *b) an eine vollständige Vernichtung glaubend;* m. Bez. *der Buddhisten* Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 8. — *c) Verderben bringend:* सत्त (= जन्मर्क्षावधि त्रयोविंशनक्षत्रम्) Ǵjotishattva und Tithinishattva im ÇKDa. — *d) abhängig* (परायत्त) H. an. Med. — 2) m. *Spinne* diess. — Vgl. सर्व°, पूर्ण°, सर्व°, वेदवैनाशिका (v. l. °वैनासिका).

वैनीतक (von विनीत) m. n. *eine Sänfte* u. s. w. *mit abwechselnden Trägern* AK. 2,8,2,26. H. 759.

वैनेय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,262. 264.

वैन्ध्य adj. zum Vindhja *gehörig:* कटकान्तरेषु Rāgat. 16,31.

वैन्य m. patron. von वेन gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. Âçv. Ça. 12,10, 11. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,26 (pl.). Pṛthi, Pṛthi oder Pṛthu Taik. 2,8,2. H. 700. ṚV. 8,9,10. Çat. Br. 5,3,5,4. Pañkav. Br. 13,5,20. MBh. 1,332. 466. 2,231. 1939. 3,12677. fgg. 6,314. 7,2294. fgg. 12,1030. fgg. Harîv. 77. Spr. (II) 1995. VP. bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,3. Bulc. P. 4,15,9. 21. 8,19,23. 18,60,61. Verz. d. Oxf. H. 12, a, 13. 49, a, 4. 264, a, 6. Liedverfasser von ṚV. 10, 148. Hier und da fehlerhaft वेण्य geschrieben.

वैन्यदत्त m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 218, a, 10. वेणुदत्त v. l.

वैन्यस्वामिन् m. N. eines Heiligthums Rāǵa-Tar. 5,97. 99.

वैपञ्चिक m. *Zeichendeuter* (!) Vjutp. 96.

वैपथक adj. (चतुर्धर्चेषु) von विपथ gaṇa धरीलृणादि zu P. 4,2,80.

वैपरीत्य (von विपरीत) 1) n. *umgekehrtes Verhältniss, Gegentheil* H. 1501. Hallâs. 4,44. Spr. (II) 434, v. l. Mâlav. P. 43,24. Verz. d. Oxf. H. 102, b, 5. Sâh. D. 12,17. 218, 22. Schol. zu Taitt. Prât. 16,26. zu Kâp. 1,60. zu Sâṅkhjas. 11,8. Gaudap. zu Sâṅkhjak. 49. — 2) m. f. (घी) *eine Art Mimosa* Râǵan. im ÇKDa.

वैपश्चित (von विपश्चित्) m. patron. des Târkshja Âçv. Ça. 10,7,9.

वैपश्यत (von विपश्यत्, partic. von 1. पश् mit वि) m. desgl. Çat. Br. 13,4,3,13. Çâṅkh. Ça. 16,2,26.

वैपात्य n. nom. abstr. von विपात gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैपादिक (von विपादिका) adj. *mit Blasen u. s. w. an den Füssen behaftet* gaṇa ज्योत्स्नादि zu P. 5,2,103, Vârtt.

वैपादिका f. = विपादिका 1) Wils. 261.

वैपाश्चि m. f. Taik. 3,5,17.

वैपाशि m. metron. von विपाश् gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

वैपाशक adj. (चतुर्धर्चेषु) von विपाश gaṇa धरीलृणादि zu P. 4,2,80.

वैपाशायनि m. pl. metron. von विपाश् gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98. der entsprechende sg. ist वैपाशायन्य.

वैपाशायन्य m. metron. von विपाश् gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98. der entsprechende pl. ist वैपाशायना:.

वैपुल्य (von विपुल) 1) n. *Dicke, Breite; grosser Umfang:* अष्टौ (Aṅgula) ज्ञानुमध्ये वैपुल्यम् Vaitân. Bṛn. S. 58,22. भूमि° Râǵa-Tar. 7, 68. वंशो वैपुल्यमाययौ 4,712. °सूत्र oder einfach वैपुल्य *ein Sûtra von grossem Umfange,* Bez. best. Sûtra bei den Buddhisten Vjutp. 38. Burn. Intr. 62. 124. 127. 438. Wassiljew 109. fg. 128. 327. Târân. 314. — 2) m. N. pr. eines Berges Burnouf in Lot. de la b. l. 847. — Vgl. महा°.

वैप्रकर्षिक adj. = विप्रकर्ष नित्यमर्कति gaṇa ढ्रादि zu P. 5,1,64.

वैप्रचित adj. (चतुर्धर्चेषु) von विप्रचित gaṇa सुतंगमादि zu P. 4,2,80.

वैप्रचित m. patron. von विप्रचिति. दानवा:, महासुरा: Mârk. P. 91,38. fg.

वैप्रयोगिक adj. = विप्रयोग नित्यमर्कति gaṇa ढ्रादि zu P. 5,1,64.

वैप्रश्निक adj. = विप्रश्न नित्यमर्कति gaṇa ढ्रादि zu P. 5,1,64.

वैफल्य (von विफल) n. *Erfolglosigkeit, Nutzlosigkeit, Vergeblichkeit* R. Gorr. 2,116,45. Kathâs. 28,8. 50,60. Râǵa-Tar. 3,157. Mârk. P. 8, 19. Siç. D. 720. किमनुक्रोश्य वैफल्यमुत्पाद्यसि मे so v. a. *Unvermögen zu helfen* (Nîlak. ergänzt ज्ञन्मन:) MBh. 13,255.

वैबाधि (von विबाध) m. patron. *Sohn des Sprengers* so v. a. *Sprenger;* so heisst der auf dem Khadira wachsende und seine Unterlage *auseinander drängende* Açvattha AV. 8,8,2 (wo वैबाध दीर्घत: zu trennen ist). वैबाधिप्रणुत्त 7.

वैबुध (von 1. विबुध) adj. (f. ई) *den Göttern eigen, göttlich* Kathâs. 9 Einl.

वैभाग्क adj. (चतुर्धर्चेषु) von विभाग gaṇa वराहादि zu P. 4,2, 80.

वैभडि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,20. vielleicht fehlerhaft für वैभाण्डि oder वैभाण्डि; vgl. विभण्डक und वैभाण्डकि.

वैभव (von विभु) n. *Macht, Wirksamkeit; hohe Stellung:* महतो हि धैर्यमविचित्यवैभवम् Kir. 12,3. Spr. (II) 2426, v. l. वितरणौ (acc.) किल वैभवम् (nom.) 2792. (I) 4946. Kathâs. 21,60. निष्ठवैभवोचितं विवाहसंभारविधिम् 34,249. 66,191. वीराणां वैभवं वैभवम् Verz. d. Oxf. H. 117, a, 25. 238, b, 4. Bulc. P. 5,18,11. 19,14,38. 34,19. 12,10,29. उत्सवसंभारं स्वसिद्धुचितवैभवम् *Herrlichkeit, Pracht* Kathâs. 90,91. am Ende eines adj. comp. f. घा 38,124. Verz. d. Oxf. H. 132, a, 1. — वैभव: MBh. 5,730 ist वै भव:.

वैभविक (von वैभव) adj. *mit Macht —, mit Wirksamkeit ausgestattet:* नानाशक्तिमतामेकं शक्तिवैभविकं (das suff. ist an शक्तिवैभव gefügt worden) Mâlav. P. 23,44.

वैभाजन (von विभाजन) adj. etwa *nicht seines Gleichen habend:* स वै वैपुष्यतं स वै वैभाजनं पुरम् Âpast. 1,22,7.

वैभाजित्र adj. = विभाजयितुर्धर्म्यम् P. 4,4,49, Vârtt. 2.

वैभाज्यवादिन् Târân. 271. fg. fehlerhaft für विभज्य°; s. u. 2. विभज्य.

वैभाण्डकि (von विभाण्डक) m. patron. Ṛshjaçṛṅga's Harîv. 1700. R. 1,9,31.

वैभार m. N. pr. eines Berges Çâṅk. 1,245. 258. 5,293 (S. 22). 14,100. — Vgl. वैहार.

वैभाषिक (von विभाषा) 1) adj. *freigestellt, facultativ* Taitt. Prât. 22,7. — 2) m. *ein Anhänger der* Vibhâshâ (s. u. विभाषा 3), Bez. einer buddhistischen Schule Vjutp. 124. Mahâvy. in Ind. St. 1, 13, 21. Verz. d. Oxf. H. 259, b, N. 9. Colebr. Misc. Ess. I, 391. fg. Wilson, Sel. Works

I, 5. II, 363. Z. f. d. K. d. M. 4, 491. fg. Burn. Intr. 445. fgg. Hiouen-thsang I, 223. Wassiljew 34 u. s. w. Tiran. 56. 59. 61. 67. 78. 293.

वैभाष्य n. = विभाषा 3) Wassiljew 218. 266. 270.

वैभीतक adj. vom Vibhîtaka kommend u. s. w. gaṇa रजतादि zu P. 4, 3, 154. Kâṭj. 11, 5. Âçv. Çr. 5, 7, 7. Suçr. 1, 215, 12. Würfel Âpast. 2, 23, 12.

वैभीदक adj. dass. TS. 2, 1, 5, 7. Śnâṅkh. Br. 3, 5. 4, 4. Çâṅkh. Çr. 14, 22, 15.

वैभूतिक adj. von विभूति Vjutp. 173.

वैभूवसे (वैभुवस Padap.; wohl von विभूवसु) m. patron. des Trita ṚV. 10, 46, 2.

वैधात्र (von विधातृ und विधातृ) 1) m. *a*) N. pr. einer Welt: वैधात्रा (विधातृो मूर्यस्य Nîlak.) नाम ते लोका दिवि भान्ति (सन्ति die neuere Ausg.) सुदर्शनाः। यत्र बर्हिषदो नाम पितरो दिवि विश्रुताः॥ Harîv. 974. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 41. — *b*) patron. Vishvakṣena's, Sohnes des Brahmadatta, Harîv. 1273. — *c*) N. pr. eines Berges Mâṇ. P. 56, 13. 57, 13. — 2) n. *a*) N. pr. eines Götterhaines Taitt. 1, 1, 65. Hâṃ. 124. Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 38. Harîv. 1250 (auf den Fürsten Vibhrâǵa zurückgeführt). VP. 169. Mâṇ. P. 55, 2. — *b*) N. pr. eines Teiches im Hain Vaibhrâǵa Harîv. 1250. — वैधात्रा: VP. 213 fehlerhaft für वैराजा:.

वैधात्रक n. = वैधात्र 2) *a*) Bâlo. P. 5, 16, 15.

वैध adj. (चतुर्धर्धेषु) von वेधस् gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75; vgl. 5, 4, 144.

वैधतायन (von विधत) gaṇa धरीरणादि zu P. 4, 2, 80. Davon adj. (चतुर्धर्धेषु) वैधतायनक ebend.

वैधत्तायन (von विधत्त) und davon adj. वैधतायनक ebend. v. l.

वैधत्य (von 2. विधति) 1) m. oxyt. patron. gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151. — 2) n. proparox. nom. abstr. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. *Meinungsverschiedenheit* Râǵa-Tar. 3, 538 (°मुख्यामात्यवैधत्य° zu lesen). 5, 462. 7, 1412. 8, 2838.

वैधद् adj. (f. ई) zu Vidhada *in Beziehung stehend, von ihm stammend* Ait. Br. 5, 4. 6, 19. ṚV. Prâṭ. 8, 11. 17, 25.

वैधर्त adj. von वेधस् P. 6, 4, 167, Schol.

वैधर्त्य n. nom. abstr. von विधर्तृ gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123 (वैध°). *Entmuthigung, Niedergeschlagenheit, Gefühl der Unlust, des Missvergnügens* AV. 5, 21, 1. MBh. 3, 14794. 9, 2786. 12, 7860. 13, 6035. 14, 680. Çiç. 79, 28. Daçâṅgas. 72, 5. Bâlo. P. 10, 54, 50. Mâṇ. P. 55, 20 (pl.).

वैधन्य adj. von वेधस् P. 6, 4, 168, Schol.

वैधल्य (von विधल) n. *Reinheit, Lauterkeit, Klarheit* Suçr. 1, 187, 20. इन्द्रियाणाम् 2, 240, 9. (लक्ष्मी:) वैधल्यमेति हरिणीव कृताभिषेचे Spr. 2486. चेत्त° Mâṇ. P. 22, 39. प्रसादो ऽर्थवैधल्यम् Śiç. D. 251, 14.

वैधात्र (von विधातृ) adj. von *einer anderen Mutter stammend* Gaṇiṇ. im ÇKDa. R. 3, 54, 4. भ्रातृ *Stiefbruder* 27, 17. 53, 19. 5, 32, 14. Schol. zu Çâṅkh. Çr. 14, 39, 7. — Nach Vjutp. 167 *Verschiedenheit oder Reihe:* इन्द्रियवैधात्रता 38. वैधात्र als Bez. *einer best. hohen Zahl* 179. Mél. asiat. 4, 639.

वैधात्रेय (wie eben) adj. dass. gaṇa प्रभृत्यादि zu P. 4, 1, 123. AK. 2, 6, 1, 22. H. 546. Kull. zu M. 8, 116.

वैधानिक 1) adj. (f. ई) *in dem* विधान *genannten palastähnlichen Wagen der Götter fahrend:* मरुत: Rasa. 6, 1. पुण्यकृत: 10, 47. तापसा यतयो विप्रा ये च वैधानिका गणा: M. 12, 48. त्रयस्त्रिंशच्च वै देवास्तत्रा वैधानिका गणा: MBh. 3, 171. मुरगणा: Vaṃç. Bṛh. S. 48, 60. VP. 96. मुरा: Bhâg. P. 4, 12, 33. देवी 10, 81, 27. m. pl. Bez. *best. Aemmalischer Wesen und der Götter* überh. H. 89, Schol. Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 33. Mahâvast. 31, 7. Kathâs. 118, 93. Bhâg. P. 3, 15, 17. 23, 41. 33, 15. 8, 23, 26. 16, 33, 24. °स्त्री 8, 15, 20. °विमोक्तृ Râǵa-Tar. 5, 370. ag.: पुण्यलये पितृपतिपुर्वैमानिक (so ist nach Kuhn zu lesen) श्वाम्बरात् 8, 1297. Bei den Ǵaina eine Klasse von Göttern, die wieder in zwei Unterabtheilungen zerfällt, in die Kalpabhava und Kalpâtîta, H. 92. fgg. — 2) adj. (vom vorhergehenden) *die Götter betreffend:* सर्ग so v. a. *die Schöpfung der Götter* Liṅga-P. bei Muir, ST. IV, 325. — 3) wohl n. N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 13, 1709.

वैमित्रा (von 2. वि + मित्र) f. N. pr. einer der 7 Mütter Skanda's MBh. 3, 14396.

वैमुक्त adj. *das Wort* विमुक्त *enthaltend:* षड्याग, अनुवाक P. 5, 2, 61.

वैमुख्य (von विमुख) n. *Abneigung, das Nichtwissenwollen von Jmd oder Etwas, Widerwille* Râǵa-Tar. 1, 8. भक्तेर्हैमुख्यमेव चेत् 8, 697. °भाज् 6, 222. म्रिय: (subj.) 2, 157. त्राणाद्वैमुख्यमापन्ति सौमुख्यं यान्ति च त्राणात्। न रेजुं कंचिदीतत्ते पद्मप्राया: पृथग्जना:॥ 8, 898. 1401. युवयोर्नास्ति वैमुख्यं संग्रामे दानवैरपि Harîv. 8388. न च तो युद्धवैमुख्यं श्रमं वाप्युपलभामहे 3089. 3114. व्याय° Kuvalaj. 75, *a*.

वैमूल्य (von 2. वि + मूल्य) n. *Verschiedenheit des Preises* M. 9, 287.

वैमृध (von विमृध्) adj. (f. ई) *dem* Indra Vimṛdh *gewidmet* u. s. w. TS. 2, 5, 3, 1. 4, 1. Çat. Br. 3, 5, 3, 5. Çâṅkh. Çr. 3, 1, 7. wie विमृध् Bein. Indra's TS. 2, 2, 3, 4. 4, 3, 3.

वैमृध्य adj. dass. Âçv. Çr. 2, 10, 12.

वैमेय m. = विमय, वैमेय Tausch H. 870. Hall. 2, 418.

वैम्य m. patron.; pl. Saṅgh. K. 186, *a*, 7.

वैयय्य (von व्यय) adj. *das Beschäftigtsein mit Etwas, Obliegen:* कार्य° Çuk. in LA. (III) 37, 16.

वैयधिकरण्य (von व्यधिकरण) n. *Nichtübereinstimmung im Casus* (Gegens. सामानाधिकरण्य) Siṃh. D. 282, 2. 283, 7. Prâtiṣâkh. 80, *a*, 2. 4.

वैयमक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2, 1869.

वैयर्थ्य (von व्यर्थ) n. *Nutzlosigkeit* Vikr. 29, 18. Comm. zu Taitt. Prât. 1, 61. 2, 47. 4, 11. 22. 5, 22. Kull. zu M. 2, 139. 3, 234. Kusum. 50, 11. 60, 11.

वैयल्कश adj. von व्यल्कश gaṇa द्वारादि zu P. 7, 3, 4. वैयल्कस Vop. 7, 4. 18.

वैयशन (von व्यशन) adj.: मूर्धन् als symbolischer Name eines Monats Weber, Nax. 2, 349.

वैयश्व (von व्यश्व) 1) m. patron. *des* Viçvamanas (eines Liedverfassers) ṚV. 3, 23, 24. 24, 28. 26, 11. वैय्यश्व geschr. — 2) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 238, *a*. Pâraṣk. Gṛ. 14, 10, 8. 15, 3, 26. Liṭ. 3, 6, 30.

वैयश्वि m. patron. von व्यश्व Vop. 7, 1. 4.

वैयसन adj. von व्यसन P. 7, 3, 3, Schol.

वैयाकरण (von व्याकरण) m. *Grammatiker* gaṇa शिवादि zu P. 4, 3, 73. Schol. zu 2, 39 und 7, 3, 3. Vop. 7, 15. Nir. 1, 12. 9, 5. 13, 9. P. 6, 3, 7. सर्वार्थानां व्याकरणाद्वैयाकरण स उच्यते MBh. 5, 1681. Ind. St. 5, 159. Siṃh. D. 119, 7. Schol. zu AV. Prâṭ. 1, 1. zu VS. Prâṭ. 4, 145. zu

Taitt. Prât. 3, 1. 24, 2. Verz. d. B. H. 160, 17. प्रथम° P. 6, 2, 36, Schol. ध° Nir. 2, 3. °ग्रसूचि *der als Grammatiker mit der Nadel in die Luft fährt* so v. a. *schlecht beschlagen in der Grammatik* Schol. zu P. 2, 1, 33. वैयाकरणाकुस्तिन् *ein einem Grammatiker als Lohn geschenkter Elephant* zu 6, 2, 65. °भार्या *der eine Grammatikerin zur Frau hat* Vop. 6, 14.

वैयाकरणभूषण n. Titel des Werkes eines *Grammatikers* Colebr. Misc. Ess. I, 263. II, 42. Hall 78. Verz. d. Oxf. H. 177, a, No. 402. °सार ebend. Colebr. Misc. Ess. II, 42. — Vgl. वृद्ध°.

वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा f. desgl. Colebr. Misc. Ess. II, 42. Verz. d. Oxf. H. 177, b, No. 403.

वैयाकर्त adj. = व्याकृत gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5, 4, 38.

वैयाख्य adj. von व्याख्या; स° = सव्याख्य *mit einer Erklärung versehen* MBu. 1, 50. 12, 1353. 1339.

वैयाघ्र (von व्याघ्र) 1) adj. a) vom *Tiger kommend, aus Tigerfell gemacht, mit Tigerfell bezogen* AV. 3, 7, 14. चर्मन् Kâç. zu P. 4, 2, 12. Lâṭj. 9, 2, 22. Kauç. 17. Hariv. 13121. R. 3, 7, 8. 4, 25, 25. Varâh. Bṛh. S. 44, 13. Verz. d. Oxf. H. 46, a, 41. °कोश MBh. 4, 1336. रथ P. 4, 2, 12. AK. 2, 8, 2, 21. H. 755. MBu. 2, 2063. 7, 2393. 8, 3898. *in ein Tigerfell gehüllt* 4, 1731. — b) von Vjâghra *herrührend:* धर्मा: Verz. d. Oxf. H. 266, b, 25. — 2) n. *Tigerfell* AV. 4, 8, 4. Çâṅkh. Çr. 14, 33, 26. Hariv. 6190. °परिवारित MBu. 2, 1854. 7, 268. °परिवारण 5, 2337. 7101. R. 7, 23, 8, 32.

वैयाघ्रपदी f. zu वैयाघ्रपद्य zu Vjâghrapad *in Beziehung stehend* Weber, Nax. 2, 392. patron.: °पुत्र N. pr. eines Lehrers Bṛh. Âr. Up. 6, 5, 1.

वैयाघ्रपद्य 1) adj. von Vjâghrapad *herrührend:* वार्त्तिक Verz. d. Oxf. H. 176, a, N. 1. — 2) m. patron. von Vjâghrapad gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. Çat. Br. 10, 6, 3, 1. 8. Lâṭj. 6, 9, 17. Kâṭh. Up. 5, 2, 3. 14, 1. MBu. 4, 224. 1141. 13, 634 (nach der Lesart der ed. Bomb.). pl. Pravarabhed. in Verz. d. B. H. 57, 35.

वैयाघ्रपाद MBu. 13, 634 fehlerhaft für वैयाघ्रपद्य.

वैयाघ्र्य (von व्याघ्र) adj. *tigerähnlich:* आसन *Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 11, a, N. 1.

वैयार्त adj. = विपात P. 5, 4, 36, Vârtt. 5.

वैयात्य n. nom. abstr. von विपात gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. *Dreistigkeit, Unverschämtheit* P. 7, 2, 10. Spr. (II) 368. Râjat. 5, 384.

वैयावृत्ति, °कर als Bed. von भोगिन् H. an. 2, 378.

वैयावृत्य (!), धर्मवैयावृत्यं करोति Buan. Intr. 273, N. 2. °कर *ein geistlicher Diener* (bei den Buddhisten) Vjutp. 203. Man könnte वैयापृत्य von व्यापृत vermuthen.

वैयास adj. von Vjâsa *herrührend* Çiç. 20, 32; vgl. Verz. d. Oxf. H. 118, a, No. 194.

वैयासकि m. patron. von Vjâsa P. 4, 1, 97, Vârtt. Vop. 7, 1. 8. MBu. 12, 8488. 13044. Spr. 2871. Bâlar. P. 1, 18, 3. 16. 2, 3, 12. 25. 6, 3, 30. 10, 1, 14.

वैयासि m. desgl. Bâlar. P. 2, 22, 37.

वैयासिक adj. (f. ई) von Vjâsa *herrührend, von ihm verfasst* u. s. w.: शमगिर: Spr. 2828. सरस्वती Paṭ. 98, 8. संहिता MBu. 1, 1. 234 und Bâlar. P. in den Unterschrr. der Adhjâja.

वैयास्क. In ṚV. Prât. 17, 23 heisst es: न दाशतय्येकपदा काचिदस्तीति वैयास्कि:. Man hat die Wahl वैयास्क: (von विपास्क) oder वै यास्क: zu lesen. Gegen dieses spricht, dass वै im Prât. nicht gebraucht wird, gegen beides der metrische Fehler. Wir sind daher geneigt वै für interpolirt und als ursprüngliche Lesart °ति यास्क: anzusehen, wobei यास्क: nach vedischer Art mit Vocaleinschub dreisilbig — ⏑ ⏑ zu sprechen wäre.

वैयुष्ट adj. = व्युष्टे दीयते कार्ये वा P. 5, 1, 97.

वैय्य° s. वैय°.

वैर (von वीर) 1) adj. *feindlich, rücksichtslos:* कर्त्र AV. 10, 1, 19. — 2) n. Sinne. K. 249, b, 2. am Ende eines adj. comp. f. श्रा. *Feindschaft, Feindseligkeit, Fehde* AK. 1, 1, 8, 25. H. 730. AV. 12, 5, 28. Pârâṣ. Bṛ. 16, 1. 12. P. 4, 3, 125 (AK. 2, 6, 4, 4). वानरराक्षसेन R. 1, 1, 60. कारणं (*Veranlassung, Ursache*) वैरस्य 4, 8, 29. °कारणा Bhaṭṭ. 9, 117. दैवत्योरन्योऽन्यम् Varâh. Bṛh. S. 5, 97. श्लेक्ष्णात्, वैरतस् Spr. (II) 239. °श्लेक्ष्णो: पारमनासाम्य Râjat. 4, 103. वैर, मैत्र Bâlar. P. 7, 9, 41. वैरं पञ्चसमुत्थानम् — स्वीकृतं वास्तुनं वाग्रं ससापत्रापराधत्तम् Spr. 3038. स्वाभाविक Pârâṣ. 66, 10. वैरं तवार्यं हि नित: प्रकर्ष: (wo wir *Feind* sagen würden) Kathâs. 32, 193. नार्यं वैरं विस्मरते कदाचित् MBu. 3, 16702. (मत:) स्मरन्ति सुकृतान्येव न वैराणि कृतान्यपि Spr. 5329. न वैराण्यभिजानासि 4354. मित्रैरपि भूयानां ज्ञायते वैरम् Varâh. Bṛh. S. 8, 4. तेषामन्यानुराणां च पुनर्वैरमजायत Kathâs. 46, 222. नैव तिष्ठति तद्वैरं पुष्करस्थमिवोदकम् Spr. (II) 384. दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् 2766. न चापि वैरं वैरेण व्युपशाम्यति 3233. नहि वैराणि शाम्यन्ति दीर्घकालं धृतान्यपि MBu. 5, 1612. नहि वैराणि शाम्यन्ति कुले 12, 5205. न वैरमुद्दीपयति प्रशास्तम् Spr. 4353. उपशान्तवैरा Varâh. Bṛh. S. 8, 30. विगत° adj. 32, 22. निवृत्त° adj. 29. न वैरं कुर्वीति केनचित् Spr. (II) 153. R. 2, 21, 15. अकर्ता च वैराणाम् Kir. Nîṭis. 4, 30. कृत° adj. MBu. 12, 2160. R. 1, 57, 1 (58, 1 Gorr.). 4, 3, 22. Spr. (II) 1864. अन्योऽन्यकृत° 384. fg. यस्य वै लोकवीरेण बद्धं वैरं महात्मना R. 5, 38, 49. पूर्ववद्ध° adj. 4, 53, 14. बद्धवैरस्य रात्रसै: 5, 6, 11. Çiç. 48. साधम् Râjat. 6, 194. Bâlar. P. 8, 7, 39. Liṅga-P. bei Mill, ST. 4, 325, 28 (विद्ध° fälschlich). 326, 6. सपत्नी ते कथं वैरं न पातयेत् R. Gorr. 2, 7, 31. तेन वैरं समासज्य Spr. 4704. वैरमारभते 2948. मित्राद्युत्पादितं वैरमपि मूलं निकृन्तति 2203. प्रयुक्तं रात्रसै: सद्य । वैरम् R. 3, 67, 12. उपगम्य वैराणि MBu. 12, 5206. वैरस्यान्तं संविधाय 3, 16703. नृपाणां वैरं विधाय Bâlar. P. 1, 11, 35. यत्नं वैरं दुस्त्यजमत्यजा: 4, 12, 3. °त्याग Jogaś. 2, 35. °निलयो निषाद: R. 1, 2, 13. °प्रकोप Varâh. Bṛh. S. 20, 9. °निर्बन्ध: कृतो राहुमुखेन MBu. 1, 1166. °साधन Pârâṣ. 81, 24. पूर्वा° *Feindschaft mit Vielen* MBu. 5, 1085. 1224. मित्र° Varâh. Bṛh. S. 53, 117. स° (रिपु) Spr. (II) 3234. Als m.: मकारान्त (मकारान्त: संकोचो येन तन्मकारान्तम् Nilak.; sehr häufig steht मकार् n. st. मकारान्तम् m.) वैरमास्थिता: (आस्थिता: ed. Bomb.) MBu. 1, 1135. न मे वैरो निषसते (besser वैरं प्रवसति die neuere Ausg.) Hariv. 6089. — Vgl. निर्वैर (adj. mit loc. Buas. 11, 55), प्रति°, प्रयुक्त°.

वैरक am Ende eines adj. comp. von वैर 2): मुक्त° Bâlar. P. 4, 4, 11.

वैरकर adj. *Feindschaft bewirkend, — hervorrufend:* द्यूत M. 9, 227. बद्ध° Varâh. Bṛh. S. 10, 20.

वैरकरण n. *das Bewirken —, Erregen von Feindschaft* R. 3, 13, 7.

वैरकार adj. = वैरकर P. 3, 2, 28.

वैरकारक adj. dass.: प्रक्रिया वैरकारिका MBu. 12, 4141.

वैरकारिता (von वैर + कारिन्) f. *Streitsucht* Kām. Nītis. 13,62.

वैरकि m. patron. von वीरक gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61.

वैरकृत् adj. *streitsüchtig, sänkisch, feindselig* Spr. (II) 786. (I) 4329.

वैरक्त n. nom. abstr. von विरक्त ÇKDa. वैरक्त्य n. *das Erkalten (gegen eine Person), Abholdwerden* Wilson so zu lesen st. वैरत्य Kathās. 60, 145.

वैरंकर adj. *anfeindend:* सर्ववैरिणाम् Bhāg. P. 5,5,39.

वैराङ्गिक (von 1. विराङ्ग) adj. = विरागं नित्यमर्हति gaṇa ऋक्षादि zu P. 5,1,64. *frei von aller Leidenschaft, der Allem entsagt hat* H. 490. Hall. 2,314. Pāṇḍavāītiāk. 5,93 (nach Aufrecht).

वैराट m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 519, Çl. 26. — Vgl. वैराट.

वैराटी f. N. pr. eines Frauenzimmers Burn. Intr. 162.

वैराणक adj. (चतुर्थ्यर्थे) von वीराण gaṇa घरीरुणादि zu P. 4,2,80.

वैराणी f. *die Tochter* Viraṇa's Harīv. 121. 142.

वैराणेय m. patron. Pravarādhy. in Verz. d. B. H. 59,18.

वैरत m. pl. N. pr. eines Volkes: सिन्धुकालकवैरताः Mārk. P. 58,32.

वैरता f. = वैर 2) MBh. 5,3198.

वैरत्यं adj. (चतुर्थ्यर्थे) von विरत gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80. fehlerhaft für वैरत्य Kathās. 60,145.

वैरत्व n. = वैरता R. 6,66,27.

वैरदेय n. *Feindschaft, Rache* oder *Strafe*: म वैरदेय इत्समः RV. 5,68, 4. als die Götter die Asura erschlugen वैरदेयादोषमाणास्ते दिशो ऽमोक्ष्यन् Kāṭh. 23,8. 28,2. 3. 6.

वैरनिर्यातन n. *Vergeltung von Feindseligkeiten, Rache* oder *Sühne* AK. 2,8,2,79. H. 804. — Vgl. वैरयातन.

वैरत्य m. N. pr. eines Fürsten: देवो निग्रहान) नूपुरेण च वैरत्यम् Kām. Nītis. 7,53.

वैरपुरुष m. *ein feindselig gesinnter Mann, Feind* MBh. 12,188.

वैरप्रतिक्रिया f. *Vergeltung von Feindseligkeiten, Rache* H. 804.

वैरभाव m. *Feindseligkeit* Bhāg. P. 7,10,34.

वैरमण (von विरमण) adj. *finalis:* श्रुक् Āpast. 1,10,2.

वैरयातन n. *Sühne* Āpast. 1,24,1. — Vgl. वैरनिर्यातन.

वैरल्य (von विरल) n. *geringe Anzahl, Geringigkeit* Rāja-Tar. 7,1443.

वैरवत् (von वैर) adj. *feindselig, in Feindschaft lebend* MBh. 13,4322.

वैरविशुद्धि f. *Vergeltung von Feindseligkeiten, Rache* Rāja-Tar. 4,282.

वैरशुद्धि f. dass. AK. 2,8,2,79. 3,4,26,122. H. 804.

वैरस (von विरस) n. = वैरस्य *Widerwille, Ekel:* कण्ठजीवित° Kathās. 104,70.

वैरस्य (wie oben) n. 1) *das Schlechtschmecken:* मद्यस्य Vaitān. Bhp. S. 46,35. मुख° *schlechter Geschmack im Munde* Suçr. 1,158,14. मुख° 192, 21. 215,9. 288,19. *das Widerstehen* (in ästhetischem Sinne) Kāvyād. 1, 63. — 2) *das keinen-Geschmack-an-Etwas-haben, Widerwille, Ekel* Suçr. 1,90,12. (आरामम्) मुरणी नन्दनोद्यानवामवैरस्यदायिनम् Kathās. 28,32. वैरस्यं स्त्रीषु चेतव 49,224. वैरस्यं न प्रेतका गता: Rāja-Tar. 2,156.

वैरहत्य (von वीरहन्) n. *Männermord* VS. 30,18. TBr. 1,5,9,5. — Vgl. म° und वीरहत्या.

वैरागिक adj. = वैराङ्गिक ÇKDa. nach Sinon. K.

वैरागिन् adj. dass. Brahmavaiv. P., Brahmakhaṇḍa 24 im ÇKDa.

वैराग्य (von 2. विराग) n. 1) *das Sichentfärben, Bleichwerden:* चकोरस्यात्तिवैराग्यम् Suçr. 2,246,2; vgl. चकोरस्य विरज्येते नयने विषदर्शनात् Kām. Nītis. 7,12. — 2) *Gleichgiltigkeit aus Ueberdruss, Abneigung, Widerwille* (gegen Personen und Sachen) Rāmāy. 17,55. Spr. (II) 466. Vaitān. Bhp. S. 74,5. mit loc.: इन्द्रियार्थेषु Bhag. 13,8. Spr. (II) 3132. भवरसे (I) 1412. Verz. d. Oxf. H. 223,b, No. 544. 231,b,31. Pañcat. 132, 8. सर्वत्र ज्ञातवैराग्यः Bhāg. P. 3,27,37. mit abl.: विषयेभ्यः Mahābh. in Ind. St. 1,22,14. in comp. mit der Ergänzung Spr. (II) 1466. Verz. d. Oxf. H. 231,b,32. ohne Ergänzung *Gleichgiltigkeit gegen die Welt, Lebensüberdruss* Maitrāyaṇ. 1,2. Bhag. 6,35. MBh. 5,1648. Śāṅkhāyan. 45. Spr. (II) 1603. (I) 1475. 2006. 2073. 2903. Mahābh. in Ind. St. 1,20,8. 22,20. Prab. 33,9. Kathās. 28,14. 36,107. 64,147. Rāja-Tar. 2,171. 4,339. Bhāg. P. 1,2,7. 12. 9,26 (Gegens. राग). 3,5,41. 45. 7,29. 13,28. 31,48. 4,23,18. 29,27. 6,1,31. वैराग्यं नास्य सेवन्ते भुञ्जतो विषयानिह यान् Mārk. P. 37,6. Weber, Rāmāt. Up. 286. 323. Pañcat. 50,16. 82, 12. 98,11 (भक्तिवशिष्णवे° ed. Bomb.). 116,11. 14. ह° Tattvas. 7. Weber, Rāmāt. Up. 324. सर्ववैराग्यम् *gleichgiltig* Pañcat. 66,20. Dhūrtas. 93,6. सहर्षवैराग्यम् 83,17.

वैराग्यता f. = वैराग्य 2) Pañcat. 50,15. मत्स्याहनं प्रति परमवैराग्यतया ed. Bomb. 1,53,5. 6.

वैराग्यशतक n. *Hundert Sprüche, welche die Gleichgiltigkeit gegen die Welt schildern*, Titel der dritten Centurie der Sprüche Bhartṛhari's.

वैराज्ञ 1) adj. von 1. विराज् 3) von Virāj *kommend, — stammend* u. s. w.: ब्रह्मसदन Harīv. 2235. 12629. °सदन MBh. 12,13723. Verz. d. Oxf. H. 19,b,7. °पिण्ड Çāṅkh. zu Bhp. Âr. Up. S. 89. patron. des Purusha Bhāg. P. 2,1,25. 9,45. 11,3,12. 17,12. Harīv. 52. Manu's oder der Manu 71. VP. 52, N. 8. Verz. d. Oxf. H. 39,a, N. 1. pl. Bez. *bestimmter Manen* MBh. 2,462. Harīv. 936. VP. 213. 321, N. 1. लोका Uttarār. 31,18 (41,14). कल्प VP. 213, N. des 27ten s. u. कल्प 2) d). — 2) adj. von 1. विराज् 4) *zur* Virāj *gehörig* u. s. w., *der* Virāj *analog* d. h. *aus Zehn bestehend, zehnsilbig* u. s. w. Çat. Br. 3,3,2,17. 9,a,19. वैराजो वै पुरुषः Pañcav. Br. 15,4,5. Çāṅkh. Çr. 15,1,31. Liṭ. 3,12,10. इष्टिर्वैराजतया Âçv. Çr. 2,1,24. 11,8. 12,6,29. पाद् RV. Prāt. 16,42. 17,10. 12,21. — 3) n. N. eines Sāman (eine der sechs Hauptformen) AV. 15,2,3. VS. 10,13. 21,26. Ait. Br. 4,28. Pañcav. Br. 8,9, 13. 12,10,6. 10. Kāṭh. Up. 2,16,1. 2. Kaṭh. Up. 1,3. VP. 42. Mārk. P. 48,34. Ind. St. 3,238, a. °पृष्ठ Liṭ. 18,13,10. Çāṅkh. Çr. 10,8,1. 16, 23,20. °गर्भ 15,7,2. °सूपम् Ind. St. 3,238, a. महा° ebend. इन्द्रस्य oder वसिष्ठस्य महावैराजम् 208, a. — 4) adj. *das* Sāman Vairāja *betreffend, — enthaltend* u. s. w. VS. 29,60. TS. 2,3,7,2. 7,5,24,1. Çāṅkh. Çr. 9,27,1. 10,5,22. — 5) m. N. pr. des Vaters von Ágita Bhāg. P. 3,5,9. — Dunkel ist die Bed. in der Formel AV. 3,20,3.

वैराजक adj. Bez. des 19ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 32,a,3.

वैराज्य (von 1. विराज्) n. *ausgebreitete Herrschaft*, neben साम्राज्य und स्वाराज्य Ait. Br. 7,22. 8,6. 12. Liṭ. 3,18,8. Bhāg. P. 18,83,41.

वैराट 1) adj. zu Virāṭa, *Fürsten der* Matsja, *in Beziehung stehend, von ihm handelnd, ihm gehörig:* पर्वन् MBh. 1,227. 481. °वेश्मन् Ka-

raja. 33,91. — 2) m. *ein Sohn* Virâṭa's MBh. 6,4349. f. ई *eine Tochter* Virâṭa's MBh. 1,228 वैराट्याः पर्व mit der ed. Bomb. zu lesen). 7, 2766. 14, 1236 वैराटि mit der ed. Bomb. zu lesen). 1846. fg. 15, 391. Bhâg. P. 1,8,14. — 3) N. pr. eines Landes: °देश Verz. d. Oxf. H. 332, *b*, 10. °राज्ञ 280,*b*,5. — 4) m. *eine Art Edelstein*, = विराटज H. 1066, Schol. — 5) m. *Coccinella, ein rother Käfer* H. 1200. — 6) *eine best. Farbe oder ein Object von bestimmter Farbe* ist gemeint im adj. °पृष्ठ (उक्षन्) MBh. 13,3777.

वैराटक n. *eine best. giftige Knolle* Suçr. 2,232,6. — Vgl. विरातक.

वैराटि m. *ein Sohn* Virâṭa's MBh. 4,1098.

वैराट्या f. schlechte v. l. für वैरोट्या H. 240.

वैराणक (vgl. वीरानक) gaṇa उत्कारादि zu P. 4,2,90. davon adj. (चतुर्वर्ग्य) वैराणकीय ebend.

वैराधव्य n. nom. abstr. von विराधव gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैरातङ्ग (वैर + धा°) m. *Terminalia Arjuna W. und A.* Râǵân. im ÇKDa.

1. वैरानुबन्ध (वैर + स°) m. *anhaltende Feindschaft* Bhâg. P. 7,1, 28. fg. 46. 10,37. 8,19,13. 22,6.

2. वैरानुबन्ध (wie oben) adj. *beständig anfeindend* Bhâg. P. 5,24,2.

वैरानुबन्धिन् adj. *Feindschaft nach sich ziehend:* कर्म मत्सावैरानुबन्धि Spr. 1620. Davon nom. abstr. वैरानुबन्धिता f. Kîm. Nîtis. 14,45.

वैराम m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1833. oder ist etwa वै राम: zu trennen?

वैराय् (von वैर) °यते *Feindseligkeiten beginnen, feindlich auftreten* P. 3,1,17. Vop. 21,10. वैरायितार: Çiç. 2,115. वैरायमाण Bhaṭṭ. 5,75. तान्प्रति Spr. 3159. मत्सद्रि: (II) 3032.

वैरि m. = वैरिन् *Feind:* संसारवैरि: (°वैरी?) Paṇḍân. 4,1,29.

वैरिञ (von विरिञ्च) adj. (f. ई) *zu* Brahman *in Beziehung stehend u. s. w.:* सभा Bhâg. P. 11,17,5.

वैरिञ्य (wie oben) m. *ein Sohn* Brahman's Bhâg. P. 4,11,6.

वैरिण n. nom. abstr. von वैरिन्; s. निर्वैरिण, wo Tattvas. st. Tarkasaṅgr. zu lesen ist.

वैरिणि m. patron. Pravarâkhy. in Verz. d. B. H. 59,10.

वैरिता (von वैरिन्) *f. Feindseligkeit, Feindschaft:* नश्येत्पूर्वा च वैरिता Kathâs. 102,189. परं नयेन्न स्वयमेव वैरिताम् Spr. 1982. पाति वैरिताम् Kathâs. 14,10. यस्माकमुलूकै: सह 62,24. देवै: सह न ते कार्या तत्कारणवैरिता 45,146.

वैरित्व (wie oben) n. dass.: काकोलूकस्य Kathâs. 62,17.

वैरिन् (von वैर) adj. *feindselig*, m. *Feind* AK. 2,8,4,10. H. 729. Hall. 2,201. M. 4,133. 8,64. Bhag. 3,37. MBh. 3,15761. 4,473. 6,4019. 13,2056. Harîv. 5539. 6148. R. 4,9,102. 12,8. 6,13,10. Spr. (II) 498. 2388. 2698. (I) 2160. 2940, v. l. 3325. 4329. 5319. 5395. Râgat. 12,104. Kathâs. 19,54. 22,201. 27,138. 49,43. 54,216. Râǵa-Tar. 1,35. 3,330. 4,286. 6,201. Bhâg. P. 8,5,29. 7,22. 11,19. 7,10,38. Vet. in L.A. (III) 22,1. वैरिपत Mâlav. P. 15,60. दृढ° MBh. 1,7128. निष्कारण° Spr. 2234. विधि *feindliches Geschick* Mâlav. 100. वायुना द्रुमवैरिणा R. Gorr. 2,120,28. वैरी न चेद्भवति वेषधरस्तथाप: Sin. D. 56,16. स्फुटवैरिकैरव der Sonne Spr. (II) 1445. वैरिणी f. (I) 4540. Kathâs. 29,112. — Vgl. धातु°, पूर्व° (auch Paṇḍar. 110,11), मुर°, वात°, विषवैरिणी.

वैरिवीर (वैरिन् + वीर) m. N. pr. eines Sohnes des Daçaratha VP. 384, N. इलविल v. l.

वैरिसिंह (वैरिन् + सिंह) m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 18. fg. 519, Çl. 27.

वैरीभू (von वैर + 1. भू) °भवति *in Feindschaft übergehen:* यस्तातकृत्येषवं वैरीभवति सोऽहम् Çiç. 120.

वैरूप (von विरूप) 1) m. patron. Pravarâkhy. in Verz. d. B. H. 50,16. des Ashṭâdaṁshṭra Paṇḍav. Bh. 3,9,21. Âçv. Çr. 12,11,1. यद्भूतेर्वैरूपस्य साम Ind. St. 3,201,*b*. कुत्सोपादस्य वैरूपस्य साम 213, *b*. pl. eine Abtheilung der Aṅgiras ṚV. 10,14,3. — 2) n. N. eines Sâman (eine der sechs Hauptformen) VS. 10,12. 13,56. 21,25. AV. 15,2,3. 4,3. Ait. Br. 4,28.5,1. Paṇḍav. Bh. 3,9,12. 12,4,17. Çâṅkh. Çr. 10,4,16. Kaush. Up. 2,15,1. 2. Kaush. Up. 1,5. VP. 42 (Mcha, ST. 3,7). Mârk. P. 48,32. Ind. St. 3,238, *a*. इन्द्रस्य oder वसिष्ठस्य वैरूपम् 208, *b*. पञ्चनिधनम् 222, *a*. °गर्भ Çâṅkh. Çr. 15,7,4. °पृष्ठ 10,4,1. 15,23,19. Liṭ. 10,13,3. Vgl. यज्ञो°, ऋत्वा°. — 3) adj. von वैरूप 2) VS. 29,6. TS. 2,3,9,2. 7,5,44, 1. Çâṅkh. Çr. 9,27,1.

वैरूपार्त (von विरूपाक्ष) m. 1) patron. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 2) Bez. eines Mantra Gobh. 4,5,4. 5. Gaṇar. 1,96.

वैरूप्य (von 2. विरूप) n. nom. abstr. Vop. 7,19. 1) *Verschiedenartigkeit, Mannichfaltigkeit, Verschiedenheit:* विश्व° MBh. 5,1627. अन्योऽन्यवैरूप्ये 12,8208. Mârk. P. 45,30. शास्त्रार्थ° Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 198. — 2) *deformitas* Jâḍ. 3,79. देहे MBh. 3,15912. यद्भव Harîv. 10863. यद्भेषु R. 5,48,6. यद्भ° 49,4. 7,30,22. Ragh. 12,40. Spr. 1912. रोग° *in Folge von Krankheit* Kathâs. 12,71. 16,68. 20,109. 40,37. 56,231. 362. Mahâbh. 312. Bhâg. P. 1,17,13. 3,30,15. 9,10,4. 10,54, 37. Daçar. 67,12. सिन्धुवैरूप्यकरण Verz. d. Oxf. H. 79,*a*,3.

वैरूप्यता f. = वैरूप्य 2): गात्र° MBh. 3,2863.

वैरेकीय (von विरेक) adj. *zum Purgiren dienend, purgirend, ausputzend:* °द्रव्य Suçr. 1,161,15.

वैरेचन (von विरेचन) adj. dass. Suçr. 1,161,1. 20. Çârṅg. Saṁh. 2,8,6.

वैरेचनिक (wie oben) adj. dass. Suçr. 1,163,5. 11. 2,97,5. 520,4.

वैरेय adj. (चतुर्वर्ग्य) von वीर gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

वैरोचन (von विरोचन) 1) adj. *von der Sonne kommend:* मयूखा: *Sonnenstrahlen* Kir. 5,46. — 2) m. *a) ein Sohn der Sonne* H. an. 4,195. Çabdar. im ÇKDa. — *b) ein Sohn* Vishṇu's H. an. — *c) ein Sohn des Feuers* Çabdar. — *d) ein Sohn des* Asura Virokana, patron. Bali's, H. an. Çabdar. MBh. 1,3464. 2,364. 3,1039. 7,859. 12,8059. 13,4687. R. 7,12,23. Bhâg. P. 8,6,34. 10,16. 15,33. °निकेतन n. Bali's *Behausung* so v. a. *die Unterwelt* Hall. 3,1. — *e)* N. pr. eines Fürsten Ait. Br. 8,22. — *f)* N. pr. eines Buddha Çabdar. Burnouf Intr. 117. 557. Wassiljew 129. 159. 183. 187. fg. Wilson, Sel. Works II, 12. 14. 35. Hiouen-thsang 2,227. Vie de Hiouen-thsang 282. Târân. 227. Lalit. ed. Calc. 200,12. ein Sohn der Göttersippe Nilakâǵika Lalit. Foucc. 358. — *g)* N. pr. einer Sippe von Siddha's (सिद्धगण) Çabdar. im ÇKDa. — *h)* °मुहूर्त Bez. *eines best.* Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912. — *i)* N. pr. einer best. Welt der Buddhisten Wilson, Sel. Works II, 36. — *k)* Bez. *eines best.* Samâdhi Vjutp. 17. — Vgl. वैरोचनि.

वैरोचनभद्र m. N. pr. eines Gelehrten Tiraṇ. 219.

वैरोचनरश्मिप्रतिमण्डित m. N. pr. einer best. Welt der Buddhisten Lot. de la b. l. 253.

वैरोचनि m. 1) = वैरोचन 2) *a*) Mān. n. 212. — 2) = वैरोचन 2) *d*) Mān. MBu. 3,12668. 12150. 5,4368. 7,3484. 3608. 13,329. Hariv. 9854. 10072. 12695. 12920. R. 1,31,4 (32,4 Gorr.). Variāh. Bṛh. S. 58,30. Bālār. P. 3,6,29. Mārk. P. 80,10. — 3) = वैरोचन 2) *f*) Mān.

वैरोचि m. patron. Bāṇa's, eines Sohnes des Bali (Vairokana, Vairokani) Çāṇḍān. im ÇKDa.

वैरोटा f. N. pr. einer der 16 Vidjādevī bei den Gaina H. 240.

वैरोढार (वैर + उ°) m. *Rache* Çāṇḍān. im ÇKDa.

वैरोधक (von विरोधक) m. N. pr. eines Mannes Mudrār. 43,4.

वैरोक्तिक (von विरोक्ति) m. pl. patron. zum sg. वैरोक्तित्य gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111. Sāmāṣ. K. 183,*b*,10.

वैरोक्तित्य m. patron. von विरोक्ति gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

वैल (von विल) adj. nach Nīlak. von *Höhlen bewohnenden Thieren herkommend* MBu. 2,1823 (वेल ed. Calc.).

वैलक्षण्य (von विलक्षण) n. 1) *Verschiedenheit, Ungleichheit, Unterschiedenheit* (in comp. sowohl mit einem im gen. als auch mit einem im abl. gedachten Begriffe) Rāǵa-Tar. 4,635. Bālār. P. 10,35,29. 11,11, 5. Çāṇḍ. zu Bṛh. Âr. Up. S. 8. 34. Sin. D. 13,10. Kuvalāy. 75,*a*,3. Kull. zu M. 1,85. Schol. zu Çiç. 42. — 2) *Unbestimmbarkeit, Unbeschreiblichkeit* Schol. zu Kirāt. 2,263.

वैलक्ष्य (von विलक्ष) n. *das Gefühl von Scham, Verlegenheit* Hariv. 5135. Spr. 1797. Kathās. 124,206. °तालन Rāǵa-Tar. 8,1329. स° adj. (f. आ) *beschämt, verlegen* 5,60. Kathās. 12,187. 43,356. 49,114. सवैलक्ष्यम् adv. 104,154. Mṛkkh. 15,24. 65,15. Vikr. 32,10. सवैलक्ष्यस्मितम् *mit verlegenem Lächeln* 45,1.

वैलस्थानि n. von Sāj. zu विल (बिल) so v. a. गर्त gezogen, wäre also वैल° zu schreiben. *Schlupfwinkel:* वैलस्थानं परि तृष्का अपोरन् RV. 1,133,1.

वैलात्य n. nom. abstr. von विलात gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वैलेपिकि adj. = विलेपिकाया धर्म्यम् gaṇa मल्लिकादि zu P. 4,4,18.

वैलिक (von विवला) adj. *beabsichtigt, bezweckt, worauf es gerade ankommt* Sin. D. 277,2. Mallin. zu Kir. 1,5.

वैवधिकि = विवधिक, वीवधिक P. 4,4,17. *Haustier* AK. 2,10,15. H. 364. वैवधिकी f. Rāǵa-Tar. 6,308.

वैवर्ण्य (von विवर्ण) n. *Entfärbung, Wechsel der natürlichen, gesunden Farbe* H. 307. मुखं वैवर्ण्यमेति Jīān. 2,13. MBu. 13,7446. 14,216. Hariv. 11174. R. Gorr. 2,62,17. 3,63,19. Suçr. 1,117,20. 156,3. 231, 13. Vers. d. Oxf. H. 307,*a*,39. Variāh. Bṛh. S. 104,22. Kathās. 16,68. Sin. D. 170. 189. 230. Bālār. P. 5,16,26. देह° 24,13. मुख° Spr. (II) 988. वर्ण° R. 4,59,13.

वैवर्त (von विवर्त) und वैवर्तक s. ब्रह्म°.

वैवश्य (von विवश) n. *Willenlosigkeit, das Nichtherrsein über sich selbst*. वेश्या तस्य °कारिणी Rāǵa-Tar. 6,74.

वैवस्वत (von विवस्वत्) 1) adj. (f. ई) von *der Sonne kommend:* प्रभा R. 6,99,44. — 2) m. *ein Sohn Vivasvant's:* *a*) patron. Jama's AK. 1, 1,6,54. Hālār. 1,71. RV. 1,113,8. 10,14,1. 57,7. 60,10. 164,2. AV. 6, 116,1. 2. 8,2,11. 18,3,13. Âçv. Çr. 10,7,2. Gaṇ., ed. Stenzler S. 47. Kātjār. 1,7. Spr. 2404 (M.). MBu. 3,11936. 5,519. 13,3500. Hariv. 1003. 4921. 4923. 13133. R. 2,64,27. R. Gorr. 2,66,38. 4,16,29. 41,67. 6,5, 11. Rāgh. 15,15. 57. Spr. (II) 1974. Variāh. Bṛh. S. 43,32. Rāǵa-Tar. 4, 150. Bālār. P. 5,26,6. वैवस्वतस्य सदनम् MBu. 1,1710. वैवस्वतस्यालयमभ्युपेति Variāh. Bṛh. S. 69,22. वैवस्वतालय Suçr. 1,116,17. °तय R. 3, 73,22. 4,21,5. °पुर MBu. 7,7082. वैवस्वतपथे (°वशे st. °पथे die neuere Ausg.) स्थित: Hariv. 4109. — *b*) patron. eines Manu AV. 8,10,24. Çat. Br. 13,4,2,3. Âçv. Çr. 10,7,1. MBu. 3,12755. Hariv. 410. 442. 542. 552 (मनुर्वैव° mit der neueren Ausg. zu lesen). R. 1,70,30. Rāgh. 1,11. VP. 264. 266. 348. Bālār. P. 1,3,15. Mārk. P. 53,7. °मन्वन्तर Verz. d. B. H. No. 1175. 1245. Verz. d. Oxf. H. 300,*a*,7. — *c*) patron. *Saturns* ÇKDa. und Wilson. — *d*) N. eines Rudra Gāṭiṇa. in Verz. d. Oxf. H. 190,*a*, 38. — 3) f. ई *a*) *der Süden* Rāǵān. im ÇKDa. — *b*) *eine Tochter des Sonnengottes* Vjutp. 107. तपती MBu. 1,3191. 6632. श्रद्धा वैवस्वती सेयं सूर्यस्य दुहिता 12,9449; vgl. Çat. Br. 12,7,3,11. — 4) adj. (f. ई, *a*) Jama Vaivasvata *gehörig, zu ihm in Beziehung stehend* Kauç. 82. 86. MBu. 6,5803. सभा 13,3499. लोक 15,903. — *b*) zu Manu Vaivasvata *in Beziehung stehend:* मन्वन्तर, मन्वन्तर MBu. 12,12808. Hariv. 171. 177. VP. bei Muir, ST. 4,104. fg. 118. Mārk. P. 100,27.

वैवस्वततीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 60,*a*,20.

वैवस्वतीय adj. zu Manu Vaivasvata *in Beziehung stehend:* मन्वन्तर Rāǵa-Tar. 1,26.

वैवाह (von विवाह) adj. *nuptialis:* मुहूर्त R. Gorr. 1,75,9.

वैवाहिक (wie oben) 1) adj. (f. ई) dass.: विधि M. 2,67. Kathās. 44, 177. Bālār. P. 3,22,18. Mārk. P. 21,62. 75,52. क्रिया R. 1,73,17. कर्म R. Gorr. 1,75,12. Mārk. P. 116,72. कौतुकसंविधान Kumārās. 7,2. तिथि 6,93. सत्र Mārk. P. 75,56. सर्पि M. 3,67. भाण्ड MBu. 3,16691. द्रव्य 13,1670. संभार Hariv. 10891. वसु Devāla in Dīpārn. 272,1. 2. वेष Hariv. 5202. रथ MBu. 7,392. पर्वन् *über eine Hochzeit handelnd* MBu. 1,314. 328. 1,193. fgg. 4,70. fgg. — 2) n. *a*) *Vorbereitungen zur Hochzeit, Hochzeitsfeierlichkeit:* राज्ञापि दुहितु: सर्वं वैवाहिकमकारयत् MBu. 3,16690. पन्नगेन्द्रं विराटस्य पुरा वैवाहिके तदा 5,157. 6078 (wo wohl ततु zu lesen ist; nach Nīlak. *zur Hochzeit gerüstet, — geschmückt*). R. 1,71, 23 (73,22 Gorr.). 72,13. — *b*) *Verschwägerung:* द्वियोर्वैवाहिकं मिथ: Bālār. P. 10,61,20.

वैवाह्य (wie oben) 1) adj. *a*) *nuptialis:* Feuer Çāṇḍān. Gaṇ. 1,1.17. — *b*) = विवाह्य 3) *verschwägert, durch Heirath verwandt* Çāṇḍān. Gaṇ. 2,13. Pāṇ. Gaṇ. 1,13. तेषां च बहूनि कौशिकगोत्राणि सप्तसु पुरुषेषु वैवाहिकानि भवन्ति VP. bei Muir, ST. 1,82, N. 48. — 2) n. *Hochzeitsfeierlichkeit:* कृत्वा वैवाह्यमुत्तमम् R. 1,73,11.

वैविक्त (von विविक्त) n. *das Befreitsein von:* दस्यु° Rāǵa-Tar. 8,2837.

वैवृत्त (von विवृत्ति) adj. *mit einem Hiatus in Verbindung stehend:* स्वर RV. Prāt. 3,10.

वैशद्य (von विशद) n. 1) *Klarheit, Helle, Reinheit; Frische:* स्फटिकस्य Rāǵa-Tar. 8,1736. Suçr. 1,20,13. 151,15. 153,1. मुख° 218,8. 243, 20. 2,136,9. des Auges 348,15. eines Gifttes u. s. w. 254,1. 477,6. Vīcān.

9,9. einer Farbe Varāh. Bṛh. S. 72,2. शास्यस्य 76,24. मनसि *Heiterkeit des Gemüths* Sarvadarçanas. 129,10. — 2) *Klarheit* so v. a. *Deutlichkeit, Verständlichkeit* Sāj. bei Müller, SL. 170. Verz. d. Oxf. H. 241,*b*, No. 591. — Hier und da fälschlich वेषम्य geschrieben.

वैशन्त (von वेशन्त) 1) adj. (f. ई) *im Teich befindlich, teichartig* P. 4,4,112. VS. 16,37. TS. 7,4,42,1. TBa. 3,1,2,3. Çat. Br. 5,3,4,14. Soma wohl so v. a. *sehr reichlich* ṚV. 7,33,2. — 2) f. या = वेशन्ता (und mit TS. 3,4,5,12 vielleicht so zu verbessern) VS. 30,16.

वैशंपायन m. patron. von विशंप gaṇa यस्कादि zu P. 4,1,110. 1) N. pr. eines alten Veda-Lehrers (im Epos ein Schüler Vjāsa's) Āçv. Gṛhj. 3,4,3. Çāṅkh. Gṛhj. 4,10. 6,6. Taitt. Ār. 1,7,5. Ind. St. 3,396. P. 4, 3,104 (Schol. zählt seine 9 Schüler auf). MBh. 1,11. 20. 97. 107. 2227. 2419. 13,331. Hariv. 18. AV. Paiṅg. in Verz. d. B. H. 92. VP. 275. 279. Bhāg. P. 1,4,21. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,3. 5. 55,*a*,6. 19. 336,*a*, No. 842. fgg. °संहिता 93,*b*,17. 104,*a*,24. 110,*b*,9. 10. °गीता धर्मा: 266,*b*,27. — 2) N. pr. eines Sohnes des Çukanāsa, Ministers des Tārāpīḍa, der in einen Papagei verwandelt wird, Kāth. in Z. d. d. m. G. 7,593.

वैशंपायनीय adj. von Vaiçaṁpājana *herrührend* Verz. d. Oxf. H. 41,*a*,24.

वैशस 1) n. *a*) = विशसन *Schlächterei, Metzelei, Mord und Todtschlag, blutiger Zusammenstoss, Greuelthat, Tod und Verderben, Noth und Elend, Unheil* MBh. 1,633. 2,2670. 3,2551. 2567. मा वं प्राप्स्यसि वैशसम् 11171. fg. 4,1292. तावद्भाप्यतु वैशसम् *so v. a. Krieg, Feindschaft* 5,4216. fgg. कुरूणां वैशसे पाण्डवै: सह 6,91. 16,167. भारतं नाम वैशसम् Hariv. 3332. 11328. घोरं तु वैशसं मन्ये गते मयि भविष्यति R. 5, 15,53. विधिना कृतमर्धवैशसं ननु मां कामवधे विमुञ्चता Kumāras. 4,31. Uttarar. 88,8 (113,6). 118,3 (160,5). उपरोध° Mudrār. 42,11. Kathās. 97,20. 119,182. विकारच्छेद° Rāja-Tar. 1,143. युक्तायुक्तविचारवात्मनस: सेवा मरुद्वैशसम् 6,208. 8,1001. 1275. 1276. Bhāg. P. 2,30,27. 4,4, 6. 11,10. 12,1. 20,28. 25,5. 5,9,16. 8,7,27. 23,8. किमिदं वैशसं दारेषु त्वया कृतम् *Greuelthat* Pañcat. ed. orn. 36,23. दिग्धा वाचो ऽतिवैशसा: Bhāg. P. 3,19,21. तस्य प्रेम्णास्तदिदमधुना वैशसं पश्य जातम् *so v. a. das zu-Schanden-Werden* Spr. (II) 1939. — *b*) *so v. a. Hölle* und N. *einer best. Hölle* Bhāg. P. 4,25,52. 29,15. 5,26,25. — 2) adj. *Tod —, Verderben bringend:* वैशसे ऽस्मिन् MBh. 5,2777.

वैशस्त्य n. nom. abstr. von विशस्ति (doch wohl eher von विशस्त) gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैशस्त्र adj. = विशसितुर्धर्म्यम् (विशसितṛ st. विशस्तṛ, weil dieses für vedisch gilt) P. 4,4,49, Vārtt. 2. nach Siddh. K. im ÇKDa. auch nom. abstr. von विशस्त्र.

वैशस्य Kathās. 120,39 fehlerhaft für वैषम्य.

वैशाख (von विशाख, विशाखा) 1) m. *a*) *ein best. Sommermonat* (neben Jjaishṭha) AK. 1,1,2,16. Taitt. S. 3,3,51. H. 153. an. 3,115. Mān. kh. 12. Çat. Br. 11,1,4,7. Lāṭj. 9,9,8. 10,5,18. MBh. 13,5155. Hariv. 9917. Varāh. Bṛh. S. 5,75. 7,17. 21,22. 25,6. 93,2. Rāja-Tar. 5,260. Verz. d. Oxf. H. 14,*b*,31. 87,*b*,5. 217,*b*,45. 284,*b*,4. 44. Lalit. ed. Calc. 62, 14. Hiouen-thsang I,63. 323. Vie de Hiouen-thsang 131. Inschr. im Journ. of the Am. Or. S. 7,33,6. — *b*) *Butterstössel* P. 5,1,110. AK. 2,9,74. Taik. H. 1023. H. an. Med. Hal. 34. Hall. 2,121. Çāṅk. 11,3. — *c*) *Bez. des 7ten Jahres im 12jährigen Umlauf des Jupiters* Varāh. Bṛh. S. 8,9. — 2) f. या N. pr. einer Löwin (मृगारिमातṛ) Verz. d. Oxf. H. 304,*a*,N. — 3) f. ई *a*) *der Vollmondstag im Monat* Vaiçākha Kauç. 75. Kāty. Çr. 24,7,1. Schol. zu 4,6,10. MBh. 13,3413. Pāṇ. 2,7,36. Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,29. Verz. d. B. H. No. 297. — *b*) N. pr. einer der 14 Gattinnen Vasudeva's Hariv. 1948. VP. 439, N. 2. — 4) n. *a*) *eine best. Stellung beim Schiessen* H. 777. nebst Schol. भूय: प्रकर्तुकामो मां वैशाखेनास्थितो मरुत्तम् Hariv. 6235. वैशाखे स्थानमास्थाय 6236. — *b*) N. pr. einer Stadt: वैशाखाख्ये पुरे Kathās. 67,5. °पुर 107.

वैशाख्य (wie oben) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,14.

वैशारद (von विशारद) 1) adj. (f. ई) = विशारद *erfahren, kundig, gewiss, nicht irrend:* मति Bhāg. P. 1,3,24. धी 7,7,17. बुद्धि 11,10,13. ईक्षा 11,13. — 2) n. *gründliche Gelehrsamkeit* R. 7,36,43.

वैशारद्य (wie oben) n. nom. abstr. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1,123. *Erfahrenheit, das Kundigsein:* वादिनां प्रयोगेषु MBh. 12, 4348. Sāṁ. D. 551. *Sicherheit in der Erkenntniss, Klarheit des Geistes:* निर्विचारवैशारद्ये (वैशारद्य = नैर्मल्य Comm.) ऽध्यात्मप्रसाद: Jogas. 1,47. प्रज्ञामेधास्मृति° so v. a. *Unfehlbarkeit* Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 133. Bei den Buddhisten nach Burnouf so v. a. *confiance* Lot. de la b. l. 346 (वैशारद्यात्[!] पादशा:). 402. Vjutp. 4. 24.

वैशाल 1) adj. von Viçāla *abstammend:* °भूपाला: Bhāg. P. 9,2,36. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,25. — 3) f. ई *a*) nach Nīlak. *eine Tochter des Fürsten* von Viçāla: भद्रा MBh. 2,1370. N. einer der Gattinnen Vasudeva's VP. 439. — *b*) N. pr. einer von Viçāla gegründeten Stadt R. Gorr. 1,46,11. 48,14. VP. 353. fg. Bhāg. P. 9,2,33. Lalit. ed. Calc. 23,4 (वैशली gedr.). 295,8. 296,18. Burnouf, Intr. 74. 80. Wassiljew 56. 68. Wilson, Sel. Works I, 293. Hiouen-thsang 1,394. Vie de Hiouen-thsang 135. 160. Târan. 9. 41. 290.

वैशालाक्ष n. Titel *des von* Çiva *als* Viçālākṣa *verfassten* Çāstra MBh. 12,2203 nach der Lesart der ed. Bomb. विशा° ed. Calc.

वैशालायन m. patron. von विशाल gaṇa यस्कादि zu P. 4,1,110.

वैशालि (von विशाल) m. patron. des Suçarman Mān. P. 70,3.

वैशालिक adj. zu Viçālā (Vaiçālī) *in Beziehung stehend:* नृपा: R. 1,47,18 (48,20 Gorr.).

वैशालिनी f. patron. von विशाल Mān. P. 123,20.

वैशालीय adj. (चतुर्धर्चेषु) von विशाल gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैशालेय (von विशाल) m. patron. Takshaka's AV. 8,10,29. Ind. St. 1,33. भोगिन: MBh. 8,4416.

वैशिक (von 1. वेश) 1) adj. (f. ई) = वेशेन चरति gaṇa वेतनादि zu P. 4,4,12. = विशिका शीलमस्य gaṇa कुत्सादि zu 62. *zur Buhlkunst in Beziehung stehend, sie betreffend, von ihr handelnd:* अधिकरण Verz. d. Oxf. H. 215,*b*,12. 16. 216,*a*,3. कला Mālav. 1,15. *sich auf die Buhlkunst verstehend, mit Buhlerinnen sich abgebend:* नायको त्रिविध: । पतिरुपपतिर्वैशिकश्च । बहुवेश्याभोगोपरमिको (lies °वेश्योपभोगपरमिको) वैशिक: ÇKDa. — 2) n. *Buhlkunst* Vjutp. 119. वैशिके पारिनिष्ठिता: R. 1,9,8 (5 Gorr.). स्तौति नो वैशिकेनार्याम् *so v. a. rühmt es an ihr, dass sie eine Buhlerin ist,* Varāh. Bṛh. S. 2,2. वैशिक Lalit. ed. Calc. 179,

s wohl fehlerhaft.

वैशिका m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. P. 57,47.

वैशिर्य adj. = विशिरा शीलमस्य gaṇa कृच्छ्रादि zu P. 4,4,62.

वैशिष्ट = वैशिष्ट्य ÇKDa. Sin. D. 20,10. 21,3 (वैशिष्ट्य die ältere Ausg.).

वैशिष्ट्य (von विशिष्ट) n. 1) *Besonderheit, Eigenthümlichkeit* Çiṇḍ. 32. Tarkas. 32. Sin. D. 27. 31. Vedântas. (Allah.) No. 60. Kusum. 41,10. 44,16. H. 507, Schol. — 2) *Vorzüglichkeit, Vorzug, das Hervorragen, Ausgezeichnetsein, Superiorität:* विवाह° MBh. 13,2559. त्रिषु लोकेषु तावच्च वैशिष्ट्यं प्रतिपत्स्यसे 7441. कर्मणा तस्य वैशिष्ट्यं कथयेत् Kiṁ. Nîtis. 5,27. Çiṇḍ. 70. Sin. D. 109,14. 678. Comm. zu Taitt. Prât. 21,1. — Vgl. विशिष्टवैशिष्ट्य°.

वैशीति m. patron. von विशीत gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61.

वैशीपुत्र (वैशी = वैश्या + पुत्र) m. *der Sohn eines Vaiçja-Weibes* TBr. 3,9,9,3. Çat. Br. 13,2,9,8.

वैशेर्य m. patron. von विश gaṇa प्रभ्वादि zu P. 4,1,123.

वैशेषिक (von विशेष) gaṇa विनयादि (स्वार्थे) zu P. 5,4,34. 1) adj. (f. ई) *a) besonder, specifisch, eigenthümlich* (Gegens. सामान्य) Suçr. 1,90,20. 97,2. आकाशस्य तु विशेषः शब्दो वैशेषिको गुणः Bulsaiv. 43. 90. सन्मात्रादीनि द्रव्याणि न वैशेषिका गुणाः Nîlak. 43. — *b) vorzüglich, hervorragend, ausserordentlich:* एक एव तु कर्तव्यो पुरःसरः) यस्मिन्वैशेषिका गुणाः MBh. 7,146. 12,1658. ज्ञान 11874. धन्यामन्यो धनावस्थां प्राप्य वैशेषिकीं नराः Spr. (II) 375. — *c) zu den Besonderheiten der* Vaiçeshika *in Beziehung stehend, von ihnen handelnd, auf ihnen beruhend:* प्रकरण Verz. d. Oxf. H. 353,b, No. 839. नय Bulsaiv. 104. मत 140. कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं मतम् Sâṁkhjapr. 6,14. Madhus. in Ind. St. 1,13, 7. 9. 18,27. Nîlak. 52. — 2) m. *ein Anhänger des* Vaiçeshika-*Systems* H. 862. Kap. 1,25. Schol. zu 1,19. Z. d. d. m. G. 7, 307, N. s. Verz. d. B. H. 160,18. fg. No. 626. Müller, SL. 84. Kusum. 29,13. Burn. Intr. 568. — 3) n. *a) Besonderheit* Kap. 10,2,7. — *b) das* Vaiçeshika-*System:* न्यायवैशेषिकाभ्याम् Sâṁkhjapr. 3,21. Nîlak. 4. 52. Lalit. ed. Calc. 179,8. °सूत्र (hierher oder zu 2) Hall 27. 64. °सूत्रोपस्कार 68.

वैशेषिन् adj. *Besonderheiten habend, specifisch, individuell* Gaupar. zu Sâṁkhjak. 41 wohl nur fehlerhaft für विशेषिन्.

वैशेष्य (von विशेष) n. 1) *Besonderheit* Taitt. Prât. 23,2. Suçr. 1,363, 10. Verz. d. Oxf. H. 307,a,24. — 2) *Vorzüglichkeit, Vorzug, Superiorität* M. 9,296. 10,3.

वैश्मनीय adj. (चतुर्धर्येषु) von वेश्मन् gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैश्य (von 2. विश्) 1) m. *a) ein Mann des Volkes, — der dritten Kaste* AK. 2,9,1. 3,4,24,148. 28,316. H. 864. Hall. 2,237. 418. Specielles über Stellung, Ursprung u. s. w. der Vaiçja s. Ind. St. 16,1. fgg. Muir, ST. 1,5. fgg. — ṚV. 10,90,12. AV. 5,17,9. VS. 30,5. Ait. Br. 1,28. 7,29. TBr. 1,1,4,5. 9,7. 7,9,7. Çat. Br. 1,1,4,12. 3,2,15. 2,1,2,5. 5,3,4, 9. °कुल Kâṭh. Ça. 4,7,16. Gobh. 1,1,15. Âçv. Gṛhj. 1,19,4. 3,3,15. °योनि Kulârn. Up. 5,10,7. M. 1,31. 90. 116. 2,31 u. s. w. MBh. 13,310. R. 1,6,16. 2,63,48. 82,31. 3,20,31. Suçr. 1,7,3. Varâh. Bṛh. S. 3,25. 9,43. 10,7 u. s. w. °पुत्र 5,30. °धर्मिन् 57. VP. 44. 292. °जातीय Wilson, Kâṁkhâs. 284. °वृत्ति Çiṣ. Gṛhj. 4,11. M. 10,82. 101. °कन्या 3,44. 10,8. Lalit. ed. Calc. 139,14. — *b)* pl. N. pr. einer Völkerschaft Varâh. Bṛh. S. 14,21. — 2) f. या *a) eine Frau der dritten Kaste* Vop. 4, 18. AK. 2,10,2. H. 896. M. 8,382. 383. Jâtin. 1,62. °पुत्र M. 9,151. °पुत्र 9,153. metron. Jujutsu's MBh. 1,2443. 2,2476. 3,697. 9,1652. 13,435. — वैश्यानरी 13,3140 fehlerhaft für वैश्वानरी, wie die ed. Bomb. liest. — *b)* N. pr. einer buddhistischen Gottheit Târân. 1,1,13. — 3) n. *das Verhältniss des Unterthanen, Abhängigkeit:* देवाः पराजिग्याना असुराणां वैश्यमुपायन् TS. 2,3,2,1. — 4) adj. *einem Manne der dritten Kaste eigenthümlich:* कर्माणि MBh. 12,2348.

वैश्यता (von वैश्य) f. *der Stand eines* Vaiçja Ait. Br. 7,29. MBh. 13,1904. VP. 4,1,14 bei Muir, ST. 1,46. Bhâg. P. 9,2,28. Mârk. P. 114,2.

वैश्यत्व n. dass. Mârk. P. 113,36.

वैश्यभद्रा f. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Târân. 70; vgl. भद्रा und वैश्या.

वैश्यभाव m. = वैश्यता M. 10,98.

वैश्यस्तव m. *eine best. Opferhandlung* TBr. II,753,3 v. u.

वैश्यस्तोम m. N. eines Ekâha Śrâpv. Bn. 4,3. Lâṭ. 8,10,5. 13. Kâṭh. Ça. 22,9,7. 23,4,5. Maçaka 4,7 in Verz. d. B. H. 72.

वैश्रमण Lalit. ed. Calc. 378,5 fehlerhaft für वैश्रवण.

वैश्रम्भक (von विश्रम्भ) 1) adj. *Vertrauen erweckend;* subst. pl. *Vertrauen erweckendes Benehmen* Bhâg. P. 5,26,32. वैश्रम्भिक ed. Bomb., aber der Comm. वैश्रम्भकैः = विश्रम्भोपायैः. — 2) n. N. pr. eines Götterhains Bhâg. P. 3,23,40.

वैश्रवण (von विश्रवस्) 1) m. *a)* patron. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. Kubera's AK. 1,1,4,64. H. 189. Hall. 1,78. 5,3. AV. 8,10,28. Çat. Br. 13,4,2,10. Taitt. Âr. 1,31,6. Śrâpv. Bn. 5,6. Çiṣ. Gṛhj. 1,11. Kauç. 25. 74. Ind. St. 4,371. MBh. 1,2100. 2,884. 3,2334. 13352. fgg. 13,1415.1417. राज्ञां वैश्रवणं प्रभुम् (सभ्यपेक्षत) Harîv. 259. 382. 12496. R. 1,1,32 (34 Gorr.). 6,3. 14,18. 22,17 (23,18 Gorr.). 4,44,30. दिशं वैश्रवणाभिगुप्ताम् 130. 5,89,8. 7,3,8. Spr. (II) 2020. Kathâs. 34, 67. 72, 39. Râja-Tar. 1,155. VP. 153. Lalit. ed. Calc. 43,15. 136,2 (वै श्रवणः gedr.). 137,7 (verschieden von Kubera). 148,14. 248,1. 297,11. 313, 9. 378,5 (वैश्रमण gedr.). Lot. de la b. l. 3. 239. Schiefner, Lebensb. 280 (30). Hiouen-thsang I,30. 319. II,224. Gatte der Lakshmî Târân. 80. वैश्रवणानुज m. *der jüngere Bruder* Kubera's d. i. Râvaṇa R. 3, 55,8. 58,31. 34. — *b)* N. *des 15ten* Muhûrta Ind. St. 10,296. — 2) adj. (f. ई) *zu* Kubera *in Beziehung stehend, ihm gehörig:* सभा MBh. 2,383. ऋद्धि 12,4561.

वैश्रवणालय 1) m. Kubera's *Wohnstätte,* Bez. *der Ficus indica* H. 1132. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,b,34.

वैश्रवणावास m. = वैश्रवणालय 1) Gaṇiṣ. im ÇKDa.

वैश्रवणोदय m. dass. Ratnam. 189.

वैश्रेय m. patron. von विश्रि gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,126. — Vgl. वैश्रेय.

वैश्रेयिक (von विश्रेय) adj. (f. ई): पङ्क्ति Verz. d. Cambr. H. 77.

वैश्व adj. *unter den* Viçve Devâḥ *stehend:* पुत्र *das achte Lustrum im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,41. n. *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ 23,8. 32,16. 101,11. Sûrjas. 8,4. f. ई dass. H. 113.

वैश्वकर्धिक adj. = विश्वकर्मणां साधुः gaṇa कर्मादि zu P. 4,4,102.

वैश्वकर्मणी adj. (f. ई) von Viçvakarman *herrührend, ihm geweiht* u.

s. w. AV. 13,1,18. VS. 13,55. Agni 18,64. Âit. Br. 4,22. TS. 2,2,6, 4. 5,4,5,4. 6,6,3. Çat. Br. 2,3,4,10. 4,6,8,6. 10,4,1,16. TBr. 1,6,2,5. 2,8,3.

वैश्वजनीन (von विश्वजन) adj. *gegen Jedermann freundlich* gaṇa प्रतिजनादि zu P. 4,4,99.

वैश्वजित adj. *zum* Viçvajit-*Opfer in Beziehung stehend:* कोतर् Âit. Br. 6,20.

वैश्वज्योतिष (von विश्वज्योतिस्) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,238,a. द्वितीयम् ebend.

वैश्वदेव (von विश्वदेव) 1) adj. (f. ई) *allen Göttern* oder *den sogenannten* Viçve Devâḥ *geweiht* u. s. w.: das dritte Savana VS. 19,26. MBh. 13,3060. VS. 4,18. 19,44. 24,5. AV. 7,27,1. Âit. Br. 6,4. अग्निहोत्र TBr. 2,1,6,6. TS. 2,1,2,5. 5,2,5. Çat. Br. 2,5,4,18. 3,9,1,13. चरु Kâṭh. 37,3. Çat. Br. 5,5,4,1. अष्टका Âçv. Gṛhj. 2,4,12. विषया: MBh. 12,11103. युग Weber, Gjoy. 24. काण्ड Ind. St. 3,391. विधि Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,28. 276,*b*,1 v. u. सूक्त Ind. St. 10,354. Sig. zu ṚV. 1,105. Bhâg. P. 3,4,4. हविस् Çat. Br. 1,1,4,24. Ind. St. 10,20. MBh. 14,285. बलि R. 2,56,27. Verz. d. Oxf. H. 277,*a*,2. 3. पिण्ड Mânav. P. 32,24. लोक M. 4,188 (wo wohl वैश्वदेवे ऽस्य st. वैश्वदेवस्य zu lesen ist). — 2) m. *a*) *ein best.* Graha VS. 18,20. Çat. Br. 4,3,4,26. 4,4,3. Kâṭh. Çr. 9,5,23. 12,8. 14,1. — *b*) *ein dem* Vaiçvadeva Parvan *ähnlicher* Ekâha Çâṅkh. Çr. 14,6,1. 7,1. 9,8. — 3) f. ई *a*) Bez. *gewisser* Ishṭakâ *der zweiten* Kiti Çat. Br. 8,2,3,1. 10,4,3,15. TS. 7,2,8,6. Kâṭh. Çr. 17,8,7. — *b*) *ein best. Festtag am 8ten Tage in der zweiten Hälfte des* Mâgha As. Res. 3,274 nach Haughton. — *c*) *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ –, – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Çrut. 27. Kṣandom. 46. Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,13). Ind. St. 8,381. — 4) n. *a*) *ein best.* Çastra Âit. Br. 2,31. 3,28. 31. 4,30. *das erste beim dritten* Savana Çat. Br. 13,5,4,11. 14,6,3,1. Çâṅkh. Çr. 8,3,7. 7,10. 19. °सूक्त 13,19, 15. Âçv. Çr. 5,6,16. — *b*) *das erste* Parvan *der* Kâturmâsja (Vaiçvadeva, Varuṇapraghâsa, Sâkamedha) TBr. 1,4,3,5. 10,1. 6,3,1. Çat. Br. 2,6,4,5. 5,2,1. — *c*) *ein best.* Çrâddha, *eine Morgens und Abends vom Haushalter darzubringende Spende an die* Viçve Devâḥ M. 3,83. fg. 108. 121. Spr. (II) 2902. (I) 1422. 1925. VP. 327. Mânav. P. 29,24. 30,6. 80,62. Çaṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 270. Verz. d. B. H. No. 1081. fgg. 1127. 1141. Verz. d. Oxf. H. 267,*b*,40. 268,*a*,16. masc. 277, *a*, No. 654. — *d*) Bez. bestimmter Sprüche: स एतानि वैश्वदेवान्यपश्यत् TBr. 3,8,10,1. fgg. Çat. Br. 13,1,3,1. 4. 3,1. — *e*) Bez. verschiedener Sâman Ind. St. 3,238,*b*. Kâṭhâ. Up. 2,24,11. — *f*) *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ Vasiṣṭh. Bṛh. S. 11,59. Weber, Nax. 1,310. — Vgl. मरु°.

वैश्वदेवक n. nom. abstr. von विश्वदेव gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,123.

वैश्वदेवत (von विश्वदेवता) m. *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ Vasiṣṭh. Bṛh. S. 6,6, v. l. °दैवत im Text.

वैश्वदेवस्तुत् m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 14,60,1. 16,15,3. 29,17. Kâṭh. Çr. 21,2,4. 24,7,16.

वैश्वदेवेष्टि m. *ein Opfer mit den* Vaiçvadeva *genannten Sprüchen* Comm. zu TBr. 3,604. Verz. d. Oxf. H. 273,*b*,24.

वैश्वदेविक adj. = वैश्वदेव. अयन R. 1,13,34 (32 Gorr.). Verz. d. Oxf. H. 56,*a*, N. 1. सूर्य Mânav. P. 31,42. *dem* Çrâddha *für alle Götter entsprechend* Jâṅ. 1,225 (vgl. Mânav. P. 31,38). zum Vaiçvadeva Parvan *gehörig* Çâṅkh. Çr. 3,14,9. 18,2. m. pl. Bez. *bestimmter Sprüche* Mânav. P. 31,57.

वैश्वदेव्य adj. *den* Viçve Devâḥ *geweiht:* Lied Nir. 7,23.

वैश्वदैवत s. वैश्वदेवत.

वैश्वदैविक v. l. für वैश्वदेविक Jâṅ. 1,225.

वैश्वर्य adj. = विश्वधा शीलमस्य gaṇa कृत्रादि zu P. 4,4,62.

वैश्वधेनव (von विश्वधेनु) = वैश्वधेनव P. 7,3,25, Schol. वैश्वधेनवभक्त n. = वैश्वधेनवानां विषयो देश: gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54.

वैश्वधेनव = वैश्वधेनव P. 7,3,25, Schol.

वैश्वन्तरि m. patron. von विश्वन्तर; pl. Saṅgr. K. 183,*b*,18 वैश्वन्तरय: gedr.).

वैश्वमनस (von विश्वमनस्) n. N. eines Sâman Pârâṣ. Br. 15,5,19. Lâṭy. 7,5,19.

वैश्वमानव (von विश्वमानव) gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54. वैश्वमानवभक्त n. = वैश्वमानवानां विषयो देश: ebend.

वैश्वरूप (von विश्वरूप) 1) adj. = विश्वरूप *mannichfaltig, verschiedenartig* Sûçr. 2,539,5. — 2) n. *das Weltall* Siddh. 15.

वैश्वरूप्य 1) adj. = विश्वरूप *mannichfaltig, verschiedenartig:* वैश्वरूप्येण विधिना Hariv. 8322. वैश्वरूप्येण केतुना 8340. — 2) m. *Mannichfaltigkeit, Verschiedenartigkeit* Wilson, Sâṅkhjak. S. 138. पोडशास्त्रोमकृत्राणि व्रते — रमयामास गोविन्दो वैश्वरूप्येण so v. a. *auf verschiedene Weise* Hariv. 8313. — Die neuere Ausg. des Hariv. an allen drei Stellen विश्वरूप.

वैश्वलोप adj. (f. ई) vom Viçvalopa (ein Baum) *herrührend:* समिध: Kauç. 17.

वैश्वव्यचस adj. von विश्वव्यचस् VS. 13,56.

वैश्वसृज adj. von विश्वसृज्. अग्नि, चिति, चयन Taitt. Âr. 1,22,11. Ind. St. 1,73. fg. 3,386. fg.

वैश्वानर (von विश्वानर) 1) adj. (f. ई) *a*) *allen Männern gehörig: allgemein, allbekannt, allverehrt, überall wohnend* u. s. w. α) stehende Bez. für Agni, *dem Gast aller Menschen* (VS. 33,16) Naigh. 5,4. Nir. 7,21. fgg. अयमेव सो ऽग्निर्वैश्वानर: 21. AK. 1,1,1,43. H. 1098. Halâj. 1,83. ṚV. 1,59,1. 98,1. 3,2,1. fgg. 3,1. 26,1. 4,5,1. 5,27,1. 6,7,1. 8,1. 9,1. 7,5,1. 49,4. 18,88,12. fg. VS. 4,15. 33,60. AV. 3,21,3. 4,36,1. 3. 6,35,1. 36,1. Âit. Br. 7,9. Çat. Br. 1,4,1,10. 14. 12,6,1,11. 14,8,10, 1. Âçv. Gṛhj. 3,6,3. Maitrâyaṇ. 2,6. 6,9. Jâṅ. 1,49. MBh. 2,1148. 3, 14193. 8,2160. 13,4093. 14,617. R. 3,9,3. 4,43,35. Uttarar. 129,8 (174, 3). Vaiṣṇ. Bṛh. S. 43,52. Kathâs. 7,44. Bhâg. P. 2,2,34. Pañcat. 224, 20. fg. यत् (Kṛshṇa spricht) वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रित:। प्राणापानसमायुक्त: पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ Bhag. 15,14. als *besondere Form* Agni's unterschieden: एतं वा वृणते ऽग्निं क्षेत्राय मरुत्पित्रा वैश्वानरेण Âçv. Çr. 1,3,22. Nir. 7,21. Çat. Br. 1,5,4,16. Pañcav. Br. 21,10,11. Kâṭh. Çr. 23,3,1. auf das Jahr gedeutet Çat. Br. 1,5,4,16. 4,2,4,3. so heisst Agni विसर्गे Gobh. 1,3. — β) *Sonne, Sonnenlicht* Nir. a. a. O. वैश्वानरो रश्मिभि: पुनातु AV. 6,62,1. Çâṅkh. Br. 19,1. Çr. 3,3,3. 5. ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ṚV. 3,61,16. TS. 1,1,4,2. TBr. 1,2,1,27. — γ)

प्राण Praçnop. 1,7. आत्मन् Kaush. Up. 5,11,2. der erste Pâda des Âtman Mânp. Up. 3. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. 133. Weber, Rimat. Up. 338. 342. = चेतन्य, विराज् Vedântas. (Allah.) No. 72. 74. — *b*) इष्टि M. 11,27. Jâân. 1,126. 3,250. वाजिनो ऽश्वमेध: Hariv. 14227. — *c*) भूमि MBu. 13,2140 nach der Lesart der ed. Bomb. (वैश्वानरी ed. Calc.). — *b*) *aus allen Männern bestehend, vollzählig, allgemein:* ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत RV. 8,30,4. VS. 11,38. TS. 3,2,8,3. Çâṅkh. Ça. 4,10,2. वैश्वानरो वैश्वदेवो VS.) मूनतामा ऽधमम् AV. 5,62,2. कविरसि वैश्वानरम् *allgemein d. h. allen Göttern gehörig* Liṭ. 5,6,6. — *c*) *allgemeinend:* Varuṇa AV. 1,10,4. — *d*) Agni Vaiçvânara *geweiht u. s. w.:* Vers TS. 5,2,4,2. पुरोडाश in zwölf Schalen Çat. Br. 2,2,3,6. 5,2,4, 13. 6,2,4,24. 9,3,4,1. 13. Kiṭ. Ça. 25,8,16. Somagraha Çat. Br. 4, 2,4,1. Atirâtra Çâṅkh. Ça. 16,23,22. 25,3. 26,3. सौर्य° Nir. 7,23. — *e*) von Vaiçvânara oder Vaiçvânara *verfasst:* धर्मा: Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,17. — 2) m. वैश्वानर *a*) वैं° patron. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. pl. N. pr. eines Ṛshi-Geschlechts MBu. 12,6143. — *b*) N. pr. eines Daitja Hariv. 200. 208. VP. 148. Bhâg. P. 6,6,32. fg. — *c*) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 7,44. 21,181. 34,116. — 3) f. ई (sc. वीथी) umfasst die beiden Bhadrapadâ und Revatî VP. 226, N. 21; vgl. °मार्ग. — 4) n. *a*) *Gesammtheit der Männer* TBa. 1,5,4,5. — *b*) N. eines Sâman Ind. St. 3,238,*b*; vgl. महावैश्वानरव्रत.

वैश्वानराग्नेष्ठ adj. *den* Vaiçvânara *zum Ersten habend* AV. 3,21,7.

वैश्वानराज्योतिस् adj. Vaiçvânara's *Licht habend* VS. 20,22.

वैश्वानरदत्त m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 20,3.

वैश्वानरपथ m. = वैश्वानरमार्ग R. 1,60,30 (62,21 Gorr.). Hariv. 4238.

वैश्वानरमार्ग m. Vaiçvânara's *Bahn*, Bez. einer best. Strecke der Mond- und Planetenbahn Vâsiṅ. Bṛh. S. 11,22; vgl. 7,2, die englische Uebers. und VP. 226, N. 21.

वैश्वानरमुख adj. Vaiçvânara *zum Munde habend:* Çiva MBu. 14, 201. — Vgl. अग्निमुख.

वैश्वानरविद्या f. Titel einer Upanishad Colebr. Misc. Ess. I, 326.

वैश्वानरायण m. patron. von विश्वानर gaṇa सप्तादि zu P. 4,1,110.

वैश्वानरीय adj. zu Vaiçvânara *in Beziehung stehend, von ihm handelnd* Âit. Br. 3,14. 38. Nir. 2,20. सूक्त 7,23. 24. Çâṅkh. Br. 25,9. Ça. 5,6,3. 11,2,10. अग्नि Ind. St. 3,458.

वैश्वामनस n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,238,*b*. — Vgl. वैश्वमनस.

वैश्वामित्र 1) adj. zu Viçvâmitra *in Beziehung stehend:* पदस्तोभा: Ind. St. 3,238,*b*. n. N. verschiedener Sâman ebend. — 2) m. patron. P. 4,1,114, Schol. Ait. Br. 7,17. fg. Âçv. Ça. 12,14,2. fgg. Pâraṅkâv. Br. 14,11,3. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,41. fg. 57,2. 3. des Ashṭaka, Ṛshabha u. s. w. RV. Anukr. plur. Bhâg. P. 9,16,37. वैश्वामित्री f. P. 4,1,78, Schol. — Vgl. महा°.

वैश्वामित्रि m. patron. von विश्वामित्र MBu. 3,13301.

वैश्वामित्रिक adj. zu Viçvâmitra *in Beziehung stehend:* अध्याय P. 4,3,69, Schol.

वैश्वावसव्य (von विश्वावसु) n. etwa *die Gesammtheit der* Vasu (entsprechend वैश्वानर) TBa. 1,5,4,5.

वैश्वावसव्य (wie eben) m. patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Çat. Br. 10,3,4,1.

वैश्वासिक (von विश्वास) adj. *Vertrauen verdienend, zuverlässig:* ज्ञान Vers. d. Oxf. H. 216,*b*,40. Daçak. 61,1.

वैषम्य s. वैशम्य.

वैषम (von विषम) n. *Ungleichheit, Wechsel* Spr. (II) 1939, v. l. — Vgl. वैषम्य.

वैषमस्थ्य n. nom. abstr. von विषमस्थ gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैषम्य (von विषम) n. nom. abstr. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. 1) *Unebenheit* (des Bodens) MBu. 12,2225. गति° Spr. 5028. — 2) *Ungleichheit, Verschiedenartigkeit, Nichtübereinstimmung, ungleiche Vertheilung, Störung des richtigen Verhältnisses* Kiṭ. Ça. 3,8,39. Liṭ. 6, 5,17. फल° MBu. 3,13863. Spr. 4699. 1560. संख्या° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 20. MBu. 1, S. 308. Verz. d. Oxf. H. 264, *a*, 32. Kiṭâd. 3,182. Sin. D. 633. Mudr. ST. 2,190. Bhâg. P. 3,32,24. मति° 1,9,21. गुण° 2, 10,3. 3,10,14. 28,42. 11,10,32. Śârṅgâdh. 46. वातपित्तकफशोणितसन्नि-पात° Suçr. 1,4,5. 9. 2,5,16. Tattvas. 30. Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 37. Sarvadarçanas. 163,13. साहार° Suçr. 1,194,18. द्रव्यावयव° Bhâg. P. 3,26,45. — 3) *Schwierigkeit:* लोकव्यवहारस्य Mṛcch. 149,1. *schwierige Lage, Noth, Bedrängniss:* वैषम्यं परमं प्राप्त: MBu. 3,2316. 13,2306. Spr. 2904. वैषम्याणां प्रशमनम् Kim. Nitis. 13,55. सु° so v. a. *Wohlfahrt* Mârk. P. 128,33. — 4) *Ungerechtigkeit, Unbilligkeit, rauhes, unfreundliches Benehmen:* मदन° Milav. 42,16. Bhâg. P. 6,2,3.7,1,23. तथा विषमशीलस्य नाम्ना वेशस्यतो (lies वैषम्यतो) ऽरिपु Kathâs. 120,39. Sarvadarçanas. 80,14. fg. 121,8. भाग्य° *Missgeschick* R. 6,96,29. Mṛcch. 152, 11. — 5) *Unangemessenheit, Falschheit, Unrichtigkeit* Sarvadarçanas. 127,7. 143,4. पाषण्डपथ° Bhâg. P. 3,7,31. संकल्प° 9,1,15. 20. कर्मसु *ein Versehen bei* 8,23,14. कर्म° 15.

वैषम्यकौमुदी f. Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. II, 57.

वैषर्य n. = विषयाणां समूह: gaṇa भिक्षादि zu P. 4,2,38.

वैषयिक (von विषय) adj. (f. ई) 1) *das Reich betreffend:* पीडा Kim. Nitis. 10,3; vgl. 7. — 2) *einen bestimmten Bereich habend, auf Etwas gerichtet, — bezüglich:* आधार (z. B. मोक्ष इच्छास्ति) Siddh. K. zu P. 1, 4,45; vgl. विषयसप्तमी. — 3) *auf die Sinnenwelt gerichtet, dieselbe betreffend:* ज्ञान Pâṇ. 1,1,52. सुख Sin. D. 93,1. °ज्ञान und वैषयिक m. *ein Materialist* H. an. 3,419. Med. n. 244.

वैषुवत (von विषुवत्) 1) adj. (f. ई) *in der Mitte (des Jahres u. s. w.) befindlich, central* Âpast. 1,22,7. अहन् Çat. Br. 4,6,2,2. 12,2,2,6. 10. Çâṅkh. Br. 25,1. 9. काल *aequinoctial* Sûrjas. 13,9. — 2) n. *a*) *Mittelpunkt:* कर्मणा उपदेशो विद्यात्संख्या वैषुवतानि च Nidânas. bei Weber, Nax. 2,284. — *b*) *Aequinoctium:* उदगयनदक्षिणायनवैषुवतसंज्ञाभिर्गतिभि: Bhâg. P. 5,21,3.

वैषुवतीय adj. = वैषुवत. अहन् Çâṅkh. Br. 19,2.

वैष्किर adj. von विष्किर. रस *Hühnerbrühe* Suçr. 2,192,18.

वैष्टर्प adj. von विष्टुप AV. 19,27,4.

वैष्टपुरेय m. patron. von विष्टपुर gaṇa प्रोक्षादि zu P. 4,1,123. Çat. Br. 14,5,5,20. 7,2,25.

वैष्टम्भ (von विष्टम्भ) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,238,*b*. Pâraṅkâv. Br. 12,3,9. 10. महा° 4,19. Ind. St. 3,239,*a*. लुब्धक° 214,*b*.

वैष्टिक (von 2. विष्टि) m. *Frühner, Zwangsdiener* Sadan. P. 4,13,a.

वैष्टुत 1) adj. zu *dem Vishṇuti gehörig, dabei üblich:* वमन Lāṭ. 2,6, 1. 4. — 2) n. *die Asche bei einem Brandopfer* H. 837; vgl. वैष्टुभ und वैष्णव.

वैष्टुभ n. = वैष्टुत 2) Taitt. 2,7,7.

वैष्ट्र Uṇādis. 4,139. n. = पिष्टप Uṇâdival. = सोम, वायु, विष्णु Uṇādisūtr. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

वैष्णव 1) adj. Vop. 4,40. parox. (f. ई) zu Vishṇu *in Beziehung stehend, von ihm herrührend, an ihn gerichtet, ihm geweiht* u. s. w. VS. 5,21. 23. 25. 10,6. TS. 3,6,9,2. 3. Ait. Br. 3,38. Çat. Br. 1,1,4,9 (s. Corrigg.). 3,5, 3,2. 4,9. 5,2,5,4. 11,5,2,5. MBh. 6,5801. Varāh. Bṛh. S. 80, 8. 81,7. बहुतानि Ind. St. 1,37,2. यज्ञ MBh. 3,12021. Ind. St. 1,21,19. वायु 2, 70. यशस् MBh. 18,308. पद् ebend. धामन् Rāgat. 11,55. Rāja-Tar. 5,125. जगत् MBh. 3,13847. Bhāg. P. 7,3,11. क्षेत्र 1,1,21. भी 3,16,28. ज्वर 10, 63,25. तेजस् Rāgat. 10,55. यूप R. 1,62,19. वर Kathās. 22,193. वचस् 71, 228. मूर्ति Harīv. 10946. तनु Mālav. P. 109,71. पाद् 58,31. बलि R. 3, 56,27. यज्ञ MBh. 3,13291. R. 7,25,8. 30,47. 49. मनुध्यान Gīt. 12,25. मन्त्र Varāh. Bṛh. S. 43,30. 44,6. Weber, Rāmat. Up. 335. सूक्त Weber, Kṛshṇaj. 304. तन्त्र Verz. d. Oxf. H. 106, *a*, 24. पर्वन् 30, *a*, No. 75. मनुस्मृति 4, *b*, No. 33. संहिता 8, *a*, 11. पुराण (auch n. mit Ergänzung von पुराण) VP. 284. Mālav. P. S. 639, Z. 3. Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 1. 59, *a*, 37. 65, *a*, 33. *b*, 9. 68, *b*, 18. 79, *b*, 37. 83, *a*, 9. Verz. d. B. H. No. 1170. Ind. St. 1,18,3. पञ्चरात्र 23,5. शास्त्र 58,21. Verz. d. B. H. No. 327. वेदेभ्यो वैष्णवं (wohl शास्त्र zu ergänzen) परम् Verz. d. Oxf. H. 91, *a*, 17. 23. 247, *a*, N. 3. वैद्यकशास्त्रे वैष्णवसंज्ञके 334, *b*, 25. विद्या Bhāg. P. 6,7,39. — 2) proparox. patron. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. Soma, Herr der Apsaras Âçv. Çr. 4,7,4. Çat. Br. 13,4,3,3 (oxyt.). यद्गोरपत्यं प्रथमं सुवर्णं भूर्वैष्णवी सूर्यसुताश्च गावः MBh. 3,12480 (Journ. of the Am. Or. S. 7, 43). पृथिवी 13,4350. गङ्गा Âtmabodhâbharaṇatattva im ÇKDa. इति पुत्रत्रये तस्य ज्ञाते ब्रह्मेशविष्णवम् (das suff. gehört zu allen drei Namen) Mārk. P. 17,10. — 3) m. (f. ई Pāṇḍar. 4,1,3) *ein Verehrer* Vishṇu's Uṇâdival. zu Uṇādis. 3,39. Wilson, Sel. Works I, 34. fgg. MBh. 18,304 = Harīv. 16361. Varāh. Bṛh. S. 86,33. Spr. (II) 3092, v. l. Kathās. 17,4. 36,10. Rāja-Tar. 2,147. 5,43. Prab. 86,6. Mālav. P. 19,35. Pāṇḍar. 4,1,3. Ind. St. 1,13,9. Vop. 3,132. Verz. d. Oxf. H. 14, *b*, 42. 15, *a*, 11. fg. 16, *a*, N. 1. 92, *a*, 19. 242, *b*, No. 309. 301, *b*, 16. fgg. Bez. *einer best.* Vishṇu'itischen *Secte* 248, *a*, 15. 18. fg. 258, *b*, 11. — 4) *ein best. Mineral*, m. H. 1054, Schol. n. *ein* Mahârasa Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761. — 5) f. ई a) *die Energie* Vishṇu's (eine der Mutter) H. 201, Schol. Mīr. 142,10. Verz. d. Oxf. H. 184, *a*, 4. 9. 25, *b*, N. 3. 39, *b*, 36. 81, *a*, 41. Rāja-Tar. 3,471. = दुर्गा Çabdar. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 25, *a*, 34. = मनसा 24, *b*, 38. °मायाकथन Verz. d. B. H. 134, *a* (3). pl. im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2656. — β) Bez. verschiedener Pflanzen: = वपुष्टिता Çabdar. im ÇKDa. = शतावरी Rāgān. ebend. = तुलसी Çabdam. ebend. — 6) n. a) *das unter* Vishṇu *stehende* Naxatra Çravaṇa Weber, Nax. I, 310. II, 385. Sūryas. 9,18. Varāh. Bṛh. S. 71,11. — *b*) N. eines Sâman Lāṭ. 5,11,4. 7,2,1. वैष्णवाग्र und वैष्णवोत्तर n. desgl. Ind. St. 3,239,*a*. — Vgl. प्रथम°.

वैष्णवज्योतिषशास्त्र n. Titel eines Werkes Mack. Coll. I, 127.

वैष्णवतीर्थ n. *ein* Tîrtha *der* Vaishṇava oder N. pr. eines Tîrtha Verz. d. B. H. 146, *b* (61).

वैष्णवत्व n. nom. abstr. von वैष्णव 3) Rāja-Tar. 5,124.

वैष्णववर्धन Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works I, 168.

वैष्णववारुणी adj. (f. ई) *an* Vishṇu *und* Varuṇa *gerichtet:* सूक्त Çat. Br. 4,5,7,7.

वैष्णवशास्त्र n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 333, *b*, No. 786. Verz. d. B. H. No. 880.

वैष्णवसिद्धान्तदीपिका f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 161, *b*, 32. वैष्णवमहासिद्धान्तदीपिका 31.

वैष्णवाकूतचन्द्रिका f. Titel eines Commentars zum 3ten und 4ten Buche des Vishṇupurâṇa Verz. d. Oxf. H. 63, *a*, No. 111. Verz. d. B. H. No. 487.

वैष्णवामृत n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279, *b*, 8. 292, *b*, 17. Verz. d. Cambr. H. 67.

वैष्णवायनि m. patron. von वैष्णव gaṇa कृतादि zu P. 4,1,100.

वैष्णवीतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 108, *b*, 37. 109, *a*, 24. fg.

वैष्णव्य adj. zu Vishṇu *in Beziehung stehend* VS. 1,12. Gobh. 1,7, 22. Sāṅkh. Br. 5,1.

वैष्णावरुणी adj. (f. ई) = वैष्णववारुणी. वशा TS. 2,1,4,4.

वैष्णुवारुण adj. (f. ई) dass. Ait. Br. 3,38.

वैष्णुवृद्धि (von विष्णुवृद्ध) m. patron. so ist vielleicht nach Weber zu lesen st. वैष्टृवृधि Pravarādhy. in Verz. d. B. H. 36,15.

वैष्वक्सेनि m. patron. von विष्वक्सेन P. 4,1,114, Vârtt.

वैसर्गिक adj. = विसर्गाय प्रभवति gaṇa सैतापादि zu P. 5,1,101.

वैसर्जनि (von विसर्जन) adj. *auf das Entlassen* (des Soma aus der Hand?) *bezüglich*, n. Bez. gewisser Opferungen TS. 6,3,2,1. 2. Kāty. 26,2.

वैसर्जनीय dass. Schol. zu Çat. Br. 3,6,2,1 und Kāty. Çr. 11,1,16.

वैसर्जिनि dass. Çat. Br. 3,6,2,2. 3. 4,6,2,6. °होम Schol. zu Kāty. Çr. 11,1,12.

वैसर्पि adj. *mit der* विसर्प *genannten Krankheit behaftet* gaṇa ज्योत्स्नादि zu P. 5,2,103, Vârtt. Nach Vjutp. 220 als subst. = विसर्प *Rose, Rothlauf.*

वैसदृश्य (von विसदृश) n. *Unähnlichkeit, Verschiedenheit* Bhāg. P. 5, 26,2. 10,85,6. Kull. zu M. 9,174. Schol. zu Çiç. 42.

वैसारिणी m. = विसारिन् *Fisch* P. 5,4,16. AK. 1,2,2,17. H. 1343. Hall. 3,35.

वैसूचन (von विसूचन und dieses von सूच् mit वि) n. *Verkleidung als Weib* (im Drama) ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वैसृप (von विसृप und dieses von सृप् mit वि) m. N. pr. eines Dânava Harīv. 203.

वैस्तारिक (von विस्तार) adj. *weit verbreitet, ausgedehnt* Burnouf, Intr. 142.

वैस्तिक s. वस्तु°.

वैस्पष्ट्य (von विस्पष्ट) n. *Klarheit, Deutlichkeit, Offenbarkeit* P. 5,3, 66, Vârtt. 2.

वैस्रेपि m. patron. von विस्रि gaṇa प्रधादि zu P. 4,1,123. — Vgl. वैस्रेय.

वैस्वर्य 1) adj. *die Stimme benehmend* Suçr. 1,192,11. 215,1. — 2) n.

a) Verlust der Stimme, — Sprache Vasan. 6,156. Sin. D. 167. 169. मतं गद्गदभाषितं वैस्वर्यं प्रमदादिजम् Prabodhan. 51,a,5. — *b) verschiedene Betonung:* स्वरयोः Çikṣ. Ça. 12,16,6.

वैकङ्ग (von विकङ्ग) *adj.* (*f.* ई) *zu einem Vogel in Beziehung stehend:* तनु *Vogelgestalt* Kathâs. 59,178.

वैकङ्ग (von विकङ्ग) adj. dass.: रस *Brühe von Vogelfleisch* Suçr. 2,459,4.

वैकृति (von विकृत) m. patron. gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61. — Vgl. वैकृलि.

वैकृलि m. patron.; pl. Saṁhit. K. 184,a,2. vielleicht fehlerhaft für वैकृति.

वैकायन desgl.; pl. ebend. 184,a,5.

वैकायस (von 2. विकायस्) 1) adj. (*f.* ई) *in freier Luft —, offen daliegend oder stehend, in der Luft —, im Luftraum stehend oder sich bewegend* Gobh. 2,6,7. Pâr. Gṛhy. 2,2. यक्ष MBh. 1,6084. शक्रस्य सभा 2, 284. Harîv. 12656. पुर MBh. 3,633. कूट (so mit der ed. Bomb. zu lesen) 12,4663. रथ R. 6,19,55. पाने वैकायसं नाम Bhâg. P. 3,10,16. धनुर् 10, 55,31. बालखिल्याः MBh. 3,10902. °गत *das Fliegen* R. 2,27,9. वैकायसम् *adv. in freier Luft* Âpast. 2,4,8. लोष्टं वैकायसं निर्दध्यात् Gobh. 4, 9,13. — 2) m. pl. *Luft-, Himmelsbewohner* Bhâg. P. 2,2,33. Bez. *best.* Ṛshi (Lichterscheinungen im Luftraum) Varâh. Bṛh. S. 48,67. — 3) f. ई N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,19,18. — 4) n. *a) der Luftraum:* वैकायसं प्राक्रमत् MBh. 7,5766. — *b) das Fliegen* Bhâg. P. 5,5,35.

वैकार (von विकार) m. N. pr. eines Berges in Magadha MBh. 2,799; vgl. LIA. 2,79, N. 4. Hiouen-thsang 3,370. fg. — Vgl. वैभार.

वैकार्य (wie oben) MBh. 5,4086 nach Nîlak. *adj. mit dem man seinen Spass hat, den man neckt und zum Narren hält;* könnte auch als n. in der Bed. *Belustigung, Spass* gefasst werden.

वैकासिक (von विकास) m. *Spassmacher, lustiger Geselle* H. 331. Hall. 2,277.

वैकृत्य (von विकृत) n. *Erschöpfung, allgemeine Schwäche:* मुमूर्षोरिव तत्रास्य वैकृत्यगलितस्मृतेः Râjat. 8,2248.

वैकाण m. pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,20. 16,35. — Vgl. वैकण.

वैटा f. *Dienerin, Sclavin* H. 534. Hall. 2,237. als Nebenform von पेटा wohl richtiger वेटा zu schreiben. — Vgl. पूगवेट.

वैड m. Variante von फेड Çabdar. im ÇKDa.

वैडु 1) m. *a) eine Schlangenart* (गोनस) Vikramâditya bei Buhl. zu AK. nach ÇKDa. — *b) ein best. Fisch* Mân. im ÇKDa. und bei Wilson. — 2) f. ई *der 4te Theil eines* Paṇa Mân. ebend. — Die gedr. Ausg. der Mân. v. 67 schreibt das Wort mit ट.

वैण m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. B. H. No. 206. 266. 1144. Die richtigere Form ist vielleicht वेडु.

वैोढ्र (von 1. वह्) nom. ag. P. 6,3,112. 1) *führend, führend, ziehend, bringend; Zugpferd* ṚV. 1,44,2. 6,64,3. अत्यो न वोढ्वा 9,81,3. सुयम 96,18. 112,4. Çat. Br. 6,4,2,9. Çikṣ. Ça. 2,18,9. इनो वसु स हि वोढ्वा ṚV. 8,2,35. Nir. 5,1. 11,16. 12,22. — रथस्य *Wagenpferd* AK. 2, 8,2,14. H. 1234. वृषस्य ein Stier MBh. 3,12734. 13,3589. AK. 2,9,64. पुगवीनाम् ebend. H. 1261. धुरः MBh. 7,378. धुर्यधुरायाम् ein Stier Pâṇ. 8,16. m. *Zugochs, Stier* Râjân. im ÇKDa. MBh. 11,760. *Wagenlenker* H. an. 2,181. Mân. dh. 4. देवानाम् *Führer* Çiç. zu Bṛh. Ar. Up. S. 28. भागीरथीनिर्झरसीकराणाम् *zuführend* (Wind) Kumâras. 1,15. कुरुवकारतमाम् Mâlav. 44. कव्यकव्यानाम् *Darbringer* MBh. 13,2023. — 2) *Heimführer eines Mädchens, Ehegatte* Çabdar. im ÇKDa. M. 8, 201. 9, 173. fg. MBh. 5,4782. वोढृ und स° Kull. zu M. 9,32. कन्याम् P. 3,3, 169, Schol. — 3) *Träger, Lastträger* H. an. Mân. Bhâg. P. 5,10,2. भार° Kathâs. 60,12. कृतभूभार° 35,39. 101,41. रुचिर्वोढृ Pâṇ. 3,14, 32. — 4) = मूढ (vielleicht fehlerhaft für सूत) Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. धूर्वोढृ.

वोढव्य (wie oben) partic. fut. pass. P. 6,3,112. Vop. 26,25. 1) *zu führen, zu ziehen, zu fahren, zu lenken:* रथ MBh. 13,2790. Verz. d. Oxf. H. 31,a,19. वोढव्या पुंगवेनेव धूः सदा रणमूर्धनि Harîv. 4049. धापास्त्वेव हि वोढव्यं (impers.) भयद्विः पुंगवैरिव MBh. 12,8298. धनड्वानिव वोढव्यः 5,4573. धूर्वुनेन धार्या स्याद्वोढव्य इतरो वनः 2799. स (सद्देवः) ते ऽरण्येषु वोढव्यो पाप्तसेनि तपास्वपि (so ed. Bomb.) *zu leiten* 4,894. — 2) *f. heimzuführen, zu ehelichen* MBh. 13,2449. Kull. zu M. 8,366. — 3) *zu tragen:* भार R. 1,12,4. R. Gorr. 2,31,8. — 4) *aufzuladen, zu übernehmen, auszuführen:* मदृद्धि कार्यं वोढव्यम् MBh. 5,72. पितृपैतामहे वृत्ते वोढव्ये ते ऽन्यथा मतिः 3,1117.

वोढु m. = वोढृ Pâṇ. 1,10,61. Verz. d. B. H. No. 1143. Gaupar. zu Siddh. 1. Ânushaṅgatva im ÇKDa. — Vgl. यत्नवोढ्वे.

वोण्ट m. die vulgäre Form für वृन्त Çabdar. im ÇKDa.

वोत् adj. = मार्ट Taitt. 3,1,9.

वोदाल m. *ein best. Fisch* Çabdar. im ÇKDa.

वोद्र und वोद्री s. u. वोडु.

वोन्यादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Journ. of the Am. Or. S. 6,517,c.

वोपदेव m. N. pr. eines überaus fruchtbaren Autors aus dem 12ten oder 13ten Jahrhundert n. Chr. Burnouf, Bhâg. P. I, xcvi. fgg. Wilson, Sel. Works 2,69. Colebr. Misc. Ess. I, 197. II, 44. fgg. Gild. Bibl. 382. fg. 397. fg. 394. Vop. S. 176. Verz. d. B. H. No. 790. 937. 978. fg. Verz. d. Oxf. H. 37,b, No. 92. 161,b,16. 164,a,1. 174,b, No. 394. 175,a,27. fgg. No. 397. 175,b, No. 398. 278,b,21. 279,b,5. Verz. d. Cambr. H. 13. fgg.

वोपालित m. N. pr. eines Lexicographen Mân. Anh. 1. Hall. 1, 3. Verz. d. Oxf. H. 182,b,1 v. u. 188,a,7. 198,b,1. Uṇâdiv. zu Uṇâdis. 4,56. 78.

वोरक m. *Schreiber* Taitt. 2,8,26. — Vgl. वोलक.

वोरट m. *eine Jasminart* (कुन्द) Taitt. 2,4,24.

वोरपटी f. *Matratze* Çabdar. im ÇKDa.

वोरव m. *eine best. Körnerfrucht* Râjân. im ÇKDa.

वोरुवान m. *ein Pferd von blassrother Farbe* H. 1240. wohl nach einem Lande, vielleicht Hyrkanien, benannt.

वोरुवाण Harîv. 7426 fehlerhaft für रोरुवाण, wie die neuere Ausg. liest.

वोल m. *Myrrhe* AK. 2,9,105. H. 1063. nach ÇKDa. auch n.

वोलक m. 1) *Strudel* H. 1076. — 2) *Schreiber* (vgl. वोरक) Çabdar. im ÇKDa.

वोल्लामक N. pr. einer Oertlichkeit Râja-Tar. 5,234.

वोल्लाक् m. *ein kastanienbraunes Pferd, bei dem Mähne und Schweif hell sind,* H. 1239.

वोक्तित्व n. *Schiff* H. 876.

वोक् für वाक् (von वाच्) Çat. Br. 1,7,3,21. 10,4,4,3. 5.

वोकक् für वोषट् Çat. Br. 2,2,3,19. 25. Schol. zu Kâts. Çr. 390,14. 391,4.

वोलि m. patron. Pravâhaṇi. in Verz. d. B. H. 57,38. wohl fehlerhaft.

वौषट् indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. in Verbindung mit कर् u. s. w. gaṇa ऊर्णादि zu 61. ein Opferruf (eine Potenzirung von वषट्) AK. 3,3, 3. H. 1538. Ait. Br. 3,6. Çat. Br. 1,5,3,16. 10,4,4,3. 12,3,3,3. Hariv. 14115. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,91. Weber, Rimat. Up. 303. वौशेषट् P. 8,2,91. — Vgl. वोषट्.

व्यंश s. व्यंस.

व्यंस (2. वि + 2. यंस) 1) adj. *auseinanderstehende Schultern habend:* पृथु° *breitschulterig* MBh. 1,3971. 3,11689. vielleicht ein alter Fehler für पृथ°; vgl. am Ende des Artikels. — 2) m. N. pr. eines von Indra besiegten Dämons: यदिन्द्रवृत्रं वृत्रतरं व्यंसम् RV. 1,32,5. 101,2. 103,2. 2,14,5. 3,34,3. 4,18,9. eines Sohnes des Viprakitti von der Siṁhikâ Hariv. 215 (व्यंश die ältere Ausg.). VP. 148 (व्यंश). — In der Stelle पृथमात्रं व्यंसौ TBr. 1,6,4,3 ist zu zerlegen वि यंसौ *die Achseln stehen um einen Pṛthu von einander ab.*

व्यंसक (von व्यंसय् mit वि) nom. ag. *Betrüger* H. 377. Halâs. 2, 194. — Vgl. क्षात्र°, मयूर°.

व्यंसयितव्य (wie oben) adj. *zu täuschen, zu betrügen* Pañcat. 202,25.

व्यक्त 1) adj. a) *herausgepulst* u. s. w. s. u. सञ्ज् mit वि 2). — b) = स्पुट *offenbar, wahrnehmbar* H. 1467. an. 2,193. Med. t. 54. °कृत्य Râm-Tâp. 6,321. °चैतन्य adj. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,102. °दर्शन adj. Kâlikop. ebend. 16. गौरिवाव्यक्तशारदी Hariv. 7079. व्यक्ता वाक् *verständlich, articulirt* Daivop. 23,10. P. 1,3,48. Vop. 23,41. *sinnlich wahrnehmbar* im Gegens. zu अव्यक्त *übersinnlich* MBh. 3,13918. इन्द्रियैः सृज्यते यच्चतदव्यक्तमिति स्मृतम् । तदव्यक्तमिति ज्ञेयं लिङ्गग्राह्यमतीन्द्रियम् ॥ 12931. 12,6964. 8672. fgg. Siṁhâs. 2. 10. 11. 14. VP. 9. Bhâg. P. 2,6,25. Verz. d. Oxf. H. 45,a,19. नावव्यक्त *eine bekannte Zahl* Colebr. Alg. 288. व्यक्तम् adv. *offenbar, deutlich* MBh. 13,236. Spr. (II) 344. (I) 2887. 3136. Kathâs. 12,166. Daçak. 91,14. व्यक्तावधूत im Gegens. zu गुप्तावधूत Wilson, Sel. Works I, 202. Vgl. unter सञ्ज् mit वि 3), अव्यक्त (als n. auch Jñân. 3,178) und परि°. — c) *specialisirt, unterschieden* H. 327. *besonder* 14. — d) *klug, verständig, weise* AK. 3,4,24,65. H. 342. H. an. Med. Halâs. 2,178. — 2) m. N. pr. eines der 11 Gaṇâdhipa bei den Gaina H. 32 nebst Comm. Wilson, Sel. Works I, 299. fg.

व्यक्तगन्धा f. (*stark riechend*) *langer Pfeffer, Jasmin, Sanseviera* Râgân. in Nigh. Pr.

व्यक्तता (von व्यक्त) f. *das Offenbarsein, Wahrnehmbarkeit:* प्रधानस्य व्यक्तता गतस्य Maitrâyaṇ. 6,10. Kâlikop. in Ind. St. 9,20. यावत्पिशाचो व्यक्तता गतः *bis der Piç. erscheint* Kathâs. 28,167. व्यक्ततया *deutlich, verständlich* Verz. d. Oxf. H. 198,b, No. 467.

व्यक्तदर्शिन् adj. *der Etwas mit eigenen Augen gesehen hat, Augenzeuge* Taitt. 3,3,10.

व्यक्तमय (von व्यक्त) adj. *das sinnlich Wahrnehmbare betreffend* MBh. 12,9672. अव्यक्तमयो विद्या *das Uebersinnliche betreffend* ebend.

व्यक्तरसता (von व्यक्त + रस) f. *deutlicher —, hervorstechender Geschmack* Saṁk. 1,171,2; vgl. 136,9.

व्यक्ति (von सञ्ज् mit वि) f. 1) *das Erscheinen, Offenbarwerden, deutliches Hervortreten, Manifestation:* नहि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः Bhâg. 10,14. Bhâg. P. 8,7,36. 10,29,14. पुष्पफल° MBh. 12, 6330. व्यक्तिं भेदं च यो वेत्ति दोषाणाम् Saṁk. 1,83,21. गोपालास्तापसा व्याधा ये चान्ये वनचारिणः । मूलाहाराश्च ये तेभ्यो मोक्षव्यक्तिरिष्यते ॥ so v. a. *das Kundwerden* 136,3. 4. Vaṁç. Bṛh. S. 2,2. धर्म° MBh. 3, 12678. श्लोक° Mucc. 12. Milâvik. 17,7. दुर्नय° Kathâs. 21,94. 123,222. वर्णानां वदने Verz. d. Oxf. H. 104,b,22. 105,a,1. 155,a,7. Bhâg. P. 6, 19,12. Sin. D. 271. 408. यव्यक्तं व्यक्तिमायत्तं मन्यते मामबुद्धयः *in die Erscheinung getreten* Bhag. 7,24. व्यक्तिमायाति Sarvadarçanas. 90,2. व्यक्तिं भजन्ति *treten deutlich hervor* Çiç. 167. अविज्ञातस्थितामादौ पुनश्च व्यक्तिमागताम् *bekannt geworden* Kathâs. 19,117. Râja-Tar. 1, 231. Am Ende eines adj. comp.: सूक्ष्मसकलव्यक्ति Mucc. 82. — 2) *Unterschiedenheit, Verschiedenheit:* क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्व्यक्तिं बुबुधे MBh. 12, 7892. यथार्णवगता नद्यो व्यक्तीर्यान्ति न च 7972. क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्व्यक्तिं पृच्छामि 11218. दैवमानुषयोश्च व्यक्ता व्यक्तिर्भविष्यति R. 2,23,19. Rasat. 1,10. रामः सपत्नमेवावयोरधरोत्तरयोर्व्यक्तिर्भविष्यति Milav. 10,12. — 3) *ein von andern unterschiedenes Ding, Einzelwesen, Einzelding, Individuum* (Gegens. जाति) AK. 1,1,6,9. H. 1513. 14. Kap. 3,10. Nilak. 36. अव्यक्ताव्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे Bhag. 8,18. Vaṁç. Bṛh. S. 86,7. Bhâg. P. 3,26,39. 6,15,5. Ind. St. 9,341. fgg. Çaṁk. zu Kâṭh. Up. S. 14. द्व्यक्षाब्दा एकव्यक्तिवाचिनः Sin. D. 10,15. Kusum. 23,1. शब्दि° Müller, SL. 197. वर्ण° Müller, RV. Prât. XIII, N. 2. Sarvadarçanas. 4,14. Schol. zu P. 5,4,58. Sidd. K. zu 7,1,58. — 4) *Geschlecht* P. 1,2,51. Sin. D. 17,12. नपुंसक° 18,2. — Vgl. अतत्°, अर्थ°.

व्यक्तिविवेक m. Titel eines Buches: °कार Sin. D. 6,5. 121,3. Verz. d. Oxf. H. 210,a, No. 493.

व्यक्तीकर् (व्यक्त + 1. कर्), °करोति *offenbaren* Kathâs. 29,46. °कृत 45,273. Prab. 1,13. Sin. D. 22,14.

व्यक्तीभाव (von व्यक्तीभू) m. *das Offenbarwerden* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 53. 134.

व्यक्तीभू (व्यक्त + 1. भू°), °भवति *in die Erscheinung treten, offenbar werden* Verz. d. Oxf. H. 155,a,6. °भूत MBh. 12,11416. Vaṁç. Bṛh. S. 47,21. Râja-Tar. 5,240.

व्यत = निरत adj. *keine Breite habend*, subst. *Aequator* Journ. of the Am. Or. S. 6,392.

व्यय (2. वि + यय) 1) adj. (f. या) a) *seine Aufmerksamkeit auf keinem bestimmten Punkt richtend* (vgl. एकाय), *zerstreut, fahrig; ausser sich, in grosser Aufregung seiend;* = व्याकुल und व्याकुल AK. 3,4,25,121. Med. r. 84. H. 366. °चित्त Spr. (II) 67. Personen Maitrâyaṇ. 3,2. 6,30. Spr. (II) 1002 (Gegens. निराकुल). Vaṁç. Bṛh. S. 8,11. मत्ययामासिरे व्यया: देवाः) Brahma-P. in LA. (III) 50,1. स्त्रीमुखालोकनतया Kir. Nitis. 14,38. मद्° R. 4,33,20. °हृदय Pañcat. 200,2. हरिभयाभिनिवेशव्ययहृदया Bhâg. P. 5,8,2. अव्यय *nicht aufgeregt, Besonnenheit zeigend, ruhig und besonnen zu Werke gehend, sich durch Nichts irre machen lassend* Maitrâyaṇ. 2,7. अव्ययो यास्यि MBh. 3,12242. प्रायावतूर्णमव्ययो जीवितेप्सुः सुदुःखितः 18777. 5,7001. Hariv. 8115. R. 1,70,5. 2,30,18.

39,12. 52,67. 61,12. R. Gorr. 2,36,16. 3,73,6. 4,9,1. 33,22. Bhâg. P. 11,29,38. Bhâtt. 6,88. वचम्, वाक्य *besonnene Worte* R. 2,21,30. 5,47,1. हृदयवृत्तेरभिमतम् *so v. a. fest stehend* Spr. (II) 2810. — *b) von allem Andern abgelenkt, ganz von Etwas in Anspruch genommen, ganz mit Etwas beschäftigt;* = व्यासक्त AK. Med. Harîv. 3450. R. 7,105,1. unter den 1000 Beiww. Vishṇu's nach ÇKDa. die Ergänzung im instr.: वेवाहिकैः कौतुकविधानैः Kumâras. 7,2. Kathâs. 52,323 (*ganz mit Jmd beschäftigt, sich mit Jmd eifrig unterhaltend*). im loc.: सीतामार्गणे R. 5,47,11. धर्मार्थयोः Kâm. Nîtis. 13,60. उद्वाहमहोत्सवे Kathâs. 14,26. Râja-Tar. 3,370. Bhâg. P. 10,9,22. im comp. vorangehend: कर्म° Spr. 2121. उत्सव° Kathâs. 19,12. 20,49. 26,38. 34,147. 36,70. 46,55. Râja-Tar. 5,144. 6,211. 360. 8,1045. Pañkat. 121,14. तपस्विकार्यव्यग्रमनसम् Çik. 30,4. भगवद्गुणानुकथनश्रवणव्यग्रचेतसम् Bhâg. P. 4,29,39. Ueberaus häufig von Armen, Händen und Fingern: वत्सव्यापारपुलकाभ्यां व्यथाभ्यां दण्डरज्जुभिः । भुजाभ्याम् Harîv. 3398. नानाप्रहरणव्यग्रैर्भुजैः R. 6,91,4. Bhâg. P. 4,7,20. तोमरव्यग्रकर MBh. 8,464. Harîv. 6228. 9075. 13150. Spr. 2928. Ragh. 17,27. Vikr. 77,4. Prab. 101,13. कुसुमावचयव्यग्रकन्या Mâlav. 50,8. केलिकेशपरव्यग्रगौरीकर Kathâs. 35,1. बीजग्रहव्यग्रपाणि Prab. 21,7. अव्यग्र *unbeschäftigt, Nichts zu thun habend* Uttarar. 38,20 (32,13). — *c) hinundher schwankend, Gefahren ausgesetzt;* अ° *ungefährdet, sicher:* त्रैलोक्य MBh. 1,7711. राज्य 3,2049. इक्ष्वाकुकुल R. 1,72,8. भवतो गतिरव्यग्रा MBh. 5,5430. यागमन R. 1,50,22. कुशल 68,5 (अव्यग्र ed. Bomb.). गच्छत्स्वारिष्टमव्यग्रं (अव्यग्रः ed. Bomb.) पन्थानमकुतोभयम् 2,34,21. योगक्षेम 76,8. — *d) in Bewegung setzend* (sinnlich): °चक्र Bhâg. P. 3,19,6. — 2) व्यग्रम् *adv. in grosser Aufregung* Vaṇîs. Bṛn. S. 12,6. अव्यग्रम् *in aller Ruhe, mit einem Gefühl der Sicherheit, ganz behaglich* Harîv. 9034. R. 2,22,19. 34,25. Mâlatîm. 78,14. Bhâtt. 8,14. — Vgl. उद्व्य°, निर्व्यग्र, भोजन° und वैयग्र्य.

व्यग्रता f. nom. abstr. von व्यग्र 1) *b*); am Ende eines comp.: तपस्विकार्य° Çik. Cu. 41,1. Râja-Tar. 1,125. Pañkat. 252,24. fg. Kull. zu M. 8,65. कुतर्काभ्यास° Kuṭṭan. 24,12. fg.

व्यग्रत्व n. nom. abstr. 1) von व्यग्र 1) *a*) Maitrâyaṇ. 3,5. Spr. 2947. Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 286. — 2) von व्यग्र 1) *b*): स्वकर्म° Kull. zu M. 8,65.

व्यङ्गुल (2. वि + अ°) *adj. keine Zügel* —, *keine Schranken kennend:* मृगैः Bhâg. P. 3,21,55.

1. व्यङ्ग (von अञ्ज् mit वि) 1) *adj. fleckig:* तनवम् AV. 5,22,6. — 2) m. *a*) *Flecken im Gesicht* Suçr. 1,118,3. 292,12. 296,12. 326,3. Çâṅkh. Çraut. 1,7,63. — *b*) *Schandfleck:* व्यङ्गभूतः कुलस्य Harîv. 4889. — *c*) *Frosch* Taitt. 1,2,36. H. an. 2,49. Med. g. 22. — *d*) *Stahl* Çâṅkh. nach Nigh. Pr.

2. व्यंङ्ग (2. वि + अङ्ग) adj. (f. आ) in Ableitungen die erste Silbe zu व्या, nicht zu वेष verstärkt, gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3,7. Vop. 7,3. 1) *entstellt an den Gliedern oder eines Gliedes entbehrend, krüppelhaft* AK. 3,4,25,179. H. an. 2,49. Med. g. 22. वक्रो विपरुर्व्यङ्गः AV. 7,56,1. M. 7,149. MBh. 1,1023. 2,289. Suçr. 1,109,1. Çâṅkh. Sâṅkh. 1,3,7. Vaṇîs. Bṛn. S. 85,79. Kull. zu M. 9,247. गो MBh. 13,3262. अ° Mân. P. 28,18. Pañkat. 184,22. अव्यङ्गाङ्गी M. 3,10. °शरीर Vaṇîs. Bṛn. S. 64,2. — 2) *keine Räder habend:* रथ Bhâg. P. 4,26,15. — 3) fehlerhaft für व्यङ्ग *dreigliedrig* (d. i. *aus Wagen, Reiterei und Fussvolk bestehend* oder n. *Wagen, Reiterei und Fussvolk*) MBh. 8,2526 (ed. Bomb. hat die richtige Lesart). व्यङ्ग (बल) ist auch 9,1288 zu lesen st. यङ्ग der ed. Calc. und व्यङ्ग der ed. Bomb. — Vgl. 1. अव्यङ्ग.

व्यङ्गक m. *Berg* Taitt. 2,3,1.

व्यङ्गता (von 2. व्यङ्ग) f. *das Fehlen eines Gliedes, Krüppelhaftigkeit, Verstümmelung, das Abhauen eines Gliedes:* शरीरस्य MBh. 12,6190. Spr. (II) 664. प्राप्नोति च व्यङ्गताम् Vaṇîs. Bṛn. 8,18. अ° MBh. 13,5599. 5601.

व्यङ्गय् (wie oben) *einen Gliedes berauben, verstümmeln:* व्यङ्गयितुम् Pañkat. 38,18. व्यङ्गित 40,24. fg. MBh. 13,5086. कर्णयोः *so v. a. durchlöcherte Ohrlappen habend* (nach Nîlak.) 4356.

व्यङ्गार (2. वि + अ°), loc. व्यङ्गारे *wenn die Kohlen verloschen sind* M. 6,56. MBh. 12,264. 9075. 13,6503. Mâlav. P. 41,6.

व्यङ्गिन् adj. = 2. व्यङ्ग 1) MBh. 13,5086. Mâlav. P. 34,76.

व्यङ्गीकर् (2. व्यङ्ग + 1. कर्) *einen Gliedes berauben, verstümmeln:* °कृता रथद्विपाः MBh. 7,3877. °कृतवपुस् Harîv. 4318.

व्यङ्गुलि (2. वि + अ°) adj. *keinen Finger habend;* व्यङ्गुलीकृत *der Finger beraubt:* पाणि MBh. 7,6176.

व्यङ्गुष्ठ (2. वि + अ°) *eine best. Pflanze* H. an. 3,491. Med. j. 86.

व्यङ्ग्य (von अञ्ज् mit वि) adj. *was offenbar* —, *wahrnehmbar gemacht wird:* ध्वनिस्तात्पर्यादिव्यङ्ग्यः प्राणिभिः Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 287. eine Lampe ist व्यञ्जक, ein von ihr beleuchteter Krug व्यङ्ग्य Sâh. D. 24,9. Schol. zu Gaut. 1,2,11. in der Poetik *was verstanden* —, *implicite ausgesagt wird* Sâh. D. 10. fg. 19. 250. fg. 265. 5,17. 107,4. 291,4. 8. Verz. d. Oxf. H. 209,b, No. 493. Pratâpar. 12,a,9. b,2.

व्यङ्ग्यता f. nom. abstr. von व्यङ्ग्य Sâh. D. 24,10. व्यङ्ग्यत्व n. desgl. 5,15. 24,14.

व्यच्, विर्चति Dhâtup. 28,12 (व्याजीकरणे). P. 6,1,6. Vop. 13,5 (व्याजे). zu belegen: विव्यचिक, अविव्यक्, विव्यचत्, विविक्तम्, विव्याच (P. 6, 1,17. Vop. 8,124), विव्यक्थ, विव्यचुस् und med. विव्यचत्त; bei den Grammatikern: विविचतुस् Sidd. K. zu P. 1,2,1. Vop. 13,5. व्यचिष्यति, व्यचिता (विचिता Vop. 13,5), विव्याट्, अव्याचीत् und अव्यचीत् Sidd. K. a. a. O. विचितवान् P. 6,1,16, Schol. *in sich fassen, aufnehmen:* मद्भाविव्यक्यधिवी पत्यमानः ṚV. 7,18,3. 21,6. मार्के विव्याच पृथिवी घनेनम् 3,36,5. 8,6,15. 12,24. 77,5. विव्यक्थ महिना भर्त सोमस्य 91,23. 10,96,4. 112,4. Ait. Br. 4,12. Âçval. 1,6. ein unregelmässiges perf. aus विच् gebildet: यद् विविच पृथिवीमुत द्याम् AV. 6,61,3.

— intens. वेविच्यते P. 6,1,16, Schol.

— उद्, उद्विचिता Kâç. zu P. 1,2,1 in der ed. Calc.

— सम् 1) *in sich zusammenfassen* ṚV. 3,36,3. विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तः 54,3. 10,111,3. कृतसंविक्त (कृतसंयुक्त v. l.) vielleicht *im Opfer aufgegangen* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,138. — 2) *zusammenfassen, — rollen, — packen:* चर्मेव यः समविव्यक्तमांसि ṚV. 7,69,1. समविव्यचुरुत पन्यसीषु 10,56,4.

व्यँचम् (von व्यच्) n. 1) *Umfänglichkeit, Capacität:* समुद्रो न व्यचो दधे ṚV. 1,30,3. न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचः 52,14. AV. 6,61,1. VS. 15,

4. — 2) *umfänglicher —, weiter Raum; Raum überh.* ṚV. 10, 93, 14. AV. 4, 19, 6. 8, 10, 14. 10, 2, 24. 12, 1, 53. यत्रा यौ च पृथिवी च पर्यचः 9, 3, 18. 13, 4, 33. पदा रुद्रेण उदेति । यदेदं सर्वं व्यचो भवति Ç. Br. 8, 1, 2, 1. 6, 4, 18. 9, 4, 3, 10. अङ्कुशेन व्यचस्करोति *erweitern, öffnen* Kauç. 79. व्यचस्काम 59. — Vgl. घृ°, उरु°, देव°, विश्व°, समुद्र°.

व्यचस्वत् (von व्यचम्) adj. *geräumig, capax:* Thore ṚV. 2, 3, 3. 10, 110, 5. VS. 20, 60. Rosse Indra's: *umfangreich* ṚV. 5, 25, 6. 10, 105, 5. VS. 11, 30. 13, 17. 14, 12. Nir. 8, 10.

व्यचिष्ठ (von व्यच् mit dem suff. des superl.) adj. *umfangreichst* ṚV. 2, 10, 4. 5, 66, 6.

व्यच्छ in गोव्यच्छ, womit irgend *ein Plager der Kuh* bezeichnet wird VS. 30, 18. Kâṭy. 15, 4. nach Mahîdh. = गौः प्रति गमनशीलः (also in वी = गतौ und यच्छ = प्रति zerlegt?), nach TBr. Comm. = गवां विनाशयिता *Austreiber, Verjager.*

व्यञ् = वीञ् *beflechten:* (तम्) विव्यञुर्व्यञनैः MBh. 9, 43. व्यञ्येत Suçr. 1, 71, 18 wohl fehlerhaft für व्यञ्जेत.

व्यञ्ज (von अञ्ज् mit वि) P. 3, 3, 119.

व्यञ्जन (von व्यञ्ज्) n. *Fächer, Wedel* (häufig im du.) AK. 2, 6, 2, 41. 7, 28. M. 7, 219. MBh. 3, 1772. 4, 1774. 9, 48. 13, 6252. R. 2, 26, 11. 91, 37 (100, 36 Gorr.). R. Gorr. 2, 35, 17. 3, 9, 7. 6, 112, 25. Suçr. 1, 15, 3. 171, 21. 240, 6. स्रामं सव्यञ्जनम् 2, 149, 6. व्यञ्जनानिलाः 475, 17. Kim. Nitis. 12, 44. Ṛt. 1, 5. Rasn. 8, 40. Spr. 1823. 2156. 3322. 5257. Bulc. P. 1, 10, 18. 11, 28. 3, 15, 38. 23, 16. 4, 4, 5. Verz. d. Oxf. H. 85, b, 23. पद्म° Rasn. 10, 62. चामर° MBh. 1, 1941. 2, 87. 6, 670. 3966. Harîv. 1290. R. Gorr. 2, 26, 12. चामरं (adj.) व्यञ्जनम् 12, 9. व्यञ्जनैर्वालचामरैः (cop. adj.) Bulc. P. 9, 10, 18. °चामर 4, 7, 21 nach dem Comm. = चामर°. — Vgl. वाल° (auch R. 4, 9, 3. 5, 14, 8. Suçr. 1, 71, 18. 2, 36, 6).

व्यञ्जनक n. = व्यञ्जन Vaṛâh. Bṛh. S. 70, 10.

व्यञ्जनीभू (व्यञ्जन + 1. भू) *zu einem Fächer (Wedel) werden:* अपत्रवालव्यञ्जनीयभूवुर्दलं नवोत्तुङ्गलोलपत्राः Raghu. 16, 38.

व्यञ्ज (von अञ्ज् mit वि) adj. = व्यक्त; davon °त्व n. nom. abstr. Comm. zu Gaut. 1, 2, 12.

व्यञ्च् (= व्यच्) adj. in उरु° und देव°; nach Analogie von उदूची könnte auch पुदूची (s. पुर्वञ्च्) hierher gehören.

व्यञ्जन Harîv. 7433 fehlerhaft für व्यञ्जम, wie die neuere Ausg. liest.

व्यञ्जनवत् adj. zur Erklärung von व्यचस्वत् Nir. 8, 10.

व्यञ्जक (vom caus. von अञ्ज् mit वि) 1) adj. (f. व्यञ्जिका) *offenbar machend, bekundend* Bulc. P. 6, 19, 12. Schol. zu Gaut. 1, 2, 18. zu AV. Paṛiç. 1, 103. das obj. im gen. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 162. घर्घानिघस्य Verz. d. Oxf. H. 211, b, No. 490. im comp. vorangehend: उत्पत्ति° M. 2, 68. कृतघ्न° Râjat. 6, 101. Pañcat. 4, 3, 155. Sin. D. 626. In der Poetik *zu verstehen gebend, implicite aussagend* Sin. D. 31. 104, 9. 107, 4. Prataparud. 10, a, 1, 3. — 2) m. *Ausdruck des Gefühls* AK. 1, 1, 3, 16. H. 282. Milatîn. 154, 6.

व्यञ्जकत्व n. nom. abstr. von व्यञ्जक 1) Schol. zu Gaut. 1, 2, 11. Sin. D. 30. वाघकलत्वकव्यञ्जकत्वेन (das suff. gehört zu allen drei adjj.) त्रिविधं शब्दज्ञानम् Prataparud. 8, b, 4.

व्यञ्जन (vom caus. von अञ्ज् mit वि) 1) nom. ag. *offenbar machend, bekundend* Harîv. 7433 (nach der Lesart der neueren Ausg., व्यञ्जन die ältere). — 2) m. s. u. 4) *b*) am Ende. — 3) f. आ in der Poetik *das Zuverstehengeben, eine indirecte Aussage, — Ausdrucksweise* Sin. D. 11. 23. 271. 117, 11. अन्वितेषु पदार्थेषु वाक्यार्थोपस्कारार्थमर्थान्तरविषयः शब्दव्यापारो व्यञ्जना वृत्तिः Prataparud. 9, b, 4. — 4) n. *a) Schmuck:* घा नो मरुद्भिर्व्यञ्जनं गामश्वम्यञ्जनम् ṚV. 8, 67, 2. — *b) das Offenbarmachen, Bekunden:* °ऋषिकादिदृष्टविषयव्यञ्जनार्थम् Suçr. 1, 2, 18. परोक्षापव्यञ्जनार्थं नामालिङ्गानि पार्थिवाः । उपेण याक्तिास्तेन Râjat. 4, 178. — *c) andeutender (indirecter, symbolischer u. s. w.) Ausdruck:* न व्यञ्जनेनोपक्रितेन वार्धः (= मुक्तकशब्द Comm.) Âçv. Ça. 3, 12, 18. Verz. d. Oxf. H. 246, a, No. 819. Sin. D. 39. 106, 14. — *d) nähere Bestimmung:* व्यञ्जनमात्रे तत्तस्याभिधानस्य भवति Nir. 7, 13. — *e) Kennzeichen, Merkmal* AK. 3, 4, 18, 118. H. an. 3, 409. Med. n. 122. Verz. d. Oxf. H. 184, b, 6. स्त्री°, पुं° Âpast. beim Schol. zu Kâṭy. Ça. 443, 4. वयो° *des Alters* Schol. zu Kâṭy. Ça. 20, 2, 10. Suçr. 1, 61, 7. 2, 266, 17. neben लक्षण R. 1, 16, 32. 5, 31, 7. पार्थिव° 2, 99, 7 (Schl.). 3, 23, 18. 25, 12. 4, 2, 12. 5, 30, 4. तपस्विव्यञ्जनोपेत *die äussern Abzeichen eines Büssers habend, als Büsser verkleidet* Spr. (II) 2374. अमात्य° adj. *nur das Aeussere eines Ministers habend* 2134. ज्ञानि° adj. Kathâs. 30, 119. चर्म° *Zeichen auf der Haut, Muttermal, Leberfleck;* s. u. चन्द्रिन्. *Insignien eines Fürsten* (zugleich *Brühe*) Spr. 3363. — *f) Symptom* (einer Krankheit) Verz. d. Oxf. H. 312, a, No. 745. — *g) Geschlechtszeichen, Geschlechtsglied;* = भगयोनि AK. H. an. Med. Vaṛâh. Bṛh. 1, 4. — *h) Zeichen der Pubertät: Bart* AK. H. ç. 121. H. an. Med. Gobhil. 2, 80. कुमाराः प्राग्व्यञ्जनेभ्यः Âpast. 2, 20, 12. अज्ञात° adj. R. 3, 42, 33. बालमप्राप्तवयसमज्ञातव्यञ्जनाकृतिम् MBh. 1, 6136. श्म° *barlos* Hall. 2, 128. *die Schamhaare* (auch *Brüste*) *beim Weibe*, sg. und pl. Spr. 2908. fg. विवाक्तितायाः कन्यायाः कृति व्यञ्जनम् Mâlav. P. 51, 104. अव्यञ्जना कन्या Spr. (II) 765. अनुपलक्षितपयोधरादिस्त्रीव्यञ्जना (so ist zu lesen) Çâṅk. zu Kâṭhân. Up. S. 80. — *i) Brühe* AK. 2, 4, 46, 93. 48, 118. 6, 2, 32. H. 397. H. an. Med. Hall. 2, 166. MBh. 3, 8530. 4, 29. R. 1, 13, 15 (14 Gorr.). 2, 32, 20 (33 Gorr.). P. 2, 1, 34. 4, 4, 26. Suçr. 1, 218, 3. Kim. Nitis. 7, 18. Spr. (II) 2050. (I) 3363. Kathâs. 49, 37. fg. 56, 408. यज्ञानि व्यञ्जनानि च 61, 40. Mâlav. P. 31, 46. Pañcat. 2, 4, 32. Râjat. 7, 1693. Pañcat. 52, 1. 61, 13. मांस° Kathâs. 54, 170. fg. °कार MBh. 4, 237. सूदव्यञ्जनकर्तृ Kim. Nitis. 12, 46. — *k) Consonant* H. an. Med. ṚV. Pâṛiç. 1, 1. 2. 18, 17. 19. VS. Pâṛiç. 1, 38. 47. 59. 100. 107. 117. 3, 15 u. s. w. AV. Pâṛiç. 1, 43. 55. 60. 93. 103 u. s. w. TS. Pâṛiç. 1, 6. 14. 17. 21. 27. 43 u. s. w. Pâṇ. 1, 1. 3. 9. Vârtt. 2. Verz. d. Oxf. H. 171, b, 2. Âçv. Ça. 1, 3, 9. Çâṅkh. Ça. 1, 1, 19. 2, 12. Lâṭy. 6, 10, 16. Pushpasûtra in Ind. St. 1, 47. Sarvasâmân. 390. — 8, 211. 467. Çat. B. 3. MBh. 1, 309. 3, 16772. 14, 1192. R. 7, 94, 21. Mâlav. P. 23, 47. Mallin. zu Çiç. 1, 11 (*Silbe*). वाचा क्रीनव्यञ्जनया R. 2, 64, 10. masc. Comm. zu VS. Pâṛiç. 4, 16. — *l) Tag* Med. — *m) Fächer, Wedel* H. 687. Hall. 2, 155. fehlerhaft für व्यञ्जन. — Vgl. उभय°, तैरो°, निर्व्यञ्जन, वाल°.

व्यञ्जनकारिका f. N. pr. einer bösen Fee, welche *einem Weibe die Schamhaare fortnimmt*, Mâlav. P. 51, 102; vgl. 104.

व्यञ्जनिक (von व्यञ्जन) n. स्वराणां व्यञ्जनिकम् Titel eines Pariçishṭa der VS. Ind. St. 3, 270.

व्यड m. N. pr. eines Mannes Vop. 7, 3. — Vgl. व्याडि.

व्यडम्बक m. *Ricinus communis* (s. एरण्ड) AK. 2, 4, 2, 32. nach Colebr. und Lois. auch व्यडम्बन m.

व्यडु m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 8, 134. 319. 351.

व्यडुमङ्गल m. desgl. ebend. 7, 1480.

व्यति (von 1. यत् mit वि, Padap. ohne Trennung) m. *Ross:* चक्रं न वृत्तं व्यतीरवीविपत् RV. 1, 155, 6. सप्तमं व्यतीनां पुरुकानाम् 4, 32, 17. यो व्यतीरफाणयत्सुयुक्वा उप दाशुषे 8, 38, 12.

व्यतिकर (von 3. कर् mit व्यति) m. 1) *Mischung, Kreuzung; Zusammenstoss, Berührung;* = व्यतिषङ्ग Trik. 3, 3, 272. H. an. 4, 278. Med. r. 296. Suçr. 1, 284, 21. 2, 166, 1. दिशाम् Bhāg. P. 3, 13, 2. तीर्थे तोयव्यतिकरभवे ब्रह्मकन्यामरण्वोः Raghu. 8, 94. उभयोः सेनयोर्मरुद्व्यतिकरो (मरुद्व्यतिकरो ed. Bomb.) ऽभवत् MBh. 6, 838. रजोव्यपाय° Megh. 15. Çiç. 4, 52. Naish. 36, 17. धर्म° Bhāg. P. 1, 4, 16. 4, 19, 21. 35. गुण° 2, 5, 22. 3, 9, 1. 10, 11. 32, 14. fg. 4, 11, 16. 22, 36. 5, 3, 5. 7, 6, 21. 25. 9, 30. 8, 12, 8. 11, 10, 27. Spr. (II) 1074. वेदाध्यविप्लुता° (I) 2858. यौवनशैशव° 2878. Milatim. 34, 11. मार्गाचल° *Zusammenstoss mit* Spr. (II) 2470. काङ्क्ष्यो ऽपि °मुखं कातराः स्वाङ्गदाने *Berührung, Vereinigung* Çiç. Cu. 58, 8. उमाकृतव्यतिकरे स्वाङ्गे Milav. 7, 4. दयितारति° Spr. (II) 112. कामः स्त्रीव्यतिकराभिलाषादि Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 286. मदन° Daçak. 92, 4. स्मरशबरबाण° Spr. (II) 1130. कान्ताविश्लेषदुःख° 1881. दैन्य° (I) 1753. घटितविनोदव्यतिकरैर्विमर्दैः so v. a. *verbunden mit* Uttarar. 65, 7 (84, 2). — 2) *das sich-zu-schaffen-Machen mit Etwas, das Gehen an Etwas:* चरणानति° Spr. (II) 2328. 2913. घटितेषवचन° Daçak. 67, 18. तत्तत्कर्मव्यतिकरकृत् (विधि) Rāja-Tar. 2, 93. — 3) *ein schlimmer Fall, Unfall,* = व्यसन Trik. H. an. Med. Uttarar. 96, 8 (125, 11; = समूह Comm.). घस्मिन्व्यतिकरे वृत्ते Kathās. 74, 89. Pañcat. 40, 18. 42, 8 (ed. orn. 38, 1). 237, 22. Hit. 110, 6. घयं व्यतिकरो ऽस्माभ्यो मम *dieser mir begegnete Unfall* Pañcat. 30, 8. दवदरुनदाक्° Spr. 1807. वार्ता° so v. a. *eine schlimme Neuigkeit* Pañcat. 130, 6 (auch hier liest ed. Bomb. so). 7. — 4) *Vernichtung, Untergang:* स्थिति° Bhāg. P. 4, 1, 56. लोक° 1, 7, 33. ज्ञानव्यतिकर 10, 67, 27. कल्प° 3, 9, 27. — Vgl. व्यतीकार.

व्यतिक्रम (von क्रम् mit व्यति) m. 1) *das Vorübergehen:* वायु° Suçr. 1, 102, 17. *das Gewinnen eines Vorsprunges:* ज्योतिषाम् MBh. 4, 1603. — 2) *das Verstreichen:* काल° R. 4, 28, 21. — 3) *das Uberspringen, Uebergehen, Ausweichen, Entgehen, Sichbefreien von;* das obj. im gen.: मार्गस्य Spr. 4799. ग्राम्यमानुक्रमः पूर्वैः स्मर्यते न व्यतिक्रमः Kir. 11, 76. भविसव्यस्य MBh. 3, 13884. भाषितस्य न व्यतिक्रमः *man kann dem Ausspruch nicht entgehen* so v. a. *der Ausspruch muss sich erfüllen* Vaṇīs. Bṛh. S. 46, 97. — 4) *das Uberschreiten, Uebertreten, Verletzung, Vernachlässigung, Unterlassung:* मर्यादा° Pañcat. 46, 20. fg. सविद: M. 8, 8. सविव्यतिक्रमकारिन् Kull. zu M. 8, 218. समयस्याव्यतिक्रमः Spr. (II) 698. सैन्ध्यानित्यकार्य° Mārk. P. 50, 53. सत्यधर्म° R. Gorr. 1, 24, 2. धर्म° Kathās. 113, 14. Bhāg. P. 3, 4, 44. P. 3, 1, 60, Schol. गुरु° *der Gesetze beim Kampfe* Hariv. 4708. पूजापूजा° Rāgh. 1, 79. नीति° Rāja-Tar. 3, 398. स्वार्थ° *Beeinträchtigung* Bhāg. P. 4, 22, 32. — 5) *Verletzung der bestehenden Ordnung, Vergehen, Verbrechen, ein begangenes Unrecht* M. 8, 229. 244. 269. 288. MBh. 1, 771. 3, 1889. 4, 462. 5, 2704 (pl.). 13, 2574. 2591. 3474. 4809. 14, 739. 1620. Hariv. 963. व्यभिचारव्यतिक्रमैः 4624. 5069. 9945. R. 1, 8, 12. 3, 46, 7. 55, 24. 4, 53, 9. 14. Spr. (II) 638. Kathās. 121, 103. Bhāg. P. 1, 5, 15. 3, 1, 19. 8, 11. 13, 4. पितृणाम् *gegen die Eltern* Hariv. 971. Mahāvīraḥ. 40, 21. गुरु° *gegen ehrwürdige Personen* Bhar. Nitiç. 19, 90. Bhāg. P. 3, 16, 12. — 6) *Wechsel, Vertauschung, umgekehrte Ordnung* Âçv. Çr. 10, 5, 10. गायत्रीत्रिष्टुभोः Liṭ. 7, 3, 11. Kauç. 6. भाषा° Daçar. 2, 61. सर्वत्र प्राङ्मुखो दाता प्रकृता च उदङ्मुखः। एष एव विधिर्दाने विवाहे च व्यतिक्रमः ॥ Udvāhatattva im ÇKDr.

व्यतिक्रमण (wie oben) n. *das Begehen eines Unrechts gegen Jmd* (geht im comp. voran): ज्येष्ठ° Kathās. 105, 91.

व्यतिक्रान्ति (wie oben) f. dass.: गुरु° *gegen* Śiç. D. 381.

व्यतिक्षेप MBh. 9, 789 wohl fehlerhaft für व्यधिक्षेप, wie die ed. Bomb. liest.

व्यतिचार (von चर् mit व्यति) m. *Umwechselung:* घ° Âçv. Çr. 2, 3, 6.

व्यतिपात (von 1. पत् mit व्यति) m. Bez. *eines best.* Joga, *wenn nämlich Sonne und Mond in den entgegengesetzten Ajana stehen und dieselbe Declination haben, während die Summe ihrer Längen 180° beträgt,* Ganit. Pitṛdin. 8. Colebr. Misc. Ess. I, 187. II, 363. Vaṇīs. Bṛh. S. 100, 2. Vers. d. Cambr. H. 64, 3. Mārk. P. 31, 21. — Vgl. व्यतीपात.

व्यतिभेद (von 1. भिद् mit व्यति) m. *gleichzeitiges Hervorbrechen:* उत्पलपत्रशत° Śiç. D. 102, 4. 5.

व्यतिमिश्र (2. वि - यति + मिश्र) adj. *untereinander gemischt, mit einander verwechselt* Vaṇīs. Bṛh. S. 67, 3. वासम् MBh. 1, 3384.

व्यतिमोह (von मुह् mit व्यति) m. *irrthümliche Verwechselung:* घ° Çat. Br. 13, 2, 4, 7.

व्यतिरिक्त s. u. रिच् mit व्यति. Davon °क n. Bez. *einer best. Art des Fluges* MBh. 8, 1991.

व्यतिरिक्तता (von व्यतिरिक्त) f. *Unterschiedenheit, Verschiedenheit* Bhāg. P. 4, 28, 40.

व्यतिरेक (von रिच् mit व्यति) m. 1) *das Gesondertsein, Ausgeschlossenheit, Ausschluss:* पृथग्विनानारेणार्थे व्यतिरेकार्थवाचकाः Halāy. 5, 90. Kāç. 3, 2, 9. 18. यथा गन्धस्य भूमेश्च न भावो व्यतिरेकतः *eine gesonderte Existenz, eine Existenz für sich* Bhāg. P. 3, 27, 18. स्वव्यतिरेकतम् 10, 3, 18. घात्मनो ऽव्यतिरेकेण 11, 2, 22. Liṭ. 16, 3, 14. लोकव्यतिरेकवर्तिनी पार्थिवता *im geraden Gegensatz zum Volke* Spr. (II) 1125. वीत° adj. *nicht abgesondert, für sich allein bestehend* Rāja-Tar. 4, 1. व्यतिरेकेण und व्यतिरेकात् *mit Ausschluss von, mit Ausnahme von, ohne* Suçr. 1, 77, 20. 96, 10. न पतिव्यतिरेकेण सुस्त्रीणामपरा गतिः Kathās. 30, 166. 120, 80. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 30. 114. 252. Kull. zu M. 2, 61. 4, 53. घस्मद्व्यतिरेक am Anfange eines comp. ohne uns Milatim. 140, 20. Tarkas. 50. *Negative* (Gegens. घन्वय) 37. Bādāmīr. 141. fgg. Kusum. 7. 10. 18, 16. Wilson, Sānkhyas. S. 58. Schol. zu Kap. 1, 40. 107. 133. Bhāg. P. 2, 9, 35. 7, 7, 24. Rāja-Tar. 1, 28. 4, 605. Śiç. D. 4, 6. Comm. zu TBr. 1, 61, 7. घ° adj. Gaim. 1, 1, 5. — 2) in der Rhetorik *ein Gleichniss mit Hervorhebung einer Ungleichheit, Contrast, Antitheton* Kāvyād. 2, 180. Śiç. D. 700. 104, 6. 105, 4. Kuvalay. 59, a. Beispiele: Rāgh. 4, 49. Çiç. 47. Spr. (II) 489. 517. 571. 2639. fg. (I) 3317.

व्यतिरेकिन् (von व्यतिरेक) adj. *ausschliessend, negirend* Kusum. 32,

16. अन्वय°, केवल° Tarkas. 37. अव्यतिरेकिव Kuṭṭan. 28, 21.

व्यतिरेचन (von रिच् mit व्यति) n. *das Contrastiren, Hervorheben eines Gegensatzes* (in einem Gleichnisse) Śiś. D. 106, 14.

व्यतिलङ्गिन् (von लङ्ग् mit व्यति) adj. *gewichen, abgerutscht:* स्वसंनिवेशाद्व्यतिलङ्गिनि किरीटे Raghu. 6, 19.

व्यतिषङ्ग (von सञ्ज् mit व्यति) m. गण न्यङ्कादि zu P. 7, 3, 53. = व्यतिकर Taik. 3, 3, 272. H. an. 4, 275. Med. r. 290. 1) *gegenseitiger Zusammenhang, Relation; Verbindung, Verschlingung* ṚV. Pāṭ. 13, 16. Kāṭy. Ça. 16, 1, 1. षड्गो: Pāraṇ. Br. 13, 11, 5. 14, 5, 4. व्यतिषङ्गो नाम द्वयोर्विच्छिन्न सन्तानुष्ठानात्मकस्तन्त्रविशेष: Prayāgar. 93, b, 6. — 2) *feindlicher Zusammenstoss:* सेनयो: MBh. 12, 3798. — 3) *Tausch:* अन्योऽन्यव्यवित्त° Bhāg. P. 5, 13, 18. 14, 37. — व्यतिषङ्गम् absol. s. unter der Wurzel.

व्यतिहार (von हृ mit व्यति) m. *Vertauschung, Tausch* H. 870. अ° Kāṭy. 27, 1. *Abwechselung* P. 3, 4, 19 (व्यतीहार, v. l. व्यति°). *Wechselseitigkeit, Gegenseitigkeit* Vop. 6, 33. 23, 55 (an beiden Stellen व्यती°). कर्म° P. 1, 3, 14 (v. l. °व्यतीहार). 3, 3, 43. 5, 4, 127. 7, 3, 6. क्रिया° Vārtt. zu P. 1, 3, 14. विक्रम° Raghu. 12, 93. व्यतिहारम् absol. s. unter der Wurzel.

व्यतीकार m. = व्यतिकर 1): परस्परव्यतीकार रणे घासीत्सुदारुण: *feindlicher Zusammenstoss* Harīv. 15111. Die beiden Längen werden durch das Metrum bedingt.

व्यतीपात m. 1) = व्यतिपात H. an. 4, 135. Med. t. 217. Jīān. 1, 218. Kṛṣṇāmiśra. 16, 14. Saṃgr. K. 1, b, 1. 2, a, 4. 80, a, 11. Bhāg. P. 4, 12, 48. 7, 14, 20. Schol. zu Kāṭy. Ça. 7, 1, 31. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 285, a, 28. — 2) = उपद्रव, महोत्पात *eine grosse Calamität* H. an. Med. — 3) = अपयान *Flucht* diess. *disrespect, contempt* Wilson nach Mad.; beruht auf einer Verwechselung von अपयान mit अपमान.

व्यतीहार m. = व्यतिहार (s. d.) Gaṇar. im ÇKDr.

व्यत्यय (von 3. इ mit व्यति) m. *Wechsel, Vertauschung* P. 3, 1, 85. Kār. zu 6, 2, 199. व्यत्ययो बहुमत्यन्तं पत्नयो: प्रेम्णकृत्वयो: Spr. 5039. पारावरीणां स्थानानां कालेन व्यत्ययो महान् Bhāg. P. 7, 10, 43. अज्ञातमत्कृतव्यत्यया (मङ्कूनाम्) Kathās. 71, 272. *ein umgekehrtes Verhältniss* AK. 3, 3, 33. H. 1502. Halāy. 4, 44. स्थलसलिलचराणाम् Vaṇīs. Bṛh. S. 95, 58. Spr. 3403. रति° = विपरीतरत (II) 1035. Schol. zu AV. Paipp. 4, 126. कर्मणाम् so v. a. *verkehrte Beschäftigung* Jīān. 1, 26. व्यत्यये *im entgegengesetzten Falle* Vaṇīs. Bṛh. S. 7, 20. व्यत्ययेन *umgekehrt* (in prädicativem Verhältnisse) 4, 33. Sūçr. 2, 183, 16. व्यत्ययात् dass. Çaṅk. 26. व्यत्ययम् *auf umgekehrte Weise sich bewegend* Vaṇīs. Bṛh. S. 88, 29. — व्यत्ययम् absol. *wechselnd* Liṭ. 1, 5, 20.

व्यत्यस्त partic. s. u. 2. अस् mit व्यति; als subst. *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4, 638, N. 24.

व्यत्यास (von 2. अस् mit व्यति) m. *Wechsel, Vertauschung* Liṭ. 10, 7, 6. MBh. 12, 1732. 13, 231. 236. 239. Harīv. 1441. 3249. fg. Mallin. zu Kumāras. 4, 8. P. 1, 4, 106, Schol. *ein umgekehrtes Verhältniss* AK. 3, 3, 33. H. 1501. Vaṇīs. Bṛh. S. 54, 53. *umgekehrte —, verstellte Lage* Kull. zu M. 2, 72. instr. und abl. *in vertauschter Ordnung, umgekehrt:* ह्रे नीले ह्रे च मन्ये व्यत्यासेन Sūçr. 1, 350, 16. व्यत्यासात्सिरा विध्येत् 2, 113, 4. 231, 3. — व्यत्यासम् absol. s. unter der Wurzel.

व्यध्, व्यध्यते Dhātup. 19, 3 (भयसंचलनयो:; v. l. दु:खचलनयो:, दु:खभयचलनयो:, दु:खापचलने: पीडायाम् Vop. 8, 133). विव्यधे P. 7, 4, 63. Vop. 8, 124. व्यविष्टाम्: अव्यविष्ये P. 3, 4, 10. act. in der älteren Sprache nur in der Formel ऊष्मणो व्यथिषत् प्रयुतं द्वेष: VS. 6, 18 (TS. v. l.), im Epos häufiger aus metrischen Rücksichten. 1) *schwanken, taumeln, aus seiner natürlichen Lage oder Richtung kommen, erschüttern; nicht feststehen, zu Fall kommen:* य: पृथिवीं व्यथमानामदृंहत् ṚV. 2, 12, 2. रसते व्यथते भूमि: कम्पतीव च सर्वश: MBh. 6, 5204. स विव्यधे ऽत्यर्थमरिप्रताडितो पवातुर: पित्तकफानिलज्वरै: 8, 4693. नास्यं व्यथते पवि: ṚV. 5, 54, 2. 3, 54, 8. पृक्षा मा व्यथिष्महि भूर्याम् AV. 12, 1, 22. 4, 40, 1. 12, 2, 23. TBr. 2, 4, 8, 8. न स राज्ञा व्यथते ṚV. 5, 37, 4. 54, 7. 10, 107, 9. Çāṅ. Br. 2, 1, 4, 27. 2, 2, 2. न स्कन्दते न व्यथते (= म्रुष्यति Comm.) न विनश्यति कर्हिचित् — ब्राह्मणस्य मुखे कृतम् Spr. (II) 3493 (M. 7, 84; vgl. Jīān. 1, 318). मा व्यथिष्ठा मया सह प्रजया च धनेन च AV. 14, 1, 48. Ait. Br. 4, 18. Śāṅkh. Br. 2, 9. Kauṣ. Up. 2, 11. चारित्रतो न व्यथते *weicht nicht vom guten Wandel* P. 5, 4, 46, Schol. यथा व्यथेरन् *wenn die Sachen schief gehen* Āçv. Çr. 2, 8, 4. विव्यधे भरतो ऽतीव प्रणे तुग्रेव (so ed. Bomb.) सूचिना *suchen, zusammenfahren* R. 2, 75, 16. हृदयं व्यथतीव मे MBh. 4, 1452. नास्खलन्नापि विव्यधु: R. 6, 91, 18. आकाशे विष्ठिता: प्रजा: स्वप्रभावान्न विव्यधु: *schwankten nicht, standen fest* 7, 23, 40. विषं विषेण व्यथते *weicht, wird wirkungslos* Kām. Nītis. 8, 67. व्यथित *schwankend:* बभूव व्यथितस्तत्र भूमिकम्पे यथा द्रुम: R. Gorr. 2, 87, 4. 2, 53, 61. °सिन्धु Kir. 5, 11. भारयोऽव्यथितमस्तक Mālav. P. 14, 78. *gewichen, verändert:* वर्ण *Gesichtsfarbe* Daçak. 81, 11. — 2) *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung kommen, seine Besonnenheit verlieren, ausser sich gerathen, versagen, sich von einem Schmerz u. s. w. hinreissen lassen:* स तेजोऽग्निर्नाव्यवत Çāṅ. Br. 2, 5, 2, 2. (देव: प्राण:) न व्यथते ऽथो न रिष्यति 14, 4, 2, 23. 6, 9, 28. दर्भ विधादात्मना न व्यथिष्ठा: AV. 19, 33, 2. नार्धमेण क्षित: कश्चिद्व्यथते वै पराजये MBh. 2, 2368. प्राप्यापदं न व्यथते कदाचित् 5, 1077. 8, 49. न व्यथते न कुप्यति Bhāg. P. 1, 18, 50. 4, 3, 19. 8, 22, 7. सुखार्तो दु:खितां दृष्ट्वा ममापि व्यथते मन: MBh. 3, 2675. R. 5, 83, 19. Kāraṇḍ. 31. सकारुणपरित्रस्तं हृदयं व्यथते मम Mṛcch. 111, 4. व्यलितामेव कौन्तेयीं प्रियं दृष्ट्वा च विव्यधे MBh. 2, 1802. 7, 2352. R. 2, 19, 1. R. ed. Gorr. 2, 16, 33. 3, 30, 46. 7, 69, 11. Raghu. ed. Calc. 11, 66 (विषसाद Sr. 67). स तु राजविरुद्धदारिद्र्याभ्यां न विव्यधे Rāja-Tar. 2, 71. 8, 307. Bhāg. P. 4, 8, 13. मा व्यथिष्ठा: Bhaṭṭ. 11, 34. Raghu. 14, 73. प्रलये न व्यथन्ति च Bhaṭṭ. 14, 2. न मीदन्ति न च व्यथन्ति (v. l. व्यथन्ते) Spr. 5117. ये न कुप्यन्ति लाभेषु नालाभेषु व्यथन्ति च MBh. 12, 5909. व्यथेत् 4, 126. व्यथन् 2, 2219. विव्यधु: 3, 717. R. 3, 30, 36. mit dem gen. der Person *vor Jmd erschrecken* 7, 23, 2, 30. व्यथित (könnte auch auf dḥ caus. zurückgeführt werden) *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung gekommen, in Aufregung versetzt, ausser sich, verzagt, von einem Schmerz u. s. w. hingerissen, mitgenommen* MBh. 1, 7721. 3, 2317. 5, 7342. 13, 7285. R. 1, 8, 20. 48, 29. 2, 47, 15. 63, 32. R. Gorr. 1, 23, 1. 3, 28, 12. Spr. 4858. 5040. Rāja-Tar. 3, 419. Bhāg. P. 3, 14, 43 (Gegens. क्रुष्ट). Pañcat. 69, 2. मनस् MBh. 3, 12114. R. Gorr. 1, 22, 20. 3, 30, 22. 66, 4. हृदय MBh. 3, 2912. चेतस् Ṛv. 6, 18. अन्तरात्मन् R. Gorr. 2, 39, 32. 52, 29. Bhāg. P. 5, 13, 5. भाव R. 4, 3, 1. इन्द्रिय R. Gorr. 2, 42, 5. बाणाव्यथितमर्मा *schmerzend* 63, 33. अतिव्यथितकर्णमूलहृदय Bhāg. P. 5, 14, 11. — Vgl. अव्यथमान.

— caus. व्यथयति Vop. 18,22. 1) *schwanken —, fehlgehen machen, zu Fall bringen; abbringen* von (abl.): मा वनिं व्यथयीर्मम AV. 5,7,2. 13, 1,21. घमित्रस्य व्यथया मृत्युम् ṚV. 6,25,2. सत्यवात् Bhaṭṭ. 10,36. pass. *in unruhige Bewegung gesetzt werden:* व्यथ्यते मन्धि: Suça. 1,286,19. — 2) *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung bringen, aufregen; in Schmerz versetzen* Bhag. 2,15. MBh. 3,16418. 7,335. तावेवार्या न चानर्या व्यथयन्ति Spr. 4886. R. 5,34,1. Kumâḍom. 67. Daçak. 77,12. Bhaṭṭ. 15,86. Spr. (II) 1627 (Gegens. नन्दय्). विनाशो लब्धस्य व्यथयतितरां न खनु दृप: 3045. Git. 2,20 (Gegens. मुख्). 10,13. व्यथयन्ती मनो मम MBh. 2, 1814. Mṛicch. 162,13. व्यथयन्ति परं चेतो मनोरथशतैर्वृना: Spr. 2909. मन्मथायुधसंपातव्यथ्यमानमते Bhaṭṭ. 4,30.

— intens. वाव्यथ्यते P. 7,4,68, Schol.

— परि *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung bringen:* यदा मा वो मृत्यु: परिव्यथा इति Praçnop. 6,6.

— प्र 1) *erheben:* दृष्ट्वेव हि पराजाो मन: प्रव्यथतीव मे MBh. 4,1242. *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung kommen, verzagen:* तदैव प्रव्यथते ऽस्य शत्रवो विनमन्ति च 5,4364. 14,271. प्रविव्यथे 7,1370. R. 2,18,41. प्राव्यथत् MBh. 3,14334. प्रविव्यथु: 6,3704. 10,263. Harîv. 12342. प्रव्यथित partic. Bhag. 11,20. 23. fg. 45. MBh. 1,7861. 2,1436. 6,1931. 2374. 12,6113. Harîv. 8174. R. 3,15,13. 4,51,4. 5,76,14. 101,1. 7,28, 15. Bâlar. P. 19,62,30. Mâlav. P. 74,23. Daçak. 83,13. — 2) *ausser Fassung bringen, in Schmerz versetzen:* न तां प्रव्यथते (richtiger प्रव्यथयेद् ed. Bomb. und Schl.) दु:खं सुखं वापि प्रकुर्वयेत् R. Gorr. 2,114,28. — caus. dass. MBh. 4,2113. Harîv. 2482. R. 2,106,2.

— संप्र, partic. °व्यथित *ausser Fassung gekommen, in grosse Aufregung versetzt:* °चेतना R. 1,38,16.

— वि, partic. °व्यथित dass. Spr. (II) 1604. MBh. 7,1373 (प्रतिव्यथित ed. Bomb.).

— सम् *aus der Fassung kommen, verzagen:* संविव्यथु: MBh. 6,789.

व्यथ s. व्रत°.

व्यथक (vom caus. von व्यथ्) adj. *in Schmerz versetzend* H. 501. Hall. 2,216. वचस् Kir. 2,4.

व्यथन (von व्यथ् simpl. und caus.) 1) adj. *in grosse Aufregung versetzend:* कर्मन् MBh. 3,16414. — 2) n. a) *das Schwanken, Nichtfeststehen* u. s. w. P. 5,4,46. — b) *Abänderung, Entstellung* (eines Lautes) ṚV. Prât. 14,1. — c) *Empfindung eines Schmerzes* Suça. 1,269,3. 2,313,13. — d) *das Bereiten eines Schmerzes* Daṇḍ. 28,1. — Vgl. अति°, निर्व्यथन.

व्यथयितृ (vom caus. von व्यथ्) nom. ag. *Jmd* (acc.) *in Schmerz versetzend, hart mitnehmend:* (अधिकारिणिका) लोकान्पालयिता शठान्व्यथयिता Mṛicch. 137,18.

व्यथा (von व्यथ्) f. Vop. 26,102. 1) *das Fehlgehen, Misslingen:* यस्कामयेयं चैव — विप्राणो कृतम् Jâtâ. 1,315 (*keinen Schmerz verursachend* Sr.); vgl. M. 7,34 = Spr. (II) 3493. — 2) *Schaden, Verlust; Ungemach* Çat. Br. 3,5,4,20. Suça. 1,7,17. Vaitân. Bhr. S. 89,5. — 3) *ein Gefühl peinlicher Unruhe, Unbehagen, Pein, Leid, Weh, Schmerz* AK. 1, 2,9,3. H. 1370. Hall. 3,4. Bhag. 11,49. मा च ते शम्बरस्येयं पत्नीति भवतु व्यथा Harîv. 9478. सत्रवतां दारुणैरपि क्रियाविशेषैर्न व्यथा भवति Suça. 1,96,10. व्यथया दीन: R. 2,22,1. व्यथातुर 51,21. Râja-Tar. 5,442. व्यथाक्रान्त Kathâs. 13,169. व्यथाकुल Pañcat. 215,19. मरणे नास्ति मे व्यथा R. 2,64,50. Uttarar. 6,2 (9,6). Kathâs. 22,93. भी. शोक. व्यथा R. Gorr. 2,53,3. 5,33,11. गुरुव्यथ adj. Vikr. 30. तीव्रोभयव्यथ adj. Râja-Tar. 6,99. व्यथां वहि MBh. 1,6145. घवधूय तव्यथाम् Bhag. 3,61. खलपयत्स तव्यथाम् 11,62. गतव्यथ adj. MBh. 1,7711. 3,1736. Bâlar. P. 3,22, 24. वीतव्यथ adj. 6,11,12. मरोषधिरुत्तव्यथ adj. (कृत st. कृत ed. Calc.) Bhag. 12,75. स कृच्छ्रकालं संप्राप्य व्यथां नैवेति कर्हिचित् Spr. 4557. इहदु:खमयं भुक्त्वा तास्यत्यन्यव्यथां ध्रुवम् Râja-Tar. 5,198. घनुभाव्य व्यथाम् 4,684. प्रियाविरहजां त्वं तु व्यथां मानुष: Vikr. 110. घघानो वक्रिदाक्समुद्भवा । व्यथा विनाशमभ्येति Spr. (II) 1532. घकाण्डमूलघनिता Râja-Tar. 5,52. व्यथां कर् (act. und med.) *Jmd* (gen.) *in Leid versetzen, Jmd Schmerzen verursachen* Harîv. 12788. R. 5,49,25. Spr. (II) 1259. °कर् (I) 2943. व्यथां मा कृथा: *gieb dich nicht dem Schmerz hin* (II) 867. न व्यथा कर्तव्या R. 3,73,17. मनस: R. Schl. 2,63,18. मानसी AK. 1,1,7,25. हृदि so v. a. *Herzklopfen* Suça. 2,402,8. हृदये 314,7. हृद्यथा Vikr. 8,29. हृदय° *Seelenschmerz* Spr. (II) 1700. घङ्ग° Kumâras. 6,8. मर्म° Git. 3,14. Râja-Tar. 3,277. शीर्ष° *Kopfschmerz* 4,14. किं कूर्मस्य भारव्यथा न वपुषि Spr. (II) 1737. गर्भवास° 2093. निस्तीर्य दोस्तव्यथाम् Bhag. 3,7. ताडयेयम° (pl.) Manu. 107. Spr. (II) 788. घव्यथ *sich nicht dem Schmerz hingebend, nicht verzagend* (I) 3009. सव्यथ *sich dem Schmerz hingebend, bekümmert* Çic. 9,63. Hit. 113,13. — Vgl. घव्यथ, निर्व्यथ.

व्यधि (wie oben) s. घ°.

व्यधिर्त 1) adj. s. u. व्यध्. — 2) n. *Schaden oder das Zagen* VS. 5,9.

व्यधिन्, व्यधिष und व्यधायै (von व्यध्) s. घ°.

व्यधिस् (wie oben) adv. 1) *schwankend, schief:* नौर्न पूर्णा दरति व्यधिर्यती ṚV. 5,59,2. — 2) *Asiatisch, unbemerkt* von (gen.): *asiatisch, hinterrücks:* माकिष्टे व्यधिरा दधर्षीत् ṚV. 4,4,3. नामामित्रो व्यधिरा दधर्षति 6,28,2. व्यधिर्दाशुषो मर्त्यस्य 62,3. यच्चिद्धि ते घपि व्यधिर्जगन्वांसो घमन्महि 8,45,19. परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यधि: 10,86, 2. 31,10. Hierher auch पुरा यदो व्यधि: भव इन्द्रस्य नाधृषे शव: AV. 6, 33,2, wozu ṚV. 5,28,2 zu vergleichen und व्यधि: शव: zu vermuthen ist. — Vgl. कृच्छ्र°.

व्यध्य (vom caus. von व्यध्) adj. s. घ°.

व्यध्ययु: irrige v. l. für घव्ययप: Naish. 1,14.

व्यधर् (von 1. धर् mit वि) adj. *nagend*, m. *Nagethier* Çat. Br. 7,4, 2,27. व्यधरो AV. 3,28,2. Richtig wäre wohl व्यधर्.

व्यध्, विध्यति Daṇḍ. 26,72 (ताडने). P. 8,1,16. विव्याध 17. Vop. 8, 134. 11,2. विविधतुम् 11,2. विविधम्, घव्यात्सीत्, (उप)विर्धन्, वेत्स्यामि (vgl. Kâr. 4 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10), वेद्धा, विद्ध्वा, विध्य, वेद्धुम्; pass. विध्यते, विर्द्ध. Hier und da aus metrischen Rücksichten auch med. 1) *durchbohren, durchstechen; erschiessen, treffen* (mit einem Geschosse ṚV. 1,61,7. 86,9. तपुषामा 2,30,4. 9. 4,4,1. तमस्तो विध्या शर्वा शिवेन: 10,87,6. AV. 3,25,1. मर्मणि 5,9,9. VS. 16,23. TS. 2,2,2,4. 6,2,5,5, 2. तमभ्यायत्याविध्यत् Âit. Br. 3,33. Çat. Br. 1,7,2,3. विध्यत्यधनुषा P. 4,4,52. मृगजातानि MBh. 4,149. उरसि 5,7176. R. 3,33,18. 4,8,12. Rasa. 9,60. घबेनमपर: कामस्तृषा विध्यति बाणवत् Spr. (II) 1646. (I) 2214. पार्श्वेदेनमतिवादबाणैर्भृशं विध्येत् 4300. Kathâs. 39,61. 47,82.

Bulc. P. 4,10,10. 5,26,24. ज्योतिषी (*die Augen*) काणेकेन 3,3,4. पदी विध्यन्ति शर्कराः *wund stechen* Schol. zu P. 4,4,82. 6,3,53. कारूरेर्विध्यन्ती *mit den Nägeln verwundend, — kratzend* Kathâs. 49,49. सिराम् *eine Ader schlagen* Suçr. 1,358,1. विव्याध MBh. 3,709. 13728. 4,1694. 1804. 13,7469. R. 1,28,25 (29,14 Gorr.). 3,34,27. 30. 5,31,30. 39,20. fg. Spr. 2583. Bulc. P. 7,2,38. विव्यधुः MBh. 3,767. अव्यात्सीत् Bhatt. 8,52. 15,69. वेत्स्यामि MBh. 13,4624. लक्ष्ये यो वेद्धा 1,6958. med.: नैनं शस्त्राणि विध्यन्ते (so ed. Bomb.) 14,560. विध्येत य इदं लक्ष्यम् 1,7004. अविध्यत 4,1817. विव्यधे 6,2460. Bulc. P. 10,47,17. वेत्स्यसे MBh. 13, 4623. विद्ध्वा R. 2,34,19. Kathâs. 48,58. विध्य absol. MBh. 16,96. वेद्धुम् 1,5286. 16,35. R. 5,79,46. Bulc. P. 10,83,21. pass.: शस्त्रेणापि न विध्यते MBh. 2,948. बालस्य कर्णौ विध्येते Suçr. 1,54,13. Kathâs. 40,12. AK. 3,3,36. विध्यमान Bhatt. 5,103. 9,66. विद्ध *durchbohrt, durchschossen, verwundet, getroffen* AK. 3,2,49. H. 1486. an. 2,249. Man. dh. 16. विद्धस्यैव पदं नेय *Folge der Spur des Angeschossenen* AV. 19,1,26. विद्धस्य पदवीरिव (sonach ist unter पदवी zu setzen *der Spur nachfolgend*) 11,2,13. 2,29,7. Ait. Br. 3,33. M. 9,43. भृश° MBh. 5,7178. सुभृशं गाढविद्धः 7316. 7,8670. पृष्ठे 13,2796. 7470. R. 1,32,21. 2,30,28. Ṛv. 6,28. Raghu. 5,51. 14,70. शरशतैः Spr. (II) 3595. रोषस्ते सायकैर्विद्धम् (I) 2647. Kathâs. 14,29. 26,179. fg. 33,203. 42,48. 61,102. Daçar. 66,11. Daçak. 88,1. Bulc. P. 2,7,9. हृदि दुरुक्तैः 4,6,6. 8,14. कुशकण्टक° MBh. 3,16862. Çik. 39. Spr. (II) 1507. Bulc. P. 3,11,19. Pañcat. 62,9. ककुभिनो ऽविद्धनसः *nicht durchstochen* Bulc. P. 3,3,4. अविद्धमुक्ताफल Kumâras. 7,10. कीटैः *durchbohrt* Varâh. Bṛh. S. 79,27. Suçr. 1,155,20. शरदीवाम्बुदे मुक्ते विद्धं भास्कररश्मिभिः *getroffen von* R. 5,39,22. प्रूलायाम् *gespiesst auf* Kathâs. 25,130. प्रूलाग्रे 128. वृतेषु Raghu. 9,60. स्वैरिण्याघाङ्गविद्धधीः *getroffen von* Bulc. P. 5,1,65. धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण सभां यत्रोपतिष्ठते। शल्यं चास्य न कृन्तन्ति विद्धास्तत्र सभासदः॥ *verwundet, verletzt* Spr. (II) 3136. *beschädigt;* शर्करा° (वप्र) Varâh. Bṛh. S. 60,15. 82,2. (धामराणि) विद्धाल्पलुप्तानि न शोभनानि 72, 2. तत्रिपिष्टपसेकाशमिन्द्रप्रस्थं व्यरोचत। मेघवृन्दमिवाकाशे विद्धं (= मिश्रं मिश्रिष्टं Nilak.) विद्युत्समावृतम् *geborsten* MBh. 1,7580. विद्ध = विकुपित (nach Durga) Nir. 4,15. — 2) *bewerfen mit:* किमेनाविध्यदर्बुदम् Ṛv. 8,32,26. सीसेन AV. 4,16,4. TS. 1,7,6,2. सर्वतो मामविध्यत (v. l. अविन्वत) सप्तभिर्धरणीधरैः MBh. 3,12170. विद्ध = क्षिप्त *geworfen* H. an. Med. — 3) *behaften, Jmd* (acc.) *Etwas* (instr.) *anheften, anhängen* (ein Uebel u. s. w.): पं वै सूर्यं स्वेनानुस्तमसाविध्यदासुरः Ṛv. 5,40,9. TS. 2,1,2,2. 6,1,10,4. Çat. Br. 1,5,2,3. 5,3,2,2. AV. 3,2,3. प्रज्ञा उदरेण Çat. Br. 1,6,2,17. पाप्मना 11,1,6,9. 14,4,2,3. तै कामुरा पाप्मना विविधुः Kaush. Up. 1,2,2. 3. कृत्यया Kauç. 39. शुचा Ait. Br. 6,36. Çat. Br. 3,3,2,3. लोकैषेन AV. 15,1,3. वायूद्धैः 11,9,12. रक्षस्तमोभ्यां विद्धस्य देहिनः Maitrâyan. 6,28. विद्ध (= दुःखादिसंबन्धिन् Comm.) Kaush. Up. 3,4,2. — 4) *Eintrag thun, beeinträchtigen, nachtheilig wirken auf Etwas* (acc.), *schaden:* अविद्धवर्चसम् Bulc. P. 3,9,3. अविद्धदृष्म 3,3,4. मार्गतरुकोणकूपस्तम्भमविद्धं द्वारम् Varâh. Bṛh. S. 53,76. रक्ष्या° (द्वार) 77. देवता° (द्वार) 78. Mârk. P. 80,70. विद्ध = बाधित Med. — 5) विद्ध *behaftet, versehen mit Etwas, das schaden kann:* राज्ञोपकरणाङ्गैरेभिरङ्गैश्च सप्तभिरादिभिर्विद्धः (चक्रः) Varâh. Bṛh. S. 2,18. fg. 47,24. विद्धामर्षाशय (= अमर्षविद्धाशय) Bulc. P. 7,10,13. — 6) विद्ध *versehen mit* überh.: तत्त्रीस्वरगुणैर्विद्धानातोद्यानन्ववादयन् (तन्त्री und विद्धान् ed. Calc., तन्त्री und विद्धानातोद्यान् die neuere Ausg.) Harîv. 8688. विद्धमासादितं (विद्ध = रागासङ्गमिश्र Nilak.) रम्यं शरीरं स्वासंपदा 8690. die रोहिणीसंयुक्ताष्टमी ist vierfach: शुद्धा *rein*, विद्धा *gemischt, mit Anderem in Berührung kommend* (d. i. *mit dem Ende des 7ten Tages*), शुद्धाधिका oder विद्धाधिका Weber, Kṛshṇaj. 227. fg. पूर्वविद्धा 225. 237; vgl. Verz. d. Oxf. H. 283, b, No. 662. — 7) *anstacheln, antreiben, in Bewegung versetzen:* (रज्ञसा) गुणेन कालानुगतेन विद्धः (= सैतोभितः Comm.) Bulc. P. 3,8,12. देवेन्द्रियप्राणमनोधियो ऽमी यदंशविद्धाः (विद्ध = आविष्ट Comm.) प्रवृत्ति कर्मसु 6,16,24. — 8) *schütteln, bewegen:* वेलानि विव्यधुः MBh. 1, 7033; vgl. वेलानि दुधुवुः 6,1587. वेलावधूनन 8,1220. वेलावेध 2,2267. — 9) in der Astron. *fixiren, den Stand eines Gestirns bestimmen:* यमे पृष्ठतो वा दृष्टिं चालयित्वा यदं विध्येत् Golâdh. Jantrâdh. 13, Comm. — 10) *sich hängen an:* चार्त्यो वा आकुतिं विध्यसि Çat. Br. 12,4,4,10. — 11) विद्ध *ähnlich* H. an. Med. पूर्णेन्दुविद्धानना (बिम्ब st. विद्ध Bâdar.) Çaut. 43. — 12) विद्ध fehlerhaft für बद्ध Lalit.-P. bei Mill, ST. 4,325, 23. — Vgl. विध्य, वेद्धृ fg., वेध fgg., वेधिन् fg., व्यध fg., व्याध्य, व्यधृ, व्याध und अपाविद्ध.

— caus. = simpl. 1): काकमवेधयन् MBh. 12,3069. शीर्षेवाप्यवीविधत् (nach der Lesart der ed. Bomb.) 7,3670. सिरां व्यधयेत् *eine Ader schlagen* Suçr. 2,250,12. वेधित = विद्ध AK. 3,2,49. H. 1486. an. 2, 249. Man. dh. 16.

— desid. *behaften wollen:* पाप्मनाविव्यत्सन् Çat. Br. 14,4,2,8.

— intens. वेविध्यते P. 6,1,16, Schol.

— अति *durchbohren; durchbrechen, mit Oeffnungen versehen* Ṛv. 4, 8,8. 8,85,2. वर्म AV. 2,5,19. शर्म नातिविधे dat. infin. Ṛv. 5,62,9. Çikṣh. Ça. 17,3,8. 5,7. 15,8. अतिविद्ध *durchbohrt, getroffen* MBh. 6,2701. बाणिगुभिः R. 2,9,51. वाक्येन मर्माप्रियेण घोरेण हृदये R. Gorr. 2,9,46. — Vgl. अतिव्याधिन्, अनतिव्याध्य.

— व्यति *durchbohren, durchschiessen:* नाराचैर्व्यतिविद्धानां शराणाम् MBh. 7,3626 nach der Lesart der ed. Bomb.

— अनु 1) *hinterdrein durchbohren, — verwunden:* विद्धमनुविध्यतः M. 9,43. — 2) *durchbohren, treffen* (mit einem Geschosse): अनुविद्ध R. 3,36,42. कामशरानुविद्ध Ṛt. 4,11. 6,12. कीटानुविद्धरत्नादि *durchbohrt, angebohrt* Sin. D. 3,21. — 3) *durchziehen, mit Etwas erfüllen:* मृत्तिका तद्रसेनानुविध्यमाना Bulc. P. 5,16,21. अनुविद्ध *durchzogen, besetzt mit, erfüllt —, begleitet von:* सरस्यनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं Spr. 5190. इन्द्रनीलैर्मुक्तामयी यष्टिरिवानुविद्धा Raghu. 13,54. रत्नानुविद्धाङ्गद 6,14. रत्नानुविद्धार्णव 63. स्वेदानुविद्धाङ्गलक्षत 16,48. अलकं बालकुन्दानुविद्धम् Megh. 66. सान्द्रकफानुविद्ध Suçr. 2,491,18. (केसाः) क्रौञ्चगणानुविद्धाः Harîv. 8703. रत्नाङ्गुलीयप्रभयानुविद्धानलाम् Raghu. 6,18. न तत्सत्यं यदछलेनानुविद्धम् Spr. (II) 3483, v. l. सौम्यानुविद्ध Megh. 14,21. Kathâs. 115,146. Milatîm. 15,13. काष्ठागतस्नेहरसानुविद्ध (नाव) Kumâras. 3,38. रज्ञसा तमसानुविद्धो मद: Bulc. P. 5,10,9. मुखानुविद्ध Verz. d. Oxf. H. 216, a, 20. — 4) *anstacheln, antreiben:* तेनानुविद्धः Bulc. P. 3,26,51. कर्मस्वनुविद्धया धिया 29,5. — Vgl. अनुवेध.

— अप 1) *fortschnellen, fortschleudern, fortwerfen:* अप शत्रूंश्चिध्य-

साम् RV. 7,73,4. तण्डुलान् Lāṭy. 4,9,13. 5,2,6. Kauç. 18. 28. 30. 39. भूषणानि R. 4,38,20. पुरा श्मशाने स्रगिवापविध्यते MBn. 3,15686. अपविद्ध *fortgeschleudert* Kir. 5,30. चरणापविद्धा Bhāg. P. 3,14,38. 46,36, 42. देहत्या परिस्पन्दनापविद्धया *gestossen, in Bewegung gesetzt* Raṅg. 19,44. *fortgeworfen* MBn. 6,3296. 3967. 14,2365. R. 5,13,67. 14,59. 19,11. 20,19. 6,99,42. Kumāras. 2,29. *verschleudert* Daçak. 83,2. *ausgesetzt, im Stich gelassen:* शव Bhāg. P. 5,14,30. गिरिर्दृषाम् 24,22.13,2. ein Kriegswagen in der Schlacht Harīv. 13671. R. 3,67,17. 6,18,33. *verstossen* (ein Kind) Bhāg. P. 4,30,13. 5,8,4. 9,23,12. 10,68,6. *ausgestossen* (aus der Kaste u. s. w.) 4,7,29. Mārk. P. 32,21. *aufgegeben, fahren gelassen:* तनु Mārk. P. 48,6. लोक Bhāg. P. 6,11,21. *aufgeben, fahren lassen* s. v. a. *vernachlässigen, sich nicht kümmern um:* त्रीनग्नीन् MBn. 13,4323. 12,1213 (अपविध्येत st. परिमुच्येत ed. Bomb.). M. 11,41. अपविद्धास्तु वैवेदा वक्रपक्षाक्षिताग्निभिः Mārk. P. 14,81. *aufgeben* so v. a. *sich befreien von:* अपविध्यन्ति पापानि दानयज्ञतपोबलैः MBn. 12,2585. — 2) *entreissen:* गदायामपविद्धायाम् Bhāg. P. 3,19,5. *mit sich fortreissen:* कर्मापविद्धधी 4,23,5. — 3) *durchbohren, treffen* (mit einem Geschosse): अपविद्धः शरीरेण MBn. 4,1952. — 4) अपविद्ध so v. a. अनुविद्ध *begleitet von:* वचो विप्रलापापविद्धम् (विप्रलापानुवद्धम् ed. Bomb.) MBn. 6,3776. — Vgl. अपविद्ध, अपवेध.

— व्यप 1) *auseinanderwerfen, zerbrechen:* साश्वमर्दं व्यपविद्धवृक्षीमठम् (अपविद्ध° ed. Bomb.) MBn. 3,15763. — 2) *fortschleudern, fortwerfen, abwerfen:* °विद्ध R. 5,32,31. 6,70,42. 7,23,5,49. — 3) *durchbohren, treffen* (mit einem Geschosse): नाराचैर्व्यपविद्धानां (व्यतिविद्धानां ed. Bomb.) शूराणाम् (अराणाम् ed. Bomb.) MBn. 7,3626.

— अभि *verwunden, treffen* (mit einem Geschosse) TS. 2,6,8,4. Kauç. 32. बाणैः स्तनान्तरे MBn. 6,5033. 7,3632 (med.). 8,4591. °विद्ध 4,1691. — Vgl. अभिव्याधिन्.

— अव *hinein —, hinabstürzen:* अप्सु RV. 1,32,6. समुद्रे 7,69,7. कूर्ते 9,73,8. सुवर्गाल्लोकात् TBr. 1,6,8,7. = वेकल्ये कार् (nach Comm.) 2, 5,8,6. 7,4,8,1.

— आ 1) *hineinwerfen:* लोकायसमास्ये Çat. Br. 3,4,4,1. Kāty. Çr. 15, 3,22. *schleudern:* आविद्ध = क्षिप्त, प्रक्त u. s. w. AK. 3,2,37. Trik. 3, 3,214. H. 1482. an. 3,242. इषु M. 9,43. — 2) *verscheuchen, verjagen* R. 7,28,5. — 3) *verstossen, ausstossen:* पतितापविद्धपाण्डालमृतसूतकान् Mārk. P. 35,36. — 4) *anschiessen, verwunden:* आविद्ध TS. 2,6,8,3. Çat. Br. 1,7,4,9. 11,2,6,7. Lāṭy. 4,9,12. Pāṇ. Gṛhy. 1,3. पाणिनैः Gir. 12,11. = पराक्त Mān. dh. 28. — 5) *durchbohren:* घनाविद्धं रत्नम् Spr. (II) 271. *durchbrechen:* विभुद्धनमिवाविध्य R. 3,58,27. *zerbrechen* 56, 46. पादपाविद्धपरिघ Raṅg. 12,73. — 6) *schwingen, im Kreise bewegen* R. 4,9,79. fg. आविध्याविध्य तौ वृक्षान्मुहूर्तमितरेतरम् । ताडयामासुः MBn. 3,11511. गदाम् 6,2799. 7,3100. Bhāg. P. 1,7,12. 10,55,19. आविध्य मत्समासञ्छिक्षाम् (so die neuere Ausg.) Harīv. 6859. आविध्य दण्डं चिक्षेप R. 3,32,36. शूलम् Bhāg. P. 6,12,2. 10,59,8. परिघम् 6,12, 24. दर्पाविद्धमटानन Harīv. 3716. आविद्धपुच्छ 3717. 4101. मतिमन्यानमाविध्य Verz. d. Oxf. H. 12,a,28. 47,b,25. अमत्यविद्धमक्षिलं ब्रह्माणडम् Mārk. P. 78,9. पवनाविद्धतोय *bewegt* Suçr. 2,199,15. आविद्ध n. *das Schwingen,* Bez. *einer best. Art zu fechten* Harīv. 11048 (S. 791). 13494. 13977. Hierher आविद्ध *gewunden, sich in Windungen bewegend, gekrümmt* (vgl. आविद्ध): सागर R. 5,74,32. °गतिसंचारा Sin. D. 116. आविद्धं याति (नदी) Viṣṇ. 115. — 7) *in Unruhe versetzen, aufregen:* कामादिभिरनाविद्धः Bhāg. P. 7,15,35. 1,2,19. अन्तःपुरमाविद्धम् (= दुःखाभिहतम् Comm.) R. 2,57,25. — 8) *aufsetzen:* आविध्य च स्रजम् Bhaṭṭ. 20,11. — Vgl. घनाविद्ध, आविद्ध, आवेध, आवेध्य, आव्याध fg.

— उपा s. उपाव्याध.

— व्या *schwingen, im Kreise bewegen:* गदाम् MBn. 3,677. R. 7,15, 32. चक्रम् Harīv. 10720. व्याविद्ध *sich im Kreise bewegend* Mṛicch. 76, 19. *verdreht, verschoben, aus seiner Lage gekommen:* °नयनाम्बरा MBn. 4,776. रशना R. 5,13,35. Daçak. 91,2 (व्यविद्ध, welches schon Bhaṭṭ. vorbesserr hat). Suçr. 2,31,8. *verserrt* 316,20.

— समा 1) *schwingen, in schwingende Bewegung versetzen:* पादे तौ गृह्य पुरुषः समाविध्यावधूय च Harīv. 3339. गदाम् R. 7,15,11. समाविध्यत लाङ्गूलं चरणौ च 5,3,1. 5,38. 38,37. 42,19. 55,10. Raṅg. 16,78. — 2) समाविद्ध *verwüstet, zerstört:* वन MBn. 15,1031.

— उद्, partic. उद्विद्ध *erheben, hoch:* प्रङ्ग MBn. 1,1107. शिखैः समिवोद्विद्धैः *sich hoch in die Lüfte erhebend* R. 2,94,4.

— उप *bewerfen, treffen:* उप घर्तमरेयो विधन्नित् RV. 1,149,1. किमेवं मां वाक्शरैरुपविध्यसि (अपि कृन्तसि ed. Bomb.) MBn. 7,6334.

— नि 1) *hinschleudern, niederschiessen:* यत्रिणो नि पर्णाने विध्यतम् RV. 7,104,8. Çat. Br. 3,9,4,25. 5,4,4,9. *einwerfen, einschlagen:* न्यविध्यदिलीविशस्य दृळ्हा RV. 1,33,12. AV. 5,20,4. (in den Boden) *einstossen* Çat. Br. 3,8,4,16. — 2) *beschiessen* (mit einem Geschosse), *treffen, durchbohren* RV. 1,164,8. 4,18,9. तं च भूयो न्यविध्यत MBn. 8, 997. न रथानां न वाजानां न गजानां न वर्मणाम् । यन्निविद्धं शितैर्बाणैरासीद्बहुलमेतरम् ॥ 4,1700. — यन्निविद्धं 1977 fehlerhaft für इति विद्धि, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निव्याध fg.

— अधिनि *treffen in:* हृदये AV. 8,6,24.

— निस् 1) *verwunden, treffen* (mit einem Geschosse) RV. 8,66,6. तेन मर्मणि निर्विद्धः शरेण R. 3,50,19. लघु निर्विध्य मृगान् *erlegen* Kathās. 27,156. गर्दभम् निरविध्यत्प्रतोदेन नासिकायां पुनः पुनः *schlug* MBn. 13, 1875. — 2) निर्विद्ध *etwa auseinanderstehend, von einander getrennt:* गोपुरैर्मन्दरोपमैः निर्विद्धैः MBn. 1,7576. nach Nīlak. = सच्छिद्र oder सभेद. — Vgl. निर्वेधिन्.

— परा 1) *hinausschleudern:* पार्वदूर्घः पराविध्यति TS. 2,4,12,1. — 2) *verwunden, treffen* (mit einem Geschosse): शरैः MBn. 8,3194. Bhāg. P. 4,29,51. — Vgl. पराविद्ध und पराव्याध.

— परि *beschiessen:* ततः सर्वान्महीपालान्पर्यविध्यत्त्रिभिस्त्रिभिः शरैः) MBn. 1,4103. — Vgl. परिव्याध.

— प्र 1) *fortschleudern; stürzen, werfen:* पार्ष्णी AV. 8,6,17. तमसि RV. 1,182,6. 7,104,3. अप्सु Çat. Br. 4,1,3,12. 2,4,6. चावाले Lāṭy. 2, 1,6. Çāṅkh. Br. 11,5. Kauç. 66. 75. 77. वेगप्रविद्ध (so ist zu lesen) *geschleudert* R. 4,9,82. प्रविद्धो रत्नसो भागः पर्वणीवाक्षिताग्निना *hingeworfen* 2,43,5. स पपात क्षितौ तीर्णः प्रविद्धाभरणाम्बरः MBn. 7,1628. प्रविद्धान्यासनानि *auseinandergeworfen* R. 3,67,1. वायुप्रविद्धाः शरदि मेघाश्याः खाम्बरे *zerstreut* 2,93,11 (102,12 Gorr.). प्रविद्धकलशोदक *vergossen* 63,24. प्रविद्ध n. *das Verstossen,* Bez. *einer best. Art zu fechten*

Harıv. 15077. — 2) *Geschosse werfen, schiessen:* उदक्षुनद्ष प्रव्याधा-म्प्रविध्यति Çat. Br. 5,1,5,13. AV. 3,26,4. — 3) *durchbohren, verwunden:* द्रोणां त्रिभिः शरैः प्रविव्याध MBh. 6,3592. शत्रुदेशे 14,2212. Suça. 1,279,2. — 4) *unterlassen, aufgeben:* देवसार्धाः प्रविद्धाः R. 2,71,37. — 5) प्रविद्ध *gespickt, erfüllt* MBh. 7,3910. — Vgl. प्रव्याध.

— अतिप्र *verschenken:* °विद्ध R. 4,1,15.

— विप्र, partic. °विद्ध *auseinandergeworfen, zerstreut* MBh. 6,4385. 7,784. 1575. 8,743. *zerpflückt, hart mitgenommen* Rasu. 14,54.

— प्रति 1) *schiessen* (gegen einen Feind), *beschiessen:* ऊर्णो भव प्रति विध्याध्यस्मत् RV. 4,4,3. स च तान्प्रतिविव्याध द्वाभ्यां द्वाभ्याम् MBh. 1,4103. 6567. 6570. 3,11960. 12124. 6,1703. Bale. P. 10,77,2. med. MBh. 3,14994. 4,1853. 1998. R. 5,41,35. 5,66,36. 7,29,11. °विद्ध MBh. 4,2209. धैप्रतिविद्ध Agni TS. 1,5,10,1. *treffen in:* स्तनान्तरे MBh. 4, 1989. R. 3,34,26. med. 6,75,64. 78,12. — 2) pass. *betroffen werden, in Frage kommen* Comm. zu AV. Pair. 4,58, wo प्रतिविध्येते zu lesen ist; vgl. Ind. St. 4,295.

— वि *durchbohren, schiessen* VS. 16,24. 61. — Vgl. विव्याधिन्.

— सम् *beschiessen:* शरवर्षेण उलूकं समविध्यत MBh. 6,1747. 7,4504.

व्यध (von व्यध्) m. P. 3,3,61. *Durchstechung, Durchbohrung* AK. 2, 3,3. H. 1523. कर्ण° Suça. 1,54,12. सिरा° *das Aderschlagen* 9,10. 336,4. 337,16. 2,343,21. — Vgl. जल° und वेध.

व्यधन (wie oben) 1) *adj. durchstechend* Suça. 1,27,18. 56,20. — 2) f. ई *Nadel* Taik. 3,3,79. — 3) n. *das Durchstechen* Suça. 1,26,17. सिरा° 45,11. 2,3,17. °साध्य 7,20. — Vgl. कृत°.

व्यधिक, व्यधिकं Kim. Nitis. fehlerhaft und zwar wahrscheinlich für न्यधिकं.

व्यधिकरण (2. वि + ध°) 1) n. *Incongruens* Kusum. 46,14. Verz. d. Oxf. H. 241,*a*, No. 590. 242,*a*, No. 593. fgg. °धर्मावच्छिन्नाभावक्रोड Titel verschiedener Schriften Hall 33. 36. fg. — 2) adj. *auf ein anderes Subject sich beziehend* Schol. zu Kap. 1, 32. — Vgl. वैयधिकरण्य und समानाधिकरण.

व्यधितेप (von 1. तिप् mit व्यधि) m. *das Schmähen, heftiges Anfahren* MBh. 9,789 nach der Lesart der ed. Bomb., व्यतितेप ed. Calc.

व्यध्य (von व्यध्) 1) adj. *aufzustechen* Suça. 2,319,16. °सिर *dem eine Ader zu schlagen ist* 1,338,13. 350,1. — 2) m. *Dogenasohn* Taik. 2, 8, 61. — Vgl. विध्य.

व्यध्व (2. वि + अध्वन्) 1) m. a) *der kalbe Weg:* तूर्णी प्रत्यानयत्वेतान्कामं व्यध्वगतानपि (= दूरगतान् Nilak.) MBh. 2,2475. व्यध्वे (oxyt. im AV., properisp. im Çat. Br.) *kalbwegs* AV. 13,2,31. Çat. Br. 6,3,3,5. 9,2,3,13. व्यध्वेऽकात्तपोष्य so v. a. व्यध्वे चेदकात्ते च Kâty. Çr. 10,6,17. — b) *ein schiefer Weg* AK. 2,1,17. H. 984. — 2) adj. (f. धी) *in der Luft zwischen Zenith und der Erdoberfläche liegend:* दिश् AV. 4,40,6; vgl. 14, 2.

व्यध्वन् (wie oben) adj. *in der Mitte des Weges befindlich oder vom Wege abschneidend:* इन्द्र या व्यध्वनः RV. 1,141,7. व्यध्वानः TBr. 3,9,2,2 ist nach dem Comm. in वि । अध्वानः zu zerlegen.

व्यधर् (von व्यध्) adj. *anbohrend, anstechend:* Wurm AV. 2,31,4. 5, 30,3. विऽव्यधर् irrig Padap. — Vgl. व्यहर्.

व्यन्त (2. वि + अन्त) P. 6,2,151. adj. *getrennt, entfernt* (Gegens. von *conjunct*) TBr. 2,1,3,1.

1. व्यन्तर (2. वि + अ°) n. 1) *Zwischenraum:* म° Gaut. 4,2,21. — 2) *Ununterschiedenheit:* निःसारे तुभिते लोके निष्क्रिये व्यन्तरे (= सर्ववर्णसाम्येन Nilak.) स्थिते Harıv. 11194.

2. व्यन्तर (wie oben) 1) adj. *in der Mitte stehend;* °रीम् *mittelmässig:* उपांशु, व्य°, उच्चैः Çat. Br. 4,5,8,4. — 2) m. Bez. einer Gruppe von Göttern bei den Gaina, welche die Piçâka, Bhûta, Jaksha, Râkshasa, Kimnara, Kimpurusha, Mahoraga und Gandharva umfasst, H. 91. Ind. St. 10,312. व्यन्तराणां Çâṅk. 14,24. 373. द्वात्रिंशद्व्यन्तराधिपाः 1,28. तत्र वृते कश्चिद्व्यन्तर धासीत् Pañcâv. 250,3. 7. विविधेषु शैलकन्दरासरवनविवरादिषु प्रतिवसन्तीति व्यन्तराः H. 91, Schol.

व्यन्तरपङ्क्ति f. Verz. d. Cambr. H. 77.

व्यप् व्यापयति (लेपे) Dhâtup. 32,93. (लये) Kavikalpadruma im ÇKDa.

व्यपगम (von 1. गम् mit व्यप) m. *das Verstreichen:* त्रिरात्रव्यपगमे Kull. zu M. 5,66. *das Schwinden:* गौरव° Spr. 1896.

व्यपत्रपा (von त्रप् mit व्यप) f. *Schüchternheit, Verlegenheit:* सव्यपत्रप adj. (f. धा) *schüchtern, verlegen* Spr. (II) 1019 (सव्यपत्रपम् zu lesen). R. 2,92,16.

व्यपदेश (von 1. दिश् mit व्यप) m. 1) *Aufgebot:* सैन्य° R. 4,28 in der Unterschrift. — 2) *Bezeichnung, Benennung; Bezeichnungsweise* Taik. 1,1,117. RV. Pair. 18,4. Kap. 1,126. Kan. 9,1,3. Bidar. 1,1,14. 17. 21. 4,1,13. घटस्येति व्यपदेशानुपपत्तिः Çâṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 40. 157. Baitâlîr. 46. Bale. P. 5,20,44. 11,28,21. Sâh. D. 17,3. 24,12 (pl.). 108, 12. 188,19. वनमित्येकवद्व्यपदेशः Vedântas. (Allah.) No. 23. Kull. zu M. 1,4 (am Ende). 49. 58. 7,158. 9,176. 10,87. Mudr. ST. 4,219,9. तवाशे आत्मा नष्ट इति व्यपदेशमात्रम् Schol. zu Kap. 1,151. zu RV. Pair. 1,19. तथा स्वरितेवा स्वरितेवा पदव्यपदेशः (nämlich als आद्युदात्त, मध्योदात्त u. s. w.) zu 3,4. लौकिक° Nilak. 182. घ° Lâṭy. 1,1,1. Âpast. 2,8,13. — 3) *das Sichberufen auf* (gen.) Spr. 2910. — 4) *Geschlechtsname:* न चैन्मुनिकुमारो ऽयम् अत्र को ऽस्य व्यपदेशः (Antwort पुरुवंशो) Çâk. 104,6. व्यपदेशमाक्लियितुं किमीदृशे ब्रनामिमं च पातयितुम् 117. — 5) *Geschicklichkeit* (= उक्ति Nilak.): अलं व्यपदेशेन MBh. 3,8668. — 6) *Vorwand, Ausflucht* H. 378. Halâj. 4,24. °रूपिन् (अव्यपदेशरूपिन् Bhagavat und Comm.; = अनिरूक्तप्रयत्नाकार Comm.) Bale. P. 5,18,31. व्यपदेशार्थम् M. 7,168. अलं ते व्यपदेशेन MBh. 14,1675. मकारणं व्यपदेशे तु कुर्यात् 5,1362. व्यपदेशेन केनचित् *unter einem bestimmten Vorwande* 15,191. व्यपदेशेन *allein dass.* Harıv. 7044. 7187. व्यपदेशेन ब्रनकादुत्पत्तिर्वसुधातलात् so v. a. *nur angeblich* R. 6,101,17. मृगयाव्यपदेशेन प्रययौ MBh. 1,7935. 15, 37. Rasa. 14,45. Katâs. 10,107. 13,68. 155. उत्कण्ठाव्यपदेशतः 15, 107. 33,148. 72,343. Sâh. D. 59,10. रोगव्यपदेशापगतेऽपि कालः Vasiṣ. Bgm. S. 78,11. त्रिदण्डिव्यपदेशजीविनः so v. a. *unter dem Scheine von* Prab. 21,3. मल्लिमात्रव्यपदेशोपजीविनः (man hätte मल्लिव्यपदेशमात्रेण° erwartet) Pañcat. 196,19.

व्यपदेशक (wie oben) adj. *bezeichnend, benennend:* यस्मिन्हि शाको नाम मरोरुकः स्वतेत्रव्यपदेशकः Bale. P. 5,20,24.

व्यपदेशिन् (wie oben) adj. am Ende eines comp. *sich berufend auf* so v. a. *sich richtend nach, Jemdes Rathschläge befolgend* (= नियोगवर्तिन्

Comm.): वसिष्ठ° R. 1,21,2.

व्यपदेश्य (wie oben) adj. 1) *zu bezeichnen, zu nennen, anzugeben* Pat. zu P. 1,2,49 (ed. Calc.). Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 159. Kull. zu M. 10, 14. इयं तु भवतो भार्या दोषैरेतैर्विवर्जिता। ग्राह्या च व्यपदेश्या च यदा देवेच रुन्धती ॥ *so v. a. verdient ehrende Beiwörter* R. 3, 19, 3 (13, 7 ed. Bomb.). अ° *nicht zu bezeichnen* Mahân. Up. 7. Weber, Rigav. Up. 338. Verz. d. Oxf. H. 229,b,40. — 2) *als tadelnswerth zu bezeichnen, zu tadeln:* न दृष्टं कण्व्यकुले (so die neuere Ausg.) व्यपदेश्यम् Harîv. 7309.

व्यपनय (von 1. नी mit व्यप) m. *das Entziehen:* तस्याः पिण्डव्यपनये (so ed. Bomb. st. °व्यपनयं der ed. Calc.) कुर्यादस्मद्विधः कथम् MBu. 5,4761.

व्यपनयन (wie oben) n. *das Abreissen, Entfernen von seiner Stelle:* कृत्ताकेशोत्तरीयव्यपनयनपरु Vaitân. in Sâṅkh. Ç. 196,10.

व्यपनुत्ति (von 1. नुद् mit व्यप) f. *das Vertreiben* Âpast. Bp. 8,10.

व्यपनेय (von 1. नी mit व्यप) adj. *zu vertreiben, zu verscheuchen:* मम दुःखं भगवता व्यपनेयम् MBu. 5,7039.

व्यपमूर्धन् (2. वि - अप + मूर्धन्) adj. *kopflos* Mân. dh. 30.

व्यपयन (von 3. इ mit व्यप) n. *das Verschwinden, Aufhören;* s. u. व्यपनय.

व्यपयातव्य (von 1. या mit व्यप) partic. fut. pass. n. *abzuthun, abzuschaffen:* संयामात् MBu. 6,5021.

व्यपयान (wie oben) n. *Rückzug, Flucht* MBu. 5,2632. याने व्यपयाने च कोविदः 6,3320 = 7,4444.

व्यपरोपण (vom caus. von 1. रुह् mit व्यप) n. 1) *das Ausreissen, Abreissen:* केश° Rasn. 3,56. मरुद्व्यपरोपण° 69. — 2) *das Entfernen:* व्यसनस्य Kir. Nîtis. 13,93.

व्यपवर्ग (von वर्ज् mit व्यप) m. *Trennung —, Scheidung in Zwei, Abschnitt* P. 8,2,49, Vârtt. 2, Schol.

व्यपसारण (vom caus. von सृ mit व्यप) n. *das Verscheuchen, Entfernen:* दोषान्धकार° Rasâvalîṃp. 1,46.

व्यपस्फुरण (von स्फुर् mit व्यप) n. *das Auseinanderschnellen* Kir. Ç. 5,3,24.

व्यपाय (von 3. इ mit व्यप) m. 1) *das Aufhören, Schluss, Ende:* तपा° R. 5,19,38. रजनी° Kir. Nîtis. 15,97. शरद° MBu. 7,4688. घन° Rasn. 3,97. मृत्यु° (= यौवनकाल°) s. शिशिर° MBu. 5,747. शरद्व्यपाय 12,6886. R. 3,23,1. क्लम° Kumâras. 3,33. — 2) *das Abgehen, Fehlen, Nichtdasein* Kathâs. 94,121.

1. व्यपाश्रय (von श्रि mit व्यप) m. 1) *Sitz, Standort;* am Ende eines adj. comp. *seinen Sitz habend in, befindlich an, — in:* व्रणाश्रयसंधि-व्यपाश्रयाः Suçr. 1,93,8. दोषा वर्त्मव्यपाश्रयाः 2,307,18. धर्मो रामव्यपाश्रयः R. 6,11,19. राज्यं सत्त्वबुद्धिव्यपाश्रयम् Kir. Nîtis. 1,16. मृदाम्बुपादानस्वरूपव्यपाश्रयेणेव धर्मेण Comm. zu Bîdar. 2,2,1. — 2) *Zuflucht, Verlass; Stützpunkt, Zufluchtsstätte, Gegenstand des Verlasses* MBu. 14,1039. न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः Bhag. 3,18. सत्त्वयुक्तव्यपाश्रयात् R. Gorr. 2,15,26. 26,27. 27,12. 3,44,33. Spr. (II) 2651. किं परतो व्यपाश्रयः Bâlar. P. 1,8,20. अव्यपाश्रयशीलिन् *sich auf Niemanden verlassend* MBu. 13,2054. तेषाम् नेक् कश्चिद्व्यपाश्रयः Bâlar. P. 5,17,31. न हि तेषां व्यपाश्रयः MBu. 1,7407. 7,870. R. 5,71,18. बाढं कृता व्यपाश्रयम् MBu. 3, 14886. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) *seine Zuversicht auf Jmd. oder Etwas setzend, vertrauend auf* Bhag. 18,56. MBu. 3,13423. 5,5220. 5471. 12,6523. R. Gorr. 2,60,7. 116,43. Spr. (II) 2631, v. l. Bâlar. P. 11,28,44.

2. व्यपाश्रय (2. वि + अप°) adj. *sich auf Niemanden verlassend, selbstständig verfahrend, nur an sich denkend:* कन्याश्चकृतुं व्यपाश्रयः Kir. Nîtis. 18,59. 62.

व्यपेतक (von इ mit व्यप) adj. *Rücksicht nehmend —, achtend auf:* धात्मदोष° MBu. 14,540.

व्यपेतता (wie oben) n. *Berücksichtigung:* निमित्तगुणाव्यपेततात् Çâṅk. 69.

व्यपेक्षा (wie oben) f. 1) *Betracht, Rücksicht:* व्यपेक्षा मेव कर्तव्या गतो ऽस्तमिति भास्करः MBu. 7,6219. नृपात्मजः सो ऽनुगतः पुरीमिति व्यपेक्षया ते नगरीं पुनर्ययुः R. Gorr. 2,44,30. व्यपेक्षया भातुः (obj.) MBu. 1, 4285. तत्रधर्मव्यपेक्षया 5,7314. 12,1106. Harîv. 8612. R. Gorr. 2,44,18. 49,36. 5,29,4. Suçr. 1,26,6. Kir. Nîtis. 9,73 (°दोषव्य° zu lesen). Sin. D. 9,8. 433. Am Ende eines adj. comp.: धर्म° *Rücksicht nehmend auf* R. Gorr. 2,43,28. धर्मव्यपेक्ष 43,26. — 2) *Erwartung:* स्वजनव्यपेक्षया Bâlar. P. 4,3,18. am Ende eines adj. comp.: संप्राप्तशेषसन्निसंगमसव्यपेक्ष Kathâs. 71, 308. — 3) *Erforderniss, Voraussetzung:* म° adj. am Ende eines comp. (f. आ) *erfordernd, voraussetzend:* क्षेत्रं च निमित्तसव्यपेक्षः Uttarar. 108,2. 3 (146,6. 7). मुद्गिसव्यपेक्षा हि सिद्धयः Kathâs. 107,127. — 4) *Relation* (in gramm. Sinne) Verz. d. Oxf. H. 102,b, N. 7. Schol. zu P. 2,1,1. 2,3,44. — Vgl. निर्व्यपेक्ष.

व्यपेत s. u. 3. इ mit व्यप. P. 7,4,67, Vârtt. 1 fehlerhaft für व्यपेत.

व्यपोह् (von 1. ऊह् mit व्यप) m. 1) *Wegschaffung, Vertreibung:* पाप्म° Âçv. Gṛhj. Pariç. 1,4. देव्या मन्युव्यपोहार्थम् MBu. 12,10304. सुखदुःखव्यपोहकृत् Suçr. 2,475,2. °स्तव Verz. d. Oxf. H. 44,b,36. — 2) *das Leugnen, Verneinen* Sin. D. 735. 332,14. — 3) *Kehricht:* भस्मव्यपोहाः (= समूहः Nilak.) MBu. 13,4128.

व्यपोह्य (wie oben) adj. *zu leugnen:* अव्यपोह्यमाहात्म्या Râjat. 3,391.

व्यभिचरित (von चर् mit व्यभि) partic. *der einen Fehltritt* (insbes. in geschlechtlicher Beziehung und zwar von Seiten der Frau) *begangen hat:* °स्त्रीवधप्रायश्चित Verz. d. Oxf. H. 87,b,17. fg. 281,b,17.

व्यभिचार (wie oben) m. 1) *das Auseinandergehen, Nichtzusammenfallen, Nichtzusammentreffen, Fehlgehen:* उभयव्यभिचारात् Kap. 1,69. न च घटादौ व्यभिचारः Comm. zu 34. Bailaṣiṃh. 47. Sin. D. 10,19. काल° Comm. zu Taitt. Prât. 1,38. सत्यत्व° Comm. zu Gaut. 1,1,5. Bailaṣiṃh. 136. Verz. d. B. H. No. 675. म° adj. क्षेत्राभास) Z. d. d. m. G. 7,289. निराकाङ्क्षो राजपुरुषपदयोर्व्यभिचारात् *so v. a. weil die Worte* राजन् *und* पुरुष *Nichts mit einander zu thun haben* Kusum. 34,8. अ° *das Zusammenfallen mit etwas Anderem; das Nichtfehlgehen, Unumgänglichkeit, absolute Nothwendigkeit* Kap. 3,2,18. 4,1,10. Kap. 2,41. द्रव्यघस्य सर्वस्य क्वचित्तत्त्वाव्यभिचारात् *so v. a. da jede* (Wurzel), *die einen* इ *genannten Vocal zum vorletzten Buchstaben hat, nothwendig consonantisch auslauten muss,* P. 8,4,31, Schol. स्वप्नतायां प्रतीतव्यभिचारतः Sin. D. 31. नियोगेन = अव्यभिचारेण *unter allen Umständen, durchaus* Kîç. zu P. 4,4,66. अव्यभिचारात् dass. P. 7,3,47, Schol. — 2) *Fehltritt, Vergehen* (insbes. in geschlechtlicher Beziehung und hier

wiederum insbes. von Seiten des Weibes): व्यभिचारात् भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति गर्ह्यताम् *durch Untreue gegen den Gatten* M. 5,164 = 9,30. 31. अन्योऽन्यस्याव्यभिचारः *gegenseitige eheliche Treue* 101. Jiǵ. 1,72. MBh. 3,11078 (S. 572). Hariv. 4623. fg. 9045. Verz. d. Oxf. H. 277,b,8. वाङ्मनःकर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे Raǵh. 15,31. या तु व्यभिचारार्थं कुलान्यटति *um Unzucht zu treiben* P. 4,1,127, Schol. वसरि °कृत् Riǵa-Tar. 6,310. व्यभिचारो ऽत्र को मम *Vergehen* MBh. 1,912. 13, 2887. Hariv. 909. 959. R. Goar. 1,35,32. °विवर्जित (ein Minister) Spr. 5338. Bhâg. P. 2,1,20. 16,5. 19,47,60. तद्व्यभिचार *ein Vergehen gegen ihn* (= ईश्वरवियोग Comm.) 4,28,64. — 3) *Wechsel, Wandel:* अव्यभिचारेण भक्तियोगेन *so v. a. unwandelbar* Bhag. 14,26. — 4) *Uebertretung, Verletzung, Eingriff in:* वर्णानाम् M. 10,24. धर्मस्याव्यभिचारार्थम् 8,122. — 5) *das Hinausgehen über, Ueberschreiten:* चकारः संज्ञाव्यभिचारार्थः P. 3,3,19, Schol. बहुलग्रहणं सर्वोपाधिव्यभिचारार्थम् 2,1,32, Schol. Sidd. K. zu 3,3,113. — 6) °भाव Verz. d. Oxf. H. 213, No. 506 fehlerhaft für व्यभिचारिभाव. — Vgl. व्यभीचार.

व्यभिचारवत् (von व्यभिचार) adj. अ° *unumgänglich, unbedingt, bestimmt:* युद्धे मृत्युः सो ऽव्यभिचारवान् (sc. स्वर्गयोनिः) MBh. 2,871.

व्यभिचारिता (von व्यभिचारिन्) f. 1) *das Auseinandergehen, Nichtzusammenfallen, das Fehlgehen* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 31. Kusum. 6,5. Bâlabh. 138. — 2) *das nicht-constant-Sein, ein wechselndes Verhältniss* Sin. D. 204.

व्यभिचारित्व (wie eben) n. = व्यभिचारिता 2): एकशब्दस्य व्यभिचारित्वात् *so v. a. weil das Wort* एक *mannichfache Bedeutungen hat* P. 2,1,65, Schol.

व्यभिचारिन् (von चर् mit व्यभि) adj. 1) *abschweifend:* स्वमार्ग° Hariv. 5784. *auseinandergehend mit* (abl.), *nicht zusammenfallend, fehlgehend* Kathâs. 15,97. Kusum. 11,16. 28,5. अव्यभिचारि दृश्यते ऽतः Comm. zu Gaim. 1,1,5. अव्यभिचारि वचः *eintreffend, sich als wahr bewährend* Çiç. 81,9. Spr. 2374. Riǵa-Tar. 1,318. सिद्धि *nothwendig eintreffend* Spr. 3279. — 2) *vom Wege abgehend, sich auf Abwegen befindend* Spr. 1651 (Conj.). Bhâg. P. 11,3,28. *ausschweifend, untreu* (von einem Weibe) Jiǵ. 1,70. 2,142. Spr. (II) 1330. Kathâs. 34,182. Ind. St. 5,291, N. 5. पतीनाम् *gegen* MBh. 4,442. अ° *treu anhängend:* राज्ञः Kathâs. 110,10. राष्ट्रे 12,38. मित्रे Spr. (II) 296. *eine Gattin* Kathâs. 49,218. — 3) *wechselnd, wandelbar, nicht constant* (Gegens. स्थायिन्): प्राकृते हि लिङ्गे व्यभिचारि Ind. St. 10,277, N. 1. भाव Sin. D. 7,20. 23,1. 169. 228. Prâtiǵâkh. 40,a,1. H. 325. fg. Verz. d. Oxf. H. 213, No. 506 (wo व्यभिचारिभाव° zu lesen ist). अ° *constant, unwandelbar:* भक्ति Bhag. 13,10. Verz. d. Oxf. H. 9,b,8. बुद्धि MBh. 14,1111. धर्म Riǵa-Tar. 1,281. Bhâg. P. 3,8,19. — 4) *übertretend, verletzend:* समय° M. 8,220. fg.

व्यभिक्रोश (von क्रुश् mit व्यभि) m. *Verspottung:* गुरोः Âpast. 1,8,15.

व्यभीचार (von चर् mit व्यभि) m. 1) *Fehltritt, Vergehen:* पुरुषैः अकर्णेरव्यभीचारैः *sich Nichts zu Schulden kommen lassend* MBh. 12,8144. — 2) *Wechsel, Wandel:* न ते बुद्धिव्यभीचारमुपलप्स्यन्ति (so ed. Bomb.) MBh. 7,3070. — Vgl. व्यभिचार.

व्यभ्र (2. वि + अभ्र) adj. (f. आ) *wolkenlos, nicht in Wolken gehüllt:* नभस्, गगन, आकाश, द्यु MBh. 3,2704. 7,2474. 13,2069. Hariv. 3831. Varâh. Bṛh. S. 46,45. Bhâg. P. 12,25,28. शरद् 20,22. काल Sûrjas. 2, 46,19. विवस्वत्, घर्मांशुमत् Raǵh. 17,48. Bhâg. P. 3,16,23. पर्वतराज् MBh. 7,1264. व्योम्नि *bei wolkenlosem Himmel* MBh. 13,6807. Hariv. 7856. Sûrjas. 1,359,16. Varâh. Bṛh. S. 32,15. 46,21. व्यभ्रे *bei wolkenlosem Himmel erscheinend* 35,4.

1. व्यय् (von व्यय), व्ययति und °ते *verausgaben, verthun, verschleudern:* कोशांस्तत्रमव्ययीः Bhaṭṭ. 15,17. वारि व्ययति वारिदे Spr. (II) 3936. तुङ्गमायमनालोच्य व्ययमानः स्ववाङ्क्या 2020. तदवशिष्टं च भोजनव्ययेन व्यपितम् Hit. 98,17. मांसम् 60,16. — व्यययति dass. (वित्तसमुत्सर्गे) Dhâtup. 35,78. गतौ und त्यागे Kavikalpadruma im ÇKDr.

2. व्यय्, व्ययति, °ते (गतौ) Dhâtup. 21,17.

3. व्यय्, व्याययति (क्षेपे) Dhâtup. 32,98, v. l. für व्यय्, नुदि (= प्रेरणे) Kavikalpadruma im ÇKDr.

व्यय (von 3. इ mit वि) 1) adj. *vergänglich* (stets in Verbindung mit अव्यय): संभवत्यव्ययाद्व्ययम् M. 1,19. MBh. 3,8333. 12,8525. VP. 13, N. 19. Mârk. P. 48,28. — 2) m. a) *Untergang, Verderben:* तेन देवासुरा राजन्नीताः सुबहवो व्ययम् MBh. 12,8388. *das Zerstieben, Vergehen, Verschwinden:* भारव्ययाय च भुवः Bhâg. P. 4,1,38. क्लेश° 2,7,26. प्राण° *das Ausgehen des Athems* Mahân. 78,18. *Einbusse, Verlust* Nilak. 53. (कार्याणि) समव्ययफलानि Spr. (II) 479. सकलबाकोर्बाकूनां कृता व्यवमनुत्तमम् Hariv. 11012. एकनेत्र° Raǵh. 12,38. आयुषः Bhâg. P. 1,16,6. 8,22,9. Pâṇḍav. 1,10,71. आयुर्व्यय 14,25. Bhâg. P. 7,6,4. तपसः R. 7, 18,22. Raǵh. 15,3. Mârk. P. 20,46. Brahma-P. in LA. (III) 37,15. आपाद्यते न व्ययमत्तरायैः कश्चिन्मदर्थे त्रिविधं तपस्तत् Raǵh. 5,5. तपो° 13,37. तपोबलव्ययं कृत्वा सुचिरात्संभृतं तदा MBh. 13,784. संयम° Riǵa-Tar. 4,33. कीर्ति° 8,3721. मनोबलोत्साम् Bhâg. P. 8,2,29. स्वतपोभाग° *so v. a. Hingabe, Aufopferung* Kathâs. 28,89. पुत्रदार° 53,188. देह° 38,122. अङ्ग° Kumâras. 3,23. जीवित° Spr. 2036. धन° Pañc. 64,12. प्राण° Mâlatîm. 70,14. Hit. I,40. Kathâs. 28,70. 46,178. 71,186. दृष्ट्वा वनचरानाथ किं न कुर्याः शरव्ययम् *warum opferst* (d. i. *gebrauchst*) *du nicht deine Pfeile?* R. 3,13,12. — b) in Verbindung mit कोशस्य, धर्मस्य, वित्तस्य, धनस्य, द्रविणस्य *Einbusse —, Hingabe —, Verausgabung —, Aufwand eines Schatzes u. s. w.:* काले चास्य (कोशस्य) व्ययं कुर्यात् Kâm. Nîtis. 5,97. धर्मस्य संग्रहे चैनं व्यये चैव नियोजयेत् M. 9,11. अर्थ° Bhâg. P. 5,26,36. H. 387. वित्तस्य (विभूषणे) पात्रे व्ययः Spr. (II) 1487. वित्तस्य वोढुभारस्य चिकीर्षन्सदृव्ययम् Bhâg. P. 3,2,33. निष्प्रवित्तव्ययभयम् Spr. 2380. Sarvadarçanas. 3,5. धन° Varâh. Bṛh. S. 103,12 (°करी). Kathâs. 75,34. Riǵa-Tar. 8,748. Daçar. 62,10. लावण्यद्रविण° Spr. 2667. Ohne solche Ergänzung *Ausgabe, Aufwand* (Gegens. आय, आगम, लाभ) AK. 3,3,17. H. 1516. P. 1,3,26. Vop. 23,28. व्यये धामुष्कस्सा Spr. 5140. °पराङ्मुखी Jiǵ. 1,93. °मध्ये Riǵa-Tar. 6,38. Kathâs 53,217 (pl.). नानाव्ययेषु 57,138. एवं गुप्तनिगीर्णास्तान्मृगयस्वामुतो व्ययम् (wohl व्यये zu lesen) *so v. a. zu Ausgaben* 141. दीनाराम्प्राग्गीर्णान्व्ययेषदात् 151. fg. विज्ञातवस्तान्दीनारानस्ति मे व्ययः *so v. a. mir stehen Ausgaben bevor* 60,217. Varâh. Bṛh. S. 53,77. 79,5. 104,10. 18. Pañcat. 138,4. आयव्ययौ M. 8, 419. Jiǵ. 1,326. MBh. 3,8599. fg. आये व्यये मकदुःखम् Spr. (II) 606. (I) 5055. क्रियतां व्ययः (so ed. Bomb., व्ययं ed. Calc.) MBh. 15,998. Mîsr.

P. 61,14. नात्यर्थं च व्ययं कुर्यात् Kām. Nītis. 5,77. व्ययं व्यधा Rāja-Tar. 4,661. कञ्चिद्व्ययस्यार्थेन — व्ययः संशोध्यते तव *wird der Aufwand bestritten?* MBh. 2,204. तेन सर्वव्ययसंमुद्धिः संपद्यते Pañcat. 251,16. कुटुम्बार्थे कृतो व्ययः M. 8,166. कञ्चित्र पाने द्यूते वा क्रीडासु प्रमदासु च। प्रतिज्ञानाति पूर्वाह्णे व्ययं व्यवनजं तव ॥ *Ausgaben für* MBh. 2,202. समुत्थान° M. 8,217. ताम्बूलादि° Kathās. 57,149. भोजन° Hit. 98,17. गृह° Pañcat. 251,18. स्वल्प° Spr. 2222. 5394. Hit. 46,8 (°व्यये mit Jonas. zu lesen). घृत° Spr. (II) 134. 1939. Hit. 101,18. घृतुल° adj. Rāja-Tar. 8,728. नित्यव्यया adj. Spr. 3132. घर्घ्यपात्रानुमितव्ययस्य राज्ञः so v. a. *Verausgabung alles Geldes* Kathās. 5,12. कुट्य° *Kosten* Jāṭ. 2,228. *Mittel zum Aufwand, Geld* 2,276. — *c) Declination* (durch Casus) Nir. 1,8. 5,28. — *d) Bez. des 20ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varāh. Bṛh. S. 8,36. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*,3 v. u. — *e)* N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2187. घ° ed. Bomb. — 3) m. n. in der Astrol. Bez. *des 12ten Hauses* Varāh. Bṛh. S. 40,4. Lacôté 1,15 in Ind. St. 2,281. Bṛh. 1,16. 2,18. 5,10. 6,4. 9,6. 11,6. °गृह 4,20. °भवन 7,3. °स्थान Verz. d. Oxf. H. 330,*b*,26. fg. °भावचिन्ता Verz. d. B. H. No. 878. — Vgl. घ°.

व्ययक (von व्यय) adj. *der die Ausgaben besorgt* Kām. Nītis. 12,48.

व्ययकर nom. ag. (f. ई) dass. MBh. 2,1294. धन° *Geld verschwendend* Varāh. Bṛh. S. 103,12.

व्ययकर्मन् n. *das Amt des Zahlmeisters, dessen, der die Ausgaben besorgt,* Jāṭ. 1,321. R. 2,1,19.

व्ययगत adj. *verarmt* MBh. 13,340, v. l. für व्ययगुण.

व्ययगुण adj. *verschwenderisch, der sein Vermögen verausgabt hat* MBh. 13,340.

व्ययन (von 3. इ mit वि) n. 1) *das Weggehen, Trennung* ṚV. 10,19,5. — 2) *Verbrauch, Verschwendung* Kiraṇāvalī 5,207.

व्ययवत् (von व्यय) adj. 1) *unvollständig* ṚV. Pāiṭ. 11,21. — 2) *viel ausgebend:* निशाया व्ययवत्तया (so ist zu lesen) Jāṭ. 2,268. — 3) *declinirt* VS. Pāiṭ. 2,26.

व्ययशील adj. *verschwenderisch* Spr. (II) 114. (I) 2911. Mīm. P. 81,14.

व्ययसह adj. *Ausgaben vertragend, unerschöpflich:* कोश Kām. Nītis. 4,62.

व्ययसहिष्णु adj. *Verluste ertragend, aus Verlusten sich Nichts machend:* नय° Kām. Nītis. 18,11. fg.

व्ययिन् (von व्यय) adj. *zu Grunde gehend:* उदय° (das suff. gehört zu beiden Wörtern) *der da steigt und fällt* Spr. 2560. — Vgl. घ°.

व्ययीकर (व्यय + 1. कर) *opfern, hingeben:* °कृताङ्ग Rāja-Tar. 4, 202. *verausgaben, verthun, verschleudern:* °चक्रे 8,1257. Kathās. 57, 117. °कृत्य 21. 53,163. °कृत Kām. Nītis. 13,66. Rāja-Tar. 4,633.

व्यर्क (2. वि + घर्क) adj. *mit Ausschluss der Sonne* Varāh. Bṛh. 2,13.

व्यर्ण (2. वि + घर्ण) adj. *wasserlos* Kāṭy. Ça. 24,6,22. 26. Pāraṣkar. Bṛ. 25,13,1. Liṭ. 16,18,13. व्यर्ण nach P. 7,2,24 partic. von घर्द् mit वि.

व्यर्थ (2. वि + घर्थ) adj. (f. घा) 1) *zwecklos, unnütz, nutzlos, vergeblich:* यत्प्रयोजनशून्यं स्याद्व्यर्थं तत् Prasaṅgar. 65, *a*, 9. MBh. 3,13358. 7, 1237. R. 2,41,30. 4,5,28. 5,9,40. 29,13. 6,50,31. Kām. 7,2. 14,41. Kumāras. 3,75. Spr. (II) 2377. (I) 1966. Kathās. 7,82. Mīm. P. 116,53 (व्यर्थं gedruckt). 134,28. fg. Śiç. D. 45,10. Rāja-Tar. 1,323. 4,614. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 202. Pāraṣkar. 2,2,66. Buiç. P. 1,16,10. 3,9,9. 4,9,24. 11,22,33. Pañcat. 93,17. 94,24. 134,14. Sarvadarçanas. 6,11. Schol. zu Taitt. Prāt. 1,21 u. s. w. zu P. 1,2,54. तस्य पलं जन्मनो व्यर्थम् so v. a. तस्य जन्म व्यर्थम् Spr. (II) 2964. व्यर्थम् adv. *unnützer Weise, vergeblich* 2670. Kathās. 22,92. Pāraṣkar. 1,2,15. Pañcat. ed. orn. 21,5. *unverrichteter Sache* Spr. 2183. — 2) *des Besitzes —, des Geldes beraubt* Spr. (II) 3068. — 3) *enthlösst von* (instr.): द्रव्यपरिग्रहैः Āpast. 2,26,17. — 4) *sinnlos, widersinnig, einen Widerspruch enthaltend* Kāvyād. 3,121. Verz. d. Oxf. H. 207,*a*,16. शब्द Hariv. 13607. °नामन् und °नामक so v. a. *einen Namen führend, der mit dem Wesen des Genannten im Widerspruch steht* (Gegens. सन्वर्थ), MBh. 5,4529. 4545. व्यर्थ allein dass. 8,3339 (व्यर्थः mit der ed. Bomb. zu lesen). — Vgl. वैयर्थ्य.

व्यर्थक adj. = व्यर्थ 1) R. 5,15,4. AK. 3,3,4.

व्यर्थता (von व्यर्थ) f. 1) *Zwecklosigkeit, Nutzlosigkeit:* उपदेश° Kusum. 37,19. व्यर्थतां याति Pañcat. 128,1. गतः 215,22. क्रियातो व्यर्थतां नीयते so v. a. *verfehlt seinen Zweck, wird unschädlich* 169,14. — 2) *Sinnlosigkeit, Falschheit:* वचनस्य R. 4,17,8. इत्यर्थं वादः स गतो व्यर्थतां कथम् so v. a. *unwahr geworden* MBh. 2,2607.

व्यर्थत्व (wie oben) n. *Sinnlosigkeit, das im-Widerspruch-Stehen* Schol. zu Kāvyād. 3,121. fg.

व्यर्थीकर् (व्यर्थ + 1. कर्) *nutzlos machen:* °कृत Prab. 31,2.

व्यर्धक (von घर्ध् mit वि) adj. *verlustig gehend,* mit instr. der Sache: सोमपीथेन Kāṭh. 11,1. 26,6. घ° TS. 5,3,6,3. TBr. 2,1,6,3. 3,3,8,5.

व्यलीक (2. वि + घ°) 1) n. *Leid, Schmerz;* = पीडा AK. 3,4,6,12. = पीडन H. an. 3,94. Med. k. 134. = घकार्य Taik. 3,3,42. H. an. Med. = विप्रिय oder घप्रिय H. 744. H. an. Med. Halāy. 4,64. Uṇâdik. zu Unâdis. 4,28. = दुःख Jinadatta bei Mallin. zu Kir. 3,19. = खेद Uṇâdik. नहि तेन मम भ्रात्रा सुमहदपि किं च न। व्यलीकं कृतपूर्वम् MBh. 3,270. व्यलीकं परं प्राप्तः 271. 17004. °स्थान (so mit der ed. Bomb. zu lesen) 4,112. 15, 297. Hariv. 8420. R. 2,26,28 (30 Gorr.). 64,8. R. Gorr. 2,16,8. 30,19. 66,7. 5,37,43. 41,10. 47,19. Mṛicch. 110,22. Kumāras. 3,25. क्षमितपरानय° adj. *Schmerz über* Kathās. 4,87. प्रत्यादेश° Çiç. 183. कुर्वन्नपि व्यलीकानि Spr. (II) 1818. Kir. 3,19 (= वैलक्ष्य nach Mallin.). Çiç. 9,85. घ° *dem es wohlgeht* (= निष्कपट Nilak.) MBh. 5,698. — 2) adj. *unwahr, lügnerisch, heuchlerisch:* eine Person Buiç. P. 3,11,17. वचस् 8,22,2. °कया Spr. (II) 1305. व्यलीकम् adv.: रुरुदुः Buiç. P. 6,14,43. घ° *ehrlich* Daçar. 2,23. *wahr:* वचस् Buiç. P. 1,19,22. °व्रत 2,9,4. 4,8,19. अव्यलीकम् adv. 3,21,22. 10,51,32. — 3) n. *Falsch, Lüge, Unwahrheit, Betrug* H. 379. Halāy. 4,63. न व्यलीकं वदेत् Spr. 3208. Çiç. 7,84 (pl.; = घप्रियवचनानि Mallin.). Mâṇ. P. 15,2. Kathās. 62,104. Prab. 97,1. Buiç. P. 2,4,19. 8,21,34. — 4) n. = वैलक्ष्य Taik. 3,3,42. H. an. Med. Jinadatta. — 5) m. = नाग Taik. 3,1,6. 3,42. Med. — 6) n. = व्यङ्ग H. an. — Vgl. निर्व्यलीक (*nicht falsch* Suçr. 2,55,15. *nicht entstellt* 158,4).

व्यल्कश Çiṅk. 4,7. gaṇa ह्रादादि zu P. 7,3,4. Vop. 7,4 (व्यत्कम). f. घा *eine best. Pflanze* ṚV. 10,16,13. — Vgl. वैयत्कश.

व्यवकलन (von 2. कल् mit व्यव) n. *das Subtrahiren* Colebr. Alg. 5.

व्यवकलित (wie oben) n. dass. ebend.

व्यवकिरणा (von 3. कॄ mit व्यव) *f. Mischung* Vjutp. 175.

व्यवकीर्ण (wie eben) partic. *dazwischen erfüllt oder besetzt mit* (instr.) Kim. Nitis. 19, 19.

व्यवच्छेद (von 1. छिद् mit व्यव) m. 1) *das Sichlosmachen —, Sichbefreien von Etwas* (instr. oder im comp. vorangehend) Bhâg. P. 4, 30, 33. 36. — 2) *Trennung, das Auseinandergehen, Unterbrechung:* षं° Ait. Br. 2, 29. Çat. Br. 3, 3, 2, 6. 11, 5, 2, 10. 12, 8, 2, 18. 35. — 3) *Ausschliessung* Sin. D. 9, 14. H. 169, Schol. — 4) *Sonderung, Unterscheidung* Sin. D. 278, 6. 368. Gaupâp. zu Sâṁkhjak. 30. Kusum. 46, 5. — 5) *das Abschneiden eines Pfeils* H. 780. Hall. 2, 315. शरशतैस्तीक्ष्णैर्व्यवच्छेदप्रवेपितैः R. 6, 79, 35.

व्यवच्छेदक (wie eben) adj. 1) *sondernd, unterscheidend;* davon nom. abstr. °त्व n. Wilson, Sâṁkhjak. S. 86. — 2) *ausschliessend* Kull. zu M. 6, 14. Comm. zu Taitt. Prât. 20, 3. davon nom. abstr. °त्व n. zu 2, 25.

व्यवच्छेद्य (wie eben) adj. *auszuschliessen* Sin. D. 331, 15. 18.

व्यवदान (von 7. दा mit व्यव) n. *das Reinigen, Läutern:* संक्लेश° Vjutp. 4.

व्यवदेश m. Kusum. 64, 13 fehlerhaft für व्यपदेश.

व्यवधा (1. धा mit व्यव) f. *Verhüllung* AK. 1, 1, 2, 14. H. 1477.

व्यवधातव्य (von 1. धा mit व्यव) partic. fut. pass. n. *zu trennen, zu scheiden* MBh. 12, 4836.

व्यवधान (wie eben) n. 1) *das Dazwischenliegen, Dazwischentreten* Âçv. Çr. 12, 4, 17. Sâṁkhjak. 7. दृष्टे विमानव्यवधानमुक्ताम् Ragh. 13, 44. देश° Kap. 1, 38. Schol. zu 109. तद्व्यवधानकृत् *zwischen sie* (Sonne und Mond) *tretend* Bhâg. P. 5, 24, 2. यत्र पूर्वोत्तरपदयोर्व्यञ्जनेन व्यवधानं कृतम् Schol. zu VS. Prât. 5, 29. zu ṚV. Prât. 3, 15. zu AV. Prât. 1, 99. fg. zu P. 2, 1, 38. 2, 36. 3, 58. 4, 2. Kâç. zu 3, 38. Siddh. K. zu 6, 3, 34. Comm. zu Vop. 3, 30. षं° Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 94. व्यवधान = यवनिका Hall. 5, 55. Schol. zu Taitt. Prât. 2, 25. व्यवधानेन so v. a. *mittelbar* Nilak. bei Muir, ST. 4, 221. — 2) *Verhüllung, Decke, Hülle* H. 1478. Hall. 4, 34. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 191. — 3) *Scheidung, Sonderung* Kusum. 39, 12. Bhâg. P. 3, 29, 35. 4, 22, 27. षं° 29, 60. 5, 5, 35. Kull. zu M. 11, 201. — 4) *Unterbrechung* Çiç. 9, 81. षं° *ununterbrochen* Bhâg. P. 5, 1, 6. 18, 7. — 5) *Schluss, Beendigung* Bhâg. P. 4, 29, 77.

व्यवधानवत् (von व्यवधान) adj. *am Ende eines comp. überdeckt:* देवदारुद्रुमवेदिकायां शार्दूलचर्मव्यवधानवत्यां Kumâras. 3, 44.

व्यवधायक (von 1. धा mit व्यव) adj. 1) *dazwischentretend* Comm. zu Taitt. Prât. 13, 15 (व्यवधापिक gedruckt). zu ṚV. Prât. 3, 1. — 2) *unterbrechend, störend* Râja-Tar. 4, 632. P. 3, 4, 57, Schol. Prâyaçittavivêka im ÇKDa.

व्यवधापिक Comm. zu Taitt. Prât. 13, 15 fehlerhaft für व्यवधायक.

व्यवधारण scheinbar bei Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 150, wo aber सर्वबलाव्यवधारणं zu lesen ist.

व्यवधि m. = व्यवधान Çabdar. im ÇKDa.

व्यवन zur Erklärung von व्योमन् Nir. 11, 40.

व्यवलम्बिन् (von लम्ब् mit व्यव) adj. *sich stützend, fest stehend:* षं° व्यवलम्बि संवत्सरायतनम् Çiksh. Bh. 26, 1.

व्यववस्य (von वद् mit व्यव) adj. *zu bescheiden* Pârâv. Bh. 15, 7, 2.

व्यवसाद (von सद् mit व्यव) m. *das Abfallen, Zerfallen* Çat. Br. 2, 1, 3, 16.

व्यवसर्ग (von सृज् mit व्यव) m. 1) *Freilassung* Çat. Br. 6, 2, 3, 35. — 2) *das Spenden* P. 5, 4, 2. Vjutp. 31. °रत 77. °परिणत Burnouf in Lot. de l. b. l. 312.

व्यवसाय (von सो mit व्यव) m. 1) *Beschliessung; Beschluss, Entschluss, Vorsatz; Entschlossenheit;* = सत्त्व AK. 3, 4, 27, 215. व्यवसायश्च वित्तेषु प्रतिज्ञाहेतुसंभवः Sin. D. 380. 378. Tattvas. 30. व्यवसायात्मिका बुद्धिः Bhag. 2, 41. 10, 36. 18, 59. MBh. 1, 2276. 7262. 2, 2504. 2812. 3, 2970. 6050. कृतं किंचिद् व्यवसायश्च कारणम् 16719. एवं सर्वं विनिश्चित्य व्यवसायं स्वधर्मतः 4, 970. °द्वितीयो ऽकं मनसा भारमुद्वहन् 7, 6997. 13, 299. बुद्धिर्हि व्यवसायेन लक्ष्यते (so ed. Bomb.) 14, 1194. 15, 237. पूर्वमेवेष हृदये व्यवसायो ऽभवन्मम 845. R. 2, 30, 41. 3, 59, 13. 4, 14, 11. 26, 14. 31, 26. 40, 5. 42, 11. 14. 5, 19, 30. 56, 93. 6, 1, 10. Kim. Nitis. 16, 37. Ragh. 8, 64. Varâh. Bṛh. S. 16, 38. Spr. (II) 1082. 1599. 2532. 3408. (I) 2879. 4634. Prab. 64, 15. °बुद्धि adj. Bhâg. P. 2, 2, 1. 2. 5, 14, 2. 7, 3, 20. Pañkat. 60, 7 (अध्यवसाय ed. Bomb.). यत्रैव °यो भव 133, 16. व्यवसायं विना कर्म न फलति 17. 134, 10. 215, 22. °वर्तिन् Kim. Nitis. 18, 68. सर्वानर्थान् विनिश्चित्य व्यवसायं भजेत्ततः R. 5, 90, 12. व्यवसायं कृ MBh. 1, 6176. Spr. (II) 1543. क्रियां प्रति MBh. 1, 7260. 3, 4311. सादित° Kim. Nitis. 17, 32. कर्मसु MBh. 12, 8217. भोक्तुं पुरुषकारेण दुष्टस्त्रियमिव श्रियम्। व्यवसायं सदैवेच्छेत् Spr. 4677. व्यवसायादविचलनम् Sin. D. 94. रामाभिषेक° R. 2, 1 in der Unterschr. R. Gorr. 2, 126 in der Unterschr. Kumâras. 4, 15. Spr. 2861. Prab. 92, 7. Personificirt R. 7, 109, 6. VS. 35. Mâlav. P. 50, 27. — 2) *erstes Innewerden* Nilak. 49.

व्यवसायवत् (von व्यवसाय) adj. *Entschlossenheit besitzend, entschlossen, resolut, unternehmend* MBh. 7, 6020. 6595. Hariv. 15183. षं° Taik. 3, 1, 11.

व्यवसायिन् (wie eben oder von सो mit व्यव) adj. dass. MBh. 9, 2880. R. 4, 26, 12. 28, 31. Kâsik. 8, 4. Soṁç. 1, 123, 17. Spr. (II) 113 (M.). 1926. 2150. 2384. Kathâs. 87, 33. 123, 164. Mâlav. P. 20, 26. Sin. D. 179, 10. Bhâg. P. 11, 16, 31. Pañkat. 134, 10. 138, 7. षं° Bhag. 2, 41. Spr. (II) 706.

व्यवसित s. u. सो mit व्यव.

व्यवसिति (von सो mit व्यव) f. = व्यवसाय als Erklärung von पद् AK. 3, 4, 26, 96; vgl. Strzelbi zu Kumâras. 6, 14. *fester Vorsatz, Entschlossenheit* Spr. (II) 4022 (Conj.).

व्यवस्त partic. nach dem Comm. so v. a. वद्, घवनद्. अव्यवस्ता वै इराटी Âçv. Çr. 4, 9, 4. 8.

व्यवस्था (स्था mit व्यव) f. = संस्था Hall. 5, 33. = स्थिति 81. = निष्ठा 67. = प्रतिनियम und नियम bei Comm. 1) *das je-anders-Sein, Besonderheit* Âçv. Çr. 10, 6, 18. Kâtj. Çr. 1, 3, 4. व्यवस्थातो नाना Kap. 3, 2, 20. Kap. 1, 29. Comm. zu 12. Wilson, Sâṁkhjak. S. 48. 70. Sin. D. 3, 11. Ind. St. 3, 222. Comm. zu Kâtj. Çr. 2, 7, 6. Siddh. K. zu P. 1, 2, 36. Mit. 47, 4 v. u. वर्णाश्रमव्यवस्थाश्च न तदासन्न संकरः Vish.-P. bei Muir, ST. 1, 29, N. 49. Verz. d. Oxf. H. 16, b, 21. 44, b, 26. Bhâg. P. 5, 19, 4. 12, 2, 2. नष्टधर्मव्यवस्थं adj. R. 7, 8, 27. सकेरात्रिव्यवस्थायां विना मासर्तुसंज्ञयः *wenn nicht Tag und Nacht von einander geschieden wären* Mâlav. P. 16, 24. मरुदुत्पव्यवस्थया Bhâg. P. 12, 7, 10. शेषस्योदात्तता वा स्यात्स्वारता वा व्यवस्थया so v. a. *der Çesha ist entweder udâtta*

oder svarita, *in jedem einzelnen Falle bestimmt* (nicht ad libitum) Comm. zu Taitt. Pair. 19, 3. व्यवस्थायाम् so v. a. *in allen und jeglichen Fällen* MBu. 5, 3233. — 2) *Verbleib, das Verharren an einem Orte:* मकारस्थानि शंकरः । उत्पाद्य भगवांस्तत्र व्यवस्थामादिदेश सः Kathâs. 109, 71. — 3) *Bestand, Constanz:* घव्यवस्था सर्वत्र MBu. 13, 3194. घव्यवस्थाभवस्थाया तान्यामन्योऽन्यविप्रके R. 6, 60, 27. भङ्गं ह्यर्थं चापतुरव्यवस्थम् Raghu. 7, 51. स्थलारविन्दश्रियमव्यवस्थाम् Kumâras. 1, 33. — 4) *das Feststehen, Ausgemachtsein; eine bestimmte Regel in Betreff von Etwas* (geht im comp. voran): एकशब्दस्य व्यवस्थार्थं समर्थयकरणम् so v. a. *damit die Bedeutung des Wortes* एक *feststehe* P. 1, 1, 68, Schol. Kull. zu M. 8, 157. Kusum. 53, 10. 55, 14. Verz. d. Oxf. H. 163, a, No. 358. 164, b, No. 363. 165, b, No. 367. 171, b, 39. fg. 350, b, No. 924. व्यवस्थया *in festgesetzter Weise* Bulg. P. 9, 1, 39. fg. — 5) *feste Ueberzeugung, — Ansicht:* इति नास्ति व्यवस्थास्मिन्कोदं सेतिष्ठते जगत् R. Gorr. 3, 116, 36. — 6) *ein bestimmtes Orts- oder Zeitverhältniss:* पूर्वापरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायाम् P. 1, 1, 34. Vop. 3, 9. Comm. — 7) *Zustand, Lage:* चित्तप स्वव्यवस्थाम् Spr. (II) 1409. Râga-Tar. 5, 461. 6, 6. 53. 327. — 8) *Fall:* यमस्यत कां कां न व्यवस्थां पार्थदो गणः Râga-Tar. 8, 907. कथाव्यवस्थासु so v. a. *Gelegenheit* 3, 80.

व्यवस्थातर् (von स्था mit व्यव) nom. ag. (mit caus. Bed.) *Feststeller, Bestimmer:* यत्र कल्पे भवान्स्रष्टा व्यवस्थाता च कर्मसु Paśkar. 1, 14, 27.

व्यवस्थान (wie oben) 1) nom. ag. etwa *Verharrer:* Vishṇu MBu. 13, 6991. — 2) n. a) *das Verbleiben, Verharren:* न विद्यते व्यवस्थानं (= मर्यादा Nîlak.) कुक्षयोः कृक्षयोः क्वचित् MBu. 8, 4450. 12, 222. धर्मे 1, 4151. R. 7, 13, 13. घस्ति पाटलिपुत्राख्यं भुवो ऽलंकरणं पुरम् । पूर्णवर्णव्यवस्थानैस्तैस्तैः सन्मणिभिः चितम् ॥ Kathâs. 38, 84. *Standhaftigkeit:* घात्मव्यवस्थानकर (घात्मव्यवस्थान = मनःस्थैर्य Nîlak.) MBu. 2, 66. घ० 9, 1765. — b) *Zustand* Bulg. P. 2, 8, 22. 3, 16, 38. व्यवस्थाने ऽमसो वेला Hall. 5, 53.

व्यवस्थानप्रज्ञप्ति f. Bez. *einer best. hohen Zahl* Lalit. ed. Calc. 168, 18. fg.

व्यवस्थापक (vom caus. von स्था mit व्यव) nom. ag. *feststellend;* davon nom. abstr. °त्व n. Kusum. 38, 12. n. wohl nur fehlerhaft für व्यवस्थापन Müller, SL. 146. — Vgl. दुर्व्यवस्थापक.

व्यवस्थापत्र n. *Urkunde* Tass. Ind. S. 10, a, 4 v. u.

व्यवस्थापन (vom caus. von स्था mit व्यव) n. 1) *das Aufrichten, Ermuthigen* R. 5, 78 in der Unterschr. — 2) *das Feststellen* Kir. Nirṇ. 3 in der Unterschr. Nîlak. 53. Wilson, Sâṅkhyak. S. 158. Kusum. 58, 13. Kull. zu M. 1, 2. Müller, SL. 146 (व्यवस्थापक gedr.).

व्यवस्थापनीय (wie oben) adj. *festzustellen* Kull. zu M. 9, 242.

व्यवस्थाप्य (wie oben) adj. *für jeden einzelnen Fall festzustellen* Vop. 4, 24, v. l. impers. ebend. im Text.

व्यवस्थारत्नमाला f. Titel einer Schrift Gild. Bibl. 498.

व्यवस्थासारसंग्रह m. desgl. Verz. d. Tüb. H. 19.

व्यवस्थित s. u. स्था mit व्यव. Davon °त्व n. *Bestand, Constanz, das Bleibendsein* Sarv. 1, 147, 2.

व्यवस्थिति (von स्था mit व्यव) f. 1) *Besonderheit, Unterschiedenheit:* ज्ञानयोग० Bhag. 16, 1. कार्याकार्य° 24. Sarvadarçanas. 6, 3. Verz. d. Oxf. H. 137, a, 12. — 2) *das Verbleiben, — Verharren:* स्वरूपेण Bhâg. P. 2, 10, 6. Kusum. 57, 11. सत्ये Bhâg. P. 10, 1, 39. 11, 3, 11. *Standhaftigkeit* MBu. 12, 9372 (Nîlak. nimmt घ० an, was er durch घनिकेतत्व erklärt). *Bestand, Constanz* Kathâs. 94, 4. — 3) *das Feststehen, Ausgemachtsein, Bestimmtsein, Bestimmung* M. 10, 70. Kull. zu 8, 156. इति धर्मव्यवस्थितिः धर्मो व्यवस्थितः die neuere Ausg.) Hariv. 6096. — Vgl. वर्ण°.

व्यवस्रंस (von स्रंस् mit व्यव) m. *das Auseinanderfallen:* घ० Paśkav. Br. 13, 11, 5. 14, 3, 4.

व्यवहरण (von हृ mit व्यव) n. = व्यवहार *Rechtshandel* Loss. zu AK. 1, 1, 3, 9.

व्यवहर्तर् (wie oben) nom. ag. 1) *der sich mit Etwas beschäftigt, — abgiebt* Wilson, Sâṅkhyak. S. 86. एभिः Jâgñ. 2, 40. — 2) *Richter* Mit. im ÇKDa.

व्यवहर्तव्य (wie oben) partic. fut. pass. 1) n. zu *handeln, zu verfahren:* नयेन व्यवहर्तव्यं पार्थिवेन यथाक्रमम् Hariv. 8277. न स्वेच्छं Spr. (II) 483. यथावसरम् Hit. 62, 9. Paśkat. ed. orn. 48, 21. — 2) zu *gebrauchen, zu verwenden:* यत्र लोहादिपात्रे तैर्भुक्तं तत्संस्कृत्यापि न व्यवहर्तव्यम् Kull. zu M. 10, 51.

व्यवहार (wie oben) m. in Ableitungen zu व्या० gesteigert गुण स्वागतादि zu P. 7, 3, 7. Vop. 7, 3. 1) *das Verfahren, Treiben, Handlungsweise* MBu. 12, 3195. fg. 13, 1640. व्यवहारं परिज्ञाय वध्यः पूज्यो ऽथ वा भवेत् Spr. (II) 2387. Sam. D. 703. रविसंध्यायोर्नायकमापिकाव्यवहारः 307, 14. fg. मम व्यवहारमेष्टा लोकपाला एव जानन्ति Hit. 65, 1. सकलराज्यव्यवहाराङ्गं ज्ञातम् 133, 11. तत्कथं मुनिते ऽप्यस्मिन्गृहे एवंविधो व्यवहारः Paśkat. 45, 13. तदयाभ्यास्मदाज्ञयास्मिन्मरणे व्यवहारः कार्यः Hit. 91, 21. fg. तवोपरि न सदृशव्यवहारः (adj.) 69, 4. व्याप्त० Dhûrtas. 76, 9. — 2) *Verkehr* Nir. 1, 2. भक्तिं मैत्रीं च शौचं च ज्ञानीयाद्व्यवहारतः Kir. Nirṇ. 4, 38. व्यवहारेण मित्राणि ज्ञायते रिपवस्तथा Spr. (II) 3189. 2593. समैः सख्यं व्यवहारं च (कुरुते) (I) 5180. °बहिष्कृत Kathâs. 7, 38. घशिष्ट० *mit* Sudbh. K. zu P. 2, 3, 27. — 3) *Thätigkeit:* व्यवहारे स्थितः Bilh. 38. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 503, Çl. 6. *Beschäftigung, das sich-Abgeben mit Etwas:* कितव० (subj.) P. 2, 1, 10, Vârtt. 3. क्षत्रियादि० Müller, SL. 169. शास्त्र० (obj.) Ragh. 3, 62. परदार० Çik. 104, 23. पदादिसंप्रदाय० Kusum. 48, 13. fg. गणन० Baiṣâp. 103. वाणिज्य० Kathâs. 43, 70. नास्य नेष die ältere Ausg.) व्यवहारो ऽस्त्रेषु *er hat Nichts zu schaffen mit* Uttarar. 96, 19 (127, 3). किमत्र वाग्व्यवहारेण so v. a. *was soll man hier viele Worte verlieren?* Milav. 13, 22. fg. — 4) *Geschäft, Handelsgeschäft, Handel* M. 3, 64. MBu. 3, 13119. R. 7, 101, 13. Spr. (II) 2111. 2216. 3042. 3618. Kathâs. 23, 84. Paśkat. 122, 2. वाणिज्यं व्यवहारेषु (शोभते) Spr. 5172. neben वणिक्कर्मन् Paśkat. 7, 99. गान्धिक० 17. व्यवहारेण जीवन् M. 7, 137. पक्वान्नव्यवहारेण विपणतः परस्परम् Hariv. 11208. घसंख्येयैमरत्नादिव्यवहारार्जितश्रियः Kathâs. 54, 168. प्रकृतः कुर्वन्व्यवहारान् 67, 17. (प्रावर्तताम्र) वणिक्कर्तुं व्यवहारं निजोचितम् 34, 190. हिरण्यकोटीसकलैर्व्यवहारं कुर्वन् Sadbh. P. 4, 13, a. *Vertrag* M. 8, 163. व्यवहारं समाचरेत् 167. 10, 53. Râga-Tar. 6, 52. 56. Paśkat. 88, 15. = पण (गण Med.) H. an. 4, 277. Med. r. 295. als Bed. von पण् Dhâtup. 12, 6. — 5) *Hergang, Vorgang* Nîlak. 168. — 6) *Rechtshandel, Streitsache, Process; Rechtspflege* AK. 1, 1, 3, 9. 3, 4, 20, 224. H. 262. व्यवहारान्दिदृक्षुः पार्थिवः M. 8, 1. व्यवहाराणां द्रष्टा

AK. 2,8,4,5. H. 720. Pañkat. 165,6. 7. M. 8,7. 48. 49. 61. 168. 199. व्यवहारस्य निर्णयः 409. 9,250. 8,420. Jiñ. 1,342. 2,1. Verz. d. Oxf. H. 7,b,5. 86,a,3. MBh. 12,2205. 4416. fgg. 13,2058. R. 1,7,7. Mṛicch. 141,6. 142,20. केन सह मम व्यवहारः 146,1. 3. Ragh. 17,39. Milav. 12,4. मृतमानिकव्यवहारवत् Müller, SL. 104. Mâlav. P. 120,2. = न्याय (d. i. न्याय) Mṛicch. — 7) *der gewöhnliche Hergang im Leben, das gemeine Leben, allgemeiner Brauch* Pat. in Mahâbh. 39. Bhâg. P. 4,29,12. 5,10, 18. 22. 11,1. 12,4. 8. 12,4,30. इत्येतद्व्यवहारान्निर्णेतुं न शक्यते Hit. 73, 22. लोके तथा व्यवहारात् H. 228, Schol. व्यवहारार्थि Pañkat. 1,14,33. °सिद्धान्त Schol. zu Kap. 1,106. इदानीं सूत्रधारः सर्वं प्रयोजयतीति व्यवहारः Sâh. D. 129,17. im Gegens. zu परमार्थ Nilak. 175. Ind. St. 10, 291. fg. कथं व्यवहारस्तत्र (देशे) Pañkat. 233,10. देश° Hit. 58,18. wohl hierher die Bed. स्थिति H. an. Med. — 8) *Gebrauch eines Ausdrucks, das Reden von* Kap. 1,121. Schol. zu 88. Spr. (II) 3425. यतीतादिव्यवहारहेतुः कालः, प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक् Tarkas. 11. Z. d. d. m. G. 4,29, N. 7. लोके धूमादिदर्शनानन्तरं वह्न्यादिव्यवहारश्च 7,299, N. 4. Nilak. 53. 64. Mcit, ST. 2,217,4 v. u. Sâh. D. 5,15. 6,12. 22,16. 116,9. Kuṭṭan. 22,5. 6. 13. fg. 43,13. Sarvadarçanas. 3,16. fg. 27,3. *Bezeichnung:* इत्यादिषघेः कृदग्रहणेन व्यवहारात् Mcit, ST. 4,258. 388, N. 21. Verz. d. Oxf. H. 109,a,29. Schol. zu Gaim. 1,1,18. — 9) *in der Math. Bestimmung* Colebr. Alg. 103. 112. 286. — 10) *bildliche Bez. der Strafe* MBh. 12,4428. *des Schwertes* H. ç. 143. — 11) *ein best. Baum* H. an. Med. — Vgl. क्षेत्र°, दुर्व्यवहार, मिथ्या°, यथाव्यवहारम्, लोक° (als subst. auch Spr. 4481. Müller, SL. 169. Nilak. 64. *allgemeiner Brauch* konnte hinzugefügt werden).

व्यवहारक (wie oben) 1) m. *Geschäftsmann* Pañkat. 138,15. — 2) f. व्यवहारिका a) *Dienerin* R. 2,66,12. die ed. Bomb. liest व्यावहारिकाः, das der Comm. als m. erklärt (व्यवहारे बाह्याभ्यन्तरसकलराज्यकृत्ये नियुक्ता अमात्याः); Gorr. liest रात्रेयोषितः. — b) *Handel und Wandel, das gewöhnliche Thun und Treiben* (लोकयात्रा). — c) *Besen.* — d) *Terminalia Catappa* (इङ्गुद, इङ्गुदी) H. an. 3,6. Med. k. 231.

व्यवहारज्ञ adj. *mit dem Hergang im Leben vertraut* so v. a. *erwachsen, mündig:* बाल एवा षोडशाब्दपर्यन्तोऽगोऽपि निगद्यते । परतो व्यवहारज्ञः स्वतन्त्रः पितरावृते ॥ Nârada in Vîvâdâratnâkara nach ÇKDa.

व्यवहारतत्त्व n. Titel eines Abschnittes im Smṛititattva, der über *den Process* handelt, Gild. Bibl. 465. 478. 489. Verz. d. Oxf. H. 290,b, No. 699. 279,b,6. 7.

व्यवहारतिलक Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. Oxf. H. 292,b,18.

व्यवहारत्व n. nom. abstr. zu व्यवहार 6) MBh. 12,4418. zu 7) Kuṭṭan. 48,16.

व्यवहारदर्शन n. *das Prüfen einer Streitsache, Rechtsprechen* Mit. nach ÇKDa.

व्यवहारदीधिति f. Titel eines Abschnitts im Râgadharmakaustubha, der über *den Process* handelt, Verz. d. Oxf. H. 272,b, No. 645.

व्यवहारनिर्णय m. Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. Oxf. H. 279,b,7. 292,b,19. Verz. d. Cambr. H. 67.

व्यवहारपद n. *Rechtsfall* Jiñ. 2,5.

व्यवहारपाद m. *einer der 4 Theile* (*Anklage, Vertheidigung, Beweis, Spruch*) *in einem Processe* ÇKDa. und Wilson; vgl. व्यवहारस्य प्रथमः पादः Mṛicch. 142,20.

व्यवहारभूषण m. Titel eines Abschnittes im Bhagavadbhâskara, der über *den Process* handelt, Verz. d. Oxf. H. 280,a, No. 655. fg.

व्यवहारमातृका f. *der Process mit allen seinen Theilen* Verz. d. Oxf. H. 263,a,15. Verz. d. B. H. No. 1403.

व्यवहारमाधव Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. B. H. No. 1403.

व्यवहारमार्ग m. *Rechtsfall* ÇKDa. nach Mit.

व्यवहारमाला f. Titel einer Schrift über *den Process* Mack. Coll. 1,26.

व्यवहारयितव्य (vom caus. von कृ mit व्यव) adj. zu *beschäftigen mit* (instr.): कृषिवाणिज्यादिना Manuâr. bei Kull. zu 8,49.

व्यवहारवत् (von व्यवहार) m. *Geschäftsmann* Spr. 1987 (यथासंव्यव° liest der Comm.). am Ende eines comp. *sich beschäftigend mit:* नक्तंचार° M. 10,27 = MBh. 13,2588.

व्यवहारविधि m. *Rechtsverfahren; Rechtslehre* ÇKDa. nach Mit.

व्यवहारविषय m. *Rechtsfall* ÇKDa. und Wilson.

व्यवहारसमुच्चय m. Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. Oxf. H. 279,b,8. 292,b,19. fg. Verz. d. Cambr. H. 68.

व्यवहारसार n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,b,3. Comm. zu Kâty. Ça. 4,7,4.

व्यवहारसिद्धि f. dergl. Târan. 302.

व्यवहारस्थान n. *Rechtsfall* ÇKDa. nach Mit.

व्यवहारासन (व्यवहार + 1. घा°) n. *Richterstuhl* Ragh. 8,18.

व्यवहारिक fehlerhaft für व्यावहारिक.

व्यवहारिन् (von कृ mit व्यव) 1) adj. *verfahrend, zu Werke gehend:* समदृश° Hit. 69,4, v. l. यथाशास्त्र° Kull. zu M. 7,31. fg. — 2) adj. *Geschäfte machend:* विषण° MBh. 12,8403. कूटस्वर्ण° Jiñ. 2,297. घनो° (= शास्त्रविक्रयक Comm.) Vaiku. Bhu. 19(18),1. m. *Geschäftsmann, Kaufmann* MBh. 15,210. Spr. (II) 3639. Kathâs. 26,133. fg. Riñ-Tar. 1,117. 4,711. Z. d. d. m. G. 14,570,3. Çaṅk. 10,77. 14,104. समुद्र° Çiç. 90,18. — 3) m. N. einer mohammedanischen Secte Wilson, Sel. Works I, 264.

व्यवहार्य (wie oben) adj. 1) *womit man sich befassen kann:* स° Mitr. Up. 7 = WebER, Rikat. Up. 338. — 2) *mit dem man verkehren darf, verkehrsfähig* Kâty. Ça. 22,4,26. Jiñ. 3,226. MBh. 4,1814. fg.

व्यवकृत s. u. 1. घा mit व्यव.

व्यवकृति (von कृ mit व्यव) f. 1) *das Verfahren, Art und Weise zu handeln* Riñ-Tar. 4,397. 8,1031. Sâh. D. 415. — 2) *Thätigkeit* Riñ-Tar. 8,2464. — 3) *Verkehr* Riñ-Tar. 8,1910. Verz. d. Oxf. H. 200,a, No. 475. — 4) *geschäftlicher Verkehr, Handel* Bhâg. P. 10,87,26. — 5) *Rechtshandel, Streitsache, Process* Verz. d. Oxf. H. 265,b,2. °तत्त्व n. Titel eines Abschnittes im Smṛititattva 289,b, No. 693.

व्यवाय (von 3. इ mit व्यव) 1) m. a) *das Dazwischentreten, Trennung durch Einschieben* Lâṭ. 1,11,12. Âçv. Ça. 3,10,12. संयोगानां स्वभावतया व्यवायः ṚV. Pâiṅ. 14,25. व्यवाये शमलैः AV. Pâiṅ. 3,93. अकारव्यवाये 2,92. fg. P. 6,1,135. 8,3,58. 4,2. मात्रकाल° Taitt. Pâiṅ. 2,28,

Comm. व्यवायेषु (wohl fehlerhaft für व्यवायिषु) शमचरतवर्गीयेषु (so ist zu lesen) 13,15. ग° Kiṭa. Ça. 8,7,11. 8,8. ṚV. Pair. 2,1. व्यवाय = विघ्न, धत्तराय H. 1309. Halâs. 2,246. = व्यवधान H. an. 3,503. = धत्तर्धि Mad. j. 102. — *b) coitus* AK. 2,7,36. H. 538. H. an. Med. Halâs. 3,39. MBh. 1,111. Suça. 1,18,9. 51,21. 175,10. 204,18. 318,4. 2,345,17. 466,10. Vasav. 11,33. Çiç. Saṁh. 3,8,21. Cit. beim Schol. zu Çiç. 20,9. Vaṁç. Bhg. 8. 28,7. Riâ-Tar. 5,280. Bhâg. P. 1,16,33. 2,1,3. 4,11,15. 29,14. 5,13,18 (so v. a. *Geilheit*). 14,6. 32. 17,12. 6,4,32. 9,9,25. 11,5,11. 13. 12,3,40. Müller, SL. 32. Ind. St. 16,103, N. धति° Suça. 2,147,7. — *c) das Eindringen:* यत्र सोमः सह्यामिना । व्यवायं (= संचारं Nîlak.) कुरुते नित्यम् MBh. 14,608. von Gift Suça. 2,253,20. — *d) Umwandlung* (= परिणाम Comm.): गुण° Bhâg. P. 3,6,11. — *e)* = प्रवृद्धि Dhan. im ÇKDa. — 2) n. = तेजस् Mahâ.

व्यवायिन् (wie oben) adj. 1) *dazwischen tretend, trennend* P. 6,2,166. ṚV. Pair. 11,9. 10,2. AV. Pair. 2,38, Comm. पद° ṚV. Pair. 11,8. — 2) *den Beischlaf vollziehend* Çâṇḍilyas. im ÇKDa. धति° Suçr. 2,445,17. — 3) *eindringend, sich in einem Andern ausbreitend* Suça. 1,151,17. Oel 182,2. Salz 227,2. 247,11. 2,477,4. 253,15. व्यवायि तन्मधा भङ्गा फेनं चास्रिसमुद्भवम् Çiç. Saṁh. 1,4,19.

व्यवेत (wie oben) partic. *getrennt, geschieden* ṚV. Pair. 11,9. Taitt. Pair. 13,7. पदेन ṚV. Pair. 10,2. Comm. zu AV. Pair. 1,101 und Taitt. Pair. 6,2. व्यञ्जन° AV. Pair. 1,28. 3,62. VS. Pair. 3,64. Taitt. Pair. 1,17. 4,51. 7,5. अकारव्यवेतस्य n. Comm. zu 1,19. — Vgl. unter 3. इ mit व्यव.

1. व्यशन (von 1. अश् mit वि) adj. in Verbindung mit अस्त्य symbolische Bez. eines Monats Kâṭy. 18,12 bei Weber, Gjot. 114. — Vgl. वेयशन.

2. व्यशन (2. वि + 2. अशन) adj. (f. आ) *sich des Essens enthaltend* Harîv. 7915 nach der Lesart der neueren Ausg.

व्यौम्रिय m. in einer Formel TS. 1,7,9,1. 4,7,14,2.

व्यमुर्विन् m. in derselben Formel VS. 22,33. nach Mahîdh. *ein Genius der Speise.*

व्यंश (2. वि + अंश) 1) adj. *pferdelos* Śrâdhapr. Ba. 3,10. MBh. 8,4099. Hariv. 7,49. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi ṚV. 1,112,15. 8,9,10. 23,16. 33. 24,22. 26,9. 9,65,7. Âṅgirasa, Verfasser von ṚV. 8,26. ein alter König MBh. 2,333. 338. plur. ṚV. 8,24,28. — Vgl. वेयश्व fg.

व्यष्टक m. s. u. मुष्टक.

व्यष्टका (2. वि + अष्टका) *f. der erste Tag in der dunklen Monatshälfte* TS. 7,5,3,1. TBr. 1,8,10,2. Kâṭy. 33,7. Lâṭy. 3,3,8.

व्यष्टि (von 1. अश् mit वि) 1) *f. a) das Erlangen, Erfolg* TS. 1,4,8,3. Çat. Br. 10,2,3,8. 12,3,3,2. 13,3,3,2. 4,2,1. सर्वा व्यष्टीर्व्याशिष्यन् Âçv. Çr. 10,6,1. Kaṭha-Up. 1,7. — *b) Einzelding, Einzelwesen* (Gegens. समष्टि) Çaṁk. zu Bhg. Âś. Up. S. 14. 312. Vedântas. (Allah.) No. 23. 28. 30. Schol. zu Kap. 1,98. Weber, Râmây. Up. 348. 350. in dieser Bed. wohl auf 2. अस् mit वि zurückzuführen; vgl. Vedântas. 30. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,22. 7,2,28.

व्यस् s. u. 2. अस् mit वि.

1. व्यसन (von 2. अस् mit वि) n. 1) *das Hinundherbewegen:* पुच्छस्य P. 3,1,30, Vârtt. 3. — 2) *Fleiss, Betriebsamkeit:* विद्या नो व्यसनं विना Spr. (II) 3320. शास्त्रे (I) 2003. विद्यायाम् 2773. मृगो 2825. — 3) *das Hängen an Etwas mit ganzer Seele, leidenschaftliche Neigung zu Etwas, das Versessensein auf Etwas:* दाने Spr. (II) 3132. (I) 3143. शिबिलीकृतवेलासनिवास° adj. Kathâs. 11,32. तत्सेवा° 27,148. दान° 35,38. दरिद्रस्य त्यागैकव्यसनस्य 36. वाद° 66,12. द्यूत° 73,186. Râga-Tar. 8,71. पानभोजनव्यवायादि° Bhâg. P. 5,14,6. किमिदानीमाशाव्यसनेन Mâlatîm. 154,13. व्यर्थकीर्तित° Pañcat. 235,9. वेश्या° Kathâs. 43,22. Hit. 71,5. मृग° Bhâg. P. 4,26,4. — 4) ohne Ergänzung *Versessenheit, eine den Menschen beherrschende Leidenschaft, insbes. eine tadelnswerthe, eine schlechte Passion, Laster:* हे साधो व्यसनैर्गुणेषु विपुलेष्वास्थां वृथा मा कृथाः Spr. 2487. Kathâs. 31,67. 32,14. 58,98. 60,76. 61,137. किमेष व्यसनं पुत्रात् 78,13. Bhâg. P. 4,26,26. *Liebhaberei, Steckenpferd:* °मंस्थित Spr. (II) 861. व्यसनैर्धनानि (स्त्यानि) 1674. यास्त्वेव्यसनैः Râga-Tar. 5,165. समानशीलव्यसनेषु सख्यम् Spr. 2236. — दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च । व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत् ॥ M. 7, 45. fg. Vaṁç. in Ind. St. 16,167. R. Gorr. 2,2,28. कामसमुत्थानि चत्वारि 3,13,2. क्रोधोद्भवानि त्रीणि 3. Kâm. Nîtis. 14,6. 7. सप्त Spr. (II) 2993. H. 739. चत्वारि मङ्गलितानि Spr. (II) 2238. M. 7,52. Jâṇ. 3, 240. MBh. 2,203. Spr. (II) 141. व्यसनेषसक्तः 1224. व्यसनेन तु मूर्खाणाम् (काले गच्छति) 1711. 2288. (I) 1845. 2844. 2912. 3040. 4777. व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते 5041. 5043. व्यसने सञ्जमानं हि क्लेशयेद्व्यसनाग्नयः Kâm. Nîtis. 7,58. युवाप्यनैर्व्यसनैर्विहीनः Raghu. 18, 13. Çiç. 38. Kathâs. 26,198. Râga-Tar. 6,153. ग° adj. Jâṇ. 1,309. MBh. 12,3910 (उव्य° mit der ed. Bomb. zu lesen). वीत° adj. Spr. 2882. — 5) *Missgeschick, Widerwärtigkeit, Unfall; Unbestand:* व्यसने चोत्थिते रिपोः M. 7,193. 9,299. Jâṇ. 2,113. MBh. 1,135. व्यसने पः परित्यागी 12,6270. R. 2,39,40. 51,21. 53,9. 73,21. 77,19. 92,26. 97,22. 104,24. 3,51,10. Spr. (II) 954. 1221. (I) 2263. 2644. व्यसनानन्तरं सौख्यं स्वल्पमप्यधिकं भवेत् 2914. व्यसनेष्वेव सर्वेषु पस्य बुद्धिर्न क्षीयते 2915. 3219. Suça. 1,130,2. Vaṁç. Bhg. S. 3,12. 30. 13. 32,38. Vikr. 59,1. Kathâs. 33,62. LA. (III) 90,22. Râga-Tar. 4,522. Bhâg. P. 1,8,13. 12, 32. 3,7,19. 31,21. भर्तृ° MBh. 3,2411. R. 2,51,16. 64,11. 6,72,19. Suça. 1,122,17. Spr. (II) 3178. Prab. 82,12. Bhâg. P. 4,14,7. मरुत् R. 2,59, 32. अविषह्य Kumâras. 4,30. दुरत्यय Bhâg. P. 1,19,2. 3,22,2. °वागुरा R. 3,72,27. °महार्णव Mṛicch. 174,6. Bhâg. P. 3,14,17. व्यसनेनार्दितः MBh. 3,2305. व्यसनार्त AK. 3,1,43. H. 381. व्यसने वर्तमानः R. 3,75,18. मह्यस्य व्यसने कृच्छ्रे MBh. 12,8214. तौ चेद्व्यसनमागतम् R. 2,52,16. व्यसनं प्राप्तः 100,15. 106,4. Spr. 2913. 3117. रामेण प्राप्ते व्यसनमत्युग्रम् MBh. 3,16602. Spr. (II) 1606. व्यसनं गतः Bhâg. P. 8,2,26. व्यसने संप्रवेष्यान्यान् Spr. 5042. व्यसनं दातुम् (II) 3476. °द् R. 4,5,21. Vaṁç. Bhg. S. 53,79. व्यसनं भेदनं चैव शत्रूणां कारयेत्ततः MBh. 13,230. °काल Spr. (II) 616. व्यसनागमे 1954. 2405. व्यसनोदये (I) 2141. व्यसनोदय adj. 3169. °प्राप्ति Sin. D. 359. व्यसनात्यय Bhâg. P. 3,23,42. व्यसनावाप 4,22,18. धृतिव्यसनापात Râga-Tar. 8,791. समान° adj. Raghu. 12,37. अदृष्टपूर्वव्यसना R. 2,38,15. 58,21. कृतपूर्वव्यसना 6,74,24. Kumâras. 3,73. Bhâg. P. 6,14,45. — सप्तानां प्रकृतीनां राज्यस्य M. 9,295. Kâm. Nîtis. 13,94. राज्य° 14,1. 2. यायुध° M. 7,93. राष्ट्र° Kâm. Nîtis. 13,64. दुर्ग° 30. 62. Spr. (II) 23. बल° 2672. (I) 4630. Kâm. Nîtis. 13,72. कोश° 66. Spr. (II)

154. पान° Kim. Nitis. 14,20. कर्म° 15,21. स्खलन° so v. a. *Verlust* Kin. 13,15. दुर्भिक्ष° so v. a. *Hungersnoth* Spr. 4630. मृगया° *Unfall —, schlimme Folge bei, von* Kim. Nitis. 14,21. स्त्री° 57. पान° 61. — 6) *Untergang* (eines Gestirns): चन्द्र° Mṛicch. 91, 3. Çiç. 77. — 7) *Belagerung oder Belagerungstruppen* Ind. St. 16,165, N. 198. वसन v. l. — Die Lexicographen kennen folgende Bedd.: अघ AK. 3,4,24,28. अनय 24, 151. मक्षिः स्त्रीपानमृगयादिषु H. an. 3,408. fg. Med. n. 122. दोषः कामक्रोधजः AK. 3,4,25,123. निष्फलोद्यम und दैवानिष्टफल Taik. H. an. Med. पाप und अघ्रुभ H. an. Med. विपद् (विपत्ति) AK. H. an. Med. अंश (3,4,25,123) und आधि (3,4,27,100) AK. Eine Etymologie des Wortes Kim. Nitis. 13,19: यस्माद्धि व्यसति क्षेपस्तस्माद्व्यसनमुच्यते. — Vgl. दुर्व्यसन, नो°, मारिव्यसनवारक, मूल° und वैयसन.

2. व्यसन adj. Harîv. 7915 fehlerhaft für व्यशन, MBh. 12, 8910 für अव्यसन.

व्यसनवत् (von 1. व्यसन) adj. am Ende eines comp.: कोश° *der ein Ungemach mit seinem Schatze erlitten hat* Spr. (II) 1950.

व्यसनिता (von व्यसनिन्) f. 1) *Liebhaberei* zu (loc.): यज्ञाधास्वपि दृश्यते व्यसनिता Kaurap. 19 in Journ. as. IV sér. t. XI, S. 472. *das Versessensein auf Etwas:* व्यसनितया विषक्षो न विधिः Hir. 94, 3. — 2) *eine den Menschen beherrschende Leidenschaft, eine schlechte Passion* Kathâs. 11, 23.

व्यसनित्व (wie oben) n. *das Frönen, Obliegen:* विषय° Râga-Tar. 3, 252.

व्यसनिन् (von 1. व्यसन) adj. 1) am Ende eines comp. *leidenschaftlich ergeben, erpicht —, versessen auf:* समर° Mṛicch. 1, 20. अद्भुत° Spr. (II) 545. सत्यव्रत° (1) 2655. मानोत्सेकपराक्रम° 2870. सञ्जीवितोदय° 3146. मृगया° Kathâs. 11, 10. 21, 22. द्यूतैक° 26, 194. शम° Râga-Tar. 2, 143. दिग्विजय° 4, 666. क्षीणोदृति° 8, 78. 2331. तुरङ्गव्यसनी (so zu lesen) 1287. शकुनिबन्ध° Pañcat. 192, 3. — 2) *böser Neigungen frönend, schlechte Passionen habend, lasterhaft* H. 435. Jâtâ. 2, 22. Harîv. 767. Kim. Nitis. 4, 56. 13, 19. 59. Spr. (II) 23. 639. 1801. 2715. (I) 2901. 3298. 3041 (M.). Varâh. Bṛih. S. 101, 13. Kathâs. 15, 56. 16, 21. 24, 33. 26, 199. 93, 41. Daçak. 2, 3. Sâh. D. 159. Pañcat. 163, 14. यति° Kathâs. 43, 25. य° Soçr. 1, 371, 16. Varâh. Bṛih. S. 2, S. 3, Z. 4 v. u. Kim. Nitis. 14, 2. Spr. 2007. 3041 (M.). 3338. — 3) *den ein Unfall betroffen hat, unglücklich* MBh. 3, 2741. 7, 1276. पेरसि व्यसनी कृतः 11, 586. R. 2, 40, 5. R. Gorr. 2, 17, 43. Kim. Nitis. 11, 75. Spr. (II) 2063. 2922 (Conj.). सूत° *der einen Unfall mit dem Wagenlenker gehabt hat* MBh. 3, 7223. प्रत्यासन्न° *dem ein Unfall droht* (प्रत्यासन्नाः समीपस्थाः व्यसनिनश्चिरदुःखिनो भ्रात्रादयो यस्य सः Nîlak.) 12, 1422. दुर्भिक्ष° *der mit Hungersnoth zu kämpfen hat* Spr. (II) 2872.

व्यसनोत्सव m. *ein Fest, bei dem man seinen schlechten Passionen freien Lauf lässt, Orgien* u. s. w. Varâh. Bṛih. S. 78, 11.

व्यसि (2. वि + असि) adj. *ohne Schwert:* कोश Spr. (II) 3023.

व्यसु (2. वि + असु) adj. (f. eben so) *entseelt, leblos* MBh. 1, 958. 963. 3212. 3, 2490. 4, 777. 7, 3218. Verz. d. Oxf. H. 257, a, N. 3. Bhâg. P. 3, 3, 1. 5, 18, 15. 7, 3, 37 (= अप्राण Comm., Gegens. असुमत्). 10, 58. अभूव प्रातराश्यः स दशभिर्दिवसैर्व्यसुः so v. a. *starb* Râga-Tar. 3, 241. यो व्यसूनव्यसून् so v. a. *tödtete* 3, 57.

व्यसुत्व (von व्यसु) n. *Verlust des Lebens* Varâh. Bṛih. S. 71, 7.

व्यस्त s. u. 2. अस् mit वि. Hinzugefügt könnte werden: = व्याप्त, व्याकुल Med. t. 54. *auseinandergerissen, voneinanderstehend, klaffend* Taitt. Prât. 2, 12 (यति°). Comm. zu 18 (यति°). 14. शब्द (य°) Lâṭ. 8, 10, 18 in Ind. St. 4, 268, N. *zerstreut* Weber, Gjot. 109. °त्रैराशिक *rule of three terms inverse* Colebr. Alg. 34. °विधि *inversion* 21.

व्यस्तकेश adj. (f. ई) *struppig* AV. 8, 1, 19.

व्यस्तपद n. *Gegenklage* ÇKDa. nach Mit.

व्यस्तार m. *das Hervorquellen des Brunstsaftes aus den Schläfen eines Elephanten* Taitt. 2, 6, 26. Hir. 29.

व्यस्थक (2. वि + अस्थन्) adj. *knochenlos* Pañcât. Bṛ. 24, 18, 7.

व्यक्त् und व्यञ्च् (2. वि + अ°), loc. व्यञ्चि, व्यक्तनि und व्यञ्चे P. 6, 3, 110. Vop. 3, 42.

1. व्या, व्यायति Dhâtup. 23, 38 (संवरणे). विव्याय P. 6, 1, 46. Vop. 8, 128. विव्यायिथ P. 7, 2, 66. Vop. 8, 62. 139. विव्यायतुस् und विव्यातुस् 139. व्यव्यात्; व्यायते, व्यात, विव्ये, विव्यानें; °व्याय und °वीय P. 6, 1, 48. fg. (°वीय angeblich nur nach परि). partic. वीत. med. *sich bergen —, hüllen in:* हरिः पवित्रे अव्यत ṚV. 9, 101, 15. इन्दुरव्यत मानो अव्ये 97, 12. partic. praes. pass.: पणिभिर्वियमाणाः (so in den Hdschrr. und in den Ausgg.) TS. 1, 1, 13, 2. TBr. 3, 3, 9, 6. entsprechend dem गुह्यमान VS. 2, 17. त्रायुषा वीतः (so Comm.; वावीतः nach Bohnoor) *gehüllt in* Bhâg. P. 3, 31, 4. मेखलया वीतः *umgürtet* 8, 18, 24. — Vgl. 7. वी, 3. वीत und वीतसूत्र.

— caus. व्यापयति P. 7, 3, 37. Vop. 18, 6.

— intens. वेवीयते P. 6, 1, 19. Vop. 20, 12. Vgl. 8. वी.

— अधि, °वीत *umwickelt:* अधीन्द्रभोगैः Bhâg. P. 3, 8, 29. अधिव्ययन्ती MBh. 1, 723 fehlerhaft; s. u. अव.

— अप 1) *abziehen, abdecken:* अपो मह्ना व्यपति चर्तसे तमः ṚV. 7, 81, 1. तन्वोऽरपो ऽपाचीनमप व्यये AV. 5, 91, 1. — 2) med. (*sich herauswickeln, sich frei machen*) *leugnen* (intrans.): कृतापव्ययते M. 8, 222. अर्थे ऽपव्ययमानः 31. 60. — Vgl. अनपव्ययन्.

— अपि *zudecken:* अद्भ्याऽरपि व्ययामसि AV. 1, 27, 1.

— अभि med. *sich in Etwas hüllen:* अभि व्यय्स्व खदिरस्य सारम् ṚV. 3, 53, 19.

— अव *abziehen, abdecken:* अवव्ययन्नसितं वस्म ṚV. 4, 13, 4. अवव्यय्सावसितम् (so ist zu lesen) *das schwarze* (Gewebe) *abdeckend* MBh. 1, 723.

— आ *umnehmen* (als Hülle, mit acc.); *sich bergen in* (loc.): आ वो वृष्टिं भरमाणा व्ययेयम् so v. a. *an eure Brust will ich mich flüchten* ṚV. 2, 29, 6. आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत 1, 166, 4. आ द्यामिरत्के अव्यत 3, 101, 14. 107, 13. — Vgl. unter dem simpl. am Ende, आवीतिन्, प्राचीनावीत, मलावीत (?).

— उद्, उद्वीत MBh. 7, 635 fehlerhaft für उद्भूत, wie die ed. Bomb. liest.

— उप *umnehmen, umhängen* (die heilige Schnur über die linke Schulter und unter den rechten Arm): उपवीतं देवानाम् उपव्ययते देवलक्ष्मैव तत्कुरुते TS. 2, 3, 11, 1. उपवीय TBr. 1, 6, 9, 2. Kâṭh. 36, 12. मलाधने दुकूलाभ्यां परिधायोपवीय च Bhâg. P. 4, 21, 17. — Vgl. उपवीत (*heilige Schnur* auch Harîv. 14944. Raçu. 11, 64. Bhâg. P. 5, 9, 11. 6, 19,

7, 7, 12, 4. 8, 16, 29. 18, 24. Mānn. P. 34, 43) und यज्ञोपवीत.

— नि *umhängen, umnehmen:* नूत्ने निवीय परिधाय च कौशिकाप्ये Baudh. P. 16, 83, 28. निवीत *behängt* (am Halse): वनमालया 3, 8, 31. 15, 28. 6, 4, 37. 16, 73, 5. — Vgl. निवीत (über अधो° s. Stenzler zu Āçv. Gṛhy. 4, 2, 9), नीवि, नीवी.

— परि (°व्याय und °वीय absol. P. 6, 1, 44) *umhüllen, überziehen, herumschlingen;* med. *sich Etwas als Hülle umnehmen, sich bergen in:* यो युत्सु तन्वं परिव्यते RV. 2, 17, 2. स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत 9, 86, 32. अधोवर्मं परि गोभिर्व्ययस्व (= act.) 10, 16, 7. 9, 98, 2. मातुर्योना परिवीतो अग्नः 1, 164, 32. 3, 8, 4. 4, 1, 7. 3, 2. वस्त्राणि परि गव्यान्यव्यत 9, 8, 6. 69, 4. वार्मसा 5. 70, 2. 107, 18. 10, 6, 1. 46, 6. VS. 6, 6. 17, 4. 5. TS. 6, 3, 4, 5. यदेकस्मिन्यूपे द्वे रशने परिव्ययति 6, 4, 3. Āçv. Gṛhy. 4, 8, 15. Kāty. Çr. 6, 3, 14. 8, 8, 15. वासुकिम् । परिवीय गिरौ तस्मिन्नेत्रम् *schlingen um* Baudh. P. 3, 7, 1. काषायपरिवीत *gehüllt in* Rāgat. 15, 77. प्रक्लृप्तमयूखनिचयैः परिवीतमूर्तिः Kir. 5, 42. सत्यपाशपरिवीत *umschlungen* Baudh. P. 1, 10, 8. नागभोगपरिवीत 10, 16, 10. परिशोचद्भिः परिवीतः स्वबन्धुभिः *umgeben von* 3, 30, 18. धैर्यपरिवीत *nicht umhüllt:* पूषा: Çat. Br. 3, 7, 2, 4. — Vgl. परिवी und परिव्ययण.

— सम् 1) *zusammenwickeln, zudecken:* पुनः समव्यद्धितंतं वयन्ती RV. 2, 38, 4. सीव्यत्तमांसि दुधिता समव्ययत् 17, 4. *hüllen in* (instr.): वस्त्रैः संविव्ययुर्देवान् Bhatt. 14, 74. — 2) *anziehen, sich umgeben mit,* med.: वासो अग्ने विश्वरूपं सं व्ययस्व VS. 11, 40. सं विव्य इन्द्रो वृत्रं न भूर्म RV. 1, 173, 6. संविव्यान ओषधीः 130, 4. संविव्यानमोषधिषु मृगं कः: *sich verhüllend* 5, 29, 4. act.: वासो गुरुपत्न्याः समव्ययत् Baudh. P. 2, 18, 10. — 3) *Jmd Etwas anziehen* (wie ein Gewand) so v. a. *Jmd ausstatten mit:* तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु AV. 7, 17, 3 (v. l. TS. 3, 3, 11, 3). पूर्वे भ्रुवं च-र्षणिभ्यः सं विव्ययुः RV. 6, 72, 3. *ausrüsten:* तास्मा अग्निः सं व्ययतु AV. 14, 1, 43. येभिर्वाचं विश्वरूपां समव्ययत् TBr. 2, 7, 15, 2. — 4) partic. संवीत mit einem im loc. gedachten Worte componirt gaṇa शौण्डादि zu P. 2, 1, 40. *a) gehüllt in* (instr. oder im comp. vorangehend), *bedeckt, umlegt, umwickelt, umgeben* AK. 3, 2, 40. H. 1476. Hall. 4, 53. 96. वस्त्रावकर्तेन MBu. 3, 2354. Spr. 2510. एकवस्त्र° MBu. 3, 2336. 2393. 2505. 2597. 13, 333. R. 2, 12, 94. R. Gorr. 2, 5, 7. 3, 52, 9. 5, 45, 4. Kām. Nītis. 17, 51. Varāh. Bṛh. S. 43, 24. Kathās. 29, 53. Mānn. P. 34, 56. Baudh. P. 3, 8, 45. शवगुण्ठन° Sīs. D. 116. पाण्डुकम्बल° (रथ) AK. 2, 8, 2, 22. H. 754. नीलोरण MBu. 12, 10969. क्षिप्राधैरिन्दुमण्डलम् R. 3, 50, 12. गभस्तिजाल° 7, 16, 2. वसुधोरण° MBu. 1, 6022. शर° 7, 5087. दिव्यैः प्रसूनैर्हरनारायणौ (zwei Statuen) Rāgat. 3, 452. भुजगाग्रेषसंवीतताम् Mālāv. 1, 1. यज्ञोपवीतसंवीताङ्ग Milav. 46, 10. स्वेन सैन्येन संवीता यथादित्याः स्वरश्मिभिः MBu. 14, 1896. so v. a. *versehen mit:* सुवर्णजाल° (प्रासाद) 1, 6964. 2, 1280. R. 3, 61, 10. 7, 15, 36. तप्तकाञ्चन° (भवण) 3, 52, 20. 7, 18, 22. जलकुक्कुट° (सरोवर) Vet. in LA. (III) 5, 8. मागधानिल° देश) Harīv. 6411. मन्दारसमुसंवीतैः सलिलैः R. 3, 62, 27. कूर्प° *erfüllt* von MBu. 7, 8131. बाष्पेण शोकेन विपुलेन च R. 2, 66, 21. Ohne Ergänzung *verhüllt:* संवीताङ्ग M. 4, 49. 8, 28. °रुचिरस्तनी Baudh. P. 3, 23, 36. अ° *unbekleidet* 5, 6, 8. 6, 13, 49. MBu. 3, 2302. सु° *schön gekleidet* 14, 1994. संवीत *geharnischt* MBu. 4, 891. सु° 993. 5, 7127. गाढ° R. 4, 12, 22. °राग *verhüllt* so v. a. *verschwunden* Harīv. 11276. — *b) umgethan, umgelegt:* सितांशुक Gīt. 8, 11. Kathās. 73, 283. 95, 17. Rāga-Tar. 1, 294. — *c)* n. *Gewand:* वल्कलं संवीताय Spr. (II) 1076. — Vgl. संव्यान.

— अनुसम् *hüllen in:* एकवस्त्रानुसंवीता MBu. 11, 683. एकवस्त्रार्धसंवीता ed. Bomb.

— उपसम् med. *darin anziehen:* राणस्योर्षमुपसंव्ययस्व AV. 2, 13, 3. कृष्णाजिनोपसंवीत *gehüllt in* MBu. 13, 377. — Vgl. उपसंव्यान.

2. व्या = 3. वी *in Bewegung setzen;* so vermuthen wir für घृतंव्ययम् RV. 7, 33, 4.

3. व्या, व्याति scheinbar in der Stelle: आत्मा च व्याति नेत्रे कर्मणी च शुभाशुभे MBu. 12, 11192. = व्याप्नोति Nīlak. es ist aber aller Wahrscheinlichkeit nach द्याति zu lesen.

व्याकरण (von 1. कर् mit व्या) n. 1) *das Sondern, Scheiden:* श्रुतौ मीलितयोर्दृश्यपूर्णमासयोर्व्याकरणेन Müller, SL. 170. व्यवसायात्मिका बुद्धिर्मनो व्याकरणात्मकम् MBu. 12, 9098. 14, 988. — 2) *Auseinandersetzung, detaillirte Beschreibung:* धर्म° MBu. 13, 8939. Sūçr. 1, 9, 8. 325, 19. 336, 19. 363, 6. 366, 16. — 3) *das Offenbaren, Kundthun:* सर्वार्थानाम् MBu. 5, 1681. मन्त्र° (pl.) Harīv. 456. 458. — 4) *Enthüllung, Vorhersagung* (bei den Buddhisten) Vjutp. 4. Burnouf, Intr. 54. fgg. Saddh. P. 4, 3, a. 6, b. Hiouen-thsang 1, 78. Wassiljew 109. 215. — 5) *Entfaltung, Schöpfung* Çaṃk. zu Bādar. Âr. Up. S. 152. 160. 323. Windischmann, Sancara 130. Baudh. P. 2, 1, 36. — 6) *Grammatik* (*Analyse*) H. 250. Nir. 1, 15. Muṇḍ. Up. 1, 1, 5. P. Einl. 1. Ind. St. 1, 48. 3, 260. fg. 5, 159. Pat. in Mahābh. S. 15. 36. MBu. 13, 4303. R. 7, 36, 41. Kathās. 4, 22. वाणी व्याकरणेन (so v. a. *grammatische Correctheit*) भाति Spr. (II) 3345. व्याकरणस्य कर्तुः पाणिनेः (I) 3253. Verz. d. Oxf. H. 7, b, 17. 86, b, 49. VP. 284. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 3. 16, 24. fgg. Rāga-Tar. 1, 176. 5, 29. Comm. zu VS. Prāt. 1, 169. zu AV. Prāt. 1, 2. zu Taitt. Prāt. 1, 57. 2, 47. 13, 16. zu P. 2, 4, 21. 6, 2, 14. द्वादशभिर्वर्षैस्तावद्व्याकरणं श्रूयते Pāṇ. 4, 14. Lalit. ed. Calc. 179, 4. Hiouen-thsang 1, 125. 127. Vie de Hiouen-thsang 165. Wassiljew 218. 221. — Vgl. गर्भ° (zu ändern *detaillirte Beschreibung des Fötus*), प्रश्न°, राम° und वेयाकरण.

व्याकरणकौण्डिण्य m. N. pr. eines Brahmanen Burnouf, Intr. 530. Lot. de la b. l. 489.

व्याकर्तृ (von 1. कर् mit व्या) nom. ag. *Entfalter, Schöpfer* Çaṃk. zu Bādar. Âr. Up. S. 158. zu Kaiṇḍ. Up. S. 623.

व्याकार (wie eben) m. *Entwickelung, weitere Ausführung:* पूर्वोक्तस्य Kull. zu M. 11, 46. ब्रह्माञ्जलिशब्दार्थ° zu 2, 71. 7, 182.

व्याकारदीपिका f. Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. II, 46.

व्याकीर्ण n. *Verwirrung* (der Casus) Prātiśāk. 63, *a*, 2. — Vgl. auch unter 3. कर् mit व्या.

व्याकुञ्चित (von कुच्, कुञ्च् mit व्या) adj. partic. *gebogen* Hall. 4, 11.

व्याकुल (von 3. कर् mit व्या) 1) adj. (f. आ) = विह्वस्त AK. 3, 1, 42. H. 366. Hall. 2, 227. *a) ganz erfüllt* —, *voll von* (instr. oder im comp. vorangehend) Pāṇ. 1, 4, 15. बाष्पव्याकुललोचन MBu. 5, 7007. घनलस्वालाधूमव्याकुलमूर्धन Kathās. 25, 190. शोकव्याकुलया वाचा R. Gorr. 2, 36, 26. निद्रा° so v. a. *schlaftrunken* Spr. (II) 675. मृगलोभव्याकुलचित्त Varāh. Bṛh. 27 (25), 6. — *b) ganz mit Etwas beschäftigt:* बलि° Mṛcch. 83. तरुविटपलतालिङ्गन° (प्रावृष) Ṛt. 1, 24. व्याकुलेनान्तरा-

त्मना विवेकस्तपस्तप्स्यति Prab. 60,1. तपव्याकुलमानस R. 2,47,16. — *c) von einem Gedanken oder einem Gefühle ganz beherrscht, bestürzt, aufgeregt, ausser sich, seiner nicht mächtig* R. 2,37,13. 3,33,19. Kathâs. 21,91. 62,110. इन्द्रारि° (लोक) Bulg. P. 1,3,28. Pañkat. 144,4. Hit. 9,8. कृतेन स मता नेवामता Spr. 5146. वृष्टिव्याकुलगोकुल Git. 4, 22. Pañkân. 1,7,72. Z. d. d. m. G. 14,575,21. मनस् MBh. 13,1482. Pañkat. 21,19. °चित्त Sûçr. 2,427,11. °चेतस् Mârk. P. 109,39. °हृदय Pañkat. 9,12. व्याकुलेन्द्रिय MBh. 3,15759. R. 2,64,2. 4,24,42. — *d) in Verwirrung —, in Unordnung stehend, verworren* (von Leblosem): मरौ तस्करशस्त्रनिपतिः Vaitân. Bpn. S. 3,22. जगत् R. Gorr. 2,116,39. द्रुमाः) व्याकुलशाखाग्राः R. 2,28,22. कस्तिकस्तपरामृष्टां व्याकुलामिव पद्मिनीम् MBh. 3,2669. दिशः सर्वाः R. 1,65,12 (67,6 Gorr.). पाठ Verz. d. Oxf. H. 174,a,1. व्यवहार Process Mṛicch. 138,19. रव H. 1404. Hallâs. 1,139. काकुव्याकुलै (adv.) व्याहरन्ती Git. 6,10. — *e) zuckend:* विद्युत् Uttarar. 64,16 (83,5). — 2) m. N. pr. eines Fürsten (die Form des Wortes steht nicht sicher) Wassiljew 53. — Vgl. गन्ध°, निर्व्याकुल, घाकुल, पर्याकुल, संकुल, समाकुल.

व्याकुलता f. nom. abstr. zu व्याकुल 1) *e)* Kathâs. 63,1. Pañkat. 58, 3. 143,4.

व्याकुलत्व n. dass. Mârk. P. 37,19. Pañkat. 76,12.

व्याकुलधुव m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 53. Die Form des Wortes steht nicht sicher.

व्याकुलय् (von व्याकुल), °यति 1) *Jmd in Aufregung versetzen, ausser sich bringen* Pañkân. 3,1,11. Pañkat. 89,14. Schol. zu Kâvjâd. 3,39. — 2) *Etwas in Verwirrung —, in Unordnung bringen:* वेदान्तशास्त्रम् Prab. 20,16. — 3) व्याकुलित partic. gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88. *a) erfüllt —, voll von:* स्मरशरधोरणिव्रणव्याकुलितामिव Kathâs. 74,242. रोषव्याकुलितेक्षण Harîv. 15817. म्लेच्छव्याकुलितान्तर (वचन) R. Gorr. 1, 24,1. क्रोधव्याकुलितान्तर 60,7. शोकव्याकुलितान्तर 2,38,13. शोकव्याकुलितमनस् Pañkat. 142,14. 222,8. भयव्याकुलितहृदय od. orn. 19,14. — *b) in Aufregung versetzt, bestürzt, ausser sich, seiner nicht mächtig* MBh. 3,636. Spr. (II) 2091. °चेतन R. 3,33,44. चीरानलव्याकुलितान्तरात्मन् Vaitân. Bpn. 27 (25), 36. °हृदय Pañkat. 55,5. °मनस् od. orn. 54,11. चिन्ताव्याकुलितेन्द्रिय R. 2,26,6. 62,3. 7,44,12. — *c) verworren, in Unordnung gebracht, gestört:* कपव्याकुलितामल Sûçr. 1,257,16. वाक्यमोघव्याकुलितान्तरम् R. 4,7,15.

व्याकुलितिन् adj. = व्याकुलितमनेन gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88.

व्याकुलीकर् (व्याकुल + 1. कर्) 1) *ganz mit Etwas erfüllen;* °कृत *erfüllt —, voll von:* मनप्रदेश्यधर्मैकव्याकुलीकृतसागर Pañkân. 4,3,106. 103. पिपीलिकाभिः सर्वतो व्याप्तो व्याकुलीकृतश्च Pañkat. 171,1. 2. भय-व्याकुलीकृतमनस् 63,8. भोग्यनागमव्याकुलीकृतमनस् Vaitân. Bpn. 27 (25), 31. — 2) *Jmd in Aufregung versetzen, verwirren, ausser sich bringen* Kathâs. 48,88. Prab. 71,8. Pañkat. 254,28. °कृत R. 4,62,2. °मानस Mârk. P. 123,44. — 3) *Etwas in Unordnung bringen, verwirren:* °कृतभूषण R. 5,54,15.

व्याकुलीभू (व्याकुल + 1. भू) *in Aufregung gerathen* u. s. w.: °भूत Pañkat. 46,1 (mit der ed. Bomb. °भूता st. भूत्वा zu lesen). 142,3. 4.

व्याकृति f. = भङ्गि Hallâs. 4,77. — Vgl. वाकृति.

व्याकृत s. u. 1. कर् mit व्या und vgl. वैयाकृत.

व्याकृति (von 1. कर् mit व्या) f. 1) *Sonderung* Çat. Br. 3,2,3,16. 4, 1,3,11. — 2) *Auseinandersetzung, detaillirte Beschreibung, weitere Ausführung* Sûçr. 1,9,10. *Erklärung:* वेदाक्षतत्त्व° Verz. d. Oxf. H. 130,a, No. 319.

व्याकोप m. Kusum. 6,9.

व्याकोश (2. वि - 2. घा + कोश) 1) adj. *aufgeblüht, blühend* AK. 2,4, 1,7. H. 1127. Hallâs. 2,32. MBh. 7,1365. 9,289. 12,309. R. 3,76,15. 5,75,16. Çiç. 4,46. Khaṇḍ. 112. Pañkân. 3,5,31. — 2) m. *Blüthe:* पद्म° Mṛicch. 47,11. — Wird weniger gut auch व्याकोष geschrieben.

व्याक्रोश (von क्रुश् mit व्या) m. *das Schelten, Schmähung* Prab. 75, 11. f. ई dass. Verz. d. Oxf. H. 131,a, N. 1. — Vgl. व्यावक्रोशी.

व्याक्रोशक (wie eben) adj. *der da schilt, schmäht* P. 3,2,147, Schol.

व्याक्षेप (von 1. क्षिप् mit व्या) m. 1) *Schmähung:* बहुव्याक्षेपपुष्कलानि नामाक् वचनानि नः MBh. 12,5843. Vgl. घाक्षेप. — 2) *Zerstreutheit* (des Geistes): चिरं तु भवता कालं व्याक्षेपेण (= व्यासङ्गेन Nîlak.) विलम्बितम् (कालो und विलम्बित: die neuere Ausg.) Harîv. 4435. Vaitân. Bpn. S. 89,15 (= घाकुलता Comm.). Mârk. P. 31,17. घव्याक्षेपे (= घविलम्ब: Comm. in der Calc. Ausg.) भविष्यत्या: कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम् Bâgh. 10,6. चित्त° Kull. zu M. 8,10. H. 322, Schol.

व्याख्या (ख्या mit व्या) f. *Erklärung, Auseinandersetzung, Commentar* Hallâs. 2,245. Maitrâjup. 6,10. Harîv. 14407. Râga-Tar. 4,685. Bulg. P. 7,9,46. 13,8. 11,11,1. Pañkân. 1,2,12. Kusum. 53,8. 6. Verz. d. Oxf. H. 63,a, No. 111. 243,a, No. 601. °कृत् 142,b,27. भव्याख्याव्याकृदाचार्य: AK. 2,7,7. टीका निरसर° H. 256. °श्लोक = कारिका Trik. 3,3,14. — Vgl. वैयाख्य.

व्याख्यातर् (von ख्या mit व्या) nom. ag. *Erklärer* MBh. 5,1676. Kathâs. 8,33. Râga-Tar. 5,39. Pañkân. 3,14,75. Verz. d. Oxf. H. 177,a, 12. Kull. zu M. 1,30. घमरव्याख्यातार: Sidd. K. 250,b,3. f. व्याख्यात्री Sidd. K. zu P. 4,1,49.

व्याख्यातव्य (wie eben) adj. *zu erklären* Nir. 1,1. P. 4,3,66. MBh. 12,12635.

व्याख्यान (wie eben) 1) adj. (f. ई) *a) erklärend, erläuternd:* सुखं व्याख्यान: सेयो ग्रन्थ: P. 4,3,66, Schol. — *b) bezeichnend:* पाटलपुत्रस्य व्याख्यानी कोशला ebend. — 2) n. *a) Erzählung* Çat. Br. 3,6,3,7. — *b) das Hersagen, Recitation* Çat. Br. 4,6,9,18. Kâty. Çr. 12,4,17. Schol. zu Pañkân. Br. 4,9,12. — *c) Erklärung, Auseinandersetzung* Çat. Br. 3,2,3,27. 33. 7,2,4,28. 14,5,4,10. 6,20,6. Âçv. Çr. 3,13,34. Maitrâjup. 6,32. P. 4,3,66. MBh. 12,2452. 12635. Harîv. 9492. Weber, Ġjot. 109. Râmây. Up. 300. Pañkân. 1,2,30. Çâṅk. zu Bpn. Âr. Up. S. 269. Sin. D. 18,14. Verz. d. Oxf. H. 20,b,41. Kuṭ. 53,1. Mallin. zu Kumâras. 3, 14. Comm. zu Taitt. Prât. 9,3. 21,1. 23,17. zu P. 3,1,30. am Ende eines comp. oxytonirt P. 6,2,151. — Vgl. पाद्°, वास्तु°.

व्याख्यानय् (von व्याख्यान), व्याख्यानयिता MBh. 12,2452 schlechte Lesart für घाख्यानयिता der ed. Calc.

व्याख्यानशाला f. *Lehrstube* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 507, Cl. 28.

व्याख्यापरिमल m. Titel eines *Commentars* Verz. d. Oxf. H. 243,a,

No. 601.

व्याख्याप्रदीप m. desgl. Colebr. Misc. Ess. II, 55.

व्याख्यामृत n. desgl. ebend.

व्याख्यायुक्ति f. desgl. Wassiljew 296. Tibar. 123. 318.

व्याख्यासार desgl. Colebr. Misc. Ess. II, 45.

व्याख्यासुधा f. desgl. ebend. 55. Verz. d. B. H. No. 792. Verz. d. Oxf. H. 182,b, No. 415. fg.

व्याख्यास्वर m. *Redeton (mittlerer Ton* Comm.) Âçv. Çr. 8,13,6.

व्याख्येय (von व्या mit व्या) adj. *zu erklären* Comm. zu Kap. 1,81.

व्याघात (von हन् mit व्या) m. 1) *Schlag, Hieb, Streich, Schuss, ictus;* = घात H. an. 3,394. fg. = प्रहार Med. t. 153 (zu lesen °प्रहारयोः). तेन व्याघातमत्त्राणां क्रियमाणामवेद्य MBh. 1,569. शर° neben शरमोक्ष R. 6,79,34. — 2) *Erschütterung, Aufregung, Beunruhigung:* यज्ञ तो नाशयिष्यामि देवव्याघातकारिणम् (die neuere Ausg. व्यापार, welches Nilak. durch स्वास्थ्यप्रच्युति erklärt) Harîv. 2732. ऋषीणामपि दिव्यानां मनो व्याघातकारणम् (अघनम्) MBh. 3,1826. — 3) *Verhinderung; Hinderniss* H. an. Med. यभिषेकस्य R. Gorr. 1,3,6. 4,31. कार्यस्य Varâh. Bhp. S. 95,36. °कर्तृ Mârk. P. 132,29. घालस्यम् u. s. w. sind षड्व्याघाता मकृत्यस्य Spr. (II) 1029. — 4) (logischer) *Widerspruch* Çaṃk. zu Bhp. Âr. Up. S. 147. zu Kâṭh. Up. S. 15. Z. d. d. m. G. 7, 300, N. 2. Sarvadarçanas. 3, 7. Kuṭṭ. 28, 11. 39, 2. *eine best. rhetorische Figur, in welcher einer Ursache widersprechende Wirkungen zugeschrieben werden,* Kâvyâd. 184,6. fgg. (349,8. fgg.). Sâh. D. 726. Kuval. 110,b. Prâtâpar. 101,b, 8. Beispiel Spr. (II) 2926. — 5) *ein best. astron. Joga* (विष्कम्भादि) H. an. Med. As. Res. 3, 302 (nach Hamilton). Saṃhit. K. 2,a. Gôtishatattva und Kosmîpradîpa im ÇKDa.

व्याघारण (vom caus. von 1. घृ mit व्या) n. *das Umhersprengen* Kâtj. Çr. 8,5,2. 8,21. 17,6,3. Pân. Gaṇ. 3,3.

व्याघ्र ohne Avagraha VS. Prât. 5,87. 1) m. *Tiger* (in RV. nicht genannt, im AV. häufig neben dem Löwen) AK. 2,5,1. 3,4,4,11. Trik. 2,5,4. H. 1285. an. 2,456. Med. r. 85. Halâj. 2,71. 78. VS. 14, 9. 19, 10. AV. 4,3,1. 36,6. 8,38,1. 110,3. 140,1. 12,1,49. 2,43. 19,46,5. द्वीपिन् 49,4. यथा व्याघ्रं सुप्तं बोधयति (vgl. *den schlafenden Löwen wecken*) TS. 5,4,40,5. 6,2,8,3. Çat. Br. 12,7,4,3. Kâṭh. Up. 6,9,3. M. 11,112. 12,43. 67. MBh. 1,5868. fgg. 3,2402. 15718. 12,4273. fgg. R. 3,33,21. Râgn. 9,63. Varâh. Bhp. S. 48,76. 51,19. 68,17. 86,28. Weber, Rämatâp. 221. Bâlar. P. 3,10,22. 4,6,20. Hit. 113,10. fg. Die Urmutter der *Tiger* ist शार्दूली R. 3, 30, 26. ein königliches Thier AV. 4,8,4. 7. उत्तमो ऽसि) व्याघ्रः सर्पदामिव 8,5,11. fg. Daher als Bild edler Männlichkeit Nir. 3,18. Çiç. 2,17. am Ende eines comp. P. 2,1,56. AK. 2,2,3. H. 1440. H. an. Med. नर° MBh. 1,5909. 6038. 3,2179. 2414. 2625. R. 3,49, 20. पुरुष° MBh. 3,2349. 2730. 3001. 15718. R. 2,32,27. मनुस्म° 104,18. — *b) Pongamia glabra Vent.* und *rothblühender Ricinus* (रक्तैरण्ड) H. an. Med. (statt कारण्ड ist in Med. mit ÇKDa. कारञ्ज zu lesen). — *c)* N. pr. verschiedener Männer: Verfasser eines Dharmaçâstra Verz. d. Oxf. H. 270,b,47. 279,b,9. 356,a,30. ein Fürst Tîrân. 3. — Rîâ-Tân. 8,1304. fgg. — 2) f. व्याघ्री *a) Tigerin:* यथा व्याघ्री क्रोत्पुत्रान्दंष्ट्राभिर्न च पीडयेत् Çiksâ 20 in Ind. St. 4,268. Spr. (II) 2370. व्याघ्रीव तिष्ठति जरा (I) 2917. R. Gorr. 2,9,34. 3,53,46. 62,27. मृगाः परिभवो व्याघ्यामित्यवेहि त्वया कृतम् Râgn. 12,87. P. 8,4,48, Schol. ein Gâtaka Buddha's Vaipâ beim Schol. zu H. 233. Gîvakacintâ 3. — *b) Solanum Jacquini* AK. 2,4,8,12. H. 1157. H. an. Med. Halâj. 2,464. — *c)* N. pr. einer buddh. Göttin Kilakârikâ 5,114. — Das Wort wird auf घ्रा mit व्या (das sonst nicht vorkommt) zurückgeführt Nir. 3,18. P. 3,1,137, Schol. Wir würden uns eher für eine Herleitung von 1. घृ mit व्या (*der Gesprenkelte*) entscheiden. Vgl. निर्व्याघ्र, पुरुष°, पुष्कर°, वैयाघ्र und वैयाघ्र्य.

व्याघ्रक m. Hypokoristikon von व्याघ्रिन P. 5,3,82, Schol.

व्याघ्रकेतु m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

व्याघ्रग्रीव (व्याघ्र + ग्रीवा) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,17.

व्याघ्रचर्मन् n. *Tigerfell* Âçv. Bâ. 8,2. Kâtj. Çr. 15,5,23. 7,1. Pâraṃ. 157,25.

व्याघ्रतम्भन adj. *den Tiger vernichtend* AV. 4,3,7.

व्याघ्रतल m. *rothblühender Ricinus* Râgân. im ÇKDa. unter व्याघ्रदल.

व्याघ्रता f. nom. abstr. von व्याघ्र *Tiger* MBh. 12, 4274. fg. Spr. (II) 3794. Hit. 113,12.

व्याघ्रत्व n. dass. MBh. 12,4298.

व्याघ्रदंष्ट्र (व्याघ्र + दंष्ट्रा) m. *Tribulus lanuginosus Lin.* Ausw. 29.

व्याघ्रदत्त m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,650. 652. 655.

व्याघ्रदल m. *Ricinus communis* Çabdam. im ÇKDa. — Vgl. व्याघ्रतल.

व्याघ्रनख 1) n. *eine von Fingernägeln herrührende Wunde von bestimmter Form* Med. kh. 16. fg. — 2) *ein best. wohlriechender Stoff,* vielleicht ὄνυξ des Dioscor., *unguis odoratus;* n. AK. 2,4,4,17. Med. masc. H. an. 4,45. unbestimmt ob m. oder n. Suçr. 1,139,8. 9. Varâh. Bhp. S. 77, 6. 13. nach Râgân. im ÇKDa. = व्यालनख. — 3) *Wurzel,* n. Med. m. H. an. *eine best. Wurzel* (in Med. kann घस्र auch mit कन्द verbunden werden) ÇKDa. und Wilson. — 4) m. *Tithymalus antiquorum Moench.* Râgân. im ÇKDa.

व्याघ्रनखक n. = व्याघ्रनख 1) Çabdam. im ÇKDa

व्याघ्रनायक m. *Schakal* Râgân. im ÇKDa.

व्याघ्रपद् (nom. °पात्) Vop. 6,31. m. 1) *Flacourtia sapida Roxb.* AK. 2,4,2,18. — 2) N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1,105. mit dem patron. Vâsishṭha, Liedverfasser von RV. 2,97,16-18. — Comm. zu Kâtj. Çr. 4,1,12. Verz. d. Oxf. H. 18,b,18. 19,a,35. Grammatiker 176,a,3. Verfasser eines Dharmaçâstra 270,b,47. plur. Kâr. zu P. 7,1,94. — Vgl. वैयाघ्रपद्य und व्याघ्रपाद्.

व्याघ्रपद् m. *eine best. Pflanze* Varâh. Bhp. S. 54,38.

व्याघ्रपद्य m. Kâṭh. Up. 5,16,1 wohl nur fehlerhaft für वैयाघ्रपद्य.

व्याघ्रपराक्रम m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 101,48.

व्याघ्रपाद् m. 1) *Flacourtia sapida Roxb.* Râgân. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,701. Grammatiker Colebr. Misc. Ess. II, 49. Verfasser eines Dharmaçâstra Verz. d. Oxf. H. 270, b, 47. 279, b, 3. 356, a, 30. Verz. d. B. H. No. 1166. 1403. — Vgl. व्याघ्रपद्.

व्याघ्रपुच्छ m. *Ricinus communis* AK. 2,4,2,31.

व्याघ्रपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 83,b, No. 141.

व्याघ्रपुष्पि m. N. pr. eines Mannes Pravaraman. in Verz. d. B. H. 59,2.

व्याघ्रप्रतीक adj. *das Ansehen eines Tigers habend* AV. 4,23,7.

व्याघ्रबल m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 120,72.

व्याघ्रभट m. N. pr. eines *Kriegers* Kathâs. 10,21. eines Asura 47,20.

व्याघ्रभूति m. N. pr. eines Grammatikers Kâr. 10 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Colebr. Misc. Ess. II, 49. Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,26.

व्याघ्रमुख m. 1) N. pr. eines Fürsten Brahmagupta bei Weber, Ghoṣ. 9. — 2) pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,6. — 3) N. pr. eines Berges Mârk. P. 58,11.

व्याघ्रराज m. N. pr. eines *Fürsten* LIA. 2,955. Târân. 266.

व्याघ्ररूपा (व्याघ्र + रूप) f. *eine Art Momordica* Dhanv. in Nigh. Pr.

व्याघ्रलोमन् n. *Tigerhaar* VS. 19,92. Çat. Br. 12,7,2,8. 9,1,6. Kâtj. Çr. 15,9,20.

व्याघ्रवक्त्र 1) adj. *ein Tigergesicht habend.* — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Hariv. 14852. — 3) f. आ N. einer buddh. Göttin Kâlakarṇa 3,134. 4,64. 5,13; vgl. व्याघ्रास्या.

व्याघ्रसन् m. *ein tigerähnlicher Hund* Vop. 6,42.

व्याघ्रसेन (व्याघ्र + सेना) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 69,19. 100, 56. 101,3.

व्याघ्रात adj. *tigeräugig;* m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2561. eines Asura Hariv. 12868. 12932.

व्याघ्रात्मिन (व्याघ्र + घ°) m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,82, Schol.

व्याघ्राट (व्याघ्र + अट) m. *Feldlerche* AK. 2,5,15. Trik. 3,3,35. H. 1340. Halâj. 2,93.

व्याघ्राण (von आ mit व्या) n. *das Beriechen* (zur Etymologie von व्याघ्र) Nir. 3,18.

व्याघ्राद्नी (व्याघ्र + अद्न) f. *Ipomoea Turpethum R. Br.* ÇKDa. angeblich nach AK. व्याघ्रादिनी Ausw. 37.

व्याघ्रास्य (व्याघ्र + आस्य) 1) adj. *ein Tigergesicht habend.* — 2) m. *Katze* Çabdar. im ÇKDa. — 3) f. आ N. einer buddh. Göttin Kâlakarṇa 4,39; vgl. व्याघ्रवक्त्रा.

व्याघ्रिणी (von व्याघ्र) f. bei den Buddhisten N. pr. eines Wesens im Gefolge der Mütter Wilson, Sel. Works 2,22. 33. — Vgl. सिंहिनी.

व्याघ्रेश्वर (व्याघ्र + ई°) und °लिङ्ग n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 44,*a*,5 v. u. 71,*a*,45.

व्याघ्र्य (von व्याघ्र) adj. *tigrinus* AV. 12,2,4.

व्याङ्गि m. patron. von व्यङ्ग gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3,7. Vop. 7,1.4.

व्याचिख्यासु (vom desid. von ख्या mit वि) adj. *zu erläutern im Begriff stehend*, mit acc. Müller, SL. 170. mit gen. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 193.

व्याज (von व्यज् mit वि) m. (hier und da auch n.) *Betrug, Betrügerei, Hinterlist; Täuschung, falscher Schein, Vorwand;* = कपट AK. 1,1,2, 20. H. 378. Halâj. 4,24. = शाठ्य Trik. 3,3,88. H. an. 2,77. Med. ś. 16. = अपदेश AK. 1,1,2,33. Trik. H. an. Med. किंचिद्व्याजं कृत्वा तेषां युद्धं निवारयेत् Bhâr. Nâjaç. 18,76. दक्षकुक्षवीर्यरक्षितः स कोत्पनेकान्व्याजान् हरिव पुनाप्यबलामवाप्य Varâh. Bṛh. S. 76,12. व्याजं पश्यावतीक्षेतोः क्रियमाणं कदाचन। दोषायास्माकमेव स्यात् Kathâs. 15,29. चकार वत्सराजस्य व्याजान्यागच्छतः पथि 19,80. वेश्याव्याजोपशिक्षार्थम् 57,88. उक्तद्विजव्याजी ताम् 123,305. °पूर्व *den blossen Anschein von Etwas habend* Râgat. 11,66. व्याजेन वर्तृ Pañkat. 147,15. व्याजेन चरते धर्ममर्थं व्याजेन रोचते। व्याजेन सिध्यमानेषु धनेषु MBh. 3,13903. R. 5,28,9. व्याजेनागतमावृणोति कृसितम् Spr. (II) 1043. दानं व्याजेन भूपतेः Daçar. 4, 57. Râga-Tar. 5,405. व्याजाद्धर्मं करोति च MBh. 3,13902. व्याजात्प्रतिरुद्धः 4,299. युद्धं व्याजाद्विवारयेत् Daçar. 3,68. व्याजेर्धर्मं चरिष्यति MBh. 3,13922. am Anfange eines comp. = व्याजेन, z. B.: °कृत *durch Hinterlist* R. 4,20,9. व्याजार्धसंदर्शितमेखल *um zu täuschen* Ragh. 13,42. °सुप्त *so v. a. sich schlafend stellend* Kathâs. 46,174. °निद्रिता Râga-Tar. 3,304. °सप्रणयैर्वाक्यैः *dem Scheine nach* Kathâs. 29,82. °व्यवहार *ein hinterlistiges Benehmen* Dhûrtas. 76,9. व्याजसुप्तं विरुरुव *ein simulirter Schlaf* Kathâs. 45,190. 70,33. °खेट 49,97. व्याजाभिप्राय 39,196. °विधु 12,165. °गुरु 19,76. °सखी 71,162. °कृमावलो 168. 180. °तपोधन Râga-Tar. 3,278. व्याजारूप Buâc. P. 2,7,35. 8,21,9. Am Ende eines comp. 1) hinter dem, *was die Täuschung bereitet:* (तस्मै वह्निः) प्रदत्तिणार्चिर्व्याजेन रुरुतेनेव तपं ददौ Ragh. 4,25. (उदन्वान्ददौ) मणिव्याजमकीपालव्याजेन रघवे करम् 58. 10,76. Spr. (II) 2488. Pañkat. 75,24. मद्व्याजात् Kathâs. 19,97. दत्तो नृकस्तस्ते रक्ताब्जव्याजतो Jaya 108, 26. — 2) hinter dem, *was simulirt wird, blosser Schein, blosser Vorwand ist:* पुत्रव्याजमुपागतो रिपुः Spr. 1789. निद्राव्याजमुपागतस्य 3010. Mâlav. 26. दुर्गव्याजेन बन्धनम् Spr. (II) 411. 2710. 3173. वणिग्व्याजात् Kathâs. 13,180. ज्ञानव्याजात् 4,60. मान्य° 24,167. 32,154. 63, 102. 71,95. प्रणयकोपव्याजात् 37,153. Râga-Tar. 1,269. 2,130. 5,269. 8,2124. Daçar. 70,6. Prab. 1,18. Sîh. D. 60,5. Mârk. P. 81,8. 116,32. Buâc. P. 4,24,6. ग्रामान्तरव्याजं कृत्वा *sich stellend, als wenn er in ein anderes Dorf ginge,* Pañkat. 187,5. नेतद्देहित्सि पन्मठाभ्यव्याजेन नरकोपार्जनं क्रियते 118,3. तद्व्याजात् *so v. a. als wenn es diesem gälte* L.A. (III) 89,18. Weber, Râmây. Up. 297. — Am Ende eines adj. comp. *nur dem Schein von — habend, in der Gestalt von — erscheinend:* नृप° Buâc. P. 1,17,27. सूकरव्याजं सन्तम् 3,13,21. स्मरव्याजमरुं 6,1,62. सव्याज *am Anfange eines comp.* 1) = सव्याजेन *ohne Betrug, ohne angewandte Künste:* °मनोहर Çiç. 17. °सुन्दरी Mâlav. 34. — 2) adj. *nicht simulirt, natürlich:* सव्याजैश्चार्यचर्य Râga-Tar. 3,208. °धैर्य 8,2124. स्वव्याजेन कर्मणा *ganz ehrlich* MBh. 13,2079. — सव्याजम् adv. *verstellter Weise* Çiç. 18,21. Vikr. 12,18. — Vgl. निर्व्याज.

व्याजनिद्रा f. *ironischer Tadel* Kuval. 90,*a*.

व्याजभानुत्रिन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 199,*a*, No. 470.

व्याजमय (von व्याज) adj. (f. ई) *simulirt, erheuchelt:* तपसू Kathâs. 24,104.

व्याजयू (wie eben), °यति *Jmd hintergehen, täuschen* Kathâs. 50,188.

व्याजस्तुति f. *ironisches Lob* Sîh. D. 707. Kuval. 88,*a*. Pratâpar. 96,*b*,2.

व्याजिह्म (2. वि - 2. हा + जि°) adj. *zur Seite gebogen, schief:* व्याजिह्माङ्गः कुरङ्गो गीतमाकर्णयन्ति Nigân. 7,11. धूमपटलव्याजिह्मरत्नत्विषः 63,16.

व्याजीकरण (von व्याज + 1. कृ) n. *das Hintergehen, Täuschen* Daśak. 28,12.

व्याजोक्ति (व्याज + उ°) f. *heuchlerische Worte, Vertuschung,* Bez. einer best. rhetorischen Figur: व्याजोक्तिर्गोपनं व्याजाद्विद्वित्स्यापि वस्तुनः Sîh. D. 749. Kuval. 146,*a* (174,*a*). Pratâpar. 88,*a*,2.

व्याड mit einem loc. componirt gaṇa शैषिकादि zu P. 2,1,40. m. 1) *Raubthier* AK. 2,4,48,45. Trik. 2,5,2. H. an. 2,127. Med. ś. 25. सरण्यवासिन् R. ed. Gorr. 2,28,31. Mârk. P. 15,18 (व्याल MBh. 13,3473).

— 2) *Schlange* AK. H. an. Med. — 3) = वञ्चक (aber *Schakal* als *Betrüger*) Rîâm. zu AK. nach ÇKDa. — 4) Beim. Indra's Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. गेहे° und व्याल.

व्याडायुध (व्याड + घा°) n. *ein best. wohlriechender Stoff*, = व्यालायुध, व्याघनख AK. 2,4,4,17.

व्याडि und व्याढि (von व्याड) m. patron. gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3, 7. क्रौड्यादि zu 4,1,80. 6,2,14, Schol. Vop. 7,4. N. pr. verschiedener Männer: ein Grammatiker ṚV. Prât. 3,14. 17. 6,12. 13,18. संग्रहे °कृतो लक्षलोकसंख्यो ग्रन्थ इति प्रसिद्धिः Nîlaṇ. in Manâm. S. 43. Kathâs. 2,50. fgg. 4,18. 23. fgg. ein Lexicograph Taik. 2,7,24. H. 852. Med. Anh. 4. Hîn. 273. Verz. d. Oxf. H. 160,*a*,39. 182,*b*,1 v. u. 188,*a*, 35. 189,*b*,13. Schol. zu H. 103. fg. 183. 201. 210. 233. fgg. 512. 616. 948. ein Mediciner Verz. d. B. H. No. 940. 1006 (व्यालि). Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761. — 247,*b*,3. व्यालि Prâvarâmn. in Verz. d. B. H. 59, 1. Vgl. Goth. Min. 209. fgg. und Weber in Ind. St. 5,41. 63. 95. 127. fgg.

व्याडिशाला gaṇa क्रौड्यादि zu P. 6,2,86.

व्याडीय adj. von व्याडि gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,105. m. pl. *die Anhänger* Vjâḍi's Ind. St. 5,134.

व्याडी f. zu व्याडि gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80.

व्यात्त n. *der geöffnete Rachen* s. u. 1. दा mit व्या. Hierzu: यन्मुखं वैश्वानरो व्यात्तम् TS. 7,5,25,1.

व्यात्पुती f. *Spiel im Wasser* Hîn. 116. — Vgl. व्याप्-पुती.

व्यादान (von 1. दा mit व्या) n. *das Aufsperren* (des Mundes, Rachens): मुख° Hit. 85,8.

व्यादिश् f. विदिश्, व्यादिश् und दिश् unter den 1000 Namen Vishṇu's MBh. 13,7049. vielleicht *der zwischen zwei* विदिश् *gelegene Punkt auf der Windrose*. ÇKDa. nimmt ein m. व्यादिश an.

व्यादीर्घ (2. वि - घा + दीर्घ) adj. *lang gestreckt*: भोगिन्, चक्षुस् Spr. (II) 935, v. l. °दीर्घास्य Vaṇîn. Bḥn. S. 69,27. °दीर्घास्यशिरोधर Bḥn. 17(15),9.

व्यादीर्ण (partic. von 1. दॄ mit व्या) adj. *aufgerissen, aufgesperrt*: व्यादीर्णास्य m. *Löwe (einen aufgesperrten Rachen habend)* H. ç. 183.

व्यादेश (von 1. दिश् mit व्या) m. *Anweisung, Vorschrift, Befehl*: व्यादेशः सर्वयोधानामयमेव क्रियतामिति R. 5,81,54. 83,17.

व्याध (von व्यध्) m. P. 3,1,141. Vop. 26,27. 1) *Jäger* AK. 2,10,21. H. 927. an. 2,248. Med. dh. 15. Hîn. 27. Hall. 2,441. M. 8,260. MBh. 3,2390. 13696. 13703. fgg. R. 1,2,32. 2,36,5. Suçr. 1,7,13. 136,3. Spr. (II) 986. 2573. Kathâs. 51,101. 103. Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,23. Çuk. in I.A. (III) 34,17. 35,9. Pañkat. 147,11. Hit. 9,6. 7. 34,18. Çiva MBh. 7, 2378. als Mischlingskaste *der Sohn eines* Kshatrija *und einer Frau aus der Mischlingskaste* Sarvasvin Brahmavaiv. P. im ÇKDa.; vgl. Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,14. — 2) *ein roher Mensch*, = दुष्ट H. an. Med. Bâlo. P. 3,14,35 (= निर्दय Comm.). — Vgl. धर्म°, मृग°.

व्याधक m. = व्याध 1) Kâuç. 103.

व्याधाम m. Indra's *Donnerkeil* H. 181. Hall. 1,86.

व्याधाय् (von व्याध), °यते *einen Jäger darstellen* Spr. (II) 1124.

व्याधि (von 1. घा mit व्या) m. 1) *Krankheit* AK. 2,6,2,2. H. 312. 462. Med. dh. 15. Hall. 2,445. मनस्तापाग्न्यभिघाज्वरादिर्व्याधिरिष्यते Prasiddh. 54,*a*,7. व्याधिर्ज्वरादिर्वातादौ: Sin. D. 192. Kâuç. 26. Smârt. Bh. 5,4. Çâṅkh. Çr. 3,4,8. Kâṭhân. Up. 4,10,2. Bhâg. 13,8. Suçr. 1,1,9. 3,5. 6. 80,1. fgg. 2,442,21. Spr. (II) 1205. 2358. (I) 3045. Bâlo. P. 4,29,23. व्याधेर्लक्षणम् Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,6. व्याधीनां विविधानां निदानम् 281,*a*, No. 659. न च तृष्णापरो व्याधिः Spr. (II) 2011. मन्त्रौषधपरिज्ञानाद्व्याधेः शान्तिः क्वचिद्भवेत् (I) 3041. व्याधिभिश्च न पीड्यते M. 8,50. °पीडित 4,67. 8,22. Spr. (II) 357. गुरुव्याधिपीडित 3720. व्याधिभिश्चोपपीडनम् M. 6,63. 12,80. व्याध्यार्त 8,64. व्याधिभिर्मध्यमानः Spr. 3044. °भय Weber, Kṛshṇaj. 307. Vaṇîn. Bḥn. S. 3,17. 6,4. 29,12. °कर 5,56. घपक्ष्येः सरः संभृते व्याधिरत्रमे यथा R. 2,64,57. केनात्यगाद्व्याधिना 72, 29. व्याधिर्न तं कश्चिच्छरीरं प्रतिबाधते 87,9. तं व्याधिः स्पृशति Spr. 5183. °सङ्कुल (याम) M. 4,60. व्याधयः प्रकुप्यन्ति Vaṇîn. Bḥn. S. 9,33. °गत Smârt. Bh. 4,6. दीर्घ° *an einer langwierigen Krankheit leidend* Âçv. Çr. 10,1,6. Kâṭj. Çr. 22,2,17. कपाल° Suçr. 1,139,16. उदर° Riâ. Tan. 6,90. तुद्व्याधेः फलमूलमस्ति शमनम् Spr. 3124. घाधि° Milârîm. 69,5. कामव्याधिरसाध्यो मामप्याक्रामति MBh. 4,395. मार° Naiṣ. 3,35. द्विविधो जायते व्याधिः शारीरो मानसस्तथा MBh. 12,439. fg. 14,214. fg. स्त्री° *eine Plage von Weib* Vaṇîn. Bḥn. S. 78,13. Personificirt ist die *Krankheit* ein Kind des Todes VP. 56. Mârk. P. 50,31. — 2) *Costus speciosus* oder *arabicus* (कुष्ठ; vgl. व्याघ्र) AK. 2,4,4,14. Med. — Vgl. निर्व्याध, पवन°, मरुत्°, वात°.

व्याधिघातं m. (*Krankheit verscheuchend*) *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* Çiṅk. 1,2, Schol. AK. 2,4,3,4. Suçr. 2,66,11.

व्याधिघ्न m. dass. Dhanv. in Nigh. Pa.

व्याधितं (von व्याधि) adj. (f. घा) *mit einer Krankheit behaftet, krank, kränklich* gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. AK. 2,6,2,9. H. 459. Âçv. Gṛhj. 1,23,20. 3,6,3. 7,1. Kâuç. 7. 27. Kâṭj. Çr. 15,1,28. M. 4,157. 7,149. 8,395. 9,72. 80. 167. Jâtâ. 1,73. 138. Suçr. 1,33,16. 98,3. 123,20. Kâm. Nîtis. 13,67. 75. Spr. (II) 1136. 2431. 2714. 3734. (I) 2918. 3067. 4999. Vaṇîn. Bḥn. 17(15),3. Kathâs. 29,157. 40,26. 66,31. 36. Mârk. P. 16, 15. Kull. zu M. 3,3.

1. व्याधिन् (von व्यध्) adj. *durchbohrend* VS. 16,18.

2. व्याधिन् (von व्याध) adj. *mit Jägern versehen*: वन Naiṣ. 3,35.

व्याधिरिपु m. (*Feind d. i. Verscheucher von Krankheit*) *Webera corymbosa* Roxb. Fl. ind. ed. Carey.

व्याधिल s. गो°.

व्याधिसंघविमर्दन Titel eines über *Heilung der Krankheiten* handelnden Werkes des Sahadeva Verz. d. Oxf. H. 22,*b*,3. 6.

व्याधिस्थान n. *der Standort der Krankheiten, Bez. des Körpers* H. ç. 117.

व्याधिकृत्तर् m. (*Vertreiber der Krankheiten*) *Yamswurzel* Riâm. im ÇKDa.

व्याधिकर् adj. *Krankheit vertreibend* Suçr. 1,139,16.

व्याधी (von धी = ध्या mit व्या) f. *Sorge* AV. 7,114,2. — Vgl. 2. घाधि.

व्याध्य als Beiw. Çiva's MBh. 7,2377. ed. Bomb. und Nîlak. व्याध wie im folgenden Çloka.

व्यानं (von 2. अन् mit वि) m. AV. Prât. 4,39 (mit Avagraha). *Athem, Hauch*; bei der gewöhnlichen Eintheilung in प्राण, उदान, व्यान und weiterhin अपान, समान, soll es *den im ganzen Körper sich ver-*

breitenden Lebenshauch bezeichnen. AK. 1,1,4,39. H. 1109. ṚV. 10,85, 12. AV. 5,4,7. 6,41,2. 10,2,12. 11,5,24. 18,2,46. व्यानोदानौ 11,8,4. 26. VS. 1,20. 13,19. 17,71. Ait. Br. 2,21. प्राणस्त्रेधा विधृतः प्राणो ऽपानो व्यान इति 29.3,8. उदानव्यानौ TS. 1,6,2,3. 7,2,2. 5,5,3. Çat. Br. 1,1,3,3. 3,4,3,4. समानव्यानौ Kâṭj. Çr. 3,4,20. Kauç. 3.72. Kâṭhâ. Up. 1,3,3. Praçnop. 3,5. 8. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,37. MBh. 3,13967. 12,6844. 14,612. fgg. Suçr. 1,17,2. 248,1. 250,7. vermittelt die Circulation der Säfte, setzt Schweiss und Blut in Bewegung und seine heftige Erregung erzeugt Krankheiten, die sich über den ganzen Leib verbreiten, 16. Wise 44. Verz. d. Oxf. H. 225,*b*,3. Vedântas. (Allah.) No. 54. sieben AV. 15,15,2. 17,1. fgg. °भृत् Çat. Br. 3,1,2,6. °दृक् TS. 7,5,19,1. Personificirt ein Sohn Udâna's und Vater Apâna's MBh. 12,12397.

व्यानर्धा adj. *Athem gebend* VS. 17,15.

व्यानर्शे (von 3. नश् mit व्या) adj. *durchdringend* ṚV. 3,49,2. Soma 8,103,6.

व्यापक (von आप् mit वि) adj. (f. व्यापिका) *durchdringend, sich weithin erstreckend, allgemein verbreitet;* in der Logik *stets enthalten in, inhärirend* (Feuer z. B. ist व्यापक, Rauch व्याप्य) Suçr. 1,363,4. पुरुष Kaṭhop. 6,8. MBh. 12,7400. सर्वत्र व्यापिका Brahmavaiv. P. im ÇKDr. तिर्यगूर्धमधस्ताच्च व्यापको भक्ष्मा कृरः Kumâras. 6,71. Mârk. P. 46,16. Bhâg. P. 7,6,33. 7,19. Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,35. 37. Tarkas. 45. 52. Bhâshâp. 137. Schol. zu Kap. 1,101. 129. Kusum. 19,1. Schol. zu P. 2, 1,57. मक्षेण व्यापकं (sc. न्यासं) कृत्वा so v. a. *über den ganzen Körper auftragen* Pâṇâr. 3,15,13. fg. Davon nom. abstr. °ता f. Bhâg. P. 4,28, 49. Tarkas. 46. °त्व n. 45. Çârîr. 87. Bhâshâp. 9. Z. d. d. m. G. 6,26, N. 1.

व्यापत्ति (von 1. पद् mit व्या) f. 1) *Unfall, Unglücksfall, Widerwärtigkeit, Calamität, Ungemach; das Verderben, in-Unordnung-Gerathen* Mṛicch. 98,3. Spr. 2004. Vaṛâh. Bṛh. 8,15. पितृ° so v. a. *Tod* Ragh. 12,56. नाति व्यापत्तिमर्हति *dem Auge darf Nichts geschehen* Suçr. 2,335,3. क्रविषो व्यापत्तौ *wenn dem Havis Etwas geschieht, wodurch es unbrauchbar wird,* Âçv. Çr. 3,10,19. Kâṭj. Çr. 1,7,28. Pâr. Gṛhj. 1,10. कर्मणाम् *Misslingen* MBh. 12,9374. यत्न° *Entstellung, Unregelmässigkeit* Nir. 2, 1. तकारस्य चकारव्यापत्त्या so v. a. *dadurch, dass* त *durch* च *verschwindet, diesem Platz macht* ṚV. Prât. 4,12, Comm. — 2) *die Verwandlung des* Visarga *in den* Ûshman ṚV. Prât. 5,1. घ° 4,12.

व्यापद् (1. पद् mit व्या) f. *Unfall, Unglücksfall, Widerwärtigkeit, Ungemach, Calamität; das Verderben, in-Unordnung-Gerathen* Spr. (II) 943 (pl.). (I) 2877. 4869 (pl.). Vaṛâh. Bṛh. S. 89,1. 90,12. Bṛh. 8,12. Râja-Tar. 2,17. 4,533. दुस्तर° 8,2709. महाव्यापत्तिमग्न 1852. व्यापदत AK. 3,4,18,131. मुक्त° adj. Hit. 44,6. कर्मणः *Misslingen* MBh. 7,4271. सर्व° Ait. Br. 5,33. Suçr. 1,21,10. 51,5. 9. 2,354,12. बल° 409,15. *Fehler z. B. beim Klystier* 199,18. 200,18. व्यापत्सिद्धि, वस्तिव्यापत्सिद्धि Verz. d. B. H. No. 933. योनि° Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,16. त्रिजगतीसर्गस्थितिव्यापदामीशः *Untergang* Spr. (II) 1889. क्षेत्रनाशः किमपि विरूढव्यापदः *durch Trennung schwindend* Mṛicch. 111. *eine unheilvolle That:* सद्भूकृता व्यापदिदानीमपि फलिता मम Kathâs. 29,109. — Vgl. गर्भ°.

व्यापन (von आप् mit वि) n. *das Durchdringen, Erfüllen* H. an. 2,194. Med. t. 57. Sin. D. 293,16. Verz. d. Oxf. H. 200,*a*, No. 475.

व्यापनीय (wie eben) adj. *zu durchdringen, zu erfüllen* Nir. 3,13.

व्यापन्न partic. s. u. 1. पद् mit व्या. = मृत *todt* H. 374.

व्यापाद् (von 1. पद् mit व्या) m. *Untergang, Tod* Râja-Tar. 8,2111. *böse Absicht* AK. 1,1,6,13. H. 1372.

व्यापादक (vom caus. von 1. पद् mit व्या) adj. *zu Grunde richtend, tödtlich:* शस्त्र Râja-Tar. 4, 524.

व्यापादन (wie eben) n. *Verderbniss* (trans.), *Zerstörung, zu-Grunde-Richtung, Tödtung* H. 370. Hall. 2,222. शिरास्नायुसंध्यस्थि° Suçr. 1, 37,4. 5. 62,17. बालामात्यव्यापादनोद्यता Mârk. P. 21,22. आत्मव्यापादनोद्यता 64,12. सर्प° *Tödtung durch* Pâṇâr. 265,16.

व्यापादनीय (wie eben) adj. *zu Grunde zu richten, zu tödten* Pâṇâr. 220,6. Davon nom. abstr. °ता f. 143,25.

व्यापादयितव्य (wie eben) adj. dass. Hit. 110,3.4. 111,19. ed. Jones. 1505.

व्यापार (von 3. पॄ mit व्या) m. 1) *Beschäftigung, Geschäft, Thätigkeit, Function:* व्यापारेण धृतात्मानं निबद्धं समबुध्यत MBh. 5,3349. व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः Spr. (II) 931. व्यापारश्च बले विशाम् 2008. रवेर्व्यापारमादत्ते प्रदीपो न पुनः शनिः 3341. न व्यापारशतेनापि शुकवत्पाठ्यते बकः so v. a. *hundertfache Bemühung* 3572. (I) 2626. विधातुर्व्यापारः फलतु Mâlatîm. 10,12. Vaṛâh. Bṛh. S. 74,2. व्यापारो ऽस्माकमेषः Kathâs. 60,26. Hit. 50,4. निजं भागं व्यापारैरवर्धयत् Kathâs. 61,201. Daçâvat. 95,10. किमनेन व्यापारेणास्माकम् Hit. 49,3. Pañcat. 57,9 (ed. orn. 48,7). 93,9. यदि तवास्माद्व्यापारान्न निवर्तसे 162,8. Sin. D. 10,18. 186. Bhâshâp. 58. 64. fg. 79. Kusum. 14,14. 39,12. Tarkas. 49. Schol. zu Kâṭj. Çr. 130,22. ज्ञानस्य Nîlak. 30. 34. 41. पुरुषभाग्यानामचिन्त्याः खलु व्यापाराः Mṛicch. 157,16. विभावादेः Sin. D. 40. (व्रतम्) व्यापारेषु मदनस्य *Beschäftigung mit* Çiç. 26. प्राकृतेषु च देवेषु व्यापारो ऽस्य मया कृतः so v. a. *ich habe ihm seinen Wirkungskreis bestimmt* Pañcat. 1,14, 30. fg. अव्यापारेषु व्यापारं यो नरः कर्तुमिच्छति *sich zu thun machen* Spr. (II) 707. तत्र व्यापारं कर्तुमर्हति *Hand anlegen, helfen* Kumâras. 6, 33. कापट्यो हि कोरत्येको व्यापारं ब्रह्मरूद्रयोः *besorgt das Geschäft* Kathâs. 72,228. यदि व्यापारं व्रजसि मे शरीरे ऽस्मिन् *sich machen an* Vikr. 58. न देवतासु लोके ऽस्मिन्व्यापारं याति कस्यचित् so v. a. *kümmern sich um Niemanden* MBh. 13,318. तस्यानुमेने व्यापारमात्मनि सायकानाम् so v. a. *er gestattete, dass die Pfeile ihn zur Zielscheibe machten,* Kumâras. 7,93. In comp. *a*) mit einem subj.: प्राणापानव्यापारावकुर्वन् Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 43. मानस° Vedântas. (Allah.) No. 7. कारक°, कारण° Madhus. in Ind. St. 1,23. दृग्व्यापाराः Râja-Tar. 5,366. 6,81. बुद्धि° Nîlak. 47. — *b*) mit einem obj. (*Beschäftigung mit* u. s. w.): गुरु° Spr. (II) 2190. गुरुव्यापारं कुर्वाः करोति Pañcat. 262,7. शकुन्तला° Çiç. 19,1. परदारपरिच्छा° 104,22, v. l. न यास्यामि मर्गव्यापारमात्मना Kumâras. 2,54. विषय° Wenis, Râmây. Up. 343. धर्मव्यापारकारिन् so v. a. *obliegend* MBh. 12,5903. नियम° Spr. (II) 929. विलास° (pl.) 1123. यशोषडुःक्षमान° 1450. 2032. 2304. परोपकार° (I) 1732. Prab. 2,9. 68,14. सुरत° Spr. (II) 1992. Sin. D. 5,2. वाग्व्यापार so v. a. *das Reden, Sprechen, Gerede* Sin. D. 285. Hit. 35,21. — घ° m. *Muse* Hall. 5,65. *eine einem nicht zukommende Beschäftigung* Spr. (II) 707. — *am Ende eines adj. comp.* (f. आ): पयोक्व्यापारा Çiç. 9,5. 33,5. 49,7. भू-

न्य° *unbeschäftigt* Prab. 100, 15. स° *beschäftigt* Mudr. 86. — Hariv. 2732 als v. l. für व्याघात von Nilak. durch स्वास्थ्यप्रच्युति (!) erklärt. — 2) in der Astrol. Bez. *des 10ten Hauses* Varâh. Bṛh. 2, 18. — Vgl. किं°, निर्व्यापार (m. *Mangel an Beschäftigung* Uttarab. 109, 17 = 148, 18 ed. Cow.), मिथ्या°, मुक्त°.

व्यापारक (von व्यापार) am Ende eines adj. comp. *die Function habend:* नियतविषयाभिमानव्यापारको ऽहंकारः स्वीकार्यः Kusum. 14, 4. 5.

व्यापारण (vom caus. von 3. पॄ mit व्या) n. *das Veranlassen zu einer Thätigkeit:* शब्देन als Erklärung von प्रेष P. 3, 2, 104, Schol.

व्यापारवत्ता (von व्यापारवत्) f. *das Haben einer Function:* घलौकिकविभावन° Sâh. D. 25, 10. fg.

व्यापारवत् (von व्यापार) adj. *wirksam* Tarkas. 21.

व्यापारिन् (wie eben) adj. *sich beschäftigend mit:* लात्तालोकादि° Brahmavaiv. P. im ÇKDa.

व्यापित्व (von व्यापिन्) n. *weite Verbreitung, das Weitreichen, Allgemeinheit:* तत्राणाम् Âçv. Çr. 12, 10, 2. शब्दस्य MBh. 12, 9187. Mârk. P. 99, 39. *das-sich-Verbreiten-über:* समस्तव्यस्त° Vedântas. (Allah.) No. 30.

व्यापिन् (von व्याप् mit वि) adj. *sich ausbreitend, sich weithin verbreitend, allgemein verbreitet, überall hindringend* Nir. 5, 13. धर्म यज्ञालवद्यापि Suçr. 2, 335, 6. चात्मन् MBh. 12, 8770. 13, 4120. मत्वाद्भान R. Gorr. 1, 13, 19. Kap. 1, 12. Bhâg. P. 3, 7, 42. 11, 21, 30. Sarvad. K. 248, b, 10. स° Kap. 1, 135. Siddhânj. 10. बहु° Sâh. D. 35, 6. यंसव्यापि ब्रह्मपउलम् *bis zur Schulter reichend* Çiç. 170. देह° *über den Körper verbreitet* Nilak. 122. Bhâsâp. 42. सर्वशरीर° Suçr. 1, 328, 1. वक्षःस्थलव्यापिकृचि (so ed. Calc.) Ragh. 6, 49. पञ्चमात्रा° (वाय्वग्नि) Spr. (II) 85. व्योम° Râja-Tar. 4, 203. विषव्यापिन् Bhâg. P. 3, 10, 7. दिग्व्यापिन् Kir. 5, 18. मुक्तिपद° Mârk. P. 38, 10. ज्ञगद्व्यापिन् Prab. 1, 13. Bhâg. P. 8, 12, 4. Mârk. P. 106, 30. यखिलज्ञगद्व्यापिन् 78, 4. सर्व° Çvetâç. Up. 1, 16. 3, 11. MBh. 2, 330. 12, 4410. 13, 6450. 14, 987. चतुर्दशवर्ष° *vierzehn Jahre umfassend, — während* Sâh. D. 137, 9. — Vgl. काल° (auch AK. 3, 2, 33), विश्व°.

व्यापीत (2. वि - 2. घा + 2. पीत) adj. *ganz gelb* Varâh. Bṛh. S. 72, 4. Bṛh. 2, 5.

व्यापृत s. u. 3. पॄ mit व्या. Hinzuzufügen m. *Beamter* Jâtâ. 1, 227.

व्यापृति (von 3. पॄ mit व्या) f. *Beschäftigung* Tarkas. 3, 3, 55.

व्याप्त s. u. व्याप् mit वि. = कीर्ण u. s. w. Halâj. 4, 17. = व्याप्त und समाक्रान्त Mahân. t. 57. *überallhin verbreitet* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 137. °तम superl. 146.

व्याप्ति (von व्याप् mit वि) f. 1) *das Erreichen, Erlangen, Zustandebringen:* °कर्मन् Naigh. 2, 18. स व्याप्तिमभि लोकं जयेतम् AV. 9, 5, 12. 11, 7, 22. नो त्वावसो व्याप्त्या चनार्यो ऽस्ति Çat. Br. 5, 2, 5, 12. = लाभ Taitt. 3, 3, 183. = लम्भन H. an. 2, 194. = रम्भ Mahân. t. 57. — 2) *das Durchdringen, Erfüllen; das überallhin-Sicherstrecken, das überall-und-stets-Sein, Durchgängigkeit, Allgemeinheit;* = व्यापन H. an. Mahân. = संबन्ध Taitt. गगणव्याप्तिकारक Mârk. P. 97, 1. गेकादिद्रव्याणां विश्वादिक्रियाणां: साकल्येन संबन्धो व्याप्तिः P. 3, 4, 56, Schol. व्याप्तिं च भूतेषखिलेषु चात्मनः Bhâg. P. 7, 8, 18. व्याप्तिदेव्यै (व्याप्त्यै देव्यै Dev. 5, 33) Mârk. P. 85, 33. Vop. 5, 4. 21. 6, 30. eine übernatürliche Kraft Verz. d. Oxf. H. 191, a, 19. 105, a, N. 4. Pâṇ. 1, 1, 49. 2, 3, 2. न व्याप्तिरेषा *es ist dies keine Regel ohne Ausnahme* Spr. (II) 3438. व्याप्तिशोभयविशेषाधिविधुरः संबन्धः Sarvadarçanas. 4, 8. 9. 13. 5, 13. Verz. d. Oxf. H. 241. fg. No. 590. fgg. Vedântas. (Allah.) No. 112. Schol. zu Gaim. 1, 1, 6. zu Kap. 1, 101. Bhâsâp. 65. 67. fg. 130. Kusum. 29, 3. 8. Tarkas. 29. 38. स° Sid. D. 3, 4. Schol. zu Kap. 1, 91. परिगणनं कर्तव्यमव्याप्त्यतिव्याप्तिवारणाय so v. a. *um das nicht Alles oder zu Vieles zu verhüten* P. 6, 3, 28, Schol. Am Ende eines adj. comp. व्याप्तिक Tarkas. 38.

व्याप्तिमत्ता (von व्याप्तिमत्) n. *die Eigenschaft des Sicherstreckens auf Andere* Nir. 1, 2.

व्याप्तिमत् (von व्याप्ति) adj. *sich erstreckend:* तावद्व्याप्तिमत्य आपः Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 293. *alldurchdringend, durchgängig, allgemein* M. 12, 26. Tarkas. 37.

व्याप्य (von व्याप् mit वि) 1) adj. *das worin Etwas stets enthalten ist, — inhärirt* P. 2, 1, 57, Schol. Bhâg. P. 7, 6, 22. Schol. zu Kap. 1, 152. Tarkas. 52. वह्निव्याप्यधूमवत् 29. 41. n. = साधन, लिङ्ग Taitt. 3, 2, 1. 11. Davon nom. abstr. त्व° n. Tarkas. 43. Z. d. d. m. G. 6, 26, N. 1. 7, 291, N. 1. 4. Bhâsâp. 9. 74. 76. Vedântas. (Allah.) No. 111. — 2) m. *Costus speciosus* oder *arabicus* (vgl. व्याघ्र) AK. 2, 4, 4, 14. st. सव्याम ist Varâh. Bṛh. S. 77, 7 vielleicht सव्याप्य (oder सव्याघ्र) zu lesen.

व्याभाषक nom. ag. von 1. भाष् mit व्या P. 3, 2, 146, Schol.

1. व्याम (zerfällt in वि + याम; vgl. समाम) m. 1) *das Maass der ausgespannten Arme: Klafter* AK. 2, 6, 2, 38. 3, 4, 22, 98. Taitt. 1, 1, 127 (*disregard, disrespect* mit einem Fragezeichen bei Wilson; vgl. व्यामन). H. 600. Halâj. 5, 19. AV. 8, 137, 2. Çat. Br. 10, 2, 3, 1. 2. °मात्र 1, 2, 5, 14. 7, 1, 2, 37. TS. 5, 1, 8, 4. 2, 5, 1. Âçv. Gṛhj. 4, 1, 10. हि°, त्रि° Kâty. Çr. 6, 3, 15. 27. अर्ध° 7, 2, 3. 16, 7, 29. MBh. 3, 434. 10207. 4, 814. 5, 3534. 7, 2288. R. 6, 2, 30. Suçr. 1, 338, 2. 2, 182, 1. Daçak. 88, 19. = 4 Aratni Schol. zu Çat. Br. 7, 1, 2, 7. = 5 Aratni Schol. zu Âçv. Gṛhj. 4, 1, 9. — 2) *Quere:* पाशान्मुञ्च पैः संयामे वध्यते पैर्व्यामे AV. 12, 4, 70. — 3) *Rauch* Çârdûlakarṇ. bei Wilson.

2. व्याम Varâh. Bṛh. S. 77, 7 vielleicht fehlerhaft für व्याघ oder व्याघ्र *Costus speciosus* oder *arabicus*.

व्यामन n. = 1. व्याम 1) Taitt. 1, 1, 127. *disregard, disrespect* Wilson nach ders. Aut.; mit यवत्ता beginnt aber ein neuer Artikel in Taitt.

व्यामिश्र (2. वि - 2. मा + मिश्र) adj. (f. घा) 1) *vermischt, vermengt; gemengt* so v. a. *mannichfaltig, vielartig, ungleichartig:* व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे Bhag. 3, 2. MBh. 3, 13372. 12, 12448. 14, 1350. R. Gorr. 2, 109, 51. Suçr. 1, 131, 4. P. 3, 3, 15, Schol. *vermischt* —, *vermengt mit, begleitet von, versehen mit;* die Ergänzung a) im instr. MBh. 3, 13013. Hariv. 14364. Suçr. 1, 81, 19. 103, 9. — b) im comp. vorangehend Suçr. 1, 16, 11. Spr. 2162. वराक्कर्णा° (शर) MBh. 4, 1382. — 2) *zerstreut, unaufmerksam* MBh. 14, 588. 590.

व्यामोह (von 1. मुह् mit व्या) m. *Verlust der Besinnung, Mangel an klarem Bewusstsein, das Irresein, Verblendung* —, *Verwirrung des Geistes* MBh. 12, 8384. 8, 215. Hariv. 5909. Spr. 2847. Kathâs. 52, 154. 228. 56, 409. Git. 10, 16. Prab. 76, 9. 93, 3. 94, 5. Sâh. D. 135, 21. Verz. d. Oxf. H. 241, b, No. 591. ज्ञनकधनयकृणापिण्डदानव्यामोहनिरासार्थम् *das im-Ungewissen-Sein* Kull. zu M. 9, 122. Kirâtâ. 3, 101.

व्याम्य (von 1. व्याम) adj. *in die Quere gehend:* पाश AV. 4,16,3 (वरूण voc. st. वरूणो herzustellen).

व्यायतत्व s. u. यम् mit व्या 2) *c*).

व्यायतन in einer Inschrift in Journ. of the Am. Or. S. 7, 10, Cl. 36 in folgender Verbindung: व्यायतनैकघोषरुचिरा: (ग्रामा:), was nur bedeuten kann *ansprechend durch das eine Geräusch, das aus verschiedenen Heiligthümern ertönt;* Hall übersetzt *adorned with ample and frequent habitations of herdsmen.* अकिंच° soll nach Stanislas Julien in Hiouen-tsiang 1, 368 *l'état où l'on est dégagé de tout* bedeuten.

व्यायामं (von यम् mit व्या) m. bei Ableitungen die erste Silbe nicht zu वैया verstärkt nach Vop. 7,3 (vgl. व्यायामिक). 1) *Kampf, Streit* AV. 2,4,1. सन्ये साम प्रशंसन्ति व्यायाममपरे जना: MBh. 12,621. °कलहो 14, 1025. — 2) *körperliche Anstrengung, — Uebung;* = श्रम H. 320. an. 3,471. Mān. m. 82. = वैकृष्य H. an. Med. — MBh. 1,3340. श्रमव्यायामकृशान 4334. °कर्षित 6634. Çiksh. Sarn. 3,1,14. MBh. 3,16748. fg. °सह 4,1309. 2246. 7,1939. 6511. व्यायामे वर्कशत्वम् 13,542. 14,2868. 15, 132. R. 2,63,19. व्यायामेषु कुशल: R. Gorr. 1,60,20. 5,13,23. Suçr. 1, 18,9. 51,21. 73,12. 130,1. 253,1. Kim. Nitis. 13,42. 14,25. 16,18. 21. 19,25. Mṛicch. 121,7. Varāh. Bṛ. S. 86,77. Kathās. 18,191. 27,146. 74,142. °पूर्वाणि कृत्यानि MBh. 2,2025. यद्यपृष्ठे रथे नागे व्यायामं कुरु नित्यश: R. Gorr. 1,79,21. व्यायामं मुष्टिभि: कृत्वा तत्तेरपि समागतै: MBh. 2,11974. श्रमभि: तेषणीयेश्च व्यायामं कुरुत: स्म तौ Harīv. 3737. Rāgā-Tar. 7,1716. 8,735. °विद्या 1073. 2117. °विद् 2328. °भूमि *ein für körperliche Uebungen bestimmter Platz, Exercirplatz* u. s. w. Kām. Nitis. 16,19. fg. वारि° *Anstrengung im Wasser* Kathās. 51,109. वाग्व्यायाम *Anstrengung beim Sprechen* MBh. 13,120. Suçr. 1,70,15. धनुर्व्यायाम *die beim Bogenschiessen stattfindende Anstrengung, Uebung im Bogenschiessen* R. Gorr. 2,65,18. ग्र° Suçr. 2,363,18. 509,6. Kām. Nitis. 14,47. — 3) = 1. व्याम *Klafter* H. 600. H. an. fg. °विषम in Mān. wohl nur ein Druckfehler für वियाम; daher die Bed. *a difficulty* bei Wilson. — 4) = दुर्गसंचार H. an. Med. — व्यायामाभ्यधिकम् MBh. 1,3014 fehlerhaft für व्यायम्याभ्यधिकम्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. बाहु°.

व्यायामवत् (von व्यायाम) adj. *sich körperlich anstrengend, körperlichen Uebungen obliegend* gaṇa बलादि zu P. 5,2,136.

व्यायामिक (von व्यायाम; vgl. Vop. 7,3) adj. (f. ई) *körperliche Uebungen betreffend:* व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a,20. वैतालिकानां Comm. zu Buic. P. 10,45,36.

व्यायामिन् adj. = व्यायामवत् gaṇa बलादि zu P. 5,2,136. Varāh. Bṛ. S. 69,27. Vicsn. 7,16.

व्यायुक (von 3. इ mit वि) adj. *weglaufend* Kāṭy. 31,3.

व्यायुध (2. वि + आयुध) adj. *waffenlos* MBh. 7,4007.

व्यायोग (von 1. युज् mit व्या) m. Bez. *einer best. Art einactiger Schauspiele* H. 284. Daçar. 1,8. Hall in der Einl. S. 6. Sāh. D. 514. Prat̄ip. 24,b,4. Verz. d. Oxf. H. 140, a, No. 280.

व्यायोगिम (wie eben) adj. etwa *unzusammenhängend*, Bez. eines best. Verbandes Suçr. 1,55,21.

व्यारोष (von 1. रुष् mit व्या) m. *Groll, Unmuth* Vīvr. 6.

व्याल (विऽग्राल AV. Padap.) 1) adj. *a*) *tückisch, hinterlistig, boshaft, bösartig;* = शठ AK. 3,4,26,198. H. an. 2,509. = खल Med. l. 48 = धूर्त Gaṇiṣ. im ÇKDa. Beiw. des Takman AV. 5,22,6. von Elephanten: गजं व्यालम् Kir. 17,25. °हिप Çiç. 12,28. °गज Kathās. 37,98. °वारण 52,113. अव्यालचेष्टित ein Elephant R. 1,6,23 (25 Gorr.). m. *ein tückischer Elephant* H. 1222. H. an. Med. Hall. 2,70. Spr. 2920. — *b*) *verschwenderisch* Hall. 5,46. — 2) m. *a*) *ein tückischer Elephant;* s. u. 1) *a*). — *b*) *Raubthier* AK. H. 1216. H. an. Med. Hall. 5,46. M. 1,39. 43. MBh. 1,1105. 7,2239. R. 2,95,15. Suçr. 1,4,19. 24,1. 89,16. Spr. (II) 345. 3403. (I) 1740. — *c*) *Schlange* AK. 1,2,4,7. 3,4,26,196. H. 1303. H. an. Med. Hall. 3,15. MBh. 3,11978. Spr. (II) 2655. (I) 2460. 2609. 2919. 5046. Varāh. Bṛ. S. 19,4. 33,28. als Verzierung an Indra's Banner 43,57. 58. Sin. D. 34,1. am Ende eines adj. comp. f. या Rāgā-Tar. 6,88. — *b*) *c*) unbestimmt ob *Raubthier* oder *Schlange* MBh. 3, 2365. 15668. 13, 5473. R. 2, 39, 10. 3, 53, 21. 5, 41, 27. Varāh. Bṛ. S. 16,3. Rāgā-Tar. 8,2188. Bulg. P. 1,6,14. 4,7,28. 7,8,29. सव्याला भू: Kām. Nitis. 4,33. — *d*) *Löwe* H. an. *Tiger* und *Panther* Rāgān. im ÇKDa. — *e*) *König, Fürst* Mahurkṣa zu AK. nach ÇKDa. — *f*) Bez. *des zweiten Decans im Krebse, des ersten im Scorpion und des dritten in den Fischen* Varāh. Bṛ. 21 (19), 6. — *g*) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2,164. Ind. St. 3,408, N. 2. — *h*) N. pr. eines Mannes: °कुल Verz. d. Oxf. H. 196,b,23. — 3) f. ई *Schlangenweibchen* MBh. 3,16143. 16191. 5,7071. 9,579. 14,2455. R. Gorr. 2,34,9. 75,17. 5,26,2. Mṛicch. 10,19. Rāgat. 12,33. Weber, Kāṣmīrā. 221. — 4) n. Bez. *einer der 3 Stadien in der retrograden Bewegung des Planeten Mars* Varāh. Bṛ. S. 6,3.

व्यालक (von व्याल) m. 1) *ein tückischer Elephant* Taik. 2,8,35. — 2) *Raubthier* oder *Schlange* MBh. 13,5484.

व्यालकरञ्ज *ein best. Parfum,* = व्याघ्रनख Nigh. Pr.

व्यालखड्ग m. dass. Rāgān. im ÇKDa.

व्यालगन्धा f. *die Ichneumonpflanze* (नाकुली) Rāgān. im ÇKDa.

व्यालग्राह m. *Schlangenfänger* Bhar. zu AK. 1,2,4,12 nach ÇKDa. M. 8,260. MBh. 3,13857.

व्यालग्राहिन् m. dass. AK. 1,2,4,12. 3,4,4,10. H. 488. Hall. 2,158. Spr. 2919. sein Ursprung Verz. d. Oxf. H. 22,a,29. °ग्राहिणी f. Kiçan. 45,7 (nach Aufrecht).

व्यालग्रीव m. pl. N. pr. eines Volkes Varāh. Bṛ. S. 14,9.

व्यालजिह्वा f. *eine best. Pflanze,* = महासमङ्गा Rāgān. im ÇKDa.

व्यालत्व n. nom. abstr. von व्याल *ein tückischer Elephant* Spr. 5143.

व्यालदंष्ट्र m. *Asteracantha longifolia Nees* oder *Tribulus lanuginosus Lin.* Rāgān. im ÇKDa. °क m. dass. Dhanv. in Nigh. Pr.

व्यालद्रेष्काण m. = व्याल 2) *f*) Comm. zu Varāh. Bṛ. 21 (19), 6.

व्यालनख m. *ein best. Parfum,* = व्याघ्रनख Rāgān. im ÇKDa.

व्यालपत्रा f. *Cucumis utilissimus Roxb.* Rāgān. im ÇKDa.

व्यालपाणिन्न m. *ein best. Parfum,* = व्याघ्रनख Nigh. Pr.

व्यालप्रकरण n. desgl. ebend.

व्यालमृग m. *Raubthier* MBh. 3,11919. R. 2,37,22. R. Gorr. 2,99,3. 3,1,31. Varāh. Bṛ. S. 6,3 (दंष्ट्रिव्यालमृगेभ्य: *through mordacious animals, serpents and wild beasts* Kern). *ein best. Raubthier:* ईहामृगा व्या-

लमृगा माङ्गल्याश्च मृगद्विजाः MBh. 8,4417. बिडालमति या — यानं व्यालमृगस्तवा (= चित्रव्याघ्र Nîlak.) 12,444.

व्यालम्ब (von लम्ब् mit व्या) 1) adj. *herabhängend:* °कुम्भ *mit herabhängendem Rüssel* MBh. 7,3192. कर्ण Vaitân. Bṛh. S. 68,69. °कम्बल Rîgâ-Tar. 8,2736. — 2) m. *rothblühender Ricinus* ÇKDa. nach dem Vaidjaka.

व्यालम्बिन् (wie eben) adj. = व्यालम्ब MBh. 6,2599. Hariv. 13018. Ṛt. 4,16 (mit der v. l. व्यालम्बिनील° zu lesen). Vaitân. Bṛh. S. 73,5. Bhâg. P. 3,28,24. 4,25,31.

व्यालवर्ग m. Vaitân. Bṛh. 25(23),13 nach dem Comm. = सर्पदेष्काण (= व्यालदेष्काण) aber zugleich erklärt als *die beiden ersten Decane im Krebs und im Scorpion und der dritte in den Fischen.*

व्यालवल्ल m. ein best. Parfum, = व्याघ्रनख Rîgân. im ÇKDa.

व्यालायुध n. = व्याडायुध = व्याघ्रनख *ein best. Parfum* Mathurêça zu AK. 2,4,4,17 nach ÇKDa. und Nigh. Pa. m. Rîgân. im ÇKDa.

व्यालि s. व्याडि.

व्यालिक adj. (f. ई) = व्यालेन चरति gaṇa पर्पादि zu P. 4,4,10.

व्यालीभू (व्याल + 1. भू) *zur Schlange werden:* °भूत MBh. 3, 12526.

व्यालीय् (von व्याल), °यति *einer Schlange gleichen* Gaṇit bei Hall in der Einl. zu Vâsavad. 56.

व्यालोल (von लुल् mit व्या) adj. *sich hinundher bewegend, zitternd, wogend:* दीप Spr. 2389. फलक 2629. 2921. नेत्र Kathâs. 73,345. Kâdab. 7. Gît. 12,15. Pañkâr. 3,5,22. Rîgâ-Tar. 5,372. Bhâg. P. 10,3,11.

व्यावक्रोशी (von क्रुश् mit व्यव) f. *gegenseitiges Schmähen* Schol. zu P. 3,3,43. 5,4,14 und 7,3,6.

व्यावभाषी (von 1. भाष् mit व्यव) f. dass. Rîsâm. zu AK. nach Wilson; °भासी ÇKDa. nach dens. Aut.

व्यावर्ग (von वर्ज् mit व्या) m. *Abtheilung, Abschnitt* Lîlâv. 7,6,8. 7,30.

व्यावर्त (von वर्त् mit व्या) m. = नाभिकण्टक Çabdar. im ÇKDa. व्यावर्तक v. l.

व्यावर्तक (vom caus. von वर्त् mit व्या) adj. (f. व्यावर्तिका) *beseitigend, ausschliessend* Spr. 1973. Tarkas. 50. Nîlak. 203. Comm. zu Taitt. Pâtîr. 21,7. Davon nom. abstr. °ता f. Vedântas. (Allah.) No. 98. 100. °त्व n. P. 2,1,57, Schol.

व्यावर्तन 1) adj. (f. ई) wohl vom caus. von वर्त् mit व्या, *beseitigend, abwendend;* s. विषयव्यावर्तिनी. — 2) n. (von वर्त् simpl. mit व्या) a) proparox. *Wendung* (des Weges) AV. 6,26,2. Kâṭhân. Up. 3,3,2. — b) *das Sichabwenden* Sân. D. 243,14. Verz. d. Oxf. H. 215,b,43. — c) *das Sichschlingen um Etwas* Kir. 5,20.

व्यावर्तनीय (vom caus. von वर्त् mit व्या) adj. *zurückzunehmen:* घ° Mîtr. 250,10.

व्यावर्त्य (wie eben) adj. *zu beseitigen, auszuschliessen* Kusum. 25, 19. 26,1.

व्यावहारिक (von व्यवहार) gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34. gaṇa स्वागतादि zu 7,3,7. 1) adj. (f. ई) a) *dem Verkehr —, dem Leben angehörig, hier gültig, — zur Erscheinung kommend, real* (im Gegens. zu *ideal*): वाच् *Umgangssprache* Nir. 13,9. घर्म M. 8,164. MBh. 12,7096. Miln. P. 26,16. नामन् Weber, Nax. 2,317. Trans. R. A. S. 2,37 (nach Hardy). पारमार्थिक, व्यावहारिक, प्रातिभासिक Nîlak. 136. 171. Colebr. Misc. Ess. 1,375. Bâlar. 16. Vedântas. (Allah.) No. 50. घ° Bhâg. P. 10, 85,14. — b) *umgänglich* Kâm. Nîtis. 18,39. — c) *zum Process gehörig* M. 8,78. — 2) m. a) *Beamter* R. ed. Bomb. 2,66,12. व्यवहारे वाल्याभ्यस्तसकलराज्यकृत्ये नियुक्ता धर्मात्मा: Comm. — b) N. einer buddhistischen Schule Târân. 271; vgl. एकव्यवहारिक (lies एकव्या°). — 3) n. *Verkehr, Handel, Geschäft* Bhâg. P. 12,2,3.

व्यावहारिन् (wie eben) adj. *zur Anwendung kommend* Vaitân. Bṛh. S. 104,2; vgl. Ind. St. 8,301.

व्यावहारी (von हृ mit व्यव) f. wohl *Umgang, Verkehr* Vop. 26,177.

व्यावहार्य (von व्यवहार) adj. *tauglich, brauchbar, noch frisch* (= व्यवहारयोग्य, यथास्थ Nîlak): सेनाय्य MBh. 4,1716.

व्यावहासी (von हस् mit व्यव) f. *allgemeines Lachen* Schol. zu P. 3, 3,43. 5,4,14. 7,3,6.

व्यावर्तन् (von वर्त् mit व्या) f. 1) *Unterscheidung, Auszeichnung, Vorrang vor* (gen. und instr.): व्यावर्तमेव गच्छन्ति भेदो समानानाम् TS. 5, 6,7,3. 2,2,8,5. धन्याभिर्दिवर्ताभि: 6,6,8,3. 7,2,5,2. TBr. 1,4,4,4. Kâṭh. 21,5. 29,7. व्यावर्त्काम TS. 2,5,8,6. 6,6,11,1. — 2) *das Aufhören:* घोषाणां व्यावर्त: (kann auch als infin. gefasst werden) *bis es zu dampfen aufhört* TBr. 1,3,10,6.

व्यावृतत्व n. Maitrâyaṇ. 3,5 wohl fehlerhaft für व्यावृत्तत्व *das Sichabwenden —, Nichtwissenwollen von Jmd oder Etwas;* nach dem Comm. = व्यावृत्ताभिप्रायत्वं गूढाभिसंधिता.

व्यावृत्ति (von वर्त् mit व्या) f. 1) *das Sichabwenden, Zukehren des Rückens:* घ° Âçv. Çr. 1,1,11. Liṭ. 1,2,15. — 2) *Verdrehung* (der Augen) Suçr. 2,192,19. Çiç. Saṃh. 3,3,16. — 3) *das Sichlossmachen von Etwas:* पाप्मन: TS. 7,2,10,4 in Ind. St. 10,150. घामिषात् Spr. 5184. — 4) *das Ausgeschlossenwerden von, das Kommen um:* पितृलोकदेवलोकाभ्याम् Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 309. *das Ausgeschlossensein, Ausschluss, Beseitigung* Kumâras. 2,27. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 282. zu Kaṭh. Up. S. 22. Kivâlp. 2,199. Sân. D. 107,19. — 5) *Sonderung, Trennung, Unterscheidung* TBr. 2,1,2,6. 6,3. पापवस्यसस्य 8,2. 3,8, 19,2. TS. 6,1,6,5. Kâṭh. 23,3. Çat. Br. 12,7,2,13. *Distinctheit* (der Stimme) Kâṭh. 27,2. सोमपीथस्य चैषा सुरापीथस्य च व्यावृत्ति: *Unterschied* Ait. Br. 8,8. — 6) N. *eines best. Opfers* Çat. Br. 13,3,2,5. — Vgl. निर्व्यावृत्ति.

व्यावृत्सु (vom desid. von वर्त् mit व्या; eine ungrammatische Form ohne Reduplication) adj. *sich von Etwas loszumachen wünschend:* संसार° Wilson, Sâṅkhjak. S. 6.

व्याशा (2. वि + 1. आशा) f. *Zwischengegend* (auf der Windrose) Weber, Râmat. Up. 328.

व्याश्रय (von श्रि mit व्या) m. *Beistand, Parteinahme für Jmd* P. 5,4,48.

व्यास (von 2. अस् mit वि) m. 1) *das Auseinanderziehen,* ein Fehler der Aussprache ṚV. Prât. 14,3. 4. — 2) *Ausführlichkeit, ausführliche Darstellung* (Gegens. समास) AK. 3,3,22. Taik. 3,3,451. H. 1432. an. 2,591. Med. s. 11. Halâj. 4,31. 5,19. MBh. 1,51. 55. 3,67. व्यासेन *ausführlich* Suçr. 2,17,3. 513,6. Pañkâr. 2,3,16. व्यासात् dass. Suçr. 1, 261,3. व्याससमासाभ्यां MBh. 12,1396.

समासव्यासयोगतस् Buic. P. 1,9,27. — 3) *Durchmesser* Colebr. Alg. 87. *Breite* Varâh. Bṛh. S. 53,12. 17. 23. fgg. = मानभेद् Çabdar. im ÇKDr. — 4) *der auseinandergezogene Text*, Bez. *des* Padapâṭha AV. Prât. 3,68. 72. — 5) N. pr. eines mythischen Weisen, dem die Redaction und auch Abfassung einer Menge umfangreicher Texte (der Veda, des Mahâbhârata, der Purâṇa, des Vedânta u. s. w.) zugeschrieben werden; er gilt für einen Sohn Parâçara's von der Satjavatî (vgl. द्वैपायन, कृष्णद्वैपायन). Taik. 2,7,12. 3,3,151. H. 847. H. an. Med. Hall. 2,258. Taitt. Âr. 1,9,2. Ind. St. 4,377. Bhâg. 10,12. मुनीनामप्यहं व्यासः (sagt Kṛshṇa) 13,37. 18,75. MBh. 1,21. 2047. विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्व्यास इति स्मृतः 2417. Harîv. 2. 4. 5. 453. 7990. 10692. मत्सीतनूज Spr. (II) 1110. Verz. d. Oxf. H. 47,b,21. fgg. 59,a,35. Buic. P. 1,6,1. Burnouf, Intr. 568. Taittvas. 22. Hall 9. 86. Verfasser eines Gesetzbuchs Jiéñ. 1,5. Ind. St. 1,20. 232. fgg. 467. Gild. Bibl. 455. achtundzwanzig Vjâsa VP. 272. Verz. d. Oxf. H. 52,a. fgg. 80,a. Astronom Ind. St. 2,247. स्कान्द् 3,280. °मातर् = सत्यवती Taik. 2,8,11. °सू desgl. 3,3,222. — 6) als v. l. für व्याघ्र Varâh. Bṛh. S. 77,7 vielleicht fehlerhaft für व्याघ oder व्याघ्य *Costus speciosus* oder *arabicus*. — Vgl. दिनव्यासदल, बाबती°, बृहद्व्यास, वेद°, वेयास fgg.

व्यासकेशव m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 807.

व्यासगीता f. (sc. उपनिषद्) pl. Titel eines Theils des Kûrmapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 8,a,33. Verz. d. B. H. 128,b. 129,a.

व्यासङ्ग (von सञ्ज् mit व्या) m. 1) *das Anhaften, Anhangen:* दानव्यानिविषादमूकमधुपव्यासङ्गदीनानन adj. (ein Elephant) Mâlatîm. 153, 4. कलङ्ग° Spr. 3080. — 2) *das Hängen an Etwas, Verlangen nach Etwas, Lust an Etwas, Leidenschaft für Etwas:* स्वर्गतरंगिणीतटभुवि व्यासङ्गमङ्गीकुरु Spr. 2256. विद्वत्कुलमनोभृङ्गरम° Verz. d. Oxf. H. 213,b, No. 507. यत्किंचिन्मनोव्यासङ्गकारकम् (परित्यज्य) MBh. 12,366. 13,316. Kathâs. 67, 29. Buic. P. 11, 20, 36. — 3) *Verknüpfung, Zusammenhang* Kusum. 14,1. — 4) *Zerstreutheit* (als Erklärung von व्याक्षेप) Nîlak. zu Harîv. 4455. Çiç. 71,3, v. l.

व्यासतीर्थ 1) n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,b,8. — 2) m. N. pr. eines Mannes Colebr. Misc. Ess. 1, 83. Verz. d. Oxf. H. 385,a, No. 484. 393,a, No. 90. °बिन्दु Hall 113. 205.

व्यासतुलसी m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 274,a, N. 649.

व्यासत्र्यम्बक m. desgl. ebend. 345,b,41. fg.

व्यासत्व n. nom. abstr. von व्यास 5) MBh. 1,4226.

व्यासदत्त m. N. pr. eines Sohnes des Vararuki Verz. d. Cambr. H. 15.

व्यासदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 248,a,32.

व्यासपरिपृच्छा f. Titel einer Schrift Vjutp. 42.

व्यासपूजा f. Vjâsa's *Ehren*, Bez. einer best. Begehung Verz. d. B. H. No. 1325. fg.

व्यासभाष्यव्याख्या f. Titel eines *Commentars* von Vâkaspatimiçra Sarvadaçanas. 165,22.

व्यासमूर्ति m. Bein. Çiva's Çiv.

व्यासयति m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 620. fg.

व्यासवन n. N. pr. eines heiligen *Waldes* MBh. 3,6063. Verz. d. Oxf. H. 46,b, N. 2.

व्यासवर्ष m. N. pr. eines Mannes Hall 38.

व्यासशतक n. Vjâsa's *Aundert* (Sprüche), Titel einer Schrift Verz. d. Kop. H. 11,b.

व्यासशुकसंवाद m. Vjâsa's *Unterredung mit* Çuka, Titel einer Schrift aus dem Mahâbhârata, Verz. d. Oxf. H. 228,b, No. 330.

व्याससमासिन् (von व्यास + समास) adj. *ausführlich und gedrängt:* वाच् MBh. 12,1604.

व्याससिद्धान्त m. Titel eines Werkes Verz. d. Cambr. H. 43.

व्याससूत्र n. Titel eines Sûtra Verz. d. Oxf. H. 279,b,11; vgl. 287,b,20. fg. °चन्द्रिका Hall 96. °वृत्ति Colebr. Misc. Ess. 1,334.

व्यासस्थली f. N. pr. eines heiligen Platzes MBh. 3,6066.

व्यासाचल (व्यास + श°) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 253,a,26. fg.

व्यासारण्य (व्यास + श°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 263,a,10.

व्यासाश्रम (व्यास + श्रा°) m. Bein. Anandânanda's Colebr. Misc. Ess. 1,333.

व्यासाष्टक (व्यास + श°) n. Vjâsa's *Oktade*, Bez. eines best. Liedes Verz. d. Oxf. H. 72,a,4. 5. 133,a,10.

व्यासीय adj. von Vjâsa *verfasst*, n. *ein Werk* Vjâsa's Verz. d. Oxf. H. 167,a,33.

व्यासुकि m. wohl patron. Vjâḍi's Verz. d. Oxf. H. 185,b,8.

व्यासेध (von सिध् mit व्या) m. *Verhinderung, Störung, Unterbrechung:* यज्ञव्यासेधकारिन् VP. 1,6,20.

व्यासेश्वर (व्यास + ई°) m. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 72,a,1. °तीर्थ 66,a,26. fg.

व्याकृत s. u. 1. कृ mit व्या; davon °त्व n. (logischer) *Widerspruch:* घव्याकृतत्वं वाचः H. 66.

व्याकृति (von 1. कृ mit व्या) f. (logischer) *Widerspruch* Kiraṇâv. 184,9 (349,11).

व्याकृतस्थ (2. वि + श्रा°) adj. *nicht geil, nicht satenhaft* Âçv. Bhâ. 6,26.

व्याकृतव्य (von 1. कृ mit व्या) adj. *zu übertreten:* घतस्ते धामनि भर्तुर्न व्याकृतव्यमेव हि R. Gorr. 2,23,4.

व्याकरण (von कृ mit व्या) n. *das Aussprechen:* मम व्याकरणात् *weil ich es sage* MBh. 14,1861. नामव्याकरणं विष्णोः Buic. P. 6,2,10. विदुराग्रेडितं प्राज्ञा द्विस्त्रिर्व्याकरणं च यत् Hall. 1,153.

व्याकर्तव्य (wie eben) adj. *zu sagen, mitzutheilen:* न त्विदं केषुचिद्व्याकर्तव्यम् MBh. 1,6227.

व्याकार (wie eben) m. 1) *Aeusserung, Gespräch, Unterhaltung* AK. 1,1,5,1. H. 241 (व्याकर् fehlerhaft). Hall. 1,138. घाविर्भूतज्योतिषां ब्राह्मणानां ये व्याकारास्तेषु मा संशयो भूत् Uttarâr. 81,4 (104,3). व्याकारे नौ नहि समुचितो युष्मदस्मत्प्रयोगः *wenn wir mit einander reden* Spr. 4602. Sin. D. 329,19. Pañcât. ed. orn. 41,9. पशुव्याकार° *das Sprechen des Viehes und der Waffen* (als portentum) Varâh. Bṛh. S. 46,71. परदार° *Gespräch über* Çiç. 104,23, v. l. — 2) *Gesang* (von Vögeln): पक्षि° Harîv. 4420. 14325. परभृतकलव्याकारेषु Mâlav. 76. — 3) in der Dramatik *eine witzige Aeusserung* u. s. w. Bhar. Nâṭyaç. 18, 119. 19, 66. 94. Daçar. 3,11. 16. Sin. D. 321. 331. Pratâpar. 28,a,1.

व्याकारमय (von व्याकार) adj. (f. ई) *aus Aeusserungen —, aus Gesprächen über* (geht im comp. voran) *bestehend* Kathâs. 121,280.

व्याकारिन् (von कृ mit व्या) adj. 1) *sprechend, redend:* सत्य° Liṅ. 9,8,7. मिथ्या° MBh. 13,199. — 2) *singend:* काम° (पक्षिन्) Harîv. 6929. *ertönend von:* मधुकर° (द्रुम) Pârâs. 96,18. — Vgl. स°.

व्याक्ति s. u. 1. धा mit व्या.

व्याकृति (von कृ mit व्या°) f. 1) *Aeusserung, Ausspruch* MBh. 13, 3138. Varâh. Bṛh. S. 51,1. नक्षीश्वरव्याकृतयः कदाचित्पुंसि लोके विपरीतमर्थम् Kumâras. 3,63. भूतार्थ° Râgat. 10,34. — 2) °ति und °ती *Spruch, Ausruf;* so heissen kurze, aus einzelnen abgerissenen Worten bestehende Formeln, namentlich die Worte भूस्, भुवस् und स्वर्, welche auch महाव्याकृतयस् genannt werden. Taitt. Prât. 3,7. TS. 1,6,10,2. 5,5,5,3. TBr. 2,2,4,3. Ait. Br. 3,32. 8,7. 13. Çat. Br. 1,1,4,13. 2,5, 13. 5,3,5. 16. 8,1,4,10. Âçv. Çr. 2,15,28. Gṛhy. 3,4,1. Kauç. 72. fg. यत्र मत्रा न विद्यते व्याकृतीस्तत्र योजयेत् Gobh. 2,16. Taitt. Up. 1,5,1 (तिस्रः). 3 (चतस्रः). Maitrâyaṇ. 6,3. M. 2,76. 6,70. 11,246. MBh. 13,7284. Harîv. 11499. Mârk. P. 101,24. Bhâg. P. 3,12,44. 5,9,5. सप्त Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,107. fg. Weber, Râmat. Up. 350. महा° Kâṭy. Çr. 2,1,6. 19,4,16. Sâṅkh. Br. 1,6. Gobh. 1,8,15. Nir. 13,9. P. 8,2,71. M. 2,81. 11,122. Jîân. 1,15. MBh. 3,14158 (पञ्च). Harîv. 12434. Suçr. 1,7,1. सव्याकृतिका गायत्री Jîân. 1,238. व्याकृति und °सामन् als Namen von Sâman Ind. St. 3,239. व्याकृतित्रयी als Tochter Savitar's von der Pṛçni Bhâg. P. 6,18,1.

व्याकृति (von कृ mit व्या) f. N. eines Sâman, v. l. für व्याकृति Ind. St. 3,239,a.

व्युच्छित्ति (von 1. छिद् mit व्युद्) f. *Unterbrechung, Störung:* धर्म° MBh. 12,1189. पञ्च° Mârk. P. 16,46. प्रवृत्तिमार्ग° VP. 1,6,31. स° (वाच्:) H. 71.

व्युच्छेत्तृ (wie oben) nom. sg. *Unterbrecher, Störer:* कुलदेशादिधर्माणामव्युच्छेता MBh. 12,2901.

व्युंच्य (von वच् mit वि) adj. *zu verbessern, darzulegen* TS. 7,3,6, 2. Ait. Br. 3,35.

व्युत s. 5. वा mit वि.

व्युति f. = व्यूति Bharata im Dvaitap. nach ÇKDa.

व्युत्क्रम (von क्रम् mit व्युद्) m. 1) *Uebertretung:* मर्यादा° VP. bei Muir, ST. 1, 193. *Fehltritt* Varâh. Bṛh. S. 74,12. — 2) *das Heraustreten* (aus der Ordnung), *Veränderung der Reihenfolge, umgekehrte Ordnung* H. 1311. Çârp. 92. °विवाक् Verz. d. Oxf. H. 282,a,40. Kull. zu M. 10,16. उत्पत्ति° Vedântas. (Allah.) No. 93. Comm. zu Âçv. Çr. 1,12,31. zu Kâṭy. Çr. 88,16.

व्युत्क्रमण (wie oben) n. *das Sichabsondern* P. 8,1,15. = पृथगवस्थान Schol.

व्युत्क्रान्त s. u. क्रम् mit व्युद्. °क्रान्ता f. (sc. प्रहेलिका) Bez. *einer Art von Räthseln* Kâvyâd. 3,99.

व्युत्तातव्य (von स्था mit व्युद्) partic. fut. pass. neutr. *die Nothwendigkeit von Etwas abzustehen:* यतो ऽस्मात्कामाद्विद्वषा व्युत्थातव्यम् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 260.

व्युत्थान (wie oben) n. 1) *das Abstehen von seinen Verpflichtungen,*

Versäumniss der Pflichten: वृषलत्वं परिगता व्युत्थानात्तत्रधर्मिणः MBh. 14,332. — 2) *das Nachgeben* MBh. 13,1511. स° 1518. — 3) Bez. *einer best. Stufe im Joga:* व्युत्थानं नितमूढवित्तिताख्यं भूमित्रयम् Verz. d. Oxf. H. 229,a, No. 561, Z. 36. fg. 231,a, 27. 30. Vedântas. (Allah.) No. 77. — Nach den Lexicographen = प्रतिरोध AK. 3,4,18,121. = प्रतिरोधन H. an. 3,420. = विरोधाचरण AK. H. an. Med. n. 134. = स्वतन्त्रता Taik. 3,3,259. = स्वैरवृत्ति H. an. = स्वातन्त्र्यकृत्य Med. = स्वतन्त्रवृत्ति Hall. 4,93. = समाधिपरिणा H. an.

व्युत्पत्ति (von 1. पद् mit व्युद्) f. 1) *die Entstehung —, Ableitung —, Auflösung —, Etymologie eines Wortes* Sin. D. 7,1. Schol. zu P. 5,2,93. 7,3,5. 8,3,6. Vop. 26,220. °रक्षिता: शब्दा: H. 2. Kusum. 48,15. Verz. d. Oxf. H. 185,b,8. — 2) *Wirkung:* प्रतिभा कारणं तस्य (काव्यस्य) व्युत्पत्तिश्च विभूषणम् Verz. d. Oxf. H. 214,a,3.6. — 3) *Abweichung im Tone, das Erklingen eines fremden Tones* Varâh. Bṛh. S. 46,61. — 4) *das Sichheranbilden, Bildung, Zunahme an Kenntnissen:* बालानाम् Manas. in Ind. St. 1,14,4. Sin. D. 2,3. 96,16. Tarkas. 59. Kusum. 23,9. — Vgl. महा°, यथा°.

व्युत्पत्तिवाद m. Titel zweier Werke Hall 55.

व्युत्पादक (vom caus. von 1. पद् mit व्युद्) adj. *ableitend, herleitend, etymologisch erklärend:* शब्दव्युत्पादकशास्त्र Durgâd. im ÇKDa.

व्युत्पादन (wie oben) n. *das Ableiten, Herleiten* von (abl.) Kumârila bei Müller, SL. 97. Madhus. in Ind. St. 1,19,1.

व्युत्पाद्य (wie oben) adj. *abzuleiten, herzuleiten:* शास्त्र° Wilson, Sâṅkhyak. S. 10.

व्युत्सर्ग (von सृज् mit व्युद्) m. *Erklärung, Aufhellung* Madhjam. 56.

व्युद् (2. वि + उद्) adj. *wasserlos, trocken* Bhâg. P. 10,25,16.

व्युदक (2. वि + उदक) adj. (f. आ) dass. Çâṅkh. Gṛhy. 4,12. Âpast. 1, 11,28. Bhâg. P. 5,14,12. 9,6,28.

व्युदास (von 2. अस् mit व्युद्) m. 1) *das Fahrenlassen, Aufgeben:* एकान्त° MBh. 12, 592. — 2) *Beseitigung, Ausschliessung* Sin. D. 444. Verz. d. Oxf. H. 209,b, 33. Schol. zu P. 7,2,74. 4,62. zu Kap. 1,88. Kull. zu M. 11,77. Comm. zu Taitt. Prât. 15,9. — 3) *Ausgang, Ende:* व्रतेष्वुदासं नाक्: Naish. 4,14. — Vgl. तिति°.

व्युद्गूहन (von 1. ऊह् mit व्युद्) n. *das Auskehren, Ausfegen* Çat. Br. 7,1,2,17. 13,8,2,3.

व्युद्ग्रन्थन (von ग्रन्थ् mit व्युद्) n. *das Aufbinden in mehreren Strängen, eine Variation des einfachen Umwindens des Jûpa* Kâṭy. Çr. 14,1,20.

व्युन्दन (von उन्द् mit वि) n. *das Benetzen* VS. 2,2.

व्युन्मिश्र (2. वि + उ°) adj. (f. आ) *vermischt —, versehen —, bestreut mit:* गदाम् व्युन्मिश्रां केशसञ्चयैः MBh. 6,3775. विमिश्रां ed. Bomb.

व्युपकार (von 1. कृ mit व्युप) m. *das Genügethun, vollkommene Beobachtung:* धर्मव्युपकारयोद्यत R. 6,96,6.

व्युपजाप (von जप् mit व्युप) m. *das Zuflüstern* Âpast. 1,8,15. st. dieser guten Lesart ist die des Haradatta (वकारमकारान्तो ऽपपाठो वा), व्युपजाप in den Text aufgenommen worden.

व्युपतोद (von 1. तुद् mit व्युप) m. *das Anstossen* ebend.

व्युपदेश m. *Vorwand* bei Wilson wohl nur fehlerhaft für व्यपदेश.

व्युपद्रव (2. वि + उ°) adj. *keinem unglücklichen Zufall ausgesetzt*

Suçr. 2,22,8.

व्युपरम (von रम् + व्युप) m. *das zur-Ruhe-Gelangen, Aufhören:* इन्द्रियाणाम् MBh. 12,9897. धर्म्र° 7,9280. क्रिया° 12,9147. युद्ध° Harıv. 4102. विकत्थ्य° Uttarar. 117,11 (159,6). वेग° Milarin. 86,16, v. l. दिन° *Neige des Tages* Harıv. 4357.

व्युपवीत (2. वि + उ°) adj. *ohne Upavîta;* s. u. बृहच्छिख 1) a).

व्युपशम (von शम् mit व्युप) m. *das Aufhören, Weichen* Vjutp. 178. व्याधा° Sin. D. 344,4. वेग° Milarin. 86,16 (v. l. °व्युपरम).

व्युप्तकेश adj. *dessen Haar geschoren ist* (Manun.) VS. 16,29. *dessen Haar verwildt ist* (Comm. und Zusammenhang) Bhâg. P. 4,2,14. Das erste Mal ist वप् auf 1. वप् mit वि, das zweite Mal auf 2. वप् mit वि zurückzuführen.

1. व्युष् (von 2. वस् mit वि) f. *Morgenhelle, Tagesanbruch* AV. 13,3, 21. Vgl. ausserdem den infin. Gebrauch unter 2. वस् mit वि und घाव्युषम्, उपव्युषम्.

2. व्युष्, व्युष्यति (दाने) Dhâtup. 26,7. (विभागे) 106. व्योषयति (उत्सर्गे) 32,92.

व्युषम् (von 2. वस् mit वि) = 1. व्युष्; s. उपव्युषसम्.

व्युषित s. u. 2. वस् mit वि.

व्युषिताश्व m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,4686. Harıv. 827 (व्युषिताश्व die neuere Ausg.). Ragh. ed. Calc. 18,22. — Varianten dieses Namens. व्युषिताश्व, मध्युषिताश्व und हूषिताश्व.

व्युष्ट adj. und n. *Tagesanbruch* (auch Hir. 253. Halâj. 1,111 und VP. 222) s. u. 2. वस् mit वि. Das m. personificirt als Sohn Pushpârṇa's von der Doshâ Bhâg. P. 4,13,14. als Sohn Vibhâvasu's von der Ushas 6,6,16. das n. = फल्ग nach H. an. 2,99. — Vgl. अ° und वैयुष्ट.

व्युष्टि (von 2. वस् mit वि) f. 1) *das Aufleuchten der Morgenröthe, Hellwerden* ṚV. 1,124,12. 171,5. उषसो व्युष्टिषु 2,34,12. मक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः 5,30,13. 6,24,9. 8,20,15. 8,98,11. 10,76,4. 99,1. AV. 8, 9,10. 13. Çat. Br. 13,2,2,6. TS. 4,3,11,1. Pârâśar. Bh. 8,1,13. — 2) *Anmuth, Schönheit* (= कान्ति, देहगतं लावण्यम् Çâṅk.) Kâṭhop. Up. 3,13,4. — 3) *Lohn für* (gen. und loc.), *Vergeltung:* = फल्ग AK. 3,4,2,41. H. 1446. an. 2,99. Med. t. 28. Halâj. 4,92. = समृद्धि und सिद्धि AK. H. an. Med. व्युष्टिरेषा स्त्रीणां पूर्वं भर्तुः परा गतिम्। गन्तुं सयुत्राणाम् MBh. 1, 6164. मेघं दानकृता व्युष्टिरनुप्राप्ता सुखं त्वया 3,15466. मक्तस्तपसः 12, 8336. दान° 13,3528. 3837. 5144. ब्राह्मणापूजायाम् 7188. 7355. fg. Spr. 3323. R. Gorr. 1,15,14. 6,72,28. 95,14 (*Strafe*). ed. Bomb. 4,20,11 (*Strafe*). Mârk. P. 16,45. — 4) *Lob* (स्तुति) H. an. — 5) Bez. gewisser Ishṭaka's TS. 5,3,4,7. — 6) N. eines Dvirâtra Kâtj. 15,10. Kâtj. Çr. 15,9,22. Lâṭj. 8,11,11. 9,3,5. 14. Maçaka in Verz. d. B. H. 72 (IV, 9).

व्युष्टित्रिरात्र gaṇa यक्तोरादि zu P. 6,2,31.

व्युष्टिमत् (von व्युष्टि) adj. 1) *mit Anmuth —, mit Schönheit ausgestattet* Kâṭhop. Up. 3,13,4. — 2) *Lohn bringend:* फलवत्ति च कर्माणि व्युष्टिमत्ति (व्युष्टिमत्ति ed. Bomb.; व्युष्टिः पारमैश्वर्यं तद्वत्ति Nîlak.) MBh. 12,9672. 13,3077.

व्यूक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,369 nach der Lesart der ed. Bomb., वक ed. Calc.

व्यूढ, व्यूढ्क partic. s. u. 1. ऊह् mit वि. Nachzutragen ist: 1) *verrückt, verschoben, versogen* Çâṅku. Ça. 10,2,2. 3,2. Pâraśar. Bh. 25,1,1. दशरात्र Âçv. Ça. 8,8,1. 12,23. 10,3,2. प्रातरनुवाक Ait. Br. 2,18. °छन्दस् *dessen Metra verschoben sind* Çâṅku. Br. 22,7. 27,4.7. Pâraśar. Bh. 10,3,14. — 2) *auseinandergezogen:* °ज्ञानु adj. (durch Zwischenstrecken der Arme Comm.) Çâṅku. Gṛhj. 1,10. — 3) *breit* Halâj. 4,14. व्यूढोरस् MBh. 1,2740. 4552 (ed. Calc. an beiden Stellen व्यूढोरः st. व्यूढोरस् der ed. Bomb.). व्यूढोरस्क R. Gorr. 1,51,18. — 4) *ausgebreitet, ausgetheilt, angerichtet* TBr. 2,3,9,9.

व्यूढकङ्कर adj. s. u. 1. ऊह् mit वि 6).

व्यूति (von 3. वा mit वि) f. = व्युति *das Weben* AK. 2,10,29. Trik. 3,3,134. H. 913. an. 2,154. Med. ṇ. 23. Çâbdar. im ÇKDr.

व्यूढ (1. ऊह् mit वि, aber als simpl. behandelt) med. *in Schlachtordnung stellen:* मव्यूढस्य महाव्यूढम् MBh. 6,2100. 3542. 4500. उभयबलेषु व्यूढितेषु Pâraśar. ed. orn. 57,15. व्यूढितो दानवैर्व्यूढैः (दानवं व्यूढम् die neuere Ausg.) Harıv. 2436.

— प्रति *sich in Schlachtordnung aufstellen gegen* (acc.), *in Gegen-Schlachtordnung aufstellen* (das eigene Heer): प्रत्यव्यूढत (ohne acc.) MBh. 6,2411. तावकानां च तं व्यूढं प्रत्यव्यूढत। मर्धचन्द्रेण व्यूहेन 2412. प्रत्यव्यूढत पाण्डवान् 8,2126. कथं पाण्डुसुताश्चापि प्रत्यव्यूढत (so ed. Bomb.) मामकान् 2128. बार्हस्पत्यं विधिं कृत्वा प्रत्यव्यूढमिशाचरम् 3. 16370. एवमेतं महाव्यूहं प्रत्यव्यूढत पाण्डवाः 6,2420. प्रत्यव्यूढत वाहिनीम् 2291.

1. व्यूर्ण (von 1. ऊर्ण् mit वि) m. 1) *Verschiebung, Verrückung:* स्थान° Nir. 7,11. Çat. Br. 10,4,2,17. 28. Lâṭj. 10,3,16. मक्षराणाम् Schol. zu Kâtj. Çr. 12,6,23. — 2) *Auseinanderrückung, Zerlegung von Halbvocalen und zusammengeschmolzenen Vocalen* ṚV. Prât. 8,22. 16,14.34. 50. अ° 18,27. — 3) *Vertheilung:* तद्विव्यूर्णा ज्ञाना: Varâh. Bṛh. S. 6,7. सुव्यूर्णकान्त adj. (गुरु) R. 5,12,49. चन्द्रे ताराव्यूर्णज्ञानम् व्यूर्णो विशिष्टः संनिवेशः Verz. d. Oxf. H. 230,b,35. चरणव्यूर्णः। चरणाः शाखाः सूत्राणि च। व्यूर्णो विविच्य भेदः Muller, SL. 198. — 4) *Aufstellung eines Heeres, Schlachtordnung, ein Heer in Schlachtordnung* AK. 2,8,2,47. Trik. 3, 3,460. H. 747. an. 2,602. fg. Med. h. 10. Halâj. 5,9. Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 16,67. प्रविश्य च व्यूर्णमेतम् MBh. 1,2755. परव्यूर्णविनाशन 3,2630. 6,674. 2409. 2412. R. 5,73,60. 82,21. 83,2. 6,31,23. फल्गु सैन्यस्य यत्किंचिन्मध्ये व्यूर्णस्य तद्वत् Spr. (II) 509. Ragh. 7,51 (du.). °च्छिद्र Kathâs. 48,7. °द्वार 11. व्यूर्णानामुत्तमा मार्गाः सप्त चैव महापथाः Harıv. 8964. सप्ताङ्ग Kâm. Nîtis. 19,30. fgg. verschiedene Formen aufgezählt und beschrieben 18,18. fgg. शकट, वराह, मकर, सूचि, गरुड M. 7,187. पद्म 188. वज्र 191. शौशनस MBh. 3. 16369. मर्धचन्द्र 6,2412. गारुड R. 6,6,11. मकर° Çiç. 16,67. महासूचि° Kathâs. 47,40. °रचनां विधाय *eine zum Kampf geeignete Stellung einnehmend* (von einem Löwen gesagt) Pañcat. 9,22. ग्राम्येव्यूर्णसंवृत *ein geordneter Jagdzug* Verz. d. Oxf. H. 13,b,42. — 5) *Gesammtheit, ein Ganzes, Complex:* = समूह, वृन्द AK. 2,5,33. 3,4,24,240. H. 1411. H. an. Med. Halâj. 4,2. पदार्थ° Schol. zu Kap. 1,62. प्रत्यूर्ण° Çârîr. 14,61. 265. चित्र° Pinçavatîhar. 4,168 (nach Aufrecht). बुद्धेत्रैव्यूर्णेषु Sadukt. P. 4,5,5. मन° (?) Pañcar. 3,14,19. बुद्धिमनोऽतार्थगुण° Bhâg. P. 4,29,70. मात्मतत्त्वव्यूर्णेनात्मना 5,17,14. Insbes. *die Vereinigkeit* Purushottama's.

ma's als Vâsudeva, Saṁkarshana, Pradjumna und Aniruddha Sarvadarçanas. 56, 16. व्यूहचतुर्विधो वासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धसंज्ञकः 20. fg. 55, 10. Weber, Rimat. Up. 326. Bhâg. P. 11, 6, 10. श्रीवेङ्कटेशपञ्चमव्यूहवर्णन, विष्णुव्यूहवर्णन Verz. d. Oxf. H. 14, a, 2. 3. काय° Gir. 12, 27. Paṇḍar. 1, 1, 50. 2, 8, 4. Auch Bez. *der einzelnen Erscheinungsform:* एकव्यूहविभाग, द्विर्व्यूहसंज्ञित, त्रिर्व्यूह, चतुर्व्यूह als Beiww. Hari's MBh. 12, 13003. fgg. मत्स्यैः चतुर्व्यूहैः Verz. d. Oxf. H. 47, b, 30. एकादश° adj. (रुद्र) Bhâg. P. 5, 25, 3. Hierher vielleicht व्यूह = काय Taik. — 6) *Theil, Abschnitt, Kapitel:* योगशास्त्रं चतुर्व्यूहम् Sarvadarçanas. 180, 11. सदिदं शास्त्रं चतुर्व्यूहम् हेयं हेयसाधनं हानं हानसाधनं च Verz. d. Oxf. H. 237, b, No. 369. कारक° 246, a, No. 618. — 7) = निर्माण Taik. H. an. Med. — Vgl. कारण्ड°, गर्भ°, घन°, चक्र° (auch Kathâs. 30, 40), दण्ड°, नक्षत्र°, प्रभा°, भय°, मल्ल°, ललित°, विमल°, वीर°, सुखवती°.

2. व्यूह (von 2. ऊह mit वि) m. *Raisonnement, Speculation;* = तर्क H. an. 2, 602. Med. h. 10. hierher vielleicht MBh. 14, 1029. = व्यवहाररचनाकौशल Nilak.

व्यूहन (von 1. ऊह mit वि) 1) adj. *auseinanderrückend, sondernd:* Çiva Hariv. 7428. = जगत्तोषक Nilak. — 2) n. *Verschiebung, Auseinanderrückung, gesonderte Aufstellung* Kâty. Çr. 4, 2, 41. मुखव्यूहन 5, 9, 37. 8, 2, 10. छन्दसाम् Schol. zu Kâty. Çr. 12, 6, 22. Soṁa. 1, 23, 2. 15. eine Eigenschaft des Windes Garbhop. in Ind. St. 2, 66. Verz. d. Oxf. H. 223, a, 8 v. u. Bhâg. P. 3, 26, 27 (= मेलनं तृणादेः Comm.). vom Winde bekommt der Fötus व्यूहन (*Entfaltung der Glieder* Stenzler) Jâjñ. 3, 76.

व्यूहपार्ष्णि m. *Hintertreffen* AK. 2, 8, 2, 47. H. 747.

व्यूहपृष्ठ n. dass. Taik. 3, 3, 134.

व्यूहमति m. N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 248, 17.

व्यूहराज m. 1) *der Fürst unter den Schlachtordnungen, die Schlachtordnung der Schlachtordnungen* MBh. 6, 1660. — 2) N. pr. eines Bodhisattva Lalit. ed. Calc. 365, 6. Lot. de la b. l. 2. 254.

व्यूहीकृ (1. व्यूह + 1. कृ) *in Schlachtordnung stellen:* °कृतैर्बलैः Spr. (II) 3308.

व्यूढ partic. s. u. वर्ध् mit वि. Nachzutragen wara *vereitelt, missungen* Çat. Br. 4, 6, 2, 9. 12, 7, 2, 12.

व्यूढि (von वर्ध् mit वि) f. *Ausschlitzung, Verlust; Misslingen, Misserathen, Vereitelung* AV. 3, 8, 9. 14, 2, 49. 12, 5, 29. VS. 30, 17. Çat. Br. 2, 3, 2, 7. यज्ञस्य 4, 5, 7, 9. 12, 7, 2, 12. इन्द्रस्यानु व्यूढिं तत्रं सोमपीथेन व्यार्धत Ait. Br. 7, 28. *Misswachs, Mangel* P. 2, 1, 6. शाकानाम् Schol. — Vgl. सु°.

व्येक (2. वि + एक) adj. (f. या) *woran Eins fehlt* Varâh. Bṛh. S. 53, 19.

व्येनम् (2. वि + एनस्) adj. *schuldlos* ṚV. 3, 33, 13.

व्येनी adj. f. zu व्येत (2. वि + एत) *bunt schillernd:* die Morgenröthe ṚV. 5, 80, 4.

व्येमान s. u. 2. यम् mit वि.

व्यैलव (2. वि + ऐ°) adj. *allerlei Lärm machend* AV. 12, 1, 41.

व्यौकस् (2. वि + ओ°) adj. *auseinander wohnend* Çat. Br. 2, 3, 2, 6. Paṇḍar. Br. 14, 3, 8.

व्योकार m. *Grobschmied* AK. 2, 10, 7. H. 920.

व्यौदन (2. वि + ओ°) m. यस्य वृक्षो व्यौदन उरु क्रमिष्ट ओषधे ṚV. 8, 52, 9. = विविधे ऽन्ने लब्धे सति Sây.

व्योम m. N. pr. eines Sohnes des Daçârha Bhâg. P. 9, 24, 3. व्योमन् Hariv. VP.; vgl. प्रतिव्योम.

व्योमक *ein best. Schmuck* Vjutp. 140. रत्न° als Beiwort von कूटागार Lalit. ed. Calc. 367, 17.

व्योमकेश (1. व्योमन् + केश) adj. *die Luft zum Haar habend:* m. Beiw. Çiva's AK. 1, 1, 4, 30. H. 198. Halâj. 1, 12. Çatar. in Ind. St. 2, 39. MBh. 7, 9526. Verz. d. Oxf. H. 101, a, 37.

व्योमकेशिन् m. dass. ÇKDa.

व्योमग (1. व्योमन् + 1. ग) adj. *im Luftraum sich bewegend, fliegend* Kathâs. 118, 54.

व्योमगङ्गा (1. व्योमन् + ग°) f. *die im Himmelsraum fliessende* Gaṅgâ Taik. 3, 3, 191. MBh. 12, 12421. Megh. 44. Ragh. 12, 55. Kumâras. 6, 5.

व्योमगमन adj. °गमनी विद्या *die Zauberkunst des Fliegens* Kathâs. 59, 106.

व्योमगामिन् adj. = व्योमग Kathâs. 30, 19. 31, 56. 43, 41. 223.

व्योमचर adj. dass. R. 5, 55, 13. Ragh. 3, 31.

व्योमचारिन् 1) adj. dass. Varâh. Bṛh. S. 86, 6. Kathâs. 22, 56. पुर Buddh. im ÇKDa. — 2) m. a) *Vogel* Taik. 2, 5, 37. Med. n. 246. — b) *ein Gott* Med. Râdâ-Tan. 8, 982. — c) d) = चिरञ्जीविन् und हिरण्य Viçva im ÇKDa. a *saint; a Brahman* Wilson ohne Angabe einer Aut.

व्योमधूम (1. व्योमन् + धूम) m. *Himmelsrauch* so v. a. *Wolke* Taik. 1, 1, 52. H. ç. 26. Hâs. 18.

1. व्योमन् (vielleicht von 3. वा mit वि) 1) n. a) *Himmel, Himmelsraum, Luftraum* Naigh. 1, 3 (= घनसंघात). 6 (= दिव्). AK. 1, 1, 3, 1. 3, 1, 23, 183. H. 163. Med. n. 136. Halâj. 1, 137. 3, 73. gewöhnlich durch व्यवन umschrieben Nir. 11, 40. यस्य पारे रजसो व्योमनः ṚV. 1, 52, 12. श्रेष्ठामो न पर्वतामो व्योमनि 5, 87, 9. नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् 10, 129, 1. am häufigsten mit dem Beiw. परम 1, 62, 7. 143, 2. पृच्छामि वाचः परमं व्योम 164, 34. fg. 39. 3, 32, 10. 7, 5, 7. विश्वे देवासः परमे व्योमनि मं वामोर्जो दधुः 82, 2. 9, 86, 15. 10, 5, 7. AV. 6, 123, 1. 2. मदेम तत्र परमे व्योमन् 7, 5, 3. 8, 9, 3. सुधायां मा धेहि प° 17, 1, 6. 18, 4, 30. VS. 13, 42. Taitt. Up. 2, 1. प्रथमे व्योमनि देवानां सदने ṚV. 8, 13, 2. पूर्व्ये 9, 70, 1. ब्रह्मणः पदव्योमानुस्मरणम् Maitrâjan. 6, 34. भुवि दिव्ये ब्रह्मपुरे सोष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः Mund. Up. 2, 2, 7. दिवं भूमिं च निर्ममे । मध्ये व्योम दिशश्चाष्टावर्पो स्थानं च शाश्वतम् M. 1, 18. व्योम्नि चन्द्रतेजसेव MBh. 3, 1821. 1782. 2671. R. 1, 31, 19. 2, 72, 20. 4, 16, 3. 44, 44. व्योम पुष्पवे 42, 15. Megh. 52. Ragh. 12, 67. व्योममध्ये Vikr. 20. व्योमैकान्तविहारिन् Spr. 2922. Varâh. Bṛh. S. 34, 1. Naish. 22, 54. Kathâs. 18, 71. गतिर्व्योम्नि 180. 20, 103. Râdâ-Tan. 3, 81. 4, 203. Dhûrtas. 74, 1. व्योम्ना ऽवतरन्तं नारायणम् Paṇḍar. 46, 18. व्योम्ना *durch den Luftraum* (sich bewegen so v. a. fliegen) Kathâs. 20, 160. 25, 262. 28, 100. 42, 156. व्योममार्गेण dass. 12, 148. व्योमवर्त्मना dass. 44, 184. व्योमायसंचारिन् 28, 191. व्योमकर्ता Sarvad. 12, 30. — b) *Aether* (als Element; vgl. आकाश u. s. w.) Soṁ. 1, 310, 16. Spr. 2163. Bhâg. P. 3, 12, 11. Bhâsâpr. 2. — c) *Wind im Körper* Bhâg. P. 2, 7, 49. — d) *Wasser* Naigh. 1, 13. Med. — e) *Sonnentempel* Med. n. 136. — f) in der Astrol. *das 10te Haus* Varâh. Bṛh. 25 (23), 3. — g) etwa *Aufnahme, Gedeihen* (= रक्षण Comm.): सुतस्य व्योमने, विभूमने, विधर्मणे TS. 3, 3, 8, 1. — 2)

m. *a*) in einer Formel (nach Mahîdh. Prajâpati oder *das Jahr*) VS. 14,23. TS. 4,3,6,1. 5,3,2,2. — *b*) N. eines Ekâha ÇBr. Ça. 14,24, 1. Âçv. Ça. 9,8,6. — *c*) N. pr. eines Sohnes des Daçârha (vgl. व्योम) Harîv. 1991. VP. 422: vgl. प्रतिव्योमन्.

2. व्योमन् (2. वि + यो° von अव्) adj. vielleicht *unrettbar:* वरुणो वा एतं गृह्णाति यं व्योमानं पक्षो गृह्णाति Kâṭh. 13,16.

व्योमनासिका (1. व्योमन् + ना°) f. *Wachtel* Taitt. 2,5,10.

व्योमपञ्चक (1. व्योमन् + प°) n. vielleicht *die fünf Oeffnungen* (vgl. ख) *im Körper* Verz. d. Oxf. H. 236,*a*, No. 567. Verz. d. B. H. No. 649.

व्योमपाद (1. व्योमन् + पाद्) adj. *dessen Fuss im Luftraum steht*, Beiw. Vishṇu's Pâṇḍar. 4,3,80.

व्योममञ्जर (1. व्योमन् + म°) m. *Fahne* Taitt. 2,8,17.

व्योममण्डल (1. व्योमन् + म°) n. dass. Çaṇḍar. im ÇKDr.

व्योममुद्गर (1. व्योमन् + म°) m. *Windstoss, Wirbelwind* Hîn. 210.

व्योममृग (1. व्योमन् + मृग) m. N. eines der 10 Rosse des Mondes Vâyu beim Schol. zu H. 104 (व्योममृग die Hdschr.).

व्योमयान (1. व्योमन् + यान) n. *ein durch die Luft fliegender Wagen, Götterwagen* AK. 1,1,2,43. H. 89, Schol. Gaṇîn. in Verz. d. Oxf. H. 191,*b*, 4.

व्योमरत्न (1. व्योमन् + रत्न) n. *das Juwel am Himmel, die Sonne* H. 95, Schol.

व्योमशिवाचार्य m. N. pr. eines Autors Hall 166.

व्योमसद् (1. व्योमन् + सद्) adj. *im Himmel wohnend* ṚV. 4,40,2. VS. 9,2.

व्योमसरित् (1. व्योमन् + स°) f. = व्योमगङ्गा Kathâs. 72,288.

व्योमस्थली (1. व्योमन् + स्थ°) f. *die Erde* (!) Buddhip. im ÇKDr.

व्योमभ (1. व्योमन् + भा) m. *ein Buddha* Taitt. 1,1,11.

व्योमारि (1. व्योमन् + अरि) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBh. 13,4360.

व्योमोदक (1. व्योमन् + उ°) n. *Regenwasser* Râjân. im ÇKDr.

व्योमोल्मुक (1. व्योमन् + उ°) m. *der Planet Mars* H. ç. 13.

व्योमिक in परम° adj. von परम-व्योमन् *im höchsten Himmel thronend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,76.

व्योष (von 1. उष् mit वि) 1) adj. *glühend, brennend* AV. 3,25,3. 4. — 2) m. *eine Elephantenart* Mân. sh. 27. — 3) n. *die drei brennenden Spezies: schwarzer —, langer Pfeffer und getrockneter Ingwer* AK. 2, 9,112. H. 422. Med. Hall. 2,469. Suçr. 1,165,15. 179,14. 2,40,2. 294, 2. 332,5. 360,2. Pâṇḍar. 3,14,70.

व्रँ (von 1. वृ) 1) m. pl. व्रास् (*begleitender oder sich zusammenschliessender*) *Haufe, Schaar* Naigh. 4,3. Nir. 3,8. अवर्धेङ्ग समनगा इव व्राः ṚV. 1,124,8. सुबन्धवो ये विश्या इव व्राः 126,5. तच्छन्तीरन्यनषत व्राः 4,1,16. 10,123,3. AV. 2,1,1. यद्दीमन्ये अस्मन्मृगं न व्रा मृगयन्ते 8, 2,6. wenn in der Stelle ṚV. 4,1,16 वानतीः zu व्राः zu ziehen ist, wäre dieses als fem. anzusehen. — 2) sg. व्रय (व्रः Padap.) ऋजापि श्रोर्मयि AV. 11,7,3 von unbekannter Bedeutung; es scheint ein blosses Spiel mit verstümmelten Worten zu sein (vgl. न्यः im folgenden Verse).

व्रत scheinbar Verz. d. Oxf. H. 82,*a*, No. 138, Z. 7, wo aber क्षिप्रण्यकर्णिपोर्वत्तः zu lesen ist.

व्रज्, व्रँजति (गतौ) Dhâtup. 7,79. 10, v. l. व्रजीत्रः व्रजाजीत् P. 7,2,3. Vop. 8,47. 58. व्रजिष्यति: aus metrischen Rücksichten auch med. व्रजितुम्, व्रजित्वा, व्रजित्वा. 1) *schreiten, gehen; fortgehen:* mit acc. des Ziels: वव्राजा सीमनदतीः ṚV. 3,1,6. पृथग्व्रजन्तीः पर्ि धीमवृञ्जन् 30,4. AV. 13,71,1. TBr. 2,3,10,3. Çat. Br. 6,6,4,7. वर्षत्यप्रावृतो व्रजेत् ?, 5,2,41. 11,5,6,4. 6,6,2. ग्रामान्तरम् Gobh. 3,5,20. दूरम् Lâṭ. 1,1,22. गृहान् 3,3,1. अन्येन चेद्व्रजा व्रजितः स्यात् *wenn der Brahmen auf einem anderen Wege gegangen ist* 5,9,7. 3,7,8. उपानद्याम् 9,1,24. Âçv. Ça. 4,10,7. Gaṇ. 3,4,6. 4,4,9. Kâṭhân. Up. 8,8,4. — अपराजितां वास्याय व्रजेद्दिशम् M. 6,31. तिष्ठन्तीषु, व्रजन्तीषु (गोषु) 11,111. Bhâg. 2,34 (med.). MBh. 1,5880. 3,2143. 2276. 10787. R. 1,1,25. 2,31,28. 85,7. 3,20,12. 56,31. Raghu. 1,46. Kâm. Nîtis. 5,42. Spr. (II) 3372. Vaitân. Bṛh. S. 91, 1. Kathâs. 47,111. Bhâg. P. 3,5,21. 28,19. 4,3,25. 6,13. 5,10,1. दूरम् 4. Pañcat. 63,18. Vet. in LA. (III) 20,3. पद्भ्याम् Râjat. 5,189. व्रजतो रूपान् शीघ्रम् R. 2,40,46. अविनीतैर्धुर्यैः M. 4,67. fg. वृषस्थितः Bhâg. P. 9,18,3. पाकाय सम् zu Schol. zu P. 3,3,15. 3,3,11. भोक्तुम् dass. 10. काण्डलावः, गोदायः dass. 12. करिष्यामीति dass. 18. अन्यारि *gegen den Feind* H. 792. हिषतो ऽभिमुखम् Kâm. Nîtis. 18,2. ohne Ergänzung dass. M. 7,206. Jâtâ. 1,247. *fortgehen aus dem Lande* M. 8, 124. — mit dem acc. des Wegemasses: योजनानां शतम् M. 11,75. योजनमधनः 132. R. 5,1,44. — mit dem acc. des Weges: वरिष्टं व्रज पन्थानम् MBh. 2,2389 (vgl. वरिष्टं व्रज R. 5,8,18). mit dem instr. des Weges: अविज्ञातेन मार्गेण संकटेन च Kâm. Nîtis. 7,30. नयवर्त्मना 8,87. LA. (III) 67,12. — स्थानात् Vaitân. Bṛh. S. 86,62. Bhâg. P. 10,44,16. इतस् von hier MBh. 3,2520. Kâraṇḍ. 15. — प्रतिलोमं व्रजत्येते व्याकृतो मृगपक्षिणः Harîv. 4262. वधम् M. 6,36. 37. Spr. 2923. 3041. ऊर्ध्वम् Bhâg. P. 4,23,26. क्वचित् M. 2,56. 4,72. अन्यत्र Mârk. P. 61,61. अन्यतस् Raghu. 6,82. Pañcat. 21,4. — व्रजाय oder व्रजम् Vop. 5,19. पुरे ऽत्र Kathâs. 29,189. स्नाऽवप्रस्थम् MBh. 1,2263 (med.). गयाम् Spr. (II) 1474. fgg. R. 2,21,61. 52,59. 4,14,28 (med.). Bhâg. P. 3,1,20. पितुर्यज्ञम् 4,19, 22. स्वर्गम् Harîv. 751 (med.). दिवम् R. 1,60,14. नरकम् M. 8,94. 307. Spr. (II) 957. अन्धतामिस्रम् Vaitân. Bṛh. S. 2,18. यमालयम् R. 2,33,17. योनिं किंनराणां मनुष्याणाम् M. 12,56. वैयाघ्रं पदम् Kathâs. 26,103. व्रजामि मूर्ध्ना तव वीर पादौ R. 4,22,38. अन्तम् *an's Ende* von (gen.) *gelangen* Bhâg. P. 3,6,32. परमां गतिम् *das höchsten Lohnes theilhaftig werden* M. 10,130. MBh. 3,8087 (med.). R. 2,64,40. — ज्ञातीन् *zu den Verwandten* MBh. 3,2331. व्रजाम्येनमशङ्किता 2482. Bhâg. P. 3,5,27 (med.). पुरुषम् *gelangen zu* 3,29,35. विद्विषम् *losgehen auf* Kâm. Nîtis. 10,40. मामेकं शरणं व्रज Bhag. 18,66. 13,1042 (med.). पदाम्बुजं ते । व्रजेम सर्वे शरणम् Bhâg. P. 3,5,42. 31,12. 6,9,26. 8,5,21. — 2) zu einem Weibe (acc.) *gehen* so v. a. *ihm beiwohnen* M. 3,46. 8,370. 382. fg. 385. Suçr. 2,147,11. — 3) von der *Bewegung* unbelebter und auch unkörperlicher Dinge: einer Wolke Megh. 27. किंचित्पश्चाद्व्रज लघुगतिः किंचिदेवोत्तरेण 16. न व्रजन्ति विमानानि विलायसि (st. des folgenden प्रभो ist mit der neueren Ausg. भयात् zu lesen) Harîv. 8225. यानं यदि गच्छेत्र व्रजेत्र *sich vorwärts bewegen* Vaitân. Bṛh. S. 46,60. दिशः सर्वाः (शैलाः पक्षवन्तः) R. 5,7,41. व्रजत्यस्तं रविः Spr. (II) 3731. Vaitân. Bṛh. S. 20,2. रुचिरम् *am Horizont erscheinen* 5,17. वधम् von einer Speise M. 11,132.

सकैव मृत्युर्व्रजति Spr. 3218. व्रजतो विषयाः *fortgehen* (II) 608. यस्मिन्मनो व्रजति तत्र गतो ऽयमात्मा Vasiṣ. Bḍn. S. 75, 2. vom *Verstreichen* der Zeit: कथं वासराणि व्रजेयुः Mṛcch. 104. व्रजतु तव निदाघः Ṛv. 1, 28. काले व्रजति Kim. Nītis. 12, 16. ad Çiç. 193. Spr. 2924. Kathās. 23, 87. Pañcat. 49, 2. 117, 9. 261, 14. — 4) *in einen Zustand —, in eine Lage —, in ein Verhältniss gerathen:* क्षयम् *alt werden* MBh. 3, 16341 (med.). मृत्युम् *sterben* Mārk. P. 26, 39 (med.). यदि व्यापारं व्रजसि मे शरीरे ऽस्मिन् *sich machen an* Vikr. 58. विश्वासं स्त्रीषु *vertrauen* Kim. Nītis. 7, 30. Spr. 1986 (विश्वासम् Conj. für विश्वासे). विनाशम् M. 3, 179. 4, 71. 8, 346. नाशम् Vasiṣ. Bḍn. S. 5, 68. विलयम् R. 5, 36, 117. ध्वंसम् Spr. (II) 3217. ध्वंसम् Vasiṣ. Bḍn. S. 5, 71. क्षयम् 9, 40. 47, 12. उदयम् 7, 1. दर्शनम् 9, 36. मरणं पीडाम् 17, 22. 31, 4. संसर्गं सद्भिः M. 11, 47. रोषम् R. Gorr. 2, 13, 19. शान्तिम् Suçr. 2, 381, 13. शमम् Mārk. P. 99, 14. पाकम् Ṛv. 4, 10. उपयोगम् Kumāras. 1, 7. उद्वेगम् Raghu. 8, 7. निर्वृतिम् Vikr. 28. संधानम्, व्यक्तिम् Çiç. 167, v. l. पुष्टिं परमाम् Spr. 2931. खेदम् Kathās. 32, 21. पशुताम् M. 3, 104. 190. विलक्षतां R. 6, 82, 23. सोपानत्वम् Mucch. 61. Raghu. 18, 16. Kim. Nītis. 4, 13. 30. Çiç. 9. Vasiṣ. Bḍn. 11, 20. 24 (22), 3. Sin. D. 43, 12. 63, 15. Mārk. P. 25, 14 (med.). भस्मत्वम् (so ist zu verbinden) 115, 2. Bhāg. P. 1, 18, 22. Pañcat. 33, 7. — 5) mit पुनर् *in dieses Leben zurückkehren* Jñān. 3, 196. — 6) an eine eigentliche *Bewegung* wird in folgenden Verbindungen gar nicht mehr gedacht: यदि जीवन्व्रजेत् सः *so v. a. mit dem Leben davonkommen* R. 4, 13, 36. तं विना को व्रजेत्सुखम् *so v. a. sich wohl fühlen* Harīv. 15815. — Vgl. दुर्व्रजित.

— caus. व्राजयति (मार्गसंस्कारगत्योः, मार्गणसंस्कारे, मार्गणसंस्कारणे; संस्कारे, सर्पणे Vop.) Dhātup. 32, 74.

— intens. वाव्रज्यते = कुटिलं व्रजति P. 3, 1, 23, Schol. Vop. 20, 3. 4.

— अति *vorüberschreiten:* अपरेण वेदिमतिव्रज्य Āçv. Ça. 2, 3, 11. 3, 1, 18. 4, 10, 1. Kauç. 24. *hinstreichen über:* अतिव्रजद्भिः पतंगैः Ṛv. 1, 116, 4. *durchstreichen, durchwandern, passiren:* अतिव्रज्य सुराष्ट्रम् Bhāg. P. 3, 1, 24. त्रिलोकीम् 4, 12, 34. *hinübergelangen über* (in übertr. Bed.): त्रिगुणम् 3, 29, 14. गतीस्तिस्रः 11, 29, 44.

— व्यति *vorüberschreiten:* तूष्णीं व्यतिव्रजेत् Āpast. 1, 28, 3. *überschreiten:* मर्यादाम् Spr. 3193, v. l.

— अनु 1) *entlang gehen:* उत्तरमग्निम् Āçv. Ça. 2, 17, 6. 4, 4, 3. 10, 2. सरस्वतीम् 12, 6, 3. — 2) *begleiten, nachgehen, folgen:* गौः Kauç. 51. Liṅg. 5, 7, 3. व्रजन्तोघनुव्रजेत् M. 11, 111. MBh. 13, 350. Harīv. 6136. Jñān. 1, 243. अतिविभासीमासम् 112. MBh. 1, 2448. 2, 1605. 2398. 3, 2892. सेना इवमाणा पृष्ठतः 6, 2480. राज्ञः कलेवरम् 15, 1045. Harīv. 7693. 13639. R. 1, 17, 32. 2, 26, 14. यमिच्छेत्पुनरायान्तं नेनं दूरमनुव्रजेत् 40, 48. 46, 9 (44, 9 Gorr.). R. Gorr. 1, 1, 28. fg. 2, 13, 19. यो मां द्रुतमनुव्रजेत् 5, 3, 62. Spr. (II) 3372. Kumāras. 7, 38. Vasiṣ. Bḍn. S. 93, 48. Kathās. 32, 190. 32, 237. 37, 105. Bhāg. P. 2, 19, 20. 11, 14, 16. कन्दुकम् *einem Balle nachlaufen* 3, 12, 22. स्वप्नेनैरनुव्रज्यमानः Pañcat. ed. orn. 4, 4. या श्मशानादनुव्रज्य ह्येनां ज्ञातिभिर्मृतः Jñān. 3, 1. — 3) *besuchen, sich wohin begeben* Liṅg. 5, 4, 3. तीर्थानि MBh. 3, 8366. तेजराणं क्रोः Bhāg. P. 2, 3, 22. देवालयम् Çārṅg. 14, 86. लोकाल्लोकम् Bhāg. P. 3, 31, 43. अनुव्रजे व्रजम् 10, 23, 7. योनिम् *eingehen in* 3, 30, 4. — 4) *in einen Zustand —, in eine Lage sich begeben:* मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति *so v. a. schliessen sich an* Spr. 2236. यज्ञाग्निर्ग्रो संतिष्ठः समानत्वमनुव्रजेत् Mānḍ. P. 40, 39. — Vgl. अनुव्रजन, अनुव्रज्या (auch M. 2, 241, wo Westergaard und Benary ein partic. fut. pass. annehmen).

— समनु *nachgehen —, folgen in Gemeinschaft* MBh. 2, 1606. 12, 1285.

— अप *weggehen* Āçv. Ça. 3, 13, 11.

— अभि *zugehen auf, durchlaufen:* अभिव्रजन्व्रजितं पार्वसा रजः Ṛv. 1, 58, 2. 3, 68, 3. — 1, 144, 5. Kauç. 44. अरण्यस्यार्धमभिव्रज्य 106. 126. कैरलान् *sich begeben zu* Bhāg. P. 10, 79, 19.

— आ 1) *herbeikommen, hinschreiten zu:* कुमारमादायाव्रजत् Çat. Bḍ. 11, 3, 4, 13. 14, 6, 10, 1. Liṅg. 2, 1, 9. दुन्दुभिम् 3, 10, 17. परिषदम् Kauç. 38. fg. आव्रजित 32. 34. मुराकर्मस्वाव्राजमामीत (आव्रज्याव्रज्य Comm.) Liṅg. 5, 4, 11. 8, 10. प्रत्युद्गम्य व्रजतः *herankommend* M. 2, 196. यस्यन्ये ऽतिथिरात्रेव्रजेत् 3, 108. Jñān. 1, 66. MBh. 3, 10081. 4, 1209. गुरुम् *kommen in* M. 3, 111. काश्यम् *kommen —, sich begeben zu* Kaush. Up. 4, 1. MBh. 3, 2277. 4, 215. Bhāg. P. 3, 19, 24. उपद्रष्टारम् Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 2, 166. पौरुषीं गतिम् *gelangen zu* Bhāg. P. 2, 22, 28. — 2) *zurückkommen, heimkehren:* न समापुधमादाय लिप्रमाव्रज R. 2, 31, 31. पुरम् 6, 102, 21. Bhāg. P. 9, 16, 1. संसृतिम् 1, 5, 19. von einem Klystier, *das wieder abgeht*, Suçr. 2, 211, 12. Häufig mit पुनर् verbunden: को नाम जीवन्पुनरायाव्रजेत् MBh. 3, 10373. R. 2, 21, 61. 5, 1, 22. 56, 31. यत्र Bhāg. P. 3, 30, 25. पुरीम् 10, 32, 5. सत्रम् 89, 14.

— उद् *vorwärts schreiten:* धनवेलमाणा ग्राममुदाव्रजन्ति Kauç. 7. 19. fg.

— प्रत्युद् *nach der entgegengesetzten Richtung schreiten* Kauç. 68. 140.

— उप *sich hinbegeben zu:* मुनिमुपाव्रजेत् Bhāg. P. 11, 18, 38.

— प्रत्या *zurückgehen, zurückkehren:* येनेता गच्छेयुरन्येन प्रत्याव्रजेयुः Liṅg. 4, 4, 17. 4, 5, 12. 6, 11. 4, 9, 4. Āçv. Gṛhj. 4, 5, 10. 6, 4.

— समा *zurückkehren:* यः संप्राप्य रणे भीष्मं जीवमानः समाव्रजेत् MBh. 6, 3449.

— उद् *das Haus verlassen:* अध्यायमुदव्रजत् Pañcat. Bḍ. 12, 11, 10. अध्यायमुद्व्रजितं रत्नो ऽगृह्णात् 15, 5, 20. स्वाध्यायमुदव्राज Kaṭh. Up. 1, 12, 1.

— प्रत्युद् *sich aufmachen und Jmd entgegengehen* Rāmây. 1, 90. 12, 33.

— उप 1) *hinzutreten, sich hinbegeben zu, nach:* तमिन्द्र उपव्रयोवाच TBr. 3, 10, 11, 2. Bhāg. P. 10, 4, 2. 11, 13, 20. कृष्णान्तिकम् 10, 54, 36. हरिम् 3, 20, 25. 4, 14, 12. 6, 7, 20. 14, 46. 18, 34, 28. श्मशानतान् 1, 11, 1. विन्ध्यपादान् 5, 4, 20. पुरीम् 9, 7, 19. वृक्षखण्डम् 10, 39, 39. वेलाम् 45, 38. तत्र 7, 8, 37. — 2) *Jmd nachgehen, folgen* R. 5, 20, 13.

— प्रत्युप *in feindlicher Absicht auf Jmd* (acc.) *losgehen, angreifen* MBh. 12, 3540.

— निस् *hinausschreiten* Kauç. 76.

— परि *herumschreiten, umwandeln; umherwandern:* मेरुं परितः पर्यव्रजन् Çat. Bḍ. 14, 6, 3, 1. उत्तरेण वेदिं परिव्रज्य Āçv. Ça. 4, 6, 1. प्रमव्यमायतनं परिव्रजन् 5, 10, 17. Gṛhj. 2, 8, 11. 9, 7. 4, 2, 10. मनुष्येश्वरालयम् R. 5, 37, 24. पुत्रस्त्वेवार्थे पिता वसेत् परि वा व्रजेत् *als obdachloser Bettler umherwandern* Kaush. Up. 2, 15. वनेषु तु विकृत्यैवं तृतीयं भागमायुषः। चतुर्थमायुषो भागं त्यक्त्वा सङ्गान्परिव्रजेत् M. 6, 33. 41. 83. Jñān. 3, 58. MBh. 12, 344. 550. 566. 13, 6475. Çārṅg. 14, 66. परिव्रजत्यदर्वी Bhāg. P. 3, 24, 34. 7, 13, 1. — Vgl. पारिव्रज्य, परिव्राज् fgg.

— प्र *vorwärts schreiten, zugehen auf; weiter gehen, wandern:* प्र वा व्रजति प्र वा धावति *geht oder fährt* Çat. Br. 2,4,4,6. 5,4,4,17. ततः प्राव्रजत् 11,6,1,3. 14,7,2,25. 3, 2. 25. घराण्यम् Çiñkh. Ça. 16,16,4. Liṭ. 8,8,6. Âçv. Gṛhj. 1,23,24. Ça. 2,5,4. Kâṭhâ. Up. 3,6,3. रथमारुह्य प्रवव्राज Praçnop. 6,1. Kaush. Up. 4,19. MBh. 4,138. R. 2,22,14. 3,53, 21. मकारण्यम् MBh. 4, 596. वने R. 3,53,16. वनाय MBh. 2,2613. ग्रामाय, वनाय, नाशाय 5,2605. पुण्यादेव प्रव्रजन्ति (पापानि कर्माणि) *absolescunt* 3,12453. प्रव्रजित (s. auch bes.) *ausgewandert, fortgezogen* R. 2,48, 22. 51,12. 5,24,5. 6,19,52. वनम् 2,39,25. Spr. (II) 1302. धर्मः प्रव्रजितः 3092. प्रव्रजितताय adj. (so ed. Bomb.) *davongelaufen* MBh. 6,3142. Insbes. *das Haus verlassen um als Asket zu wandern:* प्रव्रजिष्यतो ऽयनम् Liṭ. 10, 19, 11. M. 6, 34. MBh. 1, 3731. 12, 306. Bhâg. P. 1,2,2. 3,23, 49. 7,12, 14. Burnouf, Intr. 46. गृहात् M. 6, 38. fg. Bhâg. P. 1, 13, 25. 4,31,1. ब्रह्मावर्तात् 5,5,28. वनम् MBh. 1,3544. प्रव्रजित (s. auch bes.) *der das Haus verlassen hat um als Asket zu wandern* M. 8,363 (fem.). 407. Burnouf, Intr. 168, N. 1. Hit. 64,4. गृहात् Bhâg. P. 2,1,16. वनम् 3,33,31. — Vgl. प्रव्रजन, प्रव्रजित, प्रव्रज्या (auch Maitrâyaṇ. 6,28), प्रव्राज् fgg., प्रव्राजिन्. — caus. प्रव्राजयति (प्रव्रज° R. 6,82,121 fehlerhaft). 1) *Jmd* (acc.) *verbannen* MBh. 2, 2674. 3, 2041. विषयात् 4, 227. 5,920. 14,248. वनम् R. 2,26,19. 56, 29. R. Gorr. 2, 8, 4. 45, 21. 61, 6. 78,19. Hâṭ. 12,6. प्रव्राज्यमान R. 2,55,14 (16 Gorr.). 64,62. प्रव्राजित MBh. 1,170. 5,756. R. 2,63,3. R. Gorr. 2, 8, 27. 58, 28. — 2) *Jmd als Asketen wandern lassen* Burnouf, Intr. 46. wohl hierher प्रव्राजयितुम् MBh. 13,446. विधिवत्स्वोचितं कर्म त्याजयितुम् Nîlak. — 3) प्रव्राजित MBh. 6,3142 fehlerhaft für प्रव्रजित, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. प्रव्राजन. — desid. vom caus. s. प्रविव्राजयिषु.

— अनुप्र *Jmd* (acc.) *in die Verbannung folgen:* अनुप्रव्रजितो रामम् R. 5,36,61.

— अभिप्र *vorschreiten in der Richtung zu Jmd hin* Kâṭhâ. Up. 3,7, 2. Kaush. Up. 2,3. 4. TBr. Comm. 1,89,2 v. u.

— विप्र *auseinandergehen* Kâṭ. Ça. 24,6,12. — Vgl. विप्रव्राजिन्.

— प्रति *heimkehren:* मन्दिराय Bhatt. 8, 96.

— सम् *wandeln:* पत्रैव संव्रजन्नन्वाख्यायपचनमनुस्मरेत् Çat. Br. 2,3,2, 4. Kâṭ. Ça. 4,15,32.

— अनुसम् *hinterhergehen, folgen:* प्रपाद्यमाने राजन्ययेणानो ऽनुसंव्रजेत् Âçv. Ça. 4,4,5. Gobh. 2,2,14. इमा (गाः) अनुसंव्रज Kâṭhâ. Up. 4,4,3.

— उपसम् *hineintreten in:* (न) व्याकीर्णं भिक्षुकैर्वान्यैरागारमुपसंव्रजेत् M. 6,51.

व्रज (von व्रज्) P. 3, 13, 119. m. (nach Siddh. K. 251, *a*, 1 v. u. auch neutr., das aber nicht zu belegen ist). 1) *Zaun, Umhegung, Einfriedigung;* besonders *Hürde zur Aufnahme des Viehs, Pferch; Stall;* = गोष्ठ, गोकुल AK. 3,4,2,32. H. 1273. an. 2, 76. Med. ǵ. 15. Halâ. 2, 107. व्यू व्रजस्य तमसो द्वारश्वन् RV. 4,51,2; vgl. 1,92,4. यत्ति स्तेन इव व्रजमक्रमुः 10,97,10. परि व्रजेव वाद्योर्गन्धामा स्वर्णरम् *in den Armen wie mit einem Zaun umschliessend* 5,64,1. यभि व्रजे न तस्थिषे 8,6,28. व्रजे कृष्णं न हि वो नृपाणाः 10,101,8. सृणीरप व्रजे दिवः 9,102,8. व्रजमा पशुगात् 2,38,8. 4,31,12. या देवयुं भनति गोमति व्रजे *reicher Viehstand* 5,34,8. 7,27,1. 32,10. 8,41,6. 24,6. Vâlakh. 3, 8. यस्मिन् 10,25, 8. AV. 2,11,8. 4,39,7. व्रजे गच्छ गोष्ठानम् VS. 1,25. Çat. Br. 14,9,4, 22. Çâṅkh. Âr. 2,16. TBr. 3,8,22,2. *der Ort, wo die von Indra zu befreiende Heerde eingesperrt ist;* daher = मेघ Nigh. 1,10. Nir. 6,2. व्रजो गोः पुरा रुरुक्षोर्यात् RV. 3,30,10. 4,16,6. 20, 8. गव्य 1,131,3. 6, 45, 24. स व्रजं दर्ता पार्ये यथ गोः 66, 8. 8, 32, 3. *Stall* als Gebäude: यस्मिं संचरंति गावं उज्जमिव व्रजम् 10,4,2. *Weideplatz:* व्रजे न घा प्रुषायति 26,3. ये न दुरुक्षि ते मार्ये व्रज इव निवसन्ति *bleiben auf der Weide* Sâj. zu Âçv. Br. 3,18. — व्रजे वाप्यव वारणे *Pferch für Rinder, Hirtenstation* MBh. 3,12441. Harîv. 3371. 3648. fg. कृष्णगोमिव व्रजे 3700. 8391. Kâm. Nîtiç. 18, 60. Çiç. 2, 64. पुरग्रामव्रजाकराः Bhâg. P. 1,6,11. 10, 4. 14,19. 2,7,28. °पशु ebend. 4,18,21. 5,3,20. 8,2,3. 24,66. 10,5,6. 11, 29. तस्माद्वनं नवतृणं गच्छन्तु धनिनो व्रजाः *Heerden* Harîv. 3493. यवरुणद्धि गां व्रजम् *Kuhstall* P. 1,4,21, Schol. Bhâg. P. 10,44,16. व्रजाङ्गन *Hofraum in einer Hirtenstation* Pâṇḍar. 4, 8, 10. am Ende eines adj. comp. f. घा Harîv. 3922. — 2) Bez. der Umgegend von Agra und Mathurâ, dem Aufenthaltsort des Kuhhirten Nanda, Pflegevaters des Kṛshṇa, Inschr. in Z. f. d. K. d. M. 4,171. — 3) *Heerde, Trupp, Schwarm, Menge* AK. 2,5,39. 3,4,2,32. H. 1411. H. an. Med. Halâ. 4,1. गवाम् AK. 2,9,38. खर्वताम् Çiç. 12,31. मृग° 43. प्रियक° 4,33. हिरद्° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Cl. 20. शलभ° MBh. 6,62. खगमानाम् 3797. धमराणाम् 4542. अलि° Hâṭ. 9,34. ज्ञन° MBh. 1,5831. पुरुष° 2,634. पक्षिक° Çiç. 6, 6. द्विज° 14, 33. धनुग° Râǵa-Tar. 8, 807. नेत्र° Hâṭ. 6,7. पक्ष्मघात्त° Spr. 1720. शराणाम् MBh. 4,1364. बाण° R. 5,75, 14. अस्त्र° Hâṭ. 7,37. रथ° MBh. 4,1036. 6,3442. AK. 2,8,2,23. अनर्घ° Spr. 2598. संग्रामः सत्रघः *ein Kampf mit Vielen* Mahâ. P. 68,20. व्रजो गिरिमयः wohl so v. a. गिरिव्रज Harîv. 7571. अनुव्रजम् *schaarenweise* Pâṇḍar. 1,4,60. — 4) *Weg* AK. 3,4,2,22. H. an. Med. — 5) N. pr. eines Sohnes des Havirdhâna Harîv. 83. VP. 106. — Vgl. अश्म°, उट्°, उरु°, गिरि°, गो°, दश°, मेरु°, शत°.

व्रजक (von व्रज्) m. *Asket* Çabdar. im ÇKDr.

व्रजकिशोर m. *Hirtenknabe*, Bez. Kṛshṇa's Vrâǵabhaktivilâsa im ÇKDr.

व्रजचित्त् adj. *in der Umfriedigung bleibend* VS. 10,4.

व्रजन (von व्रज्) 1) n. *a) das Wandern, Hingehen an einen Ort:* अन्यत्र Pâṇḍar. 116,24. *das in-die-Verbannung-Gehen* Spr. 2630, v. l. für प्र°. — *b) Bahn, Strasse* RV. 7,3,2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Âgamîḍha MBh. 1,3722. 3724.

व्रजनाथ m. *Beschützer der Rinderhürden*, Beiw. Kṛshṇa's MBh. 2, 2292.

व्रजभक्तिविलास m. Titel eines Abschnittes im Mîmâṅsâ-P. ÇKDr. unter व्रजकिशोर am Ende.

व्रजभाषा f. *die um Agra und Mathurâ gesprochene Sprache* Colebr. Misc. Ess. 2, 33.

व्रजभू m. *ein best. Baum*, = केलिकदम्ब Çabdâv. im ÇKDr.

व्रजमण्डल n. = व्रज 2) Vrâǵabhaktivilâsa im ÇKDr.

व्रजमोहन adj. *die Hirten verwirrend*, Beiw. Kṛshṇa's ÇKDr. nach einem Purâṇa.

व्रजयुवति f. *Hirtin* Kâraṇḍ. 138.

व्रजराजदीक्षित m. N. pr. eines Mannes Hall. 77.

व्रजरामा f. *Hirtin* Kshandom. 135.

व्रजलाल m. N. pr. eines Fürsten am Ende des vorigen Jahrhunderts Verz. d. Oxf. H. 215,*a*, No. 317.

व्रजवधू f. *Hirtin* Verz. d. B. H. No. 576.

व्रजवनिता f. dass. Kshandom. 137.

व्रजवर् adj. *der beste in der Hirtenstation* (um Mathurâ), Beiw. Kṛshṇa's Vraǵâbhaktivilâsa im ÇKDa.

व्रजवल्लभ m. *der Liebling in der Hirtenstation* (um Mathurâ), Beiw. Kṛshṇa's ÇKDa. nach einem Purâṇa.

व्रजविलास m. Titel einer Schrift Ind. St. 1,471.

व्रजविलास m. Titel eines Gedichts, herausgegeben in Harn. Anth. 519. fgg.

व्रजसुन्दरी f. *Hirtin* Gît. 1,16. 3,1.

व्रजस्त्री f. desgl. Rîǵa-Tar. 2,167. Bulc. P. 1,10,28.

व्रजस्पति (व्रज + पति, künstliche und ungrammatische Bildung nach der Analogie von बृहस्पति u. s. w.) m. *Herr der Rinderhürden*, Beiw. Kṛshṇa's Bulc. P. 10,39,23.

व्रजाङ्गना (व्रज + अ°) f. *Hirtin* Kshandom. 40. 154.

व्रजावास (व्रज + आ°) m. *Hirtenniederlassung* Bulc. P. 10,11,34.

व्रजिन् (von व्रज) adj. *im Stall befindlich* ṚV. 5,45,1.

व्रजेन्द्र (व्रज + इन्द्र) m. *Vorstand der Hirtenstation* (um Mathurâ), Beiw. Nanda's: °नन्दन patron. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4,8,10.

व्रजेश्वर (व्रज + ई°) m. *Vorstand der Hirtenstation* (um Mathurâ), Beiw. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4,8,10.

व्रजौकस् (व्रज + आ°) m. *Hirt* Bulc. P. 3,2,28. 7,7,54. 10,11,36. 33,28.

व्रज्य (von व्रज) adj. *zur Umfriedigung gehörig* VS. 16,44.

व्रज्या (von व्रज्) f. nom. act. Nir. 1,1. P. 3,3,98. Vop. 26,486. 1) *Aufbruch, Marsch* AK. 2,8,2,63. Taik. 3,3,320. H. 789. Med. j. 53. — 2) *das Umherstreichen* AK. 2,7,35. H. 1501. Med. Hallâ. 4,91. — 3) = वर्ग (also wohl von वर्ज्) *Abtheilung, Gruppe, Klasse* Taik. Med. कोषः शोकसमूहस्तु स्यादन्योऽन्यानपेक्षकः । व्रज्याक्रमेण रचितः Sin. D. 565. सजातीयानामेकत्र संनिवेशो व्रज्या Comm. — 4) = रङ्ग (रंग wohl nur ein verlessenes वर्ग) Dhan. im ÇKDa.

व्रज्यावस् (von व्रज्या) adj. *einen schönen Gang habend* Bhatt. 7,70.

व्रज्र्मिन् m. nom. abstract. von वृज partic. von वर्ज् (2. वर्ज्) gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

व्रण (व्रण्), व्रणति (शब्दार्थ) Dhâtup. 13,8. व्रणतीति व्रणः Suçr. 2,2,1. — व्रणय् s. bes.

व्रण gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. m. n. (das n. äusserst selten) AK. Taik. 3,5,13. Sidd. K. 249,*a*,8. 1) *Wunde, offener Schaden am Leibe* AK. 2,6,2,5. H. 464. Hit. 136. Hallâ. 3,8. Wils. 164. व्रणतीति व्रणः Suçr. 2,2,1. वृणोति यस्माद्रूढे ऽपि व्रणवस्तु न नश्यति । या देहधारणात्तस्माद्व्रणा इत्युच्यते 1,83,9. 88,18. M. 8,237. प्रतोदेन व्रणा ये मे वया कृताः MBh. 13,2815. R. Gorr. 2,49,25. वम्राशनिकृत° 2,36,8. Rîǵa-Tar. 4,688. मल्लिका व्रणमिच्छन्ति Spr. 4680. Varâh. Bṛh. S. 52,10. व्रणाङ्कितशिरस् Bṛh. 17(15),1. Rṭus. 12,25. व्रणे क्षारमिवादधाः R. 2,73,9. व्रणे लुप्तेव (so ed. Bomb.) सूचिना 75,16. व्रणावत 4,59,19. शरीरे व्रणः समुत्पन्नः Paṇḍat. 170,25. 171,1. विस्तारितवक्त्र° 3 (zu lesen °व्रण आनिः). व्रणे कृम्युत्पत्तिप्रायश्चित्तम् Verz. d. Oxf. H. 282,*b*,21. °विज्ञानप्रतिषेध 308,*b*,23. °वर्ण Suçr. 1,85,18. शुद्ध 88,12. व्रणास्य षष्टिरुपक्रमाः 2,3,14. °कोविद 6,19. °ज्ञान 15,3. °क्रिया 17,3. व्रणाः संरोक्तिं 1,83,15. Çiâṇ. Saṅk. 1,7,55. व्रणास्तस्य दिने दिने । न पूरं न रुरोहैव यावज्जीवमाययौ Kathâs. 28,160. °संरोहण R. Gorr. 2,8,15. बृह° Kathâs. 65,15. Rîǵa-Tar. 4,281. संबृह° R. 3,73,6. °विरोपण Çiç. 89. °प्रश्न Suçr. 1,77,3. व्रणास्राव *Ausfluss aus Wunden* oder *offenen Geschwüren* 83,10. °वस्तु *Sitz —, Ort einer Wunde* 8,11. °वेदना 85,7. Ragu. 12,99. °धूपन Suçr. 1,133,12; vgl. °धूम 2,235,16. °शोधिन् *an Wunden —, an Geschwüren abstrend* 2,6,14. °शोथ Verz. d. Oxf. H. 314,*a*,2. दुष्ट° Suçr. 2,26,3. 399,10. Spr. (II) 1072. 3590. शारीर° Verz. d. Oxf. H. 314,*a*,5. सद्यो° 6,7. 308,*b*,25. भग्न° 314,*a*,9.10. नाडी° 12. दन्त° von *einem Zahne herrührend* Spr. (II) 3567 (n.). कुलिश° Ragu. 3,63. — 2) *Scharte, Riss, Verletzung, Fehler:* an einem Schwerte Varâh. Bṛh. S. 50,1. 3. 10. an Edelsteinen 82,11. an einem goldenen पट्ट 49,7. °हारणि MBh. 12,11311. स° Harîv. 12245. — Vgl. अ° (auch Bulc. P. 3,3,27. दण्ड Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,3. गाण्डीव MBh. 1,8181. 4,1310. असि 231. लिङ्ग 12,11310. व्रत Bulc. P. 3,3,7), अकृत°, वरु°, छिन्न°, निर्व्रण (von Baumen R. 6,113,6), मक्षा°, रत°, वनस्त°.

व्रणकारिन् adj. *Wunden erzeugend, wund machend* AK. 3,4,25,191, wo wohl °कार्ण्यकृत्करः zu lesen ist.

व्रणकृत् 1) adj. dass. — 2) m. *Semecarpus Anacardium Lin.* Ratnam. 68.

व्रणकेतुघ्नी f. *ein best. Strauch*, = दुरभेदनी Rîǵân. im ÇKDa.

व्रणक्षिता f. *Schoenanthus indicus Roxb.* Dhanv. in Nigh. Pr.

व्रणक्षिति (nom. °क्षिद्) m. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Çabdâ. im ÇKDa.

व्रणपट्ट m. *Binde um eine Wunde:* आमुक° Rîǵa-Tar. 4,454. °पट्टक m. dass. Kathâs. 28,159. 72,10 (am Ende eines adj. comp.), °पट्टिका f. dass. 65,18. 85,14 (am Ende eines adj. comp. f.). 101,321 (am Ende eines adj. comp. m.).

व्रणय् (von व्रण), °यति *verwunden* Dhâtup. 35,82. व्रणयम् Spr. 2990. व्रणित *gaṇa* तारकादि zu P. 5,2,36. *verwundet, wund* Spr. 4866. R. 3,34,17. 5,71,22. Suçr. 1,69,2. 2,17,2. Uttarâs. 73,13 (94,13). Kathâs. 10,127. 26,172. 51,173. 60,150. 104,205. Rîǵa-Tar. 3,82. रेणुव्रणितलोचन 401.

— निन्. साकूतनिर्व्रणितरूपादिक (?) Kathâs. 38,28.

व्रणवत् (wie eben) adj. *wund, verletzt* MBh. 12,11312.

व्रणहृ 1) adj. *Wunden vertreibend.* — 2) m. *Ricinus communis* (एरण्ड). — 3) f. आ *Cocculus cordifolius DC.* Çabdâ. im ÇKDa.

व्रणाहृत् 1) adj. *Wunden vertreibend.* — 2) m. *Methonica superba Lam.* Rîǵân. im ÇKDa.

व्रणायाम (व्रण + आ°) m. *Wundenschmerz* (vom humor der Luft herrührend) Çiâṇ. Saṅk. 1,7,70.

व्रणारि (व्रण + अरि *Feind*) m. 1) *eine best. Pflanze*, = अगस्त्य. — 2) *Myrrha* Râǵân. im ÇKDa.

व्रणिन् (von व्रण) adj. *wund, verwundet* Suçr. 1,8,11. 69,2. 2,24,13. 399,2. Spr. (II) 1895.

व्रणिल (wie oben) adj. *wund:* ein Raum Snapr. Ba. 4,4.

व्रणीय (wie oben) adj. am Ende eines comp.: द्वि° von *den zweierlei Wunden* (शारीर und आगन्तुक, *den von selbst entstandenen und durch fremde Gewalt zugefügten*) *handelnd*, Suçr. 2,1,3. 5.

व्रण्य (wie oben) adj. *für Wunden zuträglich* Suçr. 1,190,3. 195,13. 214,20.

1. व्रत (von 2. वृ) 1) n. (nach AK. 2,7,37 und Taik. 3,5,11 auch masc., welches wir nur durch M. 2,3 zu belegen vermögen). am Ende eines adj. comp. f. या. *a) Wille, Gebot; Gesetz, vorgeschriebene Ordnung* ṚV. 2,8,3. 38,7. 9. 3,56,1. तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः 7,31,11. 47, 3. देवानामति व्रतम् *gegen den Willen der Götter* 10,33,9. प्रचाकशद्वसानि देवः सविताभि रत्नते (oder zu *d*) 4,53,4. 5,63,7. 7,83,9. सर्वव्यानि वरुणस्य व्रतानि 1,24,10. यप्रघ्युत 2,28,8. ध्रुव 5,69,1. व्रता ते यज्ञे मरुतो मृळयानि 3,6,8. 7,6,2. तमर्यमाभि रक्षत्यृजूयतामनु व्रतम् 1,136,3. 2,38,2. धनुं व्रतं वरुणो पत्ति मित्रः 4,13,2. 3,61,1. व्रता देवानां मनुष्यस्य धर्मभिः *nach göttlicher Ordnung und menschlichen Satzungen* 3,60,6. 5,72,2. — *b) Botmässigkeit, Gehorsam; Dienst* ṚV. 1,31,1. यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः 101,3. 10,36,13. यार्यशदस्य व्रत या निमृया: 2,38,2. 5,83,5. 7,5,4. यस्ते शिक्षति व्रतेन *gehorsam* 3,39,2. यादित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तः 3. 6,54,9. वयं सोम व्रते तव प्रजावन्तः सचेमहि 10,57,5. AV. 4, 25,3. यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे 7,40,1. मम वाचमेकमनो जुषस्व Âçv. Gṛhj. 1,21,7. — *c) Gebiet:* या: पार्थिवासो या यवामपि व्रते ṚV. 5,46, 7. 3,38,6. गुहा 54,5. 1,163,3. 10,114,2. व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु AV. 7,68,1. तस्य व्रतं रक्षतं विशे जनाय शर्म यच्छतम् ṚV. 1,93,3. — *d) Ordnung so v. a. geordnete Reihe, Reich:* त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम् ṚV. 3,27,3. जनयतो दैव्यानि व्रतानि 7,75,3. यार्या व्रता विसृजन्तो यधि तानि 10,65,11. यावापृथिवी जनयन्नभि व्रताय सोमधीः *die Reiche* (der Natur) 66,9. श नो यदिर्नेषतु व्रतेभिः *sammt den* (verschiedenen) *Reichen* 7,35,9. hierher vielleicht auch यतो व्रतानि पस्पशे 1,22,19. 4, 53,4. — *e) Beruf, Amt; gewohnte Thätigkeit, Thun, Treiben, Gewohnheit:* नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् ṚV. 9,112,1. विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रतम् *beobachtest eines Jeden Thun* 37,5. विश्वेतानि वरुणस्य व्रतानि *das alles ist* Varuṇa's *Amt* 8,42,1. सूर्यस्य व्रतानि *Weise —, Verhalten der Sonne* TS. 4,3,44,2. यादित्यस्य व्रतमनुपर्यावर्तन्ते *sie ahmen die Bewegung des* Âditja (*der Sonne*) *nach* Ait. Br. 3,11. वर्णस्य व्रतानिनात् *das Treiben der Fluth* ṚV. 10,111,4. या वेद्यिष्ठमा वो व्रतमा वो ऽर्के समिति दद्दे 166,4. तन्वः, मनोमि, व्रता AV. 5,74,1. 6,2. 2,30,2. 3,8,5. VS. 12,55. नानामनसः खलु वै पशवो नानाव्रताः TS. 5,3,4,2. यर्क° (v. l. यादित्य°) Spr. (II) 743. यग्नि° (I) 1717. मारुत 1869. यम° 2321. पार्थिव 2325. वारुणैर्व्रतैः 2751. व्रतं वारुणम् 2752. यालम्ब्य कुमुद्व्रतम् Kathâs. 72,287. चकोर° 76,11. योध° MBh. 8,2357. साधुव्रते स्थितः 4,31. निर्वाकः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम् Spr. (II) 1737. सत्पुरुष° 3277 (pl.). (I) 2768. MBh. 7,6988. Kathâs. 101,37. मक्तुं सतां व्रतम् 18,188. शिष्ट्य° Harîv. 3138. यकापुरुष° Spr. (II) 398. विनयो हि सतीव्रतम् Kathâs. 17,86. न मूढव्रतमाचरेत् Spr. 4778. समानव्रतभृत् *dieselbe Lebensweise befolgend* 4603. वेखानस Çik. 26. तुल्यनाम° adj. Bhâg. P. 4,24,13. भग्न° adj. Rasik. 17,42. यथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः *so v. a. wenn du ein reines Gewissen hast* Çik. 123. शुचि° adj. (f. या) M. 9,70. R. 2,77,10. शुभ° adj. 1,9,8. — *f) religiöse Pflicht, Gottesdienst; Pflicht* überh.; = कर्मन् Nigh. 2,1. Nir. 2,13. 12,45. — ṚV. 1,22,6. कविर्देवानां परि भूषसि व्रतम् 31,3. 136,5. 144,1. ऋतस्य देवा धनुं व्रता गुः 65,2. 3,7,7. तवे व्रतायं मतिभिर्यतामहे 2,23,6. धनुं व्रतानि वर्तते रुवण्यान् 1,183,3. तस्य व्रतानि वयमुर्यं भूषेम दम या सुवृक्तिभिः 3,3,9. व्रतेः सीदन्तो यव्रतम् 5,14,3. 8, 92,1. 9,73,3. यहेळो वयं प्रमिनाम व्रतानि *wenn wir unsere Pflichten gegen euch verabsäumen* 10,2,4. 25,3. AV. 7,74,4. MBh. 13,127. पत्यौ भक्तिर्व्रतं स्त्रीणामदेवो मानुषो व्रतम् । प्रजानुपालनानन्यकर्मता भूभृतो व्रतम् *Aufgabe* Spr. 4495. यहं ते संप्रदास्यामि कां वैश्यव्रते स्थितः *die Pflichten eines* Vaiçja *erfüllend* Mârk. P. 116,3. विष्णु° *Pflichten gegen* Bhâg. P. 3,4,7. तद्व्रत adj. *die Pflichten gegen sie* (die Gattin) *erfüllend* M. 3,48. पितृ° adj. Bhâg. 9,23. यतिथि° adj. MBh. 13,2019. गृह° adj. so v. a. *die Pflichten eines Haushalters erfüllend* Bhâg. P. 7,5,30. — *g) jede übernommene religiöse oder asketische Begehung oder Observanz: Regel, Gelübde, heiliges Werk* (z. B. Fasten, Keuschheit) AK. 2,7,37. H. 843. Hall. 5,67. 74. व्रतं चरिष्यामि VS. 1,5. 19,30. व्रतं च यद्वो घोषेमि 20,24. धर्मस्य AV. 4,11,6. धनुदुहः 11. 10,7,1. 11. 11,7,9. TBr. 1,4,4,2. यः संवत्सरं व्रतं चरति 3,8,4. त्रिरो रात्रीर्व्रतं चरेत् *er übe Enthaltsamkeit* 2,5,8,7. Çat. Br. 5,7,6,1. भृगूणां वा व्रतेनादधामि *nach der Regel der* Bhṛgu TBr. 1,1,6,5. मे हि नक्तं व्रतानि सुव्यन्ते TS. 1, 5,9,5. तुरीयवि नामं व्रतम् 6,2,8,2. तस्यैतद्व्रतं नानृतं वदेन्न मांसमश्नीयात् *für ihn gilt folgende Regel* 2,5,8,6. 5,5,4,3. Ait. Br. 8,28. Çat. Br. 1, 1,4,1. fgg. धनशनमेव व्रतं मेने 7. 4,6,4,2. 10,3,4,2. 4. Kâtj. Çr. 1,10, 12. 4,15,4. यहं न निन्द्यात् तद्व्रतम् Taitt. Up. 3,7. 8. दीक्षित° Ait. Br. 7,23. Çâṅkh. Çr. 3,8,10. Kâtj. Çr. 4,6,12. गृह्यमेधि° Gobh. 1,4,26. Âpast. 2,1,1. यर्धमास° Gobh. 4,3,21. °विसर्जन Kâtj. 42. 68. °विसर्जनीय Çat. Br. 5,3,2,2. °विसर्ग Pârâs. Br. 2,10. °समापन Kâtj. 42. व्रतादानीय 56. — M. 2,165. व्रतोपवासपरा R. 2,26,28. Spr. 2925. Brahmâ-P. in L.A. (III) 49,14. न संतोषसमं व्रतम् Spr. (II) 3689. Rasik. 2,4. व्रतानि पञ्च भिक्षूणाम् Mârk. P. 41,16. °पञ्चाशीति Verz. d. Oxf. H. 34,b,41. एकब्रह्मव्रताचारः AK. 2,7,11. H. 80. व्रतात् *in Folge eines Gelübdes* 810. °वशात् dass. AK. 2,7,43. व्रतं चर् M. 4,198. fg. Spr. (II) 3836. Bhâg. P. 3,1,19. 4,22,12. यघावच्चरित° adj. MBh. 3,2246. चरित° adj. R. 1,3,1. सुचरित° adj. M. 11,116. चीर्ण° adj. Bhâg. P. 3,10,33. तच्चैनं चारयेद्व्रतम् M. 11,176. एतदेव व्रतं कुर्युः 117. 170. 181. मौनं वर्षसहस्रस्य कृत्वा व्रतमनुत्तमम् R. 1,65,2. Kathâs. 13,77. व्रतानीमानि धारयेत् M. 4,12. Bhâg. P. 9,2,10. तेन सार्धं व्यधाद्व्रतम् Kathâs. 13,78. 21, 142. काश्यमात्तमिदं कष्टमीदृशेन त्वया व्रतम् 28,20. 21,142. व्रतादान H. 81. Hall. 4,21. व्रतं भङ्ग् Kathâs. 66,91. °भङ्ग Pârâs. 34,9 (ed. orn. 30,13). व्रतमाप्ति Pârâs. 52,9. यन्यव्रतमा Hit. 19,21. धनुष्ठा Bhâg. P. 5, 17,1. समाप्त Varâh. Bṛh. S. 105,7. व्रतं समापयेत् Wasan, Kâmas. 308. fg. या व्रतस्य समापनात् M. 5,56. व्रतं पालयतः Rasik. 2,25. पारग् R. 2, 55,19. MBh. 3,16719. °संपादन Vish. 37,7. व्रतमादिश् M. 4,80. fg. R. 2,52,63. उद्दिश् MBh. 3,16716. क्लिनस्ति व्रतमात्मनः M. 2,180. °लोपन 11,61. °भङ्ग Verz. d. Oxf. H. 88,a,26. 282,b,41. fg. चिक्ष् Bhâg. P. 5,18,37. यस्कन्दित° 1,6,32. शान्त° 3,21,37. पालित° Kathâs. 3,33. नियत° 35,26. यत° MBh. 1,6936. संयित° 8102. M. 1,104. R. 2,54,

10. 95, 7. विपुल° MBh. 1, 5126. वृषा° Harıv. 11187. शंकराराधन° Kathâs. 21, 142. ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः Brahma-P. in LA. (III) 50, 13. मम दीर्घं विरूक्षव्रतं किर्तिं Çik. 180. मौन° adj. Pañkat. 94, 8. त्रैवेदिक M. 3, 1. उत्तमं व्रतम् । उन्मत्ताख्यं समाश्रित्य Mârk. P. 17, 16. चान्द्रायण° Hir. 19, 1. भ्रूणहत्या° M. 11, 121. 140. गुरुतल्प° 170. ग्रवकीर्णि° 2, 187. ब्रह्मचारि° Bhag. 6, 14. गौरी° Hir. 42, 2. जन्माष्टमी° Weber, Kṛishṇaj. 264. 307. श्लोक° Bhâg. P. 8, 3, 7. एकपत्नी° adj. R. 2, 64, 42. ब्राह्मणस्यात्रतं मलम् Spr. (II) 276. अङ्गिरसां व्रतम् N. eines Sâman Ind. St. 3, 201, b. यस्मिन्नार्व्रते heissen zwei Sâman Lâṭj. 1, 6, 24. ähnlich यद्येव्रतं गायेत् 29. — b) *Gelübde* überh., *fester Vorsatz:* व्रतं चक्रे विनाशाय क्षिप्रगानां घृतव्रतः MBh. 1, 933. यद्येतं व्रतमारब्धं क्लेस्याराधने मया 3, 2210. इति मे व्रतमाख्यितम् 2600. 5, 7214. यदिदं ते व्यवसितं पार्किंसाकृतं व्रतम् R. 3, 13, 7. तस्य प्राणैः सुतैर्दारैः स्वामिसंरक्षणं व्रतम् Kathâs. 78, 128. 91, 52. न लेवं दूषयिष्यामि शस्त्रयस्मत्कृतव्रतम् Mâlatîmâdh. 40, 12. — c) *beständiger Genuss einer und derselben Speise* H. 7; vgl. मधुव्रत *Biene* u. s. w. — d) *blosser Milchgenuss als eine Observanz nach bestimmten Regeln; diese Milch selbst* क्षीरव्रत Kâṭj. Çr. 7, 4, 20. पयो° Çat. Br. 3, 3, 4, 1): व्रतं कृणुत (nach Mantra. hierher) VS. 4, 11. पूर्वो व्रतस्य प्रामति (wohl hierher) AV. 6, 133, 2. सायंप्रातर्व्रतं प्रयच्छसि Âit. Br. 3, 40. व्रतं समपयन्ति Çat. Br. 3, 2, 2, 10. 14. 17. गृहपतये व्रतमभ्युत्सिच्य प्रयच्छेयुः 4, 2, 18. 3, 2, 1, 18. Kâṭj. Çr. 7, 4, 29. 32. 3, 3, 17. 6, 20. 16, 6, 5. एक°, द्वि°, त्रि° TS. 6, 2, 5, 3. 4. तप्त° 2, 7. घृत° Pañkav. Br. 18, 2, 5. 6. Schol. zu Kâṭj. Çr. 1, 4, 5. °मिश्र Kâṭj. Çr. 8, 2, 2. 26, 3, 33. — f) so v. a. महाव्रत nämlich Stotra oder *der Tag desselben* Çat. Br. 10, 1, 2, 7. Pañkav. Br. 18, 7, 5. 21, 13, 4. Lâṭj. 8, 2, 20. 9, 4, 18. Kâṭj. Çr. 24, 3, 27. 7, 33. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu von der Naḍvalâ Bhâg. P. 4, 13, 16. — Vgl. अ°, अनु°, अन्य°, अप°, अपि°, अभिधारा° (unter अभिधारा), आर्य°, इन्दु°, इन्द्र°, इष्ट°, कुल°, क्षीर°, गर°, गल°, गो°, घृत°, चारु°, तवा°, दान°, दृढ°, देव°, धुनि°, धृत°, निर्व्रत, नील°, पति° (auch R. 2, 27, 12), पतिव्रता, पयो° (als adj. auch Jîv. 3, 290), पुरु°, पुरुष°, प्रिय°, बक°, बाल°, ब्रह्मन्, ब्रह्म°, भद्रा°, भर्तृ° (auch MBh. 15, 1062. R. 2, 70, 8), भर्तृव्रता, भास्कर°, मङ्गला°, मधु°, मर्कटी°, महा°, मक्षि°, मुनि°, मौन°, यज्ञ°, यम°, रोहिणी°, वि°, वीर°, वृष°, शुचि°, स°, सत्य°, सु°, स्तुति°, स्नातक°, हरि°.

2. व्रत m. in einem wahrscheinlich entstellten Texte: उतामृतांमुर्व्रतं (व्रतः Padap.) एमि कृण्वन् AV. 5, 1, 7.

व्रतक n. = व्रत 1) g) Harıv. 7007. 7685. 7772. 7823. fgg. 7837.

व्रतकल्पद्रुम m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 285, a, No. 665. fgg.

व्रतकालनिर्णय m. desgl. Macn. Coll. 1, 29.

व्रतचर्या f. *Ausführung eines religiösen Werkes, einer Observanz* u. s. w., *Askese* Çat. Br. 2, 1, 4, 2. 5, 5, 2, 2. 6. 14, 1, 1, 33. 2, 26. M. 1, 111. MBh. 3, 7300. R. 1, 9, 40. R. Gorr. 1, 23, 5. Kathâs. 49, 238. Bhâg. P. 3, 9, 12. 23, 5. 8, 17, 17. 19, 60, 52. am Ende eines adj. comp. (f. आ): समान° MBh. 3, 8579.

व्रतचारिता f. nom. abstr. von व्रतचारिन् Kâm. Nîtis. 2, 28. 30, wo der Comm. वाग्यमो व्रत° liest.

व्रतचारिन् adj. *einer religiösen Observanz* u. s. w. *obliegend, unter einer Regel* oder *einem Gelübde stehend* ṚV. 7, 103, 1. Âçv. Gṛ. 2, 2, 7. MBh. 3, 5426. Spr. 4494. Vaṭs. Bâm. 8. 16, 20. मम *mir zu Ehren* Verz. d. Oxf. H. 33, a, 20. भर्तृव्रतचारिणी *die Pflichten gegen den Gatten erfüllend, dem Gatten treu* R. 1, 17, 25 (14 Gorr.).

व्रततन्त्र n. Titel eines Abschnittes im Smṛititattva Gild. Bibl. 465. 476. Verz. d. Oxf. H. 290, b, No. 700.

व्रतति f. = प्रतति 1) *Ausbreitung* AK. 2, 4, 44, 69. H. an. 3, 293. — 2) *Schlinggewächs, Kriechpflanze, Ranke* Nir. 1, 14. 6, 25. AK. 2, 4, 1, 9. 3, 4, 24, 69. H. 1117. H. an. Halâj. 2, 25. ṚV. 8, 40, 6. Âçv. Gṛ. 4, 8, 15. TBr. 1, 5, 1, 3 (neben यसिद्धि, wo etwa व्यृद्धि zu erwarten wäre). Kâm. Nîtis. 19, 11. 14. Çik. 32. व्रतती Bharata im Dvitîjâk. nach ÇKDr. Rasn. 14, 1. Khandok. 138.

व्रतदण्डिन् adj. *einen dem Gelübde entsprechenden Stab tragend* Harıv. 10079.

व्रतदान n. *das Auferlegen eines Gelübdes* Pañkat. ed. orn. 30, 5.

व्रतदुग्ध n. Vrata-*Milch* Schol. zu Kâṭj. Çr. 8, 2, 2.

व्रतदुघा f. *die Kuh, welche die* Vrata-*Milch liefert,* Çat. Br. 3, 2, 2, 14. 14, 3, 1, 34. Kâṭj. Çr. 7, 4, 19. acc. pl. °दुघस् Âçv. Çr. 12, 8, 27.

व्रतधर adj. = व्रतचारिन्. मौन° MBh. 1, 1960. ब्रह्म° Pañkat. 187, 12. महा° Bhâg. P. 6, 17, 8. भव° 4, 2, 28. — Vgl. दण्ड°, नग्न°.

व्रतधारण n. = व्रतचर्या Kâm. Nîtis. 2, 22 (व्रतचारण Comm. ohne Angabe einer abweichenden Lesart im Texte). कस्य देवताविशेषस्य व्रतधारणं मेयः Çâṅk. zu Bâm. Âr. Up. S. 318. मदीय° Bhâg. P. 11, 11, 27. तद्° d. i. पति° 7, 11, 25.

व्रतनी adj. *botmässig* ṚV. 10, 65, 6. — Vgl. वशनी.

व्रतपक्ष m. du. N. zweier Sâman Lâṭj. 1, 6, 32. 3, 9, 10.

व्रतपति m. *Herr des Gottesdienstes, der religiösen Regeln* u. s. w.: Agni AV. 7, 74, 1. VS. 1, 5. 2, 28. 20, 24. Âit. Br. 7, 5. TS. 1, 6, 3, 2. 2, 2, 2. 5, 4, 5. 6, 1, 4, 6. TBr. 3, 7, 3, 5. Taitt. Âr. 4, 41, 3.

व्रतपत्नी f. *Herrin des Gottesdienstes* u. s. w.: आपः Kauç. 56.

व्रतपा adj. *die Ordnung —, die heilige Pflicht wahrend, — beobachtend:* Sûrja ṚV. 1, 83, 5. प्र मे देवानां व्रतपा उवाच 5, 2, 5. 10, 61, 7. Agni 1, 31, 10. 6, 8, 2. 8, 11, 1. VS. 5, 6. 40. TBr. 2, 4, 4, 11. Âit. Br. 7, 7. देव्या कृपावा ṚV. 3, 4, 7.

व्रतपारण s. u. 1. पारण 2).

व्रतप्रकाश m. = व्रतरत्न Verz. d. Oxf. H. 283, b, No. 663. fg.

व्रतप्रदा adj. *die* Vrata-*Milch reichend* Âit. Br. 7, 1. Çat. Br. 3, 2, 2, 19.

व्रतप्रदान n. 1) *das Auferlegen eines Gelübdes* Pañkat. 34, 2. — 2) *das Gefäss, in welchem die* Vrata-*Milch gereicht wird,* Kâṭj. Çr. 8, 1, 19.

व्रतभृत् adj. *Träger der Ordnung, — heiligen Handlung* u. s. w.: Agni Âit. Br. 7, 5. TS. 1, 6, 3, 3. TBr. 3, 4, 4, 11. Âçv. Çr. 3, 12, 13. Kâṭj. Çr. 25, 4, 28. समान° *dieselbe Lebensweise führend* Spr. 4603.

व्रतमाला f. Titel einer Compilation Verz. d. Tub. H. 19.

व्रतय् (von 1. व्रत), व्रतयति P. 3, 1, 21. *die* (heisse) Vrata-*Milch geniessen* Çat. Br. 3, 2, 2, 10. fgg. 5, 6, 4, 6. TS. 6, 2, 2, 7. Kâṭj. 24, 9. Çâṅkh. Çr. 7, 7, 8. 14, 16, 3. Comm. zu TS. 1, 410, 9. 12. nach dem Schol. zu P. 3, 1, 21 ausserdem *vermeiden:* ग्राम्यान् व्रतयति = ग्रा° वर्जयति d. h. *die Satzung beobachten in Bezug auf* Çûdra-*Speise.*

— उप *als* Vrata-*Zuspeise geniessen:* अन्यत्र सिद्धं गार्हपत्ये पुनर्-

धिश्चित्योपव्रतयेरन् Âçv. Çr. 12,8,29.

व्रतराज m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 283,b, No. 663. fg.

व्रतवत् (von 1. व्रत) adj. 1) *eine Regel —, ein Gelübde u. s. w. erfüllend, denselben obliegend* Kauç. 67. 94. 100. वर्षाणां शतम् MBh. 1,1217. 10, 723. 14,913. 2763. Spr. (II) 3446. Harîv. 1191. Sin. D. 115,8. विद्या-वेद्° (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) MBh. 13,3084. — 2) *mit dem Vrata d. h. Mahâvrata verbunden* Lâṭ. 8,2,14. Kâtj. Çr. 23,4, 29. 24,2,27. 37. Âçv. Çr. 10,2,31. 11,2,3. 4,9. ein Paṅkâha Kâtj. Çr. 23,4,26. — 3) *das Wort* व्रत *enthaltend* Çat. Br. 13,4,4,15.

व्रतशय्यागृह् n. *ein zur Erfüllung einer religiösen Regel, — eines Gelübdes bestimmtes Schlafgemach* Kathâs. 46,173.

व्रतसंयह् m. *Uebernahme eines Gelübdes, Weihe zu einer religiösen Feier* H. 823.

व्रतस्थ adj. *einem Gelübde u. s. w. obliegend* M. 3,234. 11,210. MBh. 5,7262. Kathâs. 29,177. 35,65. Bhâg. P. 5,26,29. 6,18,37. कन्याव्रत-स्था so v. a. *die Regeln habend* Kathâs. 26,36.

व्रतस्थित adj. *Gelübden obliegend* so v. a. *im Lebensalter eines* Brahmakârin *stehend:* स्तनपानबाल्यव्रतस्थिता यौवनमध्यवृद्धाः Vaâin. Dâm. S. 96,17.

व्रतस्नात adj. *der das* Vrata (nicht aber den Veda) *absolvirt hat* R. 1,63,1 (65,1 Gorr.). Mân. P. 43,16. वेदविद्या° M. 4,31. विद्याव्रत° MBh. 13,3019. 3084. Vgl. व्रतैः स्नातः Bhâg. P. 1,5,7 und विद्या°.

व्रतस्नातक adj. dass. Pân. Gṛhy. 2,5. Gobh. 3,5,12.

व्रतस्नान n. *das Absolviren des* Vrata R. 2,22,27. Râm-Tar. 5,79. Bhâg. P. 1,10,28.

व्रतातिपत्ति (1. व्रत + घ°) f. *Versäumniss dessen, was zu einem* Vrata *gehört,* Âçv. Çr. 3,13,2.

व्रतादेश (1. व्रत + घा°) m. *eine Anweisung zur Uebernahme eines* Vrata, *Auferlegung eines Gelübdes* u. s. w. R. 2,22,28. insbes. *des ersten Gelübdes beim* Brahmakârin Jâân. 3,28.

व्रतादेशन (1. व्रत + घा°) n. dass.: कृतोपनयनस्यास्य व्रतादेशनमिष्यते M. 2,173.

व्रतार्क (1. व्रत + अर्क) m. Titel einer Compilation Verz. d. B. H. No. 1178. fgg. Hall 176. fg.

व्रतावली (1. व्रत + घा°) f. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,53. °कात्य desgl. 136.

व्रतिक (von 1. व्रत) adj. am Ende eines comp.: घ° *für den es kein Gelübde u. s. w. giebt* MBh. 12,1326. उमा° n. Harîv. 7820 fehlerhaft für °व्रतक, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. चान्द्र°, बक°, बिडाल°, बैडाल°, महा°.

व्रतिन् (wie oben) 1) adj. *in Erfüllung einer Observanz u. s. w. begriffen,* = यति u. s. w. H. 76, v. l. Hall. 2, 189. 254. Verz. d. Oxf. H. 186,b,28. = यतिधर्मे AK. 2,7,7. H. 817. Hall. 2,265. — TS. 1, 3,4,3. Kauç. 82. M. 2,188. 5,91. 99. 11,121. 224. Jâân. 3,15. 28. MBh. 1, 5120. 13, 440. 4578. Harîv. 2078 (fem.). R. Gorr. 2, 3, 23. 5, 22, 26. Çiç. 106. Spr. 2223. Kathâs. 26,202. 37,69. Râm-Tar. 1,233. 2,49. 4, 318. Weber, Kṛshṇaj. 228. 309. Pañcar. 1,9,26. व्रतिनो जटा AK. 2,6, 2,43. Hall. 2, 277. व्रतिनामासनम् AK. 2,7,45. दण्ड: Taik. 3,3,117. Hall. 2,256. स्थानम् 143. वेश्म H. 994. घ° MBh. 13,1601. R. Gorr. 1,13,8. उपसद्व्रतिन् Çat. Br. 14,9,2,2. पाशुपत° Râm-Tar. 3,267. आर्य° so v. a. *sich wie ein* Ârja *benehmend* MBh. 7,643. अतिथि° *Gastfreundschaft übend* 3,15408. मिश्रुन° *obliegend* Bhâg. P. 2,6,51. ईश° *verehrend* ebend. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 90,a,12. — Vgl. गो°, देव°, बक°, भाट्ट°, महा° (in der ersten Bed. auch Kathâs. 25,81. 26,196. 43,175), मूल°, मौन°, राम°.

व्रतेयु (wie oben) m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva VP. 447. Bhâg. P. 9,20,4.

व्रतेश (1. व्रत + ईश) m. *Herr der Observanzen* u. s. w.: Çiva MBh. 13,612.

व्रतोपनयन (1. व्रत + उ°) n. *das Einführen in ein* Vrata: der Gattin TBr. 3,3,8,2.

व्रतोपह् (1. व्रत + उ°) m.: षड्रिरसाम् N. eines Sâman Ind. St. 3,201,b.

व्रतोपायनं (1. व्रत + उ°) n. *Eintritt in ein* Vrata Çat. Br. 11,1,6, 1. Kâtj. Çr. 2,2,5. 5,28. 8,4,22. 6,2,6. °वापन Taik. 2,9,14. °नीय *dazu gehörig* u. s. w. Çat. Br. 11,2,4,7. Kâtj. Çr. 2,1,10. योदन Lâṭ. 10,20,2.

1. व्रत्य (von 1. व्रत) adj. *gehorsam, treu:* तवे स्मसि व्रत्या: RV. 8,48,3.

2. व्रैत्य (wie oben) adj. *einem* Vrata *angemessen, dazu geeignet, — gehörig, Theilhaber eines* Vrata TS. 1,8,10,2. 2,2,2,2. TBr. 1,7,4,3. यज्ञ 3,7,4,9. Çâṅkh. Br. 27,3. Çr. 3,4,11. Kâtj. Çr. 2,7,23. 12,2,12. Âçv. Çr. 12,6,28. — Vgl. घ°.

व्रद्, व्रदते, व्रन्दति Nir. 5,15. *weich —, mürbe werden:* घर्मान्नु-व्रान्नव्रदत्त वीळिता RV. 2,24,3.

व्रन्दिन् (von व्रन्द्) adj. *mürbe —, morsch werdend* Naigh. 4,2. Nir. 5, 15. fg. RV. 1,54,4. 5.

व्रंयस् n. nach Sây. = वर्धन. या देवानामोक्ते वि व्रयो रुहि RV. 2,23, 16. vielleicht von व्री = व्रि. etwa *erdrückende Gewalt, Uebermacht.*

1. व्रश्च् वृश्चति Naigh. 2,19 (वधकर्मन्). Daivat. 28,11 (छेदने). P. 6,1, 16. Vop. 13,1. वव्रश्च, वव्रश्चिव 8,124. 135. 13,1. P. 6,1,17. व्रश्चति: व्रष्टा P. 8,2,36, Schol. वव्रश्चीत् und वव्रात्तीत् Vop. 13,1. व्रश्चित्वा 26, 219. P. 7,2,55. वृक्ची; व्रष्टुम् P. 8,2,36, Schol. pass. वृश्च्यते, वृक्ति; partic. वृक्ण (hier und da fälschlich वृक्त geschrieben) P. 6,1,16. Vop. 26,97. *abhauen, zerschneiden, spalten; fällen* (einen Baum): वना RV. 6,2,9. 10,28,8. परशुं यत्ते वृश्चात् 53,9. क्रव्यादो वृक्षयपि धत्स्वामन् 87,2.5. मूलम् 10. AV. 13,1,56. RV. 3,30,16. 9,91,4. 10,116,5. षडिम् 113,4. कुलिशेन AV. 2,12,3. शिरो वृश्चामि शकुनेरिव 25,3. बाहून् 3,19,3. 6, 63,2. आयु: 12,4,28. 50. 5,42. TS. 6,3,8,4. यूपम् Çat. Br. 3,6,4,1. 6.11. दण्डम् Kauç. 47. पाशान् 49. TBr. 3,2,10,1. med.: ममूलो यस्ते केश: वृक्षते (वृश्यते?) AV. 6,136,3. — को ऽवृश्चत्तव पादास्त्रीन् Bhâg. P. 1,17, 12. छेदेन शिरांसि 6,11,15. 7,2,12. 10,66,21. 88,15. शस्त्राणि वव्रश्चु: Bhatt. 14,77. व्रश्चित्वा तद्वन् 9,41. व्रश्चति लोकमशयम् Bhâg. P. 6,3,2. वृक्णान् partic. (!) 2,5,6. वृक्ष्यमाणमूल 5,26,2. — वृक्णा *abgehauen, gespalten, gefällt* AK. 2,2,53. H. 1490. ein Baum RV. 3,8,7. Çat. Br. 14. 6,2,33. संवत्सरे वृक्णामपि रोहति *der Schnitt vernächst* AV. 8,10,5. TS. 2,5,2,4. घोरशृङ् 5,1,10,1. मूल Bhâg. P. 3,19,15. वृक्णायुधभुज 6.

12,16. 18,71. 9,2,7. 10,30,23. 11,29,39. Bhaṭṭ. 4,42. 12,78. 16,42.

— intens. वरीवृश्यते Pat. zu P. 7,4,80. Schol. zu 6,1,16.

— अपि *abhauen, zerhauen* ṚV. 8,40,6. शीर्षाणि क्रमापि वृश्च् 10, 87,16. AV. 1,7,7. 2,32,2. 18,6,1. वनुष्यतामपि शीर्षा वेवृक्षम् ṚV. 8, 62,10 stellen wir hierher, weil वृक्ष्, auf welches die Form wiese, sonst nicht mit अपि vorkommt; vielleicht wäre अप richtig.

— अव *abschneiden, abtrennen:* वृक्षो ṚV. 1,51,7. अव सक्थी वृश्चत् 7,18,17. — Vgl. अववश्च.

— आ *abtrennen von, ausser Verbindung bringen mit Jmd* (dat.): एताभ्यस्त्वा देवताभ्य आ वृश्चामः Kāṭ. Ba. 12,1,3,23. Kāṭ. 21,2. TBa. 3, 7,6,17. mit loc. Śāṅkh. Ba. 2,10. pass. mit dat.: आ सूर्याय वृश्यते TBa. 2,1,2,10. आ वृश्यतामदितये दुरेवाः ṚV. 10,87,18. देवेभ्यः AV. 15,2, 1. TBa. 1,1,4,8. पितृभ्यः 3,10,7, wo statt वृश्येत् des Textes und वृश्येत des Comm. वृश्यते zu lesen sein wird, wie auch AV. 12,2,50. 15,2,1. 12,6 und anderwärts in den Brāhmaṇa die passive Form, welche die sorgfältigen Texte stets zeigen, wieder herzustellen ist. Mit loc.: देवेषु AV. 12,4,6. 15,12,6. Hierher ziehen wir auch wegen der Construction यत्ते तपस्तस्मै ते मा वृक्षि TS. 1,6,6,1. Śāṅkh. Ça. 4,13,3. — Vgl. आव्रश्चन fg.

— नि *niederhauen, fällen:* पक्वेव राजन्यशसे नीचा नि वृश्च ṚV. 6,8, 5. प्रतो च तस्य मूलं च नीचैर्देवा नि वृश्चत TBa. 3,7,6,16.

— निस् vgl. निर्व्रस्क.

— परि *beschneiden* Kāṭ. Ba. 6,7,2,8. °वृक्ण *verstümmelt* Kāṭhop. Up. 3,9,1.

— प्र *abschneiden, abspalten; zerhauen* AV. 12,5,62. अग्रम् Kāṭ. Ba. 1,6,2,11. TBa. 2,2,4,7. भ्रातृव्यमुत्करे ऽधि प्रवृश्चति 3,2,10,1. अग्रम् Bhaṭṭ. 17,89. 107. प्रवृक्णा बाहवो मया Bhāg. P. 10,63,48. — Vgl. प्रव्रश्चन fg.

— वि *zerspalten, in Stücke hauen:* den Vṛtra ṚV. 1,61,10. 10,113, 6. die Schlange 2,19,2. 3,33,7. 4,17,7. भोगान् 5,29,6. 2,15,6. 3,53,22. वृश्चति वा पिपीलिका वि वृश्चति मर्मणि: *zerhacken* (mit dem Schnabel) AV. 7,56,7. पाशम् Bhāg. P. 6,14,54. विवृश्च 11,12,24. विवृक्णा ṚV. 1,32,5. Bhāg. P. 4,10,20. 5,9,19. 12,16. 9,15,22.

— सम् *in Stücke hauen, zerstückeln* AV. 12,5,62. पर्वाण्येषां पर्वशः संव्रश्चम् (absol.) Kāṭ. Ba. 11,6,4,3. 8. संव्रश्चमोषधिवनस्पतीनां प्रकिरति *stückweise* 13,7,4,2. Kāṭ. Ça. 21,2,6. Śāṅkh. Ça. 16,15,16. दुर्ज्ञगेक्षुञ्छिला: संवृश्च्य Bhāg. P. 10,32,22.

2. व्रश्च् (= 1. व्रश्च्) nom. sg. *abhauend* u. s. w.; nom. व्रट् P. 8,2,36. Vop. 3,77. fg. मूल° P., Scholl.

व्रश्चन (von 1. व्रश्च्) 1) adj. *abhauend, fällend, zum Abhauen* u. s. w. *dienend:* इध्म° (कुठार) Siddh. K. 250,a,6. — 2) m. a) *Säge* oder *Feile* AK. 2,10,33. H. 920. — b) *durch Einschnitt in einen Baum gewonnenes Harz* Jāṭ. 1,171; vgl. M. 5,6 unter 3). — 3) n. *das Abhauen, Spalten, Zerhauen, Einschneiden* u. s. w. Nir. 2,6. 12,29. Kāṭ. Ba. 3,6,4,7. वंश° Kāṭ. 30,2. व्रातरज्जूनाम् Maitrāyaṇ. 1,4. वृतनिर्यासान्व्रश्चनप्रभवान् M. 5,6.

व्रश्चव्य (wie oben) partic. fut. pass. P. 8,2,36, Schol.

व्रश्चक (wie oben) adj. *abhauend* s. यूप°.

व्राचड adj. Bez. eines Apabhraṁça-Dialects Verz. d. Oxf. H. 181, a, No. 412.

व्रात 1) = व्रत *Heerde, Haufen;* adv. व्रातंम् *in Haufen:* ये ऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुर्व्रातम्व्रातं: AV. 1,16,1. — 2) m. = ग्रामकुक्कुर H. ç. 192.

व्रातपति m. *Anführer des oder der Haufen,* etwa *Herzog:* परि व्रासते निधिभि: सखाय: कुलपा न व्रातपतिं चरन्तम् ṚV. 10,179,2.

व्रातबाहु m. du. nach dem Comm. *ausgestreckte Arme,* also etwa *Arme, die ein Gehege* (व्रात = व्रत) *bilden, denen man nicht entrinnt:* मृत्योर्ह वा एतौ व्रातबाहू Śāṅkh. Ba. 2,9.

व्राति f. = वायु ÇKDa. *a gale of wind* Wilson; beide ohne Angabe einer Aut.

व्रातिन् adj. in विश्वा° nach den Comm. *auf einer Stelle sitzend, nicht wandernd;* also etwa so v. a. *dessen Heerde (Pferde; vgl. व्रात) stationär ist* Kāṭ. Ba. 5,5,2,12. — Vgl. स°.

व्रौत (von 1. वृ; vgl. व्र) m. Sidd. K. 249,b,2 v. u. Verz. d. Oxf. H. 167,a,29. *Schaar, Haufen, Trupp* (AK. 2,5,39. H. 1411. Halāy. 4,1): *Abtheilung* (von Kriegern u. s. w.), *Gilde, Genossenschaft;* = व्रात्य Naigh. 2,2. = मनुष्य s. नानाव्रातीया यन्नियतवृत्तय उत्सेधशीविन: संघा व्राता: Pat. zu P. 5,2,21. व्रातं व्रातं गणं गणं मरुतामोजं ईमहे ṚV. 1. 26,2. 5,53,11. 1,163,3. der Würfel 10,34,8. 13. fünf 9,14,2. जीवं व्रातं सचेमहि 10,57,3. AV. 2,9,2. Pāraṇ. Ba. 6,9,24. छन्दांसीव खलु वै व्रात: *bilden gleichsam eine Gilde* 25. 17,1,5. 12. VS. 16,25. सर्वे व्राता वरुणस्याभूवन् TS. 1,8,10,2. व्रातेन (= शरीरायासेन Schol. gegen Pat., der die gewöhnliche Bed. annimmt; vgl. noch Schol. zu Bhaṭṭ. 4,12) P. 5,2,21. 3,113. विद्याधर° Kathās. 35,20. तुरुष्कतुरग° 19,109. नानारण्यमृग° Bhāg. P. 4,25,19. नानारण्यपशु° 8,2,7. कंसपाराचर° 3,23. 20. मधुकर° *Bienenschwarm* 5,23,7. *Menge* überh. von Unbelebtem: रथानाम् MBh. 4,1667. रथ° 1070. 5,5960. शर° 4,1714. 1851. 5,2131. 14,2227. Harīv. 9322. R. 6,79,51. Rāgh. 12,94. मलयमरुतां Spr. 2130. घोरनिश्वासवात° Kathās. 75,42. मणि° Vāsiṣ. Bāṇ. S. 44,23. श्लोक° Bhāg. P. 3,21,9. महामणिव्रातमय 4,9,60. — Vgl. भद्र°, मरुत्°, वृथ°.

व्रातपत adj. (f. ई) von व्रातपति. यज्ञ Kāṭy. 72. Āçv. Ça. 2,12,6. °पतीय Schol. zu Kāṭ. Ça. 25,5,1.

व्रातपति m. *Herr der Schaar,* — *Gilde* u. s. w. VS. 16,25.

व्रातसाह् adj. VS. Prāt. 3,121. *in Abtheilungen (Geschwadern) siegreich streitend* ṚV. 5,75,9.

व्रातिक adj. von 1. व्रत. संवत्सर Gobh. 3,1,13. Śāṅkh. Gṛhy. 2,11.

व्रौतीन adj. = व्रातेन जीवति P. 5,2,21. *einer schweifenden Bande angehörig* H. 480. *das Leben eines Vagabunden führend* Lāṭ. 8,3,1. Bhaṭṭ. 4,12.

1. व्रात्य (von 1. व्रत) adj. *zum* Vrata d. h. Mahāvrata *gehörig* Schol. zu Pāraṇ. Ba. 18,7,12.

2. व्रौत्य (von व्रात) 1) m. *einer schweifenden Bande angehörig, Landstreicher;* überh. *ein Umherschweifender; Mitglied einer Genossenschaft, welche ausserhalb der brahmanischen Ordnung steht,* AK. 2,7, 33. H. 854. Halāy. 2, 249. VS. 30,8. Lāṭ. 8,6,2. 7. 8. °गण Kāṭ. Ça. 22,4,3. °घन 9. Pāraṇ. Ba. 17,1,16. °चरण Kāṭ. Ça. 22,4,23. °भाव 27. °चर्या Lāṭ. 8,6,23. °यज्ञ Pāraṇ. Ba. 17,1,1. देवा व्रात्या: सत्रमासत बृहन्न स्पतिना 24,18,2. Schol. zu 17,1,1. Prāçnop. 2,11. यथाका-

लमसंस्कृताः। सावित्रीपतिता व्रात्या भवत्यार्यविगर्हिताः॥ M. 2,39. 10, 20. fgg. 11,197. Jiñ. 1,38. 3,289. MBh. 5,1229. 13,2631. Verz. d. Oxf. H. 282,a,3 v. u. Vasiṣ. Bp. S. 87,39. Prājaçittabh. 32,b,7. Bhāg. P. 12,1,26. Ind. St. 1,445. 3,15. Anrede an den ankommenden Gast Âpast. 2,7,13. Den Preis des Vrâtja in AV. 15 betrachten wir als Idealisirung *des frommen Vaganten* oder *Bettlers* (परिव्राजक u. s. w.). — 2) f. या a) f. zu 1) व्रात्य M. 8,373. — b) *umherschweifendes Leben:* व्रात्यां प्रवसन्तः Pāraṇ. Bh. 17,1,1. 4,1. चर् 1,2. 3,1. 2. — Vgl. सुव्रात्य.

व्रात्यता f. nom. abstr. von व्रात्य 1) M. 11,62. Jiñ. 3,234.

व्रात्यव्रुव् m. *angeblicher* Vrâtja AV. 15,13,6.

व्रात्यस्तोम m. Bez. gewisser Ekâha Kāṭj. Ça. 12,1,2. 22,4,1. 27. Liṭ. 8,6,1. 39. Âçv. Ça. 9,8,25. in Verbindung mit क्रतु *ein Opfer für Ausgestossene* Jiñ. 1,38. व्रात्यः स्तोमः Maçaka in Verz. d. B. H. 72 (III, 9-11).

व्राध्, व्राधते *reizen, anspornen* (vgl. ἐράω): त्वं त्ये चिद् यदुपो व्रधन्तो मर्कि व्राधन्त वाजिनः RV. 5,6,7. partic. praes. व्रीधत् (zum Zorn) *reizend, herausfordernd* (= मरुत् Naigh. 3,3) RV. 1,100,9. 122,10. कृमि व्राधन्तमोजसा 4,32,2. 10,49,8. 69,10. fg. शत्रूयतो यमि ये नस्ततस्ते मर्कि व्राधन्त घोरणासि इन्द्र 89,15. 99,9. vom Sóma etwa *aufregend* 1,135,9. superl.: मक्षू व्राधन्तमो दिवि 150,2.

व्रिंश् nach Naigh. 2,5 so v. a. *Finger:* तमो व्रिन्वन्ति धीतयो दश व्रिशः RV. 1,144,5.

व्री, व्रीणाति und व्रिणाति Dhātup. 31,33 (वरणे). Vop. 16,2. 5. व्रीयते dass. Dhātup. 26,31. — caus. व्रेपयति s. zu P. 7,3,36.

व्रीड्, व्रीड्यति (वादने, लज्जायाम्) Dhātup. 26,18. व्रीडते *verlegen werden, sich schämen:* व्रीडमाना MBh. 4,1185. नाति व्रीडे Bhāg. P. 8,22, 7. partic. व्रीडित *verlegen, beschämt* MBh. 3,2271. 2279. 16653. R. 1, 64,3. 2,36,17. 37,13. 98,20. fg. (107,10. fg. Gorr.). 3,68,48. 5,18,6. 7, 109,17. Vikr. 8,17. Bhāg. P. 3,12,33. 4,20,18. 8,12,26. 9,1,30. °लोचनाननाः 1,11,33. मध्यमव्रीडिता Sin. D. 100.

— caus. व्रीडयति (संस्तम्भकर्मन्) Nir. 5,16. 6,33.

व्रीड (von व्रीड्) m. *Verlegenheit, Scham* Taitt. 1,1,128. 3,5,18. H. 311, Schol. यत्ते व्रीडेन R. 3,61,46 (55,34 ed. Bomb.). व्रीडमावहति मे Raghu. 11,78. व्रीडात् Kumâras. 7,67. Râja-Tar. 1,210. 6,98. Häufiger व्रीडा f. AK. 1,1,2,23. Taitt. H. 311. Hall. 2,412. = धार्ष्टभाव Daçak. 4,22. Sin. D. 194. व्रीडा न कुरुषे कथम् *sich schämen* MBh. 2,1877. पर्या व्रीडामुपागमत् R. 1,1,80. °पुर् 4,10,31. Spr. 2016. Raghu. 15,27. Çiç. 50,15. 132. Vasiṣ. Bp. S. 74,20. 78,13. Daçak. 2,39. Râja-Tar. 1,254. 5,328. Bhāg. P. 1,10,16. 11,37. 2,1,32. 3,20,31. 23,9. 4,4,22. Am Ende eines adj. comp. (f. या): वीत° Spr. (II)526. द्रव्रीडा Sin. D. 101. स्वत्य° 42,18. स° *verlegen, beschämt* MBh. 3,10348. 4,1129. 5,5969. 7528. R. 1, 55,8 (wohl सव्रीडस्य° zu lesen). 63,10. 5,21,20. Spr. 1885. Vikr. 10, 12. Râja-Tar. 4,447. Bhāg. 3,22,1. 8,8,46. 22,14. सव्रीडम् adv. Çiç. 51, 12. Vikr. 28,14. Vasiṣ. Bp. S. 32,3. Pāraṇ. 218,13. — Vgl. सव्रीड.

व्रीडन (wie oben) n. 1) *das Festandrücken:* der Kinnladen RV. Prāt. 14,3; vgl. caus. von व्रीड्. — 2) = व्रीड, व्रीडा Çārdar. im ÇKDa.

व्रीडा s. u. व्रीड.

व्रीडावत् (von व्रीडा) adj. *verlegen, beschämt* MBh. 3,15024. Gît. 11,13.

व्रीस्, व्रीसयति (हिंसायाम्) Dhātup. 32,121, v. l.

व्रीहि m. *Reis*, pl. *Reiskörner* (auch *Korn* überh. nach den Lexicographen) AK. 2,4,6,19. 9,15. 21. H. 1168. Mān. h. 9. Hall. 2,434. 5, 28. P. 3,3,166, Vârtt. 1, Schol. Die verschiedenen Arten des Reises Suçr. 1,96,2. fgg. — AV. 6,140,2. 8,7,20. 9,6,14. व्रीहिपुवो 11,4,18. 12,1,42. VS. 18,12. TS. 7,2,10,2. Ait. Br. 2,3. 11. 8,16. Âçv. Ça. 2,6, 5. व्रीहीनार्द्रेरुक्षलकाभिः कृष्णान् TS. 2,3,1,3. कृष्णाः 1,8,10,1. TBr. 1,7, 3,5. Kāṭj. Ça. 10,6. 11,5. कृष्णव्रीहिर्व्रस्तेषाम् Suçr. 1,196,6. व्रीहियवाः Pāṇ. Gaṇ. 2,17. Çat. Br. 5,5,5,9. 14,9,2,22. Âçv. Gaṇ. 1,9,6. 17,2. Kauç. 2. 61. Muṇḍ. Up. 2,1,7. M. 3,267. 9,39. यत्पृथिव्यां व्रीहियवम् Spr. 2282. fgg. Vasiṣ. Bp. S. 55,21. प्रस्थो व्रीहीणाम् P. 6,3,92, Schol. व्रीहीन्संयच्छते 1,3,75, Schol. व्रीह्यस्त्रिवार्षिका मत्तवार्षिका वा Pāṇ. 167,1. 2. व्रीहीञ्जिघांसति सितोत्तमतण्डुलाधान्को नाम भोस्तुषकणोपक्लान्तिकार्थी Spr. (II) 2635. so v. a. *Reisfeld* Kāṭj. Ça. 22,3,42. — Vgl. बहु°, मक्ष°, वन°.

व्रैहिक adj. (मत्वर्थे) von व्रीहि P. 5,2,116.

व्रीहिकासन m. *Linsen* Taitt. 2,9,3. Hir. 182.

व्रीहिद्रोण m. *ein* Drona *Reis* MBh. 3,15404. fgg. Davon °द्रोणिक adj. *darauf bezüglich, darüber handelnd:* आख्यान 1,325. 482. °पर्वन् heissen die Adhjâja 258-260 im 3ten Buche.

व्रीहिन् adj. (मत्वर्थे) von व्रीहि P. 5,2,116.

व्रीहिपर्णी f. *Desmodium gangeticum* Dec. Râjan. im ÇKDa.

व्रीहिभेद m. wohl nur eine Erklärung (*eine Art Korn*), nicht ein Synonym (wie die Erklärer annehmen) von श्यामाक *Panicum miliaceum* AK. 2,9,20.

व्रीहिमत m. pl. N. pr. einer nicht zur brahmanischen Ordnung gehörigen Völkerschaft P. 5,3,113, Schol. — Vgl. व्रैहिमत्य.

व्रीहिमत् (von व्रीहि) adj. *mit Reis gemischt:* यवागू Âçv. Gṛh. 1,11, 3. 2,8,18. 9,7. — व्रीहिमती (संज्ञायाम्) P. 6,3,119, Schol.

व्रीहिमय (wie oben) adj. *aus Reis gemacht:* पुरोडाश P. 4,3,143. सूप Çat. Br. 2,2,3,12. पिण्ड 5,5,5,9. पशु MBh. 13,3649.

व्रीहिमुख adj. *dessen Spitze einem Reiskorn gleicht:* ein chirurgisches Instrument Suçr. 1,26,12. 17. 27,8. 2,112,14.

व्रीहिराजक m. = कामलिका (?) und चीनाम्ल H. an. 3,6. 7. °राजिक (wohl richtiger) m. = कट्वधान्य und चीनकधान्य Med. k. 231.

व्रीहिल adj. (मत्वर्थे) von व्रीहि *gaṇa* तुन्दादि zu P. 5,2,117.

व्रीहिवेला f. *Zeit des Reises* d. h. *seiner Ernte* Liṭ. 8,3,7.

व्रीहिशेष्ठ m. *Reis (die vorzüglichste Kornart)* Râjan. im ÇKDa.

व्रीह्यागार n. *Kornkammer* Taitt. 2,9,6.

व्रीह्यपूप m. *Reiskuchen* Kāṭj. Ça. 4,11,8.

व्रीह्यायवण n. *Reiserstlingsopfer* Schol. zu Kāṭj. Ça. 1,8,6.

व्रीह्युर्वरा f. *Reisfeld* Liṭ. 8,3,4.

व्रुड्, व्रुडति (संवरणे, ध्रुव्यर्थमज्जनयोः d. i. °मज्जनयोः) Dhātup. 28,99. व्रुडित *untergesunken, versunken* Râja-Tar. 8,1068. im Schnee 2741. गरुत्ते so v. a. *verirrt* 2494. — Vgl. वुड् und Weber, Hâla 259.

व्रूस्, व्रूस्, व्रूसयति und व्रूसयति (हिंसायाम्) Dhātup. 32,121.

व्रेंशो f. Bez. *der Wasser*, nach Mahîdh. *in der himmlischen Welt ruhend* (व्रन् und शी) VS. 8,48. रेंशी liest aber TS.

व्रैहे (von व्रीहि) adj. *vom Reis kommend* u. s. w. gaṇa विल्वादि zu P. 4,3,136.

व्रैहिमत्य m. *ein Fürst der* Vṛihimata P. 5,3,113, Schol.

व्रैहेय (von व्रीहि) adj. *mit Reis bestanden:* क्षेत्र P. 5,2,2. AK. 2,9, 6. H. 966. Hall. 2,7.

व्रग्, व्रङ्ग् etwa verwandt mit वर्ज् (वृज्). Mit अभि nach Sis. *erwischen, habhaft werden;* wenn mit वर्ज् verwandt, etwa *erwürgen, den Hals umdrehen:* अभिव्रग्य यत्र कृता अशोरन् RV. 1,133,1. अभिव्रग्य शीर्षा यातुमतीनां क्रिन्धि 2. — Vgl. अभिव्रङ्ग.

व्री, व्रीनाति und व्रिनाति (गतौ, वरणे, धारणे, भरणे, वृत्याम्) Dhâtup. 31,33. व्रेष्यति, व्रीन. *zusammenknicken, —drücken, —fallen machen:* नैनं दर्तिणा व्रीनाति TBa. 2,2,8,1. तेनेदमुदरमनुर्वं व्रिनात्याकृतिभिः प्रातेदंवम् Çat. Ba. 1,6,2,31. नेन्म इदं वीर्यं वीर्यमपां रसः संभृतो बाहू व्रिनातु 5,4,4,17. pass. *in sich zusammensinken, zusammenknicken, erliegen, zusammenfallen:* दिशो ऽव्रीयन्त ता उदस्तभ्नुवन् Pañcav. Br. 8,8,13. 12,3,10. 13. मेन्धव इव व्रीयन्ते Maitrâyaṇ. 6,35.

— caus. व्रेषयति P. 7,3,36. Vop. 18,8.

— intens.: प्रजा वरुणगृहीता यवेव्रीयन्तेव Kâṭh. 36,5.

— अभि pass. = simpl. pass.: सा नाशक्नुत्साभ्यव्रीयत तस्मात्सा कुव्रिमतीव Pañcav. Br. 25,10,11.

— निस् s. निर्व्रीयन and निर्व्रीतुक.

— प्र *zusammenknicken, erdrücken* (durch eine zu schwere Last): पक्षः प्र पतुरव्रीनात्प्र साम् तमृदियच्छत् TS. 6,1,3,4. Kâṭh. 23,2. Çat. Ba. 13,1,8,1. TBa. 3,11,8,3. प्रव्रीनो मृदितः शयाम् AV. 11,9,19. Ait. Br. 4,19. Çat. Ba. 3,7,3,2. — Vgl. प्रव्रप.

— सम् dass.: यथा दर्तिर्निष्पीत एवं संव्रीनः शिश्ये *in sich zusammengesunken* Çat. Ba. 1,6,3,16. दिशः TS. 5,2,3,4. 3,3,2. Kâṭh. 20,1. 11. पक्षो निर्भिन्नो नाधीयत समव्रीयत *als das Opfer fertig war, hielt es nicht, sondern fiel zusammen* TBa. 1,5,4,2. — Vgl. संव्रप.

व्रेत्, व्रेतयति (दर्शने) Dhâtup. 35,84, b, v. l.

Digitized by Google

SANSKRIT-WÖRTERBUCH

HERAUSGEGEBEN

VON DER

KAISERLICHEN AKADEMIE DER WISSENSCHAFTEN,

BEARBEITET

VON

Otto Böhtlingk und Rudolph Roth.

SIEBENTER THEIL.

(1872 — 1875)

ग — क्ष nebst den Verbesserungen und Nachträgen zum ganzen Werke.

ST. PETERSBURG.

Buchdruckerei der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften.

(Wass.-Ostr. 9. L. No. 12.)

1875.

Zu beziehen durch Eggers & Comp. in St. Petersburg und durch Leopold Voss in Leipzig.

Preis des siebenten Theils: 10 Rbl. 25 Cop. Silb. = 11 Thlr. 12 Ngr.

Gedruckt auf Verfügung der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften.

Den 7. August 1875.

K. Wessolowski, beständiger Secretär.

VORWORT.

Nach einer durch beinahe fünfundzwanzig Jahre sich hinziehenden Arbeit haben wir das Wörterbuch zum Abschluss gebracht. Es ist auch unvollendet in allen Händen gewesen, und man hatte Zeit mit seinen Vorzügen oder Mängeln sich bekannt zu machen: wir sind also der Pflicht überhoben dasselbe mit Erläuterungen zu begleiten.

Nur das Eine glauben wir bei diesem Anlass in's Gedächtniss rufen zu sollen, wie ganz anders als heute der Stand und Umfang der Sanskritliteratur damals war, als wir begannen; wie Vieles uns fehlte, womit man heute vertraut ist; wie wenige Vorarbeiten uns zur Hand waren oder im Lauf der Arbeit zu Hilfe kamen.

Wir haben es gleichwohl gewagt unser Absehen auf die gesammte Literatur zu richten und dieselbe, so weit gerade unsere Hand reichte, uns dienstbar zu machen. Was für den Anfang nur in Bruchstücken zu haben war, ist allmählich, öfters wohl durch unsere Anregung, zugänglich geworden, und so konnte das Wörterbuch in seinem Fortgang immer mehr zu einem Thesaurus anwachsen. Hätten wir uns auf diejenige Literatur beschränkt, die in den Anfängen vorlag, und in dieser vollständig sein wollen, so wäre die Vollständigkeit bald zur kläglichsten Armuth geworden. Wir haben uns also nach allen Seiten ausgebreitet, überallher wenn auch in Fragmenten zusammengetragen was erreichbar war und wozu Zeit und Kraft vorhielt; wir haben uns nicht gescheut ungleichförmig zu sein, wenn dadurch der Sache gedient war. Was einmal von uns registrirt ist, das frommt jetzt dem Benützer, künftig dem Nachfolger, wie lückenhaft auch unsere Sammlung auf dem betreffenden Gebiete sein mag.*)

*) M. Müller fragt in der Vorrede zum 6ten Bande seiner Ausgabe des Ṛgveda, S. X: „Why are not such technical terms (sic) as gitin, çirahkampin, etc., given in the Petersburg Dictionary?“ In unserem Wörterbuch fehlt Vieles, aber gerade diese beiden Wörter fehlen nicht. Sie sind am richtigen Platz (nicht etwa in den Nachträgen), mit richtiger Bedeutung und jedes mit dem einzigen bis jetzt bekannten Belege zu finden. Wir könnten also vielmehr unsererseits fragen: wie mag man so leichtfertig tadeln?

Für den Veda haben wir vergebens auf Indices und Specialwörterbücher gerechnet, Alles kommt nach uns. Man hat uns die nicht gewünschte Ehre des Vortritts bis zum Ende gelassen.

Dieselben treuen Mitarbeiter, welche vom Beginn an uns zur Seite standen, sind geblieben, namentlich unser Freund A. Weber, dessen mit dem uneigennützigsten Aufwande von kostbarer Zeit und Mühe erkaufte Sammlung aus der lexikalisch bedeutsamen und zum Theil nur ihm zugänglichen und vertrauten Schriftengattung der Brâhmaṇa und Sûtra unserem Buche zur besonderen Zierde gereicht. Nächst ihm steuerten am meisten bei H. Kern, A. Fr. Stenzler und W. D. Whitney. Wenn wir A. Schiefner's zuletzt gedenken, so wollen wir damit nur gesagt haben, dass die buddhistische Literatur, in der er besonders zu Hause ist, schon ihrer Natur nach einen für ein Sanskrit-Wörterbuch nicht immer zu verwerthenden Stoff darbietet.

Wie wir diese thätige Hilfe mit Dank erwähnen, so müssen wir auch bezeugen, dass uns im Grossen und Ganzen die aufmunternde Theilnahme, eine schonende und anerkennende Beurtheilung aller Fachgenossen, auf deren Urtheil wir ein Gewicht legen, bis hierher begleitet hat.

Die Patronin unseres Werkes aber, die Kaiserliche Akademie der Wissenschaften, wird uns, so hoffen wir, für die Art der Ausführung ihres Auftrages, welchen vollständig zu erfüllen eine seltene Gunst des Geschickes uns gestattete, ihren Beifall nicht versagen.

Jena und Tübingen, den 4. August 1875.

O. Böhtlingk.
R. Roth.

Digitized by Google

श *)

1. श = शय in गिरिश, वारिश und वृतश.

2. श m. 1) = शस्त्र. — 2) = शिव Çabdar. im ÇKDa.

शंप (von 5. शम्) adj. P. 5,2,138. Vop. 7,31. धुरो: शम्यम् N. eines Sâman Ind. St. 3,220,b.

शंपु (wie eben) 1) adj. P. 5,2,138. Vop. 7,31. a) etwa *wohlwollend, wohlthätig:* तच्छंयोः सुप्रयामिमहे ṚV. 1,43,1. यो मावँ शंयोर्ममकाय सूनवे वक्तम् 34,6. शंयू इव मंकिष्ठा 10,143,6. शंयोर्द्वामां मघ्यान्मा देवानामपसंघ्निक्तस्मात् TS. 1,2,60,2. Vishṇu 6,4,3. — *b) dem es wohlgeht, glücklich* Taitt. 3,1,24. Bhatt. 4,18. Verz. d. Oxf. H. 44,a,5. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Bṛhaspati TS. 2,6,10,1. 5,2,6,4. TBa. 3,3,6,11. Çat. Ba. 1,9,1,24. Taitt. Âr. 1,5,2. MBu. 3,14131. Verz. d. Oxf. H. 86,b,41.

शंयुवाक m. so v. a. das richtig gebildete शंयोर्वाक Açv. Çr. 1,5,26. 10,1. 6,11,3.

शंयोर्वाकँ m. *die mit den Worten* तच्छंयोरा वृणीमहे *(z. B. TBa. 3,5, 11,1) beginnende heilige Formel* Çat. Ba. 11,2,6,5. 6,9. 2,29. Çâṅkh. Çr. 1,14,23. 3,8,20. Kâty. Çr. 3,12,1.

शंयोस् 1) = शं योस् VS. 3,43; vgl. u. योस्. — 2) *die mit den Worten* तच्छंयोरा वृणीमहे *beginnende heilige Formel:* शंयोर्ब्रूकि TBa. 3,3,6, 11. अव शंयोराक् Çat. Ba. 1,9,1,24. 2,18. 6,1,47. Kâty. Çr. 3,6,16.

शंयोवस् adj. *mit dem* शंयोस्-*Spruch schliessend* Ait Ba. 3,45. Çat. Ba. 3,2,1,23. 3,5,1,20. 11,2,7,25. Kâty. Çr. 3,7,12. 5,9,22. Âçv. Çr. 4,3,2.

शंव (von 5. शम्) Vop. 7,31. m. = मुषलाग्रस्थलोलूखलऔलूखल und वज्र Dharan. im ÇKDa. — Vgl. शम्व.

शंवद् (5. शम् + वद्) m. (संज्ञायाम्) P. 3,2,14, Schol.

शंवस् (von 5. शम्) adj. P. 3,2,9, Schol. *das Wort* शम् *enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 296,b, No. 723.

शंवर s. शम्बर.

शंवूक m. = शम्बूक H. 1205, Schol.

शंस्, शंसति Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्). Dhâtup. 17,19 (स्तुतौ; nach Andern auch दुर्गतौ und क्रियायाम्): शंसिषम्, शंसियुम् (ममा शस्त 2. pl.; शशंस. (यशंसुस् MBu.) शंसिष्यति: im Epos auch med. शंसते, शशंसे (ममाशंसिरे MBu.); absol. शस्त्वा, °शस्य: शंसितुम्; pass. शस्यते, शंसि: partic. शस्तँ und शंसित (selten) s. bes. 1) *laut und feierlich aufsagen, recitiren; insbes. das Aussprechen eines an Götter gerichteten Liedes oder Spruchs:* देवाय शस्तिं शंस ṚV. 4,3,3. मरुतः 1,67,4. वचः 8,8,11. निवचनानि 1,97,3. उक्था 8,23,5. 24,7. 29,4. 7,19,9. 56,23. स्तोमासः शस्यमाना उक्थैः 8,69,3. 4,4,15. न डुष्टुतिः शंस्यते 1,53,1. धीतिः 110, 1. मन्म 2,4,5. ब्रह्म 4,58,2. गिरः शस्यमानाः 8,69,2. 5,53,5. 10,66,12. 148,4. शंसिषं नु तें सपिकर्णे 8,48,16. Âçv. Ba. 2,35. Im Ritual von der *Recitation* des Hotar: शंसावाधर्यो प्रति मे गृणीहि ṚV. 3,53,3. 4,7. 2,43,3. निविदं शस्त्वा मरुतः शंसति Ait. Ba. 2,33. 35. तूष्णीशंसम् 35. 3, 31. 5,14. 6,5. 30. शस्त्रम् 24. अग्निः Nir. 13,7. अशंसिषुर्मरुतः Çat. Ba. 4, 6,9,20. 3,3,1. 6. 10,5,3,3. उद्धैर्हाता शंसति 11,5,3,10. स्तोत्रियम् Çâṅkh. Çr. 9,5,3. घाय्याम् 11,12,3. महाव्रतम् 16,20,10. बृहतीम् Kâty. Çr. 7,25,6. पङ्क्तीं गायत्रीम् P. 6,3,35, Schol. शंसनमनुशंसति ब्रह्मचाः शस्त्रकोविदाः Kâlikâp. in Ind. St. 9,14. Aus शंसाव variirt ist in den Litaneien शंसावो, शंशंसावो, शंसाव Çâṅkh. Ba. 14,3. Kâty. Çr. 9, 13,29 und sonst. शंसामो ähnlich Çâṅkh. Ba. 14,3; vgl. यो शंसामिति शस्त्राणि शंसति Taitt. Up. 1,8,1. absol. शंसम् Çâṅkh. Çr. 18,16,2. गायत्री °1. जगती °11,18,11. पङ्क्ति °10,6,5. निविच्छंसम् 20. — 2) *loben, preisen, rühmen:* शंसा मरुतामिन्द्रम् ṚV. 3,49,1. 5,5,6. 7,61,4. शंसते स्तुवते शंभविष्ठा 6,62,5. 4,51,7. 10,99,9. ṚV. Prât. 11,25. सन्यासं कर्मणाम् Bhag. 5,1. MBu. 2,1593. Kir. Nîtis. 6,7. Spr. (II) 806. (I) 2046. Râǵa-Tar. 5,433. Bhâg. P. 1,9,45. 3,16,28. 4,5,25. 22,48. 8,4,1. 12,42. साधु साधिति शंसताम् (partic.) R. Gorr. 1,3,55. साधु साधिति भूतानि शशंसुर्मारुतात्मजम् 5,6,32. शशंसुर्द्रौपदीं तत्र कुत्सन्तो धृतराष्ट्रजम् MBu. 2,2393. Bhâg. P. 4,7,12. 9,31. शशंसिरे 8,7,45. भवेदापत्सु यान्मित्रं तन्मित्रं शस्यते बुधैः Hariv. 10004. उन्मत्तस्य हि कामस्य प्रतिवादो न शस्यते Spr. (II) 1243. 1303. Bhâg. P. 4,17, 33. *rühmen* so v. a. *für günstig —, für ein gutes Omen halten* Vârâh. Bṛh. S. 24,12. 54,122. 56,9. — 3) *geloben, anwünschen:* सूर्या यत्पत्ये शंसन्ती मनसा सवितादेदात् ṚV. 10,85,9. शंसामि पित्रे मरुताय शेवम् 124,3.

*) Was man unter श vermisst, suche man unter च oder स.

— 4) *aussprechen, sagen, verkünden, mittheilen:* किमर्थंस्तानि शंससि AV. 6,45,1. Çat. Bn. 4,3,4,21. शंस मे कासि कस्य वा MBn. 3,2884. 13, 1880. R. 1,9,26. 2,35,21. 57,10. 87,13. 90,18. 92,3. 8. R. Gorr. 2,37, 12. 3,55,46. 4,25,26. Raçu. 11,34. मायेति शंससी 12,74. नीचैः शंस Spr. 2215. Riça-Tar. 3,243. 4,508. Bhâg. P. 3,19,27. 6,11,1. कुलगोत्रे शंसन् M. 3,109. यामे दोषान्समुत्पन्नान् — शंसेद्यामदृशेशाय 7,116. fg. 8,233. कर्मणा पत्नीनिर्वृत्तिं शंस नस्तद्यतः पराम् 12,1. वंशकरान्पृथक् MBn. 1, 3134. 2,2622. 3,2905. 5,7515. 12,1061 (कृच्छ्रं mit der ed. Bomb. st. कृदयं zu lesen). R. 1,1,58. 2,35,20. R. Gorr. 1,9,28. 3,55,50. Raçu. 2,68. 3,3. 16. 4,72. 76. 9,77. Kumâras. 5,51. Vikr. 103. Kathâs. 12,122. 160. 15,110. 18,401. 22,54. 171. 23,77. 25,157. 27,119. 30,71. 32,120. 56,267. 61,6. 277. Brahma-P. in LA. (III) 53,19. Bhâg. P. 1,1,9. 18,11. 2,9,3. शशंसिरे MBn. 1,7634. 3,12345. शंसधम् R. 3,55,43. 45. शंसेथाः 44. नलं यदि न शंससि so v. a. *wenn du mir nicht sagst, wo Nala ist,* MBn. 3,2135. 2335. तौ वाल्मीकिमशंसताम् *sagten, dass es Vâlmîki sei,* Raçu. 15,69. मा चास्मै प्रेषितं (so ed. Bomb.) रामं मा चास्मै पितरं मृतम् । भवतः शंसिषुः *sagt ihm nicht, dass* R. 2,68,8. तामग्रगन्धसंपूर्णां रूपयन्नविभूषिताम् । शशंस सेना रामाय 97,14. 3,55,47. 4,31,18. Raçu. 5,29. Kumâras. 3,60. शशंसुस्ते चात्र तां मिथ्यावादिनीं स्त्रियम् Kathâs. 23,24. कार्पाटिकं मां ऽस्मै तद्दातारं शशंस 53,40. (ohne Worte) *anzeigen, verrathen, zu wissen thun:* उत्तरीयं वरारोहा प्रभान्याभरणानि च । मुमोच यदि रामस्य शंसेयुरिति जानकी ॥ R. 3,60,7. दुष्प्रयुक्ता गीः (= वाक्) पुनर्गोत्रं प्रयोक्तुः सैव शंसति Spr. (II) 2210. (दृशो दूत्यश्च) शंसत्यो रागमुत्पन्नम् (I) 4963. Kir. 5,23. Kathâs. 21,102. दूरीभवन्तं तं शंसतेवात्मनात्मना 38,78. शशंसुस्तत्पराभयम् । नगर्यां नरनाथेभ्यस्तुदद्दालमेखलाः ॥ Riça-Tar. 1,301. मन एव मनुष्यस्य पूर्वरूपाणि शंसति Bhâg. P. 4,29,66. शंसति (सा) बन्धकीं ताम् Vaitân. Bdh. S. 89,8. सैव (शिवा) शंसते मल्लिले मृतम् 90,7. *ankündigen, vorhersagen, verheissen:* इमानि हि निमित्तानि सद्यः शंसन्ति विग्रहम् R. 3,74,12. 78,11. Harîv. 4255. Kumâras. 2,32. Vaitân. Bdh. S. 86,62 (med.). 89,2. Kathâs. 18,49. 44,134. Mâlav. P. 43, 30. Bhâg. P. 1,14,10.

— caus. 1) *aufsagen —, recitiren lassen:* विस्तृतं षोळशिनम् Ait. Br. 4,4. सूक्तम् 32. 5,14. 6,30. Lâṭj. 3,6,18. तांस्त्वं शंसय सूक्ते द्वे वैश्वदेवे Bhâg. P. 9,4,4. — 2) *ankündigen, vorhersagen:* एष वसुलको नाम पत्नी — यमस्य प्रयात्याशु शंसयन्ती महद्भयम् R. 3,74,13.

— अति 1) *darüber hinaus —, weiter aufsagen:* स्तोत्रम् Ait. Br. 4, 6. एकां द्वे न स्तोममतिशंसेत् (vgl. Çâṅkh. Çr. 12,2,10) 6,8. 23. Çâṅkh. Çr. 13,7,3. 8,3. — 2) *im Aufsagen übergehen:* सूर्यम् Ait. Br. 4,10.

— अधि, partic. °शस्त (= प्रवल Nîlak.) vielleicht fehlerhaft für अभिशस्त *verrufen, gefürchtet:* कृत्यानामधिशस्तानामरिष्टशमनं महत् MBn. 13,3139.

— अनु 1) *nach Jmd aufsagen, — preisen:* ये चेमां मनुशंसेयुः (infin.) RV. 5,50,3. TS. 5,6,8,6. होतो TBr. 1,4,8,1. कश्यस्य पावमान्यो ऽनुशस्ता भवन्ति Ait. Br. 2,37,3,4. 17. परिमितं स्तुवन्त्यपरिमितमनुशंसति 4,6,8,1. Çat. Br. 4,2,3,12. 3,1,3,4. 10,1,4,6. यदि संचितमनुगीतमनुशंसेत् Âçv. Çr. 4,8,24. शंसन्तमनुशंसन्ति बह्वृचाः शास्त्रकोविदाः Kâṭhaka-Up. in Ind. St. 9,14. — 2) *vor Augen haben, in Betracht ziehen:* फलमेवानुशंसन् (= आलोचयन् Comm.) Bhâg. P. 10,16,38.

— अभि 1) *beschuldigen, Jmd etwas Uebles nachsagen;* pass. *üblen Leumund haben:* यमत्रिर्वासमभिशशंसेषुः TS. 2,1,10,2. 2,5,1. 3,2,4. 5, 6, 6. मद्यापापेयपाप्यो यो ऽभिशंसेन्मृषा परम् Jâṭ. 3,286. अनृतम् *fälschlich* Pâraṇ. Bn. 5,10,6. 7. Kâṭj. 12,6. यद्भिशस्यमानमार्ष्टिषेणं कारयेत् Ait. Br. 3,46. 5,30. स्यालो ऽभिशस्तवान्गार्ग्यमपुमानिति Harîv. 6429. अभिशस्त *beschuldigt, eines Vergehens angeklagt, bescholten* AK. 3,1,43. H. 436. भ्रात्रा यवीयसा M. 8,116. R. Gorr. 2,9,7. Mâṇ. P. 31, 27. न क्रुध्यत्यभिशस्तो (अभिशप्तो Scha.) ऽपि R. ed. Bomb. 2,41,8. M. 8, 373. 2,185. 3,159. 4,211. MBn. 7,1457. Spr. (II) 306. Verz. d. Oxf. H. 86,b,19. Jâṭ. 1,161. मिथ्याभिशस्त 3,285. अनृताभिशस्त Verz. d. Oxf. H. 282,b,29. Spr. 4875. Kâm. Nîtis. 17,31. *beschimpft* MBn. 5,1277 (= अभितः शस्त्रैर्विदीर्णः Nîlak.; also auf शंस् zurückgeführt). Harîv. 913 (अभिशप्त die neuere Ausg.). 6430 (अभिशप्त die ältere Ausg.). *verflucht, verwünscht:* (यथा समुद्रः) ब्राह्मणैरभिशस्तः सन् (अभिशप्तश्च ed. Bomb.) अभूद लवणोदकः MBn. 13,7219. Hierher (und nicht zu शंस्) wohl auch die Bed. *bedroht:* (गाम्) आतुरामभिशस्तां वा चौरव्याघ्रादिभिर्भये: M. 11, 112. — 2) *loben, preisen:* मद्भक्तासे परिगल्लाभिशस्य च R. 2,11,16. किं नाम कृपणं दैवमशक्तमभिशंससि 23,8. — Vgl. अनभिशस्त fgg., अभिशंसन fg. und अभिशंस् fgg.

— अव s. अवशंस्.

— आ 1) *hoffen —, rechnen —, vertrauen auf; erstreben* (acc. loc. dat.); med.: य आशंसेत् भूत्यर्थम् AV. 12,4,44. Ait. Br. 2,16. 3,46. TS. 2, 5,8,6. यदि शीतः स्यादाशंसेत *dann gebe man die Hoffnung auf* Çat. Br. 1,5,4,1. आ कृ वा अस्मिन्स्वाश्व निष्ठाश्व शंसत्ते 6,4,17. 9,3,33. अबलीयान्बलीयांसमाशंसते धर्मेण *sucht oder hofft zu bemeistern* 14,4,9,26. यो वै ब्राह्मणं वा शंसमानो (वाशं° zu lesen) ऽनुचरति तस्मिन्यं वायं मे दास्यतीति 2, 3,4,6. Âçv. Gṛhj. 4,1,3. Kâṭj. 88. राज्ये Pâraṇ. Bn. 19,1,2. तै कर्तुं नाशंसत 13,6,9. — Mâlav. 10,9. दौरित्रॉल्लोकान् MBn. 1,6137. पुत्रेषु यशः कीर्तिम् u. s. w. 3,13647. R. 2,30,43. 51,5 (48,5 Gorr.). 86,6 (94,7 Gorr.). वनवासकृतं सुखम् 52,47. Kumâras. 3,57. Çix. 48. आशाम् R. 2,75,35. गुणाम् (*voraussetzen bei,* mit loc.) 19,24. आशंसे वो हितामित्रं मोक्षादादृक्मोदृशम् R. Gorr. 2,92,9. विजयाय MBn. 1,148. fgg. Çix. 172. उपाध्यायवेदागच्छेदाशंसे ऽधीयीय P. 3,3,134, Schol. नाशंसे यदि ते सर्वे जीवेयुः शर्वरीमिमाम् *ich habe keine Hoffnung, dass* R. 2,86,15. नाशंसे यदि जीवन्ति सर्वे ते शर्वरीमिमाम् 51,14 (48,14 Gorr.). आशंसन्ते (so ed. Bomb.) हि पितरः सुवृष्टिमिव कर्षकाः । अस्माकमपि पुत्रो वा पौत्रो वापि प्रदास्यति ॥ MBn. 13,3219. आशंसे स्याशिता (so ed. Bomb.) सेना वत्स्यतीमां (वसन्तिमां v. l.) विभावरीम् R. 2,84,18. — act.: गर्भवस्मै वसून्या हि शीर्षिम् RV. 10,44,8. धरित्रयम् MBn. 2,1904. 13,4734 (wohl अरक्षान् zu lesen). R. Gorr. 2,17,7. 26,3. कृतं लवणमाशंसुः (ohne redupl.) शत्रुघ्नस्याभिषेचनात् 7,63,18. आशंसामि त्रिप्रमेष्यति राघवः 5,35,18. आशंसित *gehofft, erwartet* R. Gorr. 2,74,29. Kir. 3,52. Bhâg. P. 10,73,18. scheinbar auch Raçu. 1,86, wo aber mit der ed. Calc. पाद्यमाशंसितावन्द्यम् (आशंसिता nom. ag.) zu lesen ist. — 2) *befürchten;* med.: शमलम् Bhâg. P. 1,13,31. भयम् 5,8,9. — 3) *wünschen, ein Verlangen haben nach;* med. Dhâtup. 16,28 (इच्छायाम्, आशिषि). कुरुप्रवीरान् MBn. 1,7148. mit infin. MBn. 3,10640. fg. 17171. (न) चिरं जीवितुमाशंसे रुदती चापि मैथिलीम् R. 2,12,70. 8,2,32. संग्रामम् Bhaṭṭ. 14,70. आशिषः (so v. a.

Segenswünsche aussprechen) 90. राज्ञः शिवं सावरजस्य भूयादित्याशशंसे कारणैरवाप्तैः Rāgat. 14,50. act.: रिपून् Kathās. 27,141. mit infin. MBh. 3,15643. आशंसतो वन्दिनं जेतुकामः (so v. a. जेतुम्) 10542. — 4) *bitten um* (acc.), act.: मौवीरराजस्य पुनःप्रसादम् MBh. 3,15650. शम् Bhāg. P. 4,10,29. — 5) *loben, preisen;* act. mit acc. der Sache Bhāg. P. 4, 10, 9. — 6) *hersagen, recitiren;* med.: नान्दीम् Śiç. Cū. 1,8. *aussagen*, med. Daçak. 59,11. चित्तं पुष्करपत्रतोयतरलं विद्वद्भिराशंसितम् Spr. (II) 75. *ankündigen, vorhersagen;* act. Kumāras. 3,14. Bhāg. P. 5,22,13. — Vgl. अनाशस्त, आशंसन fgg., आशंस, 2. आशा. — caus. *Hoffnung, — Anrecht geben auf* (loc.): यद्नाशस्ता इव स्मसि । आ तू न इन्द्र शंसय गोषु RV. 1, 29,1; vgl. die v. l. TBa. 2,4,4,5.

— उद् med. *sich getrauen*, mit acc.: यत्सवासा घरुणे नोदाशंसते Çat. Br. 5,2,2,5. व्रतचर्याम् 11,1,4,1.

— उप s. उपाशंसनीय.

— प्रत्या med. *erwarten, voraussetzen:* सर्वमेवात्र कल्याणे प्रत्याशंसे महात्मनि R. Gorr. 2,121,19.

— समा 1) act. *zusprechen, zuweisen:* समस्मै वर्षणिभ्य आ शंस्त RV. 4,37,8. — 2) med. *hoffen —, rechnen —, vertrauen auf* (acc.): धृतराष्ट्रस्य बकपुत्रस्य वृद्धिम् MBh. 5,509. ते समाशंसिरे (ohne redupl.) लब्धुं विप्रियं राज्यं च 1,6920.

— उद् *aufrufen:* शर्धो मारुतम् RV. 5,52,8.

— निस् s. निःशम् und अनिःशस्त.

— परा s. पराशंस्.

— प्र 1) *laut verkünden; preisen, loben, rühmen* RV. 1,21,2. 138,1. 2,8,3. जातवेदसं प्र शंसति नमसा 3,3,8. अग्निर्वित्तु प्र शंस्यते 5,17,4. 6, 48,1. 7,100,3. 8,27,18. यं मित्रं न प्रशंसति प्रशस्तिभिः 63,2. 10,146,6. अन्यः क्रोशति प्रान्यः शंसति *während der Eine schilt, lobt der Andere* TS. 7,5,9,2. Kāṭh. 34,5. Kāṭy. Çr. 13,3,5. गोषाम् Çat. Br. 3,3,4,11. विप्राम् 14,4,2,24. 6, 8, 9. प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियः RV. 8,19,6. सगड्ढ प्र शंसिषो देवो मर्त्यम् *aufmuntern* 1,84,19. Āçv. Gṛhy. 2,9,4. — त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति शौचमक्रोधमत्वराम् M. 3,235. 7,109. 10,70. MBh. 1,7433. R. 1,13,20. Spr. (II) 2024. (I) 2937. Kathās. 23,182. नृप्रशंसत्यज्ञं यः M. 10,33. प्र पूर्वजो (so ed. Bomb.) पूर्वजो चित्रभानू गिरा वा (wohl so zu lesen st. वा) शंसामि MBh. 1,722. 2,1536. 3, 2220. 15228 (Gegens. निन्द्). 5,5424. R. 2,52,81. Spr. 4594. Rāja-Tar. 4,320. Bhāg. P. 4,12,33. 15,7. प्रशंसीयात् Spr. (II) 2424. प्राशंसीत् Bhaṭṭ. 15,69. प्रशशंस R. 3,28,8. 52,22. 4,2,3. 8,1. Kathās. 24,168. 45,139. सभाग्यो ऽस्मीत्यवात्मानं प्रशशंस पुनः पुनः Mārk. P. 129,6. LA. (III) 90,12. Bhāg. P. 1,5,18. प्रशशंसुः MBh. 3, 2087. 2150. R. 1,4,15. 11,10. 32,3. Bhāg. P. 3,20,50. प्रशशंसिरे R. 2,112,2 (122,2 Gorr.). प्रशस्य absol. MBh. 3, 16901. 14,119. R. 1,34,53. 65,36. R. Gorr. 2,4,8. 5,69,15. Bhāg. P. 1, 19,18. fg. 4,17,3. 22,41. 7,5,8. Pañcat. 98,4. प्रशंस्य (!) R. 5,59,18. यच्च वाचा प्रशस्यते M. 5,127. वाग्मी हूतो प्रशस्यते 7,64. 204. 209. 9,34. 10, 72. 112. भक्तानां हि परित्यागो न धर्मेषु प्रशस्यते MBh. 5,5987. Spr. (II) 1262. 1836. (I) 1996. 5004. Varāh. Bṛh. S. 48,55. 53,96. 56,10. 14. 79, 19. Kathās. 18,60. Pañcat. 34,4. प्रशस्यमान R. 1,4,17. R. Gorr. 1,3, 61. Daçak. 66,5. Pañcat. 37,18. हरिणा युवतिः प्रशशंसे Gīt. 1,43. प्रशस्त *gepriesen, gelobt, gerühmt, empfohlen, für geeignet —, gut —, vorzüglich gehalten, faustus* (von Gestirnen, Tagen u. s. w.) AK. 1,1, 4,5. 3,4,14,36. 26,162. Trik. 3,3,259. H. 86. Schol. Hall. 4,96. कृणोषि तं मर्त्येषु प्रशस्तम् RV. 7,90,2. 2,27,12. देवा देवेषु प्रशस्ता 5,68,2. 1, 180,8. धो 7,1,10. कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता 84,3. 10,160,3. Āçv. Gṛhy. 2,8,3. 10,8. दिष्ट् RV. Pāṛ. 15,1. प्रवचन 16. स्वकर्मसु M. 2,183. 3,5. 12. 24. 47. 133. 276. मृगयतिथिः 5,22. यत्र R. 2,3,14. नक्षत्र, मुहूर्त 80, 17. राष्ट्र R. Gorr. 1,7,16. देश Suçr. 1,123,21. 136,20. धर्मशाला MBh. 3,15610. आरम्भ Kumāras. 7,71. शीतक्रियायास्य Mālav. 48,17. Spr. (II) 1654. 3779. (I) 3019. 4649. 5398. Rāgat. 5,25. 17,36. Varāh. Bṛh. S. 4, 6. 6,12. 35,3. 37,1. 43,15. 48,42. 50,2. AK. 2,1,4. Hall. 2,4. Pañcat. 203,2. स्यातुं हि तत्रापि न प्रशस्तमस्मिन् Mārk. 110,23. Sarvadarçanas. 115,16. 19. सु° Pāṇ. 1,2,2. अ° *nicht für gut u. s. w. geltend, verrufen:* विगीतकन्याप्रशस्तः संवृत्तः कलिसंश्रयात् MBh. 3,2849. मृगाहिन्नाः *Unglück verheissend* R. 6,16,7. fgg. अप्रशस्ता वीणेयम् *mangelhaft, schlecht* Kathās. 49, 19. अप्रशस्तैः तु कृत्वाप्सु so v. a. *Unreines* M. 11, 255. प्रशंसित = प्रशस्त Pāṇ. 2,1,6. सु° 1,4,3. 6,26. — 2) *vorhersagen* Spr. (II) 2898 (Conj.). — Vgl. प्रशंसक fgg., प्रशंस्तव्य fg., प्रशस्त, अप्रशस्त, पुरुप्रशस्त, प्रशस्तव्य, प्रशस्ति, प्रशस्य, कविप्रशस्त, बक°. — caus. *rühmen, preisen:* उदतिष्ठन्महानादस्तदा कृत्तं प्रशंसयन् Harīv. 10346. प्र सु शंसयिष्ये (प्रशंसयिष्ये [!] die neuere Ausg., welches Nīlak. durch अतिशयेन कथयिष्ये erklärt; also hat er die andere Lesart vor Augen gehabt) 8809.

— अतिप्र *hoch preisen* Bhāg. P. 3,18,10.

— समतिप्र dass.: तं (संप्रहारं) समतिप्रशंसन् । योधास्त्वदीयाः MBh. 7, 4890.

— अभिप्र *rühmen, preisen:* राज्ञानमभिप्रशंसन् MBh. 3,11905. 12571. 6,2392. ये च त्वामिप्रशंसेयुर्निन्देयुरथ वा पुनः 12,3382.

— प्रति *entgegenrufen u. s. w.:* अप्रतिशंसत् Çat. Br. 14,5,5,9. °शस्त 10.

— वि 1) *aufsagen, recitiren:* मा चिदन्यद्वि शंसत RV. 8,1,1. 3,39,2. यथा हि वो दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे etwa *ist nicht auszusagen* d. h. *durch Worte zu erschöpfen* 10,143,3. — 2) *recitirend theilen:* त्रिर्निविदा सूक्तं विशसेत् Ait. Br. 3,19.

— अभिवि = वि 2): यत्कानीयसा हृन्दसा व्यायन्हृन्दो ऽभिविशंसति TS. 6,6,11,5.

— सम् *zusammen —, nebeneinander recitiren* Ait. Br. 6,26. 36. Çat. Br. 13,5,4,3. Çāṅkh. Çr. 10,13,9. 11,2,13. 17,9,6.

— उपसम् *hinzufügend aufsagen, anhängen* Çat. Br. 13,5,2,3. Āçv. Çr. 8,8,1. तार्क्ष्यणीकपदा उपसंशस्य 12,20. 10,10,4. Çāṅkh. Çr. 17,3,2.

शंस (von शंस्) 1) m. parox. *a) Spruch, Zuruf; Anruf, Aufforderung, Gebet; Lob* RV. 1,27,18. प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः 33,7. 141,6. 11. 182,4. यजमानस्य 178,4. 2,20,7. 31,6. 10,42,6. नराम् 1,173,9. 3,16,4. 10. 6, 24,2. शंसमाविदे 10,113,3. उरुष्या णो उरुभिर्देव शंसैः 7,1. 4,6,11. 5,3, 4. 41,9. उभा शंसा सूदय 4,4,14. उभा शंसा नर्या मामविष्टाम् 1,185,9. सत्यं शंसा उत ये गविष्टौ Vikrama. 9,3. प्रज्ञा वै नरो वाक्शंसः Ait. Br. 2, 2,4. Ueber RV. 2,26,1 s. मनुशंस. — *b) Anwünschung: α) Verwünschung, Fluch:* घोरे ते शंसे कृणुहि निनित्सोः RV. 7,25,2. 34,12. वनुष्यतः 56, 19. अरुषः 1,18,3. 3,18,2. अस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः 1,94,8. 166,8.

8,39,2. TBa. 3,7,13,2. — β) *Segen:* या नो देवानामुप वेतु शंसः ṚV. 10, 31,1. पितृणां न शंसाः सुरातयः 78,3. 7,25,3. — c) personificirt neben Bhaga ṚV. 5,46,3. 7,35,2; vgl. 10,64,10. — d) नरां शंसः ṚV. 2,34,6 wohl so v. a. नराशंसः. — 2) f. या a) *das Rühmen, Preisen* Çaṅkar. im ÇKDa. तद्दानस्य Spr. 3196. आत्म° *Selbstlob* 2636, v. l. — b) *Wunsch* H. an. 2,593 (lies वाञ्छायां). Med. s. 11. — c) *Ausspruch, Meldung* (वचम्) dioss. प्रिय° *frohe Botschaft* R. 2,72,11. — Vgl. अघशंस (*Unheil verkündend* Bhâg. P. 5,22,14), उरु°, शत्रु°, गम्भीर°, सामि°, सोच°, तूष्णी°, दुः°, नरा°, नृ°, पाक°.

शंसन (wie oben) m. *Unterhaltung* (= संभाषण Comm.): सचेतनो भवतु शंसने जनः Pân. Gaṇ. 3,13.

शंसन (wie oben) n. 1) *Recitation* Ind. St. 2,288. विरुद्ध° als Erkl. von गालि *Verwünschung* H. 272. neben योग als Beiw. Çiva's (= वेदप्रशस्य Nîlak.) Hariv. 7425. — 2) *das Aussagen, Melden, Mittheilen:* द्वितीयाप्रिय° *eine zweite schlimme Botschaft* R. 2,72,39. काव्यकारः स पश्चिते पापमाधाय शंसनम् *Bekenntniss* Taik. 1,1,132. — Statt याचा शंसनं प्रार्थनम् bei Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 123 ist याचाशंसनं प्रा° zu lesen. Vgl. मङ्गल°.

शंसनीय (wie oben) adj. *rühmenswerth, preiswürdig* Nir. 4,24. Râm-Tar. 4,133.

शंसित partic. 1) (von शंस्) *gepriesen, gerühmt:* तथा मया सभामध्ये सो ऽयं मैत्रेय शंसितः Pañcat. 102,6. *des Preisens werth:* जन्मन् Spr. 2861. — 2) fehlerhaft für संशित (von शा mit सम्).

शंसितर् (von शंस्) nom. ag. = शंस्तर् P. 7,2,34. Schol. Lit. 2,6, 11. मामधे शंसितारः स्तुवन्ति MBh. 12,10299. 13,7369. Vishṇ-P. bei Muir, ST. 4,317, N. 281.

शंसिन् (wie oben) adj. am Ende eines comp. 1) *recitirend.* — 2) *aussagend, mittheilend, verrathend:* मुनयो ऽर्थशंसिनः Bhâg. P. 11,2,20. प्रज्ञावती देवदृशंसिनी ते Raghu. 14,45. मूर्धानः ततक्रैकारशंसिनः Kumâras. 2,26. वपुरादृतिशयशंसि Çic. 9,77. Vikr. 60,14. Spr. (II) 3413. Kathâs. 10,90. 75,86. 101,349. Râm-Tar. 1,254. 6,198. *erwähnend, sprechend von:* मङ्गल्यशङ्खचन्द्रार्कचक्रकोकवधूशंसिनी (नान्दी) Sâh. D. 282. *ankündigend, vorhersagend, verheissend:* उत्पाता भयशंसिनः MBh. 1,1418.16, 6. पृथिवीतपशंसीनि निमित्तानि 6,5845. Hariv. 4256. शुभ° Râm-Tar. 3, 220. 222. Raghu. 3,14. 1,42. 12,90. Vikr. 65,11. Vaṇîs. Bṛh. S. 89,2. 90,7. Kathâs. 19,62. 107 (अङ्ग fehlerhaft). 35,107. 124,108. Râm-Tar. 1,194. Spr. (II) 160. Taik. 3,3,264. — Vgl. अघ°, उक्थ°, ब्राह्मणाच्छंसिन्, सु°, क्षेत्रा°.

शंस्तर् (wie oben) nom. ag. Uṇâdis. 2,94. Taitt. Prât. 16,5. P. 7,3, 34. *der da recitirt* ṚV. 1,162,5. निविदाम् Ait. Br. 2,11. = स्तोतर् und im acc. शंस्तरम्, nom. acc. du. शंस्तारौ nach Uéval. — Vgl. शंसितर्.

शंस्तव्य (wie oben) adj. *zu recitiren* Ait. Br. 2,32. 42. 3,24. 35. 4,3.

शंस्य und शंस्था (s. शम् + स्थ, स्था) adj. P. 3,2,77, Schol.

शंस्य (von शंस्) partic. fut. pass. P. 6,1,214. = शस्य Kâç. zu P. 3,1, 109. Vop. 26,19. 1) *zu recitiren* ṚV. 1,8,10. उक्थ 10,5. 5,39,5. — 2) *lobenswerth, preiswürdig* ṚV. 1,17,5. 116,11. 117,6. 2,34,11. अतिथिन्याय शंस्यं करिष्यन् 6,26,3. 8,18,21. रयि 49,11. 10,47,3. 48,9. Beim. des Agni, in einer Formel VS. 3,37. TBa. 1,1,10,1. Schol. zu Nir. Ça. 383,3 v. u. 394,2.

1. शक्, शक्नोति Dhâtup. 27,15 (शक्लृ). यशकम्, शकेयम्, शकेम; शशाक, शेक, शेकुस्; शक्ष्यति Kâç. 2. 9 aus Sîkṣ. K. zu P. 7,2,10 (nach Sîkṣ. K. ebend. auch शकिष्यति und शकिता neben शक्ता). partic. शक्त (s. bes.); *vermögen, im Stande sein, können:* यद्यां देवान्यदि शक्नवाम ṚV. 1,27,13. 5,40,9. कथं शेक कया पेप 5,61,3. Çat. Br. 3,5,4,13. स एते द्वयेनाशक्नोत् 10,2,4,1. यावच्छकुयात् Çâṅkh. Gṛhy. 4,8. स तद्विलं दण्डकाष्ठेन चखान न चाशकत् MBh. 1,794. अपूर्णा पूरयिष्यामायुषापि न शक्नुयात् Spr. (II) 3696. क्रियतां यदि शक्नोषि गङ्गाया अवतारणम् R. 1,42,21. Hariv. 9696. तेभिः शकेम वीर्यम् AV. 5,8,3. तच्छकेयम् VS. 1, 8. 4,4. तदशकम् 2,28. इदं सर्वमशक्नोमीदृशं किं च *zu Stande bringen* Ait. Br. 5,7. नाचिकेतं शकेमहि (Çâṅkh. ergänzt ज्ञातुम्) Kaṭhop. 3,2. mit einem infin. auf अम् P. 3,4,12. शकेम वाजिनो यमम् ṚV. 2,5,4. 1,73,10. 3,27,3. आरभम् 9,73,3. आरुक्षम् 10,44,6. प्रतिष्ठापयम् Pañcav. Br. 13,4, 11. विशासम्, अपलुपम् P. 3,4,12, Schol. mit einem infin. auf तुम् P. 3,4, 65. ṚV. 10,2,3. AV. 4,18,6. VS. 11,10. Ait. Br. 1,7. Çat. Br. 1,1,3, 17. 4,4,12. 2,4,3,6. 5,2,2,4. 14,9,3,3. शक्नोति, शक्नुमः u. s. w. M. 7,6. 44. MBh. 1,5878. 3,2152. 11277. 5,7251. R. 1,20,4. Çiç. 18,23. Daçak. 80,15. Pañcat. 44,2. 69,3. यशक्नुवत् M. 9,229. 10,99. MBh. 3,2089. R. 1,64,14. यशक्नुवान Bhaṭṭ. 3,6 (mit Verweisung auf P. 3,2,129). शक्नुयात् M. 8,130. शशाक R. 2,39,3. 3,52,19. Raghu. 3,58. शेकुः MBh. 5,7287 (mit der ed. Bomb. zu lesen शेकुराकाशगास्तदा). यशकत् 1,2346. 7230. 3,2919. 11965. R. 2,14,11. 64,19. शक्ष्यामि u. s. w. MBh. 1,6132. 6135. fg. 6140. 5,7039. R. 2,21,27. 48,10. Mucukunda 20. Spr. 4715. Kathâs. 43,266. शक्ष्याम R. 2,56,7. mit einem nom. act. im acc.: दानेन यद्यनिर्णेकं सर्पादीनामशक्नुवन् M. 11,139. im dat.: कर्मणे वां देवेभ्यः शकेयम् *verwenden können für* TS. 1,1,4,1. ग्रहणाय *greifen können* Çat. Br. 14,5,4,7. विशेषाय MBh. 14,108. तत्प्रबोधाय R. 6,37,38. तत्प्रतिकर्तवे Bhâg. P. 3,5,17. im loc.: ग्रहणे तस्य R. 1,60,19. अस्योत्थापने Bhâg. P. 3,26,62. In derselben Bed. auch शेकाति Dhâtup. 26,78 (मर्षणे). मर्तुं न शक्यामि MBh. 1,6754. न शक्याम: प्रवेष्टुं विवरं भुवः 8295. R. Gorr. 2, 59,22. 4,5,23. 5,48,14. auch शक्यते med.: शक्यसे तां गिरः सम्यक्कर्तुं मयि MBh. 3,2367. किं वा शक्यामहे वक्तुं गुणानां ते महोदयम् (so die neuere Ausg.) Hariv. 6325. शक्यसे (शक्यते impers. die neuere Ausg.) यदि स्थितुम् 9697. शक्यो ग्रहीतुम् R. 3,75,30. In der Regel hat शक्यते passive Bed. und zwar 1) *überwunden werden, unterliegen:* तस्मा ये न शक्यते शस्त्रैः सुनिशितैरपि Spr. (II) 2300. — 2) *einem Drängen nachgeben:* निवर्त्यमानापि च सा ज्ञातिभिर्नैव शक्यते MBh. 5,7256. — 3) impers. *für Jmd möglich sein:* स्थीयतां यदि शक्यते *so v. a. wenn du vermagst* MBh. 1,6678. mit einem infin.: शक्यते यदि स्थितुम् *so v. a. wenn du zu schützen vermagst* Hariv. 9697 nach der Lesart der neueren Ausg. — 4) mit einem infin. *durch Jmd* oder *Etwas* (instr.) *das Object einer Thätigkeit werden können,* was wir durch *können* und einen infinit. pass. auszudrucken pflegen: न तथैतानि (इन्द्रियाणि) शक्यन्ते नियन्तुम् *können nicht gebändigt werden* M. 2,96. शुचिना u. s. w. प्रणेतुं शक्यते दण्डः 7,31. MBh. 1,1824. 5566. 5870. 3,2812. 5,7235. R. 2,25,2. नहि रथ्या सु शक्यन्ते गन्तुं बहुजनाकुलाः 33,4. ṚV. 1,10. Spr. (II) 1519. 2801. Vaṇîs. Bṛh. S. 11,2. Kathâs. 18,32. H. 793. Pañcat. 43,17. Hit. 7,22.

Comm. zu Taitt. Prât. 2,12. 28. Das entsprechende partic. lautet शकित (im Unterschied von शक्त) Kâç. zu P. 7,2,17. Vop. 26,110. तत्रापि ज्ञातुगृहे दग्धुं समारब्धा (so ed. Bomb.) न शकिता विदुरमन्त्रितेन *obgleich man es versuchte sie zu verbrennen, so konnten sie doch nicht verbrannt werden* MBh. 1,3823. 3821. अपनेतुं च यतितो न चैव शकितो मया 6015. यदि वै पितरो मम । शक्तैर्न शकितास्त्रातुम् 6853. 7418. 7,4814. दिलीपेन — पुनर्न शकिता नेतुं गङ्गा (शकितं तेन गङ्गा 45,48 Gorr.) प्रार्थयता R. 1,44,53. R. Gorr. 1,60,5. Kathâs. 39,154. 63,45. 65,25.

— desid. s. u. 1. शिक्.

— घनु *nachthun können:* न तते घन्यो घनु वीर्यं शकत् ṚV. 10,43,5.

— परि *bewältigen:* न शक्रः परिशकवे ṚV. 8,67,7.

— प्र *vermögen:* को नु स्तोतुं प्रशक्नुयात् Harîv. 14902. कर्णो प्रयोद्धु न प्रशक्ष्ये MBh. 8,3384. — प्रशक MBh. 7,1127 fehlerhaft für प्रसक्त, wie die ed. Bomb. liest.

— प्रति *gegen Jmd* (acc.) *Etwas vermögen:* प्रतिशेकुर्न सेन्धवम् MBh. 7,1780.

— सम् *vermögen* AV. 1,27,3. mit inf. Bhâg. P. 10,61,3. *mit Etwas zu Stande kommen:* तस्मिन्प्रातर्न सशक्नुवन् TS. 6,4,2,1. न पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैः *ich komme nicht zu Stande so v. a. ich will nichts zu schaffen haben mit* AV. 4,36,7.

2. शक्, शग्धि, शक्तम्, (घा शक्याम्, शकम्, शेकिम. 1) *Jmd* (dat.) *helfen:* ता नः शक्त शचीभिः ṚV. 7,67,5. वृकाय 68,8. 8,3,11. fg. शग्धि तव तन्न ऊतिभिः 24,11. 50,5. 14. 69,2. 80,4. शग्धते 10,40,5. — 2) (*verhelfen zu*) *Jmd einer Sache* (gen.) *theilhaftig machen:* रायः ṚV. 2,2,12. 4,21,10. 5,68,3. वार्तस्य 3,16,6. TBr. 2,4,2,3. — 2. शक् liesse sich etwa als transit. zu 1. शक् *Jmd in Stand setzen* betrachten.

— desid. s. 2. शिक्.

— घा 1) *helfen:* म नः शक्रभिदा शेकदिन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः ṚV. 8,32,12. — 2) *theilhaft machen:* त्वमङ्ग शक्र वस्व घा शेकिषे नः ṚV. 7,20,2. — 3) *einladen zu* (acc.): घा वो शवसामुपस्थे राधो यमे: ṚV. 10,29,3. सधमादम् *zum Gelage* 88,17. Nir. 7,30 (zu 1. शक् gezogen).

— उप 1) *helfen:* s. उपशाक in den Nachträgen. — 2) *mittheilend Angeben:* यत्ते शितासो नोपशेकिम AV. 6,114,2. 3; vgl. die v. l. TBr. 2,4,2,9.

1. शैक 1) n. a) *Mist:* इकैव गोव् रतनेको शकेव (शके oder शका इव) पुष्यत AV. 3,14,4. °वलि 20,131,16. Vgl. अश्व° und शकन्, शकृत्. — b) v. l. für कश = उदक Naigh. 1,12. — 2) f. घा P. 7,3,44, Schol. VS. 24,32. TS. 5,3,12,1. nach Mahîdh. = शकुनि *Vogel*; nach Andern = मल्लिका oder *ein langohriges Thier* (मृग).

2. शक m. pl. N. pr. eines Volkes, *die Indoscythen* H. an. 2,17. Med. k. 34. LIA. 2,362. fgg. gaṇa शिवादि zu P. 4,3,93. AV. Pariç. in Ind. St. 10,318. M. 10,44. (Vasishṭha's Kuh अमृतान्) प्लवाङ्गाविडाठक्कान् MBh. 1,6633. 2,1088. 6,352. 359 (VP. 188. 190. 193). 13,2103. Harîv. 760. 767. 6441. Söhne Narishjant's 641. अर्धं शकानां शिरसो मुण्डयित्वा (मुण्डं कृत्वा die neuere Ausg.) 780. 782. R. 1,54,20 (33,20 Gorr.). शकद्दशाव्कृताः स्मृताः 55,3 (36,3 Gorr.). 4,40,21. 44,13. Vaṇîn. Bṛh. S. 5,38. 75. 79. 9,21. 13,9. 14,21. 16,1. 17,26. 18,6. Râjat. 3, 128. Mâlav. P. 38,6. VP. 374. 474. 475, N. 64. Bhâg. P. 9,8,5. शकादयश्च सभाप्या भद्रदत्तादिनामभिः Sâh. D. 172,16. शकाराणां शकादीनां शकारी (भार्या) संप्रयोजयेत् 173,6. °देश Verz. d. Oxf. H. 330,a,31. शकाधिपराजधानी दिल्ली 274,b, No. 651. fg. °नृपाल Weber, Gjot. 9, N. शकारिर्विक्रमादित्यः Râjat. 2,6. Gaṇîan. im ÇKDn. शकान्तक m. = विक्रमादित्य ÇKDn. ohne Angabe einer Aut. °काल *die Çaka-Aera* (78 n. Chr.) Vaṇîn. Bṛh. S. 13,3 (= Râjat. 1,56). Utpala zu Bṛh. 7,8. Râjat. 1,52. Verz. d. Oxf. H. 188,b,12. °भूपकाल dass. Vaṇîn. Bṛh. S. 8,21. शकेन्द्रकाल dass. 20. °वर्षाणां सप्तसे गते सति Weber, Gjot. 98, N.; vgl. Kern in der Einl. zu seiner Ausg. von Vaṇîn. Bṛh. S. 5. fgg. शक sg. gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. *ein Fürst der Çaka* gaṇa कम्बोजादि zu P. 4,1,175, Vârtt. II. an. Mah. — Vgl. शाक, शाक्य.

3. शक m. *ein best. vierfüssiges Thier* (v. l. शल) Paṇḍan. 1,7,28. — MBh. 13,3338 fehlerhaft für शुक, wie die ed. Bomb. liest.

शकच m. N. pr. Râjat. 5,176.

शैकट Uṇâdis. 4,81. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. (dieses selten) und n. *Karren, Wagen* Nir. 6,22. 11,47. AK. 2,8,2,20. H. 783. Hall. 2,289. Çâṅku. Ça. 4,14,33. Kâuṣh. Up. 4,1,5. शकटमिवाचेतनमिदं शरीरम् Maitrâjan. 2,3. Bhâsârdd. in Ind. St. 1,118. Weber, Gjot. 2,391, N. 1. P. 4,4,80. M. 5,117. Jâjn. 3,42. MBh. 2,1440. 2086. 3,10643. कनकामय 6, 301. 12,12689. 13,2270. 3312. शकटोर्वी 4167. 14,1931. Harîv. 3419. R. 2,36,5. 113,20 (124,20 Gorr.). R. Gorr. 2,83,21. 6,96,12. Vaṇîn. Bṛh. S. 8,3. 34,5. 43,21. 45,7. 46,9. 86,74. Spr. 2343. 5048. Kathâs. 61,326. 328. Mâlav. P. 49,30. Paṇḍat. 8,15. ed. orn. 4,12. Hit. 46,13. °भङ्गकवचन्यास (Kṛshṇa hat als Kind einen Karren umgeworfen und zerbrochen) Verz. d. Oxf. H. 26,b,24. °व्रत 34,a,19. शकटापणाः *Karren und Waaren* (nach den Erklärern) R. Gorr. 2,97,20 (शकटायनाः Schl., शकटापणाः ed. Bomb.). शकटापणवेशाः (so die ed. Bomb. überall) *Karren, Waaren und Zelte für Buhldirnen* MBh. 3,14846. 14922. 5,5155. 7647. 15,612. शकट als m. R. 7,93,3. Spr. 2345, v. l. Bhâg. P. 2,7,27. शकटी gaṇa वल्गादि zu P. 4,1,45. ṚV. 10,146,3. °मुखी Sarpv. Br. 4,7. R. 1, 33,18. 50,4. Harîv. 3448. शकटीशकट als adj. (!) zu घोष 3326. Nach Çiṣ. 4,1 können शकटि (vgl. gaṇa वल्गादि zu P. 4,1,45) und शकटी beliebig betont werden. — 2) प्राजापत्यम्, रोहिण्याः oder रौहिणीशकटम् *das als Karren gedachte* Nakshatra Rohiṇî Spr. 1886. 2307. Sûrjas. 8,13. Spr. 2648. fg. Vaṇîn. Bṛh. S. 24,30. Paṇḍat. 50,20. Kuvalaj. 193,b (169,b). शकटभेद Colebr. Misc. Ess. II, 332. — 3) m. n. Bez. *einer best. Truppenaufstellung* M. 7,187. MBh. 15,249. Kâm. Nîtis. 18,49. 19, 40. 48. fg. °व्यूह MBh. 7,192. — 4) n. Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten im 4ten und 7ten Hause stehen*, Vaṇîn. Bṛh. 12,4. 5. 13. — 5) m. schlechte Lesart für शाकट *Wagenlast* H. 885. — 6) m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. eines von Vishṇu oder Kṛshṇa erschlagenen Asura H. 220. शकटारि 221, Schol. °भिद् Paṇḍan. 4,3,122. शकटासुरभञ्जन 1,20. 8,76. — 7) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,29. — Vgl. सङ्गारशकटी, पुष्य°, शाकट und शाकटायन.

शकटविल s. शकटाविल.

शकटाय् (von शकट), °यति *einen Karren darstellen:* शकटायती Bhâg. P. 10,30,15.

शकटायन, °नाः R. 2,89,15 fehlerhaft für शकटापणाः; s. u. शकट 1).

शकटार् m. N. pr. eines klugen Affen Verz. d. Oxf. H. 157,b, No. 341. यत्तर्दुष्टः सदा पुक्तः सर्वानर्थकरः किल । शकुनिः शकटारश्च दृष्टान्तावत्र भूपते ॥ Spr. (II) 341.

शकटाल m. N. pr. des Ministers von Nanda Kathâs. 4,104. fgg. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 55.

शकटाविल m. *ein best. Schwimmvogel*, = प्लव Mit. III,41,b,10. शकटविल m. *a gallinule* Wilson nach Çabdârthak.

शकटाह्वा f. *das* Nakshatra Rohiṇî ÇKDa. — Vgl. शकट 2).

शकटि und शकटी s. u. शकट 1).

शकटिक adj. (चतुर्घर्घर्यु) von शकट gaṇa कुमुदादि 1. zu P. 4,2,80.

शकटिका (von शकटी) f. *Wägelchen* Mahâbh. 150, s. पुष्पशकटिकानिमित्तज्ञान (die beiden letzten Worte haben sich in die 19te Zeile verirrt; vgl. Comm. zu Buâc. P. 10,43,36) unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a,15. fg. — Vgl. मृच्छकटिका.

शकटिन् (von शकट) adj. *einen Karren besitzend; m. der Inhaber eines Karrens* Kathâs. 61,227.

शकटी f. = शकटानां समूहः gaṇa पाशादि zu P. 4,2,49.

शकधूम (1. शक + धूम) m. 1) *Rauch oder Dunst des Mistes:* मुखदो ब्राह्मणास्य शकृत्पिण्डान्पर्वस्वाधाय शकधूमं विमथ्याकरिति पृच्छति Kauç. 50. °ज adj. AV. 8,6,15. — 2) wohl N. eines Sterabildes AV. 6,128,1. 3. 4. Nakshatrakalpa bei Weber, Omina 363.

शकन् s. शकृत्.

शकनि s. u. शकारिलिपि.

शकंधि (शकम् + धि?) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गुणादि zu P. 4, 1,123. — Vgl. शाकंधेय.

शकन्धु (nom. °न्धूः) P. 6,1,94, Vârtt. 2. Vop. 2, 13. nach Cardy (Gramm. S. 20) = शक + सन्धु *a king's well*.

शकपिण्ड (1. शक + पि°) m. *Mistball* VS. 23,7.

शकपूण m. N. pr. eines Mannes; s. शाकपूणि.

शंकपूत m. N. pr. eines Mannes RV. 10,132,5. mit dem patron. Nârmedha, Liedverfasser von RV. 10,132 nach RV. Anukr.

शकम् (von 3. शम्) indecl. (= सुखरूप Comm.) TS. Anukr. in Ind. St. 3,397. Vgl. यवयवशकम् indecl. (in den Nachträgen), wie wohl st. यवयवशक n. zu lesen ist.

शकमय (von 1. शक) adj. *aus Mist hervorgegangen* u. s. w.: धूम *der Rauch von brennendem Miste* RV. 1,161,13.

शकंभर (शकम्, acc. von 1. शक, + भर) adj. *Mist tragend* AV. 5,22,8.

शंकर n. = शकल 1) Çat. Br. 14,6,9,22.

शंकल Uṇâdis. 1,111. m. n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. 1) m. n. *Span, Splitter, Holzscheit; Schnitzel, Bröckchen, Stückchen;* = भित्त (खण्ड) P. 8,2,59. AK. 1,1,2,17. H. 1434. an. 3,686. fg. Med. l. 134. Hall. 4,28. इध्मस्य Çat. Br. 1,5,1,3. 2. 4,1. 2,5,3,5. 14,1,2,26. TS. 6,3,3,2. यूप° 4,2,3,5. Ait. Br. 2,3. शालावृकाणाम् Kauç. 13. 18. 29. Kâtj. Çr. 4,8,14. बाल्मा° Çat. Br. 3,7,1,8. पुरोडाश° Kâtj. Çr. 9,12,9 (vgl. Âçv. Çr. 5,7,2 und Comm.). हिरण्य° Çat. Br. 3,3,2,26. 7,5,2,8. Kauç. 10. 13. 19. 79. 127. Âçv. Çr. 6,12,3. Lâṭj. 2,11,12. Schol. zu Kâtj. Çr. 4,3,24. 10,8,6. यत्र्शकलान्सक् गोमयैः पिबान: MBu. 13, 3694. शिला° Mahâbh. 115, 4. Râgat. 5,72. Nâgân. 21,19. Sarvadarçanas. 10, 6. 12, 7. s. पाषाण° Spr. (II) 2041. काच° 2297. पद्मराग° 2710. शल्यस्य Uttarân. 35, 6 (46,14). ब्रिस° Gît. 7,25. हिरण्य° Varâh. Bṛh. S. 60,17. यस्थि° 27,4. Spr. 1886. 3059. Kathâs. 60,88. 96,31. कलश° *Scherbe* Prân. 54,15. घटादि° Hariv. 5,18. शकल allein dass. M. 6,26. घण्डशकलानि Hariv. 12332. घनुषः Buâc. P. 10,42,20. कृत्तसर्पशकलानि Pañkat. 262,24. घवलाम्भोद° Kathâs. 73,341. यन्धकारं शकलानि कुर्वन् *zertheilend* Ragh. 2,46. — 2) n. *Hälfte:* शरीरशकले MBu. 2,711. fg. प्राणिशकले 713. 716. fg. Hariv. 1810. Buâc. P. 9,22,7. *die Hälfte einer Eierschale* M. 1,13. MBh. 12,11573. Hariv. 39. Varâh. Bṛh. S. 1,6. *Halbeers* Ind. St. 8, 299. 305. 322. कलयति तिलकं तथा शकलम् *zur Hälfte* Sin. D. 57,18. — 3) n. *Hirnschale* Hall. 3,11. — 4) n. *Fischschuppe* (शल्क); *Haut* (त्वच्) AK. 3,4,4,13. H. an. Med. — 5) n. *Bast* AK. H. an. Med. — 6) n. *ein best. Farbestoff* H. an. Med. P. 4,2,2, Vârtt. 1. — 7) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. 2, 9, 1 (Sây. zu Çat. Br. 14, 6, 9, 1). — 8) fehlerhaft für सकल (so die neuere Ausg.) Hariv. 8429. 8439. — Vgl. त्रि°, वि°, शाकल, शाकलिक, शाकल्य, शलाका und शल्क.

शकलवत् (von शकल) adj. gaṇa मयादि zu P. 4,2,86.

शकला (wie eben) adv. in Verbindung mit कर् *zertheilen* gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. — Vgl. संशकला.

शकलाङ्गुष्ठक ved. adj. Schol. zu P. 3,1,59. 4,6.

शकलिन् (von शकल) m. *Fisch (mit Schuppen versehen; vgl.* शल्किन्) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,111. AK. 1,2,2,17. H. 1344. Hall. 3,33. — Vgl. पुष्प°.

शकलीकर् (शकल + 1. कर्) *zerstückeln, in Stücke brechen, zersprengen:* हृदम् MBu. 7,3873. 6177. °कृतसर्वाङ्ग 6,3626. सप्तधा R. 1, 47,2. 2,69,18. लोकाः °कृताः 3,69,24. (शाखी) घत्तरा °कृतः Ragh. 15, 20. शिरोभिः °कृतैः Kathâs. 116,60. — Vgl. विशकलीकर् unter विशकल.

शकलीभू (शकल + 1. भू) *bersten, zerspringen, in Stücke gehen:* पृथिवी °भवेत् MBu. 3,591. 7,475. द्यौः 3,15100. गदा °भूता 14,2455. मूर्धा तु सप्तधा तस्य °भविता तदा R. 7,26,56.

शकलेन्दु (शकल + इ°) m. *Halbmond* Hariv. 6243. 8429 (hier besser सकलेन्दु die neuere Ausg.).

शकलोष्ट (1. शक + लोष्ट) m. *Mistball* Gaut. 2,4,2 in Ind. St. 5, 371 (शकलोट und पकलोष्ट die Hdschrr.).

शकल्यैषिन् (शकल्य + एषिन् Padap.) AV. Paipp. 3,32. adj. *dem Span nachgehend d. h. glimmend* AV. 1,23,2.

शकवर्मन् m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,a,2.

शकवृद्धि m. desgl. ebend.

शकशकाय् (onomatop.), °यति *knacken:* द्रुमैः शकशकायद्भिर्मारुतेन Bhaṭṭ. 8,65.

शकादित्य (2. शक + आ°) m. N. pr. = शालिवाहन ÇKDa. unter शक.

शकार m. 1) *der Laut* श RV. Paipp. 1,9. 4,2 u. s. w. AV. Paipp. 2,10. 13. 17. Çaṭa. 1,382. — 2) *der in schlechtem Rufe stehende Bruder der Concubine eines Fürsten* (so genannt, weil er im Drama stets श st. स und ष spricht) Bhar. Nâṭyaç. 34,11. 107. Daçar. 2,42. Sin. D. 81. 85. शकाराणां शकादीनां शाकारीं (भार्यां) संप्रयोजयेत् 173,6. Mahâbh. 9,16. fgg.

शकारिलिपि f. Bez. einer best. *Schriftart* Lalit. ed. Calc. 143, 18.

l'écriture de Çakani Fouc. 122.

शकुनि (शकुन Uṇâdis. 3, 49) 1) m. *a) Vogel*, meist von *grösseren Vögeln* und von *solchen, welche Vorzeichen geben*, gebraucht. AK. 2, 5, 32. Trik. 2, 3, 264. H. 1316. an. 3, 423. Med. n. 138. Hall. 2, 83. Vîçva bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3, 49. श्येन RV. 4, 26, 6. 9, 96, 13. 107, 20. 112, 2. हिरण्यय 9, 85, 11. हिरण्यवर्ण Maitrâṇ. 6, 34. कृष्ण RV. 10, 16, 6. AV. 12, 3, 13. TS. 3, 2, 6, 2. RV. 10, 68, 7. 106, 3. 123, 6. 165, 3. कृष्णा: सुपर्णा: शकुना वयांसि *grosse und kleine Vögel* AV. 11, 2, 24. 12, 1, 51. 20, 127, 4. Çâṅkh. Br. 7, 4. VS. 18, 53. Jâṭ. 1, 168. MBh. 1, 2947. 3, 2308. शकुनानां फलं वाय विपरीतमिदं ध्रुवम् 2555. 2734. 5, 2436. Hariv. 1217. R. 1, 30, 16. R. Gorr. 1, 2, 18. 3, 7, 4. 78, 23 (am Ende eines adj. comp. f. घा). 79, 21. Suçr. 1, 30, 5. 104, 14. 17. Spr. (II) 3077. (I) 2926. प्रदक्षिणा: H. 62. मङ्गलामङ्गल° Vaṇîn. Bṛn. S. 2, S. 6, Z. 8. 30, 2. 53, 107. 109. 59, 1. अन्यजन्मान्तरकृतं कर्म पुंसो शुभाशुभम् । यस्य शकुन: (शुभाशुफलसूचको य: कश्चित्प्राणि-द्रव्य: Comm.) पापं निवेदयति गच्छताम् ॥ 96, 5. 25. 35. 52. fgg. °फलज्ञान 88, 10. 93, 62. Râjâ-Tar. 3, 220. Ind. St. 1, 21. — *b) ein best. Vogel* Med. — *c)* pl. N. pr. eines Volkes MBh. 7, 802. Schiefner, Lebensb. 318 (88). — *d)* N. pr. eines Asura Buḍḍ. P. 7, 2, 5. — 2) n. *a) ein gutes Omen* Trik. H. an. Med. Vîçva a. a. O. Spr. (II) 1498. पुनरेव प्रयास्याम: सिद्धये शकुनान्विता: Kathâs. 32, 48. शकुनायेतिन् 53, 80. किं शकुनकारणं किंचित्संप्रातम् (कुशलकारणं तिष्ठति ed. Bomb.) Pañcat. 52, 11. सा च शुकवचनं शकुनमिव कृत्वा Çuk. in LA. (III) 36, 9. शकुनाधिष्ठात्रो देवता Kathâs. 124, 112. शकुनदेवता 109. 111. घ° *ein böses Omen* 34, 8 (am Ende eines adj. comp. f. घा). 54, 149 (zu lesen पण्यवशकुनानि). Çiç. 9, 53. — *b)* Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1, 30, 6. — Vgl. पुण्य°, मूल°, मु°, शाकुन, शाकुनि, शाकुत्त, शाकुत्ति.

शकुनक m. = शकुन 1) *a) Vogel* MBh. 3, 1296.

शकुनघ्न 1) adj. (f. घी) *mit den Omina vertraut* Kathâs. 31, 53. — 2) f. घी *eine kleine Hauseidechse* Trik. 2, 5, 23.

शकुनज्ञान n. *Vögelkunde, Kenntniss der Omina* Jâṭ. 3, 171. Verz. d. Oxf. H. 132, *a*, 35.

शकुनदीपिका f. Titel einer Schrift über *Omina* Notices of Skt Mss. 186.

शकुनहार m. *ein best. terminus technicus im Augurium*, erklärt Vaṇîn. Bṛn. S. 86, 53. fg.

शकुनविद्या f. = शकुनशास्त्र Vâsav. 121.

शकुनशास्त्र n. *die Lehre von den Omina*, Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 126, *a*, 20. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 45 (°शास्त्र gedr.).

शकुनसूक्त n. *das Vogellied* (aus dem RV.) Vaṇîn. Bṛn. S. 46, 73, v. l. nach Knan.

शकुनार्णव (शकुन + घ°) m. Titel einer Schrift über *Omina* Verz. d. Oxf. H. 113, *b*, 44.

शकुनाशा f. *eine best. Pflanze* Suçr. 2, 14, 17. vielleicht fehlerhaft für शकुलाशा; vgl. शकुलादनी.

शकुनाहृत (शकुन + घा°) 1) adj. von *Vögeln gebracht*. — 2) m. *a) eine best. Reisart* Bhâvapr. in Nigh. Pr. (falschlich °हृत् geschrieben). Suçr. 1, 73, 5. 193, 6. Vîgbh. 6, 1. — *b) ein best. Fisch* Râjân. in Nigh. Pr. auch hier °हृत् geschr.

शकुनि Uṇâdis. 3, 49. 1) m. *a)* = शकुन 1) *a)* Naigh. 5, 3. Nir. 3, 18. 4, 16. 9, 3. AK. 2, 3, 32. Trik. 3, 3, 266. H. 1316. an. 3, 424. Med. n. 136. Hall. 2, 82. RV. 2, 42, 1. 43, 3. AV. 2, 25, 2. कृष्ण 7, 64, 1. 10, 3, 6. 11, 9, 9. Ait. Br. 4, 7. °वाद् 2, 15. Çat. Br. 14, 1, 2, 21. Kâṭ. 23, 7. हिरण्यवर्णानां शकुनीनाम् (मक्षा:) Ind. St. 3, 459. Kaṭh. Up. 6, 3, 2. M. 5, 11. 12, 63. Spr. (II) 968. 3288. (I) 2997. 4604. MBh. 1, 733 (die Açvin als *Vögel*). 2, 356. 3, 10437. 5, 2452. 12, 1622. R. 1, 2, 19. 2, 34, 30. 96, 13 (105, 11 Gorr.). 3, 17, 18. Çiç. 2, 21. Vaṇîn. Bṛn. 8. 53, 106. 87, 1. Miṛk. P. 35, 22. Sarvadarçanas. 69, 6. °लुब्धक Pañcat. III, 140. — *b) ein best. Vogel* VS. 24, 40. *Falco Cheela* (चिल्ल) H. 1334. Hall. 2, 95. = गृध्र H. c. 194. — *c)* N. des 11ten festen Karaṇa (s. 2. करण 3) m) H. an. Med. Vaṇîn. Bṛn. S. 99, 5. 8. — *d)* N. pr. gaṇa सुधादि zu P. 4, 1, 123. eines Schlangendämons MBh. 1, 2157. eines Unholdes, Sohnes des Dubṣaha, Miṛk. P. 51, 3. 67. eines Asura, Sohnes des Hiraṇjâksha, Hariv. 194. VP. 147. Buḍḍ. P. 3, 10, 20. 10, 88, 14 (Vater des Vṛka). eines Fürsten der Gândhâra, Sohnes des Subala, Trik. H. an. Med. MBh. 1, 2440. 2713. 3655. 3, 1797. 12276. 14772. fgg. 6, 2104. 7, 816. 14, 2488. Hariv. 8020. 8070. 8098. Spr. (II) 341. Verz. d. Oxf. H. 157, *b*, No. 341. eines Sohnes des Vikukshi und Grosssohnes des Ikshvâku Hariv. 662. eines Sohnes des Daçaratha 1993. Buḍḍ. P. 9, 24, 5. des Urgrossvaters Açoka's Râjâ-Tar. 1, 101. — 2) f. ई *Vogelweibchen* (*Sperlingsweibchen* Çabdârthak. bei Wilson, *Turdus macrourus* Râjân. im ÇKDa.) MBh. 12, 5137. 5523. Hariv. 3382 (die neuere Ausg. besser शकुनिभ्य:). °वेषधारिणी 3423. 9088. शकुनी पूतना N. einer Unholdin MBh. 5, 4409. Hariv. 3290. 3424. 4149. शकुनी allein = पूतना 5876 (die neuere Ausg. शकुनी, die ältere शकुनि). 8391. Später sind daraus zwei den Kindern gefährliche Unholdinnen gemacht worden Suçr. 2, 382, 8. 387, 8. शकुनि Çiç. Saṃh. 1, 7, 109. Verz. d. Oxf. H. 307, *b*, 26. fg. VP. 147, N. 2. शकुनी mit Durgâ identificirt Hariv. 10241. — Vgl. कृष्ण°, मक्षा°, शाकुनिक, शाकुनेय.

शकुनिका (von शकुनी) f. *Vogelweibchen* MBh. 12, 5345. Bez. einer der Mütter im Gefolge Skanda's (wohl = शकुनी पूतना) 9, 2633.

शकुनिग्रह m. Bez. einer best. den Kindern gefährlichen Unholdin: विनता तु मक्षीद्रा कथ्यते शकुनिग्रह: MBh. 3, 14480. — Vgl. unter शकुनि 2).

शकुनिप्रपा f. *eine Tränke für Vögel* Hit. 132.

शकुनिभवन n. gaṇa सवनादि zu P. 8, 3, 119.

शकुनिमार्दि m. VS. Pâṛ. 3, 52. TS. Pâṛ. 6, 7. *ein best. Theil des Opferrosses* VS. 25, 3.

शकुनीश्वर (शकुनि + ई°) m. *der Fürst der Vögel* d. i. Garuḍa Dharmaçâsana im ÇKDa.

शकुनोपदेश (शकुन + उ°) m. *die Lehre von den Omina* Vaṇîn. Bṛn. 28, 5.

शकुन्त Uṇâdis. 3, 49. m. 1) = शकुन 1) *a)* AK. 2, 5, 32. 3, 4, 14, 60. H. 1316. an. 3, 306. Med. t. 162. Hall. 2, 82. AV. 11, 6, 3. MBh. 1, 1881. 2943. 2951. 3, 14990. 14, 2233. Çiç. 170. Spr. (II) 2309. Buḍḍ. P. 3, 31, 8. 5, 17, 22. 8, 2, 14. — 2) *ein best. Raubvogel* Buḍḍ. P. 5, 14, 5. = भास AK. 2, 4, 14, 60. H. 1338. H. an. Med. Hall. 2, 93. *der blaue Holzhäher* Çabdârthak. bei Wilson. — 3) *ein best. Insect* (कीटभेद) Med. — 4) N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13, 2349. — Vgl. क्रोडा°.

शकुन्तकै (von शकुन्त) m. *Vögelchen* Einschiebung nach ṚV. 2,43. VS. 23,23. MBn. 12,9303. शकुन्तिकी f. *Vogelweibchen* ṚV. 1,191,11. VS. 23, 23. MBn. 1,2423. Harıv. 1117. 1121.

शकुन्तला f. N. pr. einer Apsaras Cat. Bn. 13,5,4,13. eine Tochter Viçvâmitra's von der Apsaras Menakâ, Gattin Dushjanta's und Mutter Bharata's, MBn. 1,2814. fgg. निर्वने तु वने यस्माच्छकुन्तैः परिवारिता (परिरक्षिता ÇKDa.) । शकुन्तलेति नामास्याः कृतं चापि ततो मया ॥ 2981. Çiç. 9,5 u. s. w. Bhâg. P. 9,20,13. fgg. शकुन्तलोपाख्यान MBn. 1, 68 in den Unterschriften der Adhjj. Padma-P. in Verz. d. Oxf. H. 13,a, 16. शकुन्तलात्मज m. *der Sohn der* Çak. d. i. Bharata H. 702. — Vgl. अभिज्ञानशकुन्तल, शाकुन्तल und शाकुन्तलेय.

शकुन्ति Uṇâdis. 3,49. m. = शकुन 1) *a*) AK. 2,5,33. H. 1316. Halâj. 2,82. ṚV. 2,42,3. 43,1. Spr. (II) 2309, v. l. Uttarân. 53,14 (69,6).

शकुली gaṇa मद्रादि zu Uṇâdis. 1,42. 1) m. *a*) *ein best. Fisch* AK. 1, 2,3,19. H. 1345. Hit. 191. Halâj. 3,37. VS. 23,35. AV. 20,136,1. MBn. 12,4891. R. 3,76,9. Verz. d. Oxf. H. 129,a,9. 13. — *b*) वसिष्ठस्य शकुलः N. eines Sâman Ind. St. 3, 233,b. — 2) f. ई *a*) *ein best. Fisch mit giftiger Galle* (पित्त) Suçr. 2,258,3. शकुली (v. l. शक्ली) रोहिताकारा भूरी प्रायश्चरत्यसौ (also *eine Art Aal*) । गुर्वी पाके च मधुरा भेदिका दोषकोपना ॥ Râjavallabha im ÇKDa. — *b*) *Wrightia antidysenterica* Mad. in Nigh. Pr. — *c*) *eine Art Gebäck* H. ç. 95; vgl. शष्कुली. — *d*) N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,23. — Vgl. शाकुलिक.

शकुलगण्ड m. *ein best. Fisch*, = शाल Taitt. 1,2,20.

शकुलातक (शकुल + घत *Auge*) m. *eine best. Pflanze:* = गण्डाली AK. 2,4,5,24.

शकुलाली (wie oben) f. *eine best. Pflanze*, = गण्डदूर्वा Râjân. im ÇKDa.

शकुलाद (शकुल + अद्) adj. Çakula's *essend;* m. pl. Bez. einer Völkerschaft gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. — Vgl. शाकुलादिक.

शकुलादनी (शकुल + घदन) f. Bez. verschiedener Pflanzen: = कटु AK. 2,4,3,4. H. an. 3,32. = कटुकशाक (कटशाक ÇKDa. nach ders. Aut. = vulgo काशट Rasâm. 233) Med. n. 247. = कटुका und कटशक Hâr. 233. = तोयपिप्पली (जलपिप्पली) *Commelina salicifolia* AK. 2,4, 3,29. H. an. Viçva im ÇKDa. Râjân. in Nigh. Pr. = मांसी und किंशुलिका H. an. und Viçva = गन्धपिप्पली *Scindapsus officinalis* Râjân. = कट्फल Viçva a. a. O. = शकुलाली Mad. in Nigh. Pr. *eine best. Gemüsepflanze* Vigan. 6,78.

शकुलार्भक (शकुल + अ°) m. *ein best. Fisch*, = गडक AK. 1,2,3,17.

शकृत् (Uṇâdis. 4,58) und शकन् n. Sidd. K. 251,a,8. Declination P. 6,1,63. Vop. 3,39. 165. *Mist, stercus* AK. 2,6,3,18. H. 634. Halâj. 3, 15. शक्रीम् AV. 12,4,4. शक्री VS. 37,9. °शकृता Kâty. Ça. 26,1,23. MBn. 13,3440. Varâh. Bṛh. S. 50,23. शकृभिम् TS. 5,7,22,1. शकृत् nom. acc. sg. und im comp. ṚV. 1,161,10. AV. 12,4,9. TS. 7,1,10,3. Kauç. 26. R. 6,11,31. गो° M. 2,182. 11,91. अश्व° Suçr. 1,35,12. शकृद्रस 145,8. 2,340,9. शकृत्पिण्ड Kauç. 7. 50. 54. 76. fg. Varâh. Bṛh. S. 48,11. 55, 17. Bhâg. P. 5,3,20. शकृन्मूत्रम् 3,17,2. 30,20. 5,3,5. Varâh. Bṛh. S. 90, 10. मूत्रशकृत् 93,14. gaṇa गवाश्वप्रभृति zu P. 2,4,11. Als masc. oder fem. erscheint das Wort in der Stelle: मेध्यमूत्रशकृतस्त्यजन्नधः: Varâh. Bṛh. S. 51,27. — Vgl. अश्व°, शाकृत्क und 1. शक.

शकृत्कारि m. *Kalb (viel Unrath machend)* P. 3,2,24. Vop. 26,48. AK. 2,9,62. Taitt. 2,9,20. H. 1260.

शकृत्कीट m. *Mistkäfer* Hit. 163.

शकृत्पदी adj. *Mist an den Füssen habend* gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139.

शकृद्दिग्ध (von शकृत्) adj. *mit Mist beschmiert* Nir. 6,22.

शकृद्देश (शकृत् + देश) m. *After* R. 1,55,3 (56,3 Gorr.).

शकृद्द्वार (शकृत् + द्वार) n. dass. H. 612.

शकृद्भेद m. = विड्भेद *dünner Stuhlgang, Diarrhoe* Suçr. 2,498,16. 510,2.

शक्कार, शक्कारि und शक्करी s. शक्कार u. s. w.

शक्कुलि f. Sidd. K. 248,a,2 wohl fehlerhaft für शष्कुलि.

1. शक्त (partic. von 1. शक्) 1) adj. *a*) *vermögend, im Stande seiend, Etwas könnend, fähig* AK. 3,4,22,47. 32,144. Taitt. 3,1,14. H. 491. 1263. Halâj. 2,231. M. 2,109. 4,24. 10,139. 11,9. Jâṭ. 1,38. 2,116. 209. 300. MBn. 1,6852. Kap. 1,118 (Sâṅkhjak. 9.). Spr. (II) 1775. (I) 2928. Râja-Tar. 5, 457. लोकान्नावारयन् शक्ता अपि Bhâg. P. 4,14,40. शक्ततर Paṇḍat. 57, 16. अति° R. 2,29,6. अशक्त (अशक्त = अशक्ति P. 5,4,21, v. l.) M. 11, 221. Jâṭ. 2,209. R. 1,76,3. 2,63,40. Spr. (II) 709. fgg. Mit einer Ergänzung: α) mit einem instr.: धातॄणां यस्तु नेदृश्त धनं शक्तः स्वकर्मणा *wenn er solches durch seine Arbeit* (zu thun) *vermöchte* M. 9,207. कर्मणा R. 2,23,18. — β) mit einem gen. der Person: *gewachsen, Macht habend über:* शक्तो ऽहं रावणस्य MBn. 3,11304. R. 3,29,19. 4,16,45. Kathâs. 45,100. mit einem gen. der Sache: शक्तास्मि नास्य खेदस्य Varâh. Bṛh. S. 32,4. — γ) mit einem dat. der Person: शक्तो मल्लो मल्लाय P. 2,3,16, Vârtt. 2. Schol. mit einem nom. act. im dat.: शक्तश्चारक्षणायै प्रतिधावनाय (प्रतिबाधनाय ed. Bomb.) MBn. 8,3398. अशक्ता त्राणाय 1, 3432. उपकाराय Mârk. P. 19,5. — δ) mit प्रति und acc. der Person: न च शक्तस्त्वमिमं प्रति Kathâs. 45,100. — ε) mit einem Infin. M. 9,10. MBn. 1,5960. 6142. 6765. 6880. 2,736. 3,133. 1442. 2614. 12275. Spr. 3010. R. 1,33,9. 38,4. 2,27,14. 39,6. 74,28. 3,34,27. Çiç. 36. 74. Vṛṣa. 72. Sarvadarçanas. 55,16. Paṇḍat. 69,17. अशक्त M. 8,154. MBn. 1,1115. R. 2,45,30. Hit. 30,3. mit einem aus dem Vorhergehenden zu ergänzenden Infin.: नैतत्कर्तुं तमा वयम् । यो वा शक्तः स कुरुताम् Kathâs. 18, 142. Daçak. 80,15. — ζ) mit einem loc.: यत्र यच्छक्तम् Sarvadarçanas. 150,12. कर्माणि M. 8,388. Spr. (II) 2480. मन्त्रसंवरणे शक्ताः शक्ताः सूक्ष्मासु बुद्धिषु R. 1,7,9. रत्नोपायने MBn. 1,6150. 6234. 3,2262. 8772. R. 1,13, 50. 58, 3. 3, 4, 35. Spr. 3214. 3076. Râja-Tar. 8,2281. तस्य साहायके Kathâs. 73,270. अशक्ता अरुणे MBn. 1,5569. 8433. Spr. (II) 2702. — η) mit der Ergänzung componirt: पावहित्तोपार्जनशक्तः Spr. 4482. Kathâs. 91,9. — *b*) angeblich = शकित (s. u. 1. शक् am Ende) Kâç. zu P. 7,2,17. Vop. 26,110. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manasju MBn. 1,3697.

2. शक्त fehlerhaft für सक्त, z. B. Sâṅkhjak. 40 (असक्त bei Wilson). Daçak. 140,7.

शक्तरूप adj. *der so aussieht, als wenn er Etwas vermöchte:* न शक्तरूपोद्वर्तुम् Spr. 4908.

1. शक्ति (von 1. शक्) f. *das Können, Vermögen; Kraft, Fähigkeit, Geschick; Wirksamkeit* Naigh. 2,1. Nir. 7,28. AK. 2,8,2,71. 3,4,24,69. H. 796. an. 2,199. Med. t. 61. शक्तिः पुनर्भवित् । विरोधस्य प्रशमनम् Sin.

D. 383. शक्ती वा पत्ते चकृमा विदा वा RV. 1,31,18. 10,134,6. des Soma 25,5. घृतमंशुनाऽनुकृक्तिभिः 88,10. AV. 2,27,7. 3,13,3. VS. 11,2. शक्त्या, धिया 37. 63. 18,15. Çat. Br. 6,3,4,14. Çâṅkh. Br. 23,2. Kauç. 73. °विषये Âpast. 1,30,13. 22. 2,6,8. °विषयेण 12,1. यशक्ती Kâty. Çr. 2,5,12. 9,10,11. Âçv. Çr. 2,20,5. परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च Çvetâçv. Up. 6,8. कार्यं सो ऽवेक्ष्य शक्तिं च देशकालौ च तत्त्वतः M. 7,10. 16. 10,124. 11,209. स्व°, पर° 9,298. MBh. 3, 16674. तमा शक्ता Rasn. 1,22. Spr. (II) 343. 892. 3394. (I) 2927. रौद्र° Siç. D. 76,2. Bhâg. P. 1,4,17. निःशक्तिकृत Hit. 30,2. यत्य° adj. 15,9. शक्तिमरूपयित्वा *es an Kraft nicht fehlen lassend* so v. a. *Alles aufbietend* Spr. 4909. शक्त्या *nach Vermögen, — Kräften* M. 2,245. 9,202. 11,245. Jâṅ. 1,45. MBh. 14,2786. Spr. 1891. 4749. 5049. Pañcat. 130,18. यात्मशक्त्या dass. Spr. (II) 1235. स्वशक्त्या dass. Vaṇîn. Bḥn. S. 105,7. पूर्ं शक्त्या *mit ganzer Kraft* M. 7,89. 10,118. MBh. 5,5957. 7,7041. *Wirkung eines Heilmittels* Çâṅkh. Sâṅkh. 1,2,8. यु° *Schwäche, Unfähigkeit* Spr. (II) 2375. Siṅhâs. 46. 47. 49. न स्यातुं (स्थातु falsch Sîv. 5,4) शक्तिरस्ति मे MBh. 3,16751. Çâk. 153. गमने MBh. 5,5435. भोजन°, दान°, रति° Spr. 2077. रतेः, जीर्णा° 4862. दर्शन° Jogân. 2,6. दरून° Suçr. 1,31,13. दाह° Rasn. 11,42. पादपोन्मूलन° adj. 2,34. उत्साह° Spr. (II) 1222. fg. मद° Kap. 3,22. Sarvadarçanas. 2,7. 3,21. मत्ता° 12,17. तिलेषु तैलजननशक्तिः 130,13. 19,5. विधेः Râǵa-Tar. 2,92. भाग्य° 4,364. काल° Suçr. 1,160,10. तपः° MBh. 12,4297. मत्त° Kâm. Nîtis. 1,5. यग्नि° *Verdauungskraft* Vaṇîn. Bḥn. S. 76,6. सहस्र°, शत° adjj. *der tausend —, hundert (zu geben) vermag* MBh. 14,2780. ein Fürst hat *drei Kräfte:* शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः AK. 2,8,4,19. H. 735. H. an. Med. Ind. St. 10,194. fg. Kâm. Nîtis. 13,1. 32. शक्तिः त्रिसाधना Rasn. 3, 12. समग्र° adj. 6,38. 17,63. Çiç. 2,26. *die wirkende Kraft* (auch pl.) *eines Gottes, als der weibliche Theil seiner Doppelnatur:* ततो वामवदना च सा च पद्मावती तवा। रूपेण ननुस्तिस्रो मिलिता इव शक्तयः॥ Kathâs. 34,133. Indra's drei Çakti Rasn. 9,23. Çiva mit seinen Çakti Mâlatîm. 74,7. मूर्ता शक्ति मनोभुवः Kathâs. 3,62. 45,340. वैष्णवी Râǵa-Tar. 3,471. सुप्तशक्तिषु Bhâg. P. 1,10,21. गृहीतशक्तित्रितय adj. 2,4,12. 3,5,16. neun Çakti Verz. d. Oxf. H. 25,*b*, N. 5. त्रिनशक्तयः Vâjas. beim Schol. zu H. 233. insbes. Çiva's *Kraft*, personif. als Durgâ, Taitt. 1,1, 81. Med. Çiv. 194. Kathâs. 1,32. Râǵa-Tar. 3,444. Bhâg. P. 4,6,42. fg. Verz. d. Oxf. H. 92,*a*,1. °वादिन् 230,*a*,4. °मननिवर्कण 249,*b*,22. °मतेकदेशिनिराकरण 38. 39. 230,*a*,1. = कुण्डलिनी 235,*a*,37. *die wirkende Kraft eines Wortes* ist *seine Bedeutung* oder *Function* Bhâsâp. 79. Siç. D. 11. 13. 236. fg. 10,10. Kull. zu M. 11,90. Verz. d. Oxf. H. 246,*a*, No. 619. Comm. zu Taitt. Prât. 2,33. समास° Verz. d. Oxf. H. 177,*a*,29. fg. so v. a. कारक *Casusbegriff* P. 2,3,7, Schol. Sidd. K. zu P. 4,1,32. die शक्ति eines Spruches ist *der wirksamste Theil desselben* (der Schluss) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,97. fg. Pâṅkar. S. 245. Weber, Râmây. Up. S. 292. Verz. d. B. H. No. 1269. 1350. Verz. d. Oxf. H. 4,*a*, No. 28. 106,*b*, No. 161. — 2) Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten im 7ten, 8ten, 9ten und 10ten Hause stehen*, Vaṇîn. Bḥn. 12,7. 15. — Vgl. घनत्त°, घमर°, उग्र°, देव°, धी°, पर°, बल°, बुद्धि°, पद्मा°, वल्लभ°, वसु°, वस्तु°, विक्रम°, विद्रप°, विष्णु°, शिव°

VII. Theil.

und शाक्त.

2. शक्ति (von 2. शक्) f. *Hilfe; Mittheilung:* दस्तेव शक्तिमभि संदृनः RV. 2,39,7. भद्रा शक्तिर्यजमानाय 1,83,3. पितृणाम् 109,3. वस्वी षु ते इन्द्रि त्रे यंस्तु शक्तिः 7,20,10. 68,8. 3,31,14. 37,3. 4,22,5. 43,3.

3. शक्ति f. *Speer* AK. 3,4,44,69. Taṅ. 3,3,186. H. 774. 787. an. 2, 199. Med. t. 61. Hall. 2,321. P. 4,4,59. M. 8,315. MBh. 1,1170. 3, 1717. 12216. °पिनाकधृक् 5,5259. R. 1,29,12. 50,11. R. Gorr. 1,41,21. Suçr. 1,104,6. Rasn. 12,77. Mâlatîm. 82,16. Vaṇîn. Bḥn. S. 68,47. 69, 39. Weber, Râmây. Up. 306. Kathâs. 26,179. Bhâg. P. 4,10,11. 8,10, 35. auch शक्तौ gaṇa बलादि zu P. 4,1,45. Vop. 4,27. रथशक्ति ist wohl *der Fahnenstock auf einem Kriegswagen* MBh. 9,837. Harîv. 9363. R. 6,19,49. शक्ती in dieser Bed. MBh. 13,2784. — Vgl. शाक्तीक.

4. शक्ति m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha und Vaters des Paràçara, Liedverfassers von RV. 7,32,26. 9,97,19-21. 108,3. 14-16. Ind. St. 1,119. 3,460. Praṇavanidh. in Verz. d. B. H. 58,7 (wo शक्ति st. शक्ती zu lesen ist). MBh. 1,2209. 6701. 6737. 6792. 6867. 12,13642. Harîv. 9367. Mârk. P. 133,7. VP. 273. Wilson, Sel. Works 1,12. Bhâg. P. 4,1,41. Pâṅkar. 1,1,29. Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,6. 53,*b*,12. 227,*b*,7. 233,*a*, No. 563. 276,*b*,16. ज्ञातुकर्ण 80,*a*,15. Häufig fehlerhaft शक्ति geschrieben. — Vgl. शक्तिन्, शाक्त, शाक्तेय, शाक्त्य.

शक्तिक 1) am Ende eines adj. comp. = 1. शक्ति 1): यचित्त्य° Sarvadarçanas. 79,17. 92,16. यात्मादयः सशक्तिकाः Weber, Râmây. Up. 327. — 2) f. या = 1. शक्ति 1): श्रेयो गणपतेर्देवः सिद्धिबुद्धी च शक्तिके Verz. d. Oxf. H. 149,*b*,28. fg.

शक्तिकर adj. *Kraft verleihend* Spr. 5144.

शक्तिकुमार m. N. pr. eines Mannes (श्रेष्ठिपुत्र) Daçak. 153,4. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,3. 4. eines Fürsten LIA. (II) 34.

शक्तिकृत् adj. *einen Speer haltend* P. 3,2,9, Vârtt. 1.

शक्तिजागर Titel einer Schrift Hall 17.

शक्तिज्ञ adj. *seine Kräfte kennend* Spr. (II) 490.

शक्तितन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 108,*b*.

शक्तितस् (von 1. शक्ति) adv. 1) *in Folge des Vermögens, — der Kraft* Kap. 1,133. Siṅhâs. 15. — 2) *nach Vermögen, — Kräften* M. 2,167. 3,31. 71. 242. 4,29. 32. 227. 5,86. 6,7. 19. 36. 8,51. 9,274. 11,113. 125. Jâṅ. 1,42. Spr. 3056, v. l. Mârk. P. 29,28. Sarvadarçanas. 59,17. Pañcat. 161,24. स्व° dass. Spr. 3056.

शक्तिता f. am Ende eines comp. nom. abstr. von einem auf 1. शक्ति auslautenden adj. comp.: बुद्धेर्विज्ञानशक्तिता Bhâg. P. 3,26,31. Spr. (II) 4640, v. l.

शाक्तत्व n. desgl.: मकाप्रसव° Suçr. 1,335,8. selbstständiges nom. abstr. von 1. शक्ति Çiṅp. 42.

शक्तिदेव m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 24,57. fgg. eines Verfassers von Mantra bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,12.

शक्तिधर 1) adj. *einen Speer tragend:* Skanda Vaṇîn. Bḥn. S. 58,41. — 2) m. *a*) ein Name Skanda's AK. 1,1,8,36. Harîv. 3862. Kâm. Nîtis. 1,8. Bhâg. P. 3,16,32. — *b*) N. pr. eines Verfassers von Mantra bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,19. — *c*) N. pr. eines Kriegers (v. l. शक्तिधर) Hit. 99,7. fgg., v. l.

शक्तिधर m. ein Name Skanda's Daçan. 130,17. — Vgl. शक्तिधर, 2. शक्तिभृत्.

शक्तिन् m. eine Nebenform von 4. शक्ति MBh. 1,6726 (wo mit der ed. Bomb. शक्तिनं तु zu lesen ist). 6792 (शक्तिन् ed. Calc.).

शक्तिनाथ m. *der Gebieter über die* Çakti (1. शक्ति), Bein. Çiva's Mâlatîm. 74,7.

शक्तिपर्णी m. = सप्तपर्णी Gaṇiku. im ÇKDa.

शक्तिपाणि m. ein Name Skanda's (*einen Speer in der Hand haltend*) H. 209, Schol. Hall. 1,19. Kâlaçâkaṭa 1,157.

शक्तिपूजक m. *ein Verehrer der* Çakti (1. शक्ति) Çiva's Verz. d. Oxf. H. 16,*a*, N. 1.

शक्तिपूजा f. *Verehrung der* Çakti Çiva's ebend. 91,*b*, 27. Wilson, Sel. Works I, 46.

शक्तिपूर्व m. ein Bein. Parâçara's, der sonst als Sohn Çakti's (4. शक्ति) शक्तिपुत्र heisst, Vaṃç. Bar. 7,1.

शक्तिबोध m. Titel einer Schrift Hall 17.

1. शक्तिभृत् (1. शक्ति + भृत्) adj. *Macht habend, mächtig* (= बलिन्): ein Planet Vaṃç. Bar. 6,7.

2. शक्तिभृत् (3. शक्ति + भृत्) m. ein Name Skanda's (*einen Speer tragend*) H. 209.

शक्तिभैरव n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 108,*b*. °तन्त्र 109,*a*, 22.

शक्तिमत्त्व (von 1. शक्तिमत्) n. *Machtbesitz* Ragu. 4, 31.

1. शक्तिमत् (von 1. शक्ति) 1) adj. *Kraft besitzend, vermögend, mächtig, im Stande seiend, Etwas könnend* M. 10,98. MBh. 6,2918. Hariv. 3280. शक्रः शक्तिमतां वरः R. Gorr. 1, 48,7. Suça. 1,375,13. Ragu. 17, 36. Spr. 3173. यथा दुर्गा शक्तिमतीर्घापि Paṇḍar. 1,1,74. mit einem infin. R. 7,35,10. Spr. (II) 1384. mit einem nom. act. im loc.: रक्षणे R. 2,30, 28. 112,13 (122,13 Gorr.). *mit einer best. Kraft ausgestattet:* द्रव्य° Bhâg. P. 3,10,15. von einem Gotte: *mit seiner* oder *seinen* Çakti *vereinigt, mit denselben versehen* Kathâs. 1,32. Verz. d. Oxf. H. 239,*a*, 11. Wilson, Sel. Works I, 253. — 2) f. शक्तिमती N. pr. gaṇa मयादि zu P. 4, 2,86. vielleicht °fehlerhaft für शुक्तिमती. N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 6,89. 13,163. fgg.

2. शक्तिमत् (von 3. शक्ति) adj. *mit einem Speer versehen* Hariv. 12143. शतघ्नीपाश° (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) MBh. 13,1267.

3. शक्तिमत् m. N. pr. eines Gebirges MBh. 6,318. fehlerhaft für शुक्तिमत्.

शक्तिमय (von 1. शक्ति) adj. *aus einer* Çakti *hervorgegangen u. s. w.* Verz. d. Oxf. H. 104,*b*, 9.

शक्तियशस् f. N. pr. einer Vidjâdharî Kathâs. 59,11. fgg. nach ihr führt der 10te Lambaka denselben Namen 1,7.

शक्तियामल n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 88,*a*, 5 (hier °त्रामल). 102,*a*, 1. 104,*a*, 35.

शक्तिरक्षित m. N. pr. eines Fürsten der Kirâta Kathâs. 70,19. 102, 29. °क 70,43. 103,159.

शक्तिरत्नाकर m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 101,*a*, No. 157. Notices of Skt Mss. 127.

शक्तिवर m. N. pr. eines Kriegers Hit. 99,7. fgg. शक्तिधर v. l.

शक्तिवाद m. Titel einer Schrift Hall 56. °टीका, °विवरण, शक्तिवादार्थदीपिका ebend.

शक्तिविचार m. = शक्तिवाद ebend.

शक्तिवीर m. bei den Çâkta *der Mann, der sich mit dem die* Çakti *vorstellenden Weibe vermischt*, Wilson, Sel. Works I, 260.

शक्तिवेग m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 24,11. fgg.

शक्तिशोधन n. *die Reinigung der* Çakti. Bez. einer best. an dem die Çakti vorstellenden Weibe vorgenommenen Cerimonie bei den Çâkta, Verz. d. Oxf. H. 93,*a*, 10. Wilson, Sel. Works I, 238. fg.

शक्तिस्थ (1. शक्ति + स्थ) adj. *mächtig, vermögend* AK. 3,4,15,39.

शक्तिसंगमतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 158. ein Citat daraus unter गोड 1) *d*).

शक्तिसिंह m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 1223 (विरुदावली der Hdschr. ist richtig).

शक्तिसेन m. desgl. Râga-Tar. 6,216. fg.

शक्तिहर् adj. (f. घा) *Kraft raubend* Spr. 3144.

शक्तिहस्त m. ein Name Skanda's (*einen Speer in der Hand haltend*) Verz. d. B. H. No. 1269. 1271. Kâlaçâkaṭa 1,158. — Vgl. शक्तिपाणि.

शक्तिहेतिक (3. शक्ति + हेति) adj. *mit einem Speer bewaffnet* AK. 2, 8, 2, 37.

शक्तीवत् (von 1. शक्ति) adj. VS. Pair. 3,96. *kräftig, vermögend* ṚV. 6,75,9. Indra 5,31,6. वीरैः शक्तीवान् TBr. 3,6,2,1.

शक्त्यर्ध m. *halbe Kraft*, Bez. *eines best. Zustandes der Ermüdung:* कुतो ललाटे मीवायां पदा घर्मः प्रवर्तते । शक्त्यर्धं तं विजानीयादायतोच्छ्वासमेव च ॥ Râgavallabha im ÇKDa.

शक्नि und शक्निन् s. u. 4. शक्ति und शक्तिन्.

शक्र adj. = शक्तु Bharata zu AK. 3,1,36 nach ÇKDa.

शक्तु adj. = प्रियंवद AK. 3,1,36. — Vgl. शक्ना.

शक्वन् (von 1. शक्) Uṇâd. 4,146. n. 1) *Vermögen, Geschick* Naigh. 2,1. इन्द्रस्येव शक्वनाः पर्यः ṚV. 3,36,2. चमूषु शक्वनामदम् 62,16. 110,3. instr. pl. 7,8. — 2) *Unternehmen, Werk:* मघा कर्तान्यधाक्कृण धीरः ṚV. 2,38,4. — m. = इन्द्र Uṇâdis.

शक्य (von 1. शक्) adj. P. 3,1,99. Vop. 26,12. *möglich, thunlich, ausführbar* Kapila 118 (Sâṃkhjak. 9). शक्ये सति *wenn es sich thun lässt* MBh. 6,122. यच्छक्यं तत्कारिष्ये 5,7082. उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः Spr. (II) 1306. (I) 2343. Hit. 40,12. तपसा हि सुसाध्येन शक्यो मोक्षः MBh. 13,2852. वस्तु Kâm. Nîtis. 15,25. धनुनयो मर्त्यैः Ragu. 2, 54. °शङ्क adj. Sarvadarçanas. 65,22. 120,15. *bezwingbar*, von Personen MBh. 3,8773. 12231. न वाक्यमात्रेण वयं हि शक्याः 15650. Spr. 2151. Ragu. 17, 36. so v. a. *ausdrücklich gemeint, im Worte selbst liegend:* शक्यो ऽर्थो ऽभिधया ज्ञेयो लक्ष्यो लक्षणया मतः । व्यङ्ग्यो व्यञ्जनया ज्ञेयस्तिस्रः शब्दस्य वृत्तयः ॥ Alaṃkâraçâstra im ÇKDa. Bhâsâp. 81. 132. अ° *unmöglich, unthunlich:* अशक्यो Kîrân. Ça. 5,10,20. 7,5,4. MBh. 5, 7480. R. 1,57,12. अशक्यो ऽध्यवसायः Vop. 25,22. Comm. zu TS. Prât. 21,5. कार्याणि Spr. (II) 479. वस्तु Kâm. Nîtis. 15,23. °रत्न Ragu. 2,46. °प्रतिकार Kathâs. 18,251. Prab. 25,13. Râga-Tar. 8,1870. Sarvadarçanas. 116,22. Paṇḍar. 161,12. Hit. 18,15, v. l. वचस् so v. a. *unausführbar* Kathâs. 49,61. वेदशास्त्र so v. a. *unverfasslich* M. 12,94. अने-

zuzugeben: अन्योपाये: Spr. (II) 3698. प्राकाराद्यानि R. 6,17,8. Ueberaus häufig steht bei शक्य ein infin. (vgl. das pass. von शक्), wobei folgende Constructionen zu bemerken sind: 1) शक्यम् wird unpersönlich gebraucht: गन्तव्ये न चिरं स्थातुमिह शक्यम् MBh. 1,6027. न च शक्यं पुनर्गन्तुं मया वारणमाह्वयम् 5, 6002. 6033. 13,1806. R. 2,26,28. 34,48. 3, 53,28. स्थातुं निशेत्यूर्यदशक्यमग्रे Raghu. 2,56. न शक्यं रन्तिं प्राणान् R. 3,41,21. बन्धेष्टुं पत्नीं चास्य न शक्यं गरुडादते 4,10,7. — 2) शक्य richtet sich in Geschlecht und Zahl nach dem Subject und der infin. wird passivisch übersetzt: नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा Kaṭhop. 6,12. Çikṣh. Ça. 1,17,8. (दण्डः) न शक्यो न्यायतो नेतुं सक्तेन विषयेषु च M. 7,30. 9,10. 263. Pat. zu P. 1,1,62. Bhag. 6,26. MBh. 1,5909. 5921. 3,1730. 1739. 2846. 2857. 3050. 8773. 5,7207. 7252. R. 1,8,17. 38,3. 67,8. 2,27,15. शक्या निद्रा मया लब्धुम् 51,9. 86,10. 3,53,47. Raghu. 2, 49. 12,17 (सशक्य). Çiç. 153. Spr. (II) 1870. 3413. (I) 2129. 2409. Kathâs. 18,75. 267. Râga-Tar. 1,441. 7,617. Daçak. 66,16. Sarvadarçanas. 28,10. 36,2 (स°). 49,5. शक्यतम eben so construirt Spr. (II) 3485, v. l. — 3) nom. sg. neutr. शक्यम् ohne Rücksicht auf das Geschlecht und die Zahl des Subjects: स च दोषः प्रयत्नेन न शक्यमतिवर्तितुम् (so ed. Bomb.) MBh. 3,16679. शक्यमङ्गैरालिङ्गितुं पवनः Çiç. 55. नहि शक्यमुपेक्षितुं कुपिता Mâlav. 58. न सारमेकान्तरमानुवर्तिना विभूतयः शक्यनवासुम् Spr. (II) 3485. शक्यं (v. l. शक्यो) वारयितुं जलेन कृतभुक् (I) 2929. fg. Die folgenden Beispiele gehören hierher oder zu 1), je nachdem man das subst. als nom. oder als acc. fasst: नहि देवभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः Bhag. 18,11. तानि सर्वाणि संयतुं शक्यं राम त्रिभिरिन्द्रियैः R. 3, 13,5. — 4) in der Bed. *gezwungen werden könnend Etwas zu thun*: न संशयं गन्तुमहे हि शक्या (शक्ये MBh. 3,1566 in beiden Ausgg.) त्वया Draup. 3,22. — Vgl. पावच्छक्यम्.

शक्यता f. nom. abstr. von शक्य. विरुद्धयोर्विपर्ययोः स्वरूपेक्षस्य प्रतिपक्षमशक्यतया Sarvadarçanas. 49,18.

शक्यत्व n. desgl.: निरूक्तेर्वक्तुं शक्यत्वात् Sarvadarçanas. 119,18. सं° 81,7. Comm. zu TS. Prât. 21,7.

शक्यसामन्तता (von शक्य + सामन्त) f. *die Lage, da man die angrenzenden Fürsten zu bezwingen vermag*, Kâm. Nîtis. 4,7.

शक्र (von 1. शक्) Uṇâdis. 2,13. 1) adj. *vermögend*, stehendes Beiwort des Indra: विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वान् RV. 4,16,6. 5,34,3. 4. वृणीमि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रम् 6,47,11. 7,20,9. 104,20. fg. 8,2,33. स नः शक्रिष्टा शकत् 32,12. AV. 8,1,8. 12,1,37. Liṅg. 1,4,8. Götter überh. AV. 3,21,4. 11,6,12. 18. TBr. 2,4,8,4. die Maruts RV. 1,166,1. die Açvin 2, 39,3. 10,24,4. Pûshan 8,4,15. — AV. 5,1,7. 28,3. Auch die Anknüpfung an 2. शक् *mittheilsam, hilfreich* ist für die alte Sprache zulässig. — 2) m. a) ein Name Indra's AK. 1,1,2,37. Trik. 3,3,276. H. 172. an. 2,460. Med. r. 88. Halâj. 1,54. 5,40. Nârâjaṇop. in Ind. St. 1,381. MBh. 3,1724. 2123. 3042. 13,330. Hariv. 3789. fgg. R. 1,1,6. 6,3. 26. 2,91,18. 3,49, 41 (v. l. शुक्र und so auch ed. Bomb.). 54,5. Raghu. 1,75. 3, 39. Varâh. Bṛh. S. 32,6. 33,20. 43,6. Râga-Tar. 4,224. VP. 78. Brahma-P. in LA. (III) 50,3. 53,20. Verz. d. Oxf. H. 27,a,17. 44,b,25. fg. 103,a,29. Herr des Nakshatra Gjeshṭhâ Weber, Nax. 2,374. 379. Varâh. Bṛh. S. 98,5. 12. der 7ten Tithi 99,1. ein Âditja MBh. 1,2522. Hariv. 175. VP. 122. Bhâg. P. 6,6,37. — Lalit. ed. Calc. 8,20. 9,43 u. s. w. Burnouf, Intr. 131. ein Gâtaka Buddha's Vaṃ beim Schol. zu H. 233. — *b) Wrightia antidysenterica R. Br.* AK. 2,4,2,47. Trik. H. an. Med. — *c) Terminalia Arguna W. und A.* H. an. Med. — Vgl. धृति°, पृथिवी°, भू°.

शक्रकार्मुक n. Indra's *Bogen d. i. der Regenbogen* Varâh. Bṛh. S. 44,28.

शक्रकुमारिका f. = शक्रकुमारी Kâlikâ-P. im ÇKDa. unter शक्रमातृका.

शक्रकुमारी f. *ein kleiner Flaggenstock neben Indra's Banner* Varâh. Bṛh. S. 43,39.

शक्रकेतु m. Indra's *Banner* Varâh. Bṛh. S. 43,14. 37. स तूर्णं पातितस्तेन रावणः शक्रकेतुवत् R. 7,23,2,39.

शक्रक्रीडाचल m. Indra's *Vergnügungsberg*, Bez. des Meru Halâj. 1,136.

शक्रगोप m. = इन्द्रगोप Gaṇîbh. im ÇKDa. *ein rother Käfer, Coccinelle* MBh. 8,2918. Hariv. 3332. 4332. Suçr. 1,22,18.

शक्रचाप n. Indra's *Bogen* d. i. *der Regenbogen* MBh. 6,3029. 7,5732. 8,960. Hariv. 3330. R. 4,2,7. Varâh. Bṛh. S. 28,16. 36,3. 80,14.

शक्रचापाय् (von शक्रचाप) °पते *einen Regenbogen darstellen, ihm gleichen* Hariv. 3328.

शक्रजित् m. *Arâbe* Trik. 2,5,20. — Vgl. ऐन्द्रि.

शक्रजननित्री f. Indra's *Mutter*, Bez. *des grössten Flaggenstocks neben Indra's Banner* Varâh. Bṛh. S. 43,40. — Vgl. शक्रमातृका.

शक्रजात m. = शक्रज Caṇḍân. im ÇKDa.

शक्रजानु m. N. pr. eines Affen R. 6,73,61.

शक्रजाल n. = इन्द्रजाल Kâlâkâça 4,47. 5,93.

शक्रजित् m. Indra's *Besieger*, Bez. Meghanâda's, eines Sohnes des Râvaṇa Trik. 2,8,6. H. 706. R. 6,71,18. Raghu. 14,33. — Vgl. इन्द्रजित्.

शक्रतरु m. *eine best. Pflanze*, = विजया Aṣṭâṅg. 82.

शक्रत्व (von शक्र) n. Indra's *Würde* MBh. 13,1261. R. 3,98,7.

शक्रदिश् f. Indra's *Weltgegend d. i. Osten* Çiç. 9,26. Varâh. Bṛh. S. 21,14.

शक्रदेव m. N. pr. eines Fürsten der Kaliṅga MBh. 6,2283. fgg. eines Sohnes des Çṛgâla Hariv. 5698.

शक्रदेवता f. Bez. *einer best. Neumondsnacht* MBh. 5,4330.

शक्रदैवत n. *das unter* Indra *stehende* Nakshatra Gjeshṭhâ Varâh. Bṛh. S. 7,12.

शक्रद्रुम m. *Pinus Deodora* देवदारु Roxb. Bhâvapr. im ÇKDa.

शक्रधनुस् n. Indra's *Bogen* d. i. *der Regenbogen* AK. 1,1,2,12. MBh. 5,3224. R. 3,34,29. 5,39,16. Verz. d. Oxf. H. 282,b,37.

शक्रध्वज m. Indra's *Banner* MBh. 5,3420, v. l. (s. u. वैडाल). R. 4, 41,60. 5,5,25. Varâh. Bṛh. S. 46,74. 53,114. °तरु Hariv. 9881.

शक्रनन्दन m. Indra's *Sohn* d. i. Arguna Gaṇîbh. im ÇKDa.

शक्रपर्याय m. *Wrightia antidysenterica R. Br.* Ratnam. 30.

शक्रपादप m. *Pinus Deodora* देवदारु Roxb. AK. 2,4,2,33. *Wrightia antidysenterica R. Br.* Râgân. im ÇKDa.

शक्रपुर n. Indra's *Stadt* Kull. zu M. 8,356 als Erkl. von शक्रलोक. f. ई dass. Kathâs. 24,72.

शक्रपुष्पिका (von शक्र + पुष्प) f. *Mentispermum cordifolium* Ratnam. im ÇKDa.

शक्रपुष्पी (wie oben) f. dass. AK. 2,4,5,2.

शक्रप्रस्थ n. N. pr. einer Stadt, = इन्द्रप्रस्थ MBh. 1, 8023. 2,1057. 16,186. Bhâg. P. 10,71,22.

शक्रबाणासन n. Indra's *Bogen* d. i. *der Regenbogen* R. 4,31,11.

शक्रबीज n. = इन्द्रयव *der käferähnliche Same der Wrightia antidysenterica R. Br.* Râǵân. im ÇKDa.

शक्रभवन n. Indra's *Himmel* Taik. 1,1,4.

शक्रभिद् m. = शक्रजित् Çabdar. im ÇKDa.

शक्रभूधा f. *die Koloquinthengurke* Çabdar. im ÇKDa.

शक्रभूरुह् m. *Wrightia antidysenterica R. Br.* Mad. in Nigh. Pa.

शक्रमातृ f. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Râǵân. im ÇKDa.

शक्रमातृका f. = शक्रवनिता Kâśikâ-P. im ÇKDa.

शक्रमूर्धन् m. *Ameisenhaufen* Taik. 2,1,18. — Vgl. शक्रशिरस्.

शक्रयव n. = शक्रबीज Suçr. 2,437,12.

शक्रलोक m. Indra's *Welt* M. 8,386. R. 4,44,81.

शक्रवल्ली f. *die Koloquinthengurke* Râǵân. im ÇKDa.

शक्रवापिन् m. N. pr. eines Schlangendamons MBh. 2,806.

शक्रवाहन m. *Wolke* (Indra's *Vehikel*) Çabdar. im ÇKDa.

शक्रवृत m. *Wrightia antidysenterica R. Br.* Nigh. Pa.

शक्रशरासन n. Indra's *Bogen* d. i. *der Regenbogen* Hariv. 1,57.

शक्रशाखिन् m. = शक्रवृत Bhâvapr. im ÇKDa.

शक्रशाला f. *Obdach, Wohnung* (प्रतिश्रय) Bhâvapr. im ÇKDa. *a place prepared for sacrifices to be offered in* Wilson nach ders. Aut.

शक्रशिरस् n. *Ameisenhaufen* H. 971. — Vgl. शक्रमूर्धन्.

शक्रसदस् n. Indra's *Audienzsaal* MBh. 5,1800.

शक्रसारथि m. Indra's *Wagenlenker*, Mâtali Hariv. 1,61.

शक्रसुत m. Indra's *Sohn*, Bez. des Affen Vâlin ÇKDa. nach Hariv.

शक्रसुधा f. *Weihrauch* Çabdar. im ÇKDa.

शक्रसृष्टा f. *Terminalia Chebula Willd.* Taik. 2,4,15.

शक्राभ्य (शक्र + साभ्या) m. *Eule* Taik. 2,5,14.

शक्राग्नी m. du. Indra und Agni, die Herren des Nakshatra Viçâkhâ Vaitân. Bṛh. S. 98,4 (°ग्नि im comp.).

शक्राणी (von शक्र) f. Indra's *Gattin* H. ç. 32. Çabdam. im ÇKDa. MBh. 5,364. 367. — Vgl. इन्द्राणी.

शक्रात्मज (शक्र + स्वा°) m. Indra's *Sohn* d. i. Arǵuna MBh. 3,1724.

शक्रादन (शक्र + स्व°) n. = शक्रतरु, चित्रया Ausw. 38.

शक्रादित्य (शक्र + स्वा°) m. N. pr. eines Fürsten Hiouen-thsang II, 42. Vie de Hiouen-thsang 150.

शक्रानलाभ्य adj. du. Indra und Agni *betreffend* d. i. Indra und Agni, Herren des 10ten Lustrum im 60jährigen Jupitercyclus Vaitân. Bṛh. S. 8,28 (im comp. ohne Flexionszeichen).

शक्राभिलषितव्रत n. *ein best. Edelstein* Vaitp. 138.

शक्रायुध (शक्र + स्वा°) n. Indra's *Waffe* d. i. *der Regenbogen* R. 2, 100,19 (108,18 Gorr.). Vaitân. Bṛh. S. 46,28. Spr. 2543. Mitâx. P. 43,24.

शक्रारि (शक्र + अरि) m. Indra's *Feind*, unter den Namen Kṛshṇa's Pâṇḍar. 4,3,74.

शक्रावर्त (शक्र + स्वा°) N. pr. eines geheiligten Badeplatzes MBh. 3,8007.

शक्राशन (शक्र + 2. अशन) 1) m. *Wrightia antidysenterica R. Br.* Çabdam. im ÇKDa. — 2) n. a) *der Same der Wrightia ant.* Nigh. Pa. — b) *Hanf* Râǵân. im ÇKDa.

शक्रासन (शक्र + 1. आसन) n. Indra's *Thron* MBh. 3,1778. Spr. 2186.

शक्राह्व (शक्र + आह्वा) m. (!) *der Same der Wrightia antidysenterica R. Br.* Râǵân. im ÇKDa.

शक्रि m. = मेघ, वज्र, कुम्भिन् und पर्वत Unâdis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa.

शक्रेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,25.b,29. fg. 29.

शक्रोत्थान (शक्र + उ°) n. Indra's *Aufstehen* d. i. *die Aufrichtung von Indra's Banner*, ein best. Festtag Verz. d. Cambr. H. 64,8 v. u.

शक्रोत्सव (शक्र + उ°) m. *ein Fest zu Ehren* Indra's Taik. 1,1,107. MBh. 1,2360.

शक्वँ Unâdis. 4,103. adj. = प्रियंवद् H. 351. Uṇâdis. nach AK. (3,1,26); unsere Ausgg. lesen aber शकु und als Varianten werden शक्वा, शक्र und शाक्व aufgeführt.

शक्वन् (von 1. शक्) Unâdis. 4,112. 1) adj. (f. शक्वरी) *vermögend, wirksam; geschickt* VS. 5,5. पवेर्नु शक्वेव (lies शक्वेव) कृनूनि कर्त्वयन् *artifex* Çat. Br. 11,5,8,13. षड्भिर्ण्यः शक्वरीः VS. 18,22. TBr. 1,2,8,14. AV. 11,2,23 (vgl. 5,28,11 und ṚV. 10,34,12). शक्वरी du. *die Arme* Naigh. 2,4. शक्वरी = षड्भिल Un. 4,114, Schol. — 2) m. *Elephant* Uṇâdis. — 3) f. शक्वरी a) Bez. *gewisser Verse und Lieder*. In der Metrik *ein zu den* Atikkhandas *gerechnetes Maass von 56* (7 × 8) *Silben*, später *jedes Metrum von 4* × *14 Silben*. Insbesondere *die dem* Çâkvara-Sâman *zu Grunde liegenden* Mahânâmnî-*Verse* (s. Daçati des SV. Naigeja). Taik. 3,3,376. H. an. 3,603. Med. r. 223. Ind. St. 3,66. 107. 132. 281. 386. fgg. 420. 467. Colebr. Misc. Ess. II, 161. ṚV. Prât. 16, 53. धृतिपदा Pât. zu P. 5,2,191. शक्वर्य ऋचः शक्नोतेस्तस्यदाभिर्वज्रमशकद्वहुं तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वम् Nir. 1,8. पञ्चदशेषु वदन्ता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधात ṚV. 7,33,4. गायत्रे वो गायति शक्वरीषु 10,71,11. AV. 13,1, 5. VS. 21,27. Ait. Br. 5,7. TS. 2,2,9,5. 6,2,3. 3,4,4,1. 5,4,12,2. TBr. 2,1,2,11. Çat. Br. 3,3,4,1. 9,2,17. Kâṭy. 26,4. Pâraṇ. Br. 10,6,5. 12, 13,12. Kâṭhân. Up. 2,17,1. 2. °पृष्ठ Lâṭy. 10,13,11. — b) Bez. *des Wassers* AV. 3,13,7. 16,4,7. VS. 10,4. TS. 3,3,2,1. TBr. 3,7,6,4. Gobh. 3, 2,13. *Fluss* Mah. N. pr. eines Flusses H. an. — c) Bez. der 14ä; = गो Naigh. 2,11. — AV. 7,27,1 (vgl. 16,4,7). पशवः शक्वर्यः Pâraṇ. Br. 13,1,2. 3. 4,12. — d) *Gürtel* Taik. H. an. Med. मरीमर्णवशक्वरीम् Kirât. 3,149 (der Gebrauch des Wortes wird getadelt). — Häufig fälschlich शकरी geschrieben. Vgl. धृतिशक्वरी und शाक्वर.

शक्वर m. *Bull* H. 1237. शक्वरि Taik. 2,9,19. शक्वराः (vgl. शर्कराः) = प्रस्तरशकलानि Comm. zu Kâm. Nîtis. 4,53. — Vgl. शाक्वर und शांकर.

शक्वरी s. u. शक्वन्.

शग्म (von 2. शक्) adj. (f. घा) *hilfreich; mittheilsam; entgegenkommend, gütig;* = सुख Naigh. 3,6. पायु ṚV. 1,130,10. Soma 6,44,2. रुद्र 75,2. संमद् 7,54,2. वार्ता: 10,31,5. Rosse (so v. a. *fromm*) 7,97,6. 8,2, 27. शग्मो नो वार्यमुशती शृणोतु 5,43,11. Âditja 7,60,6. शग्मा भवतु मरुतो न: स्योना: AV. 4,27,3. 14,2,17. 18,2,21. 4,8. 19,8,2. VS. 3,48. 4,2. TBr. 1,5,8,2. 3,7,6,6. Çat. Br. 5,4,4,2. Kauç. 39. 124. — Vgl. तुवि°.

शग्मन् n. v. l. zu शवस्न् Naigh. 2,1.

शर्म्मेय und शर्म्य adj. so v. a. शर्म Naigh. 3, 6. Nir. 3, 8. RV. 3, 31, 1. AV. 5, 1, 9. शिवा शर्म्या पत्नियो तनू: Çâṅkh. Br. 1, 1.

शङ्क, शङ्कते Dhâtup. 4, 12 (शङ्कायाम्, auch त्रासे). शशङ्के, अशङ्किष्ट, अशङ्किष्यत, शङ्कितुम्; im Epos hier und da, aber höchst selten, auch act.: आशङ्कत्, पर्यशङ्कतम्, °शङ्कीस्. 1) *in Sorge sein, Scheu empfinden, Misstrauen hegen* MBh. 2, 1468. न चार्हं त्यक्तुकामस्त्वां किमलं भीरु शङ्कसे 3, 2327. 4, 447. शङ्किष्ठा मा च पार्थिव R. Gorr. 1, 22, 19. 3, 49, 16. 5, 1, 79. Kâm. Nîtis. 5, 36. 11, 59. 18, 68. Spr. (II) 1894. Kathâs. 27, 202. Daçak. 86, 14. Râga-Tar. 8, 586. Bhâg. P. 3, 12, 16. mit einem abl. *in Sorge sein vor:* विनाशात् Çat. Br. 3, 8, 3, 26. देवात् 3, 1, 4, 22. Kauç. 49. 75. अशङ्कितेभ्य: शङ्कत शङ्कितेभ्यश्च सर्वत: Spr. (II) 714. Bhatt. 13, 29. मुहूर्तात् Bhâg. P. 3, 13, 1. 5, 10, 18. 19, 14. mit einem acc. *befürchten, besorgen:* भयम् Çâṅkh. Grihj. 4, 14. उपतापका: Kauç. 103. सा शङ्कमाना तत्पापम् MBh. 3, 2274. रामनिश्चयम् R. Gorr. 2, 16, 20. आपदम् 3, 30, 11. 66, 4. ad Çik. 62. Kathâs. 61, 143. Râga-Tar. 4, 684. 5, 147. *Jmd in Verdacht haben, mit Misstrauen ansehen, Misstrauen setzen in:* अशङ्कमपि शङ्कत नित्यं शङ्कत शङ्कितान् Spr. (II) 715. MBh. 13, 4356. R. 2, 85, 9. R. Gorr. 2, 20, 10. 92, 18. 5, 89, 64. 6, 102, 8. बलुश: संपत्तौ वो जन: शङ्कत दोषत: MBh. 3, 2949. — 2) *Anstand nehmen, ein Bedenken haben, in Zweifel sein:* शङ्के रत्नापि पण्डिता: MBh. 13, 3124. शङ्के जीवति वा न वा R. 5, 22, 26. Wilson, Sâṅkhjas. S. 10. mit acc. *Etwas beanstanden, bezweifeln:* धर्मम् MBh. 3, 1165. धातारं धर्ममेव च 1174. तथ्यं वच: 16512. Kâsik. 28, 22. — 3) *vermuthen, annehmen;* शङ्के (ohne Einfluss auf die Construction) so v. a. *wie ich vermuthe, wie mir scheint, wahrscheinlich* dahor शङ्के als indecl. im gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57.: सानुक्रोशो भवान्मदा । मैवृत्तो निरनुक्रोश: शङ्के मद्भाग्यसंक्षयात् MBh. 3, 2735. 4, 1644. R. 2, 96, 14. R. Gorr. 1, 39, 5. 3, 65, 13. Megh. 93. Çâk. 131. 98, 22, v. l. Vikr. 66, 10. Milav. 50, 18. Spr. (II) 4162. मैवं शङ्किष्ठा: Sarvadarçanas. 48, 13. auf die Frage ता को एसो भविस्सदि wird geantwortet सखि पिशाच इति शङ्के Prab. 45, 15. mit einem acc. *annehmen, voraussetzen, glauben an:* शङ्के न पापमेतस्याम् Kathâs. 39, 48. न च ब्रह्मण: प्रमाणान्तरगम्यत्वं शङ्कितुं शक्यम् Sarvadarçanas. 60, 16. यद्यपि स्वामिना चिरेणावधीरितस्य मे बुद्धिविनाश: शङ्क्यते Hit. 55, 8. Sarvadarçanas. 121, 13. नाहं पुनस्तथा त्वयि यथा किं मां शङ्कसे *wie du von mir glaubst* Vikr. 55. तौ पुंस्कामौ शङ्कमान: *voraussetzend, dass sie auf Männer versessen sei,* MBh. 1, 5976. शङ्कमाना नलं तं वै 3, 2921. 2940. यत्रैनमामीनं शङ्केरन्दुष्टचारिण: । न तत्रापविशेत्: 4, 97. R. 4, 1, 25. 5, 95, 13. Megh. 86. Naish. 22, 42. Râga-Tar. 3, 117. Prab. 17, 7. Bhatt. 3, 26. स्थित: यत्र शङ्कते स: Kathâs. 36, 340. — partic. शङ्कित 1) *in Sorge seiend, besorgt, Scheu empfindend, Misstrauen hegend* Thr. 3, 1, 11. Hâlâ. 2, 200. Spr. (II) 714. fg. 1149. 3263. Hariv. 4838. R. Gorr. 2, 67, 9. 3, 1, 3. 35. 69. 52, 48. 54, 11. fg. 72, 9. 75, 68. 4, 9, 98. अहमेवैनं तद्वाक्यं कर्मणा तेन शङ्कित: 57, 1. 5, 81, 39. Milav. 16, 14. Kathâs. 10, 26. 45, 202. 49, 134. 56, 315. 111, 53. Râga-Tar. 6, 123. 198. Vet. in L.A. (III) 18. 5. Bhâg. P. 7, 9, 2. चेतो मे शङ्कितम् Kathâs. 17, 115. °मनस् MBh. 3, 1834. Bhâg. P. 2, 7, 20. 5, 10, 3. °दृष्टि Spr. 2048. शङ्कितम् *schüchtern* Çiçup. 34 in Ind. St. 4, 271. अशङ्कित *unbesorgt* Spr. (II) 714. MBh. 3, 2432. Râga-Tar. 6, 355. अशङ्कितम् *ohne Scheu,* — *Bedenken* Spr. (II) 2722. Kathâs. 44, 118. Râga-Tar. 4, 571. शङ्कित mit einem abl. *in Sorge seiend* —, *sich fürchtend vor, misstrauend* Spr. (II) 1247c परेभ्य: Bhâg. P. 1, 10, 32. 3, 2, 17. mit gen. dass.: प्रथमभयस्य R. 4, 35, 22. लक्ष्मणस्य Pañkat. 100, 9. mit loc. *besorgt um:* राघवे R. Gorr. 1, 1, 65. राज्ञ: प्राणेषु 2, 67, 10 (65, 14 Schl.). mit प्रति dass.: गौतमं प्रति 1, 49, 23 (48, 23 Schl.). वसन्तसेनां प्रति शङ्कितं मे मन: Mṛicch. 129, 15. sehr häufig mit der Ergänzung componirt: स्वात्म° Spr. (II) 3469. वैरि° Râga-Tar. 6, 201. Bhâg. P. 3, 17, 14. पुत्रकिल्बिष° Hariv. 4853. R. 4, 1, 18. प्रद्वेषभय° 2, 16, 34 (Gorr.). 4, 46, 11. धर्मसंकर° (so ist zu lesen) 5, 14, 55. अपदेश° Milav. 16, 11. Vaṇîm. Bṛh. S. 104, 20. पाप° Kathâs. 26, 256. 30, 115. 49, 36. 118. Râga-Tar. 3, 209. Bhâg. P. 4, 10, 32. 7, 8, 37. Pañkat. 187, 4. — 2) *vermuthend, annehmend* Râga-Tar. 3, 288. — 3) *befürchtet:* यत्तदा शङ्कितं (vielleicht besser mit Schlegel तदाशङ्कितं zu schreiben) पापं तस्य ब्रह्मे विनिश्चय: R. Gorr. 2, 67, 11. °तद्विषेण Spr. 1894. — 4) *beanstandet, in Zweifel gezogen, verdächtig:* नि:श्वासो ऽस्य न शङ्कित: Mṛicch. 48, 22. Kuṭṭan. 28, 21. स धर्म: स्यादशङ्कित: M. 12, 106. — 5) अशङ्कितम् *wider alles Vermuthen, unerwartet, plötzlich* Kathâs. 10, 167. 20, 29. 25, 41. 148. 27, 81. 30, 125. 44, 134. 46, 24. 54, 114. 179. 55, 186. 104, 39. — शङ्कते bei Çaṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 315 fehlerhaft für शक्यते. Vgl. नि:शङ्कित.

— caus. शङ्कयति *besorgt machen um Jmd* (loc.) Milav. 44, 13.

— यति *Jmd* (acc.) *in ernstlichem Verdacht haben* Lâṭj. 2, 1, 10. *Jmd in falschem Verdacht haben:* राज्ञानं नातिशङ्केत मिथ्यावादीति धार्मिकम् R. 3, 52, 57. न लक्ष्मणास्मिन्मम राज्यविघ्ने माता यवीयस्यतिशङ्कितव्या 22, 30. अतिशङ्कित *in grosser Sorge seiend* v. l. in Hariv. 11373 und Bhatt. 6, 2.

— व्यति *einen falschen Verdacht hegen:* मिथ्याव्यतिशङ्कितात्मा (so die neuere Ausg.) Hariv. 11266. nach der Lesart der älteren Ausg. wurde das partic. pass. Bed. haben.

— अभि *Jmd* (acc.) *misstrauen* MBh. 5, 2838. 12, 313. राज्ञानं नाभिशङ्केत मिथ्यावादीति धार्मिकम् R. Gorr. 2, 51, 25. Suçr. 1, 93, 19. *Misstrauen setzen in Etwas* (acc.), *bezweifeln, beanstanden:* मा धर्ममभिशङ्किथा: MBh. 3, 1166. 1169. नाभिशङ्कीर्वचो मम 5, 5060. Mṛicch. 143, 3. नाभिशङ्कमिदं चापि वचनं मे त्वया MBh. 3, 12780. auch mit gen. (der Person oder der Sache): यस्य विद्वान्हि वदत: क्षेत्रज्ञो नाभिशङ्कते M. 8, 96. यस्याचारित्रस्याभिशङ्कित: MBh. 5, 6078. ohne Ergänzung *in Sorgen sein, eine Scheu empfinden* MBh. 12, 4826 (अभिशङ्कसे ed. Bomb.). अभिशङ्कित *in Sorge seiend, ein Bedenken habend* Hariv. 11373 (अतिशङ्कित die neuere Ausg.). Bhatt. 6, 2 (अति der 2te Schol.). अनभिशङ्कितम् *ohne Scheu* Mâṇ. P. 133, 16. — Vgl. अभिशङ्का.

— आ 1) *befürchten:* यतश्च भयमाशङ्केत् M. 7, 188. fg. आशङ्कमाना तत्पापम् MBh. 3, 2361. 10084. R. 1, 1, 39 (42 Gorr.). मत्तो न दोषमाशङ्को: (आशङ्के ed. Bomb.) 2, 90, 15. वधमाशङ्क Kathâs. 12, 23. 18, 94. 42, 107. Râga-Tar. 1, 298. Bhâg. P. 5, 9, 3. Hit. 16, 14. यत्तदाशङ्कितं पापं तस्य ब्रह्मे विनिश्चय: R. 2, 65, 15. आशङ्क *zu befürchten* Kauç. 93. ohne acc. *bangen, in Sorge sein:* संदिग्धमेव सिद्धौ कातरमाशङ्कते चेत: Milav. 63. तत्किमाशङ्कसे Uttarar. 48, 2 (62, 4). नाशङ्कते प्रजल्पन्ती so v. a. *scheut sich nicht zu* Pañkat. I. 437. — 2) *erwarten, voraussetzen:* प्रणतिम् Spr. (II) 1043. भर्तागमनं पुन: Raghu. 12, 24. Kathâs. 22, 78. 24, 126.

Madhus. in Ind. St. 1, 19, 24. यत्रेदमाशङ्क्यते Çañk. zu Bṛh. Ar. Up. S. 313. Schol. zu P. 8, 3, 2. उभयपदार्थप्रधानत्वं नाशङ्कितम् Sarvadarçanas. 166, 3. 4. यशङ्कनीयशर्मत्वलाभ: Daçak. 81, 12. mit vorangehendem इति ohne acc.: कुत्र वा स्वरभक्तिरित्याशङ्य शिलाचारेऽकम् so v. a. weil sie die Frage voraussetzten Schol. zu Taitt. Prât. 21, 15. 22, 14. 23, 11. zu Bṛhc. P. 10, 33, 31. — 3) vermuthen, annehmen, halten für; mit zwei acc.: यशङ्के पदाग्रम् Çiç. 27. इमां प्रत्यात्मानं तेत्रिणामाशङ्कमान: 66, 18. Çiç. 3, 72. तां सोपपतिमाशङ्य भार्याम् Kathâs. 14, 47. 15, 38. 18, 323. तच्छ्रुत्वा सत्यमाशङ्य 20, 176. 46, 4. Bhatt. 6, 6. Pañkat. 173, 16. mit इति ohne acc.: दत्तपूर्वेत्याशङ्कते Mâlatîm. 69, 19. Çiç. 83, 9. Çañk. zu Bṛh. Ar. Up. S. 62. — 4) *Jmd misstrauen*: दयिता साधो त्वमशङ्क्यथा: कथम् Bhatt. 21, 1. — Vgl. यशङ्का fg.

— उप s. u. उप 1).

— उप 1) *Jmd in Verdacht haben*: एतस्मा तेन नान्यं म उपशङ्कितुमर्हति MBu. 6, 889. उपाशङ्कितुम् ed. Bomb. — 2) *sich Vermuthungen hingeben*: किं स्विदित्युपशङ्कितम् R. 2, 63, 11.

— परि 1) *in Sorge sein, Misstrauen hegen* MBu. 1, 7121. 8, 1256. R. 6, 101, 8. Râja-Tar. 8, 2165. °शङ्कित *in Sorge seiend, besorgt, Misstrauen hegend* R. Gorr. 1, 9, 21. 2, 109, 16, v. l. 3, 63, 20. 64, 3. 11. Bhâg. P. 4, 4, 1. 7, 5, 42. mit einem abl. Ragh. 8, 78. सर्वत: MBu. 12, 12003. चारित्रपरिशङ्कित wegen MBu. 5, 7018. mit einem acc. *Jmd misstrauen, in bösem Verdacht haben* MBu. 1, 8456. 3, 16023. R. Gorr. 2, 16, 24. Suçr. 1, 95, 20. नैवं मां पर्यशङ्क्या: (पर्यशङ्कतम् ed. Bomb.) MBu. 3, 10356. न मामर्कसि कल्याणि दोषेण परिशङ्कितुम् 3, 2976. *Misstrauen setzen in Etwas, an Etwas nicht recht glauben wollen*: वितीर्णाङ्कृतिम् Râja-Tar. 2, 107. परिशङ्कितवृत्त MBu. 12, 4779. — 2) *erwarten, ahnen*: भावानपरिशङ्कितान् Spr. (II) 194. — 3) *annehmen, glauben*; mit zwei acc.: प्राप्तां त्वां परिशङ्कते Gîtag. 6, 11. शिखण्डी पुत्रस्ते कन्येति परिशङ्कित: MBu. 5, 7448. — Vgl. परिशङ्कनीय fg.

— प्रति *Bedenken tragen, zögern*: अप्रतिशङ्कमान MBu. 3, 10638. 13, 3331. in der Stelle नैवाच्युताश्रयन्नं प्रतिशङ्कमाना (यमकिंकरा:) द्रष्टुं च विभ्यति तत: प्रभृति स्म Bhâg. P. 6, 3, 34 verbinden wir प्रति mit dem vorangehenden acc. und übersetzen: *kümmerten sich nicht mehr um die Menschen, die bei Akjuta Schutz suchten, ja fürchteten sich sogar sie zu sehen*. — Vgl. प्रतिशङ्का.

— वि 1) *in Sorge sein, Misstrauen hegen*: मा विशङ्क्या: MBu. 5, 1378. mit einem abl. der Person oder Sache *sich scheuen vor* Kathâs. 15, 60. Bhâg. P. 5, 10, 13. 12, 13. विशङ्कित *in Sorge seiend, besorgt, in banger Ungewissheit —, in Unruhe seiend* R. Gorr. 2, 91, 6. Spr. (II) 2883. Bhâg. P. 12, 8, 15. धर्मं प्रति MBu. 12, 9229. मातु: पापविशङ्कित: R. Gorr. 2, 74, 47. म्यान° 3, 13, 19. मुने: शापविशङ्किता Bhâg. P. 9, 16, 4. भर्तृत्यागविशङ्किता 20, 27. धैर्यविशङ्कितेक्षणा 10, 9, 2. अविशङ्कित *keine Scheu empfindend, nicht ängstlich, kein Bedenken habend* MBu. 5, 490. Suçr. 1, 13, 5. Vikr. 81, 11. यदि महचनं तात मद्दास्यविशङ्कित: Mâlav. P. 16, 3. Râja-Tar. 6, 330 (दत्तमत्राचि° zu lesen). Bhâg. P. 4, 12, 7. अविशङ्कितम् *ohne Bedenken* R. 5, 90, 13. mit einem acc. *Etwas befürchten*: विशङ्कसे पतो ऽवधीरणाम् Çiç. 62. स्त्रिग्धै: पापं विशङ्कते Spr. 3334. पापं यदस्यां त्वयि वा विशङ्कम् Mâlatîm. 70, 3. mit einem acc. der Person *Jmd misstrauen* R. 2, 98, 14. यन्मामेवं विशङ्कसे 3, 51, 25. मतीमपि त्वनो ऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते so v. a. *nachtheilig beurtheilen* Spr. 3121. mit einem acc. der Sache *beanstanden, in Zweifel ziehen, mit Misstrauen betrachten*: गान्धर्वादतसो (विवाहो) तत्र धर्म्यो तो मा विशङ्किष्ठा: MBu. 1, 2966. मा विशङ्कीर्वचो मम्यम् 7, 676. कर्मात्ता अविशङ्किता: R. Gorr. 2, 109, 51. — 2) *Jmd in Verdacht haben, annehmen, glauben*; mit zwei acc.: विशङ्कमाना रमितं कयापि जनार्दनम् Gîtag. 7, 12. — Vgl. विशङ्कनीय fgg. und निर्विशङ्कित. — caus. *Jmd Verdacht schöpfen lassen* Spr. 4379.

— अभिवि s. अभिविशङ्क्.

— सम् *Jmd in Verdacht haben*: समशङ्कत मां त्वयि so v. a. *sie hatte mich im Verdacht, dass es dir gelte*, MBu. 4, 868.

शङ्क m. 1) *Stier* Hân. 79. — 2) N. pr. eines Fürsten Burnouf, Intr. 140.

शङ्कट s. वि° und संकट.

शङ्कन scheinbar R. 6, 91, 22, wo aber निःशङ्केनात्मनात्मना zu lesen ist.

शङ्कनीय (von शङ्क्) adj. 1) *Besorgniss —, Verdacht —, Argwohn erregend* Hit. 97, 20. fg. मलीमसानाम् Harîv. 3105. Ragh. 4, 45. दरिद्रता Spr. (II) 1595. (I) 2032. — 2) *zu vermuthen, zu befürchten, vorauszusetzen, anzunehmen* ad Çiç. 62 (घ°). यद्य वा त्वयायं न कामचारो मयि शङ्कनीय: Ragh. 14, 62. Prab. 31, 2. Sarvadarçanas. 26, 17. 121, 9. इति शङ्कनीयम् impers. 133, 14. Verz. d. Oxf. H. 265, *a*, 1. शब्दस्तु नेत्थं बाधकत्वेन (so v. a. बाधक: शङ्कनीय: Kusum. 32, 23. Naiṣadhîy. 1, 3, 24.

1. शंकर् (5. शम् + 1. कर्) P. 3, 2, 14 (संज्ञायाम्). 1) adj. (f. ई) *wohlthätig, Segen bringend* Taitt. 3, 1, 1. Nir. 9, 3. देव (d. i. Çiva) MBu. 13, 889. Kâvjâd. 2, 322. नामानि लोकानां मातृणाम् Bhâg. P. 6, 6, 24. लोकानाम् MBu. 3, 14407. 5, 2575. लोक° (शंकर) Padma-P. 2, 6. Verz. d. Oxf. H. 197, *b*, No. 462. Spr. 2487, v. l. — 2) m. *a*) Beiw. und Bein. Çiva's (Rudra's) AK. 1, 1, 1, 36. 3, 4, 4, 14. H. 195. Hall. 1, 11. VS. 16, 41. Âçv. Gṛhj. 2, 2, 3. 4, 8, 19. Ind. St. 4, 336. 5, 194. 9, 84. रुद्राणां शंकरश्चास्मि sagt Kṛshṇa Bhag. 10, 23. MBu. 3, 12007. 13, 4316. 14, 193. Harîv. 15406. fg. R. 1, 1, 22 (24 Gorr.). R. Gorr. 1, 38, 14. Varâh. Bṛh. S. 43, 42. 54, 3. 86, 75. Kathâs. 4, 27. 15, 2. 18, 227. 43, 186. Weber, Râmat. Up. 344. VP. 7. Bhâg. P. 2, 4, 19. 4, 1, 33. 4, 1. 9, 1, 37. Pañkat. 1, 8, 28. Verz. d. Oxf. H. 27, *a*, 2. 6. 80, *a*, 27. 103, *a*, 36. Verz. d. B. H. No. 1242. Prab. 40, 12. Kâvjâd. 2, 322. Vedântas. (Allah.) No. 74. Burnouf, Intr. 131. °अगुरु (हिमवत्) R. 1, 40, 4. 4, 9, 41. °कवच Verz. d. Oxf. H. 22, *b*, 15. fg. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Kaçjapa von der Danu VP. 147 (शङ्कर zwei Hdschrr. nach Hall). eines Schlangendämons Vjutp. 85. 87. eines Çakravartin 92. — *c*) N. verschiedener Männer (auch = शंकराचार्य und शंकरकवि) L.A. (III) 87, 19. Verz. d. Oxf. H. 135, *a*, No. 254. 146, *a*, No. 310. 150, *b*, No. 320. 280, *a*, No. 653. *b*, No. 657. fg. 281, *a*, No. 659. 329, *a*, No. 780. Verz. d. Cambr. H. 49. Hall 35. 50. 67. 180. 195. in der Einl. zu Vâsavad. S. 7. Wassiljew 49. 201. Târan. 4. 5. 303. °भट्ट Hall 176. fg. 183. fg. Verz. d. Oxf. H. 341, *b*, N. °दीक्षित 134, *b*, No. 230. 140, *b*, No. 285. °भारत्याचार्य Wilson, Sel. Works 1, 201. — 3) f. आ ein Frauenname: शंकरा नाम परिव्राजिका । तत्कीला शंकरा P. 3, 2, 14, Vârtt., Schol. — 4) f. ई *a*) Çañkara's (Çiva's) *Gattin* Rudrajâmala im ÇKDa. — *b*) Bez. zweier Pflanzen: = मञ्जिष्ठा Çabdar. im ÇKDa. =

शमी Rágán. ebend. — Vgl. अत्यन्तशंकरी, भीमशंकर und शंकर.

2. शंकर fehlerhaft für संकर, z. B. R. 5, 14, 55. Kin. Nirn. 2, 38. Verz. d. Oxf. H. 22, a, 25.

शंकरकथा f. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1, 197.

शंकरकवि m. N. pr. eines *Dichters* Verz. d. Oxf. H. 125, a, 4; vgl. कवये शंकराय Hall. Anth. 483, Çl. 2.

शंकरकिंकर m. N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 120, 8.

शंकरक्रोड Titel einer Schrift Hall 50.

शंकरगण m. N. pr. eines Mannes Journ. of the Am. Or. S. 6, 520.

शंकरगीता f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 283, b, No. 662. ein Abschnitt im Devîpurâṇa ÇKDa. unter शंकर.

शंकरगौरीश m. N. eines Heiligthums Râja-Tar. 5, 157.

शंकरचरित्र n. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1, 197.

शंकरचेतोविलास m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 121, b, No. 214.

शंकरजय m. Çaṁkarâkârja's *Siegesruf* Verz. d. Oxf. H. 252, b, No. 626. — Vgl. संजेप°, शंकरदिग्विजय, शंकरविजय.

शंकरजित् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 1174.

शंकरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, a, 4. 5. Wilson, Sel. Works 2, 19. fg.

शंकरदत्त m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 21, 107.

शंकरदिग्विजय m. Titel zweier Werke Verz. d. Kop. H. 10, a. Hall 167. fg. °डिण्डिम 168. — Vgl. शंकरजय und शंकराचार्यविजयडिण्डिम Verz. d. Oxf. H. 260, a, No. 627.

शंकरदेव m. *eine Form* Çiva's Verz. d. Oxf. H. 145, a, No. 305. = अस्साकुण्डतीरवर्ती गोपेश्वरनामा Schol.

शंकरनारायणमाहात्म्य n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1, 88.

शंकरपति m. N. pr. eines Mannes Tîrân. 64. fg.

शंकरप्रिय 1) adj. Çaṁkara (Çiva) *lieb.* — 2) m. *Rebhuhn* Çabdaratnân. bei Wilson. — 3) f. आ Çiva's *Geliebte*, — *Gattin* Kathâs. 95, 68. Weber, Kṛshṇaj. 291.

शंकरबिन्दु m. N. pr. eines Autors Hall 193.

शंकरभाष्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 163, a, 9.

शंकरमिश्र m. N. pr. eines Gelehrten Colebr. Misc. Ess. 1, 262. Hall 68. fg. 85. 206. °मकरन्दोपाध्याय 81.

शंकरवर्धन m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 5, 300. 302.

शंकरवर्मन् m. desgl. ebend. 5, 128. 134. 139. 212. 268. 302. 428.

शंकरविजय m. Çaṁkarâkârja's *Siegesruf*, Titel zweier Werke Mack. Coll. 1, 98. fg. Verz. d. Oxf. H. 247, b, No. 624. 260, b, No. 628. Hall 167. fg. Verz. d. Kop. H. 10, a. — Vgl. शंकरदिग्विजय.

शंकरमुक्त m. N. pr. eines Gelehrten Hall 189.

शंकरसंहिता f. Titel eines Abschnitts im Skandapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 84, b, 26.

शंकरसंभव m. Titel eines Abschnitts des Çivarahasja im Skandapurâṇa Mack. Coll. 1, 52.

शंकरसिद्धि m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 122, 74.

शंकरसेन m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 316, b, 34. Verz. d. Kop. H. 105, a.

शंकरस्वामिन् m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 2, 54. 24, 86.

शंकराचार्य (शंकर + आ°) m. N. pr. eines berühmten Gelehrten, der im 7ten oder 8ten Jahrh. n. Chr. lebte, eine Menge von Schriften, namentlich Commentare zu philosophischen Werken, verfasste und als Reformator der Çaiva gilt, Wilson in VP. Einl. X. Windischmann, Sancara 42. Verz. d. Oxf. und B. H. (s. Ind.). Tîrân. 172. 180. fg. Sarvadarçanas. 157, 3. 4. °विजयडिण्डिम Verz. d. Oxf. H. 260, a, No. 627.

शंकरानन्द (शंकर + आ°) m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 390, b, No. 35. Verz. d. Cambr. H. 20. fg. Tîrân. 188. 247. fg. 329. fg. Hall 98. 116. 123. 141. °गुरु 222, a, No. 540. Verz. d. B. H. No. 625.

शंकराभरण (शंकर + आ°) Verz. d. Oxf. H. 200, b, N.

शंकरालय (शंकर + आ°) m. Çiva's *Behausung* d. i. der Kailâsa Verz. d. Oxf. H. 82, a, N. 1.

शंकरावास (शंकर + आ°) m. *eine Art Kampfer* Râjân. im ÇKDa.

शंकरीय adj. (चतुर्थ्यर्थे) von शंकर gaṇa उत्कारादि zu P. 4, 2, 90.

शङ्क्य adj. von शङ्कु Schol. zu P. 5, 1, 3. 12. 6, 1, 80.

शङ्का (von शङ्क्) f. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *Besorgniss, Furcht* AK. 3, 4, 6, 10. H. 315. an. 2, 17. Med. k. 35. परक्रीयात्मदोषाभ्यां शङ्कानर्थस्य तर्कणम् Sin. D. 189. Çat. Bn. 10, 1, 1, 10. 12, 8, 3, 11. शङ्कामुपागमत् R. Gorr. 1, 66, 18. शङ्कान्वित 2, 3, 5. शङ्का ब्रह्मकल्पाकृतां त्यज 65, 12. 4, 8, 33. Ragh. 13, 43. Kathâs. 30, 126. 32, 49. 48, 32. शङ्काभिः सर्वमाकुलम् Spr. 2033. शङ्का कस्य न जायते 5322. Bhâg. P. 3, 17, 1. मद्भती शङ्का मां बाधते Hit. 57, 5. °स्पृष्ट Megh. 70. mit abl. der Person: शङ्कामत्यङ्गदेहनतेयात् Ragh. 16, 88. Spr. (II) 2196. mit loc. der Person R. 3, 47, 12. mit प्रति und vorangehendem acc.: भवेदत्रीर्ण प्रति यस्य शङ्का Suça. 1, 246, 10. mit der Ergänzung comp.: कैकेयीशङ्कया Ragh. 12, 3. राज्यविभ्रम° R. 2, 23, 28. 72, 42. खादित्याद्य° R. Gorr. 2, 67, 3. पाप° 4, 8, 49. 5, 7, 42. MBh. 13, 318. Spr. 2120. 2165. Mâlav. 12, 14. नारिष्टशङ्का कर्तव्या Kathâs. 18, 229. Prab. 112, 7. विस्तरशङ्कया Sin. D. 124. Pañcat. 238, 21. Hit. 14, 18. अशङ्कया *ohne Scheu* R. Gorr. 2, 49, 17. अशङ्कम् adv. dass. Kathâs. 25, 98. सशङ्क *besorgt* MBh. 4, 337. सशङ्कनिभृता गतिः *ängstlich* Kathâs. 32, 66. सशङ्कम् adv. Spr. 3316. — 2) *Verdacht, Argwohn* Jâtâ. 2, 267. शङ्का जनयतीव मे R. 2, 85, 7. शङ्कान्योऽन्यमजायत Kathâs. 6, 11. अन्योऽन्यशङ्कया Râja-Tar. 8, 588. °शङ्कु 1684. पापयोस्ते कथं नाम तयोः (loc.) शङ्का न विद्यते R. 2, 23, 8. MBh. 4, 2841. 2339 (अति°). Bhâg. P. 12, 26, 14. fg. Hit. 129, 18. शङ्कास्पद 17. तच्छङ्कावसतिं हित्वम् Râja-Tar. 4, 93. पापशङ्का (so zu lesen) न कर्तव्या *du darfst nichts Böses argwöhnen* Kathâs. 6, 12. सशङ्क *Verdacht hegend* 38, 143. 45, 246. — 3) *Zweifel, Bedenken* H. an. Med. Hall. 4, 6. AK. 3, 4, 29 (26), 10. नात्र शङ्का त्वया कार्या MBh. 3, 2994. Kusum. 28, 10. fg. Sarvadarçanas. 131, 16. am Ende eines comp. *das Bewusstsein, Beanstanden:* सवर्णासंज्ञा° Comm. zu Taitt. Prât. 1, 3. 10, 22. Vedântas. (Allah.) No. 126. शक्यशङ्क *bezweifelbar* Sarvadarçanas. 65, 22. 120, 15. — 4) *Vermuthung, Annahme, das Halten für* Sarvadarçanas. 7, 16. 174, 22. Comm. zu Taitt. Prât. 13, 13. 14, 15. अत्र मे मरुती शङ्का भवेदेष नलो नृपः so v. a. *ich vermuthe stark* MBh. 3, 2892. in comp. mit dem, *was erwartet —, vorausgesetzt —, angenommen*, wofür Jmd oder *Etwas gehalten wird:* जलशङ्कया R. 4, 50, 15. निधि° Spr. (II) 1170. खामिष° MBh. 1, 2386. Kathâs. 12, 118. 30, 47. परीक्षितो मे बकुशो बाकुके

नलशङ्कया MBh. 3,2953. 16861. चोरशङ्कायाम् 13,1242. R. Gorr. 2,66, 13. Çik. 183. Spr. (II) 1600. (I) 2213. कुर्वन् — शशाङ्कशङ्काम् Kir. 5,13. Kathâs. 27,204. Mârk. P. 16,67. Bhâg. P. 8,2,6. 9,2,6. (वाक्यमब्रवीत्) पुनर्घोरतरं तुदमप्रियं प्रियशङ्कया R. Gorr. 2,74,45. Spr. (II) 860. पुत्रिकाधर्मशङ्कया M. 3,11. बलमात्मापचारशङ्कया Çik. 110, 23. Kir. 5, 23. Kathâs. 14,13. 28,105. Râga-Tar. 5,208. Sarvadarçanas. 7,13. fg. 8,4. 112,13. 120,4. 150,8. Comm. zu TS. Prât. 14,4. 21,10. — Vgl. अति-शङ्का, अशङ्क, निः°, वि°.

शङ्कामय (von शङ्का) adj. *aus Besorgniss hervorgegangen:* दुःख R. 2,22,6.

शाङ्कतवर्णक m. *Dieb (dessen Gesichtsfarbe verdächtig ist)* Trik. 2, 10,7. Hir. 128.

शङ्कितव्य (von शङ्क) adj. 1) *Misstrauen verdienend* MBh. 12,2988. n. impers. zu *misstrauen:* तस्माद्विश्वसितव्यं च शङ्कितव्यं च केनचित् 2994. — 2) *in Zweifel zu ziehen, zu bezweifeln, — beanstanden:* न फलादर्शनाद्धर्मः शङ्कितव्यो न देवताः MBh. 3,1197.

शङ्कित्र् (von शङ्क und शङ्का) adj. 1) *sich fürchtend vor, befürchtend;* am Ende eines comp.: तच्छङ्कित्र् Kumâras. 7,76. सर्व° MBh. 12,6369. Mârk. P. 34,89. पुनःसंधान° Ragh. 12,101. सर्प° 19,52. कापालिकसंवाद° Mâlav. 23. Kathâs. 11,62. 13,75. 15,61. 20,131. 25,178. 29,34. 107. 30,75. 32,97. 37,74. 63,186. 97,44. Mârk. P. 16,46. Râga-Tar. 3,21. 5,144. 6,303. 333. काक° *furchtsam oder misstrauisch wie eine Krähe* Spr. (II) 2184. Kathâs. 32,53. — 2) *voraussetzend, vermuthend, annehmend:* त्वदुपावर्तनशङ्कि मे मनः Ragh. 8,52. हिरदवंक्षित° 9,72. तारा° Spr. 3195. — 3) *von Furcht begleitet, Besorgniss erregend:* सेवा सदा शङ्किनी (oder सदाशङ्किनी d. i. सदा सा°) Spr. 2004.

शङ्कु Uṇâdis. 1,27. gaṇa भीमादि zu P. 3,4,74. m. (n. Hariv. 749) 1) *spitzer Pflock, Holznagel;* = कील, कीलक AK. 2,4,2a,199. Trik. 3,3,44. H. an. 2,17. Med. k. 34. Hall. 2,296. Vîrya bei Uéával. — RV. 1,164,48. शङ्कुभिर्वर्म विकन्यात् Çat. Br. 2,1,1,10. 3,5,4,1. 2,2. 6,4,3. 13,8,4,1. षट्त्रिंश° 14,9,2,13. Pañcav. Br. 11,10,12. Kâty. Çr. 5, 3,14. 7,4,8. 15,8,7. Lâṭy. 3,10,9. °धान Kauç. 26. fg. खदिर° Gobh. 4, 8,7. Kauç. 25. 49. 51. Suçr. 1,136,19. °स्फोटन 2,458,5. Varâh. Bṛh. S. 60,6. °सदृशो कर्णो Pañcat. 87,12. स भुक्तशेषं भिलावं नक्तं स्वापयति स्म तत् । भिलभाएऽस्थमलङ्घशङ्कु Kathâs. 61,90. 104,140. दण्डं शङ्कुशतावरम् Mârk. P. 127,18. °पलव्योमस्वायन Verz. d. Oxf. H. 322,b, 13. निलेप्यो ऽयोमयः शङ्कुर्ध्वलत्रास्ये दशाङ्गुलः M. 8,271. सायम R. 3,32, 12. सप्तशङ्कुचिता शतघ्नी Ragh. 12,95. Râga-Tar. 3,22. 7,348 (नागःशङ्कून् zu lesen). मणि° Pañcat. 3,12,7. 15. — 2) *Haken zur Extraction eines todten Fötus* Suçr. 1,92,21. गर्भ° Vishn. 23,32. — 3) *Stecken:* काष्ठशङ्कुभिः । खडेऽके खोष्टे च पालयिष्यन्ति Hariv. 11206. *Stake, Pfahl, Balken;* = स्थाणु AK. 2,4,1,3. H. 1122. Vîrya a. a. O. खादिरैः शङ्कुभिर्मिताः (परिखाः) MBh. 3,16325. शङ्कुभिः कीर्णो मधे AK. 2,4,2a, 205. शिलाभिः शङ्कुभिर्वापि मधेवा — ये मार्गमनुरुन्धन्ति MBh. 13,1649. = आलान Trik. 2,8,39. — 4) *Blattrippe:* पद्मा शङ्कुना सर्वाणि पत्राणि संसर्जानि Kâṭh. Up. 2,23,4. = पत्त्रसिराजाल H. an. — 5) *eine best. Waffe.* = यष्टिभेद H. an. = शस्त्रजाति Hall. 2,331. = शस्त्र Vîrya a. a. O. = शल्य AK. 2,8,2,61. Trik. 2,8,33. H. 787. = यष्टि Trik. 3, 3,44. — 6) *Stachel* in übertr. Bed. von *Allem was das Herz aufregt und peinigt* Hariv. 747. 749 (neutr.). अकस्माममताघ्यायी शङ्कुभ्याम् Râga-Tar. 4,68. शोक° Spr. 2480. Ragh. 8,93. Uttarar. 38,3 (75,13). Râga-Tar. 2,80. दृढामर्षशोक° 8,1582. उत्खाय शङ्कुशङ्कं मरीपतेः 1624. Hierher vielleicht शङ्कु = कलुष Med. = पाप Vîrya a. a. O. — 7) *Zeiger an einer Sonnenuhr, Gnomon* Colebr. Alg. 106. °छाया Sûrjas. 3,13. Schol. zu 24. Golâdh. Jantr. 9. °ज्ञीवा *der Sinus des Gnomons (der Höhe)* Sûrjas. 3,22. das einfache शङ्कु dass. Gaṇit. Traipraçn. 12. Golâdh. Traipraçn. 36. fgg. मम °, कोण°, मध्य° Siddhântaçir. S 171. °तल *die sogenannte Basis des Gnomons* Golâdh. Traipraçn. 40. — 8) *ein best. Längenmaass,* = *12 Fingerbreiten* (die gewöhnliche Höhe eines *Gnomons*) Vishṇudharmott. im Titvâdit. nach ÇKDa. — 9) *penis* H. an. H. ç. 126. — 10) *Gift* Vîrya. — 11) *ein best. Parfum,* = नखी Râgân. im ÇKDa. — 12) *ein best. Baum* Vîrya; vgl. °तरु. — 13) *ein best. Wasserthier* AK. 1,2,3,20. Trik. 3,3,44. H. an. Med. Vîrya a. a. O. — 14) *Bez. der Zahl* 10,000,000,000,000 Trik. 3, 3,44. H. 874. H. an. Med. Vîrya a. a. O. Colebr. Alg. 4. MBh. 13, 5267. R. 3,48,35. 6,16,35. — 15) N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,239,*a*. — 16) = अंश Med. — 17) *ein* Rakshas Trik. 1,1,74. H. ç. 36. Çârdar. im ÇKDa. — 18) ein N. Çiva's H. ç. 46. H. an. Hâr. 8. — 19) N. pr. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1,105. कुर्वादि zu 151. eines Dânava Hariv. 2281. 14282. eines Schlangendämons H. 1311, Schol. eines Vṛshṇi (eines Sohnes des Ugrasena) MBh. 1,6999. 7932. Hariv. 2028. 5091 (शंभु ed. Calc.). 8402. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,28. eines Sohnes des Kṛshṇa 10,61,13. Hariv. 9196 (nach der Lesart der neueren Ausg.). N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,*a*, 4. am Hofe Vikramâditja's Haer. Anth. 1. Z. d. d. m. G. 22,722. N. pr. eines Brahmanen (neben कीलक) Wassiljew 51. 205. Târân. 5. 97. fgg. — Vgl. अप:° (auch Mârk. P. 125,36 als N. pr.), गर्भ°, त्रि°, दत्त°, देव°, मरु°, लोक°, वज्र°, शङ्कव्य und शाङ्कव्य.

शङ्कुक (von शङ्कु) m. 1) *Pflöckchen* Schol. zu Kâṭy. Çr. 209, 1. 217, 20. — 2) N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,*a*, 5. 212,*a*, No. 509. Râga-Tar. 4,704.

शङ्कुकर्ण 1) adj. (f. ई und आ) *spitzohrig* MBh. 1,5930. 6072. 6662. 3, 11776. 7,7894. 9,2602. 12,5027. 10250 (Çiva). R. 5,17,24. 20,24. Suçr. 2,388,6. Bhâg. P. 7,9,15 (Vishṇu). °मुखाः MBh. 2,414. — 2) m. *a) Esel* Trik. 2,9,36. H. 1256. — *b)* N. pr. *α)* eines Dânava Hariv. 197. 2284. 14286. — *β)* eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2553. 2558. — *γ)* eines Schlangendämons MBh. 1,2156. — *δ)* eines Râkshasa R. 5,74,5. — *ε)* eines Sohnes des Gaṇamegaja MBh. 1, 3838. — *ζ)* eines Kameels Pañcat. 87,12.

शङ्कुकर्णिन् adj. = शङ्कुकर्ण Hariv. 12219.

शङ्कुकर्णेश्वर m. *eine Form* Çiva's MBh. 3,8012. n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 70,*b*, 40. fg.

शङ्कुचि m. *ein best. Wasserthier,* = शङ्कु Çârdar. im ÇKDa.

शङ्कुतरु m. *ein best. Baum,* = शाल Trik. 2,4,21. Hâr. 182. Çârdar. im ÇKDa.

शङ्कुपथ m. Vârtt. 2 zu P. 5,1,77. gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100. — Vgl. शाङ्कुपथिक.

शङ्कुपुच्छ n. *der am äussersten Ende des Leibes steckende Stachel*

einer Biene u. s. w. Rîâ-Tan. 3, 395. fg.

शङ्कुफणिन् m. *ein best. Wasserthier* H. 1331, Schol.

शङ्कुमत् (von शङ्कु) 1) adj. *mit Stecken —, Pfählen versehen:* गर्त Hall. 5, 44. — 2) f. शङ्कुमती *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 153. Ind. St. 8, 149. 234.

शङ्कुमुख 1) adj. (f. ई) *spitzmäulig:* Maus Suçr. 1, 40, 20. शङ्कुकर्णमुखा: MBh. 2, 414. — 2) m. *Krokodil* (vgl. शङ्कुमुख) H. 1349, Schol.

शङ्कुर (von शङ्कु) 1) adj. *Furcht erregend* H. 479. — 2) m. N. pr. eines Dânava VP. 147, v. l. für शंकर.

शङ्कुलो f. *Schere* oder *Dolch* (कर्तरी) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1, 37. P. 6, 2, 2, Schol. °खण्ड ebend.

शङ्कुवत m. = शङ्कुतरु Çabdam. im ÇKDr.

शङ्कुशिरस् 1) adj. *spitzköpfig.* — 2) m. N. pr. eines Asura Harîv. 196. VP. 147. Bhâg. P. 6, 6, 30. 10, 12. 8, 10, 21.

शङ्कुश्रवण adj. = शङ्कुकर्ण Vaṇîn. Bṛn. S. 68, 38.

शङ्कुस्थ (शङ्कु + स्थ) P. 8, 3, 97.

शंकात् (s. शम् + कृत्) adj. *wohlthätig* Taitt. Âr. 1, 11, 2.

शङ्क्य (von शङ्कु) adj. 1) *dem man misstrauen muss, Misstrauen —, Besorgniss erregend* MBh. 1, 3109. 12, 3988. R. Gorr. 2, 20, 10. Spr. (II) 3156. Rîâ-Tan. 2, 67. 4, 88. °तम R. 2, 100, 33. ग्र° Spr. (II) 714. fg. — 2) *zu erwarten, zu vermuthen, anzunehmen* Daçak. 108, 9. ग्र° Rîâ-Tan. 6, 147.

शङ्ख Uṇâdis. 1, 104. m. n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2, 4, 31. Taik. 3, 3, 10. 1) m. (nach den Lexicographen auch n.) *Muschel* (als Blasinstrument ein Attribut Vishṇu's; auch als Schmuck am Arm getragen) AK. 1, 1, 3, 23. 2, 8, 23. 3, 4, 3, 19. 24, 136. H. 48. 223. 1205. an. 2, 30. Mân. kh. 5. Hall. 3, 42. Vîçva bei Uṇâdis. AV. 4, 10, 1. fgg. Çat. Br. 14, 5, 4, 9. 7, 3, 10. Kâtç. 83. 85. M. 5, 121. शङ्खं दध्मौ Bhag. 1, 12. fg. MBh. 3, 12075. 5, 7169. Harîv. 12409. R. 2, 81, 2. 16. Suçr. 1, 205, 20. 206, 1. Raghu. 13, 12. Vaṇîn. Bṛn. S. 12, 4. 15, 25. 16, 7. 24, 16. 33, 10. 43, 24. 44, 7. 16. 48, 49. 73. 88, 33. fgg. 60, 16. 69, 17. 80, 3 (zu den रत्न gerechnet). 81, 1. 23 Perlen darin; vgl. शङ्खमुक्ता). Weber, Râmây. Up. 288. 306. 327. fg. Kapurâd. 266. 279. 289. 294. 297. fgg. 302. fg. Verz. d. Oxf. H. 14, *b*, 17. 34, *a*, 3. 123, *a*, 35. 190, *b*, 17. 268, *a*, 29. Pañcat. 20, 8. °मुद्राङ्कित Rîâ-Tan. 3, 287. Mṛcch. 78. °पाण्डुर R. 7, 34, 7. न श्वेतभावमुपकाति शङ्ख: शिक्षिभुक्तमुको ऽपि Spr. (II) 355. 798. °पूर्णाभ्यो बाहुभ्याम् MBh. 4, 573. Bhâg. P. 11, 9, 6. 7. स्थूलशङ्खा: स्त्रिय: MBh. 8, 2041. एकशङ्खा नार्य: Harîv. 11164. — 2) m. *Schläfe, Schläfenbein* AK. 3, 4, 3, 19. H. 574. H. an. Med. Vîçva a. a. O. Jîân. 3, 96. MBh. 6, 3397. Harîv. 11951. Suçr. 1, 15, 20. 36, 4. 66, 2. 337, 9. 2, 113, 3. 377, 9. 10. Vaṇîn. Bṛn. S. 51, 3. 34. 52, 2. 58, 6. 66, 2 (beim Pferde). 68, 70. Ver. in LA. (III) 13, 13 (शङ्क Druckfehler). Taik. 2, 8, 38 (beim Elephanten). — 3) Bez. *der Zähne eines 25jährigen Pferdes* Vaṇîn. Bṛn. S. 66, 5. — 4) m. *ein best. Parfum*, = नख, नखी, शुक्ति, सुर AK. 2, 4, 4, 18. H. an. Med. Vîçva a. a. O. Suçr. 2, 325, 13. 342, 7. Vaṇîn. Bṛn. S. 77, 19. Paṇḍan. 1, 11, 13. — 5) m. n. *eine best. hohe Zahl* MBh. 2, 2142. °शत R. 4, 30, 19. 5, 2, 20. शतं कोटिसहस्राणां शङ्खमित्यभिधीयते 4, 86. शतं शङ्खसहस्राणां वृन्दमाहु: 87. Brahmânḍa-P. im ÇKDr. — 6) *ein best. Metrum* Ind. St. 8, 410. — 7) m. *einer der Schätze* Kubera's *und dessen Genius* AK. 1, 1, 2, 67. 3, 4, 9, 19. Taik. 1, 1, 79. H. 193. H. an. Med. Vîçva a. a. O. Verz. d. Oxf. H. 184, *a*, 40. MBh. 2, 418. 13, 6261. Harîv. 2467. 6276. 6552. fgg. R. 7, 15, 16. Rîâ-Tan. 1, 30. Mâlav. P. 68, 5. 41. fgg. Spr. (II) 3950. — 8) N. pr. *a)* eines Schlangendämons Taik. 1, 2, 6. H. 1310. MBh. 1, 1888. 5, 3628. 16, 119. Harîv. 230. R. 5, 78, 9. Weber, Râmây. Up. 314. Rîâ-Tan. 1, 30. VP. 149. Bhâg. P. 5, 24, 31. — *b)* eines mythischen Elephanten (दिग्गज) R. 3, 20, 27. — *c)* eines Asura Verz. d. Oxf. H. 16, *a*, 12. 25. — *d)* eines Mannes gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98. गर्गादि zu 105. वत्सादि zu 110. AV. 19, 22, 8. Âçv. Çr. 12, 12, 3. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56, 7. Verz. d. Oxf. H. 31, *b*, 19. 34, *a*, 10. 52, *a*, 39. Paṇḍan. 1, 10, 61. Jâmâjana, Liedverfasser von ṚV. 10, 13. Kaushîja Ind. St. 3, 472. ein Sohn Virâṭa's MBh. 1, 6988. 4, 1015. Vâgrabhâbha's Harîv. 827. VP. 386, N. 22 (vgl. शङ्खनाभ). Häufig in Verbindung mit seinem Bruder Likhita genannt; jeder von ihnen und auch beide zusammen gelten als Verfasser eines Gesetzbuchs. Jîân. 1, 3. MBh. 2, 292. 12, 668. fgg. 13, 3320. Ind. St. 1, 20. 232. 234. 467. 2, 23. Verz. d. B. H. No. 322. 1017. 1024. 1028. 1231. Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, N, 1. 266, *b*, 1. 10. 267, *b*, 22. 270, *b*, 30. 271, *b*, 1. fgg. 279, *b*, 11. fg. 336, *a*, 30. fg.; vgl. auch unter लिखित 2). — *e)* einer Gegend gaṇa शर्पिटकादि zu P. 4, 3, 93. im Süden Indiens, reich an *Muscheln*, Vaṇîn. Bṛn. S. 14, 14. — *f)* eines Berges Harîv. 12410 (vgl. 12409). Mâlav. P. 58, 24. Bhâg. P. 5, 16, 27. — Vgl. नख°, मरु°, वृद्ध°, मेध्या°, रेम°, शाङ्खायन, शाङ्खिक, शाङ्ख.

शङ्ख (von शङ्ख) 1) m. n. *Muschel* H. an. 3, 101. Med. k. 162. als Blasinstrument Trikâṇḍ. (s. u. फल्गक 1). als Schmuck am Arm getragen H. an. Med. MBh. 12, 6652. — 2) m. *Schläfenbein* Jîân. 3, 90. — 3) *stechender Schmerz in den Schläfen* H. an. Med. Suçr. 2, 376, 5. 377, 11. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 33. — 4) m. *einer der 9 Schätze* bei den Gaina H. 193, Schol. — 5) शङ्खिका f. *Andropogon aciculatus* Roxb. Çabdam. im ÇKDr.

शङ्खकर्ण m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâyu 2 beim Schol. zu H. 210.

शङ्खकार m. *Muschelarbeiter* Verz. d. Oxf. H. 21, *b*, N. 3. Colebr. Misc. Ess. 2, 180; vgl. u. कंसकार.

शङ्खकुम्भस्तनी f. N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2644.

शङ्खकूट m. N. pr. 1) eines Schlangendämons H. 1311, Schol. (शंखकूट die Hdschr.). — 2) eines Berges VP. 169. Mârk. P. 55, 12. 56, 17.

शङ्खचरी f. *ein mit Sandel auf die Stirn aufgetragenes Mal* Taik. 2, 6, 10.

शङ्खचर्चा f. dass. Çabdam. im ÇKDr.

शङ्खचिल्ल *ein best. Vogel;* s. u. कम्बातायिन्.

शङ्खचूड m. N. pr. 1) eines Asura Verz. d. Oxf. H. 25, *a*, 5. 6. Wilson, Sel. Works 1, 175. Paṇḍan. 2, 5, 62. — 2) eines Gandharva Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, 17. fgg. — 3) eines Wesens im Gefolge Kubera's Bhâg. P. 10, 34, 25. — 4) eines Schlangendämons Kathâs. 22, 208. 90, 120. fgg. Nîlak. 58, 1. 59, 18. Bhâg. P. 5, 24, 31. Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 6.

शङ्खचूडक m. N. pr. eines Schlangendämons H. 1311, Schol.

शङ्खचूडतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 68, *a*, 36.

शङ्खचूर्ण n. *Muschelmehl, eine zerstossene Muschel* Rāǵān. im ÇKDn.

शङ्खज m. *eine Perle von der Grösse eines Taubeneies, die in Muscheln gefunden werden soll*, Wilson nach Çabdakalpadr.

शङ्खजाती (°जाति?) f. N. pr. einer Prinzessin Tīkan. 170.

शङ्खण m. N. pr. eines Sohnes des Kalmāshapāda R. 1,70,29 (72, 28 Gorr.). 2,110,30. fg. des Vāǵranābha (vgl. शङ्खनाभी) Rāǵān. 18,21.

शङ्खतीर्थ n. N. pr. eines Tīrtha MBh. 9,2127.

शङ्खदत्त m. N. pr. eines Mannes Kathās. 74,72. fgg. eines Dichters Rāǵa-Tar. 4,490.

शङ्खदारक m. = शङ्खकार Colebr. Misc. Ess. 2,180.

शङ्खध्मायिन् m. *Rumex vesicarius* Rāǵān. im ÇKDn.

शङ्खद्वीप N. eines Dvīpa VP. 175, N. 3.

शङ्खधर 1) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279, b, 12. eines Dichters 125, *a*, 8. — 2) f. ई *Hingcha repens Roxb.* Ratnam. im ÇKDn.

शङ्खधवला f. *Jasminum auriculatum* Ausg. 94. Dhanv. in Nigh. Pr.

शङ्खध्मा m. *Muschelbläser* Gaṇiku. im ÇKDn. VS. 30,19. Çat. Br. 14, 5,4,9. शङ्ख्मा Vop. 3,13.

शङ्खनक m. = शङ्खनख 1) *a*) H. 1205.

शङ्खनख m. 1) *eine best. Muschelschnecke* AK. 1,2,2,23. MBh. 13,2660 (die ed. Bomb. गात्रे; Nīlak.: शङ्खानां तलत्रसुविशेषाणां नखानि तैः). Suçr. 1,205,20. — 2) *ein best. Parfum*, = नखी Çabdam. im ÇKDn. Ratnam. 131. = वृक्षनखी ebend.

शङ्खनाभ 1) m. N. pr. eines Sohnes des Vāǵranābha VP. 386; vgl. शङ्खण. — 2) f. ई *eine best. Pflanze oder Staff* Suçr. 1,33,2. 4. Çiku. Sāh. 3,13,63.

शङ्खनाभी f. = शङ्खपुष्पी Mad. in Nigh. Pr.

शङ्खनारी f. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – – ⏑ – – – Colebr. Misc. Ess. 2,159 (I, 9).

शङ्खनूपुरिणी adj. f. *mit Armbändern aus Muscheln und mit Fussringen geschmückt* P. 5,2,138, Schol.

शङ्खपद् (nom. °पात्) m. N. pr. eines zu den Viçve Devāḥ gezählten Wesens Harīv. 11341. eines Sohnes des Kardama VP. (II) 2,261; शङ्खपाल die gedr. Ausg.

शङ्खपद् m. N. pr. eines Sohnes des Manu Svārokisha MBh. 12, 13383. fg. des Kardama Harīv. 275. VP. 1,22,10.

शङ्खपाणि adj. *eine Muschel in der Hand haltend*; m. ein N. Vishṇu's H. 219, Schol.

शङ्खपात्र m. *ein muschelförmiges Gefäss* R. 1,73,21.

शङ्खपाद m. N. pr. eines Sohnes des Kardama VP. 83, N. 6 (vgl. शङ्खपद्, शङ्खपद् und शङ्खपाल). N. pr. des Hauptes einer best. Secte Verz. d. Oxf. H. 231, *a*, 40.

शङ्खपाल m. 1) *eine Schlangenart* Suçr. 2,205,7. N. pr. eines Schlangendämons Vīrūp. 34. Harīv. 230. Kathās. 90, 141. 104, 83. Bālar. P. 12, 11,38. Kiṇāṅkura 4, 62. 81. — 2) N. pr. eines Sohnes des Kardama (vgl. शङ्खपद्, °पद्, °पाद्) VP. 2,8,93. — 3) *eine Art Confect* (aus dem pers. شكر پاره) Nigh. Pr.

शङ्खपिण्ड m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1538.

शङ्खपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathās. 104,84.

शङ्खपुष्पिका f. *Andropogon acicularis Roxb.* Sāmk. K. 4, *a*, 11.

शङ्खपुष्पी f. P. 4,1,64, Schol. Gaṇa. M. 11,147. Suçr. 1,137,15. 172, 11. 378,13. 2,506,15.

शङ्खप्रस्थ m. *Flecken im Monde* Çabdam. im ÇKDn.

शङ्खभिद् adj. (f. ई) P. 4,1,52, Schol. Vop. 4,20.

शङ्खभृत् adj. *eine Muschel tragend*; m. ein N. Vishṇu's H. 219. R. 6,102,13.

शङ्खमालिनी f. = शङ्खपुष्पिका Ausg. 59.

शङ्खमित्र m. N. pr. eines Mannes Prabandhas. in Verz. d. B. H. 38,33. — Vgl. शाङ्खमित्र fg.

शङ्खमुक्ता f. *eine in einer Muschel vorkommende Perle* R. 3,49,36. 5, 32,41; vgl. Varāh. Bṛh. S. 81,1. 28.

शङ्खमुख 1) adj. *muschelmäulig.* — 2) m. *a*) *Krokodil* H. 1349; vgl. शङ्कुमुख. — *b*) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1556.

शङ्खमुद्रा f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* Kiṇāṅkura 3,183.

शङ्खमूल n. *Rettig* Rāǵān. im ÇKDn.

शङ्खमोक्षक m. N. pr. eines alten Weisen MBh. 1,961.

शङ्खमौक्तिक m. *eine Körnerfrucht, deren Hülsen einer Muschel und deren Körner einer Perle gleichen*, Sandn. in Nigh. Pr.

शङ्खपूषिका f. = शङ्खधवला Dhanv. in Nigh. Pr.

शङ्खराज m. N. pr. eines *Fürsten* Rāǵa-Tar. 8,376.

शङ्खरोमन् m. N. pr. eines Schlangendämons Harīv. 230.

शङ्खलिका f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2632.

शङ्खवत् (von शङ्ख) adj. *mit einer Muschel —, mit Muscheln versehen* Mān. n. 140.

शङ्खशिरस् m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1557.

शङ्खशिला f. vielleicht = शङ्खमुक्ता Lot. de la b. l. 314. Burn. Intr. 91, N. 1.

शङ्खशीर्ष m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 5,3631.

शङ्खह्रद m. N. pr. eines *Sees* Harīv. 8393 (शङ्खह्रदा° mit der neueren Ausg. zu lesen; = शङ्खादिनिधिपुत्रो ह्रदः Nīlak.). Kathās. 104,85. fg.

शङ्खात्तर (शङ्ख + आ°) n. *Stirn* (*der Raum zwischen den Schläfen*) Kumāras. 7,38.

शङ्खालु (शङ्ख + आलु) n. *eine best. essbare Wurzel* (श्वेत मकु mahr.) Dravjaguṇa in Nigh. Pr. °क n. ebend. Suçr. 1,225,3.

शङ्खावती (von शङ्ख) f. N. pr. eines Flusses Mān. P. 59,7.

शङ्खावर्त (शङ्ख + आ°) m. 1) *Muschelwindung* Suçr. 1,258,13. — 2) *eine Form von Mastdarmfistel* (vgl. शम्बूकावर्त) Çiku. Sāh. 1,7,61.

शङ्खाह्व (शङ्ख + आ°) m. Bez. eines best. Ritus im Gavāmajana Lāṭy. 4,3,6.

शङ्खाह्वा (शङ्ख + आह्वा) f. = शतपुष्पी Rāǵān. im ÇKDn.

शङ्खिक (शाङ्खिक?) m. N. pr. eines Mannes Tīkan. 26. — शङ्खिका s. u. शङ्क.

शङ्खिन् (von शङ्ख) 1) adj. *a*) = शङ्खवत् Mān. n. 139. fg. *mit einer Muschel versehen* MBh. 4,1689. Vishṇu Harīv. 14709. 15029. *Muscheln führend:* Wasser Āpast. beim Schol. zu Kāty. Çr. 7,2,15. — *b*) *den Çaṅkha genannten Schatz besitzend* Mān. P. 68,45. — 2) m. *a*) *das Meer* Mān. — *b*) ein N. Vishṇu's Mān. — *c*) *Muschelarbeiter* Çabdam. im ÇKDn. — 3) शङ्खिनी f. *a*) *Andropogon acicularis Roxb.* AK. 2,4,4,11.

Med. = श्वेतचक्र Med. = श्वेतवन्दा Cabdan. (Med. und Cabdan. im ÇKDa. verwechselt) = श्वेतपुनाग Vigva; = पर्वतिका Râgân. im ÇKDa. *Cissampelos hexandra* Wight 146. — Suçr. 1,132,12. 139,18. 145,3. 157,14. 2,42,5. 74,16. Çârîr. Sârîr. 2,1,17. — *b*) Bez. *einer best. Ader* (नाडी) Verz. d. Oxf. H. 236,*b*, l. 9. — *c*) Bez. *einer Gattung von Frauen* (deren die Erotik vier unterscheidet: चित्रिणी, पद्मिनी, शङ्खिनी und हस्तिनी) Med. Verz. d. Oxf. H. 218,*b*, 14. fg. दीर्घा सुदीर्घनयना वरसुन्दरी या कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता। हेखात्रयेण च विभूषितकण्ठदेशा संभोगकेलिरसिका किल शङ्खिनी सा। वृषभं शङ्खिनी तुष्टा रमते। शङ्खिनी तारगन्धा स्यात् Ratn. im ÇKDa. Sarasvatîkaṇṭh. (Tub. Hdschr.). — *d*) N. pr. einer buddhistischen Göttin Târân. 1,1,19. Kâlakârana 2, 42. 43. 106. 3,141. — *e*) N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,6021. — Vgl. शाङ्खिन.

शङ्खिनीफल m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) *Hamilt.* Ausw. 94. Râgân. im ÇKDa.

शङ्खिनीवास m. *Trophis aspera* (शालोट) Cabdas. im ÇKDa.

शङ्खोद्धार (शङ्ख + उद्धार) N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 39,*b*, 39. 149,*a*, 31. °तीर्थ 67,*a*, 28; vgl. Hariv. 8393.

शंगै adj. = शंगु in der v. l. नमः शंगायै च पशुपतये च TS. 4,5,8,1.

शंगय (v. शम् + गय) adj. *dem Hausstand wohlthätig:* Pûshan RV. 2,1,6. शंगयी f.: वृष्टि 5,97,17. Âçv. Çr. 1,9,1.

शंगवी adj. f. *dem Viehstand wohlthätig* Çat. Br. 1,9,1,5. Die Stelle ist eine Abänderung der Worte RV. 5,97,17, wie aus der Vergleichung mit Âçv. Çr. 1,9,1 erhellt.

शंगु (v. शम् + v. गु) 1) adj. dass.: नमः शंगवे च पशुपतये च VS. 16,40. — 2) *eine best. Pflanze* Paṇḍan. 1,7,23.

शच्, शँचते (व्यक्तायां वाचि) Dhâtup. 6,4.

शचि f. = शची Indra's *Gattin* Buan. zu AK. 1,1,4,40 nach ÇKDa.

शचिका f. dasgl. Vaǵin. Bhm. 2,5.

शँचिष्ठ (von शच् = 2. शक्) adj. superl. *hilfreichst:* (इन्द्रः) कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठः RV. 4,20,9. 5,55,14. die Açvin 4,43,3. Ṛbhu Çâṅkh. Çr. 8,20,6.

शँची (wie oben) f. 1) *Hilfeleistung, Unterstützung;* meist zur Bezeichnung *der helfenden Thaten* Indra's und der Açvin gebraucht. Naigh. 2,1. Nir. 12,27. ता नः शक्त शचीपतो शचीभिः RV. 7,67,6. 68,8. यद्देवयत्समवृञ्जः शचीभिः 69,4. कया शचीनां भवथः शचिष्ठा 4,43,3. 1,17,4. शिक्षा शचीवस्त्वं नः शचीभिः 62,12. 103,2. 109,7. 112,8. 116,22. 117,13. 139,3. यशिक्षेतो पत्र शच्या शचीवो गृणते वसूनि 6,31,4. 8,2,16. 16,7. नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम् 32,15. प्र सू तिरा शचीभिर्ये ते उक्थिनः Vîlakh. 5,6. RV. 10,134,3. — 2) *freundliche Begegnung, Zuneigung, Gunst:* मत्स्वेदृङ् नो ऽस्मिन्समने शच्या RV. 3,60,6. प्र यद्वहो मघोनो यविष्ठ मर्त्यधर्यवो देवयन्तः शचीभिः 7,92,3. इन्द्र मादयस्व धीभिर्विशोभिः शच्या गृणानः 10,104,3. स्तोत्रं मे विश्पला धात्कि शचीभिः AV. 5,11,8. यदिन्द्रो यविषद्वृचीभिः Ait. Br. 7,32. 8,20. शची मदत्त उत दक्षिणाभिः Nir. 1,11. — 3) *Anstelligkeit, Geschicklichkeit;* = प्रज्ञा Naigh. 3,9. शचीभिः, धिया, मनसा RV. 3,60,2. रजसो यवणे धीरः शच्या समैरत् 4,56,2. यामासु पक्वं शच्या नि दीधः 6,17,3. 26,6. 10,89,4. 137,3. AV. 11,4,20. VS. 19,81. 12,66. — 4) = वाच् Naigh. 1,11. Durga zu Nir. 1,11. — 5) Indra's *Gattin* (abgeleitet aus शचीपति) AK. 1,1,4,40. Trik. 1,1,59. H. 175. an. 2,60. Med. k. 10. Halây. 1,35. mit dem patron. पौलोमी Liedverfasserin von RV. 10,159. — Çâṅkh. Gṛhy. 1,12 in Ind. St. 5, 307. MBh. 3,2082. 2333. 12003. Hariv. 4601. 7652. 7733. R. 2,94,2. 3,53, 60. 54,26. fg. 5,23,25. Raǵat. 3,12. 33. Katnâs. 115,72. Verz. d. Oxf. H. 27,*a*, 5. 60,*a*, 18. 101,*b*, 3. Schiefner, Lebensb. 255(25). °नन्दन als Beiw. Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 143,*a*, 12. — 6) *Asparagus racemosus* H. an. Med. — 7) *quidam coeundi modus* (स्त्रीकरणात्मन्) Med. ÇKDa. und Wilson fassen करण in der astr. Bed.

शचीतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Çâṅk. 85,1.

शचीनर m. N. pr. eines Fürsten Râǵa-Tar. 1,99.

शँचीपति gaṇa वनस्पत्यादि zu P. 6,2,140. 1) *Herr der Hilfe:* Indra RV. 1,100,6. 4,30,17. 31,7. 6,45,9. 8,14,2. 15,13. 37,1. शच्यूशेषु शंचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः 30,5. 10,24,2. AV. 6,82,3. die Açvin RV. 7, 67,5. — 2) nach einer späteren Deutung *der Gatte der Çakî* d. i. Indra AK. 1,1,4,38. H. 173. MBh. 3,2230. R. Gorr. 2,12,35. 76,33. Katnâs. 17,139. Mârk. P. 15,70. Brahma-P. in LA. (III) 51,2. Daçak. 64, 13. Lalit. ed. Calc. 271,5. 292,18. क्षिति° so v. a. *Fürst* Râǵa-Tar. 1,99.

शँचीवत् (von शची) adj. *hilfreich:* Indra RV. 1,20,2. 53,3. 54,3. शिक्षा शचीवस्त्वं नः शचीभिः 62,12. 6,31,4. शचीवतस्ते पुरुशाक शाकाः 24,4. 3,21,4. 4,22,2. 8,2,15. Statt शचीवि इन्द्रमवसे कृणुध्वम् 10,74,5 wird शची व इन्द्रम् zu lesen sein.

शचीवसु adj. dass. nur im voc.: Indra RV. 3,49,12. die Açvin 1, 139,3. 7,74,1.

शचीश (शची + ईश) m. *Gebieter über die Çakî* d. i. Indra H. 193, Schol.

शच्, शचते (गत्याम्) Kâśikâlpadruma im ÇKDa.

शट्, शँटति (कृत्याविशरणगत्यवसादनेषु) Dhâtup. 9,12. शाटयते (आधापाम्) 33,18, v. l. für शाठ्.

शट 1) adj. *sauer* ÇKDa. nach Siddh. K.; vgl. दृत्तशठ. — 2) m. N. pr. *a*) eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. eines Sohnes des Vasudeva Hariv. 14439 (शत die neuere Ausg.; die richtige Form ist wohl शठ). — *b*) einer Gegend gaṇa शणिडकादि zu P. 4,3,93. — Vgl. दृत्त° und शाठ.

शटि f. = शटी Cabdas. im ÇKDa.

शटी f. *Curcuma Zedoaria, Gelbwurz* AK. 2,4,5,19. Ratnam. 127. Suçr. 1,314,13. 2,80,14. 15. 206,5. 207,2. 17. 220,10. 416,6. 453,5. 500,17. Vîsan. 6,73. Häufig शठी geschrieben. — Vgl. गन्ध°.

शटूक n. *Reismehl mit Ghṛta und Wasser* Baiyâpa. 5.

शठ्, शँठति (क्लिमासंक्लेशयोः und कैतवे) Dhâtup. 9,53. शाठयति (सम्यगभाषणे, सम्यगाभाषणे, भाषणे, सम्याभावे, दुर्वाचि) 35,4. शाठयति (संस्कारगत्योः, संसंस्कारगत्योः, गत्यसंस्कृतसंस्कृते) 32,28. शाठयते (आधापाम्) 33,18.

शठ 1) adj. (f. या) *a*) *falsch, hinterlistig, heimtückisch, boshaft* AK. 3, 1,46. 4,20,198. Trik. 3,3,109. H. 376. an. 2,109. Med. th. 8. प्रियं वक्ति पुरो ऽन्यत्र विप्रियं कुरुते भृशम्। व्यक्तापराधचेष्टश्च शठो ऽयं कथितो बुधैः॥ VP. im ÇKDa. शठे ऽप्येकत्र बद्धभावो यः। दर्शितविस्रम्भनुरागो विप्रियमन्यत्र गूढमाचरति॥ Sâh. D. 74. 70. Prasannar. 5,*a*,5. von Personen M. 4,30. Buan. 18,28. Hariv. 11314. R. 1,6,10 (2 Gorr.). R. Gorr. 2,6,24. 4,16,16. 36. 34,34. 35,2. 58,10. Spr. (II) 230. 498. 616. मित्र 691. 2891. 4118. 786. 1780. 2560. 3165. (I) 1990, v. l. 2653. 2934. 4943.

3003. Kâm. Nîtis. 17,29. fg. Mṛicch. 64,18.137,25. राष्ट्रिय° 175,5. Rasa. 8,48. Mâlav. 55 (शय gedr.). Varâh. Bṛ. S. 15,22. 16,15. 69,20. Kathâs. 4,65. 13,127. 141. 15,32. 18,134. 167. 20,66. 23,35. 29,197. 38, 64. 39,71. 125. 40,59. 42,90. 46,8. 54,202. 61,186. 66,32. Râga-Tar. 4, 643. Bhâg. P. 5,6,2. 8,13. 8, 15, 22. Çiç. in I.A. (III) 38, 2. विधि Spr. (II) 2406. °बुद्धि 2306. R. 5,90,11. °धी Mṛicch. 84,3. मृदुपूर्व शठोदर्क कर्णमाभाष्य MBh. 5,3248. मति° von Personen 13,2093. Spr. (II) 4258. शु° desgl. M. 3,246. Suçr. 2,243,15. Spr. (II) 1485. °धी Bhâg. P. 8,22, 22. ब्राह्मणजीविका M. 4,11. वृत्ति Jâtâ. 1,128. वृत्त MBh. 14,1289. — *b) unpartheiisch, neutral;* m. *Vermittler* Trik. H. an. Med. — 2) m. *a) Stechapfel* (vgl. धूर्त) H. an. Med. — *b)* N. pr. *a)* गण कुञ्जादि zu P. 4,1, 98. eines Asura MBh. 1, 2537. Harîv. 202. eines Sohnes des Vasudeva Harîv. 1951 (गद die neuere Ausg.). 8095 (सुतेन st. शठेन die neuere Ausg.). 14439 (शट die ältere, शत die neuere Ausg.). — 3) f. ई s. शठी. — 4) n. *a) Saffran.* — *b) Tabernaemontana coronaria R. Br.* (s. तगर). — *c) Eisen* Râgân. im ÇKDa. — Vgl. दृत्त°, नि°, मद्रा°, शाठायन und शाठ्य.

शठता (von शठ) f. *Falschheit, Hinterlist* H. 377.

शठत्व (wie eben) n. dass. Sîk. D. 33,13.

शठाम्बा f. *eine best. Pflanze,* = घण्टापुष्पी Râgân. im ÇKDa.

शठारि m. N. pr. eines Mannes Hall 96.

शठ्, शठयति दाने, गतौ Dhâtup. 19,35.

शणी m. *eine Hanfart, Cannabis sativa* oder *Crotalaria juncea Lin.* H. 1179 (neutr.). AV. 2,4,3. Çat. Br. 3,2,4,11. °कुलाय 5,6,4,24. 8,15. Kâtj. Çr. 7,3,26. 15,4,31. °शकल Kauç. 70. °रज्जु 72. °सूत्र 25. MBh. 1,5723. 5725. °गोण (vgl. शरगोण R. 4,39,14) 3,16350. 12,3241. °शाक 13,5046. °पट R. 5,44,12. °वल्कै: 56,138. Suçr. 1,132,5. 219,20. 223, 7. 2,87,2. 438,9. Varâh. Bṛ. S. 29, 6. परबन्धनाय तु शणा: Spr. 2063. — Vgl. राज° und शाण.

शणाक 1) m. N. pr. eines Mannes °व्याधवा: gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. — 2) f. शणिका = शणपुष्पी Râgân. im ÇKDa.

शणकवास s. शाणकवास.

शणपणिका f. = शणपुष्पी Râgân. im ÇKDa.

शणतान्तव (von शण + तन्तु) adj. (f. ई) *aus hänfenen Fäden gemacht* M. 2,43.

शणतूल *Werg von Hanf* Suçr. 1,87,15. सण° gedr.

शणपर्णी f. = वशनपर्णी Çabdâs. im ÇKDa.

शणपुष्पिका f. *eine best. Pflanze,* = घण्टारवा AK. 2,4,3,25. — Vgl. मद्रा°.

शणपुष्पी f. dass. Râgân. im ÇKDa.

शणफला f. P. 4,1,64, Vârtt. 2.

शणमय (von शण) adj. (f. ई) *hänfen* Schol. zu Kâtj. Çr. 7,3,26.

शणसूत्र n. *ein hänfener Faden* Kâtj. Çr. 15,5,1. Çâṅkh. Gṛ. 1,24. = पवित्रक AK. 1,2,3,16.

शणसूत्रमय (von शणसूत्र) adj. (f. ई) *hänfen* M. 2,44. Kull. zu M. 2,43.

शणालुक (शण + आलु) m. *Cathartocarpus (Cassia) fistula* Çabdâs. im ÇKDa. शणालु Wilson nach dem Aut.

शणीर n. 1) N. pr. einer Sandbank im Çoṇa. — 2) *das Ufer der Dardari* Mbh. r. 223. — Vgl. शाणीर.

शण्ठ Uṇâdis. 4,104. m. = सकृत्दार Ujjval. adj. = शठ H. 376, Schol. — S. षण्ढ.

शण्ड्, शण्डते (कृत्स्नायां संघाते च) Dhâtup. 8,27.

शण्ड m. N. pr. des Purohita der Asura, Sohnes des Çukra. VS. 7,12. 13. शण्डामर्कौ Caṇḍa und Marka gaṇa वनस्पत्यादि zu P. 5,2, 140. TS. 6, 4, 10, 1. TBr. 1, 1, 4, 5. Çat. Br. 4, 2, 4, 4. Pân. Gaṇ. 1, 16. Bhâg. P. 7,5,1. 48. Caṇḍa neben Marka als Yaksha Vors. d. Orf. H. 18,5,35. — Vgl. शाण्ड.

शण्डाकी f. = शिण्डाकी Nigh. Pa.

शण्डिक m. nach Sây. *Abkömmling des* Caṇḍa: इन्द्रो दृक्षि वृषभं शण्डिकानाम् ṚV. 2,30,8. N. pr. einer Gegend P. 4,3,93. — शण्डिका = युद्ध in der Sprache der Dravida s. u. गण्डिका 2) in den Nachträgen. — Vgl. शाण्डिका.

शण्डिल् Uṇâdis. 1,55. m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1, 105. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 31. Colebr. Misc. Ess. 2, 188. plur. *seine Nachkommen* Âçv. Çr. 12,14,7. Taitt. Âr. 1,22,10. — Vgl. शाण्डिल, शाण्डिल्य.

शण्ढ Uṇâdis. 1,101. — S. षण्ढ.

शत्, शातयति und °ते 1) *in Abschnitte zertrennen, ablösen, abfallen machen, abhauen:* स्कन्धानमुष्य शातयन्वज्रेणैव शचीपतिः AV. 6, 138, 1. मीमान्यस्य शातय 12, 5, 69. Kâtj. Çr. 18,1,1. यस्यानि TS. 5,2,8,5. 6 (med.). शातितास्तेजसो भागा ये त्वष्ट्रा दश पञ्च च Mârk. P. 78,17. ततेदः पञ्चदशधा शातितम् 20. 108, 2. 3. शिरांसि MBh. 5,4319. R. 1,66,19. 12 (68,10. 12 Gorr.). स्तनान् MBh. 8,1560 (med.). R. 2,43,16. भुजान् Harîv. 10795. यज्ञम् R. 2,96,52 (105,51 Gorr.). 5, 36, 45. ब्रह्म चाशीशतद्वाणीः Bhatt. 15,68. विभीतकम् MBh. 3,2220. 2221 (med.). 2559. पुष्पाणि *abbrechen, pflücken* P. 7, 3,42, Schol. *aushauen, ausschiessen:* नेत्रम् R. Gorr. 2, 105, 55. 5, 68, 16. *niederhauen, zusammenhauen:* घतोत्क्रिणौ शिरः MBh. 7,6898. 2334. Harîv. 3015. *niederwerfen, zu Boden schleudern* R. 6,7,24. मत्काशिला: 14,15. 5,60,8. Harîv. 9371. 9090. यशकां मे रुरिम्रेष्ठ त्वया गन्तुं विकाययसा । वायुवेगसवेगस्य वेगो मौ शातयेत्तव R. 5, 36, 41. — 2) *zertheilen, zerstreuen, vertreiben:* धूमम् Gorr. 3,9,4. घर्मः Suçr. 2,49,16. — Gilt als caus. von 2. शद् P. 7,3,42. Vop. 18,14.

— अप caus. *wegschneiden:* वपेतो शीङ्डामीतिमियुमस्तेव शातय AV. 19, 34, 3.

— अव caus. s. अवशातन.

— नि caus. *niederhauen, schlagen:* अरिबलम् Mahâv. P. 100,39.

— परा caus. s. पराशातयितृ.

— प्र caus. *brechen, pflücken:* म्लानाम्य फलितां शाखां पक्वं पक्वं प्रशातयेत् Spr. (II) 947.

— वि caus. *zerhauen, zerschmettern:* यस्त्रम् MBh. 3,11971. विशातितैः कुम्भकायस्तैः 8, 3502. बन्धनानि R. 5, 49, 31. *aushauen, ausschliessen:* नयनम् 36,46. MBh. 13,7475. दशनान् 7476. *auseinanderwerfen, auseinanderjagen:* प्रकीर्णपर्णानि यथा वसन्ते विशातयित्वा पवनो ऽभ्युदीर्ण MBh. 4,1676. *verscheuchen:* लोकस्य पापानि R. 5,11,4.

— सम् caus. *zerschmettern:* वज्रमुद्यम्य तान्सर्वान्पर्वतान्समशातयम् MBh. 3,865.

1. शतं *hundert* (auch als Ausdruck *einer unbestimmten grossen*

Zahl) Naigh. 3, 1 (= बक). P. 5, 1, 59. m. n. Sidd. K. 250, b, 10. 1) für sich stehend: a) n. AK. 2, 6, 2, 24. H. 873. शतायै ṚV. 8, 1, 5. शतेन मा परि पाहि AV. 4, 19, 8. तं शतेनेव दृणति Śat. Br. 4, 3, 4, 3. शतं ददाति 13, 1, 8, 6. Ait. Br. 2, 17. 6, 2. ऊर्ध्वं शतात् Śāṅkh. Śr. 6, 6, 40. शतं शतम् *je hundert* Prāṇop. 3, 6. M. 8, 294. 333. Vaṇis. Bṛh. S. 13, 4. अशीतिभागः शते M. 8, 140. पूर्णं शतम् 333. पूरितं तु शतं त्वया Kathās. 64, 157. शतस्य दाता M. 3, 177. der gezählte Gegenstand im gen. oder im selben Casus wie das Zahlwort H. 872, Schol. शुचीनाम् ṚV. 1, 30, 2. पुराम् 4, 30, 20. 48, 3. M. 9, 50. 11, 75. MBh. 3, 15724. दामोनां समलंकृतम् । शतम् 2032. विश्वामित्रसुतानां तु शतं नानाविधायुधम् R. 1, 55, 3. शतं ते राजन्भिषजः ṚV. 1, 24, 9. पुरः 4, 27, 1. 31, 9. fg. शतं मृत्यून् AV. 1, 30, 2. 4, 37, 8. 5, 30, 16. 12, 4, 22. Taitt. Up. 2, 8. शतं किमीः ṚV. 1, 64, 14. Śat. Br. 1, 9, 3, 19. शरदः शतं ṚV. 7, 66, 16. TBr. 3, 1, 2, 1. MBh. 3, 2054. Bhāg. P. 3, 23, 46. शतं वर्षाणि 3, 15, 1. M. 4, 156. 165. शतं समाः 3, 10. 5, 82. 11, 25. शतमाजातीः 6, 82. शतं वर्षम् Bhāg. P. 4, 29, 24. अस्त्रशस्त्राणि शतं परमभास्वरम् R. 1, 23, 14. शतं परमभास्वरम् । वसिष्ठपुत्रान्दृष्ट्वा तप्यमानान् 57, 14. शतं सहस्रा मेषवाणि TBr. 3, 1, 2, 7. शतं सहस्राण्यश्वानाम् R. 2, 83, 5. शतेनाभिष्टिभिः ṚV. 4, 40, 2. 2, 18, 6. AV. 4, 16, 7. Bhāg. P. 8, 10, 29. शते शरत्सु AV. 12, 2, 35. शते शते संवत्सरेषु Śat. Br. 10, 1, 5, 4. शतमूतिभिः (= शतेन) ṚV. 4, 31, 2. du.: हे शते गोः 7, 18, 22. Kāty. Śr. 17, 2, 28. R. 4, 59, 6. M. 8, 121. पणानां 138. Jñān. 3, 100. शतकान् R. 2, 33, 20. pl.: शता पुरः ṚV. 1, 53, 8. शतेनमन्वनोनवुः 80, 9. 4, 32, 13. दासस्य 30, 15. गोनाम् 5, 27, 2. 6, 63, 10. 7, 103, 10. त्री शतानि 3, 29, 7. 8. युक्ता ह्यासः शता दश 6, 47, 18. शतानि षट् M. 8, 223. 278. 338. 389. 412. 9, 288. Spr. 2472. Mārk. P. 46, 27. शतान्यनुष्ट्रां पञ्च MBh. 2, 1928. 3, 1728. 4, 1058. षष्ट्या शतेश्च नवभिः शराणाम् 5, 7143. R. 2, 89, 11. 5, 2, 26. Spr. (II) 4229. शतैः — षट्त्यामनिमेषवृत्तिभिः Rāgh. 3, 42. हेरण्यानां रूपाणां च श्वेताश्वानां चतुर्युजाम् । ददामि ते शतान्यष्टौ किङ्किणीविभूषितान् ॥ R. 1, 53, 18. सिरा: शतानि सप्तैव च Jñān. 3, 100. Bhāg. P. 3, 23, 26. 8, 11, 21. शतैर्धनुर्भिः Harīv. 12750. — सपूर्णमेकेन शतं क्रतूनामपविघ्नम् *99* Raghu. 3, 38. शतमेकाधिकम् *101* Vaṇis. Bṛh. S. 11, 5. शतमेकममेतम् dass. 16. एकमधिकं शतम् dass. MBh. 3, 2316. साष्टे शते *108* AK. 3, 4, 1, 13. gewöhnlich wird die hinzu zu addirende kleinere Zahl in der Ordinal-Form beigefügt P. 5, 2, 44. fg. हे चत्वारिंशे शते *240* Śat. Br. 12, 2, 2, 6. 7, 3, 1, 43. 12, 2, 1, 7. Ind. St. 9, 407. fg., wo eine Menge von Beispielen aufgeführt werden. शत in Verbindung mit einem Zahlwort auf क bedeutet *so und so viel vom Hundert:* पञ्चकं शतम् *fünf Procent* M. 8, 139. द्विकम्, त्रिकम्, चतुष्कम् 141. fg. — b) m.: वेतनं ते शतं शताः (शता od. Bomb. = शतानि Nīlak.) MBh. 3, 2639. पञ्च शतान्यान् 4, 1057. शतं शतान्य तुरगाः Harīv. 13606. — 2) am Ende eines comp. a) nach dem gezählten Gegenstande als n.: वाससःशतम् Śat. Br. 13, 4, 2, 13. धेनु° Kāty. Śr. 22, 10, 1. M. 8, 237. 9, 157. 11, 206. MBh. 3, 2980. 13, 811. R. 1, 58, 1. 19. Spr. 2534. 3294. AK. 2, 9, 37. Vaṇis. Bṛh. S. 53, 4. 16. व्यापारशतेन Spr. (II) 3372. नीरसकाश्चताउन° (I) 3053. यामशतानाम् so v. s. यामशतस्य M. 7, 144. नानाधातुशतैः MBh. 3, 2406. 2452. R. 1, 1, 91. 2, 45. 64, 18. Mṛcch. 49. Spr. 2743. 3022. Vaṇis. Bṛh. S. 30, 13. 104, 18. Kathās. 18, 269. Brahma-P. in LA. (III) 56, 4. उपवासशतैः Spr. (II) 3285. fg. ज्ञातीर्यशतैः 1640. नव स्रायुशतानि Jñān. 3, 100. सप्त ज्ञातिशतानि R. 1, 59, 18. 1, 93. शतग्रीशतसंकुला 5, 17. Çiç. 193. Spr. 2057. 2071. तद्दिनं वर्षशताधिकमिव व्यगाम Vet. in LA. (III) 8, 17. योऽशं वर्षशतम् *116 Jahre* Kūrm. Up. 2, 16, 7. Die multiplicirende kleinere Zahl stellt sich im comp. vor den gezählten Gegenstand: चतुर्वर्षशतायुस् *400 Jahre alt* M. 1, 83. MBh. 3, 16804. Auch m.: द्वियोजनशतास्तस्य दंष्ट्राः MBh. 13, 7318. — b) als n. nach einer kleineren Zahl, die a) hinzu addirt wird: एकशतम् *101* Prāṇop. 3, 6. Kūrm. Up. 2, 11, 3. M. 11, 129. Jñān. 3, 267. सर्वशतम् *150* M. 8, 267. हे अशीतिशते *280* Çiṅkh. Śr. 16, 8, 9. eine grosse Anzahl von Beispielen zusammengestellt Ind. St. 9, 469. Gewöhnlich tritt अधिक oder उत्तर zwischen die beiden Zahlen. — β) multiplicirend: षड्गुणं शतम् M. 8, 138. पञ्चशतम् 276. षष्टशतमष्टाविंशतिरेव च Jñān. 1, 302. गवां दशशतम् MBh. 3, 2368. पशूनां त्रिशतम् R. Gorr. 1, 13, 21. षट्तैश्चापि पदातिभिः MBh. 3, 2021. त्रिशताद्यान् 7, 2284. किष्कुचतुःशतम् AK. 2, 4, 1, 18. Auch m.: चतुःशतान् MBh. 7, 2284. निधयो मे चतुःशताः 2, 2091. सप्तशता (oder सप्त शता) वीराः Mārk. P. 113, 1. 124, 9. Häufig als collect. f. in dieser Verbindung: दशशतीं *1000* Rāja-Tar. 6, 28. द्वादशशती षष्टिः *1260* 1, 54. श्लोकसप्तशती MBh. 1, 392. — γ) adj. (f. ई) am Ende eines adj. comp.: तावच्छती संध्या *eben so viele Hundert* (Jahre) *umfassend* M. 1, 69. MBh. 3, 12828. Harīv. 311. 11304. 11309. द्विशती *zweihundert umfassend* MBh. 3, 12829. Harīv. 312. fg. — δ) adj. ord.: द्विशत *der 200ste* MBh. 1 in der Unterschr. des 200sten Adhjj. eben so in एकाधिकशत, अधिकशत u. s. w. — 3) am Anfange eines comp. a) vor dem gezählten Gegenstande: °योजने रू वा एष इतस्तपति Çiṅkh. Br. 8, 3. °योजनवत् Spr. 1899. °योजनयायिन् MBh. 3, 2698. R. 1, 1, 70. Vaṇis. Bṛh. S. 74, 3. °जन्मकृतं पापम् Wasa, Kādaṃb. 223. Vgl. auch die mit शत beginnenden Composita weiter unten. — b) vor einem num. collect.: °हय n. *200* Vaṇis. Bṛh. S. 32, 31. दिव्याब्दानां शतत्रयम् Mārk. P. 46, 23. त्रिंशदधिकं च शतत्रयम् Rāja-Tar. 1, 53. — Vgl. अध्यर्ध°, अष्ट°, एक°, चतुः°, त्रि°, दश°, दशास्रि°, द्वि°, नव°, पञ्च°, परः°, षट्कृत, सप्त°, सहस्रशता.

2. शत m. N. pr. eines Sohnes des Vasudeva Harīv. 14439 nach der Lesart der neueren Ausg. st. शठ der älteren.

शतक (von शत) 1) adj. (f. शतिका) a) *aus hundert bestehend, hundert umfassend:* संघ P. 5, 1, 21, Schol. निदान Vārtt., Schol. संध्या Harīv. 314. Mārk. P. 46, 20. — b) *der hundertste:* कला R. 7, 36, 13. — 2) m. Bein. Vishṇu's H. ç. 65. — 3) f. शतिका nach einer kleineren Zahl *ein Betrag von — hundert* P. 5, 4, 1. 2. — 4) n. *ein Hundert:* पुंसाम् Pañcat. 1, 1, 25. fg. 2, 25. शतकैः स्कन्धैः 7, 13. पुष्पोच्चयानेश शतकैः 17. रत्नकुम्भै (°कुम्भा) शतकम् 2, 4, 20. षष्ट° *108:* नामाष्टशतकम् MBh. 3, 138. — Vgl. चमर°, द्वि°, नीति°, भाव°, मयूर°, वैराग्य°, व्यास°, शृङ्गार° u. s. w.

शतकपालेश m. *der Herr der hundert Schalen*, wohl Bez. einer Form Çiva's Rāja-Tar. 1, 337.

शतकर्मन् m. ein N. *Saturns* H. ç. 14.

शतकीर्ति m. N. pr. des 10ten Arhant's der zukünftigen Utsarpiṇī H. 54.

शतकुन्द m. *Nerium odorum Ait.* (कारवीर) Rāgān. im ÇKDa.

शतकुम्भ 1) m. angeblich N. pr. eines Berges Buar. zu AK. zur Erklärung von शातकुम्भ ÇKDa. — 2) f. या N. pr. eines Flusses MBh. 3, 7988. 14220. 6, 326 (VP. 182).

शतकुलीरक m. *ein best. krebsähnliches Thier* Sucr. 2,287,12.

शतकृत्वस् adv. *hundertmal* R. 5, 3, 8. Spr. (II) 637. 868. Kathâs. 28, 129. fg. 46,237. Bhâg. P. 5,4,16. शतकृत्वा R. 4,46,14 und 5,1,63 offenbar fehlerhaft für °कृत्वो; man streiche demnach शतकृत्वा fgg. unter 1. कृ 16) am Ende.

शतंकृष्णल adj. *mit 100 Krishṇala zu belohnen* TS. 2,3,8,1. 2. Kâṭh. 11,4.

शतकेसर (so ed. Bomb.) m. N. pr. eines Berges Bhâg. P. 5,20,26.

शतकोटि m. Indra's *Donnerkeil* (*Hundert Spitzen habend*) AK. 1, 1, 1,43. H. 180. Gaṇiṇ. in Verz. d. Oxf. H. 191,*b*,1.

शतंक्रतु 1) adj. *hundertfachen Rath, Einsicht, Kraft* u. s. w. *habend:* Indra RV. 1,30,1. 51,2. 2,22,4. 8,1,11. 66,1. शतमूतिं शतंक्रतुम् 88,3. AV. 6,30,1. 32,1. VS. 3,49. die Gandharva Çâṅkh. Çr. 4,10,1. Heilkräuter: यद्धा शतक्रतो (vgl. P. 7,3,109, Vârtt., Schol.) यूयमिमं मे यगदं कृत RV. 10,97,2. *hundert Opferhandlungen enthaltend:* मन्त्र Çat. Br. 11,5,8,12. एकोन° *der 99 Opfer dargebracht hat* Bhâg. P. 4,19,32. — 2) m. ein N. Indra's H. 173. Ind. St. 3,372. MBh. 3,1725. 3062. R. 1,49, 6. 2,81,12. Râgat. 3, 38. 49. Çiç. 157. Spr. 3337. Mâlav. P. 79,6 (pl.). Bhâg. P. 4,16,24. 19,2. 6,8,40. Vjâsa सप्तमे परिवर्ते Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,41. क्षिति° so v. a. *Fürst, König* Râga-Tar. 3,329.

शतक्रतुप्रस्थ n. = इन्द्रप्रस्थ MBh. 3,913.

शतक्री adj. *hundert* (Münzen, Rinder u. s. w.) *werth:* यवा: Lâṭj. 9,4,15.

शतखण्ड n. *Gold* Çabdar. im ÇKDa.

शतखण्डमय (von शत + खण्ड) adj. (f. ई) *aus hundert Fetzen bestehend:* सुवर्णशतखण्डमयी कन्था Spr. 2043.

शतगु adj. *hundert Kühe besitzend* M. 11,14.

शतगुण adj. *hundertfach, hundertmal mehr werth, — stärker* u. s. w.: उपांशु M. 2,85. आर्तनाद R. 2,52,40 (51,7 Gorr.). वेग R. Gorr. 3,67,19. so v. a. das einfache शत Pâṇ. 1,7,55. शतगुणम् adv. *hundertmal* MBh. 1,6031 (शतगुणाधिकम् Hit. 4,49). R. 5,38,41. 50,19. पितु: शतगुणं (so ist zu lesen) माता वन्द्या *hundertmal mehr als der Vater* Pâṇ. 2,6,7.

शतगुणीभाव (von शतगुणीभू) m. *Verhundertfältigung:* भेजे °भावं करुणाक्रन्दितध्वनि: Kathâs. 87,19.

शतगुणीभू (शतगुण + 1. भू) *sich verhundertfältigen:* °भवति नद्या: प्रवाह:, मनसिज Spr. (II) 3310. °भूतदु:ख Kathâs. 101,205. 18,271.

शतगुप्ता f. *die stachlige Euphorbia antiquorum* ÇKDa. unter पेयण.

शतग्रन्थि f. *Dûrvâ-Gras* Râgân. im ÇKDa.

शतग्रीव m. N. pr. eines Kobolds (भूत) Harîv. 14850.

शतग्विन् adj. *hundertfach, nach Hunderten zählend:* रयि RV. 1,159, 5. 4,49,4. 9,67,6. शतेभिरश्वानां सहस्रेभ्यो ऽभीवत्त: शतग्विन: 8,45,11. गवां पोषम् 9,65,17.

शतघण्टा f. N. pr. 1) eines Speers (शक्ति) MBh. 3,16361. — 2) einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2629.

शतघात Harîv. 16316 fehlerhaft für शरघात, wie die neuere Ausg. liest.

शतघोर m. *eine Art Zuckerrohr* Vâgasan. beim Schol. zu H. 1194. wohl fehlerhaft für शतपोर.

शतघ्निन् adj. *mit dem* शतघ्नी *genannten Speere bewaffnet* MBh. 13,1167.

शतघ्नी s. u. शतघ्न्.

शतचंक्र adj. *hunderträderig* RV. 10,144,4.

शतचण्डी f. Bez. einer best. Begehung: *das hundertmalige Lesen der Thaten der* Kaṇḍî Verz. d. B. H. No. 1311. Mack. Coll. 1, 138.

शतचन्द्र 1) adj. *mit hundert Monden versehen* (vgl. °पुरस्कृत MBh. 6, 2894. °युक्त Bhâg. P. 8,20,31. शतचन्द्रकासंकुल 7,4586): चर्मन् MBh. 6, 3610. 3876. 7,4531. 10,494. Bhâg. P. 6,8,24. यूपि 4,15,17. subst. mit Ergänzung von चर्मन् oder यूपि 7,8,28. — 2) m. N. pr. eines Kriegers MBh. 7,6943. fg.

शतचन्दित adj. = शतचन्द्र Verz. d. Oxf. H. 129,*a*,10.

शतचर्मन् adj. *aus hundert Häuten gemacht:* वधी MBh. 1,1406.

शतच्छद m. *eine Spechtart, Picus bengalensis* Taik. 2,5,16.

शतजित् m. *Sieger über Hundert*, Beiw. Vishṇu's R. 6, 102,17. N. pr. eines Sohnes des Raṅga (Raṅgas) VP. 165 (der gedr. Text शतजिन्). des Virâga Bhâg. P. 5,15,13. des Sahasrâgit 9,23,30. VP. 4,11,3. des Bhagamâna Bhâg. P. 9, 24, 8 (die ed. Bomb. richtiger शताजित्). N. pr. eines Jaksha 12,11,43. — Vgl. शताजित्.

शतजिह्व adj. *hundertzüngig:* Çiva MBh. 13,10351.

शतजीविन् adj. *hundert Jahre lebend* Varâh. Bṛh. S. 68,75.

शतज्योति und °ज्योतिस् m. N. pr. eines Sohnes des Subhrâg MBh. 1,44. fg. nach Nîlak. *der Mond.*

शतंजया MBh. 9,2624 fehlerhaft für शत्रुंजया, wie die ed. Bomb. liest.

शततन्ति, °तनु, °तन्वी s. u. तन्ति u. s. w.

शततमं (von 1. शत) adj. (f. ई) *der hundertste* RV. 4, 20, 3. 7, 19, 3. Kathâs. 41, 48. MBh. und R. in den Unterschriften der Adhjâja. कला Daçak. 64,19. एक°, द्वि° u. s. w. *der 101te* u. s. w. P. 5,2,57.

शततर्वन् s. u. तर्वन्.

शततर्हं m. *Durchbohrung* u. s. w. von *hundert* (nach Comm.) TS. 1, 5,9,6. 5,4,9,4.

शतताला f. = शतभिषज् Çabdaratn. bei Wilson.

शततिन् m. N. pr. eines Sohnes des Raṅga (Raṅgas) VP. 2,1,41. शतजित् Wilson.

शततेजस् 1) adj. s. u. तेजस्. — 2) m. N. pr. des Vjâsa द्वादशे परिवर्ते Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,21.

शतद adj. *hundert schenkend* MBh. 13,1885.

शतदक्षिण und शतदत्त s. unter दक्षिण und दत्त.

शतदन्तिका f. *Tiaridium indicum Lehm.* (नागदन्ती) Râgân. im ÇKDa.

शतदल 1) n. *Lotusblüthe* (vgl. शतपत्र) Spr. 3248. — 2) f. या *eine best. Blume,* = शतपत्री Râgân. im ÇKDa.

शतदातु und शतदाय s. unter दातु und दाय.

शतदारुक m. *ein best. giftiges Insect* oder dgl. Sucr. 2,257,19.

शतदुर s. u. 1. दुर्.

शतदूषणी f. Titel einer Schrift Hall 112. 203. °दूषिणी Wilson Sel. Works 1,43.

शतंद्युम्न m. N. pr. eines Mannes TBr. 1,3,9,1. eines Fürsten MBh. 12,8606. 13,6265. Harîv. 5081. 6627. eines Sohnes des Manu Ákshusha 71. VP. 98. Mârk. P. 76,55. des Bhânumant VP. 390. Bhâg. P. 9,13,21.

शतर्हु Uṇâd. 1,36. P. 3,2,180, Vârtt., Schol. f. N. pr. eines Flusses,

= ved. शुतुद्री *der Satledsch* AK. 1,2,3,32. H. 1084. शतधा विद्रुता पस्माच्छतद्रुरिति विप्रुता MBh. 1, 6753. 2, 271. 3,12907. 8,2055. Harıv. 9566. R. Gorr. 2,73,2. 85,5. 4,44,65. VP. 2,3,14. Mısr. P. 57,17. Bhâg. P. 5,19,18. Paiśâcîttrnd. 11,b,4. Hiouen-thsang 1,205. fg. शतद्रू R. 2, 71,2. Vaıîn. Bṛn. S. 16,21. Nach Uçôval. ist शतद्रु auch = गङ्गा.

शतद्रुका f. = शतद्रु MBh. 8,2040.

शतद्रुज m. pl. Bez. *der Anwohner der* Çatadru Miss. P. 57,37.

शतद्रुति f. N. pr. einer Tochter des Meergottes und Gattin Barhishad's Bhâg. P. 4,24,11. 13.

शतर्दृभु (शतन्ऽवभु Padap.) adj. nach Sây. so v. a. शतवभु. Wagen der Açvin ṚV. 1,119,1. — Vgl. कृतर्दृभु, प्रतर्दृभु.

शतद्वार् 1) adj. *hundert Ausgänge habend:* विवर् Hir. 14,18. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa सुभ्रादि zu P. 4,1,123. — Vgl. शातद्वारेय.

शतधनुस् m. N. pr. eines Mannes, = शतधन्वन् P. 5,4,133, Schol. eines Fürsten VP. 3,18,52. fgg. eines Sohnes des Hṛdika (Hṛdika) 4,14,7. Bhâg. P. 9,24,26. N. pr. eines Vorfahren des Çâkjamuni LIA. 2, Anh. II. Die Form शतधनु Bhâg. P. 2,7,44. 10,57,29.

शतधन्य s. unter धन्य. Wir möchten jetzt die von Sây. angenommene Bed. *den Preis von hundert werth* vorziehen.

शतधन्वन् 1) adj. *hundert Bogen habend* VS. 16,29. — 2) m. N. pr. eines Mannes (vgl. शतधनुस्) P. 5,4,133, Schol. verschiedener Fürsten Harıv. 2036. 2091. fgg. 3017. 5498. 9137. VP. 428. fgg. Bhâg. P. 12,1,14.

शतधर् m. N. pr. eines Fürsten Viṣṇ-P. in VP. 470, N. 24.

1. शतधा (von 1. शत) adv. *hundertfach, in hundert Theile* (sich theilend u. s. w.) Çat. Br. 7,2,4,27. वर्तमानः Maitrâjan. 6, 8. कल्पितः Çvetâçv. Up. 5, 9. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,160. भू MBh. 12,115. भिद्यते 1,2191. 6788. 3,12123. 12131. Harıv. 3524. R. Gorr. 2,17,41. 3,33,9. 34,18. गम् 4,22,15. Spr. (II) 2071. धौत (vgl. शतधौत) 2849. कृत (I) 2741. Kathâs. 61,318. 106,38. Râja-Tar. 5,330. Brahma-P. in LA. (III) 58,6. Pañkat. 94,6.

2. शतधा f. Dûrvâ-*Gras* Çabdar. im ÇKDr.

शतधामन् (1. शत + धा°) m. ein Name Vishṇu's Hir. 9. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,10.

शतधाय adj. etwa so v. a. शतदाय (s. u. 1. दाय): वीर् Kâṭ. 8,8.

1. शतधार् (1. शत + 1. धारा) adj. *hundertströmig:* उत्स ṚV. 3,26,9. VS. 13,49. वसोः पवित्रमसि शतधारम् Paçupatipaddh. im ÇKDr.

2. शतधार् (1. शत + 2. धारा) 1) adj. *hundertschneidig, hundertspitzig:* मणि ṚV. beim Schol. zu P. 6,1,116. — 2) *der Donnerkeil* (vgl. शतकोटि), n. Taik. 1,1,63. Halâj. 1,56. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191,b,2. masc. H. 180, Schol.

शतधारवन n. wohl N. einer Hölle P. 8,4,4, Schol.

शतधृति m. 1) ein Name Brahman's Taik. 1,1,27. 3,3,188. H. 213. Med. t. 221. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,3. Bhâg. P. 7,4,1. 11,4, 5. — 2) ein Name Indra's Taik. 3,3,188. Med. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191,a,30. Bhâg. P. 3,24,21. 9,10,34. — 3) = स्वर्ग Viçva im ÇKDr.

शतधौत adj. *hundertfach gereinigt, vollkommen rein:* °घृत Suçr. 2, 26,20. 39,10. 423,20; vgl. शतधा धौतम् Spr. (II) 2849.

शतनिर्ह्राद adj. (f. घा) *vielfache Töne von sich gebend* MBh. 5,2042.

शतनीथ s. u. नीथ 2).

शतपति m. gaṇa यज्ञपत्यादि zu P. 4,1,84. *Herr über Hundert* TBr. 2,8,4,2. — Vgl. शातपत.

शतपत्त्र (1. शत + पत्त्र *Feder* und *Blatt*) gaṇa शर्कराादि zu P. 5,3,107. 1) adj. *hundert Federn habend* ṚV. 7,97,7. — 2) m. a) *Specht* H. 1328. an. 4,281. Med. r. 299. Halâj. 5,9. MBh. 3,9927. 11575. 11609. 5,2944. 6,62. 8,3602. 13,2335. शतपत्त्रालपत्त्र Harıv. 3575. 12694. R. 3,78,28. Vaıîn. Bṛn. S. 48,6. 86,23. Brahma-P. in LA. (III) 51,22. *Pfau* H. an. Med. Hia. 90. Bhâg. P. 5,2,8. *der indische Kranich* (सारस) Med. = राजकीर् *eine Papageienart* H. an. — b) *ein best. Baum* Vaıîn. Bṛn. S. 54, 101. — 3) f. ई *eine best. Blume* Râgân. im ÇKDr. — 4) n. *eine am Tage sich öffnende Lotusblüthe* (*hundert Blüthenblätter habend*) AK. 1,2,8, 39. H. 1161. H. an. Med. Halâj. 3, 57. Ratnam. 146. MBh. 1,6068. 3, 11529. Harıv. 11790. 12669. R. 2,60,17 (15 Gorr.). °निभानना 5,19,27. Vaıîn. Bṛn. S. 68,22. Kâmaṇḍ. 143. Kirâṭ. 2, 33. Bhâg. P. 4,6,16. 19. 8,2,14. 18. 10,13,3. शतपत्त्रायतेक्षणा MBh. 3,2674. °निभेक्षण R. 2, 26, 11. Bhâg. P. 2,9,11. 3,1,29. 5,2,6. — Vgl. चक्र°, लोकित°, शातपत्त्र und सहस्रपत्त्र.

शतपत्त्रक 1) m. a) *Specht* AK. 2, 5, 16. Suçr. 1,201, 1. 19. — b) *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,258,5. 290,3. — c) N. pr. eines Berges Çatr. 1,353. — 2) f. °पत्त्रिका *eine best. Blume*, = शतपत्त्री Râgân. im ÇKDr. — 3) n. *Lotusblüthe* Verz. d. Oxf. H. 17,b, No. 63, Çl. 7.

शतपत्त्रनिवास m. ein Name Brahman's Kavikalpalatâ im ÇKDr.

शतपत्त्रयोनि m. desgl. Kumâras. 7,46. — Vgl. पद्मयोनि.

शतपथ gaṇa देवपथादि zu P. 5, 3, 100. Kâr. bei Pat. zu P. 4,2,60; vgl. Ind. St. 5, 64. 1) adj. *hundertpfadig:* ब्राह्मणमुख MBh. 12,13198. °मनस् Verz. d. Oxf. H. 224, b, No. 346. — 2) m. N. eines zur VS. gehörigen, in zwei Recensionen erhaltenen, von Albrecht Weber herausgegebenen Brâhmaṇa, MBh. 12,11734. 11739. Kâraṇavjûha in Ind. St. 3,269. °ब्राह्मण Schol. zu VS. Prât. 1,139 (wohl °ब्राह्मणे zu lesen). — Vgl. शातपथ.

शतपथिक adj. (f. ई) von शतपथ Vârtt. 9 zu P. 4,2,60. — Vgl. शात°.

शतपथीय adj. *zum Çatapathabrâhmaṇa gehörig* Ind. St. 1,470.

शतपद् (nom. °पात्) 1) adj. *hundertfüssig* ṚV. 1,116,4. Sâṃpr. Bh. 1, 4. Liṅg. 1,8,9. — 2) m. *Hundertfuss, Julus* Gaṭâdh. im ÇKDr. शतपदिष Suçr. 2,292,5. — 3) f. °पदी gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139. a) *Hundertfuss* AK. 2,5,13. H. 1211. Suçr. 2,258,5. 290,3. Kathâs. 29,136. 147. 171. fg. — b) *eine best. Pflanze*, = शतावरी Râgân. im ÇKDr.

शतपद् (*hundert Felder habend*) n. Bez. *eines zur Bestimmung der Nakshatra dienenden Kreises* (चक्र) Gôṭîsvatîtva im ÇKDr.

शतपद्म n. *die Blüthe der weissen Wasserlilie* Ratnam. im ÇKDr. offenbar fehlerhaft für शतपत्त्र.

शतपयस् adj. *hundert Flüssigkeiten* u. s. w. *enthaltend* VS. 17,16.

शतपर्णा m. N. pr. eines Mannes; s. शातपर्णेय.

शतपर्वक 1) = शतपर्वा *weissblühendes* Dûrvâ-*Gras:* °मूल Suçr. 2, 327, 8. — 2) f. °पर्विका Bez. verschiedener Pflanzen und Wurzeln: Dûrvâ-*Gras* AK. 2,4,5,33. H. 1192. an. 5,7. Med. k. 232. Vîrân. 7, 25. = वचा AK. 2, 4, 8, 21. Taik. 3, 3, 43. H. an. Med. *Gerste* Çabdar.

im ÇKDa.

शतपर्वधृक् m. *der Träger des Donnerkeils* d. i. Indra Bhâg. P. 3, 14, 10.

शतपर्वन् 1) adj. *hundert Knoten —, hundert Gelenke u. s. w. habend:* वज्र RV. 1, 80, 6. 3, 6, 6. 65, 2. 78, 3. AV. 3, 5, 15. 12, 5, 66. Harîv. 13997. R. 1, 46, 19. 3, 75, 27. Bhâg. P. 4, 12, 3. 8, 11, 6. पुरुष Çiksh. Ba. 18, 10. — 2) m. *Bambusrohr* AK. 2, 4, 3, 36. H. 1153. *eine Art Zuckerrohr* Bhâvapr. im ÇKDa.

शतपर्वा f. 1) Dûrvâ-*Gras* Med. b. 16. = श्वेतदूर्वा Ratnam. 180. *eine best. Wurzel,* = वचा Med. = कटुका Râgân. im ÇKDa. — 2) *die Vollmondsnacht im Monat* Âçvina Çabdar. im ÇKDa. — 3) N. pr. *der Gattin* Çukra's Med. MBh. 5, 3972. शतपर्वेश m. Bez. Çukra's (*des Planeten Venus*) Taik. 1, 1, 93.

शतपवित्र adj. (f. आ) *hundertfach seihend, — reinigend* u. s. w.: Gewässer RV. 7, 47, 3.

शतपाक adj. *hundertfach gekocht:* तैल (oder n. mit Ergänzung dieses Wortes) *eine best. Salbe* MBh. 13, 2762. Suçr. 2, 36, 9. 38, 13. 226, 10.

शतपाद्क 1) m. *Hundertfuss, Julus* Suçr. 2, 288, 2. — 2) f. °पादिका a) dass. Çabdar. im ÇKDa. — b) = काकोली *eine best. Arzneipflanze* Gaṇîn. im ÇKDa.

शतपादी f. *Hundertfuss, Julus* Gaṇîn. im ÇKDa. unter शतपदी.

शतपाल m. *ein Aufseher über hundert:* ग्रामाणाम् *Dörfer* MBh. 12, 3265.

शतपुत्र adj. (f. आ) *hundert Söhne habend* gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5, 1, 133. MBh. 1, 4524. Davon nom. abstr. °ता MBh. 3, 16301. — Vgl. शतपुत्रक.

शतपुष्प 1) m. a) *Anethum Sowa Roxb.* Ratnam. 116. Suçr. 1, 307, 13. — b) Beim. Bhâravi's Taik. 2, 7, 27. — c) N. pr. eines Berges Tîrthân. 141. — 2) f. आ P. 6, 1, 64, Vârtt. 1. Vop. 4, 18. *Anethum Sowa Roxb.* AK. 2, 4, 3, 17. Suçr. 1, 146, 2. 2, 31, 13. 98, 2. 222, 13. 227, 13. 393, 1. Vaiṇ. Bṛh. S. 51, 15. 77, 3. 80. = शुक्लवचा, प्रियङ्गु, शङ्खपुष्पी, मधुपुष्पा H. an. 3, 501. शतपुष्पादिवर्ग Verz. d. Oxf. H. 195, a, 28. fg.

शतपुष्पिका f. *Anethum Sowa Roxb.* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. मद्रा°.

शतपोनक m. *Fistel am After* Wise 388. Suçr. 1, 92, 4. 265, 3. 17. 299, 9. 2, 58, 21. 124, 14. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 61. 63.

शतपोर् m. *eine Art Zuckerrohr* Suçr. 1, 187, 1. °क m. 186, 14. — Vgl. शतघोर.

शतप्रद adj. *hundert gebend* Nir. 11, 31.

शतप्रमोदन m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vairûpa, Liedverfassers von RV. 10, 113.

शतप्रसव m. N. pr. eines Sohnes des Kambalabarhis Harîv. 1977.

शतप्रसूति m. desgl. ebend.

शतप्रसूना f. = शतपुष्पा *Anethum Sowa Roxb.* Râgân. im ÇKDa.

शतप्रास m. *Nerium odorum Ait.* AK. 2, 4, 3, 57.

शतबला f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 328 (VP. 192).

शतबलाक m. N. pr. eines Lehrers Vâsu-P. in Verz. d. Oxf. H. 84, b, 40. — Vgl. शतबलागत.

शतबलागत m. N. pr. eines Grammatikers mit dem patron. Maudgalja Nir. 11, 6.

शतबलि m. 1) *ein best. Fisch* Âpast. 2, 17, 2. — 2) N. pr. eines Affen R. 4, 33, 14. 39, 18. 44, 1. 6, 3, 46. 14, 14. 22, 3.

शतबाक्ु 1) adj. *hundertarmig:* Eber Taitt. Âr. 10, 1, 3. — 2) m. a) *ein best. schädliches Thierchen* Suçr. 1, 287, 16. — b) N. pr. eines Asura Bhâg. P. 7, 2, 4. eines bösen Dämons (मातृपुत्र) Lalit. ed. Calc. 390, 1. — 3) f. (°बाक्ु) N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, a, 31.

शतबुद्धि adj. *hundertfachen Verstand habend;* m. N. pr. eines Fisches Pañkat. 246, 12. Spr. 2936.

शतब्रध्न s. u. ब्रध्न.

शतभिष m. s. u. शतभिषा.

शतभिषक्सेन m. N. pr. eines Mannes P. 3, 3, 100, Schol.

शतभिषज् 1) m. f. N. eines (des 22ten oder 24ten) Nakshatra H. 114. AV. 19, 7, 5. TS. 4, 4, 10, 3. TBr. 1, 5, 2, 9. 3, 1, 2, 7. 8. P. 4, 3, 36. Vaiṇ. Bṛh. S. 9, 24. 10, 17. 21, 29. 23, 6. 54, 124. 102, 5. 101, 13 (pl.). Weber, Nax. 2, 300. 303. 375. 381. 389. Journ. of the Am. Or. S. 5, 341. — 2) N. pr. eines Mannes (*unter dem Nakshatra Çat. geboren*) P. 4, 3, 36. — Vgl. शतभिषस्.

शतभिषा f. = शतभिषज् 1) Çabdar. im ÇKDa. MBh. 13, 3231. 3394. Harîv. 7735. 7936. Bhâg. P. 5, 23, 6. Weber, Nax. 2, 375. 381. Colebr. Misc. Ess. 2, 342. 363. शतभिष masc. Weber, Nax. 2, 375. — Vgl. शतभिष.

शतभीरु f. *Jasminum Sambac Ait.* Avic. 82. Çabdar. bei Wilson; शात° Ratnam. im ÇKDa. die richtige Form ist शीतभीरु.

शतभुज्रि s. unter 1. भुज्रि.

शतभृष्टि adj. *hundertzackig* TS. 2, 6, 4, 1.

शतमख m. ein Name Indra's Hall. 1, 52. Râgân. 9, 13. Kumâras. 2, 64. Ratnâv. 20, 68. 48, 127. Râga-Tar. 6, 176. Verz. d. Oxf. H. 224, b, No. 546. Kuvalay. 105, b. — Vgl. शतक्रतु.

शतमन्यु 1) adj. *hundertfachen Grimm habend* RV. 10, 103, 7. Vishṇu Vaiṇ. Bṛh. S. 43, 34. Indra Râga-Tar. 1, 93. — 2) m. ein Name Indra's AK. 1, 1, 4, 37. Râga-Tar. 1, 174. Bhâg. P. 1, 8, 6. Bhatt. 1, 3.

शतमन्युकणिठ oder °कणिठन् *eine best. Pflanze* Paṇkat. 3, 7, 22.

शतमय (von 1. शत) adj. (f. ई) am Ende eines comp. *aus hundert — bestehend, — gemacht:* कपर्द° Spr. (II) 1038.

शतमयूख adj. *Hundertstrahlig;* m. *der Mond* Vaiṇ. Bṛh. 2, 20.

शतमाणि v. l. für माणि Verz. d. Oxf. H. 18, b, N. 1.

शतमान (1. शत + 2. मान) 1) adj. a) *hundertfach:* इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुः VS. 19, 93. — b) *ein Gewicht von hundert* (Raktikâ nach Comm.) *habend:* हिरण्य Çat. Br. 5, 5, 5, 16. 12, 7, 3, 12. 13, 2, 3, 2. 4, 4, 6. TS. 2, 3, 11, 3. Kâṭh. 14, 3. Kâtj. Çr. 15, 7, 32. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2, 4, 31. AK. 3, 6, 3, 24. — a) m. *ein goldener Gegenstand im Gewicht von hundert* Mâna Çat. Br. 5, 4, 3, 24. 26. Kâtj. Çr. 15, 6, 30. — b) m. n. *ein Gewicht von hundert* Mâna *in Gold oder Silber* P. 5, 1, 27. Kâtj. Çr. 20, 5, 6. 26, 2, 10. 20. 3, 11. 4, 5. धारणानि दश ज्ञेयः शतमानस्तु राजतः M. 8, 137. 220. शतमानं (v. l. masc.) तु दशभिर्धारणैः पलमेव च Râgân. 1, 264. घष्टौ माषाः शतमानं वदन्ति MBh. 3, 10665. Ableitungen von einem comp., das auf शतमान auslautet und mit einem Zahlwort beginnt, P. 5, 1, 29, Vârtt. — Vgl. unter 2. मान 2) c) und शतमान.

शतमाय (1. शत + माया) adj. *Hunderterlei Listen anwendend* MBh. 7, 816. 12, 3660.

शतमार्ज m. *Messerschmied* Çabdaratn. bei Wilson wohl nur fehler-

haft für शस्त्रमार्ज.

शतमुख 1) adj. s. u. मुख 5). — 2) m. N. pr. eines Asura (*hundertmäulig*) MBh. 13,674. fgg. eines Wesens im Gefolge Çiva's Harıv. 14850. — 3) f. ई ein Name der Durgâ H. ç. 57.

शतंमूति (शतम्, nom. von 1. शत, + ऊति) adj. *hundert Hilfen —, hundert Erfreuungen u. s. w. habend:* Indra RV. 1,102,6. 7,21,8. 8, 2,32. 36. 46,3. 88,8. — Vgl. शतोति.

शतमूल 1) adj. (f. घा) *hundertwurzelig:* दूर्वा Taitt. Âr. 10,1,3. — 2) f. घा Dûrva-*Gras* und = वचा Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. ई *Asparagus racemosus* AK. 2,4,3,19. Ratnam. 16.

शतमूलिका f. *Asparagus racemosus* Halâj. 2,464. *Antherieum tuberosum* Roxb. Râǵân. im ÇKDa.

शतयज्ञोपवीतित adj. *durch hundert Opfer gekennzeichnet*, Bez. Indra's (vgl. शतक्रतु, शतमख) Mânn. P. 74,58. °लक्षक 75,72 wohl fehlerhaft.

शतयष्टिक m. *ein Perlenschmuck aus hundert Schnüren* AK. 2,6,3,6.

शतंयाजम् (1. शत + याजम् absol. von 1. यज्) adv. *unter hundert Opfern* AV. 9,4,18.

शतंयातु m. N. pr. eines Mannes RV. 7,18,21.

शतंयामन् adj. *hundertbahnig:* पथा RV. 8,86,16.

शतयूप m. N. pr. eines Râǵarshi MBh. 13,328. fgg.

शतयोजनपर्वत m. N. pr. eines *Berges* Verz. d. Oxf. H. 339, *b*, 22. fg.

शतंयोनि adj. *hundert Nester —, hundert Wohnungen habend:* श्येन AV. 7,41,2. 19,46,6.

शतरथ m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,227. 2,337. VP. 384, N. 15.

शतंरा m. du. nach Naigh. 3,6 so v. a. मुख RV. 10,106,5.

शतरात्र m. *eine Feier von hundert Tagen* Âçv. Ça. 11,6,15. Çâṅkh. Ça. 13,18,4. Pañkav. Br. 24,19,2. Maçaka in Verz. d. B. H. 73. n. (nämlich सत्र) Kâty. Ça. 24,3,29. 37. Lâṭy. 10,5,9. — Vgl. शतरात्रिक.

शतरुद्र P. 4,2,38, Vârtt. 2. m. pl. *hundert* Rudra Verz. d. Oxf. H. 193,3 v. u. Bez. *best. erlöster Seelen* (bei den Çaiva) Sarvadarçanas. 88, 6. sg. wohl = शतरुद्रिय n. MBh. 13,7092.

शतरुद्रिय (von शतरुद्र) P. 4,2,38, Vârtt. 2. adj. *hundert* Rudra *gehörig, ihnen geweiht* u. s. w. VS. 21,43. ब्रह्मन् oder n. mit Ergänzung dieses Wortes *ein zu den* Jaǵus *gehöriger Abschnitt* Ind. St. 2,14. fgg. 54. 75. 3,394. Çat. Br. 9,1,1,1. 2,1. 10,1,5,3. 15. Kâty. 21,6. MBh. 7,2398. 9612. 9639. 12,10413. 13,876. 915. 7524. Verz. d. B. H. No. 143. 618. 1283. Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 33. Muir, ST. 4,334.

शतरुद्रीय P. 4,2,38, Vârtt. 2. n. dass. TS. 5,4,2,1. 5,6,4. 7,2,3. TBr. 3,11,6,2. MBh. 7,2643. 13,7461. 7479. Verz. d. Oxf. H. 83, *b*, No. 141. Burnouf, Intr. 568.

शतरूप 1) adj. *hundert Gestalten habend.* — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 82, *a*, 21. — 3) f. घा Bez. einer kosmogonischen Potenz, einer Emanation Brahman's und Gattin des Manu Svâǵambhuva, Harıv. 54. fgg. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 140. fg. VP. 1,7,14. fgg. Mânn. P. 50,14. fg. Bhâg. P. 3,12,53. fg. 21,26. 5,1,7. 11,16,25. Verz. d. Oxf. H. 25, *b*, 26. 39, *a*, 4. 50, *a*, 40. VP. 53, N. 5.

शतंर्चस् (शतऽर्चस् Padap.) adj. nach Sây. so v. a. शतऽर्चिस् oder (zu TBr.) शतविधगतियुक्त. Etwa *hundert Stützen* (wenn सचस् auf 3. अर्च् zurückgeführt wird) *habend:* die Erde RV. 7,100,3.

शतर्चिन् (von 1. शत + सच्) m. pl. Bez. der Ṛshi des 1ten Maṇḍala im ṚV. Âçv. Gṛhj. 3,4,2. Çâṅkh. Gṛhj. 4,10. दर्शादो मधुच्छन्दा द्यधिकं यदृचां शतम्। तत्माकृचर्याद्न्ये ऽपि विज्ञेयास्तु शतर्चिनः॥ Anupadânukramaṇikâ zu RV. Ancan. Verz. d. B. H. 92,2. Ind. St. 1,115. 389.

शतल m. N. pr. eines Mannes gaṇa गुदादि zu P. 4,1,123. — Vgl. शातलेय.

शतलक्ष n. *zehn Millionen:* °क्षप Pañkav. 2,2,20.

शतलुम्प und °क m. Bein. Bhâravi's Buddhapr. im ÇKDa. — Vgl. शतपुष्प.

शतलोचन adj. *hundertäugig;* m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2562. eines Asura Harıv. 12935.

शतवक्त्र adj. *hundertmäulig;* m. Bez. *eines über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1,30,5.

शतवनि m. N. pr. eines Mannes; vgl. शातवनेय.

शतंवत् (von 1. शत) adj. *hundert enthaltend, — besitzend*, von *hundert begleitet:* रयि RV. 8,5,18. गिरि 53,3. शतवत्सरूथं गवाम् 10,102, 5. 9. voc. शतावन् : Indra 6,47,9.

शतवपुस् m. N. pr. eines Sohnes des Uçanas VP. 2te Aufl. 4,63,N. 4.

शतवर्ष adj. f. (घा) *hundertjährig:* क्षत्रिय Âpast. 1,14,25. Spr. 4643. Pâṇ. Gaṇ. 3,10 (ख°). *hundert Jahre anhaltend:* धनावृष्टि Buic. P. 11,3,9.

शतवल (1. शत + वल = वलि nach Comm.) m. Bez. eines best. Gegenstandes, der als Opferlohn geschenkt wird, Çâṅkh. Ça. 14,32,10. 14; vgl. Weber, Ind. Str. 1,101, N. 1.

शतवल्श s. u. वल्श.

शतंवाज adj. *hundert Kräfte habend, — gebend:* इषा RV. 8,81,10. Soma 9,96,9. 110,10.

शतंवार adj. *aus hundert Haaren bestehend:* मणि *Amulet* AV. 19,36,1.

शतवार्षिक adj. (f. ई) *hundert Jahre während:* धनावृष्टि Mânn. P. 91,41.

शतवार्ही adj. f. *hundert als Mitgift bringend:* जाया AV. 5,17,12.

शतंविचक्षण adj. *hunderterlei Aussehen habend* RV. 10,97,18.

शतवित्तमा s. unter तर्द् mit वि.

शतवीर m. ein Name Vishṇu's H. ç. 72.

शतंवीर्य 1) adj. *hundert Kräfte habend* AV. 3,11,3. 8,8,7. TS. 5,7,2, 3. Kâty. 34,3 in Ind. St. 3,477. Çat. Br. 4,3,4,3. 5,4,2,13. — 2) f. घा *weiss blühendes* Dûrvâ-*Gras* AK. 2,4,3,24. Suçr. 1,71,17. Pañkav. 3, 14,22. = शतावरी und कपिलद्राता Râǵân. im ÇKDa.

शतवृषभ m. N. des 23ten Muhûrta Ind. St. 10,296.

शतवेधिन् m. *Rumex vesicarius* AK. 2,4,3,6.

शतशस् (von 1. शत) adv. *hundertweise, zu Hunderten:* auf einen nom. bezogen: विलयं समुपाजग्मुः शतशः MBh. 1,1131. 3,2656. 5,7239. R. 1, 12,10. 54,18. 55,22. 2,57,9. 94,20 (103,20 Gorr.). 4,29,11. Vaṅç. Bṛh. S. 54,4. Buic. P. 1,11,20. चतुर्दश हि वर्षाणि सङ्कितस्य त्वया वने। तानभूतानि पास्यन्ति शतशस्तु ततो ऽन्यथा॥ so v. a. *wie hundert Jahre* R. 2,32,32. auf einen acc. bezogen: यथैषामिन्द्र वेदांसि शतशो वि भेजामहे AV. 6,66,2. पश्य मे पार्थ रूपाणि श° Bhag. 11,5. R. 1,54,6. 2,

77,2. 81,2. auf einen instr.: निशितैर्भल्लैः शतशो ऽथ सङ्गशः । षष्टिं दम् MBu. 5,7170. *Aundertmal* M. 12,68. विचित्तः शतशश्चार्यं देशः R. 4, 52,4. घोत Spr. (II) 2285. शये Prab. 57,10.

शतर्शाख (शत + शाखा) adj. (f. घा und ई) *hundertästig* AV. 4,19,3. Harıv. 9002. Spr. (II) 180. °शाखम् adv. *Aundertfältig* Kathâs. 55,84.

शतशाखत्व (von शतशाख) n. *Hundertzweigigkeit, Hundertfältigkeit:* यभिलाषाङ्कुरः शतशाखत्वमाययौ Râga-Tar. 5,376.

शतशारद् 1) adj. *hundert Herbste zählend, — gebend* u. s. w. AV. 19,3,12. कविस् ṚV. 10,161,3 (शतवीर्य AV.). सत्र: TS. 5,7,3,4. — 2) n. *Zeit —, Alter von hundert Jahren* ṚV. 7,101,6. 10,161,3. AV. 1,35,1. 3,2,3. 5,21.

शतशास्त्र n. Titel einer Schrift Vie de Hiouen-tsiang 99. 101. 164. 218. °वैपुल्य Hiouen-tsiang 1,277.

शतशीर्ष 1) adj. *Aunderthöpfig:* Vishṇu R. 6,102,22. — 2) m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1,31,6. — 3) f. घा N. pr. der Gattin Vâsuki's MBu. 5,3976.

शतशीर्षन् s. unter शीर्षन्.

शतशृङ्ग 1) adj. *hundertgipfelig:* ein Berg R. 4,43,14. — 2) m. *N. pr. eines Berges* Sinon. K. 250,b,10. MBu. 1,4629. 4647. 2,2600. 7,2851. 12, 12035. Bhâg. P. 5,20,10. Pañkat. 1,1,35. 2,3,17. Verz. d. Oxf. H. 24,b, 46. °माहात्म्य Mack. Coll. 1,85.

शतश्लोकी f. *hundert* Çloka, Titel eines medicinischen Werkes des Vopadeva Verz. d. B. H. No. 978. vollständiger °चन्द्रकला Verz. d. Oxf. H. 319,a, No. 756.

शतसंवत्सर adj. *hundertjährig:* घयन Maçaka in Verz. d. B. H. 74 (XI,7).

शतसंख्य 1) adj. *hundert an Zahl:* शरा: MBu. 5,7157. पायम् Spr. (II) 2282. — 2) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern unter dem 10ten Manu VP. 3,2,34. Mârk. P. 94,12.

शतसंघशस् adv. *hundertweise;* auf einen nom. bezogen MBu. 3,1749. auf einen acc. 12220.

शतसनि adj. *hundert gewinnend, — verschaffend* Śâṅkh. Br. 1,4. Pâr. Gṛhj. 2,6. — Vgl. शतसा.

शतसहस्र n. *hundert tausend:* गवाम् R. 1,53,8. 11. 61,12. 2,52,62. °यान Spr. 5033. pl. Weber, Râmây. Up. 354. घष्टौ शतसहस्राणि देशनाशोत्तमा कृया: Harıv. 6927.

शतसहस्रक n. *N. pr. eines* Tîrtha (vgl. शतसाहस्रक) MBu. 3,7028. शतसहस्रिका s. u. शतसाहस्रक.

शतसहस्रघा (von शतसहस्र) adv. *in hunderttausend Stücke:* फलेन्मूर्घा ते श° R. 2,64,21.

शतसहस्रपत्त्र n. *eine best. Blume* Vârtt. 142.

शतसहस्रशस् (von शतसहस्र) adv. *Aunderttausendweise;* auf einen nom. bezogen MBu. 1, 5239. R. Gorr. 2,57,9. Bhâg. P. 5,19,16. auf einen acc. R. 4,4,3. 7,27,28. auf einen instr. R. Gorr. 1,3,70.

शतसहस्रांशु adj. *Aunderttausend Strahlen habend:* der Mond MBu. 1,1145.

शतसहस्रात्त adj. *in hunderttausend Richtungen sich verbreitend:* der Mond MBu. 1,1145, v. l. bei Nîlak.

शतसा adj. = शतसनि ṚV. 4,38,10. 7,8,6. 9,82,5. 10,95,3.

शतसाहस्र adj. (f. ई) *auf hunderttausend sich belaufend, Aunderttausend bildend, — enthaltend:* पोडनात्तर MBu. 1,1407. रात्तसा: 3,11361. Harıv. 13376. Mârk. P. 118,6. 15,72. संख्या MBu. in der Unterschrift des 11ten Parvan. दान *Aunderttausendfach* M. 7,85. घष्टशतसाहस्रा गवां वर्गा: *aus achtmalhunderttausend bestehend* MBu. 4,288. शतसाहस्र n. (mit einem gen. pl.) = शतसहस्र R. 7,15,30 aus metrischen Rücksichten.

शतसाहस्रक 1) adj. (f. °साहस्रिका) dass.: प्रज्ञापारमिता Burnouf, Intr. 462 (°सहस्रिका). शतसाहस्रिकप्रज्ञा° Vârtt. 40. — 2) n. N. pr. eines Tîrtha (vgl. शतसहस्रक) MBu. 3,8052.

शतसाहस्रिक adj. *der hunderttausendste:* भाग Harıv. 6305.

शतसू adj. f. *hundert gebährend* P. 3,2,61, Schol.

शतसेय n. *das Gewinnen von hundert* ṚV. 3,18,3.

शतस्विन् (von 1. शत) adj. *hundert besitzend* ṚV. 7,58,4.

शतहन् 1) adj. (f. शतघ्नी) *hundert tödtend* TS. 1,5,3,6. 5,4,3,4. — 2) f. शतघ्नी a) *ein best. Mordinstrument* H. 787, Schol. an. 3,424. शतघ्नी तु चतुस्ताला लोकण्टकसंचिता H. ç. 148 (im folg. Çloka ist शतघ्नीव zu lesen). Med. n. 140. घय:कण्टकसंकुला शतघ्नी मरुती क्षिप्ता Vidjânarakshita im ÇKDa. MBu. 1,7378. 3,12024. 14378. 5,1886. 2042. 12,2640. Harıv. 12537. R. 1,5,17. R. Gorr. 1,5,9. 3,28,23. 5,10,22. 72, 9. 73,9. 6,65,21. Suçr. 1,308,7. घय:शङ्कुचिता Ragh. 12,95. Bhâg. P. 6, 10,23. 10,59,15. °पाशशक्तिमत् (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) MBu. 13,1347. शतघ्नि aus metrischen Rücksichten Harıv. 13094. Bhâg. P. 9,15,30. सशतघ्नीकलाङ्गला MBu. 3,642. — b) *eine mörderische Krankheit* Suçr. 1,306,15. 308,7. 2,132,15. Çârṅ. Saṃh. 1,7,79. — c) *Tragia involucrata* (s. वृश्चिकाली) und *Pongamia glabra Vent.* (s. कारञ्ज) H. an. Med.

शतहस्त und शतहायन s. unter हस्त und हायन.

शतहैम adj. *Aundert Winter —, hundert Jahre zählend* u. s. w. ṚV. 1,73,9. 2,1,11. मेदेम शतहैमा: सुवीरा: 8,4,8. 9,74,8. AV. 19,55,4.

शतहुत adj. *hundertfach geopfert:* होम Śâṅkh. Br. 4,1.

शतह्रद् 1) m. N. pr. eines Asura Harıv. 198. — 2) f. घा a) *Blitz* (vgl. ह्रादिनी) AK. 1,1,2,10. H. 1105. an. 4,148. Med. d. 55. Halâj. 1, 60. MBu. 4,1196. 1968. 6,3874. 4542. 5597. 9,1542. Harıv. 8430. R. 1, 34,12. 3,19,7. 34,7. 7,8,10. Mâlâv. 91,21. Vikr. 66,1. Spr. 5054. Râga-Tar. 2,13. Bhâg. P. 12,9,13. am Ende eines adj. comp. (f. घा) Kumâras. 7,39. — b) *der Donnerkeil* H. an. Med. — c) N. pr. (neben तडित् *Blitz*) einer Tochter Daksha's, die Bâhuputra ehelichte, Vaṃça-P. im ÇKDa. — d) N. pr. der Mutter des Râkshasa Virâdha R. 3, 7,20. — Vgl. शतह्रद्.

शतात (1. शत + 3. घत) 1) adj. *Aundertägig.* — 2) m. N. pr. eines Dânava Harıv. 13092. — 3) f. ई a) *Nacht* Taik. 1,1,104. H. ç. 18. Çabdar. im ÇKDa. — b) *Anethum Sowa Roxb.* Çabdar. im ÇKDa. — c) Bein. der Durgâ Mârk. P. 91,42.

शतायमक्रियी (1. शत + घय - म°) f. *unter Aundert Gattinnen die obenanstehende Gattin* Mârk. P. 74,21.

शताङ्ग (1. शत + 3. घङ्ग) 1) adj. *Aunderterlei:* तूर्याणि MBu. 1,7056. — 2) m. a) *Kriegswagen* AK. 2,8,2,19. H. 751. Halâj. 2,289. — b) *Dalbergia ougeinensis Roxb.* Râgân. im ÇKDa. — c) N. pr. eines Dâ-

nava Harıv. 12935.

शताजित् (1. शत + जित्; vgl. अयुताजित्, सहस्राजित्) m. N. pr. eines Sohnes des Bhaǵamâna Harıv. 2003. VP. 4,13,2. Bhâg. P. 9,24,3 (शतजित् Bomb.) — Vgl. शतजित्.

शतातृष्ण (1. शत + आ°) adj. *hundertlöcherig* TBr. 1,8,6,4. Çat. Br. 12,7,2,13. 9,2,3. Kauç. 83.

शतात्मन् (1. शत + आ°) adj. *hundertfaches Leben habend* ṚV. 1,149,3.

शताधिक (1. शत + अ°) adj. (f. आ) *hundert übersteigend, hundertundeins bildend* MBh. 1,4532. fg.

शताधिपति (1. शत + अ°) m. *ein Befehlshaber über hundert, centurio* MBh. 12,3712.

शतानक (1. शत + आ°) n. *Leichenstätte* Taitt. 2,8,61.

शतानन (1. शत + आ°) 1) m. *Aegle Marmelos Corr.* (s. बिल्व) Aussn. 58. — 2) f. आ N. pr. einer Göttin (*100 Gesichter habend*) Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,31.

शतानन्द (1. शत + आ°) 1) m. *a*) ein Name Brahman's H. 211. Halâj. 1,6. — *b*) ein Name Vishṇu's oder Kṛishṇa's Taitt. 1,1,32. H. ç. 73. Mac. d. 54. — *c*) Vishṇu's *Wagen* Taitt. 1,1,34. — *d*) N. pr. eines alten Ṛshi Mac. MBh. 13,1765. eines Sohnes des Gautama (Gotama) von der Ahaljâ Harıv. 1785. VP. 454. Purohita des Königs Ǵanaka R. 1,50,6 (51,6 Gorr.). 51,1. 2 (52,1. 2 Gorr.). Bhâg. P. 9,21, 34. Verz. d. Cambr. H. 68. = गौतम Taitt. 2,7,31. H. 850. ein späterer Çatânanda gleichfalls ein Sohn Gautama's Verz. d. Oxf. H. 122,*a*, 1. ein Sohn Çaṁkara's von der Sarasvatî Verz. d. B. H. No. 841. Verz. d. Cambr. H. 48. fg. — 2) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2629.

शतानीक (1. शत + अ°) 1) adj. *hundert Fronten* —, *hundert Spitzen darbietend* Vîlaku. 1,2. केतयः 2,2. — 2) m. *a*) *ein alter Mann* Taitt. 2,6, 9. H. an. 4,27. Mac. k. 216 (वृन्दे fehlerhaft für वृद्धे). — *b*) N. pr. verschiedener Männer H. an. Mac. (मणि fehlerhaft für मुनि). VS. 34,52 = AV. 1,35,1. Sâttrâǵita Ait. Br. 8,21. Çat. Br. 13,5,4,19. ein Sohn Ǵanameǵaja's Verz. d. B. H. 13,11. MBh. 1,3835. Kathâs. 9,6. 18, 64. 30,42. VP. 461. Bhâg. P. 9,22,37. Verz. d. Oxf. H. 17,*b*, No. 53. Schiefner, Lebensb. 234 (4). Nakula's MBh. 1,2451. 2763. 3827. 3839. 3044. 7,625. 8,3813. VP. 459. Bhâg. P. 9,22,28. Sudâsa's 41. 42. Vasudâna's VP. 462. Vasudâman's Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,20. ein Bruder Virâṭa's MBh. 4,1011. ein Sohn des 10ten Manu Harıv. 475. Mârk. P. 94,18. N. pr. eines Asura Kathâs. 47,23. 48,103.

शताब्ज (1. शत + अ°) n. *eine Lotusblüthe mit hundert Blüthenblättern* Dhârânirnêç. in Ind. St. 2,3.

शतामघ (1. शत + मघ) adj. *hundert Spenden* —, *hundertfachen Lohn habend:* Indra ṚV. 8,1,5. 33,5. 34,7.

शतायु adj. = शतायुस्; davon nom. abstr. शतायुता *ein Alter von hundert Jahren* Çat. Br. 10,2,6,7. 12.

शतायुध (1. शत + आ°) adj. *hundert Waffen führend* TS. 5,7,2,2. Gobh. 3,8,10.

1. शतायुस् (1. शत + 2. आ°) n. *ein Alter von hundert Jahren* Bhâg. P. 10,45,5.

2. शतायुस् (wie eben) 1) adj. *ein Alter von hundert Jahren erreichend* Kâṭh. 34,5 in Ind. St. 3,477. Varâh. Bṛh. S. 68,50. Hit. ed. Jones. 2096. Ver. in LA. (III) 27,12. Andere Belege s. u. 2. आयुस् 1). — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Purûravas MBh. 1,3149. Harıv. 1373. VP. 398. des Kîrâjus Kathâs. 41,58. des Uçanas VP. 2te Aufl. 4,63, N. 4.

शतार (1. शत + 1. अर) *der Donnerkeil*, n. Taitt. 1,1,63. m. H. 180, Schol. दशशतार *tausend Speichen habend*, n. Bez. *des Diskus des* Vishṇu Bhâg. P. 3,28,27.

शतारित्र (1. शत + अ°) adj. *hundertruderig* ṚV. 1,116,5. VS. 21,7. AV. 17,1,25.

शतारुक (von 1. शत + अरु = अरुस्) m. *eine Art Aussatz* Çâṅkh. Sâṁ. 1,7,64.

शतारुण m. N. pr. eines Ameisenfürsten (v. l. शतावरुण) Kauç. 116.

शतारुस् n. = शतारुक Çârdar. im ÇKDa. Bulvapr. 7. Kâraka 8,5.

शतार्घ (1. शत + अर्घ) adj. *hundert* (Rinder u. s. w.) *wert* Çat. Br. 7,2,4,26.

शतार्णा f. *Anethum Sowa Roxb.* Çârdar. bei Wilson.

शतार्ध (1. शत + अर्ध) n. *ein halbes Hundert, fünfzig* Çvetâçv. Up. 1, 4. Varâh. Bṛh. S. 68,77. 81,18.

शतार्ध (1. शत + अर्ध) adj. = शतार्घ Kâṭj. Ça. 22,10,33. Lâṭj. 9,4,15.

शतावधान (1. शत + अ°) m. Bein. Râghavendra's, = महाचार्य° Verz. d. Oxf. H. 261,*a*,31. 33. Verz. d. B. H. 159.

शतावत् s. u. शतवत्.

शतावय s. u. शवय.

शतावरी f. 1) *Asparagus racemosus*, ein kletterndes Gewächs mit wohlriechender Blüthe AK. 2,4,2,19. Taitt. 3,3,376. Mac. r. 300. Ratnam. 16. Suçr. 1,137,4. 13. 143,14. 145,17. 21. 225,2. 9. °मूल 2,49,20. °चूर्ण 508,17. °तैल Çârṅg. Sâṁh. 2,9,23 (vgl. Suçr. 1,58,2). Varâh. Bṛh. S. 44,10. 48,40. Vgl. मक्षा°, वरी und इन्दीवरी. — 2) N. pr. Indra's Gattin Taitt. 1,1,59. 3,3,376. H. ç. 32. Mac. (शची fehlerhaft für शच्यौ).

शतावरुण s. u. शतारुण.

शतावर्त (शत + आ°) adj. *hundert Wirbel* (auf dem Haupte) *habend:* Çiva MBh. 12,10351. m. ein Name Vishṇu's H. 216.

शतावर्तवन n. N. pr. eines *Waldes* Harıv. 8954.

शतावर्तिन् m. ein Name Vishṇu's Taitt. 1,1,32. — Vgl. शतावर्त.

शतावयि (1. शत + अ°) adj. *hunderthautig, -schneidig:* der Donnerkeil ṚV. 8,17,10.

शतावय (1. शत + अ°) adj. *hundert Rosse zählend:* राधस् ṚV. 8,4,19. सहस्रं शतावयम् *tausend Rinder mit hundert Rossen* 10,62,8. Çiñkn. Ça. 14,28,15. 16,10,10. Lâṭj. 8,1,28. Kâṭj. Ça. 22,1,3. °रथम् *hundert Rinder und ein Wagen mit Rossen* 22,2,1.

शताष्टक n. *hundertundacht* (müsste eigentlich *achthundert* bedeuten) Paṇâr. 4,1,6; vgl. 3.

शताह्वा (1. शत + आह्वा) f. *Anethum Sowa Roxb.* Ratnam. 116. Ǵaṭâdh. im ÇKDa. Suçr. 2,62,4. 100,16. 410,5. 2,119,1 (masc.). Verz. d. Oxf. H. 323,*b*,1 v. u. *Asparagus racemosus* Râǵân. im ÇKDa.

शतिक adj. = शतेन क्रीतम् P. 5,1,21. = शतस्य विकारो ऽवयवो वा P. 4,3,156, Schol. = शतस्य निमित्तम् in Verbindung mit संयोग und उत्पात 5,1,38, Schol. = शतमस्मिन्वृद्धिरायो लाभः शुल्कमुपदा वा दीयते

47, Schol. = शतमंशो वस्त्रं भृतिर्वास्य 86, Schol. = शतं परिमाणमस्य 87, Schol. = शतगर्कृति 62, Schol. *hundert betragend:* °वृद्धि *vier hundert im Spiel gewinnt* Jiḱ. 2, 199. *der hundertste:* भाग *Theil* Vaṇiṇ. Bṛn. S. 80, 13. Am Ende eines comp.: अनेकवर्ष° *mehrere hundert Jahre alt* R. Gorr. 2, 1, 25. 3, 73, 26. घवर्ष° *noch nicht hundert Jahre alt* Suçr. 1, 344, 2. — Vgl. वार्ष° (auch Kauç. 10). शतिका s. u. शतक.

शतिन् (von 1. शत) adj. *hundert enthaltend, hundertfach vorhanden, centenus:* रायः RV. 1, 31, 10. 64, 15. 2, 2, 9. वाज 1, 124, 13. 5, 8, 6. 8, 64, 4. 10, 47, 5. नियुतः 1, 133, 1. 3. 7, 92, 5. die Marut 57, 7. Rosse des Indra 8, 1, 9. शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे ईरते (in adv. Sinne) 1, 59, 7. *hundert besitzend* Spr. (II) 1090. 3791. (I) 3212. गवाम् *hundert Kühe besitzend* MBh. 13, 4885. गो° dass. 3742. — Vgl. वर्ष°.

शतेध्म (1. शत + इ°) m. *hundert Scheite* Kiṭu. 36, 6.

शतेन्द्रिय (1. शत + इ°) adj. *hundert Sinne habend* Ait. Br. 2, 17. Çat. Br. 12, 7, 2, 13. 13, 1, 1, 4. 5, 6.

शतेपञ्चाशत्न्याय m. *das Axiom, dass in hundert auch fünfzig enthalten sind,* Taitt. Prât. 2, 35, Comm.

शतैर Uṇâdis. 1, 61. m. = शत्रु *Feind* Uéévaḷ. = हिंसा Uṇâdis. im ÇKDn.

शतेश (1. शत + ईश) m. *das Haupt von hundert* (Dörfern) M. 7, 115. 117. ग्राम° 117.

शतेकशीर्षन् adj. *hundert einzige* (d. i. *vorzügliche*) *Köpfe besitzend* (nach dem Comm.) Bhâg. P. 10, 16, 38.

शतैकोन (1. शत + ऊन°) adj. *einer von hundert:* शतैकोनो यो ऽवशिष्टो विप्रवर्तयिते ऽग्ने Râḱa-Tan. 8, 1274.

शतौक्थ्य adj. *hundert Ukthja-Tage habend* Çat. Br. 11, 5, 5, 2. 4. Kâṭj. Çr. 24, 3, 9.

शतौति (1. शत + ऊति) adj. *hundert Hilfen u. s. w. bringend:* der Wagen der Açvin RV. 6, 63, 5. 7, 68, 3. Indra TS. 5, 7, 2, 3. — Vgl. शतमूति.

शतोदर् (1. शत + उ°) 1) adj. *hundert Bäuche habend:* Çiva MBh. 12, 10331. — 2) m. *a*) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1, 30, 5 (31, 6 Gorr.). — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Hariv. 19830. = 3) f. ई N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2623.

शतोलूखलनेक्षणा f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2628.

शतोदना (1. शत + ओदन) f. *eine best. Cerimonie* AV. 10, 9, 1. fgg. Kauç. 64. fgg. AV. Prâr. 4, 101, Schol.

शत्य adj. = शतिक P. 5, 1, 21. Schol. zu P. 4, 3, 156. 5, 1, 38. 47. 56. fg. 63. *aus hundert bestehend:* दम Jiḱ. 2, 208. am Ende eines comp. nach अध्यर्ध und eigentlichen Zahlwörtern P. 5, 1, 24. षष्टिशक्त्याः f. pl. *aus 156 bestehend* Kâṭj. Çr. 17, 7, 25.

शत्यंजय m. Bez. des 13ten Tages im Karmamâsa Ind. St. 10, 296. wohl fehlerhaft für शत्रुंजय, wie auch Wesse vermuthet.

शैत्रि Uṇâdis. 4, 67. m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âgniveçi RV. 5, 34, 9. *Elephant* nach Uéévaḷ.

शत्रु (von 1. शद्, also eig. शत्नु) Uṇâdis. 4, 103. Vop. 26, 149. m. 1) *siegreicher Gegner, Nebenbuhler:* अशत्रुर्यं सभवः शत्रुरिन्द्र RV. 8, 85, 16. शत्रुं न किला विवित्से 1, 32, 4. नाक् वः शत्रुर्विविद् 39, 4. 176, 1. नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति 6, 18, 12. 10, 34, 2. यस्येन्द्रः शत्रुरभवत् TS. 2, 5, 8, 2. — 2) *Gegner, Feind* überh. (in der Politik *der unmittelbar angrenzende Fürst als der natürliche Feind*) AK. 2, 8, 4, 9. 11. H. 728. 732. Hall. 2, 301. 5, 60. RV. 1, 33, 13. 61, 13. 2, 23, 11. 30, 3. fgg. 3, 16, 2. 4, 29, 4. स क्षेति वृत्रा समिषेषु शत्रून् 41, 2. शत्रोः शत्रोरुतेर् इत्स्यात् 6, 19, 12. 7, 18, 18. 18, 48, 7. AV. 4, 3, 1. 5, 4, 2. 10, 3, 1. TBr. 3, 1, 1, 12. Âçv. Gṛhj. 3, 10, 11. M. 7, 33. 73. 155. 168. MBh. 3, 2625. 12068. भार्या रूपवती शत्रुः Spr. (II) 1330. 3435. 4003. (I) 2038. fgg. 3035. fgg. मित्रोदासीनशत्रवः M. 7, 177. 180. °सेविन् 186. °कुल 8, 93. °पत Spr. 2942. Vaṇiṇ. Bṛn. S. 44, 17. 52, 5. °नाशन 69, 38. °नाशकृत् 94, 11. °घ्न 52, 7. Spr. (II) 2738. °निबर्हण R. 1, 1, 11. °सूदन 53, 1. घ्न° MBh. 12, 4267. क्रोध° Mṛḱḱ. 173, 15. विबुध° Vikr. 3. — 3) in der Astrol. Bez. *des 6ten Hauses* (wie alle Worte für *Feind*) Vaṇiṇ. Bṛn. 9, 7. 20, 2. 11. 21, 2. Verz. d. Oxf. H. 331, *a*, 19. — 4) angeblich = शतावरी Aṣṭâ. 72. — 5) N. pr. eines Asura MBh. 1, 2543. richtiger क्रोधशत्रु als ein Wort ed. Bomb., da क्रोध allein schon vorhergeht. — Vgl. घ°, घातृ°, इन्द्र°, देव°, प्रति°, प्रीक्°, वक्र° (als adj. auch Kathâs. 4, 106), वृत्र° und शात्रव.

शत्रुंसह् adj. *Feinde bewältigend* P. 3, 2, 46, Schol. (संज्ञायाम्).

शत्रुक m. *Feind* Spr. (II) पं दृष्ट्वा वर्धते क्रोधः.

शत्रुघ adj. *Feinde schlagend* P. 3, 2, 49, Schol.

शत्रुघात adj. = शत्रुं वध्यात् P. 3, 2, 49, Schol.

शत्रुघातिन् 1) adj. *Feinde schlagend.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Çatrughna (Sohnes des Daçaratha) R. 7, 108, 10. fg. Rasn. 15, 36.

शत्रुघ्न 1) adj. *Feinde schlagend:* Vishṇu Paṇḍân. 4, 3, 119. Çiva Çiv. नित्य° *seine eingeborenen Feinde schlagend* d. i. *seine Leidenschaften zügelnd* R. 2, 1, 1. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer: eines Sohnes der Daçaratha von der Sumitrâ und Râma's jüngsten Bruders MBh. 3, 15378. R. 1, 19, 7. 72, 6. 2, 1, 1. Rasn. 13, 79. 15, 6. 36. Wesse, Râmây. Up. 300. fg. 337. 342. 361. Uttarân. 23, 10 (31, 9). VP. 384. fg. Verz. d. B. H. 434 (45). 468 (9). 1205. Bhâg. P. 9, 10, 2. 43. 11, 13. Verz. d. Oxf. H. 13, *b*, 7. fgg. eines Sohnes des Çvaphalka Hariv. 1917. VP. 435. Bhâg. P. 9, 24, 16. des Devaçravas Hariv. 1937. — Kathâs. 34, 182. Râḱa-Tar. 3, 483.

शत्रुघ्नजननी f. *die Mutter* Çatrughna's d. i. Sumitrâ Çabdan. im ÇKDn.

शत्रुजित् P. 3, 2, 61, Schol. 1) adj. *Besieger der Feinde:* Çiva Çiv. — 2) m. *a*) N. pr. eines Sohnes des Râḱâdhidêva Hariv. 2034. = प्रतर्दन, कुवलयाश्व u. s. w. VP. 408. Bhâg. P. 1, 14, 29. 9, 17, 6. Vater des Kuvalajâçva Mârk. P. 20, 1. 19. N. pr. eines neueren Fürsten Verz. d. Cambr. H. 48. — *b*) R. 5, 58, 6 fehlerhaft für शक्रजित्.

शत्रुंजय 1) adj. *Feinde besiegend* Kauç. 56. — 2) m. N. pr. *a*) eines Fürsten MBh. 3, 15597. 7, 1899. 6910. 12, 8249. fgg. — *b*) eines Thürstehers Kathâs. 35, 79. — *c*) eines Elephanten P. 5, 2, 46, Schol. R. 2, 32, 10 (9 Gorr.). eines mythischen Hariv. 8925. R. 2, 98, 25 (107, 14 Gorr.). 6, 112, 27. — *d*) eines bei den Ǵaina in hoher Verehrung stehenden Berges H. 1030. Çatr. 1, 9 u. s. w. °माहात्म्य im Auszuge herausgegeben von Albrecht Weber. °स्तव Wilson, Sel. Works 1, 283. — 3) f. या N. pr. *a*) einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2634 nach der Lesart der ed. Bomb. (शतंजया ed. Calc.). — *b*) eines Flusses Çatr. 1, 19. — Vgl. शत्यंजय.

शत्रुता (von शत्रु) f. *Gegnerschaft, Feindschaft:* °तामेति *wird zum Feinde* Spr. 4719. (II) 1667. Kathâs. 44,124. 74,89.

शत्रुतापन 1) adj. *Feinde peinigend:* Çiva Çiv. — 2) m. N. eines Krankheitsdämons Hariv. 9537.

शत्रुतूर्ण्य n. *Ueberwindung des Gegners* ṚV. 6,22,10.

शत्रुतूर्वि n. = शत्रुता ṚV. 8,45,5. Spr. 4722. पण्डित° 4070.

शत्रुदमन adj. *den Feind bändigend* gaṇa मन्त्रादि zu P. 3,1,134.

शत्रुतप P. 3,2,46, Schol. (संज्ञायाम्). Vop. 26,60. adj. *den Feind peinigend* MBh. 4,1670. — Vgl. शत्रुंतप.

शत्रुंदम adj. *den Feind bändigend* Mârk. P. S. 657, Z. 1. Çiva MBh. 12,10361.

शत्रुबाधन adj. *Feinde bekämpfend* TS. 1,8,22,3. TBr. 1,7,6,3.

शत्रुभट m. N. pr. eines Asura Kathâs. 47,20.

शत्रुमर्दन 1) adj. *Feinde vernichtend* Kathâs. 42,135. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Daçaratha, = शत्रुघ्न Çabdan. im ÇKDr. — *b*) eines Sohnes des Kuvalajâçva Mârk. P. 26,6. — *c*) eines Fürsten von Vigaja Wilson, Sel. Works 1,291. — *d*) eines Elephanten Kathâs. 51,161.

शत्रुलोक m. Mârk. P. 120,19 fehlerhaft für शक्रलोक.

शत्रुवर्त (von शत्रु) adj. *Feinde habend* Sidd. K. zu P. 5,2,112.

शत्रुसात् (von शत्रु) adv. mit dem caus. von गम् *dem Feinde überliefern* MBh. 2,2455.

शत्रुसाह् adj. *den Feind überwindend* MBh. 12,411.

शत्रुहन् adj. *Feinde niederschlagend* P. 3,2,49, Schol. (= शत्रुं वध्यात्). AV. 1,29,5. 5,98,3.

शत्रुहन्तृ 1) adj. dass. ṚV. 10,159,3. Bhâg. P. 3,24,10. 4,4,24. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Çvaphalka (vgl. शत्रुघ्न) Hariv. 2084.

शत्रूयु (von शत्रु) VS. Pâṭ. 3,111. TS. Pâṭ. 3,7. *feindlich auftreten;* nur partic. praes. शत्रूयन्त् ṚV. 1,33,15. 5,4,5. 28,3. विश्वे शत्रूयन्तः सघान 7,20,3. 18,89,18. यमित्रसेनामस्मो क्षत्रयतीमपि AV. 3,1,3. 4,22,6. 6,88,3. VS. 12,5.

शत्रूषाह् adj. *Feinde bewältigend;* nom. sg. °षाट् AV. 5,20,11. nom. pl. °षाहः ṚV. 8,49,6.

शत्वरी f. *Nacht* Taitt. 1,1,104. — Vgl. शर्वरी.

1. शद् *sich auszeichnen, — hervorthun; die Oberhand behalten, triumphiren:* यस्मिन्युजा वावृधुः शोशदुश्च ṚV. 2,20,4. med.: त्वया वयं शशदानेषु रण्यसि 10,120,5. शशदे 1,141,9. partic. (vgl. κεκασμένος): प्र स्वा मतिर्मतिरच्छाशदानः 1,33,13. 116,1. कन्येव तन्वाई शाशदाना 123,10. 124,6. मातीम् तान्धाडुभिः शाशदानान् 7,96,4. 104,24. ब्रह्मणा AV. 1,10,1. Nâigen. 4,3. Nir. 6,16 erklärt durch शाशद्यमान (= भिद्यमान Durga) von 2. शद्.

2. शद् (शातने) Dhâtup. 20,25. 28,134. शशाद्, शेदुस्; षशादत् Vop. 8,127. षशत्स्यत् (vgl. Kâr. 3 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10) P. 1,3,60. Schol. *abfallen, ausfallen:* दन्तास्ते शत्स्यन्ति AV. 11,3,37. partic. शन्न, शन्नमल zur Erklärung von शत्मलि Nir. 11,3. n. *Abfall:* कृषिष्य° Kâṭ. Çr. 15,1,10 (Manow. zu VS. 9,25). 17,1,23. — Vgl. शद्, शाद्.

— caus. शादयति P. 7,3,42. *treiben:* गाः शादयति गोपालः Schol. Vop. 18,14.

— intens. s. u. 1. शद्.

— व्यव *wegfallen, zerfallen* Çat. Br. 2,1,2,6. — Vgl. व्यवशाद्.

— सा (सीदा) Vop. zu Dhâtup. 20,25.

— परि, partic. °शन्न *ab —, daneben gefallen:* Körner Âçv. Çr. 2,6,3.

— प्र s. प्रशद्यन्.

शर्द् (von 2. शद्) gaṇa श्वलादि zu P. 3,1,140. m. 1) *Abfall;* s. पर्णा°. — 2) N. eines Ekâha Âçv. Çr. 9,8,21. उपशद् desgl. 22; vgl. शोपशद्. — 3) = फलमूलादि Sidd. K. im ÇKDr.

शर्दि Uṇâdis. 4,65. m. = जिष्णु und तडित् H. an. 2,461. = घर्म्मोधर् und जिष्णु Med. r. 69. = शर्करा Uṇâdis. = कृत्तिन् (vgl. शत्रि) Uṇâdis. im ÇKDr.

शर्दु adj. von 2. शद् P. 3,2,159. m. unter den Namen Vishṇu's H. ç. 75.

शद्दला f. N. pr. eines Flusses Çâṇ. 1,55.

शनक m. N. pr. eines Sohnes des Çambara Hariv. 9253. सेनक die neuere Ausg.

शनकावलि *Scindapsis officinalis Schott.*, m. ÇKDr. nach Çabdaṛ. °ली f. Wilson nach ders. Aut.

शनकैस् (demin. von शनैस्) adv. *sachte, sanft, leise, langsam, in aller Ruhe, in gemessener Weise, gemächlich, nach und nach, allmählich:* शनैरिव शनकैरिवेन्द्रायेन्दो परि स्रव ṚV. 9,80,3. शनकैः, उच्चैः Kâm. 27, 3. Maitrâjan. 6,26. M. 3,92. 224. 228. 7,108. 146. 172. 10,63. MBh. 1, 5023. 5179. 3,1779. 2177. 2706. 11005. 5,7294. 7,669. 13,3501. R. Gorr. 2,66,9. Mucc. 67. Çiç. 9,26. Ratnâv. 27,10. Spr. (II) 1378. 2665. Kathâs. 40,29. 62,237 (शकनैः gedr.). Râǵa-Tar. 1,288. 6,15. 8,1632. Bâlar. P. 1,6,23.

शनपर्णी f. *eine best. Pflanze,* = कटुकी Çabdaṛ. im ÇKDr.

शनि m. = शनैश्चर *der langsam Einherschreitende,* Bez. *des Planeten Saturn* (eines Sohnes des Sonnengottes) AK. 1,1,2,27. Taik. 1,1, 94. H. 120. Hâr. 12. Verz. d. Oxf. H. 184,b,9. R. Gorr. 2,40,10. स्वेर्व्यापारमादत्ते प्रदीपो न पुनः शनिः Spr. (II) 3341. (I) 2949. Varâh. Bṛh. S. 97,2. 103,5. 6. Gaṇit. Madhjam. 1. VP. 240. Verz. d. Oxf. H. 86,b,44. 339,b,14. 23. Verz. d. B. H. No. 878. °स्तोत्र 1274. °चक्र Grahastutja im ÇKDr. °प्रसू f. *die Mutter* Çani's d. i. Khâjâ Bûdhra im ÇKDr. Çani als Sohn des Atri Viṣṇ-P. in VP. 83, N. 4.

शनिप्रिय n. *Sapphir* (नीलमणि ÇKDr.) Çabdaratn. im ÇKDr.

शनिवार (शनि + 4. वार) m. *Saturns Tag, Sonnabend* Journ. of the Am. Or. S. 6,177. Tirthâdity. im ÇKDr.

शनैर्गङ्गम् (von शनैस् + गङ्गा) adv. wo *die Gaṅgâ langsam fliesst* P. 2,1,21, Schol.

शनैर्मेरु (शनैस् + मेरु) m. *langsames —, beschwerliches Harren* Çiṣ. Saṅk. 1,7,43. °मेरिन् adj. *daran leidend* Suçr. 1,272,14. 2,78,1.

शनैश्चर (शनैस् + 1. चर) 1) adj. *langsam einherschreitend* Med. 3 vj. 82. पोदो Spr. (II) 2169. — 2) m. = शनि *der Planet Saturn* (ein Sohn des Sonnengottes) AK. 1,1,2,27. Taik. 1,1,94. 3,3,209. H. 120. Halây. 1, 48. MBh. 2,447. 3,148 (unter den Namen der Sonne wie auch andere Planeten). 16171. 5,4840. 12,13092. Hariv. 611. 12794. 14076. R. 2,32, 15. 5,5,23. 83,2. Spr. (II) 2169. Varâh. Bṛh. S. 9,40. 10,18. 11,18. 46,11. 96,17. 103,2. Bṛh. 3,5. Lagadh. 2,3. Kathâs. 48,71. Râǵa-Tar. 4,583.

VP. 59. 266. Mlav. P. 52,11. 78, 33. 106,16. Bulc. P. 5,23,7. 6,6,39. 8,13,10. Verz. d. Oxf. H. 25,*b*,24. 26,*a*,1. 34,*b*,41. 69,*b*,5. 328,*a*, No. 777. fg. 330,*a*,25. °पूजा Verz. d. B. H. No. 1264. Verz. d. Cambr. H. 34. Paṇḍar. 30,19. °संवत्सर Ind. St. 16, 303. शनैश्चर so v. a. °वार (s. शनिवार) *Sonnabend* Spr. (II) 2419.

शनैस् und शनैस् (Cat. Br.) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. = शनकैस् AK. 3,3,17. H. 1542. Med. avj. 82 (स्वैरे und शनैर्यो). शनैश्चिन्मत्तः ṚV. 8,45,11. 80,3. उच्चैः, शनैः Cat. Br. 7,1,2,18. 11,4,2,6. 5,4,2. वातो ऽप्सु शनैर्वाति Paṇḍav. Br. 7,9,11. M. 1,15.2,164.3,217. fg. 4,242. 7,181. 185. 8,177. 396. Jiṭ. 2,43. 231. MBu. 1,6008. 7720. 3,2937. 5, 7189. R. 2,34,13. 52,69. R. Gorr. 2,52,9. 3,1,3. Kumāras. 3, 59 (शणैः godr.). Vikr. 56. Spr. (II) 3090. 3574. 3611. 3772. 4295. Varān. Bṛh. S. 44,16. Kathās. 4,13. 16,15. 18,191. 51,13. Rāja-Tar. 5,470. Bulc. P. 1,6,17. 4,28,36. Wiederholt M. 3,222. 6,81. 9,229. MBu. 1,5946. R. 2, 40,22. Spr. 2930. fg. Paṇḍar. 35,6. 98,24. 212,1. Hit. 12,4. Vet. in LA. (III) 20,7. compar. शनैस्तराम् Ait. Br. 3,7. 45. Āçv. Çr. 5,1,1. — शनैस् ist wie उच्चैस्, नीचैस् ein instr. pl.; der nicht erhaltene Stamm शन steht wohl mit 2. शम् in verwandtschaftlichem Verhältniss.

शन्तं (von 5. शम्) adj. P. 5,2,138. Vop. 7,31. — Vgl. गिरि°.

शंतनु (5. शम् + तनु) 1) adj. *der Person heilsam*; s. शंतनुत्व. — 2) m. a) N. pr. α) eines Fürsten mit dem patron. Kauravja (im Epos und später ein Sohn Pratipa's und Vater Bhishma's) Nir. 2,10. Taik. 2,8, 10. ṚV. 10,98,1. 2. 7. Verz. d. B. H. No. 47. MBu. 1,872. 3780. 3797. fgg. 3882. 5,3085. 3945. 13,267. 3041. Harīv. 1767. 1819. 2986. 3007. VP. 4, 20,5. fgg. Bulc. P. 9,21, 30. 22,12. fgg. 12,2, 37. Hall in der Einl. zu Viṣṇup. 41. Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,4. 80,*b*,26. 41. 83,*a*,16. Wird im MBu., in der ältern Ausg. des Harīv., im VP. und in Taik. in Folge einer falschen Etymologie (mit शान्त in Verbindung gebracht) शांतनु (शान्तनु) geschrieben. शान्तनूत्व (aus metrischen Rücksichten der Auslaut verlängert) Bez. Bhishma's MBu. 5,1847. — β) zweier Männer aus späterer Zeit Verz. d. Oxf. H. 44,*a*,5. 148,*a*,8. — *b*) *eine best. geringere Körnerfrucht* (कुधान्य) Suçr. 1, 196, 21. 197, 6. शान्तनु an beiden Stellen. — Vgl. शांतनव.

शंतनुत्व (von शंतनु) n. 1) *das der Person Heilsamsein* TS. 3,2,8,1. — 2) nom. abstr. von शंतनु 2) a) MBu. 1,3799.

शंतम (superl. von 5. शम्) adj. *wohlthuendst, erfreulichst, heilsamst* ṚV. 1,16,7. वोचेम शन्तमं हृदे 43,1. वरुणाय शन्तमः सोमः 136,4. देवपानानि 10,53,9. भेषज 2,33,2. गिर् 5,43,8. ब्रह्माणि 73,10. 7,51,1. Indra Vaikh. 5,8. AV. 7,68,2.3. तनू 18,4,10. VS. 16,2. हृर्दिम् 13, 19. Bulc. P. 10,29,2. 31,13. 33,21. 11,31,28.

शन्ताची s. u. शन्तति 1).

शंतति (von 5. शम्) 1) adj. *wohlthuend* P. 4,4,142. याभिः शन्तातौ मवंवो दृदाभुर्वे ṚV. 1,112,20. सा शन्तति मयस्करत् 8,18,7. SV. v. l. TBr. 3,7,10,4 liest शन्ताची. — 2) f. *das Wohlthun* P. 4,4,144. या वामगं शन्तातिभिः ṚV. 10,137,4.

शन्तातीय (von शन्तति) adj. *der das Wort* शम् *enthaltende Vers* oder *Lied* ṚV. 7,35,1. fgg. Āçv. Gṛhy. 2,8,11. 9,7. 4,8,39. 43. Kauç. 9.

शान्तं (von 5. शम्) adj. P. 5,2,138. Vop. 7,31.

शन्तिवं (शन्तिऽव) adj. *wohlthuend, freundlich* AV. 12,1,39. statt °वान् 3,30,2 ist °वा oder °वाम् zu vermuthen. Zur Bildung des Wortes vgl. घर्जिवं, राज्ञावं.

शन्तुं (von 5. शम्) adj. P. 5,2,138. Vop. 7,31.

शन्तं (wie oben) n. *das Wohlthätigsein* TS. 5,1,6,2. TBr. 1,1,2,3. Kāṭy. 36,3.

शन्ध m. = षण्ढ *Eunuch* H. 362, Schol.

शप्, शंपति, °ते und शंप्यति (nur in Bhaṭṭ.) Dhātup. 23, 31. 26, 59 (आक्रोशे). शशाप, शेपे; शप्स्यति und °ते (Kār. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2, 10). शपिष्ये MBu. 3,17086. R. 7,105,6. यशाप्सीत्, यशात; शप्तुम् (शपितुम् MBu. 3,2249. fg.), शप्त्वा (शपित्वा MBu. 7,8309). Die auffällige Form शाप्त in मा नः शाप्त जनुषो मुभागाः TS. 3,3,6,1 verstösst gegen das Metrum und ist eine Verderbniss; vgl. AV. 9,4, 24. Pāṇ. Gaṇ. 3,9 liest माप्त, Çākaṭ. Gaṇ. 3,11 मा वशाप्त, beides fehlerhaft. 1) *verfluchen* (mit acc.), gewöhnlich act. ṚV. 1,41,8. 161,12. 10,87,13. यद्वो हिषं हृपाति नः AV. 1,19,4. यः शशाप शपनेन 28,3. 8,37,3. 16,6,3. TS. 2,6,6, 1. Kāṭy. 25,7 in Ind. St. 3,467. Çat. Br. 14,9,4,11. Paṇḍav. Br. 6,5, 11. ग्रामयो यानि गेहानि शपन्ति Spr. (II) 2407 (M.). नैनमन्वागमिष्यामि कदाचिदुपेत्स माम् MBu. 1,1917. 3951. 3,1864. 2249. fg. 2299. 2840. fg. 5,7139. 7332. शपथं वां पराभवम् 6,1581. 14,1557. R. 1,27,11 (शप्तवान्). 37,22. 38,8. 64,11. 2,63,42. R. Gorr. 1,49,29. 4,20,14. Rāgān. 1, 77. 8,79. 9,78. Kathās. 1,87 (विद्वलं तं zu schreiben). 6,99. 17,145. 21,24. Rāja-Tar. 1,155. Bulc. P. 1,18,44. 3,3,24. 4,2,17. 13,19. 7,13, 72. 9,20,36. त्रिसत्येनात्मानं शपामि Paṇḍav. ed. orn. 64,7. 17. med. AV. 7,69,2 (diese Stelle ist wie VS. 6,17 ungenaue Nachbildung von ṚV. 1,23,22). MBu. 1,4583. 3,351. 2845. 17086. 14,1536. R. 2,64,31. शपथैः कष्टैः शपमानः 75,40. fg. 7,105,6. Spr. (II) 3371. *Jmd* (acc.) *schmähen*, act. Jiṭ. 2,205. Bulc. P. 4,5,20. 21 (शप्यमान pass.). 7,1,18. med. Spr. (II) 4231. *Jmd fluchen*, med. mit dat. AV. 5,30,3. *Jmd schmähen*, act. mit dat. Bhaṭṭ. 17,4. 48. — 2) med. (Vārtt. 8 zu P. 1,3,21. Vop. 23,7) *sich verfluchen* so v. a. *mit einem Schwur betheuern, geloben*; mit dat. der Person (P. 1,4,34. Vop. 5,15), der man Etwas versichert, und mit instr. der Person oder Sache, bei der man schwört: शेपानो ऽस्मि नमुचये न त्वा हिंसा न नक्तं कृनानि *ich habe mich gegen den Nam. verschworen: nicht will ich dich* u. s. w. Çat. Br. 12,7,3,1. यद्वरुणोति शपामहे *wenn wir bei Varuṇa's Namen schwören* VS. 6,22 (vgl. TS. 1,3,14,1). सत्येन ते शपे MBu. 1,5178. धर्मेण सुकृतेन च । इष्टेन च शपे — सूदयिष्यामि रात्रसम् 3,11505. 5,433. Harīv. 1282. R. 1,58,19. 2,21,16. 34, 26. 47. 48,21 (45,27 Gorr.). 51,4 (48,4 Gorr.). R. Gorr. 1,60,22. 2,9,23. 25. 18,54. 19,5. 27,5. 35,50. 4,5,6. 5,34,7. 6,101,7. 7,107,6. Bhaṭṭ. 8,23. 74. Auch act. R. Gorr. 2,121,9. 4,6,22. 7,97,17. Mlav. P. 23,90. Ghaṭ. 22. शपाम तीव्रैः शपथैः MBu. 13,1560. mit acc. st. dat.: यदि सत्येन ते शपे R. Gorr. 2,16,10. mit यदि, welches im Deutschen durch *dass nicht* (*sich verfluchen, wenn*) zu übersetzen ist; med. Prab. 57,10. act. Spr. (II) 3080. — 3) med. in Verbindung mit शपथम् (शपथान्) *eine Verwünschung aussprechen* R. Gorr. 2,79,25. *einen Eid schwören*: नृपे M. 8, 110. MBu. 7,8509. 13,4561. यदा शेप उतानृतम् *einen falschen Eid schwören* ṚV. 1,23,22. act.: शपथानशप्यत् Bhaṭṭ. 3,32. — 4) med. *Jmd be-*

schwören, obsecrare; mit acc.: सुकृतेन त्वा शपे Harıv. 10396. mit dat.: राघवेण महात्मना। शपे ते जीवनार्केण ब्रूहि यन्मनसेच्छसि R. 2,11,7. — 5) med. mit acc. der Sache um *Etwas flehen:* तेन रामेण कैकेयि शपे ते वचनक्रियाम् so v. a. *bei diesem Rāma beschwöre ich dich, du mögest das Wort wahr machen,* R. 2,11,8. — 6) partic. a) शप्त α) *verflucht:* eine Person MBu. 3,2612. 5,7542. 12,4302.13,188. Bhāg. P. 1,18,41. 48. 6, 17,16. विप्र° 7,8,36. शापमयद् R. 1,48,13 (49,14 Gorr.). वन 4,48,13. — β) *beschworen, obsecratus:* मातरं रक्ष कैकेयीं मा रोषं कुरु तां प्रति। मया च सीतया चैव शप्तो ऽसि R. 2,112,37. fg. — γ) n. *Fluch* TBr. 3,12, 8,1. Kāṭh. 25,9. *Schwur, eidliche Versicherung* R. Gorr. 2,123,12. — b) शपित α) *verflucht:* अन्योऽन्यं शपितौ R. 7,55,21. — β) Kathās. 98, 33 fehlerhaft für शापित (caus.).

— caus. शापयति 1) *beschwören, adjurare, incantare:* Dämonen AV. 4,18,4. Ait. Br. 8,19. — 2) *durch einen Schwur bethören, beschwören lassen:* सत्येन शापयेद्विप्रं तत्रियं वाहनायुधैः। गोबीजकाञ्चनैर्वैश्यं भूद्रं सर्वैस्तु पातकैः॥ M. 8,113. सुकृतैः शापिताः स्वैः स्वैः 256. — 3) *Jmd beschwören (obsecrare); Jmd Etwas dringend an's Herz legen, Jmd für Etwas verantwortlich machen;* mit acc. der Person und instr. der Sache, bei der man schwört, die man Einem an's Herz legt, für die man Einen verantwortlich macht. In dieser Bed. nur das partic. pass. शापित zu belegen: कामया (so ed. Bomb.) शापितो राजन्यथा वक्तुमर्हसि MBu. 13, 482. R. Gorr. 2,121,6. 123,10. 3,30,18. 7,47,9. शापितासि मम प्राणैः Harıv. 7102. R. 2,21,48. शापितासि मम प्राणैः पुनरागमनेन च R. Gorr. 2,18,52. 58,21. 4,15,13. 7,45,21. Mṛicch. 55,21. Kathās. 86,67. Mālav. P. 23,88. स शापितो ऽस्मद्देवेन यो लेखं वाचयेत्पथि Rāja-Tar. 3,208. शापितासि मालति (wohl so zu lesen) लावङ्किकावलोकितयोर्वितेन यदि वाचा न कथयामि Mālatīm. 129,10. Kathās. 98,32 (शापितो zu lesen). शापितो ऽसि न वदि चेत् 5,71. In comp. mit dem im instr. gedachten Begriffe: समागमनशापिताः MBu. 3,27. विक्रमादित्यदेवाङ्घिस्पर्शशापिता। सं मया पद्मनाभाय ममात्मानं गमिष्यसि॥ so v. a. *dann mache ich dich dafür verantwortlich, dass ich mich an* Vikr. *wende* Kathās. 120,127.

— intens. शंशप्यते Vop. 20,8.

— अनु *Jmd verfluchen:* °शप्त MBu. 16,14.

— अभि dass.: स तानभ्यशपत् MBu. 8,2081. Kull. zu M. 3,58. °शप्त *verflucht* Spr. 5205. MBu. 13,7219 (nach der Lesart der ed. Bomb., °शस्त ed. Calc.). Harıv. 710. R. 4,40,44. Kumāras. 4,41. Kathās. 70,36. देवाभिशप्त 57,24. *geschmäht* Harıv. 913 (die ältere Ausg. °शस्त). 6430 (die neuere Ausg. °शस्त). R. 2,41,3 (ed. Bomb. °शस्त). Kull. zu M. 8, 275. मिथ्याभिशप्ता *fälschlich beschuldigt* Pārāś. 23,15. — Vgl. अभिशाप, अभीशाप und मिथ्याभिशाप. — caus. *Jmd beschwören, obsecrare:* सत्येन माभिरत्न त्वं वरुणेत्यभिशाप्य कम् Jāān. 2,103. मत्रेघासं परिगृह्याभिशाप्य च R. Gorr. 2,9,29.

— अव *Jmd verfluchen:* °शप्त MBu. 13,7221.

— परि *Jmd schmähen:* पर्यशाप्सीत् Bhaṭṭ. 4,33. °शप्त n. *Fluch* Pāṇ. Gaṇ. Bā. 14,6,8 in Ind. St. 10,32, N. 2.

— प्रति *Jmd wieder verfluchen:* mit acc. der Person R. 7,65,30. mit gen. Bhāg. P. 6,17,37. — Vgl. प्रतिशाप.

— सम् *Jmd verfluchen,* act. Kathās. 38,121. °शप्तवान् MBu. 8,1969. — Vgl. संशप्तक.

शप (von शप्) m. 1) = शपथ, शपन H. 262. Vgl. शाप. — 2) N. pr. eines Mannes gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110.

शपण्ड v. l. für शपण्ड gaṇa इषुकार्यादि zu P. 4,2,54. शपण्डिभक्त ebend.

शर्पत्थ (von शप्) Uṇādi. 3,113. Vop. 23,7. m. (nur dieses zu belegen) und n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. = शपन AK. 1,1,8,10. H. 262. = कार (?) H. an. 3,322. 1) *Fluch* Nir. 7,3. RV. 10,87,15. AV. 2,7,1. fgg. 3,9,5. 4,9,8. 18,7. 19,7. 5,14,5. 11,1,25. TBr. 3,10,8,1. शपथैः कष्टैः शपमानः R. 2,75,40. fg. शपथान्कृच्छ्रान् शपमानः R. Gorr. 2,79,25. कुर्वन् 26. मम देवगुरुकृतः शपथः स्यात् Pañcat. 62,2. *Schmähung* H. an. — 2) *Eid, Schwur* AK. 3,4,24,149. H. an. Halāy. 5,62. सत्यं शपथेनापि लम्भयेत् M. 8,109.112.115.190. MBu. 7,693. 13,2363. Spr. (II) 1780. (I) 2368. 2952. fgg. °पथित Kathās. 32,51. Daçak. 83,12. Verz. d. Oxf. H. 86,a,4. शपथापोपचक्रमुः MBu. 13,4513. शपथं शप् 7,2509. 13,4561. शपथान तीक्ष्णैः शपथैः 4560. शपथं कृ M. 8,110. fg. Jāān. 2,235. MBu. 7, 690. R. 7,95,6. पुनरागमनाय Hit. 68,5. कृत्वान्योऽन्यापरित्यागशपथम् (so zu lesen) Kathās. 32,46. (ताम्) शपथैर्नियोज्य Vaitān. Bhār. S. 88,41. सर्व °पूर्वकं वक्ति Verz. d. Oxf. H. 156,a,36. तमुवाच शपथोत्तरम् *unter Schwüren* Kathās. 7,49. 10,52. 26,102. 37,30. इत्याभुक्ता सशपथम् 61, 76. Pārāś. 24,3. दत्तशपथा adj. Kathās. 31,42.

शपथपौवन adj. (f. ई) *Fluch abwehrend* AV. 4,17,2.

शपथपौयन adj. (f. ई) *Fluch aus dem Wege räumend* AV. 2,7,1.

शपथीय (von शपथ), partic. °वत् *Flüche sprechend* AV. 5,14,5. 19,1,5.

शपथेय्य (wie oben) m. *Fluchen* AV. 5,31,12.

शपथ्य (wie oben) adj. *auf Fluch beruhend* RV. 10,97,16.

शपन (von शप्) n. = शपथ AK. 1,1,8,10. H. 262. *Fluch* Taitt. 3,2, 9. AV. 1,28,3.

शपनेतर (von शपन) adj. *zum Fluchen geneigt* Çat. Br. 3,3,4,24.

शप्त 1) adj. und n. s. u. शप्. — 2) m. *Saccharum cylindricum* Çabdam. im ÇKDr.

शप्तर् (von शप्) nom. sg. *Fluchor* AV. 2,7,5. 5,37,1. 2.

शप्य partic. fut. pass. von शप् P. 3,1,98, Schol.

शर्क m. (nur dieses zu belegen) und n. nach den Lexicogrr. = खुर AK. 2,8,2,17. H. 1214. Halāy. 2, 286. am Ende eines adj. comp. f. आ gaṇa केशादि zu P. 4,1,55. शर्की f. gaṇa अजादि zu P. 4,1,45. 1) *Huf:* des Rosses RV. 1,116,7. 117,6. 163,5. शफानीव गर्भुराणा तोभिः 2,39,3. 5,6,7. VS. 25,3. अश्व° Çat. Br. 1,2,2,10. 13,3,4,4. Kāty. Çr. 20,6,1. 9. चतुः° TBr. 3,8,2,1. सु° Vaitān. Bhār. S. 66,1. — 2) *Klaue:* des Rindes H. an. 2,302. Med. ph. 3. AV. 3,4,16. 7,10. 10,9,23. 10,1. 12,3,19. Ait. Br. 2,11. Jāān. 1,204. des Schafs und Bocks TS. 2,1,1, 5. कृष्ण° Kāty. 24,1. घण्टा° Çat. Br. 5,2,2,15. TBr. 1,2,6,26. TS. 5,4, 11,4. धेनुका° 6,1,6,7. Çat. Br. 3,3,2,16. धनेक° Vārtt. zu P. 1,2,73. °मत् *als Gefäss gebrauchte Klaue* Çat. Br. 13,8,2,13. — 3) (nach den 8 Klauen) so v. a. *Achtel* (vgl. पाद् *Viertel*) RV. 8,47,17. TS. 5,1,10,1. Çat. Br. 3,3,2,2. — 4) *Kralle* VS. 12,4. — 5) *ein hölzernes Geräthe um den Topf vom Feuer zu heben* Ait. Br. 1,22. Çat. Br. 14,2,2,16. Liṭ. 1,6,32. — 6) n. *Wurzel* H. an. Med. — 7) शर्को des Vasishṭha heissen zwei Sāman Kāty. Çr. 26,5,18. Liṭ. 1,6,32. — Vgl. एक°

(auch Bnlc. P. 3,10,23), गो°, द्वि°, मुख°, वसिष्ठ°, वि°.

शर्कक (von शर्क) m. *eine best. Pflanze* AV. 4,34,5. — Vgl. गोशर्क.

शर्कव्युत adj. von *Hufen aufgeworfen:* Staub ṚV. 1,33,14.

शर्कर 1) m. f. (ई) Taitt. S. 3,5,19. *eine Karpfenart, Cyprinus Sophore Ham.* (ein kleiner und sehr beweglicher Fisch, der in seichtem Wasser lebt) AK. 1,2,8,18. masc. Taitt. 1,2,18. H. 1346. Hin. 187. Mṛcch. 41. Spr. (II) 1918. Kathâs. 25,49. 27,125. fem. Hall. 3,36. Vikr. 6, 34. Ṛt. 3,3. Kumâras. 4,39. Çiç. 8,24. Spr. (II) 39. 3160. (I) 1993. Varâh. Bṛh. S. 36,6. दधार °रूपं भगवान्हरिः Bnlc. P. 8,24,9. 12. 13. 15. Verz. d. Oxf. H. 16,*a*,30. Am Ende eines adj. comp. शर्कर Spr. 1970. Als *ein grosser Raubfisch* erscheint शर्कर Kathâs. 123,110. Hier und da mit स geschrieben. — 2) f. ई wohl *eine best. Pflanze:* पूति° Kâuç. 27. — Vgl. मक्षा°, राज्ञ° und शार्करिक.

शर्कराधिप (शर्कर + प°) m. *ein best. Fisch, Clupea Alosa* (इल्लिश) Taitt. 1,2,18.

शर्करीय adj. (चतुर्थ्यर्थेषु) von शर्कर gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90.

शर्करवस् (von शर्क) adj. *mit Hufen —, mit Klauen versehen* ṚV. 3,39, 6. 5,83,5.

शर्कशस् (wie eben) adv. *klauenweise* d. h. *in Achtein* Pâraśav. Bh. 18, 1,8. 19,3,4. 23,24,1. 24,8,2.

शर्कात (शर्क + अत *Auge*) m. N. pr. eines Mannes; vgl. शार्कात.

शर्काहन् (शर्क + घा°) m. *Hufzerbrecher*, Bez. von Dämonen: अङ्कुशे येनारुजासि शर्काहन्ः ṚV. 10,44,9. यातुधान 87,12.

शर्कारु (शर्क + ऊरु) adj. (f. ऊ) P. 4,1,70. Vop. 5,30.

शर्वर Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,131. 1) adj. *a*) = शबल *bunt, scheckig* Ratnam. 152. — *b*) *einem Çabara gehörig* u. s. w.: करोति भगवान्पशुमाठव्यशबराणामपि (so ed. Bomb.) MBh. 13,733. es ist vielleicht °शा° zu lesen. — 2) m. *a*) pl. N. pr. eines wilden Volksstammes im Dekkhan; sg. *ein Mann dieses Volksstammes;* später bezeichnet das Wort *einen Wilden* überhaupt und wechselt mit किरात, पुलिन्द, भिल्ल. AK. 2,10, 21. H. 934. an. 3,605. Med. r. 220. Hall. 2,444. Aṭṭ. Bh. 7,18. Çiç. Ça. 15,26,6. AV. Paric. in Ind. St. 10,319. MBh. 1,6633. 6,2084 (nach der Lesart der ed. Bomb., शरव ed. Calc.). 9,2305. 12,2429. 3620. 13, 733. 2158. 14,833. Hariv. 3274. Varâh. Bṛh. S. 5,38. 9,15. 29. 10,15. 13. 14,10. 16,1. 33. 32,15. 87,10. Bṛh. 11,20. Mâlav. P. 57,47. Çâṅk. 1, 22. P. 5,3,114, Schol. Spr. (II) 2643. Çiç. zu Kâṭh. Up. S. 23. Kathâs. 9,74. fgg. 10,132. fgg. 22, 65. fgg. 32,58. fgg. 70. 80,4. 55,219. fgg. 59, 44. fg. 71,4. 10. fgg. 98,15. 18. 101,239. 123,84. 87. 84. Râja-Tar. 2,33. fgg. Bnlc. P. 2,7, 46. Nalod. 3,27. Wilson, Sitzungsb. S. 193. स्मर° Spr. (II) 1130. शबरालय AK. 2,2,20. Hall. 2,106. शबरावास H. 1002. मध्यदेशशबरिष्कृत MBh. 13,6215. शबरी R. 1,1,55. fgg. (59. fgg. Gorr.). 3,21. 3,76,20. 77,6. fgg. 5,108,30. Uttarar. 14,2 (19,14). Wecra, Rimay. Up. 297. Spr. 2213. Kathâs. 123,49. Daçak. 116,17. Verz. d. Oxf. H. 29,*b*,3. 74,*b*,16. Hall 203. Häufig (aber nie in den Bomb. Ausgg.) ungenau शवर geschrieben. — *b*) N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. mit dem patron. Kâkshîvata, Liedverfassers von ṚV. 10, 169. = शबरस्वामिन् (s. °भाष्य). बौद्ध Verz. d. Oxf. H. 250,*b*,7 (vgl. शबल). — *c*) Bein. Çiva's H. ç. 43. H. an. Med. — *d*) *Wasser* H. an. Med. — *e*) = कुस्त und शास्त्रविशेष Uṇâdis. im ÇKDa. — Vgl. पत्रशबर, पण्ड° und शाबर.

शबरक (von शबर) m. *ein Wilder* Spr. (II) 4149.

शबरताम्बु N. pr. einer Oertlichkeit; s. शाबरताम्बुक.

शबरभाष्य n. *der von Çabarasvâmin verfasste Commentar* Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,45. — Vgl. शाबरभाष्य.

शबरलोध्र m. = श्वेतलोध्र Ratnam. im ÇKDa.

शबरसिंह m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 134,*a*,47.

शबरस्वामिन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 220,*a*, No. 526. Colebr. Misc. Ess. 1, 297. fg. Hall 169. Uééval. zu Uṇâdis. 4,117.

शर्बल Uṇâdis. 1,107. 1) adj. (f. ई) P. 4,1,40. या MBh. und auch sonst. *a*) *scheckig, bunt* AK. 1,1,8,26. 3,4,8,24. H. 1398. Halây. 4,51. 56. Jama's Hunde, Rinder u. s. w. ṚV. 10,14,10. AV. 8,1,9. VS. 24,10. TS. 2,1,8,5. 5,7,10,1. 7,3,18,1. TBr. 1,7,8,6. Pâr. Gṛhy. 1,16. Ind. St. 2,295. fgg. सामे सुपक्के शबले विपक्वे यो मा पिशाचो यशनि ददम्भ AV. 5,20,6. Kâṭh. Up. 8, 12. Suçr. 1,274,17. यस्याः MBh. 7,972. सारङ्गशबलाः 971. Varâh. Bṛh. S. 24,35. 30,12. 14. 34,2. 67,9. 82,2. °स्तन Bnlc. P. 3,23,28. मूषिक Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,20. स चक्रे वसुधां कोर्णां शबलैः कुसुमैरिव (शबलां कुमुदैरिव ed. Calc.) MBh. 6,2295. पृथिवी इव कुसुमैः शबला (so beide Ausgg.) इव 9,1511. घनान्धकारं गिरिगह्वराणां दंष्ट्रामयूखैः शबलं प्रकुर्वन् Ragh. 2,46, v. l. देशः मलयद्रुमसेव्यशबलैः । कूलनीभिश्च शबलः Râja-Tar. 5,68. पुष्प° (किंशुक, वृक्षाशोक, तरु, प्रस्तर) MBh. 6,1683. 2216. 4691. 9,1415. R. 5,83,9. 7,42,12. 15 पृथिकाशबलकेशी Vikr. 109. प्रवालपत्र° (पादप) Hariv. 4028. सतडित्यताकशबलैर्मेघैः Mṛcch. 84,1. मलतैलपङ्कशबलैर्वेणीपदैः Spr. (II) 112. केशास्थिशकलशबला (वसुधा) 4300. छायामभोजिनीनामलिकुलशबलाम् (I) 2013. लूतापराङ्ग° Varâh. Bṛh. S. 46,79. — *b*) *bunt durch Etwas* so v. a. *gemischt —, versehen mit Etwas* (schon mehrere Stellen unter *a*) konnten hierher gezogen werden): कुसुमशबलैर्विषागतैः Spr. 5391. नीलोर्ध्वरेखाशबलेन दन्तहयेन Ragh. 5,44. शकुनिशबलनीडानीवाकः Mâlatîm. 143,12. प्राणिनः सुखिन एव सर्वेश्वरः न दुःखशबलान् Sarvadarçanas. 120,22. 121,1. अविद्याशबलं ब्रह्म Weber, Rimay. Up. 335. Cowell, Kausn. Up. S. 149. न केवलं ब्रह्मभूयादानकारणं किं तु स्वयंप्रकाशं ब्रह्म शबलम् 24. परमात्मनः पञ्च रूपाणि शुद्धशबलविराड्डिभुदेवतामंज्ञानि Verz. d. Oxf. H. 300,*a*, No. 737. — *c*) *entstellt, verändert:* संशब्द Bnlc. P. 5,3,6. चित्तया मुखम् 6,14,21. वैकुण्ठचित्तशबलचेतन 7,4,39. °कृदय 10,90,20. — 2) m. N. pr. *a*) eines Schlangendämons MBh. 1,1552. — *b*) eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 250,*b*, 19 (aber शबर 7). — 3) f. या *eine scheckige Kuh* Bhar. zu AK. nach ÇKDa. als N. pr. einer Kuh R. 1,52,21 (53, 23 Gorr.). 7,53,13. — 4) f. ई *eine scheckige Kuh* AK. 2,9,68. H. 1266, Schol. *die Wunderkuh* TS. 4,3,11,5. Pâraśav. Bh. 21,1,5. 3,1. °होम *ein best. Opfer* s. Lâṭy. 9,8,1. Ind. St. 5,437. fgg. — Wird häufig (aber nie in den Bomb. Ausgg.) शबल geschrieben. Vgl. भाव° (भावशबलता dass. Prâtiçâkh. 89,*a*,6. 8), लोहित°, शाबलीय, शाबल्य.

शबलता (von शबल) f. *Gemischtheit, Gemisch:* भावस्य Sâm. D. 244. 249. भाव° Prâtiçâkh. 160,*a*.

शबलत्व (wie eben) n. dass.: यानन्दशोकशबलत्वमुपैति चेतः Mâlatîm. 161,5.

शबलात (शबल + घत *Auge*) m. N. pr. eines Ṛshi MBu. 13, 1764. — Vgl. शतबलात.

शबलाश्व (शबल + अश्व) m. N. pr. eines Mannes (*scheckige Rosse habend*) Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56, 30. ein Sohn Avikshit's MBu. 1, 3741. pl. Bez. der Kinder Daksha's von der Vairaṇî Harîv. 135. VP. 1, 15, 97. Bhâg. P. 6, 5, 24.

शबलिका (von शबल) f. *ein best. Vogel* Verz. d. B. H. No. 897. सब° die Hdschr.

शबलित (wie oben) adj. *scheckig* —, *bunt gemacht* Rîâ-Tan. 2, 167.

शबलीकृत (von शबल + 1. कृ) adj. dass. Râgat. 13, 36. Varâh. Bṛh. S. 48, 12.

शब्द Unâdis. 4, 97. m. Sidd. K. 250, *a*, 3 (n. Durgâsiṃhadêv. in Ind. St. 2, 1). am Ende eines adj. comp. f. आ MBu. 4, 932. 9, 3052. Kumâras. 1, 1, 46. Çiç. 169. Kathâs. 25, 125. 1) *Laut, Schall, Ton, Stimme, Geräusch* Nâgân. 1, 11. Nir. 1, 3. 10, 13. AK. 1, 1, 4, 16. ●, 1. Trik. 1, 1, 113. H. 1399. Halâj. 1, 138. VS. 30, 19. यः कश्च शब्दो वागेव सा Çat. Br. 14, 4, 3, 10. 5, 4, 11. 6, 2, 6. दुन्दुभेः 5, 4, 7. काक° Çâṅkh. Gṛhj. 5, 5. वीणा° 4, 7. वादित्र° Pân. Gaṇ. 2, 11. Kâç. Ça. 13, 3, 18. Liṭ. 6, 10, 8. उपरतेषु शब्देषु Âçv. Gṛhj. 4, 6, 7. शब्दोत्पत्ति TS. Prât. 2, 1. शब्दः प्रकृतिः सर्ववर्णानाम् 22, 1. वर्णात्मकः शब्दो वाच उत्पत्तिः 23, 3. VS. Prât. 1, 7. Amṛtan. Up. in Ind. St. 3, 24. fg. M. 1, 75. 12, 98. Suçr. 1, 35, 20. 313, 3. 2, 176, 18. Kâm. 2, 1, 23. 2, 1. Tattvas. 11. Bhâg. P. 2, 5, 23. वेदे न च संगुक्तान् शब्दस्पर्शरसान्कम् R. 2, 64, 67. Vet. in LA. (III) 17, 19. °मात्रान्न भेतव्यम् Spr. 2955. शब्दं सहन्ते मृगाः Çiç. 14. मधुरान्विशाख शब्दान् 99. त्रयः शब्दाः Mâlav. P. 23, 36. sieben MBu. 12, 6858. fgg. zehn 14, 1418. fgg. शब्दो श्रुते कुम्भस्य पूर्णतः R. 2, 64, 14. मृदङ्गवेणुवीणानाम् 1, 3, 19. तुमुल Bhag. 1, 13. बाण° M. 4, 112. वाद्य° Pañkat. 129, 18. पर्ण° MBu. 3, 16822. Spr. (II) 3993. पत्त° Rîâ-Tan. 3, 400. म्या° Çiç. 52. पद° Mṛkkh. 50, 12. कोकिलस्य R. 1, 64, 10. कृकलास° s. o. w. Verz. d. Oxf. H. 92, *b*, 22. fgg. भगवच्छब्दं मुखा *Stimme* MBu. 1, 693. शब्दमाज्ञाय R. 2, 75, 5. शब्दानुसारेणावलोक्य Çiç. 101, 20. ज्ञानानाम् Kathâs. 32, 67. Pañkat. 123, 24. गुरुतरशब्देन रोदितव्यम् Vet. in LA. (III) 21, 16. fgg. लब्ध° adj. R. 2, 63, 10. हरि°. *Laut, Anruf* Hari Weber, Kṛshṇaj. 267. धिक्° R. Gorr. 2, 37, 13. गीयतां पीयतां चेति शब्दश्यामीकृते गृहे *lautes Rufen* MBu. 1, 7649. R. 1, 13, 18. का केति सकला मुक्तः शब्दः MBu. 3, 3219. 3609. मा शब्दः सुप्तसुप्तानां धातृणां मे भवेत् *Lärm* 1, 6003. मा शब्द इति सर्वत्र प्रचक्रामाथ तौ सभाम् Harîv. 2911. मा शब्द इत्येवं ब्रुवतः 3004. शब्दं कर् *einen Laut von sich geben, seine Stimme erheben, laut rufen* P. 4, 4, 34. Vop. 21, 10. R. 5, 29, 18. fg. Suçr. 1, 289, 4. शब्दं चकार । भो धारुणो पाश्चात्य क्वासि वर्तसेकीति MBu. 1, 691. Kathâs. 12, 183. 32, 79. Pañkat. 1. 3, 62. Hit. 23, 8. शब्दं दा dass. Vet. in LA. (III) 24, 8. — 2) *Wort* AK. 1, 1, 5, 2. Nir. 1, 2. 16. एकार्थमनेकशब्दम् 4, 1. Çat. Br. 14, 7, 2, 23. देवता° Liṭ. 3, 9, 2. सर्व° 10, 9, 2. कोश° Âçv. Gṛhj. 1, 18, 2. Çr. 5, 3, 7. यकाल° Kâç. Ça. 25, 1, 2. पितृशब्दं पुत्रे कृत्वा 15, 6, 11. शब्दे ऽविप्रतिपत्तिः 1, 4, 9. 6, 6. 4, 3, 1. Çâṅkh. Çr. 6, 1, 3. ṚV. Prât. 4, 7. 15. fg. 20. fg. 37. AV. Prât. 4, 107. Çiç. 14, 19. P. 1, 1, 68. Maitrâjan. 6, 22. M. 2, 124. Sân. D. 35. Jogân. 1, 9. Varâh. Bṛh. S. 28, 2. Sarvadarçanas. 20, 18. 30, 11. Comm. zu TS. Prât. 1, 1. 15. fgg. zu AV. Prât. 4, 16. 27. येषां शब्द एव देवता *Verehrer des Buchstabens* Schol. zu Kâç. Ça. 6, 14. बहुशब्दानेकवत्कुर्वत्तः *Plurale* Liṭ. 2, 2, 27. so v. a. *Rede:* सुधियो विरमन्ति शब्दात् Bhâg. P. 7, 9, 49. शब्दस्य विस्तरः Halâj. 4, 81. *Ausspruch* Wilson, Sel. Works 1, 76. 78. 180. 353. *das heilige Wort* घोम् Amṛtan. Up. in Ind. St. 3, 30. Bisweilen werden auch *Wortendungen*, insbes. *Suffixe*, शब्द् genannt, z. B. Schol. zu P. 1, 1, 64. 3, 1, 62. Vop. 1, 13. AK. 3, 4, 24, 150. Gold. Min. 39. — 1) 2) in der Streitfrage ob शब्द् नित्य oder अनित्य sei, ist das Wort bald als *Laut*, bald als *Wort* zu fassen. Gaim. 1, 2. Sarvadarçanas. 128, 17. 130, 1. 131, 3. fgg. अगविदानं स्फोटाख्यो निरवयवो नित्यः शब्दो (λόγος) ब्रह्मैव 140, 1. Comm. zu Nâṣ. 2, 2, 13. fgg. — 3) *Name, Benennung, Titel:* आढ्यशब्दं कर्म Âpast. 2, 16, 1. ज्ञातब्राह्मण° M. 10, 122. मान्धातृ° MBu. 3, 10425. भीमेति शब्दो ऽस्य गतः पृथिव्याम् 15704. प्राप्ताः स्मो विधवाशब्दं (so die neuere Ausg.) त्वयि नाथे निपातिते (vgl. वैधव्यशब्दं भोक्ष्यामि R. 7, 24, 30) Harîv. 4812. महर्षिशब्दं लभताम् R. 1, 63, 17. 21 (65, 20. 25 Gorr.). Spr. (II) 30. Ragh. 2, 53. 64. 3, 35. 49. 5, 22. 18, 41. Çiç. 47. 64, 21. Vikr. 1. Kathâs. 34, 36. 58. Bhâg. P. 2, 8, 12. तच्छब्दात् *weil es so heisst* Kâç. Ça. 14, 1, 24. राज° *Königsname* Çiç. 2, 16. जनपद° *Volksname* 34. शब्द् *terminus technicus* TS. Prât. 21, 3. — 4) *eine mündliche Mittheilung* (als Quelle unseres Wissens): आप्तोपदेशः शब्दः Kap. 1, 103. Nâṣ. 1, 1, 7. स द्विविधो दृष्टार्थोऽदृष्टार्थश्च 8. 2, 1, 47. Siddh. 51. Tark. 20. Bhâshâp. 51. Colebr. Misc. Ess. 1, 304. 403. Kusum. 32, 22. Sarvadarçanas. 4, 18. 22, 22. 113, 12. °प्रमाण Kuval. 161, *b*. 162, *a*. — H. an. 2, 135 giebt dem Worte शब्द् folgende Bedeutungen: घतर्, यशस्, गीति, वाक्य, ख, श्रवण und ध्वनि. Vgl. अप°, उप° (auch Vish. 33. Weber, Kṛshṇaj. 267), ताल°, नि°, पाद°, प्रति°, बहु°, मङ्गल°, मङ्गा° (आर्तिघ्न *lautes Wehklagen* MBu. 1, 6111), मृत°, वि°, वेद°, स°, स्तुति°, शाब्द, शाब्दिक.

शब्दकर्मन् adj. *tönen u. s. w. bedeutend* Nir. 9, 12. P. 1, 4, 52.

शब्दकल्पद्रु m. Titel des *Wörterbuchs* von Kaçava Verz. d. B. H. No. 807. — Vgl. कल्पद्रु.

शब्दकल्पद्रुम m. Titel des bekannten, in diesem Jahrhundert verfassten und in Calcutta gedruckten encyclopädischen Wörterbuchs von Râdhâkântadêva, Gild. Bibl. 340. Wilson, Sel. Works 2, 294.

शब्दकार् adj. *Töne von sich gebend* P. 3, 2, 23. Bhaṭṭ. 5, 100.

शब्दकारिन् adj. dass. Nir. 5, 16. 6, 16.

शब्दकोश m. *Wortschatz, Wörterbuch* Verz. d. Oxf. H. 192, *a*, 26. 188, *a*, 4.

शब्दकौस्तुभ m. Titel eines unvollendet gebliebenen Auszugs aus dem Mahâbhâshja von Bhaṭṭôgi Colebr. Misc. Ess. 2, 13. 41. Verz. d. B. H. No. 729. 764. Verz. d. Oxf. H. 160, *a*, No. 332. 162, *b*, 26. fg. 177, *a*, 16.

शब्दक्रिय adj. = शब्दकर्मन् P. 1, 4, 52, Vârtt. 1.

शब्दग (शब्द् + 1. ग) adj. 1) *Laute vernehmend:* श्रोत्र Bhâg. P. 3, 26, 32. — 2) *Laute von sich gebend:* सर्व° *allerlei* MBu. 6, 3159. 4705.

1. शब्दगति f. *Tonkunst, Gesang* Varâh. Bṛh. S. 68, 111.

2. शब्दगति adj. = शब्दग *Laute von sich gebend* Harîv. 11430 nach der Lesart der neueren Ausg.

शब्दगोचर m. *Object der gesprochenen Worte, an den eine Rede gerichtet ist, von dem die Rede geht,* Bhâg. P. 3, 15, 11. = वेदान्तिकवेद्य

nach dem Comm.) 18.

शब्दग्रह् m. *Ohr (Auffasser des Lauts)* AK. 2, 6, 2, 48. H. 573, Schol.

शब्दग्राम m. *die Gesammtheit der Laute* H. 1414. Hall. 5, 25.

शब्दघोषा f. Titel eines *grammatischen* Commentars Colebr. Misc. Ess. 2, 46.

शब्दचन्द्रिका f. Titel eines medicinischen *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 193, *b*, No. 453.

शब्दचित्र m. *Lautspiel, wie Alliteration* u. s. w. Prâtiśâkh. 12, *b*, 17.

शब्दचिन्तामणि m. Titel eines Commentars zu Pâṇini Verz. d. B. H. No. 728.

शब्दतरंगिणी f. Titel eines *Wörterbuchs* Uééval. zu Unádis. 1, 122.

शब्दत्व (von शब्द) n. *das Laut-Sein:* शब्दो नित्यः शब्दत्वात् Tarkas. 4.

शब्दन (von शब्दय्) 1) adj. *tönend, lautend, Töne von sich gebend* P. 3, 2, 149, Schol. AK. 3, 1, 33. H. 348. — 2) n. *das Reden —, Sprechen über* (geht im comp. voran) Verz. d. Oxf. H. 49, *b*, 29. 49, *a*, 44. *b*, 4. fg.

शब्दनिर्णय m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 274, *a*, 1. 2.

शब्दपति m. *nur dem Namen nach Herr, — Gebieter:* क्षितेः Rágh. 8, 51.

शब्दपात entweder adj. *wohin der Schall noch reicht*, oder °पातम् adv. *so weit der Schall reicht* Bhatt. 3, 100, v. l.

शब्दपातिन् adj. zur Erklärung von शहूप Nir. 6, 33. nach der Analogie von शब्दवेधिन् würde es *dem Schall nach fliegend* bedeuten.

शब्दप्रकाश m. Titel eines *Wörterbuchs* Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

शब्दप्रकाशिकाहिन्नपकोश m. desgl. Verz. d. Kop. H. 103, *a*.

शब्दप्रभेद m. desgl. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46. °कार Randbemerkung beim Schol. zu H. 194.

शब्दप्राक् (nom. °प्राग्) adj. *nach einem Worte fragend* Schol. zu P. 6, 4, 19. 8, 2, 36 und 3, 2, 178, Vârtt. 1.

शब्दप्रामाण्यवाद m. Titel eines Werkes Hall 77.

शब्दबोधप्रकार m. desgl. Hall 85.

शब्दबोधविचार m. desgl. ebend.

शब्दब्रह्मन् n. *das in Worte gefasste Brahman* d. i. *die heilige Schrift:* द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये शब्दब्रह्म परं च यत् । शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥ Maitrâyaṇ. 6, 22 (= MBh. 12, 8340. fg. 9707. fg.). Bhag. 6, 44. Bhâg. P. 3, 11, 34. 12, 48. 4, 29, 45. 6, 16, 51. Uttarab. 27, 19. fg. (36, 11). 28, 1. 2 (37, 3). Paśâr. 4, 3, 55. Verz. d. Oxf. H. 44, *b*, 17. 104, *a*, No. 160. *b*, 15. 17. 185, *a*, No. 421. शब्दात्मब्रह्मन् (?) WebER, Râmat. Up. 335. — Vgl. स्वारब्रह्मन्.

शब्दब्रह्ममय adj. von शब्दब्रह्मन् Paśâr. 3, 15, 58.

शब्दभिद् f. *Wortverdrehung* Bhâg. P. 7, 15, 13.

शब्दभृत् adj. *nur den Namen von Etwas führend, nur dem Namen nach Etwas seiend* Bhâg. P. 7, 15, 13, v. l.

शब्दभेद m. Titel eines *Wörterbuchs* Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

शब्दभेदप्रकाश m. desgl. ebend. Notices of Skt Mss. 118. Verz. d. Oxf. H. 188, *b*, 18 und No. 429.

शब्दभेदिन् 1) adj. = शब्दवेधिन्; ein Pfeil R. im ÇKDa. Bein. Arǵuna's Taik. 2, 8, 17. — 2) m. *Arter* Çaṇḍâtakas. bei Wilson.

शब्दमणिपरिच्छेदालोक m. Titel eines Commentars Verz. d. B. H. No. 670. fg.

शब्दमय (von शब्द) adj. 1) *aus Lauten bestehend, — gebildet* VS. Prât. 1, 27. — 2) *tönend, Laute von sich gebend* Harîv. 11430 (v. l. शब्दगति). 13274. — 3) *aus einem Worte bestehend, — gebildet:* नभःशब्दमयेन नाम्ना Ragh. 18, 8.

शब्दमाला f. Titel eines *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 192, *b*, No. 437. कातन्त्र° s. u. कातन्त्र.

शब्दय् (von शब्द), °यति (भाषणे, शब्दक्रियायाम्, उपसर्गादाविष्कारे) Dhâtup. 33, 46. 1) *Töne von sich geben:* कूजद्भिर्नूपुरैर्देव्यः शब्दयन्त्य इतस्ततः Bhâg. P. 7, 4, 11. *laut rufen, schreien* Çiç. 11, 17. Paśâr. 224, 9. शब्द्यते *es wird geplappert* Nir. 1, 18. रासभशब्दित n. *Geschrei* Paśâr. 249, 6. *Jmd rufen, anrufen:* एकैकं स ततस्तत्र नामग्राहमशब्दयत् *bei Namen* Kathâs. 100, 24. सादित्यमुच्चैर्घ सत्तं गायत्ति शब्दयत्ति स्तुवत्तीत्यभिप्रायः Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 89. — 2) *verkünden, mittheilen:* ज्ञानेन वैयासकिशब्दितेन Bhâg. P. 1, 18, 16. — 3) pass. *heissen, genannt werden:* षण्णां तु प्रवरं तस्य शीर्षाणामिह शब्द्यते MBh. 3, 14490. भगवानिति शब्द्यते Bhâg. P. 1, 2, 11. 2, 10, 7. शब्दित *heissend, genannt* Taik. 3, 3, 155. तस्मिंस्तत्कलुषं सर्वं समाप्तमिति शब्दितम् MBh. 12, 11195. पृथुरिति शब्दितः 1031. 14, 622. Harîv. 7168. 14932. Nirukta bei Kull. zu M. 8, 148. Bhâg. P. 8, 24, 38. Verz. d. Oxf. H. 189, *a*, No. 431. एष ब्रह्ममयो(!) ज्योतिर्ब्रह्मशब्देन शब्दितः Harîv. 11588. भगवच्छब्द° Bhâg. P. 11, 15, 16. दान° *mit dem Worte* दान *belegt* MBh. 13, 7396. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 192. zu Kaṭh. Up. S. 52. Bhâg. P. 4, 3, 23. Verz. d. Oxf. H. 68, *b*, 1. — Vgl. शब्दाय्.

— अनु 1) *Etwas erzählen, mittheilen, besprechen:* °शब्दित R. Gorr. 1, 4, 52. 107. *Etwas erwähnen, sprechen von:* °शब्दित Harîv. 7774. पञ्चरात्रानुशब्दित MBh. 12, 12976. — 2) *Jmd* (acc.) *Etwas sagen, mittheilen:* °शब्द्य Harîv. 7303. दुर्भगो ऽयं जनस्तत्र किमर्थमनुशब्दितः 7110.

— अभि 1) *besprechen, erwähnen, mittheilen:* °शब्दित M. 6, 82. — 2) *benennen, bezeichnen:* एतस्यैतदक्षराभिशब्द्यते: Âçv. Çr. 8, 10, 22. °शब्द्यते Mârk. P. 102, 9. °शब्दित *genannt:* सुरभीत्यभिशब्दिता MBh. 1, 3927. 5, 5270. Suçr. 1, 249, 9.

— परि *besprechen, erwähnen, mittheilen:* °शब्दित MBh. 12, 2161.

— वि *benennen, bezeichnen:* °शब्दित R. Gorr. 1, 27, 23. — Vgl. विशब्दन.

— सम् 1) *ausrufen:* वयमेकोति संशब्द्य मृतं संजीवयाम्यकम् MBh. 1, 3215. — 2) *besprechen, erwähnen, aufführen:* °शब्द्यमान (so mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 12, 9893. °शब्दित 4778. 9896. — Vgl. संशब्दन.

शब्दयोनि m. 1) *Ursprung —, Quelle des Wortes* Bhâg. P. 3, 1, 34. 4, 22. 8, 7, 25. — 2) *Verbalwurzel* AV. 3, 4, 44, 68.

शब्दरत्न n. Titel eines *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 196, *b*, 8. eines Commentars zu Bhaṭṭoǵi's Manoramâ Colebr. Misc. Ess. 2, 13. 41.

शब्दरत्नाकर m. Titel eines *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 251, *b*, No. 832.

शब्दरत्नावली f. desgl. Colebr. Misc. Ess. 2, 56. Verz. d. Oxf. H. 192, *b*, No. 439. *b*, No. 440. 196, *a*, 32.

शब्दरहित adj. *geräuschlos:* यात Vaitân. Bṛh. S. 68, 115.

शब्दराशिमहेश्वर m. *der grosse Herr des Alphabets*, Beiw. Çiva's (vgl. शिवसूत्र) Verz. d. B. H. No. 911.

शब्दलिङ्गार्थचन्द्रिका f. Titel eines *Wörterbuchs*, in dem auf das Ge-

schlecht und die *Bedeutung* der Wörter Rücksicht genommen wird, Verz. d. Oxf. H. 196,*b*,4.

शब्दवती f. N. pr. einer Göttin Kâlâṅkura 3,144. 4,77.

शब्दवत् (von शब्द) adj. gaṇa रसादि zu P. 5,2,95. 1) *tönend, Töne —, Laute von sich gebend* Nir. 2,24. भूतानि Harîv. 15119. दीप *knisternd* Varâh. Bṛh. S. 84,1. शब्दवत् adv. *laut, geräuschvoll:* तदासु नेत्रैर्मुमुचुर्कि श° MBh. 7,60. 13,3031. Mâlav. P. 34,60. — 2) *den Laut in sich bergend, mit der Eigenschaft des Lautes behaftet:* घनिल Bâlar. P. 2,3,26.

शब्दवारिधि m. *Wortmeer* so v. a. *Sprachschatz* Verz. d. Oxf. H. 171, *a*, No. 382. — Vgl. शब्दोदधि.

शब्दविद्या f. *Grammatik* Verz. d. Oxf. H. 136,*a*, No. 259. Daçak. 60, 13. Hiouen-thsang I,73.174. Vie de Hiouen-thsang 95.152. °शास्त्र 93.164.

शब्दवेध m. *das Schiessen —, Treffen nach dem blossen Schalle* (ohne dass man das Ziel sieht) MBh. 3,15004. R. Gorr. 2,65,18.

शब्दवेधित्व n. nom. abstr. von शब्दवेधिन् MBh. 1,5252. R. 1,28,22. R. Gorr. 2,65,9. 66,15.

शब्दवेधिन् adj. *schiessend —, treffend nach dem blossen Schalle* (ohne das Ziel zu sehen) Nir. 6,32. R. 2,62,4. 63,10. Vet. in LA. (III) 31,3. Beim. Arǵuna's Dhanurvéda im ÇKDa. Vgl. शब्दवाणापवेधिन् R. Gorr. 2,102,3.

शब्दवेध्य 1) adj. *worauf man nach dem blossen Schall* (ohne das Ziel zu sehen) *schiessen muss* R. ed. Bomb. 1,5,20. — 2) n. = शब्दवेध R. 2,63,12. 64,36.

शब्दशक्ति f. *Wortbedeutung* Prâtiâkh. 17,*a*,9. *b*,1.8. Verz. d. Oxf. H. 211,*b*, No. 499. °प्रकाशिका f. Titel eines Werkes Hall 55. Verz. d. Kop. H. 102,*b*. Notices of Skt Mss. 104. °प्रबोधिनी f. Titel eines Commentars zu diesem Werke ebend.

शब्दशब्दार्थमञ्जूषा f. Titel eines *Wörterbuchs* (*eine Kiste —, ein Korb mit Wörtern und Wortbedeutungen*) Verz. d. Oxf. H. 196,*b*,3.4.

शब्दशास्त्र n. *Grammatik* MBh. 13,5103. Spr. (II) 243. 3575. Kathâs. 6,118. 7,14. Pañkat. 4,17 (ed. orn. 1,20). Prâtiâkh. 62,*b*,8.

शब्दशेष adj. *von dem nur der Name —, die Erinnerung übrig geblieben ist:* मान Spr. 4668. प्रभु° *nur noch den Titel eines Gebieters führend* (d. i. *nicht mehr Gebieter seiend*) Râgat. 5,22.

शब्दश्रेय m. *Calambourg* Mallin. zu Çiç. 9,31.

शब्दसंज्ञा f. *terminus technicus, ein grammatischer Kunstausdruck* P. 1,1,68. भगवच्छब्दसंज्ञा Bâlar. P. 5,12,11 ist zu zerlegen in भगवच्छब्दः संज्ञा यस्य.

शब्दसंदर्भसिन्धु Titel eines modernen *Wörterbuchs* Wilson, Dict. 1te Aufl. XXXVIII.

शब्दसंभव m. *die Quelle des Schalles*, Bez. des Windes (der Luft) Harîv. 13940. सर्व st. शब्द die neuere Ausg.

शब्दसाधन adj. *mit dem blossen Schalle zum Ziele kommend*, von Pfeilen, die das Ziel treffen nach dem blossen Schalle, der daher kommt, MBh. 3,884.

शब्दसाह् adj. dass.: सत्त्व MBh. 3,852.

शब्दसिद्धि f. *richtige Wortbildung* Verz. d. Oxf. H. 210,*b*, No. 497. °निबन्ध m. Titel eines neueren Schulbuches Z. d. d. m. G. 1,201.

शब्दस्फोट m. *das Knistern:* वह्नेः Kir. Nitis. 7,16.

शब्दस्मृति f. Bez. *einer best. Wissenschaft* Verz. d. Oxf. H. 207,*a*,N. 3.

शब्दहीन n. *der Gebrauch eines Wortes in einer Form oder in einer Bedeutung, die entweder gar nicht oder doch nicht von mustergültigen Autoren anerkannt werden*, Kâvâd. 3,125.148. शब्दशास्त्रकृतं वाक्यं शब्दहीनं प्रकीर्त्यते Prayâgar. 62,*b*,8.

शब्दाकार (शब्द + आ°) m. *Grammatik:* °कर Verz. d. Oxf. H. 175,*b*,4.

शब्दागर (शब्द + आ°) n. *ein lautes —, hörbar gesprochenes* ओम् Amṛtabindûp. in Ind. St. 2,62, N. 1.

शब्दाख्येय (शब्द + आ°) adj. *was sich laut sagen lässt* Mahân. 101.

शब्दाधिष्ठान n. *Ohr* (*Standort des Lauts*) Trik. 2,6,31. H. 573.

शब्दानित्यतासाधन n. Titel eines Werkes Hall 55.

शब्दानुकरण adj. *schallnachahmend* Nir. 9,12.14. 12,13.

शब्दानुकृति f. *Schallnachahmung, Onomatopöie* Nir. 3,13. 5,22.

शब्दानुशासन n. *Wortlehre, Grammatik* Pat. in Mahâbh. 2. H. 1. Verz. d. B. H. No. 766. 769. Verz. d. Oxf. H. 171, *a*,13. 176,*a*,1. *b*, No. 401. Colebr. Misc. Ess. 2,44. Sarvadarçanas. 135,8. fgg. 136,21. 137,22.

शब्दानुशिष्टि f. *Wortkenntniss, grammatische Kenntniss* Sarvadarçanas. 137,21. fg.

शब्दापय् (von शब्द), °यति und °यते *Jmd herbeirufen, zu sich rufen* R. 2,59,7. 7,82,20. 88,16. 93,9. 96,1.

शब्दाब्धि m. *Wortmeer*, Titel eines *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 374, *a*, No. 293.

शब्दाभिवह adj. *lautzuführend, schallleitend:* सिरा *Gehörgang* Suçr. 2,361,11.14.

शब्दाय् (von शब्द), °यते *einen Ton von sich geben, ertönen, schreien* u. s. w. P. 3,1,17. Vop. 21,10. Nir. 2,9. 11,9. शब्दायमाने पटके कर्णदारिणि MBh. 6,1887. Suçr. 1,277,2. शब्दायते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः Mṛkkh. 57. Verz. d. Oxf. H. 108,*a*,N. शब्दायमानस्य प्रगालवन्दस्य Pañkat. 64,3. गर्दभः शब्दायितुमारब्धः 249,8. 6. 254,21. Bhatt. 5, 82. 17,91. Vgl. शब्दय्. — caus. शब्दाययति *einen Laut ertönen —, schreien u. s. w. lassen durch* (instr.) P. 1,4,52, Vârtt. 1. देवदत्तेन Sidhânt. K. *Jmd* (acc.) *zum Schreien bringen durch* (instr.) Vop. 5,5.

शब्दार्णव (शब्द + अ°) m. *Wortmeer*, Titel eines *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,8. 126,*a*,20. fg. 183,*a*,1. 192,*b*, No. 437. 193,*b*,7. Mad. Anh. 1. Udâyâl. zu Unâdis. 1,3. 150. 2,7. 13. 99. 103. 119 u. s. w.

शब्दार्थ m. 1) du. = सर्वशब्दौ *Laut* (*Lautform*) *und Bedeutung* gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. Sâh. D. 2,19. °गर्भवत् Weber, Rigv. Up. 335. — 2) *Bedeutung —, Wesen der Laute* VS. Pair. 8,43. Çikshâ 2 in Ind. St. 2,348. — 3) *Bedeutung eines Wortes;* s. शब्दशब्दार्थमञ्जूषा. — 4) *Bedeutung der mündlichen Mittheilung* (als Quelle des Wissens) Verz. d. Oxf. H. 240,*a*, No. 582.

शब्दार्थकल्पतरु m. Titel eines werthlosen *Wörterbuchs* aus dem Anfange dieses Jahrh. Verz. d. Oxf. H. 196,*a*, No. 453.

शब्दार्थतर्कामृत n. Titel eines Werkes Hall 79.

शब्दार्थरत्न n. Titel einer modernen *Grammatik* Z. d. d. m. G. 14,565. fgg.

शब्दार्थसारमञ्जरी f. Titel eines Werkes Hall 58.

शब्दालंकार m. *Schmuck des Lautes, — des Wortes, der Lautform*

(*Alliteration, Reim* u. s. w.) Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 1. 207, *a*, 33. 208, *a*, No. 489. 209, *b*, No. 493. 210, *a*, N. 1. — Vgl. अर्थालंकार.

शब्दालोक शब्द + आ° m. Titel eines Werkes Hall 59. °रत्न n. desgl. 39. fg. 59. °विवेक m. desgl. 39.

शब्दिन् (von शब्द) adj. *von Geräusch begleitet* AV. 19,36,2. स्तनितोत्कृष्ट° (°नादिन् die neuere Ausg.) Hariv. 8129.

शब्देन्दुशेखर Titel eines Commentars zur Siddhântakaumudî Colebr. Misc. Ess. 2,13. fg. 41. Hall 137. Verz. d. Oxf. H. 161, *a*, No. 354. Notices of Skt Mss. 202. °दोषोद्धार m. Titel *einer Nachweisung von Fehlern in diesem Werke* 85. — Vgl. बृहच्छब्देन्दुशेखर.

शब्देन्द्रिय शब्द + इ° n. *das Organ zur Wahrnehmung der Laute, Ohr* Sṛṣṭi 1,313,2.

शब्दोदधि m. *Meer der Worte, Wortschatz* Verz. d. Oxf. H. 171, *a*, 9.

1. शम्, शमीध, शमीधम् P. 7,3,95 und die Erkll. शम्यतु (s. u. 2), शशमै, शशमते 3. sg., अशमिष्ट, अशमिष्ठाः, partic. शमित. 1) *sich mühen, eifrig sein, arbeiten;* insbes. von der Thätigkeit beim Cultus. RV. 8,1, 9. इन्ने यज्ञेभिः शशमे शमीभिः 3,2. अधत्तस्ते मुष्टानवे घिया मतिः शशमते 2,4. अर्यगिरा स मर्त्यः शशमे देवतातये 8,90,1. ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः 3,29,16. 5,2,7. मुशमि शमीधम् TBa. 3,6,6,4.—2) *zurichten, zubereiten:* म इदं देवेभ्यो कविः शमीध VS. 1,16. वीतं कविः शमितम्, शमिता यज्ञध्यै 17,57. सूचीभिः शम्यतु त्वा 23,33. 39. 40. कस्ते गात्राणि शम्यति 39. 42. In den entsprechenden Stellen lesen TS. und Kâṭh. शिम्पसु, शिम्यति u. s. w. — 3) partic. शशमान *eifrig bemüht, beschäftigt, fleissig;* namentlich in der Arbeit für die Götter Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्). 4,3. Nir. 6, 8 (= शंसमान). RV. 1,85,12. शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य । विदा कामस्य वेनतः 86,5. 113,20. 142,3. 3,18,4. 4,2,9. 12. अवस्यवः शशमानासः उक्थैः 16,15. 51,7. 4,22,8. पशु 23,2. 4. सुन्वत् 31,8. 1,141,10. 8,55,2. — 4,41,3. गव्यं चिदूर्वं नरः शशमाना अपं वन् 5,29,12. यो वः शर्मा शशमानस्य निन्दात् 42,10. यो वाँ यज्ञैः शशमानो ददाशति 1,151,7. 2,12, 14. 20,3. 8,35,2. 10,11,5. शंसः शशमानस्य 64,10. 92,7. उत्ते यन्ति शशमानस्य वाचः (निरुक्तम्) 142,6. AV. 12,2,10. ये यज्ञवः शशमानाः परेयुः 18,2,47. VS. 20,65. — Vgl. κάμνω.

2. शम्, शाम्यति Dhâtup. 26,92 (उपशमे). P. 7,3,74. Vop. 11,3. 5. (प्र) शमेत् R. Gorr. 1,8,14. शशाम, अशमत्: im Epos aus metrischen Rücksichten auch med.; शमित्वा und शान्त्वा P. 7,2,56. Vop. 26,208. absol. शमम् und शामम् (angeblich vom caus.) P. 6,4,92, Schol. pass. impers. शम्यते, अशमि P. 7,3,34. Vop 24,6. partic. शान्त s. bes. *ruhig —, still werden, befriedigt sein; aufhören, sich legen, erlöschen:* भूतान्यशाम्यन् VS. 14,31. इमो लोकावशाम्यताम् TS. 2,5,8,2. नो न्वेवात्राशमत् *es ist noch nicht zur Ruhe gekommen* Çat. Br. 1,7,4,7. शाम्य मा प्रुचः MBh. 2,1936. 5,7319. शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः Kumâras. 2,40. समत्सरोऽपि शशाम तेन तितिपाललोकः Ragh. 7,2. Spr. (II) 2026. (I) 2132. Kathâs. 14,51. Prab. 5,14. Bhâg. P. 1,6,36. Bhaṭṭ. 14,106. अस्मिन् शाम्यन्ती *beruhigt* MBh. 1,6262. 4,651. R. 4,44,45. शाम्यते MBh. 5,3864. नक्ति ते ज्ञातु शाम्येरन्ते राज्ञेन 4678. यदा शाम्यन्ति विप्रुषः Çat. Br. 14,2,2,28. Sâṅkh. Br. 5,10. Çâṅkh. Gṛhj. 6,6. Kâṭy. 85. 116. शूलम् Suçr. 2,347,1. आक्रन्दितधान Râjat. 3,17. न ज्ञातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति Spr. (II) 3241. (I) 4678. विषम् Kathâs. 56,96. वैरम् MBh. 14,2309 (med.). पित्तं शर्करया Spr. 3243. वृद्धं रक्तः Bhaṭṭ. 17, 63. शाम्यन्निमेव 11,31. अस्त्रम् Mârk. P. 63,35. क्रिमेन क्रिमं शाम्येदुष्कृतेनेव दुष्कृतम् Râjat. 3,100. शेमुश पायासि नरेन्द्रसूनोः Harîv. 8404. अशेषाणि घोराणि Mârk. P. 58,72. Pâṇḍ. 4,3,1 (साम्येत् gedr.). दिव्यम् (sc. वैकृतम्) Vaitân. Bṛh. S. 46,5. 48,84. ब्राह्मणास्त्वनधीयानस्तृणाग्निरिव शाम्यति M. 3,168. तेजः 9,321. तेजांसि च तमांसि च MBh. 13,3038. अग्निमारुतौ Harîv. 95 (med.). 13954 (शाम्यमाने तु समरे पावके mit der neueren Ausg. zu lesen). दुर्वाग्निः Ragh. 2,14. कोपाग्निः Spr. (II) 3422 (med.). शशाम दग्धो न पुनः क्रन्दितध्वनिः Kathâs. 16,15. देवद्राक् Gîr. 7,41. Bhâg. P. 9,5,12.

— caus. 1) शमयति (hier und da auch med. aus metrischen Rücksichten) Dhâtup. 19,70. P. 6,4,92. Vop. 18,24. अशीशमत्; Bildung des pass. P. 6,4,62. 92. Vop. 24,5. partic. शमित (nach P. 7,2,27. Vop. 26,114 und den Lexicographen angeblich auch शान्त). *a) beruhigen, stillen, beschwichtigen; zurechtbringen* überh.; *einen Fehler gut machen, placare:* रोगम् AV. 2,3,4. अग्निम् 3,21,5. मन्युम् 7,74,3. VS. S. 5,8. अघम् TS. 3, 1,5,1. Âit. Br. 1,13. 3,36. 6,21. das Feuer शम्याशमयत् TBa. 1,1,3,11. 6,7. कृतिम् 2,6,6. वरुणम् TS. 2,1,6,3. 3,4,8,3. लोकेभ्यः (abl.) 5,4,3, 4. प्राणेभ्य एवास्य अघं शमयति 6,3,6,1. — चित्तं विलिप्तम् Vedântas. (Allah.) No. 41. कुद्धं जनार्दनम् । यज्ञेनः शमयामास MBh. 3,468. R. Gorr. 2,21,1. Kâm. Nîtis. 12,40. Bhâg. P. 4,30,46. मृगाश्च (boni ominis) शमयन्तः पलिणाः (mali ominis) R. Gorr. 1,76,11. अथर्वा मन्यते घोरमद्भुतं शमयेत्तथा AV. Paric. in Ind. St. 1,296. पापकृत्यान् MBh. 1,672. ब्रह्मास्त्रेणैव सर्वमशीशमत् 7,8624. उपद्रवम् Kathâs. 115,112. दैवं प्रतिकूलम् Çiç. 7,16. शान्तिभिः Vaitân. Bṛh. S. 43,61. दुरितानि 103,18. 104,48. तपः Kumâras. 2,56. तद्वचः MBh. 1,576. अस्त्रमस्त्रेण ebend. und 4,398. Harîv. 14005. शमयंश्च वायुं च MBh. 5,2394. पक्षविप्लवम् Râjat. 1,184. विकृतीः Pâṇḍ. 3,13,22. पापम् Mârk. P. 108,29 (med.). कृच्छ्रम् Bhâg. P. 4,30,4. काश्मलम् 3,9,23. भयम् MBh. 5,338 (med.). R. Gorr. 1,76,14. 3, 10,14. दर्पम् MBh. 14,2257. पराक्रमव्यलीकम् Ragh. 4,87. व्याधिम् 8,27. संरम्भम् 15,85. प्रकृतिविरागयम् 17,55. तृषम् Spr. 2936. दोषान् Mârk. P. 100,17. दुःखम् MBh. 3,72. Kathâs. 118,176. शमिताशेषतद्बाध 2,78. विषादम् Bhâg. P. 1,11,1. शोकम् 3,4,23. रोषं समुत्थम् 17,29. क्रोधम् R. 4, 6,1. प्रकोपम् Kâm. Nîtis. 15,22. परिदेवितम् Bhâg. P. 4,17,23. वायुम् Suçr. 1,23,10. भवतापम् Gîr. 1,10. परितापम् Çiç. 104. Bhâg. P. 6,9,40. क्लमम् Râjat. 1,203. क्रन्दितध्वनिम् 4,296. दुर्वचः Kathâs. 32,90. घातम् Khaṇḍ. 53. संसारम् Prab. 108,17. बुद्धिं मरणे ऽग्निमिव R. 4, 61,22. बलमुद्वृत्तमग्निमिवाम्भसा 9,78. यथा वज्रिं मन्युम् Bhâg. P. 10,89,4. अग्निम् MBh. 1,1136. दावम् 3297. 4,397 (med.). 5,1330. R. 5,87,10. Ṛt. 1,4. Ragh. 7,45. Mnu. 54. ad 18. Spr. (II) 2723. (I) 2940. Râjat. 4, 125. Bhâg. P. 7,9,25. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,25, Cl. 3. अशमितनख so v. a. *nicht in Ordnung gehalten, vernachlässigt* Mnu. 89, v. l. für अनियमितनख. — *b*) euphemistisch so v. a. *zum Tode bringen; Jmd aus dem Wege räumen, unschädlich machen, vernichten:* प्रजाः पशून् TS. 3,1,2,2. वैनतेयशमितस्य भोगिनः Ragh. 11,59. देवकण्टकम् MBh. 3, 14620. Harîv. 8178 (med.). रात्तसान् MBh. 9,2355. 4,1521. संक्रुद्धः प्रजाः कालः कालः शमयते पुनः Spr. (II) 1696. *Jmd bezwingen, überwinden:* शमयति गन्धान्यान्गन्धहिपः बलभो ऽपि सन् (I) 5063. पलबलम् Ragh. 9,

12. संग्रामे ललाटंतपं रविम् Bhatt. 6,99. प्राचीम् *sich unterwerfen* Kathâs. 19,89. — c) *sich beruhigen* so v. a. *abstehen von Etwas* MBh. 1, 7022. — 2) शामयति (Vop. 18,24) aus metrischen Rücksichten: द्रोणास्त्रम् — शशामयत् (am Ende eines Çloka) MBh. 7, 1000. तस्मिंस्तमसि शामिते (नाशिते ed. Bomb.) 9,633. pass. शाम्यताम् R. 5,41,4. Mân. P. 114, 33 in der Bed. *werde aus dem Wege geräumt, — unschädlich gemacht* vielleicht fehlerhaft für शम्यताम्.

— intens. शंशत्ति, शंशात्तम् P. 6, 4, 15, Schol. *vollständig erlöschen:* तेनाग्नि शंशमा चक्रुः Bhatt. 14,67.

— अनु *hinterher ruhig werden, — aufhören, — sich legen:* °शाम्यत् med. Bhâg. P. 10,86,11. वाङ्मनु (so nach dem Comm.) शाम्यति 11,22,6.

— अभि *aufhören, sich legen:* कुत्सा संशायते, अभिशाम्यति MBh. 12,6020.

— अव partic. °शान्त *erloschen* Ait. Br. 3,34.

— समव caus. *placare:* चित्तं समवशमयति Çat. Br. 7,3,2,1. 2.

— उप *ruhig —, still werden; aufhören, sich legen, erlöschen:* खलः केनोपशाम्यति Spr. 3197, v. l. MBh. 3,1408. Bhâg. P. 11, 20,16. Kull. zu M. 8, 129. नोपशाम्यति मे मनः MBh. 3, 1008. उपशाम्यतु ते बुद्धिः Bhatt. 20,5. दुःखं शारीरम् MBh. 3,72. शब्दः 16,38. रक्षो भीमम् 4,1031 (उपा° ed. Bomb.). 1775. 6, 78. अग्निः Âçv. Gṛhj. 1, 9, 3. Ait. Br. 7, 5. Nir. 4, 14. Kauç. 73. Kâṭh. Up. 2,12,1. Spr. 2975. कोपाग्निः MBh. 13, 7178. med.: त्यक्त्वा मन्युमुपशाम्यस्व (व्युप° ed. Bomb.) 6, 3812. उपशाम्येत् (अग्नयः) Ait. Br. 7,8. यथा निरिन्धना वह्निः स्वयोना उपशाम्यते। तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं स्वयोना उपशाम्यते ॥ Maitrâjn. 6, 34. उपशान्त *beruhigt*, von Personen Kathâs. 72,100. Bhâg. P. 3,22,27. 5,4,13. 7, 14, 3. उपशान्तात्मन् adj. 1,13,30. 4, 13, 7. *aufgehört, sich gelegt habend:* °वैर adj. Vârâh. Bṛh. S. 8,20. *erloschen* Prâçnop. 3, 9. R. 4,17,2. Vgl. उपशम fg. und उपशान्ति. — caus. *beruhigen, stillen, beschwichtigen, aufhören machen, placare* Vârâh. Bṛh. S. 97,17. Daçak. 67,18. Verz. d. Oxf. H. 145, *b*, No. 306, Z. 13. mit verlängertem Wurzelvocal (aus metrischen Rücksichten): पुष्पायुधम् — उपशामय MBh. 1,6577. यद्यस्त्येनापि वातापिः किमर्थमुपशामितः so v. a. *zur ewigen Ruhe gebracht* 3,8541. 8645. मुक्त्वातोपशामित *durch Blasen abgekühlt* (Speise) Mân. P. 50, 45. — Vgl. उपशमन fg.

— अभ्युप, partic. °शान्त *gestillt, abgekühlt:* °मन्मथ Ṛt. 1,1.

— व्युप *sich beruhigen, aufhören, sich legen:* त्यक्त्वा मन्युं व्युपशाम्यस्व (so ed. Bomb.) MBh. 6, 3812. इयं चित्ता मे शश्वन्न व्युपशाम्यति 5,2868. ततनो व्युपशशाम 7, 9427. न चापि वैरं वैरेण व्युपशाम्यति Spr. (II) 3233. Vgl. व्युपशम.

— समुप dass.: शब्दः समुपशाम्यति MBh. 12,10583.

— नि caus. *zur Ruhe —, zurecht bringen* AV. 6,52,3. मन उर्वनम् 111,2.

— प्रणि P. 8,4,17. Vop. 8,22. 11,5. *sich beruhigen:* प्रणिशाम्य दशग्रीव Bhatt. 9,100.

— परि caus. *beschwichtigen, aufhören machen:* कलिकालुषं ननयतु परिशमितम् Gît. 7,20.

— प्र *sich beruhigen; zur Ruhe kommen, aufhören, sich legen, erlöschen:* प्रशाम्य *beruhige dich* MBh. 2,1944. 5,7063. Spr. 3730, v. l. यथा स प्रशमेदियम् (घनावृष्टिः) R. Gorr. 1, 8, 14. प्रशशाम मरीचिः R. Schl. 2,40,33. ईतयस्ते (so zu lesen) प्रशाम्यन्तु Sûçr. 1,17,19. नारः 34,3. गर्वः Spr. 5335. संयमः Kathâs. 106,185. वह्निदावेधः Pañkat. 233,22. विषम् Spr. 2706. वह्निः (II) 770. ब्राह्मं तेजः M. 4,186. Bhâg. P. 2,19,26. प्रशान्त *ruhig geworden, beruhigt, ruhig:* तत्रोपयान् R. 1,75,6. घन्धवत्पश्य कृपणं शब्दं बधिरवच्छृणु। काष्ठवत्पश्य ते देहं प्रशान्तमेति लक्षणम् ॥ Anuvâk. Up. in Ind. St. 9,28. 2,11. M. 12,27. MBh. 14,196. R. Gorr. 1,77,8. 2,30,7. 3,70,12. Spr. (II) 1916. 4479. धीर° Sin. D. 65.69. Bhâg. P. 1,19,21. 2,7,47. 3,1,35. 15,32. 32,5. 5,5,2. 6,9,21. °चित्त Vedântas. (Allah.) No. 14. प्रशान्तात्मन् Bhag. 6,14. Bhâg. P. 6,14,8. °धी 3,24, 44. Kathâs. 12,123. प्रशान्तात्मेन्द्रियाशय Bhâg. P. 2,6,40. 7,10. प्रशान्ताकृतान्तोचन 3,4,7. °मूर्ति Vârâh. Bṛh. S. 58,45. स्वान्त Spr. (II) 1936. °वाञ्छिता चेतसः Verz. d. Oxf. H. 229, *b*, 10. पुर MBh. 3,2068. राष्ट्र R. 1,7, 15. *ruhig* so v. a. *gleichgiltig, fahrlässig* Spr. (II) 2831, v. l. 4307. *aufgehört, sich gelegt habend, verschwunden:* प्रशान्ताध्यायमत्कथा R. 2,48, 27. °गीतोत्सवनृत्यवादना 29. रोग R. Gorr. 1,77,7. परुषो वायुः 6,70, 31. भय 7,71,2. °ज्वर Çik. 27,10. चापल Spr. (II) 4279. वैर 3431. शोक Kathâs. 14,18. मा दृशा मम 25,279. भङ्गसंपात Râga-Tar. 3,409. शोकावेश Prasn. 96,11. °काम Bhâg. P. 7,4,22. 9,8,24. रजनीचराः so v. a. *sich nicht mehr sehen lassend* R. 3, 17, 21. रात्रि *zu Ende gegangen* Lalit. ed. Calc. 4,14. प्रशान्तभूमिपालाभूत्कतिचिद्दिवसानि भूः so v. a. *ohne Fürsten* Râga-Tar. 2,81. प्रशान्तोल्मुक *erloschen* Vârâh. Bṛh. S. 89,1. अनल Mân. P. 99,17. कोपज्वलन Prasn. 5,13. प्रशान्तार्चिरिवानलः Bhâg. P. 4, 13,10. °कलिकापलाशकुसुम *zu Schanden geworden* Bhatt. 8,131. अस्त्र so v. a. *beseitigt, entfernt* Uttarar. 110, 1 (148, 16). *zur ewigen Ruhe eingegangen, gestorben, todt* MBh. 7, 86. Râga-Tar. 1, 95. 5,127. प्रशान्तारिति Prasn. 117,11. in der Auguralkunde = शान्त *nichts Schlimmes bedeutend, boni ominis:* दिश् Jogâsvar. 2,32 in Ind. St. 13,170. Vârâh. Bṛh. S. 85, 9. von Thieren 86,16. R. 2, 34, 30. 3,12,13. 17,18. 18, 21. Brahma-P. in LA. (III) 52, 17. °कृतचेष्टित Vârâh. Bṛh. S. 86, 52. Vgl. प्रशम fg. und प्रशान् fgg.; zu प्रशीम् hinzuzufügen die Stelle: अरुर्वै पुरुषस्यैति प्रशान्मेति *wund ist des Mannes Auge, heil (schmerzlos) das meinige* Çat. Br. 3,1,3,10. — caus. *beruhigen, beschwichtigen; stillen, aufhören machen, löschen:* शान्त्वेन M. 8,391. MBh. 2,2309. 3,12978. 8, 3355 (wohl प्रशमय माम् zu lesen st. मे शम् der ed. Calc. und प्रशमयमेम् der ed. Bomb.). निवर्तनं प्रशमय्य तं प्रकोपात् Kathâs. 109,150. ते तत्पापं प्रशमयन्त्युत MBh. 13, 7892. उपस्थितं भयं घोरं मृगाः (*boni ominis*) प्रशमयन्त्येते R. 1,74,12. वनोपप्लवम् Mṛcch. 17. अपचारम् Rṛcch. 15,47. विवादम् Çik. 105. बाधाम् Khanḍ. 64. Sûçr. 1,61,14. मन्युम् Bhâg. P. 6,4,6. शुचः 1,6,21. मत्तकुञ्जः प्रशमितः खाण्डवे कृष्णवह्निना MBh. 1,8136. Harîv. 11939. प्रशमित *zur Ruhe gebracht* so v. a. *unschädlich gemacht, vernichtet* MBh. 3,2031. प्रशमितरिपु Mudrâ. 178,12. Rṛcch. 1,61. Mit Dehnung des Wurzelvocals: प्रशामित (रजः शोणितेन) MBh. 9,633. hier aus metrischer Rücksicht, ohne alle Veranlassung dagegen in den folgenden Stellen: प्रशाम्यमान *beschwichtigt werdend* MBh. 7,9185. प्रकृतिव्यसनं यस्मात्तत्प्रशाम्य Mîm. Nyâs. 13,18. तेजः पूर्वं तेजसैव तपसा च तपस्तथा। प्रशाम्यते Mân. P. 16,47. प्रशाम्य (= प्रकर्षेण घालोच्य Nîlak., also zu 4. शम् gezogen) नगरम् *sich unterwerfen, wiedererobern* MBh. 3,12196. प्रशामित Harîv. 11939. Vgl. प्रशमन.

— अनुप्र caus. s. अनुप्रशमन.

— सँप्र, partic. °शान्त *aufgehört, gewichen, geschwunden:* °रुजस्तमम् MBh. 1,8249.

— प्रति, partic. °शान्त dass.: °शोक MBh. 12,891. absol. °शाम्य *erloschen seiend* 454. Vgl. प्रतिशम.

— सम् 1) *vollständig zur Ruhe gelangen:* संशाम्य मा प्रुचः R. Gorr. 2,23,6. 1,76,26. 2,18,17. संशाम्य तेन (auch सक् तेन) so v. a. *schliesse Frieden mit* MBh. 5,3087. 6,3810. 7,2031. 4831. fgg. 8,275. 13,7747. *erlöschen* Kaiṇḍ. Up. 2,12,1. Çat. Br. 2,3,2,12. 4,1,2,4. सद्यं संशाम्यतीव मे Bhaṭṭ. 18,26. यत्नम् so v. a. *wirkungslos werden* Bhag. P. 1,8, 15. संशाम्यतां तावन्ममापि बलवाञ्ज्वरः *aufhören, sich legen* MBh. 15, 262. संशान्त *vollständig beruhigt* MBh. 1,3299. 3,17064. 5,2873. Bhag. P. 4,6,24. *vollständig sich gelegt habend, — aufgehört:* जलसंशान्तरेणु R. Gorr. 1,5,4. 76,18. *vollkommen erloschen:* वह्नि 2,68,1 (66,1 Schl.). R. Schl. 2,69,13. so v. a. *todt* MBh. 9,1789. — 2) *beruhigen, stillen, beschwichtigen* Çat. Br. 1,7,2,11. 3,4,2,1. — Vgl. संशम्. — caus. dass. Çiksh. Ça. 14,29,2. 5. MBh. 1,992. R. 2,98,1 (107,1 Gorr.). सद्यस्तेन MBh. 10,706. रतिम् R. Gorr. 2,106,11. प्रकोपम् Kim. Nitis. 15,22. रेणुम् Harîv. 13757. कार्याणि *zu Ende bringen, vollbringen, beilegen* Spr. (II) 1682. वह्निम् *auslöschen* R. 2,97,15. त्वामपि कालः संशमयिष्यति so v. a. *zur ewigen Ruhe bringen* MBh. 12,8163. भारतयुद्धपृष्ठम् *den Garaus machen* 5,3780. Vgl. संशमन fg.

3. शम्, शम्नाति = वधकर्मन् Naigh. 2,19. Nir. 1,10 (= क्षिनस्ति D.). *Jmd ein Leid zufügen:* मा नः शम्नीयाः कया नः शम्नीय इति Kâṭh. 10,7. — Vgl. 2. शम् caus. 1) b).

4. शम्, शमयति und शामयति (vgl. Dhâtup. 19,70. 33,22. das med. nicht zu belegen). Mit नि *inne —, gewahr werden, vernehmen, hören, erfahren, kennen lernen:* निशम्य absol. MBh. 1,1237. 4228. तं निशम्य वृतं पाण्डुम् *dass* 4419. 6181. 6199. fg. 2,1740. 3,2212. fg. 2260. 2927. 10671. 12254. 4,163. R. 1,2,17. 2,21,30. 40,49. 44,25. 52,4. 6. 10. 66, 10. R. Gorr. 2,111,9. 4,9,13. 29,18 (mit gen., विशम्य fehlerhaft für निशम्य). Raghu. 2,41. 52. 61. 3,47. 4,2. 5,12. Spr. (II) 991. (I) 4930. Uttarar. 106,5 (144,5). Kathâs. 17,170. 22,171. 28,83. Râjat. 5,61. Mâlav. P. 105,21. Daçak. 65,12. LA. (III) 56,18. 89,21. Bhag. P. 1,18,41. 2,3, 12. 3,13,1. 25. 20,8. 33,1. 4,4,32. Bhaṭṭ. 2,9. निशम्यते R. ed. Bomb. 1,8,20. R. Gorr. 2,125,19. निशम्यमान Kathâs. 103,239. निशम्यताम् 27,10. 46,162. 52,58. 68. 54,97. 61,17. 188. 192. Raghu. 11,41. निशामयत् Harîv. 9877. R. 2,37,21. Bhag. P. 5,3,19. 4,18. यस्यस्तं दिव्यमस्त्रं मां चित्रमत्र निशामय MBh. 4,1968,5. 5406,6. 41. 12. 9055. 13. 1038. तन्मे निशामय 14,2251. 18,145. Harîv. 1009. 3147. R. 1,2,6. 17,11. 7,33,18. 53,8. Mâlav. P. 30,1. 51,52. 94,27. 29. 99,1. 119,31. 125,53. Bhag. P. 4,29,52. Pañcar. 1,2,26. 30. 2,1,17. 4,13. निशामयत R. 6,21,20. न्यशामयम् Daçak. 59,6. निशाम्य absol. MBh. 3,1137. R. 1,69,18. 2,46,18. Bhag. P. 3,9,26. 12,16. 19,7. 23,35. 8,23,5. 18,23,25. 1,13,56. 2,9,42. 3,6,1. 4,17,14 (an den 4 letzten Stellen निशम्य od. Bomb.). निशाम्यते R. 2,114,9. निशामित MBh. 7,3072. 8,3075. Harîv. 1012. Mâlav. P. 14, 62. — निशम्यमान mit act. Bed. und gen. R. ed. Bomb. 2,66,10. Vgl. निशमन, निशाम, निशामन.

— नि, partic. °शान्त (s. auch bes.) *erprobt, bewährt:* यद्देवत्रं निशान्तं स्यात्तन्निगदेत् Âçv. Ça. 10,7,2. 4. 6. यथानिशान्तम् so v. a. *nach der angenommenen üblichen Weise* 7,12,13. fg. 8,3,22.

— अनुनि = नि: रुदितमनुनिशम्य Bhag. P. 10,7,25. इदमित्थमिति तत्त्वाभिधानं ज्ञानमनवाप्तधनं विधीदमानम्। नियुणमनुनिशम्य तत्त्वबुद्ध्या *dem Geiste vorführend* MBh. 12,6630.

— समनुनि dass.: स्वमुतवचनमाहृतः प्रियं तत्समनुनिशम्य *erkennend* R. 7,29,37.

— अभिनि dass.: °शाम्य absol. Daçak. 94,16.

— उपनि dass.: तदुपनिशम्य वचः MBh. 8,1738.

— प्रणि dass. R. ed. Bomb. 1,8,19 (nach Westergaard).

— विनि dass.: इदम् — घोरं शुचि चरितं विनिशम्य फाल्गुनस्य MBh. 3,1878.

— संनि dass.: धातुर्ज्येष्ठस्य वचनं संनिशम्य MBh. 2,1658. Kathâs. 40, 115. सर्वाचार्यः कुलतः संनिशाम्य MBh. 5,7418. आयव्ययौ विपुलौ संनिशाम्य 12,4389.

5. शँन् indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. चादि zu 4,57. = सुख, सानन्द, कल्याण u. s. w. Naigh. 3,6. AK. 3,5,10. Trik. 1,1,113. H. 1535. an. 7,15. Med. avj. 54. Hall. 1,123. *wohlthätig, zum Vortheil, — Heil; wohl, gut, bene:* क्षिण्वन्ति शं राध्यं रोदस्योः ṚV. 7,6,3. शं नः शोच 3,13,6. शमु पत्या तन्वं मे स्पृशस्व AV. 14,1,40. शं तप मार्तिं तपः 18,2,36. शं नो वातो वातु 7,69,1. Substantivisch (mit dat. oder gen. P. 2,3,73, Schol. Vop. 5,17) *Heil, Wohl, Glück, Segen; a)* als subj.: तदु क्षेव शमिव यो मृत्योर्मुच्यते *das ist gut, wenn Einer u. s. w.* Çat. Br. 2,6,2,12. शं रोचे शं स्वस्तये ṚV. 5,50,3. कस्तें यज्ञो मनसे शं वराय 6,21,4. 34,3. 1,165,4. VS. 6,15. शं नो मित्रः शं वरुणः Taitt. Up. 1,12. शं पदाय भवाति ṚV. 7,8,6. 35,1. fgg. 38,7. 86,3. AV. 2,3,16. यथा शं सुहृदा भवेत् Bhag. P. 10,48,33. यथा शमसदद्विपदे ṚV. 1,114,1. 5,7,2. 11,3. VS. 4,1. Mânav. P. 106,51. Bhag. P. 3,16,29. — *b)* als obj. (acc.): शं नः कर्त्यर्वते ṚV. 1,43,6. 4,1,3. AV. 1,3,1. Çat. Br. 2,3,2,13. शं नो गोभ्यं कृणोतु Pân. Gaṇ. 3,3. त्रिलोक्याः शं चिकीर्षुणा Bhag. P. 5,24,28. 3,2,25. स्वापत्रोधिकीर्षया शम् 3,1. शं न आ वेतद्विपदे ṚV. 1,157,3. शं जन्मसु न विन्दति MBh. 3,1180. शं विधातुं मित्राणाम् 5,2593. Bhag. P. 3,13,44. 15,9. 3,4,39. लभते शर्मनक्तितः MBh. 12,7121. शं पृच्छति Spr. 3346, v. l. भक्तानां शमभीप्सवः Bhag. P. 1,6,10. पन्नता शं तनोति 17,24. 5,19,28. वितनोति 4, 22,19. यावशसन् 10,29. अनुभावयतः 5,22,17. नाभ्यगच्छत शम् 10,76,12. उपैमि कदा नु शमनाशम् Nalod. 3,46. या Vop. 25,19. दा 3,143. 5,26. यादिश वर्त्मशं (d. i. वर्त्मनः शं, bei Burnouf getrennt) नः Bhag. P. 3,5, 4. शं योः s. u. योस्. Sammlung von Beispielen bei M. Müller, Transl. 1,180.

शँम (von 2. शम्) m. gaṇa वृषादि zu P. 6,1,203. Schol. zu 7,3,34. Vop. 26,170. = शान्ति, शमय AK. 3,3,3. Trik. 3,2,9. H. 304. 1) *Gemüthsruhe, Seelenruhe:* शमो निरीक्षावस्थामात्मविश्रामं सुखम् Sân. D. 76, 6. शमः श्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो नियहः Vedântas. (Allah.) No. 12. Verz. d. Oxf. H. 223,b, No. 544. Mudg. Up. 1,2,13. Taitt. Up. 1, 9. Ind. St. 1,20. 2,95. 214. शमे स्थास्यत्यवान् M. 12,92. Buas. 6,2. 10,4. MBh. 3,2248. R. 2,21,29. 33,12. 93,13. Kir. 10,10. मुक्तिर्नापि शमं विना Spr. (II) 3520. धातुषु क्षीयमाणेषु शमः कस्य न जायते 4180. (I) 2197 (pl.). 3019. Râjat. 4,381. 390. Verz. d. Oxf. H. 208,b, 29. H. 76. Bhag. P. 3,9,26. 31,33. 4,8,35. Sarvadarçanas. 156,6. fgg. 157,2. 169,11. °मु-

शमनत्वम् Spr. (II) 668. 835. Rāǵa-Tar. 3, 397. °नौष्ठ्य Spr. (II) 2605. °मुधा (I) 2045. °प्रधानेषु तपोधनेषु 5062. शमपराश नरा: Vaṛāh. Bṛh. S. 13, 21. शमात्मक R. Gorr. 1, 77, 7. शमे निविष्ट: MBh. 13, 3401. शममास्थित: R. Gorr. 1, 77, 26. स्वयमागाच्छमम् MBh. 1, 506. इन्द्र: शमं ययौ Kathās. 49, 196. शमं कुरु *beruhige dich* 37, 236. शमं चक्रे R. 1, 56, 22. शम एवेह कार्य: Spr. (II) 3937. शमं न लेभे R. 2, 85, 19. शममाप R. Gorr. 1, 57, 21. शमं वात्मनि संधयेत् Kām. Nītis. 17, 28. क्रियतां पाण्डवै: सार्धं शम: *so v. a. es werde Friede gemacht* MBh. 6, 2933. als स्थापिभाव Sāh. D. 238. Halāy. 1, 91. °व्यसनिन् *Apathie* Rāǵa-Tar. 2, 143. °नौचमेष्ठ Paṇḍav. Bh. in Ind. St. 1, 34, N. *ewige Ruhe* so v. a. *Erlösung* Taik. 1, 1, 133. — 2) *Ruhe, Beruhigung* überh. (z. B. des Meeres), *Beschwichtigung, Besänftigung, das Aufhören, Nachlassen, Erlöschen:* तुल्यप्रकोपावेशमागार: शममनीयत Rāǵa-Tar. 3, 511. यस्मिन् शममुपयाति Vaṛāh. Bṛh. S. 3, 62. 46, 51. शममुपैति s. s. गत्वा रोषस्य वै शमम् MBh. 4, 785. शममेष्यति मम शोक: कथं नु Car. 96. साकं भूपालशोकेन दुर्भिक्षं च शमं ययौ Rāǵa-Tar. 2, 54. प्रतिभय° Spr. 3152. मनोन्मुख्य° 2691. अम° Çiç. 4, 62. अशेषसंक्लेश° Bhāg. P. 3, 7, 14. नीत: प्रदोष: शमम् Spr. (II) 990. यथाग्निर्न शमं व्रजेत् Mālav. P. 99, 14. शमनुपयातु ममापि चित्तदाह: Uttarār. 106, 13 (144, 13). — 3) *Hand* (vgl. शम) H. 591. — 4) die personif. *Gemüthsruhe* ist ein Sohn des Tages MBh. 1, 2587. des Dharma und Gattin der Prāpti 2596. fg. — 5) N. pr. eines Sohnes des Andhaka Harīv. 2015 (शमि die neuere Ausg.). des Dharmaśāstra Bhāg. P. 9, 22, 46. — Vgl. नि:°.

शमक nom. ag. vom caus. von 2. शम् P. 7, 3, 34, Schol.

शमकृत् adj. *sich der Seelenruhe befleissigend* H. 76, Schol.

शमगिर् f. *ein zur Seelenruhe mahnendes Wort* Spr. 2828.

शमठ m. Uṇādis. zu Uṇādis. 1, 103. N. pr. eines Brahmanen MBh. 3, 8527. fg.

शमथ (von 2. शम्) m. 1) *Gemüthsruhe, Seelenruhe* Uṇādis. zu Uṇādis. 3, 114. AK. 3, 3, 3. H. 304. an. 3, 322. Med. th. 24. Wassiljew 141. 172. 251. 319. — 2) *Minister* H. an. Med.

शमन (vom caus. von 2. शम्) 1) adj. (f. ई) *beruhigend, stillend, besänftigend, beschwichtigend, zu Nichte machend:* Çiva MBh. 12, 10432. Harīv. 7439. गणेशु Verz. d. Oxf. H. 304, b, 41. Suçr. 1, 34, 1. P. 5, 1, 88, Vārtt. 1. Kām. Nītis. 10, 14. सर्वपापानाम् Harīv. 13932. न जातु शमनं पश्ये तेषामस्तेयवर्तिनाम् Spr. (II) 3243. तृष्णाघे: (I) 3124. Paṇḍar. 4, 1, 42. mit dem obj. compon.: पृष्ठ° Kāṃ. Nītis. 24, 6, 14 (vgl. पृष्ठशमनीय unter शमनीय). रुद्र° Muīr, ST. 4, 334, N. 304. तव *Vernichter, Garaussmacher* Khaṇḍ. 116. (कालचक्रम्) शमनं सर्वभूतानाम् MBh. 3, 12985. पाप° Śāṅkar. Bh. 5, 3. अरिष्ट° MBh. 13, 2139. निर्विच्छमन Kathās. 39, 199. तृष्णासंताप° 120, 116. 36, 85. स्वतेज: ° Mālav. P. 78, 14. दुर्वृत्तवृत्त° 84, 20. सर्वापराध° Paṇḍar. 4, 3, 174. दु:ख° Bhāg. P. 12, 13, 33. युद्धं च तत्रशमनम् MBh. 2, 808. सपत्न° 3, 2242. युद्धे त्रैलोक्यशमने 12, 13277. विद्या शमनी सर्वकर्मणाम् *zu Nichte machend* Bhāg. P. 3, 24, 40. — 2) m. *a)* ein N. Jama's, *der Alle zur Ruhe bringt,* AK. 1, 1, 4, 54. Taik. 3, 3, 266. H. 185. an. 3, 422. Med. n. 137. Halāy. 1, 71. Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 30. Daçak. 19, 8. — *b) eine Gazellenart* Çabdār. im ÇKDr. — *c) eine Erbsenart* Rāǵān. im ÇKDr. — 3) f. ई *Nacht* ÇKDr. und Wilson; geschlossen aus शमनीपद्. — 4) n. *a) das Stillen, Beruhigen, Besänftigen, Beschwichtigen, Auslöschen, zu-Nichte-Machen;* = शम Taik. 3, 2, 9. = शान्ति H. an. (शान्त Druckfehler) und Med. — Kāṃ. 43, 32. Suçr. 1, 8, 18. मृत्यो: MBh. 6, 1943. क्रुध: Spr. (II) 2329. रोग° MBh. 12, 5988. पाप° Harīv. 1359. दर्प° 10794. दर्पज्वर° Spr. (II) 606. दु:ख° 1430. पराप्ति° 3898. विवाद° Liṅga-P. bei Muīr, ST. 4, 326, 7. 330, 7. अकृत्याशय° Verz. d. Oxf. H. 29, *b*, 1. 2. वास्तु° *Besänftigung* so v. a. *lustratio* R. 2, 56, 18 (vgl. वास्तूपशमन Verz. d. Oxf. H. 43, *a*, 8. 9). — *b) das Tödten, Schlachten* AK. 2, 7, 25. Taik. 3, 3, 266. H. 830, Schol. H. an. Med. पशो° Kāṃ. 44. — *c) das Kauen* Dhṛn. im ÇKDr. — Vgl. पाप°, पित्त°, मन्यु°.

शमनस्वसृ f. Jama's *Schwester* d. i. *die Jamunā* AK. 1, 2, 8, 31.

शमनीय (von शमन) adj. *zur Beruhigung dienend:* n. *ein beruhigendes Mittel* Suçr. 2, 409, 9. 410, 12; vgl. संशमनीय. पृष्ठ° Bez. eines best. Agniṣṭoma Kātj. Çr. 13, 4, 9. Schol. zu 24, 6, 14. Lāṭj. 10, 17, 19. Çāṅkh. Çr. 13, 14, 7. 18, 24, 12.

शमनीपद m. *ein Rākshasa* Taik. 1, 1, 74. wird in शमनी *Nacht* + सद् zerlegt. Vgl. शिनिपीपद् H. ç. 37.

शमयितृ (vom caus. von 2. शम्) nom. ag. *Beruhiger* Kāṃ. 94. शमयितारम् *der Einem die Last erleichtert* Śiç. D. 217, 7. *so v. a. Tödter* Nāṃ. 2, 16. मुरद्विषाम् Rāgh. 10, 15. angeblich = 1. शमितृ P. 6, 4, 54, Schol.

शमर. यस्य सर्वेभ्यो रोमशमरेभ्यो ऽङ्गारा व्याशीर्यन्त Gop. Br. 2, 18.

शमल Uṇādis. 1, 111. n. *Befleckung, Mal; Fehler, Schaden* (= विष्ठा *stercus* AK. 2, 6, 2, 18. H. 634. Halāy. 3, 15) AV. 4, 9, 8. 7, 65, 2. यद्दिव्रं शमलं चकृम यच्च दुष्कृतम् 12, 2, 40. 3, 5. 52. 13, 1, 58. 14, 2, 66. शमलमपप्रावयति TS. 6, 4, 3, 4. पञ्च° 7, 3, 44, 1. यद्भर्भस्य शमलं तद्दुर्वर्णाम् Kātj. 8, 5. °गृह्णीत Āpast. Br. 2, 17. 4, 4. यस्य शमलं सुरा Kātj. 14, 6. Kāṃ. 42. 97. Bhāg. P. 1, 13, 31. 2, 7, 3. 8, 5. 3, 9, 15. 23. 15, 17. 28, 22. 4, 21, 23. 5, 26, 32. 36. 18, 8, 47. 11, 5, 52. 6, 19. — Vgl. कश्मल und मल.

शमवत् (von शम) adj. *Seelenruhe besitzend, friedlich gesinnt* Vaṛāh. Bṛh. 24.

शमशम (von 2. शम्) adj. *beständige Seelenruhe zeigend:* Çiva MBh. 12, 10377. — Vgl. पचपच.

शमागास N. pr. einer Oertlichkeit Rāǵa-Tar. 8, 655. राजामात्यारयो: कर्ता शमाङ्गासाशनारयो: 1, 100. शमाङ्गादिमुखांश्चामात्यान् (शमाङ्गास° ?) 343.

शमाङ्गास s. u. शमागास.

शमात्तक (शम + आ°) m. ein N. *des Liebesgottes (der der Gemüthsruhe ein Ende macht)* Taik. 1, 1, 37.

शमाय्, °यते wohl ein denom. von einem auf 1. शम् zurückgehenden nom. act. शम; nach Padap. शम् आयते; *sich bemühen, thätig sein:* शमाये धीरे तन्वे जुषस्व *ich gebe mir Mühe,* Agni: *sei mit mir zufrieden* RV. 3, 1, 1. स्तवते देव: सविता शमायते 8, 75, 3. Die Form शमायसु Taitt. Up. 1, 4, 2. 3 ist, da sie neben दमायसु steht, auf das belegte शम zurückzuführen und bedeutet *mögen sich der Gemüthsruhe befleissigen.*

शमाला f. N. pr. einer Oertlichkeit Rāǵa-Tar. 7, 159. 8, 1005. 1266. 1519. 1537. 3214. 3231.

1. शमि (von 1. शम्) n. = 1. शमी, nur im nom. sg. und pl. und instr. sg. *Bemühung, Werk, Fleiss:* शम्यच्छा दीर्घे पूर्व्याणि RV. 3, 55, 2. 8, 45, 27. यदीमिन्द्रं शम्यक्राण आशत 1, 87, 3. (चनो दधे) धिया शमि *Werk*

und Andacht 2,31,6. रथं वस्तोर्वस्तोर्वर्धमानं धिया शमि 10,40,1; vgl. 9,74,7. — Vgl. सु°.

2. शमि m. N. pr. eines Sohnes des Andhaka Harıv. 2015 nach der Lesart der neueren Ausg. (शम die ältere), des Uçînara Bhâg. P. 9,23,1.

3. शमि f. = 2. शमी *Hülsenfrucht* H. 1130, schlechte v. l. für शिमि.

शमिक m. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. — Vgl. शामिक.

1. शमितर् (von 1. शम्; nach den Erklärern vom caus. von 2. शम्) nom. ag. P. 6,4,54. TS. Pair. 8,8. *Zurichter, Zertieger des geschlachteten Thiers; Koch, Zubereiter* überh. ṚV. 1,162,9. fg. 2,3,10. अग्निर्दूतः शमिता मूदयाति 3,4,10. सोमस्य वा शमितारो मुकस्तो 5,43,4. वि यो वृहन्नि शमितेव चर्म 85,1. der Çatakratu's AV. 10,9,7. Ait. Br. 2,6.7,7, 1. शमिता यज्ञधीं VS. 17,37. 21,21. 23,39. Çat. Br. 3,8,2,4. fgg. Pârâsk. Gṛ. 25,18,4. विशस्ता (so ed. Bomb.) पशवः शमित्रा MBh. 8, 4287. — Vgl. शामित्र.

2. शमितर् (von 2. शम्) nom. ag. *der seine Gemüthsruhe bewahrt* Râǵa-Tar. 4,20.

शमितृ (wie oben) 1) adj. *stets ruhig, keiner Aufregung fähig* P. 3,2, 141. Mahân. 9,5. Uttarân. 12,1 (16,6). Râǵa-Tar. 2,2.121. Çatr. 1,383. Bhatt. 7,5. Zugleich adj. und 2. शमी f. Spr. (II) 4599. Cit. bei Uǵǵval. zu Unâdis. 1,108 (S. 25,2 v. u.). compar. f. शमितीतरा und शमितितरा zu P. 3,2,141. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Râǵâdhidêva Harıv. 2034. fg. nach der Lesart der neueren Ausg. (समी nom. und समीपुत्र die ältere). des Çûra VP. 4,14,7.

शमिर m. = 2. शमी 1) Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. शमीर.

शमिरोक् (3. शमि + रोक्) m. ein N. Çiva's Trik. 1,1,45.

शमिष्ठ (von 1. शम्) adj. *fleissigst, thätigst:* शम्या शमिष्ठाः शच्या शचिष्ठाः die Ṛbhu Çâṅku. Ça. 8,20,8.

शमिष्टल (शमि = शमी + स्थल) n. P. 8,3,96.

1. शमी (von 1. शम्) f. *Bemühung, Werk, Fleiss* Naigh. 2,1. Nir. 11, 16. इमे पक्षेभिः शशमे शमीभिः ṚV. 6,3,2. 2,1,9. 6,32,1. शमीभिर्यज्ञमीशत 1,20,2. शम्या सुकृत्यया 83,4. 110,4. 3,60,3. 4,17,18. 22,3. 33,4. यस्यानुधर्ममन्विन्: शमीम् 8,64,14. शम्या यस्या सुतस्य बोध्यनचित् 4,3, 4.5,42,10.77,4.10,28,12. VS. 23,10 शिमी TS.). — Vgl. 1. शमि und सु°.

2. शमी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. ved. acc. शमीम् und शम्यम् Pat. zu P. 6,1,107. 1) *Prosopis spicigera Lin.*, nach Andern auch *Mimosa Suma Roxb.*, beide Fabaceen. Von diesem Baume nimmt man die Araṇi. AK. 2,4,2,32. H. an. 2,338. Med. m. 31. शमीमश्वत्थ आरूढः AV. 5,11,1. 30,3. 8. TBr. 1,1,2,11. fg. °पर्ण 6,4,3. Çat. Br. 2,5,2,12. 3,2,2,37. 11,5,6,13. Kâṭy. 36,6. Kâtj. Çr. 5,3,1. 25,8,2. Âçv. Gṛ. 1, 17,3. 11. 2,8,11. 4,6,4. Kauç. 8. 31. 106. 137. Gobh. 2,44. M. 8,247. Jâǵ. 1,301. P. 4,3,142. MBh. 1,481. उष्ट्रवामीसहस्रं च पुष्टाः पीलुशमीवृदेः 2,1824. 3,10318. 16078. 4,154. 1335. 7,8098. R. 3,31,20. 4,43, 23. °पाल Sûrjas. 1,214,8. 2,13,21. Rajat. 3,9. 7,23. अग्निगर्भा Çiç. 79. Vaṇîn. Bṛh. S. 29,11. 53,87. 54,81. 83. 85. 89,3. 85,6. Kathâs. 23,61. Verz. d. Oxf. H. 78,b,20. 24. °तरु und °लता Çiç. 17, v. l. °वत्स Pârâsk. 94,1. मखा° 97,15. शमीनिवात P. 8,2,8, Schol. °दृषदम् Vop. 6,7. gespielt mit शमी und शमिन् Spr. (II) 4599. Cit. bei Uǵǵval. zu Unâdis. 1, 108 (S. 25,2 v. u.). — 2) *Hülsenfrucht* überh. (vgl. °धान्य) AK. 2,9,28. H. 1130. H. an. Med. Halâ. 2, 34. °ज्ञाति Vaṇîn. Bṛh. S. 8,10. — 3) = वल्गुली H. an. = वागुरि Med. — Vgl. भू° und शमील.

3. शमी f. *ein best. Maass:* हि:°, चतु:° Kauç. 137. Vgl. शम्या.

शमीकृण m. *die Zeit, wo die Früchte der* Çamî *reif werden*, gaṇa पील्वादि zu P. 5,2,24.

शमीगर्भ (2. शमी + गर्भ) 1) adj. *in einer* Çamî *gewachsen*, m. *der* Açvattha (dessen Holz zu den Araṇi dient) TBr. 1,1,9,1.2,6,5.16. Çat. Br. 2,1,4,3. Kâtj. Çr. 4,7,22. यज्ञत्थाच्छमीगर्भादरणी याचेत् Âçv. Çr. 2,1,16. MBh. 1,8028.9,2741.2745.13,4051. Harıv. 8811.11869. VP. 4,6,61. Bhâg. P. 9,14,44. — 2) adj. *in der* Çamî *ruhend*, als Beiw. und N. des Feuers Harıv. 13931. 13942. H. 1098. — 3) m. *ein Brahmane* H. 813.

शमीजात adj. = शमीगर्भ 1) Harıv. 1406.

शमीधान्य (2. शमी + धान्य) n. Çamî-*Körner*, meist *Hülsenfrucht* überh., *eine der fünf Arten von Körnerfrucht* AK. 2,9,24. H. 1181. Bhâvpr. 3. Çat. Br. 1,1,4,10. Kâraka 1,27 u. s. w. v. l. शिम्बीधान्य.

शमीनकुथी du.: सूर्या मासी विचरन्ता दिवितिया धिया शमीनकुथी यस्य बोधतम् ṚV. 10,92,12. Vermuthlich ist zu lesen: धिया शमी नकुथी यस्य बोधत; vgl. 2,31,6. 9,74,7. 10,40,1.

शमीपत्रा f. *Mimosa pudica* Gaṇîn. im ÇKDa. °पत्री Wilson in der 2ten Ausg.

शमीप्रस्थ m. gaṇa कर्कादि zu P. 6,2,87.

शमीमय adj. (f. ई) *aus* Çamî-*Holz bestehend* TBr. 1,1,2,12. TS. 5,1, 9,6. 4,2,4. Çat. Br. 2,2,2,37. 11,5,4,15. 13,8,4,1. इध्म, सरुवा Âçv. Gṛ. 4,6,4. Çâṅku. Ça. 4,16,4.

शमीर (von 2. शमी) m. *ein niedriger* Çamî-*Baum* P. 5,3,83. Vop. 7, 77. AK. 2,4,2,32.

शमीवत् (von 2. शमी) m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,118. gaṇa मधादि zu 4,2,86. Schol. zu 8,2,9. — Vgl. शामीवत.

शमीष्य (शम्ष्याय Padap.) n. vermuthlich verdorbene Lesart; in den Zusammenhang würde passen *das Granwerden:* या शीर्ष्णः शमीष्यात् AV. 1,14,3.

शम्यक m. N. pr. eines Çâkja Schriftw., Lebensb. 288 (58).

शम्या f. *Blitz* AK. 1,1,2,10. H. 1104. Hâ. 58. Halâ. 1,60.

शम्याक m. 1) *Cathartocarpus fistula Pers.* H. an. 3,102. Anekârtha bei Nilak. zu MBh. 12,6563. Sûçr. 1,39,8. 215,15. 2,222,2. संपाक AK. 2,4,2,4 (nach ÇKDa. शम्पाक). Med. k. 165. richtig ist शम्याक (von शम्या, nach den 2 Fuss langen *stabförmigen* Schoten) Bhâvpr. 3. Çârṅ. Saṃh. 2,2,32. — 2) N. pr. eines Brahmanen Anekârtha a. a. O. MBh. 12,6563. 6585. — Nach H. an. auch = विपाक und पावक; nach Med. (संपाक) und Anekârtha a. a. O. als adj. = तर्कक und धृष्ट; nach Dharan. (संपाक) im ÇKDa. = धृत्य und लम्पट.

शम्यातास m. *ein best. Tact* (ताल) MBh. 2,121.7,2488 (शम्या°, beide Ausgg.). 13,1295. Davon °वत् शम्या° gedr.) *in diesem Tacte sich bewegend* Kathâs. 111,10.

शम्ब् शम्बति (गतौ) Vop. in Dhâtup. 11,35. शम्बयति (संबन्धने) 32,31, v. l. शम्ब Unâdis. 4,94 (शम्ब). P. 8,2,138 (oxyt.). 1) adj. = शंयु, शुभेयु

Taitt. 3,1,21. = प्रभान्वित Med. b. 8. = भाग्यवत् Rājan., = दरिद्र Uṇādiva. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa. — 2) m. a) etwa *Stange, Stock, Keule* als Waffe Indra's: यो राधाश्चुमपे बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन RV. 10,42,7. = वज्र *der Donnerkeil* Naigh. 4,2. Nir. 5,24. AK. 1,1,2, 43. H. 180. an. 2,306. Med. Halāy. 1,56. Gaṇḍu. in Verz. d. Oxf. H. 191,b,1. *metallener Knopf an der Mörserkeule*, = मुसलाग्रस्थलोहमण्डलक (so ÇKDa.) Med. = मुसललोहमुख Uṇādiva. = लोहकाण्ड H. an. — *b) ein best. Längenmaass:* शम्बगाधमुदकम् P. 5,2,4, Schol. — *c)* = अनुलोमकर्षण (vgl. शम्बाकृत) Bhar. zu AK. nach ÇKDa. — *d)* N. pr. eines Asura (vgl. शम्बर) TBa. Comm. — Vgl. शम्बिन् und शाम्ब.

शम्बर (von शम्ब) 1) m. *a)* N. pr eines Damons, den Indra von der Höhe stürzt und seine 99 oder 100 Burgen bricht; im Epos auch ein Feind des Liebesgottes. H. 228. an. 3,606. Mah. r. 221. RV. 1,51,6. 101,3. 103,8. शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तम् 2,12,11. 14,6. 19,6. 4,26,3. बृहन्तः पर्वतादधि । घवारुक्षिन्द्र शम्बरम् 30,14. 6,26,5. अव त्मना बृहन्तः शम्बरं भेत् 7,18,20. 1,54,4. 59,6. 6,18,8. 31,4. 43,1. 47, 2. 21. 7,99,5. MBh. 1,2330. 5181. 3,10271. 12072. 12149. 6,4383. 7,1125. 12,3661. 6146. 8261. 13,616. 2165. fgg. Spr. 3064. (II) 4716. Hariv. 197. 2285. 9208. fgg. 12999. fgg. 13180. 13230. 13404. fgg. 13932. 14022. 14288. R. Gorr. 2,6,13. Kathās. 45,376. VP. 575. fgg. Mālav. P. 24,31. Bhāg. P. 2,7,34. 3,3,11. 10,35,2. fgg. Beiwörter Indra's: °हन् MBh. 3,14772. °वृत्रहन् R. 5,78,31. des Liebesgottes: °घ्न Hariv. 9208. शम्बरारिकार 9209. शम्बरारि AK. 1,1,4,31. Gaṇḍu. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,28. °दारण Gir. 12,24. °सूदन Halāy. 1,22. — *b) Wolke* Naigh. 1,10. — *c) Waffe* Sāy. zu RV. 1,112,14. — *d) Kampf* Dhar. im ÇKDa. — *e) eine Hirschart* AK. 2,5,10. H. 1293. H. an. Med. Halāy. 2,75. MBh. 3,15622. Kāraka 1,1. Kāçikā. 3,46 (nach Aufrecht). — *f) Fisch* Taitt. 1,2,15. H. 1344. H. an. *ein best. Fisch* Viçva im ÇKDa. — *g)* Bez. verschiedener Pflanzen: = चित्रक, लोध्र und अर्जुन Rāgān. im ÇKDa. — *h) der Beste* (श्रेष्ठ) Dhar. im ÇKDa. — *i)* N. pr. eines Gina Viçva im ÇKDa. N. pr. eines Fürsten (fehlerhaft für संवरण) Hall in der Einl. zu Vāsavad. 41. — *k)* N. pr. eines Berges H. an. und Viçva. — *l)* Kathās. 68,37 (çaṁvara) wohl fehlerhaft für संवर. — 2) f. ई *a) Salvinia cucullata* Roxb. AK. 2,4,2,6. H. an. Med. — *b)* = माया Çabdar. im ÇKDa. *a female juggler* (!) Wilson nach ders. Aut. Es ist शाम्बरी Çambara's *Zauberkunst* gemeint. — 3) n. *a)* pl. *die Sachen* (*Stätten*) *des* Çambara: यद्दर्दृर्म्न्युना शम्बराणि वि RV. 2,24,2. — *b) Wasser* Naigh. 1,12. AK. 1,2,2,4. H. 1069. Med. Halāy. 3,26. Dvirūpak. in Verz. d. Oxf. H. 194,b, No. 449. Sāh. D. 213,15. fg. (der Gebrauch des Wortes in dieser Bed. getadelt). — *c) Macht, Kraft* (बल) Naigh. 2,9. — ÇKDa. führt nach H. an. noch die Bedd. चित्र und बौद्धव्रतभेद an, aber in der gedr. Ausg. hat शबर (शाबर) diese Bedd. und das Metrum erlaubt nicht शम्बरम् zu lesen; anderseits spricht das vorangehende अग्र für einen neuen Artikel d. i. für शम्बर. Nach Nirāmbarāmaṇi. im ÇKDa. bedeutet das n. auch व्रत und वित्त. — Vgl. काल°, तत्र°, मकामाया°, योगिनीजाल° und शाम्बर.

शम्बराकन्द m. = वाराहीकन्द Rāgān. im ÇKDa.

शम्बरचन्दन n. *eine Art Sandel* ebend.; vgl. कैरात.

शम्बरारिकृत्य n. *das Erschlagen des* Çambara RV. 1,112,14. TBa. 2, 8,8,8. Çiraṇ. Ça. 8,16,6.

शम्बर्ल n. = सम्बल Uṇādiva. zu Uṇādis. 1,108. m. n. AK. 3,6,4,34. 1) *Wegekost*, n. H. 493. an. 3,685. Halāy. 2,203. m. n. Med. l. 135. सम्बल n. Spr. 2797, v.l. (II) 1917. — 2) *Ufer*, m. H. an. (तट). m. n. Med. कूल ÇKDa., कुल die gedr. Ausg.). — 3) *Neid, Missgunst* (मत्सर); n. H. an. m. n. Med. — 4) f. ई *Kupplerin* Çabdārṇav. bei Wilson; vgl. शम्बली.

शम्बीकर्, °करोति *hin und zurück pflügen* P. 5,4,55. °कृत AK. 2, 9,9. (सम्बा die Ausgg., शम्बा° ÇKDa.). H. 968. Halāy. 2,421. व्योमनि शम्बाकृते चित्रं निर्माति पवनः सलिले । स्रपयति पवनं सलिलैर्यस्तु स्थले चरति सत्कारम् ॥ Bhām. 1,93 (nach Aufrecht).

शम्बिन् (von शम्ब in der Bed. von κοντός) adj. *Ferge* AV. 9,2,6.

शम्बु m. 1) = शम्बुक, शम्बूक *Muschel* Halāyudha bei Bhar. zu AK. nach ÇKDa. Çabdārṇava bei Uṇādiv. zu Uṇādis. 4,41. — 2) N. pr. eines Mannes Āçv. Ça. 12,12,5. — शम्बुपुत्र Nidāna 9,1. — Vgl. शाम्बव.

शम्बुक m. 1) = शम्बूक *Muschel* Çabdārṇava bei Uṇādiv. zu Uṇādis. 4,41. — 2) *ein best. schädliches Insect* Suçr. 2,288,15. — 3) N. pr. eines Çūdra MBh. 12,5742 (शम्बुक ed. Bomb.). Rāmā. 15,30 (कबुक v. l.); vgl. शम्बूक.

शम्बुक m. = शम्बूक *Muschel* Çabdar. im ÇKDa.

शम्बूक Uṇādiv. zu Uṇādis. 4,41. m. 1) *Muschel, Schnecke* AK. 1,2,2, 23. H. 1205. an. 3,102. Med. k. 161. fg. Hit. 112. Halāy. 3,42. Suçr. 1,205,20. Vishn. 6,54. Spr. (II) 1712. Kathās. 20,78. Auch शम्बूका f. Med. — 2) *ein best. Thier*, = घोडु Med. — 3) *der Rand an den beiden Erhöhungen auf der Stirn eines brünstigen Elephanten* H. an. Med. — 4) N. pr. eines frommen Çūdra, den Rāma erschlug (vgl. शम्बुक 3). Med. R. 7,76,3. Uttarar. 30,10. fgg. (40,1. fgg.). — 5) N. pr. eines Daitja H. an.

शम्बूकावर्त m. *Windung einer Muschel* Suçr. 1,266,12. Bez. *einer Afterfistel* (भगंदर) von *dieser Form* Wise 389. Suçr. 1,265,6. 266,12. fg. 2,58,3; vgl. शङ्खावर्त.

शर्म्य adj. von 5. शम् P. 5,2,138. Vop. 7,31.

शंभर m. N. pr. eines Mannes; vgl. शंभार.

शम्भल 1) m. N. pr. einer Oertlichkeit Schiefner, Lebensb. 332 (102). Kalāṅkura 1,26.150. Tāran. 325. eines Dorfes, des Geburtsortes Kalkin's, Verz. d. Oxf. H. 73,a, No. 125. °ग्राम ebend. 84,b,24. MBh. 3, 12102 (म° beide Ausgg.). VP. 4,24,26. Bhāg. P. 12,2,18. °ग्रामक (शम्भलग्रामके die neuere Ausg., संभलग्रामको die ältere) Hariv. 2367. शंभलेश्वर n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 73,b,2,3. — 2) f. ई *Kupplerin* AK. 2, 6,1,19. H. 533. Halāy. 2,337.

शम्भलीय adj. von शम्भली *Kupplerin* Naigh. 6,76 (mit स geschrieben und mit संभालयामास in Alliteration).

शंभव (3. शम् + भव) P. 3,2,14, Schol. 1) adj. = शंभु VS. 16,41. — 2) m. N. pr. des 3ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇī H. 26 (auch संभव geschr.).

शंभविष्ठ s. u. शंभु 1).

शंभु (3. शम् + भू) gaṇa मितद्वादि zu P. 3,2,180, Vārtt. 1. Vop. 26,168. 1) adj. (f. °भू, °भुवम्, °भुवस्, du. °भुवा und °भू, pl. °भुवस्) *heilbringend, wohlthätig, hilfreich:* मरुत RV. 1,40,6. 46,13. 65,3. सोम्य 105,3.

106, 2. पशूस्त्र शंभुवो 2,41,19. 3,17,5. पितरा 4,41,7. 6,70,7. 14. die Açvin 8,8,19. AV. 10,1,9. मणि 6,15. मृडेवा पत्ये शर्म्माय शंभूः 14,2, 26. 19,46,6. VS. 15,4. Çat. Br. 2,9,4,7. Çāṅkh. Çr. 8,19,6. Çiva-Rudra Maitrāyaṇ. 6, 8. Ind. St. 2, 40. प्रभाकर° Mahāpurusha Harıv. 14120. शंभुमयोभू Verse, *welche die beiden Wörter enthalten*, Kauç. 9. 18. fg. 43. superl. शंभविष्ठ RV. 1,171,3. 2,39,5. 4,43,2. स्तुवते 5,42,7. प्रत्यवर्ति दाशुषे शंभविष्ठा 76,2. — 2) m. *a*) ein N. Çiva's AK. 1,1,1,25. 3,4,22, 137. Trik. 1,1,44. H. 195. an. 2,312. Med. bh. 8. Halāy. 1,11. MBh. 13, 388. Harıv. 7425. 11494. Mahān. 31. 61. Spr. (II) 164. 1399. 2154. (I) 2937. 3074. Varāh. Bṛh. S. 48,55. 58,43. 60,19. Kathās. 4,24. 21,35. Rāja-Tar. 3,274. fg. 365. Mārk. P. 56,10. Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,36. Bhāg. P. 4,7,60. 5,3,20. Colebr. Misc. Ess. 2,271. fg. Wilson, Sel. Works 1, 264. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234. — *b*) N. pr. einer der 11 Rudra MBh. 13, 7091. Harıv. 166. Mit. 142, 6. VP. 1,15,123. Weber, Rāmat. Up. 304. 312. Verz. d. Oxf. H. 82, *b*, 26. — *c*) ein N. Brahman's AK. 2,4,22,137. H. 213. H. an. Med. Halāy. 1,7. MBh. 1,2499. Harıv. 12441. R. 7,36,30. — *d*) ein N. Vishṇu's Halāy. 1, 25. — *e*) N. eines Agni MBh. 3,14180. — *f*) *ein* Arhant H. 24. H. an. Med. — *g*) *ein* Siddha Candr. im ÇKDa. — *h*) N. pr. eines Sohnes des Vishṇu MBh. 13,621. N. pr. des Indra im 10ten Manvantara Bhāg. P. 8,13,22. eines Fürsten der Daitja R. 7,17,13. — *i*) N. pr. eines Mannes Pravarādhy. in Verz. d. B. H. 58,24. eines Sohnes des Çuka Harıv. 981. eines Fürsten 3091 (शङ्कु die neuere Ausg.). MBh. 1,228. 13, 3666. eines Sohnes des Ambarīsha Bhāg. P. 9,6,1. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 110, *a*, No. 173. eines Autors 270, *b*, 51. 279, *b*, 13. 286, *a*, No. 670. — *k*) *eine Art Asclepias* (श्वेतार्क) Candr. im ÇKDa. — *l*) *ein best. Metrum: 4 Mal 25 Längen* Colebr. Misc. Ess. 2, 164 (XX, 2). — 3) f. शंभु N. pr. der Gattin Dhruva's Harıv. 67. VP. 1,13,1. — Vgl. मल्ल°, विश्व° und शंभव.

शंभुगिरि m. N. pr. eines *Berges*: °माहात्म्य Mack. Coll. 1,86.

शंभुतनय m. Çiva's *Sohn*, patron. Kārttikeja's Candr. im ÇKDa.

शंभुनन्दन m. dass., patron. Gaṇeça's Candr. im ÇKDa.

शंभुनाथ m. 1) N. eines Tempels des Çiva in Nepāla Wilson, Sel. Works 1,213. — 2) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 110, *a*, No. 173. 341, *b*, N. — Vgl. शंभूनाथ.

शंभुप्रिया f. *Myrobalanenbaum* (Çiva's *Liebling*) Candr. im ÇKDa.

शंभुभट्ट m. N. pr. eines oder verschiedener Gelehrten Hall 179. 207. Notices of Skt Mss. 80. Gild. Bibl. 374.

शंभुभैरव m. *eine Form* Çiva's Verz. d. Oxf. H. 250, *a*, 20.

शंभुरहस्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 126, *a*, 21.

शंभुवर्धन m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 5,300. 302. 340.

शंभुवल्लभ n. = श्वेतकमल *die weisse Lotosblüthe* (Çiva's *Liebling*) Rāgān. im ÇKDa.

शंभू (= शंभु) m. N. pr. eines Autors von Gebeten bei den Tāntrika Verz. d. Oxf. H. 101, *b*, 17. — Vgl. विश्व°.

शंभूनाथ m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 317. — Vgl. शंभुनाथ.

शंमट् (3. शम् + मट्) m. N. pr. eines Āṅgirasa Pañcav. Br. 15,3,11. — Vgl. शामट्.

शम्य s. शंय.

शम्या f. *Stock; insbes. Zapfen, Holznagel, Keil, Stützholz* RV. 10,31, 10 (oxyt.). AV. 6,138,4. 20,136,9. am Mühlstein TBr. 1,6,4,1. Çat. Br. 1,1,4,22. 2,4,16. fg. 5,2,3,2. TS. 1, 122,3. am Joch AK. 2,9,14. H. 757. Halāy. 2,420. RV. 3,33,13. Çat. Br. 3,3,4,25. Kāty. Çr. 7,9,26. TS. 1, 6,8,3. चत्वारः शम्ये चनड्वान्युच्यते Pañcav. Br. 6,5,20. 11,1,6. 15,7,6. TS. 1, 364,13. 20. °गर्त Çāṅkh. Çr. in Ind. St. 5, 335. युगशम्यै m. *Joch sammt Zapfen* Çat. Br. 3,5,4,24. — TS. 6,2,3,1. Çat. Br. 12,5,2,7. Pañcav. Br. 25,10,4. Āçv. Gṛhj. 4,3,12. °मात्रं TBr. 3,2,6,2. Bṛhadd. bei Sāy. zu RV. 7,33,11. Kāty. Çr. 5,3,20 (= 32 Aṅgula Comm.). *die Wurfweite* (परम u. s. w.) *einer* Çamjā als Bez. *einer best. Entfernung*: °परम Āçv. Çr. 3,10,9. °प्राप्त 12,6,3. Kāty. Çr. 15,9,12. 24,6,5. Çāṅkh. Br. 2,10. Bhāg. P. 1,7,2 (als N. pr. einer Einsiedelei). °प्राप्तन Lāṭy. 10, 19,5. °परासिन् Pañcav. Br. 25, 13, 2. 4. °पराव्याध Çat. Br. 5,5,2,2. °लेप MBh. 3,8376. 13,4924. षट् °निपातेषु 3,7087. °पात 12,988. M. 8,287. शम्या als Bez. *eines Werkzeugs bei Behandlung der Hämorrhoiden* Vishn. 25,19 (शमी nach dem Comm.).

शम्याक s. शम्पाक und शाम्याक.

शम्यातास m. Bez. *eines best. Tactes* (s. u. शम्पातास): शम्या दक्षिणहस्तगृहीततालविशेषः ÇKDa. nach dem Saṅgītaçāstra.

शम्यु und शम्व schlechte Schreibarten für शंयु, शंव und शम्ब.

शय (von 2. शी) 1) adj. (f. या) am Ende eines comp. nach einem im loc. gedachten oder stehenden Worte (auch nach einem adv.) *liegend, schlafend, sich aufhaltend, steckend* P. 3,2,15. 6,3,18. H. 10. वत्सचर्मशया° *in der Nacht auf einem Kalbsfelle schlafend* MBh. 4, 597. एकपुलिने° 13,6476. उदके° Harıv. 37. R. 7,104,5. Mārk. P. 45,63. Bhāg. P. 2,5, 24. पूर्वाह्ण° P. 6,3,18, Schol. शिला° Kumāras. 5,25. सुवर्णतूणीर° (Pfeil) MBh. 8,4644. एकतूणी° 1821. तूणी° R. 6,34,28. Vgl. अधः°, अमते°, अयः°, अवमूर्ध°, उत्तान°, उदर°, कुक्षले°, कुशे°, क्षे°, गिरि°, गुहा°, गोष्ठे°, तल°, तले°, तल्पे°, दिग्धमल्क°, दिवा°, देवे°, नलिने°, नित्य°, पङ्के°, पत्ते°, पार्श्व°, पुरि°, पृष्ठ°, प्रगे°, प्रेष्ठे°, बिल°, बिले°, ब्रह्मे°, भू°, भूमि°, मनसि°, रात्रः°, वल्मे°, वृक्षे°, शरकुटे°, सलिले°, स्थण्डिले°, हरि°. — 2) m. *a*) *Schlaf* Daçak. 24, 60. Viçva im ÇKDa.; vgl. दिवा°. — *b*) *Lager, Bettstatt* Med. j. 56; vgl. वीर°. — *c*) *Schlange* Med. — *d*) *Hand* AK. 2,6,2,22. H. 591. Med. Halāy. 2,356. Naiṣh. 1,20. — *e*) so v. a. कुस्त als *Maass* Varāh. Bṛh. S. 56,23 (समा v. l.). हि° u. s. w. Schol. zu Kāty. Çr. 7,1,23. 5,3,9. 8,4,21. 6,18. — *f*) = पण Viçva im ÇKDa. wohl *eine Handvoll; abuse, imprecation* Wilson. — *g*) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,3649 (ed. Bomb. शास्त्वाभयाः st. शात्वाः शयाः). — *h*) शयस्य व्रतं मत्स्यर्षिः (so ist zu lesen) N. eines Sāman Ind. St. 3, 239, *a*. — 3) n. MBh. 7,3252 fehlerhaft für शत, wie die ed. Bomb. liest.

शयण्ड Uṇ. zu Uṇādis. 1,138. gaṇa इषुकार्यादि zu P. 4,2,54. शयण्डभक्त = शयण्डानां विषयो देशः ebend. Nach Uṇādik. im ÇKDa. ist शयण्ड adj. = निद्राशील. — Vgl. शयाण्ड, शायण्डायन.

शयण्डक s. u. शयाण्डक.

शयत m. = निद्रालु (vgl. शयण्ड) Uṇādiv. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa. *der Mond*(?) H. ç. 11.

शर्यव (von 2. शी) Uṇādis. 3,113. m. 1) *Lager, Aufenthalt* RV. 6,17,9. 18, 8. विभिन्धा पुरं शयवेमपाचीम् 10,67,5. — 2) *Fleischfafer* (शयाली st. श-

यादी ÇKDa.) H. an. 3,333. — 3) *Boa* ebend. — 4) *Fisch.* — 5) *Eber* Unādis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa. — 6) *Tod* H. an.

शयन (wie oben) 1) adj. *ruhend, dem Schlaf frönend:* Kṛishṇa Paṇḍar. 4,8,106; vgl. शयालु. — 2) n. Vop. 26,171. *a) Lager, Bettstatt* AK. 2,6,2,39. 3,4,88,187. H. 682. an. 3,429. Mud. n. 137. Halāj. 1,121. 2,152. AV. 3,23,1. शर्यने शर्यानः 5,29,8. Çat. Br. 11,5,4,2. 9, 4. Kaṭṭ. 17. 25. 36. 47. Kāṭy. Çr. 22,2,27. Nir. 3,15. तत्समायसम् M. 8,372. परार्ध्य MBh. 1, 5904. 13,351. R. 2,35,18. मुख्य 50,25. 58,3. 72,19. 87,12. R. Gorr. 2, 33,20. Mṛicch. 110. मनोहर Spr. (II) 3994. Uttarar. 16,14 (23,1). 17,14 (24, 4). Varāh. Bṛih. S. 74,1 (zu lesen nach Kern शय्या श°). 79,1. 18. Wassiljew 85. Vet. in LA. (III) 18, 9. विस्तीर्णे शयनोत्तमे MBh. 3,1819. स्वास्वीर्ण Sūçr. 1,69,7. Kathās. 18,113. °रचन unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,3. °विधि 83,*b*,32. Verz. d. B. H. No. 1024. शयनं परिकल्पयेत् Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,35. समानशयने चैव न शयीत M. 4,40. °स्थो न भुञ्जीत 74. शयने स्थिता Vet. in LA. (III) 20,4. शयनं गतः R. 5,81,32. Sūçr. 1,68,14. °तलगत Spr. (II) 2094. महार्हशयनोपेत R. 6,93,11. शयनं समुपाविशत् 2,85,18. पपात शयने 59, 22. शयने तयाम्मिते Kathās. 18,278. शयनं म्मितः 28,121. शयनासनसेवन Varāh. Bṛih. S. 79,5. शयनं नैव भेजिरे R. 2,41,17. अधिरुह्य शयनं 42,29. संवेश्य शयने 76,5. शूद्रो शयनमारोप्य M. 3,17. उच्छ्रितशयनासनभोजन adj. Buḍ. P. 1,11,18. राजशयनं *ein fürstliches Lager* P. 5,2,131, Schol. कुश° Rāgat. 1,95. कुसुम° Viṣṇ. 51. Spr. (II) 844. धरणि° Gīt. 5,5. वनस्त° *auf Ananta* Buḍ. P. 7,9,32. विरुद्ध° Mṛicch. 87. सुधः° adj. *auf dem Erdboden sein Lager habend* Buḍ. P. 3,1,19. सवनिशयना (nach der richtigen Lesart) Mṛicch. 86. भोगीशभोग° adj. LA. (III) 91,20. राजवधूमवन्ध्यशयनो व्यधुः Rāgā-Tar. 6,189. — *b) das Liegen, Ruhen, Schlafen* AK. 1,1,2,36. 3, 3,32. H. 313. H. an. Mud. Vop. 9, 40. VS. 18, 6. Sūçr. 1,70,14. 119,1. 255,16. युगादिकालशयनं विष्णोः MBh. 1,1218. त्मा° 3,12456. महार्हि-शयनं कुरुः Spr. (II) 671. 1686 (pl.). मञ्चास्तले केवले 1687. सुतल्पे शयनं कुरु Paṇḍar. 1,6,39. 2,2,6. Paṇḍat. 34,11. — *c) Beischlaf* H. an. Med. — *d)* N. eines Sāman Ind. St. 3,240,*b*,5 v. u. — Vgl. अब्धि°, उत्पाद°, केलि°, महा°, विहार°, वीर° (auch R. 6,105,20), शव°, श्येनाश°, स°.

शयनगृह n. *Schlafgemach* Çiç. 72,12, v. l.

शयनभूमि f. dass. Çiç. 72,12.

शयनवासस् n. *Schlafgewand* Ṛt. 5,12.

शयनस्थान n. *Schlafgemach* Halāj. 2,140.

शयनावास (शयन + आ°) m. dass. Rāgā-Tar. 5,406.

शयनास्पद (शयन + आ°) n. dass. H. 995.

शयनीय (von शयन) 1) adj. *zum Liegen —, zum Ruhen —, zum Schlafen dienend:* पर्यङ्क R. 2,72,11. °शिलातल Uttarar. 51,17 (67,3). — 2) n. *Lagerstatt, Lager, Bettstatt* AK. 2,6,2,39. H. 682. Āçv. Gṛ. 2,7,7. MBh. 13,5041. Harīv. 4785. R. 2,30,48. °तल R. Gorr. 2,66,67. शयनीयाभित 69. 74,18. Rāgat. 8,69. Kathās. 25,72. 28,142. उत्तस्थौ °तः 45,120.

शयनीयक n. = शयनीय 2) Çārdar. im ÇKDa. Kathās. 33,177. 45,182. 262. 286. 64,154. fg. 95,25.

शयनीयगृह n. *Schlafgemach* Çiç. Ca. 109,4. Kathās. 84,28.

शयनीयवास m. dass. Vet. in LA. (III) 19,33.

शयनैकादशी (शयन + ए°) f. *ein best. Festtag: der 11te Tag in der lichten Hälfte des Āshāḍha, an dem Vishṇu seinen Schlaf hält,* ÇKDa.

शर्या (von 2. शी) f. *Lagerstatt:* शर्ये शयासु प्रयुतो वनानु ṚV. 3,33,4. — Vgl. शय्या.

शयाण्ड gaṇa ईषुकार्यादि zu P. 4,2,51. शयाण्डी gaṇa वरणादि zu 82. शयाण्डीभक्त = शयाण्डानां विषयो देशः gaṇa ईषुकार्यादि. — Vgl. शयण्ड.

शर्याण्डक m. *ein best. Vogel* VS. 24,33. शयण्डक (= कृकलास Comm.) TS. 5,5,24,1.

शयान partic. s. u. 2. शी und vgl. निः°. m. n. Siddh. K. 249,*a*,9.

शयानक (von शयान) 1) adj. = शयान in प्रतिसूर्य°. — 2) m. = प्रति-सूर्य° *eine Eidechsenart* H. 1299. *Schlange* Uṇādis. im ÇKDa.

शयालु (von 2. शी oder शय) 1) adj. *schläfrig, schlaflüchtig, dem Schlafe frönend* P. 3,2,158, Vārtt. Vop. 26,148. AK. 3,1,33. Trik. 3, 3, 403. H. 442. an. 3,685. Med. l. 135. Kṛishṇa (Vishṇu) Paṇḍar. 4,8,44. — 2) m. *a) Hund* Trik. 3,10,6. 3, 3, 403. H. an. Med. — *b) Schakal* Hit. 78. — *c) Boa* H. an. Med.

शयितृ (von 2. शी) nom. ag. *der da liegt, ruht, schläft* P. 4,2,15.

शयितव्य (wie oben) n. impers. *zu liegen, zu ruhen, zu schlafen:* यत्र तृत्तौ च युष्माभिः शयितव्यमिमां निशाम् Kathās. 15,48. तृणाकुटीरके Paṇḍat. 34,9 (30,18 ed. orn.).

शर्यु (wie oben) 1) adj. *liegend, ruhend:* शयुं कत्वामन्निधांसञ्चरन्तम् ṚV. 4,18,12. हिमाता शयुः कतिधा चिदास्वे 1,31,2. 3,55,6. — 2) m. *a) Boa* AK. 1,2,4,5. H. 1303. Halāj. 3, 20. — *b)* N. pr. eines Schütz-lings der Açvin, dessen unfruchtbare Kuh sie ergiebig machen, ṚV. 1,112,16. 116,22. 117,20. 118,9. 119,6. 6,62,7. 7,68,8. 10,39,13. 40, 8. — Vgl. सत्य°.

शयुत्रा (von शयु) adv. *auf dem —, zu dem Lager;* = शयने Nir. 3,15. — ṚV. 1,117,12. का वां शयुत्रा विधवेव देवरं कृणुते सधस्थ आ 10,40,2.

शयुन m. *Boa* (vgl. शयु) Uṇādis. im ÇKDa.

शर्य्यभद्र s. d. folg. Wort.

शर्य्यभव m. N. pr. eines der 6 Çrutakevalin bei den Gaina H. 33. शर्य्यंभद्र Wilson, Sel. Works 1, 336.

शर्य्या (von 2. शी) f. 1) *Lager, Ruhebett* P. 3,3,99. AK. 2,6,2,39. 3,4, 89,193. H. 682. an. 2,384. Med. j. 57. Hit. 172. Halāj. 2,152. Çiç. Gṛ. 2,14. 4,15. Kauç. 141. °प्रभञ्जन Sharv. Bh. in Ind. St. 1,39,2 v. u. M. 3,107. 4,29. 202. 232. 250. 9,17. 10,56. 11,165. महती Sūçr. 2, 35,7. पुष्पमयी Çiç. 74. °प्राप्तविवर्तन 132. दत्ता रुक्मपरिच्छदा Buḍ. P. 3,33,16. तृणानि Spr. 2727. शार्दूलम् 2958. शैलशिला 2939. Varāh. Bṛih. S. 46,22. 60,14. 74,1. 78,4. 79,8. 88,12. °दान Verz. d. Oxf. H. 35,*b*, 15. 272,*b*, No. 644. 277,*b*,2. शय्यासनाराम्भ 86,*b*,22. शय्यासनम् M. 2, 198. °भोग Verz. d. B. H. No. 590. मातुः शय्यान्तरे लीनः Kām. Nītis. 7, 31. शय्यासने ऽध्याचरिते श्रेयसा न समाविशेत् M. 2,119. शय्यां वृतदलैः कृतां संविवेश R. 2,46,14. शय्यामधिष्ठा VP. 3,11,108. शय्यामिमां वधूम् । आरोपय Kathās. 17,87. भव्यशय्यायामारूढः सुषाप Paṇḍat. 138,11. सुख शय्याम् Rāgat. 5,66. शय्योत्सङ्ग Mṛicch. 91. सुखा शय्या तदर्थमुपकल्पिता R. 2,31,3. 86,3. इयं स्वास्तीर्णा सुखशय्यया 7,46,4. Kathās. 22,6. Vet. in LA. (III) 9,1. पर्णा°, तृण° R. Gorr. 2,28,20. वेणु° 5,13,47.

पांसु° Suçr. 2,138,6. शैव° Rāǵa-Tar. 5,335. षट्कोन्द्र° Bāīc. P. 3,32,4. तदङ्ग° Rāgn. 5,7. षरिष्ट° *das Lager einer Wöchnerin* 3,15. सिद्धान्त-शय्यामधिशय्य Sāh. D. 31,10. am Ende eines adj. comp. (f. या): षङ्ग° Kumāras. 7,65. भूमि° R. 3,32,41. 5,57,11. मनःशिलागुरु° (वानर) 4, 37,6. ष° Kathās. 17,87. — 2) *das Liegen, Ruhen, Schlafen* Vop. 26, 186. Kāty. Çr. 4,13,31. M. 7.220. Bhāg. 11,42. न शय्यासनभोगेषु रतिं विन्दति MBh. 3,2107. Suçr. 1,60,21. 2,187,5. पृथक्शय्या नारीणाम् Spr. (II) 878. यौ तौ वने दुःखशय्यामवात्सीत् — आप्नोतु तं दुःखरामन-र्थामस्यां शय्यां धार्तराष्ट्रः पराभुः MBh. 5,1819. — 3) = गुप्तन Mān. j. 57. = शब्दगुप्त H. an. = ग्रन्थस्य निर्मितिः Hāin. 146. Bez. eines Çabdālaṁkāra (neben गुप्तना) Verz. d. Oxf. H. 208,*a*, No. 489. — Vgl. अधःशय्य, अधःशय्या. गर्भ° (auch Kathās. 34,63), ब्रह्म°, पर्ण°, पुष्प°, भू°, भूमि°, मञ्च°, राज्ञ°, विलास°, वीर°, शर°, सनानशय्य und शायिक.

शय्यागृह n. *Schlafgemach* MBh. 13,2745. R. 1,12,11. Ṛt. 2,22. Rāgn. 16,1. Kathās. 110,124. — Vgl. व्रत°.

शय्यापालक m. *Hüter des (fürstlichen) Ruhebettes* Pañcat. 156,20. fg.

शय्यापालत्व n. *das Amt des Hüters des (fürstlichen) Ruhebettes* Pañcat. 63,22.

शय्यामूत्र n. *Bettpissen* Çiñkṣ. Saṁh. 1,7,108.

शय्यावासवेश्मन् n. *Schlafgemach* Kathās. 45,180.

शय्यावेश्मन् n. dass. Kathās. 20,146. Rāǵa-Tar. 4,423. 5,409.

शय्योत्थायम् (शय्या + उ° absol. von स्था mit उद्) adv. *früh Morgens, sobald man sich vom Lager erhoben hat,* Kathās. 113,30. Bhaṭṭ. 4,8.

1. शर्, शृणाति Naigh. 2,19 (वधकर्मन्). Dulīep. 31,18 (हिंसायाम्). शृणार्नैः शशरोत्, शशरैत्; शशरिथ P. 6,4,126, Schol. शशरूम् und शश्रुम् 7,4,12. Vop. 16,5. शर्त्रै, शरिष्यते. °शीर्य, शीरतोम् ṚV. 3,53,17. *zerbrechen:* रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत् AV. 6,32,2. पृष्टीः ṚV. 10,87,10. वोळ्हू 89,6. शत्रून् 138,4. Çat. Br. 11,1,6,35. TBr. 1,5,2,4. med. *sich brechen* (z. B. den Arm): शम्ये पादमडुरिम् AV. 4,18,6. स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः ṚV. 10,28,11. act. so v. a. *erliegen:* शृणाति पस्तान् (मृगान्) प्रमर्भेन तस्य ते Kir. 14,13. pass. शीर्यते (auch शीर्यति u. s. w. aus metrischen Rücksichten), शीर्; *brechen, reissen, bersten, auseinandergehen; sich lostrennen:* यत्तो न शीर्यते ṚV. 1,164,13. मा मात्रा शार्यर्मः पुर एतोः 2,28,5. TS. 5,2,6,2. 6,1,3,5. क्लिश्वान् शीर्येत् MBh. 3,591. पृथिवी शीर्येत् R. Gorr. 2,15,29. अशीर्यत्त शिलाः 5,54,7. मानवः Kathās. 107,90. पत्तात्रदग्धं न शीर्यते Suçr. 1,34,2. 99,1. धनुर्वाशीर्यदस्यतः MBh. 6,5058. नाशीर्यत धनुश्चास्य 5059. शीर्यते रथचक्रवत् Kām. Nītis. 8,2. विव्याध पाण्डवं दस्ते तस्य मुष्टिरशीर्यत MBh. 4,1943. शीर्यमाणः संलक्ष्यते न चिक्षेदो ऽपि कायः Rāgn. 16,62. कसुके शीर्यमाणे चित्रे ऽस्मिन्नस्मिंश्च देके Mālav. P. 25,14. शीर्यत्तणालघु Spr. (II) 3178. तनूषां पुष्पितायाणां नर्यपुष्पमशीर्यत *fiel ab* R. 5,5,16. श्यामः स्यात्पक्वमंकोशो न तु शीर्येत कर्हिचित् Spr. 5263. केशाः शीर्यत्त वेधसः *ausfallen* Mālav. P. 48, 21. *in sich zusammenfallen, verrecken* Spr. (II) 1845, v. l. अधिवासो न शीर्यते *sich abnutzen, vergehen* Rāǵa-Tar. 3,426. घीः शीर्यते सदा *sich aufreiben* Hariv. 16121. Çat. Br. 14,6,9,28. शीर्णं P. 8,2,42. *zerbrochen, zersprungen* (= विशीर्ण und तनु Mān. g. 30): पद्मा शीर्णेन शीर्णं संधिन्सेन् Çat. Br. 11,5,8,6. (वज्रम्) दशधा शतधा चैव तच्छीर्णं वृत्रमूर्धनि MBh. 1,6485. 13,665. शीर्णायुधायुध Kathās. 47,72. रथ R. 3,45,12. °शीर्यन् Bāīc. P. 3,18,5. °दत्त (गज) MBh. 7,4864. Spr. (II) 480. (I) 2347. *zerrissen:* कन्था (II) 2426, v. l. (für शीर्णा). *abgesprungen, abgefallen:* नगाग्रादिव शीर्णानां शृङ्गाणां पतितो MBh. 3,2540. कनकबिन्दवः R. Gorr. 2,96,16. 3,67,7. शिरःशीर्णैस्तटजैः *ausgefallen* Rāǵa-Tar. 2, 88. शापः *ausgebrochen* (aus dem Flusbett) Nir. 4,25. *zerfallen, verfault, verwest* R. Gorr. 2,33,21. तरु Spr. 3012. मक्षन् Kathās. 3, 56. Mālatīm. 79,18. Mīnk. P. 34,25. शीर्णो गङ्गातले ऽत्यन्तः Kathās. 27,128. कुष्ठशीर्णकराङ्घ्रिक 64,131. in Verbindung mit Wörtern, die *Frucht, Blüthe, Blatt* u. s. w. bedeuten, sowohl *abgefallen,* als *verwelkt, verfault:* पुष्पमूलफलैः स्वयं शीर्णैः *von selbst abgefallen* M. 6, 21. °पर्णाशिन् MBh. 13,760. 13,974. R. 1,51,26 (52,25 Gorr.). R. Gorr. 1,14,11. कर्णिकारस्य शाखेव शीर्णपुष्पा R. 2,92,22 (101,24 Gorr. शीर्णपर्णा). शीर्णपर्णफलैर्द्रुमैः MBh. 1,5891. 5,7349. Ṛv. 1,23. Mucc. 30. Vaṁs. Bāh. S. 51,3. 89,1. Sāh. D. 42,11. शीर्णानि फलानि केशो *verfault* Kathās. 75,33. Rāǵa-Tar. 3,326. Bāīc. P. 4,8,73.

— व्यति pass. *in viele Stücke zerbrochen,* — *zerspringen:* पट्टानां व्यतिशीर्यताम् MBh. 4,1817.

— घनु vgl. घनुशार (?).

— अप *abbrechen,* act.: पृष्टीः AV. 2,7,5. 6,32,2. 19,45,1. med.: बाकुम् Çat. Br. 1,7,3,19. pass.: यदि यावापिशीर्यते *zerbricht* Pañcav. Br. 9,9,13. °शीर्ण AV. 4,3,6.

— अव *zerbrechen:* मन्यून् Pañcav. Br. 7,5,2. pass. *auseinanderstieben:* (पावकः) समन्तादवशीर्यत R. ed. Bomb. 1,37,12. °शीर्ण Kāç. 88. *auseinanderfallend, wackelig:* न भग्ने नावशीर्णे च शयने प्रस्वपेत च MBh. 13,5003.

— आ vgl. आशारीक.

— नि *abbrechen:* निशीर्य शल्यान्ना मुखा VS. 16,13. — Vgl. निशरण, °शारण, °शारूक.

— निस् *zerbrechen:* ग्रीवाः Kāṭh. 24,10. शत्रून् AV. 3,6,2. 8,8,2.

— परा *zerbrechen, zermalmen;* act. ṚV. 7,104,1. 10,87,14. fg. °शरैत् AV. 6,66,2. °शरोत् 75,1. °शीर्ण Nir. 6,30. — Vgl. पराशर्.

— परि pass. *zerspringen, bersten:* (मरुत्सगिरिः) समन्तात्पर्यशीर्यत MBh. 3,11141. नभसः परिशीर्यतः 1,8333.

— प्र *zerbrechen, abbrechen:* पर्वाणि ṚV. 10,87,5. पूर्वार्धम् Çat. Br. 1,8,4,13. 39. Kāṭy. Çr. 3,4,7. °शीर्ण partic.: अग्र° Çat. Br. 11,1,6,6. स्वयं° 5,3,2,5. ग्र° Kāṭy. Çr. 2,3,21. प्रशीर्णो धनुषि MBh. 7,4425. °मुष्टि 8,4697.

— प्रति *abbrechen,* (die Spitze) *abstossen:* प्रत्यग्रं शृणीहि ṚV. 3,30, 17. 10,87,10. TBr. 1,5,4,4. प्रस्तरम् TS. 2,6,3,3. — Vgl. प्रतिशार्.

— वि pass. *zerbrechen, zerspringen, zerfallen:* मा गुगं वि शीर्ि ṚV. 3,33,17. Pañcav. Br. 14,9,27. रथाङ्गम् Çiñkṣ. Gṛhy. 1,15. 2,13. भाण्डं पृथिव्यां तद्यशीर्यत R. 2,78,17. घटाः MBh. 2,2695. नेमिः Verz. d. Oxf. H. 11,5,13 v. u. (व्यशीर्यत zu lesen). (शक्तिः) व्यशीर्यत मेदिनीम् *zersplitterte und drang in den Erdboden* MBh. 6,4763. उल्का 2,2648. गिरिः 1,8333. R. 1,65,12. शिखराः सप्तधा 5,56,43. 5,13. 2,71,17. भवनानि 5,50,10. प्रासादाः 38,33. फलानि Bāīc. P. 5,16,18. तिलशो विशीर्यमाणं शरीरम् 26,28. R. Gorr. 1,26,12. Spr. (II) 3172. विशीर्यन्ती नावमिव MBh. 3,15713. गदा विशीर्यन्ती 6,5424. तस्यैव पाणिः सनखो

विशीर्येत् 5,1879. गिरेरिव विशीर्यतः R. Gorr. 1,69,19. संदेहस्ते व्यशीर्यत् Kaiṇḍ. Up. 5,13,2. व्यशीर्यद्बन्धनम् MBh. 14,1713. व्यशीर्यत शरीरात्स्वात्सर्वगात्राणि *lösten sich ab* R. 1,25,12. पुष्पमुच्चावचं भूमौ व्यशीर्यत समन्ततः *auseinanderfallen* Harıv. 3933. सैन्यानि विशीर्यन्ते सेनायाः सेतवो यथा Spr. (II) 2945. भिन्नं हि तव बलं काष्ठमिव तृणाद्भृं विशीर्यते Kim. Nitis. 17,40. गन्धादेव व्यशीर्यन्त (गजा तथा व्यदीर्यन्त die neuere Ausg.) सिंहस्येवेतरे मृगाः *auseinanderstieben* Harıv. 13522. विशीर्यमाणा पृतना Bhāg. P. 6,11,2. 10,63,17. यत्राबि किंचिद्विशीर्यते *verderben, zu Grunde gehen* M. 8,408. (मनस्वी, कुसुमस्तबकः) विशीर्यति वने Spr. (II) 1845. देहे विशीर्यमाणे पुरुषो न विशीर्यते जडः Bhāg. P. 2,7,49. व्यशीर्यत ततो राष्ट्रं तपोनानाविधैस्तदा MBh. 1,3726. तस्य व्यशीर्यत्कोशवाहनम् MBh. 14,75. तमो विशीर्यते सद्यम् Bhāg. P. 2,4,8. अवश्यनोक्तं पूर्वं परस्ताच्च विशीर्यते ब्रह्म M. 2,74. विशीर्यन्ते स्वयं चैव दैवोपकृतकाः Spr. 3140. यास्तिकं विशीर्यते Harıv. 11316. सर्वाः Sarvadarçanas. 15,2. — partic. विशीर्ण *zerbrochen, zerfallen, zerrissen* Sesh. 2,18 (विकीर्ण MBh. 1,7669). MBh. 3,14332. Harıv. 5396 (विकीर्ण die neuere Ausg.). 13512. fg. 13521. R. 3,32,20. 33,51. 53. 56. 67, 14. 4,7,23. 21,37. 5,4,9. 87,4. 6,3,51. 81,26. Suçr. 1,38,3. 99,10. Mahān. 98,17. Kim. Nitis. 13,65. Spr. (II) 4227. Ragh. 16,11. Vaṛāh. Bṛh. S. 80,15. 104,63. Mārk. P. 47,12. Bhāg. P. 1,9,38. कुलि 3,13,29. 19,26. फल 5,16,20. 7,2,29. Pañcat. 80,9. °मूर्ति *zerschmettert, zermalmt* Kumāras. 5,54. वानराः R. 5,83,8. Ragh. 12,51, v. l. रेवाम् — विन्ध्यपादे विशीर्णाम् Megh. 19. बाष्पेण स्तनतटविशीर्णेन *zerstoben* Spr. (II) 3965. बाष्पेणविशीर्णचन्दनरजःपुञ्जप्रकर्ष *abgerieben* 4014. पुरो *zerstört* Bhāg. P. 4,28,7. 24. रुग् *zerrissen* R. 3,58,36. वल्कलम् — विशीर्णसंकृति Kumāras. 5,8. °पङ्क्ति (पूय) Ragh. 9,56. °प्रतिसंधान Vers. d. Oxf. H. 216,a,6. °जीर्णवसन Spr. 2045. Kathās. 2,51. 21,41. रत्नराशिर्विशीर्णो ऽयम् *auseinandergeworfen* MBh. 3,2548. कुलम्भस्य च मार्गेषु विशीर्णास्ते महागजाः *umherliegend* Harıv. 13321. दसालि *ausgefallen* Spr. 4965. कोश *verschleudert, zu Grunde gerichtet* MBh. 14,56. 60. प्रारम्भ *zu Nichts geworden* Spr. 2847. — Vgl. उत्केविशीर्ण, विशर, विशरण, विशारण.

— अभिवि pass. *auseinandergerissen werden:* (वाहिनी) साद्यतेन शतधाभिव्यशीर्यत MBh. 7,4378.

— निर्वि pass. *sich ablösen und auseinanderfallen:* भूषणानि मही-तले। सद्यः खान्निर्व्यशीर्यन्त तोयान्तारा इवाम्बरात् R. 3,58,35.

— प्रवि, partic. °शीर्ण *zerfallen, abgefallen:* °मांस Suçr. 1,67,13.

— सम् *zusammenbrechen:* सं वै गुरुभारः प्रणाति Ait. Br. 4,13. Çat. Br. 1,1,4,18. 2,1,4,26. यदि कर्तं पतित्वा संशशे AV. 4,12,7. 12,4,3. 8. RV. 6,54,7. einen Bogen Açv. Gṛh. 4,2,22. Pañcav. Br. 11,5,8. 21, 14,4. सुमंत्रस्तं बलं ते समशीर्यत *auseinanderstieben* MBh. 5,2495. — Vgl. संशार.

2. शद् = भा *sieden, kochen;* davon शरस्, शृत (partic.), शाशिर, शाशिर, शाशीत.

3. शद् = भि *sich anlehnen u. s. w.;* davon शरण, शरीर, शर्मन्, शाशार, शाला.

1. शर् (von 1. शद्) m. P. 3,3,57, Schol. (parox.). 1) *Rohr* überh., insbes. *Saccharum Sara Roxb.* (zu Pfeilen verwandt) Nir. 5, 4. AK. 2,4, 8,27. H. 1192. an. 2,459. fg. Med. r. 87. Halāy. 2,36. RV. 1,191,2. AV. 1,2,1. 3,1. वि ते मदे शरमिव पातयामसि 4,7,4. क्षिप्रं शर इव भव्यताम् 8,8,4. Çat. Br. 1,2,4,1. शरेषिका 3,1,3,13. °वार्क्षम् 14,9,4,11. TS. 5, 2,6,3. 6,1,3,3. Kāṭy. 47. fg. Kāty. Çr. 25,7,17. Gobhil. 1,94. M. 8,247. R. 2,96,44. 52. R. Gorr. 2,30,13. Suçr. 1,27,20. 35,12. 96,13. °काण्ड 333,20. °पाटितपाद Kathās. 74,107. Vaṛāh. Bṛh. S. 53,97. °तार 54, 112. 95,3. दर्भशरम् *gaṇa* गवाश्वादि zu P. 2,4,11. °पाण्डुर Ragh. 14,26. °काण्डपाण्डु Milav. 43. °काण्डपाण्डु Çiç. 11,20. °गौर R. 4,39,14 (vgl. शणगौर MBh. 3,16250). — 2) *Pfeil* AK. 2,8,3,55. 3,4,4,2. Trik. 2,8,52. H. 778. H. an. Med. Halāy. 2,303. 311. 5,5. Mundop. Up. 2,2,3. M. 3,44. धनुःशराणां कर्ता 160. MBh. 3,12235. 13657. 13731. R. 1,1,64. शरमुद्धृत्य 2,63,22. Megh. 49. Ragh. 1,61. शरं निधक्ष्णाद्धर्तुम् 2,30,3,56. Vaṛāh. Bṛh. S. 26,9. 58,32. Dhūrtas. 66,11. Pañcat. 224,11. Hit. 34, 20. स्मर° 39,22. Kathās. 4,8. वाक्शराः R. 2,35,8. am Ende eines adj. comp. (f. रा) Kathās. 39,170. करिष्यमाणाः सशरं शरासनम् Ragh. 3,52. — 3) *Bez. der Zahl fünf* (wegen der *fünf Pfeile* des Liebesgottes) Wilson, Nax. 2,382. Vaṛāh. Bṛh. S. 8,20. Ganit. Madhyam. 5. Sin. D. 264; vgl. शरागि 2). — 4) *sinus versus* Colebr. Alg. 89. Ganit. Traipraçn. 58 nebst Comm. Golādh. Golas. 16. Grahagaṇ. 29. Dṛkk. 10. Ganit. Grahaṇāḍh. 2. Bei Āryabhaṭa 2,17 sowohl *sinus versus*, als auch *der ganze Durchmesser nach Abzug des sinus versus.* — 5) Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten in den Häusern 4, 5, 6 und 7 stehen*, Vaṛāh. Bṛh. 12,13. — 6) N. pr. eines Mannes RV. 1,116,22. 8, 59,13. fg. eines Asura Harıv. 217 (nach der Lesart der neueren Ausg. st. प्रुक der älteren). 2288. — Vgl. कु°, कुसुम°, पत्र°, पर्ण°, पुष्प°, भीम°, महा°, राम°, स्थूल°, रुरि°.

2. शर् m. = शरस् *Rohr* H. an. 2,459. fg. Med. r. 87. सर् Ratnam. im ÇKDr. — Vgl. क्षीर°.

3. शर् n. *Wasser* H. an. 2,439. Med. r. 87.

शर्क adj. von 1. शर् *gaṇa* मयूरादि zu P. 4,2,80.

शरकार (1. शर् + 1. कार) m. *Verfertiger von Pfeilen* Sin. D. 104,17.

शरकुण्डेशय adj. *in einer mit Rohr* (शर्) *überdeckten Grube* (कुण्ड) *ruhend* (शय): यति R. 7,31,8.

शरकूप (1. शर् + कूप) m. N. pr. eines *Brunnens* (entstanden durch einen in die Erde eingedrungenen *Pfeil*) Lalit. ed. Calc. 178,2. Hiouen-thsang 1,322.

शरगुल्म (1. शर् + गु°) m. 1) *Röhricht* MBh. 13,4204. — 2) N. pr. eines Affen R. 4,41,3.

शरच्चन्द्र (शरद् + चन्द्र) m. *Herbstmond* Çiç. 145. Vet. in LA. (III) 1, 16. पौर्णमास° *Vollmond im Herbst* Spr. 2789. परिणतशरच्चन्द्रिकासु तपासु Megh. 109.

शरच्छशिन् (शरद् + शश°) m. dass. Bhāg. P. 3,2,31.

शरच्छालि (शरद् + शालि) m. *im Herbst reifender Reis* Rāja-Tar. 2, 18. 5,269.

शरच्छिखिन् (शरद् + शिख°) m. *ein Pfau im Herbste:* ist stumm MBh. 12,4257.

1. शरत्र (1. शर् + 1. त्र) adj. = शरेत्र *in einem Röhricht geboren* P. 6,3,16.

2. शरत्र (2. शर् + 1. त्र) n. *Butter* H. 407.

शरजन्मन् adj. = 1. शरज; m. ein N. Kârttikeja's AK. 1, 1, 1, 34. H. 209, Schol. Halâj. 1, 20. Racn. 3, 23. Kathâs. 50, 186. 55, 233. 101, 43.

शरज्योत्स्ना (शरद् + ज्यो°) f. *Herbstlicher Mondschein* Spr. 2960.

1. शरण (von 1. शृ) 1) m. N. eines der 5 Pfeile des Liebesgottes Verz. d. Oxf. H. 184, b, No. 419. — 2) n. = मारण, वध *Mord, Todtschlag* Taik. 3, 3, 139. H. an. 3, 228. Med. p. 79.

2. शरण (von 3. शृ) 1) adj. *schirmend, schutzend:* स त्रिधातु शरणं शर्म यंसत् ṚV. 7, 101, 2. 8, 47, 10. गृणन्तं: 10, 18, 12. उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम् 7, 95, 5. AV. 3, 12, 5. शरणान्यशरण्यानि धाम्नामानि कृतानि R. 7, 6, 5. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2147. eines Dichters Gtr. 1, 4. eines Fürsten Schiefner, Lebensb. 272 (42). Târan. 168, N. — 3) n. a) *Schirm, Schutzdach; leichter Schutzbau* überh., *Hütte; Verschlag, Kammer* (vgl. καλιά, καλεία, κλίσιον); = गृह Nalod. 3, 4. AK. 3, 4, 18, 55. H. 991. an. 3, 228. Med. p. 79. Halâj. 2, 137. उप वामवः शरणं गमेयम् ṚV. 1, 158, 3. 130, 1. बिभ्रद्वेद 2, 3, 8. 3, 62, 3. 6, 46, 9. सधा तें बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता 47, 8. 50, 3. दिवः 8, 25, 19. AV. 6, 55, 2. Çâṅkh. Çr. 15, 17, 12. pl. ṚV. 8, 79, 6. यत्र वेश्मुतः शरणमभिकृत्ति wenn *der Blitz eine Hütte trifft* Nir. 7, 23 (nach D. यद्यत्रमात्मनो दारु उदकमन्यद्वा). यादित्यं नास्तंदयते ऽन्यत्र वृतशरणाभ्याम् Gobh. 3, 1, 16. कृतं गिरिगुहम् — निर्वातं (so die neuere Ausg.) शरणं गवाम् Harîv. 3947. शरणोद्यमम: *Obdach* M. 6, 26. शरणं प्रविवेश कृ MBh. 1, 4277. 8430. 2, 1241 (pl.). एषा च दीप: शरणे दीप्यमान: प्रकाशते 14, 507. मन्मय 12, 7717. लतावितानसदृशे वकतु: शरणे पृथक् R. Gorr. 2, 56, 20. प्रदीप्त 5, 88, 21. यो रणं शरणं तद्वन्मन्यते Spr. 2361. Bhâg. P. 2, 8, 6. देवानाम् *Wohnung* MBh. 13, 223. — b) *Schutz, Obhut, Zuflucht;* = रक्षितर् (रक्षक) und रक्षण AK. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 85, b, 13. यो गति: शरणं वासीत् R. 2, 41, 2. न खलु नरके घनस्तनमण्डलं शरणम् Spr. 2833. लेभस्य शरणस्य चास्पदम् Bhâg. P. 2, 6, 6. शरणं कृमिं Pañâr. 1, 7, 78. नान्यच्छरणमस्ति Viâ. 19, 17. तदिदं मुखमुदेव शरणम् Spr. (II) 1129. सर्वस्य शरणं बभूव Çvetâçv. Up. 3, 17. इदं शरणमज्ञानाम् M. 6, 34. शरणं भव मे MBh. 13, 1501. R. 1, 14, 27. Megh. 7. Çiç. 134. Spr. (II) 3484, v. l. (I) 5171. Kathâs. 18, 99. तव पादौ संप्रतं मे शरणम् (so ist zu lesen) Pañâr. 173, 17. अयमम्भोद एव शरणाय कि निर्गुणस्य Spr. (II) 387. शरणं ते प्रदास्यामि R. 1, 39, 2. °प्रद 57, 16. °द Bhâg. P. 10, 16, 33. मत्त: शरणमिच्छति R. 1, 62, 10. शरणं प्रति देवानां प्राप्तकालममन्यत MBh. 3, 2206. धनगर्वितबान्धव° *Zuflucht bei* Spr. 2739. अनाथ° *Zuflucht für* Kathâs. 21, 116. Vaṅâ. Bṛh. S. 43, 1. Bhâg. P. 4, 6, 23. तमेव शरणं गच्छ *suche bei ihm Schutz, Zuflucht* Bhag. 18, 62. तानेव शरणं देवान् जग्मु: MBh. 3, 2224. 2513. 5, 3420. 13, 7483. R. 1, 59, 5. 60, 2. 6, 36, 20. Bhâg. P. 3, 25, 11. °गमन, बुद्धं (धर्मं, संघं) शरणं गच्छामि Burn. Intr. 80, N. 2. 630. Hiouen-thsang 1, 382. Wassiljew 98. 272. देवीं शरण्यां शरणमुपगत: Kathâs. 5, 140. शरण्यमीयु: शरणम् MBh. 7, 2306. 12, 4271. ऋषिं शरणं ययौ 4281. तौ शरणं याम: R. 2, 78, 15. इन्द्रं शरणं प्रपद्ये ऽभूवम् Kâṭh. Up. 2, 22, 3. MBh. 3, 2289. 2826. 2843. 5, 7007. R. 1, 57, 16. Spr. 2961. Bhâg. P. 10, 16, 32. ऋषिं शरणमापेदे MBh. 12, 4286. रोहन्तं शरणं मित: Kathâs. 73, 225. statt des acc. selten gen.: परेषां शरणं गत: Spr. 1022, v. l. Pañâr. 175, 13. सर्वं भवतां शरणमागत: Hit. 38, 14. — उद्विग्ना: का शरणमुपयान्ति जना: Vaṅâ. Bṛh. S. 5, 88. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): अधर्म° *der nicht zur Tugend seine Zuflucht nimmt* Spr. (II) 464. कुदित° 2233. गतिरपि तथा यष्टिशरणा *des Stabes bedürfend* (I) 4965. आत्मैक° Bhâg. P. 3, 24, 42. अ° R. 3, 42, 32. Megh. 107. Çiç. 82, 21. Spr. (II) 4429. Uttarâs. 57, 10 (74, 10). Kathâs. 27, 173. अशरणीकृत Spr. 2648. अनाथशरणा Kâraṇḍ. 21. — c) इन्द्रस्य शरणम् N. eines Sâman Ind. St. 3, 208, b. — Vgl. अग्नि° (auch Kauç. 120), त्रि°, नि:°, भक्त° (auch Âçv. Gṛhj. 2, 8, 13), यज्ञ°, सु°.

शरणाकुरु adj. MBh. 13, 1354 als Beiw. von कुश vermuthlich fehlerhaft; nach Nîlak. subst.: वाय्वाघातेन वा स्वयं वा पक्वतया पतनेन विशरणं शरणा तत्प्रधाना: कुरवो ऽस्यानि शरणाकुरव: । शृ विशरणे ऽस्माद्बाहुलके त्यु: । कुरुर्नृपान्तर भक्त इति मेदिनी । भक्त शोदन:.

शरणागत (2. शरण + आ°) adj. *der sich in Jmdes Schutz begeben hat, bei Jmd Zuflucht sucht* M. 11, 198. MBh. 12, 3518. R. 2, 96, 31. R. Gorr. 1, 39, 14. 2, 1, 11. Spr. (II) 862. परेषाम् 1022. 4607. (I) 2689. 2962. 3034. 3203. Pañâr. 90, 5. 141, 11. °कृत्तर् M. 11, 190. °घातक Spr. 2854. °घातिन् Pañâr. 1, 6, 31. Davon nom. abstr. शरणागतता f. Kathâs. 60, 112.

शरणार्थिन् (2. शरण + अ°) adj. *um Schutz bittend, Zuflucht suchend* Taik. 3, 1, 2. H. 479. MBh. 3, 2543. Spr. (II) 3147.

शरणार्थक (2. शरण + अ°) adj. dass. (?) Taik. 3, 1, 2.

शरणालय (2. शरण + आ°) m. *Obdach* MBh. 13, 6471.

शरीणि f. etwa *Widerspänstigkeit, Hartnäckigkeit.* इमामग्ने शरणिं मीमृषो न: ṚV. 1, 31, 16. वि ते कर्णव्यो शरणि वि ते मुष्कयो नयामसि AV. 6, 43, 3. — शरणि *Pfad* fehlerhafte Schreibart für सरणि.

शरणीकर् (2. शरण + 1. कर्) *zur Zuflucht machen, Zuflucht suchen bei* (acc.): चरणौ °चक्रे राज्ञ: Râja-Tar. 8, 518. अशरणीकृत s. u. 2. शरण 3) b) am Ende.

शरणीयिन् (2. शरण + ईय°) adj. = शरणार्थिन् R. 1, 1, 42. R. Gorr. 2, 1, 11.

शरण्ड m. = शरट (कृकलास: vgl. सरट), घूर्त und भूषणान्तर H. an. 3, 187. Med. d. 37. = पतिम् und कामुक Çabdar. im ÇKDr. = चतुष्पद् Uṇâdis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDr. — Vgl. शरण्ड.

शरण्य (von 2. शरण) Uṇâdis. 3, 101 (parox.; das Sûtra fehlt in einem Comm.). adj. (f. या) 1) *Jmd* (gen.) *Schutz —, Zuflucht —, Hilfe gewährend;* = शरणमिव गण शाखादि zu P. 5, 3, 103. von Göttern und Menschen 8, 1, 74, Schol. MBh. 3, 193. 2442. 4, 203. 5, 7007. 7, 2306. 13, 3623. Siv. 1, 2 (मरुत्मन् MBh. 3, 16620). R. 1, 1, 42 (46 Gorr.). R. Gorr. 2, 1, 11. 5, 91, 28. 6, 36, 20. Racn. 2, 39. 6, 21. 14, 64. Uttarâs. 32, 1 (42, 3). Kathâs. 5, 140. 46, 144. 52, 48. 95, 88. Râja-Tar. 4, 606. Bhâg. P. 2, 25, 11. 4, 16, 16. गाव: शरण्या भूतानाम् MBh. 13, 3358. दिष्ट्या R. 3, 16, 12. 17, 19. दण्डका: 35, 63. जल Spr. 3124. mit der Ergänzung compon.: त्रिगच्छरण्य Kumâras. 5, 76. अ° MBh. 12, 261. 13, 279. R. 7, 6, 5. — 2) *Schutz —, Zuflucht —, Hilfe suchend, — bedürfend* R. 1, 57, 16 (59, 14 Gorr.). 3, 14, 4. Vaṅâ. Bṛh. S. 43, 1. Bhâg. P. 4, 30, 42. 7, 8, 42. आत्म° *bei* I.A. (III) 90, 22. — 3) *Schutz —, Zuflucht —, Hilfe habend:* अ° *deren bedürfend* R. 3, 55, 62.

शरण्यता f. nom. abstr. zu शरण्य 1) R. 7, 59, 2, 13.

शरतल्प m. *ein aus Pfeilen gebildetes Lager;* vgl. शारतल्पिक.

शरता (von 1. शर) f. *das Pfeil-Sein:* पक्षी: शरतां गते: R. 6, 20, 9.

शरत्कामिन् (शरद् + का°) m. *Hund* Çabdar. im ÇKDr.

शरत्काल (शरद् + काल) m. *Herbstzeit* Rāgat. 12,79. Spr. 2964. Verz. d. Oxf. H. 288,*b*, No. 688. wohl auch Bulg. P. 10,33,26 herzustellen für शरत्काव्य.

शरत्काव्य s. u. शरत्काल.

शरत्पद्म (शरद् + पद्म) n. *eine im Herbst erscheinende Lotusblüthe* Spr. 5066. = सिताम्भोज *eine weisse Lotusblüthe* Rājān. im ÇKDa.

शरत्पर्वन् n. = शारदी *eine Vollmondsnacht im Herbst* Taik. 1,1,108. °पर्वशशिन् *Vollmond im Herbst* L.A. (III) 88,16.

शरत्पुष्प (शरद् + पुष्प) n. *Tabernaemontana coronaria Willd.* Rājān. im ÇKDa.

शरत्समय (शरद् + स°) m. *Herbstzeit* Vaṇis. ed. Grill 5,1. 2. 6. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,36.

शरत्सस्य (शरद् + स°) n. *Herbstkorn* Vaṇiṇ. Bṛn. S. 10,18. 40,1; vgl. शरत्समुत्थानां सस्यानाम् 12.

शरद् Uṇādis. 1,139. f. Taik. 3,3,1. 1) *Herbst* Nir. 4,25. AK. 1,1,8, 19. 3,4,46,95. H. 158. an. 2,235. Med. d. 39. AV. 6,55,2. 8,2,22. 12, 1,36. Çat. Br. 1,5,2,12. 2,1,2,1. 4,3,4,17. 11,2,7,22. TS. 2,6,4,1. 5, 7,2,4. Âçv. Gṛhy. 4,8,2. Kauç. 74. Kāṭhaka Up. 2,5,1. Maitrāyaṇ. 6,33. MBh. 3,12132. R. 3,22,1. 4,26,25. 27,23. Raghu. 4,24. Spr. 3000. Vaṇiṇ. Bṛn. S. 12,4. 9. fg. (शरत् st. सरित् zu lesen). 15,16. 40,12. 43,6. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,29. 288,*b*, No. 688. Bulg. P. 1,5,28. 2,8,5. 10,20,24. besteht aus den Monaten Kārttika und Mārgaçirsha Suçr. 1,20,4. 9. — 2) pl. poetisch für *Jahr* AK. 1,1,3,20. 3,4,46,95. H. 159. H. an. Med. Hia. 258. Hall. 1,116. ṚV. 1,72,3. 89,6. 2,12,11. 24,5. 27,10. 3,32,9. न यं जरन्ति शरदो न मासा न यवाः 5,24,7. 38,4. शतं जीवातु शरदः पुरूचीः 10,18,4. 93,15. TBr. 3,1,4,2. 2,1. Kaṭhop. 1,23. MBh. 1, 7387. 3,8084. 11934. R. 2,54,30 (32 Gorr.). 94,15. Raghu. 10,1. Uttarar. 7,13 (11,3). Vaṇiṇ. Bṛn. S. 69,26. Rājat. 1,53. Mālav. P. 16,32. Sin. D. 12,14. — Vielleicht von 2. शॄ, also *Zeit der Reife*; vgl. Nir. 4,25. — Vgl. शारत्क, शारद, शारदक, शारदिक.

शरदं 1) am Ende eines adv. comp. (°शरदम्) = शरद् *Herbst* P. 5,4, 107. Vop. 6,62. Vgl. उपशरदम्. — 2) f. या a) शरद् *Herbst* Taik. 1,1, 110. Hall. 1,113. Çārṅg. im ÇKDa. Hiouen-thsang 1,62 (es könnte auch शरद् gemeint sein). *Jahr* Çārṅg. im ÇKDa. — b) N. pr. einer Frauenzimmers Rāja-Tar. 8,1825.

शरदत्त m. N. pr. eines Verfassers eines Gesetzbuches Verz. d. Oxf. H. 285,*a*,34.

शरदण्ड (1. शर + दण्ड) m. *Rohrhalm:* शरदण्डानुदण्डयः (क्रियाः) MBh. 7,1015. शरदण्डः शरप्रकाण्ड इव घनुर्दण्डः पृष्ठवंशो येषां सितगौरपृष्ठा इत्यर्थः Nīlak. — Vgl. शारदण्डायन.

शरदण्डा (wie oben) f. N. pr. eines Flusses R. 2,68,15.

शरदन्त (शरद् + अन्त) m. *Ende des Herbstes, Winter* Rājān. im ÇKDa.

शरदम्बिदेव m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,543,6.

शरदिज (श°, loc. von शरद्, + 1. जा) adj. (f. या) *im Herbst entstehend, — erscheinend, herbstlich* P. 6,3,15. इन्दु Kathās. 48,409. शीतरश्मि Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,12, Çl. 44. घर्म Uttarar. 39,21 (53, 18). नक्त: Rājān. im ÇKDa.

शरदुदाशय (शरद् + उ°) m. *ein im Herbst entstehender Teich* Bulg. P. 10,31,2.

शरदृत (शरद् + गत) adj. *im Herbst erscheinend, herbstlich:* मेघ R. 2,44,25.

शरद्धिमरुचि (शरद् + हि°) m. *Herbstmond* Spr. (II) 3123.

शरद्धद (शरद् + ह्रद) adj. *ein Teich im Herbst* Bulg. P. 4,7,10.

शारद्वत् (von शरद्) 1) adj. *bejahrt* ṚV. 1,181,6. — 2) m. N. pr. eines Mannes P. 4,1,102. eines Sohnes oder entfernteren Nachkommen des Gotama MBh. 1,2435. 5072. 7116. Harīv. 434. 1784 (शारद्वत die neuere Ausg.). VP. 434. Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,40. Bulg. P. 1,19,9. 9,21,35. — Vgl. शारद्वत.

शारद्वमु m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,11.

शरद्विहार (शरद् + वि°) m. *Herbstvergnügen, — Belustigung* Verz. d. Oxf. H. 145,*a*,40.

शरद्वीप m. N. pr. einer *Insel* Harīv. 1215. nach Nīlak. = शालद्वीप.

शरधान m. pl. N. pr. eines Volkes Vaṇiṇ. Bṛn. S. 14,26. शवधान Mārk. P. 58,44.

शरधि (1. शर + धि) m. *Pfeilbehälter, Köcher* P. 3,3,93, Schol. H. 782. Vikr. 18. देवं शलधिशरधिम् Kuvalay. 105,*b*.

शरनिवास m. und शरनिवेश m. gaṇa तुभ्रादि zu P. 8,4,39.

शरन्मेघ (शरद् + मेघ) m. *eine herbstliche Wolke* Spr. (II) 3462.

शरपञ्जर (1. शर + प°) n. *das aus Pfeilen gebildete Ruhebett eines gefallenen oder schwer verwundeten Kriegers* Bulg. P. 1,9,28. Vgl. वीरशय्या fgg.

शरपर्णी (1. शर + पर्णी) f. *eine best. Pflanze* P. 4,1,54, Schol.

शरपुङ्ख 1) m. = पुङ्ख 1) Suçr. 1,25,1. Vīrān. 25,33. — 2) f. खा *eine best. Pflanze*, vulgo उन्काली Nigh. Pr. ähnlich der Indigopflanze Baivapa. ebend. (m. ÇKDa. nach ders. Aut.). = सूर्पवंशी Rājān. ebend.

शरपुङ्ख (1. शर + पुङ्ख) adj. f. ई P. 4,1,55, Vārtt. 2.

शरबन्ध m. s. u. बन्ध 1) am Ende, wo noch R. Gorr. 1,4,108 hinzuzufügen ist.

शरभ Uṇādis. 3,122. m. 1) *ein best. Thier* (nach den Comm. und in späteren Büchern öfters ein *fabelhaftes achtbeiniges Wild*, ein gefährlicher Feind des Löwen und Elephanten) AK. 2,8,11. Taik. 2,5,2. H. 1286. Med. bh. 21. VS. 13,51. Ait. B. 2,8. शरभो न वृतो ऽति दुर्गाण्येषः AV. 8,5,9. Çat. Br. 1,2,3,9. Çāṅkh. Çr. 16,3,14. 12,13. Ind. St. 1,279. dem Hirschgeschlecht zugezählt Kāraka 1,5.6. Suçr. 1,200,9. 2,412,3. MBh. 3, 12245. 15629. Harīv. 4596. R. 2,29,3. 7,7,20. 23,5. Megh. 55. Vaṇiṇ. Bṛn. 27(25),6.10. Colebr. Misc. Ess. 2,365. fg. Kathās. 42,5. Bulg. P. 3, 10,21 (एकशफ). 4,6,20. 8,2,20. 10,10. Pāṇ. 1,6,24. 7,27. अष्टपाद्: शरभः (अष्टौ पादा विषयदेशं प्रति गतिसाधनानि इन्द्रियाणि यस्य स शरभः Nīlak.) सिंहघाती MBh. 3,10665. शरभाक्रान्तसिंहेव मरुती गिरिकन्दरा 7,28. अष्टपाद्ऊर्धनयनः शरभो वनगोचरः 12,4291. fgg. Harīv. 9383. Mārk. P. 8,150. Verz. d. B. H. No. 897. विपत्तीकृत्य शरभान्पातयन्पर्वतोपमान् Kathās. 94,11. उत्पादका न वरुवः कवयः शरभा इव Bilhaṇa's Vikr. in Z. d. d. m. G. 25,455. शरभकुलमत्रिकं प्रोद्धरत्यम्बु कूपात् Ṛt. 1,23 (schwerlich = शलभ). बन्धकीपक्षशरभ्रूलिकागुर्विणीस्तनात् । प्रज्ञा नृपेण वादेया Mārk. P. 27,30; vgl. मनस्विन् = शरभ. Çākjamuni als शरभ Vāyu.

beim Schol. zu H. 233. शरभ = कारभ Med. = उष्ट्र *Kamel* Gaṇiku. im ÇKDa. — 2) unter den Beinn. Vishṇu's MBu. 13,6988. — 3) N. einer Upanishad Ind. St. 3,326,1. — 4) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – = Colebr. Misc. Ess. 2,162 (X, 15). — 5) N. pr. a) eines Asura MBu. 1,2524.3663. Hariv. 204.13181.14287. — b) zweier Schlangendämonen MBu. 1,2150.2153. — c) verschiedener Männer ṚV. 8,89,6. MBu. 2,225.3,2013 (घोदितर्धाता). Sohn Çiçupâla's 14,2468. Bruder Çakuni's 7,6944. — d) pl. eines Volkes MBu. 1,6684. statt काम्बोऽकृभान् liest aber die ed. Bomb. besser कौशिच्छ्वान्. — e) eines Affen Mân. R. 1,16,16. 4,25,33. 33,12. 39,34. 4,41,4. 5,73,44. 90,14. 6,2,37. 38,40. 69,43.

शरभकेतु m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53,3.

शरभङ्ग (1. शर + भङ्ग) m. N. pr. eines Ṛshi MBu. 3,8181. 8330. R. 1,1,40 (43 Gorr.). 3,17. R. Gorr. 2,123,16. 3,8,18. 35,102. 5,108,37. Rasm. 13,45.

शरभता f. nom. abstr. zu शरभ 1) MBu. 12,4299.

शरभानना (शरभ + आनन) f. N. pr. einer Zauberin Kathâs. 48,133.fgg.

शरभू m. ein Name Kârttikeja's H. 209. Vgl. शरजन्मन्.

शरभृष्टि f. *Rohrspitze* Çat. Br. 14,9,4,11. Kaṭy. 47.

शरमय (von 1. शर) adj. (f. ई) *aus Rohr bestehend, — gemacht* P. 4,3, 144. मेखला Kâṭh. 11,5. TS. 6,1,8,3. बर्हिस् 2,1,8,7. Kâṭh. 23,4. Âçv. Çr. 9,7,5. Kaṭy. 47.116. Nir. 5,4. 10,29.

शरमत्स्य m. *ein best. Vogel*, vulgo गोसालिक् Çabdam. im ÇKDa.

शरमुख n. *Pfeilspitze* H. an. 4,89. Med. p. 109.

शरलक n. *Wasser* Çabdam. im ÇKDa.

शरलोमन् m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 310,a,30. Verz. d. Cambr. H. 22.

शरव m. N. pr. eines Volkes MBu. 6,2984. fehlerhaft für शबर, wie die ed. Bomb. liest.

शरवण (1. शर + वन) n. *Röhricht* (Geburtsstätte Kârttikeja's) P. 8, 4,5. MBu. 7,328. 11,653. 13,4097. 4197. R. 1,37,20 (38,23 Gorr.). R. Gorr. 1,39,17. 4,44,71. fg. 7,16,1. 2. 35,22. Kathâs. 49,241. गुरुस्य °स्थस्य Suçr. 2,394,3. °भवो देवः so v. a. Kârttikeja Mahâv. 46. शरवणोद्भव desgl. MBu. 3,14633. शरवणालय desgl. 1,2587. Hier und da fälschlich शरवन geschrieben.

शरवत् (von 1. शर) adj. gaṇa मधादि zu P. 4,2,86. zur Etymologie von शल्मलि Nir. 12,8 (कण्टकैरसौ लिनस्ति D.). *mit Pfeilen gespickt* Hariv. 15204 (mit der neueren Ausg. शरवान् zu lesen).

शरवाण m. 1) *Pfeilspitze*. — 2) *Verfertiger von Pfeilen* H. an. 4,89. Med. p. 109. — 3) *Fussoldat* H. an. पादिक st. पदाति Med.

शरवारण (1. शर + वा°) n. *Schild* MBu. 6,3709. 3606. — Vgl. शरावर (wie die ed. Bomb. an beiden Stellen liest) und शरावरण.

शरवृष्टि m. N. pr. eines Marutvant Hariv. 11545. — f. *Pfeilregen*.

शरवेग m. N. pr. eines Rosses (*geschwind wie ein Pfeil*) Kathâs. 39, 170. 121,277.

शरव्य (von शर) P. 6,1,83. Vârtt. 2 (von 1. शर abgeleitet). 1) n. *Ziel* AK. 2,8,3,54. Hall. 2,313. कृता: शरव्ये करिणा तवासुरा: Çiç. 156. Raghu. 7,42. 11,27. °व्यध Çiç. 7,24. — 2) f. आ *Pfeilschuss* (später erklärt als *Pfeilhagel*) ṚV. 6,75,16. 10,87,12. AV. 1,19,1. 3 (parox.). 11,10,6. यामस्यत्ति शरव्यां३ न सा मृषा 5,18,9. 12,5,25.29. तिस्रो वै शरव्याः। प्रतीचीं तिरश्चीनूर्ची TBr. 1,7,6,8. TS. 6,5,4,1. 5,5,2,2. VS. 24,10. 30,7. अशरव्य adj. (f. आ) *Pfeilen nicht zugänglich* Çat. Br. 5,3,3,30. — शरव्या वाप: । शरव्या वै तेजनम् P. 6,1,83, Vârtt. 2, Schol.

शरव्यक n. = शरव्य 1) H. 777.

शरव्याय् (von शरव्य). °यते *das Ziel bilden:* विषमशरस्य शरव्यायमानमनो बभूव Daçak. 39,3. 4.

शरशय्या f. *ein aus Pfeilen gebildetes Lager* (für gefallene Krieger); darauf werden erlegte Löwen gelegt Kathâs. 94,10. — Vgl. वीरशय्या fgg.

शरशराय् (onomatop.) °यति *zischen* P. 8,1,12, Vârtt. 6, Schol. अग्निहोत्रं शरशरायत् Âçv. Çr. 3,11,19.

शरस् (von 2. शृ) n. *Rahm, die Haut auf gekochter Milch* VS. 39,3. शरोगृकीत *mit einer Haut bezogen* Âit. Br. 3,26. Çat. Br. 3,3,3, 2. 10,6,5,2. TBr. 2,1,2,1. शरा ऽङ्कारा घर्ष्यूकृत्ते *die Gluth überzieht sich mit einer Haut* (von Asche) 10,3. TS. 5,4,4,3. Kâṭh. 21,7. — Vgl. 2. शर.

शरस्तम्ब m. 1) *Röhricht* MBu. 1,2438.5070.fg.5082.fg.5423.9,2460. Hariv. 1786. Bhâg. P. 1,6,13. 9,21,26. Pañkat. 140,23. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit MBu. 13,1714. — 3) N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,28.

शराक m. *eine best. Mischlingskaste* Verz. d. Oxf. H. 22,a,24.

शराग्नि (1. शर + अग्नि) gaṇa तुभ्रादि zu P. 8,4,39. in der Verbindung °परिमाण MBu. 13,3229 nach Nilak. *fünfunddreissig* (शर = *fünf*, अग्नि = *drei*).

शराघात (1. शर + घा°) m. *Pfeilschuss* H. an. 4,18. Med. k. 196.

शराटि und शराटी f. *ein best. Vogel*, = शरारि Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. घाटि und घाटी.

शराति f. desgl. Râmâçrama zu AK. nach ÇKDa. — Vgl. घाति.

शराभ्यास (1. शर + अ°) m. *Uebung im Bogenschiessen* AK. 2,8,2,34.

शराय् (von 1. शर), °यते *einen Pfeil darstellen:* कटाक्षाश शरायते Spr. (II) 1124.

शरारि f. *ein best. Wasservogel*, = घाटि, घाति Taik. 2,5,25. H. 1338. Hall. 2,94. R. 3,15,6. Rt. 4,9. Kull. zu M. 5,13.

शरारीमुख 1) m. dass. Suçr. 1,205,13. — 2) f. ई *ein best. chirurgisches Instrument, eine Art Scheere* Suçr. 1,26,13. 16. 27,12.

शरारु (von 1. शर) adj. P. 3,2,173. Vop. 26,162. *Schaden zufügend, schädigend* AK. 3,1,38. H. 369. Hall. 2,317.

शरारोप (1. शर + आ°) m. *Bogen* Gaṇiku. im ÇKDa.

शरार्चिस् (1. शर + अ°) m. N. pr. eines Affen R. 4,41,3.

शरार्यास्य (शरारि oder शरारी + आस्य) n. *ein best. chirurgisches Instrument* Vâgbh. 26,9.

शरालि, शरालिका und शराली f. = शरारि Çabdar. im ÇKDa.

शराव Çânk. 3,19. m. n. gaṇa सर्वादि zu P. 2,4,31. 1) *eine flache, irdene Schüssel, Teller; schalenförmiger Deckel eines Gefässes* AK. 2,9, 33. Taik. 2,9,8. H. 1024. Hall. 2,160. Kâṭy. Çr. 5,6,10. Âçv. Gṛhj. 1, 17,3. Gobh. 2,69. वृते °संपाते M. 6,36. MBu. 14,1278. R. 1,73,20. R.

Gobh. 2,128,11. Suçr. 1,273,14. 280,4. 316,10. °निम्नमध्य 2,17,13. 234, 7. 8. °संपुट 389,20. Çiñkṣ. Sāñkh. 2,1,34. Spr. 4967. Varāh. Bṛh. S. 48, 26. सक्तूनाम् धम्मनः Kathās. 4,122.21,124.29,145. Mārk. P. 54,16. 60, 10. Taitt. Prāt. 2,7, Comm. Pañkat. 174,14. सक्तूपूर्ण° Hit. 114,22, v.l. सक्तु° 115,2. मोदक° Vikr. 45,13. निष्ठीवन° Spr. (II) 1593. — 2) *ein Maass für Korn* = 2 प्रस्थ nach TS. Comm. चतुः° (यपूप) TS. 2,3,9, 4. 4,8,7. TBr. 1,3,4,5. 6,8. 3,8,2,2. Çat. Br. 5,1,4,12. Āçv. Çr. 3,10, 27. 14,1. Kāty. Çr. 12,2,13. Kauç. 64. 67. यावच्छ्राव Āçv. Çr. 12,8,25. शरावार्ध = कुटव ÇKDr. nach dem Vaijayanta. Accent der adjj. auf शराव mit vorangehendem Zahlwort P. 6,2,29. fg. — Vielleicht von 3. शॄ. Vgl. उद्°.

शरावक 1) = शराव 1): भक्तस्यार्ध° Kathās. 29,68. am Ende eines adj. comp. (f. °शराविका): स्थाली छिद्रशराविका *einen mit Oeffnungen versehenen Deckel habend* Suçr. 2,61,16. — 2) f. शराविका Bez. *eines best. Abscesses* Suçr. 1,273,13. 14. पिडका शरावाकृतिसंस्थिता Karaka 1,17.

शरावकुई m. *eine Schlangenart* Suçr. 2,287,15.

शरावती (von 1. शॄ) f. N. pr. P. 6,3,120. 1,219. 1) eines Flusses AK. 1,2,2,33. 2,1,6. H. 932 nebst Schol. MBh. 6,327 (VP. 182). Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, N. 2. Pāiṇgaçikṣhāvṛtti 11, *b*, 4. LIA. 1,94. Anh. LII. — 2) einer Stadt Rāgat. 13,97. LIA. 1, Anh. XI, N. 21. — 3) eines buddhistischen Klosters Wassiljew 58. Tāran. 51. 293.

शरावर (1. शॄ + घा°) 1) m. *Köcher* R. ed. Bomb. 3,64,49. — 2) n. *Schild* MBh. 1,5494 (*Köcher* Nīlak.). 6,3667 (*Panzer* Nīlak.). 4010. 3709. 3606 (an den beiden letzten Stellen nur in der ed. Bomb.). — Vgl. शरावरण und das folgende Wort.

शरावरण (1. शॄ + घा°) n. *Schild* MBh. 6,2707.

शरावाप (1. शॄ + घा°) m. *Bogen* Trik. 2,8,31.

शरावि (शरावित्) s. माष° (auch Prayāgāḍ. in Verz. d. B. H. 58,22 herzustellen statt माषशराग्रि). — Vgl. शाराव und शाराविं.

शराभ्यय (1. शॄ + घा°) m. *Köcher* H. 781.

शरास m. = शरासन *Bogen* Bālār. P. 4,16,22.

शरासन (1. शॄ + घ°) *Pfeile schleudernd.* 1) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarāshṭra MBh. 1,4843. 7,5594. — 2) n. *Bogen* AK. 2,8,2,31. H. 775, Schol. MBh. 3,12077. 17302. 6,2385. 7,522. 14,822. R. 1,1,41. 2,23,36 (20,40 Gorr.). 3,56,45. 4,33,42. 5,20,19. Rāgat. 3,52. 9,10.50. Kumāras. 3,64. Çiç. 119. 156. 28,19, v. l. Vikr. 70. Varāh. Bṛh. S. 34, 8. Prasāñ. 7,12. Bālār. P. 1,17,36. 3,14,9. Vgl. पुष्य°, शक्र°, इषुसन, बाणासन (st. 1. घा° zu lesen 1. घ°).

शरासनिन् (von शरासन) adj. *mit einem Bogen bewaffnet* MBh. 5,5367. 7,4689. 13,1973. Harīv. 1803. Mārk. P. 21,8. 127,8.

शरास्य n. = शरासन *Bogen* Mārk. P. im ÇKDr.

शरि adj. = हिंस्र Uṇ. zu Uṇādis. 4,127. — Vgl. शराकु.

शरिका f. N. eines Palastes Schiefner, Lebensb. 305 (75).

शरिन् (von 1. शॄ) adj. *mit Pfeilen versehen* MBh. 2,2664. 4,302. 1639. 14,2138. R. 3,56,20. 6,72,66.

शरिमैन् Uṇādis. 4,147. m. = प्रसव Uṇ. Sv. auch शरीमन् dass.

शरी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. *ein best. Gras*, = एरका Bhāvapr. im ÇKDr.

शरीकर् (1. शॄ + 1. कर्) zum *Pfeil machen* Kuval. 105, *b*, 1 (vgl. MBh. 13,7433).

शरीमन् s. शरिमन्.

शरीर Uṇādis. 3,30. Çiṅk. 3,18. n. Sinne. K. 249, *b*, 1. m. (das m. nur durch R. 7,75,4 zu belegen) und n. gaṇa घर्धरादि zu P. 2,4,31. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *a) fester Bestandtheil des Körpers: Knochengerüste*, pl. *Gebeine; b) Leib* überh., *Körper* AK. 2,6,2,21. 3,4,25,182. Trik. 2,6,19. H. 364. Halāj. 2,255. ṚV. 1,32,10. तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् 163,11. मास्य वर्चं चिलिपो मा शरीरम् 10,16,1. 136,3. AV. 5,9,7. शरीरे मांसमसृग्मेदोयाम: 29,3. 7,53,2. 8,2,26. 28. बृहन्नडिरभवद्यच्छरीरम् 9,4,3. मा ते गात्रा वि दौषि मो शरीरम् 18,3,2. VS. 34,55. Ait. Br. 2,6. यशरीरं वै रेतो ऽशरीरा वपा यद्वै लोकृतं यन्मांसं तच्छरीरम् 14. 3, 3. TS. 1,7,2,1. श°, रस 2,1,3,7. 3,44,1. 5,6,6,3. 4. 7,3,22,1. TBr. 1, 2,4,3. प्राणा वसूना: शरीरं मर्त्यम् Çat. Br. 10,1,4,1. 6,3,2. 3,6. 12,7, 2,16. neben आत्मन् 3,3,4,16. 14,6,2,13. 2,7. 7,2,3. Kauç. 80. °केाम TBr. 3,8,10,4. शरीरा वा अन्ने वनते शरीरै: *durch seine Knochen* ṚV. 6, 25,1. शरीरै: एनो दीक्षि दुष्कृतम् 10,99,3. ओषधीषु प्रविं तिष्ठा शरीरै: 16,3. AV. 2,34,5. 11,2,2. VS. 35,2. Ait. Br. 2,2. 7,2. Kāty. Çr. 21,3, 7. 13. 4,5. Çāṅkh. Çr. 4,15,14. Çat. Br. 11,7,2,6. VS. Prāt. 1,12. TS. Prāt. 2,2. पृष्ठत: शरीरस्य M. 8,300. °संस्कार 2,26. संस्कारार्थं शरीरस्य 66. शरीर, वाच्, बुद्धीन्द्रियमनांसि 192. सा समासै: शरीरस्य 244. सा निपातात्तच्छरीरस्य 6,31. प्राक्शरीरस्य विस्रस: Kapiṣṭh. 6,4. °विमोक्षण M. 2,242. यक्लेशेन शरीरस्य 4,3. शरीरस्यात्यये 6,69. 8,69. शरीरस्य प्रुडि: 6,30. Verz. d. Oxf. H. 286, *a*, No. 670. यनङ्गेन शरीरान्तरचारिणा MBh. 1,5936. शरीरान्तकरो नृणां यम: 3,2138. शरीरान्निःसृत: कलि: 2837.15670. Suçr. 1,273,11. 337,4. Varāh. Bṛh. S. 53,2. Gegens. चेतस् Çiç. 33. Ṛt. 1,16. यनित्यानि शरीराणि Spr. (II) 292. शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति 1343. मृत 4938. शरीरधर्मकोशेभ्य: क्षिप्रं स परिक्षीयते (I) 2902. नाम 2965. शरीरमेवायतनं सुखस्य दु:खस्य चाप्यायतनम् 2966. (II) 3323. °कर्षण (I) 3067. शरीरमेतो कुरुत: पिता माता च 3069. °योगज्ञै: सुखै: Raghu. 3,26. रक्षाम्यहं शरीरं ते तत्सुखं स्वपिहि प्रभो Kathās. 18,113. शिवं नासिकया विना शेषशरीरस्य Pañkat. 38,8. सा शरीरात् *den Leib nicht ausgenommen* Kathās. 59,138. मृदुनि मृगशरीरे Çiç. 10. यछे: Halāj. 3,20. शरीराणि त्रायुत्राणउत्रस्वेदत्रोद्विज्ञाप्यानि Vaidjikā (Allāh.) No. 71. °त्रय Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,140. त्रिविध Verz. d. Oxf. H. 89, *b*, 25. fg. पञ्चात्मक, षडाश्रित, सप्तधातु, चतुर्विधाहारमय Garbhop. in Ind. St. 2,66. कारण° Vaidjikā. (Allāh.) No. 32. स्थूल° 65. 72. सूक्ष्म° 43. fg. 60. fg. 63. 65. क्षेत्रज्ञस्य शरीरम् M. 12,16. यशःशरीरार्थी शरीरं वीक्ष्य भङ्गुरम् Kathās. 34,11. Raghu. 2,37; vgl. यशःकाय Spr. (II) 2343. धृत° adj. Siddhāñj. 67. ब्रह्मशरीभूत° adj. Vet. in L.A. (III) 6,2. यतत° adj. 28,10. यस्वस्थशरीरा Çiç. 33,11. यलघुशरीरा Mālav. 65,15. सशरीरा गता स्वर्गम् R. 1,35,8. यशरीरा वाणी R. 4,63,6. Kathās. 2,68.11, 14. 23,59. 30,52. 36,29. 109,19. — 2) pl. *Reliquien* (bei den Buddhisten) Burnouf, Intr. 348, N. 2. Hiouen-thsang 1,32. Vie de Hiouen-thsang 84. 216. — 3) *fester Körper* überh. (Gegens.: उदक): शरीरोपशमन, °दीप्ति Nīl. 7.23. eines Berges: वीर्योधास्तच्छरीरविनिःसृता: MBh. 3,1739. Pañkat. 190,19. यमृतमय° der Mond Spr. (II) 551. 1168. von Steinen Varāh. Bṛh. S. 47,9. — 4) *Leib* so v. a. *Person*: आत्मा-

beim Schol. zu H. 233. शर्भ = कर्भ Med. = उष्ट्र *Kameel* Gaṇiṇ. im ÇKDa. — 2) unter den Beinn. Vishṇu's MBu. 13,6988. — 3) N. einer Upanishad Ind. St. 3,326,1. — 4) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,162 (X, 15). — 5) N. pr. *a)* eines Asura MBu. 1,2534.2662. Hariv. 204.13181.14287. — *b)* zweier Schlangendaemonen MBu. 1,2150.2151. — *c)* verschiedener Manner RV. 8,89,6. MBu. 2,325. 5,3013 (चेदिपतेर्भ्राता). Sohn Çiçupâla's 14,2468. Bruder Çakuni's 7,6944. — *d)* pl. eines Volkes MBu. 1,6684. statt काशोष्ट्रभान् liest aber die ed. Bomb. besser कौशिच्छ्वान्. — *e)* eines Affen Mbh. R. 1,16,16. 4,25,32. 33,12. 39,24. 4,41,6. 5,73,44. 90,14. 6,2,27. 38,40. 69,43.

शर्भकेतु m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53,2.

शर्भङ्ग (1. शर् + भङ्ग) m. N. pr. eines Ṛshi MBu. 3,8184. 8380. R. 1,1,40 (43 Gorr.). 3,17. R. Gorr. 2,123,16. 3,8,18. 35,102. 5,108,37. Râgân. 13,45.

शर्भत्ता f. nom. abstr. zu शर्भ 1) MBu. 12,4299.

शर्भानना (शर्भ + आनन) f. N. pr. einer Zauberin Kathâs. 48,122. fgg.

शर्भू m. ein Name Kârttikeja's H. 209. Vgl. शरजन्मन्.

शर्भृष्टि f. *Rohrspitze* Çat. Br. 14,9,4,11. Kauç. 47.

शार्मय (von 1. शर्) adj. (f. ई) *aus Rohr bestehend, — gemacht* P. 4,3, 144. मेखला Kâṭh. 11,5. TS. 6,1,2,3. बर्हिस् 2,1,5,7. Kâṭh. 23,4. Âçv. Çr. 3,7,5. Kauç. 47.116. Nir. 5,4. 10,29.

शर्मठा m. *ein best. Vogel*, vulgo गोसालिक् Çabdar. im ÇKDa.

शर्मुख n. *Pfeilspitze* H. an. 4,89. Med. ṇ. 109.

शर्लक n. *Wasser* Çabdar. im ÇKDa.

शर्लोमन् m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 310,*a*,30. Verz. d. Cambr. H. 22.

शर्व m. N. pr. eines Volkes MBu. 6,2084. fehlerhaft für शबर्, wie die ed. Bomb. liest.

शर्वण (1. शर् + वन) n. *Röhricht* (Geburtsstätte Kârttikeja's) P. 8, 4,5. MBu. 7,328. 11,652. 13,4097. 4197. R. 1,37,20 (38,23 Gorr.). R. Gorr. 1,39,17. 4,44,71. fg. 7,16,1. 2. 33,22. Kathâs. 49,241. गुहस्य °स्यस्य Suçr. 2,394,2. °भवो देवः so v. a. Kârttikeja Mann. 46. शर्वणोद्भव desgl. MBu. 3,14635. शर्वणालय desgl. 1,2587.. Hier und da fälschlich शर्वन geschrieben.

शर्वत् (von 1. शर्) adj. gaṇa मधादि zu P. 4,2,86. zur Etymologie von शल्मलि Nir. 12,8 (कण्टकैरस्मै क्लिनस्ति D.). *mit Pfeilen gespickt* Hariv. 15204 (mit der neueren Ausg. शर्वान् zu lesen).

शर्वाणि m. 1) *Pfeilspitze*. — 2) *Verfertiger von Pfeilen* H. an. 4,89. Med. ṇ. 109. — 3) *Fusssoldat* H. an. पापिष्ठ st. पदाति Med.

शर्वारण (1. शर् + वा°) n. *Schild* MBu. 6,2709. 3606. — Vgl. शरावर् (wie die ed. Bomb. an beiden Stellen liest) und शरावरण.

शर्वृष्टि m. N. pr. eines Marutvant Hariv. 11545. — f. *Pfeilregen*.

शर्वेग m. N. pr. eines Rosses (*geschwind wie ein Pfeil*) Kathâs. 39, 170. 121,277.

शर्व्य (von शरु) P. 6,1,83, Vârtt. 2 (von 1. शर् abgeleitet). 1) n. *Ziel* AK. 2,8,2,34. Halâj. 2,213. कृता: शर्व्ये हरिणा तवासुरा: Çiç. 156. Ragh. 7,42. 11,27. °व्यध Çiç. 7,24. — 2) f. या *Pfeilschuss* (später erklärt als *Pfeilhagel*) RV. 6,75,16. 18,87,12. AV. 1,19,1. 2 (parox.). 11,10,6. यामर्य्यात्ति शर्व्यां न सा मृषा 5,18,9. 12,5,25.29. तिस्रो वै शर्व्याः। प्रतीची तिरश्चीनूर्ची TBr. 1,7,6,8. TS. 6,3,4,1. 5,5,2,2. VS. 24,10. 30,7. अशर्व्य adj. (f. या) *Pfeilen nicht zugänglich* Çat. Br. 5,3,3,30. — शर्व्या यत्तः। शर्व्या वै तेऽन्नम् P. 6,1,83, Vârtt. 2, Schol.

शर्व्यक n. = शर्व्य 1) H. 777.

शर्व्याय् (von शर्व्य). °यते *das Ziel bilden*: विषमशर्स्य शर्व्यायमाणामनसो बभूव Daçak. 39,3.4.

शर्शय्या f. *ein aus Pfeilen gebildetes Lager* (für gefallene Krieger): darauf werden erlegte Löwen gelegt Kathâs. 94,10. — Vgl. वीरशय्या fgg.

शर्शराय् (onomatop.) °यति *zischen* P. 8,1,12, Vârtt. 6, Schol. सर्पिः क्षेत्रे शर्शरायत् Âçv. Çr. 3,11,19.

शर्स् (von 2. शृ) n. *Rahm, die Haut auf gekochter Milch* VS. 39,5. शर्सगृहीत *mit einer Haut bezogen* Ait. Br. 5,26. Çat. Br. 3,3,3, 2. 10,6,3,2. TBr. 2,1,2,1. शर्सा ऽङ्गारा अप्यूहन्ते *die Gluth übersieht sich mit einer Haut* (von Asche) 10,3. TS. 5,4,4,3. Kâṭh. 21,7. — Vgl. 2. शर्.

शर्स्तम्ब m. 1) *Röhricht* MBu. 1,2435.5070. fg. 5082. fg. 5432. 9,2460. Hariv. 1786. Bhâg. P. 1,6,13. 9,21,36. Pankat. 140,25. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit MBu. 13,1714. — 3) N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,28.

शर्हाक m. *eine best. Mischlingskaste* Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,24.

शर्हाणि (1. शर् + घणि) gaṇa तुभादि zu P. 8,4,39. in der Verbindung °पर्हिमाण MBu. 13,3229 nach Nîlak. *fünfunddreissig* (शर् = *fünf*, घणि = *drei*).

शराघात (1. शर् + घा°) m. *Pfeilschuss* H. an. 4,19. Med. k. 196.

शराटि und शराडि f. *ein best. Vogel*, = शाराटि Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. घाटि und घाडि.

शराति f. desgl. Rûpâçrasa zu AK. nach ÇKDa. — Vgl. घाति.

शराभ्यास (1. शर् + घ°) m. *Uebung im Bogenschiessen* AK. 2,8,2,34.

शराय् (von 1. शर्), °यते *einen Pfeil darstellen*: कटाक्षाश शरायन्ते Spr. (II) 1124.

शरारि f. *ein best. Wasservogel*, = घाटि, घाति Taitt. 2,5,25. H. 1338. Halâj. 2,94. R. 3,15,6. Rv. 4,9. Kull. zu M. 5,13.

शरारीमुख 1) m. dass. Suçr. 1,205,13. — 2) f. ई *ein best. chirurgisches Instrument, eine Art Scheere* Suçr. 1,26,12. 16. 27,12.

शरारु (von 1. शर्) adj. P. 3,2,173. Vop. 26,162. *Schaden zufügend, schädigend* AK. 3,1,28. H. 369. Halâj. 2,217.

शरारोप (1. शर् + घा°) m. *Bogen* Gaṇiṇ. im ÇKDa.

शरार्चिस् (1. शर् + घ°) m. N. pr. eines Affen R. 4,41,3.

शरार्पास्य (शराणि oder शरारी + घास्य) n. *ein best. chirurgisches Instrument* Vîrân. 26,9.

शरालि, शरालिका und शरालो f. = शाराटि Çabdar. im ÇKDa.

शौराव Çiç. 3,18 m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) *eine flache, irdene Schüssel, Teller; schalenförmiger Deckel eines Gefässes* AK. 2,9, 32. Taitt. 2,9,3. H. 1024. Halâj. 2,160. Kâṭh. Çr. 5,6,10. Âçv. Gṛhj. 1, 17,3. Gobhân. 2,69. वृत्ते °संपाते M. 6,36. MBu. 14,1978. R. 1,73,20. R.

Gobh. 2,125,11. Suçr. 1,273,14. 280,4. 316,10. °निम्नमध्य 2,17,12. 234, 7. 8. °संपुट 389,20. Çiñkr. Saṃh. 2,1,31. Spr. 4967. Varāh. Bṛh. S. 48, 36. सक्तूनाम् धम्भनः Kathās. 4,122.21,124.29,148. Mālav. P. 54,16. 60, 10. Taitt. Prāt. 2,7, Comm. Pariçiṣṭ. 174,14. सक्तुपूर्ण° Hit. 114,22, v. l. सक्तु° 113,2. मोदक° Vikr. 45,18. निष्ठीवन° Spr. (II) 1593. — 2) *als Maass für Korn* = 2 प्रस्थ nach TS. Comm. चतुः° (सपूप) TS. 3,3,8, 4. 4,8,7. TBr. 1,3,8,5. 6,8. 3,8,8,3. Çat. Br. 5,1,4,13. Āçv. Çr. 3,10, 27. 14,1. Kāty. Çr. 12,2,13. Kauç. 64. 67. यावच्छराव Āçv. Çr. 12,8,35. शरावार्ध = कुडव ÇKDr. nach dem Vaidyaka. Accent der adjj. auf शराव mit vorangehendem Zahlwort P. 6,2,29. fg. — Vielleicht von 3. शॄ. Vgl. उद्°.

शरावक 1) = शराव 1): भक्तस्यार्ध° Kathās. 29,88. am Ende eines adj. comp. (f. °शराविका): स्थाली छिद्रशराविका *einen mit Oeffnungen versehenen Deckel habend* Suçr. 2,61,16. — 2) f. शराविका Bez. *eines best. Abscesses* Suçr. 1,273,12. 14. पिटका शरावाकृतिसंस्थिता Karaka 1,17.

शरावकुट् m. *eine Schlangenart* Suçr. 2,287,18.

शरावती (von 1. शर्) f. N. pr. P. 6,3,120. 1,219. 1) eines Flusses AK. 1,2,2,33. 2,1,6. H. 952 nebst Schol. MBh. 6,327 (VP. 182). Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, N. 2. Pāiçāc. 11, *b*, 4. LIA. 1,94. Anh. III. — 2) einer Stadt Rāgat. 15,97. LIA. 1, Anh. XI, N. 21. — 3) eines buddhistischen Klosters Wassiljew 58. Tāran. 51. 293.

शरावर (1. शर् + घा°) 1) m. *Köcher* R. ed. Bomb. 3,64,49. — 2) n. *Schild* MBh. 1,5494 (*Köcher* Nīlak.). 6,2667 (*Panzer* Nīlak.). 4010. 2709. 3606 (an den beiden letzten Stellen nur in der ed. Bomb.). — Vgl. शरवारण und das folgende Wort.

शरावरण (1. शर् + घा°) n. *Schild* MBh. 6,2707.

शरावाप (1. शर् + घा°) m. *Bogen* Taik. 2,8,31.

शरावि (शरविन्) s. माष° (auch Prāyaçcitt. in Verz. d. B. H. 58,23 herzustellen statt माषशरावि). — Vgl. शराव und शरावि.

शरावय (1. शर् + घा°) m. *Köcher* H. 781.

शरास m. = शरासन *Bogen* Bālār. P. 4,16,22.

शरासन (1. शर् + स°) *Pfeile schleudernd.* 1) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarāshṭra MBh. 1,4543. 7,5594. — 2) n. *Bogen* AK. 2,8,2,31. H. 775, Schol. MBh. 3,12077. 17302. 6,2385. 7,522. 14,622. R. 1,1,41. 2,23,36 (20,40 Gorr.). 3,56,48. 4,33,42. 5,20,19. Rāgat. 3,52. 9,10.50. Kumāras. 3,64. Çiç. 119. 156. 28,19, v. l. Vikr. 70. Varāh. Bṛh. S. 34, 8. Prab. 7,12. Bālār. P. 1,17,36. 3,14,9. Vgl. पुष्प°, शक्र°, इक्षवन, वाणासन (st. 1. घा° zu lesen 1. ध°).

शरासनिन् (von शरासन) adj. *mit einem Bogen bewaffnet* MBh. 5,5367. 7,4629. 13,1978. Harīv. 1863. Mālav. P. 21,5. 127,5.

शरास्य n. = शरासन *Bogen* Mālav. P. im ÇKDr.

शरि adj. = छिन्न Uṇ. Sūtr. zu Uṇādis. 4,127. — Vgl. शराकु.

शरिका f. N. eines Palastes Schiefner, Lebensb. 303 (75).

शरिन् (von 1. शर्) adj. *mit Pfeilen versehen* MBh. 2,2664. 4,302. 1639. 14,2128. R. 3,56,30. 5,72,66.

शरिमन् Uṇādis. 4,147. m. = प्रसव Uṇ. Sūtr. auch शरीमन् ders.

शरी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. *ein best. Gras*, = एरका Bālav. im ÇKDr.

शरीकर् (1. शर् + 1. कर्) zum *Pfeil machen* Kuval. 105, *b*, 1 (vgl. MBh. 13,7485).

शरीमन् s. शरिमन्.

शरीर Uṇādis. 3,30. Çiṣṭ. 3,18. n. Sīdh. K. 249, *b*, 1. m. (das m. nur durch R. 7,75,4 zu belegen) und n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *a*) *fester Bestandtheil des Körpers: Knochengerüste*, pl. *Gebeine*; *b*) *Leib* überh., *Körper* AK. 2,6,2,21. 3,4,25,132. Trik. 2,6,19. H. 561. Hall. 2,255. ṚV. 1,32,10. तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् 163,11. मास्य तनूं चिक्लिपो मा शरीरम् 10,16,1. 136,2. AV. 5,9,7. शरीरे मांसमसृमेदसाम्: 29,5. 7,53,2. 8,2,26. 28. वृक्षस्त्रिरभवच्छरीरम् 9,4,5. मा ते गात्रा वि क्रमिषुर्मो शरीरम् 18,3,9. VS. 34,55. Ait. Br. 2,6. यशरीरं वै रेतो ऽशरीरा वया यद्वै लोकित्तं यन्मांसं तच्छरीरम् 14. 3, 8. TS. 1,7,8,1. श°. रस 2,1,2,7. 3,44,1. 5,6,6,3. 4. 7,3,44,1. TBr. 1, 2,1,3. प्राणा वसूनाः शरीरं मर्त्यम् Çat. Br. 10,1,4,1. 6,3,2. 8,6. 12,7, 2,16. neben आत्मन् 3,3,2,16. 14,6,2,13. 7,7. 7,2,3. Kauç. 80. °क्षेम TBr. 3,8,22,4. शरो वा शूरं वनते शरीरैः durch *seine Knochen* ṚV. 6, 25,4. शरीरैः एनो कृत्नु दस्यून् 10,99,8. ओषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः 16,2. AV. 2,34,5. 11,2,2. VS. 35,2. Ait. Br. 2,2. 7,2. Kāty. Çr. 21,3, 7. 13. 4, 5. Çāṅkh. Çr. 4,15,14. Çat. Br. 11,7,2,6. VS. Prāt. 1,12. TS. Prāt. 2,2. पृष्ठतः शरीरस्य M. 8,300. °संस्कार 2,26. संस्कारार्थं शरीरस्य 66. शरीर, वाच्, बुद्धीन्द्रियमनांसि 192. घा समाप्तेः शरीरस्य 244. घा विपाताच्छरीरस्य 6,31. प्राक्शरीरस्य विस्रसः Kathōp. 6,4. °विमोक्षण M. 2,243. षड्भेदेन शरीरस्य 4,3. शरीरस्यात्यये 6,68. 8,69. शरीरस्य प्रवृद्धिः 6,30. Verz. d. Oxf. H. 286, *a*, No. 670. घनर्क्षेन शरीरात्तरचारिणा MBh. 1,5986. शरीरात्तकरो नृणां यमः 3,2138. शरीराभिःसृतः कलिः 2837.15670. Suçr. 1,273,11. 337,4. Varāh. Bṛh. S. 53,2. Gegens. चेतस् Çiç. 33. Ṛt. 1,16. घनित्यानि शरीराणि Spr. (II) 292. शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति 1343. मस्त 4938. शरीरधर्मकोशेभ्यः तिप्रं स परिक्षीयते (I) 2902. लाम 2965. शरीरमेत्रागतनं सुखस्य दुःखस्य चाप्यागतनम् 2966. (II) 3323. °कार्पण (I) 3067. शरीरमेतो कुरुतः पिता माता च 3069. °योगज्ञैः सुखैः Rāgat. 3,26. रत्नाभ्यङ्कं शरीरं ते तत्सुखं स्वपिषि प्रभो Kathās. 18,113. शिवं नासिकया विना शेषशरीरस्य Pariçiṣṭ. 38,8. घा शरीरात् *den Leib nicht ausgenommen* Kathās. 59,130. मृडनि मृगशरीरे Çiç. 10. घक्षैः Hall. 3,20. शरीराणि त्रायुस्त्राणउन्नस्वेदनोद्दिक्षाण्यानि Vaidyak. (Allah.) No. 71. °त्रय Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,140. त्रिविध Verz. d. Oxf. H. 89, *b*, 25. fg. पञ्चात्मक, षडाश्रित, सप्तधातु, चतुर्विधाहारमय Garbhop. in Ind. St. 2,66. कारण° Vaidyak. (Allah.) No. 32. स्थूल° 65. 72. सूक्ष्म° 43. fg. 60. fg. 63. 65. नेत्रस्तस्य शरीरम् M. 12,15. यशःशरीरार्थो शरीरं वीक्ष्य भङ्गुरम् Kathās. 34,11. Rāgat. 2,37; vgl. यशःकाय Spr. (II) 2343. धृत° adj. Siddhānt. 67. ब्रह्मरीभूत° adj. Ver. in LA. (III) 6,2. यतत° adj. 28,10. अस्वस्थशरीरा Çiç. 33,11. यलघुशरीरा Mālav. 65,15. यशरीरा गता स्वर्गम् R. 1,35,8. यशरीरा वाणी R. 4,63,6. Kathās. 2,68.11, 14. 23,59. 30, 52. 36,29. 100,19. — 2) pl. *Reliquien* (bei den Buddhisten) Burnouf, Intr. 348, N. 2. Hiouen-thsang 1,32. Vie de Hiouen-thsang 84. 216. — 3) *fester Körper* überh. (Gegens.: उदक): शरीरोपशमन, °दीप्ति Nīlak. 7,23. eines Berges: वार्योघास्तच्छरीरविनिःसृताः MBh. 3,1739. Pariçiṣṭ. 190,19. घमृतमय° der Mond Spr. (II) 551. 1168. von Sternen Varāh. Bṛh. S. 47,9. — 4) *Leib* so v. a. *Person*: घात्मा-

धीन° adj. Spr. (II) 908. स्वशरीरोत्थं मौर्ख्यमेनस्विना नृणाम् 3457. (विद्या) न तृप्तिमुत्पादयति शरीरे 4297. (I) 4789. 5040. — Wir führen das Wort auf 3. शॄ (vgl. M. 1,17. MBh. 12,8521) zurück: *der feste Bestandtheil des Körpers* ist *der Halt, die Stütze* der übrigen Theile. Die hergebrachte Ableitung ist von 1. शॄ, indem man den *Körper als etwas Gebrechliches, Vergängliches* auffasst. Vgl. घ°, प्राण°, वृक्षशरीर, मध्य°, पद्मशरीरम्, लिङ्ग°, शारीर und शारीरक.

शरीरक (von शरीर) n. *Leib, Körper* Jâṭ. 3,98. 117. *der elende, werthlose Körper* Spr. 3216. Kathâs. 22,165. 28,15. 42. 56,71. 119,63. Am Ende eines adj. comp. = शरीर Verz. d. Oxf. H. 39,a, N. 2, wo °शरीरिका zu lesen ist.

शरीरकर्तृ m. *Erzeuger, Vater* MBh. 5,6080.

शरीरकृत् m. dass. Spr. 3068.

शरीरज (श° + 1. ज) 1) adj. *aus dem Körper hervorgegangen, mit demselben vollbracht:* कर्मदोष neben वाचिक und मानस M. 12,9. — 2) m. a) *Leibesfrucht:* मनुष्यशतशरीरजा R. 7,2,17. *Sohn* Daśak. im ÇKDr. पराशर° MBh. 13,1679. — b. *Geschlechtstriebe* (vgl. मनोज) u. s. w. Daśak. im ÇKDr. शरीरजेन तीव्रेण दह्यमानः MBh. 1,4023. 12,12191. — c) *Krankheit* Daśak. im ÇKDr.

शरीरता f. nom. abstr. von शरीर *Körper* Sarvadarçanas. 50,19. 22. 52,17. सर्व° 21.

शरीरत्याग m. *Hingabe des Leibes, Aufopferung des Lebens* Râgat. 12,10.

शरीरत्र n. = शरीरता Kâṭhâr. 6,4.

शरीरदण्ड m. *eine körperliche Strafe* Bhâg. P. 5,26,16.

शरीरधातु m. *ein Hauptbestandtheil des Körpers* (Blut, Fleisch u. s. w.; vgl. u. 1. धातु 3) Taitt. 3,3,448. अग्निश्च भुङ्क्ते शरीरधातून् Spr. II. 383. MBh. 3,16330. विमुच्यात्मानं स्वशरीरधातून् 1,3693.

शरीरपात m. *das Zusammenstürzen des Leibes, Tod* Varâh. Bṛh. 23 (23),7.

शरीरप्रभव m. = शरीरकृत् *Erzeuger* Spr. (II) 4260.

शरीरबन्ध m. 1) *die Fesseln des Leibes, das Gefesseltsein an den Leib* Bhâg. P. 5,5,5. — 2) *ein angenommener Leib:* पुः शरीरबन्धेन तिरोबभूव so v. a. *die Stadt* (in Gestalt eines Weibes) *verschwand leibhaftig* Râgat. 16,23.

शरीरभाज् adj. *einen Körper habend*, m. *ein lebendes Wesen* Bhâg. P. 1,9,42.

शरीरभृत् adj. *den* (künftigen) *Leib in sich tragend* und *mit einem Körper behaftet*, vom Samen und von der Seele MBh. 14,631. fg.

शरीररक्षक m. *Leibwache* Vikr. 97.

शरीरवत्त्व (von शरीरवत्) n. *das Versehensein mit einem Körper* Sarvadarçanas. 83,3. 4.

शारीरवत् (von शरीर) adj. *mit einem Körper versehen* Sarvadarçanas. 83,3. *körperlich, consistent* TBr. 3,8,15,2. m. *ein lebendes Wesen* MBh. 12,6846.

शरीरवृत्त adj. *der seinen Leib sich angelegen sein lässt, der sein Leben schonen muss:* नृप Kathâs. 42,45 (44 ist शरीरवृत्तिर्यु zu lesen).

शरीरवृत्ति f. *Unterhalt des Leibes, Fristung des Lebens:* स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद Râgat. 2,45.

शरीरशुश्रूषा f. *Sorge um den Leib:* भर्तुः °शुश्रूषां कुर्यात् M. 9,96. Pâraśar. ed. orn. 49,15. 52,21.

शरीरशोषण n. *Tödtung des Fleisches, Kasteiung des Körpers* Sarvadarçanas. 169,15 (aus Jâṭ.). Pâraśar. 27,1.

शरीरसंधि m. *Gelenk am Körper* Bhâg. P. 3,13,37.

शरीरस्थान n. Verz. d. Cambr. H. 24 = शारीर°.

शरीरावयव (शरीर + अ°) m. *Körpertheil* P. 5,1,6. Râgat. 3,22.

शरीरावरण (शरीर + आ°) n. *Schild* Râgân. im ÇKDr. (= चर्मन्, womit auch die *Haut* gemeint sein kann). MBh. 7,8562. — Vgl. गात्रावरण.

शरीरास्थि (शरीर + अ°) n. *Gerippe* H. 628.

शरीरिन् (von शरीर) 1) adj. *mit einem Leibe versehen:* आत्मानः M. 1, 53. Sarvadarçanas. 120,11. Kusum. 49,12. 14. साक्षाद्भावाविव शरीरिणौ *leibhaftig* Mâlav. 10,19. विरूक्ष्यया Uttarâs. 39,15 (33,12). सरस्वती Kathâs. 4,137. 33,59. *mit Leibern bedeckt:* अग्राङ्गं सर्वयात्रालोः कृत्वा भूमिं शरीरिणीम् MBh. 10,136. अ° *körperlos* Weber, Râmây. Up. 287. Kusum. 49,14. वायु R. 1,1,81. 3,4,15. Uttarâs. 30,9 (39,19). LA. 92,1. शरीरिन् am Ende eines comp. = zum *Körper habend:* स्व° M. 4,243. दम° so v. a. *der an seinem Leibe Selbstbeherrschung übt* Bhâg. P. 3,31. 19. — 2) m. *ein mit einem Leibe begabtes Wesen, Geschöpf*, insbes. *der Mensch* AK. 1,1,4,8. H. 1366, Schol. M. 1,84. 6,64. 12,25. 119. Jâṭ. 3,102. MBh. 2,753. 5,5423. 7015. Saṃk. 1,123,8. 152,13. Râgat. 8,43. Spr. (II) 2067. 2093. 3268. 3314. (I) 2090. 2229. 4697. Râja-Tar. 4,605. Bhâg. P. 4,24,17. 5,26,9. शरीरिणां स्थावराणामिवाङ्गमानाम् Kumâras. 1,23. — b. *Seele* Bhag. 2,18. Râgat. 8,88. Spr. 4810. Bhâsâpar. 26. स (क्षेत्रज्ञः) वै शरीरी प्रथमः स वै पुरुष उच्यते Mârk. P. 43,64. — Vgl. योग°.

शरीरीभू (शरीर + 1. भू) *sich verkörpern, einen Körper annehmen:* °भूत Kathâs. 1,32.

शर्क Uṇâdis. 1,11. 1) f. seltener m. *Geschoss*, sowohl *Speer* als *Pfeil* (= शर H. an. 2,461. = वज्र H. an. Med. r. 89.; instr. शर्वा RV. 1,100. 18. 186,9. 172,2. 2,12,10. शृङ्गी 4,3,7. पुङ्खा शर्वा नि वर्क्षति 28, 3. 6,27,6. शर्कुमार्गुवोतम् 7,71,1. 85,2. 8,18,11. 56,15. 20. 10,27,6. तमस्ता विध्या शर्वा शिशीहि 87,6. 15. 99,7. धनुरा तनोमि शर्वे हसवा उ 10,125,6. 182,3. यं देवाः शर्कमस्यैव AV. 5,63,2. 1,2,3. 19,2. 13,2,47. सौरी (शरी) 5,25,1. — 2) m. *Zorn* H. an. Med. — 3) m. ein N. Vishṇu's H. c. 73. — 4) m. N. pr. eines Devagandharva MBh. 1,4814. — Vgl. शर्व्य.

शर्कमत् (von शर्क) adj. *mit Geschoss bewaffnet* RV. 10,89,5.

शर्कर adj. = शार्कर P. 6,3,16.

शर्कर 1) m. a) *Kiesel* Kâç. 72. *Gries, Kies:* नीचैः °कर्षणः (वायुः) MBh. 3,11396. 6,23. °कर्षिन् Harîv. 11555. °वर्षिन् (वात) MBh. 4,1288. 10,2. शालशर्करवालुक (so die neuere Ausg.) Harîv. 9003. क्षेमशर्करवालुक 9006. im Epos die Kürze überall durch das Versmaass bedingt. — b. *Sandzucker:* खण्डशर्करवालुक (das Metrum erfordert eine Kürze) MBh. 12,10317. — c) N. pr. eines imaginären Wasserwesens Pâraśar. Bh. 14,5,15. — d) pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,35. — 2) f. शर्करा Uṇâdis. 4,3. a) *Gries, Kies, Geröll;* = उपला AK. 3,4,26,201. H. an. 3,607. Med. r. 222. = शर्कराक्षत्, शर्कराप्रदेश, शर्करान्वितदेश P. 4,2,83. 5,2,105. AK. 2,4,11. H. an. Med. r. 222. = शकल H. an. Med. = कपर्दश AK. 3,4,25,177. H. an. Med. = मृद्धिकार und चूर्णखण्ड

Uśéval. angeblich nach Hla. Meist im pl. und im comp. zu belegen. शर्करा: सिकता यस्मान् AV. 11,7,21. TS. 5,1,6,2. 2,6,2. 6,4,4. भूमिं शर्कराभिरदंहत् TBr. 1,1,3,7. 2,6,4. 3,12,6,2. Çat. Br. 2,1,3,5. 5,1,1, 12. 3,5. 5,1,6. 8,7,4,1. Kâty. Çr. 4,8,16. Lâṭy. 1,5,8. Kauç. 18. 36. fg. 47. 82. Çvetâçv. Up. 2,10. M. 8, 250. MBh. 5, 3176. ववर्ष रुधिरं देव: शर्कराङ्गारमिश्रितम् Harîv. 9299. °कर्षिन् (Wind) R. Gorr. 1,76, 13. °वर्षिन् Çârîr. Gṛhy. 6,1. °विद् Vaitân. Bṛh. S. 80, 18. 45,9. Suçr. 1, 134, 18. 305,6. Râja-Tar. 3,432. Verz. d. Oxf. H. 268,a,29. Bhâg. P. 5, 13,8. 14,18. 7,13,17. am Ende eines adj. comp. (f. आ) MBh. 6,2637. मणि° 7,2344. 9, 441. R. 2, 81,16. 3, 76, 6. 4, 41, 37. Kâm. Nîtis. 4,53. Vaitân. Bṛh. S. 3,9. 54,15. 103. 81,4. 82,4. आसारशर्करा: *Hagel* Bhâg. P. 10,76, 11; vgl. उपल°. sg. und du. Çat. Br. 8,7,2,20. Kâty. Çr. 17,4,15. 12,26 (nach dem Schol. adj.). — *b) Gries als Krankheit* H. an. Med. आक्षार्या: शर्करा-स्तिस्रो दन्तकर्णमलाश्मरी Suçr. 1,92,18. 120,11. यस्मर्या शर्करा ज्ञेया तुल्यव्यञ्जनवेदना 263,13. 15. *Verhärtung im Fleisch* 294,15. *des Ohrschmalzes* 92,18. — *c) Weinstein der Zähne* Suçr. 1,304,17. 2,128,10; vgl. दन्त°. — *d) Sandzucker* AK. 2,9,43. H. 402. H. an. Med. Harîv. 8447. R. Gorr. 2,100,67. Suçr. 1,188,8. 229,1. 2,21,14. 421,4. Spr. (II) 2834. 3000. (I) 3243. Vaitân. Bṛh. S. 77,9. Gîr. 12,29. Pañcat. 2,4,32. fg. Dhûrtân. 79,16. Pañcat. 183,21. शर्कराचलदान Verz. d. Oxf. H. 35, b,31. 41,a,24. °धेनु 35,b,29. 59,a,23. सित° Sin. D. 2,8. 9. द्राक्षा° Suçr. 2,324,8. शर्कराम्बु 1,38,19. शर्कारोदक Bhâvapr. im ÇKDr. शर्करासव R. 5,14,44. am Ende eines adj. comp. Vaitân. Bṛh. S. 76,3. — 3) f. ई v. l. für शक्करी *ein best. Metrum; Fluss; Gürtel* in Med. nach ÇKDr. und dem Comm. zu Kâtyâr. 3,149. = लेखनी Dharan. im ÇKDr. — शर्करा ist vielleicht als eine reduplicirte Form von 3. कर् oder 1. शर् (vgl. शर्कोट und कर्कोटक) zu erklären. — Vgl. कट° (st. Bed. 1 zu setzen *Zucker aus Saccharum Sara*), तुद°, गुड°, उपल°, तुहिन°, तूल°, दन्त°, निः° (auch MBh. 14,1540), पर्व°, पाण्डु°, भू°, मधु°, मालीक°, यवास°, वंश°, वर्त्म°, शार्कर, शार्करक, शार्करिक.

शर्करक adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von शर्करा gaṇa अश्मादि zu P. 4,2,80.

शर्कराक्ष (शर्करा + अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Verz. d. Cambr. H. 22,18. शर्कराक्ष्य Çâṅk. zu Kâṭhân. Up. 5,11,1. — Vgl. शार्कराक्ष्य.

शर्कराप्रभा f. N. einer Hölle bei den Gaina H. 1360.

शर्करार्बुद (शर्करा + अ°) m. n. Bez. *eines best. Geschwürs* Wise 394. Suçr. 1,292,9. 294,17. 2,118,20.

शर्करावत् (von शर्करा) adj. *mit Gries versehen, kiesig* u. s. w. P. 5, 2,105. AK. 2,1,11.

शर्करावर्ता (शर्करा + आवर्त) f. N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,19,18.

शर्करासप्तमी f. Bez. *des 7ten Tages in der lichten Hälfte des* Vaiçâkha ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 34,a,46. 41,a,18.

शर्करिक adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von शर्करा gaṇa कुमुदादि zu P. 4,2,80. 83, Schol. — Vgl. शार्करिक.

शर्करिल (von शर्करा) adj. *kiesig* u. s. w. P. 5,2,105. AK. 2,1,11.

शर्करीकर् (शर्करा + 1. कर्) *in Kiesel —, in Geröll verwandeln:* मया च पतता तत्र स्वैरगात्रै: °कृतम्। शिखरं च गिरेस्तस्य शिलाश्च समन:-शिला: R. 5,3,33.

शर्करीय adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von शर्करा P. 4,2,84.

शर्कार, f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41.

शर्कु m. N. pr. eines Unholdes AV. 8,6,2.

शर्कोट m. Bez. *einer best. Schlange* AV. 7,56,3. — Vgl. शर्कोट und कर्कोटक.

शर्णघापिति m. N. pr. eines Mannes Pravarâmâs. in Verz. d. B. H. 89,1 wohl verdorben.

शर्दि in der vielleicht verdorbenen Stelle: शर्दिर्नो यत्रिरण्योग्रमौभि: AV. 18,3,16.

1. शर्ध्, शर्धति Dhâtup. 33, 61 (auch शर्धयति, प्रसहने; v. l. प्रमर्दने). *keck auftreten, trotzig sein gegen* (gen.): स शर्धद्वर्यो विषुणस्य जन्तो: *er schert sich nicht um das Gesindel* RV. 7,21,3. यद्ये शर्ध 5,28,3. partic. शर्धत् *keck auftretend, trotzig, höhnisch:* य: शर्धते नानुददाति शृध्याम् RV. 2,12,10. मन्यु शर्धत: 23,12. 30,8. die Marut 5,56,1. दस्यु 6,23,2. 24,8. 7,18,5. 16. 32,7. प्र शर्धाय पन्तु शर्धतो यूय: 34,18. 8,2,15. 19,20. शर्धन्तमोभि सिघ्मसे 43,22. 9,100,8. 10,69,12. med. von Indra VS. 20,38. — Vgl. शृध्या.

— प्र s. प्रशर्ध, wo zu setzen ist: *keck, trotzig.*

— अतिप्र caus. etwa *aufdrängen:* स्तोता यत्ते अतिप्रशर्धयद्वि: RV. 8,13,6.

2. शर्ध्, शर्धते Dhâtup. 18, 21 (शब्दकुत्सायाम्). अशर्धिष्ट und अशृधत् P. 1,3,91. शर्धिष्यते und शर्त्स्यति, अशर्धिष्यत und अशर्त्स्यत् 92. 7,2,59. *farzen.*

— desid. शिशर्धिषते und शिश्रत्सति P. 7,2,59.

— intens. शरीशृध्यते und शरीशृधीति P. 7,4,90, Schol.

— अव caus. *auf Jmd farzen* M. 8,282.

— वि, °शर्धते *farzen* Suçr. 1,262,20. विशर्धित n. *Furz* 2,258,1.

3. शर्ध्, शर्धति und °ते Dhâtup. 21,9 (उन्दने).

1. शर्ध (von 1. शर्ध्) adj. *frech, trotzig* RV. 4,1,12. 5,87,1. Indra 9, 30,6. auch wohl 104,3. 105,3.

2. शर्ध (von 2. शर्ध्) m. *Furz* Vop. 26,61.

3. शर्ध m. *Horde, Schaar*, namentlich der Marut RV. 1,37,4. 64,1. 2,11,14. 30,11. 31,3. 4,3,8. 5,56,9. शर्ध, व्रात, गण 53,11. 54,1. 8,20, 9. नर: शर्धा उशाना: 5,33,5. रथीनाम् 53,10. तन: शर्धाय धासया स्विन्दियम् 1,111,2. शर्धाय गृणान उरु कृधि 10,147,5. 61,25. statt प्र शर्धे 8,82,16 dürfte प्रशर्धे zu setzen sein.

शर्धनक् (शर्धम्, acc. von 2. शर्ध, + नक् von कृ) adj. *blähend:* माषा: P. 3,2,23, Vârtt. Vop. 26,61. vielleicht auch subst. m. = माष.

शर्धन (von 2. शर्ध्) n. *das Farzen* Kull. zu M. 8,282.

शर्धनीति (3. शर्ध + नी°) adj. *die Schaar* (der Marut) *führend oder keck verfahrend:* Indra RV. 3,34,3.

1. शर्धस् adj. compar. शर्धस्तर *kecker, trotziger* RV. 1,122,10.

2. शर्धस् n. = 3. शर्ध Naigh. 2,9. शर्धांसि स्तुकाविनाम् RV. 8,63,13. मारुत AV. 15,14,1. RV. 1,37,1. 5. 106,1. 127,6. 2,1,6. 3,3. विशु शर्धो मघिनो मा नि येद 7,59,7. 8,15,9. 8,88,7. 10,103,9. दिव्य 1,139,1. 3, 19,4. 7,44,5. दृढुर्याम् 6,8,7. 68,8. यातुमतीनाम् 1,133,5. 10,91,7. TS. 2,4,5,1. Vgl. विश्व°.

शर्धिन् (von 1. शर्ध्) adj. *trotzend;* s. आङ्क°.

शर्ध्य m. oder n. nach Sis. *Ziel;* könnte einen *Theil des Wagens* bezeichnen: वाणी येमतुरस्य शर्ध्यम् ṚV. 1,119,5.

शर्व्, शर्वति (गतौ) Dhâtup. 11,29.

शर्म n. = शर्मन् H. 1370, Schol.

शर्मक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1087.

शर्मकृत् (शर्मन् + कृत्) adj. *Behagen —, Wohlfahrt —, Glückseligkeit schaffend* Bhâg. P. 7,11,31.

शर्मण्य (von शर्मन्) adj. *schirmend* TS. 2,4,6,1. 10,1.

शर्मन् (von 3. शॄ) Uṇâdik. zu Unâdis. 4,144. n. 1) *Schirm, Schutzdach, Decke; Hut, Obhut;* gewöhnlich in Verbindung mit यम्. ṚV. 1, 114,5. 3,13,4. 4,23,4. शर्म नो यन्तमर्वद्भ्यम् 55,4. 7,82,10. 101,2. AV. 7,6,4. Âit. Br. 2,40. मम पत्युः शर्म शारदीर्दधत् ṚV. 1,174,2. वृकाय मघे मकिः शर्म भद्रम् 5,1,10. 44,7. सप्रथस् 1,22,15. त्रिधातु 34,6. बकुल 5, 55,9. यच्छिक्व 62,9. त्रिवरूथ 5,4,8. मकि 83,8. दुराधर्ष 8,49,7. शतम 7,51,1. तस्य ते शर्मन्नुपदद्यमाने रायो मंदेम 8,49,13. उप क्काया मिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम् 16,38. 46,12. 7,6,6. VS. 1,14. 4,9. 11,30. 40. AV. 1, 20,3. 12,3,5. 14. Çat. Br. 3,2,4,8. 12,8,3,11. तेषां प्रतिष्ठा गङ्गेव शरणं शर्म वर्म च Spr. (II) 464. रामे शर्माभिगच्छेयम् *Zuflucht* R. 2,60,35. अलब्धा शर्म लोकेषु त्वामेव शरणं गतः 5,36,44. सर्वलोक° Bhâg. P. 7,8,56. मलौषधाग्नेः कुरुकाप्रयोगैर्भवत्ति दोषा वल्क्यो न शर्म *Heil, Rettung* Varâh. Bṛh. S. 75,5. लप्स्यसे शर्म भर्तुर्मम R. 3,59,22. शर्मोपाय Kathâs. 78,49. आत्मने शर्म नक्षत्ते *Schutzrüstung* TS. 7,4,9,4. 3,1,7,1. — 2) *Wohlbehagen, Freude, Glückseligkeit* AK. 1,1,4,3. H. 1370. Hall. 1,122. कचस्य नाशे मम शर्म नास्ति MBh. 1,3240. नालभच्छर्म 3,1796. 1799. 15728. R. Gorr. 2,68,55. Bhâg. P. 3,5,39. 6,7,17. 9,16,9. सर्वास्ववस्थासु न शर्मलाभः Sucr. 2,301,3. शर्म किं नाम विन्दते Bhâg. P. 3,31,9. 5,13,1. ददातु वो नावपि शर्म कृष्णः Vop. 3,143. लोकद्वयशर्मद Spr. (II) 333. निःसीमशर्मप्रद 3612. शर्मदातुरुरेः Bhâg. P. 3,5,15. तृणाः कलाश्च काष्ठाश्च तव शर्म दिशन्तु ते R. 2,25,12. दृष्टि शर्ममर्माणि मे Spr. 2872, v. l. शर्मणे ऽत्र परत्र च (II) 1135. (I) 5221. Rasik. 1,69. Kathâs. 24,138. मिथ्या परोपकारो हि कृतः स्यात्कस्य शर्मणे 56,237. 65,212 (शर्मणे zu lesen). लोकानामधिकं शर्माण Bhâg. P. 3,18,28. शर्मकाम adj. Jâtâ. 3,328. Spr. 2466. जगतामशर्म Kir. 12,26. — 3) am Ende eines Brahmanen-Namen Pân. Gaṇ. 1,17. Jaina bei Kull. zu M. 2,32. VP. 207. Colebr. Misc. Ess. 2,189. यमुक° Schol. zu Kâç. Ça. 173,17. 243,1. — 4) im Wortspiel mit शर्व personificirt Kauç. 128. — 5) fehlerhaft für चर्मन् (so die neuere Ausg.) Harîv. 13413. für धर्म Mugdh. 62. — Vgl. अग्नि°, इन्द्र°, उरु°, गिरि°, देव°, धर्म°, धृष्ट°, नन्द°, पशुपति°, पितृ°, पुरुषोत्तमदेव° (unter पुरुषोत्तम 5), प्रजापति°, बाल°, बूच° भद्र°, भव°, भास्कर°, मकरन्द°, मनोहर°, मयूर°, मित्र°, यज्ञदत्त°, राम°, रुद्र°, वरुण°, विष्णु°, विभु°, वीर°, वृद्ध°, शिव°, सु°, हरि°.

शर्मय् (denom. von शर्मन्), partic. शर्मयत्त् *schirmend* ṚV. 9,41,6.

शर्मर 1) m. *eine Art Zeug.* — 2) f. आ *eine best. Pflanze,* = दारुहरिद्रा Dhan. im ÇKDr.

शर्मवत् adj. *das Wort* शर्मन् *enthaltend:* ब्राह्मणस्य नामधेयम् M. 2,32.

शर्मसद् (शर्मन् + सद्) adj. *hinter einem Schirm oder Schilde sitzend* ṚV. 1,73,3. 3,35,21.

शार्मन् (von शर्मन्) adj. *der Freude —, der Glückseligkeit theilhaftig:* अगस्त्यं गोत्रतश्चापि नामतश्चापि शर्मिणम् MBh. 13,3409. 3419.

शर्मिला s. पाण्डु°.

शर्मिष्ठा (von शर्मन् mit dem suff. des superl.) f. N. pr. einer Tochter Vṛshaparvan's (vgl. वार्षपर्वणी), Gattin Jajâti's und Mutter Druhju's, Anu's und Pûru's MBh. 1,3139. fg. 3284. fgg. 5,5044. 7,3297. Harîv. 207. 212. 1604. R. 3,23,24. Çiç. 82. Kathâs. 27,67. VP. 147. 413. Bhâg. P. 9,6,31. 9,18,6. fgg. Verz. d. Oxf. H. 144, b, No. 301. शर्मिष्ठायाः कृतिः Milav. 16,18. 19,11. °ययाति Titel eines Schauspiels Sin. D. 195,5.

शर्य (von 1. शॄ) 1) m. *Pfeil, Geschoss:* शर्यैरभिषु पृतनासु दुष्टरम् ṚV. 1,119,10. nach Sis. *Kämpfer;* die Bed. *Schütze* wäre passend. — 2) f. या a) *Rohr* so v. a. *Pfeil* Nir. 3,4. 10,29. यस्तुन्नं शर्यैः ṚV. 1,148,4. न स्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम् 10,178,2 nach D. = यतिबलवता मुक्ताम्; vielleicht पुवतीम् (von 2. पू) *packend* so v. a. *treffend.* — b) pl. *Rohrgeflecht* (an der Soma-Seihe): शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः ṚV. 9,110,5. या यः शर्याभिस्तुविनृम्णो अस्याश्वीणीतादिशं गभस्तौ (?) 10,61,3. — Aus diesen Stellen ist c) die Bed. *Finger* geschlossen worden Naigh. 2,5. 4,2. Nir. 5, 4. — d) *Nacht* Vidjâdhara bei Buhn. zu AK. nach ÇKDr. — 3) n. *Rohrgeflecht,* an der Soma-Seihe (vgl. 2. विष्): सहस्रच्छर्याणि तान्वा ṚV. 9, 14,4. नि शर्याणि दधते देव या वरम् 68,2. — Vgl. गो°.

शर्याण *Röhricht;* m. pl. nach Sis. zu ṚV. 8,6,39 N. pr. eines Landstriches in Kurukshetra. शर्याण fehlerhaft im gaṇa मधादि zu P. 4,2,86.

शर्याणावत् (von शर्याण) m. (*mit Röhricht bewachsen*) *stehendes Wasser, Teich:* सिन्धूनपर्वताञ्छर्याणावतः ṚV. 10,35,2. यस्य शिरः विदच्छर्याणावति 1,84,14. Uebertragen auf eine Soma-*Kufe;* nach dem Comm. N. pr. eines Landstriches in Kurukshetra: मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्याणावति ṚV. 8,6,39. 7,29. 83,11. ये वाद्रः शर्याणावति (सोमासः सुन्विरे) 9,65,22. शर्याणावति सोममिन्द्रः पिबतु 113,1. Nach gaṇa मधादि zu P. 4,2,86 fehlerhaft शर्याणावत्.

शर्यणेन् m. *Pfeilschütze:* उग्र ṚV. 6,16,39. 9,70,5.

शर्याण und शर्याणावत् s. u. शर्याण und शर्याणावत्.

शर्यात m. N. pr. eines Mannes ṚV. 1,112,17. Çat. Br. 4,1,5,2. — Vgl. शार्याति und शार्यात.

शर्याति m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Manu Vaivasvata, Mârkaṇḍ. 1,4 (श° gedr.). MBh. 1,224. 3141. 3,10311. 7,2881 (°वन). 13,1945. Harîv. 643. 642. Hall in der Einl. zu Vishṇup. 30. VP. 348. Bhâg. P. 9,13,2. 9,1,12. 3,1. Mâtsja-P. 12 nach ÇKDr. ein Sohn Nahusha's VP. 413, N. 1. — Vgl. शर्यात und शार्यात.

शर्व्, शर्वति (हिंसायाम्) Dhâtup. 18,76.

शर्व (von शॄ) 1) m. a) N. eines mit *Pfeilen tödtenden Gottes:* अस्तः AV. 5,93,1. 2. 8,8,7. 12,5,36. mit Bhava und andern Namen Çiva-Rudra's zusammengenannt; später ein gangbarer Name des Çiva AK. 1,1,1,26. 3,4,18,51. H. 193. Hall. 1,11. AV. 11,2,16. 15,5,1. VS. 16,28. 39,8. Taitt. Âr. 10,16. Çâṭjân. in Ind. St. 2,37. Kâlikop. ebend. 3,15. Kauç. 51. 128. Çâṅkh. Ça. 4,19,1. 20,1. Âçv. Gṛhj. 4,8, 19. MBh. 3,12241. 13,1036 (ed. Bomb. शर्व, ed. Calc. सर्व). 14,191. Harîv. 7590. 15409. Rasik. 11,93. Kumâras. 6,14. Spr. (II) 2779. Kathâs.

15, 137. 18, 240. VP. 58. Mâlav. P. 52, 7 (सर्व gedr.). Weber, Kasmâś. 243. Bâlar. P. 4, 2, 6. 12, 10, 24. तितिमूर्ति Verz. d. Oxf. H. 53, b, 45. plur. VS. 16, 57. Taitt. Âr. 10, 19. Çatar. in Ind. St. 2, 46. सर्व geschrieben wegen eines Wortspiels Çat. Br. 6, 1, 3, 11. पविमन्मकामाम शर्वस्य Ind. St. 3, 222, b. शर्व N. pr. eines der 11 Rudra VP. 121. — c) pl. N. pr. eines Volkes (सर्व gedr.) Mârk. P. 58, 23. — 2) f. आ ein N. der Umâ (vgl. शर्वाणी) Bâlar. P. 12, 10, 34.

शर्वक m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53, b, 19.

शर्वकोश m. Titel eines *Wörterbuchs* Müller, SL. 156.

शर्वर m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 5, 413. 422.

शर्वदत्त m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Gârgja Ind. St. 4, 372.

शर्वपत्नी f. Çarva's *Gattin* d. i. Pârvatî Kathâs. 59, 15.

शर्वपर्वत m. Çiva's *Berg* d. i. der Kailâsa: °वासिनी unter den Beinn. der Durgâ Kathâs. 53, 172. — Vgl. शर्वाचल.

शर्वन् s. u. शर्व 2).

शर्वर 1) adj. so v. a. कर्बर, शबर, शबल. — 2) f. शर्वरी (oxyt. Uṇâdis. 2, 133) nach dem Schol. zu P. 4, 1, 7 fem. zu शर्वन्. *a*) pl. *die bunten Thiere der* Marut: ते स्यन्दासो नोतणो अति ष्कन्दन्ति शर्वरीः RV. 5, 52, 3. — *b*) *Nacht* (durch die Gestirne *bunt*) Naish. 1, 7. AK. 1, 1, 2, 3. H. 141. H. ç. 18. H. an. 3, 608. Med. r. 221. Halâj. 1, 107. यदि शर्वरीषु यदु स्मसि *wir übernachten auch die Nacht* Ait. Br. 4, 5. M. 1, 66. MBh. 3, 47. 16844. 4, 695. Spr. (II) 818. (I) 2968. 3027. R. 1, 25, 1. 2, 34, 24. 47, 1. 50, 37. 51, 14. 86, 15. 89, 6. Râgat. 3, 2. 11, 93. Çiç. 11, 3. Varâh. Bṛ. S. 48, 22. 76, 8. 86, 24. 49. Mârk. P. 48, 43. 45. 78, 8. Râga-Tar. 5, 208. *Dämmerung* Uṇâdis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa. Hier und da fälschlich mit स geschrieben. — *c*) *Weib* (wohl *ein best. Weib*) H. an. Med. — *d*) *Gelbwurz* (कृमिघ्न) Vîçva im ÇKDa. *Curcuma longa* Roxb. Ausw. 77. — *e*) N. pr. der Gattin Dosha's und Mutter Çiçumâra's Bâlar. P. 6, 6, 14. — 3) n. *a*) *Finsterniss.* — *b*) *der Liebesgott* (neutr.) Uṇâdis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa. — Vgl. अतिशर्वर, अपिशर्वर und शार्वर.

शर्वरिन् (von शर्वरी) m. N. *des 34sten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛ. S. 8, 39. शा° Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 1.

शर्वरीक bei Wilson (2te Aufl.) Druckfehler für शर्शरीक.

शर्वरीपति m. *der Herr der Nacht* (d. i. *der Mond*), unter den Namen Çiva's Çiv.

शर्वरीश (शर्वरी + ईश) m. *der Herr der Nacht* d. i. *der Mond* Râga-Tar. 3, 337.

शर्ववर्मन् m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 6, 67. 7, 23. ein Dichter Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 6. mit सर्ववर्मन् wechselnd 169, *a*, 39. fg. *b*, 2 und N. 1. 176, *b*, 5.

शर्वाचल (शर्व + अ°) m. Çiva's *Berg* d. i. der Kailâsa Kathâs. 109, 151. — Vgl. शर्वपर्वत.

शर्वाणी f. Çarva's (Çiva's) *Gattin* P. 4, 1, 49. Vop. 4, 23. H. 204. Halâj. 1, 15. Çâśvat. Ça. 4, 19, 5. Pâr. Gṛhj. 3, 7. MBh. 13, 1038. Kathâs. 1, 58. 26, 249. 80, 49. Daçak. 1, 4. Verz. d. Oxf. H. 25, *a*, 34 (स° geschrieben und auf सर्व *all* zurückgeführt). °रमण *der Gatte der* Çarv. d. i. Çiva 146, *b*, 3.

शर्विलक m. N. pr. eines Mannes Mṛićh. 35, 21. 46, 9. fgg.

शर्शरीक (vom intens. von 1. शॄ) Uṇâdis. 4, 19. adj. = हिंस्र Ujjval.

शर्शरीका *f. ein best. Metrum* Ind. St. 3, 107. 111. 113. — Vgl. मर्मरीका, वर्षरीका, मर्षरीका, कर्करीका.

1. शल्, शलति (गतौ) Dhâtup. 20, 13. v. l. für शल् (आशुगमने) 15, 42. Soṇa. 1, 96, 7. शलते (चलनसंवरणयोः) Dhâtup. 14, 19. (चलने स्तुतौ च) Vop. 8, 118. अशलिधम् und अशलिष्ठम् ebend. शालयते (आघाते) Dhâtup. 33, 18.

— उद् nur im partic. उच्छलत् und उच्छलित *aufschnellend, sich erhebend, aufsteigend* und *aufgeschnellt, sich erhoben habend, aufgestiegen:* उच्छलतो वाताः Spr. (II) 3801. चलद्वारिधिवीचिच्छोच्छलच्छङ्कुल Çic. 3, 27. स्वच्छन्दोच्छलदुद्दाममकामरुमरीचिभिः Kathâs. 25, 9. रुक्माम्बरोच्छलद्धातुर्निशायामिव पर्वतः 45, 4. उच्छलद्भिः पतद्भिश्च निर्लूनैः शूरमूर्धभिः 50, 7. 121, 259. उच्छलच्चत्वशरविद्ध (so ist zu lesen) 61, 104. कल्लोलशालमुच्छलदुत्थितम् 74, 77. Staub 101, 291. Prab. 85, 4. कण्ठनालोच्छलदसृक्फेनिलबुद्बुदोघैः 55, 5. 85, 5. Verz. d. Oxf. H. 128, *b*, 34. 261, *a*, 37. रामारोच्छलितशैलतटस्थलीपाषाण Vikr. 57, 19. चणाक Spr. 2876. °वीचिक (मकरालय) Kathâs. 43, 136. 101, 31. als Erklärung von उद्भूत Schol. zu Bâlar. P. 3, 13, 14.

— प्रोद्, partic. praes. dass.: शिरश्छेदप्रोच्छलच्छोणित Çic. 2, 66. 18, 44. Dhûrtan. 59, 9.

— समुद्, partic. समुच्छलत् und समुच्छलित dass. Verz. d. Oxf. H. 129, *a*, 15. 128, *b*, 32.

2. शल् (onomatop.) interj.: शलित्यपक्रान्तः AV. 20, 135, 2.

शर्ल P. 3, 1, 140. 1) m. *Stab* (nach Sîs.): im Adhrigu Praisha शला दोषणी (vgl. P. 8, 1, 62, Schol.) कर्णुतात् TBr. 3, 6, 6, 3. Ait. Br. 2, 6. nach D. zu Nir. 5, 11 = श्रवणसमर्थ (also von शल् abgeleitet). — 2) m. (Med.) und n. *Stachel eines Stachelschweins* AK. 2, 5, 7. H. 1296. Med. l. 49. Halâj. 2, 78. als *Längenmaass* (nach dem Comm. zu Taitt. Br.): त्रिशर्ल TBr. 1, 5, 10, 1. उच्चैःकार्षं पञ्चशल्यादेो दशशलादुत AV. 8, 7, 28. शत°, सहस्र° Kâtj. 12, 10 in Ind. St. 3, 464. — 3) m. *Lanze* Taitt. 2, 6, 33. — 4) m. *ein best. Thier* Pâraś. 1, 7, 28, v. l. *Kamel* H. 1253. — 5) m. = नेत्रभिद् Med. — 6) m. = विधि Med. — 7) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Taitt. 1, 1, 19. Mân. eines Schlangendämons MBh. 1, 2146. eines Sohnes des Dhṛitarâshṭra 4343. des Somadatta 6995. 2, 1267. 3, 1419. 5, 694. 7, 6002. Harîv. 1821. VP. 459. Bâlar. P. 9, 22, 13. Parîkshit's MBh. 3, 13178. Sunahotra's Harîv. 1319. = शतद्यु Bâlar. P. 1, 15, 16. — 10, 36, 21. 42, 37. — 8) f. ई *ein kleines Stachelschwein* Râgân. im ÇKDa. — Vgl. दु:°, त्रिशला.

शलक (von शल्) m. *Spinne* Taitt. 2, 5, 28. — शलका Pâraś. III, 179 fehlerhaft für शलाका.

शलकर् m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2150.

शलङ्कट m. N. pr. eines Mannes: उत्तरशलङ्कटाः *die Nachkommen* Uttara's und Çal. gaṇa तिकादिवादि zu P. 2, 4, 68.

शलङ्क m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. — Vgl. शालङ्कायन und शालङ्कि.

शलङ्ग m. = लोकपाल und लवणविशेष Uṇâdis. im ÇKDa.

शलपुत्र N. pr. einer Gegend Tiraṇ. 319. शलि° 323. die richtige Form ist vielleicht शालि°.

शलभ (von शल्) Uṇâdis. 3,122. m. f. n. (!) Taik. 3,3,24. 1) m. a) *Heuschrecke* (vielleicht auch *Lichtmotte, Nachtschmetterling*) AK. 2,5,28. H. 1213. Hall. 2,102. Aṇṇ. 7,24. यस्त्वां स्पृष्ट्वाग्निसदृशं न दग्धः शलभो यथा MBu. 2,686. क्षयन्तु शराः पार्थ शलभा इव पादपम् 4,1510. श्रेण्यः शलभानाम् 5,7213. 13,6899. 14,2187. 2258. Harîv. 5659. 6442. 6473. R. 3,20,38. 4,43,1. 5,39,12. 93,17. 6,20,23. Kâm. Nîtis. 13,68. °समूह Çiç. 31. Spr. (II) 100. 1167. 1907. 2303. (I) 4700. Varâh. Bṛh. S. 8,4. 84,1 (विशलभमरुत् eine Lampe). Bhâg. P. 5,14,5. शलभास्त्र MBu. 3, 11967. *Heuschrecken* von Gold als Verzierungen auf einem Bogen 4, 1329. die *Heuschrecken* sind Kinder Pulastja's MBu. 1,2572. Târkshja's von der Jâmini Bhâg. P. 6,6,21. — b) N. pr. eines Devagandharva MBu. 1,2534. eines Asura 2666. Harîv. 204. 12940. 13181. 14287. Verz. d. Oxf. H. 78,b,41. — 2) f. ई N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBu. 9,2624. — Vgl. इन्द्र°.

शलभत्व n. nom. abstr. von शलभ 1) a) Kumâras. 4,40.

शलभाय् (von शलभ), °यते *wie eine Heuschrecke verfahren* d. i. *unbesonnener Weise in's Feuer* d. i. *in den sichern Tod gehen:* कौरव्यवंशदावे ऽस्मिन्क एष शलभायते Vaṇîsaṃh. 12,3. तत्प्रतापाग्नौ शलभायितुमिच्छसि Kathâs. 124,34. Râǵa-Tar. 7,376.

शलल (oxyt. oder proparox. Çiṇv. 2,35, Schol.). 1) *Stachel eines Stachelschweins*, neutr. AK. 2,5,7. H. 1296. Hall. 2,78. MBu. 7,7537. Spr. (II) 1126 (*Borste eines Ebers*, Conj.). शललौ f. AK. 2,5,7. bei der Cerimonie des Haarscheitelns und zum Auftragen der Augensalbe gebraucht TBa. 1,5,6,6. Çat. Bṛ. 2,6,4,5. Kâṭy. 23,1. Kâtj. Çr. 5,2,15. Çâṅkh. Gṛhj. 1,12. 22. 28. Âçv. Gṛhj. 1,14,4. Pâr. Gṛhj. 2,1. Gṛhjâs. 1,94. Kauç. 8. — 2) m. *Stachelschwein* H. Hall.

शललवस्तु m. oder n. *Stachel eines Stachelschweins* (zum Schreiben dienend) Gâînakâṇḍapâçchimabhâga bei Gold. Mân. 61,b.

शलालित (von शलाल) adj. *mit Stacheln versehen:* शाविधू MBu. 7, 7118. 7944. 14,2207.

शलालीपिशङ्ग adj. *bunt wie ein Stachel des Stachelschweins*, m. Bez. eines Navarâtra Âçv. Çr. 10,4,27.

शलाक m. (nur Kâṭy. 26,1 und MBu. 3,1225) und शलाका f. (Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,14). 1) *Spahn, Splitter, spitzes Holz, Stäbchen; Halm, Reis* TS. 6,3,8,3. zum Rühren Çat. Bṛ. 2,6,4,6; vgl. Kauç. 80. Kâtj. Çr. 5,8,18, Schol. Comm. zu TBa. 1,250,1. Sûçr. 1,33,18. 35,12. zum Auftragen der Augensalbe: शलाकाञ्जन° Çârad. 39 in Ind. St. 4,369. MBu. 1,54. Râm. 7,3. Kumâras. 1,48. Schol. in der Einl. zu Gaim. कर्पूर° Spr. (II) 2746. पश्य शलाकावसरे (hierher oder zu 3) तृणे ऽपि भूयः प्रमार्ष्टे स्वकाः 4011. शलाकान्तिप्रविष्टा तु मनिकर्षात्र दृश्यते (I) 2969. घृतिलघुवेणुशलाकया ताडा: *Ruthe, Gerte* Kull. zu M. 8,299. °काशपर्वतान् R. Gorr. 2,87,9. वंश° AK. 3,4,44,15. H. 291. तन्तुवाय° P. 5,4, 160, Schol. पञ्च शलाका नारके पञ्चार तथा *Leimruthe* MBu. 12, 8560 (= Pâṇkar. III, 179, wo fälschlich शल्की gedr. ist; Nîlak. erwähnt eine Lesart पञ्चशलाकी). *Rippe* am Sonnenschirm H. an. 3,103. Med. k. 160. दन्तशलाकं कृत्तम् MBu. 6,782. रुक्म° R. 5,35,20. वक्र° 4,9,3. षष्ट° MBu. 12,8895. शत° 13,4646. 6231. R. 2,26,10 (12 Gorr.). 3,67, 15. *Stäbchen am Käfig* H. an. पाणिपादशलाका: *die Stäbchen an Händen und Füssen so v. a. Finger* Jâṇ. 3,88. °नखपाते: MBu. 4,353. Harîv. 4719. buddhistische Bettler tragen bei sich als Legitimation *einen mit ihrem Namen versehenen Bambusspahn*, der शलाका heisst, Burnouf, Intr. 239. Schiefner, Lebensb. 325(93). Vṛitp. 201. — 2) *Stachel des Stachelschweins* H. 1296. Schol. zu Kâtj. Çr. 5,2,13. — 3) *Stäbchen beim Spiel* Schol. zu Kâtj. Çr. 372,6. — 4) *ein spitzes Werkzeug zum Durchbohren, Spitze des Pfeils, Nadel* u. s. w. (= शल्य H. an. Med. Hall. 5,55. = शर Med.) Wurz, Gloss. 78. यष्टिभेदिन्या निरभिच्यच्छलाकया (= शङ्कु Nîlak.) MBu. 7,1113. शलाकाशल्यकर्तार: R. Gorr. 2,90,24. यवस्कार्तस्वर° Mâlatîm. 14,13. विदूरभूमिर्नवमेघशब्दादुद्भिन्नया रत्नशलाकयेव Kumâras. 1,24. रविरत्न° Râǵa-Tar. 6,294. तृणरत्न° Kathâs. 52,233 वाक्यशलाका MBu. 3,3578. 6,4448. so v. a. शलाकापत्र Suçr. 1,101,1. 2,30,9. 47,5. 216,1. 343,18. 346,4. Çiç. 3,7,3. 13,60. fg. — 5) *Pinsel zum Malen* H. an. — 6) *Knochen* Çârad. im ÇKDr. — 7) *Stachelschwein* H. an. Med. — 8) *eine Drosselart* (s. सारिका und vgl. मदनशलाका) oder *die Predigerkrähe* dies. शारिका (मा°) könnte aber auch *Plectron* sein. — 9) *Vanguiera spinosa* Roxb., = मदन (es könnte übrigens मदनशारिका auch als eine Bed. gefasst werden) Med. — 10) N. pr. eines Frauenzimmers gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. कुर्वादि zu 151. — 11) N. pr. einer Stadt R. 4,43,22. — Vgl. निःशलाक, मदनशलाका, वंश°, शालाकेय, शालाका, शकल, शल्क.

शलाकधूर्त m. darf nicht als Zeuge auftreten MBu. 5,1225. शलाकया पाशादिना वा शकुनादिकमुक्ता यो ऽन्यान्वञ्चयति Nîlak. vielleicht *Vogelsteller*.

शलाकली f. etwa *Späncben* AV. 20,130,20.

शलाकायै adv. P. 2,1,10. = शलाकया (vgl. शलाका 3) इदं न तथा वृत्तं यथा पूर्वं त्रये Schol.

शलाकापुरुष m. pl. bei den Gaina ein Collectivname für die 24 Arhant, die 12 Ćakravartin in Bhârata, die 9 Vâsudeva, die 9 Bala und 9 Vishṇudvish H. 700. — Vgl. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित.

शलाकाभू f. N. pr. eines Frauenzimmers gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

शलाकायन्त्र n. *stabförmiges spitzes chirurgisches Werkzeug: Senknadel, Nadel zu Augenoperationen, Sonde* u. s. w. Suçr. 1,24,1. शलाकाद्यानि यन्त्राणि नानाकर्माकृतीनि च Vishṇ. 1,25,22.

शलाकावत् adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von शलाका gaṇa मधादि zu P. 4,2,86.

शलाकिका (von शलाका) f. *Späncben, Stäbchen* u. s. w.: सुपूकर्पूर° Kâṭjâp. 21,7.

शलाकिन् (wie oben) adj. *mit Grannen versehen:* यव Suçr. 2,325, 19. कृत्तेन श्लोमच्छदशलाकिना *mit hundert Rippen versehen* MBu. 8,3017. — Vgl. शालाकिन्.

शलाकिर m. Vîrastaṃbaṇḍ. 137,a,4.

शलाट m. *ein best. Gewicht: eine Wagenlast*, = 20 Tulâ H. 885.

शलाटु m. n. *eine unreife Baumfrucht* AK. 2,4,6,15. H. 1130. Hall. 2,34. °रत्व Âçv. Gṛhj. 1,14,4. °मन्थ Gobh. 2,7,4. Suçr. 1,138,11. 2,102,21. उदुम्बर° 1,376,18. Çâṅkh. Gṛhj. 1,22. बिल्व° Suçr. 1,377,3. 2,431,16. 440,1. शम्बू° 434,14. Nach Einigen auch adj.: शलाटु: कर्कटी,

शलाटवो माषाः, शलाटूनि फलानि Citat bei Arrachon, Halîs. Ind. — m. = मूलविशेष Unâdis. im ÇKDa. = खित्त्व Riâan. ebend.

शलातुर N. pr. P. 4,3,94. Geburtsort Pâṇini's Hiouen-thsang 1,125. 127. 2,313. Vie de Hiouen-thsang 185. — Vgl. शालातुरीय.

शलाबल m. N. pr. eines Mannes (pl. *seine Nachkommen*) gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69. सुधादि zu 4,1,123. — Vgl. शालाबलेय.

शलाभोलि m. *Kamel* ÇKDa. und Wilson; beruht auf einer falschen Lesart H. 1233.

शलालु (शल + घालु) n. *ein best. wohlriechender Stoff* (Siddh. K.) P. 4,4,54.

शैलालुक adj. (f. ई) *mit Çaiâlu handelnd* P. 4,4,54. — Vgl. शालालुक.

शलावत् m. N. pr. eines Mannes Çâṅk. zu Kaṭha-Up. 1,8,1. — Vgl. शालावत्, शालावत्य.

शल्किकाक्षिन (?) m. ein N. Vishṇu's H. ç. 67.

शल्कुन m. *ein best. Insect* AV. 2,31,3.

शल्क Unâdis. 3,43. P. 7,2,9, Schol. (masc.). 1) m. n. *Spahn, Abschnitzel;* = शकल AK. 3,4,2,13. H. 1434. an. 2,16. Med. k. 34. शल्कैरग्निमिन्धीत TBa. 1,1,2,9. 2,6,15. हिरण्य° Âpr. Ba. 2,14. TS. 5,2,2,3. 4,2,3. Kâṭh. 20,8. 27,7. — 2) n. *Fischschuppe* Sin. D. 7,9. बभ्रव्या ब्राह्मणैर्मत्स्याः शल्कैर्ये वै विवर्जिताः MBh. 12,1314. सशल्काः मत्स्याः Çâṅkha und Likhita bei Kull. zu M. 5,16. M. 5,16. Jâṅ. 1,178. Sarvadarçanas. 2,16. शल्क = वल्क *Fischschuppe* oder *Bast* H. an. Med. = वल्कल *Bast* AK. — 3) m. *Mehl* (चूर्ण) Trik. 3,3,15. — Vgl. बृक्कृच्छ्रल्क, महा°, शकल, शलाक.

शल्कल n. = शल्क *Fischschuppe* ÇKDa. nach Siddh. K. निः° s. u. छागलक.

शल्कलिन् (von शल्कल) 1) adj. महा° *grossschuppig:* मत्स्याः Kull. zu M. 3,272. — 2) m. *Fisch* Çabdar. im ÇKDa.

शल्किन् (von शल्क) m. *Fisch* H. 1344. Halîs. 3,35.

शल्य und शल्यक fehlerhaft für शल्य und शल्यक.

शल्यपर्णिका und शल्यपर्णी f. = मेदा Riâan. im ÇKDa.

शल्भ्, शल्भते (कत्थने) Dhâtup. 10,30.

शाल्मलि m. = शाल्मलि Nir. 12,8. Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDa. (auch °ली f.). पक्वशाल्मलौ भवति विषम् ṚV. 7,50,3. 10,85,20. VS. 23,43. der höchste Baum Çat. Ba. 13,2,2,4. TS. 7,4,42,1. Pañcav. Ba. 9,4,11. Gobh. 4,3,17. शाल्मली Vaṭṭ. Bṛh. S. 57,1, v. l.

शल्य (denselben Ursprungs wie शल, शलाका) Unâdis. 4,107. 1) m. n. Siddh. K. 251,a,16. a) *Spitze des Pfeils und Speers;* in übertragener Bedeutung so v. a. *Dorn, Stachel, Alles was Einen peinigt und quält;* = शङ्कु AK. 2,8,2,61. Trik. 2,3,35. H. 787. Med. j. 56. = शलाका H. an. 2,393. fg. Halîs. 3,45. = इषु, तोमर und क्षेपा Med. = शस्त्र H. an. = घायुध Halîs. = तूस्त, कल्क Trik. 1,1,113. = दुःभक्ष und दुर्वाक्य Çabdar. im ÇKDa. शल्यौ यज्ञनिभिर्दिक्षान् ṚV. 10,87,6. निशीर्य शल्यानी मुखा VS. 16,12. AV. 2,30,2. 4,6,1. 5. 7,107,1. शत° (इषु) 6,57,1. — Ait. Ba. 1,25. TS. 6,2,3,1. Çat. Ba. 1,7,4,4. 10. 2,6,2,1. 16. 3,4,4,14. शल्यात्मन् Monatsberr. d. kön. pr. Ak. d. Wiss. 1868, S. 238,9. कृदि शल्यमिवार्पितम् MBh. 1,5695. 4,647. Hariv. 5811. Spr. (II) 635. शर, शल्य, युद्ध MBh. 13,7485. fg. °पीडित R. 2,63,24. सविष Çiç. 136. Rasa. 9,75. 16,37. Spr. (II) 2122. Bhâg. P. 11,1,23. शल्यस्य शकलः Uttarar. 33,6 (16,14). °कर्तृ R. Gorr. 2,90,24. हृदयमियुषि: कामस्यासः सशल्यमिदं यतः Viku. 29. Kathâs. 105,44. स्वात्मनस्तु ततो मूलो कृपाणी च — मम चापनयामास शल्यान् MBh. 5,7163. विनीत° adj. (तुरग) 7,1346. मुराणां शल्यमुद्धृतम् Hariv. 2763. °भूतस्तु शत्रूणाम् MBh. 8,1281. 9,659. उत्पाटितलोक° adj. Bhâg. P. 4,16,27. हृच्छल्यमुद्धरेत् Kâm. Nîtis. 6,13. हृदन्तं मे मरुच्छल्यम् R. 7,47,4. यस्येतन्मानसं शल्यं समुद्धर्तुं त्वमर्हसि MBh. 1,1646. मनसि सप्त शल्यानि मे Spr. 2973. मनः° Kumâras. 2,22. Kathâs. 29,93. शोकशल्यनिष्कर्षण Raghu. 12,97. विषाद° Çiç. 107,23. वाक्° Spr. (II) 236. 1349. MBh. 3,1355. 12,535 (so zu lesen mit der ed. Bomb. st. वाच्छल्य der ed. Calc.). R. Gorr. 2,9,36. 63,1. वाक्शल्यैस्तैः सशल्येव 6,101,2. Kathâs. 10,39. °भूता वाचः MBh. 15,69. शलीकानि शल्यभूतानि हृदये 83. सर्पशल्य *eine Pfeilspitze* —, *einen Stachel im Herzen habend* Çat. Ba. 2,5,2,20. Raghu. 9,75. = सर्पगतामित्रशल्य Kâm. Nîtis. 13,81. 69. — *b*) in der Heilkunde heisst so *jeder in den Körper eingedrungene oder in demselben sich bildende fremdartige und Schmerz erregende Stoff*, sogar *der Fötus* Wish 185. Suçr. 1,2,1. 4. 23,15. 24,10. 92,19. 96,7. 99,18. 102,7. °हान 12,5. °तन्त्र 14,14. 339,3. °शास्त्र 96,9. प्रनष्ट° 14,2. 96,6. शल्यापनयनीय *vom Ausziehen der Stacheln handelnd* 99,14. अस्थि° 101,14 (auch Vâgbh. Bṛh. S. 53,103). यास° 20. घत° 100,2. शल्योद्धृति 8,15. *der Blasenstein* 2,35,17. fgg. मूढगर्भशल्योद्धरण 91,12. न शल्यं वा घटयति न वाचा कुरुते व्रणम् MBh. 12,3812. Vâgbh. Bṛh. S. 53,38. 61. म° 59. अधर्म *eine Ungerechtigkeit* verwundet als शल्य den धर्म *die Gerechtigkeit* Spr. (II) 3136 (vgl. MBh. 9, 2326). *Schaden, Fehler* überh.: सशल्यविद्धं शयनमासनं च तथाविद्धम् so v. a. *mit keinem Schaden behaftet* Hariv. 7773. कर्मशल्यानि so v. a. *Hindernisse* Bhâg. Nâṭyaç. 19,130. — 2) m. *a*) *Stachelschwein* AK. 2,5,7. H. 1296. H. an. Med. Bhâg. P. 3,2,21. — *b*) *ein best. Fisch* Riâan. im ÇKDa. — *c*) *Vanguiera spinosa* Roxb. AK. 2,4,2,33. H. an. Med. *Aegle Marmelos* Corr. Riâan. im ÇKDa. — *d*) *Grenze* H. an. — *e*) N. pr. *α*) eines Asura Hariv. 215. VP. 1,21,10. — *β*) eines Fürsten von Madra, mütterlichen Oheims und Gegners des Judhishṭhira, H. an. MBh. 1,498. 2612. 4437. fgg. 6993. 7037. 2,1197. 5,71. 9,659. Hariv. 5020. 5080. 8020. Kâm. Nîtis. 11,9. Bhâg. P. 1,15,15. °पर्वन् Titel des 9ten Buches im Mahâbhârata MBh. 1,346. — *γ*) eines späteren Fürsten Riâa-Tar. 7,1463. — 3) f. या Kirâṭ. 1,39 nach dem Schol. = भाले कृतं समावेश्य नृत्यम्; als v. l. wird साम्य angeführt. Wir vermuthen, dass शम्या oder शम्या (vgl. शम्यातास) zu lesen sei. — शल्य n. Kâm. Nîtis. 7,17 fehlerhaft für शैल्य, wie der Comm. liest. Vgl. आत्मशल्या, उपशल्य, याम°, चक्रशल्या, जिह्म°, निः° (*keinen fremdartigen Stoff enthaltend* Suçr. 1,98,21), वङ्क°, ब्रह्म°, वक्रशल्या, वज्रशल्य, वि°.

शैल्यक m. 1) *Stachelschwein* (unterschieden von शाविध्) H. 1296. VS. 24,35 (शल्यक gedr.). Ait. Ba. 3,26. Ind. St. 1,118. 2,313. 4,4. 8. M. 5,18. 12,65. MBh. 3,1322. 9,2476. Hariv. 2295. 14300 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Suçr. 1,203,1. 2. 2,535,15. Vâgbh. Bṛh. S. 86,23. Spr. (II) 3207. Bhâg. P. 3,10,23. 4,6,20. 26,10. — 2) so v. a. सशल्क (sc. मत्स्य) *ein Fisch mit Schuppen* Vâsavadatta 256; vgl. M. 5,16. Çâṅkha und Likhita bei Kull. zu d. St. und Jâṅ. 1,178. Vielleicht ist

शल्यकाग्र nur Fehler für मशल्काग्र. — 3) *Vanguiera spinosa Roxb.* Bhâvapr. 5. Çabdar. im ÇKDa. Ratnam. 29.

शल्यकण्ठ m. = शल्यक 1) Çabdâm. im ÇKDa.

शल्यकर्तन (Scut. und Comm. in der ed. Bomb.), °कर्षण (ed. Bomb.) und °कीर्तन (Gobh.) N. pr. einer Oertlichkeit R. 2, 71, 3 (73, 3 Gorh.).

शल्यकर्तृ (कर्तृ von 1. कर्त्) m. *Chirurg* MBh. 5, 1461 (= काण्डकृत् *Pfeilmacher* Nilak.; diese Bed. hat das Wort °कर्तृ R. Gorh. 2, 90, 24). vielleicht fehlerhaft für शल्यकर्तृ; vgl. übrigens शल्यकृत्त.

शल्यकर्षण s. u. शल्यकर्तन.

शल्यकवक्त्र (von शल्यक = शल्य) adj. *ein spitzes Maul habend* (Nilak.): m. *Spitzmaus* MBh. 12, 8307.

शल्यकि Harîv. 14300 fehlerhaft für शल्यक, wie die neuere Ausg. liest.

शल्यकीर्तन s. u. शल्यकर्तन.

शल्यकृत्त m. *Chirurg* Âpast. 1, 19, 15.

शल्यपर्णी f. *eine best. Heilpflanze* (मल्लमेदा) Bhâvapr. 5.

शल्यलोमन् n. *Stachel eines Stachelschweins* Râgân. im ÇKDa.

शल्यवत् (von शल्य) adj. 1) *in dem eine Pfeilspitze steckt:* मृग MBh. 12, 4649. — 2) *dem eine Pfeilspitze gehört:* शल्यवतो मृगः so v. a. *das Wild gehört dem, der es erlegt,* M. 9, 44.

शल्यसंहरण n. *das Herausbringen eines Stachels, — Dorns* Kauç. 33.

शल्यहर्तृ m. *Chirurg* R. 5, 28, 6. Ratnâk. 83, 34.

शल्यहृत् m. dass. Vaidj. Bhp. S. 5, 30.

शल्यारि m. Çalja's *Feind* (यमि), Bein. Judhishṭhira's H. 707.

शल्ल 1) m. *Frosch.* — 2) n. *Rinde* Çabdar. im ÇKDa.

शल्लक (aus शल्यक mit Assimil.) 1) m. Taik. 2, 5, 19. a) *Stachelschwein* Halâj. 2, 78 (शल्यक v. l.). Jâṭ. 1, 177. MBh. 7, 7107 (शल्यक ed. Bomb.). शल्लकाङ्कुश Suçr. 2, 300, 2. — b) *Bignonia indica* Gaṇîn. im ÇKDa. — 2) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41. Taik. 2, 5, 19. a) *Stachelschwein* Taik. 3, 3, 46. H. an. 3, 102. Med. k. 160. R. 4, 16, 33. Verz. d. Oxf. H. 103, a, 20. Paṇḍar. 1, 7, 38. Vaǵrasûḱi 256. — b) *Boswellia thurifera Roxb., Weihrauchbaum* AK. 2, 4, 4, 12. Taik. 2, 3, 46. 443. H. 1152. 1200. H. an. Med. MBh. 12, 4283. 13, 4716. R. 2, 53, 8. 3, 26, 38. Kâraṇḍ. 1, 5. Suçr. 2, 23, 6. 114, 19. 324, 2. °त्वच् 436, 17. 438, 21. Vikr. 107. Vaidj. Bhp. S. 57, 1. Çâṅk. 1, 40. *Weihrauch* Suçr. 2, 301, 18. Hier und da (auch in Bomb. Ausgg.) mit स geschrieben. — 3) n. *Rinde* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. द्रुमल्लक.

शल्लकि oder °किन् entweder *ein best. Vogel* oder °कि = शल्लकी *Stachelschwein* (aus metrischen Rücksichten) Suçr. 2, 447, 17.

शल्लकीद्रव m. *Weihrauch* Gaṇîn. im ÇKDa.

शल्लकीय (von शल्लकी) m. (sc. निर्यास) *Weihrauch* MBh. 13, 4717 (स° beide Ausgg.).

शल्लिका f. *eine Art Fahrzeug* Harîv. 8364. किल्लिका die neuere Ausg.

शल्व m. 1) pl. N. pr. eines Volkes, = शाल्व Uṇâdis. im ÇKDa. — 2) *eine best. Pflanze;* vgl. शाल्व.

शव s. 1. शु.

शव m. n. Sîksh. K. 251, b, 1. 1) m. n. *Leichnam* AK. 2, 8, 3, 37. Taik. 2, 8, 60. H. 564. Med. v. 24. Halâj. 3, 7. Çat. Br. 1, 8, 3, 18. 13, 8, 4, 1. Kâtj. 12, 3. यक्त:° *eine Leiche enthaltend* Pân. Gaṇ. 2, 11. Çâṅkh. Gṛ. 4, 7. °द्रूप 2, 12. 5, 1. °धर्म Çâṅkh. Çr. 14, 22, 19. °दर्शन Çat. Br. 12, 5, 2, 1. 2, 2. °कर्मन् n. *ein Stück von der Nabe des Leichenwagens* Kâtj. Çr. 22, 3, 12. Lâṭj. 8, 5, 6. Sharv. Bh. 3, 8. यक्तगतशवे ग्रामे M. 4, 108. °स्पृश् 5, 64. 85. 9, 178. शवं निर्हरेयुः 10, 55. °शिरस् 11, 72. MBh. 1, 1683. 13, 2566. 14, 1944. Harîv. 14763. 14768. 14772. 14854. fg. Suçr. 1, 108, 9. 170, 15. °विष 2, 258, 7. Spr. (II) 1190. 1444. Vaidj. Bhp. S. 46, 71. 86, 45. Bhp. 25 (23), 13. Ratnâk. 4, 107. 18, 152. 154. 25, 133. 34, 186. 72, 18. 73, 286. Râǵa-Tar. 5, 271. Weber, Kṛshṇâ. 224. Mârk. P. 8, 106. fgg. जीवत् Bhâg. P. 2, 3, 23. Vet. in LA. (III) 4, 11. Verz. d. B. H. 144, 3. °मन्थिन् Verz. d. Oxf. H. 51, b, 3. °साधन 93, b, 32. °दूषितबल 282, a, 28. fg. °पन्नग MBh. 1, 1706. am Ende eines adj. comp. f. घा Ratnâk. 53, 158. Vielleicht von श्रु = श्वा (श्वि) *schwellen.* Vgl. 2. शाव. — 2) n. *Wasser* Med.; vgl. शवम्.

शवकाम्य adj. *nach Leichen begierig;* m. *Hund* Çabdar. im ÇKDa.

शवकृत् adj. *Leichen machend* unter den Beiww. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4, 8, 106.

शवधान m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 44; vgl. शरधान.

शवमन्दिर n. *Leichenstätte* Mârk. P. 8, 106.

शवयान n. *Todtenbahre* Hir. 206.

शवर s. शबर.

शवराथ m. *Todtenbahre* Çabdar. im ÇKDa.

शर्वर्त (an शर्व anklingend) m. *ein best. Wurm* AV. 2, 4, 16. TS. 3, 7, 22, 1.

शवल s. शबल.

शवलोकधातु s. मल्लोकधातु.

शववाह् m. *Leichenträger* MBh. 4, 1314.

शववाह्य m. dass. Paiṇḍaçântiprad. 20, a, 1.

शवशयन n. *Leichenstätte* Bhâg. P. 4, 7, 33. könnte nach dem Comm. auch *Lotusblüthe* (शव = शल) bedeuten.

शर्वस् (von 1. श्रु) Uṇâdis. 4, 192. 1) n. a) *Ueberlegenheit, Uebermacht; (siegreiche) Stärke, Heldenkraft;* auch pl. Naigh. 2, 9. Nir. 2, 2. 10, 29. 31. 11, 21. मरुद्भिरग्न आ गहि शर्वसे कं परुषे नरः RV. 7, 28, 3. उग्रं व ओजः स्थिरा शर्वांसि 56, 7. 48, 2. 1, 39, 8. नकिः शर्वांसि ते नशत् 2, 27, 6. शर्विष्ठ न आ भर मरुद्भिः शर्वः 6, 19, 6. 2. स्वेन शर्वसा भूशुवुर्नरः 7, 74, 6. 1, 167, 9. दा नस्तोको नृणां भरं शर्वः 10, 148, 4. धिग्रा शर्वः पुरं 2, 11, 18. 5, 15, 11. 25, 3. रथो न मरुद्भिः शर्वसे पुजानः 34, 2. 8, 24, 17. 86, 9. 10, 48, 11. वज्रं शर्वसे घृष्वा दृदे 49, 3. 116, 1. AV. 6, 33, 3; vgl. Çâṅkh. Çr. 18, 3, 2. शर्मवत् RV. 5, 86, 3. त्वेष 87, 6. उग्र 3, 36, 4. वृत्रक् 6, 48, 21. वृत्रे 8, 3, 10. शर्वसस्पतिः Indra 1, 131, 4. 145, 1. 4, 47, 3. शर्वसः सूनु: Indra 4, 24, 1. 8, 79, 2 (vgl. 1, 127, 2). शर्वसो नपातः die Ṛbhu 1, 161, 14. 4, 34, 6. 35, 1. du. die Açvin 8, 25, 8. हिं° adj. *doppelt stark* RV. 9, 104, 2. शर्वसा instr. *kräftig, stark:* वी गिर या पृणासि शर्वसा वर्धयासि च RV. 5, 11, 5. यो यज्ञानां शर्वसा विश्वदर्शतः 4, 22, 1. 6, 32, 5. 10, 31, 5. 49, 3. 73, 8. AV. 13, 2, 31. In der Stelle इन्द्रो मुह्य रोदसी पप्रथच्छवः RV. 8, 3, 6 erklärt Sây. शर्वस् als gen. st. शर्वसम्. — b) *Wasser* (vgl. शर्व) Naigh. 1, 12; vgl. z. B. Sây. zu RV. 5, 58, 7. — c) = शर्व *Leichnam* Uṇâdis. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Ind. St. 4, 373. — Vgl. यज्ञप्रतिधृष्ट°, यज्ञेष्टि°, यज्ञामि°, मन्त्र°, वृद्ध° und शार्वसायन.

शर्वसउशीनरेषु Gopatha-Br. 2, 9 fehlerhaft für सर्वशोशीनरेषु; vgl. Ait. Br. 8, 14.

शर्वसान (von 1. श्रु) Uṇâdis. 2, 36. adj. *überlegen, übermächtig, Kraft-*

thaten vollbringend, gewaltthätig RV. 1,62,1. 2. 13. 6,37,3. 7,93,2. 8, 2,33. 57,3. AV. 18,99,9. m. *Weg* Uṇâdis.

शवसावत् (zu शवस्) adj. *mächtig, kraftvoll:* Indra RV. 1,62,11.

शवसिन् (wie eben) adj. dass. RV. 7,28,2.

शवाग्नि (शव + अ°) m. *Leichenfeuer* Ait. Br. 7,7. अँ° Çat. Br. 12,3,3,3.

शवार्ह (शव + अर्ह) n. *Todtenspeise* Pâr. Gṛhj. 2,8. als Etym. von श्मशान Çat. Br. 13,8,4,1.

शवाश (शव + आश) m. *Leichenfresser* Bhatt. 12,75.

शँविष्ठ (von 1. शू; superl. zu शूर) adj. *übermächtigst, heldenhaftest:* शविष्ठ न धा भर शूर शवः RV. 6,19,6. शूराणां शविष्ठा 68,2. वाज 5, 44,10. इन्द्रं शविष्ठं नृणां नरम् 8,40,2. 1,77,4. 165,7. 8,22,2.7. VS. 10,4.

शँवीर (von 1. शू) adj. (f. आ) *mächtig:* शवीरया धिया वनतं गिरः RV. 1,3,2. इषा यातं शवीरया 30,17.

शवोढर् (शव + उ°) m. *Einer, der Leichen wegschafft,* Çat. Br. 12,5,2,14.

शव्य (von शव) n. *Leichenbegängniss* Kâṭhaka Up. 4,15,3.

शश्, शँशति (प्लुतगतौ) Dhâtup. 17,77. (कार्त्तौ wegen शशिन्) Ind. St. 10,316. शशाश, शशशिव, शशशतुस् Vop. 8,52. 80. *springen:* शशत्त् Kâç. 15,3. शशति भेक: Dunâin. bei Westr. und im ÇKDr. Wohl nur eine aus शश *Hase* erschlossene Wurzel.

— उद् *aufspringen* von so v. a. *aufgeben, im Stich lassen:* प्रकुर्यवेगोच्कृशितशयनासनभोजना: Bhâg. P. 1,11,18. उच्कूमित (= उल्लाङ्घित Comm.) ed. Bomb., aber nur fehlerhaft, da es im Comm. auf शम् (d. i. शश्) प्लुतगतौ zurückgeführt wird.

शश m. 1) *Hase* (in den Flecken des Mondes sieht der Inder einen *Hasen* oder eine *Gazelle*) AK. 2,5,11. H. 1295. an. 2,554. Med. ç. 14. शशः तुरं प्रत्यञ्चं जगार RV. 10,28,2. शश धास्कन्दमर्पति VS. 23,56. 24, 38. चान्द्रमस Çat. Br. 11,1,8,3. M. 3,270. 5,18. शशवच्च विनिष्पतेत् Spr. (II) 4378. °लोहितवर्णाभ MBh. 3,11618. 7,997. R. 5,14,18. Vasiṣṭh. Bhp. S. 3,30. 78,19. — 51,24. 86,22. (चन्द्रमण्डलस्य) द्विरंशे पिप्पलस्तत्र द्विरंशे च शशो महान् MBh. 6,192. 250. fgg. (vgl. VP. 166, N. 1). Harîv. 4596. R. 5,24,16. Saṃs. 1,46,20. 108,2. 315,9. Mârk. P. 15,30. Bhâg. P. 3,10,22. °वागुरा Vâsup. 137. °रूपम् 188. Ind. St. 8,430. Buddha als *Hase* Vâjas beim Schol. zu H. 233. Gîtagaurîśâ 11. शशस्य कर्णौ (wohl fehlerhaft für कर्णा:; vgl. शशकर्ण) N. eines Sâman Ind. St. 3,239,a. — 2) *ein best. Meteor:* यत्र प्रापादि शश उल्कुषीमान् AV. 5,17,4. — 3) Bez. *eines unter einer best. Constellation geborenen Wundermenschen* Varâh. Bṛh. S. 69,2. 7. 20. fgg. in der Erotik (neben मृग, वृषन्, अश्व) Bez. *eines Mannes mit best. Eigenschaften* H. an. Med. मृदुवचनसुशील: कोमलाङ्ग: सुकेश: सकलगुणविधान: सत्यवादी शशो ज्ञेयम् Ratim. im ÇKDr. Smaradîpikâ (Tub. Hdschr.). — 4) *Symplocos racemosa Roxb.* H. an. Med. — 5) *Myrrhe* H. 1063. H. an. Med. — Vgl. शाश.

शशक (von शश) m. 1) *Häschen, Hase* Taitt. 2,5,9. Hir. 184. Aṣṭâṅg. Bh. in Ind. St. 1,40,2 v. u. MBh. 8,1800. 1814. R. 4,16,32. Varâh. Bṛh. S. 88,2. 21. Spr. 2440. 2910. Mârk. P. 35,2. 48,26. Pâṇ. Gaṇ. 1,7,28. Pâṇ. Kât. 160,1. 2. 22. 61,2. Hit. 83,6. °शब्दज्ञान Verz. d. Oxf. H. 92, b,36. — 2) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 3,15257.

शशकर्ण m. *Hasenohr:* 1) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Kâṇva, Liedverfassers von RV. 8,9. — 2) N. eines Sâman Lâṭy. 4,6,3. 6,3,21. Nid. 6,3; vgl. शशस्य कर्णौ Ind. St. 3,239,a.

शशकविषाण n. *Hasenhorn* so v. a. *ein Unding* Spr. (II) 2702. Vgl. शशविषाण.

शशकेतु s. शशिकेतु.

शशघातिन् m. *Hasentödter,* Bez. *eines best. Raubvogels* Suçr. 1,24,7. 202,13.

शशघ्न m. dass. Varâh. Bṛh. S. 88,1. f. ई P. 3,2,53, Schol.

शशधर् m. 1) *Hasenträger* d. i. *der Mond* AK. 1,1,3,16. H. 105, Schol. Spr. 3268. Gîr. 7,2. Weber, Nax. 2,281. Verz. d. Oxf. H. 133,a, No. 244. — 2) N. pr. eines Gelehrten Verz. d. B. H. No. 531. Hall 41. 44.

शशधरीय adj. von Çaçadhara *verfasst,* n. *ein Werk* Çaçadhara's Hall 44. 25.

शशधर्मन् m. N. pr. eines Fürsten VP. 470.

शशप्लुतक n. *Hasensprung,* Bez. *einer durch Fingernägel hervorgebrachten Verwundung* Çârṅg. im ÇKDr.

शशबिन्दु m. 1) N. pr. eines Fürsten, Sohnes des Kîrtaratha, Mân. d. 54. Maitrâyaṇ. 1,4. MBh. 1,226. 2100. 7,3321. 12,998. 7577. 13,4255. 4269. Harîv. 1972. R. 7,89,17. VP. 420 (vgl. auch 2te Aufl. 2,63, N.). Bhâg. P. 9,6,38. 23,30. pl. *seine Nachkommenschaft* MBh. 2,336. 12, 999. R. 1,70,28. 2,110,16 (119,16 Gorr. fälschlich शशि° Schl. an beiden Stellen). — 2) ein N. Vishṇu's Taitt. 1,1,28. H. 217. Mân. MBh. 13, 6920. — Vgl. शशाबिन्दव.

शशभृत् m. *Hasenträger* d. i. *der Mond* H. 105. Spr. 2636. Varâh. Bṛh. 1,1 (v. l. शशिभृत्). Çâṅk. 10,136. परिणात° Kâlakâṇḍa 2,80. राज्ञ° Kathâs. 73,239. Vgl. शशधर्.

शशभृद्भृत् m. *Träger des Mondes* d. i. Çiva Kâlikâp. im ÇKDr. (hier wird fälschlich शशभृद्भृत als Thema angenommen).

शशमुण्डरस m. *Brühe von einem Hasenkopf* (als Medicament gebraucht) Çârṅg. Saṃh. 2,1,16.

शशर्प (demselben Ursprunge wie शश्वत्) adj. *unversieglich, unaufhörlich:* स्तन RV. 1,164,49. धेनु 3,55,16. राधस् Vâlakh. 5,16. शशर्पं (adv.) उदुद्रे RV. 3,57,2.

शशयान (शश + यान) n. *Hasengang,* N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,5055.

शशर्षु (von शश) adj. *Hasen nachgehend:* नीचार्यच्छशर्षुगृग: AV. 4,3,6.

शशलक्षण adj. *das Zeichen eines Hasen habend,* m. *der Mond* MBh. 3, 16198 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 9,2048. Vgl. शशाङ्क.

शशलक्ष्मण MBh. 3,16198 fehlerhaft für °लक्षण.

1. शशलक्ष्मन् n. *das Zeichen eines Hasen* (im Monde) MBh. 12,13221.

2. शशलक्ष्मन् m. *der Mond* Sin. D. 99,9. Kathâs. 27,57.

शशलाञ्छन m. dass. AK. 1,1,3,16. Kumâras. 7,6. Spr. 2372. (II) 1073. Mârk. P. 63,8.

1. शशलोमन् n. *Hasenhaar* AK. 2,9,107.

2. शशलोमन् m. N. pr. eines Fürsten MBh. 15,881.

शशविषाण n. = शशकविषाण Spr. 2661. (II) 2702, v. l. Kathâs. 40, 21. Verz. d. Oxf. H. 250,a, 7. 8. b,20. fg. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 41. Sarvadarçanas. 161,8. 149,19. fg. Davon शशविषाणाय् °यते *einem Hasenhorn* d. i. *einem Unding ähnlich sehen* ebend. 119,9.

शशशिम्बिका f. *eine best. Pflanze,* = जयन्ती Râjân. im ÇKDr.

शशाग्रङ्ग n. = शशकविषाण Kusum. 25, 6. 12. 26, 6. °कृतधनुर्दण्ड Kull. zu M. 8, 62. fgg. °धनुर्धर Verz. d. Oxf. H. 250, b, 46.

शशास्थली Taik. 2, 1, 7 Druckfehler für कुशस्थली, was ÇKDa. und Wilson nicht bemerkt haben.

शशाङ्क (शश + षङ्क) m. 1) *der Mond (mit einem Hasen gezeichnet, gestempelt)* AK. 3, 4, 2, 11. Hall. 1, 42. Aṇḍ. 1, 11. R. 4, 26, 8. Ṛt. 1, 2. °लेखा Çik. 35, 21. Spr. (II) 1958. 3149. 3752. Varâh. Bṛn. S. 9, 45. 18, 1. fgg. 24, 9. 99, 1. Lalitâ. 2, 5 in Ind. St. 2, 284. Kathâs. 18, 395. Râǵa-Tar. 4, 704. Weber, Ḳâmâṇḍ. 224. 294. 296. Pañkat. 162, 6. Hit. 83, 7. °मृङ्कोमति Verz. d. Oxf. H. 327, *a*, 1 v. u. — 2) N. pr. eines Fürsten Hiouen-thsang 1, 248. 349. 422. Vie de Hiouen-thsang 112. 235.

शशाङ्ककुल n. *Mondgeschlecht:* °भूषण Kathâs. 26, 255.

शशाङ्कज m. *Sohn des Mondes* d. i. *der Planet Mercur* Varâh. Bṛn. S. 4, 26.

शशाङ्कतनय m. dass. ebend. 103, 1. 6.

शशाङ्कपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 101, 96. umschrieben शशाङ्कपूर्व पुरम् 382.

शशाङ्कमुकुट m. ein N. Çiva's (*den Mond zum Diadem habend*) Kathâs. 117, 73.

शशाङ्कवती (f. von शशाङ्कवत् und dieses adj. von शशाङ्क) f. N. pr. einer Princessin Kathâs. 69, 31. fgg. nach ihr der 12te Lambaka in diesem Werke benannt 1, 3.

शशाङ्कशेखर m. = शशाङ्कमुकुट Buâs. P. 4, 6, 41.

शशाङ्कसुत m. = शशाङ्कज Varâh. Bṛn. S. 3, 2.

शशाङ्कार्ध (शशाङ्क + अर्ध) m. *Halbmond:* °मुख (पत्तिन्) Ragh. 3, 59. °शेखर ein N. Çiva's (vgl. शशाङ्कशेखर) Râǵa-Tar. 1, 175.

शशाङ्कोपल (शशाङ्क + उ°) m. *der Mondstein* (s. चन्द्रकान्त) Sâh. D. 340, 18.

शशाणडुलि und °ली f. *eine Gurkenart* Râǵân. im ÇKDa.

शशाद् 1) adj. *Hasen essend.* — 2) m. *a) ein best. Raubvogel* (श्येन) Râǵân. im ÇKDa. — *b)* Bein. Vikukshi's MBu. 3, 12315. fg. Hariv. 666. fgg. (die neuere Ausg. liest auch 664 शशाद् st. वशाति). VP. 360. Buâs. P. 9, 6, 11.

शशादन gaṇa घृतादि zu P. 4, 2, 127. m. *ein best. Raubvogel* (vgl. शशाद्) AK. 2, 5, 14. H. 1334. — Vgl. शशादनक.

शशिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6, 356 nach der Lesart der Bomb. Ausg. und VP. 189. शाशिक ed. Calc.

शशिकला f. 1) *Mondsichel, Mond* überh. Ḳhandom. 71. Vikr. 109. Kathâs. 18, 169. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑ Colebr. Misc. Ess. II, 162 (X, 13). Ind. St. 8, 390. fg. Ḳhandom. 71. — 3) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Kathâs. 73, 201. Verz. d. Oxf. H. 133, *b*, No. 245. 154, *a*, 18. fg.

शशिकान्त 1) m. *der Mondstein* (s. चन्द्रकान्त) Râǵân. im ÇKDa. Varâh. Bṛn. S. 80, 4. — 2) n. *eine bei Nacht sich öffnende Lotusblüthe* Râǵân. im ÇKDa.

शशिकेतु m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 91. Lalit. 163 (ed. Calc. 194, 10 शशकेतु).

शशिखण्ड 1) m. n. *Mondsichel:* °शेखर *die Mondsichel* (*Halbmond*) *zum Diadem habend*, Beiw. Çiva's Hariv. 14835. — 2) m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 26, 33.

शशिखण्डपद् m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 26, 281.

शशिगच्छ *das Mondgeschlecht* Çata. 14, 283.

शशिगुप्ता f. *Süssholzsaft* Ausw. 69.

शशिग्रह m. *Mondfinsterniss* Verz. d. Oxf. H. 327, *a*, 5 v. u.

शशिज m. *Sohn des Mondes* d. i. *der Planet Mercur* MBu. 9, 345. Varâh. Bṛn. S. 4, 21. 17, 13. 13. 41, 9. 103, 2. Bṛn. 2, 16. Lalitâ. 2, 2. 10.

शशितनय m. dass. Varâh. Bṛn. S. 17, 20. Bṛn. 7, 6.

शशितेजस् m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 65, 221. eines Schlangendämons Vîtp. 87.

शशिदेव 1) m. N. pr. eines Fürsten, = रन्तिदेव Çabdar. im ÇKDa. — 2) n. v. l. für शशिदैव Varâh. Bṛn. S. 7, 9.

शशिदैव n. *das unter dem Monde stehende* Nakshatra Mṛgaçiras Varâh. Bṛn. S. 7, 9.

शशिधर m. N. pr. eines Mannes Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Cl. 35 und S. 533.

शशिधव्र m. N. pr. eines Asura Hariv. 12944. eines Fürsten von Bhallâṭapura Kalki-P. 25 im ÇKDa.

शशिन् (von शश) 1) m. *a) der Mond* (*das Bild eines Hasen habend*) AK. 1, 1, 2, 16. Çvetâçv. Up. 2, 11. प्रभा शशिनः MBu. 3, 2147. 2676. R. 1, 1, 27. 4, 54, 3. Ṛt. 1, 12. Mâlav. 45. 102. Ragh. 1, 83. Vikr. 8. Spr. (II) 347. 2060. 3149. (I) 2817. 2970. fgg. Varâh. Bṛn. S. 3, 30. 4, 2. fgg. 5, 32. 11, 14. 18, 8. 31, 23. 98, 4. Lalitâ. 2, 5. Kathâs. 62, 39. Râǵa-Tar. 3, 284. H. 47. Hall. 1, 112. Buâs. P. 3, 15, 26. 4, 7, 21. Hit. Pr. 1. — *b)* Bez. *der Zahl Eins* Varâh. Bṛn. S. 98, 1. Ganit. Madhjam. 3. — *c) ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ — — Colebr. Misc. Ess. 2, 158. — *d)* N. pr. eines Mannes Kathâs. 64, 128. fgg. 89, 33. 124, 132. fgg. — 2) f. शशिनी N. *der 8ten Kalâ des Mondes* Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 25. — Vgl. प्रति°, शरच्छशिन् und शरत्पर्व° unter शरत्पर्वन्.

शशिपुत्र m. *Sohn des Mondes* d. i. *der Planet Mercur* Varâh. Bṛn. S. 7, 20. 40, 6. 104, 23. Bṛn. 6, 11.

शशिप्रभ (शशिन् + प्रभा) n. 1) *eine bei Nacht sich öffnende Lotusblüthe* Çabdar. im ÇKDa. — 2) *Perle* Râǵân. ebend.

शशिप्रभा (wie eben) 1) *Mondschein* Gaṇit. im ÇKDa. — 2) ein Frauenname Kathâs. 26, 35. 69, 35. 89, 5. 30. fgg. 101, 45. 89. Verz. d. Oxf. H. 152, *b*, 37.

शशिप्रिया f. *Geliebte des Mondes, ein personif.* Nakshatra H. 113.

शशिबिन्दु s. शशबिन्दु.

शशिभृत् m. *Mondträger*, Bez. Çiva's Varâh. Bṛn. 1, 1, v. l. नव° Mâlav. 44.

शशिभूषण adj. *mit dem Monde geschmückt*, m. Bez. Çiva's H. 199, Schol.

शशिमणि m. *der Mondstein* (s. चन्द्रकान्त) Nigh. 24.

शशिमत् (von शशिन्) adj. *mit dem Monde versehen:* कूस्य शिरः Sâh. D. 264, 17.

शशिमौलि adj. *den Mond zum Diadem habend*, m. Bez. Çiva's Kumâras. 5, 60. Kathâs. 21, 148. 24, 7. Mâlav. P. 84, 10.

शशिरेखा f. *Mondsichel* als N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 26, 35.

शशिलेखा f. 1) *Mondsichel* H. an. 4, 46. Med. kh. 17. — 2) *Vernonia*

anthelminthica (वाकुची) H. an. Dhanv. in Nigh. Pr. *Coccinia cordifolia DC.* (गुडूची) Mad. — 3) *ein best. Metrum* (vgl. चन्द्रलेखा) H. an. Mad. — 4) N. pr. einer Apsaras Brahma-P. in LA. (III) 50, 19. einer Fürstin Kathâs. 58, 3.

शशिवंश m. *das Mondgeschlecht:* °ज्ञो नृपः Spr. (II) 4840. °केतु Harîv. 8815.

शशिवदन 1) adj. (f. या) *mondantlitzig* Kâdamb. 10. — 2) f. या N. zweier Metra: *a) 4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Çâk. 8. Kâdamb. 10. Colebr. Misc. Ess. 2, 150 (I, 3). Ind. St. 8, 366 (hier fälschlich ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ –). — *b) 4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ –, ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2, 163 (XVI, 2). Ind. St. 8, 423.

शशिवर्धन m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 6.

शशिवाटिका f. *Boerhavia procumbens Roxb.* Râjân. im ÇKDr.

शशिविमल adj. *rein wie der Mond:* गिरि R. 7, 11, 49. nach dem Comm. *der Kailâsa.*

शशिशिखामणि adj. *den Mond zum Diadem habend*, m. ein N. Çiva's Râjat.-Tar. 1, 282.

शशिशेखर m. 1) dass. H. an. 3, 720. 5, 11. Hall. 1, 11. Kathâs. 1, 22. 22, 117. 44, 9. 50, 175. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 502, Cl. 1. Verz. d. Oxf. H. 99, *b*, 17. — 2) N. pr. eines Buddha Târan. 1, 1, 22.

शशिसुत m. *Sohn des Mondes* d. i. *der Planet Mercur* Varâh. Bṛh. S. 103, 12. 104, 19. fg.

शशीभपर्वन् Verz. d. Oxf. H. 327, *a*, 7 v. u. fehlerhaft für शशाङ्कपर्वन्; vgl. Verz. d. B. H. 237, 4.

शशीभू (शश + 1. भू) *zum Hasen werden:* °भूत Harîv. 12094.

शंशीयंस् (compar. zu शश्वत्) adj. *häufiger, zahlreicher:* दधिभिश्चिद्-शंशीयांसं दभीति ṚV. 4, 32, 2. उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी। अदेवत्रादराधसः 5, 61, 6.

शशीश (शशिन् + ईश) m. *Herr des Mondes* d. i. Çiva: °शिशु Bez. Skanda's Kin. 15, 5.

शशोर्णा (शश + ऊर्ण, ऊर्णा) n. *Hasenhaar* Sidd. K. 247, *b*, 14. fg. AK. 2, 9, 107. Hiouen-thsang. 1, 60.

शशोलूकमुखी (शश - उलूक + मुख) f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2640.

शश्, शशति künstliches denom. von शश्वत् Vop. 21, 8. — Vgl. शश्वाय्.

शश्वधा adv. *immer wieder* ṚV. 3, 33, 7.

शंश्वत् (vgl. शशय, शशीयंस्) 1) adj. (f. शंश्वती, superl. शश्वत्तम gaṇa उच्चादि zu P. 5, 1, 160). *a) immer wieder erscheinend, — thuend, sich wiederholend, frequens; zahlreich* Naigh. 3, 1. ṚV. 1, 26, 6. 27, 7. यायतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् 113, 8. 15. 171, 5. वीरान् 3, 36, 10. 56, 3. 4, 32, 13. 5, 1, 3. 7, 101, 6. 8, 17, 14. शश्वतीषा (sc. विदुः) कोतारम् 49, 17; vgl. 84, 3. 87, 6. 9, 1, 6. तं हि शश्वत ईळते 5, 14, 3. 7, 94, 5. superl.: शश्वत्तमास्तं दधामहे *frequentissime* 10, 39, 1. शश्वत्तमायां उषसो व्युष्टौ *letzterschienen* 1, 118, 11. 124, 4. — *b) all, jeder:* जन ṚV. 1, 36, 19. 72, 1. यति सप्तो यजति शश्वतः 135, 7. 2, 12, 10. 3, 9, 4. पिबा सोमं शश्वते वीर्याय 32, 5. 5, 52, 2. 6, 61, 1. 7, 1, 3. वपुः 32, 27. 93, 6. 8, 1, 24. 56, 17. शश्वते मर्ताय दाशुषे 9, 98, 4. 10, 48, 1. 100, 11. AV. 5, 5, 2. 8, 8. 6, 75, 2. 19, 32, 7. 20, 128, 4. समाः TBr. 2, 5, 8, 2. — 2) शंश्वत् adv. (शश्वत् gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37). mit imperf. oder perf. P. 3, 2, 115; vgl. Vârtt. zu 122. = पुनर्, सदा, अभीक्ष्णम्, नित्यम् AK. 3, 4, 23 (23 Colebr.), 5. 3, 1. 11. H. 1531. an. 7, 25 (st. सक् vielleicht सदा zu lesen). Med. avj. 32. fg. शश्वत्स्वादात्मप्रभे च मङ्गले ॥ पुराकल्पे सदार्थे च पुनरर्थे च दृश्यते). Hall. 4, 13. *a) immer wieder, oftmals, allzeit, stets:* शश्वत्कर्तः ṚV. 3, 54, 1. 1, 30, 16. 47, 9. शश्वत्पुरोषा व्युवास *von jeher* 113, 13. 8, 69, 2. 3, 36, 1. 6, 20, 8. 32, 3. या पौरुषि शश्वदुशता पपाव 40, 4. 41, 2. 62, 3. 8, 5, 23. 36, 16. अग्निं शश्वदीमहे 60, 13. 9, 66, 16. 10, 69, 11. AV. 4, 24, 1. Ait. Br. 7, 13. 8, 26. TBr. 3, 12, 9, 1. इति शश्वद् निणाज्ञाः कीर्तयतिमाचक्षते *pflegen zu nennen* Nir. 6, 9. Çat. Br. 3, 3, 4, 19. 4, 2, 4, 28. Kâṭh. Up. 6, 13, 2. Nidânas. 5, 10. 12. 9, 3. संग्रामेषु च राजेन्द्र शश्वज्जयमवाप्स्यसि MBh. 3, 2626. धर्मे स्थितः R. 2, 44, 4. 91, 19. 4, 54, 3. Mṛicch. 56. ad 113. Hâsy. 1, 38. 2, 48. Çiç. 107. Spr. 4721. Kathâs. 20, 230. 27, 18. Râjat.-Tar. 4, 56. Prab. 112, 10. Bhâg. P. 2, 24, 62. Daçarûp. 74, 17. पोषितः सर्वाः शश्वत्कामा भवन्तु च Pañcat. 1, 14, 46. 97. superl. *zum vielsten Male* d. h. *nach zahllosen Malen wieder, noch einmal* ṚV. 2, 38, 1. 3, 1, 23. शश्वत्तमे सुमनो यस्य पाकि 35, 6. 62, 2. 8, 87, 4. 10, 70, 3. — *b) alsbald, darauf, alsdann;* gewöhnlich mit क् verbunden: यद् शश्वदवर्धत् — शश्वद् क् स एवेन्द्रमकृणिष्यत् *sobald er gesagt hätte* u. s. w., *alsobald hätte er den* Indra *erschlagen* Çat. Br. 1, 6, 3, 10. 8, 1, 4. 2, 2, 1, 2. 5, 4, 3, 2. 12, 8, 3, 6. क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति Bhag. 9, 31. — *c) immerhin, allerdings, gewiss:* यत्सोम्यातिथिमती स्याच्छश्वत्सा स्यादेतेव° *wenn der* Soma-*Vers den Gast erwähnen soll, dann träfe das bei diesem allerdings zu, aber in der Weise dass* u. s. w. Ait. Br. 1, 17. शश्वत्तया स्यात् *so ist es allerdings* 2, 21. fg. 4, 7. शश्वद् वा एष न संभवति Çat. Br. 2, 2, 4, 3. 3, 1, 3. 4, 1, 1, 9. यद्य केनं शश्वदप्यसुरा उपसेदुः *endlich auch* 2, 4, 1, 5. चतुःषष्टिं कवचिनः शश्वदस्य ते पुत्रनप्तार धामुः Ait. Br. 3, 48. — Vgl. शाश्वत, शाश्वतिक.

शश्वाय् (denom. von शश्वत्), °यते gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 12. Vop. 21, 8.

शष्, शंषति (हिंसायाम्) Dhâtup. 17, 39.

शष्कऔंडी f. gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41. *eine best. Pflanze* und *deren Frucht* हरीतक्यादि zu 3, 167.

शष्कुल m. *Pongamia glabra Vent.* Çabdar. im ÇKDr. — Am Ende eines adj. comp. = शष्कुली P. 1, 2, 49, Schol. (पञ्च°).

शष्कुलिका f. = शष्कुली *ein best. Backwerk* Suçr. 2, 73, 1. Varâh. Bṛh. S. 76, 9.

शष्कुलौंडी (auch शष्कुलि) f. gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41. सक्थ्यादि zu 5, 3, 103. 1) *Gehörgang* Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 1, 56, 3 (°लि am Ende eines comp.). 2, 150, 6. Schol. zu Taitt. Âr. 5, 2, 9. शष्कुली du. Jiân. 3, 96. कर्ण° H. 574. Schol. zu Gaut. 1, 1, 17. — 2) *eine best. Krankheit des Gehörs,* = कर्णनाव Çâlâkj. Sâlâ. 1, 7, 31 (°लि). — 3) *ein best. Backwerk* (vulgo पुलिपिठा ÇKDr.) Çabdar. im ÇKDr. Kauç. 23. 138. Çântikalpa 15. Jiân. 1, 173. MBh. 7, 2309. 12, 8293. 13, 4993. Suçr. 1, 111, 6. 235, 1. तिल° 74, 12. 2, 155, 2. Bhâg. P. 10, 24, 26. 11, 27, 34. — 4) = शष्कुल Ratnâk. in Nigh. Pr. — 5) *ein best. Fisch* Bhâvapr. im ÇKDr. — Vgl. शाष्कुलिक.

शैंव्य (शिव्य Upâsn. 3, 28) n. Sidd. K. 249, *a*, 11. 1) n. *Geschwister, junger Trieb von Reis* u. s. w. AK. 2, 4, 8, 33. 3, 4, 20, 92. H. 1191. an. 2,

300. Mân. p. 11. Halâ. 2,35. 5,14. Schol. zu Kâty. Ça. 13,1,18. Mahîdh. zu VS. 16,17. VS. 19,18. 21. 21,39. Âit. Br. 8,5. 8. Çat. Br. 12, 7,2,5. 9,4,2. Kâty. Ça. 19,1,23. Kauç. 20. 79. कृशिपी: मशष्पकवले: MBh. 3,11342. विच्छशष्पा धरणी 12542. °वृसी R. 3,49,29. Suça. 1,22,18. 206,10. Rasa. 2,26. Ṛt. 1,22. Çiç. 7, v. l. Vikr. 120. Spr. (II) 1683. (I) 2998. Varâh. Bṛh. S. 86,67. Bhâg. P. 5,8,14. कुशस्य 20,12. Pañkat. 9,6. ed. orn. 21,30. °तुल्य so v. a. तृण° Spr. (II) 4957, v. l. Oefters falschlich शष्प und auch शष्य geschrieben. — 2) *Verlust des klaren Bewusstseins*, neutr. H. an. masc. Med. Hierher vielleicht शष्पाविग्रावलेनेभे (शष्पवि°?) सैन्ये निद्रोतने व्यधात् Kathâs. 109,124.

शष्पभुज् m. *Grasfresser* Pañkat. 110,22.

शष्पमोक्षन m. dass. Pañkat. ed. orn. 21,22.

शष्पवत् (von शष्प) adj. *junge Gräser enthaltend.*

शष्पिञ्जर (सस्पि° TS.) adj. *gelbröthlich schimmernd wie junger Rasen* (Maulom.) VS. 10,17. 58.

शैष्प्य (von शष्प) adj. *grasig* VS. 16,42.

शष्य fehlerhafte Schreibung für शष्प und सस्य.

1. शस् (auch शास्) शंसति (क्रियायाम्) Dhâtup. 17,78. शस्ति, शास्ति, शासति 3. pl.; शशसुस्, शशसिथ P. 6,4,126. शसिष्यति; partic. शस्त s. bes. *metzgen, niedermetzeln:* शशास च बहून्योधान् Bhatt. 14,103.

— अपि *abschneiden:* पुरा नाभ्या अपिशसो वयामुत्खिदतात् *ohne den Nabel wegzuschneiden* Âit. Br. 2,6.

— अभि, partic. °शस्त s. u. शंस्.

— आ s. आशासन.

— परि s. परीशास.

— प्र s. प्रशास्, partic. प्रशस्त MBh. 12,5067 in der Bed. *verschwunden* fehlerhaft für प्रध्वस्त, wie die ed. Bomb. liest.

— वि *zerschneiden, zerlegen, metzgen; niedermetzeln:* पर्शव्यरत्नुघृष्या वि शस्त Ṛ. 1,162,18. कस्त्वा वि शासत् VS. 23,39. शमितारो वि शासतु 40. 42. वाचा व्यशात् Âit. Br. 2,7. 7,16. Çat. Br. 2,2,2,1. विशसति 3,8,4,14. 8,3. Kâty. Ça. 20,7,6. Gobh. 3,10,26. Kauç. 45. 64. Bhâg. P. 5,26,25. 10,36,20. (गोपैः) विशसद्भिः कुठारैश्च काष्ठान्यपि तद्वनेपि Harîv. 3541. रावणो व्यशसत् (व्यनशत् die neuere Ausg.) 4167. विशशास R. 1,13,25. विशस्य MBh. 3,2290. 10495. 7,2164. R. Gorr. 1, 13,35. 2,83,36. विशस्यन्तो (विकृन्यन्तो sic! die neuere Ausg.) च पशवः Harîv. 3868. विशस्यमान Mâlav. P. 13,3. विशस्त P. 7,2,19 (वैपाट्ये, sonst विशसित). Vop. 26,111. MBh. 8,3511. 4227 (विशस्ता st. विशस्त्रा mit der ed. Bomb. zu lesen). 9,480. fg. R. Gorr. 2,18,27. Vgl. अविशस्तृ, विशसन fgg. und विशास्तृ. — desid. विशिशासिषत् partic. Çiksh. Ça. 15,21,1 (विशिशासिषुः v. l. Âit. Br.).

2. शस् adv. suff. = 1. शस् (*in Abschnitten*); wird im Padapâṭha vom Worte getrennt VS. Prât. 5,9. AV. Prât. 4,19.

3. शस् (= शंस्) adj. *rectitrend* in उक्थ°.

शस adj. dass. in उक्थ°.

शंसन (von 1. शस्) n. *Schlachtung* Râmâyaṇa zu AK. nach ÇKDa. H. 830. Ṛ. 1,163,12. 10,89,14.

1. शस्त (partic. von शंस्) P. 7,2,15. 1) adj. *gepriesen, gelobt, gerühmt, empfohlen, für geeignet —, gut —, vorzüglich gehalten, faustus* (von Gestirnen, Tagen u. s. w.) AK. 1,1,4,4. 3,2,39. H. 86. an. 2,199. Med. t. 62. नराधिप MBh. 13,475. न मौनं वाग्मिनां शस्तम् Spr. (II) 3378. 3410. ममाज्ञापालनं शस्तं पितुर्न तितिपालनम् Mâlav. P. 114,23. Bhâg. P. 3,29, 15. फलं शस्तमशोभनं च *die guten und die schlechten Folgen* Varâh. Bṛh. S. 47,1. शरदि कमलोदराभो हेमले रुधिरसंनिभः (यर्कः) शस्तः 3,24. 8, 29. 31. 37. 10,21. 11,33. 22,1. शस्ते ऽह्नि Mâlav. P. 116,69. 123,3. Bhâg. P. 1,14,13. 4,8,55. 10,41,49. वाक्यशस्त so v. a. *für rein erklärt* Jâḍ. 1,191. शस्तं वसनमुत्तमम् *prächtig, schön* R. 2,60,11. यज्ञयष्टि Kâtyâr. 25. Taitt. 2,6,20. 3,3,397. °केशक Çârdar. im ÇKDa. राज्ञाप्युभयतः सिद्धिं मत्वा शस्तो बभूव सः so v. a. *guter Dinge, wohlgemuth* Kathâs. 6, 150. घ्रशस्त *infaustus:* किमशस्तानि शंससि AV. 6,45,1. अशस्ता अपवित्राय ते क्रान्ताः Râmâ-Tâp. 5,12. Vet. in LA. (III) 13,10. — 2) n. a) *Preis, Lob* Ṛ. 5,47,7. 8,43,2. — b) *Körper, Leib* ÇKDa. und Wilson nach Taitt. 2,6,20, wo aber शस्तं वपुः einen *schönen Körper* bedeutet. — Vgl. कवि°, दुः°.

2. शस्त (partic. von 1. शस्) adj. *niedergemetzelt* MBh. 3,1638.

3. शस्त (partic. von 1. शास्) adj. *gestraft:* शास्ति मामपराधिनम् ॥ त्वया शस्तस्य रात्रिन्द्र नास्ति मे नरकादृयम् । R. 7,59,2,30. fg.

शस्तक n. 1) = अङ्गुलित्राण Çârdar. im ÇKDa. — 2) = लोक् Hîn. 60 fehlerhaft für शस्त्रक.

शस्तता f. nom. abstr. von 1. शस्त 1) Mâlav. P. 51,19.

शंस्तृ (von 1. शस्) nom. ag. *Schlächter, Metzger* Ṛ. 1,162,5. AV. 3,3,2.

शस्ति (von शंस्) f. *Preis, Lob* Ṛ. 1,186,3. 4,3,15. Vgl. सु°.

शस्तोक्थ (1. शस्त + उक्थ) adj. *derjenige, welchem die Recitation aufgesagt worden ist,* VS. 8,12.

1. शस्त्र (von शंस्) Uṇâdis. 4,163. n. *Anruf, Lob;* so heisst im Ritual *der Sats* oder *die Strophenreihe, welche die Recitation des* Hotar und *seiner Gehilfen* (s. 1. शस्त्रिन्) *bilden, zur Begleitung der* Graha *bei der* Soma-*Libation.* Sie folgen auf das Stotra des Udgâtar und heissen, für den Hotar, am Morgen माध्य und प्रउग, am Mittag मरुत्वतीय und निष्केवल्य, bei der dritten Spende वैश्वदेव und आग्निमारुत. Ind. St. 10, 333. VS. 19,25. 28. Âit. Br. 2,37. 3,4. 4,12. 6,20. 8,1. Çat. Br. 4,2,4, 20. 3,2,3. 5,1,2,4. एतत्त्रयं सद् क्रियते यद्धः स्तोत्रे शस्त्रम् 3,1,3,4. 10, 3,5,2. 13,3,4,2. 2,10. तद्वै शस्त्रं समृद्धं यत्स्तोमेन संपद्यते Çâṅkh. Br. 19, 3. TS. 3,2,3,2. Kâṭh. 29,3. Çâṅkh. Ça. 3,1,3. 14,8,11. 13. 19,2. 22,24. Âçv. Ça. 1,2,23. 26. 5,9,2. 4. 10. 27. 10,1. 18,2. Kâty. Ça. 3,13,24. शस्त्राते यद्धं जुहोति 19,5,3. Nir. 7,23. Kaush. Up. 2,6 (nach Çâṅkh. *Waffe*). यशस्त्रा देवता यत्र यशस्त्राशास्त्रं विना । कल्प्यते मनुजैरार्च्यैः Mâlav. P. 80,93. *das Recitiren* Çâṅkh. Br. 26, 3. Ça. 3,7,19. 17,8,13. 18,23,10. नृशस्त्र Variation zu नराशंस Çat. Br. 3,6,3,1. — Vgl. यज्ञवाक°.

2. शस्त्र (von 1. शस्) P. 3,2,182. Uddîvan. zu Uṇâdis. 4,159. 1) m. *Schwert* Taitt. 2,8,34. H. ç. 165. — 2) f. शस्त्री P. 6,2,2, Schol. *Messer, Dolch* AK. 2,8,3,60. H. 784. an. 2,460. fg. Med. r. 88. Spr. (II) 2391. शस्त्रीष्याम P. 8,2,2, Schol. Çiç. 4,44. — 3) n. a) *ein schneidendes Werkzeug: Messer, Schwert; Mordwaffe* überh. AK. 2,8,3,50. 3,4,25,181. Taitt. 2,8,50. H. 773. H. an. Med. Halâ. 2,207. 321. तत्र मुक्तमस्त्रमुच्यते यमुक्तं शस्त्रमित्युच्यते Madhus. in Ind. St. 1,21,18. °विशेषाः 23. fg. Âçv. Gṛhy. 1,12,3. Kauç. 44. 92. ये शस्त्रमुपजीवन्ति Âpast. 1,18,19. तदपा-

Schnittmesser Çat. Br. 3,6,4,4. द्रुपकारो ऽपि शस्त्रेण क्रीडपैवोल्लिलेख ताम् Kathâs. 37,9. Suçr. 1,13,5. 26,11. °युक्ति 6. °निपात 18,15. 358, 9. 2, 333, 3. शस्त्रेण च परिक्षते M. 4, 122. 7, 222. 8, 324. 9, 293. 10, 88. शस्त्रेण वैश्यावधित्वा 119. वाक्शस्त्रं वै ब्राह्मणस्य तेन क्रव्याद्रोन्दिहः 11, 33. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि Bhag. 2, 23. MBh. 1, 1169. शस्त्रेण निधनं काले ये गच्छन्त्ययराङ्मुखाः 3, 2121. निशित 2389. °तेजस् 5, 7015. शस्त्रशस्त्राणि R. 1, 23, 14. 54, 19. 2, 75, 25. Spr. (II) 1368. 3441. 4367. (I) 2801. 2974. Ragu. 2, 40. 5, 28. Çik. 11. 94, 2. शस्त्रं (*Pfeil*) संधत्ते 13. वेणीविनिगूहित *Dolch, Messer* Vaṇîn. Bṛn. S. 78, 1. 55, 15. — 42, 6. 46, 71. 50, 25. 53, 102. 69, 20. 95, 23. Râga-Tar. 3, 406. Pañkat. 1, 1, 80. Pañkat. 34, 15. 263, 6. तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः Mâns. P. 87, 12. शस्त्राण्यासुः परस्परम् *Pfeile* Bhatt. 14, 77. उग्रतेराक्रवे शस्त्रैः *Schwerter, Waffen* M. 5, 98. घाकृष्ट° (मित्रे) Spr. (II) 4988. गृहाण शस्त्रम् Ragu. 3, 51. शस्त्रं हि ब्राह्मणिर्मुक्तं धर्मो यत्रोपरुध्यते M. 8, 348. °यक् Mâlatîmâdh. 40, 22. °याकृक Kâm. Nîtis. 6, 13. न देवाः शस्त्रमादाय निघ्नन्ति रिपुवत्क्षुधा Spr. (II) 3304. कथमस्मद्विधे शस्त्रं निपतेत् R. 2, 63, 24. °निपात Vaṇîn. Bṛn. S. 3, 22. 7, 3. 11, 52. 38, 51. °घात 87, 29. 98, 6. °निधन adj. *den Tod durch das Schwert findend* 68, 29. °निर्याण adj. dass. 37. शस्त्रान्त adj. dass. 34. 91. पद्स्थामाकृतो शस्त्रं व्यापारयितुमिच्छसि Kathâs. 18, 173. °व्यवहार Ragu. 3, 62. शस्त्रोद्योग Vaṇîn. Bṛn. S. 6, 8. 46, 40. शस्त्राभ्यास Tâik. 2, 8, 52. प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते Bhag. 1, 20. संन्यस्त° adj. Ragu. 2, 59. °न्यास Vikr. 87, 2. *Schwert so v. a. Krieg:* नृच्छस्त्रावृष्टिकार Vaṇîn. Bṛn. S. 10, 2. शस्त्रामयार्ति 8, 42. प्रकोपमुपयाति शस्त्रम् *so v. a. Krieg fängt an zu wüthen* 38, 3. नृदन्तलमृत्युनराधिपशस्त्रेभ्यो जायते भयम् 34, 15. °भय *so v. a. Kriegsnoth* 4, 21. 5, 83. 88. 6, 5. 7, 16. 8, 17. 9, 20. 17, 4. 30, 17. 35, 5. 46, 62. 53, 60. 79, 36. घग्निशस्त्रभय 34, 18. शस्त्राग्निसंभव 30, 14. — *b) Eisen* AK. 3, 4, 28, 181. H. 1037. H. an. Med. Halâj. 2, 16. — R. 1, 5, 20 fehlerhaft für शास्त्र. — Vgl. घति°, निः°, न्यस्त°, मरा°, वि°.

1. शस्त्रक am Ende eines adj. comp. = 1. शस्त्र Schol. zu Kâṭ. Ça. 9, 14, 8.

2. शस्त्रक (von 2. शस्त्र) 1) n. *a) Messer* Vâyup. 208. — *b) Eisen* AK. 2, 9, 98; vgl. शास्तक 2). — 2) f. शस्त्रिका *Dolch, Messer* H. 774. Halâj. 2, 318. Daçak. 164, 14. कण्ठन्यस्तशस्त्रिक adj. 75, 17. घलक्ष्यशस्त्रिक adj. 94, 11.

शस्त्रकर्मन् n. *das Schneiden mit Messern* u. s. w., *chirurgische Operation* Suçr. 1, 14, 19. 2, 235, 1. शस्त्रकर्मविधि Verz. d. Oxf. H. 305, *a*, 24. शस्त्रकर्मकृत् *chirurgische Operationen machend, Chirurg* R. Gorr. 2, 90, 22. 109, 34. घष्टविधशस्त्रकर्मण्य adj. *von den acht Arten der Anwendung des Messers* u. s. w. *handelnd* Suçr. 1, 91, 20.

शस्त्रकलि m. *Schwerthampf, Zweikampf mit dem Schwerte* Kathâs. 71, 200.

शस्त्रकोप m. *das Wüthen des Schwertes, — des Krieges* Vaṇîn. Bṛn. S. 5, 24. 26 (घति°). 59. 8, 3. 9, 44. 30, 21 (°कारिन्). 34, 16. 37, 2. 87, 32. 35.

शस्त्रकोशतरु m. *ein best. Baum,* = महापिण्डीतरु Râgân. im ÇKDr.

शस्त्रचूर्ण n. *Eisenfeil oder Eisenrost* Nigh. Pr.

शस्त्रजीविन् adj. *vom Schwerte lebend, Kriegsdienste thuend* H. 769. Vaṇîn. Bṛn. S. 17, 24. Mâlav. P. 134, 27.

शस्त्रदेवता f. *Göttin des Schwertes, Kriegsgottheit:* न द्रोणाविनयं ज्ञातुमर्हते °देवताः Râga-Tar. 6, 247. न रविनः पादचारमाणोधास्तीति शस्त्रदेवताः (शास्त्रविद्: ed. Cowell 130, 5) परिभाषते Uttarâr. 98, 10. fg.

शस्त्रधारण n. *das Tragen eines Schwertes* Kâm. Nîtis. 19, 5. Mâlav. P. 131, 21.

शस्त्रपद n. *die Spur des Messers* d. i. *der gemachte Schnitt* Suçr. 1, 15, 20.

शस्त्रपाणि adj. *ein Schwert in der Hand haltend* R. 1, 55, 2. Spr. 3214, v. l. Weber, Kṛshṇaj. 282. fg. Ver. in I.A. (III) 10, 16. Vṛiddhâkrat. und Pâraskârîttaviv. im ÇKDr. °पाणिन् adj. dass. Spr. 3214.

शस्त्रपान n. *eine Mischung, mit der man schneidende Werkzeuge tränkt, um sie zu stählen,* Vaṇîn. Bṛn. S. 50, 23.

शस्त्रप्रकोप m. = शस्त्रकोप Vaṇîn. Bṛn. S. 11, 38. 31, 2. 43, 27. 87, 30.

शस्त्रप्रहार m. *Schwerthieb* Spr. 3070.

शस्त्रबन्ध in der Verbindung घा° adj. zu पाणि Kâm. Nîtis. 7, 37. der Comm. liest व्रशस्त्र°, was durch शस्त्रबन्धविरहित erklärt wird, was besagen soll, *dass das Schwert zur Hand sein müsse.* Diese Bed., die in den Zusammenhang passt, kann eher घा° haben.

शस्त्रभृत् adj. *mit einem Schwerte* u. s. w. *bewaffnet, bewaffnet* überh.; m. *Kriegsmann* M. 7, 223. 11, 73. Bhag. 10, 31. MBh. 5, 6957. R. 2, 99, 11. 5, 43, 2. 48, 15. Ragu. 2, 40. Vaṇîn. Bṛn. S. 17, 30. Bhâg. P. 3, 3, 4. शस्त्रास्त्रभृत् M. 10, 79.

शस्त्रमय (von 2. शस्त्र) adj. *aus Schwertern* u. s. w. *bestehend:* वर्ष R. 3, 32, 3.

शस्त्रमार्ग m. *Schwertfeger* AK. 2, 10, 7. H. 916.

1. शस्त्रवत् (von 1. शस्त्र) adj. *von einem* Çastra *begleitet:* ब्राह्मणाच्छंसिकर्तृकशस्त्रवते यागाभ्यासाय Schol. zu Kâṭ. Ça. 9, 14, 18. 10, 3, 20.

2. शस्त्रवत् (von 2. शस्त्र) adj. *mit einem Schwerte* u. s. w. *bewaffnet* MBh. 6, 613. 7, 4768. 8, 1034. Harîv. 13241. Mṛkkh. 19, 4.

शस्त्रवार्त (2. शस्त्र + वार्ता) adj. = शस्त्रजीविन् Vaṇîn. Bṛn. S. 5, 38. 16, 13. शस्त्रवृत्तवार्ता: 87, 37.

शस्त्रवृत्ति adj. dass. M. 12, 45.

शस्त्रशिक्षा f. *die Kunst das Schwert zu führen* Kathâs. 27, 145.

शस्त्रक्षत adj. *durch ein Schwert* u. s. w. *getödtet* Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 17. Devî-P. im ÇKDr. °चतुर्दशी Bez. verschiedener *vierzehnter Tage, an denen der im Kampfe Gefallenen* gedacht wird, ÇKDr. Suppl.

शस्त्राख्य (2. शस्त्र + घाख्या) adj. *Schwert genannt:* केतु Vaṇîn. Bṛn. S. 11, 30.

शस्त्राजीव (2. शस्त्र + घा°) adj. = शस्त्रजीविन् AK. 2, 8, 2, 35. H. 858. Halâj. 2, 250. f. ई Verz. d. Oxf. H. 91, *b*, 36.

शस्त्रायस (2. शस्त्र + स°) n. *Eisen* Râgân. im ÇKDr.

शस्त्रायुध (2. शस्त्र + घा°) adj. *das Schwert* (und nicht das Wort) *als Waffe gebrauchend, vom Waffenhandwerk lebend:* ब्राह्मण Spr. (II) 3092.

1. शस्त्रिन् (von 1. शस्त्र) adj. *der ein* Çastra *recitirt:* प्रशास्ता ब्राह्मणाच्छंस्यध्वर्यवाक इति शस्त्रिणो क्रोत्रकाः Âçv. Ça. 3, 10, 10.

2. शस्त्रिन् (von 2. शस्त्र) adj. *mit einem Schwerte* u. s. w. *bewaffnet* Harîv. 11204. 15093. Kâm. Nîtis. 7, 37. 15, 47. Râga-Tar. 1, 29. 4, 351. 5, 58. रविनो सर्वशस्त्रिणाम् (सर्वशः प्रभो ed. Bomb.) *mit allen möglichen Waffen versehen* MBh. 6, 3349.

शस्त्रोपजीविन् (2. शस्त्र + उ°) m. *Schwertfeger* (nach dem Comm.) R. 2, 83, 12.

शस्य fehlerhafte Schreibung für शप्य.

शंस्मन् (von शंस्) n. *feierlicher Anruf, Lob* RV. 1,119,2.

1. शंस्य (wie oben) Pat. zu P. 3,1,97. Kâç. zu 109. Vop. 16,19. 1) adj. *a) zu recitiren, als Çastra zu behandeln* Ait. Br. 6,19. Çat. Br. 14,6, 4,9.12. — *b) zu rühmen, — loben, — preisen* Spr.(II)2608.4204. (I)2881. Nalod. 4, 5. — 2) n. so v. a. शंसन 1) Çâṅkh. Br. 26, 8. शस्योपाय Âçv. Çr. 6,4,1. 9,10,17.

2. शस्य (von 1. शस्) adj. *zu schlachten* Vop. 26,12.

3. शस्य schlechte Schreibung für सस्य.

1. शा, शिशामि, शिशीहि, शिशाम्, शाधि: partic. शित: *mittheilen, gewähren; beschenken* Nir. 5, 23 (दातिकर्मन्). शाधि धियं धी प्र पंसि च शिशीहि प्रास्युदरम् RV. 1, 42, 9. 81, 7. स त्वं नो राय: शिशीहि 3, 16, 3. 1,122,3. 3,24,5. शिशीहि मा शिशयं वो अपोमि 10,42,3. mit instr. der Sache: यत्रैस्त्वायत: शिशीहि राये मघवन् 7, 18, 2. मधा नो यत्र-पितरा शिशीताम् *bewirthen* 10, 12, 4. तं शिशीता सुवृक्तिभि: 8, 40, 10. fg. पद्वा उ विश्पतिः शित: सुप्रीतो मनुषो विशि *bewirthet und wohlbefriedigt* 8, 23, 12. Vgl. शिशय.

— यव *befreien von:* यवं नो वृत्रिना शिशीहि RV. 10,105,8.

— मा *Theil nehmen —, geniessen lassen; mit loc. der Sache* Nir. 5, 22. मा शिशीहि नो वाजे गोमति RV. 8,21,8. मा नं सूते शिशीहि विश्वभूत्रिवर्तम् 7,16,6. मा नो जीवान्वरुण तासु शाधि 2,28,9.

— नि 1) *vorsetzen, darbringen:* पुरुभ्यो कव्या निशितान्यासन् RV. 1, 171, 4. पस्ते भरादन्नं निशिर्यन्मन्द्रमातिथिगुदीरेत् *wer dir Speise bringt, vorsetzt, den lieben Gast einlädt* 4,2,6. *bewirthen:* निशिशाना यतिंधिमस्य योनौ 7, 3, 5. दुरोण आ निशितं सोमसुद्भि: 4, 24, 8. — 2) *hinlegen, hinwerfen, hinbreiten:* दृस्मो न सद्मन्नि शिशाति बर्हि: RV. 7, 18, 11. पुत्र मरुतो नि शिशा अभि त्याम् 5, 18, 12. 7, 19, 8. 104, 1. 10, 28, 6. 48, 4. — Vgl. निशिति, welches demnach bedeutet *das Vorsetzen von Speise u. s. w., Bewirthung.*

2. शा, शिशाति, शिशीते, शिशीमसि ved.: श्यति Dhâtup. 26,36 (तनूकरणे, निशाने). P. 7,3,71. Vop. 11,3. AV. Çat. Br. शिनेति und शिनुते (Wurzel शि) Dhâtup. 27,2 (निशाने). अशामीत् und अशात् P. 2,4,78. Vop. 8,37. 11,6. (सम्) अशीत ved.; partic. शात und शित P. 7,4,41. Vop. 26, 120. *wetzen, schärfen; med. sich (die Waffen, das Horn u. s. w.) wetzen* Nir. 4,18. वज्रं शिशाति धियसो RV. 8,15,7. शिशीते वज्रं तेजसे न वंसग: 1,55,1. 8,65,9. वधम् 7,104,20. मृडं 5,2,9. 8,49,13. 9,5,2. शिशानो वृषभ: 69,3. Hariv. 7426 (शिशाणा die ältere Ausg.). शिशीते घ्नातरी यथा RV. 5,9,5. परशुम् 10,53,9. तमस्ता विध्या शर्वा शिशान: 87,6. तन्वं शिशान: AV. 13,2,33. — partic. 1) शात *a) gewetzt, geschärft, scharf* AK. 3, 2,40. Taik. 3,3,188. H. 1484. an. 2,200 (zu lesen शितशाती). Med. t. 63. fg. मृङ्गयो: मूलशातयो: Kathâs. 60,136. शास्त्र Râja-Tar. 5,407. — *b) dünn, schmächtig* Taik. H. an. Med. Hall. 4,32. उदर R. Gorr. 3,8,41. शातोदरी Râgân. 10,70. Varâh. Bṛh. S. 38,50. शातोदरत्व Hariv. 7890. an den beiden letzten Stellen hat die v. l. शात्त. — 2) शित *a) gewetzt, scharf* Taik. H. 1484. H. an. Med. पच्छिन्ना गभस्तिमशनिं पतन्यसि RV. 1,54,4. शिला° MBh. 3, 1919. 4,1331. 1334. 1388 (शिलाशित ed. Calc.). 1814. 6,1937. R. 2,8,7. 69,44. खड्ग MBh. 3,1602. 13581. 4,1065. 5,7158. 7, 1078 (मित ed. Calc.). R. 2, 35, 3. R. Gorr. 2, 18, 12. 3, 30, 17. 69, 17. Megh. 49. Râgân. 6,43. 9,12. 12,48. Varâh. Bṛh. S. 30, 25. fg. Kathâs. 48,35. Bhâg. P. 1,9,38. 4,5,22. 5,13,20 (°सेवया शितं zu lesen). 8,5,15. — *b) dünn, schmächtig* Taik. H. an. Med. शितोदरी Hariv. 1121 nach der Lesart der neueren Ausg., सितो° die ältere. — caus. शाययति P. 7,3,37. Vop. 18,6.

— यति etwa *die Waffe nach Jmd zucken:* यो मर्त्य: शिशीते यत्यभि: RV. 1,36,16.

— नि *wetzen, schärfen:* निश्यति मृङ्गे Nir. 4,18. शस्त्राणि Bhatt. 17, 4. असिं निश्यान: Çâṅkh. Çr. 15,21,12, wofür oder für शिशान: unrichtig निःशान: Ait. Br. 7,16. partic. 1) °शात *gewetzt, geschärft* R. 6,11,6. Çic. 1,15. Bhâg. P. 1,17,28. 3,19,14. 7,15,46. 10,36,19. 55,24. Pañkat. 3, 12,5. Bhatt. 5,16. — 2) °शित *a)* dass. AK. 3,2,40. H. 1484. Hall. 2,319. Kathâs. 3,14. MBh. 3,2389. 7150. 7155 (सु°). 11958. 15681. 15742. 4,1063. R. 2,63,13. 97,29. R. Gorr. 2,20,11. Spr. 2929. (II) 3414. Bhâg. P. 5,9, 17. Pañkat. 120, 10. °निपाता: शरा: Çiç. 10. निशिता: शस्त्रधारा: so v. a. निशितशस्त्र° (das nicht in's Versmaass passte) R. 5,83,12. शान so v. a. शानासि Bhâg. P. 4,23,11. 5,3,11. प्रहरन्ति निशितेन चेतसा Spr. 3281. — *b) scharf* d. h. *begierig auf:* राये RV. 7,18,6. — Vgl. निशान.

— सम् 1) *wetzen, schärfen;* act. RV. 7,104,19. 8,4,16. स्वधितिम् 2,39, 7. 10,53,10. TS. 7,4,3,1. Çat. Br. 1,2,4,5. 3,2,3,5. med.: आयुधा RV. 9,90,1. 10,84,1. यत्पर्वते न समशीत (nach Sây. von शी) वज्र: *als der Donnerkeil gleichsam am Felsen gewetzt wurde* 1,57,2. — 2) übertr. *anfeuern, aufreizen; bereit machen zu:* विशं विशं युधये सं शिशाधि RV. 10,84,4. 8,4,16. सर्वसे 1,102,10. धियंधम् 8,42,3. 6,15,19. das Feuer 10,87,24. वर्गाणि 120,5. क्षुभ्नीराय सं शिशातु सातिम् 1,111,5. AV. 3,19, 3. 5. 5,14,9. 7,16,1. TS. 2,1,11,2. अग्निम् 5,9,4. TBr. 3,3,8,1. Çat. Br. 5,6,2,14. इन्द्रमिन्द्रियाय 12,8,3,26. Kâty. Çr. 22,6,12. — partic. सँशित (häufig fälschlich शंसित, auch संसित geschrieben) 1) *gewetzt, geschärft* Çat. Br. 1,2,4,7. सु° MBh. 8,4246. *scharf, spitz* von Reden: °वाच् adj. 1,995. — 2) = सुनिशित H. 1491. Hall. 2,247. *bereit, gerüstet, fest entschlossen;* von Personen P. 7,4,41, Vârtt., Schol. AV. 7,16,1. 12,1,21. MBh. 1,161. तपसि Hariv. 649 (संस्थित die neuere Ausg.). प्राणसंशितमसि Kaush. Up. 3,17,6. संशितात्मन् adj. MBh. 1,2918. 3546. 13,1896. R. 3,77,11. पञ्चेन्द्रियाणि AV. 19,9,8. संशिता रश्मिना रथ: संशिता रश्मिना कृत: । संशिता घप्सु *bereit gemacht* VS. 23,14. ब्रह्मन् वीर्य, बल, क्षत्र AV. 3,19,1. व्रत *mit allem Ernst unternommen, fest beschlossen* P. 7,4,41, Vârtt., Schol. Vop. 26,121. °व्रत adj. so v. a. *streng am Gelübde hängend* Çat. Br. 12,1,2,23. M. 1,104. Bhag. 4, 28. MBh. 1, 3. 997. 2595. 5102. 3, 11934. 5, 6013. 7243. 13, 338. 7422. R. 1,20,9. 2,34,10. 95,7. R. Gorr. 1,33,7. 3,10,7. 77,9. 4,2,4. 51,1. Spr.(II)3631. 4052. °तपस् MBh. 13,6446. — Vgl. यत्तरित्तसंशित, घप्सु°, क्रूर°, घोषधि°, घो°, पृथिवी°, ब्रह्म° und सँशिति.

— विसम् = सम् 2): राष्ट्रम् Kâty. 37,12.

3. शा, शायति (पाके) Dhâtup. 22,21, v. l. für या (ये).

शांवत्य (von शंवत्) m. N. pr. eines Lehrers Âçv. Gṛh. 4,8,26.

शांशपे und शैंशप (von शिंशपा, also ursprünglich शैंश°) adj. *von der Dalbergia Sisoo* (einem grossen und schönen Baume) *stammend, daraus gemacht* गण्ड पलाशादि zu P. 4,3, 141. 7,3,1, Schol. AV. 6,129,1 (in

der Ausg. so zu verbessern). Vgl. पूर्व°.

शांशपक (wie eben) adj. (चतुर्वेर्ये) gaṇa यवादिकृष्णादि zu P. 4,2,80.

शांशपायनं (wie eben) m. metron. gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. N. pr. eines Lehrers VP. 283. Buic. P. I,xxxvii. fg. Verz. d. Oxf. H. 55,b,42. शांशपायनि 56,a,2.

शांशपायनक adj. (f. °निका) von Çâṁçapâjana verfasst: संहिता Verz. d. Oxf. H. 56,a,5. 6.

शांशपायनि s. u. शांशपायन.

शांशपास्थल adj. von शिंशपास्थल P. 7,3,1, Schol.

1. शाक (von 1. शक्) m. *Macht, Vermögen* H. an. 2,18. Med. k. 35.

2. शौक (von 2. शक्) m. *Hilfe, Unterstützung:* शचीवतस्ते पुरुशाक शाकैः RV. 6,24,4. auch scheint यस्त्वं शाके (शाकैः?) 5,15,2 hierher zu gehören. — Vgl. पुरु° *hilfreich.*

3. शार्क (wie eben) adj. *hilfreich;* m. *Helfer, Gehilfe:* सं ता इन्द्रो यमत्रदस्य शाकैः RV. 5,30,10. 6,19,4. 10,55,6.

4. शाक 1) m. (dieses nicht zu belegen) und n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. *essbares Kraut, Gemüse; vegetabilische Kost* überh. AK. 2,4,8,1. 23. 2,9,34. H. 963. an. 2,18. Med. k. 35. मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डा विदलकाः । लवणपुष्पं कवकं शाकं दशधा H. 1183. fg. Çiṅkn. Gaṇ. 1,11. 3, 12. Gaṇ. 3,3,1. 4,4,14. Kaçç. 126. Ind. St. 3,399. M. 2,216. 3,226. 4,250. 5,119. 6,5. स्थलजोदकशाकानि 12. 15. 7,132. 8,331. Jâñ. 1,182. 214. Çiç. 3,3. MBh. 3,203. 7092. fgg. 5,1402. 12,9814. °दीता 13,360. 2938. 2771. शणा° 5046. 14,2840. Harîv. 7845. Suçr. 1,70,5. 6. 216,1. 219,6. 2,45,15. 342,20. Spr. (II) 2674. (I) 3323. Vaṇîn. Bṛh. S. 76,12. Bṛh. 17,1. Kathâs. 8,133 (शाकाशनं zu lesen). Râja-Tar. 5,49. Mâlav. P. 15,32. 29,32. 91,43. Buic. P. 1,15,11. Daçaṛ. 79,14. Verz. d. B. H. No. 933. 989. Verz. d. Oxf. H. 30,b,35. 86,a,19. शाकस्य तेत्रम् Hall. 2,9. शाकाल्हार Spr. (II) 1987. Ind. St. 3,390 (falschlich शाकल्हार). Accent eines auf शाक auslautenden comp. (मिश्रे) P. 6,2,128. मुद्गशाकम् Schol. — 2) m. *Tectona grandis* H. an. Med. Ratnam. 194. Âçv. Gṛhy. 2,7,6. Kaçç. 30. 116. MBh. 6,428. Colebr. Alg. 315. Journ. of the Am. Or. S. 6,558 (°शाकादिषु zu lesen). °पत्र Suçr. 1,141,3. °बीज 377,12. 138,4. 157,19. 305,16. °त्वच् 2,94,1. 284,2. Vaṇîn. Bṛh. S. 54, 103. 79,2. 13. fgg. VP. 199. Buic. P. 5,20,24. *Acacia Sirissa* (शिरीष) *Roxb.* Çabdar. im ÇKDr. — 3) m. (vollständig °द्वीप) N. eines Dvîpa (nach einer darin stehenden *Tectona grandis* so genannt) Trik. 2,1,4. H. an. Med. MBh. 6,408. fgg. 12,406. fg. VP. 166. 199. Mârk. P. 53,18. 30. 54,6. 106,40. Buic. P. 5,1,32. 20,24. Paṇḍân. 2,2,80. fg. Colebr. Misc. Ess. 2,179. Verz. d. Oxf. H. 32,a,31. 33,a,12. 41,a,36. — 4) N. pr. einer Oertlichkeit Colebr. Misc. Ess. 2,179. — Vgl. अई°, उत्पल°, काल°, गर्दभ°, तिक्त°, दुः°, पत्र°, बालेय°, मद°, मक्ष°, रात्र°.

5. शाक (von 2. शक) 1) adj. *zu den Indoscythen —, zu ihrem Fürsten in Beziehung stehend;* m. n. (sc. संवत्सर, वर्ष u. s. w.) *Çaka-Jahr* (beginnt 78 n. Chr.). °काल Weber, Gjot. 101,3. तस्मिञ्छाके तस्मिन्मासे तस्मिन्दिने Upsala zu Vaṇîn. Bṛh. S. 8,10. Verz. d. Oxf. H. 194, No. 445. *Aera* überh. Z. d. d. m. G. 23,308. 24,398. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,93. eines Fürsten H. an. 2,18. शाकान्वय Verz. d. Oxf. H. 274,b, N. 2. — 3) m. pl. N. pr. eines Volkes Târan. 82. 128 fehlerhaft für शक; eben so °महासंमत 2.

शाकगुञ्जिका (4. शाक + गु°) f. *Tamarindenbaum* Râjân. im ÇKDr.

शाकगर्भ (4. शाक + गर्भ) adj. (f. आ und ई) P. 4,1,53, Schol.

शाकजम्बु N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. शाकजम्बुक P. 4,2, 119, Schol.

1. शाकटं (von शकट) 1) adj. *an einen Karren gespannt, einen Karren stehend* P. 4,4,80. AK. 2,9,64. H. 1261. Med. t. 55. *einen Karren füllend* u. s. w. Med. भार *Karrenlast* AK. 2,9,88. m. dass. = 20 तुला H. 883. — 2) m. *ein best. Baum,* = प्रेष्मातक Râjân. im ÇKDr. — Vgl. वल्लिशाकटपोतिका.

2. शौकट (von 4. शाक) n. am Ende eines comp. = शाकिन *ein mit — bestandenes Beet* oder *Feld* P. 5,2,29, Vârtt. 9. इतु° Schol. Vop. 7,79. — Vgl. शाक°.

शाकटायनं (von शकट) m. patron. gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. N. pr. eines Grammatikers Dunlea bei Benfey, Orient und Occident 2,691. RV. Prât. 1,3. 13,16. VS. Prât. 3,3. 86. 4,4.188. AV. Prât. 2,24. Comm. zu 6. 4,1.30. Nir. 1,3. 12. fg. P. 3,4,111. 8,3,18. 4,50. Ind. St. 1,103. 105. Mack. Coll. 1,160. Wilson, Sel. Works 1,280. Paravaśiṣ. in Verz. d. B. H. 56, 11. Verz. d. Oxf. H. 23,b, N. 4. 34,a, 3. 113,b, 3. 160,a, 29. 162,b, 27. 175,b, 2. 183,a, 1. 185,b, 16. ein Gesetzgeber 279,b, 13. Verz. d. B. H. 62,1. No. 1028. अग्निस्व° 176,b, 1.

शाकटायनि m. wohl = शाकटायन Verz. d. Oxf. H. 34,a, 10.

शाकटिक (von शकट) m. *Kärrner* Vaṇîn. Bṛh. S. 10,4. 15,2. Paṇḍat. ed. orn. 4,14. °वृत्तान्त Sarvadarçanas. 71,3.

शाकटीकर्णी adj. von शकटी-कर्ण gaṇa सुवास्त्वादि zu P. 4,2,77.

शाकटीन (von शकट) m. *Karrenlast,* = 20 तुला H. 883.

शाकतरु m. = 4. शाक 2) *Tectona grandis* Çabdam. im ÇKDr.

शाकदास m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Bhâṇḍîrâjana Ind. St. 4,373.

शाकद्वीप s. u. 4. शाक 3).

शाकनिका s. रात्र°.

शाकन्धव्यं m. patron. von शकन्धु gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

शाकंधेर्य m. patron. von शकंधि gaṇa गुधादि zu P. 4,1,123.

शाकपत्र m. *eine best. Pflanze,* = शिपु Râjân. im ÇKDr. n. *ein Blatt der Tectona grandis* Suçr. 1,28,12. wohl = पत्रशाक *Blättergemüse* Mâlav. P. 15,29.

शाकपार्थिव m. = शाकप्रियः पार्थिवः Siddh. K. zu P. 2,1,69.

शाकपिण्डी f. Çiṅkn. in Ind. St. 5,294.

शाकपूणि (von शाकपूण) m. patron. N. pr. eines Grammatikers Nir. 3,11. 8,5. 6. 14. 12,19. 13,10. 11 (vgl. Erll. S. 222). Çiṅkn. Gaṇ. 4,10. Nir. 4,9. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 92,12. Ind. St. 1,105. VP. 3,4, 22. Verz. d. Oxf. H. 54,b,36.

शाकपूत (von शाकपूत) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,239,a.

शाकपूर्णि fehlerhaft für शाकपूणि.

शाकपोत m. pl. N. pr. eines Volkes Mâlav. P. 59,14.

शाकबालेय m. *eine best. Pflanze,* = ब्रह्मयष्टि Râjân. im ÇKDr. — Vgl. बालेयशाक.

शाकबिल्व m. *die Kletpflanze* Gaṭṭân. im ÇKDr. °क m. desgl. ÇKDr.

und Wilson nach Taik. 2,4,27; die gedr. Ausg. शाकविन्दक.

शाकभव n. N. pr. eines Varsha im Plakshadvipa Mbh. P. 53,29.

शाकंपूत m. N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 3, 239,a. wohl nur fehlerhaft für शाकपूत.

शाकंभरी f. 1) *eine Form der* Durgâ Ind. St. 3,399. MBh. 3,7094. 6,801. Mkk. P. 91,44. Vimana-P. 53 im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 19,*b*, 22. Wird an allen Stellen in शाकम् + भरी zerlegt; vgl. jedoch शकंभर. — 2) N. pr. *einer der* Durgâ *geheiligten* Localität MBh. 3,7091. fgg. — 3) N. pr. einer Stadt (des heutigen शंभरी) Colebr. Misc. Ess. 2, 92. 232. 234. Verz. d. Oxf. H. 122,*b*,7. 123,*a*,38. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 48.

शाकंभरीय adj. *aus der Stadt* Çâkaṁbhari *kommend:* लवण Bhâvapr. im ÇKDa. Colebr. Misc. Ess. 2,92.

शाकयोग्य (4. शाक + योग्य) m. *Koriander* Râǵân. im ÇKDa.

शाकरस (4. शाक + रस) m. *vegetabilischer geniessbarer Saft* MBh. 9, 2224. fg. °रसीकृत Kathâs. 5,134.

शाकराज् m. = शाकराज Bhâvapr. 5.

शाकराज (4. शाक + राज) m. *der Fürst unter den Gemüsen*, Bez. *der Melde* (*Chenopodium*) Râǵân. im ÇKDa.

शाकरी Verz. d. Oxf. H. 181,*a*,29 fälschlich für शाकारी.

शाकल 1) adj. *a*) *mit dem* Çakala *genannten Stoffe gefärbt* Kâç. zu P. 4,2,2. — *b*) *zu den* Çâkala (*den Anhängern* Çâkalja's) *in Beziehung stehend, sie betreffend, von ihnen stammend* u. s. w.: संघ, षड्ङ्ग, घोष, लक्षण P. 4,3,128. ऋग्वेदे पाराशर्यपाठे शाकले Verz. d. B. H. No. 49. 51 (hier fälschlich शाकल्ये). होमा: M. 11,200. °होम Verz. d. Oxf. H. 277,*a*, No. 654; vgl. शाकलहोमीय. — 2) m. *a*) = शकल *Spahn, Schnitzel* Çat. Br. 14,2,2,21. 43. 31. Çâṅkh. Br. 18,7. Kâty. Çr. 10,8,6 (m. nach dem Comm.). हिरण्य° Kauç. 80. — *b*) pl. *die Nachkommen* Çâkalja's गर्ग कण्वादि zu P. 4,2,111. *die Schüler oder Anhänger* Çâkalja's Ṛv. Prât. 1,16. 11,10. 31. Ind. St. 1,107. fgg. 115. Verz. d. B. H. No. 48. 1040. — *c*) *die Bewohner der Stadt* Çâkala MBh. 8,2052. — *d*) N. pr. eines Dvîpa MBh. 2,998. °द्वीप 999. — *e*) fehlerhaft für शाकल्य in der Verbindung शाकलस्य संहिता Verz. d. B. H. 13, 19. — 3) m. *a*) *das Lehrbuch* —, *der Text* —, *das Ritual* u. s. w. *des* Çâkalja Ârv. Br. 3,43 (Ind. St. 3,277: nach Sây. Bez. einer Schlange). Âçv. Gṛhy. 3,4,4. Ṛv. Prât. 1,19. 6,3. 6. fgg. 11,11. Ind. St. 3,253. Pat. zu P. 6,1,127. Schol. zu Çâṅkh. Çr. 12,13,6. — *b*) N. eines Sâman Ind. St. 3,239,*b*. — *c*) N. pr. einer Stadt der Madra MBh. 2,1196. 8,2033. Kathâs. 44, 17. 92. 103. 184. 187. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,37. Burnouf, Intr. 431. 620. fgg. Hiouen-thsang 1,190. Vie de Hiouen-thsang 97. °वासिन् VP. 2,3,17.

शाकलक adj. = शाकल 1) *b*) P. 4,3,128. ऋग्वेदाम्नाय Verz. d. B. H. No. 49.

शाकलहोमीय (von शाकल + होम) adj. *zu den nach Art der* Çâkala *vollzogenen Opfern gehörig:* मन्त्रा: M 11,256; vgl. शाकला होमा: 200.

शाकलिक adj. (f. ई) *mit dem* Çâkala *genannten Stoffe gefärbt* P. 4, 2,2, Vârtt. 1.

शाकलिक adj. (f. आ und ई) *zur Stadt* Çâkala *in Beziehung stehend* u. s. w. P. 4,2,117, Schol.

शाकल्य (von शकल) m. patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. des Vidagdha Çat. Br. 11,6,3,3. 14,6,9,1. 10,7. N. eines berühmten Veda-Lehrers Âçv. Gṛhy. 3,4,4. Çâṅkh. Gṛhy. 4,10. 6,1. Ṛv. Prât. 2,44. 3, 7. 13. 4,5. 13,12. VS. Prât. 3,9. Nir. 6,28. P. 1,1,16. 6,1,127. 8,3,19. 4,51. Ind. St. 1,49. 391. Verz. d. B. H. No. 52. MBh. 13,689. fgg. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,28. fgg. 162,*b*,27. 181,*a*, No. 412. VP. 3,4,20. Bhâg. P. 12,6,57. Schol. zu AV. Prât. 4,49. शाकल्यस्य संहिता P. 2,3,5, Schol. °संहिता Colebr. Misc. Ess. 2,324 u. s. w. Verz. d. B. H. No. 835 d. Cambr. H. 43. Weber, Ghot. 24. Nax. 2,382. 391. Ind. St. 3,137. °संहितापरिशिष्ट Sarvadarçanas. 64,14. °पितृ Ṛv. Prât. 4,2. Çâkalja als neuerer Dichter Verz. d. Oxf. H. 150,*b*, No 320. — Vgl. वृद्ध°.

शाकल्यायनी f. zu शाकल्य gaṇa लोकादि zu P. 4,1,18.

शाकवाट (4. शाक + 2. वाट) m. *Gemüsegarten* Kathâs. 20, 143. °क m. dass. 142. 161. °वाटिका f. dass. 72,206.

शाकविन्दक m. *die Eierpflanze* Taik. 2,4,27. शाकवित्वक ÇKDa. und Wilson nach ders. Aut.

शाकवीर m. *Melde, Chenopodium* (*das Hauptgemüse;* vgl. शाकराज) Taik. 2,4,30. = जीवशाक Râǵân. im ÇKDa.

शाकवृत m. = शाकतरु *Tectona grandis* Ratnam. im ÇKDa.

शाकशाकट n. *Gemüsebeet, Gemüsefeld* H. 965. Hâlâs. 2,9.

शाकशाकिन n. dass. ebend.

शाकश्रेष्ठ m. Bez. verschiedener *essbarer Pflanzen:* 1) *die Eierpflanze.* — 2) = जीवन्ती. — 3) = डोडी Râǵân. im ÇKDa.

शाका f. *Terminalia Chebula* (हरीतकी) ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut.

शाकाढ्य (4. शाक + आढ्य) m. *Tectona grandis* Ratnam. im ÇKDa.

शाकाङ्ग (4. शाक = 3. अङ्ग) n. *Pfeffer* Râǵân. im ÇKDa.

शाकाद (4. शाक + अद) m. N. pr. eines Mannes (*Gemüsesesser*); pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,21.

शाकाम्र (4. शाक + आम्र) n. *die Frucht der Spondias mangifera* Râǵân. im ÇKDa. Kâlakarṇa 5,224.

शाकाम्लभेदन n. = चुक्रम् Râǵân. im ÇKDa.

शाकायन pl. zum patron. शाकायन्य gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98.

शाकायनिन् m. pl. wohl *die Anhänger des* Çâkâjanja Çat. Br. 10,4,5,1.

शाकायन्य m. patron. von शाक gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98. Kâṭy. 22,7 in Ind. St. 3,472. Maitrâjan. 1,3. 6,29. der entsprechende pl. ist शाकायना:.

शाकारिकी (so ist zu lesen) f. = शाकारी Lassen, Institt. linguae praer. App. S. 1.

शाकारी (von शकार) f. (sc. भाषा oder विभाषा) *ein Dialect, in dem* श *st.* ष *und* स *gesprochen wird, die Sprache der* Çakâra, Çaka's u. s. w. Sâh. D. 173,6. Muir, ST. 2,57. Mṛkkh. Einl. S. v. Verz. d. Oxf. H. 181, *a*,29 (fälschlich शाकरी). — शाकारस्य Ind. St. 3,223 fehlerhaft für शास्त्रकारस्य; s. Bibl. Ind. new ser. No. 230.

शाकालाबु m. = राजालाबु Râǵân. im ÇKDa.

शाकाष्टका (4. शाक + अष्टका) f. Bez. *des achten Tages in der dunklen Hälfte des* Phâlguna, an dem den Manen *Gemüse* dargebracht wird, ÇKDa. Verz. d. B. H. No. 1071.

शाकाष्टमी f. dass. Wilson, Sel. Works 2,208. fg.

शार्किन् (von 2. शक् oder 2. शाक) 1) adj. *kilfreich, mittheilend:* अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते RV. 1,54,2. 3,51,2. सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः 5,52,17. vielleicht *mächtig* (von 1. शक् oder 1. शाक): शं पक्वे न शाकिने 6,45,2. क्रोष्टा चै शाकी चै VS. 17,35. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. — शाकिनी s. bes.

1. शाकिन (von 1. शक् oder 1. शाक) adj. *gewaltig:* क्रत्वा गैरिव शाकिनः RV. 3,33,6. nach Pat. zu P. 5,2,100 von शाकी.

2. शौकिन (von 4. शाक) n. am Ende eines comp. = 2. शाकट P. 5, 2,39, Vârtt. 10. इतु°, मूल°, क्षीर°, वास्तु° Schol. Vop. 7,79. — Vgl. शाक°.

शाकिनिका f. = 2. शाकिनी Verz. d. B. H. No. 1242.

1. शाकिनी (von 4. शाक; vgl. कुमुदिनी u. s. w.) f. *Gemüsepflanzung:* शकटः शाकिनी गावो ज्ञालमस्पन्दनं वनम् । धनूषं पर्वतो राज्ञा दुर्भिक्षे नव वृत्तयः ॥ Einschiebung nach Nir. 6,5 = Amṛkav. im ÇKDa. — Vgl. क्षार°.

2. शाकिनी f. *eine Art weiblicher Unholde bei den Verehrern der* Çakti Wilson, Sel. Works 1,235. Verz. d. Oxf. H. 101,b,21. Kathâs. 37,168. 170. 61,294. 68,37. 71,269. Çatr. 14,324. Pañkat. 241,t. 2. — Vgl. डाकिनी.

शाकिनीत्व n. nom. abstr. von 2. शाकिनी Daçak. 164,17.

शाकिमनवार्दप N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 241,b,17.

शौकी f. Pat. zu P. 5,2,100. = 2. शाकि. शाकी (instr., oder ist etwa शाकी von शाकिन् zu vermuthen; vgl. Sây. zu der St.) भव पक्षमानस्य चोदिता RV. 1,51,5.

शाकीय adj. (चतुर्थ्यर्थे) von शाक gaṇa उत्कादि zu P. 4,2,90.

शाकुण adj. = पैङ्गलायनि Çâṇḍâm. im ÇKDa.

शाकुन (von शकुन) 1) adj. (f. ई) von *Vögeln kommend, ihnen eigen, sie betreffend:* मांस *Vogelfleisch* M. 3,268. Jâân. 1,257. MBh. 13,4245. Vaitân. Bḍh. S. 51,33. Mârk. P. 32,4. वृत्ति MBh. 13,6489. कायलक्षणा Suçr. 1,335,21. *die Natur eines Vogels habend* Kâraka 4,4. — 2) m. *Vogelsteller* Vaitân. Bḍh. S. 86,21, v. l. — 3) n. *Augurium, Augurenkunde* R. 3, 58,5. Vaitân. Bḍh. S. 86,4. 107,10. 80. fgg. in den Unterschrr. Verz. d. B. H. No. 896. fg. 983. Verz. d. Oxf. H. 86,b,35. 399,b, No. 168. °सारोद्धार ebend.

शाकुनसूक्त n. *das Vogellied* (aus dem RV.) Vaitân. Bḍh. S. 46,73. शकुन° v. l.

शाकुनिक (von शाकुन oder शाकुनि) m. *Vogler, Vogelsteller* (auch *Fischer*) gaṇa शाकार्यादि zu P. 5,2,84 (शौ°). 4,4,38, Schol. (oxyt.). AK. 2,10,14. H. 930. Maitrâjop. 6,26 (*Fischer*). M. 8,260. MBh. 5,2485. fgg. 12,5516 (Pañkat. III,138). Suçr. 1,7,13. Vaitân. Bḍh. S. 15,22. 16,33. 87,24. Kathâs. 71,278. 72,241. Prâyaçkittatatt. 23,a,4. Buâs. P. 7,2,56.

शाकुनिन् m. 1) dass. Vaitân. Bḍh. S. 86,21 (*Fischer* Comm.). शाकुन v. l. — 2) *ein best. Unhold* Vishṇ. 116.

शाकुनेय (von शाकुनि) 1) adj. *von* Çakuni *verfasst:* धर्मा: Verz. d. Oxf. H. 266,b,21. — 2) m. *a) eine kleine Eulenart* (उलूक) Rigân. im ÇKDa. — *b)* patron. gaṇa मुखादि zu P. 4,1,123. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 310,a,27. Verz. d. Cambr. H. 22,14. patron. des Asura Vṛka Buâs. P. 10,88,20.

शाकुनिक (von शाकुन oder शाकुनक) m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes gaṇa दामन्यादि zu P. 5,3,116.

शाकुन्तकीय m. *ein Fürst der* Çâkuntaki ebend.

शाकुन्तल (von शाकुन्तला) 1) m. metron. Bharata's MBh. 1,3104. fg. 7,2387. 12,938. 14,50. — 2) n. *die Erzählung von der* Çakuntalâ MBh. 1,74 in der Unterschr. Mâlatîm. 47,1.

शाकुन्तलेय (wie eben) m. metron. Bharata's Taitt. 2,8,8. ad Çik. 191.

शौकुलादिक adj. (f. आ und ई) von शकुलाद् gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

शाकुलिक m. *ein Fänger von* Çakula-*Fischen* P. 4,4,38, Schol.

शाकेतु (4. शाक + इतु) m. *eine Art Zuckerrohr* Vâkaspati beim Schol. zu H. 1194.

शाकृत्क adj. von शकृत् P. 7,3,51, Schol.

शाकेय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,264.

शाकोट und शाकोटक s. u. शाखोट.

शाक्की f. (sc. विभाषा) N. eines best. Dialects Verz. d. Oxf. H. 181, a, No. 412.

1. शाक्त (von 1. शक्ति) 1) adj. *zu den* Çakti Çiva's *in Beziehung stehend, aus ihnen hervorgegangen, sie betreffend* u. s. w. Tridibnâd. in Ind. St. 2,63. Verz. d. Oxf. H. 7,b,1. परमेश्वरस्य हि मलकर्मादिपाशजालासंभवेन प्राकृतं शरीरं न भवति किं तु शाक्तं Sarvadarçanas. 83,7. 8. मलाद्यसंभवाच्छाक्तं (so ist zu lesen) वपुर्नतादृशं प्रभोः 14. मन्त्र Weber, Rikat. Up. 333. — 2) m. *a) Lehrer:* वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः RV. 7,103,5. — *b) ein Verehrer der* Çakti Çiva's Wilson, Sel. Works 1,12 u. s. w. 2,26 u. s. w. Ind. St. 2,63, N. 1. Weber, Rikat. Up. 333. I.A. (III) 87,6. Verz. d. B. H. 160,14. Verz. d. Oxf. H. 253,b,15. 255,b, N. 5. 258,a,13. b,11. °तन्त्रता 109,a,28. °भाष्यकार 258,b,22.

2. शाक्त (von 4. शक्ति) 1) m. patron. des Parâçara MBh. 1,6885 (शाक्त ed. Calc.). — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,239,b.

शाक्तानन्दतरंगिणी f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 102,a, No. 159. Verz. d. Kop. H. 101,b.

शाक्तिक adj. = शक्त्या जीवति gaṇa वेतनादि zu P. 4,4,12.

शाक्तीक (von 3. शक्ति) m. *Lanzenträger* P. 4,4,59. 5,2,103, Schol. Vop. 7,15. AK. 2,8,2,37. H. 771.

1. शाक्तेय (von 1. शक्ति) m. *ein Verehrer der* Çakti Çiva's Vop. 7,23.

2. शाक्तेय (von 4. शक्ति) m. patron. Parâçara's MBh. 1,6866 (शाक्तेय ed. Calc.).

शाक्त्य (wie eben) 1) m. patron. des Gauriviti Ait. Br. 3,19. Çat. Br. 12,8,2,7. Pañkav. Br. 11,8,14. 12,13,10. 25,7,2. Âçv. Çr. 12,12,6. pl. 5,16. Pañkav. Br. 25,7,1. Kâty. Çr. 24,5,20. Gaim. Nyâyam. 182 (hier fehlerhaft शाक्य; vgl. Weber, Ind. Streifen 2,380). °सामन् Lâṭy. 7,4,1. 2. Ind. St. 3,239,b. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,239,b.

शाक्त्यायन m. patron. von शाक्त्य; pl. Saṃhit. K. 185,b,9.

शाक्र und शाक्रेय s. u. 2. शाक्त 1) und 2. शाक्तेय.

शौक्रवन् (von 2. शक्र) n. *Hilfe:* शाक्रवना शाकः RV. 10,55,6.

शाक्य m. patron. von शाक्त gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. von शाक्त und शाकिन् gaṇa कुर्वादि zu 151. = शक्रा अभिज्ञनो ऽस्य gaṇa शणिडकादि zu 3,92. H. 236, Schol. 1) N. eines Kriegergeschlechts in Kapilavastu, das auf den Sonnengott zurückgeführt wird und aus dem der Gründer des Buddhismus hervorging, Burnouf, Intr. 152. pl. Lalit. ed.

Calc. 82,10. 93,18. 114,16. 21. 125,1. 156,1. 245,2. °कुल 28,9. 141,8. °गण 115,9. 140,1. 142,1. 155,17. 244,16. °शतानि 114,4. 136,17. °कुमार 245,8. 10. °कन्या 162,10. 163,2. 294,10. सर्वशाक्यविषये 28,14. °राज्ञ 139,12. शाक्याधिपति 28,20. दण्डपाणिः शाक्यः 160,6. 161,8. 162,9. — 2) *der Çâkja* κατ' ἐξοχήν, = Çâkjamuni oder Çâkjasiṁha H. 236, Schol. Hall. 1,85. Verz. d. Oxf. H. 264, *a*, 30. fgg. ein Sohn Samgâja's und Vater Çuddhona's (Çuddhoda's; nach den buddhistischen Quellen ist Çuddhodana sein Vater) VP. 4,22,3. Bhâg. P. 9, 12,12. Wilson, Sel. Works 2,23. °धर्म Hiouen-thsang 1,34. — 3) = शाक्यभिक्षु *ein buddhistischer Bettelmönch* Varâh. Bṛh. S. 51,21. 60,19. Bṛh. 13,1. — 4) fehlerhaft für शाक्य; s. u. शाक्य 1). — Vgl. महा°.

शाक्यपाल m. N. pr. eines Fürsten Râga-Tar. 8,1226.

शाक्यपुंगव m. = शाक्यसिंह Vjutp. 2.

शाक्यप्रभ m. N. pr. eines *buddhistischen* Gelehrten Burnouf, Intr. 230. Târân. 204.

शाक्यबुद्ध m. = शाक्यमुनि. शाक्यबुद्धोपजीविन: Harîv. 11142 (शाक्यमतं बुद्धमतं चोपजीवन्ति ते Nîlak.). Hiouen-thsang 1,37. Vie de Hiouen-thsang 208.

शाक्यबुद्धि m. N. pr. eines *buddhistischen* Gelehrten Vjutp. 90. Târân. 186. fg. शाक्यबोधि fälschlich Wassiljew 314.

शाक्यबोधिसत्त्व m. = शाक्यमुनि Hiouen-thsang 1,97. 310. Vie de Hiouen-thsang 76. 127.

शाक्यभिक्षु m. *ein buddhistischer Bettelmönch* Varâh. Bṛh. S. 16,15. 104,61. Kull. zu M. 4,30.

शाक्यभिक्षुकी f. *eine buddhistische Bettelnonne* Daçak. 79,11.

शाक्यमति m. N. pr. eines *buddhistischen* Gelehrten Târân. 205.

शाक्यमहाबल m. N. pr. eines *buddhistischen* Fürsten Wassiljew 53. Der Name ist aus dem Tibetischen erschlossen.

शाक्यमित्र m. N. pr. eines *buddhistischen* Gelehrten Vjutp. 90. Burnouf, Intr. 558. Schiefner, Lebensb. 310 (80). Wassiljew 290. 326. Târân. 211. 213. 303.

शाक्यमुनि m. *der Muni der Çâkja*, Bez. des Gründers der Buddha-Lehre AK. 1,1,4,9. Lalit. ed. Calc. 202,4. Burnouf, Intr. 43 u. s. w. Hiouen-thsang 1,338. °बुद्ध Vie de Hiouen-thsang 276.

शाक्यवर्ष m. N. der Schutzgottheit der Çâkja Burnouf, Intr. 384. wohl richtiger शाक्यवर्धन Schiefner, Lebensb. 236 (6).

शाक्यश्री m. N. pr. eines *buddhistischen* Gelehrten Wassiljew 267. Târân. 253. 255. 261. 331. auch °भद्र genannt 253.

शाक्यसिंह m. = शाक्यमुनि AK. 1,1,4,10. H. 236. Lalit. ed. Calc. 3,20. Lot. de la b. l. 18. Wilson, Sel. Works 2,6. 13. 32. 36. Râga-Tar. 1,172.

शाक्यायनीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 2,274. vielleicht fehlerhaft für शाकायनीय (Weber's Vermuthung) oder शाक्त्यायनीय.

शाक्र (von शक्र) 1) adj. (f. ई) Indra *gehörig, ihn betreffend, an ihn gerichtet:* यज्ञ MBh. 7,3258. दक्षिन् Kathâs. 115,148. स्त्री 110,82. माया Verz. d. Oxf. H. 59, *b*, 26. युग Varâh. Bṛh. S. 8, 33. मत्र 43,30. — 2) f. ई Indra's *Gattin;* übertragen auf die Durgâ (neben इन्द्राणी und इन्द्रजननी) Devî-P. im ÇKDa. — 3) n. *das unter* Indra *stehende* Nakshatra Gjeshṭhâ Varâh. Bṛh. S. 6,11. 7,10.

शाकीय adj. = शाक्र 1): °दिश् so v. a. *Osten* Çat. 2,598.

शाक्वर (von शक्वर) 1) adj. *a) gewaltig, mächtig:* शाक्वराय शर्कने वोत्रिष्टाय (Wind) VS. 5,5. Çat. Br. 3,4,2,5. वृषभ AV. 9,1,9. TBr. 3,7, 6,10. दिव्यस्य शाक्वरस्य गन्धर्वराजस्य (मत्र:) Kâty. Anukr. in Ind. St. 3,439. — *b) zu dem* Sâman Çâkvara (beziehungsweise *den* Çakvarî-*Versen*) *gehörig* u. s. w.; zugleich mit appellativem Nebenbegriff: Indra TS. 2,3,9,3. 7,5,14,1. VS. 29,60. वज्र TBr. 2,1,5,11. सप्तम: शाक्वर: (शाक्वरसप्तमम् Ind. St. 3,239, *b*) N. eines Sâman Pañcav. Br. 13,5,17. Lâṭj. 7,3,11. 6,6. 9,11. — *c)* Bez. *einer imaginären Art von Soma* Suça. 2,164,17. 169,9. an beiden Stellen fälschlich शाङ्कर gedruckt. — 2) m. *Stier* H. 1257. Halâj. 2,108. fälschlich शाङ्कर Trik. 2,9,19. H. 1257. Med. r. 225. शार्कर H. an. 3,609. fg. — 3) n. N. eines Sâman, eine der sechs Hauptformen, *auf den Versen beruhend, welche* Çakvarî *heissen*, VS. 10,14. 13,85. 15,14. Ait. Br. 8,12. Lâṭj. 3,12,5. Kaush. Up. 1,5. Ind. St. 2,67. °पृष्ठ Çâṅkh. Ça. 10,6,1. °गर्भ 15,7,3. शाङ्कर und शार्कर (lies शाक्वर) n. = छन्दोभेद Med. H. an.

शाक्वरवर्ण n. N. eines Sâman (die Verse ṚV. 9,61,10—12) Lâṭj. 7, 2,1. 6. 10,5,4. Ind. St. 3,239, *b*.

शार्क्वर्य n. nom. abstr. von शाक्वर gaṇa पुरोडिन्यादि zu P. 5,1,123.

शाख् शाखति (व्याप्ति) Dhâtup. 5,12. — Vgl. साख्.

शाख 1) m. *a) eine Manifestation* Skanda's, *die als sein Sohn gefasst wird*, MBh. 1,2588. 9,2487. Harîv. 157. VP. 120. Mârkaṇḍ.-P. 5 im ÇKDa. Kathâs. 20,92. 50,181. — *b) Pongamia glabra* Vent. Çabdam. im ÇKDa. — *c)* N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 12. könnte auch n. sein. — 2) f. शाखा; am Ende eines adj. comp. f. या AV. 4,19,5. Bhâg. 2,41. MBh. 4,184. ई Spr. (II) 180. *a) Ast, Zweig* Nir. 1,4. AK. 2, 4,4,5. 11. H. 1119. an. 2,26. Med. kh. 6. Halâj. 5,21. Im ṚV. ist dafür बाहा gewöhnlich. पक्षा ṚV. 1,8,8. वनिनै: 7,43,1. 10,94,3. AV. 3,6,3. 10,7,21. मधुमती 1,34,4. दिव्या 11,2,19. Ait. Br. 4,21. Çat. Br. 2,3, 3,4. 14,9,3,15. वेतस° TS. 5,4,4,2. खाण्डवी Çat. Br. 5,3,3,5. पर्ण° 1,7,4,1. घार्ह° Âçv. Gṛhj. 1,11,2. फलवती 2,6,9. पलाश° Çâṅkh. Ça. 4,14,7. शमी° Lâṭj. 1,2,17. शास्त्र° Kauç. 21. एक°, द्वि°, त्रि° 90. Kuṇḍ. Up. 5,2,3. Maitrâjan. 4,3. Jâén. 2,227. R. 2,28,22. 33,15. 55,15. 65,3. 92,22. 5,29,21. Ṛt. 1,26. Mṛicch. 42. Kâm. Nîtis. 5,31. Varâh. Bṛh. S. 44,20. 46,25. 54,49. 55. 55,6. 88,46. Râga-Tar. 3,430. Bhâg. P. 3,8,29. 8,5,49. Pañcat. 148,5. Hit. 17,22. Vet. in LA. (III) 4,2. °पवित्र Schol. zu Kâṭj. Ça. 4,2,21. 10. S. 210,3. 21. — *b) die Extremitäten, Arme und Beine* Suça. 1,65,21. 337,4. 340,4. 2,20,13; vgl. घनुःशाख (so ist st. घनःशाख zu lesen) n. *Körper* H. ç. 116. = भुज, बाहु *Arm* H. an. Med. Milâv. 29. *Finger* Naigh. 2,5 wegen ṚV. 10,137,6. बाहु: पञ्चशाख: R. 6,36,32. *Oberfläche des Körpers:* कोष्ठाच्छाखां गता यान्ति Kâraka 1,28. शाखानुसारिणो रोगा: 11. — *c) Thürpfosten* (die Breite der 2 Çâkhâ beträgt gerade so viel in Aṅgula, als die Höhe der Thür in Hasta) Varâh. Bṛh. S. 53, 26. 56,13. fg. Vgl. द्वारशाखा, welches dieselbe Bed. hat. — *d) Ausläufer —, Flügel eines Gebäudes:* या: शाखा: कल्पवृक्षाणां पूर्वमासन्हिवोत्तम। ता एव शाखा गेहानां शालावं तेन तासु तत् ॥ Bhâg. P. 49,54. — *e) Verzweigung* (eines Geschlechts): वंशो वटुशाखा: Harîv. 1945. — *f) Abart, Species, Unterabtheilung:* वटुशाखा कृतसाम बुद्धयो ऽव्यवसायिनाम्

mannichfaltig Bhag. 2,41. पञ्चविधो धर्मो बकुशाखः MBh. 13,6416. षष्ठमंशाखाः पञ्च Bhâg. P. 7,15,12. तत्रं कृताकृतशतव्यापारशाखाकुलम् Vâsân. Bṛn. S. 74,3. — *g) Zweig so v. a. Schule, Secte;* = वेदविभाग, वेदांश, वेदभाग Taitt. 3,3,52. H. an. Med. = चरण P. 4,2,46, Schol. स्य°, पा° Gobhil. 2,102. Jâśṇ. 1,144. MBh. 3,169. शाखान्तग M. 3,145. Ind. St. 1,16.20. 3,239.386.388.396. *h.* चत्वारो वेदाः साङ्गाः सशाखाः 9,76. 120. Weber, Rimat. Up. 350. कतमो शाखामधीये Kâṭhâs. 49,156. पठामि हादश — शाखा हे सामवेदतः । ऋग्वेदाद्धे पञ्चुर्वेदात्मप्त चैकामथर्वतः ॥ 157. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,22. निष्प्रत्यूहमवर्धत्त श्रुतिशाखाः समन्ततः L.A. (III) 92,18. Schol. zu AV. Pâṛiś. 1,2. zu TS. Pâṛiś. 15,8. 16,12. zu P. 4,4, 115. सकलशास्त्रस्य चतुर्वेदस्य Kusum. 24,2. आश्वलायन° Verz. d. Oxf. H. 398,*a*, No. 144. — *i*) Bez. *des 3ten Theils einer astrologischen* Saṁhitâ Vâsân. Bṛn. 28 (26), 6. Verz. d. Cambr. H. 37; vgl. Kern in der Einl. zu Vâsân. Bṛn. S. 23. — *l*) = पताका H. an. Med. — *k*) = पक्षिक (vgl. शाखानगर् u. s. w.) H. an. — Vgl. त्रि°, द्वार°, नैचा°, पाद°, प्र°, प्रति°, बकु° (auch Kâṭh. 26,3), भद्र°, मधु°, मैत्र°, वि°, वेद°.

शाखक am Ende eines adj. von शाखा; s. अन्य°.

शाखाकण्ट m. *Euphorbia nerifolia* oder *antiquorum Lin.* Râǵân. im ÇKDa.

शाखाङ्ग (शाखा + अङ्ग) n. *Glied des Körpers* Jâśṇ. 2,225.

शाखाद् (शाखा + अद्) adj. *Zweige abfressend;* m. Bez. *einer Klasse von Thieren* (z. B. Ziege, Elephant) Kâmaka 1,25.

शाखानगर् n. *Vorstadt* AK. 2,2,1. Taitt. 2,2,1. Hit. 109. Hall. 2, 131. MBh. 12,2268. Harîv. 8558. 8680. 8682. °क n. dass. MBh. 12,2630. Mânk. P. 49,42. 46.

शाखान्तर (शाखा + अ°) n. *eine andere Schule* R. 1,58,2. Comm. zu TS. Pâṛiś. 4,11 u. s. w. Ind. St. 1,50. Davon adj. शाखान्तरीय 17. 20.

शाखापशु m. *ein an einen Zweig* (statt an einen Jûpa) *gebundenes Thier* Çâṅkh. Gṛhj. 1,10.

शाखापित्त n. *Brennen in Händen, Füssen* u. s. w. (पाणिपादादिसमूलदाह) Râǵân. im ÇKDa.

शाखापुर n. = शाखानगर् H. 972.

शाखाप्रकृति f. pl. Bez. *der acht bei einem Kriege in zweiter Reihe* (nach den मूलप्रकृति) *in Betracht kommenden Fürsten* Kull. zu M. 7,157; vgl. 156.

शाखाभृत् m. *Baum* Kir. 5,37.

शाखामृग m. *Affe* AK. 2,5,3. H. 1292. Hall. 2,76. MBh. 3,2464. 11859. R. Gorr. 2,103,7. 3,79,31. 4,16,22. 5,93,11. 6,71,27. Vaśiṣ. Bṛn. S. 12,6. 24,21. 27,3. Brahma-P. in LA. (III) 51,12. Bhâg. P. 4,6,20. 10,67, 11. Pañcat. 94,3. Davon °त्व n. *die Natur eines Affen* R. 4,1,21.

शाखारण्ड m. *ein Brahmane, der von seiner Schule abgefallen ist,* H. 837.

शाखारथ्या f. *Seiten —, Nebenstrasse* Davi-P. im ÇKDa.

शाखाल (von शाखा) m. *Calamus Rotang Lin.* Râǵân. im ÇKDa.

शाखावात m. *Gliederreissen* Suçr. 1,176,4.

शाखाशिफा f. *eine von einem Aste* (z. B. des indischen Feigenbaums) *sich herabsenkende Schnur, die Wurzel schlägt,* AK. 2,4,2,11.

शाखास्थि n. *ein Arm- oder Beinknochen, ein langer Knochen* H. 627. Hall. 3,12.

शाखि m. pl. N. pr. eines Volkes, = तुरुष्क H. 959 (साखि Comm.): vgl. शाखिन् 2) *c*).

शाखिन् (von शाखा) 1) adj. *mit Aesten* (reichlich) *versehen* MBh. 1, 1775. 12,5505. am Ende eines comp.: प्रोन्नि° Jâśṇ. 2,227. बकु° MBh. 14,152. फलाय° Harîv. 3707. — *b*) *in Schulen —, in verschiedene Recensionen zerfallend:* वेदा: Bhâg. P. 1,4,22. — *c*) *zu einer best. Schule des* Veda *sich haltend* Kull. zu M. 8,209. Comm. zu TS. Pâṛiś. 8,20 u. s. w. आश्वलायन° Verz. d. Oxf. H. 271,*a*, 2. 4. — 2) m. *a*) *Baum* AH. 2,4, 4,5. 3,4,43,205. H. 1114. an. 2,237. Med. n. 141. Hall. 2,32. MBh. 1,1378. 3,15662. 4,459. 14,1229. Harîv. 93. 3609. R. 5,29,21. Râǵân. 11,12. ad Çiç. 14. Spr. (II) 493 (सुर°). 1076. 3620. Vaśiṣ. Bṛn. S. 15, 14. Kâṭhâs. 26,20 (वट°). Râǵa-Tar. 1,371. 3,518. LA. (III) 90,1. — *b*) *der in verschiedenen Schulen* (*Recensionen*) *vorhandene* Veda H. an. Med. — *c*) N. pr. eines Fürsten H. an. Bez. *der* Turushka Med.; vgl. शाखि. — Vgl. कल्प°, मार्ग°, शक्र°.

शाखिल (wie oben) m. N. pr. eines Mannes Kâṭhâs. 47,85.

शाखीय am Ende eines comp. adj. von शाखा. काण्व° *zur Schule des* Kaṇva *gehörig* Bṛn. Âr. Up. ed. Poley S. 99.

शाखोट m. *Trophis aspera* (ein kleiner, hässlicher, krummer Baum) Taitt. 2,4,13 (शाकोट gedr.). Spr. (II) 1734. °क m. desgl. Suçr. 2,107,17. Çiśiṇ. Saṁh. 2,2,83. Spr. (II) 387. 1603 2315, v. l. Pañcat. 1,6,16 (साकोटक gedr.). 7,23 (शाकोटक gedr.).

शाख्य adj. = शाखेय *zweigartig* P. 5,3,103.

शागलि m. patron. Pravarâṅgir. in Verz. d. B. H. 58,4 v. u.

1. शांकर् (von शङ्कर्) 1) adj. (f. ई) *a*) *zu* Çiva *in Beziehung stehend, ihm gehörig* u. s. w.: गणा: Kâṭhâs. 46,201. — *b*) *zu* Çaṁkarâchârja *in Beziehung stehend, von ihm herrührend, ihn betreffend* u. s. w.: वाक्यसार् Verz. d. Oxf. H. 252,*b*, No. 626, Z. 6. कथा 253,*b*,2. °दर्शन Sarva-darçanas. 180,13. — 2) f. ई *a*) Çiva's *Anordnung der Buchstaben, die* Çivasûtra Verz. d. B. H. No. 370. — *b*) *der von* Çaṁkaramiçra *verfasste Commentar* Hall 206. — 3) n. *das unter* Çiva *stehende* Nakshatra Ârdrâ Vaśiṣ. Bṛn. S. 71,7.

2. शाङ्कर् Suçr. 2,164,17. 169,9. Taitt. 2,9,19. H. 1287 und Med. r. 225 fehlerhaft für शाक्कार्.

शांकरि (von शांकर् Çiva) m. patron. Skanda's und Ganeça's Med. r. 227.

शाङ्कव्य m. patron. von शङ्कु gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. शौङ्कव्य gaṇa कुर्वादि zu 151.

शाङ्कव्यायनी f. zu शाङ्कव्य gaṇa लोहितादि zu P. 4,1,15.

शाङ्कक (von शङ्कु) m. N. pr. eines Dichters Râǵa-Tar. 4,704.

शौङ्कपथिक adj. = शङ्कुपथेनाकृतम् oder गच्छति P. 5,1,77, Vârtt. 2.

शाङ्कुर् (von शङ्कु) adj. oder m. Bez. *des penis* AV. 7,90,2.

शाङ्ख adj. von शङ्ख ÇKDa. n. *der Laut einer Muschel* Çârṅgârtan. bei Wilson.

शाङ्गमित्र m. patron. von शङ्गमित्र Pravarâṅgir. in Verz. d. B. H. 58, 33. pl. 33.

शाङ्गमित्रि (patron. von शङ्गमित्र) m. N. pr. eines Grammatikers Comm. zu AV. Pâṛiś. 1,93. 2,6. 3,74.

शाङ्खलिखित adj. von Çaṅkha und Likhita *verfasst:* धर्म Paraç. bei Stenzler, Jñân. S. VII.

शाङ्खायन 1) m. शौ° patron. von शङ्ख gaṇa यस्कादि zu P. 4, 1, 110. N. pr. eines Lehrers und Autors, Verfassers eines Brâhmaṇa und zweier Sûtra, Weber, Lit. 43. TS. Pair. 15, 7. Ind. St. 1, 18. 60. Verz. d. B. H. No. 110. 140. °ब्राह्मण Ind. St. 2, 288. fgg. pl. *die Nachkommen oder Anhänger des* Çâṅkhâjana Verz. d. B. H. 57, 4 v. u. Ind. St. 1, 393, N. 2. — 2) adj. (f. ई) zu Çâṅkhâjana *in Beziehung stehend* Weber, Nax. 2, 392. — 3) n. Çâṅkhâjana's *Werk* Âçv. Gṛhy. 3, 4, 4. Çâṅkh. Gṛhy. 4, 10. — Vgl. मक्षा°.

शाङ्खायन्य m. patron. von शाङ्खायन gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98.

शाङ्खिक (von शङ्ख) m. *Bearbeiter von Muscheln* AK. 2, 10, 8. H. 910. *Muschelbläser* Gaṇar. im ÇKDa. — Vgl. शङ्खिक.

शाङ्खिन् m. patron. von शङ्खिन् P. 6, 4, 166, Schol.

शौङ्ख (von शङ्ख) 1) adj. a) *aus Muscheln bereitet* Suçr. 2, 324, 17. — b) *aus* Çaṅkha *gebürtig* gaṇa शणिडकादि zu P. 4, 3, 92. — 2) m. patron. von शङ्ख gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105.

शाचि m. *Graupe, Grütze* (Mantra.) VS. 23, 8.

शाचिगु adj. Bez. Indra's RV. 8, 17, 12. die Erklärungen der Comm. sind nicht annehmbar.

शाचिपूजन adj. desgl. ebend.

शाट m. und शाटी f. AK. 3, 6, 8, 28. *Tuch, Binde, Zeugstreifen:* लम्बशाट-परावृत Spr. (II) 2901. Häufiger शाटी H. 675. शाटीमाच्छाद्य दुष्कूलम् R. 2, 32, 31. शाटीं परितः कक्षां परिवेष्य 36. Kuvalay. 105, b. Verz. d. Oxf. H. 258, b, 38 (wohl शाक्षा zu lesen). शाटीव (st. dessen पट: 10, 15, 88) तस्थुषु Bhâg. P. 9, 9, 7. Saṃgr. P. 4, 20, b. 39, a (शाटि). स्नान° MBh. 13, 1488. Mṛicch. 49, 11. Verz. d. Oxf. H. 85, a, 40 (fälschlich °शाठी). शाटीपटीरम्, शाटीपटिकम् und शाटीप्रच्छदम् copulative Compp. gaṇa गवाश्वादि zu P. 2, 4, 11.

शाटक m. n. AK. 3, 6, 8, 28. dass. Taik. 2, 6, 28. H. 675, Schol. Kâç. zu P. 1, 1, 36. रक्तो किं नायते भोग्यो नारीणां शाटको यथा Spr. 2581. Kathâs. 53, 38. 43. 54, 105. 119. शिरस्त्याबद्ध° 13, 187 (vgl. पटक 190). शिर:° Râja-Tar. 6, 100. पत्त्रण° Suçr. 1, 338, 15. 17. 339, 2. पत्त° 2, 47, 2. 53, 12. पट° Mân. g. 102. शाटिका f. dass. Bhar. zu AK. nach ÇKDa. Nach Bhar. im ÇKDa. ist शाटक m. n. auch = नाटकभेद.

शाटीय s. नाय°.

शौट्य 1) adj. *aus* Çaṭa *gebürtig* gaṇa शणिडकादि zu P. 4, 3, 91. — 2) m. patron. von शट gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. तिकादि zu 154.

शाठायन (patron. von शाठ) 1) m. N. pr. eines Lehrers Çâṅkh. Gṛhy. 6, 1. Ind. St. 1, 58. 233 fg. (Verfasser eines Gesetzbuchs). 3, 66. Verz. d. B. H. No. 322. R. ed. Gorr. 2, 32, 42, v. l. (s. S. 471, wo शाठायनगोत्र zu lesen ist). °ब्राह्मण Ind. St. 4, 4. °क्षेम Titthâbh. im ÇKDa. pl. *die Anhänger des* Çâṭjâjana Ind. St. 3, 271. — 2) f. ई Titel einer Upanishad. Ind. St. 3, 325.

शाठायनक n. *die Vorschrift des* Çâṭjâjana Âçv. Çr. 1, 4, 13. Lâṭy. 1, 2, 24. Schol. zu Kâty. Çr. 7, 5, 7.

शौठायनि m. patron. von शाठ gaṇa तिकादि zu P. 4, 1, 154. Çat. Br. 3, 1, 4, 9. 10, 4, 5, 3. Verfasser eines Gesetzbuchs Verz. d. Oxf. H. 270, b, 1 v. u. 279, b, 14.

शाठायनिन् m. pl. *die Anhänger des* Çâṭjâjana Schol. zu P. 4, 3, 105 und 2, 104, Vârtt. 26. Lâṭy. 4, 5, 18. Anupadas. 1, 8. 2, 9. 3, 2. 11. 4, 8. Sây. zu RV. 1, 105.

शाठ s. कठ°.

शाठर m. patron. Saṃgr. K. 186, a, 5.

शाठायन s. u. शाठायन्य.

शाठायन्य m. patron. von शठ gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98. pl. शाठा-यनीं: ebend.

शाठिन् s. u. कठशाठ.

शाठी Verz. d. Oxf. H. 85, a, 40 fehlerhaft für शाटी.

शाठ्य (von शठ) n. *Falschheit, Hinterlist, heimtückisches Wesen* AK. 1, 1, 8, 20. H. 377. MBh. 5, 4113. Harîv. 2103. R. 2, 23, 9. 3, 30, 25. Mṛicch. 87, 8. Kâm. Nîtis. 3, 14. 13, 43. Çik. 121. Spr. (II) 367. 2738. 4380, v. l. 4813. (I) 3228. Vaṛâh. Bṛ. S. 15, 4. 68, 22. 98, 8. Kathâs. 60, 204. Râja-Tar. 6, 29. Vet. in LA. (III) 30, 4. वित्त° *eine Unredlichkeit in Betreff des Vermögens, das sich ärmer oder reicher Machen als man ist* Harîv. 16218. Weber, Kṛishṇaj. 233. 278. fg. Bâlar. P. 5, 13, 11. 14, 26. 8, 16, 31. Paṇḍar. 3, 9, 12. Verz. d. Oxf. H. 102, b, 8.

शाठ्यवत् (von शाठ्य) adj. *falsch, hinterlistig, heimtückisch* Vaṛâh. Bṛ. S. 68, 35.

शाड्, शाँडते (आघाषाम्) Dhâtup. 8, 37. — Vgl. शाल्.

शाडव s. फल° und षाडव.

शाड्वल und शाड्वल्य s. शाद्वल.

1. शाण (von शण) 1) adj. (f. ई) *hänfen:* Schnur Çat. Br. 6, 7, 2, 7. Gewand Gobh. 2, 10, 5. 10. Lâṭy. 2, 6, 1. Kauç. 57. M. 2, 41. 10, 87. MBh. 12, 6675. 13, 7175 (शान ed. Calc. तथा ed. Bomb.). — 2) f. शाणी AK. 3, 6, 4, 9. *ein hänfenes Gewand* Mân. वस्त्राणां प्रवरा शाणी MBh. 3, 12027. 12, 11275. *ein durchlöchertes Kleid* H. 679.

2. शाण (von 2. शा) m. *Schleifstein* (*Probirstein*) AK. 2, 10, 32. Taik. 3, 3, 146. H. 909. an. 2, 155. Mân. g. 29. Spr. (II) 1173. मणि: शाणोल्लीढ: 4657. Vâsavad. 10, 1. शाणा f. Spr. (II) 3398. शाणाश्मन् (I) 3331. शाणा-श्मक (so zu lesen) Râja-Tar. 4, 10. शाण = कषपत्त *Sâge* Viçva im ÇKDa. — Vgl. तर्कु°, दत्त° und निशाण unter निशान.

3. शाण m. *ein best. Gewicht*, = 4 Mâsha Taik. 3, 3, 140. H. an. 2, 155. Mân. g. 29. Bhâvapr. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 307, b, 3. 8. Çârîr. Saṃgr. 1, 1, 16. 20. 3, 8, 3. 11, 29. षष्टे शाणा: शतमानं वदन्ति MBh. 3, 10668. °प्रमाण Harîv. 7575. द्वै°, त्रै° adj. P. 7, 3, 17. त्रि° 5, 1, 36, Schol. f. या dass. Suçr. 1, 168, 18. fg.

शाणक (von 1. शाण) *ein hänfenes Tuch,* — *Gewand* Lalit. ed. Calc. 332, 12. Hiouen-thsang 1, 39 (शाणक gedruckt).

शाणकवास = शाणवास Hiouen-thsang 1, 39. Vie de Hiouen-thsang 70. an beiden Orten शाणक°.

शाणपाद् m. 1) *ein Viertel* Çâṇa d. i. *ein* Mâsha Harîv. 7563. — 2) N. pr. eines Berges Harîv. 7576.

शाणवत्य m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2, 1872.

शाणवास (1. शाण + 1. वास) m. N. pr. eines Arhant Wassiljew 225.

शाणवासिक m. dass. Wassiljew 38. fgg. Târân. 9. fgg. 15. fgg. Schief-

sss, Lebensb. 290 (60). 308 (78). LIA. 2, Anh. III.

शाणाम्रोष (2. शाण + मो°) m. *Schwertfeger* H. 916.

शाणि m. *eine best. Pflanze*, = ग्रावशण Çabdam. im ÇKDa.

शाणिक in हि° adj. von 3. शाण Çiāñ. Sāñ. 1,11,29.

शाणित (von 2. शाण) adj. *gewetzt, geschärft* ÇKDa. शानितशर Spr. (II) 1625.

शाणीर n. = शणीर Vicva im ÇKDa.

शाणोत्तरीय Taik. 2,7,24 fehlerhaft für शालातुरीय: शालोत्तरीय ÇKDa. und Wilson nach ders. Aut.

शाण्डि (patron. von शण्ड) m. N. pr. eines Mannes ṚV. 6,63,9. Vater eines Lakshmidhara Verz. d. Oxf. H. 110,*b*, N. 1.

शाण्डूर्वी f. v. l. des AV. 18,3,6 für पाकदूर्वी des ṚV.

शाण्डक m. *ein best. Thier* (in Erdlöchern wohnend) Kāraka 1,27. साण्डक v. l.

शाण्डिक adj. aus Caṇḍika *gebürtig* P. 4,1,92.

शाण्डिल 1) adj. von Çāṇḍilja *stammend*, von *ihm vorgeschrieben* u. s. w.: ऋषि Çat. Br. 9,1,1,43. 3,3,13. 9,3,1,61. 63. Liṭ. 8,2,25. Nir. 4,9. — 2) m. pl. *die Nachkommen des* Caṇḍila gaṇa काण्वादि zu P. 4,2,111. Āçv. Çr. 12,14,7. Taitt. Ār. 1,22,10. Verz. d. B. H. 60,3 v. u. 62,30. Verz. d. Oxf. H. 38,*b*,38. ag. Schiefner, Lebensb. 256 (26) fehlerhaft für शाण्डिल oder शाण्डिल्य. — 3) f. ई (f. zu शाण्डिल्य) N. pr. einer göttlich verehrten Brahmanin, die als Mutter Agni's angesehen wird. MBh. 1,2384. 3,3873. 6,295. 13,5859. fgg. Harīv. 7021. 8650. 9332. 13928. शाण्डिलीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,22. göttlich verehrt (wohl Agni) Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,10. °मातर् Spr. (II) 3535. Pāraṅ. 122,1.

शाण्डिलेय m. metron. von शाण्डिली, wohl Bez. des Agni Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,9.

शाण्डिल्य 1) m. *a*) patron. von शाण्डिल gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. N. pr. verschiedener Lehrer Taik. 3,3,221. H. an. 3,508. fg. Mān. j. 106. fg. Çat. Br. 9,4,4,17. 5,2,18. 10,1,4,10. 4,4,11. 6,3,2. 5,9. 14,5,5,20. 22. 7,3,26. 28. Liṭ. 1,1,26. 4,19. 5,20 u. s. w. Kāṭh. Up. 3,14,4. Verz. d. B. H. 61,25. 37. MBh. 2,112. 12,9114. 13,2205. 6266. R. Gorr. 2,32,16. Kathās. 9,9 (sāndilya gedr.). Verz. Oxf. d. H. 28,*a*, No. 71. 34,*a*,8. 38,*b*,23. 60,*b*,6. 74,*a*,37. 120,*a*,4. 125,*a*,7. 284,*a*,24. 310,*a*,27. 327,*b*,7. 356,*a*,31. Verz. d. Cambr. H. 22. 53. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,10. Nigh. 11,24. Hall 28 (ein neuerer Autor). °स्मृति Mack. Coll. 1,20. °विद्या Colebr. Misc. Ess. 1,326. Ind. St. 1,259. Vedānt. (Allah.) No. 7. °सूत्र (gedruckt in der Bibl. indica) Verz. d. Oxf. H. 228,*b*, No. 560. Hall 143. °सूत्रप्रवचन 144. °शतसूत्रव्याख्या Ind. St. 1,470. °शतसूत्रीयं भाष्यम् Çiṅg. 1. fgg. °शतसूत्रीभाष्य Hall 144. — *b*) ein N. Agni's (vgl. शाण्डिली und शाण्डिलेय) H. an. Mān. Harīv. 992. — *c*) *Aegle Marmelos Corr.* AK. 2,4,2,12. Taik. H. an. Mān. — 2) adj. von Çāṇḍilja *stammend*, — *verfasst*: धर्म: Verz. d. Oxf. H. 226,*b*,23. — 3) wohl n. als N. einer Upanishad Ind. St. 3,326. — Vgl. उद्द°.

शाण्डिल्यलक्ष्मण m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. B. H. No. 394.

शाण्डिल्यायनि m. patron. von शाण्डिल्य gaṇa अरीकृणादि zu P. 4,2,80. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 9,5,1,64. 10,4,3,2. Liṭ. 2,7,1. 3,4,22. 7,4. 4,4,6 u. s. w. Nidān. 2,2. 3. 4,1. 8. Ind. St. 4,372.

शाण्डिल्यायनक adj. von शाण्डिल्यायन gaṇa अरीकृणादि zu P. 4,2,80.

शाण्य adj. von 3. शाण am Ende eines comp. nach einem Zahlwort P. 5,1,28. fg.

1. शात adj. *gewetzt, geschärft; dünn, schmächtig* s. u. 2. शा.

2. शात (von शद्) m. *das Abfallen, Ausfallen* Vop. 8,136. नख° Suça. 2,246,15. केश° 248,11.

3. शात n. *Freude* AK. 1,1,4,3. अति° *grosse Freude bereitend* Gīt. 10,9. — Vgl. गय° und सात.

शातक m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 58,46.

शातकर्णि m. N. pr. oder patron. verschiedener Männer Rāgat. 13,28 (मन्दकर्णि und माण्डकर्णि R.). Verz. d. Oxf. H. 135,*a*, No. 254. 217,*b*, 31. VP. 4,24,12. सातकर्णि Z. f. d. K. d. M. 4,171. 175. शातकर्णिन् VP. 4,24,12. fg.

शातकुम्भ 1) n. *Gold* (*aus dem Flusse* Çatakumbhā *gewonnen*; vgl. जाम्बूनद) AK. 2,9,95. H. 1045. an. 4,213. Mān. bh. 23. Hālās. 2,13.5,29. MBh. 1,1438. 4,1275. 13,5282. Harīv. 6127. R. 5,111,10. Çiç. 9,9. Spr. (II) 1322. Varāh. Bṛh. S. 12,20. Bhāg. P. 4,9,56. pl. Pāraṅ. 2,1,32. — 2) adj. *golden* MBh. 7,739 (शातकुम्भमयापीड: ed. Bomb.). R. Gorr. 2,12, 4. 82,9. 5,9,16. Suça. 2,324,17. 355,13. — 3) *Nerium odorum Ait.* H. an. Mān. kann als ein N. für *Gold* auch den *Stechapfel* bezeichnen; vgl. AK. 2,4,3,58.

शातकुम्भमय (von शातकुम्भ) adj. (f. ई) *golden* MBh. 1,1959. 3,12186. 6,2362. 7,739 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 14,87. Harīv. 6197. 6918 (neben जाम्बूनदमय). 13345. R. 2,81,10. 4,22,32. 5,7,18. 10,9.

शातकौम्भ (von शातकुम्भ) 1) adj. (f. ई) *golden* MBh. 11,567. Harīv. 6546. 8947. 13023. R. Gorr. 2,100,65. Suça. 2,346,4. Bhāg. P. 3,21,36. 5,16,29. 10,5,3. 46,47. — 2) n. *Gold* Bhār. im Dvaidhak. nach ÇKDa. H. 1045, Schol.

शातकौम्भमय adj. = शातकुम्भमय *golden* Bhāg. P. 9,7,22.

शातदारेय m. patron. von शतदार gaṇa मधवादि zu P. 4,1,123.

शातन (von शद्) 1) adj. (f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41) *abfallen machend*: कूल° Nir. 6,17. *abhauend*: पर्वतपद° Rāgat. 3,42. *ausschlagend*: एकाङ्गशातनी R. 5,37,4. zu *Grunde richtend*: शोका: शातनस्तनो: Kathās. 101,200. अमित्र° Bhāg. P. 10,51,28. — 2) m. *a*) *das Abfallenmachen* Dhātup. 28,124. *das Abschneiden, Abpflücken*: पत्र° Çārañgadh. im ÇKDa. *das Behobeln, Abdrechseln* Mārk. P. 77,41. fg. 106,40. 64. *das Zugrunderichten*: घर्° Mārk. P. 23,16. वीर्य° 116,28. — *b*) *Mittel zum Abfallen, Ausfallen*: गर्भ° *Abortivmittel* Suça. 1,277,12. लोमन् Çiāñ. Sāñ. 3,11,29. — Vgl. पलाश° (auch P. 2,2,8, Vārtt. 1, Schol.), लोम°.

शातपर्ण adj. von शतपति gaṇa अश्वपत्यादि zu P. 4,1,84.

शातपर्व = शतपर्वमिव gaṇa शर्करादि zu P. 5,3,107.

शातपत्रक (von शतपत्र m. *Mondschein* Çārañg. im ÇKDa. °पत्रकी f. Wilson nach ders. Aut.

शातपर्व adj. (f. ई) zum Çatapathabrāhmaṇa *in Beziehung stehend, zu ihm gehörig, darauf beruhend* u. s. w. Kāç. zu P. 4,2,60. श्रुति Weber, Ghoṣ. 16. प्रसिद्धि Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 274.

शातपथिक m. *ein Anhänger —, Lesser des* Çatapathabrâhmaṇa Weber, Lit. 92. — Vgl. शत°.

शातपर्णेय m. patron. von शतपर्ण Çat. Br. 10,3,2,1.

शातपुत्रक (von शतपुत्र) n. *der Besitz von hundert Söhnen* gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,133.

शातभिष adj. (f. ई) *unter dem Nakshatra* Çatabhishaǵ *geboren* P. 4,2,3, Vârtt. 2, Schol.

शातभिषक adj. (f. ई) dass. P. 4,3,36. 2,3, Vârtt. 2, Schol.

शातभीरु s. शतभीरु und शीतभीरु.

शातमन्यव adj. (von शतमन्यु) adj zu Indra *in Beziehung stehend, ihm eigen:* आधिपत्य Kir. 13,38.

शातमान adj. (f. ई) *einen* Çatamâna *werth* u. s. w. P. 5,1,27. — Vgl. सध्यर्ध°.

शातय m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 58,27.

शातयितृ nom. ag. von शद् Nir. 2,16.

शातरात्रिक adj. von शतरात्र Schol. zu Kâṭy. Çr. 1036,2. 6. 14.

शातलेय m. patron. von शतला gaṇa सुधादि zu P. 4,1,123.

शातवनेय m. patron. von शतवनि ṚV. 1,59,7.

शातशूर्प (wohl patron. von शत + शूर्प) m. N. pr. eines Mannes Nir. 4,12.

शातशृङ्गिन् (von 1. शात + शृङ्ग) m. N. pr. eines Berges Mâṇ. P. 55, 13. die Länge in der ersten Silbe durch das Metrum gesichert.

शातक्रतु (von शतक्रतु) adj. *vom Blitz kommend:* ज्योतिस् Raǵa. 15,82.

शातातप (wohl 1. शात + आतप) m. N. pr. eines Gesetzgebers Jâǵñ. 1,3. Verz. d. B. H. 57,33. No. 1017. 1028. 1283. Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 9. 266,*a*, 13. 268,*a*, 3. 271,*a*, 1. 279,*b*, 13. 290,*a*, No. 696. Ind. St. 1,20. 467. 2,23. 2,176. Kull. zu M. 3,94. — Vgl. बृहच्छातातप und वृद्ध°.

शाताक्र m. N. pr. eines Mannes gaṇa सुधादि zu P. 4,1,123.

शाताक्रेय m. patron. von शताक्र ebend.

शातिन् (von शद्) nom. ag. *Abhauer:* पर्वतपत° Raǵa. ed. Calc. 3,43.

शात्रव (von शत्रु) 1) adj. *feindlich:* बल R. 5,6,32. यशस् Raǵa. 4,42. — 2) m. *Feind* gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38. AK. 2,8,2,11. Trik. 3,3,267. H. 728. an. 3,713. fg. (त्रो zu lesen). Mân. v. 52. Hall. 2,301. MBh. 8,1523. Çiç. 9,44. Bhatt. 5,81. — 3) n. *a) Feindschaft. — b) Feindesschaar* H. an. Med.

शात्रुंतपि (von शत्रुंतप) m. pl. N. pr. einer Völkerschaft oder Genossenschaft gaṇa दामन्यादि zu P. 5,3,116.

शात्रुंतपेय m. ein *Fürst der* Çatrumâtapi ebend.

शाद् (von शद्) oxyt. Uṇâdis. 4,97. = शद् P. 3,1,140. 1) *das Abfallen;* s. वर्षा°. — 2) *Gras* AK. 3,4,16,92. H. an. 2,235. Med. d. 16. Hall. 5,14. °रुहित AK. 2,1,10. H. 935. अव शादेषु (= रसेषु Comm.) गच्छति der Soma ṚV. 9,15,6. शादं दद्भिरर्वतो दत्तमूलैः (प्रोणामि) VS. 25,1. — 3) *Sumpf* AK. 1,2,3,9. 3,4,16,92. H. 1090. H. an. Med. Hall. 3,36.

शादन (von शद्) n. *das Ausfallen* Vîsn. 7,10. 11,19.

शाद्वल (von शाद्) P. 4,2,80. adj. *mit Gras bewachsen* AK. 2,1,10. H. 935. Hall. 2,4. n. sg. und pl. *Grasplatz, Rasen* Pân. Gaṇ. 3,4. Jâǵñ. 3,7. MBh. 3,11036. 11611. 5,3833. 13,3838. Harîv. 583. R. 2,30,14 (16 Gorr.). 91,29 (100,26 Gorr.). 3,50,14. 73,29. 78,29. 4,60,12. 5,4,4. 9,5. 55,1. 6,15,6. Kâm. Nîtis. 14,30. Raǵa. 2,17. Vîra. 57,18. Spr. 2988. 5391. Kir. 5,37. Varâh. Bṛ. S. 45,7. 51,2. 88,20. 89,1. 93,24. Kathâs. 65,7. 111,4. Râǵa-Tar. 2,167. 3,225. 6,120. Bhâg. P. 10,20,30. शति° 18,5. am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 4,2015. Harîv. 8128. R. Gorr. 2,65,16. 4,44,36. Kir. 7,26. Für das adj. führt Aufrecht (Uṇâdis. Ind.) folgende Stellen auf: शाद्वले धरणीतले Bhavishjottarap. 122, 42. नक्ति कोटरमंस्थे ऽग्नौ तरुर्भवति शाद्वलः so v. a. *belaubt* Kaushîtak. शाद्वलैः कोमलतृणैः पूजयेच्च सकौतुकम् *grün, frisch* Kâṭhâs. 32,50. das Wort wird häufig fälschlich शाद्वल (auch wohl शाद्वल) geschrieben.

शाद्वलवत् (von शाद्वल) adj. *mit Rasen bedeckt:* देश Pân. Gaṇ. 3,10 (mit ङ geschr.).

शाद्वलाभ (शाद्वल + आभा) m. *ein best. (grünes) Insect* Soṇ. 2,293,4.

शाद्वलित (von शाद्वल) n. *das Bedecktsein mit Rasen:* न यत्र चण्डांशुकरा विषोल्बणा भुवो रसं शाद्वलितं च गृह्णते Bhâg. P. 10,18,6.

शाद्वलिन् (wie oben) adj. *mit Rasen bedeckt:* भूमि R. 4,5,19.

शाधि und शार्धी f. gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45.

शान् शीशांसति und °ते° = शा *wetzen, schärfen* Dhâtup. 23,26. P. 3,1,6. Vop. 8,103. 132. AV. Pair. 1,37, Comm.

शान 1) m. *a)* MBh. 13,7175 fehlerhaft für 1. शाण. — 2) = 2. शाण *Schleifstein* Bhân. zu AK. nach ÇKDa. — 2) f. ई *Koloquinthe* Çabdâm. im ÇKDa.

शानि f. Sidd. K. 247,*b*, 15.

शानित s. शाणित.

शानिल m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 57,24.

शानैश्चर (von शनैश्चर) adj. zu *Saturn —, zu seinem Tage* (*Samstag*) *in Beziehung stehend, an einem solchen Tage erfolgend:* यक्ष्मन् Vet. in LA. (III) 13,9.

1. शान्त (partic. von 2. शम्) 1) adj. = शमित P. 7,2,27. AK. 3,2,47. *a) beruhigt, zur inneren Ruhe gelangt, frei von aller Leidenschaft* H. 811. an. 2,199. Med. t. 63 (शमान्वित mit ÇKDa. zu lesen). Hall. 2, 189. 244. Bhâg. Âr. Up. 4,4,23 (vgl. Vaiśîntas. (Allah.) No. 14. Sarvadarçanas. 59,21. आत्त Çat. Br.). Maitrâyaṇ. 2,4. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,149. R. 2,103,22. Raǵa. 12,20. Spr. (II) 1399. 4180. 4772. (I) 2226 (घ°). Kathâs. 24,105. Weber, Rikat. Up. 356. Bhâg. P. 1,2,26. 3,27,6. 31, 24 (घ°). 4,6,24. 9,19,29. °हृदय Kâṭhân. Up. 8,8,2. शान्तात्मन् Maitrâyaṇ. 5,1. M. 1,32. R. 5,81,27. Varâh. Bṛ. S. 101,3. °मनस् 60,19. MBh. 5, 7379. Çiç. 102. °चेतस् Spr. 3157. चित्त Verz. d. Oxf. H. 229,*b*, 29. 31. 40. Kathâs. 29,82. Bhâg. P. 3,32,42. मति 1,15,28. *sanft* von einer Person Pañkat. 1,14,69. *ruhig, still:* मृग R. Gorr. 2,99,3. Raǵa. 14,79. Nacht Âçv. Gṛhy. 4,6,6. Ort, Zustand u. s. w. Maitrâyaṇ. 6,36. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,122. 126. Spr. (II) 2065. R. 4,44,21. Çiç. 15. 95. Kathâs. 5,139. 21,26. शान्ते वर्त्मनि संस्थिताः Harîv. 1030. Bhâg. P. 3,26, 21. Siddhânjan. 38 (neben घोर und मूढ). VP. 1,3,44. 49. 7,13. श्वानन्द Bhâg. P. 2,2,21. 3,2,15. 25,38. तोय MBh. 3,2811. Spr. 2976. Harîv. 2981. *fg.* 2986. तेजस् Spr. (II) 2789. *mild:* Rede Çat. Br. 1,1,4,12 (superl.). 7,3,3. 4,3. Spr. 2519, v. l. Geruch Bhâg. P. 3,26,45. वाणी 5, 2,3. 8,22. Wind Çiç. 86. रस (in der Poesie) Trik. 1,1,126. H. 293. H. an. Med. Hall. 1,92. Sin. D. 238. न यत्र दुःखं न सुखं न चिन्ता न द्वेषरागौ न च काचिदिच्छा। रसः स शान्तः कथितो मुनीन्द्रैः सर्वेषु भावेषु शम-

प्रमाणः ॥ 92, 18. fg. R. 1, 4, 7 (3, 46 Gorr.). Prab. 2, 16. Râja-Tar. 1, 23. *weich, schmiegsam:* °शर्करावालुकाः Harîv. 9005, v. l. Im Ritual und der Auguralkunde (Gegens. दीप्त) *zahm, mild, freundlich* (im Gegensatz zu *wild, der Ordnung widerstrebend*); *faustus* AV. 19, 9, 1. 2. °वत्त Kauç. 13. 53. fg. °शाला 21. पृथिवी Âçv. Gṛhj. 2, 4, 14. घासो वै शान्ताः शान्ताभिः मुचं शमयति TS. 5, 1, 8, 1. दिश् TBr. 2, 1, 2, 5. Ait. Br. 3, 8. 8, 1. घशान्ततनु 24. शान्तैयोनि TBr. 1, 2, 8, 5. शान्तैः स्तुवीत Pañcav. Br. 21, 2, 9. °रवाः पतिमृगसंघाः Vaitân. Bṛhm. S. 21, 16. °पतिमृगराविता दिशः 24, 12. 30, 4. 7. 45, 16. 47, 27. °वेष्टाविरावित् 53, 61. 87, 1. घाशा, दिश् 36, 2. 53, 109. 86, 12 (vgl. Ind. St. 10, 202). MBh. 3, 16875. Verz. d. B. H. No. 897. — *b) erloschen:* घग्नि Çat. Br. 14, 7, 2, 5. 6. शान्तार्चिरिव पावकः MBh. 1, 5933. 6817. R. 5, 21, 13. °रश्मिरिवादित्यः 6, 70, 30. ज्वरज्वालाः Spr. (II) 1130. 1816. Kir. 17, 16. Râja-Tar. 3, 151. Bhâg. P. 4, 28, 44. 9, 6, 55. — *c) nachgelassen, aufgehört, gewichen* Hall. 4, 32. वाच् *so v. a. verstummt* Çat. Br. 14, 7, 1, 6. Kathâs. 22, 69. Spr. 2691. 3317. Bhâg. P. 4, 4, 24. °ज्वर MBh. 3, 2008. R. 5, 28, 18. °रघतोषपरिश्रम Ragh. 1, 58. 5, 47. Kumâras. 3, 42. Manu. 37. Suçr. 1, 131, 6. Çiç. 4, 22. Kathâs. 26, 32. 36, 84. 47, 54. 70, 72. Râja-Tar. 1, 18 (शान्तशोष° zu lesen). 92. 102. 106. 3, 192. 420. 6, 310. Spr. (II) 1810. Daçak. 73, 5. Verz. d. Oxf. H. 55, *a*, 1 v. u. 379, *a*, 14. Bhâg. P. 3, 21, 27. 4, 2, 2. 7, 33. Hit. 80, 21. — *d)* von Geschossen *so v. a. unwirksam* —, *unschädlich gemacht* MBh. 1, 212. R. 1, 56, 5 (57, 5 Gorr.). 14 (57, 13 Gorr.). — *e)* शान्तं पापम् (auch wiederholt) *abgewehrt sei das Uebel*, ein Ausruf, mit dem man ein Unheil, das ein ausgesprochenes Wort bewirken könnte, abwehren will, R. 2, 74, 19. Mṛicch. 13, 1. 18, 18. 162, 2. Çiç. 67, 13. Milav. 69, 10. Daçak. 93, 7. im Prâkrit Mṛicch. 121, 15. 173, 1. Mudr. 24, 5. 25, 18. धिक् शान्तम् *so v. a. behüte Gott! bei Leibe nicht!* Mṛicch. 109, 21. शान्तम् allein Uttarân. 6, 14 (10, 1). 55, 4 (72, 2). 88, 14 (114, 1). शान्तमेतन्मरुमन्य मा स्मैवं भाषथाः पुनः Kathâs. 22, 215. एकदा तत्र रात्रौ च स नृशंसश्चकार यत् । कथयेदाधतः शान्तमवाच्यमपि कथ्यते ॥ 77, 44. ईदृशः स विदेशस्थः शान्तं मा भूत्कदा च न 101, 242. शान्तं दूतस्य विप्रश्च न वध्य इति जल्पता 46, 166. न भोक्ष्ये ऽहं नागान् शान्तमतः परम् *so v. a. so wahr mir Gott helfen möge!* 90, 195. dies ist das indecl. शान्तं पापेन Mud. — *f) zur Ruhe gekommen, — gebracht so v. a. zum Tode befördert:* सुप्रतीकेन नागेन म हि शान्तः MBh. 1, 531. 7533. शान्तारि R. 4, 27, 5. *verstorben:* शान्ते पितरि *nach dem Tode des Vaters* Ragh. 18, 7. Râja-Tar. 2, 56. 4, 332. 402. गोनन्दसंततिरजायत तत्र शान्ता *starb aus* 3, 527. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sohnes des Tages MBh. 1, 2567. — *b)* eines Sohnes des Manu Tâmasa Mân. P. 74, 60. vielleicht auch 75, 45. — *c)* eines Devaputra Lalit. 401. — *d)* eines Sohnes des Çambara Harîv. 9254. — 3) f. घा N. pr. *a)* einer Tochter Daçaratha's, Adoptivtochter Lomapâda's (Romapâda's) und Gattin Ṛishjaçṛiṅga's, MBh. 12, 8609. Harîv. 1697. 8673. fgg. R. 1, 8, 16. 25. 10, 3. Uttarân. 4, 16 (7, 7). 80, 3 (103, 3). 128, 12 (173, 9). Bhâg. P. 9, 23, 7. — *b)* einer Göttin, die die Befehle des 7ten Arhant's ausführt, H. 44. — 4) n. *a) ein ruhiges Wesen, eine ruhige Natur* Bhâg. P. 4, 30, 4. — *b)* N. pr. eines Varsha in Gambudvîpa Bhâg. P. 5, 20, 3. — *c)* N. pr. eines Tîrtha Wilson, Sel. Works 2, 19. fg. — 5) indecl. s. u. 1) *c*).

2. शान्त adj. fehlerhaft für शात *dünn, schmächtig* (auch in der Bed. *geweiht, geschärft*): उदर (= कृश Comm.) R. 2, 9, 33. Harîv. 7890 nach der Lesart der neueren Ausg. Vaitân. Bṛhm. S. 58, 50, v. l. शितशान्तौ कृशे तीक्ष्णे H. an. 2, 200.

शान्तक (wohl von शान्तय्) adj. *zur Ruhe bringend, beschwichtigend* in रोग°.

शान्तकर्णा (श्री°) m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12, 1, 21.

शान्तगुण adj. *dessen Vorzüge dahin sind*, euphemistisch *so v. a. gestorben* R. 2, 65, 24.

शान्तता (von 1. शान्त) f. *Ruhe —, Leidenschaftlosigkeit des Gemüths:* ऋषीणामप्यशान्तता Kathâs. 20, 132.

शान्तव (wie oben) n. dass. Maitrâyaṇ. 6, 29. Bhâg. P. 3, 26, 22. शान्तघोरविमूढत्व 36.

शांतनव (von शंतनु 1) adj. (f. ई) von Çaṁtanu *verfasst:* टीका Verz. d. Oxf. H. 46, *a*, 13. — 2) m. patron. Bhîshma's Taitt. 2, 8, 12. MBh. 1, 2261. 2420. 4068. 5, 5986. Wilson, Sel. Works 2, 202. — 3) m. N. pr. des Verfassers der Phiṭsûtra (s. d. Ausg. von Kielhorn).

शांतनु s. शंतनु.

शान्तपुर n. N. pr. einer *Stadt* Wilson, Sel. Works 2, 23. °पुरी Tîrthân.

शान्तमति m. N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 265, 13. fg. — Vgl. शान्तमुमति.

शान्तय् (von 1. शान्त), °यति *Jmd beruhigen* Çiç. Cn. 94, 10.

शान्तरथ m. N. pr. eines Sohnes des Dharmasârathi Bhâg. P. 9, 17, 12.

शान्तरसनाटक n. Titel eines *Dramas* Verz. d. Oxf. H. 227, No. 357.

शान्तरूप adj. *Ruhe an den Tag legend* Spr. (II) 2720.

शान्तश्री m. Beiw. Prakâṇḍadeva's Wilson, Sel. Works 2, 23.

शान्तमुमति m. N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 248, 14. — Vgl. शान्तमति.

शान्तसूरि m. N. pr. eines Scholiasten Ind. St. 1, 473. — Vgl. शान्तिसूरि.

शान्तसेन m. N. pr. eines Sohnes des Subâhu Bhâg. P. 10, 90, 38.

शान्तात्मकर m. N. pr. eines Sohnes des Çambara Harîv. 9254.

शांति (von 2. शम्) 1) f. *a) Ruhe des Gemüths, Seelenruhe, innerer Friede* AK. 3, 3, 3. Taitt. 3, 3, 186. H. 304. an. 2, 206. Man. 1. 62. शान्तिमत्यन्तमेति Kâṭhop. 1, 7. Ind. St. 1, 427. 2, 98. Bhag. 2, 66. दैवेनास्तु वै शान्तिस्तव वा मम वा MBh. 3, 8037. शान्तिं न च गच्छति 15708. °गत 12, 6863. न लेभे शान्तिमात्मनः R. 1, 64, 16. न मे शान्तिर्भविष्यति 2, 99, 8. fgg. °परायण R. Gorr. 1, 76, 22. 4, 23, 7. Kumâras. 4, 17. Ragh. 7, 68. Çiç. 95, v. l. Vikr. 24. Mâlatîm. 87, 6. Spr. (II) 1287. 1705. 2753. 2977. °खड्गः को वस्य (I) 2975. °तुल्यं तपो नास्ति 3071. Vaitân. Bṛhm. S. 104, 26. Râja-Tar. 4, 337. Wilson, Sel. Works 1, 163. Prab. 5, 5. Bhâg. P. 3, 29, 23. 4, 7, 54. 20, 10, 9, 22, 13. Pañcav. 89, 5. 90, 4. शान्तिः करुणोया Hit. 36, 5. शान्तिमिच्छन्ति साधवः Spr. (II) 4651. — *b) das Erlöschen, Nachlassen, Aufhören, Sichlegen; das Ausbleiben einer üblen Wirkung, eine darauf gerichtete Cerimonie:* शान्तिमुपागमत् (घग्निः) R. 3, 9, 24. ग्लपात° Ind. St. 2, 101. भय° MBh. 1, 1640. नयनसलिलं योषितां शान्तिं नेयम् Mṛicch. 40. घघरविघात° Ragh. 11, 1. निदाघताप° Mâlatîm. 128, 3. Spr. (II) 340. भवबीज° 816. घधुना च स शापो वः सर्वेषां शान्तिमागतः Kathâs. 25, 260. Râja-Tar. 1, 166. des Hungers Ait. Br. 5, 27. Spr. 3335. Bhâg. P. 10, 23, 1.

रूपम् Spr. (II) 1992. व्याधेः (I) 3041. विस्फोट° 2276. तृष्णा° 2784. तोयविप्रव° Rāǵa-Tar. 1,159. 375. 3,461. 4,715. शीत° 6,361. घनं नीयते शान्तिम् 4,681. सापच्छान्ति 6,233. सर्वोपद्रव° Paṅkat. 3,14,15. जन्मग्रहादि° Verz. d. Oxf. H. 4, No. 30. मोह° 227, a, 16. शान्तिमुपैति पापम् Vaṇiṇ. Bṛn. S. 46,46. 24. AV. 19,9,3. fgg. VS. 3,43. 36,17. TS. 1,5,8,4. 2,5, 8,2. यथो ऽवैतान्ति शान्त्यै TBr. 1,1,2,1. 2,1,2,3. Ait. Br. 1,13.16. वज्रस्य 3, 8. 24. शान्तिर्वा आपः 7,5. यथा शान्तिः ein Spruch 8,6. 8. Çat. Br. 9,2,2,37. यद्दुतानां कर्मणाम् Śaṅkh. Br. 5,1. 2. 10. शान्तिं कृत्वा गुरुमभिवादयते Gobh. 3,2,29. शान्त्युदक Kauç. 9.17. 44. 80. Çiç. 31,11. Verz. d. Oxf. H. 94,b,15. °पात्र Çiṅkh. Gṛhj. 6,2. 3. 6. — R. 2,25,27. शान्तयश प्रवर्तन्तां समन्ततः 7,91,16. 1,11,14 (30 Gorr.). MBh. 14,2411. fg. °शतके: Spr. (II) 3217, v. l. Vaṇiṇ. Bṛn. S. 2, S. 3, Z. 17. खप्ननोत्पात° S. 7, Z. 4. यद्यपि शान्तिभिः शमयेत्पुरोधाः 43,61. नीराजनमंशिता 44,2. कुर्याच्छान्तिं तुरंगाणाम् 6.21. नृपः शान्तिं प्रयुञ्जीत 46,2. 5. 17. 54. 80. 48,2. पौषी 83. 97,17. 98,6. 104,8. Verz. d. Oxf. H. 42,b,10. 86,b,42. fgg. 97,b,34. *das Vermögen sich von allem Widerwärtigen zu befreien* 50,b,8. 100,a,40. 105,a,11 und N. 4 (vgl. Weber, Rāmat. Up. 303). °व्रत 34,a,25. fg. 58,a, 43. — c) *Friede, Heil, Segen, Wohlergehen;* = मङ्गल, भद्र Taik. H. an. Med. MBh. 1, 4515. fg. Kathās. 25, 92. त्रयाणामपि लोकानां तदा शान्तिर्भविष्यति R. 3,18,46. 69,10. Vaṇiṇ. Bṛn. S. 11,46. 30,15. दत्त्वा शान्तिं मरीचेः 48,21. नृपदेशादिशान्तिस्तु प्रशस्तिरभिधीयते Sāh. D. 405. लोकानां शान्तिः N. eines Sâman Ind. St. 3,235,b. वादयन्ति तदा शान्तिम् *Heil —, Wohlergehen wünschen* R. 2,69,4. उवाच शान्तिं मम चापि 5,69.28. ऋषिः शान्तिमनुत्तमाम् Harîv. 13732. मधुरमुवाच शान्तिपुरुषम् R. Gorr. 2,20, 47. — d) *Vernichtung, das zu Grunde Gehen:* eines Feindes Kumâras. 2,51. Kathās. 20,69. Mâlav. P. 108,8. तस्य शान्तिं करिष्यामि Bhâg. P. 7,4,36. *das Eingehen zur ewigen Ruhe, Sterben, Tod:* शान्तिं निःसंततिर्ययौ Râǵa-Tar. 3,124. शान्तिं प्रपेदे 4,134. शान्तिमागतः 702. — e) = शान्तिकल्प Bhâg. P. 12,7,4. — f) *die Seelenruhe* u. s. w. personif. Harîv. 14036. eine Tochter der Çraddhâ Padm. 17,13. 43,3. fgg. Gattin Atharvan's Bhâg. P. 3,24,24. eine Tochter Daksha's und Gattin Dharma's 4,1,49. Mârk. P. 50,21. VP. 54. — 2) m. N. pr. a) eines Sohnes des Indra MBh. 1,7304. — b) Indra's im 10ten Manvantara VP. 3,2,25. Mârk. P. 94,13. — c) eines Tushita, Sohnes des Vishṇu von der Dakshiṇâ, Bhâg. P. 4,1,7. — d) eines Sohnes des Kṛshṇa von der Kâlindî Bhâg. P. 10,61,14. — e) eines Ṛshi MBh. 12,12789. eines Sohnes des Aṅgiras 13,4147. eines Schülers des Bhûti Mârk. P. 99,11. — f) eines Sohnes des Nîla und Vaters des Suçânti VP. 453. Bhâg. P. 9,21,30. fg. — g) des 16ten Arhant's der gegenwartigen Avasarpiṇî und 8ten Kakravartin in Bhârata H. 28. 693. H. an. Çatr. 1,2. 382; vgl. °नाथ. — h) eines Lehrers (mit vollem Namen रत्नाकर°) Tirthak. 234. 239. 243. 325. 328. — Vgl. यज्ञ°, मख° (Vaṇiṇ. Bṛn. S. 46,81 °शान्तौ), मु°.

शान्तिक (von शान्ति) 1) adj. *zur Abwehr übler Folgen dienend, u. eine darauf gerichtete Handlung* H. ç. 109. MBh. 13,7081. Kâm. Nîtis. 4,32. Spr. (II) 3217. Vaṇiṇ. Bṛn. S. 44,20. Mârk. P. 50,57. 102,11. 17. 118, 45. Verz. d. Oxf. H. 86,b,29. fg. 92,a,26. 94,b,14. 97,b,8. 19. Çatr. 14, 245. 285. Z. d. d. m. G. 14,371,16. Kull. zu M. 9,322. als Titel einer Schrift Verz. d. Tüb. H. 13. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes Vaṇiṇ. Bṛn. S. 14,20. Mârk. P. 58,34.

शान्तिकर 1) adj. *Frieden —, Heil —, Segen bringend* Vaṇiṇ. Bṛn. S. 47,9. 58,35. अ° *Unheil bringend* Bhâg. P. 5,22,16. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathās. 21,107. 23,91.

शान्तिकरण n. *das Abwenden übler Folgen* Kâty. Çr. 25,7,53.

शान्तिकर्मन् n. *eine Handlung zur Abwehr übler Folgen* Âçv. Gṛhj. 4, 6,1. Ind. St. 1,16,10. fg. Verz. d. Oxf. H. 97,b,19. Verz. d. B. H. No. 1243.

शान्तिकल्प m. N. des 8ten Kalpa des AV. Ind. St. 1,297. 3,279. Weber, Nax. 2,367. fgg. 390. fgg. Verz. d. B. H. No. 363. 366. Verz. d. Oxf. H. 55,b,38. fg. Schol. zu Bhâg. P. 12,7,4.

शान्तिकृत् adj. *durch Aufsagen von Sprüchen u. s. w. ein Uebel entfernend, — Jmd eine Erleichterung verschaffend* MBh. 14,2243.

शान्तिगुप्त m. N. pr. eines Mannes Tirthak. 58. 263. 265.

शान्तिगुरु m. desgl. Hall 199.

शान्तिगृह n. *das Gemach, in welchem die Cerimonie zur Abwehr übler Folgen vollzogen wird,* H. 997. Vaṇiṇ. Bṛn. S. 44, s. 6. °क n. H. 997, Schol. — Vgl. शान्तिसदन्.

शान्तिचन्द्रिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 211,b,1 v. u.

शान्तिचरित्रनाटक n. Titel eines Dramas Ind. St. 1,466.

शान्तिद adj. *Heil —, Segen bringend* Vaṇiṇ. Bṛn. S. 58,33. fg.

शान्तिदीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 292,b,20.

शान्तिदेव 1) m. N. pr. eines Mannes Tirthak. 5. 146. 162. fg. 327. Wassiljew 208. 290. 310. 314. 326. Schiefner, Lebensb. 310 (80). — 2) f. आ N. pr. einer Tochter Devaka's und einer der Gemahlinnen Vasudeva's Harîv. 1948. 1956. 2026. VP. 4,14,5. Bhâg. P. 9,24,22. 49.

शान्तिनाथ m. = शान्ति 2) g) H. 693. Çatr. 1,500. °पुराण Mack. Coll. 1,152.

शान्तिपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1245.

शान्तिपर्वन् n. Titel des 12ten Parvan im MBh.

शान्तिपुर n. N. pr. einer *Stadt* Wilson, Sel. Works 1,152. 156. Kamaṇḍ. 31,5.

शान्तिपुराण n. Titel eines Purâṇa der Ǵaina Verz. d. Oxf. H. 372, b, No. 207. Vgl. लघु° 266.

शान्तिप्रभ m. N. pr. eines Mannes Tirthak. 198. 204. Wassiljew 79.

शान्तिमयूख m. Titel eines Abschnittes in einem grösseren, aus 12 Abschnitten (मयूख) bestehenden Werkes des Nîlakaṇṭha Verz. d. B. H. No. 1243. Mack. Coll. 1,33.

शान्तिरक्षित m. N. pr. eines Mannes Tirthak. 204. 212. fg. 219. Wassiljew 275. 319. 324.

शान्तिरत्न n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1244. Verz. d. Oxf. H. 279,b,16.

शान्तिवाचन n. und adj. (= शान्तिवाचनं प्रयोजनमस्य) gaṇa पुण्याहवाचनादि zu P. 5,1,111, Vârtt. 3.

शान्तिवाहन m. N. pr. eines Fürsten Tirthak. 75. 304. Wassiljew 49. 54.

शान्तिशतक n. *hundert über Seelenruhe handelnde Strophen,* Titel einer dem Çiblana oder Sihlana zugeschriebenen Sammlung von Sprüchen, die öfters herausgegeben ist; vgl. Haas. Anth. 410, Çl. 3.

शान्तिशील m. N. pr. eines Mannes Ver. in LA. (III) 2,2.

शान्तिसत्रन् n. = शान्तिगृह् Vaitân. Bpn. S. 44,4.

शान्तिसर्वस्व n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,b,16.

शान्तिसूक्त n. Bez. einer best. *Hymne* Verz. d. Oxf. H. 398,a, No. 144.

शान्तिसूरि m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 377,b,1. — Vgl. शान्तसूरि.

शान्तिसोम m. ein Mannsname Kathâs. 21,131. 23,91. 34,116. 105,84. 110,75.

शान्तिस्तव s. बृहच्छान्तिस्तव.

शान्तिहोम m. *Sühnopfer* M. 4,150. MBh. 13,681. 5014.

शान्वति f. *Clerodendrum Siphonanthus* Roxb. Çabdâs. im ÇKDa. शान्वति v. l. ebend.

1. शाप (von शप्) m. am Ende eines adj. comp. f आ. 1) *Schwur* AK. 3,4,24,239. Taik. 3,3,380. H. an. 2,301. Med. p. 12. — 2) *Fluch* AK. 3,3,39. 3,4,2,25. H. 272. H. an. Med. Halâj. 1,149. MBh. 3,1869. (शापः) शापदग्धं रक्षसो प्राणान् शापा इव तपस्विनाम् R. 3,31,17. Hcat. 1,78. 11,14. Megh. 1. शापस्यान्ते 89. शापान्त 109. Çiç. 111,5. Kathâs. 55,226. कृतयोः (obj.) Çuk. in LA. (III) 32,19. Brahma-P. ebend. 53,9. Bhâg. P. 1,19,14. 3,4,39. 4,2,20. वरशापौ 14,27. Gegens. अनुग्रह 6,17,20. 29. भक्तशापा Verz. d. Oxf. H. 72,a,29. शापा उक्ता महात्मभिः । नाक्रामत्त तपोः MBh. 1,7666. fg. दत्त्वा शापम् 3,1867. R. 1,60,6. Kathâs. 5,27. 17,146. 20,133. Mârk. P. 63,16. Brahma-P. in LA. (III) 50,16. Pañcat. 45,6. 186,14. ददौ शापं लोमशं प्रति R. 4,9,54. शापं दास्यसि ते (gen.) Kathâs. 41,19. Mârk. P. 63,20. 74,28. fg. 112,20. मयि विपुलमदाक्षीत् शापं मुदुःसहम् Bhâg. P. 4,27,22. न प्रयच्छामि शापं ते Mârk. P. 74,20. एवं शापं मयि न्यस्य R. 2,64,55. तस्मै शापमादिशत् Kathâs. 17,23. गिरित्राय विसृज्य शापम् Bhâg. P. 4,2,19. यो वः शापो मयैव निमितः 3,16,26. एवं शापमहं लब्धा Mârk. P. 74,42. गुरुशापपरिक्षत R. 1,60,24. कृत्वा °समायुक्तान्पुत्रान् 62,18. तीर्णाः शापो मयैव सः Kathâs. 22,144. शापान्मोक्ष्यसि मत्कृतात् MBh. 3,2613. 2336. Hcat. 5,36. निगृहीत° 89. तीर्ण° Kathâs. 25,263. विनिवृत्त° 59,170. शापस्य शान्तिः Râm-Tar. 1,166. °भूत *in Folge eines Fluchs zum Papagei geworden* Kathâs. 59,86. — Vgl. वि°.

2. शाप m. *was fliessendes Wasser mit sich führt: Trift, Geflösstes:* शापं (= सभिशापम् Sây.) सिन्धूनामकृणोदशस्तीः ṚV. 7,18,5. प्रतीपं शापं नयौ वहन्ति 10,28,4. वृष्टे शापं नदीरिवेक् स्थातिं समावरीवृतान् AV. 3,24,3. — Vgl. शापेट.

शापटिक m. *Pfau* Çabdârthan. bei Wilson; शापठिक in der 2ten Aufl.

शापनाशन m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,a,25.

शापायन m. patron. von शप (wenn ein Âtreja gemeint ist) gaṇa यस्कादि zu P. 4,1,110.

शापास्त्र m. *ein Ṛshi (dessen Wurfgeschoss der Fluch ist)* Taik. 2,7,15.

शापेट m. *angeschwemmtes Schilf* und dgl.: माव्याया दक्षिणावर्ते शापेटं निखनेत् Kaṇḍ. 18. — Vgl. 2. शाप.

शापेय m. N. pr. eines Lehrers gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,264.

शापेयिन् m. pl. *die Anhänger des* Çâpeja gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. sg. N. pr. eines Schülers des Jâgñavalkja Vishṇu-P. in Verz. d. Oxf. H. 55,a,33.

शाफारकै m. *ein Fänger von* Çapharа P. 4,4,25, Schol.

शाफालि m. patron. von शफाल Prâtiçâkhj. in Verz. d. B. H. 58,13.

शाफेय m. pl. N. pr. einer Schule Ind. St. 3,262. 264. — Vgl. शापेय und शाप्येय.

शाम्बर (von शम्बर) 1) adj. *boshaft* u. s. w. (= घातुक) H. an. 3,609. — 2) m. a) patron. von शम्बर gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. N. pr. eines Joga-Lehrers Hall 16. शारद nach andern Autorr. — b) *Symplocos racemosa* Roxb. AK. 2,4,2,13. H. 1150. H. an. Med. r. 226. fg. Ratnam. 152. — c) = पाप und अपराध H. an. Med. — d) Titel einer Schrift des Prâpakarshaṇa Verz. d. Oxf. H. 374,a, No. 295. = शिवकृततत्त्वविशेष und शम्बरस्वामिकृतभाष्यविशेष (vgl. शाम्बरभाष्य) ÇKDa. — 3) f. ई a) *Carpopogon pruriens* Roxb. H. an. Med. — b) *die Sprache der* Çabara Sin. D. 173,9. Mâlân. Ekâl. V. Mudr. ST. 2,37. Verz. d. Oxf. H. 181,a,29. — 4) n. a) *Kupfer* H. 1040. — b) *Finsterniss* H. an. — 5) *eine Art Sandel* Rîâs. im ÇKDa. u. शैलगन्ध. — Häufig शाबर geschrieben.

शाम्बरम्बुक adj. von शम्बरम्बु P. 4,2,119, Schol.

शाम्बरभाष्य n. Titel eines *Commentars* des Çabarasvâmin Verz. d. Oxf. H. 163,a,9. Colebr. Misc. Ess. 1,297. Hall 169. °वार्तिक 170. — Vgl. शाबरभाष्य.

शाम्बरभेदाभ्य n. *Kupfer* ÇKDa. und Wilson nach H. 1040; vgl. jedoch die Scholien.

शाम्बरायणी m. patron. von शाम्बर gaṇa कारितादि zu P. 4,1,100.

शाम्बरि m. N. pr. eines Mannes Târan. 88. 108. शाम्बरि gedr.

शाम्बरोत्सव m. Bez. *eines best. Festes bei den* Mlekkha Kilikî-P., Uttaratantra 60 im ÇKDa.

शाम्बलीय (von शम्बल, adj. (धनुर्वेदेषु) gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

शाम्बल्य (wie eben) f. n. *Gemisch, Durcheinander:* भूत° Bhâg. P. 10,20,24. — 2) f. ई scheint *eine Spassmacherin, Sängerin* oder dgl. zu bezeichnen VS. 30,20. शाबुल्यी TS. 3,4,8,15.

शाम्बस्त m. N. pr. eines Sohnes des Juvanâçva, der die Stadt शाम्बस्ती grundete, Bhâg. P. 9,6,21. शाम्ब° Burnouf. — Vgl. शाम्बस्त.

शाम्बस्ति m. patron. von शाम्बस्त Bhâg. P. 9,6,21. शाम्ब° Burnouf.

शाम्बुल्यी s. u. शाम्बल्य 2).

शाब्द (von शब्द) 1) adj. (f. ई) *auf Tönen —, auf Worten beruhend, in Worte gefasst, durch Worte vermittelt, auf mündliche Mittheilung sich stützend* Çat. Br. 14,8,8,10. Kâç. 9,2,8. Z. d. d. m. G. 7,306. Sarvadarçanas. 114,2. Schol. zu Gaim. 1,1,4. Kusum. 21,11. शाब्दी शाकाङ्क्षा शब्देनैव प्रपूर्यते 35,11 (= Sin. D. 15,8). °बोध Baiseshik. 80. Schol. zu Kap. 1,102. Gegens. आर्थ Sin. D. 280,6. 735. Verz. d. Oxf. H. 219,b, No. 524. H. 259, Schol. ब्रह्मन् *das in Worte gefasste* Brahman d. i. *der* Veda (vgl. शब्दब्रह्मन्) Bhâg. P. 2,2,2. 4,10. 3,21,8. 11,3,21. °ब्रह्मन् Verz. d. Oxf. H. 178,a, No. 404 wohl fehlerhaft für शब्द°. — 2) m. *Wortgelehrter, Grammatiker* ṚV. Prât. 12,8. pl. Bez. einer Secte Hall in der Einl. zu Vishṇus. 33.

शाब्दत्व n. nom. abstr. von शाब्द 1) Sin. D. 673.

शाब्दिकै (von शब्द, adj. 1) *einen Laut von sich gebend* P. 4,4,34. — 2) *mit den Wörtern vertraut, Grammatiker, Lexicograph* Uṇâdis. zu Unâdis. 4,97. H. 111, Schol. Hit. 94. 276. Verz. d. Oxf. H. 133,a, No. 254. 178,b,7. 182,b, No. 415. fg. 188,a,13. ब° b,23. No. 429. शाब्दिकां-

भूषण n. Titel einer Grammatik Colebr. Misc. Ess. 2,49.

शामन (vom caus. von 2. शम्) 1) n. *killing, slaughter; tranquillity, peace* Wilson nach Çabdakalpad. Vgl. शमन und Spr. (II) 3243. — 2) f. ई *der Osten* Rigan. im ÇKDa.

शामम् = शमम् absol. von शम् P. 6,4,93.

शार्मी f. wohl N. einer Pflanze, die gegen Aussatz dient, AV. 1,24,4.

शामाक m. nachlässig für श्यामाक Kauç. H. 11.

शामायन m. patron.; pl. Pravarâdhjâ. in Verz. d. B. H. 56,12.

शामायनीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,238.

शौमिक m. patron. von शमिकं गण विदादि zu P. 4,1,104.

शामित्र (von 1. शमितृ) 1) adj. *zum Zerleger —, zum Zurichter des Opferthieres in Beziehung stehend:* °कर्मन् *das Amt des Zerlegers* Bhâg. P. 1,16,7. — 2) m. (sc. अग्नि) *das Feuer, auf welchem das Opferfleisch gekocht wird,* Âçv. Çr. 4,12,5. 5,3,16. Gobh. 1,11,2. 7. 10. Kâty. Çr. 5, 2,3. 6,13. 7,14. 9,3. 5,4,14. 25,10,16. 13,28. Çâṅkh. Çr. 6,12,9. Lâṭj. 2,2,12. — 3) n. *a) der Ort* oder *die Einrichtung für dieses Feuer* Kâty. Çr. 6,5,12. 13. Lâṭj. 10,15,9. — *b) das Amt des Zerlegers* MBh. 3,8302. शामित्रं कर् 1,7275. 5,4791. 4798. Hariv. 12215. 13230. — *c) Schlachtbank* Mṛicch. 161,12.

शौमील adj. (f. ई) *vom Holze der* Çamî *stammend, daraus gemacht* P. 4,3,142. भस्मन्, सुच् Schol. Davon ein neues adj. शौमील in der Bed. *davon stammend, daraus gemacht* P. 4,3,155, Schol.

शामीवर्त (von शमीवत्) m. pl. N. pr. eines Clans; शामीवती (f. zu शामीवत्य) *eine Fürstin der* Çâmîvata P. 5,3,118.

शौमीवत्य m. *ein Fürst der* Çâmîvata P. 5,3,118.

शामुयाल (?) m. N. pr. eines Fürsten Tîrân. 3. 229.

शामुल्य n. *ein wollenes Hemd* ṚV. 10,85,19.

शामूल n. dass. Lâṭj. 9,4,7. Kauç. 69.

शामेय m. patron.; pl. Pravarâdhjâ. in Verz. d. B. H. 56,26. 58,3.

शाम्बर् 1) adj. (f. ई) *dem* Çambara *gehörig, ihm eigen:* वसु ṚV. 6, 47,22. माया Hariv. 8103. Ṛâmâjaṇ. 4,22. Kâçikâ. 65,30 (nach Aufrecht). शाम्बरी f. so v. a. माया *Gaukelei* AK. 2,10,11. Taik. 3,3,318. H. 925. Halâj. 4,55. Verz. d. Oxf. H. 355,*b*,21. — 2) m. *der Kampf mit* Çambara ṚV. 3,47,4.

शाम्बरिक (von शाम्बरी) m. *Gaukler* Verz. d. Oxf. H. 334,*a*,24. 335, *b*,26. fgg.

शाम्बुक m. = शम्बूक Çabdar. im ÇKDa.

शाम्बुवि m. pl. N. einer Schule Anupadâ 2,10 in Ind. St. 1,44.

शाम्बूक m. = शम्बूक Bhar. zu AK. nach ÇKDa.

शांभर m. patron. von शंभर Pravarâdhjâ. in Verz. d. B. H. 55,40.

शांभरायणी (patron. von शांभर) f. N. pr. einer Heiligen: °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,33. fg. auch सां° geschrieben.

शांभव (von शंभु 1) adj. (f. ई) *zu Çiva in Beziehung stehend, ihm gehörig, von ihm kommend, ihm geweiht* u. s. w. Ind. St. 2,63. Spr. (II) 164. 2018. Kathâs. 12,167. 20,83. 87. 39,126. 46,33. 66,5. 114,17. 115,149. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*,1. 101,*a*,5. मुद्रा 92,*a*,20. 235,*a*,19. *b*,16 und N. 4. — 2) m. *a) Sesbana grandiflora Poir.* — *b) Kampher.* — *c) Bdellium* Rigan. im ÇKDa. — *d) ein best. Gift* Çabdar. im ÇKDa. — 3) f. ई *a) ein N. der* Durgâ Tantrasâra im ÇKDa. — *b) blau blühendes* Dûrvâ-*Gras* Rigan. im ÇKDa. — 4) n. *Pinus Deodora* देवदारु Roxb. Rigan. im ÇKDa.

शांभवीपिक्षा f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 108,*a*, No. 168.

शांभवदेव m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 130,*b*, No. 320.

शांभवाक् m. patron.; pl. Pravarâdhjâ. in Verz. d. B. H. 61,7.

शांभद (von शंभद) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,239,*b*. Pañcav. Br. 15,5,10.

शाम्य (von शम) adj. *auf Frieden gerichtet, Frieden bezweckend* MBh. 5,839. अशाम्यं वैरम् *unversöhnlich* Hariv. 4207. n. *Friede, Versöhnung:* नाशक्नुवन् पदा शाम्ये (साम्ये ed. Bomb.) ते स्थापयितुमञ्जसा MBh. 14,1550. शाम्यता f. dass.: भवेद्वैराणमुखो मुकुरो शाम्यता त्वया 5,4330.

शाम्याक adj. (f. ई) von शाम्याक. समिध् Kauç. 82.

शाय (von शी) adj. *liegend, schlafend* in कङ्क°.

शायक (wie eben) 1) adj. (f. शायिका) *liegend, ruhend;* s. कोशशायिका, पुष्कर°, वृत्त°. — 2) f. शायिका *das Liegen, Ruhen* P. 3,3,108, Vârtt. 1, Schol. *die Reihe zu liegen, — zu ruhen:* भवत: Schol. zu P. 2,2,18. 3,3,111. — Vgl. मृग°.

शायण्डायन m. pl. Bez. einer best. Corporation gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54. शायण्डायनैभाक n. *der von ihnen bewohnte Ort* ebend. — Vgl. शयण्ड, शयाण्ड.

शायस्थि m. N. pr. eines Lehrers Ind. St. 4,372.

शायिता f. nom. abstr. von शायिन् am Ende eines comp.: अभ्युदय° *das (noch) Schlafen bei Sonnenaufgang* MBh. 13,5093. शाकोदर° *das Stechen im Bauche eines Çaphara* Kathâs. 25,54.

शायिन् (von शी) adj. *liegend, ruhend, schlafend,* zu *liegen* u. s. w. *gewohnt* (die Ergänzung antwortet auf die Fragen wo, worauf, wann und wie): शायी नित्यमघ: MBh. 12,11271. सलिले R. 1,63,28. तस्या भस्मनि Kathâs. 76,28. गृह° Kâty. Çr. 2,1,14. सेयं भूमौ परिम्लाना शेते प्रासाद-शायिनी MBh. 1,5908. गुहाकन्दर° 3,8705. मल्लीविवर° R. Gorr. 2,28, 14. शिबिकालय° 4,24,32. Spr. 2046. Pañcat. 2,3,62. सलिल° MBh. 9,1762. 13,648. R. 1,43,14 (44,14 Gorr.). Mâlav. P. 74,7. Pañcat. 4,8, 120. मातुरुत्सङ्ग° R. 5,3,48. नदीपुलिन° Mâlav. P. 119,52. Mṛicch. 120, 16. कासनपर्यङ्क° Râga-Tar. 4,434. कुशसंस्तर° MBh. 1,4708. R. Gorr. 2,3,23. Suçr. 1,316,10. Kathâs. 42,56. राङ्कवाजिन° MBh. 5,2141. 11, 578. भू° Kathâs 49,226. 107,81. Spr. 2460. भस्म° R. Gorr. 1,49,30. पन्नग° auf Spr. (II) 929. Râga-Tar. 4, 507. Pañcat. 4,3,23. पार्श्व° Vaitân. Bṛih. S. 93,12. मार्गपार्श्व° Daçak. 74,17. भास्वरानलमण्डल° Mâlav. P. 107,3. उपरि° Gop. Br. 2,7. अभ्युदित° *bei Sonnenaufgang* MBh. 13, 4997. अघन्य° *sich zuletzt (später als alle Andern) schlafen legend* 12, 8840. मण्डूक° *wie ein Frosch* 11271. सुख° *behaglich* Verz. d. Oxf. H. 268,*a*,34. fgg. अप्रतिबोध° *ohne zu erwachen* Raghuv. 8,87. — Vgl. अध:° (auch 22, 19), अध:प्राङ्°, अधरोक्°, ऊर्ध्व°, एक°, अल°, तल°, पार्श्व°, बिल°, विले°, मध्य° (auch Kathâs. 45,188), योग°, मित°, रत°, वीर°.

शाय्यिक adj. = शय्यया जीवति गण वेतनादि zu P. 4,4,12.

शार्ङ्ग P. 3,3,21, Vârtt. 2 (vgl. P. 6, 1, 159). m. f. (ई) Taik. 3,3, 19. 1) adj. *bunt, scheckig* P. 3,3,21. Vârtt. 2. AK. 3,4,25,168. H. an. 2, 461. Med. r. 90. Halâj. 4,56. पलित° Daçak. 60,5. Vgl. कृष्ण° und सार.
— 2) m. *a) ein beim Würfelspiel gebrauchter Stein,* — *Figur* H. 487.

H. an. Med. काल: काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारि: Spr. 2294. प्रमाददत्त° Daçak. 70, 4. — *b*) *Wind* P. 3,3,21, Vârtt. 2. AK. H. an. Med. — *c*) nom. act. von शॄ, = हिंसन Çabdârthak. bei Wilson. — 3) f. ई *a*) = 2) *a*) Çabdar. im ÇKDr. (सारी). — *b*) Kuça-*Gras* Çabdârthak. bei Wilson.

शारणिक (von शरण) adj. *schutzbedürftig, Schutz bei Jmd suchend* MBh. 13,5072.

शारतल्पिक (von शरतल्प) adj. *auf dem Todesbette eines Kriegers verkündet:* धर्म: MBh. 1,594.

शार्त्क adj. = शरदमधीते वेद वा gaṇa वसन्तादि zu P. 4,2,62.

शार्द (von शरद्) 1) adj. (f. शौरदी; शार्दी VS. 13,57). *a*) *herbstlich, im Herbst erscheinend, — reifend* u. s. w. P. 5,1,96 (= तत्र दीयते). 6, 2,9. H. an. 3,339. fg. Med. d. 40. AV. 5,22,13. 15,4,4. Çat. Br. 4,3, 4,17. 16,2,8,12. TS. 7,5,14,1. Ait. Br. 4,26. Sûça. 1,21,6. Mond MBh. 3,2575. R. 1,15,19. 5,67,13. Kathâs. 47,107. Daçak. 91,15. नक्षत्र-बीथी MBh. 13,521. Wolke 6,5507. 7,5895. R. 1,44,24. 4,49,22. 5,9,53. Regen 3,32,4. Tag Rag. 10,9. Nacht MBh. 3,12554. R. 2,101, 12 (110,10 Gorr.). 5,19,29. Himmel MBh. 7,522. 6433. R. 2,78,18 (77,18 Gorr.). R. Gorr. 2,2,22. यौगिवाव्यक्तशार्दी Hariv. 3723. 7079. Monat (मास ed. Calc. मास ed. Bomb.) MBh. 13,3670. रोग, घातप P. 4,3,18. शालय: 42, Schol. उत्पल MBh. 2,2174. 4,256. इन्दीवर Bhâg. P. 3,26,28. सस्य, धान्य Varâh. Rpn. S. 3,21. 27. 90. वासन्तशार्दैर्मुन्यन्नै: M. 6,11. — *b*) *alt:* पुरा: ṚV. 1,131,4. 174,2. 6,20,10. — *c*) *frisch* AK. 3,4,18,97. H. an. Med. hierher vielleicht सलिल Spr. (II) 622: vgl. दृषच्छार्द, रज्जु°. — *d*) *schüchtern, bescheiden* AK. H. 433. H. an. Med. Halâj. 2,220. — 2) m. *a*) *Jahr* H. ç. 25. H. an. Med. — *b*) *Wolke* Trik. 3,3,211. — *c*) *gelb blühender Phaseolus Mungo* (मुद्ग) *Lin.* H. 1172. H. an. *Mimusops Elengi Lin.* (बकुल) und = कास Râgân. im ÇKDr. *Alstonia scholaris* Ratnam. 191. — *d*) N. pr. eines Joga-Lehrers Verz. d. B. H. 196, 8. Verz. d. Oxf. H. 233, *b*, No. 566. शावर Hall 16. — 3) f. शा *a*) *eine Art Laute* Çabdar. im ÇKDr. — *b*) Bez. zweier Pflanzen, = ब्राह्मी und सारिवा Râgân. im ÇKDr. — *c*) ein N. der Sarasvatî, der Göttin der Rede, Trik. 1,1,27. Çiç. in LA. (III) 32,8. Verz. d. Oxf. H. 210, *b*, No. 497. 219, *b*, 2. 249, *b*, 40. 259, *a*, 6. शरत्काले पुरा यस्मात्तवम्यां बोधिता मुरे: । शारदा सा समाख्याता पीठे लोके च नामत: ॥ Tithâdit. im ÇKDr. सारदा (vielleicht richtiger, d. i. सार + दा; die Form auf शा von शारद ist überhaupt verdächtig) Râgân. 1,37. 4,228. °स्तोत्र Verz. d. Pet. Hdschr. 66. — *d*) ein N. der Durgâ Çabdar. im ÇKDr. Bhâg. P. 10,2,12. — *e*) N. pr. einer Tochter des Priesters Dovaratha Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 38. — *f*) = शारदातिलक Verz. d. Oxf. H. 95, *b*, 18. 104, *a*, 24. 292, *b*, 21. °टीका 104, *a*, 25. fg. — 4) f. ई *a*) *eine Vollmondsnacht im Herbst* Trik. 1,1,107. — *b*) *Alstonia scholaris* AK. 2,4,8,3. Trik. 3,3,113. H. an. Med. *Jussiaea repens Lin.* AK. 2,4,8, 29. Trik. H. an. Med. — 5) n. *a*) *Herbstkorn* Med. Çabdar. im ÇKDr. Varâh. Bpn. S. 9,42. 25,2. 40,14. 41,3. 95, 4. — *b*) *eine weisse Lotusblüthe* (श्वेतकमल) Râgân. im ÇKDr. — Vgl. तप्त°, दृषच्छार्द, पूर्व°, रज्जु°, वि°, विश्व°, शत°.

शारदण्डायनी f. patron. MBh. 1,4677. °दण्डायिनी ed. Bomb. = शार-दण्डायनेर्भार्या Nilak.

शारदातिलक n. Titel verschiedener Werke Verz. d. Oxf. H. 72, *b*, 8. 104, *a*, No. 160. 108, *a*, No. 168. 110, *b*, 10. 146, *a*, No. 310. 279, *b*, 17. 285, *a*, 34. 292, *b*, 21. 341, *a*, 41. Verz. d. Cambr. H. 68. Wilson, Sel. Works 1,280. 2,189. Sarvadarçanas. 170,7. Weber, Rimat. Up. 282. Wilson, Sel. spec. of the th. of the Hindus 2,384. fgg.

शारदक (von शरद्) m. *eine Art Herbstgras* (दर्भविशेष Schol.) P. 4,3,27.

शारदाम्बा (शारदा + अ°) f. ein N. der Sarasvatî Verz. d. Oxf. H. 257, *a*, 26.

शारदिक (von शरद्) adj. *herbstlich* (angeblich nur in best. Verbindungen): श्राद्ध P. 4,3,12. रोग, घातप 13. पुष्प Hariv. 3849.

शारदीय (wie eben) adj. *herbstlich, im Herbst stattfindend:* महापूजा Tithâdit. im ÇKDr. — Vgl. पक्ष°.

शारद्य (wie eben) adj. dass.; n. *Herbstkorn* Varâh. Bpn. S. 27,1.

शारद्वत (von शरद्वत्) patron. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. 1) m. Kṛpa MBh. 1,128. 1945. 3408. 4,947. 7,6107. Bhâg. P. 1,13,3. 16,3. Gautama Hariv. 1784 nach der Lesart der neueren Ausg. ein Schüler Kaṇva's Çiç. 63,2. pl. = गौतमा: Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60, 30. Hariv. 1788. — 2) f. ई patron. der Kṛpî MBh. 1,5114. °सुत 7, 6103. — °पुत्र = शारिपुत्र Burn. Intr. 312. 390. 466. शारद्वती als N. pr. einer Apsaras Vâju beim Schol. zu H. 183. MBh. 1,4320. Hariv. 12473. 14165.

शारद्वतायनि m. patron. von शारद्वत als Bez. eines Bhârgava P. 4, 1,102. pl. Saṃjñ. K. 184, *a*, 4.

शारभ adj. vom शरभ *genannten Thiere kommend* u. s. w.: Fleisch Kâraka 1,6.

शारम्बर N. pr. einer Oertlichkeit Râgâ-Tar. 8,1878.

शारावि (von शराव) adj. *aus einer Schüssel gekratzt* P. 4,2,14. Schol.

शारि = शारी gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45. शौरि 1) *ein best. Vogel* Uṇâdis. 4,127. Trik. 3,3,273. H. an. 2,462. f. Med. r. 89. Viçva bei Mallin. zu Çiç. 15,111. m. f. Vâjas. ebend. VS. 24,38. TS. 5,5,22,1. शारी Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. *Pfeil* (nach Sây.): पाणि: शारीराजतं स्यूमरश्मये RV. 1,112,16. — 3) *ein beim Würfelspiel gebrauchter Stein, — Figur* AK. 2,10,46. Trik. H. 487. H. an. m. Med. und Viçva a. a. O. — 4) *Elephantensattel* Trik. H. an. f. Med. Vâjas. und Viçva a. a. O. Çiç. 15,111. — 5) f. = व्यवहारासन Med. und Viçva a. a. O. = कपट Dharan. im ÇKDr. — 6) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 3,488. — 7) f. N. pr. einer Tochter Mâṭhara's, Gattin Tishja's und Mutter des ersten Schülers Çâkjamuni's, der oft schlechtweg शारिपुत्र oder शारिसुत genannt wird, Burnouf, Intr. 436. 48, N. 8. 173. 314. 390. 448. 564. Lot. de la b. l. 1. 19. fgg. 62. 715. Lalit. ed. Calc. 1,13. bei Foucaux 406. 415. Schiefner, Lebensb. 255 (25). 296 (66; hier ein zweiter). Hiouen-thsang 1,208. 296. 304. Vie de Hiouen-thsang 103. 126. 153. Wassiljew 21 u. s. w. Târan. 56 u. s. w. — Es ist nicht unmöglich, dass das Wort in einigen Bedd. richtiger mit स geschrieben würde.

शारिका f. 1) (von शारि 3) *Würfelspiel mit Steinen* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,127. — 2) *ein Werkzeug zum Schlagen der Laute* oder *eines andern musikalischen Instruments* H. 294. — 3) *eine Form der* Durgâ Kathâs.

73, 110. 116. Rîâ-Tar. 3, 349. — 4) = शारि 7) Burnouf, Intr. 49, N. s. 390. Schiefner, Lebensb. 255 (25). der Name wird mit der *Predigerkrähe* in Beziehung gebracht, die aber in den Bomb. Ausgg. constant सारिका geschrieben wird.

शारिकाकूट n. *die Kuppe der Çârikâ* (Durgâ), N. einer Oertlichkeit Kathâs. 73, 111.

शारिकापीठ n. N. pr. einer Oertlichkeit Kathâs. 73, 114. fg.

शारिकृत् adj. P. 5, 4, 120. = शारेरिव कृतिरस्य Schol.

शारिका s. पूति°.

शारिपुत्र s. u. शारि 7).

शारिप्रस्तार (शारि 3. + प्र°) m. N. pr. eines Spielers Kathâs. 74, 179.

शारिफल (शारि 3. + फल) m. n. = अष्टापद 7) *ein getäfeltes Brett zum Würfelspiel* AK. 2, 10, 46. Trik. 3, 3, 303. H. 487. °क AK. 3, 4, 99, 233. m. n. H. 487, Schol. Gaṇîbu. im ÇKDr.

शारिशोका wohl verdorben in der Stelle शारिशोकेव पुष्यत AV. 3, 14, 5; vgl. शर्केव पुष्यत 4.

शारिशृङ्खला f. = पञ्चाली, पाञ्चाली *Spielfigur* Trik. 2, 10, 18. Hîn. 171. = पाशकविशेष Çabdar. im ÇKDr. Nach ÇKDr. unter पञ्चाली = beng. कुक् d. i. *ein Feld auf dem* शारिफल.

शारिसुत s. u. शारि 7).

शारीटक m. N. pr. eines Dorfes Rîâ-Tar. 3, 349.

शारीर (von शरीर) 1) adj. (f. ई Suçr. 2, 353, 11. या MBh. 14, 442). *a) beinern, knöchern:* शलाका Suçr. 2, 353, 11. — *b) körperlich, im Körper befindlich, aus dem Körper stammend* (Gegens. मानस) H. an. 3, 608. Med. r. 224. पुरुष Çat. Br. 14, 5, 5, 1. 6, 9, 11. 7, 1, 12. आत्मन् 14, 4. 7, 1, 21. 2, 1. Taitt. Up. 2, 3. fgg. Bhâg. P. 1, 5, 2. व्याधि Suçr. 1, 1, 9. 4, 7. 5, 7. शल्य 96, 5. ब्रण 2, 1, 4. Verz. d. Oxf. H. 314, *a*, 5. 316, *b*, 5. कर्मन् M. 8, 273. 12, 7. Bhâg. 4, 21. तपस् 17, 14. शौच M. 5, 110. 139. दण्ड 9, 230. दुःख Spr. (II) 4209. MBh. 3, 65. यावाध 2, 223. 14, 442. R. Gorr. 2, 18, 16. रोग Spr. 4945. Mâlav. P. 37, 22. 38. Bhâg. P. 3, 22, 37. °व्यवस्था Verz. d. Oxf. H. 65, *b*, 39. 66, *a*, 11. — 2) n. *a) Leibesbeschaffenheit* MBh. 15, 938. Varâh. Bṛh. S. 69, 3. — *b)* ein Hauptstück in der Medicin: *die Lehre vom Körper und seinen Theilen; ein Abschnitt dieser Disciplin* Suçr. 1, 8, 4. 11, 10. 310, 1. 313, 16. bei Kâraka das vierte Buch. — *c) faeces* M. 11, 202. diese Bed. ist wohl auch H. an. und Med. gemeint, wo वृषे wohl nur Fehler für विषि ist.

शारीरक (von शारीर) 1) adj. *körperlich;* n. du. so v. a. *Freuden und Leiden des Körpers* Bhâg. P. 3, 31, 19. — 2) m. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325, 2. — 3) n. so v. a. °सूत्र Vedântas. (Allah.) No. 3 (शारीरिक). Verz. d. Oxf. H. 257, *b*, 3. 356, *a*, 22. °टीका 292, *b*, 10.

शारीरकन्यायरत्नामणि m. Titel eines Commentars zum शारीरकमीमांसाभाष्य Hall 90.

शारीरकभाष्यन्यायनिर्णय m. desgl. Hall 89.

शारीरकभाष्यवार्तिक n. Titel eines Supplements zum शारीरकमीमांसाभाष्य Hall 202.

शारीरकभाष्यविभाग m. Titel eines Commentar zum शारीरकमीमांसाभाष्य Hall 87. Verz. d. B. H. No. 608. Colebr. Misc. Ess. 1, 332.

शारीरकमीमांसा f. = उत्तरमीमांसा = ब्रह्ममीमांसा = शारीरकसूत्र = वेदान्तसूत्र Hall 86. Madhus. in Ind. St. 1, 19, 3. Colebr. Misc. Ess. 1, 327. fgg. °भाष्य n. Çaṁkarâkârja's und auch Râmânuga's *Commentar zu diesen Sûtra* Gild. Bibl. 419. Hall 86. 203. Colebr. Misc. Ess. 1, 332. Verz. d. B. H. No. 605. fgg. Verz. d. Oxf. H. 221, *a*, No. 534. fg. 237, *a*, 34. fg. Sarvadarçanas. 56, 11 (शारीरिक°). °व्याख्या Verz. d. B. H. No. 610.

शारीरकशास्त्रदर्पण m. Titel einer Abkürzung vom शारीरकमीमांसाभाष्य Hall 91.

शारीरकसूत्र n. = ब्रह्मसूत्र Verz. d. Oxf. H. 220, *b*, N. Vedântas. (Ausg. von 1829) 1, 7. 8 (शारीरिक, Comm. शारीरक). Hall 86. °सारार्थचन्द्रिका 94. Colebr. Misc. Ess. 1, 334. °भाष्यसार Verz. d. Tub. H. 19. an den beiden letzten Stellen fälschlich शारीर st. शारीरक.

शारीरविद्या f. *die Lehre vom Körper* (von Vishṇuṭa) Ind. St. 1, 467.

शारीरिक fehlerhaft für शारीरक.

शारु (von 1. शॄ) s. किंशारु.

शौरुक (wie oben) adj. P. 3, 2, 154. Vop. 26, 146. *zu Grunde richtend,* mit acc. 3, 26.

शारुप्रवेतस n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 248, *b* unter सौपर्ण.

शार्क m. = शर्करा Çabdar. im ÇKDr.

शार्कक m. 1) *ein Stück Zucker.* — 2) *Rohr* H. an. 3, 104. Med. k. 163.

1. शार्करि (von शर्करा) 1) adj. P. 4, 2, 83 (चतुर्थ्यर्थे). 5, 2, 104 (मत्वर्थे). = शर्करेव 3, 107. *a) kiesig* P. 5, 2, 105. AK. 2, 1, 11. Med. r. 224. — *b) aus Zucker gemacht* u. s. w.: मद्य Suçr. 1, 189, 18. मधु P. 5, 2, 104, Schol. — 2) m. *Rohr* (vgl. शार्कक) Med. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 239, *b*. Pañcav. Br. 14, 5, 14. Liṭ. 7, 33, 9.

2. शार्कर H. an. 3, 609 fehlerhaft für शाक्कर.

शार्करकि adj. (चतुर्थ्यर्थे) von शर्करा P. 4, 2, 83. gaṇa वाराहादि zu 80.

शार्कराक्षि patron. pl. zum sg. शार्कराक्ष्य gaṇa कण्वादि zu P. 4, 2, 111. Comm. zu Bhâg. P. 10, 87, 18. sg. Ind. St. 4, 372 vielleicht fehlerhaft für शार्कराक्ष्य.

शार्कराक्षस n. Bez. einer Abtheilung der Hâridravîja Ind. St. 3, 239. wohl fehlerhaft.

शार्कराक्षि m. patron. von शार्कराक्ष Âçv. Çr. 12, 10, 10.

शौर्कराक्ष्य m. desgl. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. Ind. St. 1, 388. Gaṇa Çat. Br. 10, 6, 5, 1. Kâṭh. Up. 5, 11, 1. pl. Taitt. Âr. in Ind. St. 4, 382 wohl fehlerhaft für शार्कराक्ष. f. शौर्कराक्ष्यी P. 4, 1, 74, Vârtt., Schol.

शार्करिकि adj. (चतुर्थ्यर्थे) von शर्करा P. 4, 2, 84.

शार्करीधान adj. P. 4, 2, 109, Schol.

शार्करीय adj. bei Wilson und im ÇKDr. fälschlich für शर्करीय.

शार्कोट adj. von शर्कोट. विष AV. 7, 59, 7.

शार्ङ्गलतोदि m. patron. von शृङ्गलतोदिन् gaṇa बाह्वादि zu P. 4, 1, 96.

शार्ङ्गी m. *ein best. Vogel* Unâdis. 1, 136 (Uṇâdival. ergänzt ohne Noth नुट्; शार्ङ्ग hatte man auf शृङ्ग zurückgeführt, nicht auf शॄ). VS. 24, 33. — Vgl. auch शार्ङ्ग.

शार्ङ्ग 1) adj. *a) hörnen* (von शृङ्ग) Suçr. 2, 49, 3. 353, 7. — *b) vom Baum Çṛṅga kommend:* विष Jâṇ. 2, 111. — *c) mit einem Bogen* (शार्ङ्ग) *bewaffnet* Bhaṭṭ. 8, 123. — 2) m. *ein best. Vogel* (vgl. शार्ङ्गी) MBh. 1, 3375. 3401. °पक्षिन् 7, 1036. शार्ङ्गी *das Weibchen* 1, 404. 3401. — 3) n. *a) Be-*

gen Taik. 3, 3, 71. H. an. 2, 49. Med. g. 24. Çiç. 93, 16. 94, 2. insbes. Vishṇu's oder Kṛshṇa's *Bogen* Taik. H. 222. H. an. Med. (hier fälschlich m.). Hallâj. 1, 26. Verz. d. Oxf. H. 183, *b*, 1 v. u. 190, *b*, 17. MBh. 2, 34. 3, 843. 850. Harîv. 8035. 7329. R. 7, 7, 7. 18. Mâlav. P. 88, 17. Bhâg. P. 8, 20, 30. Verz. d. Oxf. H. 77, *a*, No. 131. — *b*) *frischer Ingwer* Râǵân. im ÇKDa. — *c*) N. eines Sâman Lâṭj. 1, 6, 23. शार्ङ Ind. St. 3, 240, *a*. ऐन्द्रं शार्ङम् 211, *b*. यज्ञो व्यजनतः समजनत इति कालीवतो त्रीणि सामानि oder शार्ङाणि 202, *a*.

शार्ङक m. *ein best. Vogel* Ind. St. 3, 458 (?). MBh. 1, 3330. fgg. 3364. 3428. 13, 5468. f. शार्ङिका 1, 3346. — Vgl. शार्ङ 2) und शार्ङिक.

शार्ङदेव m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 72, *b*, 10. 199, *b*. No. 471. 200, *b*, 18. 201, *a*, No. 479. 211, *b*, No. 499.

शार्ङधन्वन् adj. *das Çârṅga zum Bogen habend*, m. ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's MBh. 3, 178. 12, 7523. 13, 7036. R. 6, 102, 12. Bhâg. P. 1, 6, 39. 4, 10, 30. 8, 12, 45. 10, 55, 33. Pâṇ. 3, 1, 14. 4, 3, 28.

शार्ङधन्विन् dass. Mârk. P. 19, 33.

शार्ङधर 1) adj. *den Çârṅga genannten Bogen tragend*, m. ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's; vgl. शार्ङभृत् u. s. w. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer, unter denen der Verfasser einer medicinischen Saṁhitâ (herausgegeben in Bombai 1853) und einer Paddhati (poetischen Anthologie) am bekanntesten ist, Hall in der Einl. zu Vâsavad. 48. Verz. d. B. H. No. 935. fgg. 940. fg. Verz. d. Oxf. H. 122, *b*, No. 215. fg. 125, *a*, 7. 153, *b*, 6. 279, *b*, 17. 311, *b*, 39. fg. 315, *a*, No. 748. 317, *a*, No. 753. 318, *b*, No. 755. 404, *b*, No. 35. Verz. d. Pet. H. No. 78. fg. Notices of Skt Mss. 204. Hall 14. 75.

शार्ङपाणि 1) adj. *den Çârṅga genannten Bogen in der Hand haltend*, m. ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's Mnem. 109. Kathâs. 39, 37. Pâṇ. 3, 1, 12 (सार्ङ° gedr.). — 2) m. N. pr. eines Vaishṇava Verz. d. Oxf. H. 248, *a*, 30. Vater des Sarvaǵñavishṇu Sarvadarçanas. 1, 5.

शार्ङभृत् adj. *den Çârṅga genannten Bogen tragend*, m. ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's H. 219. Kathâs. 71, 124.

शार्ङरव m. N. pr. eines Mannes P. 4, 1, 73. gaṇa शौनकादि zu 3, 106. ein Schüler Kaṇva's Çiç. 46, 21. 52, 1. fgg. pl. Pravarâdhj. im Verz. d. B. H. 39, 12 (शाङ्गेरवा: die Hdschr). Saṁsk. K. 184, *a*, 3. f. शार्ङ्गरवी P. 4, 1, 73. 8, 2, 4, Schol.

शार्ङरविन् m. pl. *die Schule des Çârṅgarava* gaṇa शौनकादि zu P. 4, 3, 106.

शार्ङष्टा f. 1) *ein der Pongamia glabra* (करञ्ज) *nahe verwandter Baum* (vulgo महाकरञ्ज) Râǵân. im ÇKDa. Suçr. 1, 142, 4. 163, 20. 2, 64, 15. 81, 8. 208, 19. 379, 12. 432, 10. Vîsam. 6, 76. शार्ङ्ष्टा Nigh. Pa. शार्ङ्गिष्टा ÇKDa. nach einer Hdchr. des Râǵân. — 2) *eine Art Koloquinthe* Nigh. Pa. — 3) *Loca hirta* nach Wils.

शार्ङ्गायुध शार्ङ्ग + आ° adj. *den Çârṅga genannten Bogen zur Waffe habend*, m. ein N. Kṛshṇa's Harîv. 7500.

शार्ङ्गिक m. = शार्ङ्क MBh. 1, 3346. auch wohl Mârk. P. 15, 28, wenn शार्ङ्गिकः st. शार्ङ्गिके gelesen wird. शार्ङ्गिका s. u. शार्ङ्क.

शार्ङ्गिन् adj. *mit dem Çârṅga genannten Bogen versehen*, m. ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. 1, 1, 14. H. 219, Schol. Hallâj. 1, 21. R. 1, 45, 26. Mnem. 47. Rudr. 12, 70. 15, 1. 40. Spr. (II) 2643. Kathâs. 68, 3. Bhâg. P. 4, 12, 24. 8, 24, 59. Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, No. 289.

शार्दूल m. 1) *Tiger* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 90. AK. 2, 5, 1. H. 1285. an. 3, 686. Hallâj. 2, 71. VS. 24, 30. Kâṭh. 12, 10. Çat. Br. 5, 3, 5, 3. 4, 6, 9. 11. 5, 4, 10. °लोमानि 18. 11, 8, 4, 1. °चर्मन् TBr. 1, 7, 9, 1. 3, 5, 2. Çâṅkh. 36 in Ind. St. 4, 107. MBh. 3, 2432. 2525. 4, 31. 245. 12, 4276. R. 3, 75, 17. Çiç. 154. Varâh. Bṛh. S. 12, 6. 68, 102. 104, 4 (mit Anspielung auf das Metrum Çârdûlavikrîḍita). Vîsam. 6, 9. Bhâg. P. 9, 2, 4. f. ई *Tigerin* MBh. 3, 16029. als Urmutter der Tiger und anderer Raubthiere 1, 2525. 2529. R. 3, 20, 22. 26. Nach Râǵân. im ÇKDa. ist शार्दूल auch = चित्रक *Panther*. — 2) am Ende eines comp. *der erste unter* — (vgl. व्याघ्र) AK. 3, 3, 9. H. 1440. H. an. नर° MBh. 3, 2086. 4, 248. R. 1, 61, 1. 3, 49, 28. 4, 33, 31. राज° MBh. 3, 2387. 2575. 5, 6099. R. 2, 103, 27. 112, 4. नृपति° 4, 17, 13. विबुध° MBh. 8, 1470. यादव° 13, 1024. पशु° Harîv. 10570. H. 2, 25, 3. 4, 17, 47. मुनि° 1, 89, 15. 63, 22. Brahmâ-P. in LA. (III) 49, 3. कपि° *unter den Affen* R. 4, 6, 21. 12, 19. 18, 12. — 3) *ein best. fabelhaftes Thier*, = अष्टापद Taik. 2, 5, 2. = पशुभेद H. an. — 4) *ein best. Vogel* Dhan. im ÇKDa. — 5) pl. N. einer Schule Ind. St. 1, 61. 3, 273. fg. — 6) N. pr. eines Râkshasa H. an. R. 5, 6, 1. 14. — 8) Bez. zweier Metra: *a*) *4 Mal* – – ⏑⏑ – ⏑ – ⏑⏑ – , – ⏑ – – – – Colebr. Misc. Ess. 2, 162 (XIII, 9). — *b*) = शार्दूलविक्रीडित ebend. (XIV, 1).

शार्दूलकर्ण m. N. pr. eines Sohnes des Triçaṅku Burnouf, Intr. 122. 207. 541.

शार्दूललालित n. *das Treiben eines Tigers* und N. eines Metrums: *4 Mal* – – – ⏑⏑ – ⏑ – ⏑⏑ – , – – ⏑⏑ – – (der Schluss hat das Maass des Wortes शार्दूलविक्रीडित) Kshandom. 102. Colebr. Misc. Ess. 2, 162 (XIII, 8).

शार्दूलवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Z. f. d. K. d. M. 3, 168, 3.

शार्दूलवाहन m. ein N. Maṅǵuçrî's (*auf einem Tiger reitend*) Taik. 1, 1, 21.

शार्दूलविक्रीडित n. *das Spiel —, das Treiben eines Tigers* (auch adj. *das Treiben eines Tigers nachahmend*) und N. eines Metrums: *4 Mal* – – – ⏑⏑ – ⏑ – ⏑⏑ – , – – ⏑ – – ⏑ – (der Schluss hat das Maass des Wortes शार्दूललालित) Kshandom. 102. Çrut. 43. Colebr. Misc. Ess. 2, 163 (XIV, 1). Ind. St. 3, 398. Gît. 4, 10.

शार्यात (von शर्याति) 1) m. patron. ṚV. 1, 51, 12. 3, 51, 7 (TS. Pâit. 4, 41. 11, 16). Mânava Ait. Br. 4, 32. 8, 21. Liedverfasser von ṚV. 10, 92. plur. Çat. Br. 4, 1, 5, 3. Harîv. 656. VP. 358, N. 1. f. ई Çat. Br. 4, 1, 5, 6. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 240, *a*.

शार्यातक m. = शार्यात 1) Ind. St. 3, 460.

शार्व (von शर्व) adj. (f. ई) *zu Çiva in Beziehung stehend, ihm eigen, von ihm kommend, an ihn gerichtet*: शिरस् Spr. 2982. Kathâs. 35, 1. उद्यान 52, 18. वृषभ 115, 148. शाप 22, 162. धनुस् 34, 136. 44, 11. 114, 121. Verz. d. Oxf. H. 19, *b*, 21. स्तव *a*, 40. 74, *a*, 13. दिश् so v. a. *Nordosten* Vaṇîs. Bṛh. S. 31, 4.

शार्वरी (von शर्वरी) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2, 123. 1) adj. *verderblich, mörderisch* (घातुक) AK. 3, 4, 25, 190. H. an. 3, 609. Med. r. 225. Viçva bei Uṇâdis. — 2) f. ई = शर्वरी *Nacht* Vâkaspati bei Bhar. zu AK. nach ÇKDa. Spr. (II) 3545. (I, 2968 (an beiden Stellen gesondert und wohl mit

Recht). — 3) n. *Finsterniss* AK. H. an. Med. Viçva (hier m.). Bhâg. P. 10, 14, 40.

शार्वरिन् m. N. des 34ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 1. — Vgl. शर्वरिन्.

शार्ववर्मिक adj. von Çarvavarman *verfasst* Verz. d. Oxf. H. 169, *a*, 48. fgg. v. l. सार्व°.

शाल्. शालते Dhâtup. 8, 37 v. l. für शाड्.

1. शाल (von शाला) 1) adj. *in der Hütte* u. s. w. *befindlich* Çat. Br. 1, 1, 2, 5. ते देवाश्चक्रमचरञ्छालमसुरा आसन् so v. a. *sassen zu Hause* 6, 8, 4, 1. — 2) m. *a*) *Vatica robusta*, ein hoher stattlicher Baum (*der zum Häuserbau gebraucht wird*) AK. 2, 4, 2, 25. Trik. 2, 4, 21. 3, 3, 407. 410. H. 1138. an. 2, 515. Med. l. 54. Hin. 182. Hâlâs. 2, 40. 5, 26. Çiçvata bei Mallin. zu Kir. 10, 34. 14, 34. M. 8, 246. MBh. 1, 5927. 7716. 3, 1600. 2404. 15702. 15940. 4, 513. 5, 864. 8, 4345. 9, 3239. 13, 635. 14, 2521. Hariv. 9002. R. 2, 97, 12 (106, 8 Gorr.). 98, 28. 100, 18. 3, 17, 9. 35, 77. 4, 1, 12. 19, 22. 5, 39, 25. 6, 17, 7. 7, 23, 6, 58. Suçr. 1, 46, 14. 145, 8. 13. 2, 110, 13. 131, 12. 468, 18. Kir. 10, 34. 14, 34. Varâh. Bṛh. S. 29, 2. 53, 87. 59, 6. 79, 2. 13. 16. 85, 7. Journ. of the Am. Or. S. 6, 588. Çatr. 2, 6. Brahma-P. in LA. (III) 51, 19. Pañkar. 1, 7, 23. Visâvas. 134, 3. Verz. d. Oxf. H. 17, *a*, No. 63, Çl. 4. 257, *a*, N. 3. °वन (vgl. भद्रशालवन) MBh. 1, 4476. 3, 945. 8, 2305. R. 2, 71, 16 (73, 14 Gorr.). °स्कन्ध MBh. 2, 826. R. 2, 96, 13 (105, 12 Gorr.). °स्तम्भ MBh. 1, 3066. 2, 825. 5, 3836. °निर्यास Ratnam. 274. Suçr. 2, 495, 18. 501, 16. Ragh. 1, 38. °पोत MBh. 1, 5942. 3, 11690. 7, 2504. °प्रांशु Ragh. 1, 13. °सकाशमूरुम् MBh. 1, 3867. °पुष्पनिभा (= रक्तपीता: Nîlak.) कृपा: 7, 980. Wird häufig (in den Bomb. Ausgg. jedoch nur ausnahmsweise) साल geschrieben. — *b*) *Baum* überh. AK. 2, 4, 2, 3. H. 1114. H. an. Med. Hâlâs. 2, 22. Çiçvata bei Mallin. zu Kir. 14, 34. कल्प° = कल्पतरु Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 505, Çl. 16. Auch साल geschrieben. — *c*) *Einfriedigung, Wall* (hierzu mag die *Vatica robusta* verwendet worden sein) AK. 2, 2, 3. Trik. 3, 3, 410. H. 980. H. an. Med. Hâlâs. 2, 133. Çiçvata a. a. O. सुमहाशालमेखला (पुरी) R. 1, 5, 12. महाशालावृता (पुरी) R. Gorr. 1, 5, 5. पर्यस्त° adj. Ragh. 16, 41. बृहन्मणिशिला° adj. Kumâras. 6, 28. Daçak. 94, 1. °प्रङ्ग n. (= प्राचीराग्र Çkdr.) *the upper part or coping of a wall* Wilson nach Çabdârthak. Auch साल geschrieben. — Vgl. पोत°, बृहच्छाल, शुक्ल°.

2. शाल m. 1) *ein best. Fisch* AK. 1, 2, 2, 19. Trik. 1, 2, 20. 3, 3, 407. H. an. 2, 511. Med. l. 50. fg. Hâlâs. 3, 37. Visâvas. 134, 3. — 2) N. pr. eines Sohnes des Vṛka Bhâg. P. 9, 24, 42. = शालिवाहन Trik. 3, 3, 407. H. an. Viçva im Çkdr.

3. शाल m. = शल gaṇa श्वलादि zu P. 3, 1, 140. m. n. (साल) gaṇa घर्घरादि zu P. 2, 4, 31. Sidd. K. 250, *b*, 8.

शालक m. etwa *Spötter* oder *Spassmacher* P. 1, 4, 106, Schol. — Vgl. त्रि° (von शाला), पीत° (von 1. शाल), प्रिय°.

शालकटङ्कट m. N. pr. eines Rákshasa: घटोत्कचेन हतः शालकटङ्कटः MBh. 7, 6127. शालङ्कटङ्कट (Sohn der Çâlaṅkaṭaṅkaṭâ) Vishṇu-P. im Çkdr. adj. als Bez. seines Geschlechts: वंशे सालकटङ्कटे (सालकटङ्कटा मात्स्यवदादेः पितामही विद्युत्केशयती तदीये वंशे वृद्धाक्षाय घार्यः Comm.) R. 7, 8, 23. m. du. N. pr. zweier Genien Jin. 1, 284.

शालग्राम 1) m. *a*) N. pr. eines bei den Vaishṇava für heilig gehaltenen, an der Gaṇḍaki gelegenen *Dorfes*, so genannt nach einem darin wachsenden Çâla-*Baume* (Comm. zu Bhâg. P. 5, 8, 29); von daher kommen die heilig verehrten *Ammoniten* (°शिला), die oft schlechtweg शालग्राम n. (s. u. गण्डकी 2) genannt werden. Colebr. Misc. Ess. 1, 156. यथा हि विष्णोः शालग्रामः Çaṅk. zu Kaṭhop. Up. S. 530. VP. 2, 1, 24. 13, 4. 7. Bhâg. P. 5, 8, 29. शालग्रामाभिधाने भगवतः क्षेत्रे (= चक्रतीर्थे Comm.) Prab. 83, 6. 7. Verz. d. Oxf. H. 21, *a*, 14. 22, *b*, 37. 39. fg. 39, *b*, 6. 60, *b*, 2. 3. 73, *b*, 35. 143, *a*, 35 (साल°). °तीर्थ 67, *a*, 25. °क्षेत्र (साल°) Ind. St. 1, 262. °गिरि Vimâna-P. im Çkdr. u. d. W. °शिला Verz. d. B. H. 117 (LXXIII). Verz. d. Oxf. H. 20, *b*, 26. 28. °शिलाचक्र 22, *b*, 31. Paṅkar. 1, 2, 24. शालग्रामश्च (*Ammonit*) पञ्चाणाम् 1, 76. 3, 13, 26. Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, 23. 25. 85, *b*, 7. °स्तोत्र Gild. Bibl. 583. 599. — *b*) *der in Çâlagrama verehrte* Vishṇu MBh. 3, 8102. — 2) f. ई ein N. der Gaṇḍaki Lin. 1, 37.

शालङ्कटङ्कट s. u. शालकटङ्कट.

शालङ्कायन m. patron. von शलङ्कु gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. 1) N. pr. eines Ṛshi H. an. 3, 33. Med. n. 247. Âçv. Çr. 12, 10, 10. 14, 6. MBh. 13, 251 (सा° beide Ausgg. als Sohn Viçvâmitra's). Verz. d. B. H. No. 1151. Verz. d. Oxf. H. 60, *b*, N. 5. Paṅkat. ed. Bomb. IV, S. 24, 3. fgg. plur. gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2, 52. 3, 3, 114, Schol. °वाष्कला: Hariv. 1464. °सोम्यवा: 1771. बाधवशालङ्कायना: gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6, 2, 27. शौलङ्कायनीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14, 9, 4, 21. — 2) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's, = नन्दिन् Trik. 1, 1, 50. H. an. Med. Gaṇâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 13.

शौलङ्कायनक 1) adj. von *den* Çâlaṅkâjana *bewohnt* gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2, 63. — 2) m. = शालङ्कायन 1) Vimâna-P. im Çkdr. unter शालग्राम.

शालङ्कायनका f. *die Tochter* Çâlaṅkâjana's, matron. der Satjavatî, der Mutter Vjâsa's, H. 848. शालङ्कायनकीवम् falsche Lesart ebend.

शालङ्कायनि m. patron. Pravarâdhjâs. in Verz. d. B. H. 39, 10 vielleicht nur fehlerhaft für शालङ्कायन.

शालङ्कायनिन् m. pl. *die Schule des* Çâlaṅkâjana Lit. 4, 8, 20.

शौलङ्कि m. patron. von शलङ्कु gaṇa पैलादि zu P. 2, 4, 59. Bez. Pâṇini's Trik. 2, 7, 24. Gaṇâdh. im Çkdr.

शालङ्क m. *ein best. Fisch*, = 2. शाल Çabdar. im Çkdr.

शालन m. *das Harz der Vatica robusta* (शाल) Ratnam. im Çkdr. (unter शालनिर्यास mit श, in der alphabetischen Ordnung mit स). Paṅkar. 3, 6, 20 (सालन).

शालपत्रा (1. शाल + पत्र) f. = शालपर्णी Ratnam. 9.

शालपर्णी (1. शाल + पर्ण) f. *Desmodium gangeticum* AK. 2, 4, 6, 3 (mit स). Trik. 3, 3, 377. Ratnam. 9. Suçr. 2, 418, 9. 438, 10. Çâṅk. Sâṁkh. 2, 2, 9.

शालपुष्प n. *die Blüthe der Vatica robusta* MBh. 7, 980. *Hibiscus mutabilis* Çabdar. im Çkdr. (mit स). शौलपुष्पभञ्जिका f. Bez. *eines best. Spiels* P. 6, 2, 74, Schol. °मय adj. (f. ई) *aus den Blüthen der Vatica robusta gemacht*: स्रजौ MBh. 12, 6344.

शालभञ्जिका f. 1) *Statue* (*aus dem Holze der Vatica robusta*, शाल) Trik. 2, 6, 3. Gaṇâdh. im Çkdr. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2, 32. Kâtjâs. 121,

145. 174. fg. 123, 140. Viśvav. 140, 1. °मयी° Rāja-Tar. 2, 64. — 2) Bez. eines best. Spiels (vgl. शालपुष्पभञ्जिका) Uṇād. — 3) Buhldirne Gaṇḍ. im ÇKDa. — Vgl. विट°.

शालभञ्जी = शालभञ्जिका 1) H. 1014 (साल°). Hin. 71. Pras. 41, 10.

शालमय (von 1. शाल) adj. (f. ई) aus dem Holze der Vatica robusta gemacht u. s. w. P. 4, 3, 144, Schol.

शालरस m. das Harz der Vatica robusta (शाल) Rāǵan. im ÇKDa. (साल°).

शालव m. Symplocos racemosa Roxb. (लोध्र) Çabdar. im ÇKDa.

शालवदन m. N. pr. eines Asura Harıv. 2288. कालवदन die neuere Ausg. und die ältere 14291, wo aber die neuere Ausg. मृगालवदन liest.

शालवाणाक m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 19.

शालवेष्ट m. das Harz der Vatica robusta (शाल) Trik. 2, 6, 38. H. 647.

शालसार m. 1) Baum H. an. 4, 284. Viçva im ÇKDa. — 2) Asa foetida diess. Suçr. 1, 133, 9. 157, 12. 2, 72, 13. 73, 9. 78, 6. साल° und °शार geschrieben.

शाला (von 3. शृ) f. Uṇād. zu Uṇādis. 1, 117. 1) Hütte, Haus, Gemach; Stall AK. 2, 2, 3. 3, 6, 2, 27. Trik. 2, 3, 106. H. 990. an. 2, 511. Med. l. 50. Hall. 2, 136. ग्राम = शालासमुदाय Pat. (s. u. ग्राम 1) in den Nachträgen). AV. 3, 12, 1. fgg. 5, 31, 5. 6, 106, 3. 8, 6, 10. 9, 3, 1. 13. 15. 14, 1, 62. TBa. 1, 2, 3, 1. Çat. Br. 3, 1, 4, 6. 11. 2, 4, 15. 6, 2, 20. 4, 5, 2, 4. Kauç. 93. °कर्मन् Pān. Gaṇ. 3, 4. °स्तम्भ Kāṭy. Çr. 7, 1, 36. °तृण Kauç. 18. 80. नव° 23. गो° 24. Kāçmīr. 7, 14. मरुती प्रभा Haus R. 5, 13, 10. 29. मातामह° Kathās. 74, 62 (st. dessen गृह 91). भार्गववेश्मनि Gemach MBh. 1, 391. 4, 510. fg. Varāh. Bṛh. S. 53, 11. 17. fgg. Bālār. P. 8, 9, 16. = पर्णा° R. 2, 56, 18. 21. 31. 100, 5. 111, 14. Stall MBh. 3, 2057. 13, 4316. वारुणानाम् 14, 2550. गजवाजिनाम् R. 2, 91, 32 (100, 30 Gorr.). Raṅgan. 16, 41. Spr. 2730. Kathās. 52, 118. 68, 55. शृङ्गार° Gemach Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 506, Cl. 24. कर्मशाङ्गार° Mārk. P. 35, 14. कुलाल° Werkstatt Gīrīṇ. in Ind. St. 2, 77. अश्वचलन° (ed. Bomb. अश्वशाला Pferdestall) Pañkat. 252, 21. Am Ende eines comp. शाला f. und शील n. P. 2, 4, 25. 6, 2, 122. AK. 3, 6, 6, 40. — 2) Ast AK. 2, 4, 4, 11. Trik. H. 1119. H. an. Med. Hall. 2, 27; vgl. Mārk. P. 49, 54. — 3) ein best. Metrum: a. b. d. ⏑–⏑–––⏑⏑–⏑–⏑–, c. ––⏑–––⏑⏑–⏑––. Journ. of the Am. Or. S. 6, 514. — Vgl. अग्नि°, अश्व°, आरोग्य° (Rāja-Tar. 3, 461), एक°, गान्धर्व°, गिरि°, गो°, गोमि°, चतुः°, चन्द्र°, चित्र°, टङ्क°, तनु°, तुरंगम°, त्रि°, दानिला°, भूत°, द्वि°, धनुः°, धर्म°, नर्तन°, नार्पित°, निःसाल, नृत्यशाला, पक्षि°, पण्य°, पत्नी° (n. auch Kauç. 77 in Ind. St. 5, 391), पर्णा°, पाक°, पाठ°, पानीय°, पुण्य°, पूप°, पेलि°, प्राचीन°, बक्र°, ब्रह्म°, भक्त°, भाण्ड°, भाण्डि°, मल्लाख्य°, यज्ञ°, यज्ञिय°, यान°, रङ्ग°, रथ°, वत्स°, वह्नि°, वाजि°, वारुण°, शक्र°, शिल्प°, शुल्क°, संगीत°, सत्र°, सूद°, हस्ति°.

शालाकँ (von शलाक) m. ein Büschel von Spähnen oder Reisig Çat. Br. 3, 6, 2, 19. 4, 4, 2, 7. 14, 3, 2, 2. Kāṭy. Çr. 10, 6, 14. 26, 7, 3. Reisigfeuer (nämlich अग्नि) Āçv. Çr. 5, 19, 7.

शालाकाधेर्य m. metron. von शलाकाधू gaṇa प्रुषादि zu P. 4, 1, 123.

शालाकिन् m. Chirurg; Barbier; Speerträger Wilson und ÇKDa. ohne Angabe einer Aut. fehlerhaft für शलाकिन्.

शालाकेर्य m. metron. von शलाका gaṇa प्रुषादि zu P. 4, 1, 123.

शालाक्य (von शलाका) 1) m. a) oxyt. metron. gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151. — b) Augenarzt Varāh. Bṛh. S. 13, 12. — 2) n. (nämlich तन्त्र) eine Abtheilung der chirurgischen Medicin: Kur der Krankheiten des Auges, Ohrs, der Nase u. s. w., welche mit feinen Werkzeugen (शलाका) zu behandeln sind, Suçr. 1, 2, 1. 7. 11, 5. 12, 2. °शास्त्र 2, 362, 8.

शालात m. N. pr. eines Mannes Āçv. Çr. 12, 14, 6.

शालाग्नि (शाला + अ°) m. Hausfeuer Gobh. 3, 7, 2. Liṭ. 3, 3, 2. Āçv. Gṛhy. 2, 2, 6.

शालाङ्की f. Statue (vgl. शालभञ्जिका) Çabdar. im ÇKDa.

शालाजिर m. eine Art Schüssel Trik. 2, 9, 8. H. 1024. Hin. 167. Hall. 2, 160.

शालाजि f. = शालिञ्ज Çabdar. im ÇKDa.

शालातुरीय adj. aus Çālātura gebürtig P. 4, 3, 94. Bez. Pāṇini's H. 851.

शालात्व n. nom. abstr. von शाला 1) Mārk. P. 49, 54.

शालाथल m. patron. von शलाथल Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 55, 29.

शालाथलेर्य m. desgl. gaṇa प्रुषादि zu P. 4, 1, 123. hierher vielleicht das verdorbene शालालावकेया: Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 58, 18.

शालाद्वार n. Hausthür.

शालाद्वार्य (von शालाद्वार) adj. an der Hausthür befindlich: Feuer Kāṭy. Çr. 3, 3, 29. 6, 23. 31. 9, 1, 2. 12, 2, 1.

शालानी f. eine best. Pflanze, = विदारी Çabdar. im ÇKDa.

शालापति m. Hausherr AV. 9, 3, 12.

शालामुख 1) n. Vordertheil eines Hauses. — 2) m. eine Reisgattung Suçr. 1, 196, 2.

शालामुखीय (von शालामुख) adj. vorn am Hause —, am Eingang befindlich: Feuer Çāṅkh. Çr. 5, 14, 6. 6, 12, 26. 10, 7, 10.

शालामृग m. Hund (Schakal ÇKDa. und Wilson fälschlich nach ders. Aut.) Hin. 78. wohl Schakal R. 3, 52, 45.

शालार n. 1) Käfig. — 2) Leiter, Treppe. — 3) Elephantenklaue H. an. 3, 610. Med. r. 226. — 4) सालार a pin, a bracket, or shelf projecting from a wall Wilson nach Çabdārthak.

शालालुक adj. mit शलालु handelnd P. 4, 4, 54.

शालावर्त m. pl. die Nachkommen Çālāvant's P. 5, 3, 118. f. ई eine Prinzessin der Çālāvata ebend.

शालावत्य m. ein Fürst der Çālāvata P. 5, 3, 118. patron. von शलावत् (nach Çaṅk.) Kāṭh. Up. 1, 8, 1.

शालावत् (von शाला) 1) m. N. pr. eines Mannes P. 5, 3, 113. — 2) °वती f. N. pr. einer Gattin Viçvāmitra's Harıv. 1461. 1769.

शालावृक s. सालावृक.

शालासद् adj. im Hause —, im Stalle befindlich Ait. Br. 1, 14.

शालास्थलि m. patron. gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4, 1, 80. f. °स्थल्यी ebend.

शालि Uṇād. zu Uṇādis. 4, 127. 129. m. (f. nach Vāsaspati) 1) sg. und pl. Reis und verwandte Körnerfrucht (der besten Art) AK. 2, 9, 6. 24. Trik. 3, 3, 405. H. 1169. 1201. an. 2, 511. Med. l. 30. Hall. 2, 7. 425. M. 9, 39. MBh. 12, 6673. 14, 2530. R. Gorr. 2, 32, 22. शालय: कनकप्रभा: 3, 22, 17. Suçr. 1, 149, 12. 156, 20. 195, 14. 18. 196, 8. Ṛt. 3, 1.

फलिता: Ragh. 15,78. Spr. (II) 1405. 2596. Varâh. Bṛh. S. 5,39. 8,30. 15,6. 19,6. 44,5. निवद्धवाट Kathâs. 34,203. Râǵa-Tar. 2,19. Paṅkat. 3,7,13. Paṅkat. 163,23. Vop. 23,49. °वन Spr. (II) 1161. Râǵa-Tar. 3, 22. गर्भ° Ragh. 17,52. °प्रसून MBh. 3,16250. °तण्डुल 2,2088. R. 1,5, 15 (17 Gorr.). Suçr. 2,166,13. °कण Kathâs. 61,77. °माल Bṛ. 3,10. °कूट R. 6,3,2. °चूर्ण Râǵa-Tar. 4,102. °पिष्ट Suçr. 2,28,11. °भवन *Reisfeld* MBh. 3,16286. 5,3007. °भू f. dass. Râǵa-Tar. 4,295. शाल्योदन Suçr. 1,72,1. Spr. (II) 1987. शालितण्डुल Varâh. Bṛh. S. 51,30. शाल्यन्न Spr. 2853. Paṅkat. 2,4,32. Bhâg. P. 8,16,40. शाल्येव फलत्याशु शालिर्न मुञ्चति क्वचित् Spr. 3000. यवा: प्रकीर्णा न भवन्ति शालय: (II) 3248. 3335. 3466. नहि मृगा: सन्तीति शालयो नोप्यन्ते Sarvadarçanas. 2, 19. fg. लोहित° Suçr. 1, 195,21. Vgl. घरण्य°, कारङ्ग°, मरा°, रक्त°, शरक्काल. — 2) = गन्धमृग, गन्धमार्जार *Zibethkatze* Taik. Med. = गन्धोलि *Curcuma Zerumbet Roxb.* H. an. st. dessen.

शालिक 1) adj. *a*) proparox. von शाला gaṇa ग्रीष्मादि zu P. 5,2,116. — *b*) am Ende eines adj. comp. von शालि gaṇa उरःप्रभृति zu P. 5,4, 151. — 2) m. N. pr. eines Philosophen, eines Schulers des Prabhâkara Prab. 20,10. °नाथ Hall 193. Verz. d. Oxf. H. 333,*b*. fälschlich शालिकानाथ 244,*a*, No. 606. 245,*b*,13. शालिकाचार्य Hall 113. — 3) f. शालिका *a*) demin. von शाला in नापित°. — *b*) *Hedysarum gangeticum* Çabdar. im ÇKDr. — *c*) *ein Werk des Philosophen* Çâlika Hall 27. 193.

शालिगोत्र m. N. pr. eines Lehrers, v. l. für शालिकोत्र Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,16. VP. 282, N. 3.

शालिगोप m. *Hüter eines Reisfeldes*, f. ई Ragh. 4,30.

शालिच m. *Achyranthes triandra Roxb.* Taik. 2,4,32. Ratnam. 233. Çabdâṇ. bei Wilson; auch शालिञ्जी f. Tiṇâdiv. im ÇKDr. Suppl. unter शैल्य. Vgl. शालञ्च.

शालित adj. = शालिन् *reichlich versehen mit:* शालेः सर्वत्र शालितः (विन्ध्यः) Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,21. विशालशाल° Çâṅk. 2,6.

शालिता f. nom. abstr. von शालिन् am Ende eines comp. *das Verbundensein mit Etwas* Sarvadarçanas. 27,6. Kusum. 11,14.

1. शालित्व n. dass.: नृप° Suçr. 2,167,3.

2. शालित्व n. nom. abstr. von शालि *Reis* Kusum. 16,18. fg.

शालिन् 1) adj. *a*) oxyt. (von शाला *ein Haus u. s. w. besitzend* gaṇa ग्रीष्मादि zu P. 5,2,116. am Ende eines comp. *voll von, reichlich versehen mit, verbunden mit* (= suff. मत् oder वत्) H. 7. जलज° MBh. 2, 1813. तीर्थ° 3,8374. सस्य° 6,86. सुवर्णगुक्तामणिरत्न° 7,87. यवगोधूम° 13,8183. 16,90. Harîv. 2664. 3968. 6368. R. 2,35,29. R. Gorr. 2,104, 10. 3,22,3. 79,4. 4,41,23. 65. 5,16,19. 80,31. 7,26,43. Kâm. Nîtis. 7, 40. 17,38. स्तन° Bṛ. 4,3. Kathâs. 38,21. Paṅkat. 3,11,15. Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,31. प्राक्तनपुण्य° Sâh. D. 23,20. कलकेसकुलारव° Kâdambar. 136. समाजोत्सव° R. Gorr. 2,48,21. 94,21. Kathâs. 44,22. शान्ति° Verz. d. Oxf. H. 198,*b*, No. 468. नृपयौवन° MBh. 1,3940. R. 1,27,7. 34,12. 72,7. 6,95,18. Suçr. 2,153,15. Verz. d. Oxf. H. 33,*a*,3. बलवीर्य° MBh. 3,16793. Harîv. 15922. नयन° 2826. श्रुताध्ययन° Jâǵn. 1,199. R. 1,50, 3. स्वाध्यायव्रत° 75,7. 3,60,2. 5,26,11. Kâm. Nîtis. 15,59. Kir. 5,32. Spr. (II) 467. 2113. 2127. 2342. 3066. (I, 2799. 3333. Kathâs. 8,11. 13, 113. 16,26. 18,139. 19,99. 25,75. 28,6. 50,37. 52,135. 56,394. Gît. 1, 38. Râǵa-Tar. 2,53. 3,323. 6,69. 8,85. Mâlatîm. P. 20,41. 123,14. 133,2. Kâdambar. 30. 96. Çiç. in LA. (III) 32,5. Sarvadarçanas. 4,7. 35,18. 90, 13. Sâṁkhyak. K. 1,*b*,1. क्षय° so v. a. *viel ausgebend* Râǵa-Tar. 7,618. ज्ञान° *sich verstehend auf* Kâdambar. 40. रूप्यनिर्माण° Spr. (II) 1933. समिति° (so ist zu verbinden) so v. a. *tapfer* (vgl. युद्ध°) Bhâg. P. 2,7, 35. — *b*) = श्लेयस् Hall. 2,220. = श्लाघ्य (Comm.) *rühmenswerth*, von einer Person Bhâg. P. 3,20,36. 24,1. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Viṣṇ-P. in Verz. d. Oxf. H. 55,*a*,33. — 3) f. शालिनी *a*) (von शालि) *Reisfeld* Varâh. Bṛh. S. 104,30 (mit Anspielung auf das Metrum gleiches Namens). — *b*) *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – – ⏑ ⏑ – ⏑ –, – ⏑ – – ⏑ ⏑ – ⏑ – Çrut. 19. Colebr. Misc. Ess. 2,160 (VI,5). Ind. St. 8,374. Kâdambar. 30. — *c*) N. pr. eines Frauenzimmers Çuk. in LA. (III) 33,4. — Vgl. गिरिशालिनी, दल°, दोःशालिन्, नय° (auch Harîv. 5964. Kir. 5,24), पाठशालिनी, फलशालिन्, बल° (MBh. 4, 2239. Harîv. 5843. R. 3,40,3. Mâlatîm. P. 116,48. 123,23. Bhâg. P. 3,3,36. *ein grosses Heer bedeutend* Varâh. Bṛh. S. 18,3), बाहु° (adj. auch MBh. 3,15740. 5,2057. R. 5, 81,55), बुद्धि° (auch Harîv. 5942. Kathâs. 13,91), भुज°, मति°, युद्ध° (auch MBh. 2 826. R. 5,85,24. Bhâg. P. 5,6,24), रूप° (auch Mâlatîm. P. 21,64 61,25. 71,19. 127,44), वृत्त°, शील°, सत्त्व°.

शालिनाथ m. N. pr. eines Mediciners Verz. d. Kop. H. 104,*a*.

शालिनीकरण n. Taik. 3,2,20 fehlerhaft für शालीनी°.

शालिपर्णी f. *Glycine debilis Lin.* Râǵân. im ÇKDr.

शालिपिण्ड m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1559.

शालिपिष्ट n. *Krystall* Taik. 2,9,29.

शालिमञ्जरि m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,25 (शालि° gedr.).

शालिवकु (°वाकु) adj. *Reis führend*, f. शाल्यूकी Vop. 4,12.

शालिवाह् m. *ein zum Reisführen dienender Ochs* (Comm. zu R.) MBh. 1,6210 (*das* वाह् *genannte Maass von Reis* nach Nîlak.). R. 2,32,20.

शालिवाहन m. *Kornführer*, N. pr. eines Fürsten, Gegners von Vikramâditja, mit dessen Geburt (78 nach Chr.) die sogenannte Çaka-Aera beginnt, LIA. 2,880,fg. वर्ष °जन्मत: Verz. d. B. H. No. 879. Wassiljew 49. 54. Târân. 3. 174. 167. महामूर्ख Spr. (II) 1499. °चरित्र Macn. Coll. 99. °शतक (im Prâkrit) 107. — Vgl. सातवाहन.

शालिशिरस् m. N. pr. eines Devagandharva MBh. 1,2552. 4812. Harîv. 14158.

शालिशूक 1) m. n. *Reisgranne* R. 3,22,18. 7,35,21. — 2) m. N. pr. eines Maurja VP. 4,24,*k*. Bhâg. P. 12,1,13.

शालिमर्य N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 3,6077.

शालिस्तम्भक Titel eines Werkes Vâtt. 41.

शालिहोत्र 1) m. *a*) poet. Bez. *des Pferdes* (*Reis-, Fruchtopfer empfangend* d. h. *mit Körnern gefüttert*) Taik. 2,8,41. H. ç. 178. Schol. zu Kâtj. Çr. 20,3,13. — *b*) N. pr. eines angeblichen Ṛshi, der als erste Autorität in der Hippologie gilt. MBh. 3,2799. शालिहोत्रस्य तीर्थम् 6077. कापल: °पिना 12, 12759. Verz. d. B. H. No. 324. 944. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*,18. 53,*b*,10. 55,*b*,16. 125,*a*,8. 183,*a*,1. Paṅkat. 253,22. fg. 255,4. — 2) m. *das von Çâlihotra verfasste Werk über Hippologie:* °त्र Paṅkat. 255,1.

शालिहोत्रायण m. patron. von शालिहोत्र; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,21.

शाली f. *Nigella indica* Roxb. Rāgān. im ÇKDa.

शालीतुमस् (von शालि + इतु) adj. *mit Reis und Zuckerrohr bestanden:* धरा Vaṛāh. Bṛh. S. 19,16.

शालीन 1) adj. (f. घा) *bescheiden, verlegen, verschämt* P. 5,2,20 (= शालाप्रवेशनमर्हति Schol.; vgl. सभ-य). AK. 3,1,26. H. 433. Halāj. 2,220. कुतूहलवानपि निसर्गशालीनः स्त्रीजनः Mālav. 51,7. गृहस्थ Miṛk. P. 41,9. Naish. 2,3. °शीलता Uttarār. 128,7 (173,4). — 2) f. घा = शालेया *Anethum Panmorium* Roxb. oder *eine andere Anisart* Rāgān. im ÇKDa. — 3) n. *ein bescheidenes, verschämtes Benehmen* so v. a. *Entgegennahme von Almosen ohne Bettelei* Bālar. P. 3,12,42. 7,11,16. — Vgl. महा°.

शालीनता (von शालीन) f. *Bescheidenheit, Verlegenheit, Verschämtheit* Rāgān. 6,81. 18,16. Çiç. 26,16.

शालीनत्व (wie oben) n. dass. Bhāvpr. 4,28.

शालीनीकरण (von शालीन + 1. कृ) n. *das Demüthigen* P. 1,3,70. 6,1,48, Vārtt. fälschlich शालिनी° Taik. 3,2,20.

शालीन्यै m. patron. von शालीन gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

शालीय 1) adj. von शाल und शाला gaṇa उत्कारादि zu P. 4,2,90. Schol. zu 1,1,73. 4,2,114. Vop. 7,15. घट (शालायां भवः) P. 3,1,7, Kār., Schol. — 2) m. N. pr. eines Lehrers VP. 3,4,22. Bālar. P. 12,6,57.

शालु Uṇ. zu Uṇādis. 1,5. 1) m. *a) Frosch* (von शल् *springen*) H. 1354. — *b) ein zusammenziehender Stoff* (कषायद्रव्य). — *c) ein best. Parfum* (चोर) H. an. 2,512. Med. l. 49. — 2) n. = शालूक *eine essbare Lotuswurzel* Çabdar. im ÇKDa.

शालुक n. = शालूक 1) Çabdar. im ÇKDa.

शालुड m. N. eines Unholds AV. 8,6,17.

शालूक Uṇādis. 4,42. n. Sidd. K. 248,*b*, 1 v. u. 1) n. *eine essbare Lotuswurzel* AK. 1,2,8,37. Taik. 1,2,34 (m.). H. 1167. AV. 4,34,5. Kauç. 83. 85. gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. Suçr. 1,241,18. 376,11. 2, 208,7. 509,7. Vaṛāh. Bṛh. S. 41,3. am Ende eines adj. comp. f. घा R. 3,76, 6. — 2) n. *Anschwellung im Schlunde* Kāraṇḍ. 1,28. गल° Suçr. 1,93,4. auch wohl 293,11. — 3) n. *Muskatnuss* Rāgān. im ÇKDa. — 4) m. = शालूर *Frosch* Rāgān. ebend. — 5) m. N. pr. eines Mannes gaṇa प्रभ्वादि zu P. 4,1,123. — Vgl. कण्ठ°, विष° (wohl fehlerhaft für विस°).

शालूकिनी (von शालूक) f. *eine an essbaren Lotuswurzeln reiche Gegend* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. N. pr. eines Dorfes 2,4,7, Schol. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3,5033.

शालूकेय m. patron. von शालूक gaṇa प्रभ्वादि zu P. 4,1,123.

शालूर (von शल्) m. 1) *Frosch* Uṇ. zu Uṇādis. 4,90. AK. 1,2,8, 24. H. 1354. Hit. 153. Halāj. 3,40. Kiçlan. 63,28 (nach Ausrufer). — 2) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2,164.

शालूरक m. *ein best. Eingeweidewurm* Kāraṇḍ. 3,7.

शालेन्द्रराज m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 274.

शैलेय (von शालि) 1) adj. *mit Reis bestanden* P. 5,2,2. AK. 2,9,6. H. 966. an. 3,809. Med. j. 107. Halāj. 2,7. — 2) m. *Anethum Panmorium* Roxb. oder *eine andere Anisart* AK. 2,4,8,28. Mad. f. घा dass. Rāgān. im ÇKDa. n. (wohl *das Korn*) dass. H. an.

शालोत्तरीय m. = पाणिनि ÇKDa. und Wilson nach Taik. 2,7,34, wo aber die gedr. Ausg. शाणोत्तरीय liest; die richtige Form ist शालातुरीय.

शाल्म Mālav. P. 58,25 wohl fehlerhaft für शाल्व.

शाल्मल m. = शाल्मलि 1) *Wollbaum* Çabdar. im ÇKDa. am Ende eines adj. comp.: स° MBh. 3,2403. Vaṛāh. Bṛh. 27(25),32. — 2) N. eines Dvipa Çabdam. im ÇKDa. VP. 2,4,21. fgg. Mālav. P. 54,6. Bhāg. P. 5,20,7. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,6. °द्वीप 41,*a*,26. fg. — 3) *das Harz des Wollbaumes* Ratnam. im ÇKDa.

शाल्मलि 1) m. f. Taik. 3,5,16. Sidd. K. 251,*a*,12. und °ली f. *Salmalia malabarica Sch. und E., Wollbaum* (von hohem Wuchs mit Dornen und rother Blüthe; der Same liegt in Wolle) AK. 2,4,8,27. Taik. 2,4,12. H. an. 3,687. Med. l. 137. M. 8,246. °फलक 396. Suçr. 1,28,2. 29,7. °पुष्प 223,7. °वृक्ष 2,436,21. 440,21. 1,110,16. 219,20. 2,286,3. 438,21. 473,13. षष्ठीला शाल्मलेः MBh. 3,10629. 5,2758. 3, 11878. 7,7568. 12,5804. fgg. Hariv. 12674. R. 3,79,36. 5,17,1. 52,14. 6,68,21. Ṛt. 1,26. Spr. (II) 2919. Hem. Anth. 528, Çl. 11. Vaṛāh. Bṛh. S. 57,1. Bṛh. 27(25),13. Kathās. 71,160. VP. 2,4,33. Mālav. P. 27,19. °तूल 38,7. Bhāg. P. 5,20,8. Pañcat. 1,7,33. Hit. 9,4. 80,14. Verz. d. Oxf. H. 324,*a*,3. 25. in der Hölle als *Marterbaum* Jiān. 3,223. R. 3, 59,21. 5,78,13. Mālav. P. 14,78. — 2) m. N. eines Dvipa Taik. 2,1,4. H. an. Med. gaṇa वरणादि zu P. 4,2,83 (wohl hierher). MBh. 6,403. VP. 2,2,5. Mālav. P. 53,18. Bhāg. P. 5,1,33. Pañcat. 2,2,33. Verz. d. Oxf. H. 33,*a*,24. — 3) m. N. pr. eines Mannes (patron.) gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80. eines Sohnes des Avikshit MBh. 1,3741. — 4) f. ई N. pr. eines Flusses R. 2,68,19 (70,18 Gorr.). LIA. 2,523, N. 1. in einer Hölle M. 4,90. — Vgl. का°, कु°, कूट° und शल्मलि.

शाल्मलिक 1) adj. (चतुर्थेषु) von शाल्मलि gaṇa कुमुदादि 2. zu P. 4,2,80. द्वीप MBh. 6,447. — 2) m. *Andersonia Rohitaka* (रोहितक) Roxb. Rāgān. im ÇKDa.

शाल्मलिन् (von शाल्मलि) 1) m. ein N. Garuḍa's Taik. 1,1,42. H. 230. Hit. 10. — 2) f. °लिनी = शाल्मलि 1) Çabdar. im ÇKDa.

शाल्मलिपत्रक m. *eine best. Pflanze,* = समङ्कर Rāgān. im ÇKDa.

शाल्मलिस्कन्ध m. ein N. Garuḍa's Rāgān. im ÇKDa. — Vgl. शाल्मलिन्.

शाल्मलीफल m. *eine best. Pflanze,* = तेजःफल Rāgān. im ÇKDa.

शाल्मलीवेष्ट m. *das Harz der Salmalia malabarica* AK. 2,4,8,27. °क m. dass. Ratnam. im ÇKDa. neutr. Suçr. 2,434,7.

शाल्मल्यै f. zum patron. शाल्मलि gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80.

शाल्यपति m. N. pr. eines Mannes Saṃsk. K. 184,*b*,1.

शाल्यूरु s. u. शालिवटू.

शाल्व 1) m. pl. N. pr. eines Volkes H. 937. LIA. 1,613. fgg. Gop. Br. 2,9. AV. Paṛiç. in Verz. d. B. H. 92 (50). Weber, Nax. 2,392. P. 4,1, 173. gaṇa भर्गादि zu 178. MBh. 2,590. 3,16664. 16904. 4,12. 6,346 (VP. 183). 8,2106. Hariv. 784. R. 4,43,23. Vaṛāh. Bṛh. S. 5,76. 14,3. 16,21. 17,13. 18. VP. 2,3,17. °नीयाः Mālav. P. 58,6. शाल्वेष्मकाः (wohl शाल्व°) 25. °राज (°राजन्) MBh. 1,4109. 3,667. fg. 5, 5974. 6007. 6029. 6093. 7017. 12,8607. 13,6267. Hariv. 4969. °पति MBh. 5,7016. °नगर Hariv. 15759. — 2) adj. oxyt. *zu den Çâlva gehörig* u. s. w. P. 4,2,135. gaṇa कच्छादि zu 133. gaṇa सिन्धादि zu 3,93. m. *ein Fürst der Çâlva* MBh. 1,2663. 4113. 4714 (त्रयः). 3,491. 669. 5,6076. 6078. 6087. Hariv.

2360. 5080. 5501. 5927. 9138. 9795. Bhâg. P. 2,7,34. unter den Feinden Vishṇu's H. 220. शाल्वारि m. Çâlva's *Feind* als N. Vishṇu's 221, Schol. — 3) f. या vielleicht N. pr. eines Flusses gaṇa नड्यादि zu P. 4, 2,97. — 4) n. *die Wurzel der* Çâlva-*Pflanze* P. 4,3,166, Vârtt. 2, Schol. — Oefters शाल्व geschrieben, aber nicht in den Bomb. Ausgg. Vgl. घनु°.

शौल्वक adj. (f. शाल्विका) von शाल्व 1) gaṇa कच्छादि zu P. 4,2, 134. मनुष्य, कृमित 135, Schol. गो, यवागू 136. रात्रन् MBh. 5,889. f. शाल्वकी gaṇa गोत्रादि zu P. 4,1,41.

शाल्वकिनी f. N. pr. eines Flusses R. 6,109,49.

शाल्वण m. *Brennschlag, Katoptasma* Suçr. 2,34,7. 42,17. 61,21. 86,13. 121,4. 125,7. 182,12. 321,16. 456,1. hier und da साल्वण. Vgl. मरु°.

शाल्वसेनि m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,368 (VP. 193).

शाल्वागिरि (शाल्व + गिरि) m. N. pr. eines *Berges* gaṇa किंशुलु-कादि zu P. 6,3,117.

शाल्वायन (von शाल्व) adj.: राजन् *ein Fürst der* Çâlva MBh. 2,891.

शाल्विक m. *ein best. Vogel*, = तुरुवुड u. s. w. Çabdak. im ÇKDh. (सा°).

शाल्वेय gaṇa नड्यादि zu P. 4,2,97 (von शाल्व). m. pl. N. pr. eines Volkes P. 4,1,169. MBh. 3,15576. 5,2138. Davon शौल्वेय *ein Angehöriger oder Fürst der* Çâlveja P. 4,1,169. Auch mit स geschrieben.

शाल्वेयक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 4,972. 5,5652.

1. शाव (vgl. शिशु) m. *das Junge eines Thieres* H. 338. Halâj. 2,347. मृगा: सार्धं शावै: Harîv. 13439. सिंह° 9105. Kâm. Nîtis. 7,4. Râgat. 6,8. 18,36. Çik. 105,14. Spr. 3254. Varâh. Bṛh. S. 104,28. Uttarar. 94,6 (122,12). Mârk. P. 43,34. Riḍa-Tar. 3,112. Sarvadarçanar. 119,21. Vgl. मृग° (auch MBh. 3,16164. R. 3,24,18. Çik. 51. Bhâg. P. 4,2,12).

2. शाव (von शव) adj. *einem Leichnam angehörig, von einer Leiche herrührend:* कर्ण Bhâg. P. 2,3,21. कपाल Harîv. 384. कलेवर Siv. 5, 61 (श्याव MBh. 3,16809. शाव ed. Bomb., welches Nîlak. ohne alle Noth durch श्याम erklärt). स्वतनूद्भव so v. a. *entseelt* Harîv. 1142 (शोच्य die neuere Ausg.). खाशौच Pân. Gaṇ. 3,10. M. 5,59. 61. fg. 74. Jâjñ. 3,16. u. so v. a. शावमाशौचम् Mârk. P. 32,28. शावशेषास्थिनिचय R. 3,77,22 fehlerhaft für सावशेष°, wie die ed. Bomb. liest.

3. शाव adj. fehlerhaft für श्याव H. 1396, v. l. und sonst.

शावक m. = 1. शाव AK. 2,5,25. कार्ष्णि° 2,8,9,2. कुरङ्ग° Spr. (II) 1134. मृग° Varâh. Bṛh. S. 48,12. Kâdamb. 26. मूषिक° Hit. 113,6. पत्ति° 18,10. 19,13. बक° 111,20. शुक° Spr. 2981. पिक° Riḍa-Tar. 3, 107. मुनि° (°शावक gedr.) *Brahmanenknabe* Verz. d. Oxf. H. 17,*b*, No. 63, Z. 4 v. u.

शावता f. fehlerhaft für श्यावता Çiâm. Saṃh. 1,7,70.

शावत्व n. nom. abstr. von 1. शाव am Ende eines adj. comp.: द्वित्रि-चतु:° der Krähen Varâh. Bṛh. S. 98,6.

शावर sowie die damit zusammengesetzten und davon abgeleiteten Wörter s. u. शाबर u. s. w.

शावसायन m. patron. von शवस् Ind. St. 4,373.

शावस्त, शावास्त und शावस्ती s. शावस्त u. s. w.

शाश (von शश) adj. vom *Hasen kommend:* मांस *Hasenfleisch* Jâjñ. 1,258.

शाशक adj. dass.: शाशकं (शशकं die neuere Ausg.) मृगमांसं च Harîv. 7843.

शाशबिन्दव adj. (f. ई) von Çaçabindu *stammend:* कुमारा: MBh. 7, 2324. प्रजा 12,7579.

शौशादनक adj. von शशादन gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

शाशिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,354. शाशिक ed. Bomb.

शाश्वत् m. N. pr. eines Lexicographen Mat. Anh. 1 wohl nur fehlerhaft für शाश्वत, das gleichfalls in's Metrum passt.

शाश्वत (von शश्वत् adv.) 1) adj. (f. ई) *stetig, beständig, immerwährend, ununterbrochen, durchgängig, ewig* AK. 3,2,22. 3,4,22,218. Taik. 3,3, 271. H. 1453. Halâj. 1,125. शाश्वतीभ्य: समीभ्य: so v. a. *für immer* VS. 40,8. शाश्वती: समा: dass. MBh. 1,5945. 3,13634. 12,9192. R. 1,2,18 (= Uttarar. 27,16. ed. Cow. 36,7). 64,20. Bhâg. P. 3,14,19. कृमि° TBr. 2,5,8,2. Seele Kâtjây. 2,18. मुख 3,12. Çvetâçv. Up. 6,12. M. 4, 232. 6,80. यमौ स्थानम् 1,18. मूर्तिर्धर्मस्य 98. वर्णानामाचार: 107. 112. 118. 2,244. 3,146. 4,259. 5,36. 7,4. 43. 8,8. 9,1. 37. 12,123. Bhag. 14, 27. MBh. 1,1166. 4034. 2,2007. 3,16806 (शाश्वती: Siv. 5,58 fehlerhaft). R. 1,33,12. 60,27. 2,60,21. 85,13. 97,23 (106,21 Gorr.). 100,26 (108, 25 Gorr.). 4,22,14. 36,8. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,122. Suçr. 1,3,18. 312,13. Kâm. Nîtis. 4,77. Ragh. 14,14. Çiç. 14,12. Spr. (II) 292. 468, v.l. 1014. (I) 4820. Varâh. Bṛh. S. 43,34. °मन्दिर *einen beständigen Wohnsitz habend* 53,38. Mârk. P. 38,19. 39,8. Bhâg. P. 5,16,31. Prab. 18,6. Pañkat. 100,6. घ° Maitrâjan. 1,2. Spr. 5193. Pañkat. 4,16. शाश्वतम् adv. *stets, auf immer* R. Gorr. 2,110,12. 6,101,12. Milârin. 3,8. — 2) m. *a) die Sonne.* — *b)* Bein. Çiva's Çabdâmbuṇ. bei Wilson. — *c)* Bein. Vjâsa's Çabdam. im ÇKDh. — *d)* N. pr. *α)* eines Sohnes des Çruta und Vaters des Sudhanvan VP. 4,5,12. — *β)* eines Lexicographen, Verfassers des Nânârthakoça, Uṇâdiv. zu Unâdis. 1,114. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,8. 126,*a*,21. 162,*b*,28. 167,*a*,39. 182,*a*, No. 414. 183,*a*,2. 188,*b*,43. 195,*b*,7; vgl. शाश्वत्. — 3) f. ई *die Erde* Çabdâmbuṇ. bei Wilson. — 4) n. *a) Beständigkeit, Ewigkeit:* तवैतद्धर्मशाश्वतम् MBh. 3,1198. — *b) Himmelsraum* Çabdâmbuṇ. bei Wilson. — Vgl. पारि°.

शाश्वतत्व (von शाश्वत) n. *Beständigkeit, Ewigkeit* MBh. 12,7563.

शाश्वतिक adj. = शाश्वत Vop. 7,16. fg. H. 1453, Schol. ṚV. Prât. 13, 4. Nir. 4,6. P. 2,4,9. 6,4,144, Vârtt. 6. Suçr. 1,91,16. Verz. d. Oxf. H. 178,*a*, No. 404.

शाश्वतीन m. N. pr. eines Mediciners Verz. d. B. H. No. 1006.

शाष्कुल adj. *Fleisch geniessend* H. 429. Vgl. शौष्कुल.

शाष्कुलिक 1) adj. = शाष्कुलीव gaṇa सङ्कुलाद्यादि zu P. 5,3,108. = शाष्कुली भक्षिरस्य 4,3,96, Schol. — 2) n. *eine Menge von* शाष्कुली Schol. zu P. 4,2,17 und 39, Vârtt. 3. AK. 3,3,40.

शौष्यक adj. von शष्य gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

शाष्येय m. N. pr. eines Lehrers gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

शाष्येयिन् m. pl. *die Schule des* Çâshpeja ebend.

1. शास्, शास्ति (अनुशिष्टे) Dhâtup. 24,67. du. शिष्टस् P. 5,4,34. Vop. 8,34. 9,36. 3. pl. शासति P. 6,1,6. imper. शाधि 4,35. Vop. 9,8. 36. potent. शिष्यात्, imperf. 3. अशात् P. 8,2,73. 2. अशास् und अशात् 74. vedisch und episch überaus häufig auch शासति u. s. w.; vedisch श-

शास 2. pl. (निस्) शशास्. (उद्) शशाधि; शशास, aor. अशिषत् P. 3,1,56. 6,4,34. 8,3,60. Vop. 8,38. 9,36. शासिष्यति; med. s. u. धा, episch auch sonst; शासितुम् (R. Rāja-Tar. Bhāg. P.) und शास्तुम् (MBh. R.); शासित्वा und शिष्ट्वा, °शिष्य und °शास्य; pass. शिष्यते (शिष्ये häufig fehlerhaft für शिष्ये von शी) und शास्यते; partic. शिष्ट (s. bes.), शासित und शास्त (MBh.). 1) *zurechtweisen, strafen* (mit Worten): अर्किर्भवते वन्धया शासदव्रतान् RV. 1,51,8. शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयज्युम् 131,4. पत्न्या पितेव कितवं शशास 2,29,5. SV. 1,4,1,6. *züchtigen, strafen* überh. M. 4,173. 8,39. 314. 316 (अशासित्वा). तस्कराम् 9,254. 272. 11,31. MBh. 3,14882. 14888. 5,3562. R. 3,55,29. Kir. Nitis. 6,6. Bhāg. P. 4,17,16. 18,35. pass. शास्यताम् Harīv. 4754. R. 6,16,35. शासित Hit. 65,13. — 2) *in Zucht —, im Zaum halten:* दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः Spr. (II) 2688. दोषान्तिपति चान्येषां नात्मानं शास्तुमिच्छति MBh. 11,118. R. 3,76,17. 7,84,13. Bhāg. P. 4,13,42. धर्मं राजा साधु यः शास्ति so v. a. *handhaben* Spr. (II) 3130. सत्यव्रतशासित *im Zaum gehalten* R. 4,6,31. सुशासिता स्त्री Spr. 3266. — 3) *herrschen über, beherrschen:* मनोः प्रजा धर्मेण शासतः MBh. 13,1945. Kathās. 11,1. भूरसेनान् Harīv. 9110. शास्ति यशास्तया राज्ञः स सम्राट् AK. 2,8,4,3. H. 690. भूमिम्, पृथिवीम् u. s. w. MBh. 12,813. Harīv. 14408. R. 2,35,10. 37,27. 39. 5,37,19. Mṛicch. 178,1. Raghu. 1,30. 10,1. Çiç. 24. Vaitān. Bṛh. S. 8,30. 13,3 (= Rāja-Tar. 1,56). Bṛh. 11,8. Kathās. 3,77. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Çl. 14. Rāja-Tar. 3,242. 4,7. Bhāg. P. 1,10,3. 16,1. 3,1,20. 13,11. 21,25. 4,12,13. 21,7. 8,16,11. 12,1,9. Bhaṭṭ. 3,53. त्रिनाकम् Bhāg. P. 6,13,16. 8,1,18. यशासत्सकलं जगत् 23,4. पुरीमयोध्याम् R. 1,6,26. तौ पृथग्वरदाकूले (acc.) शिष्टामुत्तरदक्षिणे Mālav. 88. राष्ट्रम् Rāja-Tar. 2,116. यगस्त्यशास्तां दिशम् MBh. 3,4376. राज्यं शास् *als Fürst regieren* MBh. 3,3066. R. 4,8,34. Raghu. 14,68. 19,57. Kathās. 34,210. 51,65. 54,238. 58,110. 62,166. Rāja-Tar. 1,353. 7,618. स शास्ति चिरमेश्वर्यम् R. 5,11,10. ohne obj. *regieren:* तस्मिन् शासति भूपतौ Mārk. P. 116,76. — 4) *Jmd einen Befehl ertheilen, Jmd anweisen, als Gebieter zu Jmd reden* MBh. 1,97. R. 2,23,41. 30,38. 32,40 (48 Gorr.). 82,30. 105,6 (wohl शास्मि st. शाधि zu lesen). R. Gorr. 1,30,24. 6,16,35. Raghu. 12,34. 15,79. Kumāras. 6,24. Kathās. 20,94. Bhāg. P. 3,13,9. 23,27. यास्तुमन्यानशिषत् Bhaṭṭ. 9,68. एकः कर्मसु शिष्यते Prab. 110,13. *anbefehlen:* स्वयं शाधि यत्ते विधानम् MBh. 14,220. शासित R. 7,108,27. Kathās. 18,35. — 5) *unterweisen, belehren* Nir. 3,4. RV. 3,1,2. 31,1. 8,34,1. 9,102,4. कविं शशासुः कवयो उदग्घाः 10,42,12. 82,1. 93,11. नाशिष्तं शिष्यात् Āçv. Gṛhy. 1,17,17. Çat. Br. 13,1,6,1. Kāṭh. Ça. 6,8,1. शिष्यस्ते ऽहं शाधि माम् Bhag. 2,7. Spr. (II) 720. शास्त्रं न शास्ति दुर्बुद्धिं श्रेयसे चेतराय च (I) 5072. mit doppeltem acc.: माणवकं धर्मं शास्ति Siddh. K. 35,b,2. Spr. 3085. Bhaṭṭ. 6,10. गुरुभिः शिक्षितो ऽपि न शिष्यसे त्वम् (शिक्षितस्त्वम् ed. Bomb.) *lässt dich nicht belehren* Pañcat. 94,20. सर्वशास्त्रेषु मूतस्तु व्यासशासितः Verz. d. Oxf. H. 9,b,15. fg. 15,a,10. Vgl. मातृशासित. — 6) etwa *tadeln, verwerfen:* गावो यच्छासन्वरुणं न धेनवः RV. 10,33,4. — 7) = शंस् *preisen:* यो ऽकार्षे कार्यवच्छास्ति Spr. (II) 3586. *verkünden, beichten:* स्वमेनः M. 11,82. *berichten, mittheilen:* तस्मिन्नायोधनं वृत्तं लक्ष्मणायाशिषत् Bhaṭṭ. 6,27. *verkündigen, vorhersagen:* विप्रव्यधौ गोकरणं च शास्ति (सा) Vaitān. Bṛh. S. 89,5. आशिषम् 90,5.

— caus. शासयति, अशशासत् P. 7,4,2. Vop. 8,111. 18,1.

— अनु 1) *anweisen, belehren, den Weg zeigen, eine Weisung ertheilen, Verhaltungsmaassregeln geben, instruiren:* यो यज्ञेनानुशासति RV. 5,34,1. पथेव यन्तावनुशासता रजः 1,139,4. Çat. Br. 11,5,8,7. 14,6,11,1. Maitrāyaṇ. 4,1. आचार्यो ऽन्तेवासिनमनुशास्ति Taitt. Up. 1,11,1. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 3,165. MBh. 1,3884. 2,1446. 3,11424. धन्वशास्तस्य पुत्रवदृतर्षभान् 11350. 11911. न चानुशिष्यादज्ञानमयुक्तम् 4,98. 5,1362. 7,3319. 10,612. 13,7194. R. 2,103,12. 111,19. 25. R. Gorr. 2,23,35. 38,39. 3,71,14. Kumāras. 5,5. Çiç. 71,9. Vikr. 70,13. Bhāg. P. 5,5,15. यथान्वशासन्नकुलम् — आरुरुक्षमाणो ऽनौ वीर घनूंष्येतानि निक्षिप MBh. 4,169. 1318. Harīv. 11244. R. 2,36,24. 81,11. 96,25. R. Gorr. 2,12,23. 61,29. Rāja-Tar. 4,310. LA. (III) 92,10. धनुशाधि किंकरान् Bhāg. P. 7,8,48. धनुशास्य absol. R. 3,76,27. 5,1,16. Bhāg. P. 4,11,25. 5,5,28. 9,6. *als Höher Stehender zu Jmd reden* R. 2,90,15. Vikr. 86,19. fg. mit acc. der Sache *Etwas lehren* Knos. 3. Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489. Bhāg. P. 1,5,15. 2,7,21. *angeben:* धनु म एनो भगवो देवता शाधि यो देवतामुपास्से Kaṭh. Up. 4,2,2. *anbefehlen:* यज्ञानां प्रतियातं च स्वादनं चैव R. 2,50,33 (47,24 Gorr.). mit doppeltem acc. *Jmd Etwas lehren:* माणवकं धर्ममनुशास्ति P. 1,4,51, Schol. गोपालानन्वशात्केलीन् Vop. 5,6. धारणेयमुपाध्यायं यत्र धर्मो ऽन्वशात्सुतम् MBh. 1,477. Bhāg. P. 5,4,15. धनुश्चमनुशास्य दर्शनम् R. 2,21,68. *Jmd Etwas anweisen, anbefehlen:* करिष्ये सर्वमेवाकुमार्या यदनुशास्ति माम् R. 2,39,27. pass. *gelehrt werden:* लौकिकाः शब्दा धनुशिष्यन्ते Sarvadarçanas. 135,16. 136,10. Sāh. D. 272,15. नानिष्टा क्वनुशास्यते *wird belehrt* R. 3,14,23. partic. a) धनुशिष्ट α) *belehrt, unterwiesen, angewiesen, instruirt* RV. 5,2,8. तेत्रवीदनुशिष्टः 10,32,7. AV. 13,56,4. Çat. Br. 14,4,2,26. 9,4,1,5. Spr. (II) 491. R. Gorr. 2,27,23. 30,33. 4,45,7. Raghu. 6,59. 13,75. Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 304. Rāja-Tar. 5,400. Mikk. P. 36,1. Daçak. 79,4. Bhāg. P. 3,22,7. धनुशिष्टेन किं भाव्यं पितुः (vom *Vater*) पुत्रेण 5,9,4. 10,12,14. *angeredet* (von einem Gebieter) 6,6,3. mit acc. der Sache: पाणिग्रहणकाले च यत्पुरा पावकात्तरे । धनुशिष्टा ध्रुवन्या किं तच्च मे हृदि वर्तते ॥ R. 3,3,8. R. Schl. 2,27,10. — β) *gelehrt, mitgetheilt:* एष धर्मो ऽनुशिष्टो वः M. 6,86. Kumārila bei Müller, SL. 80. Sarvadarçanas. 153,20. सो ऽयत्नेनानुशिष्टार्थः R. 4,31,9. — b) धनुशास्त *belehrt, unterwiesen* MBh. 12,11818. Verz. d. Oxf. H. 11,b,18 v. u. — c) धनुशासित *belehrt* Bhāg. P. 2,5,8. 4,20,17. — 2) *herrschen über, beherrschen:* कुङ्कुनमपत्नो (so ed. Bomb.) ऽनुशिष्याम् MBh. 5,914. प्रजाः Harīv. 11234. R. 2,100,36. Kathās. 18,32. 27,55. पुरीजनम् Bhaṭṭ. 20,17. वसुंधराम्, मेदिनीम् u. s. w. MBh. 1,2978. 12,2594. 2838. 14,359. R. 2,110,37 (119,34 Gorr.). Rāja-Tar. 1,191. 286. Bhāg. P. 5,1,28. राष्ट्रम् MBh. 2,179. अयोध्याम् R. Gorr. 1,80,25. त्रिदिवम् 7,30,50. त्रींल्लोकान् MBh. 13,3904. यगस्त्यगुप्तामाशाम् Harīv. 6391. स्वराज्यम्, राज्यम् MBh. 1,4124. 2,2434. 3,8332. R. 2,106,23. R. Gorr. 1,45,55. 58,6. Kathās. 49,7. — 3) *bestrafen:* स्वकर्म व्यापन्नमाज्ञां भवाननुशास्तिवति M. 11,99. — 4) *vollziehen:* तीर्थितं धनुशिष्टं च यत्र क्वचन षड्वेत् । कृतं तदमलो विद्याद्व तद्यो निवर्तयेत् ॥ M. 9,233. — 5) *preisen, loben:* सभिर्यमनुशासन्ति MBh. 13,1084. nach Nīlak. ist धनुशंसन्ति die richtige Lesart. — Vgl. अनुशासन fgg.

— सम्यनु *angeben, bezeichnen, nennen:* सन्यमभ्यनुशासानि *ich will*

einen Andern bezeichnen (der die Frage zu lösen vermag) Kuiko. Up. 5,11,3.

— समनु 1) *belehren, Jmd Etwas beibringen;* mit doppeltem acc.: °कर्माणि समनुशिष्टेन भाव्यम् Bhāg. P. 5,9,6. — 2) राज्यम् *das Regiment führen, regieren* MBh. 3,2449.

— अभि 1) *anweisen:* यो गृहो अभिशासति ṚV. 6,54,2. — 2) *beherrschen:* उर्वीम् MBh. 13,4582.

— आ 1) med. (ausnahmsweise auch act., z. B. Ça. Br. 14,4,4,22. MBh. 3,12071) *erwünschen, erbitten, erhoffen, erwarten* Dhātup. 24,13. तदा शास्ते यजमानो कविभिः ṚV. 1,24,11. तं वो वयमा शास्महे अरितृभ्यः 30,10. दाशुषे वार्याणि 163,13. 165,4. 9,99,5. VS. 21,61. AV. 14,1,43. स्वस्तिम् TBr. 1,4,10,2. TS. 3,5,5,3. Ça. Br. 1,1,2,12. 7,4,11. 8,2,21. दीर्घायुत्वम् 9,4,13. आशासाना मेधपतिभ्यो मेधम् TBr. 3,6,6,1. Âçv. Çr. 1,9,5. सख्यः पितरो देवाः u. s. w. आशासते कुरुभ्यः *erwünschen, erwarten von* M. 3,80. यो अस्माकं नित्यमाशास्ते मङ्गलम् *wünscht* MBh. 3,12430. 5,7137. 6,4585. देवानां कच्चिदाशास्ते प्रसादम् R. 5,33,32. Spr. (II) 190. शक्रदत्तमाशास्ते Çiç. 51,19. सर्वमस्मिन्वयमाशास्महे 112,3. Uttarar. 5,6 (7,15). Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 124. Bhāg. P. 3,14,28. 21,18. 4,6,6. 20,31. 5,3,13. 18,19. 6,18,35. 7,13,42. 9,4,64. Bhaṭṭ. 5,16. 17,1. आशास्यात्मनः प्रियम् R. 2,6,3 (5,3 Gorr.). आशासित Bhāg. P. 10,78,23. Häufig mit आशिषम् (आशिषः) *einen Wunsch wünschen* Çat. Br. 1,8,1,9. 10. 9,1,1. 21. TS. 1,5,6,1. 2,6,6,6. Âit. Br. 1,13. 3,38. आत्मने च यजमानेभ्यश्च 4,20. Bhāg. P. 3,23,1. 5,3,8. 8,11. 14,48. 23,8. 26,5. 7,10,4. 11,8,16. Bhaṭṭ. 14,90, v. l. *bittend richten:* सखाय आ शिषामहि (SV. °महे) ब्रह्मेन्द्राय ṚV. 8,24,1. mit acc. der Person *Jmd alles Gute wünschen:* (नृपम्) सप्तभिराशास्यमानं सुप्रीतैः शक्रमङ्गिरसैरिव R. Gorr. 1,70,4. — 2) act. *anweisen, Jmd einen Befehl ertheilen:* रक्षांसि रक्षितुं सीतामाशिषच्च Bhaṭṭ. 6,4. — आशासित Kathās. 56,70 fehlerhaft für आशासित. Vgl. आशास्य (zu wünschen MBh. 6, 1585 nach der Lesart der ed. Bomb. als n. auch Kumāras. 7,87, wo आशास्यचित्ता° zu schreiben ist), आशिस्.

— संप्र MBh. 5,4998 fehlerhaft für संप्र, wie die ed. Bomb. liest.

— उद् *hinaufweisen,* — *leiten* (zu den Göttern): नू मे ब्रह्मणस्पत उद्देशाधि ṚV. 7,1,20. 25.

— नि *sondern von* (instr.): नि तं शीर्ष्णि गार्हपत्येन विद्वान् AV. 12,2,9. *Jmd* (abl.) *entziehen:* नि देवीर्देवेभ्यो यज्ञमशिषन् TS. 3,5,6,3.

— निस् *verscheuchen:* द्यावापृथिव्या निःशीर्षा घर्मम् ṚV. 1,80,1.

— प्र 1) *unterweisen, belehren, anweisen:* प्र पाके शास्ति ṚV. 1,31,14. सनुःप्रशासदिं दिवो 93,3. प्र नः शाधि यथा प्रशास्यामः Çat. Br. 11,5,8,4. त्रितं नरश्च प्र शिषन्ति (शिषतः Padap. partic.) दृष्टये ṚV. 10,115,4. (मां) कः प्रशासिष्यति पुनस्तातो लोकान्तरं गते R. Gorr. 2,111,17. Bhāg. P. 6,17,12. Bhaṭṭ. 19,19. — 2) *Jmd anweisen* so v. a. *ihm eine Weisung geben, über ihn verfügen:* किं कार्यमस्ते प्रशाध्यस्मान् MBh. 2,2132. 5,974. 978. R. 1,20,18 (21,17 Gorr.). प्रशाधि यन्मया कार्यम् Mārk. P. 61,47. प्रशास्तु मां यच्च ममास्ति किंचन *verfüge über mich und über Alles was ich besitze* MBh. 4,381. — 3) *bestrafen* MBh. 5,6096. Kathās. 46,19. प्रशास्य absol. 18,45. — 4) *verfügen über* so v. a. *herrschen über, beherrschen:* पार्थिवान्सर्वान् MBh. 1,6095. मत्स्यान् 4,235. 5,7351. प्रजाः R. Gorr. 1,70,3. Rāgān. 9,1. अधि रिपून् Vāmān. Bhn. S. 104,41. वसुंधराम् u. s. w. MBh. 1,2468. 3725. 4993 (med.). 3,1868. 2024. 10283. 11929. 15102. 5,883 (प्रशास्ता वै पृथिवीं येन सर्वा). 12,522. R. 2,18,38. Kathās. 30,60. Spr. 2790. Rāja-Tar. 1,332. 4,88. प्रशास्य absol. Spr. (II) 4769. Rāja-Tar. 1,282. Mārk. P. 25,7. — नगरम् MBh. 3,2194. पितुः पदम् Rāgān. 6,76. राज्यम् *regieren* M. 9,66. MBh. 5, 5317 (med.). Harīv. 9826 (med.). R. 1,44,60. 2,50,24. 52,24. 90,10. R. Gorr. 2,34,3. 4,8,35. 17,54. 5,2,38. 7,35,19. 99,13. Mārk. P. 18,11. 130,32. प्रशास्य MBh. 3,9913. यात्मा सर्वमिदं प्रशास्ति *leitet, regiert* Çat. Br. 14,7,2,24. 8,2,1. येनेन्द्रत्वं प्रशासितम् *das Amt Indra's verwaltet* R. 7,56,23. सर्वकार्याणि पौरजानपदेषु च *über alle Angelegenheiten entscheiden* 38,1. पक्षदाने प्रशाध्यस्मै so v. a. *darüber bestimmen* MBh. 12,3920. — प्रशास्त Âpast. 1,31,14 fehlerhaft für प्रशस्त. Vgl. प्रशासन fgg., प्रशिष्टि, प्रशिस्, सर्वप्रशिष्ट, वरुणप्रशिष्ट.

— संप्र *regieren:* राज्यं संप्रशासेत् (so ed. Bomb.) MBh. 3,4998.

— प्रति, partic. °शिष्ट 1) *abgeschickt, entsandt (mit einem Auftrage)* Tāṇḍ. 3,3,99. H. 1492. — 3) *verweigert* Taitt. — Vgl. 1. प्रतिशासन.

— सम् *anweisen, auffordern* Ait. Br. 2,6. Çat. Br. 3,8,3,4. Pāṇ. Gaṇ. 2,3. Âçv. Gṛhj. 1,14,6. अपेतसंशिष्याद्वा *er spreche selbst oder heisse sprechen* 3,12,20. *zusammenweisen mit* (instr.): प्रियमेधैर्वेनो तनुवा संशास्ति TS. 5,2,4,1. partic. °शासित *belehrt, unterwiesen* Verz. d. Oxf. H. 9,b,16. — Vgl. संशिस्.

2. शास् (= 1. शास्) f. *Gebet:* ते चिद्धि पूर्वीरिभ मर्त्तेषु शासा ṚV. 7,48,3. शासा मित्रं दुर्धरीतुम् *den kein Verbot* (Anderer) *abhält* 10,20,3. concret *Gebieter:* यः शासामुग्रो मन्यमानो ब्रिधीसति *unter den Herrschern für gewaltig sich haltend* 2,23,13. oder zu 2. शास.

3. शास् s. 1. शस्.

4. शास् = 3. शास्; vgl. उक्थ°.

1. शंस (von 1. शास्) m. *Anweisung, Gebet:* रातरत्नः प्रति यः शासमिन्वति ṚV. 1,54,7. मोषण्यवे वस्य शंसं तुरासः 68,9. — Vgl. दुः°, सर्व°.

2. शासं (wie oben) m. *Gebieter:* दिव्यं शासमिन्द्रम् ṚV. 3,47,5. शास इत्था महो अर्णः 10,132,1. angeblicher Liedverfasser zu diesem Liede ṚV. Anukr.

3. शासं (von 1. शास्) m. *Schlachtmesser:* °कस्य Ait. Br. 7,17. Çāṅkh. Çr. 15,25,1. यत्रिं वै शास इत्याचक्षते Çat. Br. 3,8,1,4. 5. 13,2,2,16. Kāṭy. Çr. 6,4,11. 16,1,13.

शासक (von 1. शास्) nom. ag. = शास्तर् H. an. 2,200. Med. f. 62. *Gebieter, Herrscher;* s. मही°.

शासन (von 1. शास्) 1) adj. nom. ag. (f. ई) a) *Züchtiger, Bestrafer* H. 10. अरि° R. 2,21,15. रक्षि° Pāṇ. 4,3,137. Vgl. पुर°, स्मर°. — b) *Unterweiser:* शासनी *praeceptrix* ṚV. 1,31,11. शासनं वचः *Lehre* Bhāg. P. 1,8,30. — 2) n. am Ende eines adj. comp. f. या. a) *Bestrafung, Züchtigung* H. an. 3,425. Med. n. 141 (शासि fehlerhaft für शास्ति; daher bei Wilson die Bed. *devotion, or devotional tranquillity, the government of the passions*). M. 8,316. कुर्वीत शासनम् 9,262. Spr. (II) 2190. शत्रूणाम् Harīv. 7590. कृतपापस्य राजशासनम् Kathās. 49,59. चिक्लिता राजशासनैः *mit den vom Fürsten verhängten Strafen* (u. d. W. nach Koll. anders aufgefasst) M. 10,55. तं विचक्ष्य सुतं पुत्रे शासनैर्वि-

विधेर्नृपः Bhāg. P. 4,13,42. — b) *Herrschaft, Regiment* Kām. Nītis. 14, 12. कुसुमशरासन° Gīt. 11,4. शासनं प्रतिगृह्यताम् MBh. 14,2174. नरेश्वराः शासनमुद्वहन्ति Spr. (II) 1816. स कृत्वा पृथिवीं कृत्स्नां शासने R. 7, 67,6. विनयेष्वधिरोप्य शासनम् — सखिलदेशराजसु Kathās. 20,225. सकलभूपालमस्तकन्यस्त° 84,3. अनन्यशासनामुर्वीम् Rāgat. 1,30. महनीय° 3,69. व्याप्त° Mālav. P. 116,6. तीव्र° MBh. 12,3220. उग्र° 3,2155. घटत्पुय° Bhāg. P. 4,14,3. ऊर्जितषड° 7,4,12. ऊर्जित° Kathās. 59,59. 97,5. राज्यार्ध° *Herrschaft über* MBh. 1,224. यामशत° Kathās. 94,110. — c) *der schriftliche Befehl eines Fürsten, Edict, Schenkungsedict* Taik. 2,2,1. H. an. Med. Hia. 175. शासनं लेखयित्वा Kathās. 124,62. fgg. Rāja-Tar. 3,169. fg. शासनं पट्टे मूलमात्रानिवेशितम् Mālav. P. 36,5. राज्ञः शासनहूण्यकः Mudrār. 155,10. तुलाशासनमानानां कूटकृत् Jiān. 2,240. ऊनं वाप्यधिकं वापि लिखेद्यो राजशासनम् 295. यदहं वो शासनशतेन योजयिष्यामि Pañcat. 4,35. 5,2. यथकरतु इराणः शासनं ब्राह्मणानाम् *ein auf den Namen von Brahmanen ausgestelltes Schenkungsedict* Journ. of the Am. Or. S. 7,44. शूद्र° *auf den Namen von* Çūdra Taik. 2, 2,1. *Verleihung von Ländereien* H. an. Med. — d) *Anweisung, Geheiss, Gebot, Befehl* AK. 2,8,4,25. H. 277. H. an. Med. उत ब्रघ्नस्य शासनि रणन्ति ṚV. 3,7,5. Çiṅkh. Br. 13,9. MBh. 3,2277. एतच्छासनमिच्छन् Hariv. 14518. शासनं भर्तुरोप्सवः R. 2,68,20. शासनमाज्ञाय भ्रातुः 32,1. 34,12. 52,70. 58,22. 89,9. 3,51,8. एवं मम शासनम् 7, 19,8. न प्रीतो नृगशासनम् 53,16. यद्येकं शासनं (*Befehl* —, *Auftrag seines Fürsten*) वदेत् (दूतः) Kām. Nītis. 12,8. (तस्मिन्) महीं शासति शासनाङ्काम् Rāgat. 18,28. तरुभिरपि देवस्य शासनं प्रमाणीकृतम् Çiç. 78,19. यच्छासनं प्रत्यनुरक्ता वयम् Mālav. 73,14. वाल्यं गुरुशासनवर्जितम् Kathās. 27,166. Weber, Kṛishṇaj. 284. Bhāg. P. 2,9,18. धृतराष्ट्रस्य शासनात् *auf Geheiss, auf Befehl* MBh. 1,431.7105. 3,1727. 2113. 2376. 2381. 2739. 2973. 13,2177. R. 1,1,30 (32 Gorr.). 2,68,6. 82,21. 4,37,12. Rāgat. 12,31. Spr. 3292. Rāja-Tar. 2,116. मूर्ध्नि धृतशंभवशासनः Kathās. 50,105. यच्छासनं तु पात्यम् 26,201. कुर्वतः शासनं तस्य *dem Befehl gehorchen* MBh. 7,1408. R. 1,64,5. 67,27. 2,21,6. 45,9. 103,27. 7,16, 43. Mālav. P. 50,97. तिष्ठेत्तेषां च शासने *gehorche* M. 7,27. MBh. 2,1970. R. 1,52,8. Kām. Nītis. 11,51. Çiç. 88,16. Vikr. 155. Mālav. P. 99,24. Bhāg. P. 4,14,19. °वर्तिन् *gehorchend* Kathās. 148,135. यच्छासनपराङ्मुखो Bhāg. P. 4,17,21. न शासनम्। विकृत्यमानमिच्छामि R. 7,108,15. पित्रोरनुल्लङ्घितशासनः Kathās. 50,162. Bhāg. P. 5,26,6. 12,1,9. अलङ्घ° 4,4,14. °लङ्घन Spr. (II) 1594. यतत° Rāja-Tar. 1,99. कुण्ठित° 5,138. — e) *Unterweisung, Belehrung:* कृष्णस्य विदुलापुत्रशासनम् MBh. 1,333. कडितोरोत्वशासनात् *weil der Uebergang in ई gelehrt wird* Kāç. zu P. 3,2,139. *Vorschrift, Lehre:* वृद्धानाम् MBh. 3,2039. मताम् Kām. Nītis. 6,9. सुहृदामर्थकामानां यो न तिष्ठति शासने *wer nicht den Rath befolgt* Spr. 3280. धर्म° = धर्मशास्त्र Mallin. zu Naish. 1,5. *Lehre* so v. a. *Glaube, Religion:* यावां सुगतशासनम् Kathās. 72,95. जिन° Rāja-Tar. 1,102. शिव° Verz. d. Oxf. H. 238,b,3. — Vgl. कूट°, ताम°, दुः°, धर्म°, पाक°, 2. प्रति°, ब्रह्म°, भीम°, महा°, वस्तु°.

शासनदेवता f. *eine die Befehle eines* Arhant's *ausführende Göttin* H. 46.

शासनदेवी f. dass. Çatr. 1,7.

शासनधर adj. *einen Befehl —, einen Auftrag überbringend;* m. *Bote* Spr. 2297.

शासनवाहक dass. Kām. Nītis. 12,3.

शासनहर dass. ÇKDa. und Wilson.

शासनहारक dass. Kām. Nītis. 12,3, v. l.

शासनहारिन् dass. Rāgat. 3,63.

शासनीय (von 1. शास्) adj. *zu unterweisen, zu belehren* Çiç. 35,18, v. l.

गुरोः *von einem Lehrer* Verz. d. Oxf. H. 238,b, N.

शासितर् (wie eben) nom. ag. 1) *Züchtiger, Bestrafer* M. 7,17. पापानाम् MBh. 12,7552. Çiç. 24. Sis. zu ṚV. 3,23,12. — 2) *Herrscher, Gebieter* Rāja-Tar. 4,645. भूमितुण्डिक° Kathās. 48,64. — 3) *Unterweiser, Lehrer* Taik. 3,1,11. M. 11,35. Rāgat. 1,93. 5,11. स्वधर्मस्य M. 2, 150. पतञ्जलिः कवे योगस्य शासिता Sarvadarçanas. 138,17. fg. — Vgl. शास्तर्.

शासिन् (wie eben) adj. 1) *züchtigend, strafend:* यति° Hariv. 8846. — 2) *gebietend, herrschend; Herrscher über:* मगधकोसलकेकयशासिनो नृपतेः Rāgat. 9,22. — Vgl. भुवन°.

शासुस् (wie eben) n. *Anweisung, Gebot:* यस्य शासुरुभयासः सचन्ते ṚV. 1,60,2. मुनं तच्छासुरिव वधिमत्याः *als wäre es ein Befehl* 116,12. 10, 106,2. कर्णाव शासुरनु हि स्मरावः 9. — Vgl. दुःशासुस्, wie statt दुःशासु zu lesen ist.

शास्तर् (wie eben) nom. ag. Uṇ. zu Uṇādis. 2,94 (शास्तृ und fälschlich शास्तरि). = शासक H. an. 2,200. Med. t. 62. 1) *Züchtiger, Bestrafer* MBh. 2,2128 (= 12,8195. 14,746). Hariv. 9159. 14622. Spr. (II) 2173. Rāja-Tar. 6,27. Prab. 113,16. Mālav. P. 114,33. उत्पथगामिनाम् Bhāg. P. 1,12,26. 17,9. 18,35. 2,7,38. 4,16,4. — 2) *Gebieter* TS. 5,7.4,4. Maitrāyaṇ. 6,8. MBh. 3,14971. Hariv. 11207. R. 4,17,31. त्रैलोक्यस्य 7,59,8,36. दुर्गाणां लोकरक्षादीनाम् Rāja-Tar. 6,176. Prab. 110,15. Mālav. P. 134,27. Bhāg. P. 5,10,24. 6,2,3. 3,4. fgg. 17,11. — 3) *der einen Befehl zu Etwas ertheilt* Bhāg. P. 4,21,25. — 4) *Unterweiser, Lehrer* Taik. 3,1,11. H. 488. MBh. 13,1877. शास्तारः 2171. 14, 294. 678. Hariv. 15486. धर्म° Pāṇ. 1,10,14. Verz. d. Oxf. H. 187,a, No. 427. देवमनुष्याणाम् Buddha Bhaṭṭ. 1,483. — 5) bildliche Bez. *der Strafe* MBh. 12,4428. fg. *des Schwertes* H. g. 143. — 6) Bez. eines Buddha AK. 1,1,4,9. H. 232. H. an. Med. — Vgl. शासितर्.

शास्ति (wie eben) f. 1) *Bestrafung* Uṇ. zu Uṇādis. 4,179. H. an. 3,435. दुष्ट° Mālav. P. 132,20. — 2) *Gebotes, Befehl:* शास्तिं प्राप्यते als Erklärung von शिष्यते *wird angehalten* zu Schol. zu Prab. 110,15.

शास्त्रक (von शास्तर्) adj. *vom Lehrer kommend* P. 4,2,104, Vārtt. 22, Schol.

शास्त्रत्व n. nom. abstr. von शास्तर् 2) Bhāg. P. 5,3,6.

शास्त्रं (von 1. शास्) n. Siddh. K. 249,b,3. 1) *Anweisung, Vorschrift* AK. 3,4,25,161. H. an. 2,462. Med. r. 91. नहि वस्तव नो मर्म शास्त्रे यन्यस्य रण्यति ṚV. 8,33,16. °वर्तित *so v. a. für den es kein Gesetz giebt* Spr. (II) 642. चलच्छास्त्र adj. Brahma-P. in LA. (III) 52,18. — 2) *Unterweisung, Belehrung, ein guter Rath:* शास्त्रं न शास्ति दुर्बुद्धिं श्रेयसे चेतराय च Spr. 3072. श्रुत्वा यः सुहृदां शास्त्रं मर्त्यो न प्रतिपद्यते 3092. शास्त्रपथे युक्तः MBh. 13,2171. — 3) *Regel, Leitfaden, Theorie; Lehrbuch,*

Fachwerk, ein wissenschaftliches —, ein kanonisches Werk AK. Trik. 3,2,12. H. an. Med. Halâj. 5,56. °गर्हा Nir. 1,14. ṚV. Prât. 1,18. 16. प्रदेश° 11, 35. fg. 14,25. वर्णात्मगुण° *Lehre von* 13,6. 14,20. आगम° Sidd. K. zu P. 7,2,18. समास° Schol. zu 1,2,43. इदं शास्त्रं कृत्वा M. 1, 58. fg. 102. 104. 118. fg. मानव 12,126. गुरुतम Bhag. 15,20. सर्वशास्त्र-विशारद M. 7,62. MBh. 5,5976. R. 1,1,16. सुनूतमार्य 2,75,36. Sûçr. 1, 4,1. 13,9. 14,7. 89,3. 123,5. 147,11. आगमो हि शास्त्रमुच्यते 18. शास्त्रे-घकुण्ठिता बुद्धिः Raçu. 1, 19. अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम् । सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥ Spr. (II) 332. उशनां वेद यच्छास्त्रं यच्च वेद बृहस्पतिः 1319. शास्त्रमार्गानुसारिन् 1828. यः शास्त्रमूचे गोतमः) 4875. विद्या शास्त्रस्य (I) 2801. शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः 2980. ज्योतिषमागमशास्त्रम् Varân. Bṛh. S. 9,7. 30,10. 79,1. बहुशास्त्रवेत्तृ 69,14. °वर्त्मभिः Bulg. P. 3,32,33. °दान Verz. d. B. H. No. 1218. शास्त्राण्यधीत्य Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,24. Spr. 2979. शास्त्रं नाधिगतम् (II) 3836. Hit. 4,12. यस्यच्छास्त्राधिगमन M. 11,65. शास्त्राभ्यास Verz. d. Oxf. H. 85,a, 19. शास्त्राननुष्ठान Hit. 4,12. fg. तर्कविद्यार्थशास्त्रेषु AK. 1,1,5,3. पाशु-पत° Sarvadarçanas. 74,7. 80,6. गान्धर्व° 78,2. नाट्य° 8. प्रत्यभिज्ञा° 90,17. शास्त्रेषु लोकेषु च Verz. d. Oxf. H. 195,a, 6. Bhâg. P. 7,13,45. धनुस्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्याः Spr. (II) 245. काव्यशास्त्रविनोद 1711. शास्त्राणि निगमाश्च वैदिकाः M. 4,19. वेदे च शास्त्रे च Spr. 4918. पुराणेषु, स्मृतिषु, चतुर्वेदेषु, शास्त्रेषु, सर्वाध्यात्मविद्यासु Weber, Rimat. Up. 361. सप्तयुः सामाथर्वा च भारतं पाञ्चरात्रकम् । मूलरामायणं चैव शास्त्रमित्य-भिधीयते ॥ यच्चानुकूलमेतस्य तच्च शास्त्रं प्रकीर्तितम् । अतोऽन्यो ग्रन्थवि-स्तारो नैव शास्त्रं कुवर्त्म तत् ॥ Skânda-P. in Sarvadarçanas. 72,14. fgg. so v. a. *Gelehrsamkeit:* °शीलसमं मन्ये धनयतं तु तम् Mârk. P. 20,24. Spr. (II) 3827. — Vgl. धर्म° (auch Jâḍ. 2,31. सकलार्थशास्त्रसार Pañkat. Pr. 3,, उच्छास्त्रवर्तिन्. क्रम°, ज्ञान°, ज्योतिः°, तर्क°, धर्म°, नय°, नीति°, प्रज्ञप्ति°, मङ्गला°, मध्यान्तविभाग°, मद्य°, मन्त्र°, मोक्ष°, यन्त्र°, यथाशा-स्त्रम्, योगशास्त्र, रत्न°, रात्र°, लिङ्ग°, वेद°, शकुन°, शत°, शब्द°, शि-ल्प°, कृत्य°, हेतु°.

शास्त्रकार m. *Verfasser einer Lehre, eines Lehrbuchs* u. s. w. Varân. Bṛh. S. 53,16.

शास्त्रकृत् m. dass. Sidd. K. zu P. 3,2,89. Bhâg. P. 1,10,22. Vaḍin-tas. (Allah.) No. 112. = ऋषि, आचार्य Trik. 3,2,12.

शास्त्रगञ्ज m. N. pr. eines Papageien Kathâs. 59,28.

शास्त्रगण्ड m. = प्रघटाविद् Trik. 3,1,7. — Vgl. छात्रगण्ड.

1. शास्त्रचक्षुस् n. *das Auge der Lehrbücher, Bez. der Grammatik* Çabdârthak. bei Wilson.

2. शास्त्रचक्षुस् adj. *der die Lehrbücher zu Augen hat:* नृप Kâm. Nîtis. 14,5.

शास्त्रचारण adj. = शास्त्रदर्शिन् Çabdak. im ÇKDr.

शास्त्रचिन्तक m. *ein Gelehrter* MBh. 3,17295.

शास्त्रचौर m. *der auf eine unrechtmässige Weise in den Besitz einer Lehre u. s. w. gelangt* Mârk. P. 8. 639, Çl. 10.

शास्त्रज्ञ adj. *mit den Lehrbüchern vertraut, gelehrt, Fachmann:* अनि-युक्तो नियुक्तो वा शास्त्रज्ञो वक्तुमर्हति Nârada im Vjavahârat. nach ÇKDr. Spr. 2536. 2978. 3353. Varân. Bṛh. S. 43,61. 49,8. 53,21. Weber, Çiçup. 94. केवल° *ein blosser Theoretiker* Sûçr. 1,12,10.

शास्त्रतत्त्वज्ञ adj. *ein Lehrbuch aus dem Grunde kennend;* m. *ein Astrolog* Çabdak. im ÇKDr.

शास्त्रतस् (von शास्त्र) adv. *nach Vorschrift, nach den vorgeschriebenen Regeln* M. 9,252. MBh. 3,2884. R. 1,13,7. Sûçr. 1,236,15. AK. 2,7,20.

शास्त्रत्व n. nom. abstr. zu शास्त्र 3): पूर्वोत्तरमीमांसयोरेकशास्त्रत्वम् Sarvadarçanas. 86,20. fg.

शास्त्रदर्पण m. Titel eines Werkes, = शारीरक° Hall 91.

शास्त्रदर्शन n. *das Erwähntwerden in einem Fachwerke:* °दर्शनात् = शास्त्रतस् MBh. 14,2700.

शास्त्रदर्शिन् adj. = शास्त्रज्ञ Çabdak. im ÇKDr.

शास्त्रदीपिका f. Titel verschiedener Werke Colebr. Misc. Ess. 1, 298. fg. Verz. d. B. H. No. 601. Verz. d. Oxf. H. 220, *a*, No. 326. Hall 173. 181. 193. °कोड 178. °प्रकाश 177. fg. 183. °प्रभा 174. °प्रवेश 178. °लोक (d. i. आलोक) 177. °व्याख्या 178.

शास्त्रदृष्ट adj. *in den Lehrbüchern erwähnt, — vorgeschrieben, vor-schriftmässig, regelrecht:* हेतु M. 8,3. कर्मन् R. 1,66,2. विधि 2,56,19. 4,25,32. Spr. 2912. Bhâg. P. 8,16,50. धर्म R. 2,61,22. वर्त्मन् Spr. (II) 1479. शास्त्रदृष्टमार्ग Mâlav. 9,12.

शास्त्रदृष्टि m. *Astrolog* Mârk. P. 109,39.

शास्त्रनेत्र adj. = शास्त्रचक्षुस्; von Çiva Çiv.

शास्त्रबुद्धि f. *Gelehrsamkeit* R. 5,48,8. 90,17.

शास्त्रमति adj. *geschult, gelehrt, Fachmann* Kâm. Nîtis. 4,59.

शास्त्रमाला f. Titel eines Werkes Hall 183. °वृत्ति ebend.

शास्त्रवत् (von शास्त्र) adv. = शास्त्रतस् MBh. 3,2053. Spr. 3041, v. l.

शास्त्रविद् adj. = शास्त्रज्ञ AK. 3,1,6. H. 345. Halâj. 2,244. M. 7,54. Varân. Bṛh. 17,3.

शास्त्रशिल्पिन् (von शास्त्र + शिल्प) adj. *mit den Wissenschaften und Künsten vertraut;* m. pl. Bez. der Kaçmira Trik. 2,1,3.

शास्त्रसिद्धान्तलेशसंग्रह m. Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. 1, 337. Hall 153. Notices of Skt Mss. 35.

शास्त्रावर्तलिपि f. Bez. *einer best. Schrift* Lalit. ed. Calc. 144,7.

शास्त्रित adj. von शास्त्र gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36.

शास्त्रिन् (von शास्त्र) 1) adj. *gelehrt, Gelehrter, Fachmann* Verz. d. Oxf. H. 215, *a*, No. 317. Journ. of the Am. Or. S. 6, 320, q. सतत° so v. a. *stets studirend* R. 6,23,6. — 2) *ein* Buddha (vgl. शास्तृ) Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 15,22.

शास्त्रीय (wie eben) adj. *der Theorie —, den Lehrbüchern angehörig, darin gelehrt, theoretisch* (Gegens. लौकिक) Sin. D. 310,18. fgg. Çaṅk. zu Kaṭha-Up. S. 26. fg. zu Bṛh. Âr. Up. S. 268 (das erste Mal fälschlich यशस्त्रीय). Windischmann, Sankara 98. Kull. zu M. 2,5. 9,305. Sidd. K. zu P. 4,2,112. Schol. zu 1,2,53. Davon nom. abstr. °त्व n. Kull. zu 2,87. 8,304.

शास्य (von 1. शास्) adj. 1) *zu züchtigen, zu bestrafen* M. 8,191. स° MBh. 5,3542. — 2) *im Zaum zu halten, zu regieren:* सुशास्या कामवन्-तनाः MBh. 12,9577. — 3) *anzuweisen:* घृणिपिते मनवे शास्यो भूः ṚV. 1, 189,7. — MBh. 12,2691 fehlerhaft für सस्य, wie die ed. Bomb. liest.

शाक् m. 1) = ڪاك in नेम°, फतिक्°, भीम°. — 2) N. pr. einer Oert-lichkeit: शाकेश Râja-Tar. 6,220.

शाकि m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 4,142. 5,154. 231. fg. 6,

177. 7, 47. fgg.

शाक्वि wohl = صاب Riâa-Tan. 8, 3231.

शाक्षाम = شاه نامه Verz. d. B. H. No. 566.

शि *wetzen, schärfen* s. 2. शा.

शिंश m. *ein best. Baum:* शतधा भिद्यते मूर्धा शिंशवृक्षफलं यथा MBh. 1, 2191. °फल Nigh. Pa.

शिंशपा f. *Dalbergia Sisu* (ein schöner und starker Baum) AK. 2, 4, 2, 43. Taik. 2, 4, 22. 3, 3, 338. Ratnam. 208. ṚV. 3, 53, 19. AV. 20, 129, 7. Kaug. 8. 34. gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. धरोत्तरादि zu 2, 80. पलाशादि zu 3, 141. MBh. 3, 11575. 14, 1172. R. 2, 91, 49 (100, 48 Gorr.). 3, 79, 36. 5, 16, 46. 47. 49. Sucr. 1, 183, 15. 2, 73, 15. 74, 16. 175, 4. 432, 10. °कषाय 78, 13. °सार 2, 416, 14. Vaṛâh. Bṛh. S. 54, 105. 79, 2. 12. 15. Kathâs. 70, 38. 75, 47. Bhâg. P. 3, 10, 30. Sarvadarçanas. 8, 2. 5. Pañcat. 249, 24. Schiefner, Lebensb. 289 (39). Aus metrischen Rücksichten शिंशप m. MBh. 2, 342. Pañcar. 1, 6, 17. शिंशपा R. 5, 39, 23. fehlerhaft शिंशिपा Vet. in LA. (III) 4, 1. 2. 5. 10. Çuk. obend. 34, 12. — Vgl. कपिल्ल°, कु°, शंशाप fgg.

शिंशपास्थल n. s. शंशपास्थल.

शिंशिपा s. u. शिंशपा.

शिंशुमार m. TS. Prâr. 16, 26. von Sây. durch सूस (vgl. शिशुमार) erklärt: त्रेधाऽऽसूस सचनो त्रयो वा वृषणश्च शिंशुमारश्च पुक्षा ṚV. 1, 116, 13. TS. 5, 5, 24, 1. Nach Çânt. 3, 15, v. l. auch शिंशुंमार.

शिंकृ = शिङ्; s. उच्छिंकृत, उपशिंकृत.

शिंकाण n. 1) *Rotz* H. 632. an. 3, 230. Hâs. 194. — 2) *Eisenrost* AK. 2, 9, 99. H. 1038. H. an. — 3) *Glasgefäss* H. an. — Wird auch सिंकाण und सिंकान geschrieben; vgl. शिङ्काण.

शिंकम् indecl. gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57.

शिंकु adj. *schlaff, energielos* Taik. 3, 1, 11.

शिंक्य Uṇâdis. 5, 16 (parox.). Çânt. 4, 8. n. *Schlinge, an welcher getragen wird, Tragband; an Schnüren hängendes Gefäss.* — *Wagschale* (geflochten oder von Zeug) AK. 2, 10, 30. 3, 4, 8, 29. H. 364. Halây. 4, 73. मौञ्ज ved. P. 4, 3, 151, Schol. — AV. 9, 3, 6. TS. 5, 2, 4, 2. 3. 6, 6, 1 (Comm. II, 27). चतुश्शाम 1, 10, 5. Çat. Br. 5, 5, 4, 28. 6, 7, 4, 16. °पार्श्व 2, 4. 3, 8. Kâty. Çr. 16, 3, 2. स° 7. 17, 1, 21. Âçv. Gṛhy. 2, 1, 2. Hariv. 3479. 13522. 13533. R. Gorr. 2, 37, 5. Verz. d. Oxf. H. 269, *a*, 33. 42. Bhâg. P. 10, 8, 30. 12, 3. 13, 7. Vaṛâh. Bṛh. S. 26, 6. पाम्ये शिक्ये काचनं सन्निवेश्यम् 7. Mit. 145, 20. fgg. (Z. d. d. m. G. 9, 666). zur Aufbewahrung von Wasser Suçr. 1, 171, 20. शिक्या f. Çaṇḍân. im ÇKDr. शिक्य n. = वस्त्रविकार (!) Vop. 26, 20, v. l. — Vgl. शैक्य und शिच्.

शिक्यक n. dass.: °वस्त्र (worin das zu Tragende liegt) Vaṛâh. Bṛh. S. 26, 6.

शिक्यवत् (von शिक्य) adj. *mit einem Tragband versehen* Kâty. Çr. 16, 3, 5.

शिक्यौकृत adj. unverständlich in der Stelle तस्यैष मारुतो गणः स ईति शिक्यौकृतः AV. 13, 4, 8.

शिक्यित (von शिक्य) adj. *an einem Tragband hängend* u. s. w. AK. 3, 2, 39.

शिङ्क (von 1. शक्) adj. *kunstfertig:* यद्वा शिङ्कः परावधीत्तदा दत्तेन वास्या (वाश्या) AV. 10, 6, 3.

शिङ्कन् (wie oben) adj. dass.: रथो न यातः शिङ्कभिः (= रज्जुभिः Sây.) कृतः ṚV. 1, 141, 8. स शुक्रेभिः शिङ्कभी (= तेजोभिः Sây.) रेवदस्मे दीदाय 2, 35, 4. TS. 2, 5, 11, 2. — Vgl. शङ्कन्.

शिङ्कम् (wie oben) adj. *vermögend, wirksam, mächtig;* = शक्र Sây. Bez. der Rudra ṚV. 5, 52, 16. 54, 4. वनो वृश्चन्ति शिङ्कसः 6, 2, 9. 10, 92, 9.

1. शिल् (desid. von 1. शक्) P. 7, 4, 54. 1) act. *versuchen, unternehmen:* शुक्रेत्येव पविक्रतेति TS. 2, 6, 2, 6. AV. 6, 114, 3. 3. — 2) med. (act. nur aus metrischen Rücksichten) P. 1, 3, 21, Vârtt. 3. Vop. 19, 9. 13. Dutup. 16, 4 (विद्योपादाने). *lernen, einüben;* mit acc. der Sache und abl. der Person (st. dessen auch सकाशात् mit gen. der Person): यत्र नार्युपब्दयं शिक्षते ṚV. 1, 28, 3. शाक. शिक्षमाण *Lehrer, Schüler* 7, 103, 5. इमां धियं शिक्षमाणस्य मे शिक्षाधि 8, 42, 3. सकाशादस्यजन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् M. 2, 20. कवं द्रोणात् — सर्वाण्यस्त्राण्यशिक्षत MBh. 1, 6326. 2, 128. शिक्षस्व बुद्धिं स्थविराणां सकाशात् 2126. 4, 1527. Râm. 3, 31. Çiç. 23. Spr. (II) 691. 2183. (I) 2494. 3006. Kathâs. 25, 119. 113, 23. Mâlav. P. 27, 17. अशिक्षिष्ट Bhaṭṭ. 15, 87. शिक्षमाण R. Gorr. 1, 80, 10. शिक्षाण MBh. 3, 12048. शिक्षितुम् Çiṅku. Bh. 7, 6 in Ind. St. 1, 153, N. शिक्षित्वा Kathâs. 35, 90. 38, 60. 66. act.: शिक्षेत् Çat. Br. 14, 8, 2, 4 (ohne Noth). MBh. 1, 5520. 3, 12030. Spr. (II) 4634. (I) 3282. Bhâg. P. 7, 5, 23. 11, 3, 22. 33. mit einem loc. *sich üben in:* विद्यासु शिक्षते P. 1, 3, 21, Vârtt. 3, Schol. वीणासु शिक्षते Kathâs. 106, 18. pass. *erlernt werden:* लोकयात्रा शिक्ष्यताम् Kathâs. 6, 52. शिक्षित *erlernt:* अशिक्षितनयः (so ist zu lesen) सिंहः Kâm. Nîtis. 11, 30. मया सुतीर्थादभिनवविद्या सुशिक्षिता Mâlav. 11, 16. Spr. (II) 3006. रोदुं शिक्षितमादरेण रुमितम् 4649. (I) 2835. 5307. Kathâs. 7, 27. 12, 91. 16, 31. 18, 150. 20, 158. fg. 37, 73. सभ्या (wohl सभ्याः zu lesen) शिक्षिततन्मात्रा 130. Hit. II, 154. Riâa-Tan. 5, 8. Bhâg. P. 1, 7, 44. 2, 9, 28. 3, 6, 20. शिक्षितायुध adj. Halây. 2, 218. गिर् *eine geübte Stimme* Spr. 3296, v. l. (vgl. Vaṛâh. Bṛh. S. 74, 7).

— caus. शिक्षयति (ganz ausnahmsweise med.) *lehren, belehren, unterrichten;* mit acc. der Person: स्मारये त्वां न शिक्षये R. 3, 13, 21. 6, 90, 8. को मां शिक्षयति Kathâs. 6, 53. 11, 18. 40, 6 (शिक्षयांस zu lesen). 57, 60. Riâa-Tan. 3, 121. Daçak. 75, 11 (अशिक्षयं zu lesen). Bhâg. P. 3, 1, 16. मूढबुद्धिः प्रभुश्चायमुक्तमानेन शिक्ष्यते Kathâs. 60, 74. mit acc. der Sache MBh. 1, 3099. Spr. (II) 2801. (I) 2990. Daçak. 70, 5. Bhâg. P. 3, 10, 53. mit doppeltem acc. M. 2, 69. Jiân. 1, 18. MBh. 1, 5233. 4, 56. 309. Kathâs. 6, 145. fg. 12, 38. 34, 162. 37, 113. 49, 34. 61, 168. Riâa-Tan. 4, 31. mit acc. der Person und loc. der Sache MBh. 1, 5239. प्रज्ञा धर्मेषु Bhâg. P. 4, 21, 23. mit acc. der Person und infin.: यथा मां शिक्षयत्येष वीणां वादयितुम् Kathâs. 49, 32. mit acc. der Sache und gen. der Person: कतमां लिपिं मे शिक्षयिष्यसि Lalit. ed. Calc. 143, 16. partic. शिक्षित 1) adj. *gelehrt, unterrichtet* (von Personen): गुरुभिः Pañcat. 94, 20. गुरु° Spr. (II) 4074. Kathâs. 33, 5. mit acc. der Sache: शास्त्रमशिक्षितो यः Çiç. 121. सा यावत्ति पदान्यलीकवचनैरालीनैः शिक्षिता Spr. 3244. लिपिं गणितमेव च Kathâs. 6, 22. 29, 17. mit infin.: वक्तुं श्रोतुमशिक्षितः AK. 3, 1, 35. mit loc. der Sache: गजास्त्रयुद्धेषु Kâm. Nîtis. 18, 32. यत्नेषु Kathâs. 42, 79. विद्यासु सर्वासु 56, 9. 72, 66. 124, 104. क्वचित् Riâa-Tan. 5, 183. mit der Ergänzung comp.: शस्त्र° MBh. 1, 5276. ohne alle nähere Bestimmung AK. 3, 1, 4. 4, 86, 206. H. 342. Halây. 2, 180. 216 (in Waffenübungen). VS. 28, 15. Spr. (II) 2812. (I) 3069. Çiç. 2. ग्र° Kathâs. 32, 67. Daçak. 70, 6. Riâa-Tan. 4, 265 (ein

Pferd). सु° MBh. 4,39. R. 1,22,25. Rāja-Tar. 8,199. — 2) n. *das Unterrichten, Lehren:* अर्थः क्रियान्वयता (subj.) शिक्षितेन स्तव्यप्रमत्तस्य (obj.) Bhāg. P. 5,10,14.

— अनु *lernen, erlernen*, mit acc. der Sache und gen. oder abl. der Person; mod. Bhāg. P. 5,4,8. act. 4,11,12. 8,1,22. 11,7,35. fg. अनुशिक्षित *gelernt, erlernt* Uttarān. 48,17 (63,2). Bhāg. P. 6,7,24. 8,3,1. गुर्वनुशिक्षित vom *Lehrer* 7,8,1. Vgl. अनुशिक्षिन्. — caus. *belehren* MBh. 1,5761 (°शिक्ष्य). Bhāg. P. 10,64,31. *Jmd* (gen.) *Etwas* (acc.) *lehren* 5,6,6.

— अभि caus. *Etwas* (acc.) *lehren* MBh. 1,8022. mit doppeltem acc. Harīv. 4910.

— आ s. आशिता. आशिक्षित Kām. Nītis. 11,30 fehlerhaft für अशिक्षित.

— उप 1) *versuchen, unternehmen:* पुनः पुनः प्रतीसारमुपशिक्षतेव Çiç. Ba. 23,3. — 2) *lernen, erlernen, erforschen:* शेषं कृष्णादुपशिक्षस्व MBh. 13, 7358. उपशिक्षन्मकास्त्राणि 3,1790. उपशिक्षाम ते वृत्तं सदैव न च शक्नुमः 12,482. समाधिनोपशिक्षेत्तो ब्रह्मलोकं सनातनम् 13,4418. इतिकृत्यमुपशिक्षेत् *erforsche, erfahre* Bhāg. P. 3,23,11. उपशिक्ष्य 5,6,10. उपशिक्षितुम् MBh. 12,9706. एवं मयास्त्राण्युपशिक्षितानि शक्रात् *erlernt von* 3,11914. स्वात्मोपशिक्षित *durch sich selbst* Bhāg. P. 11,9,24. — 3) mod. *lehren*, mit acc. der Sache und gen. der Person Bhāg. P. 5,5,28. — Vgl. उपशिक्षा. — caus. *belehren*, mit acc. der Person Bhāg. P. 5,4,18. *lehren*, mit acc. der Sache und gen. der Person 18. उपशिक्षित *belehrt:* पित्रा 9,16,1. *gelehrt, mitgetheilt* (eine Kenntniss): गुरुभिरात्मने 7,5,33. सदुपशिक्षित *gelehrt von* 5,3,5. वार्क्षेयेन भवेन्नूनं विद्या सैवोपशिक्षिता MBh. 3,2887.

— सम् caus. *lehren*, mit doppeltem acc. Bhāg. P. 5,9,4. Verz. d. Oxf. H. 140,a, No. 280.

2. शिक्, (desid. von 2. शक्), शिक्षति (auch mod.) 1) act. *helfen wollen, helfen:* शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः ṚV. 1,62,12. 8,2,18. यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः 3,30,18. 8,20,10. 27,5. 31,4. 7,32,26. 83,8. युगाय विप्र उर्वराय शिक्षन् 87,4. यस्ते आदित्य शिक्षति व्रतेन *sich gefällig erweisen* 3,59,2. — 2) act. *mittheilen wollen, schenken:* वस्वः ṚV. 1,27,5. यस्तुभ्यं दाशाद्यो वा ते शिक्षात् 68,6. 81,2. आ भरतं शिक्षतम् 109,7. धरुणोः 112, 19. 7,27,2. 32,19. 8,14,2. यज्ञम् AV. 5,114,2. 3. 122,2. यस्मै त्वं दानाय शिक्षसि Vāitān. 3,5. — 3) act. *Jmd* (acc.) *beschenken wollen mit* (instr.): स देवापिं शिक्षति राष्ट्रेण Nir. 2,10. Çiç. Ba. 30,6. — 4) *Jmd* (acc.) *seine Dienste anbieten, in Jmdes Dienst treten:* शिक्षस्वैनं नमस्वैनम् MBh. 3,1200.

— आ *Etwas* (gen.) *mittheilen:* राधः ṚV. 8,81,9. *beschenken wollen mit* (instr.): यज्ञैः TBr. 2,4,4,9.

— उप 1) *an sich ziehen, anlocken, einladen:* देवेभ्य उप शिक्षा सखीयन् ṚV. 10,42,2. 95,17. इन्द्रं घोतिभिः 3,32,6. 1,173, 10. देवाव्यमा 5,40,6. उप शिक्षापसस्पुरः 9,19,6. येनेमं यज्ञमुप यासि शिक्षात् AV. 7,12,1. 11,8,17. TBr. 2,3,8,2 (= स्वीकुरु Comm.). Pāraṇ. Ba. 18, 12, 2. 14,3,3. 5. — 2) mod. *Jmd* (acc.) *seine Dienste anbieten, in Jmdes Dienste treten, sich Jmd zur Verfügung stellen* MBh. 12,1358. 14,287. 15,369. °शिक्षितुम् 14,149. यत्ति (so ed. Bomb.) दौष्मन्तिवासादेद्राज्ञानमुपशिक्षितः (mit act. Bed.) 12,3082.

— प्रति *anlocken, einladen:* नरः प्रतिशिक्षत्यन्नैः ṚV. 10,29,5.

— वि etwa *vertheilen:* सखे वि शिक्ष ṚV. 4,35,3. — Vgl. विशिक्षु.

1. शिक्षक (von शिक्षा) adj. *ein Kenner der* Çikshā gaṇa क्रमादि zu P. 4,2,61.

2. शिक्षक (vom caus. von 1. शिक्) nom. ag. *Lehrer* Milav. 15. कुस्ति° *Abrichter von Elephanten* MBh. 8,1768.

शिक्षण (wie oben) n. *das Belehren, Unterweisen:* युद्धमार्गे Kām. Nītis. 13,41. मर्त्य° Bhāg. P. 5,19,8.

शिक्षणीय (wie oben) adj. *zu lehren, zu unterweisen;* mit dem acc. der Sache: पद्मावती चेतश्चिक्षणीया त्वया Kathās. 31,93.

शिक्षा (von 1. शिक्) f. gaṇa कृत्रादि zu P. 4,4,62. 1) *Kenntniss, Kunst, Fertigkeit, Geschicklichkeit* Bhāg. P. 2,7,46. न दर्शयेयुः स्वां शिक्षाम् MBh. 1,5314. अस्मिन्दुडे u. s. w. 5520. नानाशिक्षासु बोधिताः 4256. 3,12585. Harīv. 7507. 12154. शिक्षया *kunstgerecht* 5096. 5111. 5624. 6869. R. 5,76,40. instr. pl. dass. MBh. 6,1765. स्नानशिक्षाश्च (so ed. Bomb.) R. 2,65,8. धनुश्च नमः प्रणिपातशिक्षया Raghu. 3,28. 9,62. अश्व° *die Kunst mit Pferden umzugehen* MBh. 4,63. गज° 1,4285. नाग° 5, 5209. कृष्ण° 14,2319. कुस्ति° Mālav. 1,15. क्रम° MBh. 1,2885. न्याय° 67. Spr. (II) 5815. — 2) *Unterricht, Unterweisung, Vorschrift, Lehre;* = क्रिया AK. 2,4,24,158. = उपदेशन Sin. D. 503. — Çāṇḍ. Ba. 12,6. Taitt. Up. S. 42. यस्य शिक्षामुपासते MBh. 8,227. शिक्षार्थम् MBh. 13,4991 (nach der Lesart der ed. Bomb., fehlerhaft शिष्टार्थम् ed. Calc.). R. 4,54,7. Rāja-Tar. 2,118. Bhāg. P. 4,22,39. °दण्ड *eine als Lehre dienende Strafe* 26,21. 7,5,33. Sarvadarçanas. 35,8. ललिताभिनयस्य Mālav. 67. वीणाया गणाशर्माणं शिक्षारम्भमकारयत् Kathās. 49,47. हृदये कुशलैर्विनिवेशिता । शिक्षा Spr. (II.) 2802. योगंधरायणप्राप्तशिक्षा adj. Kathās. 33,12. दत्तशिक्षा (adj.) वासवदत्तया 19. दत्तकर्तव्यशिक्षा adj. 61,194. इत्यादिशिक्षां दत्त्वा Z. d. d. m. G. 14,571,15. राज्यारम्भे नियुक्तेन भीमादेवेन धीमता । उक्ते प्रभावके शिक्षे द्वे स मत्तवदस्मरत् ॥ Rāja-Tar. 8,45. यच्छिक्षया *durch deren Unterweisung* Spr. (II) 4676. Bhāg. P. 1,5,36. — 3) *die Lehre von den grammatischen Elementen*, eine Hilfswissenschaft zum Veda und Titel besonderer Schriften, Einleitung zu Nir. S. XVI. TS. Prāt. S. 435. AK. 1,1,5,4. H. 250. VS. Prāt. 1,29. Mupp. Up. 1,1,5. gaṇa क्रमादि zu P. 4,2,61. सगयनादि zu 3,73. Ind. St. 1,13. 16. 2,211. fg. 3,290. fg. 4,118. 125. 345. fgg. 8,192. 10,433. Harīv. 1049. 1304. VP. 284. Comm. zu TS. Prāt. 1, 1 u. s. w. Lalit. ed. Calc. 179,4. Verz. d. B. H. 376. fgg. Verz. d. Oxf. H. 380,a, No. 502. fg. °सूत्र 169,a, 14. — 4) *Bignonia indica* Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. मनः°, तृण°, रघ°, वर्ण°, शास्त्र°, शैल.

शिक्षाकार m. *Verfasser einer* Çikshā Comm. zu TS. Prāt. 1,1. 21, 15. शिक्षाकर Bez. Vjāsa's Çabdam. im ÇKDr.

शिक्षातर (शिक्षा + घ°) 1) n. *ein nach den Vorschriften der* Çikshā *richtig ausgesprochener Laut:* मात्रैः °समन्वितैः R. 1,13,9 (18 Gorr.). °समायुक्त R. Gorr. 2,100,19. — 2) adj. *richtig ausgesprochen nach den Vorschriften der* Çikshā: °मन्त्रविद् MBh. 3,904. — Vgl. शिक्षास्वर.

शिक्षाचार (शिक्षा + घा°) adj. *kunstgerecht —, der Vorschrift gemäss sich betragend:* शिक्षु Rāja-Tar. 3,12.

शिक्षानर् adj. wohl *Männern helfend oder mittheilend:* Indra ṚV. 1,53,2. 4,20,8.

शिक्षापत्र n. Titel einer Schrift Hall 151.

शितापद् n. *Vorschrift* Burnouf, Intr. 304. 630. Lot. de la b. l. 444. fgg. Vigtp. 162. °प्रज्ञप्ति (ein Theil des Vinaja) 213.

शितावत् (von शिता) adj. 1) *kenntnissreich:* द्विज Harîv. 14061. — 2) *belehrend:* कथा Kathâs. 63,195.

शितावछी f. Titel des 1ten Theils der Taitt. Up. Ind. St. 2,207. 394.

शितविधि m. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,10.

शितासमुच्चय m. Titel einer Schrift Târan. 233. Wassiljew 206.

शितास्वर m. = शितातर् 1) R. 2,91,32.

शितिति 1) adj. s. u. 1. शित् simpl. u. caus. — 2) f. या N. pr. eines Frauenzimmers; vgl. शैतिति.

शितितातर् (शितिति + त°) adj. *der das Lesen und Schreiben erlernt hat* Riâ-Tar. 5,73. 469. m. *Schüler* Taitt. 2,7,4.

शितृ (von 2. शित्) adj. *mittheilsam, hilfreich:* उत शित स्वपत्यस्य शितेः (gewiss शितेा) RV. 3,19,2. यस्मै त्वमिन्द्र शितेा शितर्सि दाशुषे Vâlakh. 4,5.

शिख (von शिखा) m. N. pr. eines Schlangendämons: शिखानुशिखौ नेष्टापोतारौ Pârâv. Br. 25,15 in Ind. St. 1,35.

शिखक m. = लोक्क Unâdis. im Sarkshiptas. nach ÇKDa.

शिखण्ड m. Sindh. K. 249,b,1 v. u. 1) *Haarstrang, — büschel* Taitt. 3,3,17. H. an. 3,187. Med. q. 37. pl. TS. 7,3,20,2. चैतुः° adj. TBr. 1, 2,1,27. 3,7,6,4 (चैतुःकपर्द RV. 10,114,3). यमितः पुच्छकाण्डं शिखण्डास्त्रैव Çat. Br. 4,5,3,5. TS. 5,7,25,1. मनोज्ञशितिकण्ठशिखण्डचूड adj. Pârâs. 3,5,7. कीर्ण° Daçak. 59,14. 60,5. — 2) *Pfauenschwanz* AK. 2,5,31. Taitt. H. an. Med. Hall. 2,37. Vikr. 81. — 3) wohl *eine best. Pflanze:* यत्रस्य रुधिरास्रोत्र शिखण्डाः पार्व तस्थिरे । द्विजातिभिरभक्ष्यास्ते MBh. 12,10202. — शिखण्डिनी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. Vgl. नील°.

शिखण्डक 1) m. *a*) = शिखण्ड 1) AK. 2,6,3,47. H. 572. Râgân. 11,6 (am Ende eines adj. comp.). Uttarân. 82,4 (105,4). Çiç. 59,17 (im Prâkrit). — *b*) = शिखण्ड 2) H. 1320. Gîr. 2,3. 12,28. — 2) f. शिखण्डिका = शिखण्ड 1) H. 571. Hall. 2,377.

शिखण्डिक (von शिखण्ड) m. *Hahn* H. 1325.

शिखण्डित (wie eben) n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – ⏑ ⏑ ⏑ – ⏑ – – – Ind. St. 8,377.

शिखण्डिन् (von शिखण्ड) 1) adj. *einen Haarbusch tragend, cirratus:* Gandharva AV. 4,37,7. Rudra-Çiva 11,2,12. Mudg. ST. 4,305,6. 7. MBh. 13,1145. R. 7,23,4,26. Vishṇu-Kṛshṇa MBh. 12,1511. 13,6933. fem. MBh. 4,1195 (= मयूरपिच्छालंकारवती Nilak.). 12,8150. शिखण्डिन्यौ वत्सप्रियौ काश्यप्यौ Verfasserinnen von RV. 9,104. auch AV. 4,37,4 ist vielleicht शिखण्डिनीः voc. zu lesen. — 2) m. *a*) ein Name Çiva's und als solcher Bez. *best. erlöster Seelen* (bei den Çaiva) Sarvadarçanas. 86,2. — *b*) *Pfau* Taitt. 3,3,265. H. an. 3,426 (wenn man चित्रमेखले st. चित्रामलेखे liest). Med. n. 213. Hall. 2,36. Jâṭ. 3, 272. Mṛicch. 84,21. Spr. (II) 4667. Râgân. 1,29. Kumâras. 1,15. Uttarân. 50,13 (65,9). Gîr. 12,23. Kathâs. 114,132. Mâlav. P. 27,17. 51,37. Bhâg. P. 4,11,3. 8,15,20. गृह° Mṛicch. 76,3. Spr. (II) 2352. — *c*) *Pfauenschwanz* H. an. Med. — *d*) *Hahn* H. an. — *e*) *Pfeil* H. an. — *f*) *Abrus precatorius Lin.* und *gelber Jasmin* Riâân. im ÇKDr. — *g*) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Jâgñaseni Kaeeh. Br. 7,4 in Ind. St. 2,308. ein Ṛshi H. an. (wenn man ऋषि st. वर्षि liest; Wilson nach ders. Aut. = चित्रशिखण्डिन्). Verz. d. Oxf. H. 83,*a*,16. ein Sohn Drupada's, der den Bhîshma erschlug; wird als Mädchen (daher auch शिखण्डिनी genannt) geboren und von einem Yaksha in einen Knaben verwandelt; nach einer anderen Sage nur einfach für einen Knaben von der Mutter ausgegeben. Taik. H. an. Med. MBh. 1,525. 2452. 2761. 6223. 3,594. 4,2352. 5,5100. 5942. fgg. 13,7753. fgg. 14,1781. N. pr. eines Brahmanen Lalit. 361. — *h*) N. pr. eines Berges Verz. d. Oxf. H. 83,*a*,18. — 3) f. शिखण्डिनी *a*) *Pfauhenne* MBh. 3,11583. — *b*) *Abrus precatorius Lin.* Med. Ratnam. 33. *Jasminum auriculatum* Med. Ratnam. 176. — *c*) N. pr. einer Tochter Drupada's, die in einen Knaben verwandelt oder für einen Knaben ausgegeben wird, MBh. 5,7407. 7421. fgg. 7456. fgg. N. pr. der Gattin Antardhâna's Harîv. 82. VP. 106. Bhâg. P. 4,24,2. — Vgl. चित्रशिखण्डिन् und शैखण्ड fgg.

शिखण्डिमत् (von शिखण्डिन्) adj. *reich an Pfauen* Kumâras. 5,7.

शिखरं (von शिखा) gaṇa यश्मादि zu P. 4,2,80. 1) adj. *spitzig, zackig:* केशैररालैर्दशनैः शिखरैः Kathâs. 45,228. °दशना Megh. 80 (nach einem Schol. *Zähne wie Jasminknospen habend*). शिखरमुत्पलम् = वर्धमानी Ausw. 93. Vgl. शिखरिन्. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Taik. 3,3,10. *a*) *Spitze* eines Berges AK. 2,3,4. Taik. 3,3,374. H. 1032. H. an. 3,619. fg. Med. r. 227. fg. Hall. 2,11. गिरि° Çiç. Br. 28,1. उत्तम Ind. St. 3,194. MBh. 1,1155. 3,2441. Harîv. 6937. R. 2,33,26. 56, 10. 69,8. 94,4. 3,61,8. 68,13. 4,1,9. 8,5. 5,87,3 (masc.). 6,83, 43 (masc.). Kumâras. 5,7. Megh. 18. 75. Çiç. 167. Vikr. 10,6. Spr. (II) 1193. 4364. Varâh. Bṛh. S. 12,1. 16,25. 24,2. Kathâs. 18,398. 22,224. 31,25. Riâ-Tar. 4,166. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,11. fg. Bhâg. P. 5,16,17. Çuk. in LA. (III) 32,17. Pârâs. 120,9. वल्मीक° 9,7. eines Baumes AK. 2,4,4,12. Taik. 2,3,2. 3,3,374. H. 1121. H. an. Med. Hall. 2,26. Harîv. 6936. R. 3,79,2. 22. Spr. (II) 1312. 4929. Varâh. Bṛh. S. 28,8. *Giebel, Zinne* oder *Thurm* (eines Palastes, eines Tempels u. s. w.) R. 2,33,3. R. Gorr. 1,5,12. 2,57,18. 6,104,10. Spr. (II) 2161. Varâh. Bṛh. S. 56,21. 27. Kathâs. 114,19. Prab. 79,12. Bhâg. P. 1,10,16. 3,23,18. 4,9,56. पृष्ठ° *ein berghoher Rücken* (eines Elephanten) Spr. (II) 1324. पुच्छ° *äusserste Spitze des Schwanzes* (beim Fisch) Verz. d. Oxf. H. 129,*a*, No. 232. दशन° *Zahnspitze* Gîr. 1,7. धनुस्य Riâ-Tar. 3,77. सर्प° MBh. 1,1112. 13,836. वीचि° Varâh. Bṛh. S. 27, 1. ज्वलन° 2. *ein spitzer Gegenstand* z. B. ein Nagel Çiâân. Ça. 14,22, 9. — *b*) *das Sträuben der Härchen am Körper* (s. पुलक) Taik. 3,3,374. H. an. Med. — *c*) *ein Rubinstückchen von der Farbe eines reifen Granatkerns* (पक्वदाडिमबीजाभमाणिक्यशकल) dies. — *d*) *Achselgrube* Taik. Med. wohl eher *Achsel*; vgl. बाहु°, भुज°. — 3) m. *eine best. Stellung der Hand* Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,27. 202,*a*,6. — 4) n. *Gewürznelke* Ausw. 77. — 5) n. Bez. *eines best. mythischen Geschosses* (अस्त्र) R. 1,29,11. — 6) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 67,48. — 7) f. या *a*) *Sanseviera Roxburghiana Schult.* Çabdâm. im ÇKDa. — *b*) N. *einer best. mythischen Keule* (गदा) R. 1,29,8. — Vgl. त्रि°, बाहु° (Harîv. 4205), भुज°, वक्रि°, वैडूर्य°, शेखर.

शिखरवासिनी f. Bez. der Durgâ (*auf Berggipfeln wohnend*) Taik. 1,

1,51. H. ç. 60 (शिखर° die Hdschr.).

शिखराद्रि m. N. pr. eines *Berges* Mikk. P. 55, 6, wenn त्रिकूट: शि° gelesen wird.

शिखरिन् (von शिखर) 1) adj. *mit Spitzen —, mit Zacken versehen, spitzig:* गिरि R. 3, 55, 44. Zähne MBh. 1, 2991. R. 3, 52, 27. Suça. 2, 166, 11. प्रभूतिशूलानां शिखरिणी (zugleich Bez. *des Metrums*) Gir. 2, 20. — 2) m. *a) Berg* AK. 2, 3, 1. 3, 4, 18, 109. H. 1027. an. 3, 425. Med. n. 212. Hall. 2, 10. Maitrjup. 1, 4. Buâc. 10, 33. MBh. 5, 2686. Megh. 13. Ragh. 9, 12. 22. Spr. (II) 1093. (I) 2519. 2731. Varâh. Bṛh. S. 24, 2. 104, 8 (mit Anspielung auf das Metrum शिखरिणी). Rtúa-Tar. 2, 164. Kharsom. 89 (als fem. N. *des Metrums*). Çiç. in LA. (III) 32, 15. Vgl. कनक°, तुषार°. — *b)* N. pr. eines Berges (वर्धमान) H. 947, Schol. Çata. 1, 296. — *c) Festung* H. an. — *d) Baum* AK. 2, 4, 18, 109. H. 1114. H. an. Med. Hall. 2, 22. — *e)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Achyranthes aspera* H. an. Med. Ratnam. 40. *Andropogon bicolor Roxb., Schmarotzerpflanze,* und = कर्कटशृङ्गी Râéan. im ÇKDa. — *f) das Harz der Boswellia thurifera Roxb.* Râéan. im ÇKDa. — *g) ein best. Stelzvogel* (कोयष्टि) H. 1338. H. an. Hall. 2, 94. — 3) f. शिखरिणी *a) Hürdenreihe* (रोमाली, रोमावली (so in Med. zu lesen)) H. an. 4, 89. Med. n. 109. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Jasminum Zambac* Med. *Sanseviera Roxburghiana Schult.* Çabdak. im ÇKDa. *eine Art Weinstock oder Weintraube* Râéan. im ÇKDa. — *c) eine Perle von Weib* Med. — *d) gekäste Milch mit Zucker und Gewürz* H. 404. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 143, *a*, No. 303, Çl. 1 (zugleich Bez. *des Metrums*), im Prâkrit Vikr. 42, 7. — *e) ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – – – – – –, ⏑ – – – – ⏑ – – – – H. an. Med. Çaut. 40. Colebr. Misc. Ess. 2, 162 (XII, 1). Ind. St. 8, 393. Kharsom. 89 (zugleich m. *Berg*). Gir. 2, 20 (zugleich adj.). Verz. d. Oxf. H. 143, *a*, No. 303, Çl. 1 (zugleich in der Bed. *d*).

शिखरेशलिङ्ग n. N. eines Liṅga auf dem Kailâsa Verz. d. Oxf. H. 77, *b*, 26.

शिखा Uṇâdis. 3, 24 (oxyt.). f. am Ende eines adj. comp. als स्वाङ्ग f. आ gaṇa क्रोडादि zu P. 4, 1, 36. f. शिखी (!) gaṇa वह्न्यादि zu 45. 1) *Strähne —, Strang von Haaren, Haarbusch* AK. 2, 6, 2, 48. 3, 37. fg. Taik. 3, 3, 52. H. 571. an. 2, 27. Med. kh. 6. 7. Hall. 2, 377. 398. Vaid. bei Mallin. zu Kir. 6, 2. Çâçvata in Verz. d. Oxf. H. 182, *a*, 33. Çat. Br. 1, 3, 3, 5. Gobh. 3, 4, 19. प्रसृतशिखा: (so zu lesen) *mit aufgelösten Haaren* Âçv. Gṛhj. 4, 2, 9. शिखे विमुञ्चति 1, 7, 16. Kauç. 29. Ind. St. 2, 174. 178. R. 1, 31, 16. Vish. 127. Çiç. 4, 50. Verz. d. Oxf. H. 52, *a*, 13. 269, *a*, 34. Kathâs. 27, 19. Buâc. P. 2, 7, 18 (die ed. Bomb. liest शिखां, was durch शिखायां = मूर्ध्नि erklärt wird). 3, 22, 35. 5, 2, 9. 6, 8, 7. 9, 13. Pañkat. 121, 3. कृत्स्नमात्रं कृत्वा शिखाम् MBh. 5, 3448. सर्वकाल: शिखी राजा कुर्याद्धर्मधरोपमाम् 12, 4359. °वितानमूर्धज Harîv. 4511. शिखाभिर्मुक्ताभि: 3598. निशां मुक्ता शिखाम् Kathâs. 5, 118. बन्धनीया 119. °बन्धन Verz. d. B. H. No. 1022. नरदामपरिवृतशिख MBh. 1, 5974. °पाश Buâr. Nîtiç. 20, 13. सुशिखासमुच्छ्राय Buâc. P. 3, 20, 36. लम्बशिख Harîv. 2298. 14303. पञ्चशिख MBh. 10, 275. यशिखं भुञ्जते शवस्य पिशिताशना: Harîv. 13260. — 2) *Pfauenkamm* AK. 2, 5, 31. H. an. Med. Hall. 2, 87. Vaid. und Çâçvata a. a. O. शिखोद्भेदो वर्षाणाम् MBh. 12, 10262. Harîv. 10538. — 3) *Flamme* AK. 1, 1, 4, 32. 3, 4, 2, 20. H. 1102. H. an. Med. Hall. 1, 65. Vaid. und Çâçvata a. a. O. अग्नेः: MBh. 3, 11904. यमशिखः शिखी 4, 1710. Harîv. 12293. R. 2, 94, 21. 3, 49, 34. शिखापि दीपशिखस्य वक्रेः 53, 60. Ṛt. 2, 28. Ragh. 17, 34. Spr. (II) 1319. 2447 (सुशिख). Çiç. 13, 7. Buâc. P. 4, 28, 44. 8, 7, 15. 32. शतह्रदा° R. 3, 31, 7. प्रदलितशिखो कृतभुक् Vaitân. Bṛh. S. 43, 32. दीप° 82, 5. Mâlav. 48, 11. Kumâras. 1, 28. Spr. (II) 2121. 4945. Buâc. P. 5, 11, 8. — 4) *Strahl* AK. 3, 4, 2, 20. H. an. स्फुरद्रत्नशिखाजाल Kathâs. 21, 85. मणि° Kumâras. 2, 38. — 5) *Zweig* (शाखा) H. 1119. H. an. Med. Vaid. und Çâçvata a. a. O. — 6) *eine faserige Wurzel* (शिफा: शिखा in Med. Druckfehler) H. an. Med. Çâçvata a. a. O. — 7) *Jussiaea repens Lin.* H. an. Med. — 8) *Spitze* überh. Taik. H. an. Med. Vaid. und Çâçvata a. a. O. eines Pfeiles Maitrjup. 6, 25. eines Baumes Kir. 6, 2. eines Sternes, Kometen Varâh. Bṛh. S. 6, 10. 11, 10. 12, 15. 18, 33. 43, 50. eines Diadems 49, 3. शिरीषपुष्पस्य (= केसर Schol. in der ed. Calc.) Ragh. 16, 48. चामर° Çiç. 8. सटा° Buâc. P. 3, 13, 43. शिक्षा शिखिशा 10, 16, 28. वल्कल° *Saum* Çiç. 14. — 9) *Kopf* Hall. 5, 13. — 10) *Brustwarze* (vgl. स्तन°) Hall. 2, 371. — 11) *Fussspitze* Med. — 12) Bez. *eines best. Theiles eines Spruches* (*der Haarbusch des als Fürsten gedachten Spruches*) Ind. St. 9, 91. fg. Weber, Râmây. Up. 303. Verz. d. B. H. 91 (36). — 13) *der beste in seiner Art* H. an. — 14) N. *verschiedener Metra* Colebr. Misc. Ess. 2, 155 (IV, 1). 156 (24). 165 (VI, 12). Ind. St. 8, 319. fgg. 362. fg. 419. — 15) *Liebesfieber* (स्मरज्वर) Çabdar. im ÇKDa. — 16) in गल° R. 5, 12, 32 fehlerhaft für शाला. — Vgl. अग्निशिख, घर्मशिखा (*Flamme* auch MBh. 3, 2398. 15588. Spr. (II) 2310. Sarvadarçanas. 40, 16. 19), अग्रर्व°, उल्किख (*hellstrahlend* Uttarar. 50, 12 = ed. Cowell 65, 8), कनकशिखा, त्रिशिख (adj. भ्रुकुटी MBh. 8, 1354. 13, 862 (mit der ed. Bomb. त्रिशिखी zu lesen). Harîv. 10215. *dreiflammig* 12292), दीपशिखा (in der ersten Bed. auch Ragh. 6, 67. दीपशिखोद्भव von *einer Lampenflamme herrührend:* घञन Suça. 2, 333, 20), धूमशिख, पद्म°, बर्ह°, बब्रु°, भर्गशिखा, मयूर°, यमशिख, योगशिखा, ज्वर°, वाशिख, वह्नि°, विद्युच्छिखा, विशिख, शैलशिखा, श्वेतशिख, स्तनशिखा, शैव und शैवायनि.

शिखाकन्द n. = गृञ्जन n. Râéan. im ÇKDa.

शिखाग्रदत्त् und °दत्त (शिखा - अग्र + द्°) adj. P. 5, 4, 145, Schol.

शिखावल Taik. 2, 3, 26 fehlerhaft für शिखावल.

शिखावट adj. *einen Haarbusch tragend:* मुण्ड, वलिन, शिखावट M. 2, 219.

शिखाण्डक m. = शिखण्ड 1) H. 572.

शिखातरु m. *Lampengestell* Taik. 2, 6, 13. H. an. 4, 61. Med. k. 61. Hîn. 65.

शिखादामन् n. Megh. 89 wird von den Comm. durch चूडामणि, शिखामाल्य, शिरोमाल्य und माला erklärt.

शिखाधर m. 1) *Pfau* Çabdar. im ÇKDa. — 2) N. pr. = मञ्जुघोष Taik. 1, 1, 22.

शिखाधार m. *Pfau* Çabdar. im ÇKDa.

शिखापति m. N. pr. eines Mannes Saṁsk. K. 184, *a*, 11.

शिखाबन्ध m. *Haarschopf* Vîrtp. 120.

शिखाभरण n. *Kopfschmuck, Diadem* Vikr. 124.

शिखामणि m. *ein auf dem Scheitel getragenes Juwel* Ragh. 6, 22. Vikr.

129. Kathâs. 22, 224. Am Ende eines comp. in übertr. Bed. so v. a. *eine Perle von —, die Krone von —, der* oder *das Beste in seiner Art:* लोकनाथ° Bhâg. P. 3. 15, 4. 10, 83, 8. 11, 26, 9. Râga-Tar. 1, 154. वेदान्त° Hall 100. — Vgl. शशि°.

शिखामूल n. = शिखाकन्द Râgân. in ÇKDn.

शिखावत् (von शिखा) 1) adj. gaṇa बलादि zu P. 5, 2, 126. *flammend, brennend:* दीप P. 5, 2, 96, Schol. *mit einer Spitze versehen:* केतवः शिखावन्ति ज्योतींषि Kull. zu M. 1, 38. — 2) m. *a) Feuer* AK. 1, 1, 4, 30. — *b) ein Komet* oder *der niedersteigende Knoten* Çabdar. im ÇKDn. — *c)* N. pr. eines Mannes P. 5, 3, 118. eines Muni MBh. 2, 109. — 3) f. शिखावती *Sanseviera Roxburghiana Schult.* Çabdâm. im ÇKDn. — Vgl. शिखावत.

शिखावर् m. *Brodfruchtbaum* (पनस) Çabdar. im ÇKDn.

शिखावर्त m. N. pr. eines Jaksha MBh. 2, 398.

शिखावर्ति (von शिखा) P. 4, 2, 89. 5, 2, 115. m. *Pfau* AK. 2, 5, 30. Trik. 2, 5, 26 (शिखाचल gedr.). H. 1319, Schol. Halâj. 2, 86. LA. (III) 91, 2. Kâvjâd. 3, 24.

शिखावली in वह्नि° Spr. (II) 340. 2497 zu zerlegen in वह्निशिखा + आवली.

शिखावृत्त m. = शिखातरु *Lampengestell* Çabdârthan. bei Wilson.

शिखावृद्धि f. = कायिका वृद्धिः ÇKDn. nach der Smṛti.

शिखि m. 1) aus metrischen Rücksichten st. शिखिन् *Pfau* Harîv. 8787. — 2) N. pr. des Indra unter Manu Tâmasa Mârk. P. 74, 58. शिखिन् VP. 3, 1, 17. — 3) ein N. des Liebesgottes H. ç. 77.

शिखिकण्ठ (शिखिन् + कण्ठ) n. *blauer Vitriol* Ratnam. im ÇKDn.

शिखिप्रोव n. dass. AK. 2, 9, 101. H. 1052.

शिखिता (von शिखिन्) f. *der Zustand eines Pfauen* Kathâs. 71, 203.

शिखितीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67, *a*, 39.

शिखिदिश् (शिखिन् + दिश्) f. Agni's *Weltgegend* d. i. *Südost* Varâh. Bṛh. S. 93, 4.

शिखिध्वज (शिखिन् + ध्वज) 1) m. *a) Rauch (das Erkennungszeichen des Feuers)* Trik. 1, 1, 70. Hir. 109. — *b)* ein N. Kârttikeja's Çabdar. im ÇKDn. — 2) n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 77, *b*, 32. — शिखिध्वजोपाख्यान 334, *a*, 38.

शिखिन् (von शिखा) 1) adj. gaṇa ओरञ्चादि zu P. 5, 2, 116. बलादि zu 136. Vop. 7, 30. *a) einen Haarbusch tragend* Trik. 3, 3, 264. H. an. 2, 287. fg. Med. n. 142. Gṛhjas. 2, 52. अटौ शिखी मुण्डो Tattvas. 19. AV. 19, 22, 18. MBh. 4, 1639. 7, 9504. 13, 1171. 2277. 3694. Harîv. 10594. 11866. R. 3, 52, 9. Verz. d. Oxf. H. 148, *a*, No. 318. 288, *b*, 20. Gaṇar. zu Sâmkhjân. 22. — *b) auf der Höhe der Wissenschaft stehend:* यस्तेषां शिखा चान्या यस्य ज्ञानमयी शिखा । स शिखीत्युच्यते विद्वान् Brahmopanishad in Ind. St. 1, 383, N. 1. m. *ein Brahman* Çabdârthan. bei Wilson. — 2) m. *a) Pfau* AK. 2, 5, 30. 3, 4, 18, 109. H. 14. 1319. H. an. Med. Halâj. 2, 86. ṚV. Pariç. 13, 30. Jîân. 3, 324. MBh. 3, 2858. 4, 191. 6, 71. R. 2, 56, 9. Suça. 1, 107, 8. Vikr. 41. Çiç. 4, 50. Spr. (II) 164. 2375. 3051. (I) 2832. Varâh. Bṛh. S. 3, 28. 24, 19. 34, 4. 48, 6. 68, 115. Kathâs. 14, 19. Râga-Tar. 3, 335. शिखिपुच्छ Çabdar. im ÇKDn. — *b) Hahn* Trik. H. an. Med. — *c) Ardea nivea* Trik. 2, 5, 24. — *d) Stier* H. an. Med. — *e) Pferd* H. an. — *f) Feuer, der Gott des Feuers* AK. 3, 4, 18, 109. H. 1099. H. an. Med. Hir. 162. Halâj. 1, 62. Gṛhjas. 1, 6. Jâân. 3, 127. MBh. 1, 932. 2, 434. 1147. 3, 547. 4, 1710. 5, 1808. 12, 8556. R. 2, 98, 9. 3, 55, 11. 6, 86, 24. Mṛkkh. 83, 3. Ragh. 19, 54. Çiç. 15, 7. Varâh. Bṛh. S. 5, 60. 9, 44. 11, 11. 13, 65. 53, 43. 51. 119. Bṛh. 2, 6. तत्रस्थ शस्त्रशिखिनः शमगत यातु Uttarar. 110, 19 (149, 14). Spr. (II) 353. 2488. 4812. (I) 2486. Gîr. 7, 40. घोर्व° Verz. d. Oxf. H. 129, *a*, 11. Pañkat. 3, 7, 19. — *g)* Bez. *der Zahl drei* (wegen der *drei heiligen Feuer*) Varâh. Bṛh. S. 77, 33. 98, 1. Bṛh. 1, 13. Laghuk. 1, 21 in Ind. St. 2, 282. — *h) Lampe* ÇKDn. und Wilson. — *i)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Carpopogon pruriens* Ratnam. im ÇKDn. *Trigonella foenum graecum* und = सितावर् Râgân. im ÇKDn. — *k) Komet* H. 122. H. an. Med. Halâj. 1, 49. Varâh. Bṛh. S. 3, 11. 11, 4. 14, 37. 12, 5. 31. 47, 12. 14 (Spr. 2649). fg. vielleicht *der niedersteigende Knoten* 20, 6. Bṛh. 2, 2. Jogajâtrâ 1, 12. 3, 20; vgl. Ind. St. 10, 199. 210. fg. शिखिचार *Kometenlauf* als Titel eines Buches oder Abschnittes Varâh. Bṛh. 11, 1. — *l) Berg* Çabdârthan. bei Wilson. — *m) Pfeil* H. an. Med. — *n) Baum* diess. — *o)* N. pr. α) eines Schlangendämons MBh. 5, 3628. — β) des Indra unter Manu Tâmasa VP. 3, 1, 17. शिखि Mârk. P. शिवि Wilson, VP. — γ) des 2ten Buddha H. 236. Lalit. ed. Calc. 5, 22. Wilson, Sel. Works 1, 290. 2, 5. 8. 13. Burnouf, Intr. 222. 317 (शिखिन् gedr.). 533. Lot. de la b. l. 503. — δ) eines Brahman (der Gott) Lot. de la b. l. 3. 106. — 3) f. शिखिनी *a) Pfauhenne* R. 3, 79, 14. — *b) eine best. Staude,* = मयूरशिखा Râgân. im ÇKDn. — Vgl. रक्त°, शरच्छिखिन्, शेखिन.

शिखिन्धन (?) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, N. 1.

शिखिप्रिय m. *eine Art Judendorn* (*Pfauen lieb*), = लघुवदर Râgân. im ÇKDn.

शिखिमण्डल m. *Crataeva Roxburghii R. Br.* Çabdar. im ÇKDn.

शिखिमोदा f. *eine best. Pflanze,* = मयूरमोदा Râgân. im ÇKDn.

शिखिमृग m. *eine Antilopenart* (मोकारिन्) Râgân. im ÇKDn.

शिखिवर्धक m. *Benincasa cerifera Sav.* Çabdar. im ÇKDn.

शिखिवासस् m. N. pr. eines Berges VP. 2, 2, 27.

शिखिवाहन m. ein N. Kârttikeja's (*auf einem Pfaue reitend*) AK. 1, 1, 4, 35. H. 208.

शिखिव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Ginupa-P. 129 im ÇKDn.

शिखिन् Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 102 (oxyt.). m. 1) pl. N. pr. eines Volkes ṚV. 7, 18, 19. sg. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104 गोपवनादि zu 2, 4, 67. — 2) *Moringa pterygosperma Gaertn., horse radish tree* Absl. 1, 173. Blätter und Blüthen dienen als Gemüse. AK. 2, 4, 2, 11. H. 1134. an. 2, 463. Med. r. 91. gaṇa प्रजादि zu P. 4, 3, 164. Jîân. 1, 171. Suça. 1, 39, 5. 132, 5. 145, 5. 157, 10. 182, 16. 217, 5. 2, 66, 2. 286, 21. Vâsudh. 6, 107. etwa *der Same dieser Pflanze:* शिग्रुगिर्नवनीतमिश्रैः प्रदेग्धि Kâç. 29. षड्गारकपाले शिग्रुशर्करा नुक्षेति 38. — 3) *Gemüse* überh. AK. 2, 9, 34. H. an. Med. — Vgl. कृत्त°, गुड°, नील°, मधु°, रक्त° und शेयव.

शिग्रुक 1) m. = शिग्रु 2) M. 6, 14. — 2) n. *Gemüse* überh. H. 1184.

शिग्रुफल n. *der Same von Moringa pterygosperma Gaertn.* AK. 2, 9, 110.

शिग्रुवीज n. dass. Çabdâm. im ÇKDn.

शिङ्, शिङ्गति (गत्यर्थ) Dhâtup. 5, 31.

शिङ्ख m. N. pr. eines Mannes Tîrân. 87. fg.

शिङ्खम्बिका f. N. pr. eines Frauenzimmers Hall 158.

शिङ्गि, वसिष्ठकनु: शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् VS. 39,8. Die Stelle ist schon in der Construction fehlerhaft. Dafür steht घोषिष्ठकनै शिङ्गीनिकोश्याभ्याम् TS. 1,4,**30**,1. die Comm. wissen nichts zu erklären.

शिङ्, शिङ्गति *beriechen* (घ्राघ्राणे) Dhâtup. 5,57. शिङ्गित = घ्रात Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. शिंङ्.

— उद् s. उच्छिङ्गन.

— उप *küssen (die Nase nähern; vgl.* घ्रा): (तम्) शिरस्युपशिशिङ्ग Bhatt. 14,52. उपाशिङ्गत् 17,95.

शिङ्गण n. = शिङ्गाण *Rotz* Çabdar. im ÇKDa. (सि° geschr.).

शिङ्गाण Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,83. 1) *Rotz*, m. H. 632. n. Med. p. 81. Viçva bei Uṇâdis. — 2) n. *Eisenrost* Med. Viçva. — 3) n. *Glasgefäss* Taik. 2,9,9. Med. Hin. 127. Viçva. — शिङ्गाणः केनटिएडीरो नक्रेतश्च पिच्छिलः Vikramâdityarâga bei Uṇâdis. कुरण्डवृद्धो सिङ्गाणशेटो (lies °खेटो) Taik. 2,6,16. — Vgl. शिंङ्गाण.

शिङ्गाणक *Rotz*, m. H. 632, Schol. n. Çabdar. im ÇKDa. *Schleim* Taik. 3,3,95. m. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,83. = पात्रटीर H. an. 4,270. शिङ्गाणिका f. *Rotz* oder *Speichel* Âpast. 1,16,14, v. l. (सि°, घ्रृ°, घ्रङ्गाणिका). Wird auch सि° geschrieben.

शिङ्गिनी (von शिङ्ग) f. *Nase* H. 381. Hall. 2,366. Auch सि° geschr.

शिच् (nom. शिक्) f. = शिक्य Çabdar. im ÇKDa. Bhâg. P. 10,9,8. 12, 2. 13,9. *Netz* 7,2,52. 11,7,66. 71.

शिञ्ज्, शिञ्जे Dhâtup. 24,17 (अव्यक्ते शब्दे). *einen schrillen Laut von sich geben, klingen, schwirren* Nir. 2,5. 9,18. यत्सं स शिञ्जे पेनं गोरभीवंता RV. 1,164,29. पोर्येव शिञ्जे वितताधि धन्वं ज्या 6,75,3. घण्टाः शिशिञ्जिरे दीर्घम् Bhatt. 14,4. शिञ्जानमञ्जुमञ्जीरा Râga-Tar. 1,247. Gîr. 11,23 (wo mit der v. l. शिञ्जानमञ्जु° zu lesen ist). शिञ्जानधमत् Bhatt. 22,27. partic. act.: मञ्जुशिञ्जत्पदाङ्गि Bhâg. P. 3,23,15. °कलानूपुर 10,53,52. शिञ्जद्वलय Megh. 77. शिञ्जित 1) adj. *einen schrillen Laut von sich gebend* u. s. w.: गजेश मद्शिञ्जितैः Harîv. 4994. शिञ्जिताङ्गदभूषण 2631. वर्मन् Raghu. 4, 56 (nach der Lesart der ed. Calc. neutr.). मधशिञ्जितमेखला: 9,36 (45). — 2) n. nom. act. AK. 1,1,**6**,2. H. 1405. कृणशिञ्जितनिर्घोष R. 2,40,19. धृक्तैः शिञ्जितैर्कसैः क्षुरनेमिस्वनैरपि MBh. 7,1557. नूपुराणां शिञ्जितैः 13,2782. Harîv. 4649. R. 1,9,17 (15 Gorr.; das Versmaass verlangt घाशिञ्जित, welches Gildemeister am Rande einer Hdschr. gefunden hat). Vikr. 93. Bhâg. P. 8,8,18. 9,17. Pañcar. 3,12,9. — शिञ्जयते (वस्फुटध्वनौ) Vop. in Dhâtup. 34,44. Die Bomb. Ausgg. haben stets सि.

— घा, partic. घाशिञ्जित *klingend*: °नूपुर Kumâras. 3,36. n. *Geklingel* R. 1,9,17 (15 Gorr.) nach der richtigen Lesart; s. o. simpl.

— परि *umschwirren*: (पक्षिन्यः) धमरैः परिशिञ्जिताः R. 4,48,10.

— वि *zwitschern*: विशिञ्जानपतत्रिसंघ Bhatt. 3,46.

— सम् = simpl.: वदवाः Çat. Br. 13,2,**2**,2. — caus. *klingend zusammenstossen* Çat. Br. 11,4,**2**,2.

शिञ्जा (von शिञ्ज्) f. 1) *Geklingel* Çabdar. im ÇKDa. — 2) *Bogensehne* H. 770.

शिञ्जार m. N. pr. eines Mannes RV. 8,5,35. 10,40,7.

शिञ्जास्पत्य n. sg. copulative Zusammensetzung mit Versetzung der Glieder ganz राद्दत्तादि zu P. 2,2,31. शिञ्जास्य v. l.

शिञ्जिन् (von शिञ्ज्) 1) adj. *klingend* u. s. w. — 2) f. शिञ्जिनी a) *Bogensehne* AK. 2,8,**2**,53. Hall. 2,309. 5,79. Spr. (II) 1087. — b) *Sinus eines Bogens* Ganit. Tripraçn. 58. Goladhy. Tripraçn. 36. — c) *ein klingender Fussring* H. 666. Hall. 2,406. — Vgl. त्रिति°, चर°.

शिट्, शेटति = सिट् Dhâtup. 9,17 (अनादरे).

शिण्डाकी f. *eine scharfe Sauce aus Senf, Rettig, Reismehl* u. s. w. Bhâvapr. 5.

1. शित् partic. s. u. 1. शा.

2. शित् partic. s. u. 2. शा und vgl. सोमशित.

3. शित m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,253.

4. शित adj. *weiss*, subst. f. *Zucker* u. s. w. fehlerhaft für सित. Die Aehnlichkeit von शिति kann zu dieser Schreibung Veranlassung gegeben haben; सित ist durch falsche Etymologie aus घसित gebildet worden, wie सुर aus घसुर.

शितता (von 2. शित) f. *Schärfe* Çiç. 9,66.

शितदु f. = शतदु AK. 1,2,**2**,22. — Vgl. सितदु.

शितामन् n. *der untere Vorderfuss* (des Opferthieres) Naigh. 4,1. Nir. 4,2. शितामर्तम् VS. 21,43. TBr. 3,6,**11**,1. Nach Andern *Leber, Fett* oder *Wurf* (पोनि) *der Kuh*. — Vgl. शितीमन्.

शितिति Uṇâdis. 4,121. 1) adj. (f. eben so) P. 4,1,39, Schol. Nir. 4,3. ein mit शिति anlautendes adj. comp. behält den Ton des letzteren Gliedes P. 6,2,138. a) *weiss* AK. 3,4,**14**,85. Taik. 3,3,127. H. an. 2,200. Med. t. 64. — b) *schwarz* AK. 3,4,**14**,85. **20**,201. Taik. H. 1397. H. an. Med. Hall. 4,19. श्वेतो शितो लोकितो Verz. d. Oxf. H. 129, b, No. 234. Ind. St. 2,258. — 2) m. a) *eine Art Birke* (भूर्ज) Taik. H. an. Med.; vgl. शिवि. शिलि. — b) = सार Çabdar. im ÇKDa. — c) als Gâtaka Çâkjamuni's Vaipl. beim Schol. zu H. 233; fehlerhaft für शिबि; vgl. शिबिक.

शितिककुद् adj. *weisshöckerig* TS. 5,6,**14**,1. **17**,1. 7,3,**13**,1. Kâṭh. 13,7. शितिककुद् und शितिककुद् P. 6,2,128, Schol.

शितिकर्ण adj. *weissschulterig* AV. 5,23,5. VS. 24,1. TS. 5,5,**20**,1. — Vgl. शैतिकर्ण.

शितिकण्ठ P. 6,2,114, Schol. 1) adj. *weisshalsig*: ein Thier Kâṭh. 13,6. Rudra-Çiva (nach der späteren Auffassung *schwarz* —, *blauhalsig*; vgl. नीलकण्ठ) VS. 16,18. Çatar. in Ind. St. 2,38. MBh. 7,9520. 12,6164. 14,192. Mârk. P. 23,63. m. ein N. Çiva's AK. 1,1,**1**,27. Hâr. 8. Harîv. 9843. R. 1,37,8. 6. 9 (38, 6. 7. 10 Gorr.). 75,14. Kumâras. 2, 61. 6,81. Bhâg. P. 4,3,12. 4,18. 24,25. Pañcar. 3,5,7. — 2) m. a) *ein best. Raubvogel* MBh. 1,3605 (hier wohl als adj. mit पतंगा: zu verbinden). 5,1911. *Pfau* Çiç. 4,56. = दात्यूह Taik. 2,5,21. — b) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 16,120. — c) N. pr. eines Mannes (als N. Çiva's) Hall 201. in der Einl. zu Vâsavad. 16. °दीक्षित Verz. d. B. H. No. 664. fgg. Hall 24. fgg. (mit der v. l. श्री st. शिति).

शितिकण्ठक adj. *blauhalsig*: Pfau Vikr. 151.

शितिकेश adj. *weisshaarig*; m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2563.

शितिङ्ग adj. vielleicht *weisslich* (von शिति) AV. 11,5,12.

शितिचार m. *ein best. Gemüse* Gaṇîn. im ÇKDa.

शितिच्छद् adj. *weisse Flügel habend;* m. *Gans* Çabdan. im ÇKDa.

शितिनस् adj. *weissnasig* VArtt. 2 zu P. 5,4,113.

शितिपत् 1) adj. (f. घा) *weissflügelig* Harîv. 1121. — 2) m. *Gans* Çabdan. im ÇKDa.

शितिपाद् adj. (nom. °पात्, f. °पद्दी gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139) *weissfüssig* ṚV. 1,35,5. AV. 3,29,1. fgg. 11,10,6. 20. TS. 7,3,13,1. Kauç. 14. 16. — Vgl. एक°.

शितिपाद् adj. dass. P. 6,2,138, Schol. कुप MBn. 7,986.

शितिपृष्ठ adj. (f. घा) *weissrückig* (nach Andern *schwarzrückig*) ṚV. 3, 7,1. Indra's Rosse 8,1,25. VS. 24,7. 28,19. TS. 1,8,19,1. 2,1,8,2. 7,3,13,1. TBn. 1,7,2,2. Çat. Ba. 5,3,4,2. 5,4,12. Kâtj. Çr. 15,3,18. 9,9. eine Schlange Paṇḍav. Bh. 25,15,3. Strahlen Çâṇḍ. Bh. 14,1. ein Vogel Harîv. 1121.

शितिप्रभ adj. *weisslich:* Vishṇu MBn. 1,2506.

शितिबाहु adj. *dessen Vorderfüsse weiss sind* AV. 5,23,3. oxyt. P. 6, 2,138. TS. 5,6,13,1. VS. 24,2. 7. घन्यतः°, समत्त° 2. — Vgl. शैतिबाहेय.

शितिभसद् adj. P. 6,2,138. *dessen Hintertheil weiss ist* Kâṭh. 13,7. TS. 5,6,14,1. 13,1. 7,3,13,1.

शितिभ्रु adj. *dessen Brauen weiss sind* VS. 24,6. TS. 5,6,14,1. 7,3,13,1.

शितिमांस n. = मेदस् Gîlava in Nir. 4,3.

शितिरन्ध्र adj. *dessen Ohrhöhle weiss ist* TS. 7,3,13,1. VS. 24,6. घन्यतः°, समत्त° ebend.

शितिललाट adj. *eine weisse Stirn habend* P. 6,2,138, Schol.

शितिवर m. *Marsilea quadrifolia* Bhâvapr. 5.

शितिवार् 1) adj. *weisswandig* TS. 2,1,4,2. — 2) m. = शितिवर् Bhâvapr. 5; vgl. सितावर्.

शितिवाल adj. dass. Çat. Ba. 5,3,4,10.

शितिवासस् adj. *dunkel gekleidet* (= नीलाम्बर् Comm.) Bhâg. P. 6,16,20.

शितिसारक m. *Diospyros embryopteris Pers.* (*eine Art Ebenholz*) AK. 2,4,2,19.

शितीतु m. N. pr. eines Sohnes des Uçanas VP. 420, N. 10.

शितीयस् = शितामन् TS. 5,7,19,1. Kâṭh. 13,9.

शितेषु m. N. pr. eines Sohnes des Uçanas VP. 420 (2te Aufl. 4,63). der gedr. Text शितेषु.

शितेषु (शित *scharf* + इषु *Pfeil*) m. N. pr. eines Sohnes des Uçanas (vgl. शितेषु, शितेषु, शितीतु) VP. 2te Aufl. 4,63, N. 4. — Fehlerhaft für शोतेषु R. 1,32,18. fg.

शितोदा s. शीतोदा.

शित्पुट् m. *ein best. Thier* (*eine Katzenart* nach Comm.) TS. 5,5,13,1. v. l. शित्पुट.

शित्पृक्ष (शिति + घंस) adj. P. 6,2,138, Schol. *weissschulterig* TS. 7,3,13,1.

शित्पुट s. शित्पुट.

शित्पोष्ठ (शिति + घोष्ठ) adj. P. 6,2,138, Schol. *weisslippig* TS. 5,6,14, 1. 7,3,13,1.

शिथिर् adj. (f. घा) *locker, lose, schlaff; zart, weich* (Gegens. दृढ): सर्वा ता वि ष्या शिथिरेव ṚV. 5,65,5. Arme des Savitar 7,45,2. नि शीकुयं शिथिरे घीतमस्य: *in's Weiche niedersetzen* 71,5. AV. 18,2,3. घट्टा *schwank* ṚV. 6,58,2. पर्वाणि शिथिराणि सन्ति दृढानि *locker* (d. h. *beweglich*) *und doch fest* Ait. Br. 3,21. 6,16. TS. 3,2,4,3. Paṇḍav. Bh. 1,1,7. — Vgl. शिथिल, ग्रथ und ग्रथ्.

शिथिर्ल Uṇâdis. 1,54 (vielleicht ist hier शिथिर् zu schreiben). adj. (f. घा) dass. Taitt. 3,1,8. H. 491. Halâj.^{2}4,92, तनु Kâṭh. Ça. 4,1,6. TS. 7,1,5,4. निर्वीर्य: शिथिलो यातयामा *schlaff* 8,1. Kâṭh. 11,1. 36,5. 7. राष्ट्र *aus den Fugen gehend* 37,12. छन्दस् Paṇḍav. Bh. 17,1,12. TS. 6,5,10,2. इन्द्रो वै शिथिल इवाप्रतिष्ठित यामोत् 7,3,2,1. घौ° Weber, Nax. 2,303. Çat. Ba. 1,7,4,11. 2,1,4,2. — नवमेरायणशिथिलस्तनु: Spr. (II) 90. नवमल्लिकाकुसुम Çiç. 41. वासस् Mahâbh. 69. Vikr. 115. Râja-Tar. 4,434. Verz. d. Oxf. H. 139,a, No. 276. बन्ध Suçr. 1,66,13. Çiç. 39. घशिथिलपरिरम्भ Uttarar. 11,12 (15,16). मयूरराङ्गरुहै: (*Pfauenfedern*) Harîv. 3832. पद्म Suçr. 1,26,1. Golâdhj. Golar. 2. °चन्दनतिलक Daçar. 91,7. °भुज Spr. (II) 622. Kuvalaj. 125,a. Sîh. D. 67, 13. वृषणौ Paṇḍav. II,143. शिथिलावयव Bhâg. P. 4,28,13. कुक्षि Suçr. 1,368,3. गात्र Mṛicch. 48,24. देश: को नु खलावमेकशिथिल: *locker* 47,1. *schlaff, schlotternd, welk* von lebenden Wesen R. 3,2,17. °प्राण (सिंह) Spr. (II) 2027. सैन्य Kathâs. 51,170. गोकर्णशिथिलश्चरन् *umstät wie ein Kuhohr* MBn. 2,2324. *geschmeidig:* पौरुषेयित: Spr. 3276. शार्दूलशिथिलश्चरन् *wie ein Tiger* MBn. 4,345. °समाधि *schlaff, schwach* Mâlav. 23. °बन्धुमत्रया Kathâs. 30,143. कुर्पूरवालप्रियवं शिथिलम् Spr. 2656. वाप्यं कुरु स्थिरतया शिथिलानुबन्धम् Çiç. 90, v. l. सर्वा न: शिथिला: क्रिया: Bhâg. P. 10,46,21. प्राणा: R. 4,58,18. जीवित ad Mahâbh. 112. वाच् *schwach, zitternd* MBn. 13,270. R. 6,85,7. मनस् *unstät* MBn. 3, 1320. mit einem loc. *lässig in:* क्रियासु R. Gorr. 2,76,32. शिथिलम् adv. *nicht fest:* तस्थौ भुवि Raghu. 15,96. — Vgl. प्र°, शैथिल्य.

शिथिलता (von शिथिल) f. *Schlaffheit:* एवं मयि निरालम्बे शापाच्छिथिलतां गते Harîv. 2994. 4394. बन्धाग्रेयपरिग्रहे Paṇḍav. IV,7. राजकृत्यानि पौरकृत्यानि च सर्वाणि शिथिलतां व्रजन्ति so v. a. *werden vernachlässigt* 30,11. धर्मे शिथिलतां गते Harîv. 2306.

शिथिलभाव m. *das Lockerwerden:* धौ° neben धृति TBn. 3,3,3,5. TS. 7,2,4,2.

शिथिलय् (von शिथिल), °यति *locker machen, lösen:* ein Kleid Çiç. 9,21. med. so v. a. *unbenutzt vorübergehen lassen:* नाकमेवं रमणीयमात्मन: सेवावकाशं शिथिलयिष्ये Çiç. Cu. 62,16. fg. शिथिलित *locker —, schlaff gemacht, gelöst:* °ग्रेन चापेन Kathâs. 27,157. दोर्वल्लि Gît. 12, 12. °मृणाल Çiç. 57. °मलनिचय Daçar. 67,9. °मुष्यामात्यवैमत्यविग्र (so ist zu lesen) Râja-Tar. 3,538.

शिथिलाय् (wie eben), °यते *schlaff werden:* गात्राणि Spr. 1948.

शिथिलीकर् (शिथिल + 1. कर्), °करोति *lockern, lösen, vermindern, lindern:* घात्मन्यवज्ञां °चकार Raghu. 2,41. तद्वियोगव्यथां किंचिच्छिथिलीचक्रतु: मुनी 15,34. °कृत *gelöst, schlaff gemacht:* °ग्रघनदुकूल Gît. 2,12. °गात्रयष्टि Ṛt. 6,21. घरया (so ist zu lesen) *erschlafft* MBn. 1,3471. के देषा मनसा त्यक्ता: के वृद्धा °कृता: *geschwächt, vermindert* 12,7732. °कैलासनिवासव्यसन Kathâs. 11,22. °दुर्मताभिमान Verz. d. Oxf. H. 258,b,13. fg.

शिथिलीकरण (von शिथिलीकर्) n. *das Lockern, Schwächen* Sarvadarçanas. 165,20.

शिथिलीभू (शिथिल + 1. भू), °भवति *schlaff werden, erschlaffen:* वर्षा-

म्बुमिक्ता इव चर्मबन्धाः सर्वे प्रयत्नाः °भवति Spr. 3114. प्रारब्धे कार्यसमाप्ते कार्ये °भवति किं मुधियः Kathās. 81,115. यत्सौहृदादपि घनाः °भवति so v. a. *ablassen von* Spr. 3129. °भूत *schlaff geworden* Suçr. 1,97,21. रज्जु Kathās. 43,36.

शिन m. N. pr. eines Mannes Pravarādhy. in Verz. d. B. H. 55, 42. — Vgl. शिनि.

शिनि m. N. pr. eines Mannes (in den Purāṇa verschiedener Männer) aus Vṛshṇi's Geschlecht Uçānas. zu Uṇādis. 4,51. Taik. 1,1,35. सत्यकस्य शिनेः सुतः MBu. 2,125. 3,12330. 7,6033. 16,89. Harīv. 1934. 5078. 9203. fg. VP. 424. 451. Bhāg. P. 9,21,19. 24,12. fg. 25. in °प्रवीर् *das Geschlecht des* Çini MBu. 5, 4. शैनिवासुदेवाः P. 6,2,35, Schol. — Vgl. शैनेय, शैन्य.

शिनिवाक्षु N. pr. eines Flusses VP. 183, N. 30.

शिनिवास m. N. pr. eines Berges Bhāg. P. 5,16,27. शिनी° ed. Bomb.

शिनीवास s. शिनिवास.

शिनेयु m. N. pr. eines Sohnes des Ushant (Uçanā) Harīv. 1975. des Uçanas VP. 4,12,2 (शितेयु Wilson).

शिपट् s. ग्र°.

शिपविलुर्क m. *ein best. Wurm* oder dgl. AV. 5,20,7.

शिपिविष्ट m. = शिपिविष्ट Rāmān. zu AK. 2,4,37 nach ÇKDr.

शिपाक m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 6,350.

शिपि m. in der Erklärung von शिपिविष्ट mit पशु gleichgesetzt. पशो वै विष्टुः पशवः शिपिः TS. 2,5,5,2. = रश्मि Nir. 5,3. शैत्याच्छ्रयनयोगाच्च (°योगाद्वा Ind. St.) शिपि वारि प्रचक्षते। तत्पानाद्भक्षणाच्चैव शिपयो रश्मयो मताः। तेषु प्रवेशाद्विश्लेशः (प्रविष्टः सविता Ind. St.) शिपिविष्ट इत्युच्यते॥ इति व्यासवचनम् ÇKDr.; vgl. Ind. St. 2,37. = प्राणिन् Mahīdh. zu VS. 8,35. Die Comm. verstehen das Wort nicht.

शिपिर्त partic.; तच्छिपितमिव (*kahl?*) पक्षस्य भवति Çat. Br. 11,1,6,4.

शिपिविष्ट adj. 1) *kahl* AK. 3,4,9,37. H. 453. an. 4,65. Med. t. 65. Hall. 2,452. अतिरिक्तं शिपिविष्टम् Kāṭh. 13,10. — 2) *kahlköpfig* (दुर्मनस्) AK. H. 435. H. an. Med. Hall. 5,31. श्वित्रः शिपिविष्टः u. s. w. sollen am Çrāddha nicht theilnehmen Āpast. 2,17,21. — 3) Bez. Vishṇu's Naigh. 4,2. Nir. 5,7. 8. ṚV. 7,99,7. 100,5. 6. VS. 8,35. 22,20. Çat. Br. 11,1,6,3. 12,6,1,12. TS. 2,5,5,2. 7,5,5,2. TBr. 1,3,9,5. 4,8,4. Āçv. Çr. 2,12,5. Gop. Utt. 1,9. MBu. 12,1506. शिपिविष्टेति चाख्यायां कोनरोमा च यो भवेत्। तेनाविष्टं तु यत्किंचिच्छिपिविष्टेति च स्मृतः॥ 13229. fgg. 13,6978. Harīv. 14114. Bhāg. P. 4,13,25. 8,16,51. 17,26. Pāṇ. 4,3,24 (S. 249). — 4) Bez. Rudra — Çiva's AK. Taik. 1,1,47. H. 198. H. an. Med. Hall. 1,18. Gaṇ. in Verz. d. Oxf. H. 191,a,7. VS. 16,29.

शिपिविष्टक adj.: (सिकताः) तुल्काः शिपिविष्टकाः etwa *glatt* TBr. 3,10,1,4.

शिपिविष्टवत् adj. *das Wort* शिपिविष्ट *enthaltend* TS. 7,5,5,1. TBr. 1,3,9,5. 4,5,4. Kāṭh. 14,10. Pāṇ. Br. 18,6,25.

शिप्रक m. N. pr. des Mörders von Suçarman VP. 4,24,12.

शिप्रवत् (von शिप्रा) adj. *backig:* Indra ṚV. 6,17,2.

शिप्रा f. 1) *Backe*, du. Naigh. 4,5. Nir. 6,17. TS. Prāt. 4,11. पीवो शिप्रे यवेपयः ṚV. 8,65,10. 3,32,1. 5,36,2. 10,96,9. 105,6. — 2) *Backenstück am Helm:* हिरण्ययी: ṚV. 5,54,11. 8,7,23. am Zügel der Rosse: वि व्यंस्व शिप्रे 1,101,10. — 3) *Nase* Nir. a. a. O. — Vgl. अय:°, इश°, विशिप्रिय, वृषशिप्र, सु°, हिरण्य°, हिरि°.

शिप्रिणीवत् (von शिप्रिन्) adj. so v. a. शिप्रवत्. Indra ṚV. 10,103,5.

शिप्रिन् (von शिप्रा) adj. dass.: Indra ṚV. 1,29,2. 81,4. 6,44,14. 8, 1,27. 2,28. 17,4. या पिबसि सोमं वीर्याय शिप्रिणी 32,24. 33,7. — अस्माकं शिप्रिणीनां (vermuthlich fehlerhaft; etwa: शिप्रिणीवन् voc.) सोमपाः सोमपावन्। सखे वज्रिन्सखीनाम् 1,30,11.

शिफ 1) m. = शिफा Viçvaprak. zu AK. nach ÇKDr. — 2) शिफा f. *a) eine faserige oder schwache Wurzel* (von Gräsern und Sträuchern) AK. 2,4,4,11. 3,4,26,202. H. 1120. an. 2,202. Med. ph. 3. Hall. 2, 28. तुण्डो ह्रस्वशिफाशाखो 33. AK. 2,4,4,8. H. 1117. als *Zuchtruthe* angewandt: °विदलाङ्घ्र्योर्विदध्यान्नृपतिर्दमम् M. 9,230. शिफाभेदाप्रपाद्दश *zehn Ruthenstreiche* 8,369. *Lotuswurzel* H. 1166. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Nardostachys Jatamansi* (जटामांसी) Dec. H. an. Med. *Anethum Sowa Roxb.* und *Gelbwurz* Rāǵān. im ÇKDr. — *c) Mutter* H. an. Med. — *d)* = मरित् H. an. Med. N. pr. eines Flusses (nach Sāj.): कृते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ṚV. 1,104,3. — Vgl. प्रतिपर्ण° und शाखा°.

शिफाक m. *Lotuswurzel* Çabdar. im ÇKDr.

शिफाकन्द m. dass. AK. 1,2,3,42.

शिफाधर m. *Zweig, Ast* Çabdam. im ÇKDr.

शिफाफल m. *der indische Feigenbaum* Rāǵān. im ÇKDr.

शिबि m. 1) N. pr. *a)* eines Mannes mit dem patron. Auçīnara, Liedverfassers von ṚV. 10,179. ein wegen seiner Freigebigkeit und Uneigennützigkeit hochgerühmter Fürst, der seinen Leib hingab um eine Taube zu retten (dasselbe wird übrigens auch von seinem Sohne Vṛshadarbha erzählt). H. an. 2,539. Med. v. 25. 27 (hier शिव). MBu. 1,3539. 3669. fgg. 6996. 3,10674. 4,1768. 5,4000. 7,2209. fgg. 12,932. fgg. 1794. 6199. 8592. 13,3093. 14,2790. Harīv. 1677. fgg. R. Gorr. 2,116, 20. Kathās. 7,88. fgg. 62,110. VP. 4,18,3. Bhāg. P. 1,12,20. 2,7,45. 4, 13,16. 8,20,7. 9,23,2. 3. 10,72,21. Verz. d. Oxf. H. 5, *b*, 12. 13, *a*, 21. 166, *b*, No. 370. Çākjamuni als Çibi Vāipi beim Schol. zu H. 233 (शिति die Hdschr.); vgl. शिविक 1). — *b)* eines Sohnes des Indra MBu. 1,7304. — *c)* des Indra im 4ten Manvantara VP. 262. शिबिन् der gedr. Text. — *d)* eines Daitja MBu. 1,2226. 2644. Harīv. 189. 2281. 12938. 13092. 14282. VP. 1,21,1. — *e)* pl. eines Volkes, das auf Çibi Auçīnara zurückgeführt wird, Schol. zu P. 4,2,52. 5,3,112. LIA. 1, 644. 2,168. MBu. 2,1189. 3,15626. 15718. 8,2106. Harīv. 1678. Vaitān. Bṛh. S. 4,24. 5,67. 16,26. 17,19. Kathās. 113,17. Daçak. 153,13. शिबेस्तु शिबयः (patron.) पुत्राश्चत्वारः Harīv. 1679. sg. *ein Fürst der* Çibi Vaitān. Bṛh. S. 11,59. — 2) *Raubthier* Taik. 2,3,3. — 3) *eine Art Birke* (भूर्ज; vgl. शिति, शिलि) H. an. Med. 25. 27 (hier शिव). — Wird häufig शिवि (aber nie in den Bomb. Ausgg.) geschrieben. Vgl. शैव्य.

शिबिक (Chi-pi-kia im Chinesischen) m. N. pr. 1) eines Königs, eines Gātaka des Çākjamuni, Hiouen-thsang 1,137; vgl. शिबि 1) *e)* am Ende. — 2) pl. eines Volkes im Süden Vaitān. Bṛh. S. 14,12.

शिबिका f. *Sänfte, Palankin* AK. 2,8,3,21. H. 758. fg. Hall. 2,295. वरूत्रि शिबिकामन्ये पाल्यन्ये शिबिकागताः Spr. (II) 4735. MBu. 1,2332. 3486. 4988. 5322. 3,12462. 13155. 5,450. Harīv. 3385. 4898. 6953. R.

2,76,14. 19. 92,25. R. Gorr. 2,34,13. 83,7. 4,24,17. 38,27. fg. 8,99,13. Varāh. Bṛh. S. 68,15. 86,72. Kathās. 38,20. 88,41. 104,160. Bālār. P. 4,9,41. 5,10,1. 12,6. 18,71,15. Mārk. P. 18,44. 46. घनदस्य 78,13. 108,3. Häufig (aber nie in den Bomb. Ausgg.) शिविका geschrieben.

शिविकाल m. N. pr. eines Daitja Hariv. 189 nach der Lesart der neueren Ausg.

शिविर n. 1) *ein fürstliches Lager, Feldlager, Heerlager; ein Zelt in einem solchen Lager* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,34. AK. 2,8,3,1. Trik. 2,8,3. H. 747. Hālā. 2, 297. MBh. 1, 368. 7158. 3, 662. 5, 5173. 5178. 5180. 7614. fg. 6, 2645. 2649. 7, 673. 2488. 2494. विद्युतानि च सर्वाणि शिविराणि समन्ततः 9, 1647. 14, 1803. 2528. Hariv. 5000. 5479. 5826. 6758 (शिरिवं ed. Calc.). R. 5, 83, 18. Kām. Nītis. 19, 6. Çiç. 5, 62. Vaṇis. 4, 15. Bālār. P. 1, 7, 34. 41. 4, 18, 31. 5, 5, 30. 7, 7, 6. 9, 10, 36. 15, 21. Pañcat. 1, 7, 34. 56. 2, 2, 39. masc. etwa so v. a. *Bureau, Verwaltungslocal* Rāja-Tar. 5, 176. Wird häufig (aber nie in den Bomb. Ausgg.) शिविर geschrieben. — 2) *eine Kornart* Çabdaratnāk. bei Wilson. — Vgl. शैल°.

शिविरगिरि m. N. pr. eines *Berges* Varāh. Bṛh. S. 14, 6.

शिवीरथ m. = शिविका Hem. 138 (शिवोरथ gedr.).

शिर्श adj. etwa *geil:* सन्नः AV. 7, 90, 2.

शिम्, शिम्यति Nebenform zu 1. शाम्; s. daselbst unter 2) am Ende. Vgl. शिक् in शिक्ष u. s. w. neben शक्, शिष् neben शास्.

शिंश m. vermuthlich so v. a. 1. शमितृ. गात्राणि पर्वशस्ते शिमाः कृणवतु शिम्यत्तः TS. 5, 2, 12, 1. सिमाः v. l. in VS.

शिमि f. Nebenform von 2. शमी *Hülsenfrucht* H. 1130.

शिमिका f. N. pr. einer Oertlichkeit Rāja-Tar. 6, 182. 7, 370.

शिंशिमिदा f. N. pr. einer Unholdin: घृषु रक्षांसि शिमिंदा (°दाम् Padap.) च मेधतम् AV. 4, 25, 4. Çat. Br. 7, 4, 1, 27. — Vgl. यशिमिद्.

शिंशिमिदत्त् adj. Bez. eines Windes Taitt. Âr. 4, 9, 1.

शिमिविडिष्, स्र° was bedeuten könnte *Werke nicht anfeindend* Taitt. Âr. 1, 9, 3.

शिमिषीयद् s. शमनीयद्.

शिंशी f. Nebenform von 1. शमी TS. 5, 2, 12, 1. Kāṭh. 10, 6.

शिंशीवत् (von शिंशी) adj. *wirksam, durchdringend, gewaltig* Nir. 5, 12. 14, 25. गाः RV. 1, 84, 16. (वज्रः) दिवो न वेषो रुवधः शिंशीवान् 100, 13. 10, 8, 2. क्रन्दम् 38, 1. घर्के 1, 141, 13. मिन्धुर्न क्षोदः शिंशीवाँ अघायतः 2, 25, 3. सत्र 5, 86, 3. die Marut 8, 20, 3. Krieger 10, 78, 3. वेषमित्वा समर्यो शिंशीवतोः 1, 155, 2.

शिंशुडी f. *ein best. Strauch* Rāmāy. im ÇKDr.

शिम्ब 1) m. a) *Hülsenfrucht, Schote* Suçr. 1, 199, 6. fgg. वेदलिक 12. — b) *Cassia Tora Lin.* Çabdam. im ÇKDr. — 2) f. ई *Hülsenfrucht, Schote* AK. 2, 9, 23 (mit H). H. 1130. Hālā. 2, 34. — Vgl. तुवरी°, पृथु°.

शिम्बल m. *Schötchen* (nach Sir. *Blüthe der Çālmali*) RV. 3, 53, 22. *eine best. Pflanze* Kauç. 8.

शिम्बीत adj. nach Naigh. 3, 6 so v. a. सुख. वंसग RV. 10, 106, 5.

शिम्बि f. 1) = शिम्बा *Hülsenfrucht, Schote* H. 1131. Mālatīm. 145, 30. शिम्बी f. dass. Çabdam. im ÇKDr. °यूष Suçr. 2, 251, 1. 340, 16. 390, 17. °धान्य Kāraka 1, 25 (शमीधान्य v. l.). Vīrac. 6, 17. Rāja-Tar. 1, 211. — 2) शिम्बि *ein best. Gras*, = एरका Bhāvapr. im ÇKDr. शिम्बी *Phaseolus trilobus* und *Mucuna pruriens Hook.* Rāǵān. im ÇKDr. — Vgl. काक°, कु°, कोल°.

शिम्बिक 1) m. *eine schwarze Varietät von Phaseolus Mungo* (मुद्ग) Lin. H. 1173. — 2) f. ई *Hülsenfrucht, Schote* Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. कक्ष°, दीर्घ°.

शिम्बिपर्णिका f. *Phaseolus trilobus* Ratnam. im ÇKDr.

शिम्बिपर्णी f. dass. Çabdar. im ÇKDr.

शिर्म्यु m. N. pr. eines (feindlichen) Volkes RV. 7, 18, 5. शिंम्यु Bez. von *Feinden* 1, 100, 18.

शिमोडी f. wohl nur fehlerhaft für शिमुडी; s. u. वत्स 3).

शिर् (von 1. शॄ) nom. sg. am Ende eines comp. *zerbrechend, hart mitnehmend* Kir. 15, 5.

शिर m. 1. = शिरस् *Kopf* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 193. कुण्डलोद्दृष्टगण्डानां कुमाराणां तरस्विनाम् । निचकर्त शिरान्दीर्णानलेभ्य इव पङ्क्तान् ॥ MBh. ebend. Pañcat. 3, 2, 18. 4, 3. Verz. d. Oxf. H. 103, b, 7 (Conj.). Hariv. 2683 ist °शिरःप्रध्यात् zu lesen: die neuere Ausg. hat eine ganz andere Lesart. Vgl. इन्द्र°, त्रि°, मृग°, वेट्°. — 2) *die Wurzel von Piper longum* H. an. 2, 468 (mit म). Med. r. 92. Vgl. चटिका-शिर, °शिरस्. — 3) *eine Art Birke* (भूर्जपत्र) Ratnam. 256. — 4) = शय्या. — 5) = यज्ञगर Uṇâdis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDr.

शिरःकपाल n. *Schädel* MBh. 14, 2370. Hariv. 14839. Suçr. 1, 87, 20. Verz. d. Oxf. H. 236, b, 10. fg.

शिरःकपालिन् (von शिरःकपाल) adj. *einen Schädel tragend* Jâân. 3, 242.

शिरःकम्प m. *Kopfschütteln* MBh. 3, 16067 (pl.). Rāja-Tar. 5, 363. सशिरःकम्पम् adv. Mṛicch. 65, 12. Verz. d. Oxf. H. 142, a, 5 v. u.

शिरःकम्पिन् adj. *mit dem Kopfe zitternd* Spr. (II) 2110.

शिरःकर्ण m. sg. *Kopf und Ohr* Kauç. in Ind. St. 5, 264.

शिरःकर्तन n. *das Kopfabschlagen* Spr. (II) 2643.

शिरःक्रिया f. *das Darstellen —, Vorführen eines Kopfes:* मायाराम° R. Gorr. 1, 4, 104.

शिरःपट्ट m. *Kopfbinde* Pañcat. 4, 3, 68 (°पट्टो zu lesen).

शिरःपाक m. *eine best. Kopfkrankheit* Çāṅg. Saṃh. 1, 7, 85.

शिरःपीठ n. *Nacken* H. ç. 122. — Vgl. शिरोधरा, शिरोधि.

शिरःप्रदान n. *das Hingeben des Kopfes, — des Lebens* Verz. d. Oxf. H. 256, b, 12.

शिरःफल m. *Kokosnussbaum* Trik. 2, 4, 40.

शिरस (शिर = शिरस् + स) m. *Kopfhaar* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. शिरोरुह.

शिरस्क्षेद् (शिरस् + क्षेद्) m. *das Kopfabschlagen, Kopfabreissen* Çiç. 2, 66. Kathās. 51, 77. Pañcat. ed. orn. 42, 28 (शिरस्क्षेदम् zu lesen). राम° Rāgān. 12, 71.

शिरस्क्षेदन n. dass. विबुधरिपु° Verz. d. Oxf. H. 64, b, 40; vgl. शिरस्क्षेदनम् Spr. (II) 3312.

शिरःशिल (शिरस् + शिला) n. N. pr. einer Festung Rāja-Tar. 8, 2493.

शिरःशूल n. *heftiger Kopfschmerz* Suçr. 1, 117, 5. 156, 14. Kathās. 13, 136. Dutpat. 78, 6. °विनाशन Glaupa-P. 188 im ÇKDr.

शिरःशेष adj. von *dem nur der Kopf übrig blieb*, m. Bez. Râhu's Spr. (II) 1126.

शिरस् Uṇādis. 4,193. n. 1) *Kopf, Haupt* (AK. 2,6,2,46. H. 566. an. 2,593. Med. s. 40. Halāj. 2,363. 5,13); *das Oberste, Erste* (प्रधान Trik. 3,3,452. H. an. Med.); *oberes Ende, Spitze* (Trik.). RV. 2,20,6. 3,31,12. 4,18,9. 8,80,5. 10,27,12. AV. 6,49,2. सर्वतः 10,2,27. VS. 11,37. यज्ञस्य Ait. Br. 1,25. 2,21. TS. 2,5,11,7. 6,3,5. राज्ञाम् Śat. Br. 13,3,3, 10. 14,1,1,23. शिरसा यूपमुल्लिखति Kāty. Śr. 14,5,10. Āśv. Gṛhj. 1, 17,7. यज्ञ° Āśv. Śr. 5,12,3. कुशलीकृत° Gṛhj. 1,19,10. सर्वशिरसि *in der Mitte des Kopfes* 4,8,15. सीता° Kauç. 20. वल्मीक° 21. मुञ्ज° 23. शिरसि (der Vedi) गायत्रं गायेत् Lāṭj. 1,5,11. 20. आहवनीयाभि° *dessen Kopf dem Āhavanīja zugekehrt ist* Āśv. Gṛhj. 4,2,15. अभिशिरोदेश Gobh. 2,9,12. — M. 2,60. शव° 11,72. कीटो ऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः Spr. (II) 1782. पलित 3275. fg. Mṛcch. 7. Śiç. 183. Śiç. 9,3. Vāmn. Pur. S. 3,4. 50,11. Var. in LA. (III) 13,14. Bhāg. P. 4,7,2. शिरसो ऽस्थि Halāj. 3,11. शिरोदेश 2,112. unter den स्थानानि वर्णानाम् (प्रातिशाख्यानि) Çikshā 13 in Ind. St. 4,107. TS. Prāt. 2,3. 23,10. प्रणिपतित° Vāmn. Pur. S. 43,60. °संधि 52,4. वेष्टित° adj. M. 3,238. सु° adj. R. 1,1,12. सप्त° adj. 4,33,41. द्वि° adj. Pāṇ. Gaṇ. 251,24. सकल° adj. Bhāg. P. 3,26,25. उत्सङ्गे ऽस्याः शिरः कृत्वा MBh. 1,1883. आकाश्य केशेषु शिरः Kathās. 18,174. न संस्पृशेन्नग्नो पाणिभ्यां कण्डूयेदात्मनः शिरः M. 4,82. पुत्रदारस्य वाप्येवं शिरांसि स्पर्शयेत् 8,114. शिरो भित्त्वा Ind. St. 1,383. भिन्नशिरोदेहाः (so ed. Bomb.) MBh. 1,8319. शिरश्छेत्तुं खड्गेन 3,3046. शिरसश्छेदनम् Spr. (II) 3312. Vāmn. Pur. S. 5,1. येन वृत्रशिरो कृत्तं Bhāg. P. 6,9,53. यद्यपि शिरो दद्यामि (vgl. शिरःप्रदान) Ver. in LA. 33,1. न धारयति यः शिरः *wer den Kopf nicht halten kann* Sūçr. 1,115,11. शिरो वहामि चेष्टत्वात्तवाहं देव गर्वितः *ich trage den Kopf hoch, bin stolz* Harīv. 7103. शिरोभि गर्वितान्यूढुः 8321. इतरो वर्तयेच्छिरः *halte den Kopf hin* so v. a. *erkläre sich zur Strafe bereit* Jāān. 2,96; vgl. unter वर्तृ caus. 8) und शिरोवर्तिन्. मिद्धार्थाश्च शिरसा धारयेत् Sūçr. 1,71,17. शिरसा विधृताः केशाः, सेवकाः) Spr. 2983. शिरसा शिलाम् । विधन् Mārk. P. 14,77. fg. भार्यां शिरसावहन् (अकरोत् v. l.) Spr. (II) 4239. तामासां शिरसा कृत्वा (als Zeichen von Ehrerbietung) MBh. 4,1147. शिरोभिस्ते गृहीत्वोर्वीम् M. 8,236. यावच्च चरणौ धातुः — शिरसा प्रणक्ष्यामि R. 2,99,7. 101,15. शिरसा च महीं पपौ 1,9,67. शिरसा प्रणतः 57,18. प्रणम्य शिरसा भूमौ 4,43,51. Ver. in LA. (III) 1,2. निपत्य शिरसा R. 2,96,37. प्रणिपत्य Vikr. 3,12. अभिवादये (so ed. Bomb.) त्वां शिरसा MBh. 3,1836. शिरसाभ्यागमत् (अभ्यनमत् Ind. 2,19) 1774. शिरसा याचितो मया R. 2,101,13. 4,9,6. यादवोः शिरसा गतः 2,96,49. प्रहारान् — शिरसि विवर्तयेत् M. 4,83. शिरसि oder शिरस्सु कृ Kāty. Śr. 13,3,19. R. 5,32,46. शिरसि स्थितः (चूडामणिः) Halāj. 2,409. दास्यं च शिरसि स्थितम् *über Jmdes Kopfe hängend* so v. a. *nahe bevorstehend* Spr. (II) 2398. यातनाः शिरसि स्थिताः Pañcat. 4,3,204. धन्यानां शिरसि स्थिता: so v. a. *hoch über allen Glücklichen stehend* Spr. (II) 3369. शिरोगत, शिरःस्थित Çikshā 37 in Ind. St. 4,108. शिरोधरणीय Dhūrtas. 67,14. — पर्वतस्य महच्छिरः *Gipfel* MBh. 4,830. 8,4803. ad Manu. 18. Śiç. 4,54. Kir. 5,17. Vāmn. Pur. S. 9,39. LA. (III) 90,16. Bhāg. P. 5,17,5. eines Baumes AK. 2,4,1,12. H. 1121. Med. Halāj. 2,26. R. 3, 22,17. Bhāg. P. 5,16,17. — नक्षत्रशिरसि Harīv. 12239. AK. 1,1,2,25. उल्का शिरसि विशाला प्रतनुपुच्छा Vāmn. Pur. S. 33,8. *das obere Ende* einer Bettstelle Vāmn. Pur. S. 79,10. eines Balkens Pāraṇ. ed. orn. 6,3. यज्ञ° Bhāg. P. 3,13,32. मङ्गिनी° H. 878. सेन्यशिरसि *an der Spitze* Pārān. 85,19. रणशिरसि Çiç. 157. 185. Spr. (II) 3093. समरशिरसि Kathās. 48,128. संग्रामशिरसो मध्ये MBh. 4,1131. 6,4041. = सेनाय Med. = सेनायभाग (so ist zu lesen) H. an. सरःशिरसि Pañcat. 1,3,36. मनोवेदशिरांसि *Anfang* (eines Liedes, Spruches) Vāmn. Pur. S. 46,73. Bhāg. P. 5,9,5. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,91. Weber, Rāmat. Up. 303. — सांख्य° *Haupt* in übertr. Bed. (= प्रधान Comm.) Bhāg. P. 5,14,44. — 2) N. eines Sāman Pañcav. Br. 5,1,2. Lāṭj. 6,2,5. 10,9,3. — 3) N. pr. eines Berges Tīrthān. 3. — Vgl. अ°, अवर्व°, अव°, अवाक्° (auch M. 3, 249. 8,94. 11,73. R. 1,60,17), अश्व°, उच्चैः°, कपाल°, कूर्च°, जानु°, त्रि°, दश°, पुरुष°, पशु°, प्रत्यक्°, बृहस्पति°, ब्रह्म°, भग°, मद्र°, मृग°, रथ°, वाजि°, वि°, वेद°, शक्र°, शङ्ख°, शालि°, श्रुति°, स्कन्ध°, शीरसि, शीर्ष, शीर्षन् und मूर्धन्.

शिरस = शिरस् *Kopf* in सहस्रशिरसोदर MBh. 13,858.

शिरसिज (शि°, loc. von शिरस्. + ज) m. *Kopfhaar* Halāj. 2,375. Çiç. 7,62. am Ende eines adj. comp. f. आ Pāraṇ. ed. orn. 49,22.

शिरसिरुह m. dass. Çabdar. im ÇKDa.

शिरस्क (von शिरस्) 1) am Ende eines adj. comp. (f. आ): अ° MBh. 3, 15745. अवाक्° Suçr. 1,359,7. उन्नमित° s. d. पूर्व° (प्रतिमा) Vāmn. Pur. S. 60,10. उभय° (उल्का) 33,9. द्वि° (खर्जूरी) 54,58. विभूषित° (छत्र) 73,5. सप्रणवसव्याहृतिसशिरस्कगायत्रीभिः Kull. zu M. 2,83. कोमलशिरस्कत्व n. nom. abstr. TS. Prāt. 20,12, Comm. Vgl. वि°. — 2) n. *Helm* H. 768.

शिरस्तस् (von शिरस्) adv. *aus dem Kopfe:* उदित Kumāras. 3,49. *vom Kopfe her:* पतत्यति° Spr. 2982. *vom Kopfe an* Āśv. Gṛhj. 4,8,8. Kauç. 7. *zu Häupten:* निधा Pāṇ. Gaṇ. 1,16.

शिरस्त्र (शिरस् + त्र) n. *Helm* AK. 2,8,2,32. Hem. 73. Rāgān. 7,46. 89. Rāja-Tar. 5,342.

शिरस्त्राण n. dass. H. 768. MBh. 4,1755. 6,2322. 2343. 7,74. 14,2315. Harīv. 13739. R. 3,33,36. 6,70,40. Rāgān. 4,64. Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,33.

शिरस्पद im Gegens. zu अधस्पद P. 8,3,47.

शिरस्य, °स्यति = शिरः इच्छति P. 6,1,61, Schol.

शिरस्य adj. = शिरः इव *gaṇa* शाखादि zu P. 5,3,103. शिरस्याः केशाः P. 6,1,61, Vārtt. 1. शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे AK. 2,6,2,49. H. 570.

शिरःस्थान n. *Hauptort:* महाभूमेः MBh. 3,15365.

शिरःस्नात adj. *der sich den Kopf gereinigt hat* M. 4,33 (= MBh. 13, 5024, wo die ed. Bomb. शिरस्नातस्तु st. शिरःस्नातेन der ed. Calc. liest). MBh. 13,5031.

शिरःस्नान n. *eine Tinctur zur Reinigung des Kopfes* Vāmn. Pur. S. 77,4. 5.

शिरि Uṇādis. 4,143. m. = कुसुद Uṇādis. = शलभ Schol. zu Up. 4, 144. = खड्ग, शर, क्लिन्न Uṇādis. im ÇKDa.

शिरिणा f. *Nacht* nach Naigh. 1,7. शिरिणायां चिदक्तुना महीभिर्परीवृता वसति प्रचेताः RV. 2,10,3. wohl *Verschlag, Kammer, cella;* vgl. शरण und शर्वरी.

शिरिम्बिठ m. nach Jāska so v. a. *Wolke* Naigh. 4,3. Nir. 6,30. RV. 10,155,1. Nach RV. Anukr. N. pr. des Verfassers des angegebenen

Liedes mit dem patron. Bhâradvâga.

शिरीष Unâdis. 4,27. *Acacia Sirissa Buch.*, m. *der Baum*, n. (stets n. nach Sidd. K. 249,*b*,5) *die Blüthe*. AK. 2,4,2,43. Hit. 94. Ratnam. 139. Sharv. Bh. 5,2. Gobh. 3,9,5. Çâṅkh. Gṛhy. 4,17. Kauç. 8. R. 3,17, 11. 79,26. Suçr. 1,138,6. 145,5. 237,21. °फल 2,49,12. °वीज 329,5. 338,17. °रस 511,7. 246,13. Spr. 2920. Megh. 66. Kumâras. 1,41. Ragh. 16,48. Çiç. 29. 145. Varâh. Bṛh. S. 3,28. 29,4. 54,50. 55,3. 60,8. 80, 6. 83,1. 85,4. Kathâs. 71,118. शिरीष इव समरे मुखोच्छ्वासे मनीषिणाम् Râga-Tar. 2,83. 6,291. Buic. P. 8,2,17. Wilson, Sel. Works 2,6. Burnouf, Intr. 388, N. 1. °वण und °वन P. 8,4,6, Schol. शिरीषाणामदूरभवो ग्रामः शिरीषास्तस्य वनं °वनम् 1,2,51, Schol. — Vgl. शैरीष fgg.

शिरीषक m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 5,3630. — Vgl. अम्बुशिरीषिका.

शिरीषपत्रिका f. *eine weiss blühende Achyranthes aspera* Râgân. im ÇKDa.

शिरीषिक adj. (चतुर्थ वेय) von शिरीष gaṇa कुमुदादि 1. zu P. 4,2,80. — Vgl. शैरीषिक.

शिरीषिन् 1) m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,258. — 2) f. शिरीषिणी *eine an Çirisha reiche Gegend* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135.

शिरोगद m. *Kopfkrankheit* Suçr. 1,11,4.

शिरोगृह n. *Zimmer auf dem Dache eines Hauses* H. 995. Hall. 2,149.

शिरोगौरव n. *ein schwerer Kopf* Suçr. 1,259,14.

शिरोग्रह m. *schmerzhafte Eingenommenheit des Kopfes* Suçr. 1,35,4. Çârṅg. Saṃh. 1,7,70.

शिरोग्रीव n. sg. *Kopf und Nacken* Âit. Br. 1,25.

शिरोघात m. ein *Schlag auf den Kopf* Mṛicch. 144,12. Varâh. Bṛh. S. 51,11.

शिरोज (शिरस् + ज) n. pl. *Kopfhaar* Harîv. 5694. — Vgl. शिरोरुह.

शिरोजानु n. ein Comp. mit Umstellung der Glieder gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31.

शिरोज्वर m. *Fieber mit Kopfschmerz* MBh. 3,17321.

शिरोदामन् n. *Kopfbinde* Pâṇân. 4,3,69.

शिरोदुःख n. *Kopfschmerz* Suçr. 1,260,16.

शिरोधर n. *Nacken, Hals (Kopfträger)*: प्रसार्य च °धरम् (wohl °धराम् zu lesen) R. 3,73,23. Buic. P. 3,13,26. 8,11,32. 9,5,9. gewöhnlich °धरा f. H. 586. MBh. 1,6292. 3,11517. 16190. Harîv. 3091. 4787. R. 2,23,4. Kâraṇḍ. 3,8. Çiç. 4,53. Kathâs. 41,44. Mâlav. P. 84,1 (fälschlich शिरोऽधरा° gedruckt). S. 657, Çl. 31. Buic. P. 3,17,10. 6,11,8. 5,12, 5. am Ende eines adj. comp. (f. धरा) MBh. 7,721. Harîv. 13995. R. 3,31, 48. 55,3. 5,17,25. 42,20. Varâh. Bṛh. 17,9. Mâlav. P. 29,7. 89,35. Buic. P. 3,31,8. 5,1,20.

शिरोधि m. dass. AK. 2,6,2,39. H. 586.

शिरोधूनन n. *das Schütteln des Kopfes* Kâd. 105,2 v. u.

शिरोध्र = शिरोधि Buic. P. 10,59,16.

शिरोभाग m. *Gipfel* (eines Baumes) Kathâs. 33,109.

शिरोऽभिताप m. *Kopfschmerz* Suçr. 2,312,18. 376,6.

शिरोभूषण n. *Kopfschmuck*; davon °भूषणाय्, °भूषणायते *einen Kopfschmuck bilden* Comm. zu Kâd. 1,56.

शिरोमणि m. *ein auf dem Kopfe getragenes Juwel, Diadem* H. 650. Bṛ. 1,19. Varâh. Bṛh. S. 43,36. 44,33. Nigh. 57,17. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 18. In übertr. Bed. so v. a. *die Krone von, der Erste unter*: तार्किकाणाम् Verz. d. Oxf. H. 243,*b*,3. सर्व देव° Pâṇân. 4,3,43. मूर्ख° Kathâs. 61,302. जड° 250. धूर्त° 124,217. नास्तिक° Schol. zu Kap. 1,43. Sarvadarçanas. 1,14. 121,6. पृथ्वी° Kathâs. 65,214. Ohne nähere Bezeichnung als Titel von ausserordentlichen Werken und Personen Colebr. Misc. Ess. 2,323. fgg. Hall 31. 75. 206. Verz. d. Oxf. H. 201,*a*, No. 480. 398,*b*,N. 2. 401,*a*, No. 196. Verz. d. B. H. No. 650. fgg. Verz. d. Cambr. H. 43. Târân. 210. Notices of Skt Mss. 156. — Vgl. पण्डित°, मीमांसा°, सिद्धान्त°.

शिरोमर्मन् m. *Wildschwein* H. 1288.

शिरोमात्रावशेष adj. *von dem nur der Kopf übriggeblieben ist*: राहु Spr. (II) 1389.

शिरोमौलि m. *Diadem* als Bez. einer bekannten bedeutenden Persönlichkeit Verz. d. Tüb. H. 13.

शिरोरत्न n. = शिरोमणि AK. 2,6,2,4. H. 650, Schol. शिरोरत्नाय धूर्जटेः (चन्द्राय) Weber, Kâṇḍân. 298.

शिरोरुह् f. *Kopfschmerz* Suçr. 1,21,16. 2,354,3. Varâh. Bṛh. S. 53, 111. Kathâs. 37,213.

शिरोरुहा f. 1) dass. MBh. 3,16829; vgl. शिरसो रुहा 16816. — 2) *Alstonia scholaris R. Br.* Taik. 2,4,7.

शिरोरुह् m. *Kopfhaar* Çârṅgad. im ÇKDa. — Vgl. शिरोरुह.

शिरोरुह m. 1) dass. AK. 2,6,2,46. Hall. 2,375. MBh. 1,5932. 5468. Harîv. 13557. Bṛ. 1,4. प्रसिद्धा: Kumâras. 5,9. Spr. (II) 1687. 2104. (I) 3059. Varâh. Bṛh. S. 69,16. 95,40. Râga-Tar. 3,365. शिरोरुहात्त Bṛ. 4,15. am Ende eines adj. comp. (f. आ) MBh. 1,5929. 3,401. 2814. 15, 671. R. 2,45,27. Ragh. 15,16. Varâh. Bṛh. S. 77,1. Kathâs. 84,47. Buic. P. 3,19,26. 4,28,44. 8,12,29. = 2) *Horn* (?): अश्व्यशिरोरुहपाद (यन्त्र) Varâh. Bṛh. S. 65,3.

शिरोरोग m. *Kopfkrankheit* Suçr. 1,172,3. 182,18. 381,3. 2,376,3. Verz. d. B. H. No. 958. 963. 972. 975. Verz. d. Oxf. H. 308,*b*,12. 16. 314,*b*,3. 9. 316,*b*,13. 357,*b*,1.

शिरोऽर्ति (शिरस् + अर्ति = आर्ति) f. *Kopfschmerz* P. 3,3,108, Schol. Kathâs. 13,152. 33,148.

शिरोवर्तिन् adj. *seinen Kopf hinhaltend* so v. a. *zur Strafe sich bereit erklärend* Nârada in Z. d. d. m. G. 9,679; vgl. unter वर्तृ caus. 3).

शिरोवल्ली f. *der Kamm eines Pfauen* Çârṅgad. im ÇKDa.

शिरोविधु n. sg. ein Comp. mit umgestellten Gliedern v. l. im gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31.

शिरोविरेक m. = शिरोविरेचन n. Çârṅg. Saṃh. 3,8,19.

शिरोविरेचन 1) adj. *den Kopf ausputzend* Suçr. 1,160,7. — 2) n. *ein Mittel zum Ausputzen des Kopfes* Suçr. 1,102,3. 145,9. 2,15,16. शिरोविरेचनं नस्यविकल्पः प्रतिमर्शः शिरोविरेचनविकल्पः 236,3.

शिरोवृत्त n. *Pfeffer (rund wie ein Kopf)* Râgân. im ÇKDa.

शिरोवृत्तफल m. *eine roth blühende Achyranthes aspera* Bhâvapr. im ÇKDa.

शिरोवेष्ट m. *Turban* AK. 3,4,29,222. Trik. 2,6,38.

शिरोवेष्टन n. dass. Çabdan. im ÇKDa.

शिरोव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Mnp. Up. 3,2,10.

शिरोऽस्थि n. *Schädel* AK. 2,6,2,20; vgl. शिरसो ऽस्थि Halây. 3,11.

शिल्, शिर्लति (उञ्छे) Dhâtup. 28,70. — Vgl. सिल्.

शिल 1) m. n. (nach den Lexicographen n., die Texte bieten m.) *eine auf dem Felde zurückgebliebene Aehre und das Auflesen derselben* H. 865. an. 2,512. Mnd. 1. 51. शिलानप्युञ्छतः (gen. partic.) M. 3,100. प्रतिग्रहार्ज्जितः शेषास्तेन ऽप्युञ्छः प्रशस्यते 10,112. संचिन्वन्धीर धामीत शिलाकारी शिलं यथा Spr. 5270. शिलैः Bulc. P. 11,17,40. परिगणितोञ्छशिलाशन MBu. 12,13943; vgl. unter उञ्छ und शिलोञ्छ fg. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Pârijâtra Rgav. 18,16; vgl. LIA. 1, Anh. XII, N. 24.

शिलक m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. शालावत्य Kaush. Up. 1,8,1.

शिलगर्भज m. *eine best. Pflanze*, = पाषाणभेदन Râgân. im ÇKDa. man hätte शिला° erwartet.

शिलतरि MBu. 13,1860 fehlerhaft für शिलरति, wie die ed. Bomb. liest.

शिलंधिर (im Index शिलंधर) m. N. pr. eines Mannes Prâvahnîna. in Verz. d. B. H. 59,1. wohl fehlerhaft.

शिलमानखान m. = سليمان خان Verz. d. Oxf. H. 103,a,2.

शिलरति adj. *der sich mit Aehrenlesen begnügt* MBu. 13,1860 nach der richtigen Lesart der ed. Bomb.

शिलवाका (शिला-+वा°) f. wohl N. pr. eines Flusses P. 6,3,63, Schol. Vgl. शिलावका.

शिलवृत्ति adj. von *Aehrenlesen lebend* MBu. 13,1799. fgg. — Vgl. शिलोञ्छवृत्ति unter शिलोञ्छ.

1. शिला f. 1) *Stein, Fels* AK. 2,3,4. H. 1036. an. 2,512. Mnd. 1. 51. Halây. 2,13. AV. 12,1,26. Âçv. Gṛhy. 2,9,2. Gobh. 4,2,30. M. 2,204. Jâgn. 2,278. MBu. 3,12183. °साल 6,319. R. 1,45,20. 2,94,30. अहल्यासमा 96,6. °शितेर्वाणी: 3,68,44. 4,9,44. Suçr. 1,28,1. 2,83,2. 182,6. Megh. 103. °वर्षेव पर्वतः Raghu. 4,40. 12,73. Çik. 74. Spr. 2959. 3188. (II) 3310. Varâh. Bṛh. S. 30,25. 53,112. 54,107. fgg. Râgân-Tar. 2,129. 4,423. Prab. 21,4. 67,10. Bulc. P. 2,6,5. Pañkat. 100,18. Verz. d. Oxf. H. 98,a,3. सैन्धवशिलाशकल Raghu. 5,73. स्फटिकमणिशिलावेदिका: (*in denen* स्फ° *und* म° *die Steine sind*) Prab. 26,3. Megh. 74. तुषारसंघातशिला: so v. a. *Eisstücke* Kumâras. 1,37. am Ende eines adj. comp. (f. या): त्रि°, चतुः° Kâç. 36. एक° R. 2,94,22. 5,74,16. पञ्च° Verz. d. Oxf. H. 60,a,27. Megh. 53. मयशिलः कूपः Spr. (II) 3899. — 2) = मनःशिला *rother Arsenik, Realgar* H. an. Med. Ratnam. 292. Suçr. 2,23,14. 329,7. Verz. d. Oxf. H. 321,a, No. 761. — 3) *Kampfer* Râgân. im ÇKDa. — 4) = यवस्तादारु AK. 2,2,13. = स्तम्भेरुधोदारु H. 1008. = द्वारोदारु H. an. = द्वाराधःस्थितदारु und स्तम्भशीर्ष Med.; vgl. शिली. — 5) N. pr. eines Flusses (?) R. 2,71,4; vgl. 73,4 Gorr. — 6) N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. B. H. 113 (XXIV). शिलाप्यायिका Verz. d. Oxf. H. 354,a,35. fg. — Vgl. यवसः°, यव°, किंशिल, गण्डशिला, तीर्थ°, प्रेत°, मनः°, मक्षा°, रोग°, वध्य°, विद्रु°, शङ्ख° (konnte vielleicht *Muschein und Realgar* bedeuten), शिरःशिल, शैल, शैलेय.

2. शिला = शिरा (सिरा) *Ader* Manîshâ. Up. in Ind. St. 2,93.

शिलाकर्णी f. *Boswellia thurifera Roxb.* Çabdâç. im ÇKDa.

शिलाकुट् m. *ein zum Ausbrechen oder Behauen von Steinen dienendes Instrument* H. an. 2,84. °क m. desgl. Çabdan. im ÇKDa.

शिलाकुसुम n. *Storax* Wilson.

शिलालेख (1. शिला + ख°) n. *Lithographie* Vasis. lith. Ausg. am Ende.

शिलागृह n. *ein Gemach in einem Felsen, ein aus Steinen aufgeführtes Häuschen* R. 5,16,30. 37,42. Râgâ-Tar. 4,278.

शिलाचक्र n. *ein Diagramm auf einem Steine* Pañkâr. 1,10,82. शालयाम° 2,24.

शिलाचय m. *Steinmasse, Berg:* कनक° Varâh. Bṛh. S. 24,1. — Vgl. शिलानिचय, शिलोच्चय, शैल.

शिलाज adj. *aus Steinen —, aus Felsen gewonnen:* 1) n. a) *Erdharz* Suçr. 2,53,13. — b) *Eisen* Râgân. im ÇKDa. — 2) f. या = शिलावल्का Râgân. im ÇKDa. u. d. letzten Worte (शिलज gedr.).

शिलाजतु n. *Erdharz* AK. 2,9,104. Trik. 2,9,37. H. 1062. Ratnam. 290. MBu. 12,10260. Suçr. 1,52,31. 2,45,8. 64,13. शैलाः सूर्यप्रतापिताः। जतुप्रकाशं स्रवन्ति शिलाभ्यः प्रस्रवन्ति हि। शिलाजतीति विख्याते सर्वव्याधिविनाशनम् ॥ 83,3. 327,16. Varâh. Bṛh. S. 76,3.

शिलाजित् (1) f. dass. Râgân. bei Wilson.

शिलाजिनी f. *ein best. Strauch*, = कालाञ्जनी Râgân. im ÇKDa.

शिलाढक m. = घट Trik. 3,3,46. H. an. 4,87. Med. k. 217. = विलेप Trik. Med. *Höhle* ÇKDa. und Wilson nach Med., indem sie hier wahrscheinlich विले ऽपि st. विलेपे gelesen haben. Der gedruckte Text in Trik. hat विले वेष्टे (daher *a fence, an enclosure* bei Wilson), was aber nach den Corrigg. in विलेपेटे, d. i. विलेपे ऽटे zu verbessern ist.

शिलातल n. *ein Stein oder Fels mit horizontaler Fläche:* प्रस्थे मनःशिलातले MBu. 1,7716. 3,2612. R. 4,41,64. Sûrjas. 3,1. Kumâras. 1,36. Spr. (II) 2053. Kathâs. 22,179. ध्यानं रत्नशिलातलेषु Çik. 171.

शिलात्मज n. *Eisen (ein Kind der Steine)* Râgân. im ÇKDa.

शिलात्मिका (1. शिला + आत्मन्) f. *Schmelztiegel* Çabdâç. im ÇKDa.

शिलात्व (von 1. शिला) n. *das Steinsein, die Natur des Steins* Spr. (II) 4875.

शिलात्वच् f. = शिलावल्का Râgân. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

शिलाद (शिल + घद्) m. N. pr. eines Mannes: शक्रशिलादसंवाद Verz. d. Oxf. H. 44,a,36. Vater Udañka's 235,a,10. fg. — Vgl. शैलाद.

शिलादृढ m. = शिलाजतु Râgân. im ÇKDa. Acsu. 82.

शिलादान (1. शिला + दान) n. *das Schenken eines Steines* (sc. aus Çâlagrâma) Pañkâr. 2,7,20. Könnte auch (aber nicht hier) *das Auflesen von Körnern* (शिल + घा°) bedeuten; vgl. शिलोञ्छमप्यादद्दीत M. 10,112.

शिलादित्य m. N. pr. eines Fürsten Çatr. 1,11. 14,281. fg. — Vgl. शीलादित्य.

शिलाधातु m. *weisse Kreide* Trik. 2,3,6. *eine best. gelbe mineralische Substanz* Râgân. im ÇKDa. — R. 2,96,2 (105,2 Gorr.). 5,32,27.

शिलानिचय m. *Steinhaufe, Felsenmasse* Varâh. Bṛh. S. 24,16.

शिलानिर्यास m. *Erdharz* Acsu. 106.

शिलानीड m. ein N. Garuḍa's H. ç. 79. °नीक् die Hdschr.; vgl. शिलोकम्.

शिलान्धस् (शिल + 2. स°) n. *auf dem Felde zurückgelassene Aehren als Nahrung* Baudh. P. 11,18,35.

शिलापट्ट s. u. पट्ट 1).

शिलापुत्र m. *Reibstein* Taitt. 2,3,5.

शिलापुत्रक m. *eine Figur —, eine Statue von Stein* Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 40.

शिलापुष्प n. *Erdharz* Ratnam. 125. Râǵân. im ÇKDa.

शिलापेय s. u. पेय.

शिलाप्रासाद m. *ein Tempel aus Stein* Râǵa-Tar. 4,190.

शिलाबन्ध m. *Mauerwerk* Râǵa-Tar. 5,93.

शिलाभव n. *Erdharz* Ǵaṭâdh. im ÇKDa.

शिलाभाव m. *das Steinsein, die Natur eines Steins:* °भावमवाप्नुहि *werde zu Stein* Kathâs. 17,143.

शिलाभेद m. = पाषाणभेद Ratnam. im ÇKDa. Aṣṭâṅg. 48.

शिलामय (von 1. शिला) adj. (f. ई) *steinern* R. Gorr. 1,66,18. Ragh. 11,34. वर्ष *Steinregen* Baudh. P. 10,25,18. fälschlich (da ohne Noth) f. घा Çaṭa. 14,296.

शिलामल (1. शिला + मल) n. *Erdharz* Aṣṭâṅg. 92.

शिलामाहात्म्य n. *die Majestät der Steine* (aus Çâlagrâma), Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 193.

शिलायूप m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,233.

शिलारम्भा f. *wilder Pisang* Râǵân. im ÇKDa.

शिलालिन् m. N. pr. eines Verfassers von नटसूत्र P. 4,3,110. Vârtt. 1 zu 6,4,144. — Vgl. शैलाल fgg.

शिलावल्का f. *ein best. Heilstoff* Râǵân. im ÇKDa.

शिलावह् 1) m. pl. N. pr. einer Völkerschaft R. Gorr. 2,73, 4. — 2) f. घा N. pr. eines Flusses R. 3,71,4; vgl. शिलवाहा.

शिलावेश्मन् n. *Felsengrotte* Mṛcch. 26.

शिलाव्याधि m. *Erdharz* Taitt. 2,9,37.

शिलाशस्त्र n. *Steinwaffe* Kathâs. 116,74.

शिलासन (1. शिला + घा°) 1) adj. *auf einem Steine sitzend* R. 3,15,12. — 2) n. *Erdharz* Çaṅkar. im ÇKDa.

शिलासार (1. शिला + सार) n. *Eisen* H. 1038.

शिलास्तम्भ m. *eine Säule von Stein* Kathâs. 12,174. 34,68. 37,7. 11.

शिलास्वेद m. *Erdharz* Aṣṭâṅg. 48.

शिलाहारिन् (शिल + घा°) adj. *Aehrenleser* Spr. 5270.

शिलाह्व (?) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 39,11.

शिलाह्व (1. शिला + घाह्वा) n. *Erdharz* Bhâvapr. im ÇKDa.

शिलि m. *eine Art Birke* (भूर्जपत्र) Çaṅkar. im ÇKDa. — Vgl. शिति, शिबि.

शिलिक m. gaṇa पुरोडिताद्दि zu P. 5,1,128. Vgl. शैलिका.

शिलिककोष्ठ N. pr. eines Gebirgsdorfes (गिरिग्राम) Râǵa-Tar. 8, 1390. °कोष्ट gedr.

शिलिन् m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2150.

शिलिन m. N. pr. eines Mannes Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. 4,1,2 und Sâj. zu Çat. Br. 14,6,10,5. — Vgl. शैलिन fg.

शिलिन्द्र m. *ein best. Fisch* Râǵân. im ÇKDa.

शिली f. 1) *eine Art Wurm* AK. 1,2,2,21. H. 1203. an. 2,513 (fälschlich शोली). Med. l. 51. — 2) = स्तम्भशीर्ष Med. = द्वारार्थःस्थितकाष्ठ Çaṅkar. im ÇKDa.; vgl. 1. शिला 4).

शिलीध्र 1) m. *a) ein best. Baum* H. an. 3,612. Med. r. 229. *Musa sapientum* Çaṅkarâṇaṇḍa bei Mallin. zu Çiç. 6,32. °पुष्प = कन्दल Taitt. 2,4,25. — *b) ein best. Fisch* H. an. Med. = चित्रफलक Ǵaṭâdh. im ÇKDa. — 2) f. ई *a) ein best. Vogel.* — *b) eine Art Wurm* (गण्डूपदी). — *c) Lehm* H. an. Med. — 3) n. *a) die Blüthe von Musa sapientum* H. an. Med. Çiç. 6,32. 72. *ein best. Baum* Hall. 3,45. — *b) Pilz* (कवक) H. an. Hall. Hariv. 3358. 3606 (शिलिंध्र fehlerhaft die ältere Ausg.). statt कवक hat Med. कारक (daher die Bed. *hail* bei Wilson), wofür nach den Corrigg. कवर zu lesen ist. — *c)* = त्रिपुटा H. an. und Viçva im ÇKDa. — Vgl. उच्छिलीध्र.

शिलीध्रक n. *Pilz* Hir. 25.

शिलीपद m. = श्लीपद *Anschwellung der Füsse* Çaṅkar. im ÇKDa. °व्यापद्दनिवारिन् Dhûrtas. 94,10.

शिलीमुख adj. neben शिलीमुख als Beiw. eines Schwertes MBh. 4, 1335. nach Nîlak. soll शिली = भेकी sein.

शिलीभूत (von 1. शिला + 1. भू) adj. *zu Stein —, hart wie Stein geworden:* हिम Kumâras. 1,11.

शिलीमुख 1) adj. *a)* neben शिलीपद्द als Beiw. eines Schwertes MBh. 4,1335. शिली = भेकी Nîlak. — *b)* = शरीभूत Çaṅkar. im ÇKDa. — 2) m. *a) Pfeil* AK. 3,4,2,19. H. 778. an. 4,46. Med. kh. 17. Hall. 2,311. MBh. 6,3910. Hariv. 6646. R. 3,26,19. 31,20. 34,23. Ragh. 7,46. 18, 16. Kumâras. 4,54. Spr. (II) 2559. 4686. Kathâs. 42,6 (am Ende eines adj. comp. f. घा). Bhâg. P. 4,3,19. 11,4. 26,9. 10,30,23. 59,16. — *b) Biene* AK. H. 1212. H. an. Med. Hall. 2,100. Ragh. 4,57. Ǵîv. 1,30. — *c) b) Pfeil* und *Biene* zugleich Çiç. 9,11. Spr. 2579. — *c) Schlacht* Çaṅkar. im ÇKDa. — *d)* N. pr. eines Hasen Kathâs. 62,29. fgg. Hit. 82,16.

शिलीमुख m. 1) *Aegle Marmelos Corr.* Aṣṭâṅg. 101. — 2) N. pr. eines Ṛshi H. 328, Schol. — Vgl. शैलीमुख.

शिलीय (von 1. शिला) 1) adj. *steinhart* P. 5,3,102. दृषि Schol. — 2) n. *Erdharz* Çaṅkar. im ÇKDa.

शिलोच्चय (1. शिला + उ°) m. *Berg* AK. 2,3,1. H. 1027. Hall. 2,10. MBh. 3,2437. 11960. 12168. R. 1,23,16. Einschiebung nach 2,36,13. 4,43,19. 44,21. 23. 6,108,41. Ragh. 2,34. 51. Vikr. 66,1. Vasiṣṭh. Bṛn. S. 15,3. Kir. 5,10. Kathâs. 8,18. — Vgl. शिलाचय, शिलानिचय, शैल.

शिलोञ्छ (शिल + उञ्छ) m. *das Aehrenlesen oder n. das Aehrenlesen und das Aufsammeln von Körnern:* शिलोञ्छेन जीवन् M. 7,33. Jâǵñ. 1,128. शिलोञ्छमप्यादद्दीत M. 10,112. Baudh. P. 3, 12,42. °वृत्ति f. *a) ein Lebensunterhalt durch Aehrenlesen* MBh. 1,2437. Baudh. P. 11,17, 42. — *b)* adj. *vom Aehrenlesen lebend* MBh. 3,15407. 13,1777. Hariv. 11858. Suçr. 2,79,18. — शिलोञ्छ m. du. M. 4,10. — Vgl. शिल, उञ्छ, शिलवृत्ति.

शिलोञ्छन (शिल + उ°) n. *das Aehrenlesen, das Auflesen von Körnern* Baudh. P. 6,7,36. 7,11,18.

शिलोत्थ (1. शिला + उत्थ) n. *Erdharz* Râǵân. im ÇKDa.

शिलोद्भव n. 1) *Erdharz* Râǵân. im ÇKDa. Aṣṭâṅg. 98. — 2) *Gold* H. ç. 102 (शिलो° die Hdschr.). — 3) *eine Art Sandel* Çaṅkar. im ÇKDa.

शिलौकस् (1. शिला + ओ°) m. ein N. Garuḍa's Taitt. 1,1,12. — Vgl. शिलानीड.

शिल्पिन् m. so v. a. सुख Naigh. 3,7.

1. शिल्प्य Uṇâdis. 3,28. adj. (f. या) *bunt* VS. 24,5. 29,58. TS. 5,5,22, 1. 6,23,1. 20,1.

2. शिल्प्य (शिल्प्यं TBr. 3,3,8,1) 1) n. Sidḍh. K. 249,a,11. a) *Buntheit Zierat, Schmuck; Kunstwerk* (चायर्यकरं कर्म); *Bild;* = रूप Naigh. 3,7. = कर्मन् 2,1. येभिः शिल्प्यैः पञ्चयानामदैक्षत् । येभिर्ग्रामन्यपिंशत् TBr. 2, 7,18,2. 3. दिवः शिल्प्यमवततं पृथिव्याः ककुभि[ः] श्रितम् 3,3,2,1. VS. 4, 9. यद्वै प्रतिरूपं तच्छिल्पम् Çat. Br. 3,2,2,5. 4,1,4,3. तच्छिल्प्यं पश्यत्यो पत्नितर्पयन्पश्यन् Pañcav. Br. 16, 4, 3. 8. 15,2. देव°, इन्द्र° Ait. Br. 6,27. निवेशितानि शिल्प्यानि तादृशानि सर्वथा *Kunstwerke* Harîv. 8367. एतद्धि दिव्यं शिल्प्यं न मानुषम् Kathâs. 25,175. Bhâg. P. 1,15,8. 3,23,17. ब्रह्मदत्तः शिल्प्यम् N. eines Sâman Ind. St. 2,217,a. — b) *Kunstfertigkeit, Kunst, Handwerk* AK. 1,1,4,18. 2,10,25. H. 900. an. 2,301. Med. p. 12. त्रिवर्गे शिल्प्यं नृत्यं गीतं वादितम् Çârîr. Br. 29,5. M. 3,64. शैवेच्छिल्पैरगर्दतैः 9,75. शिल्प्योपचारयुक्ताः 259. 10,100. 116. MBh. 1,3594. 3,2637. 5,7409. Kâm. Nîtis. 4,34. 19,7. Spr. (II) 1009. 3482, v. l. 4029. (I) 2794. Vaṇîn. Bhâs. S. 16,18. 98,9. नीच° Bhâg. 10,3. °विद् 17,9. तस्याः शिल्प्यमिदं मल्लम् Kathâs. 16,102. मायायन्त्रादिशिल्प्यानि 29,42. सर्गकर्तृत्व° Pañcad. 1,1,31. 11,31. Daçak. 68,4. Verz. d. Oxf. H. 86,b,24. विरम शिल्प्यादस्मात् Dhûrtas. 93,14. नाभूतिकालेषु फलं ददाति शिल्प्यानि Spr. (II) 3602. कस्मिन्देशे दर्शयाम्यात्मशिल्प्यम् Mṛicch. 47,13. एतानि शिल्प्यानि मयि स्थितानि MBh. 4,293. शिल्प्यं यद्यापजीवति 13,4277. विविधानि च शिल्प्यानि समादेयानि सर्वतः Spr. 3302. गृह्णाति शिल्प्यम् Mâlav. P. 14,77. स्वशिल्प्यं प्रदृढः Pañcad. 1,11,29. सर्वाशिल्प्यप्रवर्तक MBh. 12, 10422. किं वापि शिल्प्यं तव विद्यते कृतम् *welche Kunst hast du erlernt* 4,223. कृत° adj. Jâṭ. 2,184. Kâm. Nîtis. 4,15. 20. कर्ता शिल्प्यसहस्राणाम् Bein. Viçvakarman's MBh. 1,2592. Harîv. 162. *Hantirung* so v. a. *Thätigkeit* überh. Bhâg. P. 5,11,10 (masc.). 7,12,26. — c) N. gewisser Çâstra (Vâlakhilja, Sukîrti u. s. w.), welche zum sechsten Tage des Prabhâja Shaḍaha, am Viçvagît u. s. w. recitirt werden, Ait. Br. 6,27. Çâṅkh. Br. 25,12. 13. 29,5. 30,3. Çr. 12,3,14. 7,4. 9,4. Âçv. Çr. 8,2,2. 4. 5. 9,10, 11. 11,2. — d) *Opferlöffel* H. an. Med. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,33. — 3) f. या *Barbierstube* H. 1000. — 4) f. ई *Künstlerin* Verz. d. Oxf. H. 91,b,36. — Vgl. विश्वशिल्प्य (auch Kâṭy. Çr. 22,2,21) und वीणा°.

शिल्प्यक 1) (wohl n.) *eine Art Schauspiel* Sâh. D. 545. 551. — 2) f. शिल्प्यिका *ein best. Gras* (लरानसिपी im Hindî) Râǵân. im ÇKDr.

शिल्प्यकार m. *der sich auf eine Kunst versteht, Künstler, Handwerker;* f. ई Hem. 19,35.

शिल्प्यकारक m. dass.; f. °कारिका AK. 2,6,1,13. Mâlav. 65,15.

शिल्प्यकारिन् m. dass. Brahmavaiv. P. im ÇKDr. f. °कारिणी Bharata beim Schol. zu Çiç. 9,6.

शिल्प्यगृह n. *die Werkstätte eines Künstlers oder Handwerkers* Kull. M. 9,266.

शिल्प्यगेह n. dass. Taik. 3,3,230.

शिल्प्यजीविका f. *eine Kunst oder ein Handwerk als Lebensunterhalt:* °जीविकां जीवेत् MBh. 14,1295.

शिल्प्यजीविन् m. *Künstler, Handwerker;* f. °जीविनी H. 521. — Vgl. शिल्पोपजीविन्.

शिल्प्यत्व (von 1. शिल्प्य) n. *das Bunt—, Geschmücktsein:* उद्वीर्यं बिभर्ति शिल्प्यत्वाय Pañcav. Br. 16,6,13.

शिल्प्यप्रजापति m. *der Urvater der Künste*, Bein. Viçvakarman's MBh. 1,2592.

शिल्प्यवत् (von 2. शिल्प्य) adj. *sich auf eine Kunst verstehend*, m. *Künstler* Harîv. 11135. शिल्प्यवतां वर 162. 8938. MBh. 1,2593. 2,10.

शिल्प्यविद्या f. *die Kenntniss der Künste* oder *Handwerke* Pañcad. 1,10,4.

शिल्प्यशाला f. = शिल्प्यगृह AK. 2,2,7. nach dem Comm. auch °शाल n. ÇKDr.

शिल्प्यशास्त्र n. *die Lehre von den Künsten* oder *Handwerken* Ind. St. 1,22. 3,280. Vaṇîn. Bhâs. 21,9. Titel bestimmter Werke Mack. Coll. 131. fg. — Vgl. शिल्पिशास्त्र.

शिल्प्यालय (2. शिल्प्य + या°) m. *Werkstätte eines Künstlers oder Handwerkers* Vaṇîn. Bhâs. 5,13.

शिल्पिक (von 2. शिल्प्य) adj. *sich auf die Künste verstehend:* Çiva MBh. 12,10422. nach Nîlak. = शल्पशिल्पिन्.

शिल्पिन् (wie oben) 1) adj. *sich auf eine Kunst verstehend;* m. *Künstler, Handwerker* AK. 2,10,8. 3,4,9,37. H. 899. Med. n. 143. Hâlâ. 2, 538. P. 3,1,145. M. 7,75. 138. 10,120. Jâṭ. 2,249. MBh. 1,4340. 5322. 5, 5181. 12,10422. 13,612. Harîv. 9114. R. 1,5,17. 12,7. 2,79,13 (86, 17 Gorr.). 80,21. 7,5,18. Mṛicch. 153,7. Raghu. 16,38. Spr. (II) 2962. Vaṇîn. Bhâs. S. 15,9. 11. 31,3. 86,20. Bhâs. 23 (21),6. Râǵa-Tar. 3,449. Pañcad. 1,1,30. Pañcat. 10,5. शिल्पिवन्न Vaṇîn. Bhâs. S. 15,5. 32,11. चर्म° *Schuhmacher* 87,8. सुर° *Werkmeister der Götter* AK. 3,4,29,111. शिल्पिनी Daç. 2,27. Sâh. D. 157. Prasâdhan. 6,a,8. Vaṇîn. Bhâs. 24 (22), 8. — 2) f. शिल्पिनी *ein best. Parfum* (कोलदल) Med. — Vgl. रोग°, शास्त्र°.

शिल्पिशाला f. *die Werkstätte eines Künstlers oder Handwerkers* H. 1000. Hâlâ. 2,141.

शिल्पिशास्त्र n. = शिल्पशास्त्र Verz. d. Oxf. H. 279,b,18.

शिल्पोपजीविन् = शिल्पजीविन् R. Gorr. 2,90,16.

शिल्हन N. pr. eines Dichters Çârṅg. 1,2,3. Verz. d. Oxf. H. 124, b,5. wird auch शिह्लन und सिल्हण geschrieben.

शिव Uṇâdis. 1,153 (शिर्व). 1) adj. (f. या) *gütig, freundlich, günstig, angenehm, zuträglich, wohlthuend, heilsam, segensreich, lieb* (Gegens. घोर) Naigh. 3,6. सख्ये ṚV. 4,10,8. सखायस्ते विषुणा अप्र एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् 12,3. 10,124,2. अतिथि 7,9,3. 18,7. हूत 8,39,3. त्रातृ 4,24,1. पायु 1,143,3. ऊति 187,2. धासि 4,41,17. मनस् VS. 2,24. Ait. Br. 7,23. R. Gorr. 1,38,17. मति ṚV. 10,67,9. Mâlav. P. 118,15. मन्यु AV. 5,110,3. नियुत् ṚV. 10,8,6. तनू VS. 4,2. 16,2. ṚV. 10,16,4. TS. 5,7,3,2. Prâṇop. 2,12. रस ṚV. 10,9,2. वाज 53,3. चक्षस् AV. 1, 33,4. Wasser 2,29,6. R. 2,40,9. 56,4. 83,22. R. Gorr. 2,124,21. Hariv. 5,3. Spr. 3027. Vaṇîn. Bhâs. S. 12,12. Bhâg. P. 1,6,12. Speise AV. 9, 71,3. तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः ṚV. 7,19,10. शिवा सखिभ्य उत मह्यमासीत् 10,34,2. AV. 7,43,1. यदिदंमनः शिवा उतेदृगि VS. 3,61. 12, 17. Çat. Br. 3,1,3,20. मित्रो वै शिवो देवानाम् TS. 5,1,6,1. यद्वै शिवं तन्नवनीतं TBr. 2,2,8,5. वर्षा: Âçv. Gṛihy. 2,4,14. Pân. Gaṇ. 3,15. पुरुष Çvetâçv. Up. 3,11. देव 5,14. Harîv. 14407. R. 1,44,7. Weber, Rimây.

Up. 338. शिखिन् Vaṃs. Bṛn. S. 11, 61. 16, 40. 18, 1. 20, 4. Spr. 5007. आशिष: R. 2,32,11. काल 43,9. संध्या 46,13. 49,2. अक्ष: शिवमुपस्थितम् R. Gorr. 2,12,20. दृश्य यांति शिव: पन्था: MBh. 3, 2824. Çiç. 86. महामार्ग R. 2,46,29. शिवेन मम मां पथा Kathās. 18,99. शिवास्ते पन्थान: सन्तु Çiç. 57,19. Çuk. in L.A. (III) 36,8. Hit. 68,17. Bhāg. P. 2,2,33. आगमास्ते शिवा: सन्तु R. 2,25,19. पवन MBh. 3,2995. R. 2,44,9. 91,24. 5,95,39. Bhāg. P. 3,15,38. ब्रह्मसरम् MBh. 3,8304. देवनदी 9918. कोसला: R. 2,50,8. पुरी 1,6,26. वनभूमय: Spr. 5391. आश्रमतरु Raghu. 11, 33. तार Suçr. 1,33,13. उपाय Milarim. 6,13. शिवाकारा (zugleich *der Gott Çiva*) Rāja-Tar. 3,416. स्वन Bhāg. P. 3,23,39. *glücklich, froh* 28, 22. compar.: शिवतरेण चक्षुषा पश्यतमुम् Uttarar. 107,8. 6 (145,2. 3). superl. शिवतम ṚV. 1,143,8. 9,85,10. Maitrāyaṇ. 6,21. Bhāg. P. 5,1,5. 3,5. स्व° (s. auch bes.) *Unheil bringend* u. s. w. MBh. 1,8778. Spr. 5007. Kir. 1,38. Bhāg. P. 3,17,9. 4,2,13. शिवम् adv. *freundlich, zärtlich:* उपस्पृशति Çat. Br. 12,3,2,8. — 2) m. a) *Heil, Wohlfahrt:* शिवो ऽस्तु विशयो ऽस्तु ते R. 5,56,36. = मोक्ष *Erlösung* Med. v. 25; vgl. neutr. — b) ein N. des Rudra: *der Gütige, Freundliche* (euphemistisch gesagt). Von ihm, mit andern Namen und Attributen auf den in die Dreiheit aufgenommenen Gott (Paçupati, Çaṃkara, Çarva, Hara u. s. w.) übergegangen, dessen Hauptbezeichnung dieses Wort wird. AK. 1,1, 4,25. Trik. 1,1,48. 3,3,423. H. 197. an. 2, 587. fg. Med. Halāy. 1,11. LIA. 1,780. fgg. शिवो नामासि VS. 3,63; vgl. 16,41. Paçupati Âçv. Gṛhy. 2,2,2. 4,8,19. तद्विषम् । प्रायमश्लोकार्धं ब्रह्मणा वचनाच्छिव: MBh. 1,1153. 3,11916. शिवमिच्छन्मनुष्याणां तस्मादेव शिव: स्मृत: 7, 9622. पञ्चनामीश्वर: शिव: 14,1178. °स्मरण Spr. 2984. VP. 62. 596. Bhāg. P. 1,9,19. 3,12,12. 4,2,15. 4,14. 8,7,29. Sarvadarçanas. 81,12. 84, 9. 86, 9. 88, 20. 103, 19. शिव शिव शिवेति प्रलपत: Spr. (II) 844. 5046. Duṛgās. 80, 16. 95, 15. शिवस्य धारणायन्त्रम् Verz. d. Oxf. H. 96, *b*, 8. °पूजा 45,*a*,23. 85, *a*, 42. 273, *b*, 24. °कवच 26, *a*, 37. 74, *b*, 9. 94, *a*, 39. °मन्त्र Spr. 3009. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,11. 106,*a*,24. fg. °यन्त्र 94,*b*,13. fg. °स्तोत्र *a*,39. °चक्र 88,*a*,33. °भस्ममाहात्म्योत्पत्ति 44,*b*,23. bei den Buddhisten Burn. Intr. 131. °वैश्रवणौ gaṇa दधिपयआदि zu P. 2,4,14. °शक्त्यो: समायोग: Verz. d. Oxf. H. 92, *a*, 2. शिवशक्त्यभेदविनिर्णय 45,*a*,1. 2. im Monat Vaiçākha unter diesem Namen verehrt Weber, Kāṇvaç. 243. Çiva als Autor Hall 13. fg. 124. शिवौ du. Çiva *und seine Gattin* Kir. 5,40. Rāja-Tar. 5, 37. Verz. d. Oxf. H. 64, *a*, 19. fg. 24. — c) *ein secundärer* Çiva bei den Çaiva so v. a. *ein Erlöster mit übernatürlicher Macht:* मुक्तात्मानो ऽपि शिवा: Sarvadarçanas. 83,10. 84,10. °पद 88,22; vgl. यत्र सिद्धा: शिवा नाम ब्राह्मणा वेदपारगा: । यधीत्य सकलान्वेदाल्लोभिरे मोक्षमव्ययम् ॥ MBh. 5, 3796. fg. nach der Lesart der ed. Bomb. — d) = शिवलिङ्ग Uṇādis. im ÇKDa. hierher wohl °प्रदानक Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,1. — e) *Gott* überh. Çāṃkar. im ÇKDa. — f) *die heilige Schrift* H. an. Med. — g) Bez. *des 8ten Monats* Ind. St. 10,298. — h) *ein Pfosten, an den die Kühe gebunden werden oder an dem sie sich kratzen,* = कील, कीलक Trik. 3,3,422. H. 1274. H. an. Med. (कीलकप्रयोगयो: trennt ÇKDa. in कीलकप्रक् + योग). — i) *Bdellium* H. an. Med. Acan. 96. — k) *die wohlriechende Rinde von Feronia elephantum* (वालुक) Med. वालक st. dessen H. an. — l) = पुण्डरीक (Bum) H. an. Med. — m) = कृतधुस्तूर Rāǵān. im ÇKDa. — n) *Quecksilber* (vgl. शिवबीज) Rāǵān. im ÇKDa. — o) Bez. *einer best. Glück verheissenden Constellation* Trik. 3,3,422. H. an. Med. Kosmopa. im ÇKDa. — p) Bez. eines best. Krankheitsdämons, neben यशिव Hariv. 9360. — q) pl. N. pr. einer Klasse von Göttern im 3ten Manvantara VP. 261. Mārk. P. 73,3. — r) N. pr. eines Sohnes des Medhātithi Mārk. P. 83,29. fg. des Idhmajihva Bhāg. P. 5,20,2.3. N. pr. eines Fürsten Hall 181. eines Gauners Kathās. 24,89. fgg. eines Autors Verz. d. B. H. No. 878. Notices of Skt Mss. 118. — s) = शुक्र m., काल: und वसु m. Nighaṇṭuçeshas. in Verz. d. Oxf. H. 194, *a*, No. 445. — 3) f. शिवा a) Çiva's *Energie*, personif. als *seine Gattin* AK. 1,1,4,33. 3,4,22, 214. H. 204. H. an. Med. Vaij. bei Mallin. zu Kir. 1,38 (उमेति st. उमेति nach Stenzler zu lesen). Spr. (II) 3033, v. l. Kathās. 78, 92. Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 5. 25, *a*, 33. 81, *a*, 41. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 506, Cl. 23. Gattin Çiva's in seiner Form als Içāna VP. 59. bei den Buddhisten Taran. 1,1,18. Wilson, Sel. Works 2, 38. — b) *Schakal* (ein Unglück verheissendes Thier, also euphemistisch so genannt) AK. 2,5,5. 3,4,22, 214. H. 1289. H. an. Med. Hin. 172. Halāy. 2, 74. Vaij. Pin. Gaṇ. 3, 18. MBh. 1, 4512. 3,16533. Hariv. 4260. R. 3,29,6. 6,75,35. Ragh. 7,47. 11,61. 12, 39. Kir. 1,38. Vaṃs. Bṛn. S. 30,30. 86,37. 90,3. fgg. Kathās. 25,135. 121,160. 124,108. Mārk. P. 43,21. Bhāg. P. 1,6,14. 14,13. 3,17,9. 5, 2,16. 8,10,11. Verz. d. Oxf. H. 51, *b*, 16. 86, *b*, 40. — c) Bez. verschiedener Pflanzen: = शमी AK. 2,4,2,32. H. an. Med. (सकृत्फला fehlerhaft für सकृपफला). *Terminalia Chebula* oder *citrina* AK. 2,4,2,40. Trik. 3,3,423. H. an. Med. Ratnam. 89. *Emblica officinalis Gaertn.* AK. 2,4,4,15. Trik. H. 1145. H. an. Med. Hin. 92. Halāy. 2,463. Ratnam. 90. *Jasminum auriculatum Vahl.* H. an. Med. Viçva bei Uṇṇval. zu Uṇādis. 1,153. = श्यामा Trik. = रुद्रा und दूर्वा Rāǵān. im ÇKDa. — Vaṃs. Bṛn. S. 48,40. — d) *die Wurzel von Piper longum Lin.* Ratnam. 99. — e) *ein best. gelbes Pigment* Rāǵān. im ÇKDa. — f) *ein best Metrum: 2 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑–⏑–, ––⏑–⏑–⏑–⏑–. Journ. of the Am. Or. S. 5,514. — g) N. pr. der Gattin des Anila MBh. 1,2569. Hariv. 156. des Aṅgiras MBh. 3,14209. fgg. einer Brahmanin 5,3796 (die Lesart der ed. Bomb. s. u. 2) c). der Mutter Nemi's, des 22ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi H. 40. der Mutter Rudrabhaṭṭa's Verz. d. Oxf. H. 318, *a*, N. 1 (vgl. u. चिरञ्जि in den Nachträgen). — h) N. pr. eines Flusses Vaij. a. a. O. MBh. 6,333 (VP. 183). Hariv. 9506. — i) f. शिवी = शिवा Çiva's *Gattin* H. 204, Schol. — 5) n. a) *Heil, Wohlfahrt, Wohlergehen:* = सुख, क्षेम u. s. w. AK. 1,1,4,3. Trik. 1,1,112. 3,3,422. H. 86. H. an. Med. Halāy. 1,122. शिवं प्रजाभ्यो शिवमस्तु मह्यम् TBr. 3,1,2,2. उपयन्ता ननु शिवं सामस्वङ्गेषु यस्य मे Ragh. 1, 60. राज्ञ: शिवं भूयात् 14, 80. ज्ञानं यत्र शिवं तत्र Spr. (II) 2449. 4479. Vaṃs. Bṛn. S. 4,2. 5,21. 23,10. 24,21. 32,29. कृतघ्नानां शिवं कुत: Kathās. 3, 44. 41, 67. 50, 116. Mārk. P. 118, 14. 19. Bhāg. P. 5,13,23. 6, 18,58. शर्कराकण्टकादिभ्यो यथोपानत्पद: शिवम् 7, 15, 17. अपि शिवं भवत: Pāṇ. 16,5. 38,6. fgg. शिवमाशंस मे पथि MBh. 1,3270. शिवं चाशास्त मे 3,12071. शिवमिच्छन्मनुष्याणाम् 7,9622. Bhāg. P. 5,18,9. °वृक्षार्घम् R. Gorr. 2,17,13. °ह् Vaṃs. Bṛn. S. 11,33. °मुभितकार 34,4. शि-

वाय गावः पूज्यन्ताम् Harıv. 3850. Milavim. 160, 14. Kathâs. 28, 47. भवतां न शिवाय तत् 45, 19. Bhâg. P. 1, 4, 11. fg. Vaâs. Bṛh. S. 4, 30. 22, 3. 30, 10. 29. सस्यानां नाशाय शिवाय वा 40, 12. 46, 85. शिवाय गम्यतां so v. a. *reise glücklich* R. 3, 12, 16. घा गंतं शिवेन *glücklich* ṚV. 7, 73, 4. MBh. 3, 16901. R. 2, 52, 81. R. Gorr. 1, 79, 11. 3, 3, 22. 70, 21. 5, 92, 7. तपो ऽस्य वनवासस्य भविष्यति शिवेन मे *zu meinem Glück* 2, 38, 42 (Gorr.). शिवेनेक्षस्व मां so v. a. *mit Glück bringendem Auge* 6, 104, 38. शिवेभिम् als adv. VS. 27, 7. घ° (s. auch bes.) n. *Unheil, Unglück* MBh. 1, 4512. Kathâs. 116, 3. शिव = मोक्ष *Erlösung* H. 74. H. an. — *b*) *Wasser* H. an. Med. — *c*) Bez. verschiedener *Glück bringender Dinge*: = सैन्धव, समुद्रलवण und श्वेतदूर्वा Râǵân. im ÇKDa. = धामलक, तार n., चन्दन, लोक् und तगर Acun. 96. — *d*) N. pr. des Hauses, in dem die Pâṇḍava verbrannt werden sollten, MBh. 1, 5775. — *e*) N. pr. eines Varsha in Plakshadvîpa Mârk. P. 53, 30. in Gambudvîpa Bhâg. P. 5, 20, 3. — *f*) N. eines Purâṇa, = शिवपुराण, शैव Verz. d. Oxf. H. 80, *a*, 4. — Vgl. घ°, भृ°, मका°, वाम°, शीत°, सदा° und शैव.

शिवक m. 1) *ein Idol* Çiva's P. 5, 3, 99, Schol.? — 2) *ein Pfahl, an den eine Kuh gebunden wird oder an dem sie sich kratzt*, AK. 2, 9, 72. Halâ. 2, 296.

शिवकर् m. N. pr. des 22ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇî H. 53.

शिवकर्णी f. N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2647.

शिवकाञ्ची f. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 251, *b*, 27. °माहात्म्य Mack. Coll. 86.

शिवकान्ता f. Çiva's *Geliebte* d. i. Durgâ H. 8.

शिवकान्ती f. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 3.

शिवकामदुघा f. N. pr. eines Flusses ebend. 19, *b*, 18.

शिवकारिणी f. eine Form der Durgâ ebend. 39, *b*, 30.

शिवकिंकर m. Çiva's *Diener*, N. pr. eines Autors ebend. 201, *a*, No. 479.

शिवकीर्तन m. *ein Lobpreiser* Çiva's: 1) *ein Verehrer* Çiva's Çabdar. im ÇKDa. — 2) Bein. Vishṇu's Taik. 1, 1, 31. H. ç. 74. Med. n. 248. Gaṇiṇ. in Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 12. — 3) Bein. Bhṛṅgariṭi's Med. n. 248.

शिवकुण्ड N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 12.

शिवकेसर m. *Mimusops Elengi Lin.* Acun. 84.

शिवकोपमुनि m. N. pr. eines Autors Hall 96.

शिवकोश m. Titel eines von Çivadatta verfassten *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 195, *a*, No. 452.

शिवक्षेत्र n. *ein Çiva geheiligtes Gebiet* Bhâg. P. 10, 79, 19. N. pr. eines best. Gebietes Kathâs. 108, 19.

शिवगङ्गा f. N. pr. eines Flusses: °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 237, *b*, 29. fg. °माहात्म्य 30, *a*, 14. Mack. Coll. 87.

शिवगण m. N. pr. eines Fürsten, n. N. pr. der von ihm gegründeten Stadt Verz. d. Oxf. H. 280, *b*, 8. 9.

शिवगति m. N. pr. des 14ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇî H. 52.

शिवगीता f. Titel eines Abschnittes im Padmapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 17, *a*, No. 61. 75, *a*, No. 127. 232, *a*, 12. Verz. d. B. H. No. 648. Verz. d. Pet. H. No. 16. fg. Hall 123. Wilson, Sel. Works 1, 18. 249.

शिवगुरु m. N. pr. des Vaters von Çaṁkarâkârja Verz. d. Oxf. H. 255, *a*, 5. 6.

शिवघर्मन् m. *der Planet Mars* Çabdaratn. bei Wilson.

शिवङ्कर् (शिवम्, acc. von शिव, + 1. कर्) 1) adj. *Heil bringend, wohlthätig* H. 489. Halâ. 2, 135. Buddha Vicitr. 2. — 2) m. *a*) bildliche Bez. *der Strafe* (दण्ड) MBh. 12, 4430. *des Schwertes* H. ç. 144. — *b*) N. eines Krankheitsdämons (ग्रह) Harıv. 9539. — *c*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâyu bei Schol. zu H. 210.

शिवचतुर्दशी f. *ein dem Çiva geweihter 14ter Tag* Verz. d. Oxf. H. 34, *b*, 38. 41, *a*, 25. fg. 85, *b*, 2. Pañcar. 2, 7, 17.

शिवचम्पूप्रबन्ध m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 826.

शिवज्ञ adj. *das Heil u. s. w. kennend*; f. घा *eine Verehrerin* Çiva's Çabdaratn. bei Wilson.

शिवज्ञान n. *die Kenntniss dessen, was Heil bringt, Kenntniss der Omina* ÇKDa.

शिवज्योतिर्विद् m. N. pr. eines Autors Notices of Skt Mss. 69.

शिवतत्त्वबोध m. Titel einer Schrift Hall 105.

शिवतत्त्वरत्नाकर m. desgl. Mack. Coll. 1, 105.

शिवतत्त्वविवेक m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 38, *a*, No. 94. Burnouf, Bhâg. P. 1, xxiv.

शिवतत्त्वसुधानिधि m. desgl. Mack. Coll. 1, 83.

शिवतत्परसूत्र n. desgl.: °भाष्यकर्तृ Verz. d. Oxf. H. 258, *b*, 3.

शिवतन्त्र n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 97, *a*, No. 151. Wilson, Sel. Works 1, 248.

शिवता (von शिव) f. *der Rang eines Çiva genannten Erlösten* Sarvadarçanas. 88, 6. — Vgl. शिवत्व.

शिवतातिल (von शिव) wed. 1) adj. *wohlthuend, Heil bringend* P. 4, 4, 142. H. 489. Halâ. 2, 135. — 2) f. *Wohlfahrt* P. 4, 4, 144. Milavim. 160, 4.

शिवतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, *b*, 41. 70, *a*, 8.

शिवत्व (von शिव) n. 1) Çiva's *Wesen* Sarvadarçanas. 91, 18. — 2) *der Rang eines Çiva genannten Erlösten* Sarvadarçanas. 81, 18. 84, 10. fg. 85, 4. — Vgl. शिवता.

शिवदत्त 1) m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 74, 154. Hall in der Einl. zu Visarp. 45. Verfasser des Çivakoça Verz. d. Oxf. H. 195, *a*, No. 452. °मिश्र Hall 100. — 2) n. Vishṇu's *Discus* Çabdaratn. bei Wilson.

शिवदर्तपुर n. N. pr. einer *Stadt* der Prâkṛta P. 8, 2, 99, Schol.

शिवदारु n. = देवदारु Râǵân. im ÇKDa.

शिवदास m. N. pr. verschiedener Männer Râǵa-Tar. 4, 621. Verz. d. B. H. No. 133. Verz. d. Oxf. H. 153, *a*, No. 328. 337, *b*, 24. 338, *a*, 8. 341, *b*, N. 358, *a*, No. 853. Hall 173. Ind. St. 1, 470. Notices of Skt Mss. 68. Colebr. Misc. Ess. 2, 45. 87. °देव Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 8. °दास Verz. d. B. H. No. 594.

शिवदिश् f. Çiva's *Weltgegend* so v. a. *der Nordosten* Vaâs. Bṛh. S. 21, 14. 89, 5.

शिवदीता f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, N. 3. °टीका 104, *a*, 26.

शिवहूतिका f. N. einer göttlichen Mutter (मातृका) Çabdar. im ÇKDa.

शिवहूती f. *eine Form der* Durgâ Tant. 1,1,83. H. ç. 36. MâRk. P. 94,3. °तन्त्र Verz. d. Oxf. H. 108,*b*, No. 169. 109,*a*, 26. fg.

शिवदृष्टि f. Titel eines Werkes (*System der* Çaiva) Sarvadarçanas. 91,15.

शिवदेव 1) m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. 2,49. — 2) n. v. l. für शिवदेव Vasiṣṭh. Bṛh. S. 7,9.

शिवदेव n. *das unter* Çiva *stehende* Nakshatra Ârdrâ Vasiṣṭh. Bṛh. S. 7,9.

शिवपुराणिष्टीपिका f. Titel einer Schrift Hall 181.

शिवपुत्र m. *Aegle Marmelos Corr.* Râgan. im ÇKDa.

शिवपुष्पा f. *Pandanus odoratissimus* Râgân. im ÇKDa.

शिवधनुर्वेद m. Titel einer dem Vjâsa zugeschriebenen Schrift Verz. d. Oxf. H. 123,*a*, 3.

शिवधर्म m. Titel eines Purâṇa oder Upapurâṇa Ind. St. 1,18. Verz. d. B. H. 127, N. Verz. d. Cambr. H. 68. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*, 7. 30,*b*, 16. fg. (pl.). 68,*b*, 10. 104,*a*, 26. 271,*a*, 2. 279,*b*, 18. शिवधर्मोत्तर 271,*a*, 2. शिवधर्मोत्तरशास्त्र 239,*a*, 14.

शिवधातु m. *Opal* oder *Chalcedon* Wilson nach Çabdârthak.

शिवधारिणी f. v. l. für शिवकारिणी Verz. d. Oxf. H. 39,*b*, 30.

शिवनक्तव्रपुरुषव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34,*b*, 34. fg.

शिवनाथ m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 540.

शिवनाभि m. *eine Art* Liṅga Vîramitrodaja im ÇKDa.

शिवनारायण m. Çiva *und* Nârâjaṇa *als eine Gottheit* Verz. d. Oxf. H. 42,*b*, 48. °दास N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 533. 819.

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्र n. Titel eines Stotra Verz. d. B. H. No. 1132.

शिवपत्र n. *eine rothe Lotusblüthe* Ausn. 92.

शिवपुरी 1) n. N. pr. verschiedener *Städte* oder Dörfer P. 4,2,109, Schol. MBh. 3,8334. Kathâs. 89,3 (in Nepâla). Çatr. 1,382. Verz. d. Oxf. H. 76,*a*, 17. fg. Verz. d. Cambr. H. 40. Wilson, Sel. Works 1,62. 130. 2,22. — 2) f. ई N. pr. einer *Stadt* Çatr. 14,31. = वाराणसी H. 974. — Vgl. शैवपुर.

शिवपुराण n. Titel eines Purâṇa Notices of Skt Mss. 66. Verz. d. B. H. No. 1207. fg. Verz. d. Oxf. H. 63,*a*, No. 113. 75,*a*, No. 127. 131, *b*, 7. 252,*a*, N. 3. 279,*b*, 19. Verz. d. Kop. H. 99,*a*. Verz. d. Tüb. H. 15. Wilson, Sel. Works 1,218. 222. — Vgl. शैव.

शिवप्रिय 1) m. *a) Agati grandiflorum* Ratnam. 76. Gaṇiṅ. im ÇKDa. — *b) Stechapfel* Râgân. im ÇKDa. — *c) Krystall* ebend. — 2) f. या Çiva's *Gattin* Çabdar. im ÇKDa. Muir, ST. 4,301, N. 269. — 3) n. = रुद्राक्ष *die Beere von Elaeocarpus Ganitrus Roxb.* Râgân. im ÇKDa.

शिवबीज n. Çiva's *Same*, Bez. *des Quecksilbers* Râgân. im ÇKDa.

शिवभक्त adj. *ein Verehrer* Çiva's Verz. d. Oxf. H. 69,*a*, N. 1; vgl. शिवैकभक्त Kathâs. 114,20.

शिवभक्ति f. *die Verehrung* Çiva's: °सिद्धि oder शिवशक्तिसिद्धि Titel einer Schrift Hall 161. in der Einl. zu Vîrâvad. 18. Verz. d. Oxf. H. 119,*a*, 5.

शिवभट्ट m. N. pr. des Vaters von Nâgoçabhaṭṭa Hall 2. Colebr. Misc. Ess. 2, 13. Verz. d. Oxf. H. 161,*a*, No. 334. 164,*b*, No. 364. 213, *b*, No. 508.

शिवभद्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 241.

शिवभागवत m. vielleicht = माहेश्वर *ein Verehrer Maheçvara's* Colebr. Misc. Ess. 1,406.

शिवभास्कर m. Çiva *als Sonne* Verz. d. Cambr. H. 69,2.

शिवभूति m. N. pr. eines Ministers Kathâs. 114,33. fgg. °क 127.

शिवमय (von शिव) adj. (f. ई, aus metrischen Rücksichten auch या). 1) *voller Heil:* सदा संतुष्टमनसः सर्वाः शिवमया दिशः Bhâg. P. 7, 15, 17. — 2) *ganz* Çiva *ergeben* Kathâs. 115,140.

शिवमल्लक 1) m. *Terminalia Arjuna W. u. A.* Râgân. im ÇKDa. — 2) f. °मल्लिका *Agati grandiflorum* Râgân. im ÇKDa.

शिवमल्ली f. *Agati grandiflorum* AK. 2, 4, 2, 62. Trik. 3, 3, 35 (lies °मल्ल्यौ). Ausn. 92.

शिवमात्र *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,639.

शिवयोगिन् m. N. pr. eines der sechs Lehrer des Shaḍguruçishja Verz. d. B. H. No. 53.

शिवयोषित् f. Çiva's *Weib* Verz. d. Oxf. H. 91,*b*, 35.

शिवरथ m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,111. 2334.

शिवरस m. *drei Tage altes Reiswasser* Râgân. im ÇKDa.

शिवरहस्य n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1166. Verz. d. Oxf. H. 84,*b*, 27 (aus dem Skanda-P.). 102,*a*, 12. 279,*b*, 19. 292,*b*, 22. Notices of Skt Mss. 118. 123. Wilson, Sel. Works 1, 18. 249. 2, 219. Hall 167. Weber, Kṛshṇaj. 294. °पुराण Ind. St. 1,469. शिवरहस्योप *zum* Çivarahasja *gehörig* (Spruch) Weber, Kṛshṇaj. 298.

शिवराजधानी f. Çiva's *Residenz*, Bez. der Stadt Kâçi Verz. d. Oxf. H. 172,*b*, 30. fg. 261,*b*, 6.

शिवराजभट्ट m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vîrâv. 45.

शिवरात्रि f. Bez. *des dem* Çiva *geweihten 14ten Tages in der dunklen Hälfte des* Phâlguna Wilson, Sel. Works 2,210. fgg. 393. Weber, Kṛshṇaj. 225. 227. fg. 231. Verz. d. Oxf. H. 64,*b*, 11. 74,*a*, 27. 75,*b*, 32. 302,*b*, 12. Râga-Tar. 8,111.

शिवराम m. N. pr. verschiedener Männer Ind. St. 1,60. Verz. d. Oxf. H. 221,*a*, N. 1. 293, *a*, No. 710. 365, *a*, No. 73. 395, *a*, No. 113. Hall in der Einl. zu Vîrâvan. 9. 10. 20. 44. °चक्रवर्तिन् 7. Colebr. Misc. Ess. 2,45. °तीर्थ Hall 188. °सरस्वती 89. °वाचस्पतिभट्टाचार्य 49. °भाग्यवत् Kshitîç. 24,11.

शिवलिङ्ग n. *Phallus* Vasiṣṭh. Bṛh. S. 50,2. Kathâs. 43,158. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 8. Wilson, Sel. Works 2,217. Kshitîç. 24,20. 26,11. fg. Tîrân. 267. — शिवालिङ्गपरीक्षा (!) Verz. d. B. H. No. 911.

शिवलोक m. Çiva's *Welt* (auf dem Kailâsa) Pañkat. 1,3,31. Bhavishja-P. im Titelindex. nach ÇKDa.

शिववर्मन् m. N. pr. eines Ministers Kathâs. 5,59. fgg.

शिववल्ली 1) m. *der Mangobaum* und *Calotropis gigantea* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) f. या *eine best. Blume*, = शतपत्री Râgân. im ÇKDa.

शिववल्लिका f. *eine best. Pflanze*, = लिङ्गिनी Râgân. im ÇKDa.

शिववल्ली f. dass. und = गोवल्ली Râgân. im ÇKDa.

शिववाहन m. Çiva's *Reitthier* d. i. *der Stier* Râgân. im ÇKDa.

1. शिवशक्ति f. du. Çiva *und seine Energie* Verz. d. Oxf. H. 92,*a*, 2. 45,*a*, 2.

2. शिवशक्ति m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 5,131.

शिवशक्तिमय adj. *aus Çiva und seiner Energie hervorgegangen* u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,38. 105,*a*,1.

शिवशक्तिसिद्धि f. Titel einer Schrift, = शिवभक्तिसिद्धि Hall 161. in der Einl. zu Visavad. 18. Verz. d. Oxf. H. 119,*a*,5.

शिवशर्मन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 69,*a*,25.40. fg. *b*,16.

शिवशेखर m. *Agati grandiflorum* Gaṇiun. im ÇKDa. Ausn. 84. *Stechapfel* Rigân. im ÇKDa.

शिवश्री m. N. pr. eines Fürsten VP. 4,24,13.

शिवसंहिता f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 648. Wilson, Sel. Works 1,18. 249. Hall 14. 17.

शिवसंकल्प 1) adj. *freundlichen Willen hegend* VS. 34,1. fgg. — 2) m. Bez. *der Sprüche* VS. 34,1. fgg. M. 11,250. als Upanishad Ind. St. 2,51. fgg.

शिवसमुद्र m. Çiva's *Meer*, N. pr. eines Wasserfalles LIA. 1,160.

शिवसर्वस्व n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,19. fg.

शिवसिंह m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,3, Cl. 12.

शिवसिद्धान्त m. Titel einer astr. Schrift Verz. d. B. H. 288,1.

शिवसुन्दरी f. Çiva's *Gattin*, Durgâ ÇKDa. nach dem Tantrarâjatra.

शिवसूत्र n. pl. 1) Bez. der 14 am Eingange von Pâṇini's Grammatik stehenden, dem Gott Çiva zugeschriebenen Sûtra, die das Alphabet enthalten. — 2) Titel von philosophischen, dem Gott Çiva zugeschriebenen Sûtra Sarvadarçanas. 94,3. Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,14. Hall 196. fg. °विवृति 196. °विमर्शिनी (zwei verschiedene Werke) 137. 196. fg.

शिवस्कन्द् m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12,1,25. शिवस्कन्ध VP. 4,24,13.

शिवस्कन्ध s. शिवस्कन्द्.

शिवस्तुति f. *ein Lobgesang auf* Çiva Verz. d. Oxf. H. 358, *a*, No. 853. — Vgl. प्राचीन°.

शिवस्वाति m. N. pr. eines Fürsten VP. 4,24,13. Bhâg. P. 12,1,24.

शिवस्वामिन् m. N. pr. verschiedener Männer Râja-Tar. 5,34. Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,9. 271,*a*,3. Colebr. Misc. Ess. 2,49.

शिवाक m. N. pr. eines Mannes gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. — Vgl. शैवाकवि.

शिवाल n. = रुद्राल *die Beere von Elaeocarpus Ganitrus Roxb.* Rigân. im ÇKDa.

शिवागम (शिव + आ°) m. Çiva's *Lehre*, auch als Bez. einer best. Schrift Kathâs. 124,16. Colebr. Misc. Ess. 1,406. Verz. d. B. H. No. 911. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,19.

शिवाटिका f. *eine best. Pflanze*, = वैशपत्री Bhâvapr. im ÇKDa.

शिवाटी f. wohl dass. Suçr. 2,371,3.

शिवात्मक (von शिव + आत्मन्) n. *Steinsalz* Rigân. im ÇKDa.

शिवादित्यमिश्र m. N. pr. eines Autors Hall 74.

शिवादेशक (शिव + आ°) m. *Schicksalsdeuter, Astrolog* Milav. 69,14.

शिवाद्वैतप्रकाशिका f. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,139.

शिवानन्दसरस्वती m. N. pr. eines Autors Hall 12.

शिवानी (von शिव) f. 1) Çiva's *Gattin* ÇKDa. und Wilson. — 2) *Sesbania aegyptiaca Pers.* (शणपुष्पी) Çabdar. im ÇKDa.

शिवापर् adj. etwa *der das Gegentheil* (अपर्) von *gütig ist:* व्याघ्रो कृत्वा नानानं तं क्रामि शिवापरम् AV. 12,2,43.

शिवापीड (शिव + आ°) m. *Agati grandiflorum* Rigân. im ÇKDa.

शिवाप्रिय (शिवा *Schakal* + प्रिय) m. *Ziege* Taik. 2,9,24.

शिवाफला f. *ein best. Baum*, = श्रमी Rigân. im ÇKDa.

शिवाबलि m. *eine den Schakalen hingeworfene Spende* Verz. d. Oxf. H. 95,*a*,5.

शिवाभिमर्शन (शिव + अ°) adj. *linde — oder heilsam berührend* RV. 10,60,12.

शिवायतन (शिव + आ°) n. *ein dem* Çiva *geweihter Tempel* Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,3. 151,*a*,6. 7. Vet. in LA. (III) 5,9. 10.

शिवारात्रि (शिवा *Schakal* + अ°) m. *Hund* Çabdam. im ÇKDa.

शिवारि (शिवा *Schakal* + अरि) m. dass. H. ç. 180.

शिवारुद्र m. *eine Form* Çiva's (als *Hermaphrodit*) Pârâs. 4,3,76.

शिवार्चनचन्द्रिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,20.

शिवालय (शिव + आ°) m. Çiva's *Behausung:* 1) Bez. des Kailâsa Râja-Tar. 3,278. — 2) *ein dem* Çiva *geweihter Tempel* Kathâs. 3,33. 37,57. 51,51. Verz. d. Oxf. H. 44,*b*,34. — 3) *Leichenstätte* Hit. 131. — 4) N. pr. einer dem Çiva geweihten Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 64,*a*,9. — 5) *roth blühendes Basilienkraut* Çabdar. im ÇKDa.

शिवालिखित n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 912. fg.

शिवालु m. = शिवा *Schakal* Rigân. im ÇKDa.

शिवास्मृति f. *Sesbania aegyptiaca Pers.* (शणपुष्पी) Çabdar. im ÇKDa.

शिवाह्लाद् m. *Agati grandiflorum* Rigân. im ÇKDa.

शिवाह्वा f. *eine best. Schlingpflanze*, = रुद्रजटा Rigân. im ÇKDa.

शिवि, शिविका, शिविका und शिविकाल s. u. शिवि u. s. w.

शिविविष्ट m. ein N. Çiva's Çabdar. im ÇKDa. = शिपिविष्ट mit Versetzung der mittleren Silben.

शिविर् und शिविरगिरि s. u. शिविर् und °गिरि.

शिवीय्, °यति *Jmd wie* Çiva *behandeln:* विष्णुम् Vop. 21,6.

शिवीरघ s. शिवीरघ.

शिवेतर् (शिव + इ°) adj. *missgünstig, unfreundlich* Bhâg. P. 4,4,14.

शिवेष्ट (शिव + इष्ट) 1) m. *Agati grandiflorum.* — 2) f. आ Dûrvâ-*Gras* Rigân. im ÇKDa.

शिवोदेर् (शिव + उ°) m. N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3, 8053. fg. LIA. 1,346.

शिवोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,15. Hall 197. Notices of Skt Mss. 29.

शिश्न् Nebenform von शिम *penis:* शिश्ना Pârâs. 3,9,7.

शिशपा f. Nebenform (aus metrischen Rücksichten) von शिंशपा R. 5,39,23.

शिशर्य (von 1. शो) adj. *mittheilend, freigebig* RV. 10,42,3.

शिशयिषा (vom desid. von 2. शी) f. *das Schlafenwollen, Schläfrigkeit* Wilson.

शिशयिषु (wie eben) adj. *schlafen wollend, schläfrig* Bhâg. P. 1,6,30. 8,24,5. Harshakaritavilâsa 15 nach ÇKDa. Suppl. unter तप्तमुद्रा.

शिशव m. Nebenform von शिशु *Kind:* शिशवास्य Weber, Kâṇvâs. 290.

शिंशिर (von शृ्या wie शीत) Uṇâdis. 1,54 (oxyt.). m. Sigen. K. 249,*b*,2. m. n. 4. 1) m. n. *eine der sechs Jahreszeiten: der erste Frühling, die*

kühle Zeit, die Monate Mágha und Phálguna, von Mitte Januar bis Mitte März umfassend (welche nach anderer Theilung, der eine dem Hemanta, der andere dem Vasanta, zugerechnet werden) Nir. 1,10. AK. 1,1,2,18. H. 156. 158. an. 3,611. fg. Med. r. 228. Halâj. 1,113. Vigva bei Uggval. zu Unâdis. 1,54. AV. 6,55,3. 12,1,36. पञ्चर्तवो हेमन्त-शिशिरयोः समासेन Ait. Br. 1,1. Çat. Br. 2,1,2,1. 2,2,7. 5,5,2,3. 13,6,1,10. Kâtj. 8,1. 34,9. Âçv. Grihj. 2,4,1. Sugr. 1,19,8. 14. शिशिरे शीतमधिकं वातवृष्ट्याकुला दिशः 22,6. MBh. 7,6645. 14,1212. R. Gorr. 2,28,26. 7,42,26. Çik. 131. °ओ Spr. (II) 4228. Varâh. Bṛh. S. 3,23. 30,22. 38,8. 46,95. 55,6. 86,26. 90,1. Râga-Tar. 4,227. 401. Bhâg. P. 4,23,6. Verz. d. Oxf. H. 97,b,30. °समय 123,a,37. शिशिरर्तु Verz. d. B. H. 11, N. Schol. zu Naish. 22,57. — 2) m. n. *Kühle, Kälte, Frost* H. an. Med. Halâj. 3,28. Vigva a. a. O. सिसृतुः शिशिरायेव (सूर्यः) दक्षिणां भजते दिशम् MBh. 3,11875. नोद्वं न शिशिरे तत्र 14,188. °मथिता पद्मिनी Megh. 81. R. 5,52,10. पद्मानां शिशिराद्ययम् Spr. (II) 4037. °घ्न MBh. 1,8736. 8847. विविक्तशिशिरोपधार *Kühle* Vikr. 19,17. शिशिरस्येव संघातः *heftiger Frost* R. 5,49,26. — 3) adj. (f. घा) *kühl, kalt* AK. 1,1,2,20. H. 1385. H. an. Med. Vigva a. a. O. काल R. 1,11,1. Varâh. Bṛh. S. 19,2. मास R. 7,39,29. सलिल 1,63,25 (Scheg.). Wind 3,78,3. Râga-Tar. 5,356. Wasser 65. R. 5,55,3. Spr. (II) 4368. Sugr. 2,489,19. 1,151,14. शिशिरामृता 2,312,19. 313,1. Raghu. 9,39. 14,3. 16,49. Vikr. 41. Spr. (II) 1482. Kathâs. 66,8. 98,22. 124,144. Bhâg. P. 4,21,19. 5,5,31. 8,22. 6,9,40. °तर Gîv. 12,18. Pañkat. 9,4. यति° R. Gorr. 2,115,18. Spr. (II) 343. घ° Çik. 61. — 4) m. ein N. *des 7ten Monats* Ind. St. 10,298. — 5) m. N. pr. eines Berges Harîv. 12386. fg. (die neuere Ausg. hat auch 12386 शिशिर). R. 4,40,34. VP. 169. Bhâg. P. 5,16,27. — 6) m. N. pr. eines Sohnes der Manohará MBh. 1,2586. Harîv. 155. des Medhátithi Mârk. P. 53,28. fg. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. 11, N. VP. 3,4,22. Bhâg. P. 12,6,57. — 7) n. N. eines mythischen Geschosses R. 1,29,19 (30,19 Gorr.); vgl. शिशिरास्त्र (शैशिरास्त्र die neuere Ausg.) Harîv. 13181. — 8) n. N. pr. eines Varsha in Plakshadvipa Mârk. P. 53,29. — Vgl. शैशिर fgg.

शिशिरकर (शि° + कर *Strahl*) m. *der Mond* Varâh. Bṛh. S. 18,30.

शिशिरकिरण m. dass. Çiç. 11,21. Varâh. Bṛh. S. 42,14. °वासर *Montag* 104,61.

शिशिरगभस्ति m. dass. Varâh. Bṛh. S. 60,20.

शिशिरगु m. dass. ebend. 19,6.

शिशिरता (von शिशिर) f. *Kühle, Kälte*: घ° *Hitze*: निःश्वासानाम् Megh. 82.

शिशिरदीधिति m. *der Mond* Ṛt. 3,2 (°दीधितिना zu lesen).

शिशिरमयूख m. dass. Varâh. Bṛh. S. 42,13.

शिशिरय् (von शिशिर), °यति *kühl machen, abkühlen* Daçak. 42,13. Nâgân. 38. शिशिरित *abgekühlt* Pañkat. 3,5,1.

शिशिरांशु (शिशिर + अंशु) 1) adj. *kaltstrahlig* Harîv. 2476. Davon nom. abstr. °त्व n. R. 3,54,12. — 2) m. *der Mond* Vikr. 159. तनुभवः शिशिरांशोः *der Sohn des Mondes* d. i. *Mercur* Varâh. Bṛh. S. 7,18.

शिशिरात m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,9.

शिशिरात्यय (शिशिर + घ°) m. *Frühling* (*die abgelaufene kühle Jahreszeit*) R. 2,56,6. 3,79,18. Kumâras. 3,61.

शिशिरायण Harîv. 1937 fehlerhaft für शैशिरायण, wie die neuere Ausg. hat.

शिशिरीकर् (शिशिर + 1. कर्) *kühl machen*: °कृत *kühl gemacht* Harîv. 6544. Ṛt. 5,4. Spr. (II) 1272.

शिशु Unâdis. 1,21 (oxyt.). m. 1) *Kind, Junges* AK. 2,5,35. 9,75. H. 338. Halâj. 2,347. शिश्वा, शिशे und शिशवे ved. ṚV. 1,65,10. 96,5. 186,8. धेनुर्न शिशे स्वसरेषु पिन्वते 2,34,8. शिशुर्धयति 35,13. 4,18,8. 5,16,10. 7,56,16. वृषा शिशुः 95,3. दिवः 4,15,6. 6,49,2. यं शिशुं (धिषं) पक्षा नवं जनिष्टारणी 5,9,2. 9,85,11. मरुतां शिशुम् 102,1. 10,115,1. AV. 10,3,10. अपां VS. 10,7. नदीनाम् 13,42. Pañkav. Br. 11,8,8. Çat. Br. 14,5,2,1. चतुर्थे मासे कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात् M. 2,34. शिशुरङ्गिरसः कविः (vgl. u. 3) 151. fg. 8,66. धाता च मे शिशुः MBh. 1,6190. 7413. 3,1740. Spr. (II) 1267. 1601. (I) 2648. 2892. Çik. 104,22. Varâh. Bṛh. S. 16,19. 28,5. Bṛh. 6,8. यशिश्यी शिशुना विना AK. 2,6,2,11. Pañkat. 1,3,50 (lies शिशुः). 4,3,45. Bhâg. P. 3,33,4. शिशु, युवन्, वृद्ध 5,13,22. 9,23,12. Pañkat. 182,12. °क्रीडा Schol. zu Naish. 22,57. घ-त्यक्त° Spr. (II) 3813. °भूपति Râga-Tar. 5,454. सिक्थः शिशुरपि Spr. 3251. मृगया: Vikr. 121. Pañkat. 160,4. von Vögeln Harîv. 1136. Spr. 2858. Varâh. Bṛh. S. 93,7. क्रय° 66,5. कस्ति° MBh. 13,4846. करेणु° R. Gorr. 2,13,23. सिक्थ° Çik. 173. कृष्ण° ad 14. कृष्णसर्प° 177. Spr. 3063. चातक° 3337. °कृष्ण (II) 3801. von jungen Pflanzen 1171, v. l. दिवसकृत् *die jugendliche Sonne* MBh. 7,2985. — 2) ein N. Skanda's (vgl. कुमार) MBh. 3,14396. fg. 14621. R. 7,35,22. — 3) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âṅgirasa (vgl. M. 2,151 oben u. 1), angeblicher Verfasser von ṚV. 9,112. eines Sohnes des Sâvarṇa VP. 4,13,14. N. pr. eines Fürsten Târan. 3,267. — Vgl. घ°, मनु°, भुजगशिशुमत्, शैशव und शाव.

शिशुक (von शिशु) m. 1) *ein kleines Kind* Trik. 2,6,7. H. an. 3,104. Med. k. 163. AV. 6,14,2 (*jung*). MBh. 1,3667. 7,1939. R. 7,36,1. Spr. (II) 2813. Kathâs. 21,89. Pañkat. II,200. — 2) *ein best. Wasserthier*, = उलुपिन् (उलूपिन्) AK. 1,2,8,19. H. 1346. Med. = सम्बुकोश. वमाच Trik. 1,2,24. = शिशुमार 3,3,14. H. an. Med. — MBh. 12,919. — 3) *ein best. Baum* H. an.

शिशुकच्छ्र n. Bez. *einer best. Kasteiung* (neben वृद्धकच्छ्र) Verz. d. Oxf. H. 283,a,12. — Vgl. शिशुचान्द्रायण.

शिशुक्रन्द m. *Kindergeschrei* P. 4,3,38. Davon adj. °क्रन्दीय *darüber handelnd* ebend.

शिशुगन्धा f. *eine Jasminart* Çabdam. im ÇKDr.

शिशुचान्द्रायण n. *eine Art Kasteiung* M. 11,219. — Vgl. शिशुकच्छ्र.

शिशुता (von शिशु) f. *Kindheit, Kindesalter* Gaṇiku. im ÇKDr. Uttarân. 83,5 (107,5).

शिशुत्व (wie oben) n. dass. AK. 2,6,2,40. H. 339. Spr. (II) 2774. Varâh. Bṛh. 20,9. Sâhit. K. 59,b,3. Pañkat. 220,10.

शिशुदेश्य adj. *beinahe noch Kind seiend* Râga-Tar. 4,575. 5,280.

शिशुनन्दि m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12,1,31.

शिशुनाक m. v. l. für शिशुनाग 2) VP. 466, N. 8.

शिशुनाग m. 1) *eine junge Schlange* R. ed. Bomb. 3,73,32 (76,28 Gorr.). — 2) N. pr. eines Fürsten LIA. 1. Anh. XXXIII. 2,83. VP. 4,24,3. Bhâg. P. 12,1,4. pl. *seine Nachkommen*, — *Dynastie* 6. — Vgl. शैशुनाग.

शिश्नुनामन् m. *Kamel* H. 1253.

शिश्नुपाल m. N. pr. eines Fürsten der Kedi, Sohnes des Damaghosha, der von Kṛshṇa erschlagen wird, H. 221. MBh. 1, 2641. 7003. 7039. 2, 124. 574. 1069. fgg. 3, 616. 12, 12962. 14, 2468. Hariv. 1930. 6579. fgg. 8018. 8101. fgg. 9136. 9792. VP. 437. fgg. Bhāg. P. 7, 10, 37. 9, 24, 39. °वधपर्वन् MBh. 2, 39. fgg. °वध ein episches Gedicht von Māgha Gild. Bibl. 234. fgg. Verz. d. B. H. No. 515. fgg. Verz. d. Oxf. H. 117. fg. No. 193. fgg. °शिरश्छेदन् Beiw. Kṛshṇa's Pāṇḍar. 4, 1, 20. °निसूदन desgl. H. 221, Schol. — Vgl. शैशुपालि.

शिश्नुपालक m. = शिशुपाल Taik. 2, 8, 12.

शिश्नुभाव m. *Kindheit, kindisches Wesen* ÇKDn. nach einem Tantra.

शिशुमत् (von शिशु) adj. von *Kindern* —, von *Jungen begleitet* ṚV. 1, 140, 10. 3, 43, 3. 8, 89, 5. धेनु VS. 21, 33. यज्ञा Pāṇḍav. Br. 12, 4, 3. 13. Liṭ. 7, 3, 16.

शिश्नुमार (nach Çiṅ. 3, 13 auch शिशुं°) 1) m. a) *Delphinus gangeticus* AK. 1, 2, 3, 20. Taik. 3, 3, 41. H. 1350. Med. r. 300. Hit. 77. VS. 24, 30. शिशुमारर्षि Pāṇḍav. Br. 14, 5, 14. R. 1, 44, 18 (45, 17 Gorr.). R. Gorr. 2, 47, 3. 5, 27, 18. Kāraṇḍ. 1, 27. Suçr. 1, 205, 20. °वसा 2, 42, 9. 121, 11. 135, 3. Vīcar. 6, 54. Kathās. 63, 98. fgg. Pāṇḍav. 51, 9. — b) *ein in der Gestalt dieses Thieres gedachtes Gestirn am Himmel, das für eine Erscheinung Vishṇu's gilt;* = तारात्मकाच्युत (woraus Wilson zwei Bedeutungen gemacht hat: *the heavenly porpoise, or collection of the stars and planets and a name or form of* Vishṇu) Med. Taitt. Ār. 2, 19. तारामयं भगवतः शिशुमाराकृति दिवि रूपं हरेः VP. 2, 9, 1. शिशुमारस्तु यः प्रोक्तः स ध्रुवो यत्र तिष्ठति 12, 29. केचनेतज्ज्योतिरनीकं °संस्थानेन भगवतो वासुदेवस्य योगधारणायामनुवर्णयन्ति Bhāg. P. 5, 23, 1. 3. Verz. d. Oxf. H. 41, a, 41. 48, b, 17. °शिरस् MBh. 1, 6960. Personif. als ein Sohn Dosha's von der Çarvarī und als eine कला हरेः Bhāg. P. 6, 6, 18. Vater der Bhrami, der Gattin Dhruva's, 4, 10, 1. — 2) f. ई a) *das Weibchen vom Delphinus gangeticus* Pāṇḍav. Br. 3, 6, 3. 9. — b) *eine best. Pflanze* Varāh. Bṛh. S. 54, 87. — Vgl. शैशुमार und शिंशुमार.

शिश्नुमारमुखी f. N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2640.

शिश्नुरोमन् m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2151.

शिश्नुवाल्क m. *eine wilde Ziege* H. 1277.

शिश्नुवाल्यक m. dass. Taik. 2, 5, 9.

शिशूल (von शिशु) m. *Kindchen:* शिशूला न क्रीळयः सुमातरः ṚV. 10, 78, 6.

शिश्न m. (nach AK. Halāy. im VP. und Bhāg. P.) und n. *Scheuss;* gewöhnlich *das männliche Glied* (AK. 2, 6, 2, 27. H. 610. Halāy. 2, 359): मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः ṚV. 1, 105, 3. मध्यः शिश्ना प्रमिनानो नवीयान् 10, 27, 19. नेयं शिश्न प्र दहति AV. 4, 34, 2. TBr. 2, 3, 3, 3. शिश्नैर्यदनृतं चकृमा वयम् 3, 7, 43, 3. Āit. Br. 1, 22. 3, 27. Ait. Up. 1, 4. Çat. Br. 1, 4, 3, 9. 7, 5, 1, 38. 12, 7, 1, 7. 9, 6, 16. Kāṭy. Çr. 1, 1, 17. Kauç. 33. °प्रोथिनी Liṭ. 4, 3, 11. उत्तार्णा चलचिक्रम्म MBh. 14, 293. °वृषणौ M. 11, 164. गृहीत° adj. Jāān. 1, 17. शिश्नोदरकृते (आत्मोदरकृते 12, 516) MBh. 3, 111. धृत्या शिश्नोदरं रक्षेत् 5, 1336. Varāh. Bṛh. S. 68, 8. Bṛh. 5, 24. VP. 2, 12, 33. Bhāg. P. 2, 6, 7. 10, 26. 3, 26, 56. 7, 9, 10. यस्मात्र हि शिश्नं पत्नीयाख्यं प्रकीर्तितम् Bṛhaspati in Sarvadarçanas. 6, 22. Falsch शिश्या st. शिश्ना Āçv. Gṛhj. Pariç. 1, 3 und शिश्ये Ait. Br. 3, 37, v. l. Die Ableitung von श्रि, welche schon Nir. 4, 19 gegeben wird (vgl. ṚV. 10, 95, 5), ist deshalb nicht zulässig, weil alsdann *männliches Glied* als Grundbedeutung angesehen werden müsste, was dem Hergang bei den übrigen Synonymen widerspricht. — Vgl. शेश्य und विशिश्य.

शिश्नेव (von श्नथ्) m. *das Durchbohren* ṚV. 3, 31, 13.

शिश्नेदेव adj. nach Nir. 4, 19 *unkeusch, buhlerisch* ṚV. 7, 21, 5. 10, 99, 3. Eher von *Dämonen* oder *falschen Göttern* zu verstehen.

शिश्न s. सु°.

शिश्निदानं Uṇādis. 2, 93. adj. = कृष्णकर्मन् oder घ° AK. 3, 1, 46. = कृष्णकर्मन् H. 855. = दुराचार Halāy. 2, 249.

1. शिष् (शिम्) Nebenform zu 1. शास्; s. das.

2. शिष्, शेषति (केसार्थ) Dhātup. 17, 36.

3. शिष्, शिनष्टि (विशेषणे) Dhātup. 29, 14. शिषयति, शिषयसि: शिषिद्ध Kāç. zu P. 8, 4, 65. Schol. zu 1, 1, 55. शेक्षते (vgl. Kār. 6 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10); शिष्ट्वा; partic. शिष्ट s. bes. *übrig lassen:* यन्मानाग्नेव तल्लोके शिष्यति TBr. 3, 3, 8, 2. भूयिष्ठं सुचि शिष्ट्वा Āçv. Çr. 2, 3, 20. 16, 3. Kāṭy. Çr. 5, 8, 30. 19, 7, 4. pass. *übrig bleiben* AV. 15, 12, 11. Āçv. Çr. 6, 3, 6. यद्या शिष्यते कियान् Rāja-Tar. 4, 291. mit न *mangeln, fehlen:* न तस्य दासा न रथो न धाता न च बान्धवाः । वने निवसतः — शिष्यते स्म कदा च न MBh. 3, 2069. fg. — शिष्ये MBh. 2, 1984 in beiden Ausgg. offenbar fehlerhaft für शेष्ये (von 2. शी); vgl. 5, 63. न शिष्यति Mārk. P. 51, 113 fehlerhaft für नशिष्यति.

— caus. शेषयति (असर्वोपयोगे) Dhātup. 34, 11. *übrig lassen, verschonen:* दृत्तशेषं न शेषयेत् MBh. 13, 400. न शेषयेतां युधि शत्रुसेनाम् 3, 14760. 5, 2098. 2480. 7, 449. 13, 2996. Spr. 2945. (II) 172. Bhāg. P. 11, 9, 7. अशेषयित्वा s. u. अशेषय् (denom. von अशेष adj.). शेषित *übrig gelassen, verschont* Vīcar. 23, 8. Bhāg. P. 10, 37, 37. MBh. 2, 1111. हृत° *unter dem Geraubten übriggeblieben* so v. a. *vom Raube verschont, nicht mit Anderem geraubt* 10, 244.

— अति *übrig lassen:* समिधम् TBr. 3, 3, 3, 2. Sāṅkh. Br. 2, 10. pass. *übrig bleiben* TS. 2, 4, 12, 1. Kāṭh. Up. 2, 10, 3. 3, 1, 4. — अतिशिष्ये Harīv. 7498 in beiden Ausgg. fehlerhaft für अतिशिष्ये (von 2. शी). — partic. अतिशिष्ट *übrig geblieben* TS. 7, 3, 20, 1. Çat. Br. 4, 1, 2, 4. Kāṭh. Up. 6, 7, 3. Çāṅk. zu 1, 10, 3. — Vgl. अतिशेष.

— अप *weglassen* Çat. Br. 7, 4, 2, 18.

— अव pass. *übrig bleiben* TBr. 3, 7, 6, 20. Çat. Br. 14, 8, 6, 1. किं कार्यमवशिष्यते MBh. 3, 15222. 5, 2628. नेह भूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते Bhāg. 7, 2. R. Gorr. 2, 116, 23. Rāja-Tar. 2, 33. 3, 173 (zu lesen यामिन्या यामः सार्धो अव°). Bhāg. P. 2, 9, 32. 3, 5, 16. Sarvadarçanas. 118, 3. partic. °शिष्ट *übrig geblieben, übrig; verschont* Kauç. 44. 59. Kāṭy. Çr. 6, 7, 13. Maitrāyaṇ. 6, 9. M. 3, 116. MBh. 3, 2276. R. 1, 46, 13. R. Gorr. 2, 5, 5. 3, 31, 21. Suçr. 1, 180, 7. क्रियदवशिष्टे रजन्याः Çiç. 46, 7. Varāh. Bṛh. 26 (24), 3. Rāja-Tar. 4, 418. Bhāg. P. 3, 4, 28. 4, 30, 47. 8, 11, 46. Pāṇḍar. 2, 7, 52. Vop. 8, 37. Pāṇḍav. 168, 4. 200, 13. Hit. 103, 14. Bhāsāp. 125. Sarvadarçanas. 23, 3. 31, 4. 105, 7. 8. P. 1, 2, 23, Schol. स्तम्बेन नीवार इवावशिष्टः (so ist zu lesen) *wie Reis, von dem nur der Stengel übrig blieb,* Rāgat. 3, 15. अ-

ल्पावशिष्टे कालस्य गतभूयिष्ठमन्तत: *wenig Zeit übriggeblieben* MBh. 4, 885. कुलान्यल्पावशिष्टानि 3,15388. द्वौ वापि मासौ समयावशिष्टौ *von der vertragsmässigen Zeit übrig geblieben* R. 5,28,7. भोजनावशिष्टमितास्म *von der Mahlzeit übrig geblieben* Hit. 27,12. शौचावशिष्टया मृदा *vom Putzen der Geschirre übrig geblieben* Spr. 3029 (Conj., bestätigt durch ed. Bomb.). कृतशौचावशिष्टा मृद: dass. Mârk. P. 34,66. मुहूर्तार्धावशिष्टायां द्वादश्याम् *von der nur ein halber Muhûrta übrig ist* Bhâg. P. 9, 4,38. स्वत्वावशिष्ट *von dem nur das Eigenthumsrecht übrig geblieben ist* 4,28,16. क्लमावशिष्टा: *so v. a. dem Tode entronnen* 10,20. Vgl. अवशिष्टक und अवशेष. — caus. *übrig lassen* MBh. 5,2638. R. 3,26,38. अवशेषित *übrig gelassen, — geblieben* MBh. 1,5129. R. 7,19,15. Râga-Tar. 1,338. Bhâg. P. 1,15,33. 3,6,23. 17,16. 18,37,30. 69,24. इत्थं तदलंकारवासोभ्यामवशेषित: *dem nur der Schmuck und die Kleider übrig geblieben waren* 3,11,4. स्वर्गसुखावशेषित *übrig geblieben von* 5,19,28. कथामात्रावशेषिता: *von denen nur die Erzählung übrig geblieben ist, nur in der Erzählung lebend* MBh. 13,988. नाममात्रावशेषिता: R. 4,28, 10. देहमात्रावशेषित Bhâg. P. 7,13,1. 5,24,33. 3,11,4. आत्मानं चिन्मात्रमवशेषितम् *so v. a.* चिन्मात्रावशेषितम् 7,12,31. अलक्ष्यो पक्षौ पादावशेषितम् *einbegriffen bis auf ein Viertel* Suçr. 2,454,21.

— पर्यव caus. *übrig lassen:* °शेषित Bhâg. P. 6,9,37.

— समव caus. dass.: °शेषित MBh. 1,6337.

— उद् dass.: मामीषां कं चनोच्छेष: ṚV. 6,75,16. AV. 5,127,1. 19, 1,17. Kâuç. 28,8. न पशुर्यो जीवनमुच्छेषेत् 31,1. TBr. 1,2,6,4. pass.: मेषामुच्छेषि किं चन AV. 11,9,12. Çat. Br. 13,1,8,1. Pârâśar. Bh. 3,1, 4. Âit. Br. 5,3. TBr. 1,1,6,5. 9,3. med. in ders. Bed.: कर्मणो नाकृतमुच्छेषते AV. 2,31,3. partic. उच्छिष्ट *übrig gelassen, als unbrauchbar liegen gelassen, übrig geblieben* TS. 7,3,20,1. Kâṭh. Up. 1,10,3. 4. M. 1,151. 10,125. शूद्रोच्छिष्टा आप: 11,148.152. R. Gorr. 2,33,32. अर्धोच्छिष्ट (सामलक) Kathâs. 61,298. Spr. (II) 382. 1615. Râga-Tar. 5,393. Prab. 59,10. 60,6. Bhâg. P. 4,6,53. Vgl. उच्छिष्ट (als adj. in der Bed. *unrein* auch Jâân. 1,155. MBh. 13,2298. 6145. R. 3,5,20. 42,5. Vaṃç. Bgh. S. 46, 79. Mârk. P. 18,28. Bhâg. P. 3,20,41. 6,18,59. als n. in der Bed. *Ueberbleibsel* auch Çat. Br. 12,4,3,5. Jâân. 1,23. MBh. 4,275. 278. Vaṃç. Bgh. S. 53,66. Spr. (II) 1193. Râga-Tar. 5,337. Daçak. 88, 8. Bhâg. P. 1,5,25. 4,21,10. 6,14,28. 9,4,8. Pañcat. 1,2,75). उच्छिष्य, उच्छेष fg., मधूच्छिष्ट, राहूच्छिष्ट. — caus. *abküssen* (?): वक्त्रमुच्छेषितं (= चुम्बितम् Comm.) भगवता Bhâg. P. 3,15,22.

— निस् caus. s. निःशेषय्.

— परि *übrig lassen* Âit. Br. 1,23. 3,21. पदिवा वाचं विसृजेरन्नर्धातृच्याय परिशिष्यु: 5,24. 7,33. Çat. Br. 2,1,4,14. उभौ समिधौ परिशिष्ट: 3,8,19. 3,8,3,29. pass. *übrig bleiben* Âit. Br. 7,18. Çat. Br. 1,3,3,4. 3,8,3,25. Kâṭhop. 4,3. Spr. (II) 4479. Bhâg. P. 10,68,46. मनुरेक: परिशिशिये Çat. Br. 1,8,1,6. °शिशिषिरे 2,2,2,9. °शेष्यते 12,4,3,9. partic. °शिष्ट *übrig geblieben, übrig* Âit. Br. 5,27. TS. 7,3,20,1. Çat. Br. 13, 5,2,1. Âçv. Çr. 10,2,30. Kâṭh. Up. 6,7,3. Spr. (II) 4842. Çâṅk. zu Bgh. Âr. Up. S. 109. Verz. d. Oxf. H. 174, b, 6. 12. P. 1,2,33, Schol. Vgl. परिशिष्ट, °शेष fg. — caus. 1) *übrig lassen, verschonen:* न किंचित्पर्यशेषयत् Ragh. 12,79. Râga-Tar. 7,348. धनं सत्रपरिशेषितम् *vom Opfer übrig geblieben* Bhâṭṭ. P. 9,4,4.11. — 2) *verlassen, aufgeben:* रणात्मा पर्यशेषयत् Bhaṭṭ. 17,93. — 3) *ergänzen* Kusum. 54,1.

— वि 1) *unterscheiden, durch besondere Attribute näher bezeichnen, als etwas Besonderes hinstellen, näher charakterisiren:* विशिनष्टि प्रधानपुरुषान्तरम् Sâṃkhyak. 37. Çâṅk. zu Bgh. Âr. Up. S. 231. zu Kâṭh. Up. S. 43. 61. Dâsabh. 270,16. Wilson, Sâṃkhyak. S. 26. Comm. zu TS. Prât. 4,7. Sarvadarçanas. 59,1. °शिष्य 62,19. pass. *sich unterscheiden, als etwas Anderes erscheinen;* mit abl. Ragh. 17,62. mit instr. ṚV. Prât. 14,30. *durch Etwas* (instr.) *näher bezeichnet werden* Comm. zu TS. Prât. 1,30. zu P. 8,2,27. zu Kâç. Ça. 25,3,25. — 2) *vor Andern* (instr.) *auszeichnen, höher stellen als:* भानुप्रभृतिभिश्चैनान्विशिनष्टि MBh. 3, 14725. pass. *hoch über Allen stehen, mehr gelten, höher stehen, vorzüglicher sein:* यद्धि्येव द्विजाग्र्याणां कर्म विशिष्यते M. 3,66. स्त्रीणां पवित्रं परमं पतिरेको विशिष्यते R. 2,39,24. 4,20,3. 23,9. Spr. (II) 1377, v. l. 1570. 3203. (I) 4953. Kathâs. 78,131. mit einem abl.: कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते Bhag. 5,2. 12,12. M. 2,83. 3,203. 278. 8,104. Spr. (II) 5003. MBh. 7,682. R. 3,3,9. mit einem instr. MBh. 1,6166. 7761. 3, 4059. Harîv. 7311. R. 2,27,9. 35,8. Spr. (II) 1416. 1319. mit einem gen. pl. (du.) *am Höchsten stehen unter:* सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते M. 4,233. 7,71. तेषां ज्ञानी विशिष्यते Bhag. 7,17. गुणैरप्सरसां दिव्यैर्मेनके त्वं विशिष्यसे MBh. 1,2916. eben so mit einem loc.: मूर्खसहस्रेषु प्राज्ञ एको विशिष्यते *unter ihnen ragt er hoch empor* Spr. (II) 3876. — 3) *steigern, vermehren:* विशिनष्टि (प्रवि° Uttar.) मनोरुजम् Mâlatîm. 71,8. — 4) विशेषयत् = विशेषयत् *übertreffend* Harîv. 5378. — 5) partic. विशिष्ट mit कृत u. s. w. compon. gaṇa मेघ्यादि zu P. 2,1,39. a) *verschieden, ein besonderer:* °काविप्रशंसा Verz. d. Oxf. H. 123, a, 31. fg. Râga-Tar. 3,147. °लिङ्ग adj. *verschiedenen Geschlechts seiend* P. 2,4,7. Sarvadarçanas. 87,19. अविशिष्टा देवानाम् *so v. a. nicht niedriger stehend als die Götter* MBh. 1,6482. कर्म° *verschieden von* Sarvadarçanas. 57,3. साध्याविशिष्टत्व und साध्याविशिष्टता *das Nichtverschiedensein von* 30,7. 11. *durch besondere Attribute unterschieden, näher bezeichnet, als etwas Besonderes erscheinend, charakterisirt durch* (die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend): (पर्वते:) तैर्विशिष्टा जनपदा: Mârk. P. 59, 8. क्लेन मन्विशिष्टेनानड् *so v. a. ein Partic. auf* त *mit einem Partic. auf* त, *das sich von jenem durch das alpha privativum unterscheidet,* P. 2,1,60. Nilak. 34. 46. Tarkas. 29. Bulcoâr. 132. Comm. zu TS. Prât. 2,44. 4,34. 5,18. 19. 28. 6,3. 10,10. 14,19. 21,1. zu P. 1,3,56. Kusum. 31,7. 11. 45,15. fg. Sarvadarçanas. 2,10. 5,12. 14,4. 8. 43,2. 49,22. 75,7. 109,20. 165,12. यस्येदमिति षष्ठीविशिष्टस्य वाक्यस्य Comm. zu Nyâyas. 2,1,50. संनिवेशविशिष्टत्व Sarvadarçanas. 81,22. 50,15. — *b) hervorragend, ausgezeichnet, über Alles hochstehend, viel geltend, vorzüglich; der vorzüglichste, beste; mehr geltend, vorzüglicher, besser:* विशिष्टाया विशिष्टेन संगमो गुणवान्भवेत् MBh. 3,2101. 16009. 4,46. 5, 7138. विशिष्टं कुत्रचिद्दीप्तं स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित् M. 9,24. 297. 10,50. 128. गुरोर्वाक्यम् MBh. 7,4297. 13,7443. Harîv. 8379. विशिष्ट, सम, क्लीन Kâm. 6,1,10. fgg. 16. R. 1,7,17. R. Gorr. 2,27,31. 5,38,47. Spr. 2384. 3358. °कुल (II) 2241. Daçak. 65,10. Mârk. P. 100,7. Pañcat. 1,7,94. 8,33. Vet. in LA. (III) 16,8. बुद्ध्या च प्रज्ञया तपसा तथा *hervorragend*

durch MBn. 13,1866. गुणात: R. 5,13,71. देशकालाभ्याम् *in Ort und Zeit einen Vorsprung habend* Kim. Nitis. 18,34. प्रीति° *mehr Liebe an den Tag legend als* (abl.) R. 2,53,22. mit einem loc. *hervorragend in, sich gut verstehend auf:* न पापे ऽस्य मनो विशिष्टम् MBn. 4,2125. mit einem gen. pl. *der beste u. s. w. unter* M. 7,58. Bhag. 1,7. MBn. 2,2406. Harıv. 7317. R. 5,2,12. mit einem abl. *vorzüglicher, besser als* M. 2,85. MBn. 3,12187. 13,240. R. 5,11,22. Spr. 4923. (II) 48. 3560. भवद्विशिष्ट *besser als du* R. 3,40,33. 5,53,22. 69,20. पापं भ्रूणहत्याविशिष्टम् *schlimmer als* MBn. 12,4011. विशिष्टतर 7,4297. Çaṅk. zu Knkn. Up. S. 79. Mıkn. P. 111,6. विशिष्टतम mit abl. MBn. 15,851. Mahâv. 67, 8, — Vgl. विशेष, महाविशिष्ट. — caus. 1) *näher bestimmen, charakterisiren:* धातुना संयोगे विशेषयिष्याम: Pat. zu P. 6,4,92. Kâç. zu 4,1,168. Schol. zu 7,3,77. pass. Çaṅk. zu Bhn. Âr. Up. S. 84. Schol. zu Kâts. Çr. 25,4,16. 11,5. विशेषित H. 506. Çaṅk. zu Bhn. Âr. Up. S. 61 (पदावि° zu lesen). 252. Comm. zu TS. Pâit. 14,5. भिन्नं तु व्यवच्छिन्नं विशेषितम् so v. a. भिन्न *wird durch* व्य° *definirt* Trik. 3,1,18. — 2) *Jmd bevorzugen:* त्रीवहिर्भागे तु पिता नैकं पुत्रं विशेषयेत् Kâts. in Dâyabh. 95,11. fg. कारुणात्त्व विशेषित: Kim. Nitis. 17,35. *als besser erscheinen lassen:* समागमो ऽपि पितरं विशेषयति Spr. 3019. विद्यया ह्यनया तात्न्यर्थं नृपो विशेषिता: so v. a. *stehen wir über den Menschen* MBn. 1, 6482. विशेष्यते *hat eine hohe Bedeutung, gilt viel* Spr. 1377, v. l. — 3) *es Jmd zuvorthun, übertreffen;* mit acc. der Person MBn. 3,14107 (विशेषयन् mit der ed. Bomb. zu lesen). 10449. 4,123. 5,7329. 7335. 7,3231. 3243. 7923 (med.). 8503 (विशेषितुम् = विशेषयितुम्; statt पाण्डवस्य ist mit der ed. Bomb. पाण्डवं स्म zu lesen). 14,107. 1329. मदनमपि गुणैर्विशेषयन्ती Mahâv. 59,14. mit acc. der Sache: लघुतां पुरुषधानस्य लाघवेन विशेषयन् MBn. 7,4655. 12,11869. पदैर्नाम पदानि विशेषयन्ती Mahâv. 10, 23. विशेषित *übertroffen:* विशेषितस्त्वया दैत्येन्द्र: Harıv. 14032. मुरेश्वरस्य u. s. w. विशेषितास्त्वया यत्ता: 14223. रक्ताशोकलताविशेषितगुणो बिम्बाधरालक्तक: Mâlav. 40. — Vgl. विशेषक, विशेषण, विशेष्य.

— प्रवि *steigern, vermehren:* प्रविशिनष्टि विधिर्मनसो रूपम् Uttarar. 79,7 (102,4. 5); vgl. Mâlatîm. 71,5, wo st. dessen विशिनष्टि steht.

— प्रतिवि, partic. °विशिष्ट *vorzüglicher, besser:* वस्तु: MBn. 1,4684. R. Gorr. 2,53,24. *schlimmer:* यत: प्रतिविशिष्टानि दु:खान्यन्यानि MBn. 4,602. — Vgl. प्रतिविशेष.

— सम्, partic. संशिष्ट *übrig geblieben* TS. 7,3,20,1.

शिषाण Harıv. 7426 fehlerhaft für शिशान; s. u. 2. शा.

1. शिष्ट (partic. von 1. शास्) P. 6,4,34. 8,3,60. 1) adj. *a) angewiesen, befohlen, gefordert* AV. 2,29,4. 5,20,4. उत्पत्ति° und उत्पन्न° *von vorn herein gefordert* Schol. zu Kâts. Çr. 1,4,16. 3,3,8. 5,16. 5,2,7. 9,10. — *b) gelehrt, traditus:* शिष्टे नाधीयीत Kauç. 141. आचार्यशिष्टा या ज्ञाति: MBn. 12, 4008 (आचार्यशास्ता 5,1691). AK. 3,6,2,25. — *c) angewiesen:* यदि चापि मया शिष्टै: (= मत्तो ऽधिकै: Comm.) कार्यं वो भर्तृशासनम् R. 2,45,9. — *d) unterrichtet, gebildet, wohlgesittet;* m. *ein gebildeter Mann, ein geistig und sittlich hoch stehender Mann* Çat. Br. 13,1,6,1. °संमत M. 3,39. ब्राह्मण 12,108. fg. Jîân. 1,118. 180. MBn. 1,35. अशिष्टानां नियन्ता हि शिष्टानां परिरक्षिता 6485. 3,13763. fg. 5,7102. शिष्टाकृति adj. 12,4363. 13,2408. 6299. शिष्टाचीर्ण (धर्म) 6454. R. 2,21,37. 44,4. Spr. (II) 1169. 3034 (= Rasn. 1,28). 3040. (I) 2985. Vaṅiç. Bhn. S. 19,17. Kathâs. 61, 188. शेषं तु तेषं शिष्टप्रयोगात् AK. 3,6,2,16. मित्राणि तुल्यशिष्टानि von *gleicher Bildung* Mânn. P. 24,8. 37,2 (Gegens. पाप). Pañcat. 92,19. Hit. 93,21, v. l. °सभा कृत्वा 100,18. Comm. zu TS. Pâit. 1,1. शिष्टाचार m. und adj. MBn. 3,13759. fgg. 13,2023. Ind. St. 5,307, N. 3. 10,98, N. Verz. d. Oxf. H. 208, *a*, 1. 265, *b*, 24. Müller, SL. 108. Sarvadarçanas. 157,14. fg. अशिष्टव्यवहार Sidd. K. zu P. 2,3,27. — 2) n. *Vorschrift über:* ध्रुवशिष्टे ऽपरेषाम् RV. Pâit. 6,12. *Belehrung:* शिष्टार्थम् (besser शिक्षार्थम् ed. Bomb.: शिष्ट्यर्थम् M. 4,164) MBn. 13, 4921. — Vgl. देव°.

2. शिष्टे (von 3. शिष्) 1) adj. *übrig geblieben, übrig* AV. 2,21,2. Çiñkh. Çr. 3,5,12. M. 3,41. MBn. 3,2299. Harıv. 12536. शिष्टान्नभोजन R. 7, 59,2,12. पितृदेवातिथिप्रेष्यशिष्टान्न Mânn. P. 15,52. Sarvadarçanas. 106, 20. fg. Bhag. Chr. 296,2. नालशिष्टा: कमलाकरा: von *denen nur die Stengel übrig geblieben sind* R. 3,22,23. कृतशिष्टा: so v. a. *dem Gemetzel entronnen* MBn. 3,2566. 11732. 15257. R. 5,56,119. कृतशिष्टानां गम्यधनानाम् so v. a. *vom Raube verschont geblieben* Daçak. 62,1. — 2) n. *das Uebrige, Rest, Ueberbleibsel* Çat. Br. 11,5,6,5. Sarvadarçanas. 73, 8. 78,8. °भुज् m. *das Essen von Ueberbleibseln* Kâtj. Çr. 25,8,11. शिष्टाशन Verz. d. Oxf. H. 30, *b*, 36. यज्ञशिष्टाशन Spr. (II) 78. 5023. Bhag. 4,31. कृतशिष्टाशिन् MBn. 7,2334. — Vgl. मधु°.

शिष्टत्व (von 1. शिष्ट) n. *Gelehrsamkeit* H. 66.

शिष्टि (von 1. शास्) f. 1) *Züchtigung, Bestrafung:* शिष्ट्यर्थम् M. 4,164. MBn. 14,888. — 2) *Geheiss, Befehl* AK. 2,8,2,26. H. 277.

शिष्य (wie eben) partic. fut. pass. P. 3,1,109. Vop. 26,17. fg. 1) adj. *zu lehren, tradendus:* तदशिष्यम् P. 1,2,53. — 2) adj. *zu belehren, zu unterweisen:* अ° *der nicht verdient unterwiesen zu werden* Spr. (II) 720. 3578. — 3) m. *Schüler* AK. 2,7,10. H. 79. Hall. 2,215. शिष्यो वेदविद्यार्थी। यत्तेवासी शिल्पशिक्षार्थी Mir. 267,15. RV. Pâit. 13,19. 15,1. fgg. Sharv. Bh. 4,1. Kauç. 139. 141. Gobh. 3,3,2. M. 1,103. 2,69. 140. 208. 242. ब्रह्म° 3, 186. 4,101. 114. 164. 178. 5,81. 8,70. 299. 317. 9,187. MBn. 12,4360. R. 1,2,5. 32,5. 2,54,10. Kim. Nitis. 2,4. Suçr. 1,6,11. 7,5. 13,2. 28,20. Rasn. 1,92. 2,40. Çik. 31,1. 46,3. Vikr. 35,1. °परंपरा Siñhâs. 71. Spr. (II) 4074. LA. (III) 87,18. °क्रम्या Pañcar. 2,8,27. 3,9,11. 17. Verz. d. Oxf. H. 45, *a*, 21. fg. 85, *a*, 20. 93, *a*, No. 149. गुरुशिष्य n. *Lehrer und Schüler* Spr. (II) 4638. am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 20,145. शिष्या f. *Schülerin* MBn. 1,2286. Kathâs. 13,91. 20, 188. गान्धर्व° *in der Tonkunst* 11,18. — Vgl. उप°, प्र°, प्रयुक्त°.

शिष्यक (von शिष्य) m. 1) *Schüler* Jîân. 2, 237. — 2) N. pr. eines Mannes Schiefner, Lebensb. 319 (89).

शिष्यता (wie eben) f. *der Stand eines Schülers:* यद्यस्ति वाञ्छा मच्छिष्यतां प्रति। सत्पुत्र्या: Kathâs. 11,27. शिश्रिये गुरुतामेकः शेषास्तच्छिष्यतां ययु: 19,75. एष मे शिष्यतां प्राप्त: Bhâg. P. 4,2,11. तम् — शिष्यतामनयत् Pañcat. 34,11.

शिष्यत्व (wie eben) n. 1) dass.: पौत्रानादाय कौरवान्। शिष्यत्वेन MBn. 1, 5212. मम शिष्यत्वमापन्ना: R. Gorr. 2,51,10. तद्भगवन्तमुपपन्ना: स्म: शिष्यत्वेन Suçr. 1,1,13. fg. — 2) *das Nichtgelehrtwerden:* अशिष्यत्वाल्लिङ्गस्य Kâr. 2 zu P. 7,1,1.

शिष्यधीवृद्धितन्त्र n. Titel einer Schrift Verz. d. Cambr. H. 53.

शिष्याय् (von शिष्य) *Jmdes* (gen.) *Schüler werden:* शिष्यायिते (impers.) गुरुकपोतशनैर्यथास्याः Spr. (II) 1632.

शिष्यीकर् (शिष्य + 1. कर्) *Jmd zum Schüler machen, in Jmdes* (gen.) *Schule geben:* गान्धर्वस्य तत्त्वेतां सुतां ॰करोमि च Kathâs. 11,11.

शिस् (शिष्) Nebenform von 1. शास् P. 6,4,34, Vârtt. 2. Vop. 9, 36. Vgl. आ॰, प्र॰.

शिह्लन s. शिल्हन.

1. शी, शेते (Nebenform von 2. शद् nach den Grammatikern) P. 7, 3,75. 1,3,60. Vop. 8,70. *ausfallen:* पद्मस्य लोमानि शीर्यन्ते TBa. 3,9, 4,4. Çat. Ba. 7,4,2,11. *weichen, schwinden, zu Grunde gehen* Spr. (II) 3032. यशीयत नृमांसादी बलम् Bhaṭṭ. 17,77. शीयमानान्धकारेषु 8,36. — अति *hinausfallen über:* शम्याम् Kâṭh. 13,1. *herauskommen aus* so v. a. *verlassen; mit acc.* Kâṭhâ. Up. 3,12,2. fgg.

— अभि *herabfallen auf:* पर्ण वनस्पतेरिव। अभि नः शीयतां रयिः TBa. 3,7,14,3.

— अव *niederfallen, abfallen:* शं ते प्रुषाव शीयताम् AV. 18,3,60. ये प्रत्यञ्चः शम्याया अवशीर्यन्ते TS. 1,8,4,1. Çat. Ba. 5,2,2,2. Kâṭh. 13,1. पुरुषाणि Pâraṇ. Br. 8,4,1.

— निस् *zerfallen, abfallen* Kauç. 83. निःशीयतामपगिति निःशीयमान-मास्तृणाति 85. fg.

2. शी, शेते (स्वप्ने) Dhâtup. 24,22. In der älteren Sprache folgende Formen: शेते, शयै 3. sg. (P. 7,4,41, Schol.), शेये, शयते (P. 2,4,73, Schol.), शयाते, शये 1. imper. (P. 3,4,96, Schol.), शयाम् AV. 6,136,1. 11 9,19. शेताम् 10,25. Çat. Ba. 11,8,2,5. शेरे 3. pl. AV. 10,3,15. शेरते VS. 13,7. शयीय AV. 18,1,14. शयीत, शयीयाताम् Gobh. 1,6,6. शयीरन् Çat. Ba. 12,3,4,2. अशेत 5,5,4,6. 14,1,2,12. अशायतः शिश्ये, शिश्यिरे, शशयानैः (आ)शयिष्ठाम्; शयितासे Çat. Ba. 11,5,4,11. शयानः शयितवी. Vom act. nur अशयत् ṚV. 1,32,7. 3,1,11. 7,18,8. AV. 11,8,16. Çat. Ba. 9,1,1,8. Kâṭh. 11,6. (परि) अशायतम् ṚV. 1,34,7. शेषन्. Als klassisch gelten शेते, शयाते, शेरते, अशेरत P. 7,4,21. 1,6. Vop. 9,41. fg. शयिष्यते Kâr. 1 zu P. 7,2,10. Vop. 8,60. शयित्वा 26,204. pass. impers. शय्यते P. 7,4,22, Schol. अशायि 3,1,66, Schol. शयित 1,2,19. Vop. 26,104. 129. 1) *stille liegen, daliegen:* यत्रैः शयत उपपर्क्येषिव्याः ṚV. 1,32,5. 9. संवत्सरं शयानाः 7,103,1. 2. यो मैत्रया दर्शतो शयै 10,162,4. 1,174,3. शेषे वनेषु मात्रा: 8,49,15. 5,32,1. 6. 8. Vâlakh. 3,2. पृथिव्या पार्श्वमुया शयते 10, 89,14. 92,1. यथा शयीत निर्ऋतेरुपस्थे 95,14. कृता इन्द्रेण पणयः शयध्वे 108,4. AV. 5,30,4. 10,8,26. 12,1,34. यस्ते मर्यो गुहा शये 46. VS. 13,7. यदेवास्य शयानस्योपमृज्यति *ungebraucht dastehend* (Soma) TS. 3,1,10, 3. Ait. Ba. 2,13. 5,28. 7,15. Çat. Ba. 1,5,3,12. 2,3,4,3. 3,1,4,7. 7,1, 2,9. दारु भूतो ऽनर्व्यः शेते 3,8,4,5. 4,5,9,11. 13,6,2,1. — शये R. Gorr. 2,120,14. शेषे R. Schl. 2,64,29. 72,24. शेते Vaṇîs. Bṛh. S. 79,39. तस्याः पुरीषे तन्मासं पितरस्तस्य शेरते M. 3,250. Mâns. P. 31,32. निकृत्ताग्र — यद्वीणामिव कूजानि धातुरक्तानि शेरते MBh. 1,1172. 4,816. Spr. (II) 69. 1093. मद्ने न शेरते so v. a. *sich impotent erweisen* Vaṇîs. Bṛh. S. 76,2. शेष MBh. 5,4501. R. 2,9,18 (8,19 Gorr.). शयीत M. 11,224. शयेयम् und शयेय (ed. Calc.) Daçak. 72,16 falsch für शयीय. शयीमहि MBh. 5,4348. शयीरन् Bâlâ. P. 5,14,39. अशेत MBh. 13,636. अशयिष्ट Bâlâ. P. 3,20,15. शिश्ये (häufig fehlerhaft शिष्ये) Kaush. Up. 2,14. MBh. 4, 826. Harîv. 4771. अशयिषि Daçak. 73,2. शयिष्येते कृतौ युधि R. Gorr. 1,22,13. Bâlâ. P. 3,17,31. अवाप्स्ये वा श्रियं तां वि शेष्ये (so zu lesen st. शिष्ये) वा निकृतो युधि MBh. 2,1964. शेष्यन्ति 5,62. शयिष्यसि R. 3, 57,12 (31,20 ed. Bomb.). शयान Ait. Ba. 4,5. M. 2,195. 197. 4,112. MBh. 1,2947. 3,2427. 2610. R. 2,51,9. 30,25. 63,31. 86,10. Bâlâ. P. 3,3,13. शयित *liegend* MBh. 1,2949. Spr. (II) 3269. *gelegen habend* R. 5,32,34. समानोदरे P. 4,4,108. — 2) *schlafen* (auch *sich schlafen legen*): न दिवा शयीत Çâṅkh. Gṛhy. 4,11. Âçv. Gṛhy. 3,9,6. Kâty. Çr. 4,15,15. सुखं स्रवमतः शेते Spr. 3189. MBh. 1,5908. 5910. fg. 3,2107. 2240. 2353. 2643. Harîv. 11281. R. 2,88,4. शेषे R. Gorr. 2,6,11. स्थण्डिले Âk. 2, 7,43. Var. in L.A. (III) 20,6. Bâlâ. P. 3,20,17. शये Kathâs. 56,188. Bâlâ. 6,18,23. 7,13,40. शेरते MBh. 1,5936. Spr. 3359. (II) 3083. 3085. 3023. Dhûrtas. 74,3. एकः शयीत सर्वत्र M. 2,180. 4,40. 75. Kâm. Nîtis. 12,15. शयीमहि Spr. (II) 726. शयीरन् M. 5,73. शयेत् Spr. 4916. शेष R. 2,86,3. प्रबुध्यस्व च शेष च 6,112,13. शेषम् Bhaṭṭ. 3,44. अशेत MBh. 1,5033. R. 2,88,6 (96,13 Gorr.). शिश्ये (auch fehlerhaft शिष्ये) Kaush. Up. 4,19. MBh. 6,3055. Harîv. 9119. R. 1,45,30. R. Gorr. 2,5,4. Ragh. 12,31. शनैश्च शिश्ये *schlief ein* Kathâs. 49,254. Bâlâ. P. 10,51,13. शयिष्यते R. 2,42,16. 88,21. 3,53,7. शयिष्यमाण Bâlâ. P. 7,1,10. शयिता fut. Kâtyây. 1,11. शयितुम् P. 4,2,15, Schol. शयित्वा R. 2,88,4 (96,5 Gorr.). चरणमपि शयित्वा पूर्वमेव प्रबुद्धाः Sin. D. 67,11. शयान M. 2,220. fg. 4,57. Jâtâ. 1,128. MBh. 1,5571. 5907. 5927. 13,251. 1274. R. 2,44,10. 51,6. 75,31. 86,7. Bâlâ. P. 1,6,20. 2,2,2. 7,31. 9,2,4. शयित *schlafend* Âk. 3,1,33. H. 443. Harîv. 11281. R. Gorr. 2,67,13. प्रवृद्धनिद्रा॰ 3, 33,64. Kathâs. 56,188. *geschlafen habend* R. 2,87,22 (95,26 Gorr.). R. Gorr. 2,93,13. fg. 96,15. 5,30,16. *eingeschlafen* Çiç. 9,39. Impers.: इक्ष्वाकुणा तेन मरुत्तमना। शर्वरीं शयितं भूमौ R. 2,88,2. इदमेषं शयितम् *dies ist der Platz, wo sie geschlafen haben,* P. 2,3,68, Schol. — शयति Pâraṇ. 174, 1 fehlerhaft für शयति, wie schon Benfey bemerkt hat.

— caus. शाययति, अशीशयत्; mit acc. Schol. zu P. 1,3,88. 4,52. Vop. 22, 21 1) *hinlegen, legen —, setzen —, stecken auf, — in:* तमेवैव बाणेन कृतं पांसुषु शाययै R. 4,13,35. शाययन् शरशय्यासु Kathâs. 94,10. Daçak. 78,10. Bhaṭṭ. 17,111. Paraṇ. 1,6,52 (besser पाययामास v. l.). उत्तानशायित Harîv. 9233. मरीतले R. 7,7,22. Râjâ-Tar. 2,102. तैलद्रोण्याम् R. 2,66,16 (68,50 Gorr.). R. Gorr. 2,80,20. पर्यङ्के Bâlâ. P. 3, 31,26. शुकुम्भशायितपद Spr. 2311. चन्दनचूर्ण॰ (so ed. Bomb.) Pfeil MBh. 8,4644. — 2) *schlafen legen, — lassen, — gehen heissen* Bâlâ. P. 10, 7,5. Bhaṭṭ. 8,33. शायित Spr. (II) 1634. Râjâ-Tar. 5,334. Bâlâ. P. 10,3,19.

— desid. शिशयिषते P. 1,3,62, Schol. 2,9, Schol. *schlafen wollen:* शिशयिषमाण Daçak. 129,13. — Vgl. शिशयिषा fg.

— intens. शाशय्यते P. 7,4,22. Vop. 20,16. शेशय्यत P. 1,2,19, Schol.

— अति 1) *früher als ein Anderer* (acc.) *schlafen, — sich zur Ruhe begeben:* यद्वै पतीव्यातिशये MBh. 3,14686. 14689. नैतानतिशयेत् 12,3398. — 2) *übertreffen,* mit acc.: यतिशेते हि ते वाचं (subj.) कर्मेतत्प्रथितं भुवि MBh. 4,1921. कालो ऽतिशेते कालीम् Pat. zu P. 5,3,55. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. 5,4,28. पूर्वान् — तया (भक्त्या) यतिशेषे Ragh. 5,14. सर्षीनप्यतिशेरते यस्या गुणाः Bhaṭṭ. 7,46. ॰शयेत (!) Râjâ-Tar. 3,223. अत्यशेत 4. Bâlâ. P. 3,23,41. अत्यशेरत तदेगं सुपर्णार्कमारुताः Bhaṭṭ. 8,1.

नातिशिश्ये (beide Ausgg. °शिष्ये) रणे कार्त्तिरैन्द्रिम् Harav. 7198. तं ब्रुवन्तम् — नैवातिशयितुं शक्तो बृहस्पतिरपि ब्रुवन् R. 5,90,22. °शयान Sin. D. 133,10. गत्वा चातिशयन्त्याति मनोवायुरथाधिगान् R. 6,82,92. °शय्यमान pass. P. 5,3,55, Vârtt. 6. °शयित in act. Bed. mit acc. P. 3,4,72, Schol. Bhâg. P. 5,24,10. ohne acc. *ungewöhnlich, bedeutend, ausserordentlich:* वर्णानां संनिधिः P. 1,4,109, Schol. °त्व n. Comm. zu Spr. (II) 1683. mit pass. Bed.: °शयितो गुरुर्भवता P. 3,4,72, Schol. पुत्रेण नातिशयितो यः प्रज्ञादानविक्रमैः Mâlav. P. 21,99. 113,28. 116,7. impers.: अतिशयितं भवता P. 3,4,72, Schol. अनतिशयनीय *unübertrefflich* Kâm. 3,52. — Vgl. अतिशय fgg. — caus. *übertreffen:* °शायित mit pass. Bed. Mâlav. P. 130,10. Vgl. अतिशायन.

— व्यति *hinausreichen über, überbieten:* सर्वतो भावृत्यं व्यतिशये Kâm. 34,7.

— अधि *ruhen in, auf, liegen —, sich legen auf* (loc.; gewöhnlich aber acc. P. 1,4,46. Vop. 3,2): दश मासो कृतानः कुमारो अधि मातरि ṚV. 5,78,3. स्तम्बे Âçv. Çr. 3,14,20. अक्षोन्द्रतल्पे Bhâg. P. 3,8,10. यच्चतुरश्यशेत *auf welchem Auge er lag* Çat. Br. 7,1,3,1.7. या कुता अधिशेरते 14,6,4,10. — पृथिवीमधिशिश्ये MBh. 6,2961. 7,6509. R. Gorr. 2,8,30. अध्यशयिष्ट ग्रामम् Bhaṭṭ. 15,114. रत्नाकरम् Vishṇu Râgn. 13,6. शय्याम् R. 2,88,12. Bhaṭṭ. 18,79. अस्माकीं सिद्धान्तशय्यामधिशय्य Sin. D. 31,10. शिलाविशेषान् Râgn. 16,49. Çiç. 33,2.3. चिताम् Spr. 4865. अक्षिम् (अक्षोः) Vop. 5,2. भुक्तान्तरम् Râgn. 19,32. रथम् 5,28. शेषमधिशयितो विष्णुः Vop. 26,139. वाक्यानि *so v. a. besteigen* Bhaṭṭ. 14,74. पावकेनाधिशयता MBh. 13,4061. *bewohnen, beziehen* (eine Wohnung): लङ्कावनम् Bhaṭṭ. 10,35. सिंहस्य पर्वतकुहरमधिशयानस्य Hit. 58,2. ग्रामम् P. 1,4,46, Schol. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Cl. 19. — Statt न रात्रावप्यधिशेते Pañkat. 26,24. fg. liest die ed. Bomb. richtiger न रात्रिमपि शेते. — caus. *legen auf,* mit zwei acc.: अधिशाय्य Daçak. 122,6. *einlegen an Stelle eines Andern* (instr.): यशाप्यकृतेन त्रिशत्रिता मानसमधशायविष्यत् Nir. 9,6.7. 8,10. 10,7.

— समधि caus. *einlegen an Stelle eines Andern* Nir. 8,10.

— अनु 1) *herumliegen an, in Etwas:* ये सूतिका अनुशेरते AV. 8,6,19. शर्ये शयानु प्रयुतो वनानु ṚV. 3,55,4. *liegen auf* Çvetâçv. Up. 4,5. शयनानि MBh. 7,1391. मल्लीम् 1995. *ruhen in:* मणि Bhâg. P. 3,9,12. — 2) *sich nach Jmd* (acc.) *hinlegen:* शयानं चानुशेते हि तिष्ठन्तं चानुतिष्ठति । अनुधावति धावन्तं कर्म पूर्वकृतं नरम् ॥ Spr. 5065. Daçak. 67,3. Bhâg. P. 3,7,37. 4,25,39. — Vgl. अनुशय fgg. und °शायिन्.

— अभि *liegen auf* (acc.) Çat. Br. 1,2,5,4. 2,1,4,1.

— आ 1) *liegen in, auf* (acc. oder loc.): तमः ṚV. 1,32,10. 10,124,1. त्रसो बुध्नम् 1,52,6. अपः 5,30,6. 8,6,16. योनिम् 10,102,1. 2,11,9. AV. 5,25,9. तल्पम् 17,12. कुसुमान्याशेरते बहूनि: Vikr. 41. सिरासु ṚV. 1,121,11. 4,30,11. 8,41,7. डुरदभ्रेनमा शये *so v. a. fällt zur Last* AV 12,4,19. — 2) *wünschen* act.: मुहुरस्याशयन्पुंस्त्वम् Bhâg. P. 3,1,27. — Vgl. आशय. — caus. *legen auf* (loc.): तस्यां चितायां नृपतेः शरीरम् — आशीयत (ध°?) R. Gorr. 2,83,31.

— अन्वा *sich erstrecken über:* किंपदविव्यदन्वा शये ऽस्य AV. 10,7,9.

— प्रत्या *vor Etwas liegen:* सप्त प्रति प्रवतं शाशयानम् ṚV. 4,19,2. 17,7.

— उद् *hervorstehen über:* ये एते अभितः पुष्कराणे शिखण्डास्ये उद्धृताते Çat. Br. 4,5,8,5.

— उप 1) *liegen bei* (acc.), *daneben liegen:* गतासुमेनमुप शेये ṚV. 10,18,8. Çat. Br. 4,1,5,9. स्त्री पुंसम् 4,1,4,20. 2,5,2,17. 5,3,4,36. TS. 5,3,2,2. Kâṭy. 21,2. Kâtç. 16. ऋतुकाले — पत्नीमुपशयेतसदा MBh. 13,6603. R. 6,8,17. पत्नीम् MBh. 13,332. Kâtç. 73. वासः 68. येवं वयसः पतितो निर्णामादेका नाश्नुपशेते Çat. Br. 10,2,4,6. *liegen auf:* धरण्याम् R. 6,19,70. — 2) *wohl bekommen:* इदं ममोपशेते इदं च नोपशेते इति *das ist mir zuträglich, — gesund* Kâraka 3,1. सात्म्यं नाम तन्यत्मातत्येनोपसेव्यमानमुपशेरते (°शेते) 8. — Vgl. उपशय, उपशाय fg.

— नि vgl. निशायिन्, निशिता, निशोथ, निशीथ्या.

— निस् s. निःशयान.

— परि *herumliegen um, umgeben, umfassen:* वेल्लस्यानं परि तृन्द्धा शयेरन् ṚV. 1,133,1. अर्के परिशयानमर्णः 3,32,11. अक्षाभिधानो मुखं परिशेते Çat. Br. 6,3,4,27. TS. 6,2,6,6. *sich befinden an oder in:* त्रिधा मघिना परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् ṚV. 1,34,7. 5,62,2. विशं विशं मघवा पर्यशायत 10,43,6. (आपः) याः पूताः परिशेरते TS. 3,7,4,17. वृषाकेः परिशय आत्मेवात्मानं परि शये 6,3,3,5. सोमपीथम् 5,6,5. या तृतीयसवनात्परि शेरते *bleiben liegen* 4,3,6.

— प्र *sich legen auf:* प्र सप्तवंधिराशसा धारामग्नेरशायत ṚV. 8,62,9.

— प्रति *gegen Jmd* (acc.) *liegen* (vgl. *Jmd anliegen*) *so v. a. nicht von seiner Seite weichen um ihn zur Nachgiebigkeit zu zwingen* (vgl. 1. विश् mit प्रत्युप): अर्कं विभं जलनिधिं समारुरुक्षाम्युपायतः । प्रतिशेष्याम्युपवसन् (प्रतिशेष्याप्युप° ed. Bomb.) दर्भपिञ्जूलिं मौ ततः ॥ MBh. 3,16298. प्रतिशिश्ये जलनिधिं विधिवत्कुशसंस्तरे 16300. — Vgl. प्रतिशोवन्.

— वि *ausgestreckt liegen:* पथि व्यशेत Bhâg. P. 10,12,16. *sitzen bleiben auf:* (पक्षिणः) अशक्नुवन्तः पतितुं शिखरेषु व्यशेरत R. 5,95,28. — Vgl. विशय, °शाय, °शायिन्.

— सम् *unschlüssig sein, Anstand nehmen, im Zweifel sein:* संशयामके MBh. 12,9713. मा संशयिष्ठाः Bhâg. P. 6,11,19. संशयिरे 10,60,25. संशय्य Spr. (II) 1750. संशयानः स्वजीविते *verzweifelnd an* Kathâs. 26,143. act. mit acc. *sich über Etwas nicht einigen können, verschiedener Meinung über Etwas sein:* संशयन्ति सामितिः मेष्ठाः प्रश्नगुद्धी नृपे तदा Mit. 145,9. 10. संशयित mit act. Bed. *unschlüssig, im Zweifel über Etwas seiend* R. 2,88,16 (96,19 Gorr.). 5,44,14. Râgn. 14,55. mit pass. Bed. *dem Zweifel unterworfen, zweifelhaft, ungewiss, in Frage stehend, gefährdet* MBh. 1,1779. 6171. 3,248. 4,831. 5,7081. 7,411. 14,1349. R. 2,41,21. 5,1,81. 6,31,12. Kâm. Nitis. 8,80. Spr. 3166. n. *Ungewissheit, Zweifel:* केचित्संशयिते (संशयिताः?) स्थिताः MBh. 14,1358. — Vgl. संशय.

3. शी (= 2. शी) adj. am Ende eines comp.: s. त्रिक्ष °, पत्सुतः° (unter पत्सुतम्), मध्यम°, स्थान°. f. = शयन und शक्ति Çabdar. im ÇKDa.

4. शी s. 1. und 2. शा.

5. शी s. श्या.

शीक्, शीकते Dâtup. 4,1 (सेचने). 11, v. l. (गत्यर्थ). *tröpfeln, stieben:* शिशीके शोणितं व्योम Bhaṭṭ. 14,76. शोणशीकिष्ट शोणितम् 15,26. शीकयति Dâtup. 33,116 (भागार्थ oder भागार्थ). 31,20 (भागार्थे, मर्षणे, धामर्शे). *beträpfeln:* (वायवः) चन्द्रावलीतरंगाद्रीः शीकयन्ति च यद्वपुः Hall. im ÇKDa. शीकाम् mit Dehnung TS. Prâtiç. 3,2. *tröpfeln, stieben* (vom feinen, seltenen Regen): शीकार्यैस् VS. 22,20. शीकायिष्यैस् und शी-

कित् TS. 7,5,11,2. शीकायते P. 3,1,17, Vârtt. 1.

शीकायत m. N. pr. eines Mannes gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154. — Vgl. शैकायतायनि.

शीकर (von शीक्) Uṇâdik. zu Uṇâdis. 3,131. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. (gewöhnlich pl.) *feiner Regen, herabfallende Tropfen* AK. 1,1,2,13. H. 165. an. 3,613. Med. r. 230. Halâj. 1,39. °वर्षिन् (मेघ) Harîv. 3802. fg. 3915. Spr. (II) 666. Çiç. 166. Milav. 44. Kir. 5,15. शीकराम्भस् Varâh. Bṛh. S. 21,37. शीकरोर्मरुद्धिः Ragh. 5,42. Spr. (II) 1067. भागीरथीनिर्झरशीकराणाम् Kumâras. 1,15. Milatîm. 147,14. Riçâ-Tar. 3,220. Ragh. 16,62. पत्तेः सलिलशीकरैः R. 4,51,38. शीकराम्बु Bhâg. P. 3,15,38. अगस्त्य (sg.) Khanḍ. 47. सुतुषार° (वनानिल) Ragh. 9,68. अवश्याय° Kathâs. 98,11. प्रालेय° Spr. 3349. हिम° (II) 2053, v. l. अग्र-रुग्लसमुक्तेन शीकरेण स नागराट्। समीक्षत (so ed. Bomb.) गुडाकेशं शैलं नीलमिवाम्बुदः (नील इवा°?) MBh. 14, 2201. 6, 4389 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Kir. Nitis. 15, 10. Ṛt. 1, 15. 2, 1 (सशीकराम्भोधर° zu lesen). Ragh. 7, 45. Kir. 16, 9. Varâh. Bṛh. S. 94, 13. Kathâs. 1, 2. 109, 1. 124, 221. Mâlav. P. 66, 27. Nigîn. 19. Bhâg. P. 3, 2, 25. करिणां मदशीकरैः 9, 11, 26. Kir. Nitis. 16, 28. कर्षबाष्पाम्बुशीकराः Kathâs. 18, 17. 369. बाष्पशीकरवर्षिन् Kumâras. 2, 42. स्वेदाम्भः शीकरैः Spr. (II) 1035. श्रम° Gîv. 12, 22. Wird bisweilen (auch in den Bomb. Ausgg.) सीकर geschrieben. — 2) n. = शरल (सरल) Med. — Vgl. कर° (auch Ragh. 7, 43).

शीकरिन् (von शीकर) adj. *von einem feinen Regen begleitet, mit feinen Tropfen geschwängert, einen feinen Regen bewirkend:* वाताः Sîn. D. 16, 6. गङ्गाशीकरिणो मरुतः Ragh. 4, 75. कर *ein Wasser ausspritzender Russel* Uttarâr. 49, 3 (63, 5) = Milatîm. 153, 18.

शीकाय् s. u. शीक्.

शीघ्र 1) adj. (f. घ्रा) *rasch, schnell* AK. 1, 1, 4, 60. H. 1470. an. 2, 463. Med. r. 92. Halâj. 5, 96. Ross Kîrt. Ça. 26, 1, 30. MBh. 3, 2629. कृपः R. 5, 41, 11. मारुत Kâuç. 141. Spr. (II) 1701. 4762 (शीघ्रतम). °पाणि heisst Vâju Saṃhr. Bh. 5, 8. यद् Ind. St. 2, 268. fg. MBh. 1, 5268. 14, 1714. गति 1, 6053. Sukas. 2, 12 (auch शीघ्रतरा). क्रम Varâh. Bṛh. S. 75, 3. Kir. Nitis. 19, 1. °वेग R. 2, 93, 11. °स्रोतस् 55, 13. 103, 25. 5, 22, 12. °चार् Vikr. 140. °पाठ H. 253. °विक्रम R. 2, 39, 12. Bhâg. P. 8, 10, 41. °पराक्रम R. Gorr. 2, 46, 19. शीघ्रमध्यचिरकालसंभव (फल) Varâh. Bṛh. S. 94, 8. तार् *rasch wirkend* Suçr. 1, 33, 13. रामदर्शनशीघ्रेण प्रहर्षेण so v. l. *alsbald hervortretend* R. 5, 54, 6. शीघ्रम् adv. *rasch, schnell, unverzüglich* AK. Halâj. 1, 12. शीघ्रं वर्षते VS. 22, 26. यद्यः शीघ्रं वर्धन्तोभ्यः TS. 7, 4, 14, 1. यात्तिं शीघ्रं यन्ति Kâṭh. Ça. 14, 3, 21. ṚV. Pâiṅg. 13, 6. शीघ्रमेव निपात्यताम् MBh. 1, 6034. गच्छाम 6040. 3, 1724. 1728. 2820. 2615. 2714. 2763. 2768. R. 1, 2, 9. 8, 4. 9, 40. 45. 61, 8. 62, 22. 2, 36, 24. 63, 41. 70, 21. R. Gorr. 2, 46, 19. 3, 68, 29. Suçr. 1, 18, 14. P. 3, 3, 133, Schol. Mahâbh. 176, 17. Varâh. Bṛh. S. 89, 13. Kathâs. 15, 117. Hit. 43, 17. Ver. in L.A. (III) 4, 3. 25, 2. 3. Çiç. obend. 37, 17. Pañcat. 128, 4. शीघ्रतरम् 88, 6. शीघ्रेण = शीघ्रम् MBh. 4, 1398. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Agnivarṇa Harîv. 829. VP. 387. Bhâg. P. 9, 12, 5; vgl. शीघ्रग. — 3) f. घ्रा *a) Croton polyandrum Roxb. oder Croton Tiglium Lin.* Riçân. im ÇKDn. — *b)* N. pr. eines Flusses MBh. 6, 336 (VP. 183). — 4) n. *a) der Punkt der grössten Schnelligkeit eines Planeten, Conjunction* Gaṇit. Spaṣṭâdh. 18. Golâdh. Kuṭṭ. 30. °कर्मन् Sûrjas. 2, 27. °फल 44. °केन्द्र n. *Excentricität, Abstand eines Planeten vom Punkte seiner grössten Schnelligkeit* Comm. zu 35. Gaṇit. Spaṣṭâdh. 18. °परिधि Sûrjas. 2, 35. शीघ्रोच्च n. *Apex der grössten Schnelligkeit eines Planeten, Conjunction* Comm. zu 30. zu Gaṇit. Grahâbhy. 14. — *b) die Wurzel von Andropogon muricatus* H. an. Med. — *c)* = चक्राङ्ग dass. — Vgl. मनः°, शैघ्र und शैघ्र्य.

शीघ्रकारिन् adj. *rasch zu Werke gehend* Harîv. 8145. *rasch zum Ziele führend:* उपाय Kathâs. 115, 95. — Vgl. आशुकारिन्.

शीघ्रकृत् adj. *rasch zu Werke gehend* MBh. 8, 2930.

शीघ्रकृत्य adj. *rasch zu vollbringen:* कार्य Spr. 2986.

शीघ्रग 1) adj. (f. घ्रा) *sich rasch bewegend, einen schnellen Lauf habend* MBh. 1, 1235. Harîv. 10843. R. 5, 2, 8. रथ 2, 49, 11. 97, 30. 3, 31, 8. 4, 28, 31. रथ MBh. 2, 553. नदी R. 2, 46, 28. 52, 3. 68. R. Gorr. 2, 55, 14. Suçr. 1, 45, 2. °मन्न Varâh. Bṛh. S. 3, 51. 69, 20. सु° R. 1, 67, 26. — 2) m. *a)* ein N. *der Sonne* MBh. 3, 155. — *b)* N. pr. *α)* eines Sohnes des Agnivarṇa R. 1, 70, 40 (72, 29 Gorr.). 2, 110, 31. fg. (110, 28. fg. Gorr.). — *β)* eines Hasen Pañcat. 164, 3.

1. शीघ्रगति f. *die grösste Schnelligkeit eines Planeten in seiner Bewegung* (welche stattfindet, wenn er bei der niederen Apsis, d. i. Conjunction, angelangt ist) Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 11. fg.

2. शीघ्रगति adj. = शीघ्रग Ind. St. 10, 277. शीघ्रतरगति ebend.

शीघ्रगत्व n. nom. abstr. von शीघ्रग 1) Kîm. Nitis. 19, 7.

शीघ्रगामिन् adj. = शीघ्रग R. 4, 52, 6. Spr. (II) 3634, v. l. Pañcat. 1, 1, 61. 7, 67.

शीघ्रचेतन 1) adj. *rasch zur Besinnung kommend:* स्वन् Spr. (II) 4427. — 2) m. *Hund* Çabdam. im ÇKDn.

शीघ्रजन्मन् m. *Guilandina Bonducella* Çabdam. im ÇKDn.

शीघ्रतव adj. *sich rasch bewegend, schnell laufend:* कृपाः R. 2, 68, 6.

शीघ्रता (von शीघ्र) f. *Raschheit, schnelle Bewegung, schnelles Verfahren* MBh. 14, 2157.

शीघ्रत्व (wie oben) n. dass. MBh. 4, 1655. R. 7, 30, 8, 10. Mâlav. P. 40, 21.

शीघ्रपातिन् adj. *schnell fliegend, sich rasch bewegend, rasch zu Werke gehend* Kîm. Nitis. 16, 12.

शीघ्रपुष्प m. = अगस्त्यवृक्ष Riçân. im ÇKDn.

शीघ्रबाकुकायन m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 38, 19.

शीघ्रबोध adj. *schnell zu verstehen;* m. als Titel eines grammatischen und eines astronomischen Werkes Colebr. Misc. Ess. 2, 48. Verz. d. B. H. No. 884. fgg.

1. शीघ्रयान n. *rascher Gang, rasches Fahren* MBh. 3, 2628. 2749 (pl.).

2. शीघ्रयान adj. = शीघ्रग Kîm. Nitis. 19, 16.

शीघ्रयायिन् adj. dass. R. 2, 57, 8.

शीघ्रवह् adj. (f. घ्रा) *schnell fliessend:* नदी Suçr. 1, 172, 11.

शीघ्रवाहिन् adj. *schnell fahrend:* वाहन Spr. (II) 3634.

शीघ्रवेधिन् adj. *rasch schiessend* H. 772. Halâj. 2, 316.

शीघ्रसंचारिन् adj. = शीघ्रग R. 5, 15, 11.

शीघ्राय् (von शीघ्र), °यते *sich in rasche Bewegung setzen* gaṇa भृशादि zu P. 3,1,12. शीघ्रायमाण Bhaṭṭ. 3,37.

शीघ्रास्त्र (शीघ्र + अस्त्र) adj. *dessen Geschosse rasch fliegen;* davon nom. abstr. °त्व n. MBh. 7,6249.

शीघ्रिन् (von शीघ्र) adj. *hastig zu Werke gehend, — lesend* Spr. (II) 2110.

शीघ्रिय (wie oben) 1) adj. = शीघ्र. — 2) m. *a*) ein N. Vishṇu's und Çiva's. — *b*) *Katzenbalgerei* Wilson nach Çabdârthak.

शैघ्र्य (wie oben) adj. *hastig* VS. 16,31.

शीत (partic. von श्यै; vgl. शीन) P. 6,1,24. Vop. 26,90. fg. 1) adj. (f. या) *a*) *kalt, kühl* (Gegens. उष्ण, ऊष्मन्) AK. 1,1,2,21. H. 1385. an. 2, 201. Med. t. 64. (षड्गाः) शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति RV. 10,34,2. तकान् AV. 1,25,4. 5,22,10. Monate 8,9,17. 12,2,22. Wind VS. 23,36. Çat. Br. 1,4,1,16. 3,4,1. 8,6,1,19. भस्मन् Kauç. 83. MBh. 3,12041. 6, 5786. R. 2,41,15. 44,10. 50,11. 91,15. R. Gorr. 2,115,18. 3,22,11. 27. 78,28. 5,73,19. शीताग्नि 7,23,4,18. 60,1. Suçr. 1,37,16. fgg. 115,17. Megh. 43. Spr. (II) 2839. 5243. Çiç. 102. Varâh. Bṛ. S. 34,94. Kathâs. 18,101. 62,28. Daçarûp. 92,7. °गात्रप्रतीकार Verz. d. Oxf. H. 319,*a*,6. मुख° R. 3,78,13. घृत° *nach dem Kochen wieder kalt geworden* Suçr. 1,133,14. सु° 2,101,1. 3. Kathâs. 45,189. घ° Bhâvapr. 35. शीतंकृत्य und शीतं कृत्वा gaṇa सातादि zu P. 1,4,74. — *b*) *träge, lässig* (अलस, स्निग्ध) Med. H. an. — *c*) = क्वथित Çabdâm. im ÇKDa. fehlerhaft für घृत. — 2) m. *a*) N. verschiedener Pflanzen: *Calamus Rotang Willd.* AK. 2, 4,2,10. Trik. 3,3,187. H. 1137 (शीत mit dem Schol. zu lesen). H. an. Med. Hall. 2,46. *Cordia Myxa Lin.* AK. 2,4,2,15. H. an. Med. = सप्तपर्णी Çabdam. im ÇKDa. = मेष्शृङ्गक Ratnam. 161. = पर्पट und निम्ब Râǵân. im CKDa. — *b*) *Kampfer* Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. या N. pr. eines Flusses MBh. 3,11063. R. 4,44,30. Mârk. P. 59,7. VP. 170 (2, 2,32). die Bomb. Ausg. des MBh. und VP. wohl richtiger सीता. — 4) n. AK. 3,6,2,22. *a*) *Kälte, Frost* (Gegens. उष्ण und घर्म) AK. 1,1,2,20. Trik. 1,1,88. H. an. Med. उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम् M. 11,113. 12,77. R. 2,61,4. 100,7. 4,44,33. Suçr. 1,22,6. 112,20. Spr. (II) 1067. 2614. 4344. (I) 2739. 2987. fgg. 4854. 5073. Varâh. Bṛ. S. 21, 19. 35,14. °घ्न Kathâs. 25,92. 60,206. Râǵa-Tar. 3,163. तीव्र° 169. fg. 177. 5,195. 6,364. Bhâg. P. 11,29,27. Paṇḍar. I,436. Vop. 26,91. घृतीसानि शीतानि P. 2,1,6, Schol. घृति° Spr. (II) 2504. Mârk. P. 99,4. 9. — *b*) *kaltes Wasser:* निर्ह्लादिः शीतेन वार्यति TS. 6,2,9,7. *Wasser* Çabdam. im ÇKDa. — *c*) = त्वच (wohl *Cassia-Rinde*) Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. घृतिशीतम्, पानीयशीत, वक्रिशीत, मरुशीता, शैत्य.

शैतिक (von शीत) 1) adj. (f. शीतिका) *a*) *kühl* AV. 18,3,60. — *b*) *kalt —, ohne Feuer zu Werke gehend, träge, lässig* P. 5,2,72. AK. 2, 10,19. H. 383. an. 3,104. fg. Med. k. 164. Hall. 2,232. — *c*) = अस्वस्थ H. an. = नुस्थित Med. — 2) m. *a*) *die kalte Jahreszeit* gaṇa यावादि zu P. 5,4,29. H. an. Med. — *b*) *Scorpion* Çabdam. im ÇKDa. — *c*) *eine best. Pflanze,* = सप्तपर्णी Çabdam. im ÇKDa. — *d*) pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛ. S. 14,27.

शीतकर 1) adj. *kühlend* Suçr. 1,176,3. — 2) m. *der Mond (der Kaltstrahlige)* Varâh. Bṛ. S. 4,29. 5,36. 19,2. 28,19. Bṛ. 2,19. Kathâs. 108,98. घम्भः° *der Mond im Wasser, der sich im Wasser abspiegelnde Mond* Prab. 112,8.

शीतकाल m. *die kalte Jahreszeit* Suçr. 1,179,9. Ṛt. 4,7. Spr. (II) 1850. Varâh. Bṛ. S. 55,3.

शीतकिरण m. *der Mond (der Kaltstrahlige)* Varâh. Bṛ. S. 4,5. Bṛ. 25 (23),8. Verz. d. Oxf. H. 253,*a*,12. शीतोष्णकिरणौ *Mond und Sonne* Mâlav. 88.

शीतकुम्भ 1) m. *wohlriechender Oleander* Ratnam. 78. — 2) f. ई *Pistia Stratiotes Lin.* Ratnam. 82.

शीतकृच्छ्र m. *eine Kasteiung, bei der man nur Kaltes geniesst,* Mit. im ÇKDa.

शीतक्रिया f. *Abkühlung* Mâlav. 48,17.

शीतक्षार m. *gereinigter Borax* Râǵân. im ÇKDa.

शीतगन्ध 1) n. *weisser Sandel* Râǵân. im ÇKDa. — 2) f. या *Mimusops Elengi Lin.* Ausw. 51; vgl. सीधुगन्ध.

शीतगु m. *der Mond (der Kaltstrahlige)* Varâh. Bṛ. 2,1. 16. 9,1. 20, 5. Lagh. 2,10 in Ind. St. 2,285. Kathâs. 55,122.

शीतचम्पक m. = तर्पण und दिन H. an. 5,7. = घातपर्ण und दीप Med. k. 232. *Spiegel* (दर्पण) Çabdârthak. bei Wilson.

शीतज्वर m. *kaltes Fieber* Verz. d. B. H. No. 965. Kathâs. 25,89. 91. 66,95.

शीतता (von शीत) f. *Kälte:* सप्तसु Kân. 2,2,3. यद्या शीतोष्णयोर्मध्ये भवेन्नोष्ण न शीतता MBh. 3,12478. क्लिम्बान् शीततां त्यजेत् R. 2,112,18. सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम् Spr. 3333. (II) 4696. Vet. in L.A. (III) 19,16. Bhâg. P. 2,10,23.

शीतत्व (wie oben) n. dass. R. 5,36,21. Siç. D. 11,8.

शीतदीधिति m. *der Mond (der Kaltstrahlige)* Varâh. Bṛ. S. 24,31.

शीतदूर्वा f. = श्वेतदूर्वा Ratnam. 180. fehlerhaft für सित°.

शीतद्युति m. *der Mond (der Kaltstrahlige)* Verz. d. Oxf. H. 193,*a*,9.

शीतपर्णी f. *Gynandropsis pentaphylla Dec.* Ratnam. 239. °पर्णि des Metrums wegen Suçr. 2,367,19.

शीतपाकिनी f. = काकोली Çabdam. im ÇKDa. = मरुसमङ्गा Râǵân. im ÇKDa.

शीतपाकी f. Vop. 4,15. *eine best. Gemüsepflanze* MBh. 13,4365. *Sida cordifolia* Çabdam. im ÇKDa. Mad. in Nigh. Pa. = काकोली Ratnam. 308. = गुञ्जा *Abrus precatorius* Râǵân. im ÇKDa.

शीतपाक n. wohl *eine best. Pflanze* oder *Frucht* Suçr. 1,214,2.

शीतपाणि adj. *kaltstrahlig:* der Mond Suapv. Br. 5,9.

शीतपित्त n. *eine durch Erkältung entstandene Geschwulst wie von einem Wespenstich, von Fieber und Erbrechen begleitet,* Bhâvapr. 7. Çârṅg. Saṃh. 1,7,67. Verz. d. B. H. No. 967. 975. Verz. d. Oxf. H. 314,*a*,22. 316,*b*,9. 357,*a*,3 v. u. Wise 269.

शीतपुष्प 1) m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) Buch. — 2) f. या *Sida cordifolia.* — 3) n. *Cyperus rotundus* Râǵân. im ÇKDa.

शीतपुष्पक 1) m. *Calotropis gigantea* Râǵân. im ÇKDa. — 2) n. *Erdharz* Çabdam. im ÇKDa.

शीतपूतना f. N. einer die Kinder quälenden Unholdin MBh. 3,14461. Suçr. 2,384,8. 391,4. Çârṅg. Saṃh. 1,7,109. Verz. d. Oxf. H. 307,*b*,27.

शीतप्रभ m. *Kampfer* Râǵân. im ÇKDa.

शीतप्रिय m. = पर्पट Râǵân. im ÇKDa.

शीतफल m. *Ficus glomerata* und *Cordia Myxa Lin.* Rágán. im ÇKDa.

शीतबला f. = महाबला Rágán. im ÇKDa.

शीतभानु m. *der Mond (die kalte Sonne)* Çabdar. im ÇKDa.

शीतभीरु 1) adj. *gegen Frost empfindlich.* — 2) m. *Jasminum Zambac* AK. 2,4,2,30; vgl. शतभीरु.

शीतभीरुक 1) adj. *gegen Frost empfindlich.* — 2) m. *eine Reisart* Suçr. 1,193,7. Vicva. 1,6,2.

शीतभोजिन् adj. *Kaltes zu geniessen pflegend* P. 3,2,78, Schol.

शीतमञ्जरी f. *Nyctanthes arbor tristis Lin.* Rágán. im ÇKDa.

शीतमय (von शीत) adj. *kalt, kühl:* रस Harîv. 2478.

शीतमयूख m. 1) *der Mond (der Kaltstrahlige).* — 2) *Kampfer* (wie alle Wörter für *Mond*) H. an. 3,9. Med. kh. 19.

शीतमयूखमालिन् m. = शीतमयूख 1) Varâh. Bṛh. S. 8,24.

शीतमरीचि m. 1) *der Mond (der Kaltstrahlige).* — 2) *Kampfer* Çabdar. im ÇKDa.

शीतमूलक n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* Rágán. im ÇKDa.

शीतमेक m. *kalte Harnruhr* Çârṅ. Saṃh. 1,7,43. Bhâvapr. 7. heisst auch शेतमेक.

शीतमेकिन् adj. *an der kalten Harnruhr leidend* Karaka 2,4.

शीतय् (von शीत), °यति *abkühlen:* यः शीतयति शीतांशुर्लोकान्सर्वानिमान् Harîv. 14995.

शीतरम्य m. *Lampe* Gaṭâdh. im ÇKDa.

शीतरश्मि 1) adj. *kaltstrahlig;* davon nom. abstr. °त्व n. Çâk. 54. — 2) m. *der Mond* MBh. 6,485. 13,2645. Harîv. 6721. 14995. R. Gorr. 2,16,44. Spr. (II) 2468. Varâh. Bṛh. S. 4,22. 31. 96,15. Bṛh. 2, 2. °त्व m. *der Sohn des Mondes* d. i. *Mercur* Bṛh. S. 104,21.

शीतरसिक (von शीत + रस) adj. *den Geschmack von Kälte bewirkend* Suçr. 1,190,1.

शीतरुच् m. *der Mond (der Kaltstrahlige)* Çiç. 9,25.

शीतज्वर m. du. *kaltes und hitziges Fieber* TS. 2,5,2,3. 4.

शीतल (von शीत) gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97. 1) adj. (f. श्रा) *a) kühl, kalt, kühlend* AK. 1,1,2,21. Trik. 1,1,88. 3,3,408. H. 1385. an. 3,667. Med. l. 139. न्यग्रोध R. 2,55,22. वायु 3,22,15. Suçr. 1,45,4. जल 100, 18. 131,16. 164,6. 214,3. 2,45,2. क्रिया 1,38,2. मेक Çârṅ. Saṃh. 1,7, 43. Mṛicch. 49,25. Bṛ. 1,6. Mṛicch. 96. Raghu. 1,43. Çiç. 69. Spr. (II) 138. 748. 1067. 1463. 1742. 1850. 2053. 3078. 3260. 5241. fg. (I) 2719. 3185. Varâh. Bṛh. S. 27,8. 28,12. Kathâs. 53,160. Râja-Tar. 1,213. निर्दोषस्य हि तस्यासन्सर्वतः शीतला दिशः 4,86. Prab. 21,4. Verz. d. Oxf. H. 46,a,40. चन्दन° wie R. 3,79,6. Kathâs. 31,23. क्लिोत्मर्गादि° Mân. P. 104,28. शीतलतर Çiç. 9,4. स° 86. मति° Spr. (II) 4245. Râja-Tar. 6,19. अत्यन्त° Cit. beim Schol. zu Çiç. 86. सु° MBh. 3,2535. Kâraṇḍ. 2. Spr. (II) 451. 2215. — *b) leicht frierend, zum Frost geneigt* Verz. d. Oxf. H. 306,b,11. — *c) im Herzen abgekühlt, frei von Leidenschaft:* धीरस्य शीतलं चित्तम् Asiatic. 18,81. 1,16. 18,22. fg. (शीतलाच्छान्तरात्मनः zu lesen). सा शोकपरिक्षतक्रोधा तस्थौ प्रशमशीतला Râja-Tar. 6,294. — *d) Jmd kalt lassend, nicht näher berührend:* मरुदपि परुषः स्पर्शः शीतलम् Vikr. 90. — 2) m. *a) Wind* Trik. 3,3,408. H. ç. 171. — *b) der Mond* Çabdar. im ÇKDa. — *c)* Bez. verschiedener *kühlender* Pflanzen und Stoffe: = श्रश्वत्थपर्णी AK. 2,4,8,15. Med. = तालपर्णी H. an. *Cordia Myxa Lin.* Çabdar. im ÇKDa. *Michelia Champaka* (चम्पक) *Lin.* Rágán. im ÇKDa. *eine Art Kampfer* und *das Harz der Shorea robusta* ebend. — *d) eine best. Begehung beim Eintritt der Sonne in den Widder* Çabdar. im ÇKDa. — *e)* N. pr. des 10ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 27. H. an. — 3) f. श्रा *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Pistia Stratiotes Lin.* Çabdar. im ÇKDa. = कुटुम्बिनी und श्रारामशीतला Rágán. im ÇKDa. — *b) Sand* Rágán. im ÇKDa. — *c) die Göttin der Blattern* Wilson, Sel. Works 2,21. °पूजा 194. °षष्ठी 192. fgg. °व्रत Verz. d. B. H. No. 1209. Verz. d. Oxf. H. 284,b,46. °स्तोत्र Verz. d. Kop. H. 3,b. — 4) f. ई *Pistia Stratiotes Lin.* Ratnam. 82. — 5) n. *a) Kälte* Çabdar. im ÇKDa. सुशीतले Spr. (II) 1366. — *b)* (nach H. an. masc.) Bez. verschiedener *kühlender Stoffe: Sandel; grüner (schwarzer) Eisenvitriol; Erdharz* H. an. Med. *die Wurzel von Andropogon muricatus* Çabdar. im ÇKDa. *Perle* und = पद्मक Rágán. im ÇKDa. — Vgl. श्रारामशीतला und रस°.

शीतलक (von शीतल) 1) m. *eine best. Pflanze,* = महुवक. — 2) n. *eine weisse Lotusblüthe* Rágán. im ÇKDa.

शीतलच्छद m. *Michelia Champaka* (चम्पक) *Lin.* Rágán. im ÇKDa.

शीतलजल n. *Lotusblüthe* Rágán. im ÇKDa.

शीतलता (von शीतल) f. *Kälte:* वह्निः शीतलतामायाति पस्येच्छया Spr. (II) 545.

शीतलत्व (wie eben) n. = शैत्य Rágán. im ÇKDa.

शीतलप्रद m. *Sandel* Çabdârthak. bei Wilson.

शीतलवातक m. *eine best. Pflanze,* = श्रश्वत्थपर्णी Çabdar. im ÇKDa. Vgl. शीतल und वातक.

शीतलस्वामिन् m. = शीतल 2) *e)* Çatr. 10,312.

शीतलीकर् (शीतल + 1. कर्) *abkühlen* Daçar. 156,9. Lalit. ed. Calc. 336,7.

शीतलीजटा f. *eine best. Pflanze;* s. कालानुशारिवा 2).

शीतलीभू (शीतल + 1. भू) *sich abkühlen, kalt werden* Kathâs. 124,139.

शीतवती s. मल्ला°.

शीतवल्क m. *Ficus glomerata* Rágán. im ÇKDa.

शीतवह् adj. (f. श्रा) *kaltes Wasser führend:* नदी R. 2,49,10.

शीतवातोज्ज्वेतालो f. N. einer die Kinder quälenden Unholdin Harîv. 9542. Vgl. शीतपूतना.

शीतवीर्य adj. *eine kühlende Wirkung äussernd, kühlend:* चन्द्रगभस्तयः Harîv. 8724.

शीतवीर्यक m. *Ficus infectoria Willd.* Rágán. im ÇKDa.

शीतशिव 1) m. *Anethum Sowa* oder *eine andere Anisart* AK. 2,4, 2,23. Med. v. 64. Suçr. 1,46,9. 146,2. 157,10. fg. 2,79,1. 101,15. 285, 18. *Mimosa Suma* (शमी) Roxb. Med. — 2) f. श्रा *eine Anisart* (मिश्रेया) Rágán. im ÇKDa. *Mimosa Suma* (शमी) Roxb. Ratnam. im ÇKDa. — 3) n. *a) Erdharz* AK. 2,4,4,10. Med. — *b) Steinsalz* AK. 2,9,42 (सितशिव). H. 942. Med.

शीतशूक m. *Gerste* Çabdârthak. bei Wilson. Vgl. सितशूक.

शीतशैल m. = शीताद्रि Kâlâdâsa 1,53.

शीतसंस्पर्श adj. *kühl anzufühlen:* वायु R. 3,22,15.

शीतसह् 1) adj. *Kälte vertragend.* — 2) m. *ein best. Baum,* = पीलु

Rágan. im ÇKDa. — 3) f. या *Vitex Negundo Lin.* und = वासन्ती Rágan. im ÇKDa.

शीतह्रद *adj. kühl wie ein Teich* AV. 6,106,2.

शीतांशु (शीत + अंशु) 1) adj. *kaltstrahlig:* der Mond MBu. 1,1145. R. 1,38,17 (36,17 Gorr.). Davon nom. abstr. °ता f. MBu. 1,4162. 3, 15100. °त्व n. 9,2032. — 2) m. *a) der Mond* H. 105, Schol. Halây. 5, 70. MBu. 3,2003. R. 5,11,4. 7,23,4,20. Vaitân. Bḍh. S. 4,25.27. 17,6. Bḍh. 6,9. Verz. d. B. H. No. 835. Spr. (II) 2322 (doppelsinnig). 3242. Kathâs. 59,3. 62,39. Gîr. 9,10. Mârk. P. 99,4. Râga-Tar. 2,10. Dhûrtas. 67,18. — *b) Kampfer* (wie alle Wörter für *Mond*) Râgan. im ÇKDa. °तैल *Kampferoel* ebend.

शीतांशुमत् (von शीत + अंशु) m. *der Mond* R. Gorr. 2,88,3.

शीताङ्ग (शीत + 3. अङ्ग) 1) adj. (f. ई) *kaltgliederig* so v. a. *gefühllos* Suçr. 1,279,2. — 2) m. *eine Art Fieber* Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 758. — 3) f. ई *eine best. Pflanze,* = कृष्णपदी Râgan. im ÇKDa.

शीतातपत्र (शीत - आ° + त्र) n. *ein Schirm gegen Kälte (Regen) und Hitze (Sonnenschein)* Vaitân. Bḍh. S. 73,6.

शीताद् (wohl शीत + अद्) m. *eine best. Krankheit des Zahnfleisches, Scorbut* Wise 305. Bhâvapr. 7. Suçr. 1,303,3. 15. 2,126,1.

शीताद्रि (शीत + अद्रि) m. *das Schneegebirge, der Himálaja* Çabdâmbar. bei Wilson. Kâlâkâra 1,53.

शीतान्त m. N. pr. eines Berges VP. 2,2,25. Mârk. P. 55,17. 56,6. falschlich शीतार्त 55,4.

शीतापह्ला f. *eine best. Pflanze,* = महाममङ्गा Râgan. im ÇKDa.

शीतार्त 1) adj. *von Kälte gequält* Gaṇâou. im ÇKDa. Kathâs. 25,91. — 2) m. Mârk. P. 55,4 fehlerhaft für शीतान्त.

शीतालु (von शीत) adj. *gegen Kälte empfindlich, frostig; frierend* P. 5,2,122, Vârtt. 7. Gaṇâou. im ÇKDa. Vaitân. Bḍh. 17,10. किं शशाङ्कस्य शीतालोः Spr. (II) 882.

शीताश्मन् m. *der Mondstein* (चन्द्रकान्त) Râgan. im ÇKDa.

शीतिकावत् adj. f. °वती *kühl* AV. 11,3,60. Vgl. शीतिका unter शीतक.

शीतिमन् (von शीत) m. *Kälte* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,122.

शीतीकर् (शीत + 1. कर्) *abkühlen:* °कृत्वा R. ed. Bomb. und Scht. 2,71,7. °कृत्य Gorr. 73,6.

शीतीकरण (von शीतीकर्) n. *Abkühlungsmittel* Suçr. 1,171,20.

शीतीभाव (von शीतीभू) m. 1) *das Kühlwerden, Abkühlung* Nir. 1,9. — 2) *das Erkalten im Herzen, vollständige Beruhigung des Gemüthes, die Erlösung auf Erden* Taitt. 1,1,133. शितीभाव Lalit. 290. die gedr. Ausg. liest नशीति भावम्, was durch नङ्क्षति भावम् (?) erklärt wird.

शीतीभू (शीत + 1. भू) *kalt werden:* Pass. मेदका: Suçr. 1,161,18.

शीतेतर (शीत + इतर) adj. *heiss:* °रांशु m. *die Sonne* H. 93, Schol.

शीतेषार्चिस् m. dass. Râga-Tar. 2,10.

शीतेषु (शीत + इषु) m. *der kalte Pfeil,* Bez. eines mythischen Geschosses R. 1,29,19. falschlich शितेषु 32,18.19 (die ed. Bomb. 30,19. fg. auch hier शीतेषु).

शीतोत्तम n. *Wasser (der beste kalte Stoff)* Çabdar. im ÇKDa.

शीतोद (शीत + उद्) 1) n. N. pr. eines Sees VP. 169 (der Text 2,2, 24 घसितोद्). Mârk. P. 55,3. 56,14. — 2) f. या N. pr. eines mythischen Flusses Kathâs. 18,334. 350 (hier शितोदा gedr.).

शीतोपचार (शीत + उ°) m. *eine Kur mit kalten Mitteln* Pariâay. 43,9.

शीतोष्ण (शीत + उष्ण) 1) adj. (f. या) *kalt und warm:* शीतोष्णा यवः समानीय Âçv. Çr. 6,9,1. Gobh. 1,17,6. 17. 3,8,9. Suçr. 1,13,4. °वर्ष 19,10. °वायव: R. Gorr. 2,33,10. Ind. St. 2,258. °किरणौ *so v. a. Mond und Sonne* Mâlav. 88. नाति° Ragh. 4,3. — 2) f. या N. pr. einer Unholdin; so ist wohl Wilson, Sel. Works 2,232 st. शीलोष्णा zu lesen. — 3) n. sg. oder du. *Kälte und Hitze* P. 2,4,18, Schol. sg. Spr. (II) 4974. du. 1687. MBu. 3,12037. 12478. im comp. Bhag. 2,14. R. 2,44,9. Vaitân. Bḍh. S. 46,39. Ind. St. 1,401,3. Bhâg. P. 3,9,3.

शीतोष्म oder शीतोष्मन् (शीत + ऊ°) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 240,a. शै° v. l.

शीत्कर् und सीत्कर् *den Laut* çît oder sît *hervorbringen;* insbes. *vom geräuschvollen Beben der Lippen geschlechtlich aufgeregter Weiber:* स्रस्तता वपुषि मोलनं दृशोर्मूर्छना च रतिलाभलक्षणम् । ब्रेषयेत्स्वप्नघनं मुहुर्मुहुः सीत्करोति गलगद्गदाकुला ॥ Ratirahasya bei Mallin. zu Kir. 9,50. Gîr. 4,19. °कृत n. *der Laut* çît oder sît Spr. (II) 1913. 2302. Kir. 9,50. Verz. d. Oxf. H. 213,b,39. पुटकैश्चासुसीत्कृतैः Râga-Tar. 1, 213. als *Beifallsbezeigung* H. 1403.

शीत्कार und सीत्कार m. = शीत्कृत, सीत्कृत (s. u. शीत्कर्) Taitt. 3,3,76. Spr. 2990. 3160. Gîr. 12,16. °शीकारा: aus Gaṇeça's Rüssel Kathâs. 1,3. 109,1. नशीत्कारमाननम् Vish. 103. — MBu. 6,4389 fehlerhaft für शीकर्, wie die ed. Bomb. liest.

शीत्कारिन् und सीत्कारिन् adj. *den Laut* çît oder sît *hervorbringend:* वक्त्र Spr. (II) 3801.

शीत्कृतिन् und सीत्कृतिन् (von °कृत) adj. dass. Naish. 2,62.

शीर्न (partic. von श्रि; vgl. शीत) 1) adj. *geronnen, dick geworden, gefroren* P. 6,1,24. Vop. 20,90. fg. H. 1494. Halây. 2,121. = मूर्छ (wohl fehlerhaft für मूर्त) H. an. 2,288. Med. n. 21. घृत, पयागू P., Schol. Vop. n. *Gefrorenes, Eis* VS. 25,9. — 2) m. = घसगर *Boa* H. an. Med.; vgl. शीर.

शीपल्य adj. *mit Çipâla genannten Pflanzen besetzt:* स्थावरा या: शीपल्यास्तास्वप्स्वेषु: Satyâr. Bḍh. 3,1. शैवल्या: v. l.

शीपाल 1) m. oder n. *Blyxa octandra Rich.* (eine gewöhnliche Wasserpflanze): उद्र: शीपालमिव वार्ते आजतु RV. 10,68,8. Âçv. Gṛhy. 2, 8,14. 4,4,8. — 2) f. या *ein mit diesen Pflanzen besetztes Wasser:* मधु पर्वजी शीपाला शमाल्ले घस्तु AV. 6,12,3. — Vgl. शैवल, शैवाल.

शीपुंड m. von unbekannter Bed. AV. 6,127,2.

शीफर adj. = स्फीत und स्फ्य Âçvalâyana bei Wilson, Daçak. 50. घृतिगात्रचित्रोपचारशीफरो रतिप्रबन्ध: *reizend* Daçak. 50,3.

शीफालिका f. = शेफालिका Bhâr. zu AK. 2,4,3,31 nach ÇKDa.

शीभ्, शीभते Dhâtup. 10,20 (कत्थने).

शीभम् adv. *rasch, schnell:* प्र वात शीभमाशुभि: RV. 1,37,14. 3,33, 12. 10,14,2. AV. 3,13,2. 5,20,7. 13,2,2. TS. 7,4,44,1. Kâṭh. 29.

शीभव m. = शीकर Çabdar. im ÇKDa.

शीभ्य (vgl. शीभम्) 1) adj. *rasch fahrend* VS. 16,21. — 2) m. *Stier* und ein N. Çiva's Çabdârthar. bei Wilson.

शीम s. दु:° und सु°.

शीर् Uṇâdi. 2,13. 1) adj. *etwa scharf, spitz* (von 2. शी) Nâigh. 4,1.

Nir. 4,14. (अग्निम्) शीर्षे पावकशोचिषम् RV. 3,9,6. 8,43,31. 91,11. 10, 21,1. — 2) m. *Boa* (सर्पराज) Çabdar. im ÇKDa. Paṇḍat. 203,6.

शीर्षशोचिस् adj. = तिग्मशोचिस्. Agni RV. 8,60,10. 14.

शीर्षिन् m. *eine best. Pflanze*, = कृष्णिका Riçân. im ÇKDa.

शीर्षा 1) adj. s. u. 1. शॄ. — 2) n. *ein best. Parfum*, = स्थौणेयक Buḍḍhp. im ÇKDa.

शीर्णाल (von शीर्ण) n. *das Morschsein:* वितानस्य Mṛicch. 92,5.

शीर्णपालाशा f. *Hemionitis cordifolia Roxb.* Çabdaṇ. bei Wilson, fehlerhaft शीर्णमालाशा ÇKDa. nach ders. Aut.

शीर्णपत्र m. N. verschiedener Pflanzen: *Pterospermum acerifolium Willd.* Çabdaṇ. im ÇKDa. *eine Art* Lodhra (पठिकालोध्र) und *Azadirachta indica Juss.* Riçân. im ÇKDa.

शीर्णपर्ण 1) m. *Azadirachta indica Juss.* Riçân. im ÇKDa. — 2) f. ई *eine best. Pflanze* Kauç. 31 (शीर्षपर्णी die Hdschrr.).

शीर्णपाद् m. ein N. Jama's (*wunde Füsse habend*) Trik. 1,1,71. Vgl. शीर्णाङ्घि.

शीर्णपुष्पिका f. *Anethum Sowa Roxb.* Çabdaṇ. im ÇKDa.

शीर्णवृन्त m. (*die Pflanze*) und n. (*die Frucht*) *Wassermelone* Çabdaṇ. im ÇKDa. Sucr. 1,216,14. 217,1. Vicva. 1,6,91.

शीर्णाङ्घि und शीर्णाङ्घ्रि m. = शीर्णपाद् H. 184.

शीर्ति (von 1. शॄ) f. *das Brechen* Kâṭy. 11,5. Sharv. Bh. 3,8.

शीर्य (wie eben) adj. *zerbrechlich, leicht reissend:* °वल्कल Gobh. 1, 5,21. शीर्य° *unzerstörbar* Çat. Br. 14,6,9,28. 11,6. 7,2,27.

शीर्यिर् (wie eben) Uṇâdis. 4,54. adj. = क्षिप्र Uṇâdis.

शीर्ष 1) n. = शिरस्, शीर्षन् *Haupt, Kopf* Vop. 3,38. 39. AK. 2,6,2, 46. H. 367. Halâ. 2,263. शीर्षम् AV. 4,34,1. उच्छिष्टो न स्पृशेच्छीर्षम् MBu. 13, 5022. चालयते R. 1,41,15. 4,20,20. 5,25,16. 7,7,42. Varâh. Bṛ. S. 53,100. 77,3. Mudr. ST. 4,298,1 v. u. Bhâg. P. 10,63,35. Lalit. ed. Calc. 377,15. अभिशोका वर्तयेच्छीर्षम् *so v. a. erkläre sich zur Strafe bereit* (wenn der Angeklagte durch ein Gottesurtheil gereinigt wird) Vishṇu in Z. d. d. m. G. 9,679. शीर्षे loc. AV. 7,56,6. सूर्यायाः शीर्षे केशाँ अकल्पयत् 14,1,35. Riçja-Tân. 7,1722. Verz. d. Oxf. H. 200,b,5. हे शीर्षे RV. 4,58,3. शीर्षणोः MBu. 3,183. शीर्षाणाम् Harîv. 10440. शीर्षाणि und शीर्षा haben wir unter शीर्षन् gestellt. वस्तिशीर्षम् *Blase und Kopf* Jâtâ. 3,98. °स्नेह Bhâg. P. 4,7,36. यच्चो पादस्य शीर्षणे *am Oberende* (der Bettstelle) *befindlich* Varâh. Bṛ. S. 79,29. शीर्षोपेत *mit Köpfchen versehen* (Buchstaben) Spr. 2991. घनशीर्ष *oberste Spitze* Harîv. 9296. रण° *Vordertreffen* R. 5,33,4. Häufig am Ende eines adj. comp. (f. घा und ई): अघः° MBu. 13,3478. ताम्र° R. 1,2,15. नत° 3,32,16. बक्र° (so ed. Bomb.) MBu. 1,3184. मनुष्य° (घट) R. 6,80,15. मुण्ड° 5,27,19. दीर्घ° AV. 4,6,1. MBu. 1,2162. प्रत्यक्शीर्षा Kauç. 44. Auch in Ableitungen von Zusammensetzungen auf शिरस् P. 6,1,62 (z. B. स्थौलशीर्ष von स्थूलशिरस्). — 2) m. N. pr. eines Berges Wilson, Sel. Works 2,24. 27. — 3) f. घा *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ – – – Colebr. Misc. Ess. 2,159 (II,8). — Vgl. अनस्त°, अप°, अवाक्°, कपि°, तीर°, गया°, गो°, चारु°, त्रि°, दश°, द्रुम°, द्वि°, पत्त° (उरग MBu. 3,4008. 4,753. R. 6, 79,67. Bhâg. P. 4,25,21. पद्मा: MBu. 6,87), पशु°, पुरुष°, पूर्व°, मर्कट°, महा°, मृग°, रथ° (auch R. 6,27,31), वज्र°, वात°, वेद°, शङ्ख°, शत° (शालय: MBu. 6,87), सप्त°, शैर्षायण, शैर्ष्य.

शीर्षक (von शीर्ष) 1) m. *der Dämon* Râhu Çabdar. im ÇKDa. — 2) n. a) *Kopf* Bhâg. P. 3,13,36. Paṇḍar. 3,4,16. *Spitze:* सस्य° H. 1181. — b) *Helm* AK. 2,8,2,31. H. 768. Hâr. 73. — c) *Schädel* Riçân. im ÇKDa. — d) *Agallochum* H. ç. 129. — e) *die Strafe, zu der sich Jmd bereit erklärt, wenn ein Gottesurtheil den Gegner reinigt*, Jâtâ. 2,96. °स्थ *sich zu einer solchen Strafe bereit erklärend* 95; vgl. वर्तय् caus. 8). — Vgl. घ°, घव°, उच्छीर्षक, चित्र°, त्रि°, धान्य°, पुरुष°, रक्त°, मवणशीर्षिका, सम°, स्थूल°.

शीर्षकपाल n. *Schädel* AV. 15,18,4. Çat. Bṛ. 3,3,2,23. 7,3,2,25. TS. 6,3,2,1. Taitt. Up. 1,6,1. Kauç. 82.

शीर्षक्ति f. *Kopfleiden, Kopfschmerz* AV. 1,12,3. 3,8,1. 12,2,19. fg. 5,23.

शीर्षक्तिमत् (von शीर्षक्ति) adj. *an Kopfweh leidend* TS. 2,6,2,2.

शीर्षघातिन् nom. ag. *Kopfabschläger, Scharfrichter* P. 3,2,51. gaṇa ब्राह्मणादि zu 5,1,124. — Vgl. शैर्षघात्य.

शीर्षच्छेद् m. *das Abschlagen des Kopfes, Köpfen* P. 5,1,65. राज्ञः शीर्षच्छेदो ऽभवत् किम् Spr. (II) 3002. — Vgl. शैर्षच्छेदिक.

शीर्षच्छेदिक adj. falsche v. l. H. 373 für शैर्ष°.

शीर्षच्छेद्य (von शीर्षच्छेद्) adj. *der geköpft zu werden verdient* P. 5,1, 65. AK. 3,1,45. H. 373. Râgat. 18,51. शीर्षच्छेद्यः स ते राम *du musst ihm den Kopf abschlagen* Uttarar. 30,11 (40,2). शीर्षच्छेद्यं त्वां करोमि *so v. a. ich werde dir den Kopf abschlagen* Bhatṭ. 5,45.

शीर्षण्णी f. = शीर्षण्य *Kopfstück eines Ruhebettes* Varâh. Bṛ. S. 79,21.

शीर्षण्य (von शीर्षन्) 1) adj. P. 6,1,61. a) *am Kopf befindlich:* रशना RV. 1,162,2. यक्ष्म 10,163,1. कृमि AV. 2,31,4. 9,8,1. 14,2,63. प्राणाः TS. 5,1,2,1. 7,2,10,4. माहत Çrâut. 10 in Ind. St. 4,107. स्तुका: Kâṭy. Çr. 5,4,17. खानि Gotama bei Kull. zu M. 2,52. 60. केशाः P. 6,1,61, Vartt. m. nach AK. 2,6,2,49. H. 570. an. 3,509. fg. und Med. j. 107. fg. *sauberes —, schönes Haar.* — b) *an der Spitze stehend, der erste* Kâṭy. 8,1 bei Weber, Nax. 2,386. यच्छीर्षण्यमाचरितं तदनुवर्तते लोकः Bhâg. P. 5,1,14. 1,14,22 (am Ende eines adj. comp.). — 2) n. a) *Kopfstück eines Ruhebettes* Ait. Br. 8,5. 12,17. Çâṅkh. Çr. 17,2,3. Kaush. Up. 1,3. — b) *Helm* AK. 2,8,2,32. H. 768. H. an. Med. Hâr. 73.

शीर्षण्यवत् (wie eben) adj. *ein Haupt habend* (Gegens. अशीर्षक) AV. 10,1,2. TS. 5,4,11,1. 7,5,19,1. 25,1. Çat. Br. 14,2,2,45.

शीर्षतस् (von शीर्षन्) adv. *vom Haupt an, mit dem Kopf beginnend, häuptlings; zu Häupten, auf dem Kopf, vorn* AV. 8,131,1. °तो ज्ञातः RV. 10,88,16. Çat. Br. 3,4,4,19. TS. 2,1,4,5. शीर्षत ओषधयः फलं गृह्णन्ति 6,3,4,3. शीर्षतो ग्रसते । शीर्षतो ह्यन्नमद्यते TBr. 1,3,5,7. Çat. Br. 3,1,2,9. 3,3,11. 3,4,1,14. पादौ कृत्वाव शीर्षतः *auf die Stelle, wo der Kopf liegen müsste*, R. 1,46,16.

शीर्षन् n. ved. = शिरस्, शीर्ष *Haupt, Kopf* P. 6,1,60. यत्ते शीर्षो दौर्भाग्यम् Schol. RV. 1,116,12. 164,7. भरति शीर्षणि क्रतुम् 2,10,2. शिप्राः शीर्षसु वितताः 5,54,11. 57,6. घर्मं शीर्षा ववक्रुषे 6,62,10. 7,18,19. 8, 63,13. 10,27,13. AV. 1,14,3. 6,49,2. 10,2,6. Çat. Br. 1,6,3,2. 6,2,1, 7. 11. शीर्षण्यये पलितो भवति 11,4,1,6. पशूनाम् TS. 5,2,2,5. Ait. Br. 1,17. शीर्ष्णे शीर्ष्णे विभक्ता विभक्ता RV. 7,18,21. 1,132,2. Âçv. Gṛhj. 1,6,3. Kâṭy. Çr. 7,2,33. शीर्ष्णि कर् 9,4. शीर्ष्णा योनिं कृत्ति *auf dem*

Kopfe trägt man den Samen (auf's Feld) Çat. Br. 3,3,3,17. TS. 5,1,9, 4. Kâṭh. 24,6. — शीर्षणि Bhâg. P. 5,25,2. कुडुरःकण्ठशीर्षणि 4,23, 14. शीर्षन् 5,18,23. 10,88,35. शीर्षाणि MBh. 13,2411. Bhâg. P. 6,9,4. शीर्षभिः 9,16,17. Am Ende eines adj. comp.: सं° TS. 5,5,6,3. सप्तं° (f. °शीर्ष्णी) ṚV. 3,5,5. धी 10,67,1. सर्क Vâlakh. 3,4. शतं° Çat. Br. 9,1, 4,6. 7. 2,3,22. सहस्रं° ṚV. 10,90,1. Sarvop. Br. (nom. °शीर्षाः falsch). MBh. 3,13315. Bhâg. P. 2,1,28. शीर्ण° 3,18,5. द्राघ° 4,7,3. अवनत° 5,3,4. विवक्ण° 9,19. — Vgl. अ°, अप°, त्रि°, पञ्च°, ब्रह्म°, मृग°, रुरु°, वि°, शतेक°, कपिशीर्ष.

शीर्षपट्ट m. *Kopfbinde* Kâmâs. 13,190.

शीर्षपर्णी s. शीर्णपर्णी.

शीर्षबन्धना f. *Kopfbinde* MBh. 8,1489.

शीर्षभार m. *Kopflast* gaṇa भस्त्रादि zu P. 4,4,16. — Vgl. शीर्षेभार.

शीर्षभारिक adj. (f. ई) *eine Kopflast tragend* ebend. — Vgl. शीर्षेभारिक.

शीर्षभिद्य n. *das Kopfspalten* AV. 19,5,30.

शीर्षमाय m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu P. 2,4,63.

शीर्षरत्न n. *Helm* Hit. 73.

शीर्षरत्नक n. dass. H. an. 3,509.

शीर्षरोगिन् adj. *Kopfweh bewirkend* MBh. 5,769 = 1327 (vgl. 2,2138).

शीर्षवत् (von शीर्ष oder शीर्षन्) adj. *ein Haupt habend:* सहस्रानन° so v. a. सहस्राननवत् und सहस्रशीर्षवत् Bhâg. P. 2,5,35.

शीर्षविरेचन n. = शिरोविरेचन Kâraka 1,2.

शीर्षव्यथा f. *Kopfweh* Râjat.-Tar. 4,14.

शीर्षशोक m. *Kopfleiden* AV. 19,39,19.

शीर्षकार्य adj. *was sich auf dem Kopfe tragen lässt* (Gegens. अनोवाह्य) TS. 6,1,9,4. Kâṭh. 24,6.

शीर्षात (शीर्ष + अत) *Nähe des Kopfes:* शीर्षाते so v. a. *unter dem Kopfkissen* Kâmâs. 3,32. शीर्षासात् 42,65.

शीर्षामय (शीर्ष oder शीर्षन् + आ°) m. *Kopfleiden* AV. 5,4,10. 9,8,1.

शीर्षायण m. patron.; pl. Pravâṇâdis. in Verz. d. B. H. 39,12. wohl fehlerhaft für शैर्षायण.

शीर्षावशेषीकर् (शीर्ष - अवशेष + 1. कर्) von *Jmd nur den Kopf übrig lassen:* दानवपतिः °कृतः so v. a. राहुः Spr. 3159.

शीर्षि in Ableitungen von Zusammensetzungen auf शिरस्: z. B. in कस्तिशीर्षि von कस्तिशिरस् P. 6,1,62, Schol.

शीर्षिक s. अ°.

शीर्षेभार (शीर्षे loc. von शीर्ष + भार) m. = शीर्षभार gaṇa भस्त्रादि zu P. 4,4,16.

शीर्षेभारिक adj. (f. ई) = शीर्षभारिक ebend.

शीर्षोद्य (शीर्ष + उ°) adj. *mit dem Kopfe aufgehend;* so heissen in der Horoskopie *die Zwillinge, der Löwe, die Jungfrau, die Wage, der Scorpion und der Wassermann* Varâh. Bṛh. 1,10.

1. शील्, शीलति Dhâtup. 15,16 (समाधौ). शीलय् s. bes.

2. शील् m. N. pr. eines Mannes Inschr. im Journ. of the Am. Or. S. 5,344,6.

1. शैील Uṇâdis. 4,28 (oxyt.) m. (dieses nicht zu belegen) und n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. Sidd. K. 250,b,8. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *Gewohnheit, angeborene oder anerzogene Art und Weise zu sein, Charakter* AK. 3,4,6,13. 28,202. H. 844. 1377. an. 2,512. Med. l. 52. Hall. 2,241. 3,42. VS. 30,14. तत्परुच्छेयस्य शीलम् Nir. 10,42. पित्र्यं वा भजते शीलं मातुर्वोभयमेव वा M. 10,59. संश्रयत्येव तच्छीलं नरो ऽल्पमपि वा बहु 60. स्मृतिशीले 2,6. श्रुतशीले 11,22. Jâtâ. 3,44. कौमारिकाणां शीलेन वध्याम्यहम् MBh. 1,4054. तुल्यशीलवयोयुक्ता 3,2677. 13, 6626. शरीरशीलयोर्यस्य प्रकृतेर्विकृतिर्भवेत् Sûçr. 1,112,12. मनुष्याकृतिशीलयुक्त Varâh. Bṛh. 24,2. सज्ञातकुल° adj. Spr. (II) 106. fg. 3832. एकोदरसमुद्भूताः — न भवन्ति समाः शीले 1423. मम शीलं जिज्ञासुः Kathâs. 21,93. Bhâg. P. 3,7,29. यास्ते शीलमनुव्रताः 14,13. यच्छीलमनुवर्तिनम् 45. साधुः कर्मतः शीलतः Daçak. 70,13. Mâlav. P. 69,21. सम° adj. MBh. 13,6754. Bhâg. P. 1,2,27. तुल्य° adj. 9,4,39. समान° adj. 3,21,15. Râjat.-Tar. 1,307. सच्छील Varâh. Bṛh. 24,2. कल्याण° adj. MBh. 13, 518. मृदु° adj. R. 2,38,9. मृदुद्र° adj. 14. शुद्ध° adj. Çâk. 190. सनर्घ्य° adj. Râgat. 5,2. सत्य° adj. R. 2,54,26. असत्य° adj. Spr. (II) 751. स्पृहणीय° adj. Bhâg. P. 3,15,25. भगवत्प्रतिकूल° adj. 30. Ueberaus häufig in comp. mit dem, was Einem zur *Gewohnheit* geworden ist, wozu man eine besondere Neigung oder Fähigkeit besitzt P. 3,2,1; Vârtt. 6 (mit dem ursprünglichen Tone des ersten Wortes). स्नानशीलादिगुणभूषित Râjat.-Tar. 5,469. meistens am Ende eines adj. comp.: सत्यसत्य° Âçv. Çr. 2,1,5. अश्व°, अस्त्र° *Läufer, Spinler* Âpast. 2,16,12. क्रोध° Spr. (II) 3315. Varâh. Bṛh. S. 46,76. क्षमा° MBh. 11,271. Pâṇkat. 2,3, 39. Sarvadarçanas. 44,1. विप्रसारण° Sûçr. 1,115,16. मिथुद्र° MBh. 4, 240. गायनाख्यान° 2264. स्तुति° R. 2,65,2. क्षेतुमेषणा° Kâm. Nîtis. 8,6. नियमव्रत° R. Gorr. 2,28,28. परिक्रम° Varâh. Bṛh. S. 69,34. क्रम° Kathâs. 114,65. fg. माया° Spr. (II) 4835. विकार° R. 7,11,42. स्वप्न° Varâh. Bṛh. S. 78,17. 94,12. पतिस्वप्न° Bhâg. 6,16. अभिवादन° Spr. (II) 504. पतिसंयम° 1551. 3639. (I) 5035. R. 5,19,22. 6,8,4. Gît. 6,5. Jogas. 2,18. Bhâg. P. 3,5,2. 4,13,4. 30,16. 5,20,31. Hit. 10,21. अगुण° *der keine Vorzüge besitzt oder der kein Verständniss für dieselben hat* Spr. (II) 2149. — 2) *Natur, Wesen* überh.: स्वप्रशीलतत्त्व R. 2,65,13. — 3) *gute Gewohnheiten, — Sitten, Ehrenhaftigkeit, ein edler Charakter* AK. 1,1,2,26. 2,4,28, 103. H. an. Med. ब्रह्मण्यता देवपितृभक्तता सौम्यता चयोपतापिता घनमूषता मृदुता चयारूप्यं मैत्रता प्रियवादित्वं कृतज्ञता शरण्यता कारुण्यं प्रशान्तिश्चेति त्रयोदशविधं शीलम् Hârîta bei Kull. zu M. 2,6. fünf bei den Buddhisten Köppen 1,444. 446. °पारमिता Lot. de la b. l. 547. त्रिषा शीलेन दमेन व्रतेन च दमेन च MBh. 3, 1306. R. 1,6,13. 2,33,13. 5,57,2. Spr. 2525. 2992. 4611. fgg. 5309. (II) 1006. 1735. 2351, v. l. 2780. 3221, v. l. 3389. 3825. 5247. Kathâs. 16,113. 20,117. °ज्ञ 38,65. Mâlav. P. 20,24. Râjat.-Tar. 1,348. 6,12. कुलशीलादिकम् Pañc. 22,10. fg. Bhâg. P. 2,7,46. 9,40. 4,12,46. सकललोकवल्लभतमं शीलम् Spr. 2765. शीलं प्रधानं पुरुषे 2993. °तुल्यं न भूषणम् (II) 292. शीलं हि विदुषां धनम् Kathâs. 5,98. °निधि MBh. 3, 2992. Bhâg. P. 4,13,21. °ज्ञाननिधि MBh. 1,3358. °वृद्ध 3,16677. संपन्ना चैव शीलतः M. 9,82. °संपन्न MBh. 1,6135. Spr. (II) 2284. 4116. Tattvas. 49. Bhâg. P. 4,12,12. Gobh. 2,4,6. Kauç. 67. Âçv. Gṛhy. 1,3,3. 4,7,2. शीलोपसंपन्न Spr. 3115. MBh. 3,2426. कुलशीलसमन्वित 2793. 2799. प्रतिलब्ध्य° adj. Bhâg. P. 3,16,7. साधोर्न तु स्थितानी तु शीले सत्ये श्रुते

स्थिते R. 2, 39, 24. शीलं संरक्ष्यम् Spr. (II) 321. शीलं रत्नं Kathâs. 13, 135. °वर्जिता R. 2, 37, 22. शीलेन विहीनः Spr. (II) 2464. Râga-Tar. 6, 328. हृदयं शीलं च पततोव मे R. 2, 71, 32. शीलं (विनश्यति) स्खलोपामनात् Spr. (II) 2991. °विघ्नकृत् Râga-Tar. 3, 496. न राजगुः °गुणाय वर्तते R. 5, 37, 30. गुणशीलतः Buâc. P. 4, 1, 64. vom *guten Charakter* einer Kuh 9, 4, 32. घ° n. *Unsittlichkeit:* घशीलं कस्य भूतये Kathâs. 4, 34. 17, 147. adj. *schlechten Gewohnheiten fröhnend, unsittlich* MBh. 12, 6619. R. 3, 40, 16. Kir. 11, 25. Mâlav. P. 20, 24. — 4) pl. Spr. (II) 4116 wohl fehlerhaft für शिल्प. — Vgl. अकर्म°, आर्ष°, किं° (auch Mâlav. P. 69, 29), तच्छील, तथा°, दान° (adj. auch Jâgñ. 1, 213. R. 2, 30, 8. 4, 44, 33), दुः°, दुःख° (auch Kumâras. 3, 7), धर्म° (adj. auch MBh. 4, 16. R. 2, 72, 24. 98, 19), पाप° (auch R. Gorr. 2, 11, 13. Kathâs. 17, 143), पुण्य° (MBh. 13, 323. R. Gorr. 2, 21, 3), प्रताप°, भद्र°, मङ्गा°, मोम°, यज्ञ°, यथा°, लज्जा°, वि°, विक्रम°, विलास°, वृष°, व्यय°, शान्ति°, सु° und शैली.

2. शील 1) m. *a) Boa* (सर्पराज) Çabdar. im ÇKDa.; vgl. शीर् und शीवन्. — *b)* N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8, 2172. eines Fürsten Târan. 2. 145. fg. 158. 279. Wassiljew 52. fg. — 2) f. घा N. pr. der Gattin Kaundinja's Tirthâbhiṣ. im ÇKDa. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 21. °भट्टारिका ebend. शीलभट्टारिका Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 9.

शीलक n. *Ohrwurzel* H. ç. 119.

शीलकीर्ति m. N. pr. eines Mannes Târan. 235.

शीलखण्डन n. *das Verletzen —, Aufgeben des sittlichen Wandels, — der Ehrenhaftigkeit* Pañkat. 46, 3 (ed. orn. 54, 13. fg.).

शीलता f. 1) = 1. शील 3): कुब्जपता शीलतया राजते Spr. (II) 2713. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 506, Çl. 16. — 2) nom. abstr. von einem auf 1. शील 1) ausgehenden adj. comp.: तुल्य° Mṛicch. 101, 19. सत्य° R. 1, 3, 9. शालीन° Uttarâs. 128, 7 (173, 4). त्याग° Spr. (II) 3862. दोषदुःख° Râgn. 3, 6. सदन° Suçr. 1, 312, 20.

शीलत्याग m. *das Aufgeben des sittlichen Wandels, — der Ehrenhaftigkeit* Kathâs. 13, 80.

शीलत्व n. = शीलता 2): नित्यस्वाध्याय° R. 2, 32, 18. धनुर्व्यायाम° R. Gorr. 2, 65, 18. दुःख° Suçr. 1, 192, 6.

शीलधर् 1) adj. *ehrenhaft* Buâc. P. 3, 14, 48. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 74, 35. fgg.

शीलन (von शीलय्) n. *das Ueben, Pflegen:* पुण्य° MBh. 12, 12086. *das Obliegen, Studiren:* वेत्रज्ञ° 9360. = गुणानां *Bestimmung des Werthes einer Lesart* Tarn. 2, 7, 4.

शीलपालित m. N. pr. eines Lehrers Târan. 198.

शीलभङ्ग m. *ein Bruch im sittlichen Wandel, — in der Ehrenhaftigkeit* Spr. (II) 321.

शीलभट्टारिका s. u. 2. शील 2).

शीलभद्र m. N. pr. eines Mannes Hiouen-thsang 1, 451. 2, 47. 78. 373. Vie de Hiouen-thsang 144. 146. 152. 163. 215. Târan. 205.

शीलभाज् adj. *ehrenhaft* Spr. (II) 3019.

शीलभ्रंश m. *Verlust der Ehrenhaftigkeit* Kathâs. 21, 114. 34, 19.

शीलय् (von 1. शील), °यति Daçak. 35, 26 (उपधारणे, nach Vop. अभ्यासे und अतिशयने). *zu thun pflegen, üben, fleissig anwenden, häufig geniessen, colere* Karaka 1, 5. पूर्वेण यामाविष्क्रमणप्रवेशनानि शीलयेत् Suçr. 1, 239, 12. शोधनम् Çiñkar. Sâh. 3, 4, 3. Vikr. 1, 7, 48. 65. फाणितम् 8, 41. घृतम् Mṛicch. 34, 19. नीलनिचोलम् so v. a. *tragen, anlegen* Gît. 5, 11. विद्याम् so v. a. *beherzigen* Çâk. zu Kâmâsûtra. 8. 73. *sich angelegen sein lassen, seine ganze Aufmerksamkeit auf Jmd richten:* देवयानीं कन्याम् MBh. 1, 3207. सोघमौलिम् Bhâmâsv. in Verz. d. Oxf. H. 130, *b. bewohnen* (vgl. सेव् und *colere*): गरुत्मन्तमपि शीलितम् Gît. 7, 4. सन्नलनलिनिदलशीलितशयन so v. a. *bereitet, zurechtgemacht* 9, 6. शीलित mit Präsensbedeutung Kâr. zu P. 3, 2, 188. Vop. 26, 131 (शिव so v. a. *cultus*). = चीर्ण Tarn. 3, 2, 16. — Vgl. शीलन.

— यति *im Uebermaass anwenden* u. s. w.: स्त्रैस्वस्तिं निर्वृतिं वा नैकमेवातिशीलयेत् Suçr. 2, 212, 17.

— घनु *es Jmd* (acc.) *nachthun, verfahren wie:* पूर्वं लीलानरवपुर्लोकमनुशीलयन् (कृष्णः) Buâc. P. 10, 23, 36. घत्रम् 11, 3, 32. — Vgl. अनुशीलन.

— परि *häufig geniessen, — anwenden, — gebrauchen:* तामुच्चलां गुणवतीं जगदीशभक्तिरत्नावलिं सुकृतिनः परिशीलयन्तु Verz. d. Oxf. H. 37, *a*, No. 90, Çl. 9. सद्वालिपरिशीलिता । कविकल्पलताप्येयममला परिशीलयताम् ॥ 211, *a*, No. 498, Çl. 6. केयं नो परिशीलितो (so ist zu lesen) गणपतिभट्टः so v. a. *studirt* 283, *a*, No. 661. विषयः परिशीलित उच्यते so v. a. *bewohnt* P. 4, 2, 52, Schol. घत्पेन्दुरेखपरिशीलितभालरेखा so v. a. *aufgetragen, angebracht* Kâdab. 7 bei Harr. 228. — Vgl. परिशीलन.

— सम् s. संशीलन.

शीलवत् (von 1. शील) 1) adj. *wohlgesittet, gutgeartet, ehrenhaft, einen edlen Charakter habend* MBh. 1, 1736. 3, 2446. 5, 696. R. Gorr. 1, 79, 16. 2, 1, 15. 74, 54. 3, 74, 10. Spr. (II) 1834. 2413. Râgn. 10, 71. Vaitân. Bpn. 13, 5. Mâlav. P. 72, 1. Buâc. P. 4, 2, 1. 22, 5. सु° dass. Mṛicch. 174, 7. मृत° (so ist mit der ed. Calc. zu lesen) so v. a. मृतवत् und शीलवत् M. 3, 27. वेदोविद्गर्ह्य° (das suff. gehört zu jedem einzelnen Worte) Sâm. D. 64. संविभाग° so v. a. संविभागशील adj. *der mit Andern zu theilen pflegt* Vaitân. Bpn. S. 68, 112. — 2) f. °वती N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 36, 38. fgg.

शीलविप्लव m. *das zu Schanden Werden der Sittlichkeit, — der Ehrenhaftigkeit* Kathâs. 13, 87. 29, 113. Râga-Tar. 3, 500.

शीलविलय m. dass. Spr. 2731.

शीलविशुद्धनेत्र m. N. pr. eines Devaputra (बोधिमण्डपरिपालक) Lalit. ed. Calc. 346, 12.

शीलवृत्त n. *Ehrenhaftigkeit und gutes Benehmen;* du. MBh. 13, 2339. sg. Spr. (II) 71. R. 1, 58, 20 (60, 23 Gorr.). 77, 24. °विद् 2, 113, 16.

शीलशालिन् adj. *sittlich, ehrenhaft* (von Personen) Buâc. P. 6, 5, 23.

शीलकर् m. N. pr. eines Mannes (*gute Sitten —, Ehrenhaftigkeit zu Schanden machend*) Kathâs. 58, 58.

शीलाढ्य (1. शील + घा°) adj. *ehrenhaft* (Person) Spr. (II) 4028.

शीलादित्य (1. शील + घा°) m. N. pr. verschiedener Fürsten Râga-Tar. 3, 330. Hiouen-thsang 1, 231. 2, 136. 163. Vie de Hiouen-thsang 161. 206. 215. Reinaud, Mém. sur l'Inde 142. fg. LIA. 2, 410. 740. 963. 3, 513. fgg. Ind. St. 3, 191. fg. — Vgl. शिलादित्य.

शीलाभट्टारिका s. u. 2. शील 2).

शीलिक (von 1. शील) adj. am Ende eines comp.: घतो ऽन्यायशीलिकः

der andere Brüche hat Gop. Br. 3, 18.

शीलिन् (von 1. शील) adj. gaṇa मुखादि zu P. 5, 2, 131. *sittlich, ehrenhaft* (von Personen) MBh. 13, 3662. घ° *unsittlich* Spr. (II) 1330, v. l. am Ende eines comp. (von °शील) P. 5, 2, 132. सम° *gleiche Gewohnheiten —, einen gleichen Charakter habend* MBh. 1, 876. मृदुसौम्य° R. 5, 89, 33. सत्य° *wahrhaftig, wahrheitsliebend* MBh. 4, 928. ब्राह्मण° *wie ein Brahmane sich benehmend* P. 5, 2, 132, Schol. चोर° Harîv. 11136. दान° *freigebig* MBh. 13, 6691. तपःस्वाध्याय° *so v. a. obliegend* 12, 7293. स्त्रीष्वनुत्तमभद्रेमलज्जासाधमशीलिनी *so v. a. verliebt, verschämt und schüchtern* Kathâs. 101, 169. धनुष्कोशमुमुह्य° (nach dem Comm. gehört das suff. zu jedem einzelnen Worte) Bâlar. P. 4, 24, 38.

शीली s. पाद°.

शीलेन्द्रबोधि m. N. pr. eines Mannes Târân. 320.

शीलोपदेशमाला f. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1, 283.

शीलोञ्छा f. als N. einer Unholdin Wilson, Sel. Works 2, 232 wohl fehlerhaft für शीतोञ्छा.

शीवन् (von 2. शी) Uṇâdis. 4, 113. 1) adj. am Ende eines comp. *liegend, ruhend;* s. उत्तान°, तत्य°, वक्ष°. — 2) m. *Bos* (बलवार) Uṇâdis. — 3) f. शीवरी *eine grosse Eidechsenart* (गोधा) Uṇâdis.

शीवल m. = शैवाल und शैलेय Med. l. 138.

1. शु, शौवति (गतिकर्मन्) Naigh. 2, 14. Dhâtup. 17, 76 (शव् गतौ; विकारे भ्वादौ Vop.). 22, 42, v. l. bei den Kamboǵa gebraucht Nir. 2, 2. 3, 18. 4, 13. Hierher (oder zu शा = शि; vgl. TBr. 1, 1, 3, 4. oder zu शम्) die Form शश्वत् zur Erklärung von शश्व *Pferd:* ततो ऽश्वः समभवच्छ-श्वत्मेध्यमभूत् Çat. Br. 13, 2, 3, 7.

2. शु adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. so v. a. क्षिप्रम् Naigh. 2, 15. Zur Etymologie gebraucht.

शुक्, शौकति (गतौ) Dhâtup. 5, 5.

शुक Uṇâdis. 3, 42 (oxyt.). 1) m. *a) Papagei* AK. 2, 5, 21. 3, 4, 28, 177. H. 1335. an. 2, 18. Med. k. 36. Hâlâs. 2, 93. 4, 53. तुण्डैरातामकुटिलैः पत्तैरुत्तिकोमलैः। त्रिवर्णशोभिभिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः॥ Kirâta. 2, 9. शुकेषु (मुकेषु AV.) मे रुरिमाणं रोपणाकामु दध्मसि RV. 1, 50, 12. VS. 24, 33. Śrâuty. Bh. in Ind. St. 1, 40. Kâuç. 10. M. 5, 12. 11, 124. MBh. 1, 2623. 12, 5307. 13, 264. fgg. 3838 (शक ed. Calc.). R. 2, 53, 22 (24 Gorr.). 3, 20, 21. Çiç. 1, 201, 19. Kîm. Nîtis. 7, 11. 13, 62. Çiç. 14. Vîrac. 41. Vaṇîm. Bṛh. S. 7, 20. 11, 11. 28, 11. 48, 6. 93, 4 (Pferd von der Farbe eines P.; vgl. Mâlav. P. 107, 10). स्वात्मनो मुखदोषेण बध्यते °सारिकाः Spr. (II) 899. 1161. 1420. 3572. 4879. (I) 2304. 2981. Kathâs. 20, 78. fg. 59, 33. 40. 46. 72, 237. fgg. Bâlar. P. 1, 1, 3 (zugleich Vyâsa's Sohn). 3, 15, 16. LA. (III) 15, 18. 32, 16. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 35. Verz. d. B. H. No. 897. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 37. 92, *b*, 42. 123, *a*, 38. °सारिकाप्रलापन unter den 64 Künsten 217, *a*, 13. fg. °सारिकम् Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 127. — *b) Acacia Sirissa* (शिरीष) Buch. Med. *Zizyphus scandens* Roxb. Ratnam. im ÇKDr. — *c)* N. pr. *α)* eines Sohnes des Vyâsa H. an. Med. MBh. 1, 81. 130. 105. 2418. 2, 106. 3, 1171. 12, 8488. 8804. fgg. 13, 1158. fgg. Harîv. 978. fgg. 1242. Bâlar. P. 1, 1, 3 (zugleich *Papagei*). 3, 41. 4, 2. 9, 21, 25. Paṇḍar. 1, 1, 24. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 42. fg. 80, *a*, 38. 41. fgg. *b*, 18. 150, *b*, No. 320. 227, *b*, 8. 228, *a*, No. 539. Hall 127. Monatsberr. d. k. pr. Ak. d. Ww. in Berlin 1868, S. 106. 111. vielleicht *Dichter* überh. Râǵa-Tar. 3, 31. — *β)* eines Kriegers MBh. 6, 3997. — *γ)* eines Asura Harîv. 217. शार्ङ्ग die neuere Ausg. — *δ)* eines Ministers des Râvaṇa Trik. 3, 3, 44. fg. H. an. Med. R. 5, 12, 10. 6, 1, 1. 18, 20. — *ε)* eines brahmanischen Asketen Târân. 83. — 2) f. ई *a) Papageienweibchen* Kathâs. 59, 38. fg. 72, 239. *die Urmutter der Papageien* MBh. 1, 2620. 2622. 2638. R. 3, 20, 18. 21. VP. 148. — *b)* N. pr. der Gattin der Saptarshi (nach dem Comm.), die Agni liebte, Bâlar. P. 4, 24, 11. — 3) n. *a) eine best. Pflanze,* = मन्थिपर्णी AK. 2, 4, 4, 20. Med. = मन्थि und शिरीष Trik. *Bignonia indica* Viçva im ÇKDr. — *b) Gewand, Zeug; Saum eines Gewandes; Helm* H. an. — *c)* N. eines mythischen Geschosses MBh. 5, 3490. — Vgl. गुरु°, रोम°, व्यासशुकसंवाद, श्रीशुकतीर्थ, शोक, शोकेय.

शुककर्णी P. 4, 1, 64, Schol.

शुकच्छद m. *eine best. Pflanze,* = मन्थिपर्णी Gaṇîdh. im ÇKDr. *eine verwandte Species* (भटोरा, घुणोर) Râǵân. in Nigh. Pr. *Xanthochymus pictorius* Roxb. Dhanv. ebend.

शुकजिह्वा f. 1) *Papageienzunge* Suçr. 1, 259, 7. — 2) *Bignonia chelonoides Lin.* Ratnam. 248.

शुकतरु m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) Roxb. Hîn. 94 (शुक° gedr.). Ratnam. im ÇKDr. Aufn. 82.

शुकता f. nom. abstr. von शुक *Papagei* Kathâs. 59, 157.

शुकतुण्ड m. Bez. *einer best. Stellung der Hand* Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 25 (vgl. Corrigg.). 202, *a*, 8. 9. *b*, 31.

शुकत्व m. = शुकता Kathâs. 59, 38.

शुकदेव m. = शुक N. pr. eines Sohnes des Vyâsa Paṇḍar. 1, 1, 15. unter den Namen Kṛshṇa's 4, 8, 67. when did Çukadeva collect an armed host? Wilson, Sel. Works 1, 240. N. pr. eines Sohnes des Harihara Verz. d. Oxf. H. 378, *a*, No. 376. 380, *a*, No. 398.

शुकद्रुम m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) Roxb. Çabdam. im ÇKDr.

शुकनलिकान्याय m. *die Art und Weise von Papagei und Nalikâ (eine best. Pflanze):* °न्यायेन *so v. a. ganz so, wie ein Papagei ohne eigentliche Veranlassung vor einer Nalikâ erschrickt,* Nîlak. zu MBh. 5, 3490.

शुकनशा fehlerhaft für शुकनसा.

शुकनसा f. = शुकनासा Suçr. 2, 103, 21. °नशा 116, 19.

शुकनामा fehlerhaft für शुकनासा Ratnam. im ÇKDr.

शुकनाश m. fehlerhaft für शुकनास.

शुकनाशन m. *eine best. Pflanze,* = दरुण Râǵân. im ÇKDr.

शुकनास 1) m. *a) Calosanthes indica Bl.* und *Bignonia chelonoides Lin.* (die Schoten gleichen einem *Papageienschnabel*) AK. 2, 4, 2, 37. Aufn. 100 (°नाश). 106. *Agati grandiflora* Trik. 2, 4, 29. — *b)* N. pr. *α)* eines Râkshasa R. 5, 13, 18. — *β)* eines Ministers des Târâpîḍa Kâd. in Z. d. d. m. G. 7, 583. — 2) f. आ = शुकनास 1) Ratnam. 248. Suçr. 1, 137, 11. fg. (°नाशा fälschlich). = काश्मीरी Dhanv. in Nigh. Pr. = नलिका Hem. ebend.

शुकपिण्डि f. fehlerhaft für शूक° Çabdam. im ÇKDr.

शुकपुच्छ m. *Schwefel* H. 1058.

शुकपुच्छक n. *eine best. Pflanze,* = मन्थिपर्णी Râǵân. im ÇKDr.

शुकपुष्प 1) m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) Roxb. Râǵân. im ÇKDr. —

2) n. = यन्थिपर्ण (स्त्रीलिंग) Bhāvapr. im ÇKDa.

शुकप्रिय 1) m. *Acacia Sirissa Roxb.* Bhāvapr. im ÇKDa. Ayur. 69. *Azadirachta indica Juss.* ebend. — 2) f. आ *Eugenia Jambolana Lam.* Rāǵān. im ÇKDa.

शुकफल m. *Calotropis gigantea* Rāǵān. im ÇKDa.

शुकबधु adj. *röthlich wie ein Papagei* VS. 24, 2.

शुकबर्ह n. = यन्थिपर्ण oder *ein anderer wohlriechender Stoff* Ratnam. 124. Çabdar. im ÇKDa. Karaka 1, 5.

शुकम् adv. gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. = क्षिप्रम् Wilkins, Gramm. 553. — Vgl. 2. शु.

शुकरहस्य n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325.

शुकवपु adj. *die Farbe eines Papageien habend* VS. 24, 7.

शुकलाङ्गल wohl fehlerhaft für °लाङ्गुल und so v. a. शुकबर्ह Suçr. 2, 109, 1.

शुकवल्क m. *Granatbaum* Taik. 2, 4, 19.

शुकवाच् adj. *die Stimme eines Papageien habend:* Kṛishṇa Paṇḍar. 4, 1, 22.

शुकवाक् m. *der Liebesgott (auf einem Papageien reitend)* Çabdārthak. bei Wilson.

शुकशिम्बा f. und °शिम्बि f. fehlerhaft für शूक° Çabdar. im ÇKDa.

शुकसंहिता f. Titel einer Saṁhitā Verz. d. Oxf. H. 109, b, 7.

शुकसप्तति f. *die siebenzig (Erzählungen) eines Papageien*, Titel einer Schrift Gild. Bibl. 367. Verz. d. Oxf. H. 157, No. 330. fg.

शुकाख्या (शुक + आख्या) f. *Bignonia chelonoides* Ratnam. 248. Suçr. 2, 25, 15. 280, 16.

शुकादन (शुक + घ°) m. *Granatbaum* Çabdar. im ÇKDa.

शुकानन (शुक + आ°) 1) adj. *ein Papageiengesicht habend:* तुरग R. 5, 12, 36. — 2) f. आ *Bignonia chelonoides* Ratnam. im ÇKDa.

शुकायन m. N. pr. eines Arhant Tīrthak. 45.

शुकाष्टक (शुक + अ°) n. *die acht Strophen Çuka's*, Titel einer Vedānta-Schrift Hall 127. °व्याख्यान n. ebend.

शुकीभू (शुक + 1. भू) *zu einem Papageien werden:* °भूत Kathās. 59, 33.

शुकेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tīrtha Verz. d. Oxf. H. 66, b, 9.

शुकोदर (शुक + उ°) n. = तालीशपत्र Rāǵān. im ÇKDa.

शुक्ल 1) adj. a) *sauer geworden;* n. *jedes durch Fermentation mit Pflanzenstoffen gewonnene saure Getränk, saurer Reisschleim* u. s. w. AK. 3, 4, 14, 35. Taik. 3, 3, 186. H. an. 2, 202. Med. t. 65. Hir. 115. Hall. 2, 168. स एनां कुक्ल: पूतिरभिववौ der Soma Çat. Br. 4, 1, 3, 6. Kāṭh. 27, 2. M. 2, 177. 4, 211. 5, 9. 10. 11, 163. Jāān. 1, 33 (*korte Woorden* Stenzler). 167. Verz. d. Oxf. H. 231, b, 43. कन्दमूलफलादीनि सक्षेरक्लवणानि च। यत्र द्रव्ये ऽभियूयते तच्छुक्लमभिधीयते॥ Bhāvapr. 5. Suçr. 1, 137, 6. 192, 10. रस°, मधु° 14. 2, 5, 8. 39, 13. 360, 7. 366, 9. 422, 13. falschlich शुक्ला geschrieben H. 415. Vaiṣṇ. Bḥg. S. 77, 1. Bhāgavatabhaktivilāsa im ÇKDa. Suppl. — b) = पक्व, कर्कश, निष्ठुर AK. Taik. H. an. Med. — c) = पूत Taik. H. an. Med. — d) = भूत H. an. — e) = श्लिष्ट Çabdar. im ÇKDa. — f) = निर्धन ebend. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha (vgl. शुक्र) Mān. P. 32, 26. — 3) f. आ *Rumex vesicarius Lin.* Çabdar. im ÇKDa. — 4) n. a) *saurer Reisschleim* u. s. w.; s. u. 1) a). — b) *Fleisch* Çabdaś. im ÇKDa. — c) *a hymn of the Vedas* Wilson: fehlerhaft für सूक्त. — Vgl. शौक्लिक.

शुक्लक (von शुक्ल) n. *saures Aufstossen* M. 4, 121.

शुक्लस्वर m. Maitrāyaṇ. 3, 5 nach dem Comm. = अव्यक्तस्वर; scheint fehlerhaft zu sein.

शुक्ति 1) f. a) *Muschel*, namentlich *Perlenmuschel, Perlmutter* AK. 1, 2, 2, 23. Taik. 3, 3, 186. H. 1204. an. 2, 202. fg. Med. t. 66. Hall. 3, 42. Kaṇḍ. 22. 71. Suçr. 1, 46, 13. 84, 11. 139, 9. 263, 20. 2, 117, 16. 236, 21. Vīrān. 6, 34. Rāgān. 13, 17. Çiç. 5, 4 (zugleich *Haarwirbel*). 8, 9. Vaiṣṇ. Bḥg. S. 68, 71. 81, 1. शुक्तौ रूप्यमिव प्रभवत्यथास्तमयते Prāb. 112, 5. Tarkas. 20. Nir. 160. सागर° Spr. 3152. समुद्र° (II) 4029. — b) *eine gehöhlte Scherbe* (aus der man trinken kann) H. an. Med. Rāǵa-Tar. 1, 24. — c) *Knochen* Bhāg. P. 6, 10, 13. — d) *ein best. Parfum* (शङ्ख. नखी, शङ्खनख) AK. 2, 4, 4, 18. H. an. Med. Vaiṣṇ. Bḥg. S. 77, 6. 30. *Parfum* überh.: अनुलिप्तं विचित्राभिर्विविधाभिश्च शुक्तिभि: R. 4, 45, 4. — e) *Haarwirbel beim Pferde* Taik. H. an. Med. Çiç. 5, 4 (zugleich *Muschel*). वल:-स्था: शुक्तयस्तिस्र ऊर्ध्वरोमा त्रयावहा: Cit. bei Mallin. zu Çiç. 5, 4. — f) *ein best. Gewicht,* = ½ Pala = 2 Karsha (etwa *ein Loth*) Çāṅg. Saṁh. 1, 1, 13. Verz. d. Oxf. H. 307, b, 6. Suçr. 1, 33, 9. 2, 51, 11. 13. 73, 1. — g) = शुक्तिक *eine best. Krankheit des Auges im Weissen* H. an. Suçr. 2, 310, 20. 324, 14. Vīrān. 6, 10, 13. 11, 7. — h) *Hämorrhoiden* H. an. Med. — 2) m. N. pr. a) eines Āṅgirasa Paṇḍāv. Br. 12, 5, 16. — b) pl. eines Volkes Vaiṣṇ. Bḥg. S. 4, 24. — c) eines Berges (सुक्ति gedr.) Mān. P. 58, 24. — Vgl. कृमि°, नुद्र°, शल°, षड्ग°, मक्षा°, मुक्ता°, मौक्तिका°, शौक्त.

शुक्तिक 1) m. *eine Krankheit des Weissen im Auge* Çāṅg. Saṁh. 1, 7, 89. f. आ dass. Suçr. 2, 305, 8. — 2) f. आ *Perlmutter* Gaṇḍīn. im ÇKDa. Çaṁk. zu Bḥg. Âr. Up. S. 191. Comm. zu Gaim. 1, 1, 4. Sarvadarçanas. 48, 11. — 3) f. आ *Rumex vesicarius Lin.* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. ऊर्वाक्शुक्तिका, तोय°.

शुक्तिकर्ण 1) adj. *muschelohrig:* राक्षसा: MBh. 2, 57. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons Harīv. 9501; vgl. Comm. zu H. 1311.

शुक्तिज (शुक्ति + 1. ज) n. *Perle* H. 1068. Vaiṣṇ. Bḥg. S. 12, 4. 81, 1.

शुक्तिबीज n. dass. Taik. 2, 9, 33.

शुक्तिमत् (von शुक्ति) 1) m. N. pr. eines Gebirges Taik. 2, 3, 4. MBh. 2, 1079. 6, 318 (शाक्ति° od. Calc.). VP. 174. 176. 421, N. 13. Mārk. P. 75, 10. 39. Bhāg. P. 5, 19, 16. — 2) f. °मती gaṇa मध्यादि zu P. 4, 2, 86 (wo wohl शुक्ति st. शाक्ति zu lesen ist). N. pr. a) eines Flusses MBh. 1, 2267. Harīv. 1988. 9310. VP. 184, N. 78. Mārk. P. 57, 33. — b) der Hauptstadt der Kedi MBh. 3, 399. VP. 421, N. 13.

शुक्तिवधू f. *Perlenmuschel* Wilson.

शुक्तिमाल्या f. = शुक्तिमती N. pr. der Hauptstadt der Kedi MBh. 14, 2467.

शुक्तिस्पर्श m. *dunkle Flecken auf einer Perle* Çabdārthak. bei Wilson.

शुक्र (von 1. शुच्) Uṇādis. 2, 28 (paroxyt.). 1) adj. (f. आ) = शुक्ल Kāç. zu P. 8, 2, 18. a) *klar, licht, hell;* von Sonne, Feuer u. s. w. ṚV. 3, 1, 3. 8. विद्युत: 14. 6, 16, 34. शोचिस् 1, 45, 4. अर्चिस् 3, 6, 2. भानु 7, 4, 1. 60, 16. केतव: AV. 13, 2, 1. अत्क ṚV. 1, 93, 7. वर्ण 3, 34, 3. वासस् 7, 77, 2. शुक्रा

कृष्णादसनिष्ट (उषाः) 1,123,9. स्वर् 2,2,7. 4,51,9. Çat. Br. 4,3,4,26. Pañkav. Br. 15,5,9. Gold ṚV. 2,33,9. 8,54,11. घर्मम् 5, 45,10. 5,6,4. 38,4. VS. 19,89. TBr. 1,1,2,2. MBn. 1,5419. fg. — *b) klar, lauter;* m. *der lautere* Soma ṚV. 1,84,4. सोमाः शुक्राः गवाशिरः 137,1. घर्मं शुक्रो धयामि ते 2,41,2. 3. 7,64,5. शुक्रमन्धः 4,27,5. शुक्रा वाशिर् याचते 8,2, 10. Vâlakh. 4,10. AV. 6,53,1. VS. 8,37. सोमपीथ Çat. Br. 12, 8,4,1. Çâṅkh. Çr. 15,15,13. Çat. Br. 1,6,3,7. 4,2,4,29. Kâtj. Çr. 9,5,19. 11, 3. 14,2. — *c) hellfarbig, weisslich, weiss:* पृश्नयः शुक्र ऊधनि ṚV. 2,34, 2. धूम 6,2,6. पयस् 1,160,3. 9,19,5. उपस्तिर् 62,28. घनड्वाहो 10,85,10. AV. 8,7,1. स्वरवः 12,1,18. शुक्रः पिङ्गाक्षो क्रोता स्यात् Çâṅkh. Br. 25,10. — *d)* übertr. *hell, rein, fleckenlos:* वचस् ṚV. 2,9,4. देवी मनीषा 7,34,1. Pañkav. Br. 1,2,9. आकूति Çat. Br. 11,6,3,6. — 2) m. *a) Feuer* AK. 1,1,4,51. Trik. 3,3,275. H. 1098. an. 2,463. Med. r. 93. — *b)* N. *eines Sommermonats* P. 4,4,133. Vârtt. 2, Schol. AK. 1,1,2,16. Trik. H. 154. H. an. Med. Halây. 1,114. VS. 7,30. शुक्रश् शुचिश् चैत्रमासावृतू 14,6. 22,31. Çat. Br. 4,3,4,15. MBn. 1,5863. R. 7,15,16 (personif. als Schatzhüter Kubera's). Suçr. 1,19,9. VP. 225. — *c) der Planet Venus* (personif. als Sohn Bhṛgu's und Lehrer der Asura) AK. 1,1,2,26. Trik. 1,1,93. 3,3, 275. H. 119. H. an. Med. Halây. 1,46. Hariv. 4258. 12794. 14076. R. 2,100, 38. Kumâras. 3,43. Varâh. Bṛh. S. 4,21. 5,61. 9,18. 11. 23. 28. Bṛh. 2,4. Lagadhâ. 1,8. 2,11. VP. 239. Mârk. P. 52,11. Verz. d. B. H. 146,*a*(16). Verz. d. Oxf. H. 41,*a*,16. 69,*b*,1. 2. 86,*b*,43. 330,*a*,5. 23. 339,*b*,7. Verz. d. Cambr. H. 34. fg. Pañkat. 50,20. Schol. zu Kâtj. Çr. 345,2. 348,4 v. u. शुक्रयाज्ञामुपाध्यायः MBn. 1,2544. 2606. 12,2231. 13,4146. 4687. Hariv. 12200. 12808. fgg. 14234. fgg. Kâm. Nîtis. 14,63. Buâg. P. 9,14,6. Pañkâr. 1, 1,66. Pañkat. Pr. 2. Verz. d. B. H. No. 897. Verz. d. Oxf. H. 25,*a*,35. 83,*a*,29. Daçak. 186,11. Hall 18. — *d) der* Çukragraha (auch mit Beisatz von ग्रह) VS. 7,12. 13,56. Çat. Br. 4,2,4,1. 5,4,4,20. 3,3,3,7. °पात्र 4,3,4,26. 8,17. शुक्रोग्र 5,9,4,6. 13. Kâtj. Çr. 9,2,9. 6,11. Vgl. 1) *b*). — *e)* N. eines Joga (विष्कम्भादि) Kosmogon. im ÇKDr. — *f)* N. pr. ein Sohn Bhava's VP. 1,8,11. ein Marutvant Hariv. 11546. ein Sohn Vasishṭha's (vgl. शुक्र) 492. VP. 83. der 3te Manu Harir. 424. einer der 7 Weisen unter Manu Bhautja Mârk. P. 100,31. ein Sohn Havirdhâna's (vgl. शुक्ल) VP. 1,14,2. — 3) n. *a) Helle, Klarheit, Licht;* auch pl. ṚV. 1,135,2. 140,11. 3,8,9. वयं शुक्रेभिर्वर्षतम् 44,5. VS. 40,8. TBr. 1,5,2,1. Kaṭhop. 5,3. Maitrâyaṇ. 6,24. Çvetâçv. Up. 4,2. धातेव खलु भूतानां सुखदुःखे प्रियाप्रिये । दधाति सर्वमीशानः पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरन् ॥ MBn. 3,1138. fg. 5,917. 2751. 1737. fgg. R. ed. Bomb. 3,43,33. — *b) Klares* so v. a. *klare Flüssigkeit, Wasser, Soma* Nation. 1,12. VS. 19,5. शुक्रं वो शुक्र या धुनोमि 8,48. प्र वायवे भरत चारु शुक्रम् ṚV. 3,43,3. 4. — *c) Saft, Seim:* त्रय्यै विद्यायै Ait. Br. 3,32. Çat. Br. 11,5,8,4. 12,4,2,10. 7,2,6. Çâṅkh. Çr. 4,8,2. — *d) Same* AK. 2,6, 2,13. 3,4,22,236. Trik. 3,3,275. H. 619. 629. H. an. Med. Halây. 3,16. 5, 67. Sidd. K. 240,*b*,3. 4. ṚV. 4,3,10. 5,66,1. Mund. Up. 3,2,1. शुक्रातिरिक्ते पुमान्भवति Nir. 14,6. M. 3,49. स्वप्ने सिक्त्वा शुक्रम् 2,181. निरस्य शुक्रम् 5,63. 135. Jâgn. 3,93. MBn. 1,2383. स्कन्द 2434. 3410. 3,14306. 14311. R. 2,108,11 (116,20 Gorr.). Suçr. 1,44,2. 13. 48,11. 126,20. °स्थान 270,19. Varâh. Bṛh. S. 68,14. fgg. 96. 69,14. 76,1. Bṛh. 2,11. Lagadhâ. 2,18 (°साम्). Vaḍâvas. (Allah.) No. 54. einer der sieben Elementarstoffe Wise 54. — *e) eine best. Augenkrankheit: ein weisser Fleck im dunkeln Theile des Auges* Trik. H. an. Med. Suçr. 2,311,13. fgg. 329, 3. fgg. Çâṅkh. Sâṅkh. 1,7,90. — *f)* N. eines Sâman Ind. St. 3,240,*a*. Kâtj. Çr. 26,3,1. Lâṭj. 1,6,24. — *g)* allegorischer N. eines Metrums ṚV. Pâiṅg. 17,4. — Vgl. घृति°, क्षीर°, त्रि°, निः°, प्रति°, मूत्र°, रक्त°, शुद्ध°, वातशुक्रल, शोक fgg.

शुक्रकार m. *Mark (Samen bereitend)* H. 628.

शुक्रकृच्छ्र n. *eine best. Harnbeschwerde* Çâṅkh. Sâṅkh. 1,7,41.

शुक्रकृत 1) adj. *aus (dem eigenen) Samen erzeugt, leiblich:* सुत MBn. 13,2624 nach der richtigen Lesart der ed. Bomb., शुल्कक्रत ed. Calc. — 2) m. pl. Bez. *einer best. Götterordnung* bei den Gaina, einer Abtheilung der Kalpabhava, H. 93. fälschlich शुक्र Wilson, Sel. Works 1,320.

शुक्रज्योतिस् adj. *hell glänzend* VS. 12,15. 17,80.

शुक्रतीर्थ n. = शुक्लतीर्थ N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 42,*a*,28.

शुक्रदत्त m. N. pr. eines Mannes (*weisszähnig*) Râga-Tar. 4,493.

शुक्रदुघ adj. *klare Flüssigkeit von sich gebend* ṚV. 8,35,5.

शुक्रपा adj. *lauteren* Soma *trinkend* VS. 6,27. 7,12. TBr. 1,1,4,1.

शुक्रपिशम् adj. *hell geschmückt:* घृषि श्रिये शुक्रपिशं दधाते ṚV. 10,110,6.

शुक्रपूतप adj. *hellen geläuterten* (Soma) *trinkend* ṚV. 8,46,26.

शुक्रपुत् m. *Pfau* Çabdar. im ÇKDr.

शुक्रभू m. *Mark* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. शुक्रकार.

शुक्रमूत्रल adj. so v. a. शुक्रल + मूत्रल Suçr. 1,195,11.

शुक्रमेह m. *Samenharnruhr* Wise 300. Bhâvapr. 7. Karaka 2,4.

शुक्रमेहिन् adj. *mit der Samenharnruhr behaftet* Suçr. 1,272,18. 2, 78,3. शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा मुञ्चेन्मेहति यो नरः । शुक्रमेहिनमाख्यातम् Karaka 2,4.

शुक्रयजुस् n. pl. Bez. *gewisser zum* Pravargja *gehöriger Sprüche* Taitt. Âr. 5,10,1.

शुक्ररूप adj. *lichtfarbig:* Agni Mârk. P. 99,29.

शुक्रर्यभ (शुक्र + ऋषभ) adj. *hellfarbiges Stiers habend:* die Ushas TS. 4,3,11,3.

शुक्रल (von शुक्र) 1) adj. *a) Samen erzeugend* Suçr. 1,195,18. Çâṅkh. Sâṅkh. 1,4,13. घात° Suçr. 1,202,3. — *b) samenreich, geil* AK. 3,4,5,223. — 2) f. या = उच्चटा *eine Art Cyperus* Ratnam. 253. Bhar. zu AK. nach ÇKDr. चक्रला AK.

शुक्रवत् (wie eben) adj. 1) *lauteren Saft* —, *den Vorlass des* Soma *enthaltend:* हे सवने शुक्रवती प्रातःसवनं च माध्यंदिनं च (während das dritte aus einem Aufguss auf den Trester bereitet wird) TS. 6,1,6,4. 3,2,2,1. Çat. Br. 4,2,4,23. 3,3,2. 19. Kâtj. Çr. 9,10,14. — 2) *das Wort* शुक्र *enthaltend* Ait. Br. 5,4.

शुक्रवर्चस् adj. *hell leuchtend:* Agni ṚV. 10,140,3.

शुक्रवर्ण adj. *lichtfarbig:* Agni ṚV. 1,140,1. *licht:* घी 143,7.

शुक्रवक्र adj. *Samen führend* Suçr. 2,57,10.

शुक्रवार m. *dies Veneris, Freitag* Journ. of the Am. Or. S. 6,177. 7,13. Ganit. Grahânajan. 18, Comm.

शुक्रवासस् adj. *licht gekleidet:* die Ushas ṚV. 1,113,7.

शुक्रशिष्य m. *ein Schüler* Çukra's, *ein* Asura AK. 1,1,6,7. H. 238.

Hall. 1,5.

शुक्रशोचिस् adj. *hell strahlend:* Agni RV. 2,2,3. 8,23,20. 22. 92,8. TBr. 1,1,4,2. VS. 7,12. voc. °शोचे RV. 8,44,9.

शुक्रसदन् adj. *im Licht wohnend:* die Ushas RV. 6,47,5.

शुक्रसुत m. *ein Sohn des Planeten Venus:* केतव: Varāh. Bṛh. S. 11,17.

शुक्रस्तोम m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Ça. 14,20,1.

शुक्रस्रग्वा adj. (f. ई) *Samen führend* Suçr. 2,57,17.

शुक्राङ्ग m. *Pfau* Gal. im ÇKDr. — Vgl. शुक्लापाङ्ग.

शुक्रामन्थिनौ m. du. P. 6,2,142, Schol. (शुक्र° fehlerhaft). *lauterer und mehliger* Soma TS. 6,4,10,1. 3. TBr. 1,1,4,4. Âit. Br. 3,1. Çat. Br. 4,2,4,1. 3,3,2.

शुक्रिकर्मन् m. nom. abstr. von शुक्र gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

शौक्रिय (von शुक्र) 1) adj. शुक्रो देवतास्य 1) P. 4,2,26. कविम् Schol. = शुक्रत्वम् 1) Âit. Br. 6,12. Kâṭh. 24,5. Pañcav. Br. 18,4,4. 11,10. — 2) n. a) Bez. *gewisser zum* Pravargja *gehöriger* Sâman (Comm.) Taitt. Âr. 5,10,1. Liṭ. 7,6,10. *des* Pravargja-*Abschnitts* VS. 36—40. Ind. St. 3,267. fg. VS. Anuç. S. LV. शुक्रियापरायणकल्प Jâḍ. 3,309. स° Verz. d. Oxf. H. 56,a,17. — b) Bez. *eines gewissen* Vrata Çâṅkh. Gṛhy. 2,11. — Vgl. त्रि°.

शुक्रीभू (शुक्र + 1. भू) *zu Samen werden:* मासेन रस: °भवति Suçr. 1,44,3.

शुक्रेश्वर (शुक्र + ई°) N. pr. eines Tempels Verz. d. Oxf. H. 44,a,4 v. u. Hall 154.

शुक्ल (aus शुक्क) Kâç. zu P. 8,2,18. parox. Uṇâdis. 2,28. Çiṇv. 1,13. 1) adj. (f. श्या) a) *licht, hell:* पक्ष *die lichte Hälfte eines Monats, die Zeit des zunehmenden Mondes:* पक्षो द्विविध: शुक्ल: कृष्णश्च तौ मास: Suçr. 1, 19,6. Kâṭh. Ça. 15,1,18. M. 1,66. 4,98. शुक्ले दशोत्तरे पक्षे MBh. 3,17126. Spr. 3074. Varāh. Bṛh. S. 4,32. Bhâg. P. 3,11,10. — b) *weiss, weisslich* AK. 1,1,4,22. H. 1392. an. 2,513. Med. l. 52. Hall. 5,22. 74. Âit. Br. 1,29. शुक्लं वै रेत: शुक्ला वपा 2,14. Çat. Br. 2,2,4,18. लोमन् 1,1,4,1. 6,3,41. धान्य 6,2,2,6. धान्य 7,3,2,14. 16 (auch वै°). सिकता: 8,26. °रूप 6,2,2,12. 14,7,4,20. Kâṭhân. Up. 1,6,5. 6,4,1. °वत्सा Çat. Br. 3,2,3, 20. Kâṭh. Ça. 15,3,26. Rois TS. 2,3,4,3. Kâṭh. 11,3. Kleid, Zeug Liṭ. 3,6,12. M. 4,35. 9,70. MBh. 1,723. 3330. R. Gorr. 2,100,61. Spr. 2702. Suçr. 1,106,17. Kathâs. 4,9. Verz. d. Oxf. H. 223, No. 543. Bhâg. P. 6, 19,3. °ध्वजपताकिन् Çiva MBh. 12,10364. वास्तिक R. 2,77,3. प्रासादपङ्क्य: 4,33,9. °मात्य 2,91,33. AK. 2,4,2,61. तिला: Weber, Kṛshṇaj. 270. 278. मरिच Suçr. 2,326,2. Wunde 12,7.14. भूमि 1,135,7. शिरोरुहा: R. 2,45,27. Varāh. Bṛh. S. 77,1. Râjat. 3,265. शिरस् Spr. 4965. Çiva MBh. 12,10339. पङ्क्तिष Çat. Br. 14,9,4,33. पात्रपामाण Ind. St. 10,436. neun *weisse* Bala bei den Gaina H. 607. — R. 2,91,68. Varāh. Bṛh. S. 3,23. 11,8. 20. 26. 30,11. 33,14. H. 49. — c) *rein, lauter:* °देह MBh. 3,13449. तनू Bhâg. P. 5,3,20. शुक्लाभिज्ञातीय MBh. 12,1196. °वृत्त 14,2713. कर्मन् Spr. (II) 4905. Bhâg. P. 4, 29,37. fg. °लोहितकृष्णवर्णेन कर्मणा 5,19,19. धन 11,17,50. von Personen MBh. 5,3417. Spr. (II) 1836. प्रज्ञातस्य Bhâg. P. 1,12,16. कर्म° 5,18,35. — 2) m. a) (sc. पक्ष) *die lichte Hälfte eines Monats* AK. 1,1, 3,12. अष्टम्यां नवम्यां वा फाल्गुनीशुक्लस्य Kâṭh. Ça. 26,1,2. 23,4,4. 24, 7,1. Çâṅkh. Gṛhy. 4,6. Weber, Gjot. 26. 54. M. 4,96. 6,20. 11,216. Jâḍ. 3,193. 224. Buhq. 8,24. MBh. 1,1302. 3244. 3,5068. 14401. 16628. Harîv. 7882. Sûrjas. 10,4. 9. Varāh. Bṛh. S. 21,5. 9. 25,1. Kathâs. 26,4. Râja-Tar. 5,412. 6,292. Bhâg. P. 5,20,12. 7,14,21. 15,34. 8,16,48. — b) *der Monat* Vaiçâkha (Comm.) Bhâg. P. 7,14,21. — c) *die weisse Farbe, Weisse:* पक्षस्य शुक्ल: P. 2,2,11, Sch. °कृष्णौ gaṇa दधिपयआदि zu P. 2,4,14. — d) *Auswurf, Schleim, Rotz:* ये ब्राह्मणं प्रत्यष्ठीवन्ये वास्मिं कुक्कुमीयिरे AV. 5,19,3. यत्र शुक्ला न क्रियते बलेन बलीयसे *wo man sich nicht vom Schwächeren muss anspeien lassen* 3,30,3. — e) *Ricinus* Alex. 86. *weisser Ricinus* Râjân. im ÇKDr. — f) N. *des 5ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varāh. Bṛh. S. 8,29. Verz. d. Oxf. H. 331,b, No. 782. — g) N. eines Joga H. an. Med. Viçva bei Uéévar. zu Uṇâdis. 2,28. — h) ein N. Vishṇu's (*der Lautere*) Bhâg. P. 3,21,16. 35. 51. 22,19. 23,23. 24,1. 5,10,17. — i) N. pr. eines Sohnes des Havirdhâna (vgl. शुक्र) Harîv. 83. Bhâg. P. 4,24,8. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 78,b,13. eines Fürsten Tîrân. 3. 265. — k) N. pr. eines Berges Bhâg. P. 5,20,21. — l) fehlerhaft für शुक्र *Venus* Verz. d. B. H. 136, a (115). — 3) f. श्या a) *Sandzucker* Çabdaç. im ÇKDr. — b) N. verschiedener Pflanzen: = काकोली, विदारी, सुरसा Râjân. im ÇKDr. — c) ein N. der Sarasvatî Taik. 1,1,27. — d) N. pr. einer Tochter Simhabahu's LIA. 2, Anh. II. — e) N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,20,22. — 4) n. a) *Helle, Licht* Maitrâjan. 6,25. — b) *weisse Farbe, weisser Fleck u. s. w.:* परौ शुक्लानि पातय AV. 1,23,2. त्रि:° *drei weisse Streifen habend* Kauç. 29. — c) *das Weisse im Auge* Çat. Br. 10,5,2,7. 12,2,4, 15. 14,5,2,3. कृष्णविशालशुक्ले नयनम् R. 5,28,13. Suçr. 2,303,15. 310, 8. 17. = शुक्लभाग z. B. 2,310,13. — d) *eine best. Krankheit des Weissen im Auge* (vgl. शुक्र) Gal. im ÇKDr. — e) *Silber* H. an. Med. Viçva a. a. O. — f) *frische Butter* Çabdaç. im ÇKDr. — g) fehlerhaft für शुक्त *saurer Reisschleim* u. s. w. H. 415. Varāh. Bṛh. S. 77,2. Bhagavaddharmottarakhaṇḍa im ÇKDr. Suppl. — Vgl. तीर°, ग्रीव°, पक्ष°, पाक°, भीम°, मरुत्°, शंकर°, शौक्ल, शौक्ल्य.

शुक्लक m. = शुक्ल *die lichte Hälfte eines Monats* Tithâdit. im ÇKDr.

शुक्लकण्ठक adj. *weisshalsig;* m. *ein best. Vogel,* = दात्यूह Çabdam. im ÇKDr.

शुक्लकन्द 1) m. *ein best. Knollengewächs,* = मल्लिकन्द Râjân. im ÇKDr. — 2) f. श्या = षतिविषा ebend.

शुक्लकर्मन् adj. *reinen Wandels* Gal. im ÇKDr.

शुक्लकुष्ठ n. *weisser Aussatz* Gîrvâṇa-P. 195 im ÇKDr.

शुक्लकोरा f. *eine best. Pflanze,* = काकोली Râjân. im ÇKDr.

शुक्लक्षेत्र n. N. pr. eines heiligen *Gebiets* Verz. d. Oxf. H. 149,a,37.

शुक्लजनार्दन m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 886.

शुक्लता f. nom. abstr. von शुक्ल P. 5,1,123, Schol.

शुक्लतीर्थ n. N. pr. eines heiligen *Badeplatzes* Verz. d. Oxf. H. 8,a, 44. 42,a, 28. 66,a, 8. 67,a, 8. 9. Paraçâritrapr. 11, b, 9; vgl. शुक्लावर्त (शुक्ल = विष्णु) तीर्थम् Bhâg. P. 3,23,23 und शुक्रतीर्थ.

शुक्लत्व n. = शुक्लता P. 5,1,123, Schol.

शुक्लदन्त adj. (f. °दती) *weisszahnig:* मृगा: Âit. Br. 8,22. Bhâg. P. 9, 20,36. 6,19,3.

शुक्लद्रुम m. *Trapa bispinosa* Roxb. Çabdaç. im ÇKDr.

शुक्लधातु m. *weisse Kreide* H. 1037.

शुक्लधान्य n. *weisses Korn* Pañcar. 1,11,32.

शुक्लपक्ष m. 1) *die lichte Hälfte eines Monats, die Zeit des zunehmenden Mondes* Kâty. Ça. 7,1,26. 14,1,2. 24,5,30. Kauç. 140. M. 11,217. R. 4,54,2. 5,18,2. Spr. 3257. Vaṃç. Bṛh. S. 21,6. Mâlav. P. 31,35. Wenta, Kasarad. 223. Bulg. P. 6,14,31. — 2) *der günstige Fall* Burnouf, Intr. 252, N. 1.

शुक्लपुष्प 1) adj. *weiss blühend* Kauç. 10. — 2) m. N. verschiedener Pflanzen: = कोकिलाक्ष Ratnam. 75. = कुरुबक, कुन्दपुष्प und मरुवक ÇKDa. nach ders. Aut. — Pañcar. 1,11,33. — 3) f. आ N. zweier Pflanzen: = नागदन्ती Ratnam. 35. = शीतकुम्भी 82. — 4) f. ई N. einer Pflanze, = नागदन्ती Râgân. im ÇKDa.

शुक्लपृष्ठक m. *Vitex paniculata Lam.* Çabdar. im ÇKDa.

शुक्लभूदेव m. N. pr. eines Autors Notices of Skt Mss. 37.

शुक्लमण्डल n. *das Weisse im Auge* ÇKDa. und Wilson.

शुक्लमध्यराणाय m. N. pr. eines neueren Astronomen Verz. d. Cambr. H. 60.

शुक्लमेक m. *weisslicher Harnruhr* Kâraka 2,4.

शुक्लमेकिन् adj. *an der weisslichen Harnruhr leidend:* शुक्लपिष्टनिभं मूत्रमभीक्ष्णं यः प्रमेकति । पुरुषं कफकोपेन तमाहुः शुक्लमेकिनम् Kâraka 2,4.

शुक्लरोहित m. *eine best. Pflanze,* = श्वेतरोहित Râgân. im ÇKDa.

शुक्लला f. = उच्चटा Ratnam. im ÇKDa. unsere Hdschr. शुक्कला.

शुक्लवचा f. *Terminalia Chebula* Taik. 3,3,193.

शुक्लवत् adj. *das Wort* शुक्ल *enthaltend* Çat. Br. 5,2,2,13. fg. Kâty. Ça. 16,1,41.

शुक्लवायस m. *eine Reiherart, Ardea nivea* Taik. 2,5,23.

शुक्लविषाण m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 293,a, No. 710.

शुक्लशाल m. *eine best. Pflanze,* = गिरिनिम्ब Râgân. im ÇKDa.

शुक्लागुरु (शुक्ल + अ°) n. *weisses Agallochum* Kumâras. 7,15.

शुक्लाङ्ग (शुक्ल + अङ्ग) 1) m. = शुक्लापाङ्ग *Pfau* Garâdh. bei Wilson. — 2) f. ई *Nyctanthes arbor tristis* Râgân. im ÇKDa.

शुक्लादिश्रावणकृष्णसप्तमी f. Bez. eines best. Feiertages Verz. d. Oxf. H. 284,b,45. fg.

शुक्लादिश्रावणकृष्णाष्टमी f. desgl. ebend. 283,a,2. 3.

शुक्लापाङ्ग (शुक्ल + अ°) m. *Pfau* (*weisse Augenwinkel habend*) H. 1320. Mcon. 23.

शुक्लायन m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,a,39.

शुक्लार्मन् n. *eine best. Krankheit des Weissen im Auge* (s. अर्मन्) Suça. 2,305,18; vgl. 310,9. 13. सुश्वेतं मृदु शुक्लार्म शुक्ले तद्वर्धते चिरात् Bhâvapr. 7.

शुक्लिमन् m. nom. abstr. von शुक्ल P. 5,1,123, Schol.

शुक्लीकर् (शुक्ल + 1. कर्) *weiss machen:* °कृतान्युपवनानि च मालतीभिः Bv. 3,2. येन °कृता क्षमाः Spr. 2304.

शुक्लीभू (शुक्ल + 1. भू) *weiss werden:* शिरः °भूतम् Spr. (II) 2349.

शुक्लेतर (शुक्ल + इतर) adj. *schwarz, schmutzig:* वासस् R. 5,75,16.

शुक्लोदन (शुक्ल + ओ°) m. N. pr. eines Bruders des Çuddhodana Vuttp. 92. Lalit. 193, N. 1. Hiouen-thsang 1,400. LIA. 2, Anh. II.

शुक्लोपला (शुक्ल + उपल) f. *Sandzucker* Ratnam. im ÇKDa.

शुक्लि Uṇâdis. 3,138. m. *Wind* Ujjval. = तेजस् und चित्र Uṇâdisûtrav. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

शुङ्ग 1) m. *a) Ficus indica* und *Spondias mangifera* Med. g. 25. — *b)* N. pr. eines Mannes P. 4,1,117. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,15. pl. *seine Nachkommen* ebend. 62,17. Liṅg. 4,6,30. Âçv. Ça. 12,15 Pariç. Nidâna 5,8. N. einer auf die Maurja folgenden Dynastie VP. 4,24,8. 11. Bulg. P. 12,1,17. sg. *ein Fürst aus dieser Dynastie* 18. statt dessen °राजन् VP. 4,24,12. — 2) f. आ *Knospendecke,* namentlich der Feigenarten, H. 1124. Suça. 1,317,11. 2,193,1. तोरि° 377,16. अश्वत्थ° 2,155,19. न्यग्रोध° Gobh. 2,6,6. 7,18. Çâṅkh. Gṛihj. 1,20. Pâr. Gṛihj. 1,14. = शूक *Granne* Taik. 3,3,45. — 3) f. ई *Ficus infectoria Willd.* und *Spondias mangifera* H. an. 2,50. — 4) m. n. *Ficus infectoria* Med. f. ÇKDa. und Wilson nach ders. Aut. (sie werden demnach च स्त्रियाम् st. चास्त्रि° gelesen haben). — 5) n. *Knospendecke* (insbes. des Feigenbaums); übertr. so v. a. *Wirkung* (Gegens. मूल *Wurzel, Ursache*) Kâṭhân. Up. 6,8,2. 4. — Vgl. एक°, शीङ्ग, शौङ्ग.

शुङ्गाकर्मन् n. N. einer mit dem Puṃsavana zusammenhängenden *Cerimonie,* wobei *die Knospendecke einer Ficus indica* (वट) gebraucht wird. Eine Beschreibung derselben im ÇKDa. u. d. W. Gṛihjâs. 1,2.

शुङ्गिन् (von शुङ्ग) m. *Ficus indica* Ratnam. 189. Garâdh. im ÇKDa. *Ficus infectoria Willd.* Garâdh. ebend.

1. शुच्, शौचति Naigh. 1,16 (*व्यतिक्रमेन*). Dhâtup. 7,1 शोके). शुच्यति (s. u. नम्) 26,56 (*पूतीभावे; शौचे विशरणे क्लेदे* Vop.). शुशोच, शुशुक्षम्; अशोचिषत् (angeblich VS.; vgl. 6,20) P. 6,1,119, Schol. अशाचीत्, शुचम्, शोचिष्यति; शोचिता und शोक्ता Vop. 8,79. fg. शुचंधी RV. 4,2,1. शोचितुम्, शोचित्वा (auch शुचित्वा nach P. 1,2,26); mod. शौचस्व u. s. w., शुशुचीत, शुशुचानै; im Veda auch शुचैस्, शुचमान und शुचयत्. 1) *flammen, leuchten, strahlen; glühen, brennen:* शाचा वि भाहि (अग्ने) RV. 6,16,15. 1,36,9. अभि रजाँसि शुशुचानो अस्थात् 149,4. 2,34,1. यं त्वा देवासः शुशुचानो (ob etwa °चानम्) अग्निं समीधे 10,98,8. दुरोकमग्निराग्नीध्रे शुशोच 7,4,2. 3,73,5. 83,2. शुशोच सूर्यः 10,138,2. 1,133,6. अचंधीः 5,17,3. 79,8. शुभ्रं स्वर्णं शुशुचीत 2,2,10. 10,43,9. Çat. Br. 1,4,2,20. 3,2,4,19. Âit. Br. 3,36. घर्मः Âçv. Ça. 4,6,3. शुशुक्षम् RV. 1,69,1. 5,87,6. ज्योतिषा शुचता 2,34,12. 4,2,15. 17. धन 23,1. 6,3,3. 10,67,7. 79,3. शुचमान 4,23,8. Nir. 10,41. अग्निं शुचयन्तं पावकम् RV. 10,46,8. अङ्गैः 4,6. अर्कैः 4,56,1. 2. 1,147,1. — 2) *Gluth —, heftigen Schmerz leiden, trauern* TS. 3,4,3,3. Âit. Br. 6,35. Çat. Br. 14,4,2,28. fg. नाभ्यो शोचतः प्रजामिच्छमानौ TBr. 1,6,9,1. Çvetâçv. Up. 4,7. शोचति क्रामयो यत्र M. 3,57. MBh. 1,1750. 3576. 2,1735. 3,2281. 2868. 4,488. R. 2,53,24. 63,9. 64, 72. 73,2. 74,24. Spr. 2767. 3026. 5082. (II) 679. 1391. Kathâs. 29,93. Râga-Tar. 5,466. Bulg. P. 5,10,9 (Gegens. कृष्यति). शोचती 4,25,61. प्रशोच R. Gorr. 2,38,1. 4,26,7. अशाचीत् Bhaṭṭ. 15,71. मा शोचिष्ट 15, 101. मैवं शुचः MBh. 1, 3229. 3, 590 (अुच fälschlich ed. Calc.). 2172. 5, 7027. Bhag. 16,5. R. 1,42,17. 70,24. 2,21,47. R. Gorr. 2,114,24. 3,63, 16. Mâlav. P. 64,13. अशोचिष्यः Bhaṭṭ. 21,6. शोचते Spr. (II) 203. 3884, v. l. शोचधम् MBh. 16,228. शोचेत Spr. (II) 4292. शोचमान (I) 5082, v. l. अशोचत R. 5,56,93. शोचिष्ये 6,93,29. die Ergänzung im loc.: न च शोचत्यसंपत्तौ M. 12,36. अपरिकर्मे ऽर्थे शोचितुम् Spr. (II) 2383. शोचते व्य-

मन तस्य (I) 3119. im instr.: न म शोचेत्कृताकृतैः (कृताकृतम् die neuere Ausg.) Haarv. 291. im acc. mit प्रति: मा त्वं शुचस्तो प्रति MBh. 3,15684. gew. im blossen acc. *trauern über, beklagen, bedauern:* सपुत्रे: पुत्रं तमथो वापि पौत्रं कर्तुं न शोचेयमहं न रुदाम् MBh. 1,3231. 3,331. 3295. न शोचाम्यहमात्मानं न चान्यदपि किं च न 3272. यशोचन् (शोचते ed. Bomb.) वैशसं कृतम्। भ्रातरं पितरं पुत्रं सखायं च 2567. R. 1,2,31. 2,52,21. 64, 17. 74, 19. R. Gorr. 1,2,18. Spr. (II) 723. स्वं वपुः Kathâs. 4, 42. 22, 180. Mâlav. P. 22, 29. शोचिमि aus metrischen Rücksichten MBh. 3, 2372. प्रशोच Râgat. 2, 27. मा शुचस्त्वमनागतान् (अर्थान्) Spr. (II) 676. Bâlar. P. 1,13,29. 4,8,68. गतानस्मान् शोचिष्यति R. 2,46,4. त्वं मिथ्याविषण्णोच्छ्वसनानघ शोचिष्यसि ध्रुवम् Râjat. 4, 299. नैनं शोचितुमर्हसि Bhag. 2,26. R. 2,72,35. Spr. (II) 3396. शोचित्वा R. Gorr. 2,57,1. शोचसे MBh. 3,2644. शोचे Bâlar. P. 7,9,43. शोचमान MBh. 3, 2016. 12260. Pañkat. 35,7 (hier befremdet med.).

— caus. 1) *in Flammen setzen, brennen* (trans.): अल्पद्विषं शोचय तामपश्यं RV. 6,22,8. TBr. 1,1,6,2. — 2) *in Schmerz versetzen:* कार्दिम् AV. 6,89,1. 2. Çat. Br. 1, 4, 3, 9. MBh. 4, 381. 7, 2695. — 3) *Schmerz empfinden, trauern* MBh. 1,5649. Spr. (II) 4293. trans. *bedauern, beklagen Jmd oder Etwas;* pass. शोच्यते Spr. (II) 263, v. l. 3884. Râgat. 8,62. Râjat. 3,136. — 4) *reinigen* (vgl. प्रुच्): दूषितं तृणतोयादि प्रतियोगैरशोचयत् Kathâs. 19, 84.

— desid. शुशुचिषति und प्रशोचिषति P. 1,2,26.

— intens. 1) *hell leuchten, — strahlen, — flammen:* ये अग्नयो न शोशुचासिधानाः RV. 6,66,2. partic. शौशुचत् 48,2. 10,82,20. 89,12 शौशुचान 4,1,4. 7,10,1. — 2) *heftigen Schmerz empfinden:* शोशुच्यमान Bhatt. 3,12.

— अनु 1) *schmerzliche Sehnsucht empfinden nach* (acc.), *trauern um* AV. 6,130,1. MBh. 1,1040. 1815. 4967. 3,2645. 2728. 15764. 16839. R. 2,34,1. 46,6. 8. 63, 29. Spr. (II) 722. 913. 1998. नष्टं मृतमतिक्रान्तं नानुशोचन्ति पण्डिताः 3473. (I) 5108. Râjat. 3, 292. °शोचती Harîv. 9238. R. 3, 52, 14. °शोचितुम् Bhag. 2, 38. R. 5, 71, 7. Spr. (II 4561. °शोचे Bâlar. P. 3,1,41. °शोचस्व Spr. (II) 913, v. l. यन्वशोचत MBh. 1, 4634. mit loc. Spr. (II) 3566. mit gen. Bâlar. P. 3,19,2. mit इति R. 2, 52,27. ohne Ergänzung Spr. 3026. MBh. 1,5647 (med.). — 2) *in Jmdes* (acc.) *Schmerz einstimmen, mit Jmd zugleich Schmerz empfinden, — trauern:* शोचतीं त्वामनुशोचति Bâlar. P. 4, 25, 61. — Vgl. अनुशोचन. — caus. *betrauern, bedauern:* पितरावनुशोच्य Kathâs. 10,67. 21,129. सुहृद्भिरनुशोचिताः MBh. 2,2594.

— समनु *Schmerz empfinden um* (acc.), *betrauern, bedauern* MBh. 4,566.

— अप intens. *durch Flammen vertreiben;* partic. अपं नः शोशुचदघम् RV. 1,97,1; vgl. VS. 35,6. Râm. 3,3.

— अभि 1) *in Gluth setzen, verbrennen:* अल्पद्विषमभि तं शोचतु मो: RV. 6,52,2. 10,16,1. मैनां तपसा मार्चिषाभि शोचोः VS. 12,15. Kâty. Ça. 6,10,3. — 2) *brennen so v. a. quälen* AV. 4,26,7. VS. 11,45. Kâty. Ça. 6,10,3. — 3) *Schmerz empfinden, trauern* MBh. 12,11242. — Vgl. अभिशोक fgg. — caus. *in Gluth versetzen, verbrennen, quälen:* (अग्नयः) मा वाभिप्रा शुचन् VS. 35,3. TS. 5,1,8,6. Vgl. अभिशोचयितु. — intens. dass.: अभि शोशुचानः RV. 10,87,9. 14.

— आ *herstrahlen:* अग्ने शुशुग्ध्या रयिम् RV. 1,97,1. — Vgl. आशुशुक्षणि.

— उद् caus. *in Flammen setzen* AV. 5,22,2. — Vgl. उच्छोचन.

— नि *brennend heiss sein:* निशोचति नितपति वर्षिष्यति impers. Kaush. Up. 7,11,1.

— निस् intens. med. *hervorstrahlen* RV. 7,1,4.

— परि *Schmerz empfinden, trauern* MBh. 1,4025. Bâlar. P. 3,30,18. *betrauern, beklagen;* med. MBh. 3,13657. 5,5063. — caus. 1) *quälen, peinigen* MBh. 6,1902 nach der Lesart der ed. Bomb. — 2) *bedauern, beklagen:* भवतो °शोच्य R. Gorr. 2,66,16.

— प्र *strahlen:* प्र यच्छोचन्त धीतयः RV. 1,6,5. — Vgl. प्रशोचन.

— अनुप्र *betrauern, beklagen:* न त्वादृशो मर्त्यमनुप्रशोचते MBh. 1,3229.

— सम् 1) *zusammen-flammen:* नेदमाबद्धं संशोचति Çat. Br. 3,6,2, 22. — 2) *betrauern, beklagen* MBh. 9,1500. — 3) °शुच्यति *schmerzen:* यदुपनद्धस्य संशुच्यति Çat. Br. 6,4,3,20. — caus. *betrauern, beklagen:* °शोच्य MBh. 7,10.

2. प्रुच् (= 1. प्रुच्) 1) adj. *flammend, leuchtend, strahlend:* s. त्रि°, विश्व°. — 2) f. a) *Flamme, Gluth:* प्रुचा प्रुचा सुमतिं रोमि वस्वः RV. 3, 4,1 प्रुचा विद्धा व्योषया AV. 3,25,4 (vgl. Ait. Br. 6,35). VS. 13,47. 17,1. या ते घर्म दिव्या प्रुक् 38,18. म ईश्वरः प्रजाः प्रुचा प्रदर्के: TS. 5,1,2,6. 2, 9,5. TBr. 1,6,2,1. *innere Wärme* Çat. Br. 14,1,2,13. 3,2. — b) *Brand des Innern: Qual, Schmerz, Sorge, Trauer, Kummer* (diese Bed. fliesst in der älteren Sprache häufig mit der ersten zusammen) AK. 1,1,2,25. 3,4,22 (28 Colebr.). 18. H. 299. AV. 4, 38, 4. 5,20,2. 7,100,1. 12,5,34. TS. 1,3,9,1. पशुं प्रुचार्पयेत् 5,1,4,2. पशोर्वा आलब्धस्य प्राणाञ्छुचं कृन्तति 6,3,9,1. Çat. Br. 3,8,5,8. 9,1,9,9. Pañkav. Br. 5,10,3. 8,1,9. प्रुचा वा एष विद्धो यस्य श्येनामयति 12. प्रुचो गृध्नुम् Spr. 5198. हृदि प्रुचं धत्ते 2887. प्रुचं विदधति Vaitân. Dhn. S. 52,4. 6. प्रुचं ग्रथयति 104,9. प्राप प्रुचम् Kathâs. 16,67. प्रुचमगात् 20,96. प्रुचमेति Spr. (II) 2781. विद्धो प्रुचम् Râgat. 12, 73. विरुद्धा प्रुधम् Çix. 94. प्रुचालम् Daçak. 73,6. प्रुचा aus *Trauer*, vor *Kummer* Râgat. 8,57. Spr. 2736. यस्मज्जानन्योग्र तत: स्फुरितं हृदयं प्रुचा Kathâs. 2,42. 41,54. कन्याजन्मप्रुचा 28,46. pl.: राज्ञो मज्जन्ति प्रुचः MBh. 2, 2181. किमधिकरणाः मन्तु च प्रुचः Spr. (II) 5193. तनयकृताः प्रुचः Vaitân. Dhn. S. 104,14. उत्सारिता इवाभूवन्मर्मास्तत्तत्प्रुचां प्रुचः Kathâs. 18,131. प्रुचां पात्रम् Spr. 2994. गुरुप्रुचां रोगस्य विश्रामभूः (II) 2641. यज्ञस्कुच्कुचः Bâlar. P. 1, 13, 37. am Ende eines adj. comp.: गुरुतर° Mcan. 86. व्यपगत° 74. विगलित° 89. ad 113. त्यक्त° Râjat. 3,105. म° Spr. (II) 937. — c) pl. *Thränen als Ausdruck des Schmerzes, — der Trauer:* प्रुचस्ते प्रमृजामि Bâlar. P. 1,7,16. 3,18,4. कृच्छ्रेण संस्तभ्य प्रुचः पाणिनामुभ्य नेत्रयोः 1,15,3. 17,3. मुक्तप्रीलदृशा प्रुचः 3,2, 8. — Vgl. मानस°.

प्रुचे 1) adj. (f. या) = प्रुचि RV. 10,26,8. — 2) f. या = प्रुच् *Trauer, Kummer:* प्रुचापक् Bâlar. P. 1,6,19. कोपामर्षप्रुचार्पित 4,10,4. महियोगप्रुचास्पद Pañkar. 1,6,2. प्रुचाकुल 7,79.

प्रुचेरथ (प्रुचत्, partic. von 1. प्रुच्, + रथ) adj. *einen strahlenden Wagen habend* RV. 4,37,4. — Vgl. शोचद्रथ.

प्रुचर्त्त (von 1. प्रुच्) m. N. pr. eines Mannes RV. 1,112,7.

प्रुचि (wie oben) Uṇâdis. zu Unâdis. 4,119. 1) adj. (f. प्रुचि; प्रुचो M. 8, 77) = श्वेत, धवल, सित u. s. w. AK. 1,1,4,22. 3,4,4,29. H. 1392. an. 2, 69. Med. k. 11. Halây. 5,22. = मेध्य, शुद्ध AK. 3,4,4,29. H. 1436. H. an.

Mrch. Hall. 1,122. = घनुपकृत H. an. Med. शंशुचि und शशुर्चि P. 6, 2,161. a) *strahlend, glühend; blank* (häufig neben पावक): भामास: ṚV. 6,6,3. 4. हिरण्य 4,10,6. Agni 1,140,1. 141,4. 3,2,15. 7,3,9. bes. Bez. desselben im Ritus (vgl. u. 2) b) TBa. 1,1,5,10. यमो वा आदित्यो ऽग्नि: शुचि: ७, 2. Ait. Br. 7,7. Âçv. Çr. 2,1,25. 3,13,4. Çat. Br. 12,4,4,5. Kâty. Çr. 4,10,9. 25,4,24. Maitrâyaṇ. 6,24. Ushas ṚV. 1,134,4. Sonne 1, 160,1. Bhâg. P. 3,24,21. Götter überh. ṚV. 2,1,13. 27,9. 3,62,5. 7,2,2. 50, 13. 57,5. 8,29,5. Rosse u.s.w. derselben 1,181,2. 10,85,12. *glänzend weiss:* सौधोत्तमङ्ग Spr. 3322. कूर्मपृष्ठ (II) 93. — b) *lauter, klar* (vom Soma so v. a. शुक्र): *rein* ṚV. 1,30,2. 7,90,1. 2. Vikramâṇ. 4,10. भेषजा ṚV. 2, 33,13. Wasser 35,3. 7,49,2. 3. 98,2. घृत 9,67,12. पद 7,41,6. उदिदाभ्य: शुचिरा पूत एमि 10,17,10. शुचय: शुचिमुप यन्ति लोकम् AV. 4,34,3. Kâṭhâkop. in Ind. St. 9,10. मणि Uttarar. 27,3 (38,13). सलिल R. 2,48, 3. वसन Gobh. 2,8,2. 10. मृद्वारि° Spr. 3206. — c) übertr. *klar, lauter, rein; tadellos, unschuldig, ehrlich, redlich:* मति ṚV. 6,8,1. 8,3,3. शुचिरप: सूयवसा उप दोति 2,27,13. स्तोम 7,93,1. 10,29,1. यो वो रत्ना: शुचिरस्मीत्याहै 7,104,16. 8,13,19. चरित MBh. 3,1078. AK. 1,1,3,26. कर्मन् Kâm. Nitis. 11,13. उपचार MBh. 3,2928. R. 3,1,22 (घ°). व्रत Çiç. 123. पद: शुचे: Râgat. 3,46. °वंश Râjat. 8,2338. Personen Kâṭhâkop. 3,8. M. 7,31. 38. 60. 62. fgg. 8,77. स शेष: शपथे शुचि: 115. 9,186. 235. MBh. 3,2446. R. 1,1,14. 7,2. 2,36,18. 39,14. 3,53,12. 74,10. दूत Sâṃk. 1,106,17. यो अर्वे शुचिर्हे स शुचिर्न मृद्वारिशुचि: शुचि: Spr. 3206. fg. ज्ञानीयात् — सप्तो शुचिम् (II) 934. 1828. 2013. 4280. 4921. Brahma-P. in LA. (III) 48,15. Bhâg. P. 3,30,35. Pañcat. 191,13. उपधा° Spr. 3338. घ° Kâṭhâkop. 3,7. M. 4,71. R. 1,7,14. शुचि m. = अमात्यो ऽस्युपध:, उपधाशुद्धमस्मिन्, शुद्धमस्मिन् AK. 3,4,3,29. H. an. Med. — d) *rein* in rituellem Sinne: वायु M. 1,76. देश Kâmaṇḍ. Up. 8,15. Âçv. Gṛhj. 2,1,9. 3,2,2. M. 2,222. 3,206. Bhâg. 6,11. आयतन Kâty. Çr. 25,4,24. भूमि M. 5,68. प्रदेश Varâh. Bṛh. S. 85,8. शाद्वलानि 88,30. VS. Pâṛ. 1,21. क्षेत्रागार Varâh. Bṛh. S. 48,7. सोम M. 5,131. घृत Spr. 2797, v. l. नित्यमास्ये शुचि स्त्रीणां शकुनि: फलपातने। प्रस्रवे च शुचिर्वत्स: शा मृगग्रहणे शुचि: ॥ (II) 968. (I) 2096. fgg. Prân. 39,14. सुत Spr. 3075. Bhâg. P. 2,10,10. Personen VS. Pâṛ. 8,32. M. 2,51. 107. 109. 115. 176. 3, 258. 4,35. 5,62. 8,87. Hariv. 8439. R. 1,46,5. 2,56,26. 4,10,24. Râgat. 1,84. Varâh. Bṛh. S. 46,18. 55,8. Bhâg. P. 3,4,15. घ° M. 4,71. 127. 142. fg. 5,78. fg. 79. 81. 84. 86. घनि M. 4,124. गन्ध Râgat. 12,30. — e) am Ende eines comp. *rein von* so v. a. *der sich einer Sache entledigt hat:* रक्त:° Kathâs. 101,388. — 2) m. a) = शुद्धि Uṇâdis. *Lauterkeit, Reinheit, Ehrlichkeit:* द्विज: शुचिविना Spr. 2614. — b) *Feuer* AK. 1,1, 4,32. 3,4,5,29. Taitt. 1,1,67. 3,3,79. H. 1099. H. an. Med. Hall. 1,62. Bez. *eines best. Feuers* (vgl. u. 1) a), eines Sohnes des Agni Abhimânin und der Svâhâ, VP. 84. Mârk. P. 52,28. 99,69. Bhâg. P. 5,1, 19. 24,4 (ein Sohn Antardhâna's von der Çikhaṇḍinî). — c) *ein best. Sommermonat* P. 4,4,128, Vârtt. 2, Schol. (oxyt.). AK. 3,4,5,29. = आषाढ 1,1,3,16. H. 154. H. an. Med. Hall. 1,114. = श्रेष्ठ Med. शुक्रश्च शुचिश्च पिप्पलादि VS. 14,6. 7,30. Weber, Nax. 2,351. 353. MBh. 1,5553. VP. 225. Ṛt. 1,2. 3. Ragh. 3,3. Kumâras. 5,20. Spr. 3186. Râjat. 5,447. Bhâg. P. 4,25,44. *Sommer* (diese Bed. kann an den meisten der eben angegebenen Stellen angenommen werden) Taitt. 3,3,79. H. an. Med. — d) *die Sonne* H. 97. Maitrâyaṇ. 6,36 (nach dem Comm.). Çiva-P. im ÇKDa. — e) *der Mond* Çabdâmr. bei Wilson. — f) *der Planet Venus* ebend. — g) *Lichtstrahl* H. 99. — h) *Wind* H. c. 170. — i) *Geschlechtstheile* AK. 1,1,3,17. H. an. Med. — k) *ein Brahmane* Çabdâmr. bei Wilson. — l) *the condition of the religious student* ebend. — m) ein N. Çiva's ebend. — n) N. pr. α) eines Sohnes des Bhṛgu MBh. 13,4145. — β) eines Sohnes des Gada Hariv. 9193. — γ) eines Sohnes des 3ten Manu Hariv. 424. — δ) des Indra im 14ten Manvantara VP. 269. Mârk. P. 100,20. Bhâg. P. 8,13,25. — ε) eines der sieben Weisen im 14ten Manvantara Hariv. 491. VP. 269. Mârk. P. 100,21. Bhâg. P. 8,13,25. — ζ) eines Sârthavâha MBh. 3,2226. — η) eines Sohnes des Çatadjumna VP. 390. Bhâg. P. 9,13,22. — ϑ) eines Sohnes des Çuddha, Sohnes des Anenas, Bhâg. P. 9,17,11. — ι) eines Sohnes des Andhaka VP. 433. Bhâg. P. 9,24,18. — κ) eines Sohnes des Vipra VP. 465. Bhâg. P. 9,22,46. — λ) eines Sohnes des Arthapati Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. — 3) f. N. pr. einer Tochter Kaçjapa's von der Tâmrâ und Urmutter der Wasservögel Hariv. 222. fg. VP. 148. fg. — Vgl. शौच.

शुचिकर्ण adj. gaṇa कुमुदादि 2. zu P. 4,2,80. — Vgl. शौचिकर्णिक.

शुचिका (von शुचि) f. N. pr. einer Apsaras MBh. 1,4818. Hariv. 14162.

शुचिकाम adj. *Reinheit liebend:* Götter Kauç. 73.

शुचिकन्द adj. *hell schallend* ṚV. 7,97,5.

शुचिजन्मन् adj. *lichtgeboren* ṚV. 1,141,7. die Morgenröthe 6,39,3. die Marut 7,56,12.

शुचिजिह्व adj. *flammenzüngig:* Agni ṚV. 2,9,1.

शुचिता (von शुचि) f. *Klarheit, Reinheit:* des Wassers Spr. 3020. des Geschlechts Râjat. 6,167. *Lauterkeit, Ehrlichkeit* Kâm. Nitis. 1,22. 4,8. Spr. 2995. (II) 3129. *Reinheit* in rituellem Sinne: चाचान्त: शुचितामियात् M. 5,143. Râjat. 1,214.

शुचित्व (wie eben) n. *Klarheit, Reinheit* AV. 12,3,28. *Lauterkeit, Ehrlichkeit* Spr. 2995, v. l. *Reinheit* in rituellem Sinne Sarvadarçanas. 116,18.

शुचिदत्त adj. *hellsehnig* ṚV. 5,7,7. 7,4,2.

शुचिद्रव, शुचिद्रव, शुचिद्रव्य m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 40,b,11. VP. (II) 4,164. wohl fehlerhaft für शुचद्रथ. — Vgl. शुचिरथ.

शुचिद्रुम m. *Ficus religiosa Lin.* Râjân. im ÇKDa.

शुचिन् adj. = शुचि *rein* Mârk. P. 35,18. 55. 105,12.

शुचिनेत्रसुतसंभव m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva Vishṇ. 38.

शुचिपदी adj. f. *reinfüssig* gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139.

शुचिपा adj. *den klaren* Soma *trinkend:* Vâju ṚV. 7,90,3. 91,4. 92, 1. 18,100,2.

शुचिपेशस् adj. *hell geschmückt:* घी ṚV. 1,144,1.

शुचिप्रणी f. = आचमन Çabdâmr. im ÇKDa.

शुचिप्रतीक adj. *von strahlendem Ansehen* ṚV. 1,143,6.

शुचिबन्धु adj. *strahlende Genossenschaft habend* ṚV. 9,97,7.

शुचिभासस् adj. *hell funkelnd* ṚV. 1,79,1.

शुचिमल्लिका f. *arabischer Jasmin* Râjân. im ÇKDa.

शुचिमुखी Harîv. 8615 fehlerhaft für सूचि°.

शुचिरथ m. N. pr. eines Fürsten VP. 4,21,4. — Vgl. शुचिद्रथ u. s. w.

शुचिरोचिस् m. *der Mond* Çabdârthak. bei Wilson.

शुचिवन n. Bhâg. P. 3,7,29 nach dem Comm. so v. a. शुष्कवन (शुचि = ग्रीष्म).

शुचिवर्षस् adj. gaṇa bhṛśâdi zu P. 3,1,12. davon denom. °वर्षाय्, °वर्षायते ebend.

शुचिवर्ण adj. *hellfarbig* RV. 5,2,3. स्व° von *unreiner Farbe;* davon nom. abstr. °ता f. Kâm. Nîtis. 7,22.

शुचिवाच् m. N. pr. eines Vogels (*eine reine Stimme habend*) Harîv. 1216.

शुचिवासस् adj. *ein reines Gewand tragend* Śrâuk. Bh. 5,2. Âçv. Gṛhj. 2,2,2.

शुचिवृत्त m. N. pr. eines Mannes Âry. Bh. 3,18. pl. *seine Nachkommen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,37. — Vgl. शौचिवृत्ति.

शुचिव्रत adj. (f. आ) 1) *dessen Gebiet (Herrschaft) licht oder rein ist:* Götter RV. 1,15,11. 182,1. 3,62,17. 6,16,24. Agni 3,43,16. 44,21. 10,118,1. Himmel und Erde 6,70,2. TBr. 2,6,13,1. — 2) *dessen Wandel rein ist* M. 9,70. R. 2,77,10. R. Gorr. 1,13,33.

शुचिश्रवस् 1) adj. *dessen Ruf rein ist:* शुचीनि श्रवणीयानि शृणोमीत् — न च पापानि गृह्णामि ततो ऽहं वै शुचिश्रवाः (Vishṇu spricht) MBh. 12, 13250. Bhâg. P. 1,5,13. 3,21,3. Paṅkat. 4,3,34 (S. 249). — 2) m. N. pr. eines Prâgâpati VP. 30, N. 2.

शुचिषद् (शु° + सद्) adj. P. 3,2,61, Schol. *im Reinen —, im Klaren wohnend* RV. 4,40,5. VS. 19,74. Bhâg. P. 4,24,37. so v. a. *auf dem Pfade der Tugend weilend* 11,16,9.

शुचिषद् (शु° + सद्) adj. (nom. °षाट्) als Beiw. Agni's MBh. 12, 8372 nach Nîlak. = शुचि मेध्यमेव सदते नामेध्यम्. Eher *Flammen ertragend* oder Fehler für शुचिषद्.

शुचिष्मत् (von शुचिस् = शोचिस्) 1) adj. *strahlend:* Agni RV. 8,6,4. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kardama Verz. d. Oxf. H. 69,a,42. — 3) f. °ष्मती N. pr. der Mutter Agni's Verz. d. Oxf. H. 69,a,37.

शुचिसंक्षय m. *das Ende der heissen Jahreszeit, der Beginn der Regenzeit* MBh. 7,499.

1. शुचिस्मित n. *ein strahlendes —, heiteres Lächeln* R. 4,19,12.

2. शुचिस्मित adj. (f. आ) *ein strahlendes Lächeln zeigend, heiter lächelnd* MBh. 3,1817. 2177. 2183. 3232. 3499. 3837. 4,244. 5,6012. 6086. 7452. R. 1,64,8. R. Gorr. 2,9,14. 2,49,22. 52,42. Râgat. 8,48. Kumâras. 5,20. Râga-Tar. 4,444. Bhâg. P. 3,16,34. überall fem. °ष्मित (lies °स्मित) unter den Beinn. Çiva's Çiv.

शुचीभू (शुचि + 1. भू) *rein werden* (in rituellem Sinne): °भूय Paṅkat. 221,7.

शुचीय् (denom. von शुचिस्; eher doch von शुचि), °यते gaṇa bhṛśâdi zu P. 3,1,12.

शुचीवती (von शुचि) f. gaṇa śaradâdi zu P. 4,3,120.

शुच्य्, शुच्यति (अभिषवे) Dhâtup. 15,6. चुच्य् v. l.

शुज्, davon ein redupl. partic. etwa in der Bed. *sich spreizend:* सद्यो-युजन्वाऽइ शूशुजानान् RV. 10,27,2. 34,6. — Vgl. शुन्.

शुटीरता f. *Heldenmuth* Taitt. 1,1,129. — Vgl. शौटीर, शौटीर्य.

शुटीर्य n. dass. Çabdar. im ÇKDr.

शुठ्, शौठति Dhâtup. 9,56 (गतिप्रतिघाते; प्रतिघाते; क्षोटने). शोठयति 32,102 (व्यालस्ये).

शुण्ठ्, शुण्ठति Dhâtup. 9,56, v. l. (गतिप्रतिघाते). 60 (शोषणे). शुण्ठयति 32,102 (शोषणे).

शुण्ठ adj. nach Comm. *weissfarbig* TS. 1,8,17,1. 5,6,20,1. Kâṭh. 13, 5. 15,9. Kâṭj. Çr. 22,11,29.

शुण्ठाकर्ण adj. VS. Pâit. 3,128. nach Comm. *kurzohrig* VS. 24,4.

शुण्ठाचार्य m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 139,a,21. fg.

शुण्ठि f. *trockener Ingwer* Comm. zu AK. nach ÇKDr. Varân. Bṛh. S. 81,15. शुण्ठी f. AK. 2,9,36. Taitt. 2,9,10. 3,3,231. 338. H. 420. Hâlâ. 2,460. Ratnam. 92. Suçr. 1,162,8. 231,11. 246,11. 378,3. 2,80,17. 99,11. 134,18. Çârṅg. Saṃh. 2,1,31. Spr. 2999. Paṅkat. 262,12. Schol. zu Kâṭj. Çr. 25,13,20.

शुण्ठ्य n. dass. Çabdâm. im ÇKDr.

शुण्ड्, शुण्डति Dhâtup. 9,40, v. l. (खण्डनप्रमर्दनयोः).

शुण्ड 1) m. *der aus den Schläfen fliessende Brunstsaft eines Elephanten* H. an. 2,127. fg. — 2) f. आ P. 5,3,88. a) *Elephantenrüssel* Taitt. 3,3,117. H. 1224. H. an. Med. 4. 25. Hâlâ. 5,20. MBh. 7,1378 (शुण्डा वि° mit der ed. Bomb. zu lesen). Suçr. 2,181,16. Ratnâs. 109,1. Verz. d. Oxf. H. 121,b,No.214. 133,a,19 (am Ende eines adj. comp.). °दण्ड Paṅkat. 163,1. — b) *Branntwein* Taitt. H. 903. H. an. Med. Hâlâ. 2, 174. — c) *Schenke* Med. — d) *das Weibchen eines Wasserelephanten* (जलेभी, सम्बुकस्तिनी). — e) *Hure* H. an. Med. — f) *Kupplerin* Çabdam. im ÇKDr. — g) *Nelumbium speciosum* H. an. Vîrya im ÇKDr. — 3) f. ई gaṇa varṇâdi zu P. 4,2,52. *eine best. Pflanze,* = हस्तिशुण्डी Râgân. im ÇKDr. — Vgl. कण्ठशुण्डी, नाग°, नाम°, विशुण्डि, हस्तिशुण्डा, °शुण्डी, शोण्ड, शौण्डिक.

शुण्डक 1) m. a) *Schlachtpfeife* (युद्धवेणु) Çabdam. im ÇKDr. — b) *Branntweinbrenner, Schenkwirth* Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. शुण्डिका a) *Zäpfchen im Halse* (घण्टिकाधिष्ठा) Çabdârthak. bei Wilson. — b) *Anschwellung der Mandeln,* = गल° Vâgbh. 1,26,3. 16.

शुण्डरोक् m. = भृतृण Râgân. im ÇKDr. शृङ्गरोक् v. l.

शुण्डायान n. *Schenke* AK. 2,10,41. Taitt. 2,10,17. H. 906.

शुण्डार्ध m. 1) = कृत्स्ना शुण्डा P. 5,3,88. = सपकृष्टा शुण्डा Vop. 7, 77. *ein kleiner Rüssel* Daçar. 72,11. — 2) *Branntweinbrenner, Schenkwirth* Çabdar. im ÇKDr.

शुण्डारोचनिका f. *eine best. Pflanze,* = रज्जिनी Med. n. 113.

शुण्डाल (von शुण्डा) m. *Elephant* H. ç. 175. Dhanañgâga im ÇKDr.

शुण्डिक m. 1) vielleicht *Schenkwirth* P. 4,3,76. — 2) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 3,15243 nach der Lesart der ed. Bomb., मण्डिक ed. Calc. — शुण्डिका s. unter शुण्डक.

शुण्डिन् (von शुण्डा) m. *Branntweinbrenner, Schenkwirth* (als Mischlingskaste) Çabdar. im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 22,a,7. s. 18. — Vgl. गन्धशुण्डिनी.

शुण्डिमूषिका f. *Moschusratte* Râgân. im ÇKDr.

शुण्डीरोचनिका f. *eine best. Pflanze,* = रोचनी Ratnam. 103. °रोघनी f. dass. ebend.

शुतुद्रि f. = शुतुद्री H. 1084.

शुतुद्री f. die älteste Namensform (vgl. शतद्रु) des bekannten Flusses im Pandshab, heut zu Tage Satledsch, LIA. 1,45. Nir. 9,26. ṚV. 3,33,1. 10,75,5.

शुतुद्रु f. = शुतुद्री Bhaṭṭ. im Dvikāṇḍ. nach ÇKDa.

शुद् (gewöhnlicher, aber nicht so richtig, मुद्) indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. in comp. mit einem Monatsnamen so v. a. *in der lichten Hälfte des Monats* —: मार्ग° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,308, 1 v. u. श्रावण° 312, 2. v. u. भाद्रपद° 7,29,1. पौष° Weber, Kṛṣṇaj. 350. Nach Weber a. a. O. ist शु Siglum für शुक्ल oder शुद्ध und दि für दिन. — Vgl. वदि.

शुद्ध (partic. von शुध्) 1) adj. = धवदात AK. 3,4,22,83. = पूत Trik. 3,3,223. H. an. 2,252. = पवित्र und निर्दोष Med. dh. 20. = केवल Trik. H. an. Med. = शुल्क Bhaṭṭ. im ÇKDa. धशुद्ध = संकीर्ण AK. 3,4,12,59. *a) rein, hell, fleckenlos, lauter* VS. 6,13. उदक ṚV. 1,164, 40. 6,28,7. 9,78,1. धाज्य Kauç. 53. TS. 1,3,9,1. AV. 6,34,2. 6,122,5. इन्द्रं स्तवाम शुद्ध शुद्धेन सामा ṚV. 8,84,7. *fgg.* शुद्धा: पूता भवत यज्ञियास: 10,18,2. Ait. Br. 1,3. 4,24. Çat. Br. 1,1,2,12 (सै°). 7,3,2,3. 14,8,6, 3. °वेष Rāmāyaṇa 1,46. शुद्धादके: Weber, Kṛṣṇaj. 275. 289. दर्पणतल Çiç. 191. स्फटिक Pañcat. 1,7,2. 83. केमन् Verz. d. Oxf. H. 31,5, No. 3. Vaitān. Bṛh. S. 49,4. 73,2. वर्ण 68,102. शाम्बूनदशुद्धगौर MBh. 3,15701. 4,2302. ब्रह्मन् Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,163. *fg.* Sarvadarçanas. 46,6. 94,10. वाचनमी M. 2,160. °स्वभावा R. 2,74,9. शुद्धाभिज्ञनकर्मन् adj. 106,9. °कर्मन् adj. Kumāras. 6,52. °शीला Çiç. 180. °संतानज Trik. 2,7,2. प: कुलाभिज्ञनाचारैरतिशुद्ध: Spr. (II) 3005. *rein, lauter* von Personen Kap. 3,29. Ragh. 1, 5. धत: ° Manu. 50. धशुद्धप्रकृतौ रात्रि Pañcat. 1,335. शुद्धसत्त्व R. 2,39, 32. धत्तरात्मन् 5,35,15. धत्यत्तशुद्धहृदय Spr. 2653. हृदयमशुद्धम् (II) 5234. *rein in rituellem Sinne* Weber, Ǵjot. 104. ब्राह्मणशीविका M. 4,11. 5,77. Spr. (II) 966. *fg.* 3283. Ragh. 14,14. °संगमा Çaṅk. (Bh.) 33. कर्मन् H. 811. धा° M. 4,127. 5,58. — *b) fehlerfrei, normal, richtig beschaffen, woran Nichts auszusetzen ist:* धमन्त्र Vaitān. Bṛh. S. 78,19. सर्वाङ्ग° (ein Pferd) 66,1. धवेदनो निरानन्दो वर्ण: शुद्ध इत्येष्यते Suçr. 1,88,12. Çaṅk. Saṅk. 1,7,55. °कोष्ठ 3,1,30. नेत्र Spr. (II) 2035. Vaitān. Bṛh. S. 8,19. 69,35. 98,18. उपदेश Mālav. 30. धा° *fehlerhaft:* मरिचवर्षाये मृषं यच्चित्रितं तदशुद्धम् ÇKDa. unter शुद्ध. In den Druckfehlerverzeichnissen indischer Ausgaben wird die *fehlerhafte* (zu *corrigirende*) Form धशुद्ध, die *richtige* (*corrigirte*) शुद्ध genannt. — *c) rein* so v. a. *ohne allen Zusatz, ungemischt, nicht mit Anderem zusammenfliessend* (Gegens. मिश्र, शबल) Çiç. Ça. 7,15,20. Gaut. 1,9. तिला: M. 10,90. °मास Weber, Ǵjot. 102. Wilson, Sel. Works 2,212. °स्वरूपमात्मन: Weber, Rāmat. Up. 343. Verz. d. Oxf. H. 300,a, No. 734. Weber, Kṛṣṇaj. 227. 237. °मिश्रत 223. शुद्ध = रागान्तरानिश्रितराग Saṅgītaç. im ÇKDa. mit einem instr. *frei von:* (धस्मान्) शुद्धान्दशभिरावर्तै: MBh. 3,2784. — *d)* grammatisch *rein* heisst ein Vocal, *der nicht nasal ist*, Çiç. Ba. 11,5. 14,3. Ça. 1,1,19. Nir. 1,13. ṚV. Prāt. 18,17. AV. Prāt. 4,121. Comm. zu 113. Ind. St. 2,310. Siddh. K. zu P. 7,1,85. — *e) einfach, bloss:* °ज्ञान *einfaches Waschen* (ohne Salbung u. s. w.) Manu. 88. °वध *einfache* (*nicht qualificirte*) *Todesstrafe* M. 9,279. लक्षणा *eine einfache Ellipse* Sarvadarçanas. 173, 10. *fgg.* कृति im Gegens. zu वि°, सं° u. s. w. Ind. St. 3,467. Hierher vielleicht Kathās. 17,122, wenn से शुद्धे st. धशुद्धो gelesen wird. — *f) ganz, vollständig, abgeschlossen:* °श्लोक Rāǵa-Tar. 4,46. श्री 49. स्वभावशुद्धा: सर्वधर्मा: स्वभावशुद्धो ऽकृम् Burnouf, Intr. 633. — *g) geprüft, untersucht:* तदावायतिशुद्धानि सर्वकर्माणि चिन्तयेत् Kām. Nītis. 10,28. — 2) m. *a)* = शुद्धपक्ष *die lichte Hälfte eines Monats, die Zeit des zunehmenden Mondes:* श्वेतशुद्ध Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13,7. — *b)* pl. Bez. einer Klasse von Göttern MBh. 13,1372. — *c)* N. pr. eines der sieben Weisen unter dem 14ten Manu Bhāg. P. 8,13,33. — *d)* N. pr. eines Sohnes des Anenas Bhāg. P. 9,17,11. — *e)* N. pr. eines Vogels Harīv. 1216. — 3) f. धा N. pr. einer Tochter Siṁhabāhu's LIA. 2, Anh. II. — 4) n. *a) Steinsalz.* — *b) Pfeffer* Rāǵān. im ÇKDa. — Vgl. बुद्धि°.

शुद्धकर्ण adj. *reinohrig;* vgl. शोद्धकर्णि.

शुद्धकीर्ति m. N. pr. eines Mannes (*reines Ruhmes*) Kathās. 70,55.

शुद्धकोटि f. *one of the sides of a right-angled triangle* Wilson.

शुद्धगणपति m. *der mit reinem Munde verehrte* Gaṇeça (Gegens. उच्छिष्टगणपति) Colebr. Misc. Ess. 1,199.

शुद्धजङ्घ m. *Esel* (*reine Beine habend*) Trik. 2,9,37.

शुद्धता (von शुद्ध) f. *Reinheit, Lauterkeit* Spr. (II) 335.

शुद्धदन्त und °दत्त adj. *reine Zähne habend* P. 5,4,145. °दन्त Bhaṭṭ. 5,61.

शुद्धधी adj. von *reiner Gesinnung* Vop. 3,59. Rāǵa-Tar. 4,202.

शुद्धपक्ष m. = शुक्लपक्ष *die lichte Hälfte eines Monats, die Zeit des zunehmenden Mondes* Çiṅkh. Ça. 2,1,8. 4,17. 4,17,3. 5,2,4. 10,1,1. Kauṣ. Up. 2,3.

शुद्धपट m. N. pr. eines Mannes (*reine Gewänder habend*) Kathās. 60,8. *fgg.* Pañcat. 224,1.

शुद्धपाद m. N. pr. eines Lehrers der Haṭhavidjā Verz. d. B. H. 196, 8. सिद्धपाद nach andern Ausl.

शुद्धपार्ष्णि adj. *dessen Rücken gedeckt ist* Ragh. 4,26. Vaitān. Jaim. 1,10 in Ind. St. 10,165; vgl. विशुद्धपार्ष्णि Kām. Nītis. 11,74.

शुद्धपुरी f. N. pr. einer *Stadt:* °माहात्म्य Mack. Coll. 1,87.

शुद्धबुद्धि 1) adj. *reines Geistes* Asṭâv. 18,18. — 2) m. N. pr. eines Lehrers der Haṭhavidjā Hall 16. °बुद्ध Verz. d. B. H. 196,7. सिद्धबुद्ध nach anderen Ausl.

शुद्धबोध adj. *dessen Erkenntniss rein ist* Asṭâv. 18,69.

1. शुद्धभाव m. *eine reine —, lautere Gesinnung* Bhāg. P. 6,18,76. Pañcar. 1,4,21.

2. शुद्धभाव adj. (f. धा) von *reiner —, lauterer Gesinnung* Spr. (II) 5427. R. Gorr. 2,6,24. 16,24. चेतस् Bhāg. P. 3,28,19. आत्मन् 8,16,39.

शुद्धभित्तु m. N. pr. eines Autors Hall 97.

शुद्धमति 1) adj. von *reiner Gesinnung* Spr. (II) 1280. Ragh. ed. Calc. 1,12. — 2) m. N. pr. des 21ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇī H. 53.

शुद्धमांस n. Bez. *einer best. stark gewürzten Fleischspeise* Bhāvapr. im ÇKDa.

शुद्धरूपिन् adj. *die reine —, wahre Gestalt habend* Asṭâv. 18,25.

शुद्धवंश्य (von शुद्ध + वंश) adj. (f. धा) *reines Geschlechts:* संतति Ragh. 1,68.

शुद्धवत् adj. *das Wort* शुद्ध *enthaltend*; f. ph (sc. ऋच:) Bez. *der Verse* RV. 8,84,7—9 M. 11,249.

शुद्धवल्लिका f. *Coccinea cordifolia DC.* Çabdam. im ÇKDa.

शुद्धवाल adj. *hellschwanzig* VS. 24,3. सर्व° ebend.

शुद्धविराज् f. *ein best. Metrum: 4 Mal* – – ⏑ ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2,139 (V, 1). Ind. St. 3,369.

शुद्धविराड्ऋषभ n. *ein best. Metrum mit ungleichen* Pâda Colebr. Misc. Ess. 2,165 (VII, 2). Ind. St. 3,336. fg.

शुद्धशुक्ल n. *eine best. Krankheit des Schwarzen im Auge* Çâlâkj. Sâlîh. 1,7,90.

शुद्धसाध्यवसाना f. (sc. लक्षणा) Bez. *einer Art von Ellipse* Sarvadarçanas. 173,6.

शुद्धसारोपलक्षणा f. desgl. ebend. 172,6. शुद्धसारोपा f. dass. 173,5.6.

शुद्धहस्त adj. *reinhändig* AV. 12,3,44.

शुद्धान्त (शुद्ध + अन्त *Auge*) N. eines Thores Harîv. 6510.

शुद्धात्मन् (शुद्ध + आ°) adj. *reines Wesens, von reiner Gesinnung* R. 2,29,16. Çiva Çiv.

शुद्धानन्द (शुद्ध + आ°) m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 373, *a*, No. 279. 390, *b*, No. 37. fgg. Hall 89. 102. 117. 129. °यति 139.

शुद्धानुमान n. *eine best. rhetorische Figur* Çabdârthan. bei Wilson.

शुद्धान्त (शुद्ध + अन्त) m. sg. (*das reine Innere*) *die für die Frauen bestimmten inneren Gemächer eines fürstlichen Palastes, Gynaeceum* AK. 2,2,11. 3,4,24,68. H. 727. an. 3,306. Med. t. 163. Hall. 2,338. MBh. 5,2328. Kumâras. 6,52. Çiç. 16,71,13. Kathâs. 106,172. Râga-Tar. 3,436. 450. 5,279. 6,136. Pañkat. 1,12,47. °पालक Çabdam. im ÇKDa. °रक्षी Ragh. 6,45. ज्ञन: °चर: 3,16. °चारिन् Uttarab. 18,11 (25,6). °वृद्धा ज्ञन: Vikram. 43. °कान्तानां मूर्धानमधिरोपिता Râga-Tar. 6,74. pl. *die Frauen eines Fürsten:* शुद्धान्ता (nach ÇKDa. fälschlich fem.) राज्ञयोषित: Dhan. im ÇKDa. शुद्धान्तै: सक्तं रमते (नृप:) Hall. 2,58. °संभोग Naish. 3,93.

शुद्धान्तरयुत् f. *change of mode or key in music* Çabdârthan. bei Wilson. falschlich शुद्धान्तयुत् in der 2ten Aufl.

शुद्धापह्नुति f. *eine best. rhetorische Figur: eine (scheinbare) Läugnung des Richtigen* Çabdârthan. bei Wilson. शुद्धापह्नुतिरन्यस्यारोपार्थो धर्मनिह्नव: । नायं सुधांशु: किं तर्हि व्योमगङ्गासरोरुहम् ॥ Kandarâloka im ÇKDa.

शुद्धाभ (शुद्ध + आभा) adj. *klar, hell, licht* M. 12,27.

शुद्धायु (शुद्धयु Padap.) adj. TS. Prât. 3,3. nach Comm. *Reinheit erstrebend* TS. 1,3,6,2. 6,3,6,4.

शुद्धावर्त adj. nach dem Comm. so v. a. प्रदक्षिणावर्त. Bäume Sraddh. Ba. 4,4.

शुद्धावास (शुद्ध + आ°) m. *die reine Behausung* (der Götter): शुद्धावासान्देवभवनान्यवभास्य Lalit. ed. Calc. 3,16. °देव 94,16. °कायिका देवा: oder देवपुत्रा: 64,3. 4,8. 20. 6,19. 21. 15,4. 226,6.

शुद्धाशय (शुद्ध + आ°) adj. *reines Herzens, von reiner Gesinnung, der ein reines Gewissen hat* Kathâs. 49,222. Pañkat. 2,3,11.

शुद्धाशुद्धीय (von शुद्ध + अशुद्ध) n. N. eines Sâman Pañkav. Br. 14, 11,27. 19,4,6. Lâṭj. 3,4,13. Ind. St. 3,240,*a*. शुद्धाशुद्धीयाग्य n. ebend.

पदान्त° (auch पदान्त:°) ebend. und 222,*b*. ऐउ° 211,*a*.

शुद्धाशुद्धोध m. Titel einer Grammatik Colebr. Misc. Ess. 2,47 (शुधा° gedr.).

शुद्धि (von शुध्) f. 1) *das Reinwerden, Reinigung, Läuterung, Reinheit* (eig. und übertr., insbes. in rituellem Sinne) TBr. 2,1,4,8. °काम Âçv. Ça. 2,12,6. द्रव्याणाम् M. 1,112. 5,110. fg. 113. fgg. पात्राणां वारिणा शुद्धिरिष्यते Jâñ. 1,183. 3,60. Ind. St. 2,95. M. 5,61. 67. 71. 105. शरीरस्य 6,30. आत्मन: 11,160. Ragh. 1,85. 12,10. Spr. (II) 2538. चक्रिर्भुव: शुद्धिमिवाकरोत् Râga-Tar. 6,192. मातु: पापस्य शुद्ध्यर्थम् Ragh. 12, 19. द्रव्य° M. 5,126. 146. आकारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि: Kaiṇḍ. Up. 7,26,2. Sarvadarçanas. 59,13. Jogas. 2,41. आत्म° M. 11,161. Bhag. 5,11. मन:° MBh. 5,3423. स्ववेश° R. Gorr. 2,74,48. Bhâg. P. 2,7,38. अज्ञातभुक्त° *das Reinwerden* von so v. a. *das Befreitwerden von* (einer Verunreinigung) M. 5,21. विण्मूत्रोत्सर्ग° 134. उपघातक° Jâñ. 3,268. वीरमेसर्ग° Bhâg. P. 4,7,17. घ° Jogas. 2,28. bei den Pâçupata ist शुद्धि so v. a. विशुद्धि Sarvadarçanas. 74,17. 75,12. *Reinheit* einer Perle AK. 2, 4,28,168. Ragh. 16,18. शुद्धि = शोधन Daiṇḍ. 3,37. 24,58. — 2) *das Reinwerden* so v. a. *das Befreitwerden von allem Schädlichen, Sicherstellung:* मण्डलशुद्धिमाचरन् Kâm. Nîtis. 8,87. यज्ञानाम् heisst ein Abschnitt der Jâtrâ Vaṇ. Bhm. 28(26),4. — 3) *das Reinwerden* so v. a. *Rechtfertigung, das für unschuldig Erklärtwerden:* शुद्धिं तस्य विनिर्दिशेत् Jâñ. 2,111. शुद्धिमाप्नुयात् 107. अचिराच्च भवेच्छुद्धि: (so zu lesen) Kathâs. 5,58. शुद्धिश्चास्यान्यतो ज्ञाता 76. fg. अग्नि° *durch die Feuerprobe* Uttarar. 3,3 (5,1). — 4) *das sich als ächt Erweisen:* संदिग्धलेख्यशुद्धि: स्यात्स्वहस्तलिखितादिभि: Jâñ. 2,92. *Aechtheit* Spr. (II) 6138. *Richtigkeit:* उपन्यास° Mâlatîm. 50,14. शब्द° Verz. d. Oxf. H. 207,*b*,5. — 5) *Bereinigung* so v. a. *das Bestrittenwerden:* सर्वव्यय° Pañkat. 251,16. — 6) *Klarheit in einer Sache, genaue Kenntniss:* धर्म° M. 12,105. तत्त्व° Kathâs. 75,194. भर्तु: शुद्धिं न जानामि so v. a. *ich weiss nichts Genaueres über meinen Gatten* Ver. in LA. (III) 18,1. यत्नं गत्वा शुद्धिं करोमि *in's Klare bringen* Horrn, Sanskrit-Lesebuch 71,9. — 7) eine Form der Dâkshâjaṇî (Durgâ) Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,28. स्मरणाच्चिन्तनाद्वापि शोध्यते स हि पातकात् । तेन शुद्धि: समाख्याता देवी हृदयनी स्थिता ॥ Devî-P. im ÇKDa. — Vgl. तुल्य°, प्रेत°, भूत°, मुख°, रत्न:°, वैर°.

शुद्धिकृत् adj. *Wüscher* Comm. zu Up. 1,82.

शुद्धिकौमुदी f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 272,*b*, No. 644.

शुद्धिचन्द्रिका f. Titel zweier Schriften Notices of Skt Mss. 14. Verz. d. B. H. No. 1092.

शुद्धिचिन्तामणि m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,21.

शुद्धितत्त्व n. Titel eines Abschnitts im Smṛititattva Gild. Bibl. 465. Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,21. 290,*b*, No. 701.

शुद्धितम (von शुद्धि) adj. superl. = शुद्धतम *der reinste:* धी Maitrâjan. 6,25.

शुद्धिदीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 336,*b*, No. 792.

शुद्धिप्रदीप m. desgl. ebend. 274,*a*, No. 640.

शुद्धिभूमि f. N. pr. eines *Landes* Wilson, Sel. Works 1,295.

शुद्धिमत् (von शुद्धि) adj. *rein, fleckenlos:* शशिन् Spr. (II) 703. अन्वय Ragh. 1,12. *unschuldig* Kathâs. 16,118.

शुद्धिमयूख m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1091. Verz. d. Oxf. H. 274,*b*, No. 649.

शुद्धिरत्नाकर m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,22. 292,*b*,22.

शुद्धिविवेक m. desgl. ebend. 279,*b*,22. *fg.*

शुद्धोद (शुद्ध + उद्) 1) adj. *reines Wasser habend:* ज्ञलधि Buic. P. 5,1,24. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Çâkja Buic. P. 9,12,13; vgl. शुद्धोदन.

शुद्धोदन (शुद्ध + ओ°) m. N. pr. eines Fürsten aus dem Geschlecht der Çâkja, Vaters des Siddhârtha oder Çâkjamuni, Lalit. ed. Calc. 28,10. *fgg.* 30,10. 44,14. *fgg.* 63,17. *fgg.* 82,14. *fgg.* 109,11. *fgg.* 134, 15. *fgg.* 136,12. *fgg.* u. s. w. Hiouen-thsang 1,310. 364. Vie de Hiouen-thsang 127. 282. Wilson, Sel. Works 2,9. 10. 338. 346. LIA. 2, Anh. II. ein Sohn Çâkja's (vgl. शुद्धोद) VP. 4,22,2. °सुत patron. Çâkjamuni's H. 237. — Vgl. शौद्धोदनि.

शुद्धोदनि m. unter den 1000 Namen Vishṇu's Paṇḍar. 4,3,137 fehlerhaft für शौद्धोदनि.

शुध्, शुन्ध् 1) शुन्धति, °ते Duiveb. 3,37 (शुद्धो). *a*) act. *reinigen:* पर्यसा मा सह शुन्धत RV. 10,17,14. सूर्यायै रूपाणि ब्रह्मा शुन्धति 85,25. VS. 1,13. 6,14. आपः शुन्धन्तु मैनसः 20,20. TBr. 3,7,12,6. Kâṭj. Çr. 25,11, 33. Auffallend ist शुन्धि imperat. *reinige* Âçv. Gṛhj. 1,17,16. 18,8. entstellt aus AV. 8,2,17. — *b*) med. *sich reinigen, rein werden:* आत्मानम् TS. 7,2,10,4. मुखम् Kauç. 44. दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वम् VS. 1,13. 5, 10. शुन्धन्तां लोकाः पितृषदनाः 5,26. 19,36. — 2) शुध्यति Duiveb. 26, 32 (शोचे). *rein werden* (insbes. in rituellem Sinne) VS. 16,15. Paṇḍav. Br. 14,11,23. 19,4,7. निरस्य तु पुमान् शुक्रमुपस्पृश्यैव शुध्यति M. 5,63. 65. 72. 83. 85. 88. 99. 102. 107. *fgg.* 122. 134. *fg.* 11,46. 53. 100. 141. 146. 193. 199. 201. 254. Spr. (II) 429. 911, v. l. 1640. 4567. Mâṇ. P. 35,29. Schol. zu P. 2,4,10. Buic. P. 1,19,23. 2,4,15. येन मत्तं शुध्येत् 5,5,1. यस्य चित्तं न शुध्यति Spr. (II) 2754. धीः Buic. P. 2,2,13. नहि शुध्यति मे मनः *klärt sich* R. Gorr. 2,99,13. यत्याकुलं कथयसि न शुध्यति मे उत्तरात्मा so v. a. *ich vermag nicht in's Klare zu kommen* Mâlav. 130, 8. यातेतापं न शुध्यति so v. a. *hat keine Entschuldigung* Kathâs. 45, 106. शुध्यते u. s. w. aus metrischen Rücksichten M. 5,108. 123. Spr. (II) 3285. *fg.* 4567. Sçṇ. 2,9,7. नहि मे शुध्यते भावस्तं वीरं प्रति *sich klären, klar werden* MBh. 1,5042. 3,2289. R. 2,90,10. 5,41,7. unmotivirt Snapv. Bh. 5,10. शुध्येरन् Jâḍ. 1,21. चतुर्थे ऽहनि शुध्यते (wohl fehlerhaft) am Ende eines Çloka Vet. in LA. (III) 8,11. शुध्यमान Sçṇ. 1,15,16. — Nur die Präsens-Formen zu belegen; fut. u. s. w. ohne Bindevocal Kâr. 4 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10.

— caus. I) शुन्धयति *reinigen* VS. 4,2. — II) शोधयति 1) *reinigen* (auch in rituellem Sinne): den Soma TS. 6,1,9,1. Maitrâyaṇ. 6,34. M. 11,226. 238. MBh. 1,5863. 7883. 9,2427. Harîv. 4341. R. 1,66,14. R. Gorr. 1,45,21. 2, 56,21. 87,7. 5,73,29. Sçṇ. 2,9,1. 6. Kathâs. 63,15. Saddh. P. 4,19,*a* (शोधयेयुः zu lesen). *b* (शोध्यमानं zu lesen). Buic. P. 3,28,9. शोधित = मृष्ट H. 1437. AK. 3,2,5. = संमृष्ट 3,9,46. H. 414. = समूढ Tâik. 3,1,20. — 2) *etwas Unreines* —, *Schädliches entfernen:* समेध्यम् M. 9, 282. मलम् MBh. 3,2703. कण्टकम् Sin. D. 14,12. शोधितनक्रमीनजाल (जल) Kâm. Nîtis. 7,34. 14,33. — 3) *bereinigen, bezahlen, abtragen:* ऋणम् Râǵa-Tar. 6,17. Kull. zu M. 9,107. — 4) *Jmd als rein hinstellen, — befinden, rechtfertigen:* प्रकाशकृयशोधित M. 8,202. उपधाशोधित (so zu lesen) Kâm. Nîtis. 4,36. — 5) *Jmd auf die Probe stellen, prüfen* Kathâs. 51,76. *untersuchen:* घरणं शोधय यदि कुत्रचित्तं ज्ञोवत्तं पश्यसि Pañkat. 142,11. — 6) *in's Reine bringen, klar machen, erklären, erläutern* Vedântas. (Allah.) No. 108. Madhus. in Ind. St. 1,20,6. — 7) *subtrahiren* Wenzr, Gǵot. 76. Gaṇit. Grahâṇâsan. 14, Comm.

— desid. in der Stelle शुशुत्सयञ्च उत्तरः Nir. 7,7.

— परि, °शुध्यति 1) *rein* —, *abgewaschen werden:* ज्ञलेन ज्ञायते यद्वै ज्ञलेन परिशुध्यति Spr. (II) 2366. °शुध्यस्व *reinige dich* so v. a. *beweise deine Unschuld* Râǵa-Tar. 4,93. °शुद्ध *rein, lauter* Kâlikop. in Ind. St. 9,19. चेतस् Buic. P. 3,32,6. 4,6,5. घ° 7,26. — 2) *vermindert werden um:* षऽभागपरिशुद्ध *von dem das Sechstel* (für den Fürsten) *abgezogen ist* MBh. 13,5350. — Vgl. परिशुद्धि. — caus. 1) *reinigen:* पन्थानम् R. 2,31,25 (19 Gorr.). — 2) *bereinigen, bezahlen, abtragen:* उभयव्ययम् Jâḍ. 2,146. राज्ञे देयं भागम् P. 1,3,26, Schol. — 3) *Jmd auf die Probe stellen, prüfen* MBh. 12,3104. *Etwas prüfen, untersuchen:* मन्त्रं स्वबुद्ध्या Kathâs. 34,199. — 4) *erklären, erläutern* Gîr. 12,28. Verz. d. Oxf. H. 173,*b*, No. 388. *fg.* Mohn, ST. 2,176. — Vgl. परिशोधन.

— प्र s. प्रशुद्ध.

— अभिप्र caus. *reinigen* Sçṇ. 2,107,10.

— वि, °शुध्यति *vollständig rein werden* (insbes. in rituellem Sinne) Nir. 14,3. M. 5,64. 66. 76. 78. 87. 101. 103. 112. 11,102. 122. 149. 162. 202. 249. 257. Jâḍ. 1,194. 3,20. Vaṇîs. Bḥ. S. 74,13. Buic. P. 6,2,11. विशुध्यन्तीन्द्रियाणि *klären sich* R. 2,78,9. °शुध्यते aus metrischen Rücksichten Mâlav. 35,15. — partic. विशुद्ध 1) *vollkommen gereinigt, — geläutert, — rein, — klar, — lauter* (eig. und übertr.) H. 1436. Nir. 14,3. काञ्चन Kathâs. 44,76. निकषसंतापाभिनिवेशैर्विशुद्धस्य कनकस्य Vaṇîs. Bḥ. S. 4, Z. 3 v. u. °मण्डलः शशी R. 4,42,16. विशुद्धेन्दुनक्षत्र Vaṇîs. Bḥ. S. 21,15. खमुडुविशुद्धम् 24,22. °गेलावसय Mâlav. P. 51,23. विशुद्धास्त्र प्रतिपत्कः M. 10,76. 11,190. 242. MBh. 4,1185. R. Gorr. 1,50,21. Kâm. Nîtis. 2,19. ज्ञातवेदोविशुद्धा प्रिया Raǵn. 12,104. Spr. 2620. Buic. P. 3,31,13. ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वः Muṇḍ. Up. 3,1,8. Vedântas. (Allah.) No. 25. Buic. P. 1,2,25. °सत्त्वविज्ञान R. 4,22,12. Sâṃkhjak. 64. Sarvadarçanas. 17,11. Buic. P. 2,6,39. प्रतिपत्कः MBh. 1, 5185. धर्म Spr. (II) 4370. Buic. P. 6,16,41 (घ°). °धीरेषातिः Kathâs. 13,195. तपस् Kumâras. 6,10. धारणा Buic. P. 1,9,21. °करण 4,12,17. कीर्ति 7,10,12. °प्रकृति Râǵa-Tar. 6,291. °भाव R. Gorr. 2,10,28. बुद्धि Bhag. 18,51. °मनस् Spr. (II) 1047. 4033 (मु°). चेतस् Buic. P. 3, 24,11. °धी Râǵa-Tar. 6,138. उत्तरात्मन् MBh. 14,588. R. 5,14,63. Kâm. Nîtis. 16,25. विशुद्धात्मन् MBh. 1,7732. 5,6071. 7072. 12,4257. R. 2,45,16. Spr. 5005. Raǵn. 1,68. °वंश्य Râǵa-Tar. 5,335. षाट्विंशविशुद्धानां राज्ञाम् R. 1,70,43. वंश° (वंश *Stamm* und *Rohr*) Spr. (II) 5369. कुलहय° Kathâs. 34,55. ज्ञाति° Spr. (II) 1413. चक्र s. u. चक्र 4) und vgl. विशुद्धिचक्र. *rein* so v. a. *glänzend weiss:* कुन्दापीडविशुद्धदन्तनिकर Ṛt. 6,24. — 2) *in's Reine* —, *ganz zu Ende gebracht, abgeschlossen:* °कर्मन् MBh. 3,11918. विशुद्धार्थो मन्त्रः R. 5,82,10. क्रयेण स विशुद्ध हि न्यायतो लभते धनम् M. 8,201. *zu Ende gekommen:* उपदेश°

so v. a. *der die Lehre absolvirt hat, vollkommen ausgelernt* Milav. 21, 8. — 3) *genau bestimmt:* भूमिरियं चतुःकङ्कटविशुद्धा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,27,19. Colebr. Misc. Ess. 2,301,14. — 4) *gereinigt* so v. a. *genau untersucht und als sicher befunden:* उद्यानवन Kâm. Nîtis. 7,38. °ज्ञातिभूषण 45. °मण्डल 8,87. °पार्ष्णि (vgl. शुद्धपार्ष्णि) 11,74. °पृष्ठ 15,5. सविशुद्धपक्ष 16. — 5) *subtrahirt* Golâdhj. Trâipâkṣ. 44. — 6) *dividirt* Varâh. Bṛh. 7,10. — 7) *gelesrt, erschöpft:* कोश Rîga-Tar. 8,867. — Vgl. हलविशुद्ध und विशुद्धि. — caus. 1) *reinigen* (auch in rituellem Sinne): द्रव्यमयी MBh. 12, 10035. Suçr. 2,107,3. Pâraṇ. 3,1, 18. 9,13. एवं गुरुधनं विद्वान्निनेव विशोधय (= परिहर Nîlak.) MBh. 5, 3904. — 2) *Jmd reinigen* so v. a. *Jmdes Unschuld beweisen, Jmd von allem Verdacht befreien:* नात्मानं वेदिशोधयेत् Jâán. 2,269. MBh. 1,3110. R. 5,90,37. 6,103,14. *Etwas rechtfertigen:* चारित्रम् MBh. 3, 15979. — 3) *in's Klare bringen, genau bestimmen, — fixiren:* घायव्यय-विशोधित Jâán. 2,122. धनुकूलदिवसे दैवज्ञविशोधिते शुभनिमित्ते Varâh. Bṛh. 8. 59,1. — 4) *subtrahiren:* विशोध्य नवात्मात् Varâh. Bṛh. 26(24), 10. Ganit. Spashṭâdh. 17. — Vgl. विशोधन fgg.

— प्रवि, °शुद्ध *vollkommen rein, — lauter* R. 7,75,12. — caus. *vollkommen reinigen, — läutern:* मार्गम् Suçr. 2,102,19. गृहस्थवृत्तिम् MBh. 12,2339.

— सम्, partic. संशुद्ध 1) *rein geworden, rein, lauter* Jâán. 3,139. Bhâg. P. 5,15,4. 25,10. — 2) *entfernt* (als Unreinigkeit,): °किल्बिष Bhâg. 6, 45. — 3) *bereinigt* so v. a. *bezahlt, abgetragen:* भुक्तान्नपिण्डः संशुद्धः प्रभोः Kathâs. 53,163. स° 81,106. — 4) *geprüft, untersucht und als unschädlich u. s. w. befunden:* वेषाभरणसंशुद्धाः स्त्रियः M. 7,219. तदा-चार्यतिसंशुद्धमारभेत Kâm. Nîtis. 10,22. fg. 11,43. — Vgl. संशुद्धि. — °caus. 1) *reinigen:* कूपान् MBh. 12,2041. चितस्ताम् Râéa-Tar. 5,89. 93. — 2) *bereinigen, bestreiten, bezahlen:* कस्यचिदायस्य चार्धेन u. s. w. व्ययः संशोध्यते तव MBh. 2,204. भुक्तयेऽामलकयोस्तयोरेकं मया तव। संशो-धितम् Kathâs. 81,106. — 3) *untersuchen und gegen Gefahren sicher stellen:* संशोध्य त्रिविधं मार्गं षड्विधं च बलं स्वकम् M. 7,185. — 4) *subtrahiren* Uttara zu Varâh. Bṛh. 7,7. — 5) *dividiren* Varâh. Bṛh. S. 8, 21. — Vgl. संशोधन.

— परिसम्, partic. परिसंशुद्ध *durchaus rein, — lauter:* स्वाशय Bhâg. P. 3,29,19.

शुन्, शुनति Dhâtup. 28,46 (गतौ).

1. शुनं 1) शुनंम् adv. *glücklich, mit Erfolg, zum Gedeihen* Naigh. 3,6. RV. 1,117,19. शुनं कुवेम मघवानमिन्द्रम् 3,30,22. 10,160,5. शुनं नः परि षदनुषासम् 6,3,12. शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् 57,4. s. 6,16,4. 10,102,8, 126,7. शुनं नो अस्तु प्रपणः AV. 3,15,4. — 2) m. angeblich Vâju Nir. 9,40 und Indra Âçv. Çr. 2,20,3. — 3) n. *Erfolg, Gedeihen* Çat. Br. 2,6,3,2. सपाम् Çâṅkh. Gṛhj. 2,10. — Vgl. सभि°, उच्छुना (vgl. ÂV. Paiṭ. 2,61). शुशुन AV. 14,2,16 ist sinnlose Variante zu RV. 3,33,12.

2. शुन m. = शुन् *Hund* H. 1279.

शुनंकवीय adj. gebildet aus den Worten शुनं कुवेम (RV. 3,30,22) Âçv. Br. 6,12.

शुनःपुच्छ (शुनस्, gen. von शुन् + पुच्छ) m. N. pr. eines Mannes P. 6,3,21, Vârtt. 5. Âçv. Br. 7,15. Çâṅkh. Çr. 15,20,1. Hariv. 1457. 9574. Verz. d. B. H. No. 1403. Verz. d. Oxf. H. 271,a,1. 356,a,32. — Vgl. शुनःशेप und शुनोलाङ्गूल.

शुनक (von शुन्) 1) m. a) *Hund* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,32. AK. 2,10, 22. Halâj. 2,126. MBh. 13,6070 (die ed. Bomb. liest auch im folgenden Çl. शुनके st. शुनि वा). — b) N. pr. verschiedener Männer P. 4,1,102. gaṇa विदादि zu 104. Verz. d. B. H. 13,1. ein Ṛshi MBh. 2,105. 112. ein Âṅgirasa und Schüler Pathja's Bhâg. P. 12,7,2. ein Fürst MBh. 1,2674. 3,10414. 12,6198. Sohn Kuru's 1,373. 13,2005. Ṛîka's R. 1,61,17. Ṛta's Bhâg. P. 9,13,26. Gṛtsamada's 17,3. Hariv. 1519. Mörder Puramîgaja's und Vater Pradjota's Bhâg. P. 12,1,2. °सुत = शौनक Verz. d. Oxf. H. 59,a,26. pl. Çunaka's Geschlecht Âçv. Çr. 3,2,6. 12,10,12. Kâty. Çr. 19,6,8. Çâṅkh. Çr. 1,7,2. Lâṭy. 6,4,13. Verz. d. B. H. 55,13. 60,27. Vgl. शौनक. — 2) f. ई *Hündin* Halâj. 2,127.

शुनकचञ्चका f. *ein best. Strauch*, = लुङ्कचञ्चु Râéan. im ÇKDr.

शुनकचिल्ली f. *eine best. Gemüsepflanze*, = सुचिल्ली Râéan. im ÇKDr.

शुनंपृष्ठ adj. *einen* (zum Reiten) *tauglichen Rücken habend:* Ross RV. 7,70,1.

शुनंवत् und शुनावत् adj. wohl *mit einer Schar versehen:* सीर TBr. 2,5,8,12.

शुनःशेप (शुनस्, gen. von शुन्, + शेप) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âgîgarti (im Epos ein Sohn Viçvâmitra's und Ṛîka's) P. 6,3,21, Vârtt. 5. gaṇa वनस्पत्यादि zu P. 6,2,40. RV. 1,24, 12. fg. 5,2,7. TS. 5,2,8,3. Ait. Br. 7,15. Çâṅkh. Çr. 15,20,1. 16,11,2. Ind. St. 1,457. fgg. 2,112. 3,478. MBh. 13,186. Hariv. 1457. 1469. 1774. 9574. R. 1,61,19. 21. fg. (63,22. fgg. Gorr.). Varâh. Bṛh. S. 48, 64. VP. 4,7,16. Bhâg. P. 7,5,46. 9,7,19. 16,30. In späteren Schriften häufig शुनःशेफ geschrieben, aber nur ausnahmsweise (z. B. Bhâg. P. 9, 7,19) in den Bomb. Ausgg. — Vgl. शुनःपुच्छ, शुनोलाङ्गूल und शौनःशेप.

शुनःशेफ s. शुनःशेप.

शुनस्कर्ण (शु°, gen. von शुन्, + कर्ण) m. N. pr. eines Mannes gaṇa कस्कादि zu P. 8,3,48. Pâraṇ. Br. 17,12,6.

शुनःसख (शुनस्, gen. von शुन्, + सख) m. N. pr. eines Mannes MBh. 13,4303. 4305. 4333. 4335. 4386. nom. °सखा 4307. शुनःसखसखि 4303.

शुनंहोत्र (1. शुन + होत्र) m. N. pr. eines Sohnes des Bharadvâga Verz. d. B. H. 12. Liedverfasser von RV. 6,33. fg. ein Sohn Kshatra-vṛddha's Hariv. 1518 (शुन°). pl. RV. 2,18,6. 41,14. 17. — Vgl. शौनहोत्र.

शुनावत् s. शुनंवत्.

शुनासीर m. 1) du. Bez. zweier den Getraidewuchs segnender Genien, vermuthlich *Schar und Pflug*. Von den Comm. gewöhnlich erklärt als Vâju und Âditja Naigh. 5,8. Nir. 9,40. Paṇḍara in Bṛhadd. bei Müller, SL. 153. शुनासीराविमां वाचं जुषेताम् RV. 4,57,8. s. AV. 3,17,6. TBr. 2,4,8,7. — 2) शुनासीर Bein. Indra's im Ritual AK. 1, 1,6,37. H. 172. Halâj. 1,58. Çâṅkh. Çr. 3,18,16. Âçv. Çr. 2,20,3. TS. 1,8,9,1. TBr. 1,7,6,1. 2,5,8,2. Kâty. 15,2. Kullâs. in Verz. d. Oxf. H. 116,b,11. die Comm. zu den Lexicographen erwähnen auch die Schreibungen: शुनाशीर und सुनासीर. सुना liesse sich mit ऊर्ण, ऊर्च vergleichen. — Vgl. शौनासीर्य.

शुनासीरिन् adj. Beiw. Indra's Çiksn. Ça. 3,18,17.

शुनासीरीय und शुनासीर्य 1) adj. *dem oder den Çunâsîra gehörig* u. s. w. P. 4,2,32. VS. 24,19. Çat. Br. 2,6,2,5. — 2) f. sc. इष्टि Âçv. Ça. 2,20,1. 3,2,12. — 3) n. sc. पर्वन् oder सक्त् TBr. 1,4,10,2. Çat. Br. 2,6,2,2. 5,2,2,4. 11,5,2,6. Kâty. Ça. 5,11,1. 5. 17. 15,1,18. Âçv. Ça. 12,1,2. — Pâraskar. Gr. 25,4,1. Çiksn. Br. 3,5. Lâty. 3,8,12. Mâç. in Verz. d. B. H. 72 (IV, 3—5).

शुनि m. = शुन्, शुन, शुनक *Hund* H. 1279.

शुनिंधम (शुनीम् + धम) Vop. 26,31.

शुनिंधय (शुनीम् + धय) P. 3,2,28, Vârtt. Vop. 26,34.

शुनी s. u. शुन्.

शुनीर (von शुन्) m. *eine Menge von Hunden* Taitt. 2,10,7.

शुनेषित (शुना ऽइषित Padap.) adj. von Sây. nicht erklärt. यमेषितं रथेषितं शुनेषितं प्राक्रम् तदिदं नु तत् RV. 3,46,38.

शुनोलाङ्गूल (शुनस्, gen. von शुन्, + ला°) m. N. pr. eines Mannes P. 6,3,21, Vârtt. 3. Âit. Br. 7,15. Harîv. 9574.

शुन्ध् s. शुध्.

शुन्धन (von शुन्ध्) adj. (f. ई) *reinigend:* सार्पः TBr. 3,7,12,6.

शुन्ध्यु (wie oben) Uṇâdis. 3,20. 1) adj. (f. शुन्ध्यू) *schmuck:* मर्य RV. 10,43,1. योषणा 39,7. उषो यद्दर्शि शुन्ध्युवो न वक्तः 1,124,4. 128,5. Bṛhaspati 7,97,7. die Marut 5,52,9. Indra 8,24,24. die Sonnenrosse 1,50,9. शुन्ध्यूरसि (nom. m.) मार्जालीयः VS. 5,32. शुन्ध्यूम् voc. pl. fem.: Wasser TS. 2,4,2,2. m. = सप्ति Uvvaṭ. — 2) n. भरद्वाजस्य शुन्ध्यु N. eines Sâman Ind. St. 3,227,5.

1. शुन्ध्यू adj. von शुन् gaṇa गवादि zu P. 5,1,2. n. und f. आ *eine Menge von Hunden* Taitt. 2,10,7.

2. शुन्य adj. = शून्य *leer* H. 1446. Gaṛbe. im ÇKDa.

शुन्ति f. nach Sây. so v. a. मुख, vielleicht *Schulter* (wie im Zend): स्वधाभिर्ये सधु शुन्तावसुह्नत RV. 1,51,5.

शुन्धाकिल N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,2.

1. शुभ्, शुम्भ् *leicht hingleiten, dahinfahren:* सार्प इव प्रवता शुम्भमानाः RV. 3,5,8. सं पृच्छसे समराणाः शुभानैः 1,165,3. मरुद्भिः शुभ्रयद्भिः सोमं पिब 5,60,8.

— प्र dass.: प्र ये शुम्भन्ति जनयो न सप्तयो यामन् *wie Stuten* RV. 1,85,1.

2. शुभ् (= 1. शुभ्) f. *das Dahinfahren, rasche Fahrt, fliegender Lauf;* insbes. von den Marut gebraucht. शुभं गमिष्ठा सुयमेभिरश्वैः TS. 4,7,15,3. ऋयतामिव तन्यतुरघ्न्यो याथना नरः RV. 1,23,11. 5,55,1. 57,2. 7,82,3. शुभं पच्छुधा उपमर्यासि (oder zu 4. शुभ्) 4,51,6. कया शुभा मरुतः सं मिमिक्षवः 1,165,1. शुभा शोभिष्ठाः 7,56,6. शुभा यामेषु (RV. v. l.) AV. 13,1,21. शुभे कं यान्त्यर्यः RV. 1,88,2. 119,2. यामेषु यद्दं युञ्जते शुभे 87,2. 127,6. 167,6. 3,26,4. 5,52,2. 57,2. रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखम् 63,5. 8,20,12. वर्हणावक एते दिवि प्रेङ्ख इरण्यये शुभे कम् *um dahin zu schweben* (oder zu 4. शुभ्) 7,37,3. 88,2. Hiernach erklären wir रथेशुभ् *im Wagen dahinfliegend* (die Marut) RV. 1,37,1. 56,2. und so ist wohl auch 5,54,1 zu lesen. Diese Wurzel scheint in κόμος enthalten zu sein. Vgl. शुभंया, शुभ्वन्.

3. शुभ्, शुम्भ्, शोभते Dâtup. 18,11 (दीप्तौ). शोभति, शुम्भति 11,42 (भासने, शोभार्थे हिंसायां च, सुतौ हिंसने, भाषणे). शुम्भति, शुम्भते 28,32 (शोभार्थे हिंसायां च); vgl. P. 7,1,59, Vârtt. Vop. 13,4. In der älteren Sprache die Formen: शुम्भति, शुम्भसे 2. sg. शुम्भत् AV. शुम्भमान und शुम्भमान, शोभते, शोभमान, शुभानः; in der nachvedischen Zeit mit intrans. Bed. शोभते und शोभति (aus metrischen Rücksichten), ganz vereinzelt auch शुम्भति (transit. und intransit.): शुशुभे (शुशोभ aus metrischen Rücksichten), शोभिष्यते (°ति aus metrischen Rücksichten); शोभसे Inschr. RV. 1,84,16. 10,77,1. partic. शुभितं (= शुभित P. 8,1,55, Kâr., Schol.) TS. 4,4,12,3. 1) *schmücken, herausputzen, verschönern; zurüsten, bereit machen:* med. *sich schmücken, schmuck —, stattlich sein, einen guten Eindruck machen, sich gut machen, sich schön ausnehmen, wohl anstehen:* हिरण्येन मणिना RV. 1,33,8. स्पार्हया श्रिया तन्वा शुभाना 7,72,1. 2,38,3. ता ज्ञातयो न तन्वः शुम्भत स्वाः 10,95,9. 1,165,8. 8,44,12. कन्याइ शुम्भमाना 10,107,10. 110,8. AV. 11,1,14. शुम्भन्मुखम् 8,2,17. 14,1,28. शोभते ऽस्य मुखम् Pârask. Gr. 28,16,6. वधू यामेषु शोभते RV. 4,32,22. 5,2,4. — गिरः 10,4. 8,6,11. इन्दुम् 9,43,2. वक्रिम् 96,7. राधांसि 1,22,8. शुम्भमाना सप्तयुभिः (सोमाः) 36,4. VS. 5,10. 29,8. Âit. Br. 5,10. AV. 12,3,36. Çat. Br. 2,3,2,3. Kâṭy. 24,9. Âçv. Ça. 2,5,9. चोर्णामास्युदगाच्छोभमाना TBr. 3,1,2,12. — शुम्भति *schmücken* Baudh. P. 10,38,12. — शोभते पदा MBh. 3,1828. शिलाः शैलस्य शोभन्ते विशालाः शतशो ऽमिताः R. 2,94,20. ह्लादितस्तेन वाक्येन शुशुभे शुभदर्शनः 112,8. 3,49,32. 79,34. धनागमं यः कुरुते स शोभते (Gegens. शोचते) Spr. (II) 263. मूर्ध्नो ऽपि शोभते तावत् 4920. Rîâ-Tar. 3,74. सत्यसन्धेषु धीराणामवस्तेव हि शोभते Kathâs. 18,131. जिगीषा तेषु शोभते Spr. (II) 475. (I) 5172. शोभमान R. 2,89,12. Mâlav. P. 24,43 (सु°). Baudh. P. 3,28,34 (von सधि zu trennen). शुशोभ MBh. 4,802 (303). निवेश्य वदनं हस्ते शोभसि Harîv. 7066. शुम्भत् (intransit.) Verz. d. Oxf. H. 130,a,14. अशोभितराम् pass. impers. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,12, Cl. 44.* — एकतः सूर्यसंकाशमेकतः शशिसंनिभम् । स बिभ्रच्छुशुभे ऽतीव हेो वर्णो पर्वतोत्तमः Harîv. 12391. R. 2,33,2. अवसत्पठिता वाणी Spr. (II) 673. 2901. 4157. कस्सी शोभते काचित् Kathâs. 47,111. ललितेन R. 1,9,16. दमेन शोभते विप्रः Spr. (II) 2709. 4657. त्वयेव शोभिष्यति राजपुत्री MBh. 1,7137. Mit न *kein Ansehen haben, einen schlechten Eindruck machen, sich schlecht machen, sich übel ausnehmen:* न वाशोभत्त पण्यानि R. 2,48,2. Spr. 3028. 3309. 5033. (II) 1821. 4542. 4624. 4800. Vaṇis. Bau. S. 77,1. Baudh. P. 1,8,29. 3,12,7. न चैवानी पात्रापिधा मक्षेन्द्रं मर्त्य सत्तं पात्रगतस्य शोभेत् MBh. 14,234. Mit इव *schmuck sein —, prangen wie,* aber auch abgeblasst so v. a. *erscheinen wie:* यतीव रामः शुशुभे कौसल्या सुतः श्रिया विष्णुरिवामरादितिः R. Gorr. 1,78,16. Spr. (II) 3123. विधाज्ञमाना शुशुभे प्रतिमेव हिरण्मयी MBh. 1,5542. 4,496. 3,1937. स तेनाभिरुतो वीरो ललाटे द्विपसत्तमः । अशोभत — सशृङ्ग इव पर्वतः 7275. 8,522 (अशोभत्). R. 2,80,4. 5,13,29. 5,9,38 (शोभिष्यसि). Rasa. 9,36. Kathâs. 25,229. Rîâ-Tar. 4,197. 5,272. Baudh. P. 3,7,17. oben so mit यथा MBh. 3,2197. hierher gehören auch: किरीटे सूर्यसंकाशे यस्य मूर्ध्न्यशोभत *wie eine Sonne* 4,575. चीरवसनो जटामण्डलधारिणौ । अशोभेतामृषिसमौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ *wie zwei Ṛshi* R. 2,52,64. — 2. *zurichten* so v. a. *geschickt —, geneigt machen für Etwas;* med. *sich anschicken zu:* इन्द्रं तं शुम्भावसे RV. 8,59,2. (गिरः) याभिर्मदाय शुम्भसे 8,2,7. 38,2. नृम्णा शिशानो मक्षिषो न शोभते 60,2. इन्द्राग्नी 1,21,2. 5,33,

4. मन्मभिः 8,44,26. AV. 6,54,1. — 3) act. missbrauchlich s. शुन्ध् *reinigen:* विश्वे शुम्भन्तु मेनयः AV. 6,415, 3. 12, 2, 10. 3, 13. 21; vgl. die entsprechenden Stellen VS. 20,20. ṚV. 10,85,35. 17,14. — शुम्भमान s. auch bes. und vgl. noch ब्रह्मशुम्भित.

— caus. शुभयति, °ते, शोभयति (nur diese in der klass. Sprache) *schmücken, zieren, Glanz verleihen* (eig. u. übertr.); med. *sich schmücken:* घर्ष्टिभिः ṚV. 1,85,3. ये यंतदृशो न शुभयंत मर्याः 7,56,16. 9,28,3. वाशस्तस्तनुवं शुभयति TBr. 3,3,4,5. (घर्मम्) घर्घ्व न रोतारो ऽशूंशुभन्नमृतांय ṚV. 9,62,6. मणिकाञ्चनचित्राणि (भूषणानि) शोभयंति महागिरिम् MBh. 1,1410. पुरुषकारेण पुरुषः कर्म शोभयन् 2,186. 3,1783. 3014. 4,382. 6, 647. 7,2532. 3933. 3950. 8,265. 13,4110. Hariv. 3261. 5219. 9002. R. 2,33,12. 36,3. 48,9. 80,16. 96,31. R. Gorr. 2,4,26. 3,42,24. 76,19. 4, 2,6. 5,73,9. 7,70,12. Rāgh. 9,40. LA. (III) 89,16. शोभित *geschmückt* MBh. 5,7181. 7534. Spr. (II) 2412. 4542, v. l. Weber, Kṛṣṇaj. 279 (सु°). पद्मावुरसि शोभितया श्रिया *prangend* Bhāg. P. 3,15,39. mit einem instr. *geschmückt mit, schmuck* u. s. w. *erscheinend durch:* शस्त्रैः सैन्यम् MBh. 5,574. मेघः शक्रचापेन 8,960. राजमार्गेण पुरी R. 1,5,8. 13. 2,52,98. 100, 20. fg. 4,44,88. 90. Varāh. Bṛh. S. 12,6. Kathās. 23,4. Weber, Kṛṣṇaj. 270,3. Das im instr. gedachte Wort im comp. vorangehend R. 1,5,7. 2,80,18. fg. 81,16. 4,16,10. Spr. 5287. Kathās. 47,114. Rāja-Tar. 5, 369. Mārk. P. 54,20. Bhāg. P. 1,11,10. 3,22,21. Pāṇ. Gaṇ. 1,4,87. 6,16 (सु°). Vop. in LA. (III) 5,8.

— desid. शुशोभिषमाण Nal. 8,10.

— intens. शोशुभ्यते *überaus schmuck sein, sich sehr stattlich machen* u. s. w. MBh. 14,277. शोशुभ्यमान 3,13296. Nach Vop. 20,1 soll ein intens. gar nicht vorkommen.

— घटि *sich sehr wohl ausnehmen* u. s. w. MBh. 13,7183 nach der Lesart der ed. Bomb. Mit न *kein rechtes Ansehen haben* u. s. w.: सेव रामेण नगरी रक्षिता नातिशोभते R. 2,47,17. उर्वशीरहितं मह्यमात्मानं नातिशोभते *will mir nicht recht gefallen* Bhāg. P. 9,14,36. — caus. *in hohem Grade schmücken, — zieren* MBh. 7,1765. नातिशोभित *kein rechtes Ansehen habend* Hariv. 7078.

— अनु s. अनुशोभिन्.

— अभि med. 1) *schmückend umlegen:* समानं वर्णमभि शुम्भमाना ṚV. 1,92,10. — 2) *schmuck sein, sich schön ausnehmen* u. s. w.: गिरयश्चाभिशोभन्ते धातुभिः समरञ्जिताः Hariv. 11997. — caus. partic. °शोभिता *geschmückt* —, *geziert* —, *ein schönes Ansehen habend* —, *stattlich erscheinend durch:* (गोपी) क्रीडाभिरभिशोभिता Hariv. 3441. घनाकारकशेनापि शरीरेणाभिशोभिता Kathās. 38,115.

— समभि med. *schmuck sein, sich schön ausnehmen* u. s. w.: उत्फुल्लैः u. s. w. वाप्यः समभिशोभन्ते श्रीमत्यः प्रमदा इव R. 4,29,13 fg.

— उप med. dass.: उपशोभते Spr. (II) 1526, v. l. उपशुम्भमान mit einem instr. Bhāg. P. 5,17,13. — caus. *schmücken, zieren* MBh. 7,3942. Hariv. 3532. 10809. Vārāh. Bṛh. S. 36,15. पुरोमत्यर्थमुपशोभिताम् MBh. 3, 2060. चारुचित्रोपशोभित (घाय) Mārk. P. 21,6. प्रासादैरुपशोभिता (सभा) MBh. 2,385. 3,1736. 2440. 2462. 10214. 7,3950. 14,2639. Hariv. 4177. R. 1,5,16. 6,26. 51,24. 27. R. Gorr. 1,49,15. 71,7. 5,73,5. Suçr. 1,22, 3. Kir. Nītis. 14,21. Mārk. P. 56,15. Bhāg. P. 4,24,47. Pāṇ. 139,20. अकुलस्योपशोभिता (भू) Suçr. 1,23,1. प्रतापस्योपशोभित Kathās. 60,52. Mārk. P. 133,18. Bhāg. P. 3,23,17. 4,6,19. 5,20,46. Vop. in LA. (III) 5,2. Vgl. उपशोभन.

— नि vgl. निशुम्भ fgg.

— परि 1) act. *zuberetten:* पयं वातः परिशुम्भति (घर्मम्) AV. 13,1,51. — 2) med. *sich schön ausnehmen* u. s. w.: °शोभमान MBh. 7,7397. — caus. partic. °शोभित *geschmückt, geziert:* शिरःकपालैः Hariv. 14839. R. 4,41,47. 68. Vet. d. Oxf. H. 9,b,32. fg. Pāṇ. 1,7,14. पद्मेन्द्रकीलपरिखाप्रतोली° R. Gorr. 2,87,22.

— प्र in der Stelle: प्र वा घोषे भृगवाणे न शोभे (= शोभते nach Sāy.) ṚV. 1,120,5.

— प्रति caus. partic. °शोभित *geschmückt, geziert:* द्रुमैः सर्वर्तुमानो च सर्वतः प्रतिशोभितम् (परिशोभितम् die neuere Ausg.) Hariv. 8368.

— वि med. *recht schmuck sein, sich sehr schön ausnehmen* u. s. w.: उरम्छैर्विचित्रेश व्यशोभत तुरंगमाः MBh. 7,4290. 13,7188 (एवातिशोभते st. एव वि° ed. Bomb.). Spr. (II) 1526, v. l. — caus. partic. °शोभित *geschmückt, geziert;* mit einem instr. R. 3,39,18. am Ende eines comp. MBh. 8,994.

— सम् med. 1) *schmuck sein, sich schön ausnehmen* u. s. w.: संशोभमाना कन्या TBr. 2,5,8,4. MBh. 9,3206. — 2) *gleich schmuck sein,* mit instr.: सं देवैः शोभते वृधा ṚV. 9,25,3. — caus. *herausputzen, schmücken* AV. 14,1,58. कुन्दैः संशोभितान्युपवनानि Ṛt. 6,23.

4. शुभ् (= 3. शुभ्) f. *Schönheit, Schmuck; Bereitschaft:* विश्वे देवा यत्ते प्रावंतु नः शुभे VS. 18,76. शुभो वा एता यज्ञस्य यद्दक्षिणाः Pāṇ. Br. 16, 1,14. शुभे सक्थ्यो घृतवन्तमस्तु नः AV. 7,106,1. वस्त्रा वासो व्यदधाच्छुभे कम् 14,1,33. 22. शुभे रुक्म न दर्शत निखातमुद्रे पशुः ṚV. 1,117,5. 64,5. auch wohl 8,62,4. 63,6. 7,57,2. 9,94,1.

शुभ (von 3. शुभ्) 1) adj. (f. आ) a) *schmuck, hübsch, prächtig, den Augen angenehm* Halāj. 4,4. Personen Jāān. 1,277 (vorzüglich Strīlex). MBh. 1,898. 3,2858. 2675. 2889. R. 3,52,26. Bhāg. P. 3,21,36. गर्भाः R. 1,15, 25 (23 Gorr.). शुभे voc. f. MBh. 1,6014. 3,1856. 2159. 2491. 2935. Pāṇ. III,185. Bhāg. P. 4,26,21. Brahma-P. in LA. (III) 30,9. रूप R. 5, 91,19. शरीरावयवानि Rāgh. 3,22. मुख MBh. 3,1778. प्रभानना 2198. 3000. R. 2,30,28. 36,30. Brahma-P. in LA. (III) 85,1. °लोचन R. 1,9, 46. शुभेक्षण 2,56,19. 3,42,33. शुभापाङ्गा 2,30,24 (Schl.). °दृश् Vārāh. Bṛh. 2,8. बाहू MBh. 3,1779. चरणौ R. 2,72,3. Thiere und Vögel 55, 28. 5,16,24. Vorr. d. Oxf. H. 51,b,27. गति *Gang* MBh. 3,2226. शृङ्ग पर्वतस्य 1,1107. वनराजी लोध्राणाम् 2,895. नदी 3,2511. पक्षिण्यः R. 2, 15,42. शुक्लतिलैः शुभैः Weber, Kṛṣṇaj. 278. रज्जनी R. 2,54,1. संध्या Vārāh. Bṛh. S. 21,16. Weber, Nax. 2,385. वसन *Kleid* R. 2,37,8. स्वास्तर 87,20. सभा M. 7,145. शाला R. 2,86,21. नगर (शुभतर) Pāṇ. 226,8. गृह Weber, Kṛṣṇaj. 269. कुम्भ 279. कुण्डले M. 4,36. MBh. 4, 296. R. 2,32,5. 64,66. आभरणानि R. ed. Bomb. 4,8,7. नौ 1,26,2 (Schl.). 2,52,5. — b) *angenehm, zusagend* (andern Sinnen als den Augen): गन्धाः *Wohlgerüche* M. 12,65. Jāān. 3,313. शुभाश H. an. 3,728. गिर् Jāān. 1,71. मृदुशुभ्यवचाः Vārāh. Bṛh. S. 22,1. — c) *angenehm überh., erfreulich, den Wünschen und Anforderungen entsprechend:* शुभंयकृत् Vārāh. Bṛh. S. 7,17. 8,19. 50,20. Kathās. 34,247. वृत्ति Suçr. 2,

395, 6. अनिष्टादिदृष्टलाभे ऽपि न गतिर्न्यायते शुभा Spr. (II) 308. Mîrk. P. 100, 44. गिर: Jîân. 3, 156. वाक्य MBh. 3, 1871. R. 4, 1, 23. 24 (°तर). कथा: 2, 53, 5. 83, 10. वाच् (auch स°) H. 273. दैवम् 1379. अशुभं दैवम् 1380. AK. 3, 4, 24, 151. मृगपतिणा: *den Menschen Nutzen oder Vergnügen verschaffend* (Gegens. नुद्रक) M. 8, 297. भूतानि (Gegens. हिंसकानि) Spr. 3352. शुभ = लेमशालिन् Mbh. bh. 8. — *d) von guter Beschaffenheit, seiner Bestimmung entsprechend:* वीज M. 2, 112. पुण्यमूलफलानि 5, 10. 137. वमा Suçr. 2, 378, 21. सम्बु Vasiṣ. Bṛh. S. 54, 30. भूमि *gutes Land* Kathâs. 20, 24. H. 940. शिल्पिन् *ein tüchtiger Künstler* R. 2, 80, 21. कल्प *recht, wahr* M. 4, 239. कर्मविधि 9, 336. प्रायश्चित्तविधि 10, 121. विद्या Spr. 3030. शुभार्चित *auf gebührende Weise* Weber, Kâtjâj. 222. — *e) Glück bringend, — verheissend; faustus:* माम् M. 7, 182. काल MBh. 3, 2191. वर्ष Vasiṣ. Bṛh. S. 8, 34. 19, 15. शकुन् Kathâs. 20, 23. 49, 25 (सु°). तिथि Pârâśar. 8, 14. लग्न Hit. 94, 9. Vet. in LA. (III) 16, 11. Vasiṣ. Bṛh. S. 9, 20. 22, 3. 43, 12. 48, 45. शक 16, 40. 41, 13. Spr. (II) 1562. Verz. d. Oxf. H. 97, b, 26. क्षण Suçr. 1, 107, 21. °लक्षण R. 1, 1, 12. 2, 21, 39. 24, 36. 52, 1. 80, 31. 5, 12, 36. Kathâs. 23, 54. 45, 348. Tattvas. 6. शुभ Vet. in LA. (III) 13, 12. — *f) gut* in ethischem Sinne: बुद्धि Çvetâçv. Up. 3, 4. 4, 1. मति Mârk. P. 100, 43. fg. कर्मन् M. 11, 231. 12, 84. Jîân. 1, 40 (*heilig* Strehlke). MBh. 13, 344. Hariv. 8931 (शुभै: zu lesen). R. 1, 63, 2. 2, 64, 21 (स°). 105, 21 (सु°). Spr. 3000 (zugleich स°). 3003. 8077. Mârk. P. 100, 44. वृत्तानि Spr. (II) 3112. भर्तृगुणा: M. 9, 24. लोकयात्रा 23. °निश्चय (wohl वशेन्द्रियत्वे zu lesen). उपाय (zugleich स°) Spr. 2501. शुभार्थ Bhâg. P. 2, 1, 18. अशुभं वाक्यम् Spr. (II) 4922. — *g) rein:* कर्मापि द्विविधं शेयमशुभं शुभमेव च। अशुभं दासकर्मोक्तं शुभं कर्मकृतां स्मृतम् Mit. 267, 10. fgg. — 2) m. *a*) angeblich *Wasser* Naigh. 1, 12; vgl. z. B. Sây. zu ṚV. 7, 82, 3. — *b) ein best.* Joga (der 23te im विष्कम्भादि ÇKDa.) H. an. 2, 313 (युग fehlerhaft). Mân. Kosmolog. im ÇKDa. °योग Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 41. — *c) Ziegenbock* Colebr. und Lois. zu AK. 2, 9, 76. schlechte v. l. für स्तुभ. — *d*) N. pr. eines Mannes गण तिकादि zu P. 4, 1, 154. Kathâs. 123, 92. eines Autors Verz. d. Tub. H. 13. — 3) f. शा *a*) *light, lustre* Wilson nach Çabdar. = शोभा, कान्ति und इच्छा ÇKDa. angeblich nach Mân.; hier beginnt aber mit शोभा ein neuer Artikel. — *b*) in der Astrol. Bez. *des 2ten Hauses* Vasiṣ. Bṛh. S. 1, 15. — *c*) Bez. *verschiedener Pflanzen* und *Stoffe:* = शमी, प्रियङ्गु, श्वेतदूर्वा: वंशरोचना, गोरोचना Râgân. im ÇKDa. — *d*) *Götterhalle* देवसभा Çabdar. im ÇKDa. — *e*) = क्षत्रियपुर Mân.; vgl. सेभ. — *f) ein best. Metrum:* ⏑ – ⏑ – – – ⏑ – ⏑ – – – + 3 *Mal* – – ⏑ – – – ⏑ – ⏑ – – Journ. of the Am. Or. S. 6, 514. — *g*) N. pr. einer Freundin der Umâ Çabdam. im ÇKDa. — 4) n. AK. 3, 6, 2, 23. अशुभ n. ebend. Taik. 3, 5, 7. *c) Anmuth, Lieblichkeit:* गीतवादित्रनिर्घोषं श्रुत्वा शुभसमन्वितम् (so ist wohl zu lesen st. °समन्विता) । कथं कथ्यादिसंकाशो शब्दं शोभ्यत्यशोभनम् ॥ R. 2, 61, 6. — *b*) *Wohl, Wohlfahrt, Heil, Glück* AK. 1, 1, 6, 3. Taik. 1, 1, 113. 3, 4, 1 (als indecl.). H. 86. H. an. Mân. Hall. 1, 132. °काम Kâuç. 72. °काम्या Taik. 2, 7, 27. Suçr. 1, 104, 19. Spr. (II) 301. 1138. 2551. 3466. 3776. 3913. Vasiṣ. Bṛh. S. 23, 1. 71, 7. 9. Kathâs. 124, 113. शुभे भूयात् Çik. 113, 14. शुभमस्तु Hit. 54, 17. सर्वत्रगतम् 78, 1. शुभेषु *im Glück* Çik. 183. प्रिये शुभानि कार्याणि द्वेष्ये पापानि चैव ह *Angenehmes, Erfreuliches* Spr. (II) 3033. अ° *Weh, Unheil, Unglück* AK. 3, 4, 9, 38. Hall. 5, 18. Suçr. 1, 104, 19. Vasiṣ. Bṛh. S. 23, 1. 48, 1. Kathâs. 124, 113. — *c) Gutes, ein gutes Werk* (in ethischem Sinne) Spr. 3001. fg. (II) 5189. पाक: शुभस्य 4017. °फल Vasiṣ. Bṛh. S. 33, 1. Kathâs. 28, 114. शुभानि (so zu lesen st. शुभान्) Tattvas. 19. अ° *Böses, ein böses Werk, Sünde* H. 1380. Hall. 3, 5. Çat. Br. 2, 4, 3, 6. Bhâg. 4, 16. 9, 1. Spr. (II) 5189. Kathâs. 28, 114. अशुभानि Vop. 3, 143. — *d) eine best. Heilpflanze,* = पद्मकाष्ठ Râgân. im ÇKDa. — Vgl. अप्रमाणशुभ (so zu lesen st. °शुभ), परीत्त° (unter परीत्त) und शोभायनि.

शुभंगी (शुभम् von 2. शुभ् + 2. गा) adj. *flüchtig hinfahrend:* वात ṚV. 4, 3, 6. यज्ञाता शुभंगा: = शुभंगिका P. 7, 3, 46, Schol.

शुभंगिका f. = यज्ञाता शुभंगा: P. 7, 3, 46, Schol.

शुभंयावन् adj. dass.: die Marut ṚV. 1, 89, 1. 5, 61, 13.

शुभंयु (von 4. शुभ्) adj. P. 5, 2, 140. = शुभान्वित Schol. AK. 3, 1, 30. = शुभसंयुक्त H. 433. = शुभसंयुत Hall. 2, 224. = शंयु Taik. 3, 1, 24. 1) *Putz liebend:* (मरुत:) उषसां न केतवो ऽधृष्यिव: शुभंयवो नाज्ञिभिर्व्यञ्जितम् ṚV. 10, 78, 7. — 2) *schmuck, prächtig, schön* Râgân. 8, 6. Verz. d. Oxf. H. 44, *a*, 5. Bhatt. 1, 20. सक देवकुमारैस्तैरासां चक्रे शुभंयुभि: Pârçvanâthak. 4, 41 (nach Aufrecht).

शुभंकर adj. *Wohlfahrt —, Glück bringend, faustus* Vasiṣ. Bṛh. S. 3, 25. 11, 9. 38, 48. Weber, Rimây. Up. 302 (Conj.; statt कृ würden wir ऽयँ lesen).

1. शुभंकर्मन् n. *ein gutes Werk* Râga-Tar. 6, 55.

2. शुभंकर्मन् 1) adj. *edel handelnd* MBh. 3, 2903 (सुभ° ed. Calc.). Kathâs. 17, 133. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2344.

शुभंकूट m. ein N. des Adams-Piks LIA. 1, 195, N. 1.

शुभंकृत् 1) adj. = शुभंकर Vasiṣ. Bṛh. S. 1, 4. 6, 13. 7, 20. 8, 5. 18, 1. 43, 31. Bhâg. P. 5, 22, 13. — 2) m. N. *des 57ten (56ten) Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vasiṣ. Bṛh. S. 8, 41. Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 1.

शुभंकृत्त्व m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Buddhisten Vjutp. 82. Burnouf, Intr. 202. 612. fg. Lalit. 369. ed. Calc. 171, 4.

शुभगन्धक n. *Myrrhe* Râgân. im ÇKDa.

शुभंकर 1) adj. = शुभंकर Buḍḍhiprakâça im ÇKDa. सर्व° Çiva MBh. 13, 1159. — 2) m. N. pr. *a*) eines Asura Kathâs. 44, 144. 45, 378. 47, 24. — *b*) eines Autors; s. u. गुप्त 2) *c*) und u. पूर्ण 4) *b*). — 3) f. ई ein N. der Pârvatî Çabdar. im ÇKDa.

शुभतात (von शुभ) f. *Wohlfahrt, Glück:* °कृत् Çat. Br. 1, 2.

शुभद् 1) adj. = शुभंकर Vasiṣ. Bṛh. S. 9, 22. 10, 21. 32, 13. 41, 10. 46, 9. — 2) m. *Ficus religiosa Lin.* Râgân. im ÇKDa.

शुभदत्त m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 57, 26. fgg. Hit. 49, 10.

शुभदन्त 1) adj. (f. ई) *schöne Zähne habend* Mân. 1. 221. — 2) f. ई N. pr. des Weibchens des Elephanten Pushpadanta Mân.; vgl. सुभद्रन्ती.

शुभदर्शन adj. (f. आ) *schmuck, hübsch, schön* R. 1, 9, 29. 2, 54, 27. 112, 8. अ° *hässlich* 3, 1, 21.

शुभदायिन् adj. = शुभद्. शुभंकर Vasiṣ. Bṛh. S. 3, 24.

शुभधर m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 6, 240. 253.

शुभनय m. N. pr. eines Muni Kathâs. 72, 250.

शुभनामा f. N. *der 5ten, 10ten und 15ten lunaren Nacht* Ind. St. 16,297.

शुभपत्रिका (von शुभ + पत्र) f. *Desmodium gangeticum* Râǵân. im ÇKDa.

शुभपुष्पितगुहि m. Bez. eines Samâdhi Vjutp. 19.

शुभप्रद् adj. = शुभद् = शुभंकर् Vasiṣṭ. Bṛn. S. 8, 43. 46, 96. 68, 72. Kathâs. 49,209.

शुभभावना f. *eine gute Meinung von den Menschen* Spr. (II) 2751.

शुभमङ्गल n. *Wohlfahrt, Glück* R. 2, 25, 24 nach der Lesart der ed. Bomb. (°मङ्गलो) oder adj. *dem das Glück hold ist* nach der Lesart bei Schlegel.

शुभमय (von शुभ) adj. (f. ई) *prächtig, schön:* मूर्ति Spr. (II) 5854.

शुभमित्र m. N. pr. eines Mannes Wassiljew 79. Târân. 198.

शुभभावुक (vgl. P. 3,2,57) adj. *schön erscheinend, prangend* Daçak. 67,7.

शुभवक्त्रा f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's (*die ein schönes Gesicht hat*) MBh. 9,2625.

शुभवत् (von शुभ) adj. *im Besitz guter Werke seiend* Verz. d. Oxf. H. 250, *a*, 12.

शुभवस्तु (aber °वास्तु) N. pr. eines Flusses, = सुवास्तु Burnouf, Intr. 377, N. 2. Hiouen-thsang 1,132. fg. 2,313. fg. Vie de Hiouen-thsang 86. Reinaud, Mém. sur l'Inde 277. LIA. 1, Anh. XXXVIII.

शुभवासन m. v. l. für मुञ्जवासन Çabdar. im ÇKDa.

शुभवास्तु s. शुभवस्तु.

शुभविमलगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

शुभव्यूह m. N. pr. eines Fürsten Lot. de la b. l. 268. fgg.

1. शुभव्रत n. Bez. einer best. *Begehung* am 8ten Tage in der lichten Hälfte des Kârttika Verz. d. Oxf. H. 38, *a*, 38.

2. शुभव्रत adj. (f. घा) *dessen Wandel gut ist, der Guten sich befleissigend* R. 1,9,9. R. Gorr. 1,36,7. Mâṛk. P. 123,1. शुभदृढव्रत R. 2,45,16.

शुभशंसिन् adj. *Gutes —, Glück verheissend* Râǵân. 3,14. Râǵa-Tar. 3,220. 223.

शुभसंयुत (Halâj. 2,224) und शुभसंयुक्त (H. 433) adj. zur Erkl. von शुभंयु.

शुभसप्तमीव्रत n. Bez. einer best. *Begehung* Verz. d. Oxf. H. 41, *a*, 19. fg.

शुभसमन्वित s. u. शुभ 4) *a*).

शुभसार m. N. pr. eines Fürsten Târân. 141.

शुभसूचनी f. N. pr. einer von Frauen verehrten Göttin (*Heil verkündend*) Âdiyamântappa im ÇKDa. Suppl.

शुभस्थली f. *Opferstätte* Çabdâmṛt. bei Wilson.

शुभस्पति (शुभस्, gen. von 4. शुभ्, + पति) m. du. *die beiden Herren des Schmucks:* die Açvin ṚV. 1,3,1. 8,5,5. 22,14. 26,6. 10,40,14. 85,15. AV. 6,3,3. 9,1,19.

शुभाकरगुप्त (शुभ - आकर + गुप्त) m. N. pr. eines Mannes (*gehütet durch eine grosse Menge guter Werke*) Târân. 232. 261.

शुभागम (शुभ + आ°) m. Bez. einer Sammlung von Mysterien Verz. d. Oxf. H. 109, *b*, 8.

शुभाङ्क (शुभ + अङ्क) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Tüb. H. 13. eines Lexicographen Mad. Anh. 2. — Vgl. शुभाङ्ग.

शुभाङ्ग (शुभ + अङ्ग) 1) adj. (f. ई) *einen schönen Körper habend:* Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. *a*) eines Tushitakâjika Devaputra Lalit. ed. Calc. 142,6. — *b*) eines Lexicographen (vgl. शुभाङ्क) Verz. d. B. H. No. 802. Verz. d. Oxf. H. 183, *a*, 2. 189, *a*, 39. Colebr. Misc. Ess. 2,20 (nach Mad.). — 3) f. ई N. pr. einer Dâçârhi und Gattin Kuru's MBh. 1,3792. einer Vaidarbhi, Tochter Rukmin's und Gattin Pradjumna's Harîv. 6710. fgg. der Gattin Kubera's Çabdâmṛt. bei Wilson.

शुभाङ्गद (शुभ + अ°) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,7003.

शुभाङ्गिन् adj. = शुभाङ्ग Wilson, Râmây. Up. 296.

शुभाचार (शुभ + आ°) 1) adj. *einen guten Wandel führend* Rag. 12, 46. Mârk. P. 99,12. — 2) f. आ N. pr. einer Freundin der Umâ Çabdam. im ÇKDa.

शुभाञ्जन m. = शोभाञ्जन Çabdar. im ÇKDa.

शुभात्मक (von शुभ + आत्मन्) adj. (f. शुभात्मिका) 1) *angenehm, erfreulich* AK. 1,1,2,3. — 2) *gutgesinnt:* स° *büsgesinnt* Spr. (II) 414.

शुभानन्दा (शुभ + आनन्द्) f. eine Form der Dâkshâjaṇî Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 13.

शुभान्वित (शुभ + स°) adj. zur Erklärung von शुभंयु AK. 3, 1, 50. P. 5,2,140, Schol.

शुभाय् (von शुभ), °यते *zu einem Glück werden* Çiç. 14,112, wo aber बहुशुभायते zu verbinden ist d. i. *zu einem grossen Glück werden.*

शुभार्थिन् (शुभ + अ°) adj. *Wohlfahrt wünschend, dem es um sein Heil zu thun ist* R. 1,62,9. Râǵa-Tar. 3,258. 4,74.

शुभावह (शुभ + आ°) adj. *Wohlfahrt —, Heil —, Glück bringend* Vasiṣṭ. Bṛn. S. 30,29. 54,98. 68,73. 79,26. Râǵa-Tar. 3,222.

शुभाशय (शुभ + आ°) adj. *von guter Gesinnungsweise* Kim. Nîtis. 12, 36. Râǵa-Tar. 6,296.

1. शुभाशिस् (शुभ + आ°) f. *Glückwunsch, Segenswunsch:* शुभाशिषं कृ, दा, प्रदा Pâṇ. 1,4,6. 11,24. 29. 14,106. 2,3,59. शुभाशीर्वचन 1,11,9.

2. शुभाशिस् (wie oben) adj. *über den ein Glückwunsch —, über den ein Segenswunsch gesprochen wird:* पुत्रं शुभाशिषं कृत्वा *so v. a. seinen Sohn gesegnet habend* Pâṇ. 1,1,23. 9,39. 13,21 (शुभाशिषौ zu lesen).

शुभाशुभ (शुभ + अशुभ) 1) adj. (f. आ) *angenehm und (oder) unangenehm, erfreulich und (oder) unerfreulich:* °फलं कर्म M. 12,3. Vasiṣṭ. Bṛn. S. 51,1. — *b*) *Glück und (oder) Unglück bringend, — verheissend:* निमित्तानि Vasiṣṭ. Bṛn. S. 7, Z. 8. Verz. d. Oxf. H. 334, *a*, 34. fg. °लक्षणानि 324, *b*, 5 v. u. °योग 336, *b*, 11. — *c*) *gut und (oder) schlecht* in ethischem Sinne: कर्मन् Nir. 14,6. M. 12,3. Spr. (II) 5343. Verz. d. B. H. 288,3 v. u. Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 18. वाच् Spr. (II) 4922. fg. — 2) n. *a*) *Wohl und (oder) Weh, Glück und (oder) Unglück* AK. 3, 4, 6, 38. 24,157. Maitrâjan. 6,16. Bhag. 2,57. Vasiṣṭ. Bṛn. S. 47,22. 51,1. 58,52. Kathâs. 25,32. Verz. d. B. H. No. 873. 896. 901. Verz. d. Oxf. H. 334, *a*, 9. 335, *b*, 14. P. 1, 4, 39, Schol. Vop. 3, 15. — *b*) *Gutes und (oder) Schlechtes, ein gutes und (oder) ein böses Werk* Spr. 5284. (II) 5405. Aṣṭâṅgâv. 13,7. Hit. I, 201.

शुभासन (शुभ + आ°) m. N. pr. eines Verfassers von Mantra bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101, *a*, 35.

शुभेक्षण् (शुभ + ईक्ष् + ल्यु) adj. *nur für das Gute ein Auge habend* Pâṇ. 4,3,35.

शुभोदय (शुभ + उदय) m. 1) *der Aufgang eines günstigen* (Planeten), स° *der Aufgang eines ungünstigen Planeten* Verz. d. Oxf. H. 97, *b*, 26.

— 2) N. pr. eines Verfassers von Mantra bei den Tântrika ebend. 101,b,16.

प्रुषि (von 3. प्रुष् Unâdis. 2,13. 1) adj. (f. षी) *a) schmuck, schön; klar;* = उद्दीप्त, दीप्त AK. 3,4,25,194. H. an. 2,464. Med. r. 93 कर्णौ ṚV. 1,33,3. 2,11,2. 3,15,5. श्रवान् 3,33,1. गुवन् 1,14,5. सूर्य 96,20. शिशवः 7,36,16. die Açvin 68,1. die Marut 1,19,5. 167,4. 2,36,2. Ushas 1,57,3. 7,75,6. Agni 3,26,2. — 7,39,3. 93,6. शुम्भ 2,11,4. 7,56,8. धारा: 5,41,12. Kauç. 103. सन्धस् ṚV. 9,62,5. 107,24. AV. 11,1,17. पुरुष Mupp. Up. 2,1,2. रथ MBh. 3,3031. शासन R. Gorr. 1,3,68. आभरण R. Sch. 2,78,5. Min. P. 82,25. गुणा: *glänzende Vorzüge* Spr. (II) 3809. — *b) weiss, hellfarbig* AK. 1,1,4,22. 3,4,25,194. H. 1393. H. an. Med. Halây. 4,47. Kîm. Nîtis. 14,32. Spr. 4925. कुथा: R. Gorr. 2,72,20. वस्त्रि Vaṭ. in LA. (III) 4,7. त्रिपवनवृष Menu. 53. गिरि Kathâs. 50, 169. चन्दन Weber, Kâs. Stud. 291. आतपत्र Râga-Tar. 5,482. Bhâg. P. 3,15,28. गरुड M. 7,76. R. 4,40,40. सद्मन् Spr. 3003. चतुःशालानि R. 2, 91,32. गुणा: *Fäden* Spr. (II) 3809. Porion Vaṭ. Bṛh. S. 61,5. सप्तराणि, °धातु Schol. zu Naish. 22,54. मृदु (मृदा st. सदा zu lesen) Padma-P. 3,4. सुधाप्रुषं सद्म Spr. 3268. भूति° *wie Asche* Kathâs. 25,231. हिम° 30,31. कर्पूर° 75,104. शरप्रुष (so ist wohl zu lesen st. शरच्छुष) R. Gorr. 1,45,19. यशस् *weiss, rein* Ragu. 2,69. Kathâs. 25,225. — 2) m. *a) Sandel* Çabdar. im ÇKDa. — *b)* N. pr. α) eines Mannes P. 4,1,123. gaṇa कुर्वादि zu 131. Gatte der Vikuṇṭhâ und Vater Vaikuṇṭha's Bhâg. P. 3,15,24. — β) pl. eines Volkes Min. P. 58,12. — 3) f. षी *crystal; Bambusmanna; the Ganges* Wilson nach Râgân. — 4) n. *a) Talk* H. an. Med. — *b) Silber* H. ç. 161. Râgân. im ÇKDa. — *c) Eisenvitriol* Râgân. a. a. O. — Vgl. चन्द्र°, तनू°, मक्षा°, शौचायण, शौधेय, शौध्य.

प्रुषकृत् m. fehlerhaft für प्रुषत्कृत् 2) Çabdaratn. bei Wilson.

प्रुषवादि adj. *mit schmucken Spangen versehen:* die Marut ṚV. 8,20,4.

प्रुषता (von प्रुष) f. *die weisse Farbe, das Weiss:* राजहंसस्य Spr. (II) 2101. कुवस्त्रता प्रुषतया विराजते 2713. Verz. d. Oxf. H. 117,b,7.

प्रुषत्व (wie oben) n. dass.: शारदस्य Spr. (II) 4345.

प्रुषदन्त् adj. (f. °दती) *weisse Zähne habend* P. 5,4,145.

प्रुषदन्त 1) adj. (f. ई) dass. ebend. शशिविमलमयूखप्रुषदन्ति Mṛicch. 159, 7. — 2) f. ई N. pr. des Weibchens des Elephanten Pushpadanta AK. 1,1,2,6. Sârvabhauma Hîra. 148; vgl. प्रुषदन्ती.

प्रुषभानु m. = प्रुषरश्मि, प्रुषांशु *der Mond* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 506, Cl. 22.

प्रुषमती (von प्रुष) f. N. pr. eines Flusses LIA. 2,802. प्रुषवती wäre die richtige Form.

प्रुषयाम adj. *einen schmucken Wagen habend:* Ushas ṚV. 3,58,1.

प्रुषयावन् adj. *mit schmuckem* (Gespann) *fahrend:* die Açvin ṚV. 3,26,19.

प्रुषरश्मि m. *der Mond* Çabdaratn. bei Wilson.

प्रुषवती (von प्रुष) f. N. pr. eines Flusses Hariv. Langl. I, 508. सप्तवती ed. Calc. — Vgl. प्रुषमती.

प्रुषशस्तम adj. superl. nach Sây. *sehr glänzend:* (सोमः) पवमानो रुषीतमः प्रुषेभिः प्रुषशस्तमः ṚV. 9,66,26.

प्रुषांशु (प्रुष + षंशु) m. *der Mond* AK. 1,1,2,15. H. ç. 10 (प्रुषांशु die Hdschr.).

प्रुषालु (प्रुष + षालु) m. *ein best. Knollengewächs* (मल्लिषकन्द) Râgân. im ÇKDa.

प्रुषावत् (von प्रुष) adj. *schmuck, klar:* एष स्तोता वि नीयते ऽस्तः प्रुषावता पथा ṚV. 9,15,3.

प्रुषि (von 3. प्रुष्) Unâdis. 4,68 (parox.), oder प्रुषिन् (von प्रुष) adj. *schmuck:* Rinder, Rosse ṚV. 1,29,1. 5,34,6. प्रुषि m. = प्रक्षन् Uṇâdis.

प्रुषिका f. Vop. 4,8.

प्रुषीभू (प्रुष + 1. भू) *weiss werden:* °भूत Râga-Tar. 1,270.

प्रुष्वन् (von 1. प्रुष्) adj. *flüchtig:* Rosse ṚV. 4,38,6. सुष्वन् Sây.

प्रुष्व n. = प्रुल्व H. 928.

प्रुष्वल n. *ein leicht Feuer fangender Stoff: Strohhalme oder Werg* nach Comm. Kâty. Ça. 25,7,12. गोमयानि च प्रुष्वलानि वावधाय Çat. Br. 12,5,2,3.

प्रुष्ण् s. 1. und 3. प्रुष्.

प्रुष्ण m. N. pr. eines Asura Hariv. 3262. 9398. 10247. R. 7,6,35. Min. P. 21,25. 90,1. fgg. Bhâg. P. 8,10,21. 30. Verz. d. B. H. No. 540. Verz. d. Oxf. H. 23,b,3. 46,b,27. 346,a,30. Mṛicch. 105,22 im Prâkrit. Beinn. der Durgâ: °हननी Hariv. 9424. °मथनी (°मर्दिनी v. l.) H. 205. °घातिनी Çabdar. im ÇKDa. Vgl. नि°.

प्रुष्णदेश m. N. pr. eines *Landes* Colebr. Misc. Ess. 2,179; vgl. सुष्ण m. pl. als N. pr. eines Volkes R. 4,40,25.

प्रुष्मन् adj. (f. ई) vermuthlich für प्रुष्वन् (vgl. 3. प्रुष् 3) *reinigend:* Himmel und Erde AV. 7,112,1.

प्रुष्मपुर n. Çumbha's *Stadt* Buddhaprasâda im ÇKDa. सधुना शम्भलपुर इति ख्यातम् ÇKDa. प्रुष्मपुरी f. dass. Taik. 2,1,12.

प्रुष्मान् (von 3. प्रुष्) m. angeblich N. eines Muhûrta in einer dunklen Monatshälfte TBr. 3,10,1,2.

प्रुष्मी m. dass. ebend.

प्रुष्र m. N. pr. MBh. 1,3788 fehlerhaft für प्रूर, wie die ed. Bomb. liest. *Lies* Duan. bei Wilson.

प्रुहुष् f. pl. *stärkende Tränke, Heiltränke* Naish. 4,3. Nir. 6,16. व्यानुषक्प्रुहुषो जीवसे धाः ṚV. 1,72,7. गोप्रुषा: 169,8. चन्द्राप्रुषा: 8,49,8. 3, 38,8. 4,23,8. 7,23,2. विश्वप्रुषस: 10,122,1. प्रुहुष: zu sprechen 1,70,5.

प्रुल्कं m. (dieses nicht zu belegen) und n. gaṇa सर्वचर्चादि zu P. 2,4, 31. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *Preis einer Waare, Werth:* मूके चन स्वो परो प्रुल्कायं देयाम् ṚV. 8,1,5. 7,82,6. — 2) *Kampfpreis:* धनुः प्रुल्कावासम् MBh. 1,7088. — 3) *Zoll, Abgabe auf eine Waare, Steuer* AK. 2,8,4,27. Taik. 3,3,46. H. 724. an. 2,19. Med. k. 37. Halây. 5,42. P. 5,1,47. Dhâraṇ. 116,6. 150,6. fgg. धर्म्यं प्रुल्कमवकारयेत् Âpast. 2,26,9. M. 8,159. 397. 10,120. Jâgn. 2,47. 261. 263. कस्मिद्भ्यागता दूराद्वणिजो लाभकारणात्। यथोक्तमवकर्यन्ते प्रुल्कं प्रुल्कोपजीविभिः॥ MBh. 2,249. 12,2724. Spr. (II) 4845. 4914. Kathâs. 29,105. 125. 130. Min. P. 18,8. Bhâg. P. 4,24,6. Pañcat. 222,3. Jaiminîyabhâra 7 in Z. f. d. K. d. M. 4,345. प्रुल्काध्यक्ष H. 724. — 4) *Kaufpreis einer Maidchens; Morgengabe* Taik. H. an. Med. Halây. Hîra. 286. Kauç. 79. न कन्यायाः पिता विद्वान्गृह्णीयाद्युल्कमण्वपि M. 3, 51. 53. fg. 8, 204. 366. 369. 9,93. 98. 100. दत्तप्रुल्का 97. °द् ebend. Jâgn. 2,144. MBh. 1,4169.

7196. 7336. 3, 11048 (S. 374). 13, 114. 209. fg. 2422. 2431. 4630. R. 2, 107, 3 (115, 3 Gorr.). Ragh. 11, 38. Kathis. 112, 194. fg. Bhâg. P. 8, 15, 6. 10, 58, 40. Bhatt. 5, 36. Rîga-Tar. 6, 254. Daçak. 61, 12. गुणशुल्का, धनशुल्का 78, 12. Hurenlohn Kathis. 43, 92. Mâlav. P. 16, 28. — 3) fehlerhaft für शुक्र MBh. 13, 2624. für शुक्ला 4925. — Vgl. वीर्य° (als m. auch Bhâg. P. 1, 10, 29. als adj. f. auch Bhâg. P. 10, 52, 41), शौल्क und शौल्किक.

शुल्कत्व n. nom. abstr. zu शुल्क 4) Dîpank. 152, 2.

शुल्कय् (von शुल्क), °यति Dhâtup. 32, 75 (खतिस्पर्शने; सर्जने वर्जने Vop.). v. l. für शल्कय् (परिभाषणे, भाषणे) 34.

शुल्कशाला f. *Zollhaus, Accise* Schol. zu P. 4, 3, 75. 4, 50. — Vgl. शौल्कशालिक.

शुल्कस्थान n. *Zollstätte, Steuerplatz* M. 8, 398. 400. Jâgñ. 2, 262.

शुल्किका f. N. pr. einer Gegend Buâs. zu AK. 1, 2, 4, 11 nach ÇKDa. vgl. शौल्किकेय.

शुल्ब Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4, 95. 1) n. AK. 3, 6, 8, 23. *a) Schnur, Strang* AK. 2, 10, 27. H. 928. Âpast. beim Schol. zu Kâty. Ça. 1, 3, 14. 20. Z. d. d. m. G. 9, LVI. Sûrjas. 13, 22. Bhâg. P. 2, 7, 20. शण° Kâç. 25. शुल्वा f. Hall. 2, 442. शुल्वा und शुल्वी Comm. zu AK. 2, 10, 27. — *b)* Titel eines Pariçishṭa des Kâtjâjana Ind. St. 3, 269. Verz. d. Oxf. H. 341, *a*, 41. °परिशिष्ट Verz. d. B. H. No. 232. Verz. d. Oxf. H. 341, *b*, N. °सूत्र 162, *a*, 9. °वार्त्तिक 341, *b*, N. मानवशुल्बभाष्य Ind. St. 1, 470. — *c)* = यज्ञकर्मन् und आचार H. an. 2, 589. Med. v. 28. — *d)* = बलसंनिधि dioss. — *e) Kupfer* (aus शुल्वारि geschlossen) AK. 2, 9, 98. H. 1039. H. an. Med. Hâl. 111. Hall. 2, 15; vgl. शौल्विक. — 2) m. N. pr. eines Mannes Çâlâk. zu Bâdar. Âr. Up. 4, 1, 3; vgl. शौल्वायन. — Meist शुल्व geschrieben.

शुल्वज (शुल्व *Kupfer* + ज) n. *Messing* H. 1049.

शुल्वय् (von शुल्व), °यति Dhâtup. 32, 71 (माने, सर्जने; vgl. शुल्कय्).

शुल्वारि m. *sulphur, Schwefel* H. 1037. Wird in शुल्व *Kupfer* + अरि *Feind* zerlegt.

शुल्विक n. v. l. für शुल्व 1) *b)* Ind. St. 2, 209.

शुल्ह n. = शुल्व *Schnur* und *Kupfer* Comm. zu AK. nach ÇKDa.

शुल्व s. शुल्व.

शुशुक्वन् (von 1. शुच्) adj. *leuchtend, strahlend* ṚV. 1, 132, 3.

शुशुक्वनि adj. dass. ṚV. 8, 23, 3.

शुशुमा (!) f. N. pr. der Gattin Çukra's Çâradâtan. bei Wilson.

शुशुलूकयातु (शुशुलूक *ein best. unheimlicher Vogel*, nach Sây. *eine kleine Eule*; vgl उलूक) m. N. eines Unholds ṚV. 7, 104, 22.

शुशुवंस् (partic. perf. von 1. शु) TS. Prâtiç. 16, 12. P. 3, 2, 108. *gehört hierher* (auch st. des verbi finiti): मुनिवचनम् R. Gorr. 1, 22, 20. 4, 31, 32. Ragh. 11, 81. Bhatt. 1, 20. यदहं तु शुशुवान्धात्रा स्त्रियं शुल्का कनीयसा 6, 136. *der gehört d. h. gelernt hat, ein Studirter*: ब्राह्मणाः शुशुवांसो ऽनूचानाः Çat. Br. 1, 3, 3, 3. 8, 1, 28. शुशुवुषाम् 2, 2, 2, 6. TS. 2, 5, 4, 1. विप्रा लोते यच्छुशुवांसः 9, 2. 5, 3, 2, 1. 8, 6, 1, 1.

शुश्रू f. *Mutter*: शिशोः शुश्रूषणाच्छुश्रूर्माता (so ed. Bomb. und ÇKDa.) MBh. 12, 9518 (°णाच्छूश्रू° ed. Calc.).

शुश्रूषक (vom desid. von 1. श्रु) adj. *gehorchend, Jmd dienend, gehorsam*: शुश्रूषकश्च पञ्चप्रकारः। शिष्यो ऽन्तेवासी भृतको ऽधिकर्मकृदाम इति Mit. 267, 1. स्वस्य कुलस्य MBh. 13, 2566. पित्रोः Spr. (II) 1828. मम Verz. d. Oxf. H. 33, *a*, 20. गुरु° MBh. 13, 3365. पितृ° Ver. in LA. (III) 35, 2.

शुश्रूषण (wie oben) n. 1) *das Verlangen zu hören* Bhâg. P. 10, 78, 38. — 2) *Gehorsam, das zu Diensten Sein, der Jmd geweihte Dienst* Çârîr. im ÇKDa. MBh. 12, 9513. 13, 525. R. 1, 34, 40. Bhâg. P. 5, 5, 20. 6, 18, 55. योगिनाम् (obj.) 1, 5, 28. परं शुश्रूषणं मह्यं स्यात् 3, 13, 12. शूद्रः शुश्रूषणं कुर्यात्त्रिषु वर्णेषु नित्यशः MBh. 4, 1559. तव शुश्रूषणं मूर्ध्ना करिष्यामि R. 2, 52, 49 (51, 15 Gorr.). गुरु° MBh. 1, 741. Pârâç. 4, 2, 19 (pl.). पति° R. 1, 1, 88. Mânav. P. 16, 62. वह्निशुश्रूषण° MBh. 1, 1071. पाद° 6268. अग्नि° *treue Pflege des Feuers* 3, 12455. R. 1, 17, 26 (18 Gorr.).

शुश्रूषा f. 1) = शुश्रूषण 1) H. an. 3, 743. Med. sh. 45. Kâm. Nîtis. 4, 21 = H. 310. — 2) = शुश्रूषण 2) AK. 2, 7, 31. Tait. 3, 3, 441. H. 497. H. an. Med. Hall. 1, 139. M. 2, 112. 10, 28. MBh. 13, 210. एतेषामेव वर्णानाम् (obj.) M. 1, 91. 2, 239. 241. 7, 38. 9, 334. MBh. 1, 1069. 13, 1422. शुश्रूषां कर्तुं द्विजानाम् M. 10, 99. Spr. 3004. शुश्रू° पित्रोर्न संपादिता 2796. तव °षाः *ganz zu deinen Diensten* Kathâs. 1, 21. 27, 104. Bhâg. P. 3, 13, 7. Pârâç. 214, 19. द्विजातिषु MBh. 13, 6446. तेषामेव नित्यं शुश्रूषां कुर्यात् M. 2, 225. गुरु° Çâṅkh. Gṛihj. 2, 6. 12. Pâr. Gṛihj. 2, 4. M. 2, 233. MBh. 3, 1808. द्विज° Jâgñ. 1, 120. स्वभर्तृ°. Çuk. in LA. (III) 34, 13. अग्नि° M. 2, 218. Kâm. Nîtis. 2, 22. Mânav. P. 28, 12. स्व° Spr. (II) 787. — 3) = कथन Med. — Vgl. चरण°, पाद°, शरीर°.

शुश्रूषितर् (wie oben) nom. ag. = शुश्रूषक. ब्राह्मणानाम् MBh. 13, 2564. गुरु° 2580.

शुश्रूषितव्य (wie oben) adj. *dem man gehorchen muss, zu dessen Diensten man sein muss* R. Gorr. 2, 21, 9.

शुश्रूषिन् (wie oben) adj. = शुश्रूषक. गुरु° MBh. 7, 2752. 2759.

शुश्रूषु (wie oben) adj. 1) *zu hören verlangend, lernbegierig* Nâg. Tîp. Up. in Ind. St. 9, 81. Harîv. 983. Spr. (II) 4467. Bhâg. P. 1, 1, 2. 2, 16. 3, 21, 4. 10, 24, 4. स्व° Buâs. 18, 67. Harîv. 14403. — 2) *gehorsam, folgsam, zu Jmdes Diensten bereit* TBr. 2, 3, 14, 4. M. 2, 109. Spr. (II) 3095. MBh. 1, 740. 2806. 3, 1530. 13, 2022. 6447. R. Gorr. 2, 34, 19. Mâlav. P. 28, 17. मातृणाम् MBh. 3, 2164. 2166. गुर्वग्न्यतिथिवृद्धानाम् Bhâg. P. 8, 1, 37. जननीम् R. 2, 21, 34. उत्कृष्ट° M. 9, 335. त्रिवर्ण° MBh. 1, 3339. Mâlav. P. 22, 30.

शुश्रूषैण्य (wie oben) adj. *was man gern hören* —, *worauf man hören soll* TS. 3, 3, 9, 2. Çâṅkh. Ça. 1, 4, 5.

शुश्रूष्य (wie oben) adj. = शुश्रूषितव्य R. Gorr. 1, 79, 15. 2, 21, 7. 10. 25, 12. Kathâs. 72, 95. Kull. zu M. 2, 241.

1. शुष्, शुष्यति Dhâtup. 26, 74 (शोषणे). शशुषत् P. 3, 1, 55. शुशोष; शोक्ष्यति Kâr. 6 aus Sidd. K. zu P. 7, 2, 10. aus metrischen Rücksichten auch med. *trocknen, eintrocknen, ausdorren, hinwelken* AV. 8, 139, 2. 9, 1. Çat. Br. 2, 6, 3, 14. 3, 7, 3, 3. 8, 1, 4, 1. 7, 2, 14. 14, 4, 3, 21. शुष्यति प्राणे क्षते ऽन्नात् 8, 28, 1. Kâṭy. 30, 1. Gewächse 36, 6. तोयनिधिः MBh. 3, 891. 12139. R. 3, 72, 36. Spr. (II) 2214. 2301. वल्कलानि R. 3, 77, 26. कुसुमानि 24. MBh. 4, 1705. Spr. 3190. 3936. Vaâlm. Bâh. S. 84, 95. Kathâs. 117, 55. Râga-Tar. 3, 162. 326. Bhâg. P. 1, 15, 2. 7, 2, 9. वृतः, आत्मा 8, 19, 40. कण्ठः R. 2, 69, 19. मुखम् vor Durst Harîv. 3412. Spr. (II) 2590.

किं ते मुखं शुष्यति दीनवर्णम् MBh. 3,15677. R. Gorr. 2,36,10. 5,33,40. क्षीयन्ते धातवः सर्वे ततः शुष्यति मानवः Suçr. 2,445,18. MBh. 2,1685. पुत्रशोकेन शुष्यन्ती Harîv. 4396. क्षुधा Spr. (II) 437. 4460. Mârk. P. 61, 73. Râdâ-Tan. 2, 84. इन्दुमिन्दुमणिः किं च शुष्यन्तमनुशुष्यति Spr. (II) 1276. सकृ वृतेन — सो ऽप्यशुष्यत MBh. 13,270. कृशमशान् — शुष्यमाणान् R. 2,96,34 (105,33 Gorr.). 3,61,48. — Vgl. ऊर्धशोषम्.

— caus. शोषयति 1) *austrocknen* (trans.), *austörren*: व्रीहीन्नम् AV. 3,25,3. हृदयम् 6,139,1. गोमयम् Kauç. 19. समुद्रान् Çat. Br. 9,5,2,18 (med.). MBh. 3,189. Harîv. 9731. R. Gorr. 2,121,7. 3,62,13. 5,26,27. Râdâ-Tan. 4,599. Pañcat. 78,19. Vop. 25,22. शोषितसरसि निदाघे Spr. (II) 2721. MBh. 3,12140. उर्वीं विवस्वान् Suçr. 1,19,17. Spr. (II) 4337. व्रीहीनातपः P. 1,3,88, Schol. Vop. 22,3 (mod.). Varâh. Bṛh. S. 55,23. 76,7 (सुशोषित). आर्द्रालक्तकं चरणम् Mâlav. 48. देहम्, शरीरम्, कलेवरम्, गात्राणि, आत्मानम् M. 6,24. MBh. 1,602. 13,7176. 14,2376 (med.). Spr. (II) 3699. Bhag. 2,23. R. 1,64,19. मुनयः — नानाधर्मेण शोषिताः Harîv. 12198. Râdâ-Tan. 6,145. — 2) *so v. a. hart zusetzen, zu Grunde richten, vernichten*: पाण्डवान्बहुशोषयत् (परिशोचयन् ed. Bomb.) MBh. 6,1902. 7,3000. मूर्खं पत्ताप्रु शोषय Mârk. P. 50,85. मनसिव्रतापम् Git. 12,5.

— घञ् 1) *allmählich eintrocknen, — verdorren, — versiegen, — hinschwinden*: अनुशुष्यात्ततो म्रियते Çat. Br. 14,4,2,32. अरण्ये द्वादशरात्रमनुशुष्येत् *sich eintrocknen lassen so v. a. sich kasteien* Kauç. 126. 41. इन्द्रियाणि Bhag. P. 10,10,16. मद्याः, देवद्रविणसंपदः 20,10. — 2) *nach einem Andern* (acc.) *hinschwinden*: इन्दुमिन्दुमणिः किं च शुष्यन्तमनुशुष्यति Spr. (II) 1276.

— श्रव *trocken werden*: यस्य वै स्नातमात्रस्य हृदयं नावशुष्यति (st. dessen कृत्यादंशवशुष्यते Mârk. P. 43,13) Viṣṇ-P. in Verz. d. Oxf. H. 51,5,3. — caus. v. l. zu उप Âpast. 2,10,16.

— उद् *eintrocknen*: आपः Kâṭhaka. Up. 4,3,2. — caus. *austrocknen* (trans.), *austörren*: समुद्रम् MBh. 7,1417. तरुगहनम् Spr. (II) 2009. (शोकः) उच्छोषयति वै प्राणान्वारिस्तोकमिवातपः R. 2,64,65. शरीरम् MBh. 5,7478. — Vgl. उच्छोषण fg.

— समुद् *eintrocknen*: समुच्छोद्यति सागरः Bhaṭṭ. 16,17.

— उप dass. TS. 3,1,10,3. Suçr. 1,97,19. Kâraka 2,6. — caus. *eintrocknen* (trans.), *austörren* Suçr. 1,263,8. उपशोषितो रसधातुः 33,4,5. सूर्यप्रतापोपशोषितदेहः 20,17. लोकमादित्यैरुपशोषितम् MBh. 3,12874. तपसा शरीरम् 1,4624. 12,248. Harîv. 1238. Kathâs. 40,102. नियमैः Âpast. 2,10,16. — Vgl. उपशोषण.

— परि *eintrocknen, verdorren, zusammenschrumpfen*: मत्काङ्क्षदः Bhaṭṭ. 10,41. समूल वा एष परिशुष्यति यो ऽमृतमभिवदति Praçnop. 6,1. पदेवं परिशुष्यसि MBh. 5,6046. (मुखम्) पर्यशुष्यत बाष्पेण व्रलोढ्तमिवाम्बुजम् R. 2,30,25. Bhag. 1,29. मुखेन परिशुष्यता R. 2,18,1. 36,11. 58,33. 104, 3. 3,7,25. 64,17. 67,2. 70,3. 4,29,7. 7,46,1. Bhâg. P. 4,6,64. परिशुष्यत्स्खलद्वाक्य Jâdâ. 2,14. परिशुष्यमाणहृदयवदन Bhâg. P. 5,26,26. ऊर्ध्वशोषं परिशुष्यमाणाः (v. l. परिशोष्यमाणाः) Bhaṭṭ. 11,40. Vgl. परिशोष. — caus. *trocken machen, austrocknen, austörren*: वारि परिशोषयते Kâm. Nîtis. 11,19. श्लेष्माणम् Kâraka 3,1. 2,6. वक्त्रम् Suçr. 1,155,7. स्वदेहम् Spr. (II) 4320. Pañcat. 182,11. Pañcad. 3,8,13. परिशोषितदुष्टपूतनाप्राणा Vers. d. Oxf. H. 68,5,22. Vgl. परिशोषण fg.

— प्र *verstiegen*: मत्तमातङ्गप्रशुष्यदानशीकर Kâm. Nîtis. 16,38. — Vgl. प्रशोष fg.

— प्रति *vertrocknen*: प्रति शुष्यतु यशो यस्य ṚV. 7,104,11.

— वि *eintrocknen, vertrocknen, hinschwinden*: घर्णावः, मांसशोणितः MBh. 5,2131. विशुष्यत्तालु Bhâg. P. 1,18,27. हृदयेन विशुष्यता R. 7, 46,19. विशुष्यतो भूपतेः Râdâ-Tan. 2,71. मुखं चैव व्यशुष्यत R. 3,29,15. विशुष्यमाणशरीर Suçr. 1,124,13. °हृदय 14. Vgl. विशोष. — caus. *trocken machen, austörren*: पयः MBh. 1,1336. 3,10767. मकरालयम् 8, 656. Harîv. 3839. विशोषितो भानुमतो मयूखैर्मन्दाकिनीपुष्करबीजमालाम् Kumâras. 3,63. Suçr. 2,336,2. Vgl. विशोषण fg.

— सम् *trocken werden, eintrocknen*: धारास्तेभ्यो ज्ञातवेदसः । स एव समशुष्यत MBh. 1,8230. Vgl. संशोष. — caus. *trocken machen, austörren* MBh. 12,11057. Harîv. 11330. 11347 (संशोषयित्वा). R. Gorr. 2,68,1. Bâlar. 6,36. Kathâs. 60,195. Vgl. संशोषण.

2. शुष् (= 1. शुष्) adj. *eintrocknend, verdorrend*: फलपाक° P. 4,3, 166, Vârtt. 1. mit caus. Bed. in पर्णा°.

3. शुष् (Nebenform von स्रस्), शुर्षति *zischen, pfeifen* (von der Schlange): शुषत्तं वि वृश्चद्वेण वृत्रम् ṚV. 1,61,10.

— आ 1) partic. praes. med. *pfeifend, gellend*: यावेव व्रहिता तु शुर्षति वाचं वृक्तादाशुषाणः ṚV. 5,36,4. — 2) *adspirare, sich zu nähern suchen, erstreben, zu vollbringen suchen*: (इन्द्रम्) या शुषि (= शुष्मिणे Sây.) राधसि मरुद्भे ṚV. 8,82,16. partic. praes. med.: अश्याम तत्सादमाशुषाणाः 2,19, 7. एता यत्र माशुषाणासः इष्टौ पुंवो: सचाभ्यश्याम वाजान् 7,93,8. 1,147,1. सूतम् 4,1,13. 2,14,16. माशुषाणासो मित्रो वर्णमातो 24,4. Die Comm. leiten die Form von शस् ab, auch Padap. schreibt ohne Trennung. Dass jenes unmöglich ist, zeigen Stellen wie 2,19,7. 7,93,8.

शुर्ष m. कविः शुषस्य मातरा रिक्णे AV. 5,1,4. vermuthlich verdorbener Text. Nach Âçvalâyana im ÇKDa. = शोषण und गर्त: vgl. शुषि.

शुषि f. 1) = शोष H. an. 2,573. Med. sh. 28. — 2) *Höhle, Grube* AK. 1,2,4,2. H. 1363. H. an. Med.; vgl. सुषिर. — Vgl. केलि°.

शुषिलें (von 1. शुष्) m. *Wind* Ujjval. zu Unâdis. 1,37. Was bedeutet aber शुषिलयुगलवर्णा (मनु) Pañcad. 3,10,11?

शुष्क (von 1. शुष्) und in der klass. Sprache शुष्कं Unâdis. 3,11. 1) adj. (als partic. angesehen; f. या) P. 8,2,51. Vop. 26,99. a) *ausgetrocknet, trocken, dürr* ṚV. 1,68,8. शार्द्रादा शुष्कं मधुमदुदोहिथ 2,13,6. शतम 4,4,4. वन 6,18,10. इति 7,103,2. 10,92,4. AV. 19,49,10. Çat. Br. 1,3,2,4. 6,2,23. 41. सिकताः 7,3,1,27. स्थाणु 9,5,2,12. Kâṭhaka. Up. 5,2,3. Âçv. Gṛhy. 2,8,3. — नदी MBh. 1,2639. Spr. (II) 5085. Pañcat. 51,5. °तोयेव निम्नगा MBh. 7,27. 3,2668. R. 5,21,15. Baum, Stamm, Holz, Pflanze, Frucht, Blatt Kauṣ. Up. 2,14. R. 2,47,8. 55,14. 69,13. ṚV. 1,35. Spr. 3006. fgg. (II) 3849. 4374. Suçr. 1,29,6. 218,5. 6. 219, 8. 8. 2,325,19. Varâh. Bṛh. S. 46,38. 51,3. 59,3. 79,3. °विरूक्ष 46, 88. तिष्ठ: संसारवातेन चेष्टते शुष्कपर्णवत् Asaṭṭiv. 18,21. Bhâg. P. 3, 17,7. 4,23,5. 5,8,30. AK. 2,4,2,15. Hall. 1,151. 2,34. ऊर्ध° Baum MBh. 4,813. Varâh. Bṛh. S. 43,13. 85,2. °गोमय AK. 2,9, 51. Tâik. 2,9,21. Hit. 170. यव MBh. 11,166. Varâh. Bṛh. S. 89,1. मांस AK. 2,6,2,14. M. 11,185. R. 2,84,17. Suçr. 1,207,10. 13. Spr.

3005. Kathâs. 8,23. शशनि MBh. 7,2709. Harîv. 4263. R. 1,56,9 (57, 10 Gorr.). *eine trockene Waffe* Harîv. 3865. Bhâg. P. 3,11,27. fg. 40. नासिका Suçr. 1,115,5. योनि Çârîr. Sârîr. 1,7,102. °कण्ठौष्ठतालुक Pârâs. 1,4,28. सपुरस्य तनु: R. 4,9,92. ग्रीवा Vârâh. Bṛh. S. 68,31. 60. शङ्के 70,17 (vgl. °शङ्का Kâç. zu P. 8,2,1). रूक्ष 22. °नितम्बस्थली Dhûrtas. 80,18. °मुख so v. a. *mit einem eingefallenen Gesicht* R. 3, 65,18. Spr. (II) 3054. दीर्घशुष्कनखौ बाहू so v. a. *spröde* R. 3,74,22. मांसि *an dem kein Fleisch mehr hängt* Vârâh. Bṛh. S. 89,1. °रुदित n. *ein Weinen ohne Thränen* Sin. D. 140. Çiç. 10,69. °संमूर्छण Vârâh. Bṛh. S. 89,1. — ग्रातप° = ग्रातपे शुष्क: P. 2,1,41. स° Çârîr. Ça. 1, 6,9. Gobh. 4,7,5. M. 11,64. — *b) trocken* so v. a. *ohne die gewöhnliche Begleitung:* गान *einfacher Gesang* (ohne Tanz) Sin. D. 305. — *c) trocken* so v. a. *leer, eitel, unbegründet; zwecklos, unnütz:* °वैर M. 4, 139. MBh. 12,5302. Spr. (II) 4230. °वैरिन् Bhâg. P. 12,3,25. °विवाद 11,17,19. °वादविवाद 18,30. °कलह Pârâs. 171,25. °तर्क Ind. St. 5,159. न शुष्कं गिरमीरयेत् M. 11,35. MBh. 12,6058. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 4,713. — 3) m. n. gaṇa सर्वादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,*a*,1. wohl *getrocknete Frucht.* — Vgl. उच्चुष्क, परि°, वि° (auch Bhaṭṭ. 3,14), सं°.

शुष्कक (von शुष्क) adj. (f. शुष्किका Kâr. in Kâç. zu P. 8,2,1) *ausgedörrt:* लघु: संप्रति निर्मांसस्तृणभूतश्च शुष्कक: R. 4,9,98.

शुष्ककण्ठ n. (nach dem Comm.) *ein best. Halsstück des Opferthiers* VS. 25,3.

शुष्कक्षेत्र s. शुष्कालेत्र.

शुष्कता (von शुष्क) f. *das Trockenstein, Verdorrtsein:* शुष्कतां याति (घड्डु:) *vertrocknet, verdorrt* Pârâs. 2,2,5.

शुष्कत्व (wie oben) n. dass.: व्यञ्जनस्याप्रशुष्कत्वं *schnelles Eintrocknen* Kâm. Nîtis. 7,18.

शुष्कदर्ति m. *ein trockener* (*leerer*) *Schlauch* TS. 1,8,19,1. TBr. 1,8,2,4.

शुष्कपाक m. *trockene Augenentzündung* Suçr. 2,323,2. 9. vollständig शुष्कातिपाक 305,5. 314,12. Vishn. 5,15,17. Wise 293.

शुष्कपेषम् in Verbindung mit पिष् *trocken d. i. ohne Zusatz von Flüssigkeit zermalmen* P. 3,4,35. Bhaṭṭ. 6,37.

शुष्कभृङ्गार m. N. pr. eines Mannes Kâraṇ. Up. 2,6.

शुष्कभृङ्गारीय n. *die Lehre des* Çushkabhṛṅgâra Çârîr. Ça. 17,7,13.

शुष्करेवती f. N. pr. einer den Kindern gefährlichen Unholdin Verz. d. Oxf. H. 307,*b*,28. Matsja-P. 154 im ÇKDa.

शुष्कल nach Manîsh. zu VS. 30,16 m. *ein best. Fisch*, nach Comm. zu TBr. 3,4,6,12 n. so v. a. *Angelhaken*, nach Uṇâdis. im ÇKDa. m. f. n. = शामिष, nach Bhar. zu AK. 3,1,19 adj. = शौष्कल d. i. शामिषाशिन् und f. ई = *gedörrtes Fleisch* und *Fleisch* überh. ÇKDa. — Vgl. शौष्कल und शुष्कालेत्र.

शुष्कालेत्र m. N. pr. eines Berges an der Vitastâ: शुष्कालेत्रे (so lesen wir st. शुष्काले ऽत्र) वितस्तायां Râja-Tar. 1,102. शुष्कालेत्रादिदेशेषु (so ed. Calc., शुष्कक्षेत्रादि° Ta.) 170.

शुष्कवत् adj. = शुष्क P. 8,2,51. *ausgetrocknet, dürr:* क्रूद Mṛicch. 19,16. काष्ठानि Verz. d. Oxf. H. 260,*a*, N. 3.

शुष्कवृक्ष m. *Grislea tomentosa Roxb.* Râgân. im ÇKDa.

शुष्कव्रण m. *Narbe* Taitt. 2,6,14.

शुष्कसंभव n. *Costus speciosus* oder *arabicus* Ausw. 99.

शुष्काय (शुष्क + घय) adj. (f. या) *eine trockene Spitze habend* TS. 6, 3,8,4. TBr. 3,2,8,2. Kâṭh. 26,3. घ° Kâṭy. Ça. 4,2,4. 6,1,8.

शुष्काङ्ग (शुष्क + घङ्ग) 1) m. *Grislea tomentosa Roxb.* ÇKDa. nach dem Vaidjaka. — 2) f. ई *Lacerta Godica* (गोधिका) Çabdar. im ÇKDa.

शुष्काप (शुष्क + घप्) 1) *dessen Wasser eingetrocknet ist:* सागर R. 2,72,30. — 2) m. oder n. *ein eingetrockneter Teich, Schlamm* oder dgl. Çat. Br. 6,1,8,13.

शुष्कार्द्र (शुष्क + घार्द्र) 1) adj. (f. या) *trocken und feucht:* घशनी R. 1,56,9. — 2) n. *trockener Ingwer* Çabdar. im ÇKDa.

शुष्कार्शस् (शुष्क + घ°) n. *ein best. Tumor des Augenliedes* Wise 297. Suçr. 2,308,16.

शुष्कास्य (शुष्क + घा°) adj. *dessen Mund trocken ist* AV. 5,139,2. — Vgl. शौष्कास्य.

शुष्टि s. शुष्टि.

शुष्ण (von 3. शुष्) Uṇâdis. 3,12 (oxyt.). 1) m. *a)* (*Zischer, Pfeifer*) N. pr. eines von Indra erschlagenen Dämons Nir. 3,11. ṚV. 1,11,7. वि शुष्णिणमभिनदुक्थशुष्मिन्द्र: 33,12. 51,11. 63,3. 101,2. 103,8. 121,9. 10. वज्र शुष्णाय वधं कुत्सं वातस्याश्वै: 175,4. कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हो: 4, 16,12. 30,13. 2,14,5. 19,6. 3,31,8. 5,29,9. 31,7. 32,4. 6,20,4. 26,3. 31,3. 7,19,3. त्वं पुरं चरिष्ण्वं वधै: शुष्णस्य सं पिणक् 8,1,23. 6,14. शुष्णस्याणडानि भेदति 40,10. 10,22,7. 11. 14. 49,2. 61,13. 99,9. 111,3. Vâlakh. 3,8. AV. 20,34,17. वृत्रस्य गात्रादन्यो य: प्रादुर्भूतो महासुर: । वृत्रं पूर्वं निरुत्येन्द्रो द्वितीयं शुष्णसंज्ञकम् । पुनर्जघानेन्द्र: Bṛhadd. bei Sây. zu ṚV. 5,32,3. Çat. Br. 3,1,3,11. Kâṭy. 37,16. — *b)* = सूर्य und वह्नि Uṇâdis. — 2) m. angeblich so v. a. बल Naigh. 2,9. — Vgl. वृष°.

शुष्णवध्य n. *siegreicher Kampf gegen* Çushṇa ṚV. 1,51,6.

शुष्म (von 3. शुष्, शुस्) Uṇâdis. 1,142. 1) adj. (f. या) *a) zischend, sprühend:* ऊर्मि ṚV. 5,61,2; vgl. Nir. 2,24. — *b) duftig:* मद ṚV. 9,79,5. Pflanze AV. 5,5,7. — *c) muthig* ṚV. 1,52,4. — Verdorben ist die Stelle AV. 5,1,9. — 2) m. *a) das Zischen, Pfeifen, Sprühen* u. s. w. (von Feuer, Wasser, Wind u. s. w.): घा सानु शुष्मैर्नदयन्पृथिव्या: Agni ṚV. 7,7,2. 3,6. 2,17,1. 10,142,6. उदस्य शुष्मादानुरार्ति 7,34,7. प्र ते दिवो न स्तनयन्ति शुष्मा: 4,10,4. 5,3,8. der Marut 7,56,8. घर्चन्ति शुष्मम् 1,165,1. 8,7,5. घनन्ति शुष्ममुदियर्ति die Sindhu 10,75,3. वज्रस्य 8,27,4. AV. 1,12,3. *der Hauch* des Mitra-Varuṇa ṚV. 7,61,4. des Indra 1,63,1. यस्य शुष्माद्रोदसी सभ्यसेताम् 2,12,1. 13. 4,17,12. 21,7. 22,3. AV. 5,38,3. — *b) Hauch, Duft* (einer Pflanze, eines gährenden Trankes): उच्चुष्मा ओषधीनामोरते ṚV. 10,97,3. AV. 4,4,4. des Soma ṚV. 1,165,4. 9,53,1. उते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वन: Giech 80, 1. VS. 19,32. — *c) Muth, Trieb, Ungestüm:* यस्य भरे भरे वृत्रहा शुष्मो घस्ति ṚV. 1,100,2. 6,60,3. ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन् 3,32,3. 37,10. 8,6,11. 7,27,2. 33,4. तस्मिन्दधृषणं शुष्ममिन्द्र: 4,24,7. 30,7. 5,32,9. 6,19,3. 9. 7,24,4. TBr. 1,2,1,21. TS. 3,2,8,2. ṚV. 8,15,7. 85,3. नि शत्रो: वृष्णं नि शुष्मं नि वर्यस्तिर 9,19,7. 30,3. 52,4. 76,2. येषां शुष्म: पृतनासु साळ्हान् 8,68,7. 72,3. वृषा शुष्मेण वाजिनी *geschlechtlicher Trieb*

AV. 4,4,2. — 3,9,3. 6,65,1. यो व: प्रुष्मो रुद्रियेषित: 73,2. 18,2,36. 5, 20,2. VS. 20,44. *Geist, lebendige Kraft:* रस, प्रुष्म, जीव TBa. 1,3,10, 8. 6,3,4. *Manneskraft* so v. a. *Samen* kann verstanden werden AV. 9, 1,10. 20; vielleicht ist वृषाप्रुष्मै zu lesen. — n. = बल Naigh. 2,9. Nir. 2,24. AK. 2,8,3,70. H. 796. = ओजस् H. an. = तेजस् Med. m. 34. = सूर्य H. an Med. (hier masc.). = अग्नि und समीर (als n.!) Uṇâdis. m. *Feuer* Taik. 1,1,66. *Wind; Vogel* Uṇâdiv. im Saṅkshiptas. nach CKDa. = सर्पिस् Çunîṅka bei Bhar. zu AK. nach ÇKDa. प्रुष्मस्य fehlerhaft für प्रुक्षस्य P. 3,1,85, Schol. — Vgl. घनस्°, अग्नि°, उक्थ°, तुवि°, नि°, वीर°, वृष°.

प्रुष्मद् adj. *Muth u. s. w. gebend* AV. 19,40,1.

प्रुष्मन् (von 3. प्रुष्, प्रुस्) m. 1) *Feuer* AK. 1,1,1,19. H. 1099. Hit. 162. धूमस्तोमं तम: शङ्के कोकीविरुरुप्रुष्मणाम् Kuvalay. 39,b. — 2) n. *Kraft, Muth, Energie* H. 796. Halây. 4,38. ब्रह्मणो रुद्रदृष्टाप्रुष्मणाम् Kiçikn. 81,13 (nach Aufrecht). — Vgl. वह्नि°.

प्रुष्मय. सबाधस्ते मदं च प्रुष्मयं च ब्रह्म नो ब्रह्मकृत: सपर्यन् TS. 2,2, 12,1. so die Ausg. und unsere Hdschr., offenbar Fehler für प्रुष्म्यं adj. = बलप्रापक Comm.

प्रुष्मवत् (von प्रुष्म) adj. *feurig* (in geschlechtlicher Beziehung) AV. 4,4,3.

प्रुष्मिण m. N. pr. eines Fürsten der Çibi Ait. Br. 8,23.

प्रुष्मिन् (von प्रुष्म) 1) adj. a) *brausend, sprühend:* die Marut RV. 1, 37,4. Agni AV. 5,20,1. — b) *duftig, geistig, stark:* Soma RV. 1,30, 3. 175,5. 3,37,8. 8,3,3. 18,7. 30,1. 41,2. सुरा VS. 19,7. यज्ञ 11,23.— c) *muthig, feurig, kräftig:* Agni RV. 1,127,9. शवस् 145,1. 7,40,3. रयि 2,11,12. 3,16,3. वीर 7,56,24. वृषभ 10,43,3. वध 1,133,6. राजन् TS. 1,7,13,3. Indra RV. 1,173,12. 4,32,1. 47,3. 7,23,3. TBa. 2,7,13,2. Krieger MBa. 3,1494. 5,4702. 7,286. 5044. 5248. 5898. 6353. 8,3213. Mâṇ. P. 49,5. Viṣṇ-P. bei Muir, ST. 1,28. Bhâg. P. 1,10,29. Affen R. 5,15,2. brunstige Elephanten und Stiere MBa. 1,3883. 8,693. Bhâg. P. 3,18,19. 3,12,32. 10,46,9. भङ्ग (= मत्त Comm.) 21,2. — 2) m. pl. Bez. der Kshatrija in Kuçadvîpa Muir, ST. 1,192.

1. प्रू, प्रूयुवत्, प्रूयुवम्, प्रूर्शवाम, प्रूयुर्यात, प्रूयुर्यास्, प्रूयुवे, प्रूयुर्वान: *überlegen —, siegreich sein:* स्वेन शवसा प्रूयुवन्[1]: RV. 7,74,6. 2,25, 1. स प्रूयुवद्भिर्ऋभ्वा वन्वन्नमित्रियं 3,31,2. धृषता शवसा प्रूयुवासं: 1,167, 9. 7,93,2. 4,16,13. 5,19,2. मद 7. प्रुष्म 8. 10,47,4. रयि 1,64,15. स वीरो यत्रप्रियुक्त इन्द्रेण प्रूयुवे नभ: 7,32,6. नभिर्यत्र रुन्धाम प्रूयुयाम च 8,21,12. येन दीर्घं मरुत: प्रूयुवाम युष्मावता पनोयुजा 1,166,14. स या राजा मर्त्यानि: प्रूयुवज्जनि: *der Fürst ist siegreich als Heerführer, er und sein Volk* 1,34,7. partic.: कृत्वी वृत्रमिन्द्र: प्रूयुवान: 7,20,2. उत वातो यतरद्रूयुवान: 4,27,2. बर्हत्सो वृषभ प्रूयुवान: 10,28,9. 111,6. infin.: तेभिर्न: पातं सधस्त्र तेभिर्न: पातं प्रयुयिं 93,1. — Vgl. शवस्, शवमान, शविष्ठ, शवोर्, प्रू.

2. प्रू *schwellen,* = ष्णा, स्फि.

प्रूक m. n. *gaṇa* अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. n. *Granne des Getraides* AK. 2,9,22. = शूक Taik. 3,3,15 Med. k. 37. = किंशारु H. an. 2,20. Sarvadarçanas. 21,21 (n.). दीर्घ° Schol. zu Kâṭy. Çr. 68,10. 76,6. शालि° R. 3,22,18. नि:° *grannenlos* Bhâvapr. 3. — 2) *eine best. Getraideart* Suçr. 1,198,7. Bhâvapr. 3. Mad. 10,4; vgl. दीर्घशूकक. — 3) *Stachel eines Insects* Suçr. 2,238,6. 290,13 (n.). प्रूकापकृत Karaka 2,3. Saṅkshiptapiṇḍ. 38,1 v. u. = शूक (wohl kein Fehler für शुङ्ग, da diese Bed. schon durch किंशारु gegeben ist) H. an. — 4) n. *ein best. im Wasser lebendes giftiges Insect* Bhâvapr. 7. auch शल्यशूक genannt, das dem penis als Stimulans applicirt wird; auch wohl *andere ähnliche Aphrodisiaca* Suçr. 1,298,14. fg. 299,3. 17. 2,238,3. व्याधय: शूकजा: Verz. d. Oxf. H. 314, a, 20. — 5) *Mitleid,* m. Taik. H. 369. H. an. m. n. Med. n. Halây. 4, 39. — 6) m. = शोक und सन्निपात H. an. — 7) f. आ a) *Sonnenstrahl* H. an. (शूका gedr.). — b) *Mucuna pruritus Hook.* Çârdaś. im ÇKDa.— Vgl. आनु°, कर°, शल°, तीक्ष्ण°, तोय°, धान्य°, धूम्र°, यव°, राज°, विष°, शालि°, शीत°, सित°.

शूकक m. 1) = प्रवह H. an. 3,105. = प्रावह Med. k. 164. — 2) = रस (d. i. रसभेद, द्या) H. an. Med.

शूककीट m. = वृश्चिक AK. 2,5,14. 3,4,1,7. °क m. dass. H. an. 3, 100. Çârdar. im ÇKDa.

शूकतरु m. Hit. 94 fehlerhaft für शुकतरु.

शूकतृण n. *ein best. stacheliges Gras* Riçân. im ÇKDa. Gorr. 1,3,20.

शूकदोष m. *schädliche Einwirkung des* Çûka (s. शूक 4), Bez. *verschiedener Krankheiten des penis* Wise 380. Suçr. 1,298,4. Bhâvapr. 7. Verz. d. B. H. No. 975. Verz. d. Oxf. H. 314,a,18.fg. 316,b,7.

शूकधान्य n. *Grannenfrucht* (eine der fünf Arten von Getraide; die vier andern sind शालिधान्य, व्रीहि°, शमी°, तृण°), *Gerste* u. s. w. AK. 2,9,24. H. 1187. Bhâvapr. 3. Mad. 10,3. Karaka 1,25.

शूकपत्र m. *eine Schlangenart* Suçr. 2,265,19.

शूकपिण्ड und °पिण्डी f. = शूकशिम्बि Çârdam. und Çârdar. im ÇKDa.

शूकरोग m. = शूकदोष Suçr. 2,113,10. Çiṅg. Saṅg. 1,7,62.

शूकल m. *ein hartnäckiges Pferd* H. 1235. — Vgl. शूलक.

शूकवत् (von शूक) 1) adj. *mit Grannen u. s. w. versehen.* — 2) f. °वती *Mucuna pruritus Hook.* Çârdaś. im ÇKDa.

शूकवल्ल m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,290,12.

शूकशिम्बा = शूकशिम्बि Çârdaś. im ÇKDa.

शूकशिम्बि und °शिम्बी f. *Mucuna pruritus Hook.* AK. 2,4,2,5. Taik. 3,3,101. H. an. 3,452. Med. bh. 12. °शिम्बिका H. an. 2,119.

शूकाख (शूक + ख°) n. = शूकतृण Riçân. im ÇKDa. unter शूकतृण.

शूकाघर m. *eine Art Edelstein* Hit. 216. शूकाघ्र Wilson nach Vers. Ant.

शूकामय (शूक + आ°) m. = शूकदोष, शूकरोग Çiṅg. Saṅg. 1,7,62.

शूकार m. *das Scheuchen (durch den Ruf* शू) VS. Pair. 3,27. VS. 22,8.

शूकुल m. 1) *Fisch.* — 2) *ein best. Fisch.* — 3) *ein best. wohlriechendes Gras (Cyperus)* Wilson nach Çabdârthar.

शूकृत 1) adj. *gescheucht (durch den Ruf* शू) VS. Pair. 3,27. VS. 22, 8. — 2) n. *das Scheuchen, Hetzen* RV. 1,162,17.

शूघर्न VP. Pair. 3,27. adj. = क्षिप्र Naigh. 2, 15. मिन्धोरिव प्राघने शूघनासो वातप्रमिय: पतयन्ति यह्वा: RV. 4,58,7. etwa Bez. einer *Wasserschnelle.*

शूतिपर्णा m. *Cathartocarpus (Cassia) fistula* Çârdar. im ÇKDa.

शूत्कार m. (*der Laut* शूत्) *das Pfeifen, Zischen u. s. w.*: शरशूत्कारैः Rigi-Tan. 8,407. शैलानां शोकनिश्वासशूत्कार इव श्रूयते 7,252. समूत्कारमरुत् Kathis. 101,140.

शूद्र Unadis. 2,19. 1) m. *a*) *ein Mann der vierten, dienenden Kaste* AK. 2,10,1. Trik. 2,10,1. H. 894. Halây. 2,237. fg. 431. Ind. St. 16,4. fgg. Mcin, ST. पद्भ्यां शूद्रो अजायत RV. 10,90,12. M. 1,31. R. 3,20,31. VP. 44. पशूं शूद्र उतार्यः AV. 4,20,4. 19,32,8. 62,1. शूद्रार्यौ VS. 14,30. शूद्रार्यम् gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. ब्राह्मण, राजन्, विश्, शूद्र VS. 18,48. 26,2. 20,17. 30,5. Ait. Br. 7,17. शूद्रकल्पः | अन्यस्य प्रेष्यः कामोत्थाप्यो यथाकामवध्यः 29. TS. 2,5,10,1. 3,2,6,2. 5,7,6,4. 7,1,1,6. यमुर्यः (वर्णः) शूद्रः TBr. 1,2,6,7. 3,2,3,9. 3,11,2. Çat. Br. 1,1,4,12. 3,1,4,10. 5,5,4,9. Kâṭy. 34,5. Kâtj. Çr. 1,1,5. 6,7,4. 22,1,10. Lâṭj. 3,3,16. der Esel wird angeredet शूद्रो ऽसि शूद्रजन्मा Pân. Gaṇ. 3,15. — (कारयेत्) दास्यं शूद्रं हितन्मनाम् M. 8,410. 413. fg. (विप्राणाम्) शुश्रूषैव तु शूद्रस्य धर्मो नैःश्रेयसः परः 9,334. 1,91. MBh. 13,3110. Spr. (II) 2457. तपः शूद्रस्य सेवनम् 4506. शूद्राणामेव सन्मतः (वैद्याम्) (I) 5014. (II) 2456. 4388. 4390. न शूद्रवद्धिष्कार्यः सर्वस्माद्धिजकर्मणः M. 2,103. शूद्रमारोग्यमेव (पृच्छेत्) 127. (नामधेयं स्यात्) शूद्रस्य तु जुगुप्सितम् 31. प्रेष्यसंयुतम् 32. नहि तस्यास्ति किंचित्स्वं भर्तृकार्यधनो हि सः (शूद्रः) 8,417. शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धनसंचयः। शूद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानेव बाधते ॥ 10,129. शूद्राणां तु (पितरः) सुकालिनः 3,197. शूद्राणां गणनायकः (दैवतम्) Wilson, Sel. Works 1,2. शूद्रमपि कुलगुणसंपन्नं मन्त्रवर्जमनुपनीतमध्यापयेदित्येके Suçr. 1,7,4. Bhâg. 9,32. MBh. 1,6158. R. 1,1,96. 6, 16. Vaṛâh. Bṛh. S. 5,29. 32. 56. 9,13. 12,18. °ज्ञान M. 4,99. ज्यैष्ठ्यं °भूयिष्ठम् 8,22. °योनि MBh. 1,4215. °कन्या M. 10,8,9. Wilson, Sel. Works 1,258. °शिष्य M. 3,156. °राज्य 4,61. °वृत्ति 10,98. शूद्राम 4,213. Weber, Kasanaś. 224. Verz. d. Oxf. H. 281,b,27. °शासन Trik. 2,2,1. Hit. 173. °संस्पर्श M. 5,104. °सेवन 11,69. °याजक 3,178. Verz. d. Oxf. H. 282,b,7. °घ्न Pârâśar. 1,10,77. °क्रून् M. 11,120. °क्त्या 131. 140. विट्शूद्रा 3,23. वैश्यशूद्रा 24. 110. 112. क्षत्रशूद्रवपुम् 10,9. क्षत्रविट्शूद्रयोनयः 8,62. 9,229. स्त्रीशूद्रद्रम्भन 4,198. 11,153. Weber, Kasanaś. 288. स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध M. 11,66. °विट्क्षत्रविप्राणाम् 8,104. — *b*) pl. N. pr. eines Volkes: शूद्राभीरगणाः MBh. 2,1192. 1869. 6,375 (VP. 193). 9,2119. Vaṛâh. Bṛh. S. 14,18. 16,21. VP. 481. Mârk. P. 57,36. LIA. 1,799. 2, 548. — *c*) N. pr. eines Brahmanen Tîrân. 5. 59. — 2) f. शूद्रा *a*) *ein Weib der vierten Kaste* P. 4,1,4, Vârtt. 1. AK. 2,6,2,12. 3,4,22,212. H. 524. AV. 5,22,7. VS. 23,30. न शूद्रामुपेयात् Gaut. 3,2,12. Pân. Gaṇ. 1,4. M. 3,13. fg. 17. 44. 8,383. 385. 9,178. 10,18. 64. MBh. 1, 4216. 2,1329. 12,6372. R. 2,63,48. °पुत्र Pârâśar. Bh. 14,6,6. M. 9, 154. fg. °सुत 151. 152. °वेदिन् 3,16. °विशोः AK. 2,10,2. — *b*) N. pr. einer Tochter Raudrâçva's Harîv. 1681. — 3) f. ई *ein Weib der vierten Kaste* Jâtâ. 1,91. वैश्यशूद्रयोः obend. Schol. zu Kâtj. Çr. 18,6,27. *die Frau eines* Çûdra P. 4,1,4, Vârtt. 2. AK. 2,6,2,13. H. 523. — Vgl. महा°, विट्शूद्र, शौद्र, शौद्रायण.

शौद्रक (von शूद्र) m. N. pr. gaṇa सप्तादि zu P. 4,1,110. 5,3,75, Schol. (संज्ञायां कुत्सिते). eines Fürsten, angeblichen Verfassers der Mṛicchakaṭikâ, LIA. 2,759. fg. 945. Mṛicch. 1,13. fgg. Kathis. 78,5. Râja-Tar. 3,343. Hit. III, 99. 96,5. fgg. Kîe. in Z. d. d. m. G. 7,383. Daçan. 118,2. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. Verz. in LA. (III) 23,10. 25,8. VP. 472, N. 39. Verz. d. Oxf. H. 152,b,16. 207,b,24. N. pr. eines Soldaten Râja-Tar. 8,509. — Vgl. शौद्रकायण.

शूद्रकृत adj. *von einem* Çûdra *gemacht* AV. 16,1,3.

शूद्रकृत्य n. *die Obliegenheit eines* Çûdra: °विचारणा, °विचारणातन्त्र, °विचारतन्त्र Titel eines Abschnittes im Smṛititattva Verz. d. Oxf. H. 289,b, No. 693. 291,a, No. 702. Gild. Bibl. 485. 486.

शूद्रजन्मन् adj. *von einem* Çûdra *stammend* Pân. Gaṇ. 3,15. m. = शूद्र *ein* Çûdra Jâtâ. 1,57.

शूद्रता f. nom. abstr. von शूद्र 1) *a*) M. 3,15. 4,245. 10,65. MBh. 13, 1903. Mân. P. 112,25. Bhâg. P. 7,15,72.

शूद्रत्व n. dass. M. 2,168. 11,97. Mân. P. 15,36. Bhâg. P. 1,13,14.

शूद्रधर्म m. *die Obliegenheit eines* Çûdra Verz. d. Oxf. H. 268,b,18. 276,b,31. °तन्त्र n. Titel eines Werkes des Kamalâkara 277,a, No. 654. Verz. d. B. H. No. 1019. Mack. Coll. 1,35.

शूद्रप्रिय 1) adj. *einem* Çûdra *lieb.* — 2) m. *Zwiebel* Râgân. im ÇKDa.

शूद्रान्ना (शूद्र + घा°) f. *Fennich, Panicum italicum* Çabdâs. im ÇKDa.

शूद्राह्निक (शूद्र + घा°) n. *die täglich zu einer bestimmten Zeit zu vollbringende Handlung eines* Çûdra Verz. d. Oxf. H. 277,a, No. 654. शूद्राह्निकाचारतन्त्र n. = शूद्रकृत्यविचारणातन्त्र Gild. Bibl. 486.

शूद्रीभू (शूद्र + 1. भू), °भवति *zu einem* Çudra *werden* M. 10,92. Kathis. 4,114.

शूद्रोद्द्योत (शूद्र + उ°) m. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,35 (शूद्रोद्योत gedr.).

1. शून्य (von 2. शू = श्वा, श्वि) partic. *geschwollen, aufgedunsen* P. 6, 1,15. 7,2,14. Vop. 26,107. सर्वाङ्ग° Suçr. 1,34,19. शिरा 115,3. लोचन 2,255,7. °गात्र 1,35,3. °कर 118,14. 119,19. 155,19. 302,19. शूनात 2, 372,16. 382,20. शूनाण्डमेढ्रता 1,116,3. 2,134,3. ख° (व्रण) 1,88,15. Ber. eines best. Fehlers der Aussprache RV. Prât. 14,2.

2. शून n. *Leere; Abwesenheit, Mangel:* मा शूनमारतम् RV. 3,33,13. मा शूने नि यंदाम नृणाम् 7,1,11. सोम्यस्य 1,105,3. सपेः 2,27,17. सख्युः 8,45,26. मा शूने भूम सूर्यस्य संदृशि (Attraction st. संदृशः) 10,37,6.

3. शून m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,2261. पूरु ed. Bomb.

शूनत्व (von 1. शून) n. *Aufgedunsenheit* Suçr. 1,118,7.

शून्य (von 2. शून) 1) adj. (f. श्रा) gaṇa गवादि zu P. 5,1,2 (von शून्!). *a*) *leer, öde, unbewohnt, nicht besetzt* AK. 3,2,6. Trik. 3,3,221. H. 1446. am. 2,384. Mân. j. 57. Halây. 5,62. शालमत्र TBr. 2,1,2,12. Çat. Br. 2, 3,4,9. सदस् Lâṭj. 2,4,12. °शाला Kauç. 27. शून्यागार Mârkaṇḍ. 6,10. M. 4,57. 9,265. Suçr. 1,366,20. 374,18. 2,389,20. जगत् MBh. 1,7669. वन 3,2361. 2401. 13,2295. Harîv. 3489. R. 1,9,58. 55,24. 2,30,12. 37,27. 42,22. 88,17. R. Gorr. 1,49,14. Spr. 2730. 3011. fg. (II) 444. 685. 1079. 1435. 1631. Çiç. 74. 94,5. Vaṛâh. Bṛh. S. 51,4. 98,8. 58. Bṛh. 24,8. Kathis. 3,28. 18,158. 27,147. 37,57. 86,108. Râja-Tar. 4, 171. Verz. d. Oxf. H. 268,a,27. Bhâg. P. 3,24,28. 5,14,20. रथ R. 2, 52,38. पर्यङ्क 72,11. वाहिन् *so v. a. ohne Reiter* Kathis. 26,66. *leer so v. a. ausgeleert, seines Inhalts beraubt* 33,138. चित्त° 124,71. Spr. 3011. चक्षु° MBh. 3,12843. दूरशून्यो ऽधा AK. 2,1,18. H. 985. ख° Pân. Gaṇ. 1,5. Kâtj. Çr. 2,4,4. 20. 8,13. हारं शून्यमशून्यं वा Verz. in

LA. (III) 23,11. fg. यशून्यां कुर्वते नित्यं गृहाम् so v. a. *verlassen nicht* R. 4,44,113. R. Scrr. 2,32,24. यशून्योपस्था so v. a. *fruchtbar* Ind. St. 5,315. — *b*) *leer* von einem Blick so v. a. *auf kein festes Ziel —, in's Blaue gerichtet* Mâlatîm. 11,8. Asvlâv. 17,9. मनस्, हृदय, आशय, चित्त so v. a. *an Nichts denkend, nicht bei der Sache seiend, abwesend, zerstreut:* पुरं शून्येन मनसा प्रययौ MBh. 2,608. 13,2758. R. 3,50,24. Spr. (II) 2047. °मनस् adj. 2473. मूर्खस्य हृदयं शून्यम् 444. °हृदय adj. R. 4,29,6. Çiç. 47,7 (im Prâkrit). Kathâs. 95,54. शून्याशय adj. (f. आ) 25,165. 95,52. Spr. (II) 3612. °चित्त Asvlâv. 17,16. 18,24. Von Personen *Nichts im Sinne habend, an Nichts denkend, mit seinen Gedanken abwesend* Maitrâyan. 2,4. 6,23 (°भूत). 28. शून्येन खलु मयेदं समुदाहृतम् R. 2,13,16 (10,27 Gorr.). Kumâras. 3,75. Kathâs. 123,137. °वत् Daçak. 66,14. °भूत Mâlav. P. 78,6. — *c*) *leer* so v. a. *beraubt, von Allem beraubt* Spr. (II) 720. जीवितं मे सखा — यमहृत-स्त्वया। तच्छून्यं देहमप्येतं त्वं गृहाणाधुना मम ॥ Kathâs. 74,130. *allein, ohne Gefährten, — Begleitung, alleinstehend* R. 3,20,35. 65,1. Bhâg. P. 1,14,44. — *d*) mit einem instr. *einer Person* oder *Sache beraubt, einer Sache baar, ohne Jmd* oder *Etwas seiend, frei* von Vikr. 130. Çiç. 8,70. Kathâs. 78,41. Bhâg. P. 1,15,20. Bhâsâp. 69. Gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: वृक्षशून्या पृथ्वी Harîv. 95. शोकशून्येन मनसा R. Gorr. 2,97,5. Jogas. 1,9. 43. Megh. 93. Râgat. 4,85. 5,49. 74. Vikr. 66, 1. सर्वशून्या दरिद्रता Spr. (II) 444. 685. यस्त्रिलिङ्गविचारशून्यबुद्धि 826. 1158. 1771. 2919. 3984. 4837. 5372, v. l. 5437. AK. 3,3,3. H. 1497. Trik. 3,3,217. Kathâs. 31,17. 111,63. Çaṃk. zu Bhag. Âr. Up. 8. 140. Mâlav. P. 51,105. Bhâg. P. 5,1,16. Bhâsâp. 15. Sarvadarçanas. 47,17. 61,18. Schol. zu Çiç. 86. — *e*) *unausgeführt, unausgerichtet:* त्वमपि नियोगमशून्यं कुरु so v. a. *richte aus* Çiç. 24,16. 81,4. — *f*) *mangelnd, fehlend, nicht da seiend:* °संवरणावृत्ता (राजधानी) R. 2,88,19. °व्यापार (= व्यापार°) Prasâd. 100,15. °हृदय Pañkat. 208,23. — *g*) *leer* so v. a. *eitel, nichtig; in Wirklichkeit nicht seiend:* वाच: R. 3,61,48. प्रतिवचन Pañkat. 117,14. फल Çaut. (Bâ.) 5. यशून्यजन्मन् adj. Râga-Tar. 3,430. 444. यत्तद्रूपं परं सूक्ष्मशून्यं शून्यकलित्यतम् Bhâg. P. 3,9,49. Nâg. Tîp. Up. in Ind. St. 9,149. Burnouf, Intr. 462. Hiouen-thsang 1,443. Sarvadarçanas. 9,8. 14,3. 15. 15,9. 22,9. — 2) f. आ = मली (?) Trik. (so nach den Corrigg. zu lesen) und Med. = तूलिका H. an. = नली (so Trik. im Text) ÇKDa. nach Viçva und Med. = महाकपर्दिनी Çabdar. im ÇKDa. = वन्ध्या Râgân. im ÇKDa. — 3) n. *a*) *Leere, Einöde, ein von Menschen nicht bewohnter oder im Augenblick nicht besetzter Ort* AK. 3,4, 22,39. MBh. 1,2846. 4,1178. 7,202.679. R. 2,28,8. 77,6. 96,18. 3,40,28. 51,17. 4,29,6. Kâm. Nîtis. 5,78. Bhâg. P. 1,14,14. Pañkat. 231,18. न खल्वहं शून्ये रौमि किं न शृणोषि मे MBh. 1,3022. Bhatt. 18,29. यापूर्णतामेति Spr. 5078. रङ्कस्याशून्यरेखेयं तिष्ठन्विरूपं च पार्थिवः Harîv. 6030. — *b*) *Nichts, Abwesenheit von Allem* Kap. 1,43. fg. Colebr. Misc. Ess. 1, 347. Asvlâv. 20,1. भित्तिबुद्धिकरं शून्ये भित्तौ शून्यप्रतीतिदम् (पुराख्यानम्) Kathâs. 29,59. नीतस्तेनैव शून्याय नीहार इव भानुना Bhâg. P. 6,13,20. Verz. d. Oxf. H. 229,*a*, No. 561. °मत der Buddhisten 250,*b*,43. शून्यमात्मेति चेदति (यथेरा बोद्धः) Vedântas. (Allah.) No. 89. = शून्यता *das Nichtdasein von:* स्वरूप° Verz. d. Oxf. H. 229,*a*, No. 561. — *c*) *Null und das Zeichen dafür* (= बिन्दु H. an.) Colebr. Alg. 19. Ind. St. 9,444. fgg. Verz. d. Oxf. H. 250,*b*,4. Varâh. Bṛh. S. 8,20. Ganit. Madhjam. 4. Z. f. d. K. d. M. 2,423. Vgl. Diez, Etym. Wört. d. romanischen Sprachen unter *cifra*. — *d*) *der Luftraum* Çabdar. im ÇKDa. — *e*) Bez. *einer best. Himmelserscheinung* (उपयक्) Gjotishattva im ÇKDa. unter वज्रक. — *f*) *Ohrring* Spr. (II) 2489. — Vgl. तृण°, परि°, पुष्प°, मरु°, मुष्क°, वास्तु°, वि°.

शून्यक adj. = शून्य *leer* gaṇa यावादि zu P. 5,4,29. n. *das Nichtdasein, Fehlen, Mangeln:* मनुष्यदेहशून्यकं भवत्यमुत्र गच्छतः MBh. 12, 12097.

शून्यता (von शून्य) f. 1) *Leerheit, Oede, Verödung:* खाद्यमस्य R. 3,1, 35. Varâh. Bṛh. S. 46,47. 89,16. यद्धनम् — तस्य निष्यतुरशून्यतामुपे *fülltes* Rag. 19,13. ऋतूनामशून्यता *das Vollwerden der Jahreszeiten* Çat. Br. 10,4,2,19. न पुरं हृदि संक्रान्ता चित्रं दिग्वपि शून्यता Kathâs. 33,138. दृष्टिपाते so v. a. *ein starrer Blick* Daçak. 72,10. — 2) *Leere im Herzen, das Denken an Nichts, Gedankenlosigkeit, Zerstreutheit* Sarvadarçanas. 176,16. Suçr. 1,48,20. 49,1. Sâh. D. 201. — 3) am Ende eines comp. *das Ermangeln, das ohne Etwas Sein:* कर्णोत्पल° Kumâras. 5,47. मातृ° Spr. (II) 2774. स्वरूप° Verz. d. Oxf. H. 229,*a*, No. 561. सर्व° Schol. zu Kap. 1,159. Eigentlich nom. abstr. von °शून्य. — 4) *Nichtigkeit* Burnouf, Intr. 442. Saddh. P. 4,5,*a*. Sarvadarçanas. 23, 10. — Vgl. मरु°.

शून्यतासप्तति f. Titel einer Schrift Târan. 302. 322.

शून्यत्व (von शून्य) n. 1) *Leerheit:* यत्पत्तं हृदि शून्यत्वान्न वंशशब्दनायते Spr. (II) 3441. — 2) *Leere im Herzen, Gedankenlosigkeit, Zerstreutheit* Prasâdap. 52,*a*,7. — 3) am Ende eines comp. *das Ermangeln, das ohne Etwas Sein:* विचार° Râga-Tar. 4,236. परिच्छेदत्रय° Weber, Râmat. Up. 287. Sarvadarçanas. 61,1. 66,21. Eigentlich nom. abstr. von °शून्य. — 4) *Nichtigkeit:* वाक्यार्थस्य Sarvadarçanas. 15,11.

शून्यपदवी f. = ब्रह्मरन्ध्र Verz. d. Oxf. H. 235,*a*,15. fgg.

शून्यपाल m. *Stellvertreter* MBh. 4,1159. 13,4881.

शून्यपुष्प (?) Vie de Hiouen-thsang 220.

शून्यबन्धु m. N. pr. eines Sohnes des Tṛṇabindu Bhâg. P. 9,2,33.

शून्यभाव m. *Leerheit* Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,27.

शून्यमध्य m. *Rohrschilf* (नल) Râgân. im ÇKDa.

शून्यमूल adj. Bez. eines Heeres in einer best. schlimmen Lage Kâm. Nîtis. 13,71. 88.

शून्यवाद m. *die Theorie von der Nichtigkeit der Dinge, die Lehre der Buddhisten* Madhus. in Ind. St. 1,13,18. Verz. d. Oxf. H. 259,*b*,5.

शून्यवादिन् adj. *der die Nichtigkeit der Dinge behauptet*, m. *Buddhist* (oder *Atheist* überh.) H. 861. Wilson, Sel. Works 1,22. 33. 359. fgg.

शून्यसार n. *Gold* (*die Leere entfernend*) Ausn. 109.

शून्याशून्य (शून्य + य°) n. = जीवन्मुक्ति Verz. d. Oxf. H. 236,*a*,2. Verz. d. B. H. No. 640 (?).

शून्यीकर (शून्य + 1. कर) *veröden, in eine Oede verwandeln:* राष्ट्राणि °कुरुते विरोधैः Varâh. Bṛh. S. 8,51. *einen Ort leer machen* so v. a. *verlassen:* गृहं °कृत्य Pañkat. 238,18.

शून्येषं (शून्य + एष) adj. (f. ई) *eine Oede wünschend:* शून्येषी निर्गते यान्यगन्धे AV. 14,2,19.

शूर, शूर्यते Dhātup. 26,48 (हिंसास्तम्भयोः). शूरयते (denom. von शूर) 35,48 (विक्रान्तौ).

1. शूर*) (von 1. शू) Nir. 4,12. Uṇâdis. 2,25. 1) adj. *kriegerisch, tapfer, muthig;* m. *Held* AK. 2,8,2,45. 3,4,16,130. H. 365. an. 2,464. Med. r. 94. Halâj. 2,199. शर्विष्ठ न या भर शूर शर्वः RV. 6,19,6. शूराणां शर्विष्ठा 66,2 (vgl. auch Jaska 1,15). इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा यभि सन्तु माघाः 7,1,10. 34,8. 36,22. अस्तृ 1,70,11. यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिः 101,6. 141,8. 158,3. 2,17,3. 30,10. 4,38,2. 3. प्रयुध् 5,50,3. 6,25,5. यत्र शूरासस्तन्वो वितन्वते 46,12. 8,2,9. 45,3. शूरो न युध्यन्नव नो निद स्यः 9,70,10. 76,3. सत्वन् 87,7. रथ 9,94,2. सेनानी 96,1. 10,114,9. 154, 3. Indra 7,84,4. यः शूरो मघवा यो रेवान्ताः 1,173,3. 4,21,1. 7,18,11. AV. 8,8,1. Agni 4,3,15. 6,15,11. VS. 16,34. 20,37. — M. 7,54. 62. 210. MBh. 3,2074. शूरा वीराश्च शतशः सन्ति लोके 13,334. R. 2,29,15. Śaṃk. 1,323,11. Spr. 3014. fgg. 5059. स्वभावशूरं बलम् 5352. शूराणां चैव भीरवः (यत्नम्) (II) 2238. न शूरस्य सखा क्लीबः 3281. शूरमञ्जलिकर्मणा भेदयेत् 4536. (I) 3013. नाशूरं भजन्त्यर्थाः (II) 3569. Vasiṣ. Bṛh. S. 15,3. 68,29. शूरा हि प्रणतिप्रियाः Kathâs. 19,33. Râśa-Tar. 5,238. Mârk. P. 113,1. शूरैर्हतस्वः Bhâg. P. 5,13,7. Elephant R. 1,6,22. Hund R. Goas. 2,72,24. Spr. (II) 4427. Löwe (सति°) 1435. Am Ende eines adj. comp. (f. या): कृतशूरा चमूः R. 5,21,12. Mit einem loc. *ein Held gegenüber Jmd.:* ब्राह्मणेषु स्त्रीषु ज्ञातिषु गोषु च Spr. (II) 4511. *ein Held —, ein Meister in Bezug auf:* मत्तेभकुम्भदलने 4662. घरणे, गृहवासे, त्यागे MBh. 13,3646. सार्ङ्गे 3647. अध्ययने 3648. सतिविग्रहणे 3649. statt des loc. auch instr.: तैस्तैर्नियमैः 3647. गुरुशुश्रूषया 3648. fg. häufig in comp. mit der Ergänzung: वाक्य° 2,2342. विद्या°, तपः°, दान° 5,4661. यज्ञ°, सत्य° 13,3644. युद्ध°, दान°, सांख्य°, योग° 3645. 3648. fg. Harîv. 12592. द्यूत°, धर्म° Kathâs. 52,115. शृङ्गार° Pañcat. 1,10,26. compar. शूरतर RV. 9,66,17. सर्वमनुष्येभ्यः MBh. 7,1010. Harîv. 7599. superl. शूरतम (शर्विष्ठ s. bes.): कुञ्जराणाम् MBh. 5,884. 7,1097. P. 2,3,41, Schol. शूरान्महाशूरतमो हि को वा Praśnottarab. 12 in Monatsberr. d. K. pr. Ak. d. Ww. 1868, S. 109. शूर als abstr. in der Bed. *Heldenmuth* Spr. 2614 vielleicht fehlerhaft für शौर्य. — 2) m. *a) Löwe; Eber; Tiger* oder *Panther* (चित्रक); *Artocarpus Lacucha* (लकुच) Roxb.; *Vatica robusta* (auch Gaṛṇ. nach Wilson); *Linsen* Râśân. im ÇKDn. — *b*) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1869. Harîv. lith. Ausg. 33,56. शूराभीराः (शूद्रा° ?) Harîv. 12837 nach der Lesart der neueren Ausg. R. 4,43,19. VP. 2, 3,16. — *c*) N. pr. verschiedener Männer, eines Jâdava Mbh. Vater Vasudeva's und Grossvater Kṛshṇa's MBh. 1,2764. 4382. 7,6021. 13,6838. fgg. 14,391. Harîv. 8694. Bhâg. P. 9,24,26. fgg. 10,45,26. ein Sauviraka MBh. 3,15598. ein Sohn Ilina's 1,2703. Kârtavîrja's Harîv. 1892. VP. 416. Vidûratha's 436. Harîv. 2032. Bhâg. P. 9,24, 25. Devamîḍhusha's Harîv. 1922. fgg. VP. 436. Bhagamâna's Harîv. 2002. Vasudeva's Bhâg. P. 9,24,47. 10,61,17. Vatsapri's Mârk. P. 118,1. — Râśa-Tar. 4,714. 5,26 (= शूरवर्मन्). 47. fgg. 7,803. 808. 8, 1847. 1940. 2483. Schiefner, Lebensb. 310(80). Târân. 5. 90. 136. 140. 181. 204. — Vgl. चन्द्र°, दान°, पिण्डी°, पितरि°, प्रदान°, रति°, शौरि, शौर्य.

2. शूर m. fehlerhafte Schreibart für सूर *Sonne* Taitt. 1,1,99. H. 96, Schol. an. 2, 464. Viçva in Vert. d. Oxf. H. 188,b,32.

शूरक m. N. pr. v. l. für शूद्रक VP. 472, N. 39. LIA. 2,759.

शूरग्राम adj. *Kriegerschaaren habend* RV. 9,90,3.

शूरत्र m. 1) *ein Sohn* Çûra's Râśa-Tar. 5,40. — 2) N. pr. eines Mannes Râśa-Tar. 8,335.

शूरण 1) adj. = विक्रमशील nach Sây. himmlische Rosse RV. 1,163, 10. — 2) m. *Amorphophallus campanulatus*, nach Bhâvapr. 5 das beste Knollengewächs, *the Telinga Potatoe Roxb.* AK. 2,4,8,22. Taitt. 3,3, 204. 382. H. 1189. Suçr. 1,225,19. 226,1. Varâh. 1,6,114. Çârṅg. Saṃh. 1,7,118. 2,7,11. fg. Mad. 7,66. *Bignonia indica* Çabdam. im ÇKDn. Die Schreibung schwankt zwischen शू° und सू°. — Vgl. घरण्य°, कन्द°, पङ्क°, पद्म°, वन°, वल्लि°, श्वेत°.

शूरणोदुम्बर m. *ein best. Vogel* (कठिठाङ्क) Çabdam. im ÇKDn.

शूरता (von 1. शूर) f. *Heldenmuth, Beherztheit* Spr. (II) 4748. Sin. D. 90.

शूरत्व (wie eben) n. dass. R. 3,10,21. 7,15,24.

शूरदत्त m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 68,33.

शूरदेव m. N. pr. 1) eines Sohnes des Fürsten Viradeva Kathâs. 83, 13. — 2) des 21ten Arhant's in der zukünftigen Utsarpiṇî H. 53. — Vgl. शौरदेव्य.

शूरपत्नी adj. f. *einen kriegerischen Herrn* oder *Gatten habend* RV. 1, 174,3. 10,86,8.

शूरपुत्रा f. *Heldenmutter:* Aditi AV. 3,8,2. 11,1,11.

शूरपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 52,92. 59,81. Râśa-Tar. 3,227. 5,39. 7,1361. 1365. 1368. 1532. 8,1268. 1406.

शूरबल m. N. pr. eines Devaputra (बोधिमण्डपरिपालक) Lalit. ed. Calc. 346,9.

शूरभू f. N. pr. einer Tochter Ugrasena's Bhâg. P. 9,24,24.

शूरभूमि f. dass. Bhâg. P. 9,24,41.

शूरमठ m. *das von Çûra angelegte Collegium* Râśa-Tar. 5,38. 40. 6, 223. 243.

शूरमानिन् adj. *sich für einen Helden haltend* MBh. 4,899. 17,67. R. 3,27,19. Spr. (II) 402, v. l.

शूरमूर्धमय (von शूर + मूर्धन्) adj. (f. ई) *aus Köpfen von Helden gebildet:* मही Kathâs. 109,110.

शूरवज्र m. N. pr. eines Fürsten Târân. 277.

शूरवर्मन् m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 60,3. Râśa-Tar. 5,22. 250. 291. 445. — Vgl. सूर°.

शूरवाक्य n. *Worte eines Helden, die Rede eines Grosssprechers:* किं त्वं स्त्रीमध्ये वीर शूरवाक्यानि मुञ्चसि R. 4,9,68.

शूरविद्या Kathâs. 25,127 wohl fehlerhaft für विद्याशूर.

शूरवीर 1) adj. *kriegerische Männer habend* AV. 8,5,1. — 2) m. N. pr. *a*) eines Lehrers mit dem patron. Mâṇḍûkeja Ind. St. 1,391. — *b*) pl. eines Volkes Harîv. lith. Ausg. 33,56.

शूरश्लोक m. Bez. *best. künstlicher Strophen* Verz. d. Oxf. H. 133, a, No. 244.

शूरसाति f. Bez. *des Kampfes, Schlachtgewühles* Nigh. 2,17. nur im

*) Zum Accent vgl. गोघ, धीर, विप्र.

loc.: मं पृक्षिश्चो उर्वस शूरसाता RV. 6,26,1. 19,12. 23,2. 33,2. नरंधिष्टा समिषे शूरसातौ ववन्दिरे 3,54,6. 1,31,6. 100,7. 187,2. 7,93,5. 8,16,4. 10,63,14. 67,9.

शूरसिंह m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Cambr. H. 13.

शूरसेन (शूर + सेना) 1) m. *a*) pl. N. pr. eines Volkes, das um Mathurâ wohnte, MBu. 2,590. 1106 (शूरसेनान् mit der ed. Bomb. zu lesen). 4,11. 144. 5,2128. 6,347 (VP. 185). 8,2098. 13,6841. Harîv. 4973. lith. Ausg. 33,56. R. 4,44,12. 7,70,9. Varâh. Bṛh. S. 5,28. 69. 9,17. 14,5. 17,13. 28. 69,26. Mârk. P. 58,7. Bhâg. P. 1,10,24. 6,14, 10. 9,24, 62. Daçak. 161, 14. Verz. d. Oxf. H. 258,*b*, 18. शूरसेनेश्वर Harîv. 4958. शूरसेनाधिपति Ragh. 6,45. °पति Varâh. Bṛh. S. 14,31. Bhâg. P. 1,15,39. — *b*) sg. *α*) N. pr. des von den Çûrasena bewohnten Gebietes Pâṇ. 1,10,44. — *β*) *ein Fürst der* Çûrasena: Vishṇu MBu. 13,7024. Ugrasena Harîv. 3102. als N. pr. ein Sohn Kârtavîrja's 1892. VP. 417. Bhâg. P. 9,23,26. Çatrughna's VP. 383. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 10,163. 183. 34,206. 56,81. 66,172. 111,28. Verz. d. Oxf. H. 153,*a*, No. 328 (शूर°). — 2) f. आ ein N. der Stadt Mathurâ R. 7,70,6. — 3) f. ई *eine Fürstin der* Çûrasena P. 4,1,177, Schol. MBu. 1,3696. — Vgl. शौरसेन, शौरसेन्य.

शूरसेनक m. pl. = शूरसेन 1) *a*) M. 2,19. Varâh. Bṛh. S. 9,11.

शूरसेनज (शू° + 1. सि) m. pl. dasgl. M. 7,193.

शूरीकर (1. शूर + 1. कर) *Jmd zu einem Helden machen:* °कृत Kathâs. 43,100.

शूरेश्वर (1. शूर + ई°) m. Bez. *einer von* Çûra *errichteten Statue* Râjat. 5,38.

शूर्त partic. nach Nigh. 2,15 so v. a. क्षिप्र. त्वयी शूर्ता वर्धमाना अपस्यम् RV. 1,174,6.

शूर्प Uṇâdis. 3,26. 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,*a*, 11. *a*) *ein geflochtener Korb zum Schwingen des Getreides, Wanne* Nir. 6,9. AK. 2,9,26. H. 1019. Manḍan. zu VS. 1,6. AV. 9,6,16. 19,9, 26. 11,3,4. 12,3,19. fg. 20,136,8. TS. 1,6,*a*,3. TBr. 1,6,5,4. 3,2,5,11. Çat. Br. 1,1,4,22. 4,19. 2,5,*a*,23. Kâtj. Çr. 3,7,19. 5,5,11. Gobh. 2, 2,10. Âçv. Gṛhj. 4,3,13. °पुट 1,7,14. Kaṇḍ. 87. M. 5,117. Jâtâk. 1,184. 285. Harîv. 2204. 7698 (कृष्णाजिनं तिलैः पूर्णं प्रयच्छ च सकाञ्चनम् die neuere Ausg.). विसृज्य शूर्पवद्दोषान्गुणान्गृह्णन्ति साधवः Spr. 2876. Varâh. Bṛh. S. 46,62. शूर्पाकार adj. 68,3. Mârk. P. 35,7. 51,21. Pañcat. 121,19. °वात Taitt. 2,9,5. Mârk. P. 80,28. सशूर्पपिटकाः (शूर्पाणि तण्डुलादिप्रक्षेपार्थानि पिटकास्तदाख्या मञ्जूषाः Nîlak.) MBu. 5,3219. Nirgends masc.; öfters unrichtig शूर्प geschrieben. — *b*) als Maass = 2 Droṇa Çabdam. im ÇKDa. Çiṅkṣ. Saṅgr. 1,1,21. — 2) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. *a*) *eine kleine Wanne* Uṇâdis. im ÇKDr. — *b*) = शूर्पणखा Çabdam. im ÇKDa. — Vgl. शौर्प, शौर्पिक.

शूर्पक (von शूर्प) m. N. pr. eines Feindes des Liebesgottes H. 228. शूर्पकाराति m. *der Feind* Çûrpaka's, ein N. des Liebesgottes Halâj. 1,38. शूर्पकारि m. ÇKDa. nach ders. Aut.

शूर्पकर्ण 1) adj. *wannenähnliche Ohren habend:* Ganeça Kathâs. 55, 168 (शूर्प° gedr.). °पुट dass. 123,161. — 2) m. *a*) *Elephant* Taik. 2,8, 84. H. ç. 175. — *b*) pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,5. — *c*) N. pr. eines Berges Mârk. P. 58,11 (सूर्प°).

शूर्पग्राह adj. f. ई *eine Schwinge haltend* AV. 11,3,4.

शूर्पणखा (शूर्प + नख) f. N. pr. Schol. zu P. 4,1,58. 8,4,3. einer Râkshasî, einer Schwester Râvaṇa's, Çabdam. und Çabdar. im ÇKDa. MBu. 3,12896. 13900. R. 1,1,44. fg. (48 Gorr.). 3,23,12. 6,108,35. 7, 9,25. Ragh. 12,35. Verz. d. B. H. No. 336. °णखी (gegen P. 4,1,58) Çabdam. und Çabdar. im ÇKDa. R. 6,82,103. fg. Bhâg. P. 9,10,4. Hier und da fälschlich शूर्पनखा geschrieben.

शूर्पनाथ (शूर्प + नाथ) m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1,151. सूर्पणाथ्य Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,4. 19,*a*,10 (pl.) fehlerhaft für शूर्पणाथ oder शौर्पणाथ्य.

शूर्पणार्गीय adj. von शूर्पणाथ gaṇa उत्कादि zu P. 4,2,90.

शूर्पपर्णी f. *eine Art Hülsenfrucht* (शिम्बीविशेष) Çabdar. im ÇKDa.

शूर्पय (von शूर्प), °यति (माने) Dhâtup. 32,71, v. l.

शूर्पशूति m. *Elephant* Hâs. 14 (सूर्प°). — Vgl. शूर्पकर्ण.

शूर्पाद्रि (शूर्प + अद्रि) m. N. pr. eines *Berges* im Süden Varâh. Bṛh. S. 14,14; vgl. सूर्पाद्रि Mârk. P. 58,26.

शूर्पारक m. pl. N. pr. eines Volkes R. Gorr. IV, S. 526. Mârk. P. 57, 49. sg. (n. als N. der Stadt) N. pr. einer Gegend MBu. 2,1169. 3,8185. 8337. 10221. 10227. 12,1781. शूर्पारकोदक 13,1736. Bhâg. P. 10,79,10. नगर Harîv. 5300. 5387. Bournouf, Intr. 235. Schiefner, Lebensb. 332 (102). Lassen (IA. 1,537. 565. fg.) nimmt zwei Çûrpâraka an. Oefters सू° geschrieben. — Vgl. शौर्पारक.

शूर्पकर्ण Kathâs. 55,168 fehlerhaft für शूर्पकर्ण.

शूल, शूलति (रुजायाम्, संघाते च, संघोषे च) Dhâtup. 15,19. शूलति लोकं रागः Durgâs. im ÇKDa.

शूल m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 250,*b*,9. 1) m. *a. Bratspiess; Spiess, Wurfspiess* (insbes. Çiva's) AK. 2,4,4,14. 26,199. Taitt. 2,8,36. H. 787. an. 2,513. Med. l. 53. Viçva beim Schol. zu Vâsavad. S. 21. RV. 1,162,11. Çat. Br. 11,4,3,4. 7,3,2. 4,3. कृत्तं शूले परिसप्य Âçv. Gṛhj. 1,11,12. Kâtj. Çr. 6,7,14. 8,8,33. 20,7,27. Schol. zu 6,7,14. Kaṭhân. Up. 7,15,3. यमते शूलान् Vâsa bei Kull. zu M. 3,122. यमते प्रेत्य दीप्तशूलर्ष्टयोगुडान् M. 3,122. °मुद्गरकस्ता MBu. 1,7651. 3,819. त्रिशिखर 14551. त्रिशिख Bhâg. P. 3,19,13. 5,25,3. 6, 9,14. शितधार MBu. 7,8141. 8151 (mit der ed. Bomb. zu lesen शूला भुशुण्ड्यो ऽश्मगुडाः). 12,10671. 13,858. 862. Harîv. 3090. शैवं शूलवरम् R. 1,29,6. R. Gorr. 1,41,21. 3,8,5. 6. 26,11. 28,36. शित 31,28. अयोमुख 53,52. 6,87,16. fg. 19. Suçr. 2,436,19. Varâh. Bṛh. S. 44,21. 58, 48. 69,22. 29. भृकुट्योः शूलशातयोः Kathâs. 60,136. Râjat. 3,365. 4, 201. पर्वस्य Mârk. P. 78,17. 108,3. Bhâg. P. 3,19,18. 4,5,6. 6,1. 10, 11. शूले मत्स्यानिवाप्यक्ष्यन् Spr. (II) 5213. Halâj. 2,168. एक°, द्वि° Schol. zu Kâtj. Çr. 6,5,7. — 2) m. oder n. *ein spitzer Pfahl, auf den Verbrecher* (insbes. *Diebe*) *gespiesst werden:* तीक्ष्णे शूले निवेशयेत् M. 9,276. शूलानारोपयेत्सप्तान् Jâtâk. 2,273. MBu. 1,4317. स शूलमारोक्ष्यति 16,31. शूले समारोप्य Râjat. 2,79. शूलस्य पृष्ठे मरणम् 90. शूले भिन्नः MBu. 13,1343. मोक्षं प्राप्स्यसि शूलात्, कृत्वा °कृतो 1344. °स्थ 1,4218. °भङ्ग Vâsavad. 20. श्मशान° Kumâras. 5,73. शूले प्रोतः MBu. 1,4316. Mârk. P. 16,27. Bhâg. B. 5,26,32. शूलप्रोत m. als N. einer Hölle 7. प्रोत°

Rāǵa-Tar. 2,80. Auch मूला f. H. an. Kaṭuṅ. 10,62. 18,139. 20,16. 25, 120. Paṅkat. 41,14. 238,1. — मूलारोपण Kaṭuṅ. 20,17. 88,82. मूलाधिरोपित 18,148. — 3) m. n. *stechender Schmerz*, namentlich *Cholik* Wise 341. AK. 3,4,26,199. H. an. Med. Viçva a. a. O. Kāraka 8,3. acht Arten derselben Çiraṇ. Sāṅk. 1,7,32. Suçr. 1,32,2. 50,7. 85,9. 118,7. 120,6. 2,187,13. 445,21. 456,19. 458,6. 11. 19. Verz. d. B. H. No. 949. 963. 965. fgg. 975. 993. Verz. d. Oxf. H. 313,a, 1 v. u. 316,a, 2 v. u. 357,a, No. 849. fg. Vaṅiu. Bṛn. S. 68,22. 69,23. तस्यायमो मूलम् Kaṭuṅ. 54,183. शान्त° adj. 183. Rāǵa-Tar. 5,52. fg. मूलाङ्गभञ्जन Vet. in L.A. (III) 13,19. °भङ्ग Vāsavad. 20. शिरस: Prab. 74,9. कोष्ठ° Suçr. 1,117,5. गुद° 2,58,19. त्रिक° *Kreuzweh* Bhāvapr. 7. *Schmerz, Weh* in übertragener Bed.: घट्-मूला वनपदा: शिवमूलाश्चतुष्पथा: । केशमूला: स्त्रियो राजन्विध्यन्ति युगपत्ये ॥ MBh. 3,12846. fg. 12860. fg. Hariv. 11139. Matsja-P. 47,255 (nach J. Muir). — 4) m. n. *Feldzeichen, Banner* Med. Viçva a. a. O. Vāsavad. 20. — 5) m. n. *Tod* Med. Viçva a. a. O. — 6) m. n. Bez. *eines best.* Joga (des 9ten im विष्कम्भादि nach ÇKDa.) H. an. Med. Viçva a. a. O. *eine Constellation, bei der alle Planeten in drei beliebigen Häusern stehen*, Vaṅiu. Bṛn. 12,10. 18. — 7) f. ला *a) ein spitzer Pfahl*; s. u. 2) am Ende. — *b) Hure* Trik. 2,6,5. H. an. Med. — 8) f. ई *eine best. Grasart* Rāǵan. im ÇKDa. — Vgl. अप°, कर्ण° (auch Bhāg. P. 5,13,5), कुति°, त्रि°, दत्त°, दिक्°, परिणाम°, पार्श्व°, मस्तक°, मूत्र°, वात°, वि°, विट्°, शिर:°, कुक्कुल, कृदय°, तृणमूली, मोक्षमूलोत्तर und शील.

मूलक m. *ein hartnäckiges Pferd* Hālā. 2,285. — Vgl. प्रकाल.

मूलकार m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 57,40.

मूलगव m. *Spiessrind*, Bez. *eines best. dem* Rudra *gebrachten Rindopfers* Āçv. Gṛhj. 1,3,6. 4,8,1. 23. Pār. Gṛhj. 3,8. 9. Lāṭj. 4,9,4.

मूलग्रन्थि f. *eine Art* Dûrvâ-*Gras* (मालादूर्वा) Rāǵan. im ÇKDa.

मूलग्रह m. ein N. Çiva's (*einen Spiess tragend*) Gaṇap. zu Sāṅkhjak. 40.

मूलघातिन् m. dergl. Çiv.

मूलघातन adj. *stechenden Schmerz —, Cholik vertreibend*; n. *Eisenrost* Çabdar. im ÇKDa.

मूलघ्न 1) adj. (f. ई) dass.: पोनिमोत्रातिशिरसाम् Suçr. 1,181,10. 226, 8. — 2) m. = तुम्बुरुवृक्ष Ratnam. im ÇKDa. — 3) f. ई *Calmus* Ausw. 86; vgl. Bhāvapr. 3.

मूलदोषहरा f. = मूलपर्णी Ausw. 84.

मूलद्विष् m. *Asa foetida* (*Cholik u. s. w. vertreibend*) Ratnam. im ÇKDa.

मूलधन्वन् m. ein N. Çiva's Çabdar. im ÇKDa.

मूलधर adj. *einen Spiess tragend*: Rudra-Çiva R. 1,45,23. Çiv. Uṇâdi-Sûtra zu Uṇādis. 2,22. प्रतिभय° R. 3,7,36. मूलधरा f. ein N. der Durgâ Çabdar. im ÇKDa. H. ç. 48 (fälschlich मूरवरा).

मूलधारिन् adj. dass.: Durgâ Tantras. im ÇKDa.

मूलयुक् adj. dass.: Çiva R. 5,89,8. Durgâ Trik. 1,1,54.

मूलनाशन adj. *Cholik u. s. w. vertreibend*; n. *Sechalsalz* H. 943.

मूलनाशिन् adj. dass.; f. *Asa foetida* Ausw. 59.

मूलपत्री f. *eine best. Grasart* (*spitze Blätter habend*), = मूली Rāǵan. im ÇKDa.

मूलपदी adj. f. *spiessähnliche Füsse habend* gaṇa कुम्भपदादि zu P. 5,4,138.

मूलपर्णी f. wohl = मूलपत्री Ausw. 84.

मूलपाणि 1) adj. *einen Spiess* (Çiva's *Spiess*) *in der Hand haltend* Bhāg. P. 5,10,26. 7,5,39. Bein. Rudra-Çiva's Śaṅkar. Bh. 5,11. Ind. St. 2,6. MBh. 1,1932. 3,15999. 12,4502. 13,859. 6378. Hariv. 8102. Çiç. 4,68. Wilson, Sel. Works 2,217. VP. 153, N. 1. Bhāg. P. 1,15,12. 8,12,14. Verz. d. Oxf. H. 24,a, N. 3. °पाणिन् 48,b,22. — 2) m. N. pr. eines (oder verschiedener) Gelehrten Paṅkaçārīrend. 7,a,5. 8,a,3. 30, a,4. Verz. d. B. H. No. 53. 1148. 1403. Verz. d. Oxf. H. 270,b,23. 281, a, No. 660. 283,a, No. 661. b, No. 662. 292,b,22. fg. Ind. St. 1,467.

मूलभृत् adj. *einen Spiess tragend*; m. ein N. Çiva's H. 199. MBh. 6, 2779. Rāgat. 2,36. Kumāras. 7,40.

मूलभेद m. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 66,a,17. 19. fg. 24.

मूलवत् (von मूल) adj. *stechenden Schmerz habend* Suçr. 1,120,13.

मूलशत्रु m. *Ricinus communis* (*Cholik vertreibend*) Çabdar. im ÇKDa.

मूलकृच्छ्रा f. *Ptychotis Ajowan* (पवानी) Dec. (*Cholik u. s. w. vertreibend*) Rāǵan. im ÇKDa.

मूलशस्त्र m. *einen Spiess in der Hand haltend*: इत्तम् MBh. 1,7622. m. ein N. Çiva's Paṅkar. 1,7,66. 73. 76.

मूलशृत् m. *Asa foetida* (*Cholik u. s. w. vertreibend*) Trik. 2,9,11.

मूलीकार (मूल + कर), °करोति *am Spiess braten* P. 5,4,65. Vop. 7,90. °कुर्यात् Çat. Br. 3,8,3,3. °कृत AH. 2,9,45. H. 413.

1. मूलाग्र (मूल + अग्र) n. *die Spitze eines Spiesses*: यष्टेा सिक्तानुपादाय मूलाग्रे R. 3,7,7. *die Spitze eines Pfahles, auf den Verbrecher gespiesst werden*, MBh. 1,4319.

2. मूलाग्र (wie eben) adj. *spitz wie ein Spiess*: ein Komet Vaṅiu. Bṛn. S. 11,23. 51. ein Schwert 50,7.

मूलाङ्क (मूल + अङ्क) adj. *mit* (Çiva's) *Spiesse gezeichnet* MBh. 12, 13294.

मूलि adj. = मूलिन् (aus metrischen Rücksichten) *mit einem Spiesse versehen*: Çiva MBh. 2,1642. — Vgl. पिनाकि.

मूलिक 1) adj. (von मूल) am *Spiess gebraten* Çabdar. im ÇKDa. — 2) m. *a) Hase* H. 1296. — *b)* pl. N. pr. eines Volkes Vaṅiu. Bṛn. S. 9,13. 21. 10,7. 14,8, v. l. 23. 16,35. Mārk. P. 57,41. Die v. l. in Vaṅiu. Bṛn. S. hat fast überall मूलिक, was auf मूलिक führen würde.

मूलिका (von मूल) f. *Bratspiess* Suçr. 1,230,15. von einer मूलिका (?) kann ein Fürst Weisheit lernen Mārk. P. 27,20.

मूलिन् (wie eben) 1) adj. *a) mit einem Spiesse versehen* Raṅu. 15,8. Spr. 2896. Rāǵa-Tar. 8,1307. Bhāg. P. 3,19,20. Beiw. und Bein. Rudra-Çiva's AK. 1,1,1,25. H. 199, Schol. Hit. 8. Hālā. 1,11. Kauç. 31. MBh. 7,2858. 13,32. 745. 858. 14,182. Hariv. 14502. R. 1,43,25. Megh. 35. Kumāras. 3,57. Spr. 2773. (II) 4279. Kaṭuṅ. 20,74. 23,21. Sarvadarçanas. 95,19. Beiw. der Durgâ Mārk. P. 81,61. — *b) die Cholik hebend* Spr. 2896. वर्षपेहिदलं मूली ÇKDa. nach dem Vaidjaka. — 2) m. *a)* ein N. Çiva's; s. u. 1) *a*). — *b) Hase* Bhāvapr. im ÇKDa. — *c)* N. pr. eines Weisen Verz. d. Oxf. H. 53,b,9. — Vgl. त्रि°.

मूलिन m. = भाण्डीरवृक्ष Çabdam. im ÇKDa.

मूलेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,a,34.

मूलोत्था f. *Serratula anthelmintica* Çabdar. im ÇKDa.

प्रौल्य (von प्रूल) adj. zum *Bratspiess gehörig, daran gebraten* u. s. w. P. 4,2,17. AK. 2,9,45. H. 413. Hall. 2,168. Kâty. Ça. 20,8,4. Hariv. 8439. fg. (°प्रूल die neuere Ausg.). Suça. 1,75,1. 230,18. 2,340,14. Vishn. 1,7,37. Bhatt. 4,9.

प्रूल्वाण m. N. pr. eines dämonischen Wesens Kauç. 56.

प्रूष्, प्रौषति (प्रसवे) Dhâtup. 17,38. सूष् v. l.

प्रूर्व (von प्रूम्) 1) adj. a) *(pfeifend) gellend, klingend:* प्र विप्रवे प्रूर्वेतु मन्म RV. 1,154,3. 10,54,6. वर्क 6,4. घोष 3,7,6. 6,10,2. — b) *schnaubend, muthig:* मवन् RV. 3,49,2. प्र कृष्टिरेव प्रूर्व एति रोरुवत् 9,71,3. — 2) m. a) *(heller Ton) Klang, klingendes Lied* u. s. w., *Jubel:* इन्द्राय प्रूर्वनेर्चति RV. 1,9,10. 10,96,2. 120,8. 133,1. प्र मन्मरे प्रूर्वम् 1,62,1. — 131,2. 3,54,1. 5,41,7. 10. 6,12,4. 68,3. 7,25,5. प्रूर्वस्य मन्मभिः 8,63,1. 10,6,3. सुवितस्य 31,3. — VS. 22,30. Kâṭh. 35,10 bei Weber, Nax. 2,350. — b) *Hauch, Lebenskraft:* नाम्या एवास्य प्रूर्वो ऽजायत (vgl. VS. 21,54) Çat. Br. 12,7,2,7. प्रूर्वो नामास्यमृतो मर्त्येषु TBr. 3,10,8,4. parox. VS. 21,36. 54. इन्द्रियं प्रूर्वमिन्द्रे वयो दधत् 28,41. — c) N. pr. eines Mannes TBr. 3,10,8,13. Ind. St. 4,373. — 4) n. = बल Nigh. 2,9. = सुख 3,6. प्रूर्वे du. RV. 9,97,54 dunkel.

प्रूषन्, loc. प्रूषणि s. u. 1. प्रू.

प्रूर्व्य (von प्रूर्व) adj. *klingend, jauchzend:* वचस् RV. 1,54,3. स्तोम 7,66,1. 5,86,6.

प्रृङ्खल 1) m. f. (घा) und n. Taitt. 3,5,22. a) *Kette, Fessel* AK. 2,8,2,2. Taitt. 2,8,40. 3,3,407. H. 1229. an. 3,688. Med. l. 140. Hall. 2,68. मुखप्रृङ्खलकर्षिणः (स्तम्बेरमाः) Bâlar. 5,72. लोरुप्रृङ्खलबद्ध Mâlav. P. 125,18. Bâlc. P. 10,3,49. Gewöhnlich प्रृङ्खला f. Vârâh. Bṛh. S. 89,1. 95,42. संसारवासनाबन्ध° Gîr. 3,1. बद्धाविव मारप्रृङ्खलया Kathâs. 7,62. मुनौ °बद्धा 13,118. खलसंवाद° 24,210. °पाश 25,204. 65,194. 71,52. 80,31. धर्ममर्यादा° 91,54. 101,179. Weber, Kṛshṇaj. 268. Spr. (II) 2080. Prasâdh. 103, a, 4. °बन्धन Daçak. 25,21. 77,14. Bâlc. P. 5,16,13. Unbestimmt welches Geschlechts Bhatt. 9,90. am Ende eines adj. comp. Kathâs. 27,169. — b) *Mannsgürtel* AK. 2,6,3,10. Taitt. H. 665. H. an. Med. — 2) f. ई *Asteracantha longifolia Nees.* (कोकिलाक्ष) Râgân. im ÇKDa. — Vgl. उच्चप्रृङ्खल. कटि°, कन्दर्प°, दीप°, वप्र°, वाट°, वि°, विष्णु°.

प्रृङ्खलक (von प्रृङ्खल) m. *ein an den Füssen gefesseltes junges Kamel* P. 5,2,79. AK. 2,9,76. H. 1255. Hit. 81. Hall. 2,125. Çiç. 12,7. — Vgl. वप्रप्रृङ्खलिका und भाषाप्रृङ्खलक unter रास 4).

प्रृङ्खलतोदिन् m. N. pr. eines Mannes gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. — Vgl. शार्ङ्गलतोदि.

प्रृङ्खलय् (von प्रृङ्खल), °यति *fesseln* Daçak. 25,17. प्रृङ्खलित Dhanañg. im ÇKDa.

प्रृङ्खाणिका f. *Rotz* Âpast. 1,16,14. प्रृङ्खाणिका, शिङ्खाणिका und सि° v. l.

प्रौङ्ग Unâdis. 1,125. m. n. gaṇa गर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Taitt. 3,5,12. Siddh. K. 251,a,1 v. u. 1) n. a) *Horn* AK. 2,9,100. 3,4,18,55. H. 1264. an. 2,50. Med. g. 25. fg. Hall. 2,112. 123. 4,79. 5,69. am Ende eines adj. comp. f. घा (MBh. 1,6662. 9,2003. 13,3815) und ई (Jâṭ. 1,204. MBh. 3,12737. 7,2204. 13,3795. Kathâs. 37,74. Mâlav. P. 110,43) P. 4,1,55. Accent eines adj. comp. auf प्रृङ्ग 6,2,13. — RV. 1,140,6. 163,11. 3,39,3. 3,8,10. 4,58,3. शिशानो वृषभो यवाशिः प्रृङ्गे दविध्वत् 8,49,13. शतस्य प्रृङ्गुर्विषा वि पप्रथे 8,75,5. 5,59,3. AV. 2,32,6. 8,6,14. प्रृङ्गाभ्यो रुतं सपति 9,4,17. Ait. Br. 4,17. Çat. Br. 1,8,4,5. पेवस्य TS. 6,2,8,4. 7,5,4,1. गो° Kauç. 31. ऐकं° AV. 8,7,4. हि° Kauç. 43. सहस्र° RV. 5,1,5. 7,53,7. — Sâṅkh. Br. 6,9 in Ind. St. 1,41. M. 4,67. 5,121. °च्छेद R. 2,61,14. 77,20. 3,49,21. 5,11,7. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 144. 149. 156. Ragh. 16,13. Çiç. 39. 144. Vârâh. Bṛh. S. 61,7. प्रृङ्गोन्नमिता विप्राः Râja-Tar. 5,460. सक्साम° adj. als Beiw. Vishṇu's R. 6,102,17. *Horn zum Blasen* AV. 20,129,10. Bâlc. P. 10,11,31. °रव 12,1. ध्मात्तः प्रृङ्गाणि 7. °वाद्य H. ç. 83. °वेत्रकर and °वाद्यप्रिय als Beiww. Kṛshṇa's Paṇḍar. 4,8,113. *zum Trinken* Kâṭh. 27,2. *zum Schröpfen* Suça. 1,39,17. 19. 363,4. 2,33,20. प्रृङ्गेण रक्तं क्रोरत् 108,12. — b) = शशप्रृङ्ग Kusum. 23,8. — c) *Hauzahn des Elephanten* R. 3,11,7. Kâm. Nîtis. 14,34. — d) *Spritze*, = क्रोडाम्बुपत्र (°क) H. an. Med. Viçva bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. = ज्वलनपत्रक Utpalini ebend. Ragh. 16,70. — e) *Berggipfel* AK. 2,3,4. 3,4,8,27. 9,39. Trik. 2,3,2. H. 1032. H. an. Med. Hall. 2,11. 5,25. Utpalini z. d. St. शैल° MBh. 1,1164. 3,2437. 2540. 12139. सप्रृङ्ग इव पर्वतः 5,7278. R. 2,54,29. 5,11,7. Mṛicch. 14,53. 59. Ragh. 13,26. Spr. 2731. (II) 2094. 3466. Vârâh. Bṛh. S. 12,6. Kathâs. 25,207. Daçak. 75,5. वल्मीक° Kâd. 35,25 (nach Auftrecht). Paṇḍar. 9,7. — f) *Thürmchen eines Tempels, Palastes* u. s. w.: प्रासादवरप्रृङ्गस्थ MBh. 1,2821. वेश्म° R. Gorr. 2,33,4. विमान° Kumâras. 7, 40. 63. Çiç. Cu. 141,11. Vârâh. Bṛh. S. 56,23. 25. Paṇḍar. 10,8. Bâlc. P. 10,71,33. — g) *Horn des Mondes:* (सोमस्य) यत्रास्तिष्ठन्ति प्रृङ्गाः Hariv. 12793. R. 5,11,7. Vârâh. Bṛh. S. 4,8. 14. 17. 21. 47,16. fg. प्रृङ्गोन्नति Gaṇit. Çirodd. 5. Verz. d. Cambr. H. 31. 39. 42. 57. Comm. in der Einl. zu Sûrjas. 10. प्रृङ्गोन्नमन ebend. *Horn eines in der Form eines Halbmondes aufgestellten Heeres* MBh. 6,2418. — h) *die weibliche Brust* Bâlc. P. 5,2,11. — i) *Lotusblüthe* Çabdar. im ÇKDa. — k) *Agallochum* (अगुरु) H. ç. 129; vgl. प्रृङ्गज. — l) *Spitze, das äusserste Ende* überh.: eines Pfeils AV. 4,6,5. eines Bogens Kumâras. 2,64. नखस्य Gîr. 1,8. einer Flamme; daher unter den ज्वलतो नामधेयानि Nigh. 1,17. — m) *Gipfel* so v. a. *der Hervorragendste* —, *Beste in seiner Art:* (मथुरा) प्रृङ्गं पृथिव्याः so v. a. *der schönste Punkt auf Erden* Hariv. 6424. Hierher und zu n) die Bedeutungen उत्कर्ष Taitt. 3,3,70. H. an. Med. Viçva a. a. O. प्राधान्य AK. 3,4,3,27. प्रभुत्व H. an. Med. — n) *das Horn als Bild des erwachten Selbstgefühls:* यवाप्य पृथिवीं कृत्स्नां न ते प्रृङ्गमवर्धत MBh. 3,1126. प्रृङ्गं परेषामुच्छ्रितम् Ragh. 9,62. — o) *das erste Erwachen des Gefühls der Liebe:* प्रृङ्गं हि मन्मथोद्भेदः (zur Erklärung von प्रृङ्गार) Sâh. D. 210. — p) *Zeichen* (चिह्न) Taitt. 3,3,70. H. an. Med. — q) = तीक्ष्ण (*very sharp* Wilson) und ऊर्ध्व (*minutely fine* Wilson; dieses wäre मूल्य) Çabdar. im ÇKDa. — 2) m. a) *eine best. Pflanze*, = कूर्चशीर्ष (°क) AK. 2,4,6,5. H. an. Med. Viçva a. a. O. *eine best. giftige Pflanze* Z. d. d. m. G. 9,674; vgl. शार्ङ्ग 1) b). — b) N. pr. eines Muni Çabdar. im ÇKDa. — 3) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. वरणादि zu 2,33. a) *ein best. Fisch* H. an. Med. Hall. 3,37. Viçva und Utpalini a. a. O. = मदुरस्य प्रिया AK. 1,2,3,25. H. 1347. = ग्राम्यमदुरिका Hit. 186. — b) Bez. verschiedener Pflanzen: = विषा AK. 2,4,3,18. H. an. Med. *Trapa bispinosa* Viçva a. a. O. = वृषभ, सपत्र AK. 2,4,4,4. H. an.

Mān. Viçva a. a. O. = कर्कटशृङ्गी Ratnam. 45. Its fruit is compared to the claw or feelers of a crab or to the horn of a goat Mollsw. = व्रत, वर and विष (*Gift*) Rāǵān. im ÇKDa. — Suçr. 2,207,17. 252,6. — *c*) zu *Schmucksachen dienendes Gold* (vgl. शृङ्गीकनक) H. an. Mān. Viçva und Uttamī a. a. O. Hierher vielleicht °दान Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,35. — Vgl. घन°, घवा°, सप्य°, एक°, कर्कट°, कुलीर°, चतुः°, तिग्म°, त्रि-धातु°, तीक्ष्ण°, नृ°, पुत्र°, पृश्नि°, पृष्ठ°, प्रा°, बस्त°, बक्र°, बाल°, भूरि°, मणि°, मेष°, राज्ञ°, वक्र°, वि°, वैडूर्य°, शत°, शश°, सिंहल्य°, हार्द्र.

शृङ्गक 1) am Ende eines adj. comp. = शृङ्ग *Horn:* स° MBu. 5,3469. Kathās. 37,70. — 2) n. *Horn des Mondes:* शशाङ्कशृङ्गकोवति Verz. d. Oxf. H. 327,*a*,1 v. u. — 3) m. *eine best. Pflanze,* = व्रोवक (d. i. कूर्च-शीर्ष) Ceylon. im ÇKDa. — Vgl. द्विशृङ्गिका.

शृङ्गकन्द m. *Trapa bispinosa* Rāǵān. im ÇKDa.

शृङ्गकार m. N. pr. eines Berges Pāṇḍar. 1,7,2.

शृङ्गगिरि m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,25. 274,*b*, No. 624. Wilson, Sel. Works 1,199. 201. 203.

शृङ्गग्राहिका f. *das Packen bei den Hörnern;* instr. so v. a. *direct, unmittelbar* Schol. zu Çiç. Bh. 7,1. 17,6. zu Pāṇ. Bh. 14,2,6. zu Kāś. Ça. 25,14,6 (nicht gedruckt).

शृङ्गघ्न n. *Agallochum* Ratnam. 133.

शृङ्गघ्नादि n. = शृङ्गस्य मूलम् gaṇa कर्णादि zu P. 5,2,24.

शृङ्गधर m. N. pr. eines Mannes Tīrān. 279.

शृङ्गपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 251,*b*,21. — Vgl. शृङ्गेरिपुर.

शृङ्गभुज m. N. pr. eines Mannes Kathās. 39,20. fgg.

शृङ्गमय (von शृङ्ग) adj. in कनक° *mit vergoldeten Hörnern versehen:* गोशत MBu. 1,653.

शृङ्गमूल m. *Trapa bispinosa* Rāǵān. im ÇKDa.

शृङ्गमोक्तिन् m. *Michelia Champaka* (चम्पक) *Lin.* Rāǵān. im ÇKDa.

शृङ्गरुक् m. *Trapa bispinosa* Rāǵān. im ÇKDa. unter शृङ्गाटक.

शृङ्गरोक् m. v. l. für मुण्डरोक् ÇKDa.

शृङ्गला (von शृङ्ग) f. *eine best. Pflanze,* = घण्टापुष्पी Çabdar. im ÇKDa.

शृङ्गवत् (wie eben) 1) adj. *a*) *gehörnt* MBu. 13,3317. — *b*) *mit* (vielen) *Gipfeln versehen:* Berg, Gebirge R. 4,49,22. — 2) m. N. pr. eines Berges (Gebirges) MBu. 6,199. 348. 13,7658. Golāḍhy. Bhuvanak. 26. Mālav. P. 55,10. Bālc. P. 5,16,8. 17,8. — Vgl. शृङ्गिन्.

शृङ्गवप् m. N. pr. eines Mannes RV. 8,17,13.

शृङ्गवेर 1) m. N. pr. eines Schlangendämons MBu. 1,2134. — 2) n. *frischer Ingwer* (*zingiberi* Plin. H. N. 12,7) AK. 2,9,37. Hālār. 2,481. Suçr. 1,74,20. 142,11. 145,7. 166,16. 217,3. °चूर्ण 369,14. °कल्क 2, 87,18. Vārāh. Bṛn. S. 76,14.

शृङ्गवेरक n. = शृङ्गवेर 2) H. 1189.

शृङ्गवेरपुर n. N. pr. einer *Stadt* an der Gaṅgā MBu. 3,8207. R. 1, 1,28 (31 Gorr.). 2,83,19. 89,3. R. Gorr. 2,46,19. 124,22. fg. 5,108,44. Uttarār. 10,12 (14,10). Mālavikāgn. 72,6. Verz. d. Oxf. H. 165,*a*,2. 178,*a*,16. Nāgān. in Mālatīm. S. 1.

शृङ्गवेराभमूलक (शृङ्ग° -ābhā -मूलक) m. *eine Art Gras* (एरका) Bhāvapr. im ÇKDa.

शृङ्गमुख n. *Hormusth* H. ç. 83 (शृङ्ग: मुख die Hdschr.).

शृङ्गाट (von शृङ्ग) n. Taitt. 3,5,7. Sidd. K. 249,*a*,3. 1) m. *Trapa bispinosa;* die Frucht (n.) hat zwei *hörnerförmige* Stacheln. Taitt. 1,2, 37. Hir. 179. the triangular nut of the Çṛṅgāṭa Journ. of the Am. Or. S. 6,339,2 v. u. Auch शृङ्गाटी f. *die Pflanze* Suçr. 2,457,5. शृङ्गाट m. = स्वादुकण्टक Çabdar. im ÇKDa. — 2) *Dreieck, ein dreieckiger Platz* Kām. Nītis. 16,3. — 3) n. *ein Platz, in den drei Wege münden,* H. 988. — 4) Bez. *einer best. Configuration der Planeten* Varāh. Bṛn. S. 107,3. — 5) m. N. pr. eines Berges in Kāmākhjā Kālikā-P. 82 im ÇKDa. — Vgl. वन°.

शृङ्गाटक (von शृङ्गाट) 1) m. *Trapa bispinosa* (n. *die Nuss*) H. an. 4,38. Mān. k. 218. Suçr. 1,80,14. 156,21. 225,2. 15. 238,8. 377,13. 2,32,3. Çiç. Sāh. 3,8,20. MBu. 13,4366. °निभो ऽभिक्षित् Weber, Nax. 2,391, N. *Asteracantha longifolia Nees.* Ratnam. 8. — 2) *Dreieck* Varāh. Bṛn. S. 34, 5. 80,9. 17. MBu. 6,3362. — 3) m. n. *ein Platz, in den mehrere* (nach Einigen *vier*) *Wege münden; Kreuzweg* AK. 2,1,17. H. an. Mān. Hālār. 2,134. Vīrar. 132. शृङ्गाटकेषु सर्वेषु समाप्यातु ऋयं मम MBu. 4, 2186. R. Gorr. 2,73, 31. Nityānanda 1 bei Hall. Anth. S. 512. Bālc. P. 3,15,16. 9,10,17 (am Ende eines adj. comp. f. °शृङ्गाटका!). 10,41,21. Pāṇḍav. ed. orn. 3,8 (neben चतुष्पथ). Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,26. fg. शृङ्गाटिका f. dass. Daçak. 108,18. — 4) n. in der Anatomie *Verbindungen von Gefässen in Nase, Ohr, Auge, Zunge;* = सिरामुखानां शिरसो मध्ये संयोगस्थानम् Bālāvabr. 2. Suçr. 1,340,21. 345,13. 346,6. 2,332,13. — 5) n. Bez. *einer best. Configuration der Planeten* Varāh. Bṛn. S. 20,2. Verz. d. Cambr. H. 36. in der Horoskopie Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten in den Häusern 1, 5 und 9 stehen,* Varāh. Bṛn. 12,4. 13. — 6) n. *ein best. Gericht* Bālāvabr. im ÇKDa. — 7) m. N. pr. eines Berges in Kāmākhjā Kālikā-P. 82 im ÇKDa. unter शृङ्गाट. — 8) n. *a door and a collection or mountain of three peaks* Wilson nach Çārdārthak. — Vgl. यक्ष°, वन°.

शृङ्गान्तर (शृङ्ग + च°) n. *der Raum zwischen den Hörnern, Stirn eines gehörnten Thiers* Raǵa. 2,21.

शृङ्गाय् (von शृङ्ग), °यते *mit den Hörnern stossen* TBa. 2,3,9,2.

शृङ्गार (von शृङ्ग wie वृन्दार von वृन्द) Uṇādis. 3,136. m. n. Siddh. K. 249, *b*,4. 1) adj. *schmuck:* चक्र R. 6,95,24. शृङ्गारैः सुप्रकाशैश्च कैलासो मदनायते Harīv. 12007. °वेषाभरण adj. MBu. 4,2295. °वेष adj. 5,337. — 2) m. *a*) *Putz, Staat, schmucke Kleider* Spr. (II) 1649. वसन्तः संततोत्सृष्टिसानङ्गशृङ्गार एव Dhūrtas. 69,3. शृङ्गारं विधाय Pāṇḍav. ed. orn. 32,20. Vet. in LA. (III) 8,18. Çiç. ebend. 36,4. कृत° adj. (f. आ) Pāṇḍav. ed. orn. 32,21. 51,15. मुक्त° 32,23. स° *geputzt* 49,21. Kathās. 64,131. Mān. n. 214. *Schmucksachen eines Elephanten* Taitt. 3,3,275. H. an. 3,814 (गजमण्डन st. राजमण्डन zu lesen). Mān. 3,231. Hir. 204. Çārṅgad. bei Udāyar. zu Uṇādis. 3,136. °धारिन् R. 7,35,27. — *b*) *Geschlechtsliebe; der erotische Grundton* (रस) *in einem Kunstwerke* AK. 1,1,8,17. Taitt. 1,1,126. H. 229. 294. H. an. Mān. Hālār. 1,93. 3,75. पुंसः स्त्रियां स्त्रियः पुंसि संभोगं प्रति या स्पृहा । स शृङ्गार इति ख्यातः क्रीडारत्यादिकारकः ॥ Suvarṇa-sena bei Udāyar. a. a. O. शृङ्गं हि मन्मथोद्भेदस्तदागमनहेतुकः । उत्तम-प्रकृतिप्रायो रसः शृङ्गार इष्यते ॥ Sāh. D. 210. Daçar. 2,13. 45. R. 1,4,

7 (3,46 Gorr.). शृङ्गारैकरसो मदनः Vikr. 9. °लक्षा Çiç. 14,3. Spr. 3018. (II) 1911. Riéa-Tar. 2,121. 3,484. 5,230. 232. °प्रिय Pañkar. 1,10,26. 11,30. 14,69. Verz. d. Oxf. H. 130, a, No. 236. 208, b, 27. 213, b, 1. धर्मार्थकामेत्रिविधः शृङ्गारः Sin. D. 516. धर्म°, अर्थ°, काम° 193,3. fgg. Bhar. Nâṭyaç. 18,67. fgg. संभोग° Sin. D. 226.7,7. °चेष्टित 95. °चेष्टा Ragu. 6, 13. Halâj. 1,89. — c) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 210, a, No. 495. Riéa-Tar. 8,329. 369. 2131. 2254. 2270. 2424. 2471. °भट्ट 2437. — 3) n. a) *Mennig* H. 1061, Schol. H. an. Med. — b) *Gemürznelke.* — c) *Mehl, Pulver* H. an. Med. — d) *frischer Ingwer* (vgl. शृङ्गवेर) Çabdar. im ÇKDa. — e) *schwarzes Agallochum* (कालागुरु) Riéan. im ÇKDa.

शृङ्गारक (von शृङ्ग oder शृङ्गार) P. 5,2,122, Vârtt. 4. Vop. 7,32. fg. 1) adj. *gehörnt* Med. r. 165. — 2) n. *Mennig* Riéan. im ÇKDa.

शृङ्गारचन्द्रोदय m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 826.

शृङ्गारजन्मन् m. ein N. *des Liebesgottes* H. 229, Schol.

शृङ्गारण (von शृङ्गारय्) n. bei den ekstatischen Pâçupata *das Verliebtthun, das Benehmen eines Verliebten* Sarvadarçanas. 78,9. वृषणोवनसंपन्ना कामिनीमवलोक्यात्मानं कामुकमिव यैर्विलासैः प्रदर्शयति तत् शृङ्गारणम् 11. fgg.

शृङ्गारतिलक n. Titel verschiedener Werke Gild. Bibl. 247. Verz. d. Oxf. H. 209, b, No. 491. Sin. D. 202, 13. UéévaL. zu Unâdis. 3, 47. — Vgl. बृहत्शृङ्गार°.

शृङ्गारपिण्डक m. N. pr. eines Schlangendämons Hariv. 9503. H. 1311, Schol.

शृङ्गारभूषण n. *Mennig* H. 1061.

शृङ्गारमञ्जरी f. N. pr. eines Frauenzimmers Hall in der Einl. zu Vikrav. 37.

शृङ्गारमण्डप *Tempel der Liebe*, N. eines Tempels Skanda-P. in Verz. d. Oxf. H. 71, b, 27.

शृङ्गारय् (von शृङ्गार) *verliebt thun*, — *sein:* शृङ्गारित *verliebt* (vielleicht auch *geputzt*) gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. — Vgl. शृङ्गारण.

शृङ्गारयोनि m. ein N. *des Liebesgottes* H. 229, Schol. Halâj. 1,83.

शृङ्गाररसाष्टक (शृ° + रस + अष्टक) n. *acht Strophen erotischen Inhalts*, Titel eines dem Kâlidâsa zugeschriebenen Gedichts; herausgegeben in Haeb. Anth. 310. fg. Kâvjakalâpa 94. fg. Kâvjasaṁgraha 29. fg.

शृङ्गारवत् (von शृङ्गार) 1) adj. *verliebt; erotisch* Comm. zu Daçar. 3, 46. — 2) f. °वती a) ein Frauenname Kathâs. 123, 316. 336. Verz. d. Oxf. H. 152, b, 33. — b) N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 152, b, 26.

शृङ्गारशत und °क n. *hundert über Liebe handelnde Sprüche*, Titel der 11ten Centurie des Bhartṛhari, Verz. d. Oxf. H. 133, b, No. 246. 134, a, No. 247. Bhartṛ. ed. Bohl.

शृङ्गारशेखर m. N. pr. eines Fürsten Hall in der Einl. zu Vikrav. 36. 39.

शृङ्गारसिंह m. N. pr. eines Mannes Riéa-Tar. 8,530.

शृङ्गारित s. शृङ्गारय्.

शृङ्गारिन् (von शृङ्गार) 1) adj. a) *geputzt, schön gekleidet* Trik. 3,3, 364. fg. H. an. 3,426. Med. n. 214. — b) *verliebt* Med. Verz. d. Oxf. H. 209, b, No. 491. Schol. zu Kirât. 3,121. *erotisch* Daçar. 3,46. — 2) m. a) *Elephant* Trik. H. an. Med. — b) *der Betelnussbaum* diess. — c) *Rubin* (माणिक्य) Riéan. im ÇKDa. — 3) f. °णी *Geliebte, Gattin* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Cl. 21.

शृङ्गारीय् (von शृङ्गार), °यति *der Liebe begehren* Spr. 2641.

शृङ्गाल s. कर्कु°.

शृङ्गि = शृङ्गी (s. u. शृङ्ग). 1) f. *ein best. Fisch* Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. n. = शृङ्गीकनक Colebr. und Lois. zu AK. 2,9,96.

शृङ्गिक 1) m. *ein best. vegetabilisches Gift* H. 1198. Halâj. 3,25. — 2) m. oder f. (am Ende eines adj. comp. f. या) nach Nilak. *eine Schleudermaschine:* सगुडशृङ्गिका MBh. 3,643. — 3) f. या *Birke* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. रक्त°.

शृङ्गिण (von शृङ्ग) P. 5,2,114. m. *Widder* H. 1277.

शृङ्गिन् (wie oben) 1) adj. a) *gehörnt* Med. n. 143. RV. 1,32,15. 33,13. 3,8,13. Âit. Br. 4,17. Kâṭj. 33,1. MBh. 2,1820. 3,12778. R. 2,25,17. Mârk. P. 79,6. प्रवालमणि° *Hörner von — habend* R. 3,49,4. m. *ein gehörntes Thier* Jâén. 2,200. MBh. 1,6450. Spr. 3348. (II) 3214. Vasiṣ. Dh. S. 16,8. Bṛh. S. 5,25. *Stier* Hit. 79. — b) *mit Hauzähnen versehen:* हेम° MBh. 1,7344. m. *Elephant* Med. — c) *mit einem Stachel versehen;* s. विष°. — d) *mit Gipfeln versehen;* m. *Berg* Med. MBh. 3,1738. 9, 1937. Ragu. 12,80. — e) *mit Wipfeln versehen;* m. *Baum* Med. — f) *mit einer Brust versehen* (nach Burnouf): चारु° Bhâg. P. 5,2,16. — 2) m. a) *ein gehörntes Thier; Stier; Elephant; Berg; Baum* s. a. dem adj. — b) *ein best. giftiges Thierchen* Suça. 2, 287, 12. — c) *eine best. Pflanze,* = वृषभ Colebr. und Lois. zu AK. 2,4,4,4. — d) N. pr. eines Gebirges Hit. 26. VP. 167. Mârk. P. 54,9. Verz. d. Oxf. H. 48, a, 10. — e) N. pr. eines Ṛshi MBh. 1,1679. fgg. 1963. fgg. Hariv. 9573. Verz. d. Oxf. H. 122, a, 3. — 3) f. शृङ्गिणी a) *Kuh* AK. 2,9,66. H. 1263. — b) Bez. verschiedener Pflanzen; = मेष्मशृङ्गी, मल्लिका und ज्योतिष्मती Med. — Vgl. द्वि°, विष°.

शृङ्गिपुत्र m. patron. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55, b, 10. 12.

शृङ्गिवर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 280, a, No. 636.

शृङ्गीकनक n. *zu Schmucksachen dienendes Gold* AK. 2,9,96. H. 1046. Hit. 50.

शृङ्गीभरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67, b, 11.

शृङ्गेरिपुर n. eine Corruption von शृङ्गगिरिपुर Verz. d. Oxf. H. 237, a, 27; vgl. Wilson, Sel. Works 1,199. 201.

शृङ्गेरीमठ m. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 149, a, 10.

शृङ्गेश्वर Verz. d. B. H. 144,27 vielleicht fehlerhaft für शृङ्गीश्वर.

शृङ्गोत्पादन (शृङ्ग + उ°) adj. *Hörner erzeugend,* in Verbindung oder mit Ergänzung von मन्त्र *Zauberspruch* Kathâs. 37,68. 88.

शृङ्गोत्पादिन् adj. dass.; f. N. pr. einer Jakshiṇî, die *Hörner erzeugt* und Menschen in Vieh verwandelt, Kathâs. 37,55. fgg.

शृङ्गोदरीय (शृङ्ग + उ°) m. *Löwe* H. c. 183.

शृङ्ग्य (von शृङ्ग) adj. *hornartig* gaṇa शाखादि zu P. 5,3,103.

शृङ्गाणिका s. शृङ्गणिका.

शृत (partic. von शॄ = श्रा) 1) adj. *gekocht* P. 5,1,27. Vop. 26,111. AK. 2,2,45. H. 1485. Halâj. 2,130. 261. Çat. Br. 1, 3, 3, 14. 16. 3,36. 3,8,3,6. स्वयं° 7,3,1,26. मांस MBh. 3,2941. क्रोधेन तप्तं तस्य सर्वं शृतमिवाभवत् Hariv. 3659. पयस् 8447 (सृत die ältere Ausg.). R. 2,86,14

(मित Scha. und ed. Bomb.; शृत ed. Goas. 26). 3,1,24. Sūça. 1,161, 16. Vaṛāh. Bṛh. S. 54,112. 55,23. 76,4. fgg. (überall v. l. मित). Bhāg. P. 8,16,52. पयसि *in Milch* 46. पयःशृतेन चारुणा 6,19,21. शङ्खपुष्पीशृतं पयः M. 11,147. घ° Ratnam. im ÇKDa. Cat. Bā. 1,7,2,27. 3,8, 2,7. 3,6. 4,5,2,16. 11,4,4,4. सु° R. Goas. 2,56,25. Bhāg. P. 10,9,7. Paṛāç. 3,8,12. सुशृतं पायसे ब्रूयात्सवत्सवां कृसरे तथा MBh. 12,7034. — 2) n. *Gekochtes*, speciell *gekochte Milch*: शृतेन प्रातःसवने मेणीयात् दध्ना मध्यंदिने TBa. 1,4,2,6. Cat. Bā. 1,6,4,7. 3,3,2,2. Kāty. Ça. 4,4,8. Āçv. Ça. 6,8,10. Paṛāç. Bā. 2,5,5.

शृतंकाम adj. *Gekochtes (Milch) liebend* TBa. 3,2,2,12. Kāṭy. 31,2. 7.

शृतंकृ *gar kochen:* °कृत्य TS. 3,3,2,1.

शृतंकर्तृ nom. ag. *der da gar kocht* TS. 3,1,4,4.

शृतंकृत्य adj. *gar zu kochen* TS. 2,6,2,4.

शृतत्व (von शृत) n. *das Gekochtsein* u. s. w. TS. 2,5,2,4. TBa. 3,2, 2,12. Kāṭy. 31,2.

शृतपा adj. *gekochte Milch trinkend* ṚV. 10,27,6.

शृतपाक adj. *gar gekocht* ṚV. 1,162,10.

शृतशीत adj. *gekocht und wieder abgekühlt* Sūça. 1,133,14. 2,414,4. Vaṛāh. Bṛh. S. 55,16.

शृतातृघ् (शृत + घा°) adj. *in gekochter Molke zum Gerinnen zu bringen* TS. 5,2,2,3. 6,5,2,4.

शृतावदान n. *ein Holz zum Zertheilen des* Purodāça Kāṭy. Ça. 2, 6,49. Schol. 215,8. 234,18. 316,3.

शृतोष्ण (शृत + उष्ण) adj. *kochend heiss* AK. 2,7,22. H. 831.

शृध m. 1) (von 2. शृध्) *After*. — 2) = शुद्धि Viçva im ÇKDa.

शृधी (von 2. शृध्) Uṇādis. 1,93. f. *After* Ujjval.

शृध्यु (von 1. शृध्) f. *Freiheit, Trotz* ṚV. 2,12,10.

शेकु und शेकुष्ठ P. 8,3,97. Oder ist etwa im Sūtra कुशे-कु zu trennen?

शेखर (vgl. शिखर) 1) m. *a) Scheitel:* नीलवमनसमलंकृत° (so ist zu lesen) Kathās. 75,41. निशाकान्तकलाकलित° 120,36. — *b) Gipfel eines Berges:* घस्तगिरि° Kathās. 28,189. Rāja-Tar. 3,72. — *c) ein auf dem Scheitel getragener Kranz, — Schmuck, Diadem* AK. 2,6,2,32. 3,4,20, 229. H. 654. 7 (am Ende eines adj. comp.). Hālā. 2,339. शशिखण्ड° Harīv. 14833. Kumāras. 7,32. Çiç. 4,50. 11,46. Mālatīm. 145,3. Kathās. 50,192. पुष्प° 75,73. Rāja-Tar. 3,269. Ver. in LA. (III) 10,6. Paṛāṛar. 1,8,3 (शेस्वर gedr.). Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 18. शेखरापीडयोजन (so Schol. zu Bhāg. P. 10,45,36) unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a,3. — *d)* am Ende eines comp. *der Beste, Schönste:* नृपति° Kāmaṇḍ. 45 (शेषर gedr.). क्षत्रिय° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Çl. 11. कवि° Daçarūp. 67,4. 11. परमशाब्दिक° Verz. d. Oxf. H. 188,a,13. क्षार° Ṛtus. 1,6. कनकनूपुर° 3,20. — *e) Bez. eines best. Eingangsverses in einem Gesange* Saṃketapadḍh. im ÇKDa. लघु° ebend. — *f)* abgekürzter Titel eines best. Werkes Burnouf in Bhāg. P. I, Lxxxvii. — 2) f. ई *Schmarotzerpflanze* Çabdar. im ÇKDa. — 3) m. *a) Gewürznelke* Rāgān. im ÇKDa. — *b) die Wurzel der Moringa pterygosperma* Gaertn. Çabdaṛ. im ÇKDa. — Vgl. अलंकार°, इन्दु°, उत्त° (f. घा), गन्ध°, चन्द्र°, तुङ्ग°, धातु°, पशु°, राज°, वसन्त°, शशाङ्क°, शशाङ्कार्ध° (unter शशाङ्कार्ध), शशि°, शिव°, शृङ्गार°, शेवसिद्धान्त°, स्मसु°, शेखरिक f.

शेखरज्योतिस् m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 72,268.

शेखराचार्यज्योतिरीश्वर m. nach Lassen, Institutiones linguae pr. App. 28. N. pr. des Verfassers des Dhūrtasamāgama. Nach unserer Meinung ist Daçarūp. 67,11. fg. कविशेखर ein ehrendes Epitheton des Verfassers, der demnach आचार्यज्योतिरीश्वर heissen würde.

शेखरित (von शेखर) adj. *zum Diadem gemacht, als Diadem dienend* Bhāg. P. 10,83,8.

शेखरीभू (शेखर + 1. भू) *zum Diadem werden:* स शेषः विधच्छेखरीभूत-मशेषं तितिमण्डलम् VP. 2,5,21.

शेट Taitt. 2,6,16 fehlerhaft für खेट; vgl. 3,3,23.

शेड (?) Rāja-Tar. 4,690. शेडु 8,578.

शेणवी und शेणा f. *understanding, mind, intellect* Wilson nach Çabdaṛatn. — Vgl. शेमुषी.

शेत्य adj. vermuthlich Fehler für श्येत Paṛāṛav. Bā. 7,10,18. = शेतव्य Comm.

शेप m. 1) *das männliche Glied* Nigh. 3,29. Nir. 3,21. H. 610. Çabdar. im ÇKDa. ṚV. 1,112,4. 10,85,37. AV. 5,25,1. 6,72,1. VS. 19,86. 25,7. TS. 5,7,25,1. 7,3,20,2 (v. l. शेफ). — 2) *Schweif, Schwanz* ṚV. 10,105, 2. — Vgl. पराच्छेप, पुनः°, शेफ.

शेपम् n. = शेप Uṇādis. 4,200. 1) *das männliche Glied* H. 610. AV. 5,138,3. 11,5,12. Çāṅkh. Bā. 23,4. Kāraka 3,8. — 2) *Hodensack* oder *Testikel* Sudhīndrabha bei Uṇṇval. zu Uṇādis. 4,200. — Vgl. शेफम्.

शेपर्कर्षणा adj. (f. ई) *die Ruthe steif machend* AV. 4,4,1. Padap. (vgl. AV. Paipp. 2,56) nimmt ohne Grund शेपम् als erstes Glied.

शेपाल m. n. = शेफालि, शेवाल, शैवाल H. 1167. Çaṇḍikāpāla bei Uṇṇval. zu Uṇādis. 4,88. Çabdar. im ÇKDa.

शेप्य (von शेप) s. मगूर°.

शेप्यावत् (von शेप्य) adj. *penitus* AV. 7,113,1.

शेफ m. = शेप 1) *das männliche Glied* H. ç. 126. Hālā. 2,339. TS. 7,3,20,2, v. l. MBh. 10, 389. 13, 782. unbestimmt ob शेफ oder शेफम् 12,7931. Taitt. 2,6,23. — 2) *Hodensack*, du. *die Hoden* Ait. Bā. 1,22. उदरशेफवर्धन Verz. der Oxf. H. No. 975. — Vgl. पुनः°.

शेफम् n. = शेपम् *das männliche Glied* AK. 2,6,2,27. 3,4,2,26. H. ç. 126. Hālā. 2,339. Kāraka 7,1. 2. Sūça. 1,260,10. 261,19. 318,11. 2,470,1. Vaṛāh. Bṛh. S. 68,8. °स्तम्भ Kāraka 1,20.

शेफालि f. = शेफालिका Çabdar. im ÇKDa. शेफाली dass. ebend. Taitt. 2,4,21. Çāṅkh. Śr. 2,2,33. 3,2,17. Paṛāṛar. 1,7,19. = नीलसिन्धुवार Bhāvapr. im ÇKDa. Vgl. unter निर्गुण्डी.

शेफालिका f. AK. 3,6,4,7. *Vitex Negundo* (निर्गुण्डी) Lin. (*die Pflanze* und *die Frucht*) gaṇa क्षुद्रीतक्यादि zu P. 4,3,167. AK. 2,4,2,51. Sūça. 1,28,6. 12. Ṛṭus. 3,14. Śiç. D. 79,8.

शेमण्ड und °क s. u. काचिघ 3).

शेमुषी (partic. perf. act. von 4. शम्) f. 1) *Verstand, Einsicht* AK. 1, 1,4,10. H. 309. Hālā. 2, 179. क्षिप्तस्य हि विपर्येति तत्त्वज्ञस्यापि शे° Rāja-Tar. 3,203. वाचस्पतिमतिस्पर्धि° Verz. d. Oxf. H. 187,b, No. 428. — 2) *Vorsatz, Entschluss, Beschluss:* वाचमाचारमद्राक्षीं गिरा च मदशीं मनः। शेमुषीं मनसा तुल्याम् Brahma-P., Uttar. 22. न वै कार्या भवता शेमुषीदृशी Kiçkiṇ. 93. 51. Alle drei Stellen nach Auufrecht.

शेप partic. fut. pass. von 2. शी P. 7,4,22, Schol.

शेरभ und शेरभक m. Name von *Schlangen* AV. 2,24,1.

शेल्. शैलति (मतौ) Dhātup. 15,36. v. l. मेल्.

शेलग (?) m. N. pr. eines Mannes Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 58,21.

शेलाय्, °यति gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

शेलु m. *Cordia Myxa Lin.* AK. 2,4,8,15. H. 1144. Halāj. 2,42. M. 5,6 (*die Frucht*). Suçr. 1,219,10. 2,226,2. 256,4. 286,3. 297,18. 438,9. 471,17. — Vgl. भू°.

शैव Uṇādis 1,152. adj. *lieb, werth* Nigh. 3,6. Nir. 10,18. मित्र ṚV. 1,58,6. 69,4. 73,2. 3,7,5. 5,64,2. 10,20,7. 113,5. अतिवि 122,1. शंनो-मि पित्रे धर्मुराय शेवम् 124,2. ज्ञायेव पत्यावधि शेवे (für शेवं oder शेवा n. pl.) मंहसे 9,82,4. AV. 8,9,22. — शैवा f. Uṇādis. 1,154. Nach Ujjval. शेव n. = मेढ (vgl. शेप, शेफ) *penis*, शेवा = लिङ्गाकृति. Nach Uṇādis. im ÇKDa. शैव m. = मेढ, उमत, वह्नि; nach H. c. 198 *Fisch*. Vgl. घृ°, दु:°, मु°.

शेवधि (शेव + धि) m. *Schatz, Kostbarkeit* Nir. 2,4. AK. 1,1,4,67. H. 192. Halāj. 1,82. यमावरुद्ध्येवधि जातवेदा: VS. 18,59. स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति ṚV. 2,13,6. AV. 5,22,14. यं त्रिष्णा: शेवधिरिष्ट इक् वर्धताम् *ein für das Alter aufgesparter Kleinod* 7,53,5. 9,3,18. द्यु-मुष्मिं लोके शेवधिं धयन्ति TBr. 3,10,11,2. 3. Kāṭhaka 2,10. विप्या ब्रा-ह्मणमेत्याह शेवधिस्ते ऽस्मि रत्त मा म् M. 2,114. Milarīm. 103,10. Ka-thās. 25,137. Rāja-Tar. 3,105. Çārṅ. 2,537. Bhāg. P. 3,24,16. 11,2, 30. निरपत्या च दु:शीला सा भवेद्दु:खशेवधि: Kaçikā. 37,49 (nach Aufrecht).

शेवधिवत् adj. *Kostbarkeiten bewahrend* Vikram. 4,9.

शेवरक m. N. pr. eines Asura Kathās. 47,17.

शैवल 1) adj. nach Comm. zu Pāṇ. Gaṇ. 1,16 *schleimig, wässerig*: घर्मेतु पृथ्वि शेवलं यत्ते ब्राह्मत्तवे AV. 1,11,4. Die Bedeutung ist vielleicht aus शेवल, शेवाल vermuthet. — 2) n. = शेवाल H. 1167. Çabdar. im ÇKDa. — 3) am Anfange von Personennamen P. 5,3,84.

शेवलदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Schol.

शेवलिक m. Hypokoristikon von शेवलदत्त u. s. w. P. 5,3,84.

शेवलिनी f. = नदी *Fluss* Rāgān. im ÇKDa. — Vgl. शैवलिनी.

शैवलिय m. = शेवलिक P. 5,3,84.

शेवलिल m. desgl. ebend.

शेवलेन्द्रदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Vārtt. 1, Schol.

शैवार (von शेव) m. etwa *Schatzkammer*: शेवारे वार्या पुरु देवो मर्ताय दासते ṚV. 8,1,22. Nach Sāj. adj. *zum Glück führend* (nämlich Opfer).

शैवाल Uṇādis. 4,38. 1) n. = शेवाल H. 1167. Halāj. 3,61. Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. ई *eine best. Pflanze*, = घाकाशमांसी Rāgān. im ÇKDa. — 3) ई adv. in Verbindung mit कर् u. s. w. gaṇa ऊर्यादि zu P. 4,4,61.

शैवृध 1) adj. *werth, lieb* (vgl. शेव): = सुख Nigh. 3,6. स शेवृधमधि धा यु्मस्मे ṚV. 1,54,11. रायं: 3,16,2. त्रिगोति शेवृधो नृभि: 5,87,4. स शेवृधो जात धा कृष्णेषु 10,46,2. oxyt.: मृत्यू स्थिरं शैवृधं (vielleicht subst.) मृत माता 61,20. — 2) m. N. einer *Schlange*, eben so शेवृधक AV. 2,24,2.

शैव्य adj. so v. a. शेव. मित्र ṚV. 1,156,1.

शेष (von 3. शिष्) 1) m. n. AK. 3,6,4,32. a) *Rest, das Uebrige* Taitt. 3,3, 11,1. H. an. 2,573. Mān. ch. 28. fg. Ait. Br. 7,2. ṚV. Prāt. 1,3.16.3,3. Kauç. 21.26.42.51. TS. Prāt. 1,6.49.46. 2,28. Çiñ. 4,19. P. 1,4,7. 3,4,114. R. 3, 18,30. न शेषं भवता चिन्त्यम् 4,17,36. Suçr. 1,135,17. 136,16. Nāgān. 2, 66. Spr. (II) 1823. 3166. 5263. Bhāg. P. 7,6,8. पलाशे शेषानाभिष्य Kāty. Çr. 15,6,10. शेषे रात्रौ यथा दिवा so v. a. *während des übrigen Theils der Nacht oder des Tages* M. 4,106. शेषे *im Uebrigen, in allen andern Fällen* 8,290. 320. 322. शेषे प्रमाणं तु भवत्त: MBh. 3,2190. षष्ठो शेषे P. 2,3,50. 4,2,92. mit einem abl.: ऋणात् Jāān. 2,117. Spr. 2945. gen.: सूक्तस्य ṚV. Prāt. 15,15. 18,21. यच्छेषं दशरात्रस्य M. 5,75. किं शेषं किं बलस्य मे MBh. 4,1095. Suçr. 1,11,16. आयुष: सति शेषे Nāgān. 8,40. Spr. 2945. (II) 1630. Rāja-Tar. 1,50. 264. 4,292. gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: आद्य° Kāty. Çr. 5,1,3. कृषि:° 8,7,24. वसा° 5,8,21. यद्° 9,14,14. अनुवाक° 18,3,12. सुराशेषा: Lāṭy. 3,4,14. Çāṅkh. Çr. 4,5,3. व्यञ्जन-शेष: TS. Prāt. 1,14. बलि° M. 3,91. 213. 252. 282. 5,24. 11,188. प्रज्ञा-शेषो ऽस्ति चेत्तव MBh. 5,1868. R. 2,87,19. R. Gorr. 2,32,33. fg. 5, 49,22. Spr. 2945. (II) 1331. fgg. Mucn. 39. AK. 2,7,28. Rāja-Tar. 5,61. Bhāg. P. 5,26,37. Pañcat. 51,11. व्यतीतं तदृ:शेषम् MBh. 13,2494. 1482. Jāān. 1,113. M. 11,204. दिन° Vaṇ. Bhp. S. 45,16. Pañcat. 55, 6. रात्रि° R. 2,49,1. Sāhas. 3,50. Rāja-Tar. 3,190. कार्य° M. 7,153. R. 2,68,11. 5,50,1. Spr. (II) 982. 4644. Kathās. 32,25. 34,139. Rāja-Tar. 3,121. देवतातिथिशेषेण कुरुते देव्यापनम् *mit dem, was Götter und Gäste übrig lassen*, MBh. 3,13410. am Ende eines adj. comp. (f. घा) wovon nur (selten मात्र hinzugefügt) — *übrig ist*: त्रिभागमात्रशे-षायां रात्र्याम् MBh. 7,8457. Mucn. 87. स्त्रीशेषं जगत् MBh. 9,35. जीवित° R. 2,62,10. Nāgān. 6,76. 7,10. 40. 8,73. Kumāras. 5,57. Spr. (II) 4657. Vaṇ. Bhp. S. 11,39. Kathās. 22,245. 60,226. Rāja-Tar. 2,24. 3,408. 4,295. 5,18. 183. Daçak. 69,8. Pañcat. 47,6. 160,2. एकशेष: कृतो वंश: MBh. 13,1966. रत्नन्यायमधशेषायाम् R. 5,15,20. सत्यशेषमिदं कार्यम् 37, 29. सत्यशेषैर्मयूखै: Spr. (II) 4036. किंचिच्छेष MBh. 9,34. 1442. Kathās. 20,30 (zusammen zu schreiben und सस्य zu ergänzen). 39,189. 54,101. कथा° von *dem nur die Erzählung übrig geblieben ist, nur noch in der Er-innerung lebend* (vgl. कथावशेष) Rāja-Tar. 4,579. स्मृति° dass. Spr. (II) 4224. कृत्य° so v. a. *der seine Arbeit noch nicht vollbracht hat* Bhāg. P. 3,2,14. Be-achtung verdienen noch folgende Redensarten: मित्राणां संयद्: शेष: (oder adj.) so v. a. *jetzt gilt's noch Freunde zu gewinnen* R. 4,28,10. शेषं (oder adj.) दुर्गविनाशनम् 5,50,3. यदि शेषं भवेदस्य पुत्राणां मम so v. a. *ach wenn doch heute nicht alle meine Söhne zu Grunde gingen* MBh. 2,2689. यदि प्रकृतिमापन्ने शेष: स्यात् so v. a. *könnten noch Einigegerettet werden* 5,3416. न व: शेष: कश्चिदिहास्ति पुंढे so v. a. *keiner von euch kommt mit dem Leben davon* 3,15698. नूनं विद्वानो मम शेषमस्ति so v. a. *mir steht jetzt noch sicher Etwas bevor, ich habe noch nicht Alles erduldet* R. 5,28,5. कुर्यु-रेते क्वचिच्छेषं न तु कुद्दो धनंजय: so v. a. *die könnten noch Etwas (Jmd) verschonen* MBh. 4,1550. 3,10251. fg. सिक्त: पाशविनिर्मुक्त: न न: शेषं करिष्यति 4,1545. नास्यापराद्धा: शेषमवाप्नुवन्ति so v. a. *bleiben verschont* 3,15705. so v. a. *Ende, Ausgang, Schluss*: न चैकमत्यं शेषो ऽस्ति Spr. (II) 1481. so v. a. *Ergänzung, Nachtrag*: तस्माच्छ्रुत्रमु शेषा उपेक्षित-व्या: Nir. 13,13. Weber, Nax. 2,302. 304. प्रेषित इति शेष: Comm. zu R. 7,104,12. Kull. zu M. 9,107. इति ते वाक्यशेष: Viṣn. 35,5. Nach H. an. und Mān. ist शेष m. angeblich auch = वध (aber यवध). — b) *Ne-*

bensache, Accidenz: धर्मः शेषो ऽङ्गं गुण इत्येकार्थाः Schol. zu Kâty. Ça. 22,2. 8. 9. 24,18. 23. Madhus. in Ind. St. 1,19,6. Vgl. शेषिन्. — 2) adj. (f. या) *übrig, reliquus;* sg.: उदक M. 3,218. देवेभ्यश्च कृताद्यच्छेषात् Jiân. 1,103. सेना Hariv. 8054. सैन्य R. 3,32,27. सन 2,44,22. Spr. (II) 1436. अनुयायिवर्ग Raçu. 2,6. अस्मिन् Hariv. 10518. भू Bhâg. P. 9,11,3. काल MBh. 1,7976. दिवस Mâlav. P. 22,5. आयुस् Bhâg. P. 6,16,3. कर्मन् R. 4,24,9. कर्तव्य Kathâs. 24,111. Vikr. 52. 87,15. pl. (auch subst. *die Uebrigen*): रात्रयः M. 3,47. 1,102. 5,20. 9,105. 124. 162. 11,239. TS. Prât. 22,14. शेषान्ये (d. i. शेषा अन्ये) ग्रन्थविस्तराः Maitrâyaṇ. 6,34. Jiân. 2,145. शेषास्त्रय इवाममाः MBh. 1,79. 14,1256. Hariv. 4559. 11027. R. 2,1,32. 25,23. 3,20,14. Kâm. Nîtis. 2,9. 16. Mnân. 31. 85. Raçu. 4, 64. 10,30. Spr. (II) 812. 1721. 2205. Siṃhâs. 34. fg. Varâh. Bṛh. S. 8,21. 37. 9,22. 21,13. 38,8. 41,10. 48,33. Kathâs. 17,134. 19,75. 48, 60. 85. 104. 72,407. 75,3. H. 946. Siç. D. 36,2. Pañcât. 1,12,53. Pañcât. 123,13. 198,10. prädicativ: याः शेषा मम मातरः R. 2,26,31. MBh. 13,1484. उत्तरं कर्म यच्छेषम् R. 5,47,22. आपः शेषाः MBh. 5,479. सप्त पाण्डवतः शेषा धार्तराष्ट्रास्तथा त्रयः so v. a. *sind noch am Leben* 9,38. तस्य सर्वस्य सैन्यस्य द्वौ शेषौ महाबलौ R. 3,32,35. 33,23. *am Anfange eines comp.:* °व्रतानि Jiân. 3,282. शेषाक्षेभिः 20. शेषाद्य MBh. 1,8547. Mnân. 18. Raçu. 7,13. Varâh. Bṛh. S. 26,7. Kathâs. 8,23. 60,90. 118, 100. AK. 2,9,3. Pañcât. 1,2,37. Pañcât. 38,3 (ed. orn. 34,17). *am Ende eines comp.:* विच्छित्तिशेषैर्वर्णैः *übrig gebliebene* von Çiç. 164. Besondere Erwähnung verdient noch die Verbindung mit einem partic. praet.: देशान्तरं प्रगतेभ्यो ये शेषास्ते so v. a. *die Wenigen, die nicht in ein anderes Land gegangen waren,* Râja-Tar. 5,631. gewöhnlich in comp.: कृतशेषाः *die Wenigen, die dem Tode —, dem Untergange entronnen waren,* MBh. 3,8816. 12386. 9,5. सैन्य R. 3,33,3. °शेषो निशाचरो 32,35. 33,21. 42,53. 5,49,32. 76,9. Kathâs. 10,123. 51,170. 54, 230. 115,153. 118,91. Pañcât. 122,24. 162,18. Bhatṭ. 15,100. द्वयोस्काकृतशेषवर्त्मा Raçu. 16,14. पीतशेषमिवोदकम् *beim Trinken zurückgeblieben* R. 2,27,3 (9 Gorr.). भुक्तशेषमिवोदकम् R. ed. Bomb. 2,27,3. सकृभिः भुक्तशेषैः Pañcât. 252,10 (vgl. भुक्तशेष). भक्षितशेषाणि जम्बूफलानि 206,2. निर्पातशेषा चरणाङ्गुला *nicht ganz herausgetreten* Raçu. 10,38. Der substantivischen Bed. *Ende, Schluss* entspricht hier die adjectivische *der letzte:* विपञ्चतनये ऽभिज्ञस्य शेषे Râja-Tar. 3,527. पूर्व, शेष Çâṇḍilânâva bei Uddyut. zu Unâdis. 4,41. शेषस्य पर्यायः *Synonyme des letzten (zuletztgenannten Wortes)* im ÇKDa. häufig, z. B. unter अच्, यत्गुला, वाह्निनी, वाटी; शेषस्य विधिः ebend. unter राम; शेषस्योत्पत्तिः ebend. unter वायस. — 3) m. N. pr. eines Schlangendämons, der die Erde trägt und auf dem Vishṇu während seines Schlafes ruht. In den Purâṇa wird Baladeva (oder Saṃkarshaṇa, Halâjudha m. s. w.), Kṛshṇa's älterer Bruder, mit ihm identificirt. AK. 1,2,4,5. Taik. H. 1307. H. an. Med. Kâṇ. Ancer. in Ind. St. 3,458. MBh. 1,1550. 1566. fgg. 2549. 5,3618. 6,3023. Hariv. 227. 267. 6766. fgg. 9506. 12076. 12466. 12496. 12822. 14172. Kumâras. 3,13. Raçu. 12,70. Spr. 2763. 3137. 5251. (II) 4569. 5818. Kathâs. 19,72. Tattvas. 45. Râja-Tar. 1,58. 3,58. 4,507. 5,355. VP. 149. 153. 205. fg. 503. 546, N. 4. Mâlav. P. 116,61. fg. Bhâg. P. 2,7,41. 5,25,11. 6,16,29 (देवदेव). 8,4,20. Vop. S. 176. Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,4 v. u. 46,*a*,25. 74,*a*,2 v. u. 81,*a*,14. 251,*a*,39. fg. Weber, Râmat. Up. 277. 323. Kaṭhâs. 280. 282. 342. LA. (III) 88,12. Pañcân. 1,9,18. 12,29. 62. 72. 2,2,98. 4,1,7. fgg. 3,28. 126. (°देव). Wilson, Sel. Works 1,25. 35. fg. 175. 360. als Prajâpati R. 3,20,7. VP. 50, N. 2. als Weltelephant Hia. 148. शेष und शेषनाग (der Schlangendämon selbst oder nach ihm benannte Personen) als Autoren Colebr. Misc. Ess. 1,106. 2,63, N. Weber, Gjot. S. Târan. 75. 152. 157. Verz. d. Oxf. H. 238,*b*,N. 333,*a*, No. 838. Hall 105. — 4) m. *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2,239 (1,2). — 5) f. या pl. *von einer heiligen Handlung übrig gebliebene, Segen bringende Blumen;* sg. *ein solcher Kranz* H. an. Med. ततः सुमनसः शेषाः प्रतिगृह्य MBh. 3,16644. शेषाः पूर्वं निवेद्य च 16645. इति पुत्रस्य शेषाश्च कृत्वा शिरसि R. 2,25,33. शेषामिव भर्तुराज्ञामादाय मूर्ध्ना Kumâras. 3,22. Bhâg. P. 2,16,42. 11,3,31. 27,47. auch m. oder n.: तस्याज्ञा शिरसि निधाय शेषभूताम् Mâlav. 173,21. — 6) f. ई N. pr. eines Frauenzimmers Hall 70. — Vgl. अ°, आलेख्य°, एक°, कीर्ति°, देव°, नाम° (adj. f. या Uttarâs. 28,16 = Cowell 37,19), निः°, पाद°, भुक्त°, मधु°, यशः°, वाक्य°, शब्द°, शिरः°, यावच्छेषम्, शेष und शेषिक.

शेषक m. = शेष 3) Pañcân. 4,1,2.

शेषकरण n. *das Uebriglassen, Stehenlassen eines Restes:* केश° Pân. Gaṇ. 2,1.

शेषकारित adj. *unvollendet, unbeendigt* MBh. 4,1598.

शेषकृज्ञ m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 138,*a*, No. 271.

शेषगति f. *assimilation of residue; reduction of fractions of residues or successive fractional remainders* Colebr. Alg. 24.

शैषण (von 3. शिष्) n. ein Spielausdruck: सताणी ग्लहेनं शैषणं च AV. 7,109,5.

शेषता (von शेष) f. nom. abstr.: आयुःशेषतया so v. a. *weil seine Lebenszeit noch nicht ganz abgelaufen war* Pañcât. 9,4. 127,3. सस्थि° nom. abstr. von सस्थिशेष adj. *von dem nur noch die Knochen übrig sind* Kathâs. 72,136. लावण्य° 71,94. शेषता = पारार्थ्य Gaimini im ÇKDa. unter शेषत्व.

शेषत्व (wie oben) n. *das Restsein, Uebrigsein* Schol. zu Kâty. Ça. 1, 6,5. = उपकारित्व Bhaṭṭ im ÇKDa.

शेषनाग s. u. शेष 3).

शेषनारायणपण्डित (श्री°) m. N. pr. eines Commentators des Mahâbhâshja Verz. d. B. H. No. 721. fgg.

शेषपति m. *Verwalter, Besorger* Vjutp. 96.

शेषभाव m. *das Restsein, Uebrigsein* Kâty. Ça. 1,6,5. 5,6,33.

शेषभुज् adj. *die Ueberbleibsel geniessend* M. 3,117. Bhâg. P. 3,30,11.

शेषभूत adj. *übrig gebliebene, reliquus* Çâṅkh. Ça. 6,1,21. Comm. zu TS. Prât. 2,47. 4,3. 11,3.

शेषभूषण m. ein N. Vishṇu's (*den Schlangendämon Çesha zum Schmuck habend*) Verz. d. Oxf. H. 177,*a*,10.

शेषरामचन्द्र m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 119,*b*, No. 204. fgg.

शेषद्रुपिन् adj. *als Nebensache —, als Accidens erscheinend* Sarvadarçanas. 57,22. Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,4.

शेष partic. fut. pass. von 2. शी P. 7,4,33, Schol.

शेरभ und शेरभक m. Name(n) von *Schlangen* AV. 2,24,1.

शेल्, शेलति (गतौ) Dhâtup. 15,36. v. l. सेल्.

शेलग (?) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhjâ. in Verz. d. B. H. 58,31.

शेलाय्, °यति gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

शेलु m. *Cordia Myxa Lin.* AK. 2,4,3,15. H. 1144. Hâlâ. 2,42. M. 5,6 (*die Frucht*). Suçr. 1,219,10. 2,226,2. 256,4. 286,3. 297,18. 438,9. 471,17. — Vgl. भू°.

शेव Uṇâdi 1,153. adj. *lieb, werth* Nigh. 3,6. Nir. 10,18. मित्र ṚV. 1,58,6. 69,4. 73,2. 3,7,5. 5,64,2. 10,20,7. 113,3. अतिवि 122,1. शंसामि पित्रे मरुताय शेवम् 124,3. जायेव पत्यावधि शेव (für शेवं oder शेवा n. pl.) मंहसे 9,82,4. AV. 3,9,33. — शेवा f. Uṇâdi. 1,154. Nach Uṇâdis. शेव n. = मेढ्र (vgl. शेप, शेफ) *penis*, शेवा = लिङ्गाकृति. Nach Uṇâdis. im ÇKDa. शेव m. = मेढ्र, उमत, यक्ष्मः nach H. c. 195 *Fisch*. Vgl. यु°, दुः°, मु°.

शेवधि (शेव + धि) m. *Schatz, Kostbarkeit* Nir. 2,4. AK. 1,1,4,67. H. 192. Hâlâ. 1,82. यमाबध्नाच्छेवधि ज्ञातवेदाः VS. 18,59. स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति ṚV. 2,13,6. AV. 5,22,14. यूयं नॄंरप्णाः शेवधिरिष्ट इन्द्रं वर्धताम् *ein für das Alter aufgespartes Kleinod* 7,53,5. 8,3,15. मुष्मिं लोके शेवधिं धयन्ति TBr. 3,10,11,2. 3. Kaṭhop. 2,10. विद्या ह्यस्याणमेत्याक् शेवधिस्ते ऽस्मि रक्ष माम् M. 2,114. Mâlatîm. 103,10. Kathâs. 25,127. Râjat. 3,108. Çâṅk. 2,657. Bhâg. P. 3,24,16. 11,2, 30. निरपत्या च दुःशीला सा भवेद्दुःखशेवधिः Kâçikh. 37,49 (nach Aufrecht).

शेवधिपा adj. *Kostbarkeiten bewahrend* Vikram. 4,9.

शेवरक m. N. pr. eines Asura Kathâs. 47,17.

शेवल 1) adj. nach Comm. zu Pân. Gaṇ. 1,16 *schleimig, wässerig*: घर्मेतु पृथ्वि शेवलं मृनै ज्ञाप्यत्तवे AV. 1,11,4. Die Bedeutung ist vielleicht aus शेवल, शेवाल vermuthet. — 2) n. = शेवाल H. 1167. Çabdar. im ÇKDa. — 3) am Anfange von Personennamen P. 5,3,84.

शेवलदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Schol.

शेवलिक m. Hypokoristikon von शेवलदत्त u. s. w. P. 5,3,84.

शेवलिनी f. = नदी *Fluss* Râjân. im ÇKDa. — Vgl. शैवलिनी.

शैवलिय m. = शेवलिक P. 5,3,84.

शेवलिलै m. desgl. ebend.

शेवलेन्द्रदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Vârtt. 1, Schol.

शेवार (von शेव) m. etwa *Schatzkammer*: शेवारे वार्या पुरु देवो मर्ताय रासते ṚV. 8,1,22. Nach Sây. adj. *zum Glück führend* (nämlich Opfer).

शेवाल Uṇâdis. 4,38. 1) n. = शेवाल H. 1167. Hâlâ. 3,61. Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. ई *eine best. Pflanze*, = आकाशमांसी Râjân. im ÇKDa. — 3) ई adv. in Verbindung mit कृ u. s. w. gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61.

शेवृध 1) adj. *werth, lieb* (vgl. शेव): = सुख Nigh. 3,6. स शेवृधमधि धा यमस्मे ṚV. 1,54,11. रायः 3,16,2. त्रिर्यातं शेवृधा नृभिः 5,87,4. स शेवृधो जात या कर्म्येषु 10,46,3. oxyt.: मृळा च्छिद्रं शेवृधं (vielleicht subst.) सूत माता 61,20. — 2) m. N. einer *Schlange*, eben so शेवृधक AV. 2,24,2.

शेव्य adj. so v. a. शेव. मित्र ṚV. 1,156,1.

शेष (von 3. शिष्) 1) m. n. AK. 3,6,4,32. a) *Rest, das Uebrige* Taitt. 3,3, 441. H. an. 2,373. Mân. ch. 28. fg. Âpast. Baudh. 7,2. ṚV. Prât. 1,2. 10. 3,2. Kauç. 21. 26. 42. 51. TS. Prât. 1,6. 42. 46. 2,23. Çâṅkh. 4,19. P. 1,4,7. 3,4,114. R. 3, 18,30. न शेषं भक्षता चित्त्यम् 4,17,56. Saṅk. 1,135,17. 136,16. Nâgân. 2, 66. Spr. (II) 1823. 3166. 3263. Bhâg. P. 7,6,8. पलाशे शेषनामिध्म Kâtj. Çr. 15,6,10. शेषे रात्रौ यथा दिवा so v. a. *während des übrigen Theiles der Nacht oder des Tages* M. 4,106. शेषे *im Uebrigen, in allen andern Fällen* 8,290. 320. 322. शेषे प्रमाणं तु भवेत्तः MBh. 3,2190. षष्ठी शेषे P. 2,3,50. 4,2,93. mit einem abl.: ब्राह्मणात् Jâṅk. 2,117. Spr. 2943. gen.: सूक्तस्य ṚV. Prât. 15,15. 18,31. यच्छेषं दशरात्रस्य M. 5,75. किं शेषं किं बलस्य मे MBh. 4,1095. Saṅk. 1,11,16. आयुषः सति शेषे Nâgân. 8,40. Spr. 2945. (II) 1630. Râjat. 1,50. 264. 4,293. gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: यज्ञ° Kâtj. Çr. 6,1,5. कृषि° 8,7,24. वसा° 6,8,21. यक्ष्म° 9,14,14. धनुवाक° 18,3,12. सुराशेषाः Lâṭj. 5,4,14. Çâṅkh. Çr. 4,5,3. व्यञ्जनशेषः TS. Prât. 1,14. बलि° M. 3,91. 215. 282. 285. 5,24. 11,188. प्रज्ञाशेषो ऽस्ति चेत्तव MBh. 5,1868. R. 2,87,19. R. Gorr. 2,32,33. fg. 5, 49,22. Spr. 2945. (II) 1331. fgg. Mucn. 39. AK. 2,7,25. Râjat. 5,61. Bhâg. P. 5,26,37. Pañkat. 51,11. व्यतीतं तदकृत्स्नशेषम् MBh. 13,3494. 1482. Jâṅk. 1,113. M. 11,204. दिन° Vaṭân. Bṛh. S. 45,16. Pañkat. 55, 6. रात्रि° R. 2,40,1. Sârâs. 3,50. Râjat. 3,190. कार्य° M. 7,153. R. 2,68,11. 5,50,1. Spr. (II) 982. 4644. Kathâs. 32,25. 34,129. Râjat. 3,121. देवतातिथिशेषेण कुरुते देवयापनम् *mit dem, was Götter und Gäste übrig lassen*, MBh. 3,15419. am Ende eines adj. comp. (f. या) wovon nur (selten मात्र hinzugefügt) — *übrig ist*: त्रिभागमात्रशेषायां रात्र्याम् MBh. 7,8457. Mucn. 87. स्त्रीशेषं जगत् MBh. 9,35. जीवित° R. 3,62,10. Nâgân. 6,76. 7,19. 40. 8,72. Kumâras. 5,57. Spr. (II) 4657. Vaṭân. Bṛh. S. 11,39. Kathâs. 22,245. 60,238. Râjat. 2,24. 3,408. 4,295. 5,18. 183. Daçân. 68,8. Pañkat. 47,6. 160,2. एकशेषः कृतो वंशः MBh. 13, 1966. रक्तन्यायार्धशेषायाम् R. 5,15,20. अल्पशेषमिदं कार्यम् 37, 29. अल्पेशेषेर्मयूखैः Spr. (II) 4036. किंचिच्छेष MBh. 9,34. 1442. Kathâs. 20,30 (zusammen zu schreiben und सस्य zu ergänzen). 39,189. 54,101. कथा° von *dem nur die Erzählung übrig geblieben ist, nur noch in der Erinnerung lebend* (vgl. कथावशेष) Râjat. 4,570. स्मृति° dass. Spr. (II) 4224. कृत्य° so v. a. *der seine Arbeit noch nicht vollbracht hat* Bhâg. P. 3,2,14. Beachtung verdienen noch folgende Redensarten: मित्राणां संयक्ः शेषः (oder adj.) so v. a. *jetzt gilt's noch Freunde zu gewinnen* R. 4,28,10. शेषं (oder adj.) दुर्गाविनाशनम् 5,50,3. यदि शेषं भवेदद्य पुत्राणां मम so v. a. *ach wenn doch heute nicht alle meine Söhne zu Grunde gingen* MBh. 2,2689. यदि प्रकृतिमापन्ने शेषः स्यात् so v. a. *könnten noch Einige gerettet werden* 5,3416. न वः शेषः कश्चिदिहास्ति युद्धे so v. a. *keiner von euch kommt mit dem Leben davon* 3,15698. नूनं त्रिदानीं मम शेषमस्ति so v. a. *mir steht jetzt noch sicher Etwas bevor, ich habe noch nicht Alles erduldet* R. 5,28,5. कुर्युरेते क्वचिच्छेषं न तु कृत्स्नं धनंजयः so v. a. *die könnten noch Etwas (Jmd) verschonen* MBh. 4,1580. 3,10351. fg. सिंहः पाशविनिर्मुक्तः न नः शेषं करिष्यति 4,1548. नास्यापराद्धाः शेषमवाप्नुवन्ति so v. a. *bleiben verschont* 3,13705. so v. a. *Ende, Ausgang, Schluss*: न चैकमत्यं शेषो ऽस्ति Spr. (II) 1491. so v. a. *Ergänzung, Nachtrag*: तस्माच्छन्दस्सु शेषा उपेक्षितव्याः Nir. 13,13. Weber, Nax. 2,302. 304. प्रेषित इति शेषः Comm. zu R. 7,104,13. Kull. zu M. 9,107. इति ते वाक्यशेषः Vishn. 35,3. Nach H. an. und Mân. ist शेष m. angeblich auch = वप (eher यवध). — b) *Ne-*

Nebensache, Accidens: धर्मः शेषो ऽङ्गं गुण इत्येकार्थाः Schol. zu Kâty. Ça. 22,3. 8. 9. 24,13. 23. Madhus. in Ind. St. 1,19,6. Vgl. शेषिन्. — 2) adj. (f. या) *übrig, reliquus; sg.:* उदक M. 3,218. देवेभ्यश्च कृतादन्नाच्छेषात् Jâân. 1,103. सेना Harîv. 8034. सैन्य R. 3,32,27. अन्न 2,44,22. Spr. (II) 1436. धनुर्याधिवर्ग Râgân. 2,4. अस्मन् Harîv. 10518. भू Bhâg. P. 9,11,3. काल MBh. 1,7976. दिवस Mâlav. P. 22,5. आयुस् Bhâg. P. 6,16,3. कर्मन् R. 4,24,3. कर्तव्य Kathâs. 24,111. Vikr. 52. 87,15. pl. (auch subst. *die Uebrigen*): रात्रयः M. 3,47. 1,102. 5,20. 9,108. 124. 163. 11,239. TS. Prâtiç. 22,14. शेषान्ये (d. i. शेषा अन्ये) ग्रन्थविस्तराः Maitrâyaṇ. 6,24. Jâân. 2,145. शेषास्त्रय इवाश्रमाः MBh. 1,79. 14,1256. Harîv. 4559. 11027. R. 2,1,33. 25,33. 3,20,14. Kâm. Nîtis. 2,9. 16. Mâgh. 31. 85. Râgân. 4, 64. 10,30. Spr. (II) 812. 1721. 2205. Siddhântaç. 34. fg. Varâh. Bṛh. S. 8,21. 27. 9,22. 21,13. 38,5. 41,10. 48,33. Kathâs. 17,134. 19,75. 48, 60. 88. 104. 72,407. 78,3. H. 946. Sâh. D. 36,3. Paṇḍân. 1,12,63. Paṇḍat. 123,13. 198,10. prädicativ: याः शेषा मम मातरः R. 2,26,31. MBh. 13,1454. उत्तरं कर्म यच्छेषम् R. 5,47,22. आपः शेषाः MBh. 5,479. सप्त पाण्डवतः शेषा धार्तराष्ट्रास्तथा त्रयः so v. a. *sind noch am Leben* 9,35. तस्य सर्वस्य सैन्यस्य द्वारः शेषा मकाबलः R. 3,32,35. 33,23. *am Anfange eines comp.:* °व्रतानि Jâân. 3,282. शेषाकोभिः 20. शेषाश्च MBh. 1,3847. Mâgh. 18. Râgân. 7,12. Varâh. Bṛh. S. 26,7. Kathâs. 8,28. 60,90. 118, 100. AK. 2,9,3. Paṇḍân. 1,2,37. Paṇḍat. 38,8 (ed. orn. 34,17). *am Ende eines comp.:* विच्छित्तिशेषैर्वपुः *übrig gebliebon von* Çiç. 164. Besondere Erwähnung verdient noch die Verbindung mit einem partic. praet.: देशान्तरं प्रगतेभ्यो ये शेषास्ते so v. a. *die Wenigen, die nicht in ein anderes Land gegangen waren,* Râjat. 4,621. gewöhnlich in comp.: हतशेषाः *die Wenigen, die dem Tode —, dem Untergange entronnen waren,* MBh. 3,8816. 15356. 9,5. सैन्य R. 3,33,8. °शेषो निशाचरो 32,25. 33,21. 42,52. 5,49,33. 76,9. Kathâs. 10,135. 51,170. 54, 230. 115,153. 118,91. Paṇḍat. 122,24. 162,13. Bhatṭ. 15,100. द्वयोत्काकृतशेषबर्हाः Râgân. 16,14. पीतशेषमिवोदकम् *beim Trinken zurückgeblieben* R. 2,27,8 (2 Gorr.). भुक्तशेषमिवोदकम् R. ed. Bomb. 2,27,8. सकृभिः भुक्तशेषैः Paṇḍat. 252,10 (vgl. भुक्तशेष). भक्षितशेषाणि जम्बूफलानि 206,2. निर्यातशेषा चरणाङ्गुष्ठा *nicht ganz herausgetreten* Râgân. 10,38. Der substantivischen Bed. *Ende, Schluss* entspricht hier die adjectivische *der letzte:* विषव्रतनये ऽभिन्नस्य शेषे Râjat. 3,527. पूर्व, शेष Çaṇḍiçvara bei Uddyut. zu Uṇâdis. 4,41. शेषस्य पर्यायः *Synonyme des letzten (zuletztgenannten Wortes)* im ÇKDa. häufig, z. B. unter त्वच्, वल्गुला, वाजिनी, वाटी; शेषस्य विधिः ebend. unter राम; शेषस्योत्पत्तिः ebend. unter वायस. — 3) m. N. pr. eines Schlangendämons, der die Erde trägt und auf dem Vishṇu während seines Schlafes ruht. In den Purâṇa wird Baladeva (oder Saṁkarshaṇa, Halâjudha u. s. w.), Kṛishṇa's älterer Bruder, mit ihm identificirt. AK. 1,2,6,5. Trik. H. 1307. H. an. Med. Kîṇ. Anekâ. in Ind. St. 3,458. MBh. 1,1550. 1566. fgg. 2549. 5,3618. 6,3023. Harîv. 227. 267. 6766. fgg. 9306. 12076. 12466. 12496. 12822. 14172. Kumâras. 3,13. Râgân. 12,70. Spr. 2763. 3137. 5251. (II) 4569. 5816. Kathâs. 19,73. Tattvas. 43. Râjat. 1,58. 3,68. 4,507. 5,355. VP. 149. 153. 205. fg. 503. 546, N. 4. Mârk. P. 116,61. fg. Bhâg. P. 2,7,41. 5,25,11. 6,16,29 (देवदेव). 8,4,20. Vop. S. 176. Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,4 v. u. 46,*a*,25. 74,*a*,2 v. u. 81,*a*,14. 251,*a*,29. fg. Weber, Rimây. Up. 277. 323. Kaṭhâś. 280. 282. 342. LA. (III) 88,12. Paṇḍân. 1,9,16. 12,29. 63. 73. 2,2,98. 4,1,7. fgg. 3,28. 126. (°देव). Wilson, Sel. Works 1,25. 35. fg. 175. 360. als Prajâpati R. 3,20,7. VP. 50, N. 2. als Weltelephant Hîn. 148. शेष und शेषनाग (der Schlangendämon selbst oder nach ihm benannte Personen) als Autoren Colebr. Misc. Ess. 1,106. 2,63, N. Weber, Gjot. S. Târân. 75. 152. 157. Verz. d. Oxf. H. 238,*b*,N. 353,*a*, No. 838. Hall 105. — 4) m. *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2,259 (1,2). — 5) f. या pl. *von einer heiligen Handlung übrig gebliebene, Segen bringende Blumen; sg. ein solcher Kranz* H. an. Med. ततः सुमनसः शेषाः प्रतिगृह्य MBh. 3,16644. शेषाः पूर्वं निवेद्य च 16645. इति पुत्रस्य शेषाञ्च कृत्वा शिरसि R. 2,25,25. शेषामिव भर्तुराज्ञामादाय मूर्ध्नी Kumâras. 3,22. Bhâg. P. 8,16,43. 11,3,54. 27,47. auch m. oder n.: तस्याज्ञौ शिरसि निधाय शेषभूताम् Mṛicch. 173,21. — 6) f. ई N. pr. eines Frauenzimmers Hall 70. — Vgl. अ°, अनालेख्य°, एक°, कीर्ति°, देव°, नाम° (adj. f. या Uttarâs. 28,16 = Cowell 37,19), निः°, पाद्°, भुक्त°, मधु°, यशः°, वाक्य°, शब्द°, शिरः°, यावच्छेषम्, शेष und शेषिक.

शेषक m. = शेष 3) Paṇḍân. 4,1,3.

शेषकरण n. *das Uebriglassen, Stehenlassen eines Restes:* केश° Pân. Gaṇ. 2,1.

शेषकारित adj. *unvollendet, unbeendigt* MBh. 4,1898.

शेषकृष्ण m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 138,*a*, No. 271.

शेषज्ञाति f. *assimilation of residue; reduction of fractions of residues or successive fractional remainders* Colebr. Alg. 24.

शेषण (von 3. शिष्) n. ein Spielausdruck: यत्ताणां ग्लहकृतं शेषणं च AV. 7,109,3.

शेषता (von शेष) f. nom. abstr.: आयुःशेषतया *so v. a. weil seine Lebenszeit noch nicht ganz abgelaufen war* Paṇḍat. 9,4. 127,3. अस्थि° nom. abstr. von अस्थिशेष adj. *von dem nur noch die Knochen übrig sind* Kathâs. 72,136. लावण्य° 71,94. शेषता = पारार्थ्य Gaimini im ÇKDa. unter शेषत्व.

शेषत्व (wie oben) n. *das Restsein, Uebrigsein* Schol. zu Kâty. Ça. 1, 6,3. = उपकारित्व Bhâsa im ÇKDa.

शेषनाग s. u. शेष 3).

शेषनारायणपण्डित (श्री°) m. N. pr. eines Commentators des Mahâbhâshja Verz. d. B. H. No. 721. fgg.

शेषपति m. *Verwalter, Besorger* Vjutp. 96.

शेषभाव m. *das Restsein, Uebrigsein* Kâty. Ça. 1,6,3. 5,6,32.

शेषभुज् adj. *die Ueberbleibsel geniessend* M. 3,117. Bhâg. P. 3,30,11.

शेषभूत adj. *übrig geblieben, reliquus* Çiṅkh. Ça. 5,1,21. Comm. zu TS. Prâtiç. 2,47. 4,3. 11,3.

शेषभूषण m. ein N. Vishṇu's (*den Schlangendämon* Çesha *zum Schmuck habend*) Verz. d. Oxf. H. 177,*a*,10.

शेषरामचन्द्र m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 119,*b*, No. 204. fgg.

शेषद्रविन् adj. *als Nebensache —, als Accidens erscheinend* Sarvadarçanas. 57,22. Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,4.

शेषवत् (von शेष) adj. *übrig* —, *am Leben geblieben* MBh. 5,609.

शैषस् (von 3. शिष्) n. *Nachkommenschaft* Nigh. 2, 2. Nir. 3, 2. RV. 1,93,4. 5,12,6. मा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा 70,4. 6,27,4. 8. स्वशैन्मना शेषसा वावृधानम् 7,1,12. 4,7. 10,16,3. — Vgl. स°, वरुण°.

शेषाधिकारीय (von शेष + अधिकार) adj. *zum Abschnitt* शेष (vgl. P. 2,2,23. 5,4,154) *gehörig* Schol. zu P. 7,3,13.

शेषानन्त (शेष + स°) m. N. pr. eines Scholiasten Hall 44.

शेषार्या (शेष + आ°) f. Titel einer Schrift (= परमार्थसार) von Çeshanâga Hall 105.

शेषिन् (von शेष) adj. *einen* (unwesentlichen) *Rest* (neben sich) *habend, die Hauptsache bildend*; subst. *Hauptsache*: ब्रह्मन् Sarvadarçanas. 57, 22. शेषशेषिभावः Madhus. in Ind. St. 1,19,6. Schol. zu Kâty. Çr. 22,3. 24,18. 23. शेषशेषित्व 22,9.

शेष्य (von 3. शिष्) adj. *bei Seite zu lassen, fernerer Beachtung nicht werth* Kathâs. 74,213.

शैकपतायनि m. patron. von शीकपत gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

शैकि m. patron.; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,19.

शैक्य (von शिक्य) 1) adj. etwa *damascirt*: शैक्यायसी गदा MBh. 6, 2346. शैक्यायसानि वर्माणि 7,4744. शैक्यायसमय 12,8631. सर्वशैक्यायस 3,13719. 6,2253. शैक्या सर्वायसी गदा 3,11732. शस्त्राणि मृदुशैक्यायसानि Sucr. 1,28,14. शैक्या गदा MBh. 3,1978. 5,2045. 7,7300. 9,579. von Nîlak. gewöhnlich durch शिक्यास्य erklärt; = शिक्य घास्तिम् Uéâval. zu Uṇâdis. 5,16. — 2) m. etwa *eine Art Schleuder*: कनकभूषण MBh. 2,1916 (= शिक्याधृतं पात्रम् Nîlak). शैक्येन (= शिक्यसदृशेन पात्रेण Nîlak.) नागास्तरसा विगृह्णन् 5,1829. — शैक्य MBh. 12,12202 wohl fehlerhaft für शैत्त.

शैत्त 1) adj. (f. ई) von शित gaṇa सगपनादि zu P. 4,3,73. क्त्रादि zu 4,62. *kunstgerecht, regelrecht, correct* MBh. 1,7022 (beide Ausgg. शैत्य). स्वर् 12,13504 (शैत्य ed. Calc.). 13,161 (शैत्य beide Ausgg.). st. शैक्यो वागमृतम् 12,13202 lesen wir शैत्त वा°. — 2) m. *ein beginnender Schüler, Anfänger* AK. 2,7,10. H. 79. Halâj. 2,245. Vjutp. 55. Burnouf, Intr. 322, N. 1.

शैत्तिक adj. *mit der* Çikshâ *vertraut* ÇKDa.

शैत्तिर्त m. metron. von शित्तिता P. 4,1,113, Schol.

शैत्य s. u. शैत्त 1).

शैख (von शिखा) m. *ein Abkömmling eines ausgestossenen Brahmanen* M. 10,21.

शैखण्डि adj. von शिखण्डिन् P. 6,4,144, Vârtt. 1. — Vgl. शैखण्डिन.

शैखण्डि m. patron. von शिखण्डिन् MBh. 7,955.

शैखण्डिनी (von शिखण्डिन्) gaṇa सुवास्त्यादि zu P. 4,2,77. n. N. eines Sâman Ind. St. 3,240,a.

शैखरिक (von शेखर) m. *Achyranthes aspera* AK. 2.4,8,7. Kâraka 3,7.

शैखरेय m. dass. Ratnakosha bei Bhar. zu AK. 2,4,8,7 nach ÇKDa.

शैखायनि m. metron. von शिखा gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

शैखावर्त m. patron. von शिखावत् P. 5,3,113. f. (ई) und pl. ebend.

शैखावत्य m. *ein Fürst der* Çaikhâvata ebend. N. pr. eines Brahmanen MBh. 5,6014.

शैखिन (von शिखिन्) adj. vom *Pfau kommend* u. s. w.: पित्त Sucr. 2,67,15.

शैखव m. patron. von शिखु gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

शैखर्व (von शिखु) n. *die Frucht der Moringa pterygosperma* Gaertn. gaṇa प्रतादि zu P. 4,3,164.

शैघ्र (von शीघ्र) 1) adj. in Verbindung oder mit Ergänzung von फल *Aequation des 2ten Epicyclus* Sûrjas. 2,42 (hier शैघ्र). 43. Golâdhj. Khedjak. 26. 35 (शैघ्र). — 2) n. = शैघ्र्य *Geschwindigkeit, Behendigkeit* R. 6,69,33. Kâm. Nîtis. 4,33 (nach der Lesart des Comm.).

शैघ्र्य (wie oben) 1) adj. (wohl fehlerhaft) = शैघ्र; s. d. — 2) n. *Geschwindigkeit, Behendigkeit* MBh. 3,15101. 12,9136. Hariv. 7516. 10515. Spr. 3054. Kâm. Nîtis. 4,33. 15,33. Bhâg. P. 3,21,9. 22,7.

शैतिकत m. patron. von शितिकत. °याज्ञालेपाः gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37 (fälschlich शैतिकात°).

शैतिबाल्य m. patron. von शितिबाहु Schol. zu P. 4,1,135. 6,4,147.

शैतोष्ण (von शीत + ऊष्मन्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,240,a.

शैत्य (von शीत) n. *Kühle, Kälte* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123. Jâén. 3, 77. MBh. 2,2548. 16,267. R. 3,22,24. Sucr. 1,20,13. 117,20. 148,19. 154,9. 10. 313,6. Raghu. 5,54. Kumâras. 1,36. Kâm. Nîtis. 7,17 (nach der richtigen Lesart des Comm.). Spr. 3020. (II) 1763. 3059. 3062. 4049. Bâlar. 44. Bhâg. P. 3,26,36. Pañkat. 1,7,4. Verz. d. Oxf. H. 213, a, No. 506. Sarvadarçanas. 176,14.

शैत्यमय (von शैत्य) adj. *in Kälte bestehend, als Kälte sich äussernd* (z. B. eine Krankheit); davon nom. abstr. °त्व n. Sin. D. 71,21.

शैत्यायन m. N. pr. eines Grammatikers TS. Prât. 5,40. 17,1. 7. 18,3.

शैथिल्य (von शिथिल) n. 1) *Losheit, Lockerheit, Schlaffheit*: शरीरस्य Kâraka 3,1. लिङ्ग° 7,1. Sucr. 1,135,13. fg. 273,3. शैथिल्यमेतु मे कायः Mâlav. P. 109,22. वयसा जरया जीर्णाः शैथिल्यमुपयास्यसि R. 7,38,23. यस्य वर्णस्योच्चारणे शिक्षोपोषाग्रमध्यमूलानां शैथिल्यं भवति Schol. zu P. 8,3,18. त्वक् ° Kull. zu M. 6,3. संधि° Sucr. 1,48,20. सिरा° 49,2. Çârîr. Sâm. 3,5,26. 12,7. निबद्धवध° Riâ-Tar. 8,1308. तितिः शैथिल्यमेष्यति so v. a. *wird ihre Fugen gehen* (= निर्बलत्व Nîlak.) Hariv. 3015. — 2) *Lässheit, Erschlaffung* in übertr. Bed., *Abnahme, Verringerung*: दृष्टेः *Unsicherheit des Blicks* Spr. (II) 1876. हृदय° so v. a. *Niedergeschlagenheit, Kleinmuth* Bhâg. P. 5,7,11. पूर्वमित्रेषु so v. a. *Erkaltung* Mâlav. P. 68,26. धारणादाने Hit. ed. Jonas. 1320. प्रज्ञासत्त्वयोः *Abnahme* Daçak. 74,12. दुःख° MBh. 12,11909. भार° Hariv. 2958. स्मृति° Çiç. 110,15. प्रयत्न° Jonas. 2,47. उत्साह° Riâ-Tar. 3,137. सौहृद° Bhâg. P. 10,84,65. गोष्ठी° Pañkat. 118,3. धारणादान° Hit. 62,22. प्राप्ति° so v. a. *geringe Wahrscheinlichkeit* MBh. 13,5906.

शैनेय (von शिनि) m. patron. Sâtjaka's und Sâtjaki's (des Wagenlenkers von Kṛshṇa) Taitt. 1,1,35. Gaṇân. in Verz. d. Oxf. H. 190,b, 16. MBh. 5,894. 1817. 2109. 6,2486. 7,4748. 7263. 16,36. fgg. Hariv. 1935. Riâ-Tar. 8,471. Bhâg. P. 1,8,7. Pañkat. 3,11,22 (शै° gedr.). pl. VP. 435 (der Text 4,14,1 fälschlich शैनया:).

शैन्य (wie oben) m. patron. Âçv. Çr. 12,12,2. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,41. 43. pl. VP. 4,19,9.

शैपेय m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,34.

शैव adj. von *den* Çibi *bewohnt* Schol. zu P. 4,2,52. 69. an beiden

Stellen शैव.

शैवल und शैवाल s. शैवल und शैवाल.

शैवी f. zu शैव्य 1) gaṇa शार्ङ्गरवादि zu P. 4,1,73 (mit व geschr.)

शैव्य 1) adj. zu *den* Çibi *in Beziehung stehend:* राजन् *König der* Çibi Ait. Br. 8,22. m. *ein Nachkomme* Çibi's *oder ein Fürst der* Çibi P. 5,3,112, Schol. Praçnop. 1,1. 5,1. Bhag. 1,3. MBh. 1,3925. 3,15605. 7,9188. 12,937. 13,4420. Hariv. 6703. R. 2,66,41. Verz. d. Oxf. H. 264, a, 5. f. या (vgl. शैवी) MBh. 1,3707. 3,8838. 16859. Hariv. 1988. 9179. 9187. VP. 342. 421. Bhâg. P. 9,23,34. fgg. 10,71,43. — 2) m. N. pr. eines der vier Rosse Vishṇu's Trik. 1,1,34. MBh. 2,35. 7,9812. Hariv. 7667. 9720. Bhâg. P. 10,53,8. 99,49. — 3) f. या *a)* patron. s. u. 1). — *b)* N. pr. eines Flusses MBh. 6,331 (VP. 183). — Häufig (aber nie in den Bomb. Ausgg.) शैव्य geschrieben.

शैव्य s. u. शैव्य 1).

शैरसि m. patron. von शिरस् gaṇa वाह्वादि zu P. 4,1,96.

शैरिन् (1) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 38,27.

शैरीष und शैरीषि (von शिरीष) 1) adj. gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141. *vom* Çirîsha *kommend:* पल Suçr. 1,134,12. *die Farbe einer* Çirîsha-*Blüthe habend* Varâh. Bṛh. S. 80,11. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,240,a. महा° ebend.

शैरीषक und शैरीषकि (wie oben) gaṇa धरीकृणादि und वराकादि zu P. 4,2,80. als subst. (wohl n.) N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 2,1188. Bhagavat, Intr. 396 (शै°). — Vgl. पद्म°.

शैरीषिकि (wie oben) adj. gaṇa कुमुदादि zu P. 4,2,80.

शैर्षघात्य n. nom. abstr. von शीर्षघातिन् gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

शैर्षच्छेदिक (von शीर्षच्छेद) adj. *der da verdient, dass ihm der Kopf abgeschlagen wird,* P. 5,1,68. H. 373.

शैर्षायणि adj. von शीर्ष gaṇa पलादि zu P. 4,2,80. — Vgl. शीर्षायण.

शैर्षिक f. चर्म°.

शैर्ष्य adj. von शीर्ष gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

शैल (von शिला) 1) adj. (f. ई: im Bhâg. P. या wohl fehlerhaft) *steinern:* मकरास्त्र MBh. 3,12141. भूधर Hariv. 4407. पात्र Suçr. 1,240,19. दश वर्षसहस्राणि शैली स्थास्यसि R. 1,64,12. 4,44,77. प्रतिमा Varâh. Bṛh. S. 60,5. Bhâg. P. 11,27,12. आसन *steinähnlich,* Bez. *einer best. Art des Sitzens* Verz. d. Oxf. H. 11,a, N. 1. — 2) m. *a) Fels, Felsgebirge, Berg, Gebirge* AK. 2,3,1. 3,4,8,20. Trik. 2,3,1. H. 1027. an. 2,514. Mahâbh. 1,54. Harîv. 2,10. 5,20. M. 1,24. 10,50. MBh. 1,1123. 6022. 3, 15250. R. 1,1,39. 34,8. 2,25,7. 48,10. 54,38. 4,36,8. 44,115. 5,108, 19. Megh. 12. ad 112. Ragh. 4,51. 71. 12,73. Çiç. 80. 167. Spr. 3021. 5060. (II) 541, v. l. Varâh. Bṛh. S. 4,22. 11,42. 12,1. 70,10. °पक्षभङ्ग 32,6. मपक्षका: Kathâs. 25,42. Naish. 22,44. Râja-Tar. 4,331. Prab. 43,5. Bhâg. P. 3,28,22. °वर्ग Verz. d. Oxf. H. 183,a,13. 191,b,21. 192, b, No. 437. 193,a,25. शैलानी शिखराणि R. 4,8,5. °शिखर Vikr. 10,6. °शृङ्ग MBh. 1,1164. Spr. (II) 2094. 3466. °कूट Varâh. Bṛh. S. 12,6. शैलाग्र Trik. 2,3,2. °मूल Suçr. 1,227,8. Varâh. Bṛh. S. 24,16. °शिला Prab. 67,10. महाशैलशिला Spr. 3188. महा° MBh. 3,2318. R. 2,71,4. am Ende eines adj. comp. (f. या) MBh. 3,10288. 9,442. R. Gorr. 2,45, 16. 4,36,9. 5,3,51. Kâm. Nîtis. 19,14. प्रविरलात्य° Suçr. 1,120,14. — *b)* aus metrischen Rücksichten für शिला *Stein:* शैलोदक *steinern* Suçr. 2,350,8. — *c)* Bez. *der Zahl sieben* (wegen der *sieben Hauptgebirge*) Ganit. Madhjam. 4. — 3) f. ई *hardness, stoniness* Wilson nach Çabdârthak. (unter शैल्य). — 4) n. Bez. *verschiedener Erdharze,* = शैलेय und तार्क्ष्यशैलक H. an. Med. = शिलाजतु Ratnam. 290. — Varâh. Bṛh. S. 77,11. Verz. d. Oxf. H. 321,a, No. 761. — Vgl. क्रीडा°, चैत्य°, तार्क्ष्य°, तुङ्गिन°, पद्म°, पाद°, पूर्व°, बदरी°, मणि°, मन्थ°, मक्षा°, राज°, श्री°. Ein etymologisch verschiedenes शैली s. bes.

शैलक n. = *Erdharz* Çabdar. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 77,10.

शैलकन्या f. *Gebirgstochter,* ein N. der Pârvatî (*Tochter des* Himâlaja) Hariv. 7196.

शैलकम्पिन् adj. *Berge erschütternd;* m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2565. eines Dânava Hariv. 12936.

शैलगन्ध n. *eine Art Sandel* (शावरचन्दन) Râgân. im ÇKDr.

शैलगर्भाख्या f. = शिलावल्का Râgân. im ÇKDr.

शैलगुरु 1) adj. *schwer wie ein Berg* Ragh. 11,28. — 2) m. *der Vater der Berge,* Bez. *des* Himâlaja Kumâras. 7,76. *Montis sacerdos* Stenzler.

शैलज 1) adj. *im Gebirge geboren, montanus:* Affen R. 4,39,12. — 2) f. या Bez. zweier Pflanzen: = गजपिप्पली und सेंकली Râgân. im ÇKDr. — 3) n. *Erdharz* Med. j. 108. Ratnam. 125.

शैलतनया f. = शैलकन्या Kathâs. 1,62. 90,41.

शैलता f. nom. abstr. von शैल *Berg* Spr. (II) 545.

शैलत्व n. desgl. MBh. 13,191.

शैलदुहितृ f. = शैलकन्या Kathâs. 7,113.

शैलधन्वन् m. ein N. Çiva's Trik. 1,1,45. H. ç. 43.

शैलधर adj. *Träger eines Berges;* m. ein N. Kṛishṇa's Dhanañgaja im ÇKDr.

शैलधातु m. *Mineral* Hariv. 5407. — Vgl. गिरिधातु.

शैलनिर्यास n. *Erdharz* Çabdârthak. bei Wilson.

शैलपति m. *der Fürst der Berge, der* Himâlaja Wilson.

शैलपत्र m. *Aegle Marmelos Corr.* (s. बिल्व) Râgân. im ÇKDr.

शैलपद्म m. 1) *Gebirgslotus* Râga-Tar. 1,371. — 2) N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 39,12 (शैलपद्म die Hdschr.).

शैलपुत्री f. *Gebirgstochter:* 1) ein N. der Pârvatî (vgl. शैलकन्या) MBh. 9,2472. Hariv. 8652. R. 3,22,39. Verz. d. Oxf. H. 76,b,6. 110,b, No. 174. — 2) Bein. der Gaṅgâ R. 1,38,11.

शैलपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 42,125. fgg.

शैलपुष्प n. *Erdharz* Suçr. 2,285,17.

शैलपूर्णार्य m. N. pr. eines Mannes Hall 203.

शैलप्रस्थ m. n. *Bergebene, Plateau* R. 2,94,11.

शैलब्राह्मण m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 86.

शैलबीज m. *Semecarpus Anacardium Lin.* (भल्लातक) Râgân. im ÇKDr.

शैलभित्ति f. *Brecheisen* Gaṇâdh. im ÇKDr.

शैलभेद् m. *eine best. Pflanze,* = वज्रभेद् Suçr. 2,323,16.

शैलमय (von शैल) adj. (f. ई) *steinern,* von *Stein* Hariv. 4718. R. Gorr. 1,66,17. fg. Spr. (II) 3892. Kathâs. 18,41. Râga-Tar. 5,103. Verz. d. Oxf. H. 32,a, 5.

शैलमृग m. *Steinbock* Spr. (II) 3541.

शैलयष्ट्र s. शैलयष्ट्र 2).

शैलराज् m. *der Fürst der Berge, der Himâlaja* R. 5,40,8.

शैलराज m. dass. R. Gorr. 1,37,22. 3,79,31. 4,9,41. 22,34. Megh. 51. Kumâras. 7,63. °सुता patron. der Gaṅgâ R. 1,44,4. der Pârvatî 7,87,11. Devî-P. 43 im ÇKDa. °दुहितर् patron. der Pârvatî Verz. d. Oxf. H. 116,b,3.

शैलवर् m. *der beste der Berge, der Himâlaja* R. Gorr. 1,37,21.

शैलवल्कला f. = शिलावल्कला Rigân. im ÇKDa.

शैलवालुका: Harîv. 12678 fehlerhaft für सैल° (d. i. स + ए°), wie die neuere Ausg. liest.

शैलशिखा f. *Bergspitze* und N. *eines Metrums:* 4 Mal ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Ind. St. 8,421. Colebr. Misc. Ess. 2,162 (XI,11).

शैलशिबिर n. *das Meer* Taik. 1,2,8.

शैलसंधि m. *Thal* Taik. 3,3,130.

शैलसंभव n. *Erdharz* H. an. 3,510.

शैलसंभूत n. *Röthel, rubrica* Ausn. 44.

शैलसार adj. *steinhart* Rasen. 11,45. Kusum. 64,17.

शैलसुता f. *Gebirgstochter*, patron. der Pârvatî Kumâras. 3,68. Kavis. 110,56. °कान्त *der Gemahl der* Pârvatî d. i. Çiva 122,109. °पति dass. Vaṇîs. Bṛn. S. 8,24.

शैलसेतु m. *ein Damm von Stein* Spr. (II) 1832.

शैलाभ्य (शैल + आभ्या) n. *Erdharz* Ratnam. 125.

शैलाम्र n. dass. Rigân. im ÇKDa. wohl nur fehlerhaft für शैलत्र.

शैलाट (शैल + अट) m. 1) *Löwe* Taik. 2,5,1. H. ç. 183. H. an. 3,172. Med. ṭ. 56. — 2) *ein Kirâta.* — 3) = देवलक. — 4) *Krystall* (मुक्ताकाच) H. an. Med.

शैलाद (von शिलाद) m. patron. Verz. d. Oxf. H. 44,b,25.

शैलादि (wie eben) m. patron. des Nandin (im Gefolge Çiva's) Vimâna-P. 63 im ÇKDa.

शैलाधिराज (शैल + अ°) m. *der Fürst der Berge, der Himâlaja:* °तनया patron. der Pârvatî Spr. (II) 2470.

शैलाभ (शैल + आभा) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBh. 13,4357.

शैलालय (शैल + आ°) m. N. pr. eines Fürsten, Grossvaters des Bhagadatta, MBh. 15,547.

शैलालि (von शिलालिन्) m. N. pr. eines Lehrers Çat. Bṛ. 13,5,4,2. pl. Pravaṇaḥ. in Verz. d. B. H. 57,42.

शैलालिन् m. pl. *die Schule des* Çilâlin P. 4,3,110. 2,66, Schol. (नटा:). Anupadas. 4,5. 5,5. 7,3. 7. शैलालिब्राह्मण Verz. d. Oxf. H. 271, a,5. = शैलूष *Schauspieler, Mime* AK. 2,10,12. H. 329. Halâj. 2,437.

शैलामा (शैल + 3. आमा) f. ein N. der Pârvatî H. ç. 55.

शैलारुह (शैल + आरुहा) n. *Erdharz* Ausn. 97.

शैलिक m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,20.

शैलिक 1) m. = सर्वलिङ्गिन् Gaṇiṣṭh. im ÇKDa. — 2) n. oxyt. nom. abstr. von शिलिक gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128.

शैलिनि (von शिलिन) m. N. pr. eines Lehrers Çat. Bṛ. 14,6,10,8. VS. S. LVI, 16.

शैलिनि m. = शैलिन Bṛn. Âr. Up. 4,1,2.

शैली (von शील) f. *Sitte, Gewohnheit, Art und Weise zu verfahren:* स्थिरा शैली गुणवताम् Spr. 5320. इति ब्रूते शैलीयम् Kavyâd. 121,20. प्रायेणाचार्याणामियं शैलो यत्स्वाभिप्रायमपि परोपदेशमिव वर्णयन्ति Kull. zu M. 1,4. आचार्याणामियं शैली यत्सामान्येनाभिधाय विशेषेण विवृणोति (sg.!) Dunâin. zu Vop. nach ÇKDa. = प्रक्रिया u. s. w. Taik. 3,2,25. — Ein etymologisch verschiedenes शैली s. u. शील.

शैलूत N. pr. einer Oertlichkeit v. l. für कोलूक R. 4,43,8.

शैलूष m. 1) *Schauspieler, Tänzer, Mime* (ihre Weiber sind übel berüchtigt) AK. 2,10,12. Taik. 3,3,141. H. 328. an. 3,742. Med. sh. 45. Halâj. 2,437. VS. 30,6. M. 4,214. Jâṇ. 2,48. शैलूष इव मीं (Sîtâ spricht) परेभ्यो दातुमिच्छसि R. 2,30,8. 83,15 (90,28 Gorr.). Çiç. 1,69. Vaṇîs. 4,12. 5,16. 7,2. Rîâ-Tar. 2,156. Prab. 5,18. Paiṣâçikatant. 23,a,4. शैलूषी f. MBh. 4,494. (माम्) शैलूषीमिव परेभ्यो दातुमिच्छसि R. 6,101,8. शैलूष = धूर्त und तालधारक Çabdar. im ÇKDa. *a rogue, a cheat* und *the master of the band, or one who beats time* Wilson nach dens. Aut. Nach dem Comm. zu H. 328 patron. von शिलूष. — 2) N. pr. eines Fürsten der Gandharva MBh. 2,406. R. 6,41,61. 7,12,24. 100,12. — 3) pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,46. — 4) *Aegle Marmelos Corr.* (बिल्व) AK. 2,4,2,12. Taik. H. an. Med.

शैलूषक (von शैलूष) adj. von *Schauspielern u. s. w. bewohnt* gaṇa राजन्यादि zu P. 4,2,53.

शैलूषिक m. = शैलूष 1) Brahma-P. in Paiṣâçikatantrava nach ÇKDa. f. °की Paiṣâçikatantratattva im ÇKDa.

शैलेन्द्र m. *Fürst der Berge, ein grosses Gebirge:* विचालयेयु: शैलेन्द्रान् R. 1,16,23. मध्यमक 4,9,28. insbes. Beiwort oder N. des Himâlaja 1, 36,13 (37,14 Gorr.). R. Gorr. 2,120,25. 3,31,9. Mârk. P. 57,2. °दुहितर् *eine Tochter des* Himâlaja, Bez. der Gaṅgâ und der Pârvatî R. Gorr. 1,37,20.

शैलेन्द्रस्थ adj. *auf dem* Himâlaja *stehend (wachsend);* m. Bez. *der Birke* Rigân. im ÇKDa.

शैलेय (von शिला oder शैल) 1) adj. *steinähnlich, steinhart* P. 5,3,102, Schol. Med. j. 108. — 2) n. *Erdharz (Benzoin* u. s. w.) AK. 2,4,4,11. H. an. 3,510. Med. Ratnam. 125. Karaka 1,3. Suçr. 2,131,14. 275,18. 285,17. 356,18. Ṛt. 6,25. Kumâras. 1,36. Rasen. 6,61. msc. Vaṇîs. Bṛn. S. 77,23. n. = तालपर्णी (steht im AK. neben शैलेय, aber als neuer Artikel) und सिन्धूत्थ (मेन्धव) H. an. Med. — 3) m. *Biene* H. an. Med. Çabdar. im ÇKDa. — 4) m. *Löwe* Çabdar. — 5) f. ई ein N. der Pârvatî Taik. 1,1,52.

शैलेयक n. = शैलेय 2) Suçr. 2,95,1. Vaṇîs. Bṛn. S. 16,23. 77,13.

शैलेश (शैल + ईश) m. *der Fürst der Berge, der* Himâlaja: °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 71,b,3.

शैलेशय m. N. pr. eines Mannes; pl. Pravaṇaḥ. in Verz. d. B. H. 58,18. vielleicht fehlerhaft für शैले-शय.

शैलोदा (शैल + उद् *Wasser*) f. N. pr. eines Flusses MBh. 2,1858. R. 4,44,76. तस्या: स्पृष्ट्वेव सलिलं नर: शैलो ऽभिजायते 77. LIA. 1,847. 2,653.

शैल्य adj. von शिला ÇKDa. n. *hardness, stoniness* Wilson nach Çârdûlavarman.

1. शैव 1) adj. zu Çiva *in Beziehung stehend, von ihm kommend, ihm geweiht* u. s. w.: मूल R. 1,29,6. धनुस् 66,19. देवकुल Kathâs. 10,30. आयतन 40,89. मन्त्रा: Weber, Rîmây. Up. 353. Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,33. पुराण VP. 3,6,19. Mârk. P. S. 659, Z. 3. Weber, Kṛishṇaj. 234. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,1. 30,*a*, No. 75. 59,*a*,37. 65,*a*,34. *b*,22. 271,*a*,5. Ind. St. 1,18,3. Wilson, Sel. Works 1,210. पञ्चरात्र Pâṇ. 1,1,57. शास्त्र oder n. mit Ergänzung dieses Wortes Verz. d. B. H. No. 810. Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,4. 91,*a*,17. 247,*a*,N. 3. 276,*b*,18. °तन्त्र 108,*b*, No. 169. dass. ohne तन्त्र 104,*a*,26. — 2) m. *a*) patron. von Çiva P. 4,1,112. Vop. 7,1. 10. — *b*) *ein Verehrer* Çiva's (auch Bez. *einer best.* Çivaitischen *Secte*) Taik. 3,1,23. Wilson, Sel. Works passim; Colebr. Misc. Ess. 1,196. fgg. Prab. 86,6. Weber, Rîmây. Up. 335. Verz. d. B. H. No. 543. 616. Verz. d. Oxf. H. 16,*a*,N. 1. 74,*b*,19. 92,*a*,18. 242,*b*, No. 599. 247,*b*,2 v. u. 248,*a*,7. 258,*b*,3. Vop. 3,132. 7,23. °दर्शन Sarvadarçanas. 80. fgg. der Çivait als ein Sohn Vasishṭha's angesehen Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,6. 276,*b*,16. — *c*) N. pr. des 8ten schwarzen Vâsudeva H. 696. — *d*) Bez. zweier Pflanzen: *Stechapfel* und = वसुक Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. ई N. der Göttin Manasâ Verz. d. Oxf. H. 24,*b*,38. — 4) n. *Glück, Wohlfahrt:* त्यक्ताशेषशैवम् Buâs. P. 3,1,13. — Vgl. वीर°.

2. शैव n. = शैवाल Çabdâm. im ÇKDa.

3. शैव fehlerhafte Schreibart für शैव.

शैवगव m. patron. von शिवगु Âçv. Ça. 12,12,5.

शैवता f. nom. abstr. zu 1. शैव 2) *b*) Râǵân. 1,43.

शैवनगर n. N. pr. einer *Stadt* Ind. St. 3,206.

शैवपाशुपत adj. zu Çiva-Paçupati *in Beziehung stehend* u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, N. 1. m. *ein Anhänger von* Çiva-Paçupati Prab. 21,1.

शैवपुर adj. von शिवपुर P. 4,2,109, Schol.

शैवभूप्य adj. von शिव-भूप्य P. 4,2,106, Schol.

शैवल Uṇâdis. 4,38. m. Taik. 3,5,5. 1) *Blyxa octandra, eine Wasserpflanze,* m. AK. 1,2,3,37. Trik. 1,2,35. Med. l. 141. n. H. 1167. Halây. 3,61. unbestimmt ob m. oder n. Hin. 106. MBh. 1,8016. 3,17315. 4, 2015. 6,4165. 13,3790. 6502. 18,43. Hariv. 9626. R. 5,55,1. 78,19. Suçr. 2,323,16. °मञ्जरीणी ज्ञालानि Raǵan. 5,46. Kumâras. 5,9. Spr. 3190. 5190. (II) 2001. Paṇâḍ. 188,12. am Ende eines adj. comp. f. आ R. 2,50,11. R. Gorr. 2,47,1. 3,76,6. 5,18,24. neutr. = पद्मकाष्ठ Med. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,361 nach der Lesart der ed. Bomb., शैवाल ed. Calc.; vgl. VP. 191. — 3) m. N. pr. eines Berges R. 7,75,18. 77,5. 79,16. — Vgl. शैवाल.

शैवलवत् (von शैवल) adj. *mit Blyxa octandra besetzt* Raǵan. 16,46.

शैवलिन् (wie eben) adj. गण तारकादि zu P. 5,2,36.

शैवलिनी (wie eben) f. *Fluss* AK. 1,2,3,39. H. 1080. Hin. 53. Halây. 3,43.

शैवल्य (wie eben) adj. *die Blyxa octandra enthaltend:* स्थावरा: Sarvad. Bh. 3,1. — Vgl. शीपल्य.

शैववायवीय adj. zu Çiva und Vâju (*dem Gotte des Windes*) *in Beziehung stehend* u. s. w.: पुराण Verz. d. Oxf. H. 76,*a*,19. fg.

शैवसर्वस्व n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 201,*a*, No. 480.

शैवसिद्धान्तशेखर m. desgl. ebend. 279,*b*,42.

शैवाकवि m. patron. von शिवाकु गण बाह्वादि zu P. 4,1,96.

शैवागम (शैव + आ°) m. *eine heilige Schrift der* Çaiva Verz. d. B. H. No. 941. 1025. Verz. d. Oxf. H. 102,*a*,2. 249,*a*, N. 4. 271,*a*,6. Sarvadarçanas. 80,14. 88,19.

शैवायन m. patron. von शिव गण अश्वादि zu P. 4,1,110.

शैवाल Çiksh. 3,18. 1) = शेवल 1) n. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,38. AK. 1, 2,3,37. H. 1167. MBh. 4,2015. 12,11281. 13,2660. Hariv. 3646. R. 2, 59,30. Karaka 1,3. Suçr. 1,41,10. 145,22. 170,19. 171,18. 206,10. Vishṇ. 1,5,6. Raǵat. 16,61. Spr. (II) 5361. — 2) m. pl. = शैवल 2) MBh. 6,361 (VP. 191). — 3) m. = शैवल 3) Mârk. P. 59, 4. — Vgl. शीपाल.

शैवालक am Ende eines adj. comp. = शैवाल 1) Spr. (II) 4458.

शैवालवज्र n. *eine Art Stahl* ÇKDa. unter वज्र.

शैवालीय् (von शैवाल), °पति *einer Blyxa octandra gleichen* Gaut bei Hall, Vâsavad. Einl. S. 56.

शैवि m. patron. von शिव Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,38.

शैव्य 1) schlechte Schreibart für शैव्य. — 2) in Verbindung mit सस्य beim Schol. zu Kâç. Ça. 176,4 fehlerhaft für शैम्ब्य und demnach = शिम्बीधान्य.

शैशव (von शिशु) 1) adj. *kindlich:* वपुस् Verz. d. Oxf. H. 242,*a*, No. 593. fgg. — 2) m. patron.; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 39,14. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1874. — 3) n. *a*) *Kindheit, das kindliche Alter* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,21. AK. 2,6,2,40. H. 339. M. 8,27. Raǵat. 1,8. 3, 22. 11,8. 15,33. Spr. 2878. Varâh. Bṛih. 17,8. Kathâs. 4,2. 26,194. 27, 167. 28,99. 34,173. 40,13. 96,6. Nîlak. 53,7. Râǵa-Tar. 1,82 (स शै° zu lesen). 4,684. Buâs. P. 3,31,28. — *b*) N. eines Sâman Ind. St. 3, 240,*a*. Paṇâḍav. Br. 13,3,23. fg.

शैशव्य n. = शैशव 3) *a*) Sarvadarçanas. 145,14 wohl fehlerhaft.

शैशिरि (von शिशिर) 1) adj. (f. ई) *a*) *zur kühlen Jahreszeit in Beziehung stehend, zu ihr gehörig* u. s. w. P. 4,3,16, Schol. मास, ऋतु, काल AV. 15,4,6. VS. 15,57. 21,28. TS. 7,5,22,1. Âit. Br. 4,26. Çat. Br. 12,2, 2,14. Âçv. Ça. 4,12,1. MBh. 3,11078. 6,5822. R. 7,42,26. धूम MBh. 12,8662. त्रियामा Hariv. 8768. मरुत्, वात Spr. (II) 1915. 2302. सत्र Hariv. 12732. 13181 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Kathâs. 116,71. — *b*) von Çiçira *stammend, von ihm verfasst:* संहिता Müller, SL. 135. 369. — 2) m. *a*) *eine Sperlingsart* (श्यामचटक) Râǵân. im ÇKDa. — *b*) N. pr. eines Lehrers (neben शिशिर) Müller, SL. 135. 369. — *c*) N. pr. eines Berges MBh. 3,11949. 7,9242. 12,12313. Hariv. 12386 (शिशिर die neuere Ausg.). — Vgl. फल°.

शैशिरायण m. patron. von शिशिर Hariv. 1937 nach der Lesart der neueren Ausg., शिशि° die ältere.

शैशिरि m. desgl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,18. Verz. d. Oxf. H. 55,*a*,34. fg. (शैशिरि). pl. Âçv. Ça. 12,13,2. Pâraç. 2.

शैशिरिक adj. = शिशिरमधीते वेद वा गण वसन्तादि zu P. 4,2,62.

शैशिरीय adj. von शैशिरि गण गर्गादि zu P. 4,2,105. Müller, SL. 135. fg. 369. Ind. St. 3,253. Verz. d. B. H. No. 48 (nach Sarpeshṭiçiras

= शिशिरनाममकर्षिप्रोक्त oder शिशिरर्तुसमाप्य).

शैशिरीयक adj. dass. Verz. d. B. H. No. 49. fgg. Müller, SL. 135. 369.

शैशिरेय (von शैशिरि) m. patron. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 34, b, 35.

शैशुनाग m. patron. von शिशुनाग; pl. Çiçunâga *mit seinen Nachkommen* VP. 4, 24, 3.

शैशुनालि bei Hall, Vâsavad. Einl. 53 vielleicht fehlerhaft für शैशुपालि.

शैशुपाल MBu. 3, 15282 fehlerhaft für शैशुपालि, wie die ed. Bomb. liest.

शैशुपालि m. patron. von शिशुपाल MBu. 3, 15282 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 5, 2011. 4221. 7, 1511. — Vgl. शैशुनालि.

शैशुमार adj. von शिशुमार. चक्र Bulg. P. 2, 2, 24.

शैश्य (von शिश्न) m. (sc. भाग) *Geschlechtstheil* Bulg. P. 11, 4, 11.

शैष (von शेष) m. *die kühle Jahreszeit* H. 136.

शैषिक (vom Worte शेष P. 4, 2, 92) adj. *in den übrigen, nicht in den bis dahin angegebenen, sondern erst* P. 4, 3, 25. fgg. *aufgeführten Fällen oder Bedeutungen geltend, — angewandt:* ein Suffix Kâr. zu P. 3, 1, 17. Schol. zu 2, 4, 58 und 4, 1, 12, Vârtt. Mallin. zu Çiç. 18, 27. Verz. d. Oxf. H. 162, *a*, 19. 164, *a*, No. 360. fg. 166, *a*, 2.

शैष्योपाध्यायिका (von शिष्य + उपाध्याय) f. *das Verhältniss vom Schüler zum Lehrer* P. 5, 1, 133, Schol.

1. शोर्क (von 1. प्रुच्) adj. *glühend* AV. 1, 25, 3.

2. शोक (wie oben) m. 1) *Gluth, Flamme:* अग्ने: ṚV. 2, 38, 5. 4, 6, 5. 10, 31, 9. अभि प्रेहि निर्दह कृत्सु शोकै: 103, 12. AV. 4, 14, 1. VS. 13, 45. Çat. Br. 6, 5, 4, 16. — 2) *Qual, Schmerz, Kummer, Gram, Trauer* AK. 1, 1, 5, 13. 7, 25. Taik. 1, 1, 129. H. 72. 299. Halâj. 1, 91. सर्वप्राणभृतामभि मे वसु शोकाः ṚV. 1, 125, 7. कृदध्य AV. 6, 18, 1. VS. 30, 16. Çat. Br. 14, 6, 4, 1. यज्ञात° 12, 3, 4, 9. कर्षशोको Kathâs. 2, 12. Colebr. Misc. Ess. I, 397. वीतशोकभय M. 6, 32. °ङं वारि MBu. 3, 2172. 12036. तस्मादशनजः R. 2, 64, 65. Sûçr. 1, 253, 1. Spr. 2644. °स्थानसहस्राणि 3022. नास्ति °समो रिपुः 3025. नास्ति °सनं तमः 3024. शोकेन रोगो वर्धते 3081. Spr. (II) 1205. शोकस्य मूलोद्धरणानि पञ्च 4119. Sarvadarçanas. 43, 11 (unter den 18 दोषा नयस्य bei den Gaina). Varâh. Bṛh. S. 3, 14. 9, 27. 52, 2. 53, 77. 81, 30. द्राग्भ्यां शोकाभ्यामभितप्यते R. 2, 62, 5. शोकैर्बहुभिरावृत: 72, 26. 75, 18. 81, 2. 105, 23. शोकानुवृत्ति Varâh. Bṛh. S. 104, 6. °द् 47, 12. जगत: °र्त्ता Bulg. P. 3, 14, 48. शोकापनुद् P. 3, 2, 5. शोकापनोद adj. Vârtt. शोकापह Vop. 26, 33. °शल्य Sûçr. 1, 100, 10. °पङ्कार्णव MBu. 5, 7009. °सागर R. 2, 38, 18. Wilson, Kâmaṇḍ. 265. 295. दु:खशोकार्णव ebend. शोकं धारयस्व R. 2, 34, 45. घाविष्ट: शोकदु:खाभ्याम् MBu. 3, 2957. तीव्रशोकसमाविष्ट 2958. 2973. M. 6, 77. °परीतात्मन् MBu. 1, 5902. °संतप्त R. 1, 1, 52. °वेगसमाकुल 2, 44, 16. शोकोपकृतचेतना MBu. 3, 2367. °विकृत Spr. (II) 2781. °संविग्नमानस Bhâg. 1, 47. °युक्त Çiç. in LA. (III) 35, 17. शोकं कृत्वा Ved. ebend. 18, 3. शोकं मे वर्धयसि MBu. 3, 2330. द्वेष्यार्कि कुलयो: शोकमावहेयु: Spr. 5285. मम शोकविवर्धन MBu. 3, 2428. रास: (subj.) R. 1, 3, 12. मम (obj.) शोकेन संविग्ना MBu. 3, 2777. R. 1, 2, 19. Varâh. Bṛh. S. 51, 11. सुहृच्छोकविवर्धन *der Freunde Kummer* MBu. 3, 2302. भर्तृशोकाभियोडिता *Trauer um* 2490. 2499. 2668. R. 1, 1, 33. 3, 24, 29. 38, 16. 62, 5. 63, 4. 6, 94, 6. Bhâm. 12, 97. Kathâs. 2, 43. 22, 156. Pañcat. 103, 2. am Ende eines adj. comp. f. या Hariv. 1156. R. 5, 28, 18. उपशोका ad Mahâv. 112. घार्द्रशोका Kathâs. 21, 113. Râja-Tar. 6, 310. स° *bekümmert, traurig, betrübt* R. 2, 34, 18. 62, 1. Ṛtus. 6, 16. Spr. (II) 614. Hit. 77, 1. सशोकम् adv. Vikr. 32, 18. Kathâs. 5, 107. der personificirte Çoka ist ein Sohn des Todes VP. 36. Mârk. P. 50, 31. des Droṇa von der Abhimati Bulg. P. 6, 6, 11. — °चिकित्सा Verz. d. B. H. 949 wohl fehlerhaft für शोष°. — Vgl. स°, सर्क°, त्रि°, नि:°, वि°, वीत°, शीर्ष°, सहस्र°.

शोककर m. *Semecarpus Anacardium Lin.* Acun. 82. fehlerhaft für शोफकर: vgl. शोथकृत् u. s. w.

शोकतर्द adj. *Schmerz überwindend* Çat. Br. 11, 5, 8, 13.

शोकनाश adj. *Schmerz u. s. w. verscheuchend;* m. *Jonesia Asoka* (घशोक) Roxb. Râjân. im ÇKDa. Acun. 100.

शोकमय (von शोक) adj. *voller Schmerz u. s. w.:* ज्ञीवलोक Kathâs. 17, 54.

शोकवत् (wie oben) adj. *bekümmert, traurig, betrübt* MBu. 5, 7007. दु:ख° (von दु:ख + शोक) R. 4, 19, 11.

शोकहारी f. = वनवर्वरिका Râjân. im ÇKDa. fehlerhaft für शोफहारिन्, wie o. d. l. W. geschrieben wird.

शोकारि (2. शोक + घरि) m. *Nauclea Cadamba* (कदम्ब) Roxb. (ein *Feind des Kummers u. s. w.*) Çabdar. im ÇKDa.

शोकी f. = रात्रि Naigh. 1, 7. Vgl. नोकी.

शोच in घशोच (ohne Zweifel eine falsche Form).

शोचनं 1) nom. ag. von 1. प्रुच् P. 3, 2, 150. — 2) n. *Kummer, Gram, Trauer* H. 299. Halâj. 5, 89. — शोचन H. an. 3, 427 fehlerhaft für शोभन.

शोचनीय (von 1. प्रुच्) 1) n. impers. *zu trauern, zu klagen:* किं कर्म कृत्वा नहि शोचनीयम् Prâçnottarasamîkâ 20. — 2) adj. *zu beklagen, beklagenswerth* Raghu. 14, 1. 15, 43. Çiç. 83, 28. Schol. zu 23. Râja-Tar. 4, 357. davon nom. abstr. °ता f. Kumâras. 5, 71. Râja-Tar. 1, 283.

शोचयत्नी (partic. vom caus. von 1. प्रुच्) f. pl. *die Brennenden, Quälenden,* Bez. der Apsaras des Gandharva Kâma TBr. 3, 4, 3, 3.

शोचिं (von 1. प्रुच्) f. = शोचिस् AV. 18, 2, 9. — Vgl. भद्र° und unter प्रुक्शोचिस्.

शोचितव्य (wie oben) 1) n. = शोचनीय 1): न शोचितव्यं मनीषिणा Kâraka 1, 38. MBu. 13, 1048. शोचितव्ये न शोचसि wenn zum *Klagen Veranlassung da ist* 12, 8031. — 2) adj. = शोचनीय 2): नैवाकं शोचितव्यस्ते R. Gorr. 2, 49, 28. 68, 29. 6, 95, 32. Pañcat. 118, 6.

शोचिष्केश (शोचिस् + केश) adj. *gluthhaarig:* Agni ṚV. 1, 45, 6. 127, 2. 3, 14, 1. die Sonne 1, 50, 3. शिखा Çat. Br. 1, 4, 3, 9. m. *Feuer* AK. 1, 1, 1, 49. H. 1099.

शोचिष्ठ adj. superl. zu प्रुक्र ṚV. 5, 24, 4. 8, 49, 6.

शोचिष्मत् (von शोचिस्) adj. *glühend, flammend:* Agni ṚV. 2, 4, 7.

शोचिस् (von 1. प्रुच्) Uṇâdis. 2, 109. n. *Gluth, Flamme, Feuerschein* Naigh. 1, 17. AK. 1, 1, 3, 26. H. 99. Halâj. 1, 38. प्रुक्रस्य शोचिषस्पते ṚV. 5, 6, 5. 1, 12, 12. 45, 4. 127, 1. प्र यावा शोचि: पृथिवी यरोचयत् 143, 2. योष: पात्रं न शोचिषा 175, 3. ऊर्ध्वा शोचींषि प्रस्थिता रुशन्ति 3, 4, 4. 7, 43, 2. दूरात्सूर्यो न शोचिषा ततान 6, 12, 1. 4, 7, 10. 10, 10, 4. AV. 5, 27, 1. 17, 1, 16. VS. 17, 11. der Ushas ṚV. 4, 52, 7. घद्रे घद्रे शोचिषा शिश्रि-

याणम् AV. 1,12,2. 25,4. Çiva Hariv. 14879. so v. a. *Farbe:* शोणित-शोणा° Kiraṇ. (1866) 70,13 (vgl. शोणितशोणशोभा Spr. (II) 1073). *Glanz, Pracht, Schönheit:* ईषत्स्मितशोचिषा (°रोचिषा Burnouf) गिरा Bhâg. P. 2,9,18 (ed. Bomb.). 3,15,26. 3,2,13. adj. *glänzend, leuchtend:* ब्रह्मवर्चसेन शोचिषा 2,2,24. — Vgl. अगृभीत°, अग्नि°, ऊर्ध्व°, चित्र°, तिग्म°, दीर्घायु°, पावक°, मन्यि°, वृद्ध°, शुक्र°, श्वेत°, स्व°.

शोच्य (wie oben) 1) n. impers. *zu trauern, zu klagen:* तस्माच्छोच्यं भवता (subj.) मृतानां (obj.) वै (मृतार्थेन die neuere Ausg.) Hariv. 6062. — 2) adj. *zu beklagen, beklagenswerth* (bisweilen auch in verächtlicher Bedeutung) MBh. 9,2705. 14,1866. 15,846. R. 2,44,4. 60,21. 105,32. R. Gorr. 2,58,17. 3,79,20. Çiç. 58. Milav. 68,17. Spr. 5108. (II) 233. 1397. 1722. Kathâs. 30,21. 52,166. 62,192. Râjat. 8,1468. Sin. D. 230. Mâlav. P. 22,30. Bhâg. P. 1,13,41. 17,6. 3,31,24. साधु° 3,11,9. शोच्यशोच्य 3,5,14. य° 1,17,6. Kumâras. 6,79. Spr. (II) 722. fgg. Kathâs. 41,24. शोच्यता f. nom. abstr. 22,209. यशोच्यता Raghu. 8,27. यशोच्यत्व n. MBh. 4,513.

शोच्यक (von शोच्य) adj. *beklagenswerth, erbärmlich, elend* Çabdar. im ÇKDr.

शोटीर्य n. = शौटीर्य Çabdar. im ÇKDr.

शोठ adj. = श्लक्ष्ण und मूर्ख Taik. 3,3,109. Med. th. 9. = धूर्त, नीच und पापरत Çabdar. im ÇKDr.

शोठ (?), शोठाक्षिदंश neben विशोक्षक्षि Kathâs. 46,121.

शोण्, शौणति (वर्णगत्योः) Dhâtup. 13,13.

शोण 1) adj. (f. आ und ई P. 4,1,43. Vop. 4,17) *roth, hochroth* AK. 1,1,4,24. Taik. 3,3,140. H. 1395. an. 2,156. Med. g. 31. fg. Halâj. 4, 48. Ross H. 1242. H. an. Med. Halâj. 2,283. ṚV. 1,6,2. 126,4. 3,35, 2. 5,33,9. 10,20,9. MBh. 3,15597. 4,1677. 1826. 6,781. R. 5,12,25. Kathâs. 37,162. 167. शोणो धावति Vedântas. (Allah.) No. 105. वृषन् ṚV. 9,97,12. यदिदं घृते द्रुते शोणमिवार्चिरुज्वलति Kâṭh. 8,9. TS. 7, 3,18,1. Kumâras. 1,7. Vasiṣṭh. Bpn. S. 30,22. °राग Kathâs. 23,78. 109, 120. °शिरस् adj. (Vogel) Hariv. 1121. तालु 1145. मुख Sin. D. 34,4. शेष Kathâs. 35,11. कार् 105,2. रोषमुशोणदृष्टि Bhâg. P. 2,7,24. मणि-माला Khanḍom. 53. शोणित° Spr. (II) 1073. Kiraṇ. (1866) 70,13. Sin. D. 146,3. सिन्दूर° Kathâs. 19,68. कुङ्कुम° Bhâg. P. 10,60,8. धूम्रान AK. 2,4,2,34. °पद्म Git. 3,5. °पद्मक Râjan. im ÇKDr. °मरोज Vers. d. Oxf. H. 141, b, No. 289, Z. 5. घर्शोण AV. 19,60, 1 wohl fehlerhaft für यशोर्ण. — 2) m. a) *Röthe* AK. 1,1,4,24. H. 1395. Bhâg. P. 1,11,3. — b) *Feuer* H. an. Med. — c) Bez. verschiedener Pflanzen: = श्योनाक diess. = श्योनाकप्रभेद und रक्तेक्षु Râjan. im ÇKDr. — d) N. pr. eines in Amarakaṇṭaka entspringenden und bei Pâṭaliputra in die Gaṅgâ sich ergiessenden Flusses AK. 1,2,2,33. Taik. H. 1090. H. an. Med. Halâj. 3, 52. LIA. 1, 82. MBh. 2, 373. 796. 3, 8150. 13910. 14223. Hariv. 9512. 12827. R. 1,33,20 (34,18 Gorr.). R. Gorr. 1,37,4. 4,40,20. Bhâg. 7,23. Vasiṣṭh. Bpn. S. 3,63. 16,1. 9. Pâṇaçêîttkand. 11,b,3. Mâlav. P. 57, 21. Bhâg. P. 5,19,18. Verz. d. Oxf. H. 235,a,15. 339,a,20. fg. 40. °संगम 39,b,28. गङ्गाशोणम् P. 2,4,7, Schol. शोणा f. MBh. 6,337 (शोण VP. 183). — e) N. pr. eines Meeres Daśar. im ÇKDr. — f) N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. Çat. Br. 13,5,4,16. — 3) f. आ s. u. 2) d) am Ende. — 4) n. a) *Blut.* — b) *Mennig* Râjan. im ÇKDr. — Vgl. दृधि° und शोणायन.

शोणक m. = श्योनाक AK. 2,4,2,33. Taik. 2,4,16.

शोणकिण्वका f. = रक्तसैरेय Râjan. im ÇKDr.

शोणकिण्वी f. N. zweier Pflanzen, = कण्टकिनी und कुरुवक Râjan. im ÇKDr.

शोणना (von शोण) f. *Röthe:* यथा व्योमापि शोणनाम् Kathâs. 47,91.

शोणपत्र m. = रक्तपुनर्नवा Râjan. im ÇKDr.

शोणपुष्पक m. *Bauhinia variegata Lin.* Râjan. im ÇKDr.

शोणपुष्पी f. = सिन्दूरपुष्पी Râjan. im ÇKDr.

शौणप्रस्थ m. v. l. für शोणाप्रस्थ gaṇa मालादि zu P. 6,2,88.

शोणभद्र m. N. pr. eines Flusses LIA. 1,56, N. 4.

शोणमणि f. *Rubin* Sin. D. 116,14.

शोणरत्न n. dass. AK. 2,9,93. H. 1064, Schol.

शोणवज्र n. *eine Art Stahl* ÇKDr. unter वज्र.

शोणकृष्ण adj. *rothe Rosse habend*, Beiw. Droṇa's MBh. 7,637. — Vgl. शोणाश्व.

शोणाक m. = श्योनाक Ratnam. 4. Vasiṣṭh. Bpn. S. 54,23.

शौणाप्रस्थ m. gaṇa मालादि zu P. 6,2,88. शोणप्रस्थ v. l.

शोणाम्बु (शोण + अ°) adj. *rothes Wasser habend;* m. Bez. einer der sieben Wolken am Ende der Welt Vers. d. Oxf. H. 347,b,33.

शोणाय् (von शोण), °यते *sich röthen:* शोणायमान Bhâg. P. 10,53,53. शोणायित *geröthet* 3,8,27 (शोनायित fehlerhaft Burnouf). 12,9,23.

शोणाश्मन् (शोण + अ°) m. *Rubin* Halâj. 2,20.

शोणाश्व (शोण + अश्व) 1) adj. *rothe Rosse habend*, Beiw. Droṇa's MBh. 4,1823; vgl. °वाह् 1677 und शोणकृष्ण. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Râgâdhidheva Hariv. 2033.

शोणित (von शोण) n. 1) *Blut* AK. 2,6,2,15. 3,4,26,202. Taik. 2,6, 17. H. 621. Halâj. 3,10. Nir. 14,5. 6. Âçv. Çr. 3,11,5. Gaṇ. 4,6,27. Kâty. Çr. 25,11,28. Gobh. 3,10,26. शोणितं यावतः पांसून्संगृह्णाति मक्षी-तले M. 11,207. 4,168. मांसशोणितलेपन 6,76. 8,287. Jâén. 3,92. Suçr. 1,43,2. घार्तव 17. 45,1. °पाषाण Raghu. 2,39. 3,54. Çiç. 154. Spr. (II) 5469. Vasiṣṭh. Bpn. S. 46,27. 69,28. Bhâg. P. 3,28,28 (शोनित fehlerhaft Burnouf). °शोण Spr. (II) 1073. Kiraṇ. (1866) 70,13. Sin. D. 146,3. शोणितोत्तित MBh. 3,16852. R. 2,97,29. पांसुशोणितदिग्धाङ्ग 63,34. °परीताङ्ग 1,2,14. °वर्षिन् *von Blut triefend* Râjat. 4,278. गात्राणि विमृजन्ति स्म शोणितम् MBh. 3,12129. विप्रस्योत्पाद्य शोणितम् M. 11, 208. शोणितोत्पादक 4,168. °त्व Suçr. 1,46,7. °वर्धन 47,3. शोणितास्थ्या-पन *blutstillend* 2,8,3. °स्राव Verz. d. B. H. No. 958. Verz. d. Oxf. H. 315,a,4 v. u. रेतःशोणितयोरियं परिणतिर्यद्धर्म्म Spr. (II) 3800. R. 2,108, 11. Vasiṣṭh. Bpn. S. 76,1. श्वेत Hariv. 8445. plur. 9349. R. 3,1,24. पूय-शोणितैः M. 5,123. पूयशोणितम् 3,180. मांसशोणितम् gaṇa गवाश्वादि zu P. 2,4,11. Kathâs. 22,233 (°शोनित gedr.). am Ende eines adj. comp. (f. आ): उपरतशोणिता (ein menstruirendes Weib) Gobh. 2,5,6. MBh. 4, 2019. 7,3388. हिम° (कृष्णमृगः पक्षः) R. 2,56,22. संभुष्क° 3,26,8. पीत-शोणिताः षड्लताः Kathâs. 50,8. स° (कलङ्क) Vasiṣṭh. Bpn. S. 89,3. — 2) *Baumsaft, Harz* Suçr. 2.324,2. — Vgl. ग्रीव°, वात°.

शोणितचन्दन n. *rother Sandel* Râjan. im ÇKDr.

शोणितत्व n. nom. abstr. zu शोणित 1) MBh. 14,371.

शोणितपित्त n. = रक्तपित्त Suçr. 2,238,19. davon °वस् adj. *mit dieser Krankheit behaftet* 472,8.

शोणितपुर n. N. pr. der *Stadt des* Asura Bâṇa Trik. 2,1,17. H. 977. Harîv. 3135. 9793. 9824. VP. 593. Bhâg. P. 10,62,22. umschrieben शोणिताख्यं पुरम् 4. पुरं °माह्वयम् Harîv. 9825; vgl. रुधिरे पुरे 9823.

शोणितमेहिन् adj. *Blut harnend* Suçr. 1,272,20. 2,78,9.

शोणितशर्करा f. = मधुशर्करा Ausw. 84.

शोणितात्त (शोणित + घत *Auge*) m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,15.

शोणितार्बुद (शोणित + ब्र°) n. *Blutbeule* (ein प्रकोप) Suçr. 1,298, 9. 299,12; vgl. 2,124,17.

शोणितार्शस् (शोणित + ब्र°) n. *Blutknoten*, eine Krankheit des Augenliedes, Wise 298. Suçr. 2,308,2; vgl. 309,19.

शोणितार्शिन् adj. *an Blutknoten leidend* Vijnâneçvara bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,195.

शोणिताह्वय (शोणित + घा°) n. *Saffran* Ratnam. 134.

शोणितिन् s. वात°.

शोणितोत्पल n. (!) fehlerhaft für शोणितोपल ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut.

शोणितोद (शोणित + उद) m. N. pr. eines Jaksha MBh. 2,399.

शोणितोपल (शोणित + उ°) n. (!) *Rubin* Râéân. bei Wilson; शोणोपल ÇKDa. nach ders. Aut.

शोणिमन् (von शोण) m. *Röthe:* अधर° Gît. 12,18. Naish. 22,53. Bhâg. P. 1,11,2.

शोणोपल (शोण + उ°) m. *Rubin* Râéân. im ÇKDa.

शोण्ड und शोण्डी s. u. शौण्ड.

शोथ (von श्रु = श्वा) m. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,4. *Anschwellung, Aufgedunsenheit;* eine Klasse von Krankheiten Wise 241, wo die Arten nach Kâraka aufgezählt worden. AK. 2,6,2,2. H. 468. Suçr. 1,50,10. 102,11. 304,4. 2,4,10. Verz. d. Oxf. H. 313,*b*,30. fgg. 314,*a*,2. fgg. 316, *b*,4. 357,*a*,No. 849. fg. °रोग Çiçup. Sâlu. 1,7,47. am Gaumen 78. am Ende eines adj. comp. f. घा Vop. 4,17. — Vgl. शोफ (im Kâraka oft v. l. für शोथ) und श्वयथु.

शोथक m. = शोथ Çârṅg. im ÇKDa.

शोथकृत् adj. *Anschwellungen verursachend;* m. *Semecarpus Anacardium Lin.* (s. भल्लातक) Ratnam. 68. — Vgl. शोथकृत्.

शोथघ्नी f. *Boerhavia procumbens Roxb.* (*Anschwellungen vertreibend*) AK. 2,4,8,14. Ratnam. 25. *Desmodium gangeticum* Râéân. im ÇKDa.

शोथजित् m. *Boerhavia procumbens Roxb.* (*Anschwellungen vertreibend*) Trik. 2,4,31.

शोथकृत् m. = शोथकृत् Ratnam. im ÇKDa.

शोध (von शुध्) m. *Reinigung* Vop. in Daśrûp. 22,70. — Vgl. उ:°.

शोधक nom. ag. 1) *reinigend, Reiniger* R. Gorr. 2,90,27. यशो रुद्र-यशोधकम् Verz. d. Oxf. H. 252,*b*, No. 626. — 2) m. *Subtrahend* Colebr. Alg. 363. — 3) f. शोधिका *eine rothe Varietät von Panicum italicum* H. 1177. — 4) n. *eine best. Erdart* (कङ्कुष्ठ) Râéân. im ÇKDa. — Vgl. मार्ग°.

शोधन 1) adj. *reinigend* (eig. und übertr.) Suçr. 1,31,14. 132,13. कल्क 19. 133,5. द्रव्य 6. 8. 10. गणपूष Verz. d. Oxf. H. 304,*b*,41. इन्द्र-व्रतसङ्ग्रे कायशोधनम् Spr. (II) 1109. ऐन्द्र M. 11,125. — 2) m. *Citronenbaum* Râéân. im ÇKDa. — 3) f. ई *a) Besen* AK. 2,2,18. H. 1015. — *b)* Bez. zweier Pflanzen: = ताम्बली und नीली Râéân. im ÇKDa. — 4) n. *a) Mittel der Reinigung* Suçr. 2,8,19. यज्ञानुक्तं तूतार्थं शोध्यं वाप्याम् शोधने: M. 11,160. कर्ण° *Werkzeug zum Reinigen des Ohrs* Vîsân. 1,25, 35. शोधनादिगणीय (अध्याय) Verz. d. Oxf. H. 304,*b*,15. — *b) das Reinigen, Reinigung, das Bereinigen* (eig. und übertr.) Daśrûp. 22,26. Nir. 4,16. Kâty. Çr. 6,1,18. Suçr. 1,63,19. 2,3,2. 8,19. कर्तव्यमूर्ध चाधश शोधनम् 25,7. 231,6. अध:° 345,4. कूपतीर्थानां मार्गाणां शिबिरस्य च Kâm. Nîtis. 10,6. भवन° 7,37. der Metalle u. s. w. Verz. d. B. H. No. 965. 969. 993. 1374. मांसादि° Verz. d. Oxf. H. 95,*a*,2. काय° Spr. (II) 2277. भ्रुव: MBh. 1,2508. R. 2,77,5. आत्मन: Mîm. P. 35,38. चेत:° Spr. (II) 2329. *das Reinigen von einer Anklage* R. 7,95,6. *das Corrigiren, Verbessern* ÇKDa. — *c) das Reinigen* so v. a. *Entfernen:* कण्टकानाम् M. 1,115. 9,283. कण्टक° MBh. 12,3174. Kâm. Nîtis. 6 in der Unterschr. 13,47. 18,22. Spr. (II) 3712. विषाणाम् Verz. d. B. H. No. 969. — *d) das Subtrahiren* ÇKDa. — *e) das in's-Reine-Bringen, Untersuchung, Prüfung:* मित्रेडामीनरिपूणाम् मण्डल° Kâm. Nîtis. 8,66. दुर्ग° Hit. 97,15. 112,9. न मासतिथिवारादिशोधनं सूर्यपर्वणि Milamâsat. im ÇKDa. लेख्य° ÇKDa. तत्त्वपदार्थ° Vedântas. (Allah.) No. 94. — *f) faeces* Çabdar. im ÇKDa. — *g) Eisenvitriol* Râéân. im ÇKDa. — Vgl. ऊर्ध°, धातु°, पाप°, मुख°, वक्त्र°, शक्ति°.

शोधनक (von शोधन) m. *ein Diener, der ein Haus rein und in Ordnung zu halten hat,* Mnâm. 136,1. fgg.

शोधनबीज n. *der Same einer Croton-Art* (जयपाल) Râéân. im ÇKDa.

शोधनीय (vom caus. von शुध् und von शोधन) 1) adj. *a) zu reinigen* Kull. zu M. 5,108. — *b) abzutragen, zu bezahlen* Kâtyâs. 53,141. — *c) zur Reinigung dienend:* रसक्रिया Suçr. 2,9,7. वस्ति 33,8. — 2) n. *Mittel zur Reinigung* Suçr. 2,241,15. 300,15.

शोधयितृ nom. ag. *Reiniger* H. an. 3,64.

शोधयितव्य adj. *zu reinigen* Sadon. P. 4,19,*b* (सो° gedr.).

शोधिका s. u. शोधक.

शोधिन् adj. *reinigend* Suçr. 2,240,17. — °शोधिनी Daçak. 77,16 fehlerhaft für °शोभिनी, wie die ed. Calc. liest. Vgl. मुख°, वक्त्र°.

शोध्य 1) adj. *a) zu reinigen* (eig. und in rituellem Sinne): मृत्तोयै: शुध्यते शोध्यम् M. 5,108. 9,282. 11,160. 226. Jiân. 3,82. *zu verbessern, zu corrigiren* Verz. d. Oxf. H. 171,*a*,11. — *b) wovon Etwas abzuziehen —, zu subtrahiren ist* Utpala zu Varâh. Bṛh. 7,5. — 2) n. *Blut* H. ç. 127 (मोध्य die Hdschr.). — Vgl. नि:°.

शोनाप् und शोनित fehlerhaft für शोणाप् und शोणित.

शोपारीपाक m. *ein best. Decoct* Verz. d. Oxf. H. 319,*b*, No. 788. Vgl. beng. सुपारी *Areca Catechu* und शोफारि.

शोफ m. = शोथ, श्वयथु AK. 2,6,2,3. H. 468. Hall. 2,447. *Geschwulst, Geschwür, Beule* Suçr. 1,45,17. 47,18. 51,7. सर्वांगसम्भवी दोषसंघात: शरीरैकदेशोत्थित: शोफ इत्युच्यते 61,3. 2,4,9. fgg. 132,19. fgg. शोफान्वित, शशोफयुत 312,18. 326,19. 345,1. Verz. d. B. H. No. 975. Verz. d. Oxf. H. 306,*a*,37. Kathâs. 63,186. am Ende eines adj. comp. f. घा Sidd. K. zu P. 4,1,54. स्थूलशोफता Suçr. 1,366,4. — Vgl. दृत्त°.

शोफघ्नी f. Bez. zweier Pflanzen: = शालपर्णी und रक्तपुनर्नवा Râǵan. im ÇKDn.

शोफनाशन m. eine best. Pflanze, = मील ebend.

शोफहारिन् m. desgl., = वनवर्वरिका Râǵan. im ÇKDn. u. d. letzten Worte.

शोफहृत् m. = भल्लातक Bhâvapr. im ÇKDn.

शोफारि (शोफ + अरि) m. eine best. Pflanze, = कृष्णिकन्द Dhanv. in Nigh. Pr.

शोफिन् (von शोफ) adj. mit einem Geschwür behaftet Suçr. 2,134,5.

शोभ (von 3. शुभ्) 1) m. a) Bez. einer Klasse von Göttern H. ç. 2. — b) N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,266. — 2) f. शी a) schmuckes Aussehen, Pracht, Schönheit, Anmuth AK. 1,1,2,19. 3,4,24,158. 29,227. H. 1512. Med. bh. 9. Halâ. 2, 410. 5, 27. 74. TS. 3,3,2,2. शोभार्थम् MBh. 2,70. न शोभार्थाविमौ बाहू R. 2,23,31. चक्रे शोभां पराम् R. Gorr. 2,5,10. Mnch. 53. 60. Râgh. 2,27. 16,59. Çiç. 18. Spr. (II) 1592. 3790. Kathâs. 25,171. 34,13. 43,215. 46,173. Râǵa-Tar. 5,246. Paṇḍar. 1,1, 78 (शोभा vom Folgenden zu trennen). 2,6,33. Bhatt. 2,14. शोभी न विभर्ति von einem Argument so v. a. sich übel ausnehmen Sarvadarçanas. 130,10. Am Ende eines adj. comp. (f. या) R. 2,71,36. Ragh. 9,80. Spr. (II) 347. 4896. Varâh. Bṛh. S. 24,17. Kathâs. 24,72. Râǵa-Tar. 4,111. Daçak. 63,15. Bhâg. P. 3,15,19. शोभा unter den अयत्नजा अलंकाराः der Weiber H. 509. Daçak. 2,32. Sâh. D. 129. unter den सत्त्वजाः पौरुषा गुणाः Daçak. 2,9. 10. Sâh. D. 89. fg. elegante Redeweise Sâh. D. 434. 437. शौर्य° so v. a. glänzender —, ungewöhnlicher Heldenmuth Comm. zu Daçak. 2, 10. दृतता° (so ist zu lesen) ebend. सौभाग्य° Spr. (II) 3817. सुख° Hit. 115,17. प्रीति° Çuk. in LA. (III) 35,10. — b) Schein, Farbe Spr. (II) 1073. Varâh. Bṛh. S. 52,2. — c) Wunsch (इच्छा) Med. — d) ein best. Metrum: 4 Mal ⏑ – – – – – –, ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ – – –, – ⏑ – – – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XV,3). Khandoh. 111. — e) Gelbwurz und = गोरोचना (ein gelbes Pigment) Râǵan. im ÇKDn. — f) N. pr. einer Hirtin Brahmavaiv. P. im ÇKDn.

शोभकृत् (शोभ = शोभा + कृत्) 1) m. u. N. des 36ten (37ten) Jahres im 60jährigen Jupitercyclus Varâh. Bṛh. S. 8,41. Verz. d. Oxf. H. 332, a, 2. — 2) marking-nut plant Çabdâmṛtak. bei Wilson fehlerhaft für शोधकृत्.

शोभगात m. N. pr. eines Fürsten Târân. 262.

शोभन (von 3. शुभ्) gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134 (paroxyt. संज्ञायाम्). 1) adj. (f. या) a) schmuck, schön, prächtig AK. 3,2,1. H. 1444. an. 3,627. Med. n. 144. Halâ. 5,16. वासम् Çat. Br. 3,3,2,3. Kâty. Çr. 7,7,3. Jüngling, Jungfrau Çat. Br. 13,4,2,7. 8. Âçv. Çr. 10,7,3. 4. Spr. (II) 4542. शोभने voc. f. MBh. 1,5971. 3,2157. R. 2,52,81. 95,12. 3,51,16. Kumâras. 4, 44. Bhâg. P. 4,3,16. Kâbe Âçv. Gṛhy. 2,10,3. Nir. 9,20. तीर्थानि MBh. 1,7838. गुरुः R. 3,76,24. 4,44,38. Kathâs. 15,124. WebER, Kṛshṇaj. 270. 277. Bhâg. P. 3,2,27. Paṇḍar. 216,8. परम° MBh. 3,2218. 2795. 4,262. R. 1,34,24. 3,79,30. मु° Kathâs. 24,31. Weber, Kṛshṇaj. 269. Paṇḍar. 1,6.17. सर्वाङ्ग° an allen Gliedern Kâç. 106 (f. ई nur hier). R. 1, 9,7. 5,38,3. श्वेतचामर° prächtig —, schön durch Paṇḍar. 1,11,14. राकाशशिशोभना यामिनी Spr. (II) 5468. सव्रीडस्मितशोभना Bhâg. P. 4,25,25. 1, 15,18. — b) überh. vorzüglich, ausgezeichnet, vortrefflich, den Erwartungen und Wünschen entsprechend: स्तुति Nir. 2,24. स्वयोदितं शोभनमेव Bhâg. P. 4,3,16. ब्रुवाणे बकुशोभनम् 6,17,10. यन्मयानं सुशोभनम् MBh. 4,428. यन्नाति शोभनम् Spr. (II) 3693. कुम्भकारा: R. 2,83,12 (90,12 Gorr.). R. Gorr. 2,90,18. 20. भियध् AV. Paipp. 4,46, Comm. ज्ञाति MBh. 13,429 भूति Spr. (II) 3279. तत्र भौनं हि शोभनम् 4531. कल्पना Çâṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 250. प्रज्ञा Bhâg. P. 4,30,10. नृजन्माखिलजन्मशोभनम् vorzüglicher als 5,13,21. तेन सार्धमविच्छेदः स्थानं परमशोभनम् Paṇḍar. 1,1,21. शोभनम् als Ausruf neben साधु Mârk. P. 116,67. धान्यार्थ Varâh. Bṛh. S. 5,30. वृष्टि 9,30. 24,23. 29,11. फल 47,1 (घ°). Jahr 8,26. 40. गुणप्रभावशीलेन चारित्रेण च ausgezeichnet durch MBh. 13,1392. स्वर्गे दिव्यस्पर्शनशोभने Spr. (II) 3253. समिति° (so ist zu schreiben) ausgezeichnet im Kampfe R. 4,18,12. साक्ष्य° (°शोभिन् MBh. 3,15788) Draup. 9,12. तदपि न शोभनं विभाति schlecht, unrichtig, falsch Sarvadarçanas. 166, 8. (यदि) संतापयसि मां भूयः संतापो तत्र शोभनम् nicht edel R. 5,31,24. — c) Gutes versprechend, faustus, boni ominis Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 94. fg. Râǵa-Tar. 3,427 (Gegens. भीम). Varâh. Bṛh. S. 46,93. 51,4. लग्न Kathâs. 36,53. 51,180. यक्ष Mârk. P. 123,4. स्वप्न (घ°) Suçr. 1,111,14. — 2) m. a) Bez. Agni's beim Çuṅgâkarman Gṛhyâs. 1,3. — b) N. eines Joga (विष्कम्भादि ÇKDn.) H. an. Med. Kosuṭumbaradîpa im ÇKDn. — c) ein Planet Duhk. im ÇKDn. — 3) f. या a) Gelbwurz und = गोरोचना (ein gelbes Pigment) Râǵan. im ÇKDn. — b) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2624. — 3) n. a) Heilbringendes, Heil, Wohlfahrt, Glück: यत्र किं शोभनं पत्त्वं सक्सैन्यो विनङ्क्ष्यसि R. 3,45,17. Mârk. P. 58,57 (Gegens. भय). यात्प्रोति शोभनम् Bhâg. P. 4,20,11. 33. Paṇḍar. 126,21. न शोभनमापतितम् 143,22. 155,21. दुःखितानां सपत्नीनां न करिष्यति शोभनम् wird ihnen nichts Gutes thun R. 2,31,13. न शोभनं कृतं मया । पत्तस्य विद्यामं गत्वाभिप्रायो निवेदितः nichts Ersprossliches Paṇḍar. 22,9. कुर्वतामपि पापानि नैव कार्यमशोभनम् man soll kein Leid anthun Spr. (II) 3869. अशोभनं यो ऽहम् u. s. w. es ist ein Unglück, dass ich u. s. w. R. 2,39,32. — b) moralisch Gutes: शोभनान्याचरन् Spr. (II) 261. त्यजता भवता पत्नीं न शोभनमनुष्ठितम् Mârk. P. 71,11. यमीयं किमकारि शोभनम् Bhâg. P. 5,19,21. घ° etwas Böses R. 2,38,8. — c) कश्यपस्य शोभनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,213,a. — d) Lotusblüthe Çabdâm. im ÇKDn. — Vgl. कर्ण°, वन°, शोभनेय.

शोभनक (von शोभन) m. = शोभाञ्जन Çabdâm. im ÇKDn.

शोभनवती (wie oben) f. N. pr. einer Stadt Wilson, Sel. Works 2,6.

शोभयितर् (vom caus. von 3. शुभ्) nom. ag. Ausschmücker: तनू° Nir. 6,19.

शोभव्यूढ (?) m. N. pr. eines Gelehrten Târân. 219.

शोभाकर 1) adj. Schmuck verleihend: धोकारस्य मुखे ऽतिशोभाकरो ऽभवत् MBh. 8,1500. — 2) m. N. pr. eines Autors Notices of Skt Mss. 7.

शोभाकोटि (°कोटि?) Verz. d. Oxf. H. 90,a,10.

शोभाञ्जन (Schönheitssalbe) m. Moringa pterygosperma Gaertn. (das Oel aus dem Samen der Behennuss wird zu Salben benutzt, weil es nicht ranzig wird) Ainslie 1,175. AK. 2,4,3,11. Trik. 2,4,10. H. 1134. Ratnam. 275. MBh. 13,4364. °कषाय Suçr. 2,89,12. 325,14. 472,1. °क 54,17.

शोभावती (von शोभा) f. 1) *ein best. Metrum, 4 Mal:* – ⏑ – ⏑ – ⏑ ⏑ – ⏑ ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2, 161 (IX, 4). — 2) N. pr. einer Stadt Kathās. 78, 5. 80, 4. 97, 4. 104, 17. Verz. d. Oxf. H. 152, *b*, 25.

शोभासिंह m. N. pr. eines Fürsten Kshitîç. 43, 5.

शोभिन् (von 3. प्रभु und शोभा) adj. 1) *schmuck, schön, prächtig:* मध्ये-नातीव शोभिना MBh. 3, 1826. केशबन्ध 4, 190. am Ende eines comp. *a) prangend —, sich schön ausnehmend —, sich auszeichnend in, an:* गल° (कौस्तुभ) Weber, Kṛshṇaj. 303. ग्राव्ण° MBh. 3, 15788. 4, 1122. समर° (इषु) 7, 5401. पादपा वनशोभिनः Harîv. 3942. — *b) prangend —, geschmückt mit:* वपाट्टालक° MBh. 3, 11699. वनशोभिनः (°शोभिताः die neuere Ausg.) पर्वताः Harîv. 9650. विग्राभिज्ञान° MBh. 1, 2742. R. 2, 73, 19. 83, 26. 5, 10, 7. 42, 13. Megh. 58. Raghu. 3, 52. 6, 10. 8, 12. 9, 16. 11, 13. 15, 26. Vikr. 137. Spr. 2921. Kathās. 4, 7. 34, 254. 43, 13. 116, 82. Râǵa-Tar. 1, 283. 2, 27. 117. 4, 69. 5, 358. 384. Daçak. 77, 16 (mit der ed. Calc. शोभिनी st. °शोधिनी zu lesen). Weber, Kṛshṇaj. 283. Brahma-P. in LA. (III) 55, 2. Bhâg. P. 3, 15, 20. Verz. d. Oxf. H. 57, *b*, 8. 121, *a*, No. 212. — 2. am Ende eines adj. comp. statt des einfachen शोभा *Pracht, Schönheit:* चतुरस्र° = °शोभ Kumâras. 1, 32. 37. 2, 29.

शोभिष्ठ adj. superl. zu प्रुभ RV. 7, 56, 6. 8, 3, 21.

शोम् s. u. शंस् 1).

शोली f. = वनकरिका Râǵân. im ÇKDa.

1. शोष (von 1. प्रुष्) 1) m. *a) das Austrocknen, Eintrocknen, Verdorren, Trockenheit* H. an. 2, 574. Med. sh. 29. Suçr. 1, 118, 8. 119, 16. 165, 21. 192, 21. जलधाराश्च ताः शोषं जग्मुः MBh. 1, 8249. Harîv. 9732. R. Gorr. 2, 15, 29. Spr. (II) 914. क्रूद° Kumâras. 4, 39. Varâh. Bṛh. S. 46, 47. 97, 5. Pañkat. 51, 5. 76, 11. 159, 13. पादपः शोषमागतः MBh. 13, 268. Varâh. Bṛh. S. 19, 8. 55, 14. मुखं चास्यागमच्छोषम् R. 2, 36, 10. (यस्य) चिन्तया ह्रदं शोषः (so v. a. मुखशोषः) Mârk. P. 43, 18. Râǵa-Tar. 5, 110. शोषाधारी शिरीषस्य 6, 291. भुवः शोषे Varâh. Bṛh. S. 58, 9. *das Vertrocknen* (eines Leichnams) Bṛh. 23 (23), 12. तेन रोगेण राज्ञोसौ क्षयु-शोषो ऽग्र वर्तते Kathās. 29, 137. — *b) Schwindsucht* AK. 2, 6, 2, 2. H. 463. H. an. Med. Hall. 2. 147. Kâraka in Verz. d. Oxf. H. 24. मेशो-षणाद्रसादीनां शोष इत्यभिधीयते Suçr. 2, 445, 5. 446, 7. 9. 447, 2. Varâh. Bṛh. 23 (23), 3. personificirt als böser Dämon Varâh. Bṛh. S. 53, 45. 68. — 2) adj. *trocken machend, austrocknend:* कर्णकषाय° (so v. a. *entfernend*) Bhâg. P. 2, 6, 43. घात्म° 10, 54, 49. — Vgl. तालु°, ड्°, मुख°.

2. शोष m. VS. 2, 32 nach Mahîdh. so v. a. ग्रीष्म; vielmehr so v. a. प्रूष 2) *b*), wie Gobh. 4, 3, 18 statt dessen steht, und प्रुष्म TS. 3, 2, 5, 3.

3. शोष Verz. d. Oxf. H. 234, *b*, 30 wohl fehlerhaft für दोष; vgl. 27.

शोषक adj. *versiegen machend* so v. a. *vernichtend:* मद्° Bhâg. P. 5, 18, 25. — Vgl. तृण°.

शोषण 1) adj. (f. ई) *trocknend, austrocknend* Nir. 2, 24. Suçr. 1, 31, 15. 156, 15. 2, 421, 3. पत्त्र R. Gorr. 1, 30, 14 (29, 16 Schl.). 57, 7 (56, 8 Schl.). पत्त्राणां शोषणेन महता Çiç. 58. लोक° Ragh. 12, 29. समुद्रजल° MBh. 1, 1396. गात्र° (दुःख) 12, 900. क्रूद्य° (व्याधि) 1, 4704. R. Gorr. 2, 77, 32. *versiegen machend* so v. a. *entfernend, verscheuchend:* घक्लिताय° Bhâg. P. 1, 11, 10. वशोषदोषामय° Verz. d. Oxf. H. 234, *b*, 27. — 2) m. *a)* N. eines Agni Harîv. 10465. — *b)* N. eines der 5 Pfeile des Liebesgottes Tantr. 1, 1, 40. Verz. d. Oxf. H. 184, *b*, No. 419. 190, *b*, 39. Ver. in LA. (III) 5, 19. Schol. zu Ghṛ. 8, 1. — *c)* = श्योनाक Bhâvapr. im ÇKDa. — 3) n. *a)* intrans. *das Eintrocknen, Verdorren* H. an. 2, 574. Med. sh. 29. Dhârtp. 23, 10. 26, 74. मत्स्यानां वानाम् Maitrâyaṇ. 1, 4. कासार° LA. (III) 91, 22. von Baumen Varâh. Bṛh. S. 46, 28. — *b)* trans. *das Trocknen, Trockenmachen, Dörren, Austörren* H. 394. Tattvas. 13. Suçr. 1, 152, 8. घगस्त्येन विना को हि शक्तो ऽन्यो ऽर्णवशोषणे MBh. 3, 8772. Pañkat. 82, 8. 9. Verz. d. Oxf. H. 78, *a*, No. 133. Bhâg. P. 3, 26, 40. मीमस्य R. 2, 96, 38 (103, 37 Gorr.). शरीरस्य Spr. (II) 5543. *das Abtrocknen* Pañkat. 3, 9, 12. — *c) trockener Ingwer* Râǵân. im ÇKDa. — Vgl. शरीर°.

शोषणीय adj. *was trocken gemacht werden muss:* घवचूर्णितानि भा-नोर्मरीचिभिः शोषणीयानि Varâh. Bṛh. S. 77, 23.

शोषयितृ nom. ag. vom caus. von 1. प्रुष् Nir. 5, 18.

शोषमंभव n. *die Wurzel des langen Pfeffers* Râǵân. im ÇKDa.

शोषापहा (शोष + घ°) f. *eine best. Pflanze,* = क्षीरतनक Râǵân. im ÇKDa.

शोषिन् 1) adj. *a) eintrocknend* d. i. *hinsiechend, schwindsüchtig:* शोक° Suçr. 2, 446, 12. ज्वर° 14. 1, 45, 10. कफ° 76, 9. 80, 19. 111, 2. 175, 18. 202, 16. 2, 404, 1. Varâh. Bṛh. 23 (21), 8. — *b) austrocknend, austörrend:* किं नो मांसेन प्रुष्टेण परिक्लिष्टेन शोषिणा MBh. 9, 1707. घति° (मैथुन) Suçr. 2, 351, 20. क्रुच्छ्रोरुमनः° (दुःख) R. Gorr. 2, 76, 28. क्रूद्यकुसुम° Uttarar. ed. Cowell 83, 16 (fälschlich °शोधिन् die ältere Ausg.). — 2) f. शोषिणी Bez. einer der 5 Dhâraṇâ (s. u. धारणा 3) *c*), *die austrocknende, die des Aethers* Verz. d. Oxf. H. 237, *a*, 7.

शोष्य adj. घ° *nicht trocknend, unversieglich* Bhag. 2, 24. Varâh. Bṛh. S. 46, 47. 54, 14. 78. 97, 5. — R. 2, 91, 20 fehlerhaft für शोष्य, wie die ed. Bomb. hat.

शोस् a particle of reproach or contempt Wilson nach Çabdârthas.

शौक (von प्रुक) m. 1) *Papageienschwarm* gaṇa क्षुद्रादि zu P. 4, 2, 45. AK. 2, 5, 43. H. 1415. an. 2, 21. Med. k. 38. — 2) *quidam eorundi modus* H. an. Med. — *sorrowfulness* (dies ist शोक) Wilson ohne Angabe einer Aut.

शौकि m. patron.; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 19.

शौकेर्य m. patron. von प्रुक gaṇa प्रुभ्रादि zu P. 4, 1, 123.

शौक्त (von प्रुक्ति) n. N. eines Sâman Ind. St. 2, 240, *b*. Pañkav. Br. 12, 5, 12. Liṭ. 6, 12, 1.

शौक्तिक adj. von प्रुक्त 1) *a)* Kâraka 2, 2.

शौक्तिकेय (von प्रुक्ति) n. *Perle* Halâj. 3, 42. Râǵân. im ÇKDa.

शौक्तेय (wie oben) n. dass. Râǵân. im ÇKDa.

शौक्र (von प्रुक्र) adj. (f. ई) *zum Planeten Venus in Beziehung stehend* Varâh. Bṛh. S. 8, 17. 18, 8. 12. 24, 7.

शौक्रायण m. patron. von प्रुक्र; pl. Saṁsk. K. 184, *b*, 2.

शौक्रि adj. (चतुर्धर्चेषु) von प्रुक्र gaṇa मतंगमादि zu P. 4, 2, 80.

शौक्रेर्य m. patron. von प्रुक gaṇa प्रुभ्रादि zu P. 4, 1, 123. pl. N. eines kriegerischen Stammes P. 5, 3, 117. Davon शौक्रेय m. *ein Fürst der Çaukreja* ebend. शौक्रेयी *eine Fürstin der Ç.* 4, 1, 178, Schol.

शौक्र्य n. nom. abstr. von प्रुक्र gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123.

शौक्ल (von प्रुक्ल) 1) adj. *zu Reinen in Beziehung stehend:* जन्मन्

eine Geburt von reinen Eltern Bhāg. P. 4,31,16. — 2) n. N. eines Sāman Ind. St. 3,240,*b*. fehlerhaft für शौक्र.

शौक्तिकेय m. *ein best. Gift* AK. 1,2,4,11. wohl nur fehlerhaft für शौल्विकेय.

शौक्ल्य (von शुक्ल) n. *Weisse* P. 5,1,123. Vārtt. Bhāṣ. S. 72,2. ब्रह्मा शौक्ल्यं केशादौ AK. 2,6,4,61 शुक्लपक्षस्य Nīlak. 66. *Heller Schein:* des Mondes Vārtt. Bhāṣ. S. 4,3. 4. Gobhila. Çrāddhakalpa. 4 fgg. ष्य° P. 5, 1,119, Vārtt. 9, Schol.

शौङ्ग m. patron. von शुङ्ग (भरद्वाज) P. 4,1,117. Āçv. Çr. 12,13,2. Devabhūti Hall in der Einl. zu Viçvāv. 53.

शौङ्गायनि m. patron. von शौङ्ग Ind. St. 4,372.

शौङ्गि m. patron. von शुङ्ग P. 4,1,117, Schol. gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138.

शौङ्गीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,21.

शौङ्गीय adj. von शौङ्गि gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138.

शौङ्गेय m. ein N. Garuḍa's Daçak. 93,6.

शौङ्ग्य m. patron. von शुङ्ग Pāraskargṛ. in Verz. d. B. H. 53,22. 56, 26 (शौङ्ग्य die Hdschr.). 59,27.

शौच (von शुचि) 1) m. patron.: Āhneja Taitt. Ār. 2,13. — 2) n. nom. abstr. P. 5,1,124, Schol. *Reinheit, Reinigung* (Taik. 3,3,244), *Lauterkeit* (eig. und uneig.) H. 82. शौचं द्विविधं बाह्यमाभ्यन्तरं च Comm. zu Jogān. 2,32. तापायःक्षारोत्थानाम् M. 5,114. 115. 6,52. Spr. 3029. शारीरं M. 5,110. 139. धकृत्वा पादयोः शौचम् MBh. 3,2256. शौचं प्रचक्रतुः (बलेन) R. 3,12,2. Jāān. 1,17. काके शौचं कुतः दृष्टं मृतं वा Spr. (II) 1618. यथार्थं कुञ्जरशौचवत् *unnütz wie das Baden eines Elephanten* Bhāg. P. 6,1,10. 7,15,26. कृताश° *Reinigung durch Feuer* Spr. (II) 5497. *Reinheit in rituellem Sinne* Āçv. Çr. 1,1,10. 12,2. M. 1,112. 2,61. 69. 3, 126. 193. 235. 4,148. 178. 5,94. 97 u. s. w. मोमः शौचं दृढो स्त्रीणाम् Jāān. 1,71. Vārtt. Bhāṣ. S. 74,7. समीमांस्यानि शौचानि स्त्रीषु बालातुरेषु च Tithyād. bei Weber, Kasaṇḍ. 268. शौचाचारः Jāān. 1,15. Spr. (II) 382. °शालिन् Rāja-Tar. 6,69. वाक्शौचं कर्मशौचं च पञ्च शौचं प्रकीर्तितम् । त्रिभिः शौचैरुपेतो यः स स्वर्गी नात्र संशयः ॥ MBh. 3,13431. सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम् Spr. 3206. वाचा°, मनसः शौचम् 4980. आत्म° Bhāg. P. 3,23,2. *Lauterkeit der Gesinnung, Reinheit im Handel und Wandel*, insbes. *Ehrlichkeit in Geldsachen* Bhag. 13,7. MBh. 3,2163. 2462. 13,310. R. 2,44,8. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,13. Spr. 2992. 3302. (II) 3167. Suçr. 1,6,9. 126,18. 192,4. Vārtt. Bhāṣ. S. 15,5. 10. 18. 16, 23. 26. Am Ende eines adj. comp. (f. या): कृत° eig. und in rituellem Sinne M. 4,93. 7,145. MBh. 3,2003. R. 2,77,1. अपरिज्ञातशौचायां भूमौ MBh. 1,6370. — Vgl. ष्य° (*Unehrlichkeit* Spr. (II) 328), धर्म° (auch Kām. Nītis. 5,16), पक्षौच, पाद° (Jāān. 1,209), प्रेत°.

शौचक n. = शौच 2): ष्य° *Verunreinigung* MBh. 12,2656.

शौचत्त (?) n. = शौच Hit. ed. Müller 1,194 (nach Benfey).

शौचद्रव्य (von प्रशुचद्रव्य) m. patron. des Sunītha RV. 5,79,2.

शौचवत् (von शौच) adj. *rein* (eig. und übertr.) Jāān. 3,137. MBh. 13,5347.

शौचादित्य m. patron. Nidānas. 3,4.

शौचिकर्णिकै adj. (चतुर्थ्यर्थे) von शुचिकर्णा gaṇa कुमुदादि 2. zu P. 4,2,80.

शौचिन् (von शौच) adj.: ष्य° *unrein* Kull. zu M. 5,84.

शौचिवृत्त m. pl. pl. zum sg. शौचिवृत्ति Nidānas. 3,2. 4.

शौचिवृत्ति m. patron. von शुचिवृत्त P. 4,1,81. Nidānas. 2,12. 3,6. 7. 8,4. 6. 8,8. °वृत्तौ f. P. 4,1,81.

शौचिवृत्त्यी f. zu शौचिवृत्ति P. 4,1,81.

शौचेर्य (von शुचि oder शौच) m. 1) *Wächter* Çabdar. im ÇKDr. — 2) patron. TS. 7,1,10,2. Çat. Br. 11,5,8,1.8.

शौचोदक (शौच + उ°) n. *Reinigungswasser* Jāān. 3,6 (wohl न शौ° zu lesen).

शौट्, शौटति (गर्व) Dhātup. 9,1. — Vgl. शौड्.

शौटीर Uṇādis. 4,30. 1) adj. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. *a) männlich, stolz, Selbstgefühl bestitzend* MBh. (nach der Lesart der ed. Bomb.) 5,5609. 12,8168. 8605. R. Gorr. 2,20,7. वृत्त° *der stolz sein kann auf* 93,3. विक्रम° MBh. 3,15175 (nach der Lesart der ed. Bomb.). ष्य° *unmännlich:* वाक्य R. Gorr. 2,20,7. शौटीर = वीर् Uṇādis. — *b) freigebig* Uṇādis. — 2) n. wohl nur fehlerhaft für शौटीर्य *Männlichkeit, Stolz, Selbstgefühl* R. 3,48,6. 4,11,8. — Vgl. शौण्डीर.

शौटीरता f. in युद्ध° (nom. abstr. von युद्धशौटीर) so v. a. *Kampfweth* R. 3,33,39.

शौटीर्य (von शौटीर). n. nom. abstr. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. *Männlichkeit, Stolz, Selbstgefühl;* = शौर्य H. 739, v. l. = वीर्य Çabdar. im ÇKDr. MBh. 1,511. 9,3121. °मानिन् 8563. R. 3,59,8. Harīv. 10211. 11246 (an beiden Stellen शौण्डीर्य die neuere Ausg.). R. 5,71,6. वृत्त° *Stolz auf, ein Selbstgefühl in Bezug auf* 24,13. ष्य° MBh. 12,8605 nach der Lesart der ed. Bomb.

शौड्, शौडति = शौट् Vop. in Dhātup. 9,1.

शौड N. pr. eines Landes Rāja-Tar. 6,300 (zu lesen °शौडोड्रसंभवः).

शौण्डायनि m. patron. von शौण्ड gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

शौण्डेय m. patron. Rāja-Tar. 8,2890.

शौण्ड (von शुण्डा) 1) adj. *a) dem Branntwein ergeben, Trunkenbold;* = मत्त, लोल AK. 3,1,23. H. 436. an. 2,128. Med. ḍ. 26. MBh. 3,14720 (= पराभिभवसमर्थ Nīlak.). शौण्डैर्यथा पीतरसश्च कुम्भः 15671 (= शुण्डया विदितैर्गजैः Nīlak.). Mārk. P. 32,28. Hierher wohl शौण्डैभक्त = शौण्डानां विषयो देशः gaṇa देवकार्यादि zu P. 4,2,24. — *b) mit Leidenschaft an Etwas hängend;* mit dem im loc. gedachten Begriffe componirt P. 2,1,40. धृत° Schol. 6,2,2, Schol. *auf Etwas versessen:* युद्ध° MBh. 2,2675 (= दृप्त Nīlak.). 3,10255. Harīv. 7538. 13164. R. Gorr. 2, 125,14. रण° 5,82,19. MBh. 3,15329. आकृत° 7,65. — *c) geschickt —, erfahren in Etwas:* क्रतुक्रियाकाण्ड° Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,39. Bhāg. P. 10,61,4. 11,6,18. = विख्यात H. an. Med. (hier विख्याते zu lesen). — 2) m. *Hahn* H. ç. 190 (शौण्ड die Hdschr.). — 3) f. या fehlerhaft für शुण्डा *Branntwein;* am Ende eines adj. comp.: गतशौण्डा पानभूमिः R. Gorr. 2,125,11. — 4) f. ई *langer Pfeffer* AK. 2,4,2,15. H. an. शौण्डी st. शौ° zu lesen). Med. *Piper Chaba* (चवि) W. Hunt. H. an. Viçva im ÇKDr. — Vgl. द्राक्ष° (Rāja-Tar. 6,87), पान° (Kathās. 105,58. Bhatṭ. 8,31), मक्कशौण्डी.

शौण्डक s. मद्° und तृणशौण्डिका.

शौण्डता f. nom. abstr. zu शौण्ड 1) *b*): प्रज्ञापौढ्य° Rāja-Tar. 4,624.

शौण्डर्य n. = शौटीर्य Çabdaratnāk. bei Wilson. — Vgl. शौण्डीर्य.

शौण्डायनि (von शुण्डा) m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes gaṇa कु-

ञादि zu P. 4,1,98.

शौण्डायन्य m. ein Fürst der Caupâjana ebend.; vgl. 5,3,113.

शौण्डि adj. = शौण्ड 2) b): संयुग° Bhâg. P. 1,16,11 nach der Lesart der ed. Bomb.

शौण्डिक adj. = प्रौण्डिकादागत: P. 4, 3, 76. m. 1) *ein Brenner oder Verkäufer von berauschenden Getränken, Schenkwirth* AK. 2,10,10. Trik. 3,3,331. H. 901. Halây. 2,438. M. 4,216. 9,223. Jâân. 2,18. R. 2,83, 13 (90, 14 Gorr.). Varâh. Bṛh. S. 9, 34. 10, 17. 15, 22. 51, 22. 86, 31. Bṛh. 18, 3. Spr. (II) 1683. Paiśâcatantrakh. 20,b,3. 38,b,3. Schol. zu Kâty. Ça. 949,8. Kull. zu M. 4,84. शौण्डिकागार Verz. d. Oxf. H. 93,b, N. 1. f. ई 91,b,26. Spr. 3355. Als *eine Mischlingskaste* betrachtet: ततो गान्धिककन्यायां कैवर्तादेव शौण्डिकः । कैवर्तस्य च कन्यायां शौण्डिकादेव शौचिकः ॥ Pârâçarapaddh. im ÇKDa. — 2) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 13,2138 nach der Lesart der ed. Bomb., शौण्डीक ed. Calc.

शौण्डिकेय (von प्रौण्डिका) m. Bez. eines den Kindern schädlichen Dämons Pân. Gaṇ. 1,16.

शौण्डिन् m. = शौण्डिक 1) Çabdar. im ÇKDa. शौण्डिनी f. Spr. 3335, v. l. (II) 3498.

शौण्डीक s. u. शौण्डिक 2).

शौण्डीर 1) adj. = शौटीर 1) *a)* Dhanañgaja im ÇKDa. MBh. 3,15175 (विक्रम°). 5,5609. 12,8168. 8608 (die ed. Bomb. überall शौटीर). R. 2, 23,7. ध° *unmännlich, kein Selbstgefühl verrathend:* eine Rede R. 2,23,7. — 2) n. = शौटीर 2) Bhâg. P. 3,18,21.

शौण्डीर्य n. = शौटीर्य H. 739. Hariv. 10211. 11246 (an beiden Stellen nur in der neueren Ausg.). R. 7,16,36. Mṛicch. 55,24. 126,18. ध° 120, 21 (v. l. धशौटीर्य). MBh. 12,2603 (धशौटीर्य ed. Bomb.). चारित्र° R. 2,73,19.

शौण्डेय m. patron. oder metron.; pl. Saṁgh. K. 185,b,5.

शौण्डिन् (?) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,27.

शौढकर्णि m. patron. von प्रौढकर्ण Saṁgh. K. 184,b,5.

शौढात्तर (von प्रौढ + अत्तर) adj. *einen reinen Vocal* (ohne Anusvâra oder Consonanten) *betreffend* ṚV. Prât. 4,38. 11,20.

शौढोदनि (von प्रौढोदन) m. patron. Çâkjamuni's AK. 1,1,8,10. H. 237, Schol. Halây. 1,38. Vidagdhamukham. 1 in Haas. Anth. 269 (fälschlich सौ°) = Verz. d. Oxf. H. 215,a, No. 314 (fälschlich सौढोदनै: st. शौढोदनै:). Paṇkar. 4,3,137 (fälschlich प्रौढो°).

शौद्र (von प्रौद्र) adj. *einem Çûdra eigen, ihm gehörig* u. s. w. Ait. Br. 7,17. वर्ण 8,4. Çat. Br. 6,4,4,9. 14,4,3,23. कर्मन् MBh. 12,2248. 13, 3143. यज्ञ 6213. von *einer Çûdrâ geboren* M. 9,160.

शौद्रकायण m. patron. von प्रौद्रक gaṇa मद्रादि zu P. 4,1,110.

शौद्रायण m. patron. von प्रौद्र gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54. शौद्रायणीभक्त = शौद्रायणानां विषयो देश: ebend.

शौधिका f. schlechte v. l. für शौधिका H. 1177.

शौन (von श्वन्) adj. (f. ई) *einem Hunde gehörig* u. s. w.: शाघनी MBh. 12, 5402.

शौनक (von प्रुनक) 1) m. patron. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. Bez. verschiedener Personen, besonders eines berühmten Grammatikers und Rituallehrers, angeblichen Verfassers des ṚV. Prât., AV. Prât., der Bṛihaddevatâ u. s. w. Çat. Br. 11,4,1,2. 13,5,3,5. 4,1. 14,5,5,20. 7,3,26. Kâṭhân. Up. 1,9,3. 4,3,5. Muṇḍ. Up. 1, 1, 3. Âçv. Ça. 12,8,25. 10,2. Gaṇ. 3,4,4. 4,7,16. Einl. zu ṚV. Prât. AV. Prât. 1,3. Schol. zu Çâṅkh. Ça. 12,13,3. Gaṇ. 1,5. M. 3,16. MBh. 1,3. 3,61. 12,5595. fgg. 13,2005. Hariv. 11.fg. 1612. 11062. Sûçr. 1,324,3. Verz. d. Oxf. H. 17, b, No. 63. 20,a, No. 65. fg. 34,a,10. 55,b,25. fg. 64,b, No. 114. fgg. 72, b, No. 124. 83,b, No. 140. 113,b,45. 148,a,1.3. 271,a,6. 279,b,25. 356, a, 33. fg. Daçak. 118,2. VP. 283. 406. Bhâg. P. 1, 1, 4. 3, 17, 3. 22, 37. plur. Hariv. 1519. N. einer Schule Ind. St. 3,277. — 2) f. ई *ein Werk des* Çaunaka: s. लघु°, बृह°. — Vgl. भद्र°.

शौनकायनि m. patron. von शौनक (वात्स्य) P. 4,1,102. pl. Saṁgh. K. 183,b,3.

शौनकि m. desgl. Verz. d. B. H. No. 127 (शौनक 136). 366.

शौनकिन् m. pl. *die Schule des* Çaunaka P. 4,3,106. sg. Ind. St. 3,277. fg.

शौनकीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,30.

शौनकीय adj. von Çaunaka *herrührend:* दश ग्रन्था: Ind. St. 1,102. °स्वराष्टक Verz. d. Oxf. H. 164,a,3. °विवाक्पटल 338,a,19. चतुराध्यायिका Titel des AV. Prât., herausgegeben von Whitney, New Haven 1862.

शौनःशेपि (von प्रुनःशेप) 1) m. patron. des Nikumpuṇa Ind. St. 3,459. — 2) n. *a)* (sc. आख्यान) *die Geschichte von* Çunaḥçepa TBr. 1,7,10, 6. (शौनःशेप gedr.). Ait. Br. 7,18. Nir. 3,4. Kâty. Ça. 15,6,5. Çâṅkh. Ça. 15,27,6. 16,11,1. — *b)* N. eines Sâman Ind. St. 3,240,b.

शौनहोत्र m. patron. von प्रुनहोत्र ṚV. Anukr. Âçv. Ça. 12,10,13. Verz. d. B. H. 12. 55 (शौन° die Hdschr.). Sie. in der Einl. zu ṚV. 2,1,1.

शौनायन m. patron.; pl. Saṁgh. K. 184,b,3.

शौनासीर्य adj. von प्रुनासीर Lâṭy. 10,11,7.

शौभ (von प्रुभ?) m. 1) *ein Gott* Trik. 1,1,8. — 2) *Betelnussbaum* Çabdam. im ÇKDa.

शौभनेय (von शौभना) m. *der Sohn einer schönen Frau* P. 4,1,113, Schol.

शौभाञ्जन m. = शौभाञ्जन Bharata im Dvaitâdv. nach ÇKDa.

शौभायन (von प्रुभ) m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98.

शौभायनि m. patron. von प्रुभ gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

शौभायन्य m. *ein Fürst der* Çaubhâjana gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1, 98; vgl. 5,3,113.

शौभ्रायण (von प्रुभ्र) m. pl. Bez. einer best. Genossenschaft oder dgl. gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54. शौभ्रायणीभक्त = शौभ्रायणानां विषयो देश: ebend.

शौभ्रेय m. 1) patron. von प्रुभ्र (oder metron. von प्रुभ्रा) P. 4,1,123. Vop. 7,1. 5. Kâty. Ça. 10,2,21. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,6. — 2) pl. N. pr. eines Kriegerstammes gaṇa पैङ्गेयादि zu P. 4,1,178. शौभ्रेय m. sg. *ein Fürst der* Çaubhreja gaṇa पैङ्गेयादि zu P. 5,3,117. शौभ्रेयी f. *eine Prinzessin dieses Stammes* gaṇa पैङ्गेयादि P. 4,1,178.

शौर्य m. patron. von प्रुर gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

शौरदेव्य m patron. von प्रूरदेव ṚV. 8,59,15.

शौरसेनि adj. (f. ई) *zu den* Çûrasena *in Beziehung stehend* u. s. w. gaṇa पलक्ष्यादि zu P. 4,2,110. Verz. d. Oxf. H. 181,a, No. 412. f. ई (sc. भाषा) *die Sprache der* Ç. ebend. und 180,a,7. Sin. D 432. 262. 13. Muir, ST. 2,53. fgg. Bhar. zu Çik. 9,6.

शौरसेनिका f. (sc. भाषा) = शौरसेनी Sin. D. 173,11.

शौरसेन्य adj. (चतुर्धर्चेषु) von शूरसेन gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

शौरि (von शूर) m. patron. 1) Vasudeva's MBu. 7,6031. Bhāg. P. 3, 1,37. — 2) Kṛishṇa's (Vishṇu's AK. 1,1,2,16. H. 216. Hall. 1,21. MBu. 1,7989. 3,148 (unter den Namen der Sonne). 12389. 7,3212. 13, 6986. 14,330. Kathās. 10,40. 29,12. 39,197. 50,61. 71,188. 201. 74,213. Khandob. 122. Weber, Kṛishṇaj. 225. 294. Bhāg. P. 1,10,33. 14,32. 16, 11. Pāṇkar. 3,2,8. 11,2. 4,3,130. — 3) eines Sohnes des Prāçāli Mārk. P. 118,22. 24.

शौर्य adj. von शूर P. 5,1,26.

शौर्पणाक्ष्य m. patron. von शूर्पणाख gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151 (oxyt.). N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,20. 7,2,26.

शौर्पारक adj. aus Çūrpāraka stammend Varāh. Bṛh. S. 80,6.

शौर्पिक adj. von शूर्प P. 5,1,26.

शौर्य (von शूर) n. *Heldenmuth, kriegerische Tüchtigkeit; Muth* überh. AK. 2,8,2,70. Trik. 3,3,231. H. 739. 796. an. 2,385. Med. j. 58. Hall. 5,79. Çat. Br. 13,1,6,3. M. 7,211. Bhāg. 18,43. MBu. 14,1023. R. 2,44,14. 4,36,17. 6,16,72. 88,13. Suçr. 1,6,9. 15,14. 126,18. 313,5. 335,3. Kām. Nītis. 4,23. शौर्य शापदचेष्टितम् Raghu. 17,47. Spr. 2095. 3125. 3174 (neben वीर्य). (II) 2632. 2760. 3302. 4763, v. l. 5023, v. l. Varāh. Bṛh. S. 15,15. 69,19. Kathās. 18,344. Rāja-Tar. 5,233. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 12. °वर्धन Bhāg. P. 3,19,38. 7,11, 22 (neben वीर्य). Sin. D. 176. Pañcat. 201,8. 238,22. °कर्मन् M. 9,368. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 38,a,47.

शौर्यवत् (von शौर्य) adj. *heldenmüthig, muthig* Raghu. 17,4. Kathās. 58, 122. उत्साहशौर्यधनसारवत् Varāh. Bṛh. 13,7.

शौर्यादिमत् (von शौर्य + आदि) adj. *mit Heldenmuth und andern Vorzügen versehen* Sin. D. 4,9.

शौर्यौदार्यप्रभावमय adj. *aus Heldenmuth, edlem Wesen (Freigebigkeit) und Frauenliebe zusammengesetzt* Kathās. 91,7.

शौल (von शूल) m. *ein best. Theil des Pfluges* Kṛishis. 9,6. 9.

शौलायन m. patron.; pl. Saṁs. K. 186,a,10. — Vgl. शौल्वायन.

शौलिक m. pl. N. pr. eines Volkes Varāh. Bṛh. S. 14,8. v. l. शूलिक, सूलिक, सौलिक.

शौल्क (von शुल्क) 1) m. *Zollaufseher, Steuereinnehmer* Çabdārthak. bei Wilson. — 2) n. N. eines Sāman Ind. St. 3,240,b.

शौल्कशालिक adj. = शुल्कशालाया आगतः P. 4,3,75, Schol. = शुल्कशालाया अवक्रयः 4,80, Schol.

शौल्कायनि m. N. pr. eines Lehrers VP. 283. Bhāg. P. 12,7,2. Verz. d. Oxf. H. 35,b,32.

शौल्किक (von शुल्क) m. *Zollaufseher, Steuereinnehmer* H. 724. Jiṭ. 2,173.

शौल्किकेय m. *ein best. vegetabilisches Gift* AK. 1,2,4,11 (Colebr. und Lor. fälschlich शौल्लिकेय). H. 1196. Hall. 3,24. Nach Bharata zu AK. von शुल्लिका N. pr. einer Gegend.

शौल्य n. *Anethum Sowa Roxb.* Trikāṇḍ. im ÇKDa.

शौल्वायन m. patron. von शुल्व TS. 7,4,8,4. 5,6,2. Çat. Br. 11,4, 3,17. 14,6,10,2.

शौल्विक (von शुल्व) m. *Kupferschmied* AK. 2,10,8. H. 910.

1. शौव (von श्वन्) 1) adj. Vop. 7,4. 18. *zum Hunde in Beziehung stehend, einem Hunde eigen, hündisch:* उद्गीथ Kaus. Up. 1,12,1. संकोच P. 8,4,144, Vārtt. 4. — 2) n. *Hundeschaar* Saṁhitopan. im ÇKDa.

2. शौव (von 2. श्वस्) adj. *morgen —, am folgenden Tage erfolgend* u. s. w. Saṁhitopan. im ÇKDa.

शौवदृष्ट (von सुदृष्टा) adj.: मणि P. 7,3,8, Vārtt. 1, Schol.

शौवन (von श्वन्) 1) adj. *zum Hunde in Beziehung stehend, vom Hunde kommend* u. s. w. Vop. 7,4. 18. fg. मांस P. 6,4,133, Schol. — 2) n. *Hundeschaar* gaṇa क्षुद्रिकादि zu P. 4,2,45.

शौवनि adj. (चतुर्धर्चेषु) von श्वन् gaṇa मुतंगमादि zu P. 4,2,80.

शौवनेय m. patron. von श्वन् gaṇa प्रुधादि zu P. 4,1,123.

शौवस्तिक (von 2. श्वस्) adj. *morgen —, am folgenden Tage erfolgend, bis dahin reichend* u. s. w. P. 4,3,15. Davon °त्व n. nom. abstr.: शौवस्तिकं विभवा न येषां व्रजन्ति *dessen Reichthümer nicht bis zum folgenden Tage reichen* Bhartṛ. 2,33.

शौवस्थान (von सुस्थान) n. N. pr. einer Stadt P. 7,3,8, Vārtt. 1.

शौवापद adj. von श्वापद् P. 7,3,9. Vop. 7,4. 18.

शौवावतान (शौव + अव°?) gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. Davon adj. शौवावतानिक (f. घा und ई) ebend.

शौष्कल (von शुष्कल) adj. von *gedörrtem Fleisch* oder — *Fischen lebend* (nach den Lexicographen auch *gedörrtes Fleisch verkaufend;* nach Comm. zu TBa. *Angelfischer*) AK. 3,1,19. H. an. 3,689. Med. l. 141. Hall. 2,196. VS. 30,16. शौष्कुल Bhāsvat beim Schol. zu H. 429. — Vgl. शाष्कुल.

शौष्कार्य (von शुष्कास्य) n. *Trockenheit des Mundes* AV. 11,9,21.

शौष्कुल s. शौष्कल.

शुन्द् und शुन्द्र s. चुन्द् und चुन्द्र.

शुम्, शुमाति etwa *dämpfen:* देवासो मन्युं दासस्य शमन् RV. 1,104,2. Eher mit शम् als mit चम् verwandt.

1. शुत्, शौतति Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). Dhātup. 3,4 (क्षरणे). 1) intrans. *triefen, träufeln* RV. 1,87,2. शोतन्ति धारा मधुनो घृतस्य 3,1,8. 21,2. 3. 50,3. 7,101,4. 8,2,8. Ait. Br. 2,12. Çat. Br. 4,3,2,6. Kāṭh. 5,29. Bhāg. P. 3,16,8. Bhartṛ. 14,40. 17,77. — 2) trans. *träufeln, triefen lassen* Milatin. 81,13. Kathās. 22,199. Bhartṛ. 15,31. 17,62. — In den späteren Schriften fast immer द्युत् geschrieben, welche Form aus der Vermengung von द्युत् und शुत् entstanden ist.

— caus. *träufeln lassen:* मेघम् Çat. Br. 4,5,2,6.

— desid. चुशोतिषति P. 7,4,61, Schol.

— घनि caus. *träufeln lassen, bestreuen:* चमसं पयश्चचुशुतत् Kāṭy. Çr. 25,11,22. बिन्दुना Kauç. 13. med. *sich bestreuen,* — *bestreuen:* शोषध्या 30.

— अव *abträufeln, herabfallen* TBa. 3,7,2,6. 7.

— व्यव dass. Çat. Br. 4,1,4,17. 2,17. 3,5,2.

— घा *hintröpfeln* (intrans.), partic. घाशुतित Çat. Br. 1,6,2,5. 5,5,4, 6. — caus. *hintröpfeln* (trans.): घाशोतयितवै Çat. Br. 2,3,4,16. — Vgl. घाशोतन. घाशोतन.

— नि *herabtriefen, herabträufeln:* निशोतन्ते कवयोबिन्दवो यावदेते

Milatin. 128,5. भक्षातकनिश्च्युतितः क्षेत्रः Suçr. 2,31,17. — caus. mit Trans. Bed.: निश्चोत्य निश्चोत्य (तण्डुलतामापाद्य Comm.) Kiçkan. 31,7 in Gött. gel. Anz. 1860, S. 742.

— प्र 1) intrans. *hervortriefen, — träufeln* Milatin. 24,3. — 2) trans. *träufeln, fliessen lassen:* रक्तम् Bhatt. 14,79. — Vgl. प्रश्चोतन.

2. श्युत् (= 1. श्युत्) adj. am Ende eines comp. *träufelnd* (trans.): तुषारजलश्युत् Kin. 5,9. लोचनेनामृतश्युता Kathâs. 101,204. गिरा प्रेमश्युश्युता 103,64. Ueber die Schreibung श्युत् s. u. 1. श्युत्. — Vgl. घृत°, मधु°.

श्योत m. nom. act. von 1. श्युत् AK. 3,3,10 (श्द्योत geschr.).

श्युत् s. u. 1. und 2. श्युत्; श्द्योत s. u. श्योत.

श्रथ्, श्रंथति Naigh. 2,19 (वधकर्मन्). Dhâtup. 19,37 (हिंसार्थ). श्रथिक्षि, श्रंथत्, श्रथिष्टम्, श्रथिष्टन: *durchstossen, durchbohren:* श्रथिष्टाम् RV. 1,63,5. वृत्रम् 6,60,1. पुर: 7,99,5.

— caus. श्रर्थयति, शिश्रथत्, श्रथिश्रत् RV. 7,28,3. partic. श्रथितै: dass.: घनैरिव RV. 1,51,9. 7,82,6. त्रि: स्म माह्नः श्रथयो वैतसेनं 10,95, 5. यश्रस्य चिच्छिश्रथत्पूर्व्याणि 2,20,5. 6,4,3. यस्मत्कं कवयं शिश्रथं कयै: 10,49,3. सर्वनर्ड श्रथितमप्स्वन्त: *hineingestossen* 1,116,24. In RV. 8,24,25 ist ein acc. मुञ्जम् oder वृत्रम् zu ergänzen. Statt श्रथयत्त 88,6 ist, wie der Sinn zeigt und Sây. erklärt, श्रथयत्त zu lesen.

— उप *zurückstossen:* उप यानं श्रथिष्टन RV. 9,101,1.

— अभि *durchbohren:* अभिश्रथै: (infin.) RV. 10,138,5.

— नि *niederstossen:* श्रथिष्टान् RV. 7,25,3. — caus. dass.: पर्वासु RV. 2,6,16. 39,10. 4,30,10.

— परिनि dass.: मुञ्जं परि प्रदक्षिणिद्विश्रथ्यवे नि शिश्रथ: RV. 10,22, 11. Vgl. शिश्रथ.

श्रंथन (von श्रथ्) adj. *durchbohrend* RV. 2,21,4.

श्रंथितृ (wie eben) nom. sg. *Durchbohrer:* वज्र RV. 1,57,2. यत्रं मुञ्चस्य श्रथिता वधर्यमम् 10,49,3.

श्रंस् n. nach Manibu. *Mundwinkel* VS. 5,21. श्रर्यंस् TS. 1,2,12,3.

श्राप्, °श्रीष्टीये n. du. N. zweier Sâman Ind. St. 3,240,b. — Vgl. श्रीष्ट.

श्रुष्टि 1) f. etwa *Häufchen* oder sonst ein *Maass* (für Reis u. s. w.) Kâty. 12,7. 31,1. — 2) m. N. pr. eines Âṅgirasa Pañcav. Br. 13,11,22.

श्रौष्ट (von श्रुष्टि) n. N. eines Sâman Pañcav. Br. 13,11,21. श्रौष्ट Ind. St. 3,241,b.

श्व्यत् s. श्रत्.

श्मन् n. angeblich = शरीर Nir. 3,5. श्मश्रु लोम श्मनि श्रितम् ebend. und 5,12. = मुख (gleichfalls wegen श्मश्रु) Bhâm. zu AK. 2,6,2,50 nach ÇKDa.

श्मशी f. etwa *Graben* (mit Aufwurf), *Wasserrinne; Deich* Naigh. 4,2. Nir. 5,12. यत्र श्मशा कृधुहा: RV. 10,103,1. Zur Ableitung von श्मशान wird Çat. Br. 13,8,2,1 gesagt, dass श्मशा: *die Esser* unter den Vätern (Manen) bezeichne.

श्मशानं Nir. 3,5 (= श्मशपन). gaṇa पृषोदरादि zu P. 6,3,109. n. Sidd. K. 249,a,3. 9. 1) (*aufgedämmter Raum*) *Leichenstätte* (sowohl für das Verbrennen der Leiche als zum Begräbniss der Gebeine; auch als Richtstätte benutzt) AK. 2,8,2,37. Trik. 2,3,61. H. 989. Halây. 3,16. कूप, श्म° AV. 5,31,3. 19,1,18. TS. 5,2,2,3. Çat. Br. 4,5,2,15. 13,8, 2,1. 3. 7. 17. Kâty. Çr. 21,4,25. 25,8,2. Âçv. Gṛhy. 1,5,3. 4,1,12. 15. Gobhila 2,4,2. Kauç. 37. 46. 77. 84. 86. 141. निषेकादिश्मशानान्त M. 2, 16. 4,116. 9,318. 10,29. 50. MBh. 3,13686. 5,3171. Suçr. 1,134,18. 367,1. Spr. (II) 1221. 2052. Vaṇîn. Bṛn. S. 45,9. 51,4. 53,120. 79,3. 86, 78. Kathâs. 18,104. 139. 38,62. Bhâg. P. 3,14,24. 32,20. 5,7,23. Var. in LA. (III) 13,17. पारेश्मशानम् Milatin. 79,19. °कारणं n. Smârv. Bh. 2, 10. Çat. Br. 13,8,1. 7. 9. °चित् *ein श्म° schichtend* TS. 5,2,8,5. *wie ein श्म° geschichtet* 4,44,3. Kâty. 21,4. — 2) = पितृमेध Schol. zu Kâty. Çr. 25,8,7. विवाक्श्मशानयो: Pân. Gaṇ. 1,3 (9). — 3) = अप्सरस्तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 235,a,19. — Vgl. महा° (*eine grosse Leichenstätte* Var. in LA. (III) 3,10), श्माशानिक.

श्मशानकालिका f. *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 98,a,14.

श्मशानकाली f. desgl. ebend. 94,a,1. 96,a,11. fg.

श्मशाननिलय adj. *auf Leichenstätten hausend:* Çiva Çiv.

श्मशानपति m. wohl N. pr. eines Zauberers Tântr. 319.

श्मशानपाल m. *Hüter einer Leichenstätte* Kathâs. 18,107.

श्मशानभैरवी f. *eine Form der* Dûrgâ Verz. d. Oxf. H. 94,a,10.

श्मशानवासिन् adj. *auf Leichenstätten wohnend:* चाण्डाल Çuddhit. im ÇKDa. Beiw. Çiva's Bâṭukabhairavastotra ebend. °वासिनी ein N. der Kâlî Kilikiñcayantrastotra im ÇKDa.

श्मशानवेताल m. N. pr. eines Spielers Kathâs. 74,179.

श्मशानवेश्मन् adj. *auf Leichenstätten hausend;* m. ein N. Çiva's H. 196.

श्मशानालयवासिन् adj. dass.: Çiva Çiv. °वासिनी ein N. der Kâlî Tantrasâra im ÇKDa.

श्मश्रु Uṇâdis. 3,28. n. Sidd. K. 248,b. 11. sg. und pl. *Bart*, bes. *Schnurrbart* AK. 2,6,2,50. 3,4,28,118. H. 883. Halây. 2,369. Indra ist bärtig RV. 2,11,17. 8,33,6. 10,23,1. इन्द्र: श्मश्रूणि हरितानि धुनुते 4. 26,7. वातेव श्मश्रु वपसि प्र भूम 142,4. AV. 5,10,14. 6,68,2. VS. 19, 92. 20,5. an Thieren 25,1. Çat. Br. 11,4,3,6. 12,9,3,6. केशश्मश्रु 2,5, 3,18. 3,1,3,1. Kâty. Çr. 2,1,9. Âçv. Br. 7,13. Âçv. Gṛhy. 1,18,3. 4. M. 5,141. 6,6. Suçr. 1,324,21. Raghu. 15,52. श्मश्रूणि रोक्तुं Bhâg. P. 4,6, 51. प्रवृद्ध Pañcat. 182,10. श्मश्रूद्भेद Spr. 3419. कचश्मश्रुनखाप्रवृद्धि H. 63. अस्फुटितायं स्निग्धं श्मश्रु शुभे मृदु च मंसते चैव । रूक्षै: परुषैश्चारु: श्मश्रुभिरल्पैश्च विज्ञेया: ॥ Vaṇîn. Bṛn. S. 68, 87. बधूनि MBh. 1, 4278. रक्त° 5929. हिरण्य° Kâṭhân. Up. 1,6,6. तप्ततास Bhâg. P. 6,9,12. (तस्य) श्मश्रूणि लुलुचे 4,5,19. बस्त° 7,5. कृतकेशनख° adj. M. 4,35. 6,52. स° adj. f. H. 531. — Vgl. दीर्घ°, नि:°, क्षि°.

श्मश्रुकर m. *Bartscheerer* Vaṇîn. Bṛn. 14,4.

श्मश्रुकर्मन् n. *das Scheeren des Bartes* Mâlav. P. 34,75.

श्मश्रुजात adj. = जातश्मश्रु *dem der Bart gewachsen ist* gaṇa घादितार्न्यादि zu P. 2,2,37.

श्मश्रुल (von श्मश्रु) adj. *bärtig:* ein Bock TS. 2,1,4,5. 5,5,2,2. Kâty. 24,7. — Vgl. श्मश्रुल.

श्मश्रुधर 1) adj. *einen Bart tragend, bärtig* Bhâg. P. 9,8,6. — 2) m. pl. N. pr. einer Völkerschaft Vaṇîn. Bṛn. S. 14,3. — Vgl. श्मश्रुधारिन्.

श्मश्रुधारिन् 1) adj. *einen Bart tragend, bärtig* MBh. 4,143. — 2) m. pl. N. pr. einer Völkerschaft Mâlav. P. 58,17. — Vgl. श्मश्रुधर.

श्मश्रुमती f. *ein bärtiges Weib* Çabdar. im ÇKDa.

श्मश्रुल (von श्मश्रु) adj. = श्मश्रुण *bärtig* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,28.

M. 11,103. MBu. 12,6326. Rāgān. 4,62. Mārk. P. 8,51 (श्मश्रल gedr.). 48,19. Kāçikā. 33,27. Matsja-P. 128,78 (die beiden letzten Stellen nach Aufrecht). ein Bock Bulg. P. 3,10,5.

श्मश्रुवर्धक m. *Bartscheerer* R. Gorr. 2,32,21. 6,112,16.

श्मश्रुशेखर m. *Kokusnussbaum* Dhanv. in Nigh. Pr.

श्मश्रूय् (von श्मश्रु), °यते *einem Barte gleichen* Wilson.

श्मसि nach Sāj. = उष्मसि (von वप्) RV. 2,31,6.

श्मशानिक adj. = श्मशाने ऽधीते P. 4,4,71, Schol. *Leichenstätten besuchend* Benfey, Intr. 309.

श्मील्, श्मीलति = स्मील्, मील्, म्मील् Dhātup. 15,11 (निमेषणे).

श्या, श्यायति Nir. 4,3. med. Dhātup. 22,67 (गतौ). *gefrieren —, gerinnen machen:* स यदेतयोर्बलिष्ठं श्यायति तेनो देतौ (शैशिरौ) तपश्च तपस्यश्च Çat. Br. 4,3,4,19. pass.: किमो वर्षं शीयते TBr. 3, 12, 8, 3. यदस्थि शीयत तदश्वतं किरण्यमभवत् TS. 1,5,4,1. partic. शीन *geronnen* P. 6, 1,26. 8,2,67. पवागू, घृत, मेदस्, वसा Schol. Vop. 26,90. fg. श्यान *trocken geworden:* सरितः °पुलिनाः Spr. (II) 4657. — Vgl. शीत und शीन.

— अभि, partic. °श्यान und °शीन *geronnen* P. 6,1,26. Vop. 26,93. °श्यात und °शीत *abgekühlt, kühl:* वायु, जल Kāç. zu P. 6,1,26.

— समभि, partic. °श्यान Kāç. zu P. 6,1,26.

— अव, partic. °श्यान und °शीन *geronnen* P. 6,1,26. Vop. 26,93. °श्यात und °शीत *abgekühlt, kühl:* वायु, जल Kāç. zu P. 6,1,26. — Vgl. अवश्याय.

— समव, partic. °श्यान Kāç. zu P. 6,1,26.

— आ med. *trocken werden:* यावदाश्यायते वेदिरभिषेकजलाप्लुता Rāgān. 17,37. partic. आश्यान *ausgetrocknet, eingetrocknet:* पदमाश्यानकर्दमान् 4,24. °कालेय Kumāras. 7,9.

— प्र, partic. °शीत *fest gefroren:* यदे शीतस्य प्रशीतं तद्धिमस्य ह्रादो Çat. Br. 8,1,2,26.

— प्रति, partic. mit Contraction P. 6,1,28. °शीत Schol. °शीन Kāç. zu 8,2,47. Vop. 26,92. — Vgl. प्रतिश्याय, welches auch vom *Gerinnen des Schleimes* erklärt werden könnte.

— सम्, partic. °श्यान *zusammengeschrumpft* (= संकुचित): वृश्चिकः शीतात् Vop. 26,91. P. 6,1,24, Schol.

— अभिसम्, partic. °श्यान und °शीन Kāç. zu P. 6,1,26.

— अवसम्, partic. °श्यान und °शीन Kāç. zu P. 6,1,26.

श्यापर्ण m. (nach gaṇa विदादि zu P. 4,1,104 patron. eines anders betonten श्यापर्ण) N. pr. eines Mannes Çat. Br. 6,2,1,39. 8,5,3,1. 10, 4,1,10. Kāṭy. in Ind. St. 3,471. plur. श्यापर्णाः gaṇa गोपवनादि zu P. 2,4,67. Air. Br. 7,27. वि° und स° *mit —, ohne* Çj. ebend. und 34.

श्यापर्णीय adj. zu *den* Çj. *gehörig* Air. Br. 7,27.

श्यापर्णेय (von श्यापर्ण) m. patron.: कपिश्यापर्णेयाः, पैलश्यापर्णेयाः gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37.

श्यापीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,264 (viele Varianten des Namens).

श्यामं Uṇādis. 1,144. 1) adj. (f. श्या) *schwarz, schwarzgrau, schwarzblau, schwarzgrün;* = कृष्ण, नील u. s. w. AK. 1,1,4,23. 3,4,22,145. H. 1397. an. 2,333. Med. m. 31. fg. Halāj. 4,49. Viçva bei Uṇādival. zu Uṇādis. = रोहित् AK. 3,4,22,145. H. an. Med. Viçva a. a. O. Jama's Hund AV. 8,1,9. TS. 5,7,19,1. Çāṅkh. Br. 2,9. Pāṇ. Gaṇ. 1,16. — TS. 7,3,18,1. TBr. 1,3,4,4. Nir. 4,3. ṚV. Prāt. 17,9. Çat. Br. 5,1,2,9. 2,5,3. पुत्र 14,9,4,13. श्याम इव पाप्मा Kāṭh. 13,6. अयस् *Eisen* AV. 11, 3,7. यनु दद्म श्यामेन ब्रह्मम् 9,5,4. श्यामाच्छबलं (als nom. abstr.) प्रपद्ये Kaṭh. Up. 2,13. — Ind. St. 3,277. 10,318. Megh. 58. Vāmn. Bṛh. S. 3,29. 8,17. 33,16. 34,23. 47,23. 80,7. Lalitav. 2,18. Kathās. 22,182. Rāja-Tar. 4,4. Erde Sūrj. 1,135,3. Kuh 371,17. Pferd Bulg. P. 1,16, 12. श्यामो लोहितालो दण्डः M. 7,35. अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानां वारणानाम् Spr. (II) 227. स्तन Megh. 18. विलीनपक्वजम्बूश्यामरुचिः स्तनो Kathās. 22,5. स्तनावाश्यामचूचुकौ 34,32. श्यामया चूचुकाविव 120,48. उरस् Bulg. P. 3,15,39. °कर्ण (कपि) 9,15,6. °घोणि 4,24,51. वज्रनख° Vāmn. Bṛh. S. 64,2. वपुस् einer Wolke Megh. 18. नीलाम्बुद° MBu. 1,5911. प्रावृट्तुलधर° 5928. मेघ° R. 2,83,3. Pāṇḍav. 1,3,3. दिवस इवार्धश्यामः (इवाधश्यामः v. l.) Çik. 60. उदधिश्यामसौम्या धरित्री 48. स्त्रिग्धश्यामा दण्डकारण्यभागाः Uttarār. 32,6 (42,5). वनभूमयः श्यामास्तमालद्रुमैः Gīt. 1,1. फलपरिणतिश्यामजम्बूवनान्ताः Megh. 24. कुरबक श्यामं द्वयोर्भागयोः Vikr. 26. बतसीकुसुम° Vāmn. Bṛh. S. 58,32. दूर्वाकाण्ड° 5,58. Bhaṭṭ. 5,18. दूर्वा° Vāmn. Bṛh. 2,4. इन्दीवर° MBu. 3, 1721. Harīv. 7081. R. 2,88,14. R. Gorr. 2,1,41. Vāmn. Bṛh. S. 24,18. Bulg. P. 3,26,38. नीलोत्पलदल° R. 4,29,9. पलाश° Kathās. 21,11. शार्ङ्गी° P. 6,2,2, Schol. Çiç. 4,44. कोमलश्यामशष्प Sūrj. 1,22,18. मरकत° Bulg. P. 8,6,3. 10,35. Für schön gilt bei Männern und Frauen die durch श्याम bezeichnete Hautfarbe: द्रुमतुलं °मुन्दरम् Pāṇḍav. 1, 1,3. 5,3. यं श्यामो महाबाहुः सिंहस्कन्धो महाद्युतिः MBu. 1,5943. 3,2450. 7,2343. 5089. R. 2,34,1. 3,42,33. Weber, Rāmāy. Up. 294. Bulg. P. 1,12,3. 19,38. 4,7,20. दासीसहस्रं श्यामानाम् MBu. 3,12711. 1,5949. 3,2664. 2754. R. 2,61,4. 3,79,20. 42. Megh. 90. Çiç. 8,36. Spr. (II) 6342. fg. Kathās. 45,234. Rāja-Tar. 3,413. Kāçīkh. 40. Mārk. P. 21, 18. Pāṇḍav. 1,4,48. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,12, Einschiebung nach Çl. 48. श्यामा = यौवनमध्यस्था Utpala bei Mallin. zu Çiç. 8,36. = घृतमूतस्त्री H. an. Med. Viçva a. a. O. शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी योष्मे या सुखशीतला। तप्तकाञ्चनवर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कथ्यते॥ Citat beim Schol. 2. zu Bhaṭṭ. 5,18. 8,100; vgl. Spr. (II) 1850. घनश्याम Bulg. P. 8,4,37. श्यामावदात 2,9,11. 3,4,7. 8,18,2. R. 5,14,28. श्यामारुण Vāmn. Bṛh. S. 11,24. In Vāmn. Bṛh. S. häufig श्याव als v. l. — 2) m. a) *ein schwarzer Stier* TS. 1,8,6,1. 2,1,4,2. Āçv. Çr. 9,4,6. — b) *der indische Kuckuck* H. an. Med. — c) Bez. verschiedener Pflanzen: = वृद्धदारक H. an. Med. Viçva a. a. O. = दमनक und गन्धतृण ÇKDa. angeblich nach Viçva: = धुस्तूर, पीलु, श्यामाक Rāgān. im ÇKDa. — d) *Wolke* H. an. Med. Viçva bei Uṇādival. — e) N. pr. α) eines Mannes gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. gaṇa शुभ्रादि zu 123. eines Sohnes des Çūra und Bruders des Vasudeva Harīv. 1927. 1943. 3085. VP. 437. eines neueren Fürsten Verz. d. Cambr. H. 8,1 v. u. — β) pl. einer Schule Ind. St. 3,258. — γ) eines Berges MBu. 6,419. — δ) einer für heilig erachteten Ficus indica H. an. Med. Viçva a. a. O. R. 2,55,7. 23. Rāgān. 13,58. Uttarār. 11,8 (13,11). — 3) f. श्या a) *ein best. Vogel* Rāgān. im ÇKDa. Vāmn. Bṛh. S. 86,37. 88,1. 3. 16. °रुत Verz. d. B. H. No. 896. Pāṇḍav. 157,4. = कोकिला Trik. 3,3,203. = पिक (vgl. 2) b)

Viçva a. a. O. — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: = गुन्द्रा, प्रियङ्गु (die in H. an. und bei Viçva unterschieden werden) AK. 2,4,2,35. Trik. H. 1149. H. an. Med. Halâj. 2,38. Viçva; = सारिवा AK. 2,4,3,30. 3,4,22,145. H. an. Med. = पालिन्धी AK. 2,4,3,27. = त्रिवृत्, वागुरी (वागुरि, und नीली H. an. Med. (कृष्णत्रिवृतिका) und Viçva; = कृष्णा H. an. Viçva; = नोमलता H. an. = श्यामलता Viçva; = गुडूची, कस्तूरी, वरयष्टी, वन्दा, नीलपुनर्नवा, पिप्पली, हरिद्रा, नीलदूर्वा, तुलसी, कृष्णसारिवा, शिंशपा und पद्मवीज Râéân. im ÇKDa. — R. 4,29,12. Suçr. 1,59,11 139,18. 144,16. 162,8. 2,102,11. 110,12. 374,15. °मूल 122,5. 135,1. Mucch. 102. Spr. (II) 6044. Varâh. Bṛh. S. 54,37. 55,22. 85,6. — *c*) *Nacht* AK. 3,4,22,145. Trik. 1,1,104. H. 142. H. an. Med. Halâj. 1, 108. Viçva. Kâvjapr. (II) 180,1. — *d*) N. pr. einer Frau: श्यामाया आश्रमः MBh. 13,1716. einer Tochter Meru's Bhâg. P. 5,2,23. eine Form der Durgâ Wilson, Sel. Works 2,78. 184. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,29. fg. 94,*a*, 44. fg. *b*,26. 96,*a*,5. 101,*a*,12. °हृदय 104,*a*,37. 108,*b*,No. 169. Wilson, Sel. Works 1,250. 254. fgg. 262. °कल्पलता Notices of Skt Mss. 144. °कवच 217. °नित्यपूजापद्धति 179. °प्रदीप 173. °रत्न 213. °स्तोत्र 237. 269. श्यामार्चनचन्द्रिका 116. — N. pr. einer Göttin, die die Befehle des 6ten Arhant's ausführt, H. 44. N. pr. der Mutter des 13ten Arhant's 40. einer Fürstin Hall in der Einl. zu Vâsavad. 52. — *e*) N. pr. eines Flusses Mârk. P. 59,18. ein N. der Jamunâ Med. — 4) n. *a*) *Pfeffer.* — *b*) *Seesalz* H. an. Med. Viçva. — Vgl. प्रियङ्गु°, मणि°, मल्ल°, रक्त° (auch Varâh. Bṛh. S. 69,27), श्यामायन, श्यामेय.

श्यामक 1) adj. *dunkelfarbig* Varâh. Bṛh. S. 61,8. — 2) m. *a*) *Panicum frumentaceum* (eine cultivirte Hirse) H. 1176. Halâj. 2,439. Vgl. श्यामाक. — *b*) N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. eines Sohnes des Çûra und Bruders von Vasudeva Bhâg. P. 9,24,28. 41. Davon patron. श्यामक gaṇa विदादि zu P. 4,1,104; pl. श्यामकाः gaṇa गोपवनादि zu 2,4,67. N. pr. einer Völkerschaft Mârk. P. 58,47. — 2) f. श्यामिका *Schwärze* Kumâras. 5,21. 80 v. a. *Unreinheit:* क्षेत्रः संलक्ष्यते यद्वी विपुष्टिः श्यामिकापि वा Ragh. 1,10. Vgl. वदन°. — 3) n. = रोहिषतृण Râéân. im ÇKDa.

श्यामकण्ठ adj. *schwarzhälsig;* m. *Pfau* Halâj. 2,86. Nach ÇKDa. und Wilson auch = नीलकण्ठ.

श्यामकन्दा f. *eine best. Pflanze,* = अतिविषा Râéân. im ÇKDa. Ausw. 48.

श्यामकाण्डा f. *eine Art* Dûrvâ-Gras (गण्डदूर्वा) Râéân. im ÇKDa.

श्यामग्रन्थि f. dass. ebend.

श्यामचटक m. *eine Art Sperling,* = शेशिर Râéân. im ÇKDa. unter d. letzten W.

श्यामजित् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 1174.

श्यामता (von श्याम) f. *das Schwarzsein, Schwärze, dunkle Farbe:* मुखं श्यामतां समुपागतम् MBh. 3,10996. जिह्वा श्यामतां यदा (एति) Mârk. P. 43,26. Kâd. (ed. Calc. 1862) 11,1.

श्यामत्व (wie eben) n. dass. MBh. 6,420. R. 6,82,21.

श्यामपत्त्र m. *Xanthochymus pictorius* Roxb. (तमाल) Çabdar. im ÇKDa.

श्यामफेन adj. *schwarzen Schaum habend;* davon nom. abstr. °ता f. Kâm. Nîtis. 7,18.

श्यामर्त्त (von श्याम) gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97. 1) adj. (f. आ) *dunkelfarbig* AK. 1,1,4,23. H. 1397. an. 3,686. Med. l. 136. Halâj. 4,19. Sîm. D. 16,3. श्यामर् Kathâs. 94,9. निश्श्रेण (व्योम von श्या° zu trennen) 26,232. 86,122. श्यामलाग्रपयोधरा 124,197. भूमि Bhâg. P. 8,2,4. °मृदुलकलेवर Gît. 11,26. Harîv. 14708. 15838. Kathâs. 48,82. Râéat. 4,329 (श्यामला von रक्त° zu trennen oder श्यामलरक्त° zu lesen). Bhâg. P. 8,8,32. Pâṇâd. 1,3,29. श्यामनवमेघ° Mâlatîm. 145,10. वनराजि° Râéat. 4,180. कृष्णागरु° Daçak. 190,2 v. u. इन्दीवरश्रेणी° Gît. 1,46. नीलोत्पलपलाश° Daçak. 77,15. दूर्वालता° Kathâs. 45,333. प्रियङ्गु° 47,109. श्रमितकुवलय° Kâd. (ed. Calc. 1862) 32,6 v. u. कलाप° Pâṇâd. 3,7,36. श्वरूण° 35. — 2) m. *a*) *eine Bienenart* Çabdârthak. bei Wilson. — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: = पिप्पल H. an. Med. = वर्बुर (*eine Grasart*) Schol. zu Pâṇâd. Bh. 3,3,7. = पूतीक Schol. zu Kâty. Çr. 25,12,19. — *c*) N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 41. 51. — 3) f. श्या *a*) Bez. verschiedener Pflanzen: = श्वगन्धा, कक्षी, शम्बू, कस्तूरी Râéân. im ÇKDa. — *b*) *eine Form der* Durgâ Çaṇḍikâbhâk. bei Wilson. — *c*) N. pr. eines Frauenzimmers (aus dem Tibetischen zurückübersetzt, Schiefner, Lebensb. 275 (43). — Vgl. रात्रिश्यामलोपासक.

श्यामलक (von श्यामल) 1) m. N. pr. eines Mannes Pâṇâd. ed. Bomb. Buch IV, S. 20, 12. 15. — 2) श्यामलिका f. *die Indigopflanze* Râéân. im ÇKDa.

1. श्यामलता f. nom. abstr. von श्यामल.

2. श्यामलता (श्याम + ल°) f. *eine best. Pflanze,* = सारिवा Çabdar. im ÇKDa. Çiç. Cn. 62,5. — Vgl. श्यामालता.

श्यामलत्व (von श्यामल) n. *Schwärze, eine dunkle Farbe:* तमाल° Sarvadarçanas. 110,16. fg.

श्यामलदेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5,506, Cl. 21.

श्यामलित (von श्यामल) adj. *dunkel gefärbt, verdunkelt:* खड्गप्रभाश्यामलितांमपीठाः Harîv. 13163. धूमान्धकारश्यामलितरश्मि Prab. 109, 10. Kâd. (ed. Calc. 1862) 11,9.

श्यामलिमन् (wie eben) m. *Schwärze* Kâvjapr. (II) 180,1.

श्यामलीकर् (श्यामल + 1. कर्) *dunkel färben:* धूमेन °कृता Kathâs. 73,196. Prab. 21,12.

श्यामलेक्षु (श्यामल + इक्षु) m. *eine Art Zuckerrohr* (कृष्णेक्षु) Râéân. im ÇKDa.

श्यामवर्ण adj. *dunkelfarbig;* davon nom. abstr. °त्व n.: मुखस्य Kâm. Nîtis. 7,25.

श्यामशबलव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Schol. zu Hâla 188.

श्यामसार m. = कृष्णखदिर Ausw. 82.

श्यामाक 1) m. *a*) *Panicum frumentaceum* (eine cultivirte Hirse) AK. 2,4,3,31. H. 1176. Halâj. 2,439. parox. Uṇâdis. 4,15 und die Texte, proparox. Çiç. 2,23. 3,18. — VS. 18,12. TS. 2,3,3,6. Çat. Br. 10,6,3,2. 12,7,1,9. Kâty. Çr. 19,1,20. Schol. zu 15,4,3. 172,19. 349,10. Çâṅkh. Çr. 12,16,5. Âçv. Çr. 2,9,1. श्यामाक und °तण्डुल Kâṭhân. Up. 3,14,3. MBh. 14,1269. R. Gorr. 2,28,21. Suçr. 1,53,1. 73, 6. 79,20. 197,6. 2,45,13. Gaṇit. 1,88. Çiç. 89. एका भूरुभयोरिकामुभयोर्दलकाण्डयोः । शालिश्यामाकयोर्भेदः फलेन परिचीयते ॥ Spr. (II) 1405. Mârk. P. 32,9. 49,71. श्यामाकेष्टि Çâṅkh. Çr. 3,12,1. — *b*) N. pr. eines

Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. Davon patron. शौमाक ebend. pl. शौमाकाः gaṇa गोपवनादि zu P. 2,4,67. N. pr. eines Volkes Vaṃiṇ. Bṛn. S. 14, 26. — 2) oxyt. adj. (f. ई) von श्यामाक 1) a) gaṇa तालादि zu P. 4,3,151. चरु TS. 1,8,4,2. 2,3,8,6. Kāṭy. Çr. 6,6,10. 15,4,8. Lāṭy. 8,2,9. भोजन MBu. 3,8088. यज्ञ 12,9814. 13,4228. — Vgl. राज°.

श्यामाङ्ग (श्याम + यङ्ग) m. *der Planet Merçur* Tāṇḍ. 1,1,93. H. 117.

श्यामाम्बी f. = नीलाम्बी Rāmāṇ. im ÇKDa.

श्यामाय् (von श्याम, °यते *eine dunkle Farbe annehmen*: वनानि Rāgān. 2,17. Pāṇ. 79,16. श्यामायते न युष्मानु पः (उपदेशः) कालनेमिवाग्रिपु Mālav. 30. Kām. (ed. Calc. 1862) 9,7, 10,2 v. u. 17,4. श्यामायित (दिवम्) Sāh. D. 346,10.

शौमायन (von श्याम) m. patron. gaṇa यस्कादि zu P. 4,1,110. ein Sohn Viçvāmitra's MBu. 13,254.

श्यामायनि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 83,a,11.

श्यामायनिन् m. pl. N. einer nach einem Schüler Vaiçaṃpājana's benannten Schule P. 4,3,104, Schol. Aṇubāṣ 2,12. 3,3.

श्यामायनीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,238.

श्यामालता f. wohl = श्यामलता Vaṃiṇ. Bṛn. S. 29,12.

श्यामित (von श्याम) adj. *dunkel gefärbt*: मदस्रुतिश्यामितगण्डलेखाः Kāṃ. 16,2.

श्यामीकृ (श्याम + 1. कृ), करोति *dunkel färben* R. 4,29,9. Rāgān. 9,36.

श्यामीभू (श्याम + 1. भू), °भवति *dunkelfarbig werden* Kāṃ. 5,37.

श्यामेर्य m. patron. von श्याम gaṇa प्रभ्वादि zu P. 4,1,123.

श्याव 1) adj. oxyt. *schwarzbraun, braun* AK. 1,1,4,35. H. 1396. Hāṃ. 4,30. Ross des Yama AV. 5,5,8. श्यावाः सवितुः Naigh. 1,15. श्यावाः शितिपादः ṚV. 1,35,5. 100,16. श्यावा एवं वक्तो रोहिता वा *Braune oder Füchse* 2,10,2. 3,46,28. गृध्र AV. 7,95,1. श्याव इव क्षेप वर्षिष्यभवति Kāṃ. 11,10. 22,8. Kāṭy. Çr. 22,5,10. कृष्णाभावे श्यावः Lāṭy. 3, 1,6 यास्क Suāpv. Bṛ. 1,7. कपिलः श्यावः, कृष्णः श्यावः *gelbbraun, dunkelbraun* TBa. 2,3,8,1. ṚV. Pāṛ. 17,10. MBu. 3,16809. Suçr. 1,45,8. 96,20. 114,14. 116,12. Vaṃiṇ. Bṛn. S. 4,29. 5,36. 11,32. 39. 61,4. 67, 9. 79,25. 94,6. श्यावात 68, 67. श्यावलोलेलण 70,19. Daçan. 73,6. — 2) m. a) *eine Krankheit des äusseren Ohrs* Suçr. 1,39,3. 12. — b) patron. N. pr. eines Schüttlings der Açvin ṚV. 1,117,24. 10,65,12. — Nach Sāy. shinde ṚV. 5,61,9 श्यावे für श्यावाय N. pr. Zweifelhaft ist 8,19, 37. — 3) f. ई patron. a) *eine schwarze Stute* ṚV. 3,46,32. — b) *die Dunkle* so v. a. *Nacht* Naigh. 1,7. ṚV. 1,71,1. 3,55,11. Vāṃiṇ. 7,6.

श्यौवक (von श्याव) m. N. pr. eines Mannes ṚV. 8,3,12. 4,3.

श्यावता (wie oben) f. *das Braunsein* Suçr. 1,305,11. Çiāṇ. Saṃh. 1, 7,70 (शाव्यता gedr.).

श्यावतैल m. *der Mangobaum* Çabdaratn. bei Wilson.

श्यावद् s. u. श्यावदन्.

श्यावदन् adj. *braunsähnig* P. 5,4,144. AV. 7,63,2. 11,9,17. TS. 2, 5,4,7. TBa. 3,2,8,12. Kāṭy. 31,7 (dazu vgl. Āpast. 2, 12, 22, wo übrigens die Form श्यावद् in den Text aufgenommen ist). MBu. 12,1210 (°दत्रयि mit der ed. Bomb. zu lesen).

श्यावदत्त adj. dass. P. 5,4,144. Mān. P. 31,27. Ind. St. 3,476.

श्यावदत्तक adj. dass. M. 3,153. Jāṭ. 1,222. 3,209. Suçr. 1,305,11. 306,16. Çiāṇ. Saṃh. 1,7,73.

श्यावदत्तता f. nom. abstr. von श्यावदत्त M. 11,49. Suçr. 2,402,9.

श्यावनाय gaṇa उत्कारादि zu P. 4,2,80. m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu 4,1,151.

श्यावनायीय adj. (चतुर्धर्चेय) von श्यावनाय gaṇa उत्कारादि zu P. 4,2,80.

श्यावनाय्य m. patron. von श्यावनाय gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

श्यावपुत्र m. N. pr. eines Mannes ebend.

श्यावपुत्र्य m. patron. von श्यावपुत्र ebend.

श्यावाश्व m. N. pr. eines Mannes ebend.

श्यावाश्व्य m. patron. von श्यावाश्व ebend.

श्यावलि m. patron. von श्यावलि gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

श्यावलि m. N. pr. eines Mannes ebend.

श्याववर्त्मन् n. *eine best. Krankheit des Augenlides* Suçr. 2,309,7. Çiāṇ. Saṃh. 1,7,87.

श्यावाश्व (श्याव + अश्व) 1) adj. patron. *braune Rosse habend*: त्रय Çiāṇ. Çr. 14,33,16. Taitt. Ār. 1,11,2. AV. 11,2,16. — 2) m. patron. N. pr. eines Mannes, Liedverfassers von ṚV. 5,52—61. Ātreja ṚV. 5,52,1. 61,5. 8,38,10. AV. 4,29,4. 18,3,18. Āçv. Çr. 12,14,1. Pāraṣk. Bṛ. 3,3,11. Çiāṇ. Çr. 16,11,3. Pravarādhyāy. in Verz. d. B. H. 38,2 v. u. Verz. d. Oxf. H. 33,a,19. fg. °रतुत ṚV. 5,61,5. श्यावाश्वस्य प्रकितः N. eines Sāman Ind. St. 3,240,b. — 2) n. a) *die Geschichte von* Çj. Çiāṇ. Çr. 16,11,7. — b) N. verschiedener Sāman Pāraṣk. Bṛ. 3,3,10. Ind. St. 3,240,b.

श्यावाश्वि (von श्यावाश्व) m. patron. des Andhigu ṚV. Anukr.

श्यावास्य (श्याव + आ°) adj. *ein braunes Gesicht habend* Pāṇ. Gaṇ. 1,3. Davon nom. abstr. °ता Suçr. 2,406,2.

श्यावी f. etwa *Dunkelheit* (von श्याव) ṚV. 6,15,17.

श्येत Uṇādis. 3,93 (paroxyt.). adj. (f. श्येती Çiāṇ. 2,20. P. 4,1,39; nach dem Schol. auch श्येता) *röthlich weiss* (*weiss* AK. 1,1,4,22. H. 1392. nach den Comm. = श्वेत, शुभ्र, रक्त, आरक्तः श्वेतः, आलोहितः श्वेतः): Agni ṚV. 1,71,4. 7,4,3. Rosse 5,33,3. एनी, श्येनी, कल्मा, रोहिणी AV. 6,83,1. 18,4,32. VS. 24,3. die Farbe der auf- oder untergehenden Sonne Çat. Br. 3,3,4,7. Kāṭy. 15,4. der Açvin Çat. Br. 3,3,4,1. 9,3. Çiāṇ. Çr. 15,14,23. Kāṭy. 13,4. Kāṭy. Çr. 15,3,23. हंसश्येतो Kāṃ. 3, 21. कुमुदश्येतो P. 6,3,2, Schol. श्येनी = कुमुदपत्त्राभा Halāy. 4,53. — श्येनी s. auch unter श्येन.

श्येतकोलक m. *ein best. Fisch* ÇKDa. angeblich nach Hir. — Vgl. श्वेतकोल.

श्येतार्त (श्येत + अत) adj. (f. ई) *röthlich weisse Augen habend* VS. 24, 3. Çat. Br. 3,3,4,14. fg. Kāṭy. 24,1. Kāṭy. Çr. 7,6,14.

श्येतेरी in Verbindung mit कृ TS. Pāṛ. 10,18. nach dem Comm. so v. a. *beneistern* TBa. 1,1,6,3. TS. 5,5,6,1. 2.

श्येन Uṇādis. 2,46. 1) m. a) *der grösste und stärkste Raubvogel: Adler*; auch *Falke* oder *Habicht* Naigh. 3,3. Nir. 4,24. 11,1. AK. 2,8, 46. Taṃr. 3,3,260. H. 1334. an. 2,285. Med. n. 21. Halāy. 2,96. श्येनो न भीतो धनरो रजांसि ṚV. 1,32,14. 33,2. 118,11. 163,1. श्येनो इव धर्णसितो वरारिते 163,2. 2,42,2. 4,6,10. 5,44,11. 48,3. 7,30,3. 63,3. 8,20,1. श्येनो गृध्राणाम् 9,96,6. 10,99,6. 127,6. TS. 2,4,3,1. श्येनो व नीडा पतेन्द्रः

5,4,44,1. VS. 9,9. 19,10. AV. 3,3,4. यथा श्येनात्पतत्त्रिणः संविजते 5, 21,6. 7,41,2. 11,9,9. holt den Soma RV. 1,93,6. 3,43,7. 4,18,12. 26, 3. 27,2. 6,20,6. 46,12. 8,71,9. 9,66,6. 77,2. 10,11,4. VS. 6,32. Çat. Br. 12,7,4,6. Gespann der Açvin RV. 1,118,4 (daher = अश्व Naigh. 1,14). Agni heisst दिवः श्येनः RV. 7,15,4. — Çat. Br. 14,7,2,19. Pañcav. Br. 1,5,2. 19. 13,10,12. वयसां वोर्यतमः Kâṭh. 37,14. तेपिष्ठः Śnâpv. Br. 3, 8. M. 11,135. MBh. 1,2621. 2888. fgg. 5991. 3,15692. 12,9943 (श्येनाश्वा° mit der ed. Bomb. zu lesen). Harîv. 223. R. Gorr. 2,46,5. 3,20, 19. Suçr. 1,24,2. 202,13. Kap. 4,5. Spr. 3326. (II) 2852. 4963. Vaitân. Bṛh. S. 43,62. 46,69. 79,24. 86,38. 88,1. 11. 94,5. Râjâ-Tar. 3,81. Mâlav. P. 104,8. Bâlar. P. 3,10,23. 5,23,3. 6,6,37. 7,8,28. 8,10,10. Verz. d. B. H. No. 897. H. 48. Pañcav. 188,15. — *b*) N. eines Ekâha Śnâpv. Br. 3,6. Kâtj. Çr. 22,3,1. 5,30. Mâç. 3,7 in Verz. d. B. H. 72. श्येनाजिरा Âçv. Gṛhj. 3,7,1. Çâṅkh. Çr. 14,22,4. — *c*) Bez. *einer best. Schlachtordnung* MBh. 6,3062. Kâm. Nîtis. 18,48. 19,44. — *d*) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âgneja, Liedverfassers von RV. 10, 188. — MBh. 2,293. — 2) f. ई *die Urmutter der Adler, Falken* u. s. w. MBh. 1,2620. fg. 2633. Harîv. 222. fg. R. 3,20,18. fg. 22. fg. VP. 148. Mârk. P. 104,8. — 3) n. *a*) *Brust* Kâtç. 45; vgl. 4) *a*). — *b*) N. eines Sâman Ind. St. 3,240,*b*. Pañcav. Br. 13,10,12. Lâṭj. 8,2,8. — 4) adj. *a*) etwa *adlergestaltig:* श्येनमंस्य वर्तः कृणुतात् TBr. 3,6,6,2. श्येनं वत्त उद्गातुः Ait. Br. 7,1. Âçv. Çr. 12,9,3; vgl. AV. 9,7,5. vom *Adler* oder *Falken kommend:* मांस Weber, Kṛṣṇaj. 221; vielleicht fehlerhaft für श्येन. — *b*) = श्येत Taitt. Ĥ. an. Med. — Vgl. तिग्र°, दिवःश्येनी und श्येनी unter श्येत.

श्येनकपोतीय (von श्येन + कपोत) adj. *den Adler (Falken, Habicht) und die Taube betreffend, von ihnen handelnd:* आख्यान u. s. w. MBh. 1,448 (vgl. 3, Adhj. 130. fg.). Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,2.

श्येनकारण n. *acting rashly or desperately; burning on a separate funeral pile* Wilson. — Vgl. श्येनोपदेश.

श्येनगामिन् adj. *wie ein Adler* u. s. w. *dahinfliegend;* m. N. pr. eines Râkshasa R. 3,29,30.

श्येनघण्टा f. *eine best. Pflanze,* = दन्ती Râgân. im ÇKDr.

श्येनचित्त adj. *in Gestalt eines Adlers geschichtet* P. 3,2,92, Schol. TS. 5,4,11,1. Kâṭh. 21,4. m. a *hawk feeder or keeper* Wilson nach Çaṅkarâr.

श्येनचित्र m. N. pr. eines Mannes MBh. 13,3665.

श्येनजित् m. desgl. MBh. 3,13203. fgg. 5,4781. Verz. d. Oxf. H. 5,*b*,12.

श्येनजीविन् m. *Falkoner* M. 3,164.

श्येनजूत adj. *adlerschnell* RV. 9,89,2.

श्येनपत्त्र n. *Adlerfeder* Çat. Br. 12,7,3,22. 9,3: Kâṭj. Çr. 19,2,27.

श्येनपत्वन् adj. *mit Adlern* (als Gespann) *fliegend* RV. 1,118,1.

1. श्येनपात m. *Adler —, Falkenfang* P. 6,3,71. Schol. zu 4,2,58. — Vgl. श्येनपात.

2. श्येनपात adj. (f. आ) *wie ein Adler oder Falke dahinfliegend* MBh. 3,10646.

श्येनवल्गु n. N. eines Sâman Ind. St. 3,240,*b*.

श्येनयाग m. *ein best. Opfer* Colebr. Misc. Ess. 1,319.

श्येनरंहस adj. *vom Adler gebracht:* Soma Çat. Br. 4,5,10,2. 4. Kâṭj. Çr. 25,12,9. nach dem Comm. *eine Schmarotzerpflanze;* vgl. श्येनाहृत als *eine* Soma-*Art* Nigh. Pa.

श्येनाक्ष्य (श्येन + अक्ष्या) m. *Ardea sibirica* H. ç. 193.

श्येनाभृत adj. = श्येनहृत RV. 1,80,2. 8,84,2. 9,87,6.

श्येनाय् (von श्येन), °यते *einen Adler oder Falken spielen* P. 3,1,11, Sch.

श्येनावपात (श्येन + अव°) m. *das Herabschiessen eines Adlers oder Falken:* °पातमभियत्य Prân. 66,14, v. l. °पातमवपत्य (adv.) *wie ein A. oder F. herabschiessend* im Texte.

श्येनाश, श्येनाश्यस्येनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,240,*b*.

श्येनाहृत s. u. श्येनहृत.

श्येनिका (von श्येन) f. 1) *das Weibchen eines Adlers oder Falken* Ind. St. 3,376. — 2) N. zweier Metra: *a*) *4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑–– Ind. St. 3,376. — *b*) *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑–⏑–⏑–– ebend. 377.

श्येनोपदेश (श्येन + उप°) m. *recommendation or injunction to women, to burn on a separate funeral pile* Wilson. — Vgl. श्येनकारण.

श्यैत (von श्येत) 1) m. patron. Âçv. Çr. 12,10,11. Âṅgirasa Ind. St. 3,240,*b*. — 2) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,240,*b*. 241,*a*. AV. 15,4,1. Ait. Br. 4,27. TS. 5,5,6,1. TBr. 1,1,6,2. Âçv. Çr. 8,4,27. 6,16. Pañcav. Br. 7,10,2. Lâṭj. 1,5,22. °नीधसे Kaush. Up. 1,5. °नीधसम् Ind. St. 3,241,*a*.

श्यैनपात (von श्येनपात) adj. (f. आ) *wobei Falken fliegen:* मृगया *eine Jagd mit Falken* P. 4,2,58. 6,3,71. AK. 3,6,2,6.

श्यैनिक adj. *zum Ekâha Çyena gehörig* Schol. zu Pañcav. Br. 13,13,5.

श्यैनेय (von श्येनी) m. metron. des Gâṭâju Mahâvîrac. 73,7.

श्योनाक m. *Bignonia indica* AK. 2,4,2,37. Karaka 1,2. Suçr. 2,106, 2. 330,6. Çârîr. Sârîr. 2,1,10. 2,66. श्योणाक Vaitân. Bṛh. S. 54,28, v. l.

श्रङ्ग्, श्रंङ्गति (गत्यर्थ) Dhâtup. 4,16. — Vgl. श्रङ्ग्, श्रङ्ग्.

श्रङ्ग्, श्रंङ्गति (गत्यर्थ) Dhâtup. 5,44. — Vgl. श्रङ्ग्, श्रङ्ग्.

श्रण्, श्रंणति (दाने) Dhâtup. 19,26. श्राणयति (दाने) 32,42. शशिश्रणत् und शशश्राणत् Siddh. K. zu P. 7,4,2. Vop. 18,2.

— वि caus. *verschenken, schenken:* तं (विभवं) विश्राणय सर्वशः R. Gorr. 2,32,21. वसु (so ed. Bomb.) विश्राणयामास यथा वैश्रवणस्तथा MBh. 13,2803. वसु विश्राणय तत्सर्वम् 15,729. वेश्मानि सुहृद्भ्यः Raghu. 14,15. Râjâ-Tar. 8,2395. विश्राणय दक्षिणां तस्मै Pañcav. 3,10,14. विश्राणित Gorr. 1,4,48. R. 2,32,25 (अ°). Raghu. 5,1. Daçak. 83,6. — Vgl. विश्राण, विश्राण.

श्रत् oder श्रद् indecl. P. ed. Calc. 1,4,57, Vârtt. 2. = सत्य Naigh. 3,10. nur in den beiden Verbindungen: 1) mit कृ *zusichern, verbürgen:* श्रद्दिधा वार्या कृधि RV. 8,64,2. श्रत्करोति (अव्यक्तानुकरणे) P. 5,4,57, Schol. — 2) mit धा *a*) *vertrauen, Jmd* (dat.) *glauben; für wahr halten, Etwas glauben;* Construction P. 3,3,145. fgg. nebst Vârtt. Vop. 25,11—14. 18. श्रद्दस्मै धत्त स त्रैनाम् इन्द्रः RV. 2,12,5. 1,55,5. 103,3. 104,7. श्रद्दिर्यथा दधत् 10,39,5. 147,1. वचसे VS. 8,5. *b*: श्रद्दधाति मत्तिं देवा इति AV. 11,2,28. Çat. Br. 1,3,4,28. Taitt. Âr. 1,11,14. श्रद्धे infin. RV. 1, 102,2. श्रद्धित (श्रद्धितं = श्रद्धास्य संज्ञातां gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36) 104,6. med. *sich Jmd anvertrauen:* मन्मे देवा दधिरे चारुमध्वरं पुरोहाम् TS. 1,4,4,1. TBr. 3,11,8,5. Çat. Br. 14,6,8,22. बृहस्पतये वै देवा न

मद्धत *misstrauen* Kiṣṇ. 37, 7. उभयं ऽस्य देवमनुष्या इष्टाए मद्धते *Etwas halten auf* TS. 1, 6, 8, 1. मद्धान बोन्नः पुरो विभिन्दन्वेषत् *bauend auf* (acc.) ṚV. 1, 103, 3. इदं कविः मद्धानो नुकोमि *vertrauensvoll, gläubig* 5, 44, 16. शृण्वन्तु मे मद्धानस्य देवाः AV. 4, 35, 7. 5, 122, 5. 12, 3, 7. 9, 5, 7. Śaṅkh. Br. 2, 10. सु° Çat. Br. 12, 4, 4, 10. — Âçv. Gṛhy. 1, 1, 3. Kauç. 73. Belege aus der klassischen Literatur: mit acc. der Sache; act.: न मूरतौ मद्धामि ते MBh. 4, 288. मद्ध्यौ सर्वमेव ते 1373. R. 4, 8, 11. मद्धुर्नेव तदाक्यम् 57, 1. 5, 95, 3. Spr. (II) 1595. Mâlav. P. 16, 3. med.: कस्ते मद्धास्यते वचः MBh. 1, 3060. 5, 7406. 8, 1790. Prab. 52, 4. Bhâg. P. 3, 33, 11. Pañcat. 48, 6. 91, 4. मद्धाय Bhâg. P. 3, 24, 5. pass.: मद्धीयत प्रियतमेन वचः Çiç. 9, 69. Bhâg. P. 10, 65, 12. mit gen. der Sache Bhâg. P. 2, 1, 10 (act.). यथद्धानाः पुरुषा धर्मस्यास्य Bhag. 9, 3. Spr. (II) 3317. mit loc. der Sache: ये वेदिषः मद्धते सत्ये सत्येतरे (sc. वचसि) ऽपि वा 5364. mit gen. der Person; act.: कच्चिन्न मद्धास्यासाम् MBh. 2, 217. 4, 946. 5, 5995. R. Gorr. 2, 100, 26. med. 5, 3, 7. mit acc. der Person: न मद्धत तां दामोमनकेतोरुपस्थिताम् *er glaubte nicht, dass* MBh. 4, 249. मूर्खास्ते मद्धतुर्विद्वान् Bhâg. P. 10, 89, 15. mit acc. der Sache und abl. der Person *Etwas von Jmd erwarten:* न मद्धाति कल्याणं पेरुभ्यो ऽप्यात्मशङ्कितः Spr. (II) 3469. Ohne Ergänzung: act.: मद्धासि न चेत्स्वयम् MBh. 1, 3099. 5, 7499. R. 2, 24, 4. Spr. 3077. med.: मद्धान M. 4, 138. 11, 39. Spr. 3030. 3032. Bhag. 4, 40 (सु°). 12, 20. MBh. 3, 6030. Mṛcch. 56. Vaṇîs. Bṛh. S. 12, 17. Bhâg. P. 1, 12, 3. 10, 1, 12. Sarvadarçanas. 32, 18. मद्धित *Vertrauen habend* Bhâg. P. 10, 69, 13. सु° 8, 20, 14. — b) *sich einverstanden erklären, gutheissen;* mit acc. der Sache, act. Kathâs. 31, 89. 44, 125. 48, 406. 103, 93. med. 10, 89. 44, 102. 118, 12. मद्धाय 46, 136. 68, 63. 103, 112. mit acc. der Person *sich mit Jmd einverstanden erklären* so v. a. *Jmd willkommen heissen;* act.: धृष्टो ममापि नो को ऽत्र मद्ध्यात्स्वयमागतो 114, 35. med. 5, 114. 21, 47. 24, 140. मद्धाय 48, 136. ohne Ergänzung *seine Einwilligung geben, einstimmen:* तवेति मद्धेतराम् 102, 85. मद्धान 46, 198. मद्धित *gut geheissen:* वचसु 74, 123. 82, 212. तवेति मद्धिते राज्ञा 90, 85. *willkommen geheissen:* तच्छ्रुद्धितः 26, 184. 110, 41. — c) *ein Verlangen haben nach Etwas:* नाहारं मद्धे Kathâs. 73, 359. देहं त्यक्त्वाविराकारः स्थितस्तत्र विलोकयन् । दाशान्भक्तयतो मत्स्यान्मनसा मद्धे नुधा ॥ 112, 139. mit infin. Bhâg. P. 3, 6, 35 (act.).

1. मद्, मर्दति (विमोचनप्रतिकर्षयोः) Dhâtup. 31, 39. (मनु) म्रन्थति TS. मर्थति (मोक्षणे) Dhâtup. 34, 17. मर्न्थते (शैथिल्ये) 2, 34. शम्थेः मेथतुस्, मेथिव P. 6, 4, 122, Vârtt. auch मन्थतुस् शमन्थिथ Siddh. K. zu P. 1, 2, 6. Vop. 8, 32. 12, 6. 16, 5. शम्थाव, 1. शमथ und शम्थाथ Siddh. K. zu P. 1, 2, 6. मथित्वा und मन्थित्वा Vop. 26, 106. 1) *locker —, los werden, nachgeben:* यर्मन्थन्दृळ्हावर्दत वीळिता ṚV. 2, 24, 3. मन्थते नाशीरदितेर्सुते यते *sich nachgiebig zeigen* 9, 69, 3. मन्थते, यर्मन्थिष्ट मेखला zu P. 3, 1, 89. Vop. 24, 12. — 2) *schlaff —, welklos machen* ṚV. 10, 171, 3. मन्थति मेखलाम् zu P. 3, 1, 89. med. *sich* (dat.) *ablösen:* पाशान् AV. 14, 1, 57. — Vgl. शिथिर्, मथ्.

— caus. मथयति (in der Saṁh. auch मथा° AV. Pâip. 4, 23) Dhâtup. 34, 17 (मथयति मोक्षणे). 35, 18 दौर्बल्ये). शिमथत्, शिमथयिषु. 1) *locker machen:* घर्द्रिम् ṚV. 10, 112, 3. 9, 68, 3. वलम् Ait. Br. 6, 24. *los lassen, Raum geben:* मथयो सूषणे त्वम् AV. 4, 11, 3. med. *schlaff werden, nachgeben:* न वो ऽद्यौः मथयत्ताङ् मिमीतः ṚV. 5, 54, 10. वीरा: 85, 4. 8, 88, 6 (wo मथयत्त st. मथयत zu lesen ist). — 2) *lösen, ablösen; erlassen:* एनांसि ṚV. 1, 24, 14. खागः 7, 93, 7. 5, 85, 7.

— मनु 1) *auflösen:* सोममुपनम्नाति, मनुप्रन्थति TS. 6, 1, 9, 7. — 2) med.: मनु स्वं भानुं मंथते घर्णयैः von *sich ablösen* so v. a. *ausbreiten, umherstreuen* ṚV. 5, 59, 1. — caus. etwa *erschrecken* (trans.): मा बभ्रुर्यो मा धनुं शिमथः ṚV. 4, 32, 22.

— घन caus. *ablösen* ṚV. 1, 24, 15.

— उद् caus. *auflösen* ebend.

— नि, °मथ्य Nir. 6, 4 zu einer Worterklärung, nach D. und Sây. so v. a. निबध्य.

— प्र vgl. प्रमथ *fg.*

— वि med. *für sich öffnen:* उभे मावा काव्येना वि शंमथे ṚV. 1, 70, 2. — caus. 1) *lösen:* वि मच्छ्वाय रशनाम् ṚV. 2, 28, 5. 1, 24, 15. पर्वाणि AV. 12, 3, 24. — 2) *ablösen:* एनांसि ṚV. 4, 12, 4. — 3) *auflösen, zu Nichte machen:* वि यू मृधः शिमथः 2, 28, 7.

2. मथ्, मंथति fehlerhaft für मथति v. l. in Naigh. 2, 19 und Dhâtup. 19, 37. मंथति und माथयति v. l. für मथ् 34, 19. मन्नाति v. l. für मन्थ् 31, 41. माथयति 32, 13 (प्रयत्ने, प्रतिकर्षे). मन्थयति = मन्थ् 34, 21 (संदर्भे, वधे).

मथ m. nom. act. von 1. मथ्; s. क्षिप्र°.

मथर्य्, °र्यति *lax —, schlaff werden* ṚV. 10, 77, 4.

मद्धान s. u. मद् 2): davon °ता f. *Glaube* Spr. (II) 4030. MBh. 5, 2444. 14, 1043.

मद्धयत् partic. (?) = मद्धान *gläubig* Mṛcch. Up. 3, 2, 10.

मर्डा (मद् + धा) 1) adj. *vertrauend, treu:* आपः मर्डा: मर्डा वा यस्मै देवाः Kiṣṇ. 31, 3. TS. 1, 6, 8, 1; vgl. Âçv. Çr. 2, 3, 23. — 2) f. gaṇa गिरादि zu P. 3, 3, 104. Vop. 26, 193. indecl. (?) gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. a) *Vertrauen, Zuversicht, Glaube; Treue, Aufrichtigkeit* Naigh. 3, 9. Nir. 9, 30. AK. 3, 4, 23, 105. H. an. 2, 252. Hall. 4, 95. निगमाचार्यवाक्येषु भक्तिः मर्डेति विमुता Çâṅkarâbhâsa in Verz. d. Oxf. H. 223, b, No. 544. im Joga definirt als योगविघ्ने चेतसः प्रमादः Comm. zu Joga. 1, 30. तौ सत्यौ मर्डामभ्या हि यातम् ṚV. 1, 108, 6. तं मर्डाभिर्मन्दमानः सोमैर्दीर्घीतये चुमुरिमन्द्र सिष्यप् 6, 26, 6. 7, 32, 14. 8, 1, 31. सत्य, सत्य, मर्डा 9, 113, 2. 4. 10, 151, 1. VS. 19, 30. 77. 20, 24. 18, 5. AV. 5, 7, 5. 9, 5, 21. 10, 2, 19. 6, 4. 11, 7, 9. 19, 64, 1. धा लेव मर्डये क्षेतव्यम् Ait. Br. 5, 27. 7, 10. न न चिकित्सेत्स ब्रूयात्सत्य मर्डया 8, 15. मर्डामनोभ्य TS. 1, 6, 8, 1. TBr. 3, 7, 6, 1. कथं न्वेषामत्रैव मर्डा भवति Çat. Br. 1, 3, 4, 26. 11, 2, 3, 20. 3, 4, 1. मर्डये वे देवा दीक्षा निरमिमीत 12, 1, 3, 1. 3, 23. दीक्षायै त्वा पदक्रुद्धा 8, 2, 4. fgg. 14, 6, 9, 22. मर्डावित्त 7, 3, 23. 9, 4, 12. Taitt. Up. 1, 11, 3. दानं प्रतियत्नेन क्षेमः मर्डाया ललणं स्मृतम् Tattvas. 31. M. 3, 202. 259. 275. 4, 225. fg. Bhag. 6, 37. 17, 3. मर्डया वर्धते धर्मः R. 3, 43, 38. मर्डामिव विमानिताम् 5, 21, 10. मर्डया प्राप्तो वाक्यमेतदुवाच ह 7, 50, 9. Kâm. Nîtis. 11, 62. Rasa. 2, 16. Çiç. 188. Spr. 3033. fg. (II) 3069. धर्मकार्येषु (oder *Lust an*) 4518. 5816. Râja-Tar. 6, 111. मर्डया युक्तः AK. 3, 1, 27. °समेत Spr. 2770. °रक्षित Wasa, Râmây. Up. 349. °पूरितचेतस् Pañcat. 265, 18. कृत्रिम° L.A. (III) 89, 7. मर्डा मुतिषु संदधे 91, 3.

स्वमक्षिणो। दृता निधुवन्श्रद्धा धनदानैः सदक्षिणा Rtúa-Tan. 5,285. Sarvadarçanas. 65,11. °तयमी gaṇa दधिपयआदि zu P. 2,4,14. °मेधे abend. Çiksh. Gaur. in Ind. St. 10,132. Weber, Nax. 2,338. सु° M. 4,225. Yog. 25,11. यच्छ्रद्ध adj. welchen Glauben habend Bhag. 17,3 — b) personificirt als Tochter des Prajâpati (vgl. प्रजापतेः श्रद्धा als N. eines Sâman Ind. St. 3,224,b) TBa. 2,3,10,1. der Sonne Çat. Br. 12,7,3,11. Tochter Daksha's und Gattin Dharma's MBh. 1,2378. VP. 54. Mârk. P. 50,20. Mutter Kâma's 25. Tochter Kardama's und Gattin des Aṅgiras Bhâg. P. 3,24,22. 4,1,34. Gattin Manu's 9,1,11. 14. — b) Bewillkommnung: समश्रद्धा adj. Jmd willkommen heissend, freundlich entgegen kommend Kathâs. 75,93. श्रद्धा = श्रादर् Mân. Dh. 19. — c) Lust, Verlangen AK. H. an. Med. न मे श्रद्धा स्वर्गे गन्तुं विनात्मना MBh. 12,7223. 7351. Harîv. 10889. चिच्छेद जीविते श्रद्धां धर्मे यशसि चात्मनः R. 2,38,3. का नाम जीविते श्रद्धा सुखे वा तं प्रियं विना 5,20,25. श्रवणे 7,50,17. ज्ञातश्रद्धो ऽम्बुवे तस्मिन् Kathâs. 72,29. तीर्थिणां प्रति ज्ञाता मे श्रद्धा Kathâs. 65,142. युद्ध° MBh. 7,9187. 9,1940. R. 7,8,5. 23,5,48. चिच्छेद जीवितश्रद्धां मुखश्रद्धां च दुःखितः 2,37,15. प्रदान° Kathâs. 67, 39. लक्ष्मीलवश्रद्धया Spr. (II) 2391. श्रद्धाच्छेद Çârîr. in Orient und Occident 2,698. °प्रतीघात P. 1,4,66. यदक्षरैवेनं श्रद्धायनमेत् Schol. zu Kâty. Ça. 7,1,3. 354,23. श्रद्धया so v. a. gern Bhâg. P. 10,38,29. 86,5. die Gelüste bei Schwangeren H. 541. Halâs. 2,343. °प्रणयनमुज्ञावचेषु भावेषु Kâmas 4,4. Appetit Suçr. 1,155,3. 2,356,1. so v. a. Neugier TBa. 3,11,8,1. श्रद्धामाख्याहि नस्तावत् so v. a. stille unsere Neugier und sage uns Kathâs. 65,196. — d) = प्रीति Çârdûl. im ÇKDa. — Vgl. यथाश्रद्धम् und श्राद्ध.

श्रद्धातृ nom. ag. glaubend an: यमुं लोकम् Ind. St. 2,203. fg.

श्रद्धातव्य partic. fut. pass.; n. impers. zu glauben MBh. 12,11811. Spr. (II) 3298.

श्रद्धादेय adj. Kaṭhâv. Up. 4,1,1 wohl fehlerhaft für श्रद्धेय.

श्रद्धादेव श्रद्धा adj.; ein comp. nach Art von भरद्वाज u. s. w.) adj. Gott vertrauend, gläubig (Comm. श्रद्धावत्, श्रद्धालु) TS. 2,5,4,2. 7,1,9,2. TBa. 3,2,5,9. Kâṭh. 30,1 in Ind. St. 3,462. Çat. Br. 1,1,4,15. Çâṅkh. Br. 2,8. — Vgl. श्रद्धादेय.

श्रद्धान n. Glaube H. 77. Sarvadarçanas. 31,17. रुचिर्जिज्ञासितव्येषु मग्नस्यश्रद्धानमुच्यते 19. 33,17.

श्रद्धाप्रकाश n. Titel einer Schrift Hall 144.

श्रद्धामनम् (श्रद्धा adj.) adj. vertrauend oder treu ṚV. 2,26,3.

श्रद्धामनस्यो f. instr. treu ṚV. 10,113,9.

श्रद्धामय (von श्रद्धा) adj. aus Glauben zusammengesetzt: पुरुष Bhag. 17,3.

श्रद्धालु (von श्रत् mit धा) adj. P. 3,2,158. 1) gläubig AK. 3,1,27. H. 490. Med. l. 136. Bhâg. P. 3,8,9. 11,11,33. — 2) Gelüste habend (von einer Schwangeren) AK. 2,6,2,21. H. 539. Med.

श्रद्धावत् (von श्रद्धा) 1) adj. a) gläubig Bhag. 3,31. 4,39. Spr. (II) 4475. Mârk. P. 32,28. — b) einstimmend, beipflichtend Kathâs. 101,108. — 2) f. °वती N. pr. einer mythischen Stadt auf dem Meru Comm. zu Bhâg. P. 5,16,20.

श्रद्धालु (wie oben) adj. gläubig MBh. 12,11813. 13,3533 (आ° fälschlich od. Calc.). Kull. zu M. 2,228.

श्रद्धेय adj. glaubwürdig, Vertrauen verdienend ṚV. 10,125,1.

श्रद्धेय (von श्रत् mit धा) adj. zu glauben, glaubwürdig (von Sachen) AV. 4,30,4. MBh. 5,7513. 6,250. 14,2703. Spr. (II) 4632. Çiç. 70,2. Rtúa-Tan. 4,72. Pañkat. 161,1. 217,11. सु° R. 2,68,5 (96,13 Gorr.). 5,36,22. 6,1,4. Kâm. Nîtis. 8,29. Para. 50,8. Bhâg. P. 7,1,32. Pañkat. 79,16. Als subst. am Ende eines adj. comp.: तदात्वमात्र° dem nur die Gegenwart etwas Glaubwürdiges ist Harîv. 11180. die neuere Ausg. liest °मात्रे und Nîlak. erklärt श्रद्धेय durch श्रद्धावत् (!).

श्रद्धेयत्व (von श्रद्धेय) n. Glaubwürdigkeit: वचसस्य Pañkat. 162,2. सु° Weber, Ind. 141.

श्रन्थ् s. श्रथ्.

श्रन्थ (von 1. श्रथ्) m. ein N. Vishṇu's Tân. 1,1,28.

1. श्रन्थन n. nom. act. von 1. श्रथ् (s. क्रिम°). f. आ P. 3,3,107. Vop. 26,104.

2. श्रन्थन (von 2. श्रथ्) n. = ग्रन्थन das Winden eines Kranzes H. 653. Halâs. 4,45.

श्रप s. सुश्रप.

श्रपण (vom caus. von आ) 1) adj. kochend; m. Kochfeuer (der bhavanîja oder gârhapatja) Kâty. Ça. 2,3,9. 16,4,10. 12. — 2) f. ई Kochgeschirr; s. u. 1. वप. — 3) n. das Kochen TS. 3,6,8,4. Çat. Br. 6, 5,4,21. Kâty. Ça. 1,1,15. 8,25. 2,5,22. 20,7,9. 27. MBh. 12,9134. — Vgl. पशु°, व्रत°.

श्रपयितृ (wie oben) nom. ag. Koch Çat. Br. 1,2,3,14.

श्रपिस 1) adj. s. u. आ caus. — 2) f. आ Reisbrei ÇKDa. und Wilson; vgl. आपाण.

1. श्रम्, श्राम्यति (तपसि खेदे च) Dhâtup. 26,93. P. 7,3,74. श्रममत्, श्रमित्वा, शश्रमुस्, श्रेतुस्, शश्रमाणाः श्रमति u. s. w. s. unter खि. müde —, überdrüssig worden; sich abmühen, sich vergebens bemühen; im Ben. sich kasteien: सिन्धवो न श्राम्यति ṚV. 2,28,4. 9,22,4. श्रमयदिषम् न्यामां सर्मनं गती AV. 5,60,3. श्राम्यतः पचतो विद्धि सुव्रत: 11,1,30. मा पुष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म ṚV. 2,29,4. सख्ये तव शश्रमाण 8,4,7. न मा श्रमत् impers. 2,30,7. पाकयज्ञेन मनुराश्राम्यत् TS. 1,7,8,3. श्राशया TBa. 3,12,8, 2. 3. Âit. Br. 3,25. इमं यस्ते शरीरकश्रमाणः sich mühend ṚV. 4,12,3. 1,179,1. 10,105,3. Çat. Br. 1,8,4,7. 10,6,5,2. वृथा श्राम्यसि Spr. (II) 46. R. Gorr. 2,62,11. पथि श्राम्यतां प्रोषितानाम् Megh. 97. Rtúa-Tan. 6,46. वीरो शश्रमतुर्न च Bhatt. 14,110. नाश्रमद्वन्द्रवंगमान् 15,48. 91. श्रममाण Pañkat. 3,12,9. — partic. श्रान्त 1) adj. a) ermüdet, abgearbeitet ṚV. 8,56,6. वधूः AV. 4,20,3. 5,74,3. Çat. Br. 4,6,8,1. 3. 14,7,1, 19. 3,28. यथा श्रान्ते वेश्म प्रपादेषु: Çâṅkh. Br. 27,6. Âit. Br. 3,47. 7,15. M. 9,300. MBh. 1,1140. 5877. 3,554. 2234. 2239. 2386. 2642. 13297. R. 2,77,20. R. Gorr. 2,74,10. Vish. 67,2. Spr. 2970. (II) 5593. 5640. Vasiṣ. Dhs. S. 68,116. Kathâs. 18,115. 23,88. 47,73. Rtúa-Tan. 5,651. °वाक्त्व R. 1,62,1. 2,45,33. 68,21. 71,30. Rasa. 1,48. Kathâs. 18,196. श्रद्धायामशालागार° 191. सुध° Spr. (II) 225. °हृदय R. 2,71,29. °मनस् Çiç. 102, v. l. संसारश्रान्तचित्त Spr. 5107. श्रान्तेव दृष्टिः Bhâg. P. 3,20,36. श्रान्तो मूर्ता शक्तिं मनोभुवः Kathâs. 3,62. यति° Pañkat. 52,4. नातिश्रान्ततनु Mârk. P. 61,18. सु° Pañkat. 134,18. श्रश्रान्तः किमिदं करोषि Kathâs. 40,17. श्रश्रान्तम् adv. unermüdlich, unverdrossen Spr. (II) 2065. 3274. — b) = शान्त zur Ruhe gelangt H. 311. Halâs. 2,344. — 2) n. Ermü-

dung, Mühe; Kasteiung, Frucht der religiösen Bemühung: न मृषा श्रान्तं यदवोचत्ति देवाः RV. 1,179,3. न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः 4,33,11. TS. 6, 5,6,2. Kāṭh. Ça. 4,7,18. Aīt. Br. 7,24. — Vgl. यज्ञश्रान्त.

— caus. श्रामयति und श्रमयति *müde machen, ermüden:* श्रामयामि (श्रावयामि die neuere Ausg.) किमात्मानमाकृते शक्रमूनुना Harīv. 8137. श्रमयन्त्यलानि Kām. Nītis. 13, 18. श्रमयति शरीरम् Spr. (II) 6550. so v. a. शम् caus. *bezwingen, besiegen:* तपश्चरणयुक्तस्य श्राम्यमाणेन्द्रियस्य ते R. 7,2,36. — श्रामयति v. l. für श्रामयति (श्रामत्तणे) Dhātup. 35,40.

— आ s. आश्रम.

— उप *sich ausruhen* Kaṭṭ. 41. 48. 139.

— नि s. निश्रम.

— परि *sich sehr abmühen:* °श्रम्य absol. R. 7,23,51. partic. °श्रान्त *sehr ermüdet, erschöpft* M. 4,99. MBh. 1,5908. 6035. 3,2537. 10002. R. 1,9,58 (57 Gorr.). 2,54,24. 72,9. 4,9,24. 35,9. Kām. Nītis. 13,76. Mālatīm. 154,10. Kathās. 12,109. 123,151. Pañcat. 137,24. Hit. 85,4. परिश्रान्तेन्द्रियात्मन् Bhāg. P. 1, 6, 15. परिश्रान्तो ऽस्मि लोकस्य गुर्वीं धर्मधुरं वहन् R. 2,2,7. वृत्तसेचनात् Çiç. 16,20. घनेन कर्मणा 13,4. तपसा MBh. 5,5424. दीर्घवर्त्म° Spr. (II) 2820. ग्रास° Pañcat. 3,12,2. कूलपातपरिश्रान्तं प्रसुप्तमिव कुञ्जरम् R. 2, 103, 4 (111, 11 Gorr.). रणसंरम्भ° Rāǵa-Tar. 5,334. तृट्परिश्रमा° MBh. 1,7626. 3,2236. 4,2139. R. 3,71,3. Bhāg. P. 4, 26, 11. शोक° R. Gorr. 2, 84, 18. भिक्षावलि° *überdrüssig geworden* M. 6,34. मु° MBh. 3,2535. घ° R. Gorr. 2,73,14. यो यज्ञेऽपरिश्रान्तः Spr. (II) 3634. — Vgl. परिश्रम, परिश्राम.

— संपरि, partic. °श्रान्त *überaus ermüdet, erschöpft* R. 2,93,5.

— वि 1) *sich ausruhen:* व्यश्राम्यत् u. s. w. R. 1,62,1. 2. Spr. 3022. Çiç. 72,10. Vikr. 40,2. Kathās. 11, 56. 18, 192. 43, 60. 53, 101. 63, 12. 64, 119. 123, 210. Pañcat. 134, 18. विश्राम्यतीव मे हृदयम् 202, 18. विश्राम u. s. w. MBh. 1,5211. Ragh. 4,74. Kathās. 12, 135. 13, 43. 18, 378. 49, 335. 65, 22. 110, 134. विश्रमेयत्र वै श्रान्तः MBh. 3,13397. विश्रमाः 9,3457. व्यश्रमत् R. Gorr. 1,64,1. विश्रमतः (partic.) 2. विश्रम 7,26,26. अविश्रमद्भिः Mālav. P. 133,17. विश्रमध्वम् MBh. 1,3897. absol. विश्रम्य Çat. Br. 12,2,2,3. 4. 5. Spr. 2852. (II) 4325. 5150. Kathās. 19, 103. 26, 131. विश्राम्य (in beiden Ausgg.) MBh. 15,771. impers. विश्रम्यताम् Spr. (II) 3963 (v. l. विश्रा°). Kathās. 10, 164. 33, 123. Bhāg. P. 10, 88, 29. विश्राम्यताम् MBh. 3, 2331. R. Gorr. 1,65,9. Spr. (II) 379. Kathās. 52, 192. व्यश्रमि und व्यश्रामि Vop. 11,7. 24,6. विश्रान्त *ausgeruht* M. 7,151. MBh. 1,6. 2,2028. 3,2721. 2761. 16814. 5,5039. Harīv. 9700. R. 2, 83, 28 (90, 36 Gorr.). Mṛcch. 27. Çiç. 22, 17. Vikr. 18, 113. Daçak. 59, 6. Bhāg. P. 1, 13, 6. Hit. 77, 4. 99, 5. नोऽधश्चेद्° *erhält von* Kathās. 25, 207. s. das verbum finitum Iṣṭa bei Sāj. zu RV. 1,125,1. Kumārās. 6, 8. *sich ausruhend* Pañcat. 222, 4. तालीवनच्छायामुप° Rāǵa-Tar. 3, 30. Varāh. Bṛh. S. 56, 5. — 2) *eine Thätigkeit einstellen, aufhören, nachlassen:* सापि प्रतिदिनं कुटुम्बेन सह कलहं कुर्वाणा न विश्रश्राम Pañcat. 220, 24. fg. विश्राम्यतु वचसः Kumārās. 3, 9. विश्रान्तचारणानि (°वारणानि die ältere Ausg. 1, 17) Uttarār. 3, 1. दिगन्तविश्रान्तरथ Ragh. 3, 4. विश्रान्तेषु पथिषु Spr. (II) 937, v. l. °कथ (मुख) Ragh. 8, 54. अविश्रान्तदुःख Çiç. 89, 10. °पुष्पोद्गम Vikr. 130. °विलास Kathās. 46, 175. °वेर 220. कर्णान्तविश्रान्ते विशाले तस्य लोचने *bei den Ohren aufhörend* so v. a. *sich bis dahin erstreckend* Ragh. 4, 13. Rāǵa-Tar. 4, 20. श्रम विश्रान्तकर्णयुगलम् so v. a. *bis zu den Ohren reichend* Kathās. 40. (बलम्) परिश्रान्तं हि युध्येत विश्रान्तं सुविधानतः so v. a. *aus der guten Ordnung gekommen* Kām. Nītis. 13,76. विवेकविश्रान्तम् (v. l. °शून्यम्) अभिहितम् so v. a. *des Urtheils baar* Milav. 4, 1. — 3) *beruhen auf* (loc.): प्रत्याशा पुनरस्य चातकशिशोस्त्वय्येव विश्राम्यति (v. l. °ते) Spr. 3337. *Ruhe finden* so v. a. *Jmd sein ganzes Vertrauen schenken, sich ganz verlassen auf* (loc.): तद्या मया विधातव्यं विश्राम्यति यद्या कपिः R. 5,7,4. वरमेकः (पुत्रः) कुलालम्बी यत्र विश्राम्यते (विश्रम्यते v. l.) कुलम् Spr. (II) 1746. विश्राम्यन्ति महात्मानो यत्र कल्पतरावि॑व so v. a. *sich behaglich fühlen* 6200. विश्रम R. 4,62,28. 5,7,48. मयि विश्रम्य Bhaṭṭ. 8,9. मयि विश्रान्तः R. 5,7,4. 13. — Vgl. विश्रम fg. und विश्रान्ति fg. — caus. 1) *ruhen lassen;* mit kurzem Wurzelvocal Çiç. Gaṇ. 4,6. Ragh. 1,54. Kathās. 118, 117. 120, 94. 133. Daçak. 137, 19. Bhāg. P. 3,4,10. 10,15,14. mit langem MBh. 3,11004. 5,177. Ragh. ed. Calc. 1,55. Kathās. 52, 107. 123, 151. — 2) *Etwas zur Ruhe bringen, einem Dinge ein Ende machen:* रथोद्धतम् । रक्षो विश्रामयत्यार्ता क्षत्रभ्रून्येषु मौलिषु Ragh. 4,85. विश्रमितश्रमशीकर Gīt. 12,22. — desid. s. विश्रिश्रमिषु.

— परिवि, partic. °श्रान्त *vollkommen ausgeruht* Harīv. 8685.

— सम्, partic. संश्रान्त *ermüdet, erschöpft* MBh. 1,1017. 6,3274. Bhāg. P. 10,52,10. घ° *unermüdlich* Sūçr. 2,244,3.

2. श्रम् indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37.

श्रम (von 1. श्रम्) m. am Ende eines adj. comp. f. श्रा. 1) *Ermüdung, Müdigkeit, Erschöpfung* H. 319. खेदो रत्यध्वगत्यादेः श्रमनिद्रादिकृद्भ्रमः Sāh. D. 173. अश्वस्य दार्ढ्यं वि श्रमत्त्येषः RV. 10, 114, 10. AV. 4, 11, 10. 8,8,9. Çat. Br. 6,3,3,7. 14,4,3,31. MBh. 1,3892. R. 1,62,3. 2,31,13. R. Gorr. 1,25,12. Çiç. 7. Varāh. Bṛh. S. 104,10. Rāǵa-Tar. 1,371. 2, 154. Bhāg. P. 1,2,3. 4,20,4. तस्य फलः श्रम एव केवलम् 5,19,14. 9,21, 13. श्रमार्त M. 8,67. °कर्षित MBh. 1,6024. 3,2272. °संतापकर्षित 1, 1128. °मोक्षित 3,2961. °पीडित 16749. °खिन्न R. 2,28,11. °क्लान्त Çiç. 32,11. श्रमायुक्त = श्रमयुक्त R. Gorr. 2,11,11. न ते श्रमो भवेत् MBh. 3, 16775. श्रमं नावाप्नुयात् R. 2,24,21. श्रममध्यगात् Bhāg. P. 4,26,10. शास्तो मे भवत्या दर्शने (so ist wohl zu lesen) श्रमः Rāǵa-Tar. 3,420. (तम्) चकार विगतश्रमम् Kathās. 18,114. वाचं विपुलश्रमाम् Bhāg. P. 2,21,11. मद्कृतश्रमा R. 5,13,48. प्रजागरकृत° Spr. (II) 675. सुरतव्यापारजात° 1992. घर्घ° R. 2,72,5. घर्घश्रमपरिगत Mṛcch. 17. घर्घश्रमविनयन 53. विनीताध्व° Ragh. 4,67. अविज्ञातपथ° Kathās. 42, 103. मृगयाश्रमसुप्त 20, 136. रतिश्रमनुद् Kir. 5,28. गतायुध° Bhāg. P. 1,9,31. व्यर्थस्तस्य तपःश्रमः Pāṇ. 1,2,58. fg. विनयन्ते स्म तद्बोधा मधुभिर्विनयश्रमम् Ragh. 4,65. घर्मश्रमेण 2,67. रतिश्रमापनयन Spr. (II) 1493. Bhāg. P. 3,31,15. — 2) *körperliche oder geistige Anstrengung, — Arbeit, Mühe, Bemühung mit heiligem Werke oder Studium* H. 788 (*Waffenübung*). AV. 4, 35, 3. 6,133,3. 10,7,36. ब्रह्मचारी श्रमेण लोकास्तपसा पिपर्ति 11, 5, 4. 7, 17. 12,5,1. Çat. Br. 1,6,3,2. 6,1,1,1. 3,9. 11,5,7,3. TBr. 2, 4, 8, 11. Aīt. Br. 2,13,7,15. श्रमेण यदुपार्जितम् M. 9,208. कृतः कथंचिन्मरुता श्रमेण R. 3,64,21. ज्ञानाति हि पुनः सम्यक्कविरेव कवेः श्रमम् Spr. (II) 1219. शक्तिः श्रमेण समं समेत्य 3816. Verz. d. Oxf. H. 182,*a*,20. मुचिर Bhāg. P. 3,13,4. 13. अलं मरीचाल तव श्रमेण Ragh. 2,34. किं श्रमेण ते MBh.

5,7069. R. 4,45,11. तत्किं वृथा श्रमेण Pañcat. 93,6. 116,25. श्रमं तेषां सर्वेषामप्यपाकरत् Kathās. 49,148. मा वृथा ते ऽस्त्वयं श्रमः MBh. 13,1916. वृथा ज्ञातो मम श्रमः R. 5,15,1. सफलं कुरु मे श्रमम् 2,74,62 (Gorr.). 6, 100,4. विफल° adj. Rāja-Tar. 4,304. 717 (विफलश्रमत्व). वन्ध्य° adj. Rāgān. 16,75. मोघ Spr. (II) 3045. Kathās. 35,86. व्यर्थ Pañcat. 136,14. 226,25. पित्राहं लालितः स्नेहात्र श्रमं ग्राहितः पुरा R. 5,1,61. लगवच्छपुटद्रोणीपूरणे तव कः श्रमः Spr. 5324. व्याकरण° adj. Rāja-Tar. 3,29. धूमपथ° Bālār. P 4,4,10. मा कृथाः श्रमम् R. 3,57,16. यो ऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् M. 2,168. कृत° (s. auch bes.) adj. R. 1, 21,6 (fälschlich °श्राम Schl.). Kām. Nītis. 8,6. Kathās. 27,146 (सकृत°). धनुर्वेदे च वेदे च सर्वत्रैव MBh. 13,1915. प्रवासायासदुःखेषु पुढेषु च Kām. Nītis. 4,67. Kathās. 19,2. धनुर्वेदकृत° MBh. 1,5255. मत्तभकुम्भविदलनकृत° Spr. (II) 4664. कृतविद्या° (so ist zu lesen) Rāja-Tar. 6,180. श्रित° adj. Harīv. 4344. R. 4,40,4. Spr. 3174 (zu lesen वाक्येषु श्रितश्रमः). 5352. मधे Bālār. P. 7,8,27. श्रितश्रमत्व Kām. Nītis. 14,25. मुश्रित° 18,32. सन्येषु च तथा वीरः शस्त्रेषु विश्रितश्रमः Mārk. P. 129,13. यति° Bālār. P. 2,7,31. — 3) N. pr. eines Sohnes des Āpa Harīv. 153. — Vgl. कृत°, निः°.

श्रमकर adj. *Müdigkeit erzeugend, Mühen verursachend* Spr. (II) 4644.

श्रमण 1) adj. *Müdigkeit verscheuchend* Suçr. 1,169,10. — 2) f. ई *die Frucht von Cucurbita lagenaria* Rāgān. in Nigh. Pr.

श्रमच्छिद् adj. dass. Rāgān. 3,6.

श्रमजल n. *Schweiss* Wilson.

श्रमणा (von 1. श्रम्) mit कृत u. s. w. componirt gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2,1,59. 1) adj. *der sich abmüht, — kasteit*; m. *Bettelmönch*, insbes. *ein buddhistischer, Buddhist* überh. (Gautama selbst erhält dieses Beiwort) Taitt. 1,1,24. H. 75. an. 3,227. Mān. ç. 80 (nach H. an. und Mān. auch = निर्ग्रन्थजीविन्). Hall. 2,190. Colebr. Misc. Ess. 2,196.203. Wilson, Sel. Works 1,295. 303. 2,312. fgg. Burnouf, Intr. 78. 275. fg. 297. LIA. 2,238. 263. 449. Çat. Br. 14,7,1,22. Taitt. Ār. in Ind. St. 1,78. श्रमणाश्च वनौकसः MBh. 1,7778. R. 1,13,13 (11 Gorr.). gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,130. Bālār. P. 5,3,20. 11,2,20. 12,3,19. Kathās. 27,18. 38, 56. 51,118. fgg. 53,39. 65,132. 75,37. 39. Varāh. Bṛh. S. 87,9 (v. l. für श्रमण). Rāja-Tar. 1,199. 5,427. Sāh. D. 103,12. Lalit. ed. Calc. 2,20. 308, 6. 14. 309,20. 318,18. 320,6. 7. 20. Wassiljew 63. 83. 212. 248. Vie de Hiouen-thsang 62. श्रमणा f. Taitt. 3,3,141. H. 532, Schol. Hall. 2,232. R. 1,1,55 (59 Gorr.). Mahāvīrac. 80,13. fgg. कुमारी° P. 2,1,70. 6,2,26. श्रमणी R. 2,38,5. ed. Bomb. 1,1,57. — 2) f. घा *eine Bettelnonne*; s. u. 1); = शबरीभिद् (vgl. R. 1,1,55), मुदर्शना und मासी Mān. = मुण्डीरी Taitt. 3,3,141. Mān. — Vgl. घ°, पञ्चाच्छ्रमण, प्रमत्त°, मक्ष°, श्रामणेर und 4. श्रवण.

श्रमणक m. = श्रमण 1) Mṛicch. 111,5. f. श्रमणिका Daçak. 162,14.

श्रमणाय् (von श्रमण), °यते *zu einem Bettelmönch (Bettler) werden* Spr. (II) 2020.

श्रमनुद् adj. *Müdigkeit verscheuchend* Rāgān. 9,3. रति° Kām. 5,28.

श्रमर्यु (von 1. श्रम् oder श्रम) *sich ermüdend, — abmühend* ṚV. 1,72,3.

श्रमवत् (wie oben) adj. *der sich abgemüht —, fleissig gearbeitet hat*: शास्त्रेषु Verz. d. Oxf. H. 321,a,9.

श्रमवारि n. *Schweiss*: ललाटबद्धश्रमवारिबिन्दु Rāgān. 7,63. Kumāras. 3,35. Bālār. P. 1,9,34.

श्रमविनयन adj. *Müdigkeit verscheuchend*: घघ° Mālav. 53.

श्रमविनोद m. *Verscheuchung der Müdigkeit* Varāh. Bṛh. S. 53,38.

श्रमशीकर m. *Schweiss* Gīt. 12,22.

श्रमस्थान n. *ein zu Waffenübungen bestimmter Platz* Hall. 2,215.

श्रमाधायिन् (श्रम -+ धा°) adj. *Mühe verursachend, mühevoll* Spr. 5251 (Conj.).

श्रमाम्बु (श्रम -+ घ°) n. *Schweiss* Uttarān. 117,4 (138,10).

श्रमिन् (von 1. श्रम्) adj. *der sich abmüht* u. s. w. P. 3,2,141. श्रितश्रमित्व n. nom. abstr. von श्रितश्रमिन् (= श्रितश्रम) und = श्रितश्रमत्व; s. u. 1. श्रम 3).

श्रम्भ् (neben स्रम्भ् in den Bomb. Ausgg.; der Comm. zu P. 8,3,119 विस्रब्धः), श्रम्भते Dhātup. 10,33 (प्रमादे). 18,18 (विश्वासे).

— नि s. निश्रम्भ.

— प्र s. प्रश्रब्धि.

— वि *vertrauen —, sich verlassen auf* (loc.): दैवाधीनेषु कामेषु को विश्रम्भेत Bālār. P. 3,3,23. विश्रभ्य — इतिकृत्यायाम् 1,19,24. विश्रभ्य ohne Ergänzung s. v. a. *getrost, ohne Bedenken* 6,11,15. partic. विश्रब्ध = विश्रस्त und सनुद्र Taitt. 3,3,223. H. an. 3,349. Mān. dh. 36. = गाढ Mān. = शान्त und अत्यर्थ H. an. = स्थिर Hall. 2,215. 1) *vertrauend, kein Arg habend, sich sicher fühlend*: कथमिव (so ed. Bomb.) सखे विश्रब्धं स्यादिमां प्रति मे मनः Mālav. 69. यैः सह क्रीडते सीता विश्रब्धैर्मृगपोतकैः R. 3,67,6. Çiç. 39, v. l. Spr. (II) 1280. °घातिन् Taitt. 3,3,66. विश्रब्धा भव Pañcat. 74,4. तावन्नर्मिक — विश्रब्धशा वै सुखम् *so v. a. getrost, ohne Bedenken, ruhig, ohne Weiteres* MBh. 3,12996. 5,7192. R. 2,19,8. 27,8. 28,8. 3,51,10. Mārk. P. 22,14. Bālār. P. 11,5, 14. Pañcat. 75,9. statt dieses nom. haufig auch विश्रब्धम् adv. (वाक्यार्थ Taitt. 3,3,223): विश्रब्धं ब्राह्मणः प्रूहाद्व्योपादानमाचरेत् M. 8,117. MBh. 1,7663. 3,2161. R. 2,57,29. R. Gorr. 2,11,25. 16,3. 27,9. 3,40, 22. 49,33. 4,8,16. Spr. 3302. (II) 3821. Çiç. 39. 9,15. Kathās. 13,21. 18,316. Pañcat. 19,5. सुविश्रब्धम् R. 6,86,16. विश्रब्धप्रसुता Daçak. 91,8. ब्रूहि विश्रब्धमाचिरम् (aus metrischen Rücksichten st. विश्रब्धं मा°) R. 7,59,2,14. — 2) *von Vertrauen zeugend oder Vertrauen erweckend*: °चाटुकशतानि Spr. (II) 3080. घ° *kein Vertrauen erweckend*: विदुषामप्यविश्रब्धः पदुर्गः किमु मादृशाम् Bālār. P. 11,26,24. — caus. 1) *auflösen, aufknüpfen*: Soma-Büschel Lāṭ. 5,6,7. die Rüstung u. s. w. 3,10,16. — 2) *Jmd Vertrauen einflössen, ermuthigen*; mit acc.: शनैर्विश्रम्भयञ्शान् MBh. 7,4714. विश्रम्भित partic. 13,3623. Harīv. 8616. Mārk. P. 21,67. Bālār. P. 10,89,35. 12,3,2. — Vgl. विश्रम्भ fgg.

— प्रतिवि, partic. °श्रब्ध *voller Vertrauen zu*: मयि Bālār. P. 5,8,6. °श्रब्धम् adv. *ganz getrost, ohne alle Bedenken* Verz. d. Oxf. H. 44,b, 4. — caus. *zu vertraut machen*: स्त्रियम् Kāmaka 1,8.

— उपवि caus. *Jmdes* (acc.) *Vertrauen gewinnen* Bālār. P. 5,26,22.

— प्रतिवि, partic. °श्रब्ध *voller Vertrauen, kein Arg habend*: °घातिन् MBh. 1,3601.

श्रय s. भद्र°.

1. श्रयण (von 1. श्रि) n. = श्राय AK. 3,3,12. 1) *das Sichlehnen, Sich-*

heften an, Zufluchtsuchen bei: पादपङ्कजशरण॰ Bhâg. P. 8,9,28. — 2) *das woran sich Etwas lehnt, sich heftet, einen Halt findet:* षड्भिर्दंदं मद्भारुणमणिभ्रपणम् Bhâg. P. 3,15,44.

2. अपण (von 1. अप्) n. *das Mengen* Kâty. Çr. 9,6,10. 22,9,3. चरु॰ Gobh. 1,87. 4,2.

अव (von 1. अव्) 1) adj. *tönend* VS. 16,34. — 2) m. a) *Ohr:* स्थूलरद-भवाधरनस: adj. Vaitân. Bhp. 17,9. Kathâs. 103,138. hierher oder zu 1. अवस् AK. 2,6,2,43. H. 573. Hall. 2,361. — b) hierher oder zu 1. अवस् *Hypotenuse* Sûlbas. 3,26. 4,20. — c) *das Hören:* ततः प्रहसिताः सर्वे नारदस्य वचःश्रवात् Harîv. 10889. 10914. Râm. 11,72. अप्यदृष्टं श्रवादेव पुरुषं धर्मचारिणम् — जनाः कुर्वते प्रियम् *nach dem blossen Hörensagen* MBh. 13,4963. चक्रमे वासुदेवस्तां श्रवादेव Harîv. 6394. fg. विदुरस्य श्रवे राजा तं च प्रत्यभिपूजयत् *so dass es Vidura hörte* MBh. 15,699. सुदु:॰ *überaus unangenehm zu hören* Uttarar. 123,3 (166,3). — Vgl. कर्ण॰, पशु॰, मुख॰, श्रुतश्रवा.

श्रवदुर्य (1. श्रवस् + दुर्य) m. *Preislust:* सूर्यीणाम् RV. 5,66,5.

श्रवक nom. sg. v. l. für श्रवक Vop. 26,41.

1. श्रवण (von 1. श्रु) 1) m. (seltener n.) *Ohr* AK. 2,6,2,43. Taitt. 3,3, 139. H. 574. an. 3,227 (श्रवणं st. श्रावणं zu lesen). Med. p. 79. Hall. 2,361. Maitrâyan. 6,22. Spr. (II) 4992. MBh. 12,7397. R. 2,91,27 (n.). R. Gorr. 2,100,24. 3,50,17. 52,20. 5,14,19. Suçr. 1,125,3. 126,4. 2, 363,3. Gobh. 2,98. ad Çiç. 54. Schol. zu 8. Vaitân. Bhp. S. 28,9. 31, 8. Kathâs. 13,160. 48,39. Kâtyâr. 6. Mârk. P. 34,71. 82,17. Bhâg. P. 2,2,37. 7,9,40 (n.). 8,2,7. 11,23. — 2) m. (wie alle Wörter für *Ohr*) *Hypotenuse, Diagonale eines Tetragons* u. s. w. Colebr. Alg. 39. Golâdhy. Triprâç. 48. — 3) n. *das Hören* Taitt. Ât. zu. Med. Çat. Br. 14,5,2,5. 7,2,6. Pân. Gaṇ. 3,10. Kaṭh. Up. 2,12,4. M. 8,74. MBh. 1,865. 2, 277. 7,2138. Harîv. 12243. R. 2,102 in der Unterschr. R. Gorr. 1,3, 38. 4,140. 71,19. 4,17,20. 38,3. 7,20,6. दूराच्छ्रवणानि दर्शनानि चास्य भवन्ति Suçr. 1,138,11. Çiç. 15,15. fg. 59. Vaitân. Bhp. S. 90,3. Spr. 2871. Bhâg. P. 1,2,17. 3,35. 2,4,3. 7,15. 3,7,14. 16,6. 2,3,24. 10,6,3. 41,16. Verz. d. Oxf. H. 85,b,13. 225,a,20. Pâraṇ. 188,10. Sarvadarç. 4,6. 76,6. 8. 157,9. 22. ॰सुभग *angenehm zu hören* Megh. 11. ॰परुष 62. उग्रश्रवणदर्शन adj. MBh. 3,15856. दूर॰ *weithörig* Pâṇ. 1,1,30. णिचो ऽश्रवणं छान्दसम् *so v. a. das Fehlen des Causalsuffixes* Çiç. zu Bhp. Âr. Up. S. 102. *das Hören* so v. a. *das Lernen, Lesen:* शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा। ऊहो ऽपोहो ऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः॥ Kir. Nitis. 4,22 = H. 310. fg. ॰मनननिदिध्यासनसमाध्यनुष्ठान Vedântas. (Allah.) No. 113. fg. Nilak. 26. Schol. zu Kap. 1,60. Sarvadarçanas. 46,12. 58,12. fgg. 83,4. 103,20. 124,22. 139,10. 159, 8. अश्रवणात् *weil man es nicht lernt, weil es nicht gelehrt wird* Lâṭy. 10,11,3. — 4) n. *Leumund, guter Ruf* Âçv. Çr. 1,10,3. Nir. 11,33. — Vgl. कुरु॰, पितृ॰, वि॰.

2. श्रवण (von 2. श्रु) 1) adj. a) *laufend* Kâty. Çr. 23,4,16. — b) *leck* Gobh. 3,2,43. — 2) m. a) N. *des 20ten (21ten, 22ten)* Nakshatra, das unter der Figur von drei Fusstapfen gedacht wird, H. 113. an. 3,227. Med. p. 79. AV. 19,7,4. Schol. zu Kâty. Çr. 355,1. Âçv. Gṛhy. 3,5,2. Çâṅkh. Gṛhy. 1,30. Pân. Gaṇ. 2,10. 11. Varâh. Gṛhy. 95. Jyot. 1,142. MBh. 6,81. 85. 13,3279. 4265. 14,1213. R. 5,55,1. Vaitân. Bhp. S. 6,7. 11. 7,3. 11 (v. l. n.). 9,3. 33. 10,1. 15. 11,60. 15,20. 30. 23,6. 32,16. 43,38. 47,6. 53,31. 81, 20. 97,16. 98,11. Mân. P. 33,14. Bhâg. P. 4,12,48. 7,14,20 (pl.). 23. Varâh, Kṛṣṇâṣ. 230. fg. fem. श्रा Med. Vaitân. Bhp. S. 98,15 (v. l. masc.). Bhâg. P. 5,23,6 (ed. Bomb. masc.). Mân. P. 58,41. — b) N. pr. eines Sohnes des Nariṣka Bhâg. P. 18,39,12. — 3) f. श्रा a) N. eines Nakshatra, s. o. 2) a). — b) *die Vollmondsnacht im Monat* Çrâvaṇa P. 4,2,5. 23. Gobh. 3,3,11. Çâṅkh. Çr. 3,14,2. ॰चित्रा Verz. d. Cambr. H. 64. ॰कर्मन् *die an diesem Tage übliche Ceremonie* Âçv. Gṛhy. 2,1,1. Gobh. 3,7,1. 4,8,1. Pân. Gaṇ. 2,11. Verz. d. B. H. No. 208. — c) (neben Çravishṭhâ) N. pr. einer Tochter Kîtraka's Harîv. 1921. 2089. Râgâdhideva's 2034. — 4) n. = श्रवणाकर्मन् (s. o. 3) b) Çâṅkh. Gṛhy. 1,15. — Vgl. श्रोण, श्रवण, 2. श्रावण, श्रावणिक.

3. श्रवण m. *eine best. zum Weissfärben dienende Pflanze* Suçr. 2,175, 4. f. श्रा = मुण्डीरिकावल्ल (vgl. श्रावणा unter 1. श्रावण) Ratnam. im ÇKDr. श्रवणाकृपा f. *eine best. Pflanze* Suçr. 1,134,2.

4. श्रवण m. fehlerhaft für श्रमण *Buddhist* Vaitân. Bhp. S. 87,9 (v. l. श्रमण). 36. Verz. d. Oxf. H. 31,b,11. f. श्रा *eine Bettelnonne* H. 532. R. 3,76,20. Hierher vielleicht श्रवण m. als N. Vishṇu's H. ç. 63.

5. श्रवण n. s. श्रवण.

6. श्रवण n. = श्रपण Randglosse im Comm. zu H. 75.

7. श्रवण fehlerhaft für 2. श्रावण.

श्रवणक m. = 4. श्रवण Vaitân. Jaimîyâ 4,24.

श्रवणगोचर m. *Bereich des Gehörs:* घगाढासवदत्तायाः शनैः श्रवणगोचरम् Kathâs. 12,55.

श्रवणदत्त m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Kauhala Ind. St. 4,372. 380.

श्रवणद्वादशी f. Bez. *eines best. zwölften Tages* (= भाद्रपदशुक्लद्वादशी Comm. zu Bhâg. P. = श्रवणानक्षत्रयुक्तभाद्रशुक्लद्वादशी ÇKDr.) Verz. d. Oxf. H. 154,a,4. Verz. d. B. H. 135,b. Verz. d. Cambr. H. 64. Bhâg. P. 8,18,5.

श्रवणपथ m. *Bereich der Ohren:* ॰गता दृष्टिबाणाः *bis zu den Ohren reichend* Spr. 3168. ॰पर्यन्तगमनप्रयास Gîr. 11,32.

श्रवणपालि f. *Ohrläppchen* Gîr. 3,13.

श्रवणभृत adj. *in den Ohren getragen* so v. a. *von dem man reden hört* Bhâg. P. 10,87,40.

श्रवणमूल n. *Ohrwurzel* Kathâs. 103,223.

श्रवणरुज् f. *Ohrenschmerzen, Ohrenkrankheit* Vaitân. Bhp. 8,16.

श्रवणविधिविचार m. Titel einer Schrift Hall 140.

श्रवणविषय m. *Bereich des Gehörs, Hörweite* Megh. 101.

श्रवणव्याधि m. *Ohrenkrankheit, Ohrenschmerzen* Vaitân. Bhp. S. 9,33.

श्रवणशीर्षिका f. *eine best. Pflanze,* = श्रावणी Râjân. im ÇKDr.

श्रवणहारिन् adj. *das Ohr entzückend* Vaitân. Bhp. S. 19,16.

श्रवणिका f. wohl = श्रवणा (s. u. 2. श्रवण 3) b): ॰व्रत Verz. d. B. H. 135,b (90). Verz. d. Oxf. H. 34,b,25.

श्रवणी f. fehlerhaft (wie auch Wilson annimmt) für श्रावणी Verz. d. B. H. No. 1122.

श्रवणीय (von 1. श्रु) adj. *zu hören, hörenswerth* Snâpr. Bh. 2,3. Nir.

5,23. 11,9. 50. Kâṭhop. Up. 1,2,5 (auch घ°). MBh. 3,12308. 7,2023. Bhâg. P. 1,15,36. 11,23,1. °धार् m. Bez. eines der 8 Sthâna des Ṛgveda Ind. St. 3,251.

1. अवस् (von 1. अव) 1) n. κλέος. *a) Getöne, Ruf; lautes Lob:* देवेभ्यः कृत अवः ṚV. 10,155,5. 4,31,15. 8,54,12. अवस्, स्तोम 5,35,5. 18,1. बृहत् 8,9,17. 31,7. 63,9. कारमङ्गे मु पुरुष अवांसि 10,59,2. 1,11,7. दिवि अवो दधिरे यत्तियासः 73,7. 5,52,1. 8,88,2. 9,32,1. VS. 18,1. = शब्द *Laut, Schall* गन्धाकृतिस्पर्शरसश्रवांसि Bhâg. P. 5,11,10. — *b) Lob, Ruhm, Ansehen* Nir. 4,24. 9,10. 11,9. राया सुम्नेन अवसा वि भाति ṚV. 5,5,5. 10,5,5. राज्ञा अव इच्छमानः 1,126,1. ते हि प्रताया मनोस्त वि अवः 10,92,10. पथु 7,5,5. 16,10. 1,9,7. बृहत् 8. 3,37,10. अस्तिति 1,40,4. महि 160,5. घृत 3,53,15. 7,81,6. वीरवत् 4,36,9. अवोभिर्युग्रं चिदभ्यसत् 1,136,2. 8,5,22. मर्त दधासि अवसे दिवे दिवे 1,31,7. 73,8. अवसे वासयोषसः 134,3. 7,18,23. AV. 6,33,2. 13,2,3. Bhâg. P. 4,17,6. 19,28. उदार° adj. 16,3. 5,24,18. परिप्रुतोरु° adj. 4,9,5. तीर्घ° adj. 2,7,15. सुभद्र° adj. 4,15. fg. — *c) Ohr* AK. 3,4,24,76. hierher oder zu अव 2,6,2,45. H. 573. Halâj. 2,261. — *d)* hierher oder zu अव *Hypotenuse* (wie alle Wörter für *Ohr*) Śulbas. 3,26. 4,20. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Śaṅta MBh. 13,2002. — Vgl. उप° (auch Bhâg. P. 3,20,7), उरु°, उषः°, उषम°, कर्ण°, गूर्त°, चतुः°, चित्र°, तुवि°, तोर°, दीर्घ°, दूरे°, शुभ्र°, पशु° (adj. auch Bhâg. P. 4,24,1. N. pr. eines Sohnes des Manu Harîv. 170 nach der Lesart der neueren Ausg.), प्र°, प्रति°, प्रथम°, प्रिय°, बृहच्छ्रवस्, भद्र°, भद्रश्र°, भद्र°, भूरि°, वसु°, वि°, विष्टर°, शङ्कुकर्ण°, शुचि°, श्रुत°, सत्य°, सु°, सोम°.

2. अवस् (von 2. अव = सु) n. ἄκος. 1) *Strom, Guss:* सुरेतसा अवसा तुञ्जमानाः ṚV. 3,1,16. 9,87,5. 110,3. या पूर्यमाणमवक्षभि अवः *zum Strom des Soma* 1,51,10. अवनेरमुक्षदभि अवो दावने 61,10. आप्यायमानः सोम दिवि अवांसि धिष 91,18. — 2) *Lauf, Fahrt, rasche Bewegung:* अर्वतो न अवसा भितमाणाः ṚV. 7,90,7. 4,41,9. अर्वो ध्र अवसे सातिमच्छ 9,97,28. अवो विविदे श्येनो अत्र 4,26,5. 1,92,3. 165,12. 3,37,7. 10,102,4. 131,3. वात्रगु 8,69,5. अस्मद्र्यक्सं मिमीहि अवांसि etwa *zu uns richte deine Fahrten* (wonach unter 3. मा mit सम् 4) zu ändern wäre) 3,54,23. अभि अव क्ष्यंतो वह्नेयः 6,37,2. अधि अवांसि धेहि नस्तनूषु 3,19,5. अभि अवोभिः पृथिवी बभूव *im Fluge* 59,7. 8,1,11. — 3) *Bahn, Bett:* अर्वतीव्रनतमुविताय अवांसि ṚV. 7,79,3. अव श्रेना पेरो धन्यर्दस्ति तर्व्यवी व्रीरिमाणस्तारत्ति 10,27,21. Auch einige der Stellen unter 1) lassen sich hierher ziehen. — 4) nach den Comm. so v. a. अन्न Naigh. 2,7. Nir. 10,3. bei Sây. namentlich an den Stellen, wo der Soma gemeint ist. — 5) so v. a. धन Naigh. 2,10. Nir. 4,24. — Vgl. गाव° (nachzutragen adj. *dem Gesang zueilend*, nach Sây. *dessen Ruhm zu besingen ist* ṚV. 8,2,38), वसु°, वाज°, वृद्ध°.

अवस्काम adj. *nach Zuruf* u. s. w. *begierig* ṚV. 8,2,38.

अवस्य् (von 2. अवस्) °स्यति *auf der Fahrt sein, reisen; eilig —, schnell sein* ṚV. 4,40,2. mit acc. etwa *erhaschen:* वसव्यम् । इन्द्र यच्चित्रं अवस्या घनं गूर् 2,13,12. partic. praes.: स्तुतः अवस्यन्नवसोप यासि 1,177,1. श्येन 8,46,12. वीर 8,47,12. 1,131,5. 138,4. मनस् 10,74,2. 147,2. — VS. S. 39,2.

— आ *rasch herbeikommen:* यास्य अवस्याद्रवः ṚV. 5,37,3.

1. अवस्य (von 1. अवस्) n. *Lobruf, Ruhm; rühmliche That* Nir. 5,23. यत्कृण्वत अवस्यानि दुष्टरा ṚV. 10,44,6. उक्थानि विश्वानि च अवस्या 8,16,2. 15,2. 1,100,2. 117,10. धनु पद्वो अवस्या सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति 184,4.

2. अवस्य (von 2. अवस्) adj. *eilig, behend:* Ross ṚV. 1,117,2. 2,10,4. 6,1,11.

अवस्यो instr. adv. *flugs, eilig:* अवस्या शनाशाना न्यस्तः ṚV. 7,18,11. 23,1. 8,27,6. अभि वाजं सप्तिरिव अ° 9,96,16. सप्तिमिव अवस्येन्द्रायार्क समर्जे 1,61,5. विश्वा दधे वार्याणि अ° 149,4. 2,19,7.

1. अवस्यु adj. *preislustig, lobend:* अवस्यवः शशमानास उक्थैः ṚV. 4,6,15. (इन्द्रम्) अहूमहि अवस्यवः 45,10. 8,24,18. Vikramâṅkâ. 4,4.

2. अवस्यु adj. 1) *fliessend, strömend* ṚV. 1,125,4. Kuh 8,83,1. — 2) *rasch sich bewegend, behend; rüstig, rührig:* Rosse, Wagen u. s. w. ṚV. 1,132,5. 5,56,5. 9,10,1. 66,10. 87,5. पूरोः 1,83,5. 85,6. वर्यः 2,31,1. 7. 6,1,4. AV. 3,9,3. 4.

अवाप्य m. = वल्लियोग्यपशु, यल्लियपशु ÇKDr. nach Sinon. K. (vgl. Uṇ. 3,95) fehlerhaft für अवाप्य.

अवीय्य (von 1. अव) Uṇâdis. 3,96. Vop. 26,164. VS. Pair. 4,180. adj. *löblich, rühmlich:* वाज ṚV. 1,27,2. 6,45,2. रयि 9,63,23. 101,9. 10,38,2. धाति 102,1. 1,31,5. 5,20,1. 6,16,12. 8,46,9. 9,57,33. अवाय्यमिषम् acc. f. 5,38,2. m. = पशुषु Uṇâdis; vgl. अवाप्य.

अविष्ठ 1) adj. *unter dem* Nakshatra Çravishṭhâ *geboren* P. 4,3,34. m. N. pr. eines Mannes गण अश्वादि zu P. 4,1,110. — 2) f. आ *a)* (oxyt. Çiṣṭ. 1,20. proparox. in den accentuirten Texten) pl. (später auch sg. und du.) N. *des 21ten (22ten, 23ten)* Nakshatra (= धनिष्ठा), vorgestellt unter dem Bilde einer Trommel, Weber, Sûrjas. 8. 196. AK. 1,1,2,23. H. 114. Halâj. 1,51. AV. 19,7,4. TS. 4,4,10,2. TBr. 1,5,2,5. 9. 3,1,2,7. Weber, Gjot. 27. fg. 34. 112. fg. Nax. 1,312. 2,300. 313. 325. 354. fg. 375. 389. Maitrâjaṇ. 6,14. P. 4,3,34. — *b)* N. pr. einer Tochter Kṛitaka's Harîv. 1921. 2089. Râgâdhideva's 2034. der Mutter von Paippalâdi (Pippalâdi die neuere Ausg.) und Kauçika 11074 nach der Lesart der neueren Ausg. (प्रविष्टा die ältere). — Vgl. आविष्ठायन und आविष्ठेय.

अविष्ठक m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 52,b,35 fg. (Conj.).

अविष्ठात m. *Sohn der* Çravishṭhâ d. i. *der Planet Mercur* Tâṇḍ. 1,1,93. Hîn. 35.

अविष्ठाभू m. desgl. H. 117.

अविष्ठारमण m. *Gatte der* Çravishṭhâ d. i. *der Mond* H. ç. 11.

अविष्ठीय adj. zum Nakshatra Çravishṭhâ *in Beziehung stehend:* पौर्णमासी Çâṅkh. Gṛihj. bei Weber, Nax. 2,311. — Vgl. आविष्ठीय.

अवोदृत् adj. *Ruhm gewinnend* ṚV. 8,32,14.

अव्य (von 1. अव) adj. *hörbar, was mit dem Ohr vernommen wird, hörenswerth:* मुवा त्विदमुपाव्यानं अव्यमन्यन्न (आ° ed. Bomb.) रोचते MBh. 1,647. अव्याणामुत्तमं (आ° ed. Bomb.) चेदम् 2393. वचनं अव्यानामभीरितम् 3,10942. 12,1272. 14,618. R. Gorr. 1,3,60. Spr. (II) 2999 (आ° v. l.). 5714 (v. l. आ°). Kathâs. 74,77. Kâç. 1,39. Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489. Sîm. D. 557. दृश्यश्रव्यत्व 272. — Vgl. सुश्र°, श्राव्य.

आ, औति (पाके) Dhâtup. 19,49. 22,31. औयति (पाके, nach Vop. auch

स्वेदे) 24,15. partic. *gekocht, gebraten:* 1) श्रातं P. 6,1,26. पदि श्रातो धृक्षेतेन RV. 10,179,1. fgg. भेषाय म इदं श्रातमस्तु TS. 6,5,6,2. कविम् Âçv. Ça. 5,13,5. 6. श्रातास्त इन्द्र सोमाः ved. P. 6,1,26, Schol. (von श्री abgeleitet). Vgl. घ°, सु°. — 2) श्राण P. 6,1,27, Vârtt. 2. Vop. 26.88. fg. Taik. 3,3,140. Mah. p. 30. f. या = पक्वाम् *Reisbrei* P. 6,4,67. AK. 2,9,16. Taik. H. 397. Man. Halâs. 2,168. — 3) श्रृतं, Gegens. धाम RV. 9,83,1. कविम् 114,4. एदा श्रृतं कृणवो जातवेदः 16,16,1. Çat. Ba. 3,2, 2,16. धश्च TBa. 1,6,6,4. स्वयं° Kâtj. 15,5. स्तोकाः Çat. Ba. 3,5,2,21. 3,4. पर्यसि 5,3,2,1. वपा 13,5,2,11. क्षीरि° Kâtj. Ça. 4,11,15. कुशल° Gobh. 1,7,7. Kauç. 12. 16. 22. उदक° 46. श्रृतं तोरं देवदत्तेन P. 6,1,27, Schol. दुः° *schlecht, unvollständig gekocht* Âçv. Ça. 3,14,1. घ° Çat. Ba. 3,2,3,10. 8,2,20. 3,6. Vgl. श्रृत und श्री.

— caus. श्रपयति, घशिश्रपत्; *kochen, braten, rösten,* überh. *zur Speise machen;* (Töpfe u. s. w.) *brennen* VS. 1,22. उक्षाम् 11,50. 61. TS. 4,1,6,4 (TS. Prât. 9.23). 5,1,2,2. पशुम् Âçv. Ba. 2,18. TBa. 3,6,6,4. MBa. 14, 2544. R. 2,56,21 (med.). R. Gorr. 2,56,24. चरुम् Çat. Ba. 2,5,2,4. MBh. 3,5033. 5,3723. 12,1722. 3413 (med.). R. Gorr. 2,56,22. Bhâg. P. 6,14,27. 9,15,3. श्वोषि Çat. Ba. 1,7,3,26. व्रतम् 3,2,3,10. वपाम् 8,2,19. 28. 5,5,4,6. MBh. 14,2647. R. 1,13,39. पुरोडाशम् Çat. Ba. 11, 1,6,2. व्रीहीन् Âçv. Ça. 2,6,8. Gobh. 1,10,8. 11,10. fgg. व्रश्नोदनम् 22,12. Kâtj. Ça. 4,1,7. 2,35. पायसम् Çâṅkh. Gobh. 3,11. pass. श्रप्यते Çat. Ba. 2,2,1,2. 3,8,2,29. 4,2,5,12. Âçv. Ça. 3,4,1. श्रप्यमाणपयसम् Bhâg. P. 10,16,1. श्रापित P. 6,1,27, Vârtt. MBh. 1,6893. Vgl. श्रपण fg. und श्रापिन्.

— घधि, partic. °श्रृत fehlerhaft für °श्रित; s. u. 1. श्रि.

— घा, partic. °श्रृत *angekocht* (= ईषत्कृत Comm.) Çâṅkh. Ça. 4,3,7. — Vgl. घाश्रपण.

— नि, partic. °श्राण s. u. निस्वान in den Nachträgen.

श्राण und श्राणा s. u. श्रा.

श्रौपिक adj. (f. ई) = श्राणा निर्वृत्तं दीयते ऽस्मै P. 4,4,67.

श्राद्ध (von श्रद्धा) 1) n. Bez. *einer Todtenspende und eines damit verbundenen Todtenmahls, wobei Brahmanen beschenkt werden.* Es werden vier Hauptarten unterschieden: पार्वण, काम्य, घाभ्युदयिक und दैवोद्दिष्ट Âçv. Gṛhj. 4,7,1. fgg. nach Nîla. zu d. Stelle daher benannt, weil die Gabe für die Väter den Brahmanen anvertraut wird. = श्रद्धा प्रयोजनमस्य Kâç. zu P. 5,1,110. AK. 2,7,30. Taik. 3,3,224. H. 822. an. 2,252. Man. dh. 19. fg. Colebr. Misc. Ess. 1,164. fgg. 180. fgg. Âçv. Gṛhj. 4,5,10. Gobh. 4,4,2. Kauç. 61. 89. 141. Çâṅkh. Gṛhj. 4,7. 6,1. Pâr. Gṛhj. 2,11. Âpast. 2,17,14. 21. पार्वण° Schol. zu Kâtj. Ça. 34,8,12. दर्श° 297,3. वृद्धि° 627,6. नित्य° Âpast. 2,18,3. मासि° (wohl मासिक° zu lesen) 20,1. घष्टका° Prasoban. 94,a,1. 95,a,1. घष्टमी° ebend. Von zahlreichen besonderen Formen wird ausführlich gehandelt im Çrâddhaprakâça des Nirṇayasindhu. प्रेते पितृंश्च निर्दिश्य भोज्यं यत्प्रियमात्मनः। श्रद्धया दीयते यत्र तच्छ्राद्धं परिकीर्तितम् Manâs ebend. 1. यत्पुनः पिण्डदानं तु ब्रह्मचारी द्विजार्चनम्। श्राद्धशब्दाभिधेयं स्याद्भयं सामवेदिनाम् Dharmapradîpa ebend. °कल्प M. 1,112. पितॄन् श्राद्धैः (घर्चयेत्) 3,81. 138. fgg 144. fg. 151. 188. 191. 204. 220. 234. fg. 276. 278. 282. Hariv. 835. fgg. R. 2,61,12. Râm. 1,68. मृतानामपि जन्तूनां श्राद्धं चेत्तिकारणम् Spr. (II) 4944. fg. घृतमग्नौत्रियं श्राद्धम् 4950. Rîâ-Tar. 6. 284. VP. 297. 314. fgg. 325. 328. 330. 333. Daçarâs. 89,2. Verz. d. B. H. No. 324. 1120. fgg. Verz. d. Oxf. H. 10,b,23. 12,b,17. 87,a,16. 25. 285,b,29. 289,b,15. 271,a,2. °शरीरनिर्णय 273,b,24. fg. 275,b,1. 277, a, No. 654. 282, b, 38. 286, a, No. 670. 294. b, No. 711. 295, a, No. 712. श्राद्धोत्तरकर्मन् 87,a,28. °पात्रनिर्णय 13,a,29. श्राद्धोपयोगिनो मन्त्राः 398, a, No. 144. घष्टकापूर्वक 384, b, No. 478. श्राद्धं कृ M. 3,82. 118. fg. 280. निर्वप् 281. भुज् 146. 223. 247. 249. fg. 4,109. 131. दा MBh. 1,4964. 14,1850. °मित्र M. 3,140. श्राद्धार्ह Kamâs. 5,114. Verz. d. Oxf. H. 291,a, No. 702. °वासर 24,b,23. °दिन 282,a,43. fg. Titel von Schriften, die über das श्राद्ध handeln: °कल्प Verz. d. B. H. No. 1118. Verz. d. Oxf. H. 273,b,15. Ind. St. 1,470. 3,269. °कल्पभाष्य 1,58. °कल्पसूत्र Verz. d. B. H. No. 252. 257. fg. °कल्पलता Verz. d. Oxf. H. 295,b, No. 717. °कारिका Verz. d. B. H. No. 134. °चन्द्रिका Hall 176. Verz. d. Oxf. H. 292,b,23. °चिन्तामणि 24. 293,a, No. 710. °तत्त्व Gild. Bibl. 468. °दीपकालिका Verz. d. Oxf. H. 270,b,25. fg. °दीपिका 87,b,26. 292,b,24. fg. Verz. d. B. H. No. 258. °निर्णय Mack. Coll. 1,31.. °पद्धति Verz. d. Oxf. H. 273,b,45. fg. °पद्धति 280,b, No. 667. 383,a, No. 460. °प्रदीप 273,b,46. °मयूख 38,b,10. 280,b, No. 657. Verz. d. B. H. No. 1115. Hall 192. °विधि Notices of Skt Mss. 246. °विवेक Verz. d. Oxf. H. 273,b,47. 279,b,26. 283,b, No. 682. 292,b,25. °संग्रह 279,b,27. °सूत्र (= °कल्पसूत्र) 380,a,8. — 2) adj. *a) gläubig* P. 5,2,101 (vielleicht ist das n. gemeint). Vop. 7,32. fg. 23,22. Taik. H. 400. H. an. Mah. — *b) zu einem Çrâddha in Beziehung stehend:* श्राद्धी कला Notices of Skt Mss. 299.

श्राद्धकर्मन् n. *Veranstaltung eines Todtenmahls, Todtenmahl* M. 3, 187. 285. Hariv. 665. R. 1,72,19. 2,77,1.

श्राद्धकाल m. *die Zeit, da man das Çrâddha darbringt,* Kâtjây. 3, 17. Hariv. 654. Verz. d. Oxf. H. 286,a, No. 670. °काला:, घनित्यश्राद्धकाला: Notices of Skt Mss. 299. Bez. *der 8ten Stunde des 5ötheiligen Tages* H. 141.

श्राद्धत्व n. nom. abstr. von श्राद्ध 2) *a)* Verz. d. Oxf. H. 397,a,11.

श्राद्धदेव m. *der Gott des Todtenmahls,* Beiw. des Manu Vaivasvata MBh. 12,4307. Mârk. P. 105,4. Bhâg. P. 3,1,22. 8,6,35. 8,13,1. 9. 24,11. 9,1,11. des Jama Vaivasvata AK. 1,1,6,54. H. 185. Halâj. 1,73. Mârk. P. 8,157. des Vivasvant selbst Hariv. 833. frommer Brahmanen M. 3,218. — Vgl. श्रद्धदेव.

श्राद्धदेवता f. = श्राद्धदेव; pl. Bhâg. P. 4,18,18.

श्राद्धदेवत n. nom. abstr. von श्राद्धदेव Hariv. 838.

श्राद्धशाक n. = कालशाक Bhâvapr. im ÇKDa. = नाडीशाक Bhâvapr. in Nasg. Pa.

श्राद्धसूतक adj. *zu einem Todtenmahl oder einer Geburt in Beziehung stehend:* घत्व MBh. 13,6581.

श्राद्धाह्निक adj. *täglich Todtenmahle veranstaltend* Hariv. 1194.

श्रौद्धिक (von श्राद्ध) adj. *zu einem Todtenmahle in Beziehung stehend* Kauç. 141. Çâṅkh. Gṛhj. 4,7. श्राद्धिकं प्रतिगृह्य M. 4,116. प्राणि वा पदि वाप्राणि पत्क्वेचिच्छ्राद्धिकं भवेत् 117. भुक्त्वा वा श्राद्धिकं प्रतिगृह्य च Jâgn. 1,146. *der an einem Todtenmahl Theil genommen hat* P. 5,2,85.

श्राद्धिन् adj. 1) (wie oben) *Todtenmahle veranstaltend* Harıv. 845. ध्र° M. 4,223. *der an einem Todtenmahl Theil genommen hat* P. 5,2,85. — 2) fehlerhaft für श्रद्धिन् MBn. 13,3532 (ed. Bomb. श्रद्धिन्).

श्राद्धीय (von श्राद्ध) adj. *zu einem Todtenmahl in Beziehung stehend* Kull. zu M. 3,178. 4,116.

श्राद्धेय (wie oben) adj. *zu einem Todtenmahl sich eignend:* धम्याद्धेयानि धान्यानि MBn. 13,4363. धम्याद्धयेत falsche v. l. für धम्यद्धे° Weber, Gsor. 111.

श्रान्त s. unter श्रम् und ध्र°.

श्रान्तसंद् adj. *müde sich lagernd* AV. 1,32,2. गावो 7,95,2.

श्रान्ति (von श्रम्) f. *Ermüdung:* °घ्न Suça. 1,176,13.

श्रापय्, °यति 1) caus. von श्रा; s. das. — 2) künstliches denom. von श्र (wovon श्रेयस्, श्रेष्ठ abgeleitet werden) = प्रशस्य Vop. 21,16; vgl. 7,57.

श्रापिन् (vom caus. von श्रा) adj. *kochend* Kâts. Ça. 2,5,18. 7,6. 28.

श्राम्, श्रामयति v. l. für याम् (यामयणे) Dhâtup. 35,40. (मन्त्रे) Kavikalpadruma im ÇKDa. मन्त्रे ऽभिमुखीकरणम् गुप्तोक्तिरित्येके Dunçin. ebend.

श्राम m. 1) *Monat* Taik. 1,1,109. H. an. 2,240. Med. m. 34. Hit. 28. — 2) *Zeit* (काल). — 3) *eine offene Halle* u. s. w. (मण्डप)-Taik. 3,3, 203. H. an. Med. — 4) fehlerhaft für श्रम R. 1,21,6.

श्रामण्य n. nom. abstr. von श्रमण v. l. (aber richtig) im gaṇa युवादि zu P. 5,1,130.

श्रामणेर (von श्रमण) m. *ein buddhistischer Novize* Taik. 1,1,25. Burnouf, Intr. 276. Hiouen-thsang 1,48. 183. Vie de Hiouen-thsang 280.

1. श्रार्य (von 1. श्रि) P. 3,3,24. 1) adj. *Etwas an sich habend, mit Etwas* (loc.) *versehen:* श्राया रथेषु धन्वसु RV. 5,53,4. — 2) m. = श्रयण AK. 3,3,12. *Behausung:* पात यूर्यं पमश्रायम् (= पमस्थानम् Comm.) Bhatt. 7,36.

2. श्राय adj. *zur Çrî in Beziehung stehend:* रविस् Sinn. K. im ÇKDa.

श्रायस्तीय (aus dem Anfangsworte von RV. 8,88,8 gebildet) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,241,a. TBa. 1,5,12,1. 8,2,5. Pañcav. Br. 8,2, 9. 9,3,5. Âçv. Ça. 6,8,12. fg.

श्रायस् (von श्रेयस्) P. 7,3,1. adj. = श्रेयसि भवम् Schol. m. patron.: Kaṇva Kiṭu. 21,8. TS. 5,4,3,5. Vâjasaneyi 6,5,3. Pañcav. Br. 9,1,9. 25,16,3.

श्राव m. N. pr. eines Sohnes des Juvanâçva und Vaters des Çrâvastaka MBn. 3,12917. Harıv. 670 (nach der Lesart der neueren Ausg.).

श्रावक (von 1. श्रु) m. 1) nom. ag. *Zuhörer, Schüler* Milatin. 174,6. (व्यासः) ऋग्वेदश्रावकं पैलं जग्राह विधिवद्द्विजम् । यजुर्वेदप्रवक्तारं वैशंपायनमेव च ॥ जैमिनिं सामवेदार्थश्रावकं सो ऽन्वपद्यत । Verz. d. Oxf. H. 54,b,4. s. unter den acht स्थानानि ऋग्वेदस्य Ind. St. 3,251. — 2) *ein Zuhörer oder Schüler* Buddha's oder Gina's, *ein buddhistischer oder* Gaina-*Laie* Taik. 1,1,12. H. 244, Schol. Burnouf, Intr. 79. 296. fgg. 438. Lot. de la b. l. 52. 292. Wassiljew 8 u. s. w. Lalit. ed. Calc. 6, 17. 295,9. Vie de Hiouen-thsang 65. Pañcat. 236,19. fgg. — Colebr. Misc. Ess. 2,195. Wilson, Sel. Works 1,278. 284. 303. fg. 317. 324. 342. fg. Çatr. 14,317. °पति Verz. d. B. H. No. 1364. °व्रत Titel einer Gaina-Schrift Verz. d. Oxf. H. 379,a. No. 390. श्रावकाराधन dsgl. Wilson, Sel. Works 1,282. f. श्राविका Çatr. 14,317. Wilson, Sel. Works 1,304. — 3) *Krähe* Taik. 2,5,19. — 4) *ein weit hörbarer Ton* Çiç. 11,1. — Vgl. मक्षा°, यद्द°.

1. श्रावण (von 1. श्रवण) 1) adj. *durch das Gehör vermittelt, durch's Ohr wahrgenommen* u. s. w.: शब्द (= श्रवणेन गृह्यते) P. 4,2,93, Schol. उपसर्ग Miṅk. P. 40,7. 10. sc. ज्ञान Verz. d. Oxf. H. 231,a,23. fg. यदा पुनः काश्यपो वै जगाम फलान्याहर्तुं विधिना श्रावणेन so v. a. *in der heiligen Schrift vorgeschrieben* (vgl. श्रौत) MBn. 3,10073. Nilak. verbindet विधिनाश्रावणेन und sucht darin यज्ञायज्ञीय (= यज्ञायज्ञ. वैदिक) oder याज्यपण = इज्याऽर्थं तत्राऽऽवयेत्यादिशब्दप्रयोगात्). — 2) m. *Ketzer* (vgl. श्रावक 2) Mad. g. 81. — 3) f. या *eine best. Pflanze,* = दृध्यालो (vgl. दृध्यानी) Med. = श्रावणी Ratnam. 39. — 4) f. ई *Sphaeranthus mollis,* gewöhnlich मुण्डी (nach der Blüthe, die einem *mit kurzen Haaren besetzten Kopfe* verglichen wird) und भिक्षु genannt, Ratnam. 39. Mad. 1,104. Suça. 2,170,12. 173,8. = महाश्रावणिका ÇKDa. Suppl. unter dem letzten W.; vgl. मक्षा°.

2. श्रावण (von 2. श्रवण 1) adj. (f. ई) *zum* Nakshatra Çravaṇa *in Beziehung stehend:* in Verbindung mit मास्, मास oder m. mit Ergänzung dieser Wörter Bez. *eines Monats der Regenzeit* P. 4,2,23. AK. 1,1,2,16. 3,4,20,234. H. 154. Med. g. 81. प्रथमो वार्षिको मासः श्रावणः R. 4,23,12. 7,70,8. षाषाढश्रावणौ प्रावृट् Suça. 1,20,5. Âçv. Gṛhj. 3, 5,2. Weber, Gsor. 28. 30. fg. 35. 98. Padma. zu Kâts. Ça. 355,4. Ind. St. 9,51. 18,286. 294. Jâdn. 1,142. Weber, Khandâs. 221. fgg. 309. Varâh. Bṛh. S. 5,78. 7,17. 21,9. 10. 22,2. 24,26. 86,27. Verz. d. Oxf. H. 34,b,12 (श्रवण gedr.). 35,a,13. 46,b,26 (श्रवण gedr.). 218,a,2. 284, a,40. b,7. 8. 16. 18. 20. fg. 32. Hiouen-thsang 1,63. 492. रात्रि, पौर्णमासी oder f. mit Ergänzung dieser Worte *der Vollmondstag im Monat* Çrâvaṇa P. 4,2,5, Schol. Âçv. Gṛhj. 2,1,1. Pâr. Gṛhj. 2,10. 14. Kauç. 141. M. 4,95. Jâdn. 1,142. व्यतीता वार्षिकी रात्रिः श्रावणी लघुविक्रमा R. 7,66,18. Ind. St. 3,391. Schol. zu Kâts. Ça. 15,9,25. °कर्मन् (daneben श्रवणाकर्मन्) Verz. d. B. H. No. 206. °पूर्णा (श्रवणी° die Hdschr.) 1122. मधुपर्क Kauç. 92. f. sc. पाकसंस्था oder पाकयज्ञसंस्था Schol. zu Kâts. Ça. 34,9. Verz. d. Oxf. H. 30,b,8 (in 8 wohl °यज्ञसंस्थाः सप्त zu lesen). 266,b,27. neutr. mit Ergänzung von कर्मन् so v. a. श्रवणाकर्मन् Gobh. und Çâṅkh. Gṛhj. (श्रवण Hdschr.) bei Weber, Nax. 2,330. 332. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,b,24.

3. श्रावण (vom caus. von 1. श्रु) n. *das Hörenlassen, Verkünden:* श्रुस्येतिकरणस्य सदा श्रवणं श्रावणं तथा MBn. 7,2128. सत्य° Pañcat. 97, 17. यजदेवाय° ed. orn. 38,22.

4. श्रावण n. H. an. 3,227 fehlerhaft für श्रवण.

श्रावणत्व (von 1. श्रावण) n. *Hörbarkeit:* शब्दस्य Tarkas. 42. 44.

श्रावणवर्ष (2. श्रावण + वर्ष) Bez. *eines der 12 Jahre im Umlaufe des Planeten Jupiter* Varâh. Bṛh. S. 8,12.

श्रावणविधि (2. श्रावण + विधि) m. Titel eines Pariçishṭa des SV. Verz. d. Oxf. H. 378,a,7. 8.

श्रावणिक m. *der Monat* Çrâvaṇa P. 4,2,23. AK. 1,1,2,16. H. 154.

1. श्रावणिका f. dem. von श्रावणी f. zu 1. श्रावण; s. मक्षा°.

2. श्रावणिका f. dem. von श्रावणी f. zu 2. श्रावण. °व्रत (श्रव° gedr.) Verz. d. B. H. 135, b (91).

श्रावणीय adj. 1) (vom caus. von 1. श्रु) *zu verkünden, zu verlesen* Mâit. P. 97, 16. — 2) = श्रवणीय *zu hören, hörbar* MBh. 12, 13788.

श्रावस्ती f. N. pr. einer Stadt, = धर्मपत्तन Taitt. 2, 1, 19. wohl fehlerhaft für श्रावस्ती.

श्रावयैत्पति (श्रावयत्, partic. vom caus. von 1. श्रु. + पति°) adj. *den Herrn berühmt machend* RV. 5, 25, 8.

श्रावयैत्सखि adj. *den Freund berühmt machend*; nom. °खा RV. 8, 46, 12.

श्रावयितव्य (vom caus. von 1. श्रु) adj. *was zu Jmdes Ohren gebracht werden muss* Spr. (II) 2858. *den man Etwas* (acc.) *hören lassen muss* Çiç. Cu. 165, 5.

श्रावष्टीय bei Wilson und im ÇKDa. fehlerhaft für श्राविष्टीय.

श्रावस्त 1) m. N. pr. eines Fürsten, Sohnes des Çrâva und Grossohnes des Juvanâçva (auch Sohnes des Juvanâçva), Gründers der Stadt Çrâvasti, Harîv. 671. VP. 4, 2, 12. श्रावस्तक MBh. 3, 13518. Harîv. 670. — 2) f. ई N. pr. einer Stadt der Kosala gaṇa नद्यादि zu P. 4, 2, 97. MBh. 3, 13518. Harîv. 670. R. 7, 108, 5 (Residenz Lava's). Ind. St. 2, 416. Kathâs. 15, 68. 30, 28. 26. 33, 133. 106, 43. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. VP. 4, 2, 12. Daçak. 134, 6. 138, 9. Lalit. ed. Calc. 1, 5. 2, 16. Burnouf, Intr. 22. fg. 90. 169. 235. 313. Wassiljew 38. 75. 188. 218. Târân. 10. fg. Wilson, Sel. Works 1, 295. Schiefner, Lebensb. 234(4). Hiouen-thsang 1, 115. 293. fgg. 2, 355. fg. Vie de Hiouen-thsang 310. LIA. 3, 200. fgg. — Vgl. शावस्त, शावस्ती.

श्रावस्तक s. u. श्रावस्त 1).

श्रावस्तेय adj. von श्रावस्ती gaṇa नद्यादि zu P. 4, 2, 97.

श्राविता (von 1. श्रु) nom. sg. = श्रोतृ *Hörer* MBh. 12, 13759.

श्राविन् (wie oben) dass.: पद्मदर्भ° Sarvadarçanas. 58, 6. 7.

श्राविष्ठ adj. (f. ई) *zum Nakshatra Çravishṭhâ in Beziehung stehend*: मास Ind. St. 9, 435. 16, 289. पौर्णमासी, अमावास्या 289. fgg.

श्राविष्ठायन m. patron. von श्रविष्ठ gaṇa यस्कादि zu P. 4, 1, 110. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 38, 2.

श्राविष्ठीय adj. *unter dem Sternbilde Çravishṭhâ geboren* P. 4, 3, 34, Vârtt. 3. — Vgl. श्रविष्ठीय.

श्राव्य (von 1. श्रु simpl. und caus.) adj. 1) *was gehört werden darf*: यदि चेतन्मया श्राव्यम् R. 4, 51, 27. यत्तु श्राव्यं न सर्वस्य Bhaṭṭ. beim Schol. zu Çiç. 13, 8. सर्व° und ग° Sin. D. 425. *was gehört zu werden verdient, hörenswerth* Harîv. 7096. °गायिन् Kathâs. 36, 116. — 2) *zu verkünden* MBh. 1, 2563. *bekannt zu machen, certior faciendus* 12, 6752. fg. — Vgl. श्रव्य.

1. श्रि, श्रयति, °ते (सेवायाम्) Dhâtup. 21, 31. ved. Formen: श्रयेत्, श्रयियन्, श्रशिश्रेत्, श्रशिश्रयुस्, शिश्रोत (med.), शिश्रय, शिश्रीय, शिश्रिये, शिश्रियाणं, श्रयिष्यति, श्रधिश्रयितवै Çat. Br. 2, 3, 2, 6 klassische: श्रशिश्रियत् P. 3, 1, 48. Vop. 8, 86. 132. शिश्रियुस्, शिश्रिये, शिश्रिवंस् (P. 7, 2, 67, Schol.), श्रयिष्यति, °ते (Kâr. 1 aus Sinon. K. zu P. 7, 2, 10), श्रयिता P. 7, 2, 11. Schol. Vop. 8, 60. 132. श्रित्वा P. 7, 2, 11, Schol. °श्रित्य, °श्रयित्वा (opisch): reflex. श्रयते, श्रशिश्रियत, श्रश्रायिष्ट und श्रश्रयिष्ट Vop. 24, 12. 1) act. (klíno, hlinéo) *lehnen; legen an oder auf* (loc.), *anbringen an, hinbringen zu, ruhen lassen auf* u. s. w.: यः शिश्राय मघवा कामंमस्मे *richten auf*, — *an* RV. 10, 42, 6. 43, 2. 1, 2, 29. देवेषु च सावतः लोकमश्रैः 3, 54, 11. दिवीव रुक्मंमुरुव्यञ्चमश्रेत् 5, 1, 12. रथीणां योक्त्रम् 33, 2. त्रिवन्धा स्तोमः पृथिव्यां श्रयतु VS. 18, 10. इन्द्रियमस्मिन्नश्रयत् TS. 2, 3, 3, 4. क्रन्दस्तु *stützen auf* TBr. 1, 5, 12, 1. स्वां तनुवं वरुणो शशिश्रेत् (nämlich यज्ञे) *übertrage auf uns* TS. 1, 8, 10, 1. तं शृतेनाश्रयन् (Vermengung von श्रा und श्रि wie auch sonst) Çat. Br. 1, 6, 4, 7. 8, 1, 17. Pañcav. Br. 18, 11, 4. Namentlich vom *Verbreiten des Lichts über* —, *an Etwas* (loc.): समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत् *bringt Glanz an den Himmel* RV. 5, 28, 1. ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेत् *leuchtet nach oben* 4, 6, 2. 7, 72, 4. उच्चन्सूर्य उर्विया ज्योतिरश्रेत् 1, 124, 1. 92, 2. 5. 7, 79, 1. केतुम् 4, 14, 2. पृथिव्यां पाजः 3, 14, 1. 61, 5. 7, 10, 1. धर्मणिम् 3, 38, 8. 7, 38, 1 (vgl. 39, 1). Hierher liesse sich ziehen: श्रोणामुर्व स्थादिवं भुरण्युः शोचिः zum partic. zu ergänzen) *Licht verbreitend hebt er sich zum Himmel* 1, 168, 1. Zur Form vgl. unter अभि und सम्. — 2. med. *sich lehnen an*: शिश्रिये स घनम् Harîv. 6674. *Halt finden, haften, sich befinden in oder an Etwas* (loc. und acc.): प्र यः समाणः शिश्रीत योनौ RV. 1, 149, 2. यत्किं पर्वते शिश्रियाणाम् (vgl. νήσων αἵ τ' ἀλὶ κεκλίαται Od. 4, 607) 32, 2. वने वने 5, 11, 6. 10, 91, 2. भरेषु रुसवच्छिश्रिये पयः 1, 44, 13. 10, 106, 2. समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्तात् *stehend vor* 3, 8, 2. मा नि पेत भुवने शिश्रियाणाः AV. 12, 1, 31. TBr. 1, 4, 6, 5. प्रथमा हितोषेषु श्रयध्वम् *sich anreihen* 3, 11, 3, 1. TS. 2, 5, 3, 4. 3, 1. वाक्यर्तंगार्ग शिश्रिये (धीयते VS.) 1, 5, 3, 1. दिवम् VS. 9, 34. 39, 4. सूनून् Ait. Br. 1, 23. यद्वः 4, 5. Çat. Br. 6, 1, 2, 4. Pañcav. Br. 9, 1, 12. Âçv. Gṛhj. 1, 24, 29. ओषो देवी शिश्रियाते ऽन्तरिते MBh. 5, 1741. in vers. Ed. pass.: (गौः) यस्यापि पृष्ठः सूर्ये न चक्षुः *haftet* RV. 6, 11, 5. इन्द्रो यस्यापि सुध्यौ निरेके *bleibt* 1, 51, 14. ausnahmsweise auch act.: तद्यत्तत्तदादित्यमभितो ऽश्रयत् Kauṣh. Up. 3, 1, 4. hierher ziehen die Erklärer श्रायत्त इव सूर्ये विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत RV. 8, 88, 3, eine schon in alter Zeit zweifelhafte Stelle, Naigh. 4, 3. Nir. 6, 8 (श्रायत्तम् = समाश्रिताम्). Mahidh. zu VS. 33, 41. — 3) med. act. *sich irgendwohin oder zu Jmd begeben* (insbes. um Hilfe oder Schutz zu finden; vgl. शरण), mit acc.; med.: गिरिं श्रयावहै R. 2, 97, 21. यं देशम् Spr. (II) 1947. Kathâs. 25, 79. 61, 303. Bhâg. P. 5, 13, 3. 7, 12, 20. 10, 60, 42. 11, 29, 3. विद्राधगोष्ठीपाखोधिपोतं सुधियः श्रयसाम् Verz. d. Oxf. H. 190, a, 4. तरुच्छायां शिश्रिये Râgat. 3, 70. 19, 1. Kathâs. 7, 103 (शिश्रिये st. ग° zu lesen). प्रव्रजिका शरणं शिश्रिये नृपः 14, 71. 18, 64. 20, 89. 185. 30, 94. तस्योत्सङ्गम् 33, 124. 51, 42. 56, 249. छायां श्रयिष्ये R. 2, 107, 18. act.: गङ्गां श्रयेत् MBh. 13, 1853. श्रयेद्धिमा रामं श्रयति मैथिली R. Gorr. 2, 68, 21. श्रयन्ति नीडानि खगाः 96, 28. वनान्तरम् Vîra. 112. Kathâs. 33, 130. Bhâg. P. 7, 5, 26. स्वैरिणी वा पतिं क्षिप्त्वा सवर्णं कामतः श्रयेत् Jiân. 1, 67. भवनं यत्तदत्तस्य शिश्रियुः Kathâs. 3, 12. (दिशम्) यां यदृच्छयाशिश्रियत् (यदृच्छयामश्रियत् blosser Druckfehler) Çiç. 1, 46. Kathâs. 7, 90. 104. 24, 132 (fälschlich यशिश्रियत्, Brockhaus nimmt श्रा° an). 41, 54. Râga-Tar. 3, 210. 4, 148 (यशिश्रियंस्तं zu lesen). Bhaṭṭ. 6, 17. नद्यः श्रयिष्यन्ति वनम् Harîv. 1194. तत्र (श्रामे) श्रयिष्यामः R. 3, 1, 29. सेयमित्त्वाकुरार्षेः श्रोत्स्यामश्च श्रयिष्यति 2, 3, 41. यं शुद्धा श्रीरशिश्रियत् — सिन्धुरिवार्णवम् Râga-Tar. 4, 19. *hinstreben zu*: तस्मात्प्रशस्तं श्रयते मतिर्मे MBh. 3, 13330. वृत्तीर्मनः श्रयते ऽन्यत्र तत्त्वम् Bhâg. P.

3, 11, 5. *Eingang finden, sich bemeistern* (von Gemüthszuständen): (शम:) न भिन्ने श्रयते हृदि 4, 8, 36. काम: कथं नु पुनरस्य मन: श्रयेत 2, 7, 7. तं मोक्षच्छ्रुपते मद: Spr. (II) 1373. नूनं तौ शिश्रिये रूपं सर्वान्यवरयोषिताम् *ihr wird zu Theil* Kathâs. 34, 96. — 4) med. act. *in einen Zustand —, in eine Lage —, in ein Verhältniss sich begeben, antreten, greifen zu;* med.: रूपमन्यत्स शिश्रिये *so v. a. er nahm eine andere Gestalt an* Kathâs. 18, 242. कर्मकरीभावम् 13, 91. गुरुताम् *so v. a. wurde Lehrer* 19, 75. मूढत्वम् 56, 884. प्रव्रज्याम् 66, 97. act.: पौरुषं श्रय *so v. a. lege Männlichkeit an den Tag* R. 4, 6, 13. द्विपेन्द्रभावं कलभ: श्रयन् Râgat. 3, 33. अपत्यकरुणाम् Spr. (II) 4846. सभ्योक्तताम् 2792. परिव्रज्यामशिश्रियत् Kathâs. 28, 18. कृपणां परमेवाम् 36, 74. मान्यछायाम् *so v. a. stelle sich krank* 63, 103. श्वानुकूल्यमशिश्रियन् (so ist zu lesen) Râga-Tar. 5, 132. — partic. श्रित P. 7, 2, 11, Schol. Vop. 26, 39. 1) in act. Bed. a) *haftend an, stehend auf, — in, befindlich —, angebracht an, enthalten in* (gewöhnlich loc., aber auch acc.): नाकस्य पृष्ठे अधि तिष्ठति श्रित: ṚV. 1, 125, 5. 75, 5. दिवि वात इव श्रिता: 187, 4. 2, 3, 11. पर्वते 28, 5. 5, 11, 3. 63, 4. सिन्धुषु 9, 88, 3. 3, 39, 3. अप्सु 3, 9, 3. चक्रे नाभिरिव श्रिता 8, 41, 6. वे श्रितार्णसि 2, 41, 17. सप्त्ये 3, 9, 3. श्रित: कामो युवद्रिक् 4, 43, 7. श्मश्रुषु *barba indutus* 8, 33, 6. दितु VS. 15, 6. 18, 55. TS. 2, 6, 9, 1. TBr. 1, 5, 3, 1. Âit. Br. 3, 19. पत्सामुद्गमनं श्रितम् AV. 13, 2, 4. Taitt. Âr. 3, 2. Pâr. Gṛhj. 1, 11. 16. म एवो अग्निर्दिवि श्रित: Maitrâyaṇ. 6, 1. Kaṭhân. Up. 2, 3. 10. Kaṭhop. 5, 3. यश्चकारेते यादे वा दिवि श्रिता: लोका:) MBh. 1, 3655. 14, 334. तौ दिशं श्रिता: शिवा: Ragh. 11, 61. Râga-Tar. 4, 239. सर्वे कामा ये अस्य हृदि श्रिता: (स्थिता: Çat. Br. 14, 7, 3, 9) Bṛh. Âr. Up. 4, 4, 7 = Kaṭhop. 6, 14. आत्मन् श्रितं तत्त्वम् Bhâg. P. 4, 7, 30. या: काश्च (प्रजा:) पृथिवीं श्रिता: (पृथिवीश्रिता: Maitrâyaṇ. 6, 11) Taitt. Up. 2, 2. एकं फलकं श्रित: *stehend auf* Kathâs. 26, 132. शयनं श्रित: *liegend auf* 28, 121. 65, 142. Bhâg. P. 3, 23, 45. रेवतीम् *im Sternbild* B. *sich befindend* so v. a. *unter diesem Sternbild es thuend* MBh. 13, 4268. अङ्घ्रिश्रितकृशवर्णा *stehend in* Bhâg. P. 2, 1, 37. सभासमीपविटपिश्रितकोकिल *sitzend auf* L.A. (III) 89, 17. — b) *sich irgendwohin oder zu Jmd* (acc.) *begeben habend* (auch das verbum finitum vertretend): ममवंशाच्छ्रायी श्रित: शाङ्गिनाम् Râga-Tar. 1, 271. अस्मि सबान्धव: — तौ शरणं श्रित: 4, 392. आसुरं भावमुत्सृज्य शौरिं स शरणं श्रित: Kathâs. 29, 12. रोदनं शरणं श्रित: 73, 225. भुजदण्डयुगम् — देवा: । मेन्द्रा: श्रिता: Bhâg. P. 1, 15, 13. तव चरणातपत्रम् 3, 21, 17. — c) *sich begeben habend in einen Zustand, — eine Lage, — ein Verhältniss, gerathen in:* स्वतनुम् *so v. a. seine (ursprüngliche) Gestalt angenommen habend* Kathâs. 52, 164. रात्तसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिता: Bhag. 9, 12. मूढभिषम् Kathâs. 56, 264. पतनम् Râga-Tar. 3, 530. कष्टश्रित P. 2, 1, 24, Schol. Bhaṭṭ. 5, 53. — d) *der sich unter Jmdes Schutz gestellt hat:* काञ्चित्तातीन्गुरून्बन्धून्वयोधिकान् शिल्पिन: श्रितान् । धनैरुपायनगृह्णासि MBh. 2, 205. — 2) mit pass. Bed. a) *wohin oder zu wem man sich begeben hat, adhitus:* °गोकर्णनिकेतमीश्वरम् Ragh. 8, 23. श्रितो ऽस्माभिर्बलनिधि: Spr. (II) 546. नलत्रनाथ: 3567 (Conj.). Kathâs. 52, 39. — b) pass. zu श्रित 1) c): °तम *so v. a. sich in Geduld fassend* Çâṅk. 10, 132. °मन्न Bhâg. P. 4, 7, 40. पैरश्रिधा: श्रिता: *so v. a. gegeben, ertheilt* Râga-Tar. 4, 148. — मन्दबुद्धिजना: श्रिता: Verz. d. Oxf. H. 155, b, 34 fehlerhaft für °जनाश्रिता:. — partic. श्रितवत् *der sich in Jmdes Schutz begeben hat:* दिधि श्रितवतश्चन्द्रं शास्त्र Spr. (II) 2807.

— caus. श्रापयति s. u. श्रि.

— desid. शिश्रयिषति und शिश्रीषति P. 7, 2, 49. Vop. 19, 6.

— अधि 1) *verbreiten über:* मह्यीमधि श्रिश्राय वाचम् AV. 18, 2, 7. मामानं को देवो अधि श्रिश्राय पूरुषे 13. — 2) *setzen auf:* वाम ऊरावधिश्रित्य दलिणाङ्घ्रिमरोरुहम् Bhâg. P. 3, 4, 8. insbes. *auf's Feuer* (mit und ohne अग्नि u. s. w.): पुरोडाशम् TS. 1, 6, 9, 4. चरुम् TBr. 1, 1, 10, 5. गार्हपत्ये 2, 1, 2, 7. 8, 5. Çat. Br. 1, 2, 2, 4. 5, 3, 2, 5. यज्ञेषु 12, 5, 2, 7. Kauç. 2. 64. Âçv. Çr. 2, 3, 16. अधिश्रित्य समिद्धे ऽग्नौ बदराणि MBh. 9, 2302. Soṇa. 1, 163, 6. पयो ऽधिश्रित्य Bhâg. P. 10, 29, 5. नहि भिलुका: सन्तीति स्वाल्पो नाधिश्रीयते (so mit Sarvadarçanas. 2, 21 zu lesen) Verz. d. Oxf. H. 216, b, 18. fg. — 3) *sich setzen —, sich legen auf:* शयनमध्यशिश्रियाव Daçar. 75, 4. 5. — partic. °श्रित 1) *haftend an, ruhend in —, auf Etwas:* धामंसे विश्वं भुवनमधि श्रितम् ṚV. 4, 58, 1. 1, 164, 29. सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति । सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं शतदायं ददाति । सोमो अहे भजति सोमो अप्सु सोमे प्रतिष्ठा हृदयं निषत्तम् ॥ सोमो गौरी अधि श्रित: (nach P. 6, 1, 36 von श्री; vgl. 1, 1, 19) 8, 12, 3. 14, 1. दिवि सोमो अधि श्रित: *hängt am Himmel* 10, 85, 1. AV. 1, 32, 1. 18, 4, 4. यो देवानामधिपो यस्मिँल्लोका अधिश्रिता: Çvetâç. Up. 4, 18. — 2) *gesetzt auf:* वत्सस्यधिश्रितस्तनौ Bhâg. P. 4, 7, 21. insbes. *auf's Feuer* AV. 13, 12, 1. Çat. Br. 2, 4, 2, 10. 11, 5, 2, 2. 12, 4, 4, 4. 14, 3, 2, 26. fgg. Âpast. Br. 5, 26. 7, 2. Kâtj. Çr. 25, 2, 3. Hariv. 3872 (°श्रुत in beiden Ausgg.). Bhâg. P. 10, 9, 8. — 3) *besetzt mit:* शिखरेषु केसकुम्भैरधिश्रितम् Bhâg. P. 3, 23, 18. — 4) *der sich wohin begeben hat:* दुर्गम् Pañcat. 191, 11. — Vgl. अधिश्रयण.

— प्रत्यधि *daneben übersetzen:* उखा: Kâtj. Çr. 25, 7, 12.

— समधि *auf's Feuer setzen:* पावके समधिश्रयत् । अपचद्राजशार्दूल (so ed. Bomb.) बदराणि MBh. 9, 2781. °श्रित्य 3, 2932.

— अनु, partic. °श्रित *gefolgt von:* यत्र पतत्तैरनुश्रित: (अनुमत: verstiesse gegen das Metrum) Çâṅk. 14, 210.

— अप med. *sich entfernen* Lâṭj. 2, 6, 8. partic. °श्रित *der sich entzogen hat, verborgen:* पर्वतेषु ṚV. 1, 84, 14. 5, 61, 10. 3, 24, 30. AV. 5, 127, 2. Çat. Br. 10, 5, 2, 18. अनप° Lâṭj. 2, 6, 2. — Vgl. अपश्रय.

— सम्यप med. *sich wegbegeben zu:* उत्तरं चक्रम् Śrâddhak. Bh. 1, 4.

— अभि 1) *herbeiführen, vereinigen mit:* यथावृक्षमो ऽभि ज्योतिरभैत् AV. 13, 2, 9. Hierher stellt sich, obgleich der Form nach zu श्री gehörig: (सुकृतं राष्ट्रं च) अन्यतरो ऽभिश्रीणाति (Gegens. अपकृत्ति) TBr. 1, 1, 2, 6, 7; vgl. u. simpl. 1) am Ende und unter सम्. — 2) *sich flüchten zu:* भयाद्रणं परित्यज्य शक्रमेवाभिशिश्रियु: MBh. 1, 6174. st. °श्रित्य Siv. 6, 6 liest MBh. 3, 16863 besser °सृत्य. — Vgl. अभिश्री 2) 3).

— अव vom *Feuer nehmen*, s. अवश्रयण.

— उपाव med. *sich hingeben an* (acc.) Çat. Br. 4, 6, 9, 8.

— आ 1) act. *heften an, anbringen:* त्रिषधिं दिव्याश्रयन् AV. 11, 10, 19. — 2) *sich lehnen an:* घटं चाप्याश्रयत् Hariv. 13478 nach der Lesart der neueren Ausg. *sich lehnen —, sich schliessen an Jmd, Halt und Schutz bei Jmd suchen, sich Jmd hingeben;* med.: का च सर्वगुणोपेतं नाश्रयेत नलं नृपम् MBh. 3, 2246. धर्ममाश्रयेत श्लोकाङ्कम् Kâm. Nîtis. 11, 38. शरण्यमेनमाश्रयते Ragh. 13, 7. धर्मवत्सम् Spr. (II) 2622. 3078. अन्यं शरणं कमाश्रये Bhâg. P. 4, 17, 30. 7, 5, 5. Vedântas. (Allah.) No. 2. नीचमाश्रयते लक्ष्मी: Spr. (II) 3793. act.: तद्विद्वाञ्श्रयेदप्रमत्तकम् 414. 587.

माश्रयेत्पार्थिवं विद्वान् 6356. Pañcat. I,32. Mārk. P. 19,35. Bhāg. P. 5, 25,11. राज्यलक्ष्मीश्च तत्पुत्रमाश्रयत् Kathās. 9,17. स लक्ष्म्याश्रीयते Spr. (II) 5336, v. l. अन्योऽन्यमाश्रित्य 5571. तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः M. 3,77. देवम् Kathās. 12,179. Bhāg. P. 3,14,19. रेवतिमाश्रयित्वा so v. a. *an der Seite von* Revati, *in ihrer Gesellschaft* Harīv. 8383. — 3) *haften an, beruhen auf:* सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति Spr. (II) 5414. M. 1,17. धनाश्रित्येदमाख्यानं कथा भुवि न विद्यते MBh. 1,207. 651. — 4) *sich an einen Ort begeben, med.:* या पत्तिर्यं सुविताय जग्मतुः ṚV. 7, 2,6. निम्नगाम् Ṛt. 1,27. वनानि Vikr. 155. Spr. (II) 5078. पुनस्त्यक्तस्ते पुनराश्रयन्ते 5085. act.: यथा पर्वतमादीप्तं नाश्रयन्ति मृगद्विजाः Maitrāyaṇ. 6, 18. आममन्नाश्रयेत् M. 6,43. MBh. 3,13069. श्येनमार्गम् Spr. (II) 1450. 2118. Çiç. 54,23. 81,21, v. l. Bhāg. P. 3,5,39. Pañcat. 188,16. आशिमाश्च भूतलम् so v. a. *fiel zur Erde* Bhaṭṭ. 14,111. 17,92. वनमाश्रयितुम् R. Gorr. 2,7,27. समुद्रकुक्षिमाश्रित्य दुर्गे प्रतिवसन्त्युत MBh. 3, 13063. Çiç. 9,4. Vaitān. Bṛh. S. 28,1. Pañcat. 56,9. स गङ्गाद्वारमाश्रित्य निवेशमकरोत् *angelangt bei* MBh. 1,7781. 5,7346. R. 1,73,9. 2,46,1. 3,11,2. Weber, Rāmāy. Up. 337. महतां स्थानम् Spr. (II) 4738. आश्रयति (loc. partic.) रज्जुजालकम् so v. a. *wenn er steht bei* Vaitān. Bṛh. S. 51, 14. यस्मिन् वेरे) तणे तणे राज्यमासो दोलामिवाश्रयत् *auf einer Schaukel liegend* Rāja-Tar. 3,130. — 5) *sich begeben in* so v. a. *sich überlassen, sich hingeben, zu Etwas greifen, Etwas erwählen;* med.: नियमं घोरम् R. 7,17,18. वेतसीं वृत्तिम् Kathās. 5,6. न चेतश्चाक्षमाश्रये so v. a. *gut heissen, billigen* R. Gorr. 2,99,21. act.: मा शोकं मा च संतापं धैर्यमाश्रय R. Schl. 2,72,52. वेतसीं वृत्तिम् Spr. 3175. संतोषम् (II) 1148. कृत्याकृत्यविवेकम् 3826. दासीत्वम् Kathās. 52,43. धर्ममाश्रय मा तेष्णयम् R. 2, 21,43. अधर्मम् Pārāç. 9,4. pass.: संग्रामे (so zu lesen mit der v. l.) मृत्युरेवाश्रीयताम् Hit. 75,17. मया च शोणवडवाद्वयमत्राश्रयिष्यते *ich werde die Gestalt — annehmen* Kathās. 37,162. हिंसामाश्रित्य Nār. 14,8. विद्याम् 9. धर्मम् M. 6,8. R. 2,21,41. पुत्रिकाधर्मम् Bhāg. P. 4,1,2. सङ्गमाश्रित्य केवलम् R. 3,40,18. दम्भम् Spr. 3034. कैकेय्या लघु शासनम् (आश्रुत्य ed. Bomb.) R. 2,58,23. बलम्, केतुम् 21,14. R. Gorr. 1,70,10. बाहुबलम् 3,35,113. स्वबाहुबलम् MBh. 1,5579. 5588. Spr. 5346. वृत्तिं वेतसीम् Raghu. 4,35. Bhāg. P. 4,26,5. व्यर्थपाण्डित्यम् Pañcat. 94, 24. मित्रभावम् 141,19. मनुष्यकन्यकाभावम् Kathās. 28,106. कृतमत्प्रकरणमाश्रित्यैनमाराधयाम: Çiç. 4,12. संस्कृतम् *zum Sanskrit greifend, — übergehend* Mālatīm. 102,11. Çiç. 48,7. Prab. 68,9. Daçar. 76,20. 80,13. 85,7. *erfahren* (einen Wandel u. s. w.) von Unbelebtem: एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान् । आवर्तबुद्बुदतरंगमयान्विकारानम्भो यथा Uttarar. 68,10. fgg. (88,2. fgg.). — 6) *treffen, zu Theil werden:* ब्रह्मविद्दो देषा नाश्रयन्ति कदा च न Maitrāyaṇ. 6,18. पापमेवाश्रयेदस्मान् Bhag. 1,36. यदि तावत्प्राणी विधिनाश्रीयते । अथ प्राणी प्रतिषेधेनाश्रीयते Pat. zu P. 8,3,72. इकाश्याश्रीयते so v. a. *findet auch hier Anwendung, gilt auch hier* Sidd. K. zu P. 1,2,6. — 7) *berücksichtigen:* न चेमं देहमाश्रित्य वैरं कुर्वीत केनचित् so v. a. *um dieses Leibes Willen* Spr. (II) 153. — partic. आश्रित 1) mit act. Bed. a) *sich an Jmd lehnend, — schliessend, Halt und Schutz bei Jmd suchend, Jmd ergeben, — untergeben;* mit acc.: यानिमानाश्रितास्तार्क्षीर्विप्रियं सुमहत्तम MBh. 1,5990. कृष्णम् Vop. 6,20. रामं सर्वात्मना R. 5, 57,8. Bhāg. P. 3,20,2. 7,8,31. मामनाश्रिताः 1,13,42. mit gen.: आश्रिताश्चैव लोकस्य विहिषः (nom. pl.) Spr. (II) 1056. am Ende eines comp.: कृष्णाश्रित Vop. 6,20. पराश्रित Spr. 2987. Kathās. 18,138. Verz. d. Oxf. H. 155, b, 24 (°धनाश्रिताः zu lesen). Rāja-Tar. 4,691. Bhāg. P. 5, 13, 25. m. *Untergebener* Kumāras. 3,1. Spr. (II) 1055. 2495. 3024. 4849. Hit. 15,8. 19. 16,1. चिराश्रित *ein alter Diener* 61,6. धनाश्रित Jāān. 3, 6 nach Stenzler so v. a. *keinem bestimmten Stande angehörend.* — b) *haftend an, eigen.* (गुणानाम्) तेषामेव समावायः सांप्रतं रामाश्रितः R. Gorr. 1,1,103. सर्वभूताश्रितं वपुः M. 12,26. दैवं रत्नाश्रितम् Vaitān. Bṛh. S. 80,1. द्रव्याश्रित (गुण) AK. 3,4,22,49. Buhlmān. 83. 88. Sarvadarçanas. 107,21. fg. 132,8. 18. लक्षधर्माश्रिता मतिम् R. 2,21,43. *abhängig* Kap. 1,125. Siddhānt. 10. वेदे *beruhend auf* Bhāg. P. 4,4,20. सत्ये ऽमृतम् Spr. (II) 3377. राष्ट्रं बाहुबलाश्रितम् M. 9,255. Spr. (II) 616. यदाश्रितं शरीरम् Ind. St. 2,66; vgl. M. 1,17. — c) *bezüglich auf, betreffend;* mit acc.: मामाश्रितानि कान्याकुः R. 7,43,5. am Ende eines comp.: भीष्माश्रिताः कथाः MBh. 13,1765. Harīv. 9658. R. 4,20,17. 7,71,6. Kathās. 49,2. 123,298. Verz. d. Oxf. H. 82, a, No. 138, Çl. 11. Mārk. P. 109,29. Bhāg. P. 4,16,26. Schol. zu P. 1,1,55. 62. — d) *an einen Ort sich begeben habend, weilend —, sitzend —, liegend —, stehend —, befindlich —, gelegen in, an, auf* (vgl. गत); mit acc.: के चेते शेरते वनमाश्रिताः MBh. 1,5927. Jāān. 3,193. R. 1,61,3. 2,24,11. 53,13. 58,6. 60,20. 67,5. 74,6. R. Gorr. 2,110,22. दुर्गाणि M. 7,72. वनस्पतिम् Raghu. 12,21. तरुच्छायाम् 1,75. Spr. (II) 3553. Kathās. 20,144. Weber, Rāmāy. Up. 333. शिलातलम् MBh. 3,2412. भूतलम् 5,7187. रत्नमञ्चम् 1,8187. गजपृष्ठम् Vaitān. Bṛh. S. 44,27. आसनम् Bhāg. P. 2,2,15. आदित्यपथम् MBh. 1,1148. दक्षिणां ककुभम् Vaitān. Bṛh. S. 47,8. 88,13. Bṛh. 23,17. मित्रे परमप्रेरुकोटिमाश्रिते *gelangt zu* Pañcat. 76,8. आश्रममभत्यम् Raghu. 8,11. *stehend bei* so v. a. *verbunden mit* R. 3, 58,26. mit loc.: कण्ठेषु (मेघाः) Vaitān. Bṛh. 22,1. कृत्पुष्करे Maitrāyaṇ. 6,1. Spr. (II) 1754. Bhāg. P. 1,6,16. काये रोगाश्रयः R. 3,49,33. am Ende eines comp.: दुर्गाश्रित M. 7,73. Bhāg. P. 5,1,18. fg. तीर्थाश्रित Spr. 2808. Vaitān. Bṛh. S. 5,68. 10,18. 32,23. द्वाराश्रित Spr. (II) 5509. शयनीयाश्रित Kathās. 28,142. मेरोवरं तुङ्गाद्रिकटकाश्रितम् 25,247. याम्याश्रित ein Komet Vaitān. Bṛh. S. 11,19. 103,6. Bṛh. 6,9. 10,4. Rāja-Tar. 4,269. 5,123. Çuk. in L.A. (III) 32,17. Pañcat. 61,22. कालिन्दीं पश्चान्मुखाश्रिताम् so v. a. *den Lauf nach Westen genommen habend* R. 2,55,4. धनन्याश्रितरुग्य so v. a. *dessen Vermögen nicht auf einen Andern übergegangen ist* Jāān. 2,51. येषां धनानि सकलार्थिवनाश्रितानि so v. a. *dessen Vermögen allen Armen gehört* Spr. (II) 5576. — e) *sich überlassen —, sich hingegeben —, zu Etwas gegriffen —, Etwas erwählt habend;* mit acc.: पाषण्डम् M. 5,90. Bhāg. P. 4,2,20. बुद्धिम् Spr. (II) 481. शत्रुपद्धतिम् 2740. धर्मम् 5570. ब्राह्मणीं वृत्तिम् MBh. 1,6951. Rāja-Tar. 6,22. माध्यस्थम् M. 4,257. प्रव्रज्याम् Kumāras. 6,6. व्यवसायम् Bhaṭṭ. 7,12. प्रीतिम् Rāja-Tar. 3,150. सत्कारम् Pañcat. 76,2. अन्यदसत् Bhāg. P. 3,2,10. पतनमनाश्रितः Spr. (II) 1261. स्वबाहुबलम् R. 2, 44,12. मानुषीं तनुम् Bhag. 9,11. 15,14. MBh. 3,16838. Raghu. 1,13. L.A. (III) 87,20. am Ende eines comp.: धर्माश्रित Vaitān. Bṛh. S. 101,2. — f) *Rücksicht nehmend auf:* धनाश्रितः कर्मफलम् Bhag. 6,1. R. 3,10,

6. — 2) mit pass. Bed. a) zu *dem man seine Zuflucht genommen hat:* तेन त्वमाश्रितो ऽस्माभिः Kathās. 24,125. °पद् Bhāg. P. 2,7,43. 3,23,42. — b) *unterstützt:* तस्त्रिभिः Rāja-Tar. 5,286. — c) *wohin man sich begeben hat, bewohnt, besetzt, eingenommen:* नास्त्येव तज्जन्तुनपादपस्य यत्राश्रितं सङ्घशरैः समन्ततः Spr. (II) 4929. दक्षिणा (दिक्) वत्सकाश्रिता Kathās. 18,59. (यमदंष्ट्रम्) घाश्रितेतरपार्श्वं च कुमार्या 42,139. शयने तयाश्रिते 18,276. शाखा चातकाश्रिता Pañcat. 80,8. पादाङ्गुष्ठाश्रितावनि so v. a. nur *mit der grossen Zehe den Fussboden berührend* Bhāg. P. 7, 3,3. सुरेन्द्रमात्राश्रितगर्भ Raghu. 3,11. — d) *dem man sich überlassen —, hingegeben hat, worin man gegriffen hat, angenommen, erwählt:* कोपस्तयाप्याश्रितः Spr. (II) 4012. °दैन्या Kathās. 23,17. भवतेदमतिकष्टं व्रतमाश्रितम् Prasāra. 52,2. °कलभोपम्यम् Rāja-Tar. 4,701. योगतरि Prasāra. 102,4. — e) *berücksichtigt:* इति स्मार्तो विशेषो नाश्रितः H. 510, Schol. — Vgl. घाश्रय fgg., घाश्रयिन्, घनेकाश्रित.

— घन्वा, partic. °श्रित *entlang* (acc.) *gegangen:* घर्कं तस्य क्षितार्धाय गङ्गामन्वाश्रितो नदीम् R. Gorr. 2,91,7. *entlang stehend, — hingestellt:* तिष्ठसु गङ्गामन्वाश्रिता नदीम् R. Scul. 2,84,7. निविष्टो घङ्गिनो गङ्गामन्वाश्रितो नदीम् 1. घनु könnte auch als selbständige Präposition gefasst werden.

— घपा 1) act. *lehnen, hängen an* (loc.): स्थूणायाम् Śiśup. Ça. 17,10, 19. — 2) med. act. *sich lehnen an:* परस्परं केचिदपाश्रयन्ते R. 5,60,16. घन्नं चापाश्रयत् (चाप्याश्रयत् die neuere Ausg.) Harīv. 13478. in übertr. Bed. so v. a. *Halt und Schutz suchen bei Jmd, seine Zuflucht zu Jmd nehmen:* नाप्यपाश्रित्य कं च न Spr. (II) 580. 1739. MBu. 7,6349. घन्योऽन्यमपाश्रित्य so v. a. *von einander abhängend* 12,7936. — 3) *sich überlassen, — hingeben, greifen zu Etwas:* घाकारमनपाश्रित्य शरीरस्थेव धारणाम् (न विद्यते) MBu. 1,307 = 651. योगपटमपाश्रित्य (उपाश्रित्य die neuere Ausg.) Harīv. 10743. — partic. घपाश्रित 1) in act. Bed. a) *gelehnt an, angelehnt:* मुषलापाश्रितोदर Harīv. 4438. लतास्तरुमपाश्रिताः 12012. नापाश्रितो भुञ्जीत Suça. 2,145,18. in übertr. Bed. so v. a. *der sich unter Jmdes Schutz gestellt hat:* कृष्णं नाथम् Harīv. 4288. — b) *geflüchtet in:* केचिद्वनमपाश्रिताः R. 6,93,2. *ruhend in:* कोत्रम् Bhāg. P. 3,8,17. — c) *der sich hingegeben —, zu Etwas gegriffen hat:* चिन्ताम् Bhāg. 16,11, v. l. बाहुवीर्यम् MBu. 1,7102. तदृतं विविधमपाश्रितो (घवाश्रितो die neuere Ausg.) वपुः *angenommen habend* Harīv. 11425. — 2) mit pass. Bed. a) *woran man sich lehnt:* घपाश्रितार्भकाश्चत्य Bhāg. P. 3,4,8. — b) *umgelegt, angelegt:* °वेष Bhāg. P. 3,8,25. — c) *besetzt, bewohnt:* घपाश्रय R. 5,11,19. — Vgl. घपाश्रय.

— व्यपा *zu Jmd seine Zuflucht nehmen:* मां व्यपाश्रित्य Bhāg. 9,32. MBu. 3,595. 13,3019. 15,123. Harīv. 4939. — partic. °श्रित 1) *seine Zuflucht genommen habend, geflüchtet zu:* धर्मराजम् MBu. 15,767. am Ende eines comp. Kathās. 109,29. — 2) *sich überlassen —, sich hingegeben —, zu Etwas gegriffen habend:* संविभागं दमं शौचं सौहृदं च MBu. 12,2898. पौरुषं स्वम् 7,6085 (nach der Lesart der ed. Bomb.). योगकलाम् Bhāg. P. 4,6,39. सत्वो षड्वृषि सामानि शरीराणि *angenommen habend* MBu. 12,7501.

— संव्यपा *sich überlassen, — hingeben, greifen zu:* पौरुषं °श्रितः (besser स्वं व्यपा° ed. Bomb.) MBu. 7,6085.

— उपा 1) *sich lehnen an* so v. a. *beruhen auf:* यानुपाश्रित्य तिष्ठन्ति लोका देवाश्च सर्वदा M. 9,316. — 2) *sich irgend wohin begeben:* शैलमुपाश्रय R. Gorr. 2, 106, 19. गुहां दुर्गामुपाश्रयत् R. 3,30,16. — 3) *sich überlassen, — hingeben, zu Etwas greifen:* तामुपाश्रय रतिं चन्द्रार्धचूडामणौ Spr. (II) 4982. इदं ज्ञानमुपाश्रित्य Bhag. 14,2. विद्याम् Spr. (II) 5234. धर्मम् 5663, v. l. तत्रधर्मम् R. Gorr. 1,77,21. उग्रं व्रतम् 37,20. धैर्यम् 2, 80,17. बलम् 6,1,33. शक्तिम् Bhāg. P. 2,4,7. दैवीं मायाम् 4,9,33. योगपटम् Harīv. 10743 (nach der Lesart der neueren Ausg.). उपाश्रयिता तव वीर्यममानुषम् R. 7,17,36. Der absol. lässt sich häufig durch *mit Hilfe von* übersetzen. — partic. °श्रित 1) mit act. Bed. a) *sich anlehnend, anliegend, sich stützend auf:* °शरीर Śiśup. Gorr. 4,8. चूतं लता R. 2,96,18. पाणौ स्तनान्तरमुपाश्रितो 5,13,32. मेरुर्मेरुवनम् R. Scul. 2, 73,13. यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ *beruhend auf* Kathop. 5,5. *der sich an Jmd geschlossen —, zu Jmd seine Zuflucht genommen hat, geflüchtet zu* MBu. 12,3284. माम् Bhāg. 4,10. R. 2,73,13. 96,15. Kathās. 52,261. देवम् Vāmān. Bhāṣ. S. 60,19. Bhāg. P. 3,9,8. 7,10,2. — b) *der sich irgend wohin begeben hat, angelangt bei, weilend in, bei:* गङ्गाम् Spr. 5007. शोणातीरम् R. Gorr. 1,34,18. किंमवत्तम् 36,9 (35,9 Scul.). 2,119,19. 4,37,25. वृत्तम् MBu. 1,5918. 3,16694. R. 2,50,35. वृतमूलम् 42,16. 58, 4. R. Gorr. 1,58,4. 3,44,27 (उपाश्रितः zu lesen). भुजच्छायाम् Kathās. 34,39. रौद्रादीनि मघात्तान्युपाश्रिते चन्द्रजे Vāmān. Bhāṣ. S. 7,3. 13,6. घात्मनि मुक्तविषये Bhāg. P. 4,11,29 (= स्थित Comm.). — c) *der sich überlassen —, sich hingegeben —, zu Etwas gegriffen hat:* चित्ताम् Bhag. 18,11. विद्याबलम् MBu. 3,12218. मायायोगम् R. 1,31,8. सैकीं वृत्तिम् Spr. (II) 5996. तं तं विधिम् Mārk. P. 109,34. मर्त्यधर्मान् Kathās. 56, 51. — 2) mit pass. Bed. *worauf man sich gelehnt —, gestützt hat:* स्वापक्षेतुरनुपाश्रितो ऽन्यया रामबाहुः Uttarar. 17,17 (24,7). — Vgl. उपाश्रय.

— समुपा, partic. °श्रित 1) in act. Bed. a) *sich lehnend an, gestützt auf* (acc.) R. 5,13,37. *beruhend auf:* क्षेत्रं हि दैवतमिदं ब्राह्मणान्समुपाश्रितम् MBu. 13,4430. त्रिवर्गो ऽयं दंपत्यं °श्रितः Spr. (II) 1318. — b) *sich irgendwohin oder zu Jmd begeben habend:* गोमन्तम् MBu. 2,618. समुद्रम् 3,8752. सभूं च सप्रुरं चैव वस सं °श्रिता R. Gorr. 2,26,26. — c) *sich überlassen —, sich hingegeben —, zu Etwas gegriffen habend:* वैराग्यम् Bhag. 18,52. निकृतिम् MBu. 2,2074. मायाम् 1,1156. Mārk. P. 19,7. — 2) mit pass. Bed. a) *besetzt, eingenommen:* दार्वाभिसारराजेन — घधिरोणयः Rāja-Tar. 5,141. — b) *heimgesucht:* भूतेन रात्रौ बलवता MBu. 4,540.

— प्रत्या s. प्रत्याश्रय.

— व्या s. व्याश्रय.

— समा 1) *sich stützen auf, sich halten an* in übertr. Bed.: यस्य बाहू समाश्रित्य सुखं सर्वे शयामहे MBu. 1,6247. यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः M. 3,77. *Zuflucht suchen bei, sich in Jmdes Schutz begeben:* °श्रित्य शरासंघम् Harīv. 9084. Rāja-Tar. 1,283. — 2) *sich irgendwohin begeben:* क्षपां °श्रयिष्ये R. Gorr. 2,115,18. घरण्यं °श्रयेत् M. 6,3. गिरिदुर्गम् 7,71. Pañcat. 192,25. गिरिदुर्गं °श्रित्य M. 7,70. क्षपाम् Bhatt. 3,38. तमः M. 1,55. *sich herbeimachen:* समाश्रयन्ति प्रवगाः Ṛt. 2,19. — 3) *in Besitz nehmen, einnehmen:* तदागत्यान्यः कश्चिदेतत्स्थानं समाश्र-

धिष्यति Pāṇ. 136, s. 9. समाश्रयासनमिदम् Spr. (II) 1478. — 4) *sich überlassen, — hingeben, greifen zu:* धर्ममेव °अयेत् MBu. 3, 13345. संधिम् M. 7, 169. एतच्चयं °श्रित्य 215. एतां बुद्धिम् R. 3, 48, 16. धर्मम् 2, 18, 16. Spr. (II) 8663. रौद्रं वपुः Mān. P. 17, 14. — partic. °श्रित 1) *in act. Bed. a) an einander gereiht* Nir. 4, 13. 6, 3. — *b) gelehnt an:* मीमस्योः MBu. 4, 630. शाखां पलाशस्य Vārāh. Bṛh. 27 (25), 11. *der sich in Jmdes Schutz begeben hat:* त्रासंधम् MBu. 2, 376. पादसेवाश्रयपरम् Kathās. 48, 135. पदी 83, 81. *ohne Ergänzung* Kām. Nītis. 15, 23. Spr. (II) 3752. Vārāh. Jogaj. 2, 17 in Ind. St. 10, 169. — *c) beruhend auf:* शेषं दैवं °श्रितम् Spr. (II) 1878. शेषं दैवसमाश्रितम् Kām. Nītis. 11, 40. Mārkaṇḍ. 6, 9 (wo vielleicht पक्षवायुसमा° zu lesen ist). — *d) bezüglich auf, betreffend:* मन्युस्त्यागसमाश्रितः R. 6, 104, 42. प्रबोधचन्द्रिका नाम रामचन्द्रसमाश्रिता Verz. d. Oxf. H. 166, *b*, No. 370, Z. 25. — *e) der sich irgendwohin begeben hat, weilend in, stehend an, auf:* देवलोकम् Jāṭ. 3, 187. शालवृतम् MBu. 1, 5937. Pāṇ. 80, 7. पर्वतेन्द्रम् R. 4, 1, 17. पूर्वोत्तरां कूर्मस्य पादम् Mārk. P. 58, 53. तरुमूले Kathās. 72, 31. भागीरथीं प्राच्यां दिशि *so v. a. fliessend* Harīv. 9518. *mit der Ergänzung comp.:* दुर्ग° (नृप) M. 7, 72. शालस्कन्ध° (विटप) R. Gorr. 2, 105, 12. गरुत्पृष्ठ° (वायस) Vārāh. Bṛh. S. 95, 24. देशे सुरसिन्धुसमाश्रिते *gelegen an* Kathās. 18, 62. — *f) gelangt zu* so v. a. *theilhaftig:* पितुस्तेजो मातुश्चैव °श्रिताः Harīv. 5198. eben so समाश्रितवत् Spr. (II) 5875. — *g) sich überlassen —, sich hingegeben —, zu Etwas gegriffen habend:* तत्राधर्मम् MBu. 5, 7148. श्रुतविनयविधिम् Spr. (II) 689. धृतिमुदं वृतिम् 155. दैन्यम् Rāja-Tar. 6, 250. साध्यवसमाश्रितत्वात् Pāṇ. 87, 23. *annehmend, statuirend:* प्रमाणवाप्रमाणाने स्वतः सोप्याः समाश्रिताः Sarvadarśanas. 131, 19. — 2) mit pass. Bed. *a) auf den man sich stützt, den man zu Hilfe nimmt* Rāja-Tar. 5, 218. — *b) ausgestattet mit* (instr.): शौन्दर्येण Kathās. 50, 133. *Asylgesucht von:* तृट् MBu. 14, 1605. — *c) wozu man gegriffen —, was man erwählt hat:* यशिष्यत्वादि लिङ्गस्य पुंस्त्वं वेत्तृ °श्रितम् Kāś. 2 zu P. 7, 1, 1. — Vgl. समाश्रय u. s. w.

— प्रतिसमा, partic. °श्रित *beruhend auf, abhängig von* (acc.) MBu. 14, 1139.

— उद् 1) act. *in die Höhe richten, aufrichten:* उत्सूर्यो बृहद्भिर्भियसत् RV. 7, 62, 1. 76, 1. यूपम् Ait. Br. 2, 3. VS. 23, 27. Çat. Br. 3, 7, 2, 4. 8, 2. 13, 8, 2, 12. Kauç. 61. Liṭ. 1, 7, 1. ध्वजम् MBu. 4, 1165. उच्छ्रित्य 1231. उच्छ्रयन्प्रथमं पादम् *so v. a. den ersten Schritt thuend* Harīv. 2642. उच्छ्रित्य बाहू *die Arme empor hebend* MBu. 3, 16842. 9, 15. 14, 1962. R. 2, 66, 17. R. Gorr. 2, 39, 45. 57, 25. 68, 51. pass. उच्छ्रीयते Ait. Br. 2, 2. Çat. Br. 3, 7, 2, 13. 8, 3. घस्र उच्छ्रिश्रिये MBu. 4, 1018. उच्छ्रीयन्तो मन्तात्स्फुरदुरुमणयः शेषफणास्तोरणानाम् Prab. 26, 7. — 2) med. *sich aufrichten, aufrecht stehen* Vārtt. zu P. 3, 1, 89. उच्छ्रयते (उदशिश्रियत) दृणः स्वयमेव Scholl. उच्छ्रयस्व वनस्पते RV. 3, 8, 3. यद्गिरिं गिरिस्पृगुदश्रयत Ait. Br. 3, 42. VS. 29, 5. — partic. उच्छ्रित 1) *in die Höhe gerichtet, aufgerichtet, empor gehalten* Çat. Br. 1, 4, 4, 3. Kāty. Çr. 13, 3, 13. Çāṅkh. Çr. 15, 19, 11. ध्वज R. 2, 43, 10. 99, 14. R. Gorr. 1, 5, 9. छत्र Rāgh. 17, 33. Kathās. 25, 11. 53, 188. °भुज Vārāh. Bṛh. 27 (25), 7. °पाणि Spr. (II) 2914. नेत्रे °पक्ष्मणी MBu. 4, 166. *aufsteigend, sich erhebend, in die Höhe gehend:* शिलोच्चयं प्रकृतैर्बकुलैरिवोच्छ्रितम् MBu. 3, 2427. धूम R. 2, 54, 5. तेजसो राशिः Māṇ. P. 97, 1. Kām. 1, 15. Vārāh. Bṛh. S. 28, 18. फणा *erhoben, angeschwollen* Spr. (II) 3966. द्वाभ्यां धर्मः स्थितः पद्भ्यामधर्मस्त्रिभिरुच्छ्रितः *auf drei Füssen stehend* Harīv. 11315. — 2) *hoch* AK. 3, 2, 19. 3, 4, 24, 87. H. an. 3, 259. Med. t. 100. मृङ्ग R. 3, 53, 36. Berg 4, 40, 59. Kām. 5, 1. Bhāg. P. 8, 2, 1. Baum 30, 44. Pañcat. 1, 7, 13 (zu lesen योजनायुतम्). एकाङ्गुलोच्छ्रित Suçr. 1, 258, 12. Vārāh. Bṛh. S. 11, 33. 24, 9. 53, 16 (*höher als* mit abl.). 56, 12. 58, 49. 88, 18. वृत्र R. 7, 84, 5. मस्तकोच्छ्रितनासिकाः 5, 17, 29. नात्युच्छ्रितं नातिनीचमासनम् Bhāg. 6, 11. — 3) *emporgestiegen, zu Macht gelangt, mächtig* (von Personen) Spr. (II) 3829. 5336. घत्युच्छ्रित M. 7, 170. Spr. (II) 178. 615. — 4) *üppig, übermüthig:* उच्छ्रितानां निरुत्सा Harīv. 14367. शत्रु R. 6, 95, 21 (Gegens. दीन). बाहुवीर्योच्छ्रित *pochend auf* Spr. (II) 3968. — 5) *aufgeregt:* दोषाः Suçr. 2, 451, 5. — 6) *gesteigert, vermehrt:* = प्रवृद्ध AK. 3, 4, 24, 87. H. an. Med. °शास्त्रेतिकासादिभिरुच्छ्रुतश्री (सरस्वती) Prāṇ. 80, 1. *gross, ingens:* स्वभुजवीर्य Rāgh. 9, 20. — 7) *hervorgegangen, entstanden;* = जात, संजात AK. H. an. Med. — 8) Pañcat. V, 11 fehlerhaft für उल्लिखितः s. Spr. 2918. — Vgl. उच्छ्रय flgg. — caus. उच्छ्रापयति *aufrichten* VS. 23, 26.

— सम्युद्, partic. सम्युच्छ्रित 1) *aufgerichtet* Çat. Br. 10, 2, 2, 6. *emporgehoben:* °कर MBu. 3, 13735. — 2) *aufsteigend, sich erhebend:* ऊर्मिशतानि Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 11. — 3) *hervorragend:* वल्मीकानां पङ्क्तौ यत्रैको ऽभ्युच्छ्रितः Vārāh. Bṛh. S. 54, 25. मृङ्ग Rāgh. 9, 62. — 4) *hervorragend durch, sich auszeichnend in* (instr.) Rāgh. 16, 2. — Vgl. सम्युच्छ्राय.

— प्रोद्, partic. प्रोच्छ्रित 1) *emporgehalten:* छत्र Harīv. 4977. *emporgehoben:* बाहव: 10528. — 2) *hervorragend, hoch:* कूर्म्य Mṛicch. 76, 19.

— प्रत्युद् 1) act. *aufrichten gegen* Çat. Br. 1, 4, 4, 5. — 2) med. *sich auflehnen gegen:* स भ्रातृव्यं प्रत्युच्छ्रयते Çat. Br. 11, 1, 8, 6. — 3) प्रत्युच्छ्रित *ansteigend* Çat. Br. 2, 1, 4, 2. 13, 8, 4, 6.

— समुद् act. *aufrichten:* ध्वजान्समुच्छ्रिण्वि: Bhaṭṭ. 14, 11. — partic. समुच्छ्रित 1) *aufgerichtet, emporgehoben:* यूप MBu. 3, 8054. 7, 2339. °ध्वजवती (पुरी) R. 1, 77, 6 (78, 6 Gorr.). 3, 29, 3. Vārāh. Bṛh. S. 43, 7. रथे केतुः MBu. 3, 14424. °पताक R. Gorr. 2, 87, 24. °छत्र Kathās. 18, 403. °भुजद्वया R. 1, 28, 25. — 2) *in die Höhe gegangen:* शोण Suçr. 1, 63, 11. — 3) *hoch* MBu. 1, 1114. 3, 11269. R. 2, 80, 20. 4, 41, 40. 5, 96, 5. Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 22. Spr. (II) 2589. Māṇ. P. 54, 18. Pañcat. 1, 12, 16. — 4) *hoch stehend* in übertr. Bed.: ध्वजवन्यशोव्याप्तिसमुच्छ्रितः (वेधाः) Suçr. 1, 123, 5. — Vgl. समुच्छ्रय, समुच्छ्राय.

— उप 1) act. *anlehnen:* यमुना द्यावापृथिवी उपाश्रयन् *lehnten an einander* TBr. 1, 6, 6, 2. परिधी Çat. Br. 14, 2, 2, 22. Kāty. Çr. 26, 6, 12. — 2) med. *sich lehnen, — stemmen:* सकृत्ते मित उप हि मर्यताम् RV. 10, 18, 12. वर्तासु रुक्मा उपशिश्रियाणाः *angebracht an* 7, 56, 12. — 3) *sich stellen zu, an:* उपश्रयमाणस्य विभावसुम् Bhāg. P. 11, 26, 31. *sich bei Jmd* (acc.) *einstellen, einfinden:* उपशिश्रियुः MBu. 3, 10456. उपश्रित्य Daçarāj. 85, 16 *hinzutretend* fehlerhaft für उपसृत्य — 4) med. *sich gewöhnen an* (acc.): स यथा शकुनिः सूत्रेण प्रबद्धो दिशं दिशं पतित्वान्यत्रायतनमलब्ध्वा बन्धनमेवोपश्रयत एवमेव खलु तन्मनः — प्राणमेवोपश्रयते Kāṭh. Up. 6, 8, 2. — partic. उपश्रित *gelegt an:* घर्मं न कृदि स्तोम उपश्रितश्चिदस्तु RV. 7, 86, 8. पुष्करपर्णे *gelehnt an, liegend auf* TS. 5, 1, 6, 4. 2, 6, 8, 9. दिवे रुक्मा उपश्रिताः VS. 16, 56. Kāty. Çr. 26, 6, 19. 21. —

Vgl. उपमी.

— नि act. 1) *anlehnen:* eine Leiter Çat. Br. 5,2,2,9. — 2) *etwas niederlegen:* नि दुर्यणे कुर्पवाचं मृधि मेतॄ ṚV. 1,174,7. — Vgl. निमय-पणी, निमेणी.

— अभिनि act. *übergehen zu* (acc.) Âpast. 2,22,4.

— उपनि 1) act. *in die Nähe ziehen, an die Seite setzen:* ब्रह्मैवास्तत उपनिमयति स्वा योनिम् Çat. Br. 14,4,2,23. — 2) med. *sich anlehnen:* कृविर्धानस्य वर्त्म Çâṅkh. Br. 9,4. Ça. 15,3,5. *sich anschmiegen:* गावः सुवाससम् Çat. Br. 3,1,2,17.

— उपनिस् *sich hinausbegeben in, nach:* श्रावस्तीमुपनिःमित्य Lalit. ed. Calc. 2,16. fg.

— विनिस्, विनिःमित Siṁh. 6,11 fehlerhaft für °मृत, wie MBh. 3, 16871 gelesen wird.

— परा, partic. °मित *sich anschliessend* Çrauṇ. 5.

— परि act. *umlegen, umstellen, umhängen, einfassen; einen Verschlag u. s. w. machen* Çat. Br. 2,2,4,11. 12,4,2,1. पुरम् 6,3,2,24. सदः 4,6,2,9. 10. शालाम् 3,1,2,2. दक्षिणाग्निम् Kâṭh. Ça. 25,2,2. शकलौ Çat. Br. 14,1,2,26. शकलैः Kâṭh. Ça. 26,3,9. TS. 6,1,4,1. 5,6,4. TBr. 1,6,6,6. परिमिद्भिः Çat. Br. 7,1,1,12. 3,5,2,9. ज्ञातेन 3,4,2,9. Ait. Br. 1,29. Çâṅkh. Ça. 18,24,18. pass.: मरुद्भिः परि ओषस्व *umgieb dich* VS. 37,13. Çâṅkh. Ça. 5,13,7. — partic. °मित 1) *umherstehend:* ये चात्रमिच्छन्ति ददस्व तेभ्यः परिमिता (= अन्ये ऽत्रोपजीविनः Nîlak.) ये परितो मनुष्याः MBh. 1,7160. — 2) *umgeben von* (instr. oder im comp. vorangehend) Kathâs. 43,14. Bhâg. P. 2,21,22. 24,9. 3,4,9. 10,25,22. 36,24. — 3) n. s. bes. — 4) MBh. 12,1799 fehlerhaft für परिमुत, wie die ed. Bomb. liest; Âçv. Gṛhy. 2,8,18 wohl für परिमुतः. — Vgl. परि-मय fg., °मित्, °मित (n. auch TS. 2,2,2,2. Çat. Br. 6,4,4,19).

— संपरि act. *überdecken:* कृविर्धाने (du.) Ait. Br. 2,9. °मिपेते pass. ebend. für °मोपेते.

— प्र act. *anlehnen, aufstellen:* यूपम् Kâṭh. 26,3. *anfügen, anreihen:* प्रेमधरेषधरा धिषिम्यु: ṚV. 10,76,2. — partic. °मित 1) *(vorgeneigt) der eine rücksichtsvolle Stellung eingenommen hat; anspruchlos, bescheiden* Âk. 3,1,25. H. 431. an. 3,276. Med. t. 123. तमहं कीर्तयिष्यामि तथैव प्रमिता भव MBh. 13,6779. संनतः प्रमितो (प्रस्थितो ed. Bomb.) भूत्वा वाक्यमर्जुनमब्रवीत् 3,1722. त्यागिनः प्रमृतस्येव्हे (so beide Ausgg., = निष्ठावत् Nîlak.) नोच्छित्तिर्विद्यते क्वचित् 12,351. 3358. 10098 (= अद्धावत् Nîlak.). 13,3540 (प्रमृत beide Ausgg.). 6706. R. Gorr. 2,1,26 (°तर्). Bhâg. P. 1,5,29. 7,5,32. वाक्य MBh. 3,16002 (beide Ausgg. प्रमृत, = पुष्कलार्थवत् Nîlak.). R. 1,12,2 (प्रमृत Schl.). 18,5. 67,25 (प्रमृत Schl.). 68,3 (°मृत Schl.). R. Gorr. 2,23,1. 3,52,21 (°मृत gedr.). प्रमितम् adv.: प्रोवाच प्रमितं विनयान्वितः MBh. 1,7333. 13, 6310 (प्रमृतम् ed. Calc.). Bhâg. P. 10,41,9. — 2) *verborgen, geheim, dunkel:* सर्व *Sinn* MBh. 1,82. — Vgl. प्रमय fgg. und प्रमित.

— उपप्र act. *hinstellen an* (acc.) Kâṭh. 26,2.

— संप्र, partic. °मित = प्रमित 1): स्थितं संप्रमितं दृष्ट्वा रामम् R. Gorr. 2,15,4. वाक्य R. Schl. 2,70,11.

— प्रति, partic. °मित n. *so v. a.* प्रतिमय (wie die ed. Bomb. liest) *Obdach* MBh. 13,335.

— वि act. *von einander thun, öffnen* (z. B. Thürflügel): स्वाध्यौ वि दुरो ऽशिम्यु: ṚV. 7,2,8. im Sinne des med.: वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो ययौतॄ 3,4. med. *sich auseinander bewegen, — öffnen, — entfalten:* द्वारः ṚV. 1,13,6. 7,17,2. 10,70,5. VS. 29,5. ऊर्ध्वा यस्या मतयो वि यन्ति ṚV. 7,78,1. विमयमाणो यमतिमुच्चोम् *von sich ausgehen lassend* 45,3. या न ऊर्ज उशती विमयते *öffnet* 10,85,17; vgl. 110,5. — partic. विमिता गीः 1,117,1.

— सम् 1) act. *zusammenfügen:* सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमयेत् *ausstatten* ṚV. 3,19,3. तेनात्मानं समधीणात्प्रजया पशुभिरिन्द्रियेण Pâṇḍav. Br. 9, 6,7. (स व्यधत्त) स तैरात्मानं समधीणात् 14,3,22. 16,12,4. 18,11,1. med. *sich zusammenfügen, zusammentreten, sich verbinden:* दंपती AV. 6,122,3. 12,3,7. पत्नीः 6. — 2) *sich abgeben mit:* वीरपत्न्यस्तथा तया नार्यः संमयन्ति नरान् MBh. 3,12868. — 3) *sich an Jmd* (acc.) *schliessen, — unter Jmdes Schutz stellen, sich zu Jmd flüchten;* med. MBh. 13, 340. Kâm. Nîtis. 11,26. 19,26. Kathâs. 33,118. act. M. 7,171. MBh. 7,8215. R. 2,66,10. °मित्य Spr. (II) 5757. MBh. 2,128. — 4) *beruhen auf:* न ह्यन्तु वस्तुरूपाधीन्प्रीतयः संमयन्ते Mâlatîm. 15,2. — 5) *sich an einen Ort* (acc.) *begeben;* med. M. 2,24. Spr. (II) 2308. act. MBh. 3, 13083. 6,705. 13,2998. 15,96. 1030. Hit. III,147. Mâlav. P. 49,35. — 6) *sich hingeben, greifen zu:* वलं च दाक्ष्यं संमयस्व MBh. 3,10841. बाधिर्यं संमयेत् Spr. (II) 1811. पत्नीं कं च न संमयेत् Bhâg. P. 7,13,7. संमित्य निकृतिमिमाम् R. 2,39,7. — 7) *gelangen zu so v. a. theilhaftig werden:* संमयत्येव तच्छ्रोत्रम् M. 10,60. — 8) *Jmd mit Etwas heimsuchen:* ताभ्यतुर्थभागेन संमयिष्ये Dr. 7,86,16. — partic. °मित 1) *vereinigt* AV. 11,7,21. Ait. Br. 3,11. पत्न्या लक्ष्म्या च *verbunden mit* Râjat. 2,151. रावणं सैन्यं खरदूषणसंमितम् R. 3,31,32. 32,9. धर्मसंमितं वचनम् R. Schl. 2,21,10. संमितवत् *der sich vereinigt hat mit* (instr.) Çiç. 88. — 2) *gelehnt —, geklammert an:* बाहू रामस्य R. 2, 60,20. अनीश्वरो वलं धर्मो द्रुमं वल्लीव संमिता Spr. (II) 3164. mit pass. Bed. *woran man sich gelehnt —, geklammert hat:* घनपायिनि संमितद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी Kumâras. 4,31. — 3) *der sich in Jmdes Schutz oder Dienst begeben hat, Untergebener, Diener:* समग्रा वृषिणी लक्ष्मीः कमेकं संमिता नरम् R. 1,1,6. ohne Ergänzung M. 4,179. Jîân. 1,157. MBh. 12,3264. 13,4410. R. Gorr. 2,30,37. 5,86,21. Spr. (II) 1230. 1893. Râjat. 5,385. राज्ञः Spr. (II) 634. राज्ञ° (I) 3183, v. l. mit pass. Bed. *unter dessen Schutz man sich gestellt hat* MBh. 13,6353. — 4) *haftend an, eigen:* वेगसत्त्वानि संमितानि तम् R. 7,23,8,17. भूमिका प्राणसंमिता MBh. 5,333. — 5) *bezüglich auf, betreffend:* क्रोधमात्मनि संमितम् R. 2,10,27. कैकेयी° (ज्ञत्य) 80,14. धर्मार्थ° (कथा) MBh. 1,16. अध्यात्म° (संवाद) Bhâg. P. 2,10,49. — 6) *der sich an einen Ort begeben hat; weilend —, wohnend —, befindlich in, an, auf:* यामं भेताय संमितः (st. des verbi finiti) MBh. 3,13688. दुर्गम् Spr. 2885. 5360. (II) 4198. सधानम् R. Gorr. 1,51,9. स्वकमाश्रमम् 3,74,3. पर्वतान् 4,37,4. उदग्दिशम् Vaṁç. Bhâg. S. 5,66. विकारम् R. 2,60,18. वृतमूलेषु 46,22. पद्मा समुद्रमभितः संमिताः सरितो ऽपराः *sich ergiessend in* MBh. 12,10976. प्रासादवातायन° Râgat. 6,24. मण्डल° *der sich geflüchtet hat in* Vaṁç. Jogat. 2,17 in Ind. St. 15,169. देह° *im Körper seinen Sitz habend* MBh. 13,157. धरणि° *liegend auf* R. 6,18,51. रेवासंमितानि तीर्थानि

gelegen an Verz. d. Oxf. H. 65, *a*, 4. देशो दक्षिणसंश्रितः *im Süden gelegen* R. 4,32,4. कथा महाभारतसंश्रिताः *enthalten in* MBu. 1,11. पुराण° 16. — 7) *der sich überlassen —, sich hingegeben —, zu Etwas gegriffen hat:* सत्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च Bhag. 16,18. हेयीभावम् Pañcat. 155,21. in der entsprechenden pass. Bed. MBu. 12,7139. — 8) etwa *bescheiden* (vgl. प्रश्रित) oder *passend:* वाक्य MBu. 12,4102. — 9) fehlerhaft für संशित MBu. 12,10898 (सुसंशित ed. Bomb.). Verz. d. Oxf. H. 76, *a*, 26. für संभृत Rāja-Tar. 6,70. — Vgl. संश्रय fgg. und धर्मसंश्रित.

— अभिश्रम् 1) act. *sich irgendwohin flüchten, Zuflucht suchen in, auf:* उत्सेधम् Çat. Br. 13,2,2,9. दुर्गम् MBu. 12,2628. — 2) act. *sich überlassen, — hingeben:* त्यागम् MBu. 12,518. — 3) *gelangen zu, theilhaftig werden;* pass.: तवाप्या प्रकृतिर्योगादभिसंश्रीयते (°श्रियते falschlich ed. Bomb.) MBu. 12,10977. — partic. °श्रित *der sich zu Jmd* (acc.) *begeben hat* MBu. 1,1156. 13,2717. *der sich in Jmdes* (acc.) *Schutz begeben hat* 12,2766. — Vgl. अभिसंश्रय.

— उपश्रम् *sich anschliessen an, sich einfinden bei* (acc.); med. TBr. 1,5,10,3. Çat. Br. 3,4,4,14. act. *sich in Jmdes Dienst begeben:* न विद्वान्विद्यया क्लेनं वृत्त्यर्थमुपसंश्रयेत् MBu. 13,7600. Spr. (II) 5234.

— प्रतिसम् act. *sich wieder* (*als Erwiederung*) *in Jmdes Schutz begeben* MBu. 13,6853.

2. श्रि (= 1. श्रि) adj. s. वक्तः°, वक्तिः°.

3. श्रि am Ende eines adj. comp. = 3. श्री: s. वेष°.

श्रित् (von 1. श्रि) adj. s. कृच्छ्रे°, दिवि°, नभः°.

श्रित partic. s. u. आ und 1. श्रि.

श्रिति f. यति श्रिती तिरश्ता गव्या जिगात्यण्व्या ṚV. 2,14,6. vielleicht für श्रुती oder सृती *auf schmalem Wege.*

श्रिमन्य adj. n. zum f. श्रियंमन्या P. 6,3,68, Schol.

श्रियध्यै infin. zu 1. श्रि oder श्री P. 3,4,9, Schol.

श्रियंमन्या (श्रियम्, acc. von 3. श्री, + म°) adj. f. *sich für die Çrī haltend* Vop. 26,32. Bhatt. 5,71.

श्रियंसे (dat. infin. zu einer sonst nicht erhaltenen Wurzel श्री = 3. श्री) P. 3,4,9, Schol. (*so dass es sich schmuck ausnimmt*) *schön, hübsch* (vgl. श्रिये, श्रिये unter 3. श्री): श्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे ṚV. 1,87,6. गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमम् 5,59,3. मर्या इव श्रियसे चेतथा नरः ebend.

श्रिया (Nebenform von 3. श्री) f. Ind. St. 5,195. 1) *Wohlfahrt, Glück* Spr. (II) 5446 (wo drei Mal श्रिया wieder herzustellen ist). श्रियैश्वर्यप्रवेप्सवः Bhāg. P. 1,2,17 (der Comm. fasst das Wort als instr., indem er सह ergänzt). — 2) personif. als Gattin Çridhara's oder Vishṇu's Ind. St. 5,194. — Vgl. भद्रश्रिय.

श्रियादित्य m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 349, *b*, 1 (Verz. d. B. H. No. 873).

श्रियानकुल N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *b*, 19.

श्रियावास (श्रि° + वास) m. *eine Wohnstätte der Wohlfahrt, — des Glücks:* वेदव्यास MBu. 13,1337.

श्रियावासिन् (श्रि° + वा°) adj. *bei der Çrī lebend:* Çiva MBu. 13,1182.

1. श्रिष्, श्रेषति (दाहे) Dhātup. 17,31. = श्लिष् *verbinden, zusammenfügen:* कस्येमां हृदि श्रेषाम सुष्टुतिम् ṚV. 4,43,1. — Vgl. श्रेष्मन् in स°. — अभि *verbinden:* सूते चिदभिश्रिषः (infin.) ṚV. 8,1,12.

— आ s. आश्रेष.

— सम् s. संश्रेषिण.

2. श्रिष् (= 1. श्रिष्) adj. s. दोषणि°, हृदय°.

1. श्री (= श्रा), श्रीणाति, श्रीणीते (पाके) Dhātup. 33,1. तं घृतेनाभिश्रीणीतात् घृतं भूतमनुक्रोत् TS. 6,5,9,1. 2. VS. 6,18. Pañcav. Br. 3,2,10.11 (= श्रपयत् Comm.). घर्मम् AV. 4,1,2.

2. श्री, श्रीणाति, श्रशिश्रियुस् *mengen, mischen,* κεράννυμι: सोमम् ṚV. 1,84,11. 3,2,11. गोभिः 9,46,4. 71,4. 107,2. 3,2,3. पर्यसेव मे सोमं श्रीणान् TS. 6,4,6,1. Pañcav. Br. 18,6,2. 4. Çat. Br. 4,1,4,3. 4,9,13. 12,7,3,19. med. ṚV. 8,90,9. गोभिः श्रीणानः 9,109,17. 24,1. उभे सर्पिषो दर्वी श्रीणीष आसनि 5,6,9. partic. श्रीत 8,2,23. गोभिः श्रीतो मदाय कम् 71,5.9. 109,15. Vgl. गोश्रीत. — श्रीणन् ṚV. 1,68,1 s. unter 1. श्रि.

— अभि dass. ṚV. 9,1,9. मधुना पयः 11,3.6. 65,26. 84,5. 86,17. 93,3. अभिश्रीणन्पयः पयसाभि गोनाम् 97,43. Vgl. auch unter 1. श्रि mit अभि und अभिश्री.

— आ med.: आ यः शर्याभिस्तुविनृम्णो अस्याश्रीणीतादिशं गभस्तौ ṚV. 10,61,3.

— सम् s. unter 1. श्रि mit सम्.

3. श्री (= 2. oder auch 1. श्री) adj. s. तीर्°, घृत°, सक्तु°.

4. श्री (= 1. श्रि) adj. *sich verbindend, vereinigt mit, sich nahend zu* in अग्नि°, क्षत्र°, गण°, ज्ञन°, देव°, auch wohl in अघर्°, यज्ञ°.

5. श्री (nom. श्रीस्*) Uṇādis. 2,57. Vārtt. 1 zu P. 3,2,178. Vop. 26, 71. Declination 3,80. 82. श्रीणाम् ved., klass. auch श्रियाम् P. 7,1,56. behält am Ende eines adj. comp. die Länge 1,2,48, Schol. neutr. °श्रि H. 50. °श्री Bhāg. P. 3,18,2. 1) *f. a) schönes Aussehen, Schönheit, Pracht; Putz, Zierde, Prunk;* = शोभा Trik. 3,3,378. H. 1512. an. 1,12. fg. Mān. r. 1. Hālās. 5,27. Vīçva bei Uṇādis. = प्रभा Dhan. im ÇKDa. = वेषोपकरण H. an. st. dessen विधोपकरण (zwei Bedd.) Mān. und रेखोपकरण Vīçva s. a. O. = वेषरचना Mān. Vīçva; st. dessen वेष (auch Trik.) und रचना H. an. मिनाति श्रियं जरिमा तनूनाम् ṚV. 1,179,1. सनुं श्रिया नीतत्या सचेथे 116,17. 117,13. विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे 5,57,6. 7,69,4. समो देवेभ्य उत श्रिया 6,48,19. अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने 10,110,6. सूर्यस्य 1,122,2. समिद्धस्याग्ने वन्दे तव श्रियम् 5,28,4. 2,10,1. श्रिये चिदा बाबधुः 5,55,3. 7,72,1. श्रियं वसो जरितृभ्यो दधाति 9,94,4. श्रिये मर्यासो अञ्जीरकृण्वत 10,77,2. VS. 9,8. श्रिये 19,92. 20,8. कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणाम् ist Kṛshṇa Bhāg. 10,34. MBu. 3,1806. 2031. 2146. R. 5,14,22. Spr. (II) 2131. 2617. Rāja-Tar. 1,245. Bhāg. P. 1,11,26. वेष्णवी 3,16,28. रूप° Kathās. 10,32. आनन° Megh. 66. कमलशोभा° Kumāras. 7,32. Verz. d. Oxf. H. 188, *a*, 13. श्रियं पुष्यत्यर्यं गिरिः R. 2, 94,10 (103,10 Gorr.). भानु° Rāja-Tar. 3,337. सरस: Kathās. 46,89. वन° R. Gorr. 2,99,4. Bhāg. 3,8,36. पुष्य° Spr. (II) 1753. 5777, v. l. Megh. 93. Bhāg. P. 3,21,40. 8,2,14. LA. (III) 91,22. Dhūrtas. 92,6. फल° Kathās. 18,368. Rāja-Tar. 1,239. मधुकर° Megh. 48. मधु° Vikr. 26. शिशिर° Spr. (II) 4228. यौवन° 993. 3827. °विकीर्णानि कुटुम्बभवनानि R. 2,71,24. अलंकार° Çiç. 10,6. Bhāg. P. 4,25,32. पिक्तेव श्रियं धत्ते

*) Nach Einigen auch श्री: vgl. Ramāçrama bei Uṇādis. zu Uṇādis. 2, 57 und Randglosse zu H. 226.

पद्धतिः पुण्यकर्मणाम् Spr. (II) 4083. क्रीश्रियेा Sucr. 1,114,16. श्रियेा *Schönheit und Wohlfahrt* Naish. 3,36. pl.: पुवोर्विशा सधि श्रियः ṚV. 1, 139,3. 2,91,9. सनीकेषधि श्रियः 20,12. 28,8. 61,20. 1,85,3. 166,10. 2, 1,12. 3,38,4. 44,2. सर्: °Spr. (II) 3818. सर्वर्तु° Bhâg. P. 3,15,16. 5,24,10. यौवन° Spr. (II) 6419. am Ende eines adj. comp. Kumâras. 2,2. Naish. 22,48. Kathâs. 18,353. Dhûrtas. 69,9. H. 39. Bhâg. P. 1,11,12. 20. 3,16,3. 23,50. 4, 6,21. — dat. श्रियै und श्रिये (vgl. श्रियसे) in adv. Weise *schön, hübsch; lieblich, gefällig:* श्रिये छन्दो न स्मयते विभाती ṚV. 1,92,6. सधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ *prangend* 6,63,5. उदु श्रिय उषसो रोचमाना सस्रुः *schön leuchtend* 64,1. 7,67,2. श्रिये रुरिवान्दधे रुक्मवर्पसम् *wohlgefällig* 1,61,4. श्रिये कं वो सधि तनूषु वाशी: *hübsch zu schauen sind an euch die Schwerter* 88,3. 4,5,15. 10,5. श्रिये न गाव उप सोमसस्रुः 41,3. प्रुषा व्यञ्जत श्रिये *putzen sich hübsch heraus* 8,7,25. सम्यञ्चो ऽस्मा इमे लोकाः श्रिये दीयति Ait. Br. 1,8. — *b) Wohlgefallen, Befriedigung:* श्रिये मनांसि देवासो तक्रन् ṚV. 6,44,3. उप स्तोमासस्तस्थुर्दर्शयः श्रिये 3,26,4. तवे श्रिये व्यजिहीत पर्वतः *dir zu Gefallen* 2,23,18. वशानां भवथा सह श्रिया 3,60,4. माहूतं गणं संयत श्रिये 1,64,12. 3,104, 1. स्मसि वो संदृशि श्रिये *euch zu Gefallen stehen wir vor euch* 5,74,5. श्रिये ते पत्निरुपसेचनी भूच्छ्रुचे दर्वि: 10,105,10. VS. 19,46. TBr. 1,2, 4,26. देवं वो देवेभ्यः श्रिया उद्हामि Âçv. Çr. 2,2,2. — *c) Wohlfahrt, Glück, Reichthum; ausgezeichnete Lage und Stellung, Herrlichkeit;* = संपद्, संपत्ति, विभूति AK. 2,8,2,50. Trik. H. 357. Med. = त्रिवर्गसंपत्ति (nach ÇKDr. zwei Bedd.) H. an. Med. Viçva s. v. O. = वृद्धि und सिद्धि Çabdar. im ÇKDr. = अधिकार und कीर्ति Dharan. ebend. = ऐश्वर्य ved. Comm. श्रीश्च लक्ष्मीश्च VS. 31,22. 32,16. श्रियं मा धेहि भूत्याम् AV. 12, 1,63. तत्र, श्री 6,56,1. 73,1. 3,3,31. द्रविण, श्री 10,6,26. 11,1,12. 21. श्री, धर्म 12,5,7. सत्य, श्री, यशस् 2. प्रतीच्यैर्या श्रीरगात् भद्रा भूत्वा परा भविष्यति *ihr Glück ging rückwärts* TBr. 1,1,6,4. Ait. Br. 1,30. 3,7. 5,22. 7,15.17. आदित्य इव श्रिया प्रतिष्ठितस्तपति 34. 8,5.6. 9. 12. TBr. 3,10,9,6. यद्य वा हृतस्याच्छ्री राष्ट्रं क्रामति 9,14,1. यो ऽलं श्रिये सन्सन्दृङ्मानः स्यात् TS. 2,2,9,6. 5,1,8,6. 6,1,10,3. 7,2,3,3. सर्वतिमिव पौष्णमपक्रम्य श्रियं गच्छति 4,3,1. 4,1. यशस्, सत्याम्, श्री Çat. Br. 1, 6,2,8. 2,1,3,7. 2,3,6. 3,6,3,1. 13,1,5,1. 4. 2,6,3. 9,3. श्रीयशासि 12,8,3,1. पुष्टि, राद्धि, श्री Lâṭ. 3,11,3. Âçv. Çr. 11,4,8. Gaut. 1,24, 29. 4,9,4. Kauç. 3. 9. 101. 106. Kaush. Up. 1,5. श्रिया देयम् *so v. a. nach den Vermögensverhältnissen* Taitt. Up. 1,11,2. श्रियं प्रत्यक्षमुत्तो भुङ्क्ते M. 2,52. कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते M. 9,300. MBh. 1,7761. 13,309. fg. स्वगृहे °विवर्जितम् R. 2,72,2. लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं श्रिया दुराप: कथमीप्सितो भवेत् Çiç. 62. 91,14. श्रीर्मङ्गलात्प्रभवति Spr. 3087. न दातुं नोपभोक्तुं वा शक्नोति कृपणः श्रियम् (II) 3282. पदीच्छेच्छ्रियमात्मनः 3387. 3502. पद्म °सहचारिणः 3758. °भाजन 3842. 4978. Vaṇîs. Bṛh. S. 45,6. 53,88. 124. Kathâs. 18,124. कोशे वद्धा कृता येन चलापि श्रीर्भुजार्पिता 43,21. पुष्टा M. 4,231. Vaṇîs. Bṛh. S. 62,1. सुविपुला MBh. 3,2302. = कोश *Schatz* Bhâg. P. 3,10,17. सर्व°, भोग° Kathâs. 54,162. हृतयोर्निपुणं वेत्ति नाकं भेदं श्रियोः 161. शक्रस्य *Herrlichkeit, Majestät* Spr. (II) 3589. लोकपालाः °लक्षणोत्सर्गविनीतवेषाः Kumâras. 7,15. समर्° Vaṇîs. Bṛh. S. 12,3. *die glänzende Stellung und Macht eines Fürsten:* श्री, विजय Bhag. 18,78. °प्रताप MBh. 4,2285. श्रीश्च राज्ये प्रतिष्ठिता 12,2251. R. 2,21,15. 36,20. 55,16. श्रीश्च तौ वृणुते पद्मा (personif.) 70,12. 79,16. 84,5. Raghu. 3,26. 8,12. fg. 12,2. 6. 13. 104. 17,46. 18,32 (°भुवौ). विपुलेक्षा कनकरुचिश्रीर्चितानं ममाभम् *so v. a. königliche Insignien* Vikr. 76. परा Spr. (II) 688. 2633. 3399. 3548. 3894. प्रदीप्ता Vaṇîs. Bṛh. S. 50,22. श्रियेा भाजः *Aschangenehme, vornehme Leute* 68,61. मोक्षान्धमविवेकं हि श्रीश्चिराय न सेवते Kathâs. 49,223. Râja-Tar. 3,126. 4,49. 610. °मद् 1,254. Bhâg. P. 10,73,20. बुभुजे च श्रियं स्वदाम् 8,15,36. यौवराज्य° Vikr. 161. °पुत्र (सुनीथा) *eines* R. Einl. — plur.: श्रियेा वै पर्जन्यो वर्षति Çat. Br. 12,4,3,11. श्रीश्च प्रतीचीं च विधेहि नः Prâçnop. 2,13. श्रियेा दोलालोलाः Spr. 3035. 5022. (II) 3110. 3698. श्रीणां दानं रसः परः 4049. प्राज्ञाः श्रियः 4327. Kathâs. 56, 385. सन्यनृप° 23,70. Am Ende eines adj. comp.: पशु° MBh. 3,2446. Raghu. 1,93. 2,74. पूर्ण° Spr. (II) 2156. श्री sg. und pl. im Wortspiel mit स्त्री Spr. (II) 313. 4628. 5996. pl. 395. 4200. (I) 5126. — *d) personif. als Göttin der Schönheit,* insbes. aber *der Wohlfahrt,* = लक्ष्मी AK. 1, 1,3,22. Trik. 1,1,41. 3,3,273. H. 226. H. an. Med. Hal. 224. Halâs. 1,31. Viçva s. v. O. प्रजापतिर्वै प्रजाः सृजमानो ऽतप्यत। तस्माच्छ्रासाते-पानाच्छ्रीरुदक्रामत्सा दीप्यमाना धावमाना लेलायत्यतिष्ठत् u. s. w. Çat. Br. 11,4,3,1. fgg. उच्छ्रीर्यके श्रियै कुर्यात् (बलिम्) M. 3,89. पायतलोचना MBh. 3,2084. लोककान्ता 2664. °परिचय Spr. 2664. श्रिया क्षीणां संवासः 5085. देवी (II) 3768. विज्ञेयाललाटात्कमलं नीवर्णमभवत्तदा। श्रीः संभूता यतो देवी पत्नी धर्मस्य धीमतः॥ MBh. 12,2252. fg. Hariv. 5419. 6092. fgg. 6615. 7740. 9498. तास्त्वां परिचरिष्यन्ति श्रियमप्सरसो यथा R. 5,22,22. पद्मकीनामिव श्रियम् 3,32,22. Raghu. 10,8. परस्परविरोधिन्यो: श्रीसरस्वत्योः Spr. (II) 3941. Kathâs. 18,206. Râja-Tar. 5,423. wohnt auf dem Meru R. 1,1,32 (24 Gorr.). रामलक्ष्मणयोर्मध्ये सीता रात्रौ ते सुप्ता। विद्युत्सावयोर्मध्ये पद्मा श्रीरिव रूपिणी॥ R. Gorr. 2,60, 13. Kathâs. 7,60. °कवच Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,42. °मन्त्र 93,*b*,19. 105, *b*,16. fg. entsteht bei der Quirlung des Oceans MBh. 1,1146. 1148. Hariv. 4603. fgg. 12187. R. 1,45,42. VP. 76. fgg. Spr. (II) 5897. ब्रह्मधिसुता Dhûrtas. 77,1. देवी श्रीर्जनकात्मजा Sîtâ als Çrî Spr. (II) 2955. Tochter Bhṛgu's von der Khjâti und Gattin Nârâjaṇa's VP. 89. fg. Mârk. P. 52,15. Bhâg. P. 4,1,42. कामभवननिवासिनीं च श्रियं रुदतीमपश्यत् Lalit. ed. Calc. 378,13. als Mutter des Darpa Mârk. P. 50, 25. Çrî ist Herrin des Karaṇa Vaṇidja Vaṇîs. Bṛh. S. 99,4. श्रियः पुत्राः heissen *Ziegen mit best. guten Merkmalen* 65,9. Bed. *c)* und *d)* lassen sich häufig nicht scheiden. — *e)* am Anfange von Personennamen (von Göttern und Menschen), Büchertiteln, Orten u. s. w. als Ausdruck *der hohen Stellung,* welche die Personen u. s. w. einnehmen. देवं गुरुं गुरुस्थानं क्षेत्रं क्षेत्राधिदेवताम्। सिद्धं सिद्धाधिकारांश्च श्रीपूर्वं समुदीरयेत्॥ Prasoddhâra im ÇKDr. °राम Weber, Râmat. Up. 344. fg. 350. 359. °रामचन्द्र 345. 350. 354. °मल्लि H. 49. °हर्षवर्धनः (नवसिद्धो नृपः) Vaṇîs. Bṛh. S. 86,2. °प्रभाकरवर्मन् Râja-Tar. 3,20. °कीर्तिवर्मदेव Prab. 2,9. Dhûrtas. 66,16. zwischen dem Personennamen und चरण, पाद *Fuss:* भगवद्विनीलकण्ठभारतीश्रीचरणैः Sarvadarçanas. 172, 1.2. — °पञ्चरात्र 55,18. पुरी °विशाला Mṛicch. 31. °काञ्ची Verz. d. Oxf. H. 221,*a*,No.534. — *f)* am Ende von Personennamen: देव्याः श्रीशब्दलाञ्छिताः (z. B. सद्भाव°) Râja-Tar. 3,252. Wassiljew 267. — *g)* =

मति H. an. Med. = भारती Taik. Med. und Vaiçya a. a. O. = गिर् H. an. — h) *Gewürzmelke* AK. 2,6,8,37. H. 646. *Pinus longifolia* H. an. Med. *das Harz der Pinus longifolia* Vaiçya a. a. O. Vaṇîm. Bṛn. S. 77, 11. 16. 28. *Aegle Marmelos* (aus श्रीफल geschlossen), = वृक्षिनीषध und *Lotusblüthe* (कमल) Rîgân. im ÇKDa. — i) N. verschiedener Metra: α) *4 Mal* — Colebr. Misc. Ess. 2,138 (V, I, 1). — β) *4 Mal* — ⏑⏑⏑—, ⏑⏑⏑⏑—— Colebr. Misc. Ess. 2,160 (VI, 14). Ind. St. 3,377. — γ) *3 Mal* ——⏑⏑——⏑⏑⏑⏑—— + ⏑⏑⏑——⏑⏑⏑⏑—— Journ. of the Am. Or. S. 6,514. — k) N. pr. α) einer buddhistischen Göttin Taik. 1, 1,17. — β) der Mutter des 17ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî (Kunthu's) H. 40. — γ) einer Tochter des Fürsten Suçarman Kathâs. 7,60. — 2) m. N. eines musikalischen Râga ÇKDa. — Vgl. क्षय°, गत°, ज्ञय° (*Siegesglück, Siegesgöttin* auch Ragh. 4,41. 12, 93. Râga-Tar. 1,68), जिन°, दर्शत°, धृत°, निः°, ब्रह्म°, भद्र°, भूपाल°, मञ्जु°, मधु°, मर्य°, महा°, मुख°, राज्ञ°, राज्य° (*fürstliche Würde, — Stellung* R. 2,21,2. Ragh. 17,23), विजय°, वेद°, वेष°, शान्त°, शिव°, सुत°, संभृत°, सु°, स्मेमन्, स्मेयस्, स्मेष्ठ und ausser.

श्रीक 1) am Ende eines adj. comp. (f. श्रा). α) von S. श्री 1) a) *Schönheit:* गत° Harîv. 3722. विगत° MBh. 1,957. कृत° R. 4,9,25. नष्ट° 6,11,31. पुण्य° Uttarar. 82,2 (105,5). सु° Harîv. 10982. — b) von S. श्री 1) c) *Ache —, fürstliche Stellung:* विगत° Jâân. 1,339. जित्वा पुरं धनं सर्वं समीकं वशमागते। प्रत्यपद्यत् Bhâg. P. 9,6,19. — Vgl. निः°. — 2) m. *ein best. Vogel* (= श्रीकर्ण Schol.) Vaṇîm. Bṛn. S. 48,6. — 3) m. (nach dem Comm.) *eine Art Harz* oder *Gummi* (= श्रीवासक Comm.) Vaṇîm. Bṛn. S. 77,24.

श्रीकण्ठ adj. *eine Prachtkehle —, einen Prachthals habend:* 1) m. a) *ein best. Vogel* Vaṇîm. Bṛn. S. 90, 33. — b) ein N. Çiva's (vgl. नीलकण्ठ) AK. 1,1,1,27. H. 198. an. 3,178. Med. th. 17. Hall. 1, 11. MBh. 12, 13394. Harîv. 9820. Spr. (II) 4738. 6145. Verz. d. Oxf. H. 97,a, No. 151. Vop. 3,143. श्रीकण्ठादित्यास Weber, Râmây. Up. 315. 319. Râga-Tar. 2,171 (°कण्ट bei Ta. gedr.). °मठ 6,166. Davon nom. abstr. °ता f. MBh. 13,6397. — c) Bez. *best. erlöster Seelen bei den* Çaiva Sarvadarçanas. 86,2. 88,6; vgl. शिव 2) c). — d) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 74,116. Verz. d. B. H. No. 166. 243. 664. fgg. 716. 1046. 1203. Verz. d. Oxf. H. 316,b,25. Hall. 24. fgg. Bein. Bhavabhûti's: भट्टश्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिनामा Mâlatîm. 3,8. 9. °पदलाञ्छन als N. Bhavabhûti's Çârad. im ÇKos. — e) N. pr. einer Gegend Med. = कुरुजाङ्गल H. an. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 13. 17. 51. °स्तव Verz. d. Oxf. H. 210,a, No. 493. °देश Kathâs. 20,23. °विषय 39. 44,47. 108. 113. कुरु = °जाङ्गल H. an. 2,495. N. pr. eines Berggipfels im Himâlaja LIA. 1,49. — 2) f. ई Titel einer Abhandlung (श्रीकण्ठीयसंहिता) Hall 197.

श्रीकण्ठकण्ठ m. Çiva's *Hals* Spr. (II) 4738. Davon denom. °कण्ठीयति *dem dunkelblauen Halse* Çiva's *gleichen* Gaut. bei Hall in der Einl. zu Vâsavad. 56.

श्रीकण्ठनिलय m. wohl = श्रीकण्ठ 1) c) Kathâs. 40,42.

श्रीकण्ठशर्मन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 700. fgg.

श्रीकण्ठशिव m. ein Bein. Çambhunâtha's Verz. d. Oxf. H. 317,a, N.

श्रीकण्ठसख m. Çiva's *Freund*, ein N. Kubera's Hall. 1,78.

श्रीकण्ठीय adj. zu Çrikaṇṭha *in Beziehung stehend:* °संहिता = श्रीकण्ठी Hall 197.

श्रीकन्दा f. *eine best. Arzneipflanze*, = वन्ध्याकर्कोटकी Rîgân. im ÇKDa.

श्रीकर 1) adj. a) *Wohlfahrt —, Glück bewirkend* Verz. d. Oxf. H. 267, b, 13. — 2) m. a) ein N. Vishṇu's Taik. 1, 1, 38. H. ç. 68. — b) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 74,a, 34. 283,a, 33. b, No. 662. 356,a, 38. Verz. d. B. H. No. 1403. Dîpâv. 2,1 v. u. — 3) m. *die Blüthe der Nymphaea rubra* Taik. 1,2,33.

श्रीकरण n. *Schreibrohr, Schreibpinsel* Çabdar. im ÇKDa.

श्रीकर्ण m. *ein best. Vogel* Vaṇîm. Bṛn. S. 86,35. 88,1. 37. Uppala zu 48,6 (als Erklärung von श्रीक). Verz. d. B. H. No. 897.

श्रीकर्णदेव m. N. pr. eines *Fürsten* LIA. 2,759. Journ. of the Am. Or. S. 6,517. fg.

श्रीकलश m. N. pr. eines Siddha Râga-Tar. 5,66. श्री ist hier vielleicht nur Ehrentitel.

श्रीकान्त m. 1) *der Geliebte der* Çrî d. i. Vishṇu Çabdar. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 132,b,6. 8.

श्रीकाम adj. 1) *Auszeichnung —, Herrlichkeit begehrend* Ait. Br. 1. 8. Ind. St. 2,213,1. Kîrân. Ça. 4,7,6. 15,15. श्रीपशुकाम 18. 5,12,1. — 2) f. श्रा ein N. der Râdhâ Pâdân. 5,5,59.

श्रीकारिन् m. *eine Hirschart* Rîgân. im ÇKDa.

श्रीकुञ्ज n. N. pr. eines Tîrtha an der Sarasvatî MBh. 3,6078.

श्रीकुण्ड n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,5028.

श्रीकुल Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 239,a, 1.

श्रीकृच्छ्र n. Bez. *einer best. Busse, je drei Tage lang Kuhkharn, Mist und Gerstentrank* (यावक) *zu geniessen*, Prâyaçcittend. 9,a,5.

श्रीकृष्ण m. N. pr. verschiedener Männer: °विप्र Dîpâv. 1,5. 365,7. °तर्कालंकारभट्टाचार्य 9. 10. °तीर्थ Hall 130. °सरस्वती 134. °न्यायवागीशभट्टाचार्य 25. °विद्यावागीश Notices of Skt Mss. 126. महामहोपाध्याय°सार्वभौम Hass. Anth. 409. °राय Kauṭiliç. 18,17. 21,20. 22,19. श्रीकृष्णालंकार m. Titel eines Commentars Hall 153.

श्रीकेशव m. N. pr. eines Mannes (°केशवाचार्य) Hall 92. Wilson, Sel. Works 1,36.

श्रीक्रम m. Titel eines Buches Verz. d. Oxf. H. 93,b,19. 104,a,27. — Vgl. बृहच्छ्रीक्रम.

श्रीक्रियाद्यूषिणी f. ein N. der Râdhâ Pâdân. 5,5,60.

श्रीक्षत्र oder °क्षेत्र N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang 2,82. 391. Vie de Hiouen-thsang 182.

श्रीखण्ड (*Prachtstück*) m. n. *Sandel, Sandelbaum* Taik. 2,6,39. H. 641. Hall. 2,389. Hit. 103. Rathân. 137. Spr. (II) 3288. °शीतल Kathâs. 31,33. 82,33. श्रीखण्डाङ्गराग 33,166. श्रीखण्डार्द्रविलेपन 85,21. °विलेपन Spr. (II) 2215. °चर्चा Gît. 9,10. °द्रुम Râga-Tar. 4,156. श्रीखण्डखण्डैर्मलयाचलः किम् Spr. (II) 5705. °शैल *das Gebirge* Malaja 4050. Gît. 1,47.

श्रीगणेशा f. ein N. der Râdhâ Pâdân. 5,5,60.

श्रीगदित n. Bez. *einer Art von Schauspielen* Sâh. D. 550.

श्रीगर्भ 1) adj. *die Wohlfahrt —, das Glück im Schooss bergend.* — 1) m. *a*) Bez. *des Schwertes* H. ç. 143. MBh. 12, 6304. *der Strafe* 4428. — *b*) ein N. Vishṇu's (Kṛshṇa's) Taik. 1, 1, 28. H. ç. 66. Hariv. 2143. — *c*) N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21. Lot. de la b. l. 14. Daçabh. 2. — *d*) N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 37, 99. — 3) f. श्रा ein N. der Rádhá Paṅkân. 5, 3, 38.

श्रीगर्भरत्न n. *ein best. Edelstein* Vjutp. 138.

श्रीगिरि m. N. pr. eines *Berges* (= चारुगिरि Comm.) Wilson, Sel. Works 2, 17. Verz. d. Oxf. H. 20, *a*, No. 65. fg. — Vgl. श्रीपर्वत, श्रीशैल.

श्रीगुणलेखा f. N. pr. einer Fürstin Rágá-Tar. 8, 1609.

श्रीगुप्त m. N. pr. eines Mannes Hiouen-thsang 2, 18. Vie de Hiouen-thsang 134. Schiefner, Lebensb. 294 (64). Târân. 172. 193. 198. fg.

श्रीगुरुसहस्रनामस्तोत्र n. *Preis der tausend Namen des in hohem Ansehen stehenden Lehrers*, Titel eines Auszuges aus dem Saṁmohanatantra Notices of Skt Mss. 233.

श्रीगोष्ठीमाहात्म्य n. Titel eines Abschnitts im Brahmâṇḍapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 30, *a*, 15.

श्रीघट m. *eine Tränke für Vögel* Hin. 132.

श्रीघाम m. N. pr. eines Grâma Verz. d. Oxf. H. 333, *a*, 3.

श्रीघामर (von श्रीघाम) m. Bein. des Astronomen Nârâjaṇa ebend. 42.

श्रीघन 1) m. *ein Buddha* AK. 1, 1, 2, 9. H. 234. Paṅkân. 4, 3, 136. N. pr. eines Buddha Açoṅiv. 219. — 2) n. *saure Milch* H. ç. 99. Gaṭîdh. im ÇKDr.

श्रीचक्र n. Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88, *a*, 32. 93, *b*, 20. 251, *b*, 31. Wilson, Sel. Works 1, 238. fgg. *a magical diagram; an astrological division of the body, the uterine or pubic region; a wheel of* Indra's *car; the circle of the globe or earth* Wilson nach Çaṇḍiârṇav.

श्रीचक्रविहार m. N. pr. *eines buddhistischen Klosters* Rágá-Tar. 8, 2416.

श्रीचण्ड m. N. pr. eines (*leidenschaftlichen*) Mannes Kathâs. 10, 149.

श्रीचन्द्र m. N. pr. verschiedener Männer Rágá-Tar. 8, 2334. Wassiljew 51. 73. Târân. 2. 89. 93. °देव Colebr. Misc. Ess. 2, 286.

श्रीज m. *der Sohn der Çrî, der Liebesgott* Çaṇḍiârṇav. bei Wilson. = शाम्ब (साम्ब) ÇKDr. ohne Angabe einer best. Aut.

श्रीजगद्राम m. N. pr. eines Mannes Kshitîç. 45, 13 (°जगत्राम gedr.).

श्रीञ्जक N. pr. einer Gegend Rágá-Tar. 5, 305. — Vgl. छक्क 1) *b*).

श्रीणा f. v. l. für शिरिणा *Nacht* Naigh. 1, 7.

श्रीतत्त्वबोधिनी f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 153.

श्रीतल n. N. einer Hölle VP. 204, N. 1.

श्रीताल m. *ein der Weinpalme ähnlicher Baum* Rágân. im ÇKDr.

श्रीतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 8016.

श्रीतेजस् m. N. pr. 1) eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5, 11. — 2) eines Schlangendämons Vjutp. 87.

श्रीत्रिकटुकविहार m. N. pr. *eines buddhistischen Klosters* Târân. 210.

श्रीद 1) adj. *Wohlfahrt u. s. w. verleihend* Paṅkân. 1, 1, 8. 3, 33. 7, 37. — 2) m. ein N. Kubera's AK. 1, 1, 2, 63. Taik. 1, 1, 75. 3, 3, 216. H. 189. Halâj. 1, 78. Kuvalaj. 45, *b*. — 3) f. श्रा ein N. der Rádhá Paṅkân. 5, 5, 60.

श्रीदत्त m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 10, 14. Ver. in LA. (III) 18, 18. Verz. d. B. H. No. 1023. fg. Verz. d. Cambr. H. 15. Verz. d. Oxf. H. 273, *b*, 47. 279, *b*, 37. 292, *b*, 26. मैथिल° 279, *a*, 20.

श्रीदयित m. *der Geliebte der Çrî* d. i. Vishṇu Vop. 3, 143.

श्रीदर्शन m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 73, 67.

श्रीदशान्तर m. (sc. मास) Bez. *eines best. sechsstündigen Gebetes* Paṅkân. 4, 1, 4.

श्रीदात्रिनगर n. N. pr. einer *Stadt* Târân. 166.

श्रीदामन् m. N. pr. eines Gespielen Kṛshṇa's Hariv. 3746. Paṅkân. 4, 3, 147. श्रीदामानन्दत्रो und श्रीदामेश्वरवल्लभा unter den Namen der Rádhá 5, 5, 89.

श्रीदुर्गायन्त्र Bez. *eines best. Diagramms* Verz. d. Oxf. H. 90, *a*, 14.

श्रीदेव 1) m. N. pr. verschiedener Männer Ind. St. 1, 469. Rágá-Tar. 4, 474. Verz. d. B. H. No. 1100. — 2) f. श्रा N. pr. einer Gattin Vasudeva's Hariv. 1948 (सन्देवा ed. Calc.; eben so 2026, wo die neuere Ausg. सुदेवा hat). VP. 4, 14, 8. Bhâg. P. 9, 24, 32. 50.

श्रीधन N. pr. einer Oertlichkeit Târân. 324.

श्रीधनकटक N. eines Kaitja Târân. 142, N.

श्रीधर 1) m. *a*) *Träger der Wohlfahrt, — Çrî*, ein N. und eine Form Vishṇu's (Kṛshṇa's) H. 215. Halâj. 1, 23. Einschiebung nach ṚV. 10, 85. Ind. St. 5, 194. MBh. 13, 5380. Hariv. 2751. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 12, Çl. 47. Bhâg. P. 12, 12, 53. Verz. d. Oxf. H. 57, *b*, 14. Wenda, Kṛshṇâs. 295. Paṅkân. 1, 7, 67. 3, 2, 3. 4, 3, 39. 7, 7. Wilson, Sel. Works 2, 163. — *b*) als N. Vishṇu's Bez. *des Monats* Çrâvaṇa Vaṭîn. Bṛh. S. 105, 15. — *c*) N. pr. verschiedener Männer H. 51 (des 7ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇî). Kathâs. 58, 46. 63, 6. 120, 52. Colebr. Misc. Ess. 2, 422. 469. 500. Goldens. Bhuvanak. 52, Comm. Verz. d. B. H. No. 830. 1052. Verz. d. Oxf. H. 1, *b*, 13. 120, *a*, 4. *b*, 7. 125, *a*, 11. 162, *b*, 28. 185, *b*, 42. 338, *a*, 19. Târân. 5. 238. = °स्वामिन् Verz. d. Oxf. H. 63, *a*, 15. श्रीधराचार्य 341, *b*, N. Verz. d. B. H. No. 1045. Sarvadarçanas. 110, 19. °भट्ट Hall 176. °यति 118. °सरस्वती 108. श्रीधरानन्दयति 9. °चक्रवर्तिन् Colebr. Misc. Ess. 2, 47. — 2) n. *ein Ammonit von best. Form:* यतिलुङ्गं द्विचक्रं तु वनमालाविभूषितम्। श्रीधरं देवि विज्ञेयं श्रीप्रदं गृहिणां सदा॥ Brahmavaiv. P., Prakṛtikh. 19 im ÇKDr.

श्रीधरमालव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 133. Verz. d. Oxf. H. 341, *b*, N. 358, *a*, No. 853.

श्रीधरसेन m. N. pr. eines Fürsten Buddh. 22, 38. Journ. of the As. S. of Beng. 4, 486. fg.

श्रीधरस्वामिन् m. N. pr. eines bekannten Gelehrten, der abgekürzt auch श्रीधर genannt wird, Colebr. Misc. Ess. 2, 357. Verz. d. B. H. No. 487. Verz. d. Oxf. H. 2, *a*, 4 v. u. 36, *a*, No. 79. fgg. 38, *b*, 17. 63, *a*, No. 111. 72, *b*, 12. fg. 279, *b*, 29. 286, *a*, No. 670. 292, *b*, 26. Haas. Anth. 322. श्रीधरस्वामियति Hall 118.

श्रीधरोत्तमनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 131, *b*, No. 238.

श्रीधामन् n. *die Wohnstätte der Çrî:* पद्म Bhâg. P. 10, 79, 8.

श्रीनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 43, *b*, 1. Hit. 86, 2, v. l. Kshitîç. 44, 2. LIA. 1, 40. 51. Hiouen-thsang 2, 322. श्रीनगरी f. desgl. Rágá-Tar. 1, 104. 134. 139. 306. 4, 6.

श्रीनन्दन m. *der Sohn der Çrî*, metron. *des Liebesgottes* H. 228. Hall. 1, 33.

श्रीनरेन्द्रप्रभा f. N. pr. eines Frauenzimmers Râǵa-Tar. 4, 17.

श्रीनरेन्द्रेश्वर m. Bez. *einer von Çrînarendraprabhâ errichteten Statue des* Çiva Râǵa-Tar. 4, 38.

श्रीनाथ m. 1) *der Gemahl der Çrî* d. i. Vishṇu Notices of Skt Mss. 183, No. 231. — 2) N. pr. verschiedener Männer ebend. Verz. d. B. H. No. 971. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234. °भट्ट Notices of Skt Mss. 183. श्रीनाथाचार्य Ind. St. 1, 470.

श्रीनाथशर्मन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 283, *b*, No. 662.

श्रीनिकेत 1) m. *die Wohnstätte der Schönheit* so v. a. *ein Muster von Schönheit* Bhâg. P. 3, 3, 20. 4, 6. सरविन्द 4, 1, 56. so v. a. *Lotusblüthe* 3, 28, 30. — 2) n. = 2. श्रीवास Suçr. 2, 66, 7.

श्रीनिकेतन 1) m. *die Wohnstätte der Schönheit*, Bez. Vishṇu's Çârad. im ÇKDr. Khandom. 112. Bhâg. P. 1, 18, 13. 10, 39, 2. Paṇḍar. 1, 3, 83. 4, 3, 29. — 2) n. = 2. श्रीवास Çârdâstomamahânidhi.

श्रीनितम्बा f. unter den Namen der Râdhâ (*schöne Hüften habend*) Paṇḍar. 5, 5, 60.

श्रीनिधि m. *Behälter der Schönheit*, Bez. Vishṇu's Paṇḍar. 1, 3, 83. 4, 3, 29.

श्रीनिवास 1) m. *a*) *die Wohnstätte der Çrî*: गोमयं श्रीनिवासः Spr. (II) 2871. — *b*) *die Wohnstätte der Schönheit*, Bez. Vishṇu's (Kṛishṇa's) Taitt. 1, 1, 29. Gaṇân. in Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 14. Khandom. 122. Bhâg. P. 1, 16, 31. 3, 7, 28. 4, 7, 36. 6, 18, 64. 10, 14. 2, 4, 60. 10, 80, 26. Paṇḍar. 1, 1, 8. 3, 88. — *c*) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 336, *b*, No. 792. Wilson, Sel. Works 1, 159. Weber, Prâtiçâkhya 73. Hall 112. 114. 118. 204. °भट्ट 202. — *d*) = 2. श्रीवास Ausw. 106. — 2) f. श्रा ein N. der Râdhâ Paṇḍar. 5, 5, 58.

श्रीपञ्चमी f. Bez. *des 5ten Tages in der lichten Hälfte des* Mâgha Wilson, Sel. Works 1, 321. fgg. 2, 187. fgg. Verz. d. Oxf. H. 34, *a*, 36. fg. Verz. d. Cambr. H. 64, 3 v. u.

श्रीपति m. 1) *Herr der hohen Stellung, ein Fürst* H. an. 3, 306. Med. t. 163. — 2) *Gatte der Çrî*, Bez. Vishṇu's (Kṛishṇa's) AK. 1, 1, 2, 16. H. 214. H. an. Med. Halâj. 1, 21. Çiç. 13, 69. Vaǵas. Bṛih. S. 43, 4. Khandom. 122. Bhâg. P. 10, 47, 47. Weber, Kṛishṇaǵ. 295. Verz. d. Oxf. H. 122, *a*, 25. fg. 148, *b*, 19. Sarvadarçanas. 68, 1. Vop. 25, 21. — 3) N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. 2, 323. 363. Ind. St. 2, 245. 250. fgg. Verz. d. B. H. No. 129. 230. 740. 881. 1006 (श्रीमति die Hdschr.). Verz. d. Oxf. H. 110, *b*, 10. 162, *b*, 28 (= °दत्त). 279, *b*, 30. 292, *b*, 28. 331, *b*, No. 782 (°भट्ट). 336, *a*, No. 790. 338, *a*, 20. 341, *a*, 34. Hall 171. Verz. d. Cambr. H. 15. 43. 68. °भट्ट 54. 65. °संहिता, °समुच्चय (auch Verz. d. Oxf. H. 292, *b*, 28) 68. °भाष्य Verz. d. B. H. No. 865. — Vgl. मूल°.

श्रीपतिदत्त m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. 2, 45. Verz. d. Oxf. H. 169, *a*, 32. 175, *a*, 33. Notices of Skt Mss. 297.

श्रीपत्तन n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 333, *b*, 27.

श्रीपथ m. = राजपथ *Hauptstrasse* H. 987.

श्रीपद्म m. ein N. Kṛishṇa's MBh. 12, 1312.

श्रीपर्ण 1) n. *a*) *Premna spinosa* oder *longifolia* (अग्निमन्थ) AK. 2, 4, 2, 16. Trik. 2, 3, 140. H. an. 3, 338. Med. p. 82. — *b*) *Lotusblüthe* AK. 3, 4, 22, 55. Trik. H. an. Med. — 2) f. ई *Gmelina arborea* (ein starker Baum) AK. 2, 4, 2, 16. H. 1143. Med. Ratnam. 1. Colebr. Alg. 315 (Journ. of the Am. Or. S. 6, 538). Suçr. 2, 374, 16. 413, 21. 465, 13. 482, 14. Vaǵas. Bṛih. S. 54, 105. 79, 11. 15. Weber, Kṛishṇaǵ. 278. Comm. zu Kâtj. Çr. 6, 5, 7. 8, 1, 12. = शाल्मलि und कुठ H. an. = कुम्भी Med. *eine Art Solanum* Ratnam. 11. = अग्निमन्थ Râǵân. im ÇKDr.

श्रीपर्णिका f. *ein best. Baum*, = कट्फल AK. 2, 4, 2, 21.

श्रीपर्वत m. N. pr. verschiedener *Berge* MBh. 3, 8160. Suçr. 2, 169, 2. Vaǵas. Bṛih. S. 16, 2. Kathâs. 65, 66. 73, 105. VP. 180, N. 2. Mârk. P. 57, 15. Râǵa-Tar. 3, 267. 4, 330. Wilson, Sel. Works 2, 221. Hall in Vâsavad. 11. Verz. d. Oxf. H. 42, *a*, 12. वाराणसीश्रीपर्वतयोर्माहात्म्यम् (so wohl nach dem Ind. zu lesen) 45, *a*, 3. 338, *b*, 34. 339, *a*, 22. *b*, 2 v. u. Hit. 39, 13. Wassiljew 201. Târân. 73. 81. fg. 84. 87. 243. 303. fg. 307. LIA. 2, Anh. LV. — Vgl. श्रीगिरि und श्रीशैल.

श्रीपा adj. (n. श्रीप) *Schönheit* —, *Wohlfahrt* u. s. w. *schützend* Siddh. K. zu P. 1, 2, 47. Vop. 3, 90.

श्रीपाद m. N. pr. verschiedener Männer Hall 16 (oder सिद्धिपाद). 108. 188.

श्रीपाल m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. 2, 286. Çatr. 2, 556. °चरित Verz. d. Oxf. H. 372, *b*, No. 268; vgl. Mack. Coll. 1, 152. 2, 113. Verz. d. B. H. No. 1362. Wilson, Sel. Works 1, 283.

श्रीपालकविराज m. N. pr. eines *Dichters* Verz. d. Oxf. H. 124, *a*, 27.

श्रीपिष्ट m. v. l. für श्रीवेष्ट Râmâç. zu AK. 2, 6, 2, 13 nach ÇKDr. Ratnam. 41.

श्रीपुट m. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ – –, – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2, 160 (VII, 6). Ind. St. 2, 379. वनितास्यं श्रीपुटोष्ठम् *schön geschlossene Lippen habend* (mit Anspielung auf das Metrum) Vaǵas. Bṛih. S. 104, 13.

श्रीपुत्र m. = लक्ष्मीपुत्र *Pferd* Trik. 2, 8, 41. Nach ÇKDr. und Wilson auch ein N. *des Liebesgottes*.

श्रीपुरनगर n. N. pr. einer *Stadt* Ver. in LA. (III) 18, 18.

श्रीपुरुषोत्तमतन्त्र n. Titel eines Abschnitts im Smṛititattva Gild. Bibl. 465. 483.

श्रीपुष्प n. 1) *Gewürznelke* Râǵân. im ÇKDr. — 2) *eine best. Heilpflanze*, = पद्मकाष्ठ Ratnam. im ÇKDr. Ausw. 61.

श्रीप्रद adj. *Wohlfahrt* u. s. w. *verleihend*: Râdhâ Paṇḍar. 5, 5, 58.

श्रीप्रभाव m. ein Bein. Kambala's Târân. 324.

श्रीप्रिय n. *Auripigment* Ausw. 68.

श्रीफल 1) m. *Aegle Marmelos Corr.* (बिल्व) AK. 2, 4, 2, 12. H. 1135. Med. l. 138. Halâj. 2, 39. Ratnam. 6. Vaǵas. Bṛih. S. 55, 2. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 22. Paṇḍar. 1, 6, 19. 10, 52. der Name des *Baumes* ist aus dem der *Frucht* (n.) gebildet worden. — 2) f. श्रा *die Indigopflanze* und = तुङ्कारवेल्ली Râǵân. im ÇKDr. — 3) f. ई *die Indigopflanze* AK. 2, 4, 2, 13. Med. *Myrobalane* Med. — 4) n. *a*) *die Frucht(frucht* d. i. *die Frucht von Aegle Marmelos Corr.* M. 8, 120. Jâǵ. 1, 186. Hariv. 7863. 9383. स्तनयुगलं °श्रीविडम्बि Vikramâṇ. 31. Mârk. P. 70, 2. Paṇḍar. 1, 3, 33. Ind. St. 5, 338. — *b*) *die Frucht* —, *der Lohn der Frucht* u. s. w.

Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,23.

श्रीफलिका f. = तुरुकारवेल्ली und मलानीली Rāǵān. im ÇKDn.

श्रीबक (°वक gedr.) m. N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 8,1011. 1048. 1133. 1137. 1416. 1422.

श्रीबलि N. pr. eines Dorfes Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,24.

श्रीभत m. heisst der मधुपर्क Gobh. 4,10,13.

श्रीभट m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 155,*a*,23. *b*,13.

श्रीभद्र 1) *eine Cyperus-Art* (भद्रमुस्तक), m. Wilson nach Çabdar. f. या ÇKDn. nach derselben Aut. — 2) m. N. pr. *a*) eines Schlangendämons Vājtp. 87. — *b*) eines Autors Colebr. Misc. Ess. 2,49. — 3) f. या N. pr. *a*) einer Göttin Kālaǵakra 3,140. — *b*) der zweiten Gemahlin Bimbisāra's Burnouf in Lot. de la b. l. 304. Schiefner, Lebensb. 253 (23).

श्रीभानु m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Bhāg. P. 10,61,11.

श्रीभाष्य n. Titel zweier Werke Wilson, Sel. Works 1,43. Hall 92.

श्रीभुज् nach Wilson *the enjoyer or possessor of* Çrī in der Stelle देव स एष मे जामाता तवार्हति श्रीभुजाराधनम् Daçak. 140,2, die durch *he is worthy of your veneration, such as paid to* Vishṇu wiedergegeben wird. Das Comp. ist aber in श्रीभुज् + या° zu zerlegen und der ganze Satz zu übersetzen: *dieser mein Schwiegersohn verdient es Eurer Hoheit Armen zu dienen.*

श्रीभ्रातृ m. *der Bruder der* Çrī, Bez. des Rosses (das mit der Çrī zugleich bei der Quirlung des Oceans erschien) Rāǵān. im ÇKDn.

श्रीमङ्गल 1) m. N. pr. eines Mannes Hall 118. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Hall 203. n. N. pr. eines Tīrtha Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,19.

श्रीमञ्जु m. N. pr. eines Bergs Wilson, Sel. Works 2,23. Burnouf in Lot. de la b. l. 506.

श्रीमणस् s. श्रीमनस्.

श्रीमण्डप m. N. pr. eines Berges Hall 13.

श्रीमतोत्तर n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 110,*b*,11.

श्रीमत्कुम्भ n. *Gold* H. ç. 162.

श्रीमत्ता (von श्रीमत्) f. *Pracht, Schönheit:* श्रीमत्ता प्राप स द्रुमः MBn. 13,293.

श्रीमद्वेतोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Ind. St. 1,249. 252. 2,110.

श्रीमनस् und °मणस् adj. VS. Pair. 3,90. TS. Pair. 7,9. etwa *gut gestimmt* VS. 17,56.

श्रीमत् (von s. श्री) 1) adj. Vop. 7,27. *a*) *schön, prächtig* H. an. 2,201. Med. f. 162. Personen MBn. 4,2264. R. 1,1,11. 33. Kathās. 22,89. वदन R. 2,72,23. नितम्ब Spr. (II) 2102. शार्दूल MBn. 3,2481. Kūbe 4,996. गज R. Gorr. 2,12,11. केस Spr. (II) 2502. Bäume MBn. 3,2502. R. 2, 55,6. Milarip. 148,8. सरोरुह Varāh. Bṛh. S. 19,16. Garten Bhāg. P. 3,15,12. षड्विषय R. 1,25,14. Rāǵa-Tar. 8,3402. धाम, °पद् R. 1, 48,11. 51,25. Berge MBn. 3,16126. Kathās. 18,351. Bhāg. P. 8,2,1. चन्द्र Spr. (II) 2126. नदी R. Gorr. 2,46,8. Stadt, Gebäude, Gemach R. 1,5,7. 18. Bhāg. P. 4,9,36. R. 2,78,18. श्रीमति मृगेक्षणाभिर्गृहे Varāh. Bṛh. S. 48,14. Rāǵa-Tar. 4,210. Sitz R. Gorr. 2,2,20. Wagen MBn. 5,7139. धनुस् 3,1852. विभूषा Kām. Nītis. 15,46. MBn. 1,1147. फल *Frucht, Lohn* Kām. Nītis. 13,2. वाक्य R. 2,79,14. — *b*) *eine hohe Stellung einnehmend, vornehm, in hohem Ansehen stehend, reich, ein grosser —, vornehmer Herr* AK. 3,1,14. Tarn. 3,3,187 ईश्वर geben Wilson und ÇKDn. fälschlich durch Çiva wieder). H. 357, Schol. H. an. Med. Kālān. Up. 3,13,3. MBn. 3,1724 (voc.). 2629. 2716. R. 2,33,3. 35,29. 40,30. fg. 46,29. 49,13. 70,26. 5,70,10. Spr. 2901, v. l. 3256. 5022. 5086. (II) 2881. 3079. 4340. 5549. Kathās. 18,319. 26,194. Rāǵa-Tar. 3,137. 7,149. Pañc. 2,3. श्रीमद्भिः किं ज्ञातम् Ver. in LA. (III) 6,7. Z. d. d. m. G. 14, 574,23. श्रीमद्देवपादानाम् Hit. 54,20. Spr. (II) 5567. श्रीमत्पैर्भागवतः Bālār. P. 1,16,24. श्रीमत्सायण (= श्रीसायण) Sarvadarçanas. 1,7. 10. 82,21. श्रीमत्पैष्करे (ein Werk) 83,21. 87,13. 89,18. 22. मेरु wohl so v. a. *goldreich* Spr. (II) 5197. श्रीमान्वैयाघ्रे चर्मणि स्थितो राजा so v. a. *in seinem vollen Ornat, mit seinen Insignien* Varāh. Bṛh. S. 44,13. श्रीमत्तम von einer Person und Waffe Kāçīn. Up. 2,6. — *c*) *Glück bringend* R. 2,26,9. नातः श्रीमत्तरं किंचिदन्यत्पथ्यतमं तथा । प्रभविष्णोर्यथा तात तमा Spr. (II) 3553. — 2) m. *a*) *ein best. Baum,* = तिलक AK. 2, 4,3,20. Tarn. H. an. Med. *Ficus religiosa Lin.* Rāǵān. im ÇKDn. — *b*) *Papaget* H. ç. 194. — *c*) ein N. Vishṇu's Çabdar. im ÇKDn. — *d*) ein N. Kubera's Çabdam. im ÇKDn. — *e*) N. pr. eines Sohnes des Nimi MBn. 13,4330. ein anderer Name des Çākjamitra Tārān. 303. — 3) f. श्रीमती N. pr. *a*) einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBn. 9, 2631. — *b*) verschiedener Frauen Verz. d. B. H. 124,8 v. u. Verz. d. Oxf. H. 264,*a*,13. Schiefner, Lebensb. 281 (51). Çatakāvas. 126.

श्रीमन्मन्य (श्रीमत् + मन्य) adj. *glaubend, dass man im Besitz der* Çrī *sei,* Buatt. 5,71.

श्रीमय (von s. श्री) adj. *in der* Çrī *aufgehend:* Vishṇu Pañcar. 4,3,78.

श्रीमलायक्ष f. *eine best. Staude,* = धूमयक्ष Rāǵān. im ÇKDn.

श्रीमस्तक m. *eine Art Knoblauch* (स्वस्तिक) Tarn. 2,4,38.

श्रीमहादेवी f. N. pr. der Mutter Çaṁkara's Wilson, Sel. Works 1,198. श्री ist hier vielleicht nur Ehrentitel.

श्रीमहिमन् m. °महिमः स्तवः *ein Lob auf* Çiva's (!) *Grösse* Verz. d. Kop. H. 100,*a*.

श्रीमाल N. pr. eines Gebietes und der darin gelegenen Stadt: °माहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 76,*a*, No. 130. °खण्ड 84,*b*,29. 338,*b*,27.

श्रीमालादेवीसिंहनादसूत्र n. N. eines buddhistischen Sûtra Vie de Hiouen-thsang 81.

श्रीमुख m. N. *des 7ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varāh. Bṛh. S. 8,31. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*, No. 782.

श्रीयशस् m. N. pr. eines Fürsten Kālaǵakra 5,257.

श्रीयामल n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,5.

श्रीर (von s. श्री) adj. s. घ° und vgl. श्रील.

श्रीरङ्ग n. N. pr. einer Stadt (vulgo सार्पटम् ÇKDn.), in der Vishṇu verehrt wird, LIA. 1,159. Wilson, Sel. Works 1,36. fg. Bhāg. P. 10, 79,14. Verz. d. Oxf. H. 130,*a*,13. °माहात्म्य 30,*a*,15. Mack. Coll. 1, 87. fg. °राज Verz. d. Oxf. H. 130,*a*,18. 213,*a*, No. 505. श्रीरङ्गेश *der Fürst von* Çrīraṅga (man streiche hiernach den Artikel रङ्गेश) 130, *a*,7. °नाथ *eine Form* Vishṇu's Wilson, Sel. Works 1,36. N. pr. eines Mannes Mack. Coll. 1,31. Hall 112.

श्रीरत्नगिरि m. N. pr. einer Oertlichkeit Tārān. 268.

श्रीरस m. *das Harz der Pinus longifolia* Rāǵān. im ÇKDn. Suçr. 2,

131,14. 374,12 (श्री gehört auch zu रम).

श्रीराम m. N. *des 3ten musikalischen Râga* Hall. im ÇKDa.

श्रीराधावल्लभ m. *eine Form* Vishṇu's Wilson, Sel. Works 1,177.

श्रीराम = राम. °पद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 300,*a*, No. 733.

श्रीरूपा adj. f. *die Gestalt der Çrî habend:* Râdhâ Paṇḍar. 5,5,59.

श्रीर्ति (von 5. श्री) adj. (f. घा) gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97. 1) *schön:* Personen Paṇḍar. 4,8,49. राधा 5,5,60. — 2) *eine hohe Stellung einnehmend, hochberühmt* AK. 3,1,14. H. 357, v. l. °त्नुमत् Verz. d. Oxf. H. 143, *b*, No. 295. °श्रीवीरदेव Vop. 8. 175. — Vgl. घ°, श्रीर, श्रील.

श्रीलक्ष्मन् m. N. pr. = लक्ष्मीधर Hall in der Einl. zu Viṣṇup. 50.

श्रीलता f. *eine best. Pflanze*, = मकाण्योतिष्मती Râǵân. im ÇKDa.

श्रीलाभ s. भद्र°. सार्य° Burnouf, Intr. 567.

श्रीलेखा f. N. pr. einer Fürstin Râǵa-Tar. 7,123. 134. 141.

श्रीवत्स m. 1) Bez. *einer best. Figur* (abgebildet in Z. d. d. m. G. 6,94. Colebr. Misc. Ess. 2,210. Lot. de la b. l. 623), insbes. *ein Haarwirbel von dieser Form auf* Vishṇu's (Kṛshṇa's) *Brust* H. 222. Hall. 1,27. Verz. d. Oxf. H. 183, *b*, 1 v. u. MBh. 1, 2507. 3, 10960 (hier neutr.). 12900. fg. 13840. 13851. 5, 2955. 3590 (bei andern göttlichen Wesen). 12, 13294. 13, 6803. Harîv. 4446. R. 6, 102, 26 (°लक्षण: als comp. zu lesen). 7, 37, 2, 12. Ragh. 10, 10. 17, 29 (zugleich *Form eines Gemachs*). Kumâras. 7, 43. Varâh. Bṛn. S. 33, 10 श्रीवत्स v. l. 43, 3. 58, 31. श्रीवत्साङ्क 45 (छिन्न). 94, 2 (in der gleichlautenden Stelle 79, 21 श्रीवत्स). Weber, Rikat. Up. 306. Kâṣmîrâ. 274. 289. 295. 303. Bâlar. P. 3, 8, 28. 16, 21. 19, 34. 5, 3, 3. 6, 8, 20 (°धामन्). 8, 4, 19. Paṇḍar. 3, 11, 19. °स्वस्तिकनन्द्यावर्तवर्धमानसंस्थानकेश Lalit. ed. Calc. 122, 20. fg. 334, 17. Wilson, Sel. Works 2, 15. fg. das Zeichen des 10ten Arhant's H. 47. °भृत् m. ein N. Vishṇu's H. 219. — 2) ein N. Vishṇu's H. 218. Hall. 1, 24. — 3) *ein Gang in einer Mauer von einer best. Form* Taik. 2, 10, 9. — 4) *the name of one of the lunar asterisms* As. Res. 9, 366 nach Haughton. — Vgl. श्रीवत्त.

श्रीवत्सकिन् adj. *auf der Brust und der Stirn einen Haarwirbel in der Gestalt des* Çrivatsa *habend:* Pferd H. 1236. — Vgl. श्रीवृत्तकिन्.

श्रीवत्सलाञ्छन 1) adj. *den* Çrivatsa *als Zeichen habend*, m. ein N. Vishṇu's AK. 1, 1, 2, 17. — 2) ein Bein. des Maheçvara Hall in der Einl. zu Viṣṇup. 54.

श्रीवत्साङ्क 1) adj. *den* Çrivatsa *zum Zeichen habend:* Vishṇu Varâh. Bṛn. S. 43, 2. Gîna 58, 45. m. ein N. Vishṇu's H. 219, Schol. Hall. 1, 21. — 2) m. N. pr. eines Mannes (hiernach der Artikel वत्साङ्क zu streichen) Verz. d. Oxf. H. 130, *a*, 7.

श्रीवद् adj. *Glück verkündend:* °पत्रिन् H. an. 3, 80.

श्रीवत्त् adj. *das Wort* श्री *enthaltend* Kîṭ. 10, 11.

श्रीवभास (!) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8, 1484.

श्रीवर m. N. pr. eines Autors Gild. Bibl. 243. Verz. d. Oxf. H. 147, *a*, No. 314.

श्रीवरबोधिभगवत् m. N. pr. eines Mannes Târân. 215.

श्रीवराह m. Vishṇu *als Eber* Taik. 1, 1, 28. H. ç. 75.

श्रीवर्धन m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7, 58.

श्रीवल्ली f. *eine best. Pflanze*, = कण्टवल्ली, शिववल्ली u. s. w. Râǵân. im ÇKDa.

श्रीवह् adj. *Glück u. s. w. bringend;* m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 1588.

श्रीवाटी f. *eine best. Pflanze*, = नागवल्लीभेद Râǵân. im ÇKDa.

श्रीवारक m. *Marsilea quadrifolia*, = सितावर Râǵân. im ÇKDa. Bhâvapr. 5.

1. श्रीवास (5. श्री + 2. वास) m. *die Wohnstätte der Schönheit* u. s. w. 1) ein N. Vishṇu's Taik. 3, 3, 152. H. an. 3, 757. Med. s. 41. — 2) *Lotusblüthe* H. an. Med.

2. श्रीवास (5. श्री + 3. वास) m. *Prachtgeruch*, Bez. *des Harzes der Pinus longifolia* AK. 2, 6, 3, 30. Taik. 3, 3, 152. H. 648. an. 3, 757. Med. s. 41. Ratnam. 41. Âçv. Gṛhj. Pariç. 2, 3. श्रीनिकेत u. s. w. als Synonyme beruhen vielleicht auf einer falschen Etymologie.

श्रीवासक m. dass. Varâh. Bṛn. S. 57, 2. 77, 28.

श्रीवासस् m. dass. Schol. zu AK. 2, 6, 3, 30.

श्रीविद्या f. *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 22. 94, *a*, 41. 96, *a*, 8. 99, *b*, 24. 36.

श्रीवृत्त m. 1) *Ficus religiosa* H. 1131. Hall. 2, 41. Verz. d. Oxf. H. 349, *a*, 7 v. u. °नवमीव्रत 34, *b*, 4. इषे मास्यसिते पक्षे नवम्यामार्द्रयोगतः । श्रीवृक्षे (*Aegle Marmelos Corr.* nach ÇKDa.) बोधयामि वो यावत्पूजां करोम्यहम् ॥ इति तिथ्यादितन्त्रधृतमोदुर्गाबोधनमन्त्रः ÇKDa. — 2) Bez. *einer best. Figur* (mit श्रीवत्स wechselnd) Varâh. Bṛn. S. 33, 10, v. l. 50, 2 (= वित्त्व Comm.). 56, 15. 70, 10 (= वित्त्व Comm.). 71, 5. 79, 21 (alle Hdschrr., = वित्त्व Comm.). *ein Haarwirbel von best. Form auf der Brust eines Pferdes* Hall. 2, 283. स° adj. Kathâs. 18, 88. — Vgl. श्रीवत्स.

श्रीवृत्तक m. *ein Haarwirbel von best. Form auf der Brust* (und Stirn) *eines Pferdes* Taik. 2, 8, 44. Hân. 118. Vaṭ. bei Mallin. zu Çiç. 5, 56.

श्रीवृत्तकिन् adj. *mit einem solchen Haarwirbel versehen:* Pferd Hall. 2, 283. Çiç. 5, 56. — Vgl. श्रीवत्सकिन्.

श्रीवृद्धि f. N. pr. einer बोधिवृत्तदेवता Lalit. ed. Calc. 421, 16.

श्रीवेष्ट m. AK. 2, 6, 3, 13. *das Harz der Pinus longifolia* 2, 6, 3, 30. H. ç. 132 (श्रीर्वेष्ट: die Hdschr.). °क Suçr. 1, 133, 11. 139, 9. 2, 78, 19. 125, 9.

श्रीवैष्णव m. Bez. einer Vishṇu'itischen Secte Wilson, Sel. Works 1, 31. 38. 46. 68. 96. 131. 139. 143. 184. 346.

श्रीश (5. श्री + ईश) 1) m. *Besitzer der Schönheit* u. s. w., Bein. Vishṇu's (Kṛshṇa's) Çabdar. im ÇKDa. Spr. 5094. Weber, Kâṣmîrâ. 295. Paṇḍar. 1, 1, 8. 3, 82. 4, 1, 19. Vop. 5, 2. 25, 19. Bein. Râma's Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. घा Bein. der Râdhâ Paṇḍar. 5, 5, 58.

श्रीशत्मलीभाण्ड n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 77, *b*, 19.

श्रीशात्त m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 2, 23.

श्रीशुक्लतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 77, *b*, 25.

श्रीशैल m. N. pr. verschiedener *Berge* Bâlar. P. 5, 19, 16. 10, 79, 13. Verz. d. Oxf. H. 24, *a*, N. 2. 39, *b*, 3. 64, *a*, 6. 82, *a*, No. 138, Çl. 6. 256, *a*, 25. VP. 180, N. 3. Wilson, Sel. Works 1, 223. 225. Hall in der Einl. zu Viṣṇup. 11. Muir, ST. 2, 446. — Vgl. श्रीगिरि und श्रीपर्वत.

श्रीषवायण Titel eines Abschnittes des Romakasiddhânta Verz. d. Oxf. H. 338, *b*, 2. 339, *a*, 27.

श्रीषेण und °सेन (s. श्री + सेना) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 73, 188. 254. 278. eines Astronomen Colebr. Misc. Ess. 2, 386. 388. 407. 476. 480. Verz. d. Cambr. H. 54.

श्रीसंहिता f. Bez. einer best. Saṁhitâ Ind. St. 1,471,2.

श्रीसंयाम m. N. eines Matha Râéa-Tar. 8,611.

श्रीसंज्ञ n. *Gewürznelke* AK. 2,6,2,27. H. 646. — Vgl. श्रीपुष्प.

श्रीसंभूता f. N. *der 6ten Nacht im* Karmamâsa Ind. St. 10,296.

श्रीसहोदर m. *der leibliche Bruder der* Çrî so v. a. *der Mond* (beide brachte das gequirlte Meer hervor) Çaṅkarâkar. bei Wilson.

श्रीसुन्दरपुर s. सुन्दरपुर.

श्रीसूक्त n. angeblich *das Lied* RV. 1, 185 Çâṅkh. Br. 26, 9. Verz. d. Oxf. H. 7,b,12. 398,b,2.

श्रीसेन s. श्रीषेण.

श्रीस्थल n. N. eines Tempels des Çiva: °माहात्म्य Mack. Coll. 1,88.

श्रीस्मरणदर्पण m. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,168.

श्रीस्रव् n. copul. comp. von s. श्री + स्रज् P. 5,4,106, Schol. Vop. 6,7.

श्रीस्वरूप m. N. pr. eines Schülers des Kaitanja Wilson, Sel. Works 1,159.

श्रीस्वरूपिणी adj. f. *das Wesen der* Çrî *besitzend:* राधा Paṅkâr. 5,3,59.

श्रीस्वामिन् m. N. pr. eines Fürsten Râéa-Tar. 5,156. des Vaters von Bhaṭṭi Schol. zu Bhaṭṭ. 22,35.

श्रीहट्ट N. pr. einer Stadt (Silhet) Wilson, Sel. Works 1,153.

श्रीहर adj. (f. श्रा) *Schönheit u. s. w. raubend, — zu Nichte machend* so v. a. *Alle an Schönheit übertreffend:* Râdhâ Paṅkâr. 5,3,59.

श्रीहरि m. *der heilige* Hari (Vishṇu): श्रीहरेरुत्थानम् wird am 14ten des Kârttika gefeiert As. Res. 3,265 nach Haeberlin. °स्तोत्र n. Titel einer Hymne Notices of Skt Mss. 171.

श्रीहर्ष s. हर्ष.

श्रीहस्तिनी f. *Heliotropium indicum* AK. 2,4,2,50.

1. श्रु (श्रवणे Dhâtup. 22,46.), शृणोति P. 3,1,74. Vop. 8,94. शृणुमस् und शृणमस्, शृणुवस् und शृणवस् 98. शुश्राव, शुश्रुव, शुश्रुम (शुश्रुवस् s. bes.) P. 7,2,13. Vop. 8,57. 95. श्रोष्यति; शश्रोथात्; श्रोतुम्, श्रुत्वा (Vop. 26,204). Der älteren Sprache gehören folgende Formen an: शृणुधि P. 6,4,102. शृणोत Schol. zu P. 6,3,133. 7,1,45. 3,1,78. Vârtt. शश्रवम्, शश्रोत्, श्रवत्, श्रोतु, श्रौत, शृधि P. 6,4,102. श्रुतम्, श्रूयास्, श्रूयाम् Padap.) RV. 2,10,2. श्रोषन्, श्रोषतु, श्रोषि (vgl. श्रुष्) 6,4,7. शश्रोषम् Çat. Br. शुश्रवत्, शुश्रूषास् (शुश्रु° Padap.) RV. 8,43,18. शुश्रूषतम् 5, 74,10. श्रूयाम्; शुश्रव, शुश्राव; श्रोष्यामि. 1) act. *hören, erfahren; hören auf, aufmerken; beim Lehrer hören, lernen, studiren:* भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम RV. 1,89,8. 30,3. यस्माकं शृणुधी हवम् 4,9,7. वेद्दविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान् 5,30,2. 32,12. त्वत्तं हि वो शृणोमि *ich höre du seist reich* 8, 2,11. 1,109,5. श्रोषन्ये यस्य शासम् 68,9. Âit. Br. 7,15. VS. 6,26. AV. 5,4,2. 8,9,18. पापं श्लोकम् TS. 3,3,2,2. 5,6,10,2. Çat. Br. 2,4,2,2. 14, 4,2,2. 30. 7,4,27. नाकेव तमु शुश्रुव Paṅkav. Br. 13,6,9. शृणवत्ति (*achten* Asch Comm.) तृष्टवानम् 11,13. वं तत्त्ववित् शुश्रुमो वयम् Maitrâyaṇ. 1,2. श्रोष्यन् so v. a. *der in die Lehre zu treten in Begriff ist* Âçv. Çr. 3,14, 2. — पठन्, शृण्वन् R. 1,1,96. इति शुश्राव MBh. 1,1272. नाश्रौषमिति राजानं सूत वक्ष्यसि संगमे R. Gorr. 2,39,47. अथ चेन्नमस्कारान्न श्रोष्यसि Bhag. 18,58. श्रोष्यत्यवक्षिता Manu. 98. कामेनां शीघ्रमे नित्यं श्रोतुमिच्छामि MBh. 3,2644. सा मूलाच्छ्रोतुमिच्छामि Çiç. 14,19. वक्तुं श्रोतुमशिक्षितः als Erklärung von एडमूक *taubstumm* AK. 3,1,38. श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः। न कृष्यति ग्लायति वा M. 2,98. श्रुत्वा धर्मं विजानाति.श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम्। श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात्॥ Spr. 3091. — मुहुस्त्वजनवाक्यानि यावन्न शृणोति च MBh. 3,2287. Spr. 5278. (II) 2813. 4907. शृण्वन्ति तवेरितम् Bhâg. P. 1,8,36. सुहृदाक्यमिदं शृणु MBh. 3,2171. 2526. कुलस्त्रीणां सकाशाच्छ्रुत्वा 16619. कथाम् 5,5944. वचो मम R. 1,52,21. 2,63,4. Kathâs. 18,177. गोदोहकम् *vom, die Geschichte des* 61,44. रहस्यम् Hit. 37,3. शुद्धः शृणुत निर्णयम् M. 5,110. 9,19. 11,145. 12,2. शृण्वताम् Bhâg. P. 5,2,10. शृणुयात् — प्रणिधीनां च चेष्टितम् M. 7,223. 8,76. शृण्वतोः सततं गुणान् MBh. 3, 2088. अशृण्वं कथाः Bhâg. P. 1,5,26. प्रविशेत्यशृणोद्वचः Kathâs. 18, 211. Paṅkat. 21,2. श्रूयात् Bhâg. P. 10,90,49. शुश्राव शब्दम् MBh. 1, 6111. 3,2609. Ragh. 2,12. Kathâs. 11,14. शुश्रुवतुः स्वनम् MBh. 1,6119. शुश्रुवुः 3,2128. 2854. शश्रोषम् Bhag. 18,74. R. 2,63,21 (65,21 Gorr.). शश्रोषीस्त्वं रामधर्मान् MBh. 3,1296. श्रोष्यामि मधुरां गिरम् 2431. R. 5,36,6. Manu. 13. Çiç. 33,3. चित्राः कथाः श्रोतुम् MBh. 1,2. 7618. 3, 2691. Ragh. 1,10. R. 1,1,7. श्रोतुमिच्छामि गङ्गां त्रिपथगां नदीम् *erfahren über* 36,11. वचनम् *achten auf* R. Gorr. 2,120,23. शुश्रूषतान्धमान् M. 5,1.77. 6,94. MBh. 3,1815. 2104. 2112. 2426. 2756. 2796. Harîv. 9119. R. 1,1,47. 2,87,1. 5,66,16. Ragh. 12,18. Spr. 3042. fg. 3092. Vaṭs. Bhaṭṭ. 8. 47,28. Hit. 19,21. Vet. in LA. (III) 2,15. 7,1. — केनापि पठ्यमानं श्लोकार्धं शुश्राव *hörte recitiren* Hit. 4,7. विगतं तु विदेशस्थं शृणुयाच्चो ज्ञानिर्दशम् *erfahren, dass* M. 5,78. शुश्राव धृतराष्ट्रमधनुषम्। घातमानं दितिसुतं चास्मै पित्रा MBh. 1,4378. 3,2016. Harîv. 3371. Râéa-Tar. 1,66. यदाश्रौषम् — चित्रं विद्धं लक्ष्यं पातितं वै पृथिव्याम् MBh. 1,148. fgg. श्रुत्वा तु रावणं प्राप्तम् R. 7,27,23. Spr. 3044. fg. Ragh. 12,39. Kathâs. 7,28. — mit gen. der Person: यस्माकमित्नु शृणुहि RV. 4,22,10. 6,21,8. 7,28,1. 33,5. दूतस्य 39,3. स्तुवतः 8,24,14. 1,37,13. आचार्यस्य Çâṅkh. Gṛhy. 2,12. Lâṭy. 2,9,11. इति शुश्रुव पूर्वेषाम् Kenop. 3. Îçop. 10. नटस्य P. 1,4,29, Schol. किं न शृणोषि मे MBh. 1,3022. शृणु मे वम् — पद्मावां मूषिको ऽब्रवीत् 3577. 3,2138. 2475. सा चास्य न शृणोति वै 10327. कोशतो न शृणोति मे R. 2,68,31. 6,2,11. Spr. (II) 1325. mit acc. der Sache und gen. der Person: सर्वं शृणुत तं (गुणं) सर्वं कीर्तयतो मम M. 3,36. MBh. 3,2332. हेतुं मे गदतः शृणु 15756. R. 2,64,31. Manu. 13. तदपत्यानि मे शृणु Bhâg. P. 8,13,1. dat. st. gen.: शृणु वचो मह्यम् MBh. 6,2933. mit abl. der Person: इति श्रुत्वैव मार्द्धारात् Kathâs. 33, 124. 96, 17. mit acc. und abl.: शुश्राव विप्रेभ्यो गान्धारीम् *erfuhr von — über* MBh. 1,4371. तच्छ्रुत्वा दमयन्तीसखीगणात् 3,2109. Ragh. 1, 29. 3,66. Kathâs. 2,25. 45,51. Bhâg. P. 3,22,10. Hit. 19,2. पार्श्वमश्रौषीत् — वर्तमानं तपस्युग्रे ब्राह्मणेभ्यः MBh. 3,2084. fg. Kathâs. 29,179. st. des einfachen abl. auch °मुखात् (Kathâs. 18,196) und सकाशात् (MBh. 3,1262). mit acc. und instr.: तद्दूतं नृपतिः श्रुत्वा दूतश्रेष्ठैः R. 1,70,8. In der Bed. *bitten* (nach den Scholl.) Bhaṭṭ. 8,77. — 2) med. = act. (im Epos stets nur aus metrischen Rücksichten): शृण्वन्तु मुमुक्षवस्तमः RV. 1, 131,7. कर्णाभ्यां भूरि शुश्रुवे Pâr. Gṛhy. 3,15. शृण्वेकमना भव MBh. 1, 6520. 13,484. Harîv. 288. Paṅkat. 186,15 (शृण्वेकाग्रमनाः bosser ed.

Bomb.). प्रणुधम् MBh. 3,8768. Harîv. 10308. इत्यप्रणमद्धि Bhâg. P. 10, 23,48. तत्पुत्रपौत्रनप्तॄणां गोत्राणि च न प्रणमे 9,3,33. तच्छ्रुणुष्व MBh. 12,1266. 13,245. 14,122. R. 7,23,6,70. Mân. P. 99,19. प्रणुधं च वचो मम MBh. 1,1625. 2,1337. R. 6,81,14. प्रणवीत Bhâg. P. 3,13,47. पूर्वेषां प्रणवानशरितं मरुत् MBh. 1,2285. 2,994. 13,3697. Bhâg. P. 1,11,11. तं शब्दं शुश्रुवे R. 3,56,2. 5,25,14. Bhâg. P. 7,3,3. श्रोष्ये MBh. 9,105. 107. R. Gorr. 2,120,23. 5,23,18. 69,36. श्रः श्रोष्यसे (so ed. Bomb. st. °से) शिरस्तस्य नेन्धवस्य रणे हृतम् MBh. 7,2725. शुणुधावहितो मम 13, 1119. 14,124. शुश्रुवे mit acc. der Sache und abl. der Person 1,386. — 3) med. (im Veda) in pass. Bed. und pass. शूयते u. s. w. (nach vedischer): म घोषः शुण्वे जनेभिः: *wird vernommen* ṚV. 3,30,16. 5,73,7. 10, 94,6. केनेषं नु कं शोमतेन न शुश्रुवे वृत्रहा 8,55,9. 2,31. कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठः: *hetzt* 4,20,9. क उग्राः के ह शृण्विरे 8,45,4. वधा सुष्व शृण्विषे 6,14. 67,3. 7,26,4. शूयते Çiṅkṣ. Çr. 1,16,7. 7,8,6. 9,1,3. हितातिमुख्यवृत्तीनां विधानं शूयताम् M. 3,280. 11,161. R. 1,8,5. 53,5. सालाप इव शूयते Çiç. 8,21. Spr. (II) 2928. वार्तापि न शूयते 6033. शूयतां धर्मसर्वस्वम् 6578. fg. Vaṅîn. Bṛh. S. 12,6. कुमुमे कुसुमोत्पत्तिः शूयते न च दृश्यते Spr. (II) 1846. स्थानप्राप्तिविहीना हि गीतवत्कुलकन्यका। उद्देजिनी परस्यापि शूयमाणैव कर्णयोः॥ Kathâs. 24,25. हादशभिर्वर्षैस्तावद्व्याकरणं शूयते *wird beim Lehrer gehört, — studirt* Pañkat. 4,14 (ed. orn. 1,17). शागमेषु परमेश्वरस्य शरीरेन्द्रियादियोगः शूयते *so v. a. man erfährt aus, man liest in* Sarvadarçanas. 83,19. इति तर्हि शूयमाणस्य विधेः 123,18. यत्र तुशब्दः शूयते *gehört — so v. a. angewandt wird* Schol. zu TS. Prât. 22,6. — शब्दाः शूयन्ति सर्वज्ञैः MBh. 6,2515 शब्दः शुश्रुवे 4,1788. Harîv. 3003. R. 1,24,5. 2,40,29. 76,21. 91,25. 6,19,4. Ragh. 19,18. Kathâs. 11,66. 19,112. शुश्रुविरे गिरः Ragh. 9,44. इत्यमावि च वाग्दिव्या Kathâs. 46,96. Prab. 20,9. Pañkat. 64,3. कृतानि वाग्रोषत शुद्धानाम् Bhaṭṭ. 2,10. परास्य शक्तिर्विविधैव शूयते *man hört, — erfährt, es heisst, dass* Çvetâçv. Up. 6,8. Maitrîup. 2,3. शूयते भवतः माता स्वसा माद्री यशस्विनी MBh. 1,4480. यशः शूयते गीतः शोको महात्मना 3,7073. R. 2,107,11. तैर्युक्तः शूयतां नरः 1,1,9. 22,17. 6,95,37. Çiç. 71. Spr. (II) 2431. 2933. Kathâs. 24,85. बरुवः — जीवन्मुक्तिमाश्रिताः शूयन्ते रमेशरमिहासते Sarvadarçanas. 98,20. fg. शुश्रुवे। राजपुत्रो त्रिगीषुश्च शोमान्योधिष्ठिरे कुले *man hörte von* Râga-Tar. 2,144. तेनार्येण मदीयो भार्याभावि विचिन्वता Kathâs. 56,240. mit gen. der Person: तच्छ्रूयतां मम MBh. 3,12772. R. 1,4,28. mit पुछात् st. des einf. abl. Hit. 39,7. pass. impers.: वेदकात्तात्त्विग्यो व्रतो ऽनुगन्तव्य इति शूयते *man hört, — liest, dass* Çiç. 54,22. शूयते *so v. a. ich höre* 14,16. शूयताम् *man höre, du höre* M. 1,4.60. 5,2. R. 1,1,8. Çiç. 50,7. 57,8. 84,11. Kathâs. 18,238. Pañkat. 33,21. Hit. 27,10. Ver. in LA. (III) 4,20. शूयतां तु गुणैरेभिर्यो युक्तः R. Gorr. 1,1,18. यदस्मि u. s. w. Çiç. 93,1. तथा च श्वेताश्वतरोपनिषदि शूयते *und so liest man in* Sarvadarçanas. 152,2. mit abl. der Person: वृद्धेभ्यः शूयते यथा Kathâs. 6,74. mit gen. der Sache: शूयतामस्य धनुषो यद्वर्धमिह तिष्ठति R. 1,66,7. — शुश्रुवंस् und शुश्रुत s. bes.

— caus. श्रावयति (nur im Veda) und आ° (श्र° ṚV. Padap.); des Metrums wegen auch med. *hören lassen, verkünden, hersagen:* यशोजा यच्छुवयंत ऐतन ṚV. 1,110,3. आवयेदस्य कर्णा वाजयध्यै 4,29,2. वाचम् 8,85,12. Çat. Br. 1,8,3,10. 9,2,18. लोकं 7,3,4,29. 12,8,3,26. श्रुस्यम् Çiṅkṣ. Gṛhy. 2,11. Âçv. Gṛhy. 4,7,16. य एवं श्रावयेच्छ्राद्धे Kâṭhâkop. in Ind. St. 3,20. श्रुत्र संमदि Kâṭhâkop. 3,17. स्वाध्यायम्, धर्मशास्त्राणि u. s. w. M. 3,232. श्रोकत्रयम् Jâṅ. 3,332. तच्च वाक्यं श्रावयां चक्रिरे MBh. 3, 2743. 8,2516. R. 7,13,35. — Verz. d. Oxf. H. 47,a,2 v. u. नाम स्वं श्रावयन् R. 2,3,31. 5,30,19. Kathâs. 6,4. मङ्गल्यशब्दम् Lalit. ed. Calc. 378,10. fg. mit acc. der Person *Jmd hören lassen, zu Jmd sprechen, anreden, Jmd Etwas mittheilen* P. 1,4,52. Vârtt. 2. सात्विणः Jâṅ. 2, 73. Harîv. 5197. Kathâs. 4,66. 8,19. 12,153. 182. 32,79. 69,82. Bhâg. P. 1,3,44. mit doppeltem acc.: वेणुमश्रावयच्च गाः Vop. 5,5. एतद्वो ऽयं भृगुः शास्त्रं श्रावयिष्यति M. 1,59. Jâṅ. 3,334. MBh. 1,2300. 2317. fg. 6518. 8403. भीष्मं हतान्तरा वाचः 2,1432. 3,993. 1337. 5,909 (mod.). 13, 4303. Harîv. 9711. R. 2,77,24. R. Gorr. 1,4,3. 5,76,18. 6,101,6 (med.). Bhâg. P. 4,31,23. Pañkar. 1,12,4. यशिश्रवत्तं च श्रीवत्सं पवनात्मजम् *er theilte ihm mit, dass* Bhaṭṭ. 15,103. mit gen. der Person: तेन ते श्रावयिष्यामि यत्तद्वस्य सनातनम् MBh. 13,1120. Bhâg. P. 4,12,49. mit dat. der Person: मह्यं श्रावयामास किल्बिषम् Harîv. 1087. इमां कथां श्रावयेस्तु विप्रेभ्यः 12276. pass. *zu Ohren bekommen:* श्राव्यतां पृथिवीक्षितः। पञ्चपाण्डिकितं वाक्यं मया च प्रतिभाषितम् Harîv. 9620. mit acc. der Sache: इति वचनं पौलस्त्यः श्राव्यताम् R. 5,76,18. partic. श्रावित 1) *der Etwas (acc.) zu Ohren bekommen hat, — vernommen hat:* इत्यस्य हूतेः स श्राविनो ऽभवत् Râga-Tar. 4,352. Kathâs. 81,83. 124,119. सस्याधिवासनम् Harîv. 6020. सर्वमर्थम् R. 5,66,16. मया वाक्यं तदीयम् MBh. 3,2746. तेन बकुशो हूतम् 6,3880. 3,2. 5,7508. 14,415. Harîv. 1097. R. 1,17,18 (7 Gorr.). 2,62,1. 4,32,4. 7,30,18 (श्राविनः *zu lesen*). mit gen. der Person MBh. 7,6103. mit abl. der Person: सादयमन्येभ्यः Jâṅ. 2,82. — 2) *verkündet, gesprochen, mittgetheilt* R. Gorr. 1,1,105. Bhâg. P. 3,22. 8. 4,18,3. — 3) *angemeldet:* सचिवैः श्राविताः पूर्वं प्रविष्टास्ते नराधिपाः Harîv. 6035. — 4) *genannt:* श्रावस्तीति पुरी रम्या श्राविता च लवस्य कः R. 7,108,5. — 5) *so v. a.* आश्राविन *der rituelle Zuruf* Çat. Br. 14, 9,3,9. — Vgl. 3. श्रावण, श्रावणीय, श्राव्य.

— desid. शुश्रूषते P. 1,3,57. Vop. 23,37. im Epos des Metrums wegen auch med. 1) *hören wollen, gern hören:* वं कं त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये ṚV. 7,19,2. 4,38,7. VS. 22,5. MBh. 3,875. 1262. 13248. 13,7029. R. 2,56,17. Bhâg. P. 2,9,10. यदि शुश्रूषसे MBh. 3,2064. 14,63. Harîv. 281. शुश्रूषस्व MBh. 7,2064. शुश्रूषधम् 12,1296. 13,614. तस्मै एवात शुश्रूषते Kâṭhâkop. Up. 7,3,2. शुश्रूषस्व गिरं मम MBh. 3,16922. 5, 2322. 4462. 13,5023. 14,64. R. 3,51,11. नाशुश्रूषत गायनान् Bhaṭṭ. 8, 34. act.: तस्मै शुश्रूषतो ब्रूहि MBh. 5,1363. Bhâg. P. 1,18,18. 2,3,14. 10,51,32. शुश्रूषितां वाचं भाषिता Çat. Br. 14,9,4,17. — 2) *gehorchen, Jmd seine Aufmerksamkeit erzeigen, zu Jmdes Dienst stehn* Kumâras. 1, 60. भार्या न शुश्रूषते Spr. (II) 2103. गुरून् M. 2,244. पतिम् Spr. (II) 3686. 3859. राज्ञानम् MBh. 3,12175. 12722. 13,3662. 15,115. श्वश्रूम्, पितरम् R. 1,8,10. 77,15. Çiç. 93. शुश्रूषमाणा ते (= त्वाम्) R. 2,27,13. R. ed. Bomb. 2,8,13. शुश्रूषितुम् MBh. 3,1880. 5,866. गाः शुश्रूषित्वा M. 11, 110. act.: मातरं पितरं च शुश्रूषत्ति MBh. 13,1665. R. Gorr. 2,32,23. 7,79,14. शुश्रूष माम् 2,18,24 (21,23 Suc.). 38,42. 39,5. 6,104,37. शुश्रूषेयम् 2,15,38. शुश्रूषेत् 2,16,32. शुश्रूषन्ती MBh. 4,274. 15,456. R. Gorr.

2,18,25. तव पादयोः Bhāg. P. 7,2,34. शुश्रूषिष्यति Harīv. 7614. pass.: यैः कर्मभिः प्रचरितैः शुश्रूष्यसे द्विजातयः M. 10,100. R. Gorr. 2,58,23. शुश्रूषितस्तेन MBh. 12,4588. 13,917. Bhāg. P. 6,18,30. Pāṇḍav. 118, 24. — Vgl. शुश्रूषक fgg.

— desid. vom. caus. शिश्रावयिषति und शुश्रावयिषति P. 7,4,81. Vop. 19,15.

— caus. vom desid. = desid. *zu Jmdes Dienst sein:* गृहं शुश्रूषयेत् Kull. zu M. 2,243. vielleicht nur fehlerhaft für शुश्रूषेत.

— घनु 1) *hören* ṚV. 2,24,13. नानुं शुश्राव कश्चन *das hat Niemand gehört* so v. a. *das ist unerhört* AV. 11,4,25. Śat. Br. 1,6,2,3. इत्यनुशुश्रुम Bhāg. 1,44. MBh. 1,7460 (°शुश्रुमः falschlich ed. Calc.). 13,3815. 3702. 14,2760. Harīv. 47. Verz. d. Oxf. H. 63,b,10 (°शुश्रुमः). Bhāg. P. 3,14,2. ऋषीणामनुशृण्वताम् 1,9,25. 10,84,3. नानुशुश्रुम ज्ञातवन्तः M. 9, 100. MBh. 1,2166. Bhāg. P. 3,33,37. 5,6,17. 8,12,46. 10,33,40. 85,59. पुत्रीयास्यानुशुश्रुम (so ed. Bomb. st. °शुश्रुमः der ed. Calc.) MBh. 1, 3740. तृतीयमन्यं लोकेषु वर्षं नैवानुशुश्रुम 8,241. नैतत्समस्तमुभयं कस्मिंश्चिदनुशुश्रुम (so ed. Bomb.) 4,1591. तमः सत्त्वं रजश्चैव पृथक्त्वे नानुशुश्रुम 14,1069. pass.: तत्र्यनुशूयते Pāṇḍav. 3,9. 6,3. 234,5. तदा ऋषीणामनुशुतमास Śat. Br. 1,6,3,1. 9,2,25. 3,1,4,4. Bhāg. P. 5,25,8. — 2) *von Neuem —, wieder hören:* शुतं शुतमेवार्थमनुशृणोति Prāśnop. 4,5. नेत्रं शृण्वत्सर्वे प्राणा यदनुशृण्वन्ति Kāṭh. Up. 3,2. — Vergl. अनुश्रव und °श्राव. — desid. *gehorchen:* कौसल्यातो ऽतिरिक्तं च सो ऽनुशुश्रूषते हि माम् (मम शुश्रूषते बहु ed. Bomb.) R. 2,8,18. Vgl. अनुशुश्रूषा.

— अभि 1) *hören, vernehmen:* खगानां च विकूजितम्। अभीक्ष्णमभिशृण्वती Harīv. 4383. जगतो ऽभिशृण्वतः Bhāg. P. 4,4,10. तमागतमभिशुत्य MBh. 1,4427. — 2) partic. °शुत *bekannt* AV. 6,138,1. — Vgl. अभिश्राव.

— आ 1) *hinhören, horchen, lauschen auf* (acc., bei Personen gen. oder dat.) ṚV. 1,139,7. नर्वमानस्य 190,1. 4,3,3. 5,45,10. 46,6. कृत्वम् 7,67,10. कारवे 3,33,9. 10. 10,95,11. AV. 5,13,5. 20,3. 6,142,2. Śat. Br. 1,5,2,6. घोषम् 3,5,4,3. 5. Pāṇḍav. Br. 21,3,5. Bhāg. P. 3,4,10. — 2) *hören, vernehmen:* आशुत्य वचः Bhāg. P. 1,19,22. 3,19,33. 5,10,16. 7,2,36. 8,24,16. 10,21,3. 60,22. धीशुत *hörbar:* आशुततरं वर्तते TS. 2,5,64,1. — 3) *zusagen, versprechen;* mit acc. der Sache und dat. der Person P. 1,4,40. Vop. 5,15. R. ed. Bomb. 2,58,27. आशुत *zugesagt, versprochen* AK. 3,2,58. H. 1489. कुर्यान्नाशास्यमाशुतम् Jiṭ. 2,196. — 4) आशुत = आशावित *der rituelle Zuruf* Kāṭy. Śr. 3,2,6. 5,4,33. 9,11. TS. 7,3,64,2. — Vgl. 1. आशव. आशुत्. आशुति. — caus. 1) *verkünden, bekannt machen:* आ नो जनं श्रवयतम् ṚV. 7,62,5. आशावयन्त इव श्लोकमाणवः 1,139,3. यज्ञं देवेष्वाशावयं Āçv. Śr. 1,3,28. आशावयच्च तत्कर्म MBh. 3,15260. Bhāg. P. 5,6,17. 10,70,40 (med.). 73,34. — 2) *anreden, anrufen:* यो ब्रातान्यांशावयति श्लोकेन ṚV. 5,52,9. आ यो रवेण पृथिवीमशुषुवुः 10,94,12. mit dopp. acc. *Jmd Etwas sagen:* आशाव्य रामं दुर्वाच्यम् Bhāg. P. 10,68,29. — 3) speciell vom rituellen *Zurufen*, namentlich *des* Adhvarju *an den* Agnīdh *zum Aussprechen der* श्रौषट्-*Formel* AV. 9,6,49. VS. 19,24. आ स्वधेत्याशावयति TBr. 1,6,9,5. आशावयतीदं देवाः शृण्वन्तिति TS. 2,5,64,3. 3,1,2,2. Śat. Br. 1,5,2,1. fgg. 3,7. 3,7. 3,5,2,24. Āçv. Śr. 1,3,23. 4,12. 4,15,11. 9,7,9. श्रोमित्याशावयति Kāṭh. Up. 1,1,9. श्रोमाशावयेत्याशावयति Taitt. Up. 1,1,8; vgl. P. 8,2,93, Vārtt. आशावित n. *der rituelle Zuruf:* अग्निहोत्रस्याशावितम् TBr. 2,1,5,9. Śat. Br. 11,4,2,5. Kāṭy. Śr. 3,3,11. — 4) *herbeirufen, zu sich heranlocken:* पाशस्य ग्रहणम् Bhaṭṭ. 12,30. — 5) *besprechen:* आशावित (मन्त्र) R. 5,82,10. — Vgl. आशावणा. — desid. आशुश्रूषति (nicht °ते) P. 1,3,59. Vop. 23,57.

— प्रत्या, partic. °शुत n. = प्रत्याशावित TS. 7,3,44,2. Kāṭy. Śr. 3. 2,6. 5,4,33. Z. d. d. m. G. 9,LXII. Vgl. प्रत्याशाव. — caus. *den rituellen Zuruf beantworten* (mit Worten wie अस्तु स्वधा, अस्तु श्रौषट् u. s. w.) TBr. 1,6,9,5. Śat. Br. 1,5,2,7. 3,6,2,25. Āçv. Śr. 1,4,13. partic. प्रत्याशावित n. *die Erwiederung auf den rituellen Zuruf* TBr. 2,1,5,2. Śat. Br. 14,9,2,9. Vgl. प्रत्याशावणा.

— समा caus. mit dopp. acc. *Jmd Etwas mittheilen:* कृष्णरामौ (acc.) समाश्राव्य पुत्रान्कंसविकर्षितान् Bhāg. P. 10,85,28.

— उप 1) *anhören, hören, vernehmen:* गिरः ṚV. 1,82,1. ब्रह्माणि 6, 40,4. 45,22. 52,9. 7,32,1. 4,41,3. यामेदमुपशृण्वन्ति यामं दूरं परागताः 10,97,21. Śat. Br. 4,6,9,17. 9,1,6,9. 11,8,3,5. साधिति स्तुवत उपाशृणोत् Pāṇḍav. Br. 8,2,2. 12,5,11. AV. 12,4,27. 20,127,1. TBr. 3,1,2, 5. Kāṭh. Up. 3,13,8. 4,1,5. उपशृण्वन्तु मे सर्वे मातीभूता वनेचराः R. 3, 31,34. तस्योपविष्टस्य सतो विश्रान्तस्योपशृण्वतः। पुनरेव कथां चक्रुः MBh. 5,6039. 12,2043. R. 2,3,3 (2,3 Gorr.). 20,32. 3,75,26. 5,70,13. 6,107,2. तावुपशृत्य गायनौ R. 1,3,65 (4,25 Schl.). उपाशृणोद्विर्गदितं वचः Bhāg. P. 2,9,6. 4,20,26. Verz. d. Oxf. H. 255,a,19. उपशृत्य वचः MBh. 2,1264. 13,282. 4033. 14,2063. Harīv. 91. R. 3,26,5. 6,98,14. 7, 81,1. Çik. 15,11, v. l. Uttarar. 30,12 (40,3). Bhāg. P. 1,11,3. 15,33. 2, 9,21. 3,19,34. 4,3,5. 9,16,14. 10,28,3. Pāṇḍav. ed. orn. 39,15. यमुपशृत्य सेनाये जनः सर्वो विदीर्यते MBh. 7,329. Bhāg. P. 1,12,27. तमुपशृत्य संरुद्धम् Harīv. 6774. Bhāg. P. 6,5,34. तव प्रज्ञामुपशृत्य नारदात् MBh. 15,462. Verz. d. Oxf. H. 47,b,27. शिष्यादुपशृत्य प्राप्तं रामम् R. 3,18, 12. Vikr. 11,15. भवानीपतेर्मुखकमलात् Hall in der Einl. zu Vāsavad. 24. उपशृण्वान MBh. 4,1494. Bhāg. P. 1,16,14. partic. उपशुत *gehört, vernommen* Harīv. 5305. Bhāg. P. 4,15,23. पुलस्त्यस्य सकाशात् MBh. 3,4032. — 2) उपशुत *zugesagt, versprochen* AK. 3,2,58. — Vgl. उपशुति fg. — desid. med. *zuhören, aufmerken* Ait. Br. 3,2.

— समुप *anhören, hören, vernehmen:* भर्तृभगवत्कथां समुपशृणोति Bhāg. P. 5,19,2. तेषां तु समुपशृत्य सूतमागधबन्दिनाम्। सर्वा बबुधिरे R. Gorr. 2,67,4. ब्राह्मणात्समुपशृत्य MBh. 1,884.

— परि *hören, vernehmen:* पतिं हि परिशृण्वती रामम् *hörend von, Etwas erfahrend über* R. 5,29,35. तामागतां परिशृत्य 6,99,19. — partic. °शुत 1) *gehört, vernommen:* कथा MBh. 1,4685. न च नस्तादृशं दृष्टं नैव चापि परिशुतम् 9,1194. 10,200. 13,3804. सर्वलोक° 14,834. यत्र घोरतमं वृत्तमृषीणां मे परिशुतम् 12,6456. R. Gorr. 2,18,34. उदाराश्चापि वंशे ऽस्मिन्राजानो मे परिशुताः MBh. 1,3784. परिशुतो मया पूर्वं रामेणेव सकाशवान् R. 4,14,13. इति परिशुतम् impers. Harīv. 2010. — 2) *bekannt als, geltend für, gekannt als, genannt:* यज्ञमेधः क्रतुश्रेष्ठः क्षत्रियाणां परिशुतः Harīv. 11110. महावन्दसहस्राणां शतं पञ्च परिशुतम् R. 6,4, 58. मीनाशाकं परिशुता MBh. 13,3956. पूतनेति परिशुता Harīv. 3423. R. 7,35,20. *bekannt* so v. a. *berühmt* MBh. 12,1799 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 3127. Bhāg. P. 4,9,3. — 3) fehlerhaft für प्रतिशुत

(so ed. Bomb.) MBu. 4,1610. — Vgl. परिश्रुत.

— प्र med. 1) *gehört werden, sich hören lassen:* प्र ये दिवो बृहतः पृणिभ्रे RV. 5,87,3. — 2) *bekannt werden:* सवीभिः स प्र पृणवे RV. 4, 41,2. प्राके मके वृत्रखादे सप्तश्रवि 10,48,3. 7,8,4. — Vgl. प्रश्रवस् (hierher oder प्र + श्र°).

— अतिप्र med. *vor Andern bekannt werden* RV. 10,11,7.

— प्रति 1) *antworten; bejahen, zusagen, versprechen* (mit acc. der Sache und dat. [auch gen.] der Person P. 1,4,49. Vop. 5,15) AV. 9,6, 30. स वामेषु प्रति शुधि RV. 1,15,20. Çat. Br. 1,4,4,10. 12. 13. 11,4, 4,3. 14,9,4,1. यद्य देनमृषभो ऽब्रुवाद् सत्यकामऽ इति भगव इति ह प्रतिश्रुश्राव Kaush. Up. 4,5,1. इति पृष्ट्वा प्रतिशृणोति प्रत्याचष्टे वा Çiksh. Ça. 5,1,10. 10,13,17. MBu. 1,714. 3,2175. यो न दद्यात्प्रतिश्रुत्य 13,105. 415. 2763. 3177. Hariv. 13843. R. 1,16,8. 2,98,5. R. Gorr. 2,23,21. 89,1. Ragh. 2,65. 3,67 (°श्रुश्रुवान्). 12,69. 14,29. 15,4. Kathâs. 24, 126. Sadukt. P. 4,17,a. Bhâg. P. 6,7,38. 8,19,3. सत्यम् MBu. 3,2964. R. 2,98,3. 6,81,10. कन्यकाम् Kathâs. 14,79. प्रतिश्रुत *zugesagt, versprochen* H. 1489. प्रतिश्रुते ब्रुवोति *nachdem die Zusage erfolgt ist* Çiksh. Gaut. 1,7. 9. 3,10. यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् Jâtâ. 2,175. राजपुत्र्याः प्रतिश्रुतम् MBu. 4,456. 1610 (nach der Lesart der ed. Bomb.). वाचा 5,211. R. 2, 88,22. R. Gorr. 2,17,19. 3,14,18. 5,47,9. Kumâras. 2,56. Ragh. 13,74. Mâlav. 8,17. Kathâs. 26,137. 119,4. Râga-Tar. 1,242. 4,56. Bhâg. P. 1,7,38. 14,46. 2,7,18. 3,23,51. 8,18,42. कुरु प्रतिश्रुतं सत्यम् 1,7,34. MBu. 5,7082. याज्ञस्य सुता नगरवासिनः। तत्कृते याचितास्माभिः सा च पित्रा प्रतिश्रुता ॥ Kathâs. 61,19. सा च पित्रा दातुं प्रतिश्रुता 123,166. यद्येष्टमशनं दातुं ततो ऽनेन प्रतिश्रुते Râga-Tar. 1,133. n. *Zusage, Versprechen:* सत्य° adj. R. 3,41,18. अनिस्तीर्ण° adj. Bhâg. P. 10,89,43. — 2) प्रतिश्रुत *wiederhallend:* तया तयोर्गदापेषैर्दिशः सर्वाः प्रतिश्रुताः R. 7,32,38. — 3) *hören, vernehmen:* तद्वीरु मया सर्वं प्रतिश्रुतम् (परिश्रुतम्?) R. 6,9,6. — 4) प्रतिश्रुत *genannt* Hariv. 1937 fehlerhaft für पारिश्रुत, wie die neuere Ausgabe liest. — Vgl. प्रतिश्रव fgg. — desid. °शुश्रूषति (nicht med.) P. 1,3,69. Vop. 23,57.

— संप्रति *zusagen, versprechen:* यो ऽस्मभ्यं संप्रतिश्रुत्य कन्यारत्नं विगर्ह्यं नः। कृष्णायादात् Bhâg. P. 10,57,4. — caus. *Jmd veranlassen eine Zusage zu machen, Jmd ein Versprechen abnehmen* R. 2,107,3.

— वि 1) *vernehmen, hören:* कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम् Taitt. Up. 1,4,1. शङ्खशब्दं विशुश्रुवुः Hariv. 13577. Bhâg. P. 1,5,26. 28. °श्रुत्य 4,8,70. pass.: इति च। व्यश्रूयन्त महाघोराः शब्दास्तत्र समन्ततः MBu. 1,1178. 4, 895. Hariv. 13212. R. 1,13,13. Vet. in LA. 21,1. स्वनो विशुश्रुवे R. 2, 103,48. — 2) med. (ved.) und pass. *bekannt —, berühmt werden* RV. 4,8,6. Vâlakh. 6,6. वि शृण्वा ततनेषु TBr. 2,4,2,1. विश्रावि RV. 10, 93,14. विश्रूयस्व स्वकर्मणा MBu. 5,4506. व्यश्रूयत नाम त्रिदिवे ऽपि यस्य Ragh. 18,9. Spr. (II) 1928. — partic. विश्रुत mit श्रेणि u. s. w. componirt gaṇa कृतादि zu P. 2,1,59. 1) *vernommen, gehört* AV. 15,2,1. Spr. (II) 1363. — 2) *bekannt,* = ज्ञात H. an. 3,296. fg. Vîkva im ÇKDr. स्त्रियो हि चपला नित्यं देवानामपि विश्रुतम् Spr. 3303. इत्येव नाम तस्याश्च विश्रुतम् MBu. 1,2367. Verz. d. Oxf. H. 235,a,1. विश्रुतस्त्रिषु लोकेषु क्रोधात्त्वा यद्य एकयात् *bekannt als* Hariv. 13651. Paṇ. 3,2. °गोवर्धनस्त्वर्थी को ऽपि न विश्रुतः Gîv. 1,1. मरुत्वामेति (°मामेति?) विश्रुतो ऽसि Maitrâyaṇ. 2,1. शतदुरिति विश्रुता *bekannt als so v. a. genannt* MBu. 1,6733. 3,1767. 2124. 2442. 2694. 2900. 13,2582. R. 1,31,19. 2,50,15. 110,8. Kathâs. 7,10. 13,54. Paṇ. 2,10. Bhâg. P. 3,21,2. 4,1,1. 9,6. 11. ततो यमत्वं तव देव विश्रुतम् *so v. a. daher wirst du Jama genannt* MBu. 3,16781. *weithin bekannt, berühmt* AK. 3,1,2. H. 1493. H. an. RV. 1,52,11. 62,1. MBu. 3,2442. R. 2,54,33. 71,2. 3,53,32. 5,1,21. Ragh. 8,76. Spr. (II) 756. Vaṇîn. Bṛh. S. 26,5. Bṛh. 20 (18),6. विश्वत्र Kathâs. 20,187. Daçak. 59,10. Bhâg. P. 4,15,25. त्रैलोक्य° 2,31,21. R. 1,1,47. n. *Berühmtheit* Bhâg. P. 1,3,40. — 3) *froh* (कृष्ट, संकृष्ट) H. an. und Vîkva a. a. O. — Vgl. विश्राव, विश्रुत, 1. विश्रुति, लोकविश्रुत (auch MBu. 4,362. 5,5945), विश्व°. — caus. 1) *hören lassen, verkünden, mittheilen:* इत्येवं वाचो व्यश्रावयन् R. 6,70,56. मया विश्रावितं वाक्यं MBu. 3,4971. गुरौ मिथो विश्रावयति 12,2819. नामानि Verz. d. Oxf. H. 195,a,19. नाम विश्राव्य चात्मनः *seinen Namen nennend* MBu. 4,1653. 1785. 1,6287. Hariv. 9242. R. 3,59,5. 5,38,41. 53,1. 6, 76,15. 7,22,49. 23,52. mit acc. der Person: यद्यवीच्च सर्वं विश्रावयञ्जगत् *so v. a. so dass es alle Welt hörte* MBu. 14,2025. Bhâg. P. 10,64,44. mit doppeltem acc. *Jmd Etwas mittheilen:* मम कर्म च देवेन्द्रं (देवेन्द्रे Aṇâ. 10, 69) मातलिर्विस्तरेण तत्। सर्वं विश्रावयामास यथाभूतम् ॥ MBu. 3,12265. fg. — 2) *berühmt machen:* नाम विश्रावितं भुवि Hariv. 4857. R. 7,33,16. — 3) *erschallen machen:* दुन्दुभिम् MBu. 6,1628. ततो ऽन्तरीक्षे वागासीत्सर्वा विश्रावयन् (statt °श्रावयन्ती) दिशः 3,16556.

— अभिवि, partic. °श्रुत *bekannt als, genannt:* घटोत्कचेत्यभिविश्रुतः (nicht voc., wie man wohl anzunehmen pflegt, sondern nom. mit auch sonst im Epos vorkommender Contraction) MBu. 1,1275. 2718. 3219. 3,8760. Hariv. 812. 8982. 14917. R. 1,45,28 (46,28 Gorr.). 2,55,7 (5 Gorr.). 110,35 (119,32 Gorr.). R. Gorr. 1,26,10. Mâlav. P. 46,43. Bhâg. P. 8,1,21. 9,15,12.

— सम् 1) *vernehmen, hören:* संशृणुत Paṇ. 105,19. गदतो निगमं मम Bhâg. P. 6,5,30. समशौषं वचः MBu. 1,1636. संशृणोति न चोक्तानि Bhatt. 5,19. क्रोष्टून्समाशृणोत्क्रूरावसतो ऽशुभदर्शिनः 6,2. पुनः संश्रुत्य संश्रुताम् (वाचम्) Jâtâ. 3,150. 12. याक्रन्दमानो संश्रुत्य MBu. 3,2388. रथघोषम् 13,1978. R. 5,55,8. मन्मुखात् Paṇkat. 4,2,15. यदि वास्ति समिप्रायः संश्रोतुं तव R. 7,35,18. med.: संशृणुष्व Bhatt. 8,16 (thörlich auf P. 1, 3,29, Vârtt. 2 und Vop. 23,14 verwiesen). कितव ए: संशृणुते Spr. 3085. *sich vernehmen* P. 1,3,29, Vârtt. 2. Vop. 23,14. यथैव मिथः संशृण्वीरन् Çiksh. Bu. 9,1. pass.: यदा संश्रूयते *wie man hört, liest* MBu. 12, 7159. त्वं हि संश्रूयसे ऽत्यर्थमसह्यबलविक्रमः *so v. a. du bist, wie man hört,* 6,4794. यस्मिन्संश्रूयते सत्यं ज्योतिर्ब्रह्म सनातनम् *worin, wie man hört, enthalten sein soll* 1,30. संश्रुत *vernommen, gehört* Jâtâ. 3,150. MBu. 5,1263. न दृष्टं न च संश्रुतम् Spr. (II) 5018. Mâlav. P. 100,17. fg. सनत्कुमाराह्वचनमिति वै संश्रुतं मया R. Gorr. 1,8,29. पुराणे संश्रुतो मया *so v. a. gelesen* MBu. 1,2516. — 2) *zusagen, versprechen:* मातामहे समक्षं श्रोष्यद्भ्यश्रुत्वा च। कारिष्य इति संश्रुत्य पूर्वमस्मासु MBu. 3. 2143. तवेति संश्रुत्य गमनं तस्य R. 1,10,22 (23 Gorr.). 23,8. 2,21,41. तपस्विभ्यः सत्रे यज्ञदक्षिणाम् 75,24. R. Gorr. 2,18,48. 3,14,15. fg. 67. 21. Spr. (II) 612. LA. (III) 91,11. संश्रुत *zugesagt, versprochen* AK. 3,2. 58. H. 1489. MBu. 14,1667. R. 3,14,17. 6,8,23. 7,76,12 (mit gen.

der Person). Rāgn. 12, 5. Rāéa-Tar. 3, 19. — Vgl. संश्रव u. s. w. — caus. 1) *hören lassen, verkünden* Jāéṇ. 2, 112. संश्रावगव्यधनि देशिकेन्द्रः Verz. d. Oxf. H. 239, a, 19. कुदितघनिम् Kathās. 72, 50. वार्ताम् R. 3, 63, 28. नाम संश्राव्य चात्मनः *seinen Namen nennend* MBh. 18, 732. R. Gorr. 2, 2, 18. 6, 79, 10. Kathās. 20, 40. संश्राव्यमाणेषु राज्ञा नामसु MBh. 12, 118. वाचो वृत्तः संश्रावयन् 8, 309. पराणि R. 4, 8, 21. भगवते पराणि Bhāg. P. 10, 74, 30. mit acc. der Person (auch neben acc. der Sache) *Etwas zu Jmds Ohren bringen* MBh. 3, 560. Bhāg. P. 1, 3, 42. एतान् शब्दं संश्राव्य Pañéat. 172, 25. संश्रावितततोषो so v. a. *vergelesen* Kathās. 43, 271. — 2) *erschallen machen:* क्षीमूत इव घर्मान्ते सर्वं संश्रावयन्सभाम् MBh. 5, 2285.

— अभिसम् *vernehmen, hören:* एतदभिसंश्रुत्य R. 2, 66, 18.

— प्रतिसम् *zusagen, versprechen:* यज्ञियोः प्रतिसंश्रुत्य MBh. 13, 7806.

2. श्रु = सु. श्रुवत्, श्रुवतु *sich in Bewegung (namentlich der Theile) setzen; auseinandergehen, zerfliessen:* त या गंमन्तु त इह श्रुवन्तु ṚV. 6, 49, 1. 10, 13, 5 (nach dem Comm. zu 1. श्रु). वीळु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्भनेव पत्याम् 1, 127, 2. Auch in späteren Schriften wird diese Wurzel und ihre Ableitungen öfters mit dem palatalen Zischlaut geschrieben. Wir verweisen jedoch diese Stellen unter सु.

— आ dass.: आ वो यामाय पृथिवी चिदश्रोत् *die Erde selbst wich eurem Lauf* ṚV. 1, 39, 6.

— प्र caus. *vorwärts bringen:* प्राश्रावयं तुर्वशं यदुं ṚV. 10, 49, 5. प्राश्रं श्रोणां अवर्षन् 2, 13, 12.

— वि s. 2. विश्रुति.

— सम् *zusammenfliessen:* यद्दस्तावधि संश्रुतम् AV. 1, 3, 6.

श्रुकन्दलि scheinbar Vers. d. B. H. 196, 7, wo aber शुद्धबुद्धश्र क° zu lesen ist; vgl. Verz. d. Oxf. H. 233, b, 3 v. u. u. Hall 16.

श्रुत् (von 1. श्रु) adj. am Anfange eines comp. in श्रुत्कर्ण; am Ende eines comp. in कर्ण°, दीर्घ°, देव°, भद्र°, वन्दन°, सत्य°, सु°, कृवन°. त्रि° Āçv. Çr. 3, 13, 6 (auch in den von uns verglichenen Hdschrr.) fehlerhaft für त्रिश्रुच्; s. VS. 38, 27.

श्रुत (partic. von 1. श्रु) 1) adj. am Ende eines N. pr. P. 6, 2, 148, a) *gehört, vernommen, worüber oder über wen man durch's Ohr eine Kunde hat* AK. 3, 4, 66, 79. H. an. 2, 203. Med. t. 67. Çat. Br. 14, 9, 4, 1. Pāṇ. Gaṇ. 3, 15. Kāṭhaka-Up. 3, 13, 8. Praçnop. 4, 5. ये च दिवि श्रुताः *die, wie man hört, im Himmel sind* Kauç. 133. साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद्विब्रुवन् M. 8, 73. न मया मानुषः क्वचित् । दृष्टपूर्वः श्रुतो वापि तथाविधः ॥ MBh. 3, 2929. 2985. स्यविरेभ्यः 2201. 13, 3570. R. 1, 2, 35. 2, 29, 5. R. Gorr. 1, 46, 6. 3, 55, 8. 4, 8, 53. Spr. 3089. Rāgn. 1, 78. 3, 40. तैलमुग्धो श्रुतस्तावदस्थिमुग्धो निशम्यताम् Kathās. 61, 193. Mān. P. 24, 55. Rāéa-Tar. 6, 65. Pañéat. 36, 19. श्रुतः स्वयंवरो राज्ञा — हितीयो दमयन्त्या वै भविता स इति द्विजात् MBh. 3, 2897. कुतो ऽयमायाति पुरा न मे श्रुतः 4, 200. श्रुतस्ते हि वदतो नारदान्मया 6, 3826. R. 1, 1, 10. चित्रकूटमनुप्राप्तो राज्यभ्रष्टो ऽसि मे श्रुतः 3, 11, 5. तेनास्या राज्ञा रूपसमः श्रुतः । विमलाख्यस्य तनयो राज्ञः Kathās. 56, 82. fg. इति श्रुतम् impers. Kathās. 24, 88. इति नः श्रुतम् MBh. 5, 5975. R. 1, 22, 22. 47, 10. 2, 109, 18. 110, 30. Bhāg. P. 3, 12, 28. यद्या भर्तुर्वर्तितव्यं श्रुतं च मे R. 2, 39, 27. यद्या चैव श्रुतं मया 93, 6. श्रुतपूर्व (श्रुतं v. l.) नारदमुखात् Çiç. 93, 5. पुराणे पन्मया श्रुतम् so v. a. *gelesen* R. 1, 8, 5. एष धर्मः स्त्रिया नित्यो वेदे लोके श्रुतः स्मृतः (d. i. वेदे श्रुतो लोके स्मृतः) Spr. 3001. यद्यपि कायमङ्गुलिमूले तथोरुध (M. 2, 58) इत्यत्र चाङ्गुलिमात्रं श्रुतं तथापि u. s. w. so v. a. *erwähnt, genannt* Kull. zu M. 2, 59. *in der heiligen Lehre enthalten* ṚV. Pāiç. 11, 31. — b) *bekannt als* so v. a. *genannt:* पुण्यश्लोक इति श्रुतः MBh. 3, 2450. R. 1, 5, 3. 8, 7. 9, 28. R. Gorr. 1, 9, 61. 2, 85, 18. Kathās. 13, 165. 42, 17. Bhāg. P. 9, 13, 1. Spr. (II) 3089. *bekannt* so v. a. *berühmt* ṚV. 1, 33, 9. 7, 18, 12. सं धनदा धमि श्रुतः 32, 17. गीर्भिः *in Liedern gefeiert* 8, 2, 27. 33, 10. 4, 32, 21. राधस् 5, 82, 17. पृथतीषु 60, 2. 62, 5. Varuṇa 5, 85, 1. 5. Indra 2, 14, 8. Wagen der Açvin 8, 26, 4. AV. 6, 32, 3. Arr. Bn. 7, 17. Kāṭhaka-Up. 3, 13, 8. कर्मन् MBh. 1, 8043. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Bhagiratha Harīv. 812. fg. VP. 379. des Kṛshṇa 391. Bhāg. P. 10, 61, 11. des Subhāshaṇa 9, 13, 25. des Upagu VP. 390. — 3) f. श्रुता N. pr. einer Tochter des Dirghadaṁshṭra Kathās. 110, 84. — 4) n. a) *das Gehörte, Gelernte, Ueberlieferte; Gelehrsamkeit, Wissen;* = शास्त्र AK. H. an. Med. AV. 6, 4, 1. प्रिया श्रुतस्य भूयास्म 7, 61, 1. 2. 15, 2, 4. Āçv. Gṛh. 3, 9, 1. 4, 7, 2. Çāṅkh. Gṛh. 1, 2. Taitt. Up. 1, 4, 1. M. 2, 149. 4, 18. 8, 273. Jāéṇ. 1, 123. 3, 44. MBh. 2, 345. fg. प्रज्ञाश्रुताभ्याम् 13, 1865. 1868. R. 2, 33, 12. 63, 39. 100, 22. 4, 20, 23. श्रुतस्य पायादगमत्तम् Rāgn. 3, 21. 5, 33. Spr. 3024. 3037. fg. 3040. 3052. 3075. श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा 3088. 3090. शीलवृत्तफलं श्रुतम् (II) 71. 1528. 1343. 2944. 3067. नाभ्यासेन विना श्रुतम् 3570. 3318. 3816. Vaṇīn. Bṛh. S. 79, 12. Bhāg. P. 1, 16, 27. 3, 7, 32. °शीले M. 11, 22. °वृते 7, 135. neben विद्या so v. a. *heiliges Wissen* Spr. 5127. (II) 1819 (besser विद्या श्रुतं). विद्याश्रुतसंपन्न Bhāg. P. 11, 19, 1. श्रुताध्ययनसंपन्न Jāéṇ. 2, 2. °पारग R. Gorr. 1, 35, 3. °प्रकाश Rāgn. 5, 2. °वृत्तोपपन्न M. 9, 244. °वृत्ताढ्य R. Gorr. 1, 79, 18. तपःश्रुतवयोवृद्ध 2, 10, 23. °वृद्ध Rāgn. 18, 45. °सङ्घ Çiç. 194, v. l. °युक्त Vaṇīn. Bṛh. S. 13, 11. श्रुतान्वित Bhatṭ. 1, 1. सदर्थ° adj. Bhāg. P. 1, 5, 40. संभृत° adj. Rāéa-Tar. 3, 132. Bei den Gaina folgendermaassen definirt: ज्ञानावरणक्षयोपशमे सति मतिज्ञानितं स्पष्टं ज्ञानं श्रुतम् Sarvadarçanas. 32, 8. 9. ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलभेदेन 5. Personificirt als Kind Dharma's und der Medhā VP. 35; Mān. P. 50, 26. — b) *das Hören:* छन्दसी लक्षणं श्रुतमात्रेण बुध्यते Çaṅk. 1. श्रुतेन मन्त्रसिद्धिश्च भवेन्न पृथिवीपतेः Spr. 3041. so v. a. *der Unterricht, den man empfängt:* नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन Muṇḍ. Up. 3, 2, 3. घनात्मनि श्रुतं नष्टम् Spr. (II) 3471. साधीनां तु स्थितानां तु शीले सत्ये श्रुते स्थिते R. 2, 39, 21. pl. Spr. (II) 3422. neben पाठ Kathās. 40, 30. — c) *Erinnerung* AV. 1, 1, 2. — Vgl. अ°, कु°, ज्ञन°, दुः°, बहु°, यद्या°, वसु°, वाच्र°, विश्रु°, वेद°, सु°.

श्रुतर्षि adj. *berühmte Ṛshi habend:* Indra ṚV. 10, 47, 2. श्रुतर्षि TBr. 2, 5, 8, 1. — Vgl. श्रुतार्ष und श्रोतऋषि.

श्रुतकक्ष m. N. pr. eines Liedverfassers mit dem patron. Āṅgirasa ṚV. 8, 84, 25. — Vgl. श्रोतकक्ष.

श्रुतकर्मन् 1) adj. *dessen Thaten berühmt sind.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Sahadeva MBh. 1, 3827. VP. 439. Bhāg. P. 9, 22, 29. Arǵuna's MBh. 1, 8039. 8043. Somāpi's VP. 436, N. 62.

श्रुतकीर्ति 1) adj. *dessen Ruf weit bekannt ist.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Arǵuna MBh. 1, 2451. 2763. 3827. VP. 439. Bhāg. P. 9,

22,28. — 3) f. N. pr. einer Tochter Kuçadhvaga's und Gattin Çatrughna's R. 1,73,30. einer Tochter Çûra's, Schwester Vasudeva's und Gattin Dhrshṭaketu's, VP. 437. Bhâg. P. 9,24,29. 37. 10,58,56.

श्रुतकर्वालिन् m. pl. Bez. bestimmter Heiliger (sechs an der Zahl) bei den Gaina H. 34.

श्रुतकीर्ति m. N. pr. eines Sohnes des Senagit VP. 465. des Satjâju Bhâg. P. 9,13,12.

श्रुतत्स् (von श्रुत) adv. 1) *nach Hörensagen:* नादृष्टं दृष्टवो ब्रुवीत नाश्रुतं श्रुतवः *als hätte er es gehört* Gobh. 3,3,16. — 2) *in Bezug auf Gelehrsamkeit:* ब्रह्मा परिचरः श्रुतवः Nir. 1,6.

श्रुतत्व (wie oben) n. *das Ueberliefertsein,* — *Gelehrtwerden* Çiç. zu Bhâm. Âs. Up. S. 68.

श्रुतदेव 1) m. a) *ein Gott in Bezug auf Gelehrsamkeit* Bhâg. P. 3,25, 2. — b) N. pr. eines Sohnes des Krshṇa Bhâg. P. 10,90,34. eines Dieners des Krshṇa 1,14,32. 2,7,45. 5,13,18. 9,21,17. 10,86,13. — 3) f. श्रा N. pr. einer Tochter Çûra's und Schwester Vasudeva's Harîv. 1927. 1930 (1936 liest die neuere Ausg. देवश्रवाः st. श्रुतदेवा). VP. 437. Bhâg. P. 9,24,29. 36. — 4) f. ई *die Göttin der Gelehrsamkeit,* Sarasvatî H. 241.

श्रुतधर 1) adj. *das Gehörte behaltend, ein gutes Gedächtniss habend* Kathâs. 2,63. Gît. 1,4,v.l. Daçak. 140,3. Bhâg. P. 10,87,45. Bâw. und Bez. *des Ohrs* 4,20,13. 25,30. fg. Vgl. एक° unter एकश्रुत. — 2) m. a) Bez. *der Brahmanen im* Dvîpa Çâlmali Bhâg. P. 5,20,11. — b) N. pr. eines Fürsten Kathâs. 74,24. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,a,11. — Vgl. श्रुतिधर.

श्रुतधर्मन् m. N. pr. eines Sohnes des Udâpi Harîv. 1813 nach der Lesart der neueren Ausg. श्रुतश्रवस् die ältere.

श्रुतधारण adj. = श्रुतधर Bhâg. P. 2,7,46. प्रभुधारण ed. Bomb. und der Comm. gegen das Metrum. Burnouf's Auffassung s. u. धारण 1).

श्रुतधि m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 70,31. fgg.

श्रुतधन्वन् m. N. pr. eines Kriegers MBh. 7,7011.

श्रुतप्रकाशिका f. Titel eines Commentars Hall 92.

श्रुतबन्धु m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Gaupâjana oder Laupâjana, Liedverfassers von ṚV. 5,24,3. 10,87. fgg.

श्रुतबोध m. Titel einer dem Kâlidâsa zugeschriebenen Metrik Gild. Bibl. 401. fg. छन्दसो लक्षणं यत्र श्रुतमात्रेण बुध्यते । तदहं संप्रवक्ष्यामि श्रुतबोधमविस्तरम् ॥ Çrut. 1.

श्रुतर् in einer Formel TS. 2,4,9,2 vor यावत् nom. st. श्रुत.

श्रुतरथ m. wohl N. pr. ṚV. 1,122,7. 5,36,6.

श्रुतर्षि m. nach Sây. N. pr. ṚV. 1,112,9. könnte auch श्रुतऋषि sein.

श्रुतर्वन् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Arkṣa ṚV. 8, 63,4. 12. 10,49,5. MBh. 3,8595. fgg. 9,1413. Harîv. 4966. 6584. 6604. 6671. fgg. 6725. — Vgl. मैश्रर्वण.

श्रुतर्षि (श्रुत + ऋषि) m. *ein durch Gelehrsamkeit ausgezeichneter* Ṛshi, wie Suçruta u. s. w. Taitt. 3,7,16. Dhâna zu Nir. 1,20 bei Muir, ST. 2,175. — Vgl. श्रुतऋषि und मैश्रर्ष.

श्रुतवत् (von श्रुत) 1) adj. a) partic. *gehört habend:* इति श्रुतवानस्मि Çiç. 83,8. सर्वे श्रुतवतः सुखिनो वयम् Hit. 44,7. — b) *gelehrt, kenntnissreich* MBh. 4,2268. 13,2189. Harîv. 4875. R. 1,8,14. R. Gorr. 2,21,6. 4,16,21. 5,90,35. Kâm. Nitis. 15,30. Bâlar. 19,1. Spr. (II) 1840. 5002. 5414. Vasiṣṭh. Dhp. S. 101,12. श्रुतशीलवत् (so die v. l.) d. i. श्रुतवत् und शीलवत् M. 3,27. — c) *mit Wissen verbunden, auf Wissen beruhend:* भक्ति Bhâg. P. 3,5,41. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Somâpi VP. 4,23,2.

श्रुतवर्धन m. N. pr. eines Arztes Kathâs. 39,6.

श्रुतवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. Açokâvad. 293.

श्रुतविद् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âtreja (Liedverfassers von ṚV. 5,62) ṚV. 5,44,12.

श्रुतविन्दा f. N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,20,16.

श्रुतविस्मृत adj. *gehört und wieder vergessen:* मन्त्र Kathâs. 20,159.

श्रुतशर्मन् m. N. pr. eines Sohnes des Udâpa Harîv. 1813 (श्रुतधर्मन् und उदापि die ältere Ausg.). des Udâjus VP. 456, N. 62. N. pr. eines Vidjâdhara-Fürsten Kathâs. 44,12. 31. 45,8. fgg.

श्रुतशील m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 133,b,15.

श्रुतश्रवस् 1) m. N. pr. verschiedener Männer MBh. 1,674. 2049 (श्रुतश्रवा वेहा mit der ed. Bomb. zu lesen). 2,319. Harîv. 9558. VP. 456. Bhâg. P. 9,22,9. 44. — 2) f. N. pr. einer Tochter Çûra's und Schwester Vasudeva's Harîv. 6000. VP. 437. Bhâg. P. 9,24,29. 36.

श्रुतश्रवा f. = श्रुतश्रवस् 2) Harîv. 1927. 7709. = Vgl. मैश्रश्रव.

श्रुतश्रवोऽनुज m. *der Planet Saturn* H. ç. 14 (°श्रु die Hdschr.). Hit. 12.

श्रुतश्री m. N. pr. eines Daitja MBh. 5,3685.

श्रुतश्रुवस् MBh. 1,2049 fehlerhaft für श्रुतश्रवस्.

श्रुतसेणी f. *Antherieum tuberosum Roxb.* (इक्षसी) Bhâvapr. im ÇKDr. Vgl. सुतसेणी.

श्रुतसद् adj. *in dem Gehörten (der Lehre) wohnend* TS. 3,2,10,1.

श्रुतसेन 1) adj. oxyt. nach Manthn. *dessen Heer berühmt ist* VS. 18, 35. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,804. eines Daitja 5,3685. eines Bruders des Ganamegaja Çat. Br. 13,5,4,3 (proparox.). MBh. 1,662. VP. 457. 461. Bhâg. P. 9,22,34. eines Sohnes des Ganamegaja Harîv. 1813. des Sahadeva MBh. 1,2452. 2763. 3049. 3045. des Vṛkodara (Bhîmasena) VP. 2te Aufl. 4,159. Bhâg. P. 9,22, 28. des Çatrughna 11,13. des Çambara Harîv. 9232. N. pr. eines Fürsten von Gokarṇa Kathâs. 33,25. — 3) f. श्रा N. pr. einer Gattin Krshṇa's Harîv. 9191.

श्रुतसोम m. N. pr. eines Sohnes des Bhîmasena VP. 459. श्रुतसेन und सुतसोम v. l.

श्रुतादान (श्रुत + आ°) n. = ब्रह्मवाद Hit. 221.

श्रुतानीक (श्रुत + अ°) m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,7011.

श्रुतायस (श्रुत + अस) m. desgl. MBh. 9,1404.

श्रुतार्णव (श्रुत + अर्ण) adj. *bekannte,* — *berühmte Schätze habend* ṚV. 8,82,1.

श्रुतायु oder श्रुतायुस् (श्रुत + आ°) m. N. pr. verschiedener Männer MBh. 1,538. 2700. 7001. 2,128. 5,36. 8,107. Harîv. 1373. 1414. VP. 386, N. 19. 390. 394. Bhâg. P. 9,13,22. 15,1. 2.

मुनागुध (मुन + धा°) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,131.

मुनार्थ (मुन + अर्थ) 1) adj. *der Etwas gehört hat*, mit gen.: मुनार्थो देव गुह्यस्य भवान् so v. a. *du hast das Geheimniss vernommen* Harıv. 6520. — 2) f. धा N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 6, 9.

मुनावती (von मुत) f. N. pr. einer Tochter Bharadvâga's MBh. 9, 2763. 2829.

1. मुँति (von 1. मु) f. P. 3, 3, 95, Vârtt. 1 (करणे). Vop. 26, 182. 1) *das Hören, Vernehmen, Zuhören* H. an. 2, 203. Med. t. 65. Çat. Br. 14, 6, 8, 1. 7, 1, 27. 8, 20. वेदस्य VS. Prât. 8, 41. fg. समये Spr. (II) 5046. धर्म° 5569. इष्टानिष्टदर्शनश्रुतिभिः Sâh. D. 175. Bhâg. P. 5, 18, 11 (pl.). यथाश्रुतिमात्रेण 9, 5, 16. श्रुतिमभिनीय *thuend, als wenn er etwas hörte*, Çiç. 31, 8. श्रयुतिमभिनीय Uttarâs. 54, 4 (69, 11). ब्रूहि यद्यस्ति ते श्रुतिः *sprich, wenn du es gehört hast*, MBh. 13, 823. श्रुतिं वचोऽनुगां (so zu lesen) कृत्वा so v. a. *auf die Rede hinhorchend* Weber, Prâtiçâkh. 111. — 2) *Ohr (Gehör)* AK. 2, 6, 2, 45. 3, 4, 26, 76. Taik. 3, 3, 188. H. 573. H. an. Med. Hall. 2, 361. Vish. 56. Varâh. Bṛh. S. 51, 39. Kathâs. 18, 82. du. Sarvadarçanas. 176, 17. °विषयगुणा Çiç. 1. °गोचरा Weber, Râmây. Up. 336. तेन शब्देन मरुता पूर्णश्रुतिः MBh. 1, 5360. यदि ते श्रुतिमागतः zu *Ohren gekommen* R. 3, 18, 6. श्रुतिं गतम् 66, 8. श्रुतिं चकाराच्युतसत्कथोदये Bhâg. P. 9, 4, 18. पतच्छब्दैः श्रुतिं घ्नत्तः Râga-Tar. 3, 400. श्रुतिं क्लिन्दन् 5, 346. सर्वश्रुतिमनोहर R. 1, 3, 7. श्रोतृश्रुतिसुखावह 4, 5. °कारिन् Ṛt. 2, 14. Mârk. P. 61, 24. °सुखद Varâh. Bṛh. S. 104, 64. °सुख adj. Bhâg. P. 7, 9, 25. °दूषक LA. (III) 89, 30. °कटु Kâvyâd. im ÇKDa. — 3) *Hypotenuse, Diagonale* (wie alle Wörter für *Ohr*) Colebr. Alg. 59. Golâdhj. Tribhâgn. 42. fgg. — 4) *Laut, Klang, Geräusch* ṚV. 8, 85, 3. AV. 11, 7, 20. Kâṭhân. Up. 3, 13, 3. ṚV. Prât. 3, 3. 6, 5. 9. 13, 4. 16. AV. Prât. 3, 71. TS. Prât. 21, 16. 18, Comm. प्रेष्यमाणश्रुतिभिः Bhâg. P. 5, 2, 4. गीत° Kathâs. 12, 31. समान° adj. *gleichlautend* P. 4, 3, 100, Schol. — 5) in der Musik *ein Viertelton* oder *Intervall* (deren 22 angenommen werden) H. an. As. Res. 3, 69. 3, 461 (nach Haughton). Verz. d. Oxf. H. 200, b, 5. 6. 10. °ज्ञानविशारद Jâḍ. 3, 115. Çiç. 1, 10. 11. 1. Pâṇân. 3, 12, 9. Pâṇâṭ. ed. Bomb. IV. V. Notes, S. 14. — 6) *Lautcomplex* (ohne Rücksicht darauf, ob es ein Wort für sich oder nur einen Bestandtheil desselben bildet) TS. Prât. 4, 35 (wir lesen पतीश्रुतिः). 12, 7. 13, 11. — 7) *Kunde, Nachricht, Gerücht, Sage*; = वार्ता Taik. H. an. Med. श्रागता R. 3, 63, 25. श्रुतौ तस्करता स्थिता so v. a. *kennt man nur von Hörensagen* Bâlar. 1, 27. इक्ष्वाकुवंशमदृशं व्याकृतं भरत त्वया। धनरूपं गुणानां च श्रुतेश्च वशगश्च ते R. Gorr. 2, 93, 2. सीता° *Nachrichten von* 4, 61, 31. रामस्याभ्युदयश्रुतिः Bâlar. 12, 3. श्रभीष्टवर° Kathâs. 16, 67. इति श्रुतिः *so lautet die Sage* MBh. 1, 3552. हे चास्य भार्ये गर्भिण्यौ बभूवतुरिति श्रुतिः R. 2, 110, 18. Râga-Tar. 6, 112. 306. pl.: इतिकामाः सर्वेषाञ्च विविधाः श्रुतयो ऽपि च MBh. 1, 60. एष मे कृष्ण संदेशः श्रुतिभिः (= वेदैः Nîlak.) ख्यातिमेष्यति। देवतानां दिविष्ठानां श्रागतश्च so v. a. *durch Weitererzählen* Harıv. 4345. — 8) *Ausspruch*: इतीयं प्रथिता श्रुतिः MBh. 1, 7067. 3244 (इति zu ergänzen). पौर्विकी 14, 524. श्रुतिर्हि श्रूयते पुण्या ब्राह्मणानां यशस्विनाम् R. 2, 29, 17. श्रन्तकाले हि भूतानि मुह्यन्तीति पुरा श्रुतिः। रात्रौ वं कुर्वता लोके प्रत्यक्षा सा श्रुतिः कृता 106, 12 (113, 7 Gorr.). 107, 11. लौकिकी Spr. 3039. लोके हि प्रथिता ननु श्रुतिरियं नार्यो ऽपि गायन्ति याम् (II) 4161. इति सत्यवती श्रुतिः Bhâg. P. 4, 21, 45. 10, 74, 31. Insbes. *ein überlieferter Ausspruch in heiligen Dingen, eine religiöse Vorschrift, ein heiliger Text*; = वेद, श्रामाय AK. 1, 1, 5, 3. 2, 7, 40. 3, 4, 24, 76. H. 249. H. an. Med. Hall. 1, 9. 5, 10. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु स्मृतिः M. 2, 10. 9. श्रुतिः संक्षिप्तास्वरूपा ब्राह्मणस्वरूपा च स्मृतिर्धर्मसंहारका मन्वादिः Comm. zu Çâṅkh. Gṛhj. 2, 7. श्रुतिश्च द्विविधा वैदिकी तान्त्रिकी च Kull. zu M. 2, 1. Âpast. Bh. 7, 9. Nir. 13, 13. Anupada 2, 10 in Ind. St. 1, 44. Weber, Gjot. 111. श्रुत्युक्त im Gegens. zu स्मार्त M. 1, 103. धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः 2, 13. °स्मृत्युदित 4, 155. 9, 96. 12, 109. Bhag. 2, 53. इमां श्रुतिमुदाहरेत् MBh. 13, 3670. Sâṅkhâj. 5 (nach dem Comm. wohl श्रात्मश्रुतौ zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 65, a, 9. 10. 276, b, 4. Râgat. 2, 2. °मुखामुखानां पण्डितानाम् Spr. (II) 5904. व्यसनं श्रुतौ 6147. Varâh. Bṛh. S. 43, 59. Bṛh. 1, 1. निर्दोष° Sarvadarçanas. 45, 20. 48, 20. 49, 4. 103, 6. LA. (III) 90, 22. श्रखिलश्रुतिसार Bhâg. P. 1, 2, 3. 3, 9, 5. परमार्थं च श्रुतेर्न ज्ञानाति Pañkat. 167, 1. °गणः Bhâg. P. 3, 24, 61. °गणाः 14, 4. °दूषणता: Manow. zu VS. 24, 1. °सामर्थ्यात् Kâç. Ça. 1, 6, 26. श्रुत्यानर्थक्यम् 8, 3. श्रुत्यर्थाभावात् 10, 1. °प्रामाण्यतम् M. 2, 3. °चोदनात् 25. 169. °निदर्शनात् 11, 45. °ह्रेष 2, 14. 9, 32. वैदिकी 2, 13. 7, 97. सनातनी 3, 284. माधो LA. (III) 87, 6. सात्वती Bhâg. P. 1, 4, 7. °विक्रायक MBh. 5, 1501. इति श्रुतेः *weil es so in der Schrift heisst* Lâṭj. 4, 10, 7. Kâṭj. Ça. 1, 3, 10 (उपांशुप्रयोगः श्रुतेः). 3, 8, 21. Vedântas. (Allah.) No. 8. Sarvadarçanas. 33, 1. 3. दीक्षितस्याग्निहोत्रप्रतिषेधश्रुतेः *weil vorgeschrieben ist, — gelehrt wird* Kâṭj. Ça. 7, 1, 34. तूष्णीं° 4, 10, 4. वक्तुः° Lâṭj. 4, 10, 18. सर्वकर्मफलोपसंहार° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 15. तत्र प्राप्तविवेकस्यानावृत्तिश्रुतिः Kap. 1, 84. pl.: तथा च श्रुतयो बह्व्यो निगीता निगमेष्वपि M. 9, 19. श्रद्धां श्रुतिषु संदधे LA. (III) 91, 3. विविधास्तं श्रुतीर्वेत्थ वेदाङ्गानि च सर्वशः MBh. 1, 4150. विविधाश्चोपनिषदीः श्रुतीः M. 6, 29. श्रथर्वाङ्गिरसीः 11, 33. श्रुतयो विभिन्नाः Spr. (II) 2505. इत्येवमादिश्रुतिभ्यः Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 147. Sarvadarçanas. 37, 2. 39, 9. 65, 18. 72, 5. श्रुतयः so v. a. वेदोक्तानि कर्माणि (nach dem Comm.) Bhâg. P. 5, 2, 21. *der heilige Text* personificirt Harıv. 14036. — 9) *Benennung, Titel*: विश्रुत्यनन्यविषयो लोकपाल इति श्रुतिम् Kâvjâd. 2, 231. — 10) *Gelehrsamkeit* (wohl nur fehlerhaft für श्रुत): °मरुत् (v. l. श्रुत°) Çiç. 194. °कुलजातिख्याताः (v. l. श्रुत°) Varâh. Bṛh. S. 32, 18. — 11) angeblich Synonym von बुद्धि Tattvas. 8. — 12) *das Nakshatra Çravaṇâ* Çabdar. im ÇKDa. — 13) N. pr. einer Tochter Atri's und Gattin Kardama's VP. 83, N. 4. — Vgl. श्र° (श्रश्रुतोपदे या *in Vergessenheit gerathen* MBh. 12, 321), चतुः°, जन°, बहु°, मन्त्र°, मरा°, यथा°, लोक°, वेद° (in der 2ten Bed. auch MBh. 1, 6158. 3, 1760. 12, 12969. °श्रुतौ 2, 1574), सूर्प°, श्रोत.

2. श्रुति (wie eben) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1, 232. konnte auch श्र° oder श्रा° heissen.

3. मुँति (von 2. श्रु) f. *Lauf, Bahn*: द्रोणे न वाजं श्रुत्या श्रपो वधि ṚV. 2, 2, 7. इन्द्रः किल श्रुत्या श्रस्य (सूर्यस्य) वेद 10, 111, 3. als v. l. neben मुति z. B. Âpast. Bh. 1, 2.

4. श्रुति Hitopad. 1, 60 fehlerhaft für त्रुटि.

श्रुतिकर m. 1) = प्रायश्चित्त, पापशोधन Suhṛn. — 2) *Schlange* Taik. 3, 3, 194. Med. t. 66. Hir. 227. — 3) = प्रासङ्गिक (?) Med. — Vgl. श्रुतिकण्ठ.

श्रुतिकण्ठ m. 1) *Sühne.* — 2) *Schlange.* — 3) = प्राशस्त्योद्? H. an. 4,66. — Vgl. श्रुतिकट.

श्रुतिकीर्ति f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 329,a, No. 780. °कार ebend.

श्रुतिगीर्विका f. = धर्मसंहिता Çabdar. im ÇKDa.

श्रुतितत्पर adj. = सकर्ण Gaṭṭon. im ÇKDa.

श्रुतितस् (von 1. श्रुति) adv. *auf dem Wege der geoffenbarten Lehre* (Gegens. तर्कतस्) Nir. 13,12.

श्रुतिता nom. abstr. zu 1. श्रुति 6) Verz. d. Oxf. H. 200,b,2. उदात्त° ṚV. Paiṅg. 3,11 nom. abstr. von उदात्तश्रुति adj. (zu 1. श्रुति 4).

श्रुतिधर adj. vom (blossen) *Hören behaltend, ein gutes Gedächtniss habend* Harîv. 4909. 12326. Suçr. 2,85,18. Gîr. 1,4 (v. l. श्रुतधर). Paṅkar. 3,14,7. Ginçpa-P. 191 im ÇKDa. — Vgl. ध° und श्रुतधर.

श्रुतिन् adj. = श्रुतमनेन gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88.

श्रुतिपथ m. 1) *Bereich des Gehörs:* वेदो मे कृत्स्नः श्रुतिपथं गतः zu *Ohren gekommen* MBh. 1,2372. R. 3,4,2. Rîga-Tar. 1,109. °गत Milav. 59. °प्राप्त Rîga-Tar. 1,372. °पथायात Kathâs. 121,159. — 2) *Ueberlieferung:* पौराणिकैः °पथैरनुमानयेत्तम् Suçr. 2,323,6.

श्रुतिमत् (von 1. श्रुति) adj. 1) *Ohren habend* Çvetâçv. Up. 3,16 = Bhag. 13,13 = MBh. 13,1014 = Tattvas. 23. — 2) (wohl nur fehlerhaft) = श्रुतवत् *kenntnissreich, gelehrt* R. 1,1,10 (धृतिमत् ed. Bomb.). 2,105,24 (श्रुतवत् ed. Bomb.). Spr. (II) 5414, v. l. (für श्रुतवत्). Vaṇîs. Bṛh. S. 101,12, v. l. (für श्रुतवत्). Kathâs. 6,137. Hariv. Anth. 485, Çl. 3.

श्रुतिमय (wie eben) adj. *der heiligen Ueberlieferung entsprechend:* गुणाः MBh. 12,4473.

श्रुतिमार्ग m. *der Weg der Ohren, eine Vermittelung durch die Ohren:* °मार्गं गतः *zu Ohren gekommen* Spr. (II) 1060. इति श्रवणवाक्येन समं मदनसायकाः। प्रविश्य श्रुतिमार्गेण राज्ञस्तस्यालगन्हृदि so v. a. *mittels des Gehörs, in Folge von Erzählungen* Kathâs. 31,123. °प्रविष्ट 31,2. 33,215.

श्रुतिमुख adj. *die heilige Ueberlieferung zum Munde habend* Paṅkar. 4,8,103.

श्रुतिमूल n. *Ohrwurzel* Wundu, Prastâvîn. 75. Gîr. 1,41.

श्रुतिवर्जित adj. *taub* Gaṭṭon. im ÇKDa.

श्रुतिविवर n. = कर्णविवर *Gehörgang* Vaṇîs. Bṛh. S. 69,10.

श्रुतिवेध m. *Durchbohrung des Ohrläppchens* Gîtopaniṣattva im ÇKDa. — Vgl. कर्णवेध.

श्रुतिशिरस् n. *eine Hauptstelle aus der heiligen Ueberlieferung* Sarvadarçanas. 46,11. Spr. (II) 6673. Hariv. Anth. 485, Çl. 3.

श्रुतिशीलवत् M. 3,27 schlechte Lesart für श्रुत°; s. u. शीलवत् und श्रुतवत्.

श्रुतिसागर m. *ein Meer der heiligen Ueberlieferung* so v. a. *der Inbegriff alles heiligen Wissens:* Vishṇu Paṅkar. 4,3,55.

श्रुतिस्फोटा f. *eine best. Pflanze,* = कर्णस्फोटा Râgân. im ÇKDa.

श्रुतीक am Ende eines adj. comp. von 1. श्रुति in der Bed. 8): सवेदः सश्रुतीकाश्च कृताः MBh. 12,12969.

श्रुतकर्ण adj. *lauschende Ohren habend* ṚV. 1,44,13. 45,7. 7,32,5. 8, 45,17. 10,140,6. AV. 19,3,4.

श्रुत्य (von 1. श्रु) 1) adj. *hörenswerth, rühmlich:* रयि ṚV. 7,8,9. 2, 30,11. 1,36,12. 117,23. 6,72,5. वीर् 10,80,1. Indra 2,46,14. पराव-ति श्रुत्यं नाम विन्दत् 5,30,5. वचस् 1,165,11. 6,36,5. — 2) n. *eine merkwürdige —, rühmliche That:* प्रत्ना त इन्द्र श्रुत्यानु येमुः ṚV. 6,21,6. एता त्या ते श्रुत्यानि केवला 10,138,6. — Vgl. मत्त°.

श्रुत्यनुप्रास m. Bez. *einer best. Alliteration: das Aufeinanderfolgen von consonantischen Lauten, die an derselben Stelle des Mundes hervorgebracht werden* (z. B. ङ und ग; त, थ, द, ध und न) Sâh. D. 636. Comm. zu Kîvjâ. 1,56.

श्रुधीयत् adj. etwa *gehorsam, willig* ṚV. 6,67,3.

श्रुध्य n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,241 (श्रुद्ध). Paṅkav. Br. 3,1,22. 15,5,22. Liṭ. 7,3,3. 5.

श्रुमत् m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,116. — Vgl. श्रोमत, श्रौमत, श्रौमत्य.

श्रुष् Nebenform von 1. श्रु. श्रोषमाण *willfährig, vertrauend* ṚV. 3,8, 10. 7,7,6. 51,1. Die Formen श्रोषन्, श्रोषतु (s. u. 1. श्रु) könnten auch hierher gezogen werden. Vgl. açrusti, çraosha im Zend, caoyxo, caoyxa, cashmirth, ahd. hlosên u. s. w.

श्रुष्टि (von श्रुष्) 1) f. *Willfährigkeit, Bereitwilligkeit; Vertrauen:* वृणीते श्रुष्टिं राजेव ṚV. 4,67,1. श्रुष्टिं कर् *willfahren, folgen* 69,7. 2, 14,9. 7,18,6. 10. विश्वस्य श्रुष्टये 2,38,2. 1,166,12. 2,13,9. 3,50,2. 18, 101,3. यद् स्या तं इन्द्र श्रुष्टिरस्ति यया बभ्रूं ऋतियन्त्यूती 1,178,1. श्रुष्टी नवस्य मे स्तोमस्य नि रातिषे दक् *willfährig gegen* 8,23,14. या रोहस्त्रेमाममृतस्य श्रुष्टिम् (parox. wie auch einige Mss. in 3,17,2 = ṚV. 18,101,3 betonen) *fasse Vertrauen zum Nichtsterben* AV. 8,2,1. instr. *willfährig, gern; ohne Zögern, rasch;* = क्षिप्रम् Naigh. 4,3. Nir. 6,18. श्रुष्टी देवं सपर्यत ṚV. 3,9,8. 2,9,4. 14,8. श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः 6,68,1. 7,39,4. श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः 2,3,9. 4,36,4. 5,13,1. 8,23,18. सश्चिना श्रुष्टा गतम् 76,6. 9,106,1. 10,20,6. — 2) adj. *willig, gehorsam:* श्रुष्टिमा वक्ष् दुरोणो धेनुम् ṚV. 2,32,3. यो श्रुष्टिर्विद्ध्याऽ समेतु 7,40,1. — 3) m. N. pr. eines Aṅgirasa Ind. St. 3,201,b,2. fehlerhaft für श्रुष्टि. — Vgl. एक°, श्रौष्ट fg., श्रौष्टीय.

श्रौष्टिगु m. N. pr. eines Mannes (*der willige Stiere hat*) Vaṃç. 3,1. mit dem patron. Kâṇva Ind. St. 3,241,b. — Vgl. श्रौष्टीगव.

श्रुष्टिमत् (von श्रुष्टि) adj. *willfährig, dienstfertig:* यधा ṚV. 1,93,12. राजन् 5,54,14.

श्रुष्टीवन् (wie eben) adj. (f. °वरी) *willfährig, bereitwillig, gehorsam* Nir. 6,22. श्रुष्टीवानो दाशुषे देवाः ṚV. 1,45,2. 119,2. 127,9. Agni 3, 27,2. ein Bote 7,73,7. 10,30,11. 106,4.

श्रू adj. von 1. श्रु in देव° (auch TS. 1,2,8,1).

श्रूयमाण partic. s. u. 1. श्रु; davon °त्व n. *das Gehörtwerden* Vaṇîs. (Allah.) No. 104.

श्रेढी und श्रेढी f. in der Arithm. *series, Kette* Colebr. Alg. 51. fg. Paramâdîçvara zu Âryabh. 1,1. 2,19.

श्रेणि (von 1. श्रि) Uṇâdis. 4,51. Nir. 4,12. m. (dieses nicht zu belegen) und f. (Trik. 3,3,16) und श्रेणी f. 1) *eine geschlossene Reihe; Gruppe, Schaar* AK. 2,4,4,4. Trik. 3,3,139. H. 1423. an. 2,155. Med. p. 31. Halâj. 4,36. Viçva beim Schol. zu Vâsavad. 10. सक्थ्नस्याये श्रेणी नयन्ति ṚV. 1,126,4. रथानाम् 4,38,6. वयो न ये श्रेणीः पप्तुः 5,59,7. 10,61,20.

ऽनुशासन M. 2, 139. 223. धर्मार्थावुच्यते श्रेयः कामार्थौ धर्म एव च। अर्थ एवेह वा श्रेयस्त्रिवर्ग इति तु स्थितिः ॥ 224. प्रेत्य श्रेयोऽभिकाङ्क्षिणः 4, 91. परं श्रेयो ऽधिगच्छति 258. श्रेयो वै ते भविष्यति MBh. 3, 1794. 2820. R. 4, 18, 11. 5, 1, 11. Mlkr. P. 128, 3. घात्मानं श्रेयसा योक्ष्ये MBh. 3, 2489. 2639. R. 3, 17, 26. MBh. 3, 2614. तत्र ते ऽहं श्रेयो धास्यामि पत्यरम् 2618. स ते श्रेयो विधास्यति R. 3, 8, 18. Kathās. 32, 37. R. 2, 34, 31. श्रेयो नः क्रियतामिदम् 4, 33, 23. Raghu. 1, 79. Çik. 172 (Gegens. दुःख). 91, 16. यावशक्ति श्रेयसे यतिष्ये 113, 3. Spr. 3254. (II) 1450. 2839. न श्रेयो विन्दते मर्त्य 4134 4783. य इच्छेच्छ्रेय घात्मनः 4904. Bhâg. P. 4, 8, 41. मृतैः संप्राप्यते श्रेयः (v. l. für स्वर्गः) Spr. (II) 4949. श्रेयसो वृद्धौ Vaṛâh. Bṛh. S. 49, 6. श्रेयोलवाय Râja-Tar. 3, 25. Bhâg. P. 1, 1, 3. 4, 28. 2, 1, 12. Pañkat. 182, 1. plur. Suçr. 1, 122, 21. Çik. 99, 21. Vikr. 68, 6. 7. Spr. (II) 3470. 4232. 4310. Kir. 5, 49. Vaṛâh. Bṛh. S. 68, 93. Bhâg. P. 1, 2, 23. 4, 24, 75. 31, 12. fg. 7, 14, 39. Die Lexicographen geben dem Neutrum folgende Bedeutungen: मङ्गल u. s. w. H. 86. H. an. Halâj. 1, 122. धर्म AK. 1, 1, 4, 2. H. 1379. H. an. Med. Halâj. 1, 125. पुण्य Med. मोक्ष, मुक्ति AK. 1, 1, 4, 15. H. 74. Med.; vgl. Colebr. Misc. Ess. 1, 401. — c) N. eines Sâman Lâṭj. 7, 7, 17. Ind. St. 3, 226, 5. — Vgl. घ°, घर्क°, बहु°श्रेयसी.

श्रेयःकेत AV. Paiṭ. 2, 62. adj. *dessen Absehen auf Vorrang gerichtet ist* AV. 5, 20, 10.

श्रेयस n. Nebenform von श्रेयस् (श्रेयस्): यथा वदसि देवेश तथा नः श्रेयसं (श्रेयसे die neuere Ausg.) परम् *das grösste Heil* Harîv. 14990. Am Ende eines comp. in घर्क°, निः°, सु°.

श्रेयस्क (von श्रेयस्) in घ° (s. Nachträge).

श्रैयस्कर adj. (f. ई) 1) *besser* —, *ansehnlicher machend* VS. 10, 28. — 2) *Glück* —, *Heil bringend*, *heilsam* M. 7, 88. MBh. 7, 1207. 13, 6480. R. 7, 3, 7. Spr. (II) 4108. गुण Kârâka 3, 8. Pañkat. 73, 19. Sarvadarçanas. 23, 11. compar. °तर M. 12, 84. 86.

श्रेयस्कारभाष्य n. Titel eines *Commentars* Hall 207.

श्रेयस्काम adj. (f. घा) *nach Glück verlangend, dem es um seine Wohlfahrt zu thun ist* Spr. (II) 1308. Bhâg. P. 3, 14, 18. 6, 18, 34. 7, 9, 54. 14, 33. 8, 4, 15. 12, 6. davon nom. abstr. °ता f. *das Verlangen Jmds Glück zu schaffen — Jmd glücklich zu machen* MBh. 5, 4755.

श्रेयस्कृत् adj. = श्रेयस्कर 2) Bhâg. P. 1, 13, 18.

श्रेयस्त्व (von श्रेयस्) n. *eine höhere Stellung* M. 10, 66.

श्रेयांस (Nebenform von श्रेयस्) m. N. pr. des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 29 (vgl. Verz. d. Oxf. H. 186, b, 12). श्रेयांश fehlerhafte Lesart.

श्रेयामय (von श्रेयस्) adj. *vorzüglich* Çârîr. Sârîr. 1, 1, 5.

श्रैष्ठ (superl. zu श्रोमत्; vgl. श्रेयस्) P. 5, 3, 60. Vop. 7, 57. 1) adj. *der schönste*: ज्योतिषाम् ṚV. 1, 113, 1. संदृश् 4, 1, 6. पेशस् 36, 7. मानवः 7, 77, 3. रूप 10, 112, 3. AV. 5, 25, 10. पुरी R. 1, 6, 5. 2, 50, 2. — b) *der vorzüglichste, beste, höchste, erste* AK. 3, 2, 8. H. 1439. an. 2, 109. Med. fh. 9. Halâj. 2, 116. 4, 4. 5, 8. 14. 30. 67. mit gen. oder loc. Vop. 5, 34. देवानाम् ṚV. 1, 43, 3. श्रेष्ठो ज्ञातस्य रुद्र श्रियासि 2, 33, 3. रयि 7, 1. द्रविण 21, 6. 3, 21, 2. 3. सव 1, 164, 26. सुमति 5, 25, 3. 82, 1. 6, 26, 3. भाग 10, 35, 7. VS. 2, 26. °यज्ञ Âit. Br. 4, 25. °सामन् Pañkav. Br. 21, 2, 3. AV. 4, 25, 7. 18, 4, 86. श्रेष्ठज्ञानाम् 6, 21, 2. 44, 2. TS. 1, 5, 10, 2. 3, 1, 9, 2. इन्द्रः श्रेष्ठो देवतानाम् TBr. 2, 3, 4, 3. घर्घस्य Çat. Br. 4, 2, 4, 20. 8, 3, 1, 3. 9, 2, 3, 3. लोकानाम् 14, 4, 3, 24. स्वानाम् Âit. Br. 1, 5. पूष्णस्य Âçv. Gṛhy. 4, 8, 3. 1, 15, 3. Kauç. 90. भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः, बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः M. 1, 96. 100. 6, 69. 9, 207. MBh. 3, 2075. 2493. R. 1, 51, 28. 65, 22. 2, 53, 1. R. Gorr. 2, 69, 3. 90, 23. 109, 33. Spr. (II) 1828. 2653. Vaṛâh. Bṛh. S. 4, 21. 25. 17, 21. 24, 24. मन्द, मध्यम, श्रेष्ठ 26, 12. 53, 36. °गुणैर्युक्तः R. 1, 1, 30. द्रव्यं श्रेष्ठं स्मृतम् *gilt für die Hauptsache* Suçr. 1, 150, 8. श्रेष्ठ, मध्यम, घधम Schol. zu Çik. 9, 6. in comp. mit dem im gen. gedachten plur.: पाण्डव° MBh. 1, 5921. नर° 3, 1885. 2179. 2415. 2428. 2435. 2480. 2716. 5, 7014. 7122. 7295. R. 4, 17, 2. Brahma-P. in LA. (III) 48, 12. 50, 11. नरवर° R. 2, 61, 2. धनुः° MBh. 3, 774. रथ° 13, 2805. *ebenso stehend in Bezug auf* (loc.): धनुषि MBh. 3, 535. in comp. mit einer im gen. und loc. gedachten Ergänzung: ज्ञातिकुलधनश्रेणीश्रेष्ठाः Vaṛâh. Bṛh. S. 8, 10. in comp. nach einem nom. act. (das seinen Ton behält) P. 6, 2, 25. गमन° *zum Gehen am besten* Schol. am Ende eines adj. comp.: गन्धर्वास्तुम्बुरुश्रेष्ठाः MBh. 3, 1783. — c) = श्रेयस् *besser, vorzüglicher, angesehener*: येन केनचिदङ्गेन किंस्याच्छ्रेष्ठमस्य यत् M. 8, 279. श्रेष्ठेभ्यः, सदृशेभ्यः, घवरेभ्यः Spr. (II) 6384. mit einem abl.: यत्तेभ्यो यन्धिनः श्रेष्ठाः 113. Jâtâ. 1, 199. Bhâg. P. 3, 20, 39. इयत्त्रे च पितुः श्रेष्ठो बभूव भरतावरः R. 2, 1, 14. mit einem gen.: दैवमानुषयोः किं स्वित्कर्मणोः श्रेष्ठमित्युत (so ed. Bomb.) MBh. 13, 297. जीवाः श्रेष्ठा जीवानाम् Bhâg. P. 3, 19, 28. 30. — d) *am meisten Glück* —, — *Heil bringend* Vaṛâh. Bṛh. S. 86, 17. 18. श्रेष्ठं वर्षं स्याद्भुगशस्ति 88, 22. — 2) m. a) *ein Fürst.* — b) *ein Brahmane* Çârdar. im ÇKDr. — c) ein N. Kubera's (*der reichste*) H. an. Med. Çârdar. im ÇKDr. — d) N. pr. eines Fürsten Wassiljew 35. Târân. 3. 267. — 3) f. घा *Hibiscus mutabilis* und = मेदा *eine dem Ingwer ähnliche Wurzel* Râjân. im ÇKDr. — 4) n. *Kuhmilch* Trik. 2, 9, 6. — Vgl. जीव°, फल°, मनु°, मल्लि°, मृग°, यया° (adv.), यम°, रोग°, वर्ण° (auch Spr. (II) 2457, v. l.), वसु°, व्रीहि°, श्येन.

श्रेष्ठकाष्ठ m. *Tectona grandis* (शाकवृक्ष) Râjân. im ÇKDr.

श्रैष्ठतम (superl. von श्रेष्ठ) 1) adj. P. 5, 3, 55, Vartt. 8, Schol. *der allerschönste, allerbeste u. s. w.* ṚV. 1, 113, 12. नर्य 5, 61, 1. VS. 1, 1. AV. 6, 138, 1. सर्वेषां भूतानाम् Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 94. भार्या श्रेष्ठतमः सखा Spr. (II) 623. धनुर्धराः श्रेष्ठतमाः पृथिव्याम् MBh. 3, 15667. Suçr. 1, 3, 11. 158, 8. बल Spr. 5352. श्रेष्ठतमो गुणः Harîv. 8823. noch durch सर्व verstärkt: सर्वेषं मानुषे लोके सर्वश्रेष्ठतमा तव MBh. 2, 478. Vgl. श्रेष्ठतर. — 2) f. घा *Basilienkraut* (तुलसी) Ausw. 67.

श्रेष्ठतर (compar. von श्रेष्ठ) adj. *besser, vorzüglicher* MBh. 1, 186. mit abl. 71. 8, 1516.

श्रेष्ठतस् (von श्रेष्ठ) adv. *in der Weise, dass der (die, das) Beste vorangeht*, Lâṭj. 8, 11, 20.

श्रेष्ठता (wie oben) f. *Vorrang, erste Stelle, Vortrefflichkeit* Âit. Br. 2, 15. 3, 12. 21. 4, 22. 28. उत्तमानुत्तमान्गच्छन्हीनांश्च वर्जयन् । ब्राह्मणः श्रेष्ठतामेति प्रत्यवायेन शूद्रताम् ॥ M. 4, 245. Kir. Nîtis. 14, 67. सर्वभूतेषु MBh. 13, 1894. बुद्धिर्क्षीयते, मध्यतां याति, श्रेष्ठतां याति Spr. (II) 4472.

श्रेष्ठत्व (wie oben) n. *Vortrefflichkeit* Suçr. 1, 11, 21.

श्रेष्ठपाल m. N. pr. eines Fürsten Târân. 2. 234.

श्रेष्ठभाज् adj. *der den besten Theil davongetragen hat* so v. a. das einfache श्रेष्ठ *der beste, vorzüglichste:* क्षित्तासु: क एषां श्रेष्ठभागिति MBu. 8,1890.

श्रैष्ठवर्चस् adj. *der machtvollste, herrlichste:* Könige RV. 5,65,2. 8,31,10.

श्रेष्ठवाच् adj. *überaus beredt* R. 2,70,1.

श्रेष्ठशाक n. *ein best. vortreffliches Gemüse;* s. वरपोत.

श्रैष्ठशोचिस् adj. *am schönsten, — vorzüglich glänzend* RV. 8,19,1.

श्रेष्ठसेन m. N. pr. eines Fürsten Rigá-Tar. 3,97.

श्रेष्ठान्न n. = वृक्षान्न n. *die Frucht der Spondias mangifera* Rigán. im ÇKDa.

श्रेष्ठाश्रम m. *das beste Lebensstadium* (आश्रम) d. i. *das des Haushalters* ÇKDa. und Wilson (*the householder*).

श्रेष्ठिक (von श्रेष्ठिन्) s. भूरि°.

श्रेष्ठिन् (von श्रेष्ठ) m. 1) *ein Mann von Ansehen* Ait. Br. 3,30. Çāṅkh. Br. 28,6. Kauṣ. Up. 4,20. — 2) *das Haupt einer Innung, — Zunft, Gildemeister* Gaṇiṇ. im ÇKDa. श्रेष्ठिपूर्वास्तु श्रेणय: Harıv. 10985. श्रेष्ठिवत्त्व Mṛicch. 61,17. Vaṛāh. Bṛh. S. 29,10. 33,25. 86,34. Sin. D. 173, 3. Spr. (II) 2206. 3700. Pañcat. 3,20. 100,1 (श्रेष्ठि° zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 155,a,17. Vet. in LA. (III) 17,10. 18,18. Cun. ebend. 32,11. 37,2. Hiouen-thsang 1,474. Z. d. d. m. G. 14,569,3. केशव° als N. pr. 573,3. श्रेष्ठिन् (श्रेष्ठी die Hdschr.) als Gātaka Çākjamuni's Vaijn beim Schol. zu H. 233. Vjutp. 8 (श्रेष्ठीजातक). 101. — Vgl. कुल°.

श्रेष्मन् (von 1. श्रिष्) s. श्र°.

श्रैष्ठ्य (von श्रेष्ठ) n. *Vorrang, die erste Stelle:* मरुतानाम् AV. 1,9,3. 10,6,31. Ait. Br. 4,25. 7,18. TS. 2,4,8,2. 5,6,2,3. TBr. 2,8,9,1. भूतानां श्रैष्ठ्यं पर्येत् Çat. Br. 13,7,8,1. 14,8,14,3. Kauç. 89. °काम Āçv. Çr. 10,3,22. Kaṭhop. Up. 5,2,6. Kauṣ. Up. 2,6. 4,15. 20. M. 1,100. 12,38. Jiān. 1,264. MBu. 2,596. 5,821. Spr. (II) 1201. Bhāg. P. 10,74,19. Çaṅk. zu Kaṭhop. Up. 8. 10. प्रकृति° M. 10,3. वर्ण° MBu. 7,156. कारण° (so ed. Bomb.) 12,11039. ज्ञाति° *unter den Blutsverwandten* Jiān. 1,262. MBu. 13,5037. स्वजन° Mān. P. 33,10.

श्रैष्ठ्यतम (!) adj. = श्रेष्ठतम. स्वानाम् Çāṅkh. Gṛ. 1,19.

श्रोण्, श्रौणति Dhātup. 13,14 (संघाते). Nir. 4,3 (गतिचलाकर्मन्). Comm. zu TBr. 1,215 (संघवाचिन्). Aus श्रोण und श्रोणि geschlossen. Vgl. श्रोण्.

1. श्रोण Uṇādis. zu Uṇādis. 3,6. 1) adj. = श्रवण *lahm, claudus* AK. 2,6,2,45. H. 452. Hālā. 2,433. RV. 1,112,8. गो 161,10. 2,13,12. प्रति श्रोण: स्यात् 15,7. 4,30,19. नि: श्रोणो भूत् 8,68,2. 10,25,11. — 2) f. या N. eines Nakshatra, = श्रवणा TS. 4,4,10,2. Kāṭh. 39,13. एतच्छ्रौणतच्छ्रोणा TBr. 1,5,9,9. 3,1,9,5.6 Bhāg. P. 8,18,5. श्रोण des Metrums wegen 7,14,28. — Vgl. श्रोण.

2. श्रोण 1) adj. *dressed, cooked, matured.* — 2) f. या *rice-gruel* Wilson nach Çabdārthak. — Fehlerhaft für श्राण, श्राणा.

श्रोणकोटिकर्ण m. N. pr. eines Mannes Schiefner, Lebensb. 299 (69). Burnouf in Lot. de la b. l. 351 (श्रोण: कोटिकर्ण:).

श्रोणकोटिविंश m. desgl. Schiefner, Lebensb. 283 (53).

श्रोणापरान्त N. pr. einer Stadt Burnouf, Intr. 253. fg. °क m. pl. *die Bewohner dieser Stadt* 252. fgg.

श्रोणि Uṇādis. 4,51. m. (nicht zu belegen) und f. Sindh. K. 247,b,1. und श्रोणी (später) f. 1) *Hinterbacke, Keule, Hüfte* Nir. 4,3. AK. 2,6, 2,25. 3,4,84,240. H. 607. Hālā. 2,337. gew. du. RV. 10,163,4. AV. 9, 4,18. 7,9. 8,21. 10,2,3. 9,21. VS. 20,8. TS. 5,7,45,1. 7,3,10,2. Çat. Br. 3,3,3,18. 4,5,2,3. Ait. Br. 2,6. 7,1. Kāṭy. Çr. 6,4,2. 7,6. Sūṇ. 1, 77,12. पुरुषेण:प्रमाणाविस्तीर्णा स्त्रीश्रोणि: 126,10. 321,6. श्रोणिरेमे मम श्रोणिम् MBu. 1,5966. Spr. (II) 4438. Vaṛāh. Bṛh. S. 56,7. 70,2. 80,17. °युग्मं च सुन्दरम् Pañcat. 1,14,37. Dhūrtas. 66,9. Bhāg. P. 3,23, 32. 5,23,6. °देश 2,1,35. विशाला Harıv. 7894. °भारादलसगमना Mṛicch. 80. Prab. 40,3. °तटालसगति Bhāg. P. 8,9,17. °बिम्ब (angeblich = कटिसूत्र Dhanañgāja im ÇKDa.) Vīra. 100. Mālav. 36. Spr. (II) 6173. पीनश्रोणिपयोधरा MBu. 3,2393. Brahma-P. in LA. (III) 30,3. विपुलश्रोणीभरा Spr. (II) 1633. श्याम° Bhāg. P. 4,24,51. am Ende eines adj. comp. (f. ई): काञ्चीगुणोल्लसच्छ्रोणि 3,28,16. वृक्षच्छ्रोणि 4,21,16. गुरुश्रोणी R. 2,30,42. चारु° Vaṛāh. Bṛh. 24,10. सु° MBu. 1,2792. 3301. 3,1805. 2892. R. 1,48,22. 2,30,22. 3,52,31. 5,13,32. Vaṛāh. Bṛh. S. 105,12. Brahma-P. in LA. (III) 53,2. Bhāg. P. 4,25,23. 5,17,27. 9,19, 4. Pañcat. 2,3,28. पृथुसु° MBu. 1,3968. महाकटिश्रोणय: 3,1787. *Schenkel der Vedi* TS. 5,3,6,5. Çat. Br. 1,3,3,6. 3,5,4,2. 4,2,4,15. वेदि° Āçv. Çr. 1,1,23. 5,1,11. — 6,10,21. Kāṭy. Çr. 9,10,7. 17,2, 11. 17. Kauç. 137. — 2) *Weg, Pfad* Çabdar. und Bhān. im Dharmapr. nach ÇKDa. — 3) श्रोणी N. pr. eines Flusses VP. 185, N. 80. — Vgl. पिप्पलि°, पृथु° (f. °श्रोणी auch MBu. 1,4743. R. Gorr. 1,49,18. Bhāg. P. 8,12,30), सुत°, सु°.

श्रोणिकपाल n. *Schenkelknochen* Ait. Br. 1,23.

श्रोणिका f. = श्रोणि 1): °युग Pañcat. 2,5,28. — Vgl. श्रोणीका.

श्रोणितंस् (von श्रोणि) adv. *aus dem Schinken* VS. 21,43. Nir. 4,3.

श्रोणिप्रतोदिन् adj. *in den Hintern stossend* AV. 8,6,13.

श्रोणिफल n. = श्रोणिफलक Rigán. im ÇKDa. श्रोणीफल Colebr. und Lois. zu AK. 2,6,2,25.

श्रोणिफलक n. = कट *Hüfte* AK. 2,6,2,25. — Vgl. ऊरुफलक.

श्रोणिवेध m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṅgīt. K. 186,a,7.

श्रोणिसूत्र n. *Gürtel* MBu. 4,190. श्रोणी° dass. R. 5,24,6 (neben मेखला). *Degengurt* 7,6,65.

श्रोणीका f. = श्रोणिका Pañcat. 1,10,90.

श्रोणीफल und श्रोणीसूत्र s. u. श्रोणि°.

श्रोणेय m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṅgīt. K. 185,b,9.

श्रोतृ (von 1. श्रु) 1) nom. ag. und fut. *hörend, Hörer, Zuhörer;* mit acc. und gen. (der Sache oder der Person): श्रोता एवम् RV. 1,178,3. 3,26,2. 5,61,18. 8,23,4. 24,2. oxyt. Çat. Br. 14,6,8,1. 9,31. 8,11. — RV. Prāt. 15,2. Kauṣ. Up. 3,8. MBu. 3,18035 (Gegens. गुरु). 13,381. 14,619. Harıv. 7384. R. 1,4,5. Spr. 3283. (II) 471. 1727. 4258. 5635. Kumāras. 1,46. Weber, Rāmat. Up. 300. Verz. d. Oxf. H. 47,a, No. 103, Z. 21. fg. 153,a, No. 328, Çl. 6. Rigá-Tar. 3,98. Sin. D. 8,20. Bhāg. P. 4,12,46. 7,2,54. fg. 8,23,28. Sarvadarçanas. 136,16. — 2) m. N. pr. eines Jaksha (nach dem Comm.) Bhāg. P. 12,11,37.

श्रोतव्य (wie oben) adj. *zu hören, was gehört werden kann oder muss,*

hörbar, hörenswerth Çat. Br. 14,3,4,8. Prâçnop. 4,8. MBh. 1,2302. R. 1, 3,4. 45,6 (46,6 Gorr.). 2,27,3. R. Gorr. 2,18,1. 3,77,29. 4,43,61. 7,18,15. Çiç. 35,8. Milav. 68,10. Spr. (II) 2181, v. l. 6583 (mit abl. der Person). Rtâ-Tar. 1,126. Verz. d. Oxf. H. 50,*b*,21. Sin. D. 357. Bhâg. P. 1,1, 11. 19,38. 2,1,1.2. श्रोतव्यस्त्वं मया *ich muss dir zuhören* Harîv. 10402. तस्मादेकेन मनसा भगवान्—श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च ध्येयः पूज्यश्च नित्यदा *über den man hören muss* Bhâg. P. 1,2,14. 2,1,5. 2,36. impers.: श्रोतव्यं चेन्मया *wenn ich es hören darf* MBh. 14,132. श्रोतव्यमिदानीं संवृत्तम् *jetzt ist der Augenblick zum Hören gekommen* Çiç. 68,8. श्रोतव्यं कस्य वा (ed. die neuere Ausg.) मया *auf wen soll ich hören?* Harîv. 303. R. Gorr. 2,18,15. Mârk. P. 34,85.

श्रोतस् (wie oben) n. *Ohr* Taitt. 2,6,31. — S. auch श्रोतस्-.

श्रोतु (von 1. श्रु) s. सु°.

श्रौतुराति adj. etwa *dem Gehorsamen günstig:* श्रोतु नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः सिन्धुः RV. 1,122,6.

श्रौत्र (von 1. श्रु) Uṇâdis. 4,167. n. 1) *Ohr* AK. 2,6,2,45. H. 574. Halâj. 2,361. RV. 10,85,11 (vgl. AV. 14,1,11). AV. 11,3,3. Çat. Br. 4,1, 3,1. 13,4,4,8. 14,4,4,6. Kâṭhân. Up. 8,12,4. Kâṭj. Çr. 17,5,11. 25,6, 11. Âçv. Gṛhj. 3,8,10. M. 2,90. fg. 8,272. Suçr. 1,17,7. 86,14. 181,10. Spr. (II) 2428. 3816. 6586. Siddhânta. 20. Varâh. Bṛh. S. 52,3. Bṛh. 5,24. Rtâ-Tar. 4,20. 451. 719. LA. (III) 80,1. Bhâg. P. 3,26,12. धन्यैर्मे श्रोत्रमागतः R. 4,8,50. °सुख Varâh. Bṛh. S. 77,34. R. Schl. 2,91,28. श्रोत्राशयसुख 1,4,20. श्रोत्रानुकूल 5,31,45. श्रोत्राभिराम Râgân. 2,72. °पेय Mṛcch. 13. °कारिन् Mârk. P. 61,21. °रम्य Brahma-P. in LA. (III) 52,3. — 2) *Gehör* AV. 2,17,5. 35,5. 5,10,8. वाचा श्रोत्रेण चक्षुषा 10,7,39. 11,5,25. 18,2,39. 19,60,1. VS. 4,15. 6,14. 20,5. TBr. 1,2,4,3. 3,6,6, 2. Âit. Br. 3,2. °चित् Çat. Br. 10,5,2,7. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 132. M. 12,121. Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,41. fg. Bhâg. P. 2,2,29. 10,22. — Vgl. श्रोत्र.

श्रोत्रज्ञता f. *die Wahrnehmung durch's Ohr, Gehör* Jtân. 3,202.

श्रोत्रतस् (von श्रोत्र) adv. *am Ohre* Çat. Br. 13,4,4,8.

श्रोत्रता f. nom. abstr. von श्रोत्र 1): न ज्ञाने — सर्वाण्यङ्गानि किं यान्ति श्रोत्रतां किमु नेत्रताम् Spr. (II) 3246, v. l.

श्रोत्रनेत्रमय (von श्रोत्र + नेत्र) adj. *aus Ohren und Augen bestehend:* श्रोत्रनेत्रमयं कृत्स्नमकरोत्किं न मामू (विधाता) Kathâs. 35,139.

श्रोत्रपति m. *Herr des Gehörs* Taitt. Up. 1,6,2.

श्रोत्रपद्वी f. *der Bereich des Gehörs:* ग्रहादीनां न तच्छ्रोत्रपद्वीमुपयास्यति *zu Ohren kommen* Verz. d. Oxf. H. 58,*b*,4.

श्रोत्रपा adj. *das Gehör schützend* VS. 20,34. Âit. Br. 2,27. TS. 3,2,10,1.

श्रोत्रपालि f. *Ohrlappen* Rtâ-Tar. 6,157.

श्रोत्रपुट m. dass.: लोल° adj. (द्वि) Spr. (II) 5888; vgl. श्रोत्रपुटिपुट Rtâ-Tar. 1,34.

श्रोत्रभृत् f. Bez. gewisser Ishṭakâ Çat. Br. 8,1,2,6.7.

श्रोत्रमय (von श्रोत्र) adj. *im Gehör bestehend, dessen Wesen das Gehör ist* Çat. Br. 10,5,2,7. 14,7,2,6.

श्रोत्रमार्ग m. *der Bereich des Gehörs:* तादृङ्नैवास्माकं नयनपद्वीं श्रोत्रमार्गं गतो वा Spr. (II) 1069.

श्रोत्रमूल n. *Ohrwurzel:* श्रोत्रमूले चोपशेपुर्वदनैः R. 1,9,38.

श्रौत्रवत् (von श्रोत्र) adj. *mit Gehör begabt* Çat. Br. 10,3,2,4.

श्रोत्रवादिन् adj. *zu hören geneigt, willig:* मनांसि Harîv. 11888.

श्रोत्रस्विन् (von श्रोत्र: vgl. शतस्विन्) adj. *ein gutes Gehör habend* TBr. 3,1,2,13.

श्रोत्रहीन adj. *taub* Varâh. Bṛh. S. 96,13.

श्रौत्रिय (von श्रोत्र) adj. *studirt, gelehrt (in der heiligen Ueberlieferung); m. ein mit der heiligen Lehre vertrauter Brahmane* P. 5,2,84. Schol. zu Çiç. 128. AK. 2,7,6. H. 917. Halâj. 2,240. AV. 9,6,37. 10,2,20. fg. Âit. Br. 1,25. Çat. Br. 5,4,4,5. 13,4,3,11. 14,9,2,15. Kâṭj. 23,4. 28, 4. Taitt. Up. 2,8. Âçv. Çr. 10,7,9. Gṛhj. 4,4,27. M. 2,124. 3,120. 128. 137. 184. 4,31. 224. 5,81. 7,133. fg. 8,65. 149. 398. fgg. MBh. 3,17282. fg. 13,1908. Suçr. 1,31,3. Spr. (II) 3666. 3861. 3968. Varâh. Bṛh. S. 48, 30. 69,5. Weber, Rimây. Up. 356. Kathâs. 20,134. Rtâ-Tar. 6,69. Prab. 22,6. Sin. D. 26,3. Dhûrtas. 88,18. fg. Notices of Skt Mss. 227. Pañcât. 110,24. महा° Kâṭhân. Up. 5,11,1. Bhâg. P. 5,4,12. अ° ungelehrt Çat. Br. 13,4,3,3. Kâṭj. 28,1. Kâtj. Çr. 1,1,5. 10,2,36. नाश्रोत्रिये शुश्रूषयात् Kâuç. 73. M. 3,136. 4,205. 5,82. Spr. (II) 3666. adj. comp. *woran kein gelehrter Brahmane theilnimmt:* श्राद्ध Spr. 3343. (II) 4950. मन्त्रि° *ein schriftgelehrter Minister* Pañcât. 25,12. काठ° P. 2,1,65, Schol. शुद्ध°, कृष्ण° Colebr. Misc. Ess. 2,188, N. — Vgl. श्रौत्रियक.

श्रोत्रियता f. nom. abstr. von श्रोत्रिय Taitt. 2,7,2.

श्रोत्रियत्व n. desgl. MBh. 13,1909.

श्रोत्रियसात् (von श्रोत्रिय) adv. *in Verbindung mit* कृ *schriftgelehrten Brahmanen schenken* Raghu. 16,28.

श्रोत्रेन्द्रिय (श्रोत्र + इ°) n. *Gehörorgan* Suçr. 1,30,9.

श्रोत्र (1) m. N. pr. eines Dieners der Sonne Vâiṣṇ. beim Schol. zu H. 103.

श्रौमत n. *guter Ruf, Berühmtheit* RV. 1,182,7. 7,24,5. केतो नु कं श्रोमतिं न प्रुमुक्वे 8,55,2. वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः *rühmlich* 8,19,10. — Vgl. सुमस्, श्रौमत, श्रौमत्य, सोश्रोमतेय.

श्रौत (von 1. श्रुति) 1) adj. (f. ई) *a) zur heiligen Ueberlieferung —, zum Veda in Beziehung stehend, daselbst vorgeschrieben, damit übereinstimmend, darauf beruhend* (Gegens. स्मार्त u. s. w.): कर्मन्, क्रिया, विधि u. s. w. Jtân. 1,97. 313. Weber, Gesch. 111. Çiç. 61,12. Kathâs. 13,56. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 250. LA. (III) 87,12. 92,16. Bhâg. P. 5,14,30. Madhus. in Ind. St. 1,14,32. Schol. zu Kâṭj. Çr. 1,1,18. fgg. zu Âçv. Çr. 1,1,2. zu Kap. 1,7. Nilak. 34. Sarvadarçanas. 35,14. 39. 16. 104,15. श्रौतानुमानप्रज्ञाभ्याम् Jogas. 1,49. सम्पन्नः Schol. zu Kâṭj. Çr. 385,6. जन्मन् *die durch das Veda-Studium erfolgte zweite Geburt eines Brahmanen* Bhâg. P. 11,3,8. Befremdend ist das fem. श्रौता Mârk. P. 75,15. — *b) durch die heilige Lehre geistig verwandt; n. eine auf gemeinschaftlichem Veda-Studium beruhende Verwandtschaft* MBh. 12, 3144. Harîv. 6997. — *c) in Worten vernommen:* उपमा *ein ausdrückliches Gleichniss* (durch इव u. s. w.; Gegens. आर्थी) Sin. D. 640. Parîbh. 65,*c*,1. — 2) n. N. zweier Sâman Ind. St. 3,241,*b*.

श्रौतऋषि (von श्रुतऋषि) m. patron. des Devabhâga Âit. Br. 7,1. — Vgl. श्रौतर्ष.

श्रौतकत (von श्रुतकत) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,241,*b*. Pañcav. Br. 9,2,7.

मैतनृसिंहकारिका f. Titel einer Schrift Ind. St. 1,470. fg.

मैतपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 382,a, No. 460.

मैतप्रायश्चित्त n. Titel eines Pariçishṭa zum SV. Verz. d. Oxf. H. 383,b, No. 466. °चन्द्रिका f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 88.

मैतर्वण (von मुतर्वन्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,241,b.

मैतर्षि (von मुतर्षि) 1) m. patron. des Devabhâga TBr. 3,10,७,11. Çat. Br. 3,4,4,5. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,241,b. — Vgl. मैतऋषि.

मैतम्भव (von मुतम्भवा) m. metron. des Çiçupâla MBh. 3,627.

मैतसूत्र n. *ein auf der Çruti beruhendes Sûtra* (Gegens. गृह्यसूत्र oder स्मार्तसूत्र) Wilson, Sel. Works 2,280. fgg. Verz. d. Oxf. H. 384,a, No. 471. fg. 386,b, No. 508. 393,b, No. 94. 403,a, No. 3. Ind. St. 3, 175. Notices of Skt Mss. 100.

मैतस्मार्तकर्मपद्धति (so ist wohl zu lesen st. °स्मारणकर्म°) f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 246.

मैतहोम Titel eines Pariçishṭa des SV. Verz. d. Oxf. H. 383,b, No. 466.

मैति m. patron. (wohl von मुत) gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138. davon adj. मैतेय ebend.

मैत्र (von मित्र) 1) adj. (f. ई) *zum Ohr in Beziehung stehend* VS. 13, 57. Çat. Br. 14,5,5,8. Bṛh. Âr. Up. 3,9,18. — 2) n. *a)* = मैत्र *Ohr* gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38. Çabdar. im ÇKDa. — *b) eine Menge von Ohren* gaṇa भिक्षादि zu P. 4,2,38. —, *c)* nom. abstr. zu मैत्रिय P. 5,1, 130, Vârtt. (vgl. gaṇa युवादि ebend.). Taitt. 2,7,3. Çabdar. im ÇKDa.

मैत्रियक n. nom. abstr. von मैत्रिय gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,133.

मैमर्त im pl. als pl. zum sg. मैमत्य P. 5,3,118. Âçv. Çr. 12,14,2.

मैमत्य m. patron. von मुमत् P. 5,3,118. Çat. Br. 10,4,5,1.

मैमृष्ट् indecl. in dem Opferausruf घस्तु मैमृष्ट् (= मघवा भवतु Sây.) gaṇa चादि zu P. 1,4,57. ऊर्यादि zu 61. AK. 3,5,5. H. 1538. घस्तु मैमर्ष्टो घग्निं घिया दधे ṚV. 1,139,1. TS. 1,6,11,1. 3,3,3,2. Çat. Br. 1,5, 2,16. 18. 3,2,20. 2,3,2,11. 12,3,3,3. घस्तु मैमेष्ट् P. 8,2,91. — Vgl. वषट्, वैषट्.

मैष्ट (von मुष्टि) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,241,b. मैष्टानि त्रीणि 201,a. Vgl. मैष्ट (die richtige Form).

मैष्टि (wie eben) adj. *folgsam:* मैष्टीव धुरमनु राय ऋध्याः ṚV. 8,48, 2. — Vgl. युधी°.

मैष्टीगव (von मुष्टिगु) n. N. zweier Sâman Ind. St. 3,241,b.

मैष्टोप (von मुष्टि) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,240,b.

म्याङ् (s. म्री + याङ्) n. *Lotusblüthe* Çabdaratn. bei Wilson.

म्रत hier und da falschlich für म्रदण.

म्रदर्य Uṇâdis. 3,19. adj. (f. या) *schlüpfrig, glatt, weich, zart* (Gegens. खर, कर्कश) AK. 3,2,11. H. 1427. Halâj. 4,2. MBh. 12,6854. 14,1416. AV. 20,133,5. 6. Çat. Br. 4,1,5,19. 9,1,2,40. Kâty. Çr. 16,3,22. अति° (Gegens. अतिलोमश) TBr. 3,4,2,19. — Sûçr. 1,24,4. 30,11. °शिला 28,1. R. 2,96,6. Kathâs. 72,184 (सु°). स्तम्भ 37,3. 9 (सु°). तार Sûçr. 1, 33,12. शेरे हिविधः कर्णौ म्रदणाश्च 96,14. मांस 2,350,14. व्रण 3,13. °पिष्ट 73,21. शाल्मलीफलक M. 8,296. धनुस् MBh. 1,8181. °ब्रूयसम्न्विताः (यूपाः) R. 1,13,28. °तीक्ष्णाग्र शूक) AK. 2,9,23. Golâdh. Golâdh.

1. स्निग्धम्रदणातनुत्वयोगाणः Vaṇîn. Bṛh. S. 61,11. स्निग्धा रक्ता दीर्घा म्रदणा सुसमा च भागिनी श्रेया 68,33. वक्त्र 34. °स्निग्धापाङ्गेन चक्षुषा Buâ. P. 3,23,32. मेखला M. 2,42. वासस् R. Gorr. 1,9,16. Taitt. 3,3, 396. पताका Vaṇîn. Bṛh. S. 24,9. °चन्दनकल्क R. Gorr. 2,100,69. वाच्, वचन, वाक्य, गिर्, वाणी, शब्द u. s. w. Kâṭâṇḍ. Up. 2,22,1. M. 2, 159. MBh. 3,2288. 2295. 2771. 4,958. 13,6664. R. 1,30,14. 2,31,18. 35,8. 91,37. 96,7 (°तर्). R. Gorr. 1,11,10. 71,17. 2,21,1. 3,20,2. 5, 64,13. Buâ. P. 1,6,21. 3,21,49. Paṇḍar. 1,13,7. सामन् R. 2,24,31. °वादिन् R. Gorr. 2,6,34. घनेघुरम्रदणापद् Bhar. Nîtiç. 18,125. Kathâs. 72,79. विकार Daçar. 2,11. von Personen (= मधुरवाच् Halâj. 2, 210) MBh. 12,3479. Spr. (II) 309. 791. R. 2,23,9. in comp. mit einem im instr. gedachten Worte P. 2,1,31. वाचार° Schol. वाकारवर्णसुम्रदणाः (वाक्यः) MBh. 3,2196. म्रदणम् adv.: भयविक्लवया वाचा मन्दया म्रदणमब्रवीत् (म्रदणयाब्रवीत् ed. Bomb.) R. 2,34,5. 4,7,18. सु° MBh. 7,1363.

म्रदणक (von म्रदण) 1) adj. (f. म्रदणिका) dass. AV. 20,133,5. — 2) n. *Beteinuss* Râjân. im ÇKDa.

म्रदणता (wie eben) f. *Glätte:* अति° (Gegens. पारुष्य) Karaka 2,5.

म्रदणत्वच् m. *eine best. Pflanze,* = घण्मत्तक Râjân. im ÇKDa.

म्रदणन (von म्रदणय्) n. *das Schlüpfrigmachen, Glätten* Kâty. Çr. 26,1,27.

म्रदणय् (von म्रदण), °यति *schlüpfrig machen, einschmieren* P. 3,1,21. Kâty. Çr. 26,1,22.

— सम् dass. Çat. Br. 6,5,2,4.

म्रदणीकर् (म्रदण + 1. कर्) dass.: घद्भिः TS. Comm. 1,139,7.

म्रद्ध s. उच्छ्रद्ध.

म्रद्ध्, म्रन्द्धते Dhâtup. 4,10 (गत्यर्थ). — Vgl. म्रद्ध्.

म्रद्ध्, म्रन्द्धति Dhâtup. 5,45. (गत्यर्थ). — Vgl. म्रद्ध्, म्रद्ध्.

म्रध् = म्रथ् *locker —, los werden, nachgeben:* म्रधदुकूलं संनयतो Buâ. P. 8,12,21. म्रधदसनभूषणकेशबन्धाः 10,16,21. 33,11. 60,24.

— caus. म्रधयति Dhâtup. 35,18, v. l. दीर्घत्वे). *locker machen, lösen:* बन्धनानि Nîlak. 19. शरीरं म्रध्यते (Conj.) नाशा *erschlafft* Spr. (II) 6420.

— घा *locker —, los werden:* यदा मनोहृदयपन्थिरस्य कर्मानुबन्धो दृढ घाम्रधेत Buâ. P. 5,5,2.

— वि dass.: °म्रधत् Buâ. P. 6,1,60. °म्रधमान Paṇḍar. 2,5,28. °म्रधित Buâ. P. 10,71,34.

म्रध adj. = शिथिर्, शिथिल *locker, los, schlaff, nicht fest sitzend* Taitt. 2,1,7. H. 491. Halâj. 4,92. °कस्तगाणिउव MBh. 8,4778. °बन्धन Ṛt. 6,8. वृत्ताच्छ्रथं रुरति पुष्पमनोकरूनाम् (वायुः) Raçu. 3,69. °शिञ्जितमेखला 9,36. 19,25. Çiç. 133, v. l. Vikr. 146. Çic. 7,62. म्रधाङ्ग Spr. (II) 622. म्रधाङ्गता Vîrân. 1,11,8. °संधिता 16. Vaṇîn. Bṛh. S. 67,2. 68,33. Kathâs. 19,99. 45,158. 104,88. Gît. 2,15. 12,12. °शिल: कूपः Spr. (II) 3899. Golâdh. Jantr. 10. °लम्बिनीर्दंष्ट्राः (adv.) Kumâras. 5,47. *schlaff, schwach:* म्रयोत्थम Spr. (II) 4299. म्रधादर Prab. 109,7. घपरि° *recht fest, — stark:* घनेकवारमपरिम्रधं (adv.) परिघस्तस्य Uttarâr. 108,18 (147,8). — Vgl. प्र°, वि°.

म्रधत्व (von म्रध) n. *Schlaffheit* बन्धस्य Sin. D. 221,6.

म्रधाय् (wie eben), °यते *locker —, los werden:* सुबहूस्यापि भारस्य पूर्वबन्धः म्रधायते MBh. 1,7979.

अधीकर् (अध -+ 1. कर्) *schlaff machen, erschlaffen* (trans.): चिरविरक्तिणोरुत्कण्ठार्तिअधीकृतगात्रयोः Spr. (II) 2298. so v. a. *vermindern:* कृतात्मोपदेशवासरम् Kathās. 22,151.

अनवास m. N. pr. eines Arhant Tāran. 4. 51; vgl. die Anm. auf S. 4.

अवण adj. = अवण, श्रोण *lahm* Pāṇ. Bh. 21,14,16. Anupad. 1,3. Kāś. Ça. 23,4,16, v. l. (nach dem Schol. = रक्तवर्णो चिन्हाकारस्वदोषः).

आदणभारिकं adj. = अदणभारं करोति, वहति oder आवहति gaṇa वंशादि zu P. 5,1,50.

आदिणार्क adj. 1) = अदणमधीते वेद वा gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. — 2) = अदणं (als Last) करोति, वहति oder आवहति gaṇa वंशादि zu P. 5,1,50.

आध्, श्नाधति Dhātup. 5,13 (व्याप्तौ). — Vgl. शाध्.

आध्, श्नाधते (im Epos hier und da act.) Dhātup. 4,41 (कत्थने). mit dat. P. 1,4,34. Vop. 5,15. 1) *sich zu Jmd* (dat.) *versehen, Zuversicht zu Jmd haben:* यस्या इव भूयिष्ठं आधेत तां भित्तेत Cat. Bh. 11,3,8,7. — 2) *mit Zuversicht reden, grosssprechen, prahlen mit, stolz sein auf* (instr.): परेषामेव यशसा आधसे त्वम् MBh. 2,2121. त्वया परिषदो मध्ये आधते स नराधिपः 4,1160. आधते ज्ञातिमध्ये स्म त्वयि प्रव्रजिते वनम् 5,3695. यत्कर्म कलुषं कृत्वा आधसे जनसंसदि 7,9138. Daçak. 66,11. गर्गिकया P. 5,1,134, Schol. आधमान MBh. 3,15170. R. 5,78,5. शस्त्राधिरे Harīv. 8316. आधिष्ये केन Bhaṭṭ. 16,4. act.: मया निसृष्टास्तेनैव (so ed. Bomb.) स्वयं आधति कथितेन MBh. 3,13206. आधन्निव ममाथतः 14,1820. *stolz sein auf* mit loc.: आधते आधनीयेषु Kām. Nītis. 5,37. — 3) *Jmd* (dat.) *etwas Angenehmes sagen, schmeicheln:* यदाधिष्ट पस्मै Vop. 5,15. परस्त्रीभ्यः Bhaṭṭ. 8,73. — 4) *rühmen, preisen;* mit acc.: आधस्व (so ed. Bomb.) मां कुशलिनम् MBh. 3,577. यशांसि: शक्तिमात्मीयां आधसे ये च दुर्जनाः Spr. (II) 710. शिरसा आधते (इन्दुं शिवः) 2117. P. 1,4,34, Schol. भरतं आधमानेव स्वकर्म (so ist zu trennen) प्रयापयत्युत R. Gorr. 2,74, 31. act.: यस्य आधन्ति विबुधाः कर्माणि MBh. 7,1997. pass.: आध्यते Spr. (II, 1670, v. l. R. Gorr. 1,3,61. Kām. Nītis. 5,37. कथमयं आध्यतां महात्मा: Hit. 100,12. ad Mucc. 18. यथैव आध्यते गङ्गा पादेन परमेष्ठिनः wegen Kumāras. 6,70. कर्माणि आधितानि Bhāg. P. 3,4,33.

— caus. आधयति 1) *Jmd zureden, zu beruhigen* —, *zu trösten suchen:* को मां — आधयिष्यत्युपासीनः पुत्रशोकपर्यार्दितम् R. 2,64,32. — 2) *rühmen, preisen:* तदाधयम् Hit. 61,6. Bhāg. P. 7,15,37.

— सम् *grosssprechen, prahlen mit* (instr.): इति संआधते नित्यं तेन पापेन कर्मणा MBh. 12,4214.

आधन (von आध्) 1) adj. *grosssprechend, prahlend* MBh. 5,967. 2405. — 2) n. *das Rühmen, Preisen:* मुक्तात्मआधना (adj. comp.) धैर्य मनोवृत्तिरचपला *frei von Selbstlob* Sin. D. 135.

आधनीय (wie oben) adj. *zu rühmen, zu preisen, rühmlich, rühmenswerth, ehrenwerth;* von Personen und Sachen MBh. 12,8963. 13,969. Harīv. 11137. Spr. (II) 3828. R. 2,115,5 (126,5 Gorr.). R. Gorr. 1,18, 8. 71,28. 2,19,19. 7,23,8,61. Kām. Nītis. 5,37. Mucc. 33. Çiç. 193. Kathās. 73,371. La. (III) 89,20. Bhāg. P. 2,24,62. compar. °तर R. 4,20,6.

आधनीयता f. nom. abstr. von आधनीय Spr. (II) 457.

आधा (von आध्) f. 1) *Grosssprecherei, Prahlerei* P. 5,1,134. Spr. (II) 787. R. 3,33,37. त्यागे °विपर्ययः Rāgat. 1,22. सम्आधम् adv. *s. v. a. mit Selbstbewusstsein, mit wichtiger Miene* Vikram. 82,7. Prab. 27,18. 48. 14. — 2) *das Rühmen, Preisen; Ruhm, Preis* H. 270. an. 2,35. Med. gh. 6. Hālā. 1,115. योग्यस्य वस्तुनः Sāh. D. 720. यशोकृत्तमाधेकतत्परा Kathās. 25,160. गुण° Spr. (II) 2912. परिच्छद° Vikr. 56,15. घस्वआधा H. 68. सविकत्थनो ऽनात्मआधाकरः Sāh. D. 32,21. आधा (Conj.) नीचो ऽपि गच्छति Spr. (II) 4749. का आधा तस्य जीविते 5788. भर्तृआधावहा 2795. am Ende eines adj. comp.: उत्तमत्पद्मआध Rāja-Tar. 3,2. — 3) *das zu Diensten Sein, Huldigung.* — 4) *Verlangen, Wunsch* H. an. Med.

आधिन् (von आध् oder आधा) adj. 1) *prahlend mit, eingebildet auf;* am Ende eines comp.: बल° Harīv. 3086. R. 4,13,41. *hochmüthig, stolz:* Löwe Bhāg. P. 3,2,6. — 2) *in gutem Rufe stehend, berühmt* MBh. 12, 8968. Harīv. 9378. गुण° *wegen seiner guten Eigenschaften* MBh. 13, 335. R. Gorr. 1,14,29. 5,36,1. सर्वराज्ञां बलआधी MBh. 2,1332. R. 6, 80,29. वीर्य° 77,28. समर° MBh. 3,369. 5,5914. 14,1786. Harīv. 13706. R. Gorr. 1,22,10. 6,30,5. रण° 87,18. 7,23,1. MBh. 5,7044. शब्दवेधित्व° R. Gorr. 2,63,9. आधिष्ठ *im höchsten Ansehen stehend, überaus ehrwürdig:* महाभिषेकआधिष्ठचारुकबर Bhāg. P. 1,15,10. — 3) *rühmend, preisend:* तद्वचः° R. 5,31,31. — Vgl. आत्म° (auch Harīv. 3083), वृत्त°.

आध्य (von आध्) adj. = आधनीय Taitt. 3,1,24. MBh. 5,3919. 9,3336. R. 1,75,4. 3,55,16. Kām. Nītis. 5,49. Rāgat. 11,86. Çiç. 94. Milav. 91. Spr. 3053. fg. 3094. (II) 503. 1543. 1737. 2249. 2309. 2377. 2992. 2997. 3794. 4746. 5071. 5691. 5719. Gīt. 1,4. Kathās. 21,59. 49,59. 53,186. Rāja-Tar. 1,7. 43. 3,236. 259. 6,181. Mālav. P. 21,98. Bhāg. P. 4,16, 3. 6,11,4. 9,14,21. Prab. 57,12. 74,12. 102,1. Daçak. 72,5. Sāh. D. 53. 16. Hit. 17,5. 99,12. Cum. in LA. (III) 33,13. तपः° *wegen* R. 1,4,17. गुण° 3,3,4. Kathās. 27,87. Rāja-Tar. 3,28. रण° 5,56,63. जगच्छाध्य von *der Welt zu preisen* Kathās. 30,43. आध्यम् adv.: जीवति Spr. (II) 6200. compar. °तर Rāgat. 6,16. superl. °तम Bhāg. P. 1,10,26. 2,22,4.

आध्यता f. nom. abstr. von आध्य Spr. (II) 1978.

आ्रि = 1. आ in प्रआ्रित.

आ्रिकं Uṇādis. 1,33. आ्रिकुम् nom. = पार्श्व und ज्योतिष Uṇādi. m. = षिड्, n. = ज्योतिःशास्त्र Uṇādis. im ÇKDa.

1. आ्रिष्, आ्रेषति = 1. आ्रिष् Dhātup. 17,33 (दाने). erhält keinen Bindevocal इ Siddh. K. zu P. 7,2,10.

2. आ्रिष्, आ्रेष्यति (auch °ते; आ्रियति s. u. श्रा) = 1. आ्रिष् Dhātup. 26. 77 und Sarva. 1,77,9 (आलिङ्गने, nach Vop. श्रेषे). शिआ्रेष, आ्रेष्यति (Kār. 6. 8 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10); aor. अआ्रियत् und अआ्रिषत् (nur in der Bed. आलिङ्गने) P. 3,1,46. Vop. 8,78. 11,3. आ्रिष्ट्वा, °आ्रिष्य, आ्रेष्टुम्. 1) *sich anhängen, sich halten* —, *sich klammern an;* mit loc.: दोषाः आ्रिष्यन्ति वर्त्मसु Sarva. 2,189,9. यथा पुष्करपलाश आपो न आ्रिष्यन्त एवमेवंविदि पापं कर्म न आ्रिष्यते Kāṭh. Up. 4,14,3. impers.: नाप्युत्तरे (कर्मणि) आ्रियताम् Spr. (II) 1402. mit acc.: नाधर्मः आ्रिष्यते प्राज्ञं पयः पुष्करपर्णवत्। यत्प्राज्ञमधिकं पापं आ्रिष्यते जतु काष्ठवत् MBh. 12,10948. — 2) *umfangen, umarmen:* आ्रिष्यति कामपि चुम्बति कामपि Gīt. 1,44. 6,7. बाहुभिः Bhāg. P. 10,43,21. — 3) *sich zusammenfügen:* दुःखेन आ्रिष्यते भिन्नम् Spr. (II) 2832. आ्रिष्यत्यशाङ्कुलिं कृत्तम् Kathās. 5,3. *verschmelzen, zusammenfliessen:* आ्रिष्यन्ति शब्दाः Kirāt. (II) 236,1. — 4) *zusammen-*

fügen: तानेव पाशान् श्लिष्टा Kathâs. 70,93. — partic. श्लिष्ट 1) *hängend, haftend, klebend an* (loc.) Kâṭy. 25,6. Kâṭ. Çr. 9,4,29. मनसि श्लिष्टेव वर्तेव Daçak. 73,14. भुजायश्लिष्टेन मुसलेन Harîv. 8767. तस्य कार्ष्णायसं वर्म — विबभौ सर्वतः श्लिष्टम् *überall anliegend* MBh. 7,5161. घृतश्लिष्टक्षौनांशुकान्तरीय Daçak. 90,14. घनिष्ट वैव मे श्लिष्टं हृदयान्नापसर्पति MBh. 7,2481. चतुश्चरणमुश्लिष्टः कूर्मः *so v. a. mit ganz eingezogenen Füssen* Harîv. 9626. विषयाश्लिष्ट *nicht an der Sinnenwelt hängend* MBh. 12,9085. श्लिष्टा (शिष्टा ed. Bomb.) क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था *an der Person haftend, nicht auf Andere übergehend* Milav. 15. — 2) *zusammengefügt, an einander geschlossen, verbunden:* श्लिष्टे घटास्या वपुः Spr. (II) 2823. श्लिष्टं दुःखेन भिद्यते । भिन्नश्लिष्टा तु या प्रीतिः न सा (स Druckfehler) स्नेहेन वर्तते ॥ 2832. मण्डलं सर्वतः श्लिष्टं रश्मिनाम् MBh. 7,1168. श्लिष्टं च सर्वतश्चक्रं रथमण्डलमाशु ते 6110. सुश्लिष्टपञ्चाग्नि Vaṇîs. Bṛh. S. 43,58. श्लिष्टाङ्गुली चरणौ 68,2. 70,1. सुश्लिष्टाङ्गुलिपादा प्रमदा 105,12. सुश्लिष्टोसौ 68,34. सुश्लिष्टसंधि 88. संघात इति सुश्लिष्टसंधिता 100. श्लिष्टसंधिक MBh. 9,302. श्लिष्टाञ्जलिपुटा R. 3,4,1. परस्परश्लिष्टभुजा Daçak. 90,11. सुश्लिष्टगुणतया रमणीय एष वः सुमनसां संनिवेशः Mâlatîm. 18,4. सुश्लिष्टमपि लोकेषु भेदयन् Harîv. 3209. ब्रह्मवत्तमं लोके सुश्लिष्टं न विरज्यते MBh. 13,2608. नातिश्लिष्टः संधिरस्य मृणालवलयस्य Çiç. Cn. 62,1. शत्रुणा नहि संदध्यात्सुश्लिष्टेनापि संधिना Spr. (II) 6371. द्यावो वचनविन्यासः सुश्लिष्टः Sin. D 303. किं स्विद्दृढमपेतार्थमश्लिष्टसमञ्जसम् (अक्लिष्टम् die neuere Ausg.) तावुभौ प्रतिवक्ष्यामः *Unzusammenhängendes* MBh. 7,1990. सुश्लिष्टधातुसौहृद *sehr fest* R. Gorr. 2,91,6. सुश्लिष्टं कुरुते कार्यम् *so v. a. fest abschliessen* Sin. D. 87. तं तस्य स्वरसंक्रमं मृदुगिरः श्लिष्टं च तन्त्रीस्वनम् *so v. a. der begleitende Saitenton* Mṛicch. 44,13. — 3) *umfasst —, umfangen haltend*, mit acc. P. 3, 4,72. यस्या वामं भुजं श्लिष्टा (श्लिष्ट्वा?) पेया तिष्ठति R. 2,92,23 (101,24 Gorr.). श्लिष्टो गुरुं भवान् P. 3,4,72, Schol. — 4) *umfasst, umfangen* P. 3,4,72. श्लिष्टो गुरुर्भवता Schol. श्लिष्टः कण्ठे किमिति न मया मूढया प्राणनाथः Spr. (II) 6391. मरुता (so ist zu lesen oder मरुताश्लिष्टा) श्लिष्टा (v. l. für स्पृष्टा) लतामाधवी Çiç. 58, v. l. श्लिष्टस्तत्कान्तितेनासा (श्लाश्लिष्ट° Brockhaus) Kathâs. 18,78. — 5) (*in der Bedeutung zusammenfliessend*) *doppelsinnig* Sin. D. 301. 437. 548. 643. — 6) दुःश्लिष्ट Bez. *des in उ übergehenden ल oder des aus ल entstandenen उ* Comm. zu TS. Prât. 13,16; vgl. दुःस्पृष्ट Ind. St. 4,349.

— caus. श्लेषयति Dhâtup. 32,33 (श्लेषणे, आलिङ्गने). *zusammenfügen, schliessen:* श्लेषयेत्स्वजघनम् Ratirahasya bei Mallin. zu Kir. 9,50. श्लेषित *verbunden mit:* विभेद संधिं देहस्य शरेण श्लेषितस्य हि (mit Anspielung auf den Namen शरासंध) MBh. 12,132.

— आ 1) *hängen bleiben, kleben;* mit loc.: यच्च प्रूषि । आशिश्लेष दृषदि TS. 3,7,6,21. *sich klammern an* (acc.): द्रोणस्याश्लिष्य तं रथम् MBh. 7, 3344. — 2) *umfangen, in seine Arme schliessen:* सूर्मी ज्वलन्तीं स्वाश्लिष्येत् M. 11,103. Spr. 2934. (II) 1980. 2596. 3366 (पद्मगः). Kathâs. 23, 267. 58,96. 62,88. 92,16. भुजैरिवाश्लिषन् Bhâg. P. 4,9,3. 12,8,37. आशिश्लेष Pâṇ. 1,4,44. 2,3,30. राममाश्लियत् R. 2,96,22 (103,21 Gorr.). Bhâg. P. 10,60,27. पितुराश्लिष्यते ऽङ्गानि Spr. (II) 4230. पुत्रमाश्लिष्य MBh. 1,4468. 3,11997. 12177. R. Gorr. 2,123,7. Çiç. 48,10. 56,11. Kathâs. 37,185. 39,218. 41,50. 45,139. Sin. D. 59,20. Bhâg. P. 3,10, 40. बाहूपपीडम् Bhaṭṭ. 5,94. आश्लेषुम् Kathâs. 119,110. pass.: आश्लिष्यमाणः प्रियया 15,2. — partic. आश्लिष्ट 1) *hängen geblieben, klebend an* (loc.) Çat. Br. 4,4,5,26. *geklammert an:* पादयोः Kathâs. 34,15. — 2) *umfangen haltend*, mit acc.: लक्ष्मीम् Vop. 26,139. Harîv. 15121. R. 7,16,26 (statt des verbi finiti). आश्लिष्टवत् dass. Çiç. 9,55. — 3) *umfangen, umschlungen:* परस्पराश्लिष्टशाखैः (hierher oder zu 2) पादपैः MBh. 1,2857. दृष्ट्वा Kathâs. 116,110. Bhâg. P. 10,81,15. °भूमिं पतिमापगानाम् Çiç. 3,72. नवीनशाद्वलाश्लिष्टा सस्वेदाभूद्वसुंधरा Kathâs. 111,4. षड्भिराश्लिष्टभुज Raghu. 6,52. मेघमाश्लिष्टसानुम् Megh. 2. — Statt पुरमासुरमाश्लिष्य Anâ. 6,12 lesen die beiden Ausgg. des MBh. 3,12090 besser: परमं मुदमाश्रित्य. Vgl. आश्लेष. — caus. 1) *befestigen, aufkleben:* स्त्रिरण्यमौडुम्बर्याम् Liṭ. 2,8,25. Kâṭ. Çr. 5,3,7. — 2) *umfangen, umschliessen:* परस्पराश्लेषिताङ्ग्यः R. 5,13,38.

— उप *umfangen:* पतिदेवमुपाश्लिष्य Mâlav. P. 135,40 — partic. °श्लिष्ट *angepackt habend:* एकमत्तं नागराजः MBh. 1,1125.

— सम 1) *sich klammern an* (acc.): रथं समाश्लिष्य MBh. 3,12086. — 2) *umfangen, umarmen:* समाश्लिष्यत्सूतपुत्रम् MBh. 7,5392. Spr. 3179. °श्लियत् MBh. 3,10043. °श्लितत् Bhaṭṭ. 15,62. °श्लिष्य MBh. 1,5418. 6021. षड्भमङ्गैः 2,901. 4,755. Harîv. 14838. Verz. d. Oxf. H. 9,b,22. Râja-Tar. 4,435. partic. °श्लिष्ट *umfangen* Spr. 5174. °श्लिष्टावन्योन्यम् MBh. 4,1338. — Vgl. समाश्लेष. — caus. *verbinden, vereinigen* TS. 2,3,8,1.

— उप *sich anschmiegen, dicht herantreten:* भीमसेनमुपाश्लिष्यत् MBh. 4,515. °श्लिष्य Mâlav. 45,9. एनमुरसोपश्लिष्य Daçak. 74,5. 86,5. 6. गङ्गा यमुनामुपाश्लिष्यति *nähert sich* P. 1,3,23, Vârtt. 1, Schol. — partic. °श्लिष्ट 1) *befestigt an:* घण्टे घण्टे वै पुरुषस्य पाप्मोपश्लिष्टः TBr. 3,8,22, 4. — 2) *dicht herangetreten:* समीपम् Pâṇ. ed. orn. 18,13. impers.: उपश्लिष्टं भवता P. 3,4,72, Schol. — Vgl. उपश्लेष, उपश्लेषण. — caus. *näher bringen:* शरम् Veṇîs. 78,11. रथम् *dicht heranfahren* 10,16. 13,16.

— नि caus. *befestigen an, aufkleben* Çat. Br. 2,5,3,15.

— प्र partic. °श्लिष्ट *zusammengeballt:* प्रश्लिष्टं च न जानन्ति यथाप इव पांसवः MBh. 12,11951. — Vgl. प्रश्लिष्ट fg.

— वि 1) *auseinander gehen, sich trennen, sich lösen:* शरबन्धा विशिश्लिषुः Bhaṭṭ. 14,67. ग्रसा विश्लिष्यत्संधिविप्रकृः Kathâs. 72,89. ततो ऽस्य राज्ञो राज्यश्च चिराद्विश्लिष्यतोर्मिथः 55,239. — 2) *trennen, entfernen von* (abl.): विश्लिष्येतां तु नृपतेः Kathâs. 32,140. 188. pass.: एषा राज्ञो विश्लिष्यते 148. Vielleicht ist überall विश्ले° zu lesen. — partic. °श्लिष्ट *getrennt* Ait. Br. 5,32. Çâṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 22. तौ चिरविश्लिष्टसंश्लिष्टौ Kathâs. 74,320. विश्लिष्टमेघनादास्त्रबन्धन *gelöst* Raghu. 12, 76. कार्योरुभयोरेव विश्लिष्टतरशाखयोः *weit auseinanderstehend* Verz. d. Oxf. H. 202,b,17. *der sich von seiner Partei getrennt hat* Kîm. Nîtis. 15,56. *dislocirt, verrenkt* (von Gliedern) Suçr. 1,182,7. 300,9. 12. 2, 28,4. — Vgl. विश्लेष fgg. — caus. *trennen:* संश्लान् Spr. (II) 1171. सेजीवकं प्रभोः Pâṇ. 42,7 (ed. orn. 38,2). बुद्ध्या विश्लेषयसि तम् *so v. a. bringen ihn um seinen Verstand* Spr. (II) 3304. partic. °श्लेषित *getrennt* Megh. 7. Kathâs. 73,441. गगणं वायुना *auseinandergerissen* Mṛicch. 76, 21. *auseinandergeflossen* Mallin. zu Kumâras. 3,38. नासिका *abgetrennt* Suçr. 1,60,10. °वक्त्रम् *dessen Brust zerrissen ist* 2,303,5.

— प्रवि s. प्रविश्लेष.

— सम् 1) *sich anschmiegen, Jmd nahe rücken:* तावन्योन्याञ्जलि कृत्वा सेक्तासंश्लिष्य चोरसा R. 1,10,28. Kām. Nītis. 12,12. समश्लिषज्जातु काष्ठम् *hat sich geklebt an* P. 3,1,46, Schol. — 2) *umfangen, umarmen:* ममुपाघ्राय मूर्धानं संश्लिष्य च पुनः पुनः । युधिष्ठिरं च भीमं च MBh. 4,2319. R. 5,91,17. Spr. (II) 2915. — 3) *in unmittelbare Berührung bringen:* युगेर्युगानि संश्लिष्य युयुधुः MBh. 6, 3879. — partic. 1) *angeschmiegt, fest anliegend, sich unmittelbar berührend, verbunden, vereinigt, zusammenhängend* Cat. Br. 3,3,2,14. संश्लिष्टा षड्डलयो ज्ञायेरन् TS. 5,1, 9,3. Kāṭh. 34,9 (घ°). संश्लिष्टाङ्गे स्थितौ MBh. 7,1212. पद्मकोशाकरौ कृत्वा संश्लिष्टौ Kathās. 65,197. उमा °मर्पयन्ती Cik. 170, v. l. Bhāg. P. 5,2,4. यद्या ह्रतु च काष्ठं च पांसवश्चोदबिन्दवः । संश्लिष्टानि MBh. 12, 11947. fg. तद्या कर्म च कर्ता च संश्लिष्टाविवरेतरम् Spr. (II) 5106, v. l. परस्पर° Suçr. 1,338,11. तौ चिरविश्लिष्टसंश्लिष्टौ *lange getrennt und nun vereinigt* Kathās. 74,220. रजतं च सुवर्णं च संश्लिष्टे H. 1047. पृथिव्यग्निहृदयं नित्यसंश्लिष्टमृक्सामनी इव Çāṅk. zu Kāṭhaka-Up. S. 59. Kull. zu M. 2, 125. Comm. zu TS. Prāt. 2, 12 (घति°). 17, 4. वनौकसौ °शरीरकारिणाम् *wohl so v. a. sich zusammenthuend, zusammen wohnend* (संश्लिष्टमस्त्विचर्ममात्रसंश्लेषवत् तच्च तच्छरीरं च तस्य कारिणां शरीरशोषकाणामित्यर्थः Nīlak.) MBh. 12, 8882. mit सह् verbunden: (धमितसहः) पाणिना सह संश्लिष्ट एकीभूत इव 10,462. mit einem blossen instr.: पात्रं संश्लिष्टं वेदतृणैः Āçv. Çr. 1, 11, 5. मरुत्वानिव संश्लिष्टो यज्ञाभ्यां चन्द्रभास्करौ R. 5,73,49. किंचिल्लोविताशया *so v. a. ein wenig Hoffnung schöpfend* Pārāç. 143,8. mit acc.: पृथगात्मान आत्मानं संश्लिष्टा ह्रतु काष्ठवत् MBh. 12,11949. häufig in comp. mit der Ergänzung: नदीं वाश्रमसंश्लिष्टाम् 1, 3867. 4, 2071. R. 5, 5, 12. Hariv. 2501. 6351 (संसृष्ट die neuere Ausg.). Kathās. 38,44. Var. in L.A. (III) 22,18, v. l. सर्व° (स हि st. सर्व ed. Calc.) *so v. a. in Allem enthalten* MBh. 13,6312. Pañcat. 4, 3,23. सु° von einer Rede *so v. a. wohl gefügt* R. 3,48,2. संश्लिष्ट n. *Anhäufung:* इदं फलानां संश्लिष्टम् *hier sind Früchte aufgehäuft* 2,108,7. — 2) *verschwommen, in einander fliessend, so dass die einzelnen Theile nicht gesondert hervortreten* VS. Prāt. 4,145. इक्षुरामोष संश्लिष्टः MBh. 7,3639. नकस्य नृपते किंचित्संश्लिष्टमुपलक्षये । सते पुरुषसंकल्प पिण्डके ऽस्याधिके पतः 14,2581. fg. von einer Handlung, *bei der man nicht zwischen gut und schlecht unterscheidet:* यभिप्रेतामसंश्लिष्टां कृत्वा चात्मस्थितां क्रियाम् 12,13875. °कर्मन् adj. *für den es gleichviel gilt, ob eine That gut oder böse ist:* ज्ञात्वा 7, 5965. Spr. (II) 5412 (die Uebersetzung hiernach zu verbessern); vgl. 6664. — Vgl. संश्लिष् u. s. w. — caus. 1) *zusammenhängen* (trans.) Ait. Br. 5,32. *vereinigen, zusammenbringen, in Berührung bringen mit* Kathās. 32,141. परपुरुषानानीय तैः स्वभार्याः संश्लेषयते Kull. zu M. 8, 362. कत्रात्रावलीढं तु पङ्क्तं मुखपङ्क्तये । संश्लेषयित्वा Hariv. 7030. संश्लेषय शिरः स्वं स्वं भर्तृधातृकबन्धयोः Kathās. 80, 45. संश्लेषित *vereinigt, verbunden* MBh. 2, 733. मया संश्लेषिता भूमिरद्यैर्व्योम च वायुना । वायुश्च तेजसा सार्धम् 12, 13238. fg. — 2) *übertragen auf:* भर्तरि पापं संश्लेषयति Kull. zu M. 8, 317. — 3) *an sich heranziehen:* शाटविकात्तपालान्संश्लेषयेद्दानवता च सामा Kām. Nītis. 15, 55.

— अभिसम् *sich anschmiegen:* अन्योन्यमभिसंश्लिष्य MBh. 6, 3127.

— उपसम्, partic. उपसंश्लिष्ट *verbunden, zusammenhängend;* davon °त्व n. nom. abstr. Maitrāyaṇ. 3, 3.

श्लिषा (von 2. श्लिष्) f. *Umarmung* Taik. 3,2,4.

श्लिष्टवृत्तक n. *Doppelsinnigkeit als rhetorische Figur* Mallin. zu Çiç. 9,36. Schol. zu Kirāt. 1,34.

श्लिष्टवर्त्मन् m. *das Zusammenkleben der Augenlieder* Çāṅk. Sāṁ. 1. 7,87. sonst श्लिक्तवर्त्मन् z. B. Suçr. 2,309,11.

श्लिष्टालेप (श्लिष्ट + घा°) m. in der Rhetorik *eine durch doppelsinnige Worte an den Tag gelegte Erklärung, dass man mit Etwas nicht einverstanden sei,* Kirāt. 2,160. Beispiel Spr. (II) 537.

श्लिष्टि (von 2. श्लिष्) m. N. pr. eines Sohnes des Dhruva von der Çambhu Hariv. 67. fg. VP. 98.

श्लिष्टोक्ति (श्लिष्ट + उक्ति) f. *ein doppelsinniger Ausdruck* Kathās. 73,420.

श्लीपद् n. *Elephantiasis* Taik. 2, 6, 13. H. 465. Halāy. 2, 449. Wise 391. Suçr. 1,93,1. 291,13. fgg. 326,9. Bhāvapr. 7. Çāṅk. Sāṁ. 1,7,53. Verz. d. B. H. No. 966. fgg. 973. Verz. d. Oxf. H. 308, b, 36. 313, b, 40. 316, b, 4.

श्लीपदप्रभव m. *der Mangobaum* Çabdam. im ÇKDa.

श्लीपदारुह (श्लीपद् + घ°) 1) adj. *die Elephantiasis vertreibend.* — 2) m. *Putranjiva* (पुत्रंजीव) *Roxburghii Wall.* Taik. 2, 4, 29.

श्लीपदिन् (von श्लीपद्) m. *mit der Elephantiasis behaftet* Vājñ. 204. M. 3, 165.

श्लील adj. = श्लील Sāmān. zu AK. 3,1,14 nach ÇKDa. H. 357. nur in der Verbindung अ° *unschön, hässlich, unanständig* (insbes. von Reden): तस्मादनर्थमश्लीलमप्रियं द्रौणिमब्रवीत् MBh. 7, 9403. 12, 12252. Rāja-Tar. 3, 140. 6, 158. Schol. zu Kirāt. 1, 25. अश्लीलत्व zu 66. fg. Vgl. अ° (auch in den Nachträgen).

श्लेष (von 2. श्लिष्) 1) m. nom. act. P. 3,1,141. Vop. 11,3. *a) das Haften, Kleben an* (loc.) Taik. 3, 3, 219. यद्या पुष्करपत्रेषु पतितास्तोयबिन्दवः । न श्लेषमभिगच्छन्ति Spr. (II) 5119. उत्तरपूर्वार्धयोरश्लेषविनाशौ Bādar. 4,1,13. — *b) Vereinigung, Verbindung;* = संधि AK. 3,3,11. त्रिमार्ग्याः H. 988. पद्याम् Halāy. 2,134. *geschlechtliche Vereinigung:* ततो गर्भः संभवति श्लेषात्स्त्रीपुंसयोः MBh. 13, 3427. — *c) Umarmung* Uttarar. 113,9 (133,4). Spr. (II) 4281 (zugleich *Zweideutigkeit*). Sāh. D. 67, 13. — *d) das Zusammenkleben der Wörter* (als rhetorische Figur) Kirāṭārj. (II) 236, 1. Prātiçāk. 67, b, 7. Sāh. D. 614. बहूनामपि पदानामेकपदवद्भासनात्मा Comm. Gegens. भङ्ग Viçvan. Comm. S. 3. Verz. d. Oxf. H. 120, a, 35. — *e)* in der Rhetorik *eine durch Verbindung von Gegensätzen pikante paradoxe Situation* Sāh. D. 621. Beispiel Spr. (II) 2937. — *f) Doppelsinnigkeit, Zweideutigkeit* Sāh. D. 641. 643. 705. 18,11. fg. 130,5. रागपदे श्लेषः 305,15. Prātiçāk. 94, b, 7. Verz. d. Oxf. H. 208, a, 5 v. u. b, 24. 211, b, 3. Kuvalay. 74, b. Spr. (II) 4281 (zugleich *Umarmung*). प्रत्यक्षरश्लेषमय (प्रबन्ध) Viçvan. Comm. S. 9. — *g) Augment* (in grammat. Bed.) Nilak. 2,2,39. — 2) f. श्ला *Umarmung:* अन्योन्यश्लेषया (अन्योन्याश्लेषया ed. Bomb.) Bhāg. P. 3,20,30. — Vgl. घस:°, शब्द° (auch Verz. d. Oxf. H. 211, a, 11 v. u.).

श्लेषक (vom caus. von 2. श्लिष्) adj. *anleben machend, Zusammenhang herstellend* Vīrān. 12,18.

श्लेषण nom. ag. und act. (Daiyup. 17,64) von 2. श्लिष्; s. घस:°, लोह°.

श्लेष्मक m. = श्लेष्मन् Çabdar. im ÇKDa.

श्लेष्मकटाल्क *Spucknapf* Vjutp. 209.

श्लेष्मघना f. *Pandanus odoratissimus* und *arabischer Jasmin* H. an. 4,196. Med. n. 214. ÇKDa. und Wilson fälschlich श्लेष्मघ्ना nach Med.

श्लेष्मघ्न 1) adj. *Schleim vertreibend:* मधु P. 5,2,53, Schol. — 2) f. घ्ना *eine Art Jasmin*, = त्रिपुरमल्लिका Taik. 2,4,25. — 3) f. ई *arabischer Jasmin* und *Cardiospermum Halicacabum* (auch nach Gaṇḍn. im ÇKDa.) Med. n. 144. *Ingwer, schwarzer und langer Pfeffer* (त्रिकटु) Çabdar. im ÇKDa.

श्लेष्मणी (von श्लेष्मन्) 1) adj. (f. घ्नी) gaṇa पामादि zu P. 5,2,100. *klebrig, schleimig* AK. 2,6,2,11. H. 460. Mund Çat. Ba. 10,5,2,12. — 2) f. घ्नी *eine best. Pflanze*, = तर्पणी, गुरुस्कन्ध Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. श्लेष्मल.

श्लेष्मन् (von 2. श्लिष्) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4, 144 (parox.) 1) m. Taik. 3,5,4. *klebriger Stoff, Schleim* Çat. Ba. 13,4,3,6. 7,2,2,5. 6. 12,7,1,2. Kauç. 19. M. 4, 132. 5, 135. श्लेष्मपुरीषम् MBu. 7, 2597. श्लेष्मासु Spr. 3056. MBu. 14,150. Suçr. 1,20,14. 2, 130,8. 246, 19. मुखं श्लेष्मागारम् Spr. 3297. गुडेन वर्धितः श्लेष्मा पतो निःशेषतां व्रजेत् (II) 1164. 4909. Vaṇîn. Bṛn. S. 51, 37. श्लेष्मत्याग 33. Mân. P. 14, 79. Bhâg. P. 5, 26, 23. श्लेष्मापिहितलोचन MBu. 12, 5360. In der Medicin Bez. *einer der Grundstoffe des menschlichen Leibes* (auch कफ genannt), *Phlegma* AK. 2,6,2,13. 3,4,44,67. Taik. 2,6,17. H. 462. Halây. 2,430. fg. 5,6. Wise 46. Vișnu. 12,15. fgg. न समवातपित्तश्लेष्माणो ज्ञातयो भवन्ति Kâraka 3,6. Suçr. 1,23,9. संधिसंश्लेषणक्लेदनरोपणापूरणबलस्थैर्यकृत् 48,7. 77,3. 80, 14. 2, 186, 4. 318, 1. श्लेष्मसंघातजौ स्तनौ Jâtâ. 3, 97. पद् (अञ्जलयः) श्लेष्मा im Körper 106. श्लेष्माणौ निकृत्ति Spr. (II) 1992. श्लेष्मज्वर Verz. d. Oxf. H. 318,b,4 v. u. °पित्तज्वर 3 v. u. °कृता रोगाः Vaṇîn. Bṛn. S. 8, 28. °दुष्ट Suçr. 1, 45, 5. °क्षय 48, 19. °वृद्धि 50, 1. °घ्न 2, 305, 14. °कर 338, 12. °भव 369, 12. श्लेष्मास्राव 307, 4. 397, 11. °शोफ 1,61,10. 131,20. °विद्रधि 2,305,12. श्लेष्माश्मरी 1, 262, 7. श्लेष्मोपनाह 2, 305, 14 und in zahlreichen andern Krankheitsnamen. — 2) f. घ्नी *Schleim* Pâṇân. 1, 3,38. — 3) n. *Band, Nestel:* यद्या श्लेष्मणा चर्मण्यं वान्यद्वा विभ्रिष्टे संश्लेषयेत् Âit. Ba. 5, 32. Pâraṇ. Ba. 16,1,12. यद्या वै रथस्य श्लेष्मैवं यज्ञस्य तपः Kâṭh. 34,2. यद्या क् वै दारुणः श्लेष्म (hier vielleicht *Leim*) संश्लेषणं स्यात् Çâṇḍ. Ba. 6,12.

श्लेष्मल (von श्लेष्मन्) 1) adj. (f. घ्नी) gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97. *schleimig, phlegmatisch* AK. 2,6,2,11. H. 460. Halây. 2,431. घाटार Suçr. 1,52,11. 186,18. 266,12. Kâraka 3,6. Çâṇḍ. Saṅh. 3,3,5. Vișnu. 1,6,113. योनि eine Krankheit der weiblichen Genitalien: *Schleimfluss* Suçr. 2, 397,10. — 2) m. *eine best. Pflanze*, vulgo वकुपार Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. श्लेष्मण.

श्लेष्मवत् (wie eben) adj. *mit Bändern versehen:* ein Wagen Pâraṇ. Ba. 16,1,12.

श्लेष्मक 1) adj. *den Schleim vertreibend.* — 2) m. = श्लेष्मातक Çabdar. im ÇKDa.

श्लेष्मात m. = श्लेष्मातक Çabdar. im ÇKDa.

श्लेष्मातक (von श्लेष्मन्) 1) m. *Cordia latifolia* Roxb. (die Frucht enthält *klebrigen Schleim*) AK. 2,4,2,15. H. 1144. Halây. 2,42. Gorr. 1,5, 17. °फल M. 6,14. Suçr. 1,214,9. 2,39,20. 175,2. 284,1. °त्वच् 298,20. Vaṇîn. Bṛn. S. 48,4. 55,27. 29. °वन R. 7, 10, 43. Verz. d. Oxf. H. 61, a,22. masc. als Bez. *der Frucht* MBu. 12,1213. — 2) f. ई dass. MBu. 3. 10678. Suçr. 2,276,15.

श्लेष्मातकमय (von श्लेष्मातक) adj. *aus dem Holze der Cordia latifolia Roxb. gemacht:* यूप MBu. 14,2681. R. 1,13,25 (23 Gorr.).

श्लेष्माढ्मा in den Bedd. मल्लिकायां und कम्पिल्लकफणिज्जयोः (?) H. an. 3,127 wohl fehlerhaft für श्लेष्मघ्ना.

श्लेष्मातक m. = श्लेष्मातक ÇKDa. — Vgl. लुङ्°.

श्लैष्मिक (von श्लेष्मन्) adj. (f. ई) *zum Schleim (Phlegma) in Beziehung stehend, ihn (es) erregend* oder *beinhaltend* Vârtt. 1 zu P. 5, 1, 35. *schleimig, phlegmatisch* Suçr. 1,10,21. व्याधि 20,18. 21,3. पुरीष 192,2. घ्राणी 1,262,11. 2,130,20. 343,9. °द्रव्य Vaṇîn. Bṛn. S. 104,61. यद् Mit. 224,8 (श्लैष्मिक gedruckt). श्लैष्मिका (!) योनिः so v. a. श्लेष्मला योनिः Suçr. 2,396,14.

श्लोक्, श्लोकते Dhâtup. 4,2 (संघाते: सर्जने, वर्जने Vop.). — Vgl. श्लोकय्.

श्लोक (von 1. श्रु) m. 1) *Ruf, Schall, Geräusch* (z. B. des Wagens, klapperoder Steine u. s. w.) Naigh. 1, 11. Nir. 9, 9. श्लोकैः RV. 1,118,3. 139, 10. कृमा इव कृणुत श्लोकमद्रिभिः 3,33,10. 10,76, 5. 94, 1. यातां 12,5. सूनृतस्य 4,23,8. यापच्छ्लोकोऽन्तरिक्षेषु पूयमानः 9,92,1. मिमीहि श्लोकमास्ये 1, 38,14. 51,12. 10,13,1. यदर्को श्लोकमाघोषति दिवि 1,83,6. 6,24,1. 7,36, 9. 97,3. VS. 10,5. 18,1. Kâṭh. 8,9. Çâṅkh. Ba. 17,3. *Ruf* oder *Stimme der Götter:* des Bṛhaspati RV. 1,190,2. यस्य श्लोको दिवीयते पृथिव्याम् 4. des Savitar 4,53,3. देवेषु च सवितः श्लोकमश्रेः 3,54,11. य इमा विश्वा जातान्याजभार श्लोकेन 5,82,9. 7,82,10. der Açvin 1,92,17. — 2) *Ruf, Nachrede;* = यशस् AK. 3, 4, 3. H. 273. an. 2,20. Med. k. 37. Halây. 1, 173. पत्यौ मे श्लोक उत्तमः RV. 10, 159, 3. समानानामुत्तमश्लोको अस्तु TS. 5,7,6,2. न पापं श्लोकं शृणोति *non male audit* 3,5,2,2. भद्र (oder zu 1) AV. 16,2,4. कीर्तिं श्लोकं विन्दते Çat. Ba. 14, 4, 2, 16. Çâṅkh. Çr. 7,9,6. पुण्य TBa. 3,1,2,6. उत्तम° adj. Bhâg. P. 1,3,40. 18, 4. 2,1,9. 4,8,37. 15,23. 19,23. 20,25. 5, 1, 3. मु° adj. 3,3,7. 6,27. — 3) *Strophe*, später insbes. *die* Anushṭubh-*Strophe, der epische* Çloka AK. H. an. Med. उपनिषद: श्लोकाः सूत्राणि Çat. Ba. 14, 5, 4, 10. 7, 2, 11. भूमिः श्लोक इलो 13,7,2,15. 19,3,2,4. 18. 11,3,2,5. 3,4,12. Kauç. 6. 68. 74. तदप्येते श्लोका अभिगीताः Âit. Ba. 8, 22. Pâraṇ. Ba. 24, 18, 4. Taitt. Âr. 8,1. Nir. 3,4. RV. Prâr. 16,3. Kaush. Up. 1,6. Maitrâjan. 6, 32. MBu. 3,2642. R. 1,2,31. 33. पदैश्चतुर्भिः संयुक्तमिदं वाक्यं समाक्षरैः। शोचतोऽकं मया यस्मात्तस्माच्छ्लोको भवत्विति ॥ R. Gorr. 1,2,39. Websa, Râmây. Up. 337. 362. Vaṇîn. Bṛn. S. 22,2. 46,57. 53. 48,38. 65,3. 86,7. 104, 57. 107,18. Spr. (II) 6593. fg. Râja-Tar. 4,46. Bhâg. P. 4,12,29. Sarvadarçanas. 103,9. 108,5. Pâraṇ. 106,2. 127,14. Hit. 8,20. Comm. zu TS. Prâr. 22,14. 23,30. °शती Verz. d. B. H. 159, Cl. 11. — 4) N. eines Sâman TS. 7,5,8,1. 2. प्रजापतेः dasgl. Ind. St. 2, 224, b. — Vgl. घनु°, पुण्य°, प्रतिश्लोकम्, वरुच्छ्लोक, वि°, भूर°, सच्छ्लोक, शतश्लोकी (वेदान्त° Hall 119).

श्लोककार adj. P. 3,2,23.

श्लोककृत् adj. *Geräusch machend* AV. 5,20,7. *laut rufend* Taitt. Up. 3,10,6.

श्लोकगौतम m. *der in Çloka sprechende* Gautama Verz. d. Oxf. H. 270,a,34. fg. 278,a,26.

श्लोकत्व n. nom. abstr. zu श्लोक 3) R. 1,2,43. Râgat. 14,70.

श्रोकय् (von श्रोक), °यति P. 3,1,25. *schallen machen:* श्रोत्रम् VS. 14,8. — उप *besingen in Strophen* P. 3,1,28, Schol.

— सम् dass. Bhāṭṭ. P. 5,25,8.

श्रौकयव adj. etwa *den Schall* (in Maasse) *spannend* ṚV. 9,73,6.

श्रौकवार्त्तिक n. *ein metrisches* Vārttika Colebr. Misc. Ess. 1,300. °कार Goldstücker, Min. 95. fg. 102.

श्रौर्किन् (von श्रोक) adj. *geräuschvoll* ṚV. 8,82,8.

श्रौक्य (wie eben) adj. 1) dass. VS. 16,33. — 2) *rühmenswürdig* Bhāṭṭ. P. 1,17,30. 8,6,28. 10,41,14. सु° 3,12,31. 6,18,16. 10,89,21.

श्रोण्, श्रौणति = श्रोण् (संघाते) Dhātup. 13,15. पद्श्रौणात् ॥ तच्छ्रोणा TBr. 1,5,2,3. 9. Aus श्रोण gefolgert.

श्रौर्ण adj. (f. घा) = श्रौण *lahm* AV. 12,4,3. TBr. 3,9,12,2 (= दुष्टत्वच् Comm.). — Vgl. घ° (auch TS. 5,1,6,7).

श्रौर्ण्य (von श्रौर्ण) n. *Lahmheit* TBr. 3,9,12,3. = लङ्दोष Comm.

1. श्व am Ende einiger comp. = श्वन् *Hund* P. 5,4,96. fg. Vop. 6,42. — Vgl. अति°, गोष्ठ°, यम°.

2. श्व von 2. श्वस् in श्वस्य° und श्वःश्व.

श्वःकाल (2. श्वस् + काल) m. *der morgende Tag:* °काले so v. a. morgen MBh. 1,7219.

श्वकिर्त्किन् (श्वन् + कि°) adj. Bez. von *Unholden* AV. 8,6,6.

श्वक्रोडिन् (श्वन् + क्री°) adj. *Hunde zum Vergnügen haltend* M. 3,164.

श्वगण (श्वन् + गण) m. *ein Rudel Hunde* P. 4,4,11. Hariv. 14620. 14632. 14664.

श्वगणिक (von श्वगण) adj. (f. ई) *mit einem Rudel Hunden umherziehend* P. 4,4,11. Pāraskārgṛhyas. 30,a,3. 5. — Vgl. श्वागणिक.

श्वगणिन् (wie eben) adj. dass.: वागुरिक Rāgān. 9,53.

श्वग्रह m. Bez. *eines best. Dämons, durch den Kinder besessen werden,* Verz. d. Oxf. H. 307,b,24 (स्वग्रह die Hdschr.).

श्वघ्निन् m. Bez. *eines gewerbsmässigen Spielers* Naigh. 4,2. Nir. 5,22. श्वघ्नीव कृत्वर्वत्ते यामिनाना ṚV. 1,92,10. श्वघ्नीव यो डिंगोवा लतमादत् 2,12,4. 4,20,3. 8,45,38. कृतं पच्कृघ्नो विचिनोति काले 10,42,9. घृतानिव श्वघ्नी नि मिनाति (वि विनोति) तानि AV. 4,16,5.

श्वङ्ग्, श्वङ्गते Dhātup. 4,22 (गत्यर्थ; सर्पे Vop.). स्वङ्ग् v. l.

श्वङ्ग्, श्वङ्गति Dhātup. 5,44 (गत्यर्थ; Vop. गतौ, सर्पणे, व्रजे, सपि). स्वङ्ग् v. l.

श्वच्, श्वचते Dhātup. 6,8 (गतौ). — Vgl. श्वञ्च्.

श्वचक्र (श्वन् + चक्र) n. *das Kapitel über Hunde,* Titel des 89ten Adhj. in Vārāh. Bṛh. S.

श्वञ्च्, श्वञ्चते Kāç. in Dhātup. 6,7. — Vgl. श्वच्, श्वञ्च्, श्वञ्ज्.

श्वत्राघनी (श्वन् + घा°) f. Kāty. Çr. Comm. 509,1. — Vgl. unter त्राघनी.

श्वत्रीवन adj. *der aus Hunden ein Gewerbe macht* Daśa zu Nir. 2,3.

श्वत्रीविका f. *Hundeleben,* Bez. *des Dienstes* H. 866. — Vgl. d. श्ववृत्ति.

श्वञ्च्, श्वञ्चते Dhātup. 6,6 (गतौ). *sich aufthun, in die offenen Arme aufnehmen:* मर्यायेव कन्या शश्वचे ते ṚV. 3,33,10. — caus. *sich aufthun machen, öffnen:* श्वञ्चयो गिरीन् ṚV. 10,138,2. — Vgl. श्वञ्च्.

— उद् *sich aufthun:* उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि ṚV. 10,18,11. fg. 142,6. — Vgl. उच्छ्वञ्च्.

श्वञ्ज्, श्वञ्जते = श्वञ्च् Kāç. in Dhātup. 6,7.

श्वठ्, श्वाठयति Dhātup. 32,29 (संस्कारगत्योः, असंस्कारगत्योः, गत्यसंस्कृतसंस्कृते). — Vgl. श्वण्ठ्.

श्वठ् und श्वठे P. 6,1,216.

श्वण्ठ्, श्वण्ठयति = श्वठ् Dhātup. 32,29, v. l.

श्वदंष्ट्रक m. = श्वदंष्ट्रा Rājān. im ÇKDr.

श्वदंष्ट्रा f. (*Hundszahn* nach den starken Dornen des Stammes) *Asteracantha longifolia Nees.* AK. 2,4,3,17. H. 1136. Halāy. 2,46. Ratnam. 8. Suçr. 1,137,1. 20. 238,13. 367,11. 2,21,14. 52,20. 54,4. — Vgl. शोवदंष्ट्र.

श्वदंशित 1) adj. *Hunden lieb.* — 2) n. *Knochen* H. 626.

श्वदति m. *Hundebalg* Spr. (II) 6596. — Vgl. unter दति 1).

श्वधूर्त m. *Schakal* Çabdar. im ÇKDr.

1. श्वन् 1) m. Nir. 3,18. Uṇādis. 1,158. Declination P. 6,4,133. Vop. 3,117. in Ableitungen zu शोव° gesteigert guṇa ṭhārādi zu P. 7,3,1. Vop. 7,4. *a) Hund* AK. 2,10,23. H. 1280. Med. n. 21. Halāy. 2,126. fg. श्वानं बस्तो बोधयितारमब्रवीत् ṚV. 1,161,12. रार्यतः श्वनः 162,4. 2,39,4. 7,55,5. 8,101,13. 10,86,4. Vājas. 7,3. AV. 5,37,3. 11,2,3. सर्वत्र्या श्वनं श्वाक्षाणि पेचे ṚV. 4,18,13. VS. 16,28. Çat. Br. 11,5,2,3. 13,2,2. 14. Pāraśav. Gṛhy. 2,8,22. Āçv. Gṛhy. 4,9,3. Kauç. 13. 48. श्वनः पदम् Āçv. Çr. 3,10,14. Kāty. Çr. 25,4,18. दिव्य AV. 5,20,1. Çat. Br. 11,1,8,1. der Mond 2. 10. du. TBr. 1,1,2,6. Jama's *Hunde* ṚV. 10,14,10. AV. 8,1,9. 11,2,11. चतुरक्ष nach dem Comm. *ein solcher, der über den Augen zwei augenähnliche Flecke hat,* TBr. 3,8,4,1. Çat. Br. 13,1,2,9. Kāty. Çr. 20,1,28. — श्वा M. 2,201. 3,239. 241. 12,62. श्वा मृगयरूपो मृगयः Spr. 2997. (II) 968. श्वनीमन्वेति श्वा 1893. यस्य निर्देशनः श्वेव जिह्वया लेढि केवलम् 3833. श्वावलिह्याद्विः 5214. (I) 3088. Vārāh. Bṛh. S. 46,36. Bhāṭṭ. P. 3,10,22. श्वानम् Spr. 3038. श्वना M. 4,208. R. 5,23,32. श्वचितानी श्वना सव्यम् Suçr. 1,111,2. श्वनः पुच्छम् Spr. 3076. Vet. in LA. (III) 9,13. श्वनि Bhāg. 5,18. श्वानः प्रकृत्त इव Vārāh. Bṛh. S. 46,68. श्वनस् acc. pl. M. 3,220. 8,90. R. 2,70,22 (72,24 Gorr.). श्वभिस् M. 3,131. 6,51. 8,371. Bhāṭṭ. P. 3,17,31. श्वभ्यस् MBh. 3,105. Bhāṭṭ. P. 9,21,9. श्वनाम् M. 3,92. Vārāh. Bṛh. S. 51,18. श्वगर्दभम् M. 10,51. श्वनकुलम् 11,159. श्ववराहम् gaṇa गवाश्वादि zu P. 2,4,11. श्वखरोष्ट्र रुवति M. 4,115. श्वगृधी 3,115. श्वसूकरमुलानुग 8,239. 298. 11,131. 199. 12,55. Suçr. 1,108,1. Vārāh. Bṛh. S. 53,108. Bhāṭṭ. P. 2,7,42. श्वकृत M. 8,232. श्वशत्रु MBh. 12,1266. श्वचेष्टित Verz. d. B. H. 268,1. Verz. d. Oxf. H. 331,a,33. श्वशब्दज्ञान 92,b, No. 148. श्वादिदंशनप्रायश्चित्त 282,b,32. Fasste man दीर्घजिह्वम् ṚV. 9,101,1 als acc. von °जिह्वी (was aber nicht nothwendig ist), so würde श्वन् auch *Hündin* sein. — *b) ein zum Aufbau eines Hauses besonders zugerichteter Platz* Mān.; vgl. u. गज 4. — 2) f. श्वनी *a) Hündin* P. 4,1,41. Vop. 4,13. AK. 2,10,23. H. 1281. Hāl. 172. चतुरक्षी AV. 4,20,7. Çat. Br. 5,3,3,19. Jāān. 3,235. MBh. 16,41. Spr. (II) 1893. यस्य भार्या गृहे नित्यं श्वनीव परिगर्जति 5388. Kathās. 13,118. Bhāṭṭ. P. 3,18,11. गृहिणी Citat bei Uṇṇ. zu Uṇādis. 1,158. — *b) Benincasa cerifera* Sav. Rājān. im ÇKDr. — Vgl. देवश्वनी, वनश्वन्, 1. शोव, शोवन fgg. und श्वान.

2. श्वन् in श्वत्रि°, दुर्गृभि°, मातरि°.

श्वनिन् (von 1. श्वन्) adj. *Hunde haltend,* — *führend* VS. 16,27. 30,7.

श्वनिश n. und °निशा f. P. 2,4,28, Schol. AK. 3,6,6,40. *eine Nacht,*

in der die Hunde heulen u. s. w., Taitt. 1,1,105.

शौन्वत् (von 1. शुन्, gesprochen शौंवन्वत्) adj. Beiw. einer Klasse von Apsaras AV. 11,9,15. 19,36,6.

शुप adj. *Hunde beschützend, — beaufsichtigend; Besitzer von Hunden* Harıv. 14665.

शुपच् m. (nom. °पक्) = शुपच Vopâlita bei Buan. zu AK. 2,10,20 nach ÇKDa. °पचाम् M. 3,92.

शुपच gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. m. Bez. einer best. verachteten Menschenklasse (*Hunde kochend*), oft dem Kaṇḍâla gleichgesetzt, AK. 2,10,20. Taitt. 3,3,207. H. 933. Hall. 2,143. Çiksh. Gaṇ. 2,14. चण्डालश्वपचानां तु बहिर्ग्रामात्प्रतिश्रयः । श्वपात्राश्च कर्तव्या धनमेषां सुगर्दभम् ॥ M. 10,51. MBh. 3,103 (= Mahân. P. 29,23). 7,3254. 12,5003. 5286. fgg. Suçr. 1,63,4. अन्योऽन्यस्य च विश्वासः श्वपचेन प्लुतो यथा Spr. 3105. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 51,5. 53,84. Râǵa-Tar. 5,390. 392 (fälschlich °पक ed. Ta.). Bhâg. P. 3,16,6. 33,7. 7,9,10. Pañkat. 1,2,40. Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,23. fg. f. ई *b*,34. श्वा Râǵa-Tar. 5,104. — Vgl. शुपाक, शुपाद्.

शुपचता f. nom. abstr. von शुपच MBh. 13,188.

शौपति m. *Herr der Hunde* VS. 16,28. *Besitzer von Hunden* Bhâg. P. 9,21,9. शुगर्दभपतयः *Besitzer von Hunden und Esseln* 5,26,24.

शौपद् (शुन् + पद् *Fuss*) m. AV. Paipp. 3,10. *ein reissendes Thier:* व्याघ्रः शुपदामिव AV. 8,5,11. 19,39,4. — Vgl. शुपाद्.

शुपद् n. *Hundepfote*, als Brandmahl M. 9,237. Vîrabadr. 44,2. — Vgl. शुपाद्.

शुपाक m. = शुपच gaṇa श्वयुकादि zu P. 7,3,53. तन्तुवायास्तथोशायौ शुपाक इति कीर्त्यते M. 10,19. Bhâg. 3,18. MBh. 7,9135. 12,5287. 13, 772. 2563 (Abkunft). 5762. 6705. Spr. (II) 3659. Bhâg. P. 1,11,22. Râǵa-Tar. 5,217. 382. 389. f. ई 390. fg. 393. 406. — Vgl. शुपाकक.

शुपाद् m. = शुपद् Râǵa-Tar. 6,109.

शुपुच्छ m. n. *Hunderuthe* Spr. 3342. (II) 570. 2851. Kâṭ. Ça. Comm. 599,1. — Vgl. शुपुच्छ.

शुफल m. *Citronenbaum* Ratnam. im ÇKDa.

शुफल्क m. N. pr. eines Sohnes des Vṛshṇi Harıv. 1908. fgg. 2081. 5085. 6628. 6649. VP. 431. fg. 435. Bhâg. P. 3,1,32. 9,24,14. — Vgl. शाफल्क fg.

शुभक्ष adj. *Hundefleisch geniessend* MBh. 12, 5295. °भक्ष्य ed. Bomb.

शुभीरु m. *Schakal (den Hund fürchtend)* Çabdam. im ÇKDa.

शुभोजन 1) n. *eine Speise der Hunde*, Bez. *des Körpers* Bhâg. P. 3, 14,27. — 2) m. N. einer Hölle VP. 2,6,5. 27.

शौभ 1) n. AK. 3,6,4,22. Siddh. K. 249,*b*,1. m. n. *Erdspalte, Loch; Grube* AK. 1,2,4,2. 3,4,25,186. Taitt. 1,2,1. 3,2,15. H. 1364. Hall. 3,2. परि शौभेव दुरितानि वृण्याम् ṚV. 2,27,5. Çat. Bṛ. 11,2,3,3. °प्रद्र 5,2,3,2. 3. 7,2,4,8. Kâṭ. Çr. 6,7,13. 13,3,16. 16,3,2. 19,2,7. Lâṭ. 1,7,3. 4. 16. 3,11,1. उपरवा नाम शुभाः 10,15,17. स्वर्गलोक Gobh. 4,7,3. Gop. 2,13. Kaṭhân. Up. 2,9,3. मण्डूकं °मुखे दृष्ट्वा MBh. 3,13164. 13,1649. शुभाणि पूरयामासुः R. Gorr. 2,87,11. Suçr. 1,23,1. 110,10. 134,18. 2, 144,8. Kâm. Nîtis. 18,67. Viṣṇ. 18. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 48,16. 53,90. 58, 84. 60,6. Bṛh. 27 (25),36. Spr. (II) 3517 (Gegens. तुङ्ग). Kathâs. 21,16. 34,203. 64,150. 65,17. दुःखान्धा हि पतन्त्येव विपच्छ्वभ्रेषु कातराः 101, 21. Mârk. P. 43,29. Râǵa-Tar. 1,302. 331. 372. Bhâg. P. 4,7,28. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,20. °तिर्यञ्च् *ein Gruben bewohnendes Thier* Spr. (II) 2190 (vielleicht ist aber शुभे *in der Hölle* zu lesen). — 2) *Hölle* Spr. (II) 6278. Sarvad. 141,18. गच्छेत्स्वर्गं वा शुभमेव वा Sarvadarç. 82,5. m. *eine best. Hölle* Mârk. P. 10,81. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Vasudeva Harıv. 1951. eines Fürsten von Kampana Râǵa-Tar. 8,696.

शुभपति m. wohl *Höllenfürst* Çaṅk. 14,13.

शुभय् (von शुभ), °यति Dhâtup. 32,79, v. l. (गत्याम्, कृच्छ्रजीवने, क्लिशे, तङ्के). शुभिर्त adj. *löcherig* (ein Boden) gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36.

शुभवत् (wie oben) 1) adj. *löcherig* (ein Boden) Suçr. 1,135,10. मुखान्न इव धावन्ति गच्छन्तः शुभवत्मुखम् MBh. 5,1539. — 2) f. °वती N. pr. eines Flusses Harıv. 9509. प्लुभवती Lassen.

शुभित s. u. शुभय्.

शुभीय् (von शुभ), °यति *für eine Grube halten:* शुभीयत्यपि मन्दिरम् Spr. (II) 3899.

शुमांस n. *Hundefleisch* M. 10,106. R. 1,59,19.

शुमुख adj. *ein Hundsgesicht habend;* m. pl. N. pr. eines Volkes Vasiṣṭh. Bṛh. S. 14,25, v. l. Verz. d. Oxf. H. 340,*a*,16.

शुयैव (von शु, शि) m. *das Schwellen* Çat. Bṛ. 4,2,4,11.

शुयथु (wie oben) m. P. 3,3,89. *Anschwellung, Aufgedunsenheit* AK. 2,6,2,3. H. 468. Hall. 2,447. Suçr. 1,40,16. 45,10. 101,1. 118,3. 308,16. घृणोः 258,18. 2,15,4. वात° 133,7. 9. 11. °कर् 1,148,6. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 32,10. Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,3. 4.

शुयन (wie oben) n. *das Schwellen* AV. Paipp. 3,40, Comm.

शौयातु (1. शुन् + यातु) m. *eine Art von* Jâtu ṚV. 7,104,20. 22.

शुयौर्च Uṇâdis. 4,71. *eine best. Krankheit* Uǵǵval.

शुयूष (1. शुन् + यूष) n. *Hundeschaar;* s. शायूषिक.

शुर्त्, शुर्तयति Dhâtup. 32,79 (गत्याम्, कृच्छ्रजीवने).

शुल्, शौलति Dhâtup. 15,42 (साधुगमने, वेगे). Suçr. 1,96,7.

शुलिक् (nom. °लिट्) adj. wohl *wie ein Hund leckend* P. 8,4,42, Schol.

शुलेख adj. *was ein Hund auszulecken vermag*, von einem Brunnen mit wenig Wasser P. 2,1,33, Schol.

शुल्क्, शुल्कयति Dhâtup. 32,34 (परिभाषणे, भाषणे).

शुष्, शौष्टति = शुल् Dhâtup. 15,42. अशुष्टोत् P. 7,2,3, Schol.

शुवत् (von 1. शुन्) adj. *Hunde besitzend, — haltend* M. 4,216. MBh. 17,83.

शुविष्ठा f. *Hundekoth* M. 10,91.

1. शुवृत्ति f. *Hundsleben*, Bez. *des Dienstes* AK. 2,9,2. M. 4,4. 6. Spr. 3292. (II) 4348. 4625. Râǵa-Tar. 5,133. Bhâg. P. 7,11,18. 20. 11,17, 46. fg. Hier und da fälschlich स्ववृत्ति geschrieben.

2. शुवृत्ति adj. = शुवृतिन् Paiçâcikî Bhâsha 50,*a*,3.

शुवृतिन् adj. von *Hunden lebend* Jâǵ. 1,162.

शुव्याघ्र (1. शुन् + व्या°) m. *Jagdleopard* Gaṇiḍh. im ÇKDa.

शुशीर्ष adj. *einen Hundskopf habend* Vishṇ. 205.

शौभ्र Uṇâdis. 1,45. 1) m. *Schwiegervater* AK. 2,6,1,31. H. 559. Med. r. 224. Hâr. 201. ṚV. 10,28,1. 85,46. 93,4. AV. 3,6,24. 14,1,39. 2,26. TBr. 2,4,6,12. Âit. Br. 3,22. Âçv. Çr. 2,11,3. Gaṇ. 1,24,4. M. 3,119. 148. MBh. 3,2010. 2448. R. 2,40,15. R. Gorr. 2,26,26. 3,53,3. 4,9,41.

43,63. 6,6,20. Spr. (II) 1178. 1182. Vasiṇ. Bṛh. S. 70,20. Kathās. 18, 396. Rāja-Tar. 3,491. Bhāg. P. 4,3,1. Vet. in LA. (III) 17,12. fg. Daç. 129,5 (*mütterlicher Oheim*). du. श्वश्रूौ *die Schwiegereltern* P. 1,2, 71. AK. 2,6,4,27. H. 360. Jāṭ. 1,83. Kathās. 46,37. 58,69. 77,41. plur. dass.: श्वघ्र पदाग्निः श्वश्रूरेषु दीदयत् ṚV. 10,95,12. AV. 14,2,27. Kāṭh. 12,12. statt des sg. M. 2,130. Vasiṇ. Bṛh. S. 103,6. Vgl. भ्रातृ° und श्वाश्रुर. — 2) f. = ब्राह्मी Med. — Vgl. श्वाश्रुर.

श्वश्रूक (von श्वश्रुर) m. *ein lieber oder armer Schwäher* Paṇḍat. 130, 1. Vet. in LA. (III) 18,2.

श्वश्रूय (wie eben) adj. *zum Schwäher in Beziehung stehend:* इष्टिः सुषाश्वश्रूया Āçv. Çr. 2,11,7.

श्वश्रूर्य (wie eben) m. patron. P. 4,1,137. *ein Bruder des Mannes oder der Frau, Schwager* AK. 2,6,4,24. H. an. 3,508. Med. j. 100. Hāla. 5,54. Kathās. 19,57. 22,177. 33,16. 46,37. 103,217. 109,138. fehlerhaft श्वा° 80,22. 24.

श्वश्रूं (von श्वश्रुर) f. *Schwieger* P. 4,1,68, Vārtt. AK. 2,6,4,21. Taitt. 2,6,9. H. 359. ṚV. 10,34,3. 85,46. AV. 14,2,26. M. 2,131. P. 1,2,71. MBh. 1,1376. 3,16710. 13,4358. R. 2,39,19. 26. R. Gorr. 2,26,26. 6, 8,12. Raghu. 14,13. Spr. (II) 6243. Kathās. 13,161. 25,209. श्वश्रूरेवैनां स्नुषायाः श्वश्रूर्मासानि खादति 29,68. Rāja-Tar. 5,245. °श्वश्रूौ AK. 2, 6,4,27. H. 360. °श्वश्रूणाम् st. des du. Kathās. 107,81. °स्नुषे 39,248. pl. *die Schwieger und die übrigen Frauen des Schwähers* R. 2,104,20 (112,24 Gorr.). 7,42,28. 46,17. — Vgl. श्वेष्ठ°.

श्वःश्रेयस् (2. श्वस् + श्रेयस्) n. P. 5,4,80. Vop. 6,80. = कल्याण, सुख AK. 1,1,4,3. H. 86. H. an. 4,333. Med. s. 63. Halāy. 1,122. = भद्र und परानन्द H. an. = शर्मन् und परमात्मन् Med. *fortschreitende Verbesserung der Lage* u. s. w. Çat. Br. 3,1,2,13. 3,11; vgl. 2,2,2,19. 4,3,4,33. — Bhaṭṭ. 4,38.

श्वःस्य (2. श्वस् + 2. अस्) n. *das Verschieben auf morgen* Çat. Br. 2,1,2,9.

1. श्वस्, श्वंसिति Naigh. 2, 19 (वधकर्मन्). Dhātup. 24, 61 (प्राणने). P. 7,2,76. Vop. 9,27. श्वसिहि (ep. auch °श्वस), श्वंसत्ति und श्वर्सत्ति P. 6, 1,188. °श्वसते und श्वसमान ep., श्वस्यात् (ep. auch °श्वसेत् und °श्वसीत); imperf. अश्वसीत् und अश्वसत् P. 7,3,98. fg. Vop. 9,27. aor. अश्वसीत् P. 7,2,5. Vop. 8,49. 9,27. शश्वास, श्वसिष्यति, श्वसितुम्. 1) *blasen, stechen, sausen, schnaufen:* (अग्निः) श्वसित्यप्सु कृसो न सीदन् ṚV. 1,65, 9. Kauç. 93. 131. प्रति श्वसते ब्रवीमकि ṚV. 8,21,11. श्वसतु गर्गरा अपाम् AV. 4,15,12. 6,101,1. धीरमर्धीरा धयति श्वसन्तम् ṚV. 1,179,4. यच्छ्वसतो व्रयसाना अरावीषुः 10,94,6. सर्पाः श्वसन्तः MBh. 1,2036. शेरो व्याल इव श्वसन् 5,7277. Harīv. 15244. R. 2,22,1. 92,27. R. Gorr. 2, 9,6. 3,7,32. 4,15,16. 5,67,13. Ṛt. 1,13. Mālav. P. 23,69. Bhāg. P. 3,1, 11. 19,7. 4,8,14. 7,8,5. 9,18,15. मृगराज इव श्वसन् MBh. 4,510. श्वसद्भिर्वृषैः 6,3964. 5,7231. Suçr. 1,38,13. श्वसिति मृदु (ein Elephant) Vasiṇ. Bṛh. S. 94,12. श्वसिति विहगवर्गः Ṛt. 1,23. med.: श्वसमाना इवाण्डगाः MBh. 3,12844. 4,2040. — 2) *athmen* Bhāg. 5,3. स लोहकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति Spr. (II) 2767. 5372. Verz. d. Oxf. H. 156,a,23 (lies श्वसिति). श्वसन् शवः Bhāg. P. 2,3,23. 7,11. 3,29,43. 4,20,61. 6,12,8. यं वै श्वसन्तमनु विश्वसन्तः श्वसन्ति 16,48. श्वसन्मृतः 8,19,43. 10,4,16. इतश्च इव श्वसन्ति 87,17. श्वसान *athmend* so v. a. *nur eben lebend* 3,1,15. — 3) *seufzen, aufseufzen* MBh. 3,1867. श्वसतो दीर्घमुष्णं च दुःखार्तस्य मुहुर्मुहुः R. Gorr. 2,79,23. Kathās. 39,188. Bhaṭṭ. 3,18. Bhāg. P. 3,30,13. — partic. 1) श्वसित a) adj. so v. a. *aufgelebt:* श्वसितेनेव वचसा तव सिक्तमिदं मम । चेतन्यमभूच्छ्वसितम् Kathās. 117,111. — b) n. *das Athmen. Athem* H. 1368. R. 2,59,29. Çiç. 9,65 (pl.). अधिक Mālatīm. 11,9. Bhāg. P. 3,1,33. — 3) श्वस्त, श्व° P. 7,2,16, Schol. — Vgl. 3. श्वष्.

— caus. श्वासयति *schweren Athem machen* Suçr. 2,497,6. — श्वासिता R. 2,84,18 fehlerhaft für स्वाशिता, wie die ed. Bomb. liest.

— intens. शेश्वसत् *schnaubend:* Rosse ṚV. 1,30,16. 10,48,6.

— अनु *fortwährend athmen:* जीवस्त्वकोरात्रमनुश्वसन्वै श्वासान्कोरातीक् कतिप्रमाणान् Verz. d. Oxf. H. 149,b,20. fg.

— अप, अपश्वसिति zur Erklärung von अपानिति (das *einathmen* bedeuten soll) Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 42.

— अभि *herblasen, — sausen:* अभिश्वसन्स्तनयन्नेति नार्वत् ṚV. 1,140, 8. भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्वसो (instr. mit Attraction) भयते 10,92,8 (hiernach der Artikel अभिश्वस zu streichen). *stechen, pfeifen:* रक्तोभिरभिश्वसद्भिः R. 5,11,43. *stöhnen:* शराभिघातार्तमभिश्वसन्तम् 2,65,44. — Vgl. अभिश्वास.

— अव s. अवश्वसम्.

— आ 1) *aufathmen, sich erholen, sich beruhigen, gutes Muths werden.* — *sein:* कस्याश्वासिति चेतो हि विकितस्वैरमादृतम् Kathās. 27,202. Mudr. 8. आश्वसिहि MBh. 13,2048. Bhaṭṭ. 4,38. 5,22. आश्वस पुत्र दुर्योधनं प्रति MBh. 6,190. Harīv. 8899. नाश्वसत् Kathās. 33,139. आश्वसीदिव वनम् Bhaṭṭ. 9,56. कृत्वापराधं नष्टः सन्दूरस्थो ऽस्मीति नाश्वसेत् Spr. (II) 1885. 4737. 4747. आश्वसधम् MBh. 3,690. तत्राश्वसीत सत्कृत्वा असत्कृत्वा न विश्वसेत् MBh. 13,7612. कालं कंचिदाश्वस्य 2,17. R. 6,36. 40. Mālatīm. 64,4. *Vertrauen haben zu* (loc.): अप्यस्मिन्नाश्वसन्ते MBh. 5,4620. यस्मिन्मित्रे पितरीवाश्वसीत Spr. (II) 3265. partic. विश्वसित und विश्वस्त (nur dieses zu belegen) Vop. 26,102. *fg. erholt, zu sich gekommen, gutes Muths geworden* MBh. 1,217. 3,12149. 15865. 5,3275. Kathās. 42,103. Bhāg. P. 5,6,12. °मनस् 8,9,11. — Vgl. आश्वास. — caus. *Jmd zu Athem kommen —, sich erholen lassen, beruhigen, trösten:* शीतामिरद्भिरातुरमाश्वास्य Suçr. 1,16,6. 369,3. — 69,13. 100,19. Buddh. 11,50. MBh. 1,5406. 3,3221. 3371. 3434. 3679. 3764. 4,691. 5,6020. 7189. 7280. R. 2,44,24. 46,7. 53,29. 60,4. 71,6. 7. 75,39. 89,33. 103,17. R. Gorr. 2,98,24. 3,51,43. 5,61,7. 6,104,5. Kām. Nītis. 12,19. ad Mudr. 112. Raghu. 12,3. 14,35. 15,45. Kumāras. 4,45. Vikr. 50. 154. Spr. (II) 3611. Kathās. 8,27 (कथा personificirt). 18,95. 175. 290. 20,30. 30,48. 32, 132. 56,70 (आश्वासित zu lesen). Daçak. 59,16. 69,9. Rāja-Tar. 2,410. Bhāg. P. 1,11,23. 3,24,20. Paṇḍat. 104,7 (°क्रियाश्वासित zu lesen). ed. orn. 4,25. Hit. 57,7. 90,9, v. l. Vet. in LA. (III) 18,3. आशिश्वसत् Bhaṭṭ. 15,95. आश्वास्य adj. Mudr. 99. Vgl. आश्वासन.

— पर्या *aufathmen, sich erholen, sich beruhigen:* °श्वसिहि R. Gorr. 2,94,4. °श्वस MBh. 8,4332. °श्वस्त partic. 14,2396. — caus. *Jmd zu Athem kommen —, sich erholen lassen, beruhigen* MBh. 3,11806. 5,6042 (med.). 7,6846. 8,5037. 9,1348.

— प्र caus. *beruhigen, trösten* R. 2,35,115.

— प्रत्या *wieder zu Athem kommen, sich wieder erholen:* °श्वसते रिपुमाचकाङ्क्ष Raghu. 7,44. °श्वसिहि R. 2,51,2 (48,2 Gorr.). 86,3. °श्वस्य

MBh. 5,1380. R. Gorr. 2,66,18. °श्वस्त partic. MBh. 7,3356. 4919. 9,43. Harıv. 8904. R. 1,67,20 (69,21 Gorr.). 2,58,1. R. Gorr. 2,61,1. Mnon. 96. Vgl. प्रत्याश्वास. — caus. *beruhigen, trösten* R. Gorr. 2,117, 26. Vgl. प्रत्याश्वासन.

— समा *aufathmen, sich erholen, sich beruhigen, guten Muths werden:* हृदयं °श्वसिति Kathâs. 43,264. °श्वसिकि MBh. 3,2172. R. 3,53,23. Mṛicch. 61,19. Vikr. 7,7. Mâlatîm. 20,19. Hit. 103,18. °श्वसम् R. 3,43,26. °श्वसत् MBh. 3,2465. °श्वसीत् R. Gorr. 2,51,4. °श्वस्य 2,17,28. Râǵa-Tar. 3,419. Prab. 48,3. 67,5. 90,8. मयि शिष्ये च भृत्ये च मरुते च समाश्वस *verlass dich ruhig auf* MBh. 3,16098. partic. °श्वस्त *erholt, beruhigt* 5, 7281. R. Gorr. 2,93,14. 4,38,49. 5,9,5. 7,7,46. Kathâs. 13,61. 18,185. 21,52. 29,173. 60,15. *voller Vertrauen* M. 7,59. Vgl. समाश्वास. — caus. *Jmd zu Athem kommen lassen, sich erholen lassen, beruhigen, trösten* MBh. 2,988. 3,896. 2391. 2679. 2884 (Rosen). 3011 (med.). 12263. 4,1459. R. 1,9,31 (49 Gorr.). 17,29 (18 Gorr.). 2,78,26. 103,12. 3,1,34. Çiç. Cr. 60,9. Kathâs. 20,148. 25,168. Mâlatîm. P. 21,24. Prab. 22,8. 90,8. 9. Daçak. 93,10. fg. Hit. 90,9. 21. Vgl. समाश्वासन.

— उद् 1) *aufzischen, aufschnaufen:* व्यालवदुच्छ्वसन्तः MBh. 3,15690. घ्राणीविषवदुच्छ्वस्य 7,47. Bhâg. P. 10,78,11. उच्छ्वसमान MBh. 13,31. — 2) *aufathmen, ausschnaufen von so v. a. inne halten* Gorr. 4,5,5. Suçr. 1,235,9. 120,19. सोमपरिग्रहात् 2,166,2. धनुच्छ्वस्य *in einem Athem* Âçv. Çr. 2,17,4. Kâty. Çr. 12,5,8. कुतो वायं प्रश्वसिति उच्छ्वसित्यपि वा पुनः *ausathmen* MBh. 14,573. निःश्वस्योच्छ्वस्य चातुरः Mân. P. 23, 11. *athmen überh.:* नासिकयोच्छ्वसीत (so zu lesen) Çvetâçv. Up. 2,9. नोच्छ्वसेत् Amṛitan. Up. in Ind. St. 9,27. उच्छ्वसन्न स ब्रीवति M. 3,73 = MBh. 3,17343. Spr. (II) 2812. अथ वा नोच्छ्वसिष्यामि संवत्सरशतान्यपि R. 1,64,18. धनुच्छ्वसन् 20. मन्दम् 4,21,1. भुजमुच्छ्वस्य दारुणम् MBh. 14, 482. धनुच्छ्वसमान R. 1,63,8. उच्छ्वसत् n. *ein athmendes Wesen* 7,109, 22. — 3) *aufseufzen:* कोशम् Bhaṭṭ. 6,120. 14,55. — 4) *sich heben:* मन्दारकुसुमस्रग्भा गुरुरस्याः मूच्यते हृदयकम्पः । मुक्तरुच्छ्वसता Vikr. 6. — 5) *sich lösen von* (abl.) Bhâg. P. 10,38,20. उच्छ्वसद्वीवी Pârâç. 3,5, 28. — 6) *sich öffnen, aufblühen:* कुमुदम् Vikr. 57. Mâlav. 31. — partic. 1) उच्छ्वस्त *beruhigt* Kathâs. 71,194. — 2) उच्छ्वसित *a)* adj. α) *beruhigt* Kumâras. 6,14. Mâlav. 41 (st. ब्रीवितुम् liest die ed. Bomb. besser विश्रान्तम्). Kathâs. 49,67. *erfrischt, erquickt:* वनिप्यन्दोच्छ्वसितवसुधा Mnon. 43. विरलस्केर्नभस्वद्भिर्दिश उच्छ्वसिता इव Ragh. 10,74. — β) *gehoben, emporgerichtet, geschwollen:* उच्छ्वसितालकं मुखम् Ragh. 8,61. द्रुतागतायाः कस्याश्चिन्मुक्तरुच्छ्वसितौ स्तनौ Kathâs. 18,16. Kâdab. 14. उत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया Mnon. 98. — γ) *weit geöffnet:* उच्छ्वसितोत्पलेक्षण Bhâg. P. 10,17,6. *aufgeblüht* Mâlatîm. 12,15. — *b)* n. α) *das Ausstossen des Athems* Sin. D. 170. *von feuchten Dünsten* Ragh. 8,3. *Athem, Lebenshauch:* पित्रोरुमा विशेषोच्छ्वसितं बभूव Kumâras. 7,4. Çiç. 31,10. — β) *das Aufgehen, Sichlösen:* नीवीबन्धोच्छ्वसित Mnon. 69. केयूरबन्धोच्छ्वसितैः Ragh. 6,68. — Vgl. उच्छ्वास fg. — caus. 1) *aufathmen lassen* Kâtyâ. 33, 7. *beleben, erfrischen* Bhâg. P. 3,11,15 (उच्छ्वसयन्). प्रथबन्धनानि गात्राणि Ṛit. 6,8, v. l. उच्छ्वसितहृदम्बुजा Kathâs. 33,215. — 2) *in die Höhe heben* R. 7,15,34. Mnon. 71 (mit den Scholiasten zu lesen: °भुजोच्छ्वासितालिङ्गितानाम्). — 3) *lösen:* दशमुखभुजोच्छ्वासितप्रस्थसंधि Mnon. 89.

— प्रोद् *schnaufen, heftig athmen:* प्रायः प्रोच्छ्वसिषि हुतं कृतवत्त्वालासनं रात्रिषु Spr. (II) 7036.

— समुद् 1) *Athem holen* Suçr. 2,370,12. *aufathmen, sich erholen:* ब्राह्मणी साम्बुसिक्तेव तप्ता भूः समुदश्वसत् Kathâs. 21,31. — 2) *tief aufseufzen* (oder auch in Bed. 1): मया समुच्छ्वसितम् (impers.) Spr. (II) 1512. — caus. *in die Höhe heben:* श्रमवारिलेशैः किंचित्समुच्छ्वासितपत्रलेखम् (प्रियामुखम्) Kumâras. 3,38. = विश्रेषित Mallin.

— उप s. °श्वस. caus. *anbrausen, mit Brausen füllen:* उपं श्वासय पृथिवीमुत द्याम् (दुन्दुभे) ṚV. 6,47,29.

— नि 1) *zischen, schnaufen:* निश्वसन्तं (निः° ed. Bomb.) यथा नागम् MBh. 1,219. R. 3,53,55. 5,11,13. Mâṇ. P. 23,73. 69,17. निशश्वासोरगो यथा MBh. 1,5901. वनगजा यथा R. Gorr. 2,101,30. न्यश्वसीत्कल्पवायुवत् Bhaṭṭ. 15,24. — 2) *aufseufzen:* निश्वसन्ती Mâṇ. P. 62,8. निशश्वास MBh. 2,516. 3,460. 3000. 9,1713. R. 3,68,21. Mâṇ. P. 122,16. °श्वस्य (निः° ed. Bomb.) MBh. 3,2376. Çiç. Cr. 26,8. Mâṇ. P. 21,23. Daçak. 89,11. न्यश्वसत् MBh. 8,4833. न्यश्वसीत् Bhaṭṭ. 6,34. 3,17. — partic. निश्वसित n. *Anshauch* Çat. Br. 14,5,4,10 = Maitrâyaṇ. 6,32. — Vgl. निश्वास und श्वस् mit निस्.

— विनि 1) *zischen, schnaufen:* °श्वसन्कुद्ध इवोरगाधिपः R. 4,5,31. Bhaṭṭ. 8,91. — 2) *aufseufzen:* °श्वसत्युच्चम् (so!, विनिः° ed. Bomb.) MBh. 3,14739. °श्वसन् R. Gorr. 2,62,42. 3,47,18. Ragh. 6,40. Spr. (II) 443. °श्वस्य MBh. 3,2730 (विनिः° ed. Bomb.). 13663 (विनिः° ed. Bomb.). 4,459. R. Gorr. 1,57,23. 58,1. 3,68,22. — Vgl. श्वस् mit विनिस्.

— निस् 1) *zischen, schnaufen:* निःश्वास मरुतामिवो विलस्थ इव रोषितः R. 2,23,2 (20,2 Gorr.). 92,27. R. Gorr. 2,19,1. शरं दीप्तं निःश्वसन्तमिवोरगम् 6,92,42. निःश्वसन्निव कुञ्जरः R. Schl. 2,20,8. 101,16 (40,14 Gorr.). — 2) *aushauchen* Suçr. 1,38,15. *einathmen:* निःश्वस्योच्छ्वस्य चातुरः Mân. P. 23,11. — 3) *aufseufzen:* °श्वसति R. 2,59,12. °श्वसत् MBh. 1,5922. 2,1647. R. 1,63,12. 2,34,2. Mân. P. 22,42. Râǵa-Tar. 3,286. Bhâg. P. 4,8,15. °श्वस्य R. 1,54,3. 2,35,1. 57,11. 3,48,1. Çiç. 20,2 (v. l. नि°). Vikr. 21,14. Kathâs. 26,52. Hit. 22,14. — partic. °श्वसित n. *der ausgestossene Athem* Ragh. 8,63. Sâh. zu Çat. Br. 14,5, 4,10. *das Seufzen, Seufzer* Kumâras. 3,46. Vikr. 37 (pl.). — Vgl. निःश्वास und श्वस् mit नि.

— अतिनिस् *heftig aufseufzen:* °श्वसन् R. Gorr. 2,84,5. सुदीर्घमतिनिःश्वस्य MBh. 13,182. R. 2,36,1.

— विनिस् 1) *zischen, schnaufen:* °श्वसन्भुजङ्ग इव रोषितः R. 4,5,16. कोणूनामिवर्षभः R. Schl. 2,42,17. MBh. 7,3089. — 2) *aufseufzen:* °श्वसन् R. 2,83,19. Kathâs. 10,154. °श्वस्य MBh. 5,7332. R. 1,56,32. Bhâg. P. 4,4,3. — Vgl. श्वस् mit विनि.

— परा *vertrauen auf* (loc.): त्वयि पराश्वस्य MBh. 3,17011.

— प्र *einathmen:* कुतो वायं प्रश्वसिति उच्छ्वसित्यपि वा पुनः MBh. 14, 573. Vgl. प्रश्वसितव्य fg. — caus. 1) *athmen machen* Çat. Br. 13,2,7, 12. — 2) *beruhigen, trösten* Harıv. 6343. R. 5,62,4.

— अभिप्र *anblasen,* mit acc. Ait. Br. 3,20.

— प्रति *gegen Jmd schnaufen:* प्रतिं श्वसन्तमवं दानवं रुन् ṚV. 8,29,4. Die Accentuirung sieht die Präp. zu रुन्.

— वि *Zuversicht —, Vertrauen —, kein Arges haben, unbesorgt sein:*

°श्वसिषि Kathās. 60,48. °श्वसित्ति Spr. (II) 1458. °श्वसन् 3646, v. l. Kathās. 36,65 (श्व°). Rāja-Tar. 6,201 (ष्व°). °श्वसेत् MBu. 4,98. Spr. (II) 1677. 6735. °श्वस्य R. 4,27,18. Kathās. 33,173. °श्वसितुम् R. 4,44,69. °शश्वसे (impers.) पतिगणैः Bhatt. 2,36. mit loc. der Person: °श्वसिति Spr. (II) 287. 4219. 4741. Śiś. D. 59,13. °श्वत्ति Spr. (II) 6064. °श्वसन् (ष्व°) Kathās. 43,70. °श्वसिहि R. 5,22,7. °श्वसेत् 4,55,7. Spr. (II) 3430. fgg. Kathās. 5,91. °श्वसैः MBu. 5,433. °शश्वास Kathās. 40,75. °शश्वसुः Kumāras. 5,15. °श्वसे Harīv. 1179. °श्वसीत Mārk. P. 27,8. mit loc. der Sache: घाघरे चलचित्तस्य स्त्रीचरित्रे च Spr. (II) 6202. mit gen. der Person: °श्वसिमि u. s. w. Pañcat. 109,13. 32,23. 238,9 (विश्वसिति zu lesen). Spr. (II) 1694. Mārk. P. 68,32. °श्वसेत् MBu. 3,17310. Spr. (II) 3387. 3428. fg. 3818. 3184. 6208. °श्वसेयुः 1268. मा विश्वसीः Rāja-Tar. 7,461. °श्वसिष्यति R. 2,12,67. mit acc. der Person: न विश्वसेयुस्तां द्रुमाम् Spr. (II) 3434. partic. °श्वस्त und विश्वसित Vop. 26,102. fg. विश्वस्त voller Vertrauen, kein Arges habend, unbesorgt H. an. 3,301. Med. t. 135. MBu. 1,5924. 5949. 4,2227. तेन R. 1,1,68. 3,1,25. 78,3 (°मृगशार्दूल). 4,6,20. 5,79,3. R. Gorr. 1,47,14. Çiç. 9,18, v. l. Spr. 3306. (II) 2197. 2375. 3412. 3431. fgg. 3637. 3923. 6209. Kathās. 24,135. Rāja-Tar. 5, 404. fg. Pañcat. 33,8. °वञ्चक Kathās. 26,240. °घातिन् 57,28. °घातक (विश्वस्तो घा° gedr.) Pañcat. ed. orn. 43,5. mit gen. der Person Pañcat. 63,6. सु° 34,25. घ्न° R. 3,1,23. Spr. (II) 287. 3412. 3431. fgg. 3923. 6209. विश्वस्तम् adv. 3632. 5644 (vielleicht so zu lesen st. विश्वस्तो). Suçr. 2,343,18. विश्वसित nur Bhāg. P. 10,87,20. Vgl. विश्वसनीय, विश्वसितव्य, विश्वस्त, विश्वास, विश्वासिन्, विश्वास्य (°तर् mehr Vertrauen verdienend Daçak. 70,11). — caus. Jmdes Vertrauen gewinnen, Jmd Vertrauen einflössen; mit acc. der Person R. 5,33,18. Kām. Nītis. 5,16. Spr. (II) 659. 1458. 2398. 3431. 4659. 6207. fgg. Kathās. 12,95. 46,232. 121,183. Pañcat. 33,7. 68,20. Hit. 20,11. III, 1. Bhatt. 8,105. Vgl. विश्वासन. — desid. vom caus. Jmd (acc.) Vertrauen einzuflössen beabsichtigen: विशिश्वासयिषां चक्रुर्गोपितः Bhatt. 14,12.

— धृतिवि grosses (zu grosses) Vertrauen haben u. s. w.: मनो नातिविश्वास्य Rāgat. 12,101. विश्वस्ते नातिविश्वसेत् Spr. (II) 3431. fgg. विश्वस्ताच्चातिविश्वसेत् 6209. °श्वस्त MBu. 3,12274.

— अभिवि caus. Jmdes Vertrauen gewinnen, Jmd Vertrauen einflössen; mit acc. der Person MBu. 3,10021. Suçr. 1,316,19.

— परिवि, partic. °श्वस्त voller Vertrauen, kein Arges habend, unbesorgt MBu. 1,5618. 3,11452. 13,1012. — caus. beruhigen, trösten R. 2, 30,26.

2. श्वस् adv. gaṇa स्वादि zu P. 1,1,37. Ableitungen davon (शोव°) gaṇa द्वारादि zu P. 7,3,4. Vop. 7,4. morgen, folgenden Tags Nir. 1,6. AK. 3,5,22. H. 1541. मदर्धीरस्य मदर्धीरिड श्वः RV. 1,123,8. 167,10. 170,1. 8,56,6. 71,6. यस्य त्रीणि मा श्वः AV. 5,18,2. 11,4,21. यदकृस्य श्वो ज्यायसे स्यात् Çat. Br. 2,1,4,1. 14,4,2,34. को हि मनुष्यस्य श्वो वेद 2,1,2,9. 3,1,28. TS. 2,6,2,3. यस्य श्वो वा विनाशिने (अरोराय) Spr. (II) 944. श्वः कार्यमद्य कुर्वीत 6895. वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः Verz. d. Oxf. H. 2:6,a,41. विश्वसो श्वस्तव ताणः Rāja-Tar. 6,43. mit fut. II (auf ता) P. 3,3,15 (aber यस्य श्वो वा गमिष्यति Schol.). 3,1,39, Schol. MBu. 3,2897. R. 2,64,35 (66,36 Gorr.). 90,23. R. Gorr. 2,99,39. Rāja-Tar. 3,92. mit fut. I MBu. 4,2256. R. 1,25,16. 28,35. 2,36,34. 40 (35,41 Gorr.). 83,23. 84,18. R. Gorr. 1,48,21. 5,1,11. 53,4. Milav. 24,10. Varāh. Bṛh. S. 48,21. Kathās. 29,166. Mārk. P. 61,36. LA. (III) 91,13. mit praes. Kathās. 23 c. श्वः श्वः von Tag zu Tag, immer weiter RV. 8,50,17. AV. 10,3,2. 6,5. श्वः श्वो भूतान्भवति TS. 1,3,9,2. 2,5,4,1. TBr. 1,5,6,5. Çat. Br. 2,2,2,19. 11,1,8,4. Kauç. 140. Kāty. Çr. 15,3,2. श्वो भूते am morgenden Tage, am folgenden Tage TS. 1,6,2,1. 2,4,10,1. Çat. Br. 3, 2,2,2. Âçv. Gṛhy. 2,4,7. Kauç. 67. 126. Kenop. Up. 4,6,1. MBu. 2,2008. 3,2768. 16,25. 191. R. 5,1,34. 7,98,26. Kathās. 123,191. Bhāg. P. 6, 9,21. 8,16,44. 9,20,17. श्वःप्रभृति Kāty. Çr. 15,1,8. श्वःकाय Lāṭy. 8,4,6. Vgl. परश्व°, परःश्व°, 2. शोव, शोवस्तिक und zur Form des Wortes श्वस् gestern.

श्वसथ (von 1. श्वस्) m. das Blasen, Zischen, Schnaufen: वृत्रस्य RV. 8,85,7. eines Stiers Çat. Br. 1,1,4,14.

श्वसन (wie eben) 1) adj. blasend, zischend, schnaufend RV. 1,34,5. Çāṅkh. Çr. 4,19,10. ein Stier Vārāh. Bṛh. S. 61,6. समीरण Pāṇ. 3, 3,36. — b) schwer athmend Suçr. 2,446,15. — 2) m. a) Wind (auch in medic. Bed.) AK. 1,1,4,37. H. 1106. an. 3,428. Med. n. 138. Halāy. 1,75. MBu. 3, 10056. 7,1764. 12,12101. R. 5,50,8. 6,16,25. 79,60. 108,1. Suçr. 2,258.10. 314,13. 319,1. Kām. Nītis. 4,80. Kir. 10,34. Çiç. 11,21. Bhāg. P. 1,11,35. 3, 8,17.32. 17,26. 8,10,19. 20,26. 10,20,6. der Gott des Windes MBu. 1,1489. 3,770. 8,1511. Vārāh. Bṛh. S. 34,3. unter den Vasu als Sohn der Çvasā MBu. 1,2582. — b) Vanguiera spinosa Roxb. AK. 2,4,3,33. H. an. Med. — 3) n. a) = श्वास H. an. Med. heftiges, körperliches Athmen Suçr. 1,285, 1. 308,15. das Athmen überh., Athem: घास्यकमलश्वसनैः Çiç. 9,52. 11,21. Kir. 10,34. Bhāg. P. 4,8,20 (nach dem Comm. m. = प्राण). 8, 7,27. 11,4,4. — b) das sich Räuspern Suçr. 1,100,5. — c) = स्पर्श (Comm.) Gefühl d. i. was da gefühlt wird Bhāg. P. 2,2,29. — MBu. 8, 4208 ist statt समाततेन श्वसनेन mit der ed. Bomb. zu lesen तमाततेनेषसनेन.

श्वसनरन्ध्र n. Nasenloch Bhāg. P. 10,16,21.

श्वसनाशन (श्वसन Wind + 2. अशन) m. Schlange (von Wind lebend) Hār. 15. Rāja-Tar. 1,225.

श्वसनेश्वर (श्वसन + ईश्व°) m. Terminalia Arjuna W. et A. Carāṅk. im ÇKDa.

श्वसनोत्सुक श्वसन Wind + उ°) m. Schlange Carāṅk. im ÇKDa.

श्वसीवत् adj. nach Śiś. so v. a. श्वसनवत् schnaubend, zischend RV. 1,140,10.

श्वसुन m. eine best. Pflanze, = लतप्र Carāṅk. bei Wilson; श्वसुन ÇKDa. nach ders. Aut.

श्वस्तन (von 2. श्वस्) adj. P. 4,2,105. zum andern Morgen in Beziehung stehend, morgend: सायंतनं श्वस्तनं वा न संगृह्णीत भिक्षितम् Bhāg. P. 11,8,11. fg. यश्वस्तनविद् der das „morgen“ nicht kennt 4,25,38. यश्वस्तनविघातृ der sich um das „morgen“ nicht kümmert MBu. 12, 5920. यश्वस्तनविधान 6050 = M. 11,16. n. das Morgen, Zukunft Nir. 1,6. Pañcat. Bp. 5,7,3. 15,9,17. श्व° adj. ohne Zukunft obend. nicht für den folgenden Tag Etwas habend Jāṭ. 1,128. श्वस्तनी f. das Futurum und der Charakter (रूप) desselben Vārtt. zu P. 3,3,15.

श्वस्तनवत् (von श्वस्तन) adj. *eine Zukunft habend* Pāṇ. Bn. 11,5, 15. 12,13,10.

श्वस्तनिक in अ° adj. = अश्वस्तन *nicht für den folgenden Tag Etwas habend* M. 4,7.

श्वैस्त्य adj. = श्वस्तन P. 4,2,105.

श्वःसुत्यां f. *Vortag der* Sutjā-*Feier* Ait. Bn. 2,3. स्वर्गस्य लोकस्य *Vorfest der* Soma-*Feier, die zum Himmel hilft*, 6,34. 7,1. Çat. Bn. 3,3,4,12. 7,2,7. 5,1,2,16. Liṭ. 1,4,13. 25.

श्वःस्तोत्रिय m. *der* Stotrija *des folgenden Tages* Ait. Bn. 6,17. Çāṅkh. Bn. 28,17. Ça. 12,2,1. 6. 9,3.

श्वक्षान zu schliessen aus शोवक्षान.

श्वा (श्वि), श्वयति Daivat. 23,41 (गतिवृद्धोः). शिश्वाय und प्रुशाव P. 6, 1,30. शिश्वियतुम् und प्रुश्रुवतुम् Schol. Vop. 8,142. aor. अश्वत् (अश्वताम्, अश्वन्), अश्वयीत् und अशिश्वियत् P. 3,1,49. 58. 7,2,5. 4,18. Vop. 8,38. 57. 86. 135. 141. श्वयिता (vgl. Kāç. 1 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10) 60. श्वूयात् 142. श्वयितुम्; partic. श्वून s. bes. *anschwellen*: प्रजापतिरत्यश्वयत् TS. 5,3,12,1 und öfters. infin. von Todten (vgl. शव) Çat. Bn. 10,6,3, 6. 11,6,2,5. 13,4,4,6. रुदतो ऽशिश्वियद्यतुरास्यं रेतोस्तवाश्वयीत् Bhaṭṭ. 6,19. गृध्रस्येवाश्वतां पतो कृतो 31. शिश्वियुः, प्रुश्रुवुः 14,79. अश्वता कुती जठरं चाप्यशिश्वियत् 15,30.

— caus. aor. अश्वूश्वत् und अशिश्वयत् P. 6,1,31. Vop. 8,142. 18,1.

— desid. vom caus. प्रुशावयिषति und शिश्वाययिषति P. 6,1,31. Vop. 8,142. 19,1.

— intens. शोश्वूयते und शेश्वीयते P. 6,1,30. Vop. 8,142. 20,1. 4. *heftig anschwellen*: शेश्वीयमानारुणीरुनेत्र Bhaṭṭ. 3,30.

— उद्, partic. उच्छून *aufgeschwollen*: प्रबलरुदितोच्छूननेत्र Mṛcch. 82. Spr. (II) 5852. °गल Kathās. 63,185. शवैशिरप्रविष्टाम्बुसमेकोच्छून-विग्रहैः Rāja-Tar. 3,271. स्वर्गग्रामटिकाविलुण्ठनवशोच्छूनैः किमेभिर्भुजैः Sin. D. 3,2 = 214,3. उच्छूनभावं गन्तुम् als Umschreibung von श्वयितुम् Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 56. *angeschwollen* so v. a. *an Umfang gewonnen habend, verstärkt* Sarvadarçanas. 95,1.

— प्र, partic. °श्वून *aufgeschwollen* Soç. 1,120,10.

— वि *anschwellen*: विश्वयत् partic. ṚV. 7,50,1.

— सम्, partic. संश्वून *aufgeschwollen*; *aufgedunsen*: मांसोपभोग° Bhaṭṭ. 9,16. — Vgl. संश्वायिन्.

श्वाकर्ण (f. श्वन् + कर्ण) m. *Hundeohr* Kāç. zu P. 6,3,137.

श्वाकुन्द (f. श्वन् + कुन्द) ebend.

श्वागणिक adj. (f. ई) = श्वगणिक P. 4,4,11. 5,3,3. Vārtt. 2. Vop. 7,1.13.

श्वाघ (f. श्वन् + घस) n. *Hundefutter* Kathās. 114,116; vgl. 122.

श्वात्र, श्वात्रति = गतिकर्मन् Naigh. 2,14.

श्वात्र (von श्वद् = स्वद्) 1) adj. *schmackhaft, angenehm zu geniessen*: der Soma ṚV. 10,46,7. श्वात्राः पीता भवत यूयमापः VS. 4,12. 6,34. 8, 31. Nach den Comm. = तिग्र oder मित्र. — 2) n. *eine schmackhafte Speise (Trank), ein guter Bissen*: श्वात्रमर्का अनूषत ṚV. 8,32,5. त्वा श्वाघच्छात्रमग्निरुणोत् *machte zu einem Bissen, liess sich schmecken* 10,88,4. श्वात्रेण पित्रेर्मुच्यसे पर्या त्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः so v. a. *das mit einer Lockspeise* (z. B. mit einem Spahn) *von den Reibhölzern abgenommene Feuer kann man hin und her tragen* 1,31,4. Nach Naigh. 2,10 so v. a. धन; adv. so v. a. तिग्रम् 4,2. Nir. 5,3. Vgl. im Zend qâçtra d. i. hvâçtra.

श्वात्रौक्ष्य adj. *schmackhaft, zuträglich zu essen*: वयम् ṚV. 8,4,9.

श्वौत्र्य (von श्वात्र) adj. *schmackhaft*: मधोर्मधु श्वात्र्यं सोममाशिरम् ṚV. 10,49,10. त्वा गिरः श्वात्र्या घा हुवेमसि *dich rufen die Lieder, die schmackhaften* (Tränke) *herbei* 160,1.

श्वाद् (f. श्वन् + अद्) m. = श्वपाक Bhāg. P. 3,33,6. 6,13,8.

श्वादंष्ट्रा (f. श्वन् + दं°) f. Kāç. zu P. 6,3,137. — Vgl. श्वदंष्ट्रा.

श्वादंष्ट्रि m. patron. P. 7,3,8, Schol.

श्वादत्त (f. श्वन् + दत्त) m. *Hundezahn* Kāç. zu P. 6,3,137.

श्वान 1) m. = 1. श्वन् *Hund* H. 1279. Çabdar. im ÇKDr. Spr. (II) 226. 1400. 1613. 4381, v. l. 4427, v. l. 6501. 6597. Vṛddha-Kāç. 17,11. Vāsavadatta 5. 19. Verz. d. Oxf. H. 60,a,13. N. 1. 170,b,32. — 2) f. ई = शुनी *Hündin* Çabdar. im ÇKDr.

श्वानचिल्लिका f. = शुनकचिल्ली Rāgān. im ÇKDr.

श्वान्त partic. zu einer nicht mehr vorhandenen Wurzel (etwa श्वम्; nach Sāy. so v. a. श्वात्त oder शात्त, womit der Sinn wirklich getroffen zu sein scheint; etwa *ruhig, friedlich*: यभि श्वान्तं गृणते नान्वेमि मुदे ṚV. 1,145,4. यथा गाव उपमातिं कनायां यनुं श्वास्यस्य कस्य चित्परोयुः 10,61,21.

श्वापद् (f. श्वन् + पद्) Kāç. zu P. 6,3,137. 1) m. n. (dieses den Lexicographen unbekannt) *ein reissendes Thier* AK. 3,4,26, 198. Trik. 2,8,3. 4 (= व्याघ्र *Tiger*, auch nach Çabdar. im ÇKDr.). H. 1216. Hālā. 2,78. (प्रवा° zu sprechen) ṚV. 10,16,6. AV. 11,10,5 (vielleicht श्वापदा oder श्वापदो zu lesen). शार्दूलश्वेष्टाः Çat. Bn. 5,3,4,10. 14,2,4,16. 4,2,29. Kauç. 95. MBh. 3,2651. Harīv. 9632. R. 2,42,20. 97,30. 5,15,56. Suçr. 1,110,4. Rāgān. 17,47. Çiç. 23,11. Spr. (II) 5160. मरमासुताः Bhāg. P. 6,6,26. Brahma-P. in LA. (III) 52,17. Pāṇ. 34,21. 63,14. 16. 20. श्वापदानि Kaivan. Up. 7,2,1. MBh. 12,489. 14,2542. Spr. (II) 1914. R. 2,63,20. 84,13. 97,10. n. sg. collect. AV. 11,9,10. Mān. P. 48,30. — 2) pl. N. pr. eines Volkes Mān. P. 57,50 (स्वापद् gedr.). — 3) adj. = शोवापद् P. 7,3,9. Vop. 7,4. 18. — Vgl. श्वपद्.

श्वापाकक adj. von श्वपाक gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

श्वापुच्छ n. = श्वपुच्छ Kāç. zu P. 6,3,137.

श्वाफल्कि m. patron. von श्वफल्क Schol. zu P. 4,1,114. 2,4,38. श्वाफल्किचैत्रकाः zu 6,2,34.

श्वाफल्कि m. desgl. = अक्रूर Bhāg. P. 11,12,10.

श्वाभस्त्र adj. von श्वाभस्त्रि P. 7,3,8, Vārtt. 3, Schol.

श्वाभस्त्रि m. patron. P. 7,3,8, Schol.

श्वायूथिक adj. von श्वयूथ P. 7,3,8, Vārtt. 2, Schol.

श्वावराह (f. श्वन् + वराह) m. Kāç. zu P. 6,3,137.

श्वौवराहिका f. *die Feindschaft zwischen Hund* (श्वन्) *und Eber* (वराह) P. 4,2,104, Vārtt. 28, Schol.; vgl. P. 4,3,125.

श्वाविध् (f. श्वन् + 4. विध्) VS. Pāṭ. 3,96. P. 6,3,116. m. *Stachelschwein* (nom. °विट्) AK. 2,5,7. H. 1296. Hālā. 2,78. VS. 23,56. 24, 33. AV. 5,13,10. Kauç. 29. Āpast. 1,17,27 (vgl. Note). M. 5,18. 12,68. MBh. 1,3753. 7,1932. 5403. 7235. 8,3266. 13,3761. Suçr. 1,74,13. 203, 1. 2,495,21. Vīcan. 6,48. Vaitān. Bṛh. S. 48,16. 88,3. Mān. P. 8,146.

35,2. Bhāg. P. 3,21,44. श्वाविच्कुललित MBh. 7,7419. 7944. 14,2207. श्वाविद्रोमन् Schol. zu Kāty. Çr. 5,2,15. Kāraṇḍ. 8,15.

श्वाविलोमापरू n. N. eines Tīrtha MBh. 3,6031. = श्वाविलोमापनयन n. 6032.

श्वाशुर (von श्वशुर) adj. (f. ई) *dem Schwäher gehörig* Kathās. 14,10. 19,103. 21,69. 35,152. 55,224. 56,46. 417. 63,182. 64,74. 77,41. 42. 80,22.

श्वाशुरि m. patron. von श्वशुर Uṇādis. zu Uṇādis. 1,43.

श्वाशुर्य m. Kathās. 80,22. 24 fehlerhaft für श्वशुर्य.

श्वास (1. श्वन् + घस) m. ein N. Bhairava's (*den Hund als Pferd gebrauchend, auf einem Hunde reitend*) Caṇḍiāṭmak. bei Wilson.

श्वासँ (von 1. श्वस्) 1) m. P. 3,1,141. Vop. 26,37. a) *Gezisch* (einer Schlange), *Geschnauf:* दृष्टिश्वासमकुर्वाणाः (नागाः) R. Gorr. 2,28,14. Kathās. 46,68. fg. 71. fg. Bhāg. P. 8,7,15. सञ्जवमर्षितः श्वासान् 3,18,14. 7,8,32. Rājā-Tar. 1,167. — b) *das Athmen, Athemzug, Athem* H. 1368. कामक्रोधौ भयं निद्रा पञ्चमः श्वास उच्यते। एते दोषाः शरीरेषु दृश्यन्ते सर्वदेहिनाम् ॥ MBh. 12,11152. छिन्दन्ति पञ्चमं श्वासमत्याकारतया 11154. निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम् 13,3699. Kumāras. 2,42. निगमं °ब्रूपेण ददौ तस्मै Verz. d. Oxf. H. 63,b,24. श्वासान्करोति 149,b,21. भयत्रस्तो नरः श्वासं प्रभूतं कुरुते मुहुः Spr. (II) 4532. क्षयानां श्वासाः 4935. प्रमाणाधिक Çiç. 29. घब्भगन्ध H. 57. श्वासं मनुष्येण (*Gatte*) समं त्यजन्ती Vaṇīn. Bṛn. S. 78,15. श्वासैरगलितावेगैः Rājā-Tar. 3,508. °शेषा प्राणावृत्तिः 5,183. श्वासानिल Bhāg. P. 8,19,10. °धारणं कृत्वा Schol. zu Kāty. Çr. 4,1,13. गत° adj. MBā. 3,16764. क्षित° 7,378 (कृष्णः). Bhāg. P. 1,13, 31. 2,1,17. 3,8,21. 15,7. 28,10. 4,8,75. fg. सश्वासं मरणम् Spr. (II) 4718. घधिकश्वासम् adv. 6332. *der Hauch* bei der Aussprache der dumpfen Consonanten u. s. w. Ṛ. Einl. 6. 13,2. 14,6. AV. Prāt. 1,12. 43. TS. Prāt. 2,5. 10. 24,5. Schol. zu P. 1,1,9. ईषच्छ्वास bei der Aussprache der Tenues und Zischlaute Çikṣā in Ind. St. 4,356. im Gegens. zu प्रश्वास *das Einathmen* H. 83. Sarvadarçanas. 174,13. Kuṭṭan. 14,5. — c) *das Seufzen, Seufzer* Spr. (II) 3894. Çiç. 133. श्वासान्मुञ्चति Sin. D. 57,4. 173. — d) *schwerer Athem, Asthma* Suçr. 1,116,10. 118,16. zerfällt in die Arten तृड्, तमक, छिन्न, मरुत्, ऊर्ध्व 2,497. fgg. Wise 317. Kāraṇḍ. 8,15. Çiṅhās. Saṅh. 1,7,17. Verz. d. Oxf. H. 305,b,28. 306,b,22. 312,b,24. 316,a,6 v. u. Verz. d. B. H. No. 935. 965. fgg. 972. 975. 993. 996. क्षिप्तोद्वत° R. Gorr. 2,65,16. Vaṇīn. Bṛn. S. 8,48. 9,44. 32,10. Bṛn. 23 (21), 8. Bhāg. P. 3,30,17. — 2) f. श्वा N. pr. der Mutter des Windgottes (श्वसन) MBh. 1,2553. — Vgl. क्ष°, छिन्न°, नभ°, मधु°, मरु°.

श्वासकुठार m. *ein best. sicher wirkendes Mittel gegen Asthma* Bhaiṣaṇ. im ÇKDa.

श्वासता f. nom. abstr. zu श्वास *Hauch* Ṛ. Prāt. 13,1.

श्वासरोति m. *Schlaf, Schläfrigkeit* H. 313.

श्वासारि (श्वास *Asthma* + घरि *Feind*) m. *Costus speciosus* oder *arabicus* Rāǵān. im ÇKDa.

श्वासिन् (von 1. श्वस् und श्वास) 1) adj. a) *zischend* Āçv. Gṛhy. 4,8,28. — b) *hauchend* Suçr. 1,105,18. *asthmatisch* 116,9. 301,14. 2,498,7. — c) *mit einem Hauch gesprochen, adspirirt* Çikṣā 31 in Ind. St. 4,356. — 2) m. *Wind* Caṇḍān. im ÇKDa.

श्वाहि m. N. pr. eines Sohnes des Vṛṣṇivant Bhāg. P. 9,23,30.

श्वि s. श्वा.

श्विक m. pl. N. pr. eines Volkes Çat. Br. 12,8,2,7. 13,5,4,18. — Vgl. शैक्व.

1. श्वित्, श्वेतते Dhātup. 18,2 (वर्णे; शोक्ये Vop.). zu belegen nur श्वितानें, श्वयेत्, श्वयितन् (vgl. P. 3,1,55) und श्वाशयितत्. Bildung des partic. pract. pass. P. 7,2,16. fg. *weiss —, licht —, hell sein:* म (घग्निः) श्वितानस्तन्यतू रौचनस्थाः Ṛ. 5,6,2. (उषाः) रुशदासो विधतो भुक्तमश्वेत् 7, 77,2. (उषाः) घरुणाप्सुरशिश्वितत् 8,5,1.

— श्वव *hervorleuchten:* श्ववेयमश्वेयुवतिः पुरस्तात् Ṛ. 1,124,11.

— वि *hell sein, strahlen:* die Uṣas Ṛ. 1,92,12. 113,15. (मरुतः) प्रुषंयवो नाक्षिभिर्व्यश्वितन् 10,78,7.

2. श्वित् = 1. श्वित् in उद्° (nicht von श्वि, सूर्य°.

श्वितीचि (von श्वित्यञ्) adj. *weisslich* Ṛ. 10,46,8.

श्वित्न (von 1. श्वित्) adj. *weisslich* (nach Comm. Rinder) Ṛ. 2,46,31.

श्वित्र्य adj. dass.: मनुत्तेत्रं सश्वित्रिभिः श्वित्र्येभिः Ṛ. 1,100,18. nach Sāy. die Maruṭ.

श्वित्य (?) m. N. pr. eines Mannes Nilak. zu MBh. 7,2183. — Vgl. शैत्य.

श्वित्र्यँ adj. *weisslich:* वृषभ Ṛ. 2,33,8. (उषाः) भुक्ता कुवाद्दनिष्ट श्वितीची 1,123,9. die Vasiṣṭha 7,33,1. 83,8.

श्वित्रँ (von 1. श्वित्) Uṇādis. 2,13. VS. Prāt. 6,27. 1) adj. (f. ई) a) *weisslich, weiss:* Schlange AV. 3,27,6. 10,4,8. 18. TS. 5,5,10,2. In श्वित्र्यं गाम् Ṛ. 1,33,15 vermuthen wir einen acc. von श्वित्रो; nach Sāy. *ein Sohn der* Çvitrā wegen शैत्रेय 14. — b) *mit dem weissen Aussatz behaftet* Pāraṇ. Gṛ. 12,11,11. Āpast. 2,17,21. — 2) m. *ein best. Hausthier* oder überh. *ein weisses Thier* VS. 24,39. — 3) *weisser Aussatz*, m. Varāhaṃ in Verz. d. Oxf. H. 167,a,25. Bhāg. P. 7,1,18. 11,23, 16. Schol. zu Kāty. Çr. 15,3,39. neutr. AK. 2,6,2,8. H. 466. Hall. 2, 449. Verz. d. Oxf. H. 307,a,9. Suçr. 2,66,12. unbestimmbaren Geschlechts: °कर 1,185,10. MBh. 12,11268. Kāvyād. 1,7. Verz. d. Oxf. H. 306,a,2 v. u. Verz. d. B. H. No. 996. — 4) f. श्वा N. pr. eines Frauenzimmers Sāy. zu Ṛ. 1,33,14. fg. — Vgl. शैत्र्य.

श्वित्रक (von श्वित्र) adj. (f. °त्रिका) *mit dem weissen Aussatz behaftet* MBh. 13,6067.

श्वित्रघ्नी f. *Tragia involucrata* Lin. (*weissen Aussatz vertreibend*) Caraṇ. im ÇKDa.

श्वित्रिन् (von श्वित्र) adj. *mit dem weissen Aussatz behaftet* M. 3,7. 161. 177. Jāǵ. 3,215. MBh. 3, 14664. 13, 1584. 4287. 5089. Suçr. 2, 66, 14. Vaṇīn. Bṛn. 23 (21), 7.

श्विन्द्, श्विन्दते Dhātup. 2,9 (शैत्ये, शौक्ल्ये, शैत्ये). Vgl. 1. श्वित्.

शेतँ (von 1. श्वित्) 1) adj. f. घा P. 4,1,39; nach Vop. 4,27 fälschlich auch शेनी, eine Verwechselung mit श्येत). *weiss, licht* AK. 1,1,6,22. H. 1392. an. 2,204. Med. t. 67. fg. Hall. 4,47. Ross Ṛ. 1,116,6. 119, 10. 7,77,3. 8,41,9. 10. Ait. Br. 6,35. Çat. Br. 2,6,2,9. Bhāg. 1,14. R. Gorr. 2,12,11. Hall. 2,283. उत्तर्णाः Vikram. 7,2. AV. 5,17,15. 19,128, 6. Kuh TS. 2,1,8,1. 4. शेतार्ये शेतवत्सायै दुग्धे TBr. 1,7,2,7. Kauç. 120. गोवृष R. Gorr. 2,12,11. वृषभ MBh. 2,415. घश्वतरी (vgl. शेता घश्वतरी Ind. St. 3,258) 1,5008. R. 4,16,11. °दशन 3,36,7. दृप्त Ṛ. 7,87,6.

पक्षिः) चित्रो यदभाट् केतो न विशु 1,66,6. 3,1,4. 5,1,4. 8,40,5. कलश des Soma 4,27,5. 9,74,7. 7,90,3. 91,3. 8,26,19. 10,20,9. लक्ष्मन् AV. 1,23,1. पर्वता: Schneeberge Çat. Br. 14,6,8,9. चर्मन् Kâṭh. 34,5. °पिपीलिका Kauç. 116. — ṚV. Pariç. 17,5. माल्यानि R. 2,25,26. शिला: 4,9,14. श्वेतं पर्व शिरोरुहाणाम् Spr. (II) 6399. 2104. Rasik. 1,33. Suçr. 1,23,3. सुरा 189,6. 2,440,5. शतपदी 290,3. 297,7. सर्षप Ratnam. 113. श्वेतोत्पल Bâlar. P. 3,21,10. यूका Pañkat. 60,24. °तण्डुलपिष्ट Wheeler, Kasmunâ. 272. शोणित Hariv. 8145. कमण्डलु MBh. 1,1149. कुण्डलभूषण Hariv. 2437. 13065. fg. 13070. श्वेतातपत्र Spr. (II) 6495. Bâlar. P. 4, 4,5. Varâh. Bṛh. S. 3,21. 25. 5,58. 34,23. 38,3. घनतिश्वेत. घनतिकृष्ण Lâṭy. 1,1,7. Ind. St. 1,51. त्रि:श्वेता शलली Gobh. 2,7,3. — 2) m. *a*) *Schimmel (Ross)* Çat. Br. 13,5,4,22. — *b*) *Otterköpfchen* H. ç. 172. H. an. *Muschel* überh. Rîâṇ. im ÇKDa. — *c*) = जीवक Gaṇâkaṇ. im ÇKDa. *Kummel* (dies wäre जीरक) Wilson nach derselben Aut. — *d*) *eine weisse Wolke* Çabdar. im ÇKDa. — *e*) *der Planet Venus* ebend. — *f*) *ein best. Komet* (vgl. °केतु) Varâh. Bṛh. S. 11,39. fg. 97,3. — *g*) N. pr. *a*) eines Schlangendämons Pâr. Gṛhy. 2,14. Çâṅkh. Gṛhy. 4,18. Âçv. Gṛhy. 3,3,3. VP. 149. Bâlar. P. 5,24,31. eines Wesens im Gefolge des Skanda MBh. 9,2566. eines Daitja, eines Sohnes des Viprakitti, Hariv. 2437. 2631. eines Muni MBh. 1,962. Kathâs. 72,334. fgg. einer Incarnation Çiva's Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,14. 53,*b*,4. eines Schülers dieses Çveta 52,*a*,15. eines Râǵarshi MBh. 1,226 (eig. 231). 12,5743. 13,6668. 7130. 7681. Verz. d. Oxf. H. 59,*a*,20. eines Sohnes des Fürsten Sudeva R. 7,78,4. eines Heerführers MBh. 6,1868. 1870. श्वेतोपाख्यान MBh. 1,333 (विश्वेपाख्यान ed. Bomb.). R. Gorr. 1,4,140. eines Sohnes des Vapushmant Mârk. P. 53,27. eines Lehrers Ind. St. 8, 222. fg. 364. — β) pl. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 16,38. — γ) eines Weltelephanten MBh. 1,2530. — *b*) eines Berges (vgl. °पर्वत, °शैल, श्वेताद्रि) H. an. Med. MBh. 3,10820. 11537. 14429. 6,198. 9,3349. 13, 7657. 14,1174. R. 5,11,7. Mârk. P. 54,9. VP. 167. Bâlar. P. 5,16,8. Verz. d. Oxf. H. 48,*a*,40. — *c*) eines Dvîpa (vgl. °द्वीप) H. an. Med. MBh. 12,12703. R. 7,37,5,22. = श्वेतद्वीप bei Kâçî Verz. d. Oxf. H. 57,*a*, N. 4. — 3) f. या *a*) *Otterköpfchen* Med. — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: = काष्ठपाटली (°पाटला) und शङ्खिनी H. an. Med. *Boerhavia procumbens Roxb.* Ratnam. 25. *Birke* 94. *Achyranthes atropurpurea Lam.* 160. = अपराजिता, श्वेतवृक्षी, श्वेतकण्टकारी, पाषाणभेदी, शिलावल्कला, श्वेतदूर्वा, क्षुरिकापत्री Rîâṇ. im ÇKDa. — Suçr. 1,144,13. 2,114,8. 130,21. 285,7. Varâh. Bṛh. S. 44,10 (= गिरिकर्णिका Comm.). — *c*) Bez. verschiedener *weisser* Stoffe: *Zucker*, = वंशरोचना und स्फटी (von Wilson hier durch *Krystall* wiedergegeben) Rîâṇ. im ÇKDa. — *d*) mystische Bez. *des Buchstabens* स Wheeler, Râmây. Up. 317. 319. — *e*) N. pr. einer der Mutter im Gefolge Skanda's MBh. 9,6240. der Mutter des Weltelephanten Çveta (Çaṅkha R.) MBh. 1,2625. 2630. R. 3,20,22. einer Fürstin Râǵa-Tar. 8,375. — 4) n. *a*) *das Weisse im Auge* Suçr. 2,303,13. — *b*) *das Weisswerden der Haare* Kâṭhâ. Up. 2, 14. — *c*) *Silber* AK. 2,9,97. 3,4,24,82. Taik. 2,9,32. H. 1042. H. an. Med. Hall. 5,5. — *d*) *Buttermilch und Wasser zu gleichen Theilen gemischt* H. 409. — Vgl. मरु°, श्वेत्य.

श्वेतक (von श्वेत) 1) adj. *weisslich, weiss* Varâh. Bṛh. S. 81,19. — 2) m. *a*) *Otterköpfchen* Bhâvapr. im ÇKDa. — *b*) N. pr. eines Schlangendämons Vâyup. 87. — 3) n. *Silber* Rîâṇ. im ÇKDa.

श्वेतकन्दा f. *eine best. Pflanze*, = घृतविषा Rîâṇ. im ÇKDa.

श्वेतकपोत m. 1) *eine Mansart* Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,20; vgl. Suçr. 2,278,5. 6. — 2) *eine Schlangenart* Suçr. 2,263,6.

श्वेतकर्ण m. N. pr. eines Sohnes des Satjakarṇa Hariv. 11068.

श्वेतकाकीय (von श्वेत + काक) adj. *einer weissen Krähe entsprechend* so v. a. *ganz ungewöhnlich, unerhört:* भर्तारं दु:खशीलमुपाचरत् । उपायि: श्वेतकाकीयै: MBh. 1,1879. ईदृशै: श्वेतकाकीये राज्ञ: शासनदूषकै: Mahâbh. 153,10. या च एतश्च (= मृग) काकश्च तेषामिमे श्वेतकाकीयास्तै: नित्यजागद्भकलभयचकितवेङ्गितवत्तै: — अन्ये तु श्वेतकाको बकस्तदीयै: तं हि वर्षासु नीडस्थं बकोव पुष्णाति Nîlak.

श्वेतकापोती f. *eine best. Pflanze*, welche an Kraft dem Soma gleichen soll, Suçr. 2,170,1. 3. 171,5. 173,12.

श्वेतकाम्बोजी f. = श्वेतगुञ्जा Rîâṇ. im ÇKDa. unter dem letzten Worte.

श्वेतकि m. N. pr. eines alten Fürsten MBh. 1,3098. fgg.

श्वेतकिणिही f. *eine Achyranthes* Rîâṇ. im ÇKDa.

1. श्वेतकुष्ठ *weisser Aussatz* Verz. d. Oxf. H. 281,*a*, No. 659.

2. श्वेतकुष्ठ adj. *mit dem weissen Aussatz behaftet;* davon nom. abstr. °त्व n. Kull. zu M. 11,51.

श्वेतकुञ्जर m. *ein weisser Elephant*, Bez. Airâvata's, des Elephanten Indra's, Çabdar. im ÇKDa.

श्वेतकुश m. *weisses Kuça-Gras* Rîâṇ. im ÇKDa.

श्वेतकृष्णा f. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,289,21.

श्वेतकेतु m. N. pr. verschiedener Männer: Auddâlaki Çat. Br. 3, 4,2,13. 4,2,5,14. MBh. 1,4724. 3,10597. Verz. d. Oxf. H. 215,*b*,11. Âruṇeja Çat. Br. 10,3,4,1. 11,2,2,12. 5,4,18. 6,2,1. 12,2,4,2. Kâṭhâ. Up. 5,1,1. Çâṅkh. Âr. 10,29,7. Âpast. 1,13,18. Kaush. Up. 1,1. ein Sohn des Sonagît Hariv. 1058. — MBh. 1,2047. Hariv. 9574. Verz. d. Oxf. H. 53,*a*,42. Kâv. in Z. d. d. m. G. 7,384. Çâkjamuni als Bodhisattva Lalit. 12. Schiefner, Lebensb. 232 (2). Taik. 1,1,9. N. eines Kometen Varâh. Bṛh. S. 11,37. derselbe heisst bei Parâçara: Uddâlaka-Çvetaketu; vgl. Kern in der Uebers. zu 37 und 16.

श्वेतकेश m. = रक्तशिपु Gaṇâkaṇ. im ÇKDa.

श्वेतकोल m. *ein best. Fisch*, = शफर Taik. 1,2,18. °क m. dass. H. 1346. Hit. 187.

श्वेतखदिर m. *weiss blühender* Khadira Rîâṇ. im ÇKDa. Çabdar. bei Wilson.

श्वेतगङ्गा f. N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,16. fg. Lit. 1,56.

श्वेतगज m. *ein weisser Elephant*, Bez. des Elephanten Indra's H. 177.

श्वेतगरुत् m. *Gans* AK. 2,8,23.

श्वेतगिरि m. N. pr. eines *Berges:* °माहात्म्य Mack. Coll. 1,88.

श्वेतगुञ्जा f. *eine best. Pflanze*, = श्वेतकाम्बोजी, काकादनी, घूडाला u. s. w. Rîâṇ. im ÇKDa.

श्वेतगुणवत् (von श्वेत + गुण) adj. *mit der Eigenschaft der weissen Farbe versehen:* अश्व Sîk. D. 13,4.

श्वेतगोकर्णी f. *Clitoria ternatea* Dhanv. in Nigh. Pr. unter श्वेतनामन्.

श्वेतघण्टी f. *eine best. Pflanze;* s. मक्ता°, welches übrigens auch in मक्राश्वेत + घ° zerlegt werden könnte.

श्वेतचन्दन n. *weisser Sandel* Ratnam. 140. Rágán. im ÇKDa. Paṇḍán. 2,4,3, v. l.

श्वेतचम्पक m. *eine Art* Kampaka Paṇḍán. 2,4,3.

श्वेतचरण adj. *weisse Füsse habend;* m. *ein best. Vogel* Suça. 1,205,14.

श्वेतचिच्चिका und श्वेतचिच्ची f. *eine best. Gemüsepflanze,* = वास्तुकी (so ist st. वास्तको zu lesen) Rágán. im ÇKDa.

श्वेतच्छत्र n. *ein weisser Sonnenschirm* P. 5,1,63, Schol. Bulg. P. 9, 10,11. — Vgl. श्वेतच्छत्रिक.

श्वेतच्छद 1) adj. *weisse Flügel* oder *Blätter habend.* — 2) m. a) *Gans* AK. 3,4,20,228. Halâj. 2,26. — b) *eine Art Basilienkraut* (गन्धपत्र) Çabdan. im ÇKDa.

श्वेतजीरक m. *weisser Kümmel* Rágán. im ÇKDa.

श्वेतटङ्क n. = श्वेतटङ्कण Rágán. im ÇKDa.

श्वेतटङ्कण n. *eine Art Borax* Rágán. im ÇKDa.

श्वेततपस् m. N. pr. eines Mannes, = श्वेत Verz. d. B. H. No. 485.

श्वेततर (von श्वेत) m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,258.

श्वेतता (wie eben) f. *Weisse, Helle* Ind. St. 10,279.

श्वेतदूर्वा f. *weisses* Dûrvâ-Gras Rágán. im ÇKDa.; vgl. श्वेता दूर्वा Suça. 1,378,15.

श्वेतद्युति m. *der Mond* H. 105.

श्वेतद्रुम m. *Crataeva Roxburghii* (mit grossen weissen Blüthen) Rágán. in Nigh. Pr.

श्वेतद्विप m. *ein weisser Elephant,* Bez. des Elephanten Indra's Trik. 1,1,62.

श्वेतद्वीप m. n. *die weisse Insel,* Bez. eines mythischen Landes Seliger MBa. 12,12775. Harîv. 14384. R. 7,37,8,9. Kathâs. 54,19.21.22. 115,101. Rágá-Tar. 3,471. Weber, Kṛishṇaj. 253. 318. fgg. Râmây. Up. 277. fg. 283. 324. Bulg. P. 8,4,18. Paṇḍán. 1,12,56. 2,2,84. 4,3,124. Verz. d. B. H. No. 448. Verz. d. Oxf. H. 60,a, N. 4. N. einer heiligen Localität bei Kâçî 71,a,12. 73,b,13. — Vgl. श्वेत 2) g) ε).

श्वेतधातु m. *Kreide* Rágán. im ÇKDa. *Opal* oder *Chalcedon* Wilson nach Çabdâmbudh.

श्वेतधामन् m. 1) *der Mond.* — 2) *Kampfer.* — 3) *os Sepiae* (धब्धिफेन) H. an. 4,195. Med. n. 249. — 4) *Achyranthes atropurpurea* Ratnâk. in Nigh. Pr. *eine weiss blühende Clitoria ternatea* Ausw. 67.

श्वेतना (von 1. श्वित्) f. *das Hellwerden, Morgenroth* (nach Sây. und Durga) RV. 1,122,4.

श्वेतनामन् m. *Clitoria ternatea* Dhanv. in Nigh. Pr. Kaṇḍa 1,1 (S. 348 der Ausg.).

श्वेतनील m. *Wolke* Çabdar. im ÇKDa.

श्वेतपत adj. *weissgeflügelt* Pân. Gaṇ. 3,6.

श्वेतपट m. N. pr. eines Lehrers Ind. St. 3,222. 331.

श्वेतपत्र 1) m. *Gans* (*Flamingo*); s. das folgende Wort. — 2) f. आ *eine best. Pflanze,* = श्वेतशिंशपा Rágán. im ÇKDa. unter dem letzten Worte.

श्वेतपत्ररथ m. ein Bein. Brahman's H. 212, Schol. Çabdar. im ÇKDa.

श्वेतपद्म n. *eine weisse Lotusblüthe* Rágán. im ÇKDa. Paṇḍán. 1,3,55. Kiṭâdârjun. 3,44. 46.

श्वेतपर्ण 1) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 59,4. — 2) f. आ *Pistia Stratiotes Lin.* Ratnam. im ÇKDa.

श्वेतपर्णास m. *weisses Basilicum* Ratnam. 107.

श्वेतपर्वत m. N. pr. eines *Berges* MBa. 2,1037. fg. 5,353. 6,247. Harîv. 9499. R. 1,37,19 (38,32 Gorr.). 5,27,12. 23. Verz. d. Oxf. H. 149, a,17. Vgl. श्वेत 2) g) δ).

श्वेतपाकी f. *eine best. Pflanze* und *ihre Frucht* gaṇa क्रीतकादि zu P. 4,3,167.

श्वेतपाटला f. *eine weiss blühende Bignonia* Gaṇîjan. im ÇKDa.

श्वेतपाद m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâju beim Schol. zu H. 210.

श्वेतपिङ्ग m. *Löwe* H. 1283.

श्वेतपिङ्गल 1) adj. *rothfalb* H. 1237. — 2) m. *Löwe* Trik. 2,5,1.

श्वेतपिङ्गलक m. *Löwe* Çabdam. im ÇKDa.

श्वेतपिण्डीतक m. *ein best. Baum,* = मक्तापिण्डीतक Rágán. im ÇKDa.

श्वेतपुङ्खा f. = श्वेतशरपुङ्खा Rágán. im ÇKDa. unter dem letzten Worte.

1. श्वेतपुष्प n. *eine weiss Blume* Suça. 1,32,12.

2. श्वेतपुष्प 1) adj. (f. ई) *weiss blühend* Ç'rkn. Ça. 13,6,3. Pân. Gaṇ. 1,12. — 2) m. *Vitex Negundo* (निर्गुण्डी) *Lin.* Gaṇîjan. und Rágán. im ÇKDa. — 3) f. आ *Crataeva Roxburghii* Dhanv. in Nigh. Pr. = घोषातकी Ratnam. 65. = श्वेतनिर्गुण्डी Dhanvan. in Nigh. Pr. *eine weiss blühende Clitoria ternatea* Madanav. obend. = नागदन्ती und मृगेर्वारु Rágán. im ÇKDa. — 4) f. ई *eine weiss blühende Clitoria ternatea* Dhanv. in Nigh. Pr.

श्वेतपुष्पिका f. Bez. zweier Pflanzen: = पुत्रदात्री und मक्राशणपुष्पिका Rágán. im ÇKDa.

श्वेतप्रसूनक m. *eine best. Pflanze,* = तिक, शाकतरु, सेतुवृत Çabdam. im ÇKDa.

श्वेतफला f. *eine best. Pflanze* P. 4,1,64, Vârtt. 3. = श्वेतवल्ली Rágán. im ÇKDa.

श्वेतबुक्का f. *eine best. Pflanze,* = वनतिक्ता u. s. w. Ratnam. 51.

श्वेतबृहती f. *eine best. Pflanze* (शुक्लबृहद्वार्ताकी) Rágán. im ÇKDa.

श्वेतभण्डा f. *eine weiss blühende Clitoria ternatea* Ratnam. 19.

श्वेतभद्र m. N. pr. eines Guhjaka MBa. 2,297.

श्वेतभानु adj. *weissstrahlig:* der Mond Harîv. 2589.

श्वेतभिक्षु m. *ein weiss gekleideter Bettler* (Bez. einer best. Secte): ist तपस्विनां धूर्तः Spr. (II) 3400. — Vgl. पाण्डुरभिक्षु.

श्वेतमण्डल m. *eine Schlangenart* Suça. 2,265,11.

श्वेतमन्दार m. *ein best. Baum* Verz. d. B. H. 135,b (85). °क m. desgl., = पृथ्वीकुरबक, दीर्घापुष्प u. s. w. Rágán. im ÇKDa.

श्वेतमरिच 1) m. *eine Art Moringa pterygosperma Gaertn.* H. 1134. — 2) n. *der Same von Moringa pterygosperma Gaertn.* AK. 2,9,110.

श्वेतमर्कटिका f. = श्वेतवल्ली Rágán. im ÇKDa. unter dem letzten W.

श्वेतमाधव n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 77,b,16.

श्वेतमाल m. 1) *Wolke.* — 2) *Rauch* Viçva im ÇKDa. — Fehlerhaft für खतमाल.

श्वेतमूत्रता (von श्वेत + मूत्र) f. *das Leiden am Abgang weisslichen*

Harns (कफरोग) Çiva. in Nigh. Pr.

श्वेतमूल n. und °मूला f. *Boerhavia procumbens* Mad. in Nigh. Pr. neutr. Sooa. 2,374,21.

श्वेतमेक् bei Wise 361 irrthümlich für शीतमेक्, wie aus der Vergleichung von Bulvapr. 7 hervorgeht.

श्वेतमोद् m. N. eines Krankheitsdämons Harîv. 9557.

श्वेतय् (von श्वेत), °यति = श्वेतामाचष्टे und श्वेताश्वेनातिक्रामति Dair. 35,86. Vop. 21,15.

श्वेतयौवन् adj. (f. °यौवनी) *weiss fliessend* oder N. pr. eines Flusses RV. 8,26,18.

श्वेतरक्त adj. *hellroth* AK. 1,1,4,25. H. 1305.

श्वेतरञ्जन n. *Bixa* Çabdâtnak. bei Wilson.

श्वेतरथ m. *der Planet Venus* Çabdar. im ÇKDr.

श्वेतरश्मि m. N. pr. eines in einen weissen Elephanten verwandelten Gandharva Kathâs. 36,13. fgg.

श्वेतरस n. *Buttermilch und Wasser zu gleichen Theilen gemischt* H. 409, Schol.; vgl. श्वेत 4) *d*).

श्वेतराजी f. *eine best. Pflanze*, = चचेण्डा Râgân. im ÇKDr.

श्वेतरावक m. *Vitex Negundo* (निर्गुण्डी) *Lin.* Rathnam. 110.

श्वेतरूप्य n. *Zinn* H. ç. 159.

श्वेतरोचिस् m. *der Mond* Halâj. 1,42.

श्वेतरोहित m. 1) *eine best. Pflanze*, = शुक्लरोहित Râgân. im ÇKDr. — 2) ein N. Garuḍa's Çabdâtnak. bei Wilson.

श्वेतलोध्र m. = पट्टिकालोध्र Râgân. im ÇKDr.

श्वेतलोहित m. N. pr. eines Schülers des Çveta (einer Incarnation Çiva's) Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,16.

श्वेतवक्त्र m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2575.

श्वेतवचा f. N. zweier Pflanzen: = अतिविषा und शुक्लवचा Râgân. im ÇKDr.

श्वेतवत्सा adj. f. *ein weisses Kalb habend:* eine Kuh Kâṭh. 11,5 in Ind. St. 3,465,1. TS. 1,7,8,7. Çat. Br. 5,3,2,1.

श्वेतवल्कल m. *Ficus glomerata* Gaṇîn. im ÇKDr.

श्वेतवस्त्रिन् (von श्वेत + वस्त्र) adj. *weiss gekleidet* Kâlakârma 1,153.

श्वेतवाहिन् m. 1) *der Mond* H. 104. — 2) Bein. Arǵuna's Gaṇîn. im ÇKDr.

श्वेतवाराह oder °कल्प m. N. des 11ten Kalpa oder 11ten Tages im Monat Brahman's Verz. d. B. H. No. 1175. 1245. Verz. d. Oxf. H. 63,*b*,19. 300,*a*,6. Titel eines Abschnitts im Vâju-Purâṇa 67,*b*,No. 117. 84,*b*,6. 7. Verz. d. Pet. H. 40. श्वेतवाराकतीर्थ n. Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,6. 7.

श्वेतवार्ताकिनी f. *eine best. Pflanze*, = श्वेतवृक्षती Râgân. im ÇKDr.

श्वेतवासस् m. *ein weiss gekleideter Mönch* Halâj. 2,189.

श्वेतवाह् adj. *mit Schimmeln fahrend;* nom. voc. °वाम्, acc. °वाहम्, instr. °वाहा (?) und श्वेतीहा; du. °वोभ्याम् P. 3,2,71 nebst Vârtt. 2, 2,67. Vop. 26,65. 3,102. 107. fgg. fem. °वाही (?) und श्वेतीही 4,12.

श्वेतवाह् adj. *mit Schimmeln fahrend;* m. ein Bein. Arǵuna's MBh. 3,10547. nach ÇKDr. auch ein Bein. Indra's.

श्वेतवाहन 1) adj. *mit Schimmeln fahrend.* — 2) m. *a*) *der Mond* Taitt. 3,3,265. H. ç. 10. H. an. 3,33. Med. n. 248. — *b*) eine Form Çiva's Harîv. 7987. 7990. — *c*) ein Bein. Arǵuna's Taitt. H. an. Med. MBh. 1,7274. 3,10532. 4,1249. 1275. 1382. Verz. d. B. H. 114. — *d*) ein Bein. Bhadrâçva's Verz. d. Oxf. H. 38,*a*,25. — *e*) N. pr. eines Sohnes des Râǵâdhideva Harîv. 2033.

श्वेतवाहिन् m. ein Bein. Arǵuna's Çabdar. im ÇKDr.

श्वेतवृत्त m. *Crataeva Roxburghii* Râgân. im ÇKDr.

श्वेतव्रत m. pl. Bez. einer Secte Hall in der Einl. zu Vâsavad. 33.

श्वेतशारपुङ्खा f. *ein best. Strauch* Râgân. im ÇKDr.

श्वेतशिंशपा f. *eine best. Pflanze*, = श्वेतविल्विका Râgân. im ÇKDr.

श्वेतशिख m. N. pr. eines Schülers des Çveta (einer Incarnation Çiva's) Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,15.

श्वेतशिग्रु m. *eine weiss blühende Moringa* Bulvapr. im ÇKDr.

श्वेतशीर्ष m. N. pr. eines Daitja Harîv. 12939.

श्वेतशुङ्ग m. *Gerste* Gaṇîn. im ÇKDr.

श्वेतशूरण m. *ein best. Knollengewächs*, = वनशूरण Râgân. im ÇKDr.

श्वेतशैल m. N. pr. eines best. *Berges* Harîv. 2437 (hier vielleicht *Schneeberg*). Kathâs. 118,93. 96.

श्वेतशैलमय (von श्वेतशैल) adj. *aus weissem Stein* —, *aus weissem Marmor gemacht* Râǵa-Tar. 6,302.

श्वेतसर्प m. *Crataeva Roxburghii* Gaṇîn. im ÇKDr.

श्वेतसर्षप m. *weisser Senf, ein weisses Senfkorn* H. 1180. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,25.

श्वेतसार m. 1) *Acacia Catechu Willd.* Gaṇîn. im ÇKDr. *eine weiss blühende Ac. Cat.* Râgân. in Nigh. Pr. — 2) *Sandel* Ausg. 82.

श्वेतसिंही f. = श्वेतवृक्षती Râgân. im ÇKDr. unter dem letzten Worte.

श्वेतसिद्ध m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2570.

श्वेतसुरसा f. *eine weiss blühende Vitex Negundo* AK. 2,4,2,31.

श्वेतस्पन्दा f. *Clitoria ternatea* Râgân. im ÇKDr. *eine weiss blühende* Mad. in Nigh. Pr.

श्वेतकृत m. *eine Schlangenart* Sooa. 2,265,17.

1. श्वेताक्ष m. ein *Schimmel*, Bez. des Rosses von Indra Taitt. 1,1,60.

2. श्वेताक्ष adj. *weisse Rosse habend;* m. ein Bein. Arǵuna's H. 709.

श्वेतास्तिन् m. *ein weisser Elephant*, Bez. des Elephanten Indra's Gaṇîn. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,40. Buchsp. im ÇKDr.

श्वेताश्व (श्वेत + अश्व) m. (sc. सोम) *eine best.* Soma-*Pflanze* Sooa. 2, 164,14. 168,17.

श्वेताश्व (श्वेत + अ°) adj. *einen weissen Hodensack habend:* Hengste MBh. 7,1015.

श्वेतात्रेय (श्वेत + अ°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18, *b*,1. 19,*a*,9.

श्वेताद्रि (श्वेत + अ°) m. N. pr. eines *Berges* Harîv. 13070. Buiu. P. 3,8,4 (= कैलास Comm). Vgl. श्वेतपर्वत.

श्वेतानुलेपन (श्वेत + अ°) adj. *weiss gesalbt*, Bolw. und Bein. Balarâma's MBh. 9,2156. 2760 (°लेपन: mit der ed. Bomb. zu lesen).

श्वेतानूकाश (श्वेत + अ°) adj. *weiss scheinend* TS. 7,3,13,1. Çiñ. Br. 14,1 (श्वेता: प्राता येषाम् Comm.).

श्वेताम्बर (श्वेत + अ°) adj. *weiss gekleidet;* m. 1) Bez. gewisser Gaina-

Moncho Sarvadarçanas. 44,4. Colebr. Misc. Ess. 1,380. fg. Wilson, Sel. Works 1,24. 33. 281. 284. 294. 339. fg. 344. °चन्द्र Verz. d. Oxf. H. 123, b, 41. — 2) eine Form Çiva's Verz. d. Oxf. H. 148, b, 37.

श्वेताम्लि (श्वेताम्ली ?) f. = वम्लिका *Tamarindus indica* Rigân. im ÇKDr.

श्वेतायिन् adj. *zum Geschlecht des* Çveta *gehörig* Weber, Nax. 2,391.

श्वेतारण्य (श्वेत + अ°) n. N. pr. eines *Waldes:* रुद्रेणेव विनिर्दग्धः श्वेतारण्ये पुरान्धकः R. 3,35,93. ein Tîrtha am nördlichen Ufer der Kâverî Verz. d. Oxf. H. 83, b, No. 141.

श्वेतार्क (श्वेत + अर्क) m. *Calotropis gigantea alba* Ratnam. 152.

श्वेतार्चिस् (श्वेत + अ°) m. *der Mond* Spr. 3074.

श्वेतावर (श्वेत + अ°) m. *eine best. Gemüsepflanze,* = सितावर Rigân. im ÇKDr.

1. श्वेताश्व (श्वेत + अश्व) m. *Schimmel (Ross)* Çiñku. Ça. 14,20,2. R. 5,32,18.

2. श्वेताश्व (wie oben) 1) adj. *mit Schimmeln bespannt:* रथ Çiñku. Ça. 14,34,2. R. 1,53,18. — 2) m. *a*) ein Bein. Arǵuna's (*mit Schimmeln fahrend*) MBh. 3,10881. — *b*) v. l. für श्वेताश्य Wilson, Sel. Works 1, 211. — 3) f. आ N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, a, 9.

श्वेताश्वतर (श्वेत + अ°) adj. *weisse Maulthiere habend;* m. N. pr. eines Lehrers Çvetâçv. Up. 6,21. °शाखा Verz. d. Oxf. H. 271, a, 6. °शाखिन् 223, a, 7. v. u. श्वेताश्वतरोपनिषद् (herausgegeben in der Bibl. ind.) 271, a, 6. Sarvadarçanas. 152,2. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,257. fg. Bez. der Upanishad Mantrn. zu VS. 5,14.

श्वेताश्य (श्वेत + आ°) m. N. pr. eines Schülers des Çveta (einer Incarnation Çiva's) Verz. d. Oxf. H. 52, a, 16. श्वेताश्व v. l.

श्वेताह्वा (श्वेत + आ°) f. *eine weiss blühende Bignonia* Rigân. im ÇKDr.

श्वेतिक m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,2185.

श्वेतेक्षु (श्वेत + इक्षु) m. *eine Art Zuckerrohr* Rigân. im ÇKDr.

श्वेतेक्षण (श्वेत + ई°) m. N. pr. eines Astronomen Colebr. Misc. Ess. 2,461.

श्वेतोदर (श्वेत + उ°) 1) adj. *einen weissen Bauch habend.* — 2) m. *a*) *eine Schlangenart* Suçr. 2,265,10. — *b*) ein Bein. Kubera's Trik. 1,1,78.

श्वेतोष्णी s. u. श्वेतवाकु.

श्वेत्य (von श्वेत) adj. *weiss, licht:* die Ushas ṚV. 1,113,2. Naigh. 1, 8. Nir. 2,20. ein Fluss ṚV. 10,75,6.

श्वेत्र n. = श्वित्र *weisser Aussatz* Comm. zu AK. 2,6,2,5.

श्वैक्र m. *ein Fürst der* Çvikna Çat. Br. 2,4,4,3.

श्वैतच्छत्रिक (von श्वेतच्छत्र) adj. *der einen weissen Sonnenschirm verdient* P. 5,1,63, Schol.

श्वैतरी. उपस्तिरे श्वेतरी धेनुर्मीळ्हे ṚV. 4,33,1. nach Sây. *milchreich*, vielleicht nur eine dem Metrum folgende Schreibung für श्वेत्रीम् so v. a. श्वित्रीम् (s. श्वित्र).

श्वैति von श्वेत gaṇa मुतंगमादि zu P. 4,2,80.

श्वैत्य (von श्वेत) 1) m. patron. Sṛṅǵaja's (nach Nilak. von श्वित्य ?. MBh. 7,2183. 2195. 2208. 12,1052. — 2) n. *Weisse* Dhârtp. 2,9. Vishn. 11,8. Siv. D. 337,18.

श्वैत्रेय m. wohl N. pr. eines Mannes (nach Sây. metron. von श्वित्रा): श्वैत्रेयो नृषदाय तस्थौ ṚV. 1,33,14. धा श्वैत्रेयस्य उत्तवो गृभद्धत कृष्ण्यः 5,19,3. hier nach Sây. das *Blitzfeuer*, weil es aus der *kalten Luft* geboren ist.

श्वैत्र्य (von श्वित्रिन्) n. *das Behaftetsein mit dem weissen Aussatz* M. 11,51.

श्वोभाव (2. श्वस् + भाव) m. *das Bevorstehen am folgenden Tage* Kâty. Ça. 12,6,28. pl. so v. a. *Sorgen für den folgenden Morgen* Kaṭhop. 1,26.

श्वोभाविन् (2. श्वस् + भा°) adj. *am folgenden Tage bevorstehend:* युद्ध MBh. 1,515. यौवराज्याभिषेचन R. Gorr. 2,3,20. 37.

श्वोमरण (2. श्वस् + म°) n. *der morgen bevorstehende Tod, der Gedanke an den bevorstehenden Tod:* यत्रावगाह्य पीत्वा च नैनं श्वोमरणं तपेत् MBh. 12,5646.

श्वोवसीय n. = श्वोवसीयस Halây. 1,122. Daçak. 60,3.

श्वोवसीयस् (von 2. श्वस् + वसीयस्) n. P. 5,4,80. Vop. 6,80. *künftige Wohlfahrt* H. 86. — Verz. d. Oxf. H. 162, b, N. 2 ist श्वो वसीयः (diese beiden sind मङ्गलार्थकौ nach der Vorstellung des Autors) zu lesen.

श्वोवस्यस् (2. श्वस् + वस्यस् = वसीयस्) adj. *künftige Wohlfahrt verleihend:* त्वम् TBr. 2,3,6,10.

Harns (कफरोग) Çiva. in Nigh. Pr.

श्वेतमूल n. und °मूला f. *Boerhavia procumbens* Mad. in Nigh. Pr. neutr. Suçr. 2,374,21.

श्वेतमेक् bei Wise 361 irrthümlich für शीतमेक्, wie aus der Vergleichung von Bhâvapr. 7 hervorgeht.

श्वेतमोद् m. N. eines Krankheitsdämons Harîv. 9557.

श्वेतय् (von श्वेत), °यति = श्वेताश्वमाचष्टे und श्वेताश्वेनातिक्रामति Dhâtup. 35,66. Vop. 21,15.

श्वेतयावन् adj. (f. °यावरी) *weiss fliessend* oder N. pr. eines Flusses ṚV. 8,26,18.

श्वेतरक्त adj. *hellroth* AK. 1,1,4,25. H. 1395.

श्वेतरञ्जन n. *Blei* Çabdâmrtan. bei Wilson.

श्वेतरथ m. *der Planet Venus* Çabdan. im ÇKDn.

श्वेतरश्मि m. N. pr. eines in einen weissen Elephanten verwandelten Gandharva Kathâs. 36,13. fgg.

श्वेतरस n. *Buttermilch und Wasser zu gleichen Theilen gemischt* H. 409, Schol.; vgl. श्वेत 4) *d*).

श्वेतराजी f. *eine best. Pflanze*, = घण्टापाटा Râgân. im ÇKDn.

श्वेतरावक m. *Vitex Negundo* (निर्गुण्डी) Lin. Ratnam. 110.

श्वेतरूप्य n. *Zinn* H. ç. 159.

श्वेतरोचिस् m. *der Mond* Hall. 1,12.

श्वेतरोहित m. 1) *eine best. Pflanze*, = शुक्लरोहित Râgân. im ÇKDn. — 2) ein N. Garuḍa's Çabdâmrtan. bei Wilson.

श्वेतलोध्र m. = पट्टिकालोध्र Râgân. im ÇKDn.

श्वेतलोहित m. N. pr. eines Schülers des Çveta (einer Incarnation Çiva's) Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,16.

श्वेतवक्त्र m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBn. 9,2575.

श्वेतवचा f. N. zweier Pflanzen: = अतिविषा und शुक्लवचा Râgân. im ÇKDn.

श्वेतवत्सा adj. f. *ein weisses Kalb habend:* eine Kuh Kâṭh. 11,5 in Ind. St. 3,463,1. TS. 1,7,8,7. Çat. Br. 5,3,3,1.

श्वेतवल्कल m. *Ficus glomerata* Gaṇîdn. im ÇKDn.

श्वेतवस्त्रिन् (von श्वेत + वस्त्र) adj. *weiss gekleidet* Kâlakârma 1,158.

श्वेतवाजिन् m. 1) *der Mond* H. 104. — 2) Bein. Arǵuna's Gaṇîdn. im ÇKDn.

श्वेतवाराह oder °कल्प m. N. des 4ten Kalpa oder 4ten Tages im Monat Brahman's Verz. d. B. H. No. 1175. 1245. Verz. d. Oxf. H. 63,*b*,19. 300,*a*,6. Titel eines Abschnitts im Vâju-Purâṇa 67,*b*,No. 117. 84,*b*,6. 7. Verz. d. Pet. H. 40. श्वेतवाराहतीर्थ n. Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,6. 7.

श्वेतवार्ताकिनी f. *eine best. Pflanze*, = श्वेतवृन्ता Râgân. im ÇKDn.

श्वेतवासस् m. *ein weiss gekleideter Mönch* Hall. 2,189.

श्वेतवाह् adj. *mit Schimmeln fahrend;* nom. voc. °वाम्, acc. °वाहम्, instr. °वाहा (?) und श्वेतोहा; du. °वोभ्याम् P. 3,2,71 nebst Vârtt. 8, 2,67. Vop. 26,65. 3,102. 107. fgg. fem. °वाही (?) und श्वेतोही 4,12.

श्वेतवाह् adj. *mit Schimmeln fahrend;* m. ein Bein. Arǵuna's MBn. 3,10847. nach ÇKDn. auch ein Bein. Indra's.

श्वेतवाहन 1) adj. *mit Schimmeln fahrend.* — 2) m. *a*) *der Mond* Taik. 3,3,265. H. ç. 10. H. an. 3,33. Med. n. 248. — *b*) eine Form Çiva's Harîv. 7987. 7990. — *c*) ein Bein. Arǵuna's Taik. H. an. Med. MBn. 1,7274. 3,10533. 4,1349. 1378. 1382. Verz. d. B. H. 114. — *d*) ein Bein. Bhadrâçva's Verz. d. Oxf. H. 58,*a*,35. — *e*) N. pr. eines Sohnes des Râǵâdhideva Harîv. 2033.

श्वेतवाहिन् m. ein Bein. Arǵuna's Çabdan. im ÇKDn.

श्वेतवृत m. *Crataeva Roxburghii* Râgân. im ÇKDn.

श्वेतव्रत m. pl. Bez. einer Secte Hall in der Einl. zu Viśvâv. 33.

श्वेतशारपुङ्खा f. *ein best. Strauch* Râgân. im ÇKDn.

श्वेतशिंशपा f. *eine best. Pflanze*, = श्वेतचिल्लिका Râgân. im ÇKDn.

श्वेतशिख m. N. pr. eines Schülers des Çveta (einer Incarnation Çiva's) Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,15.

श्वेतशिग्रु m. *eine weiss blühende Moringa* Bhâvapr. im ÇKDn.

श्वेतशीर्ष m. N. pr. eines Daitja Harîv. 12939.

श्वेतशुङ्ग m. *Gerste* Gaṇîdn. im ÇKDn.

श्वेतशूरण m. *ein best. Knollengewächs*, = वनशूरण Râgân. im ÇKDn.

श्वेतशैल m. N. pr. eines best. *Berges* Harîv. 2437 (hier vielleicht *Schneeberg*). Kathâs. 118,93. 96.

श्वेतशैलमय (von श्वेतशैल) adj. *aus weissem Stein* —, *aus weissem Marmor gemacht* Râǵa-Tar. 6,302.

श्वेतसर्प m. *Crataeva Roxburghii* Gaṇîdn. im ÇKDn.

श्वेतसर्षप m. *weisser Senf, ein weisses Senfkorn* H. 1180. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,25.

श्वेतसार m. 1) *Acacia Catechu Willd.* Gaṇîdn. im ÇKDn. *eine weiss blühende Ac. Cat.* Râgân. in Nigh. Pr. — 2) *Sandel* Ausw. 82.

श्वेतसिंही f. = श्वेतवृन्ता Râgân. im ÇKDn. unter dem letzten Worte.

श्वेतसिद्ध m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBn. 9,2570.

श्वेतसुरसा f. *eine weiss blühende Vitex Negundo* AK. 2,4,3,51.

श्वेतस्पन्दा f. *Clitoria ternatea* Râgân. im ÇKDn. *eine weiss blühende* Mad. in Nigh. Pr.

श्वेतहनु m. *eine Schlangenart* Suçr. 2,265,17.

1. श्वेताक्ष m. ein *Schimmel*, Bez. des Rosses von Indra Taik. 1,1,80.

2. श्वेताक्ष adj. *weisse Rosse habend;* m. ein Bein. Arǵuna's H. 709.

श्वेताक्षिन् m. *ein weisser Elephant*, Bez. des Elephanten Indra's Gaṇîdn. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,40. Buchrp. im ÇKDn.

श्वेताक्त (श्वेत + अक्त) m. (sc. सोम) *eine best.* Soma-*Pflanze* Suçr. 2, 164,14. 168,17.

श्वेताण्ड (श्वेत + अ°) adj. *einen weissen Hodensack habend:* Hengste MBn. 7,1015.

श्वेतात्रेय (श्वेत + अ°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18, *b*,5. 19,*a*,9.

श्वेताद्रि (श्वेत + अ°) m. N. pr. eines *Berges* Harîv. 13070. Bhâg. P. 3,8,4 (= कैलास Comm). Vgl. श्वेतपर्वत.

श्वेतानुलेपन (श्वेत + अ°) adj. *weiss gesalbt*, Beiw. und Bein. Balarâma's MBn. 9,2156. 2760 (°लेपन: mit der od. Bomb. zu lesen).

श्वेतानूकाश (श्वेत + अ°) adj. *weiss scheinend* TS. 7,3,13,1. Çâṅkh. Br. 14,1 (श्वेता: प्राणा येषाम् Comm.).

श्वेताम्बर (श्वेत + अ°) adj. *weiss gekleidet;* m. 1) Bez. gewisser Gaina-

Moncho Sarvadarçanas. 44,1. Colebr. Misc. Ess. 1,380. fg. Wilson, Sel. Works 1,24. 33. 281. 284. 294. 339. fg. 344. °चन्द्र Verz. d. Oxf. H. 123, b,41. — 2) eine Form Çiva's Verz. d. Oxf. H. 148,b,37.

श्वेताभि (श्वेताभी?) f. = श्वभ्रिका *Tamarindus indica* Râǵân. im ÇKDa.

श्वेतापिन् adj. *zum Geschlecht des* Çveta *gehörig* Wurm. Nal. 2,391.

श्वेतारण्य (श्वेत + ष°) n. N. pr. eines *Waldes*: रुद्रेणेव विनिर्दग्धः श्वेतारण्ये पुरान्धकः R. 3,35,23. ein Tîrtha am nördlichen Ufer der Kâvarî Verz. d. Oxf. H. 83,b, No. 141.

श्वेतार्क (श्वेत + अर्क) m. *Calotropis gigantea alba* Ratnam. 152.

श्वेतार्चिस् (श्वेत + ष°) m. *der Mond* Spr. 5074.

श्वेतावर (श्वेत + ष°) m. *eine best. Gemüsepflanze*, = सितावर Râǵân. im ÇKDa.

1. श्वेताश्व (श्वेत + अश्व) m. *Schimmel* (*Ross*) Çiñân. Ça. 14,20,2. R. 5,52,15.

2. श्वेताश्व (wie eben) 1) adj. *mit Schimmeln bespannt*: रथ Çiñân. Ça. 14,34,2. R. 1,53,15. — 2) m. *a*) ein Beiw. Arǵuna's (*mit Schimmeln fahrend*) MBh. 3,10881. — *b*) v. l. für श्वेताश्य Wilson, Sel. Works 1, 211. — 3) f. आ N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,9.

श्वेताश्वतर (श्वेत + ष°) adj. *weisse Maulthiere habend*; m. N. pr. eines Lehrers Çvetâçv. Up. 6,21. °शाखा Verz. d. Oxf. H. 271,*a*,6. °शाखिन् 222,*a*,7. v. u. श्वेताश्वतरोपनिषद् (herausgegeben in der Bibl. ind.) 271, *a*,6. Sarvadarçanas. 152,2. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,257. fg. Bez. der Upanishad Mantrab. zu VS. 5,14.

श्वेताश्य (श्वेत + आ°) m. N. pr. eines Schülers des Çveta (einer Incarnation Çiva's) Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,16. श्वेताश्व v. l.

श्वेताह्वा (श्वेत + आ°) f. *eine weiss blühende Bignonia* Râǵân. im ÇKDa.

श्वेतिक m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 3,2185.

श्वेतेक्षु (श्वेत + इक्षु) m. *eine Art Zuckerrohr* Râǵân. im ÇKDa.

श्वेतोत्पल (श्वेत + उ°) m. N. pr. eines Astronomen Colebr. Misc. Ess. 2,461.

श्वेतोदर (श्वेत + उ°) 1) adj. *einen weissen Bauch habend*. — 2) m. *a*) *eine Schlangenart* Suçr. 2,265,10. — *b*) ein Beiw. Kubera's Trik. 1,1,78.

श्वेतोष्णी s. u. श्वेतवाह्.

श्वेत्य (von श्वेत) adj. *weiss, licht*: die Ushas ṚV. 1,113,2. Naigh. 1, 8. Nir. 2,20. ein Fluss ṚV. 10,75,6.

श्वेत्र n. = श्वित्र *weisser Aussatz* Comm. zu AK. 2,6,2,5.

श्वैक्र m. *ein Fürst der* Çvikna Çat. Br. 2,4,4,2.

श्वैतच्छत्रिक (von श्वेतच्छत्र) adj. *der einen weissen Sonnenschirm verdient* P. 5,1,63, Schol.

श्वैतरी. उपस्तिरे श्वैतरी धेनुर्मीळ्हे ṚV. 4,33,1. nach Sây. *milchreich*; vielleicht nur eine dem Metrum folgende Schreibung für श्वैत्रीम् so v. a. श्वित्रीम् (1. श्वित्र).

श्वैति von श्वेत gaṇa मृतंगमादि zu P. 4,2,80.

श्वैत्य (von श्वेत) 1) m. patron. Sṛṅǵaja's (nach Nilak. von श्वित्य?) MBh. 7,2183. 2195. 2208. 12,1032. — 2) n. *Weisse* Daitup. 2,9. Vishn. 11,8. Siñ. D. 337,18.

श्वैत्रेय m. wohl N. pr. eines Mannes (nach Sây. metron. von श्वित्रा): श्वैत्रेयो नृषदाय तस्थौ ṚV. 1,33,14. धा श्वैत्रेयस्य वृत्रवो युयुर्धन्त कृष्टयः 5,19,3. hier nach Sây. das *Blitzfeuer*, weil es aus der *hellen Luft* geboren ist.

श्वैत्र्य (von श्वित्रिन्) n. *das Behaftetsein mit dem weissen Aussatz* M. 11,51.

श्वोभाव (2. श्वस् + भाव) m. *das Bevorstehen am folgenden Tage* Kâty. Ça. 12,6,28. pl. so v. a. *Sorgen für den folgenden Morgen* Kâṭhop. 1,26.

श्वोभाविन् (2. श्वस् + भा°) adj. *am folgenden Tage bevorstehend*: पुंस MBh. 1,215. अभिषेचन R. Gorr. 2,3,28. 37.

श्वोमरण (2. श्वस् + म°) n. *der morgen bevorstehende Tod, der Gedanke an den bevorstehenden Tod*: यत्रावगाह्य पीत्वा च नैनं श्वोमरणं तपेत् MBh. 12,5646.

श्वोवसीय n. = श्वोवसीयस Hall. 1,122. Daçak. 60,3.

श्वोवसीयस् (von 2. श्वस् + वसीयस्) n. P. 5,4,80. Vop. 6,80. *künftige Wohlfahrt* H. 86. — Verz. d. Oxf. H. 162,*b*, N. 2 ist श्वो वसीयः (diese beiden sind मङ्गलार्थकौ nach der Vorstellung des Autors) zu lesen.

श्वोवस्यस् (2. श्वस् + वस्यस् = वसीयस्) adj. *künftige Wohlfahrt verleihend*: ब्रह्मन् TBr. 2,2,9,10.

ष

1. ष adj. = षष् am Ende des comp. पञ्चष.

2. ष adj. = विष्ण und श्रेष्ठ; m. = कच Med. sh. 1. = मानव und गर्भविमोचन (m.) ÇKDa. nach einem Eigennamen. *loss, destruction; rest, remainder; loss of knowledge previously acquired* Wilson nach einem Eigennamen. *eternal happiness, final emancipation; heaven, paradise; sleep; end, term;* n. *the embryo; patience, endurance* Çabdârthas. bei Wilson.

षैदु (von षष्) 1) adj. *aus sechs bestehend:* पर्याय Lit. 5, 8, 9. RV. Pât. 16, 10. Suçr. 1, 158, 3. 2, 547, 19. fg. Kâm. Nîtis. 8, 21. 31. Ind. St. 3, 253. 8, 239. 249. 254. Schol. zu Kâty. Çr. 5, 3, 16. *für sechs gekauft* u. s. w. P. 5, 1, 22. *zum sechsten Mal erfolgend* (मरण) 2, 77. *zum sechsten Mal Etwas thuend* Vârtt. °मासिक adj. *auf sechs Monate gemiethet* 4, 116, Vârtt. 4, Schol. — 2) n. *ein aus sechs Theilen bestehendes Ganzes, Hektade:* षष्ठ निरुक्ते पूर्वषट्प्रारम्भ: Nir. S. 31. उत्तरषट्प्रारम्भ: 115. Âçv. Çr. S. 532. fg. Çaut. 38. Kull. zu M. 3, 134. पञ्चानाम् Halâj. 2, 128. हस्ति° (हस्तिषड्व ed. Bomb.) MBh. 8, 3333. मास° Varâh. Bṛh. S. 5, 63. 79, 9. Kathâs. 6, 145. 32, 17. Brahma-P. in LA. (III) 57, 1. Pañkat. 2, 8, 11. Bhâsâñ. 31. Pañkat. 5, 3. Vop. 6, 35. 7, 76. Kull. zu M. 7, 38. Sarvadarçanas. 16, 5. Am Ende eines adj. comp. nach einem Zahlwort: रश्मिकलापश्च नवषट् *aus neun Hektaden bestehend* Varâh. Bṛh. S. 81, 32. द्विषट्पदचारिन् *auf zwölf Füssen gehend* MBh. 11, 138.

षैट्पाल (षष् + क°) adj. *in sechs Schalen bestehend* Çat. Br. 2, 6, 1, 4. 8.

षट्पर्ण adj. *wobei sechs Ohren* (d. i. *zwei Ohren zu viel*) *betheiligt sind:* मन्त्र Spr. (II) 6601. fgg.

1. षट्कर्मन् n. *die sechs* (erlaubten) *Beschäftigungen eines Brahmanen* (अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान, प्रतिग्रह): षट्कर्मनित्यता Çâñk. Gaut. 4, 5. Verz. d. Oxf. H. 85, *a*, 28. *die sechs Zauberkünste* (शान्ति, वश्य, स्तम्भन, द्वेष oder विद्वेष, उच्चाटन oder उच्चाट, मारण) ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 100, *a*, 37. fgg. 94, *a*, 26. *die sechs Selbstpeinigungen im Joga:* धौती, वस्ती, नेती, त्राटक, नौलिक, कपालभाती; s. ebend. 234, *a*, 37. fgg.

2. षट्कर्मन् adj. *sechs* (erlaubten) *Beschäftigungen nachgehend:* ein Brahman M. 4, 9 (vgl. 1, 88; von Kull. auf sechs andere Beschäftigungen bezogen). MBh. 13, 6157. m. so v. a. *ein Brahman* AK. 2, 7, 4. H. 812. Halâj. 2, 336. षट्कर्मनिरतात्मा वर्ण: Verz. d. Oxf. H. 265, *b*, 33.

षट्कल (षष् + कला) adj. *sechs Kalâ dauernd* Schol. zu Kâty. Çr. 170, 1.

षट्कार m. *die Silbe* षट् (von वौषट्) Ait. Br. 3, 7. Çâñkh. Çr. 1, 2, 14.

षट्कारकप्रतिच्छन्दक s. u. प्रतिच्छन्दक.

षट्कति adj. *sechsbäuchig* Ind. St. 1, 28.

षट्कील (von षष् + कुल) adj. *zu sechs Geschlechtern gehörig* Verz. d. Oxf. H. 11, *b*, 19 v. u. 49, *b*, 32.

षट्का f. *eine Form der* Bhairavî (Durgâ) Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 15. 96, *a*, 6.

षट्कृत्वस् adv. *sechsmal* Kauç. 140. Lâṭj. 1, 2, 21.

षट्कोण 1) adj. *sechseckig;* n. *Sechseck* Weber, Rik. Up. 300. 316. Pañkar. 3, 15, 26. — 2) n. Indra's *Donnerkeil* Râgân. im ÇKDa. — 3) n. in der Astrol. Bez. *des sechsten Hauses* Gotiratattva im ÇKDa.

षट्कोलक n. N. pr. einer Stadt (षट्कोलेपुक्तामेदं कि) an der Godâ Verz. d. Oxf. H. 318, *a*, 22. fg.

षट्चक्र n. sg. *die sechs mystischen Kreise am Körper* (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध und आज्ञाख्य) Verz. d. Oxf. H. 88, *b*, 38. 89, *a*, 13. fgg. 149, *b*, 18. fg. 236, *a*, 7 v. u. Pañkar. 1, 3, 70. 2, 8, 6. °प्रभेद m. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 120. °भेद m. 243. °भेदटिप्पनी und °भेदविवृतिटीका ebend.

षट्चत्वारिंश (von षट्चत्वारिंशत्) adj. (f. ई) *der sechsundvierzigste* MBh. und R. in den Unterschriften der Kapitel.

षट्चत्वारिंशक adj. dass. Jâtâ. 2, 76.

षट्चत्वारिंशत् f. *sechsundvierzig* Nir. 3, 9. Çâñkh. Çr. 12, 2, 22.

षट्चरण adj. *sechsfüssig;* m. *Biene* (*Laus* Râgân. im ÇKDa.) H. 1212, Schol. Halâj. 2, 100. Çik. 23. Varâh. Bṛh. S. 104, 17. Davon nom. abstr. °ता 22.

षट्चरणाय (von षट्चरण), °यते *eine Biene darstellen* Kathâs. 34, 33.

षाट्तिक adj. *aus sechs* चिति *bestehend* Çat. Br. 10, 4, 4, 3.

षट्, षट्पति (so Dunçâd., सट्पति West.) Kavikalpadruma im ÇKDa. (निकेतने क्रिमे दाने बले). — Vgl. सट्.

षष्टी f. *die sechs* Tantra (*philosophischen Systeme*): °सार् n. Titel einer Schrift Hall 165.

षष्य (von षष्) adj. *sechserlei:* Speise Çiṅkn. Ba. 20,1.

षष्टिलदान n. Bez. *eines best. Festes* Wilson, Sel. Works 2,206. 210. — Vgl. das folgende Wort.

षष्टिलिन् (von षष् + तिल) adj. *sechs Handlungen mit Sesam-Körnern vollführend:* तिलोदर्तो तिलस्नायी तिलहोमी तिलप्रदः । तिलभुक्तिलवापी च षष्टिली नावसीदति ॥ Tithyâdit. im ÇKDa.

षष्टितम (von षष्टिशत्) 1) adj. (f. ई) *a) aus sechsunddreissig bestehend:* Metrum u. s. w. ṚV. 10,114,6. स्तोम Pañcav. Ba. 22,18,1. Çiṅkn. Ça. 14,15,2. — *b) mit dem* Shaṭtriṃça-Stoma *verbunden* Çat. Ba. 13,5, 4,20. Pañcav. Ba. 19,13,10. 25,1,1. Liṭ. 4,5,11. fg. — *c) der sechsunddreissigste* Riéa-Tan. 4,702. MBh. und R. in den Unterschrr. der Kapitel. शिर एव षष्टितमौ *die fünf- und sechsunddreissigsten* Çat. Ba. 10,5,4,5.7. — 2) = षट्त्रिंशत् in षष्टितोन Weber, Nax. 2,284.

षष्टित्रिंशत् *f. sechsunddreissig* TS. 2,5,10,3. TBa. 3,9,19,2. Çat. Ba. 3,5,4,4. 6,2,2,21. 7,1,2,22. सहस्राणि 13,5,3,3.7.9.11. R. 4,35,28. मात्रा:] °शत् Verz. d. Oxf. H. 50,b, N. 1. 85,b,48. Riéa-Tan. 3,857. 6, 175. °शतं समा: 4,266. वर्षे: °शता 2,56. 3,117. °शता वर्षाणाम् 4,6. °शद्गुन Weber, Nax. 2,283. °शदक् Ait. Ba. 4,24. °शदक्षर TBa. 3,9, 19,2. Çat. Ba. 3,5,4,2. °शदिष्टक 10,4,2,16. °शत्संवत्सर Mâç. 11,7 in Verz. d. B. H. 74. Liṭ. Ça. 24,5,20. °शद्रात्र 2,23. °शच्छत्य *aus sechsunddreissig Hunderten bestehend* 17,7,25. °शत्सहस्र Çiṅkn. Ça. 14,15, 8. °शद्वार्षिक M. 3,1. °शन्मत n. *die Ansicht der sechsunddreissig* (Gesetzgeber; nach Çaṅkha und Likhita im ÇKDa.: Manu, Vishṇu, Jama, Daksha, Aṅgiras, Atri, Bṛhaspati, Âpastamba, Uçanas, Kâtjâjana, Parâçara, Vasishṭha, Vjâsa, Saṃvarta, Hârita, Gotama, Prâcetas, Çaṅkha, Likhita, Jâǵñavalkja, Kâçjapa, Çâtâtapa, Lomaça, Ǵamadagni, Prâǵâpati, Viçvâmitra, Paiṭhînasi, Baudhâjana, Pitâmaha, Khâgaleja, Gârgja, Mariki, Ṛjavana, Bhṛgu, Ṛshjaçṛṅga und Nârada) Verz. d. B. H. No. 1166. Verz. d. Oxf. H. 271,a,18. 279,b,30. fg. 336,a,33. Sarvad. K. 39,a,8. 10. °शद्गीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 84,b,10.

षट्त्रिंशत्क adj. *aus sechsunddreissig bestehend* Kâm. Nîtis. 8,32.

षट्त्रिंशदक्षाम् adj. *in je sechsunddreissig Tagen* Liṭ. Ça. 17,7,13.

षट् (von षष्) n. *Sechszahl* P. 5,2,39, Vârtt. 7.

षष्टुत s. u. पत्.

षट्स्वर्ष adj. *sechs oder fünf Jahre alt* Bhâg. P. 4,12,12. — Vgl. पञ्चष.

षट्साश (von षट्साशत्) adj. *der sechsundfünfzigste* Riéa-Tan. 6,333. MBh. und R. in den Unterschrr. der Kapitel.

षष्टिसाशत् *f. sechsundfünfzig* Çat. Ba. 12,3,5,13. °शहिनाशकवर्णन Verz. d. Oxf. H. 79,a,33. °शद्गणपतिक्रम Verz. d. B. H. No. 1236.

षट्साशिका f. Titel eines astr. Werkes in *sechsundfünfzig* Strophen Verz. d. B. H. No. 861. 883. Verz. d. Oxf. H. 338,a,22.

षट्पत्र adj. *achtblätterig* Nâs. Tîp. Up. in Ind. St. 9,109.

षष्टृद् oder षट्टृद् adj. *sechsfüssig* AV. 13,2,27. f. षट्टृदी (vgl. auch unter षट्पद) gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139. *Laus* H. 1208.

षष्टृद् 1) adj. *a) sechsschrittig* (f. ई) TS. 3,3,10,2. Âçv. Gṛhj. 1,7,19. Çiṅkn. Ça. 9,1,14. — *b) mit sechs Plätzen versehen:* पुर् MBh. 15,155. — *c) sechsfüssig* MBh. 1,3619. m. *ein sechsfüssiges Thier* (*Insect*) AK. 3,6,3,37. Verz. d. B. H. 268,1. insbes. *Biene* (*Laus* Riéan. im ÇKDa.) AK. 2,5,29. Çiṅkn. Ça. 1,1,14. MBh. 3,8703 Harîv. 8730. R. 5,13,27. Suça. 1,22,10. 155,11. °ध्य Mnch. 72. °मणि Kumâras. 5,9. षट्टाली Rasn. 6,69. 12,27. Çiç. 72. Vikr. 41 Spr. (II) 1780. 4652. 5139. 6608. Vaṛâh. Bṛh S. 12,9. Riéa-Tan. 3,402. Ver. in LA. (III) 5,7. मत्त° Bhâg. P. 8,2,14. am Ende eines adj. comp. (f. या) Kathâs. 66,193. Bhâg. P. 4,6,29. R. 5,13,60. Kathâs. 33,11. Bhâg. P. 2,8,15. — *d) aus sechs Versthellen bestehend* (f. या) VS. 23,34. तूष्णीशंस Ait. Ba. 2,39. 8. 10. पाङ्क्त Çat. Ba. 13,5,4,9. Çiṅkn. Ça. 7,26,9. Ind. St. 9,119. f. या Bez. *einer Klasse von* Prâkrit-*Metra* Colebr. Misc. Ess. 1,150. — 2) m. *Biene* s. u. 1) *c*). — 3) f. या s. u. 1) *d*). — 4) f. ई *die sechs Worte:* दिष्या ते षट्टृदो जिता । हे पूर्वे (d. i. *Hunger und Durst*) मध्यमे हे च (d. i. *Kummer und Geistesverwirrung*) हे चान्त्ये मोषायिके (d. i. *Alter und Tod*) MBh. 3,17427. nach Nîlak. zu dieser Stelle und zu 5,1038 auch कामक्रोधौ शोकमोहौ und मदमानौ. Als Titel zweier Schriften Hall 135. 153. °विवृति ebend. — 3) n. *die sechs Schritte*, Bez. einer best. vortheilhaften Stellung im Vierschach Monatsberr. d. k. pr. Ak. d. Ww. 1872, S. 69. 75. — Vgl. तृण°.

षट्टृप्रिय adj. *Bienen lieb;* m. Bez. *der Mesua Roxburghii Wight.* Çabdam. im ÇKDa.

षट्टृतिथि adj. *Bienen zu Gästen habend;* m. Bez. *des Mangobaums* Trik. 2,4,9. *der Michelia Champaka* (चम्पक) Çabdâmṛtam. bei Wilson.

षट्टृनन्दवर्धन adj. *die Wonne der Bienen vermehrend;* m. Bez. *des Baumes* Kiṃśiṃśapâ Rîdan. im ÇKDa. *eine Art Acacie* Ratnâk. in Nigh. Pr. *Jonesia Asoka* Tîrak. im Çabdastomamahânidhi.

षट्टृभिधर्म m. Titel einer Schrift Vie de Hiouen-thsang 67. 164.

षट्टृदिका f. = षट्टृदा Bez. *einer Klasse von* Prâkrit-*Metra* Colebr. Misc. Ess. 2,90. fg. 156.

षट्टृदेष्ट (षट्टृद् + इष्ट) adj. *den Bienen lieb;* m. Bez. *der Nauclea Cadamba* (कदम्ब) Ratnam. 204.

षट्टृलिक adj. *aus sechs* Pala (verschiedener Species) *bestehend:* सर्पिस् Bez. *einer best. Salbe* Suça. 2,89,16.

षट्टृद् m. = षट्टृद् *Biene* Harîv. 8418. 8730.

षष्टिनापुत्रक m. Bez. *eines best. Tuotes* Cit. beim Schol. zu H. 292.

षट्पुर n. N. pr. *einer aus sechs Burgen bestehenden Stadt der* Asura Harîv. 7604. 7973. fg. 8139. fg. 8187. 8497. fgg. °गुप्ता 8163. गुप्ता °सेना 8162.

षट्प्राश n. *ein aus sechs* Prâǵâtha *bestehendes Stück* Liṭ. 10,8,2. Çiṅkn. Ça. 12,9,2.

षट्प्रश्न adj. *mit sechs Dingen vertraut:* धर्मार्थकाममोक्षेषु लोकतन्त्रार्थयोरपि ॥ षट्सु प्रश्नास्ति यस्योच्चैः स षट्प्रश्न इति स्मृतः । Trik. 3,1,15. fg. m. *Wüstling, ein liederlicher Geselle* 6.

षट्प्रोषनिषद् f. = प्रप्रोषनिषद् Verz. d. Oxf. H. 392,b, No. 74.

षष्टुत 1) n. *a) Hundertundsechs* Çat. Ba. 12,2,4,6. — *b) sechshundert* Ind. St. 9,35. pl. dass.: °शतेश्च पदातिभि: MBh. 3,3031. — 2) f. ई *sechshundert* Weber, Gjot. 104. Vaṛâh. Bṛh. 12,1. — 3) adj. *in sechshun-*

dert bestehend, so viel betragend: दम, दण्ड M. 8,198. 367.

षष्टम adj. (f. ई) *die Weite von sechs Çamjâ habend* Kauç. 137.

षष्टम् (von षष्) adv. *sechsfach, — mal:* षष्टः कृत्वा मया प्रोक्तं पुराणम् Verz. d. Oxf. H. 55,b,39. संलिख्य Pâṇkar. 3,15,29.

षष्टन्त्रिन् adj. *mit den sechs Çâstra (philosophischen Systemen) vertraut* Monier Williams.

षष्टि (von षष्टि) adj. 1) *der sechsundsechzigste* MBu. in den Unterschrr. der Adhjâja. — 2) *um sechsundsechzig vermehrt:* शत *hundertundsechsundsechzig* Lîlâv. 8,5,26. fg.

षष्टि f. *sechsundsechzig*, pl. Çat. 14,102. °षष्ट्यधिकशतो ऽध्यायः MBu. 1, S. 231.

षष्टितम adj. *der sechsundsechzigste* R. Gorr. in den Unterschrr. der Sarga.

षोडशिन् adj. *sechs* Shodaça-Stoma *habend* Pañkav. Br. 17,2,1.

षष्ठ (षष्+सप्तन्) adj. pl. *sechs oder sieben:* °सप्तान्वासरान् Râǵa-Tar. 8,2815.

षष्ठत (von षष्ठति) adj. *der sechsundsiebenzigste* MBu. in den Unterschrr. der Adhjâja.

षष्ठति f. *sechsundsiebenzig:* °सप्तत्यधिकशतो ऽध्यायः MBu. 1, S. 245.

षष्ठतितम adj. *der sechsundsiebenzigste* R. Gorr. in den Unterschrr. der Sarga.

षट्कर्ण adj. *sechstausend zählend* AV. 11,5,2.

षट्कलशत *sechshunderttausend:* बरूथस्य पुरं °क्रूरम् (so ed. Bomb.) MBu. 13,7343. 7357.

षड (?) m. = षेयान्तरे भेदे H. an. 2,129.

1. षडंश m. *ein Sechstel:* °भाज् Râgat. 17,65. — Vgl. षष्ठांश, षडभाग.

2. षडंश adj. *aus sechs Theilen bestehend;* davon °ता f. nom. abstr. Sarvadarçanas. 16,5.

षडंह्रि m. = षडङ्घि *Biene* H. 1212, Schol. Spr. (II) 5957, v. l.

षडर्ण adj. *sechslautig* RV. 10,99,10. Çat. Br. 1,6,2,1. 5,5,4,2.

षैडतर adj. (f. ई) *sechs-stibig* VS. 9,32. Çâṅkh. Gṛhj. 1,2,4. Spr. (II) 6606. Verz. d. Oxf. H. 45, *a*, 17. 74, *a*, 18. 83, *b*, No. 141. 99, *a*, No. 153. Weber, Rigav. Up. 280. 292. 336. 354. fg. 362. Schol. zu Lâṭj. 7,1,11. 2,1. महाविद्या Pâṇkar. 2,3,72. 75. fg. विद्या Burnouf, Intr. 225. — Taitt. 3,3,344 (?).

षडलीण m. *Fisch* Çabdârthak. bei Wilson.

षडग (षडङ्ग?) m. *eine best. Schlange* Suçr. 2,265,14.

1. षडङ्ग 1) n. *a) die sechs Haupttheile des Körpers:* ब्रह्मे बाहू शिरो मध्यं षडङ्गमिदमुच्यते Çabdak. im ÇKDa. — *b) die sechs* Vedâṅga: प्रधानं च षडङ्गेषु व्याकरणम् Pat. in Mahâbh. ed. Bâll. 15. °विद् Ind. St. 3,259. M. 3,185. — 2) f. ई *die sechs* Vedâṅga H. 253.

2. षडङ्ग 1) adj. *sechsgliederig:* शरीर (vgl. u. 1. षडङ्ग 1) Suçr. 1,337, 4. आत्मन् Âit. Br. 2,39. Çâṅkh. Br. 13,3. वेद Pîn. Gaut. 2,6. Manâsn. ed. Bâll. 13. °वेदविदम् R. 5,16,41. °निगमाध्येतृ Verz. d. B. H. No. 877. योग (nämlich प्रत्याहार, ध्यान, प्राणायाम, धारणा, तर्क und समाधि) Amṛtanâdop. in Ind. St. 9,25. क्षेम Vaṅîs. Bhâg. S. 46,21. — 2) m. = लुब्धगोलुक Râǵân. im ÇKDa.

षडङ्गक n. *der aus sechs Theilen bestehende Körper* H. c. 116 (खड-ङ्गक die Hdschr.).

षडङ्गजित् m. ein N. Vishṇu's H. c. 64. Çabdam. im ÇKDa.

षडङ्गिन् adj. *sechsgliederig;* f. Bez. *eines vollständigen Heeres* (vgl. षड्विधं बलम् M. 7,185. Kâm. Nîtis. 18,2. Ragh. 4,26) R. Gorr. 1,52,21. वद्यथिनी die beiden anderen Ausgg.

षडङ्गुलिदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Vârtt. 4, Schol.

षडङ्घि adj. *sechsfüssig;* m. *Biene* Spr. (II) 4382. 5857. Bhâg. P. 3,23, 15. 4,29,53. 10,47,14.

षडण्ड (wohl षष्+अण्ड) gaṇa घूमादि zu P. 4,2,137. — Vgl. षाडण्डक.

षडभिज्ञ adj. *die sechs* Abhigñâ *besitzend;* m. *ein* Buddha AK. 1, 1,4,9. H. 233. *ein Buddhist* LA. (III) 89,21.

षडर् adj. *sechs Speichen habend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,109. Vgl. auch unter 1. षर् 1).

षैडरात्रि adj. *sechsellig:* यूप Çat. Br. 3,6,4,19.

षडर्च n. = षडृच Çâṅkh. Çr. 18,23,9.

षडवत्त n. 1) *eine aus sechs Abschnitten, für den* Agnidh *bestimmte Portion* Kâtj. Çr. 3,4,19. Schol. 216,21. 235,4 v. u. 256,11. — 2) *das dazu gehörige Doppelgefäss* Z. d. d. m. G. 9,LXXIX.

षडशीत (von षडशीति) adj. *der sechsundachtzigste* MBu. in den Unterschrr. der Adhjâja.

षडशीति f. *sechsundachtzig:* षडशीत्यधिकशतो ऽध्यायः MBu. 1, S. 254. षडशीतिर्भेदाः Weber, Prâtiçâkh. 103. Verz. d. Oxf. H. 55, *a*, 6. 8. तुलादिषडशीत्यङ्काम् Sûrjas. 14, 4. °मुख ebend. und 3 (vgl. das Citat aus Tittirîjak. im ÇKDa.: मृगकर्कटसंक्रान्तौ द्वे तूदग्दक्षिणायने। विषुवतो तुला मेषे गोलमध्ये तथापरा॥ धनुर्मिथुनकन्यासु मीने च षडशीतयः। वृषवृश्चिककुम्भेषु सिंहे विष्णुपदी स्मृता॥). °चक्र (= मिथुनकन्याधनुर्मीनराशिस्थरवेः प्रभाप्रभफलज्ञानार्थं नक्षत्राङ्कनराकारचक्रम्) ÇKDa. षडशीति als Titel *einer aus sechsundachtzig Strophen bestehenden Schrift* Verz. d. Oxf. H. 279,b,21. Verz. d. B. H. No. 1092. °व्याख्या 1403.

षडशीतितम adj. *der sechsundachtzigste* R. in den Unterschrr. der Sarga.

षैडश्व (षडश्व) adj. *mit sechs Rossen versehen, — bespannt* RV. 1,116, 4. गृह् Mân. P. 50,83.

षडष्टक n. *eine best. Constellation* Gjotishattva und Ginupa-P. 61 im ÇKDa.

षडस्र adj. *sechseckig* Verz. d. Oxf. H. 96,b,12. fg. 97,b,2.

षडस्रि adj. dass.: वप्र MBu. 3,8699. Vaṅîs. Bhâg. S. 43,44. 56,20. 80,7.

षडर्ह (षडहन्) m. *eine Zeit von sechs Tagen*, insbes. *eine sechstägige* Soma-*Feier* (deren zwei Arten पृष्ठ und अभिप्लव heissen): षडहेन Weber, Nax. 2,284. TS. 5,3,2,6. AV. 8,9,16. TS. 6,1,6,1. 7,2,6,2. 5,2,2. Ait. Br. 1,15. 5,23. Çat. Br. 4,5,4,12. 12,1,2,2. 3,10. Kâtj. Çr. 12,3, 1. 23,5,1. 10. Pañkav. Br. 24,15,1. Lâṭj. 10,8,5. अभिप्लवः षडहः पृष्ठ-विकारः Çâṅkh. Çr. 14,4,1. °स्तोत्रिय Âçv. Çr. 7,2,12.

षडहोरात्र m. *sechs Tage und Nächte:* यानिद्रो षडहोरात्रं तपोवनमातताम् R. 1,32,4.

षडात्मन् adj. *sechs Naturen habend:* der Gott des Feuers Mân. P. 99,27.

1. षडानन n. *sechs Munder* (des Skanda), am Anf. eines Comp. Ragh. 14,23.

2. षडानन adj. *sechs Münder habend*, Beiw. und Bein. Skanda's AK. 1,1,4,34. MBh. 3,14637. R. 1,38,28 (39,28 Gorr.). Kathâs. 20,87. Mârk. P. 94,7. — Vgl. षड्वक्त्र.

षडाम्नाय m. *die aus den sechs Mündern Çiva's hervorgegangenen heiligen Texte* (पूर्वाम्नाय, दक्षिणा°, पश्चिमा°, उत्तरा°, ऊर्ध्वा° und अधः° Sammohanatantra im ÇKDa. Vgl. unter आम्नाय in den Nachträgen.

षडायतन s. u. आयतन d).

1. षडाहुति f. *eine Sechszahl von Opferungen*, am Anf. eines Comp. Schol. zu Kâty. Çr. 264,3. 486,1 v. u. 487,6.

2. षडाहुति adj. *zu sechs Opferungen dienend*: चरु Âçv. Gṛhj. 3,6,3.

षडाहुतिक adj. dass. Schol. zu Kâty. Çr. 10,8,30.

षडिक m. Hypokoristikon von षडङ्गुलिदत्त P. 5,3,84, Vârtt. 4, Schol.

षडिडः पदस्तोमाम् N. eines Sâman Ind. St. 3,241,a. — Vgl. unter इडा in den Nachträgen am Ende des Artikels.

षडुत्तर adj. *um sechs grösser* Paṇâv. Br. 19,2,4.

षडुष्णाम s. unter उष्णाम.

षडून adj. *um sechs weniger* Weber, Nax. 2,283. 285.

षडूर्मि f. *die sechs Wogen* (vgl. unter ऊर्मि), am Anf. eines comp. Paramahaṃsop. in Tüb. Hdschr. 7,17. Spr. (II) 6470.

षडूषण n. *die sechs brennenden Species*, nämlich पिप्पली, मरिच, शुण्ठी, यन्धिक, धनल und चव्य (Çârdak. im ÇKDa.) oder पञ्चकोल und मरिच (Bhâvapr. im ÇKDa.).

षड्च m. n. *die Zahl von sechs Versen* AV. 19,23,3. Ait. Br. 3,50. Çat. Br. 2,3,4,16. 7,3,1,25. 9,5,2,7. Paṇâv. Br. 15,1,9. — Vgl. षडर्च.

षड्ड m. = षड्ड Weber, Prâtiçâkhya. 107. 109. fg. Ind. St. 4,139.

षड्ण Harîv. 7225 (°गणान्) und 7432 (°गणास्य) wohl fehlerhaft für षड्गुण, wie die neuere Ausg. liesst.

षड्णा f. *die sechs mit* णा *oder mit* ण *anlautenden, Erlösung bringenden Dinge*: णया णवो (wohl णयाणवो zu lesen) णयादित्यो णायत्री च णदाधरः । णया णयासुरश्चैव षड्णा मुक्तिदायिका ॥ Viṣṇu-P., Gaṇâpadan. im ÇKDa.

षड्गर्भ m. pl. Bez. einer Gruppe von Dânava Harîv. 3223. 3226. nach Nîlak.: Haṃsa, Suvikrama, Kratha, Damana, Ripumardana und Krodhahantar mit Namen.

षड्गव m. n. *ein Sechsgespann von Stieren* TS. 5,2,8,2. Çat. Br. 7,2,2,6. 13,8,2,6. Kâṭh. 20,3. Kâty. Çr. 21,3,34. 22,11,2. Lâṭy. 9,4,19. Ânandâçr. im ÇKDa. *sechs Kühe*: °दोह Schol. zu Kâty. Çr. 346,16. am Ende eines comp. *Sechszahl irgend einer Thierart* P. 5,2,29, Vârtt. 7. Vop. 7,76. H. 1424. Halâj. 2,128. गो° Vop. अश्व° P. Schol. क्षत्रि° MBh. 8,1759. 1781. 3838 (nach der Lesart der ed. Bomb.).

षड्गवीय (von षड्गव) adj. *mit sechs Stieren bespannt*: शकट MBh. 8,3837.

1. षड्गुण gaṇa चतुर्वर्णादि zu P. 5,1,124, Vârtt. 1. *die von den fünf Sinnen und dem Manas wahrgenommenen Eigenschaften*: षड्गुणेश Buic. P. 1,3,36. °योगयुक्त Ind. St. 2,66. *die sechs Vorzüge* (ऐश्वर्य, ज्ञान, यशस्, श्री, वैराग्य und धर्म nach Nîlak.; eher die Sarvadarçanas. 54,22. fg. aufgezählten): षड्गुणास्य Harîv. 7432 (die ältere Ausg. षड्गुणास्य). प्रथमः षड्गुणानाम् 7448. *das sechsfache Verfahren eines Fürsten in der auswärtigen Politik* (संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव und संश्रय): °किमलय Daçak. 201,2. ज्ञगुरन्ये षड्गुणान् (= वक्रियस्त्रिगधमधुरलास्यविभ्रमावबद्धरयान् Nîlak.) Harîv. 7225 (षड्गुणान् die ältere Ausg.); hier könnte man auch षड् गुणान् trennen. — Vgl. पाड्गुण्य.

2. षड्गुण adj. 1) *sechsfältig, sechsfach*: रथा: *Helden* Kathâs. 47,21. — 2) *sechs Vorzüge habend* Sarvadarçanas. 54,21. fgg. 55,10.

षड्गुणीकर् *versechsfachen, mit sechs multipliciren*: °कृत Weber, Ghoṣ. 77.

षड्गुरुभाष्य n. Titel eines *Commentars* (*der sechs Lehrer*) Verz. d. Oxf. H. 279,b,32.

षड्गुरुशिष्य m. *der Schüler von sechs Lehrern*, N. pr. eines Commentators Verz. d. B. H. No. 53. Ind. St. 3,189. Verz. d. Oxf. H. 279,b,32. 379,b, No. 379.

षड्ग्रन्थ 1) m. *eine Karaṅga-Art* AK. 2,4,2,29. Trik. 3,3,200. H. an. 3,328. Med. th. 24. — 2) f. या Bez. verschiedener Pflanzen: = वचा AK. 2,4,2,21. Trik. H. an. Med. Ratnam. 24. = शटी H. an. = श्वेतवचा und मलाकारज्ञ Rîâk. im ÇKDa. = कर्चूर (= शटी) und कारज्ञ Aṣṭâṅg. 44. — Suçr. 2,65,3. 207,7. 224,11. — 3) f. ई = वचा Çabdar. im ÇKDa.

षड्ग्रन्थि n. *die Wurzel vom langen Pfeffer* ÇKDa. nach dem Vaidjaka.

षड्ग्रन्थिका f. *eine best. Pflanze*, = शटी AK. 2,4,2,19.

षड्ज m. 1) *die 1te Note der Tonleiter* (*aus den sechs übrigen Tönen geboren, auf ihnen beruhend*) AK. 1,1,2,1. H. 1401 (vgl. Comm.). Halâj. 3,77. MBh. 12,6339. 14,1419. Ind. St. 2,67. 4,351. 8,259. 266. fg. 10,421. fg. °संवादिनी: केका द्विधा भिन्ना: Râgan. 1,39. Varâh. Bṛh. S. 86, 10. Verz. d. B. H. No. 383. Verz. d. Oxf. H. 200,b,7. Mârk. P. 106,56. Tattvas. 11; vgl. die Anm. des Uebersetzers. — 2) N. des 16ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 82,a,1.

षड्ढा (von षष्) adv. *sechsfach* Çat. Br. 13,5,4,17. — Vgl. षड्धा, षोढा.

षड्होतृ (षष् + होतृ) m. N. gewisser Sprüche beim Thieropfer TBr. 3,12,5,2. 5. Çat. Br. 11,7,2,6. Kâty. Çr. 6,1,26. Çâṅkh. Çr. 10, 17,1. 3. fehlerhafte Bildung षड्होताराकृति Schol. zu Kâty. Çr. 549,19. 558,22.

1. षड्दर्शन n. sg. *die sechs philosophischen Systeme* Sarvadarçanas. 98, 3. Verz. d. B. H. No. 633. °वृत्ति Hall 64. 166. °समुच्चय 64. 165.

2. षड्दर्शन adj. *mit den sechs philosophischen Systemen vertraut* Vet. in L.A. (III) 24,5.

षड्दशन adj. *sechszähnig* Halâj. 2,112.

षड्धा adv. = षड्ढा, षोढा P. 6,3,109, Vârtt. 4. 5. Vop. 7,45. Paṇâv. Br. 7,2,4.

षड्बिन्दु 1) adj. *mit sechs Tropfen* (*Punkten*) *versehen* u. s. w.: तैल *eine ölige Mixtur gegen Kopfschmerz, von welcher sechs Tropfen geschnupft werden*, Bhâvapr. 7. — 2) m. *a*) *ein best. Insect* Med. d. 41. — *b*) ein N. Vishṇu's Trik. 1,1,28. H. 215. Med.

षडाग m. *ein Sechstel* (insbes. *das vom Fürsten als Abgabe erhobene*), mit gen. und abl. M. 7,131. 8,33. 35. Jâṇ. 2,258. Harîv. 2872. R. 2,10,16. Spr. (II) 6915. Varâh. Bṛh. S. 53,19. Mârk. P. 18,4. 69,29. °भाज् M. 8,305. बलि° R. 2,75,23. Spr. (II) 218. 568. 4099. 4409. धर्म° M. 11,22. Spr. (II) 6915. Mârk. P. 130,38. तप: Çiv. 46. °दल *ein Zwölf-*

tel Vaśiṣ. Bṛh. S. 81,19.

षड्भावविद् adj. *ein Anhänger der Theorie von den sechs* Bhâva (द्रव्य, गुण, कर्मन्, सामान्य, विशेष und समवाय) Verz. d. Oxf. H. 259,a,24.

षड्भुज 1) adj. (f. आ) *a) sechsarmig* Paṭṭâd. 1,14,29. Durgâ Bhavânîdîkṣâvara-P. im ÇKDa. — *b) sechs Seiten habend*, subst. *Sechseck* Colebr. Alg. 96. — 2) f. आ *Wassermelone* Râǵân. im ÇKDa.; vgl. षड्रेखा, षण्मुखा.

1. **षड्योग** m. *die sechs Weisen im Joga* Verz. d. Oxf. H. 89,a,11.

2. **षड्योगी** adj. *mit Sechsen bespannt:* षड्योगीभिरर्कैषु AV. 8,91,1. MBr. 8,9,16. Kâṭj. Çr. 5,11,2. — Vgl. षड्व.

षड्ड adj. *sechstädtig* H. 1263.

1. **षड्रस** m. *die sechs Geschmäcke:* °गुणा Verz. d. B. H. No. 988. °निघण्ट Mack. Coll. 1,134.

2. **षड्रस** 1) adj. *die sechs Geschmäcke habend:* अन्न Kathâs. 45,230. — 2) n. *Wasser* H. ç. 164.

षड्रसास्रव m. *Lymphe* H. 620.

षड्रात्र m. *ein Zeitraum —, eine Feier von sechs Tagen* AV. 11,7,11. TS. 7,1,10,3. 2,9,1. ÇiṅkhBr. Çr. 16,25,1. 7. Liṭ. 9,12,15. Kâṭj. Çr. 4,10,16. Pâṇ. Gaṇ. 2,1. R. 1,32,4 (33,4. 6 Gorr.). Harîv. 1284. R. 4,59,5.

षड्रेखा f. *Wassermelone* Râǵân. im ÇKDa. Vgl. षड्भुजा, षण्मुखा.

षड्लवण n. *die sechs Salze* (मूलोपेतं पञ्चलवणम्) Râǵân. im ÇKDa.

षड्लोह *die sechs Metalle:* °माक्षिक Verz. d. B. H. 300,1.

षड्वक्त्र adj. *sechs Münder habend* MBh. 11,138. Paṭṭâd. 1,12,37. m. Bein. Skanda's MBh. 3,14352. Vaśiṣ. Bṛh. S. 99,1. Matsja-P. 134 nach ÇKDa. — Vgl. षडानन.

षड्वर्ग m. *eine Gruppe —, ein Verein von Sechsen* Verz. d. B. H. No. 873. Verz. d. Oxf. H. 236,a,9. *sechs Kühe mit Kälbern* Schol. zu Kâṭj. Çr. 5,4,21. 14,5,20. 22. 19,5,4. *die fünf Sinne und das* Manas: यमनियत° adj. Bhâg. P. 11,18,40. *die sechs innern Feinde des Menschen:* कामः क्रोधस्तथा लोभो दर्पो मानो मदस्तथा । षड्वर्गमुत्सृजेदेतम् Spr. (II) 1638. Bhaṭṭ. 1,2. °जित् MBh. 1,1948. कामक्रोपादिरिपु° Kathâs. 20,134. वैरि° Mâṛk. P. 132,44. Daçak. 186,7. शत्रु° Spr. (II) 2740. Kâm. Nîtis. 1,58. — Vgl. षाड्वर्गिक.

षड्विंश (von षड्विंशति) adj. (f. ई) 1) *der sechsundzwanzigste* Çat. Br. 12,3,2,2 (du. so v. a. *der 25ste und 26ste*). Weber, Ǵjot. 37. Sâṁas. 14,5. Râǵa-Tar. 6,148. Verz. d. Oxf. H. 53,b,16. °ब्राह्मण n. und षड्विंश n. Titel eines Brâhmaṇa, das als Ergänzung zum Pañka-viṁçabrâhmaṇa gleichsam als *26ter Abschnitt* dieses Brâhmaṇa betrachtet wird, Ind. St. 1,31. 36. fgg. 78. 4,375. fg. — 2) *aus sechsundzwanzig bestehend* Çat. Br. 12,3,2,2. Ind. St. 9,17. Vaśiṣ. Bṛh. S. 56,27. — 3) *um sechsundzwanzig vermehrt:* शत *hundertundsechsundzwanzig* Weber, Ǵjot. 41. — 4) **षड्विंशम्** Ind. St. 5,370 fehlerhaft für षड्विधं.

षड्विंशक adj. *aus sechsundzwanzig bestehend* Paṭṭâd. 4,3,17. Kûlikop. in Ind. St. 9,16.

षड्विंशति f. *sechsundzwanzig:* Rippen TBr. 3,6,6,3. Halbmonate Çat. Br. 12,3,2,2. Vaśiṣ. Bṛh. S. 82,7. Bhâg. P. 11,22,2. Verz. d. Oxf. H. 56,a,18. fg. °सङ्ख्याणि (षड्विंशति?) 9,b,2. °रात्र Kâṭj. Çr. 24,2,22. Âçv. Çr. 11,3,11.

षड्विंशतिक s. षड्विंशतिम.

षड्विंशतितम adv. *der sechsundzwanzigste* MBh. in den Unterschrr. der Adhjâja.

षड्विंशतिम adj. dass. Vaśiṣ. Bṛh. S. 50,15, v. l. (im Text षड्विंशतिक).

षड्विंशत्क adj. *aus sechsundzwanzig bestehend* Kâm. Nîtis. 8,23.

षड्विध adj. (f. आ) *sechsfach, sechserlei:* Speise (vgl. षट्पय) Çat. Br. 10,4,2,14. 20. Ind. St. 5,370 (षड्विधं st. षड्विंशम् zu lesen). आत्मन् (vgl. षडङ्ग) Âit. Br. 2,39. ÇiṅkhBr. 14,1. Çr. 16,25,7. स्त्रोधन M. 9,194. बल 7,165. Kâm. Nîtis. 18,2. Raǵat. 4,26. प्रीतिलक्षण Spr. (II) 2703. Sin. D. 102. Bhâg. P. 3,10,18. राजनीति 10,45,34. Sarvadarçanas. 173,4. रस Bhâvapr. 34. — Vgl. षाड्विध्य.

षड्विधान s. u. विधान 3) *a*).

षड्विन्ध्या f. *ein best. Insect*, = तेलिनी Râǵân. im ÇKDa. unter dem letzten Worte. Vielleicht fehlerhaft für षड्बिन्दु.

1. **षण्ड** 1) m. (Sidoh. K. 249,*b*,1 v. u.) und n. *Baumgruppe, Pflanzengruppe* Uṇâdis. zu Unâdis. 1,113. AK. 1,2,8,41. H. 1110. an. 2,129. Med. d. 26. Halâj. 5,25. वन° R. 2,15,42. 5,15,31. कोकिलाकुलषण्डानि (वनानि) 6,15,11. कानन° 4,44,24. उपवन° 5,63,22. द्रुम° MBh. 3,11537. R. 4,13,12. वृत्त° Harîv. 8945. कदम्बतरु° MBh. 3,14537. कमल° 12,4283. कदली° 13,637.9,3181. Harîv. 1875. 6407. 8251. 8946 (die neuere Ausg. des Harîv. überall खण्ड). R. 3,12,14. 76,15. 4,41,27. 43,6. 44,16. Mṛkkh. 20. Râǵa-Tar. 2,139. मौक्षण्डद्रुमदो° 4,156. Verz. d. Oxf. H. 187,b,3 v. u. Mâlav. P. 60,2 (प्रक्षण्डः zu lesen). Bhâg. P. 4,7,3. वल्ल° 11,2 (°खण्ड od. Bomb.). कदली° 4,6,21 (°खण्ड ed. B.). *Menge, Haufen* überh. Uṇâdis. दोर्दण्डषण्डविवरे (°खण्ड od. B.) Bhâg. P. 3,15,41. नखमणि° (°खण्ड od. B.) 5,25,4. Daraus, dass षण्ड durch die Mâgadhî-Form सण्ड (Ind. St. 10,283) bezeugt wird, darf man noch nicht schliessen, dass nur jenes richtig, खण्ड aber falsch sei. Dieses etymologisch ganz verschiedene Wort findet sich in der angegebenen Bed. in den sonst so zuverlässigen Bomb. Ausgg. (z. B. वन° MBh. 3,13147. fg. पलाश° 16888; vgl. auch das Wortspiel मौक्षण्डखण्डैः Spr. (II) 5703) und diese Bed. des Wortes schliesst sich ungezwungen an die von *Stück, Theil* an. Nach Uṇâdis. auch शण्ड. Vgl. तरु°, द्रुम°, वातिक°. — 2) m. *ein in Freiheit gesetzter Stier* AK. 2,9,62. Trik. 3,3,155. H. 1259. an. 2,129. Med. d. 26. dh. 4. Uṇâdis. zu Unâdis. 1,101. 113. hier und da षण्ढ und शण्ढ geschrieben. Vgl. ग्रामषण्ड, नील° (auch ed. Bomb. °षण्ड), वृष°. — 3) m. *N. pr. eines Schlangendämons* Paṭṭâd. Bh. 25,13,3. Liṭ. 19,20,1. Nid. 10,12; vgl. कु°. — 4) n. = लिङ्ग Bhâg. P. 4,19,23 zur Erklärung von पाषण्ड (पाखण्ड); od. Bomb. खण्ड.

2. **षण्ड** fehlerhafte Schreibart für शण्ड (Kâm. Nîtis. 17,39 शण्डामर्कौ zu lesen), षण्ढ und सण्ड.

षण्डक s. षण्ढक.

षण्डकापालिक m. *N. pr. eines Lehrers* Verz. d. B. H. 196,12. षण्ड° Verz. d. Oxf. H. 234,*a*,3. खण्ड und कापालिक Hall 17.

1. **षण्डता** f. nom. abstr. zu 1. षण्ड 2) AK. 2,9,62. H. 1259.

2. **षण्डता** und **षण्डतिल** s. षण्ढता und षण्ढतिल.

1. षण्डत्व n. nom. abstr. zu 1. षण्ड 2) Hall. 2,109 (षण्ढत्व gedr.).

2. षण्डत्व s. षण्ढत्व.

षण्डाली f. = तेलमान, सारसी und स्त्री कामुकी Trik. 3,3,409. H. an. 3,689. Med. l. 142.

षण्डीय् (von षण्ड), °यति denomin. P. 8,1,54, Vârtt., Schol.

षण्ढ Unâdis. 1,101. 1) adj. *zeugungsunfähig*, m. *Eunuch; Zwitter* AK. 2,6,1,39. 8,1,9. 3,4,29,215. Trik. 3,3,111. 118. H. 362. 728. an. 2,131. Mân. dh. 4. 5. Hall. 2,275. Pân. Gaṇ. 2,7. Kâś. Ç. 1,1,5. M. 3,239. 4,211. 11,133. Jâṭ. 1,215. MBh. 3,1866. 4,2174. °वेष 5, 3523. 8,2093. 13,4287. Spr. (II) 4285. 5145. 6618. 6711. Suç. 1,318, 17. Çiç. Saṃh. 1,7,98. Vaṃç. Bṛh. S. 86,46. Kathâs. 56,88. 103. 91, 7. Mâlav. P. 15,31. 35,24. Bhâg. P. 2,3,24. Verz. d. Oxf. H. 92,*a*, N. 1. 277,*b*,6. Sâh. D. 81. षण्ढा: सम्मृङ्का: MBh. 5,3469. Elephanten Vaṃç. Bṛh. S. 67,10. षण्ढी (vgl. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41) योनि: eines Weibes, das weder Regeln noch Brüste hat, beim Beischlaf trocken Suç. 2,396,14. 397,13. Wird häufig (aber nie in den Bomb. Ausgg.) शण्ढ, षण्ड und शण्ड geschrieben. — 2) *das sächliche Geschlecht:* शिखिरं षण्ढे AK. 2,8,2,1. — 3) ein Bein. Çiva's H. 196. — 4) N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 8,2463. — Vgl. षाण्ढ.

षण्ढक = षण्ढ 1) MBh. 4,53. Sâh. D. 173,12. यो भार्यायामृतौ मोक्षादङ्गनेव प्रवर्तते Suç. 1,318,15. fg.

षण्ढता f. nom. abstr. von षण्ढ 1) Kathâs. 33,90. Mâlav. P. 15,38.

षण्ढतिल m. *unfruchtbarer Sesam* H. 1180. Hall. 2,428. °तिला ज्वाकला: MBh. 2,3521. 3526. एते सर्वे °तिला (so v. l. wahrsch. *Gestrüpp*) विनष्टा: लयं गत्वा नरकं दीर्घकालम् 5,853. ध्रुवोचं यत्षण्ढतिलानकं वस्तव्यमेव तत् 3521. 7,4868. 5427. 5659. 8,308. 3774.

षण्ढत्व n. = षण्ढता Kathâs. 56,103. — Vgl. षण्डत्व.

षण्ढिता (von षण्ढ) adj. f. (sc. योनि) so v. a. षण्ढी योनि: (s. u. षण्ढ 1) am Ende) Çiç. Saṃh. 1,7,102.

षण्ढगरिक (von षण्ढगरी) m. pl. N. einer Schule Wassiljew 231. Târan. 271. 273.

षण्ढगरी (षष्+नगर) f. *ein Verein von sechs Städten* P. 8,4,42, Vârtt. Vop. 2,27.

षण्ढवत (von षण्ढवति) adj. *der sechsundneunzigste* MBh. in den Unterschrr. der Adhjâja.

षण्ढवति (षष्+नवति) f. *sechsundneunzig* TS. Prâtiç. 7,2. P. 8,4,42, Vârtt. Vop. 2,27. Schol. zu AV. Prâtiç. 2,16. TS. 7,2,25. M. 8,224. Jâṭ. 2,172. Vaṃç. Bṛh. S. 11,27. 68. 105. Râja-Tar. 1,104. Bhâg. P. 5,24,16.

षण्ढवतितम adj. *der sechsundneunzigste* R. in den Unterschrr. der Sarga.

षण्णाडीचक्र (षष्-नाडी+चक्र) n. Bez. *eines best. Diagramms* ÇKDa. Suppl.

षण्णाभि (षष्+नाभि) adj. *sechsnabig* MBh. 1,727. 3,10645.

षण्मयूख s. u. मयूख.

षण्मात्र adj. Ind. St. 3,216. fg.

षण्मास m. *Semester* P. 5,1,84. Comm. 433. °मासात् *nach einem halben Jahre* Vaṃç. Bṛh. S. 46,20. 39. 48. 88, 13. °निचय adj. M. 6,18. षण्मासाभ्यन्तरे Hit. 3,5. षण्मासे: षड्भिर्वर्षै: Râja-Tar. 1,191.

षाण्मासिक adj. (aber nicht वयसि) von षण्मास P. 5,1,84. — Vgl. षाण्मासिक.

षाण्मास्य (von षण्मास) 1) adj. P. 5,1,82. *sechsmonatlich* Çat. Br. 9, 5,1,63. Ait. Br. 4,22. Kâṭh. 33,8. Âçv. Ç. 3,8,3 (षा° die Ausg.). Çâṅkh. Ç. 15,12,16. — 2) n. *Semester* Kâtj. Ç. 4,10,7. 20,3,6. Pân. Gaṇ. 2,2.

षण्मुख 1) adj. *sechsmündig oder sechsantlitzig:* Çiva MBh. 13,739. m. Bein. Skanda's Trik. 3,3,273. H. 209. Hall. 1,19. Taitt. Âr. 10,1, 6. MBh. 3,14643. 7,7412 (tödtet Mahisha). Mârk. 173,15. Hem. 17, 67. Kathâs. 6,167. 20,90. 49,215. Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,4. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,8, Çl. 29. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 6,319. des Dieners des 13ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi H. 42. eines Fürsten Târan. 3.267. eines Bodhisattva Hiouen-thsang 1,121 (Chang-mou-kia). °कुमार Târan. 75. — 3) N. eines Sûtra Wassiljew 274. षण्मुखी धारणी desgl. Vie de Hiouen-thsang 304. — 4) f. या *Wassermelone* Râgân. im ÇKDa.; vgl. षडङ्गुला, षडङ्गुला. — 5) f. ई = कुमारी Kâlakârma 3,131. 4,26. 60. — Vgl. षडानन und षडङ्गुल.

षण्मुहूर्ती f. *sechs* Muhûrta Weber, Gjot. 29.

षत्व n. *das* ष-*Sein, der Uebergang von* स *in* ष AV. Prât. 4,74. Schol. zu VS. Prât. 4,22. Weber, Prâtiçâkh. 108. Verz. d. Oxf. H. 169, *a*,26. — Vgl. पात्वणत्विक.

षराब्रिम N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,45. fg.

षराब्रिम desgl. ebend. 340,*a*,4.

षरोत्र desgl. ebend. 340,*a*,18.

षरोलिका ebend. 354,*b*,11 vielleicht fehlerhaft für सरोलिका *Stute;* vgl. सराल.

षर्जूर (vielleicht खर्जूर) N. pr. einer Oertlichkeit ebend. 340,*a*,15.

षलाघु desgl. ebend. 339,*b*,6.

षष् 1) *sechs* Nir. 4,27. nom. acc. षट्, instr. षड्भिस्, dat. abl. षड्भ्यस्, gen. षण्णाम्, loc. षट्सु Vop. 2,27. 3,149. P. 7,1,55. 8,4,42. — RV. 1,23,15. 164,15. 3,56,2. AV. 8,9,16. 17. 23. 10,8,5. Çat. Br. 11,3,3,1. 5,6,7. 12,2,2,2. इन्द्रियाणि RV. 1,164,6. उर्वो: 8,47,3. सर्पय: AV. 8,9,7. षडशीतय: 11,3,21. षट्कृत्वो RV. 7,18,14. सप्तय: VS. 9,32. Çat. Br. 2,1,4,12. षड्गुतुता Nir. 4,27. सलिला: Schol. zu Kâtj. Ç. 8,6,26. रसा: Suç. 2, 548,1. Vikr. 1,10,43. Kâtj. Ç. 5,3,13. 9,25. Kâç. 51. 53. Âçv. Gṛhj. 2,5,6. 4,8,20. TS. Prât. 1,9. M. 1,17. 61. 3,217. 269. गुणा: Spr. (II) 6614. दोषा: 6615. सूनां षण्मत्स्यु: R. 1,19,1. षड्भिस् Kathâs. 20,88. Râja-Tar. 1,54. Taitt. Âr. 2,2,2. षट् षट् च मासेषु M. 8,403. षण्णाम् 1,16. 10,76. 12,86. Spr. (II) 6616. fg. षण्मनूनाम् Verz. d. B. H. No. 834. षड्डाम्नित Ind. St. 2,66. लिप्त्यावद्दिश (= लिप्त्यावद्देत) सर्पय: Çaṃkar. (s. u. लिप्त्य). Am Ende eines adj. comp. angeblich wie andere Wörter auf ष declinirt: प्रियषषस् nom. pl. P. 7,1,22, Schol. प्रियषषाम् gen. pl. 55, Schol. — 2) Bez. *einer Klasse von Zahlwörtern* (षष् selbst und die auf न् und ति ausgehenden) P. 1,1,24. fg. 4,1,10. 5,1,179. 7,1, 22. 55. AK. 3,6,8,16. — 3) षट् adv. *sechsmal:* प्रचरत: Çat. Br. 4,3,4, 10. 12. Kâtj. Ç. 9,13,13.

षष्क्, षष्कति Naigh. 2,14 (गतौ). — Vgl. षष्क्.

षष्ठ (von षष्टि) adj. *der sechzigste* MBh. I, S. 384. II, S. 179. nach P. 5,2,58 und Vop. 7,38 in dieser Form (vgl. षष्टितम) nur in comp. mit Einern. चतुः° Lit. 18, 14, 2. एक° Cat. Br. 10,4,2,12. द्वाषष्ठानि त्रीणि शतानि d. i. *dreihundertundzweiundsechzig* 11,5,2,10.

षष्टि (von षष्) f. *sechzig* P. 5,1,59. षष्टिः सहस्रम् RV. 1,126,3. सहस्रा 53,9. 8,46,22. 29. शता 7,18,14. 1,164,48. षष्या 2,18,5. त्रिः षष्टिर्गृहाः 8,85,3. स्वालेकान्न षष्टी TS. 7,2,11,2. AV. 12,3,34. 19,47,4. Ait. Br. 2, 17. 4,12. 7,2. Çat. Br. 6,2,2,33. 8, 3, 2, 11. M. 3,177. Jiéh. 3,84. MBh. 5,7143. षष्टि पुत्रसहस्राणि R. 1,39,8 (40,8 Gorr.). 2,83, 4 (90,4 Gorr.). 3,20,10. Kâm. Nîtis. 3,36. Spr. (II) 6618. fg. Vasiṣ. Dh. S. 8, 21. 11, 18. 21. 34, 32. योजनानां सहस्रेषु षष्टौ वसति मे पितः Kathâs. 31,32. Râga-Tar. 1,54. 282. 3,364. Mâlav. P. 52,25. Bhâg. P. 6, 6,1. 8,17,7. mit gen.: योजनानाम् R. 5,1,46. WebER, Ġjot. 93. °शतम् Kirât. Ça. 22,3,25. त्रीणि षष्टिशतानि संवत्सरस्याक्षाम् Çâṅkh. Br. 3,2. 16,9. Âçv. Ça. 8,13,31. 8,6,10. Kâm. Nîtis. 15,11. °सहस्राणि Bhâg. P. 4,1,39. 5,21,17. °पुत्रसहस्राणि R. 1,5,2. °त्रिंशत adj. Weber, Nax. 2, 286. °योजनी *eine Strecke von sechzig Jôgana* Kathâs. 18,349. षष्टीष्टक Çat. Br. 10,4,2,11. °दिन adj. Weber, Ġjot. 100. द्विषष्टिरात्र Âçv. Ça. 11,4,5. वर्ष° Râga-Tar. 1,192. 6,287. षष्टी Jiéh. 3, 86. der nom. षष्टिम् als adv. *sechzigmal:* मन्त्रति Sâmâs. 13,23.

षैष्टिक m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. *in sechzig Tagen reifender Reis* (vulgo साठी) P. 5, 1, 90. AK. 2, 9, 24. H. 1168. MBh. 13, 5971. Suçr. 1, 73, 4. 136, 20. 195, 15. 19. 2, 41, 1. षैष्टिको व्रीहिषु मेध्यः Vishn. 1,6,7. Colebr. Alg. 316. Vasiṣ. Dh. S. 29,5. °पिण्डयोग 76,9. षष्टिकान्न 51,20. षष्टिकौदन 76,6. MBh. 13,3265. Suçr. 1,257,8. गौर् und कृष्णगौर् Kâraka 1,27. Vgl. लोर्°. — 2) f. या dass. Taittiriyâr. und Vâkaspatyaṇiçra im ÇKDr. Suçr. 1,228,10. — 3) n. *Sechzigzahl, sechzig* Vasiṣ. Dh. S. 32,21.

षष्टिकी adj. *mit* Shashṭika *genanntem Reis bestanden* P. 5,2,2. AK. 2,9,7. H. 966. Halâj. 2,5.

षष्टित्र m. = षष्टिक 1) Râgân. im ÇKDr. unter षष्टिक.

षष्टितन्त्र n. *das System der sechzig Begriffe im* Sâṁkhja Sâṁkshâr. 72. Gaudap. zu 17. Tattvas. 45.

षैष्टितम adj. *der sechzigste* P. 5,2,58. Vop. 7,38. MBh. und R. in den Unterschrr. der Kapitel.

षष्टिधा (von षष्टि) adv. *sechzigfach, in sechzig Theile (Theilen)* Kâraka 1,4. — Vgl. त्रि°.

षष्टिपथ m. Bez. *der sechzig ersten* Adhjâja *im* Çatapatha-brâhmaṇa Ind. St. 1,185. P. 4,2,60, Vârtt. 9. Weber, Prâtiçâkh. 104.

षैष्टिपथिक adj. (f. ई) *den* Shashṭipatha *studirend* P. 4,2,60, Vârtt. 9. — Vgl. षाष्टिपथ.

षष्टिमत m. Bez. *des Elephanten, der bis zum sechzigsten Jahre brünstig ist,* Çabdam. und Sârasvatânubhûtiçr. im ÇKDr. षष्टिमत fehlerhaft Wilson.

षष्टिरात्र m. *ein Zeitraum von sechzig Tagen* P. 5,1,90.

षष्टिलता f. *eine best. Pflanze,* = धमरमारी Râgân. im ÇKDr.

षष्टिवर्षिन् adj. *sechzigjährig:* Elephant MBh. 1,5888.

षष्टिवासस् m. = षष्टिक 1) Râgân. im ÇKDr. unter षष्टिक.

षष्टिविद्या f. etwa = षष्टितन्त्र Ind. St. 3,399.

षष्टिव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 41,a,28. 87,b,6.

षष्टिशालि m. = षष्टिक 1) Râgân. im ÇKDr. unter षष्टिक (°शालि gedr.).

षष्टिसहस्रिन् adj. pl. *sechzigtausend an Zahl seiend* Buâg. P. 3,8,10.

षष्टिहायन 1) adj. *sechzigjährig:* Elephant MBh. 1,6005. 4,348. Spr. (II) 3627. — 2) m. a) *Elephant* Taik. 3,3,267. H. ç. 175. Med. s. 249. — b) *eine Hornart* Taik. Med.

षष्टिह्रद N. pr. eines Tîrtha MBh. 13,1722.

षष्ट्यब्द n. *der sechzigjährige Jupitercyclus* Sûrjas. 14,2. Vasiṣ. Dh. S. 2, S. 4, Z. 6. °पूर्व: प्रभव: स नाम्ना 8,27. Titel eines darüber handelnden Werkes 52.

षष्ठ (von षष्) 1) adj. (f. ई) *der sechste* (n. *ein Sechstel*) P. 5,2,51. 3, 51 (nach dem Schol. parox. भागे). Vop. 7,41. H. an. 2,109. Med. th. 9. AV. 8,9,4. 6. 15,15,5. 19,22,1. VS. 23,4. सप्तन् TBr. 1,3,10,4. TS. 5,4, 9,2. Ait. Br. 5,10. Çat. Br. 8, 5, 4, 8. Kâtj. Ça. 9,7,11. 12,3,12. 6,20. Âçv. Gṛ. 3,12,8. Kâuç. 49. 80. 91. TS. Pâit. 4,32. मास M. 2,34. षष्ट्र 37. Râm. 17,72. Vasiṣ. Dh. S. 9,20. 40,11. 43,44. रजनी R. 2,63,3. निशा Weber, Kṛishṇaj. 268. 300. °दिन Verz. d. Oxf. H. 23, a, N. 2. 85, a, 17. 294, a, 12. काल *die sechste Stunde des Tages* Vish. 20. *die sechste Essenszeit* (am Abend des dritten Tages) MBh. 13, 5175. 14, 1562. 1665. भाग M. 7,120. संश 9,164. Spr. (II) 6580. Buâg. P. 5,15,9. पञ्चमानषष्ठा: *sechs mit dem Jañ.* Kâtj. Ça. 8,2,6. MBh. 1,5874. षष्ठमिरुवहामिष्टम् N. eines Sâman Ind. St. 3,236, a. — 2) m. N. pr. eines Mannes, = °चन्द्र Râga-Tar. 8, 2762. 2774. fg. 2854. 2889. 3039. — 3) f. ई a) (sc. तिथि) *der 6te Tag in einer Monatshälfte* Weber, Ġjot. 112. MBh. 3, 14454. 14453. Harîv. 10241. Var. in LA. (III) 13, 7. Verz. d. Oxf. H. 87, a, 47. 97, b, 19. °कल्प 31, b, 5. °व्रतानि 284, b, 28. °जागरक H. an. 4, 232. Med. s. 61. षष्ठ्यादिकल्पबोधन As. Res. 3, 261 (nach Haughton). — b) (sc. विभक्ति) *der sechste Casus, Genetiv* Nir. 1, 17. Âçv. Ça. 1, 6, 2. Kâtj. Ça. 1, 9, 16. VS. Pâit. 1, 136. 2, 18. AV. Pâit. 2, 71. P. 1, 1, 49. 2, 1, 18. 2, 3. 3, 26. 30. 34. 38. 50. 5, 4, 148. 6, 2, 60. 134. 3, 21. 8, 1, 20. AK. 3, 6, 2, 26. Weber, Rikat. Up. 307. Verz. d. Oxf. H. 162, a, 13. 178, a, 6. Sarvadarçanas. 135, 18. °समास 92, 10. P. 7, 4, 60, Vârtt. 1. °तत्पुरुष Schol. zu P. 6, 2, 25. zu 5, 1, 9, Vârtt. 6. 8. — c) eine Personification einer Partikel der Prakṛti Verz. d. Oxf. H. 23, a, 24. 24, b, 23. Wilson, Sel. Works 1, 246. 2, 193. eine Personification des *sechsten Tages* nach der Geburt eines Kindes (wo die Hauptgefahren für dasselbe vorüber sind) Sâṁk. K. 107, b. Weber, Kṛishṇaj. 250. 269. fg. Verz. d. Oxf. H. 85, a, 17. Verz. d. B. H. No. 1031. 1037. Vgl. unter 1. साधक 2) b). = Durgâ Taik. 1, 1, 54. H. ç. 49. H. an. Med. Verz. d. B. H. No. 542. = इन्द्रसेना Nâm. Vaik. Up. in Ind. St. 9, 98. — Vgl. अशोकषष्ठी, भद्र°, मन्दार°, महा°.

षैष्ठक adj. *der sechste* P. 5,3,51. Çaut. 44. 40 (Bâ.).

षष्ठकाल m. *die sechste Essenszeit* (am Abend des dritten Tages): °कालोपवास *ein Fasten, wobei man immer nur am Abend des dritten Tages isst* (d. i. *fünf Mahlzeiten vorübergehen lässt*) MBh. 3, 8032; vgl. unter षष्ठ 1).

षष्ठचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 8, 2506. 2572. 3046. 3084. — Vgl. षष्ठ 2).

1. षष्ठभक्त n. *die sechste Mahlzeit:* °भक्तेन वर्तयामास *lebte von der sechsten M. d. i. ass immer nur am Abend des dritten Tages* MBh. 13, 1024.

2. षष्ठभक्त adj. *nur die sechste Mahlzeit geniessend d. i. stets nur am Abend des dritten Tages speisend* MBh. 12, 8889.

षष्ठम adj. = षष्ठ. f. ई *der sechste Tag in einem Halbmonat* Verz. d. Oxf. H. 172, *b*, No. 383.

षष्ठवती (von षष्ठ) f. N. pr. eines Flusses Bhāg. P. 5, 19, 18 (fehlt in der ed. Bomb.). — Vgl. सप्तवती.

षष्ठांश (षष्ठ + अंश) m. *ein Sechstel*, insbes. *das vom Fürsten erhobene* Verz. d. Oxf. H. 23, *a*, N. 2. Jiān. 2, 35. Rāgat. 2, 66. Mārk. P. 120, 6. °वृत्ति *so v. a. Fürst* Spr. (II) 4569.

षष्ठान्नकाल (षष्ठ + अ°) adj. *nur die sechste Mahlzeit zu sich nehmend, stets nur am Abend des dritten Tages speisend;* davon °ता f. nom. abstr. M. 11, 200.

षष्ठान्नकालक n. = षष्ठान्नकालता Taitt. 2, 7, 11 (षष्ठालुकालक gedr. und so auch ÇKDa. und Wilson in der 1ten Aufl.).

षष्ठान्नकालिक adj. = षष्ठान्नकाल Pāraśar. 182, 22.

षष्ठाह्निक adj. *dem sechsten Tage* (des Shaḍāha) *entsprechend* Çārīrak. Ça. 12, 7, 2. 15, 8, 4.

षष्ठिका f. = षष्ठी *eine Personification des sechsten Tages nach der Geburt eines Kindes* Sāṁk. K. 59, *b*, 3. Tithyādit. im ÇKDa.

षष्ठीजाय adj. *die sechste Frau habend* Vop. 6, 14.

षष्ठीदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Tüb. H. 13. Kshitiç. 7, 18. fg.

षष्ठीप्रिय m. *ein Freund des sechsten Tages*, Beiw. Skanda's MBh. 3, 14633; vgl. 14658.

षस wohl = सस्स Verz. d. B. H. No. 988.

षाट् interj. Çāṇḍārtak. bei Wilson.

षाट्कोशिक (von षष्ट् + कोश) adj. *aus sechs Hüllen bestehend:* शरीर Sarvadarçanas. 98, 10. Gaupāp. zu Sāṁkhjak. 39. Comm. zu Kap. 3, 11. Nīlak. zu MBh. 14, 634.

षाट्पुरुषिक (von षष्ट् + पुरुष) adj. *durch sechs Generationen gehend* u. s. w. Monier Williams.

षाडवक adj. von षडव gaṇa धूमादि zu P. 4, 2, 127.

षाडव m. 1) *Zuckerwerk mit Früchten* u. s. w. (die richtige Form ist खाण्डव) Suçr. 1, 232, 18. 2, 480, 1. 522, 9. = रस Taitt. 3, 3, 423. Med. v. 23. — 2) = राग Taitt. = गान Med. षाडवः पञ्चभिः प्रोक्तः स्त्रीभिः षड्भिस्तु षाडवः। संपूर्णः सप्तभिर्ज्ञेय एवं रागस्त्रिधा मतः॥ Saṁgītadāmodara im ÇKDa. — Vgl. राग° und फलषाडव.

षाडविक m. *Zuckerbäcker* R. Gorr. 2, 90, 26.

षाडुण्य (von षड्गुण) n. gaṇa चतुर्वर्णादि zu P. 5, 1, 124, Vārtt. 1. *die sechs Vorzüge* (vgl. u. 1. षड्गुण): संपूर्णषाड्गुण्यमूर्ति (Vishṇu) Kathās. 54, 21. *das sechsfache Verfahren eines Fürsten in der auswärtigen Politik* M. 7, 58, 157. MBh. 2, 142. 5, 1421. fg. 12, 1476. 2661. fg. 15, 218. fg. Harīv. 5273. 5278. Vārāh. Bṛh. S. 2, S. 6, Z. 6. 7. Jogeçvarī 1, 13 in Ind. St. 16, 166. Spr. (II) 6620. Mārk. P. 27, 9. Pāraśar. 154, 9. 168, 24. Hit. 119, 17.

षाड्गुर्गिक (von षड्गुण) adj. *zu den fünf Sinnen und dem Manas in Beziehung stehend* Bhāg. P. 1, 3, 26.

षाड्गुण्य (von षड्गुण) n. *Sechserleiheit* Kull. zu M. 8, 76.

षाण्डश und f. षाण्डशी gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41.

षाण्ढ्य n. nom. abstr. von षण्ढ *Eunuch, Zwitter* Suçr. 1, 348, 21. 2, 48, 21.

षाण्मातुर (von षष् + मातृ) P. 4, 1, 115, Schol. m. = हैमातुर Taitt. 2, 6, 6. ein N. Skanda's (*sechs Mütter habend*) AK. 1, 1, 2, 36. H. 208. Colebr. Misc. Ess. 2, 331.

षाण्मासिक 1) adj. *sechsmonatlich* P. 5, 1, 83. गर्भ MBh. 1, 3835. विधव Bṛhaspati bei Cowell, Kusum. S. 65 (der Uebersetzung). खवधि Kathās. 122, 97. षाण्मासिकाद् *alle sechs Monate erneuert werdend* M. 7, 126. Vgl. षण्मासिक. — 2) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Tüb. Hdschr. 13.

षाण्मास्य adj. *sechsmonatlich* P. 5, 1, 83. fg. Āçv. Çr. 3, 8, 5. — Vgl. षण्मास्य.

षात्वणत्विक (von षत्व + णत्व) adj. *über den Uebergang von* स *in* ष *und von* न *in* ण *handelnd* P. 4, 3, 67, Schol.

षामिल N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 7.

षाष्टिक adj. von षष्टि gaṇa निष्कादि zu P. 5, 1, 20. *sechzigjährig* 38, Vārtt. 3, Schol. — Vgl. हि°.

षाष्टिपर्व adj. = षाष्टिपविक Kāç. zu P. 4, 2, 60.

षाष्ठ (von षष्ठ) adj. *der sechste* (Theil) P. 5, 3, 50. *im sechsten* (Adhjāja) *gelehrt* 8, 1, 19, Schol.

षिड् m. *Wüstling, ein liederlicher Gesell, Galan* Taitt. 3, 1, 6. H. 331. Med. g. 13. Kaṇḍa bei Uṇâdi-sūtr. zu Uṇādis. 1, 113. Çiç. 5, 24. षिड्ड H. an. 2, 40. षिड्ड Comm. zu Hāla 277. षिड्ड = झार Hem. Deçīs.

षु m. = सू Eaikshavak. im ÇKDa.

षुक्क s. षष्क्.

षुराजिम N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *b*, 9.

षुरासाण desgl. ebend. 338, *b*, 39. — Vgl. खुरासान.

षू f. *Geburt, Niederkunft* Eaikshavākaça im ÇKDa. und bei Wilson; fehlerhaft für सू.

षेड wielleicht = षेडृत् Schol. zu VS. Pāṭ. 3, 57. — Vgl. षेडीय्.

षेडृत् (षष् + दृत्) adj. *sechszählig* (als Bez. des Lebensalters) P. 5, 3, 109, Vārtt. 3. gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5, 4, 38. H. 1263. Halāj. 2, 113. — Vgl. षेडत.

षेडत्त adj. dass. VS. Pāṭ. 3, 46.

षेडशी 1) adj. (f. ई) *a) der sechszehnte:* Tag Çārīrak. Ça. 15, 12, 20. Çat. Br. 8, 2, 3, 9. कला Çat. Br. 14, 4, 3, 22. Śrāṇḍ. Br. 4, 6. वर्ष Āçv. Gṛhj. 1, 18, 2. 19, 5. M. 2, 38. 66. 86. Kām. Nītis. 9, 4. Vārāh. Bṛh. S. 6, 4. Verz. d. Oxf. H. 43, *a*, 19. Bhāg. P. 2, 9, 6. कलां नार्हति षेडशीम् MBh. 3, 12370. 7, 1344. Spr. (II) 1742. Mārk. P. 109, 33. Pāraśar. 4, 3, 214. षेडश M. 11, 126. H. 106. भाग AK. 1, 1, 2, 17. Mārk. P. 78, 20. 108, 1. m. *ein Sechzehntel* AV. 3, 29, 1 (AV. Pāṭ. 1, 68). Vārāh. Bṛh. S. 53, 12. am Ende eines adj. comp. (f. घा): वृषभषेडशाः (so ist mit der v. l. zu lesen) *so v. a. fünfzehn Kühe und ein Stier* M. 9, 124. — *b) mit sechzehn verbunden:* वर्षशतम् *hundertundsechzehn Jahre* Kaṭhās. Up. 3, 16, 7. — *c) aus sech-*

zehn bestehend: स्तोम VS. 9,34. स्तोत्र TS. 5,6,11,1. Pañcav. Br. 17, 1,1. 2,2. Liṭ. 6,8,8. Bhāg. P. 6,1,50. — d) fehlerhaft für षोडशन् sechzehn: षोडशैवानी: Weber, Rāmāy. Up. 327. — 2) f. ई N. einer der zehn Mahāvidjā Notices of Skt Mss. 213. 259. Verz. d. Oxf. H. 93,b, 18. 28. 101,b,10 (pl.). Pāṇ. 2,5,43. fg. 51. — Vgl. परि°.

षोडशक 1) adj. aus sechzehn bestehend MBh. 12,11857. Kām. Nītis. 9,4. Śiśupāl. 3. 22. Varāh. Bṛh. S. 56,25. 77,20. 25. n. Sechszehnzahl, ein Aggregat von sechzehn 81,14. Pāṇ. 2,12,16. 13,12. Sarvadarç. 114,19. — 2) f. षोडशिका ein best. Gewicht, = 16 Māsha = कर्ष Çiraṇ. Saṃh. 1,1,17.

षोडशकल (षोडशन् + कला) adj. sechzehntheilig: यज्ञक्रतु Ait. Br. 5,10. Çat. Br. 7,2,2,17. 11,1,6,26. 12,8,2,13. 13,2,2,13 चन्द्रमस् Suapv. Br. 4,6. पुरुष Paraçar. 6,1. Ind. St. 9,110. fgg. Bhāg. P. 1,3,1. 6,1,51. °विद्या Colebr. Misc. Ess. 1,326.

षोडशगृहीत adj. sechzehnmal geschöpft: ग्रह Çat. Br. 4,2,2,2. 6. Kāṭh. Çr. 18,3,13.

षोडशधा (von षोडशन्) adv. sechzehnfach TS. 2,1,6,6. 5,4,5,4. 6,6, 11,1. Verz. d. Oxf. H. 43,a,13.

षोडशन् (षष् + दशन्) adj. sechzehn VS. Prāt. 3,46. 5,27. P. 6,3, 109, Vārtt. 3. nom. acc. °दश, °दशभिस्, °दशभ्यस्, °दशानाम्, °दशसु. VS. 18,25. Windungen der Schlange TS. 5,4,5,4. 7,2,11,2. Çat. Br. 7,2,2,17. कला: 10,4,4,17. 11,1,6,26. सविता: 10,4,4,19. Kāṭh. Çr. 14, 3,11. TS. Prāt. 1,5. M. 3,46. 8,124. 126. fg. 11,248. Harīv. 8351. R. 2,70,20. 4,25,26. Varāh. Bṛh. S. 21,30. 23,6. Kathās. 46,36. Rāgat. 1,26. 6,286. Daçak. 70,8. Bhāg. P. 1,11,31. 2,4,23. दानानि Verz. d. Oxf. H. 67,a,27. °दशमकादानम् 45,a,27. श्राद्धानि 87,a,26. fg. 294,a, 18. °दशश्राद्धक्रम Verz. d. B. H. No. 1121. नित्या न्यासा: Verz. d. Oxf. H. 93,b,26. fg. (vgl. Verz. d. B. H. No. 1336). उपचारा: Verz. d. B. H. No. 1104. 1150. Verz. d. Oxf. H. 249,a,2. 284,a,34. Weber, Kṛshṇaj. 255. 268. 277. 279. 289. योगा: Verz. d. B. H. No. 876. 881. शोकारा: P. 1, 2, 34, Schol. °दशमातृका: Çāṅkhār. im ÇKDa. °दशधुवाणां नामानि Verz. d. Oxf. H. 87,a,7. 8. °दशाधार 236,a,No. 367. Verz. d. B. H. No. 649. °दशलिङ्गादर्च मण्डलम् 920. fg. °दशकारणपूजा Wilson, Sel. Works 1,322. °दशस्त्रीसङ्गमेश Pāṇ. 4,1,21. °दशावस्तृत Bhāg. P. 4,29,74. °दशपद Ait. Br. 4,1. °दशवर्ष Pāṇ. Gaṇ. 2,1. ऊनषोडशवर्ष R. Gorr. 1,23,2. °दशार Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,110. Weber, Kṛshṇaj. 272. Kālakarṇa 4,101. °दशात R. 5,32,13. °दशदल Weber, Rāmāy. Up. 306. 319. fg. Ind. St. 9,113.

षोडशभाग m. ein Sechzehntel Varāh. Bṛh. S. 43,40. 52,23.

षोडशभुज adj. sechsehnarmig; f. आ eine Form der Durgā Kālikā-P. 59 im ÇKDa.

षोडशम adj. der sechzehnte: भाग Gaṇit. 1,74. परिवर्त Verz. d. Oxf. H. 52,b,43. Bhāg. P. 1,3,20.

षोडशरात्र m. n. eine sechzehntägige Feier Liṭ. 18,1,10. Maç. 9,1 in Verz. d. B. H. 73.

षोडशर्च (षोडशन् + ऋच्) m. ein Stück aus sechzehn Versen AV. 11, 23,13. Çat. Br. 13,6,2,12.

षोडशलक्षण n. das aus sechzehn Adhjāja bestehende Sūtra des Gaimini Sarvadarçanas. 86,23.

षोडशविध adj. von sechzehnerlei Art Kām. Nītis. 10,22. Verz. d. Oxf. H. 25,a, N. 2. Pāṇ. 1,1,31.

षोडशसहस्र n. sg. sechzehntausend Bhāg. P. 5,10,7. wohl richtiger °साहस्र Burnouf.

षोडशांश m. ein Sechzehntel Varāh. Bṛh. S. 53,23. Pāṇ. 2,2,100.

षोडशांशु adj. sechzehnstrahlig; m. der Planet Venus Çabdam. im ÇKDa.

षोडशांघ्रि adj. sechzehnfüssig; m. Krebs H. 1352.

1. षोडशातर् n. die sechzehnte Silbe Ind. St. 10,416.

2. षौडशातर् adj. sechzehnsilbig VS. 9,34. Çāṅkh. Çr. 10,8,13. 13,8. Pañcav. Br. 12,11,20. Liṭ. 6,10,10.

षोडशाङ्ग adj. sechzehntheilig; m. (sc. धूप) Bez. eines best. Räucherwerks Tantrās. im ÇKDa.

षोडशाद्रि m. = षोडशांद्रि H. 1352, v. l.

षोडशात्मक m. die Seele von sechzehn (गुण) Bhāg. P. 2,4,23.

षोडशात्मन् m. dass. Bhāg. P. 5,11,5.

षोडशार्चिस् adj. sechzehnstrahlig; m. der Planet Venus Taik. 1,1, 22. H. 120. Hāl. 36.

षोडशावर्त adj. sechzehn Windungen habend; m. Muschel H. 1205.

षोडशिक in स° adj. mit dem Shoḍaçistotra verbunden Pañcav. Br. 20,2,1. 14,1. Āçv. Çr. 5,10,21. स° Liṭ. 8,12,9. 18,10,14. Kāṭh. Çr. 23,1,13. — षोडशिका f. s. unter षोडशक.

षोडशिकाम (षोडशिका + काम) n. ein best. Gewicht, = पल ÇKDa. इति वैद्यकपरिभाषा; vgl. षोडशीबिल्व und षोडशिका unter षोडशक.

षोडशिन् (von षोडशन्) adj. AV. Prāt. 4,51. 1) aus sechzehn bestehend, sechzehntheilig: Prāgāpati VS. 8,36. 32,5. TS. 5,6,11,1. Mahīdh. Up. in Ind. St. 2,83. — 2) insbes. der sechzehntheilige Stoma, Stotra u. s. w. (auch ohne स्तोम u. s. w.) VS. 15,3. Ait. Br. 4,1. 4. Pañcav. Br. 12,13,2. 18,6,19. 19,6,2. Çāṅkh. Çr. 8,7,4. 15,3,5. Āçv. Çr. 5,10,23. 11,1. 6,2,1. P. 8,3,105, Schol. — 3) mit einem sechzehntheiligen Spruche u. s. w. verbunden: Indra VS. 8,33. 20,10. Āçv. Çr. 6,3,22. यज्ञ Pañcav. Br. 12,11,6. Çat. Br. 4,3,2,1. 5,1,2,3. TS. 5,6, 11,1. — 4) m. ein Sutjā-Tag mit sechzehntheiligem Spruche (oder Spende), eine der Saṃsthā des Soma-Opfers Ind. S. 9,120. AV. 11, 7,11. Ait. Br. 6,15. Çat. Br. 3,9,2,23. 4,3,10,2. 5,5,2,3. 12,2,2,6. TS. 7,4,3,2. 2,3. 10,1. Āçv. Çr. 6,11,1. 8,9,9. Maitrājan. 6,26. Z. d. d. m. G. 7,527, N. Verz. d. Oxf. H. 30,b,10. 266,b, 39. Bhāg. P. 3,12,40.

षोडशिमत् (von षोडशिन्) adj. = सषोडशिक (s. unter षोडशिक) Çat. Br. 12,2,2,7. TS. 7,4,3,2. Liṭ. 4,5,7. 8,5,23. 18,13,3. Āçv. Çr. 10,2,19.

षोडशिसामन् n. das im Shoḍaçistotra befindliche Sāman Ait. Br. 3,41. Pañcav. Br. 18,6,18. Śāṅkh. Br. 3,11. Liṭ. 3,1,1. 10,2,2. 5.

षोडशीबिल्व n. ein best. Gewicht, = पल Çāṅkh. Saṃh. 1,1,18. — Vgl. षोडशिकाम.

षोडोय् (wohl von षोड), °यति P. 6,1,64, Vārtt., Schol.

षोढा (von षष्) adv. sechsfach P. 5,3,109, Vārtt. 4. 5. Vop. 7,48. षोळ्का पुक्ता: पक्षे पक्ष वक्ति RV. 3,55,18. °विक्तो वै पुरुष: sechstheilig TS. 5,6,6,1. तस्य षोढा शरीराणि षड्धो धारयति च Jāṭ. 3,84. Verz. d. Oxf. H. 7,b,1. 208,a, No. 489. 267,b, 25. °न्यास 7,b,1. 93,b,

23 (vgl. 26). °गुह्य 94,b,1. — Vgl. महाषोढान्यास.

षौडत adj. = षोडत् gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38.

ष्ट्या s. स्त्या.

ष्ठिव् oder ष्ठीव्, ष्ठीवति und ष्ठीव्यति (nicht zu belegen) Dhâtup. 15,52. 26,4 (निरसने). 7,3,75. 6,1,64, Vârtt. Vop. 8,42. 66. 71. टिष्ठेव und तिष्ठेव 72. *spucken, ausspeien* Varâh. Bṛh. S. 51,32. Bhaṭṭ. 12, 18. शोणितम् Suçr. 2,192,18. 1,304,4. 2,446,16. तेन यत्राहमष्ठीवमभूत्तत्र काञ्चनम् Kathâs. 108,78. ष्ठीवन्त्यस्य च मूर्धनि Bhâg. P. 11,23,35.

— अभि *bespeien:* °तिष्ठेव Çat. Br. 1,2,3,1. °ष्ठ्यूत 2,1,1,2.

— अव dass.: °ष्ठ्यूत Çat. Br. 1,2,3,1.

— नि *ausspucken* Çat. Br. 4,1,3,9. 14,4,1,33. Kâtj. Çr. 25,11,26. Çâṅkh. Gṛhj. 4,12. Ḱhând. Up. 2,12,2. Kauç. 58. MBh. 6,2767. Suçr. 1, 317,13. 2,237,10. Bhaṭṭ. 18,14. न्यष्ठीवत् — तस्य मूर्धनि MBh. 3,11797. Bhaṭṭ. 17,10. °तिष्ठिवु: 14,100. °ष्ठीव्य M. 5,148. MBh. 13,5067. Mârk. P. 34,69. निष्ठ्यूत (oftersfalschlich निष्ठूत geschr.) *ausgespuckt* Kâtj. Çr. 25,11,31. Kâvjâd. 1,95. Râǵa-Tar. 5,462. *entlassen, von sich gegeben* AK. 3,2,37. H. 1482. तेजो वह्निनिष्ठ्यूतम् Ragh. 2,75. (चन्द्रेण) °मरीचिभासा Kumâras. 7,35. निष्ठ्यूतः — लाक्षारसः केनचित् (तरुणा) Çâk. 80. Spr. (II) 3912. Râǵa-Tar. 5,96. n. *ausgeworfener Speichel* M. 4,132. Jâǵń. 2,213. Bhâg. P. 5,24,17. — Vgl. निष्ठीव fgg. und निष्ठेव fgg.

— अभिनि *ausspucken auf* Çat. Br. 14,1,1,33. Kauç. 31. 36.

— अवनि dass. M. 8,282.

— विनि *ausspeien* Suçr. 2,503,18.

— निस् dass.: निरष्ठीवत् Çat. Br. 5,5,4,10. P. 1,4,62, Schol. *hinwerfen so v. a. hinzeichnen:* तद्रसेन सुधाभित्तौ चक्रवाकमिथुनं निरष्ठीवम् Daçak. 92,6. 7.

— प्र *ausspeien* Âçv. Çr. 6,13,10.

— प्रति *bespucken:* ब्राह्मणम् AV. 5,19,3.

ष्ठीव (von ष्ठीव्) nom. ag. s. हिरण्य°.

ष्ठीवन (wie eben) n. 1) *das Spucken* Vop. 26,172. H. 1521. Pâr. Gṛhj. 2,8. Suçr. 1,98,11. 331,21. 2,344,12. 465,1. शोणित° 193,16. उच्चैः Kâm. Nîtis. 5,23. Varâh. Bṛh. S. 78,4. ष्ठीवनं चाचरेच्छनैः MBh. 4,117. श्मश्रुमालासु Râǵa-Tar. 6,157. — 2) *ausgeworfener Speichel:* नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं वा समुत्सृजेत् M. 4,56. 5,123 (pl.). Jâǵń. 1,137. 152. MBh. 14,150 (pl.). Râǵa-Tar. 5,462. Mârk. P. 35,30. Bhâg. P. 5,5,30 (oder *das Bespucken*). — Vgl. रक्त°.

ष्ठीवि (wie eben) adj. *spuckend:* सुवर्ण° MBh. 7,2157.

ष्ठीविन् (wie eben) adj. dass.: हिरण्य° MBh. 2,2106. सुवर्ण° 7,2163. 12,1045. स्वर्ण° 1042. काञ्चन° 1043.

ष्ठीवी (wie eben) f. *das Spucken*, s. रक्त°.

ष्ठेवन (wie eben) n. dass. Vop. 26,172. H. 1521.

ष्ठ्यूत (wie eben) n. dass. H. 1521.

ष्वक्क्, ष्वक्कते (गत्याम्) Vop. 8,42. 106, Anf. — Vgl. ष्वष्क्.

ष्वष्क्, ष्वष्कति (ष्वःकति) Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). ष्वष्कते Dhâtup. 4,26 (गत्यर्थ). P. 6,1,64, Vârtt. Varianten im Dhâtup.: ष्वस्क्, षुक्क्, स्वस्क्; vgl. auch षष्क्.

— परि *umhergehen* Hâla Anh. 51. 59 (im Prâkrit). — Vgl. परिष्वष्कित.

स*)

1. स pron. der dritten Person, nur im nom. sg. masc. und fem. erhalten; im Veda noch der loc. सस्मिन् in Verbindung mit ऊधन् RV. 1,152,6. 180,4. 4,7,7. 10,3. 7,36,3. योनौ 1,174,4. सदने 18,95,11. धातौ 1,32,15. Vor Consonanten fehlt das Casuszeichen im nom. sg. masc. VS. Pair. 3,15. AV. Pair. 2,57. P. 6,1,33. Vop. 2,55. Ausnahme: ततः सुषाव सस्तदा (am Ende eines Çloka) Hariv. 11387 (die neuere Ausg. सो ऽब्रवीत्). Das स des nom. स verschmilzt bisweilen mit einem folgenden Vocale RV. Pair. 2,33. fg. VS. Pair. 3,14 (vgl. सोषधीः VS. 12,36. सेमाम् 29,54 und सेषः weiter unten). Wenn स mit dem स priv. verbunden ist, fällt das Casuszeichen nicht ab nach P. 6,1,33. Vop. 2,55. प्रतीयते संप्रति सो ऽप्यसः पेः Çic. 1,69. Voc. स, सा P. 7,2,106. nach Sasn. K. zu P. 7,2,102 ist kein Vocativ vorhanden. *Dieser, der* (auch zum Artikel abgeschwächt); *er, sie:* मृगः स मृगयुस्त्वम् AV. 18,1,26. यः सूर्यं ब्रह्मान् स संनासः इन्द्रः RV. 2,12,7. तस्मिन्देशे य आचारः पारंपर्यक्रमागतः । वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते M. 2,18. 168. येन येन — स सः Çiç. 130. यः — स एव Vasiṣṭh. Bpn. S. 53,11. — स नास्ति कश्चित् — यः Spr. (II) 2202. नास्ति लोके स उत्पातो यो स्वनेन न शाम्यति Vasiṣṭh. Bpn. S. 48,54. स एव — यः 78,22. — तथैवासीद्विदर्भेषु भीमः — प्रजाकामः स चाप्रजः MBh. 3,2076. यथा त्वदन्यं पुरुषं न सा मंस्यति कर्हिचित् 2093. — उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले Çiç. 38. स्वरितयोर्मध्ये यत्र नीचं स्यादुदात्तयोर्वान्यतरतो वोदात्तस्वरितयोः स विक्रमः TS. Pair. 19,1. यदि चेज्ञानादस्थमुदात्तमथ चेत्संक्षितेन स्वर्यते स प्रातिलोम्यः 20,3. त्रिरेव लोष्ठे तिमिरनुदो मण्डलं यदि स लेखः Vasiṣṭh. Bpn. S. 5,45. 20,8. 86,54. — सो ऽब्रवीदिन्द्रः Ait. Br. 6,15. सा रु सुपर्ण्युवाच Çat. Br. 3,6,2,4. °तं स भीमः प्रजाकामस्तोषयामास MBh. 3,2078. यत्र राज्ञा स नैषधः 2254. चित्रकूटो ररास सः R. 1,1,22. मिथिलाधिपः स तौ द्रष्टुमागतः 70,13. सखी सा खलु कुलपतेरुच्छ्वसितम् Çiç. 31,10. स विद्रूषकः Kathās. 18,145. 171. स हि भर्ता समागतः 366. स च मृगः Hit. 17,15. स मरुतः Raghu. 3,65. स पतिर्मे गतः क्वापि Kathās. 18,224. स हि ते वर्तते पतिः । पुत्रो दिव्येन भोगेन 229. Beliebt ist die Verbindung mit einem Rel. am Anfange eines Satzes: स य एनं शस्ते Ait. Br. 2,21. स यो ऽनुदिते जुहोति 3,20. स यदग्निर्वीरस्पर्शः 3,4. Çat. Br. 2,5,4,23. स यदग्नौ जुहोति तदेवेषु जुहोति 6,2,22. स यदि मुचा जुहोति 4,3. Aus diesem Gebrauch, indem der Satzanfang wie zur festen Formel wurde, entspringt der andere, dass स auch in Fällen bleibt, wo die Construction ein anderes Genus und einen anderen Numerus verlangt, oder wo es vollkommen pleonastisch ist, z. B.: स यदि स्थावरा आपो भवन्ति — ताः Çat. Br. 13,8,4,6. स यस्य कस्य च नामास्ति — तत् 11,2,3,3. स यदि विष्णुक्रमीयमकः स्यात् 6,7,4,15. स यथा केवेम सावित्रीलोकाः 11,2,3,2. स यज्ञेनमासिसङ्क्षन्ति 1,6,4,15. 4,5,3,1. 10,7. 11. 1,2,12. 12,6,2,2. 13,3,3,6. 14,4,3,19. 5,1,23. 4,10. — Verstärkt durch andere Pronomina der 3ten Person: स एषः Ait. Br. 2,25. Çat. Br. 14,6,11,6. Çiṣ. 5,11. सेषा AV. 12,5, 12. सैषः contrahirt Kathās. 36,139. 40,69. 65,168. 101,307. 104,142. 118,57. स वा एषः Ait. Br. 3,30. एष क्व वै सः ebend. सा ते एषा AV. 2,29,7. इयमेव सा 3,10,4. सर्वं स तिष्ठति यतः Çiç. 62. सेयमासादिता बाला MBh. 3,2697. सो ऽयं विदूषकः प्राप्त इति कोलाहलं व्यधुः Kathās. 18,345. सेयम् Mālav. P. 62, 20. Çiç. 67,6. स (शापः) चायमङ्गुलीयकदर्शनावसानः 111,6 (v. l. ohne अयम्). याम् — सेयम् MBh. 3,2333. Çiç. 84. 89. Spr. (II) 4036. अये सेयमत्रभवती शकुन्तला सैषा Çiç. 106,13. Kathās. 18,331. स भवान् Çiç. 82,8. 95,11. Hinweisend in Verbindung mit der 1ten und 2ten Person sg. (mit und ohne अहम् oder त्वम्): सा वै वो वरं वृणै *ich will mir Etwas von euch ausbitten* Ait. Br. 1,7. स वा (तक्षा Çat. Br. 14,6,2,1) पक्ष्कामि Bpn. Âr. Up. 3,3,1. MBh. 1,6113. 3,2484. fgg. सो ऽहमाश्रवणं छित्त्वा पलाशांश्च न्यषेचयम् R. 2,63,9. MBh. 1,5952. 5968. 6142. 6153. 3,15606. Çiç. 13,22. Raghu. 1,5 68. सार्कं कृता Mālav. P. 70,5. स एव तस्य धातारम् Kathās. 43,221. — स वै नो ब्रूहि Çat. Br. 14,6, 10,6. 9. 12. 15. 18. 1,1,4,10. स किं शोचसि Spr. (II) 6647. स कर्म कुरु 6646. MBh. 1,5971. 6172. 3,15650. 15697. स मे नावो ज्ञानावस्य भव R. 1,62,7. स नास्ति परमित्येव कुरु बुद्धिम् 2,108,17. स त्वमात्मिन योगम् MBh. 3,2639. Raghu. 2,10. 45. 3,45. Çiç. 55,21. Mālav. P. 61,52. 55. तन्मात्रं चेन्मह्यं न ददाति पुरा भवान् । स (*du eben derselbe*) कथं पृथिवी-

*) Was man hier vermisst, suche man unter अ oder ष.

मेतां प्रददामि विशांपते ॥ MBh. 9,1896. मूध्यर्यं नात्यजः पूर्वं स कर्षं त्यजसि वसुंधराम् 1807. Schliesslich ist noch zu erwähnen, dass स wie एष, य und क zur Bez. des पुरुष verwandt wird, Tattvas. 19. — Vgl. 1. त.

2. स untrennbare (mit instr. statt सह) Bhâg. P. 7,12,27: विनिर्दिशेत् । दितु मात्रं स नादेन) Partikel am Anfange eines comp., *Verbindung, Gemeinsamkeit* oder *Gleichheit* bezeichnend (Gegensatz अ priv.): =सह P. 2,2,28. 6,3,78. fgg. Vop. 6,17. = सम् 72. = समान 7,97. fg. P. 6, 3,84. fgg. =अधिक und अन्वात्त 79. Am Anfange 1) eines subst. Karmadhâraja (selten), z. B. in सकाश, सगोष्ठी, सग्धि, सयोनि. — 2) eines adj. comp.; ein Wort für einen Theil des Körpers hat im f. eines solchen comp. nie ein betontes ई P. 4,1,37. Das comp. erhält zum Ueberfluss hier und da noch die adjectivische Endung इन्, z. B. सपुत्रिन् = सपुत्र Hariv. 11842. सशरिन् = सशर MBh. 7,4289. Der zweite Theil bezeichnet Etwas a) was an einem Andern haftet, in ihm enthalten ist, an ihm wahrgenommen wird: सवासाः स्नानमाचरेत् *bekleidet, in Kleidern* M. 11,174. 223. सचेल 202. स्तनैः सकाश्मभरणैः सचन्दनैः Ṛtus. 1,4. सातत (पात्र) Kâç. 2,21. सतमस्क (घर्कमण्डल) Varâh. Bṛh. S. 3,6. सोपस्करवाः (कलिङ्गाः) 5,75. सशिख (ein Komet) 11,10. सपत्त *geflügelt* 32,3. सघन (भानु) 21,20. सफेनं तोयम् 54,26. सतृणे सतृणा यस्मिन्सतृणे तृणवर्जिता मही यत्र 54,52. सहास *lächelnd* 12,3. — *b*) was mit einem Andern sich in demselben Falle befindet, dasselbe thut oder erfährt, in derselben Weise zur Erscheinung kommt: (आचारः) वर्णानां सासंकीर्णानाम् *der Kasten und Zwischenkasten* M. 2,18. स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः *er und sein Geschlecht* 168. कुलानि ससंतानानि 3,15. तेन यथासभृत्येन कर्तव्यम् *er und sein (seine) Minister* 7,36. नले सभार्ये प्रेष्यतां गते MBh. 3,2654. R. 1,1,31. Kâm. 1,38. 2,28. 4,3. Çiç. 7,19. 32,14. 61,7. Varâh. Bṛh. S. 3,29. 67. प्रजाः सनृपाः 8,9. 10. (दृष्टः) सेन्दुः शक्रः 9,23. 13,4. नादा मृगाणां सपतत्रिणाम् 24,25. साग्ने शतभिषजि 10,17. Hit. 9,15. पुराणि सराष्ट्राणि MBh. 3,2742. पावमगरलोको ऽभूत्सार्कः सिन्दूरपिङ्गलः *die Städter und die Sonne* Kathâs. 18,122. क्रोदं समार्दवम् Jâân. 3,77. वेदं सकल्पं सरहस्यम् (अध्यापयेत्) M. 2,140. 165. सव्याहृतिप्रणवकाः प्राणायामाः 11,248. रुक्ष सापरा याम्याम् *den Westen und den Süden* Varâh. Bṛh. S. 3,4. 4,25. सक्लेशबहुमानेन स्वागतेन Kathâs. 18,314. — *c*) was zu einem Andern hinzuzuzählen ist: सद्रोणा खारी *eine Khârî und ein Drona* P. 5,3,79, Schol. सपादं पणम् *einen und ¼ Paṇa* M. 8,241. सेके (sc. एकादशे) so v. a. द्वादशे Jâân. 1, 14. — *d*) was diesem und einem Andern gemeinschaftlich ist, z. B. सवर्ण *zu derselben Kaste gehörig*, सगोत्र *zum selben Geschlecht gehörig*, सरूप *eine gleiche Gestalt u. s. w. habend*. वायुवेगसवेग R. 3,38,41. सधर्मिन् = सधर्म, सनाभ्य = सनाभि, सोदर्य = सोदर. — *e*) was aus einem Andern gefolgert werden kann (mit diesem auf's Engste verbunden ist) P. 6,3,80. साग्निः कपोतः so v. a. *die Taube deutet auf ein Feuer*. सपिशाचा वात्या Schol. — 3) am Anfange eines adv. comp., das als acc. des adj. aufzufassen ist, z. B. सभयम् *erschrocken* Hit. 18,12. सादरम् *rücksichtsvoll* 16,12. डेगीयते सवेणुवीणाम् *in Begleitung von Pfeifen und Lauten* Varâh. Bṛh. S. 19,18. सस्वनम् 32,2. Die indischen Grammatiker verzeichnen folgende Bedeutungen: पद्मा (सकरि = करेः सादृश्यम्), यौगपद्य (सचक्रेण = चक्रेण युगपत्), सादृश्य (ससखि = सदृशः सख्या), संपत्ति (सतत्रम् = तत्राणां संपत्तिः, तत्रियाणां योग्यं तत्रत्वम्), साकल्य (सतृणमत्ति = तृणमप्यपरित्यज्य), व्याप्ति (साग्नि = अग्निसम्बन्धपर्यन्तम् sc. अधीते) P. 2,1,6. 6,3,81. Vop. 6,61.

3. म (von मन्) adj. *verschaffend* in पशुघ, प्रियस.

4. म 1) m. = ईश्वर und सर्प Çabdar. im ÇKDa. = पक्षिन् Ekâkshar. ebend. = विष्णु Bharata im Ekâtharasâhasrikâ nach ÇKDa. Abkürzung von षड् (warum nicht ष?) Verz. d. Oxf. H. 200,b,6. — 2) f. आ = गौरी und लक्ष्मी (vgl. Gaṇâm. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,23) Çabdar. im ÇKDa.

सक्षत्त (2. स + क्षत्त) adj. (f. आ) *mit einem Nakshatra in Verbindung stehend* Varâh. Kṛishṇâs. 237.

सँय m. *Gerippe* Çabdar. im ÇKDa.

संयंत् (यत् mit सम्) P. 8,4,40, Vârtt. 1. Vop. 26,78 (an beiden Orten auf यम् zurückgeführt). 1) adj. *an einander sich schliessend, zusammenhängend, ununterbrochen:* त्वौ भासि संयतः ṚV. 2,2,2. युग्म 6,16,21. इळा नः संयतं करत् 7,102,2. 9,62,2. इषम् 86,18. धाराः 47. वृष्टि 65,2. स्वस्ति 6,22,10. यच्छा नो अर्द्धरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः 8,23,10. 89, 9. 9,72,6. गिरः Çiksh. Ça. 9,6,6. best. Ishṭaka: संयद्भिः संयच्छंति तत्संयतां संयत्तम् TS. 5,2,10,6. personif. 4,4,11,2. — 2) f. *a*) *Verbindlichkeit, Vertrag:* यद्या लोके न संयतमाद्रियते Çat. Br. 2,3,3,9. — *b*) etwa *verabredeter Ort, Stelldichein:* यतो विप्रा यभि मं यांति संयतः ṚV. 9,86,15. — *c*) *Kampf, Schlacht* Naish. 2,17. AK. 2,8,2,74. H. 796. Hall. 2,295. nur loc. संयति MBh. 1,1178. 3,8891. 7233. 6,640. 8. 706. R. 2,13,9. 5,37,39. 42,8. 11. 80,26. 6,79,23. Raghu. 6,72. 7,36. 16,20.

संयत s. u. यम् mit सम्.

संयतक m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 116,95.

संयतिन् adj. *sich zügelnd, seine Sinne im Zaum haltend:* तेषां संयतिर्भिक्षाव्यम् Mârk. P. 31,31. vielleicht fehlerhaft für संयमिन्.

संयतौ du. des partic. von 3. इ mit सम् ṚV. 2,12,2. 5,37,3. 9,68,2.

संयतेन्द्रिय adj. *der seine Sinne in der Gewalt hat;* s. u. यम् mit सम् 1). Davon nom. abstr. °ता f. Jâân. 3,66.

संयत्वर् m. = वाग्यत und ज्ञसुसमूरु Uṇâdiṣ. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa.

संयद्वर् Uṇâdis. 3,1. m. = नृप Ujjval. — Vgl. संयद्वर्.

संयद्वसु adj. *ununterbrochenen Güterbesitz habend* VS. 15,18. Ait. Br. 2,27. TS. 3,2,10,2. Âçv. Ça. 5,5,12.

संयद्वाम adj. *ununterbrochen Liebes gewährend:* एतं (पतिणि पुरुषं) संयद्वाम ऊपाचक्षत एतं हि सर्वाणि वामान्यभिसंयन्ति Kaush. Up. 4,15,2.

संयद्वीर adj. *wo Männer nicht ausgehen (fehlen):* रयि ṚV. 2,4,5.

संयन्तृ (von यम् mit सम्) nom. ag. *Zügler, Lenker, im Zaum haltend:* रथवाजिनाम् MBh. 4,2035. 5,5328. 5734. 8,1671. सरीणाम् 2, 2570. संयन्तारः स्थावराणां जङ्गमानां च सर्वशः *zusammenhaltend* 12, 3343. mit अस्मि als fut.: अयुध्यमानस्तुरगान्संयन्तास्मि तव *ich werde lenken* 7,1275.

संयन्तव्य (wie oben) adj. *zu zügeln, im Zaum zu halten:* इन्द्रियाणि मनसा MBh. 12,12299.

संयम (wie oben) m. = संयाम P. 3,3,63. 6,2,144. AK. 2,3,18. 1) *das*

Zusammenbinden, Aufbinden: कुन्तलसंव्यानसंयमव्यपदेशत: Sin. D. 39, 10. कबरीमोक्षसंयमौ 19. — 2) *Fesselung* Vaśiṣ. Bṛ. S. 52,5. — 3) *das Schliessen:* नेत्र° *der Augen* Mārk. P. 77,4. — 4) *das in Zucht-Halten, Bändigung, Zügelung:* विसर्गे कोबेरे वारुणे चैव संयमे MBu. 2, 2578. इन्द्रियाणाम् Spr. (II) 1113. M. 12,33. Spr. (II) 960 (स°). इन्द्रिय° Car. Bu. 11,5,2,1. R. 3,77,10. Hariv. 2,242. पशु° Bhāg. P. 7,15,28. आत्म° Bhag. 4,27. मन:° Spr. (II) 3169. वाक् 1487. 6017. Kathās. 1,58. निर्विण्ण: शोकसंयमे Bhāg. P. 11,26,4. संयमात् *so v. s. mit genauer Noth* Spr. (II) 3713; vgl. jedoch 6359. — 5) *Bändigung der Sinne, Selbstbeherrschung* Bhag. 4,26. Jiñ. 3,14 (*Anhalten des Athems* Strzlbr). MBu. 11,185. 12,9602. 13,1369 (pl.). R. 2,1,17. उग्र° 5,42,17. Kumāras. 2,59. Spr. (II) 1060. 1195. 2943. परधनकरणे 4310. 6359. Çiç. 92. 171. 177. निसर्गचपलानां हि महतां संयम: (hier so v. s. वाक्संयम:) कुत: Kathās. 121,151. Riśa-Tan. 4,33. Mārk. P. 51,54. Bhāg. P. 4, 21,41. 22,6. — 6) im Joga *Concentration des Geistes:* धारणाध्यानसमाधित्रयमत्रस्रङ्गं संयमपदवाच्यम् Sarvadarçanas. 154,9. 10. 177,3. Verz. d. Oxf. H. 229,*a*,No. 361, Z. 30. — 7) *Unterdrückung* so v. s. *Vernichtung* (der Welt) neben उत्पत्ति (जन्मन्, उदय, सर्ग) und स्थिति Mārk. P. 45,38. 46,7. Bhāg. P. 3,5,16. 42. 4,11,16. 5,17,21. 18,38. 7,8,40. 8, 3,23. 6,8. 10,10,49. 11,6,15. संयमाम्भस् *das Wasser am Ende der Welt* 8,9,23. सर्गस्थित्यप्तनियमा: (*quiescence*) Nilak. 41. — 8) N. pr. eines Sohnes des Dhūmrāksha und Vaters des Kṛçāçva Bhāg. P. 9,2,34. — Vgl. प्राण° (Jiñ. 1,23).

संयमक (wie oben) nom. sg. *im Zaum haltend, bändigend* Vāmn-P. im ÇKDa.

संयमन (wie oben) 1) nom. sg. (f. ई) *a) Lenker:* बुद्धिसंयमनं रथम् MBu. 14,1427. — *b) im Zaum —, in Zucht haltend, bändigend:* दण्ड Bhāg. P. 4,13,15. प्रजा° (यम) MBu. 3,16813. Mārk. P. 77,4. Bhāg. P. 3,5, 20. 6,3,11. 10,45,43. बलि° Pāṇ. 4,3,129. क्रोध° (तपस्) Mārk. P. 63,20. — *c) zur Ruhe bringend:* die Nacht Einschiebung Vers 4 nach ṚV. 10,127. — 2) f. ई N. pr. der Stadt Jama's (auf dem Meru nach dem Comm. zu Bhāg. P. 5,16,30) H. 186. an. 4,193. Med. n. 221. MBu. 7,2530. 4735. 5888. 13,4358. Bhāg. P. 5,21,7. 6,3,3. 10,45,42. 89,43. fälschlich संयमिनी Çāṅk. zu Bṛ. Âr. Up. S. 524. — 3) n. *a) das Zusammenbinden, Aufbinden:* = बन्ध, बन्धन H. an. Med. घलक° Vīr. 47. केश° Sin. D. 140,8. 162,1. *das Anziehen* (der Zügel): रश्मि° Çiç. 5,12. als Bed. von यम् *fest machen* Nir. 10,9. — *b) Fessel* Mārk. 110,2. — *c) das im Zaum Halten, Bändigen:* खल° Bhāg. P. 10,16,6. आत्म° 7,15,9. MBu. 12,4369. मन:° Hariv. 14983. वाच:° MBu. 3,16719. — *d) Selbstbeherrschung,* = व्रत H. an. Med. Kaṭh. Up. 2,5. — *e)* = संयमनी MBu. 3,11849. — *f)* v. l. für संज्ञवन Bhāg. zu AK. 2,2,5 nach ÇKDa.

संयमवस् adj. vielleicht fehlerhaft für संघयवस् *eine Menge von* — (instr.) *besitzend:* घर्षे: संयमवानर्थान्प्राप्नोति किंपदुतम् Kathās. 6,38.

संयमिन् (von संयम oder von यम् mit सम्) 1) adj. *aufgebunden:* केशा: Spr. (II) 1916 (zugleich in der Bed. *b*). — *b) seine Sinne bändigend, Selbstbeherrschung übend* Bhag. 2,69. Suçr. 2,244,14. Rāgān. 1,48. 4, 60. 8,11. Kumāras. 3,34. 44. Spr. (II) 1916 (zugleich in der Bed. *a*). 3681 (Conj.). Çiç. 177, v. l. Mārk. P. 2,43. 31,34. Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,13. 258,*a*,7. m. = मुनि Dharan. im ÇKDa. — 2) f. संयमिनी Çāṅk. zu Bṛ. Âr. Up. S. 524 fehlerhaft für संयमनी. — Vgl. राम°.

संयवन (von 2. यु mit सम्) n. *das Mischen* Mahīdh. zu VS. 1,23.

संयाज m. und संयाजन n. (von 1. यज् mit सम्) s. पशो°.

संयाज्य (wie oben) 1) adj. *mit dem man an einem Opfer Theil nehmen kann:* स° M. 9,248. — 2) f. du. Bez. zweier Verse: Jājā und Purovākjā des Svishṭakṛt (z. B. ṚV. 3,11,2. 1) Ait. Br. 1,8.10.17. Çat. Br. 1,6,9,13. 2,2,4,20. Âçv. Çr. 2,1,21. 5,14,6. — 3) n. *Betheiligung an einem Opfer:* सयाज्य° M. 11,59.

संयाति m. N. pr. eines Sohnes des Nahusha MBu. 1,3155. Hariv. 1600. Bhāg. P. 9,18,1. eines Sohnes des Prākinvant (Bahugava) und Vaters des Ahaṁjāti MBu. 1,3766. fg. VP. 447. Bhāg. P. 9,20,3. संयाति Hariv. 1657. fg.

संयात्रा (सम् + या°) f. *eine Reise in Gesellschaft,* insb. *eine Seereise* Bhag. zu AK. nach ÇKDa. — Vgl. सांयात्रिक.

संयात्रिक Kathās. 80,30 fehlerhaft für सांयात्रिक.

संयान (von 1. या mit सम्) 1) m. *a mould* Wilson nach Çabdārthak. — 2) f. ई N. gewisser Ishṭakā Çat. Br. 8,7,1,13. fg. Kāṭy. 22,6. TS. 5,3,10,1. 2. — 3) n. *a) das Zusammengehen, — fahren:* एतत्संयानात् *mit diesem* Kathās. 70,74. — *b) das Fahren, Reisen, Reise:* नौभि: °गामिन: Hariv. 5237. °गतेर्ब्यो: 5238. यथा हि सुखसंयाने नौर्निमित्तमम्भसि । लोकानां सुखसंयाने तथा धर्म: स्वनुष्ठित: ॥ R. 5,86,9.10. लोकपालेषु सर्वेषु दित्सु र्वरितेषु Hariv. 2625. क्रय° MBu. 3,754. प्राप्तकालं नरपते: कुरु संयानमुत्तमम् *die letzte Reise* (auf die Leichenstätte) R. 2,76,2. — *c) Aufbruch:* घनौकान्यथ संयाने व्यादिदेश MBu. 6,2402. — *d) Fahrzeug, Fuhrwerk* R. 7,41,8. वधू° Mṛicch. 98,23. — *e)* Bez. gewisser Sûkta TS. 7,1,5,4.

संयाम m. = संयम P. 3,3,63. 6,2,144. AK. 3,3,18.

संयार्व (von 2. यु mit सम्) m. P. 3,3,23. 6,2,144. *ein best. Gebäck aus Weizenmehl* Çabdār. im ÇKDa. M. 8,7. Jiñ. 1,173. MBu. 7,2594. 13, 4995. Mārk. P. 34,48. Bhāg. P. 9,21,4. 10,24,26. 29,3. 11,27,34.

संयार्स (von यस् mit सम्) m. *Erhitzung, Anstrengung* VS. 39,11; vgl. TS. 1,4,45,1 (nach dem Comm. यमलोके बाधका देवा:).

संयुक्त 1) adj. s. u. 1. युज् mit सम्. Nachgetragen könnte noch zu 1) werden: *verbunden mit* (instr.) *einem andern Laute,* insbes. *einem Consonanten* ṚV. Prāt. 6,2. 3. AV. Prāt. 1,49. Comm. zu 50. TS. Prāt. 22,15. Comm. zu 21,5. Çiñ. 2,25. Ind. St. 3,224. Whāa, Prātiçākja. 78.81.fg. 84. 91. Comm. zu VS. Prāt. 1,90. 4,101. — 2) f. सा *ein best. Metrum:* 4 *Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2,139 (V,8). संयुक्त im Text, संयुक्ता im Index, संजुता (!) im Prâkrit.

संयुक्तक (von संयुक्त) adj.: आगम = संयुक्तागम Burnouf, Intr. 49.

संयुक्तसंयोग m. *eine Verbindung mit dem Verbundenen,* z. B. die eines Stranges mit einem Pferde, wodurch die Bewegung eines Wagens vermittelt wird, Kap. 5,2,1.

संयुक्तसंचयपिटक m. *der Korb der Sammlung gemischten Inhalts,* Titel einer Schrift Hiouen-thsang 2,36. fg. Vie de Hiouen-thsang 159.

संयुक्तसमवाय m. *Inhärenz in dem Verbundenen* (eine der sechs Ar-

ten unmittelbarer Wahrnehmung im Njâja), z. B. die Wahrnehmung der Farbe eines zu Gesicht gekommenen Gefässes, Tarkas. 26. Kaṇ. 18, 2, 7.

संयुक्तसमवेतसमवाय m. *Inhärenz in demjenigen, was dem Verbundenen inhärirt*, z. B. die Wahrnehmung des Gefärbtseins überhaupt an einem zu Gesicht gekommenen Gefässe von bestimmter Farbe, Tarkas. 26.

संयुक्तागम m. Titel eines Âgama bei den Buddhisten Wassiljew 115. Târân. 297.

संयुक्ताभिधर्मशास्त्र n. Titel einer Schrift Hiouen-thsang 1, 119.

संयुग् (सम् + युग्) n. (im Bulc. P. auch m.) 1) *Verbindung, Vereinigung:* घनपत्यानुपायस्य संयुगे (= संयोगे 673) MBu. 2, 680. Verz. d. Oxf. H. 54, b, 19 (wohl संयुगं zu lesen). — 2) *Kampf, Schlacht* Naish. 2, 17. AK. 2, 8, 2, 73. H. 799. Hall. 2, 298. MBu. 2, 914. 1474. 3, 12070. 12257. 5, 761. 1896. 3411. 7204. 7, 8816 (entweder संयुगे oder mit der od. Bomb. संचये: zu lesen). 9, 1034. R. 1, 1, 4. 6, 20. R. Gorr. 1, 23, 26. 3, 25, 17. 5, 85, 23. 6, 16, 16. 36, 54. 80, 42. Kim. Nitis. 15, 11. Kumâras. 2, 57. °मूर्धि Raṇ. 9, 20. Riâ-Tar. 5, 424. Mârk. P. 43, 73. Bulc. P. 1, 16, 11. 3, 2, 24. मम देहि संयुगम् 17, 27. 30. 8, 10, 8. 10, 34, 13. 57, 13. 63, 5. °गोप्तृ MBu. 7, 6734. — 3) संयुगस्यात्तकाले Atharvaç. bei Mill, ST. 4, 299, 21. fg. fehlerhaft. — Vgl. संयुगीन.

संयुज् (1. युज् mit सम्) adj. *durch freundschaftliche oder verwandtschaftliche Bande verknüpft, angehörig, verwandt* Taitt. 3, 1, 13. MBu. 2, 1328. निरवद्य° Bulc. P. 10, 32, 22 (nach dem Comm. als adj. comp. zu fassen, संयुज् f. = संयोग).

संयुति (von 2. यु mit वस्) f. *Conjunction von Planeten* Ganit. Grahajuti. 3.

संयुयुत्सु (vom desid. von 1. युध् mit सम्) adj. *kampfbegierig* Riâ-Tar. 8, 2810.

संयूयुप् (vom desid. von 2. यु mit सम्) adj. *in Verbindung zu bringen wünschend:* दिशो वाणी: Bhatt. 9, 35.

संयोग (von 1. युज् mit सम्) m. 1) *Verbindung, Zusammenhang, Vereinigung, Zusammentreffen* (Gegens. विभाग, पृथक्त्व, वियोग, विप्रयोग, विरह, अपाय); in der Philosophie *die Kategorie der unmittelbaren Berührung, Contact* (anschaulich gemacht durch das Beispiel der Vermengung von Sesamkörnern und Reis, während für समवाय die Mischung von Wasser und Milch angeführt wird, Prasiddh. 103, b, 7). Jogas. 2, 23. 35. Kaṇ. 1, 1, 6. अन्यतरकर्मज उभयकर्मज: संयोगश्च संयोग: 7, 2, 9. Colebr. Misc. Ess. 1, 266. Nilak. 93. Bhâshâp. 3. Wilson, Sâṅkhyas. S. 6. ऐक्य, संयोग, नानात्व, समवाय MBu. 2, 137. — Âpast. im Comm. zu TS. 2, 109, 5. MBu. 15, 934. Harîv. 10076. P. 5, 1, 38. Mâṇ. 85. Sâh. D. 17, 19. Bulc. P. 5, 14, 1. 7, 10, 53. स्याल् खासन्न: संयोगेन so v. a. *Verschwägerung* Nir. 6, 9. MBu. 13, 4626. संयोगा विप्रयोगान्ता: Spr. (II) 6624. 6948. संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति सम्भवम् 6625. अभङ्गुर 1857. अत्यन्त° P. 2, 1, 20. 3, 6. Vop. 3, 4. Construction des Wortes: *a)* mit einem gen. *α) Zusammenhang innerhalb eines Ganzen:* पटस्य *eines Gewebes* Kaṇ. 18, 2, 5. — *β) Verbindung einzelner Theile, Zusammenhang zwischen:* एषाम् Çvetâç. Up. 1, 2. 5, 13. Kaṇ. 1, 1, 30. 4, 2, 2. Sâṅkhyas. 21. 66. एतेनायमाबयोर्जात: संयोगो ऽन्योऽन्यसंमत: Kathâs. 121, 123. Bulc. P. 1, 13, 10. यथामयोश्च M. 3, 113. पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव (Gegens. विप्रयोग) 9, 1. क्षेमकस्य मृगस्य च। कुतो लोके संयोगा: R. 3, 49, 20. — *γ) Verbindung —, Vereinigung —, Contact mit:* आदिपुरुषस्य संयोगमात्रेण प्रकृतेर्महत्तत्त्वरूपेण परिणामनम् Nilak. 215. यस्य संयोगमेत्य Mâṇ. 12. सकार्याणां क्रियाणां च संयोगं य: करोति वै। कार्याणामक्रियाणां च so v. a. *unternehmen, sich machen an* MBu. 8, 3421. — *b)* mit सङ्ग und instr. dass.: त्वया सङ्ग R. Gorr. 2, 29, 18. खापतरमणीयानां संयोगानां प्रियै: सङ्ग Spr. (II) 970. पाण्डवै: सङ्ग संयोगं गतस्य द्रुपदस्य कु *in ein freundschaftliches Verhältniss getreten mit* MBu. 1, 7247. — *c)* mit blossem instr. dass.: प्रेषितेन प्रियेण Vasiṣ. Bpn. S. 90, 14. शशाङ्केन यथाणाम् Sâmas. 7, 23. सप्रियै: M. 6, 62. ब्राह्मैर्यैनिश्च संबन्धै: संयोगं पतितैर्गत्वा 3, 157. 12, 60. कथं तौ द्विजपार्थिवौ। पुनर्दैवेन संयोगं व्रजत: R. 7, 56, 2. एनमा न तु संयोगं प्राप्स्यसे ज्ञातु MBu. 5, 7262. — *d)* mit loc. *Vereinigung in* so v. a. *das Aufgehen in:* तस्या: (मनोगते:) ब्रह्मणि संयोगो योग इत्यभिधीयते VP. 6, 7, 31. — *e)* am Ende eines comp. *α) Zusammenhang innerhalb eines Ganzen:* वाक्य° Nir. 6, 1. — *β) Verbindung einzelner Theile, Vereinigung —, das Zusammenkommen von:* शुक्रशोणित° Nir. 14, 6. नानापदसंधान° = पदसंहिता TS. Prât. 24, 8. Kaṇ. 1, 1, 29. भुजसंयोगपीडित R. 5, 13, 31. कर्मफल° Bhag. 5, 14. 13, 26. पञ्चयज्ञ° Vasiṣ. Bpn. S. 5, 17. वाक्यार्क° Bulc. P. 5, 16, 21. प्रकृतिपुरुष° 23, 3. प्रधानपुरुष° Sarvadarçanas. 152, 22. मध्यान्यावसंयोगा: Suçr. 1, 145, 18. द्रव्य° 190, 20. खाहार° 2, 438, 12. गन्धसंयोगा: R. 4, 44, 99. संपन्नो ऽर्थसंयोगै: 24, 9. नयविक्रम° Spr. (II) 3084. 3597. संयोग d. i. मन्त्र° (im Gegens. zu मन्त्रभेद) so v. a. *Uebereinstimmung der Meinungen im Rathe* R. 5, 82, 8. — *γ) Verbindung —, Zusammenhang —, Contact mit:* द्रव्य° (so v. a. *Attribut*) Nir. 7, 6. यज्ञसंयोगाद्राजा स्तुतिं लभते राज्ञसंयोगाच्चोदायकरणानि 9, 11. 10, 21. Kâtj. Çr. 1, 3, 27. 4, 2, 13. 15, 27. 23, 4, 28. Çâṅkh. Çr. 1, 1, 24. Gobh. 3, 9, 19. सर्पिर्व्रजतुमधूच्छिष्टानामग्निसंयोगाद्द्रवत्वम् Kaṇ. 2, 1, 6. 5, 1, 6. 14. 2, 17. P. 4, 1, 33. स भवान्दण्डसंयोगेनानेन कृतकिल्बिष: R. 4, 17, 58. वज्रसंयोगपुङ्के: — खाभरणै: 5, 45, 3. द्रव्यसंयोगसंस्कृते वासने s. 50, 8. शास्त्राय गुरुसंयोग: Kâm. Nitis. 1, 39. Mâṇ. 88. मित्र° Spr. (II) 1166. Vasiṣ. Bpn. S. 87, 19. fgg. Kathâs. 28, 15. 35, 88. Verz. d. Oxf. H. 80, b, 3. Hall. 2, 481. Bulc. P. 4, 1, 23. 4, 17, 29. Nilak. 25. सुख° M. 6, 64. दु:ख° Bhag. 6, 23. Mârk. P. 16, 6. 7. (यस्त्रम्) गाण्डीवसंयोगमानोय MBu. 3, 12241. प्रापितस्याग्निसंयोगं स वने ग्रहतापसै: so v. a. *wurde verbrannt* Mârk. P. 22, 19. दाराग्निहोत्रसंयोगं कुरते य: so v. a. *wer ein Weib nimmt und das heilige Feuer pflegt* M. 3, 171. यदा हि प्रीतिसंयोगं त्वया समागत: so v. a. *in ein Freundschaftsverhältniss getreten* R. 7, 84, 15. — 2) *eheliche Verbindung, fleischliches Vermischung, Beischlaf:* इच्छान्योन्यसंयोग: कन्यायाश्च वरस्य च। गान्धर्व: स तु विज्ञेयो मैथुन्य: कामसंभव: ॥ M. 3, 32. स्त्रिया: पुरुषसंयोगे MBu. 13, 579. स्त्रीपुंसयो: Suçr. 1, 320, 18. Mârk. P. 64, 7. नरेण संयोगमुपैति कामिनी Vasiṣ. Bpn. 4, 1; vgl. गत्वा मैथुनं संयोगम् Verz. d. Oxf. H. 59, b, 43. — 3) *Summe:* मान° Vasiṣ. Bpn. S. 33, 15. — 4) *Consonantenverbindung, eine Gruppe von zwei oder mehr Consonanten* RV. Prât. 1, 4. 3. 7. 5. 11. 6, 1. 14, 10. 23. 17, 14. 18, 18. fg. VS. Prât. 1, 48. 102. 4, 97. 105. AV. Prât. 1, 51. 56. 98. 104. 3, 28. 57. TS. Prât. 21, 4. 15 (रेफोष्म°). 22, 14. fg. Çikṣ. 2, 26. P. 1, 1, 7. 4, 11. 8, 2, 23. Ind. St. 3, 211. 225. fg. Weber, Prâtiçâkh. 108. — 5) Bez.

eines best. Bündnisses Kiu. Nitis. 9,2. एकार्थं सम्यगुद्दिश्य क्रियां यत्राभिगच्छतः । स संक्षिप्तप्रयाणास्तु संधिः संयोग उच्यते ॥ Spr. (II) 1407. — Vgl. वर्ण°, वाक्य°, विष°, संयुक्त°, स्वर°, सांयोगिक.

संयोगित adj. = संयोजित Bhar. zu AK. 2,2,41 nach ÇKDa. संयोगिते Harav. 14649 fehlerhaft für तं योगिनो, wie die neuere Ausg. liest.

संयोगिन् (von संयोग) adj. 1) *in Contact stehend, unmittelbar verbunden* Kap. 3,1,9. 7,2,19. 9,2,1. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 165. यावन्न संयोगि जगदेतत्तदर्पुभिः Mâlav. P. 78,11. घये वृत्तः कपिसंयोगी न मूले Sudhâmitalakshmaṇâçâdapiçi im ÇKDa. *mit dem geliebten Gegenstande verbunden* (Gegens. वियोगिन्) Schol. zu Kirâṭ. 2, 305. — 2) Bez. der *verheiratheten* Mitglieder unter den Atîta Wilson, Sel. Works 1,204. die Bed. *verheirathet* hat das Wort vielleicht auch Verz. d. Oxf. H. 21, a, 13. — 3) *mit einem andern Consonanten verbunden, einer der Consonanten in einer Consonantengruppe* P. 1,2,27, Schol.

संयौजन (von युज् mit सम्) n. 1) *das Vereinigen* Çat. Br. 11,5,3,2.5. तेषां चतुर्णां भागानाम् Vedântas. (Allah.) No. 68. *das Zusammenbringen mit* (instr.) Daçak. 62, 6. संयोजनमश्विनोः, प्रकृतेः und मित्रावरुणयोः Namen von Sâman Ind. St. 3,204, a. 225, b. 229, b. — 2) *fleischliche Vermischung, Beischlaf* Hit. 50.

संयोज्य (wie eben) adj. *in Verbindung zu bringen mit, zu richten auf:* धर्मे त्वमात्मा संयोज्यः MBu. 3,13128.

संयोद्धृ (von 1. युध् mit सम्) nom. ag. *Kämpfer;* s. प्रति°.

संयोद्धव्य (wie eben) n. impers. *zu kämpfen* MBu. 5,5294.

संयोधकण्टक m. N. pr. eines Jaksha R. 7,14,21.

संरक्त (von 1. रञ्ज् mit सम्) 1) adj. *hütend, Hüter* gaṇa पुरोरुक्तादि zu P. 5,1,128. Vgl. सांरक्त्य. — 2) f. घा *Hut, Schutz, Bewachung:* परस्परं हि संरक्षा राज्ञा राष्ट्रेण चापदि MBu. 12,4737. am Ende eines adj. comp. सर्वतः कृतसंरक्षा दिवानिशमतन्द्रिताः Kathâs. 107,82.

संरक्षण (wie eben) n. *das Hüten, Schützen, Bewahren* R. 2,52,88. Kathâs. 106,184. संरक्षणं कार्यं यत्नतः मूतिकागृहे Mâlav. P. 51,107. das obj. im gen.: क्षत्रूणाम् M. 6,68. राज्ञः MBu. 8,2402. Harav. 1780. 14941. सताम् (Gegens. वध) Bhâg. P. 3,21,50. 10,50,9. im comp. vorangehend: भार्या° MBu. 13,2267. लोक° 3338. मित्र° Spr. (II) 876. स्वामि° Kathâs. 78,128. 91,53. कोश° R. Gorr. 1,7,10. धर्म° Bhâg. P. 5,26,36. शेष° MBu. 1,5049. मख° Verz. d. Oxf. H. 29,b,1. वेद° Prab. 86,19. गुरु° Harav. 8751. रक्षस्य° Pañkat. 129,2. धर्म° Jâṭ. 1,198. MBu. 3,15848. Kim. Nitis. 6,8. Ragh. 15,5. स्वशील° R. 5,14,67. *das Bewahren vor* (geht im comp. voran): बुद्धा कार्यं निखं रक्षेद्वेश्मसंरक्षणात् Kathâs. 33, 131. धनिलकोप° *das Verhüten* Çuṣa. 2,48,12. Comm. zu TS. Prât. 6,5.

संरक्षणीय (wie eben) adj. *zu bewachen* so v. a. *vor dem man sich zu hüten hat:* यस्मिन्काले निशाचरो । संरक्षणीयो तो R. 1,32,2.

संरक्षित s. u. 1. रक्ष् mit सम्. Davon संरक्षितृ adj. *der gehütet u. s. w. hat* (mit loc.) gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88.

संरक्षितृ (von 1. रक्ष्) nom. ag. *Hüter, Bewacher:* संरक्षितास्ततो दृष्ट्वा सुनिरुद्धस्य Harav. 10221. सत्य° *der sein Wort hält* MBu. 8,3544.

संरक्ष्य (wie eben) adj. 1) *zu hüten, zu schützen, zu bewachen:* ज्ञातयः MBu. 3, 1468. पाण्डवास्त्वं च राष्ट्रं च 10, 711. संरक्ष्यान्पालयेद्राजा 12, 3344. Spr. (II) 327. Harav. 3216. 8922. संरक्ष्याश्च वयं दैवैरस्माभिरपि देवताः 10340. Pañkat. III, 157. Kathâs. 62,119. Râga-Tar. 5,324. आत्मा रिपुभ्यः Mârk. P. 27,5. दुर्गाणि Râga-Tar. 4,350. कोश Kim. Nitis. 4, 54. रुधिर *in Acht zu nehmen* Çuṣa. 1,47,16. धर्म Jâṭ. 2,186. शील Spr. (II) 321. वृत्त 6251. — 2) *wovor man sich zu hüten hat* Kathâs. 8,6. संघर्ष Kathâs. 15,142.

संरञ्जनीय (von रञ्ज् mit सम्) adj. *woran man seine Freude hat:* धर्म Burnouf, Intr. 402, N. 2.

संरम्भ (von रभ्, रम्भ् mit सम्) m. 1) *das Anpacken:* बाहु° MBu. 4, 1056 (°रब्धौ besser ed. Bomb.). — 2) *Beissen und Jucken* (einer Wunde u. s. w.) Suçr. 1,55,6. 57,14. 97,6. 304,10. 2,333,6. 354,5. — 3) = घावेश, घोटोप Taik. 3,2,19. H. 1499. Hall. 4,37. *innere Aufregung und ein daraus hervorgehendes ungestümes Gebaren, ein leidenschaftliches Auftreten, an den Tag gelegter grosser Eifer:* न संरम्भेणाभते त्रिवर्गम् MBu. 5,1079. °समुपागत R. 4,9,1. पति° Kathâs. 12,115. सत्त्व° (im Meere) 18,389. 103,6. Bhâg. P. 8,6,24 (Gegens. साम्य). धृति° Kathâs. 123,6. म° adj. 72,3. तमजितं जेतुम् — संरम्भं त्रयाक् so v. a. *setzte Alles daran* MBu. 2,921. चन्द्रान्वयपार्थिवानां पृथिव्यामाधिपत्यं स्थिरीकर्तुमयमस्य संरम्भः Prab. 4,18. fg. कार्यारम्भेषु संरम्भः स्थैर्यमुत्साक् उच्यते Sâh. D. 76,1. कियन्मात्रे कृते ज्ञेन संरम्भो ऽयं कियान् Kathâs. 65, 139. अभूच्च यात्रासंरम्भो राष्ट्रे तस्य महाप्रभोः so v. a. *man rüstete sich ernsthaft* zu 19,60. अन्योऽन्यत्रय° Ragh. 12,92. तदाकर्णन° *ein ungestümes Verlangen* zu Râga-Tar. 1,303. ससंरम्भमभाणि *in grosser Hast* so v. a. *in aller Kürze* Sarvadarçanas. 37,6. — 4) *Aufwallung, Zorn:* ताडयित्वा तृणेनापि संरम्भात् M. 4,166. MBu. 1,986. 4,497. R. 2,23 in der Unterschr. R. Gorr. 1,4,103. 142. 2,6,12. 4,8,40. 17,49. 35,15. 5, 34,11. प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो हि महात्मनाम् Ragh. 4,64. Kumâras. 3,76. विरम संरम्भात् Vikr. 39. 115. Râga-Tar. 1,297. 2,50. Ghaṭ. 3. Bhâg. P. 3,2,24. 16,26. 30. 18,16. 4,26,25. 7,1,27. 8,30. °दृश् adj. 8, 10,38. धरायाम् Ragh. 15,85. Nigân. 39,22. अहो ममोपरि विधेः संरम्भो दारुणो महान् MBu. 3,2562. संरम्भं निनाय ताम् Ragh. 12,36. धृति° Râga-Tar. 1,67. Bhâg. P. 5,9,19. ज्ञातसंरम्भा R. 1,27,10. म° adj. Prab. 112,16. Die Bedeutungen 3) und 4) sind bisweilen schwer auseinanderzuhalten. — 5) *das Toben* (des Wassers, der Schlacht, der Leidenschaften); *Heftigkeit, Intensität, hoher Grad:* शुश्रुवतुः शब्दं तोयसंरम्भवर्धितम् R. 1,26,5. रणसंरम्भपरिप्लुत Râga-Tar. 5,334. शोक° R. 2,75,44. R. Gorr. 2,11,12. वत्कोप° Râga-Tar. 3,22. चित्ता° 6,143. मन्यु° Bhâg. P. 8,11,45. 7,9,1 (adj. nach dem Comm. = मन्युना घावेशो यस्य). क्षेद° 4,26,19. प्रेम° 5,8,13. 10,60,30. Spr. (II) 1266. चिरोत्सुक्यसंरम्भा Kathâs. 37,184. सत्त्व° *ausserordentlicher Muth* (zugleich *ungestümes Gebaren der Thiere*) 18,389. घवृष्टि° (घम्बुवाक्) Kumâras. 3, 48. घृतादनर्घसंरम्भः Kim. Nitis. 14,53. — 6) Harav. 11109 fehlerhaft für संभार, wie die neuere Ausg. liest; Vikr. 61 vielleicht für घारम्भ *Anfang.*

संरम्भण (wie eben) adj. *aufreizend*, Bez. der Lieder AV. 4,31. fg. Kauç. 14.

संरम्भिन् (von संरम्भ) adj. 1) *jauchzend* Çuṣa. 1,266,6. 2,314,11. — 2) *mit grossem Eifer obliegend:* धर्म° MBu. 12,3476. — 3) *zornig* (sowohl zum *Zorn geneigt* als auch *im Zorn seiend*) R. 1,6,10 (3 Gorr.). MBu.

3,1928. 14760. 5,751. 3279. 5872. 7,5551. 8747. 8,3654. Bhāg. P. 3,29,8.

संराग (von रञ्ज्, रञ्ज् mit सम्) m. 1) *Leidenschaft, Heftigkeit:* क्रोधसंरागात् R. 5,87,3. उग्र° adj. *stark geröthet* und zugleich *heftig aufgeregt* 9. — 2) *das Hängen an Etwas:* विषयेष्वतिसंरागः (Gegens. विराग) Pāñcar. (s. u. नैर्मल्य).

संराजितृ nom. ag. von 1. राज् mit सम् P. 8,3,25, Schol.

संराद्धि (von राध् mit सम्) f. *das Gelingen* Daśak. 26,33. fg.

संराधन (vom caus. von राध् mit सम्) 1) adj. (f. ई) *zufrieden stellend, Eintracht bewirkend* Cat. Bā. 14,9,2,3. Āçv. Çr. 8,14,4. — 2) n. *vollständige Concentration des Geistes* Bīdar. 3,2,24. = भक्तिध्यानप्रणिधानाद्यनुष्ठान Çāṅk.

संराध्य (wie eben) adj. *den man für sich gewinnen muss* Bhāg. P. 3, 4,26. *was man sich zu eigen machen kann* 26,28.

संरावं (von 1. रु mit सम्) m. *lautes Geschrei* Schol. zu P. 3,3,22 (vgl. 6,2,144). AK. 1,1,6,2. H. 1400. घोष° AK. 2,8,2,76. मुक्तसंरावं मरुद्भूतम् Rāja-Tar. 3,340.

संरुजन (von 1. रुज् mit सम्) n. *Schmerzhaftigkeit:* पार्श्व° Kāraka 2, 8.

संरुध् (2. रुध् mit सम्) f. ein Spielausdruck, *etwa eine Art des Einsatzes* bezeichnend AV. 7,50,5.

संरोदन (von 1. रुद् mit सम्) n. *das Heulen, Jammern* Suçr. 2,304,16.

संरोध (von 2. रुध् mit सम्) m. = रोध (रोधन) und क्षेप H. an. 3,350. Mān. dh. 38 (mit ÇKDr. संरोधो रोधने zu lesen st. संबोधो बोधने). 1) *das Zurückhalten, Aufhalten, Hemmung, Unterdrückung:* घोष° Kumāras. 2,35. पयः° Milāṭīm. 79,18. शकृच्छुक्रवात° Suçr. 1,165,4. प्राण° Çāṅk. zu Bādar. Ār. Up. S. 194. विषयेन्द्रिय° Jīān. 3,158. रश्मि° Paṇḍar. 162,11. आहार° R. 4,61,38. प्रवृत्ति° Kām. Nītis. 1,35. गति° Çiç. Cr. 25,5. आयुष: MBh. 12,8516. *Einschränkung* Lāṭ. 10,7,11. — 2) *Einsperrung, Einschliessung* R. 6,99,50. Kull. zu M. 9,10. दावाग्निधूम° *durch* Kām. Nītis. 14,24. R. 7,35,57. Megh. 71. *Belagerung* Bhāg. P. 10,73,2. पुर° Sin. D. 349. — 3) *Beschränkung, Beeinträchtigung:* घर्मरोधेन भूतानां वृत्तिं लिप्सेत MBh. 14,1232. तस्यां तस्यां (वृत्तौ) न संरोधं कुर्यात्पण्यस्त्रीविनाम् Kām. Nītis. 5,80. — 4) *Unterdrückung* so v. a. *Vernichtung:* विद्योत्पत्तिसंरोधकेतु Bhāg. P. 10,63,25. — Vgl. काल°.

संरोधन (wie eben) n. 1) *das Zurückhalten, Hemmen, Unterdrücken:* मूत्रपुरीषयोः Spr. (II) 170. भृत्यानां वृत्तिसंरोधनम् MBh. 5,1356. उपचार° so v. a. *Verbot* Kāraka 4,4. — 2) *Einsperrung* Bhāg. P. 10,73,7.

संरोध्य (wie eben) adj. *einzusperren:* गृहे Kāraka 8,7.

संरोपण (vom caus. von 1. रुह् mit सम्) 1) adj. *zusammenwachsen* —, *vernarben machend, zuheilend* (trans.) Suçr. 2,10,6. — 2) n. *das Pflanzen:* नवसंरोपणशिथिलस्तरुः Spr. (II) 90. पाद्प° Vāsiṣ. Bhāṣ. S. 55,31.

संरोह (von 1. रुह् mit सम्) m. 1) *das Zuwachsen, Ueberwachsen* TS. 3,5,2,5. 4,4,6,2. 5,3,6,2. Bhāṭṭ. 2,5,44,2. *das Verwachsen, Verheilen:* व्रण° Suçr. 1,3,9. 16,2. — 2) *das Aufkeimen, Hervorbrechen, zum-Vorschein-Kommen:* विकल्प° Verz. d. Oxf. H. 80,b,18. कामानां कल्पसंरोहः Bhāg. P. 7,10,6.

संरोहण (von 1. रुह् simpl. und caus. mit सम्) 1) adj. = संरोपण Suçr. 2,9,21. — 2) n. a) *das Verheilen, Vernarben:* व्रणसंरोहणं चास्य तत्र देवि त्वया कृतम् R. Gorr. 2,8,18. — b) *das Pflanzen* Spr. (II) 90, v. l.

संरोहिन् (von 1. रुह् mit सम्) adj. *wachsend:* कमलं शैवलसंरोहि Spr. (II) 2659.

संलक्ष्य (von लक्ष् mit सम्) adj. *wahrnembar, sichtbar* Rāja-Tar. 3, 261. 6,163 (mit dem Folgenden zu einem comp. zu vereinigen). सत्व° Sin. D. 127. घ° 338,13. °क्रम und घसंलक्ष्यक्रम *ein wahrnembarer* und *ein nicht wahrnehmbarer Vorgang* 254. 101,18. fg. Prasannar. 13,a,7. In der folgenden Stelle ist wohl सल्लक्ष्य zu lesen: चित्तेकाग्र्यं तु संलक्ष्ये समाधानम् Verz. d. Oxf. H. 223,b, No. 544, Z. 13. — Vgl. दु:°.

संलपन (von 1. लप् mit सम्) n. *das Schwatzen:* संलपनोद्यता so v. a. *ein Verlangen viel zu sprechen* Suçr. 1,94,20.

संलयं (von 1. ली mit सम्) m. 1) *das Niederhocken:* eines Vogels Cat. Bā. 14,7,2,19. — 2) *Schlaf* H. 313.

संलयन (wie eben) n. wohl *das Niederhocken* Verz. d. Oxf. H. 277,b,1 v. u.

संलाप (von 1. लप् mit सम्) m. (am Ende eines adj. comp. f. घा) *Unterhaltung, Gespräch* AK. 1,1,5,17. H. 275. Hall. 1,150. वितण्डालापसंलापैः MBh. 7,3022. 12,12248. 13,1457. R. 4,19,11. Spr. (II) 806. Kathās. 18,10. 26,28. घन्योऽन्यसंलापो ज्ञायायत्योः 72,128. Rāja-Tar. 4,67. 5, 366. Mālav. P. 20,4. Bhāg. P. 5,24,16. 10,60,58. संलापं कृ Bhār. Nāṭyaç. 20,28 (संल्लाप gedr.). Sin. D. 287. मित्रेण Spr. (II) 5390. घनेन सह संजातः संलापः Rāja-Tar. 3,142. नृपतेः *mit* 191. Mālav. P. 8,26. कवि° *über* Spr. (II) 5264. इत्यन्योऽन्यनवप्रेमकृतसंलापयोस्तयोः Kathās. 35,141. Bez. *eines best. Dialogs im Drama:* संलापः स्याद्भीरोक्तिर्नानाभावसमाश्रयः Sin. D. 418. 416.

संलापक 1) m. Bez. *eines best. Dialogs im Drama* (vgl. संलाप am Ende) Bhār. Nāṭyaç. 20,40. 42 (hier सल्लापक gedr.). Daçār. 2,50. — 2) n. Bez. *einer Art von Schauspielen* Sin. D. 203,17. fgg.

संलिप्सु (vom desid. von लभ् mit सम्) adj. *kabhaft zu werden wünschend:* मृग° MBh. 16,136 (मृगलिप्सु od. Bomb.).

संलोकिन् (von लोक् mit सम्) adj. *gleichzeitig anblickend* Gobh. 4,7,12.

संलोडन (vom caus. von लुड् mit सम्) adj. *in Verwirrung* —, *in Unordnung bringend:* लोक° MBh. 1,1397.

1. संवर्त् (von सम्; vgl. निवर्त्, प्रवर्त्) f. 1) *Seite; Strecke, Strich:* प्र पत पृथिव्या धनुः संवर्तम् AV. 8,105,2. परो वद् परोवोमनुः संवर्तम् 29,2. RV. 1,191,15. 8,64,15. स संवतो नवजातस्तुतुर्यात् 5,15,2. घा द्यव वरिष्ठामनुः संवर्तम् VS. 11,12. — 2) angeblich = संग्राम Naigh. 2,17.

2. संवत् Abkürzung für संवत्सरे *im Jahr, anno* gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. AK. 3,5,16. H. 1533. H. ç. 25. Hit. 28. विक्रम°, सिद्धसेनकुमार° H. 1535, Schol. = विक्रम° Weber, Kāṭhaka 350. *im Regierungsjahre* Inschr. bei Colebr. Misc. Ess. 2,244,7; vgl. 251.

संवत्सम् (von सम् + वत्स) adv. *etwa ein Jahr lang* RV. 4,33,4.

संवत्सर (सम् + व°) Uṇādis. 3,72. Çiks. 1,7. VS. Prāt. 5,32 (ohne Avagraha). m. 1) *Jahr* AK. 1,1,3,20. H. 159. Hall. 1,116. 5,32. संवत्सर एव स्त्री गौर्वा वडवा वा विज्ञायते Cat. Bā. 11,1,6,2. 5,6,5. गर्भेण संवत्सरे पर्यावृत्य प्रजायते Pāraṇ. Bā. 10,12,5. RV. 1,110,4. 140,3. 161, 12. संवत्सरं शशयानाः 7,103,1. 7. °रे प्रावृष्यागतायाम् 9. समुद्रार्णवादधि संवत्सरो जायते 10,190,2. AV. 1,35,4. 2,6,1. 3,10,2. द्वादशार 4,35,4. 6,55,3. hat zwölf Monate TS. 5,2,8,5. Ait. Bā. 1,13. 16. Cat. Bā. 1,2,5,13. dreizehn VS. 18,29. dreihundertundsechzig Tage Cat.

Br. 1,3,5,9. 9,1,4,43. Ait. Br. 2, 17. Sūçr. 1,19,19. यजत: परिप्लवते Çat. Br. 4,3,4,7. पुरा °रात् Kāty. Çr. 10,2,27. Ait. Br. 4,23,30. °रे अस्थीनि पात्रयेयु: *binnen eines Jahres* Kāty. Çr. 25,13,36. TS. 1,6,8,2. संवत्सरे संवत्सरे gaṇa सवनादि zu P. 8,3,110. die Augen des Jahres sind Voll- und Neumonde TS. 2,5,9,1. हि: संवत्सरस्य सस्यं पच्यते 5,1,2,3. संवत्सरे कृत्स्नमन्नाद्यम् Ait. Br. 8,4. एषा वै संध्यान्ना रात्रि: संवत्सरस्य यत्पूर्वे फल्गुनी TBr. 1,1,2,8. Maitrāyaṇ. 6,14. M. 5,76. R. 1,63,13. पूर्ण: संवत्सरो ऽभवत् R. Gorr. 1,12,1. साग्र: संवत्सरो गत: 4,8,47. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 8,28. 37. 41. 19,3. 6. Mārk. P. 16,35. 30,12. Bhāg. P. 3,11, 12. 14. 5,18,15. °रम् *ein Jahr lang* M. 3,271. 9,77. 11,136. MBh. 3, 11934. R. 3,53,19. संवत्सरमिमम् MBh. 4, 8. °रेण *nach einem Jahre* M. 11,180. यथा प्रभृति °रेण MBh. 3, 16680. °रेण एकवारम् *einmal im Jahre* Spr. (II) 7044. °रस्येकमपि चेत्कृच्छ्रम् *im Laufe eines Jahres* M. 5, 21. गणितस्याथ योगस्य चक्रे संवत्सरं प्रभु: Harīv. 272. 12506. VP. 183, N. 1. संवत्सरस्य पत्नी, प्रतिमा Weber, Nax. 2,233. पुच्छम्, मुखम् 329. °प्रभृति Kāty. Çr. 24,4,2. °दीक्ष 22,1,44. °दीक्षित Çāṅkh. Çr. 16, 20,11. °प्रयोग 3,11,16. °ब्राह्मण Pañcav. Br. 24,20,2. °व्रत Çat. Br. 3,4,4,6. 12. °वासिन् beim Lehrer 14,1,4,27. °वेला *Zeit eines Jahres* 7,4,3,38. °काम so v. a. गवामयनकाम Āçv. Çr. 11,6,10. संवत्सरोषित *ein Jahr alt* Sūçr. 1, 199, 19. °निरोध M. 8,375. संवत्सराभिशस्त 373. °कृत्य Verz. d. Oxf. H. 87,a,39. संवत्सरारम्भविधि 284,a,38. °फलदर्शिन् Subandhu bei Uṇādis. zu Uṇādis. 3,72. Als neutr. Mukṇ. Up. 2,1, 6 (m. ed. Pol.). MBh. 7,9596 (संवत्सरश्च st. संवत्सराणि ed. Bomb.). Harīv. 11774. — 2) *das 1te Jahr im fünf- oder sechsjährigen Cyclus* VS. 27,45. TS. 5,5,7,3. TBr. 3,10,4,1. Kāṭy. 13,15. 39,6. 40,6. Pāṇ. Gaṇ. 3,2. Weber, Gjot. 34. Vaṃç. Bṛh. S. 8,24. VP. 224. Bhāg. P. 5,22,7. — Vgl. त्रिषंवत्सर, परि°, प्रतिसंवत्सरम्, शत°, सांवत्सर fgg.

संवत्सरकार adj. als Beiw. Çiva's Çiv.

संवत्सरकौमुदी f. Titel einer Schrift; s. u. तालनवमी und मित्रसप्तमी.

संवत्सरतम (von संवत्सर) adj. (f. ई) P. 5,2,57. Vop. 7,39. °तमीं रात्रिम् so v. a. *heute über's Jahr* Çat. Br. 11,5,4,11.

संवत्सरदीपव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. B. H. No. 1203. fg.

संवत्सरपर्वन् n. *Jahresabschnitt* P. 4,2,21, Vārtt. 3.

संवत्सरप्रदीप m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1170. Verz. d. Oxf. H. 38,b,6. 7. 279,b,32. 283,b, No. 662. 292,b,28. Verz. d. Cambr. H. 68. Wilson, Sel. Works 2,187.

संवत्सरप्रवर्क m. *eine Nebenart des* Gavāmajana Lāṭy. 4,5,4.

संवत्सरप्रवत्क m. dass.; s. प्रवत्क.

संवत्सरभृत adj. *ein Jahr lang getragen* oder *gepflegt* (das Feuer wird, ehe es auf den Altar kommt, täglich einmal in der Ukhā getragen) Çat. Br. 6,7,4,19. 7,5,4,24. 9,5,4,63. 10,2,4,9. ख° Kāty. Çr. 16,6,9. °भृतिन् *der dieses gethan hat* 17,5,6.

संवत्सरमय (von संवत्सर) adj. पञ्च° *aus den fünf Jahren* (eines Cyclus) *bestehend* Weber, Gjot. 20.

संवत्सरसत्र n. *ein* Soma-*Opfer, dessen* Sutjā-*Tage ein Jahr über dauern*, Çāṅkh. Çr. 13,19,20.

संवत्सरसद् adj. *der eine solche Feier hält* TS. 3,4,8,3. 7,5,4,2. Çat. Br. 12,3,4,2.

संवत्सरसंमित adj. *dem Jahr gleichmässig* Çat. Br. 3,1,4,17. 4,3. 5, 3,3,2. 11,5, 4,6. *dem Jahres-Sattra gleichartig* Çāṅkh. Çr. 15,17,2. रात्री: Bez. gewisser Opfertage, weil der Vishuvant-Tag in ihrer Mitte liegt, Āçv. Çr. 11,3,3. 6,12. Lāṭy. 10,5,1. Kāty. Çr. 24,3,11.

संवत्सरसहस्र n. *Jahrtausend* Çat. Br. 10,4,4,4.

संवत्सरावर (संवत्सर + व°) adj. *mindestens ein Jahr dauernd* Kāty. Çr. 13,4,3.

संवत्सरिक s. सांवत्सरिक.

संवत्सरीण (von संवत्सर) adj. *jährig, jährlich* P. 5, 1, 92. पर्व उस्रियाया: *alle Jahre* (nach der Geburt eines Kalbes) *vorhanden* ṚV. 10, 87,17. मरुत: AV. 7,77,3. भाग VS. 17, 12. स्वस्ति Ait. Br. 1,28. TS. 3,1,9,4. TBr. 1,4,10,1. 3,1,2,6. im comp. nach Zahlwörtern P. 5,1, 87. हि° Schol.

संवत्सरीय adj. dass. P. 5,1,92.

संवत्सरोपासित (संवत्सर + उ°) adj. *ein Jahr lang bedient* (s. संवत्सरभृत) Çat. Br. 6,7,4,19.

संवदन n. 1) (von वद् mit सम्) = संवाद und समालोच H. an. 4, 200. = सालोच Med. n. 216. — 2) = वशेक्रिया, वशीकृति, वशीकार AK. 3,3,4. H. an. Med. Spr. (II) 3527, v. l. auch f. या Bhar. zu AK. nach ÇKDa. fehlerhaft für संवनन.

संवदितव्य (von वद् mit सम्) adj. *zu bereden, worüber ein Uebereinkommen zu treffen ist* Çat. Br. 9,5,2,16.

संवनन (vom caus. von 1. वन् mit सम्) 1) adj. *geneigt machend, für sich gewinnend, versöhnend, vereinigend* ṚV. 8,1,2 (संवननम् aufzulösen). AV. 6,139,2. अन° (°संवलन gedr.) Pañcad. 3,13,15. दानसंवनना क्षेते मन्या: *zum Spenden geneigt machend, — auffordernd* Spr. (II) 2758. — 2) m. N. pr. des Liedverfassers von ṚV. 10,191 mit dem patron. Āṅgirasa ṚV. Anukr. — 3) n. *ein Mittel der Vereinigung, — Eintracht, — für sich zu gewinnen, — zu bezaubern; sühnender Bann* AK. 3,3,4 (nach der Lesart bei Mallin. zu Çiç. 10,37). H. 1498. Hālā. 4,21. विद्वेषणं संवननं विषस्य ṚVidhān. 1,2 (nach Aufrecht). एकेयुष्टीन्संवननेन सर्वान्कृणोमि AV. 3,30,7. 6,9,3. यस्य ṚV. 10,93,12. Pāṇ. Gaṇ. 1,6. यत्र संवननं स्मृतम् Maitrāyaṇ. 6,13. एतत्संवननं मम MBh. 3,14706. नक्षीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते Spr. (II) 3527. उपश्रिय: (obj.) Rāgh. 16,74. हृदयानुप्रवेशो हि प्रभो: संवननं महत् Kathās. 34, 169. स्त्रियं चेदभिमन्येत तस्या: संवननं महत् ṚVidhān. 3,19 (nach Aufrecht). एतल्लाभान्यकं कर्तु भर्तृसंवननं महत् MBh. 3,14707. स्वामि° Kathās. 40,51. मन:° (das vorangehende तद् davon zu trennen) 95,21. कोश° *das Gewinnen —, Erwerben eines Schatzes* MBh. 5,5010 nach der Lesart der ed. Bomb. °सम्बलम ed. Calc. — Vgl. विश्व°.

संवत् 1) adj. *mit* सम् *verbunden* Çāṅkh. Br. 17,9. — 2) n. N. eines Sāman Pañcav. Br. 15,3,36.

संवन्दन (von वन्द् mit सम्) n. *ehrfurchtsvolle Begrüssung:* कृत° adj. Bhāg. P. 10,44,51.

1. संवर (von 1. वृ mit सम्) 1) adj. *abwehrend, zurückhaltend:* काल° als Beiw. Vishṇu's Pañcad. 4,3,70. — 2) m. a) *Damm* H. 965. — b) *Abwehr der Aussenwelt, das Sichhüten vor derselben*, Bez. eines der sieben oder neun Tattva bei den Gaina: जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनि-

र्मोक्षास्तत्रानि Sarvadarçanas. 36,14. fg. यास्रवनिरोधः संवरः। येनात्मनि प्रविशत्कर्म प्रतिषिध्यते स गुप्तिसमित्यादिः संवरः 38,20. fgg. यास्रवो भवहेतुः स्यात्संवरो मोक्षकारणम् (so ist zu lesen) 39,16. 41,5. 43,16. मोक्षसो द्वारं संवृणोतीति संवर इति निरुक्तेः 39,14. — *c*) N. pr. des Vaters des 4ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇī H. 36. N. pr. des 18ten Arhant's der zukünftigen Utsarpiṇī 55. — Mbh. r. 232. — *d*) N. pr. einer Gegend, = गड; s. u. गडलवण. — 3) n. *ein best. Gelübde bei den Buddhisten* Mhd. त्रिसंवरनिर्देश Wassiljew 155. = संयम Trik. 3,3,377. — Vgl. चक्र°.

2. संवर (scheinbar von 2. वर् mit सम्) m. *Wahl* (eines Gatten), = स्वयंवर (wie die ed. Bomb. liest) MBh. 7,6033.

3. संवर (auch सम्वर und सम्वर्) ungenaue Schreibart für शम्बर. 1) m. *a*) = शम्बर 1) *a*) Trik. 3,3,377. Med. r. 232. MBh. 8,4397. R. 4,12,8. 5,18,29. VP. 137. 147. Bhâg. P. 6,6,29. 10,19. 7,2,4. 8,6,31. 10,19. Die Bomb. Ausgg. haben überall die richtige Schreibart. Auch die buddhistische Tantra-Gottheit (Wilson, Sel. Works 2,24. 32. Burnouf, Intr. 538) wird wohl शम्बर zu schreiben sein. — *b*) = शम्बर 1) *e*) Trik. Med. — *c*) = शम्बर 1) *f*) und *k*) Med. — 2) n. *a*) = शम्बर 3) *b*) Trik. Med. Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449. — *b*) *Zauberei:* शाकिनी-संवरादर einer der drei Fehler der Weiber Kathâs. 37,170. शाकिनी-सिद्धिशंवरा (Brockhaus trennt शाकिनी) 68,37.

1. संवरण (von 1. वर् mit सम्) 1) adj. (f. ई) *verschliessend:* eine der Falten (वलि) des Afters Suçr. 1,258,11. — 2) m. N. pr. eines Mannes RV. 5,33,10. Verfasser dieses Liedes mit dem patron. Prâjâpatja RV. Anukr. N. pr. eines Sohnes des Ṛiksha, Gatten der Tapatî und Vaters des Kuru, MBh. 1,3734. fgg. 3791. 6327. 13,335. Harîv. 1799. VP. 455. Mârk. P. 78,34. 106,16. Bhâg. P. 9,6,39. 8,13,10. 9,22,3. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,13. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 41. — 3) n. *a*) *Umhegung, ein umschlossener Raum* (wie der Opferplatz): यो नौ मरुत्सवरणेषु वज्रिन् RV. 4,21,6. 7,3,2. समुद्रं न संवरणान्यग्मन् 9,107,9. 10,77,6. AV. 2,6,3. *Wall* R. 2,88,19 (96,32 Gorr.). — *b*) *Hülle, Decke* Bhâg. P. 10,87,20. — *c*) *das Verbergen, Verstecken, Geheimhalten:* पुत्र° Vikr. 79,3. मल° MBh. 1,5616. 5,4812. 12,18. R. 1,7,9. R. Gorr. 2,72,11. त्रयी° MBh. 12,2006. प्रतेच्छाविकार° Mâlav. 30,19. स्वाकार° Pârâśar. ed. orn. 20,7. 30,3. अप्रसिद्धार्थस्य Schol. zu Kâvjâd. 3,109. °कार्युत्तरं प्रहेलिका Sâh. D. 198,6. so v. a. *Geheimnisskrämerei* Mâlatîm. 7,1. 174,7. — *d*) *das Schliessen:* पोनेः Suçr. 1,278,18. श्रुतेः *der Stimme* RV. Pâr. 6,5. — Vgl. अनु°.

2. संवरण (von 2. वर् mit सम्) n. *das Erwählen* (eines Gatten): °मन्त्र = वरणमन्त्र Râgân. 6,90.

संवरणीय (von 1. वर् mit सम्) adj. *zu verbergen, — verstecken, geheim zu halten* Schol. zu Kâvjâd. 3,109. Kull. zu M. 7,102.

संवरविंशक n. Titel einer Schrift Târân. 156 (सम्वर° gedr.). wohl शम्बर° zu lesen.

संवरव्याख्या f. desgl. ebend. 211 (सम्वर° gedr.). wohl शम्बर° zu lesen.

संवरोदयतन्त्र n. desgl. Burnouf, Intr. 537. fg. wohl शम्बरो° zu lesen.

संवर्ग (von वर्ज् mit सम्) 1) adj. *zusammen —, an sich raffend:* Agni (der über seine Grenze hinausgreift) Çat. Br. 12,4,4,3. TS. 2,4,8,3. Ait. Br. 7,7. Kâts. Çr. 25,4,32. Çâṅkh. Çr. 3,4,5. Âçv. Çr. 3,13,7. Çat. Br. 14,9,3,9. die Mittagssonne Kaush. Up. 2,7. der Wind Kâṭh. Up. 4,3,1. इन्द्रस्य संवर्गं वार्त्रघ्नम् N. eines Sâman Ind. St. 3,209,*a*. — 2) m. *das Zusammenraffen:* संवर्ग इतीष्टिमाङ्क्तेः TS. 2,4,8,3. Kâṭh. 10,7. संवर्गः N. eines Sâman Ind. St. 3,200,*b*. ज्रमदग्नेः desgl. 217,*a*. *das Zusammenbringen:* राष्ट्र° Verz. d. B. H. 89, No. 365.

संवर्गजित् m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Lâmakâjana Ind. St. 4,373. — Vgl. सांवर्गजित.

संवर्गम् (von वर्ज् mit सम्) absol. *zusammenraffend:* संवर्गं सं तृणेव ज्रेय RV. 8,64,12. संवर्गं पन्मघवा सूर्यं जयत् 10,43,5.

संवर्गविद्या f. Bez. *einer best. Lehre* Colebr. Misc. Ess. 1,326. fehlerhaft für संसर्ग° (wie die ed. Bomb. liest) MBh. 12,8473.

संवर्ग्य 1) adj. (von वर्ज् mit सम्) *zu multipliciren* Vaṇis. Bṛh. 26(24),9. — 2) (wohl von संवर्ग) N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 873. Verz. d. Oxf. H. 336,*b*,1.

संवर्जन (von वर्ज् mit सम्) n. *das Packen* Kâraka 8,7. संवर्जनात्संयक्षणात्संयमनाद्वा संवर्गः Çâṅkh. zu Kâṭh. Up. S. 244.

संवर्णन (von वर्णय् mit सम्) n. *das Schildern, Erzählen:* °चरित्र° Verz. d. Oxf. H. 129,*b*,6.

संवर्त (von वर्त् mit सम्) m. 1) etwa *das auf-den-Leib-Rücken* MBh. 9,3193. = शत्रुप्रसरणस्यावरोधनम् Nîlak. — 2) *etwas Gerolltes* oder *rund Geknetetes, Ballen:* पुरोडाश° Kâç. 30. — 3) *ein geballter —, dichter Haufe:* ज्ञन° Mâlatîm. 166,12. — 4) *eine geballte, regenschwangere Wolke;* = मेघ Çabdar. im ÇKDr. एकदेशेन चावर्ते संवर्ते सर्वतो ज्ञलम् Kâṭhâs. 7,2. आवर्तो निर्ज्ञलो मेघः संवर्तो बहूदकः Gîrvânapadârthâvalî im ÇKDr. °निनद् Harîv. 6878. R. 4,18,22. — 5) N. *einer der sieben Wolken beim Weltuntergange* Verz. d. Oxf. H. 347,*b*,38. — 6) *Weltende, Untergang der Welt* AK. 1,1,2,22. H. 161. an. 3,307. Med. t. 164. Hâlâ. 1,117. लोकानाम् R. 7,22,18. संवर्त इव मारुतः 6,37,63. संवर्ताग्नि MBh. 3,15812. 8,2317. Bhâg. P. 3,15,26. संवर्तार्क 7,3,9. संवर्ताम्भस् 8,24,33. — 7) N. *eines* Kalpa (*einer Weltperiode*) Verz. d. Oxf. H. 21,*b*, N. 3. Vie de Hiouen-thsang 76. — 8) Jaâr Hâlâ. 5,18. — 9) Bez. *einer best. mythischen Waffe* Harîv. 12736 (संवर्तन die neuere Ausg.). R. Gorr. 1,30,18. 7,101,7. — 10) *Terminalia Bellerica* Roxb. H. an. Med. Ratnam. 91. — 11) Bez. *eines best. Kometen* Varâh. Bṛh. S. 11,51. — 12) Bez. *einer best. Conjunction der Planeten* Varâh. Bṛh. S. 20,5. एकर्क्षे चत्वारः सह पैरिर्यायिनो ऽथ वा पञ्च। संवर्तो नाम भवेत् 6,9. — 13) N. pr. eines Mannes Med. Vîrabh. 6,2. eines Sohnes des Aṅgiras (und Verfassers von RV. 10,172) RV. Anukr. Ait. Br. 8,21. MBh. 1,2569. 2,300. 3,8174. 13,4148. 7122. 14,93. 137. Harîv. 1833. 9371. 11076. R. 7,18,3. 90,4. Mârk. P. 130,11. Bhâg. P. 9,2,26. Pâṇ. 1,10,63. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,13. 19,*a*,37. Verfasser eines Gesetzbuchs Jâtî. 1,4. Ind. St. 1,20. 232. fg. 467. Verz. d. B. H. No. 1017. Verz. d. Oxf. H. 266,*a*,42. 271,*a*,9. 292,*a*,2 v. u. 279,*b*,33. 336,*a*,33. fg. Gild. Bibl. 457. Wilson, Sel. Works 1,13. Kull. zu M. 5,62. °श्रुति Ind. St. 2,76. 100. — Vgl. वस्त्र°.

संवर्तक (vom caus. von वर्त् mit सम् und von संवर्त) 1) adj. *zusammenrollend, Alles umsturzend beim Untergange der Welt:* Feuer Nyâs. Viṃç.

Up. in Ind. St. 9,90. 138. MBh. 3,153. 187. 12873. 12877. 12966. fg. 13607. 6,281. 4390. 13,336. 942. 6974. Hariv. 2149 (neben सौर्व). 11340. 11415. 13432. R. 3,70,1 (सांवर्तक ed. Bomb. 65,1). 5,83,16. Mārk. P. 47,11. Bhāg. P. 12,4,9. Verz. d. Oxf. H. 49,b,9. Sonne MBh. 3,12967. Wolken Hariv. 2823. 13131. संवर्तके नाम गणे तोयदानाम् 3893. Wind Bhāg. P. 12,4,11. subst. m. (sc. अग्नि) H. 1100 (*das höllische Feuer*). Bhāg. P. 4,30,43. Gaṇar. 1,11. n. (sc. फाल) Baladeva's *Pflugschar* H. 228. Hariv. 3035. 3362. pl. so v. a. *die höllischen Mächte:* इतो ऽपि बडवानलः सह समस्तसंवर्तकैः Spr. (II) 1095. — 2) m. a) *Weltende, Untergang der Welt:* संवर्तकं कर्तुम् Hariv. 4329. युद्धं लोकसंवर्तकोपमम् R. 6,87,6. — b) N. pr. α) eines alten Weisen = संवर्त Gārgīlop. in Ind. St. 2,76. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 48,64. — β) eines Schlangendämons MBh. 1,1155 nach der Lesart der ed. Bomb. (वृत्तसंवर्तको). — γ) angeblich = संवर्तकिन् Çārdar. im ÇKDa. — δ) eines Berges LIA. 1,355, N. — 3) f. संवर्तिका *ein junges* (noch *zusammengerolltes*) *Blüthenblatt einer Nymphaea* AK. 1,2,3,42. H. 1166. — Vgl. सांवर्तक.

संवर्तकिन् m. ein N. Baladeva's (nach seiner Pflugschar संवर्तक so genannt) Taik. 1,1,36.

संवर्तग m. N. pr. eines Sohnes des 3ten Manu Sāvarṇa Hariv. 479. सर्वत्रग die neuere Ausg. und Langlois.

संवर्तन (vom caus. von वर्त् mit सम्) n. Bez. *einer best. mythischen Waffe* (*zusammenrollend, Alles vernichtend*) Hariv. 12736 nach der Lesart der neueren Ausg. संवर्त die ältere.

संवर्तम् (von वर्त् mit सम्) absol. *aufrollend, umstürzend* Pāraṣ. Br. 14,12,7. Çāṅkh. Çr. 17,5,6.

संवर्तमरुत्तीय adj. *die Weisen* Saṁvarta *und* Marutta *betreffend:* आख्यान MBh. 1,606; vgl. 14, Adhj. 3. fgg. in den Unterschriften.

संवर्ति f. = संवर्तिका (s. unter संवर्तक) Bhar. zu AK. 1,2,3,42 nach ÇKDa.

संवर्धक scheinbar in einer Inschrift in Journ. of the Am. Or. S. 6, 504, Çl. 13, wo aber ohne Zweifel संवर्धयो चक्रिरे (संवर्धयाञ्च°) zu lesen ist.

संवर्धन (von 1. वर्ध् simpl. und caus. mit सम्) 1) adj. *vermehrend, fördernd:* तेजसः Spr. (II) 7239. दानसंवर्धना क्षेते यन्धाः 2758, v. l. — 2) m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 8,1967. — 3) m. a) *das Heranwachsen* (eines Kindes) Kathās. 93,99. — b) *das Grosswerden* (eines Kindes) R. 2,111,10 (= क्रीडन Comm. in der ed. Bomb.) = 120,10 Gorr. — c) *Mittel zum Wachsenmachen:* केश° Çāṅkh. Śr. 3,11,19. — d) *das Gedeihen, Erfolghaben:* धर्म° MBh. 1,2432. व्यवसितस्य Vikr. 57,2. धविरूढसंवर्धनमौष्मितलम्भानाम् 49,11. — e) *das Gedeihenmachen, Fördern* Kām. Nītis. 13,55. तेजोबलवर्णमेधा° Daçak. 60,5.

संवर्धनीय (vom caus. von वर्ध् mit सम्) adj. 1) *aufzuziehen, gross zu ziehen:* दुहिता Pāraṣ. 188,19. *zu ernähren:* भृत्याः Kull. zu M. 3,72. — 2) *zu mehren, zu fördern:* गुण Spr. (II) 1381.

संवर्मय् (von वर्मन् mit सम्), °यति *Jmd eine Rüstung, einen Panzer anlegen* P. 3,1,25. Vop. 21,17.

संवर्य् (सम्बर्य् geschr.), °र्यति (संभरणे) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

संवर्षण LA. 27,3 falsche Conjectur; vgl. Spr. (II) 729.

संवल s. शम्बल. In der Bed. *Wegekost* auch Spr. (II) 2190. घृतम्बल Çaṅk. 10,183.

1. संवलन (von वल् mit सम्) n. *das Zusammentreffen, Vereinigung, Verbindung* Milarām. 167,5. Verz. d. Oxf. H. 245,a, No. 613. f. आ dass. Gir. 12,27.

2. संवलन (सम्बलन) fehlerhaft für संवनन.

संववर्तृत् = संवव्रिवंस् partic. perf. act. *verhüllend:* Finsterniss ṚV. 5,31,3.

संवसथ (von 5. वस् mit सम्) m. *Niederlassung, Dorf* Uṇ. Sval. zu Uṇ. 3,114. AK. 2,2,19. Taik. 3,3,295. H. 961. Halāj. 2,103.

संवेसन (wie eben) n. *Wohnort, Behausung* ṚV. 9,86,17.

सैवसु (wie eben) adj. *Wohnungsgenosse:* देवेषु ṚV. 8,39,7. संवसव इति वै नामधेयम् AV. 7,109,6.

संवस्त्रय् (von वस्त्र mit सम्), °यति *bekleiden* Vop. 21,17.

संवह् (von 1. वह् mit सम्) m. N. *eines der sieben Winde* MBh. 12, 12407. Hariv. 12787. Golādhj. Bhuvanak. 1. Brahmāṇḍa-P. beim Schol. zu Çiç. 165. N. *einer der sieben Zungen des Feuers* (als masc.!) Colebr. Misc. Ess. 1,190.

संवहन (wie eben) n. 1) *das Führen, Leiten:* रस° Suçr. 1,250,18. — 2) *das an-den-Tag-Legen, Aeussern:* गर्व संवहनायोद्यम् Kuval. 16,a.

संवहित्र (wie eben) nom. ag. s. सांवहित्र und vgl. संवोढ्र.

संवाच् (सम् + वाच्) f. *gemeinsame Rede, colloquium* VS. 9,2 (TS. v. l.). So ist wohl auch ṚV. 1,167,3 zu lesen.

संवाद्य (von वद् mit सम्) n. unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a,16. Comm. zu Bhāg. P. 10,45,36. wohl *die Kunst sich zu unterhalten.*

संवाटिका f. = भृङ्गाटक Rāgān. im ÇKDa.

संवाद् (von वद् mit सम्) m. 1) *Unterredung* ṚV. 8,90,4. Çat. Br. 3,1,4,10. 9,5,2,16. Kāṭh. Çr. 8,8,30. 12,2,10. Ind. St. 1,116. Spr. (II) 6628. R. 2,31,1. Verz. d. Kopenh. H. 16,b, No. 35. आवयोः Bhāg. 18,70. MBh. 1,224. वृत्तेषु द्विजानामनुकूलताम् R. 3,79,24. आयत्ते वत मूढानां संवादा यपि तादृशाः Kathās. 5,37. Bhāg. P. 2,10,42. 3,33, 36. 7,2,27. 8,24,59. Kull. zu M. 3,26. सह सीतया R. Gorr. 1,4,47. Çaṅk. 1,31,6. Bhāg. P. 1,4,7. राघवेण R. Gorr. 1,4,55. Bhāg. P. 2,6, 10. सीताराघण° R. 3,52 in der Unterschrr. Verz. d. Oxf. H. 44,b,19. 24. fgg. Bhāg. P. 1,5 und 16 in den Unterschrr. Pāraṣ. 118,25 (°संवादे zu lesen). बधात्यार्यपरीवादं खलसंवादमृङ्खला Kathās. 24,210. निषादाधिप° *mit* R. 1,3,13 (3 Gorr.). Spr. (II) 290, v. l. Kathās. 14,86. 61, 320. संवादं कृ Verz. d. Oxf. H. 61,b,7 v. u. द्वया R. 5,34,7. अपि s. सीतया कृतसंवादः (adj.) 13. 49,17. MBh. 6,2979. पञ्चरात्रं पञ्चसंवादम् Pāraṣ. 1,1,24. 2,1,12. — 2) *Verabredung:* पद्यासंवादम् Kāṭh. Çr. 20,8,24. — 3) *Uebereinstimmung, Einklang:* शशिनः भुवा भसंवादम् Varāh. Bṛh. S. 2,22. वाद्यः गोत्रसंवादमेति Milarām. 80,5. Kathās. 21,127. 23,11. 14. 35,107. 43,206. 119,164. 123,333. Mārk. P. 15,42. Bhāg. P. 6,4,31 (Gegens. विवाद). Kull. zu M. 3,37. 8,33. Z. d. d. m. G. 7,299, N. 4. Sarvadarçanas. 23,1. स° adj. (f. आ) *übereinstimmend* Kathās. 34,152. ससंवादम् adv. 122,91. — Vgl. प्राण°, व्यामभुक°, सह°.

संवादक (vom caus. von वद् mit सम्) adj. *übereinstimmend:* गुरुशिष्यसमत्वसंचारिणाम् Wilson, Sélections. S. 138.

संवादन (wie oben) n. *Einigung, Einstimmung* Kathâs. 50,169.

संवादिन् (von वद् mit सम् oder von संवाद) adj. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. 1) *sich unterhaltend:* रक्षःसंवादिनी Raghu. 15,92. — 2) *übereinstimmend, im Einklang stehend* Kathâs. 92,94. 119,117. 122. Verz. d. Oxf. H. 222,b,39 (?). स्वचितसंवादि वचः Spr. (II) 7270. षड्जसंवादिनीः केकाः Raghu. 1,39. Uttarar. 114,4 (154,10). रुतं नूपुरसंवादि Kirâtârg. 2,168. Kathâs. 35,119. Râga-Tar. 1,21 (mit dem Folgenden zu verbinden). H. 59. Pañkat. ed. orn. 49,24. — Vgl. संवाद्य.

संवार (von 1. वर् mit सम्) m. *der Verschluss der Stimmritze* (bei der Aussprache eines Lautes) P. 1,1,9, Schol. Gegens. विवार.

संवारण (vom caus. von 1. वर् mit सम्) adj. *zurückhaltend, abwehrend:* शत्रु° (कार्मुक) MBh. 6,3333. 8,537.

संवारयितु (wie oben) adj. *zurückzuhalten —, abzuwehren beabsichtigend* MBh. 6,3762 nach der Lesart der ed. Bomb.

संवार्य (von वर् mit सम्) adj. 1) *zu verhüllen, zu verbergen:* संवृत° Spr. (II) 3713. — 2) *zurückzuhalten, abzuwehren:* नेतदत्रलमसंवार्यम् MBh. 7,4269. 9,1166 (nach der Lesart der ed. Bomb. st. घसंकार्य der ed. Calc.).

संवास (von 5. वस् mit सम्) m. 1) *das Zusammenwohnen, Zusammenleben* MBh. 4,564. 5,630. 8,2032. 12,4275. 13,2440. 2666. R. 2,30,38 (38,47 Gorr.). Spr. (II) 384. 6781, v. l. तेषाम् MBh. 15,924. Spr. (II) 4605. दुर्जनैः M. 12,79. MBh. 1,4589. 13,2426. 14,813. R. 6,104,14. Spr. (II) 3613 (घत्यक्त°). 6533. त्रात्यया सह M. 8,372. MBh. 1,4588. 14,441. Spr. (II) 476. 3819 (घत्यक्त°). 5256. Pañkat. 196,18. प्रिय° *mit* MBh. 4,566. Spr. (II) 290. 293. 2826. 4377. Gîr. 7,40. — 2) *Niederlassung, Wohnstätte, Wohnplatz* Hariv. 3488. ग्रामसंवासवासिनाम् R. 2, 49,4. s. घोष° Hariv. 4287. ऐकलव्य° 6413. ज्ञनसंवासाद्यदि भाण्डान्यपनेत्काकः Varâh. Bṛh. S. 95,13. श्रीः मुखस्येव संवासः MBh. 5,1619. घसंवासाः प्रजायन्ते म्लेच्छाः MBh. 13,3525. कृत्यघकृत° Verz. d. Oxf. H. 149,b,26. उद्देशकृतसंवासैर्धैः *gemeinschaftlicher Wohnplatz* Kâm. Nîtis. 9,72. — 3) *Spazierplatz* Gaṇâdh. im ÇKDn.; vgl. संवाह्. — Vgl. सह°, सांवासिक.

1. संवासिन् (von 3. वस् mit सम्) adj. *gekleidet in:* चर्मवत्कल° MBh. 14,1268.

2. संवासिन् (von 5. वस् mit सम्) adj. *zusammen wohnend, Wohnungsgenosse* Kâm. Nîtis. 4,38. Râga-Tar. 2,115. चिर° MBh. 12,8128. *wohnend in, bewohnend:* मनुष्याणां ग्रामसंवासिनाम् R. Gorr. 2,46,6.

संवास्य adj. MBh. 12,13068 nach Nîlak. = क्षेतुं योग्यः, eine andere Lesart संघास्य wird durch उच्छेतुं योग्यः erklärt; allein richtig ist aber die zuletzt erwähnte Lesart संध्यास्य *zu Schultern die Morgen- und Abendröthe haben.*

संवाह् (von 1. वह् mit सम्) gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. गुडादि zu 4,103. 1) adj. = संवाह्य Gaṇâdh. im ÇKDn. — 2) m. *a)* etwa *ein Park zum Spazierenfahren* (= सप्राकारमुद्यानम् Nîlak. zu Hariv.) MBh. 3, 11700. Hariv. 8358. 8360. — *b)* = संवाहन *das Entlangfahren mit der Hand, Streichen:* षड्ज° Mâlav. P. 16,15. — *c)* als Bez. *einer der sieben Winde* wohl nur fehlerhaft für संवह् Brahmâṇḍa-P. beim Schol. zu Çiç. 165. — *d)* etwa *aufgebürdete Last, Auflage* Râga-Tar. 5,175. राज्ञ° *eine vom Fürsten eingeführte Auflage* 191. — Vgl. सांवाहिक.

संवाह्य (vom caus. von 1. वह् mit सम्) nom. ag. *mit der Hand entlang fahrend, die Glieder streichend, der dieses als Gewerbe betreibt* Taitt. 2,8,21. H. 492. Hall. 2,435. R. Gorr. 2,32,22. Mṛicch. 29,18 u. s. w. गात्र° Kâm. Nîtis. 12,45. पादसंवाहिका Kathâs. 63,26.

संवाहन (wie oben) n. 1) *das Fahren, Ausfahren:* = वाहन H. an. 4, 209. fg. राज्ञः °क्रियाः। घवेक्षत MBh. 5,5011. = संप्रापणं दानोपदानादिकम् Nîlak. — 2) *das Ziehen:* der Wolken Mâlatîm. 130,19 (pl.). — 3) *das Ziehen —, Tragen einer Last* u. s. w. Mân. n. 217. — 4) *das Entlangfahren mit der Hand, Streichen —, Reiben der Glieder* AK. 3,3,22. H. an. Mân. häufig pl. Kâraka 1,7. Suçr. 1,331,2. 2,35,2. 41,10. 143,9. 273, 4. Mârk. P. 20,11. दत्तसंवाहनानि (षड्ङ्कानि) Uttarar. 11,42 (15,16). हस्त° *mit der Hand* Mân. 94. Kathâs. 112,128. गात्र° *das Streichen der Glieder* MBh. 3,13373. R. 1,46,11 (47,10 Gorr.). षड्ङ्ग° Mârk. P. 10,13. पाद° MBh. 1,3365. Kathâs. 63,24. Mârk. P. 19,2. Bhâg. P. 9, 18,35. 10,15,14. 17. 46,15. चरण° Weber, Kṛishṇaj. 284. श्रान्त° Jâtâ. 1,209.

संवाहितव्य (wie oben) adj. *zu reiben:* पादौ MBh. 13,2746.

संवाहिन् (von 1. वह् mit सम्) adj. *führend* Kâraka 4,4.

संवाह्य (wie oben) adj. 1) *zu tragen u. s. w.* P. 3,1,121, Schol. घग्नि Vop. 26,11. सुख° Spr. (II) 88. — 2) *an den Tag zu legen, zu äussern:* गर्वमसंवाह्यं किं वरसि Spr. (II) 2096.

संविकाश MBh. 9,896 fehlerhaft für संनिकाश, wie die ed. Bomb. liest.

संविचेतव्य s. unter 1. चि mit संवि.

संविज्ञान (von ज्ञा mit संवि) n. 1) *das Mitverstehen —, Mitbegreifen —, Subsumiren aller übrigen Theile:* ज्ञन्मादीति सृष्टिस्थितिप्रलयं तदुपसंविज्ञानो बहुव्रीहिः *ein* Bahuvrîhi, *in dem durch einen Theil des Ganzen* (hier ज्ञन्मन्) *alle übrigen Theile* (hier स्थिति und प्रलय) *subsumirt werden,* Sarvadarçanas. 60,6. 7. Çiç. zu Bâlar. 1,1,2. — 2) *das Kennen:* तपोनामसंविज्ञानमस्ति Uttarar. 26,13 (35,1). *Verständigung* Suçr. 1,10,19. °भूत *allgemein bekannt, — gebräuchlich* Nir. 7,13.

संविति (von 1. विद् mit सम्) f. 1) *Erkenntniss* Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,163. fg. Gauḍap. zu Sâṅkhjak. 69. संविन्मात्र Weber, Râmat. Up. 324. तत्त्वस्य Kâm. 16,32. — 2) *Empfindung:* गन्ध° Verz. d. Oxf. H. 231,a, 26. सुख° Kâm. 11,34. बाह्यघाल्पकसंवित्तीनां पृथगवभासः *Empfindung, Wahrnehmung* Sarvadarçanas. 16,14. fg. 21. — 1) 2) = वेदना Hall. 5,33. = प्रतिपद्, प्रतिपत्ति Taitt. 3,3,208. H. an. 3,313. Mân. 1. 167. = बुद्धि, उपलब्धि u. s. w. H. 309. Hall. 2,179. — 3) *Einverständniss,* = घविवादो ज्ञनस्य Mân. *st. dessen bloss* घववाद (d. i. घविवाद) H. an.

संवित्प्रकाश (संविद् + प्र° m. Titel einer Schrift Ind. St. 2,252.

1. संविद् (1. विद् mit सम्) f. Sivas. K. 248,a,3. 1) *Bewusstsein, Erkenntniss* VS. 18,7. MBh. 13,1011. Spr. (II) 3612, v. l. यस्यास्ति हृदये संवित् Verz. d. Oxf. H. 63,a, No. 113. 238,b,13. 250,a,5. 256,b,37. VP. 14,N. 22. Kâm. 18,42 (pl.). Mârk. P. 101,18. Bhâg. P. 2,24,46. 10,47,19. Pañkat. 2,13,24. 15,27. Sarvadarçanas. 93,21 (pl.). हृदये चित्त° Verz. d. Oxf. H. 231,a,7. स्व° Bhâg. P. 1,13,33. 10,46,46 (adj.). घात्म° 11,28,9. वीर्य° adj. 3,25,25. तत्त्वैक° *Bewusstsein von* Mâlatîm. 100,10. Bez.

einer durch Anhalten des Athems erreichten Stufe im Joga Mâlav. P. 39,21. 24. fg. सज्ञातसंविदेश *das klare Bewusstsein* Râga-Tar. 6,105. चित्तालुप्त° 124. — 2) *Empfindung:* केवलां संविदं स्वस्थां मन्यन्ते मध्यमाः (d. i. माध्यमिकाः) Sarvadarçanas. 24,13. सुखदुःख° Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,14. निर्वाणसुख° Bhâg. P. 8,3,11. 9,7,25. नाशममात्यस्य प्रीतिसंविच्च (so ist zu lesen) सा ययौ *das Gefühl der Liebe* Râga-Tar. 6,271. — 1) 2) = प्रतिपद्, चित्, उपलब्धि, ज्ञान AK. 1,1,4,10. 3,4,26,93. H. an. 2,236. Med. d. 42. — 3) *Einverständniss:* यथा कृणुध संविदं सुभद्राम् RV. 10,10,11. *Vertrag, Verabredung, Uebereinkunft;* = प्रतिज्ञा, संगर, समय, क्रियाकार, संकेत, समाधि AK. 1,1,4,16. 3,4,26,93. 25, 131. 25,163. H. 278. H. an. Med. Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 12,35. संविदा देयम् Taitt. Up. 1,11,3. MBh. 5,3288. Kathâs. 30,85. Râga-Tar. 3,208. मन्त्रि° *mit* Kathâs. 32,16. कर्तव्य° *in Betreff* 4,40. दूरागमन° 102,31. कोश° Râga-Tar. 6,228. संविदं कृ *sich verabreden, übereinkommen, ein Uebereinkommen treffen mit* (gen., instr., instr. mit सह) M. 8,219. MBh. 1,1223. यवतर्तुं मक्षीम् 2309. 5,3806. 14,241. R. 1,17,9 (16,9 Gorr.). R. Gorr. 2,111,32. Hâsy. (II) 5375, v. l. Kathâs. 27,193. 29,85. 39,24. 40,69. 57,101. 71,85. कार्याय 73,2. 102,32. 123,193. अपकाराय 256. Bhâg. P. 8,6,32. अकृत्वा कालसंविदम् *in Betreff des Zeitpunktes* MBh. 3,299. कर्तव्यसंविदं कृत्वा Kathâs. 16,6. 24,89. 71,155. 73,216. 124,178. कार्य° 27,197. कृतागमन° 44,188. यात्रा° 59,71. स्थित° adj. so v. a. *der Verabredung treu* 16,96. 20,207. 32,10. 63,159. संविदं स्थापय् *eine Verabredung treffen, ein Uebereinkommen schliessen* 10, 106. 32,6. 49,102. विधा dass. 31,79. 46,127 (wohl verdorben, es wäre denn, dass man संविद् als adj. *mit einer Sache vertraut* auffasste). 60, 155. संविदं लङ्घय् *einen Vertrag u. s. w. brechen* Jâtâ. 2,187. संविदस्य व्यतिक्रमः *Bruch eines Vertrags* M. 8,5. संविद्व्यतिक्रम Verz. d. Oxf. H. 263,*a*,23. स° adj. *mit dem man sich verabredet hat* Kathâs. 57,109. — 4) *ein Stelldichein:* रक्षसि Bhâg. P. 10,31,10 (pl.). 17. — 5) *Plan, Anschlag:* घाताय संविदम् Râga-Tar. 4,353. निशिकाय युक्ता कांचित्तु संविदम् 412. कृत्वा संक्रान्तसंविदम् । सखीम् 128. पूर्णायां संविदि 553. 576. 615. — 6) *Unterredung, Gespräch* AK. 3,4,26,93. H. an. Med. MBh. 3, 1639 = 1719. ततस्ते पुरुषव्याघ्रा गत्वा स्त्रीभिस्तु संविदम् 2, 2025. कुर्वाणा तेन संविदम् 4,698. 7,3143. 12,5037. Mârk. P. 81,28. सप्राप्तवन्कश्चित्कांचित्संविदं ज्ञातु केनचित् MBh. 10,732. नालभत्संविदं क्वचित् Hâsy. 1611. चक्रतुः कुशलप्रश्नसंविदम् MBh. 1,7327. 12,7225. समेत्य तान् — तव दास्यामि संविदम् *so v. a. Nachricht geben* 7,3145. — 7) *Herkommen, Sitte;* = आचार H. an. Med. Vaij. गोत्र° Çiç. 12,35. — 8) *Name* AK. 3,4,26,93. H. an. Med. Vaij. गोत्र° Çiç. 12, 35. — 9) *Kampf* AK. Vaij. — 10) = लेखन H. an. Med. — 11) *Hanf* Wilson ohne Angabe einer Aut. — Vgl. न°.

2. संविद् (3. विद् + सम्) f. *Erwerb, Besitz:* यद्यास्मुत्तरो अन्यर्ष्मा उत संविदः AV. 3,5,3. 9,6,26. देवतास्य एव यज्ञे संविदं दधाति TS. 7,2,8,7. का स्वित्तत्र यजमानस्य संवित् Vâjas. 10,1.

संविद् 1) in यथासंविदं adj. (3. यथा + 1. संविद्) *bewusstlos* Çat. Br. 12, 3,2,11. — 2) = संविद् *Verabredung, Uebereinkunft:* त्वया तु पार्थेन कृते च संविदे प्रजाः शिवं प्राप्नुयुरिच्छया तव MBh. 8,4512. — घात° (?) Kir. Nirn. 11,26.

संविग्न n. = 2. संविद् *Besitz:* वशायाः AV. 12,4,4.

संविध् = संविधा. वाल्मीकिर्भगवान्कर्ता प्राप्तो यज्ञसंविधम् *wird Vorkehrungen treffen* R. 7,94,24 (der Comm. lässt °संविधम् fälschlich von प्राप्तो abhängen und erklärt es durch संविधम्; auch erwähnt er eine Lesart °संविदम्). संविधे (सम्यग्विधत्यनया तां यात्रादिसंपत्तिम् Nîlak.) चक्रे लङ्कायां शास्त्रनिर्मिताम् MBh. 3,16324 nach der Lesart der ed. Bomb. (संविधिं ed. Calc.). An beiden Stellen könnte man संविधाम् vermuthen.

संविधा (1. धा mit सं) f. 1) *Anordnung, Vorkehrung, Veranstaltung, Einrichtung:* दृष्ट्वा वेश्मसु (so zu trennen) संविधाम् R. Gorr. 2,100,25. (तम्) उपाचरत्कृत्रिमसंविधाभिः Raghu. 14,17. मङ्गलसंविधाभिः 7,16. — 2) *Lebensweise:* वन्या Raghu. 1,94.

संविधातर् (wie eben) nom. sg. *Anordner, Bestimmer* d. i. *Schöpfer, Gott* MBh. 2,2212.

संविधातव्य (wie eben) adj. *zu veranstalten, zu bewerkstelligen, zu thun* MBh. 1,1619. 4,2126. Hariv. 10350. n. impers. *zu verfahren* Spr. (II) 4593.

संविधान n. = संविधा 1) Hariv. 10430. कर्मणाम् R. 5,93,40. 6,13, 11. घाशौचस्य° Suçr. 2,323,8. वैवाहिके: कौतुकसंविधानैः Kumâras. 7,2. Mâlatîm. 34,11. Daçak. 1,14. 3,27. पार्ष्णिग्राह° Kull. zu M. 7,184. संविधानं कृ MBh. 11,228. Hariv. 8711. fg. Suçr. 2,371,8. Kull. zu M. 7,180. Kathâs. 103,216. रचितमङ्गल° 35,160. संविधानं च विहितम् MBh. 7,2672. — Hariv. 8449 liest die neuere Ausg. संनिधान.

संविधानक (von संविधान) n. *eine absonderliche Art des Verfahrens* Uttarar. 68,9 (87,11).

संविधानवत् (wie eben) adj. *richtig verfahrend* Suçr. 2,64,11.

संविधि m. = संविधा. प्रभोरेषैव (st. एष एव nach Nîlak.) संविधिः (wohl संविधा zu lesen) MBh. 6,244. यज्ञ° 12,9227. Hariv. 3872. पुरश्चरण° Kathâs. 115,8. वेश्म° (d. i. वेश्मनि) R. 2,91,30. संविधिं कृ MBh. 3,16221 (entweder शास्त्रनिर्मिताम् oder संविधौ zu lesen; vgl. unter संविध्). ततो ऽतिमानुषं सर्वं चक्रे यज्ञस्य संविधिम् 14,214. कृत° adj. Kathâs. 109,81. विहितानेक° adj. 115,53. इतिकर्तव्यतामात्रमाज्ञापयते कविबुद्धयः । यज्ञस्य इव भूतेभ्यो लोकसंविधयस्त्रयः MBh. 1,648. घाध्यात्मादिभूतादिदैवानां सम्यग्विधयो रचनाः Nîlak. — संविधि MBh. 3,1320 fehlerhaft für संनिधि, wie die ed. Bomb. liest.

संविधेय adj. = संविधातव्य. संविधेयं स्थितं मम Hariv. 8393. न खलु योषित्संगमः संविधेयः Spr. (II) 6319.

संविन्मय (von 1. संविद् adj. *aus Erkenntniss bestehend:* सत्संविन्मय so v. a. सच्चिन्मय Nrs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,164.

संविभक्तर् (von भज् mit सं) nom. sg. *mit Andern theilend, Andere bedenkend* MBh. 3,13788. 15393. 12,2868. सर्वेषाम् 2900.

संविभक्तव्य (wie eben) adj. *zu vertheilen unter* (dat.) Kull. zu M. 7,97.

संविभज्य (wie eben) adj. *mit dem man Etwas theilen muss, zu bedenken* MBh. 12,2915. auch 2879 hat die ed. Bomb. Ausg. so st. संविभाज्य.

संविभाग (wie eben) m. 1) *das Theilen mit Andern, das Zukommenlassen eines Antheils* Âpast. 2,9,10. MBh. 3,13886. 4,545. 12,625. Spr. (II) 5921. संविभागेन कृत्वा *dadurch, dass man eine Vertheilung ver-*

unstatthaft, MBh. 4,982. °मनस् 547. °रुचिता Sucr. 1,312,13. °रत Mâlav. P. 47,30. °शील Daçak. 140,7. 8. कृत° adj. Kathâs. 56,417. विक्लिष्टादान° Râja-Tar. 3,67. संविभागो हि भूतानां (subj.) सर्वेषामेव दृश्यते MBh. 3,99. संविभागश्च भूतेभ्यः कर्तव्यः M. 4,32. प्राणिभ्यो ऽन्नादिनापि Kull. zu d. St. सर्वभूतेभ्यो भागशः MBh. 13,3061. भृत्येषु Spr. (II) 1669. 3310, v. l. रत्नानाम् *Vertheilen der* R. Gorr. 1,4,132. यज्ञाद्यादेर्भूतेभ्यः Bhâg. P. 7,11,10. द्रव्य° Daçak. 70,2. ये: प्रियायाः कृत इव लोचनकान्ति-संविभागः Çâk. 36,10. बालाप° *das Theilnehmenlassen an* Mâlatîm. 128, 13. सपत्य° *das Beschenken mit* MBh. 1,4849. — 2) *Antheil:* संविभागं प्रयच्छ मे MBh. 3,8598. तपसः संविभागेन भवत्तमपि योक्ष्यते 5,3914. Kathâs. 29,140. 114,113.

संविभागिता (von संविभागिन्) f. *die Tugend mit Andern zu theilen* MBh. 12,10883.

संविभागित्व (wie eben) n. dass.: लुब्धस्यासंविभागित्वात् Spr. (II) 5861.

संविभागिन् (wie eben und von संविभाग) adj. 1) *mit Andern zu theilen pflegend* MBh. 7,2758. 12,2534. Harîv. 7430. R. 7,23,4,32. 50,2, 44. Spr. (II) 309. 4863. बालानाम् MBh. 13,7337. स्व° 12,6030. Spr. (II) 744. — 2) *einen Antheil erhaltend:* यस्मदुपार्जितस्य वित्तस्य Pañcat. 213, 24.

संविभाज्य MBh. 12,2879 fehlerhaft für संविभज्य.

संविभाव्य (vom caus. von 1. भू mit संवि) adj. *wahrzunehmen, zu erkennen* Bhâg. P. 3,33,8.

संविमर्द (von मर्द् mit संवि) m. *ein Kampf auf Leben und Tod* MBh. 6,2787. मम शक्तिरियोद्यैव R. 6,36,22.

संविवर्धयिषु (vom desid. des caus. von 1. वर्ध् mit सम्) adj. *gedeihen zu machen —, zu vermehren begehrend:* प्रजाः Harîv. 122.

संविवादिन्, समविवादिता Kâm. Nîtis. 4,6 fehlerhaft für सविसंवादिता, wie der Comm. liest.

संविषा f. *eine best. Pflanze*, = अतिविषा Çabdak. im ÇKDa.

संविष्कार Harîv. 8721. die neuere Ausgabe und Nîlak. lesen सव्य कृति च प्रियः st. संविष्कारो कृतिप्रियः.

संवीक्षण (von ईक्ष् mit संवि) n. *das Suchen, Nachforschen* AK. 3,3,30.

संवीत s. u. 1. व्या mit सम्.

संवुवूर्षु (vom desid. von 1. वृ mit सम्) adj. *zu verbergen beabsichtigend:* स्वमाकूतम् Bhatt. 9,26.

संवृक्तधृतु adj. *der den Starken an sich reisst, — bemeistert* RV. 2,48,2.

संवृक्त (von वृज् mit सम्) adj. *an sich reissend* RV. 2,12,3. विष: VS. 38,22.

1. संवर्त् (von 1. वृ mit सम्) 1) adj. *bedeckend* TS. 4,4,4,3. — 2) f. etwa *das Zudecken:* पुरा संवर्तः AV. 18,3,30.

2. संवर्त् (von वर्त् mit सम्) f. *das Beschreiten, Herankommen* AV. 8,6,4.

संवृत 1) adj. s. u. 1. वृ mit सम्. In der Bed. *geschlossen:* कण्ठ TS. Pâr. 2,4. कर्ण 27. Weber, Prâtiçâkh. 107. स्वरभक्ति Comm. zu TS. Pâr. 21,15. Davon °ता f. *das Geschlossensein:* गलविवरस्य zu 22,9. — 2) m. ein N. Varuṇa's H. ç. 38; vgl. संवर्त.

संवृतमत्र adj. *der seine Berathungen —, seine Pläne geheim hält;* davon nom. abstr. °ता f. Kâm. Nîtis. 8,9.

संवृति (von 1. वृ mit सम्) f. 1) *Verschluss:* योनि° (vgl. das fehlerhafte योनिसंवृत्ति oben nach Wilson) Sucr. 1,120,12. कोशसंवृतिं कृ *den Kelch (die Schatzkammer) schliessen* Spr. (II) 4286. — 2) *Verhüllung, Verbergung, Geheimhaltung* Voc. 8,128. Sarvadarçanas. 146. 17. Kâm. 10,44. Spr. (II) 4472. — 3) *Verstellung, Heuchelei* Spr. (II) 1676. — 4) über die Bed. des Wortes bei den Buddhisten s. Wassiljew 293. fgg. 323. 325. fg.

संवृत्त 1) adj. s. u. वर्त् mit सम्. — 2) m. *a*) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 5,3630. — *b*) ein N. Varuṇa's (vgl. संवर्त) Çabdam. im ÇKDa.

संवृत्ति (von वर्त् mit सम्) f. 1) etwa *Erfüllung*, personif. MBh. 2,459. — 2) wohl fehlerhaft für सद्वृत्ति R. Gorr. 2,109,31. Kathâs. 56,413. — 3) fehlerhaft für संवृति in योनि°.

संवृद्धि (von 1. वर्ध् mit सम्) f. *Wachsthum:* शरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूतं संवृद्ध्युपेतं (so zu lesen) निरये Maitrâyaṇ. 3,4.

संवेग (von 1. विज् mit सम्) m. 1) *eine heftige Gemüthsaufregung* AK. 1,1,2,34. H. 322. Hall. 4,27. MBh. 2,2505. तीव्र° Kathâs. 74,132. Jogas. 1,21 (adj.). कालज्ञीर्ण° adj. (mit भर्ता zu verbinden) Kathâs. 84, 66. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,15. मनोभिः सत्संवेगैः (so zu schreiben) MBh. 5,5878. — 2) *Heftigkeit, Gewalt, hoher Grad:* धृतिदुःख° Uttarâdh. 38, 6 (51,14). 74,4 (95,3). तीव्रसंवेगो वायवम्: 26,12 (ed. Cowell). शम° Râja-Tar. 4,390.

संवेजन (wie eben) n. *das Erschrecken* (intrans. und trans.) रोम° *das Sträuben der Haare* Sucr. 1,155,18. नेत्र° (an einer Klystirspritze) so v. a. *Anstoss* (das Klystir *erschreckt* gleichsam den वायु) 2,203,3.

संवेद (von 1. विद् mit सम्) m. *Empfindung* AK. 3,3,6. Harîv. 11830.

संवेदन (von 1. विद् simpl. und caus. mit सम्) n. 1) *das Erkennen* MBh. 3,1675. Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,32. 36. स्व° Wassiljew 295. 310. fg. 323. 332. — 2) *das Bewusstwerden, Empfinden* Sin. D. 53. दुःख° Uttarâdh. 22,9 (30,1). Sarvadarçanas. 22,14. 103,16. — 3) *das Melden, Verkünden, Zwischenthun:* उत्सवाधिगमे राज्ञां संवेदनमिव व्यधुः Kathâs. 103,168. Çiçup. Saṁh. 1,2,5. — Vgl. नामा°.

संवेद्य (wie eben) 1) adj. *a*) *kennen zu lernen, zu erkennen:* अशेषशास्त्र° aus Verz. d. Oxf. H. 163,*b*, No. 339. सर्व° *zu erkennen —, zu empfinden*, von, *verständlich für* Râja-Tar. 1,5. सर्वज्ञान° Sin. D. 15,17. सहृदय° 106,18. 112,10. स्व° Râja-Tar. 5,366. Daçak. 65,9. 10. Pañcat. 4,4,5. — *b*) *mitzutheilen:* यमर्थो न संवेद्यो भोगे MBh. 3,2758. — 2) m. *Zusammenfluss zweier Flüsse* Hall. 3,47. — 3) n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8143; vgl. कन्या°.

संवेद्यता (von संवेद्य) f. *Verständlichkeit für* (instr.) Sin. D. 119,8.

संवेद्यत्व n. dass. Sin. D. 54.

संवेश (von 1. विश् mit सम्) m. 1) *Eintritt, Anschluss* TS. 3,1,2,1. 7,5,8,1. TBr. 1,4,6,4. — 2) *das Niederlegen, Schlafen* AK. 1,1,2,36. H. 313. an. 3,728. Med. ç. 29. संवेशाय विशां पतिम् — विसस्रसे Raghu. 1,93. सुख° adj. *süss schlafend* MBh. 12,8462. — 3) *quidam cubandi modus* Med. — 4) *Schlafgemach* (= उपभोगस्थान Comm.) Bhâg. P. 3, 23,21. — 5) *Sitz, Bank* H. an.

संवेशक (vom caus. von 1. विश् mit सम्) nom. ag. s. गृह°.

संवेशन (von 1. विश् simpl. und caus. mit सम्) 1) adj. (f. ई) zum *Lie-*

gen veranlassend TBr. 3,10,9,7. die Nacht, Einschiebung nach ṚV. 10, 127. — 3) n. gaṇa सेतापादि zu P. 5,1,101. gaṇa घनुप्रवचनादि zu 111. a) *das Niederliegen, Schlafen:* संवेशने तन्वः शार्करेधि ṚV. 10,36,1. Liṭ. 3,3,11. Gobh. 4,9,11. Kiç. zu P. 1,2,37 (Gegens. उत्थान). स्थण्डिल° Baudh. P. 3,9,11. — b) *geschlechtliches Beiwohnen, das Beschlafen* Taitt. 3,2,19. H. 537. °प्रकाराः Verz. d. Oxf. H. 215,b,28. वाजाता° Liṭ. Çr. 20,3,5. — c) *Sitz, Bank* Med. kh. 3. — Vgl. सांवेशनिक.

संवेशनीय adj. = संवेशनं प्रयोजनमस्य gaṇa घनुप्रवचनादि zu P. 5,1,111.

संवेशपति m. *Herr des Niederliegens, — Schlafs, — Beischlafs:* Agni Âçv. Çr. 2,4,10. VS. 2,20.

संवेशिन् (von 1. विश् mit सम्) adj. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. sum *Schlafs liegend:* यवः° Liṭ. 10,18,11. — Vgl. सांवेश्य.

संवेश्य (wie oben) adj. *zu betreten, zu besitzen:* राष्ट्र AV. 8,1,1.

संवेष (von 1. विष् mit सम्) m. nom. act. gaṇa सेतापादि zu P. 5,1, 101. — Vgl. सांवेषिक.

संवेष्ट (von वेष्ट् mit सम्) n. 1) *das Gehülltsein in:* वल्कलाजिन° MBu. 3,13445. — 2) *Hülle:* शार्दूलचर्म° adj. *gehüllt in* Harîv. 9286.

संवेष्टन (wie oben) n. nom. act. Daitup. 28,53 (als Bed. von गुद).

संवेष्टृ nom. ag. von 1. वेष्ट् mit सम् P. 4,3,120, Vârtt. 4.

संव्यवस्य (von सा mit संव्यव) adj. *zu entscheiden:* तादृशो ऽयमनुप्रश्नः संव्यवस्यः त्वया धिया MBu. 12,4734.

संव्यवहरण (von हृ mit संव्यव) n. *das Zurechtkommen —, Sichverständigen im gewöhnlichen Leben* Kull. zu M. 10,4.

संव्यवहार (wie oben) m. 1) *Verkehr:* पतितैः Âpast. 1,21,5. Spr. (II) 4517. Kull. zu M. 11,196. — 2) *Beschäftigung, das Sichabgeben mit Etwas, Betreiben:* द्यूत° adj. MBu. 13,1641 (द्यूत° ed Bomb. würde zu 1) gehören). Mânav. P. 57,9. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 82. — 3) *das Zurechtkommen —, Sichverständigen im gewöhnlichen Leben* Gaut. Sâmayâbh. 71. Mârk. P. 26,23. Kull. zu M. 2,58. 3,21. Schol. zu Âçv. Çr. 2,6,4. 10,13. 3,2,11. zu TS. Prât. 1,14. 22,3. लोक° M. 8,131. Mârk. P. 44,26. Sin. D. 252,12. — 4) *ein allgemein verständlicher Ausdruck aus dem gewöhnlichen Leben:* मानुषमिति लौकिकः संव्यवहारः Çaṅk. zu Taitt. Up. S. 32. Schol. zu Liṭ. 1,3,4. — Vgl. व्यवहार und सांव्यवहारिक.

संव्यवहारवत् (von संव्यवहार) adj. *der mit der Welt verkehrt,* m. *Geschäftsmann* Spr. (II) 4487.

संव्यवहारिक s. सां°.

संव्यवहार्य (von हृ mit संव्यव) adj. न° *mit dem man nicht verkehren darf;* davon °त्व n. nom. abstr. Kâm. Nîtis. 14,64.

संव्याध (von व्यध् mit सम्) m. nom. act. न° *das nicht-aus-der-Lage-Kommen* Pâraṅk. Bh. 10,5,6. 14,8,4. 15,2,6. 25,11,4.

संव्यायाम (von व्यध् mit सम्) m. *Kampf* Çat. Br. 1,2,4,2.

संव्यान (von 1. व्या mit सम्) n. *Tuch, Mantel;* = उत्तरीय AK. 2,6, 3,19. H. 671. Halâj. 2,391. = क्षौम H. an. 3,430. Med. n. 151. = वस्त्र H. an. = पंशुक Med. कुशलसंव्यानसंयमव्यपदेशतः Sin. 59,10 (*covering or fastening her hair* Ball.). Kir. 4,38.

संव्याय (wie oben) m. *Decke, Tuch* Çiṅkh. Br. 1,5. Ça. 2,5,28.

संव्याप्त Verz. d. Oxf. H. 48,b,2 wohl fehlerhaft.

संव्यूह (von 1. ऊह् mit सम्) m. *Vertheilung, Anordnung* Bhâg. P. 3,7,27.

संव्यूहन (wie oben) n. *das Zusammenschieben, Beiseiteräumen* Vishṇu. 1,25,41.

संव्यूहिम (von संव्यूह) adj. etwa *vertheilend* Suçr. 1,33,7.

संव्रश्चम् s. u. व्रश्च् mit सम्.

संव्रात vielleicht = व्रात *Menge* Pâṅkat. 2,10,16.

संव्रय (von व्री mit सम्) m. nom. act. न° *das Nichtzusammensinken* TBr. 1,3,4,2.

संशकला indecl. in Verbindung mit कर् u. s. w. gaṇa ऊर्णादि zu P. 1,4,61. — Vgl. शकला.

संशप्तक (von संशप्त und dieses partic. von शप् mit सम्) m. pl. *Eidgenossen,* im MBh. Bez. von Kriegern (Trigarta mit seinen Brüdern), *die feierlich geschworen hatten* Arǵuna zu tödten, aber selbst um's Leben gebracht wurden, AK. 2,8,2,66. H. 795. MBh. 1,157. 338. 530. 535. 3,15173. 15187. 5,2201. 2248. 7,711. 723. 14,1837. 2172. °वधपर्वन् MBh. 7, Adjhâja 17. fgg. in der ed. Calc. häufig fälschlich संसप्तक gedr.

संशब्द (सम् + शब्द) m. 1) *Anruf, ein herausfordernder Ruf:* धन्वी-ऽन्यं वीरसंशब्दो (so ed. Bomb. st. बाण° der ed. Calc.) नाभ्यपत भैः कृतः MBh. 6,1886. कृ संशब्दम् R. 4,13,40. 15,2. धृति° 4. — 2) *Rede* Baudh. P. 5,3,6. — 3) = संशब्दन *das Erwähnen* Vop. 17,1. — Vgl. शब्दय् mit सम्.

संशब्दन (von शब्दय् mit सम्) n. *das Erwähnen* Daitup. 32,110. प्रागव्ययीभावसंशब्दनाद्कुत्वोत्वाधिकारः Schol. zu P. 6,2,106.

संशब्द्य (wie oben) adj. न° *nicht verdienend erwähnt, — besprochen zu werden* MBh. 3,10695.

संशम (von 1. शम् mit सम्) m. *Beruhigung, Befriedigung* Çat. Br. 2, 4,3,12. आत्मन: MBh. 5,2845.

संशमन (vom caus. von 1. शम् mit सम्) 1) adj. (f. ई) *beruhigend, niederschlagend* (die aufgeregten humores) Suçr. 1,135,20. वात° 145,19. क्रिया Kâraka 8,6. Vgl. पाप°. — 2) n. a) *Mittel zur Beruhigung u. s. w.* Suçr. 1,145,15. 146,11. 2,51,6. Wise 137. — b) *das zur Ruhe-Bringen:* रिपोः Spr. (II) 5895.

संशमनीय (von संशमन) adj. *von den Mitteln zur Beruhigung u. s. w. handelnd, sie betreffend:* संशोधन° (das suff. gehört zu beiden Wörtern) Suçr. 1,144,11. वास्तुसंशमनीयानि (von वास्तुसंशमन) मङ्गलानि R. 2,56,27.

संशय (von 2. शी mit सम्) m. am Ende eines adj. comp. f. श्रा. 1) *Zweifel, Zweifelhaftigkeit, Ungewissheit* (Gegens. निर्णय) AK. 1,1,4,12. 3,4,9,10. 23,164. H. 1375. Halâj. 4,6. definirt Suçr. 2,559,18. Sin. D. 440. Tarkas. 52. Bodhiṅ. 129. Sarvadarçanas. 113,14. 163,19. fg. — Âçv. Çr. 1,3,5. 3,12,11. चक्राम् 10,6,18. M. 8,253. इति चेत्संशयो भवेत् 9,122. MBh. 3,2344. Kap. 2,2,17. 10,1,2. इति संशये Çiṅkh. 125. Comm. zu AV. Prât. 4,12. unter den 16 पदार्थ (bei Gotama) Mahâbh. in Ind. St. 1,18,5 v. u. Colebr. Misc. Ess. 1,291. in der Pûrvamîmâṃsâ

des 2te Glied in einem Adhikaraṇa Sarvadarçanas. 122,21. — त्रुपे मे संशयस्त्वेकः *in Bezug auf* MBh. 3,2959. सीतायाः प्राणधारणे R. 3,63,6. मम पृष्ठाधिरोहणे *Bedenken* 5,35,29. त्वत्सकाशेषु रूक्षतेषु 69,6. मनसो ऽस्तित्वं स्वत्वं च प्रति Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 285. Bhâg. P. 7,1,3. in comp. mit dem Begriffe, in Bezug auf welchen ein *Zweifel* obwaltet: धादिसंशयात् VS. Paṁr. 3,38. धर्म° Riéa-Tan. 1,81. 4,33. 52. सीता° R. 5,51 in der Unterschr. लोक° *die Zweifel der Welt* (subj.) Bhâg. P. 6, 3,3. — भूयः परिपप्रच्छ संशयम् (so v. a. *zweifelhafte Sache*) R. 1,27,1 (28,1 Gorr.). तांश्च पृच्छसि संशयान् 2,106,3. संशयापन्नमानसं AK. 3,1,5. धर्मसंशयमापन्नः MBh. 3,7080. धनर्थसंशयान्विचार्य Daçak. 62,6. धर्मसंशयनिर्णय M. 12,112. संशयं छिद् R. 2,67,38. R. Gorr. 2,23,24. 4,16,21. Spr. 3280. संशयोच्छेद् Comm. zu AV. Paṁr. 4,106. संछिन्नः संशयो मत्तम् Bhâg. P. 3,7,15. संशयं त्रय् 6,3,2. नुद् LA. (III) 92,2. मुक्त° adj. subj. von *allen Zweifeln befreit* MBh. 3,1244. obj. *keinem Zweifel unterliegend* Pat. zu P. 1,1,29. धस्त° adj. subj. Kathâs. 95,58. निरस्त° desgl. 34, 152. शास्त्रो ऽस्य संशयः Riéa-Tan. 3,192. — नास्ति मे संशयः am Anfange eines Verses ohne Einfluss auf die Construction R. 3,61,19. न संशयो मे ऽस्ति mitten in den Satz eingeschoben 4,9,107. नास्त्यत्र संशयः am Ende eines Verses Bhag. 8,3. नास्ति संशयः desgl. Spr. 3249 (v. l. नात्र). नात्र संशयः desgl. M. 2,87. Bhag. 10,7. MBh. 3,2788. Ver. in LA. (III) 26,19. überaus häufig bloss न संशयः (= धसंशयम् *ohne Zweifel*) Bhag. 12,8. MBh. 1,6161. 6187. 3,2833. 2712. 3052. 15669. R. 1,21,11. 53,14. 2,27,15. 61,9. 5,29,30. 7,40,17. Spr. (II) 5872. 6296. Vaṁs. Bṛh. 5,9. Kathâs. 33,76. Weber, Rimay. Up. 291. 338. LA. (III) 87,22. ebenso नहि संशयः Spr. (II) 2930. in derselben Bed. धसंशयः (könnte auch fehlerhaft für धसंशयम् sein) Bhag. 8,7. 18,68. R. 3,23,25. धसंशयेन *ohne Zweifel, ohne Bedenken* Vaṁs. Bṛh. S. 26,12. धसंशय adj. *keine Zweifel habend:* बुद्धि R. 4,54,2. स° adj. subj. *im Zweifel stehend:* तथ्यं नेति समंशया MBh. 12,11860. 11867. Kathâs. 20,105. obj. *dem Zweifel unterliegend, zweifelhaft:* धर्म R. 2,106,19. 5,1,81. Kathâs. 29, 140. Vorr. d. Oxf. H. 204,a,22. — 2) *Gefahr* MBh. 1,608 (दर्शितः mit der ed. Bomb. zu lesen). Spr. (II) 3997. निष्ठसं संशये R. 3,41,3. न संशयमध्यापद्येत Âçv. Gṛhj. 3,9,6. प्रपद्येत Jiév. 1,122. परमं गतः R. 3, 48,1. 4,36,15. धागताः 53,26. धापन्नः 3,51,12. धारूढा Spr. (II) 3475. Çiç. 92,6. प्राणा MBh. 3,16827. मया प्राप्तः संशयः R. 4,9,29. जीविते 6, 101,15. जीवितस्य 3,30,6. Brahma-P. in LA. (III) 50,12. दारार्थी जीवितस्य च R. 4,41,78. नान्यत्प्रपश्यामि किंचिद्वीर्यस्य (doch wohl धन्यं und कंचिद् zu lesen) संशयम्। स्ते रामनियातातु 3,43,39. प्राणानां संशयावहः MBh. 2,1126. जीवित° R. 3,44,31. Spr. (II) 3080. धर्थप्राणविनाशसंशयकरी 385. — Vgl. स° (धसंशयम् auch Bhag. 6,35. 7,1. R. 3,63,6. Spr. (II) 692. 1223. Naiṣ. 22,44), निः°, प्राण° (auch Kathâs. 21,30. Paṁkat. 192,9), वि°, सांशयिक.

संशयच्छेद् m. *Lösung eines Zweifels, — einer zweifelhaften Sache;* davon संशयच्छेद्य adj. *solches betreffend:* व्यवहाराः Rasn. 17,39.

संशयपदतारकस्य n. Titel einer Schrift Hall 53.

संशयवादार्थ m. desgl. ebend. 47.

संशयसम m. (sc. प्रतिषेध) Bez. *eines der unrichtigen Gegenargumente* (der 24 Gâti; s. u. जाति 8) in den Nachträgen) Nyâyas. 5,1,1. 14. Sarvadarçanas. 114,11.

संशयापत्तेय (संशय + धा°) m. eine best. Redefigur: *Entfernung eines ausgesprochenen Zweifels* Kuval. 2,164. Beispiel 168.

संशयात्मक adj. *dem Zweifel unterworfen, zweifelhaft:* उपाय Spr. (II) 1303.

संशयात्मन् adj. *dem Zweifel sich hingebend, unschlüssig* Sarvadarçanas. 130,7.

संशयानुमितिरहस्य n. Titel einer Schrift Hall 51.

संशयालु (von संशय) adj. *skeptisch, Zweifler* H. 445.

संशयित s. u. 2. शी mit सम्. Mit passiver Bed. auch Kir. Çi. 24,1,23.

संशयितृ (von 2. शी mit सम्) nom. ag. *Zweifler* H. 445.

संशयोपमा (संशय + उ°) f. *eine in der Form eines Zweifels ausgesprochene Vergleichung:* किं पद्ममर्धासालि किं ते लोलेक्षणं मुखम्। मम दोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा॥ Kuval. 2,26.

संशर्ई (von 1. शृ mit सम्) m. *das Zusammenbrechen* VS. 30,17. *das Zerreissen:* स्तोमानाम् TBr. 1,8,3,1.

संशरण n. 1) etwa *das Zufluchtsuchen bei Jmd* (von 2. शृ mit सम्): राज्ञः संशरणं धाम (रा° सेरणं धर्मः der Comm.) Kir. Nitis. 6,4. — 2) *Beginn eines Kampfes, Angriff* Çabdam. im ÇKDr. fehlerhaft für संसरण.

संशान (von 2. शा mit सम्) n. N. best. Sâman Çat. Br. 12,8,3,26. Liṭ. 5,4,16. इन्द्रस्य Ind. St. 3,241,a.

संशान्ति (von 2. शम् mit सम्) f. *das Erlöschen:* मदनविषानलं संशान्तिं नयति Vaṁs. Bṛh. 24(22),7.

संशासन (von 1. शास् mit सम्) n. *Anweisung* Çiṁkn. Bh. 10,4.

संशित 1) adj. s. u. 2. शा mit सम्. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105; vgl. सांशित्य.

संशिति (von 2. शा mit सम्) f. *Schärfung:* इषे (gen.) Âit. Br. 1,26.

संशिशरिषु (vom desid. von 1. शृ mit सम्) adj. *zerreissen wollend* Nir. 6,31.

संशिशिन् (सम् + शिप्र) adj. (f. संशिशरी) *ein gemeinsames Kalb habend* (= एकशिप्रक Sây.) ṚV. 1,38,11. 9,61,14.

संशिक्षीषु (vom desid. von 1. शिक्ष् mit सम्) adj. *sich anzulehnen beabsichtigend:* धसम् Bhaṭṭ. 9,33.

संशिष् (शिस् = 1. शास् + सम्) f. *Aufforderung* AV. 11,8,27.

संशीत adj. so v. a. शीत *kalt* Çiṁkn. Saṁh. 3,1,31.

संशीलन (von शीलय् mit सम्) n. *das Ueben, fleissiges Anwenden:* पुनः पुनः संशीलनमभ्यासः Sarvadarçanas. 59,15. *häufiger Verkehr mit* (gen.): गुणदोषावबाध्येते पुंसां संशीलनादुभे Spr. (II) 2116.

संशुद्धि (von शुध् mit सम्) f. *Reinheit* Rathâm. im ÇKDr. धाचार° MBh. 12,8778. सत्त्व° Bhag. 16,1. भाव° 17,16. Kir. Nitis. 2,31. in rituellem Sinne als Erklärung von निष्कृति Kull. zu M. 11,179 (pl.).

संशुष्क adj. = शुष्क *ausgetrocknet, trocken, dürr:* सागर MBh. 7,1944. R. Gorr. 2,71,9. शोणित 3,26,28. MBh. 3,15990. °सान्द्रमदलेख Mṛicch. 7,35. Baume Vaṁs. Bṛh. S. 53,120. Blätter Rv. 1,23. मही Mârk. P. 8,206. मांस Taitt. 3,3,270. *abgemagert* MBh. 13,4046. चरणौ Vaṁs. Bṛh. S. 61,2. °मांसवल्कलाणु adj. (मुनि) MBh. 1,1569. संशुष्कास्य *eingefallen* 7,1582.

संशोधन (vom caus. von शुध् mit सम् 1) adj. (f. ई) *reinigend, schlechte*

Säfte ableitend Suçr. 1,4,12. 132,18. 144,11. 2,10,5. वस्ति 202,9. — 2) n. a) *ein reinigendes Mittel* Suçr. 1,146,12. 2,161,19. — b) *das Reinigen* Ratnam. im ÇKDr. Suçr. 2,196,5. गोमयादिना आद्देश° Kull. zu M. 3,235.

संशोष (von 1. शुष् mit सम्) m. *das Trockenwerden, Eintrocknen:* सरितां चाम्बुसंशोषं दृष्ट्वा ग्रीष्मे Varāh. Bṛh. S. 46,87.

संशोषण (wie oben) n. dass.: समुद्रस्य MBh. 8,222. रसादीनाम् Suçr. 2,445,5. als eine Bed. von घास्कन्दन H. an. 4,161. Med. n. 168.

संशोषृ Uṇâdis. 3,85. gaṇa भृशादि zu P. 3,1,12. = कुत्सक Uôéval. — Vgl. संशत्.

संशाय् (von संशत्), °यते gaṇa भृशादि zu P. 3,1,12.

संश्रद्धा (सम् + श्रत् - धा) = श्रद्धा *Glauben haben:* संश्रद्धाय absol. Bhâg. P. 7,14,40.

संश्रय (von 1. श्रि mit सम्) m. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *Verbindung, Anschluss an:* यस्य न ज्ञायते शीलं न कुलं न च संश्रयः Spr. (II) 5375. Rāgat. 6,41. हिंसतां यात्ति संश्रयम् Spr. (II) 1263. pl. MBh. 13, 2229. in comp. mit der Ergänzung: राजसंश्रयवश्यानाम् R. 6,98,28. Spr. 3286. स्थान° Suçr. 1,82,3. तपसेति विना भार्यां कुभार्यासंश्रये ऽपि वा Mânav. P. 21,78. 77,10. एक° Spr. (II) 3941. विभीतकश्चाप्रशस्तः संवृतः कालिसंश्रयात् MBh. 3,2849. Spr. (II) 32. अन्योऽन्यसंश्रयात् 2975. 4762. 3657. Bhâg. P. 1,15,7. Çiç. D. 37. गर्वितो बलवांश्चापि नकुलो वरसंश्रयात् so v. a. in Folge von MBh. 5,393. दैवसंश्रयात् 1,3917. am Ende eines adj. comp. (= संश्रित): रक्षितं सैन्यं खरदूषणसंश्रयम् so v. a. verbunden mit R. 3,31,43. 32,1. राक्षसंश्रयाः Spr. (II) 6869. तत्संश्रया ये निधयः Mânav. P. 68,2. वनं वेणुसवह्निसंश्रयम् Bhâg. P. 3,1,21. व्यर्थाः कष्टसंश्रयाः Spr. (II) 605, v. l. Daçak. 2,19. 3,26. द्विसंश्रयां प्रीतिमवाप लक्ष्मीः Kumâras. 1,44. एकसंश्रयाः *zusammenhaltend* Spr. (II) 4404. — 2) *Anschluss an einen benachbarten Fürsten, ein Schutz- und Trutzbündniss* (eines der sechs politischen Mittel eines kriegführenden Fürsten) M. 7,160. fgg. 168. 176. Jâén. 1,346. Spr. (II) 6382. Pañcat. 12, 21. 149,2. 154,10. कथं बलवता शक्यः कर्तुं दुर्बलसंश्रयः R. 5,81,41. 83,14. — 3) *Zuflucht, Schutz, Zufluchtsstätte:* संश्रयाय प्राप्ते मित्ते Mṛicch. 17. संश्रयैक दुर्गिणाम् Kâm. Nîtis. 13,28. वार्ता वै लोकसंश्रयः 3,27. Mânav. P. 85,25. त्वं सदा संश्रयः शैल स्वर्गमार्गाभिकाङ्क्षिणाम् MBh. 3,1735. त्रैलोक्यस्य R. 2,41,6. 5,90,28. भीतस्य प्रादात्स संश्रयम् Râga-Tar. 6, 317. बन्धु° für R. 2,74,10. 5,86,22. Rāgat. 10,22. Çiç. 177. Bhâg. P. 3,33,26. am Ende eines adj. comp.: लब्ध° Râga-Tar. 6,218. विमुक्तसुत° *des vom Sohne kommenden Schutzes beraubt* R. 4,19,27. त्वत्पादसंश्रया मुनयः *unter dem Schutze deiner Füsse stehend* Bhâg. P. 1,1, 13. 3,21,37. — 4) *Wohnstätte, Aufenthaltsort:* शक्यो चिरमपि स्थातुं पुण्ये ऽस्मिन्मुनिसंश्रये R. 3,78,13. Râga-Tar. 6,300 (zu lesen °शैडाद्रिसंश्रयः). मया सो ऽविदितसंश्रयः Pañcat. 155,23. am Ende eines adj. comp. *seinen Wohnort irgendwo habend, sich aufhaltend* —, *sich befindend in, an:* ज्ञातिकुलैक° Spr. (II) 6704. पातालान्तर° Mânav. P. 21,29. पाताल° 132,37. भार्गाश्रम° 129,35. दुर्ग° Râga-Tar. 4,346. क्ष्मासे ज्ञलसंश्रयः MBh. 12,9291. उदक° *wachsend am* (Baum) 3,17249. गुरु° *beim Lehrer weilend* Kâm. Nîtis. 2,24. नौ° *stehend in* Rāgat. 16,57. प्रदेशसंश्रये 3,13. वेदिकाचैत्यसंश्रयाः *befindlich an* R. 5,15,13. — 5) *das Sichbestehen auf, das Betreffen;* am Ende eines adj. comp.: मनोरथः शशिमौलिसंश्रयः so v. a. *sich beziehend auf, betreffend* Kumâras. 5,66. विपुलां गिरम्) क्षितसंश्रयाम् MBh. 6,1959. रागसंश्रया (प्रवृत्ति) R. 3,60,36. स्वरो ऽग्निगुणसंश्रयः Kâraka 1,14. एकार्थसंश्रयमुभयोः प्रयोगं पश्यामः Mîlav. 16,19. पङ्क्तासु मेषाव्ययानसंश्रयासु Varāh. Bṛh. S. 86, 80. Buâr. Nîtiç. 34,76. Daçak. 2,35. — 6) *das Sichbegeben an einen Ort:* यत्र संश्रयार्थाय MBh. 3,8370. वनसंश्रयात् Mârk. P. 109,28.24 (wohl °संश्रयः zu lesen). स्वनीडसंश्रयं चक्रतुः Pañcat. 76,9. — 7) *das Sichhingeben, Gehen an Etwas, Greifen zu:* तस्य (धर्मस्य) संश्रयः साधुपूजकः Spr. (II) 2572. न दैवादुःसंश्रयात् so v. a. *mit Hilfe von, mittels* MBh. 13,334. दानसंश्रयात् Spr. (II) 2845. am Ende eines adj. comp.: सत्य° so v. a. *der Wahrheit ergeben* R. 3,56,9. धर्म° Bhâg. P. 4,9,22. — 8) *ein zu Etwas gehöriges Stück:* नाराचैः — विषाणालसंश्रयैः (so ed. Bomb.) so v. a. *Splitter davon* (= एकदेश Nîlak.) MBh. 7,1388. — 9) N. pr. eines Prajâpati R. ed. Bomb. 3,14,7. सुव्रत Gorr. 3,20,7.

संश्रयण (wie oben) n. *Verbindung, Anschluss an:* देव° MBh. 3,12506.

संश्रयणीय (wie oben) adj. *an den man sich schliessen kann, in dessen Dienst man sich begeben darf;* davon nom. abstr. °ता f. Kâm. Nîtis. 5,70.

संश्रयितव्य (wie oben) adj. *wohin man sich des Schutzes wegen begeben muss:* दुर्ग Spr. (II) 711 (Conj.).

संश्रयिन् (wie oben) adj. 1) *der sich unter Jmdes Schutz gestellt hat, in Jmdes Dienst getreten ist, Diener, Untergebener* Kâm. Nîtis. 11,29. — 2) am Ende eines comp. *wohnend* —, *stehend* —, *befindlich in, an:* नागार्जुनः षडर्हनसंश्रयी Râga-Tar. 1,173. मन्दुरासंश्रयिभिस्तुरंगैः Rāgat. 16,41. चतमालया । जराधवलकर्णायसंश्रयिण्या Kathâs. 25,15.

संश्रव 1) (von 1. श्रु mit सम्) a) *das Hören, Vernehmen:* प्रथमप्रियावचन° Milarâm. 48,17. संश्रवे धृतराष्ट्रस्य *so dass es Dhṛt. hören konnte* MBh. 15,65. विदूर° adj. *weit hörbar* R. 3,66,26. Vgl. सु°. — b) *Versprechen, Zusage* AK. 1,1,4,14. H. 278. Halâj. 4,30. सत्य° *eine feierliche Zusage* R. 3,14,21. — 2) für संश्रव.

संश्रवण (wie oben) n. 1) *das Hören, Vernehmen* MBh. 8,3041. शब्द° Suçr. 1,285,20. कर्ण° *das Bedenhören von einer Abgabe* Hariv. 13780. नायकगुणगण° Sarvadarçanas. 96,15. वृत्तिभेदसंश्रवणात् Kull. zu M. 10,27. — 2) *Bereich des Gehörs:* तेषां संश्रवणे वायुर्निषेदुर्विदुरादयः MBh. 15,515. संश्रवणे *so v. a. so dass man es hörte, laut* R. 2,79,16 (86,20 Gorr.). 5,30,1. R. 6,23,7. असंश्रवणे *so dass man es nicht hört* Âçv. Çr. 8,14,12.

1. संश्रवस् (wie oben) 1) n. संश्रवसे dat. als inf. *zum Hören, aus einem* Sâman Çat. Br. 12,8,2,26. Kâty. Çr. 19,5,3; vgl. Lâṭy. 5,4,19.

2. सैंश्रवस् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Sauvarkanasa TS. 1,7,2,1. संश्रवसः साम ind. St. 3,241,a.

संश्राव (von 1. श्रु mit सम्) m. *das Zuhören:* प्रभू° Kâuç. 141.

संश्रावम् absol. s. श्र°.

संश्रावयितृ (vom. caus. von 1. श्रु mit सम्) nom. ag. *Verkünder, Ausrufer* (der Namen der Ankommenden) so v. a. *Einführer, Thürsteher* (Comm.) Kâuç. Up. 2,1. Davon °तन् adj. *einen Thürsteher habend* ebend.

संश्राव्य (von 1. श्रु simpl. und caus. mit सम्) adj. 1) *hörbar:* प्रजापतितपोरसंश्राव्य (adv. घसंश्रावम् v. l.) स्वाध्यायो ऽध्येतव्यः *so dass es sein*

Çûdra oder ein Gefallener nicht hört VS. Prât. 8,34. — 2) *zu dessen Ohren man Etwas (acc.) gelangen lassen darf:* पुरुषं तत्र संभाव्यो भवता वसुधाधिपः R. Gorr. 2,50,15.

संभितव्य fehlerhaft für संभयितव्य Pañkat. 1,362; s. Spr. (II) 711.

संभुत 1) adj. s. u. 1. भू mit सम्. — 2) m. N. pr. eines Mannes P. 6, 2,148, Schol.

संभुत्य m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,254.

संभेषिण (von 1. भिष् mit सम्) m. etwa N. pr. oder Bez. *eines best. Ringkampfes des* Indra: विश्वत्संभेषिणो ऽजयत् AV. 8,5,14.

संभिष्य 2. भिष् mit सम्) adj. *zusammenhängend, verschlungen* Kâç. 39,6.

संभेष (von 2. भिष् mit सम्) m. 1) *Verbindung, Vereinigung, unmittelbare Berührung* Mân. j. Sâl. 5,49. यदा द्वावपि नेच्छेतां संभेषम् Kim. Nîtis. 11,26. यदि वायुमयो जीवः संभेषो यदि वा पुनः MBh. 12, 6886. Spr. (II) 2217, v. l. अघटितसंभेषा Pañkat. 203,4. तव तस्य च। संभेषं वा करिष्यामि MBh. 12,3922. पार्श्वयोः Vers. d. Oxf. H. 202,b,20. अपस्पिण्डादीनाम्, व्यञ्जनानाम् Ind. St. 4,267,1. Comm. zu TS. Prât. 2, 33. स्वराणाम् ebend. पाणिभिः MBh. 12,4831. वातेन 6887. रसा Wilson, Sânkhyak. S. 55. यमस्तस्मै संभेषमभ्येत्य Mârk. P. 37,15. इतरेतर° Vish. 1,3, 5. दैपत्योः प्राण° MBh. 12,9514. कृत्स्न° Harîv. 5833. भोगावाप्ति° Pañk. 81,15. यदङ्गसंभेषमितस्तव (इस partic.) देवस्य मानुषः Mârk. P. 24,17. चम्पक° Spr. (II) 2562. न लभेद्धर्मसंभेषम् so, v. a. *theilhaftig werden* MBh. 12,2561. स° Çañk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 93. Vish. Sañkara 122. — 2) *Umarmung* AK. 2,3,30. H. 1507. Mâlav. 54,10. परिरयक° Spr. (II) 1806. Kâdamb. 97. — 3) *Riemen, Band* MBh 14, 1226 nach der richtigen Lesart der ed. Bomb. st. संक्रोश der ed. Calc.

संभेषण (wie eben) n. 1) nom. act. vom simpl. als Bed. von लुह् Dhâtup. 28,87. = लय H. an. 2,331. — 2) nom. act. vom caus. *das Verbinden, Vereinigen:* संधि° Suçr. 1,48,6. — 3) *Band* Çiñkn. Bh. 6,12. एतदन्योऽन्यसंभेषणं पित्रोः Uttarar. 50,6 (65,6).

संभेषिन् adj. *verbindend* Çiñkn. Bh. 6,12.

संभेत् = संभेत् Subhûtikândra bei Udâyan. zu Upâdis. 2,65.

संभोगिन् (von भा mit सम्) adj. TS. Prât. 16,26. *schwellend:* उभयतः° TS. 2,6,8,4.

संभोल s. वि°.

संभक्ति (von भञ्ज् mit सम्) f. *Berührung, Contact:* उत्तमाधम° *mit* Spr. (II) 1180.

संभङ्ग (wie eben) m. *Zusammenhang, Verknüpfung:* भासो: Nir. 7,22. वत्ता° Lâṭy. 7,9,3.

संभङ्गिन् adj. *in Berührung kommend,* am Ende eines comp. Spr. (II) 6642, v. l.

संभद् (सद् mit सम्) P. 3,2,61. f. *consessus, Versammlung, Gemeine; ein versammelter Gerichtshof, der Hof eines Fürsten; Gesellschaft, Anwesenheit vieler Personen* AK. 2,7,14. 3,4,22,140. H. 481. पितुमती *Mahl* ṚV. 4,1,3. यमुन्वाम् 8,14,15. 45,23. सप्त 81,10. VS. 26, 1. अस्याः सर्वस्याः संसदो मा भगिनीं कृणु AV. 7,12,3. TS. 4,7,15,4. दैवी 7,4,8,1. 2. Çiñkn. Ça. 17,13,10. Âçv. Gṛhj. 2,6,11. भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि ṚV. 1,94,1. 7,4,1. यस्यायं संसदो ते मतीमहि 7,84,3. विवेश नन्दगोपस्य संसदम् Harîv. 4387. Ragh. 11,15. 15,66. संसदि M. 8,52. R. 2,100,19. 106,10. Kim. Nîtis. 12,6. Ragh. 16,24. Spr. (II) 6048. 6117. Kathâs. 49,11. Dhûrtas. 66,3. Pañkat. 19,14. दासो ऽस्मीति त्वया वाच्यं संसत्सु च सभासु च MBh. 4,1125. दस्यूनाम् 482. देव° TBr. 3,7,4,1. Bhâg. P. 3,9,24. शक्र° MBh. 1,2946. सायार्य° TS. Prât. 24,6. सार्य° M. 8,75. मुनि° Vers. d. Oxf. H. 20,b,1. ऋषि° R. 1,4,10. राज्ञ° 2,35,33. Kathâs. 13,168. 21, 104. 28,91. नृप° Spr. (II) 3319, v. l. प्रकृति° R. 2,106,1. ब्रह्म° MBh. 3,2729 (pl.). R. 1,1,30. 4,30. 68,3. 2,22,32. R. Gorr. 1,79,10. वानर° 5,1,42. ययौ राज्ञा निवासास्थानसंसदम् Kathâs. 49,127. *Menge* überh.: धमनीर्ण वास्य मुमुचुर्वाजिनो रथसंसदि R. 6,75,29. संसदामयनम् heisst *eine best. Feier von 24 Tagen* Âçv. Çr. 11,3,11. Çiñkn. Ça. 13,16,17. 20,14; vgl. Kâty. Ça. 24,2,14, wo der sg. संसद् steht. — Vgl. ब्रह्म° (*eine Versammlung von Brahmanen* Kâṭhâ. 3,17), सुधर्मसद्, स्वाद्वर्धसद्.

संसनन (von सन् mit सम्) n. घञ्° als Erklärung von वाजमाति Nir. 12,45.

संसक्त s. संशक्त.

संसमक (सम्ऽसमक Padap.: etwa aus सम्+सम्) adj. *aneinander gefügt:* एव ते शेपः सहसाप्यर्को ऽङ्केनाङ्गं संसमकं कृणोतु AV. 6,72,1.

संसरण (von सृ mit सम्) n. 1) *das Umhergehen, Wandeln* Çabdar. im ÇKDa. परिमित° adj. MBh. 12,6678. — 2) *das Wandern aus einem Leben in ein anderes, das durch Wiedergeburten nicht endende weltliche Dasein;* = संसार H. an. 4,90. fg. Mân. j. 110. fg. = प्राण्युत्पाद AK. 2,4,22,37. — Bhâg. P. 10,40,28. Gaupar. zu Sâñkhyak. 40. Sarvadarçanas. 32,17. लीला° Asṭâv. 14,1, v. l. — 3) *der ungehinderte Marsch eines Heeres* AK. H. an. Mân. — 4) *Beginn eines Kampfes* (vgl. संसारण) Mân. s. समारम्भे नगरस्य in H. an. ist vielleicht म° संगरस्य zu lesen: oder नगरस्य ist mit उपनिर्गमे (vgl. उपनिष्क्रमण) zu verbinden und st. समारम्भे zu lesen रणारम्भे. — 5) *Hauptstrasse* AK. 2,1,19. 3,4,22, 37. H. 987. H. an. Mân. — 6) *a resting place for passengers near the gates of a city* Wilson nach Svâmin zu AK.

संसर्ग (von सृज् mit सम्) 1) adj. *sich vermengend, zusammenlaufend:* घृत Kâṭy. Ça. 25,4,30. — 2) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. a) *das Zusammentreffen, Verbundensein, Verbindung, Vereinigung, Zusammenhang, Berührung, Contact* Hâlâs. 3,59. Bed. der Präposition सह Nir. 1,3. द्यावापृथिव्योः *das Verschwimmen* Harîv. 3579. द्रव्याणाम् Çiñkn. Ça. 3,6,2. zweier Feuer Kâṭy. Ça. 25,4,29. Kauç. 93. मणिभुजगयोः Spr. (II) 773. मात्रा° ṚV. Prât. 13,16. परस्पर° Suçr. 1,153,14. इतरेतर° (beim coitus) Çañk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 294. दोषधातुमल° Suçr. 1,90,3. 2,302,12. विरुद्धधर्म° Sarvadarçanas. 131,11. Vedântas. (Allah.) No. 100. °सा दोषगुणाः *durch Berührung entstanden* Spr. (II) 6634. 6781. TS. Prât. 23,2 (vgl. Uvaṭa zu ṚV. Prât. 13,4). अनिष्टानाम् *Berührung mit* (Gegens. विसर्जन) MBh. 11,55. Spr. (II) 3885. तस्य शस्त्रस्य R. 3,13,21. 5,36,4. प्रभाप्रभाधिवासेन MBh. 3,23. fg. ततः संसर्गमागम्य (साकाम्य die neuere Ausg.) बलेनास्त्रबलेन च Harîv. 1109. Suçr. 1,83,4. 5. पाप्मभिः Çañk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 87. मात्रा° Çat. Br. 14,7,2, 15. रज° Harîv. 10380. Ragh. 16,21. Çik. 3. विषय° Spr. 3268. विष° (II) 308. 1619. 5441. Kathâs. 18,58. Mârk. P. 51,90. 115,18. Bhâg. P. 5,1,37. Prab. 59,12. Râja-Tar. 4,110. सप्तोधःसंसर्गो त्रिपालिङ्गनानि-

र्वृतिम् Rāgn. 12,45. नास्ति घटो गेहे इति मतो घटस्य गेहसंसर्गप्रतिषेधः Kap. 9,1,10. °प्रतिषेधिक: प्रतिषेधो ऽत्यन्ताभावः Sarvadarçanas. 112, 1. संसर्गाभाव 116,16. fgg. Siṅ. D. 54. 117,20. Verz. d. Oxf. H. 245,b, No. 616. fg. Schol. zu Çiç. 81. *Berührung mit so v. a. das Zuthunhaben —, Sichabgeben mit, Sichbetheiligen an* (insbes. an etwas Schlechtem), *das Sichbefleckenmit:* वेश° Daçak. 86,3. रतिसंसर्गलालसा Harîv. 4785. मानसंसर्गकर्कश R. 5,4,11. गीतवाद्यादिवनितासंभोगसंसर्गदूषित Mārk. P. 17,23. कामोपभोग° 36,5. परदारादि° 51,23. मरुत्संयाम° adj. *der Theil genommen hat an* 133,16. pl. *Berührung mit der Aussenwelt, Sinnengenuss* M. 6,73. sg. Bez. *einer best. Berührung von Himmelskörpern* (beim Planetenkampfe) AV. Paric. in Ind. St. 10,320; vgl. संसर्जन 1). — *b) das Zusammentreffen mit Menschen, Berührung mit Andern, Umgang, Verkehr* MBh. 3,14054. 13,1600. R. 6,101,12. Spr. (II) 258. 1726. 4520. 4795. °प्रशंसा Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,38. °प्रायश्चित्त (*Verkehr mit Unreinen*) 87,5,25. 102,*a*,8 v. u. Pāraçarîttrend. 72,*a*,7. धीमताम् *Verkehr mit* Spr. (II) 248. पतितानाम् 3885. यमताम् 4338. विपश्चितः 4714. त्यागिनि शूरे विदुषि च 2633. न संसर्गं व्रजेत्सद्भिः M. 11,47. यो येन पतितेनैषां संसर्गं याति मानवः 131. R. 1,3,33 (29 Gorr.). क्व ते रामेण संसर्गः *wo bist du mit* Râma *zusammengetroffen?* 5,32,2. Kām. Nītis. 5,32. 7,46. सद्भिः सङ्ग MBh. 3,26. परिभिः सङ्ग 12,3310. Spr. 5373. (II) 4492. तपस्वि° Rāgn. 14,75. Spr. (II) 1859. 2120. 4044. 5965. 5975, v. l. Kathās. 18,232. Bhāg. P. 4,7,17. Pañcat. 197,11. LA. (III) 19,20. 91,4. Tattvas. 41. *geschlechtlicher Verkehr* Sucr. 1,70,4. प्रभावत्याः *mit* Harîv. 8662. दास्याः Bhāg. P. 6,1,21. निमीलिताक्ष्याः संसर्गस्तव सुभ्रु मया सङ्ग Mārk. P. 62,20. पुरुष° MBh. 13,1467. Verz. d. Oxf. H. 22,*a*, 11. 18. 19. — *c) die Verbindung zweier Humores, welche Krankheiten erzeugt* (*der Zusammentritt aller drei* heisst सन्निपात), Suçr. 1,261,6. 2,40,5. 196,11. °ज 404,15. °पाचन 462,12. Çiñkṣ. Saṃh. 1,7,91. fg. — *d) das Zusammenbleiben von Verwandten nach erfolgter Erbtheilung* (*Gütergemeinschaft*): विभागानन्तरं मैत्र्यात्पितृभ्रातृपितृव्यभ्रातृपुत्राणां यथायथमेकत्रावस्थानं संसर्गः तद्युक्तः संसर्गी Dāyabh. im ÇKDa. — *e) Dauer:* न तस्मिन्युगसंसर्गे व्याधयो नेन्द्रियक्षयः MBh. 3,11238. — Vgl. प्रति°, वर्ण°, सङ्ग°, सांसर्गिक.

संसर्गक am Ende eines adj. comp. = संसर्ग 2) *a*) Kusum. 33,10.

संसर्गवत्त्व n. nom. abstr. von संसर्गवत् Kusum. 33,9.

संसर्गवत् (von संसर्ग) adj. *in Verbindung stehend:* एते पदार्थाः परस्परं संसर्गवन्तः Kusum. 33,1. 2. am Ende eines comp. *verbunden mit:* छागान्तं प्रियमाणानां कादम्बसंसर्गवतीव पङ्क्तिः Rāgn. 13,55.

संसर्गविद्या f. Kāç. zu P. 4,2,60, Vârtt. 4. *die Kunst mit Menschen umzugehen* MBh. 12,8472 nach der Lesart der ed. Bomb. संवर्ग° ed. Calc. — Vgl. सांसर्गविद्य.

संसर्गिक s. u. संसर्गिन् 1).

संसर्गिता (von संसर्गिन्) f. *das in Berührung Kommen mit Andern:* संसर्गितया न परिवसेत् als Erklärung von संवसेत् Kull. zu M. 11,190.

संसर्गिन् (von सर्ज् mit सम् oder von संसर्ग) adj. P. 3,2,142. 1) *zusammenhängend, in Berührung stehend:* सांसर्गिको दोष एव नूनमेकस्यापि सर्वेषां संसर्गिणां (संसर्गिकाणां ed. Bomb.) भवितुमर्हति Bhāg. P. 5,10, 5. in comp. mit der Ergänzung: धामफल° (कषाय) Spr. (II) 1726. नक्त्रात्र° (पवन) Mārk. P. 15,53. Pañcat. 4,6,8. 9. पाप्म° *so v. a. theilhaftig* Çaṃk. zu Kaṭhop. Up. S. 30. दोषा° *frei von zu* Bṛh. Âr. Up. S. 88. स्तनन्नघनघनाभोग° *so v. a. im Besitz seiend* Spr. (II) 6642, v. l. — 2) = संसृष्टिन् *der nach erfolgter Erbtheilung fortführt mit den Verwandten zusammen zu leben* Dāyabh. 321, 8 v. u.; vgl. संसर्ग 2) *d*).

संसर्जन (von सर्ज् simpl. und caus. mit सम्) 1) *das Zusammenkommen, Vereinigung:* संसर्जने ऽग्निमान्येन Âçv. Çr. 3,13,4. धारोष्णं च भेदश्च लेखनं सव्यदक्षिणम्। रश्मिसंसर्जनं चैव यत्प्रयुङ्क्ते चतुर्विधम्॥ AV. Paric. in Ind. St. 10,318. — 2) *das Heranziehen an sich, das Gewinnen für sich:* प्राधान्येन हि सर्वत्र सर्वाः संसर्जयेत्प्रजाः। तासां संसर्जनाद्राजा सर्वाङ्गी श्रियमश्नुते॥ Kām. Nītis. 8,52.

संसर्प (von सर्प् mit सम्) 1) adj. *schleichend, gleitend* u. s. w. (in einer Formel und nicht genau zu bestimmen) VS. 15,7. 22,30. parox. TS. 4, 4,2,3. 5,3,6,2. — 2) m. *a*) N. eines Kāturabha Kāṭy. Çr. 23,2,14. Lāṭy. 9,12,8. — *b*) N. *des 13ten Monats* TS. 1,4,14,1. 6,5,9,3. Weber, Gjot. 101. fg. 104. Nax. 2,336. 350. fg. — 3) m. N. eines Sâman Ind. St. 3,241,*a*. 242,*b*. — Vgl. वसिष्ठ°.

संसर्पण (wie oben) n. 1) *das Besteigen:* मेरोः MBh. 8,220. — 2) *das Beschleichen, Ueberrumpeln* (eines Feindes) Vaitân. Jonâsûtrâ 1,11 in Ind. St. 10,165.

संसर्पमाणक (von संसर्पमाण, partic. von सर्प् mit सम्) adj. *kriechend:* धन्या व्रत्यन्ति पुत्र वां भूमौ संसर्पमाणकम् MBh. 3,17145.

संसर्पिन् (wie oben) adj. am Ende eines comp. *sich erstreckend —, reichend bis:* कपोल° Rāgn. 7,28 (= Kumāras. 7,31). कपोलसंसर्पिता 13,11.

संसर्पा indecl. in Verbindung mit कृ u. s. w. gaṇa सादादि zu P. 1,4,74.

संसव (von सु mit सम्) m. *ein gleichzeitiges* Soma-*Opfer zweier benachbarter Gegner:* विमतानां प्रसवसंनिपाते संसवे ऽन्तर्वृत्तिषु नद्या वा पर्वतेन वा Âçv. Çr. 6,6,11. Âit. Br. 1,3. Kāṭy. Çr. 24,14,23. 25,14, 8. Lāṭy. 1,11,12. Çāṅkh. Çr. 13,5,1.

संसद् m. = संसद् *Gesellschaft:* स्त्रीपंसादे TS. 2,5,4,5.

संसादन (vom caus. von सद् mit सम्) n. *das Zusammenstellen:* पात्र° Kāṭy. Çr. 6,2,5. 8,2,21. 6,25. 9,1,2.

संसाधक (vom caus. von साध् mit सम्) adj. *in seine Gewalt zu bringen —, für sich zu gewinnen beabsichtigend:* विशाम् Bhāg. P. 2,3,4.

संसाधन (wie oben) n. *das Bereiten, Verfertigen:* कृत° adj. Kull. zu M. 11,95. *das Zustandebringen, Vollbringen:* धर्मस्य MBh. 14,1384. कार्य° 5,6364. das einfache संसाधन *so v. a.* कार्य° 2951.

संसाध्य (wie oben) adj. 1) *zu bewerkstelligen, zu vollbringen* Buhl. Nîtiç. 19,6. Mārk. P. 43,51. — 2) *zu gewinnen, zu erlangen* R. 4,44, 100. — 3) *mit dem man fertig werden kann, besiegbar, bezwingbar:* रणे MBh. 3,1682. घटत्प्रपत्र° Harîv. 13615.

संसार (von सृ mit सम्) 1) adj. *wandernd, Wiedergeburten erfahrend:* चित्त Maitrâyaṇ. 6,24. man könnte aber auch संसारे st. संसारं vermuthen. — 2) m. *a*) *das Hindurchgehen:* घनचोलसंसारे तमसि Spr. (II) 785, v. l. (für °संचारे). — *b*) *die Wanderung aus einem Leben in ein anderes, das sich stets wiederholende Dasein, Kreislauf des Lebens, das* (*sich immer wieder erneuernde*) *Leben mit allen seinen Leiden* Taitt. 1,

1, 133. H. an. 4, 91. Med. g. 111. Hallâs. 5, 20. त इमे मिथ्याज्ञानादयो दुःखान्ता अविच्छेदेन प्रवर्तमानाः °शब्दार्थो घटीचक्रवन्निरवधिरनुवर्तते Sarvadarçanas. 115, 20. fg. वैराग्यात्प्रकृतिलयः संसारो भवति रागात् Siddh. 45. यत्र यत्र भवेत्तृष्णा संसारं विद्धि तत्र वै Asuriv. 10, 3. °मोतस्थितिबन्धहेतु Çvetâçv. Up. 6, 16. संसारेषु विचित्रेषु पच्यमानाः MBh. 3, 12637. Spr. (II) 4793. संसारमधिगच्छति Kathâs. 3, 7. प्रतिपद्यते M. 6, 74. Jâtâ. 3, 140. संसारान्प्रतिपद्यते M. 12, 39. 54. पापान्संयाति संसारान् 52. सजीव इह संसारान्नीनाप्रोति MBh. 13, 3450. स उपान्प्रैति संसारान् 3452. पापान्संसृत्य संसारान् M. 12, 70. °गमन 1, 117. संसारान्मुच्यते Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 83. संसारादविभयुः 88. संसारं क्रातुम् Asuriv. 16, 9. तीर्णः Râgat. 12, 60. भ्रमति संसारे Spr. 3357. न संसारात्परो रिपुः (II) 3462. सर्वस्य संसारस्य दुःखात्मकत्वम् Sarvadarçanas. 13, 10. Wassiljew 12 u. s. w. यस्मिन्संसारे Maitrâjup. 1, 4. एवं पतति संसारे तासु तास्विक् योनिषु MBh. 3, 117. Varâh. Bṛh. S. 105, 13. Spr. 3265. (II) 4559. 5961. 6439. संसारे किं सारम् 6639. fg. Kathâs. 30, 62. 40, 30. Râja-Tar. 4, 68. Vet. in LA. (III) 16, 15. चक्राकार Kathâs. 70, 113. चक्रवद्भवति Spr. (II) 293. परिवर्तिन् 6681. मृगतृष्णासम 2318, v. l. कदलीस्तम्भनिःसार 4823, v. l. घसार 4464 (und विरस). 6641. fg. Râja-Tar. 2, 112. Pañkat. 33, 12. 165, 17. गतसार Spr. (II) 2067. °परिवर्तन MBh. 12, 7755. °बन्धनानि Mârk. P. 16, 8. °बीज Sarvadarçanas. 40, 3. Bhâg. P. 7, 10, 3. °हेतुपरम 2, 2, 6. °दुःख 3, 5, 38. °परिताप 5, 6, 14. °परिश्रम 8, 24, 46. °घात्तचित्त Spr. (II) 6637. संसारार्तिभयापह Wilson, Kâṇvaç. 291. °सुख Kâtyâp. Comm. Einl. °सार Dhûrtas. 88, 1. °सारचक्र Verz. d. Oxf. H. 120, a, 39. त्यक्तसंसारमङ्ग Spr. (II) 3085. संसारासे 2004. घा संसारात् so v. a. vom *Anfang der Welt* (vgl. घासंसारम्) Kathâs. 32, 167. ब्रह्मसंसारबन्धन *die Fessel der Geburt und des weltlichen Daseins* MBh. 13, 6938. mit मृत्यु verbunden Bhâg. 9, 3. 12, 7. °कारिन् Verz. d. Oxf. H. 150, a, 6. °पोषक Asuriv. 18, 38. °हृत् Spr. (II) 6638. °वैरि वैरिन्? Pañkat. 4, 1, 22. °वर्जित Sarvadarçanas. 69, 20. °वासना (vgl. Asuriv. 9, 8) Pañkat. 1, 9, 10. 13, 19. Gîv. 3, 7. °वर्त्मन् Spr. (II) 2847. Kathâs. 28, 182. Bhâg. P. 4, 25, 6. °पद्धति 3, 27, 3. °सरणि Spr. (II) 127. °चक्र Maitrâjup. 6, 28 (संसार° der Text, vgl. aber Comm.). MBh. 13, 5434. Ind. St. 2, 49. Kathâs. 70, 107. Verz. d. Oxf. H. 60, b, 46. Prab. 69, 13. Bhâg. P. 6, 11, 27. 17, 18. 7, 9, 16. 21. °मण्डल Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 26. °कारागृह Spr. (II) 2578. °सागर Wilson, Kâṇvaç. 295. Pañkat. 2, 4, 16. Pañkat. 33, 21. °समुद्र 15. संसारोदधि Spr. (II) 6643. संसाराब्धि Pañkat. 3, 12, 20. संसारार्णव 1, 5. Spr. (II) 1269. °कूप Bhâg. P. 7, 15, 46. Verz. d. Oxf. H. 5, b, 25. °वन Spr. (II) 6643, v. l. °कानन 6893. °कान्तार Asuriv. 10, 7. °वृक्ष Ind. St. 2, 214. Verz. d. Oxf. H. 83, a, 2. °विषवृक्ष Spr. (II) 6636. °तरु Bhâg. P. 3, 25, 11. °विटपाङ्कुर Asuriv. 16, 7. °वारोक 4, 1. संसाराङ्गार Sarvadarçanas. 154, 15. संसारानल Vedântas. (Allah.) No. 19. पुत्रदारादि°, शास्त्र° so v. a. *Erbärmlichkeit, Armseligkeit* Spr. (II) 4107. — Vgl. घासंसारम्, भूतसंसार, संसरण und संसृति.

संसारगुरु m. *der Lehrer für das weltliche Dasein*, ein N. *des Liebesgottes* Trik. 1, 1, 39.

संसारण (vom caus. von सृ mit सम्) n. *das Fortbewegen:* रथ° Kâty. Çr. 12, 3, 7. — Asuriv. 14, 1 fehlerhaft für संसरण, wie die v. l. hat.

संसारतरणि und °णी f. *das Schiff* (für den Ocean) *des weltlichen Daseins*, Titel eines Commentars zum Jogavâsishṭhasâra Verz. d. B. H. 192, 27. Hall 122.

संसारमार्ग m. *der Weg in's weltliche Dasein*, Bez. *der vulva* Trik. 2, 6, 22.

संसारवत् (von संसार) adj. *den Armseligkeiten des weltlichen Daseins unterworfen* Asuriv. 1, 11.

संसारसारथि m. *der Wagenlenker im weltlichen Dasein*, Bein. Çiva's Çiv.

संसारावर्त (संसार + घा°) m. Titel eines Wörterbuchs Med. Anh. 1. Verz. d. Oxf. H. 183, a, 2. Colebr. Misc. Ess. 2, 20.

संसारित्व n. nom. abstr. von संसारिन् 1) b) Sarvadarçanas. 101, 5.

संसारिन् (von सृ mit सम्) 1) adj. a) *within sich bewegend, umfassend:* प्रज्ञा Spr. (II) 5399. — b) *im weltlichen Dasein steckend, daran gebunden* Asuriv. 15, 16. Weber, Rikat. Up. 338. Bhâg. P. 1, 2, 3. Gaupav. zu Siddh. 61 (Gegens. मुक्त). Windischmann, Sancara 94. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 82. 146. Vedântas. (Allah.) No. 36. Sarvadarçanas. 35. 6. 95, 22. — 2) m. *ein lebendes Wesen, Mensch* Hallâs. 1, 134. Spr. (II) 1074. Milarip. 140, 9.

संसिच् (सिच् mit सम्) adj. *giessend, zusammenschüttend* AV. 11, 8, 13.

संसिद्धि (von सिध् mit सम्) f. 1) *das Fertigwerden, Gelingen, Zustandekommen, ein glücklicher Erfolg* H. an. 3, 251. Med. dh. 38. Hallâs. 5, 20. Dhûrtas. 27, 16. सत्र° Gobh. 1, 4, 2. गम्यतां संसिद्धौ (so ist zu lesen) so v. a. *geh und möge dir die Sache gelingen* Mârk. P. 16, 42. कार्य संसिद्धिमभ्येति Spr. (II) 3249. कार्य° R. Gorr. 2, 20, 22. Kumâras. 2, 63. इष्टस्य Vârâh. Bṛh. S. 93, 61. वाञ्छित° Kathâs. 13, 166. 16, 2. 30, 56. यज्ञ° Gobh. 1, 6, 16. MBh. 13, 1884. योग° Bhag. 6, 37. सर्व° Kathâs. 61, 55. Spr. (II) 4566. धर्मार्थकाम° 4539. Mârk. P. 34, 10. दैव° *das Sicherfüllen* Kathâs. 20, 130. — 2) *ein vollkommener Zustand, Vollkommenheit* (eines Menschen) M. 6, 29. संसिद्धिमास्थिता ब्रह्मकाद्यः Bhag. 3, 20. संसिद्धिं परमां गताः 8, 15. MBh. 12, 659. 667. R. Gorr. 1, 67, 2. Kâm. Nîtis. 18, 42. Kathâs. 28, 43. Mârk. P. 28, 9. Bhâg. P. 1, 19, 27. 3, 33, 21. 11, 16, 3. Verz. d. Oxf. H. 109, a, 39. अनेकशास्त्रसंसिद्धिलब्धकीर्ति *Vollkommenheit in* Pañkat. 4, 21 (ed. orn. 2, 1). — 3) *das letzte Ergebniss, — Resultat:* स्वनुष्ठितस्य धर्मस्य संसिद्धिर्हरितोषणम् Bhâg. P. 1, 2, 13. — 4) *eine feststehende Meinung, das letzte Wort* R. 2, 40, 8 (die ed. Bomb. st. dessen संसिद्धम् adj.). — 5) = प्रकृति, स्वरूप, स्वभाव AK. 1, 1, 9, 37. H. 1377. H. an. Med. — 6) = मदेरया Med.

संसुतसोम m. = संसव Lâṭ. 1, 11, 10.

संसृद् (von स्वद् mit सम्) f. *das Kosten, Geniessen:* स्वादुष्टे घस्तु संसृदे RV. 8, 17, 6.

संसूचक (von सूच् mit सम्) adj. *anzeigend, an den Tag legend, verrathend:* मुक्ति° Mârk. P. 40, 34.

संसूचन (wie oben) n. *das Verrathen, an-den-Tag-Legen:* भाव° Daçar. 4, 3. वक्रोक्ति° so v. a. *das Aeussern, Hervorbringen* Spr. 3235.

संसूच्य (wie oben) adj. *zu verrathen, an den Tag zu legen* Daçar. 1, 31.

संसृत् m. *ein best. Organ im Maul des Thieres*, etwa *Gaumen* (von स्वद्); nach dem Comm. *Nase und Anderes* (von सृद्) TS. 5, 7, 66, 1.

संसृत्त् (von सृत् mit सम्) f. *das Zusammentreffen:* मृत्साधनस्य RV. 10, 84, 6.

संसृति (von सृ mit सम्) f. = संसार 2, b) Asuriv. 9, 6. 18, 36. Bhâg. P. 1,

1,14. 5,19. 24. 7,22. 15,33. 2,2,33. 3,9,9. 23,38. 26,7. 27,4. 31,31. 32,28. 4,21,31. 29,38. 5,10,23. 6,1,1. 17,28. 7,2,26. 13,27. 8,19,25. 22,9. 9,19,20. 10,31,5. 73,3. 88,40. Pâṇḍav. 3,3,1. 4,3,195. °चक्र Bhâg. P. 3,31,20. 5,11,6. 7,7.37. °चक्रवाल 5,18,14. = प्रवाह Taitt. 3,3,109. — Vgl. लोक°.

संसृप् (von सृप् mit सम्) f. Bez. von zehn *Gottheiten* (Agni, Sarasvatî, Savitar, Pûshan, Bṛhaspati, Indra, Varuṇa, Soma, Tvashṭar, Vishṇu) *und den ihnen geweihten Opfergaben im* Daçapeja *des* Râǵasûja: तत्संसृदिरनुसमसर्पत् । तत्संसृपां संसृप्त्वम् TBr. 1,8,2,1. Çat. Br. 5,4,2,2. संसृपामिष्टिः Çâṅkh. Çr. 15,14,1.

संसृपाक्त्विस् n. s. unter dem folg. Worte.

संसृपेष्टि f. nach dem Comm. *ein Opfer an* Agni *und sechs andere Gottheiten im* Daçapeja (also wesentlich so v. a. संसृप्) Âçv. Çr. 9,3, 17.4,6; vgl. संसृपाक्त्वीषि Kâty. Çr. 15,8,1 (wenn nicht संसृपां zu lesen ist).

संसृष्ट s. u. सर्ज् mit सम्.

संसृष्टजित् adj. *im Handgemenge siegreich* ṚV. 10,103,2.

संसृष्टत्व (von संसृष्ट) n. 1) *das Verbundensein* Çaṅk. zu Kâṭh. Up. S. 18. — 2) *das Zusammenleben von Verwandten nach erfolgter Erbtheilung* Dâyabh. im ÇKDr.

संसृष्टधुर् adj. *mit der Kuh zusammengelassen und saugend:* Kalb TBr. 2,1,4,3.

संसृष्टहोम m. *eine gemeinschaftliche Oblation* (an Agni und Sûrja) TBr. Comm. 2,371,10. 403,18.

संसृष्टि (von सर्ज् mit सम्) f. in der Rhetorik *die Verbindung zweier neben einander bestehender Redefiguren (einer lautlichen und einer sachlichen* Sâh. D.) Sâh. D. 755. fg. 264. Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,25. Prâtiṣâkh. 103,*b*,5. 104,*a*,1.

संसृष्टिन् (von संसृष्ट) adj. *der nach erfolgter Erbtheilung mit den Verwandten wieder auf gemeinsame Kosten lebt* Jâǵñ. 2,138. fg. Mitâksh. 221. fgg. Dâyabh. 313. fgg.

संसेक (von सिच् mit सम्) m. *Durchnetzung, das Nasswerden:* घर्म्म° *durch Wasser* Râǵa-Tar. 5,271. तैल° R. ed. Bomb. 2,76,4 (°सेक Sch.).

संसेवन (von सेव् mit सम्) n. 1) *das Anwenden, Gebrauchmachen von etwas:* सङ्ग° MBh. 12,8772 (= 9339). तीव्रार्कताप° *das Sichaussetzen* Kathâs. 103,66. — 2) *das Dienen, zu-Diensten-Sein, Verehren:* साधु° Mârk. P. 68,7.

संसेवा (wie eben) f. 1) *Besuch:* तीर्थ° Bhâg. P. 9,15,41. — 2) *Anwendung, Gebrauch:* सङ्ग° Bhâg. P. 11,25,34. — 3) *Verehrung* Bhâg. P. 7,9,27.30. — 4) *Hinneigung zu, Vorliebe für:* वारिराशिसलिलास्त्रसंनिधान° Spr. (II) 5497.

संसेवितृ (wie eben) nom. ag. *Anwender, Gebraucher, der sich einer Sache bedient* Vaṇîn. Bṛh. S. 77,34.

संसेविन् (wie eben) adj. *verehrend:* श्रीकृष्ण° Verz. d. Oxf. H. 127,*b*, No. 228.

संसेव्य (wie eben) adj. 1) *zu besuchen, besucht werdend:* तत्कालसंसेव्यं दैवानां मानसं सरः Kathâs. 69,121. सुख° *leicht zu erreichen:* °लतया (ungenau st. लतासुखसंसेव्यया) वनराज्या Kâm. Nîtis. 14,35. — 2) *zu verehren:* गोपालबाल° Pâṇḍav. 4,8,130. — 3) *wovon man Gebrauch machen soll* oder *darf, zu betreiben, dem man sich hingeben soll* oder *darf:* काम MBh. 13,6331. कथाः Bhâg. P. 1,18,10.

संस्कन्ध m. N. *eines Unholds* oder *einer Krankheit* (Gegens. विष्कन्ध) AV. 19,34,5.

संस्करण (von 1. कृ mit सम्) n. 1) *das Zurechtmachen, Zubereiten:* खाद्यस्य Gobh. 1,7,29. हविषः 4,4,4. — 2) *das Verbrennen eines Verstorbenen* Verz. d. Oxf. H. 136,*a*,26 (fälschlich संस्कारण). भीष्म° MBh. 13,7713.

संस्कर्तृ (wie eben) nom. sg. 1) *Zurechtmacher, Zubereiter* (von Speisen) M. 5,51 = MBh. 13,5643. — 2) *Einweiher, Vollbringer einer religiösen Cerimonie:* मृतयोः Uttarar. 126,8 (170,8). — 3) *Hervorbringer eines Eindruckes* Comm. zu Gaim. 1,2,13.

संस्कर्तव्य (wie eben) adj. *herzurichten, zuzurüsten, zurechtzumachen:* (पुरी) संस्कर्तव्यापुद्यागारा Hariv. 5263. मरुसेना 15827 (nach der Lesart der neueren Ausg. st. संकर्तव्या der älteren). श्राकृत्या पुरः Schol. zu Kâty. Çr. 6,1,21. कर्माङ्गस्य पशोः संस्कर्तव्यत्वात्कालादिदृष्टयः शिरआदिषु लिप्यन्ते Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 18.

संस्कार (wie eben) m. 1) *Zubereitung, Zurüstung, Bearbeitung, Zurichtung, ein kunstgerechtes, einem best. Zwecke entsprechendes Verfahren mit Etwas; Reinigung, Schmückung, Verzierung:* = गुणान्तराधान Kâraka 3,1. = प्रतिपत्ति H. an. 3,616. Man. v. 234. Hall. 5,37. श्राकृति° Çâṅkh. Gṛhy. 1,1. खाद्य° s. Kauç. 7. Âçv. Çr. 4,1,20. 5,6,25 (°त्व). Kâty. Çr. 1,7,21. द्रव्य° 8,21. गार्हपत्ये 24. 5,1,21. 12,1,11. दुर्ग° MBh. 2,615. Kâm. Nîtis. 13,31. मार्ग° R. 2,90 (87 Gorr.) in der Unterschr. रथ्या° Rasar. 15,38. यज्ञ° MBh. 3,2626. मूढान्संस्कारकुशलान् R. 7,65,23. द्रव्याणाम् Manus. in Ind. St. 1,14,26. द्रव्यसंयोग° Sâṃkhyas. 1,190,20. 236,13. पद्मं मत्तसंस्कारसंस्कृतम् R. Gorr. 2,83,26. स्वर्णादि° Verz. d. Oxf. H. 321,*b*, No. 762. कुण्डानाम् 105,*a*,32. fgg. मञ्चानाम् 98,*b*,13. fgg. Sarvadarçanas. 170,7. fgg. रस° (*Quecksilber*) 99,21. fgg. Verz. d. Oxf. H. 320,*b*,5. fgg. मणिः प्रयुक्तसंस्कारः so v. a. *Schliff* Rasar. 3,16. Çiç. 133. पैर्भुक्ते पात्रे संस्कारेणापि न शुध्यति ते निरूपिताः *Reinigung* Schol. zu P. 2,4,10. कलशे कृतसंस्कारे Sâṃkhyas. 1,163,8. 2,75,6. श्रवस्कारस्य Spr. (II) 3832. गन्धमाल्याद्यैः AK. 2,6,2,36. H. 637. शरीर° Jâǵñ. 1,84. स्नानादिगात्र° Kâm. Nîtis. 14,47. नात्याहृतगात्रसंस्कारा Daçak. 63,12. fg. षट्कर्मसंस्कारकर्म (°संस्कार ed. Bomb.) कुर्वाणा Pârâç. 185,28. चरण° Mâlav. 33,13. घर्मसंस्कारपाटलोष्ठपुटं मुखम् Çiç. 182. केश° Mṛicch. 33. स्वभावसुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते Spr. 3331. नवे भाजने लग्नः संस्कारः (II) 5301. क्रय° *Pflege* u. s. w. MBh. 7,3799. तरोः (Gegens. उपघात) Vaṇîn. Bṛh. S. 48,1. संस्काराभिनयौ so v. a. *Anzug* Hariv. 8676. *Herstellung, richtige Bildung eines Wortes, eine mit diesem vorgenommene richtige Operation* Nir. 1,13. 18. 4,1. 5,2. Ind. St. 4,98. 177. 13,405 fg. Sarvadarçanas. 137,15. *eine astronomisch-mathematische Correction* Golâdhy. Dgan. 10. Journ. of the Am. Or. S. 6,454. — 2) *Bildung, gute Erziehung:* सूताः परमसंस्काराः R. 2,65,2. °संपन्न R. 5,90,22. निसर्गसंस्कारविनीत Raghuv. 3,35. श्रात्मसंस्कारसंपन्नो राजा Kâm. Nîtis. 4,4. — 3) *Fehlerfreiheit, Richtigkeit, Correctheit:* पदेषु गुणसंस्कारं मम चानर्थबुद्धिताम् R. 5,85,5. insbes *der Aussprache und Ausdrucksweise:* संस्कारेण यथा रूपं वाक्यार्थान्तरं गताम् R. 5,18,19.

शब्दसंस्कारसंयुक्त (हिंस) MBh. 1, 2884. स्वरव्यञ्जनसंस्कारा भारती 14, 1192. वाणी °भूषणा 13, 2221. संस्कोपगता संहिता 1, 19. वचः संस्कारालंकृतम् R. 7, 4, 3. वाणी परमसंस्कारा Harıv. 14098. कृतसंस्कारा भारती Ragh. 10, 37. °पूतेन मुखमाक्षनिबन्धनेन Kumâras. 7, 90. वदत्यभिमंत्रणार्थेन संस्कारेण Uttarab. 101, 10. fg. (135, 6). — 4) *eine Begehung häuslicher und religiöser Art, die an jedem Mitgliede der drei oberen Kasten zu vollziehen ist oder die es selbst zu beobachten hat, wodurch es gleichsam zugerichtet und rein wird; Weihe, Vollziehung eines Sacraments, Sacrament* AK. 2, 7, 40. H. 842. Prajogaratna in der Einleitung zählt vierzig auf vom Garbhâdhâna und Puṁsavana an, darunter die Hauptopfer, dazu acht innere Eigenschaften wie दया, तान्ति u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 30, *b*, 1. fgg. Verz. d. B. H. No. 1031. sechzehn des Gṛhastha Z. d. d. m. G. 2, 341, 3. — Pân. Gaṇ. 2, 3. Gaṇâs. 1, 36. M. 1, 111. वैदिकैः कर्मभिर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्। कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च ॥ 2, 26. 66. वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिकः स्मृतः 67. पाणिग्रहण° 3, 43. मत्रसंस्कारकृत्पतिः 5, 153. ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं तत्रियेण 7, 3. कृत° adj. 9, 326. Ragh. 10, 79. — M. 10, 2, 69. 126. 11, 146. जातकर्मादि° MBh. 1, 2990. (प्रद्राः) नार्हन्ति संस्कारम् (so die neuere Ausg., सत्कारम् ed. Calc.) Harıv. 11822. Pat. in Mahâbh. bei Ballant. 36. Çâk. 112, 3. Varâh. Bṛh. S. 98, 16. Verz. d. Oxf. H. 85, *a*, 15. 276, *b*, 7. fgg. 277, *a*, No. 654. 291, *b*, No. 707. 332, *b*, 10. 335, No. 787. fg. संस्कारं पुत्रपत्नीमलम्भयत् Mârk. P. 22, 46. Bhâg. P. 5, 9, 4. 7, 11, 13. 14, 26. 15, 52. °हीन = व्रात्य AK. 2, 7, 53. Hall. 2, 249. °वर्जित H. 854. bei den Gaina Colebr. Misc. Ess. 2, 192. so v. a. मृत° (AK. 3, 4, 40, 121) *das an einem Todten vollzogene Sacrament* d. i. *Verbrennung der Leiche* R. Gorr. 2, 81, 3. अग्न्याधेय° 3, 73 in der Unterschr. 6, 8, 26. 96 in der Unterschr. Pañcat. ed. orn. 4, 22. Vet. in L.A. (III) 13, 22. — 3) *Eindruck, eine durch Vorangegangenes (auch durch Werke in einer früheren Geburt), aber im Augenblick nicht mehr Wirkendes bedingte Stimmung —, Anlage des Geistes; Nachwirkung* (im Geiste oder in einem Körper); = अनुभव (अनुभवे st. तु भवे in H. an. zu lesen) und नामकर्मन् H. an. Med. = वासना H. 1373. Hall. 4, 95. = गुणभेद H. an. Kân. 4, 1, 7. 5, 1, 17. fg. 9, 2, 6. Nilak. 16. शास्त्रकृत 17. 31. Jogas. 1, 18. 50. 2, 13. Siddhânj. 67. Kap. 2, 42. 3, 43. 5, 130. Tarkas. 3. 19. Verz. d. Oxf. H. 229, *a*, 7 v. u. 230, *a*, 26. fgg. Sarvadarç. 40, 11. 107, 13. 108, 1. fgg. 164, 6. 168, 16. 179, 18. Vedântas. (Allah.) No. 149. Kusum. 11, 4. zerfällt in drei Formen: वेग *Impuls*, स्थितिस्थापक *Elasticität* und भावना *reproductive Einbildungskraft* Tarkas. 54. Bhâsâp. 29. 136. ist nicht beim परमात्मन् Âtmop. in Ind. St. 2, 57. (रामस्य, विष्णोः) संस्कारास्त्वभवन्वेदाः R. ed. Bomb. 6, 119, 25. प्रयत्नज्ञानसंस्कारा घात्मलिङ्गमुदाहृतम् Kâm. Nîtis. 1, 29. Ragh. 1, 20. Mâlatîm. 126, 9. Kathâs. 7, 19. 23, 51. Mârk. P. 24, 19. Râja-Tar. 1, 328. जन्मान्तरकृत° Çârîr. zu Bṛh. Âr. Up. S. 133. Hit. 112, 5. अहो स्थिरसंस्कारता व्यवहारार्थिनः Mṛicch. 139, 14. — 6) bei den Buddhisten *Stimmung des Innern, ein momentaner Affect des Geistes*, einer der fünf स्कन्ध H. 233, Schol. Burnouf, Intr. 84. 488. 503. fgg. 511. Sarvadarç. 20, 11. 23, 22. वेदनास्कन्धनिबन्धना रागद्वेषाद्याः क्लेशा उपक्लेशाश्च मदमानाद्यो धर्माधर्मौ च संस्कारस्कन्धः 20, 16. fg. Wassiljew 224 u. s. w. Hiouen-thsang 1, 385. संस्कृतो तृणिकाः सर्वसंस्काराः Prab. 49, 10. Spr. (II) 2005. 6727. Sadduh. P. 4, 26, 6. — Vgl. अग्न्य°, अङ्ग°, दुः°, पात्र°, पुनः° (auch M. 9, 176. Jâjñ. 3, 235), भू°, मत्र°, वक्रि°.

संस्कारक (wie eben) adj. 1) *zubereitend, zurüstend, zurichtend, in einen zweckentsprechenden Zustand versetzend* Schol. zu P. 2, 1, 34. fg. zu Kât. Çr. 5, 9, 10. 12, 1, 11. आत्म° 4, 12, 16. — 2) *weihend, ein Sacrament ertheilend:* प्रद्र° MBh. 8, 1846. — 3) *einen Eindruck bewirkend, — hinterlassend* Sarvadarç. 131, 15.

संस्कारकौस्तुभ m. Titel eines *über die Weihen (Sacramente)* handelnden (in Bombay 1783 (1861) lithographirten) Werkes Verz. d. B. H. No. 1033. Wilson, Kâśikâ. 239.

संस्कारगणपति m. Titel eines Commentars zu Pâraskara's Gṛhjasûtra Verz. d. B. H. No. 267.

संस्कारतत्त्व n. Titel eines Abschnittes im Smṛititattva Gild. Bibl. 463. 473. Verz. d. Oxf. H. 289, *b*, No. 693. 291, *b*, No. 707.

संस्कारदीधिति f. wohl = संस्कारकौस्तुभ Verz. d. B. H. No. 1033.

संस्कारनामन् n. *der beim* नामकर्मन् *dem Kinde gegebene Name* (entspricht unserem *Taufnamen*) Varâh. Bṛh. 26 (24), 15.

संस्कारपद्धति f. Titel eines über *die Weihen (Sacramente)* handelnden Werkes Notices of Skt Mss. 11.

संस्कारप्रकाश m. desgl. ebend. 26.

संस्कारप्रयोग m. desgl. ebend. 85.

संस्कारभास्कर m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 280, *b*, No. 658.

संस्कारमय (von संस्कार) adj. in अपत्य° *in der Weihe des Kindes bestehend:* विधि Ragh. 14, 75.

संस्कारमयूख m. Titel eines über *die Weihen (Sacramente)* handelnden Werkes Verz. d. B. H. No. 1032.

संस्काररत्न n. desgl. ebend. No. 1031.

संस्कारवत् (von संस्कार) adj. *grammatisch richtig:* गिर् Kumâras. 1, 38. स्वरसंस्कारवती (सच्) Ragh. 15, 76 nach Stenzler und dem Comm. in der ed. Calc. *den Accenten nach richtig (accentibus adornata)*; es muss aber dieses comp. in स्वरवतो संस्कारवती च aufgelöst werden, da स्वर auch sonst mit संस्कार (*die richtige Bildung eines Wortes*) in einer copul. Zusammensetzung erscheint, z. B. Nir. 2, 1. Davon nom. abstr. संस्कारवत्त्व n. H. 65.

संस्कारवादार्थ m. Titel eines über *die Weihen (Sacramente)* handelnden Werkes Notices of Skt Mss. 150.

संस्कारसिद्धिदीपिका f. Titel eines philosophischen, über *die Eindrücke* handelnden Werkes Hall 48.

संस्कारादिमत् (von संस्कार + आदि) adj. *geweiht* (von Personen) u. s. w. Bhâg. P. 10, 23, 43.

संस्कार्य (von 1. कृ mit सम्) adj. 1) *herzurichten* u. s. w.; in der Astron. *durch eine entsprechende Operation zu corrigiren* Colebr. Dhân. 10, Comm. — 2) *zu weihen* (von einer Person) M. 10, 66. Jâjñ. 2, 124. MBh. 13, 2635. Schol. zu Kât. Çr. 21, 4, 11. 16. Prajogar. 2, *b*, 2. असंस्कार्यैः शरीरैश्च प्रत्रास्ताः स्थिरयौवनाः Mârk. P. 49, 2 = Vishṇu-P. bei Muir, ST. 1, 29. — 3) *einen Eindruck empfangend* Sarvadarç. 131, 15.

संस्कर्तृ und संस्कृत (s. auch unter 1. कृ mit सम्) VS. Prāt. 4, 7. 5, 43. adj. 1) *zugerüstet, zugerichtet, bereit;* n. *Zurüstung, Vorbereitung, zum Empfang bereiter Ort:* न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठा ṚV. 5, 76, 2. ṛṇāya 8, 33, 9. तत्र नो संस्कृतम् *dort ist Alles für uns bereit* VS. 4, 34. TS. 1, 4, 22, 3. स्त्री पुमांसं संस्कृते तिष्ठन्तमभ्येति Ćat. Br. 3, 2, 1, 22. गो TBr. 3, 3, 5, 5. पुनः° (रथ) Lāṭj. 9, 4, 7. Çāṅkh. Br. 1, 5. साधु° Ćat. Br. 1, 1, 4, 10. Çāṅkh. Gṛhj. 1, 8 (अ°). दाधिकं संस्कृतं दृघा Hall. 2, 167. अग्नि 260. भूमि 4, 77. = प्रशस्त 96. = व्युत्पन्न u. s. w. 2, 197. — 2) *geweiht* (eine Person): ब्राह्मणाः (neben प्राकृताः) MBh. 3, 13437. स्त्रियः Verz. d. Oxf. H. 101, *b*, 10. — 3) *richtig gebildet* (von der Sprache): अवितथसंस्कृतप्रभाषिन् Suçr. 2, 532, 4. असंस्कृतवाक्य Spr. (II) 4434. die heute so genannte Sprache (adj. und subst. n.) ist gemeint Çiksh. 3 in Ind. St. 4, 348. Bhag. Nāṭjaç. 18, 51. Daçak. 2, 59. Kiṭāb. 1, 33. 37. fg. Prātiṣākh. 19, *b*, 8. Tarkas. 19. TBr. Comm. 1, 84, 5. Weber, Rāmat. Up. 362. Verz. d. B. H. No. 881. 946. Verz. d. Oxf. H. 179, *a*, No. 410. 214, *a*, 12. Prab. 68, 9. Ind. St. 8, 205. 396. — Vgl. सु°.

संस्कृतर् (von 1. कर्त् mit सम्) n. *Schlachtbank* ṚV. 5, 28, 4.

संस्कृतमाला f. Titel eines Buches zur Erlernung *des Sanskrit* Gild. Bibl. 374.

संस्कृतवाक्यरत्नावली f. desgl. ebend. 595.

संस्कृति (von 1. कृ mit सम्) f. VS. Prāt. 4, 7. 5, 43. = संस्कार. 1) *Zurüstung, Zubereitung, Zurichtung* VS. 7, 14. Ind. St. 1, 14. neben विकृति unter den Beinn. Kṛshṇa's MBh. 12, 1507 (संस्कृत ed. Bomb.). — 2) *Bildung:* आत्म° *Selbstbildung* Ait. Br. 2, 39. 6, 27. — 3) *Weihe, Vollziehung eines Sacraments* Ind. St. 8, 227. Verz. d. B. H. No. 1032. Bhāg. P. 10, 45, 26.

संस्क्रिया (wie eben) f. 1) *Zubereitung, Zurüstung, Zurichtung:* मन्त्र° von *Sprüchen* Verz. d. Oxf. H. 98, *b*, 16. Sarvadarçanas. 170, 12. — 2) *Weihe,* insbes. *die letzte, die Verbrennung des Leichnams* Taik. 2, 8, 61. — Vgl. अङ्ग°.

संस्तम्भ (von स्तम्भ् mit सम्) m. *Hartnäckigkeit, Widerstreben* TBr. 2, 7, 10, 1. Nir. 5, 16 (als Bed. von स्तोभ् caus.). MBh. 5, 787.

संस्तम्भन (vom caus. von स्तम्भ् mit सम्) 1) adj. *stopfend:* व्रण° Vishṇu. 1, 10, 20. — 2) n. *a*) *Stopfmittel* Suçr. 2, 434, 5. — *b*) *das zum-Stillstehen-Bringen, Aufhalten:* सेना° Verz. d. Oxf. H. 105, *b*, 29. — Vgl. स्तम्भन.

संस्तम्भनीय (wie eben) adj. *aufzurichten, zu ermuthigen:* बाष्पकलो ज्ञः R. 2, 34, 53.

संस्तम्भयितर् (wie eben) nom. ag. *der zum Stillstehen bringt (gebracht hat), der da bannt:* विन्ध्यस्य Bhāg. 6, 61.

संस्तम्भयिषु (vom desid. des caus. von स्तम्भ् mit सम् ohne Reduplication) adj. *zum Stehen zu bringen beabsichtigend:* ein fliehendes Heer MBh. 7, 1746 nach der Lesart der ed. Bomb., विष्टम्भयिषु ed. Calc.

संस्तम्भिन् (von स्तम्भ् mit सम्) adj. *zum Stillstehen bringend, bannend* (eine Gefahr): विद्या MBh. 14, 267.

संस्तर (von स्तर् mit सम्) m. 1) *Streu, Lager* AK. 3, 4, 22, 163. H. 682. an. 3, 615. Med. r. 235. Hall. 5, 32. R. Gorr. 2, 93, 24. fg. 103, 24. 120, 13. Pañcat. 117, 12. कुश° MBh. 1, 1541. 4708. R. Gorr. 2, 96, 24. Kathās. 22, 198. 56, 316. दर्भ° R. 2, 103, 29 (111, 25 Gorr.). R. Gorr. 2, 3, 22. 5, 68, 11. Kathās. 22, 195. 54, 162. पर्ण° R. 1, 25, 1 (26, 1 Gorr.). नवपल्लव° Kumāras. 4, 34. Rāgān. 8, 36. सम्मोहदल° Spr. (II) 537. शर° MBh. 12, 1811. अग्नि° 3, 11004. चर्म° Verz. d. Oxf. H. 46, *a*, 41. — 2) *eine (ausgestreute) Menge:* पुष्पसंस्तरसंस्तृत (आश्रम) MBh. 1, 2362. पुष्पसंस्तरसंकट (वनोद्देश) R. 3, 56, 9. — 3) *Hülle, Decke:* अर्कांशुसंस्तरा adj. Spr. (II) 792. — 4) *das Bestreuen:* वेदिसंस्तरार्थम् Çiṅ. 31, 6, v. l. für °संस्तरणार्थम्. — 5) *Ausbreitung:* प्रवृत्ते धर्मसंस्तरे Harīv. 2622. — 6) *Opferhandlung, Opfer* AK. H. 820. H. an. Med. Hall. 2, 239. R. 1, 13, 22 (20 Gorr.). gewöhnlich in dieser Bed. यज्ञ° MBh. 1, 2216. 2385. 5, 3754. 9, 2353. 14, 2641. 15, 930.

संस्तरण (wie eben) n. 1) *Streu:* असंवृतो संस्तरणेन मेदिनीमथाधिशिश्ये R. Gorr. 2, 8, 59. — 2) *das Bestreuen:* वेदिसंस्तरणार्थम् Çiṅ. 31, 6.

संस्तव (von स्तु mit सम्) m. 1) *gemeinschaftlicher —, gleichzeitiger Preis* Nir. 4, 15. चमसस्य 11, 16. Çāṅkh. Çr. 14, 11, 8. अ° Nir. 12, 2. — 2) *Preis, Belobung;* sg. und pl. Harīv. 8657. Spr. (II) 2330. Bhāg. P. 11, 13, 41. प्रियायाः Harīv. 7109. स्वबल° MBh. 1, 1521. अमित्र° 2, 2135. सूतमागधाः । तुष्टुवुः — स्तवैर्मङ्गलसंस्तवैः (= मङ्गलप्रतियादकैः Comm.) R. ed. Bomb. 2, 81, 1. — 3) *Erwähnung:* दीर्घसत्र° Comm. zu Kāṭj. Çr. 32, 12. — 4) *Bekanntschaft* AK. 3, 3, 23. H. 1313. Hall. 4, 88. Kir. 4, 22. 25. Rāǵa-Tar. 4, 498. क्षत्रयोः P. 3, 3, 21, Schol. °प्रीति Kathās. 121, 62. प्राग्जन्मान्तर° 28, 117. कस्ताभिः संस्तवो मम 45, 306. प्रियाभिः सक् 54, 241. 104, 77. संस्तवं कृ 60, 66. तेन 65. वणिजा सक् 29, 101. संज्ञात° adj. 20, 179. भिलुभिः सक् 63, 57. तत्कथासंस्तवा adj. 108, 72. अ° adj. *mit Jmd unbekannt, fremd* Çiç. 33, v. l.

संस्तवन (wie eben) n. 1) *gemeinschaftliches —, gleichzeitiges Preisen* Āçv. Çr. 1, 2, 23. 6, 10, 13. Comm. zu 1, 3, 26. Çāṅkh. zu Kāṭh. Up. S. 74. — 2) *das Preisen, Loben* Bhāg. P. 8, 7, 34. देव° Harīv. 2628.

संस्तवार्ह (wie eben) Uṇādis. 2, 89. adj. = वाग्मिन् *beredt* Uǵǵval.

संस्तार (von स्तर् mit सम्) m. = संस्तर *Streu, Lager:* शरावाकार° Mān. P. 60, 10. die Länge durch's Metrum bedingt.

संस्तारपङ्क्ति f. *ein best. Metrum* (12 + 8 + 8 + 12 *Silben*) ṚV. Prāt. 16, 39. Colebr. Misc. Ess. 2, 153. Ind. St. 8, 249.

संस्तार्य (von स्तु mit सम्) m. 1) *Ort des gemeinsamen Lobgesangs* P. 3, 3, 31. AK. 3, 3, 34. Ćat. Br. 14, 6, 11, 3. — 2) = संस्तव *gemeinschaftlicher —, gleichzeitiger Preis;* am Ende eines adj. comp.: स्वर्गसंस्तावं हि साम Kāṭh. Up. 1, 8, 3. प्रतिष्ठासंस्तावं (so ist zu verbinden) हि साम 7.

संस्तिर् (von स्तर् mit सम्) f. *was nahe zusammenliegt: das Dichte* oder *das Nahe:* न संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति ṚV. 1, 140, 7.

संस्तुत s. u. स्तु mit सम्. Davon nom. abstr. °त्व n. *das Zusammengepriesenwerden* Çāṅkh. zu Kāṭh. Up. S. 46.

संस्तुति (von स्तु mit सम्) f. *Preis, Lob* MBh. 6, 783 (pl.). °निन्दाभ्याम् 5, 1735. गीतसंस्तुतिवादित्रैः Bhāg. P. 3, 22, 28. श्रीविषयशील° (obj.) Kathās. 123, 344. तुल्यनिन्दात्मसंस्तुति adj. *dem es gleich ist, ob man ihn tadelt oder lobt,* Bhag. 14, 24. MBh. 1, 1600. 9, 2856.

संस्तृभ् (स्तृभ् mit सम्) s. स्तृभ् mit सम्.

संस्तोभ (von स्तुभ् mit सम्) m. मरुतां संस्तोभः (oder घर्कः) N. eines Sāman Ind. St. 3, 228, *b*. संस्तोभ n. desgl. 241, *b*.

संस्त्याय (von स्त्या mit सम्) m. 1) *Anhäufung, Ansammlung* AK. 3, 4,34,153. H. an. 3,512. Med. j. 109. Nir. 10,9. 12,9. — 2) *Haus, Wohnung* H. 991. H. an. Halâj. 2,136. संस्त्यायमेव गच्छावः Mâlatîm. 23, 11. = संनिवेश AK. H. an. Med. = संस्थान Med.

संस्थ (von स्था mit सम्) 1) adj. (f. धा) = अवस्थित Med. th. 13. *a) stehend —, weilend —, sich befindend in, auf, enthalten in:* सीतया पार्श्वे संस्थया R. Gorr. 2,13,8. वने ऽत्र Spr. (II) 263. दिने दिने तणं चित्तं त्वयि संस्थं भवतु Harîv. 14673. gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: तत्तशिला° MBh. 1,831. काञ्चनयष्टि° 3,698. पातालतल° 15757. 7,3800 (कर्णौ हस्तसंस्थया mit der ed. Bomb. zu lesen). द्रौपदीतत्य° 8,3308. R. 4,45,9. यष्टि° 5,33,27. 54,14. 6,14,22. स्वोच्चसंस्थेषु ग्रहेषु R. ed. Bomb. 1,18,9. Raghu. 6,29. Kumâras. 6,60. Mâlav. 15. Varâh. Bṛh. S. 5,35. 11,40. 17,2. 28,3. 40,3. 45,10. 50,12. 52,10. 54,1. Spr. (II) 1307. 2094. 2249. 2953. 3138. 4529. 6185. 6398. Kathâs. 14, 19. 25,113. 80,53. Mârk. P. 18,50. 51,16. 75,8. Bhâg. P. 11,12,21. Vers. d. Oxf. H. 16,a,6. 156,a,2. Vet. in LA. (III) 4,14. सक्थसंस्थं साम Çâṅkh. zu Kâuîtak. Up. S. 44. यत्तर्पयामी जीवसंस्थः Sarvadarçanas. 55,12. तस्याद्यरूपवाज्ञानादात्मसंस्थं वकार क् so v. a. *nahm zu sich, verzehrte* Harîv. 1439. — *b) befindlich in, bei* so v. a. *eigen, gehörig:* ज्ञवेनात्मनि संस्थेन R. 7,36,27. गोषु ब्राह्मणसंस्थासु M. 8,325. चतुर्थे तस्य धर्मस्य तत्संस्थे वै भविष्यति MBh. 12,2522. कामान्सर्वान्पार्थिवानेकसंस्थान् 13, 2685. विद्यया चात्मसंस्थया (*par sa science fixée sur l'Esprit* Burnouf) Bhâg. P. 3,10,6. — *c) beruhend auf, abhängig von;* am Ende eines comp.: यूथवर्गः सहामात्यो मत्संस्थो ऽस्य MBh. 1,5684. यमात्मसंस्थः सर्वेषु कार्येषभवत्तदा 7477. (ताम्) ब्रात्मसंस्थां चकार 3,17125. यस्मत्संस्था च पृथिवी वर्तते 5,2167. देव° 13,1005. पुत्रसंस्थं विपुलं राज्यं विप्रोषिते त्वयि 15,162. शान्ति मत्संस्थाम् Bhag. 6,15. ब्रात्मसंस्थं मनः कृत्वा 25. — *d) sich befindend in* so v. a. *theilhaftig, im Besitz von — seiend:* सङ्ग° MBh. 5,1690. फलसंस्था भविष्यामि कृत्वा कर्म सुदुष्करम् 1,6198. सुख° *glücklich lebend* Pañkat. 94,2. — *e) bestehend, dauernd:* कतिपयदिनसंस्थं (was Gildemeister aus metrischen Rücksichten in दिनैः कतिपयैः संस्थं verändert hat) यौवनम् Vet. in LA. (III) 35,22. — *f) todt* (vgl. संस्थित) Çabdar. im ÇKDa. — 2) m. *Späher, Kundschafter* Med.; vgl. 4) b). — 3) loc. etwa *in loco; inmitten, in Gegenwart* RV. 1,5,4. संस्थे पदेव ईयसे रथीणाम् 5,3,8. संस्थे जनस्य गोर्मतः 8,21,11. उपस्तुतीनाम् 27,13. *auf der Stelle* 32,11. — 4) f. संस्था *a) das Bleiben, Verbleiben bei Jmd:* (घस्यागतस्य) सुखं पृष्ट्वा प्रतिवेद्यात्मसंस्थां (so v. a. *aufforderud bei ihm zu bleiben*) ततो दद्यादमवेद्य धीरः MBh. 5,1399. ब्रात्मसंस्थाकार 13, 1372. — *b) Gestalt, Form, Aussehen* Sâh. D. 624. am Ende eines adj. comp. *in der Form von — auftretend, erscheinend als:* एतच्चेष्टं नित्यमेवात्मसंस्थम् Çvetâçv. Up. 1,12. ईश° 6,17. इमाश्चतस्रो दिशश्चतस्र उपदिशो ऽग्निसंस्थाः Maitrâyaṇ. 6,2. महत्संस्थमयस्पिण्डम् 27. धनुःसंस्थे हे वर्षे दक्षिणोत्तरे MBh. 6,333. ब्रभाव° (निरूप) 5,729. Kir. 15,12. वक्र° = वक्र Halâj. 2,143 (vgl. AK. 2,2,14. H. 1009). संस्था = सादृश्य H. an. 2,221. Med. = साकार Vaij. bei Mallin. zu Kir. 15,12. — *c) eine festgesetzte Ordnung, Norm:* लोकस्य संस्था न भवेत्सर्वं च व्याकुलीभवेत् MBh. 12,1992. याचक्षे ऽकर्निशासंस्थां यथावद्विक्षणिऽतताम् Mârk. P. 16,70. सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्पृथक् । वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे ॥ M. 1,21. उपयोग° (= °नियम) Karaka 3,1. संस्थां कृ oder स्थापय् *eine Verhaltungsregel* (für sich) *aufstellen, eine Verpflichtung eingehen:* संस्थां व्यतिक्रम् oder परिभिद् (v. l. प्रतिभिद्) *einer aufgestellten Verhaltungsregel —, seiner Verpflichtung untreu werden* MBh. 13,7513. R. Gorr. 1,62,26. 4,33,29. 57,23. 5,32,23. °कृत *festgesetzt, bestimmt* Harîv. 11113. संस्था = मर्यादा, स्थिति AK. 2,8, 1,26. Trik. 3,3,200. fg. H. 744. H. an. Med. Vaij. a. a. O. = व्यवस्था H. an. Halâj. 5,33. Vaij. a. a. O. — *d) Beschaffenheit, Natur, Wesen:* दुरितप्रत्यूह° Raghu. 11,35. Bhâg. P. 2,1 und 2 in der Unterschr. 3,7. 26. 10,9. 20,17. 23,43. 4,7,39. 5,10,14. 20,38. 26,40. 6,4,26. 10,37, 23. 70,5. 11,10,15. 12,11,9. संस्था = व्यक्ति H. an. — *e) Abschluss, Vollendung* Trik. H. an. VS. 19,29. नेत्पुरा पशुस्य संस्थाया यत्तं गच्छानि Çat. Br. 3,1,3,6. 2,1,7. 1,1,1,3. 9,1,1. 7,2,3,7. 8,1,1,3. 3, 4, 1,15. 13,4,1,3. Nidânas. bei Weber, Nax. 2,284. Ait. Br. 2,25. 6,3. यक्षः 7,17. TS. 1,6,11,2. Kâṭh. Ça. 1,7,17. पर्व° 5,2,13. 25,5,16. 7,1. यज्ञः° TBr. 3,12,9,6. Lâṭy. 10,5,13. इष्टि° 15,3. °क्षय *Schlussgebet* Âçv. Çr. 1,12,14. fg. 13,10. प्राक्संस्थ *in der Richtung nach Osten endigend* Kâṭy. Çr. 2,1,16. उदक्संस्थ Âçv. Gṛhy. 1,3,1. 10,17. — *f) Ende* so v. a. *Untergang, Tod* Trik. H. 323. H. an. Med. Halâj. 3,5. Vaij. a. a. O. तेमकं प्राप्य रात्रानं स (वंशः) संस्थां प्राप्स्यते कलौ VP. 4, 21,4. Bhâg. P. 1,12,16. 15,32. 9,12,15. 22,42. पाण्डुपुत्राणाम् 1,7,12. 2,4,4. 6,10,3. 7,7,10. *Untergang der Welt* 12,7,9. 17. यत्संस्थमिदम् 2,3,2. — *g) ein abgeschlossener liturgischer Satz* oder *Gang im Soma-Cult.* In mehreren solcher Sätze bewegen sich die Hauptbegehungen; der Gjotishṭoma z. B. kann bestehen in den sieben Sätzen: Agnishṭoma, Atjagnishṭoma, Ukthja, Shoḍaçin, Vâgapeja, Atirâtra und Aptorjâma. Sie. in der Einl. zu Ait. Br. und zu 3,49. 4, 12. Ueber die Differenzen vgl. Ind. St. 9,120. 229. 10,325. 332. ततोयसवन उत्तरोत्तरा संस्थामुपेयुरतिरात्रात् Âçv. Çr. 6,7,7. 11,1 (सर्वे सोमयागाः संस्थया सप्तविधाः Comm.). स्तोमपृष्ठ° 9,1,12. इमामेवैकाङ्गं पृथक्संस्थाभिरुपेयुः 10,5,9. Kâṭy. Çr. 25,14,10. Çâṅkh. Çr. 7,21,4. 15,5, 17. °विकृत 26,9,4. Bei Lâṭy. 5,5,22. fgg. werden neben den sieben *Formen* des Soma-Opfers (s. oben) noch die sieben *Formen* des Havirjagña aufgezählt: Agnjâdheja, Agnihotra, Darçapûrṇamâsau, die Kâturmâsja, Paçubandha, Sautrâmaṇi und Pâkajagña; Gautama hat Agrâjaṇeshṭi (an 8ter Stelle) st. Pâkajagña, die bei ihm gleichfalls in sieben *Formen* zerfallen: Ashṭakâ, Pârvaṇa, Çrâddha, Çrâvaṇi, Âgrahâjaṇi, Kaitri und Âçvajugi. — Lâṭy. 10,20,10. Çâṅkh. Gṛhy. 1,1. Kauç. 138. °विभेदाः Bhâg. P. 3,13, 37. सुषाव च बहून्सोमान्सोमसंस्वास्ततान च MBh. 1,4695. सोमसंस्थासु सप्तसु 12,930. सोमसंस्था कविःसंस्थाः पाकसंस्थाश्च सप्त याः Mârk. P. 23. 33. Vers. d. Oxf. H. 266,b,36. fgg. पशु° so v. a. *das Schlachten des Opferthiers* Bhâg. P. 10,23,8. प्रेत° so v. a. *die Cerimonie der Verbrennung des Leichnams* 7,14,26. ohne प्रेत dass.: कृत्वा संस्थाविधिं पितुः 10,66,27. पामाकुलौकिकीं संस्थां कृतानां समकारयन् 44,49. ये पितरः भुञ्जते विप्रशरीरसंस्थाः wohl so v. a. श्राद्ध Mârk. P. 96,22. संस्था = क्रतु Trik. = क्रतुभेद H. an. — *h) ein Späher —, Kundschafter im eigenen Lande* (vgl. 2) H. an. (Wilson und ÇKDa. fassen चरे च निशराष्ट्रके als

zwei Bedd. und machen das Wort zum masc.). Vaiś. a. a. O. (= प्रणिधि). Kâm. Nîtis. 12,35. fg. — Vgl. चित्र°, दूर°, पाक° (in den Nachträgen), पार्श्व°, बर्हिः°, ब्रह्म°, पत्त°, पदासंस्थम्.

संस्थात्व (von संस्था) n. *das Formsein, das Gestaltetsein:* व्यक्ति° Bhâg. P. 3,26,39.

संस्थान (von स्था mit सम्) 1) adj. als Beiw. Vishṇu's MBh. 13,6691. als v. l. für सस्थान Sîddh. K. zu P. 5,4,10. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2097. — 3) n. am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) das Sichbefinden an einem Orte:* दूर° (कोशस्य) Spr. (II) 134. भूमिसंस्थानन्न फलम् Verz. d. Oxf. H. 15, *b*, No. 59. — *b) das Bestehen, Dasein, Vorhandensein:* घरात्रा° Mârk. P. 16,32. प्राक्प्रदो ऽभिव्यक्तेर्मृदाद्यवयवानां पिण्डादिकार्यान्तरत्वेन संस्थानम् Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 34. *Existenz, Leben:* यत्किंचित्कर्म मानुष्यं संस्थानाय प्रदृश्यते MBh. 13,2424. — *c das Verharren in* so v. a. *treues Befolgen:* मतिस्मृत्यर्थ° Kâm. Nîtis. 2,26. — *d) Aufenthaltsort, Wohnort* Nir. 7,5. ब्रह्मणः Kauṣ. Up. 1,3. 5. वध्यघातिनाम् MBh. 1,6727. गतदेवतसंस्थाना (वसुधा) 12,3240. पुरंदरस्य 15,545. रुद्रस्य R. 4,44,52. VP. 1,2,53 (= आकृति Comm.). — *e) ein öffentlicher Platz in einer Stadt* M. 8,371. MBh. 12,2602. 6105 (vgl. M. 8,371). 14,1905 (eine von Nîlak. erwähnte richtige Lesart für संघ्यान). R. 1,5,7 (3 Gorr.). R. Gorr. 2,48,19. 94,19. = चतुष्पथ AK. 3,4,28, 126. fg. H. 986. an. 3,431. Med. n. 147. Hall. 2,134. — *f) Gestalt, Form, Aussehen* (häufig in Verbindung mit रूप) MBh. 1,5078. 2,431. 1816. 3,10826. 11017 (S. 370; zu schreiben वेदीसं°). 5,4079. 6,480. 12,2112 (मायासंस्थानम् st. भार्यासंस्थानम् ed. Bomb.). 6901. 13,3245. 3506. 14,187. Harîv. 3929. 7633. 10072. गते स्वभावसंस्थानं लोके 12304. R. 1,16,32. 5,21 in der Unterschr. 31, 29. 32,3. 5. Spr. (II) 1834. Kâraka 2,1. 3,7. 8,5. Suçr. 1,259,7. 299, 4. Çiç. 126. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 16. S. 6, Z. 16. 3,17. 4,8. 18. 11,26. fg. 26,2. 33,4. 35,1. 50,7. 66,1. 82,3 (सु° adj.). Mârk. P. 23, 34. 54,8. 58,2. 61,1. 91,12. 119,9. Bhâg. P. 2,8,8. 3,9,28. 5,1,41. 5,30. 10,6. 20,1. 23,4. 6,1,5. 12,12,16. Verz. d. Oxf. H. 202, *a*, 42. Lalit. ed. Calc. 122,21. Weber, Vâgâsan. 224,4 v. u. Sâh. D. 4,15. 8,5. Sarvadarçanas. 51,14. 130,12. Vedântas. (Allah.) No. 130. Kusum. 16,21. Ind. St. 10,280. चतुरश्रानेकसंस्थानैः M. 9,261 (vgl. Kâm. Nîtis. 12,35). भारतं वर्ष चतुःसंस्थानसंस्थितम् *in vierfacher Form* Mârk. P. 57,58. संस्थान — रूप Taitt. 3,3,268. = आकृति H. an. Med. = संनिवेश AK. H. 1516. H. an. Med. Hall. 4,93. — *g) eine schöne Gestalt, — Form:* गन्धसंस्थानसंपन्न (पुष्प) MBh. 3,11072. 5,727. सु° adj. *des schönen Aussehens beraubt* R. 3,73,18. — *h) Symptom einer Krankheit* Verz. d. Oxf. H. 312, *a*, No. 745. Suçr. 1,30,18. = चिह्न Agastîpâla im ÇKDr. — *i) Beschaffenheit, Natur, Wesen* Verz. d. Oxf. H. 12, *b*, 8. Bhâg. P. 3,7,38. 27,28. — *k) Gesammtheit, das Ganze:* आकृतिरवयवसंस्थानविशेषः, मात्रादिसंस्थानविशेषो लिङ्गम् Gold. Mîm. 154, *a*. Bhâg. P. 1,3,3. 3,11,3. — *l) Abschluss* Çiṅkh. Çr. 5,14,2. 8,12,9. Lâṭ. 10,16,1. Drâhj. 3,13,23. — *m) Ende, Tod* Taitt. H. an. Med. — Vgl. क्षत्र° und संस्थानिक.

संस्थानचारिन् adj. MBh. 1,7044 (hier ausserdem नृषु fehlerhaft für त्रिषु) und 3,14913 fehlerhaft für सस्थानुचारिन् *mit dem Unbeweglichen und Beweglichen.* Vgl. संस्थानुचारिन्.

संस्थानवत् (von संस्थान) adj. 1) *da seiend, vorhanden:* यानि (भूषणानि) चैव विमुक्तानि तथा संस्थानवन्ति च R. 5,19,13. — 2) *verschiedene Gestalten habend:* संस्थानवत्यः संस्थाश्च (*Späher*) कार्याः कार्यप्रसिद्धये Kâm. Nîtis. 12,33; vgl. M. 9,261.

संस्थापक (vom caus. von स्था mit सम्) nom. ag. 1) *der da feststellt, in Kraft setzt:* धर्म° Pâraṅkar. 3,8,8. — 2) etwa *der einem Dinge eine best. Gestalt giebt:* खाड° etwa *der Figuren aus Zucker bildet* R. Gorr. 2,90,27.

संस्थापद्धति f. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 312.

संस्थापन (vom caus. von स्था mit सम्) 1) n. *das Befestigen:* धारा° Suçr. 1,28,1. *das Aufstellen, Aufrichten:* यज्ञ° MBh. 4,5 in der Unterschr. eines Gottesbildes Varâh. Bṛh. S. 60,15. — 2) m. *das Feststellen, in Kraft Setzen, Bestimmen:* धर्मस्य Bhâg. P. 10,33,27. धर्म° Bhâg. 4, 8. MBh. 7,8241. 14,1575. Harîv. 2215. Verz. d. Oxf. H. 253, *b*, 21. LA. (III) 87,15. Z. d. d. m. G. 6,97,15. घर्घ° *des Preises* M. 8,402. — 3) f. आ *das Aufrichten, Ermuntern, Muthmachen:* प्रियतमा विरक्तातुराणाम् Mṛicch. 43,18.

संस्थाप्य (wie oben) adj. 1) *zu stellen:* वशे *unter Jmdes* (gen.) *Botmässigkeit* Spr. (II) 808. *dem Platz geschafft werden kann:* राज्यव्यवस्था यावच्च पितामह्याश्च वृत्तयः । दुःस्थिताः प्रत्यभासन्त (so ist zu lesen) संस्थाप्यास्तस्य चेतसि ॥ so v. a. *so lange es dem Anschein hatte, als wenn sie in seinem Herzen noch einen Platz finden würden,* Râǵa-Tar. 6,327. — 2) *abzuschliessen:* यज्ञ TS. 2,6,8,6. — 3) *mit einem beruhigenden Klystier* (vgl. संस्थापन) *zu versehen* Kâraka 8,5.

संस्थावन् (von स्था mit सम्) adj. *was sich zusammenbefindet:* संस्थावना पवयसि RV. 8,37,4. nach Sây. *die beiden Welten.*

संस्थावयववत् (von संस्था + अवयव) adj. *eine Gestalt und Glieder habend* Bhâg. P. 2,8,8.

संस्थास्नुचारिन् MBh. 7,372 (Nîlak. verbindet सम् mit dem vorangehenden पश्यामस्) fehlerhaft für सस्थास्नुचारिन् *mit dem Unbeweglichen und Beweglichen;* vgl. संस्थानचारिन्.

संस्थित s. u. स्था mit सम्.

संस्थितपर्तृ n. *Schlussspruch nebst zugehöriger Spende* (sonst समिष्टयजुस्) Çat. Br. 2,5,4,39. Âit. Br. 1,11. Kâṭh. 29,3.

संस्थितहोम m. *Schlussopfer* Kauç. 3. 6. 47. 80. 140.

सँस्थिति (von स्था mit सम्) f. 1) *das Zusammensein mit, Vereinigung:* मित्रेण Spr. (II) 5390. यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् । एवमाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम् ॥ M. 6,90 = MBh. 12,10860. क्वापि Maitrâyaṇ. 3,1. *das Stehen auf:* केशभस्मतुषाङ्गारकपालेषु Jâbâl. 1,139. *das Verweilen bei, in:* भवित्री नहि ते तुद्र वनमध्येषु संस्थितिः MBh. 10,722. गच्छन्तीह गतिं मर्त्या देवलोके च संस्थितिम् 14,436. न कुर्यात्तत्र संस्थितिम् Spr. (II) 3802. एकत्रासनसंस्थितिः *das Zusammensitzen* 1363. गच्छतस्तत्राणां कालावयवसंस्थितिः Bhâg. P. 3,7,33. — 2) *das Bestehen* so v. a. *Dauern, Verharren im selben Zustande:* दीपस्य Spr. (II) 5989. नास्ति कालस्य संस्थितिः Harîv. 3339. so v. a. *Möglichsein:* धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राणाः संस्थितिहेतवः Spr. (II) 3121. चारसंस्थित्ये Kâm. Nîtis. 12,36. so v. a. *Dasein, Vorhandensein:* विनेषां व्युष्टिसंस्थितिम् Mârk. P. 16,45. नवमः (पुत्रः) केतुमालश्च तत्राज्ञा वर्षसंस्थितिः

53,35. — 3) *das Bestehen —, Halten auf Etwas:* नामो (स्त्रीणां) वयसि संस्थितिः Spr. 3822. ohne Ergänzung *Ausdauer, Beharrlichkeit* (in gutem Sinne) Harav. 2785. Bhâg. P. 4,22,49. — 4) *Gestalt, Form* MBh. 5,5894. R. 4,41,58. Ind. St. 15,280. Mâṛk. P. 54,31. 61,2. तदा संविदिति ख्याता प्राणायामस्य संस्थितिः *Form, Stufe* 39,25. — 5) *eine festgesetzte Ordnung:* संस्थितौ प्रकृतायां तु चातुर्वर्ण्यस्य सर्वशः Vâju-P. bei Mutr. St. 1,31. न लोकः संस्थितेर्भेदमेति Kâm. Nîtis. 3,39. — 6) *Beschaffenheit, Natur, Wesen* Jâṇ. 3,104. Mâṛk. P. 68,3. Bhâg. P. 1,18,2. एवंसंस्थितिका सिद्धिरियं लोकस्य MBh. 3,1260. — 7) *Abschluss, Feststellung:* यज्ञस्य TS. 6,4,8,2. 7,3,4,4. TBr. 3,9,6,5. — 8) *Ende:* स्वाहूदकस्य पुरतो दृश्यते लोकसंस्थितिः VP. 2,4,94. मरुापुरुष° Bhâg. P. 12,12,8. स्त्रीं को नु लभेत संस्थितिम् *so v. a. Tod* (diese Bed. kennt Çaṇḍiârṇav. bei Wilson) 3,19,27. — 9) *constipatio, Stockung, Verstopfung:* अपराधाः *des Uterus* Suçr. 2,217,6.

संस्पर्धा (von स्पर्ध् mit सम्) f. *Wettstreit, Wetteifer, Eifersucht, Neid* Bhâg. P. 3,1,21. 11,23,18. नन्दीश° Râja-Tar. 1,124.

संस्पर्धिन् (wie eben) adj. *eifersüchtig, neidisch* Bhâg. P. 11,6,12.

संस्पर्श (von स्पर्श् mit सम्) 1) m. *Berührung* AV. 8,2,16. Kâṭh. Up. 3,13,3. संस्पर्शं विगमिषेत् Kauṣh. Up. 2,4. Jâṇ. 2,215. °ज्ञा भोगाः Bhag. 5,22. येन P. 3,3,116. R. 3,49,44. Kumâras. 3,36. Çik. 32,15. Bhâg. P. 7,4,41. संस्पर्शं येनामी प्रतिपद्यते *das durch Berührung erzeugte Gefühl* 3,6,16. in comp. mit dem *Berührten* oder *Berührenden:* जुर° Kauç. 141. प्राण° Maitrâjan. 6,26. भूद्र° M. 5,104. R. 2,43,31. 5,13,59. 35,44. fg. 6,101,9. Spr. 3295. घनिष्ट° (II) 6328. Varâh. Bṛh. S. 48,53. 50,11. 51,44. Kathâs. 104,186. Râja-Tar. 3,437. 6,84. Nîlak. 126. Mâṛk. P. 43,14. 116,25. Bhâg. P. 4,9,43. 7,13,26 (मनः°). Paṇḍat. 93,1. 198,13. 250,4. am Ende eines adj. comp. (f. या): लघ्य° Kathâs. 37,17. परिवर्तितसंस्पर्शा निशायाः 36,45. घोर° (यामि) Âit. Br. 3,4. Çâṇḍ. Br. 1,1 (°तम superl). सुख° *angenehm bei der Berührung* MBh. 2,337. 4,922. 13,3822. वज्र° *bei der Berührung einem Donnerkeil ähnlich* 3,12175. राङ्कवाजिन° R. Gorr. 2, 30, 14. वज्राग्नि° 65,41. 3,57,4. सायंक° Bhâg. P. 10,76,24. — 2) f. या *eine best. wohlriechende Pflanze* (= जटी u. s. w.) AK. 2,4,8, 19. — Vgl. कील°, दुःख°, राङ्क°, शीत°.

संस्पर्शन (wie eben) 1) adj. *berührend:* गात्रसंस्पर्शनानि (nach der Lesart der ed. Bomb.) nach Nîlak. *so v. a. Gemünder* MBh. 2,200. — 2) n. *das Berühren, Berührung* Çâṇḍ. Çr. 7,5,11. Mâṛk. P. 24,38. Bhâg. P. 10,32,15. स्त्रीणाम् Suçr. 1,70,2. यदि: Comm. zu Âçv. Çr. 5,6,26. उष्ण° MBh. 12,11669. स्थल° 13,2662. शीतोदक° Suçr. 1,238,9.

संस्पर्शिन् (wie eben) adj. *berührend:* प्रेत° Jâṇ. 3,14. कस्तूरीमृग° (घनिल) Râja-Tar. 4,170.

संस्पृश् (wie eben) adj. dass.: तद्दोटिका° (प्रियतम) Spr. (II) 2665.

संस्प्रष्टृ (wie eben) nom. ag. zur Erklärung von पृश्नि Nir. 2,11.

संस्फाल (von स्फल् mit सम्) m. *Widder, Schaf* Taik. 2,9,24.

संस्फीय gaṇa घूमादि zu P. 4,2,137. — Vgl. सांस्फीयक.

संस्फुट (von स्फुट् mit सम्) adj. *aufgeblüht* Çârṅâr. im ÇKDr.

संस्फेट m. = संस्फोट Bhar. zu AK. 2,8,2,73 nach ÇKDr. H. 796, Schol. — Vgl. संफेट.

संस्फोट (von स्फुट् mit सम्) m. *Kampf, Schlacht* AK. 2,8,2,73. H. 796. Hall. 2,298.

संस्मरण (von स्मृ mit सम्) n. *das Gedenken, Sicherinnern* (das obj. im gen.) Kumâras. 3,3. Verz. d. Oxf. H. 62,*a*,13. 106,*a*,20. 30. Bhâg. P. 1,19,33. Paṇḍar. 3,9,22. Hall. 5,97.

संस्मरणीय (wie eben) adj. *dessen man sich erinnern muss, nur noch in der Erinnerung lebend* Spr. (II) 347.

संस्मारक (vom caus. von स्मृ mit सम्) adj. *erinnernd an* (geht im comp. voran) Kâṇḍan. 99.

संस्मारण (wie eben) n. = स्मारण (die ed. Bomb. म स्मारणं st. संस्मारणं) *das Ueberzählen* (des Viehes) MBh. 3,14854.

संस्मृति (von स्मृ mit सम्) f. *das Gedenken, Erinnerung an* (gen. oder im comp. vorangehend) Kir. 18,27. Kâṇḍan. 137. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 7. तत्संस्मृतिं प्रति *so weit die Erinnerung daran reicht, so viel davon im Gedächtnisse geblieben ist* Vaṇiâm. Bṛh. S. 50,31. संस्मृतिं लभ् *sich Jmdes oder einer Sache wieder erinnern* Kathâs. 55,206.

संस्यन्दिन् (von स्यन्द् mit सम्) adj. *zusammenfliessend:* क्रतौ Çâṇḍ. Çr. 16,18,10.

संस्राव (von स्रु mit सम्) m. = संस्राव Vop. 26,36. 1) *Zusammenfluss:* कफसंस्राव (so) Suçr. 2,321,1. — 2) *zusammenlaufender Rest von Flüssigem, Neige* ṚV. 1,113,5. Çat. Br. 3,5,3,12. 9,3,22. 4,2,1,19. 5,5,4,3. 14,9,3,4. Âit. Br. 2,30. Pâr. Gṛhj. 1,11,3. Âçv. Gṛhj. 4,7, 15. Jâṇ. 1,234. 247. मक्षामन्धि° Kâṭj. Çr. 22,5,25. *Rest* überh.: नाराचैः — विषाणाग्रसंस्रावैः (°संस्रवैः ed. Bomb. und dieses = एकदेश nach Nîlak.) *so v. a. Theilchen davon, Splitter* MBh. 7,1333. — 3) *fliessendes Wasser:* नद्यः शोणितसंस्रावाः R. 7,101,6.

संस्रवण (wie eben) n. in गर्भ° = गर्भस्राव *Fehlgeburt* Schaṇṭu bei Kull. zu M. 5,66.

संस्रवभाग adj. = संस्रावभाग *dem die Neige gehört* VS. 2,18.

संस्रष्टृ (von सृज् mit सम्) nom. ag. *in Berührung stehend, Etwas zu thun habend mit:* परिदृष्टा गुणानां तु संस्रष्टा मन्यते यथा MBh. 12,10830; vgl. 7107. 9019.

संस्राव (von स्रु mit सम्) m. P. 3,1,141. = संस्रव Vop. 26,36. 1) *Zusammenfluss* AV. 1,15,3. 4. *Ansammlung von Eiter u. s. w.* Suçr. 2, 269,12. 302,16. — 2) *Neige, Rest* TS. 3,1,9,6. Kâṭh. 28,7. Çâṇḍ. Gṛhj. 1,16,7 in Ind. St. 3,337. — Vgl. कर्ण°.

संस्रावभाग adj. = संस्रवभाग TS. 1,1,12,1. TBr. 3,3,9,7.

संस्राव्य (von संस्राव) adj. *zusammengeflossen, gemischt:* क्षविस् AV. 1,15,1. 2,26,2. 19,1,1.

संस्वेद (von स्विद् mit सम्) m. *Schweiss* MBh. 3,13454. °ज्ञाः *aus Schweiss (erwärmter Feuchtigkeit) entstanden* (Würmer, Insecten u.s.w.) 1,2587. 14,1134. Burnouf, Intr. 593. Vishṇ. 65. — Vgl. स्वेद.

संस्वेदपु ved. adj. Schol. zu P. 3,2,170. 7,4,35. Vârtt. 2.

संस्वेदिन् (von स्विद् mit सम्) adj. *schwitzend* Suçr. 2,332,7.

संहति (von हन् mit सम्) f. etwa *Schlichte:* स्तीर्णा बर्हिः संहतौ विश्वरूपैः ṚV. 3,1,7. = पङ्क्तीभूत Sây.

संहत s. u. हन् mit सम्.

संहतजानु adj. *dessen Knies* (beim Gehen) *sich berühren* Sivasiṁha

bei Buan. zu AK. 2,6,4,47 nach ÇKDa. °क dass. AK. 2,6,4,47.

संकृतता (von संकृत) f. *enger Anschluss* (eig. und übertragen) Çiç. 9,44.

संकृतव (wie eben) n. 1) *Zusammengesetztheit* Nilak. 85. — 2) *enger Anschluss* Spr. (II) 6678, v. l.

संकृतपुच्छि (von संकृत + पुच्छ) adv. *so dass die Schweinze zusammenstossen* gaṇa छिद्रादि zu P. 5,4,138.

संकृतल m. *die mit den Handflächen aneinandergelegten Hände* AK. 2,6,3,36. संकृततल Wilson in der 2ten Auflage. — Vgl. संघतल.

संकृताङ्ग (संकृत + अङ्ग) adj. *gedrungene Glieder habend* Suçr. 1,124,16.

संकृतापन m. N. pr. eines Schlangendämons MBu. 1,2153.

संकृताश्व (संकृत + अश्व) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Nikumbha, Harıv. 780. VP. 362.

संकृति (von कृ mit सम्) f. 1) *das Zusammenschlagen:* स्वकरतलय° Spr. (II) 1456. der Kinnbacken Çiṅis. Saṁs. 3,3,16. *das Sichschliessen* (eines Blumenkelches, einer Schatzkammer) Spr. (II) 4286, v. l. — 2) *Gedrungenheit, fester Bau* (des Körpers): वज्रवत्कठिना संकृतिरस्य शरीरे भवति Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,20. Vaṛāh. Bṛ. S. 68,1,100 (in der Unterschr.). तीक्ष्णाङ्ग° MBu. 3,1618. — 3) *Verdickung, Anschwellung:* तालु° Çiṅis. Saṁs. 1,7,78. — 4) *Verbindung, Vereinigung, das Verbundensein:* संकृतेः पश्य माहात्म्यं तृणैर्वारि निवार्यते Spr. (II) 2106. VP. 1,2,50. Mārk. P. 45,59. भेद: संकृतिभेदनम् Sin. D. 350. कृत्य° adj. Rāga-Tar. 5,247. भिन्न° adj. 260. संकृतिः प्रेयसी पुंसो स्वकुलैरत्यकैरपि Spr. (II) 6645. अल्पानामपि वस्तूनां संकृतिः कार्यसाधिका 648. पदानाम् Çaṁk. zu Bṛ. Ār. Up. S. 73. प्राणादि° 192. वज्रोमरुधिरस्नायुमेदोमज्जास्थि° als Umschreibung des *Körpers* Buic. P. 11,26,21. घ° Kām. Nītis. 19,51. Mārk. P. 102,3. — 5) *Nath:* वल्कले पयोधरोत्सेधविशीर्णसंकृति Kumāras. 5,8. — 6) *eine geballte Masse, Haufen, Menge* AK. 2,5,4,10. 3,6,3,26. H. 1411. Hālis. 2,9. 4,1. Kir. 12,10. तृणानाम् AK. 2,4,5,33. नड° ebend. नाराचशर° R. 6,19,60. शरदम्बुद° Kir. 5,4. शीर्णपलाश° Spr. (II) 1637. कुमुद° 2669. तरंगिणी° Kathās. 53,32. वरलोमसंकृती: 96,38. नक्षत्र° Mārk. P. 88,19. सस्थि° Buic. P. 2,6,9. कलिमल° 12,12,65. दिग्म° AK. 1,1,3,20. उडूनाम् 2,9,60. सर्वार्थिक्षन° Kathās. 22,30. 50, 6. Spr. (II) 1610. Nalod. 4,45. काच° Taitt. 3,3,139. गुण° Spr. (II) 7318, v. l. — Vgl. धूम°, नड°, पत्ति°.

संकृत्यकारिन् (सं°, absol. von कृ mit सम्, + का°) adj. *zusammen wirkend* Buic. P. 11,24,9. davon nom. abstr. °कारिता f. Schol. zu Kir. Çr. 243,15. °कारित्व n. 16. 117,4,5.

संकृनन (von कृन् mit सम्) 1) adj. *a) gedrungen, fest:* ऊर्ध° von Çiva MBu. 13,1243. संकृननाङ्ग adj. = संकृताङ्ग Buic. P. 5,9,11. 10,1. — *b) gedrungen machend* Suçr. 1,231,5. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manasju MBu. 1,3697. — 3) n. *a) das Zusammenschlagen:* करु° Suçr. 2,192,19. — *b) Verhärtung* Suçr. 1,287,8. — *c) Gedrungenheit, ein fester, — kräftiger Körperbau* Kāraka 3,8. 4,2. सर्वसंकृननोपेत MBu. 1,3035. °बलोपेत Buic. P. 5,2,20. प्राप्स्यसि नृप वृषसंकृननम् (so ed. Bomb.) MBu. 3,12300. घन° n. und adj. 1,2309. R. 1,16,17. 5,8,10. Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,20. Buic. P. 5,17,12. 7,3,23. सिंह° adj. MBu. 4,2350. R. 5,6,28. सिंहसंकृननोत्तम् adj. 1,20,10. 4,37,22. *Festigkeit* überh.: कार्मुकं संकृननोपेतम् MBu. 1,7032. — *d) Körper, Leib* AK. 2, 6,2,31. H. 563. Hālis. 2,355. दिव्य MBu. 14,2099. R. 1,16,4 (20,4 Gorr.). Uttarār. 113,3 (152,12). — *e) Verbindung:* घ° *das Unverbundensein mit, Freisein von* (instr.) Nilak. 43. — *f)* etwa *Harmonie, Uebereinstimmung* MBu. 12,2420 (wo vielleicht परस्परं zu lesen ist). — 9) *Harnisch* (देश) Taitt. 3,3,427. MBu. 7,79. fehlerhaft für संनकन, wie die ed. Bomb. des MBu. liest.

संकृनु adj. *die Kinnladen zusammenklappend* AV. 3,1,16. संकृनु (adv. कृ) *zwischen die Kinnladen fassen* 5,28,13.

संकृत्तृ nom. ag. *Vernichter:* संकृत्ता सर्वदैत्यानाम् Paṇḍār. 2,3,57. ohne Zweifel fehlerhaft für संकर्त्री.

संकर (von कृ mit सम्) m. 1) N. pr. eines Asura Harıv. 2283 (सङ्कर die neuere Ausg.). 14284 (सङ्कर die neuere Ausg.); vgl. संकार. — 2) संकराख्य nach ÇKDa. ein N. des Agni Pavamāna im Matsja-P.

संकरण (wie eben) n. 1) *das Anpacken:* तस्या: (obj.) MBu. 3,15867. — 2) *das Einsammeln, Ernten:* सस्यसंकरणानि MBu. 12,8694. — 3) *das Zurückholen von abgeschossenen Pfeilen u. s. w. durch magische Mittel* Uttarār. 110,2 (148,17). — 4) *Vernichtung* (urspr. *Einziehung der Welt* im Gegens. zu *Entlassung, Schöpfung derselben*): प्रजानाम् MBu. 8,3807. प्रजा° 6,3347. 7,3088. 12,9201. जगत्सं° Harıv. 11328. Kathās. 109,126. विष्व° Mārk. P. 132,39. विप्रोषसंतमस° Inschr. im Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Cl. 5.

संकर्तृ (wie eben) nom. ag. *Vernichter* (urspr. *Einzieher der Welt* im Gegens. zum *Entlasser, Schöpfer derselben*): लोकानाम् MBu. 1, 1389. सर्वभूतानाम् 3,12953. 12,1675. 13,918. 6811. विश्वस्य जगत: Harıv. 7969. 11051. 12312. 12886. Rāgat. 10,16. Kumāras. 6,23. Paṇḍār. 1,14,9. 12. 4,5,5. वृश्चिचक्रस्य MBu. 11,783. यज्ञस्य R. Gorr. 1,11,22. द्विषदायुषाम् Vikram. 145. दैत्यदानव° Verz. d. Oxf. H. 39,*a*, N. 3.

संकर्तव्य (wie eben) adj. 1) *zusammenzubringen:* महासेना Harıv. 13827 (संस्कर्तव्या die neuere Ausg.). *zu ordnen, wiederherzustellen:* वेणि Sin. D. 162,4. — 2) *zu vernichten* (*wieder einzuziehen* im Gegensatz zu *zu entlassen, zu schöpfen*) Nilak. 224.

संकर्ष (von कर्ष् mit सम्) 1) m. *a) Schauder, das Rieseln durch die Glieder* u. dgl. Suçr. 1,97,10. 2,314,9. *wollüstige Erregung* 1,285,20. MBu. 15,840 (संघर्ष ed. Bomb.). — *b) freudige Erregung, Freude* H. an. 3,743. Med. sh. 46 (wo wohl कृष्टि st. घृष्टि zu lesen ist; प्रमोद ÇKDa. nach derselben Aut.). Viçva im ÇKDa. — *c) Wetteifer, Wetteifer, Eifersucht* (vgl. संघर्ष) H. 1515. H. an. Med. Hia. 208. Hālis. 4,101. देवासुराणां समजायत । ऐश्वर्यं प्रति संकर्ष: Matsja-P. 25,10 (nach Aufrecht). MBu. 3,14153. 6,3268 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 15,853. R. 5, 37,34. 40,6 (परस्पर° adj.). 90,22. Kām. Nītis. 17,8. Bhām. Nāyaç. 20, 41. — *d) Wind* H. an. Med. — 2) f. आ = पर्पटी Dhanv. in Nigh. Pr.

संकर्षण (von कर्ष् simpl. und caus. mit सम्) 1) adj. (*f.* ई) गण नन्द्यादि zu P. 3,1,134. *a) sträuben machend;* s. लोम°. — *b) erfreuend:* वानराणाम् (obj.) MBu. 3,16536. — 2) n. *Wetteifer, Eifersucht* Kām. Nītis. 18,5.

संकर्षिन् adj. *erfreuend:* मन:° R. Gorr. 2,65,12.

संक्वन n. *Häuserviereck* Çabdārthak. bei Wilson.

संकात (aus संघात) m. 1) *Gedrängtheit:* घतर् ° (°संघात Ballant.) in der Dramatik *eine Schilderung in kurzen treffenden Worten* Sin. D. 434. 436. — 2) *eine best. Hölle* M. 4, 89 (संघात v. l.); vgl. संकार 9). — 3) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâyu beim Schol. zu H. 210 (संकांत die Hdschr.).

संकात्य (von संकात) m. *Sprengung eines Bündnisses mittels Ueberredung, Bestechung oder in Folge des Schicksals* Sin. D. 416 fg. संघात्य v. l.

संकाप्यम् (von क्रा, क्रीते mit सम्) absol. घ° *in der Lage sich nicht aufraffen zu können* Pañcav. Bu. 9, 1, 21. fg.

संकार् (von कर् mit सम्) m. P. 3, 3, 122 (vgl. 6, 2, 144). 1) *das Zusammenscharren, Sammeln:* द्रव्य° MBu. 12, 608. — 2) *das Zusammenziehen:* der Sprachorgane ṚV. Prât. 14, 2. *das Einziehen:* des Rüssels Raghu. 5, 45. — 3) *das Zusammenbinden, Ordnen* (der Haare): मृदु° adj. केशपत्त MBu. 5, 2903. — 4) *Zurückholung eines abgeschossenen Pfeiles u. s. w. durch magische Mittel; ein solches magisches Mittel* MBu. 1, 5131. 3, 1650. 4, 1830. 6, 3209. 10, 691. R. 1, 30, 2. 3 (31, 2. 4 Gorr.). R. Gorr. 1, 24, 18. 5, 4, 21. Raghu. 5, 57. Mâlav. P. 74, 52. Bhâg. P. 1, 7, 20 (उपसंकार ed. Bomb.). 27. personificirt als Sohne der Vigâjâ R. 1, 23, 16. — 5) *Zusammenfassung, Zusammenziehung, Compendium:* der Parjâja Lâṭj. 6, 2, 5. 6, 14. 7, 8. 10, 17. *Sammlung* Kâlâkâra 1, 99. 2, 49. 52. 89. = संक्षेप Gaṇiḍ. im ÇKDa. — 6) *Vernichtung* (*Einziehung* im Gegens. zu *Entlassung, Schöpfung*) *der Welt* (H. 161. Halâj. 1, 117); *Vernichtung* überh. M. 1, 80. MBu. 6, 4462. 7, 2042. 12, 9167. fgg. 13, 818. Hariv. 525. fg. (pl.). 14935. R. 7, 62, 5. Kathâs. 33, 99. 36, 41. 52, 333. Mârk. P. 81, 53. 103, 2. Weber, Râmây. Up. 337. Liṅga-P. bei Muir, ST. 4, 325. Pañcâr. 1, 14, 13. 3, 15, 19. Verz. d. Oxf. H. 12, *a*, 39. fg. 23, *b*, N. 3. 48, *b*, 39. 49, *b*, 6. 80, *a*, 23. Verz. d. B. H. No. 1365. Sarvadarçanas. 77, 9. 84, 5. सर्व° Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 137. Hariv. 13906. भूत° MBu. 1, 40. प्रजा° R. Gorr. 1, 30, 4. विश्व° Kathâs. 50, 57. भगूणां सत्रियाघमेः MBu. 1, 6847. पुरत्रयस्य Hariv. 16335. नरनागाश्व° Râjat.-Tar. 4, 445. ग्रामग्राम° 6, 351 (°सकार Ta.). वक्ष्यन्ते संकारमात्मनः MBu. 1, 922. क्रिया° 926. concret so v. a. संकर्तृ (vgl. प्रभव) *Vernichter:* भूतग्रामस्य 14, 1577. — 7) *Ende, Schluss* (eines Dramas, Actes u. s. w.); = वाक्यार्थोपसंहृतिः Prâtiçâkh. 22, *b*, 3. Buâg. Nâṭjaç. 19, 68. 92. 93. Sin. D. 388. 356. Mṛcch. 178, 13. बीभत्स्य Buâg. Nâṭjaç. 18, 15. काव्य° 19, 67. 102. Daçar. 1, 48. Sin. D. 391. 404. — 8) N. pr. eines Asura Hariv. 2289 (संक्राद die neuere Ausg.); vgl. संकर्. — 9) *eine best. Hölle* (vgl. संकात) AK. 1, 2, 2, 2. — Vgl. घस्थि°, ऋतु°, वर्ण°, वेणी°.

संकारक (wie eben) adj. *vernichtend, wegschaffend;* s. घस्थि°.

संकारकाल m. *Zeit des Weltunterganges* MBu. 3, 187.

संकारकालाय् (von संकारकाल), °यते *wie die Zeit des Weltunterganges erscheinen* Spr. (II) 1081. 2246.

संकारबुद्धिमत् (von संकार + बुद्धि) adj. *die Welt zu vernichten im Sinne habend* Hariv. 11324.

संकारभैरव m. Bhairava *als Weltvernichter* Verz. d. Oxf. H. 25, *b*, N. 3. 250, *a*, 20.

संकारवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Daçak. 96, 6.

संकारवेगवत् (von संकार + वेग) adj. *brennend vor Ungeduld die Welt zu zerstören* MBu. 13, 1088.

संकारिन् (von कर् mit सम्) adj. *vernichtend* (urspr. *Entlassenes —, Geschaffenes wieder einziehend*): सर्व° Kathâs. 12, 178. 50, 56. संसार° Verz. d. Oxf. H. 69, *a*, 6.

संकार्य (wie eben) adj. 1) *zusammenzulesen, — stoppeln* (von verschiedenen Orten her): प्रउग Çâṅkh. Br. 21, 2. 4. Ça. 11, 9, 3. मामाः 13, 27, 6. — 2) *transportabel* Âçv. Ça. 12, 6, 4. st. dessen प्रकृष्य Pañcav. Bu. 25, 10, 5. Lâṭj. 10, 15, 15. Kâṭj. Ça. 24, 5, 27. — 3) *zu vermeiden* Taitt. Âr. 1, 11, 13. — 4) *zu beseitigen, dem Einhalt gethan werden kann oder muss;* mit घ priv.: चक्र Hariv. 10837. राजसूय 11103. वेग 13335. युद्ध MBu. 9, 1166 (घसंवार्य ed. Bomb.). गुण 12, 9079. विधिः प्राणिनाम् R. 5, 35, 4. नहि धर्मो ऽप्यसंकार्यो विधर्मफलसंहितः 47, 30. तमः Spr. (II) 871. — 5) *abzubringen, zu verleiten, bestechlich* (nur mit घ priv.): घनुरक्तो घसंकार्यः पार्थान्प्रति जनार्दनः MBu. 5, 3078. घसंकार्यः स्थितो धर्मे 5288. संकार्याः, मन्त्रिणः 12, 3069. 4245. R. 1, 16, 4 (20, 4 Gorr.). R. Gorr. 2, 109, 28. 5, 12, 21. — 6) *dem man Etwas zukommen lassen muss, Ansprüche habend auf:* मूयो भूयो ऽपि संकार्यः पितृवित्तात् MBu. 13, 2338.

संकित 1) adj. (s. auch unter 1. घा mit सम्) = संहित Vop. 6, 72. Accent eines auf संकित ausgehenden comp. gaṇa घाचितादि zu P. 6, 2, 144. *a) zusammengefügt, verbunden, angeschlossen, eingefügt:* यज्यावयंव विद्युरेव संकितम् ṚV. 1, 168, 6. वि संकितं विस्रसो वक्ता रपः 8, 36, 21. 85, 2. बिदलसंकित इव पुरुषः *aus zwei gleichen Stücken zusammengefügt* Ait. Br. 4, 22. AV. 11, 8, 16. 3, 31, 6. वातः प्राणेन संकितः 19, 27, 7. पर्वाणि (Gegens. विस्रस्त) Çat. Br. 1, 6, 2, 37. 4, 2, 4, 19. पुरीष° 6, 7, 4, 10. मांसेन 8, 6, 2, 14. 7, 2, 6. मूर्ध° 13, 8, 2, 9. पार्श्व° *neben einander gelegt* Lâṭj. 8, 6, 15. एकारस्पर्श° ṚV. Prât. 5, 22. 16. 11, 6. — *b) ununterbrochen* (in der Wortfolge) ṚV. Prât. 10, 9. Kauç. 56. — *c) oxyt. gemischtfarbig* VS. 3, 22. 29, 56. vielleicht auch 18, 29. TS. 2, 1, 2, 4. 5. — *d) festgesetzt, durch Vertrag bestimmt:* घनृत° Ait. Br. 1, 6. Vgl. सत्य°. — 2) f. घा *a) Verbindung:* संकितायां उपनिषत् Taitt. Up. 1, 3, 1 महासंकिताः ebend. und 4. — *b)* so v. a. संधि *unmittelbare Verbindung von Lauten, Wörtern nach den grammatischen Regeln* H. an. 3, 309. ṚV. Prât. 11, 9. 25. 28. वर्णानामेकप्राणयोगः संहिता VS. Prât. 1, 158. पाद्°, प्राण° Schol. ebend. — *c) ein nach diesen Regeln behandelter Text* (im Gegens. zum *Wortext*), zugleich *ein zusammengestellter Text.* So heissen die vedischen Textbücher, z. B. ऋग्वेद°, तैत्तिरीय°. H. an. पर्याः सैनिकर्षः संहिता (P. 1, 4, 109) पदप्रकृतिः संहिता Nir. 1, 17. ṚV. Prât. 2, 1. 14. 43. 6, 8 (कृतसंहित adj.). °विधि Comm. zu 11, 34. °काल 8, 21. VS. Prât. 1, 148. 3, 1. 4, 18. 175. AV. Prât. 2, 1. 4, 108. fg. 124. TS. Prât. 5, 1. 21, 10. 24, 1 (vier angebliche Texte). P. 1, 2, 39. 6, 1, 72. 3, 114. 8, 2, 108. संकिताध्ययन MBu. 1, 6362. संकिताध्यायिन् 13, 6620. °ज्ञ M. 11, 200. वेदस्य 77. Jâjñ. 3, 249. ऋक्संकिता, यजुषाम्, साम्नाम् M. 11, 262. VP. 3, 4, 19. fgg. Verz. d. Oxf. H. 54, *b*, 20. fgg. Bhâg. P. 9, 21, 29. im Gegensatz zu ब्राह्मण Sidd. K. zu P. 1, 2, 36. °पाठ Kâç. zu P. 8, 4, 25. कपिष्ठल° Ind. St. 1, 469. — *d)* überh. *ein grösseres Sammelwerk* (wie das Râmâjaṇa, die verschiedenen Gesetzbücher, die medicinischen Werke von Karaka und

Çârṅgadhara, die Purâṇa); = शास्त्र H. an. चतुर्विंशतिसाहस्री R. S. 14. षाङ्गिरस° u. s. w. Gild. Bibl. 443. fgg. मानवीय° Kull. zu M. 1, 1. Sacc. 2,381,18. व्यासस्य MBu. 1,21. Bhâg. P. 1,4,3. Verz. d. Oxf. H. 8, a, 11. fg. वाराहाख्या 82, a, No. 138. पुराण° 54, b, 14. VP. 3, 6, 15. Mârk. P. 45,21. Bhâg. P. 3,21,2. सावित° 1,7,6. तन्त्र° 3,21,32. Insbes. *ein vollständiges System der natürlichen Astrologie* (im Gegensatz zur wissenschaftlichen Astronomie und Nativitätslehre): षट्गणितसंहिताहोरापञ्चार्थवेत्तृ Vaitân. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 1 v. u. S. 6, Z. 14. होरागणितसंहिता: 2,21. Verz. d. Cambr. H. 37. Gaṇit. Kilamân. 7. Golâdh. Grahaṇav. 9. नारदी Verz. d. B. H. No. 862. auch *die ganze astronomisch-astrologische Lehre* Vaitân. Bṛh. S. 1,3 (vgl. Kern in der Vorrede 21. fg.). °कारा: Râjâ-Tar. 1,55. — 3) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,241,b. — Vgl. धर्मसंहिता, पाद्°, प्राण°, बृहत्°, ब्रह्म°, मनु°, मत्स्य°, यम°, वसिष्ठ°, वायु°, वेद° (auch Jâtân. 3,260), शंकर°, शिव°, शुक°, श्री°, सौहित und सौहितिक.

संहितपुष्पिका (von संहित + पुष्प) f. *eine Anisart* (मिश्रेया) Râjân. im ÇKDa.

संहितासत्य m. Titel eines zum AV. gehörigen Pariçishṭa Ind. St. 3,279.

सैंहितास्त (संहित + बस्त) adj. *an den Enden verbunden* AV. 10,2,3.

संहिताप्रदीप m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279, b, 34.

संहिताभाष्य n. Titel eines *Commentars* Ind. St. 1,469.

संहितावृत्ति f. Titel einer *astrologisch-astronomischen* Abhandlung Notices of Skt Mss. 2,42.

संहितासूत्र n. Titel eines über die Betonung handelnden Pariçishṭa zum ṚV. Ind. St. 1,82.

संहितिक adj. im Comm. zu AV. Paipp. 4,107. 114 fehlerhaft für सौहितिक.

संहितीभाव (von संहित + 1. भू) m. *das Sichverbinden:* द्वयोर्बह्वृचां च द्रव्याणाम् Kârakâ 3,1.

संहितोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Ind. St. 1,391. eines Brâhmaṇa 4,376. संहितोपनिषदं ब्राह्मणम् 375. Verz. d. Oxf. H. 377, b, No. 375. 382, a, No. 451. Vgl. संहित 2) a).

संहितोरु (संहित + ऊरु) adj. (f. ऊ) *anschliessende Schenkel habend* P. 4,1,70. Vop. 4,30.

संह्वति (von ह्वे mit सम्) f. *gemeinschaftlicher Anruf* AK. 1,1,8,9. H. 281.

संह्वत s. u. ह्वे mit सम्.

संह्वतबुसम् und संह्वतपवम् adv. gaṇa तिष्ठद्वादि zu P. 2,1,17. — Vgl. संह्रियमाण°.

संह्वति (von ह्वे mit सम्) f. 1) *Vernichtung der Welt* Mârk. P. 81, 37. Pañcât. 3,15,22. — 2) *Abschluss, Ende:* उद्दिष्टार्थस्य Sin. D. 544. मन्त्रपाठादि° Kathâs. 37,77.

संह्वतिमत् (von संह्वति) adj. *am Ende eines comp. den Schluss von — enthaltend:* बोध° Sin. D. 278. nach Ballantyne = बोधवत् und मै°.

संह्वष्ट s. u. ह्वर्ष् mit सम्. Davon संह्वष्टिन् adj. *der steif zu sein pflegt* (penis) Lâṭ. 5,10,6 (v. l. zu VS. 23,29).

संक्षेत्र (सम् + क्षेत्र) n. *Opfergemeinschaft* ṚV. 10,86,10.

संह्वाद (von ह्वाद mit सम्) m. 1) *ein lauter Schall, — Ton:* शङ्खाला-नाम् MBu. 6,3146. गदाभिघात° 7,608. मुखाडम्बरसंह्वादै: 14,2202 (nach der Lesart der ed. Bomb.). दितु-सर्वासु संह्वादं जनयामास पतिराट् Hariv. 6960. निनादस्य R. 4,14,11. भीम° adj. (वानर) 39,18. व्याविमुञ्चाप° adj. MBu. 7,3502 (nach der Lesart der ed. Bomb.). — 2) *der Schreier*, N. pr. eines Asura, eines Sohnes des Hiraṇjakaçipu, MBu. 1,2642. 2526 (an beiden Stellen ed. Calc. संह्वाद). 2,365. 367. Hariv. 187. 219. 2283. 2289 (nach der Lesart der neueren Ausg.). 12459. 12698. 12914. 14284. VP. 1,15,41. Bhâg. P. 6,18,13. fg. — Vgl. संह्वाद.

संह्वादन (wie eben) adj. *laute Töne von sich gebend:* हय MBu. 2,2054.

संह्वादि (wie eben) m. N. pr. eines Râkshasa R. 7,5.40. — Vgl. संह्वादिन्.

संह्वादिन् (wie eben) 1) adj. dass.: व्याविमुञ्चाप° MBu. 7,3502. दंशा: संह्वादिकपठभरणा: Kir. 18,19. — 2) m. N. pr. eines Râkshasa R. 6, 69,12. 74,4.

संह्वादीय adj. zu Saṁhrâda *gehörig:* गण Hariv. 12868.

संह्रियमाण partic. praes. pass. von ह्वृ mit सम् (s. das.). °बुसम् und °पवम् adv. gaṇa तिष्ठद्वादि zu P. 2,1,17. — Vgl. संह्वतबुसम् und °पवम्.

संह्वाद m. 1) fehlerhaft für संह्वाद 1) MBu. 14, 2202. — 2) fehlerhaft für संह्वाद 2) MBu. 1,2526. 2642. — Die ed. Bomb. hat überall die richtige Lesart.

संह्लादिन् (von ह्लाद mit सम्) adj. *erfrischend, erquickend* Spr. (II) 3606. हृदय° MBu. 2,390.

सकं (demin. von 1. स) pron. im nom. masc. bleibt das Casuszeichen nach P. 8,1,132. सको देव: Schol. f. सका P. 7,3,45. Vop. 4,6. सका ईघास ते विषम् ṚV. 1,191,11. AV. 10,4,14. — Vgl. एषक, एक.

सकङ्कट (2. स + क°) adj. *mit Schienen versehen:* बाहु Hariv. 4717 (कङ्कट: = बालिङ्गनेनावरोध: Nîlak.). सुसंकट MBu. 4,351 (सकण्टक v. l.).

सकञ्चुक (2. स + क°) adj. *gepanzert* H. 767.

सकट m. = शाखोट *Trophis aspera* Buchanaiosa im ÇKDa.

सकटात्तम् (von 2. स + कटात) adv. *mit einem Seitenblick* MBu. 8,3018 nach der Lesart der ed. Bomb. (सङ्कटाक्ष्यम् ed. Calc.). — Vgl. संकटात.

सकटान्न n. *die Speise Verunreinigter* Jâtân. 3,15. कटशब्देनाशौचं लक्ष्यते । तत्सदृचरितमत्र सकटान्नम् Mit. III,6,a,5.

सकण्टक (2. स + क°) 1) adj. (f. घा) a) *mit Dornen versehen, dornig:* दल Tittâdit. im ÇKDa. केतकी Spr. (II) 6331. — b) *mit emporgerichteten Härchen versehen:* अङ्गानि Kathâs. 25,220. — c) *mit stacheligen Schienen versehen:* बाहु MBu. 4, 351, v. l. für सुसंकट (सकङ्कट Hariv. 4717). — 2) m. Bez. zweier Pflanzen: = शैवाल Çabdâ. im ÇKDa. = पूतिकाञ्ज Ratnam. 156.

सकमल (2. स + क°) adj. (f. घा) *mit einer Lotusblüthe versehen* Ragu. 9,19.

सकम्प (2. स + कम्प) adj. (f. घा) *zitternd* Kumâras. 6,48. Kathâs. 4, 10. 25,98. 31,20.

सकरुण (2. स + करुणा) adj. (f. घा) *mitleidig:* eine Person Bhâg. P. 1,13,12. वचस् 7,49. निरीक्षण 3,8,25. दृष्टि Ânandal. 22 in Hall. Anth. 250. °म् adv. Çiç. Ca. 89,16. Bhâg. P. 5,13,24.

सकर्ण (2. स + 1. कर्ण) adj. *Ohren habend, hörend* Gaṇâdh. im ÇKDa.

सकर्णक (2. स + क°) gaṇa पत्तादि und सेकाशादि zu P. 4,2,80. adj. (f. घा) *mit einem Zapfen oder dergl. versehen* Kāś. Ça. 18,4,6. Comm. zu 6,3,7. — Vgl. साकर्णकायन und साकर्णक्य.

सकर्तृक (von 2. स + कर्तृ) adj. *einen Thäter —, einen Urheber habend* Kusum. 48, 7. Sarvadarçanas. 60, 17. 82, 1. 119, 11. Davon nom. abstr. °ता f. 128, 17. °त्व n. Kusum. 48, 7.

सकर्मक (von 2. स + कर्मन्) adj. 1) *wirksam, Folgen habend:* कर्मन् Bhāg. P. 5,20,33. — 2) *mit einem Object versehen, transitiv:* ein Zeitwort P. 1,3,53. 3,1,87. Vārtt. 3. Comm. zu 3,2,4.

सकल (2. स + कला) adj. (f. घा) 1) *aus Theilen bestehend, theilbar, materiell* (Gegens. अकल und निष्कल): ब्रह्मन् Maitrāyaṇ. 6, 15. MBh. 13,1044; vgl. 4). — 2) *alle Theile in sich schliessend, ganz, vollständig, gesammt, sämmtlich, all:* = सर्व u. s. w. AK. 3,2,15. H. 1433. Hālā. 4,28. Kāś. Ça. 16,1,31. पृथिवी MBh. 12,167. मङ्कापुरी R. 6, 10, 37. Mārk. P. 75,67. 121,3. Bhāg. P. 4,28,4. LA. (III) 88,9. Varāh. Bṛh. S. 34,8. 69,18. सकलं कुलतयम् 94,10. Pañcat. ed. orn. 55,3. °देह Duṛgās. 93,18. °यूथपरिवृत Pañcat. 117,1. पशव: so v. a. *ganz, ungetheilt* Harīv. 8439 nach der Lesart der neueren Ausg. सकले अक्षि Spr. (II) 4291, v. l. रात्रि Pañcat. 117,8. स्थान ṚV. Prāt. 14,7. सकलं ज्योतिरुद्यते P. 6,3,79, Schol. धर्म M. 1,81. भद्र Nir. 1,18. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,140. सकीर्ति MBh. 1,7449. अपचिति R. 2,74,26. प्रसाद 3,3, 17. गत Vikr. 93. विद्या Spr. (II) 1360. 1431. 2839. 4807. Ved. in LA. (III) 5,1. Schol. zu TS. Prāt. 4,52. 16,29. Comm. zu Kāś. Ça. 25,7,33. प्रतिज्ञा सकलां कर्तुम् so v. a. *erfüllen* R. 2,21,59. भृत्यान्सकलान् *alle* R. Gorr. 2, 113, 11. 3, 69, 26. Varāh. Bṛh. S. 64,1. सकला: संहिता: Bṛh. 7,6. Kathās. 12,33. Mārk. P. 78,11. Bhāg. P. 2,7,9. 3,13,48. 5,26,40. Pañcat. 53,21. 55,12. Hit. 7,20. 60,3. Duṛgās. 67,5. 75,19. जन *Jedermann* Kathās. 15, 53. सकल m. sg. dass. Spr. (II) 4853. n. sg. *Alles* Mṛicch. 103,12. Bhāg. P. 8,2,29. Vop. 5,21. 30. अ° *nicht ganz, — vollständig* Kaṭṭ. 80. Megh. 82. Varāh. Bṛh. S. 21,21. 34,5. — 3) *ganz so v. a. heil, gesund* (Gegens. विकल) Nīlak. 13. Spr. (II) 2533, v. l. — 4) *mit den Elementen der materiellen Welt behaftet;* m. Bez. *der auf der niedrigsten Stufe stehenden Seele* (पशु) bei den Çaiva: पशुस्त्रिविध: । विज्ञानाकलप्रलयाकलसकलभेदात् Sarvadarçanas. 83,12. मलमायाकर्मात्मकबन्धत्रयसंहित: सकल इति संलप्यते 17. 86,8. मालामायाकर्मयुत: सकल: 7. 13. 15. 87,22. 88,3. — Vgl. माकलायन, साकल्य.

सकलकाल Bein. eines best. Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 200, *a*, No. 475, Z. 8.

सकलजननी f. *die Mutter von Allem:* °स्तव Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, No. 168.

सकलभुवनमय (von सकल + भुवन) adj. (f. ई) *die ganze Welt enthaltend* Pañcar. 3,2,1.

सकलयज्ञमय (von सकल + यज्ञ) adj. (f. ई) *das ganze Opfer enthaltend* Bhāg. P. 2,7,1.

सकलवर्ण m. (sc. पद् oder वाक्य) *die Laute* क *und* ल *enthaltend*, in Verbindung mit सत्कार (vom *Laute* क् *begleitet*) eine Umschreibung von कलह *Streit, Hader* Naiṣ. 2,14.

सकलवेदोपनिषत्सार m. *die Quintessenz aus allen Veda und Upanishad* Verz. d. B. H. No. 614. Verz. d. Oxf. H. 38, *a*, N. 1.

1. सकलसिद्धि f. *das Gelingen von Allem:* °दा भैरवी Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 13. fg.

2. सकलसिद्धि adj. *der alle Vollkommenheiten (Wunderkräfte) besitzt* Bhāg. P. 6,19,4.

सकलागमाचार्य (सकल - आगम + आ°) m. N. pr. oder Bein. eines *Lehrers* Verz. d. Cambr. H. 43, 10.

सकलाधार (सकल + आ°) m. *der Behälter von Allem:* Çiva Çiv.

सकलार्णमय (von सकल + अर्ण) adj. (f. ई) *alle Laute enthaltend* Pañcar. 3,1,21.

सकलिक (2. स + कलिका) adj. (f. आ) *mit Knospen versehen* Raghuv. 9,29.

सकलीकर् (सकल + 1. कर्) *vervollständigen* Pañcar. 3,6,6. 15,36.

सकलीविधा (सकल + धा mit वि) dass. ebend. 3,7,24.

सकलेन्दु (सकल + इन्दु) m. *Vollmond* Harīv. 8429 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Vikr. 28.

सकलेश्वर (सकल + ई°) m. *Herr des Alls* Bhāg. P. 2,5,8.

सकाकोल N. einer Hölle M. 4,89.

सकाम (2. स + काम) adj. (f. आ) P. 6,1,144, Vārtt. 2. Vop. 6,73. 1) *zur Wunscherfüllung führend, die Wünsche befriedigend:* अघन् VS. 26, 1. सकामो ऽयं वने वासो भविष्यति R. 3,10,25. — 2) *dessen Wunsch erfüllt ist, zufriedengestellt:* सकाममात्मानमसावमन्यत R. 3,52,52. सकामा भगिनी मे ऽस्तु 29,31. 55,61. सकामो भव MBh. 1,5919. R. 2,42,21. 66,3. R. Gorr. 2,10,5. 34,2. 6,8,4. Spr. (II) 1170, v. l. स त्वमात्मप्रदानेन (मां) सकामां कर्तुमर्हसि *zufriedenstellen* MBh. 1,7807. R. 2,73,15. 79,12. 101,11. R. Gorr. 2,6,28. 22,4. Kathās. 42,100. — 3) *einwilligend* (von Mädchen, die sich einem Manne willig ergeben) Vishṇu in Dīpārn. 272,2 v. u. M. 8,364. 368. Jāgñ. 2,288. 3,233. — 4) *mit Absicht, — freiwillig verfahrend:* यकामो वा सकामो वा यत्र क्वापि वर्तिर्बले । इदं चामुत्र दु:खानि माधवज्ञायी न पश्यति ॥ *ohne oder mit Absicht* Tirthāvir. im ÇKDa. — 5) *von Liebe erfüllt, verliebt:* सा त्वं मम सकामस्य सकामा — गान्धर्वेण विवाहेन भार्या भवितुमर्हसि MBh. 1,2967. R. 5,22,1. 37,3. Mṛicch. 18,16. Ṛt. 6,2. Spr. (II) 5815. Kathās. 33,40. Mārk. P. 128,4. Bhāg. P. 3,12,28. Çiç. in LA. (III) 37,17. *Verliebtheit verrathend:* वचन Pañcat. 44,9. — सकामं Daçak. 85,2 fehlerhaft für स कामं, wie die ed. Calc. liest.

सकार् 1) m. *a) der Laut* स ṚV. Prāt. 6,1. TS. Prāt. 5,6. 10. 14. 6,1. 14. 16,1. Verz. d. B. H. No. 380. Verz. d. Oxf. H. 97, *b*, 2. Rāmat. 6. 29. — *b) Anapaest;* s. °विपुला. — 2) adj. Kathās. 103.47 fehlerhaft für माकार्.

सकारणक (von 2. स + 1. कारण) adj. (f. °णिका) *begründet, in Folge einer ganz bestimmten Veranlassung erfolgend* Kull. zu M. 6,73.

सकारभेद m. Titel einer die *Sittlanten* behandelnden Schrift Notices of Skt Mss. 197.

सकारविपुला f. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,344.

सकाली f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 3 °समुद्र (an der ersten Stelle getrennt) 35.

सकाश (2. स + 1. काश) m. (*Sichtbarkeit*) *Anwesenheit, Gegenwart bei* (gen.): एष मे तत्र वै देव्या: सकाशं गन्तुमिच्छति R. 3,79,23. आ सकाशात्

bis an (das Feuer) Çiṅkh. Ça. 2,14,6. Der acc., loc. und abl. in der Bedeutung von praepp. (mit gen. der Person oder in comp. mit der Ergänzung; nur ganz ausnahmsweise ist dieso nicht eine Person). 1) acc. सं — *Ein:* kommen, gehen, führen, senden Kaṭh. Up. 3,7,2. MBh. 3,2952. 5,5981. R. 2,34,15. 70,15. 101,10 (110,8 Gorr.). 3,40,23. 67,21. 5,6,12. 35,31. Mṛicch. 77,5. Ragh. 5,35. Kumâras. 7,73 वेला°. Çiç. 62,16. 93,3. Milav. 47,15. Kathâs. 6,61. Bhâg. P. 3,16,26. 6,1, 58. Pañkat. 23,1. 160,24. Hit. 40,20. 22. — 2) loc. *in Gegenwart, — in Anwesenheit von, bei* Âçv. Gṛihj. 1,18,7. MBh. 1,6503. 3,2092. वास R. 2,36,13, f. Kathâs. 38,110. Pañkat. 66,10. fg. सं — *Ein:* sich begeben u. s. w. MBh. 3,16552 (सकाशम् Siv. 5,104). R. 2,52,12. Pañkat. 35,19. — 3) abl. von — *her, von Seiten:* मत्तः Jâân. 1,315. kommen, gehen, sich entfernen MBh. 1,1160. 5,941. R. Gorr. 1,80,20. 5,90,10. Kâm. Nîtis. 12,27. Ragh. 5,24. Kathâs. 5,106. 44,82. Pañkat. 1,15,4. Pañkat. 36,23. न परित्यागार्हेयं मत्सकाशात् R. 1,33,12 (34,14 Gorr.). geboren werden, hervorgehen, entstehen Sây. zu ṚV. 1,32,5. Jâân. 3,67. rauben, wegnehmen Daçak. 76,9. befreit werden Kathâs. 23,9. fordern, bitten 52,299. erlangen R. 1,49,25. R. Gorr. 1,79,20. 4,38,46. Mâlav. P. 63,53. 129,13. 134,5. fgg. Daçak. 87,5. Pañkat. 220,14. Sây. zu ṚV. 1,114,6. erfahren, lernen, hören M. 1,119. 2,20. MBh. 1,1073. 1539. R. 3,77,18. Spr. (II) 3188. Verz. d. Oxf. H. 141,b,14 v. u. kaufen Kathâs. 10,37. 42. gesondert, verschieden Sarvadarçanas. 9,17. fg. 34,1. भय MBh. 1,7279. R. 4,58,10. मान 2,14,4. विप्रकारा: 22,5. परुष 4,33, 2. 13. पराजय Prab. 5,19. statt des gen. auch der abl. नैताभ्यां भविता दोष: सकाशात्ते MBh. 1,1466. Vaṇîs. Bhg. S. 104,13. सकाशतम् dass.: wegführen R. 1,34,8 (35,8 Gorr.). — सकाशाय Râga-Tar. 4,263 ist kein dat. von सकाश, sondern fehlerhafte Schreibart für स-काषाय.

सकुक्षि (2. स + कुक्षि°) adj. *aus demselben Leibe geboren* Vop. 6,97.

सकुतूहल (2. स + कुतू°) adj. von *Neugier getrieben, neugierig* Kathâs. 25,51. °म् adv. 26,50.

सकुरुण्ड m. = साकुरुण्ड Râgân. im ÇKDa.

सकुल 1) adj. a) (2. स + कुल) *mitsammt seinem Geschlecht* (im Wortspiel mit नकुल) Spr. (II) 6214. — b) wohl fehlerhaft für सकल Kathâs. 44,147. Vaṇîs. Kâmas. 237. — 2) m. in einem Wortspiel st. नकुल Pân. Gaṇ. 2,7.

सकुलज adj. (f. आ) *im gleichen Geschlecht geboren, gleichen Geschlechts mit* (gen.) MBh. 13,5086. स्व° ed. Bomb.

सकुल्य (von 2. स + कुल) adj. *gleichen Geschlechts*, m. ein *Verwandter* Gaṇîbh. im ÇKDa. M. 9,187. Jâân. 1,63. Ind. St. 5,310.

सकूति (2. स + कू°) adj. *begierig, verliebt* TBr. 2,4,6,4.

सकृत् (2. स + कृत्) adv. P. 5,4,19. 1) *auf ein Mal, mit einem Male; = सक* AK. 3,4,25 (26), 4. Med. avj. 33. सकृत्सु ते धनु स्तोमे मुदीमहि ṚV. 1,1,14. 2,16,8. सकृत्सु नो मघव 10,33,3. सकृणो मा सकृद्धो ददर्श 1,105,19. 6,66,1. न वै सकृदेवाये सर्व: संभवति Ait. Br. 6,21. TS. 3,4, 2,3. सकृदाच्छिद्य *mit einem Ruck abgetrennt* Âçv. Ça. 2,6,4. Çat. Br. 2,4,2,17. सकृल्लून Çiṅkh. Ça. 4,4,6. सकृच्छ्रु P. 8,2,4, Schol. सकृदादोषन Kauç. 80. M. 8,151. so v. a. *plötzlich* MBh. 1,4418. — 2) *einmal, semel* AK. Med. RV. 5,48,22. सकृद्भू: 10,95,16. TBr. 2,1,2,1. Ait. Br. 1, 26. 2,24. 7,17. Çat. Br. 1,2,2,11. 2,4,2,2. सकृदिन्द्रं भूतान्यत्यरिच्यत 4,5,2,1. Âçv. Gṛihj. 1,3,3. सकृन्मन्त्रवचनम् Kâty. Ça. 1,7,9. सकृद्दुग्धं 8, 46. सकृदुपमथितं Çat. Br. 2,6,4,6. Kâty. Ça. 24,3,34. M. 6,20. 11,92. 97. 100. 214. 250. Spr. (II) 5253. 6650. fgg. 6656. Çiç. 27,2. Vikr. 10. Vaṇîs. Bhg. S. 11,44. सकृद्ग्रहं न गृह्णाति Spr. (II) 6655. सकृद्ग्रहगृहीतार्थ 6654. सकृच्छ्रुतधर Kathâs. 2,61. सकृत्सकृत् Çat. Br. 1,8,2,5. Âçv. Gṛihj. 4,7,14. M. 5,139. 9,70. Jâân. 1,240. *einmal* so v. a. *irgend ein Mal* Spr. (II) 1707. सकृत्कृतप्रणयो ऽपि जन: so v. a. *einst, ehemals* Çiç. 59,13. मा — सकृत् *nie* Spr. (II) 2304. — 3) *ein für allemal, für immer:* सकृद्दिवा दैवास्मै भवति Kaṭh. Up. 3,11,3. सकृद्विभात 3,4,2. Nâs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,165. Vedântas. (Allah.) No. 124. भानु: सकृद्युक्ततुरंग एव Spr. (II) 4569. Mâlav. P. 109,67. — Vgl. स्व° (auch MBh. 5,7160. Vaṇîs. Bhg. S. 28,4. 30,3. 68,74. Bhâg. P. 1,5,36 nach der Lesart der ed. Bomb.).

सकृत n. = शूद्रशासन Hâr. 175. सकृति st. dessen Taik.

सकृत्प्रज (सकृत् + प्रजा) 1) adj. *nur einmal* (im Jahre) *Nachkommenschaft (Junge) habend.* — 2) m. a) *Krähe* AK. 2,5,30. H 1321. an. 4, 57. Hâlây. 2,90. — b) *Löwe* H. an.; vgl. Spr. (II) 7044.

सकृत्फल 1) adj. *nur einmal Früchte tragend.* — 2) f. आ *Musa sapientum* (s. कदली) Râgân. im ÇKDa.

सकृत्सू adj. f. *mit einem Mal gebärend:* सकृत्स्वा ये पुरुपुत्रा मही दुदुक्षन् ṚV. 10,74,4.

सकृदागामिन् adj. *der nur noch einmal wiederkehrt*, Bez. der zweiten Stufe der Ârja bei den Buddhisten Burnouf, Intr. 292. fg. Wassiljew 264. 248. Vjutp. 32. 123.

सकृदावृत्ति f. *eine einmalige Begebenheit:* °प्रकारेण so v. a. सकृत् *einmal, ein für allemal* Kull. zu M. 11,221.

सकृद्गति f. *nur eine Möglichkeit* zu P. 7,1,30.

सकृद्गर्भा 1) adj. *nur einmal eine Leibesfrucht empfangend.* — 2) m. *Maulthier* Râgân. im ÇKDa.

सकृद्गह m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,373 (nach der Lesart der ed. Bomb., सकृद्गाह ed. Calc.).

सकृद्गोरं m. *eine best. Pflanze*, = एकवीर Râgân. im ÇKDa.

सकृद्गन्दा f. N. pr. eines Flusses MBh. 3,8137. प्राङ्नदीं च st. सकृद्गन्दां ed. Calc.

सँकेत (2. स + केत) 1) adj. *von einer Absicht durchdrungen* ṚV. 6,9, 5. — 2) m. angeblich N. pr. eines Âditja TS. 1,5,2,2.

सकोप adj. (f. आ) *erzürnt* Râga-Tar. 6,358. H. 579; vgl. auch unter कोप 2) am Ende.

सकोश adj. *Stellen aus Wörterbüchern enthaltend* (Gegens. विकोश) Verz. d. Oxf. H. 72,b,2.

सकौतुक (2. स + कौ°) adj. (f. आ) *neugierig* Kathâs. 24,10. 29,8. 40, 17. वद्दर्शन° 46,194. साश्चर्य° *erstaunt und neugierig* 25,271. सकौतुकम् adv. 23,16.

सक्त s. u. सञ्ज्. Davon सक्तता f. *das Hängen an der Sinnenwelt* (Gegens. मुक्तता) MBh. 12,12638. सक्तव n. *das Hängen an:* रति° 1,2206.

सक्तमूत्र adj. *beschwerlich —, langsam harnend* Karaka 1,27.

सक्तव्य (von सक्तु) adj. *zu Grütze bestimmt, — dienend:* धाना: P. 5,

1,2, Vârtt. 4, Schol.

1. सक्ति (von सञ्ज्) f. *das Zusammenhängen*: लतानाम् Kir. 3,46. *das Hängen* (in übertr. Bed.) an: विक्षिप्तात्त° adj. so v. a. *die Sinne darauf heftend* Râǵa-Tar. 6,151. व्यापारासक्ति° Sin. D. 186. *das Hängen an den Dingen der Welt* Sarvadarçanas. 74,20. सु° Bhag. 13,9. — Vgl. अति°.

2. सक्ति MBh. 13,871 fehlerhaft für 3. शक्ति.

सक्तिमत् s. अति° (auch Spr. (II) 6802).

सक्तु (wohl von सञ्ज्) Nir. 4,10. Unâdis. 1,70. P. 7,2,9. m. (nur dieses zu belegen) und n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Sidd. K. 248,b,14. m. pl. Taitt. 3,5,6. *gröblich gemahlene geröstete Körner: Grütze*, namentlich von *Gerste* Taitt. 2,9,15. H. 401. Ind. St. 3,218. सक्तुमिव तितउना पुनन्तः Ṛv. 10,71,2. सोमं सक्तुभिः श्रीणाति TS. 6,4,10,6. VS. 19,21. fg. गवेधुका° Çat. Br. 3,1,1,5. 12,9,1,5. निर्ऋत° 1,6,3,16. 13,2,1,3. घृतमार्गान्सक्तून्कुर्वन्ति Kâṭh. 13,2. घृतत° Âçv. Gṛhj. 2,1,2. 19. Çâṅkh. Gṛhj. 4,5. 5. Gobh. 3,7,6. fgg. °धानी *Gefäss für* Manâbh. lith. Ausg. 3,93,b. Kauç. 93. 136. °होम Liṭ. 5,4,10. कुवल°, कर्कन्धु°, बदर° Çat. Br. 5,5,4,22. wird mit Flüssigkeit und Butter angesetzt zum मन्थ Kauç. 47. Suçr. 1,233,11. 2,49,21. Madanâvin. 11,89. — Jâṅ. 3, 332. Pat. in Ind. St. 5,158. MBh. 8,1842. 2064 (°पिण्डाः). 2039 (°म्-घावलिप्त). 13,4329. 14,2695. यवप्रस्थं तं सक्तूनकुर्वत्त 2721. Suçr. 1, 72,7. 236,1. 4. यवानाम् 2,72,15. °मिश्र 122,5. Vîrar. 1,6,39. Spr. (II) 3439. 7337. Vaṇîn. Bṛh. S. 46,64. 55,17. 21. Kathâs. 4,122. fgg. यवैः लूनैर्भृष्टैश्च पिष्टैश्च सक्तवो विक्षिप्तास्तया 71,267. fgg. Mârk. P. 41, 11. Râǵa-Tar. 1,205. Pañcat. 252,20. Hit. 114,22 (सक्तुपूर्णाः zu lesen). 115,2. °काल Verz. d. Oxf. H. 87,a,18. यव°, चणकयव°, शालिसक्तवः Baiṭhân. 5. Oefters (aber nie in den Bomb. Ausgg.) शक्तु geschrieben. — Vgl. दधि°, साक्तुक.

सक्तुक m. *ein best. vegetabilisches Gift* H. 1198. शक्तुक Baiṭhân. im ÇKDa.

सक्तुकार m. *der sich mit dem Mahlen von Grütze abgiebt* R. Gorr. 2,90,26. °क dass., f. °कारिका Nir. 6,6.

सक्तुघटाख्यायिका f. *die Erzählung von einem Topfe mit Grütze* Verz. d. Oxf. H. 134,a,25; vgl. Pañcat. 252,8. fgg.

सक्तुप्रस्थीय (von सक्तु + प्रस्थ) adj. *über einen* Prastha *Grütze kaufend* Verz. d. Oxf. H. 5,b,15; vgl. MBh. 14,2711. fgg.

सक्तुफला f. *Prosopis spicigera Lin.* oder *Mimosa Suma* (शमी) Roxb. AK. 2,4,2,32. °फली f. dass. Çabdar. im ÇKDa.

सक्तुल adj. von सक्तु (मत्वर्थे) gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97.

सक्तुवर्ती adj. *mit Grütze gemischt* VS. 8,37.

सक्तुसिन्धु P. 7,3,19, Schol. — Vgl. साक्तुसैन्धव.

सक्थ am Ende eines comp. = सक्थन्, सक्थि P. 5,4,93. 113. 6,2, 198. fg. Vop. 6,18. 25. 43. भग्न° adj. MBh. 6,1793. 9,30. आत्तसक्थी adj. f. Harîv. 3916. घाभुग्नसक्थी adj. f. Suçr. 2,92,8. — Vgl. सञ्जि°, अपर°, उत्तर°, उत्°, चक्र°, पूर्व°, पृष्ठि°, फलक°, मृग°, लोमश°.

सक्थन् n. सैक्थि (Unâdis. 3,154) n. und सक्थि f. (im du.). Declination in der klassischen Sprache P. 7,1,75. Vop. 3,95. ältere Formen: सक्थ्ना, सक्थ्नस्, सक्थ्नो, सक्थ्नोस्, सक्थ्नानि, सैक्थि, सक्थ्यौ, सक्थ्या, सक्थ्यौस्, सक्थि-भ्याम्. *Schenkel* Nir. 9,20. AK. 2,6,2,24. H. 613. Hall. 2,360. वि सक्थानि नेरा पसुः Ṛv. 5,61,2. न सक्थ्युर्वमीयमी 10,86,6. 7. घत्तरा सक्थ्या 16. सक्था देदिश्यते नारी euphemistisch für *cunnus* VS. 23,29. — AV. 6,9,1. घर्मस्य सक्थ्यावृक्त् TS. 5,3,11, 2. 7,4,10,1. Kâṭh. 33,3. Çat. Br. 3,8,2,27. 7,1,1,29. 39. 3,6,2,9. 10, 6,3,3. 13,2,2,3. 3,1,4. Âit. Br. 7,1. 3. Liṭ. 2,8,29. Gobh. 4,1,2. 3. Kâṭh. Çr. 6,7,6. Pañcav. Br. 16,2,6. सक्थिनी MBh. 3,17292. 5,5676. 13,3290. R. 3,75,27. Pañcar. 4,5,17. सक्थ्न्याम् R. Gorr. 2,8,13. सक्थ्नाम् Mâlav. P. 18,49. Suçr. 1,256,7. सक्थ्य im comp. 125,12. 208, 2. °सदन 263,16. Spr. (II) 137. Vaṇîn. Bṛh. S. 66,3. am Ende eines adj. comp.: भग्नसक्थ्य R. 5,10,19. in übertr. Bed. P. 5,4,113. दीर्घसक्थ्य शकटम् *mit langen Gabeldeichseln* Schol. Vop. 6,18. — Vgl. दुः°, लोमश°.

सक्थ्य s. u. पृश्निसक्थ्य.

सैक्थन् (von सच्) n. *Umgang, Verkehr*: वृञ्जिनवर्तनिं नरं सर्काय्यिर्यं विदथे Ṛv. 1,31,6. Vgl. im Zend hakhman.

सैक्थ्य n. etwa *Verbindung, Gemeinschaft* Ṛv. 3,38,7.

सक्रतु (2. स + क्रतु) adj. *einmüthig, einträchtig* Ṛv. 1,93,5. इमं स्तोमं सक्रतवो जुषन्त 2,27,2.

सक्रिय (2. स + क्रिया) adj. *handelnd, thätig* Siddhânt. 10. Çiv. in LA. (III) 35,9.

सक्रुध् (2. स + 2. क्रुध्) adj. *erzürnt* Râǵa-Tar. 3,17.

सक्रोध adj. dass. MBh. 3,11381. 5,7483. R. 1,60,12.

सत्, सतति = गतिकर्मन् Nigh. 2,14. etwa so v. a. सच्. व्रतस्य साता गव्यस्य निःसृजः सत्तत इन्द्र निःसृतः Ṛv. 1,131,3. = वो संभजमानाः Sây.

सत्त (von सद् nach Comm.) adj. *überwältigend*: सत्त ग्रूष सवितः TS. 3,5,8,1. सत्तेदं पंस्य TBr. 3,7,2,1.

1. सर्तण (wie oben) adj. *überwältigend* Ṛv. 5,41,4.

2. सत्तण (2. स + तण) adj. *Musse zu Etwas* (loc.) *habend*: यामीना दीर्घसत्रेण कथायां सतणा रहेः Bhâg. P. 1,1,21.

1. सर्तणि (von सच्) adj. *zusammengehörig mit* (gen.), *Gefährte, Besitzer*: भुवनस्य Tvashṭar Ṛv. 2,31,4. सूर्यस्य Soma 9,71,4. 78,3. श्येनाशिनो सतणी ऊर्वे 8,22,13. 59,8. सतणि instr. s. u. सच्.

2. सर्तणि (von सद्) adj. *überwältigend*, mit acc.: ज्ञामिमज्ञामिं पतनासु सतणिम् Ṛv. 1,111,3. सभिमातीः 8,24,26. वृत्राणि 9,110,1.

सतम m. N. pr. eines Lehrers der Haṭhavidjâ Verz. d. Oxf. H. 234, a,4. v. l. सक्तम und सुतम.

सतार (2. स + तार) adj. *ätzend, beissend* Suçr. 1,173,12. fg. 177,13. 186,20. 218,16.

सत्तित् (2. स + तित्) adj. *neben einander wohnend, — liegend* u. s. w. Ṛv. 1,140,2. 6,44,6.

सतीर (2. स + तीर) adj. *mit Milch versehen, milchig* (z. B. Pflanzen, R. 4,25,23. Suçr. 1,136,1. 2,172,4. उदक Çâṅkh. Çr. 4,15,13. यूष *aus einem Gewächs gemacht, das Milchsaft hat*, Satyâṣ. Br. 4,4. Çâṅkh. Gṛhj. 1,13.

सद्, सद्यति eine zur Erklärung von सखि gebildete Wurzel Nir. 14,10.

सर्ख am Ende eines comp. = सखि P. 5,4,91. Vop. 6,37. 55 (त्रिसख्म्). 1) *Freund, Gefährte;* in comp. mit einem adj.: प्रिय° (s. auch bes.) *ein lieber Freund* R. 2,51,5. 69,6. 86,7. Spr. (II) 4288. बलोद्धत° Kir. Ni-

vis. 10,30. mit einem im gen. gedachten subst.: बलभित्सख Çiç. 27,23. Vikram. 3. विबुध° Bhatt. 1,1. Bhâg. P. 1,8,43. 9,23. 15,1. 3,25,4. 8, 1,26. in Verbindung mit सुहृद् *Freund:* बलिसख: सुहृत् 11,13. देवापनसुहृत्सख: 3,4,9. 5,10,26. am Ende eines adj. comp. 4,28,53. — 2) *in Gesellschaft von —, vereint mit — seiend:* प्रायदाममम् — तस्य मरुत्वेमक्रियीसख: so v. a. *er und seine fürstliche Gemahlin* Raghu. 1,48. मचिव° 4,37. 12,9. Kumâras. 1,10. Kathâs. 14,16. 18. 18,382. 405. 23, 30. 28,141. 144. 29,41. 30,58. 60. 141. 34,174. 35,160. 40,83. 43,12. 274. 44,81. 45,252. 52,18. 56,116. Râga-Tar. 4,310. 668. Bhâg. P. 4, 25,47. fg. कात्तसखा f. 3,12. खड्गैक° *nur von seinem Schwerte begleitet* Kathâs. 68,40. — Vgl. कवा°, काम°, द्रावयत्°, धी°, पशु°, पुत्र°, प्रिय°, मदिरा°, मधु°, मन्दयत्°, मरुत्°, मेघ°, यावयत्°, राम°, लक्ष्मी°, वसन्त° *(der vom Malaja blasende Wind* Vikram. 31,18), वात°, वायु°, विश्व°, श्रुत:°.

सँखि (von सच्) Uṇâdis. 4,136. m. nom. सखा, acc. सखायम्, instr. सख्या, dat. सख्ये, abl. gen. सख्युस्, loc. सख्यौ, du. सखाया, सखायौ, pl. सखायस्, सखीन्, सखिभिस्, सखीनाम् P. 6,1,112. 7,1,93. fg. 3,118. Vop. 3,50. fgg. *Gefährte, Begleiter; Genosse, Freund* AK. 2,8,4,12. Trik. 3,3,82. H. 730. an. 2, 28. Med. kh. 7. Halây. 2,373 द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया ṚV. 1,164,20. कृणे सखाया 3,43,4. कृमे: 10,67,3. तवं प्रत्नेन पुत्र्येन सख्या वयेन 6,21,7. राय: 55,3. विश्वे त्वा देवा धीतक्रुर्वे सखाय: *die dich begleitenden* 8,85,7. सयूथ्य VS. 6,9. इन्द्र इच्चरत: सखा Âit. Br. 7,15. सुशेव ṚV. 2,1,9. शिव 5,12,3. प्रिय 6,75,3. सखायस्ते वामभाज: स्याम 3,35,22. 6,17,17. सखे विष्णो 18, 11. 33,3. सखीयो देवौ 6,60,14. 7,27,2. न ते सखा सख्यं वष्टि 10,10,2. AV. 5,4,7. सप्तपद 11,9. 13,5. युज्य 6,51,1. ज्ञाति, सखि Çat. Br. 1,6,4, 3. 2,2,8,16. कपिवान्सुतानां सखा Çâṅkh. Çr. 7,10,13. M. 3,110. MBh. 3,2681. Spr. (II) 5927. 6638. Pañcat. 265,3. सखे Vikram. 12,1. Bhâg. P. 4,28,33. Hit. 14,20. सखायम् MBh. 3,1795. 2567. सख्या 1,5133. सख्ये Kathâs. 22,162. सख्यु: M. 11,38. 170. H. 9. सखिभिस् MBh. 1,5568. सख्यादीन् M. 3,113. H. 9. रामसखा R. 2,83,20. Auch in Verbindung mit einem fem. (vgl. सखी) P. 4,1,62, Schol. सखीभूदश्विनोरुषा: ṚV. 4, 52,2. 3. Âçv. Gṛhj. 1,7,19. Çâṅkh. Gṛhj. 2,2. सखायं विहितं देवै: MBh. 1,6133. Spr. (II) 6639. सखिगणावृता MBh. 3,2095. सखितुल्य Kathâs. 18,20. — Vgl. यस्मत्° (unter 1. यस्म), इन्द्र°, गोसखि, गोसखि, बाल°, मत्°, मरुत्°, वायु°, श्रुत:°, सावयत्°, साखेय.

सखिता (von सखि) f. *Genossenschaft, Freundschaft* MBh. 3,870. ऊषाया: सखितां गता: Harîv. 9921. मया सखितां गत: R. 5,94,22.

सखित्व n. dass. ṚV. 1,10,6. 3,1,15. 4,25,2. 8,21,8. 10,133,6. R. 7, 108,27. सखित्वमनुपालयन् 6,26,34. सखित्वं ज्ञास्यते मम 35. सखित्वात्तस्य *aus Freundschaft zu ihm* R. Schl. 1,10,19. Pañcat. 60,4. पितुर्हि प्रस्राव सखित्वमात्मन: R. 3,20,36. सखित्वं चाभ्युपैतु न: 5,90,41. यात: सखित्वं वलघातिना Harîv. 7487. तया सखित्वाद्दाक्ष्म् R. 4,51,13. मया सक् 4,11. बाल° *Freundschaft mit* Spr. (II) 4434.

सखित्वन् n. dass. ṚV. 6,51,14. 8,12,6.

सखिदत्त gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80. — Vgl. साखिदत्तेय.

सखिपूर्व n. *Freundschaft* Spr. (II) 3281. 3668. MBh. 1,5194 (unter पूर्व andere aufgefasst).

सखिभाव m. dass. Kathâs. 74,335.

सखिल (2. स + खिल) adj. *sammt den Supplementen* Ind. St. 2,269. Harîv. 9491.

सँखिवत् (von सखि) adj. *mit Begleitern versehen* ṚV. 1,156,4.

सखिविद् adj. *Freunde gewinnend* VS. 11,3.

सखी (von सखि) f. *Gesellschafterin —, Freundin eines Frauenzimmers* P. 4,1,62. Vop. 4,26. AK. 2,6,4,12. H. 529. 334. Halây. 2,233. MBh. 3,2032. 2105. fg. 2605. Harîv. 9919. 9923. 9927. Mṛicch. 76. 86. 92. 101. Çiç. 9,5. Vaṇîn. Bṛh. S. 78,4. 9. Kathâs. 18,231. 364. LA. (III) 5,16. 19,7. 35,18. Pañcat. 258,9. Uttarâdh. 47,9 (61,13). °ज्ञन Spr. (II) 3337. R. 2,78,13. fg. Ragh. 3,1. ससखीजना adj. f. Çiç. 32,14. प्रिय° Ragh. 3,5. Spr. (II) 1634. Vikram. 3,2. 3. श्री° Bhâg. P. 8,9,18. श्रयन° *Bettgenossin* (der Freundinnen) Kumâras. 7,95. वनासंगीत° *Theilnehmerin an* 5,56. *Freundin so v. a. Geliebte* Vaṇîn. Bṛh. S. 104,28.

सखीक am Ende eines adj. comp. (f. घा) von सखी. उत्पतिता ससखीकाकम्बरम् Kathâs. 20,112. 66,176. 119,125.

सखीय् (von सखि) *sich als Begleiter anschliessen, Freundschaft suchen; nur partic.* °यत् ṚV. 3,31,7. सखीयतामविता बोधि 4,17,18. 5, 49,1. सखिभि: सखीयन् 6,32,2. 8,40,2. सुयखा सखीयते 10,91,1.

सखीकृदाभरण m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 574.

सखेद (2. स + खेद) adj. *betrübt;* °म् adv. Çiç. 32,11.

सखोल N. pr. einer Oertlichkeit Râga-Tar. 1,342.

सख्य (von सखि) n. VS. Prât. 4,164. *Gemeinschaft; Freundschaft* P. 5,1,126. AK. 2,8,4,12. H. 730. Halây. 4,21. दृतेरिव ते ऽवकर्मस्तु सख्यम् ṚV. 6,48,18. यन्निरिणा सख्ये दैदातु न: 8,60,13. 10,124,9. प्राणा: सख्ये नौ यन्तु AV. 13,1,17. देवानाम् ṚV. 7,7,2. गमेम इन्द्र: सख्या वयेव 1, 178,2. 2,18,8. शिव 7,22,9. प्रत्न 8,18,8. पित्र्य 7,72,2. स्त्रैण 10,95,15. सख्य, घाप्य 7,82,8. सख्य, वेश्य 8,61,14. 19,12. 8,85,7. 10,10,1.2. 71, 2. 132,2. स्वात्सख्यादरणी नाभिमेमि *Freundschaft so v. a. Verwandtschaft* 10,123,2. AV. 7,104,1. 8,9,22. — R. 1,3,23. Ragh. 5,60. Spr. (II) 6230. 6660. Bhâg. P. 6,4,24. 7,3,23. 8,9,10. तयो: सख्यमभवत् Hit. 25, 15. समानशीलव्यसनेषु Spr. (II) 4934. मुमूर्ष सख्यं रामस्य कुरु Ragh. 12, 57. Bhâg. P. 8,11,27. यद्भरतेन R. 1,10,3. Kathâs. 22,68. 28,103. चरितानां प्रुना सख्यं कपिसख्यं तु शोषिणाम् Sûçr. 1,111,2. उष्ट्रेण साकम् Kathâs. 60,152. सख्यमेति मधुभि: Râga-Tar. 6,134. सख्यं कृ R. 1,65, 23. शंभो: Bhâg. P. 8,13,24. रामेण R. 1,1,59. 3,75,47. Spr. (II) 7242. दुर्जनेन समम् 2859. तै: सक् Kathâs. 44,100. तं सख्यं तै: सक् साधय ebend. सख्यं विधा 64. बकबङ्कगृधै: Bhâg. P. 5,13,18. बबन्ध सुहिना सख्यं येन Râga-Tar. 1,155. सार्धम् 5,365. वीर° unter M. 2,134. सक्षेत्र्या° *mit, zu* R. 5,78,5. Râga-Tar. 4,148. Hit. 18,2. — Vgl. परि°, पद्यासख्यम्.

सख्यविसर्जन n. *Auflösung der Gemeinschaft* (ein Vorgang im Ritual) Âçv. Çr. 7,1,6. Comm. zu 6,12,12; vgl. Pân. Gṛhj. 2,11.

सग्, सँगति Dhâtup. 19,27 (संवरणे). — Vgl. स्थग्.

सँगण (2. स + गण) adj. *von einer Schaar begleitet, in Schaaren:* सगणो मरुद्भि: ṚV. 1,101,9. 3,32,3. 47,2. 4. VS. 25,46. TBr. 2,8,8,5. AV. 7,77,3; vgl. TS. 4,3,48,4. *mit seinem Gefolge* MBh. 3,3122. R. 2, 81,10. Kir. 5,13. als Beim. Çiva's Çiv.

सगद्द s. u. गद्द.

सगन्ध (2. स + गन्ध) adj. 1) *riechend* Suçr. 2,429,2. — 2) *gleichen*

Geruchs mit (instr. oder im comp. vorangehend) Vop. 6,97. घृतमधुना Varāh. Bṛh. S. 43,36. मत्स्य° 68,18. 50,21. — 3) *verwandt* Taik. 2,6, 9. Çiç. 69,11 (im Prākrit).

सगन्धिन् adj. *gleichen Geruchs mit:* मत्स्य° MBu. 1,2396.

1. सँगर् m. 1) *Luftmeer* Naigh. 1,3. अपः प्रेरयं सगरस्य वृष्णात् ṚV. 10, 89,4. मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष TS. 4,4,12,2. 5,5,10,1. Kāṭh. 8,14. 9,3. u. v. l. Naigh. 1,3. — 2) N. pr. eines mythischen Fürsten, der durch seine 60000 Söhne die Erde aufwühlen liess, um ein zum Opfer bestimmtes Ross wieder aufzufinden. Kapila verbrannte dieselben und Bhagiratha, ein Nachkomme Sagara's, führte die Gaṅgā vom Himmel auf die Erde um sie zu entsundigen. Das Meer, wohin die Gaṅgā mit der Asche der Verbrannten geleitet wurde, erhielt ihnen zu Ehren den Namen Sāgara. H. 692. MBu. 1,227. 3,5831. fgg. 12,1023. fg. 10613. fgg. Harīv. 762. fgg. R. 1,5,2. 39,2. fgg. (40,2. fgg. Gorr.). 70, 36. fg. (72,23. fg. Gorr.). 2,36,16. 64,41. 110,24. fgg. VP. 374. fgg. Bhāg. P. 2,7,44. 9,8,4. Wilson, Sel. Works 2,167. fg. Mcan. 31. Rāgat. 3,50. Spr. (II) 1995. 6201. 7059. Verz. d. B. H. No. 452. Verz. d. Oxf. H. 13, a,19. Daçak. 89,4. pl. *die Söhne* Sagara's R. 2,61,21. Verz. d. Oxf. H. 23,a,29. fg. der Name wird auf गर् *Gift* zurückgeführt, weil die Mutter *vergiftete* Speise genossen haben soll.

2. सँगर् adj. 1) nach Comm. (2. स + गर् von 1. गॄ) so v. a. von *Lob begleitet:* यज्ञाः VS. 5,34. konnte auch *gefrässig, im Frass begriffen* (2. स + गर् von 2. गॄ) bedeuten. — 2) *vergiftet, giftig* Bhāg. P. 3,26, 34. *vergiftete Speise* R. ed. Bomb. 1,70,31.

3. सँगर् nicht zu bestimmen in der Formel सन्दमरुः सगरा रात्रिः Çat. Br. 1,7,2,26. सन्दः सँगरः सुमेकः TS. 4,4,2,2.

सगरम् = 2. सगर 1) als Bez. des Agni Liṭ. 2,2,34. Pāraṇ. Bṛh. 1,4,13.

सगरी f. N. pr. einer Stadt Tīrān. 112. 251.

सगर्भ (2. स + गर्भ) adj. (f. आ) 1) *mit einer Leibesfrucht versehen, schwanger* Harīv. 770. 8832. Pīṭha-P. im ÇKDr. Kathās. 3,13. 10,147. 17,65. 21,113. 27,211. 35,116. 39,18. 42,70. 46,26. तस्मात् 93,47. तया Harīv. 1399. सगर्भप्रमदा Ṛt. 2,2. अनलो ऽपि सगर्भो ऽभूत्तेन वीर्येण पूर्वजः Kathās. 20,84. von Pflanzen *mit einem unentwickelten Blatte:* दर्भाः Kāçikh. 35 im ÇKDr. — 2) *aus demselben Leibe geboren* H. 551. Hālās. 2,353. Çārṅgad. im ÇKDr.

सँगर्भ्य adj. = सगर्भ 2) P. 4,4,114. 6,3,84. Schol. AK. 2,6,2,24. Bruder VS. 4,20. 6,9. Kāṭh. 3,5.

सगर्व (2. स + गर्व) adj. *hochmüthig* Rāga-Tar. 4,183. °म् adv. R. 3, 32,2. Çiç. Cu. 41,9.

सगु (2. स + 3. गु = गो) adj. *sammt Rindern* Pāraṇ. Bṛh. 25,8,2.

सगुण (2. स + गुण) adj. (f. आ) 1) *mit einem Stricke versehen:* पूर्णकुम्भ Spr. (II) 2151. *mit einer Sehne versehen, sammt der Sehne:* क्षिप्ता सगुणं चापम् MBu. 3,1031. Kiraṭārjun. 1,139. — 2) *mit seinen besondern Beigaben —, mit dem was dazu gehört versehen* Āçv. Çr. 12,4,18. Kāṭy. Çr. 6,7,23. Comm. 543,2. — 3) *mit Qualitäten versehen* Ind. St. 2,20. 3,48. Weber, Rāmat. Up. 287. 329. Bhāg. P. 3,32,12. 36. 6,9,38. 7,9,48. Verz. d. Oxf. H. 104, b, 7. Vedāntas. (Allah.) No. 7. Kaush. Up. Einl. S. 2. — 4) *mit Vorzügen versehen:* Personen R. 4,55,3. Spr. (II) 4114. 6661. Rāga-Tar. 4,714. सर्व° *in Allem* Kathās. 34,162. कुम्भ Spr. (II) 2151. शब्दार्थौ Sāh. D. 2,19. 4,10. Davon °त्व n. nom. abstr. 1.

सगुणवती f. Titel einer Schrift des Çaṁkarākārja Verz. d. B. H. No. 916.

सगुणिन् adj. = सगुण 4) Spr. (II) 2375, v. l.

सँगृह (2. स + गृह) adj. *sammt seinem Hause* TS. 3,5,4,3.

सगोत्र (2. स + गोत्र) adj. (f. आ) *gesippt* P. 6,3,85. Vop. 6,98. AK. 2, 6,1,34. H. 561. Hālās. 2,351. सपिण्डास्तु पुरुषे (fehlt eine Silbe) समसे विनिवर्तन्ते । सप्तमादूर्ध्वं सगोत्राः Citat aus der Smṛti Schol. zu H. 562. Pāraṇ. Bṛh. 18,2,12. Śrāddh. Bṛh. 4,7. Liṭ. 3,2,12. Kauç. 46. M. 9,190. Jiṇ. 1,68. 2,128. 3,221. Suçr. 2,148,7. MBu. 12,11913. स्त्री° ebend. पितुः 13,2421. M. 3,5. पराशरसगोत्र MBu. 12,11875. R. Gorr. 2,98,23. Ind. St. 3,281. 485. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5,539,9. युष्मत्सगोत्रस्य कण्वस्य Çiç. 110,16. सगोत्रविद्य = सगोत्र und सविद्य Vop. 6,5.

सगोत्री (2. स + गो°) f. *Kameradschaft mit*, am Ende eines comp. Bhāg. P. 4,22,23.

सगौरव (2. स + गौ°) adj. *würdevoll;* °म् adv. Kathās. 24,128. Duṅgar. 95,8.

सँगिध (2. स + गिध = जिघ) VS. Paṭ. 3,45. f. *ein gemeinschaftliches Mahl* Nir. 9,42. P. 6,4,100. AK. 2,9,55. Taik. 3,2,4. H. 425. VS. 18,9. 28,16. TS. 4,7,8,1.

सगर्म angeblich so v. a. यज्ञमान. सुग्मे ते गोः VS. 4,26, wofür संपत्ते (संपत्ते die Ausg. von Weber) गोः TS. 1,2,3,1. also vielleicht *Zusage, Einsverden im Handel: wenn du auf eine Kuh eingehst* (vgl. गम् mit सम्).

सगमन् so v. a. संयाम Naigh. 2,17; vgl. गम् mit सम्.

सघ्, सघ्नोति Dhātup. 27,20 (हिंसायाम्). सघत्; wohl verwandt mit सक् *auf sich nehmen, zu tragen vermögen:* घसंघेर्णाम् ṚV. 1,31,3. नकिं त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत् (= प्राप्नोति Sāy.) 57,4. घघ्निनोस्त्वा वाकुभ्यो सघ्यासम् den Soma TS. 3,2,8,1.

सघ m. N. pr. eines Mannes Tīrān. 324.

सँघन् (von सघ्) m. nach dem Comm. *Geier* TS. 3,2,8,1.

सघन (2. स + घन) adj. *dicht:* केशाः स्युः सघना दृढाः Çāṅk. Sāṁkh. 3,11,21.

सघृण (2. स + घृणा) adj. *mitleidig:* eine Person Bhāg. P. 5,5,17. 8, 9,3. घवलोक 4,30,7.

संकत s. निः°.

संकतिका (von सम् + कत्त) f. Bez. *eines best. Gewandes* Hiouen-thsang 1,33. 69.

संकर्ट (vgl. अवकर, उत्कर, प्रकट, विकट) P. 5,2,29. 1) adj. (f. आ) a) *eng, schmal, wenig freien Raum bietend* AK. 3,2,34. H. 1304. Hālās. 3,11. नातिविस्तार° Kām. Nītis. 10,2. मार्ग 7,30. Spr. (II) 6119. 6662. Kull. zu M. 7,70. वन° (घघन्) Kām. Nītis. 18,50. Thūr, Thor MBu. 12, 2639. Varāh. Bṛh. S. 53,80. छिद्र 79,33. ललाट 68,72. °मुख adj. (संकट) Kathās. 96,40. दृष्टि भ्रूसंकटां कृत्वा MBu. 9,3412. वाकुभिः सुसंकटैः (v. l. सकङ्कट und सकण्टक) so v. a. *dicht geschlossen* 4,331. भूमि Kathās. 47,30. देशान्विषमसंकटान् MBu. 3,10967. वल्लीलतासंकटेषु कुरुजेषु 11586. 7,6383 = 7962. 1977. नर्मदातीरे दारुणोपलसंकटे Harīv. 3218. शिलासंकटपादप 3361. लताविटप° (वन) R. 2,52,98. पद्मिनीं पद्मसंकटाम् 97. 56,9. 4,12,12. 5,54,5. नगरी विषमोच्चयसंकटा Harīv. 5023. दु-

प्रबोधसंकटत Spr. (II) 3311. भूतसंकटः श्मशानवारः Milatim. 77, 20. वनानि *dicht* R. 4,47,3. Kim. Nitis. 7,37. — *b) schwierig, worüber man nicht leicht hinüberkommt* (in übertr. Bed.): प्रश्नः सुसंकटः MBh. 12,11181. धर्मशास्त्रेष्वसंकटः 12284. संसारचक्र Mahan. P. 10,26. 45,8 (अति°). युद्धं परमसंकटम् *so v. a. überaus gefährlich* MBh. 7,3086. — 2) m. N. pr. *a) eine Personification der schwierigen Durchgänge* als Sohn Kakubh's Bhâg. P. 6,6,6. — *b)* eines Mannes Râga-Tar. 5,241. — *c)* eines Flamingo Kathâs. 60,169. Pañkat. 76,7. Hit. 110,3, v. l. — 3) *f.* आ N. pr. einer der acht Jogini Gautama im ÇKDa. einer in Benares verehrten Göttin ÇKDa. °स्तोत्र Verz. d. Pet. H. No. 51. — 4) n. *a) Enge, ein beengter Raum, ein schmaler Pfad, ein schwieriger Durchgang* MBh. 3, 2930. 11,142. Spr. (II) 3372. Mâlâv. 50,18. Râga-Tar. 4,368. Kull. zu M. 8,295. गिरि° R. 4,49,29. पर्वत° Spr. (II) 8933, v. l. रथ° Kull. zu M. 8,296. वनसंघ° R. 3,20,28. वृतसंकटजा दोषाः Kim. Nitis. 14,24. द्रुम° 15,12. विषमशिला° Spr. (II) 3310. मुच्येत योनिसंकटात् *so v. a. Wiedergeburt* MBh. 3,8073. मार्गाः समंकटाः L.A. (III) 87,9. कङ्कटस्यानिसंकटे *ausserordentliche Dichtigkeit* Râga-Tar. 6,249. — *b) Schwierigkeit; eine schwierige Lage, Verlegenheit, Noth, Gefahr:* यद्या पवेदं निपुणं विचार्यते तथा तथा संकटमेव दृश्यते Mahân. 149,2. °नाशन Kim. Nitis. 18,3. संकटे ऽस्मिन् Kathâs. 6,152. 18,241 (pl.). 27,179. संकटे किं परीक्ष्यते प्राज्ञाः शूराश्च संगरे 31,93. 35,52. 49,73. 50,27. Sin. D. 492. यत्र संकटं ज्ञातुं युवयोः स्यात् Kathâs. 42,82. 36,28. द्रौपद्याः MBh. 3, 13537. स्वानाम् Bhâg. P. 9,18,29. प्राणस्य 8,2,30. नाधिगच्छामि संकटम् MBh. 2,2376. संकटं महदागतम् Mârk. P. 61,29. 75,58. 76,36. 81. °स्थ Kathâs. 119,69. संकटं प्राप्तः Mârk. P. 62,28. 126,30. संकटं महदास्थितः 70,26. संकटे पतिताः स्मः Nâgân. 24,4. निपत्य संकटे Râga-Tar. 6,249. सान्त्वान्युच्यास्य संकटात् MBh. 3, 13965. 7, 3920. Mâlav. 58,9. Kathâs. 104,157. Mârk. P. 92,28. Râga-Tar. 6, 252. Verz. d. Oxf. H. 88, *b*, 12. 34. संकटादुद्धर्तुम् MBh. 3, 13536. येनास्मान्निस्तरिष्यामः संकटात् Kathâs. 49,72. संकटोत्तीर्णा 86,128. स वै नः संकटादस्मात् Bhâg. P. 8,24,43. in comp. *a)* mit dem, was in *Gefahr* steht: पुर° 6,10,6. 12,5. प्राण° 8,19,43. स्वस्वामिगुरु° Kathâs. 119,67. धर्म° MBh. 11,150. R. Gorr. 2,18,43. Bhâg. P. 9,4,38. शब्दार्थन्यायसंकटेषु Durga bei Muir, ST. 2, 184. — *β)* mit dem, was *Gefahr* bringt: शस्त्र° MBh. 7,7370. शत्रु° 4, 209. Spr. (II) 1221. 3727. Kathâs 33,119. 106,145. भव° Verz. d. Oxf. H. 80, *b*, 37. अज्ञान° (so zu fassen) Bhâg. P. 3,7,7. — महा° Spr. (II) 4497. अति° 3170. Milatim. 103,19. Mallin. zu Kumâras. 3,23. सु° Bhâg. P. 10,88,16. — सङ्कटाप्यम् MBh. 8,3018 fehlerhaft für सकटानम्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. प्राण°, वन°, वृत्त°.

संकटचतुर्थी f. Bez. *eines best. Festtages am 4ten Tage in der dunklen Hälfte des* Çrâvaṇa Verz. d. Oxf. H. 284, *b*, 17.

संकटात 1) adj. *Seitenblicke* (कटात) *werfend.* — 2) m. *Grislea tomentosa Roxb.* H. an. 4,332. Vîrya im ÇKDa. — सकटात्त Mad. sh. 57. adj. = कटात्तसक्षिन्; m. = कटात्त (?).

संकटिक adj. von संकट gaṇa कुमुदादि zu P. 4,2,80.

संकटिन् dsgl. gaṇa प्रेक्षादि zu P. 4,2,80. *in einer schwierigen Lage sich befindend, in Verlegenheit setzend:* वयं संकटिनो विप्र येषां पत्नी न वेश्मनि Mârk. P. 72,3.

संकथन (von कथय् mit सम्) n. *das Sichunterhalten:* बहूनां कलहो नित्यं द्वयोः संकथनं ध्रुवम् MBh. 12,6652. तापिः Bâlâçikshâ im ÇKDa. ज्ञातिभिः सह Spr. (II) 6888.

संकथा (सम् + क° oder von कथय् mit सम्) f. gaṇa कथादि zu P. 4,4, 102. 1) *Unterredung, Gespräch* H. 275. Hall. 4,94. Bhâg. P. 10,82,17. पणितैः सह Spr. (II) 1183. तत्कृतामुच्चैराकर्णयति संकथाम् Kâm. Nitis. 5, 36. विश्रम्भसंकथाः। कुर्वती मदिरावत्या सह *vertrauliche* Kathâs. 104, 174. घनार्य° *mit* Harîv. 1026. घर्षुन° *über* MBh. 14,2387. कथयन् — प्रियस्य पुत्रस्य विवाहसंकथाम् R. Gorr. 2,66,69. Kâm. Nitis. 15,29. Bhatt. 8,103. सचिवैः सह संग्रामसंकथाः। तास्ताः कुर्वन् Kathâs. 47,95. 93,5. सखीभिर्बद्धसंकथा adj. f. Râga-Tar. 3,303. — 2) *ein übereinstimmender Ausspruch:* इत्याद्यकवि° Verz. d. Oxf. H. 214, *a*, 6. — Vgl. सांकथिक.

संकर (von 3. कॄ mit सम्) m. (im Epos hier und da auch n.). 1) *Vermengung, Mischung, Vermischung* VS. Prât. 1,8. संकरेण च पुष्पैरन्संकरः संकुलावरः Kâm. Nitis. 19,26. Suçr. 1,109,6. Verz. d. Oxf. H. 230, *a*, 9. Siç. D. 264. Kusum. 16,18. 54,3. Sarvadarçanas. 53,1. *fg.* 78,20. सर्ववस्तु° 13,4. क्रिया° Suçr. 1,131,6. Vishn. 1,12,67. रोषामुत्कर्षणोत्पादैः Prâtâpar. 56, *a*, 2. 59, *a*, 9. सर्ववर्णानाम् Suçr. 1,122,15. M. 9,67. वर्णानाः संकरः = वर्णसंकरः Varâh. Bṛh. S. 89,1. ज्ञाति° Kathâs. 40,10. गोत्र° MBh. 12,11912. ग्राम्य° 11911. धर्म° 11913. 13,2370. 4341. R. 5,14,55 (शंकर gedr.). आचार° R. Schl. 1,6,17. am Ende eines adj. comp.: धर्मसंकरेण धर्मेण MBh. 14,2777. रक्षित° Kathâs. 71,270. ज्ञात° 80,81. — 2) *so v. a.* वर्णसंकर *Vermischung der Kasten durch unebenbürtige Ehen* Bhag. 1,42. Varâh. Bṛh. S. 9,14. Tattvas. 21. संकरे ज्ञातयः M. 10,40. °ज्ञात 5,89. °ज Verz. d. Oxf. H. 277, *b*, 7. Varâh. Bṛh. S. 16,11. °ज्ञाति adj. Bhâg. P. 7,11,30. °भव adj. Varâh. Laghuç. 2,3. concret *so v. a. Mischlingskaste:* संकरा वै सुराष्ट्राः MBh. 8,2098. वर्णानां संकराः dass. Harîv. 11321. — 3) *eine der Vermischung der Kasten gleichkommende Handlung:* कथमेका बहूनां स्याद्धर्मपत्नी न संकरः MBh. 1,7256. पापकर्मतया चैव संकरं तेन पुष्यति। संकरो नरकायैव 5,2613. विमुच्यते चापि स सर्वसंकरैर्मम वास्य दोषैरभिभूयते मनः॥ 13,5204. तिर्यग्योनिं न गच्छेच्च नरकं संकराणि च 7622. तस्याभावे (sc. धर्मस्य) तु लोको ऽयं संकराच्चाशमाप्नुयात् (Text und Comm. शङ्करात्, welches durch संकीर्णतया erklärt wird) Kâm. Nitis. 2,33. — 4) *Vermischung von Redefiguren, wobei die einzelnen Elemente in einander fliessen* (im Gegens. von संसृष्टि): क्षीरनीरन्यायायत्र संबन्धः स्यात्परस्परम्। अलंकृतीनामेतासां संकरः स उदाहृतः॥ Prâtâpar. 104, *a*, 8. Sin. D. 755. 757. 5, 4. 5. — 5) *was durch Berührung mit Unreinem unrein sein kann:* विमर्शे संकरादाने नायं कुर्यात्कदा च न MBh. 1, 6371. — 6) *Kehricht* AK. 2,2,18. H. 1016. Hall. 2,147. Hir. 235. — 7) *das Knistern des Feuers* Hir. — 8) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Gautama Ind. St. 4,374. eines Bhikshu Târan. 72. — Vgl. योनि° (°ज MBh. 3,8172), लोक°, लोक्°, वर्ण° und संकार.

संकरक (wie oben) adj. *vermengend, vermischend:* धर्म° MBh. 6,2228. (°संकरकारिते ed. Bomb.).

संकरकृत्या f. = संकर 3) M. 11,125. = संकरीकरण Kull.

संकरता in वर्ण° nom. abstr. von वर्णसंकर. °तां गतः *in eine Mischlingskaste gerathen* MBh. 13,6578.

संकराश्व (संकर + अश्व) m. *Mischlingspferd* so v. a. वेसर *Maulthier* Mallin. zu Çiç. 12,19.

संकरित in गर्भ° (von गर्भसंकर) adj. *zu einer Mischlingskaste gehörig* Spr. (II) 5749.

संकरिन् adj. in ग्राम्यसंहेय° d. i. ग्राम्यसंहेयिन् und संकरिन् *der zur Vermischung der Kasten beiträgt* oder *eines eben so schlimmen Vergehens schuldig* MBh. 12,6031. — Vgl. पुत्र°.

संकरीकरण (von संकर + 1. कर्) adj. *was eben so schlimme Folgen hat wie die Vermischung der Kasten* Visnu im ÇKDa. M. 11,68. Paiṭhînasi. 3,a,6. Verz. d. Oxf. H. 282,b,43. fg.

संकर्ष (von 1. कर्ष् mit सम्) m. *Zusammenrückung, Nähe* Gobh. 1,5,9. — Vgl. सन्निकर्ष und कालसंकर्षा.

संकर्षण (von 1. 2. कर्ष् mit सम्) 1) m. nom. ag. gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. a) *der Pflüger*, ein Bein. Halâjudha's, des älteren Bruders von Kṛshṇa, der aus dem Mutterleibe der Devakî in den der Rohiṇî versetzt ward. Bei den Verehrern Vishṇu's wird er als zweite Person in der Viereinigkeit Purushottama's (die mit der Seele identificirt wird) angesehen. AK. 1,1,4,19. H. 224. Halâj. 1,29. MBh. 1, 3520. 6997. 7050. 2,398. 3,10890. °समानना 4,187. 6,3012. 3022. °समो बले 7,4227. 10,498. 12,7527. 13,7003. Harîv. 3244. 3309. P. 6,2,34, Schol. VP. 440. 498. Wilson, Rîmây. Up. 303. 327. Verz. d. Oxf. H. 259, a,94. LA. (III) 88,14. Bhâg. P. 1,5,37. 3,8,3. 11,29. 26,25. 4,24,35. 5, 17,96 (die vierte Form des Mahâpurusha). 25,1. 3. 6,11,21. 15,27. 3,24,53. 10,1,8. 2,13. Pañcar. 3,2,1. 4,1,7. 11. 3,23. 65. Sarvadarçanas. 54,20. 55,9. Râǵa-Tar. 5,193. Ind. St. 1,23. °काण्ड 19. Verz. d. B. H. No. 1106. °विद्या Paṇḍ. 115,12. — *b)* N. pr. des Vaters des Nîlâmbara Verz. d. Oxf. H. 380,a,9. — 2) n. *a) das Herausstechen:* संकर्षणात्तु गर्भस्य स तु संकर्षणो स्मृतः । भविष्यत्यग्रजो मम Harîv. 3244. Bhâg. P. 10, 2,13. — *b) ein Mittel zum Zusammenführen, — Vereinigen:* द्रष्टृदृश्ययोः Bhâg. P. 5,25,1 (zur Erklärung von संकर्षण 1) *a*).

संकर्षणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,b,11.

संकर्षित (von 1. कर्ष् mit सम्) adj. s. काल°.

संकल P. 4,2,75. — Vgl. सांकल.

1. संकलन (von 2. कल् mit सम्) n. *das Zusammenzählen, Addiren* Colebr. Alg. 5. f. या dass. Wenzel, Ǵjot. 86. Kell. zu M. 4,85. Schol. zu P. 8,3,5. — Vgl. नीति°.

2. संकलन R. 2,66,15 und Verz. d. Oxf. H. 283,a,7 fehlerhaft für संकालन.

संकलिका s. Burnouf, Intr. 258, N. 3.

संकलित (von 2. कल् mit सम्) adj. *zusammengezählt, addirt* gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88. Wenzel, Ǵjot. 47. n. *Addition* Colebr. Alg. 5. f. या *the first sum, or addition of arithmeticals* 51. संकलितैक्य n. *aggregate of additions, summed sums or second sum* ebend.

संकलितिन् (von संकलित) adj. *der eine Zusammenzählung gemacht —, addirt hat;* mit loc. gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88.

संकलुष (सम् + क°) *Verunreinigung:* योनिसंकलुषे जातः MBh. 13, 2602; vgl. कलुषयोनित्व 2603.

संकल्पं (von कल्प् mit सम्) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. या. *a) die vom Herzen* (मनस्) *getroffene Entscheidung, der daraus hervorgegangene Wille, — Wunsch, Verlangen, Vorsatz, eine best. Absicht, kurz diejenige Willensbestimmtheit, die den Gedanken des Menschen für den Augenblick eine feste Richtung giebt;* = मानसं oder मनसः कर्म AK. 1. 1,4,11. H. 1370. Halâj. 4,88. मनातनो हि संकल्पः काम इत्यभिधीयते MBh. 13,4025. Kâm. Nîtis. 1,33. fg. मनो नाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः Vedântas. (Allah.) No. 47. Sarvadarçanas. 148,17. 162,17. Wilson, Sel. Works 1,266. 2,163. 213. *die dritte Stufe in der Geschlechtsliebe* Sâm. D. 79,20. *die Geburtsstätte derselben* (vgl. संकल्पज u. s. w. und Spr. (II) 1050) H. 229. — AV. 11,8,1. 27. 15,3,10. 16,6,10. °कुत्सल 3,25,1. °जूति TS. 3,12,8,4. Çat. Br. 14,4,3,9. सर्वेषां संकल्पानां मन एकायनम् 8,4,11. 7,2,12. °विकृत Çâṅk. Ça. 14,11,2. संकल्पो वाव मनसो भूयान् Khând. Up. 7,4,1. 8,2,1. fgg. Ait. Up. 5,3. Maitrâyan. 2,5. °मूलः कामो वै यज्ञाः °संभवाः । व्रता नियमधर्माश्च (oder व्रतानि यम° zu schreiben) सर्वे °जाः स्मृताः ॥ M. 2,3. यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः Bhag. 4,19. °प्रभवाः कामाः 6,24. MBh. 3,2333. एष मे हृदये संकल्पः 16730. 3,7274. 3,16892. 5,1012. विदित° adj. Harîv. 4274. °कृपसंयुक्तैर्यात्तीमिव मनोरथैः R. 5,21,6. घर्षाः °कल्पाः Spr. (II) 993. 2237. 3975. Megh. 100. वृथैव °शतैरज्ञमनङ्ग नीतोऽसि मयातिवृद्धिम् ad Çâk. 54. Kathâs. 27,121. Gîr. 6,11. Râǵa-Tar. 5,25. Bhâg. P. 2,6,28. 10,30. सर्वसंकल्पविद् 3,23,47. 26,27. 5,14,2. 7,3,8. 7,42. 9,1,18. 20. ममैतावान्संकल्पो यन्नया सह सौकृत्यमवश्यं करणीयम् Hit. 24,11. fg. सत्य Kaṭh. Up. 3,2. सत्य° adj. 2,6. Çat. Br. 10,6,3,2. Bhâg. P. 3,16,22. 11,1,5. सत्यसंकल्पत्व Çâṅk. zu Bâdar. Âṇ. Up. S. 139. सत्संकल्प adj. Bhâg. P. 4, 1,30. 9,18. दुष्ट° Kathâs. 27,122. दैव° adj. Mârk. P. 31,39. क्रूर° adj. Râǵa-Tar. 3,429. °प्रभव Bhâg. P. 3,12,16. ज्ञात° adj. MBh. 3,2142. यतिप्रणीत° *dessen Verlangen zu weit geht* Kâraṇḍ 2,6. संकल्पाद्विरमेत् Bhâg. P. 6,16,59. °नियम MBh. 13,454. तत्संकल्पपरिभ्रष्ट Kathâs. 18,277. °विप्लव Râǵa-Tar. 3,89. सर्वसंकल्पसंन्यासिन् Bhag. 6,4. संसंन्यस्त° adj. 2. शान्त° adj. Kaṭhop. 1,10. विगत° MBh. 3,2122. गत° 2127. संकल्पात्तस्य सिध्यति Bhâg. P. 8,24,60. नानासंकल्पसिद्धि 6,17, 3. सिद्ध° adj. Daçak. 83,4. Verz. d. Oxf. H. 75,b,5 (सिद्ध st. सिद्धि zu lesen). संसिद्ध° adj. MBh. 13,4033. °सेवति Kathâs. 11,41. यसकृद्यः° adj. MBh. 1,8274. 3,16294. Bhâg. P. 7,10,60. विस्तृत° adj. 4,27,23. फलित° adj. Kathâs. 23,68. मोघ° R. 5,13,21. अमोघ° adj. Bhâg. P. 2, 9,37. 3,10,23. सर्वासामेव संकल्पः पतित्वेनाभवत्तदा so v. a. *sie wollten ihn alle zum Manne haben* Harîv. 6046. नानार्थेषु Kâm. Nîtis. 1,30. तापस्ये धृतसंकल्पा *fest entschlossen zu* MBh. 5,7237. mit der Ergänzung comp.: अभिषेक° R. Gorr. 1,4,31. 2,8,32. यज्ञ° 5,34,13. Spr. (II) 3042. प्रनष्टदुःखसंकल्पा so v. a. *traurige Gedanken* R. 2,25,40. तत्संगमाति° MBh. 4,396. संकल्पं कृ R. 2,72,27. Bhâg. P. 4,1,30. Kathâs. 43,184. शोकशान्तये 46,224. सार्वभौमवरप्राप्तौ 61,204. अभोगे Râǵa-Tar. 4,433. संकल्पस्त्वपि भूतानां कृतः किल न रिष्यति Bhâg. P. 4,27,24. अनशनसंकल्पं कृत्वा MBh. 3,16242. कृतानशनसंकल्पा 1,378. व्यायामकृत° R. 2,63,19. इत्याशाकृत° so v. a. *diesen Hoffnungen sich hingebend* R. Gorr. 2,74,28. °कल्पना Verz. d. Oxf. H. 91,a,8. 9. गृहीत° adj. Paṇḍ. 89,6. संकल्पमात्रोदितसिद्धि *durch den blossen Willen* Raghu. 14,17. °सिद्ध MBh. 5,7190. °श्राद्धप्रयोग *in einer best. Absicht* Verz. d.

Oxf. H. 294,*b*,25. °निर्वृति so v. a. *nach Herzenswunsch* Milatin. 125, 1. स° n. (!) R. Gorr. 1,67,15. यसंकल्पाज्ञपेत्कामम् Bhāg. P. 7,15,22. यथासंकल्पम् MBh. 1,3864. so v. a. मनस् *Herz* in दृष्ट° adj. 3,3305. Bisweilen wird das Wort ungenau durch *richtige Unterscheidung* erklärt, z. B. Nilak. 46 und Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 286. zu Kâṭh. Up. S. 484. in der Definition संकल्पः समीचीनत्वेन भावनम् Nilak. 18 bedeutet das Wort *Voraussetzung*. सर्व° R. 3,81,16 bedeutet wohl *Jedermanns Uebereinkunft*. — *b*) *der Wille* u. s. w. personificirt Harîv. 12476. 14074. VP. 49, N. 2. Prab. 89,12. als Sohn der Saṃkalpâ Harîv. 149. 12841. Brahmaṇ's Mâhâ. P. 50,7. — 2) f. आ N. pr. einer Tochter Daksha's, Gattin Dharma's und Mutter des Saṃkalpa, Harîv. 146. 149. 12841. VP. 119. Bhāg. P. 6,6,4. Gattin Manu's Harîv. 12450. — Vgl. पाप° (auch R. Gorr. 2,9,2. 68,21. Spr. (II) 751), मनः° (*Entscheidung —, Wunsch des Herzens* auch R. 4,44,28. 5,53,20. 69,17. 6,86, 1. Sucr. 1,312,17), शिव°.

संकल्पक (vom caus. von कल्प् mit सम्) adj. *entscheidend, wollend:* मनस् Âpast. Up. in Ind. St. 9,29. Śâṅkhâṣ. 27. *richtig unterscheidend* Nilak. 46.

संकल्पचन्द्रिका f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 166.

संकल्पज 1) adj. *aus dem Willen hervorgegangen:* सम्यक्संकल्पजः काम: Jâân. 1,7. *aus einer best. Absicht hervorgegangen* M. 2,3. *durch den blossen Willen entstanden* Mallin. zu Kumâras. 1,18. — 2) m. *a*) *Wunsch, Verlangen* Bhāg. P. 4,9,27. — *b*) *Geschlechtsliebe, der Liebesgott* MBh. 1,7007.

संकल्पजन्मन् adj. *aus dem Verlangen hervorgegangen:* काम Kathâs. 19,240. m. *Geschlechtsliebe, der Liebesgott* Halâs. 1,22.

संकल्पदुर्गभञ्जन n. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 102.

संकल्पन (von कल्प् mit सम्) n. *das Wünschen, Verlangen; Wunsch* Çvetâçv. Up. 5,11. संकल्पनं (°नाँ Burnouf) विसृजा पिपीषृहि Bhāg. P. 4,19,38.

संकल्पनामय (von संकल्पना) adj. (f. ई) *im Willen bestehend, darauf beruhend:* सिद्धि Bhāg. P. 4,18,19.

संकल्पनीय (von कल्प् mit सम्) adj. *was man wollen darf* Kâṭh. Up. 1,2,6. स° ebend.

संकल्पभव adj. *aus dem Verlangen hervorgegangen:* घनश्लेष त्वत्संकल्पभवेन MBh. 13,3214. m. *Geschlechtsliebe, der Liebesgott* Taitt. 1,1,38.

संकल्पयोनि 1) adj. *dem blossen Willen seinen Ursprung verdankend:* देवता: Prab. 115,9. — 2) m. *Geschlechtsliebe, der Liebesgott* (*aus dem Verlangen hervorgegangen*) H. 229, Schol. Gaṭṭon. in Verz. d. Oxf. H. 109,*b*,32. Kumâras. 3,24. Milav. 28,7.

संकल्पराम m. N. pr. eines Lehrers Hall 129.

संकल्पवत् (von संकल्प) adj. *einen Willen habend, das Subject des Wollens seiend* Vedântas. (Allah.) No. 85.

संकल्पसूर्योदय m. *der Sonnenaufgang des Willens*, Titel eines philosophischen Dramas Macs. Coll. 1,110.

संकल्पितव्य (von कल्प् mit सम्) adj. *was gewollt wird, wozu man sich entscheidet* Tattvas. 27. fg.

संकष्टकव्रत n. Bez. einer best. *Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284,*b*, N. 1.

संकसुक (von 1. कस् mit सम्) 1) adj. Uṇâdis. 2,29. v. l. im gaṇa गौरादि zu P. 3,4,74 (vgl. Uéóval. zu Uṇâdis. 2,29). *a*) *zerspaltend, zerbröckelnd*, Bein. des den Leichnam *zerstörenden* Agni AV. 5,31,9. 8, 1,12. 12,2,11. 14. 19. 40. Kauç. 86. — *b*) (proparox.) *abbröckelnd* Çat. Br. 11,4,4,8. 11. — *c*) = अस्थिर Ak. 3,1,43. H. 473. = संशयापन्न: und दुर्जन Uéóval. = दुर्बल, मन्द, संकीर्ण und अपवादशील ÇKDa. nach dem Uṇâdis. u. s. w. = संप्रेषक Nilak. etwa *unschlüssig* MBh. 12,7044. 13,4968. वकु° 12,3332. स° M. 6,13. wird häufig संकुसुक (auf कुस् von Nilak. zurückgeführt) und शंकुसुक geschrieben. — 2) m. angeblich N. pr. des Verfassers vom Leichenliede ṚV. 10,18 mit dem patron. Jâmâjana ṚV. Anukr.

संकङ्का f. *Treffen* Naigh. 2,17. Nir. 9,14. ṚV. 6,75,5. स नः सङ्कासु पारय TBr. 2,4,3,5.

संकार (von 3. कॄ mit सम्) 1) m. *a*) *Kehricht* H. an. 3,617. Med. r. 233. °धान Sadon. P. 4, 18, *b*. 19, *a*. — *b*) *Gehülfe des Feuers* H. an. Med. — 2) f. ई *ein vor Kurzem entjungfertes Weib* H. an. Med. — Vgl. संकर.

संकालन (von 3. कल् mit सम्) n. 1) *das Zusammentreiben oder Hinaustreiben* (des Viehes): धेन्वादि° Verz. d. Oxf. H. 283,*a*,7 (संकलन gedr.). — 2) *das Hinaustragen eines Leichnams auf die Leichenstätte und das Verbrennen desselben* R. 2,66,13 (संकलन Schl. संकालन ed. Bomb.). 77 (84 Gorr.) in der Unterschr. R. Gorr. 2,85,1.

संकाश (von काश् mit सम्) m. 1) *Schein:* मुखस्य AV. 7,114,1. नक्षत्राणां मा संकाश: प्रतीकाशश्चावताम् Kauç. 82. *das Erscheinen:* गृह° 24. 77. Am Ende eines adj. comp: (f. आ) — *erscheinend, — aussehend, erscheinend wie —, — gleichend* Ak. 2,10,38. H. 1462. an. 3,727. पाण्डु° *bleich aussehend* MBh. 1,4289. दिव्य° R. 1,48,14 (घातम). 7,57,1 (कथा). बहुत° MBh. 1,6930. भीम° 4,1112. R. 1,28,27. 32,13. 74,16. पुण्य° 70,3. घोर° 26,12. 42,25 (वाक्य). 7,105,8 (वाक्य). प्रघस्त° (भूमि) MBh. 5,338. पक्ष° Spr. (II) 7108. कार्य° R. 2,109,2 (118,2 Gorr.). häufiger in comp. mit einem subst.: अग्नि° Çat. Br. 2,2,4,15. हिरण्य° 6,1,1,5. MBh. 1,2917. 5970. 3,2699. 11920. 12224. 4,346. 5,5959. 7274. Harîv. 12843. R. 1,12,24. 16,19. 28,25. 45,42. 48,11. 2,30,24. 39,6. 40,13. 56,24. 61,7. 72,23. 94,3. 5. R. Gorr. 2,87,5. 3,18,1. 35,37. 39. 4,9,22. 40,40. 50,15. 5,6,3. Sucr. 1,280,3. 303,6. Spr. (II) 489. घनयो नयसंकाश: 4477. Variâh. Bṛh. S. 43,45. 47. 78,19. 80,7. 81,7. Mâhâ. P. 59,6. 60,4. Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,33. Prab. 86,4. घनर्क्षर्क्षसंकाशै: Bhāg. P. 7,7,45. Pâṇḍar. 1,4,54. 7,39. Vet. in LA. (III) 4,12. Halâs. 4,53. — 2) = अस्तिक H. an. und Viçva im ÇKDa. fehlerhaft für सकाश. — Vgl. अग्नि°, मधु°, सोकाश्य.

सोकाश्य fehlerhaft für सांकाश्य.

संकिल m. *Feuerbrand* Taitt. 1,1,70.

संकीर्ण partic. s. u. 3. कॄ mit सम्. Nachzutragen wäre: 1) adj. *gemischt, nicht von einerlei Art* Bhar. Nâṭyaç. 18,35. 93. Daçar. 3,38. fg. 50. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,38. 181,*a*,5 v. u. *b*,4 v. u. 183,*a*,21. 192,*a*, 37. *b*, No. 437. 193,*a*,29. Prâtiṣâkh. 22,*b*,6. °नाग *ein Elephant mit bestimmten und zwar gemischten Eigenschaften* Variâh. Bṛh. S. 67,3. fgg. °युद्ध *ein Kampf, bei dem verschiedene Waffen in Anwendung kommen,*

MBu. 1,5239. *durch Mischung verschiedener Kasten entstanden, Mischling* Bhag. Nâṭjaç. 34, 10. fgg. °जाति Verz. d. Oxf. H. 276, *a*, 2 v. u. °याप 266, *a*, 2. °कारण s. 269, *b*, 29. संकीर्णा (sc. प्रकृतिका) *eine Art von Räthseln* Kivâlp. 3, 105. वाक्यसंकीर्ण n. *Verwirrung der Sätze* Prâtiṣâkh. 63, *b*, 3. — 2) m. N. pr. eines alten Weisen Verz. d. Oxf. H. 41, *b*, 42. संकील v. l.

संकीर्णता (von संकीर्ण) f. *Verwirrung* —, *Verstellung der Worte in einem Satze* Sin. D. 575. 225, 21. Beispiel: मुञ्च चन्द्रं कुरङ्गाक्षि पश्य मानं नभोऽङ्गणे, wo मुञ्च mit मानम्, पश्य mit चन्द्रं नभोऽङ्गणे zu verbinden ist.

संकीर्णीकरण (von संकीर्ण + 2. कर्) adj. *zu einem Mischling machend, dieselben Folgen habend wie die Vermischung der Kasten* ÇKDa. unter संकरीकरण.

संकीर्तन (von कीर्तय् mit सम्) n. *das Erwähnen, Hersagen, Preisen:* °ध्वनि Pârâṣ. 1, 10, 72. प्रवसनालापस्य Spr. (II) 3780. रामस्य R. 7, 66, 11. नाम° MBu. 3, 8222. Verz. d. Oxf. H. 76, *a*, 4. Bhâg. P. 3, 29, 18. Sarvadarçanas. 55, 21. fg. गुण° MBu. 1, 1521. R. Gorr. 2, 84, 11. अनेकाचार्य° P. 8, 4, 67, Schol. वंश° Mârk. P. 52, 20. अगस्त्य° R. 3, 15 und 4, 59 in den Unterschrr. Bhâg. P. 5, 8, 28. Pârâṣ. 1, 10, 68. Vop. S. 176. Comm. zu Kâṭj. Ça. 561, 3. am Ende eines adj. comp.: पुण्य° Vârâh. Bṛh. S. 48, 69.

संकील m. N. pr. eines alten Weisen Verz. d. Oxf. H. 41, *b*, 42. संकीर्ण v. l.

संकुचन (von कुच् mit सम्) nom. ag. *Zusammenschrumpfer*, Bez. eines Krankheitsdämons Hariv. 9539. संकुटन die neuere Ausg.

संकुचित 1) adj. s. u. कुच् mit सम्. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit gaṇa तक्षशिलादि zu P. 4, 3, 93; vgl. सांकुचित.

संकुटन (von 1. कुट् mit सम्) nom. ag. *der sich zusammenkrümmt*, Bez. eines Krankheitsdämons Hariv. 9539 nach der Lesart der neueren Ausg., संकुचन die ältere.

संकुल (von 3. कर् mit सम्) 1) adj. (f. घा) = संकीर्ण, घाकीर्ण AK. 3, 2, 35. H. 1472. = व्याप्त an. 3, 690. Med. i. 143. Hall. 4, 17. *a) erfüllt* —, *voll von, besetzt* —, *reichlich versehen mit* (die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend): पद्मिनीभिः MBu. 3, 9928. R. 1, 51, 25 (52, 24 Gorr.). 5, 1, 6. 53, 14. Suçr. 1, 113, 20. Bhâg. P. 3, 15, 20. 4, 25, 14. 7, 8, 36. Pârâṣ. 1, 6, 15. तारतरोर्मि° MBu. 1, 1234. महासार्थो रत्नयथ्यसंकुलः 3, 2510. 12425. 4, 1035. कुशिकवंशः ब्रह्मर्षिशतसंकुलः 13, 185. 14, 1405. 15, 442. Hariv. 3062. 8264. R. 1, 5, 9. 17. 6, 26. 50, 4. 2, 70, 26. 77, 13. 115, 11. R. Gorr. 1, 79, 43. 2, 4, 15. 26. 52, 22. 109, 47. 3, 34, 9. 78, 25. 4, 44, 65. 5, 11, 10. 83, 16. 6, 4, 52. 26, 24. fg. Kâm. Nîtiç. 14, 23. Râgat. 6, 22. Spr. (II) 1070. 2928. Vârâh. Bṛh. S. 53, 20. 68, 28. Gîr. 1, 28. Kathâs. 22, 249. नटचारण° (महोत्सव) Râjâ-Tar. 1, 232. 4, 11. VP. im Comm. zu Pâṇ. 96, Çl. 30. Mârk. P. 21, 12. 64, 3. Bhâg. P. 1, 9, 41. 4, 6, 27. 10, 5. 7, 8, 33. 8, 2, 7. 9, 18, 7. 18, 15, 21. Pârâṣ. 1, 7, 14. Verz. d. Oxf. H. 17, *a*, No. 63, Çl. 4. Pârâṣ. 43, 4. LA. 4, 15. 74, 3. यज्ञो ऽयं सर्वगोपसुसंकुलः Hariv. 3868. खड्गपट्टिश° *versehen mit* (बल) R. 5, 78, 3. विमानशतसंकुलाः । देवर्षिपितृसिद्धेशाः Bhâg. P. 7, 10, 67. रुदितोत्कुष्ट° (सद्मन्) R. Gorr. 2, 67, 21. निर्लोष्ट्राश्च बकुलाः पतत्रिजनसंकुलाः *untermischt mit* MBu. 3, 2544. मायां वातदुर्दिनसंकुलाम् *begleitet von* R. 3, 73, 13. बलव्यसन° (= °युक्त 2872) *behaftet mit* Spr. (II) 4451. घनलोभसंकुलधियः 5579. — *b) dicht:* धूम R. 2, 100, 11 (108, 11 Gorr.). नद्यः संकुलकलुषाः *so v. a. überaus trübe* Vârâh. Bṛh. S. 46, 48. वायु *so v. a. ein überaus heftiger Wind* R. 1, 65, 13. — *c) verworren, in Verwirrung gekommen:* पदातीनां च समरे तव तेषां च संकुले MBu. 6, 1780. सैन्य 3, 15758. लोक 12790. भूमि 5, 106. von einer Rede AK. 1, 1, 5, 20. H. 265. H. an. Med. (अविस्पष्ट zu lesen). — *d) auf Hindernisse stossend, mit Hindernissen zu kämpfen habend, behindert:* नयद्विषन° (सैन्य) Spr. (II) 2820. अतिसंकुला सिद्धिः Vârâh. Bṛh. S. 38, 2. — 2) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 13. — 3) n. *a) Gedränge:* मरुतः पोरुषस्य Mâlatîm. 19, 5. *Schlachtgetümmel* (= युद्ध Âgâsapâla im ÇKDa.; vgl. रण°): भयंकर MBu. 3, 10927. परम 6, 1782. राजधानीं यमस्याग्र्य कृतः प्राप्स्यति संकुले 7, 2072. घोररूप 9, 1169. Hariv. 5071. संकीर्णे च युध्येरन्संकरः संकुलावरुः Kâm. Nîtiç. 19, 26. रौद्ररणसंकुलं वदेत् Vârâh. Bṛh. S. 46, 22. *Noth, Bedrängniss:* संकुलं प्रतिभाति मे Mârk. P. 16, 28. असंकुलैर्भृतगणैः Bhâg. P. 1, 14, 17 (व्यामिश्रैः प्राणिभिः सङ्कीर्तैः Comm.). — Vgl. नीलालिकुल°, रण°, व्याकुल, पर्याकुल, व्याकुल, समाकुल.

संकुलित (von संकुल) adj. 1) *reichlich besetzt mit:* द्विजसंकुलिताङ्घ्रिप Bhâg. P. 3, 2, 27. — 2) *in Verwirrung gekommen:* इन्द्रिय R. ed. Scr. 3, 49, 2 (nach Bopp).

संकुलीकर् (संकुल + 1. कर्) 1) *zusammendrängen, versammeln:* सप्तर्षीनैगमं सर्वं नगरं संकुलीकृतम् । धातुरं वृद्धबालं च वर्जयित्वा पुरे वनम् ॥ *so v. a. hatte sich versammelt, war auf dem Platze erschienen* R. Gorr. 2, 90, 29. — 2) *in Unordnung —, in Verwirrung bringen* Kâm. Nîtiç. 18, 55.

संकुसुक s. संकसुक.

संकुसुमित (सम् + कु°) adj. *aufgeblüht, entfaltet, zur Erscheinung gekommen:* °नक्षत्रराजसंकुसुमिताभिज्ञ am Ende eines Buddha-Namens Lot. de la b. l. 242. 253. 268.

संकूटन n. nom. act. von कूट् mit सम् Mânâm. ed. Bomb. 3, 91, *a* (vgl. die Corrigg.).

संकृति (von 1. कर् mit सम्) P. 8, 3, 5, Schol. 1) adj. *zurecht machend, herstellend:* यूयं स्थ संकृतीः (für निष्कृतीः des ṚV.) TS. 4, 2, 6, 2. स प्रथमः संकृतिर्विश्वकर्मा TBr. 1, 1, 4, 3. TS. 5, 4, 12, 2. — 2) m. N. pr. eines Mannes (pl. *sein Geschlecht*) gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. Âçv. Ça. 12, 12, 3. Çâṅkh. Ça. 1, 7, 3. Liṭ. 5, 4, 13. Ind. St. 10, 89. fgg. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56, 3. 5. 60, 37. fg. MBu. 1, 227. ein Sohn Gâjatsena's (Gâjasena's) Hariv. 1516. fg. VP. 412. Bhâg. P. 9, 17, 18. Nara's 21, 1. VP. 450. Vgl. सांकृत्य. — 3) f. *ein best. Metrum:* द्वादशातिरा Ind. St. 8, 107. 285. *ein Metrum von 4 × 24 Silben* 132. 137. 281. 403. ṚV. Pârç. 16, 55. 59. Colebr. Misc. Ess. 2, 163 (XIX). Vgl. कृति, अभि°, आ°, उत्°, प्र°, वि°. — 4) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 241, *b*. TS. 5, 4, 12, 3. Pârâṣ. Br. 14, 9, 27. 15, 3, 28. fg. — Vgl. संस्कृति.

संकृप्ति (von कल्प् mit सम्) f. *das Wollen* Kâlid. Up. 7, 4, 2.

संकेत (सम् + केत) m. Taik. 3, 3, 2. 1) *Uebereinkommen, Verabredung;* insbes. *eine verabredete Zusammenkunft mit der geliebten Person, ein Stelldichein* Taik. 3, 2, 25. Tarkas. 49. Sin. D. 10, 6. तव संकेतेन *nach einer Verabredung mit dir* Pârâṣ. 26, 2 (22, 20 ed. orn.). संकेतमिति ब्रवीति Spr. (II) 1542. °मिलित *verabredeter Weise* Kathâs. 12,

22. °पूर्वकम् Pañkar. 2,1,17. संकेतं ग्रह् *ein Uebereinkommen treffen, verabreden* Sin. D. 12. गृहीत° 14,17. °ग्रह Kuṭṭ. 22,13. °ग्रहण Sarvadarçanas. 142,2. — °केतवः *zu einem Stelldichein* Vaṭṭ. Bṛh. S. 78,11. MBh. 4,736. संकेते पिङ्गला वेश्या कामेनामोहिनाकृता 12,6514. कामं संकेत उपनेष्यती Bhâg. P. 11,8,22. संकेतोपजीविनी 25. सखी यत्र पुंसः संकेतमादिशत् Kathâs. 30,81. या याति संकेतम् AK. 2,6,4,10. °काल Spr. (II) 6663. संकेतं कर् *Jmd* (gen. oder instr. mit सह्) *ein Rendez-vous geben* Kathâs. 4,46. Sin. D. 118. कामेव कृतसंकेता R. 4,41,24. तस्यास्मि कृतसंकेता 7,26,24. सखीमुखेन कृत्वा च संकेतं सह तेन सा Kathâs. 13,72. स्वयंकृतसंकेता 77,59. कृतसंकेत उद्याने *zu einem Rendez-vous verabredet* 8,12. चौरसंकेतकृत *mit Dieben verabredet* (धूर्तत्रोविका) 30,129. कल्पित° adj. *verabredet* Comm. zu Gaim. 1,1,5. संकेतं दा *eine Verabredung treffen:* प्रागदत्त° *mit dem man Etwas vorher verabredet hat* Z. d. d. m. G. 14,572,9. प्रियतमदत्तसंकेता *die dem Geliebten ein Rendez-vous gegeben hat* Daçak. 72,8. सं° adj. *mit dem man Etwas verabredet hat* Kathâs. 77,62. स्थित° adj. *der Verabredung getreu* 46, 37. — 2) *ein verabredetes Zeichen, Signal* Hall. 5,36. प्राच्यूर्ध्वन्यस्तसंकेतकाण्डयष्टि adj. Kathâs. 39,113. कृतकेरीपटदण्डजादि° adj. Kull. zu M. 7,190. यजमानं संकेतादिना पृष्ट्वा Comm. zu Kâty. Çr. 379,18. कृतसंकेतम् adv. Gir. 5,9. — 3) *Uebereinstimmung:* शिक्षादिशास्त्रप्रसिद्ध° Comm. zu TS. Prât. 1,21. *Einwilligung:* वृत्त° adj. Râga-Tar. 3,374. — 4) pl. N. pr. eines Volkes (vgl. साकेत) Mârk. P. 58,8. — Vgl. उत्सव°.

संकेतक n. = संकेत 1) Hall. 5,33. संकेतके चिरयति (loc. des partic.) Mṛicch. 43,17. संकेतकागत Kathâs. 77,64. तस्यापि तत्रैव दिने तद्दैव तया निशि। संकेतकं द्वितीयस्मिन्प्रकरे पर्यकल्प्यत 4,37.46. तस्य संकेतकं व्यधात् 30,178. 65,235. तस्य संकेतकं दत्त्वा Pañkat. 129,6. कयाचित्स्वैरिण्या दत्तसंकेतकः 1.

संकेतकेतन n. *der Ort, an dem eine verabredete Zusammenkunft mit der geliebten Person stattfindet:* °केतनं संपदामिव Kathâs. 26,44; vgl. unter संकेतोद्यान.

संकेतकौमुदी f. Titel einer Schrift Verz. d. Cambr. H. 69.

संकेतन LA. (III) 20,14 wohl fehlerhaft für संकेतक.

संकेतनिकेत m. = संकेतकेतन Naish. 22,12.

संकेतनिकेतन n. dass. Kathâs. 96,30. Ratnamañg. im ÇKDa.

संकेतपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 104,a,28. 108,a, No. 168. 110,b,11.

संकेतभूमि f. = संकेतकेतन Bharata beim Schol. zu Gît. 7,2.

संकेतमञ्जरी f. Titel eines Commentars Verz. d. B. H. No. 934.

संकेतय् (von संकेत), °यति Daitup. 35,39 (यामलवृणे). *eine Verabredung treffen mit* (gen.): शिष्याणां संकेतयति Z. d. d. m. G. 14,572,12. संकेतित *durch Uebereinkunft festgesetzt:* षशीतिरक्षिकापरिमितताम्रे पणशब्दः संकेतितः Prâyaçcitt. 22,b,8. अर्घ Sin. D. 10,1.10. 117,14. असंकेतितपरामृष्ट *mit der man keine Verabredung getroffen hat* Daçak. 91,14. असंकेतितत्व n. *das nicht-Festgesetztsein durch Uebereinkunft* Sin. D. 15,2.

संकेतकृतप्रवेश m. Bez. eines Samâdhi bei den Buddhisten Vjutp. 19.

संकेतवाक्य n. *Losung* Spr. (II) 1617.

संकेतशिक्षा f. Titel einer Schrift Hall 17. — Vgl. कूटसंकेतचन्द्रिका.

संकेतस्तव m Bez. eines best. *Lobgesanges* bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 103,b,28.

संकेतस्थान n. 1) = संकेतकेतन Kathâs. 96,29. Vet. in LA. (III) 20, 8. Sin. D. 20,14. Verz. d. Oxf. H. 123,a,39. — 2) *ein Gegenstand, in Betreff dessen man sich durch Zeichen verständigt*, Vet. in LA. (III) 5,20. fg.

संकेतीकर् (संकेत + 1. कर्) *zu einem Stelldichein verabreden* (einen Ort): °कृत Gît. 7,11.

संकेतोद्यान (संकेत + उ°) n. *ein Lustgarten, in dem man sich ein Rendez-vous gegeben hat:* संकेतोद्यानमिव यत्सर्वासां भोगसंपदाम् Kathâs. 81,83; vgl. unter संकेतकेतन.

संकोच (von कुच् mit सम्) 1) m. *a) Zusammenschrumpfung, das Sichzusammenziehen, Contraction* (auch in Folge einer Krankheit) Mârk. P. 46,12. त्वक्° Suçr. 1,36,1. 269,20. पार्श्व° 281,8. 2,445,21. Çârîr. Saṅh. 1,7,70. कौर्म संकोचमास्थाय Spr. (II) 1957. प्राप संकोचं कस्तिचर्म तत् Kathâs. 12,111. सोमा संकोचमापाति वह्नौ चर्म पशोरिव Spr. (II) 7054. पद्मा: संकोचं याति 2322. Kathâs. 90,65. 103,213. Comm. zu Naish. 22,43. अक्षि° *das Sichschliessen der Augen* Sin. D. 228. अक्षिपक्ष्मणोः Kull. zu M. 1,64. वस्त्रसंकोचरेखा so v. a. *Kleiderfalte* Trik. 3, 3,293. H. an. 2,317. Med. m. 3. जले घृतबिन्दुरिव कीर्तिर्लोके संकोचमेति Kull. zu M. 7,34. घटप्रासादादिप्रदीपवत्संकोचविकासिता Çaṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 112. Sarvadarçanas. 45,16. त्वया पृथिवी लब्धा न संकोचेन चाप्युत *die Contraction des Körpers beim Betteln* MBh. 12, 401. न संकोचं क आप्नुयात् beim Schauder Spr. (II) 6810. vor Scham Mallin. zu Kumâras. 7,34. करिष्यसि च संकोचम् *werden sich ducken* so v. a. *werden bescheiden werden* Hariv. 11214. °कारिन् so v. a. *bescheiden, schüchtern* Râga-Tar. 4,667. — *b) Schmälerung, Abnahme, Verminderung, Einbusse, Beschränkung:* आयुष: Durga zu Nir. 1,20 bei Muir, ST. 2,173. ज्ञानसंकोचविकासौ Sarvadarçanas. 53,4. देशकालाकार° 94,7. कालसंकोचं करोति *er beschränkt die Zeit* Çaṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 120. आचार° Verz. d. Oxf. H. 266,a,26. 28. वृत्ति° Kull. zu M. 3,100. 4,8. पूजा° zu 3,120. 5,84. — *c)* = बन्ध Med. s. 19. — *d) ein best. Fisch* ebend. — *e)* N. pr. eines Asura MBh. 12,6264. — 2) n. *Safran* (vgl. °पिष्पुल und रक्त°) AK. 2,6,2,26. H. 645. Schol. Med.

संकोचक (vom caus. von कुच् mit सम्) adj. *zusammenschrumpfen lassend* Comm. zu Kâṭjây. 2,159. — Vgl. रक्त°.

संकोचन (von कुच् mit सम्) 1) m. N. pr. eines Berges R. 6,2,27. — 2) f. ई *Mimosa pudica* Ratnam. im ÇKDa. — 3) n. = संकोच 1) *a)* Suçr. 2,38,2. संकोचने यत्नमकरोत् (उष्ट्रः) MBh. 12,4186. नेत्र° *das Sichschliessen der Augen* Sin. D. 236.

संकोचपत्रक adj. *im Zusammenschrumpfen der Blätter sich äussernd:* वृक्षेषु ध्वाङ्क्षः Hariv. 10537. warum nicht संकोचि°?

संकोचपिष्पुल n. = संकोच *Safran* H. 645.

संकोचित (vom caus. von कुच् mit सम्) n. *das Zusammenschrumpfenlassen* (der Glieder), Bez. einer Art zu kämpfen Hariv. 15978.

संकोचिन् adj. 1) *zusammenschrumpfend, sich schliessend* (von einer Blüthe) Râga-Tar. 7,1432. — 2) *zusammenziehend, einziehend;* s. गात्र°.

संक्रन्द (von क्रन्द् mit सम्) m. 1) *das Rauschen:* सोम° *des gährenden*

Soma MBu. 7,979. — 2) *Gejammer, Geklage:* नृपतिरोषितां क्रोञ्चीनामिव R. Gorr. 2,38,49. — 3) *Kampf* (eig. *Kampfgeschrei;* vgl. संक्रन्दन 3) MBu. 6,4332. कौरव° 7,7747.

संक्रन्दन (wie eben) 1) adj. *schreiend, brüllend* gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. RV. 10,103,1. 2. AV. 5,20,9. गुधि MBu. 4,166. 5,2252. 7,281 (भूय; wie an den beiden vorangehenden Stellen zu lesen). — 2) m. *a*) ein N. Indra's AK. 1,1,4,29. H. 171. Halâj. 1,52. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Manu Bhautja Harîv. 495. Mârk. P. 100,32. eines Fürsten, Vaters von Vapushmant, 134,11. 135,9. — 3) n. *Kampf* (eig. *Kampfgeschrei;* vgl. संक्रन्द 3): कुरु° MBu. 11,680.

संक्रम (von क्रम् mit सम्) m. n. Taitt. 3,5,12. 1) m. = क्रमण Med. m. 35. *Gang, Lauf:* शुभ° adj. (चक्र) Verz. d. Oxf. H. 11,*b*,17 v. u. (statt dessen शुभविक्रम 49,35). — 2) m. *Zusammentritt* VS. 15,9. — 3) m. *das Uebergehen auf* (loc.) Kuṭṭan. 15,14. 16. — 4) m. *der Eintritt der Sonne in ein neues Sternbild* Jjôt. 1,217 (सूर्य°). Vaitân. Bṛh. S. 28,20. Ganit. Sr. 1. Golâdhj. Madhjag. 16. Bhâg. P. 4,12,48. — 5) m. *das Zusammentreten zweier Wörter im* Krama *durch Ausfall dazwischenliegender* VS. Prât. 3,143. 4,77. 165. 194. Ind. St. 1,56,14. — 6) m. *Brücke, Steg über ein Wasser:* °घनपट्टीनां भेदकः M. 9,285. MBu. 3,650. 13,1635. R. Gorr. 2,87,12. 4,47,13. 5,72,13. fgg. 6,38,37. तपो वै संक्रमो मतः MBu. 3,13987. यसाधुभ्यो ऽर्थमादाय साधुभ्यो यः प्रयच्छति । तदात्मानं संक्रमं (so v. a. *Mittelsperson*) कृत्वा 12,4884. सो ऽतिथिः स्वर्गसंक्रमः *Brücke zum Himmel* Spr. (II) 4362 = Verz. d. Oxf. H. 268,*a*,17. am Ende eines adj. comp. f. या MBu. 7,2336. 12,3644. *Steg —, Treppe zu einem Wasser:* नदीमार्गेषु च तथा संक्रमानवनादयेत् 2634. Pâlâṇḍ. 16,*a*,2. m. n. = संक्राम = दुर्गसंचर H. 1317 (masc.). Med. — 7) n. इन्द्रस्य oder वसिष्ठस्य संक्रमम् N. eines Sâman Ind. St. 3,209,*a*. — 8) *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,638. — 9) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBu. 9,2339. eines Fürsten der Vidjâdhara und Sohnes des Vasu Kathâs. 48,78. — Vgl. स्वर्°.

संक्रमण (wie eben) n. 1) *das Eintreten, Eintritt:* ग्रहासंक्रमणे Harîv. 11080. — 2) *das Uebergehen in:* स्वाम° Âçv. Çr. 2,17,4. भूतग्राम *das Hinübergehen zu Bh.* so v. a. *das Uebergeführtwerden in sein Geschlecht* Harîv. 1729. दारुमये गरुडे संक्रमणं कुरु *fahre hinein in* Pañkat. 48,16. तच्छरीरे संक्रमणमकरोत् 19. Vet. in LA. III) 21,12. मुख्यार्थस्यार्थान्तरे Sin. D. 101,13. — 3) *das Eintreten der Sonne in ein neues Sternbild* Journ. of the Am. Or. S. 6,411. सूर्य° Weber, Gjot. 36. रवि° Gaṇit. in der Kâlasaṃgr. und Devî-P. im Tithividh. nach ÇKDr. °काल Schol. zu Kâtj. Çr. 6,1,2. — 4) *das Hinübergehen in eine andere Welt, Heimgang* MBu. 16,124. 180. R. 2,66 (68 Gorr.) in der Unterschr. — 5) über die Bed. des Wortes bei den Mathematikern s. Colebr. Alg. 26. 324. — 6) *Mittel zum Hinunterkommen:* सेतुमेव तं संक्रमणं कुरुते Çat. Br. 13,2,10,1. — Vgl. गर्भ°, दर्वी°.

संक्रमदादशाह् m. *eine best. Form des* Dvâdaçâha Kâtj. Çr. 24,7,12.

संक्रमीकृ (संक्रम + 1. कृ) *zur Brücke —, zum Vermittler machen:* °कृत्य mit acc. so v. a. *vermittelst* Daçak. 87,7.

संक्रान्ति (von क्रम् mit सम्) f. 1) *das Hinübergehen — , Fahren in* (loc. oder im comp. vorangehend): नवनारीषु संक्रान्तिस्तासाम् Mârk. P. 51, 89. पयसो गणडूपसंक्रान्तयः so v. a. *das Verschluckwerden* Uttarar. 49, 2 (63,4) = Milarêp. 133,17. *das Uebergehen* (einer Kunst) *auf einen Andern, Uebertragenwerden* Milav. 15. क्रिया° 18. — 2) *der Eintritt der Sonne in ein neues Sternbild* (geht im comp. voran) Weber, Gjot. 98. fgg. Sûrjas. 14,3. 11. Ganit. Adhimâs. 6, Comm. Spashṭâdhj. 76. Verz. d. Oxf. H. 31,*b*,13. 34,*b*,39. 41,*a*,27. 87,*a*,13. 92,*a*,14. 285,*a*,29. 294,*b*, 30. 332,*a*,33. 335,*a*, No. 787. *b*, No. 788. Verz. d. B. H. No. 1108. 1237. Wilson, Sel. Works 1,266. 2,159. fg. 164. 170. 393. Pañkat. 119,1. 2. Hit. ed. Jones. 2434. Vgl. रवि°. — 3) defectiv für °वादिन् Bez. einer buddhistischen Schule Wassiljew 113. 232. fg. 257. 268. Târan. 271. fgg.

संक्राम (wie eben) gaṇa गुडादि zu P. 4,4,103. m. n. = संक्रम = दुर्गसंचर AK. 3,3,28. H. 1317. — Vgl. सांक्रामिक.

संक्रामण (vom caus. von क्रम् mit सम्) n. *das Hinüberbringen, Versetzen* Vaitân. Bṛh. S. 55,7.

संक्रामयितव्य (wie eben) adj. *hinüberzubringen, zu versetzen in* (acc.): स (गर्भः) संक्रामयितव्यस्ते मत्तमे मालि रोहिणीम् Harîv. 3243.

संक्रामिन् (von क्रम् mit सम्) adj. *auf Andere übergehend.* सर्वे संक्रामिणो रोगा वर्जयित्वा प्रवाहिकाम् Kull. zu M. 3,7. भूत° TS. 7,1,8, 6 etwa zu (andern) *Wesen hinübergelangend, dieselben durchschreitend.*

संक्रीड (von क्रीड् mit सम्) m. *Spiel, Scherz:* मरुताम् N. eines Sâman Ind. St. 3,228,*b*.

संक्रीडन (wie eben) n. *das Spielen, Scherzen:* गोपी° Harîv. 16337.

संक्रोश (von क्रुश् mit सम्) 1) m. *Geschrei:* षड्भिरसाम् N. eines Sâman Ind. St. 3,201,*b*. *Geschrei des Unwillens:* अनपिष्यति संक्रोशं राघवस्य विवासनम् R. 2,58,36. = इह पत्र च दुःखम् Comm. in der ed. Bomb. — 2) n. *a*) pl. (n. nach Manoh., sc. यङ्गानि) *diejenigen Körpertheile* (des Rosses) *welche bei seiner Bewegung einen Ton von sich geben,* VS. 25,2. — *b*) N. eines Sâman Ind. St. 3,242,*a*.

संक्लेद (von क्लिद् mit सम्) m. *Durchnetzung, das Nasswerden, das Nassesein, Nässe* Vaitân. Bṛh. 25 (23),13. सम्बु° *durch Wasser* Spr. (II) 5141. सलिल° Harîv. 3001. तैल° R. 2,76,4 (°सेक ed. Bomb.). °भूत *eine feuchte Masse bildend* (der Fötus im ersten Monate) Jjôt. 3,75.

संक्लेश (von क्लिश् mit सम्) m. *Schmerz, Leiden* MBu. 1,2287. 3,11789. 15348. 5,613. नरकादीय संक्लेशमाप्नोति 13,3272. R. 7,20,25. Kâm. Nitis. 14,46. Bhâg. P. 1,5,40. 2,9,9. 3,7,14. Daṇḍ. 9,54. Vop. 8,40. यसंक्लेशेन लोकस्य वृत्तिं लिप्सेत MBu. 3,13885. — 14,1236 fehlerhaft für संक्लेद, wie die ed. Bomb. liest.

संक्षय (von 3. क्षि mit सम्) m. 1) *das zu Ende Gehen, Vergehen, völliges Verschwinden, Verlegen, Vernichtung, Untergang:* प्रजानाम् MBu. 1,3735. 6,4948. Spr. (II) 5872. Pañkat. 104,18. भूतानां महताम् Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,17. तपसः MBu. 1,3237. Nal. 14,7. 8. यपर्य्यन्तस्य दुःखस्य सागरस्येव संक्षयम् R. Gorr. 2,80,3. लोक° Sûçr. 2,82,7. ग्रीष्मे सलिलसंक्षयः R. 2,33,13. Vaitân. Bṛh. S. 32,14. रसस्य° 9,26. वीर्यस्य° 46,28. Pañkat. 47,10. वर्ष्म° Jjôt. 3,55. शरीर° 161. प्राणि° Râga-Tar. 4,382. ज्ञान° Vaitân. Bṛh. S. 46,30. देशकुल° 52. R. Gorr. 2,68,35. 6, 33,31. Kathâs. 22,43. Harîv. 5600. दानव° Bhâg. P. 8,11,43. क्षेत्रज्ञ° MBu. 14,931. प्राण° Spr. (II) 5989. 7411. जीवित° Mârk. P. 110,26. मन्यु° Sin. D. 197. मासर्तु° Mârk. P. 16,34. सर्ग° Verz. d. Oxf. H. 81,

a, 31. शक्ति° 269, a, 30. घर्म° Spr. (II) 53. घघर्म° MBh. 13, 5482. मदाग्य° 3, 2735. R. 5, 26, 21. 36, 16. भाग्योष्म° Rāǵa-Tar. 5, 385. पुण्य° R. 5, 50, 11. दुष्कृत° Mārk. P. 12, 15. घघ° Verz. d. Oxf. H. 172, b, 19. क्लेश° Bhāg. P. 4, 12, 45. 30, 27. विधु° *Abnahme* —, *Hinschwinden des Mondes* Verz. d. Oxf. H. 30, b, 7. 40, a, N. 1. दिवस° *Ende des Tages* MBh. 5, 7162. संतपं गम् Mārk. P. 16, 33. Rāǵa-Tar. 4, 398. पा Spr. (II) 1882. VP. 1, 13, 25. 3, 31, 23. आ-पा Vaṇīs. Bṛh. S. 5, 26. Rāǵa-Tar. 3, 402. 4, 540. उप-पा Vaṇīs. Bṛh. S. 17, 20. Spr. (II) 5808. प्र-पा Bhāg. P. 6, 8, 26. नी Rāǵa-Tar. 5, 277. कृ Spr. (II) 759. Vaṇīs. Bṛh. S. 5, 23. 93. धातुसंतपकृत् 7, 5. लोकसंतपावहा 33, 26. — 2) *Untergang der Welt:* कालाग्निरिव संतपे MBh. 13, 7271. Verz. d. Oxf. H. 49, b, 14. — 3) N. pr. eines Marutvant Hariv. 11345. — Vgl. सूत्र°, लोक° (auch Spr. (II) 5873), शुचि°.

संतर् (von तॄ mit सम्) m. *Zusammenfluss* Çat. Br. 10, 5, 2, 18. इडा नाम् (auch संतार्) N. eines Sāman Ind. St. 3, 207, a. Pañcav. Br. 15, 3, 14. 16, 1, 7. Liṭ. 3, 6, 24. 6, 11, 3.

संतार् s. u. संतर्.

संतिप्त s. u. तिप् mit सम्. °भाष्य *ein gedrängter* —, *kurzer Commentar* Verz. d. B. H. No. 227. °क्षेमप्रकार 1066. °वेदान्तशास्त्रप्रक्रिया Titel eines Commentars zum Ātmabodha Hall 105. °सार Titel einer Grammatik Colebr. Misc. Ess. 2, 45. fg. Verz. d. Oxf. H. 173, b, No. 388. fgg. Gild. Bibl. 385. °गति f. oder संतिप्ता f. Bez. eines der sieben Theile im Kreise der Nakshatra nach Parâçara's System Vaṇīs. Bṛh. S. 7, 8. संतिप्तायां पुष्यः पुनर्वसुः फल्गुनीहृदयं च 10, 14.

संतिप्तक (von संतिप्त) m. = संतिप्ति Bhar. Nāṭyaç. 20, 55. सन्दर्भशिल्पयुक्तो बकुपुस्तोत्थापनचित्रनेपथ्यः । संतिप्तवस्तुविन्यासो ज्ञेयः संतिप्तको नाम ॥ 56.

संतिप्तत्व (von संतिप्त) n. *das Schmalsein*, — *werden:* पृथूनाम् Suçr. 1, 117, 18.

संतिप्ति (von तिप् mit सम्) f. in der Dramatik *eine einfache Art sich zu helfen, eine Sache zu Stande zu bringen* Daçar. 2, 53. Sāh. D. 420. 422.

संतिप्तिका f. dass. Comm. zu Daçar. 2, 53.

संतेप (von तिप् mit सम्) m. 1) *das Zusammenwerfen, Vernichtung:* प्रज्ञासंतेपसमये MBh. 3, 11421. — 2) *Abkürzung, kurze* —, *gedrängte Darstellung* (Gegens. विस्तर) AK. 3, 4, 2, 3. H. 1432. Hālā. 4, 81. MBh. 1, 61. 103. शाकद्वीपस्य संतेपो यथावत् — उक्त ṛṣ: 6, 411. 412. काव्य° R. 1, 1 in der Unterschr. Ind. St. 5, 139. Suçr. 1, 237, 3. नीतिशास्त्राणाम् (so v. a. *Quintessenz*) Spr. (II) 6666. Vaṇīs. Bṛh. S. 46, 1. 49, 1. 79, 22. Kathās. 1, 10 (nach Hall in der Einl. zu Vāsavad. 23 °मात्रं zu lesen). 21, 33. 22, 121. Verz. d. Oxf. H. 50, a, 12. 200, b, No. 476. Pañcat. 4, 17. Prātiṣār. 22, b, 6. Comm. zu TS. Prāt. 12, 6. Sarvadarçanas. 108, 17. 124, 6. सत्यस्य संतेपः (= घनादरः Comm.) so v. a. *kurze Darlegung der Wahrheit* R. 6, 93, 18. तस्येष कारसंतेपो जिह्वाच्छेदः so v. a. *um die Sache mit der Abgabe kurz abzumachen, so wird ihm dafür die Zunge abgeschnitten* Hariv. 15802. संतेपात् *mit kurzen Worten, in aller Kürze* Mṛicch. 137, 16. Spr. (II) 6665. Kathās. 27, 53. 35, 31. Dhūrtas. 79, 17. Sāh. D. 465. Sarvadarçanas. 32, 3. Hit. 93, 19. संतेपतस् dass. MBh. 3, 11915. 16677. Suçr. 2, 304, 13. Spr. (II) 3283, v. l. Prātiṣār. 69, b, 2. Sarvadarçanas. 33, 19. Çaṅk. zu Kaṭhop. Up. S. 1. Bhāg. P. 2, 13, 7. संतेपेण dass. R. 5, 55, 24. Madhuç. in Ind. St. 1, 14, 3. 23, 12. संतेपम् (absol.) dass. Pañcar. 2, 8, 28. am Anfange eines comp. in adv. Bed.: °टीका Verz. d. Oxf. H. 93, a, 7. °क्षेमप्रयोग 94, a, 27. °तिथिनिर्णयसार Verz. d. B. H. No. 1174. °पुरश्चरणविधि Notices of Skt Mss. 218. °शंकरजय Verz. d. Oxf. H. 232, b, No. 626. 260, No. 627. fg. °शारीरक 72, b, 13. 226, b, No. 555. Colebr. Misc. Ess. 1, 335. Hall 90. 203. Verz. d. B. H. No. 609 (°व्याख्यान). संतेपानुक्रमणिका Verz. d. Oxf. H. 44, b, 10. — 3) *Zusammenfassung* so v. a. *Summe:* संतेपेण हिमप्रतिः M. 7, 157. संतेपतस् Kull. zu M. 1, 68. 7, 157. चतुर्लक्षसंतेपेण Verz. d. Oxf. H. 65, a, 27. — 4) in der Dramatik *eine Erklärung in kurzen Worten, dass man sich einem Andern zur Verfügung stelle*, Sāh. D. 434. 465. — 5) *ein Mittel des Zusammendrängens* Suçr. 2, 28, 1. — Vgl. न्याय°.

संतेपक (wie eben) nom. ag. *Zusammenwerfer, Vernichter* MBh. 3, 12105.

संतेपण (wie eben) n. *das Zusammendrängen, Verkürzen, Darlegen in kurzen Worten* AK. 3, 3, 21.

संतेपतृ (wie eben) nom. ag. = संतेपक MBh. 13, 7013.

संतोभ (von 1. तुभ् mit सम्) m. *Stoss, Ruck, eine plötzliche heftige Bewegung, Erschütterung* Suçr. 1, 277, 13. 301, 21. 319, 24. स्तनोद्वहनसंतोभाद्व्यथमाना पदे पदे MBh. 3, 1825. समुद्राणाम् 10951. 7, 8157. मीन° R. 2, 40, 24. हय° Vīkr. 12. Prasāṇ. 5, 1. Pañcar. 4, 6, 4. सैन्यानां संतोभः सागरोपमः MBh. 7, 5673. R. 7, 14, 7. चित्ततन्वोः *eine Erschütterung des Herzens und des Leibes* Bhāg. P. 3, 15, 42. auch ohne nähere Angabe *Gemüthsbewegung, Aufregung* MBh. 3, 10946. 10951. संतोभाच्चापि मन्त्रानामनावृष्टिकृतो ऽभवत् 5, 339. मण्डल° Kām. Nītis. 8, 69. पुण्यकालोक° Rāgh. 10, 47. तेजस्वी संतोभात्प्रायः प्रतिपद्यते तेजः Çiç. 158, v. l. Kathās. 17, 130. 20, 66. 104, 188. 106, 177. संतोभेष्वप्यनुद्वेगः Sāh. D. 92.

संतोभण (wie eben) n. घति° *allzu heftige Erschütterung* Suçr. 2, 133, 3.

संतोभिन् (wie eben) adj. *stossend:* ein Wagen Kāraṇḍ. 2, 3.

संध्यां (von ध्या mit सम्) 1) adj. am Ende eines comp. *zählend, übersählend* P. 3, 2, 7. गो°, पशु° Schol. zu d. St. und zu 6, 2, 66. — 2) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 2, 292. — 3) f. या a) *Zählung:* कृतानां पुधिवीराणाम् — संध्या न शक्यते कर्तुम् R. 4, 73, 11. संध्यामिवैषां धमरक्षकार Raghu. 16, 17. Rāǵa-Tar. 4, 699. केचिदेतां मृषा तेषां कालसंध्यां प्रचक्रिरे 1, 49. मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंध्या विधीयते Spr. (II) 4186. तथा तवापि पुण्यस्य संध्या नैवोपपद्यते Mārk. P. 15, 72. लेख्यसंध्याविद् so v. a. *Arithmetik* R. Gorr. 1, 80, 2. Vāyup. 119. fg. am Ende eines adj. comp.: लब्धाधिपत्यसंध्यानां भूभुजाम् *die zu denen gezählt werden (gehören), die regiert haben*, Rāǵa-Tar. 1, 50. — b) *Zahl, Anzahl* Taitt. 3, 3, 833. H. 872. an. 2, 386. fg. Mahābh. 5, 59. Hālā. 5, 50. Nir. 3, 10. 4, 26. अङ्क संध्याः संध्यातः Āçv. Çr. 10, 1, 16. °पूरण 17. Gobh. 3, 4, 1. Çat. Br. 7, 3, 1, 42. Kāty. Çr. 1, 8, 20. 15, 8, 21. 20, 7, 1. एतेन न्यायेन तां तां संध्यां पूरयति Çāṅkh. Çr. 13, 15, 11. Lāṭy. 5, 10, 24. 8, 1, 2. RV. Prāt. 11, 11. 12, 9. नदीपाणाम् — अस्तो गम्यः संध्यया 14, 28. VS. Prāt. 1, 49. M. 8, 81. 97. Kap. 1, 1, 6. 2, 2, 37. Jogas. 2, 50. Tarkas. 15. Bhāshāp. 110. Suçr. 1, 336, 19. Vaṇīs. Bṛh. S. 53, 26. 68. 68, 105. 77, 21. Rāǵa-Tar. 5, 172. नाकारणकृषां संध्या so v. a. *sind unzählig* Spr. (II) 3537. तेषां संध्या न वि-

यते R. 4,37,28. Spr. (II) 6619. न कश्चिद्वतारणां संख्यां ज्ञानाति ते भुवि Weber, Kṛṣṇaj. 291. संख्यया परिवर्जिताः unzählig Pañcat. II,62. °परित्यक्ताः dass. ebend. (eig. 63). तं पुत्रिणाम् — समारोपयद्यसंख्याम् so v. a. ganz vornan stellen Ragh. 18,29. संवत्सरसंख्य n. cop. comp. P. 7,3,15. ग्राम° Anzahl Hall. 2,129. षट्° 128. सहस्र° Kir. 5,34. षष्टि° Comm. zu TS. Prāt. 1,1. चतुः° zu 23,16. am Ende eines adj. comp. nach einem Zahlworte: सहस्र° MBh. 1,2132. शत° Mārk. P. 101,4. Bhāg. P. 3,11,20. शतार्ध° Varāh. Bṛh. S. 54,31. दशार्ध° MBh. 1,7052. अनेक° Kir. 5,34. कतिपय° Pañcat. 156,6. — c) so v. a. °नामन्, °शब्द Zahlwort TS. Prāt. 16,25. VS. Prāt. 5,15. Çiñ. 2,5. P. 1,1,23. 2,1,10. 19. 50. 52. 2,2,25. 5,1,22. 2,47. 4,17. 43. 6,2,35. 163. 3,47. 7,3,15. AK. 2,9,33. 3,6,3,24. 8,43. Comm. zu AV. Prāt. 4,27. — d) der grammatische Numerus Schol. zu P. 1,2,53, Vārtt. 2. — e) Berechnung d. h. genaue Erwägung des pro und contra: दोषाणां च गुणानां च प्रमाणं प्रविभागतः। कंचिदर्थमभिप्रेत्य सा संख्येत्युपधार्यताम्॥ MBh. 12, 11934. 2,2036. = विचारणा, विचार AK. 1,1,4,11. Trik. H. 1373. H. an. Med. = मेधा u. s. w. Hall. 2,179. Vgl. noch Hall in der Einl. zu Sāṅkhjapr. S. 2. fgg. — f) = ख्या Benennung, Name: द्वापर° R. 7,74,23. 25. am Ende eines adj. comp. 24. — g) eine best. hohe Zahl bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,641. — 4) n. Schlacht, Kampf AK. 2,8,3,72. Trik. H. 796. H. an. Med. Hall. 2,298. nur im loc. संख्ये Naigh. 2,17. Bhag. 1,47. MBh. 3,12125. 13710. 4,1401. 13,6814. 14,333. R. 3,54,28. 6,72,2. Rāja-Tar. 5,149. — Vgl. असंख्य, गो°, निः°, शत°, कुलसंख्या, पञ्चासंख्यम्, पञ्चासंख्येन (auch Comm. zu TS. Prāt. 2,19. 10,105), सांख्य, सांख्यायन.

संख्यक am Ende eines adj. comp. von संख्या Zahl, Anzahl; Zahlwort: लत° Hit. ed. Johns. 2438. अष्टाविंशति° Sin. D. 50,11. अशीतिशत° Vop. 8,1. त्रि° (त्रि = sechs) Çaut. 29. रात्रात्ताः प्रागसंख्यकाः AK. 3,6,2,12. Vgl. संख्याक (लतसंख्यक ist लतसंख्य adj. + क, लतसंख्याक ist unmittelbar aus लत + संख्या entstanden).

संख्याक dass. am Ende eines adj. comp.: सप्तति° Hariv. 15203. Kād. in Ind. St. 9,16. Kathās. 18,130. 50,195. 82,38.

संख्याङ्कविन्दु m. das Zeichen der Null Spr. (II) 1371.

संख्यात 1) adj. s. u. ख्या mit सम्. Das Wort ist auch Bhāg. P. 5,14, 3 und bei Pat. zu P. 3,4,41 (vgl. संख्यातानामनुदेशः VS. Prāt. 1,143) als adj. aufzufassen. समसंख्याताः an der ersten Stelle bedeutet dieselbe Anzahl bildend; dieselbe Bed. hat das einfache संख्यात an der zweiten Stelle. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes Varāh. Bṛh. S. 14,2. — 3) f. आ (sc. प्रहेलिका) eine Art von Räthseln, wobei gezählt wird, Kivyād. 3,101.

संख्यातृ (von ख्या mit सम्) nom. ag. Ueberzähler; s. गो°. Aufzähler: कपिलस्तत्त्वसंख्याता Bhāg. P. 3,25,1. तत्त्वानां संख्याता गणकः सांख्यप्रवर्तक इत्यर्थः Comm.

संख्यातिग (संख्या + अतिग) adj. unzählbar, unzählig: संपदः Spr (II) 2578. Kathās. 44,186.

संख्यान (von ख्या mit सम्) n. 1) das Erscheinen, zum Vorschein Kommen: सर्वगुण° adj. Bhāg. P. 5,17,17. — 2) das Zählen, Zählung, Aufzählung Āçv. Çr. 4,2,13. 8,13. Kāṭy. 36,2. Lāṭy. 6,1,5. TS. Prāt. 1,43. Comm. zu 59. Daitīp. 35,2. M. 8,400. MBh. 1,514. 516. 3,2814. 2832. 4,67. Suçr. 1,337,10. गुण° Bhag. 18,19. Bhāg. P. 3,24,10. 8,16,30. 10,90, 43. 11,16,39. 22,33. Ind. St. 3,426. Verz. d. Oxf. H. 8,a,20. Kāç. zu P. 5,4, 17. — 3) das Ausmessen, Berechnung: ज्यम्बुहोपस्य Hariv. 11450. Mārk. P. 49,40. काल° MBh. 12,10012. — 4) MBh. 14,1905 schlechte Lesart für संस्थान, welches Nīlak. erwähnt.

संख्यानामन् n. Zahlwort Nir. 4,6.

संख्यापद n. dass. VS. Prāt. 5,27, v. l.

संख्यामङ्गल्यग्रन्थि m. die Glück verheissende Cerimonie der Knüpfung eines der Zahl der abgelaufenen Lebensjahre entsprechenden Knotens in einer Schnur Uttarar. 39,3 (52,17).

संख्यायोग m. eine Constellation, bei der es darauf ankommt, in wie vielen Häusern ein Planet steht: संख्यायोगाः स्युः सप्त सप्तर्क्षसंस्थैरेकापायात् Varāh. Bṛh. 12,10.

संख्यालिपि f. eine best. Schriftart (etwa mit Zahlzeichen) Lalit. ed. Calc. 143,20.

संख्यावत् (von संख्या) adj. 1) gezählt, ein bestimmtes Maass habend; = संख्यायुक्त Med. t. 226. fg. = मित H. an. 3,207. — 2) klug AK. 1, 7,5. H. 342. H. an. Med. Hall. 2,178. ऋणाङ्गणे कृतास्राभः संख्यावांश सदोऽविशे Kiçān. 82,8 (nach Aufrecht). Verz. d. Oxf. H. 200,a, No. 475, Z. 9. Vop. S. 176.

संख्याविधान n. das Anstellen einer Berechnung Varāh. Bṛh. S. 12,14.

संख्यावृत्तिकर (संख्या-आवृत्ति + 1. कर) adj. die Wiederholung des Zählens bewirkend so v. a. schwer zu zählen, überaus zahlreich: कबन्धानि समुत्तस्थुः सुबहूनि समन्ततः। तस्मिन्विमर्दे घोराणां °कार्याणि च॥ Hariv. 5097. fg. लतस्य वधे एककबन्धसमुत्थानम् यत्र तु संख्यायाः आवृत्तिः (so, im Text der lith. Ausg. aber °वृत्ति) कबन्धसंख्यैव कर्तुं न शक्या इत्यर्थः Nīlak.

संख्याशब्द m. Zahlwort Schol. zu H. 872.

संख्याशस् (von संख्या) adv. घ° in unzählbarer Menge Bhāg. P. 3,12,16.

संख्येय (von ख्या mit सम्) adj. was gezählt wird, was der Zahl nach bestimmt wird oder bestimmt werden kann, zählbar P. 2,2,25. 5,4,73. AK. 2,9,33. H. 872. Kusum. 57,10. Sin. D. 235. — Vgl. घ° (adj. auch MBh. 3,2861. 4,910. 12,6938. Bhāg. P. 7,4,36).

1. सङ्ग (von सञ्ज्) m. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) das Hängenbleiben, Stockung; das Haften an; das Anstreifen, Berührung, Contact: परस्परप्राप्तिमात्रं सङ्गः Sarvadarçanas. 40,17. अग्नि° Suçr. 1,250,17. गर्भ° 368,19. 2,91,18. मूत्र° 1,370,21. यावत्यनलसङ्गः स्यात् so dass die Achse nicht daran hängen bleibt Kāṭy. 26,8. TS. 5,3,8,3.4 (vgl. Çat. Br. 3, 6,3,11). संपर्यासनसादनसङ्गाः (eines Wagens) Varāh. Bṛh. S. 46,9. गोलाङ्गलपोः 63. eines Pfeils Ragh. 2,42. नो रत्नानि चेतो हरन्ति विनाङ्गनाङ्गसङ्गात् Spr. (II) 5706. विरुङ्गसङ्गक्षीणाः (Bäume) R. 5,16,19. चूते द्विरेफमाला सविशेषसङ्गा Kumāras. 1,27. कीटो ऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः Spr. (II) 1782. सङ्ग° Berührung Daçak. 87,16. Bhāg. P. 3,23,10. 4,9,48. कृततुल्यिनकणासार° Spr. (II) 3801. रथ्याम्बु ज्ञाङ्गवीसङ्गात्रिदशैरपि वन्द्यते 4764. Mālatīm. 170,8. तत्याज तोयसङ्गान् so v. a. er verliess das Wasser Hariv. 8436. गुणसङ्गाः so v. a. die an Einem haftenden Vorzüge R. 5,27,22. असङ्गेन ohne anzustreifen, ohne zu be-

rühren 3,27.7,21. Hariv. 11087 (S. 792). घसङ्गचारिन् R. 5,42,4. घ° (s. auch bes.) adj. *nicht hängen bleibend, — anstreifend, ungehindert —, frei sich bewegend:* रथ Hariv. 1605. नौ Mârk. P. 84,10. गति 19,16. Hariv. 4989. रेणु Buic. P. 4,5,5. 1,5,6. — 2) *Berührung mit Jmd, das Zusammentreffen mit Jmd, Anschluss an Jmd, ein näheres Verhältniss zu Jmd* (auch in geschlechtlicher Beziehung), *Umgang, Verkehr* AK. 3,3,29. 3,4,44,73. H. 1308. Vop. 23,11. ब्रूते दृश्यते सँसर्गो वने सङ्गविवर्जनम् Spr. (II) 258. 773. विनश्यति पतिः सङ्गात् 2991. ज्ञानमध्यसङ्गरहित 4585. 6671 (Gegens. विरह *Trennung*). 6675. Daçak. 62,7. मित्र° Buic. P. 3,30,29. स्त्रीषु *Verkehr mit* MBh. 3,1302. सङ्गः सत्सु विधीयताम् Spr. (II) 6673. सत्सु सङ्गं समाचरेत् 7461. Buic. P. 3,23,55. 31,34. यद्यप्य न न मे सङ्गमुपैष्यति so v. a. *zusammenkommen mit* Mârk. P. 62,12. मनुष्यापि च मे भर्तुः सङ्ग एव विशिष्यते R. 4,20,3. कथमासां नराः सङ्गं कुर्वते *umgehen —, verkehren mit* MBh. 13,2234. घसताम् *Verkehr mit Schlechten* Spr. (II) 747. 1944. 2623. 6561. 6668. 7461. Buic. P. 8,22,36. संभूतः प्रथमभिक्ष्वाकुरस्य सङ्गान्मायायां मन इति विश्रुतस्तनूजः Prab. 9,9. fg. सद्भिः Jiân. 3,156. Kim. Nîtis. 14,60. Spr. (II) 3778. मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरंगैः । मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः 4934. 5716. मार्जारनकुलयोर्मूषकेण Vaitân. Bau. S. 97,12. Uttarâdh. 25,7 (33,8). Kathâs. 32,30 (सङ्गं गम्). LA. (III) 89,19. सङ्ग कैः Spr. (II) 6051. 6674. 7462. 7479. in comp. mit der Ergänzung: परकान्त° 3269. 3413. 4601. 4772. 5827. 6173. 7218. Çâk. 71,3. Kathâs. 13,75. 17,22. 30,5. स्वप्ने प्राप्स्यसि तत्सङ्गम् (mit dem Geliebten) 31,12. fg. (मत्सङ्गमर्थिनी 37,101 fehlerhaft für °संगमार्थिनी). सत्सङ्ग Spr. (II) 3201. 6747. 4786. 7491. Uttarâdh. 31,15 (11,12). Vaitân. Bau. S. 87,6. 10. 88,19. Kathâs. 60,135. Râja-Tar. 5,203. Mârk. P. 74,20. Buic. P. 1,10,11. 18,13. 3,30,6. 31,25. 4,26,18. 7,9,18. Pañcat. 187,6. — 3) *Hang des Herzens, Gelüste* Taitt. 1,1,131. सङ्गाद्दत्ता धेनुः *aus Anhänglichkeit* R. 7,53,9. विषयेषु Buddh. 2,62. घकर्मणि 47. गुणेषसङ्गः Buic. P. 2,3,19. मात्रा° M. 6,57. विषय° 12,16. मुख°, ज्ञान° Buddh. 14,6. R. 2,23,14. Spr. (II) 1539. 3085. Buic. P. 2,7,3. 5,1,15. ohne Ergänzung: घन्यत्र प्रस्थितः सङ्गादन्यत्रैव च गच्छति so v. a. wenn ihm eine *Lust* ankommt Kim. Nîtis. 11,9. सङ्गे dass. M. 5,37. इति सङ्गः सतां Spr. (II) 6019. Verz. d. Oxf. H. 231,b,37. 46. LA. (III) 57,4. °कार Sarvadarçanas. 75,11. सङ्गेभ्यो विनिर्गतः M. 8,63. सर्वसङ्गनिवृत्ति Spr. (II) 4093. त्यक्ता सङ्गान् M. 6,23. 81. Buddh. 2,48 (sg.). °त्याग Spr. (II) 3904. त्यक्त° adj. R. 2,37,2. उत्सृज्य सर्वतः सङ्गम् Buic. P. 1,18,3. मुक्त° adj. 2,20. 12,27. 4 16,18. मुक्तसमस्त° 1,19,7. मुक्तान्य° 4,23,37. विमुक्त° 1,9,30. 4,23,39. छिन्न° 2,1,23. घ° m. 2,1,15, adj. 1,11,38. Davon घसङ्गता R. Gorr. 1,67,15. st. घसङ्गत्व MBh. 14,1001 hat die ed. Bomb. besser घसंज्ञत्व. सु° adj. *woran das Herz stark hängt* MBh. 8,4502. — 4) घत्रेः सङ्गः N. eines Sâman Ind. St. 3,202,a. — Vgl. घ°, दुः°, निः°, मनः°, मूत्र°, रथ°, वाक्°, वासर°, विट्°, स°. यद्यासङ्गम्.

2. सँगं (सँग Padap.) m. *feindliches Zusammentreffen* Naish. 2,17. ṚV. 4,20,1. मंगे समत्सु वृत्रहा 10,133,1.

सङ्गट m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,2179.

मंगणाना (von गणय् mit सम्) f. *das Zusammenzählen:* तत्र सं° नास्ति राज्ञामयुतशस्तदा MBh. 14,2135.

मंगणिका f. *eine unvergleichliche Erzählung* (घप्रतिरूपकथा) Taitt. 3,2,26.

संगत् (von गम् mit सम्) Vop. 26,78.

संगत adj. und n. s. u. 1. गम् mit सम् (auch in den Nachträgen). Hier nachzutragen wäre noch 1) adj. *a) verbunden, verbündet, befreundet:* विपत्तेः सङ्ग Râja-Tar. 3,257. — *b) entsprechend, passend, angemessen* Bâla bei Mallin. zu Naish. 9,68. — 2) m. *a)* (sc. संधि) Bez. *eines best. auf gegenseitiger Freundschaft beruhenden Bündnisses* Kâm. Nîtis. 9,2. Spr. (II) 4481. 6784. — *b)* N. pr. eines Fürsten aus der Dynastie der Maurja VP. 4,24,8. Buic. P. 12,1,13. — 3) n. *das Zusammenkommen:* घस्याः प्रदोषे शर्वर्याः कुरुघनेन संगतम् (so ed. Bomb.) MBh. 4,893. सतां सकृत्संगतमीप्सितं परम् Spr. (II) 6694. सकृत्सज्जनसंगतम् 5253. *häufiges Zusammenkommen, ein freundschaftliches Verhältniss, Verkehr* Hâlâs. 4,21. Bâla a. a. O. Kathâs. 1,6. Naish. 9,68. Vop. 26,16. मनाम् Spr. (II) 5680. Kumâras. 5,39. मृगाक्षीणाम् Kirâtârj. 2,232. सुजनैः संगतं कुर्यात् Spr. (II) 2318. पुष्पस्य तिलैः कृतसंगतस्य 7242. दुर्जन° 2242. — Vgl. भुजंगसंगता.

संगतक (von संगत) m. N. pr. eines Marchenerzählers Kathâs. 10,2. 4. 201.

सङ्गतल m. N. pr. eines Mannes Târân. 63.

संगतार्थ (संगत + घर्थ) adj. *einen passenden, zutreffenden Sinn habend:* शास्त्र Karaka 3,8. संगदत्थ im Prâkrit Çâk. 37,12.

सँगति (von 1. गम् mit सम्) f. 1) *das Zusammentreffen, Eintreffen* ṚV. 4,44,1. 10,141,4. स्वर्गस्य लोकस्य Ait. Br. 2,17. 4,20. *das Sichbegeben an einen Ort:* पञ्च पत्र न विद्यन्ते न कुर्यात्तत्र संगतिम् (v. l. für संस्थितिम्) Spr. 3862, v. l. यात्रोत्सवे 7336. *das Zusammentreffen* zweier Töne Comm. zu ṚV. Prât. 3,4. — 2) *das Zusammentreffen von Personen, Verkehr, Umgang* (auch geschlechtlicher): = योग AK. 3,4,3,22. = मैथुन 48,124. = सङ्ग H. an. 3,311. = संगम Med. t. 168. = समिति Hâlâs. 5,25. पत्र नः संगतिर्भवेत् Hariv. 15748. युद्धे 15753. एवं भवत्यचित्त्या विरञ्चाश्च संगतयश्च जन्तूनाम् Kathâs. 124,243. Prab. 86,18. तस्य संगतिमुत्पाद्य *eine Zusammenkunft mit* Kathâs. 65,99. तेन 30,74. 52,292. केनापि वणिजा सह 18,292. संगतेः संचरते पापम् *durch Verkehr* Spr. (II) 1061. कुमित्रे *Verkehr mit* 1804. 6667. सताम् *mit Guten* 529. Pañcat. 60,9. प्राज्ञैतरैः 1943, v. l. 2141. 5375. 6769. Kathâs. 25,153. 28,191. योषिद्भिः सह Spr. (II) 3202. सद्भिः समम् 5046. सत्संगति 2376. 2716. 2882. 3060. 6051. 6106. 6607. 6637. Kathâs. 17,113. सुधा° Râja-Tar. 1,208. भ्रातृदार° Daçak. 67,15. fg. घ° *keinen Umgang habend* MBh. 12,13221. so v. a. *Bündniss:* व्यसने सति कुर्वीत येन केनचित्संगतिम् Spr. (II) 6319. — 3) *das Zutreffen, Sichereignen:* संगत्या so v. a. wenn es sich so trifft, da es sich so traf, *zufälliger Weise* R. 2,79,3. MBh. 1,6110. 6948. 3,2129 (= N. 12,20). 13,156 (संगत्वा ed. Calc.; man streiche demnach die beiden letzten Stellen unter 1. गम् mit सम् Z. 19. fg.). Weber, Rikat. Up. 336,5 (wo so mit der Hdschr. und des Metrums wegen zu lesen ist). — 4) *das Zutreffen, Stimmen, Passen:* घर्थ° Verz. d. Oxf. H. 151,a,14. Kathâs. 34,120. Muir, ST. 4,221. Schol. zu Pañcat. Bu. 3,1,1. Sarvadarçanas. 12,19. = सिद्धान्त Hall in der Einl. zu Vâsavad. 10. — 5) *Zusammenhang, Beziehung:* ज्ञलसंगतिकोना (भू) Kathâs. 25,10. मनो हि ज्ञ-

न्मात्रसंगतिज्ञम् Rāgn. 7,15. Spr. (II) 2447. इदानीमुच्चारितस्य देवदत्तशब्दस्य दिनान्तरोच्चारितेन गच्छतीति पदेन संगतिः स्यात् Sāh. D. 9,1. 2. 719 (घ°). Kuṭṭ. 32, 4. Madhus. in Ind. St. 1, 20, 2 v. u. इति °लब्धः पाठः Spr. (II) 4595, N. in der Pūrvamīmāṁsā eines der fünf Glieder (अवयव) eines अधिकरण Sarvadarçanas. 122,21. Nyāyamālāv. 4,5. fgg. 10, 3. fgg. Verz. d. B. H. No. 667. am Ende eines adj. comp. °क Sarvadarçanas. 127,2. — 6) = ज्ञान H. an. Med. — 7) Dhūrtas. 83,3 wohl fehlerhaft für संगता. — Vgl. प्रीति° und सांगतिक.

सांगतिन् (von सांगत) adj. *zusammengekommen:* आढसांगतिनो विप्राः Mārk. P. 14,90.

संगति (von 1. गम् mit सम्) m. 1) *Vereinigung, Mittelpunkt:* घ्रये वामस्य संगथे रयीणाम् ṚV. 2,38,10. वामस्य TBr. 3,6,8,1. वार्ज्ञस्य ṚV. 1, 91,16. — 2) = संग्राम *Kampf* Naigh. 2,17.

संगर्म (wie eben) m. und n. (dieses nicht zu belegen) gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. AK. 3,6,4,34. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *das Zusammentreffen* (freundliches und feindliches), *Zusammenkunft, Vereinigung* (auch geschlechtliche), *Verkehr* Naigh. 2,17. AK. 3,3,29. Trik. 3,3,29. 306. H. 1508. ṚV. 10,38,3. इदं यं ते यनुमदाम संगमे 1,102,2. ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति संगमे 10,107,4. 131,3. सिन्धौ AV. 6,24,1. MBu. 15,934. नव° R. 3,79,17. 7,36,18. Mṛcch. 98. Rāgn. 19,33. Spr. (II) 2904. 6073. 6669. 6672. Çaut. (Bā.) 33. Rāja-Tar. 3,422. 6,79. LA. (III) 20,21. अस्तु नौ संगमः (fleischlich) MBu. 4,704. Mṛcch. 103. Spr. (II) 1444. 3716. 6271. Kathās. 26,226. त्वया *mit dir* MBu. 1,2270. 3,2101. R. 1,3,29. 2,112,1. Vikram. 128. Spr. (II) 2952. 6695. त्वया नः संगमं कुरु Kathās. 13,115. 137. 17,36. 22,157. Pañc. 17,12. Bhāg. P. 3,1,2. 4,24,16. fg. त्वया सह R. 1,48,18 (49,18 Gorr.). 2,29,17. Spr. (II) 6636, v. l. Kathās. 37,151. Pañcat. 221,16. Vet. in LA. (III) 9,18. संगमं मम कुरुष्व *mit mir* MBu. 1,2401. 4393. 4,719. R. 4,45,16. Suçr. 1,108,9. Çiç. 62. Spr. (II) 637. 3181. 6671. 7115, v. l. Pañc. 69,2. Z. d. d. m. G. 14,572,11. Bhāg. P. 4,22,19. 24,58. 30,28. प्रिय° *mit Lieben* Varāh. Bṛh. S. 45,8. 87,7. Rāgn. 12,66. 90. Vikram. 61. Spr. (II) 1634. 1943. 2712. 4309. 6108. 6173. Kathās. 13,133. 52,263. Mārk. P. 74,18. Rāja-Tar. 3,496. Pañc. 33,8. Sāh. D. 120. सु° *ein schöner Vereinigungsort* Bhāg. P. 10,60,53. — 2) *Zusammenfluss zweier Flüsse, Mündung eines Flusses* AK. 1,2,2,34. Halāy. 3,47. Jōn. 1,293. Varāh. Bṛh. S. 56,7. नदीनाम् MBu. 14,784. Harīv. 3284. गङ्गायमुनयोः R. Gorr. 2,12,5. सरस्वत्यारुणायाश्च (d. i. सरस्वत्या अरुणायाश्च: demnach ist रुणा als Flussname zu streichen) MBu. 3,7022. सरस्वत्याः 8067. सरस्वत्यब्धि° 9, 2030. सिन्धुसमुद्रयोः Bhāg. P. 6,5,3. — R. 1,25,5. R. Gorr. 2,54,6. 22. Mṛcch. 52. Vikram. 33. Varāh. Bṛh. S. 30,2. 79,4. Uttarār. 36,19 (49, 5). Kathās. 46,2. Mārk. P. 51,43. Rāja-Tar. 1,296. 3,327. 4,248. 5, 98. 6,305. Verz. d. Oxf. H. 39,b,25. 65,b,31. fgg. 67,a,9. 10. 76,a,26. 149,b,3. 4. नदीनां संगमोदकम् Harīv. 9584. — 3) *Conjunction von Planeten:* यमजीव° Varāh. Bṛh. S. 20,7. 28,21. — 4) *Durchschnittspunct:* पूर्वापरदिक्षितिवृत्तसंगमयोः Goḷādh. Golār. 4. — 5) *eine zusammenstehende Anzahl:* घनुदात्त° ṚV. Prāt. 11,27. व्यञ्जन° 18,19. — 6) *Verbindung, Berührung, Contact:* ते ऽपि तीरगतास्तस्या नद्याः कीचकवेणवः। समागच्छन्त्यत्नेन संगमं च परस्परम् ॥ R. 4,44,78. घङ्ग° Bhāg. P. 3,4,19. मुखं विषयसंगमज्ञम् Spr. (II) 2635. क्रूर° (कालकूटस्य) 4284. घनर्थेन so v. a. *das Schadennehmen* Kām. Nītis. 14,60. भविष्यलाभस्य so v. a. *das Gelangen zu* Spr. (II) 158. — 7) = सङ्ग *Hang des Herzens, Gelüste:* कर्मस्वसंगमः Bhāg. P. 11,19,38. घ° ohne Ergänzung = वैराग्य (Comm.) 3,29,16. — 8) N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. 2,235. fgg. Westergaard, Duitcp. Einl. II. — Vgl. पुनः°, प्रथम°, शक्तिसंगमतन्त्र.

संगमक (vom caus. von गम् mit सम्) adj. *hinführend an einen Ort* so v. a. *den Weg angebend:* घज्ञाः Nīlak. zu Harīv. 8992.

संगमज्ञान m. N. pr. eines Gelehrten Tīrān. 253. संगमभीज्ञान 255.

संगमदत्त m. N. pr. eines Mannes Kathās. 56,205.

संगमन (von 1. गम् simpl. und caus. mit सम्) 1) adj. (f. ई) *versammelnd, Versammler:* ज्ञनीनाम् ṚV. 10,14,1. वसूनाम् 1,96,6. 10,125,3. 139,3. AV. 7,79,2. TS. 3,5,4,1. — 2) n. a) *das Zusammentreffen, Vereinigung:* पथीनाम् AV. 9,5,19. TBr. 3,7,12,3. Nir. 3,9. सुत° *mit Uttarār.* 106,8 (144,6). — b) *das in-Berührung-Kommen mit* (instr.) so v. a. *Theilhaftwerden:* श्रिया MBh. 17,81. — Vgl. प्रिय°, सांगमन.

संगमनीय (von संगमन) adj. *zur Vereinigung führend, Vereinigung bewirkend* Vikram. 128. 143.

सङ्गमनेर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 341,b,2.

सङ्गमय (von सङ्ग) adj. *aus dem Hange des Herzens, — aus den Gelüsten hervorgegangen, dadurch bewirkt:* पाशाः MBh. 14,1331.

संगमभीज्ञान s. संगमज्ञान.

संगमस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes Kathās. 55,87. fgg.

संगमिन्, दिव्य° etwa *mit Himmlischen verkehrend* Mārk. P. 59,9.

संगमेश्वर (संगम + ई°) 1) m. ein Bein. Viçvanātha's Verz. d. Oxf. H. 284,a,25. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit ebend. 44,a,6 v. u. Wilson, Sel. Works 2,226. 228. fg. °स्वामिन् m. N. pr. eines Mannes 226.

1. संगर (1) m. a) (von 1. गृ mit सम्) *Zusage, Versprechen, Vertrag:* = प्रतिज्ञा, संविद्, घङ्गीकार, क्रियाकार AK. 3,4,25,168. H. 278 an. 3, 615. Med. r. 235. Hall. 4,30. — AV. 6,119,2. Ait. Br. 8,21. तथेति तस्यावितवं प्रतीतः प्रत्यग्रहीत्संगरम् Rāgn. 5,26. स्मारयित्वा व्रतिना पूर्वसंगरम् Kathās. 26,219. सत्य° adj. Nir. 3,6. MBh. 1,2393. 2,131. 4,20. 13,100. 18,33. R. 2,104,16. 106,6. R. Gorr. 2,1,12. 109,4. 114,20. 5, 47,11. 6,111,1. Rāgn. 11,48. Kathās. 3,45. 75,49. स्थिर° adj. MBh. 3,1811. पालित° adj. Rāgn. 13,65. — b) *Kampf, Gefecht* AK. 3,4,24, 72. 25,168. H. 798. H. an. Med. Hall. 2,295. M. 4,121. संगरे त्यक्त MBh. 3,729. 4,1601. 5,4086 (pl.). 7,4801. प्रवेश्य Harīv. 1101. 13755. R. Gorr. 2,51,6. 4,55,9. °स्थ 5,11,6. °स्थम Kām. Nītis. 13,80. Varāh. Bṛh. S. 9,38. Spr. (II) 2671. 3815. शूराश्च संगरे (परीक्ष्यन्ते) Kathās. 31, 93. 46,182. Rāja-Tar. 1,61. तेन MBh. 4,2236. Mārk. P. 21,89. 125. 21. द्रोणपार्थसंगरे MBh. 14,1789. स्मर° Git. 8,4. Verz. d. Oxf. H. 141, b,1 v. u. Rāja-Tar. 1,69. दृप्तिणानाम् nom M. 8,349. उद्धिकत° adj. Kathās. 20,89. प्रिय° adj. R. 4,13,41. घ° *nicht kämpfend* Spr. (II) 615. — c) *Ungemach* AK. 3,4,25,168. H. an. Med. — d) = गर *Gift* H. an. Med. — 2) n. *die Frucht der Çami genannten Fabacee* H. an. (lies शम्याः) und Med.

संगरण (von 1. गृ mit सम्) n. *das Verhandeln, Sichverständigen* Nir. 3,9.

संगवे (von सम् + गो) m. *die Zeit, wo die weidenden Kühe zum Melken zusammengetrieben werden* (nach dem Comm. zu Âçv. wo *sie mit den Kälbern beisammen sind*); bei Theilung des Tages in fünf Abschnitte *der zweite: Morgen, Vormittag:* उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य RV. 5,76,3. AV. 9,6,46. त्रिरह्नः पशवः प्रेरते प्रातः संगवे सायम् TBr. 1,4,9,2. 5,2,1, यावत्संगवं मात्रा सह चरणि 2,1, 4,3. Çat. Br. 2,2,2,9. Âçv. Çr. 3,12,2. Sâṅkh. K. 3,b,3. °वेला Kauṣ. Up. 2,9,5. = *zehn* Nâḍikâ (*4 Stunden*) nach dem Comm. zu Âçv. Çr. 3,12,2. = *drei* Muhûrta (*2 Stunden und 24 Minuten*) Taitt. Âr. im ÇKDr. und Comm. zu TBr.

सङ्गवत् (von सङ्ग) adj. *hängend an:* विषयेष्वसङ्गवान् R. 3,37,23.

संगविनी (von संगव) f. nach Sây. *der Ort, wo die Kühe zum Melken zusammenkommen:* भरतानां पशवः सायंगोष्ठाः सत्तो मध्यंदिने संगविनीमयन्ति Ait. Br. 3,18.

संगाद् m. *conversation* bei Benfey und nach ihm bei Monier Williams beruht auf einer falschen Auffassung der Worte दुष्टसङ्गाद्दोषिणी: *durch die Berührung mit Unreinen nicht unrein werdend* Mârk. P. 35,21.

संगायन (von 2. गा mit सम्) n. *gemeinsames Besingen* Kâty. Çr. 20,3,8.

सङ्गिक m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,2182.

सङ्गिन् (von सङ्ग oder सङ्ग) adj. 1) *hängend an, steckend an, in auf:* प्रबुद्धचूत° (परभृता, भ्रमरी) Mâlav. 60. शरदभ्रोधरोत्सङ्गसङ्गिनीवेन्दवी कला Kathâs. 22,107. शरावच्छिद्र° 29,145. वृत्तायः (पाश) 96,16. भुञ्जतो पिबतो वापि सङ्गिभिर्मलविप्रुषैः Mârk. P. 51,58. यस्त्राणि करपल्लवसङ्गीनि 84,26. — 2) *in Berührung, — in Contact kommend:* घंघुमाला सूर्यस्य द्विजचणडालसङ्गिनी Mârk. P. 18,32. सदङ्गसङ्गी पवनः 15,48. — 3) *mit dem Herzen hängend an, einer Person oder einer Sache ergeben, obliegend:* योषिताम् Bhâg. P. 5,5,2. स्त्री° 9,10,11. 11,14,29. fg. 3,31,35. भगवत्सङ्गिन् 1,18,13. 4,24,57. 30,34. Kathâs. 58,60. काम्यवस्तुषु नवेषु Rudr. 19,16. यमु° Harîv. 11902. यात्म° MBh. 14,1304. सत्य° 5, 4911. कर्म° Bhag. 3,26. 14,15. Spr. (II) 1868. 4735, v. l. सुख° Çiç. 108. ohne Ergänzung *an der Sinnenwelt hängend:* तारुण्य Kathâs. 27,183. अ° *nicht a. d. S. h.* Bhâg. P. 1,11,38. 4,14,15. 7,7,19. 11,25,26. *frei von allen Gelüsten:* योग Mârk. P. 16,6. — Vgl. पत्सङ्गिन्.

सङ्गिय m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,3449.

संगिर् (von 1. गर् mit सम्) f. *Zusage, Versprechen* RV. 9,86,16. 10,89,9.

संगिर् (von 2. गर् mit सम्) adj. *verschlingend* AV. 6,135,3.

संगीत (s. auch u. 2. गा mit सम्) n. *vielstimmiger Gesang, Concert, Gesang überh.* Hall. 1,95. गीतं वाद्यं नर्तनं च त्रयं संगीतमुच्यते Verz. d. Oxf. H. 200,b, No. 476. °लास्याभिनयादिमेषु ललितेषु तासाम् 256,a, 16. °प्रकरण 87,a,5. °निर्णय 201,a, No. 480. चिरसंगीतोपासन Mṛicch. 2,11. °रचना Mâlav. 19,1. ऋगुः सुकण्ठो गन्धर्व्यः संगीतं सप्तभूमिकाः Bhâg. P. 10,84,46. Pañcat. 1,12,5. गन्धर्वराजः संगीतं (also auch *ein einstimmiger Gesang*) त्रयी 11,1. °संनादाः Bhâg. P. 8,2,6. °गीतिन् (wohl so, nicht °गीति) adj. Ind. St. 8,303. वनान्तसंगीतमध्यः Kumâras. 5,36. किंनरीगीतैः कोकिलानां कूजितैः। रुतैरलीनां संगीतमृतुराजस्य तन्यते Kathâs. 54,86. भृङ्गी° 22,103. सरसारब्धसंगीता विद्याधरवराङ्गना: 10. °वत् adv. Bhâg. P. 3,17,10. संगीत so v. a. संगीतशास्त्र Verz. d. Cambr. H. 54.

संगीतक n. dass. Kathâs. 50,131. °ध्वनि 17,107. °रस 44,185. प्रवृत्त Mâlav. 17,18. °कं या-रभ् 3,11. कृ Mṛicch. 2,11. सेव् Kathâs. 21,4. धनु-स्था Prab. 3,3. Dhûrtas. 77,9. वि-धा Çaṅk. 14,33. सूत्रय् 55. धव तृ Dhûrtas. 68,4.

संगीतकगृह n. *Concertsaal* Kathâs. 52,234.

संगीतकौमुदी f. Titel eines über *Gesang* u. s. w. handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201,a, No. 480.

संगीतदर्पण m. desgl. ebend. 200,b, No. 476. fgg. Verz. d. B. H. No. 1384.

संगीतदामोदर m. desgl. Notices of Skt Mss. 219.

संगीतनारायण n. desgl. ebend. 180. Verz. d. Oxf. H. 201,a, No. 480 (masc.).

संगीतरत्नमाला f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 201,a, No. 480.

संगीतरत्नाकर m. desgl. ebend. 72,b, 10. 126,a, 32. 199,b, No. 471. fgg. 201,a. No. 479. °कलानिधि 72,b,11.

संगीतविद्या f. *die Lehre vom Gesange* Pañcat. 1,11,25.

संगीतवेश्मन् n. *Concertsaal* Kathâs. 34,170.

संगीतशाला f. dass. Mṛicch. 2,7. Çiç. 59,3 (im Prâkrit).

संगीतशास्त्र n. *ein über Gesang u. s. w. handelndes Werk* und Titel eines best. solchen Werkes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Cl. 37. Verz. d. Oxf. H. 108,a, No. 168. °सक्षेप 200,b, No. 476; vgl. u. शाम्यताल.

संगीतसार m. Titel eines über *Gesang* u. s. w. handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201,a, No. 480. Verz. d. B. H. No. 1384.

संगीतार्णव m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 201,a, No. 479.

संगीति (von 2. गा mit सम्) f. P. 3,3,95, Schol.; vgl. 8,2,139. 1) *Unterhaltung:* संकथा = धन्योऽन्यसंगीतिः Hall. 4,94. — 2) *ein best. Arjâ-Metrum:* 32 + 29 *Moren* Colebr. Misc. Ess. 2,154. — Vgl. धर्म°.

संगीतिपर्याय m. Titel eines buddhistischen Werkes Burnouf, Intr. 448. Wassiljew 107. Târan. 296.

संगीतिप्रासाद m. *Berathungssaal* und *Concertsaal* Vikrp. 131.

संगुण (सम् + गुण) adj. *multiplicirt:* त्रि° Vaṛâh. Bṛ. 7,11. Ganit. Bhâgâṇḍ. 8. 14. Prâtiçâkhyac. 19. संगुणीकृत adj. dass. Golâdhj. Jantrâdh. 12.

संगुप्त 1) adj. s. unter 1. गुप् mit सम्. — 2) m. *ein* Buddha Trik. 1,1,10. H. 234.

संगुप्ति (von 1. गुप् mit सम्) f. 1) *das Hüten, Bewahren:* शरीर° MBh. 12,4530. — 2) *das Verbergen* Prâtiçâkh. 54,a,2.

संगृहीत s. u. ग्रभ् mit सम्. In der Bed. *zusammengezogen, verkürzt* Verz. d. B. H. No. 620. fg.

संगृहीतृ (von ग्रह् = ग्रभ् mit सम्) nom. ag. *Rossebändiger, Wagenlenker* P. 3,2,135, Vârtt. 6, Schol. (VS. 16,26 richtiger संग्र°). Mâlav. 89 (die Bomb. Ausg. संग्र°). *Lenker, Regierer* überh., *der Alles im Zaume hält:* गोप्तारः संगृहीतारो दातारः क्षत्रियाः स्मृताः MBh. 8,1269. 12,8366. R. 6,107,6. Die falsche Form ist nicht einmal metrisch verschieden von संग्रहीतृ.

संगृहीति (wie eben) f. *das im Zaume Halten, Bändigung:* द्विषिक्° नाः 10. °वत् adv. Bhâg. P. 3,17,10. संगीत so v. a. संगीतशास्त्र Verz. d. Cambr. H. 54.

(= सर्प und छत्र) Vâsavad. 19,1.

संगोपन (von 1. गुप् mit सम्) 1) adj. *verbergend:* आत्म° (गाम्भीर्य) Paśâśar. 1,14,108. — 2) n. *das Verbergen:* दृक्स्य° Sin. D. 108,23.

संगोपनीय (wie oben) adj. *zu verbergen, geheim zu halten:* धृति° Paśâśar. 1,15,23.

संग्रन्थन (von 1. ग्रथ्, ग्रन्थ् mit सम्) n. *das Zusammenknüpfen u. s. w.:* कलहस्य so v. a. *das Anstiften, Beginnen* MBn. 2,1976.

संग्रसन (von 1. ग्रस् mit सम्) n. *das Verschlingen, Fressen:* ग्रस्यतसंग्रसनव्याक्तव्यालतुण्ड Bhâg. P. 10,12,19.

संग्रह (von ग्रह = ग्रभ् mit सम्) m. 1) *das Ergreifen:* कर्कट° (besser कर्कटकग्रह) Spr. (II) 4523, v. l. वायुध° 7218. कृतकाषाय° adj. so v. a. *das Anlegen* Râśa-Tar. 3,320. *das für sich Nehmen, Behalten:* प्रदानं च प्रदेयानामदेयानां च संग्रह: Kâm. Nîtis. 13,52. Râśa-Tar. 5,174. fg. *das Bekommen, Erhalten:* गृहसंग्रहकृतत्परा: Harîv. 6503. *das zu sich Nehmen, Geniessen:* स्वधा° Raghu. 1,66. भेषज° Spr. (II) 6348 (pl., v. l. sg.). — 2) *das* (auf übernatürliche Weise geschehende) *Zurückholen eines abgeschossenen Pfeiles u. s. w.* MBn. 10,692. R. 6,69,32. *die darüber handelnde Lehre* (in ähnlicher Verbindung aber in anderer Bed. Ind. St. 1,21,13) MBn. 9,2471. Harîv. 4910; vgl. संहार. — 3) *das Beisammenlassen:* ऊधस्केतु° ṚV. Prâtiś. 11,2,33. — 4) *das Zusammenbringen, Sammeln, Aufspeichern, Anhäufen; Vorrath:* सर्वस्य M. 9,11. सस्याद्दे: Kâm. Nîtis. 12,18: Raghu. 17,60. Spr. (II) 1303, v. l. 2183. 2209. 2505. 2742, v. l. 3144. 5087. 6676. Vaśiṣ. Dhn. S. 40,14. 42,3. 4. Râśa-Tar. 6,70. Hit. 91,2. Var. in LA. (III) 15,3. Schol. zu P. 3,3,36. सुभाषितमपेक्ष्यो: संग्रहे न करोति य: Spr. (II) 7114. रसधान्येध्म° *Vorrath von* 6239. धर्म° MBn. 5,7146. Spr. (II) 292. 3678. 4230. धर्मार्थ° R. 4,28,1. 5,51,14. चारित्र° 7,13,18. गुण° Bhâg. P. 4,20,26. *das Versammeln, Zusammenbringen* (von Menschen): दित्सु सर्वासु सेन्यानां सर्वेषां कुरु संग्रहम् R. 4,25,30. बलानाम् 5,72,20. कृतप्रकृतिमुख्य° adj. Raghu. 19, 55. — 5) *Zusammenstellung, vollständige Aufzählung:* सप्ति° Jâṭ. 3, 90. पर्व° MBn. 1,311. नाम° 13,1114. Suçr. 1,150,3. Daçar. 1,39. Sâh. D. 389. Spr. (II) 2913, v. l. °पाठ im धनुर्वेद Ind. St. 1,21,13. Sudhâk. zu P. 7,2,63. उक्तानामप्यनुक्तानां शब्दानामिह संग्रह: Hall. 5,61. नानार्थसंग्रहं कुरु Tait. 3,3,1.5,1. *Sammlung:* कथा° L.A. (III) 32,1. Hit. in den Unterschrr. der Bücher. *Gesammtheit, Inbegriff, das Ganze* Bâlar. 155. कारणं कर्म कर्तेति त्रिविध: कर्मसंग्रह: Bhag. 18,18. इन्द्रिय° Kâm. Nîtis. 1,31. Bhâg. P. 4,28,57. R. 5,42,3.4. Vaśiṣ. Dhn. 12,9. 28(36),6. सुरतोत्सव° Mṛicch. 87,6. सर्व° = कोश Hall. 5,54. लोक° VP. 1,2,56. काल° (ed. Bomb. °पर्याये) *die ganze Zeit* so v. a. *Termin* R. 4,31,3. संग्रहेण *vollständig* R. Scut. 2,56,25. *ein vollständiges Compendium* und Titel von solchen Compendien (insbes. eines grossen grammatischen Werkes des Vjâḍi) Tait. 3,2,24. gaṇa कथादि zu P. 4,4, 102. सर्वे वेदा: — सोपवेदोपनिषद: साङ्गस्या: ससंग्रहा: MBn. 8,4414. Vers. d. Oxf. H. 12,a,28. (ग्रन्थम्) ससूत्रवृत्त्यर्थपदं सकार्थं ससंग्रहम् (Vjâḍi's Werk nach dem Comm.) R. 7,36,45. क्रतुसंग्रहपरिशिष्ट Ind. St. 1,59. 3,42. 127. 159. fgg. सर्वशाकुन° Vaśiṣ. Dhn. S. 86,4. वृत्त° 104, 64. ससंग्रहं व्याकरणमधीते P. 5,3,79, Schol. Vers. d. Oxf. H. 279,b, 34. 292,a,12 (गृह्य°). °कार 271,a,9. 10. 274,a, No. 649. Notices of Skt Mss. 2,57. Colebr. Misc. Ess. 1,234. 300. Vgl. 11). — 6) *das Umfassen, Einschliessen, Mitbegreifen:* उत्तमग्रहणमुपात्तस्यापि संग्रहार्थम् Schol. zu P. 5,4,90. Kâśik. 24,3. 53,4. Kull. zu M. 3,117. — 7) *was Etwas umfasst, einschliesst; Behälter* Bhâg. P. 3,8,25. 4,17,30. 21,24. 24,43. — 8) *das im Zaum Halten:* मनस: Bhâg. P. 11,20,21. दुष्टानाम् (Gegens. पालन) Var. in LA. (III) 1,19. — 9) *das in Ordnung Halten, Bewahren, Hüten:* राष्ट्रस्य M. 7,118. fg. MBn. 12,3261. der Welt im Gegens. zu निग्रह Bhâg. P. 7,2,39. — 10) *Lenker, Regierer, Behüter:* सर्वलोकामृतस्य° Bhâg. P. 4,14,21. सर्व° R. 1,6,1. ततो निहत्य काकुत्स्थो लक्ष्मणं हरि संग्रहम् etwa *Verfüger, Anordner* 7,103,15. = सम्यगुत्कार्षणवत्तम् Comm.; eher संग्रहे in der Bed. 14) zu lesen. — 11) *Zusammendrängung, kurze Darlegung* Mân. P. 53,9 (wohl उत्पत्तिसंग्रहे zu lesen). संग्रहेण *in Kürze, mit kurzen Worten* Kathâs. 2,16. Buâc. 8,11. Spr. (II) 3233. Bhâg. P. 4,8,3. संग्रहात् dass. MBn. 6,178. 13. 2630. fg. Sarvadarśanas. 53,21. सर्वस्तवचनसंग्रहपर 31,14. संग्रहे प्रवृत्ता वयम् 41,3. 97,8. °श्लोका: 108,3 (संग्रह als Titel eines Werkes gefasst von Hall 164). राद्धान्त° 127,13. fg. Bhâg. P. 2,7,51. 11,23, 60. मद्रीये लघुसंग्रहे Verz. d. Oxf. H. 252,b, No. 626. भूतार्थ° Spr. (II) 3593. शिरस्कृत्स्यामि वै कारदानस्य संग्रहम् (vgl. कारसंतेप 13802) so v. a. *kurze Antwort auf* Harîv. 13800. इति महचनाद्रामो वक्तव्यो मम संग्रहम् (so lesen wir st. संग्रह:) R. 7,48,18. Vgl. 5). — 12) *Verengerung, Schmälerung; schmale Stelle:* वाङ्मय Vâgbh. 1,25,13. Schol. zu Kâty. Çr. 688,17. मध्य° 217,23. — 13) *Verstopfung;* s. °ग्रहणी. — 14) *das Herantreten, für sich Gewinnen; freundliche —, liebevolle Behandlung:* सामदानार्थसंयुक्त: संग्रह: परिकीर्तित: Buâg. Nirjaç. 19,34. 62. 34,33. Daçar. 1,37. Sin. D. 370. Prabodhâc. 37,a,1. धनै: कार्यो ऽस्य (मित्रस्य) संग्रह: M. 3,138. साधूनाम् 8,311 (Gegens. निग्रह). मित्र° Spr. (II) 1939. 2261. 2916. MBn. 1,3620 (Gegens. विग्रह). 5,968 (Gegens. निग्रह). 13, 4313. R. 2,98,6. R. Gorr. 1,4,59. 4,28,10. 5,90,12. fg. Kâm. Nîtis. 3. 39. 13,74. 19,2. Spr. (II) 1447. 3204. Râśa-Tar. 5,295. Hit. 92,17, v. l. Bhâg. P. 10,84,13. — 15) *das zur Ehe Nehmen, Heirathen:* चित्राङ्गदा° MBn. 1,125 in der Unterschr. des Adhjâja. — 16) *Auffassung, Wahrnehmung:* स्पर्शस्य Bhâg. P. 3,26,35. *das Verstehen:* वैयाकिकस्य Kap. 1,36. सत्संग्रह adj. *der von Guten verstanden wird* Bhâg. P. 5.9, 44. सु° etwa *leicht zu fassen* Harîv. 11573. — Die indischen Lexicographen kennen folgende Bedd.: ग्रह Med. h. 25. ग्राह (st. विग्रहो ist संग्रहो zu lesen) H. an. 3,770. समाकृति AK. 1,1,5,7. H. 257. संतेप Tait. 3,3,461. H. 1432. H. an. Med. Hall. 4,61. बृहद्बृहद्ग H. an. बृहद्बृहद्ग (statt dessen बृहत् und उत्तुङ्ग ÇKDa. nach ders. Aut.; vgl. unter संग्राह्य) Med. मुष्टि Vaiçya im ÇKDa. स्वीकार, सम्भोग Nânârtharatnam. ebend. — Vgl. धनेकार्थ°, तर्क°, दार° (auch MBn. 1,1048. 13, 6087. R. 2,37,22. Kathâs. 24,153), द्रव्यसार°, धनंजय° (unter धनंजय 2) b) in den Nachträgen), धर्म° (s. auch oben u. 4), नानार्थ° (unter नानार्थ 3), नाम°, न्याय°, पाणि° (auch R. Gorr. 1,75,21 und zwar bei der Verlobung), पुत्र°, बिन्दु°, भगवन्नाममाहात्म्यसमन्वय°, भारतसंग्रहदीपिका, भावनासार°, योग°, योगवृत्ति°, रत्न°, लोक° (in der 2ten Bed. auch Buâg. 3,20. Spr. (II) 3733, v. l. *Gesammtheit der Welten* VP. 1,2,56), वास्तु°, वृत्ति°, वैद्य°, वैद्यकसार°, व्रत°, शास्त्रसिद्धान्तलेश°, सार°, सु-

ति°, स्मृतिसागर° und सांयक्लिक.

संयक्प्रक्षणी f. *eine besondere Form von Diarrhoe abwechselnd mit Verstopfung* (संयक्) Buhvapr. 7. Wise 337.

संयक्षण (von यक्ष् = यभ् mit सम्) 1) adj. *ergreifend* AV. 19,38,3. Gobr. 3,6,4. — 2) f. ई = संयक्ष्यक्षणी Buhvapr. 7. — 3) n. a) *das Ergreifen*; s. पाणि°. *das Bekommen, Erhalten, in den Besitz Gelangen von:* सर्वसंयक्षणं येषां (मन्त्राणां) देवतैरपि दुर्लभम् R. 1,29,22. — b) *das Sammeln, Anhäufen:* सस्य° Kathās. 55,27. कोश° R. Gorr. 1,7,7. विद्या° Spr. (II) 3042, v. l. — c) *das Zusammenbringen mit, Einfügen:* कनकभूषणसंयक्षणोचितो मणिः Spr. (II) 1526. — d) *das Zusammenstellen, ein vollständiges Aufzählen* Ind. St. 1,21,24. — e) *das Lenken:* कृप° MBh. 3,2796. — f) *das Verdichten, Verdicken:* घयाम् Kull. zu M. 1,18; vgl. संघात Kap. 5,2,8. — g) *das Einhalthun, Hemmen* Suçr. 2,430,10. स्रेक्° 15,1. दोषाणाम् 196,5. des Durchfalls Çiāñc. Saṁh. 3, 4,29. Vicbr. 1,6,36. — h) *das Heranziehen, für sich Gewinnen, Geneigtmachen:* मनोयक्षणं वै संयक्षणम् TS. 2,3,9,3. MBh. 1,7512. सत्र° 12,4811. 15,230 (Gegens. नियक्षण). 15,230. सक्षणानाम् Spr. (II) 5413. Verz. d. Oxf. H. 256,b,7. — i) *das Unrecht Treiben:* स्त्री° M. 8,6. ohne स्त्री 72. 356. fgg. Jiñ. 2,72. 283. Mit. 338. fgg. Vaṁs. Bḥ. S. 86,70. 96,3. 5. नराणाम् 9. — Vgl. सांयक्षण.

संयक्ष्वन् (von संयक्) adj. *mit einer gedrängten Wiederholung des Gegenstandes versehen* Verz. d. Oxf. H. 63,a, No. 111.

संयक्सूत्र n. wohl *ein einen best. Gegenstand kurz zusammenfassendes* Sûtra; vgl. सांयक्सूत्रिक.

संयक्ष्विन् (von यक्ष् = यभ् mit सम्) nom. sg. *Sammler, Zusammenbringer, Herbeischaffer:* रत्नानाम् Spr. (II) 3135, v. l. सर्व° MBh. 2,2569. — Vgl. संयाक्ष्विन्.

संयक्षीतृ (wie eben) nom. sg. *Rossebändiger, Wagenlenker* VS. 16, 26. Air. Br. 2,25. TS. 1,8,9,2. TBr. 1,7,3,5. 9,6. 3,8,5,3. Çat. Br. 5, 3,1,3. 4,3,23. Kâtj. Çr. 20,1,16. Milav. 89 (nach der Lesart der ed. Bomb.). — Vgl. संगृक्षीतृ.

संयाग (सम् + याग) m. (nach Sidd. K. 249,a,14 auch n.) 1) *Volksversammlung:* ये संयागाः समितियास्तेषु चारु वदेम ते AV. 12,1,56. *Schaar, Haufen:* यः संयागान्वर्यति स युधे (TS. v. l.) 4,24,7. — 2) *das feindliche Zusammentreffen zweier Haufen, Kampf* Naigh. 2,17. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,142. AK. 2,8,2,74. H. 796. Hall. 2,398. AV. 5,21,7. 11, 9,26. °मे संयत्तः, °मे ईयति TS. 2,1,2,1. 3,4. Çat. Br. 1,2,5,18. 5,2,5. 2,6,2,1. Âçv. Gṛhj. 3,12,1. M. 7,94. Jiñ. 3,27. MBh. 3,2626. 15761. R. 2,75,29. R. Gorr. 2,8,14. Spr. (II) 294. 6077. Vaṁs. Bḥ. S. 3,20. 30,4. 43,28. 63,2 (unter Hahoon). Prab. 75,1. Mârk. P. 19,28. fg. Bhâg. P. 8,11,7. उत्क्षण 6,14,6. देवासुर R. 2,107,4. वक्राङ्ग° Râja-Tar. 6, 138. न निवर्तेत संयागात् M. 7,87. संयागेषनिवर्तित्वम् 88. R. 2,64,10. नोत्सृष्टश्चैव संयागः Mârk. P. 13,13. सुराणामसुराणां च सर्वघोरतरः MBh. 1,1168. 3,12148. दानवैः Harîv. 3388. Râja-Tar. 4,164. तेन सार्धं सुदारुणः 4,172. सर्वं युतशर्मणा Kathās. 46,177. मद्दामोहेन सङ्गस्माकं संप्रवृत्तः संयागः Prab. 72,6. नहि शक्तो ऽस्मि संयागे स्थातुं तस्य दुरात्मनः R. 1,22,19 (23,19 Gorr.). संयागान्सुबहून्कृत्वा तत्रियैः MBh. 2,1054. एते मया महाघोराः संयागाः पर्युपासिताः 3,12151. दश चाष्टौ च संयागान् ग्रासंधस्य यादवाः । दृढः Harîv. 5126. 5133. R. Gorr. 2,8,18. व्यधुः । एकाङ्गैः सह संयागम् Râja-Tar. 5,288. Paddh. 238,21. fg. °मूर्धनि MBh. 4,1218. Bhâg. P. 1,15,30. संयागाये Râja-Tar. 4,705. °कर्मसु 6,181. °मृत्युः (v. l. संयागे मृ°) Hit. 75,17. नरेन्द्र° Vaṁs. Bḥ. S. 17,28. योषित्कृते° Spr. (II) 4428. दृढ° Kathās. 48,106. विजित° adj. (शूर) Spr. (II) 2423. — 3) N. pr. zweier Männer Râja-Tar. 5,305. 423. 6, 171. 280. Verz. d. Oxf. H. 148,a,9. — Vgl. श्री°, सांयाग, सांयागिक.

संयागगुप्त m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 6,136.

संयागजित् 1) adj. *siegreich im Kampf* AV. 5,20,10. Çat. Br. 13,5, 4,9. MBh. 3,2477. Mârk. P. 101,4. °जित्तम superl. 118,2. — 2) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,116. eines Sohnes des Kṛshṇa Harîv. 9187. VP. 591. Bhâg. P. 10,61,17. — Vgl. सांयागजित्य.

संयागतूर्य n. *Schlachttrommel:* °तूर्येषाक्लेषु Paddh. ed. orn. 57,14.

संयागदत्त m. N. pr. eines Brahmanen Kathās. 38,101.

संयागदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Râja-Tar. 6,90. 95. 99.

संयागनगर m. N. pr. einer *Stadt* Râja-Tar. 8,2446.

संयागपटह m. *Schlachttrommel* Taik. 1,1,163.

संयागपाल m. N. pr. eines Fürsten Râja-Tar. 7,334. 590 963. 1187. 8,291.

संयागभूमि f. *Kampfplatz, Schlachtfeld* MBh. 8,727. 2868. Paddh. ed. orn. 57,14.

संयाग्य् (von संयाग), °यते (nach Vop. auch °यति) *kämpfen* Dhâtup. 35,68. Siddh. K. 160,b,1. — desid. s. सिसंयाग्यिषु.

संयागराज m. N. pr. zweier *Fürsten* Râja-Tar. 6,335. 338. 7,8. 91.

संयागवर्धन m. N. pr. eines Mannes Kathās. 75,55. 93.

संयागवर्म m. desgl. ebend. 54,138.

संयागसाहि m. N. pr. eines *Fürsten* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Cl. 14.

संयागसिंह m. N. pr. eines Beamten in der Unterwelt Kathās. 118,137.

संयागसिंहि m. N. pr. eines Elephanten Kathās. 121,276.

संयागापीड (संयाग + धा°) m. N. pr. zweier Fürsten Râja-Tar. 4, 490. 492. 673. 705.

संयागाशिस् (संयाग + धा°) f. *Schlachtgebet*, personif. Ind. St. 3,242,a.

संयागिक fehlerhaft für सांयागिक.

संयाग्य (von संयाग) 1) adj. *zum Kampf geeignet* Nir. 6,33. — 2) n. = संयाग *Kampf:* संयाग्ये (संयागे?) संयत्ते Kâtj. 9,14.

संयाक् (von यक्ष् = यभ् mit सम्) m. = मुष्टि (nach dem Schol. zu P. *Faust*, nicht *Griff*: यक्षो मल्लस्य संयाक्; P. 3,3,86 (vgl. 8,2,144). *Faust* AK. 3,3,14 (= मुष्टिबन्ध *das Ballen der Faust*). H. 597. Hall. 2,368. *Griff eines Schildes* AK. 2,8,2,33. H. 784. Zu belegen ist nur घसंयाक् adj. als Beiwort gut gearteter Pferde MBh. 5,3262. nach Nilak. *sich nicht bäumend:* संयाक्: वक्रदृङ्गः (vgl. unter संयक् am Ende) क्षेपणपूर्वकमयपादन्यासमुत्प्लवनमिति यावत् तद्रक्षिताः घसंयाकाः संयाक्षो वक्रदृङ्ग इति विशः.

संयाक्क (wie eben) adj. (f. ई) 1) *zusammenfassend, in kurzen Worten darlegend:* सूत्र Sarvadarçanas. 20,22. घवशिष्टानामवपवानी °का: क्वचिदक्व: श्लोका: Naiṣadhîyâr. 4,7. स्तवकार्थसंयाक्कश्लोक Kuṭṭan. 19,17. 24,16. 42,5. — 2) *zusammenziehend, hemmend, stopfend* (z. B. den Durch-

fall) Suçr. 1,148,8. 152,7. कषायो रस: 156,15. 190,3. 198,12. 211,15. 2,440,12. Karaka 1,3.

संयाक्किन् (wie oben) 1) adj. a) *sammelnd:* रत्नानाम् Spr. (II) 3135. — b) = संयाक्क 2) Suçr. 1,175,16. 179,20. 200,13. 2,444,11. Çiku. Saṃh. 3,4,23. — c) *an sich heranziehend, für sich gewinnend:* लोक° Kim. Nitis. 4,19. — 2) m. *Wrightia antidysenterica R. Br.* Rágan. im ÇKDa. — Vgl. संयक्किन्.

संयाक्षी (wie oben) adj. 1) *zu umfassen, zu umfangen:* मध्ये योषा Cat. Ba. 1,2,8,16. — 2) *zu hemmen, zu stillen:* घसृङ् Suçr. 2,471,6. — 3) *an sich heranzuziehen, für sich zu gewinnen* Hit. 91,10. नाविग्रो नानृ-ब्रु: पार्श्वे नाप्रज्ञो नामकाधन: । संयाक्षो वसुधापालैर्भृत्य: so v. a. *anzustellen* MBh. 12, 4344. 13, 4387. — 4) *anzunehmen, zu beherzigen:* वचन Pañkat. 158,12. besser यात्रा ed. Bomb.

संर्घ (von हन् mit सम्) m. P. 3,3,86 (vgl. 6,2,144). *Schaar, Haufe, Menge* AK. 2,8,41. H. 1412. Halây. 4,1. P. 3,3,43. 4,3,127. मरुर्घी-णाम् MBh. 3,1841. मेखलिनाम् R. 2,32,21 (मरु°). रिपूणाम् Rágat. 6,224. देव° Bhâg. P. 1,19,18. असुर° MBh. 1,1110. 3,12183. पिशाच° Varâh. Bṛh. S. 39,1. मर्त्य° 19,7. शिष्य° 24,2. मरुर्षि° 43,52. ऋषि° Çvetâçv. Up. 6,21. R. 1,60,23. H. 31 (so v. a. *Versammlung*). नर° R. 2,99,2. जीव° Bhâg. P. 4,25,7. भूत° 11,20. भूतविशेष° Bhag. 11,15. वधूनाटक° R. 1,5,18. शत्रु° MBh. 1,5905. शिल्पि° Raghu. 16,38. नि-षाद° Varâh. Bṛh. S. 5,76. पक्षिमृग° 21,16. गोमायुगृध° 97,9. घशाश्व-तर° MBh. 4,535. ग्राम्यपशु° P. 1,2,73. पृषत° R. 2,93,2. पक्षि° 56,10. Varâh. Bṛh. S. 46,70. नानापतग° MBh. 1,1106. मयूर° Harîv. 8788. पतंग° MBh. 3,13656. मीमांसाधिकरण° Kathâs. 41,43. घस्थि° Bhâg. P. 2, 1,33. काष्ठ° Suçr. 2,502,4. धूम°, मेघ° MBh. 1,1128. रत्न° 3,12083. कर्म्मप्रासाद° R. Gorr. 2,100,30. शस्त्र° Mâlav. P. 88,60. दोष° Tattvas. 29. Ohne nähere Angabe so v. a. मुनि° Bhâg. P. 1,15,11. so v. a. शत्रु° Rágat. 6,226. *eine zu einem best. Zweck vereinigte grössere Anzahl von Menschen* M. 8,219. Sîm. D. 417. bei den Buddhisten so v. a. *die Gemeinde* Wassiljew 68 u. s. w. Sarvadarçanas. 24,16. °भेद Vjutp. 192. °भेदक 203. संघाधीन 215. — Vgl. घार्य°, प्र° (ed. Bomb. प्रवर्ष), भिक्षु°, भूत°, मूल°, वृद्ध°, व्याधि°.

संघक m. dass.: दैत्य° Pañkat. 2,6,17.

संघगुप्त m. N. pr. des Vaters von Vâgbhaṭa Verz. d. Oxf. H. 303, a, No. 741. fg. 357, a, No. 848. Târan. 312. Vgl. संघपति und सिंहगुप्त.

संघगुप्ता m. N. pr. eines Mannes Târan. 90. 312.

संघचारिन् 1) adj. *in Schaaren gehend* MBh. 9,847 (मरुच्चारिन् ed. Bomb.). शतवानरगोपुच्छा: R. Gorr. 1,20,11. — 2) m. *Fisch* H. 1344.

संघचारिन् adj. *in Gesellschaft lebend, einer schweifenden Bande angehörig* H. 480.

संघट (von घट् mit सम्) v. l. für संघट्ट im gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. — Vgl. 2. संघर् und संघाटिका.

संघटक (wie oben) als Erklärung von संघि TBr. Comm. 3,349,6.

संघटन (wie oben) n. und °ना f. *Verbindung, Vereinigung* (Gegens. विघटन) Sîm. D. 122,8. 22. विरूपयो: 720. पद° 624. वर्ण° 119,19. *Laut-, Wortgefüge;* = बन्ध Comm. zu Kâvyâd. 1,47.

संघटिन् s. संघट्टिन्.

1. संघट्ट (von घट्ट mit सम्) gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. 1) m. (am Ende eines adj. comp. f. घा) *Zusammenstoss* MBh. 7,506. 838. 12,11164. R. Gorr. 2,54,6. Megh. 54. Mâlatîm. 74,13. 144,11. Kathâs. 38,24. 60. 31. Paṛ. 81,6. Spr. (II) 3739. 5693. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,543,2. Pañkat. 35,5 (ed. orn. 31,6). 165,8. असंघट्टमुखम् *wobei kein Zusammenstoss —, keine Collision stattfindet* Rágat. 14,86. — 2) f. घा *Schlingpflanze* Çabdar. im ÇKDa. richtiger wäre संघटा. — Vgl. संघट्टिक.

2. संघट्ट m. fehlerhaft (aber durch das Metrum geschützt) für संघट्ट *Verbindung, Vereinigung* Tithâdit. im ÇKDa.

संघट्टचक्र n. *ein best. astrologisches Diagramm* Verz. d. Oxf. H. 334, a, 28. fgg.

1. संघट्टन (von घट्ट mit सम्) 1) m. *ein best. gespenstisches Wesen* Harîv. 9539. — 2) n. *das Zusammenstossen:* कटि° Rágat. 6,158.

2. संघट्टन n. und °ना f. fehlerhafte Schreibart für संघटन, °ना. s. = संधि Taitt. 3,3,225. = उत्किरण Schol. zu Naish. 22,47. वीरसंघट्टनं या-वदकरोत् Rágat. 6,340. मालाकारीगृहे द्वाभ्यां संघट्टनं कृतम् Vet. in LA. (III) 19,11. बीजानुकूलसंघट्टनप्रयोजनविचारो युक्ति: Prathâpar. 21,a,4. रीतिर्नाम गुणान्वितपदसंघट्टना मता 11,a,9. 92,a,9. Sîm. D. 6,14.

संघट्टिन् m. *Geführte, Anhänger* Bhâg. P. 5,10,6. कृष्ण° 10,18,20. 23. Ungenaue Schreibart für संघटिन्.

संघतल m. = संकुतल ÇKDa. angeblich nach AK.

संघतिर्य (von संघ) adj. *in Schaaren —, in Menge vorhanden* P. 5,2, 52. Vop. 7,42. — Vgl. गणतिथ, पूगतिथ, ब्रह्मतिथ.

संघदास m. N. pr. eines Mannes Wassiljew 207. Târan. 104. 127. 135. 146. fg.

संघपति m. 1) *Vorstand der buddhistischen Gemeinde;* davon nom. abstr. °त्व n. Çâk. 14,34. Vgl. संघाधिप. — 2) m. N. pr. des Vaters von Vâgbhaṭa Verz. d. B. H. No. 929; vgl. संघगुप्त.

संघपुष्पी f. *Grislea tomentosa Roxb.* Rágan. im ÇKDa.

संघभद्र m. N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 567. Hiouen-thsang 1,183. 222. fg. Vie de Hiouen-thsang 93. 102. Târan. 119. 123. 318. fgg. Vjutp. 90.

संघमण्डल n. Wilson, Sel. Works 2,37.

संघरक्षित m. N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 30. 313. fgg. Wassiljew 279. Târan. 104. 135. fg. 138.

संघर्ष (von घर्ष् mit सम्) m. 1) *Reibung* Çabdar. im ÇKDa. MBh. 1, 1134. 3, 1610. 7, 3713. 4004. Harîv. 11339. 13894. R. 1, 20, 10 (27, 9 Gorr.). Suçr. 2,19,5. 312,18. Kathâs. 47, 31. Spr. (II) 2682. Bhâg. P. 11,13,7. — 2) *wollüstige Erregung* MBh. 13,840 nach der Lesart der ed. Bomb. st. संकर्ष der ed. Calc. — 3) *Wettstreit, Wetteifer, Eifersucht* H. 1515, Schol. Çabdar. im ÇKDa. सुराणामसुराणां च समजायत वै मिथ: । ऐश्वर्ये प्रति संघर्ष: (Nîlak. scheint ऐश्वर्ये प्रतिसं° gelesen zu haben) MBh. 1,2127. 5,3260 (संकर्ष ed. Bomb.). 9,1251 (संघर्षेणा° zu lesen; संघातेना° ed. Bomb.). 12,49. R. 7,42,14. 101,13. Kathâs. 15,142. 18,130. 74,80 (तत् von सं° zu trennen). Spr. (II) 5329. Daçak. 66,11. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 315. VP. bei Muir, ST. 1,193, N. 15. Bhâg. P. 11, 30, 13. यत्रभवतो: परस्परेण ज्ञानसंघर्षो जात: Mâlav. ed. Bomb. 14,9. 10. °शालिन् *eifersüchtig* Kathâs. 18,139. — 4) = संसर्ग Çabdar. a. a. O. —

Vgl. दन्त°.

संघर्षण (wie eben) n. 1) *das Reiben, Reibung:* घाणा: Mân. P. 35,6. वेणु° Bric. P. 5,6,9. beim coitus Dunca zu Nir. 5,14. — 2) *ein zum Einreiben dienender Stoff, Einreibung:* गात्र° (pl.) MBu. 2,200. °संस्पर्शन ed. Bomb. und Nîlak., der aber auch unsere Lesart kennt. — MBu. 9,1251 ist statt संघर्षणा° zu lesen संघर्षणा°.

संघर्षिन् (wie eben) adj. *wetteifernd, wetteifernd:* यत्रभवतो: परस्परं विज्ञानसंघर्षिणो: Mâlav. 13,13. fg.

संघवर्धन m. N. pr. eines Mannes Târan. 4. 78.

संघशस् (von संघ) adv. *in Schaaren, in Haufen, in einer grossen Anzahl* MBu. 4,316. Harîv. 10281. R. Gorr. 1,3,55. 2,5,20. 67,16. 3,79, 21. 5,111,44. Spr. (II) 4762. — Vgl. शत°.

संघाट (von घट् mit सम्) m. 1) *Zimmerwerk:* काष्ठसंघाटम् (so ed. Bomb. st. °संघातम्; nach dem Comm. = संघात) चक्रतु: महाप्लवम् R. 2,85,14. st. dessen einfach संघाट (= प्लव Comm.) 18. — 2) = संघात am Ende eines comp. P. 3,2,49, Vârtt. 3; vgl. पद्°, वर्ण°.

संघाटिका (wie eben) f. 1) *Paar.* — 2) *Kupplerin* Taik. 3,3,48. H. an. 4,38. Med. k. 220. — 3) *Trapa bispinosa* Roxb. H. an. Med. — 4) *Nase* (घाण) H. an. Vicva im ÇKDa. — Vgl. संघारिका.

संघाटी (wie eben) f. *ein bes. Gewand* (bei den Buddhisten) Vjutp. 207. Hiouen-thsang 1,33.343. Vie de Hiouen-thsang 70.78. Wassiljew 267. fg. °सूत्र Index des Kandshur No. 102. Vjutp. 42. hier und da संघाटि geschrieben. — Vgl. भिक्षु°.

सङ्घाणक m. = शिङ्घाणक Comm. zu Kâç. Ça. 28,3,12, v. l.

संघार्त (von कॄ mit सम्) m. Schol. zu P. 3,3,86. im Epos hier und da auch neutr.; am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *Schlag, Verletzung* H. an. 3,308. Med. k. 167. MBu. 9,1251 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Sûçr. 1,89,8. 15. — 2) *Verschluss* (der Thore) VS. 28,13. TBa. 3,6,12, 1. — 3) *Zusammenstoss, Kampf* (nach Mahîdh.). संघातं (v. l. संघाते) भैष्म VS. 1,16 (Çat. Br. 1,1,4,13). Kâṭh. 29,1. भूत° MBu. 14,13. — 4) *Verdichtung, Verhärtung:* भैष्मसंघातजौ स्तनौ Jâân. 3,97. संघातं ब्रह्मवेगेन धातवो गमिता: Harîv. 11709. Sûçr. 1,322,7. दोष° 61,8. मांस° 90,16. संघातमुपगम्य 262,12. 2,130,9. Kap. 5,2,8 (Gegens. विलयन). Çâṅk. zu Bâd. Âr. Up. S. 45. °कठिन Kumâras. 2,11. संघात इति मुष्टिसंधिता *Compactheit* Vaṇîn. Bân. S. 68,100. hierher etwa auch VS. Pair. 1,9. — 5) *eine feste Verbindung, Aggregat, Complex, Collection, Klumpen, Menge* Nir. 10,23. AK. 2,5,39. 3,4,42,48. 24,152. Taik. 3, 3,193. H. 1411. H. an. Med. Hall. 4,1. 5,25. 81. एक° VP. bei Muir, TS. 4,34. MBu. 12,6891. पाषाण° 2,916. महाशैलशिला° Spr. (II) 6876. अस्थिधर्मस्नायुमज्जमांसमृक्कशोणितमेध्यमूषिकाविण्मूत्रपित्तकफ° Maitrâjan. 1,3. त्वङ्ग मांसं तथास्थानि मज्जा स्नायुश्च पञ्चमम्। इत्येतदिह संघातं शरीरे पृथिवीमयम्॥ MBu. 12,6840. वज्र° so v. a. *aus Donnerkeilen zusammengesetzt* 1,4778. अमेध्य° adj. (काय) 14,527. देहस्तु सर्वसंघात: Bhâg. P. 7,7,22. अण्वादि° Sarvadarçanas. 36,3. 4. प्रोक्तास्ते दिनु संघाताश्चत्वारो बलसागरा: Harîv. 11456. 11701. बल° Kumâras. 4,6. मेघ° MBu. 1,5963. 1396. तुषार° Rt. 5,4. Kumâras. 1,57. 5,35. हिम° Hall. 3,28. Râga-Tar. 2.28 (°संघात fälschlich Ta.). तेजसाम् Mân. P. 104,35. रविकिरणबलदमहतां संघातो दण्डवत्स्थित: Vaṇîn. Bân. S. 30, 16. शैवल° MBu. 16,141. द्रुम° Harîv. 3608. R. 3,39,12. वृतोपल° 35, 75. Mâlatîm. 153,3. Pañkat. 157,24. चतुर्दशास्थी संघाता: Sûçr. 1,338,19. fgg. 337,12. Bhâvapr. in Verz. d. Oxf. H. 311,a,2 v. u. अस्थि° MBu. 3, 10926 (n.). Kathâs. 90,95. मर्मास्थि° R. 3,35,91. शरीर° *Menge* 5,18,24. प्रासनोमार° MBu. 12,8628. इषु° 7,268. R. Gorr. 2,91,14. कर्म्मप्रासाद° R. Schl. 2,91,33. कौशेयाभरण° Vaṇîn. Bân. S. 51,19. उरग° MBu. 1, 8254. मृग° Kâm. Nîtis. 14,34. तुरंगसैन्य° Kathâs. 14,12. 18,7. 103, 157. रथानां च गजानां च वाजिनां च समादिनाम्। सङ्घशतसंघाता: प्रहाणाम् MBu. 4,1093. सार्थ° R. 2,83,7 (90,7 Gorr.). सधि° 7,93,2. सर्वरात्रस° 5,58,10. बकुभिर्मूर्खसंघातै: Spr. (II) 4423. सेवक° Kathâs. 38, 28. Râga-Tar. 5,260. 6,121. सम° von Lauten R. Gorr. 2,100,24. चक्राम् Âçv. Çr. 10,5,16. 7,1,20. वर्णानाम् Comm. zu TS. Pair. 22,3. यवमानपावकमुचि° *ein Aggregat von* Maitrâjan. 6,34. उपाय° Rasn. 14, 11. कार्यकारण° Çâṅk. zu Bâd. Âr. Up. S. 257. अविद्या कर्मसंघातरूपा Sarvadarçanas. 57,17. अवस्था °विशेषरूपता Comm. zu Kap. 1,14. In der Grammatik *a)* im Gegens. zu विगृहीत (*die einzelnen Theile des Compositum*) *das ganze ungetrennte Compositum* P. 4,3,71, Vârtt. Kiç. zu 4,67. Schol. zu 6,2,91. — *b)* im Gegens. zu वर्ण (*Buchstab*) *ein Vocal mit seinem Consonanten* Kâç. bei Gold. Mân. 40. — 6) *Intensität:* शिशिरस्य R. 5,49,26. वात° 55,3. स्थैर्यबलसंघातोपचयकर Sûçr. 1,151,6. 7. रोगराट् रोगसंघातो ज्वर इत्युपदिश्यते 2,427,15. — 7) *ein materielles Aggregat, Körper* Bhag. 13,6 (*multiplex conditio* Schl.). Sâṅkhjak. 17 (Tattvas. 43. = महदादिसंघात Gaudap.). Mân. P. 38,15. Bric. P. 7,1,9. 12,24. 15,59. 12,4,6. पाण्डुसंघातदर्शिन् so v. a. *der die Gegenstände weiss sieht* Sûçr. 1,121,12. — 8) *ein in einem und demselben Metrum abgefasstes Gedicht* Kâvjâd. 1,13. — 9) *eine best. Hölle* AK. 1,2,2,2. Taik. Med. M. 4,89, v. l. (für संकृत). Jâân. 3,223. Burnouf, Intr. 201. Hiouen-thsang 1,230. — 10) = कफ Râgân. im ÇKDa. — 11) *a particular mode of walking in dramatic representation* Wilson nach Çârdâtanay. — Vgl. मत्स्य°, मांस°, रव°, वज्र°, वर्ण°, संघातक und संघातिक.

संघातक (von संघात) m. *Entwickelung Zusammenhaltender:* संघातभेदजननं तच्छै: संघातको ज्ञेय: Bhâr. Nâtjâç. 20,44. — Vgl. संघात्य und संहात्य.

संघातचारिन् adj. *in Heerden lebend* Sûçr. 1,203,15.

संघातपत्रिका f. *Anethum Sowa* Roxb. Râgân. im ÇKDa.

संघातवत् (von संघात) adj. *dicht zusammenstehend:* वेणु Spr. (II) 6678. भ्रातृ° *der mit seinen Brüdern zusammenhält* 6740.

संघातशूलवत् adj. *einen beklemmenden Schmerz empfindend:* हृदि Sûçr. 1,120,18.

संघात्य m. = संघातक, संहात्य Bhâr. Nâtjâç. 20,40.

संघाधिप (संघ + घ°) m. *Vorstand der buddhistischen Gemeinde* Çâṅk. 10,318. — Vgl. संघपति.

संघानन्द oder संघानन्दिन् m. N. pr. des 17ten Patriarchen der Buddhisten LIA. 2, Anh. VI (संघानन्दि gedr.).

संघाराम (संघ + घा°) m. *ein buddhistisches Kloster* Hiouen-thsang 1,66. LIA. 2,829. Burnouf in Lot. de la b. l. 436 (*un jardin enclos pour l'Assemblée*). Vgl. बोधि°.

संघावशेष m. bei den Buddhisten Bez. *derjenigen Sünden, welche die Gemeinde erlassen kann*, Wassiljew 82. संघादिशेष Burnouf, Intr. 301.

संघीभू (संघ + 1. भू) *sich zu einer Schaar vereinigen:* यज्ञाविकानां भूय वने चरन्तीनाम् Kull. zu M. 8,236.

संघोष m. = घोष *Hirtenstation* Mân. P. 49,42.

संघोषिन् (von 1. घुष् mit सम्) adj. *zusammen tönend, lärmend* Çiñkn. Ça. 4,19,10.

1. सच् I) सँचते Nir. 3,21. Dhâtup. 6,2 (सेचने fehlerhaft für सेवने, wie schon Westergaard erkannt hat; Sidd. K. giebt beide Bedd.). सचानै, सँचमान, सचध्यै RV. 1,167,5. सचत 2. pl. act. 10,75,5. असतत 8,53,9. सतत 3. pl. 13,28. सतीमहि; सश्चे, सश्चिरे, सश्चुस्, सश्चिम; aor. सश्चत् RV. 2,22,1. सँश्चति 3. pl. 1,101,3. सश्चत 2. pl. med. सश्चत 3. sg. u. pl. 7,26,4. 90,3. सँश्चते 3. pl.; vgl. auch सश्च्. 1) mit instr. a) *vereint —, beisammen —, vertraut sein mit, sich zu thun machen mit:* सख्या सचेय RV. 8,48,10. 10,117,4. योगित्राभिः सचते गोपतिः सक् 6,28,3. सतीमहि पुरुभिर्देवैः 7,39,6. विष्णुना सचानः 6,20,2. 1,183,2. 2,18,2. नासुन्वता सचते *hat keine Gemeinschaft mit* 5,34,5. 9,93,3. 10,7,1. AV. 3,14,6. 4,15,2. त्रिभिः शतैः सचनानि *nebst dreihundert* RV. 5,36,6. 10,3,3. — b) *im Besitz —, im Genuss einer Sache sein:* शर्मणा RV. 7,51,1. प्रत्नया, सोमस्योती 1,136,6. रायस्पोषेण 125,1. क्रत्वा 143,2. 5,33,8. सूतेन 1,152,1. 2,1,3. ऊतिभिः 8,6. 7,34,3. तरणित्वा 1,110,6. वर्षसा 8,4,9. 9,74,1. AV. 5,1,7. *anheimfallen* (einem Uebel): यसता RV. 4,5,14. तर्मसा 10,89,15. 103,12. — 2) mit acc. a) *Jmd nahe sein, um Jmd sein; gehören zu:* सचस्व नायमवसे RV. 6,24,10. 5,28,2. यस्माच्चायो मघवानः सचन्ताम् 1,98,3 (vgl. 4,41,10). भानवो घर्मिं सचन्त 3,1,11. 7,91,6. 8,33,9. पौंस्यानि निर्युतः सश्चुरिन्द्रम् 6,36,3. AV. 2,34,1. — b) *anhängen, ergeben sein:* यं पूर्वो वृत्रहणं सचते RV. 1,59,6. 100,13. घर्मिम् 73,4. उभे सामूती सचसा सचेताम् 185,9. सैनं सश्चद्देवो देवम् 2,22,1. 9,86,8. मार्हत गणं सेवत श्रिये 1,64,12. VS. 8,36. 13,1. — c) *befolgen:* शासुः RV. 1,60,2. क्रतुम् 136,4. 4,42,1. व्रतम् 7,3,4. व्रता पदेव सश्चिरे 5,67,3. 1,84,12. 101,3. — d) *nachfolgen, verfolgen; aufsuchen, besuchen:* वरुणास्य धाम्न RV. 1,123,8. 7,33,7. उपसम् 8,5,2. 13,28. 3,16,2. त्रीवं व्रातं सचेमहि *sich befinden unter* 10,57,3. दुरः सचन्ते घृतता व्रतानाम् 7,61,3. AV. 1,12,3. स्वप्नया सचसे व्रतम् 5,7,8. 4,34,3. गन्धर्वः सचते स्त्रियः 37,11. 6,110,3. 12,3,50. — c) *im Gefolge —, im Besitz —, im Genuss haben; bekommen:* पुरुवारपं सचते RV. 4,12,2. बृहद्रयः 5,43,15. 7,74,3. सचावहे यदवृकं पुरा चित् 88,5. 8,58,17. मनसा धियं सचत 91,22. क्रतुम् 10,64,7. etwas Uebles: निर्ऋथम् 7,104,14. — f) *treffen, zu Theil werden:* इतो वै नः पापीयः सचते Çat. Br. 1,1,4,14. 10. — 3) *zusammen sein:* मधोः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे RV. 8,58,7. 5,64,3. 10,57,6. सखायाविव सचावहे AV. 6,42,1. 3. 12,3,9. — II) सिषक्ति, सिषति, सिषक्तु Nir. 3,21. *Jmd* (acc.) *nachfolgen, nachgehen, sich hängen an:* क्रत्वेव विश्वं भुवनं सिषक्ति RV. 1,73,8. 18,1. 36,4. वत्सं न माता 38,8. वनं 66,2. 5,41,15. 20. 6,30,5. 7,91,3. धन्यमस्मद्रियं सिषक्तु दुरुक्तं 8,64,12. 10,19,1. mit loc. *sich aufhalten, — befinden:* सिषक्त्यूधन्योर्वृत्रेषु विप्रः 6,68,3. 10,3,1. Hierher als infin. सक्षणि RV. 10,32,1, wo übrigens सक्षणी auch als du. zu 1. सक्षणि möglich wäre.

— अनु *nachgehen, aufsuchen, sich halten zu* (acc.): वर्तनीः RV. 1,140,9. 7,18,25. पूर्वाणयोक्यो 8,23,17. तवं व्रतमन्वापः सचन्ते 9,82,3. यनुं त्वा दिव्या वृष्टिः सचताम् VS. 13,30. 29,2. AV. 8,9,23. Pârask. Gr. 3,9,5. *verfolgen:* पोषितम् Çat. Br. 3,2,3,10.

— अप *sich entziehen, entgehen einer Sache* (acc.): अप देवो अप क्रतोऽन्यव्रतस्य सश्चिरे RV. 5,20,2. VS. 38,20.

— अभि *aufsuchen, sich Jmd* (acc.) *zuwenden:* अभि नो देवीः सचन्ताम् RV. 1,22,11. अग्निं विश्वो अभि पूर्तः सचन्ते 71,7. 4,44,2. 7,90,3. अभि क्षेत्रीरसचन्त स्वधानम् 3,31,4. 40,7. 53,17. 5,31,2. 7,67,3. 72,1. धर्मत्यो मर्त्यान् AV. 6,41,3. 8,4,23. 24. — Vgl. अभिषाच्.

— आ *aufsuchen* RV. 1,136,3. 2,39,3. 4,11,6.

— उप dass. RV. 1,190,3. AV. 18,4,40. *verfolgen:* धनुरान् Ait. Br. 6,26.

— नि *eng verbunden sein mit:* यरिष्यसो नि पायुभिः सचेमहि RV. 8,23,11.

— प्र *verfolgen:* सिषक्त्यूधः प्र युगा जनानाम् RV. 10,27,19.

— प्रति *rächend verfolgen* Çat. Br. 11,6,3,3.

— वि für die Etymologie von विष vorausgesetzt Nir. 12,26.

— सम् *verbunden sein mit* (instr.) RV. 6,35,1. श्रिया 1,116,17.

2. सच् adj. = 1. सच् in यावयच्. — Vgl. साच्.

सच (von 1. सच्) adj. s. समसच्.

सचक्र (2. स + चक्र) 1) adj. (f. या) *a) mit Rädern versehen* MBh. 7,846. — *b) mit Truppenabtheilungen versehen* MBh. 3,640. — 2) °म् adv. P. 6,3,81, Schol. = चक्रेण युगपत् Schol. zu P. 2,1,6. Vop. 6,61.

सचक्रिन् adj. *Wagenfahrer* (nach Comm.) TBr. 2,7,18,4.

सँचतुस् (2. स + च°) adj. *mit Augen versehen, sehend* Çat. Br. 1,6,3,11. MBh. 7,883. Spr. (II) 6832.

सचँध्य (von 1. सच्) m. *das Zusammensein, Nachfolge* RV. 1,156,5.

सचध्य (von सचध) n. *Beistand:* सचेमहि सचध्यैः RV. 5,50,2.

सचनँ (von 1. सच्) adj. *zu Gebot stehend, dienstbereit:* देवर्डवाट् सचनो रथो वाम् RV. 1,110,18. यपो नस्तस्य सचनस्य देव 6,39,1.

सँचनस् (2. स + च°) adj. *einträchtig:* देवेभिः RV. 1,127,11. trotz der Verschiedenheit des Tons dürfte hierher gehören der superl.: (या गतम्) देवा देवेभिरग्ना सचनस्तमा (könnte auch auf 1. सच् zurückgeführt werden) 8,26,8.

सचनस्य (von सचनस्), °स्यते *Pflege —, Zärtlichkeit erweisen:* शिशुं न त्वा माता विभर्ति सचनस्यमाना RV. 10,4,3.

सचनँवस् adj. so v. a. सचन. Wagen der Açvin RV. 8,22,2.

सचर्म (2. स + चर्मन्) adj. *sammt dem Fell:* बाहू *Vorderfuss* Kâç. 138.

सचस्य (von सचस्, das von 1. सच्), °स्यते *Pflege empfangen:* सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे RV. 10,8,7.

सँचा (von 1. सच्) adv. *dabei, zur Hand; zugleich, zusammen* Naigh. 4,2. Nir. 5,5. kommt im AV. nicht mehr vor. इन्द्रं प्रागूर्भवा सचा RV. 1,40,1. 71,4. वत्सं च नो वसो सचेन्द्र पत्नीं च वर्धय 10,4. या पीतमुषं नः सचा 93,11. 83,8. 122,8. 4,3,9. 5,44,12. 48,4. तत्र पूषाभवत्सचा 6,57,4. कृधा दुवांस्यत्तमा सचेमा 7,22,4. 81,2. 8,46,7. 67,2. 10,23,4. 93,8. 131,4. वं तुर्यं वेतसवे सचाकन् 8,26,4. यष्टिं सस्मा शच्या सचाकन् 6. mit loc. vor- oder nachstehend: *bei, in, Angesichts von, zusammen mit* RV. 1,9,3. नि यदाम् सचा मुते 8,21,15. 86,8. सचाभुवः (du.) 1,174,6. 3,54,3. 10,105,4. 9. पृत्सु 5,16,3. सोमेषु 8,35,6. 57,17. 10,62,6. यमाञ्छूरिव पित्रोः सचा

सुतो 2, 17, 7. 1, 51, 11. मादयस्व सुते सचा 81, 8. 3, 60, 4. 8, 45, 29. इन्द्र इद्धर्यो: सचा 1, 7, 2. 3, 12, 2. सखिभिर्ये ते सचा 32, 2. 7, 93, 8. सूरिभि: सूर्ये सचा 1, 135, 3. 140, 7. Vâlakh. 3, 1. VS. 20, 68. TBr. 1, 2, 1, 6.

सचाभू adj. *Gesells, Begleiter* RV. 1, 34, 11. तत्तन्वत्सार्य मातरं सचाभुवम् 111, 1. 131, 3. वसुभि: सचाभुवा *begleitet von* 2, 31, 1. 3, 31, 10. 35, 2. यदङ्गिरसामभव: सचाभू: 10, 70, 9. 76, 1. *Freund* 117, 4.

सचि adv. *so v. a.* सचा *zugleich:* यूयं तु मे सच्युपवात Cat. Br. 4, 1, 2, 7. — Vgl. सचिविद्.

सचित् (2. स + 3. चित्) adj. *denkend oder gleich denkend* RV. 10, 64, 7.

सचित्क (von सचित्) adj. *denkend* Bhâg. P. 12, 11, 3.

सचित्त (2. स + चित्त) adj. *einmüthig* AV. 6, 100, 1.

सचित्त (2. स + चित्ता) adj. (f. या) *in Gedanken vertieft* Mṛicch. 7, 7. Kathâs. 25, 166. सचित्तम् adv. *gedankenvoll* Çik. Cu. 43, 15. सचित्ताकुलम् dass. Çik. Bhartṛ. 32, 2.

सचिल्लाक (von 2. स + चिल्ल) adj. *triefende Augen habend* Çabdar. im ÇKDa.

सचिव (von सचि) m. 1) *Begleiter, Beistand;* insbes. *der Beistand eines Fürsten oder Prinzen, Minister, ein hoher Beamter* AK. 3, 4, 22, 208. H. 719. an. 3, 715. Med. v. 53. Hall. 2, 271. Ait. Br. 3, 20. LA. (III) 88, 8. मौलान् शास्त्रविद: शूराँल्लब्धलक्षान्कुलोद्गतान् । सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् ॥ M. 7, 54. 120. MBh. 3, 16654. R. 1, 4, 26. 67, 2. 2, 32, 17. 52, 4. 66, 16. 83, 22. 91, 38. 101, 12 (110, 11 Gorr.). R. Gorr. 1, 60, 13. 2, 88, 22. 3, 53, 4. 76, 36. 5, 7, 3. Kâm. Nitis. 4, 12 (auch मु° adj.). 20. 13, 62. Ragh. 1, 24. 4, 87. 7, 33. Milav. 7 (मौर्यसचिव ed. Bomb). Vasiṣṭh. Dh. S. 3, 22. 4, 25. 5, 67. 35, 5. 43, 22. 48, 43. Spr. (II) 1373. 1840. 3093. 3813. 5116. 7187. Kathâs. 4, 30. 18, 120. 28, 148. 30, 59. 63, 195. Râga-Tar. 1, 71. 3, 2. 256. 280. 5, 241. 413. Bhâg. P. 5, 24, 24. 8, 21, 22. Pañcat. 155, 4. कार्यान्तर° Milav. 9, 23. नि:° adj.: राज्य Spr. (II) 5773. भावभूतकारण° adj. *so v. a. unterstützt von* Kuṣum. 39, 10. fem. सचिवी Bhâg. P. 5, 2, 16. सचिवा gaṇa प्रियादि zu P. 6, 3, 34. Vop. 6, 13. ein fem. behält in einem adj. comp. vor सचिवा seinen fem. Charakter ebend. Vgl. कु°, धी°, नर्म° (auch Milatim. 37, 4), साचिव्य. — 2) *eine Art Stechapfel* (कृष्णधत्तूरक) Râgân. im ÇKDa.

सचिवता (von सचिव) f. *das Amt eines Ministers* Râga-Tar. 5, 289.

सचिवत्व (wie eben) n. dass. Kathâs. 34, 113. दोषवद्गुण° nom abstr. von दोषवद्गुणसचिव adj. Çaṅk. zu Kaṭhop. Up. S. 34.

सचिवायय (सचिव + य°) m. *Rothlauf* Râgân. im ÇKDa.

सचिविद् (सचि + 4. विद्) adj. *zusammengehörig d. h. vertraut, anhänglich* RV. 10, 71, 6.

सचिह्न (2. स + चि°) adj. *gebrandmarkt* Jâṭ. 2, 270. सचिह्नम् adv. 202.

सचीनक (2. स + चीन) adj. *nebst Panicum miliaceum* Mârk. P. 49, 66.

सचेतन (2. स + चेतना) adj. *verständig, bei vollem Verstande, — Bewusstsein* Pân. Gaṇ. 3, 13. R. Gorr. 2, 33, 13. Kathâs. 109, 125. 110, 140. Prab. 34, 17. Pañcat. 43, 10.

सचेतस् (2. स + चेतस्) adj. 1) *einmüthig, einverstanden* RV. 10, 1, 3. 4, 5. 64, 7. 113, 1. Vâlakh. 10, 1. AV. 1, 30, 2. 5, 21, 12. 6, 68, 1. — 2) *eine richtige Einsicht —, ein richtiges Verständniss habend, verständig* RV. 1, 61, 10. 10, 44, 4. दत्त AV. 2, 29, 3. 4, 26, 1. 29, 1. Pân. Gaṇ. 3, 13. Bhâg. 11, 31. Kumâras. 5, 43. Râga-Tar. 4, 498. Sin. D. 33. 35. 24, 21. Daçak. 144.

सचेष्ट m. *der Mangobaum* Çabdam. im ÇKDa.

1. सच्चरित (सत् + च°) n. *ein guter —, tugendhafter Wandel* Çik. 15, 15. Spr. (II) 6783. Kathâs. 24, 227. °व्रत adj. Bhâg. P. 3, 6, 50. उत्सृष्टधर्म° adj. Vasiṣṭh. Dh. S. 3, 13. °मीमांसा Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 38, b, 12. fg.

2. सच्चरित (wie eben) adj. *einen guten —, tugendhaften Wandel führend* Spr. (II) 2542. 7160.

सच्चरित्र n. = 1. सच्चरित Râga-Tar. 1, 155.

सच्चर्या f. desgl. Kathâs. 78, 20. Spr. (II) 7542.

सच्चार (सत् + चार) m. *ein guter Späher* Kâm. Nitis. 12, 24 (सच्चार् gedr.).

सच्चारा f. *Gelbwurz* Çabdam. im ÇKDa.

सच्चिदानन्द (सत् + 3. चित् + आनन्द) m. pl. *Sein, Denken und Wonne;* adj. *aus diesen dreien bestehend* (als Bez. des höchsten unkörperlich gedachten Wesens) Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 143. 147. fg. 154. Weber, Rimat. Up. 287. 327. 333. 336. 352. 363. Paṅkar. 4, 1, 20. Vop. vor 6, 24. Verz. d. Oxf. H. 37, a, No. 92. 72, a, 47 (सच्चि° gedr.). 90, b, No. 147. 104, b, 5. 160, b, 4. 290, b, 10. Vedântas. (Allah.) No. 2. Bilar. 14. 21 (pl.). 26. 29 (neutr.). सच्चिदानन्दानुभवप्रदीपिका Titel einer Schrift Hall 102. °सरस्वती oder °तीर्थ N. pr. eines Lehrers 104. 135. °भारती und सच्चिनवसच्चिदानन्दभारती desgl. Wilson, Sel. Works 1, 201.

सच्चिदानन्दमय adj. *in Sein, Denken und Wonne bestehend* Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 84.

सच्चिन्मय (von सत् und 3. चित्) adj. *in Sein und Denken bestehend* Spr. (II) 4983. Vgl. सत्संविन्मय.

सच्छन्दस् (2. स + छ°) adj. *ein gleiches Metrum habend* VS. 23, 34. Cat. Br. 1, 7, 2, 19. Ait. Br. 1, 25.

सच्छन्दस्य adj. dass. Liṭ. 10, 2, 14.

सच्छाय (2. स + छाया) adj. (f. या) 1) *Schatten gewährend* Kathâs. 17, 106. 37, 94. 62, 5. 63, 10. Râga-Tar. 1, 205. — 2) *farbig:* मणि Kathâs. 22, 6. — 3) *gleichfarbig mit* (geht im comp. voran) Kathâs. 45, 336.

सच्छास्त्र (सत् + शास्त्र) n. *eine gute —, ächte Lehre* Verz. d. B. H. 188, 37. Mârk. P. 35, 23. 51, 10. Pañcat. 183, 21. Bhâg. P. 4, 2, 28. य° 7, 13, 7. M. 11, 65. Jâṭ. 3, 242.

सच्छास्त्रवत् (von सच्छास्त्र) adj. *eine gute —, ächte Lehre besitzend* Spr. (II) 4829.

सच्छील (सत् + शील) n. *ein guter Charakter* Vasiṣṭh. Dh. S. 24, 3.

सच्छेद (2. स + छेद) adj. *unterbrochen:* भणित Ver. in LA. 21, 1.

सच्छोक (सत् + श्लोक) adj. *in gutem Rufe stehend* Spr. (II) 6997, v. l.

सच्च्युति (2. स + च्युति) adj. nach den Comm. von *Samenergiessung begleitet* TBr. 2, 4, 6, 4. Âçv. Çr. 2, 10, 14.

सज् s. सञ्ज्.

सज्जन (2. स + 1. जन) adj. 1) *nebst Leuten:* रात्रपुरुषै: सज्जने राजनिन्दकै: Râga-Tar. 3, 156. — 2) *von Menschen besucht —, bewohnt:* वन R. 2, 52, 61. सज्जने *an einem Orte, wo Leute sind; unter Menschen* Cat. Br. 14, 6, 2, 14. MBh. 2, 2501. 2512. 5, 3424.

सज्जनपद (2. स + ज°) adj. *aus demselben Lande seiend, Landsmann*

P. 6,3,85. Vop. 6,97.

सन्नर्नीय n. (sc. सूक्त) *das Lied mit dem Refrain* स इनास इन्द्रः (ṚV. 2,12) TS. 7,5,8,2. Ait. Br. 5,2. Kāty. Ça. 25,14,18.

सन्नर्नु (2. स + ऋनु) adj. *zugleich entstanden:* सन्नन्वा तन्वा Çat. Br. 5, 3,5,25.

1. सँनन्य (2. स + 2. ऋन्य) adj. *Verwandten gehörig:* धन ṚV. 4,50,9.

2. सन्नन्य n. = सन्ननीय Kāṭy. 34,4.

सन्नम्बाल (2. स + ऋ°) adj. *sumpfig, kothig* AK. 2,1,10.

सन्नल (2. स + ऋल) adj. *mit Wasser versehen, feucht* R. 5,75,11. Verz. d. Oxf. H. 74,b,21. नयन Mṛcch. 23.

सन्नागर (2. स + 1. ऋागर) adj. *wachend, nicht schlafend* Kathās. 39,207.

सन्नार्त (2. स + ऋात) adj. *verwandt;* m. *ein Angehöriger, Stammgenosse, Landsmann:* ऋास उत वो सन्नातानू ṚV. 1,109,1. AV. 1,9,3. 19, 2. 2,6,4. 3,3,6. 5,5,2. 73,1. 11,1,6.7. VS. 5,22. 10,29. 27,5. TBn. 2,1, 5,6. 7,10,5. स एवास्मै सन्नातान्प्रयच्छति ग्राम्येव भवति TS. 2,1,5,2. 2, 1,2. 3,9,2. Çat. Br. 1,9,1,5. 5,4,4,19. Pāraṇ. Gṛ. 3,9,7. Kāty. Ça. 15, 7,12. Lāṭy. 1,7,12. °काम Kāṭy. 10,11. 11,1. 12,1.

सन्नातवनस्या f. *der Wunsch nach Herrschaft über Angehörige,* Bez. eines Spruchs dieses Inhalts TS. 2,6,9,7. Āçv. Ça. 1,9,5.

सन्नातवैनि adj. *Angehörige u. s. w. gewinnend* VS. 1,17.

सन्नार्तवत् (von सन्नात) adj. *von Verwandten umgeben* TBn. 2,4,9,13.

सन्नाति (2. स + ऋाति) adj. *zur gleichen Kaste u. s. w. gehörig, gleichartig* (Gegens. विसाति) M. 9,87. 10,41. Jiñ. 1,90. Kull. zu M. 9,198. AK. 2,10,3. H. 1413.

सन्नातीय (wie eben) adj. dass. (Gegens. विसातीय) Kāç. in der Sidhh. K. zu P. 6,3,34. Vop. 6,98. Jiñ. 2,133. Hariv. 4074 (स्वसातीय die neuere Ausg.). Kaṇ. 1,1,9. AK. 2,5,41. Ind. St. 3,442. Sin. D. 10,14. 209,9. Vedântas. (Allah.) No. 123. Schol. zu Kap. 1,22. zu TS. Paiṭ. 10,1. Kusum. 6,4. Sarvadarçanas. 26,7. 61,18.

सन्नात्य (wie eben) 1) adj. *stammverwandt* ṚV. 8,72,7. M. 8,387. — 2) m. *gleiche Abkunft, Verwandtschaft, Stammgenossenschaft* ṚV. 2,1, 5. 3,54,16. 8,18,19. सन्नात्येन सबन्धवः 20,21. 27,10. 10,64,13.

सन्नाय (2. स + ऋाया) adj. *bewohnt, verheirathet* Kathâsaritsâgara in Z. d. d. m. G. 14,570,6.

सञ्जिवन् (2. स + जि°) adj. (f. °वरी) *siegreich, überlegen* ṚV. 3,12, 4. Rosse 10,97,3. Bositz 1,8,1.

सजीव (2. स + जीव) adj. (f. घा) *besetzt, lebend, lebendig* MBn. 2,713. 7,6128. Kathās. 43,10 (°वत्). 122,32. 123,138. 340. Bhâg. P. 8,22,33. Paṇḍat. 244,7. 10.

सञ्जुष् (2. स + जुष्), ष् geht in स् und ज् über und der Vocal wird verlängert P. 8,2,66. = सक् Taitt. 3,4,8 (सक्षः gedr.). Çaṅkar. und Bhar. zu AK. nach ÇKDr. 1) adv. *zugleich, überdiess:* सञ्जूस्तंतनुरिन्द्रं जनुषा रोजसे ṚV. 8,86,10. 10,105,9. ग्रागमदिमं यज्ञं सञ्जूरुषं AV. 6,35,2. 8,2, 13. सञ्जूरुपसृष्टा Çat. Br. 11,5,3,5. mit कर् u. s. w. verbunden gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. सञ्जूःकृत्य so v. a. *in Gemeinschaft mit* (acc.) Bhaṭṭ. 5,72. — 2) praep. *mit, sammt;* mit instr.: सञ्जूर्गणेन ṚV. 1,23,7. 44,2. 14. 8,47,21. 10,75,6. VS. 3,10. 6,11. 12,74. 14,7. Çiṅkh. Ça. 10,18,10. 11,2,28. Bhâg. P. 6,18,66. — 3) als adj. declinirt Vop. 3,150. 164.

सञ्जोष adj. = सञ्जोषस्. nom. pl. °षास् ṚV. 1,153,1. 186,2. 8,67,8. AV. 3,22,1. du. °षौ ṚV. 3,62,2. VS. 12,74.

सञ्जोषण (2. स + जोष°) n. *eine gemeinsame Vergnügung* Çiṅkh. Ça. 12,19,1.

सञ्जोषस् (2. स + जोष°) adj. *einmüthig, vereint;* überh. *zusammen befindlich* oder — *handelnd mit* (instr.) ṚV. 3,8,8. 20,1. वां विश्वे सञ्जोषसो देवासो दूतमक्रत 5,21,2. सञ्जोषा इन्द्र वरुणेन सोमं पाहि 4,34,7. 5,4,4. 43,6. 8,48,15. त्वमिन्द्र सञ्जोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः trägst mit dir 10,153,4. AV. 5,29,8. 6,115,1. TBn. 3,1,6,12. voc. ṚV. 2,31,2. du. 3,58,7. 8,9,12. VS. 7,8. °षाम् neben du. ṚV. 4,56,4. im Sinn des acc. sg. von Sis. gefasst 7,3,1. adv. °षम् *vereint:* सञ्जोषस्त्वा दिवो नरः इन्धते 6,2,3.

सञ्ज् s. सञ्ज् und सञ्जय्.

सञ्ज (aus सञ्य durch Assimilation wie सञ्जते aus सञ्यते) 1) adj. (f. घा) a) *mit der Sehne versehen:* ein Bogen (der erst dann, wenn er gebraucht werden soll, mit der Sehne versehen wird; sonst ist die Sehne um ihn gewickelt): इयेष कर्तुं सञ्जं धनुस्तत्सशरम् MBn. 1,7033. 4,1803. R. 2,87, 23. 97,15. 7,23,11. ein Pfeil so v. a. *auf die Sehne gefügt* MBn. 1,6955. R. 1,76,5. धनुषः सञ्जकर्म MBn. 1,7034. Die ed. Bomb. des MBn. überall (mit Ausnahme von 1,6955 an der zweiten Stelle) सज्य, die des R. nur 1,76,5 सज्य (शरं सृज्यं [!] ज्यायुक्तं चकार Comm.). — b) zu *einem best. Zweck gehörig vorbereitet, fertig, bereit* (von Personen und Sachen), = संनद्ध AK. 2,8,2,33. Taik. 3,3,89. H. 766. an. 2,77. Med. ṅ. 18 (hier fälschlich सज्ञ). = संभृत Taik. H. an. Med. (hier fälschlich सभृत; ÇKDr. aber संभृत). = कृत्य AK. 3,4,24,161. = निभृत Çabdar. im ÇKDr. सांग्रामिकं ततः सर्वं सज्जं चक्रुः MBn. 1,513. नित्यसज्जानिमाञ्चयान् 3,14943. 5,7163. 7180. 7,2986. ग्राचख्युः सज्जमित्येव पार्थाय 14,1480. 16,189. Hariv. 4416. R. 2,26,18. 22. 82,25. fg. (89,7. 8 Gorr.). 104,6. R. Gorr. 1,75,16. 2,101,39. 106,17. 5,9,31. 7,6,63. 46,32. Suçr. 1,123,16. Kām. Nītis. 16,15. Kathās. 12,46. 13,14. 50,168. 110,124. Rāǵa-Tar. 1,66. 3,173. 440. 433. 4,438. die Ergänzung ein infin.: ग्रपि सज्जो महातेजा भीष्मं द्रष्टुं युधिष्ठिरः MBn. 12,2005. ein loc.: तत्रापि सज्जा वयम् Spr. (II) 4643. Paṇḍat. ed. Bomb. II,181. ein loc. eines nom. act. Rāǵa-Tar. 3, 432. ein dat. eines nom. act. Hariv. 4416. Rāǵa-Tar. 2,93. im comp. vorangehend: युद्ध° R. 6,86,15. संग्राम° Mārk. P. 124,1. Rāǵa-Tar. 4, 471. उत्पिञ्जोत्पादना° 3,122. In dieser übertragenen Bed. niemals सज्य geschrieben. Vgl. वासकसज्जा. — 2) सज्जा f. = वेष und सनाद् ÇKDr. und Wilson (zur Erklärung von सज्जित gebildet).

सज्जक 1) adj. (f. सज्जिका) = सज्ज in वासकसज्जिका. — 2) m. N. pr. zweier Männer Rāǵa-Tar. 7,1493. 8,1491.

सज्जट (सत् + ऋट) f. *ein best. wohlriechender Stoff* Paṇḍar. 3,7,18.

सज्जता (von सज्ज) f. *Bereitheit:* गणिकायाश्च गम्यं प्रति Daçak. 62,7.

सज्जत्व Schol. zu Kāṭy. Ça. 19,1,20 fehlerhaft für सर्जत्व.

1. सज्जन (von सञ्ज्) 1) adj. *hängend an:* कण्ठ° M. 2,68. — 2) n. *eine Treppe, die zu einem Wasser hinunterführt, Landungsplatz* H. an. 3,431. Med. n. 148.

2. सज्जन (von सज्जय्) 1) n. *Ausrüstung —, Ausschmückung eines Elephanten* Taik. 3,3,267 (सज्जन gedr.). f. घा dass. AK. 2,8,2,10. H. an. 3,431. fg. Med. n. 148. fg. Govardh. Ârjâs. 370, d (nach Benfey). — 2)

n. Piquet, Soldatenposten AK. 2,8,2,1. H. 749. H. an. Med.

3. सज्जन (सत् + जन) m. 1) *ein guter, edler, wohlwollender Mensch* (Gegens. खल, पामर) AK. 2,7,2. Trik. 3,3,267 (सज्जन gedr.). H. an. 3, 432. Med. n. 143. fg. Hall. 2,217. M. 10,35. MBh. 1,591. 6155. R. 1, 2,6. 2,47,15. 64,12. 4,36,18. 5,81,14 (घ°). 88,4. Suça. 1,271,3. Milav. 69,1. Çiç. 16,22. Spr. (II) 1004. 2215. 2318, v. l. 2928. 3138. 3644. 3986. 4434 (घ°). 4632. 4859. 5103 (so v. a. *ein kluger Mensch*; vgl. सत्). 5253. 6434. 6444. 6636. 6684. 7012. Varâh. Bṛh. 28 (26),7. Kathâs. 13, 194. Bhâg. P. 4,9,45. Vop. 25,38. Verz. d. Oxf. H. 123,a,40. Sarvadarçanas. 1,11. °लोक zu Spr. (II) 2089. wie ein adj. mit पति verbunden Harîv. 10006. nach Med. stets adj. — 2) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 113,b,9. Râja-Tar. 8,1418. Târân. 241. 329.

सज्जनवल्लभ (3. सज्जन + व°) Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 336, a, No. 790. f. घा Titel eines Commentars zu Pâraskara's Gṛhjasûtra Verz. d. B. H. No. 264.

सज्जपुर m. pl. N. pr. eines Volkes Verz. d. B. H. 93,27.

1. सज्जय् s. u. dem caus. von सञ्ज्.

2. सज्जय् (von सज्जा), °यति 1) *mit der Sehne versehen, — beziehen:* चापम् R. 3,31,2. सज्जित (चापयष्टि) Kathâs. 85,7. — 2) *in Bereitschaft setzen, bereit machen* MBh. 3,10756 (सज्जयामास eine von Nîlak. erwähnte Lesart). Harîv. 4418. आयुधम् R. 7,68,18 (med.). नागान् MBh. 5,5209. सैन्यानि Kathâs. 88,25. सज्जयमाना करिणी 13,17. Prab. 78,13 (सज्जयन्ती zu lesen). med. *sich bereit machen:* सज्जयध्वम् MBh. 14,1479. सज्जित *in Bereitschaft gesetzt, bereit gemacht, bereit;* = कल्पित H. 1221. Hall. 2,66. रथाश्वाः MBh. 7,2672. कुम्भाः R. Gorr. 2,83,6. शिविका 7. मामाग्रैः सज्जितैः पाशैः Spr. (II) 2963. सज्जितोद्दाकुसंभार Kathâs. 35,100. 92,71. 123,177. वासवेश्मन् Sîk. D. 120. तद्रक्षणार्थं च मया क्रमः सज्जितः Pañkat. 197,25. 216,5. 217,2. प्रेष्ठसंगम° *bereit zu* (= प्रेष्ठसंगमेन वशीकृतः Comm.) Bhâg. P. 10,22,28.

सज्जल m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,2185.

सज्जीकर् (सज्जा + 1. कर्), °करोति 1) *mit der Sehne versehen, — beziehen:* einen Bogen Kathâs. 55,108. Bhâg. P. 1,15,7. 9,10,6 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Hit. 81,16. — 2) *in Bereitschaft setzen, bereit machen:* रथम् MBh. 13,2782. 16,187. करेणुम् Kathâs. 13,16. तुरगम् 18,117 (med.). राजमार्गम् 103,234. नागाश्वम् Mâlav. P. 125,17. Prab. 78,18. 79,2. Pañkat. 62,5. 216,1. 3. Hit. 90,9. संदर्भसज्जीकृत Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 293. सुसज्जीकृत Hit. 84,9. 130,1 (an beiden Stellen auch ohne सु v. l.).

सज्जीभू (सज्जा + 1. भू), °भवति *sich bereit machen* MBh. 2,891. 3,1708. 5,7033. 14,1480. 16,188. R. 4,24,18. 6,75,21. 7,25,21. Hit. 50,9. 76, 20. तपोवनरक्षायै Çâk. 17,20, v. l. शत्रुविनाशाय Prab. 73,16.

सज्जीय् (von सज्जा), °यते dass.: सज्जीयमानेषु (संनह्यमानेषु ed. Bomb.) सैन्येषु MBh. 6,734.

सज्जुष्ट (सत् + जुष्ट) *adj. woran Gute Gefallen finden:* कर्मन् R. 2,75,24.

सज्य (2. स + ज्या) adj. *mit der Sehne bezogen:* ein Bogen Kâuç. 36. MBh. 1,6985. 3,424. 4,1812. 16,231. R. Gorr. 1,69,18. 17. fg. 3,26,6. 6,31,25. Kir. 13,71. — Vgl. सज्ज und विज्य.

सज्जीकर् = सज्जीकर् 1) Bhâg. P. 9,10,6. सज्जी° ed. Bomb.

सज्योतिस् (2. स + ज्यो°) adj. = समानज्योतिस् P. 6,3,85. Vop. 6,97. *von gleicher Dauer wie das Licht* (der Sonne am Tage oder der Sterne in der Nacht) d. i. *am Tage bis zum Untergang der Sonne, in der Nacht bis zum Verschwinden der Sterne während* M. 4,106. 5,82.

सज्वर (2. स + ज्वर) adj. *fieberkrank* Spr. (II) 563 (Conj.).

सञ्ज्, सैञ्जति v. l. für सज्ज्, सज्जति (गतौ) Dhâtup. 7,22.

सञ्ज m. *Heft* (पुस्तकलेखनार्थपत्रचय ÇKDa.) Duvl-P. im ÇKDa.

सञ्जक *Stempel* oder *Giessform* Naiṣ. 22,47. fg.

सञ्जत् m. = प्रतारक ÇKDa. nach Sidd. K. (vgl. Un. 2,92). fehlerhaft für संयत्.

संचय (von 1. चि mit सम्) m. (am Ende eines adj. comp. f. या) sg. und pl. *Anhäufung, Ansammlung, Vorrath, Reichthum, Menge* überh. AK. 2,5,39. H. 1412. Hall. 4,1. Nir. 5,26. Suça. 2,199,10. कर्तव्यः संचयो नित्यं कर्तव्यो नातिसंचयः Spr. (II) 1511. 2742. त्यजेत संचयान् 2625. 6688. धनेश्च संचयैश्चैव शक्रवैश्रवणोपमः MBh. 4, 2274. धनेश्च संचयैश्चान्यैः शक्रवैश्रवणोपमः R. 1,6,2. Râja-Tar. 2,28. Bhâg. P. 3,12,42. संचित° adj. R. 4,27,11. संचयाय *so v. a. um mehr zu haben* Kathâs. 1,42. 61, 103. कूटप्रस्थितसंचया (नदी) Harîv. 8773. घर्षस्य संचयं कुर्यात् Jâṭ. 3, 47. राजानं प्रथमं विन्देत्ततो भार्यां ततो धनम् । त्रयस्य संचयेनास्य ज्ञातीन्पुत्रांश्च तारयेत् ॥ MBh. 1,6216. वाससाम् R. 2,91,69. 100,7. R. Gorr. 2, 100,67. 3,39,21. 4,50,33. fgg. शुभानामशुभानां च कुरुते संचयं मरुत् MBh. 3,12633. धर्मस्य R. 2,100,33. श्मशान° Nir. 3,5. चित्त° R. 2,39,14. R. Gorr. 2,31,30. 35,42. Spr. (II) 290. 1370. 1893. Kathâs. 12,194. 34, 38. 44,115. 64,65. काष्ठ° Pañkat. 175,1. पत्रिरलपत्र° MBh. 1,1383. 3,15150 (वज्रसंचये: mit der ed. Bomb. zu lesen). ओषधि° 12,5341. हिम° Harîv. 8267. प्राकार° 15141. शोणित° 15994. पित्त° Suça. 1,20,8. — R. 2,88,4. 95,10. R. Gorr. 2,96,6. अघ° 125,17. पावक° 3,36,18. 4,44, 63. Ṛt. 1,1. कच° Spr. (II) 1670. अस्थि° 4909. Mâlatîm. 14,5. पलालधूम° Varâh. Bṛh. S. 30,38. घनतिमिर° 38,1. इष्टका° 89,1. ग्राम° Kathâs. 18,128. 53,78. ग्राव° Râja-Tar. 6,172. Pañkat. 33,6. तपः° R. 5,42,3. वर° 89,62. पुण्य° Mârk. P. 61,40. पाप° Varâh. Bṛh. S. 46, 2. दुष्कर्म° Spr. (II) 5275. बल° R. 6,11,4. सुरवधू° (pl.) Verz. d. Oxf. H. 64,b,6 v. u. उत्सन्नसंचयतृणा *so v. a.* उत्सन्नतृणसंचय Harîv. 3490. अति° Kathâs. 61,105. अ° adj. *keinen Vorrath habend* MBh. 13,2018. संचय nom. act. in der Bed. *Zusammenlesung* Pañkat. 244,2. 4. यक्ष° Vet. in LA. (III) 13,9 wohl fehlerhaft für °संचर. — Vgl. घर्ष° (auch Bhâg. 10,12. Spr. (II) 2129. Kathâs. 29,37. 34,211), धन°, संयुक्तसंचयपिटक.

संचयन (wie oben) n. *das Sammeln:* der Todtengebeine Âçv. Gṛhj. 4,5,1. Çâṅkh. Çr. 4,15,10. Kâty. Çr. 25,8,1. 7. 13,46. M. 5,59. 68. Mârk. P. 35,43. fg. धन°, पशः° Spr. (II) 7353.

संचयवत् (von संचय) adj. *mit Reichthum versehen, reich* Spr. (II) 2625.

संचयिक (wie oben) in षण्मास° *der Vorräthe für ein halbes Jahr hat* M. 6,18. अ° *gar keine Vorräthe habend* 43, v. l.

संचयित्व (von संचयिन्) n. *das Angehäuftsein:* मलस्य Suça. 2,87,11.

संचयिन् (von संचय) adj. 1) *Reichthümer besitzend:* संचयी नावसीदति MBh. im ÇKDa.; vgl. धन° unter धनसंचय. — 2) *angehäuft, in Fülle vorhanden;* vgl. संचयित्व.

संचरँ (von चर् mit सम्) 1) adj. *a) wandelnd, einhergehend:* मूर्ति° so v. a. *verkörpert* Uttarar. 107, 15 (143, 12). Vgl. दिवा°. — *b) was zusammengeht, zusammengehörig, gleichzeitig* VS. 24, 19. द्वयीषि Çiñkn. Bh. 5, 3. 5. 3. — 2) m. am Ende eines adj. comp. f. सा *a) der Platz, auf dem man sich bewegt, Weg, Durchgang, Passage* (im Ritus namentlich *der jedem Theilnehmer angewiesene Raum*) P. 3, 3, 119. पद्मानाम् TS. 5, 4, 2, 5. Çat. Br. 1, 9, 2, 4. 3, 1, 2, 23. यज्ञमान° Lâṭ. 3, 7, 11. Kâṭ. Çr. 1, 3, 42. 2, 3, 40 (स°). प्रतिप्रस्थातु: 5, 3, 18. सधर्यु° 3, 4, 6. दीक्षित° 7, 9, 32. Âçv. Çr. 4, 2, 12. विसंस्थित° *der, so lange das* Savana *noch dauert, einzunehmende Platz* 5, 3, 28. 19, 8. 6, 5, 3. Kâṭ. Çr. 11, 1, 37. Lâṭ. 2, 2, 14. य: (रात्रपथ:) संचरो ऽभूदभिसारिकाणाम् Rāgh. 16, 12. Kumâras. 6, 43. Kathâs. 39, 24. Verz. d. Oxf. H. 48, *a*, 3. = सेतु Taik. 2, 1, 18. Vgl. दुर्ग°. — *b)* im Sâṁkhja *Evolution, Entwickelung* (Gegens. प्रतिसंचर, संप्रतिसंचर) Tattvas. 26. — *c) Körper* H. 863. — Vgl. संचार.

संचरण (wie oben) 1) adj. (f. ई) *worauf man geht, gangbar:* गवामिव सुतयं: संचरणी: ṚV. 6, 24, 4. एषा सृति: सती संचरणी Çat. Br. 14, 6, 11, 3. — 2) n. *das Sichbewegen* Sarvadarçanas. 174, 15. 175, 10. स्थानात् Sûçr. 1, 109, 6. वायो: कुतो 49, 9. चरण° Milâṭîm. 15, 12. पिपीलिकाण्डसंचरणाद्विष्यति वृष्टि: Wilson, Sâṅkhjak. S. 113. कील° *mittels* Paṇâṭ. 44, 17. *das Befahren:* समुद्रं न संचरणे सनिष्यवं: ṚV. 1, 56, 2. 4, 55, 6. — Vgl. सनु°.

संचरिष्णु (wie oben) adj. *sich bewegend, umherschweifend:* भुवनान्तरेषु Çiç. 1, 46.

संचरेण्य (wie oben) adj. *wandelbar* Nir. 1, 6. ṚV. 1, 170, 1.

संचल (von 1. चल् mit सम्) adj. *zuckend, bebend;* s. संचलनाडि.

संचलन (wie oben) n. *das Zucken, Beben* Daṁṭûp. 19, 2. मही° Mâṅk. P. 9, 18. अचल° Kir. 18, 8. Milâṭîm. 147, 12. — संचलनादि R. 2, 65, 13 fehlerhaft für संचलनाडि.

संचलनाडि f. *Pulsader* R. od. Bomb. 2, 65, 14. संचलनादि fälschlich Schr. संचस्कारयिषु s. संचिस्कारयिषु.

सञ्चान m. *ein best. Vogel,* = मल्लावीर Med. r. 291. st. dessen कोकिल H. an.

संचाय्य (von 1. चि mit सम्) adj. (क्रतौ) P. 3, 1, 130. Vop. 26, 11.

संचार (von चर् mit सम्) m. am Ende eines adj. comp. f. सा. 1) *das Sichergehen, Umherstreichen* u. s. w. (von Menschen und Thieren aller Art) R. 2, 45, 21. 3, 52, 34. प्रियकाननसंचारा *sich gern in Wäldern ergehend* 68, 6. Mṛicch. 110, 4. संचारे कर् Spr. (II) 1661. तिमिर° *in der Finsterniss* 5202. Uttarar. 32, 14 (42, 16). Kathâs. 72, 133. 104, 69. Râga-Tar. 3, 302 (zu schreiben न त्रासु d. i. वीथिषु). Verz. d. Oxf. H. 122, *b*, 14. Sin. D. 116. क्रूर° (क्रूर = व्याघ्रादि) Prab. 92, 16. कस्तूरीमृग° Mallin. zu Kumâras. 1, 53. सिंह° Kathâs. 18, 96. मत्संचारबिल (eine Maus spricht) 61, 110. यक्षि° 101, 290. मत्स्यकच्छप° Bhâg. P. 8, 2, 16. कुतो ऽत्र वृषभयाने रात्रसंचार: *das Fahren* Mṛicch. 119, 15. *Bewegung* überh.: पाद° Harîv. 11466. तारानक्षत्र° Jâṭ. 3, 172. der Sonne (und einer Kuh) Rāgh. 2, 15. der Wolken (und Menschen) Spr. (II) 7188. पद्म° Sûçr. 1, 67, 3. सूत्रसंचाराधिष्ठितदारुपुत्रक Kuṭṭ. 23, 7. नेत्र° Spr. (II) 3807. प्राण° Bâdar. 131. Wilson, Sâṅkhjak. S. 104. नाडी° Verz. d. Oxf. H. 76, *a*, 14. रश्मि° *Bewegung der Zügel* so v. a. *das Lenken* MBu. 8, 4014. R. 6, 90, 7. असंचार सचाम् *das nicht von der Stelle Geschobenwerden* Lâṭ. 10, 2, 15. वाक्य° *Gang einer Rede* so v. a. *Art und Weise zu reden* MBu. 12, 4332. विचित्रपदसंचारा: कथा: *Fluss der Worte* 13, 716. — 2) *Hindurchgang, Passage:* अभवद्धारसंचारा पृथिवी पर्वतैरिव Harîv. 2609. der Zunge zwischen den Zähnen Spr. (II) 3006. सूची° adj. *wo keine Nadel hindurchgeht* 785. Râga-Tar. 8, 980. concret *Durchgang:* पर्याप्तसंचारा वृत्ता: MBu. 13, 280. यावत Kâm. Nîtis. 16, 16. क्रूरस्यमासाग्र संचारं नासौ विनमते क्वचित् MBu. 3, 2929. — 3) *Uebergang in:* इन्द्रियान्तर° (*das Uebertragen von einem Sinne auf den anderen* Strassen) Jâṭ. 3, 174. स्वपरशरीरयोर्यदा शरीरसंचारं जानाति Verz. d. Oxf. H. 231, *a*, 38. fg. — 4) *Weg, Pfad* Harîv. 12240. देव° 11571. *Führte des Wildes* Schol. zu Çiç. 23, 11. — 5) *Lebensgang:* महापुरुष° Sin. D. 189, 6 (v. l. सत्कार, das = गुणावर्णन sein soll). संचारे (संचरे od. Bomb., welches Nîlak. durch योनिसंचरे उत्क्रान्त्यादिषु च erklärt) पद्यमानश्च दोषैरात्मकृतैर्नर: MBu. 3, 13874. man könnte संसारे vermuthen. — 6) Bez. des ऊँकार (Çâṅk. liest संचर, welches durch विकल्प्यमानस्वरूप erklärt wird) Kaṭha-Up. 1, 13, 3. — 7) fehlerhaft für संचर *Evolution, Entwickelung* in त्रैगुण्य° Verz. d. B. H. No. 636. für संसार (vgl. u. 5) Maitrâyaṇ. 6, 28. für सञ्चार Kâm. Nîtis. 12, 34. — Vgl. दु:°, दुःख°, दुर्ग°, नि:° (*das Nichtlustwandeln:* निशीथनि:संचाररमणीयता मार्गस्य Milâṭîm. 126, 6), पात्र° (अतीतपात्रसंचारे auch MBu. 12, 264. 13, 6503. es entspricht dem वृत्ते शरावसंपाते M. 6, 36. MBu. 14, 1278), भूत°, मुख° und संचर.

संचारक (wie oben) 1) m. *a)* = चारक *Führer* H. an. 3, 40. Spr. (II) 5004. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBu. 9, 2376. — 2) f. संचारिका *a) Liebesbotin* AK. 2, 6, 4, 17. H. 521. Hâlâ. 2, 336. *Kupplerin* Med. k. 219. — *b) Paar.* — *c) Nase* (घ्राण) Med. — Vgl. पर° und संघाटिका.

संचारज्ञीविन् adj. = शरणार्पक (st. dessen शरणापन्न ÇKDa.) Taik. 3, 1, 2. wohl so v. *Landstreicher.*

संचारण (vom caus. von चर् mit सम्) n. 1) *beiläufiges Hinzutreten* Sin. D. 27, 7. 9. — 2) *das Beisichführen* Comm. zu Kâm. Nîtis. 7, 17.

संचारणीय (wie oben) adj. *zu übertragen auf* (loc.) Sin. D. 310, 3.

संचारपथ m. *Spazierweg* Harîv. 4531.

संचारयितृ (vom caus. von चर् mit सम्) nom. ag. *Führer:* प्राणास्य ब्रह्मलोकपर्यन्तं सूर्यरश्मिद्वारा संचारयित्री Comm. zu Maitrâyaṇ. 6, 21.

संचारिन् (von चर् mit सम् und von संचार) 1) adj. *a) sich ergehend, wandelnd, in Bewegung seiend, hinundhergehend, beweglich* Rāgh. 6, 67. Kumâras. 3, 54. सगाधजल° (रोहित) Spr. (II) 30. यद्येष्टसंचारिण: काका: 2123. Milâṭîm. 13, 12. Kathâs. 17, 142. 28, 191. स लोष्ट इव संचारी प्रतस्थे Râga-Tar. 3, 398. 4, 449. Paṇâṭ. 4, 1, 27. Paṇâṭ. 44, 14. Hit. 122. शिवशिर:संचारिनाकापगा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 502, Çl. 2. पत्र *Blatt* Gîr. 6, 11. ग्रन्थि (Gegens. अचल) Sûçr. 2, 450, 18. — *b) übergehend* (von Krankheiten) so v. a. *erblich* oder *ansteckend* Jâṭ. 1, 54. Kull. zu M. 3, 7. स्पर्श° Râga-Tar. 4, 524. — *c) sich bei Jmd befindend:* छातपत्र so v. a. *den man mit sich führt* Râga-Tar. 3, 32. am Ende eines comp. *sich befindend in:* पञ्जरान्तरसंचारी शकुन्त: MBu. 14, 2338. वक्त्र° (वायु) Sûçr. 1, 250, 9. Mṛicch. 84, 10. *sich befin-*

dend bei so v. a. *beschäftigt mit:* वत्सपालन° Pañcat. 4, 1, 22. — *d) beiläufig hinzutretend, accessorisch:* भाव, रस H. 295. Sin. D. 33. 45. 208. 234. 245. 600. 28, 9. 81, 5. 245, 10. Davon nom. abstr. संचारित्व n. 75, 3. — *e) fortbewegend:* नाडी प्राणसंचारिणी Maitrâyaṇ. 6, 21. — *f) bei sich führend:* विज्ञातव्य° Kâm. Nîtis. 7, 47. — *g)* st. सुख° Harîv. 3499 liest die neuere Ausg. सुखसंचार wo man *sich angenehm ergeht.* — 2) m. *a) Räucherwerk, der vom Verbrennen von Räucherwerk aufsteigende Rauch* Trik. 2, 6, 38. — *b) Wind* Çabdam. im ÇKDr. — 3) f. संचारिणी *eine best. Pflanze,* = दंसपदी Râǵân. im ÇKDr. — Vgl. तनु°, देह°, शीघ्र°.

संचार्य (von चर् mit सम्) adj. 1) *zugänglich:* अ° *unzugänglich für* (instr.) Harîv. 3637. — 2) *zu Wege gebracht werdend, vermittelt:* प्राणो मुखनासिकासंचार्या हृदयवृत्तिः Çâṅk. zu Bṛu. Âr. Up. S. 283.

संचालक Mṛch. 86 fehlerhaft für संचारक (wie H. an. 3, 40 liest) *Führer.*

सञ्चाली f. *der Same von Abrus precatorius Lin.* (गुञ्जा) Jukticalpataru im ÇKDr.

संचिकीर्षु (vom desid. von 1. कर् mit सम्) adj. *zu veranstalten beabsichtigend:* श्राद्धदेवपूजादि° Kull. zu M. 3, 86.

संचिचिप्सु (vom desid. von 1. चिप् mit सम्) adj. *eine kurze Darstellung zu geben beabsichtigend* Varâh. Bṛu. S. 86, 10.

संचिति (von 1. चि mit सम्) f. 1) *Schichtung* Âçv. Gṛhy. 4, 2, 22. Titel des 9ten Buchs im Çatapathabrâhmaṇa. — 2) *das Sammeln, Sparen:* स्वल्पधनस्य संचितिर्बलम् Spr. (II) 7200.

संचित्रा (सम् + चित्र) f. *Salvinia cucullata Roxb.* Çabdam. im ÇKDr.

संचित्य (von चित् mit सम्) adj. 1) *woran man denken muss, zu erwägen, in Betracht zu ziehen* Jâân. 2, 275. MBu. 13, 4464. — 2) *zu betrachten, anzusehen als* (°वत्): पुत्रवत्ते ऽपि संचित्याः Spr. (II) 3320. — Vgl. दुः°.

संचिन्वानक (von संचिन्वान, partic. von 1. चि mit सम्) adj. *mit Sammeln* (von Reichthümern) *beschäftigt* Spr. (II) 6692.

संचिष्कारयिषु (vom desid. des caus. von 1. कर् mit सम्) adj. *Jmd* (acc.) *die* (letzte) *Weihe ertheilen zu lassen beabsichtigend* MBu. 15, 706. संचस्कारयिषु ed. Bomb. und Nîlak.

संचीवरय्, °यते = चीवराण्यर्जयति und परिधत्ते P. 3, 1, 20 nebst Vârtt. 2. = चीवराणि संमार्जयति und परिदधाति Vop. 21, 17.

संचेत् (von चर्त् mit सम्) f. *das Zusammenheften, Schliessen* RV. 3, 34, 2.

संचेय (von 1. चि mit सम्) adj. P. 3, 1, 130, Schol. *zu sammeln, anzusammeln* Spr. (II) 743, v. l.

संचोदक (vom caus. von चुद् mit सम्) nom. ag. *Antreiber* als N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 249, 11.

संचोदन (wie eben) 1) n. *das Antreiben, Anfeuern:* तव संचोदनार्थम् Harîv. 3059. — 2) f. आ *Reizmittel* MBu. 12, 11378.

संचोदयितव्य (wie eben) adj. *anzutreiben, anzufeuern* Harîv. 4554. संनोदयितव्य die neuere Ausg.

संछर्दन (von छर्द् mit सम्) n. *das Speien,* Bez. einer der zehn angeblichen Arten, auf welche eine Eklipse endet, Varâh. Bṛu. S. 5, 31. 37.

संछेत्तृ (von 1. छिद् + सम्) nom. ag. *Zerhauer, Löser:* सर्वसंशय° MBu. 14, 945.

संछेत्तव्य (wie eben) adj. *zu zerhauen, zu lösen:* संशय MBu. 12, 4231.

सञ्ज्, सजति Dhâtup. 23, 18 (सङ्गे, परिषङ्गे). P. 6, 4, 25. Vop. 8, 102. असाङ्क्षीत् (s. u. प्र), ससञ्ज, ससञ्जतुम् und समक्तुम् Vop. असक्तः सङ्क्ष्यामि (vgl. unter आ und Kâr. 2 aus Siddh. zu P. 7, 2, 10); partic. सक्त. 1) *anhängen, zusammenhängen* Çâṅk. Bh. 24, 1. यदग्र दुरुधं पृथिवीमसक्त *sich hängen an* TBr. 1, 4, 3, 3. — 2) act. *hängen bleiben, sich anheften:* समज्जुः (समज्जुः ed. Calc.) — मनोभवेषु फलरेणवः Raghu. 4, 47. — 3) pass. सज्यते *hängen* (intrans.) *an* Çat. Br. 10, 2, 6, 3. 14, 6, 9, 28. 11, 6. gewöhnlich mit Assimilation सज्जते (episch auch सज्जति, welches Dhâtup. 7, 22 als bes. Wurzel in der Bed. गतौ angeführt wird; vgl. संससज्जतुम् unter सम्) *an Etwas* (loc.) *gehängt —, geheftet werden; hängen —, stecken bleiben:* गुणेन सज्जते (in dieser rein passiven Bed. wäre wohl richtiger सज्यते) दृक्: Pañcat. 2, 8, 31. मासज्जत शिचस्तत्त्याम् Bhâg. P. 7, 2, 32. यथा नभः सर्वगतं न सज्जते 42. MBu. 5, 2222. येषां नोपरि नाधश्च न तिर्यक्सज्जते गतिः R. 5, 53, 20. 69, 18. 4, 28, 27. सज्जमानः पदे पदे Harîv. 9457. वाचा सज्जमानया 4856. MBu. 1, 7769. R. 2, 58, 11 (13 Gorr.). 60, 4. 64, 10. *stecken bleiben* so v. a. *anstehen, zögern* MBu. 1, 7176. R. 4, 28, 33. Spr. (II) 5623. act.: पादपाग्रेषु सज्जन्ती R. 3, 58, 13. सज्जत्सु चक्रेषु MBu. 7, 3538. Harîv. 4759. नहि बाणा मयोत्सृष्टाः सज्जन्तीह शरीरिणाम्। कायेषु *bleiben nicht stecken* so v. a. *durchbohren, fliegen hindurch* MBu. 5, 7045. *geheftet sein auf, hängen an* so v. a. *sich hingeben, sich beschäftigen mit, mit den Gedanken, mit dem Herzen bei Jmd* oder *Etwas* (loc.) *sein;* med.: कस्यास्त्वयि न सज्जेत मनो दृष्टिश्च Bhâg. P. 9, 14, 20. कर्मसु सज्जन्ते MBu. 3, 63. 13157. R. 4, 61, 57. 5, 47, 17. Bhâg. P. 5, 2, 46. तस्मिन्कर्मणि Spr. (II) 7395. गुणकर्मसु Bhag. 3, 29. गुणेषु Bhâg. P. 5, 5, 44. कामभोगेषु R. 4, 34, 28. घकार्येषु Spr. (II) 6685. fgg. Kâm. Nîtis. 17, 56. विवर्त्मसु 5, 52. व्यसने 7, 5. न ते लोकेषसज्जत (so ist zu lesen; vgl. Muir, ST. 4, 331) निरपेताः प्रजासु ते VP. 1, 7, 7. गृहे Bhâg. P. 5, 18, 13. उपधर्मेषु 4, 19, 25. इन्द्रियार्थेषु 22, 52. असद्ग्रास्त्रेषु 7, 13, 7. यत्र Spr. (II) 5103. Bhâg. P. 1, 3, 36. 10, 24. 11, 3, 5. माता पिता चेति राम सज्जेत यो नरः Spr. (II) 1301. Bhag. 3, 28. Bhâg. P. 3, 15, 27. act.: यत्र वा दृष्टिर्न सज्जति MBu. 1, 7694. कस्या मनस्ते — स्त्रिया न सज्जेदुभयोः Bhâg. P. 4, 25, 42. सज्जन्ति पुरुषे नार्यः MBu. 13, 2291. विषयेषु M. 6, 55 (v. l. med.). Spr. (II) 808. Bhâg. P. 3, 23, 54. 2, 1, 39. — 4) partic. सक्त *anhängend, anhaftend* AV. 5, 13. 1. तत्र तत्र हि दृश्यन्ते सक्ताः कनकबिन्दवः R. 2, 88, 9. कौशेयतन्तवः 10. कङ्कपत्रे। सक्ताङ्गुलिः कृः Raghu. 2, 31. विमोचयन्ती शाखासु वल्कलमसक्तमपि Çâk. 45. अन्योऽन्यसक्ताः (तिस्रो मात्राः) Prâtiçâkh. 5, 6. असक्तो बाहुः *an Nichts geklammert, frei* R. 3, 75, 6. मालया कण्ठसक्तया 4, 12, 47. कस्माद्भारि तिष्ठेत्त्व सक्तः so v. a. *wie angenagelt* MBu. 5, 944. किं भित्तिसक्तस्त्वं तिष्ठस्यालिखितो यथा Kathâs. 72, 290. इषूनसक्तांस्वरितः प्राकिरोत् *nicht hängen bleibend, durchfliegend* MBu. 14, 2139. असक्तं (अशक्तं die ältere Ausg.) च रथो याति Harîv. 9741. तव भर्तृसक्तो (so ed. Bomb.) ऽयमृत्युः Pañcat. 186, 24. मत्सक्ता स्त्रीकृत्या 221, 14. मुनिपुणापरमासक्तत्व adj. (नृप) so v. a. *übertragen, anvertraut* Kâm. Nîtis. 5, 93. सुराः सक्तवैरा (v. l. बद्ध°) दैत्ये: so v. a. *im Streit befindlich* Çiç. 48, v. l. बलव्यसन° (v. l. °युक्त) *steckend in, behaftet mit* Spr. (II) 2872, v. l. मम सक्तम् so v. a. *mir gehörig* Pañcat. 222, 13. 15. असक्तम् adv. *ununterbrochen* H. 1471. Hall. 4, 13. स्वप् Kâm. Nîtis. 7, 57. *geheftet —,*

gerichtet auf, hingegeben, obliegend, beschäftigt mit, mit den Gedanken oder dem Herzen an Jmd oder Etwas (loc.) *hängend:* पार्श्वस्थ चतुरुर्व-श्याम् MBh. 3, 1800. तत्र तत्रैव सक्तभूदृष्टिः 2199. वसुधासक्तनयना R. 3,60,7. Rāgh. 2,28. Kathās. 18,81. सत्यैव सक्ता बुद्धिम् R. 2,102,9 (110, 8 Gorr.). प्रियस्य भावेषु च सक्तभावाः 5,11,16. रत्यर्थं सक्तमनसो रावणे रावणस्त्रियः 5,14,36. सक्तमनसां कान्तामुखविलोकने Spr. (II) 3698. Rāgā-Tar. 6,177 (सक्त bei Tr. Druckfehler). गिरीशं प्रति सक्तमानसा Kumāras. 5,2. चित्तं सक्तं कास्वपि दृष्टिषु Verz. d. Oxf. H. 228, *a*, N. परान्न-स्त्रीसक्तचित्त Varāh. Bṛh. S. 69, 20. सम्यगभियोजनसक्तचित्त (भूप) 19,9. अप्सरसि सक्तः (दानवपुंगवः) R. 4,51,13. पुत्रदारकुटुम्बेषु Maitrjup. 6, 28. सुहृत्सु (beide Ausgg. शक्त, was = प्रियंवद sein soll) Daśak. 140,7. स्त्रीघ्नगम्यासु Varāh. Bṛh. S. 68, 69. अर्थकामेषु M. 2,13 (अ°). विषयेषु 7,30. कर्मणि Bhag. 3,25. यज्ञे MBh. 14,2810. ग्राम्येषु भोगेषु Spr. (II) 6657. R. 4,31,3. स्वकृत्याशने Spr. (II) 2575. गृहेषु Bhāg. P. 1,13,16. क्रीड-नादिषु 4,8,37. 5,19,6. häufig in comp. mit der Ergänzung: द्यूतस्त्री-पान° Jāān. 2,267. तपः° MBh. 14,2810. Spr. (II) 4432. 5438. Varāh. Bṛh. S. 5,33. 39. 74. 12,6. 15,6. Kathās. 19,46. Mārk. P. 24,22. Rāgā-Tar. 1,308. Pañcat. 89,18. ohne Ergänzung Bṛh. Ār. Up. 4,4,6. Maitrjup. 4,3. Spr. (II) 4315 (Conj. für शक्त). अ° Śārṅgaj. 40 (अशक्त Lassen). Rāgh. 1,21 (सर्व zu ergänzen). Bhāg. P. 1,6,28. 3,3,19. fehlerhaft für अशक्त Kām. Nītis. 13,25. — 5) partic. सक्तवत् so v. a. समज्ञ *heftete an:* गजपुष्पीं तां तस्य कण्ठे स सक्तवान् R. 4,12,46. — Vgl. उत्कसक्त.

— caus. 1) सञ्जयति *anheften:* सञ्जितवान् als Erkl. von असक्त Çaṅk. zu Bṛh. Ār. Up. 1,3,8 (und Sāj. zu Çat. Br. 14,4,1,9). *in Verbindung bringen mit* (loc.): सत्त्वं (subj.) सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि, तमः प्रमादे स-ञ्जयत्युत Bhag. 14,9. — 2) सञ्जयति (vgl. pass.) dass.: वृत्ते पाशमसञ्जयत् Kathās. 13,99. सञ्जित = काचित Halāy. 4,83. सञ्जयन्ति हि ते नारीः so v. a. *verkuppeln* M. 8,362. *hängen an, heften auf:* काले देशे च मनो न सञ्जयेत् Bhāg. P. 2,2,15. असञ्जितात्मन् 5,13,20. — सञ्जय् *bereit machen* s. bes.

— desid. सिषञ्जति P. 8,3,64, Schol.

— यति, partic. °यक्त *zusammenhängend mit* (instr.) AV. 12,3,23. °सक्त *heftig hängend an:* विषयातिसक्तचेतसम् Daśak. 65,6.

— व्यति *an entgegengesetzten Orten verbinden, verschränken, verschlingen, mit einander in Verbindung setzen:* सोमयवक्षीरं सुराग्रक्षीरञ्च व्यतिषजति । घृताग्नेनैवैन व्यतिषजति TBr. 1,3,8,5. व्यतिषजति पदार्थानान्तरः को ऽपि हेतुः Uttarār. 108,4 (146,3). *Jmd in Etwas hineinziehen, verwickeln* (z. B. in ein Spiel): मां व्यत्यषजत् (so ed. Calc. st. व्यत्यसजत्) Daśak. 70,7. व्यतिषक्त *verschränkt, verschlungen, verflochten, untereinandergemischt:* व्यतिषक्तं वै तत्र विशा TBr. 2,7,18,3. यत्रान्या घन्या ओषधयो व्यतिषक्ताः स्युः TS. 5,2,6,3. 6,4,2. 5,4. 7,4, 3,5. Ait. Br. 1,11. छन्दांसि Çat. Br. 3,4,4,2. 5,4,2,9. 7,3,1,4. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,91. 94. केशबन्धव्यतिषक्तमल्लिका Bhāg. P. 10, 6,5. (युद्धम्) तावकानां परेषां च व्यतिषक्तरथद्विपम् MBh. 6,1365. 2125. 2421 (an den beiden letzten Stellen ed. Calc. fehlerhaft व्यतिषिक्त). 3506. 9,531. Harīv. 5028. युद्धं तव तेषां च — नराश्वरथनागानां व्यति-षक्तं परस्परम् MBh. 6,3336. अन्योऽन्य° 14,991. M. 10,25. Harīv. 3441. मूर्यरश्मिभिः 12097 (die neuere Ausg. fehlerhaft व्यतिषिक्त, welches Nīlak. durch मिश्रित erklärt). सर्वैरपि गुणैः MBh. 14,1378. व्यतिषिक्त fehlerhaft in beiden Ausgg. 4,1043. 10,7329. व्यतिषङ्गम् absol. Çat. Br. 2,6,1,32. °यस्य *sich gegenseitig bei der Hand fassend* Pañcav. Br. 14,8,4. 15,2,9. Vgl. व्यतिषङ्ग.

— घञ् 1) act. *a) behängen:* आत्मानं रसेन Çat. Br. 7,3,1,3. — *b) hinzufügen* Pāṇ. Gaṇ. 1,5. 8. — 2) pass. *a)* °सक्ति *a) hängen bleiben —, haften an* (loc.): धर्मपूते च मनसि नभसीव न ज्ञातु रजो ऽनुषक्तिते Daçak. 64,18. *sich anschliessen* Comm. zu VS. Prāt. 4,173. — *β) sich wieder anschliessen* so v. a. *aus dem Vorangehenden nachgelten, — zu ergänzen sein:* संनिधानादेवेत्यनुषक्तिते Comm. zu Kāp. 1,98. Sāh. D. 238,4. — *b)* °सक्ति *α) sich Jmd* (acc.) *anschliessen* so v. a. *auf dem Fusse folgen:* गोपास्तमन्वसञ्जन्त शकटैः Bhāg. P. 10,39,33. 83,24. — *β) hängen an* so v. a. *sich hingeben, sich beschäftigen mit, mit den Gedanken, mit dem Herzen bei Etwas* (loc.) *sein:* इन्द्रियार्थेषु, कर्मसु Bhag. 6,4. कुशले कर्मणि 18,10. काये Bhāg. P. 4,20,5. द्रविणे 11,23,23. — 3) partic. घनुषक्त *a)* mit act. Bed. *haftend an:* मृत्युर्जरा च व्याधिश्च दुःखं यानेक-कारणम् । घनुषक्तं पदा देहे MBh. 12,6345. *hängend an* so v. a. *auf dem Fusse folgend:* रथाङ्ग Bhāg. P. 9,4,50. परानुषक्त (पराक् पृष्ठतो लग्नः Comm.) 3,18,9. *gekettet an, in naher Verbindung stehend mit* (gen.) Maitrjup. 4,6. — *b)* mit pass. Bed. *behaftet mit* (instr.): रसेन Çat. Br. 7,3,1,3. पाप्मना 2,2,3,10. मृत्युना (so mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 12,6670. Spr. (II) 2381. नकारानुषक्त Siddh. K. zu P. 7,1,59. दुःखानु° Sarvadarçanas. 116,2. वियानु° 118,5. — Vgl. घनुषङ्ग fgg. und घानुषक्त.

— घभि, °यक्ति P. 8,3,65, Schol. 1) *Jmd* (acc.) *Etwas anhängen* so v. a. *über Jmd einen Fluch aussprechen:* घभिषक्तो ऽभिषक्तेत् Spr. (II) 3217. — 2) *Ansprüche machen* oder *haben auf* (loc.): तदेवासनमन्विच्छेत्तत्र नाभिषक्तेत् (नाभिषक्तेत् ed. Bomb.) परः MBh. 4,95. — Vgl. घभिषङ्ग. — desid. घभिषिषङ्क्षति P. 8,3,64, Schol.

— घव 1) *hängen —, befestigen an:* घनागसि गुरौ यो मे मानसर्षमवासृजत् (wohl घवासजत् zu lesen; vgl. 1,1692. 1743) MBh. 1,1973. स्क-न्धदेशे ऽवसज्य पाणिम् 15,486. पुष्पदाम कण्ठे Harīv. 7690. 13135. शि-लां कण्ठे R. 3,53,52. घवसक्तौ शरीरे भूषणानि 5,22,21. स्वामिवचनं हृदयेघवसक्त so v. a. *einprägen* 61,12. घवसक्त *a) angehängt; anhangend, hängend an:* (राज्ञा) घवसक्तः पितुस्ते ऽयं मृतः स्कन्धे भुजंगमः MBh. 1,1692. 1743. मुद्रा Harīv. 2430. वासस् (so v. a. *hängen geblieben, angestreift*) Mṛicch. 23,9. क्षौद्रूतावसक्तेन (°सिक्तेन die neuere Ausg., was Nīlak. durch व्याप्त erklärt) Harīv. 4301. पादपशाखाग्रेषु नार्यः R. 4, 44,103. वारुणेषु 7,28,36. शाखावसक्त 2,103,12 (94,12 Schl.). भोगिभो-गावसक्तेन मणिरत्नेन Harīv. 2496. घंसावसक्तपरशु 5292. R. 5,47,36. Varāh. Bṛh. S. 12,6. Kumāras. 7,23. Çiç. 9,7. Kādāp. 4. मल्लीतल्लावस-क्तजानु adj. so v. a. *auf den Knieen liegend* Pañcat. ed. orn. 44,13. ना-दाम्रयावसक्तसुतदुहितृकलत्र *hängend an* so v. a. *gehörig zu, bewohnend* Bhāg. P. 5,14,28. — *b) behängt:* माल्यदामावसक्त Harīv. 10049. — 2) *aufbürden, übertragen:* तं कार्यसमासङ्गमवसज्य रुनूमति R. 4,42,7. कार्य-समाधानमवसक्तं रुनूमति s. — 3) °सज्जते *sich anhängen, auf den Leib rücken:* यथा मा भक्षितुं चैव रुतुं चैवावसज्जते MBh. 13,2198. — Vgl. अव-वसज्जन in den Nachträgen. — caus. partic. अवसञ्जित *behaftet —, ver-*

schen mit: शैर्याव° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 503, Cl. 17.

— आ 1) *anhängen, aufhängen an* (loc.): मूर्धं विषम् RV. 1,191,10. दिवि वृष्णम् 10,124,7. पत्सङ्किनी: AV. 5,21,10. शाखायाम् Kauç. 75. fg. 79. Çat. Br. 2,6,3,17. Kâtj. Çr. 7,9,9. 8,3,26. 13,3,20. मालां कण्ठे आसक्तम् MBh. 3,16125. स्कन्धे चासज्य परशुम् R. 1,74,18. आयुधानि वृक्षेषु 5,91,18. चापं कण्ठे Kumâras. 2,64. धनुर्बन्धानासङ्क्ष्यामि Pat. zu P. 3,1,11 in der ed. Calc. धनुर्बन्ध आसज्यते Siddh. K. 160,b,2. med. *sich anhängen, anlegen* Kâtj. Çr. 24,7,3. *Jmd* (dat.) *Etwas anhängen:* यूयस्मैनाङ्कं हिषते वा (पार्थो लक्ष्मी) संग्रामसि AV. 7,115,1. pass. *hängen bleiben an* (loc.): आसज्यत धनुस्तम्बे Kathâs. 81,37. *sich heften auf:* आसज्यमानेतरा Çâk. 74. — in übertr. Bed. act. *aufladen, aufbürden, übertragen:* भुजे (sc. स्वस्मिन्) भूयः स भूमेर्धुरमासासज्ज Raghu. 2,74. यस्मात्त्वामस्य सर्वाणि राज्यकार्याणि MBh. 1,1955. स्वपुत्रे राज्यम् 13,544. तस्मात्ज्येष्ठेषु पुत्रेषु राज्यतन्त्राणि पार्थिवाः । आसज्यन्ति R. Gorr. 2,7,19. fg. 31, 11 (आसज्य zu lesen). न तु दुर्योधने दोषमिममासक्तुमर्हसि *schieben auf, zuschreiben* MBh. 6,588. तेन वैरमासज्य so v. a. *Feindschaft beginnen* Spr. (II) 4737. आससञ्ज भयं तेषाम् so v. a. *er versetzte sie in Angst* Bhatt. 14,104. — 2) *sich lehnen an* (acc.): मा सारमज्ञात्वा कदलीस्कन्धमासजः आसज ed. Bomb., कदलीस्कन्धतुल्ये निःसारे ऽस्मिन्धर्मे मा सक्तो भवेत्यर्थः Nîlak.) MBh. 3,10581. *sich klammern an:* तमासज्य (आसाद्य ed. Bomb.) R. 2,64,28. *sich hängen an* so v. a. *auf der Ferse folgen:* अमित्रान्व्रणेन AV. 11,10,3. यदि नो ऽसुररक्षसान्यासज्येयुः Çat. Br. 1,5,3,21. 3,6,1,27. in derselben Bed. आसज्जत Buâç. P. 7,8,27. st. आसज्ज MBh. 7,79 liest die ed. Bomb. आसाद्य. — 3) partic. आसक्त *a) angehängt, aufgehängt, hängend —, geheftet an, gelegt an, auf* Çat. Br. 4,1,3,9. 6, 7,1,17. 19. 21. Nir. 9,20. उत्तरीयमिदासक्तं सीतया R. 2,88,10. चक्रे प्रधिः MBh. 5,2081. नियोगपाशाः स्कन्धाभ्याम् Harîv. 3731. गोधाङ्गुलित्रेरासक्तैः R. 2,100,22 (108,21). 5,13,49. Kumâras. 6,8. आसक्तो so v. a. परस्यासक्तो MBh. 1,6020. स्कन्धासक्तं कृत्तम् 13,436. वृक्षाग्रासक्तपाद R. 3,10,6. वृक्षासक्तानि वल्कलानि 77,26. सत्र्योमासक्तभार 52,9. Raghu. ed. Calc. 1,50. शिखरासक्तमेघाः Kumâras. 6,40. Râga-Tar. 2,167. द्वार्या मुक्तासक्ता Kathâs. 34,98. गृहासक्त *am Hause hängend*, von Hausthieren AK. 2,3,43. Trik. 3,3,22. (मातृः) अभ्यवाद्यदासक्तम् wohl so v. a. *sich an sie schmiegend* R. 2,104,18. पादासक्त so v. a. *Jmd auf Schritt und Tritt folgend* oder *zu Füssen liegend* Spr. (II) 4039. *enthalten in:* अमृतौ नीरम् 6396. यवाष्टकमुदरासक्तम् Varâh. Bṛh. S. 79,8. *geheftet —, gerichtet auf:* गगणासक्तलोचन R. Gorr. 2,10,18. 26,5. Pañcât. 46,14. चित्त, चेतस्, मति, मनस्, मानस, हृदय Spr. (II) 993. 1948. R. Gorr. 1, 7,12 (vgl. 9 Schl.). Varâh. Bṛh. S. 46,76. Kathâs. 36,105. Buâç. P. 4, 27,12. Mârk. P. 50,74. Bhâg. 7,1. Kathâs. 45,270. Buâç. P. 3,32,16. Çiç. in LA. (III) 32,11. R. 2,21,19. Kathâs. 15,3. Brahma-P. in LA. (III) 54,12. 19. Buâç. P. 3,30,6. 4,25,3. 9,22,23. von Personen *mit den Gedanken —, mit dem Herzen an Jmd* oder *Etwas hängend, obliegend, sich beschäftigend mit;* = तत्पर AK. 3,1,9. परासक्त (= परलोकप्रिय Nîlak.) MBh. 6,562. नेत्रापणगृहासक्त Spr. (II) 1868. 2193. 2324. 4432. 6276. Varâh. Bṛh. S. 15,27. 16,23. Kathâs. 18,132. 42,116. 50,34. Verz. d. Oxf. H. 128,b,8. Prab. 101,1. Buâç. P. 6,1,29. 7,10,2. Sâh. D. 34,9. Pañcât. 27,9. Hit. 27,16. 60,2. — *b) umwunden:* आयुधे मालादामभिरासक्ते R. 2,33,3. *behängt —, versehen mit:* मधुकरासक्तपक्ष Pañcât. 1,7,16. कस्तूरीकुङ्कुमासक्त 38. — *c) entsponnen* (von einem Kampfe): प्रभिन्नयोर्यदासक्तं (sc. युद्धं) मत्तयोर्वनदन्तिनोः MBh. 9,1164. — Vgl. आसक्ति fgg. und मानासक्त. — caus. 1) *aufhängen* Çârîr. Ça. 17, 4,2. 3. — 2) *anhängen —, aufsetzen lassen:* धात्रीकराभ्याम् — आसञ्जयामास यथाप्रदेशं कण्ठे गुणम् Raghu. 6,83. — 3) *anstellen an* (ein Geschäft): आसञ्जयित्वा त्वां कृत्ये (so ed. Bomb.) कस्मिंश्चित् MBh. 13,5904. — आसाद्य R. Gorr. 2,31,11 fehlerhaft für आसज्य. — desid. आसिसङ्क्षति *sich an Jmd machen wollen* Çat. Br. 1,6,4,12. 15.

— अध्या *aufhängen an:* स्थाणौ AV. 14,2,48.

— अभ्या, partic. °सक्त *zusammengehängt*, im Ritual der Fall, wo ein folgender Tag mit derselben Form anhebt, die den vorangehenden Tag schloss, Âçv. Çr. 10,3,4. Comm. zu Pañcâv. Br. 22,3,7 (अभ्यासङ्गः पश्चात्कः im Text).

— उपा s. उपासङ्ग.

— निश्रा, partic. °सक्त *mit den Gedanken —, mit dem Herzen an Etwas hängend:* एकत्र MBh. 13,6476. wohl fehlerhaft für समासक्त, wie die ed. Bomb. liest.

— प्रत्या s. प्रत्यासङ्ग.

— व्या, partic. °सक्त 1) *angeheftet, hängen geblieben, hängend an* (loc.) Harîv. 13005. Kathâs. 18,294. 74,192. वेत्रव्यासक्तकरस्त MBh. 9,1636. Raghu. 7,48. Khandom. 112. *hängend an* so v. a. *im Gefolge seiend* Harîv. 13823. *abhängig von, in Verbindung stehend mit* Müller, SL. 170. *geheftet, gerichtet auf:* चित्तं गृहेषु Buâç. P. 1,19,14. मनस् Spr. (II) 2490. हृदय R. 3,42,8. *mit den Gedanken, mit dem Herzen an Jmd* oder *Etwas hängend, beschäftigt mit* AK. 3,4,23,192. गन्धाभरणमाल्येषु MBh. 4, 713. स्वकार्ये Vikr. 60,6. लीलाशत° Gît. 6,11. Spr. (II) 1436. — 2) *umschlungen* Spr. (II) 1378. — Vgl. व्यासङ्ग.

— सम 1) *anhängen, umschlingen:* तस्य स्कन्धे मृतं सर्पम् — समासञ्जत् MBh. 1,1675. 1699 (nach der Lesart der ed. Bomb. st. समासृजत् der ed. Calc.). सञ्जं राज्ञः स्कन्धे 4418. तस्य स्कन्धे बाहुम् 5,3695. कायुधानि समासज्य 4,150. 174. Harîv. 8242 (कण्ठे zu lesen). — 2) *aufbürden, übertragen, übergeben:* पुत्रे सर्वं समासज्य M. 4,257. पुत्रे राज्यम् 9,323, v. l. मयि सर्वं कुटुम्बम् MBh. 3,14702. रामे भारम् Harîv. 6025. — 3) partic. समासक्त *angehängt:* ग्रीवायां कालपाशः R. 3,56,36. *bespannt:* सिंहैश्चतुर्भी रथः 5,43,15. *gebunden an* so v. a. *abhängig von:* त्वयि प्राणाः R. Schl. 2,64,9. *in Beziehung stehend zu:* युधिष्ठिरे भारती MBh. 4,914. *geheftet —, gerichtet auf:* चित्तं ज्ञसोर्विषयगोचरे Maitrâjup. 6,34. *mit den Gedanken —, mit dem Herzen hängend an, beschäftigt mit:* एकत्र MBh. 13,6476 nach der Lesart der ed. Bomb. जलक्रीडा° Pañcât. 4,1,35. *zurückgehalten:* दीर्घकालसमासक्तं विषम् MBh. 5,2035. *übertragen, anvertraut:* सर्वा धनार्षे Spr. (II) 5559. वानरेषु कार्यम् R. 5,71,10. *behaftet mit:* संताप° Kathâs. 117,55. — Vgl. समासक्ति fgg.

— उद् s. उत्सङ्ग, उत्सञ्जन. उत्सज्यते (°ताम्) Milavim. 172,13 und Spr. (II) 2033 fehlerhaft für उत्सृज्यते (°ताम्).

— उप, °सज्जते *hängen an* in übertr. Bed.: स्त्रीषु स्त्रैणेषु च Buâç. P. 11,26,22. partic. उपसक्त so v. a. *an der Sinnenwelt hängend* R. 7,23,1,48.

— नि, °षज्जति Vop. 8,102. med. *sich Etwas umhängen:* इषुधीन्

ṚV. 1,33,3. तस्य वालो न्यषङ्गि *an ihm hängt ein Schweif* Çat. Br. 3,6,2,4. 5. — partic. निषक्त *angehängt, geheftet —, hängend an* Mâlav. P. 47,13. विटपनिषक्तजलार्द्रवल्कलेषु द्रुमेषु Çiç. 31, v. l. कण्ठे स्वर्यमाकृनिषक्तबाहुम् Kumâras. 3,7. कण्ठनिषक्तशरासन Raghu. 9,50. कार्मुकनिषक्तमुष्टि 11,70. पयोधरनिषक्तचन्दन 19,43. Daçak. 91,5. आत्मानं खड्गे निषक्तप्रतिमं ददर्श Kumâras. 7,36. दरीगृहोत्सङ्गनिषक्तभासः (घोषधयः) 1,10. *geheftet —, gerichtet auf:* मनो यत्र निषक्तमस्य Çat. Br. 14,7,2,8. *fest sitzend in:* निषक्तमिव (so zu lesen) कृदये शास्त्रम् Vasiṣṭha Dh. S. 2,5. — Vgl. निषङ्ग flgg.

— परि, °षज्जति, पर्यषज्जत् P. 8,3,63, Schol. °सज्जते *hängen an (mit den Gedanken, mit dem Herzen):* विकरन्सर्वतो मुक्तो न क्वचित्परिसज्जसे MBu. 12,8320. — desid. परिषिषङ्क्षति P. 8,3,64, Schol.

— प्र 1) *anhängen an* (loc.) Liṭ. 10,4,3. — 2) *behängen, behaften, versehen mit* (instr.): कृदियेण पप्रून् Çat. Br. 1,7,2,21. 4,12. अयज्ञियान्यज्ञेन 5,3,2,2. 3,8,2,20. — 3) *sich hängen an* (loc.): तस्यामसौ प्रासज्जत् Daçak. 65,13. fg. med. mit acc.: कामा मनुष्यं प्रसज्जन्त एते MBu. 5, 770. तन्मा प्रसाङ्क्षीः *so v. a. mit Jmd anbinden, sich an Jmd reiben* Kaṭh. Up. 4,1,2. प्रसक्त्य *an der Welt hängend* Bhâg. P. 3,25,34. — 4) *eintreten, stattfinden, die Folge von Etwas sein:* तथा मा प्रसाङ्क्षीत् Sarvadarçanas. 135,12. 137,13. Sâṅ. Ç. 103,6. प्रसज्येत् (wenn nicht प्रसज्येत zu lesen ist) Sarvadarçanas. 117,16. 137,5. — 5) pass. °सज्यते, °ति, °सज्जते und °ति *a) sich heften, sich klammern an; mit den Gedanken —, mit dem Herzen an Jmd oder Etwas hängen, sich beschäftigen mit:* आसनं तु पदाकृत्य न प्रसज्येत् (प्रसज्जेत् ed. Bomb.) तथा नरः MBu. 13,5005. कर्णान्तिके प्रसज्जन्तः क्वलाश गणिकाकटाक्षाश Spr. (II) 3900. न प्रसज्जेत (प्रसज्येत v. l.) विस्तरे M. 3,125. 6,55. इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्यत (v. l. प्रसज्जेत) Spr. (II) 1121. एतेषु सर्वेषु (Personen) न प्रसज्जेत 2725. 7288. रूपरसादिविषयेषु प्रसज्जत्यः Kull. zu M. 9,2. प्रसज्जति *so v. a. hängt an der Welt* Bhâg. P. 5,13,16. प्रसज्जन्ती *eine Neigung empfindend, verliebt* Harîv. 4621. 9225. — *b*) = 4): वैषम्यनैर्घृण्ये नेश्वरस्य प्रसज्यते Nîlak. 38. इतीतरेतराश्रयः प्रसज्यते 41. Mudr. ST. 4,219,1. Pat. zu P. 6,2,191. Schol. zu P. 5,3,84, Vârtt. 3. Comm. zu TS. Prât. 2,9. 20. 3,1. 19,3. Daiçnâp. 61. Kusum. 30,16. Sarvadarçanas. 11,6. 15, 17. 45,12. 70,13. 162,12. एकपिण्डशब्दौ वृथा प्रसज्येयाताम् *so v. a. angewandt werden, stehen* 70,7. — 6) partic. प्रसक्त *a) anhaftend, anhängend:* प्रसक्ताम्बुमुखी R. 2,29,1. 5,26,19. पुत्राभ्यामिव पद्माभ्यां प्रसक्तास्तोयबिन्दवः 33,18. *geheftet, gerichtet auf:* चित्तमसतां पथि Bhâg. P. 3,27,5. द्विजदेवपत्नीयोगप्रसक्तधी Vasiṣṭha Dh. S. 69,38. पानप्रसक्तकृदया 103,12. *mit den Gedanken —, mit dem Herzen an Jmd oder Etwas hängend, obliegend, beschäftigt mit* Hâlâs. 2,209. व्यसनेषु M. 7,46. इन्द्रियार्थेषु 11,44. MBu. 7,1127 nach der Lesart der ed. Bomb. 8,1144. R. 4,37,12. Spr. (II) 4105. Kathâs. 30,92. Râga-Tar. 6,317. Bhâg. P. 4,31,6. राघवस्य R. 5,20,21. द्यूतपान° M. 12,45. भोगैश्वर्य° Bhag. 2,44. जिह्वालौल्य° Spr. (II) 2421. Uttarar. 91,13 (118,5). Kathâs. 46,217. 52,79. कुक्कुरप्रसक्तपादावत Daçak. 87,14. Pañcat. 197,25. Dhûrtas. 76, 6. ohne Ergänzung *an der Welt hängend* Bhâg. P. 4,19,4.14. *verliebt* MBu. 4,266. Spr. (II) 1815. 3556 (रति°). — *b*) *behaftet —, versehen mit:* वाचा स्वरसंपत्प्रसक्तया (st. dessen °प्रयुक्तया 11) R. 4,63,7. — *c*) *als Folge sich herausstellend, aus etwas Vorangehendem folgend, zur Geltung gelangt* P. 1,1,60, Vârtt. इति द्वितीयाः प्रसक्ताः Kâç. zu P. 1, 1,50. Kathâs. 19,53. Sarvadarçanas. 61,1. Comm. zu TS. Prât. 1,4. 2,29. 3,2. 37. 9,13. 14,5. 21,1. — *d*) *anhaltend, fortwährend, dauernd* (adj. und adv.); = नित्य Gaṭâdh. im ÇKDr. युद्ध MBu. 5,230. परिश्रम R. 2,56,3. प्रणय Mudr. 145,7. घोष Raghu. 13,40. निर्वाण Spr. (II) 6423. यत्न Mâlatîm. 70,20. Sûçr. 1,256,4. 308,14. 2,304,16. 502,19. Vasiṣṭha Dh. S. 86,9. — Vgl. प्रसक्ति, प्रसङ्ग, प्रसङ्गिन्, प्रसक्य. — caus. 1) *eintreten lassen:* वर्षासु सक्तो प्रसज्जिते Naish. 9,96. — 2) *stecken bleiben:* न शरोत्तमा नगेषु u. s. w. प्रसज्जयेरन् *so v. a. würden hindurchfliegen* R. 5,80,22.

— अनुप्र *anhängen, anfügen an* (instr.) Çat. Br. 3,3,4,13. partic. °सक्त *geheftet —, gerichtet auf:* तदनुप्रसक्तकृदया Çiç. 9,62. — Vgl. अनुप्रसक्ति.

— संप्र pass. *geheftet sein auf, hängen an:* न परदारेषु मनो मे संप्रसज्जति MBu. 13,1496. प्रसज्जते कुब्जान्धबडवामेनि: Spr. (II) 5498. — °सक्त 1) *an Etwas hängend, beschäftigt mit:* °मनस् MBu. 12,840. 6579. यत्र Spr. (II) 4933. MBu. 6,3775. — 2) *anhaltend, fortwährend, dauernd:* संप्रसक्तस्य वैरस्य कृतो ऽन्तः R. 4,22,26.

— प्रति *Jmd* (loc.) *Etwas anhängen:* सर्वर्तिमन्यस्मिन् TS. 7,2,2,4. med. *sich Etwas umhängen:* कृष्णाजिनम् Liṭ. 10,20,2. — Vgl. प्रतिसङ्गिन्.

— वि 1) *aufhängen:* प्रवाते TS. 5,4,2,2. Liṭ. 27,3. आतपे Âpast. im Comm. zu TS. 2,109,6. — 2) pass. *a) geheftet —, gerichtet sein auf, mit den Gedanken —, mit dem Herzen an Etwas hängen:* यदा न चेतो मायासु सिद्धस्य विषज्जते Bhâg. P. 3,27,30. नेत्रे विषज्जते 2,2,31. विषयेषु 4,23,28. 29,26. 8,1,18. 11,7,40. विषज्जत् *an der Welt hängend* 10,81, 36. विषज्जन्ती *an einem Manne hängend* 8,12,24. — *b*) *auf dem Fusse verfolgt werden:* दितिजाधमेन विषज्जमानः Bhâg. P. 3,19,6. — 3) partic. विषक्त *aufgehängt, angehängt* AV. 12,3,12. विटपविषक्तजलार्द्रवल्कलेषु द्रुमेषु Çiç. 31. °तूण R. 3,19,27. *stecken geblieben:* काये शराः (mit der ed. Bomb. विषक्त st. विविक्त zu lesen) MBu. 3,7132. 7,739. पथिषु च तत्र तत्र विषक्ताः *hängen —, stehen geblieben* Bhâg. P. 5,8,10. *hängend an, in:* सभा ह्रे विषक्तेव MBu. 2,388. R. 6,14,19. तस्मिन्नीकप्रमुखे विषक्ता दोधूयमाना महापाताकाः MBu. 6,2654. सरस्सु नलिनीजाले विषक्तम् 3160. in übertr. Bed.: अविषक्तचेतस् Spr. (II) 5108. कृष्णविषक्तमानस Bhâg. P. 10,39,31. यस्यां विषक्तकृदयः 10,75,32. *an der Welt hängend* 8,12,39. *hängend an so v. a. abhängig von:* स्वशक्तिविषक्तं रागम् Daçak. 66,15. *so v. a. eingepflanzt, eingeprägt* (= श्रित Comm.): (मन्युः) विषक्तस्तीव्रेण व्रणितकृदयेन Uttarar. 73,13 (94,12). — *b*) *suspensus so v. a. unterbrochen:* von einer Kuh, welche aufhört Milch zu geben, ṚV. 1,117,20. — Vgl. विषङ्ग fg. — caus. partic. विषञ्जित *hängend —, haftend an* Bhâg. P. 10,90,11.

— अधिवि *stehen auf* (loc.): यस्मिन्देवा अधि विश्वे विषक्ताः MBu. 1,727.

— अभिवि pass. *mit den Gedanken —, mit dem Herzen hängen an:* गुणेष्वभिविषज्जते Bhâg. P. 3,27,2.

— सम् pass. 1) *hängen bleiben:* न संसज्जत्यसौ (so ed. Bomb.) MBu.

5,2223. विषाणे समसञ्जत 3,17238. *sich anhängen, zusammengerathen im Kampfe, handgemein werden mit:* बाहुभिः (बाहुभ्यां) समसज्जेताम् 2,917. 3,11506. 4,358. भीष्मः समसञ्जत्किरीटिना 6,3137. med. 3139. 3141. Bhâg. P. 3,10,8. राजानः समसञ्जन्त समासाद्येतरेतरम् *wurden handgemein* MBh. 12,7563. auch mit acc. so v. a. *angreifen:* कुक्षिभोजम् संससञ्जतुराक्रन्दे (nach der Lesart der ed. Bomb. st. समसञ्जतुम् der ed. Calc.; also सञ्ज् als selbständige Wurzel behandelt) MBh. 6,1741. *stocken* von einer Rede: वचो हि परुषातरं न च पदेषु संसज्जते ad Çik. 69, 2. वाचा संसज्जमानया MBh. 1,4225. R. 2,25,37. 90,14. 112,9 (122,9 Gorr.). — 2) *zusammenfliessen, sich vereinigen:* नरस्याश्वस्य नागस्य समसज्जत (= घनतामगमत् Nîlak.) शोणितम् MBh. 7,1397. — 3) *sich entspinnen, sich bilden:* समसज्जन्त पुङ्खानि MBh. 6,2142. — 4) partic. संसक्त a) *hängen geblieben* so v. a. *stockend:* घर्मसंसक्तात्मपद् Harîv. 16160. *feindlich zusammengerathen —, handgemein geworden mit* (Instr.) MBh. 3,668. 680. 6,2263. 7,1257. 14,2416. Harîv. 2737. 4116. 4303. 5060. 5069. 10464. R. 6,18,17. दिवाकरो धूमकेतुना 96,42. *in unmittelbarer Berührung stehend, verbunden, vereinigt:* परस्परम् Pañkar. 4,6,7. मूलानि परस्परम् Viṣṇ-P. in Verz. d. Oxf. H. 51,a,7 = Mâlav. P. 40,24. धन्योन्य° Raghu. 7,21. कासससंसक्तकुस्ताः Ṛt. 3,23. कलिन्दकन्या गङ्गेर्मिसंसक्तजला Raghu. 6,48. चक्रवाकमिथुनानि Mṛicch. 76,18. = चित्तयोरितरेतरम् (so mit Benfey zu lesen) Rîâ-Tar. 5,366. दीपस्य संसक्ता रश्मयः so v. a. *abhängig, bedingt* R. 2,64,68. *verbunden mit* so v. a. *versehen mit:* मरुेन्द्रायुधसंसक्तो (so ist zu lesen, v. l. °संयुक्तो) — घम्बुदो Harîv. 3732. मूत्रश्लेष्मादि° Spr. (II) 4909 (Conj.). Pañkar. 1,7,53 (wohl संसक्तं zu lesen). सक्तचक्र° 11,17. 2,2,20. *dicht anliegend, anstossend, sich berührend* AK. 3,2,17. H. 1451. पश्येमान्पार्थनिर्मुक्तान्संसक्तानिव गच्छतः (शरान्) MBh. 4,2074. दीर्घासंसक्ताभिर्धृतिभिः Vaitân. Bṛh. S. 68,69. वामाङ्गसंसक्तसुराङ्गन Raghu. 7,48. *dicht:* °विटपस्कन्धैः R. 3,79,7. 5,13,61. Kumâras. 3,43. °धाराजलदे मेघे Kîm. Nîtis. 7,38. *ununterbrochen, beständig sich wiederholend* H. 1471. °वद्नाश्वासा MBh. 3,2552. केका Mâlatîm. 145,11. पान Kathâs. 17,1. कलक् 18,108. — b) *geheftet, gerichtet auf:* तस्यां °मनसः MBh. 1,6331. °चेतस् Verz. d. Oxf. H. 256, a,16. *mit den Gedanken —, mit dem Herzen an Jmd oder Etwas hängend, ergeben, obliegend, beschäftigt mit:* घृताच्याम् R. 4,35,7. परपुरुषसंसक्ता Spr. (II) 1827, v. l. सर्वभोगेषसंसक्तः R. 7,3,2. Verz. d. Oxf. H. 51,a,9. कर्मसु Bhâg. P. 4,25,56. 56,b,18 (wohl शक्तयो zu lesen). ब्रह्म° MBh. 13,210. युद्ध° R. 4,15,31. गुरुव्यापार° Spr. (II) 2190. स्वाध्याय° Rîâ-Tar. 6,9. ohne Ergänzung *ergeben, treu anhängend* Harîv. 7391 (nach der Lesart der neueren Ausg. st. संभक्त der älteren). *verliebt* Mâlav. P. 18,42. *an der Welt hängend* Bhâg. P. 4,20,6. — Vgl. संसक्ति fgg.

सञ्ज 1) m. ein N. Brahman's und Çiva's H. an. 2,78. Med. g. 17 (स्वञ्ज gedr., सञ्ज im ÇKDa.). — 2) f. या *Geiss* Taitt. 2,9,26.

सञ्जक m. N. pr. eines Mannes Rîâ-Tar. 8,2361.

सञ्जतर (?) n. N. pr. einer Stadt Pañkav. 118,22.

1. संजनन (von जन् mit सम्) 1) adj. (f. ई) *erzeugend, bewirkend, verursachend:* दोष° Suçr. 1,171,12. कीर्ति° MBh. 13,2974. प्रीति° R. 2,1,22. 5,36,72. मनःप्रह्लाद° 5,13,17. शोक° 6,82,30. भयरोग° Vaitân. Bṛh. S. 7,16. ईति° 46,42. घर्कास्य° Kathâs. 12,51. त्रिलोकसुख° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Cl. 8. — 2) n. a) *das Entstehen, Wachsen:* केशानाम् Çâṅku. Çr. 18,24,22. — b) *das Erzeugen, Bewirken, Verursachen, Schaffen:* रोग° Suçr. 2,3,20. जगत्संजनन Verz. d. Oxf. H. 80,a,24. कोश° (vgl. कोशसंवलन unter संवलन) MBh. 7,100. कथा° 3, 12610. तेजः° 4,1587. काम° R. 1,9,19 (18 Gorr.). — Vgl. निद्रा°.

2. संजनन n. Raghu. ed. Calc. 16,74 und संजननी adj. Mâlav. P. 72,9 fehlerhaft für संवनन, °नी.

सञ्जनी (von सञ्ज्) f. ein künstliches zur Umschreibung von स्थूणा gebildetes Wort: *woran man Etwas hängt* Nir. 1,12.

सञ्जपाल m. N. pr. eines Mannes Rîâ-Tar. 8,211. 603. 616. 653. u. s. w.

संजय (von 1. जि mit सम्) 1) adj. *siegreich* ṚV. 10,159,3. AV. 3,5,16. Âit. Br. 3,19. — 2) m. a) *Sieg:* विश्वामित्रस्य Bez. eines Katuraha Pañkav. Bh. 21,12,1. — b) Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kîm. Nîtis. 19,44. — c) N. pr. verschiedener Männer: ein Sûta und Sohn Gavalgaṇa's im Dienste Dhṛtarâshṭra's Bhâg. 1,1. MBh. 1,81. 2626. 5,943. fgg. 6,43. fgg. Bhâg. P. 1,13,30. ein Sohn Dhṛtarâshṭra's MBh. 7,6851. ein Vjâsa Verz. d. Oxf. H. 32,b,43. ein Sohn Supârçva's VP. 390. Pratikshatra's (Prati's) 412. Bhâg. P. 3,17,16. Bharmjâçva's 21,22. Raṇamêgaja's 12,13. VP. 463. ein Lehrer Hiouen-thsang 2,52. ein Heerführer der Jaksha Burnouf, Intr. 532. — Hall in der Einl. zu Vâsavad. 2. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,242,a. Pañkav. Bh. 13, 6,6. 7. Liṭ. 6,10,11. 7,2,1. इन्द्र° Ind. St. 3,207,a.

संजयकविशेखर m. N. pr. eines *Dichters* Verz. d. Tüb. H. 13.

संजयत् (von 1. जि mit सम्) 1) adj. *gewinnend:* घप्सरा AV. 4,38,1. — 2) f. °ती N. pr. einer Stadt MBh. 2,1173. Suçr. 2,173,10.

संजयिन् (wie eben) m. N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 162. Schiefner, Lebensb. 256 (26). 293 (63). Târan. 59.

संजल्प (von जल्प् mit सम्) m. *Gerede, Gespräch, Unterhaltung* MBh. 2,1256. 3,29. 45. 561. 4,362. 12,12648. 13,1460. Harîv. 6324. Bhâg. P. 1,10,20.

संजवन n. 1) *ein Häuserviereck* (चतुःशाल) AK. 2,2,3. H. 992. Hâlâ. 2,127. — 2) etwa *Wegweiser:* व्यक्तसंजवनोद्देशो (व्यक्तं स्पष्टं संजवनं प्रतिपत्तिनिमित्तं वस्त्रपत्रं यस्य स तथाविधः Nîlak.) यत्नतुर्दिक्साधनैः Harîv. 8979. मार्गसंजवनघण्टाः (संगमका घण्टाः पेर्धत्रैर्विद्धभूतैर्भगवद्भिर्मार्गो ज्ञाप्यते Nîlak.) 8992.

संजात 1) adj. s. u. जन् mit सम्. — 2) m. pl. N. pr. einer Völkerschaft VP. 418, N. 20.

संज्ञि *gaṇa* यवादि zu P. 3,2,9.

संजिघृक्षु (vom desid. von ग्रह् mit सम्) adj. 1) *zusammenzubringen —, zu sammeln beabsichtigend:* स्वादुपानीयमेधांसि कन्दमूलफलानि Daçak. 149,13. fg. — 2) *zusammenzufassen —, in Kürze darzulegen beabsichtigend:* सारम् Sarvadarçanas. 158,20.

संजिजीवयिषु (vom desid. des caus. von जीव् mit सम्) adj. *zu beleben beabsichtigend:* राजानम् MBh. 1,2012.

संजिजीविषु (vom desid. von जीव् mit सम्) adj. *zu leben wünschend* MBh. 13,5914.

संजित् (von 1. जि mit सम्) adj. *gewinnend, erstreitend:* धनानाम् ṚV. 3,30,22. 5,42,5.

संजिति (wie eben) f. *das Gewinnen, vollständiger Sieg* Ait. Br. 8,9. Kâty. Çr. 19,3,4. Lâṭy. 5,4,19.

सञ्जिमत् adj. von सञ्जि gaṇa यवादि zu P. 8,2,9.

सञ्जिनी MBh. 6,1886 fehlerhaft für सिञ्जिनी (शि°) *Bogensehne*, wie die ed. Bomb. liest.

संजिरीर्षु (vom desid. von रॄ mit सम्) adj. *zu vernichten beabsichtigend*, mit acc. R. 6,70,35. Bhâg. P. 3,4,4.

संजीव (von जीव् mit सम्) P. 6,2,91. 1) adj. *belebend* Âçv. Çr. 6,9,1. — 2) m. *das Aufleben:* °करणी (ओषधि) R. 6,26,8. — 3) *eine best. Hölle* Vâyup. 118. Burnouf, Intr. 201. Hiouen-thsang 1,230; vgl. संजीवन.

संजीवक (wie eben) 1) adj. (f. °विका) *belebend* Âçv. Çr. 6,9,1. मृत° Bhâg. P. 10,90,21. — 2) m. N. pr. eines Stiers Kathâs. 60,13. fgg. Pañcat. 8, 16. fgg. Hit. 46, 13. fgg. — 3) f. °विका ein Frauenname Hall in der Einl. zu Vâsavad. 37.

संजीवन (wie eben) 1) adj. (f. ई) *belebend, lebendig machend* Suçr. 2, 228,12. मणि MBh. 14,2382. विद्या 1,2215. Bhâg. P. 8,11,47 (die Bomb. Ausgg. an beiden Stellen संजीविनी). ओषधि Milatîm. 167,4. Kathâs. 18,212. स्मर° 59,6. — 2) m. Bez. *eines best. Antidoton* Suçr. 2,276, 14. — 3) f. ई Titel verschiedener Commentare des Mallinâtha: रघुवंश° Verz. d. Oxf. H. 126,*a*,5. 113,*a*,26; vgl. संजीविनी. — 4) n. *a) das Aufleben, Leben:* कृच्छ्रात् MBh. 1, 606. 4, 430. 12, 1041. 6895. Uttarar. 38,1 (51,9). Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,19. °प्रमयोः Kathâs. 101, 188. संजीवनं कर् Pañcat. 244,4. — *b) eine best. Hölle* (vgl. संजीव) M. 4,89. Jâtâ. 3,223. — *c)* = संजवन *ein Häuservorsprung* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. मृत° (adj. auch Kathâs. 30,120. Vet. in LA. (III) 14,21), मृत्यु° und संजीविन्.

संजीवार्म (संजीव + घर्म) n. P. 6,2,91.

संजीविन् 1) adj. = संजीवन. विद्या MBh. 1,3193. 3215 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 3253. Bhâg. P. 8,11,47 (nach der Lesart der ed. Bomb.). — 2) m. N. pr. eines Ministers des Krahenkönigs Meghavarṇa Pañcat. 149,11. संजीविन् (!) Kathâs. 62,8. — 3) f. °नी = संजीवनी Z. d. d. m. G. 2,341. Verz. d. B. H. No. 514. — Vgl. मृत°.

1. संज्ञ 1) am Ende eines adj. comp. von संज्ञा; s. das. — 2) n. *gelber Sandel* Râgân. im ÇKDa.

2. संज्ञ adj. = संज्ञु H. 436. Sinasiñka bei Bharata zu AK. 2,6,1,47 nach ÇKDa.

संज्ञक am Ende eines adj. comp. (f. संज्ञिका) von संज्ञा *Benennung, Name:* प्राणसंज्ञको जीवः Maitrâyaṇ. 6,19. Bhâg. 8,13. MBh. 3, 13877. ब्रह्मभूत° (so ed. Bomb.) 12,13191. मञ्च° R. 5,86,17. Kâm. 4,2,1. क्रौञ्च° Viṣṇu. 1,12,40. 25,5. Varâh. Bṛh. S. 28,2. Kathâs. 9,11. 25,398. 30,6. 48,96. 51,45. 52,102. 278. Verz. d. Oxf. H. 82,*a*,11 v. u. Râga-Tar. 4, 43. Bhâg. P. 5,26,14. Pañcân. 1,12,73. Pañcat. II,37. 154,8. Taik. 2, 9,30. Sarvadarçanas. 20,11. 54,21. Comm. zu TS. Prât. 9,16. सन्वर्त्य° Kathâs. 44,5. सन्वर्त्यादि° Weber, Rikat. Up. 288. — Vgl. नट°, रवि°.

संज्ञपन (vom caus. von 1. ज्ञा mit सम्) n. 1) *das Einmüthigmachen* AV. 6,74,2. — 2) *das Tödten des Opferthiers* (durch Ersticken) AK. 2, 8,2,32. Halâs. 2,333. Çat. Br. 3,8,4,16. Kâty. Çr. 16,1,14. 20,6,10. Bhâg. P. 4,5,24. यज्ञ° MBh. 15,929.

संज्ञप्ति f. = संज्ञपन 2) H. 371.

संज्ञा (1. ज्ञा mit सम्) f. Vop. 26,193. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *Einverständniss* TBr. 3,2,5,4. Çat. Br. 1,1,4,5. 6,4,4,10. 7,4,1. य° 4,1,5,3. देशान्तरं प्रतस्थाते सङ्केतो पितृसंज्ञया Kathâs. 63,8. — 2) *Bewusstsein, eine klare Vorstellung* AK. 3,4,5,35. H. an. 2,79. Med. n. 3. Hall. 5,36. न प्रेत्य संज्ञास्ति Çat. Br. 14,5,4,12. 7,5,13. Sarvadarçanas. 35,9. संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते Bhâg. 1,7. MBh. 1,5846. 5848. संज्ञेया लौकिकी राजन्न क्विनस्ति न रूढ्यते 12,746. लोकतस्तं कि संज्ञाश्च सर्वमत्रे प्रतिष्ठितम् 13,3204. °समीरित Harîv. 3683. भविष्यामीति संज्ञा 9745. Kumâras. 6,44. Daçak. 87,17. वशीकार° Jogas. 1,15. Nilak. 18. 27. संज्ञां का Spr. (II) 159. स्वसंज्ञया विमूढाः R. 4,50,28. विमूढ° adj. 2, 77,32. प्रमूढ° adj. R. Schl. 2,35,19. नष्ट° adj. MBh. 3,2857. R. 4,50. 24. Prab. 150,16. °नाश Suçr. 2,474,19. Kâm. Nîtis. 14,59. गत° adj. MBh. 3,1837. °प्रबोधन Çâṅk. Sâṁ. 3,8,15. संज्ञां लब्ध्वा Vikr. 71,20. Daçâvat. 96,3. लब्ध° adj. MBh. 5,7180. R. 1,14,1. 2,34,21. विद्यूपकं संज्ञां लम्भयति so v. a. *macht ihm die Sache klar* Vikr. 47,13. संज्ञां प्रतिलभ्य R. 2,21,50. 39,9. R. Gorr. 2,9,27. 35,2. उपलभ्य R. Schl. 2, 62,3. आप 2. संप्राप्य MBh. 5,7378. उपागम्य R. 4,29,5. ईषत्संज्ञ (so zu schreiben) R. Gorr. 2,16,23. घ° R. Schl. 2,39,3. घसंज्ञत्व MBh. 14, 1001 (nach der Lesart der ed. Bomb.). — 3) *ein Zeichen mit der Hand* u. s. w. AK. H. an. Med. Hall. 5,36. MBh. 4,842. 9,1183. Harîv. 7056. R. 6,8,37. Kim. Nîtis. 12,47. संज्ञया शकारं निर्दिशति Mṛicch. 151,10. Kathâs. 39,71. 64,83. संज्ञया सूचितम् 75,80. स्वसंज्ञया 22,125. 64,52. संज्ञाः प्रकुर्वत्यः R. 1,9,18 (15 Gorr.). संज्ञां कर् Kumâras. 7,45. Kathâs. 7,68. 68. 11,69. 12,88. 42,132. 56,23. 75,72. कृतसंज्ञो ध्रुवा प्रभोः Râga-Tar. 4,221. संज्ञां दा Mṛicch. 35,4. 104,4. 14. संज्ञामेतामजानानः Kathâs. 7,65. 75,74. मुखार्पितैकाङ्गुलि° Kumâras. 3,41. धू° Râga-Tar. 4, 420. शिरोऽलि° 5,345. क्रुद्ध° Prab. 22,8. so v. a. *Spur:* गुरोर्नाधिगतः संज्ञां परीक्षन् Bhâg. P. 6,7,17. — 4) *Benennung, Name, terminus technicus* AK. Taik. 1,1,117. H. 260. H. an. Med. Hall. 1,152. 5,33. °करण Nir. 1,2. M. 8,131. °कर्मन् Kâç. 2,1,18. fg. 4,2,9. 6,1,2. Kap. 1,69. Tarkas. 48. Sarvadarçanas. 5,2. सवर्णो हि सवर्णानां पशुसंज्ञां करिष्यसि MBh. 2,865. 12,2349. सुखसंज्ञा विधीयते Spr. (II) 3847. 4320. पितृसंज्ञामुत्पादयेत् Sadoh. P. 4,22,*a*. दधे संज्ञां क्रियोचिताम् Bhâg. P. 4,7, 51. Varâh. Bṛh. S. 88,8. 99,2. VS. Prât. 4,96. AV. Prât. 4,67. P. 1,1, 34. 2,53. 4,1. 2,1,21 u. s. w. AK. 3,6,5,15. Verz. d. Oxf. H. 171,*a*,2 v. u. 162,*a*,1. 164,*a*, No. 360. fg. Am Ende eines adj. comp.: पुरुष° Maitrâyaṇ. 2,8. M. 9,100. 12,13. Bhâg. 15,5. Varâh. Bṛh. S. 3,7. 7,9. 8,1. 35. 11, 18. Bhâg. P. 5,17,16. Çuk. in LA. (III) 36,3. स्त्री° *einen Namen mit weiblicher Endung führend* Varâh. Bṛh. S. 86,38. Harîv. 7350. — 5) *Erkenntniss der Dinge nach ihren Namen* (*idée* Burnouf), einer der fünf Skandha bei den Buddhisten, Sarvadarçanas. 20,11. गौरित्यादिशब्दोल्लेखिसविज्ञानप्रवाहः संज्ञास्कन्धः 15. 23,22. Burnouf, Intr. 511. fg. H. 233, Schol. — 6) Bez. *der Gâjatrî* H. an. Med. — 7) *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Vâyup. 184. Mél. asiat. 4,632 (hier सज्ञा). — 8) N. pr. einer Tochter Tvashṭar's (Viçvakarman's), Gattin des Sonnengottes und Mutter Manu's, Jama's und der Jamî, Taik. 1,1,103. 3,3,90. H. an. Med. Harîv. 545. fgg. VP. 206. fg. Mârk. P. 77,1. fgg. 106,1. fgg.

Bhāg. P. 6,6,38. 8,13,8. 9,1,11. Verz. d. Oxf. H. 39,a,23. 74,a,23. Pāṇḍar. 1,4,85. — Vgl. यत्संज्ञ, कृत°, निः°, नैवसंज्ञा°, रथाङ्ग°, वि°, शब्द°, श्रो°, सूर्य°, सोम° und संज्ञायनि.

संज्ञातत्त्व n. Titel eines Abschnitts in Nīlakaṇṭha's Tāṇḍika Verz. d. B. H. No. 876. Ind. St. 2,246. 253. 267.

संज्ञातरूप adj. *dessen Aussehen bekannt ist* ṚV. 1,69,9.

संज्ञाति (von 1. ज्ञा mit सम्) f. *Einverständniss* Ait. Br. 5,16.

संज्ञात्व n. nom. abstr. zu संज्ञा *terminus technicus* Verz. d. B. H. 212,4.

संज्ञान (von 1. ज्ञा mit सम्) 1) adj. *Einigkeit wirkend* Ait. Br. 5,16. — 2) f. ई (sc. इष्टि) *eine Ceremonie zur Herstellung der Einigkeit:* विमतानां समत्यर्थे संज्ञानी Āçv. Çr. 2,11,10. TS. 2,2,11,6. — 3) n. *a) Einigkeit, Einverständniss, Anlass zur Eintracht* ṚV. 10,19,6. AV. 3,30,4. 7,52,1. 11,1,26. मयि संज्ञानमस्तु वः 3,14,4. संज्ञानमस्तु मे ऽमुना VS. 26,1. 30, 3. TS. 5,2,8,2. पशुभिः 3,4,11. Nir. 4,21. — *b) Bewusstsein* Çat. Br. 14,7,2,3. Ait. Up. 3,2. Bhāg. P. 6,4,47. 9,16,24. als Bed. der Wurzel चित् Vop. 8,33. — *c) richtiges Verständniss* Wadd. Prātiç. 109. — *d)* = संज्ञा 3) Hiouen-thsang 1,385. — Vgl. नैवसंज्ञानासंज्ञायतन.

संज्ञावत् (von संज्ञा) adj. *Bewusstsein habend* R. 1,22,1.

संज्ञाविवेक m. Titel eines Abschnitts in Nīlakaṇṭha's Tāṇḍika Verz. d. B. H. No. 876.

संज्ञासुत m. *der Sohn der Saṁjñā*, Bez. *des Planeten Saturn* (!) ÇKDa. ohne Angabe einer best. Autorität.

संज्ञासूत्र n. pl. *die Sūtra der termini technici*, Bez. der Çivasūtra, Schol. am Ende der Çivasūtra.

संज्ञास्त्र (संज्ञा + अस्त्र) n. Bez. eines mythischen *Geschosses* des Pradjumna Hariv. 9381.

संज्ञिका (von संज्ञा) f. *Benennung, Name:* श्रोत्रं घ्राणं रसः स्पर्शो दृष्टिश्चेन्द्रियसंज्ञिकाः (°संज्ञिताः ed. Bomb.) MBh. 12, 6825. — Vgl. संज्ञक (°संज्ञिक MBh. 12, 13383 und beim Schol. zu TS. Prāt. 1,12, v. l. und 13,16 fehlerhaft für °संज्ञित (so ed. Bomb. des MBh.) oder °संज्ञक).

संज्ञित (wie oben) adj. 1) *zur Kenntniss gebracht, vorgeführt:* एषोपमा त्वदर्थं संज्ञिता मया R. 6,112,11. — 2) *der ein Zeichen bekommen hat:* भ्रू° *mit den Brauen* Rāja-Tar. 3,206. — 3) *genannt, heissend:* इति संज्ञिताः Bhāg. P. 9,23,29. Snapeçabhūshaṇa bei Roth, Z. f. d. M. G. d. V. 26. ते दोषास्तेषु संज्ञिताः Verz. d. Oxf. H. 51,a,9. meist am Ende eines comp. *die Benennung —, den Namen — führend, so und so heissend* Maitrāyaṇ. 6,23. M. 7,137. Jāṭ. 3,101. Bhāg. 6,28. 8,3. 11,1. MBh. 3, 12398. 14,802. R. 1,39,4. R. Gorr. 2,118,2. 19. 3,35,75. 5,49,3. 87, 13. Hāsy. 10,35. Spr. (II) 2134. 6237. Vaṛāh. Bṛh. S. 5,52. 8,45. 44,2. 51,2. 60,3. Kathās. 46,51. Rāja-Tar. 1,106. Mālav. P. 42,14. 51,55. 116,61. Bhāg. P. 3,28,41. 4,21,30. 24,3. 28. 7,7,49. 9,9,29. 21,32. 23,33. 10,10,10. 51,52. 11,9,18. कर्म° *benannt nach* Spr. (II) 1868, v. l. लोके गन्धर्वसंज्ञिते so v. a. गन्धर्वाणाम् Mālav. P. 63,51. यास्पदं युवराजसंज्ञितम् Hāsy. 3,36. — 4) schlechte Lesart für संज्ञित (so ed. Bomb.) MBh. 12,12467.

— अभिसंज्ञित *genannt, heissend* MBh. 12, 3113. 6321 (°ज्ञिता: mit der ed. Bomb. zu lesen). 14,66. Vgl. auch in den Nachträgen u. d. W.

— सामसंज्ञित *mit dem man vorher eine Verabredung getroffen hat* Kām. Nītis. 6,11. सामसंज्ञिता: (sic) प्रागेव राज्ञा ते संकृतिं नीता: प्रतीपत्वेन व्यापिता: Comm.

संज्ञिन् (von संज्ञा) adj. *gaṇa* ओजःसादि zu P. 5,2,116. 1) *mit Bewusstsein versehen* Sarvadarçanas. 35,3. निर्वाण° *glaubend, dass man das Nirvāṇa erlangt habe*, Saddh. P. 4,6,a. — 2) *einen betreffenden Namen führend* Tarkas. 48. Sarvadarçanas. 5,2. Kull. zu M. 1,47. Kusum. 31,4. P. 9,3,32, Schol.

संजु (सम् + जु = ज्ञानु) adj. *dessen Knie beim Gehen aneinanderschlagen* P. 5,4,139. AK. 2,6,2,47. H. 456.

संज्वर (von ज्वर् mit सम्) m. *Gluth, Hitze* AK. 1,1,2,53. H. 1102. देहज° Kuṭṭan. 118. कन्दर्पज्वर° Gīt. 4,21. स्मर° Kathās. 55,63. घासवासेवनोत्पन्नकवितारूपण्य° adj. Rāja-Tar. 6,150. संज्वरं कर् *innerlich aufgeregt werden* MBh. 12,10844. श्र° adj. *keine Hitze empfindend* und zugleich *innerlich nicht aufgeregt* M. 4,185.

संज्वरवत् (von संज्वर) adj. von *Gluth erfüllt:* मेरु° (कूट) Milav. 154,18.

संज्वारिन् (von ज्वर् mit सम्) adj. P. 3,2,142.

सट्, सटति Dhātup. 9,26 (अवयवे).

सट m. und सटा f. Taitt. 3,3,18. n. Çārdān. im ÇKDa. सटा (nur dieses zu belegen) 1) = जटा AK. 2,6,2,45. Taitt. 2,6,32. H. 816. an. 2,100. Med. t. 29. Hālās. 2,377. *Flechte:* सटास्तस्य पञ्च चक्रे als Zeichen der Trauer MBh. 3,15785. — 2) *Mähne* (des Pferdes, Löwen), *die Borsten eines Ebers* H. an. Med. MBh. 7,7904. 12,1661. Hariv. 3716. 4283. 4298. 4306. 12708. Ragh. 9,60. Çiç. 1,47. Kathās. 96,40. Rāja-Tar. 5, 332. Mālav. P. 88,19. Padmap. 16,97. Bhāg. P. 3,13,27. 43. 7,8,20. 32. fg. 10,37,1. Sāh. D. 221,9. सिंह° Taitt. 3,3,332. — 3) = शिखा Çārdān. im ÇKDa. — 4) = छटा 1) *Menge:* चन्द्रार्कांशु° Vaṛāh. Bṛh. S. 27,1. प्रविकटसटोटोपचपल s. लाङ्गूलं (eines Hundes) ससटम् so v. a. *rauh haarig, struppig* 62,1. — 5) = छटा 2) *Licht, Glanz:* तडिद्घटि° Bhāg. P. 4,5,2.

सटाङ्ग (सटा + अङ्ग) m. *Löwe* Çārdān. im ÇKDa.

सटाल (von सटा) adj. 1) *mit einer Mähne versehen:* सिंह Kathās. 22, 107. 55,203. — 2) am Ende eines comp. *reichlich versehen mit:* कोमलकान्ति° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,508, Çl. 33. *adorned with seemly radiance as his frontlet* Hall.

सट्, सटयति Dhātup. 32,31, v. l. (हिंसावलादाननिकेतनेषु, दान st. घादाने v. l.). 89 (हिंसायाम्). — Vgl. घट्.

सटक n. Bez. *einer Art von Schauspielen* Sāh. D. 429. 542. Verz. d. Oxf. H. 146,b, No. 313.

सट्टा f. = पत्तिभेद und वाद्य Uṇādis. im Saṁkshiptas. nach ÇKDa.

1. सठ्, साठयति = शठ् Vop. in Dhātup. 32,28.

2. सठ् m. N. pr. eines Mannes Inschr. im Journ. of the Am. Or. S. 6,544, 3.

सड = सक् उन वर्तते P. 3,3,56, Schol. — Vgl. साडि.

सड् m. N. pr. zweier Männer Rāja-Tar. 8,23. 184. 262. 279. 301 u. s. w.

सणकाष N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,13.

सण्ड m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,351 (VP. 187) nach der Lesart der ed. Bomb. षण्ड ed. Calc.

सण्डश m. = संदंश *Zange* ÇKDn. mit einem Citat aus Mâṇ. P. 14, 62, wo aber die gedr. Ausg. संदेश liest.

संडीविन् Kathâs. 62,8 ohne Zweifel fehlerhaft für संन्नीविन्.

सँत m. n. *ein best. Gefäss, Schale, Schüssel* VS. 19,27. 38. Çat. Br. 12,7,2,13. 8,2,14. वेतस 15. Kâṭj. Çr. 19,2,5. 4,13 (aus Palâça nach dem Comm.).

सतःपङ्क्ति (सतस् + प°) f. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,249. Colebr. Misc. Ess. 2,133. — Vgl. सतोबृहत् fgg.

सतत = सँतत P. 6,1,144, Vârtt. 1. Vop. 6,72. सततम् adv. *fortwährend, ununterbrochen, stets, immer* (mit einer Negation *niemals*) AK. 1,1,4,61. H. 1471. Hall. 4,13. M. 3,192. 4,22. 148. 157. 204. 6,53. 8,38 u. s. w. Bhâg. 6,16. MBh. 3,1084. 2088. 2260. 2732 (शततं ed. Calc.). 2838. 13,4153. Harîv. 3579. R. 1,51,25. 2,24,22. 38,4. 74, 25. 77,14. Spr. (II) 344. 958. 1271. 1910. 4526. 5438. 6752. 7250. Vaṇîn. Bṛh. S. 47,15. 55,21. Brahma-P. in LA. (III) 50,11. 57,20. Pañkat. 182,9. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen: सततोत्थित Spr. (II) 4604. Kâm. Nîtis. 1,17. Vaṇîn. Bṛh. S. 36,3. °परिवृत Weber, Kṛshṇaj. 287. सततोच्चाङ्क्रमान Kathâs. 25,10. °यायिन् M. 1, 50. °दुर्गत Spr. (II) 6434. सतताभियोग Vaṇîn. Bṛh. S. 75,4. °धृति adj. *stets festen Willen zeigend* Prab. 14,13. °शास्त्रिन् *stets studirend* R. 6,23,6. °मानस *stets seinen Geist auf Etwas richtend* Harîv. 14973. — Vgl. सातत्य.

सततग adj. *in beständiger Bewegung seiend;* m. *Wind* MBh. 1,8880.

सततगति dass. Mucn. 70.

सततसमिताभियुक्त m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 215. fg.

सँतति (2. स + तति) adj. *zusammenhängend, ununterbrochen* TS. 3,2,2,2.

सतत्त्व (2. स + तत्°) n. *Natur, Wesen* H. 1377. आत्म° Bâlar. P. 5,13, 14. Vedântas. (Allah.) No. 147.

सँतनु (2. स + तनु) adj. *behörpert, sammt dem Leibe* (Gegens. वितनु): सदेतः सतनुर्दिं भूत्वा TS. 3,1,4,4. 5,4,4,1. TBr. 3,2,8,4. 8,22,5. Davon nom. abstr. °त्व n. TS. 6,6,8,2.

सतन्त्र (2. स + तन्त्र) *mit dem Tantra* (Bed. 1) d) *übereinstimmend* Âçv. Çr. 2,15,9. 11,2,17. 3,7.

सतमसा f. N. pr. eines Flusses oder adj. f. *nebst dem Fluss* Tamasâ Mârk. P. 57,22.

सतँस् (von 2. स) adv. am Anfange einiger compp. *ebenmässig, gleich* Naigh. 3,29. तिरः सत इति प्राप्तस्य (v. l. स°) Nir. 3,20.

सतानूनप्तिन् s. u. तानूनप्त 1).

सतार (2. स + तारा) adj. *mit den Sternen:* स कदाचित्प्रपद्मके शलकीडा मरोदधौ । दरिः सह गुणोदरिः सतार (= तारैः सह) इव चन्द्रमाः ॥ Harîv. 5181.

सतारा f. N. pr. eines Staates Hall 181.

सतासतँी du. = सदसती, dem सुतासुतौ nachgebildet TBr. 2,6,2,2. VS. v. l.

सताह N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,4.

सति 1) f. oxyt. = साति, सत्ति P. 6,4,45. Vop. 26,44. = दान und यजमान (d. i. साति) Bhar. zu AK. 3,4,24,70. — 2) *ein best. Metrum* Ind. St. 8,283. सती Colebr. — 3) fehlerhaft für मति Kathâs. 18,47.

सतितरा adj. f. = सतीतरा = सत्तरा Vop. 7,49; s. u. सत्.

सतिमिर (2. स + तिमिर°) adj. (f. आ) *in Finsterniss gehüllt:* नक्तम् R. 1, 9,65. दिश: R. Gorr. 1,76,16.

सतिल (2. स + तिल) adj. *nebst Sesamkörnern:* सलिलाञ्जलि Verz. d. Oxf. H. 207,b,28.

1. सती s. u. सत्. Davon °त्व n. *Weibertreue* Harîv. 7753. Spr. (II) 3403. 5241. 5243. 5928. 6702. 7222. 7609. Kathâs. 63,41. Mârk. P. 22,39. Pañkat. 38,16. 19.

2. सती = साति Bhar. zu AK. nach ÇKDn. Vgl. मति 1).

सँतीक n. angeblich *Wasser* Naigh. 1,12, v. l. TS. 4,4,6,2 (सऽतीक Padap.). Nir. 14,11.

सतीत्व s. u. 1. सती.

1. सतीन (von सत्) adj. *wirklich*; vgl. सतीनकङ्कत fgg. — 2) n angeblich *Wasser* Naigh. 1,12.

2. सतीन m. 1) *eine angebaute Erbsenart mit rundem Korn* (daher auch वर्तुल genannt), vulgo केराउ (کراو) *Pisum arvense* nach Sharkey.) Bhâvapr. 5. Bharata zu AK. 2,9,16 nach ÇKDn. H. an. 3,162. Kâṭh. 15,5. Suçr. 1,73,9. 107,12. 198,3. 221,4. 12. 228,16. °यूष 2,471,16 476,1. Madanav. 10,36. Vishn. 1,6,52. — 2) *Bambusrohr* Çabdam. im ÇKDn. — Vgl. सतील, सतीलक.

सतीनक m. = 2. सतीन 1) Comm. zu AK. 2,9,16 nach ÇKDn. H. 1170

सतीनकङ्कत m. nach Sây. *Wasserschlange* RV. 1,191,1. etwa *einen eigentlichen Kamm habend.*

सतीनमन्यु adj. *wirklich eifernd* RV. 10,112,3.

सतीनसत्वन् adj. *wirkliche Krieger führend* RV. 1,100,1.

सतीप 1) Kâṭhân. Up. 8,3,5 eine Auseinanderreckung von सत्य zum Behuf einer mystischen Erklärung des Wortes. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes (v. l. für सनीप) VP. 193, N. 135.

सतीर्थ (2. स + तीर्थ) 1) adj. *einen gemeinschaftlichen Lehrer habend.* m. *Mitschüler* Vop. 6,97. Çabdar. im ÇKDn. als Bein. Çiva's MBh. 14, 198 schlechte Lesart für सुतीर्थ, wie die ed. Bomb. liest. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes (v. l. für सनीय) VP. 193, N. 135.

सतीर्थ्य = सतीर्थ 1) P. 4,4,107. 6,3,87. AK. 2,7,11. H. 79.

सतील 1) m. *a*) = 2. सतीन 1) Vaijn. bei Bharata zu AK. 2,9,16 nach ÇKDn. — *b*) = 2. सतीन 2) Hem. 108. — *c*) *Wind* Râjân. zu AK. nach ÇKDn. — 2) f. आ = 2. सतीन 1) Çabdaj. im ÇKDn.

सतीलक m. = 2. सतीन 1) AK. 2,9,16. Med. t. 44.

सतीवृत्ति f. Titel eines *Commentars* zu den Uṇâdisûtra Ujjval. zu Uṇâdi. 3,21. सूतिवृत्ति zu 140.

सतीव्रता f. ein Frauenname Hall in der Einl. zu Vâsavad. 37.

सतीश्वर (1. सती + ई°) und °लिङ्ग n. N. eines Liṅga Verz. d. B. H. 147,b,2. Verz. d. Oxf. H. 71,b,50.

सतीसरस् n. *der Teich der* Sati Râja-Tar. 1,25.

सतुष (2. स + तुष) adj. *mit Spelzen versehen* Schol. zu Kâṭj. Çr. 76, 6. सस्यं क्षेत्रगतं प्राहुः सतुषं धान्यमुच्यते । यामं वितुषमित्युक्तं स्विन्नमम्रुदाहृतम् ॥ Çrâddhatattva im ÇKDn.

सँतूल (2. स + तूल) adj. *mit dem Wedel versehen* Çat. Br. 3,1,2,14. TS. 6,1,2,6.

सतृणम् (von 2. स + तृण) adv. *sammt dem Grase, bis auf's Gras:* ग्रसति so v. a. तृणमप्यपरित्यज्य Schol. zu P. 2,1,6. Vop. 6,61.

सतृष् (2. स + तृष्) adj. *durstig; lüstern* Taik. 3,1,3.

सतृष्ण (2. स + तृष्णा) adj. dass. AK. 3,4,26,207. °म् adv. *mit Verlangen, sehnsüchtig:* दृष्ट Çik. 59.

सतेजस् (2. स + तेजस्) adj. *sammt dem Feuer, Glanz, der Kraft* u. s. w.: Auge Ait. Br. 1,3. ग्रग्नि TS. 5,3,5,3. 6,1,7,1. 3,2,2. Davon nom. abstr. °त्व n. 5,3,1,2. Kâṭy. 29,7.

सतेर m. = तुग Uṇâdiv. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa.

सतोक (2. स + तोक) adj. *sammt Nachkommen* AV. 6,56,1.

सतोवृक्त (सतस् + वृ°) 1) adj. *gleich hoch, — gross:* सतोवृक्तप्रतया पशुभिरसानि TBr. 2,7,18,5. सर्वानेवैनान्सतोवृक्तः करोति Pañcav. Br. 17,1,11. Ind. St. 8,45. — 2) f. °वृक्ती *ein best. Metrum* (12 + 8 + 12 + 8) RV. Prâṭ. 16,33(39). 18,1. VS. 14,9. Ait. Br. 6,28. TS. 3,1,6,3. TBr. 2,7,18,5. Pañcav. Br. 12,4,3. Çâṅkh. Çr. 7,25,3. 23. Ind. St. 8, 17 u. s. w. Colebr. Misc. Ess. 2,132. Vgl. महा°.

सतोमरुत् (सतस् + म°) adj. *gleich gross* RV. 8,30,1.

सतोमुख (सतस् + मुख) s. महासतोमुख.

सतोवीर (सतस् + वीर) adj. *gleich männlich* RV. 8,75,9.

सत्कथा (सत् + कथा) f. *eine schöne Unterredung, — Erzählung* Bhâg. P. 4,14,36. 31,28. 10,80,2. am Ende eines adj. comp. (f. या) 1,10,24. 15,36. R. 2,48,27.

सत्कदम्ब (सत् + क°) m. *eine* Kadamba-*Art* (केतिकदम्ब) Çabdâ. im ÇKDa.

सत्कर् s. u. सत्.

सत्कार (von सत्कर्) adj. s. ग्र° in den Nachträgen.

सत्कारण (wie eben) n. *das Erweisen der letzten Ehre, das Verbrennen eines Leichnams* R. Gorr. 2,68,49.

सत्कर्तर् (wie eben) nom. ag. *Wohlthäter* Spr. (II) 2812. unter den 1000 Namen Vishṇu's ÇKDa. ब्राह्मण° *der den Brahmanen Wohlthaten erweist* oder *sie ehrt* MBh. 13,6460.

सत्कर्तव्य (wie eben) adj. *dem man Gutes erweisen muss* MBh. 3,15120.

1. सत्कर्मन् (सत् + क°) n. *ein gutes Werk* Mârk. P. 16,69. Râǵa-Tar. 5,113 (von ग्रन्मसु zu trennen). Spr. (II) 2575. ग्र° 3174.

2. सत्कर्मन् (wie eben) 1) adj. *gute Werke vollbringend* Râǵa-Tar. 4, 696. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtavrata Bhâg. P. 9,23,12.

सत्कला (सत् + कला) f. *eine schöne Kunst* Spr. (II) 813.

सत्कवि (सत् + कवि) m. *ein guter Dichter* Spr. (II) 680. 5547. °मिश्र m. N. pr. eines *Dichters* Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,12. सत्कवित्व n. *eine wahre Dichtergabe* Spr. (II) 6130.

सत्काञ्चनार m. *Bauhinia variegata* Çabdâ. in Verz. d. Oxf. H. 196, *a*,2. — Vgl. रक्तकाञ्चन.

सत्काण्ड (सत् + का°) m. *eine Falkenart* (चिल्ल) Çabdâ. im ÇKDa.

सत्कार (von सत्कर्) m. sg. und pl. *gute —, freundliche Behandlung, Ehrenerweisung,* insbes. *die freundliche Aufnahme eines Gastes, Bewirthung:* सत्कारेपूत्सवेषु च M. 3,59. सत्कारमर्हति 137. Jâǵ. 1,338. MBh. 1,2078. वीरा न तस्य सत्कारं कृतवन्तः 3,2805. fg. न सत्कारमकुर्वन्मपि 2318. ग्रग्र्य 11910. R. 1,52,22. R. Gorr. 1,4,56. 3,15,23. 32,24. 4,4,12. Sâṃk. 1,71,2. 3. Kâm. Nîtis. 18,3. ad Mâlav. 18. विधिप्रयुक्त° Kumâras. 6,32. ग्रतिथेय Çik. 7,11. विमर्शनावसर° 97,10. ad 160. Mâlav. 83. Spr. (II) 762. 4994. 6335. Kathâs. 19,57. Râǵa-Tar. 5,33. Bhâg. P. 7,1,23 (Gegens. न्यक्कार). °भाज् Sarvadarçanas. 64,1. ग्रतिथ्य° R. 3,2,6. Kathâs. 15,129. विवाहाचारसत्कारसभ्य 44,64. in comp. mit der Person, *die geehrt wird:* गुरुसत्कारकारिन् R. 2,100,12. 111,30. राज्ञ° MBh. 12,2541 (so v. a. *Lob eines Fürsten*). Spr. (II) 3221. देव°, शरीर° (*Person*) MBh. 3,16710. ग्र° *schlechte Behandlung* 1,6355. R. 2,97,28. *Rücksicht für eine Sache* Jogan. 1,14. Statt सत्कार Harîv. 11822 ist mit der neueren Ausg. संस्कार zu lesen; in der Verbindung पश्चिमं केससत्कारं (*die letzte Ehrenerweisung* d. i. *die Verbrennung des Leichnams*) चकुस्ते 4898 kann aber eben so gut सत्कार wie संस्कार (so die neuere Ausg.) stehen. — Vgl. ग्रतिथि° (auch R. 3,52,30. Kathâs. 25,16).

1. सत्कार्य (wie eben) adj. 1) *was bewirkt wird;* n. *Wirkung* (vgl. ग्रसत्कार in den Nachträgen) Sâṃkhyak. 9. Tattvas. 31. Schol. zu Kap. 1, 119. — 2) *der da verdient geehrt —, — gut aufgenommen zu werden* R. 1,25,20. 3,9,26. *dem die letzte Ehre (die Verbrennung des Leichnams) erwiesen werden muss* 4,24,9.

2. सत्कार्य (सत् + कार्य) n. *eine gute, erlaubte Beschäftigung:* ग्रसत्कार्यपरिग्रह M. 12,32.

सत्काव्य (सत् + काव्य) n. *ein gutes Gedicht* Spr. (II) 6705. Verz. d. Oxf. H. 193,*a*,13.

1. सत्कीर्ति (सत् + की°) f. *ein guter Ruf* Bhâg. P. 3,22,33.

2. सत्कीर्ति (wie eben) adj, *eines guten Rufes sich erfreuend* Verz. d. Oxf. H. 44,*a*,5.

1. सत्कुल (सत् + कुल) n. *ein gutes, edles Geschlecht* Mârk. P. 16,24. सत्कुलोत्पन्न Kathâs. 4,33.

2. सत्कुल (wie eben) adj. *einem guten, edlen Geschlecht angehörend* Kâm. Nîtis. 4,68. Davon nom. abstr. °ता f. Sin. D. 181.

सत्कुलीन adj. dass. Vîçvasâratantra im ÇKDa.

सत्कृति (von सत्कर्) f. = सत्कार. सत्कृतिं गम् MBh. 2,838. तत्सत्कृतिं समधिगम्य Bhâg. P. 10,15,42. प्र-यम् Spr. (II) 5549, v. l. कृत° adj. Kathâs. 110,111. Râǵa-Tar. 3,262 (vom Vorangehenden zu trennen).

सत्कृत्यमुक्तावली f. Titel einer Schrift; s. u. लिपिका und vgl. Thorer in Râǵa-Tar. 1,429.

सत्क्रिय (2. सत् + क्रिया) adj. *Gutes thuend* MBh. 6,2950.

सत्क्रिया (von सत्कर्) f. 1) *Herstellung, das in Ordnung Bringen:* स्वदुर्ग° Kâm. Nîtis. 12,18. पुरमार्ग° Ragh. 11,3. यूप° Kumâras. 5,73. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,6. 9. गेदधिक्कार° so v. a. *Erklärung* Verz. d. Oxf. H. 220,*b*, No. 536. — 2) sg. und pl. = सत्कार M. 3,126. Jâǵ. 1,109. 3,300. Çik. 112. 160. 97,2. Spr. (II) 180. 5499. 6117. Kâm. 1,12. Râǵa-Tar. 2,171. 3,148. 167. 185. 224. Bhâg. P. 3,9,18. 7,5,41. Mârk. P. 16, 63. सत्क्रियाभ्यसन 15,44. सत्क्रियां कर् Spr. (II) 5622. Râǵa-Tar. 2,89. प्र-यम् Spr. (II) 5549. प्रति-यज् R. Gorr. 1,53,14. Kumâras. 5,32. प्रति-ग्रह् R. 1,52,14. ग्रतिथ्य° R. Gorr. 1,53,23. Kathâs. 2,50. विवाह° so v. a. *Feier* Ragh. 8,60. लाभ° *bei Gelegenheit von* Râǵa-Tar. 3,149. पाद्यार्घ्यासन° R. 1,31,26 (32,20 Gorr.). ग्रतिथि° Jâǵ. 1,102. देव° R. 3,77,23. राज्ञ° Spr. (II) 3221, v. l. निवर्तितसाधु° adj. Bhâg. P. 6,7,36.

परलोक° *in Bezug auf die andere Welt* so v. a. *Todtenfeier, Verbrennung der Leichname* u. s. w. MBh. 1,1806 (°क्रियाः प्र-पुन्). ohne nähere Angabe dass. Taik. 2,8,61. — Vgl. सत्त° (auch Rigá-Tan. 2,84).

सत्क्षेत्र (सत्+क्षेत्र) n. *ein guter Acker* Spr. (II) 2300. 6710.

सत्त partic. von 1. सद्; s. das. und vgl. नसत्त.

सत्तन्त्र (सत्+तन्त्र) n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,13.

सत्तम s. u. सत्. Davon °ता f. *der Vorrang unter Allen:* शूद्रः सत्तमतामियात् Bhâg. P. 4,23,32.

सत्तर् (von 1. सद्) nom. ag. *der Sitzende*, namentlich *beim Opfer* ṚV. 3,17,5. सत्ता नि योनौ कलशेषु सोदति 9,86,6. 96,23.

सत्तर् s. u. सत्.

सत्तर्क (सत्+तर्क) m. *ein orthodoxes System der Philosophie* Verz. d. Oxf. H. 128,a,9. द्य° Bhâg. P. 2,6,40 erklärt der Comm. durch द्यमनो तर्कः, man könnte aber darunter auch *ein heterodoxes System d. Ph.* verstehen.

सत्ता (von सत्त्) f. *das Sein, Dasein* Hall. 5,64. 82. Daśrûp. 1,1. Kap. 1,2,7. 8. Tarkas. 56. Nilak. 47. 170. 223. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 163. Weber, Rikat. Up. 287. Bhâsikîp. 7. Spr. (II) 2736. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 41. 308. Bhâg. P. 10,3,24. 85,7. 86,44. Sin. D. 51. Kull. zu M. 2,124. Comm. zu Kap. 1,97. 121. Kusum. 33,8. Sarvadarçanas. 4,9. 12,17. 20. 143,15. गोसत्तैव गोत्वम् 144,12. भावः सत्तेवेति धात्वर्थः सत्ता 16. जन्मसत्तावृद्धयः Mallin. zu Çiç. 1,46. Am Ende eines adj. comp.: उपादानसमसत्ताक Nilak. 180. प्रमातृसत्तातिरिक्तसत्ताकत्व 225. — Vgl. महा°.

सत्तावत् (von सत्ता) adj. *dem das Prädicat »Sein« zukommt* Bhâsikîp. 13.

सत्ति (von 1. सद्) f. *Eintritt, Anfang:* योग° Ind. St. 10,289.

सत्त्र (von 1. सद्) Uṇâdis. 4,166. VS. Prât. 6,27 (सत्र zu schreiben). n. 1) *eine grosse* Soma-*Feier von mehr als zwölf Tagen mit vielen Officianten* AK. 3,4,25,183. H. 820. an. 2,463. Med. r. 93. Hall. 2, 339. Kâty. Ça. 12,1,4. 13,1,1. Çâṅk. Ça. 11,1,4. Âçv. Ça. 11,1,7. Maçaka in Verz. d. B. H. 73. Z. d. d. m. G. 9,LXXI. Gewöhnlich mit याम्, सद्, auch उप-इ *eine Feier begehen*, उद्-स्था *beenden*. ṚV. 7,33,13. AV. 11,7,8. 12,1,39. सत्त्रं नि षेदुर्ऋषयो नाधमानाः 17,1,14. येन ऋषयस्तपसा सत्त्रमायन् VS. 13,49. 8,52. Ait. Br. 2,19. 4,17. स्वर्गाय लोकाय सत्त्रमासते 3,14. 8,21. TBr. 1,4,2,7. TS. 2,3,8,1. 7,2,9,3. 3,6,2. Çat. Br. 4,6,1,13. 9,1. 9,1. 11,5,5,1. Pañcav. Br. 15,12,3. षष्टीनां द्वादश चतुर्विंशतिः संवत्सर इति सत्त्राणाम् Âçv. Ça. 4,8,15. Kâty. Ça. 1,6,13. 12,1,6. 7. Liṭy. 2,2,2. 4. 11. 10,1,1. °व Kâṭh. 34,8. °काम Kâty. Ça. 12,4,26. द्वादशवार्षिक MBh. 1,1. Uttarar. 2,12 (4,2). पशवस्ति सत्त्रेष्वेव यज्ञेषु परमाधरे MBh. 5,486. सत्त्रादिभिर्मखैः Spr. (II) 2953. शतैः 4586. सत्त्रान्सत्त्रावसानिकान् R. 2,56,25. 75,24. °फलद Harîv. 2813. Bhâg. P. 3,13,37. तेषु तत्सत्त्रमुपासीनेषु MBh. 1,662. सत्त्राण्यन्वासते (v. l. उपासते) Spr. (II) 3631. सत्त्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्रसममासत Bhâg. P. 1, 1,5. °वर्धन 7,2. गो° TS. 7,5,4,1. पुरोडाश° Ait. Br. 2,9. Bildlich *ein einem* Sattra *gleichkommendes verdienstliches Werk:* क्षयस्य हि यो दाता स पूज्यः सततं नृपः। सत्त्रं हि वर्धते तस्य सदैवाक्षयदक्षिणम् ॥ M. 8, 303. द्यापत्त्राभयसत्त्रेषु दीक्षिताः खलु पोरवाः Çiç. 49. सत्त्रस्पर्द्धि f. *Vollendung —, Gelingen des* Sattra heisst ein Sâman Ind. St. 3,242,a (fehlerhaft सत्त्रस्पर्द्धि). TS. 7,5,8,1. Çat. Br. 4,6,9,11. Çâṅk. Br. 29,6. neutr. Kâty. Ça. 12,4,11. — 2) = सत्त्रगृह, °वसति, °शाला, °सदन्, *ein Haus, in dem Speisen u. s. w. unentgeldlich verabreicht werden, Verpflegungshaus, Hospiz:* तत्र तया सत्त्रे ऽवतारिते। नानापथागतानाबन्धोरप्यपि भुज्यते ॥ Rigá-Tar. 2,58. सत्त्रे सुन्दरकस्याशु वारयामास भोजनम् Kathâs. 20,157. यज्ञादिदानसत्त्राण्यकारयत् 113,29. = सदादान AK. H. an. Med. st. सत्त्र Mâṅk. P. 35,33 wird nach ÇKDa. सत्त्र gelesen, welches der Comm. durch सदनिणां सततान्नदानम् erklärt. — 3) *eine angenommene Gestalt:* तया च सत्त्रेण वसन् MBh. 4,311. कृष्णः सत्त्रेण 1194. 1267. 1271. *ein trügerischer Schein:* उत्पलवन° Daçak. 77,12. = व्याच्छादन AK. H. an. Med. = कैतव Taik. 3,3,277. Med. = दम्भ H. an. = वस्त्र H. ç. 135. — 4) *Wald* AK. Taik. (वल्ल fehlerhaft für वन). H. 1110. H. an. Med. Halâ. 2,55. मृगव्य° Kir. 13,9. — ÇKDa. führt nach dem Anekârthakoça noch folgende Bedd. an: धन, गृह, दान, सरोवर. Vgl. दीर्घ° (in der 1ten Bed. auch MBh. 1,661), देव°, पक्ष°, ब्रह्म°, भूमि°, महा°, मृग°, रण°, रात्र°, रात्रि° (Âçv. Ça. 11,6,16), संवत्सर°, सर्प°.

सत्त्रगृह n. = सत्त्र 2) Kathâs. 21,93.

सत्त्रय् (von सत्त्र), °यते Daśrûp. 35,52 (संतानक्रियायाम्, संबन्धे und संततौ, निर्वाहक्रियायाम्, विस्तारे).

सत्त्रयाग m. = सत्त्र 1) Kathâs. 118,36. Bhâg. P. 8,8,39. 9,13,7.

सत्त्रराज् m. *König des Festes* VS. 3,34.

सत्त्रवसति f. = सत्त्र 2) Kathâs. 72,99.

सत्त्रशाला f. dass. H. 1000. Halâ. 2,142. Kathâs. 21,71.

सत्त्रसद् adj. *Festgenosse* AV. 1,30,4. VS. 34,35. Çat. Br. 12,1,3,22.

सत्त्रसदन् n. = सत्त्र 2) Kathâs. 20,149.

सत्त्रसंग n. *Festfeier* AV. 9,6,42.

सत्त्रस्पर्द्धि Ind. St. 3,242,a fehlerhaft für सत्त्रस्पर्द्धि; s. u. सत्त्र 1) am Ende.

सत्त्रापय्, °यते = सत्त्रय् Vop. nach Westergaard.

सत्त्राय् (von सत्त्र), °यते = कण्डूयनक्रीडायाम् oder सत्त्राय क्रमणे ऽनार्जवे P. 3,1,14, Vârtt.

1. सत्त्रायण (सत्त्र+अयन) n. *eine Feier von besonders langer Dauer* Çat. Br. 4,6,9,2. Ait. Br. 6,22. Pañcav. Br. 25,3,4. 7,3. 8,2. 10,3. Ind. St. 3,382. 390. 393. यद्य यत्सत्त्रायणमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद्ब्रह्मचर्येण खलु वै सत आत्मनस्त्राणं विन्दते Kâṭh. Up. 8,5,2.

2. सत्त्रायण (wie eben) 1) adj. *sich im* Sattra *bewegend*, Beiw. Çaunaka's Bhâg. P. 6,18,21. — 2) m. N. pr. eines Mannes, Vaters des Bṛhadbhânu, Bhâg. P. 8,13,36.

सत्त्रि m. = पक्षशील, रुस्तिन्, मेघ Uṇâdis. im ÇKDa.

सत्त्रिन् (von सत्त्र) adj. 1) *Vollbringer eines* Sattra, *Theilnehmer an einem* Sattra, *ein Feiernder, ein Festgenosse;* = गृहपति AK. 2,8,1, 15. Taik. 3,3,155. H. 734. — TS. 1,7,2,1. 7,4,11,1. TBr. 1,2,2,1. 2, 3,5,4. Ait. Br. 4,13. Çat. Br. 11,8,4,1. °धर्मा: Âçv. Ça. 12,8,1. Liṭy. 6,4,15. Anupadas. 4,6. M. 5,93. Jâṅ. 3,28 (*Hausherr* Stenzler). MBh. 12,3628. Harîv. 2813. Kathâs. 87,24. fgg. Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 39. कृशाय म्रियमाणाय वृत्तिग्लानाय सीदते। भूमिं वृत्तिकरीं दत्त्वा सत्त्री भवति मानवः ॥ *hat dasselbe Verdienst, als wenn er ein* Sattra *vollzogen hätte*, MBh. 13,3131. — 2) *durch eine Verkleidung unkenntlich gemacht*

MBh. 14,156. Kir. Nitis. 12,34. — Vgl. दीर्घ°.

सत्त्रिय adj. zum Sattra *gehörig* u. s. w.: दीक्षा Ait. Br. 4,26. Feuer TBr. 3,11,9,2. Pañcav. Br. 14,1,1. Kâṭy. 34,11. — Vgl. सत्र्य.

सत्त्रीभूत (सत्त्र + भूत) adj. *Andere speisend* MBh. 13,4873. भूतानामाच्छादनवद्भवतीति: Nilak.

सत्त्रोत्थान (सत्त्र + उ°) n. *das Aufstehen (Auseinandergehen) vom Sattra* Cat. Br. 4,6,9,6. 10. 15. Kâṭy. Ça. 12,4,20.

सत्त्र्य adj. = सत्त्रिय Cat. Br. 11,3,3,2.

सत्त्व (von सत्), am Ende eines adj. comp. f. या. 1) n. *das Sein, Existenz, Realität* Halâs. 5,82. Vaiç. bei Mallin. zu Kir. 12,40. स्मो वयमित्यात्मानमेव सत्त्वं गमयति TS. 2,5,9,5. 5,2,1,6. 4,9,5. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 162. सर्वत्र Weber, Râmat. Up. 287. Z. d. d. m. G. 7, 294. Nilak. 12. 21. 52. 121. Comm. zu Gaim. 1,31. zu Kap. 1,4. अस्ति सत्त्वे AK. 3,3,19. H. 1541. Sarvadarçanas. 9,9. fgg. 12,21. 14,7. 141,15. या° 12,21. 14,11. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,162. Nilak. 164. Siṁ. D. 269. Z. d. d. m. G. 7,294. — 2) n. *Wesen, Charakter:* पुत्रस्य पुत्रः सत्त्वमुते Pañcav. Br. 15,12,2. सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति Bhag. 17,3. Spr. (II) 4753. क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे 5712 = 6145. सर्वः कृच्छ्रगतो ऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम् 7322. 7420. Kir. 12, 40. Varâh. Bṛh. S. 68,114. नाभिः स्वरः सत्त्वमिति प्रदिष्टं गम्भीरमेतच्चितयं नराणाम् 85. Suçr. 1,124,12. अदीन° adj. MBh. 3,11909. 13599. R. 2, 72,53. 4,29,25. अभिनन्द्य° adj. Bhâg. 5,21. आर्ष°, उदार° adjj. MBh. 2,1366. उच्चकुल, शास्त्रनियमित Spr. (II) 369. उन्नत 6560. ऊर्जित° adj. 6511. ऋजुबुद्धि° adj. MBh. 15,672. कल्याणसत्त्वता R. 2,44,14. क्रूर° adj. Prab. 113,11. तीव्र°, मन्द° adjj. Kathâs. 35,75. fg. दृढ° adj. 67. 88,49. धीर° 35,63. लघु° adj. Varâh. Bṛh. 15,13. °लाघव R. 4,6,6. विगुढसत्त्वविज्ञान adj. R. 4,22,12. शुद्ध° adj. 2,38,29. स्थिर° adj. R. Schl. 2, 83,8. सिंह°, व्याघ्र°, वराहमृग°, शल° adjj. MBh. 13,2155. Varâh. Bṛh. S. 68,108. 111. fgg. Prab. 113,16. सत्त्वसत्त्व eines Rubins Spr. (II) 867. सत्त्व = स्वभाव H. an. 2,540. Med. v. 28. Vaiç. z. d. O. = आत्मभाव H. an. = आत्मन Med. — 3) n. *ein fester Charakter, Festigkeit, Entschlossenheit, Energie, Muth* Bhag. 10,36. R. 2,21,38. Kir. Nitis. 1,16. fg. 4,6. 29. 43. 68. 5,13. 13,2. 19,62. Suçr. 1,130,2. तुल्यसत्त्वानां सिंहानाम् Ragu. 4,72. Spr. (II) 646. 2781, v. l. 3101. 3502. 4387. 4463. 7504. Kathâs. 18,196, 283. 389 (doppelsinnig). सत्त्वमनुधावति संपदः 27, 134. 208. 35, 43. 53, 143. 66, 109. Râja-Tar. 3,33. 4,65. 5,131. Siṁ. D. 197. ततः सत्त्वमास्थितः MBh. 12,4257. धारयन्सत्त्वम् R. 2,22,2. सत्त्वमाश्रित्य केवलम् 3,40,18. अबालसत्त्वो बालः Çiç. 101, 21. आपन्नपि त्यागं न सत्त्वम् Kathâs. 21,100. सत्त्वावसाद 18,209. सत्त्वोत्कर्ष Hit. 100,6. संपन्नः सत्त्वसंपदा AK. 3,1,13. °संपन्न Jâṭ. 1,208. R. 2,78,2. 101,17. °युक्त Varâh. Bṛh. S. 5,39. सत्त्वान्वित Dhûrtas. 77,3. सत्त्वोद्रिक्त Râja-Tar. 3,243. सत्त्वाधिक Spr. (II) 1431. Kathâs. 27,134 (कर्मन्). Ved. in LA. (II) 29,1. 2. सत्त्वाढ्य Kathâs. 12,44 (doppelsinnig). 38,3. रूपसत्त्वगुणोपेत M. 3,40. °वीर्यगुणोपेत R. 1,6,22. °बुद्ध्युपपन्न Spr. (II) 6711. सत्त्वाभिजनसंपन्न 6712. सत्त्वोत्साहकृत्ति Hit. 30,2. विहीनाः सत्त्वेन Varâh. Bṛh. S. 27,8. हीन° adj. R. 5,13,69. Suçr. 2,474,16. Kathâs. 27,69. 43,88. विहीन° adj. Varâh. Bṛh. S. 16,32. उत्तम°, मध्यम° adjj. Suçr. 2,226,12. fg. Kathâs. 15,117. अल्प° adj. 25,98. सत्त्व = व्यवसाय AK. 3,4,28,215. H. an. Med. Vaiç. = स्थामन् Halâs. = बल H. an. Med. Vaiç. = पराक्रम Vaiç. — 4) n. *das absolut gute Wesen*, die erste der drei Qualitäten (गुण) der Prakṛti AK. 1,1,4,7. H. an. Med. Halâs. Nir. 14,3. Maitrâyaṇ. 4,5. 5,2. M. 12, 24. सत्त्वं ज्ञानम् 26. तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनि लक्षयेत् । प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत् ॥ 27. 37. सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः 38. °युक्त Jâṭ. 3, 159. Siṁhâs. 13. 54. Weber, Râmat. Up. 324. Tattvas. 25. Vedântas. (Allah.) No. 25. Madhus. in Ind. St. 1,23,17. Sarvadarçanas. 147,17. 151,12. Varâh. Bṛh. S. 69,9. 14. Bṛh. 2,7. सत्त्वोद्रिक Siṁ. D. 34. Bhâg. P. 1,2,19. 23. 25. 3,8. 4,30,42. Muir, ST. 1,19. fg. 23. 28. fg. 33. — 5) n. *geistiges Wesen, Geist;* = चित्त H. an. Med. = अन्तःकरण Vaiç. शुद्ध° Mahâp. Up. 3,2,6. °शुद्धि Jâṭ. 3,159. Nilak. 22. °पुरुषान्यता 28. fg. Çiç. 4,55 (= प्रकृति Mallin.). Verz. d. Oxf. H. 231,a,6. b,27. 232,a,17. fg. Sarvadarçanas. 167,11. Bhâg. P. 1,10,23. 7,15,41. निर्वृत्ते ब्रह्मसाक्ष्यौ द्वे त्रिधाङ्किकसात्त्विके AK. 1,1,5,16. H. 283. Siṁ. D. 184. fg. मूढ° adj. MBh. 3,15710. — 6) n. *Lebensathem;* = असु, प्राण AK. 3,4,27, 215. H. an. Med. Vaiç. तेन शब्देन सहसा समुद्रे पर्वतोपमाः । आप्लवन्त गतेः सत्त्वैर्गतस्याः शतसहस्रशः ॥ MBh. 3,12098 (= बुद्धिभिः Nilak.). उद्ग्रतानीव सत्त्वानि R. 2,48,1 (45,1 Gorr.). परिकल्पितसत्त्वयोग adj. Çiç. 42. गत° adj. MBh. 3,2653. 15798. R. 2,60,1. 4,9,31. — 7) n. *ein reales Wesen, Gegenstand, Ding;* = द्रव्य, वस्तु AK. Taik. 3,2,5. 21. H. an. Med. Vaiç. सत्त्वप्रधानानि नामानि Nir. 1,1. 12. 20. 2,7. 15. 7,4. 9,1. ṚV. Prât. 12,5. 6. AV. Prât. S. 261. P. 1,4,57. 2,3,33. II, S. 451 unter गुण. °गामिन् AK. 1,1,4,63. — 8) m. n. *ein lebendes Wesen*, insbes. *ein ungeborenes künftiges* AK. 3,4,28,215. H. 1366. H. an. Med. Halâs. 5,82. 3,34. Vaiç. अस्थिमत्त् M. 11,140. अन्नाद्यज, रसज 142. क्लिन्न 12,56. Jâṭ. 3,275. MBh. 1,1135. रात्रिचारिन्, दिवाचारिन् 10,26. fg. सत्त्वैः सत्त्वा हि जीवन्ति दुर्बलैर्बलवत्तराः 12,443. 4258. स्त्री वा पुमान्वा यज्ञान्यत्सत्त्वं नगरराष्ट्रजम् R. 1,9,21. 40,20. 2,25,18. बोद्धव्यानि 33,13 (15 Gorr.). 55,7. R. Gorr. 1,43,2. 3,55,48. 64,21. 4,1,18. 5,14,62. 7,4,9.10. Gaim. 1,9. Suçr. 1,114,7. 2,399,18. 538,12. 15. 18. 495,20. Kir. Nitis. 15,9. Kumâras. 5,17. Ragu. 2,8. 14. 38. 6,46. 14,75. 15,15. Çiç. 38. 192. 17,20. 93,8. Spr. (II) 3753. 4424. 4526. 4929. 5609. 6263. Varâh. Bṛh. S. 5,54. 21,23. 32,1. 25. 33,5. 91,2. °युद्ध 43,29. Kathâs. 12,44. 18,389 (an beiden Stellen doppelsinnig). 60,22. 93. Râja-Tar. 1,128 (°हिंसा mit der ed. Calc. zu lesen). 3,4. Siṁ. D. 38,10. Brahma-P. in LA. (III) 48,12. Bhâg. P. 1,15,14. 3,13,21. 26,18. 5,9,21. Pañcat. 60,5. 165,9. Hit. 56, 20. Burnouf, Intr. 593. — 9) m. n. *ein gespenstisches Wesen, ein böser Geist, Kobold;* = पिशाचादि H. an. Med. Vaiç. = गन्धर्व AK. 3,4,24, 135. सत्त्वास्तु नारकाः 1,2,3,2. रक्षोपक्षादिसत्त्वानां दर्शनम् Varâh. Bṛh. S. 46,92. सत्त्वमाविश्य R. 2,33,10. सत्त्वेनाविष्टचेतनः R. Gorr. 2,33,11. fg. Kathâs. 44,159. — 10) m. N. pr. eines der Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,4548. — ÇKDr. führt noch folgende Bedd. an: रस, आयुस् nach Dharan. कुबेर angeblich nach H. धन nach Çabdar. — Vgl. अ°, अस°, आपन्न° (auch Suçr. 2,491,6), दुः°, देव°, निः°, बोधि°, भीरु°, महा°, यावत्°, वन्न°, स°, सु°, सात्त्विक.

सत्त्वक (von सत्त्व) m. N. pr. eines Mannes; s. सात्त्वकि.

सत्त्वकर्तृ m. *Schöpfer der lebenden Wesen* so v. a. प्रजापति R. 7,4,10.

सत्त्वधामन् n. *die Heimath der Qualität* Sattva, Bein. Vishṇu's Bhâg.

P. 7,8,28. 9,13. 8,8,12. धामन् = प्रकाश und मूर्ति nach dem Comm.

सत्त्वपति m. *Fürst der Geschöpfe* Bhâg. P. 7,4,7.

सत्त्वप्रकाश m. *die Offenbarung der Qualität* Sattva, personif. als Fürst Verz. d. B. H. No. 541.

सत्त्वमय (von सत्त्व) adj *aus der Qualität* Sattva *gebildet* MBh. 6,2007.

सत्त्वमूर्ति adj. dass. Bhâg. P. 7,8,49.

सत्त्वलक्षणा adj. f. *schwanger* Çiç. 66,18.

सत्त्ववत् (von सत्त्व) adj. 1) *einen festen Charakter habend, Entschlossenheit —, Energie —, Muth besitzend; m. ein charaktervoller Mann* Bhag. 10,36. MBh. 1,2536. R. 1,41,8. 2,106,31. 5,29,6. 48,7. Suçr. 1,123,19. 130,3 (zugleich *mit der Qualität* Sattva *reichlich versehen*). Spr. (II) 1277. 1628. 4170. 7040. Kathâs. 17,40. 18,67. 109. 301. 20,30. 35,30. 55. Bhâg. P. 7,13,36. वीर्य° (das suff. gehört hier und im folgenden comp. zu beiden Wörtern) MBh. 3,2678. सत्त्वोत्साकृवत् Spr. (II) 7049. सत्यवत् fehlerhaft für सत्त्ववत् Raghu. 5,56 (ed. Calc. richtig) und Pâṇ. 4,1,6,35. — 2) f. °वती N. pr. einer Tantra-Gottheit Vjutp. 106.

सत्त्ववर् m. N. pr. zweier Männer Kathâs. 53,90. 78,9 (सत्य° gedr.). 81. fgg.

सत्त्वशालिन् adj. *festen Charakters, energisch, muthig* Kathâs. 18,211. 46,107.

सत्त्वशील m. ein Mannsname Kathâs. 35,33. 81,5. Verz. d. Oxf. H. 152,b,24.

सत्त्वसर्ग m. *eine Schöpfung* (concret) *der Qualität* Sattva Bhâg. P. 3, 12, 10.

सत्त्वस्थ adj. (f. स्था) 1) *beim festen Charakter bleibend, Festigkeit u. s. w. zeigend* Maitrjup. 6,30. Kâlikâp. in Ind. St. 9,10. Bhag. 2,48. MBh. 12, 8909. Milav. 20,9. — 2) *an der Qualität* Sattva *festhaltend, sich in derselben bewegend* Bhag. 14,18. Bhâg. P. 8,5,50. धी Spr. (II) 3463.

सत्त्वस्थान n. *das Verbleiben in der Qualität* Sattva Verz. d. Oxf. H. 58, b, 9.

सत्त्वहर् adj. *die Qualität* Sattva *entziehend:* कलि °हरं पुंसाम् Bhâg. P. 1,1,22.

सत्त्वात्मन् (सत्त्व + आ°) adj. *dessen Wesen die Qualität* Sattva *ist* Bhâg. P. 8,12,21.

सत्पतिन् (सत्त् + प°) m. *ein guter, nützlicher, unschädlicher Vogel* Çiç. in LA. (III) 34,14.

सत्पति (सत्त् + प°) m. 1) *Heerführer, Anführer* überh.: *Vorkämpfer, Held* RV. 1,54,7. वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा 91,5. namentlich Indra 11,1. 53,6. 165,3. वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्र: 174,1. 8,26,2. आङ्गिरसतुर् Vâlakh. 5,6. RV. 2, 1, 4. 33, 12. अग्निर्दीदाति सत्पतिं सासाद् यो युधा नृभि: 5,25,6. 32,11. 44,13. 65,2. 82,7. स सत्पति: शवसा कृत्ति वृत्रम् 6,13,3. 14,4. 16,19. 46,1. 8,2,28. 19,36. 21,10. Âditja 6,51,4. 10,8,9. 60,2. इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती 65,2. AV. 7,62,1. विदथस्य 73,4. — 2) *ein guter Herr, — Gebieter:* विशस्य Prâçnop. 2,11. Verz. d. Oxf. H. 47,a,13. Bhâg. P. 2,8,27. 3,22,15. 10,34,16. — 3) *ein guter Gatte* Raghu. 3,33. प्राप्त° adj. f. Kathâs. 15,53.

सत्पत्र (सत्त् + प°) n. *ein junges Blatt der Wasserrose* Çabdaç. im ÇKDa.

सत्पथ् = सत्पथ. instr. °पथा R. 7,80,10.

सत्पथ (सत्त् + पथ) m. *ein guter —, der richtige Weg* AK. 2,1,18. H. 984. °वर्तिन् ein Planet Varâh. 8,53. gewöhnlich in übertr. Bed.: सताम् MBh. 13,6477. R. 2,23,12. Bhâg. P. 4,12,30. °पथं या 3,28,1. MBh. 2,267. गम् R. 7,107,13. वर्तय् 5,89,35. त्यज् Kathâs. 91,42. °पथे संनिविष्ट: MBh. 1,3627. वर्तृ Harîv. 4023. स्थित: R. 2,31,10. 5,90,39. °स्थान MBh. 13, 6443. °पथादपेत: R. 4, 34,35. am Ende eines adj. comp. घातित° Spr. (II) 719. मुक्त° Kathâs. 56,13. उत्क्रान्त° 294. उल्लङ्घित° Bhâg. P. 5,7,2. अ° *nicht auf dem richtigen Wege seiend* (मनस्) 3,28,7.

सत्पद्धति (सत्त् + प°) f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 874. fg.

सत्पथ्यरत्नाकर m. desgl.; s. u. नीरेणुक.

सत्पशु (सत्त् + पशु) m. *ein zum Opfer geeignetes Thier* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

सत्पात्र (सत्त् + पात्र) n. *eine würdige Person* Spr. (II) 3845. fg. 4256. 5434. 6714. Râga-Tar. 3,181. Mânav. P. 21,91. Bhâg. P. 7,14,27.

1. सत्पुत्र (सत्त् + पुत्र) m. *ein guter Sohn* Spr. 6428, v. l.

2. सत्पुत्र (wie oben) adj. *einen Sohn habend* M. 9,134. अ° ebend.

सत्पुरुष (सत्त् + पु°) m. *ein guter —, vorzüglicher Mensch* P. 2,4,31. Schol. R. 2,48,7. 109,19. Spr. (II) 1460. 1613. 3277. 4157. 4556. 5784 (so v. l. *ein kluger Mann*). 6019. 6106. 6589. 7234. Lalit. ed. Calc. 43,4. 9.

सत्पुष्प (सत्त् + पु°) adj. (f. आ) *in Blüthe stehend* P. 4,1,64, Vârtt. 1. Vop. 4,18.

सत्प्रक्रिया (सत्त् + प्र°) f. *der Abschnitt über die Participia praesentis:* °व्याकृति Verz. d. B. H. No. 739.

सत्प्रतिग्रह (सत्त् + प्र°) m. *die Entgegennahme einer Gabe von guten, ehrenwerthen Menschen* M. 10,115. अ° 11,194. Jâtâ. 3,290.

सत्प्रतिज्ञ (सत्त् + प्रतिज्ञा) adj. *der Etwas versprochen hat* Taitt. 3,3,193.

सत्प्रतिपक्ष (सत्त् + प्र°) adj. *wogegen ein triftiger Einwand erhoben werden kann: हेतु ein solches Argument* (auch subst. mit Ergänzung von हेतु) Tarkas. 40. 42. Sarvadarçanas. 119,19. Kusum. 50,11. Verz. d. Oxf. H. 241,b,14. 242,a, No. 593. fgg. Davon nom. abstr. °ता f. Kusum. 49,13.

सत्प्रतिपक्षित (von सत्प्रतिपक्ष) adj. *wogegen ein triftiger Einwand erhoben worden ist* Comm. zu Kap. 1,71.

सत्प्रतिपक्षिन् adj. = सत्प्रतिपक्ष. Davon nom. abstr. °पक्षिता Bâlabh. 76. °पक्षित्व n. ebend. Comm. असत्प्रतिपक्षित्व n. Z. d. d. m. G. 7,294, N.

सत्प्रमुदिता s. u. सदाप्रमुदित.

सत्फल (सत्त् + फल) m. *Granatbaum* Çabdar. im ÇKDa. n. *die Frucht* Verz. d. Oxf. H. 103,b,2. — सत्फलानाम् Spr. (II) 813 schlechte v. l. für सत्कलानाम्.

सत्य (von सत्त्) 1) adj. *wirklich, wahr, ächt; wahrhaft, ernstlich; zuverlässig, treu* (Gegens. मोघ, अनृत u. s. w.) AK. 1,1,5,22. 3,4,26,36. H. 264. an. 2,336. Mân. j. 60. Hall. 1,141. 144. अग्निर्विद्वाँ ऋतचिद्धि सत्य: RV. 1,145,5. मक्ष 152,2. 174,1. आशिष: 179,6. 7,17,5. VS. 35, 20. उक्था RV. 6,67,10. वचस् 7,104,12. आशा TBr. 3,12,9,2. ब्रह्मितार: RV. 1,180,7. सत्या सत्यस्य कारणानि वोचम् 2,15,1. 22,1. 23,11. मन्यु 24,14. 4,17,10. रयि 3,14,6. मनसा 7,90,5. 10,67,5. राजन् 8,92,6. मक्षिभि: 6,67,7. सत्या नृणामभवद्वृष्टिति: wahr so v. a. von *Erfolg begleitet* 8,63,5. 7,83,4. 7. 10,116,5. वाचि: सत्यं भवति पदेषिणे AV. 9.

2,25. स हि सत्यो यं पूर्वे चिदेवासाश्चिध्मो यिथे *das ist der rechte, derselbe, welchen* RV. 5,25,2. सत्यमिन्द्रं स्तवाम नानृतम् 8,51,12. यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म 10,130,5. विश्वं सत्यं कृणुहि 3,30,6. 4,17,20. AV. 1, 10,1. VS. 9,12. Çat. Br. 13,4,3,12. मित्रः सत्यः (vgl. die v. l. TS. 3,4, 8,1. TBr. 1,7,8,1) VS. 9,39. Çat. Br. 5,3,3,8. संधा TS. 1,7,8,4. तव तत्सत्यमस्त्वस्मावायः सचत्ताम् *mach das wahr: uns sollen u. s. w.* RV. 1,98,3. विश्वं सत्यं युवोरित् *bei euch ist alles zuverlässig* 2,24,12. 4,1, 18. 22,6. 28,5. यत्सुवाति सत्यमस्य तत् *dabei bleibt es* 54,4. 8,82,5. 9, 92,5. यस्मे ता तं इन्द्र सत्या सन्तु 10,22,13. सत्यमात्मानं कुरुते Kaiṅd. Up. 6,16,2. — महाभूतानि सत्यानि यथात्मापि तथैव हि *wirklich, in Wirklichkeit vorhanden* Jâñ. 3,149. यथा स (भीष्मपराजयः) सत्यो भवति तथा कुरु MBu. 5,7330. मर्यादा R. Gorr. 2,11,5. प्राब्रवा सत्यमस्यात्तम् Raghu. 12,75. सत्यं संपद्यते हि तत् Kathâs. 3,50. 18,200. यदि सत्येव यात्रा *so v. a. wenn du wirklich reisen willst* Spr. (II) 5235. गिरु, वसम् u. s. w. 6211. 6567. 6736. fg. R. 2,52,42. Kathâs. 52,279. Vet. in LA. (III) 11,1. प्रतिज्ञा R. 1,67,28. 3,35,112. संकल्प Kaṭha-Up. 3,2. याथिथः *wahr so v. a. eintreffend, in Erfüllung gehend* Bhâg. P. 1,10, 19. 4,9,24. 15,19. 19,41. ज्ञाति *ächt* M. 2,148. °सुहृद् Pañkat. 80,21. नन्द् (Gegens. योग°) Kathâs. 4,104. °गत्व 12,16. 42,14. 56,277. यस्त्यकपठार्पितबाहुबन्धना *ein Hals, der in Wirklichkeit nicht da war,* Kumâras. 5,87. भाषा *so v. a. giltig* M. 8,164. सत्यं कर् *Etwas wahr machen, erfüllen:* प्रतिश्रुतम् Bhâg. P. 1,7,54. मनोरथम् R. 2,88,24. 3, 33,8. वचः 5,80,23. *wahrhaft, aufrichtig, zuverlässig, auf dessen Wort man sich verlassen kann:* देवी सरस्वती Vaṭṭ. Bṛh. S. 26,2. fgg. 46, 98. R. 2,22,9. सत्यस्त्वं भव 34,42. त्वामहं सत्यमिच्छामि नानृतम् 47. यद्हं हि पितरं सत्यं चिकीर्षुः R. Gorr. 2,26,29. 29,11. Spr. (II) 1694. 6739 (नृपनीति und वेश्याङ्गना). 6740. 6746. 6897. वेदशास्त्रपुराणानि 6271. — 2) m. *a) Ficus religiosa Lin.* Râjân. im ÇKDa. — *b)* N. der höchstgelegenen unter den sieben Welten H. an. Viçva im ÇKDa.; vgl. 4) *f*). — *c)* N. des 9ten Kalpa; s. u. कल्प 2) *d*). — *d)* ein N. Kṛshṇa's: सत्यात्सत्यं च गोविन्दस्तस्मात्सत्यो ऽपि नामतः MBu. 5, 2571. Râma's Çabdan. im ÇKDa. — *e)* N. pr. eines best. göttlichen Wesens Vaṭṭ. Bṛh. S. 53,43. 52. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens Gaṇân. in Verz. d. Oxf. H. 190,*a*,33. = नान्दीमुखश्राद्धदेव Çâṅkhâj. im ÇKDa. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,25. MBu. 2, 105. eines Sohnes des Vitatja 13,2001. N. pr. eines der sieben Ṛshi in verschiedenen Manvantara Hariv. 468. Mârk. P. 94,8. 14. Bhâg. P. 8,13,22. = तुषित VP. 3,1,35. ein Vjâsa Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,19. eines Sohnes des Havirdhâna Bhâg. P. 4,24,8. in धर्मसत्यव्रतेषवः *so v. a.* सत्येषु (indem das am Ende stehende suff. auch zu धर्म und सत्य gehört) 8,20,4. pl. Bez. einer Gruppe von Göttern in verschiedenen Manvantara Hariv. 427. VP. 3,1,14. 16. 38. Mârk. P. 73, 2 (सत्याप्त्यो गणः). 74,57. Bhâg. P. 8,1,24. Verz. d. Oxf. H. 36,*b*,33 (= ज्ञयाः in einer früheren Geburt). — *f)* N. pr. eines Astronomen, des Verfassers des Horâçâstra, Vaṭṭ. Bṛh. 2,17. 7,2. 9. 13. 20,10. 21,3. Ind. St. 2,251. — 3) *f.* ई *a)* Bez. einer Çakti Weber, Râmat. Up. 326. Pañkar. 3,2,30. — *b)* Beiw. der Sîtâ Çabdan. im ÇKDa. = सत्यवती ebend. = सत्यभामा MBu. 3,14723. Hariv. 7138. Bhâg. P. 1,14,37. Verz. d. Oxf. H. 15,*b*, No. 59. Pañkar. 3,7,30. Tochter Dharma's und Gattin Çamju's MBu. 3,14132. Mutter des Satja (= तुषित) VP. 3,1,38. Gattin Manthu's und Mutter Bhauvana's Bhâg. P. 5,15,13. eine Tochter Nagnagît's und Gattin Kṛshṇa's 10,58,32. Familiengottheit der Kutsa und Atharvan Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,28. ein N. der Durgâ 25,*a*,33. v. l. für सत्वी Hariv. 1706. — 4) n. *a) das Wirkliche; Wirklichkeit, Wahrheit* AK. 1,1,5,22. 3,4,24,156. H. 264. H. an. Med. Halây. 5,96. शंसः सत्यस्य RV. 7,35,2. 12. 36,12. सूनुः सत्यस्य Indra 3,38,4 (AV. 6,1,2). 9,73,1. 113,2. 4. सत्त, सत्य 10,190,1. Âit. Br. 1,6. 7,10. TBr. 1,1,3,1. वाचः 3,3,3. Âit. Br. 3,14. AV. 2,15,5. 3,11,3. 4, 18,1. 12,1,1. VS. 1,5. 11,47. सत्यं वदति Çat. Br. 2,2,2,19. सत्यं वै चक्षुः 1,3,2,37. Âçv. Gṛhj. 2,6,4. पुरा सत्यादाकूतिं कृत्स्नस्य *damit es nicht wirklich werde* d. h. *keinen Erfolg habe* AV. 7,70,1. कस्मात्सत्यादृध्य ओषधयः संभवन्ति *in Folge welches Sachverhaltes* u. s. w. d. h. *wie kommt es, dass* TS. 3,3,6,2. 2,6,2,1. 6,1,6,4. 2,1. 4,2,7. TBr. 3, 9,2,2. तेन सत्येन ज्ञागृतम् *auf Grund hiervon* RV. 1,21,6. — सत्यं ब्रुवन् M. 8,76. 81. 83. यविन्दंस्तन्नृतः सत्यम् 109. ब्रूणु सत्यम् MBu. 3,1861. 2333. 2473. R. 2,38,4. 3,53,20. सत्यपूतां वदेद्वाचम् Spr. (II) 2934. 5060. 6717. 6720. Raghu. 1,7. Brahma-P. in LA. (III) 53,10. Bhâg. P. 2,20,22. जिज्ञासार्थं तवानघ । प्राप्तः सत्यं च ते ज्ञात्वा (*dass du wirklich so bist*) MBu. 13,162. fg. सत्येन *der Wahrheit gemäss, in Wirklichkeit* M. 8,85. 86. R. 1,53,18. 2,21,61. 3,75,69. Spr. (II) 3838. तेन सत्येन *so wahr dieses ist* Kaiṅd. Up. 3,11,2. यथा — तेन सत्येन *so wahr — eben so gewiss* MBu. 3,2207. fgg. 13,158. fg. 14,2029. 2031. R. 2,64,39. Mârk. P. 16,81. तेन सत्येन — यथा MBu. 3,2981. यथा — एवं सत्येन Hariv. 4890. — सप्तसत्ये Çâṅkh. Çr. 2,7,12. fg. देवसत्यानि ब्रूयुः *göttliche Wahrheiten* Lâṭj. 8,9,12. Çat. Br. 2,4,2,6. vier *Wahrheiten* bei den Buddhisten Burnouf, Intr. 629. fg. Wassiljew 296. fgg. — *b) Wahrhaftigkeit, das Reden der Wahrheit* Kenop. 33. मौनात्सत्यं विशिष्यते M. 2,83. Jogas. 2,30. R. 1,1,19. 5,21. 2,25,6. R. Gorr. 2,33,14. Spr. (II) 1091. 3682. fg. 3689. 6715. fg. 6718. fg. 6722. 6724. fgg. 7575. Kathâs. 27,120. Siṅ. D. 90. सत्यं पुष्पफलं विद्यादात्मवृक्षस्य जीवतः Bhâg. P. 8,19,39. — *c) Gelöbniss, Versprechen, Eid, Schwur* AK. 3,4,25,156. H. an. Med. धातुर्देवस्य सत्येन AV. 2,36,2. सत्यं ब्रू M. 8,88. MBu. 3,2173. 2233. 2722. Spr. (II) 6730. वच् MBu. 3,2365. वद् 5,7489. प्रति-ज्ञा Nala ed. Bauer 19,6. प्रति-श्रु MBu. 3,2964. R. 2,98,2. °संभव 3,14,21. °भावणं कर् Pañkat. 97,17. वचनं पितुः सत्योपबृंहितम् R. 2,30,31. वाचा सत्ये कृते M. 9,69. Pañkar. 1,4,25. सत्यं दा (v. l. प्र-दा) 26. सत्यं चिकीर्षमाणः *das gegebene Wort zu halten Willens* MBu. 3,2148. कृत्वा सत्येन संविदम् M. 8,219. सत्येनायुधमालभे R. 2,98,6. R. Gorr. 2,29,24. 33,3. 3, 33,26. सत्येन शप् R. Schl. 2,21,16. 34,36. 47. 51,4. R. Gorr. 2,16,10. 121,9. 4,5,6. 6,22. त्रिसत्येनाहमात्मानं शपामि Pañkat. ed. orn. 64,7. 16. fg. सत्येन शापयेदेनम् M. 8,113. सत्येन बद्धः Kathâs. 84,39. °पाशेन संयुतः R. 2,34,30. Mârk. P. 126,32. 127,28. Bhâg. P. 2,10,3. सत्ये स्था R. Gorr. 2,11,2. सत्यमनुपालये R. Schl. 2,34,49. Spr. (II) 6746. Kathâs. 17,157. सत्यानुपालन 84,30. स्वसत्यं रक्षणं कुरु Pañkar. 1,4,28. त्रिसत्यमिवात्यार्यं मदीयं जीवितं यदि Kathâs. 17,60. सत्यं परि-स्यज् Spr. (II) 6729. अति-वर्त् Kathâs. 98,53. कृन् 84,40. सत्याद्भुतमलोपयन्

Rasu. 12,9. — *d*) *das erste Juga* (gew. कृत genannt) H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 21,*b*, N. 2. — *e*) (sc. ब्रह्म) *eine best. mythische Waffe* (neben घनृत) R. 1,29,18 (30,18 Gorr.). — *f*) N. *der höchst gelegenen unter den sieben Welten* Vaidjntas. (Allah.) No. 70. VP. 2,7,19. जनस्तपःसत्यनिवासिन: Bhâg. P. 3,13,25.43. Mârk. P. 101,25. unter den sieben Vjâhṛti Ind. St. 3,108; vgl. 2) *b*) und सत्यलोक. — *g*) Bez. *des achten astrologischen Hauses* Verz. d. B. H. No. 878. — *h*) *eine Satja-Formel:* सत्येन चमसान्भक्षयति Âçv. Çr. 3,7,36. — *i*) N. eines Sâman Çat. Br. 7,3,2,17. Kâty. Çr. 17,3,28. Lâṭj. 1,5,5. प्रत्रायते: सत्यम् desgl. Ind. St. 3,224,*b*. — 3) सत्यम् adv. *in Wirklichkeit, in Wahrheit, fürwahr, wahrlich; gewiss, recht* gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. चादि zu 4,57. Med. adj. 61 (प्रेम्ण Jâjupagme). in der Frage behält das verbum finitum seinen Ton P. 8,1,32. — ṚV. 1,38,3. सत्यमद्धा नकिरन्यस्त्वावान् 52,13. 3,39,5. 8,33,10. 44,9. यदि सत्यमस्ति *in der That, wirklich* 89,3. सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य 10,117,6. *gut* (in zustimmender Antwort) 4,33,6. *mit Recht* 5,73,9. — AV. 5,11,3. VS. 5,5. Kâty. Çr. 25,1,11. Kauç. 5. Âçv. Çr. 3,7,37. सत्यं वस्तव्यं किल मे वने R. 2,29,8. Mârk. 130,12. Çik. 6,5. 29,23. 30,14. 36,5. 79,15. Vikr. 71,18. Mâlav. 15,3. Spr. (II) 386. 2308. 3083. 5304. 3913. 6220. 6723. सत्यमेवाक् सुगतः संस्कारानविनश्वरान् *mit Recht* 6727. 6733. 7134 (wiederholt). 7209. Vaitân. 9,8. Kathâs. 12,131. 22,115. 27,78. 103. 32,160. 39,2. 40,25. 46,11. Mârk. P. 21,37. Râdâ-Tan. 5,86. 6,285. Sân. D. 56. सत्यमुक्ता so v. a. *es bejahend* M. 11,196. सत्यम् allein einräumend *so ist es, recht* Comm. zu TS. Prât. 1,21. 8,16. 13,15. सत्यम् — तु Kumâras. 6,19. सत्यम् — किंतु Kathâs. 49,216. Mârk. P. 134,31. Comm. zu TS. Prât. 1,53. 2,18. सत्यम् — तथापि Sarvadarçanas. 81,19. 114,20. — Vgl. अ°, अनृतसत्य, अप्रामिसत्य, अमृतब्रात°, त्रिसत्य, निःसत्य, प्रिय°, मम°, यथासत्यम्, सात्य.

सत्यक (von सत्य) 1) m. N. pr. *a*) eines Sohnes des Çini MBh. 1, 2434. 7916. 2,122. 14,1855. Harîv. 1935. 6628. 6649. 9206. VP. 435. Bhâg. P. 9,24,13. — *b*) eines Sohnes des Manu Raivata Mârk. P. 75,73. — *c*) eines Sohnes des Kṛshṇa von der Bhadrâ Bhâg. P. 10, 61,17. — *d*) pl. einer Gruppe von Göttern unter Manu Târnasa Bhâg. P. 8,1,23. — 2) m. *Abschluss eines Handels* Çabdâtvar. bei Wilson.

सत्यकर्ण m. N. pr. eines Sohnes des Kandrâpîḍa Harîv. 11067.

सत्यकर्मन् 1) adj. *dessen Thun wahr ist* ṚV. 9,113,4. — 2) m. *a*) *Aegle Marmelos Corr.* Nigh. Pr. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Dhṛtavrata Harîv. 1708. fg. VP. 446.

सत्यकाम 1) adj. *die Wahrheit liebend, ein Freund der Wahrheit* Kâṭh. Up. 3,7,1. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Ait. Br. 8,7. Çat. Br. 13,5,2,1. 14,6,10,14. 9,2,19. Kâṭh. Up. 5,2,3. Ind. St. 1, 262. fg. Praçnop. 1,1. Maitrjop. 6,5. — Vgl. सात्यकामि.

सत्यकाय m. N. pr. eines Mannes Saṃsk. K. 186,*a*,7. vielleicht fehlerhaft für सत्यकाम.

सत्यकीर्ति 1) adj. *dessen Ruhm wahr ist.* — 2) m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Spruches* R. 1,30,4 (31,5 Gorr.).

सत्यकृत् adj. *Wirkliches vollbringend, der Nichts vergebens thut* Bhâg. P. 7,1,11.

सत्यकेतु m. N. pr. eines Sohnes des Dharmaketu Harîv. 1594. VP. 409. Bhâg. P. 9,17,8. des Sukumâra Harîv. 1752. des Akrûra 1954. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,11.

सत्यक्रिया f. *die mystische Kraft der Wahrheit* (bei den Buddhisten Ind. St. 3,119.

सत्यखान oder °श्रीमानदत्त m. N. pr. eines *Chan's* Verz. d. B. H. No. 398.

सत्यग adj. als Beiw. eines Rades Verz. d. Oxf. H. 11,*b*,17 v. u. wohl fehlerhaft für सत्याङ्ग, wie 40,*b*,34 gelesen wird.

सत्यगिर् adj. *dessen Wort wahr ist, der sein Wort hält* Râdâ-Tan. 1,113.

सत्यगिर्वाक्स् adj. *ächtes Lob empfangend* ṚV. 1,127,8.

सत्यघ्न adj. *der sein Wort bricht* Pâṇân. 1,6,46.

सत्यंकार (von सत्य-म् + 1. कृ) m. P. 6,3,70. 1) *Versprechen, Zusage* Râdâ-Tan. 6,71. *Abschluss eines Handels* AK. 2,9,33. H. 872. °कृतं द्रव्यम् wohl so v. a. *als Handgeld verabfolgt* Jâgñ. 2,61. = बन्धक H. an. 3,74. — 2) N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. — Vgl. सात्यंकार्य.

सत्यजा adj. = सत्यजा Ait. Br. 4,20.

सत्यजित् 1) adj. *wahrhaft siegreich* oder *durch Wahrheit siegend* VS. 17,32. AV. 4,17,2. — 2) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,3480. 3483. 7,716. fg. 9228. Verz. d. Oxf. H. 77,*a*, No. 131. ein Sohn Bṛhaddharman's Harîv. 1056. Kṛshṇa's 9188. Sunîta's VP. 4,23,3. Sunîtha's Bhâg. P. 9,22,47. Ânaka's 24,40. Amitragît's Weber, Kâṇvâs. 234. ein Dânava Harîv. 199. ein Jaksha (nach dem Comm.) Bhâg. P. 12, 11,44. Indra im 3ten Manvantara 8,1,24.

सत्यजिति f. *ein wahrer Sieg* Lâṭj. 5,4,19. Kâty. Çr. 19,3,4.

सत्यज्ञ adj. *des Wahren kundig* Nir. 11,18.

सत्यज्ञानानन्दतीर्थ und °यति m. N. pr. eines Gelehrten Hall 132. 136. 141. Hall. Anth. 470. — Vgl. सत्यानन्दतीर्थ.

सत्यंज्योतिस् adj. *wirklichen Glanz habend* VS. 17,30.

सत्यतपस् m. N. pr. eines durch Durvâsas aus einem Jäger zu einem Muni gemachten Mannes Verz. d. Oxf. H. 59,*a*,16.

सत्यतस् (von सत्य) adv. *in Wahrheit, wirklich* Kathâs. 57,29.

सत्यता (wie eben) f. 1) *Wirklichkeit, das Wahrsein, Wahrheit* Çat. Br. 14,6,10,9. महाप्रभावे च सत्यतां प्राप्ते Kathâs. 3,77. इत्यसत्यमपि ध्यानबलिनामेति सत्यताम् 72,218. घलीकमेतन्नास्त्यत्र सत्यता कापि 124,239. गतौ सवियत्कावेव कृतावासे ऽप्यसत्यताम् (so lesen wir) so v. a. *da wurden sie in ihrem wahren Wesen vollkommen erkannt* Râdâ-Tan. 3,27. — 2) *Wahrhaftigkeit, Wahrheitsliebe, Zuverlässigkeit:* पाण्डवानाम् MBh. 1,100. 7493. मूलं धर्मस्य सत्यता R. Gorr. 2,118,13. Spr. (II) 6480.

सत्यतितिक्षावत् (von सत्य + तितिक्षा) adj. *wahrhaft und geduldig* Spr. (II) 1503.

सत्यत्व n. 1) = सत्यता 1) Kathâs. 23,15. 44,66. Sarvadarçanas. 70, 14. Comm. zu Gaim. 1,1. — 2) = सत्यता 2) MBh. 13,952.

सत्यदर्शिन् 1) adj. *das Richtige —, die Wahrheit schauend* MBh. 3, 2491. — 2) m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 201,13. eines der 7 Ṛshi im 13ten Manvantara Harîv. Lanc. 1,42. तत्त्वदर्शिन् die gedr. Ausgg.

सत्यदृश् adj. = सत्यदर्शिन् 1) Bhâg. P. 3,27,12. 7,13,44.

सत्यधर् 1) adj. *sein Wort haltend.* — 2) m. N. pr. eines Prinzen Kavaṣa. 74,35. fgg.

1. सत्यधर्म m. *das Gesetz der Wahrheit, die ewige Wahrheit:* सत्यधर्म इक्ष्वाकम्प्यः R. 5,33,8. सत्यधर्मे (सत्ये धर्मे ed. Bomb.) प्रतिष्ठिता R. Schl. 1,33,11. °पथे स्थितः 2,30,28.

2. सत्यधर्म 1) adj. *wahre —, feste Satzungen habend* Bṛh. Âr. Up. 5, 15 = Îçop. 15 = Maitrâyaṇ. 6,35. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des 13ten Manu Bhâg. P. 8,13,25. eines Brahmanen Çuk. in LA. (III) 34,9.

सत्यधर्मन् adj. = 2. सत्यधर्म 1): Agni ṚV. 1,12,7. Varuṇa 5,63,1. AV. 1,10,3. TBr. 1,7,10,3. Savitar ṚV. 10,34,8. 139,3. AV. 7,24,1. — ṚV. 5,51,2. 10,121,9. Wagen des Mitra-Varuṇa TS. 4,7,15,2; vgl. jedoch AV. 4,29,7.

सत्यधर्मविपुलकीर्ति m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,16.

सत्यधामन् adj. zur Erklärung von सप्तधामन् Çat. Br. 9,4,1,7.

सत्यधृत m. N. pr. eines Sohnes des Pushpavant VP. 4,9,19.

सत्यधृति 1) adj. *wahren —, redlichen Willen habend* Çat. Br. 10,6, 3,2. Kaṭhop. 2,9. R. 2,82,5 (°वृत्ति ed. Bomb.). 104,30. — 2) m. N. pr. eines Mannes MBh. 1,6990. mit dem patron. Vâruṇi, Liedverfassers von ṚV. 10,185, ṚV. Anukr. ein Sohn Dhṛtimant's Harîv. 1073. fg. VP. 453. Kṛtimant's Bhâg. P. 9,21,27. Çatânanda's Harîv. 1785. fg. VP. 454. Bhâg. P. 9,21,35. Mahâvîrja's VP. 390. Sâraṇa's 439.

सत्यधन्न m. N. pr. eines Sohnes des Ûrgavaha VP. 4,5,12.

सत्यधन्नावतार m. Titel einer Schrift Wassiljew 299.

सत्यधृत् (धृत् von धृ) adj. *die Wahrheit bewegend* ṚV. 10,27,1.

सत्यनाथ m. N. pr. eines Mannes Notices of Skt Mss. 7. °माहात्म्यरत्नाकर ebend.

सत्यनाम adj. (f. सा) = सत्यनामन् R. Gorr. 2,109,47.

सत्यनामता f. nom. abstr. von सत्यनामन् Kathâs. 94,4.

सत्यनामन् 1) adj. *einen richtigen Namen —, seinen Namen mit Recht führend* MBh. 3,2506. Kathâs. 40,48. 81,24. nom. f. °नामा MBh. 12, 918. R. 1,6,25. Mâlatîm. 118,4. °नाम्नी R. Gorr. 1,6,29. — 2) wohl f. = ब्राह्मी Nigh. Pa.

सत्यनारायण m. N. pr. eines mohammedanischen Heiligen in indischem Gewande Notices of Skt Mss. 211. °व्रतकथा ebend.

सत्यनेत्र m. N. pr. eines Ṛshi Harîv. 431. 14153. VP. 83, N. 4.

सत्यपराक्रम adj. *von wahrem Heldenmuth, von wahrer Macht:* Personen MBh. 3,2378. R. 2,22,9. 45,1. 64,64. — Vgl. सत्यविक्रम.

सत्यपाल m. N. pr. eines Muni MBh. 2,109.

सत्यपुर n. Satjanârâjaṇa's *Stadt* Skanda-P. im ÇKDr.

सत्यपुष्टि f. *wahres —, bleibendes Gedeihen* Liṭ. 5,4,19. Kâṭ. Çr. 19,5,4.

सत्यप्रतिज्ञ adj. *der sein Versprechen hält* R. 2,26,21. 51,19.

सत्यप्रवाद् n. Titel des 6ten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften der Gaina H. 247.

सत्यप्रसव adj. *dessen Antrieb (Geheiss) wahr —, recht ist, — sich gleich bleibt:* Savitar TS. 1,8,10,1. Çat. Br. 5,3,3,2. 13,4,3,12. VS. 10,28. °प्रसवसू dass. 9,10.

सत्यप्राप्तू adj. nach dem Comm. so v. a. सत्यपराक्रम TBr. 1,1,8,1.

सत्यफल m. *Aegle Marmelos Corr.* Rigâr. im ÇKDr. Dhanv. in Nigh. Pa.

सत्यभामा f. N. pr. einer Tochter Satrâgit's und einer der Gattinnen Kṛshṇa's MBh. 1,224. 3,12563. 12567. 14649. fgg. 4,262. Harîv. 2078. 6702. 6826. 6973. 6977. 7032. fgg. 7679. 8977. 9037. 9179. 9183. VP. 428. 578. 586. fgg. Bhâg. P. 10,61,11. Pañcar. 3,15,9. 4,1,31. Verz. d. Oxf. H. 15,b, No. 39. Notices of Skt Mss. 45. = भामा Comm. zu TS. Prât. 18,3 und zu Pañcav. Br. 13,3,2; vgl. auch सत्या.

सत्यभारत m. Bein. Vjâsa's Taitt. 2,7,19.

सत्यभाषण n. *das Reden der Wahrheit* Spr. (II) 2283.

सत्यभूयम् (von सत्य + 1. भू) absol. *zur Wahrheit (worden):* यन्नृतं सत्येन परिगृह्यते सत्यभूयमेव भवति Çat. Br. 14,8,6,2.

सत्यमदन् adj. *richtig begeistert, — berauscht* ṚV. 3,2,37.

सत्यमख adj. *dessen Reden wahr sind* ṚV. 1,20,4. 7,76,4.

सत्यमन्मन् adj. *dessen Gedanken —, dessen Wille wahr, recht ist:* Savitar ṚV. 1,73,2. 3,97,48. Agni Çiñs. Ça. 1,13,3. TBr. 3,5,9,1.

सत्यमय (von सत्य) adj. (f. ई) *aus Wahrheit bestehend, wahrhaft* Çiñs. Br. 2,8. 9,1. वाक्य Harîv. 2896. नदी MBh. 12,12460.

सत्यमान n. *ein richtiger Maassstab* Bhâg. P. 5,8,31. = सत्यभूतं प्रमाणं Comm.

सत्यमुग्र adj. *wahrhaft gewaltig* ṚV. 3,113,5. — Vgl. सात्यमुग्र fg.

सत्यमेधस् adj. *eine richtige Einsicht habend:* Vishṇu MBh. 13,7029.

सत्यमोदल m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,274.

सत्यभ्रा f. N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,20,4.

सत्यर्चस् adj. *wahrhaft* oder *erfolgreich anbetend, — opfernd:* Agni als Hotar ṚV. 4,3,1. 5,16,16.

सत्यर्तज्ञ m. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 10,6,2,1. Kshaṇd. Up. 5,11,1.

सत्यर्तयुग n. N *des ersten* oder Kṛta-Juga Taitt. 1,1,112.

सत्यर्तयोनि adj. *der einen bleibenden Sitz hat:* भुवः समाढिन्द्र सत्यर्तयोनिः ṚV. 4,19,2.

सत्यर्तयौवन m. *ein* Vidjâdhara (*wirkliche Jugend besitzend*) Gaṇiṣa. im ÇKDr.

सत्यरत 1) adj. *an der Wahrheit sich erfreuend.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Satjavrata Mârkaṇḍ.-P. 12 im ÇKDr. = व्यास Çabdar. nach Wilson.

सत्यरथ 1) m. N. pr. eines Fürsten von Vidarbha Verz. d. Oxf. H. 74,a,34. 37. eines Sohnes des Minaratha VP. 390. des Samaratha Bhâg. P. 9,13,24. — 2) f. सा N. pr. der Gattin Triçaṅku's Harîv. 754. — Vgl. सात्यरथि.

सत्यराज्ञ् m. *ein wahrer —, ewiger König* VS. 20,4.

सत्यर्राधस् adj. *wahre —, bleibende Wohlthaten erweisend:* Indra ṚV. 1,101,8. 4,24,2. 29,1. 7,31,2. 10,29,7. Mitra 5,40,7.

सत्यरूप adj. 1) *dessen äussere Erscheinung wahr ist:* यो तमे ऽप्यसो विष्णुः सत्यैः सह स्वयोत्तमैः । सत्यायामभवत्सत्यः सत्यरूपो जनार्दनः ॥ Kaurma-P. 48 im ÇKDr. — 2) *wahrscheinlich, glaubwürdig:* वाक्य R. 2,57,21.

सत्यलोक m. *die Welt der Wahrheit,* Bez. der höchstgelegenen unter den 7 Welten Ind. St. 2, 178. 3, 119. Verz. d. B. H. 146,a,3. Verz. d.

Oxf. H. 28,b,16. 69,b,12. Bhâg. P. 2,3,39. Pañkat. 2,2,59. Nilak. 24. — Vgl. सत्य 4) *f*).

सत्यलौकिक n. *das Wahre und das Weltliche* so v. a. *die heiligen und die weltlichen Angelegenheiten* Bhâg. P. 3,24,35.

1. सत्यवचन n. 1) *das Sprechen der Wahrheit* Kaṭhop. Up. 3,17,4. — 2) *das Geben eines Versprechens, Versprechen, Gelöbniss* R. 1,1,23 (26 Gorr.). 2,110,12. स्वसत्यवचनं स्तुत्य Kathâs. 30,53.

2. सत्यवचन adj. *die Wahrheit redend* Vaitân. Bṛh. S. 15,20.

सत्यवचस् 1) adj. *dessen Rede wahr ist;* m. Bez. *eines* Ṛshi AK. 2, 7,42. Trik. 2,7,13. — 2) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Râthitara Taitt. Up. 1,9.

सत्यवदन n. *das Reden der Wahrheit,* als religiöse Observanz (vgl. Ait. Br. 6,1) Kâty. Çr. 2,1,12. Çâṅkh. Çr. 2,3,24. 3,13,47. Pâr. Gṛhj. 2,8.

सत्यवन् s. सत्यावन्.

सत्यवत्त् (von सत्य) 1) adj. *a) wahr:* श्रुति MBh. 12,6699 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Bhâg. P. 4,21,45. 10,74,31. *wahrhaft, die Wahrheit redend* 8,1,36. Siv. 1,4 (सत्यवाच् MBh. 3,16622). MBh. 13,2655. R. 1,39,6 (40,6 Gorr.). 5,90,39. fehlerhaft für सत्त्ववत् Rasik. 5,56 (सत्त्ववत्त् ed. Calc., *validus* Stenzler). Pañkat. 1,8,35 (im Gegens. zu कृपण). — *b) das Wort* सत्य *enthaltend* Ait. Br. 6,18. — 2) m. *a) Bez. eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1,30,4; vgl. सत्यवाच्. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Manu Raivata Hariv. 434. des Manu Câkshusha von der Naḍvalâ Bhâg. P. 4,13,16. eines Fürsten Mân. L. 224. eines Sohnes des Djumatsena und Gatten der Sâvitrî MBh. 3,16667. fgg. 4,635. 12,9360. fgg. R. 2,30,6. Verz. d. Oxf. H. 13,b,17. fg. — 3) f. ॰वती N. pr. *a)* der Gattin Parâçara's (Çaṁtanu's) und Mutter Vjâsa's Trik. 2,8,11. H. 847. Mân. MBh. 1, 54. 2398. fgg. 3801. fgg. 3,5947. 16,234. 236. Hariv. 1. 973. Verz. d. Oxf. H. 80,b,26. 38. 235,b,N. 4. VP. 459. Bhâg. P. 1,3,21. 6,1. 2,7,36. Pañkat. 2,1,17. — *b)* einer Tochter Gâdhi's und Gattin Ṛîka's, die in den Fluss Kauçiki verwandelt wird, Mân. MBh. 3,11053 (S. 571). 5,3973. 12,1721. fgg. 13,206. fgg. Hariv. 1430. fgg. 1766. fg. R. 1,35,7. fgg. (36,7. fgg. Gorr.). VP. 399. fg. Bhâg. P. 9,15,5. — *c)* der Gattin Nârada's Mân. MBh. 5,3974. — *d)* der Gattin Çivarâgabhaṭṭa's und Mutter Vasantarâgabhaṭṭa's, Hall in der Einl. zu Vâsavad. 45. — *e)* = मल्लिका Verz. d. Oxf. H. 39,b,40. — Vgl. सात्यवत.

सत्यवर Kathâs. 78,9 fehlerhaft für सत्त्ववर.

सत्यवर्त्मन् adj. *in dem richtigen, bleibenden Geleise laufend:* Wagen des Mitra-Varuṇa AV. 4,29,7.

सत्यवाक m. = सत्यवदन Kauç. 99.

सत्यवाक्य adj. *dessen Rede wahr ist* R. 1,1,3. Mârk. P. 116,70. Davon nom. abstr. ॰ता f. MBh. 2,709. R. Gorr. 1,3,4.

1. सत्यवाच् f. *eine wahre Rede* Spr. (II) 1816.

2. सत्यवाच् 1) adj. *dessen Rede wahr ist, wahrhaft* ṚV. 3,26,9. 54,4. 7,2,3. रोदसी 10,12,1. AV. 5,1,9. सरस्वत् TBr. 1,8,3,4. TS. 1, 8,10,1. MBh. 3,1811. 2368. 2446. 16622. R. 2,29,11. 3,53,12. Vaitân. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 10 v. u. Râja-Tar. 6,89. Mârk. P. 23,113. Bhâg. P. 3,22,20. Pañkat. 4,1,31. Hit. 120,15. m. = ऋषि Çaṅkar. im ÇKDa. — 2) m. *a) Bez. eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1,31,3; vgl. सत्यवत्त्. — *b) Krähe* Taik. 2,5,20. — *c)* N. pr. eines Devagandharva MBh. 1,2551. eines Ṛshi 2,297. eines Sohnes des Manu Câkshusha von der Naḍvalâ Hariv. 71. VP. 98. des Manu Sâvarṇa Mârk. P. 80,11.

सत्यवाचक adj. *Wahres redend, wahrhaft* Spr. (II) 4111, N.

सत्यवाद् m. *das Geben eines Versprechens, Gelöbniss* R. 2,107,8.

सत्यवादिता f. (Kâm. Nîtis. 4,36. 8,7) und ॰वादित्व n. (Spr. (II) 3870) nom. abstr. von ॰वादिन् 1).

सत्यवादिन् 1) adj. *Wahres redend, wahrhaft* AV. 4,16,6. 11,4,11. Çat. Br. 12,1,2,23. Çâṅkh. Br. 2,8. M. 7,26. 8,179. MBh. 3,2074. R. 1,4,22. 6,6. 57,10. 2,34,9. 44,3. 62,14. 107,9. Spr. (II) 1336. fg. 1745. 4378. 4977, N. 6712. 7008. 7520. Çâk. 69,23. Râja-Tar. 4,464. Brahma-P. in LA. (III) 48,15. Pañkat. 100,23. als Observanz Kâty. Çr. 2,1,11. 19,1,12. — 2) m. Bein. Kauçika's, der in seiner vorangehenden Geburt ein Jager Namens Bâlaka gewesen war: सत्यं मया सदा वाच्यमिति तस्याभवद्व्रतम्। सत्यवादीति विख्यातः स तदासीत् MBh. 8, 3449. — 3) f. ॰नी *eine Form der* Dâkshâjaṇî Verz. d. Oxf. H. 39,b,33. eine Bodhivṛkshadevatâ Lalit. ed. Calc. 421,16. fg.

सत्यवाच् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Bhâradvâga Muṇḍ. Up. 1,1,2.

सत्यवाक्य adj. *Wahrheit bringend:* स्वप्नोत्तम Râja-Tar. 4,100.

सत्यविक्रम adj. *von wahrer Kraft, von wahrem Muth* MBh. 3,2852. 3055. 13,3654. R. 2,72,34. R. Gorr. 1,1,4. — Vgl. सत्यपराक्रम.

सत्यविद्या f. *die Lehre von der Wahrheit,* Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. 1,326, N.

सत्यवृत्त n. *ein wahrer Lebenswandel* MBh. 13,3565.

सत्यवृत्ति adj. *der Wahrheit lebend, — sich befleissigend* R. ed. Bomb. 2,82,6.

सत्यवेधस् adj. als Umschreibung von ऋतावृध् Çat. Br. 9,2,3,42.

1. सत्यव्रत n. *das Gelübde der Wahrhaftigkeit* Hariv. 7103. R. 2,26, 27. 4,6,24. Spr. (II) 5824.

2. सत्यव्रत 1) adj. (f. या) *das Gelübde der Wahrhaftigkeit befolgend, stets die Wahrheit redend* Çâṅkh. Çr. 3,8,11. MBh. 3,2131. Hariv. 1711. R. 3,55,38. Vaitân. Bṛh. S. 26,2. Spr. (II) 1594. 6745. 7420. Bhâg. P. 8,21,12. धर्म॰ R. 2,41,6. — 2) m. N. pr. eines alten Fürsten Spr. (II) 4820. eines Râgarshi Bhâg. P. 8,24,10. 38. fgg. 9,1,2. 3. ein Sohn Dhṛtarâshṭra's MBh. 1,2448. Devadatta's Verz. d. Oxf. H. 81,b,2. ein Gesetzgeber 206,b,4. 267,b,19. 271,a,11. 279,b,35. ein Sohn Trajjâruṇa's und = Triçaṅku Hariv. 717. fgg. VP. 371. Bhâg. P. 9,7,4. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 73,257. eines Fischers 25,49. 26,1. pl. Bez. einer Gruppe höherer Wesen im Gefolge Satjasena's, eine Manifestation Vishṇu's, Bhâg. P. 8,1,25. Bez. der Kshatrija im Çâkadvîpa 5,20,28.

सत्यशपथ adj. *dessen Schwüre wahr sind, dessen Flüche in Erfüllung gehen* MBh. 13,3655.

सत्यशवस् adj. *wirklich —, nachhaltig ungestum:* die Marut ṚV. 1, 86,8. 9. 5,52,8.

सत्यशील adj. *der Wahrhaftigkeit sich befleissigend* R. 2,54,36.

सत्यशीलिन् adj. dass. MBh. 4,923. R. 7,82,14.

सत्यश्रुष्म adj. *wahrhaft muthig* ṚV. 1,51,15. 57,1. 59,1. 103,6. 3,30, 21. 4,11,4. 10,44,3. 112,10. TS. 1,6,4,2.

सत्यश्रवस् 1) n. *das Hören der Wahrheit* (in einer Formel) Çat. Br. 12,8,3,26. Kâṭj. Çr. 19,3,3. — 2) m. N. pr. eines Liedverfassers mit dem patron. Vâjja ṚV. 5,79,1. Ind. St. 2,242, *a*. Âtreja ebend. ein Sohn Mârkaṇḍeja's Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,24. Vitihotra's Bhâg. P. 9,2,20.

सत्यश्री 1) m. N. pr. eines Sohnes des Satjahita Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,26. — 2) f. N. pr. einer Çrâvikâ Çatr. 14,217.

सत्यश्रुत् adj. *auf die Wahrheit hörend:* die Marut ṚV. 5,57,8. 6,49,6.

सत्यसंकल्प adj. = सत्यसंध. Götter Ait. Br. 1,6.

सत्यसंकल्प adj. *dessen Wille, Vorsatz, Absicht wahr ist* d. i. *in Erfüllung geht* Çat. Br. 10,6,2,2. Kâṭh. Up. 3,14,2. 8,7,1 (Sarvadarçanas. 55,1. falsch aufgefasst bei Wilson, Sel. Works 1,43). Maitrjup. 2, 6. Bhâg. P. 8,16,22. 11,1,5. Paṇḍar. 4,1,31. Davon nom. abstr. °त्व n. Çâṇḍ. zu Bṛh. Âr. Up. S. 139.

सत्यसंगर 1) adj. *dessen Zusage wahr ist, der sein Versprechen hält:* Belege s. u. 1) संगर 1) *a*). — 2) m. *a*) ein Beiw. Kubera's Taitt. 1,1, 78. H. ç. 39. — *b*) N. pr. eines Ṛshi MBh. 2,397.

सत्यसती f. *eine wahrhaft treue Frau* Verz. d. B. H. No. 897.

सत्यसत्वन् m. *ein ächter Streiter* oder adj. *ächte Streiter habend* ṚV. 6,31,5.

सत्यसद् adj. als Umschreibung von सतसद् Ait. Br. 4,20.

सत्यसंध 1) adj. (f. घा) *Verträge —, Zusagen haltend, auf dessen Wort man sich verlassen kann* AV. 11,6,19. M. 7,31. Jâṇ. 1,254. MBh. 1, 2714. 3,6053. R. 1,1,14. 3,5. 16,2. 2,66,18. 73,6. 111,30. 4,3,9. Ragh. 14,52. Kathâs. 37,83. 44,124. 84,51. Râǵa-Tar. 1,101. 5,132. Mâlav. P. 72,15. Bhâg. P. 1,12,19. 4,16,16. 8,20,14. 10,62,3. घ° Spr. (II) 54. 1280. सत्यसंध m. angeblich (in Wirklichkeit blosses Epitheton wie auch Manḍ. 5, welche Stelle ÇKDa. als Beleg für den Namen Râma's anführt) = Bharata und Ǵanameǵaja und f. घा = Draupadî Çabdar. im ÇKDa. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2543. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra 1,2725. 5510.

सत्यसंधता f. nom. abstr. von सत्यसंध 1) MBh. 3,1239. 13,2126. 15, 1069. Râǵa-Tar. 3,315.

सत्यसव adj. *dessen Befehle wahr, recht, giltig sind:* Savitar ṚV. 5, 82,7. 10,36,13. VS. 4,28. AV. 7,15,1; vgl. VS. 17,74.

सत्यसवन adj. dass.: Savitar Çâṅkh. Çr. 8,18,4.

सत्यसवस् adj. dass.: Savitar Lâṭj. 5,12,13. — Vgl. सत्यप्रसवस्.

सत्यसेतु adj. = सताषेतु Çat. Br. 9,4,4,7.

सत्यसरस् m. N. pr. des Vaters von Svadhâman Bhâg. P. 8,13,30. Burnouf fasst das Wort als adj. und verbindet es mit मनोः.

सत्यसाक्षिन् m. *ein die Wahrheit aussagender Zeuge* M. 8,257.

सत्यसार adj. (f. घा) *durchaus aufrichtig:* धृति Bhâg. P. 9,7,22.

सत्यसेन m. N. pr. eines Mannes MBh. 8,1078. ein Sohn Dharma's von der Sûnṛtâ Bhâg. P. 6,1,15.

सत्यस्थ adj. *bei der Wahrheit bleibend, dem gegebenen Worte getreu* R. 2,107,19 (113,19 Gorr.).

सत्यहविस् adj. *dessen Opfer richtig* oder *erfolgreich ist* Çâṅkh. Çr. 10,18,3. Taitt. Âr. 3,5,1.

सत्यहव्य m. N. pr. eines Mannes; s. सात्यहव्य.

सत्यहित 1) adj. *in Wirklichkeit wohlwollend* R. Gorr. 2, 107, 9. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Pushpavant Hariv. 1808. des Vaters von Pushpavant Bhâg. P. 9,22,7. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 54, *b*,25; vgl. VP. 277, N. 7.

सत्याकर् (सत्य + 1. कर्), °करोति (*wahr machen*) *fest kaufen, einen Handel abschliessen* P. 5,4,66. Vop. 7,90. mit acc. der Sache P., Schol.

सत्याकृति (von सत्याकर्) f. *Abschluss eines Handels* AK. 2,9,33. H. 872.

सत्याग्नि (सत्य + घग्नि) m. ein N. Agastja's Taitt. 1,1,89. H. ç. 16. Çabdar. im ÇKDa.

सत्याङ्ग (सत्य + 3. घङ्ग) 1) adj. *dessen Theile aus Wahrheit gebildet sind:* चक्र Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,34. st. dessen सत्यग 11,*b*,17 v. u. — 2) m. pl. Bez. der Çûdra in Gambudvîpa Bhâg. P. 5,20,4.

सत्यात्मक (von सत्य + घात्मन्) adj. *dessen Wesen Wahrheit ist:* राज्य R. 2,109,10.

सत्यात्मज (सत्या + घा°) m. *ein Sohn der* Satjâ (Satjabhâmâ) Bhâg. P. 3,1,35.

सत्यात्मन् (सत्य + घा°) adj. *dessen Wesen Wahrheit (Wahrhaftigkeit) ist* Taitt. Up. 1,6,3. R. 2,34,32. 109,1.

सत्यानन्द m. 1) *wahre Wonne:* सत्यानन्दे चिदात्मनि Weber, Rîmây. Up. 286. °चिदात्मन् 345. — 2) N. pr. eines Mannes Ind. St. 1, 142. °तीर्थ = सत्यज्ञानानन्दतीर्थ Hall 189.

सत्यानृत (सत्य + घ°) n. du. *Wahrheit und Lüge* ṚV. 7,49,3. VS. 19. 77. Çat. Br. 9,5,1,12. Ait. Br. 4,1. du. und sg. bildliche Bez. *des Handels* AK. 2,9,3. H. 867. M. 4,4. 6. Bhâg. P. 7,11,18. 20.

सत्यापन (von सत्यापय्) n. *Abschluss eines Handels* AK. 2,9,33. H. 871. falschlich सत्यायन Vîramitrodaja 136,*a*,12 (nach Stenzler). Auch सत्यापना f. Vopâlita bei Bhâr. zu AK. nach ÇKDa.

सत्यापय् (von सत्य), °यति P. 3,1,25. Vop. 21,16. = सत्यमाघष्टे P., Schol.

सत्याभियाचन, सत्याभिसंध (auch R. 2,22,9), सत्याभिसंधान und सत्याभिसंधिन् s. u. घभियाचन u. s. w.

सत्यायु (सत्य + घायु) m. N. pr. eines Sohnes des Purûravas von der Urvaçî Bhâg. P. 9,15,1. 2.

सत्यावन् 1) adj. Umschreibung von सतावन् Çat. Br. 7,3,1,34. — 2) m. (सत्यवन् Padap.) N. pr. eines Mannes AV. 4,29,1.

1. सत्याशिस् (सत्य + घा°) f. *eine wahr werdende Bitte* Paṇḍav. Bh. 11,10,11. 13,12,7.

2. सत्याशिस् (wie eben) adj. *dessen Bitte wahr wird:* पत्नमाना: Paṇḍav. Bh. 14,3,20. Bhâg. P. 4,9,7 (nach dem Comm. kein comp.).

सत्याश्रय (सत्य + घा°) m. Journ. of the As. Soc. of Bombay 1851, S. 203. 207. 211. 1854, S. 3. Journ. of the R. As. Soc. 3, 260 (nach Hall).

सत्याषाढ (सत्य + घा°) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 1, 80. 83. Verz. d. B. H. No. 141. Hall 192.

सत्येतर (सत्य + इ°) adj. *unwahr; n. Unwahrheit* H. 265, Schol.

सत्येष्मु (सत्य + ईष्मु) m. N. pr. eines Asura MBn. 12,8262.

सत्येषु (von सत्य) m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva MBn. 1, 3701. Bhâg. P. 9,20,4.

सत्यौक्ति (सत्य + उ°) f. *eine wahre Rede* ṚV. 10,37,2. Râm.-Tap. 4,100.

सत्योत्तर (सत्य + उ°) adj. *überwiegend —, wesentlich wahr:* वाच् Âit. Br. 1,6.

सत्योद्य (सत्य + 1. उ°) adj. *dessen Rede wahr ist, wahr redend* Çaunak. im ÇKDa.

सत्योपयाचन s. u. उपयाचन, wo noch R. Gorr. 2,55,18 hinzugefügt werden kann.

सत्योपाख्यान n. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,129.

सत्यौजस् (सत्य + ओ°) adj. *wahrhaft mächtig:* Agni AV. 4,36,1. Varuṇa VS. 10,28. TS. 1,6,4,1.

सत्रप (2. स + त्रपा) adj. (f. घा) *Schamgefühl besitzend, verlegen* MBh. 12,3107. Kathâs. 45,215. Râm.-Tap. 4,135. सत्रपम् adv. *verlegen* 3,106.

सत्रम् adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. = सत्रा Halâj. 3,91.

सत्रा (von 2. स) adv. *zusammt, zumal* (daher häufig mit विश्व verbunden); *ganz und gar, ausschliesslich; überhaupt, immerhin;* = सकम् u. s. w. AK. 3, 5,4. H. 1527. सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ṚV. 1,57,6. 72,1. सत्रा सोमा अभवन्यस्य विश्वे 4,17,6. 30,2. सत्रा कृधि सुहना वृत्रा 7,25,5. सत्रा वसेको वृत्राणि तोशसे 8,15,11. 1,71,2. सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु 5, 60,4. सत्रा वृषं वठर घा वृषस्व 10,96,12. 2,20,7. 8. 3,51,6. 5,65,5. 6, 36,1. 10,113,5. Pâraṇ. Br. 12,9,21. नहि ते राधसो ऽन्तं विन्दामि सत्रा *ich finde gar kein Ende* ṚV. 8,46,11. सत्रा देव महाँ असि 90,12. daher unter den Bezz. für सत्य Naigh. 3,10. अकर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्रातिं पाय *immerhin* AV. 7,28,1. तं न सत्रा पशुं कुर्यात् *nicht gar zu breit* Çat. Br. 1,2,3,9. 6,3,31. सत्रात्पत्तिके *gar zu nahe* 3,5,3,19. Mit instr. *zusammen mit:* सत्रा वाजपुरूवनानि पश्वे: ṚV. 6,34,1. घर्देवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा दक्षम् 7,93,5. सत्रा कलत्रैर्गार्हस्थ्यम् H. 1527, Schol.

सत्राकार् adj. *vollständig* oder *ausschliesslich wirksam:* यज्ञमानस्य शंसः ṚV. 1,178,4.

सत्राज (सत्रा + 1. षज) m. *voller Sieg:* °इं जिगीषन् Çiñku. Ça. 14,45,1.

सत्राजित् 1) adj. *ganz siegreich, ausschliesslich gewinnend* ṚV. 2,21, 1. 8,3,15. 87,1. 9,27,4. SV. 1,3,1,4,9. VS. 11,8. TS. 4,1,4,2 (nach TS. Pair. 3,5 im Padap. सत्रजित्). — 2) m. *a)* N. eines Ekâha Çiñku. Ça. 14,45,1. — *b)* N. pr. eines Fürsten, Vaters der Satjabhâmâ, Harîv. 2042. fgg. 5086. VP. 423. fgg. Bhâg. P. 10,56,2. fgg. — Vgl. सात्राजित.

सत्राजित m. = सत्राजित् 2) *b)* Bhâg. P. 9,24,12. 10,56,1.

सत्रांसु (सत्रा + सु°) adj. *vereint, vollzählig, gemeinsam:* प्रयस्वतो न सत्राचो घा गत ṚV. 10,77,4. सत्राचो रातिं गृणानः 7,56,18. *gesammelt, ganz:* प्र यः सत्राचा मनसा यजाते (vgl. bathbrâhmaṇo Jaçna 30,9) ṚV. 7,100,1. 8,2,37. 9,77,1. सत्राच्या धिया 8,50,1.

सत्रादावन् adj. *mit einem Male gebend* ṚV. 1,7,6.

सत्रासम् (von 2. स + त्रास) adv. *erschrocken, furchtsam, ängstlich* Hit. 30,3. रत्नोद्दर्शन° Kathâs. 18,383.

सत्रासह् adj. *Alles überwältigend, unwiderstehlich:* रयि ṚV. 1,70,8. Indra 2,21,2 (°साहे, Padap. °सहे). 3,51,8. 34,8. 7,20,2. 8,81,7.

सत्रासाह् (°सह् Padap.) adj. dass.: Indra ṚV. 2,21,3. — Vgl. सा-त्रासाह्.

सत्रासाह्य n. N. verschiedener Sâman Pañcav. Br. 12,9,20. 20,3. 2. Lâṭj. 6,12,14. Ind. St. 3,242,a. इन्द्रस्य 209,a.

सत्राहे adj. = सत्राहन् पौंस्य ṚV. 5,35,5.

सत्राहन् adj. *völlig niederschlagend:* Indra ṚV. 4,17,8. 6,46,3.

सत्रिज्ञातक (2. स + त्रि-ज्ञा°) n. *ein best. Fleischgericht:* मांसं बहु-घृते भृष्टं सिक्थं चोल्लाम्बुना गुडः । क्षीरकाम्बेः समायुक्तं परिभुक्तं तदु-च्यते ॥ तदेव घृततक्राढ्यं प्रदिग्धं सत्रिज्ञातकम् । Çaṇḍâs. im ÇKDa.

सत्वच् (2. स + त्वच्) adj. *mit der Rinde versehen:* दण्ड M. 2,47.

सत्वचस् (2. स + त्व°) adj. *sammt der Haut* Çat. Br. 3,3,3,18.

सत्वत m. N. pr. eines Sohnes des Mâdhava (Mâgadha die neuere Ausg.; vgl. सत्वत्) Harîv. 5241. fgg. des Amça VP. 4,12,16. 13,1. Eine aus सात्वत falschlich erschlossene Wortform.

सत्वन् (von सत्) m. 1) (*Einer der auf Beute ausgeht*) *Krieger*, pl. *die Mannen, Heerschaar:* यो कृ सत्वा यः शूरो मघवा यो रेवन्तमः ṚV. 1,173, 5. शूरो यत्रेव सत्वभिः 3,3,4. 87,7. 1,133,6. 2,25,4. 30,10. 3,49,2. युध्म 6,18,2. सत्य 22,1. इन्द्रो वृत्रं कनिष्ठो यस्तु सत्वा 37,8. उद्वर्षय सत्वनो मामकानां मनांसि 10,103,10. AV. 5,20,8. ज्यैतु सत्वानो मम 6,65,3. रुशद्भिः सृजानो यत्नो न सत्वभिः ṚV. 9,76,1. सत्वानो न दृप्सिनः *wie Krieger mit Bannern* 1,64,2. दृप्सं दविध्वद्विषो न सत्वा *wie ein das Banner schwingender Krieger* 4,13,2 (wonach unter दृप्स und दृप्सिन् zu andern und drafsha im Zend zu vergleichen ist). Indra 6,29,6. 45,22. 8,45,21. इनः सत्वा गवेषणः 7,20,3. er ist सत्वनां केतुः 8,83,4. सत्वनां नेता Çiñku. Ça. 8,17,10. VS. 16,8. सत्वनां पतिः 20. Âit. Br. 2,38. etwa *Dienstmann* überh. AV. 11,5,14. Nach Nir. 6,30 so v. a. उदक oder कर्मन्. — 2) N. pr. eines Ṛshi MBh. 1,4188. सत्वन् ed. Bomb. — Vgl. घभि°, घस्रिघुम्न°, सत्य°.

सत्वर्न m. = सत्वन् 1): घा सत्वनैरयति रुशन्तं वृत्रम् ṚV. 5,37,4. 10,115,4.

सत्वनार्षत् partic. *als Krieger sich gebärdend* AV. 5,20,1.

सत्वन्त् m. pl. N. pr. eines Volkes des Südens gaṇa उत्सादि zu P. 4. 1,86. विमुक्तादि zu 5,2,61. पर्श्वादि zu 3,117. Ait. Br. 8,14. Çat. Br. 13,5,4,21. Kaush. Up. 4,1 (wo vielleicht सत्वन्य° st. सवसन्य° zu lesen ist). MBh. 12,12237. Harîv. 1997. sg. (vgl. सत्वत) N. pr. eines Sohnes des Madhu ebend. und 1996. — Vgl. सात्वत.

सत्वर (2. स + त्वरा) adj. (f. घा) *schnell zu Werke gehend, eilend* AK. 1,1,4,60. H. 1470. M. 9,94. MBh. 5,7141. 14,829. Harîv. 7068. Kathâs. 1,77. Kathâs. 13,49. 18,226. 289. 21,83. 26,234. 52,208. Râm.-Tap. 3,118. *das Schicksal, die Erfüllung des Schicksals* Pañcar. 1,5,29. सत्वरम् adv. *eiligst, rasch, alsbald* AK. 1,1,4,60. H. 1530. Halâj. 4,12. R. 2,39,14. 55,33. 72,30. 4,24,17. Spr. (II) 4528. 6693. 6982. Mṛkkh. 110. Çiç. 12,14. 78,1, v. l. Kathâs. 22,173. Prab. 33,18. 37,9. Pañcar. 1,5,30. Daçâkum. 77,12. 90,18. Pañcat. 46,1. Hit. 15,7. 21,18. 23,8. 9. 41,13. 43,13. 20. सत्वरतरम् Spr. (II) 990. Prab. 112,18. — Vgl. रति°.

सत्वरी f. N. pr. einer Tochter Vaimateja's und Gattin des Bṛhan-manas Harîv. 1706 (nach der Lesart der neueren Ausg., सत्या die ältere). 1707 lesen beide Ausgg. falschlich सत्यां st. सत्यां.

सत्संविन्मय (von सत् + संविद्) adj. so v. a. सच्चिन्मय Ind. St. 9,164. davon nom. abstr. °त्व n. ebend.

सत्सङ्ग (सत् + सङ्ग) m. *der Verkehr mit Guten* (s. u. 1. सङ्ग 2): °विलास Titel eines Schauspiels Notices of Skt Mss. 38.

सत्सार m. *Maler; Dichter* Çabdaratnak. bei Wilson; *eine best. Pflanze* ÇKDa. ohne Angabe einer best. Art.

सत्सुखानुभव m. Titel einer Schrift Hall 129.

सद्, सीदति Dhātup. 20, 24 (विशरणगत्यवसादनेषु). सीदति 28, 122 (mit denselben Bedd.). P. 7, 3, 78. Vop. 8, 70. vedische Formen: सेदुस्, सदत, सदतन, सदेम, सदतु, असदत्, सेदतम्; सत्सि AV. 6, 110, 1. — ससाद (Vop. 8, 126), समत्य, सेद, सेदुस्; (आ) समस्यात् AV. 6, 29, 3. सेदिवंस् P. 3, 2, 108. सेदुषस् ṚV. 5, 15, 2. असदत् Vop. 8, 126. सत्स्यति (vgl. Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10). (आ) सत्स्यत् partic. °सीदिष्यति Mâṇ. P. und Çaṃ. med. hier und da aus metrischen Rücksichten. pass. असादि ṚV. 7, 7, 5. °सीदितुम् MBh. R. 1) *sitzen, sich niederlassen* (namentlich beim Opfer) *auf, bei, in* (acc. oder loc.): उत नं ईं मरुतः स्मद्रोदसी सदन्तु ṚV. 1, 186, 8. यज्ञेषु 14, 11. वयो न सीदन्वधि बर्हिषि 85, 7. 65, 9. बर्हिः 13, 8. योनिम् 6, 15, 16. यो मानुषा युगा सीदद्धोता 16, 23. मधौ 8, 21, 5. वेश्मन्यधरे AV. 19, 33, 3. 11, 1, 25. बुध्ने 12, 3, 30. गोष्ठे ṚV. 6, 28, 1. सदने 7, 96, 1. TS. 3, 2, 4, 4. VS. 2, 6. 12, 54. Çat. Br. 3, 5, 2, 5. सेदुरेकस्मिन्नवतन्त्रे गिरेः Bhaṭṭ. 7, 58. — 2) *belagern, Jmd* (acc.) *belauern:* सदत्तो घर्ष्टिमौशिजस्य गोर्हे ṚV. 4. 21, 6. तं मृत्युरसीदत् Ait. Br. 3, 14. — 3) *unter einer Last niedersinken, zusammenbrechen, in Verfall gerathen; unterliegen, in Noth —, in eine verzweifelte Lage gerathen, an sich selbst verzweifeln, vergehen* (vor Schmerz u. s. w.), *nicht zu bleiben —, sich nicht zu fassen, zu halten wissen:* भुवो नाव इवेदधो। सीदन्त्या भूरिभारेण Bhâg. P. 1, 8, 34. वृषं पदेकेन सीदन्तम् 1, 17, 2. सीदन्ति मम गात्राणि Bhag. 1, 29. तस्य सीदन्ति गात्राणि पद्मानीव (so ist mit Kratt zu lesen) हिमागमे Spr. (II) 5388. अङ्गानि MBh. 3, 2322. Pañc. 89, 15. कालाभिपन्नाः सीदन्ति यथा बालकमेतवः Spr. (II) 6515. यत्रप्रं सरलं चापि यच्चापत्सु न सीदति। धनुर्मित्रं कलत्रं च 3300. स्वल्पकेनाप्यविद्वान्सि पङ्के गौरिव सीदति M. 4, 191. 8, 21. Mṛicch. 149, 3. Spr. (II) 7389. R. 7, 23, 43. राष्ट्रम् MBh. 2, 237. von Personen: क्षुधा M. 4, 34. 7, 134. 11, 21. Jâǵ. 1, 130. M. 10, 101. 113. संमोहात् MBh. 1, 2061. 2, 2591. R. 2, 40, 36. 42, 12. R. Gorr. 2, 9, 35. 11, 24. 32, 28. 35, 15. 53, 38. न कर्मसु न सीदति 5, 8, 19. 33, 21. 18, 3. Spr. (II) 658. 1183. 1331. 2181. 2164. 2691. 2829. 3092 (Gegens. प्र-भू). 3486. 3004. 3866. 6695. 6731. 7052 (Gegens. वि-लस्). Vaṛâh. Bṛ. S. 17, 14. 19, 2. Kathâs. 11, 25. 66, 100. Bhâg. P. 5, 14, 18. 8, 16, 23. 22, 28. 9, 21, 3. 10, 64, 14. 80, 10. Pañcat. 96, 16. Hit. III, 6. Bhaṭṭ. 17, 84. सेदुः MBh. 4, 1727. समाद R. 2, 41, 8 (40, 8 Gorr.). सीदिष्यति Mâṇ. P. 109, 43. न सीदेयमहं क्षीर्यते 40 v. a. *sich schlecht fühlen* Vaṛâh. Bṛ. S. 76, 10. पशवः सीदन्ति *herunterkommen, abnehmen* Çat. Br. 11, 2, 2, 22. सीदता चातकेन Spr. (II) 3360. तेन सीदति मे मनः *weiss sich nicht zu fassen* R. 2, 71, 27. R. Gorr. 2, 123, 9. हृदयम् 17, 38. R. Schl. 2, 64, 67. धर्मे सीदति *in Verfall gerathend* M. 9, 94. वर्णधर्मा न सीदन्ति यस्य राज्ये तथाश्रमाः Mâṇ. P. 27, 29. सीदत् im Gegens. zu उत्पत् *so v. a. verschwindend* Bhâg. P. 11, 22, 37. med.: सीदते Harîv. 14784. Mâṇ. P. 109, 44. मनः Bhâg. P. 3, 9, 8. हृदयं सीदतेतराम् R. ed. Bomb. 2, 64, 72. सीदमान 7, 23, 46. R. Gorr. 2, 53, 9. Bhâg. P. 10, 80, 8. — partic. 1) सन्न *sitzend:* der Hotar ṚV. 2, 36, 6. 3, 41, 2. कुवे देवानां इन्निमानि सन्तः 7, 42, 2. 56, 18. — 2) सन्न a) *niedergesetzt* VS. 8, 58. Âçv. Çr. 11, 6, 3. Liṭy. 2, 2, 9. योनौ Çat. Br. 4, 2, 2, 18. Çâṅkh. Çr. 5, 14, 19. *sitzend bei* so v. a. *beschäftigt mit:* कपिकपि° (°मत्क die neuere Ausg.) Harîv. 14331. — b) *versunken:* यपो मध्ये तया (so ist zu trennen) सन्नामवेक्ष्य गाम् Bhâg. P. 3, 13, 16. *niedergesunken, erschlafft:* साधसमन्नकुस्त Kumâras. 3, 51. *mitgenommen, erschöpft:* °शरीर adj. Vaṛâh. Bṛ. S. 3, 14. °वाक् adj. Bhâg. P. 6, 11, 12. *ermüdet* so v. a. *todt* (vgl. καμόντες): न सन्नो ग्रर्व गच्छति AV. 5, 76, 4. TBr. 2, 4, 2, 11. *in einer schlimmen Lage sich befindend, sich nicht zu fassen wissend* MBh. 7, 6317. R. 2, 40, 30. 43, 1 (42, 1 Gorr.). 63, 17. R. Gorr. 2, 11, 2. अतिदुःखशोक° 39, 32. *zu Grunde gegangen, zu Schanden geworden:* °नौक adj. MBh. 8, 44. शत्रु Raghu. 7, 61. अङ्गुलीत्रणसन्नवर्तिक 19, 19. वातापन (= भग्न Comm.) Mṛicch. 86 (vgl. Schütz). अग्नि so v. a. *matt, erloschen* Suçr. 2, 75, 4. 81, 16. बाष्पसन्नकण्ठी Çiç. 107, 8, v. l. Kumâras. 7, 85. Kir. 3, 38. °जिह्व Bhâg. P. 4, 7, 23. °वाच् 8, 14. °धियः 3, 17, 25. °मुसले so v. a. *ruhend* M. 6, 56. सन्नतर von der Aussprache eines Lautes *schwächer, niedriger* AV. Prât. 1, 43. P. 1, 2, 40. सन्न = पतित, पन्न, शान्त Halâs. 4, 82. — c) *gesigt zu* (infin.): मम सन्ना मतिः सीते नेतुं त्वां दण्डकावनम् R. 2, 30, 39. या यमतिस्तद्धिरूढा या मतिरासीत्सा इदानीं सन्ना विशीर्णा Comm. in der ed. Bomb. — d) *klar, deutlich:* यस्ये मुसन्ना ध्यवहारनीतयो मतिस्तु गौः पङ्कगतेव सीदति Mṛicch. 149, 3. — Vgl. यसन्न.

— caus. सादयति 1) *setzen, sich setzen lassen; hinbringen in, an, ablegen auf* (loc.): इळा बर्हिषि ṚV. 7, 44, 2. देवान् 1, 13, 4. 10, 30, 14. कस्तेषु *in die Hand geben* AV. 6, 122, 3. इन्द्रस्य उदरे Kâṭy. Çr. 2, 2, 20. 14, 2, 9. सीसे मलं सादयित्वा AV. 12, 2, 20. 3, 33. स्वाणावधि 14, 2, 49. 57. VS. 1, 11. 6, 24. चमसान् Ait. Br. 7, 34. इष्टकाः TS. 5, 3, 10, 1. Çat. Br. 1, 1, 4, 18. fg. 2, 23. 4, 2, 2, 18. 7, 1, 1, 26. असीषदन् VS. 12, 54. pass.: साद्यमान Çâṅkh. Çr. 3, 14, 11. 5, 9, 1. सादित Bhâg. P. 4, 13, 27. — 2) *in Noth —, in eine schlimme Lage versetzen, in's Verderben bringen:* ब्राह्मणानां परिक्लेशो देवतान्यपि सादयेत् MBh. 3, 50. 51. 1950. 7, 6320. 12, 3817. 13, 7163. Spr. (II) 1116. R. Gorr. 1, 38, 15. Bhâg. P. 3, 19, 31. साद्यते Gaut. 11. साद्यमान Spr. (II) 5534. सादित MBh. 1, 183. 3, 15744. 7, 434 (सूदित ed. Bomb.). 585. Raghu. 6, 53. 7, 41. Kir. 14, 57. überh. *zu Grunde richten, zu Nichte machen:* मुष्टिभिश्चोत्तमाङ्गानि तलैर्गात्राणि चासकृत्। सादितानि (*zerschlagen*) Harîv. 13791. शैरीषम्, उत्साद्यम् Kir. 14, 57. प्रतिष्ठाम् Vikr. 42. सादिता मेरवः पाशाः Harîv. 9132. — Bhâg. P. 5, 5, 14 ist nicht सादित, sondern आसादित anzunehmen.

— intens. सासद्यते (भावगर्हायाम्) P. 3, 1, 24. Vop. 20, 2. 5. *sich auf eine unanständige Weise hinsetzen* Bhaṭṭ. 4, 31.

— अनु *sich nach Jmd setzen:* ततः सेनापतौ पश्चात्प्रशस्तावन्वसीदताम् R. Gorr. 2, 100, 38.

— अभि, अभ्यसीदत् und अभ्यषीदत् u. s. w. im Veda P. 8, 4, 119. sonst अभ्यषीदत् 3, 63. अभिषसाद 4, 118. *drohend gegenüberstehen, im Zaume halten:* पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति ṚV. 9, 7, 5. मृधा वा एषोऽभिषेणो यस्मात्समानेघन्यः श्रेयान् TS. 2, 4, 2, 3. Kâṭy. 10, 16.

— अव *niedersinken, zusammenbrechen; herunterkommen; unterliegen, in Noth —, in eine verzweifelte Lage gerathen, vergehen* (vor Schmerz u.

s. w.), *an sich selbst verzweifeln, nicht zu bleiben —, sich nicht zu fassen, zu halten wissen:* अप्सु Suça. 2,429,6. Bhâg. P. 8,2,39. जीर्णागारमिवाभिवृष्टमवसीदन्तं वृद्धमाचक्षते Suça. 1,129,9. Spr. (II) 5098. नदीकूलमिव क्लिन्नमवसीदति R. 4,27,14. वर्षासु क्लिन्नकटवत्तिष्ठवेवावसीदति Spr. (II) 4534. अवसीदेत्मुडुर्बुद्धिरामो घट इवोदके 5661. अवासीदद्वेपस्ये MBh. 7,6305. 6315. क्षुधा M. 4,187. न कृच्छ्रेष्ववसीदति MBh. 1,255. शोकेन 3,2674. शत्रुदमने नावसीदितुमर्हसि (so ed. Bomb.) 4,1964. Hariv. 1293. R. Gorr. 2,84,4. 4,6,11. 5,19,27. Kâm. Nîtis. 1,59. Spr. (II) 1030. 1859. 2692. 2843. 2872. 3138. 4419 (राष्ट्रम्). 4395. 4865. 4911. 6336. 6801. 6951. 7298. Kir. 2,7. Kathâs. 18,201. 27,95 (शनैर्भाव° wohl so v. a. *allmählich*). 62,169. 171. Râga-Tar. 4,108. Prab. 37,7. Daçak. 82,2. Mâlav. P. 137,5. Bhâg. P. 6,15,19. 8,1,15. 10,49,11. 11,7,73. 9,26. केर्मन्यशवो ऽवं सीदन्ति *herunterkommen, abmagern* TS. 6,1,6,1. Pañcat. Bâlâv. 21,14,15. सप्ततमसी स्वप्नक्रियतया स्वकार्यप्रवृत्तिं प्रत्यवसीदतः *schlaff —, lass sein in Bezug auf* Wilson, Sâṁkhyak. S. 55. अवसीदन्ति मे प्राणाः *erschlaffen, vergehen* MBh. 4,1963. हृदयं मे ऽवसीदति *weist sich nicht zu fassen* R. 2,71,28. नात्मावसीदति Bhâg. P. 3,9,24. नावसीदेत्कुलं च नः *zu Ende gehen, erlöschen* R. 1,43,21. तस्यार्थो नावसीदति *Schaden nehmen, zu Nichte werden* MBh. 7,6324. न तस्य कश्चिदारम्भः कदाचिदवसीदति 12,10985. स्वधर्मो मे ऽवसीदति Kathâs. 5,3. मदस्तां हि क्रिया नित्या क्षिप्रे नैवावसीदति Bhaṭṭ. 6,24. — *med.:* न ज्ञातको ऽवसीदेत वर्तमानः स्वकर्मसु MBh. 1,5184. घटापुः सो ऽवमीदत *ermattete, wurde erschöpft* R. 4,38,6. — partic. अवसन्न 1) *niedergesunken, niedergedrückt:* महावसन्नकस्त Daçak. 83,18. अतिभारावसन्न (बलि) Bhâg. P. 10,16,21. कामभारावसन्न R. 2,52,22. *eingesenkt* (Gegens. उत्तिष्ठ): नेत्र Suça. 2,201,2. *eingedrückt, tief* (Gegens. उत्सन्न): eine Wunde 1,83,17. 87,18. 2,291,9. अवसन्नतर von der Aussprache eines Lautes als Umschreibung von सन्नतर *niedriger, schwächer* Comm. zu AV. Prât. 1,43. — 2) *heruntergekommen, mitgenommen, in Noth —, in eine verzweifelte Lage gerathen* Kâṭy. Ça. 23,4,17. MBh. 4,198. Spr. (II) 2234. Hariv. 13649 (च भाग्येषु st. अवसन्नेषु die neuere Ausg.). Kathâs. 18,82. 62,188. अवसन्नवत् dass. von einem an's Ufer geworfenen Fische 123,111. bei den Juristen bedeutet अवसन्न nach Strehler *im Process unterliegen;* vgl. क्रियावसन्न. — 3) *zu Nichte geworden, zu Ende gegangen:* °दृश् adj. so v. a. *blind* Raghu. 9,77. रजनी Hit. 9,5. वशता Spr. (II) 6443, v. l. — Vgl. अवसाद. — caus. *versenken:* अप्सु Suça. 2,165,8. *niederdrücken:* स भारः सोम्य भर्तव्यो यो नरं नावसादयेत् Spr. (II) 6837. *herunterbringen, hart mitnehmen, stark zusetzen:* ब्रह्मचारी — यत्पञ्चमात्मानमाचार्यकुले ऽवसादयत् (so ist zu lesen) Kaṭhop. Up. 2,23,2. उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् Bhag. 6,5. Daçak. 76,3. उपोषणेन हि मां बन्धनेनावसादयेत् R. 4,55,10. Kathâs. 123,152. Bhâg. P. 7,8,55. *zu Nichte machen:* संक्रमान् MBh. 12,2624. धैर्यमुत्थमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा Spr. (II) 1493. तत्कार्यमवसादितम् R. 5,51,2. Vgl. अवसादक fg.

— प्रत्यव *zu Schanden —, zu Nichte werden:* यथाः प्रत्यवसीदन्ति तथानर्था भवन्ति च MBh. 12,3982.

— व्यव *niedersinken, zusammenbrechen:* व्यवासीदद्रथे MBh. 3,713. अवस्थातुं न शक्नोमि अङ्गं मे व्यवसीदति 833. व्यवसीदामि दुःखेन so v. a. *ich vergehe vor Schmerz* 8,3570.

— समव, partic. °सन्न *in Noth —, in einer verzweifelten Lage seiend* MBh. 2,956.

— आ 1) *sitzen, sich setzen auf, an* (acc. oder loc.): सादनम् RV. 2,23,1. बर्हिः 7,2,8. बर्हिषि 2,6,8. योनिम् 5,21,4. उपस्थम् 7,6,6. सधस्थम् 3,62,15. सानौ बर्हिषः 7,43,3. सुवीरतायाः इदमा सीसध्यात् AV. 6,29,3. infin. आसदम् RV. 4,9,1. आसदे 5,26,8. AV. 12,3,13. VS. 2,5. Çat. Br. 4,4,2,17. अङ्कम् Ait. Br. 7,17. 1,30. med. AV. 5,12,8 (act. RV.). 27,9 (act. VS.). Çiṅkh. Çr. 1,17,3. pass. सा — असादि RV. 5,43,7. — 2) *den Vorsitz führen über* (acc.): आसीदहिमा भुवनानि सम्राट् RV. 6,42,1. — 3) *belauern:* परिपन्थिनो य आसीदन्ति दीर्घयो RV. 10,85,32. — 4) *gelangen zu, erreichen* (einen Ort) Dhârtop. 34,25 (पथ्यर्थे). यः प्रवतमासादे AV. 6,28,3. VS. 11,40. कलीवतो ऽत्तिकम् Sâj. zu RV. 1,125,1. Bhaṭṭ. 7,31. पथि प्रच्छन्नम् MBh. 1,3887. शैलम् R. 2,56,12. 68,31. R. Gorr. 1,79,35. 3,4,22. 65,18. Kumâras. 6,36. आसेदिवान्नवदासनम् Raghu. 6,4. 11,23. स्वं ग्राममासदत् Kathâs. 64,11. अनघौघोऽलोकान् Râga-Tar. 1,351. 3,408. Bhâg. P. 3,17,26. Pañcat. 35,14. *hintreten zu Jmd* (acc.), *sich nähern* R. 2,34,4. 6,9,1. Raghu. 6,52. Râga-Tar. 3,129. 232. सर्पिं (so ed. Bomb.) दीप्तमिवासीदन्नानमुपशिक्षितः MBh. 12,3082. मा स्म दुर्बलमासदः *in feindlicher Absicht* Spr. (II) 2865. तस्मिन् Bhâg. P. 3,4,9. ohne Ergänzung 4,10,27. कालः 27,13. *Jmd oder auf Etwas treffen, stossen auf, finden:* न चासाद तं बालम् Hariv. 4919. R. 3,20,4. 48,18. 68,1. नासाद मृगं कंचित् Mâlav. P. 112,3. विकोशं खड्गम् MBh. 3,2850. फलवत्तं विभीतकम् 2813. *treffen* von Geschossen: न ते शस्त्रास्त्रवर्षौघा आसेदुः सुरसैनिकान् Bhâg. P. 8,10,25. *gelangen zu* so v. a. *theilhaftig werden, finden:* रतिम् R. Gorr. 2,40,17. माध्यम् Raghu. 3,60. इन्द्रियार्थान् 14,25. पर्याप्तिम् Râga-Tar. 1,127. वधम् 5,213. सुखम् Pañcat. 80,11. श्रमायम् Bhaṭṭ. 3,26. वेपथुम् u. s. w. 4,43. — 5) partic. आसन्न *a) hingesetzt:* कविम् AV. 9,6,21. Çiṅkh. Çr. 3,13,15. 4,8,2. पात्र Kâṭy. Çr. 25,10,17. Ait. Br. 7,2. ऊरौ VS. 8,55. fg. — *b) nahe* a) im Raume: *nahe stehend, in der Nähe befindlich, benachbart* (die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend) AK. 3,2,16. H. 1541. Halâj. 4,8. Nir. 3,20. Lâṭy. 5,8,6. 10,20 (अनासन्न). TS. Prât. 1,25. P. 5,2,34. R. 2,54,28 (इतः). Mnch. 24. 93. Raghu. 10,30. 12,24. Spr. (II) 1066. 2390. 3234. Varâh. Bṛh. S. 12,9. 13,5. 17,3. 25,4. 53,86. 54,24. Kathâs. 4,12. Râga-Tar. 1,282. 2,169. 3,231. 369. 407. 4,234 (आशन्न Ta.). 5,59. Bhâg. P. 4,16,11. Hit. 38,22. 43,20. आसन्नम् *in die Nähe* MBh. 7,4921. पद्यासन्नं प्रधाविताः R. Gorr. 2,111,42. आसन्ने *in der Nähe* 3,50,10. Spr. (II) 4748. राजगृहासन्ने Kathâs. 56,220. im comp. ohne Flexionszeichen MBh. 7,4921. Suça. 2,345,1. 3. Kir. Nîtis. 7,21. विन्ध्याद्रिरासन्नचर Kumâras. 3,56. आसन्नतरता Spr. (II) 1065. — β) in der Zeit: *nahe bevorstehend:* °काल P. 3,2,117. °कालिक 5,4,20, Schol. निर्वाण Raghu. 12,1. मरण Spr. (II) 1253. 5939. Jogas. 1,21. Varâh. Bṛh. S. 28,13. Kathâs. 10,4. 14,79. 31,73. 46,190. Mâlav. P. 66,32. Râga-Tar. 3,105. Taitt. 1,1,96. Pañcat. 120,13. अत्यासन्न Prab. 61,15. — γ) der Zahl nach P. 2,2,25. °विंशाः = विंशतेरासन्नाः Schol. in der Reihenfolge *der nächste* Varâh. Bṛh. S. 87,38. fg. Bṛihajj. 17. *am nächsten verwandt;* ein Laut VS. Prât. 1,142. Çâṅkh. in Orient und Occident 2,694. नृपासन्न *einem Fürsten nahe stehend* Spr. (II) 5605. — *c) wohin man sich begeben hat:*

तेषामनामसपदां तव Bhāg. P. 3,20,37. *was man erlangt hat, in dessen Besitz man ist:* °शीलोद्र adj. 18,31. — Manu. 86 und Bhāg. P. 3,13, 16 ist सन्न, nicht सामन्न gemeint. Vgl. सामत्ति fgg., सामाद्. — caus. 1) *hinsetzen, sich setzen heissen:* दैव्यं जनं बर्हिषि ṚV. 1,31,17. बर्हिः सप्त होतॄन् 10,35,10. 8,44,3. TS. 2,2,5,7. Ç̣at. Br. 1,2,5,21. 2,3,2,6. Kāṭy. Ç̣r. 5,1,27. रुक्मीषि Āçv. Gṛhy. 2,5,2. Ç̣r. 2,3,10. med.: या वृक्षस्थितिं सदने सादयध्वम् ṚV. 5,43,12. — सीसादित TS. 4,4,9,1. °रुक्मिषि बर्हिषि Bhāg. P. 5,8,19. कश्मलम् *versetzt in* 26,8. पापमाचरताम् — यकृमासादितो राज्ञा प्राणान्कर्तुम् *eingesetzt* so v. a. *bestimmt, berufen* R. 3,35,11. मृत्युमयमासादितः स्वयम् *hat sich selbst zum Tode befördert* Bhāg. P. 3,18,28. — 2) *bewirken:* सामादित *bewirkt* Bhāg. P. 3,8,12. 30,33. 5,5,14 (अविद्यायामादितं zu schreiben). 6,18. — 3) *gelangen zu, auf, erreichen* Daśak. 34,25 (पद्यार्धे). पुण्यं सुरेन्द्रलोकम् Bhag. 9,20. गुकाम् MBh. 2,1122. वेलां पश्चिमाम् 3,2536. पुरम् 2576. आकाशदेशम् 2617. क्रूरं संचारम् 2939. यत्तं तस्य 12939. वैष्णवं यूपम् R. 1,62,19. कौशिकीतीरम् 63,16. 2,52,96. 56,38. 71,15. 3,76,5. Manu. 35. Spr. (II) 1658. 2130. दुष्टं पन्थानम् 2889. 5309. पारम् Vaṛāh. Bṛh. S. 2,4. Kathās. 18, 73. 25,36. Mārk. P. 21,51. Rāǵa-Tar. 4,108. 5,143. Daçak. 69,6. Pañcat. 57,10. 76,8. 127,17. घण्टास्वनामादितकर्णरन्ध्र Kām. Nītis. 15,45. यमगणानालेख्यम् Ragh. 8,94. *herantreten, sich nähern:* पादावासाद्य जग्राह R. 2,104,25. 4,18,25. mit acc. der Person Kauṣ. Up. 1,1. R. 2, 22,2. Daçak. 84,13. fg. Pañcat. 69,14. *Jmd treffen, mit Jmd zusammentreffen, auf Jmd stossen, Jmd finden* M. 4,227. MBh. 3,2260. 2697. 3007. 3033. 15665. 5,5978. fg. 7429. 7504. Harīv. 4919. Spr. (II) 6556. R. 1, 1,29. 41,11 (42,10 Gorr.). 2,32,33. 3,68,2 (med.). *gerathen in:* दुःखम् 3,54,4. यनामादितविग्रह् Spr. (II) 6908. तदिदं काकतालीयं वैरमासादितं त्वया R. 3,45,17. Kuṣum. 28,8. यनेन रथवेगेन पूर्वप्रस्थितं वैनतेयमप्यासादयेयम् so v. a. *einholen* Vikr. 6,7. *in feindlicher Absicht auf Jmd losgehen* MBh. 1,5984. 4,1663. 7,9186. R. 1,21,13. 3,41,5. Bhāg. P. 1, 7,38. Bhaṭṭ. 6,95. 8,37. वायुरिवाध्वमासाद्य Spr. (II) 4072. *gelangen zu* so v. a. *finden, erlangen, gewinnen, bekommen, theilhaftig werden:* धनम् M. 10,129. दुःखम् MBh. 3,2339. क्वाचित्कं च न 2648. पुत्रं कंचिन्नासादयामास कालेन मरुता स्वपि 10672. 13,1511. तद्वत्स 14,579. राज्यम् R. 2,31,14. Rāǵa-Tar. 3,264. वीरम् R. 2,38,8. उत्तममायुः 105,32. मृत्युम् 3,49,53. गुष्कमिन्धनमासाद्य वनेषिव हुताशनः 3,49,6. यत्तम् *Gelegenheit* 2,50,1. 3,52,4. Vikr. 73,4. Spr. (II) 2671. 3341. 5858. 5837. Kathās. 6,28. 29,131. 45,274. रत्नम् 30,159. 106,161. Gīt. 5,7. Rāǵa-Tar. 4,349. Mārk. P. 121,3. Bhāg. P. 3,4,12. Sarvadarçanas. 59, 22. Daçak. 86,11. Pañcat. 93,24. Kusum. 42,7. AK. 3,2,54. सूकराकृतिम् *die Gestalt eines Ebers annehmen* Bhāg. P. 3,18,3. पुंस्त्वम् MBh. 5,7496. दिव्यत्वम् Kathās. 28,93. साराधनीयताम् Kusum. 12,7. Mārk. P. 111,13. संयोगम् Megh. 85, v. l. भङ्गम् Prab. 73,6. गर्वम् so v. a. *hochmüthig werden* Pañcat. 26,3. 5. व्रीडाम् *sich schämen* Rāǵa-Tar. 2,155. यतिथिम् *einen Gast bekommen* Spr. (II) 4028. भर्तारं रामम् *als Gatten* R. 1,67,22 (69,23 Gorr.). तं नृपम् *zum Fürsten* R. Gorr. 1,45,55. भवत्तं मित्रम् Hit. 17,19. so v. a. *kaufen* Jiṭ. 2,169. *zu Theil werden, Jmd treffen* (Schmerz u. s. w.): सो ज्यमासादितः पुण्यैः Rāǵa-Tar. 3,131. न वो दुःखमासादयितुमर्हति R. 2,106,6. यासाद्य हि निवर्तेत संतापस्त्वाम् R. Gorr. 2,114,32. यासादयते ऽनुमार्दवम् *es kommt* (mich) *Mitleid an* 5,37,31. यासादित mit trans. Bed. *bekommen haben* mit acc. Dhūrtas. 72,12. — 4) im absol. यासाद्य ist die ursprüngliche Bed. 3) oft so erblasst, dass wir denselben durch eine Preposition wiedergeben können: न समन्नेषु गर्तेषु न गच्छन्नापि च स्थितः । न नदीतीरमासाद्य न च पर्वतमस्तके ॥ so v. a. *an einem Flussufer* M. 4,47. नक्तः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति so v. a. *in seinem Gebiete, in seinem Element* Spr. (II) 3211. यादृशं वपते बीजं क्षेत्रमासाद्य कर्षकः *auf sein Feld* 3454. भूता सूर्या विनश्यन्ति — विक्लवं हूतमासाद्य so v. a. विक्लवे हूते 4608. तूणांश्च पूर्णान्मकृतः शराणामासाद्य (so ed. Bomb.) so v. a. *sammt, zugleich mit* MBh. 7,79. तोयमासाद्य गर्जन्ति न रिक्ताः स्तनयित्नवः so v. a. *mit Wasser* Spr. (II) 4331. यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महार्णवे । समेत्य च व्यपेयातां कालमासाद्य कंचन ॥ so v. a. *nach einiger Zeit* 5093, v. l. *gemäss, mit Rücksicht auf* R. 4,15,6. मातुरभिप्रायम् Prab. 16,6. तदाज्ञाम् Rāǵa-Tar. 5,430. कालम् (v. l. कार्यम्) Spr. (II) 7182. कालं कार्यं च M. 8,324. 9,293. शीलमासाद्य सीताया मम च प्रवनं महत् R. 5, 57,3. नेदं जीवितमासाद्य वैरं कुर्वीत केनचित् so v. a. *wegen* Spr. (II) 3510. निमित्तं किंचित् so v. a. *in Folge, durch* 2338. त्वाम् *durch dich* so v. a. *durch dein Erscheinen* Megh. 22. — Vgl. सासादन fgg. — desid. vom caus. s. सासिसादयिषु.

— यत्या caus. *durchschreiten:* यत्यासाद्य तद्देशम् R. 2,15,20.

— यध्या *sitzen auf* (acc.) Kauç. 3. 137. — caus. *setzen auf* (loc.) TBr. 3,7,6,8.

— यभ्या 1) *sich setzen in* (acc.): द्रोणानि ṚV. 9,3,1. 30,4. — 2) *gelangen zu, erreichen:* शैलम्, स्वयोरुपम् Kir. 5,52. — caus. Vgl. यभ्यासादन, यभ्यासादयितव्य (in den Nachträgen).

— उप *sich setzen auf* (acc.): बर्हिः ṚV. 8,1,8. — caus. *herantreten zu Jmd* (acc.) Bhāg. P. 7,10,55. *empfangen:* योगादेशम् 4,24,71.

— न्या *sich niedersetzen an, in, auf* ṚV. 1,22,8. पस्त्यासु 23,10. स्वे योनौ 6,16,41. 40,1. बर्हिः 32,7. 9,99,8. 104,1. ये पार्थिवे रजस्या निषत्ताः 10,15,2. 73,9. 3,21,13. 6,9,4. गव्यूतिर्धूत या निषत्ता *getauscht in* 80,6.

— प्रत्या *in der Nähe sein* Comm. zu Nirukt. 1,1,2. *Jmd* (acc.) *nahe bevorstehen* Kir. 11,26. — partic. प्रत्यासन्न 1) *nahe* a) im Raume: *in unmittelbarer Nähe befindlich, benachbart;* die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend MBh. 5,4747. 8,1769. R. Gorr. 2,28,12. 3,32, 9. Megh. 76. Çiç. 17,21. Prab. 26,9. Bhāg. P. 4,5,16. Pañcat. 62,24. दत्तमूल° TS. Prāt. 2,42, Comm. प्रत्यासन्नम् *in die Nähe* MBh. 12,7426. °गत 13769. — b) in der Zeit: *nahe bevorstehend* Megh. 4. Spr. (II) 385. 4193. Kathās. 26,5. 50,195. Prab. 78,8. Pañcat. 10,9. Hit. 115,15. — c) *in naher Beziehung zu Jmd* oder *Etwas stehend* Spr. (II) 6083. Kusum. 18,19. यत्यन्तप्रत्यासन्नता Prab. 16,6. — 2) *Reue empfindend* (nach Nilak.) MBh. 12,4536. — Vgl. प्रत्यासत्ति.

— समा *gelangen zu, erreichen:* मरुच्चक्र्यम् MBh. 1,2866. मरोदधिम् 3,8804. R. 2,83,19. मद्य Ragh. 7,16. Kumāras. 3,58. पर्वं पारम् Rāǵa-Tar. 4,280. 577. राज्ञः संनिधौ *sich begeben in die Nähe von* Daçak. 65, 20. *zu Jmd* (acc.) *herantreten, mit Jmd zusammentreffen* MBh. 2,553. 3,10087. 5,7496. R. 4,47,7. यप्सरोभिः Harīv. 13902. *in feindlicher Absicht auf Jmd losgehen* MBh. 5,7134. *gelangen zu* so v. a. *erlangen, be-*

kommen: पृथिवीपतित्वम् Kathās. 49,251. सिद्धिम् Rāja-Tar. 4,392. समाप्तिं साम्राज्यस्य 671. — partic. °सन्न *in der Nähe befindlich, benachbart* Kathās. 22,221. वेलासमासन्नशैल Raghu. 10,36. मृत्युदेश° (ब्रन) Jāgñ. 2,281. Vgl. समासत्ति. — caus. *gelangen zu, erreichen:* नरनारायणाश्रमम् MBu. 12,4661. 13,3922. R. 1,1,71 (76 Gorr.). 2,5. तं वृत्तम् 2,53,1. R. Gorr. 2,12,35. 55,3. *gerathen in:* पतंगाः पावकम् 6,19,25. कलं वङ्किः Śāṅg. 1,63,15. *herantreten zu Jmd, sich Jmd* (acc.) *nähern* MBu. 3,16752. R. 1,18,19. 69,8. Pañcat. 81,7. *zusammentreffen mit, stossen auf* MBu. 3,2946. Rāja-Tar. 3,143. Pañcat. 69,16. 87,7. 120,9. रोहिणीं ताराम् der Mond R. 3,35,32. *treffen* von Geschossen MBu. 5,7156. *in feindlicher Absicht auf Jmd losgehen, angreifen* 1,5453. 6004. 7,4286. 9296. Bhāg. P. 6,12,29. 8,10,6. *gelangen zu* so v. a. *erlangen, bekommen, theilhaftig werden* Varāh. Bṛh. S. 43,6. Kathās. 43,253. Vāsavad. 12. Mārk. P. 21,86. सत्तां Anuśās. 43,68. साचिव्यपदवीम् Pañcat. 13,6. चेतनाम् 58,19. दार्ष्यम् Rāja-Tar. 6,341. *mit den Sinnen empfangen:* गन्धम् so v. a. *riechen* Harīv. 12164. *gelangen zu* so v. a. *zu Theil werden:* धातरो तो समासाद्य राज्यं नैव व्यराजत Rāja-Tar. 4,401. — समासाद्य (vgl. घासाद्य) mit erhöhter Bed.: देशकालौ समासाद्य विक्रमेत विचक्षणः so v. a. *zu rechter Zeit und am rechten Orte* Spr. (II) 1812. यथा केनं समासाद्य विद्युतेज्ञोऽतिवर्तिलम्। तथा वज्रो कृतः पूर्वम् so v. a. *vermittelst* MBu. 5,499. स्वभावं च समासाद्य न किंचिदतिवर्तते so v. a. *vermöge seiner Natur* Spr. (II) 3193. नेदं ब्रह्म समासाद्य वैरं कुर्वीत केनचित् *wegen* 3510, v. l. — Vgl. समासाद्य.

— उद् *sich bei Seite machen, sich entziehen, zu Ende gehen, ausgehen, verschwinden:* दिवो मानं नोत्सदन्यजुर्यः RV. 5,52,2. Śat. Br. 6,5,4,3. 11,8,4,6. प्राजापत्यमालभ्येतोत्सीदत्तीष्टयः 13,4,3,1. उदस्याग्निः मेदेत् *entweicht ihm* TS. 3,4,10,5. — उत्सीदेयुरिमे लोकाः *zu Grunde gehen, zu Nichte werden* Bhāg. 3,24. यस्मिन्न कर्माण्युत्सीदन्ति Bhāg. P. 5,14,4. med.: उत्सीदेरन्प्रजाः सर्वा न कुर्युः कर्म चेदिदम् Spr. (II) 1225. उत्सीदन्ते मयज्ञाः (वेदाः) MBu. 12,8547. — partic. उत्सन्न 1) *erhaben* (Gegens. धवसन्न *vertieft*) Suçr. 1,83,17. व्रणोपूत्सन्नमांसेषु प्रशस्तान्यवसादने 134,13. 2,9,5. 11,15. मण्डलान्युत्सन्नान्यवलिखेत् 65,16. कीर्यष्ट 291,9. — 2) *verschwunden, verloren, abhanden gekommen, nicht mehr bestehend:* अग्निमन्वविन्दन्नृतुपूत्सन्नम् TBr. 1,3,3,1. पशवः Śat. Br. 6,2,4,39. वीर्यमुत्सन्नं स्त्रीषु 12,7,3,11. 14,3,1,1. 7,3,1,43. Çāṅkh. Ça. 17,6,1. पाठाः Schol. zu Pāṇ. Gaṇ. 1,1. Müller, SL. 105. अध्ययन Ind. St. 3,370. °यज्ञं TS. 5,3,1,1. 7,3,1. Śat. Br. 2,3,3,43. 6,3,19. 13,3,3,6. Kāṭh. 14,6. = अवसन्न Schol. zu Çāṅkh. Ça. 14,47,2. °संचयतृणा (उच्छिन्न° die neuere Ausg.) Harīv. 3490. अग्नि Verz. d. Oxf. H. 294,b,18. °ज्ञानवासोक् als Erkl. von शून्यमोक् Kull. zu M. 4,57. मण्डलस्य दूरोत्सन्नस्य योजनम् Rāja-Tar. 1,187. उत्सन्नार्थ adj. Weber, Ġaṭ. 3. °कुलधर्म adj. Bhāg. 1,44. उत्सन्नोत्सवयज्ञ adj. MBu. 1,7673. °पिण्ड adj. 9,3328. °सत्यसंयोग Harīv. 3020. °भय adj. Bhāg. P. 4,9,1. उच्छन्न Suçr. 2,395,10 fehlerhaft für उत्सन्न (vgl. उच्छादन) oder उच्छिन्न (vgl. Spr. (II) 4600, v. l.) — Vgl. उत्साद्. — caus. 1) *aussetzen, bei Seite schaffen, wegräumen:* प्रवर्ग्यम् Śat. Br. 14,3,1,1. 2,1. 3,19. 5,1,22. Kāṭh. Ça. 3,3,19. Āpr. Br. 1,22. पात्राणि Āçv. Ça. 12,4,5. Kauç. 38. Pāṇ. Gaṇ. 2,6. — 2) *beseitigen* so v. a. *vernichten, vertilgen, zu Nichte machen:* तस्कारान् M. 9,267. सर्वं तत्रम् MBu. 1,273. 3,5097. 7,3344. 7510. 12,1711. R. 1,74,20 (76,23. fg. Gorr.). 75,24. 3,1. 16. 23,27. 5,56,103. Spr. (II) 6816. Kathās. 46,8 (उत्सादनीय). 120. 23. 121,261. LA. (III) 87,11. लोकमिमम् MBu. 5,1376. R. 3,70,12. कुलम् 6,8,4. उत्सादितश्च विषयः काशीनाम् MBu. 13,1990. उत्सादितद्रुम adj. Harīv. 3488. देश, वन R. 1,26,30. fg. (27,29. fg. Gorr.). पुण्यानि तीर्थान्यायतनानि च 3,23,37. 5,3,21. उत्साद्यन्ते ज्ञातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः Bhāg. 1,43. सत्य R. Gorr. 2,61,18. — 3) *einreiben, salben:* गोरसार्थपकल्केन साद्येनोत्सादितः Jāgñ. 1,276. MBu. 7,2920. 13,1487. — Vgl. उत्सादक fgg.

— सम्युद् caus. सम्युत्सादयामकः ved. P. 3,1,42. = सम्युदसोषदत् Schol.

— उपोद् *wegsiehen zu* (acc.) Śat. Br. 10,3,3,1.

— प्रोद् caus. *forttreiben, auseinandertreiben:* कामनोन्नीयिषात्तत्र वेत्रकर्करपाणयः। प्रोत्साद्यन्तः (प्रोत्साद्यन्तः ed. Bomb., उत्साद्यन्तः in ähnlicher Verbindung R. 6,99,23) MBu. 6,4436. fg. *beseitigen, zu Nichte machen:* Diebe M. 9,261. कश्चिच्छोको नु (न ed. Bomb.) मन्युर्वा त्वां प्रोत्साद्यते (प्रोत्याद्यते od. Bomb.) MBu. 2,235.

— प्रत्युद् = उपोद् Śat. Br. 11,4,3,20.

— व्युद् *ausgehen, sich entfernen* Ait. Br. 1,12.

— समुद् caus. *vernichten, zu Grunde richten:* देवान् MBu. 3,8832. असुरान् Harīv. 3147. लोकान् R. 3,70,21. जनपदम् 1,27,26.

— उप 1) *sitzen auf:* रथम् RV. 6,75,3. — 2) *sich zu Jmd setzen; nahen, herantreten* namentlich mit Verehrung: तं वो वयमुप शुबाधो नमसा सदेम RV. 6,1,6. 1,72,5. 3,14,5. Vāsāh. 1,6. यज्ञिं न नग्नः RV. 10,61,9. 73,11. 99,3. सोमम् 6,37,2. 1,65,2. AV. 11,1,25. 14,2,24. 7,74,4. TBr. 1,5,9,7. 3,1,3,1. गोतामम् Kāṭh. Ça. 9,11,10. zu der Kuh um zu melken Śat. Br. 1,3,3,20. 9,1,3,13. यत्र वैनं प्रस्तोतोपसमाद् Kaṭh. Up. 1,11,4. 7,1,1 (उपासमाद् im Text, उपसमाद् im Comm.). मा प्रातरुपसीदथाः 6,13,1. धनंजयमुपासदत् MBu. 7,5852. (तम्) यावत्यमाधनैस्तैस्तैरुपसेदुः प्रमाधकाः Raghu. 17,22. Bhāg. P. 10,16,27. 4,7,24. 6,14,15. 11,2,34. Bhaṭṭ. 3,12. 6,135. 9,92. उपाध्यायं विज्ञाकेतोरुपासदम् *sich in die Lehre begeben* Kathās. 108,21. *Jmd feindlich nahen* Bhāg. P. 6,3,27. — 3) *werben um, bittend angehen:* देवानां सख्यम् RV. 1,89,2. 7,33,2. स पृथिवीमुपासीदत्तर्तेषु प्रतिगृह्णीते TS. 2,5,3,2. Śat. Br. 2,4,3,1. — 4) *besitzen:* भागम् RV. 8,47,16. AV. 3,14,6. — 5) उपसद् उपसद्यते d. h. *die Upasad-Feier wird gefeiert* TS. 6,2,3,4. — 6) *einstürzen:* यद्यागारं दृढस्थूणं त्रीणि भूत्वोपसीदति Spr. (II) 5098, v. l. — 7) partic. उपसन्न a) *auf die* Vedi —, *an das Feuer gesetzt* TBr. 2,1,3,1. Ait. Br. 5,26. Kāṭh. Ça. 25,2,3. — b) *herangetreten, genaht* (um Belehrung, Schutz zu suchen, um seine Verehrung zu bezeigen) H. 1494. Hall. 4,65. Pāṇ. Gaṇ. 2,3. Kaṭh. 141. Mahāp. Up. 1,1,3. Bhāg. P. 3,31,12. Spr. (II) 2301. — c) *verblichen, geschenkt:* उपसन्नार्घ MBu. 12,3806. — Vgl. उपसत्तृ fgg. — caus. 1) *hinsetzen, daneben setzen,* z. B. das Havis auf die Vedi neben den Āhavanīja: अग्निक्रोत्रम् TS. 1,6,10,2. यावत्वनीयं 5,4,3,5. TBr. 1,4,2,2. 2,1,3,6. 4,3. इध्मं बर्हिः Śat. Br. 1,2,5,21. 14,1,3,1. कुशेषु Āçv. Ça. 2,3,15. सुचम् Çāṅkh. Ça. 2,8,22. Kauç. 1. — 2) *bewirken, dass Jmd oder Etwas naht, hinführen zu, herbeiführen, zuführen;* nur partic. °सादित Bhāg. P. 3,31,21. 42.

4,8,29. 9,27. 21,50. 5,8,6. 9,9. 10,1. 6,9,42. 10,30,31. 34. 12,4,6. Spr. (II) 5254 (Bhāṣ. P.). — 3) *finden, bekommen, erlangen:* उपसाद्य गुरो वृत्तिम् Bhāṣ. P. 10,45,32.

— अभ्युप caus. *gelangen zu, erreichen:* आशापुरीमभ्युपसाद्य Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,26.

— समुप *sich hinbegeben zu:* स तं यज्ञं समुपासदत् MBh. 14,2698.

— नि, निषीदति, निषसाद, vedisch न्यषीदत् (nur dieses in der klass. Sprache) und न्यसीदत् u. s. w. VS. Pāṭ. 3,53. P. 8,3,63. fg. 66. 115. fg. Vop. 8,45. 107. 126. 1) *niedersitzen auf* (loc.), namentlich vom Sitzen des Hotar, *sich setzen* (von Menschen, Vögeln, Fröschen), *sich legen* (von vierfüssigen Thieren, Schlangen); *sich setzen* so v. a. *einsinken:* बर्हिषि ṚV. 2,36,3. 4. द्रुरोणे 3,1,18. क्षेत्रपर्दने 2,9,1. 1,177,1. नि गावो गोष्ठे असदन् 191,1. सीदन्ति क्षेत्रा यज्ञाय 5,11,2. पर्वताः 5,30,3. 7,70,3. 10,52,1. तर्पसे 109,4. धरुणे 9,89,5. दिवो नाभा न्यसादि क्षेत्रा 3,4,4. 4,6,2. नि पर्वतः सादि 2,11,3. 18. 7,73,2. VS. 11,47. AV. 8,9,17. सत्रम् *ein Sattra absitzen* d. h. *feiern* 17,1,14. यस्माद्धोषा निषीदसि Ait. Br. 3,27. TBr. 2,2,4,4. Śat. Br. 2,5,2,2. 3,2,4,6. dat. inf. निषदे ṚV. 1,104,1. — निषीदति M. 8,11. Spr. (II) 6979. Ṛt. 1,13 (फणी). 18 (भेकः). Vikr. 41 (तोर्मूलालवाले शिवी). निषीदेत् ṚV. Prāt. 15,2. निषीदेयम् R. 5,68,37. निषीद Rāgh. 1,39. Daśak. 65,21. निषीदत् Spr. (II) 4021. न्यषीदत् R. 2,91,38. Kathās. 18,333. 43,182. Bhāṣ. P. 3,8,21. न्यसीदत् (!) R. Gorr. 2,100,37. न्यसीदताम् (!) 3,9,21. निषसाद MBh. 1,60. 7233. 3,2327. 16752. R. 2,97,1. R. Gorr. 1,34,20. 4,7,12. 18,28. Bhāṣ. P. 4,2,7. 4,24. 8,24,40. Pañcat. 8,18 (ed. orn. 4,14. 16). निषेदतुः MBh. 1,7717. R. 2,91,39. निषीदतुः (!) MBh. 3,14650 (beide Ausgg.). निषेदुः 5,6060. R. 1,20,14. R. Gorr. 1,34,19. 2,100,33. Spr. (II) 869. निषेदुषी, निषेदुषः Rāgh. 2,6. Kumāras. 5,12. Kathās. 25,72. निषीदिष्यति Śāṅk. 14,212. निषीदमान MBh. 3,333. नौर्यथा पुरुषाकाशा निषीदति महाह्रदे *versinken, untergehen* Harīv. 11936. — 2) *sich auf das Weib niederlassen:* यस्यं रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ṚV. 10,86,16. — 3) *setzen*, act. med.: नि पृथिवीं सदने ससत्य ṚV. 3,30,9. क्षेत्रादग्निं मनुषो नि षेदुः 4,6,11. 7,5. 5,3,4. ब्रह्मणे गृहपतिं नि षेदिरे 5,8,2. 6,15,8. 8,91,18. 10,21,7. — 4) partic. *a)* निषत्त und निषण्ण P. 8,2,61. *sitzend* ṚV. 1,58,3. 68,7. 70,8. 146,1. 3,3,2. — *b)* निषण्ण *a) sitzend, liegend* (von vierfüssigen Thieren) Harīv. 4815. R. 2,96,14. Mṛcch. 53. 79. Rāgh. 1,39. 2,23. 4,74. षट्प° 8,42. Śiś. 144. कुसुम° (मधुकरी) 146. Spr. (II) 5560. Māl. P. 21,16. Bhāṣ. P. 4,2,8. Daśak. 67,17. *liegend* von leblosen Dingen: उत्सङ्गनिषण्णधन्वन् Kumāras. 4,22. *gelehnt an:* तुरंगमस्कन्धनिषण्णदेह Rāgh. 7,44. 59. 9,76. Vikr. 64,12. — *β) abgesessen:* ein Sattra TS. 7,5,1,1. *worauf man gesessen hat:* निषण्णे चामने दिव्ये R. 4,34,8. — Vgl. निषण्णक fgg. und निषाद fgg. — caus. act. med. *niedersetzen, einsetzen* ṚV. 3,19,3. ब्रह्मणि गृहेषु TS. 5,3,3,2. क्षेत्रात्रम् ṚV. 3,6,3. 9,9. 10,7,5. 52,6. *niedersitzen —, knien lassen:* निषादिता गजवधूः Māl. 91,9. Vgl. निषादित.

— अधिनि *sich niederlassen in* (loc.): द्यौरन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः ṚV. 1,164,33.

— अभिनि *sich niederlassen um* (acc.): यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमे दमे ṚV. 7,15,2. घृतं ह्याभि नि षेदिम (sonst im ṚV. nur सदेम) भूर्णे *um das Ghṛta mögen wir auf dir umher uns sammeln* AV. 12,1,29.

— उपनि *sich nahen, sich machen an* (acc.): तयो दीक्षामुपनिषेदुः AV. 19,41,1. घर्मम् Kauç. 72. घृतं तन्वानानृषीन्गन्धर्वा उपनिषेदुः Śat. Br. 11,2,3,7. — Vgl. उपनिषद् fg.

— परिनि *ringsum sitzen, — sich aufhalten:* परि स्पशो नि षेदिरे ṚV. 1,25,13. 4,56,7. 7,1,11. किरणयात्परि पोनैर्निषद्य 2,35,10. परि कोशम् 9,87,1.

— विनि *sich getrennt setzen:* पञ्चधा TS. 7,5,9,4.

— संनि *sich zusammensetzen* AV. 4,16,2. *niedersitzen:* °षीदतुः (so beide Ausgg.) MBh. 1,8077. संन्यषीदम् (so ed. Bomb. st. संन्यसीदम् der ed. Calc.) 5,7177. °षीदताम् 13,4682. °षीदत med. 7,4671. संनिषण्ण *niedersitzend* 8,2999 (संनिषेद्य ed. Bomb. संनिषण्ण = उपसम्य Nīlak.). R. Gorr. 1,52,2.

— परि, °षसाद P. 8,3,118, Schol. 1) *umsitzen, umlagern:* ऊर्वं गव्यम् ṚV. 4,2,17. उपासंम् 3,11. 7,4,6. 10,99,3. AV. 6,76,1. Kauç. 50. — 2) *Schaden nehmen:* सो ऽनर्थः (wohl न सो ऽर्थः zu lesen) परिषीदति. मनस्तत्परिषीदति MBh. 12,9128. न सो ऽर्थः परिषीदति 10987. °सीदति ed. Calc. überall. — partic. परिषण्ण (!) etwa *verloren gegangen* oder *übergangen* AV. Prāt. 4,126, Schol. — Vgl. परिषद् fgg.

— प्र 1) *klar —, hell —, heiter* (auch in übertr. Bed.) *werden:* वारि प्रसीदति Spr. (II) 4369. Raghu. 4,21. दिशः प्रसेदुः 3,14. R. 6,92,81. आशाः सर्वाः प्रसेदिरे Harīv. 8298. प्रसेदुश्च दिशः सर्वा ववौंसि च मनांसि च Bhāṣ. P. 3,24,8. चेतः प्रसीद *klar werden, sich von aller Aufregung frei machen, heiter und ruhig werden* Spr. (II) 1450. Bhāṣ. P. 1,2,19. मनः प्रसीदति 2,1,19. येनात्मा सुप्रसीदति 1,1,11. 2,5,6. सर्वाख्यात्मःकरणो ममात्मात्मा Śiś. 98,21. fg. यस्यात्मा लोकश्च Jñān. 3,230. प्रसीदन्ति नराणां च स्वरवर्णमनांसि MBh. 12,2673. तन्नभावः प्रसीदति *klar —, deutlich werden* Kāṭhop. 6,13. तन्निष्ठस्य हि शास्त्रार्थाः प्रसीदन्ति Kām. Nītis. 1,20. *heiter —, guter Laune werden, seine gute Stimmung gegen Jmd* (gen.) *äussern, Jmd seine Gewogenheit an den Tag legen* (von Menschen und Göttern und vom Schicksal), *Gnade ergehen lassen, gnädig sein:* (अशनम्) दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च M. 2,54. Spr. (II) 3730 (Gegens. प्रकुप्). 4088. Mālatīm. 46,12. प्रसीद देवेश Bhag. 11,25. 31. MBh. 1,1259. 3,1860 (तत्प्रसीद mit der ed. Bomb. zu lesen). 2539. 12015. 12769. 5,7072 (मां mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,64,18. Kumāras. 3,9. Śiś. 110,13. Vikr. 39. Weber, Rāmây. Up. 288. 357. Kāraṇḍ. 290. fg. Spr. (II) 2036. Daśak. 85,9. Sarvadarśanas. 57,15. Bhāṣ. P. 3,13,47. 8,21,24. प्रसीदस्व MBh. 1,4700. 5,370. mit infin. *geruhen* Raghu. 2,45. 6,64. — 2) *gut von Statten gehen, gelingen:* क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति Raghu. 3,29. — 3) *beruhigen:* मनोनक्षात्राम् Ait. Br. 3,35. — 4) partic. *a)* प्रसन्न *befriedigt* ṚV. 5,60,1. — *b)* प्रसन्न *klar* AK. 1,2,3,14. 3,4,6, 21. Med. n. 86. Wasser MBh. 3,2511. R. 2,68,15. 4,13,5. 5,31,3 (सु°). 6,112,74. Suçr. 1,20,11. Mṛcch. 41. Kumāras. 7,74. Śiś. 117. Brahma-P. in L.A. (III) 52,4. रस *Saft* Spr. (II) 532. तीर्थ R. 1,2,6. शशिमण्डल Spr. (II) 4900. प्रसन्नात्मा सोमः MBh. 1,1145. नभस् 6174. Varāh. Bṛh. S. 31,5. Sonnenstrahlen 30,10. ein Komet 11,8. दृष्टि *Auge* MBh. 3, 16858. °भाः पावकः 6,133. तेजस् Suçr. 1,43,18. मणि Spr. (II) 5427. °वर्ण (मणि) R. 5,56,4. °मुखवर्ण 4,3,26. प्रसन्नाग्र *mit blanker Spitze:*

Pfeile MBh. 4, 1166. 7, 5399. Harıv. 13387. 13390. *heiter* von einem Gesicht MBh. 3, 15688. Rāgh. 2, 68. Spr. (II) 2344 (सु°). 2999. 4280. 4883. 6377. Vārāh. Bṛh. S. 58, 32. 48. Weber, Rāmat. Up. 294. 356 (wo nach Weber वदन् st. वरद् zu lesen ist). Bhāg. P. 2, 2, 9. मूर्ति Vārāh. Bṛh. S. 58, 44. *klar* vom Verstande Spr. (II) 6351. तर्क so v. a. *richtig* Mālav. 31, 23. °प्रायस्ते वितर्कः Mālatīm. 20, 3. *klar, deutlich* von Sinneseindrücken: रसः स्पर्शाश्च गन्धाश्च शब्दाश्चापि–दृश्यानि च प्रसन्नानि यत्र राज्ञा युधिष्ठिरः MBh. 4, 936. *frei von aller Aufregung, ruhig:* इन्द्रियाणि R. 1, 36, 24. R. Gorr. 2, 15, 7 (घ°). Vārāh. Bṛh. S. 69, 24. *heiter, gut —, gnädig gestimmt;* = संतुष्ट Mch. प्रसन्नात्मन् Maitrāyaṇ. 6, 20. Bhag. 18, 54. Sarvadarśanas. 57, 16. सर्वात्मात्मरात्मन् Viṣṇ. 72, 5. मनस् R. 1, 2, 6. 2, 35, 24. Śuçr. 1, 328, 6. Spr. (II) 6174. Kumārās. 5, 35 (mit loc. der Person). Bhāg. P. 3, 28, 1. चेतस् Mch. 41. Kumārās. 7, 74. von Menschen und höheren Wesen Ind. St. 2, 43, N. 3. MBh. 3, 2079. 5, 7252. Rāgh. 2, 63. Çāk. 1. Spr. (II) 3898. 4281. Weber, Rāmat. Up. 321. 344. Daçak. 92, 19 (°कत्व). Pañcat. 223, 9. LA. (III) 28, 12. 37, 6. देवाः प्रसन्नास्ते MBh. 1, 5919. R. 1, 18, 17. Viṣṇ. 53. पत्नीं प्रति Kathās. 14, 56. ओषधानि, मन्त्राणि, नक्षत्रम्, शकुनम्, यज्ञाः *geneigt, gewogen* Spr. (II) 1498. *gnädig* so v. a. *Gewogenheit verrathend:* वाचः R. 5, 37, 28. Spr. (II) 4281. क्षम Bhāg. P. 2, 9, 18. — Vgl. प्रसन्न, प्रसन्न, प्रसाद, प्रासाद, घृतप्रसन्न. — caus. *klar machen, klären:* यत्प्रसादितमुद्धाम्बु Spr. (II) 442. प्रसादयत्यः ककुभः सेनास्तस्य महीतले। विचेरुर्विक्रमादित्यस्य सादित्यस्येव रश्मयः ॥ Kathās. 120, 64. *erheitern:* चेतः Spr. (II) 2376. act. und med. (wegen des Metrums) mit acc. der Person *Jmd heiter stimmen, in gute Laune versetzen, besänftigen, zu besänftigen —, geneigt zu machen suchen* (insbes. zur Erfüllung einer Bitte), *um Etwas angehen* M. 11, 204. fg. Jāṇ. 3, 283. MBh. 1, 3313. सा त्वां याचे प्रसाद्याहमनुं देहि 3409. 4325. 6714. 3, 12190. 5, 7070. 8, 1584 (प्रसादयितवान्). 13, 243. 1336. Harıv. 6007 (यतः प्रसादयिष्ये त्वां die neuere Ausg. st. यतस्त्वाहं प्रसादिष्ये der älteren). R. 1, 9, 68 (67 Gorr.). 18, 3. 39, 9. 65, 23. 66, 24. 2, 29, 14. क्रुद्धान् 41, 3. 62, 7. 63, 42 (प्रसादयन्). 82, 28. 6, 108, 41. Rāgh. 1, 85. Viṣṇ. 54. Mālav. 42, 19. Spr. (II) 2222. Kathās. 14, 52. 45, 411. Mārk. P. 16, 49. fg. 34, 38. 75, 54. LA. (III) 91, 14. Bhāg. P. 3, 16, 4. 4, 6, 5. Pañcat. 71, 17. प्रसाद्यमानापि न तुष्यति 223, 9. शिरसा R. 1, 11, 2. 2, 88, 25. R. Gorr. 2, 18, 33. प्रणम्य 4, 6, 12. पादेषु R. Schl. 2, 100, 16. पादयोः पतित्वा Pañcat. 223, 11. आहारपानवस्त्रैः Kathās. 23, 37. प्रसादये त्वां शिरसा गन्तुमिच्छामि वनम् R. 2, 21, 30. प्रसादये त्वामकम् — अर्हसि देव सोढुम् Bhag. 11, 44. MBh. 3, 1629. प्रसादयामास पुनः क्षिप्रमेतद्भविष्यति भवत्विति Siv. 1, 16) 16635. निवर्तस्व ऋणादस्मादिति चैव प्रसादितः 5, 7304. 7335. 13, 2704. R. 1, 57, 18. तां वै धारयितुम् 43, 24. यस्या धारणे R. Gorr. 1, 44, 22. शापमोक्षाय Bhāg. P. 6, 17, 24. गङ्गायाः परिमोक्षार्थम् R. Gorr. 1, 45, 9. तयोरर्थे Śuçr. 1, 3, 12. Pañcat. 25, 25. प्रसादित n. pl. *gute Worte* Harıv. 8348. — Vgl. प्रसादक fgg. (प्रसादनीय auch Viṣṇ. 72, 5), प्रसादयितव्य, प्रसाद्य (auch Sāh. D. 33, 19).

— अतिप्र *recht heiter u. s. w. werden:* नातिप्रसीदद्धृदय Bhāg. P. 1, 4, 27. 3, 9, 12.

— अनुप्र *mit Jmd* (acc.) *zufrieden werden, seine Freude an Jmd haben* Spr. (II) 2222.

— अभिप्र *sich niederlassen:* यत्र मनुष्या अभि प्र सेदुर्ऋतमाशुषाणाः ṚV. 4, 1, 13. वरेभिर्वीरा अभि पु प्रसीदतः 10, 32, 1. — caus. *Jmd in gute Laune versetzen, besänftigen, geneigt zu machen suchen, um Etwas angehen* R. 1, 61, 12. 2, 5, 8. 77, 24. R. Gorr. 2, 20, 46. 5, 69, 28. अभिप्रसादयमृषिं गिरा त्रायेति मां तदा MBh. 3, 14068.

— उपप्र *beziehen:* गृहान् AV. 3, 12, 9.

— संप्र *heiter —, guter Laune werden, sich freundlich —, sich gnädig erweisen* (mit gen. der Person) MBh. 7, 1630. यमित्राः संप्रसीदन्ति तथा मित्रीभवन्त्यपि 12, 8142. याराधिता हि शीलेन प्रयत्नेशोपसेविताः। राजानः संप्रसीदन्ति प्रकुप्यन्ति विपर्यये ॥ Spr. (II) 1006. Bhāg. P. 3, 7, 35. 9, 10. 4, 11, 13. partic. °सन्न *beruhigt, ruhig* Kāṭh. Up. 3, 11, 1. *gnädig gestimmt, gewogen* Bhāg. P. 4, 11, 14. Vgl. संप्रसाद. — caus. *Jmd besänftigen, gewogen machen* MBh. 3, 14039. 15, 318. R. Gorr. 2, 108, 18. 4, 9, 1. Spr. (II) 3828. तां वाचं मयि संप्रसाद्य Verz. d. Oxf. H. 110, *a*, No. 173, Çl. 2.

— प्रति, °सीदति P. 8, 3, 66. Vop. 8, 45. 126. *sich dagegen setzen, sich entsetzen:* उद्वेपते ते हृदयं मनस्ते प्रतिसीदति MBh. 8, 2757.

— वि, °पीदति, °यसाद्, व्यषीदत् (nur dieses in der klassischen Sprache) und व्यसीदत् im Veda P. 8, 3, 64. 66. 118. fg. 1) *in Bestürzung gerathen, verzagen:* कस्माद्रामादिषीदसि R. 3, 44, 28. 51, 7. Spr. (II) 3932. Kathās. 26, 112. Bhāg. P. 3, 20, 36. विषीदत् Bhag. 1, 28. MBh. 3, 448. 4, 775. Kathās. 33, 37. Bhāg. P. 8, 11, 37. Bhaṭṭ. 7, 89. व्यषीदन् Kathās. 47, 62. मा विषीद R. 2, 107, 19. Hit. 82, 18. विषसाद R. 2, 72, 39 (74, 42 Gorr.). 77, 8. 5, 15, 17. विषेदुः Bhāg. P. 8, 10, 51. विषीदिष्यत्ति Çāk. 14, 226. 230. 276. विषीदितुम् MBh. 3, 3075. R. 2, 106, 4 (114, 30 Gorr.). मनो मम विषीदति R. 1, 74, 10. विषीदत्ति मम प्राणाः MBh. 4, 1953. — 2) *niedersinken, untergehen:* तानि पर्वतशृङ्गाणि तृणकाष्ठानि चैव हि। समुद्रे क्षिप्यमाणानि न विषेदुः (नि°?) कदा च न ॥ R. 5, 95, 15. — 3) partic. विषण्ण *bestürzt, verzagt, kleinmüthig* R. 1, 63, 20. 2, 30, 5. 36, 11. 40, 38. 42, 3. 71, 29. 77, 20. 3, 64, 17. Rāgh. 9, 75. Çāk. 20, 1. Viṣṇ. 43, 2. Kathās. 13, 34. 21, 24. 27, 102. 31, 94. Bhāg. P. 5, 14, 25. 24. 6, 9, 19. 11, 26. Pañcat. 8, 19. Hit. 86, 9. °ब्रुव R. 3, 36, 26. °चेतस् adj. 50, 28 (सु°). Bhāg. P. 3, 9, 27. 6, 11, 12. °मनस् adj. 3, 8, 36. विषण्णात्मन् adj. 9, 7, 7. °वदन adj. R. 1, 40, 24. 48, 25. 62, 3. 2, 72, 29 (74, 42 Gorr.). °मुख adj. 4, 50, 9. — Vgl. विषाद und 1. विषादिन्. — caus. *Jmd in Bestürzung versetzen, bewirken, dass Jmd verzagt, kleinmüthig wird* MBh. 6, 5696. R. 2, 7, 18 (6, 16 Gorr.). 53, 31 (27 Gorr.). 7, 46, 26. Spr. (II) 6893. मनो मम विषादयन् MBh. 5, 7219. विषादयत्ति नात्मानम् *verzagen nicht* 3, 3076. Vgl. विषादन.

— अनुवि, partic. °पण्ण *gerichtet auf:* यथ यत्रैतदाकाशमनुविषण्णं चक्षुः Kāṭh. Up. 2, 12, 4.

— प्रवि, partic. °पण्ण *bestürzt, verzagt:* °ब्रुव adj. R. 2, 40, 49.

— सम् 1) *zusammen sitzen mit:* प्रजया ṚV. 10, 169, 4. *auf:* पृथिवीम् VS. 38, 17. med. *sich niederlassen* ṚV. 1, 36, 9. संसत्सै *niedergesetzt* VS. 39, 5. — 2) *zusammensinken:* संसीदमानो निपपात MBh. 4, 2095. übertr. so v. a. *verzagen, den Muth sinken lassen:* (पण्डितः) न चापि संसीदति न प्रहृष्यति Spr. (II) 3330. Jāṇ. 1, 272. *sich in Noth befinden* Spr. (II) 6751. क्षुधा *vor Hunger vergehen* M. 4, 33. 7, 133. —

Vgl. संसद्, संसाद्. — caus. 1) (*zusammen*) *hinsetzen:* प्रस्कण्वं सर्मसादयच्छ्यानं त्रिचक्रिमुद्धितम् Vikkn. 3, 2. TS. 5, 1, 4, 5. Ait. Br. 1, 19. 23. Çat. Br. 1, 1, 2, 23. Âçv. Çr. 4, 6, 3. पात्राणि Kity. Çr. 2, 3, 6. 26, 6, 21. Çâṅkh. Çr. 4, 3, 2. 5, 10, 22. — 2) *zusammenkommen, sich vereinigen mit* (acc.) Bhâg. P. 2, 2, 30. — 3) *verzagt machen:* (न त्वाम्) धविषण्णतमः शोकः संसादयितुमर्हति R. Gorr. 2, 114, 21. — Vgl. संसादन.

2. सद् (= 1. सद्) 1) adj. *am Ende eines comp.* (°सद् und °षद्) *sitzend, seinen Sitz habend, Bewohner* P. 3, 2, 61. H. 10. 87. किष्किन्धाद्रि° Bhatt. 6, 120. Vgl. अम्भ°, अन्तरिक्ष°, अप्सु°, आत्म°, आश्रम°, उत्तरा°, उपरि°, उपस्थ°, ऋत°, गगण°, गर्त°, गिरि°, गृध्र°, गो°, धर्म°, घृत°, चमू°, तुरण्य°, त्रिविष्टप°, दक्षिण°, दिवि°, द्रोण°, द्रुवन्य°, देव°, ध्रु°, ध्रु°, धूर्षद्, ध्रुव°, नभः°, नाक°, नृ°, पथि°, पशात्सद्, पस्त्य°, पितृ°, पुरः°, पुष्कर°, पूर्व°, पृथिवि°, बर्हि°, बर्हिः°, बर्हिः°, भुवन°, मनः°, वन°, वनर्षद्, वर°, वेदि°, व्योम°, शर्म°, शाला°, शुचि°, श्रात्त°, श्रुत°, संवत्सर°, सत्र°, सत्य°, सदना°, सभा°, सोम°, स्वर्ग°. — 2) m. *das Besteigen* (des Weibchens) AV. 4, 4, 7.

सद् 1) oxyt. = साद् P. 3, 1, 140. = सद् in बर्हि°, शमनी°, सभा°. सदम् am Ende eines adv. comp. gaṇa शरदादि zu P. 5, 4, 107. — 2) m. *a) Frucht* M. 8, 151. 241; vgl. शद् 3). — *b)* N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 4548. es könnte übrigens सदःसुवाच् auch als ein Name gefasst werden. — 3) n. *ein best. Theil des Rückens am Opferthier* Ait. Br. 7, 1.

सदशक (2. स + दृ° = दृश) m. *Krebs, Krabbe* Râgân. im ÇKDr.

सदशवदन (सदश [2. स + दृश] + व°) m. *Reiher* Râgân. im ÇKDr.

सदल (2. स + दल) adj. *mit Verstand begabt:* यद्ये सदलः सतनुर्दि भूवा TS. 3, 1, 4, 1.

सदक्षिण (2. स + दक्षिणा) adj. (f. या) *nebst Geschenken* M. 11, 3. Râjat. 5, 285.

सदञ्जन (सत् + घ°) n. *als Collyrium gebrauchte Messingasche* Çabdac. im ÇKDr.

सदण्ड (2. स + दण्ड°) adj. *mit Strafe belegt, bestraft* Vishṇ. 125.

सदन (von 1. सद्) 1) n. *a) Sitz, Ort; Standort, Heimath; Behausung, Haus* Ak. 2, 2, 4. H. 990. an. 3, 428. Med. n. 151. Hall. 2, 136. कृत्रिम ṚV. 1, 55, 6. 104, 5. नित्य 148, 3. पार्थिव 169, 6. दिव्यान्यः सदनं चक्रे 2, 40, 4. पृथिवीं सदने ससत्थ 3, 30, 9. 31, 12. 54, 6. योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि 7, 24, 1. सीदन्होतेव सदने चमूषु 9, 92, 2. सुगा वो देवाः सदना अकर्म VS. 8, 18. 12, 39. विवस्वतः ṚV. 1, 53, 1. ऋतस्य 84, 4. 164, 47. पृथिव्याः 4, 11, 5. पार्थिव 8, 86, 5. रायः 3, 54, 21. 6, 7, 2. देवानाम् 8, 13, 2. 10, 38, 2. उखायाः VS. 12, 16. पत्नीनाम् AV. 9, 3, 7. TS. 3, 2, 4, 4. = पत्नीशाला (nach Nîlak.) Hariv. 2204. — वैवस्वतस्य MBh. 1, 1710. यमस्य R. 2, 64, 35. 7, 21, 1. धातुर्विधातुः सवितुर्विभोर्वा शक्रस्य वा तं सदनात्प्रपन्ना MBh. 3, 15591. सम्भोक्तयोनेः Prab. 24, 1. मूकाम्बिकायाः Verz. d. Oxf. H. 257, a, 23. सिद्धचारणविद्याधराणाम् Bhâg. P. 5, 24, 4. गृहिणाः Spr. (II) 2195. 6998. कुटिन्याः Kathâs. 87, 59. स्वयंभू° MBh. 13, 4377. महेन्द्र° Kathâs. 6, 65. धर्म° Bhâg. P. 4, 1, 35. यदु° MBh. 8, 1740. पर° Spr. (II) 551 = 1168. Kathâs. 33, 97. प्रेयसी° 37, 199. लज्जा° *Sitz* 13, 196. त्रिसाम्य° Bhâg. P. 2, 7, 40. *am Ende eines adj. comp. seinen Sitz habend in:* पाताल° MBh. 13, 329. शशाङ्क° Verz. d. Oxf. H. 104, a, 4 v. u. Im Veda häufig mit metrischer Dehnung सादन (सदन Padap.) ṚV. Pair. 9, 19. ṚV. 1, 84, 4. 2, 23, 1. 8, 9, 10. यमस्य 10, 135, 7. Citat in Çat. Br. 11, 5, 8, 13. — *b) das Sichniederlassen, Zurruhekommen* ṚV. 5, 47, 7. 10, 93, 5. — *c) Erschlaffung* Hir. 268. Sûçr. 1, 39, 1. गात्र° 128, 11. 252, 11. षड्° 2, 213, 21. — *d)* angeblich *Wasser* Naigh. 1, 12. H. an. (जल fehlerhaft für शल). Med. — 2) adj. (f. ई) *Niederlassung —, Bleiben bewirkend:* दीधिति ṚV. 1, 186, 11. — Vgl. ऋत°, केलि°, देव°, घृत°, नृ°, पितृ°, ब्रह्म° (in der 2ten Bed. auch Bhâg. P. 5, 17, 4), यज्ञ°, यम°, राज्ञ°, वाः°, केतृ°.

सदनासद् adj. *im Sitz sitzend* ṚV. 9, 98, 10.

सदंदि (सदम् + दि etwa 4. दा) adj. *für immer fesselnd, — bleibend:* तकान् AV. 5, 22, 13. 19, 39, 10.

सदन्य s. सादन्य.

सदपदेश (सत् + अपदेश) adj. *nur scheinbar eine Realität besitzend* Bhâg. P. 5, 5, 20.

सदम् (von 2. स) adv. 1) *allezeit, stets* ṚV. 1, 106, 3. 116, 6. कृविर्मन्तः सदमिन्नो व्यामके 114, 8. 122, 10. कामी हि वीरः सदमस्य पीतिम् 2, 14, 1. 34, 4. 3, 2, 15. 4, 1, 1. 7, 2, 3. उषासः सदमुच्छन्तु 41, 7. 10, 4, 7. 93, 1. AV. 1, 15, 3. 3, 15, 3. 7, 18, 2. Çat. Br. 11, 5, 8, 13. — 2) *je, irgend; immerhin* ṚV. 1, 185, 8. 4, 3, 13. मा ते सखायः सदमिद्रिषाम 12, 5. 5, 85, 7. 6, 67, 8. 10, 7, 3. ऋतस्विनः सदमिन्मातुमावतो दक् 1, 36, 20. — Vgl. सदा.

सदम *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4, 639.

सदंपुष्प adj. *immer blühend;* f. घा *eine best. Pflanze* Kauç. 28, 39. — Vgl. सदापुष्प.

सदम्भ (2. स + दम्भ°) adj. *heuchelnd* P. 5, 2, 76, Schol. *erheuchelt:* धर्म Spr. (II) 6749.

सदय (2. स + दया) adj. (f. घा) *Mitleid empfindend* (mit loc. der Person) Kathâs. 1, 62. 9, 75. 17, 39. 21, 45. 26, 147. हृदय Spr. (II) 6893 (könnte hier auch als adv. gefasst werden). ad Mucc. 113. सदयम् adv. *mitleidsvoll* Bhâg. P. 5, 3, 16. *auf eine sanfte Weise, nach und nach, ganz allmählich* Rajat. 8, 7. 16, 19. Çiç. 72. 147. Spr. (II) 6893 (oder adj.). am Anfange eines comp.: घमरवधूकस्तसदयालूनपल्लव Kumâras. 2, 41.

सदर् m. N. pr. eines Asura Hariv. 2283 nach der Lesart der neueren Ausg. — Vgl. सदर् und सद्र.

1. सदर्थ (सत् + अर्थ) m. *eine Angelegenheit, die Einem vorliegt, um die es im Augenblick sich handelt* Spr. (II) 1036.

2. सदर्थ (wie eben) adj. *wohlhabend* Mâlav. P. 137, 3. als Umschreibung von भवत् *seiend* Taik. 3, 3, 175.

सदर्प (2. स + दर्प) adj. *übermüthig, trotzig* Spr. (II) 1364 (eine Schlange). 6908. सदर्पम् adv. Hit. 12, 20.

सदलंकृति (सत् + अ°) f. *ein ächter Schmuck;* davon nom. abstr. °ता f. Kathâs. 43, 20.

1. सदश (2. स + दशन) adj. *mit Dekaden* (Stoma) *versehen* Çâṅkh. Çr. 14, 27, 9. 28, 6.

2. सदश (2. स + दशा) adj. *mit Fransen versehen:* वस्त्र MBh. 12, 6297.

सदशनज्योत्स्न (2. स + दशन-ज्योत्स्ना) adj. (f. घा) *mit glänzenden Zähnen versehen, gl. Z. zeigend:* भारती Rajat. 10, 38.

सदशनार्चिस् adj. dass.: लीलास्मित Rajat. 8, 70.

1. सदश्व (सत् + अश्व) m. *ein gutes, edles Ross* Kaṭhop. 3,6. MBh. 3, 2790. 5,7126. Harıv. 13332. Spr. (II) 5710. R. 5,87,12.

2. सदश्व (wie eben) 1) adj. a) *Besitzer edler Rosse* ṚV. 5,58,4. — b) *mit edlen Rossen bespannt:* रथ Bhâg. P. 1,9,2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Samara Harıv. 1063. VP. 4,19,12.

सदश्वसेन m. N. pr. eines Mannes LIA. 1,802, N. 1.

सदश्वोर्मि m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,221. सदस्योर्मि ed. Bomb.

सदस् (von 1. सद्) f. (dieses nicht zu belegen) und n. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,188. Taik. 3,5,20. 1) *Sitz, Ort, Stelle, Aufenthalt* ṚV. 1,47,10. दिवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः 85,1. 6. 8,29,9. सदो दधान: 1,128,3. 9, 107,10. 10,94,12. त्रिबर्हिसम् 1,181,8. 2,17,7. क्षत्रस्य 3,7,2. der Götter 34,5. दिवः सदांसि VS. 34,32. पृष्ठे सदः des Reiters ṚV. 5,61,2. सदः सदः सदत 16,15,11. 76,1. VS. 2,6. 6,24. सदोगतः सन्भगवानिवाग्निः MBh. 6,3674. इन्द्र° Indra's *Behausung* R. 7,56,29. — 2) im Besondern *ein im Opferraum östlich vom* Prâkînavaṁça *errichteter Schuppen* AV. 9,6,7. VS. 19,18. Âit. Br. 1,23. 2,36. TS. 3,2,4,3. TBr. 2,1,5,1. Çat. Br. 3,5,2,5. उभयतोद्वार् 7. 6,2,21. Âçv. Çr. 5,7,1. 3,13. Kâtj. Çr. 8,6,1. fgg. 9,8,19. Çâṅkh. Çr. 7,7,3. 10,21,10. MBh. 5,2307. Harıv. 2204 nach der Lesart der neueren Ausg. (= पत्नीशाला Nîlak.). यज्ञ:-सदसम् Çâṅkh. Çr. 17,4,3. वह्नि:° 2. Liṭ. 4,2,2. — 3) *Versammlungsort* Bhâg. P. 3,10,17. — 4) *Versammlung* (insbes. bei einem Opfer) AK. 2,7,15 (f. n.). H. 481. Hâlâ. 4,60. Kâṭh. Up. 1,1. तस्मिन्सदसि विस्तीर्णे मुनीनां भावितात्मनाम् MBh. 1,9. ब्रह्मणेऽयस्य सदः (= यज्ञमण्डपम्) — विवेश 2314. कर्ष सदसि भोक्तारो हविस्तस्य सुरर्षयः R. 1,59,13 (61,14 Gorr.). R. Gorr. 1,67,34. fg. सदः समस्तं पप्रच्छे Mâṇ. P. 130, 15. Verz. d. Oxf. H. 14,b,6 v. u. (wohl सदसो zu lesen). Bhâg. P. 4,2,5. प्राप्ता: स्म राजन्भद्रं ते विवाहार्थं सदस्तव R. Gorr. 1,75,11. सदोभूषा मूर्खि: Spr. (II) 3363. 4253. 6147. Çiç. 15,1. Kathâs. 45,231. Râja-Tar. 5,361. मुनिगणनृपवर्षसंकुले जनःसदसि Bhâg. P. 1,9,41. सतां सदसि 2,3, 14. नृपसदस्सु 9,11,21. यमसदसि Varâh. Bṛh. S. 32,3. सदसि *in Gegenwart von vielen Menschen* Kathâs. 4,78. 80. सदोगत MBh. 12,13344 (pl. so v. l. versammelt). Raghu. 3,66. सदःस्थ Bhâg. P. 4,5,20. — सदसि त्वा Çvetâçv. Up. 4,22 fehlerhaft für सदमित्वा; vgl. ṚV. 1,114,8. — Vgl. यज्ञ°, शक्र°.

सदसत्त्व n. nom. abstr. von सत् + असत् *was da* (wirklich) *ist und zugleich nicht ist* Bhâg. P. 3,5,23. = प्रधानगुणभाव Comm.

सदसत्पति m. *Herr des Seienden und nicht Seienden* Pâṇ. Gaṇ. 4,3,157.

सदसत्फल n. im comp. *gute und üble Folgen* Varâh. Bṛh. S. 32,7. davon °मय adj. *daraus hervorgegangen, darin bestehend:* पाशा: Maitrâjup. 4,2.

सदसदात्मक adj. (f. सदसदात्मिका) *dessen Wesen es ist zu sein und zugleich auch nicht zu sein* M. 1,11. 14. 74. Harıv. 11577. Bhâg. P. 2, 6,32. 3,5,25. 15,6. 22,4. 26,10. 28,44. Verz. d. Oxf. H. 47,a, No. 103, Çl. 4.

सदसदात्मता f. nom. abstr. zu सदसदात्मक Bhâg. P. 4,22,38.

सदसद्भाव m. *Wirklichkeit und Unwirklichkeit, Wahrheit und Falschheit* Spr. (II) 4176.

सदसद्रूप adj. (f. आ) *als seiend und auch als nicht seiend erscheinend* Bhâg. P. 1,2,30.

सदसत् (सत् + अ°) adj. gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61. 1) *seiend und nicht seiend,* n. *Seiendes und nicht Seiendes* Bhâg. P. 2,5,6. 6,41. 7, 47. 3,24,42. 4,22,28. 7,13,4. du. (सदसतो:) 8,7,34. 12,9. — 2) *wahr und falsch,* n. *Wahres und Falsches:* सदसद्विवेकिन् Spr. (II) 6521. — 3) *gut und übel:* फल Varâh. Bṛh. S. 43,10. सदसद्योगा: 40,1. सदसत्त्वज्ञा: 48,22. *Gutes und Schlechtes* Raghu. 1,10. *Gute und Schlechte:* द्रष्टार: सदसताम् Râja-Tar. 4,60. — Vgl. साद्सत.

सदसन्मय (von सदसत्) adj. *aus Seiendem und nicht Seiendem gebildet* Bhâg. P. 7,13,4. Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,325.

सदस्पति (स° gen. von सदस् + प°) m. *Herr des Sitzes* d. h. *des heiligen Ortes und der dort Versammelten* ṚV. 1,18,6. TS. 2,6,8,1. 3, 2,4,1. Âçv. Çr. 5,3,22. Gaṇ. 3,5,4. Pâṇ. Gaṇ. 2,10. Ind. St. 3,392. 398. Bhâg. P. 4,2,7. 13,30. fg. 7,15,21. 10,74,17. सताम् *das Haupt einer Versammlung Guter* 5,15,7 (सदस: पति: सताम् ed. Bomb.). — Vgl. सदस्पति.

सदस्तिमाला f. Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 165,b,3.

सदस्पति m. = सदस्पति Bhâg. P. 4,21,8. du. Indra-Agni ṚV. 1,21,5.

सदस्य (von सदस्) adj. *im* Sadas *befindlich, dazu gehörig, Theilnehmer an einer Versammlung* (insbes. bei einem Opfer); speciell m. sg. *ein im* Sadas, *damit es nicht leer stehe, sitzender* Ritvig, *der siebenzehnte, der nur zuschaut* (Âçv. Gṛh. 1,23,5. Verz. d. Oxf. H. 267,a,25. Harıv. 1335) AK. 2,7,15. H. 480. VS. 7,45. 38,18. Çat. Br. 4,2,4,29. यावतो वै सदस्यास्ते सर्वे दक्षिण्या: TS. 3,2,8,2. 6,1,9,6. 5,6,5. 7,3,11,1. अग्नय: Ait. Br. 2,36. 7,1. Çâṅkh. Br. 17,7. 20,4. Liṭ. 2,3,6. 4,10. 5,12,5. 8,11, 15. स सदस्यै: सकामीनः आवयामास भारतम् MBh. 1,98. 862. 2042. 2215. 4,552. 14,256. 286. 2638. Harıv. 1336. 2204. R. 1,13,23 (21 Gorr.). 62, 24 (64,24 Gorr.). 2,89,23. 104,30. R. Gorr. 1,67,23. 7,36,56. Çiç. 32,11. Bhâg. P. 4,2,6. 19. 5,7. 13,29. 8,18,22. 20,22.

सदस्योर्मि m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,221 nach der Lesart der ed. Bomb. सदश्योर्मि ed. Calc.

सदा (von 2. स) adv. = सदस् *allezeit, stets, immer, jedesmal* P. 5,3,6. 15. Vop. 7,110. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. AK. 3,5,22. H. 1531. Hâlâ. 5,101. ṚV. 1,117,23. तूर्णी रथ: सदा नव: 3,11,15. सदा सुग: (पन्था:) 34,21. 6,45,23. व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा 7,83,9. सदा पाहि 8,1,20. 19,23. 25,21. 10,1,7. AV. 2,4,1. 4,27,2. 5,128,4. सूर्यस्यामृ: सदा वक्षि रथम् 13,1,24. या वहो सूर्या रथं तिष्ठद्रघुष्यदं सदा *so oft als, jedesmal wenn* ṚV. 5,73,8. Ait. Br. 3,31. Kâṭj. Çr. 4,13,6. Liṭ. 1,4,7. 5,12,5. Çâṅkh. Çr. 12,4,3. M. 1,108. 2,71. 166. 3,45. 147 u. s. w. MBh. 3,2284. 2638. 2642. 2711. 3024. Weber, Ġiṣ. 28. Raghu. 3,44. Spr. (II) 6100. 6750. 6752 u. s. w. Weber, Râmây. Up. 338. Varâh. Bṛh. S. 13,4. Ver. in LA. (III) 7,6. सदैव M. 8,303. Spr. (II) 4569. Varâh. Bṛh. S. 24,10. 35,6. 51,44. 53,41. 88. 25. न — सदा *nie, niemals, nimmer* Spr. (II) 2064. 4103. 6755. 6757. fg. 7576. Bhâg. P. 1,11,38. न — सदैव Varâh. Bṛh. S. 88,25. यशश्चतम् — सदा *nimmer von Bestand* Spr. (II) 6911. सदाहीनगति: पुरा R. 2,71,26. im comp.: मुखसदोचिता R. 2,42,19. सदापुष्पितकानना (नदी) 103,24. सदावगाढ्क्षतवारिसंचय Ṛt. 1,1. सदाचण्डी R. 2,70,10 braucht nicht als comp. gefasst zu werden; eben so wenig सदोज्वल: Weber, Râmây. Up. 338. 343.

सदाकान्ता (स° + का°) f. N. pr. eines Flusses MBu. 6, 332 (VP. 183).

सदाकारिन् (स° + का° und von सत् + आकार) adj. *stets thätig* und *ein gutes Aeusseres habend* Spr. (II) 4111, N.

सदाकालम् (von स° + काल) adv. *allezeit* Schol. zu VS. Prât. 1, 8.

सदाकालवह् adj. (f. आ) *zu jeglicher Zeit fliessend (Wasser habend)*: नद्य: Mârk. P. 57, 32.

1. सदागति (स° + गति) f. *Beständigkeit*: अनित्या वै सदागति: Spr. (II) 526.

2. सदागति (wie oben) 1) adj. *in steter Bewegung seiend*: चक्र MBu. 3, 10645. Beiw. Çiva's Çiv. — 2) m. *a) Wind* (auch in medic. Sinne), *der Gott des Windes* AK. 1, 1, 1, 57. H. 1106, Schol. an. 4, 129. Med. t. 222. Hall. 1, 76. MBu. 1, 2937. 3, 2982. 4, 1706. 7, 231. 12, 12404. R. 3, 33, 12. 6, 78, 2. 7, 35, 65. Suçr. 1, 304, 20. Varâh. Bṛh. S. 31, 5. — *b) die Sonne* H. ç. 7. Med. (नार्क° d. i. ना अर्क° zu lesen). — *c)* = निर्वाण. — *d)* = मरीचि H. an. Med. In den beiden letzten Bed. eher सत् + आगति und in der dritten eher f. als m.

सदागम (सत् + आगम) m. 1) *eine gute Lehre* Spr. (II) 1768. Prab. 87, 3. Sîn. D. 108, 18 (hier zugleich in der zweiten Bed.). — 2) *die Ankunft eines Guten* Sîn. D. 108, 18.

सदाचरण (सत् + आ°) n. *die Handlungsweise verständiger Menschen* Verz. d. Oxf. H. 155, *a*, 5.

1. सदाचार (सत् + आ°) m. *die Sitte der Guten, ein guter Wandel* M. 2, 12. 18. 4, 155. Jâñ. 1, 7. Raçu. 14, 27. Spr. (II) 2432. °विवर्जन 3040. Râja-Tar. 3, 47. 4, 28. 72. VP. 3, 11, 1. fgg. Mâlav. P. 34, 3. fgg. Bâlar. P. 6, 1, 21 (नष्ट° adj.). Prab. 35, 10. Mudr. St. 4, 44, 4. Verz. d. B. H. 128, *b* (17). 130, *b* (25). Verz. d. Oxf. H. 13, *a*, 26. 16, *b*, No. 60. 35, *b*, 32. 45, *a*, 1. 123, *a*, 41. °वर्तिन् Pañcat. 40, 20. °क्रम m. Titel einer Schrift Ind. St. 1, 467. °चन्द्रोदय m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 274, *a*, No. 649. °प्रकरण desgl. Hall 142. °संग्रह m. desgl. Notices of Skt Mss. 103. °स्मृति-व्याख्या f. desgl. Mack. Coll. 1, 25. Vgl. वङ्ग°.

2. सदाचार (wie oben) adj. (f. आ) *die Sitte Guter befolgend, einen guten Wandel führend* H. an. 3, 64. Med. k. 117. Spr. (II) 1473. 4947, v. l. 6751. Kathâs. 2, 7. Râja-Tar. 1, 198. 327. Prab. 48, 4 (Gegens. दुराचार).

सदाचारवत् (von 1. सदाचार) adj. dass. M. 4, 158. VP. 3, 11, 2. Mâlav. P. 34, 3.

सदाचारिन् in विमलधात्रत्° adj. von विमलधात्रत्सदाचार Verz. d. Cambr. H. 60.

सदातन (von सदा) 1) adj. *immerwährend, beständig* AK. 3, 2, 22 Trik. 3, 3, 271. H. 1452, Schol. Bhaṭṭ. 5, 65. Davon nom. abstr. °त्व n. Kuṭṭan. 3, 3. 6. — 2) m. = यज्ञ (nach ÇKDa. und Wilson Vishṇu) Trik.

1. सदादान (सदा + 1. दान) n. *beständiges Spenden* AK. 3, 4, 28, 133.

2. सदादान (wie oben) adj. *beständig spendend* Spr. (II) 6753 (zugleich in der Bed. 3. सदादान 1).

3. सदादान (सदा + 3. दान) 1) adj. *beständig Brunstsaft entlassend* Spr. (II) 6753 (zugleich *beständig spendend*). — 2) m. *a)* = गन्धगज, गन्धहस्तिन् H. ç. 34. H. an. 4, 198. Med. n. 216. — *b)* Indra's *Elephant* H. an. Med. Gaṇîbn. in Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 41. — *c)* ein N. Gaṇeça's H. an. Med.

1. सदान (2. स + 1. दान) adj. *Gaben habend* ṚV. 7, 33, 12.

2. सदान (2. स + 3. दान) adj. *brünstig*: Elephant Kir. 3, 9.

सदानन (सत् + आनन) adj. *ein schönes Gesicht habend* Kir. 3, 9.

1. सदानन्द (सदा + आ°) m. *beständige Wonne*: ज्योतिर्मात्रसदानन्द-निर्मलज्ञानमूर्ति (Çiva) Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 2.

2. सदानन्द (wie oben) 1) adj. *beständige Wonne empfindend*, — *gewährend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 122. 164. Prab. 117, 18. Çiva ÇKDa. nach dem Çaiçavasâmaja. — 2) m. N. pr. verschiedener Manner Gild. Bibl. 421. fg. Notices of Skt Mss. 2, 132. Verz. d. Cambr. H. 60. Hall 7. 129. °योगीन्द्र 101. °व्यास 120. 168.

सदानन्दचिदात्मक (von सत्-आनन्द-3. चित् + आत्मन्) adj. *aus Sein, Wonne und Denken bestehend* Weber, Rîmat. Up. 354. — Vgl. सच्चिदानन्द.

सदानन्दमय (von 1. सदानन्द) adj. (f. ई) *aus beständiger Wonne bestehend* Verz. d. Oxf. H. 68, *b*, 27. 192, 2 v. u.

सदानर्त (सदा + नर्त) m. *Buchsteize (beständig tanzend)* Çabdak. im ÇKDa.

सदानिरामया (सदा + नि°) f. N. pr. eines Flusses MBu. 6, 340.

सदानीरवहा f. = सदानीरा Çabdak. im ÇKDa.

सदानीरा (सदा + नीर) f. N. pr. eines von den nördlichen Bergen kommenden Flusses Çat. Bṛ. 1, 4, 1, 14. MBu. 2, 794. 6, 332 (VP. 183). Mârk. P. 57, 19. = कर्तोया AK. 1, 2, 3, 32. H. 1085.

सदान्वा f. Bez. gewisser Unholdinnen Naigh. 4, 3. Nir. 6, 30. ṚV. 10, 155, 1. AV. 2, 14, 1. 4. 4, 10, 3. 16, 6, 7. °तैयण 2, 18, 3. °चातन ebend. Wird im Nir. in सदा + नोनुव *immer lärmend*, — *kreischend* aufgelöst.

सदापरिभूत (सदा + प°) m. N. pr. eines Bodhisattva Burnouf, Intr. 228. fgg.

सदापर्ण (सदा + पर्ण) adj. *stets belaubt* MBu. 14, 936.

सदापुष्प (सदा + पुष्प) 1) adj. *stets blühend* MBu. 14, 936. — 2) m. *Kokosnusspalme* Çabdam. im ÇKDa. — 3) f. ई *Schwalbenwurz, Calotropis gigantea* (ein Strauch, vgl. अर्क) Ratnam. im ÇKDa. Çiâbd. Gaṇ. 3, 1. Karaka 1, 4. 3, 8. Suçr. 1, 158, 10.

सदापुष्पफलद्रुम adj. *mit stets blühenden und Früchte habenden Bäumen versehen*: उद्यान Kathâs. 34, 165.

सदापूर्ण 1) adj. *stets schenkend* ṚV. 5, 44, 12. — 2) m. N. pr. des Liedverfassers von ṚV. 5, 45 (vgl. Sây. Einl. zu 44) mit dem patron. Âtreja.

सदाप्रमुदित (सदा + प्र°) n. *beständige Fröhlichkeit*, Bez. einer der acht Vollkommenheiten (सिद्धि) im Sâṁkhja Gaupad zu Sâṁkhjak. 51. सत्प्रमुदिता f. st. dessen Tattvas. 42 und als entsprechende Unvollkommenheit असत्प्रमुदित n. 37.

सदाप्रसून 1) adj. *beständig blühend*. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: = रोहितक, अर्क und कुन्द Râjân. im ÇKDa.

सदाफल (सदा + फल) 1) adj. (f. आ) *stets Früchte habend*: जम्बूपादप Pañcat. 205, 6. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: = उदुम्बर H. an. 4, 199. Med. l. 165. Ausn. 93. = बिल्व H. an. Med. Ausn. 92. Gaṇîbn. im ÇKDa. = स्कन्धफल H. an. Med. — 3) f. आ Bez. zweier Pflanzen: = त्रिसंधिपुष्प Râjân. im ÇKDa. = वार्ताकुविशेष Râjavallabha ebend.

सदाभद्रा (सदा + भ°) f. *Gmelina arborea* Ratnam. 1.

सदाभव (सदा + भव) adj. (f. आ) *immerwährend, beständig* Schol. zu

Bhatt. 5,65.

सदाभास (सत् + भा°) adj. *worin sich das wirklich Seiende abspiegelt* Bhâg. P. 3,27,13. *der als wirklich seiend erscheint* 3,3,14.

सदाभ्रम (सदा + भ्रम) adj. *stets wandernd* Mun. ST. 2,261.

सदामत्त (सदा + मत्त) 1) adj. *stets ausgelassen vor Freude:* Vögel R. 7,31,21. *stets brünstig:* Elephanten Spr. (II) 3139. Kathâs. 11,4. Braucht nicht als comp. aufgefasst zu werden. — 2) m. N. pr. eines Mannes, pl. *sein Geschlecht* gaṇa यस्कादि zu P. 2,4,63.

सदामद (सदा + मद्) adj. *stets ausgelassen vor Freude:* Vögel Harîv. 9007. R. 5,20,11. *stets berauscht* Mâlav. P. 81,13. *stets brünstig:* Elephant Spr. (II) 3139, v. l.

सदायोगिन् (सदा + यो°) 1) adj. *stets dem Joga obliegend* Tirthâbhiv. im ÇKDa. — 2) m. Bein. Vishṇu's Taitt. 1,1,20. H. ç. 75.

सदार्जव (सदा + आ°) adj. *stets redlich* Spr. (II) 7510.

सदावृध adj. *stets ergötzend:* Indra ṚV. 4,31,1. 5,36,2. 8,13,18. 24, 16. 37,5. 39,2. Aditi 18,6. der Soma 9,44,5.

सदाशिव (सदा + शिव) 1) adj. *stets gütig, — freundlich* u. s. w. Ind. St. 9,84, N. 5. 122,6. — 2) m. a) Bez. Çiva's Râǵa-Tar. 5,41. 162. Bhâg. P. 3,7,19. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,44. fgg. 14,*a*, N. *b*,12. 72,*b*, No. 123 (सदाशिव zusammen zu schreiben). 75,*b*,38. 89,*a*,24 (सदाशिव voc. zu lesen). 104,*b*,20. 257,*b*,38. Verz. d. B. H. No. 1242. °कवच Verz. d. Pet. H. No. 47. °स्तोत्र 54. °गीता Hall 18. °पद 197. °संहिता Verz. d. Oxf. H. 84,*b*,38. fg. °ता f. nom. abstr. 238,*b*,18. — *b*) N. pr. verschiedener Männer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13, Cl. 52. Verz. d. B. H. No. 1346. Hall 94. °तीर्थ 140. °भट्ट = शिवभट्ट 2. — 3) f. आ Bez. der Durgâ MBh. 4,182.

सदाशिस् (सत् + आ°) f. *ein gutes Bittgebet* Bhâg. P. 10,25,39.

सदासक्त adj. *stets verhaftet, — dauernd:* रयि ṚV. 1,8,1.

सदासा adj. *stets gewinnend* ṚV. 4,16,21. °तम 37,5. *stets reichlich vorhanden:* रयि 7,39,6.

सदासुख (सदा + सुख) n. *beständiges Wohlbefinden* R. Gorr. 2,15,16.

सदिवम् adv. so v. a. सद्यस् ṚV. 2,19,6.

सदीश्वर (सत् + ई°) m. = सदागति H. an. 4,139. Med. t. 232.

सदुःख (2. स + दुःख) adj. (f. आ) *betrübt, traurig* Kathâs. 66,50. 78, 94. Râǵa-Tar. 4,218.

1. सदुक्ति (सत् + उ°) f. *ein gutes Wort* Bhâg. P. 6,15,1.

2. सदुक्ति (wie eben) adj. *von guten Worten begleitet* Bhâg. P. 11,31,21.

सदूर्व adj. *mit Dûrvâ-Gras belegt* Âçv. Gṛhy. 2,9,3.

सदृक m. *ein süsses Backwerk oder eine andere Näscherei* Suçr. 1, 234,13. 240,17.

सदृत (2. स + दृत) adj. *ähnlich, gleich, entsprechend, angemessen* P. 6,3,29, Vârtt. Siddh. K. zu P. 3,2,60. Vop. 26,82. 85. AK. 2,10,37. H. 1461. Halâ. 4,9. VS. 17,84. Bhâg. P. 3,1,20. 22,24. तत्सदृत 11, 13,32. — Vgl. प्रति°.

सदृश् (2. स + दृश्) adj. dass. P. 6,3,29. 3,2,60, Vârtt. Vop. 26, 82. 85. AK. 2,10,37. H. 1461. Halâ. 4,9. 5,88. 95. ṚV. 1,94,7. पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि (vgl. P. 7,1,33) 8,11,3. VS. 17,81. तस्मात्तत्सदृगेव *deshalb bleibt es sich gleich* TBr. 1,2,6,2. TS. 2,2,9,3. 5,5,6. 7,2,5,2. Bhâg. P. 11,28,10. mit instr.: प्रकृत्या ṚV. Prât. 6,9. त्वया Kathâs. 39,85. चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशौ चपले च नयने तस्याः Spr. (II) 4681. इन्दीवरगर्भकान्ति° 8343. सदृक्पाठ als Bez. von गम H. an. 2,321. adv.: यूयं न सदृगवकृतः Snâpv. Bh. 3,6. सदृग्भवम् absol. Çat. Br. 4,5,8,1. — Vgl. प्रति°, वि°.

सदृश (2. स + दृश) adj. (f. ई) dass. P. 6,3,29. 3,2,60, Vârtt. Vop. 26, 82. 85. AK. 2,10,37. Taitt. 3,3,433 (= सम und उचित). H. 1461. Med. ç. 28. fg. (= सम und उचित). Halâ. 4,9. देवाः Çat. Br. 4,5,4,1. 9,5,6, 12. 11,8,3,11. °शी (kann der Form nach auch zu सदृश् gehören) वाहू 3,2,3,21. °गीति Lîlâv. 7,5,21. 6,3. TS. 7,3,11,1. ṚV. Prât. 17,14. M. 8,68. 9,88. 90. 136. 168. fg. 174. 184. 10,6. 27. 52. 11,177. °स्त्री 9,125. Jâǵñ. 2,121. सदृश, सवर्, अयंस् MBh. 3,1126. अेष, सदृश, अघन्य Spr. (II) 6384. MBh. 3,2857. 13,2674. R. 1,20,16. वाक्य *angemessen* R. 1, 21,2 (22,2 Gorr.). 2,51,11. 75,28. 86,13. Mṛicch. 120,18 (neben युक्त). Âryabh. 2,3. Spr. (II) 7250. Ragh. 1,65. Çiç. 98,8. Kathâs. 34,221. Râǵa-Tar. 4,101. Bhâg. P. 3,23,11. 25,19. 4,27,8. 9,20,15. वाहोवीर्ये *gleich an* R. 1,24,11. फलेन dass. Varâh. Bṛh. S. 26,13. mit instr. dessen, womit verglichen wird P. 2,1,31. मया *mir gleich* Bhag. 16,15. Spr. (II) 6764. प्रज्ञया सदृशागमः Ragh. 1,15. Varâh. Bṛh. S. 7,20. विष्णुना वीर्ये R. 1,1,13 (21 Gorr.). mit gen. Pat. zu P. 6,2,11 (auch compon. mit demselben: वृषत्व्याःसदृशाः) Jâǵñ. 1,123. MBh. 3, 2945. 5,290. 12, 4272. कामाश कालदेशयोः Harîv. 7823. R. 1,24,14. 2,30,41. 61,61. 4, 6,6. Ragh. 12,38. Çiç. 7,4. Varâh. Bṛh. S. 50,2. 75,1. Mâlav. P. 61,38. अश्विनो रूपे MBh. 3,2098. R. 3,40,22. रावणस्य शौर्येण च बलेन च 28, 10. परस्परस्य प्रमाणोद्भूतचेष्टितैः R. Schl. 1,48,3. mit loc.: नहि पश्यामि तत्सौम्य पृथिव्यामपि किंचित्। सदृशं व्रतिप्रयाव्याने R. 6,98,15. mit der Ergänzung componirt (das vorangehende Wort behält seinen Ton) P. 2,1,31. 6,2,11. व्याति° ṚV. Prât. 6,15. पिशङ्ग° Çiksh. Ça. 18,3,2. दावाग्निधूम° MBh. 1,6021. 3,2308. R. 1,1,19 (21 Gorr.). तत्कालसदृशं वचः 2,21,1. 60,17. Suçr. 1,259,7. Ragh. 1,15. 3,23. Mṛicch. 10. Çiç. 26. 88. पश्चात्तापसदृशवेष 80,6. 103,18. Varâh. Bṛh. S. 1,1. 3,30. 35. 12, 19. fg. 30,14. 18. 43,46. 47,16. Weber, Râmat. Up. 363. Spr. (II) 4287. Râǵa-Tar. 4,709. Sarvadarçanas. 28,19. 83,13. Pañcat. 4, 24. 163,18. fem.: सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वः (उषासः) ṚV. 1,123,8. 3,52,8. 6,47,21. न वि जानते सदृशीरजुर्याः 4,51,6. TS. 2,5,6,6. 6,2,6,4. 6,6,2. Çat. Br. 6,2,1,19. R. 2,60,16. Spr. (II) 842. 2876. Kathâs. 39,104. पेलोम्या Çiç. 187. घृतेः Ragh. 3,10. Kathâs. 3,57. Râǵa-Tar. 3,185. यस्या रूपेण *ihr an Gestalt* MBh. 3,2698. घनस्य° Kathâs. 11,76. 45,318. Râǵa-Tar. 4,124. सदृशम् adv.: उक्तम् *angemessen gesprochen* Uttarar. 123,6 (166, 6). गुर्वीं धुरं यो भुवनस्य पित्रा धुर्येण दम्यः सदृशं बिभर्ति Ragh. 6,73. सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेः Spr. (II) 6763. Vikr. 36,10. Vop. 6,61. अवस्थासदृशं परिक्रम्य Mâlav. 34,13. am Anfange eines comp.: सदृशशेते *gleich weise* Schol. zu P. 2,1,68. 6,2,3. superl. सदृशतम zu 1,1,50. परमसदृश *überaus ähnlich* u. s. w. zu 6,2,11. अति° Kathâs. 101,81. अर्ध° mit gen. *halbgleich* TS. Prât. 11,19. घसदृशे gaṇa चार्वादि zu P. 6,2,160. *unähnlich, ungleich, unangemessen* M. 9,171. शाप MBh. 1, 6734. वाक्य R. 6,101,6. Kathâs. 39,85. Hit. 69,4, v. l. स्त्रीणाम् R. 3, 49,10. — Vgl. वि°, सादृशीय und सादृश्य.

सदृशत्व (von सदृश) n. *Aehnlichkeit, Gleichheit:* व्रीहि° Comm. zu Kâty. Çr. 68,1. सदृशासदृशयोर्ग्यायोर्ग्यत्व (das suff. त्व gehört auch zu सदृश, असदृश und योग्य) Vaiç. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 7. 8.

सदृशवृत्ति adj. *auf gleiche Weise sich benehmend;* davon nom. abstr. °ता f. Spr. (II) 1180.

सदृष्टितेपम् s. u. तेप 1).

सदेव (1. स + देव) adj. *von Göttern begleitet, — besucht, im Schutz der Götter stehend* TS. 2,5,11,1. 6,3,1. 6,1,1,7. TBr. 3,2,3,12. Çat. Br. 2,1,4,7. 14,6,9,20. Davon nom. abstr. °त्व n. TS. 2,5,11,1. 6,3, 4. 3,4,10,4.

सदेवक (wie oben) adj. *nebst den Göttern:* सर्वेषु लोकेषु सदेवकेषु (so mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 12,8942.

सदेश (2. स + देश) adj. *benachbart* AK. 3,2,16. H. 1450. Hall. 4,7. in comp. mit seiner Ergänzung, die ihren Ton behält, P. 6,2,23. सद्द° Schol.

सदैकरस (सदा + एक-रस) adj. *dessen Verlangen stets nur auf Eins gerichtet ist* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,131. Braucht kein comp. zu sein.

सदोगृह (सदस् + गृह) n. *Versammlungsgemach:* नृपस्य Ragu. 3,67.

सदोद्यम (सदा + उ°) adj. *der sich stets anstrengt* Spr. (II) 1979.

सदोपचारमुक्तावली (सदा-उ° + मु°) f. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,282.

सदोविशेष m. N. eines Sâman Ind. St. 3,242,a. प्रजापतेः desgl. 224,b.

सदोक्विधान n. प्रजापतेः स° N. eines Sâman Ind. St. 3,224,b.

सदोक्विधानिन् adj. *mit Sadas und Havirdhâna versehen* TS. 7, 2,1,3.

सदोष (2. स + दोष und दोषा) adj. *mit Mängeln — und zugleich mit der Nacht versehen* Kâṭh. 2,176.

सद्गति (सत् + गति) f. 1) *eine gute Stellung, ein glückliches Loos:* °तिं गम् MBh. 13,4265. R. Gorr. 1,4,149. Spr. (II) 1337. या 3305. MBh. 3, 11316. याप् Verz. d. Oxf. H. 68,a,3 v. u. (यास्यति zu lesen). Bhâg. P. 10,6,35. 86,58. भाजनं सद्गतीनाम् Spr. (II) 6445. ग° *eine schlimme Stellung, ein schlimmes Loos* Bhâg. P. 3,9,29. — 2) *der Weg der Guten* (aber auch Bed. 1) wäre möglich) Spr. (II) 5826.

सद्गव (सत् + गव = गो) m. *ein guter Stier* MBh. 3,11688. 13,7170.

1. सद्गुण (सत् + गुण) m. *eine gute Eigenschaft, Vorzug* R. Gorr. 1, 1,2. 2,23,7. 4,56,26. Kathâs. 49,190. Bhâg. P. 1,12,24. सद्गुणार्णव Paṇḍar. 4,3,94.

2. सद्गुण (wie oben) adj. (f. आ) *mit Vorzügen ausgestattet:* eine Person Kathâs. 42,199. 79,5. zu Spr. (II) 527. fg.

सद्गुरु (सत् + गुरु) m. *ein guter Lehrer* Spr. (II) 7315. Bhâg. P. 1,11, 7. eines mystischen Gebetes Verz. d. Oxf. H. 101,b,2.

सद्गोरक्ष (सत्-गो + रक्ष) m. N. pr. eines Mediciners Verz. d. B. H. No. 940.

1. सद्ग्रह (सत् + ग्रह) m. *ein guter, günstiger Planet* Vaiç. Bṛh. S. 28,21.

2. सद्ग्रह (wie oben) adj. *sich an Gutes, Wahres klammernd, daran hängend:* कृष्ण an Kṛshṇa *als dem wirklich Wahren hängend* Bhâg. P. 1,12,28. — Vgl. असद्ग्रह fgg. in den Nachträgen.

सद्घन (सत् + घन) adj. *ganz, Nichts als Sein* (neben चिद्घन und आनन्दघन; vgl. सच्चिदानन्द) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,150.

सद्धर्म (सत् + धर्म) m. *das gute Recht, — Gesetz, die wahre Gerechtigkeit, das wirklich Gute* Mârk. P. 15,44. °चारिन् 21,91. 23,21. 132,21. °पालक 61,66. Bhâg. P. 2,10,4. °विद् 3,25,11. 7,15,8. 11,2,12. ध° *ein schlechtes Gesetz, ein schlechter Brauch, eine Ungerechtigkeit, etwas Schlechtes* R. 3,35,28. Spr. (II) 753. Bhâg. P. 7,5,45. Die Buddhisten bezeichnen durch सद्धर्म *ihre Lehre* Burnouf in Lot. de la b. l. 718. Titel von Werken, die über diese *Lehre* handeln: °पुण्डरीक (dieses zugleich Bez. *eines best.* Samâdhi Lot. de la b. l. 253) Burnouf, Intr. 14. 68. 438. Wassiljew 151. 222. vollständig übersetzt von Burnouf unter dem Titel Le Lotus de la bonne loi. °संग्रहिग्रक् Vie de Hiouen-thsang 211 (im Index °परिसंग्रक्). °लङ्कावतार Burnouf, Intr. 68. 438. 514.

सद्भाग्य (सत् + भा°) n. *Glück* Paṇḍar. 1,6,30.

सद्भाव (सत् + भाव) m. 1) *wirkliches Existenz, das Vorhandensein:* सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते Bhag. 17,26. R. 7,56,9. Spr. (II) 5702, v. l. Mârk. P. 16,11. 37,34. fg. Nîlak. 14. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 32. 71. Sin. D. 47. 6,11. fg. 30,11. 206,16. Sarvadarçanas. 19,3. 28, 3. 29,1. 2. 119,4. Vedântas. (Allah.) No. 126. Wilson, Sânkhyas. S. 9. Comm. zu TS. Prât. 13,14. 14,28. 16,29. zu TBr. 1,129,1 v. u. 3,364, 11. Kull. zu M. 9,153. als Beiw. Çiva's Paṇḍar. 1,8,17. ध° *das Nichtdasein, Fehlen* Kathâs. 33,50. — 2) *das Wahrsein, Wahrheit, der wahre Sachverhalt:* °निरतान्यो केचित्संशयिते स्थिताः MBh. 14,1338. अवकाशो किमर्थो ऽयं सद्भावः कथ्यतां मम Brahma-P. in LA. (III) 56,1. भाषाणकस्य Sarvadarçanas. 107,10. शास्त्र° Vaiṣṇ. Bṛh. S. 5,13. — 3) *eine gute, liebevolle Gesinnung, Zuneigung* MBh. 1,773. 12,4253. R. 2,86,1. 5,49,22. ad Mṛcch. 18. Kumâras. 5,62. Spr. (II) 1929. 2071. 4287, v. l. 6206, v. l. 6767. fg. 7299. सा वत्सेषां प्रति। गाढं बबन्ध सद्भावम् Kathâs. 13,1. 114. 57,53. 91. 127. 58,50. Paṇḍar. 1,6,12.

सद्भावती f. N. pr. einer Göttin Râga-Tar. 3,353.

सद्भूत (सत् + भूत) adj. *wahr* H. 265. गुणाः Harîv. 8593. सद्भूतोत्पादक adj. *Wahres erzeugend:* सद्भूतोत्पादकं नाम तत्स्थानं वेदसंज्ञितम् (so ed. Bomb.)। विन्यासकाले पत्रास्ते भगवान्कव्यकाव्यभुक् ॥ MBh. 12,13382.

सद्भृत्य (सत् + भृ°) m. *ein guter Diener* Spr. (II) 6125.

1. सद्मन् (von 1. सद्) m. *sessor, Daitzender, Anwesender:* या पत्म-द्यानं दिव्यं विवासान् RV. 1,173,1. 6,31,13.

2. सद्मन् (wie oben) n. 1) *Sitz, Ort, Aufenthalt;* insbes. *der Opferplatz* (vgl. सदन): उत्तर RV. 10,67,10. AV. 4,1,4. पार्थिव RV. 1,38,10. 5,87,7. वि सद्मान्यूर्विया सुक्रतुर्धात् *Wohnplätze für die Lebendigen* 6, 30,2. 1,139,10. 151,5. 4,1,5. ऋतस्य 3,55,14. 9,7,2. 83,5. विश्वा सद्मान्यप्राः *alle Räume* 10,1,1. 96,10. 103,9. दस्मो न सद्मन्नि शिशाति बर्किः 7,18,11. 22. क्षेता परि सद्म मिता यन् 1,173,3. 4,9,2. 5,23,2. 6,11,5. Âit. Br. 4,20. du. *Himmel und Erde* Naigh. 3,30. RV. 1,185,6. 3,55,2. म गव्कति ब्रह्मणः सद्म शाश्वतम् M. 2,244. das Meer ist वरुणस्य सद्म MBh. 1,8421. नाग° so v. a. *die Unterwelt* Kir. 5,30. — 2) *Wohnung, Gebäude, Haus* Naigh. 3,4. AK. 2,2,4. 3,4,30,235. H. 990. Med. n. 151 (मन्दिरे zu lesen). Hall. 2,136. RV. 1,67,10. 73,1. सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानैः 2,15,3. ये वा सद्मकृषा वीरवाहः *Haus oder Stall* 7,42,3. सद्म पशुमात्तिं 9,92,6. 97,1. 6,47,21. 67,7. मिन्वन्सद्म 10,20,5. AV. 5, 31,5. विवृत Kâṭhop. 2,13. सद्मनिवासिनः MBh. 3,12003. नरदेवस्य R.

2,65,28. Rāgh. 3,19. Spr. (II) 2303. 2347. 5739. 6410. 6493. Vārāh. Bṛh. S. 33,5. 23. 88,12. Gir. 1,2. शीर्ण° Kathās. 3,56. रात्रिसुता° 18,324. 21, 62. विमानं सद्मनिवेशितम् *Schuppen* R. 3,61,14. चण्डिका° so v. a. *Tempel* Kathās. 10,189. viell. *ein astrologisches Haus* Verz. d. Oxf. H. 333, a 19. Am Ende eines adj. comp. — *zur Wohnung habend* H. 10. — 3) *Wasser* Naish. 1,12. Mān. — 4) *Kampf* (संग्राम) Naish. 2,17. — विप्रगृह-सद्माधिष्ठ Pāṇ. 4,3,7 fehlerhaft für विप्रगृहसद्मन्यिञ्, wie Buḍḍh. P. 6,5,23 gelesen wird. — Vgl. यज्ञ°, ईश्व°, देव°, यु°, नृ°, पितृ°, प्राण°, बलि°, भोग°, राज°, शान्ति°, शुक्र°, सत्र°, सुर°.

सद्मबर्हिस् adj. *die Streu des heiligen Sitzes bereitend* ṚV. 1,52,4.

सद्ममख adj. *am heiligen Ort eine Feier begehend* ṚV. 1,18,2.

सद्म n. nom. abstr. von 2. सद् in उपरि°, तत्य° (s. u. तत्य 1) und सत्र°.

सद्यऊति (सद्यस् + ऊ°) adj. *alsbald* oder *täglich helfend* ṚV. 5,54, 15. 10,78,2.

सद्यःकाल s. सद्यस्काल.

सद्यःकृत n. *Name* (*alsbald gethan*) Taitt. 1,1,117.

सद्यःक्रीत adj. *an demselben Tage gekauft* (Soma); daher m. *ein Ekāha, innerhalb dessen durch ein abgekürztes Verfahren* Dīkshā, Upasad *und* Sutjā *Statt haben*, AV. 11,7,10 (vgl. TBr. 1,8,2,1. TS. 1,8,10,1. Pāraṇ. Br. 16,12,1). Āçv. Çr. 9,5,12 (wohl richtiger सद्यस्क्री). Çat. Br. 3,5,2,17. 19. Liṭ. 8,3,13. सद्यःक्री nach AV. Prāt. 2,62. सद्यस्क्री nach gaṇa कस्कादि zu P. 8,3,48. — Vgl. साद्यःक्र.

सद्यःक्षत adj. *frisch geschlagen* (Wunde), n. *eine frische Contusion*, — *Wunde* Suçr. 2,23,20. 24,17. 121,13. 201,1.

सद्यःपर्युषित adj. *einen Tag alt* Suçr. 2,247,13.

सद्यःपाक adj. (f.) *alsbald Folgen habend* Vārāh. Bṛh. S. 97,15.

सद्यःपातिन् adj. *alsbald sinkend* Mṛicch. 10.

सद्यःप्रतालक s. u. प्रतालक.

सद्यःप्रसूता adj. f. *eben geboren* —, *gekalbt* —, *geworfen habend* Weber, Kāṣhṇāj. 283. Uttarār. 70,5 (90,7).

सद्यःफल adj. (f. आ) *alsbald Früchte tragend*, — *Folgen habend* Vārāh. Bṛh. S. 97,14. Pāraṇ. 201,22.

सद्यश्छिन्न adj. *frisch geschnitten:* eine Wunde Suçr. 2,98,6. 8.

सद्यःशोच adj. *alsbald Anschwellung bewirkend;* f. आ *Mucuna pruriens Hook.* Çabdār. im ÇKDr.

सद्यःशौच n. *alsbaldiges Reinwerden* (in rituellem Sinne) Verz. d. Oxf. H. 87,*b*,10. fg. 272,*b*,No. 644. 273,*b*,29.

सद्यस् (von 2. स + यु = दिव्; vgl. सदिवस्) adv. 1) *desselbigen Tages; sogleich, soeben, alsbald, sofort; auf einmal, plötzlich* P. 5,3,22. Vop. 7, 110. AK. 3,5,9. H. 1532. H. ç. 202. Hālār. 4,67. ṚV. 1,61,7. 14. सद्यस्ते राधो दावने स्याम 2,11,12. सद्यः प्रवीता वृषणा जजान 3,29,3. 4,7, 9. 5,1,9. भूरि चिदन्ना समिषन्ति सद्यः *auf einen Sitz* 7,4,2. 18,12. 32,5. सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञम् 7,101,1. 8,3,10. 10,27,19. 39,8. *auf einmal* 62,8. 113,1. सद्यः सर्वा परि पश्यसि भूमिम् AV. 11,2,25. Çat. Br. 11,5,4,12. 14,1,2,22. Pāraṇ. Br. 16,6,11. 12,1. Pin. Gṛhy. 2,3. सद्य एव विभु-ध्यति M. 5,78. 94. 98. 8,307. 325. 364. 370. 9,81. 82. 312. 10,92. 11,79. Jiñān. 2,7. सद्यो वा कामनैषिणीः *frisch, soeben* 283. — MBh. 1,256. 3460. 13,183. 362. 1970. Hariv. 5264. R. 1,55,9. 2,35,12. 20. 55,13. 63, 15. 64,21. 65,28. R. Gorr. 1,39,15. 3,55,3. 58,35. 74,12. Mṛicch. 10. 25. 60. 70. 79. 95. 106. *ad* 113. Rāgh. 2,59. 8,94. 12,37. Kumāras. 3,29. Çiç. 51,17. *ad* 78. 97, v. l. Vikr. 154. Mālav. 9,7. Spr. (II) 64. 1379. 2097 (सद्योषु:, सद्यो वा). 2620. 3574. 4088. 4787. 5955. 6498. 6773. fgg. 6924. 6993. Vārāh. Bṛh. S. 3,27. fg. 11,29. 30,20. 32,30. 42,14. 97,9. Kathās. 2,81. 12,50. 142. 18,184. 22,93. 27,103. 35,82. 42,141. फलं सद्यः AK. 2,8,4,29. Hālār. 1,118. Prab. 54,3. 117,3. Mārk. P. 51,113. Bhāg. P. 3,9,17. 32,31. Daçakum. 93,15. LA. (III) 87,7. Pāraṇ. 175,1. — 2) *innerhalb eines Tages*, daher auch *täglich:* die Sonnenrosse परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ṚV. 1,115,3. 4,45,7. 51,5. 5,47,4. 6,48,21. Ait. Br. 4,20. AV. 2,2,3. 4,38,5. 8,10,21. सद्यश्चिद्या दुदुक्षे भूरि धानाः ṚV. 3,57,1. 4,30,18. 6,62,1. सद्यस्, घर्घमासे, मासि TS. 2,5,6,6. Kāṭy. Çr. 2,1,16. 22,3,27. ग° 5,30. 4,2,14. सद्यो ददाति यज्ञियम् MBh. 13,3368.

सद्यस्क (von सद्यस्) 1) adj. *frisch* H. 1449. Hālār. 4,78. Butter Suçr. 1,179,19. Fleisch 208,19. 2,226,5. — 2) *ein best. Opfer* MBh. 13,4934. साद्यस्क ed. Bomb.

सद्यस्कार adj. (f. आ) *an demselben Tage vollbracht werdend:* इष्टि MBh. 12,8906.

सद्यस्काल adj. (f. आ) gaṇa कस्कादि zu P. 8,3,48. *auf denselben Tag fallend* Z. d. d. m. G. 9,LVII. Schol. zu Kāṭy. Çr. 173,9. 319,14. 351,2. Davon nom. abstr. °त्व n. zu 4,3,17. 5,4,1. 11,21.

सद्यस्क्री s. सद्यःक्री.

सद्यस्त्व (von सद्यस्) n. = सद्यस्कालत्व Kāṭy. Çr. 4,3,17. Comm. zu 5,4,1. 11,21.

सद्यःसुत्या f. Soma-*Kelterung am selben Tage* Ait. Br. 6,34. — Vgl. सद्यःसुत्या.

सद्यःस्नेहन n. *ein schnellwirkendes Erweichungsmittel* Suçr. 2,179, 11. fgg.

सद्युक्ति (सद्यस् + युक्ति) f. *eine gute Argumentation* Spr. (II) 2215. °मुक्तावली f. Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. 1,263.

सद्युत्ति in der verdorbenen Stelle Āçv. Çr. 2,10,14. सकृति TBr. 2,4,6,1.

सद्योघर्व adj. *rasch zum Ziele kommend:* ein Bote ṚV. 1,60,1.

सद्योज adj. *neugeboren* gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75. — Vgl. साद्योज.

सद्योजात 1) adj. a) dass. Pāraṇ. Br. 18,1,24. Hariv. 9749. Pāraṇ. 3,14,2. Kalb AK. 2,9,61. — *b*) f. आ *eben geboren habend, — niedergekommen* Weber, Kāṣhṇāj. 283. — 2) m. a) *ein neugeborenes Kalb* Çabdār. im ÇKDr. — *b*) Bez. Çiva's Mātsja-P. und Tritīrthapr. im ÇKDr. Wilson, Sel. Works 2,215; vgl. सद्योजातपाद्.

सद्योजातपाद् m. bei den Çaiva Bez. einer der fünf Formen ihres Gottes Sarvadarçanas. 83,10. — Vgl. सद्योजात 2) *b*).

सद्योद्रू adj. *rasch erregt* ṚV. 8,70,9.

सद्योत्पन्न (सद्यस् + उ° mit unregelmässiger Contraction) adj. *neugeboren* MBh. 1,4237. समुत्पन्न ed. Bomb.

सद्योदुग्ध adj. *frisch gemolken* Liṭ. 8,3,10. 10,5.

सद्योभव adj. *so eben entstanden:* रन्ध्र भुव: Rāgh. 15,82.

सद्योभाविन् m. *ein neugeborenes Kalb* Çabdār. im ÇKDr.

सद्योऽभिवर्ष m. *Eintritt von Regen an demselben Tage* Vārāh. Bṛh. S. 95,82.

सद्योमन्यु adj. *alsbald erzürnend* Bhāg. P. 3,3,25.

सद्योमरण n. *ein an demselben Tage erfolgender —, alsbaldiger Tod* Vaṃś. Bṛh. S. 2, S. 5, Z. 1 v. u. Bṛh. 28(26),1.

सद्योमांस n. *frisches Fleisch* Spr. (II) 6775.

सद्योमृत adj. *so eben verstorben* R. Gorr. 2,45,3.

सद्योयज्ञसंस्था f. *Absolvirung des Opfers an einem Tage* Śrāpv. Bṛ. 4,1.

सद्योवर्ष m. *Eintritt von Regen an demselben Tage* Vaṃś. Bṛh. S. 2, S. 6, Z. 21. 34,7. 47,22.

सद्योवर्षण n. dass. Verz. d. Oxf. H. 328,*b*,1. 2.

सद्योवृध् adj. *täglich sich ergötzend* ṚV. 3,31,13.

सद्योवृष्टि f. *Eintritt von Regen an demselben Tage* Kauś. 6,1. 9. Vaṃś. Bṛh. S. 28 in der Unterschr. Verz. d. B. H. 94 (65). 238,24.

सद्योव्रण m. *eine plötzlich bewirkte Wunde* Suśr. 2,17,6. 19,18. 24, 7. 16. 25,4. 6. Śiṅhās. Sāh. 1,7,56. सद्योव्रणा ये सकृमा भवन्त्यभिघातत: Viśvān. 5,26,1. Verz. d. Oxf. H. 314,*a*,6. 7.

सद्योक्त adj. *frisch verletzt* Suśr. 2,358,6. *frisch geschlachtet:* Fleisch Viśvān. 1,6,69.

सद्रत्न (सत् + रत्न) n. *ein ächter Edelstein, eine ächte Perle* Kathās. 26,45. 34,38. 44,79. 53,33. 59,76. 64,65. 109,84. Pañcat. 1,11,26. fg. 2,4,38. — Vgl. सन्मणि.

सद्रत्नमाला f. Titel einer Schrift Gild. Bibl. 315.

सद्रु P. 3,2,159 (oxyt.). Vop. 26,149. adj. *laufend* (vgl. द्रु) in der Etymologie von समुद्र AV. 15,7,1.

सद्वंश (सत् + वंश) m. 1) *schönes Rohr* Spr. (II) 6776. 7008. an beiden Stellen zugleich in Bed. 2). — 2) *ein edler Stamm, ein edles Geschlecht* ebend. und Pañcat. 2,5,13.

सद्वचस् (सत् + वचस्) n. *eine schöne Rede* ṚT. 6,29.

सद्वत् (von 1. सद्) in घस्र°, द्रु°, नृ°.

सद्वत् 1) adj. सत् d. h. *eine Form von* घस् *oder* भू *enthaltend, von einem dergleichen Verse begleitet* u. s. w. TS. 5,2,8,5. 3,2. Śat. Br. 13, 4,1,13. 2,10. Śāṅkh. Br. 1,1. Ça. 3,12,14. साध्यागो Āçv. Çr. 10,6,6. — 2) f. सद्वती N. pr. einer Tochter Pulastja's und Gattin Agni's VP. 83, N. 3. 5.

सद्वंड (2. स + दंड) adj. *im Streit liegend, rechtend* Spr. (II) 6287.

सद्वर्तक adj. Mārk. P. 131,6 wohl fehlerhaft für संवर्तक.

सद्वसथ m. *Dorf* Çabdārthak. bei Wilson fehlerhaft für संवसथ.

सद्वक् m. N. pr. eines Fürsten Hiouen-thsang 2,95. 98. Vie de Hiouen-thsang 186 (hier सद्वाक्).

सद्वार्त्ता (सत् + वा°) f. *eine gute Nachricht:* लोक: पृच्छति सद्वार्त्ताम् so v. a. *erkundigt sich nach dem Wohlbefinden* Spr. (II) 5867.

सद्विच्छेद (सत् + वि°) m. *Trennung von Guten* Pañcat. 1,7,11.

सद्विद्य (सत् + विद्या) adj. *mit wahrem Wissen ausgestattet, unterrichtet* Spr. (II) 6673. Rāja-Tar. 3,135. — Vgl. दुर्विद्य.

सद्विद्या (wie eben) f. *wahres Wissen* Spr. (II) 5881.

सद्विधान Pañcat. 2,5,18 fehlerhaft für संविधान.

सद्वृत्त (सत् + वृत्त) m. *ein schöner, kräftiger Baum* Spr. (II) 7300.

1. सद्वृत्त (सत् + वृत्त) n. 1) *eine schöne, runde Gestalt* Spr. (II) 334 (zugleich in der Bed. 2). — 2) *das Benehmen Guter, gutes Betragen, ein guter Wandel* MBh. 10,128 (st. dessen सतां वृत्तम् 127). °रक्षित R. Gorr. 1,6,13. °कुशल 2,23,24. Kir. Nitis. 5,30. Spr. (II) 334. 2360. 4547. 6228. Kathās. 31,227. °शालिन् Mārk. P. 20,41. °स्थ Kauṣ. Up. Einl. 2,6. — Vgl. सुवृत्त.

2. सद्वृत्त (wie eben) adj. (f. या) 1) *sich gut betragend, einen guten Wandel führend* MBh. 1,7361. R. 2,74,9 (76,14 Gorr.). 3,1,11. 5,26,30. Spr. (II) 1503. 2464. 6444. Mārk. P. 81,11. Verz. d. Oxf. H. 141,*a*,27. घ° R. 7,15,25. 73,16. Spr. (II) 6263. 7200. Bhāg. P. 4,14,11. 32. 9,14, 12. — 2) *schöne Metra enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 198,*b*, No. 468 (zugleich in der Bed. 1). — Vgl. सुवृत्त.

सद्वृत्ति (सत् + वृत्ति) f. *ein gutes Benehmen* Kir. Nitis. 11,57. °मार्ग Malamāsat. im ÇKDn. so ist wohl auch st. संवृत्ति zu lesen R. Gorr. 2, 109,31. Kathās. 56,115.

सद्वैद्य (सत् + वैद्य) m. *ein guter Arzt* Spr. (II) 6486.

सद्व्रत (सत् + व्रत) n. *ein guter Vorsatz:* मत्सु सद्व्रतदर्शनम् (सद्वृत्त°?) Kir. Nitis. 13,43.

सध् Grundform zu साध् und सिध्; vgl. सधि.

1. सध (von 2. स) adv. = सक् am Anfange einiger Composita.

2. सध n. oder सधा f. सधे du. v. l. für स्वधे *Himmel und Erde* Naigh. 3,30.

1. सधन (2. स + धन) n. *gemeinsame Habe* Çat. Br. 3,9,3,34 im Wortspiel.

2. सधन (wie eben) adj. (f. धा) 1) *nebst Reichthümern:* दद्दो च सधनां तस्मै नाम्ना रत्नावलीं सुताम् Kathās. 77,22. 88,32. — 2) *reich, wohlhabend* R. 2,39,28. Spr. (II) 2141. Vaṃś. Bṛh. S. 17,17. 68,68. Bṛh. 18,5.

सधनता (von 2. सधन) f. *das Reichsein* Spr. (II) 3364.

सधनित्व n. nom. abstr. zu सधनी. देवो मर्तस्य सधनित्वमाप ṚV. 4,1,9.

सधनी (सध्वनी Padap., vielmehr सधऽनी *den man mit sich führt*) adj. *Gefährte:* त्वयं वयं सधन्यस्त्वोतास्त्व प्रणीत्यश्याम वाजान् ṚV. 4,4,14. 6,51,3. सूर्या मासा मदनाय सधन्यौ 10,93,5.

सधनुष्क (2. स + 1. धनुस्) adj. *sammt Bogen* MBh. 2,2699. *mit einem Bogen versehen* Harīv. 10635.

सधनुस् adj. *mit einem Bogen versehen* Harīv. 10635 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 2,21,9. सधनुःपाणि Weber, Rāmat. Up. 295.

सधमाद् (1. सध + माद् von 1. मद्) m. 1) *Trinkgenosse, Festgenosse* ṚV. 1,121,15. इन्द्र स्तुत: सधमादस्तु शूर: 4,21,1. 6,37,1. देवानाम् 7,76,4. — 2) *Genosse, Gefährte* überh. nom. sg. सधमाँस् ṚV. 7,18,7. घा ता रुद्रा: सधमादो वहन्तु 3,43,6. 6,69,4. गोभि:, वीरै: 5,20,4. राया पुत्रा 7,43,5. आपो: VS. 10,7.

सधमाद् (1. सध + माद्) m. P. 6,3,96. 1) *Trinkgelage, Schmaus, Fest* Nir. 7,30. ṚV. 1,30,18. 31,8. इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व 7,22,3. 32,1. 8,2,3. 28. मघूनाम् 3,43,3. 4,23,1. 9,62,6. 10,35,10. 88,17. 96,12. AV. 6,62,2. VS. 19,44. सधमादं मद् *zechen, schmausen mit* (instr.): एमेनं ṚV. 10,14,10. तृतीये नाके AV. 6,122,4. 7,109,3. TBr. 3,1,4,5. सधमादं देवै: सोमं पिबति TS. 2,5,2,5. — 2) *Gemeinschaft, Genossenschaft:* रुद्रो मरुद्भिरा सधमादे युनक्ति ṚV. 3,35,4.

सधमाद्य (von सधमाद्) 1) adj. *a) convivalis, festlich; Festgenosse:* उक्था ṚV. 4,3,4. यापि 8,3,1. Vāraḥ. 6,5. इन्द्र भवा न: सधमाद्य: 8,86, 7. Soma 9,23,6. 10,104,4. — *b) socius:* रुद्रो ṚV. 8,13,27. 32,29. —

2) n. *Festgelage:* तया मदेत्तः सधमाद्येषु TBa. 1,4,8,2 richtig nach dem Metrum, während VS. 19,44 °मादेषु hat.

सधमित्र (1. सध + मित्र) m. N. pr. eines Mannes gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116 (v. l. साध°). — Vgl. साधमित्रक.

1. सधर्म (2. स + धर्म) m. *ein gleiches Wesen, dieselbe Eigenthümlichkeit:* गरुत्मन्नरलोक° adj. (Vishṇu) Bhāg. P. 5,4,4.

2. सधर्म (wie oben) adj. 1) *gerecht, tugendhaft:* Menschen Vaṃś. Bhn. S. 15,20. — 2) *dieselbe Eigenschaft —, dieselbe Eigenthümlichkeit habend, gleichartig, ähnlich:* वस्तु Sāh. D. 690, so v. a. *demselben Gesetz unterworfen:* Menschen Bhāg. P. 7,2,37. — Vgl. सधर्मन् und साधर्म्य.

सधर्मक adj. = 2. सधर्म 2): अयःसधर्मकं चित्तम् (indem es wie das Eisen angezogen wird) Sarvadarśanas. 162,10. 15.

सधर्मचारिणी adj. f. *gleichen Pflichten obliegend;* f. Bez. *der Gattin* Hall. 2,339. MBh. 13,6387. Prab. 97,4. 5. °योग Verz. d. Oxf. H. 30, b,3. — Vgl. सधर्मिणी und सहधर्मचारिणी.

सधर्मत्व (von 2. सधर्म oder von सधर्मन्) n. *Gleichartigkeit* Suçr. 1,166, 4. Spr. (II) 574.

सधर्मन् (2. स + धर्मन्) adj. Vop. 6,98. 1) *gleichen Pflichten obliegend* H. 1413. v. l. सधर्मिन्. — 2) *dieselbe Eigenschaft —, dieselbe Eigenthümlichkeit habend, gleichartig* H. 1461. mit gen.: प्रजानां तु सधर्माणः सर्वे ऽपद्यसत्रा: स्मृता: M. 10,41. न वशे कस्यचित्तिष्ठन्सधर्मा मातरिश्वन: MBh. 1,1609. am Ende eines comp.: मृगयति° 3,11082 (S. 572). Hariv. 17,53. Rāja-Tar. 4,127. 609. — Vgl. 2. सधर्म.

सधर्मिन् (von 2. स + धर्मन्) adj. = सधर्मन् 1) AK. 2,5,42. H. 1413, v. l. सधर्मिणी f. so v. a. *Gattin* H. 512. AK. 1,1,2,22; vgl. सहधर्मिणी. — 2) = सधर्मन् 2): काष्ठलोष्ट° R. Gorr. 4,60,24.

सधवा (nach falscher Etymologie im Gegensatz zu विधवा gebildet) f. *eine Frau, deren Mann am Leben ist,* Gaṇḍ. im ÇKDr. Prajñāçittrav. 12, b, 5. सधवस्त्री dass. ebend.; vgl. Wilson, Sel. Works 2,300. fgg.

सधवीर = सहवीर. Indra ṚV. 6,26,7.

1. सधस्तुति (1. सध + स्तु°) f. *gemeinsames Lob* ṚV. 1,17,9. सधस्तुतिमाजमीळ्हासो अग्मन् 4,44,6. 8,1,16. ये मे पञ्चाशतं दुडाश्वानां सधस्तुति *unter gemeinsamem Beifall* 5,18,5.

2. सधस्तुति (wie oben) adj. *gemeinsam gepriesen:* Indra, Agni ṚV. 8,38,4.

सधस्तुत्य n. *gemeinsamer Beifall* ṚV. 8,26,1.

सधस्थ (1. सध + स्था) P. 6,3,96. 1) n. *Stelle, Standort; Aufenthalt, Heimath; Raum überh.* Nir. 3,15. परमे व्योमन्, अवरे सधस्थे ṚV. 2,9, 3. 3,6,4. 1,101,8. 154,1. 2. परम 163,13. 8,11,7. 10,16,10. AV. 7,63,1. सोमं पिबतु दाशुषः स्वे सधस्थे 3,51,9. 8,68,9. *an ihrem Ort* d. h. *wo sie eben sind* 10,64,8. सोमः सधस्थमा सदत् 3,62,15. पृथिव्याः VS. 11,16. 20. अयाम् ṚV. 1,149,4. 2,4,3. दिवः 5,52,7. 64,5. पस्त्यासु सधस्थं विश्वे यजत्रिय देवाः 7,39,4. अधी नो अग्ने सदने सधस्थे 10,11,9. 32,4. 40,2. यं मे नाभिरिह मे सधस्थम् 61,19. AV. 2,2,1. 3,4,6. 18,3,8. VS. 8,19. 10,7. 11,18. 15,54. प्रिय 29,1. दिव्य AV. 7,82,6. 12,1,18. *auf der Stelle* ṚV. 5,29,6. यदेदयुक्त सप्त हरितः सधस्थात् *von ihrer Stelle losschirrt* 1,115,4. dagegen ist 7,60,3 der abl. mit वहन्ति zu verbinden, oder auch सधस्थे zu vermuthen. Drei *Stätten* ṚV. 3,56,5. 9,103,2. TS. 2, 4,11,2. त्रिसधस्थ adj. *an drei Stellen befindlich, dreifachen Stand habend:* बर्हिस् ṚV. 1,47,4. Agni 5,4,8. 6,8,7. 12,2. Soma 8,83,5. Vishṇu 1,156,5. Bṛhaspati 4,50,1. Sarasvatī 6,61,12. n. *dreifacher Ort:* अग्निं नरस्त्रिसधस्थे समीधिरे 5,11,2. 10,61,14. — 2) adj. *hier vorhanden, anwesend:* तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च ṚV. 3,12, 8. एतं सधस्थाः परि वो ददामि AV. 6,123,1. 2; vgl. VS. 18,59. 60.

सधि (Padap. ohne Avagraha; etwa von सध् = साध्, सिध्) m. 1) *Ziel* (einer Bewegung): यत्स्वधि सधिष्टवं (VS. Pait. 3,74. TS. Pait. 6,5) *den Wassern strebst du zu* ṚV. 8,43,9. = प्रवेशस्थान Sāj. = स्थान Mahīdh. — 2) *Feuer* Taiṭt. 1,1,66.

सैधिस् Uṇādis. 2,114. m. *Stier* Ujjvaladatta.

सधुर (2. स + धुर्) adj. *an derselben Deichsel gehend* d. h. *einträchtig* AV. 3,30,5.

सधूम (2. स + धूम) adj. *in Rauch gehüllt:* Feuer R. 1,56,19.

सधूमक adj. *rauchig, in Rauch (Dunst) gehüllt* Sūçr. 2,318,17. °कम् adv.: निःश्वसिति 1,38,15.

सधूमवर्ण m. (sc. जिह्वा) N. einer der sieben Zungen des Feuers Mahīdh. zu VS. 17,79. — Vgl. सधूम्रवर्ण und सुधूम्रवर्ण.

सधूम्र adj. so v. a. धूम्र *grau* Śāṅkhār. 6,23.

सधूम्रवर्ण f. = सधूमवर्ण Mān. P. 90,56.

सैधि m. nach Sāj. N. pr. eines Ṛshi ṚV. 5,44,10. Liedverfasser von 10,114 mit dem patron. Vairūpa.

सध्री (von सध्; vgl. सधि) adv. *einem Ziele (Mittelpuncte) zu:* सधी मा पत्ति परि विश्वतोः पयः ṚV. 2,13,2.

सधीचीन (von सध्यञ्) adj. 1) *nach einem Ziel gerichtet, gleiche Bahn einhaltend, vereint:* मनस् ṚV. 1,33,11. 4,24,6. 1,105,10. 108,3. 134, 2. पथ्या 3,55,15. पार्थिव 10,106,1. सक्थिभिः 112,3. AV. 3,30,5. — 2) *unterstützt, befördert durch* — (geht im comp. voran) Nīlak. 169. — 3) *zum Ziele führend, recht, richtig* (= समीचीन Comm.): Weg Bhāg. P. 6,1,17. 5,33. अयं हि सर्वकल्याणां सधीचीनो मतो मम 11,29,19. यमधीचीनमिव स्म करोति 5,9,5. सधीचीनेन *auf die rechte Weise* 4,29,37.

सध्यञ् (सधी + अञ्) 1) adj. = सकाशति P. 6,3,93 nebst Vārtt. Vop. 26,81. AK. 3,1,24. H. 444. a) *nach derselben Richtung gehend, nach einer Mitte gewandt, zusammenstrebend* (Gegens. विषञ्): सध्यञ्चो निषद्य ṚV. 4,4,12. 1,164,21. प्र सधीचीरकृत्वत (यवः) 3,31,16. 5,60,5. 6,36,3. 10,43,1. 111,10. AV. 6,88,3. वातं धूम इव सध्र्यङ्नामेवाञ्चेतु ते मनः *wie der Rauch mit dem Winde geht* AV. 6,89,2. 13,3,12. Pāraṇ. Bh. 16,11,4. Karç. 33. सधीची f. *Freundin, Gefährtin* H. 529. Bhatt. 6,7. — b) *zum Ziele führend, recht, richtig* Bhāg. P. 4,22,21. 11,11,48. — 2) सध्यक् adv. a) *vereint, beisammen* (Gegens. पृथक्): वे विद्या तविषी सध्र्यङ्मिता ṚV. 1,51,7. 108,3. यस्मात्रा ते सध्र्यक्सन्तु रातयः 132,2. प्र ज्ञीरयः सिस्रते सध्र्यक्पथक् 2,17,3. निमग्नासो न सध्र्यक् 8,32,23. 9, 29,4. — b) *auf die rechte Weise* Bhāg. P. 4,27,1. 5,5,13. — 3) n. so v. a. मनस् Bhāg. P. 2,7,18.

सधंस m. N. pr. eines Ṛshi mit dem patron. Kāṇva, Liedverfassers von ṚV. 8,8. So nach Sāj., der Wortlaut der Anukr. könnte auch heissen: *der vorangehende Ṛshi sammt Dhvaṃsa.*

1. सन्, सनति Dhātup. 13,21 (संभक्ति). सनोति 30,2 (दाने). सनवथ,

ससन्वन्, ससान, ससानिषम् ṚV. 6,74,22. सनिषत्, सनिषामदे, सनिषत्त, सनेषम्, सनेम (सनेम् TBa. 1,2,1,15 in der Ausg. wohl Fehler), सनिर्व्यत्त्; ससनिष्ट und ससात, ससनिष्टाम् und ससाथाम् P. 2,4,79, Schol. Vop. 8, 128. 13,1. सन्यात् und सायात् ebend. सन्यते und सायते P. 6,4,43. 1) act. med. *gewinnen, erwerben, als Geschenk empfangen* ṚV. 1,100,6. 18. 120,10. वयं सहस्रमृषिभिः सनेम 189,8. वाजम् 3,2,3. 4,17,9. 5,30, 14. 61,8. दिवोदासात् 6,47,23. 7,18,1. 100,1. 8,25,22. 46,23. 9,9,1. fgg. गामश्वं सनुयाम् 10,119,1. 36,9. 80,4. AV. 5,29,1. 16,6,1. Ait. Br. 2,3. 4,17 (wo ससन्वन् st. ससुन्वन् zu lesen ist). Çat. Br. 12,8,1,23. कामम् Pañcav. Br. 10,5,13. सनिम् Çiñkh. Ça. 16,11,5. mod.: वार्या ṚV. 3,11, 9. यूयं नश्चत्र सनिषत्त नो धियः *erfüllt werden sollen unsere Gebete* 9,79, 1. 5,12,4. partic. perf. act. ससवंस् (nach P. 7,2,69 समनिवंस् in der Verbindung सनिं ससनिवांसम्, sonst nach dem Schol. सेनिवंस्), ससनुषो ṚV. 3,34,8. राया वयं संसवांसो मदेम *besitzend, genossend* 4,42,10. 8, 6. 10,148,1. क्षेत्रा TBa. 3,6,12,1. 14,3. Vâlakh. 5,7. ससावान् oder ससन्वान् ist zu sprechen ṚV. 7,87,2. कलशं वाज्यक्रमीत्ससवान् *der gewonnen hat* 9,74,8. 10,29,2. partic. pass. सार्त P. 6,4,42. ṚV. 2,24, 10. धीभिः 8,4,20. 10,102,11. TBa. 2,3,9,9. *erworben:* Soma Çat. Br. 12,6,1,6. संवत्सर° TS. 2,2,6,4. — 2) *(für einen Andern erwerben) verschaffen, schenken:* यमिः सनोति वीर्याणि ṚV. 3,25,2. 13,3. सनेम सनंतः 7,52,1. अस्माभिः (dat.) सु तं सनुहि 8,70,8. Vâlakh. 1,10. ṚV. 9, 9,9. पूरुषम् 10,97,8. 2,6,8 ist dreimal सनो (सनः) für म नो (नः) zu lesen.

— desid. (सिसनिषति und) सिषासति P. 6,4,42. 7,2,49. 8,3,108, Vârtt. 4, Schol. Vop. 8,128. 19,8. als Bildung aus सा liesse sich सीषर्तो AV. 4,38,2 betrachten. 1) *erlangen —, gewinnen wollen, erhalten, gewinnen* ṚV. 1,17,8. 133,7. 2,32,1. 5,31,1. सिषासन्तो त्रिगोवासः स्याम 62,9. यूयः 6,73,3. वार्या 9,3,4. वाजिम् 10,102,12. ब्रह्माणि TS. 7,3,2,1. AV. 13,2,14. — 2) *gewähren —, verschaffen wollen, schenken* ṚV. 1, 123,4. यत्रये सिषासतं धियः 10,143,3. AV. 6,21,3.

— desid. vom caus. सिसानयिषति P. 8,3,108, Vârtt. 5, Schol.

— intens. सन्सन्यते und सासायते P. 6,4,42, Schol. *gewinnen:* ते यन्यामन्यां नर्यं सनिष्णत ṚV. 1,131,5.

— अभि, partic.: अभिषाता धनानि: *gewonnen, erobert* ṚV. 5,41,14.

— आ *gewinnen* AV. 14,2,70.

— प्र med. *gewinnen:* प्र सप्तयः प्र सनिषत्त नो धियः ṚV. 10,142,2.

— सम् *erlangen:* कामम् Çiñkh. Br. 7,1. — Vgl. संसनन.

2. सन् (= 1. सन्) adj. in गोषन्.

1. सन 1) adj. (f. धा) *alt* (Gegens. नव, नूतन, नव्य) ṚV. 1,95,10. 139,8. 174, 8. आप्य 2,29,3. सना यत्रं पुवतयः सयोनीः 3,1,6. 20. यूप 4,33,3. 8,45, 28. सनात्स्वतपसः so v. a. *lange anhaltend* (nach einer anderen Erklärung zu 2. सन) Bhâg. P. 2,7,5. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,34. eines der sieben geistigen Söhne Brahman's MBh. 12,13078. Harîv. 12437. चतुःसन so v. a. Sana, Sanaka, Sanatkumâra und Sanandana Bhâg. P. 2,7,5. Wilson, Sel. Works 1,35. — Vgl. सना, सन्यस्.

2. सन (von 1. सन्) adj. *gewinnend* u. s. w.; m. *das Uebergeben, Darbringen;* = समर्पण (Comm.) Bhâg. P. 2,7,5. — Vgl. यद्दे°, सुयण.

3. सन 1) m. und सनी f. *das Hinundherschlagen der Elephantenohren* Çârdar. im ÇKDa. — 2) m. *Bignonia suaveolens* Roxb. Çârdaś. im ÇKDa. Suçr. 2,139,20.

सनर्के (von 1. सन) 1) adj. *ehemalig, alt:* यर्यज्ञान: ṚV. 1,33,4. सनकात् *von jeher, von Alters her* 3,29,14. 10,69,12. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi, eines der 7 oder 4 geistigen Söhne Brahman's, MBh. 12,13078. Harîv. 12437. Colebr. Misc. Ess. 1,130. 144. Wilson, Sel. Works 1,31. 34. fg. 85. 140. 150. 163. 175. 240. Verz. d. B. H. No. 206. 366. 1143. fg. Weber, Rimat. Up. 306. 361. Varâh. Bṛh. S. 48,62. VP. 28. 38, N. 13. Bhâg. P. 3,12,4. 13,12. 4,8,1. 19,6. 29,42. 11,13,16. Pañcar. 1,3,42. 10,55. 60. Gaupar. zu Siddhânt. 1. 43. Schol. zu Çiñkh. Gṛhj. 4,10. °संहिता Verz. d. Oxf. H. 109,*b*,5. 6.

सनकानीक m. pl. N. pr. eines Volkes LIA. 2,953.

सनग m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,35. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,11. 19,*a*,29. — Vgl. सानग.

सनङ्गु m. oder f. Bez. *eines best. aus Leder bereiteten Gegenstandes;* davon सनङ्गव्य adj. (चर्मन्) P. 5,1,3, Vârtt. 1, Schol.

सनेङ् adj. = सन *alt:* सनङा सनीळे ṚV. 1,62,7. Nach Padap. und Sây. vom Folgenden.

सनाळ (1. सन + डा) adj. *längst vorhanden, alt:* सनडा चिद्या धीः ṚV. 3,39,3. 10,111,3.

सनत् 1) adv. gaṇa स्वरादि P. 1,1,37. = सना, सनात् Rimiçrama zu AK. 3,5,17 nach ÇKDa. H. 1531, Schol. — 2) m. ein N. Brahman's (wohl aus सनत्कुमार geschlossen) Taik. 1,1,25. H. ç. 62.

सनेता adv. = सनात् *von jeher*, mit der Negation *niemals* ṚV. 2, 3,6. यद्या धर्माणि सनता न मूडुषत् 3,3,1. Monatsberr. d. k. pr. Ak. d. Ww. 1868, S. 238.

सनत्कुमार m. *der ewige Knabe*, N. eines Ṛshi, der für einen geistigen Sohn Brahman's gilt, mit Skanda und Pradjumna identificirt und als Verfasser eines Upapurâṇa genannt wird, AK. 1,1,2,46. Kâṭhâ. Up. 7,1,1. 26,2 (सनात्कु° gedr.). MBh. 1,2786. 3146. 2,441. 3, 10697. 12700. fgg. 10,686. 12,13078. 13,916. Harîv. 43. 158. 893. fgg. 1335. 8039. 11811. 12437. R. 1,8,6. Varâh. Bṛh. S. 48,62. Gaupar. zu Siddhânt. 43. Ind. St. 1,18. 469. 2,35. Weber, Rimat. Up. 306. Kâṭhâs. 252. fg. Bhâg. P. 3,8,7. 12,4. 4,16,25. 6,8,15. 8,18,22. Pañcar. 1,2, 49. fgg. 10,61. 4,4,3. Verz. d. B. H. No. 452. 1143. 1198. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,5. 23,*b*, N. 5. 25,*b*,29. 46,*b*,28. 52,*a*,35. 65,*b*,7. 75,*b*,25. 80,*a*,3. 341,*a*,41. °कल्प 95,*b*,19. fg. °तन्त्र 20 (°कुमारीतन्त्र 104,*a*,29. fg.). Notices of Skt Mss. 126. °संहिता Verz. d. Oxf. H. 84,*b*,20. fg. 95,*b*,20. fg. 104,*a*,28. fg. 106,*b*, No. 161. 109,*b*,6. 279,*b*,26. 299,*b*,10. fg. Bei den Gaina ist Sanatkumâra der 4te Ćakravartin in Bhârata H. 693. — Vgl. वास्तु°.

सनत्कुमारज्ञ m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Gaina, einer Unterabtheilung der Kalpabhava, H. 93.

सनत्कुमारीय adj. von Sanatkumâra *verfasst;* n. *ein Werk von ihm* Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,21.

सनेल adj. (f. ई) = सनातन AV. 10,8,30.

सनत्सुजात (सनत् + सु°) adj. *ewig schön;* m. N. eines Ṛshi, eines der sieben geistigen Söhne Brahman's, MBh. 1,304. 5,1866. 12,13078.

Ind. St. 1,385. 471 (°वेदास). Verz. d. Oxf. H. 237,a,3. Verz. d. B. H. No. 406. Davon °सुजातीय adj. von ihm verfasst, u. ein Werk von ihm ebend. °विवरण 407.

सनद्रयि (सनस्, partic. von 1. सन् + रयि) adj. Besitz verleihend ṚV. 9,52,1.

सनद्वाज (सनस् + वाज) 1) adj. Beute —, Gewinn erwerbend oder verleihend ṚV. 3,62,23. 10,47,4. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Çuṅi Bhâg. P. 9,13,22.

सनन n. nom. act. von 1. सन् zur Erklärung von सनि Nir. 6,22. — Vgl. सु°.

सनन्द् m. = सनन्दन 1) Weber, Rigvv. Up. 306. Bhâg. P. 3,12,4. Paṅkar. 1,10,60. मनसो दमनं दम इति सनन्दवचनात् Kull. zu M. 6,92. — सनन्दी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41.

सनन्दक m. Harîv. 12437 fehlerhaft für सनन्दन, wie die neuere Ausg. liest.

सनन्दन (2. स + नन्द°) m. N. pr. 1) eines Ṛshi, eines geistigen Sohnes des Brahman, MBh. 12,13078. Harîv. 12437 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Gaudap. zu Sâṅkhjak. 1. 43. Vaṅîn. Bṛn. S. 48,62. Weber, Rigvv. Up. 306. Miṅk. P. 50,7. Bhâg. P. 3,21,1. 10,87,12. Verz. d. B. H. No. 206. 366. 1143. fg. Verz. d. Oxf. H. 52,a,24. 78,b,27. °संहिता 109,b,6. — 2) eines Schülers des Çaṁkarâkârja Verz. d. Oxf. H. 221,a, No. 538. 235,a,12. b,5. 257,b,17. 259,b,20. Wilson, Sel. Works 1,201.

सनपर्णी f. = घसनपर्णी Çabdar. im ÇKDr.

सनेम् (von 1. सन) adv. vor Alters: एषा सनाभ्यो सनमेव जज्ञे AV. 10,8,30.

सनेय adj. (f. या) = सन alt (Gegens. नव u. s. w.) ṚV. 3,20,4. 4,51,4. कृधिचिज्जायते सनेयासु नव्यः 10,4,5. रघु 39,4.

सनेर (von 1. सन्) Gewinn, Beute: ऋविषोदाः सनेरस्य प्र यंसत् ṚV. 1,96,8.

सनव N. pr. einer Wüste Târan. 324.

सनेवित्त (सनम् + वित्त) adj. längst vorhanden, von jeher besessen: अघन् ṚV. 7,42,2. पात्र 10,112,6.

सनेश्रुत (सनम् + श्रुत) 1) adj. längst bekannt, altberühmt ṚV. 3,11,4. 32,4. 8,81,2. 10,23,3. — 2) m. N. pr. eines Mannes Âçv. Bâ. 7,34.

सनःश्रुत (सनम् + श्रुत) v. l.

सनःश्रुत s. सनश्रुत 2).

सनस् adv. = सना in सनःश्रुत, सनोजा.

सनसय m. N. pr. eines Lehrers Schiefner, Lebensb. 238(28). vielleicht ist शणाशय gemeint.

सना (von 1. सन) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. von jeher AK. 3,5,17. H. 1331. Hall. 5,101. सनो पुराणमध्येम्याहात् ṚV. 3,54,9. सना ता ते इन्द्र भोजनानि 7,19,6. यावत्तो वेव सनाये देवाः Çat. Bâ. 2,3,4,16. 8,7,4,9. Entstellt ist तिरो विश्वा यङ्कं सना ṚV. 5,75,2; etwa यङ्कं-सनाः (vgl. 8,50,9) zu lesen.

सनाजु adj. यजु पत्यूधा यङ्कृत्सनाजुवः ṚV. 1,141,5 für सनायुवः oder सनाजुरः; vgl. 1,95,10.

सनाजुर् (सना + जुर्) adj. altersschwach: त्रिधो पितरा सनाजुरा ṚV. 4,36,3.

सनात् adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. चादि zu 4,57. = सना von jeher, von Alters; stets, für immer Nir. 12,36. H. 1331, Schol. ṚV. 1,51,6. 53,2. 62,8. 10. 102,8. सनादेव न शीर्यते niemals 164,13. सनायुवो-नम् ewig jung 2,16,1. 27,1. 4,20,6. 56,6. 7,32,24. 56,5. सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि 8,11,10. 21,18. 25,2. 10,78,8. 87,19. Çâṅkh. Çr. 18,15,5.

सनातन (von सना) 1) adj. (f. ई) ewig, unvergänglich, beständig, dauernd AK. 3,2,22. H. 1432. an. 4,197. Med. n. 218. Hall. 1,125. AV. 10,8, 22. fg. Çat. Bâ. 6,4,4,17. 7,1,1,2. 28. 3,1,22. उपाख्यान Kâṭhop. 3,16. Sucr. 1,6,5. गुहा Maitrâjup. 6,24. मृति M. 3,284. त्रयं ब्रह्म 1,23. वेद-शास्त्र 12,99. ब्रह्मयोनि MBh. 14,1139. धर्म M. 7,98. 9,64. R. 2,30,38. R. Gorr. 2,16,33. 4,17,39. Kâm. Nîtis. 2,18. Spr. (II) 6732. 7470. 7557. Bhâg. P. 3,16,18. Vet. in LA. (III) 27,5. पक्ष M. 1,22. Spr. (II) 6715. वर्त्मन् 1107. R. 5,11,22. Kâm. Nîtis. 3,37. Bhâg. P. 4,2,31. विधि M. 9, 325. 10,7. वृत्ति MBh. 3,12783. Spr. (II) 206. कार्य 1448. स्थिति MBh. 3,10581. संकल्प 13,4025. चतुस् M. 12,94. घस्र MBh. 3,11986. 7,2838. लोका: Spr. (II) 2099. ज्रम्भवत्त MBh. 6,278. कुलवंश R. Gorr. 2,119, 34. कुमार MBh. 5,1566. पृथिव्या निर्देश: R. 1,41,4. यौवराज्य 2,26,26. पुरुष Prân. 114,7. göttliche Wesen M. 1,7. 6,79. R. 1,41,25. 5,1,54. Paṅkar. 2,3,39. 4,6. 4,1,17. fem. °नी Bhâg. P. 2,2,32. superl. सनातनतम MBh. 6,778. 13,4020. — 2) m. a) Bez. Brahman's H. an. Vishṇu's Taik. 1,1,30. H. 216. H. an. Med. Hall. 1,25. Verz. d. Oxf. H. 190,b,11. Bhatt. 1, 1. Çiva's H. an. Med. — b) = पितृणामतिथि: H. an. = पितृतिथ्यत्तर Med. — c) N. pr. α) eines Ṛshi (eines geistigen Sohnes des Brahman im Epos und später) TS. 4,3,2,1. Çat. Bâ. 14,5,2,22. 7,2,26. MBh. 2,111. 12, 13078. Harîv. 12437. Colebr. Misc. Ess. 1,144. Weber, Rigvv. Up. 306. Vaṅîn. Bṛn. S. 48,62. Verz. d. B. H. No. 206. 366. 1143. fg. Gaudap. zu Sâṅkhjak. 1. 43. Bhâg. P. 3,12,4. 10,87,5. Paṅkar. 1,10,60. — β) eines Fürsten Târan. 230. eines Autors Hall 19. 144. Wilson, Sel. Works 1, 154. 158. 167. fg. — 3) f. ई Bez. der Durgâ (Verz. d. Oxf. H. 25,a,35), der Lakshmi und der Sarasvatî Çabdar. im ÇKDr.

सनातनशर्मन् m. N. pr. eines Scholiasten des Meghadûta Verz. d. Oxf. H. 125,b, No. 218.

सनात्कुमार s. u. सनत्कुमार.

सनाथ (2. स + नाथ) adj. (f. घा) 1) einen Schutz habend an (instr.), sicher aufgehoben bei: त्वया नाथेन वैदेही सनाथा R. 3,8,10. 63,24. 4,16,35. 7,104,15. Bhâg. P. 1,11,8. सनाथ: खलु संवृत्त: Vîkr. 80,16. Spr. (II) 4102. गोत्राम: सनाथान्कुरु Bhâg. P. 10,41,12. सनाथा f. eine Frau, deren Gatte lebt, Gaṇîn. im ÇKDr. — 2) besetzt —, verbunden —, versehen mit (instr. oder im comp. vorangehend): पतिवत्नीभि: कोतु-कागारम् Kathâs. 16,76. Râga-Tar. 1,209. 3,77. 4,335. अनुकूलेन तर्केण सनाथे सति साधने Sarvadarçanas. 120,9. वत्सनाथे गवाते Megh. 96. स्व-लितमेघायधिदीपिकासनाथा त्रियामा Ragh. 9,70. भक्तिशोभा° Kumâras. 7,94. केशपाशे कुसुमसनाथे Vîkr. 85. Spr. (II) 345. 3004. Kathâs. 18,138. Miṅk. P. 100,5. Paṅkat. 43,5. 50,7. 51,15. 76,18. 98,9. 146,22. 205,8. 215,3. 4. 256,10. सभा so v. a. eine stark besuchte Gesellschaft Comm. zu Çiṅk. 3,14. — Vgl. सानाथ्य.

सनाथता (von सनाथ) f. Gönnerschaft Spr. (II) 1823. 5938.

सनाधीकर् (सनाथ + 1. कर्) 1) Schutz verleihen, mit acc.: कतिपय-

राजं भवता °क्रियतामाश्रमः Çiç. 28,14. यत्रावस्थानेन वनमिदं °क्रियतां Hit. 38,13. fg. °कृततद्देशा सरस्वती Kathâs. 66,30. Paṇḍân. 4,3, 116. — 2) *einen Ort besetzen, einnehmen:* मृगेन्द्रैः °कृतान्तर्दरनिर्झरम् विन्ध्यम्) Varâh. Bṛh. S. 12,6.

सनाभ m. = सनाभि *ein leiblicher Verwandter (Bruder)* Bhâg. P. 5,5,20.

सनाभि (2. स + नाभि) adj. = समाननाभि P. 6,3,83. Vop. 6,97. *von einer Nabe —, von einem Nabel ausgehend:* 1) die Speichen ṚV. 10, 78,4. die Finger Naigh. 2,5. ṚV. 9,89,4. — 2) *leiblich verwandt;* m. *ein leiblicher Verwandter* AK. 2,6,1,33. H. 562. an. 3,460. Med. bh. 22. Hâlâs. 2,254. ṚV. 10,133,5. AV. 1,30,1. M. 5,72. Jâṭ. 1,158. भगिन्यः सनाभयः *leibliche Schwestern* M. 9,192. 212. m. *ein leiblicher Bruder* Bhâg. P. 10,83,9. — 3) *mit einem Nabel versehen* TS. 5,2,8,7. — 4) *gleichartig* (तुल्य) H. an. Med. — 5) = सहयुक्त Çârdûn. im ÇKDn. — ṚV. 1,164,13 ist स नाभिः zu lesen; das ungewöhnliche masc. mag zu der Aenderung Anlass gegeben haben.

सनाभ्य m. = सनाभि *ein leiblicher Verwandter* M. 5,84.

सनाम adj. (f. या) = सनामन् 1) MBh. 1,1636. सनामा 1867.

सनामक 1) adj. dass. Harîv. 1666. — 2) m. *Moringa pterygosperma Gaertn.* Çârdûn. im ÇKDn.

सनामन् (2. स + ना°) adj. 1) *gleichnamig* P. 6,3,85. Vop. 6,98. ṚV. Prât. 16,4. MBh. 1,1636. 3044. 9,3418. f. सनाम्नी 1,1047. 1058. 1853. Ind. St. 8,231. 235. — 2) *gleichartig* ṚV. 10,73,6.

सनाय् (von सन oder सना), partic. सनायंस् von *Alters her vorhanden* ṚV. 1,62,13.

सनायुं (von सनाय्) adj. *alt* ṚV. 1,62,11. vgl. auch unter सनात्यु.

सनारु m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,28. Verz. d. Oxf. H. 71,b,31.

1. सनि (von 1. सन्) Uṇâdis. 4,139. m. in den Brâhmaṇa f. *Gewinn, Empfang; Gabe* (= यज्ञोपवीत AK. 2,7,32. H. 388) Nir. 3,5. इमं सनिं ववेषु प्र वोचः ṚV. 1,27,4. तं संचत्ते सनयस्तं धनानि 100,13. 4,20,3. धनानाम् 6, 26,3. रदा पूषेव नः सनिम् 61,6. सनि, वाज, रयि 70,6. 1,30,16. 2,31,2. गोः 3,1,23. 30,21. सं पुंस्याव सनिभ्य या 3,51,11. सनि, मेधा 1,18,6. 2, 34,7. 3,5,27. VS. 5,7. f. AV. 19,31,14. VS. 8,54. यो दिशं सनिमेष्यन्स्यात् *auf Bettel gehen* TBr. 3,3,9,9. TS. 2,2,6,4. 1,2,8,2. 6,44. 2,1, 6,3. यज्ञ°, वृष्टि°. पुरोवात° 4,4,6,1. 5,3,4,4. Çat. Br. 2,3,4,15. सनितारं सनीनाम् TBr. 3,1,4,7. काम° *Erfüllung bringend* Pâraṇ. Gṛ. 11,8,4. 23,3,2. सनये नो धियो धाः *erfülle* ṚV. 7,79,5. Concret *auf Gewinn ausgehend*, so etwa ṚV. 3,16,3. 24,28. 10,35,4. 40,8. Am Ende eines comp. als nom. ag. P. 3,2,27. — Vgl. यज्ञ°, यज्ञ°, यज्ञ°, आत्म°, ऊर्ज°, गो°, धन°, पशु°, पुरु°, प्रज्ञा°, लोक°, वाज°, वृष्टि°, शत°, सहस्र°, स्तनयित्नु°, हृद्°.

2. सनि f. *Weltgegend* Çârdûn. im ÇKDn.

सनिकाम adj. *nach Gewinn —, nach Gabe begierig* TS. 2,1,6,3.

सनितर्, seltener सनितृ (von 1. सन्) nom. ag. *gewinnend, verschaffend; gebend:* वाजस्य ṚV. 1,36,13. वाजम् 4,17,8. 5,33,2. धनानि 1,100,9. धनानाम् 5,42,7. यामेभिः, रथेभिः 1,100,10. धीभिः 4,37,6. तस्य वो स्याम सनितार आजेः 4,41,11. 7,37,5. 10,99,9. TS. 1,6,2,4. सनीनाम् TBr. 3,1,4,7. — Vgl. 1. सनुतर.

सनिति (wie oben) f. so v. a. साति. तोकस्य ṚV. 1,8,6.

सनितुनि m. neben, *ausser* mit vorangehendem acc.: इमा शफानां सनितुर्निधानौ *neben diesen Spuren der Hufe* ṚV. 1,163,5. चकार गर्भं सनितुर्निधानम् *neben dem Schooosse* (dem er entsprang) 3,31,2. नाकं पृष्टिं सनितुरस्य रायः (वेद) *ich verstehe die Gabe nicht ohne einen Herrn* d. h. *Geber* 5,12,3. Nir. 3,6. Nach Sây. überall gen. von सनितर्; dagegen vgl. 2. सनुतर् und im Zend hanare ohne mit abl.

सनित्र (von 1. सन्) n. *Gabe, Spende:* दिवः ṚV. 9,97,29.

सनित्य (wie oben) adj. *zu gewinnen:* वाज ṚV. 8,70,8.

सनित्वन् (wie oben) n. *Gewinn* oder *Gabe* ṚV. 10,36,9.

सनिद्र (2. स + निद्रा) adj. *schlafend:* ईषत्सनिद्र *leicht schlummernd* Kathâs. 71,120.

सनिन्द् (2. स + निन्दा) adj. *mit einem Tadel verbunden:* उपालम्भ AK. 1,1,8,15. H. 274. सनिन्दम् adv. Çiç. 83,13, v. l.

सनिमेष (2. स + नि°) adj. *blinzelnd, sich schliessend* (vom Auge) Kathâs. 28,61.

सनियम (2. स + नि°) adj. (f. या) *der eine gelegentliche Pflicht zu erfüllen sich verpflichtet hat* Vîsn. 37,7. Kir. 5,40.

सनिर्वेद (2. स + नि°) adj. *verzweifelt, kleinmüthig;* °वेदम् adv. Kathâs. 32,64. Daçak. 59,13.

सनिःश्वासम् (von 2. स + निःश्वास) adv. *unter Seufzern* Çiç. 41,11. 57,16. 23. सनिश्वासम् Mṛicch. 150,3 (v. l. सनिः°). Çiç. Cu. 65,5.

सनिष्ठ (von 1. सन्, superl. zu सनीयस्) adj. *am meisten gewinnend* ṚV. 8,81,15.

सनिष्यद् (vom intens. von स्यन्द्) adj. (f. या) *fliessend, rinnend:* धाराः AV. 19,2,1.

सनिष्यु (von 1. सन्) adj. *zu gewinnen —, zu haben begierig, habelustig* ṚV. 1,56,1. 4,55,6. स्वः 1,131,2. 7,94,6. 8,6,44. 27,3. °मार्ग 2,8,5. — Vgl. सनीष्यंस.

सनिस्रंस् (vom intens. von स्रंस्) adj. *brechend, gebrechlich* AV. 5,6,4. °मार्ग 2,8,5. — Vgl. सनीस्रंस.

सनी f. = 1. सनि Bhar. zu AK. nach ÇKDn.; vgl. auch unter 3. सन.

सनीड (2. स + नीड) adj. *in einem Nest beisammen, aus einem Nest stammend* so v. a. *verschwistert, verbündet, nahe vereint* ṚV. 1,34,9. 62,7. 10. 69,6. ज्ञानयः 71,1. die Marut 100,5. 165,1. 7,36,1. Finger 9, 72,2. 10,31,6. 99,2. समग्निमिन्धे वृक्व: सनीडाः 10,101,1. 123,3. संगत्य पितृः सनीडाः AV. 18,2,26. उप मा यन्तु मनवः सनीडाः Kâṭh. Çr. 13,2,19. *nahe, benachbart* AK. 3,2,16. H. 1450. Hâlâs. 4,7. am Ende eines comp. (das vorangehende Wort behält seinen Ton) P. 6,2,33. मद्र° Schol. तत्सनीडे *in seiner Nähe* Bhaṭṭ. 5,31.

सनीप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,371 nach der Lesart der ed. Bomb. सनीय ed. Calc. (VP. 193).

सनीय s. सनीप.

सनीयंस् (von 1. सन्, compar. zu सनिष्ठ) adj. *viel gewinnend, — verschaffend* TS. 3,5,8,3.

सनीस्रंस (vom intens. von स्रंस्) adj. P. 2,4,74, Schol. — Vgl. सनिस्रंस.

सनु in 2. सनुतर् fgg.

सनुकम् adv. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. सनुतर् (von 1. सन्) nom. ag. = सनितर् *gewinnend, verschaffend;*

nur im fem. सनुत्री. धिषे: ṚV. 10,7,4. उर्वन्ती वाडी वृक्ती सनुत्री 1,123, 2. — Vgl. तरुतर्, वहतर् u. s. w.

2. सनुतर् (von सनु, adv. VS. Pair. 1,165. AV. Pair. 2,48. TS. Pair. 8,8. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. चादि zu 4,57. unter den निपातास्संज्ञितनामधेयानि Naigh. 3,28. weg, abseits ṚV. 9,98,11. सनुतरा च etwa fern und nah, dort und hier 6,51,2. mit यु fernhalten, vertreiben 1,92,11. 2,29,2. 6, 57,3. धाराच्चिद्वेषः सनुतर्युयोतु 47,13. 10,77,6. 100,9. 102,3. mit धा dass.: धारे देवेभिस सनुतर्दधाम 5,45,5. 8,86,3. mit abl.: तेत्रोदपश्यं सनुतर्धरन्तम् 5,2,4. — Vgl. सनितुम् und ἄνευ, ἄνευθε.

सनुतर (von सनु, adj. etwa verstohlen, unvermerkt: पः सनुतरुर्यति गोषु गच्छन् ṚV. 4,38,4. = संभक्तर Sây.

सनुत्य (von सनु) adj. P. 4,4,114 (von सनुत abgeleitet). 6,3,84, Schol. (abseits liegend) verstohlen, unvermerkt ṚV. 2,30,9. यो नः सनुत्यो अभिदासत् 6,5,4. त्यत्नम् 62,10.

सनुत्री s. 1. सनुतर्.

सनूदपर्वत (!) m. N. pr. eines Berges im Gebirge Pâripâtra Harîv. 7549. die neuere Ausg. liest aber स तस्थौ पर्वतश्रेष्ठे st. सनूदपर्वते तस्थौ.

1. सनेमि (von 1. सन; im Padap. ohne Avagraha) adv. von jeher, allezeit, olim; = पुराण Naigh. 3,27. = तिप्रम् Nir. 12,14. सनेमि मध्यं दोषाम् ṚV. 1,62,9. 169,2. 4,10,7. सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः 7,38,7. 56,9. 9,104,6. 105,6. भुवनानि सनेमि रात्रा परि याति VS. 9,25.

2. सनेमि (सऽनेमि Padap.) adj. mit einer Felge versehen: सनेमि चक्रमजरं वि वावृते ṚV. 1,164,14. besser zu 1. सनेमि.

सनेरु adj. von unbekannter Bed. ṚV. 10,106,8.

सनोजा (सनस् + जा) adj. von je her seiend, ewig: सखा ṚV. 10,26,8.

सत् (partic. von 1. अस्, 1) adj. (f. सती) seiend; daseiend, vorhanden, anwesend Naigh. 3,29. Nir. 3,20. = विद्यमान AK. 3,4,24,86. H. an. 1,9. Med. t. 68. दूरादिहेव सती ṚV. 8,5,1. पात्रेव भिन्दत्सत ऐति रत्नम् 7,104,21. सतः प्राणाविषुर्मतिम् eines jeden anwesenden 9,21,7. 10,53,10. सतो मे wenn ich da war, wo ich war 27,4. पतिं सत्तं पुत्रं ब्रूयात् Çat. Br. 3,1,3,5. यो ऽहमस्मि स मन्यत्रे Kâṭy. Çr. 4,7,18. अन्यस्य सती einem Andern gehörig Çat. Br. 2,5,2,20. 4,5,5,4. TS. 2,5,2,7. सतः सतः प्रतिमानम् ṚV. 3,31,8. सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम् Chând. Up. 6,2,1. तद्वै खल्वाहुरसदेवेदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं तस्मादसतः सज्जायेत ebend. Taitt. Up. 2,6. उदाराणां तु सत्कर्म दैवतम् Spr. (II) 2975. सदप्यसत् 4201. सतो ऽपि गुणाः vorhanden 6795. fg. 1678. भार्या मित्रं गृहे सतः des im Hause Weilenden 7027. विज्ञने ऽपि वने सतो R. 2,60, 19. सत्कल्पवृते वने in dem sich Kalpa-Bäume befinden Çiç. 171. विभवे सति M. 11,33. Śiśup. 66. Râgat. 1,94. Spr. (II) 6700. fg. राज्ञ्यसति 5759. प्रकृते सति M. 8,286. परेणापकृते सति MBh. 1,5985. 3, 2366. तया कृते सति Hit. 21,9. 43,17. यया सतः पुरुषात्केशलोमानि तथासतात्संभवतीह्य विद्यम् so v. a. lebend Mund. Up. 1,1,7. न सदिदं भगत् so v. a. von Bestand Spr. (II) 5249. als partic. des copulativen अस् zur Hervorhebung eines Attributs: उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत् ṚV. 6, 47,10. प्रियः सन् 7,68,5. तस्मात्पुरुषस्य पर्वाणि शिथिराणि सन्ति दृढानि ब्रह्मणा हि तानि धृतानि Ait. Br. 3,31. M. 5,145. पृष्टः सन्नाभिनन्दति 8,54. 216. 9,90. 173. MBh. 1,5391. माता सती पाण्डवानाम् als Mutter 5894. 6197. 3, 2385. 2425. 2691. 2711. Mahân. 27. Râgat. 1,9. 2,61. Kumâras. 4,1. 5,1. Çiç. 76. 146. 55,19. Spr. (II) 2850. Kathâs. 4,82. 18,100. 210. Hit. 16,11. 34,18. LA. (III) 9,2. 16,3. 19,1. 5. 28,12. 35, 17. नाम्नि वापि कृते सति M. 5,70. धार्मिके सति राजनि 11,11. Mahân. 60. Çiç. in LA. (III) 37,5. अगुणस्य सतः Śiśupâl. 60. रसेन गलता सता (Conj.) Spr. (II) 7209. mit einem adv.: अन्यथा सत्तम् 5619. fg. नानापि सति दैवते Âçv. Gṛhy. 1,3,10. — b) acht, recht, wirklich; gut; = सत्य, साधु, प्रशस्त (शस्त), अभ्यर्हित (अर्चित, मान्य) AK. H. an. Med. विप्रो विप्रेण सम्मता ṚV. 8,43,14. वचस् 7,104,12. सा हि श्रीरमृता सताम् (oder zu 2) a) TBr. 1,2,8,26. तन्न सत् das ist nicht recht Kathâs. 46, 185. Bhâg. P. 8,9,29. चेष्टा eine gute Handlung Spr. (II) 6182. मति Bhâg. P. 2,4,1. गिर् 3,6,26. अपत्य Çiç. 188. प्रजा: so v. a. rechtschaffen M. 8,68. MBh. 3,16702. mit seinem nom. componirt (vgl. सच्छास्त्र u. s. w.) P. 2,1,61. सदुपाधयः Daśak. 138. als obj. am Anfange eines comp.: सदधीयान, सदादिन्, सद्व्याधिन्, सद्व्याधिन् Maitrâjan. 6,30. — 2) m. pl. a) die Lebenden, Wesen: वृषभः सतामसि ṚV. 2,1,3. 10,1. विश्वेषां वः सतां श्रेष्ठतमा 6,67,1. 8,23,16. — b) gute, edle, vorzügliche, gebildete, kluge Menschen AK. 2,7,1. H. 342. Med. Halây. 2,177. M. 2, 1. 217. 3,147. 165. 4,178. 7,93. MBh. 5,5997. R. 1,1,17. 2,25,2. 30,30. 72,15. 75,34. 94,26. 102,3. Mahân. 112. Râgat. 1,10. 2,16. 3,41. 12,9. Çiç. 21. 111. 156. Spr. (II) 433. 756. 1281. 1705. 2069. 2314. 2485. 2578. 2589. 2996. 3434. 3782. 3800. 3909. 3941. 4060. 4141. 4349. 5277. 5423. 5714. 6091. 6693. fgg. 6780. 6782. fg. 6794. 7461. Vaśiṣ. Bṛh. S. 3,14. 12,7. Kathâs. 18,118. Râga-Tar. 3,305. 5,79. Daçak. 76,3. LA. (III) 1,15. 30,3. 57,12. Taitt. 1,1,1. am Anfange eines comp.: सद्विगर्हित M. 3,46. 10,84. 11,52. Spr. (II) 413. सन्तुष्ट R. 2,75,34. सद्दत्तस्त Râgat. 2,69. सत्संनिधान Spr. (II) 1619. सद्वृत्तिन Bhâg. P. 2,4,18. सदनुग्रह 3,17,31. अ° schlechte, unbedeutende Menschen Spr. (II) 747. 754. 756. 2069. 7461. 7462 (sg.). Bhâg. P. 2,4,13. 3,17,31. असत्संपर्क Spr. (II) 7403. असद्राधाः Bhâg. P. 3,32,19. — 3) superl. सत्तम der beste, erste, oberste unter (gen. oder im comp. vorangehend) AK. 3,2,8. H. 1439. an. 3,474 (= श्रेष्ठ, पूज्य, साधिष्ठ). Med. m. 56 (= पूज्यतम, साधीयस्, उत्तम). Halây. 4,5. Ait. Br. 2,36. 7,16. Çat. Br. 3,5,4,23. Çâṅkh. Çr. 16,22,27. Chând. Up. 2,9,6. MBh. 1,6195. 3,14335. Bhâg. P. 1,12, 18. LA. (III) 49,3. द्विज° M. 1,33. कुरु° MBh. 1,5977. 6194. 2,261. 3, 2159. 11947. 5,6082. 7064. 7194. 7283. 7338. R. 1,2,26. 7,1. 8,4. 32,4. 2,59,1. Kathâs. 46,216. Râga-Tar. 3,459. Bhâg. P. 1,13,38. मृग° R. 3,49,25. वाजि° Kathâs. 18,102. Vgl. विश्वसत्तम. — 4) f. सती a) ein gutes, tugendhaftes, treues Weib AK. 2,6,4,6. 26 (vgl. P. 4,1,127, Schol.). Taitt. 3,3,193. H. 528. an. 2,205. Med. t. 68. Halây. 2,240. R. 1,1,51. Kumâras. 1,21. Çiç. 114. Spr. (II) 3865. 6296. 6703. fg. 7160. 7520. Vaśiṣ. Bṛh. 24,4. Kathâs. 3,14 (°वृत्त). 13,160. 29,114 (°धर्म). Bhâg. P. 3,24,22. 5,15,3. Pañcat. 2,1,17 (°सत्यवतीसुत). Verz. d. Oxf. H. 123,a,40. Çiç. in LA. (III) 34,21. Wilson, Sel. Works 1,182. 2,60. 293. fgg. Gattin überh.: द्विज° Bhâg. P. 5,9,7. Weibchen: कृष्णसार° 8,3. असती ein schlechtes, untreues Weib Spr. (II) 748. 752. compar. सतीतरा, सतितरा und सत्तरा Vop. 7,19. — b) eine best. wohlriechende Erdart H. 1055. — c) N. zweier Metra: α) 4 Mal ⏑⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,138 (IV,4); vgl. सति 2). — β) a. b. – – ⏑ – – ⏑ ⏑ – – ⏑ – –; c. d.

— Journ. of the Am. Or. S. 6,514. — *d*) N. pr. α) der Gattin Viçvâmitra's Einschiebung nach ṚV. 10,85. — β) einer Tochter Daksha's und Gattin Bhava's (Çiva's), = दुर्गा u. s. w. Taitt. 1,1,51. 3,3,193. H. 204. H. an. Meo. Verz. d. Oxf. H. 184,a,13. Kumâras. 1,21. VP. 1,7,28. 8,12. fgg. Mânk. P. 30,22. Bhâg. P. 3,14,35. 4, 1,64. 2,1. fgg. 8,7,36. Verz. d. Oxf. H. 25,a,33. 27,a,5. 45,b,8. fgg. 50,a,41. 63,b,35. 71,b,47. 101,b,8. 138,b,20. Notices of Skt Mss. 208. — γ) einer Gattin des Aṅgiras Bhâg. P. 6,6,19. — *δ*) verschiedener Frauen aus der Neuzeit Verz. d. Oxf. H. 164,b,1 v. u. (°देवी). Hall 2. 74. — Vgl. सत्यसती und सती. — 3) n. *a*) *das Seiende, Wirkliche, ein reales Ding; die reale Welt:* नासदासीन्नो सदासीत् ṚV. 10,129,1. 5,7. विश्वानि सात्त्यर्यस्तु मुक्ता 2,28,1. सतो यस्य राज्ञो *dieser Welt* 7,87,6. Çat. Br. 14,4,1,30. सतः सञ्जायते Sarvadarçanas. 149,18. नापि सतो ऽसञ्जायते 21. सदसच्च M. 12,118. Siṅhâs. 9. Bhâg. P. 2,7,50. 3,26, 9. सत्संप्रयोगे Gaim. 1,4. सदुद्भवस्थाननिरोधलीलया Bhâg. P. 2,4,12. 3, 11,1. 2. 26,46 (= आकाशादीनि Comm.). — *b*) *etwas Gutes, — Erspriessliches, Vortheil:* सदस्य मदे सदसस्य पीताविन्द्रः सदस्य सख्ये चकार । रणा वा ये नियदि मत्ते अस्य पुरा विविक्रे मरुद नूर्तनाभः ॥ ṚV. 6,27,2. सदासच्च *Gutes und Böses* Spr. (II) 1677. सत्कृत्वा, असत्कृत्वा ebend. धर्मारण्यचरेषु केनचिदुत प्राणिघमन्वेष्टितम् Çiç. 106. — *c*) als partic. praes. Bez. *der Endungen des partic. praes. act. und med.* P. 3,2,127. 3,14. 2,2,11. — *d*) *Wasser* Naigh. 1,12. — 6) सत् adv. = सु *schön:* सद्गमित Çaṭa. 2,659. — 7) सत्कर् Vop. 8,21. *a*) *in die gehörige Ordnung bringen, zurechtlegen, zurechtmachen, aufputzen, schmücken:* सत्कृत्य निक्तिं सर्वमेतदाचार्यसन्निधौ । स वनायुधमादाय त्रिप्रमाणत्र R. 2, 31,31. 38. 70,19. भिक्षामप्युदपात्रं वा सत्कृत्य M. 3,96. अन्नं चैव यथाशक्ति सत्कृत्य 99. 113. 264. Jâṭâk. 1,31. MBu. 5,180. गामर्घ्यं च सुसत्कृतम् 7504. यद्दानम् — दीयते । असत्कृतमवज्ञातम् Spr. (II) 199. तस्मात्संज्ञनयेत्कोशं सत्कृत्य परिपालयेत् *so v. a. zusammenbringen* MBu. 12,4816. दद्यो स दश धर्माय कण्व्यपाय त्रयोदश । सोमाय राज्ञे सत्कृत्य प्रीतात्मा सप्तविंशतिम् ॥ *mit Schmuck und Anderem versehend* M. 9,139. AK. 3, 1,14. H. 475. कच्चित्तं नागमो ऽगम्यां गम्यां वासत्कृतां स्त्रियम् Bhâg. P. 1,14,42. स्वां सत्कर्तुं (= पवित्रीकर्तुम् Comm.) गिरम् 3,6,36. वंशो राजर्षिसत्कृतः *geschmückt durch* VP. 4,21,1; vgl. Mus, ST. 1,54, N. 41. याः क्रियाः प्रचरिष्यन्ति प्रवृत्तिफलसत्कृताः *so v. a. gesegnet mit* MBu. 12,12070. — *b*) *Jmd* (acc.) *Ehre bezeigen*, insbes. *einen Ankömmling freundlich aufnehmen, ehrenvoll bewirthen* P. 1,4,63 (आदरे). °करिष्यति R. 3,53,25. °करोते Spr. (II) 4278. तस्मादेनं सत्क्रियया सत्करिष्ये ऽतिथिमागतम् R. 3,18,32. °कृत्य Jâṭâk. 1,108. MBu. 3,2881. 3064. 5,7501. R. 1,4,28. 2,70,20. 104,29. R. Gorr. 1,46,5. 3,9,25. Çiç. 61,12. Spr. (II) 2016. Kathâs. 22,74. 24,64. Râja-Tar. 5,32. पाद्यौघभोजनशयनादिभिः Pañkat. 35,25. पुष्पैः सत्कृत्य वक्ष्यिम् R. 4,4,17. सत्कृत *geehrt, ehrenvoll behandelt, — bewirthet* MBu. 1,6114. 3,2306. 2755. 2882. 2918. सद्भिः 12,4811. R. 3,2,6. Spr. (II) 782. AK. 2,6,4,19. Bhâg. P. 1,1,5. 4,2,7. सत्कारेण R. 3,15,22. वस्त्रादिभिः Pañkat. 26,21. Vaṇiç. Bḍn. S. 33,21 (*so v. a. göttlich verehrt*). लोक° R. 2,100,22. 28 (110,22 Gorr.). नृप° Vaṇiç. Bḍn. S. 18,11. स्व° MBu. 3,2755. 2918. विस्तारशय्यासनभोजनेषु Bhâg. 11,42. सु° R. 1,8,19. 53,7. 2,107,1. सत्कृत n. *ehrenvoller Empfang:* गुरूणामासनं देयमभ्युत्थानादिसत्कृतम् Mânk. P. 34,33. *Jmd die letzte Ehre erweisen* (durch Verbrennung des Leichnams u. s. w.): पितॄन्नं सत्करिष्यामि R. 3,73,35. पितरम् — प्रेतकार्येषु सर्वेषु सत्करिष्यति 2,94,18. सत्कृतः 111,14. सर्वेषु प्रेतकार्येषु 15. सुसत्कृत 74,30. यति° R. Schl. 2,39,35. caus. *Jmd die letzte Ehre erweisen lassen* MBu. 1, 5867. — *c*) *Etwas in Ehren halten, eine hohe Meinung von Etwas haben:* राज्यं लोकसत्कृतम् R. 2,101,24 (110,19 Gorr.). प्रद्वेः — देवदानवसत्कृतैः 4,40,34. असत्कृत्य च तत्सर्वम् *nicht weiter beachtend* MBu. 13, 2766. — Vgl. सत्कार u. s. w. — 8) अभिसत्कर् *Jmd* (acc.) *Ehre bezeigen, einen Ankömmling ehrenvoll empfangen:* °कृत्य MBu. 2,2549. °कृत 1, 2358. 3,12713. महेन्द्रेण Harîv. 12510. R. 5,6,6. प्राभिसत्कृत MBu. 7, 6261. 15,570. — 9) प्रतिसत्कर् *Jmd* (acc.) *wieder Ehre bezeigen:* °कुर्वन् MBu. 5,3366. °कृत 3,14745. — Vgl. असत् und ब्रह्मसती.

सत्त m. 1) = संकृतल Çabdak. im ÇKDr. — 2) N. pr. eines Sohnes des Satja MBu. 13,2001. — Vgl. दुःसत्त.

संतत्त्रण (von 1. तत् mit सम्) n. *Verletzung:* वाक्संतत्तणैः *durch verletzende Reden* Daçak. 62,3. 4.

संतत adj. (Vop. 6,72) s. u. 1. तन् mit सम्. Hinzuzufügen wäre noch ununterbrochen von einem *anhaltenden* Fieber Karaka 8,1. Suçr. 2, 403,11. Wise 231. संततम् adv. (vgl. auch unter 1. तन् mit सम् 3) Hall. 4,13. ṚV. Prât. 15,10. Ait. Br. 2,19. Kâtj. Çr. 18,1,1. 3,1. गायति Lâṭj. 6,1,2. Spr. (II) 5083.

सैंतति (von 1. तत् mit सम्) 1) f. *a*) *ein ununterbrochener Fortgang, Dauer, Fortsetzung:* यज्ञस्य TS. 2,5,3,6. 3,2,1,2. अग्नेः TBr. 1,1,9,10. 2,3,1. Ait. Br. 1,11. 3,7. 5,2. 16. 6,17. अमुष्य लोकस्य 7,10. इक्ष्वाकुकुलस्य Raghu. 3,1. प्रजा° 14,32. जागरण° P. 3,2,110, Vârtt. 2. यज्ञ° Bhâg. P. 1,4,19. 4,7,17. संसार° Spr. (II) 2673. ज्ञान° Mâṇḍ. Up. 10 (Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,133). अर्च° Suçr. 1,9,1. धर्मकामार्थ° Mârk. P. 21, 76. संतोष° Harîv. Anth. 410, Çl. 3. संताप° Milatim. 14,17. विघ्न° Çaṅk. 14,220. वाक्यजनितात्मज्ञानस्मृति° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 180. रस° Sâh. D. 23,21. — *b*) *Zusammenhang der Dinge, Causalnexus* MBu. 1, 251 (= ब्रह्मादिः Nîlak.). Spr. (II) 3664. — *c*) *eine ununterbrochene Reihe, Menge* Spr. (II) 3898. मुक्ता° Kathâs. 18,47. पथिक° Taitt. 2,8, 29. मोघ° Kathâs. 27,11. जलसंततिम् । मुमुचुः *einen ununterbrochenen Wasserstrom* MBu. 1,8154. अम्बु° Kathâs. 11,51. अपचित्तन्याय° adj. *so v. a. Netz* Pañkat. 182,17 (Mârk. P. 74,14 ist wohl घमनिसंततं st. °संततौ zu lesen). घात्त° *eine dichte Finsterniss* Râja-Tar. 1,259. संक्रमाम् *eine Menge von Sünden* Kir. 5,17. = परंपराभाव und विस्तार H. an. 3,310. = पङ्क्ति H. an. Med. l. 168. — *d*) *Fortsetzung des Geschlechts, Nachkommenschaft* AK. 2,7,1. 3,4,7,34. H. 503, Schol. H. ç. 114. H. an. Med. Hall. 2,342. Weber, Ġjot. 110. M. 3,259. 11,5. पत्नीनां प्रजाः Jâṭâk. 2,39. एतेषां प्रसवो यश्च प्रसवस्य च संततेः MBu. 1,2161. Raghu. 1, 69. 3,30. 10,3. ed. Calc. 1,35. Çiç. 91,7. 12. Spr. (II) 921. 5709. Uttarar. 123,6 (166,8). Mârk. P. 109,35 (pl.). न लेभे तासु संततिम् Bhâg. P. 6,4,11. एक° *das einzige Kind* 14,51. तपोगर्वोद्धता कालेन संततिरभवत् Pañkat. 80,6. Hit. 67,9. धर्मार्जिता लक्ष्मीरासंतत्यनपायिनी Kathâs. 19, 50. अनन्य° adj. Râja-Tar. 3,83. कुलानि ससंततिकानि Kull. zu M. 3, 15. गोनर्दसंततिरजायत (गोनन्द° gedr.) तत्र शास्ता *das Geschlecht —, der*

Stamm des Gonarda *erlosch* Râǵa-Tar. 3,527. — *e) fortgesetztes Nachdenken* H. 84. Sarvadarçanas. 178,5. Prab. 50,11 (= चेतधारा [so ist zu lesen] Comm.). धी° dass. 48,13. — *f)* = संततिक्षेम Çat. Br. 9,4,3,13. — *g)* N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Kratu's Mâns. P. 50,23. fehlerhaft für संनति. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Alarka VP. 408. fg. Bhâg. P. 9,17,8. — Vgl. कुल°, तनु°, नि:°, वक्र° und संतान.

संततिमत् (von संतति) adj. *Nachkommenschaft habend* Mâns. P. 121,37.

संततिक्षेमें m. Bez. gewisser *Opfersprüche* TBr. 3,8,16,2. auch einfach संतति Çat. Br. 9,4,3,18.

संततेयु (von संतत) m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva VP. 447. Bhâg. P. 9,20,4. — Vgl. संनतेयु.

संतनि (von 1. तन् mit सम्) 1) adj. *fortsetzend, Dauer herstellend:* सूक्त Âçv. Gr. 5,16. Lâṭj. 1,7,15. 6,1,8. — 2) oxyt. m. oder f. *das Tönen, concentus, Musik:* शृण्वे यामेषु संतनि: ṚV. 5,73,7. प्रप्रतम् 9,69,2. पवमान: संतनिमेषि कृण्वन् 97,14. — 3) parox. m. oder f. N. eines Homa Çat. Br. 11,5,5,11. सवन° Kâṭj. Çr. 24,4,1. — 4) N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,242,a. Pañcav. Br. 13,5,9. 14,3,7. 9,27. Lâṭj. 6,1,1. 7,5,1.

संतनु m. N. pr. eines Knaben im Gefolge der Râdhâ Pañcar. 2,4,46.

संतपन (von 1. तप् mit सम्) n. *das Warmwerden* Kauç. 135.

संतमक (von तम् mit सम्) m. *eine best. Form von Asthma* Wise 318, 1. — Vgl. तमक und प्रतमक.

संतमस (von सम् + तमस्) n. P. 5,4,79. Vop. 6,79. *allgemeine Finsterniss, Finsterniss überh.* AK. 1,2,4,4. H. 146. Hall. 1,110. प्रातर्विभेद विश्वस्य कै: संतमस रवि: Kathâs. 87,18. 93,13. LA. (III) 86, 14 (pl.). Sarvadarçanas. 48,8. सान्द्रतम° Çiç. 9,22. रज:° *durch Staub bewirkt* Bhaṭṭ. 5,2. विद्योद्य° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Cl. 5. निमज्जयन्संतमसे पराशयम् Naish. 9,98.

संतरण (von 1. तर् mit सम्) 1) adj. *hinüber führend* (über eine Gefahr u. s. w.): वक्रि VS. 35,13. — 2) n. *das Hinübersetzen über, das Hinübergelangen über* (eig. und bildlich): गङ्गा° R. 2,52. 89 in den Unterschrr. दुर्ग° R. Gorr. 1,64,8. मृत्युव्यसनस्य° Kusum. 60,12. — Vgl. कलि°.

सन्तरम् (von सम्) adv. *mehr zusammen* u. s. w.: संतरं सं शिशाधि AV. 7,16,1. सन्तराम् dass.: संतरा पादकौ हर ṚV. 8,33,19. VS. 27,8 (संतरम् AV.). TS. 5,7,10,3. 5,2,8,7. Çat. Br. 3,4,3,2.

संतरुत्र (von 1. तर् mit सम्) adj. *durchhelfend, aussreichend:* रयिं ṚV. 2,1,19.

संतर्जन (von तर्ज् mit सम्) 1) adj. *drohend, scheltend* Kâraka 8,7. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2560 (vielleicht ist घतिसं° st. यत: सं° zu lesen). — 3) f. या *Drohung, Schmähung* MBh. 9,1318. neutr. dass. Kâm. Nitis. 17,8. unbestimmt ob f. oder n. Bhâg. P. 5,26,8. — Vgl. घति° in den Nachträgen.

संतर्दन (von तर्द् mit सम्) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛshṭaketu VP. 437. Bhâg. P. 9,24,37. 10,58,56.

संतर्पक (vom caus. von तर्प् mit सम्) adj. *labend, erquickend, stärkend* Bhâvapr. 2.

संतर्पण (wie eben) 1) adj. dass. Suçr. 1,159,16. 162,18. 165,8. 177,19. Vishn. 1,6,39. Uttarar. 17,10 (23,13) = Mâlatîm. 95,7. नाकसद्दाम् (राज्ञ्, वक्रि) Bhaṭṭ. 1,4. — 2) n. *a) ein labendes —, stärkendes Mittel:* पानि° Suçr. 2,94,14. इन्द्रियाणाम् 137,21. 139,1. 354,18. = द्राक्षादाडिमखर्जूरीकदलीशर्करालाजाचूर्णमधाज्यसंमिलितम् Râǵân. im ÇKDa. — *b) das Laben, Erquicken, Stärken:* घस्य (d. i. कृव्यवाकृतस्य) संतर्पणं कर्तुं युक्तमेभिर्गृहोत्तमै: R. 5,30,5.

संतर्पणीय (von संतर्पण) adj. *zum Labe —, Stärkungsmittein handelnd* Kâraka 1,28.

संतर्प्य (vom caus. von तर्प् mit सम्) adj. *zu laben, zu erquicken, zu erfreuen:* दत्तिणाभिर्विप्रा: MBh. 7,6566.

संताड्य (von 1. तड् mit सम्) adj. *zu schlagen:* संताड्या गाव: न तु पादेन MBh. 13,3437.

संतान (von 1. तन् mit सम्) m. n. (wie 1. मान, indem die Endsilbe das Sprachgefühl irre leitete) Taik. 3,3,12. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *ein ununterbrochener Fortgang, Fortsetzung, Continuität;* = संतति Taik. 3,3,268. H. an. 3,480. fg. Med. n. 146. Çârṅgadh. u. s. w. in Verz. d. Oxf. H. 187,a, No. 427. शब्दार्चिर्ज्वल° Suçr. 1,44,11. धर्म° Nir. 6,19. Lâṭj. 6,1,8. Dhâtup. 14,18. कुलस्य MBh. 1,1042. 4155. R. 1,11,2. लोक° MBh. 13,4149. Bhâg. P. 3,12,21. प्रसव° MBh. 3,3558. तप:° R. 5, 47,27. दोर्घशोक° Uttarar. ed. Cow. 50,9 (°संताप die ältere Ausg. 37, 9). °वाक्यानि दु:खानि 97,13 (76,2). स्वकर्म° Hit. I,201. कीर्ते: Kumâras. 6,69. स्फुरद्दैवविधाति° Prab. 81,5. चित्ता° 94,13 (pl.). घात्मविज्ञानतत्स्मृति° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 181. fg. zu Khând. Up. S. 8. Sarvadarçanas. 19,11. 14. 20. 24,13. 58,13. — 2) *eine ununterbrochene Reihe:* घपादं पदसंतानं गच्छम् Verz. d. Oxf. H. 199,a, 1. शलभ° R. 5,95,17 (pl.). सहित: Kumâras. 6,69. Çiç. 167 (pl.). भुवन° Verz. d. Oxf. H. 238, b, 8. — 3) *Verzweigung:* जालानि *ein netzartiger Ueberzug* Suçr. 2,311,6. — 4) *ein netzartiges Stück des Thieres* TS. 1,4,26,1. *Sehne, Band* 7,4,24, 1. — 5) *Herstellung des Zusammenhangs, Verbindung, Uebergang* (in der Recitation u. s. w.): पादैरवसायार्धचात्तै: संतान: Âçv. Çr. 5,14,16. 20,5. Çâṅkh. Çr. 1,1,25. 5,9,10. Taitt. Up. 1,2,1. — 6) *Fortsetzung des Geschlechts, Nachkommenschaft* AK. 2,7,1. Taik. 3,3,268. H. 503. H. ç. 114. H. an. Med. Çârṅgadh. u. s. w. a. a. O. °कर्मन् Nir. 3,4. °कर्तृ 6.6,6. कुलानि ससंतानानि M. 3,15. संतानस्य परिक्षये 9,69. प्रजनार्थं स्त्रिय: सृष्टा: संतानार्थं च मानवा: 96. MBh. 1,1036. 1515. 4031. 6190. 4,1141. R. Gorr. 1,11,2. Ragh. 1,34. 2,65. 18,52. Spr. (II) 4571. ब्रह्मसंताना: Brahman's *Kinder* Varâh. Bṛh. S. 11,25. स्वसंताननिर्विशेषम् *nicht anders als seine eigenen Kinder* Kathâs. 112,147. सुता° Râǵa-Tar. 3, 487. 5,245. Bhâg. P. 3,14,13. 4,1,46. Pañcat. 80,20. यस्ते दुष्कृतिनां कर्म संतानेनेव वर्धते Kathâs. 29,109. दुश्चित्रेक° adj. 77,24. neutr. MBh. 1,1526. 3051. 4032. 4170. 6760. 3,16631. 16836. 5,4482. 13,4144. 14, 2757. घात्म° so v. a. *Sohn* M. 3,185. °ज: सुत: desgl. Harîv. 4056. पुत्रा: °वर्धना: *pflanzen das Geschlecht fort* Jâǵ. 1,90. प्रबुद्धसंतानज *einem reinen Geschlecht entsprossen* Taik. 2,7,3. — 7) *ununterbrochener Gedankengang* Sarvadarçanas. 19,5. 16. fg. 23,7. 26,6. — 8) *ein auf Dauer berechnetes Bündniss, bei dem man dem Bundesgenossen seine Tochter zur Ehe giebt,* Kâm. Nitis. 9,2. Spr. (II) 6784. — 9) n. *eine best. mythische Waffe* MBh. 5,3491. — 10) m. N. *eines der fünf Prachtbäume*

der Götter AK. 1,1,2,46. Taik. 3,3,268. H. 179. H. an. Med. Halls. 1, 138. Çiçvata u. s. w. s. a. O. Hariv. 8241 (संतान die ältere Ausg.). 8243. 8411. Çatr. 1,40. — 11) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 7. — 12) pl. Bez. bestimmter Welten R. 7,110,19. — 13) N. pr. eines Sohnes eines der Rudra VP. 59. Mârk. P. 52,11. — Vgl. ज्ञान° (auch Sarvadarçanas. 116,19), तनु°, सांतानिक und संतति.

संतानक 1) m. *a*) = संतान 10) MBh. 3,14536. 5,3333. 13,3325. Hariv. 7016. 8243. Kumâras. 6,46. 7,3. Çiç. 6,67. Nigh. 40. Pañkat. 3,5,11. 7,39. °लता R. 5,17,3. — *b*) pl. = संतान 12) R. 7,110,18. st. dessen संतानिका: MBh. 15,708 (सांतानिका: ed. Bomb.) — 2) f. संतानिका *a*) *Spinngewebe* H. an. 4,39 (शत्तानिका gedr.). Med. k. 218. Hit. 234. Suçr. 1,65,15. — *b*) *Haut* (*Rahm*) *von Milch* u. s. w. Med. Hit. Suçr. 1,139, s. 9. 19. 180,3. 326,2. 2,471,20. — *c*) *eine best. Speise* Pâkaçâsanasvâmin im ÇKDr. (Nachtrag). — *d*) *Schwertklinge* Hit. — *e*) = क्षीरशुक्ल (?) H. an. — *f*) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2627. — Vgl. चीरसंतानिका.

संतानकमय adj. (f. ई) *aus den Blüthen des* Samtânaka *genannten Baumes bestehend:* वृष्टि Rag. 10,78.

संतानगणपति m. *eine Form* Ganeça's, *die wegen Nachkommenschaft verehrt wird*, Verz. d. Oxf. H. 249, *a*, N. 4. Wilson, Sel. Works 1,20.

संतानगोपाल m. *eine Form* Kṛshṇa's, *die wegen Nachkommenschaft verehrt wird*, Verz. d. B. H. No. 1103. 1322.

संतानवत् (von संतान) adj. *Nachkommenschaft habend* MBh. 12,5520.

संतानिक 1) adj. (f. ई) *vom* Sâmtâna *genannten Baume kommend:* माला R. 3,75,53. — 2) m. pl. Bez. bestimmter Welten MBh. 15, 708 (सां° ed. Bomb.; संतान und संतानक R.). — 3) n. प्रजापतेः सं° N. eines Sâman Ind. St. 3,224,*b*. — Die richtige Form wird überall सां° sein. Vgl. मत्स्य°.

संतानिन् (von संतान) m. *das Subject des ununterbrochenen Gedankenganges* Sarvadarçanas. 26,5.

संतापं (von 1. तप् mit सम्) m. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *das Heisswerden, Hitze, Gluth* AK. 1,1,2,33. H. 1102. Çat. Br. 12,5,2,3. यतस्य संतापमुपानक्ति so v. a. *das was heiss ist* 3,5,2,13. °ज्ञ Kâç. Çr. 25,7,13. MBh. 1,1126. शस्त्र° 6,3773. यशक्रुवन्धारयितुं कोपं संतापमागतः R. 1,64,14 (66,17 Gorr.). 2,92,6. Suçr. 1,49,20. 128,10. 156,9 (गात्र°). 237,11. 313,4. Spr. (II) 2032. 2683. 4206. 4368 (zugleich *Schmerz*). 5175. 5278. Uttarar. 104, 12 (141,10). Milatiu. 17, 9. Varân. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 3 v. u. Kathâs. 11,57 (zugleich *Schmerz*). ज्वर° 13,78. — 2) *Schmerz, Kummer, Reue:* मनसः Vikr. 55,20. चित्त° Varân. Bṛh. S. 87, 45. हृदय° Bhâg. P. 5,8,12. संतापः सुमहानासीत्सुराणां वासवस्य R. 1, 63,26. 2,26,30. 30,24. 34,2. 52,22. R. Gorr. 2, 15, 7. 39,24. 3,42,47. Kâm. Nitis. 12,14. 14,46. पश्चाद्भवति संतापः Spr. (II) 405. 1908. 2904. 6785. Varân. Bṛh. S. 7,3. 9,22. चिरोत्सुका° Kathâs. 29,131. 44,168. Bhâg. P. 6,14,41. 15,25. स मां दहति संतापः R. 4,61,21. मा शोकं मा च संतापं धैर्यमाश्रय R. Schl. 2,72,32. बलमाहृत्य संतापम् 3,68,39. न संतापमाप्नुयात् Spr. (II) 4537. उपयाति 5522. यायाति Varân. Bṛh. S. 17,12. कर् *sich dem Schmerz hingeben* MBh. 1,6143. R. 2,22,29. 52,41. R. Gorr. 2,7,11. 51,8. Pañkat. III, 164. *Schmerz bereiten* Spr. (II) 6550. °कारिन् Kathâs. 44,18. संतापस्त्यज्यतामयम् R. 1,74,12. विमुच्यताम् 2, 34,32. व्यवधूय संतापम् 60,8. ज्ञात° adj. 6,10,1. गत° adj. MBh. 4,737. निवृत्त° adj. Suçr. 2,169,18. निवृत्तसंतापकर 1,10,2. — 3) *Kasteiung:* संतापमुपज्ञमिवान् MBh. 3,16622. Kir. 5,50. — Vgl. भूत°, मनः° (95,14 zu lesen), मानस°, सांतापिक.

संतापन (vom caus. von 1. तप् mit सम्) 1) adj. *in Gluth versetzend; Schmerz bereitend, peinigend:* लोक° (ein Asura) Bhâg. P. 7,10,25. — 2) m. *a*) N. eines der fünf Pfeile des Liebesgottes Taik. 1,1,40. — *b*) N. eines bösen Dämons, der Kinder besessen macht, Hariv. 9358. im Gefolge Çiva's Vâipi beim Schol. zu H. 210. — 3) n. (sc. अस्त्र) *ein best. mythisches Geschoss* R. 1,29,16. 56,7. — Vgl. भूत° (auch Bhâg. P. 7,2,18) und सांतपन.

संतापवत् (von संताप) adj. von *Schmerz erfüllt* Kathâs. 6,121.

संतापितर् schoinbar MBh. 12,10406, da mit der ed. Bomb. मत्ता पिता st. सन्तापिता zu lesen ist.

संतापीय in निवृत्त° (adj. von निवृत्तसंताप) *wodurch Schmerzen verschwinden* Suçr. 2,169,14; vgl. 1,10,2.

संताप्यं (vom caus. von 1. तप् mit सम्) adj. *anzuzünden* Çat. Br. 12,5,2,5.

संतार (von 1. तर् mit सम्) m. *das Hinübersetzen über* (ein Wasser) MBh. 5,4009 (die ed. Bomb. liest घासन्वितस्तया). गङ्गायाः R. 1,3,14 (8 Gorr.). संतारं कारयामास ऋषिसंघस्य 45,8 (46,8 Gorr.). R. Gorr. 1, 4,34. 5,74,17. सागरजले 66,23. तोयावतारसंतारो Kâm. Nitis. 19,2. उडुपप्लव° MBh. 1,2487.

संतारक (vom caus. von 1. तर् mit सम्) adj. *hinüberführend* (über ein Wasser, eine Gefahr): °विधि m. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,282.

संतारमूलक Râja-Tar. 8, 3039 vielleicht fehlerhaft für संतानमूलक.

संतार्य (von 1. तर् mit सम्) adj. *worüber man setzen muss:* समुद्र R. 4,41,23. *worüber man glücklich hinübergelangen kann, wovon man sich befreien kann:* भूणहत्या Hariv. 4187 (संघार्य die neuere Ausg.).

सत्ति f. nom. act. von 1. सन्, = सति und साति P. 6,4,45. Vop. 26, 44. — Vgl. पुरुषसत्ति.

संतुषित (von तुष् mit सम्, Nebenform von संतुष्ट) m. N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 49,4. 299,9. 467,13. 469,2. °क 415,9. — Vgl. तुषित.

संतुष्टि (wie oben) f. *Zufriedenheit:* येन केन वा Bhâg. P. 4,31,19. मनः° MBh. 1,7222.

संतृप्ति (von तर्प् mit सम्) f. *das Sattwerden, Sättigung* Kathâs. 73,247.

संतेजन (vom caus. von तिज् mit सम्) n. *das Schärfen* (in übertr. Bed.) Suçr. 2,191,20.

संतोदिन् (von 1. तुद् mit सम्) adj. *stechend, stossend* AV. 7,95,2.

संतोष (von तुष् mit सम्) 1) m. *Befriedigung, Zufriedenheit, Genügsamkeit* AK. 3,4,22 (23), 5. H. 308. Spr. (II) 855. 1029. 1974. न संतोषात्परं सुखम् 2011. 2015. 2082. 2678. न संतोषं विना सौख्यम् 3520. न संतोषसमं व्रतम् 3689. 4090. 4931. 5579. °मूलं हि सुखम् 6798. 6800. शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमः Joga. 2, 32. 42. H. 82. Sarvadarçanas. 173, 19. 174, 1. सुनीथजीवितप्राप्त्या संतोषः परमो मम Kathâs. 45,163. 50,116. Sin. D. 191. °प्रशंसा Verz. d. Oxf. H. 123, *a*,

41. Bhâg. P. 5,9,1. 7,11,9. स च बृहत्पतिस्तस्याः संतोषाय नाभवत् Hit. 28,4. संतोषं परमास्थाय Spr. (II) 6798. साध्येत् 1148. अवाप्नोति Maitrîup. 6,29. परं संतोषमीयतुः Kathâs. 29,64. सत्यानन्दा न संतोषं ग्राम्यधर्मेण गच्छति Soṇa. 2,397,6. दैवाल्लाभेन Bhâg. P. 3,28,2. यदृच्छोपपन्नेन 8, 19,23. सदैव सत्पुरुषेण संतोषः कार्यः Pañkat. 139,17. अहोरात्रं च संतोषः कर्तव्यो नियतात्मना । फलैर्वृक्षावपतितैः R. 2,28,12. यथालाभेन 17. Spr. (II) 5429. Pañkat. 136,12. संतोषस्त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोज्ये धने Spr. (II) 6799. येन तेन प्रकारेण यस्य कस्यापि देहिनः । संतोषं जनयेद्धीमान् 7601. गृहीतसंतोषा Kathâs. 32,171. स° Çiç. Ca. 146,5. Mâlatîm. 94,10 (रुद्रस्य). Bhâg. 4,8,28. 5,8,17. 7,15,21. सर्वकामयोः 8,19,25. fg. Personificirt als लोभस्य जेता Pârâç. 76,1. fgg. als Sohn der Tushṭi VP. 55. Mârk. P. 50,26. unter den Göttern Tushita Bhâg. P. 4,1,7. — 2) f. या N. pr. der Mutter Gaṅgâdâsa's Verz. d. Oxf. H. 198,b, No. 468.

संतोषण (vom caus. von तुष् mit सम्) n. *das Zufriedenstellen, Erfreuen:* ऋषि° MBu. 5,5116.

संतोषणीय (wie eben) adj. *zufriedenzustellen:* °रूप *den Schein erweckend, als wenn man zufriedenzustellen wäre,* MBu. 12,6699.

संतोषवत् (von संतोष) adj. *zufrieden, genügsam:* स° Spr. (II) 4090.

संतोषिन् (wie eben) adj. dass. Jâtâ. 1,129. Spr. (II) 6481. स्वान्त° *im Herzen* 4019. सत्काव्य° *sich erfreuend an* Verz. d. Oxf. H. 193,a,13 (°तोषिणी zu lesen).

संतोष्टव्य n. partic. fut. pass. impers. von तुष् mit सम्. संतोष्टव्यमायुष्मता *damit muss der Herr, dem ich langes Leben wünsche, zufrieden sein* Sarvadarçanas. 13,19.

संतोष्य (vom caus. von तुष् mit सम्) adj. *zufriedenzustellen:* देवतापितृपूजासु संतोष्यास्त्रीव नो द्विजाः MBu. 13,7408.

सत्त्य adj. nur im voc. als Anrede an Agni, nach dem Comm. *Gaben gebend* (vgl. 1. सन् und सत्ति) ṚV. 1,15,12. 36,2. 45,5. 3,21,3. 5, 51,3. 8,19,26. 44,23.

संत्यज्य (von 1. त्यज् mit सम्) adj. *aufzugeben, fahren zu lassen:* जीवित Mârk. P. 23,15. — Vgl. संत्याज्य.

संत्याग (wie eben) m. *das im Stich-Lassen, Verlassen, Aufgeben, Fahrenlassen:* अदुष्टस्य सत्पथे ऽभिरतस्य च R. 2,36,29. R. Gorr. 1,4,142. सर्व° 5,89,60. स्वधर्म° Mârk. P. 28,35. यसंत्यागात्पापकृताम् Spr. (II) 738. — Vgl. प्राण°.

संत्यागिन् (wie eben) adj. *im Stich lassend, verlassend, aufgebend:* अग्नि° Mârk. P. 31,29. संयितानामसंत्यागी R. 5,86,21.

संत्याज्य (wie eben) adj. *im Stich zu lassen, zu verlassen, fern zu halten, aufzugeben:* नृप Spr. (II) 2185. 6740, v. l. निद्राः पञ्च: Râja-Tar. 4, 52. नासदृशा ये (क्लेशाः) Vaṇîn. Bhp. S. 65,1. न संत्याज्यं च ते धैर्यम् MBu. 12,2032. स° *den man nicht im Stich lassen darf* MBu. 1,5349. *nicht zu vermeiden:* मृत्यु, जरा u. s. w. Spr. (II) 4955. *nicht zu versäumen,* — *unbenutzt vorübergehen zu lassen:* तमाकाल MBu. 3,1058. — Vgl. संत्यज्य.

संत्राण (von 1. त्रा mit सम्) n. *das Retten:* संत्राणं म्रियमाणाया मम कृत्वा Mânu. P. 61,71. शरणागतसंत्राणं कर्तुम् 132,23.

संत्रास (von 1. त्रस् mit सम्) m. *Schrecken, Angst* Râja-Tar. 4,174 (Gegens. अभिलाष). Bhâg. P. 7,10,28. तस्याः °शङ्कया *aus Besorgniss, sie möchte erschrecken,* Kathâs. 28,105. संत्रासात् *aus Angst* MBu. 1,5458. 7073. Râja-Tar. 5,398 (सत्रासात् Druckfehler bei Tr.). नाकारयति संत्रासम् R. 2,60,30. संत्रास आविशच्चेनम् 6,11,2. न कार्यः संत्रासः Bhâg. P. 3,31,47. तदालोकनसंत्रास° Râja-Tar. 6,185. die Ergänzung im abl. oder im comp. vorangehend: रावणात् R. 5,33,21. मृत्युतस् Spr. (II) 1111. रामलक्ष्मण° R. 4,36,2. Kathâs. 29,92. Râja-Tar. 4,175. ईषदागत° adj. MBu. 6,5819. किंचिदागत° adj. R. 6,3,2. जात° adj. 4,8,42. गत° adj. Râja-Tar. 5,224. — Vgl. कृतात्त°.

संत्रासन (vom caus. von 1. त्रस् mit सम्) n. *das in Schrecken-Jagen:* मुरारिभुजगेन्द्र° Khaṇḍan. 88.

सन्त्वं n. nom. abstr. von सम् TBr. 1,1,9,3. dagegen ist शल्याय zu lesen 3,3,10,3.

संत्वरा (von त्वर् mit सम्) f. *Eile* Âçv. Çr. 6,6,12. Kâty. 7,5,26.

संदंश (von 1. दंश् mit सम्) m. 1) *das Aufeinanderbeissen der Zähne* (als Fehler der Aussprache) ṚV. Prât. 14,4. *das Zusammenkneifen:* ओष्ठ° MBu. 12,3840. — 2) *Klammer* oder dgl. AV. 9,3,5. *Zange* H. 909. Snâtv. Bh. 3,10. Kauç. 39. Suçr. 1,23,16. 24,11. 2,13,16. Mârk. P. 14, 62. Bhâg. P. 5,26,19. von verschiedenen *zangenartig gebrauchten Gliedern des menschlichen und thierischen Körpers: die Spitzen von Daumen und Zeigefinger, aneinander gelegt,* Verz. d. Oxf. H. 86,a,28. 202, a,9. प्रसूनवृन्तविगलत्संदंशकर Kathâs. 89,8. so v. a. *Daumen und Zeigefinger* Jâtâ. 2,274 (vgl. M. 9,277). *die einander gegenüberstehenden Eckzähne* Vaṇîn. Bhp. S. 66,5 (beim Pferde). कुलीर° *die Scheeren eines Krebses* Pañkat. ed. orn. 42,25. st. dessen स्वदशन° die kürzere Ausg. und स्ववदनदंशसदृश ed. Bomb. मुख° *Fresszangen* Suçr. 2,257,8. 258,1. 2. 7. — 3) *Abschnitt, Hauptstück, Kapitel:* दायभाग° Dâyabh. 330,4 v. u. 331,3 v. u. — 4) N. eines Ekâha Snâtv. Bh. 3,10. Kâty. Çr. 22,11,27. Çâṅkh. Çr. 14,22,4. Lâṭy. 9,4,37. — 5) N. einer Hölle, in der die Verbrecher mit *Zangen* gemartert werden, VP. 207. 209. Bhâg. P. 5,26, 7; vgl. 19.

संदंशक (von संदंश) 1) wohl m. *Zange* Daçak. 71,1. पादाग्रसंदंशकेनाकृष्याम्बरम् Spr. (II) 4014. — 2) f. संदंशिका dass.; = मुचुटी und लोकपत्रविशेष Med. k. 219. — Vgl. रक्तसंदंशिका.

संदंशित adj. = दंशित *geharnischt, gerüstet* MBu. 3,16404. wohl richtiger स दं° ed. Bomb.

संददि (von 1. दा mit सम्) adj. *erfassend:* रुस्तेव शक्तिमभि संददी vielll. अभिसंददी) नः ṚV. 2,39,7. 9,99,7.

संदर्प m. = दर्प *Uebermuth:* अर्थ° *das Pochen auf* Kathâs. 52,39.

संदर्भ (von 1. दृभ् mit सम्) m. (am Ende eines adj. comp. f. आ) *das Winden* (eines Kranzes u. s. w.) H. 653. Hall. 4,45. Daṇḍ. 31,11. 34,31. *ein kunstgemässes Zusammenlegen,* — *Aufstellen:* आयुध° Kathâs. 38,21. *Verschlingung, Mischung:* विस्मयानन्द° Uttarar. 126,2 (170,2). *ein kunstgemässes Gefüge von Tönen, Wörtern u. s. w.:* रञ्जकः स्वरसंदर्भो गीतमित्यभिधीयते Verz. d. Oxf. H. 199,b, No. 472. इमं च वाक्यसंदर्भं (so die neuere Ausg.) श्लोकमेकमुदाहृतम् Harîv. 1236. पद° Siṅh. D. 247,5. Sarvadarçanas. 38,6. °शुद्धि Gîrâm. Gîv. 1,4. साधुशब्दार्थ° Verz. d. Oxf. H. 214,a,4. सत्यर्थसुकुमारार्थसंदर्भा ist die कैशिकी, ईषन्मृदर्थसंदर्भा die भारती u. s. w. Prâtîpar. 10,a. ohne nähere Bez. *eine*

literärische Composition Trik. 3,2,21 (= प्रबन्ध). Uttarar. 86,13 (111, 3). Kathâs. 14,12. Râga-Tar. 1,22. Verz. d. B. H. No. 636. Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 295. 145,a,23. 207,a,8. Kaush. Up. Einl. 1. गूढार्थस्य प्रकाशश्च सारोक्तिः श्लेषता तथा । नानार्थत्वञ्च वेद्यत्वं संदर्भः कथ्यते बुधैः ॥ इति रूपसनातनगोस्वामिकृतभागवतीयषट्संदर्भस्य प्रथमसंदर्भकारिका ॥ ÇKDa. — Vgl. क्रमसंदर्भप्रभास, भागवत°, सिद्धान्त°.

संदर्श (von दृश् mit सम्) m. 1) *Anblick, das Gewahrwerden:* संदर्शनेव सेनाया भयं भीरून्प्रबाधते MBu. 12,3775. — 2) *Aussehen*, am Ende eines adj. comp. (f. या): पिशाच° Bhâg. P. 12,3,40.

संदर्शन (von दृश् simpl. und caus. mit सम्) n. 1) *das Erblicken, Gewahrwerden, zu-sehen-Bekommen* (auf längere Zeit) Kathâs. 37,208. das obj. im gen. Nir. 10,40. R. 1,20,21. 65,21. 2,90,2. R. Gorr. 1,9, 11. 7,23,8,14. Vaitân. Bṛh. S. 87,2. Mârk. P. 105,2. Bhâg. P. 3,20,23. 22,5. मृगस्य प्रथमसंदर्शनादिने Hit. 26,18, v. l. स्वप्ने Kathâs. 122,32. das obj. im comp. vorangehend: राम° R. 1,51,2. R. Gorr. 1,66,13. 2,12, 2. 72 in der Unterschr. 3,61,35. Suçr. 1,323,2. Kumâras. 7,56. Ragh. 15,94. Çiç. Cr. 160,7. Vaitân. Bṛh. S. 86,50. Kathâs. 16,87. 25,112. 45,343. Sîh. D. 137. Râga-Tar. 1,370. Nilar. 169. रामसंदर्शनं प्राप्य R. Gorr. 1,52,2. समयः समतिक्रान्तो भवत्संदर्शने मया so v. a. *beim Verweilen bei dir* MBu. 1,7768. संदर्शने *im Angesicht von* (gen.) Kâç. Ça. 26,2,15. MBu. 4,111. 673. स्या 5,7109. 12,1984. R. 1,9,12. 5,23,32. ग्राम-स्थापय् 2,99,6. ग्रामसंदर्शने ग्रामात् *ausserhalb des Gesichtskreises des Dorfes* Âçv. Gṛhj. 4,8,12. तस्य स्वप्ने संदर्शनं गत्वा so v. a. *ihm im Traume erscheinend* Pañkat. 235,10. संदर्शनं प्र-यम् *Jmd einen Anblick von sich gewähren, sich Jmd* (gen.) *zeigen* 161,14. — 2) *Blick:* क्रूर° Sîh. D. 232. स्नेह° R. 2,50,27. — 3) *das Besichtigen, in Augenschein-Nehmen:* ग्रामसंदर्शनारम्भ MBu. 1,461. धनिमिषोपकल्पु° Vish. 78,19. *das Betrachten, Erwägen:* मनुबोधायनवचन° Kull. zu M. 5,136. तत्कृतकार्य° Hit. 129,10. — 4) *das zu-Gesicht-Kommen, Erscheinen:* कृतसंदर्शनं (copulat. comp.) नेष्टं प्रतीपं वानर्तयोः Vaitân. Bṛh. S. 86,42. एवंविधवैचित्र्यस्य सकृद्बधा संदर्शनात् Sîh. D. 276,17. ग्रपाय°, उपाय° Spr. (II) 415. vom *heliakischen Aufgang eines Gestirns* Vaitân. Bṛh. S. 12,14. — 5) *das Aussehen:* विबुधोपम° Bhâg. P. 5,20,4. — 6) *das Zusammentreffen —, Zusammenkommen mit* (blosser instr. oder instr. mit सकृ): ग्रथास्य मृगयायातस्यासीत्संदर्शनं वने । कयापि सिद्धतापस्या Kathâs. 43, 193. किं न क्रियते मया सकृ संदर्शनम् Pañkat. 109,23. — 7) *das Sehenlassen, Zeigen;* in comp. mit dem näheren obj.: प्रीत्यर्थं तव चैतन्ये स्वर्गसंदर्शनं कृतम् MBu. 13,2892. कासो ऽस्थिसंदर्शनम् (ग्रस्थि so v. a. *Zahn*) Mârk. P. 25,17. ग्रात्म° Bhâg. P. 9,10,31. in comp. mit dem entfernteren obj.: रामसंदर्शनार्थं तद्धनुरानीयताम् *um ihn dem Râma zu zeigen* R. Gorr. 1,69,2. — Vgl. पुनः°, स्वप्न°.

संदर्शनद्वीप m. N. pr. eines Dvîpa R. 4,40,64.

संदर्शनपथ m. *Gesichtskreis:* (तस्य) °पथं त्यक्ता तस्थौ Harîv. 6471.

संदर्शयितर् (vom caus. von दृश् mit सम्) nom. ag. *der sehen macht:* इन्द्रियाणाम् Nir. 10,26.

संदष्ट s. u. 1. दंश् mit सम्. Davon संदष्टता f. ähnlich wie संदंश *ein best. Fehler der Aussprache* ṚV. Prât. 14,4.

संदातर् (von 4. दा mit सम्) nom. ag. *Binder, Fesseler:* ग्रसंदितानां संदाता संदितानां च मोक्तृकः M. 8,242 nach der richtigen Lesart.

संदान (wie oben) 1) m. *die Gegend unterhalb des Knies beim Elephanten* (vgl. *Fessel*) Trik. 2,8,37. — 2) n. *Band, Fessel* AK. 2,9,74. Trik. 3,2,22. H. 1274. Halây. 2,122. पर्वतः ṚV. 1,162,3.18. AV. 6,103, 1. 104,1. ग्रादानसंदानाभ्याम् 11,9,3. Kauç. 16. TS. 2,4,3,2. Çat. Br. 14, 3,1,22. Kâty. Çr. 26,2,10. — Fehlerhaft für संधान (so ed. Bomb.) MBh. 7,5923.

संदानिका (von संदान) f. *ein best. Baum*, = घरिखादिर (?) Râgân. im ÇKDa.

संदानित (wie oben) adj. *gebunden, gefesselt* AK. 3,2,44. H. 439. रसनासंदानितचरणा Mâlav. 41,13. v. l. संदित.

संदानितक (von संदानित) n. *eine Verbindung von drei Çloka, durch welche ein und derselbe Satz durchgeht*, Sâh. D. 558. Schol. zu Kâvyâd. 1,13. fehlerhaft संदामितक Wilson.

संदानिनी (von संदान) f. *Kuhstall* H. 999. — Vgl. संधानिनी.

संदामितक s. संदानितक.

1. संदाय (von 1. दा mit सम्) adj. *schenkend;* s. गो°.

2. संदाय (etwa von 4. दा mit सम्) m. etwa *Zügel, Leitseil:* (कृतास्त्रेण) ग्राच्छिद्य मम संदायो नीपसे नृपकोविदः Harîv. 4836 nach der Lesart der neueren Ausg.

संदाव m. nom. act. von दु mit सम् P. 3,3,22. *Flucht* (vgl. संद्राव) AK. 2,8,8,79. H. 802.

संदिग्ध adj. s. u. दिह् mit सम्. n. (sc. वाक्य) *ein doppelsinniger Ausdruck* Prâtiâkh. 18,b,2. 61,a,5. Verz. d. Oxf. H. 207,a,16.

संदिग्धत्व (von संदिग्ध) n. *Zweifelhaftigkeit, Ungewissheit* Sîh. D. 385.

संदिदृक्षु (vom desid. von दृश् mit सम्) adj. *anzuschauen verlangend:* पद्मम् MBu. 3,10623.

संदिधक्षु (vom desid. von 1. दह् mit सम्) adj. *zu verbrennen —, vollständig zu vernichten beabsichtigend:* mit acc. MBu. 13,2879. Vaitân. Bṛh. S. 19,7. Bhâg. P. 3,4,33.

संदिह् (दिह् mit सम्) f. *Aufschüttung, Wall* oder dgl.: वप्रो वि ईधान संदिहः ṚV. 1,51,9.

सन्दी f. bei Wilson und im ÇKDa. fehlerhaft für ग्रासन्दी, da ohne Zweifel dieses Trik. 2,6,41 gemeint ist.

संदीन adj. = दीन *niedergeschlagen, betrübt:* °मानस adj. Harîv. 3690 nach der Lesart der neueren Ausg. st. संलीन der älteren.

संदीपक (vom caus. von दीप् mit सम्) adj. *in Flammen setzend:* वदनमिन्धसंदीपकम् *so v. a. neidisch machend* Gît. 10,15.

संदीपन (wie oben) 1) adj. *in Flammen setzend, anfachend:* पावनाग्नि° Verz. d. Oxf. H. 234,b,26. सप्त संदीपनान्यतराणि Uttarar. 90,12 (116,10). वैर° MBu. 12,3966. — 2) m. N. *eines der fünf Pfeile des Liebesgottes* Vet. in LA. (III) 5,19. — 3) n. *das in Flammen Setzen, Anfachen:* गोमयशुष्ककर्पासादिना Comm. zu Kâty. Çr. 25,7,12. ग्रनङ्ग° Ṛt. 1,12. Pañkar. 1,11,30. — Vgl. ग्रग्नि°, विन्दु°.

संदीपनवत् (von संदीपन) adj. *mit leicht entzündlichen Stoffen versehen* Kâty. Çr. 25,7,12.

संदीप्य (von दीप् mit सम्) m. *eine best. Stande*, = मयूरशिखा Çabdam. im ÇKDa.

संडुक्ष (von 1. डुक्ष् mit सम्) adj. = संदोक्ष *zu melken:* सुखसंडुक्षा

Bhar. zu AK. 2,9,72 nach ÇKDa.

संदूषण (vom caus. von 1. दुष् mit सम्) 1) adj. (f. ई) *schändend, verderbend:* पानम् u. s. w. नारीसंदूषणानि पट् Spr. (II) 4044. मायावादसंदूषणी f. *die Lehre von der Mâjâ (den Buddhismus) zu Schanden machend*, Titel eines Werkes Hall 160. — 2) n. *das Schänden:* कन्या° Jiân. 3,238. °करी वंशस्य Harîv. 9939.

संदृश् (von दृश् mit सम्) f. 1) *Anblick; Ansehen* Nir. 10,40. सूर्यस्य RV. 2,33,1. 10,59,3. 3,5,3. यस्य मेधा सुभगस्य संदृक् 4,1,6. 6,6. स्मसि वां संदृशि प्रिये 5,74,6. 87,6. 8,10,8. 7,88,2. यज्ञे: 10,69,1. 82,2. AV. 7, 68,2. 11,2,5. 12,1,16. VS. 4,22. 36,19. TS. 1,6,8,1. न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य Kaṭhop. 6,9 = Çvetâçv. Up. 4,20. — 2) *Ausblick, Schrichtung* so v. a. दिश्. षळस्तस्था विदृद्रः पञ्च संदृशः RV. 2,13,10. — Vgl. शेष°, पिशङ्ग°, रण्व°, सु°, सुदृशीक°, हिरण्य°.

संदृश (wie oben) *Aussehen* in मधु° (s. Nachträge).

संदृश्य (wie oben) adj. *anzusehen, erscheinend als:* यज्ञ्यासघाती संदृश्यो (= रमणीयाङ्गः Nîlak.) दुर्दर्शो सर्वरात्रिभिः MBh. 2,937. घपारमिव संदृश्यं (संदृश्य ed. Bomb.) सागरप्रतिमं बलम् 6,2132.

संदृष्टि (wie oben) f. *Anblick:* रण्वः संदृष्टौ RV. 1,144,7. 2,4,4. यज्ञे: 4,10,3. 6,1,4. 10,25.

संदेह (von दिह् = दिह् mit सम्) m. 1) *Zusammenkittung*, verächtliche Bez. *des menschlichen Leibes* Çat. Br. 10,5,2,2. Bṛh. Âr. Up. 4,4,13 bei Poley, संदेक्ष bei Roër, संदेक् Çat. Br. 14,7,2,17. — 2) *Ungewissheit, Zweifel* Çat. Br. 3,1,2,3. — Vgl. संदेक्.

संदेव (सम् + देव) 1) m. N. pr. eines Sohnes des Devaka Harîv. 2025. — 2) f. या N. pr. einer Tochter Devaka's und einer der Gattinnen Vasudeva's Harîv. 1948 (श्वीदेवा die neuere Ausg.). 2026 (सुदेवा die neuere Ausg.).

संदेश (von 1. दिश् mit सम्) m. 1) *Anweisung, Auftrag, Botschaft;* = संवाद Çabdar. im ÇKDa. संदेशमर्पयाप्य Kâd. 46. Bhâg. P. 3,24,3. संदेशं ब्रू R. 2,59,1. पत्नावतीदत्त° Kathâs. 17,161. तस्मै तं सर्वसंदेशं शशंस 57,126. श्रुत्वेतं वक्रसंदेशम् 47,6. लेखे लिखित्वा संदेशमादाय पितुरन्तिकात् 59,146. संदेशाकरण Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 295. गृहीत Çiç. 55,17. संदेशो वद कस्तव *was hast du für einen Auftrag?* Spr. (II) 1631. R. 4,42,14. संदेशं मे श्रोष्यसि Mṛicch. 13. कवय चन्द्रस्य संदेशम् Pañkat. 162,3. संदेशं शृणु मे वत्स तं कुर्या: R. Gorr. 1,79,11. 3,1,77. अनुष्ठितो गुरोः संदेशः Çiç. 70,3. संदेशतः पितुः *im Auftrage des Vaters* Kathâs. 14,64. यसंदेशाद्रामस्य R. 5,24,30. पश्चिमं संदेशमिच्छामि श्रोतुमात्मनः *an mich* R. Schl. 2,72,36. संदेशं प्रतिदास्यामि विज्ञो: Harîv. 7230. तस्याः सकाशात्संदेशो नयितव्यः । प्रद्युम्नस्य 8594. प्रियायाः (*an die Geliebte*) संदेशं मे हर Megh. 7. संदेशमेतं दत्तवान्दानवेन्द्रे Harîv. 14380. वत्सराजाय *ein Auftrag an* Kathâs. 14,7. व्यवेदयत् — वत्सराजाय संदेशं तम् 11,19. häufig in comp. mit der Person, von der *der Auftrag* u. s. w. kommt: राम° R. Gorr. 2,49. fg. in der Unterschr. रामसंदेशमब्रवीत् 58,14. 5,38,39. Megh. 86 (pl.). 97. Raghu. 12,63 (pl.). Çiç. 61,7. कश्चिदेषामुपाध्यायसंदेशः 64,12. Vikr. 86,17. तस्मै माधवसंदेशं शंसति स्म Kathâs. 24,118. ऊचतुः शक्रसंदेशं तस्मै 41,21. पितृसंदेशकृत् Bhâg. P. 5,1, 38. am Ende eines adj. comp. (f. या): व्याकृत° Kumâras. 6,2. इति राज्ञोक्तसंदेशः Kathâs. 44,90. संक्रान्त° Mârk. P. 135,40. — 2) *Geschenk* Trik. 2,8,30. — 3) *eine best. leckere Speise* ÇKDa. — Vgl. प्रिय°, मेघ°, लेखसंदेशहारिन्.

संदेशक (von संदेश) m. *Mittheilung:* मिथ्यावार्तासंदेशकैः Pañkat. 51,21. fg.

संदेशपद n. pl. *der Wortlaut eines Auftrages:* लघुसंदेशपदा सरस्वती Raghu. 8,76.

संदेशवाच् f. *Auftrag* AK. 1,1,5,18. H. 276.

संदेशहर m. *Ueberbringer eines Auftrags, — einer Botschaft, Bote, Abgesandter* AK. 2,8,1,16. Raghu. 3,66.

संदेशहार adj. *eine Botschaft überbringend:* यावद्वापित° Sîn. D. 88.

संदेशहारक m. = संदेशहर H. 734. unter den drei Arten von Dûta Sîn. D. 86. definirt durch यावद्वापितसंदेशहार 88. st. dessen शासनवाक्य Kâm. Nîtis.

संदेशहारिन् adj. = संदेशहर. काव्य° Çiç. 61,9.

संदेशार्थ m. pl. *der Inhalt einer Botschaft* Megh. 5.

संदेशोक्ति (संदेश + उ°) f. *Auftrag* Hit. 166.

संदेश्य (von 1. दिश् mit सम् oder संदेश) adj. 1) *anzuweisen, dem man Verhaltungsmaassregeln zu geben hat* Kathâs. 67,52. — 2) *auf Anweisung beruhend* oder *absichtlich:* पाप AV. 10,1,11. fg. 2,8,5. — 3) *hiesig* (wenn wir विदेश्य richtig gefasst haben) AV. 4,16,8.

संदेष्टव्य (von 1. दिश् mit सम्) adj. 1) *anzuweisen, dem man Verhaltungsmaassregeln zu geben hat:* संदेष्टव्यो तु मन्ये वो ढिण्डार्तिं कोपनं प्रति MBh. 3,17019. — 2) *was man Jmd zu sagen hat, woran man Jmd* (gen.) *zu erinnern hat:* यतो ऽन्यत्र (so mit der ed. Bomb. zu lesen) प्रयास्यामि संदेष्टव्यं हि किं च न MBh. 1,4895. 15,978. किं नु खलु ब्रुव्यत्तस्य पुरुषत्रयमस्माभिः संदेष्टव्यम् Çiç. 55,2. 3.

संदेह (von दिह् mit सम्) m. 1) *Zusammenkittung:* यज्ञ° Çat. Br. 10, 5,2,3. verächtliche Bez. *des menschlichen Leibes* 14,7,2,17. Kâṭhâ. Up. 5,13,2. — 2) *Zweifel, Zweifelhaftigkeit, Ungewissheit* AK. 1,1,8,12. H. 1375. Hall. 4,6. 5,3. 94. AV. Pâr. 4,51. TS. Pâr. 1,25. Comm. zu 14. 26. 4,28. 5,1. 21,2. 5. Çiç. 11,11. 33,13. MBh. 3,2201. °दोलां प्राप्तं नयेत: 9,3525. Sîn. D. 202. Bîlar. 4. मुनिः संदेहमागतः R. 1,64,10. इति संदेहः कस्य चित्ते न भासते Spr. (II) 4693. चिरमागमनं मनसि संदेहमारोपयति Prab. 84,3. सर्वसंदेहकृत्तम Mâlav. P. 20,33. °भञ्जनं काव्य Pañkat. 1,10,2. das zweite Glied in einem Adhikaraṇa Sarvadarçanas. 123,3. 126,19. एकेन संदेहः पृष्टः *eine dem Zweifel unterliegende Sache* Verz. d. Oxf. H. 156,a,6. एवमन्येषामपि सत्त्वानां संदेहो विद्यते *Zweifel in Bezug auf* Nir. 2,7. यात्मनश्चापि संदेहं मा कृथास्त्वं कुलस्य च R. 3,42,31. सर्वद्वैधस्य °च्छेदनम् Kâm. Nîtis. 11,50. त्रय्याम् Harîv. 11322. वचने Pañkar. 1,4,78. प्रभुत्वे नास्ति संदेहः R. 1,72,16. निगूढे नन्दिगुप्तादिद्रोहे लोकस्य यो ऽभवत् । संदेहः स तया तेन व्यक्तकृत्येन धारितः ॥ Râja-Tar. 6,331. in comp. mit dem Begriffe, in Bezug auf welchen ein *Zweifel* obwaltet: वसासंदेहात् Kâty. Çr. 2,8,36. 25,7,36. Çâṅkh. Çr. 6,1,20. वीर्यसंदेहमागताः R. 1,66,21. घस्मिन्कार्यसंदेहे संप्राप्तवति दुष्करे 5,69,9. विजय° Râja-Tar. 1,62. Hit. 57,1. v. l. धर्य° 10,11, v. l. °दायिन् Vîsavad. 3. °भञ्जन Pañkar. 1,4,77. °संदेहापनोदन Comm. zu AV. Pâr. 4,108. Am Ende eines adj. comp. (f. या): प्राप्तचारित्र्य° R. 6,100,16. उच्छिन्नराज्य° R. ed. Bomb. 4,29,6. निरस्ता-

खित° LA. (III) 92,7. वीत° *keinem Zweifel unterliegend* Râǵa-Tar. 4, 53. स° *zweifelnd* Kathâs. 12,161. असंदेहम् *ohne Zweifel* Spr. (II) 182. न संदेह: (mitten im Satz ohne Einfluss auf die Construction) dass. MBh. 1,6162. R. 1,65,24. 5,1,47. Spr. (II) 5628. Mârk. P. 62,24. S. 639, Z. 1 v. u. Bhâg. P. 1,12,17. Vet. in LA. (III) 17,7. Vaṁś. Bez. S. 38,2 (am Ende des Verses). eben so संदेहो नास्ति (R. 5,1,60) und नास्ति संदेह: (R. 5,29,11). — 3) *Gefahr:* सर्वत्रार्थार्जने संदेह एव Hit. 10,14. किम् — समस्तस्वार्थत्यया संदेहे नियोजित: Pańkat. 8,21. श्रीरोहति संदेहम् Spr. (II) 179. मुक्त्वा तनं तथा राज्यम् u. s. w. युधि संदेहदोलास्थं को हि कुर्यात् 7151. जीवितव्य° *Lebensgefahr* 1827. प्राप्त° Hit. 10,11. — Vgl. नि:°, प्राण° (auch Pańkat. 91,16), वैद्य° und संशय.

संदेहत्व n. nom. abstr. zu संदेह 2) Sin. D. 293,11.

संदेहालंकार m. *eine best. Redefigur* Sin. D. 5,4. S. 293,10.

संदेहालंकृति f. dass.: विषयो विषयी यत्र सादृश्यात्कविसंमतात् । संदेहगोचरौ स्यातां संदेहालंकृतिस्य सा ॥ Prataparudr. 80,a,6.

संदेह्य s. u. संदिह् 1).

संदोल oder संदोला (von दुल् mit सम्; vgl. दोल) Bez. *eines best. schwingenden Schmucks:* स्वर्णचम्पकसंदोल adj. Pańkat. 4,8,101.

संदोह (von 1. दुह् mit सम्) m. 1) *das Melken:* सर्वघोषस्य संदोह: क्रियताम् Harîv. 3818. लोका: कामसंदोहा: *Welten, in denen Einem alle Wünsche gewährt werden* (vgl. कामदुघ fgg.) Bhâg. P. 4,21,22. — 2) m. *alle Milch einer Heerde:* गवां शताद्यत्सतरी धेनु: स्याद्विशताद्यति: । प्रतिसंवत्सरं गोपे संदोहश्चाष्टमे ऽहनि ॥ Nârada in Mit. 251,5. 6. त्रिरात्रं चैव संदोह: सर्वघोषस्य गृह्यताम् Harîv. 3867. — 3) *Gesammtheit, Fülle, Menge* überh. AK. 2,5,39. H. 1411. Halâj. 4,1. अङ्ग° Ind. St. 3,432. पाल° Spr. (II) 4884. अशेषकला° (des Mondes) Kathâs. 113,23. कुरुविन्द° Verz. d. Oxf. H. 122,a,35. मकरन्द° 139, a,8. मयूख° Bhâg. P. 7,10,57 (pl.). 10,32,12. शर° 77,14 (pl.). पुराण° 12,13,9. सुख° R. 4,28,5. मुक्तालावण्य° Kathâs. 118,162. स्यानन्द° Daśak. 27,9. Bhâg. P. 10,14,37. 11,9,18. परमानन्द° Sin. D. 2,5. Pańkat. 2,3,74. 5,16. 36. सच्चिदानन्द° Verz. d. Oxf. H. 72,a,3 v. u. des Versmaasses wegen voranstehend: नष्टसंदेहसंशयस्फोटन Mârk. P. S. 658, Z. 8 v. u.

संदोह्य (wie eben) adj. zu *melken:* सुखसंदोह्या AK. 2,9,72.

संद्रष्टृ (von दृश् mit सम्) nom. ag. *der da sieht, — schaut* Nir. 10, 36. Bhâg. P. 3,5,25.

संद्रष्टव्य (wie eben) adj. *den man sehen —, aufsuchen muss:* कार्येष्वहं त्वया पुत्र संद्रष्टव्य: सदैव हि MBh. 3,14571.

संद्राव (von 1. द्रु mit सम्) m. P. 2,3,22. *Flucht* (vgl. संदाव) AK. 2,8, 2,79. H. 803.

संध (von 1. धा mit सम्) nom. ag. s. अक्षिन°. संधा s. bes.

संधनार्जित (सम्°धनार्जित Padap.) adj. so v. a. धनसंजित् *Beute zusammengewinnend* AV. 5,20,3. 13,1,37. 17,1,1.

संधय् (von संधि), °यति 1) *zusammenfügen:* संधयामास तं शरासंधम् MBh. 7,8224. Sûçr. 1,56,14. einen Pfeil mit dem Bogen so v. a. *auflegen:* धनुर्गृहीत्वोपनिषदं महास्त्रं शरं क्षुरपर्यानिशितं संधयीत (so bei Polat st. संधीयत, welches Çiva. durch संधानं कुर्यात् umschreibt) Mund. Up. 2,2,3. *in Verbindung bringen mit* (instr.): स्वरेण संधयेद्योगम् Ind. St. 2,60. mit आत्मनि so v. a. *sich Etwas aneignen:* शमम् Kâm. Nîtis. 17,28. — 2) *sich verbinden* so v. a. *sich aussöhnen, Frieden schliessen:* संधितुम् Bhâg. P. 9,19,9. — 3) partic. संधित a) *zusammengefügt:* शर्या (eine Râkshasî) संधितो यस्माच्छरासंघो भवत्ययम् MBh. 2,739. 7,8225. Harîv. 1810. Râǵa-Tar. 2,110. कपालसंधिर्विज्ञेय: केवलं समसंधित: (nach dem Comm. zu Kâm. Nîtis. abl. von °संधि) Spr. (II) 1330. ein gestörtes Opfer MBh. 7,9554. 12,10273. 13,7481. Harîv. 12269. संधितं च शिरो पत्राच्छिन्नं रौद्रेण तेजसा 7316. (mit der Sehne) *zusammengefügt* so v. a. *aufgelegt* von einem Pfeile MBh. 1,5278. 6,2203. 7,549. 12,8091. धनुषि Bhâg. P. 9,10,23. °वेणु *angelegt* d. i. an die Lippen 10,35,10. अन्तरिक्षं तदुभयसंधितम् *mit diesen Beiden* (Himmel und Erde) *verbunden* 5,21,2. मृत्यु° *mit dem Tode verbunden* so v. a. *dem Tode geweiht* MBh. 5,2462. — b) *verbündet, der einen Bund oder Frieden geschlossen hat* Spr. (II) 3242. 6376. 6398. 6721. 6746. — c) *durch Mischung u. s. w. bereitet:* ein Liqueur u. s. w. Bhâvapr. 5. n. so v. a. *ein gebrautes Getränk* Çârngadharapaddhati 19 im ÇKDa. — d) fehlerhaft für संदित (wie einige Hdschrr. lesen) *gebunden, gefesselt* M. 8,342.

— अति, partic. °संधित *betrogen, hintergangen* R. 2,7,23 (6,24 Gorr.). — Vgl. 1. धा mit अतिसम्.

— अनु, partic. °संधित *erforscht:* त्रयो ऽनुसंधिता लोका बुद्ध्या सत्येन च Harîv. 809. — Vgl. 1. धा mit अनुसम्.

— अभि, partic. °संधित 1) *zusammengefügt* Bhâg. P. 3,22,8. — 2) *zum Bundesgenossen gemacht:* एकेन बहवो ऽमित्रा: पलितेनाभिसंधिता: MBh. 12,5113. — 3) *versehen worden mit* (instr.): रथ्या मत्या गत्या च यथाऽभिसंधिता MBh. 6,3740. — 5) *entschlossen zu, beabsichtigend:* शक्रवध° Bhâg. P. 4,19,27. — 6) *mit einer Absicht verbunden, absichtlich* so v. a. *unsinnig:* दानानि Mârk. P. 95,14. कर्मन् 15. — Vgl. 1. धा mit अभिसम्.

— प्रति, partic. °संधित *befestigt, verstärkt:* परोणेवं °मनोरथ: Bhâg. P. 5,1,22.

संधा (1. धा mit सम्) f. 1) *Uebereinkommen, Vertrag:* यामिन्द्रेण संधा समधत्था: AV. 11,10,9. 15. TBr. 1,7,8,6. अति हि संधा धयति *gegen die Abrede* 2,1,1,3. सत्या TS. 1,7,8,4. Gobh. 3,7,22. बह्वी: संधा अतिक्रम्य Kaush. Up. 3,1. — 2) *Versprechen, Gelöbniss* AK. 3,4,22, 105. H. 278. an. 2,253. Med. dh. 20. Halâj. 4,30. गङ्गाम् — ततार संधामिव सत्यसंध: Raghu. 14,52. संधामुद्यतरोषो व्यधात् LA. (III) 91,8. इयं मे साधीयसी संधा Daśak. 86,1. कृतसंध (कृतसंधं ed. Bomb.) *zugesagt, versprochen* MBh. 8,3446. — 3) *Grenze, Schranken, festgesetzte Ordnung* (मर्यादा, स्थिति, अवधि) AK. H. an. Med. Halâj. 5,32. hierher nach dem Comm. das adj. कर्मसंध (so ed. Bomb.) *in seinen Handlungen die Schranken beobachtend* Bhâg. P. 6,5,42. — 4) = संधान *das Mischen, Bereiten eines Trankes* Çârdar. im ÇKDa. — 5) fehlerhaft für संध्या *Dämmerung* Vâkaspati bei Bhar. zu AK. 1,1,2,2. समेधेव निशा R. Gorr. 2,105,18. — Vgl. अतिसंधम्, इन्द्रसंधा, शरासंध, ब्रह्म°, दृढ°, सत्य°.

संधातृ (von 1. धा mit सम्) nom. ag. 1) *der zusammenfügt, Zusammenfüger:* संधिम् RV. 8,1,12. Çiva MBh. 12,10424. Vishṇu 13,6971. — 2) M. 8,342 schlechte Lesart für संदातृ.

संधातव्य (wie eben) adj. 1) *anzufügen:* शिरस् Suçr. 1,3,11. — 2) *mit dem man sich verbünden, vertragen muss* Hit. 71,22. n. impers.:

संधातव्य बुधैर्नित्यम् *Verständige sollen sich stets verbünden* Spr. (II) 6812. एवंविधशत्रुणा सह Kull. zu M. 7,210.

संधातृ (wie eben) 1) adj. *zusammenfügend, heilend:* मधुरो रसः Suçr. 1,155,10. 175,9. 184,17. — 2) m. *a) ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. 1,30,7. — *b)* N. pr. eines Ministers Kathâs. 43,108. — 3) f. ई *a) das Mischen, Bereiten eines Trankes* Çabdar. im ÇKDr. — *b) ein Ort, an dem die unedlen Metalle aufbewahrt werden,* H. 996. — Vgl. घृत°. — 4) n. *a) das Zusammenfügen, Vereinigen, Vereinigung* H. an. 3,482. Med. n. 149. पादावकर्षसंधाने: (so ed. Bomb.) MBh. 7,6923. पदर्थे विच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिव तत् Çiç. 9. संधानं ब्रह्म 167, v. l. देवसधानपितृकानने Râjat. 2,134. वपुरर्धयोः 3,1. मुखेन सा पद्मसुगन्धिना सरोजसंधानमिवाकरोदपाम् so v. a. *verlieh ihnen Lotusblüthen* Kumâras. 5,27. *Zusammenführung, Vereinigung, Zusammenkommen von Menschen:* दूतैश्च कृतसंधानाः पृथिव्यां सर्वपार्थिवाः Harîv. 9398. संधाने ऽभिनवे मित्रो भगवतोः Râjat. 5,1. दूते संधानमायाते so v. a. *Zutritt erhalten* Kâm. Nîtis. 12,33. — *b) Fuge, Gelenk; Berührungspunkt* TS. 7,4,21,1. 5,25,1. पादनङ्ष्योः संधाने गुल्फः Suçr. 1,348,14. Ind. St. 5,370 (संधानेषु zu lesen, wie Weber vermuthet). Taitt. Âr. 7,2,1. घरणयोः Lâṭj. 3,5,3. कण्ठोरसोः TS. Prât. 2,2. — *c) das was eine Vereinigung bewirkt, Mittel der Vereinigung* Taitt. Up. 1,3,2. 3. — *d) das Ansetzen, Wiederansetzen, Zusammenheilen* Suçr. 1,3,9. des Ohrs 35,12. der Nase 60,10. der Lippe 68,12. einer Wunde 47,6. 2, 1,10. 8,2. — *e) das Auflegen eines Pfeils* (mit und ohne Hinzufügung dieses Wortes): घस्र° MBh. 6,5832. बाण° Çiç. 6,11. 52. शर° Sây. zu RV. 3,33,24. विमोक्षादानसंधाने लघुतं परमाप सः MBh. 1,5245. लघुसंधानयोगाभ्याम् 7,5508. R. Gorr. 1,69,10. Buâe. P. 8,11,23. कृत° adj. Çiç. 11. शत° *hundertmal den Pfeil auflegend* MBh. 8,4727. — *f) das Anreihen von Wörtern* u. s. w. Suçr. 1,9,1. सचाम् Schol. zu Çâṅkh. Br. 23,1. प्लुतेन वपट्कारसंधानम् Çâṅkh. Çr. 1,1,42. 6,1,30. so v. a. संधि *Verbindung der Laute in Wort und Satz* RV. Prât. 4,5. 10,11. TS. Prât. 24,3. Comm. zu 14,15. zu AV. Prât. 4,114. 122. — *g) Vereinigung, Entzweiter; Vertrag, Vergleich, Bündniss, Friedensschluss, freundschaftliches Verhältniss:* मित्र° Spr. (II) 4706. Pañkat. 92,7. एवं वृत्ते तु संधाने MBh. 5,322. 13,7747. Harîv. 5925. कृष्णो ज्ञातीन्समानाय्य स संधानं करिष्यति 4270. 5928. 6011. Hit. 120,5. 127,20. 130,11. संधानं पस्य गच्छति Spr. (II) 331. Kathâs. 44,84. धन्येन केनापि सह मर्त्यलोके मम संधानं नास्ति *Freundschaft mit* Pañkat. 210,13. संधानासन (so ist mit der ed. Bomb. zu lesen) und यात्रासंधान so v. a. संधायासन und संधायगमन MBh. 12,3662. — *h) das Zusammensetzen, Mischen, Bereiten eines Trankes* AK. 2,10,42. H. an. Med. सुरायाः Comm. zu TBr. 2,652,11. in der Medicin verschiedener Gewürztränke, Liqueure und dgl. Çârṅ. Saṃh. 2,10,1. Bhâvapr. 5. मोदादिविकारकारिभिः (पुष्पमूलफलैः) कृतसंधानस्य प्रतिषेधः Kull. zu M. 5,10. नीलसंधानभाण्ड *ein Gefäss, in dem Indigo bereitet wird,* Hit. ed. Jones. 1930. — *i) saurer Reisschleim* Hall. 2,163. *ein geistiges Getränk; eine Durst erregende Speise* Râjân. im ÇKDr. Vgl. u. चुक्र 1). — Vgl. दुः°, पुनः° (*Wiedervereinigung zweier Personen* Sâh. D. 45,21), मद्य°.

संधानक (von संधान) 1) adj. (f. संधानिका) in नेमि° adj. *rund umschliessend:* ein best. Verband Suçr. 1,55,17. पाचनाग्नि° *zusammenhaltend, erhaltend* Verz. d. Oxf. H. 234,b,26. — 2) f. संधानिका *ein best. Gebäck* Pâkaçâstra im ÇKDr.

संधानकारिन् adj. *zusammenfügend, verheilend* Vishn. 1,6,16. भिन्न° *Getrenntes zusammenfügend* MBh. 5,5265.

संधानकृत् adj. *zusammenfügend, verheilend* Vishn. 1,10,6. Suçr. 1,199,4.

संधानताल m. *ein best. Tact* Pañkar. 1,12,7, v. l. संधानभाव im Text.

संधानित adj. fehlerhaft für संदानित Çârdârthak. bei Wilson.

संधानिनी f. fehlerhaft für संदानिनी Çârdârthak. bei Wilson.

संधानीय (von 1. धा mit सम् und von संधान) adj. 1) *mit dem man sich verbünden —, vertragen muss* Pañkat. 149,22 (संधनीय gedr.). संधेय ed. Bomb. — 2) *zum Wiederfestmachen —, zum Verheilen beitragend, verheilend* Suçr. 1,141,12. 2,30,6.

संधाय (von 1. धा mit सम्) absol. *nach vorangegangener Verständigung* (mit einem Gegner): °गमन Kâm. Nîtis. 11,5. संधायासन 17. fg. st. dessen यात्रासंधान und संधानासन MBh. 12,3662. — Vgl. विगृह्य.

संधारण (von धृ mit सम्) 1) adj. *zusammenhaltend, erhaltend:* न चास्ति पवि भोक्तव्यं प्राणसंधारणं मम MBh. 12,6399. — 2) f. या *a) Haltung:* मुखसंधारणाविशेष *eine best. Mundstellung* Comm. zu VS. Prât. 4,141. — *b) das Richten der Gedanken auf:* ब्रह्म° Buâe. P. 6,10,33. — 3) n. *a) das Tragen:* कुक्षि° *im Mutterleibe* (des Kindes) MBh. 12, 9312. — *b) das Zusammenhalten, Unterhalten:* वायु° adj. *vom Winde unterhalten:* अग्नि MBh. 12,6904. — *c) das Zurückhalten, Abhalten, Verhalten:* der Stimme RV. Prât. 6,5. eines Dranges (z. B. zum Wasserlassen): वेग° Kâraka 1,25. 2,5. Suçr. 1,243,7. 2,372,4. des Essens Cit. beim Schol. zu Çiç. 20, 9. — *d) das Verweigern:* प्रार्थनाति° Kâraka 4,4.

संधार्य (wie eben) adj. 1) *zu tragen, getragen werden müssend:* मनुष्यशत° (धनुस्) R. 3,4,42. — 2) *bei sich zu halten, in seiner Nähe zu dulden:* न स (भृत्यः) संधार्यो भूभुजा Spr. (II) 7349, v. l. — 3) *aufrecht zu erhalten, zu behaupten, zu beobachten:* गृहस्थाश्रम M. 3,79. — 4) *aufzuhalten in seinen Folgen, unschädlich zu machen:* ein Verbrechen Harîv. 4187 nach der Lesart der neueren Ausg., संतार्य die ältere.

संधि (von 1. धा mit सम्) 1) adj. *einen Uebergang enthaltend* u. s. w. TBr. 1,4,8,1. — 2) m. *a) Verbindung, Vereinigung;* = श्लेष AK. 3,3, 11. H. an. 2,254 (श्लेष्म fehlerhaft). = संश्लेष Hall. 5,49. = संघट्ट Trik. 3,3,225. Med. kh. 21. त्रिभिरेत्य संधिम् Kathop. 1,17. संधये सरला सूची वक्रा छेदाय कर्तरी Spr. (II) 6811. पापि: so v. a. *Verkehr, Umgang mit* 252. सुकर° adj. *leicht zu vereinigen, — zusammenzufügen* (सुवर्ण, कनकघट) 4971, v. l. व्यञ्जनमर्धमात्रं स्वरश्च मात्राकालः तयोः संधिरर्धार्धमात्रः *die Vereinigung Beider, Beide zusammen* Comm. zu TS. Prât. 21,1. नीति° so v. a. *das Ganze der Lebensklugheit* Spr. (II) 7061. — *b) Uebereinstimmen:* चतुर्णां मनसश्च TS. 3,2,8,2 (AV. v.l.). *Uebereinkunft, Verabredung:* प्रययुः समरात्रेण यत्र संधिः कृतो ऽभवत् Verz. d. Oxf. H. 53,a,19. — *c) Friede, Bündniss zwischen* (gen.), *mit* (instr., auch instr. mit सह) AK. 2,8,1,18. 3,4,22,49. H. 735. P. 6,2,154. M. 7,56. 65. 160. fgg. 189. 206. Jîv. 1,346. वज्रस्य सह शक्रेण संधिं कुरुत MBh. 3,303. 12,2138. न विद्यते संधिरवापि विग्रहो मृतैर्मतैर्वः 17,

87. R. 1,7,11. संधिं गच्छतु रामेण 4,14,28. Kâm. Nîtis. 9,1. fgg. Vasiṣ. Jogasûtrâ 1,13. 15 in Ind. St. 10,166. Spr. (II) 5216. शत्रुणा नहि संदध्यात्सुश्लिष्टेनापि संधिना 6371. 6814. fgg. 7183. 7496. Kathâs. 50, 54. Râjâ-Tar. 4,137. fg. 6,189. 225. Bhâg. P. 8,6,19. 28. Hit. 4,3. Vet. in LA. (III) 29,12. — *d) Verbindung der Laute in Wort und Satz, die euphonischen Veränderungen zusammenstossender Laute* ṚV. Prât. 2,2. 7. 18. 7,1. पद् ° 2,5. स्पर्शोष्मसंधयः 4,23. इउसंधौ 14,26. पदान्तपदा-योः VS. Prât. 3,2. द्वयोर्व्यञ्जनयोः Comm. zu 3,95. स्वर् ° AV. Prât. 4, 114. Comm. zu TS. Prât. 2,18. 10,15. 24. fg. Ind. St. 8,120. 464. 10, 407. Weber, Prâtiśâkh. 109. संधिमात्रं न जानासि माशब्दोदकशब्दयोः Kathâs. 6,117. Verz. d. Oxf. H. 169,*a*,1. 23. 173,*b*, No. 388. 174,*b*,4 v. u. संधिमाप्नोति Comm. zu Vop. 2,20. संधौ विश्लेषाश्लीलकष्टता: Sâh. D. 575. चत्वारि °ज्ञातानि Ind. St. 8,120. — *e) Veranstaltung:* सावरण-दृष्टसंधयः (संधि = साधन Schol. der ed. Calc.) समागमाः Râgat. 19,16. — *f) Ort oder Zeit des Zusammentreffens, Berührungspunkt; Zwischenraum, Zwischenzeit:* von Wasser und Gewächsen TS. 2,1,9,3. von feucht und trocken 6,4,4,5. 2,4. वेण्यस्तस्य 6,4,1. पृथिवी पूर्वरूपं द्यौ-रुत्तररूपम् आकाशः संधिः Taitt. Up. 1,3,1. fgg. सीमासंधिषु M. 8,248. 261. संधिषु सीमायाम् 251. न्यसेत गुल्मान्दुर्गेषु संधौ (so v. a. an der Grenze) च MBh. 12,2601. गङ्गायमुनयोः R. 2,54,8. 55,4. भ ° Śâśâs. 11, 22. प्रस्थ ° Mâlav. 59. शैलयोः H. 1034. सौदामिनीव श्लक्ष्णदरसंधिलीना Mâlatîm. 15,1. स्तनौ °क्षीनौ Spr. (II) 7185. Weber, Râmat. Up. 310. 344. विधान ° Kathâs. 53,68. कङ्कटवर्मसंधिषु R. 5,80,32. यच्च यः प्रा-णापानयोः संधिः स व्यानः Kâṭhân. Up. 1,3,8. पर्वप्रतिपदोः Weber, Gjot. 51. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,26. त्रेताद्वापरयोः MBh. 1,272. 3,10310. 12,12953. निशाया दिवसस्य च 7,1969. Bhâg. P. 7,13,5. — *g) Fuge, Gelenk:* संधाता संधिम् ṚV. 8,1,12. जानुनोः AV. 10,2,2. Çat. Br. 11,5, 2,2. घस्रि ° Kâraka 1,11. 17. °मर्माणि Suçr. 1,345,21. 14,1. 25,14. 97,10. ग्रंस ° 2,29,5. 7. 8. हृदय ° 1,35,3. Çârîr. Saṅh. 1,5,16. पुच्छ ° Kâty. Çr. 17,12,20. Nir. 2,20. MBh. 14,472. सर्वाङ्गसंधीषु (die Länge des Metrums wegen, °संधिषु die neuere Ausg.) Hariv. 12256. संधि-र्विक्रामति P. 1,3,41, Schol. ṚT. 1,7. Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,5 v. u. Spr. (II) 6044. Varâh. Bṛh. S. 31,5. 43. 52,4. 68,20. 100 (सुश्लिष्टसंधि-ता). 69,10. 33. AK. 2,6,2,24. 29. H. 588. 613. Hall. 2,368. Bhâg. P. 6,8,8. Daśâvat. 95,13. Vet. in LA. (III) 13,15. deren hundertundachtzig Ind. St. 2,71. zweihundert Jâtâ. 3,102. — *h) Berührungspunkt von Himmel und Erde, Horizont* Çat. Br. 3,2,1,5. 10,5,4,2. Âçv. Çr. 1, 1,23. Gaṇ. 3,2,2. — *i) die Zeit zwischen Tag und Nacht, Uebergangszeit, Dämmerung* (vgl. संध्या) VS. 24,25. TBr. 1,4,8,1. 2,2,9,8. Kauç. 73. MBh. 6,55. पताकेवात्रसंधयः 11,173. Varâh. Bṛh. S. 48,69. du. Çat. Br. 1,6,3,35. 3,4,4,13. Âpast. im Comm. zu TBr. 1,164,6. Bhâg. P. 10,16,62. प्राक्सध्यसंधियु दिनस्य Varâh. Bṛh. S. 30,17 nach Utpala = उदयास्ताक्रान्तमयकालेषु. — *k) Nath:* यात्ति शतधा पत्कञ्चुके संधयः Spr. (II) 2484. — *l) Falte:* वस्त्रसंध्यन्तर्गता eine Wanze Pañkat. 62,13. an einer Binde Suçr. 1,68,11. — *l) eine in der Mauer* (von Dieben) *gemachte Oeffnung, Bresche* Trik. 2,10,2. 3,3,225. H. 985, Schol. H. an. Med. Hall. 4,86. 5,19. संधिं क्षिप्त्वा M. 9,276. Mṛicch. 46,25. 47,2. 8. 48,13. Daśak. 71,4. Dhûrtas. 88,4. — *m) am Auge* heissen so fünf *Verbindungen der Bestandtheile desselben*, z. B. des Weissen mit dem Dunkeln, des Dunkeln mit der Linse Wise 292. Suçr. 2,303,11. 15. 306,16. 307,1. Çârîr. Saṅh. 1,7,38. — *n) die weibliche Scham* Trik. 2,6,22. 3,3,225. H. an. Med. — *o) Theil, Stück;* = भेद Trik. 3,3,225. H. an. कठिन्याः Schol. zu Naish. 22,54. चतुः °, त्रि ° द्वि ° *aus vier, drei, zwei Theilen zusammengesetzt* Ait. Br. 1,25. कानन ° *Waldpartie* Hariv. 9004. — *p)* N. eines Stotra (am *Uebergang zweier Tage*) Ait. Br. 3,44. 4,6. 10. Çat. Br. 5,5,2,4. 13,5,2,10. Pañkav. Br. 9,1,20. 3, 4. 20,1,1. — *q)* in der Dramatik Bez. *α) der fünf Fugen im Drama* (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श und निर्वहण) H. an. Med. (hier मुखाद्यङ्गे zu lesen). Daçar. 1,21. fg. Sâh. D. 321. 330. fg. 126,13. Kumâras. 7,91. zwei Samâdhi im Dhûrtanartaka Verz. d. Oxf. H. 138,*b*, No. 274. इति प्रधानाङ्गसंधिः Daśâvat. 87,5. कथा ° *eine Fuge in einer Erzählung* (wo nämlich diese durch eine andere Erzählung unterbrochen wird) Kathâs. 27,10. 59. 74,35. 89,100. 93,7. 118,8. — *β)* eines der 14 Glie-der im Nirvahaṇa (*Katastrophe*) Daçar. 1,45. fg. Sâh. D. 391. fg. — *r)* = सावकाश Med. — *s)* N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. eines Sohnes des Prasuçruta Bhâg. P. 9,12,7. — *t)* कर्मसं-धिषु fehlerhaft für कर्मसङ्गिषु Spr. (II) 4735. — 3) f. (nach TBr. Comm.) *die Genie der Verbindung* VS. 30,9. — Vgl. सतु ° (auch Jâtâ. 1,146), कपाट °, कपाल °, कानन °, काण्ड °, मन्थ °, त्रिसंधि, दुः °, दृढसंधि, हि-संधि, घृतसंधि, ध्रुव °, निः °, पट् °, पर्व °, पाषाण °, भग्न °, महासंधिविग्रह, मेघ °, वयः °, शरीर ° (auch Mṛicch. 48,24), शैल ° und सांघ.

संधिक 1) am Ende eines adj. comp. von संधि *Gelenk:* कोपकम्पाङ्ग ° Kathâs. 52,49. — 2) m. *eine Art von Fieber* Verz. d. Oxf. H. 319,*b*, No. 736; vgl. संधिग. — 3) f. धा *das Brennen geistiger Getränke* (मद्य-संधान) Çabdar. im ÇKDr.

संधिग = संधिक 2) Verz. d. Oxf. H. 318,*b*,2 v. u.

संधिगुप्त n. Bez. *eines künstlichen Satzes, in welchem durch euphonische Lautveränderungen der Sinn versteckt wird*, Verz. d. Oxf. H. 122,*b*,28.

संधिचौर m. *ein durch eine Oeffnung in der Mauer einbrechender Dieb* H. an. 6,2. Med. k. 78. 235. Çabdam. im ÇKDr.

संधिच्छेदक m. dass. Vîrûp. 127.

संधिज adj. 1) *aus einer Verbindung* —, — *Uebergangszeit* u. s. w. *entsprungen:* अहोरात्राः Çârîr. Gṛihy. 3,13. Kauç. 73. — 2) *aus einem grammatischen* Samâdhi *entstanden* ṚV. Prât. 2,13. Comm. zu AV. Prât. 3,56. स ° ṚV. Prât. 13,8. — 3) *den Verbindungsstellen* (des Au-ges) *angehörig* Suçr. 2,306,19. — 4) *durch Destillation* (vgl. संधान, सं-धिका) *gewonnen;* n. *Branntwein* Kâçîkâ. im ÇKDr.; vgl. संधित und संधृ.

संधिजीवक adj. *der auf unredliche Weise Geld erwirbt* (wörtlich von *Bresche lebend*) Trik. 3,1,9. H. 475. Hit. 44.

संधित s. u. संधृ.

संधितस्कर m. = संधिचौर H. an. 3,21.

संधित्सु (vom desid. von 1. धा mit सम्) adj. *ein Bündniss —, Frie-den zu schliessen wünschend* Kâm. Nîtis. 9,76.

संधिन् (von संधि) 1) m. *ein Minister für Bündnisse* (neben विग्रहिन्) R. ed. Gorr. Bd. VII, S. 341. — 2) f. संधिनी *eine rindernde Kuh* (nach

den Lexicographen eine vom Bullen besprungene und eine zur Unzeit gemolkene Kuh) AK. 2,9,69. H. 1267. an. 3,432. fg. Med. n. 150. संधिनी वृषस्यन्ती Hiatus bei Kull. zu M. 5,8. °तीर् Âpast. 1,17,33. M. 5,8. Jiéâ. 1,170. Paiçâcikîtrnd. 52,*b*,8. 53,*a*,3.

संधिनिर्मोचन n. Titel eines buddhistischen Sûtra Wassiljew 135. 152. 300. 302. 323. 327. Târan. 301. 316. मध्यमिकमूलसंधिनिर्मोचनव्याख्या (wohl मा° zu lesen) 137.

संधिबन्ध m. 1) vielleicht *Kitt* oder *Kalk* Inschr. in Z. f. d. K. d. M. 4,152. — 2) *Kaempferia rotunda* (भूमिचम्पक) Çabdâ. im ÇKDr.

संधिबन्धन n. *Sehne* H. ç. 128.

संधिमति m. N. pr. eines Ministers des Fürsten Gajendra Râga-Tar. 2,65. 72. 79. 82. 105. — Vgl. संधिमत् 2,*a*).

संधिमत् (von संधि) 1) adj. *a*) *wobei ein Zusammentreffen* (zweier Tage oder Tageszeiten) *stattfindet* Weber, Gsot. 51, N. 4. Comm. zu Kâty. Ça. 173, N. 2. — *b*) *im Frieden lebend:* Vishṇu MBu. 13,6971. *verbündet* Kim. Nîtis. 6,55 (der Comm. liest संधिना st. संधिमान्). — 2) m. N. pr. *a*) = संधिमति Râga-Tar. 2,110. fg. — *b*) eines Ministers des Fürsten Gajâpîḍa Râga-Tar. 4,496.

संधिमुक्त n. *Gliedausrenkung* Sucr. 1,300,7. 8.

संधिरन्ध्रका f. *eine Bresche in einer Mauer* Çabdârthak. bei Wilson.

संधिराग m. = संध्याराग Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,37.

संधिला f. 1) *eine Bresche in einer Mauer* H. 985. an. 3,691. Med. l. 144. — 2) *ein berauschendes Getränk* Med. — 3) *Haus* H. an. — 4) *Fluss* H. an. Med.

संधिविग्रहक (von संधि + विग्रह) m. *Minister der Bündnisse und des Krieges* Râga-Tar. 6,320. °विग्रहिक Vjutp. 95. Spr. (II) 3104. wohl nur fehlerhaft für संधिविग्रहिक.

संधिविग्रहकायस्थ m. *ein Secretär im Ministerium der Bündnisse und des Krieges* Kathâs. 42,91.

संधिवेला f. *Dämmerungszeit* Kâty. Ça. 7,5,8. 13,2,9. 25,11,14. Gobh. 3,10,14. 4,6,8. Lâṭy. 3,3,13. M. 4,55. P. 4,3,116. निशाया दिवसस्य च Vâsa im Âçvâlây. nach ÇKDr. — Vgl. संधिवेल.

संधिषामन् n. *ein Sâman zu den Samâdhistotra* (s. संधि 2) *p*) Pañcav. Br. 24,11,6. Çâṅkh. Ça. 9,21,2. Lâṭy. 2,9,19.

संधिसंभव adj. *aus dem grammatischen* Samâdhi *hervorgegangen;* m. so v. a. *Diphthong* Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,4.

संधिसितासितरोग m. *eine best. Krankheit des Auges* Verz. d. Oxf. H. 308,*a*,18. fgg.; vgl. संधि 2) *m*).

संधिस्कारक m. = संधिचोर Hit. 146.

संधीश्वर (संधि + ई°) m. N. pr. eines zur Erinnerung an die *Zusammenfügung* der Körpertheile Samâdhimati's errichteten Heiligthums Râga-Tar. 2,134.

संधुक्षण (von धुक्ष् mit सम्) 1) adj. *anfachend, entflammend:* कोप° Uttarar. ed. Cow. 116, N. 3. — 2) n. *das Anfachen, Entflammen:* अग्नि° Kârapa 1,8. घनल° Sucr. 2,48,13. 181,4. Vîcan. 1,8,20. वैर° MBu. 3, 15944. त्यागशक्ति° Daçak. 62,3.

संधेय (von 1. धा mit सम्) adj. 1) *zusammenzufügen:* धातु° *leicht z.* (कनकधट) Spr. (II) 4971. स्वर° *mit einem Ton verbunden werdend* VS. Prât. 6, 8. — 2) *mit dem man Frieden oder ein Bündniss schliessen kann oder muss* MBu. 12,3050. 6268 (auch अ°). Spr. (II) 1153. 6740. Kathâs. 12,36. Bhâg. P. 8,6,20. Pañcav. ed. Bomb. III,51,4. Hit. 116,21. 117,17. 20 (अ°). 126,12. 127, 19. न संधेयः कार्यं मया MBu. 9,260. धातु° *leicht zu versöhnen* Spr. (II) 4971. neutr. impers.: यमित्रैरपि संधेयम् *sogar mit Feinden soll man sich verbünden* 6812. किं नु संधेयमस्मिन् *kann man sich wohl mit ihm aussöhnen?* Bhâg. P. 10,47,16. — 3) *in Ordnung zu bringen, wieder gut zu machen:* अ° Ait. Br. 7,17. — Vgl. दुः°.

संध्य (von संधि) 1) adj. *a*) *auf dem Uebergangspunct liegend u. s. w.:* स्थान Çat. Br. 14,7,1,9. पौर्णमासी Gobh. 1,5,2. 12. चतुर्हिसंध्यम् Sucr. 1,7,16. — *b*) *auf dem grammatischen* Samâdhi *beruhend* RV. Prât. 2, 23. 3,6. 5,20. 11,3.20. 13,15. fg. 14,26. AV. Prât. 1,1. 2,27. 3,37. — *c*) (von 1. ध्या mit सम्) = सम्यग्विचारकर्तृ Comm. zu Viśvâm. S. 32. संध्या dass. ebend. — 2) f. संध्या *a*) *Uebergangszeit, Morgen- oder Abenddämmerung* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,111. AK. 1,1,8,3. H. 140. an. 2,387. Med. j. 59. पश्चिमा MBu. 1,656. पूर्वा 687. घोरा समभवत्संध्या 5890. पुरा संध्या प्रवर्तते 6028. R. 1,25,2. संध्या संरभ्यते घोरा MBu. 1,6462. R. 1, 28,21. शनैर्विपुध्यते 35,16. धर्कचन्द्राभ्यां रक्षिता 3,52,5. 4,43,47. Raghu. 1,83. 2,20. Varâh. Bṛh. S. 21,8. 30,5. fgg. प्राची, अपरा 31. संध्येव रागिणी वेश्या Kathâs. 12,93. Spr. (II) 6819. VP. 222. fg. 308. Brahma-P. in LA. (III) 54,11. 22. Bhâg. P. 2,1,36. 3,14,7. 8,20,24. °प्रयोद् (vgl. संध्याधि) Çâk. 75. °रूप Varâh. Bṛh. S. 3,35. 46,67. 75. du. 3,34. Çârṅg. Pa. 2,9. M. 2,78. 3,280. 4,50. 113. 131. 8,66. Jiéâ. 1,25. उभे पूर्वापरे MBu. 6,34. R. 2,25,13. 75,31. Sucr. 2,145,18. Spr. (II) 930. Weber, Kâmpaḍâ. 264. Hall. 1,106. संध्यामाम्, उप-धाम्, यनु-धाम् *die Morgen- und Abendandacht verrichten* Sharv. Bh. 4,5. Âçv. Gṛhy. 3,7,3. Çârṅg. Gṛhy. 2,9. 4,9. Kauç. 141. M. 2,69. 7,223. MBu. 1,1890. R. 1,31,20. 2,46,13. 64,33. R. Gorr. 1,26,2. Weber, Rikat. Up. 344. Verz. d. Oxf. H. 83,*a*,34. Verz. d. B. H. 91 (41). No. 326. Brahma-P. in LA. (III) 55,16. MBu. 3, 2256 (धन्वास्त mit der ed. Bomb. zu lesen). R. Gorr. 2,47,25. संध्यां कर्तुं पूजनम् Pañcar. 1,3,49. °वन्दन Verz. d. Oxf. H. 273,*b*,23. 276,*b*, 10. 40. संध्योपस्थान Comm. zu TBr. 1,67,4 v. u. °कार्य Vikram. 37,9. संध्याग्निकार्य Kathâs. 20,40. संध्याग्निहोत्रमन्त्र 24,36. °विधि 38,37. Verz. d. B. H. No. 1051. fg. Verz. d. Oxf. H. 267,*b*,26. 286,*a*, No. 670. संध्याङ्गजपविधि 267,*b*,30. °भेद 85,*a*,24. °नियम Bhâg. P. 3,14,36. Hier und da kann auch Bed. *d*) gemeint sein. — *b*) *Morgen- oder Abendgebet:* पूर्वी (पश्चिमा) संध्यां जपन् M. 2,101. fg. 4,93. उभे संध्ये जपन् 2, 222. R. 1,25,20. Brahma-P. in LA. (III) 54,7. °प्रयोग Verz. d. Oxf. H. 93,*a*,4 v. u. — *c*) *die Morgendämmerung* (vgl. संध्यांश) *eines* Juga (*Weltperiode*) M. 1,69. fg. Hariv. 311. fgg. VP. 23. Bhâg. P. 3,11,20. *die Dämmerung am Anfange und am Ende eines* Juga Med. Hariv. 11304. *am Ende* Bhâg. P. 1,3,25. — *d*) *die drei Gelenke des Tages: Morgen, Mittag und Abend:* °त्रय Varâh. Bṛh. S. 34,8. *die Genien dieser Zeitabschnitte* Âçv. Gṛhy. Paric. 1,2. — *e*) *die Dämmerung* (insbes. *die Abenddämmerung*) personificirt als eine Manifestation Brahman's VP. 40. Bhâg. P. 3,20,33. fgg. Troyer zu Râga-Tar. 1,33. als Geliebte der Sonne Spr. (II) 760. Çiva's Kathâs. 1,44. Râga-Tar. 1,33. 7,1. als Gattin Kâla's Vaiv. P. im ÇKDr. Pulastja's MBu. 5,3970. Pûshan's

R. 5,25,27. als Schwieger Vidjutkeça's 7,4,30. fg. — *f*) Bez. *eines einjährigen Mädchens, das bei der* Durgâ-*Feier diese Göttin vertritt,* Annadâkalpa im ÇKDa. unter कुमारी. — *g*) N. pr. eines Flusses H. an. Med. MBh. 2,375. — *h*) *Grenze* H. an. — *i*) = संधान H. an. — *k*) *Versprechen, Gelöbniss* (fehlerhaft für संधा) H. an. Uçîvaḷ. — *l*) = विसा (von 1. धा mit सम्) H. an. — *m*) *eine best. Blume* H. an. — Vgl. घ-र्मसंध्या, उपसंध्यम्, त्रिसंध्य, दीर्घ°, नीलसंध्या, प्राक्° und सांध्य.

संध्यक am Ende eines adj. comp. von संध्या in एक°.

संध्यक्षर (संधि + घ°) n. *ein auf* Saṁdhi *beruhender Vocal* d. i. *Diphthong* ṚV. Prât. 1, 1. 13, 15. VS. Prât. 1,45. 4,46. 55. 8, 8. AV. Prât. 1, 10. 3, 10. Comm. zu TS. Prât. 1,23. 2,47. fg. 18, 1. P. 5,3,83, Vârtt. 8. Ind. St. 10, 421. Âçv. Ça. 1,5,9. Çâṅkh. Ça. 1,2,4. 5. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37.

संध्यर्त (संधि + 2. ऋत) Mânk. P. 51,87.

संध्यवेला f. *Dämmerungszeit* Pân. Gaṇ. 2,11.

संध्यांश (संध्या + अंश) m. *die Abenddämmerung eines* Juga (*Weltperiode*) M. 1, 69. fg. Hariv. 511. fgg. VP. 23. Bhâg. P. 3, 11, 20. °क dass.: कलि° Hariv. 2371.

संध्याकाल m. *Dämmerungszeit* R. 1, 28, 21. Varâh. Bṛh. S. 11, 51. 30, 1. 8. 47, 22. Spr. (II) 7566.

संध्याचल (संध्या + अ°) m. N. pr. eines *Berges* Kâlikâ-P. 50. 81 nach ÇKDa.

संध्यातर् M. 8, 342 schlechte Lesart für संदातर्.

संध्यात्व n. nom. abstr. von संध्या *Dämmerung* Daçak. 67, 1.

संध्यानाटिन् adj. *in der Dämmerung tanzend;* m. ein N. Çiva's Taitt. 1, 1, 17. °नाडिन् fehlerhaft H. ç. 46.

संध्यापद्धति f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 269.

संध्यापुष्पी f. *Jasminum grandiflorum Lin.* Râgân. im ÇKDa.

संध्याबल adj. *in der Dämmerung mächtig;* m. ein Râkshasa Taitt. 1, 1, 74. H. ç. 37.

संध्याबलि m. 1) *eine zur Dämmerungszeit gerichte Spende* (s. u. 1. बलि 2) Manu. 35. — 2) *ein in einem* Çiva-*Tempel freigelassener Stier* Hân. 67.

संध्याभ्र (संध्या + अभ्र) n. 1) *eine Regenwolke in der Dämmerung* R. 3, 31, 13. Raghu. 12, 28. Bhâg. P. 4, 6, 36. — 2) *eine Art Röthel* (सुवर्णगैरिक) Râgân. im ÇKDa.

1. संध्याराग m. *das rothe Glühen der Dämmerung* (eine best. Naturerscheinung) Varâh. Bṛh. S. 21, 19.

2. संध्याराग 1) adj. *die Farbe der Dämmerung habend.* — 2) n. *Mennig* Râgân. im ÇKDa.

संध्याराम m. ein Name Brahman's (vgl. u. संध्य 2) *e*) Çârdûl. im ÇKDa.

संध्यावास m. N. eines Dorfes Kathâs. 108, 40.

संध्याविद्या f. Bein. der Varadâ Taitt. Âr. 10, 34.

संध्याशङ्ख m. *eine Muschel, die beim Eintritt der Dämmerung geblasen wird:* °ध्वनि Mâlatîm. 41, 16.

संध्योपनिषद् f. Titel einer Upanishad Notices of Skt Mss. 34.

संध्यास्य s. u. संध्यास्य.

सन्ध 1) adj. s. u. 1. सद् und vgl. सन्धीकर्. — 2) m. = सन्धकट्टु Bhâv.

सन्धक (von सन्ध) adj. *zwerghaft* Bhâv. zu AK. 2,4,2,15 nach ÇKDa. — Vgl. गत°.

सन्धकट्टु m. *Duchanania latifolia Roxb.* AK. 2,4,2,15.

संनत 1) adj. s. u. नम् mit सम्. — 2) m. N. pr. eines Affen R. 4,39,37.

संनति (von नम् mit सम्) 1) f. *a*) *Verminderung, Erleichterung:* क्रियतामस्याः पृथिव्या भारसंनतिः (°संततिः die neuere Ausg.) Hariv. 2962. — *b*) *Zuneigung, Gunst, Willfährigkeit* AV. 11,7,3. सं मे संनतयो नमन्ताम् TBr. 3,7,6,18. TS. 7,5,22,1. 23,1. °लोम TBr. 3,8,20,5. विदुषाम् *gegen* Bhâg. 8,31 (संमति ed. Calc.). भूपाल° Varâh. Bṛh. S. 104,32. — *c*) Bez. von *Sprüchen, die dies ausdrücken* (z. B. AV. 4,39,1) Kauç. 5. 68. 72; vgl. TBr. Comm. 3,630. — *d*) *Unterwerfung; Demuth, anspruchloses Betragen* H. an. 3,311. Med. t. 168. संनतिमेव ह्यगमुः MBh. 6,2630. ये च दिग्विजये तस्य संनतिं न ययुर्नृपाः Bhâg. P. 10,70,24. MBh. 2, 1333. 5, 1707 (mit loc. der Person). 6, 772. 8, 1484. 3614. 13, 6903. Hariv. 3269. 7740. 8739. 9131. R. 1,46,9 (47,8 Gorr.). 5,64,30. Bhâg. P. 4, 11, 31. 7, 11, 24. 10, 28, 10 (mit loc. der Person). — *e*) *Laut, Ton* H. an. Med. — *f*) N. pr. α) einer Tochter Devala's (Asita's) und Gattin Brahmadatta's Hariv. 1261. fg. — β) einer Tochter Daksha's und Gattin Kratu's VP. 34. Mârk. P. 50,23 (संतति fehlerhaft). 52,24. — 2) m. N. pr. *a*) eines Sohnes des Sumati Hariv. 1080; vgl. संनतिमत्. — *b*) eines Sohnes des Alarka Hariv. 1587.

संनतिमत् (von संनति) 1) adj. *unterwürfig, bescheiden, anspruchlos* MBh. 2,581 (mit gen.). Hariv. 1262. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Sumati VP. 453. Bhâg. P. 9,21,28; vgl. संनति 2) *a*).

संनतेयु m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva MBh. 1,3701. Hariv. 1659. — Vgl. संततेयु.

सन्नद् adj. *zu Nichte machend* (nach Nîlak.): गोप्ता गोप्तॄणां सन्नदो दुष्कृतीनाम् Hariv. 7446. सन्नदः सन्नयमानो (!) नाशस्तत्प्रदः Nîlak.

संनद्ध 1) adj. s. u. 1. नह् mit सम्. — 2) m. N. *eines best. Sonnenstrahls* VP. 2te Aufl. 2,297, N.

संनद्धव्य partic. fut. pass. von 1. नह् mit सम् *sich rüsten:* स चेत्संनद्ध आगच्छेत्संनद्धव्यं ततो भवेत् *dann muss man sich rüsten* MBh. 12,3542.

सन्नभाव adj. *kleinmüthig;* davon °त्व n. *Kleinmuth* MBh. 14,1091. = नष्टभक्तित्वं देवादिषु Nîlak.

संनंम् f. = संनति 1) *b*): मह्यं संनमः सं नमन्ताम् AV. 4,39,1.

संनयं (von 1. नी mit सम्) 1) adj. *zusammenführend* ṚV. 2,24,9. — 2) m. *a*) *Versammlung* AK. 3,4,22,153. H. an. 3,512. Med. j. 109. देवानाम् MBh. 1, 7066. 7945. — *b*) *Nachhut eines Heeres, Hintertreffen* AK. H. an. Med.

संनंहन (von नह् mit सम्) n. 1) *das Zusammenbinden, Schnüren* Nir. 4,21. इध्मबर्हिषोः Âçv. Gṛhy. 1,10,3. — 2) *das Sichrüsten* AK. 3,4,2, 23. 25,170. देव° Hariv. Adhj. 243 in der Unterschr. — 3) *Band, Schnur* TS. 1,1,2,2. Çat. Br. 1,3,3,6. 2,6,1,15. इध्म° *ein Strang aus Grüsern u. s. w.* TBr. 3,7,6,18. Âçv. Ça. 1,4,18. Kâty. Ça. 3,1,13. 2,3. Kauç. 87. MBh. 4, 1320. युग° 7,3397. — 4) *Rüstzeug, Rüstung* MBh. 2,1914. 7, 79 (nach der Lesart der ed. Bomb.). गाढं संनह्ने चक्रे R. 4, 13, 20. — 5) fehlerhaft für संहनन in वज्र° adj. MBh. 4, 2242. — Vgl. पत्नी°, सर्व°

संनदनीय MBh. 9,890 fehlerhaft für संदननीय (*fest, gedrungen*), wie die ed. Bomb. liest.

संनाद् (von नद् mit सम्) m. 1) sg. und pl. *Getön, Gebrüll, Geschrei* u. s. w.: लोमहर्षण MBh. 7,3122. गीतवादित्र° 2660. भेरीणाम् R. 6,2, 40. संगीत° Bhâg. P. 3,2,6. ढल° R. 5,74,37. ऊर्मिजल° 39. सिंहशार्दूल° Harîv. 5374. घोर° adj. (अरण्य) MBh. 1,6995. कोकिलाकुल° 2376. दृप्तकुक्कुट° Harîv. 4178. द्विजालिकुल° Bhâg. P. 10,3,3. मातृणाम् R. 2,39,29. 7,15,15. भीम° adj. 22,7. °शब्द 5,38,38. MBh. 12,7626. — 2) N. pr. eines Affen R. 6,3,23; vgl. संनाद्न 2).

संनाद्न (vom caus. von नद् mit सम्) 1) adj. *ertönen machend, mit Getöse u. s. w. erfüllend:* लोक° (वक्त्र) MBh. 1,3118. — 2) m. N. pr. eines Affen R. 6,3,23; vgl. संनाद् 2).

संनाम (von नम् mit सम्) m. *das Sichneigen, Unterwerfung:* स° adj. *sich demüthig neigend* Naish. 1,3. nach dem Comm. सत्त्व + नाम.

सन्नामन् (सत्त्व + ना°) n. *ein guter, schöner Name* ebend.

संनाय्य Hall. 2,261 schlechte Lesart st. संनाय्य; vgl. Randglosse zu H. 831.

संनाह् (von नह् mit सम्) 1) *das Umbinden, Gürtung:* कक्षा° (beim Elephanten) Varâh. Bṛh. S. 96,4. *das Sichrüsten* Hall. 3,57. °ज्ञननी (भेरी) R. 6,9,22. कृत° adj. *gerüstet* MBh. 1,3432. *das Sichrüsten zu Etwas* so v. a. *Unternehmung* Daçak. 114,11. — 2) *Band, Schnur:* काञ्चनसंनाहे तले (so ed. Bomb. st. प्रभे) MBh. 4,1418. — 3) *Rüstzeug, Pferdegeschirr* Taik. 2,8,45. MBh. 4,1017. Kathâs. 19,67. *Rüstzeug, Rüstung eines Kriegers* H. 766. Hall. 2,304. Ait. Br. 7,14. Çiñkh. Ça. 15,18, 26. 28. MBh. 2,2520. 3,664. 14372. 15068. 14,2365. Harîv. 9290. संनाहादिधारण Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,23. काञ्चन° adj. R. 6,19,5. कृत्स्न° adj. Bhâg. P. 9,10,27. दिव्यप्रावरण° adj. 10,82,5. शीलसंनाहरक्षिताः (साध्याः) Spr. (II) 4549. — Vgl. वि°, सर्व° und सांनाहिक.

संनाह्य (von संनाह्) adj. zum *Kampf gerüstet:* ein Elephant H. 1222. Hall. 2,69.

सन्नि f. nom. act. von 1. सद्; s. सन्निसत्त्व.

संनिकर्ष (von 1. कर्ष् mit सम्) 1) m. *a) Zusammenrückung, Annäherung; Nähe, nahe Berührung* H. 1450. Âçv. Çr. 1,2,9. परः संनिकर्षः संहिता Nir. 1,17. P. 1,4,109. प्रह्व° Çiñkh. Gṛhy. 4,7. देशकाल° Çiñkh. Ça. 13,24,18. Gobh. 1,5,8. क्रीडन्ति सर्पेनकुला मृगेर्व्याघाश्च मित्रवत् । प्रभावाद्दीप्ततपसां संनिकर्षान्महात्मनाम् ॥ MBh. 13,631. तव संनिकर्षे वृणे 1026. Jâtâ. 3,160. R. Gorr. 1,80,14. संनिकर्षाच्चानुरागः — सर्वस्य जायते 2,7,24. स्त्रीसंनिकर्षे परिवर्तुम् Kumâras. 3,74. Çiç. Ch. 63,6. Mâlav. 26. उत्कण्ठते च पुंस्त्वसंनिकर्षस्य Uttarar. 112,6 (151,11). Spr. (II) 3170. 6429. 6820. Mârk. P. 15,68. 65,13. Paṇ. 100,8. Bhâg. P. 5,19, 1. 10,29,27. संनिकर्षे *in der Nähe von* (gen.) MBh. 1,1174. 3,1533 (falschlich संनिकर्ष ed. Calc.). 16088. Harîv. 5278. R. 4,20,17. Bhâg. P. 1,12,10. कर्म्याय° Kathâs. 33,98. संनिकर्षम् *in die Nähe von* (gehen, gelangen, führen u. s. w.) R. 6,99,21. Ragh. 6,20. Spr. (II) 7191. Kathâs. 10,93. 18,350. वातायन° Ragh. 7,8. संनिकर्षात् *aus der Nähe* (sich entfernen u. s. w.): गच्छताम् — संनिकर्षादितो मम R. 6,5,13. वर्जितः 7,39,5. स्वात्मसंनिकर्षाद्व्यवारयत् Kathâs. 74,88. — पुण्यवत्त्वयोः Kap. 2,2,1. वायु° *Berührung mit* 1,15. इन्द्रियार्थ° 3,1,18. चात्मेन्द्रियमनोऽर्थ° 5,2,15. Sarvadarçanas. 107,11. 134,8. इन्द्रियार्थसंनिकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम् Tarkas. 25. fg. Bhâg. P. 5,10,23. 11,25,7. Bhâsâp. 62. 131. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 135. परस्पर° *gegenseitige nahe Beziehung* Sâṅkhyak. 1,363,11. — *b) das Dasein, Vorhandensein, Vorkommen:* प्रयोग° (= उत्पत्ति Comm.) Gaim. 1,26. — *c) etwas Naheliegendes, — Neues:* वेदार्थैके संनिकर्षम् (चक्रुः) Gaim. 1,27. = चाधुनिक Comm. — *d) Behälter, Sammelplatz* (लयस्थान Comm.) Bhâg. P. 2,2,30. — 2) adj. *nahe stehend:* वृत्तयोः संनिकर्षयोः (warum nicht संनिकृष्टयोः?) Harîv. 13228.

संनिकर्षण n. = संनिकर्ष 1) *a)* AK. 3,3,23. यावद्देहेन्द्रियप्राणैरात्मनः संनिकर्षणम् *eine nahe Berührung mit* Bhâg. P. 11,28,12.

संनिकर्षता f. nom. abstr. von संनिकर्ष *nahe Berührung* Kusum. 41,12.

संनिकर्षवादार्थ m. Titel einer Schrift Hall 46.

संनिकर्षविचार m. desgl. ebend.

संनिकाश (von काश् mit संनि) m. *Schein, Aussehen;* stets am Ende eines adj. comp. (f. आ) *den Schein —, das Aussehen von — habend:* शशाङ्क° MBh. 7,4739. 9,986 (fälschlich °संविकाश ed. Calc.). 1075. सङ्घ° R. 3,64,21. रवि° 4,16,33. गिरि° 50,38. 6,36,34. Mṛicch. 76,14. Varâh. Bṛh. S. 19,2. 4. 67,5. — Vgl. संकाश.

संनियत् (von यत् mit संनि) m. *Züchtigung, Bestrafung* MBh. 1,3503.

संनिचय (von 1. चि mit संनि) m. 1) *das Anhäufen, Sammeln:* अर्थसंनिचयं कुर्यात् MBh. 12,2631. कोशसंनिचयेषु (नियुक्ताः) 3975. — 2) *Vorrath, Fülle, Menge:* रत्न° Harîv. 6922. तेजः° (नियतम् mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 13,1025. अल्प° adj. *geringe Vorräthe habend* R. 1,6,7.

संनिदाघ m. = निदाघ *Hitze, Sonnenhitze:* °दग्धस्य यद्वा क्लिष्टस्य Bhâg. P. 3,12,2.

संनिध n. = संनिधान *Nähe* Vopâlita bei Bhar. zu AK. 3,3,23 nach ÇKDa.

संनिधातर् (von 1. धा mit सम्) nom. ag. 1) *Berger, Verwahrer:* मोक्षस्य M. 9,275. — 2) *ein in der Nähe Seiender:* संनिधात्री im Sinne des fut. Naish. 9,78. — 3) m. *ein Dienst thuender Beamter* Paṇḍat. 136, 17. कः को ऽत्र संनिधातॄणाम् (so ist zu lesen) Râja-Tar. 3,237.

संनिधान (wie eben) n. 1) *Behälter, Sammelplatz:* तपसाम् (तपसो st. तपसा mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 7,9186. दोषाणाम् Spr. (II) 1038. Bhâg. P. 10,2,28 (= लयस्थान Comm.). — 2) *das Nahesein, Nähe, Gegenwart, Anwesenheit, das Dasein* H. 1450. Hall. 4,7. 5,5. वक्त्र° Harîv. 8449 (nach der Lesart der neueren Ausg., °संविधान die ältere). योगो मुहूर्तं तव संनिधानं ममैव कृत्स्नादपि जीवलोकात् R. 2,21, 52. Kap. 1,97. Vishn. 1,7,80. तेषामसंनिधाने Spr. (II) 934. सत्संनिधानेन 1619. 5170. 2800. 5101. 5497. 6039. 6221. ईप्सितरस° Vikr. 19,1. संनिधानं तदर्थये । प्रभोस्तत्र Kathâs. 80,193. fg. Mârk. P. 15,59. संनिधानमस्माकं भविष्यति *wir werden anwesend sein* 97,35. संनिधानं कृ *erscheinen* 62,1. संनिधाने परे कृते 97,26. राज्ञश्चासंनिधानकृत् *die Abwesenheit des Fürsten bewirkend* Kathâs. 15,120. — Prasoçar. 93,*b*,2. Sarvadarçanas. 153,1. 2. Schol. zu Kâtj. Çr. 3,11,13. Kusum. 12,8. Kull. zu M. 6,83. विक्रयक्रेतृविषयसंनिधाने ऽप्यविक्रियत्वम् (so ist zu lesen) 93. यत्संनिधानात्सततं तिष्ठतीनाम् *das Nichtvorkommen* Spr. (II) 1317. संनिधाने *in der Nähe —, in Gegenwart von* (gen. oder im comp. vorangehend): ग्राम्य° Hit. 113,6. मत्संनिधाने Kathâs. 120,89. Hit. 18,15. 69,4. तव संनिधानात् *von dir her* (kommen) Bhâg. P. 11,29,37.

प्रयये — पार्वतीसंनिधानतः zu — *bis* Pañcar. 1,15,5.

संनिधि (wie oben) m. 1) *Nebeneinanderstellung, gleichzeitige Erwähnung* Kāṭy. Ça. 3,2,15. 4,4,3. 7,1,35. 10,9,22. 12,4,5. 22,5,52. = पदानामविलम्बेनोच्चारणम् Tarkas. 50. Sin. D. 17,11. 27. Schol. zu Kap. 1,96. — 2) *Nähe, Gegenwart, Anwesenheit, das Vorhandensein* AK. 3, 3,22. H. 1451. an. 3,251. Med. dh. 37. Adhjâtmar. 1,1,24. Sarvadarçanas. 165,21. °वियोग Mâlav. 65,10. राजसंनिधिलोकाः *in der Nähe des Fürsten* Pañcat. ed. orn. 23,14. °रत्नपूर्वा भूः *so v. a. mit vor ihm liegenden Juwelen* Spr. (II) 4594. संनिधौ *wenn man anwesend ist*, अ° *wenn man nicht anwesend ist* M. 5, 74. 8, 147. Comm. zu Kāṭy. Ça. 394,21. *fg.* 423,19. संनिधौ mit einem gen. oder am Ende eines comp. *in der Nähe, — in Gegenwart von* Âçv. Ça. 1,9,5. M. 2,194.195. 4,58.99. 108. 8,60.79.194 u.s.w. MBh. 3,2180.2189.2367.2758. 5,1220 (nach der Lesart der ed. Bomb.). R. 1,2,13. 2,22,19. 32,27. 64,72. 82,26. 101,25. Jogas. 2,35. Çik. 171. Spr. (II) 3101. 6413. 7336. Varâh. Bṛh. S. 96,4. Kathâs. 36, 46. Râǵa-Tar. 2,147. 4,132. Daç. P. 1,15,5. 5,9,5. 6,12,6. 18,5. 7,5,14. स्वसंनिधावुपवेश्य Dhûrtas. 92,5. नाधीतं गुरु° *beim Lehrer* Spr. (II) 4155. गुरु° नीतः *in die Nähe von, zu* Ved. in LA. (III) 10,17. नितेतुरसंनिधौ *in Abwesenheit von* M. 8,181. विच्छिन्नकरपरमाणवसंनिधौ *wenn nicht vorhanden ist* Kusum. 15,22. घटं प्राप्तो भयार्तस्तव संनिधिम् *zu dir* R. 3,42,15. °संनिधिं प्रस्थिता Prab. 68,5. यस्य नाथाति संनिधिम् Sin. D. 118. ज्ञले ऽस्मिन्संनिधिं कुरु *erscheine in* Pañcat. 3,6,9. संनिधिं वि-धा *Platz ergreifen, seinen Sitz aufschlagen in* (loc.) Râǵa-Tar. 4,110. बन्ध् dass. 307. — Vgl. सांनिध्य.

संनिनद् (von नद् mit संनि) m. *Getön, Geschrei* u. s. w.; pl. R. 6,37,14.

संनिनाद (wie oben) m. dass. MBh. 7,3038. R. 6,17,32.

संनिपत्य absol. von 1. पत् mit संनिः संनिपत्योपकारक *unmittelbar wirkend* (Gegens. व्यवधानोपकारक) Comm. zu Kāṭy. Ça. 27,16. 38,8. 87, 12. 394,15. Madhus. in Ind. St. 1,15,6. 7.

संनिपात (von 1. पत् mit संनि) m. 1) *Zusammenstoss* (auch von Feinden), *das Zusammenprallen, Zusammentreffen; Verbindung:* शरयोः MBh. 3,1565. 7,3625. तालिका° Harîv. 9920. कर° (*Hand und Strahl*) Kathâs. 103,237. गज° Râgat. 7,48. घनजयवृक्षसयोः MBh. 2,1017. 1039. 4,352 (= Harîv. 4717). 1534. 1902. 6,146. 2154. 4161. 7,1247. 3554. 14,479. Harîv. 4734. Kir. Nîtis. 9,60. Baiṣṇâp. 116. संयोगस्तु व्यञ्जनसंनिपातः ṚV. Prât. 1,7. स्वरितानुदात्त° TS. Prât. 10,12. वर्गाणां विपरीतानाम् Comm. zu AV. Prât. 2,38. Pat. zu P. 6,4,19. Paribhâshâ zu 7,1,13. वातपित्तकफशोणित° Suçr. 1,4,9. 61,6. 320,14. 2,1,5. Kir. 5,36. R. 5,85,23. प्राणानाम् MBh. 3,13969 = 12,6877. धूमज्योतिःसलिलमरुतां संनिपातः ist die Wolke Megh. 5. Râgat. 13,38. उद्गयनपूर्वपतपुण्याक्संनिपाते पञ्चकालः Liṭ. 3,1,1. 5,9,3. Kāṭy. Ça. 1,7,15. 22,1,42. Çâṅkh. Ça. 1,16,16. Kauç. 68. Âçv. Ça. 7,2,15. 3,6,10. 9,6,7. ṚV. Prât. 13, 4. 17,16. R. 3,43,37. Spr. (II) 1441. Daç. P. 11,25,5. 6. — 2) *coitus* Âpast. 2,1,17. 20. *fg.* 26,20. 27,11. मैथुने MBh. 5,1067. — 3) *der Zusammentritt sämmtlicher drei Humores zur Hervorbringung einer Krankheit und die auf diese Weise entstandene Krankheit (das Zusammenwirken zweier Humores heisst* संसर्ग) Karaka 3,6. Suçr. 1,83,6. 2, 40,5. 133,1. संसर्गे संनिपाते च वस्तिरेव हितः 196,14. 426,18. 529,12. °दुष्ट 1,45,6. °ज्ञ (so v. a. सर्वज्ञ, त्रिदोषज्ञ) 62,12. °समुत्थ 174,11. संनिपातोत्थित 2,452,7. °ज्वर 1,200,19. °ज्वर 2,402,20. Çârṅg. Saṅh. 2, 2,104. °शमन Suçr. 2,133,18. — Spr. (II) 6283. Verz. d. B. H. No. 949. 965. 972. 1370. Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 758 (14 Formen). °भैरवो रसः *a.a.O.* — 4) in der Astrol. *eine best. Art von Conjunction der Planeten* Varâh. Bṛh. S. 20,3. उदितः पश्चादेकः प्राङ्नान्यो यदि स संनिपाताख्यः 3. 9. — 5) *Fall* (einer Waffe u. s. w.); s. लतया°. — 6) *Tod:* उत्पत्तिवृद्धिव्ययसंनिपातैर्न युज्यते ऽसौ परमः शरीरी MBh. 12,7408. = मरण Nîlak. — 7) *ein best. Tact:* एक एव गुरुर्यत्र संनिपातः स उच्यते Saṅgîtadâm. im ÇKDr. — Vgl. लतया°.

संनिपातकलिका f. Titel eines über die *Krankheit* Sannipâta *handelnden Werkes* Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 758.

संनिपातन n. *das Zusammenfallenlassen* Çârṅg. Ça. 1,2,27. 13,5,1.

संनिपातनुद् 1) adj. *die* Sannipâta *genannte Krankheit vertreibend* Suçr. 1,162,15. — 2) *eine* Nimba-*Art* (निपालनिम्ब) Râǵân. im ÇKDr.

संनिपातिन् adj. *zusammentreffend, zusammenfallend* Comm. zu Kāṭy. Ça. 27,2 v. u.

संनिपात्य adj. *zu schleudern:* बाणो मृगशरीरे Çik. 10.

संनिबर्हण (von 1. बर्ह् mit संनि) n. *das Niederdrücken* so v. a. *Besiegen:* मनसः Spr. (II) 1384.

संनिबोद्धव्य (von 1. बुध् mit संनि) adj. *zu erkennen:* पूर्वचक्रस्यागमनं तस्मिन्नपि संनिबोद्धव्यम् Varâh. Bṛh. S. 38,6.

संनिभ adj. (f. आ) am Ende eines comp. = निभ *gleich, ähnlich* H. 1461. Hall. 4,9. वसुधाधर° MBh. 1,6022. 3,2457.2701.11997. 16774. 5, 7244 (बल = गन्धकरस! Nîlak.). 7,4697. 12,6329. R. 1,1,62. 6,24. 9, 18. 35. 37,20. 54,21. 55,2. 24. 60,21. 2,54,28. 91,29. 94,5. R. Gorr. 1,46,21. 2,30,12. 3,53,13. 4,7,22. 38,30. 5,21,20. Ṛt. 1,11. Varâh. Bṛh. S. 3,24. 28,6. 11. 34,5. Cit. beim Schol. zu Çik. 6,3. Kathâs. 28, 3. 32,163. Spr. (II) 302. 3700. Râǵa-Tar. 3,107. 118. 290. Daç. P. 3, 13,23. Pañcar. 1,4,48. 7,2. Pañcat. III,140. H. 3. 19. पीताभ्रणा° so v. a. पीताभ्रणा Varâh. Bṛh. S. 30,13. — Vgl. गोमेद°.

सन्निमस् (von सन्नि) adj. *verzweifelnd, kleinmüthig*, als Umschreibung von निर्विण्ण Comm. zu Daç. P. 11,26,4.

सन्निमित्त (सत् + नि°) 1) n. *ein gutes Vorzeichen* R. 6,19,44. — 2) °म् *für eine gute Sache* Spr. (II) 3063.

संनियच्छन (von यम् mit संनि) n. *das Bändigen, Zügeln, Lenken:* रथानाम् MBh. 8,1654.

संनियन्तर् (wie oben) nom. sg. *Bändiger, Zügeler, Lenker:* क्षत्रियस्य M. 9,320 = MBh. 12,2927.

संनियम (wie oben) m. *Bestimmtheit* Gaim. 1,26. मूल° Suçr. 1,363, 10. यसंनियमार्थव्याख्यान Kumârila bei Müller, ST. 227.

संनियोग (von 1. युज् mit संनि) m. *Anweisung, Auftrag* Harîv. 7705. 8438. R. 5,84,7. *Vorschrift* Vârtt. 2 zu P. 7,3,117—119. Schol. zu 4, 1,7. 8,3,2. Siddh. K. zu 3,1,11.

संनिरुद्धगुद् m. *Verengerung des Mastdarms* Wise 387. Suçr. 1,24, 20. 297,11. 2,121,16. 19. Çârṅg. Saṅh. 1,7,65. — Vgl. निरुद्धगुद्.

संनिरोद्धव्य (von 2. रुध् mit संनि) adj. *einzusperren:* नारी M. 9,82.

संनिरोध (wie oben) m. 1) *Hemmung, Unterdrückung* Suçr. 1,36,3.

क्रिया° 81,6. 64,14. इन्द्रिय° MBh. 16,121. गुण° Bhâg. P. 2,2,30. — 2) *Einsperrung, Gefangensetzung*, pl. Bhâg. P. 7,5,43. — 3) *Enge:* पर्वत° *Bergschlucht* MBh. 3,12341.

संनिवपन (von 2. वप् mit संनि) n. *das Zusammentragen* (des Feuers); davon संनिवपनीय adj. *damit verbunden:* इष्टि Çâṅkh. Br. 19,1. Çr. 3,22,6.

संनिवर्तन (von वर्त् mit संनि) n. *das Umkehren, Umwenden* (intrans.) MBh. 7,6851 (pl.). R. 2,27,28.

संनिवाय (von 2. वप् mit संनि) m. *das Zusammenschütten:* यवानाम् Âpast. 2,12,10.

संनिवाय (von 5. वा mit संनि) m. *Verknüpfung, Vereinigung:* गुण° Bhâg. P. 2,2,22.

संनिवारण (vom caus. von 1. वर् mit संनि) n. *das Zurückhalten:* समरे पाण्डवेयानामभिधावताम् MBh. 9,80.

संनिवार्य (wie oben) adj. *zurückzuhalten, zu hemmen:* वधोन्मुख Mâlav. P. 127,41. अभिमान MBh. 12,11983.

संनिवास (von 5. वस् mit संनि) m. 1) *das Zusammenwellen, Zusammensein* Bhâg. P. 2,10,27. — 2) *gemeinschaftlicher Wohnsitz, Nest* MBh. 12,4366.

सन्निवास (सत् + नि°) adj. *bei Guten weilend:* Vishṇu MBh. 13,7024.

संनिवृत्ति (von वर्त् mit संनि) f. *Wiederkehr:* यसंनिवृत्यै तदतीतम् Çiç. 137. यसंनिवृत्तये Râgat. 8,48. यभूयःसंनिवृतये 10,28.

संनिवेश (von 1. विश् mit संनि) m. 1) *Platzergreifung, Niederlassung:* संनिवेशं कृ *sich niederlassen* R. 5,1,7. ते पदादृसंनिवेशं कुर्वन्ति *sich festsetzen in* Suçr. 1,92,4. क्रियतां समात्रसंनिवेशः *man sorge dafür, dass die Versammlung Platz finde*, Uttarar. 119,9 (161,9). सप्तातीयानामेकत्र संनिवेशः *das an demselben Platze Stehen* Siṅh. D. 209,9. — 2) *Auftrag:* लक्षण° *so v. a. Brandmarkung* Spr. (II) 6295. — 3) *Gründung:* पुरादीनाम् Verz. d. Oxf. H. 48,a,2. — 4) *Anordnung, Einrichtung, Zusammensetzung, Arrangement:* व्यूहो विशिष्टः संनिवेशः Verz. d. Oxf. H. 230,b,35. fg. 42. कन्यापुर° Daçak. 90,4. 5. गृहसंनिवेशोपदेशक Kull. zu M. 3,163. स्कन्धावार° Kim. Nîtis. 16 in der Unterschr. Siṅh. D. 138,19. केश° Nîlak. zu MBh. 3,13785. सुमनसाम् *Anordnung von Blumen* Mâlatîm. 18,5. तथाविधलिपि° Siṅh. D. 268,14. मुलभानुकारः खलु जगति वेधसो निर्माणसंनिवेशः Mâlatîm. 131,21. Kull. zu M. 10,5. VP. 2,12,29. Bhâg. P. 2,1,38. 3,26,15. 5,21,1. 24,7. 7,9, 36. 11,1,10. 4,4. 12,4,19. — 5) *Stellung, Lage* Suçr. 1,88,12. 320,3. मुष्टि° = षड्डुलि° Schol. zu P. 3,3,36. ज्योतिषाम् Verz. d. Oxf. H. 8,a, 29. उत्तानपाणिद्वय° Kumâras. 3,45. स्तनान्तरे कल्पितसंनिवेशम् कौतुकरूस्तसूत्रम् 7,25. Râgat. 6,16. प्रियानितम्बोचितसंनिवेशैः — नखाघैः 17. 19. — 6) *Form, Gestalt, Aussehen:* घनवस्थितो भूमिसंनिवेशः Uttarar. 35,10 (47,4). Râgat. 16,11 (vgl. jedoch die Corrigg.). Bhâg. P. 5, 23,8. — 7) *Ort des Verweilens, Aufenthaltsort:* प्रियतमस्य Mṛicch. 86, 11. मुनि° Râgat. 14,76. निजसेनासंनिवेशं तमागात् Kathâs. 46,248. जल° *Wasserbehälter* Spr. (II) 1913. — 8) *versammelte Menge:* एतादृशे तत्रिपसंनिवेशे MBh. 3,16642. जनसंनिवेशे Varâh. Bṛih. S. 89,20. — 9) *die Anordnung, Einrichtung* personificirt als Sohn Tvashṭar's von der Rakanâ Bhâg. P. 6,6,42. — 10) fehlerhaft für संनिकाश (so ed. Bomb.) MBh. 5,1825. — Nach den Lexicographen: = संस्थान AK. 3, 4,18,127. H. 1516. Halâj. 4,93. = संस्त्याय AK. 3,4,24,152. = निकर्षण 2,2,16. — Vgl. सांनिवेशिक.

संनिवेशन (von 1. विश् simpl. und caus. mit संनि) n. 1) *Wohnort, Wohnung* MBh. 1,1896. 9,2148. R. 7,42,16. Kim. Nîtis. 7,80. — 2) *das Aufstellen:* eines Götterbildes Varâh. Bṛih. S. 60,22. — 3) *das Anordnen, Anbringen* Siṅh. D. 408.

संनिवेशिन् adj. am Ende eines comp. *sitzend, steckend in* Suçr. 1,33,12.

संनिवेश्य adj. *hineinzulegen, hineinzustecken:* शिखे कासनम् Varâh. Bṛih. S. 26,7.

संनिश्चय m. = निश्चय *eine feststehende Meinung:* न च संनिश्चयं यामि *ich komme nicht in's Klare* MBh. 12,13793.

संनिषेव्य (von सेव् mit संनि) adj. *ärztlich zu behandeln:* धातुरो हि कृतो राजा संनिषेव्यश्च (so ed. Bomb.) MBh. 8,2999.

सन्निसर्ग (सत् + नि°) m. *ein gutes Naturell, Gutmüthigkeit* MBh. 1,7305.

संनिकृती f. N. pr. eines Flusses (neben Narmadâ) Paiṅgârîttherîṭîkâ 11,b,3 (°कृत्याम् loc.). eines Tîrtha MBh. 3,7061. संनिकृत्या 7062. 7066.

संनिकृन nom. act.: तीर्थसंनिकृनादेव संनिकृत्येति विश्रुता MBh. 3,7066.

संनिक्षिप्त 1) adj. s. u. 1. धा mit संनि. — 2) m. N. eines Agni MBh. 3,14193.

सन्नीकृ (सत्र + 1. कृ) *stillen, befriedigen:* यद्येवंसन्नीकृतचित्रकौतुक Kathâs. 122,112.

संनृत्य n. = नृत्य *Tanz* Hariv. 8454. die neuere Ausg. hat eine andere Lesart.

संनेय partic. fut. pass. von 1. नी mit सम् P. 3,1,129, Schol.

संनोदयितव्य (vom caus. von 1. नुद् mit सम्) adj. *anzutreiben, anzufeuern* Hariv. 4354 nach der Lesart der neueren Ausg.

संन्यसन (von 2. घस् mit संनि) n. *Entsagung der Welt* Bhag. 3,4. कृत° adj. Verz. d. Oxf. H. 140,a, No. 280.

संन्यास (wie oben) m. 1) *Entsagung, das Aufgeben:* कर्मणाम् Bhag. 5, 1. 2. Bhâg. P. 3,32,34. निपतस्य कर्मणः Bhag. 18,7. कार्यस्यास्य MBh. 2,664. सर्वैषणा° Windischmann, Sancara 100. क्रियाफल° Sarvadarçanas. 171,18. प्राण° R. 5,51,6. सर्वसंन्यासं कर्तुम् Râǵa-Tar. 3,297. ohne Ergänzung *Entsagung der Welt* Ind. St. 2,75. 78. 95. 175. M. 1,114. 5, 108. 6,96. Bhag. 6,2. 18,1. 2 (als काम्यानां कर्मणां न्यासः erklärt). MBh. 1,627. 9,2910. fg. 14,1195. Bhâg. P. 11,19,38. Duṅgar. 90,6. Sarvadarçanas. 95,13. Verz. d. B. H. No. 645. Verz. d. Oxf. H. 24,b,11. 269,b,12. संन्यासं कृ 128,b,30. R. Gorr. 1,77,10. °योग Mudg. Up. 3,2,6. Ind. St. 5,83. Verz. d. Oxf. H. 79,a, 23 (vgl. Z. d. d. m. G. 2,339, No. 168). — 2) *das Aufgeben aller Nahrung* Halâj. 4,75. — 3) *Erschöpfung, günzliche Ermattung* Suçr. 2,403,1. Vâgbh. 1,10,2. Çârîr. Sâṅk. 1,7, 25. — 4) *Uebereinkunft:* कृतसंन्यासा Kathâs. 4,36. — 5) *Depositum, ein anvertrautes Gut* R. 2,115,14. fg. 17. 20 (127,7. 10. fg. Gorr.). °विधिना दत्तम् (खड्गम्) 3,13,17. Mṛicch. 83,7. — 6) *Einsatz beim Spiel* MBh. 3,2034. — 7) *Nardostachys Jatamansi* (जटामांसी) Dec. Çabdâm. im ÇKDr. — Vgl. सांन्यासिक und न्यास.

संन्यासयक्ष्मण n. *das Ergreifen des Saṁnjâsa, der Entschluss der Welt zu entsagen* Pâṅkâr. 2,7,43. Verz. d. Oxf. H. 294,b,38. °पद्धति f. Titel einer Schrift Hall 142.

संन्यासधर्मसंग्रह m. Titel einer Schrift Hall 141.

संन्यासनिर्णय m. desgl. Hall 142. °टिप्पणी 143.

संन्यासपद्धति f. desgl. Notices of Skt Mss. 2,100. Verz. d. Pet. H. 100.

संन्यासवत् (von संन्यास) adj. *mit vollständiger Entsagung verbunden* AK. 2,7,52.

संन्यासविधि m. = संन्यासपद्धति Notices of Skt Mss. 2,100.

संन्यासिक s. वेद°.

संन्यासिन् (von 2. यस् mit सं नि oder von संन्यास) adj. 1) *entsagend, aufgebend:* सर्व° (so zu lesen) Asvaláy. 18,67. ohne Ergänzung *der der Welt entsagt hat* Maitrjup. 6,10. Colebr. Misc. Ess. 1,117. MBh. 14,1196. Weber, Rámat. Up. 329. Spr. (II) 798. Dudrtas. 84,18. Bhág. P. 7,4, 22. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,13. 227,*b*,17. H. 843. नित्य° Bhag. 5,3. वेद° = वेदसंन्यासिक Kull. zu M. 6,95. — 2) *der der Nahrung entsagt hat* Bhatt. 7,76.

संन्यासोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Ind. St. 1,302. Notices of Skt Mss. 54. Verz. d. Oxf. H. 394,*b*,33.

सन्मङ्गल (सत् + म°) n. *eine gute, vorschriftmässige Ceremonie* u. s. Ragh. 2,71. 4,41. 10,73.

सन्मणि (सत् + म°) m. *ein ächtes Juwel* Kathás. 29,89. 35,54. 71, 143. 109,10. — Vgl. सद्रत्न.

1. सन्मति (सत् + मति) f. 1) *eine dasselbe Absicht u. s. w., ein° eine nicht vorhandene A.:* असन्मतिं कर् *keinen Sinn haben für* (loc.) Bhág. P. 3,4,27. — 2) *eine gute, richtige Ansicht:* ग° *eine falsche A.,* — *Meinung* Bhág. P. 3,24,47. असन्मतिं दा *lehren* Pańcat. 1,10,21.

2. सन्मति (wie eben) adj. *wohlgesinnt, edel denkend* Kathás. 22,148. 42,218. 73,438. 103,149. Verz. d. Oxf. H. 261,*b*,10.

सन्मत्र (सत् + म°) m. *ein guter Spruch* Ragh. 17,16.

सन्मात्र (सत् + मात्र) adj. *nur seiend, von dem nur das Sein ausgesagt werden kann* Weber, Rámat. Up. 338. Ind. St. 10,137. 163. Çiva Çiv. an den beiden ersten Stellen lesen wir mit der v. l. सर्वाधिष्ठान: सन्मात्र:.

सन्मान (सत् + मान) m. *eine gute Meinung:* °कर् *Achtung einflössend* RV. Pair. 11,36. wohl fehlerhaft für संमान, wofür auch sonst häufig सन्मान geschrieben wird.

सन्मार्ग (सत् + मार्ग) m. *der richtige Weg* (in übertr. Bed.) Ind. St. 10, 33. Málav. 1. Kathás. 17,113. 33,39. 101,23. Márk. P. 19,17. Bhág. P. 10,86,30. °स्थ Spr. (II) 4039. सन्मार्गे तावदास्ते 6824. °योधिन् *auf eine ehrliche Weise* Ragh. 17,69. — Vgl. सत्पथ.

सन्मित्र (सत् + मित्र) n. *ein guter Freund* Spr. (II) 4060.

सन्मिश्रकेशव m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 274,*a*, No. 650.

सन्मुनि (सत् + मु°) m. *ein guter Muni* in दैवज्ञ° N. pr. eines Astronomen Ind. St. 2,253.

सन्मौलिक (सत् + मौ°) adj. Bez. einer Klasse von Kájasthas, die zwischen den Kulina und Maulika stehen, Colebr. Misc. Ess. 2,189.

सन्यम् (von 1. सन) adj. *alt:* तं सन्यर्यमव्यं कृणोमि सन्यसे पुराजाम् RV. 3,31,19. तमु त्वा नूनमीमहे नव्यं दंसिष्ठ सन्यसे 8,24,26. nach Sây. = सनातन (von 1. सन्) oder संन्यास (von 2. यस्).

1. सप्, सपति Dhátup. 11,6 (समवाये). सपेम, सेपुस्; सपत्ते, सपत्त: *nachstreben, zu erreichen suchen; Jmd anhängen, sich zu ihm machen* um (acc.) Naigh. 3,5.14. सविदानासो विदुष्टरं सपेम RV. 6,13,10. इन्द्रं वो नर: सप्त्याय सेयु: 29,1. क्रीळन्तस्त्वा सुमनस: सपेम 4,4,9. देवा घृतं सपत्त 5, 3,4. 43,12. 9,97,37. त्वष्टुमन्तस्त्वा सपेम VS. 37,20 (vgl. त्वष्टीमती ते सपेय TS. 1,2,5,2. 6,1,6,5). स्तुतम् RV. 5,12,2. 68,4. 1,68,4. स्तुता 67,5. स्तुतया 2,11,12. — सप्तुम् MBh. 13,2744 fehlerhaft für स्वप्तुम्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. साप् in स्तृत°, केत°.

— caus. med. dass.: ते सीषपन्त ओषमा यत्रा स्तुतस्य धारा RV. 7,43,1. — अभि dass.: अभि ये मिथो वनुष: सपन्ते रातिं दिव: RV. 7,38,3.

2. सप्, सापयति nur in der, wie es scheint, verdorbenen Stelle: कर्नीलुनदिव सापयन् etwa *futuens* TBr. 2,4,6,5; vgl. jedoch die v. l. चर्नीलुदग्यथा सपम् Âçv. Çr. 2,10,14.

सप (von 2. सप्) m. *penis* TBr. 3,4,6,5. मुष्कयोर्निरूढ: सप: 6. Âçv. Çr. 2,10,14. — Vgl. पस.

1. सपत्त (2. स + पत्त) m. 1) *Anhänger, Freund;* s. सपत्तता und सपत्तत्व. — 2) *Theilnehmer, mit einem Andern in gleichem Falle sich befindend* Sidhh. K. zu P. 3,3,84. Tarkas. 39. 41. Sin. D. 55,19. 122,10. 14. Bhâsháp. 72. — Vgl. 1. विपत्त.

2. सपत्त (wie eben) adj. 1) *mit Flügeln versehen* R. 5,85,12. Spr. (II) 1193 (zugleich in Bed. 2). Borgo MBh. 7,1162. Harîv. 12600. R. 2, 89, 20. Varáh. Bṛh. S. 32,3. Kathás. 26,9. 27,137. 120,84. — 2) *einen Anhang habend* Spr. (II) 1193. — Vgl. 2. विपत्त.

सपत्तक adj. = 2. सपत्त 1): Borgo Kathás. 25,43.

सपत्तता f. nom. abstr. zu 1. सपत्त 1) Spr. (II) 5817.

सपत्तत्व n. desgl. Kathás. 45,167.

सपत्त्र (2. स + पत्त्र) adj. *befiedert* so v. s. *Pfeil* Çiñku. Çr. 17,5,7. 18,5.

सपत्त्रक (2. स + प°) adj. *nebst Achyranthes triandra* Roxb. Pańcat. 1,7,24.

सपत्त्राकृ (सपत्त्र + 1. कृ), °करोति *mit einem Pfeile so treffen, dass die Federn desselben in den verwundeten Körper eindringen,* P. 5,4,64. Vop. 7,91. Daçak. 196,1. — Vgl. निष्पत्त्राकृ.

सपत्त्राकरण n. nom. act. von सपत्त्राकृ Hálís. 4,30.

सपत्त्राकृति f. desgl. H. 1372.

सपत्न (ein zu सपत्नी *Nebenbuhlerin* gebildetes) m. *Nebenbuhler, Widersacher, Feind* AK. 2,8,2,10. H. 729. Hálís. 2,301. RV. 10,166,1. AV. 1,19,4. 10,6,30. 12,2,46. TS. 1,6,2,2. 3,2,8,5. P. 6,3,118, Schol. Çat. Br. 1,1,2,11. 4,17. 5,2,9. 6,4,20. 9,2,11. 14,4,2,19. द्विषत: सपत्ना: Taitt. Up. 3,10,4. P. 4,1,145. MBh. 1,3727. 4047. 2,1693. 3,2431. 4,162. 5,914. 14,224. fg. 251. R. Gorr. 2,106,15. 3,51,26. 4,9,15. 5, 88,2. Spr. (II) 220. 1401. 1982. 6825. Varáh. Bṛh. 17 (15),2. Márk. P. 104,13. Bhág. P. 3,18,4. 19,2. 8,10,2. 6. Pańcat. 171,12. °बलसूदन MBh. 4,160. सपत्नानीकमर्दन Harîv. 12986. °नाश MBh. 15,248. °विजय Bhág. P. 1,14,9. °श्री Spr. (II) 3530. °वृद्धि R. Gorr. 2,7,22. °ज्ञ (घनिभाव) Ragh. 9,4. षट् *die sechs inneren Feinde* (s. u. षड्वर्ग) Bhág. P. 5,1,17. fg. 11,13. — Vgl. स° (in der Bed. 1) *b*) auch MBh. 1,214. Bhag. 2,8) und निस्°.

सपत्नकर्शन adj. *Nebenbuhler mindernd* AV. 8,5,12.

सपत्नर्तृयण adj. (f. ई) *Nebenbuhler verderbend* AV. 1,29,4. 2,18,2.

18,3,1. TS. 1,6,2,2. Kauç. 6. 16. 48.

सपत्नजित् adj. dass. VS. 1,29.

सपत्नघ्नी s. u. सपत्नहन्.

सपत्नचातन adj. *Nebenbuhler verscheuchend* AV. 2,18,2.

सपत्नजित् 1) adj. *Nebenbuhler besiegend* MBu. 3,16389. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Sudattâ Hariv. 9188.

सपत्नता (von सपत्न) f. *Nebenbuhlerschaft, Feindschaft* MBu. 1,4046.

सपत्नतुद् adj. (nom. °तूस्) *Nebenbuhler überwindend* TBr. 1,2,1,21.

सपत्नत्व (von सपत्न) n. *Nebenbuhlerschaft:* पत्नलेखा° Hariv. 7078.

सपत्नदम्भन adj. *Nebenbuhler schädigend* VS. 3,18. AV. 10,6,29. 19,28,1.

सपत्नदूषण adj. *Nebenbuhler verderbend* Çâṅkh. Gṛhj. 5,2.

सपत्नसाद s. सपत्नसाह.

सपत्नसाही adj. f. (ई) VS. Pâṛ. 3,121. *Nebenbuhler bewältigend* VS. 5,10. TS. 1,1,10,1. 5,1,10,2. Kâṭh. 19,10. Hariv. 13166 (°साह die neuere Ausg.).

सपत्नहन् adj. (f. °घ्नी) *Nebenbuhler schlagend* ṚV. 10,159,5. 166,2. 170,2. VS. 5,24. 12,5. AV. 1,29,5. 4,8,2. 10,6,30. Çat. Br. 1,1,4,14. 14,2,2,5. Kauç. 47. MBu. 3,11998. 4,331.

सपत्नारि m. *eine Bambusart* Çabdar. im ÇKDr.

1. सपत्नी (von 2. स + पति) adj. f. *denselben Herrn habend; f. ein Weib desselben Mannes, Nebenfrau; Nebenbuhlerin* P. 4,1,35. 6,3,35, Vârtt. 3, Schol. (verschiedene Erklärungen). Vop. 6,97. ṚV. 3,1,10. सपत्नी यज्ञे धेनू 6,4. 1,105,8. सपत्नी वा ममाधृषा माधवाभ्यः 10,145,3. Jâán. 3,232. MBu. 1,1225. 5,7457. 14,2358. Hariv. 5203. R. 1,70,30. 2,21,22. 24,17. 31,13. 66,19. 104,14. 110,18. R. Gorr. 2,6,28. 7,31. 22,4. 3,24,2. 5,14,25. Mṛicch. 83,13 (निशा स° zu schreiben). Çiçup. Saṃh. 1,7,106. Raghu. 6,63. 10,58. Spr. (II) 4263. 4737. 6826. 6849. Verz. d. Oxf. H. 215,b,39. Kathâs. 16,113. 21,82. 32,124. 33,14. 39,25. 42, 65. 49,206. 210. Mâlav. P. 71,20. Bhâg. P. 3,14,10. 4,8,10. 6,14,40. Pañcat. 110,23. Râjat. 6,198. °स्पर्धा 3,21. °व्रत Çik. 93. चतुरस्रमहो° 95. — Vgl. सपत्न, सापत्न, सापत्न्य.

2. सपत्नी (2. स + प°) adj. = सपत्नीक R. 2,33,16.

सपत्नीक (von 2. स + पत्नी) adj. *in Begleitung der Frauen* oder *der Frau, nebst Frau* Kâṭy. Çr. 6,6,28. 19,3,27. 25,7,37. Kauç. 88. Raghu. 1,61. Kathâs. 27,4. Mâlav. P. 17,25. Râjat. 2,28.

सपत्नीकृ (सपत्न + 1. कृ) *zum Nebenbuhler machen:* °कृत Verz. d. Oxf. H. 137,a,10.

सपत्नीत्व n. nom. abstr. von 1. सपत्नी MBu. 1,4841.

सपत्न्य n. dass. Varâh. Bṛh. S. 103,4. — Vgl. die richtige Form सापत्न्य.

सपदि (von 2. स + पद्) adv. gaṇa दिदण्डादि zu P. 5,4,128. स्वरादि zu 1,1,37. *sofort, alsbald, im Nu* AK. 3,5,2. 9. H. 1532. Halâj. 4, 67. Hariv. 6. Suçr. 1,131,7. Ind. St. 2,351. Megh. 52. Raghu. 3,40. 5, 78. 9,67. 82. 12,103. ed. Calc. 1,77. Kumâras. 3,76. 6,4. Çik. 115, v. l. Varâh. Bṛh. S. 12,1. Spr. (II) 879. 1676. 2414. 3181. 3772. fg. Gît. 4,7. 10,2. Kathâs. 2,81. 6,70. 11,83. 12,193. 17,170. 18,282. 277. 21,145. 25,290. 26,279. 43,261. 45,264. 116,63. Siṃh. D. 34,5. Prab. 24,2. 104, 6. Daçâvat. 85,2. Bhâg. P. 1,9,35. 2,7,21. 5,8,19. 10,18,30. Pañcat. 198,3. Çâṅk. 10,97.

सपद्म (2. स + पद्म) adj. *mit Lotusblüthen versehen:* सलिल Ṛt. 6,2.

सपर (2. स + पर) n. *eine best. hohe Zahl* (mehr als परार्ध) MBu. 2, 2144. = साधिके परार्धाद्व्यधिकम् Nîlak.

सपरितोषम् adv. s. u. परितोष und füge Çik. 22,14, v. l. hinzu.

सपरिषत्क (2. स + परिषद्) adj. *sammt Anhang:* द्याचार्य Gobh. 3, 2,40. 4,23.

सपर्य्, सपर्यति Naigh. 3,5 (परिचरणकर्मन्). gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1, 27 (पूजायाम्). सपर्यम्, असपर्यत् AV. 14,2,20. nur im praes. und imperf. *ehren, verehren:* मुष्टी देवं सपर्यत ṚV. 3,9,3. यो अग्न्य वीमिदं वचः (= वचसा) सपर्यति 1,93,2. नमसा 3,31,19. 4,12,2. घृतिम् 1,12,8. 5,14,5. 8, 44,13. सपर्यतस्त्वा पत्नेषु देवमीळते 5,21,3. धीभिः 25,4. द्युम्नम् 6,44,5. द्यूती 8,41,6. सोमैः 51,5. ब्रह्मा कस्तं सपर्यति 53,7. मह्ना देवाय तद्दृतं सपर्यत *zur Ehre ausführen* 10,37,1. रुविषा 98,4. प्रयसा 1,58,7. घृतेन 72,3. 8,26,12. AV. 3,30,6. 14,2,18. 23. गीर्भिः 19,7,1. इदं रुवेरादित्यासः सपर्यत *gratum habere* Kauç. 73.

— वि *hier und dort verehren:* वि त्वा नरः पुरुत्रा सपर्यन् ṚV. 1,70,10.

सपर्य (von सपर्य्) 1) adj. in dem unverständlichen Stück ṚV. 10,106, 5. — 2) f. या (Göttern und Menschen erwiesene) *Verehrung, Ehrenerweisung* AK. 2,7,34. H. 417. Halâj. 1,126. त्रिय: MBu. 12,8427. Hariv. 8070. Raghu. 14,81. Kathâs. 26,208. Pañcat. 3,2,32 (pl.) अतिथीनाम् Raghu. 13,46. AK. 2,7,12. अतिथि° Naish. 11. देवद्विज° Kathâs. 17,134. Verz. d. Oxf. H. 146,b,3. सपर्या प्रति-यत् Hariv. 13455. Raghu. 2,22. लभ् Bhâg. P. 7,8,54. कृ 2,3,21. 4,8,34. 5,7,11. Kathâs. 45,38. 103,160. 236. चर्य् Bhâg. P. 3,2,2. शिरसा या-कृ 1,19,29. सं-भृ 5. 3,6. दा 4,4,8. नि-वर्तय् Raghu. 16,39. वि-धा Bhâg. P. 8,22,23. प्रतिविधा Uttarar. 12,7 (16,13). °विधि Raghu. 5,22. सपर्यया अभि-गा 11,35. प्रत्युद्-इ Kumâras. 5,31. उप-यास् Bhâg. P. 7,14,40. यज्ञय् 10,28,4. प्रतियत् 3,21,48. सपर्यावर्तमान d. i. सपर्यया 10,43,9.

सपर्यु (wie oben) adj. 1) *ehrend, huldigend* ṚV. 2,6,3. 3,54,2. 7,2,4. 94,10. — 2) *ergeben, treu:* Rosse ṚV. 3,50,2.

सपर्यण्य (wie oben) adj. *colendus* ṚV. 6,1,6. Kâṭy. 8,13. Kauç. 6.

सपलाश (2. स + प°) adj. *mit Blättern besetzt:* ein Zweig Âit. Br. 8,13. Çâṅkh. Çr. 4,17,5. Liṭ. 1,2,17. Âçv. Gṛhj. 1,11,2. 4,8,15.

सपशु (2. स + पशु) adj. von *Vieh begleitet, sammt Vieh:* सगृहः सपशुः सुवर्गं लोकमेति TS. 3,5,4,5. Çat. Br. 12,5,1,14. चातुर्मास्य *mit einem Thieropfer verbunden* Kâṭy. Çr. 5,11,19.

सपशुक adj. dass. Schol. zu Kâṭy. Çr. 549,17.

सपाद (2. स + पाद) adj. *nebst einem Viertel* M. 8,241. Râjat. 4, 407. Bhâg. P. 5,22,5. 8.

सपादक (wie oben) adj. *nebst den Füssen* Kâṭy. Çr. 7,2,33.

सपादुक (2. स + पादुका) adj. *beschuht* R. 3,32,9.

सपाल (2. स + पाल) 1) adj. von *einem Hüter begleitet:* पशव: M. 8, 240. 242. लोक: *die Welt mit ihren Fürsten* Bhâg. P. 1,9,14. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Tîrthân. 287.

सपिण्ड (2. स + पि°) adj. (f. या) *am Piṇḍa für die Manen Theil nehmend, nicht ferner als in der sechsten Generation mit Jmd* (gen.) *verwandt* Vop. 6,97. AK. 2,6,2,33. H. 562. Halâj. 2,254. 5,50. Gaut.

3,4,1. Âçv. Gṛhj. 4,4,18. M. 2,217. 3,59. 61. 100. 9,59. 187. 11,182. P. 4,1,165. VP. 316. Mârk. P. 50,91. Verz. d. Oxf. H. 87,b,10. 272,b, No. 644. Schol. zu Kâtj. Çr. 25,7,13. °बन्ध neben पैतबन्ध Bhâg. P. 10,82,30. मासपिण्डक्रियाकर्मन् M. 3,247. स° 5 (MBh. 13,2421). 5,100. fg. Jâjñ. 1,52. — Vgl. सापिण्ड, सापिण्ड्य.

सपिण्डता f. nom. abstr. von सपिण्ड Çâṅkha und Likhita bei Kull. zu M. 5,60. M. 5,60. Dattakam. 74,3.

सपिण्डन n. nom. act. von सपिण्डय्. सपिण्डनं कर् Dattakam. 73,19. 20. °प्रयोग Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,64.

सपिण्डय् (von सपिण्ड) *Jmd zu einem* Sapiṇḍa *machen, Jmd die Rechte eines* Sapiṇḍa *ertheilen, zum ersten* Çrâddha *nach einem Todesfalle zulassen, das erste* Çrâddha *vollziehen.* — Vgl. सपिण्डन.

सपिण्डीकर् (सपिण्ड + 1. कर्), °करोति dass. Dattak. 73,1 v. u. 74,1.

सपिण्डीकरण n. = सपिण्डन Çâṅkh. Gṛhj. 4,3. 5,9. Jâjñ. 1,253. VP. 3,13,26. 36 (संपिण्डीक्रमण gedr.). Mârk. P. 30,12. 18. Ind. St. 10, 66. Verz. d. B. H. No. 268. 1108. 1121. fg. 1130. 1150. Verz. d. Oxf. H. 9,a,23. 40,a, No. 1. 87,a,23. fg. 276,b,27. 294,b,15. Dattakam. 73,16. fg.

सपित्व (2. स + पि°) n. etwa *Gemeinschaft:* येभिः सपित्वे पितरो न घर्मान् RV. 1,109,7. — Vgl. सपपित्व, प्रपित्व.

सपिन् s. निःसपिन्.

सपीतक 1) m. *eine best. Pflanze,* = राजकोशातकी. — 2) f. सपीतिका desgl., = कृत्तिघोषा Râjân. im ÇKDa.

1. सपीति (2. स + 1. पीति) f. *Gemeinschaft des Trinkens, Gelage* AK. 2,9,55. H. 907. Hall. 2,173. VS. 18,9. 28,16. Nir. 9,43.

2. सपीति (wie oben) m. *Trinkgenosse* RV. 8,1,23. TS. 2,4,8,1.

सपुत्र (2. स + पुत्र) adj. 1) *nebst dem Sohne* M. 10,107. — 2) etwa *mit menschlichen Figuren versiert:* °कारक *ein solcher Wasserkrug* Hariv. 7827. fgg.

सपुरुष (2. स + पु°) adj. *sammt den Leuten* Pañcav. Br. 25,8,2.

सपुष्प (2. स + पुष्प) adj. *mit Blüthen versehen, blühend:* द्रुमाः Ṛt. 6,2.

सपूर्व (2. स + पूर्व) adj. (f. या) 1) *nebst dem vorangehenden* (Laute) TS. Prât. 3,19. 8,22. — 2) von *den Vorfahren besessen:* यमपूर्वापि तेनोर्वी सपूर्वेव महीभुजा । लालिता हृदयेन पत्या नववधूरिव ॥ Râjat. 2,8.

सप्त = सप्तन् in त्रिसप्त, त्रिसप्त.

सप्तऋषि m. pl. = सप्तर्षि Sidd. K. zu P. 8,1,128. Ind. St. 3,459. Verfasser von RV. 9,107.

सप्तऋषिवत् adj. *von den sieben* Ṛshi *begleitet* AV. 19,18,7.

सप्तऋषीय adj. zu सप्तऋषय: Nir. 10,26.

सप्तक (von सप्तन्) 1) adj. *aus sieben bestehend* RV. Prât. 16,13. Ind. St. 3,285. 8,239. M. 7,52. MBh. 13,4353. Kâraka 1,4. 8,5. Kâm. Nitis. 14,67. Bhâg. P. 12,11,27. सप्त सप्तकाः *neunundvierzig* Hariv. 444. सप्तकाः सप्त मरुतः R. Gorr. 1,48,5. चत्वारः सप्तका गणाः *aus achtundzwanzig bestehend* Hariv. 445. — 2) f. ई *ein weiblicher Gürtel* AK. 2, 6,3,10. H. 664. Hall. 2,405. — 3) n. *eine Siebenzahl von Gegenständen, Heptade* M. 11,255. Suçr. 2,277,14. पुर° Kathâs. 43,13. दिन° 72,96. Pañcat. 3,8,5. 12,9 (स्वर° st. सुर zu lesen). Verz. d. B. H. No. 1021. Çatr. 14,75. H. 739. Vet. in LA. (III) 13,12. Schol. zu Kâtj. Çr. 530,3. Gaupâr. zu Siddhânt. 3. स° adj. Weber, Gjot. 106. षष्टिः सैकोनसप्तिका 93. त्रिसप्तकायाम् *21* (Hasta) *breit* Varâh. Bṛh. S. 56,22. — Vgl. कुतप°, सप्त°.

सप्तकर्ण (सप्तन् + कर्ण) m. N. pr. eines Mannes Taitt. Âr. 1,7,2.

सप्तकुमारिकावदान n. *die Legende von den sieben Jungfrauen* Burnouf, Intr. 556.

सप्तकृत् (सप्तन् + कृत्) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens MBh. 13,4361.

सप्तकृत्वस् (सप्तन् + कृ°) adv. *siebenmal* Mârk. P. 52,5. 72,12. Bhâg. P. 5,1,30. Varâh. Bṛh. S. 54,113. सप्तकृत्वेवम् (so ist mit den Hdschrr. zu lesen) st. सप्तकृत्व एवम् 55,29.

सप्तगङ्ग (सप्तन् + गङ्गा) n. N. pr. einer Oertlichkeit (vgl. MBh. 6,242. fgg. R. 1,44,14. fgg.): °गङ्गे MBh. 3,8007. 13,1703. °गङ्गम् adv. P. 2, 1,20, Schol.

सप्तगण adj. *aus sieben Schaaren bestehend:* die Marut TS. 2,2,11,1. 5,4,2,7. TBr. 2,7,2,2.

सप्तगु adj. *sieben Rinder besitzend* oder *mit sieben Rindern fahrend;* m. N. pr. des Verfassers von RV. 10,47 mit dem patron. Âṅgirasa; s. daselbst Vers 6.

सप्तगुण adj. (f. या) *siebenfach* Weber, Gjot. 55. 74. Kathâs. 47,22.

सप्तगृध्र m. pl. *die sieben Geier* (?) AV. 8,9,18.

सप्तगोदावर (सप्तन् + गोदावरी) n. N. pr. einer Oertlichkeit Vop. 6. 85. °रे MBh. 3,8186. °रम् adv. P. 2,1,20, Schol. f. ई N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 10,79,12.

सप्तचक्र s. u. चक्र.

सप्तचत्वारिंश adj. *der 47ste* MBh. und R. in den Unterschrr. der Kapitel.

सप्तचत्वारिंशत् f. *siebenundvierzig* Çat. Br. 10,4,3,17.

सप्तचरु n. N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 3,8040 (nom. °चरुम्!).

सप्तचितिक adj. *sieben* Kiti *haltend:* Agni Çat. Br. 6,6,1,14. 8,7. 8,2,7.

सप्तच्छद m. *Alstonia scholaris* (benannt nach der *Zahl* ihrer quirlförmig gestellten *Blätter*) Râjân. im ÇKDa. MBh. 3,14862. R. 4,32,12. 5,9,7. Sucr. 1,32,17. 142,20. 144,19. 2,70,3. 247,20. 421,9. 500,6. Ṛt. 3,12. 13. Raghu. 5,48. — Vgl. सप्तपर्ण.

सप्तजन m. pl. ein Collectivname für *sieben* bestimmte Muni R. 4, 13,17. 27.

सप्तजिह्व adj. *siebenzüngig;* m. *Feuer* Taitt. 1,1,67. H. 1099. Varâh. bei Mallin. zu Çiç. 2,107. Bhâg. P. 5,20,3. कवि Varâh. Bṛh. S. 43,55. प्रविशति सप्तजिह्वम् 74,16.

सप्तज्वाल adj. *siebenflammig;* m. *Feuer* H. 1099.

सप्तत (von सप्तति) adj. *der siebsigste* in comp. mit vorangehenden Einern; s. एक° u. s. w.

सप्ततन्तु 1) adj. *siebenfädig* so v. a. *aus sieben Abschnitten bestehend:* यज्ञ RV. 10,52,4. 124,1. महाध्वर MBh. 2,1937. — 2) m. *Opfer* AK. 2, 7,12. H. 280. Hall. 2,259. सप्ततन्तून्वितन्वाना यात्रकाः MBh. 7,3037. Çiç. 14,6. Bhâg. P. 7,3,30; vgl. संस्था 2) g).

सप्ततय (von सप्तन्) adj. (f. ई) *siebentheilig:* देवताः Çat. Br. 6,5,3,11.

सप्ततति (wie oben) f. *siebzig* P. 5,1,59. Çiñt. 1,7. das Gezählte con-

gruirt im Casus mit dem Zahlwort, steht im gen. pl. oder geht im comp. voran oder nach. RV. 2,18,5. सप्ततिं च सप्त च 10,93,15. 8,46,26. AV. 6,25,2. 11,6,16. 47,3. सप्ततिं पदानि Âçv. Çr. 8,3,14. Liṭ. 9,6, 10. MBh. 1,416. 13,1022. सप्तत्या निशितैः शरैः Hariv. 9365. R. Gorr. 1,4,42. 5,1,47. Kâm. Nitis. 8,25. Varâh. Bṛh. S. 53,17. 54,34. °हायन Bṛh. 69,23. Mârk. P. 133,4. Râéa-Tar. 1,53. वर्ष° 311. Siddhânt. 72 (Hall 4). *ein Siebzig* so v. a. *siebzig Jahre* M. 8,394. Suçr. 1,125,4. — Vgl. षष्टि° (auch Ait. Br. 8,23), एक° (auch AK. 1,1,3,22. Mârk. P. 46,24), चतुः°, त्रि° (auch MBh. 4,1732. 6,3391), द्वा° (auch Prâçnop. 3,6) u. s. w. शुक°, शून्यता°, सप्ततिक.

सप्ततितम (von सप्तति) adj. *der siebzigste* P. 5,2,58. Vop. 7,38. MBh. und R. in den Unterschriften der Kapitel.

सप्तत्रिंश adj. *der siebenunddreissigste* MBh. und R. in den Unterschriften der Kapitel.

सप्तत्रिंशत् f. *siebenunddreissig* MBh. 12,13257. °शतं वर्षाण् Râéa-Tar. 1,288. °शति वर्षेषु (so ist zu schreiben) 2,81. Pañcar. 2,4,53. °शद्रात्र n. *eine best. Feier* Âçv. Çr. 11,4,7. Kâty. Çr. 24,2,34.

सप्तत्रिंशति f. dass. °तिमब्दान् Râéa-Tar. 3,326.

सप्तत्व (von सप्तन्) adj. (f. ई) *der siebente* RV. 1,164,15. 7,36,6. 10,99,2.

सप्तदश 1) adj. (f. ई) *a) der siebzehnte* Âçv. Gṛhj. 1,23,5. Çat. Br. 12, 2,4,11. Varâh. Bṛh. S. 6,5. Bhâg. P. 1,3,21. 6,1,50. 11,22,22. Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 139. तिथि Weber, Ġjot. 50. गृहपतिसप्तदशाः *mit dem Gṛhap. zu siebzehn* Âçv. Çr. 4,1,8. — *b) mit siebzehn verbunden:* शतम् *Hundertundsiebzehn* Çat. Br. 12,3,5,13. — *c) aus siebzehn bestehend:* das Jahr Çat. Br. 6,2,2,9. 8,4,2,20. Prâgâpati TBr. 1,3,6,4. 3,10,6. nach der Silbenzahl die Zusammenstellung यास्मावयास्तु मोयज्ञ ये यज्ञामन्ने वयट् TS. 1,6,11,1; vgl. Comm. und Sây. zu Ait. Br. 1,1. — Çat. Br. 1,5,2,17. 5,1,2,11. 8,4,4,11. 13,3,2,4. पत्त TBr. 1,2, 6,3. स्तोम VS. 9,34. 10,12. 14,24. TS. 5,3,4,1. TBr. 1,4,5,3. VP. 1, 5,52. dem Âditja geweiht Nir. 7,11. auch ohne das Hauptwort m. VS. 13, 56. TBr. 1,5,10,3. 2,2,4,7. सप्तदश स्तोमा नातियन्ति 7,10,3. TS. 5,3, 2,2. Ait. Br. 4,18. fg. Âçv. Çr. 4,12,2. 10,3,11. — *d) mit dem siebzehntheiligen* Stoma *verbunden, demselben analog* u. s. w. TBr. 1,2, 2,1. वैश्य 2,5,10,2. 7,5,18,1. VS. 29,60. Âçv. Çr. 10,3,9. — *e)* pl. wohl = सप्तदशन् *siebzehn:* वयं (im Namen von sieben Personen) पुनः सप्तदशेषु — कुलेषु सर्वे जनवमेषु जाताः MBh. 3,15649. सप्तदश घण्टा कर्माणि नव शतान्यष्टौ च नित्यं सन्ति येषु तानि सप्तदशानि Nilak. — 2) n. *eine Gruppe von siebzehn* Kâty. Çr. 14,2,33. Çâṅkh. Çr. 15,3,14.

सप्तदशक adj. = सप्तदश 1) *c)*: राशि MBh. 3,12917. 12,12466. 12756. संख्याने °दशके *wenn man die Zahl siebzehn annimmt* Bhâg. P. 11,22,32.

सप्तदशता f. *die Zahl siebzehn* Kâty. Çr. 14,2,32.

सप्तदशधा adv. *siebzehnfach* Çat. Br. 10,4,2,14. Siddhânt. 49 (bei Wilson besser सप्तदश वधा st. सप्तदशधा तु).

सप्तदशन् *siebzehn* (°दश nom. acc., °दशभिस्, °दशानाम्, °दशसु) TS. 2,3,10,2. TBr. 1,3,6,3. Ait. Br. 1,1. 30. सप्तदश रात्रीर्दीक्षितः स्यात् TS. 5,6,7,2. Âpast. in TS. Comm. 1,1023. Çat. Br. 5,1,2,10. 5,6. 2, 1,3. 2,3. Siddhânt. 49 (nach der Lesart bei Wilson). Bhâg. P. 9,15,30. °दशार Liṭ. 5,12,11. °दशारत्नि Çat. Br. 3,6,2,26. सप्तदशात्तर VS. 9, 34. P. 6,4,140, Vârtt. 1, Schol. °दशावराः, °दशप्रभृतिषु Schol. zu Kâty. Çr. 1,6,10.

सप्तदशम adj. *der siebzehnte* Verz. d. Oxf. H. 65,*b*,3.

सप्तदशरात्र m. n. N. *einer siebzehntägigen Feier* TS. 7,3,8,1. Maçaka in Verz. d. B. H. 73 (IX, 2).

सप्तदशर्च (सप्तदशन् + ऋच्) adj. *siebzehnversig* AV. 19,23,14.

सप्तदशवत् (von सप्तदश) adj. *mit dem siebzehntheiligen* Stoma *versehen* Çat. Br. 8,4,4,1.

सप्तदशिन् (von सप्तदशन्) adj. *mit siebzehn* (Stotra) *versehen* Pañcav. Br. 18,6,1.

सप्तदिन am Anf. eines comp. *sieben Tage, eine Woche:* °दृश्य Varâh. Bṛh. S. 11,37.

सप्तदिवस dass.: °दिवसात्त adj. ebend. 32,18.

सप्तदीधिति adj. *siebenstrahlig;* m. *Feuer* Taik. 1,1,66.

1. सप्तद्वीप am Anf. eines comp. *die sieben Inseln der Erde* so v. a. *die ganze Erde:* °प्रसाधक Mârk. P. 127,32. °पति Bhâg. P. 9,18,46. °द्वीपेश्वर 23,33.

2. सप्तद्वीप adj. (f. आ) *aus sieben Inseln bestehend:* वसुंधरा u. s. w. Ind. St. 9,77. Pat. in Mahâbh. Ilh. Ausg. 16,*b*. MBh. 8,4735. Hariv. 1616. Çiç. 192. Mârk. P. 53,11. Verz. d. Oxf. H. 3,*b*, No. 24. 48,*b*,1. °धरापति 24,*b*,29.

सप्तद्वीपवत् adj. dass.: पृथ्वी u. s. w. Ind. St. 9,76. 113. Mârk. P. 125, 55. Bhâg. P. 3,21,2. 7,4,16. 9,4,15. 6,34. °वती f. so v. a. *die ganze Erde:* °पति 47.

सप्तधा adj. *in sieben Theilen (Theile), siebenfach* AV. 8,9,23. VS. 17, 79. Ait. Br. 2,17. Çat. Br. 10,2,3,3. 13,1,9,1. Sçr. 1,178,19. Mârk. P. 56,11. 101,25. फल् R. 2,64,22. शकलीभू 7,26,56. वि-भू Çat. Br. 10,4,2,3. भू Kaṭh. Up. 7,26,2. सम्-पद् MBh. 1,6454. घस् Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,35. वि-तर्द् TS. 5,1,8,1. छिद् MBh. 3,14999. R. 1,46,18. भिद् R. Gorr. 1,47,17. Kathâs. 19,97. प्रवि-भज् Çaṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 266. कर्तृ Bhâg. P. 6,18,61. 71. कर् Hariv. 6860. P. 5,3,43, Schol. Bhâg. P. 10,58,45. वि-धा 1,13,49. *siebenmal* Rasik. 4,33. भुज् P. 5,3,43, Schol. — Vgl. द्वि°.

सप्तधातु m. N. eines der zehn Rosse des Mondes Vâju beim Schol. zu H. 104. — Vgl. auch unter धातु.

सप्तधार n. N. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,34.

सप्तन् (सँ॰ in der klassischen Sprache Çânt. 2,3. Uṇâdik. zu Uṇâdis. 1,156), सप्त nom. acc., सप्तभ्यस्, सप्तभिस्, सप्तानाम्, सप्तसु; *sieben.* Diese Zahl drückt zugleich eine *unbestimmte Vielheit* aus, wie in kleinerem Massstabe die Dreizahl. Daher auch die Vervielfältigung der *sieben* mit der *drei.* त्रिः सप्त RV. 1,191,12. 14. 4,1,16. 7,87,3. 8,46,26. 58,7. 85,2. 9,70,1. सप्त सप्त 5,52,17. 8,28,5. 10,55,3. Çat. Br. 2,5,4, 13. 5,4,2,17. सप्ततिं च सप्त च RV. 10,93,15. सप्त च शतानि विंशतिश्च Ait. Br. 2,17. — AV. 8,9,18. VS. 17,79. TBr. 3,11,6,1. Âditja s. u. d. W. Sonnenrosse RV. 1,50,8. 4,13,3. Ströme 28,1. 7,18,24. 8,24,27. 35,1. प्र सप्त सप्त त्रेधा हि चक्रमुः 10,75,1. 64,8. Burgen der Dämonen 5,20,10. 7,18,13. रथा 5,1,5. 6,74,1. विप्रासः 22,2. 4,2,15. होतारः

2, 10, 4. 8, 49, 16. सप्तपः s. u. d. W. कृत्तासः RV. 4, 58, 9. Hausthiere VS. 9, 22. AV. 3, 10, 6. Ait. Br. 2, 16. Wild Çat. Br. 9, 5, 2, 3. Pflanzen TS. 5, 2, 5, 5. Sonnenstrahlen AV. 7, 107, 1. Sonnen Taitt. Âr. 1, 7, 1. Thore des Himmels TBr. 3, 12, 2, 9. Götterwelten Ait. Br. 2, 16. 4, 9. 5, 10. Berge TS. 6, 2, 4, 3. प्राणाः Çat. Br. 6, 5, 2, 11. 7, 5, 2, 9. स्तोमाः 9, 5, 2, 8. सप्तवः 1, 2, 21. 2, 2, 43. दिशः RV. 8, 114, 3. Çat. Br. 9, 5, 2, 3. hundert und *sieben* Arten von Kräutern RV. 10, 97, 1. — TS. Pair. 23, 4. 11. M. 1, 19. 36. 62. 105 u. s. w. R. 1, 1, 73. 4, 6. Siddhânt. 3. 63. Nâgân. 1, 60. 2, 25. Spr. (II) 2284. 2614. 2729. 6827. 6830. fg. 7520. Kathâs. 18, 314. 28, 172. Bâlc. P. 4, 27, 16. °पातालनिलिप्तमूल Spr. (II) 6829. Siddhânt. 65. dagegen würden wir R. 1, 1, 54 सप्तपातालान् und Varâh. Bṛh. S. 11, 34 सप्तमुनीन् lieber getrennt schreiben. — Vgl. त्रि°, पञ्च°, साप्त, साप्ति.

सप्तनली f. *Vogelleim* (vgl. beng. सातनला) Spr. (II) 1041.

सप्तनवत adj. *der siebenundneunzigste* Râéa-Tar. 5, 236. MBh. in den Unterschrr. der Kapitel.

सप्तनवति f. *siebenundneunzig:* °नवत्यधिकशत MBh. Th. 1, S. 685.

सप्तनवतितम adj. *der siebenundneunzigste* R. Gorr. in den Unterschrr. der Kapitel.

सप्तनाडिक adj. in Verbindung mit चक्र und सप्तनाडीचक्र n. *ein best. astrologisches Diagramm* (*sieben* aus einem Punkte ausgehende *Schlangenlinien*) *zur Bestimmung von Regen* ÇKDa.

सप्तनामन् adj. *siebennamig* RV. 1, 164, 2; vgl. 7, 87, 4.

सप्तनामा f. *Polanisia icosandra W. u. A.* Râéân. im ÇKDa.

सप्तपञ्चाश adj. *der siebenundfünfzigste* MBh. und R. in den Unterschriften der Kapitel.

सप्तपञ्चाशत् f. *siebenundfünfzig* Nir. 2, 23. °शद्धिकशत MBh. Th. 1, S. 223.

सप्तपत्र m. *eine Art Jasmin* (मुद्गर) Râéân. im ÇKDa.

सप्तपद् 1) adj. *a)* (f. ई) *auf sieben* (d. h. *vielen, allen*) *Tritten, auf Schritt und Tritt* (पदे पदे) —, *bei jeder Gelegenheit vorhanden:* पिप्युषीमिषमूर्जं सप्तपदीम् so v. a. *für alle Bedürfnisse genügend* RV. 3, 61, 16. पुर्ध्यस्ते सप्तपदः सख्यास्मि so v. a. *stets treu* AV. 5, 11, 10. Hieraus die Anwendung in der Heirathscerimonie सख्या (schon diese Form lässt die Entlehnung erkennen) सप्तपदी भव *Freund werde mit dem siebenten Schritt* Âçv. Gṛhy. 1, 7, 19. Çâṅkh. Gṛhy. 1, 14, 6. Kauç. 76. Kull. zu M. 8, 227. P. 4, 1, 62, Schol. सखे सप्तपदा (!) भव Pân. Gṛhy. 1, 8, 1. निष्ठा सप्तपदी स्मृता (vgl. तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे M. 8, 227) MBh. 7, 2149. — TS. 3, 3, 10, 2. सप्तपदं मित्रम् MBh. 3, 13439 und 13, 2703 fehlerhaft für सप्तपदं (so ed. Bomb. an beiden Stellen) मैत्रम् (so ed. Bomb. an der zweiten Stelle). — *b)* (f. या) *aus sieben Pâda bestehend* Ait. Br. 5, 12. Çat. Br. 3, 3, 4, 1. 9, 2, 17. 2, 3, 4, 17. TS. 2, 6, 2, 3. TBr. 2, 1, 5, 11. Pârâv. Gṛh. 19, 7, 6. RV. Pât. 18, 24. Ind. St. 8, 119. — 2) f. ई *eine Zahl von sieben Schritten:* सप्तपदी ततः पादं दत्त्वा मुख्यनिकेतने Kâmas. 16, 9. — Vgl. साप्तपद, साप्तपदीन und पञ्चपदी.

सप्तपदार्थनिरूपण n. Titel einer Schrift, = सप्तपदार्थी Hall 74.

सप्तपदार्थी f. *die sieben* Padârtha (der Vaiçeshika), Titel einer Schrift Hall 74. Verz. d. Oxf. H. 353, *b*, No. 839. °टीका 164, *a*, 6. 7. °व्याख्या Hall 75.

सप्तपराक m. *eine best. Kasteiung* Weber, Râmây. Up. 356.

सप्तपर्ण 1) m. *Alstonia scholaris* (vgl. सप्तच्छद) AK. 2, 4, 3, 3. Trik. 2, 4, 7. 3, 3, 212. H. 1133. Ratnam. 191. MBh. 3, 11572. Harîv. 3842. 12681. R. 3, 17, 11. 4, 29, 11. 49, 22. 5, 17, 16. 6, 15, 4. 18, 35. 36, 54. Suçr. 1, 157, 14. 2, 15, 7. 70, 8. Râgân. 4, 23. Varâh. Bṛh. S. 29, 4. 54, 29. Brahma-P. in LA. (III) 51, 19. — 2) f. ई *Mimosa pudica* Ratnam. und Râéân. im ÇKDa. Suçr. 2, 540, 3. — 3) n. *a) die Blüthe* (*Frucht* Auvrecht) *der Alstonia scholaris* Z. d. d. m. G. 27, 23. — *b) ein best. Gebäck* Çabdâ. im ÇKDa.

सप्तपर्णक m. = सप्तपर्ण 1) Pâéân. 1, 7, 23.

सप्तपलाश m. dass. H. 16.

सप्तपुत्र adj. *sieben Kinder habend* RV. 1, 164, 1.

सप्तपुत्रम् f. *eine Mutter von sieben Kindern* Trik. 2, 6, 4.

सप्तबाह्य n. N. pr. der Herrschaft Bâlhika's Harîv. 1820.

सप्तबुद्धस्तोत्र n. *Lobgesang der sieben* Buddha, Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 388, *b*, 4. Wilson, Sel. Works 2, 5. fgg.

सप्तबुध्न s. u. बुध्न.

सप्तभङ्गिनय m. *die Methode der sieben Redewendungen* oder *Formeln*, Bez. der bei den Gaina gebräuchlichen Dialektik Sarvadarçanas. 41, 7. 42, 8. 45, 4. Wilson, Sel. Works 1, 315.

सप्तभद्र m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) *Buch.* Çabdâ. im ÇKDa.

सप्तम 1) adj. (f. ई) *der siebente* VS. 25, 4. Çat. Br. 3, 3, 4, 3. TS. 5, 5, 2, 3. Âçv. Gṛhy. 3, 12, 9. Kâty. Çr. 22, 7, 13. पुरुष M. 5, 60. युग 10, 64. पद 8, 227. भक्त 11, 16. रात्रि R. 3, 72, 8. — R. Gorr. 2, 13, 1. Bâlc. P. 3, 31, 10. 9, 16, 24. °राशि Varâh. Bṛh. S. 5, 10. °दिनकृत्य Verz. d. Oxf. H. 294, *a*, 13. fg. — 2) f. ई *a) der siebente Tag in einer Monatshälfte* Kâty. Çr. 7, 1, 26. 15, 8, 14. Lâṭy. 9, 9, 8. MBh. 11, 554. Varâh. Bṛh. S. 25, 8. Weber, Kâtyây. 228. fgg. Bâlc. P. 7, 14, 21. कल्पसप्तम्य MBh. 4, 998. कृष्ण° Râéa-Tar. 5, 221. घायाष्टमुक्ला° 445. °कल्प Verz. d. Oxf. H. 31, *b*, 8. °व्रतानि 284, *b*, 44. °स्नपन 41, *a*, 6. — *b) der siebente Casus* (विभक्ति), *Locativ, die Endungen dieses Casus* Nir. 4, 15. 5, 23. VS. Pâtr. 3, 188. AV. Pâtr. 1, 74. P. 1, 1, 19. 2, 1, 40. 3, 7. 9. 36. 42 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 162, *a*, 12. 178, *a*, 6. सप्तम्यन्तं पदम् Comm. zu TS. Pâtr. 5, 10. °समास Kâéik. zu P. 8, 4, 35.

सप्तमक adj. *der siebente* Çaut. 20.

सप्तमस्र m. *Feuer* H. 1099.

सप्तमरीचि adj. *siebenstrahlig;* m. *Feuer* Varâh. Bṛh. S. 43, 37.

सप्तमातृ adj. *sieben Mütter habend:* Flüsse RV. 1, 34, 8. दक्षिणा 10, 107, 4.

सप्तमानुष adj. *bei den sieben Menschenstämmen wohnend* d. h. *bei Allen gegenwärtig* (vgl. वैश्वानर): Agni RV. 8, 39, 8.

सप्तमास्य adj. *siebenmonatlich:* ein Kind Kâtyây. 33, 8.

सप्तमीय adj. *der siebente* Mân. P. 76, 57.

सप्तमुष्टिक m. *eine best. Mixtur gegen Fieber* Çârîr. Saṅgr. 2, 2, 104.

सप्तम्यर्कव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Cambr. H. 64.

सप्तरक्त n. *die sieben rothen Theile am menschlichen Körper:* पाणिपादतलौ रक्तौ नेत्रान्तरनखानि च । तालुकाधरजिह्वाश्च सप्तरक्तं प्रशस्यते ॥ Simhabâhu im ÇKDa.

सप्तरत्नपद्मविक्रामिन् m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 133.

सप्तरश्मि adj. 1) *mit sieben Gurten* (darunter mögen *schmal geschnittene Stäbe* oder dergl. verstanden sein) *versehen:* ein Wagen RV. 2, 18, 1. 6, 44, 24. Auch पञ्चरश्मि 2, 40, 3 wäre entsprechend zu erklären. नाकस्य पृष्ठे अधि सप्तरश्मौ (von den *Gurten*, die unter der Himmelsdecke gezogen sind) AV. 9, 5, 15. 11, 1, 26. — 2) etwa *siebenstündig;* so ist nach der Zusammenstellung mit Kopf und Mund zu schliessen, während *siebenstrahlig* überall unbrauchbar ist. त्रिशीर्षाणं सप्तरश्मिं दधन्वान् RV. 10, 8, 3. त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं गृणीषे (Agni) 1, 146, 1. सप्तास्येस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमांसि 4, 50, 4. कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षः AV. 19, 53, 1. RV. 1, 12, 12.

सप्तरात्र 1) *ein Zeitraum von sieben Nächten (Tagen):* °रात्रम् acc. M. 2, 187. 11, 152. Vaśiṣ. Bṛh. S. 46, 17. 54, 114. Bhāg. P. 4, 8, 53. °रात्रेण M. 10, 93. MBh. 1, 1744. R. Gorr. 2, 70, 19. Mārk. P. 63, 47. °रात्रात् Bhāg. P. 5, 15, 27. °रात्रोषित R. 2, 71, 18. Vaśiṣ. Bṛh. S. 55, 18. °रात्रान्ते 97, 2. °कृत Mārk. P. 110, 38. °वृष्टि Ind. St. 10, 320. — 2) m. N. eines Ahina AV. 11, 7, 11. Āśv. Śr. 10, 3, 6. Kāty. Śr. 23, 5, 9. Śāṅkh. Śr. 16, 26, 1. Lāṭy. 9, 12, 17. Maçaka in Verz. d. B. H. 73.

सप्तरात्रिक n. wohl fehlerhaft für °रात्रक = सप्तरात्र 1) Ind. St. 10, 320.

सप्तराशिक *the rule of seven* Colebr. Alg. 35.

सप्तर्च (सप्तन् + ऋच्) n. *ein Lied von sieben Versen* AV. 19, 23, 4. Śat. Br. 9, 5, 2, 1. 8. Kāty. Śr. 18, 4, 12.

सप्तर्षि s. u. ऋषि 1) c). Hinzugefügt kann werden: सप्तर्षयः सदाराः Vaśiṣ. Bṛh. S. 48, 61. सप्तर्षीणां मतम् 86, 3. °चार 2, S. 6, Z. 4 v. u. °चारित R. 4, 44, 39. °वलि Kumāras. 5, 37. °मत (Titel eines Werkes) Verz. d. Oxf. H. 279, b, 37. °संवाद 5, b, 18. fg. °लोक Verz. d. B. H. 146, a (18). °स्मृति Ind. St. 1, 467. °स्मृतिसंग्रह Mack. Coll. 1, 23. °स्तोत्र 140. °पूजा दिक् so v. a. *Norden* H. 15, Schol.

सप्तर्षिक m. = सप्तर्षि in सप्तर्षिकोदेश Hariv. 464.

सप्तर्षिपुत्र m. *der Sohn der sieben Weisen, der Planet Jupiter* H. 118, Schol.

सप्तर्षिता f. nom. abstr. von सप्तर्षि Hariv. 1459.

सप्तल 1) m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. — 2) f. ई N. verschiedener Pflanzen: *arabischer Jasmin* AK. 2, 4, 2, 33. H. 1148. an. 3, 690. Med. l. 143. Hall. 2, 82. *Seifenbaum* AK. 2, 4, 8, 8. H. an. Med. Acan. 89. *Mimosa concinna Roxb.* (mit seifigen Schoten) Ratnam. 184. *Abrus precatorius* und *Bignonia suaveolens* H. an. Med. — Suçr. 1, 139, 19. 144, 16. 145, 3. 168, 12. 183, 17. 221, 3. 2, 33, 9. 277, 12. Paṇḍan. 1, 7, 19. — Vgl. सप्तलेय und सप्तला.

सप्तलिका f. = सप्तला Suçr. 2, 108, 13.

सप्तवती f. N. pr. eines Flusses Bhāg. P. 5, 19, 18. — Vgl. पञ्चवती.

सप्तवध्रि 1) adj. *mit sieben Riemen* (= धातु Comm.) *gefesselt:* die Seele Bhāg. P. 3, 31, 11. 19. — 2) m. N. pr. eines Mannes, den die Açvin retten, wie er in einen Baum eingeklemmt ist, RV. 5, 78, 5. 8, 62, 9. 10, 39, 9. AV. 4, 29, 4. mit dem patron. Âtreja Liedverfasser von RV. 5, 78. 8, 62.

सप्तवर्ग m. *eine Gruppe von Sieben* Ind. St. 8, 106. 114.

सप्तवर्मन् m. N. pr. eines Grammatikers Tibet. 74. fgg. 78. — Vgl. सर्ववर्मन्.

सप्तवार m. N. pr. eines der vielen Söhne Garuḍa's MBh. 5, 3596.

सप्तविंश adj. 1) *der siebenundzwanzigste* Śat. Br. 8, 4, 3, 15. TBr. 3, 11, 2, 4. — 2) *aus siebenundzwanzig bestehend* Ind. St. 9, 16.

सप्तविंशक adj. = सप्तविंश 2) RV. Prāt. 16, 50 (51).

सप्तविंशति f. *siebenundzwanzig* (das Gezählte steht in demselben Casus oder im gen.) VS. 9, 7. 14, 30. Śat. Br. 10, 5, 4, 5. Nir. 10, 42. Weber, Nax. 2, 277. fgg. 281. 284. 286. M. 9, 129. MBh. 1, 2580. 9, 2013. Hariv. 1332. Kathās. 123, 70. °नक्षत्रकोश AK. 2, 6, 2, 3. °रात्र n. N. eines Sattra Kāṭy. Çr. 24, 2, 22. °साधुलक्षण n. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1, 282. — Vgl. सप्ताविंशति.

सप्तविंशतिक adj. *aus siebenundzwanzig bestehend* Mān. P. 74, 57.

सप्तविंशतितम adj. *der siebenundzwanzigste* Comm. zu Kāṭy. Çr. 688, 8.

सप्तविंशतिम adj. dass. Verz. d. Oxf. H. 53, b, 20.

सप्तविंशिन् adj. *aus siebenundzwanzig bestehend:* मासाः Lāṭy. 4, 8, 5. Nidānas. 5, 11.

सप्तविदारु m. *ein best. Baum* Colebr. Alg. 315.

सप्तविध adj. (f. धा) *siebenfach, siebenartig* Śat. Br. 9, 5, 2, 8. 10, 2, 2, 1. 4, 8. 6, 2. Maitrāyaṇ. 6, 22. MBh. 2, 451 = Hariv. 14078. Suçr. 1, 170, 11. Kām. Nītis. 13, 28. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 281. Paṇḍar. 1, 1, 36. fg. Davon सप्तविधता f. nom. abstr. Śat. Br. 10, 2, 6, 14.

सप्तशत 1) adj. (f. धा) in धर्म° *dreihundertundfünfzig:* °शता नार्यः R. Gorr. 2, 35, 10 (34, 13 Schl.). 81, 6. 83, 27. — 2) f. ई *siebenhundert:* श्लोक° MBh. 1, 592. Titel verschiedener aus 700 Strophen bestehender Gedichte Colebr. Misc. Ess. 2, 74. Hall in Vāsavad. 22. Gild. Bibl. 215. 218. Verz. d. Oxf. H. 203, b, N. 1. 2. °काव्य Notices of Skt Mss. 43. °विवृति 30. °व्याख्यान 2, 54. — 3) n. pl. in धर्म° *dreihundertundfünfzig:* मातॄणामधर्मसप्तशतानि R. 2, 39, 36 (38, 43 Gorr.).

सप्तशतिका f. = सप्तशती Verz. d. B. H. No. 1338. लघुसप्तशतिकास्तव ebend.

सप्तशलाकचक्र n. *ein best. astrologisches Diagramm* (sieben senkrechte Linien, durchschnitten von sieben wagerechten) *zur Bestimmung eines glücklichen Hochzeitstages* ÇKDa. °विधि Verz. d. Cambr. H. 63.

सप्तशिरा s. सप्तसिरा.

सप्तशिव adj. (f. धा) nach Śiva *die sieben* (Welten) *beglückend:* मातर्यु RV. 1, 141, 2. Der Text scheint entstellt zu sein.

सप्तशीर्ष adj. *siebenköpfig* MBh. 1, 2162. 13, 850. °शीर्षन् s. u. शीर्षन्.

सप्तषष्ट adj. *der siebenundsechzigste* MBh. in den Unterschriften der Kapitel.

सप्तषष्टि f. *siebenundsechzig* Weber, Gjot. 92. fg. Mārk. P. 46, 35. 53, 4. 121, 5. °शतानि und °सहस्राणि ebend. °भाग m. *der siebenundsechzigste Theil* Ind. St. 10, 300.

सप्तषष्टितम adj. = सप्तषष्ट R. in den Unterschriften der Sarga.

सप्तसप्तक 1) adj. *aus neunundvierzig bestehend* Verz. d. Oxf. H. 49, a, 18. — 2) n. *neunundvierzig:* °वेतृ R. 2, 53, 41.

सप्तसप्तत adj. *der siebenundsiebzigste* Rāja-Tar. 6, 286.

सप्तसप्तति f. *siebenundsiebzig* Ind. St. 2, 282. Vaśiṣ. Bṛh. S. 11, 24. वत्सरे सप्तसप्ततौ so v. a. *im siebenundsiebzigsten Jahre* Rāja-Tar. 5, 221.

सप्तसप्ततितम adj. = सप्तसप्तत R. in den Unterschriften der Sarga.

सप्तसप्ति adj. *mit sieben Rossen fahrend;* m. *die Sonne* Taitt. 1, 1, 99.

H. 90. MBh. 3,193. 8,475. Rāgn. 13,41. Çiç. 137. Milav. 33. Kir. 5, 34. Mārk. P. 107,2.

सप्तसम s. प्राच्य°.

सप्तसमुद्रवत् (von सप्तन् + समुद्र) adj. *sieben Meere habend, von s. M. umgeben* Buic. P. 5,6,14.

सप्तसारस्वत m. N. pr. eines Tirtha MBh. 3,6035. 9,2134. fgg.

सप्तसिरा f. *Betelpfeffer* Rāéan. im ÇKDa. °शिरा gedr.

सप्तसू f. *eine Mutter von sieben Kindern* Çāndān. im ÇKDa.

सप्तसोमसंस्थापद्धति f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,208.

सप्तस्पर्धा f. N. pr. eines Flusses R. Gorr. 2,73,12.

सप्तस्रोतस् n. N. pr. eines Tirtha Buic. P. 1,13,49 (°स्रोतस् Burnouf).

सप्तस्वसृ adj. *sieben Schwestern habend:* °सा nom. fem. RV. 6,61, 10. 8,41,2. Nir. 10,5.

सप्तक n. N. eines Sâman Ind. St. 3,242,a. Śāṅkh. Br. 3,9.

सप्तकर्तृ adj. *sieben erschlagend* RV. 10,49,8.

सप्तकोतृ adj. *sieben Opferpriester habend:* Agni RV. 3,29,14. 10, 64,5. यज्ञ VS. 34,4. यधर् AV. 4,24,2. Çat. Br. 1,8,1,21. Çāṅkh. Çr. 10,18,1. Pañcav. Br. 25,4,2. *ein best.* Mantra TBr. 3,12,5,2.

सप्तकोत्रप्रयोग m. Titel eines Werkes Ind. St. 9,188. 192.

सप्तगुरुगव m. *der Planet Saturn* Gaṇiṣn. im ÇKDa.

सप्तगुल (सप्तन् + घतर्) adj. (f. ई) *siebenstilbig:* विद्या Pañcav. 2,5,27.

सप्तगारम् adv. *in sieben Häusern* Verz. d. Oxf. H. 269,a,32.

सप्तगङ्ग (सप्तन् + घङ्ग) adj. *siebengliedrig, — theilig:* घात्मन् Mārk. Up. 3. Ind. St. 9,125. Weber, Rāmây. Up. 337. fg. 342. राज्य M. 9,294. 296. Jiéān. 1,252. Kām. Nītis. 1,17. 4,1. °मूर्ति Verz. d. B. H. No. 1002.

सप्तगात्मन् (सप्तन् + घा°) adj. *sieben Naturen habend* Ind. St. 9,140.

सप्तगद्रि (सप्तन् + घद्रि) m. *sg. Siebengebirge* LIA. 2,965, N. 3. 966.

सप्तगर्चि m. = सप्तगर्चिस् *Feuer:* सप्त (so ist zu trennen) सप्तगर्चिर्वचसः R. 5,40,1. सप्तगर्चेः Mārk. P. 99,26.

सप्तगर्चिस् (सप्तन् + घ°) 1) adj. *a) siebenstrahlig. — b) stechende Augen habend* H. an. 3,758. Med. s. 64. — 2) m. *a) Feuer, der Gott des Feuers* AK. 1,1,1,51. H. 1100. H. an. Med. Hall. 1,62. 68. MBh. 1, 893. 3,5035. 12,11887. 17,36. Rāgn. 10,22. Varāh. Bṛh. S. 32,18. Kathās. 20,85. 35,69. Mārk. P. 99,60. — *b) der Planet Saturn* H. 120. Hit. 12.

सप्तगर्णव (सप्तन् + घ°) adj. (f. घा) *sieben Meere habend, von s. M. umgeben:* die Erde Buic. P. 3,21,25.

सप्तगविंशति f. = सप्तविंशति Harīv. 11522. 11837 (als n., wenn nicht °तिं zu lesen ist). 12454 (die neuere Ausg. an allen drei Stellen सप्त°). °मुक्ता: Varāh. Bṛh. S. 81,34 (das Versmaass erfordert die Länge).

सप्तगस्र und सप्तगस्र (सप्तन् + घस्र, घस्र) adj. *siebeneckig:* °कुण्ड Verz. d. Oxf. H. 97,b,10 (°स्र).

सप्तगश्व (सप्तन् + घश्व) adj. *siebenrossig:* die Sonne RV. 5,45,9. m. *die Sonne* AK. 1,1,2,20. Hall. 1,26.

सप्तश्ववाहन adj. *mit sieben Rossen fahrend:* die Sonne Sūryastotra im Sāmba-P. nach ÇKDa.

सप्ताष्ट (सप्तन् + घष्टन्) adj. *sieben oder acht:* °दिवसान् (so ed. Bomb.) MBh. 5,3446. °दिवसम् R. Gorr. 1,10,21.

सप्तास्य (सप्तन् + घा°) adj. *siebenmündig* RV. 4,50,4. 51,4. 9,111,1. *sieben Oeffnungen habend* 10,40,8.

सप्तार्क (सप्तन् + घर्क = घर्कन्) m. *sieben Tage, eine siebentägige Feier* Çat. Br. 13,4,1,4. Pañcav. Br. 23,19,3. Kāty. Çr. 23,5,4. °कम् *sieben Tage lang* Çat. Br. 13,4,1,4. R. Gorr. 1,4,122. Sūçr. 1,163,7. 167,12. 168,13. Varāh. Bṛh. S. 44,6. 46,10. 77,31. Kathās. 46,120. Rāéa-Tar. 5,91. Buic. P. 2,1,14. 5,16,27. °रात् *nach sieben Tagen* M. 8,108. Varāh. Bṛh. S. 30,12. 31. 32,30. 38,2. 86,64. Kathās. 46,107. Mārk. P. 17,8. Rāéa-Tar. 6,112. Verz. d. Oxf. H. 103,b,27. °रान् Weber, Nax. 2,286. °मात्रेण Verz. d. Oxf. H. 75,a,2. °रात्तर् Varāh. Bṛh. S. 5,92. 96. पूर्णसप्तार्का adj. Kathās. 86,157.

सप्ति m. *Ross, insbes. Rennpferd* Naigh. 1,14. Nir. 9,3. AK. 2,8,3, 12. H. 1233. Hall. 2,251. RV. 1,85,1. 6. वाजिन् 102,1. 9,96,9. वातजु 103,6. वाजंभर (zugleich angeblicher Liedverfasser) 10,80,1. रघ्य 2,31, 7. घत्य 3,22,1. 35,2. 10,6,2. यशा सप्तो 6,39,3. क्षित 9,21,4. क्षिन्वान 65,26. केत 7,43,2. धामु VS. 22,22. 19. RV. 8,4,14. 13,18. 20,22. 33, 18. 43,28. 46,7. 9,29,2. यभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्या 96,16. रोहिता 10, 60,6. 142,2. श्रवो हि सप्तेः परमं विभूषणम् Spr. (II) 2373. नरसप्तिरथ-द्विपवर्द्धिकार Pañcār. 3,3,4. — Vgl. पुरुसप्ति°, सप्त°, सित°.

सप्तिता f. nom. abstr. von सप्ति MBh. 8,2160.

1. सप्तिन् (von सप्तन्) adj. *sieben enthaltend* RV. Prāt. 16,11. m. *der siebentheilige* Stoma Pañcav. Br. 19,7,6. Liṭ. 8,5,24.

2. सप्तिन् (von सप्ति) adj. f. °नी dem वाजिनी nachgebildet Liṭ. 2,7,26.

सप्तीवत् (wie eben) adj. *mit Rennern fahrend* RV. 7,94,10. 10,6,6.

सप्तोत्साह (सप्तन् + उ°) adj. *sieben hohe Theile am Körper habend* Burnouf in Lot. de la b. l. 568.

सप्त्य (von सप्ति) n. etwa *Tummelplatz für Rosse, Rennbahn:* वरुणस्य RV. 8,41,4.

सप्रकारक (von 2. स + प्रकार) adj. *eine Specification enthaltend:* ज्ञान Tarkas. 26.

सप्रज (2. स + प्रजा) adj. (f. घा) *Nachkommen habend* Rāgn. 4,3. Buic. P. 9,18,21. *nebst Kindern* 3,22,33.

सप्रजम् (2. स + प्र°) adj. *Nachkommen habend* Kauç. 3.

सप्रजापतिक adj. *nebst* Prāgāpati: देवा: Ait. Br. 8,12. Āçv. Gṛhy. 3,9,1. Kauç. 56.

सप्रणय s. u. प्रणय 2) *b*) und füge daselbst MBh. 5,7332 hinzu.

सप्रत्यय s. u. प्रत्यय 1).

सप्रथस् (2. स + प्र°) adj. 1) *ausgebreitet, geräumig* Naigh. 4,3. Nir. 6,7. शर्मन् RV. 1,22,15. 94,12. 6,16,33 (vgl. VS. 18,54). छर्दिस् 15,3. 8,5,12. यवस् 5,65,5. VS. 38,20. — 2) *weit reichend, weithin wirkend* u. s. w.: वचस् so v. a. *weithin schallend* RV. 1,75,1. मन्मन् 6,68,9. केतर् 5,13,4. Mitra 3,59,7. Vishṇu 1,156,1. Agni als *weithin leuchtend* 18,9. 45,7. 10,140,6. VS. 38,7. येषामर्णो न सप्रथो नामं RV. 8,20,19. 10,181,1. proparox. VS. 22,3. TS. 7,1,11,1. — In der Formel सप्रथ सभां मे पाहि TBr. 1,1,10,3 scheint der Vocativ den übrigen Formeln नर्य, शंस्य u. s. w. nachgebildet zu sein.

सप्रभ (2. स + प्रभा) adj. *gleiches Glanzes, — Aussehens mit* (geht im comp. voran): दीप्तपावक° MBh. 1,1038. सूर्य° 3,12222. हिङ्गुल° 12886. 7,2811. यमराधिपसैन्य° 8,1212. Harīv. 2692. 12513. R. 6,19,46. Va-

śân. Bṛh. S. 37, 1. 81, 23. 82, 5. Pāśkar. 3, 14, 2.

सप्रभव (von सप्रभ) n. *gleiches Aussehen* Vīsan. 1, 7, 11.

सप्रभाव (2. स + प्र°) adj. (f. आ) *Macht besitzend* Kathās. 30, 70.

सप्रभृति (2. स + प्र°) adj. *gleich beginnend, n. gleicher Anfang* Pāśkar. Bṛ. 15, 1, 6. Çāṅkh. Br. 20, 4. 21, 4. 22, 4. 26, 16. nach P. 6, 3, 84 wäre समानप्रभृति die richtige Form.

सप्रवाद् (2. स + प्र°) adj. *sammt den Casusformen* ṚV. Prāt. 3, 15. — Vgl. सकृप्रवाद्.

सप्रसव adj. *mit Nachkommenschaft gesegnet* Rāgān. 1, 22; vgl. auch unter प्रसव 3).

सप्राण (2. स + प्राण) adj. *athmend, lebend* TS. 5, 3, 6, 3. 6, 1, 1, 4. R. 6, 82, 23. Bhāg. P. 8, 2, 26.

सप्राय (2. स + प्राय) adj. *gleichartig, gleichmässig:* कल्प° Lāṭj. 6, 9, 12. — Vgl. साप्राय्य.

सप्रेमन् (2. स + प्रे°) adj. *seine Freude an Etwas* (loc.) *habend* Spr. (II) 3612.

सप्रेष in der Verbindung वालखिल्याः (वालि° gedr.). समप्रेषाः Verz. d. Oxf. H. 36, *a*, 8. wohl fehlerhaft für समप्रेषाः.

सप्सर् (ohne Avagraha) adj. von unbekannter Bed.: ते सप्सरासो ऽजनयन्ताप्सु वंसु Marut ṚV. 1, 68, 9. nach Sāy. = समानरूप oder हिंसक.

सफ 1) m. N. pr. eines Liedverfassers mit dem patron. Vāsishṭha Ind. St. 3, 242, *a*. mit dem patron. Pāgṛja 233, *b*. — 2) n. N. verschiedener Sāman ebend. 242, *b*.

सफल (2. स + फल) adj. (f. आ) 1) *mit Früchten behängt:* ein Zweig Pāṇ. Gaṇ. 2, 10. यादृप Kathās. 25, 13. — 2) *Lohn —, Gewinn bringend, Erfolg habend, sein Ziel erreichend, erfolgreich:* जन्मन्, जीवित MBh. 3, 2099. R. Gorr. 1, 21, 20. 71, 13. 4, 44, 8. 5, 13, 6. Spr. (II) 2932. 5383. Mārk. P. 61, 37. Pāśkar. 1, 3, 14. — R. 2, 37, 17. 3, 77, 10. 5, 57, 2. 90, 21. आरम्भ Mṛicch. 174, 3. Vikr. 10, 9. Spr. (II) 4730. Rāja-Tar. 5, 372. Vet. in LA. (III) 24, 2. यज्ञसमृद्धि *sich erfüllend* R. 1, 50, 13 (31, 13 Gorr.). आशा MBh. 3, 13643. ज्ञपाशा 7, 51. ° प्रार्थन adj. Vikr. 21, 17. तर्क Spr. (II) 4282, v. l. प्रतिज्ञा सफलां कृ *erfüllen, halten* R. 4, 13, 31. 39. करोति सफलं वचः Kām. Nītis. 17, 30. लक्षणं सफलम् *nebst Erfolg* Vaṇiç. Bṛh. S. 20, 5. — 3) *Hoden habend, unverschnitten* R. Gorr. 1, 50, 4 (49, 4 Schl.). 10. — Vgl. साफल्य.

सफलत्व n. nom. abstr. zu सफल 2): चतुरस्य सफलत्वमागतम् Kathās. 45, 267. कामिनो मण्डनश्रीर्व्रजति हि सफलत्वं वल्लभालोकनेन Śiç. D. 43, 12.

सफलय् (von सफल), °यति *gewinnreich —, erfolgreich machen:* नयने Gīt. 9, 6. तारुण्यम् Khaṇḍ. 32. Kathās. 89, 53. Rāja-Tar. 2, 142 (सफलयन् zu lesen). सफलित Verz. d. Oxf. H. 146, *b*, 2.

सफलीकृ (सफल + 1. कृ) dass.: जीवलोकः °क्रियते Pāśkar. 226, 6. °क्रियतां सर्वम् Çaṅk. 1, 19. °कृतधातृपिण्ड Milav. 68, 18. लोचने Kathās. 45, 234. प्रतिज्ञा *erfüllt, gehalten* R. Gorr. 1, 69, 24. 3, 35, 112.

सफलीभू (सफल + 1. भू), °भवति *Gewinn bringen, Erfolg haben* Spr. (II) 5816. सौन्दर्य °भूतम् Kathās. 123, 219.

सबन्धु (2. स + बन्धु) adj. 1) *derselben Sippe zugehörig, verwandt* P. 5, 3, 85. Vop. 6, 97. ṚV. 3, 1, 10. 5, 47, 3. 8, 20, 21. 9, 14, 2. 10, 10, 9. AV. 6, 13, 2. 8, 2, 26. 15, 8, 2. 3. VS. 5, 32. सखा: ṚV. 5, 59, 5. — 2) *einen Angehörigen —, einen Freund habend* (Gegens. बन्धुहीन) Hit. 17, 19. — Vgl. स°, यावत्सबन्धु.

सबर्दुघ (सबर् + दुघ) adj. (f. आ) *alsbald* (vgl. ἅφαρ) *Milch gebend (ohne Mühe zu melken)* oder *neumelk:* eine Kuh ṚV. 1, 20, 3. 121, 5. 134, 4. 3, 6, 4. धेनवः सबर्दुघाः शशया अप्रदुग्धाः 55, 16. 12. 8, 1, 10. 10, 61, 11. zu 9, 12, 7 vgl. SV. II, 5, 1, 8, 7. Nach Sāy. bedeutet सबर् *Milch, Saft, Nektar.*

सबर्दुघ् adj. dass.: °धुक् ṚV. 10, 69, 3.

सबर्धु adj. dass.: सबर्धुं धेनुम् ṚV. 10, 61, 17.

1. सबल (2. स + 1. 2. बल) 1) adj. *a) kräftig, mächtig* ṚV. 8, 82, 9. AV. 13, 3, 12. Çāṅkh. Gṛhj. 6, 5. MBh. 13, 860. Spr. (II) 3624. *nebst Kraft, — Macht* AK. 2, 7, 57; vgl. H. 1382. — *b) nebst Heer* R. 2, 52, 74. 71, 10. सबलानुग = सबल und सानुग MBh. 5, 7449. — *c) nebst Bala* (Kṛshṇa's älterem Bruder) Bhāg. P. 3, 2, 26. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Bhautja Harīv. 496. eines Sohnes des Vasishṭha und eines der 7 Weisen Mārk. P. 52, 26. eines der 7 Weisen unter Manu Sāvarṇa 94, 8.

2. सबल schlechte Schreibart für शबल MBh. 7, 827. 13, 3766 (die ed. Bomb. an beiden Stellen शबल). Pāśkar. 188, 11. fg.

सबलसिंह m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 5, Cl. 12.

सबलि (2. स + 1. बलि°) m. *Abend* H. 140.

सबहुमानम् (von 2. स + बहुमान) adv. *mit Hochachtung* Çiç. 99, 13.

सबाध s. u. 1. बाध 2).

सबाधम् (2. स + बाध°) 1) adj. etwa *bedrängt:* नू नो यद्य ऊतये सबाधसश्च हातये (sc. यसः) ṚV. 5, 10, 6. = सक्षिण् Naigh. 3, 18. — 2) adv. *dringend:* नरो वृत्र्येभिरीळते सबाधः ṚV. 7, 8, 1. 26, 2. 94, 5. 8, 63, 6. 12. प्र नमोभिः सबाधं ईळे 7, 53, 1. 61, 6. 8, 55, 1. प्र वीरमर्चता सु° 3, 51, 4. तं स° यो चकृवृतये 3, 27, 6. 4, 17, 18. स° शशमानः 23, 4. 1, 64, 8. 10, 101, 12. TS. 2, 2, 12, 4.

सबाह्यात्तःकरण adj. *mit den äusseren und inneren Sinnen:* यत्सबाह्यात्मन् so v. a. *das ganze Selbst* Çiç. 98, 31.

सबाह्यात्तरात्मन् m. *das Herz nebst den äusseren Sinnen* so v. a. *das ganze Selbst* Vikr. 72, 5. 6.

सबिन्दु (2. स + बिन्दु°) m. N. pr. eines Berges Mārk. P. 55, 5.

सबीज (2. स + बीज) adj. *Samen —, Keime enthaltend* (auch in übertr. Bed.); davon nom. abstr. °त्व n. Weber, Rāmāy. Up. 343, 3.

सब्द् ein dunkles Wort: सब्दः सर्गः सुमेकः TS. 4, 4, 9, 2. सब्दमक्षः सगरा रात्रिः Çat. Br. 1, 7, 3, 26.

सब्रह्मक (von 2. स + 2. ब्रह्मन्) adj. *sammt dem Brahman (Priester)* Āçv. Çr. 3, 5, 1. *sammt dem Gotte Brahman:* सब्रह्मकेषु लोकेषु सप्तस्वप्यखिलेषु च MBh. 3, 175. इमे सब्रह्मका लोकाः समुरामुरमानवाः 12, 13013.

सब्रह्मचारिक adj. von सब्रह्मचारिन् oder = सब्रह्मचारिन् Jāṭ. 2, 85.

सब्रह्मचारिन् (2. स + ब्र°) m. *(geistlicher) Mitschüler* P. 6, 3, 86 nebst Vārtt. Vop. 6, 97. AK. 2, 7, 11. H. 80. Āçv. Gṛhj. 4, 4, 26. Gobh. 3, 3, 18. Çāṅkh. Gṛhj. 4, 17. M. 5, 71. Jāṭ. 2, 135. Kām. Nītis. 2, 23. K.

rnâs. 4,97. 70,19 (सब्र° zu lesen). 104,24. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,13. f. °चारिणी Kathâs. 29,51. गतिं गरुत्मतो दृष्ट्वा वेगसब्रह्मचारिणीम् so v. a. *wetteifernd* 18,89. — Vgl. साब्रह्मचारिण.

सैब्राह्मण (2. स + ब्रा°) adj. *sammt Brahmanen:* देवाः AV. 12,4,10. 33.

सब्ध्य nach Manoh., eher सर्ब्ध्य f. etwa *Speisebrei* (des Magens), welche Bed. Manoh. irrig für ऊवध्य annimmt. VS. 19,84. TBa. 2,6,8,2 schreibt सवुर्वम्, nach dem Comm. adj. von (Athmungs-) *Geräusch* (घुर्व) *begleitet.* Eher wäre in diesem Falle *crepitans* (von Blähung) zu verstehen.

सम् = सकृ; vgl. प्रसभम्.

सभ s. unter सभा.

सभक्तिकाम् (von 2. स + भक्ति) adv. *liebevoll* Çiv. in LA. (III) 34,19.

सभक्त (2. स + भक्त) adj. *Mitesser, Tischgenosse:* पद्यासभक्तम् *je mit dem betreffenden Mitesser* Âçv. Çr. 5,6,19.

सभय (2. स + भय) adj. (f. या) von *Angst* —, von *Furcht ergriffen, erschrocken* Kathâs. 10,157. 17,67. 22,254. Pañkat. 45,8. सात्मापराध° *sich fürchtend vor* Kathâs. 18,224. सभयम् adv. R. 1,64,4. Kathâs. 26, 217. Hit. 18,12. 39,8.

सँभरम् (2. स + भ°; vgl. भर 2) *c*) adj. etwa *zusammenklingend, — stimmend:* die Marut RV. 5,54,10. VS. 17,81.84. गिरा च श्रुष्टिः सभरा असद्वः *wenn mit unserer Bitte die Gewährung stimmt* RV. 10,101,3.

सभर्तृका (von 2. स + भर्तृ) adj. f. *einen Gatten* (am Leben) *habend* AK. 2,6,4,12.

सभव (2. स + भव) adj. *nebst* Bhava (Çiva) Bhâg. P. 3,23,3.

सभस्मन् (2. स + भस्मन्) adj. सभस्महिताः *mit Asche bestrichene Brahmanen,* Bez. *der* Pâçupata oder Çiva'*itischen Mönche* Vâmîn. Bhn. S. 60,19; vgl. Hiouen-thsang 1,124.

सभा f. *ein öffentliches* oder *Gemeindehaus, Halle für Versammlungen,* insbes. *Spielhaus; Versammlung, Gesellschaft; Hof eines Fürsten, Gerichtshof* AK. 2,2,5. 7,14. 3,4,24,73. 22,140. Trik. 3,3,291. H. 481. 990. an. 2,312. fg. Med. bh. 9. Halây. 4,60. 5,35. बृहो वर्ष उच्यते सभासु RV. 6,28,6. चन्द्रो यति सभासुषे 8,4,9. सभामेति कितवः 10,34,6. AV. 5,31,6. यामाः, घरण्यम्, सभाः 12,1,56. VS. 3,45. 16,24. 20,17. पृशेवो ब्राह्मणस्य सभा TS. 1,7,6,7. पत्सभायां विजयते TBa. 1,1,10,6. Çat. Br. 2,3,2,3. 5,3,1,10. Çâṅkh. Br. 7,9. सभाः समाज्ञाश्च Âpast. 1, 32,19. südlich von der Stadt 2,25,5. in der Mitte ein Spieltisch 12. *Gesellschaftsraum im Wohnhaus* AV. 2,10,5. TBa. 1,1,10,3. तस्यं सभायामुत्तानो निषद्य TS. 3,4,6,6. सभानामुपस्तरणानि Kâtj. 11. 17. Lâṭj. 3,5,22. प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये Kâṅkh. Up. 8,14. संसत्सु च सभासु च MBh. 3,15787. सभा क्रियताम् 2,9. fgg. 5,179. fgg. इक्ष्वाकुनाथस्य R. 2, 81,9. 5,89,6. fgg. दैत्येन्द्रस्य MBh. 3,15884. Ragh. 17,27. Spr. (II) 4023. Kathâs. 29,13. Râja-Tar. 2,127. 159 (सभास्तरे bei Ta. zu lesen). 3,377. 4,222. 5,33. 391. 417. Pañkat. 1,4,66. Halây. 4,93. °प्रवेशन *Gerichtshof* Pân. Gṛhy. 3,13. M. 7,145. 8,1. 10. 11. 79. 95. R. 2,67,1. Spr. (II) 1293. 3136. 6838. सभासीन (राजन्) Râja-Tar. 4,32. सभास्थानस्य 3,129. सभोपविष्ट Pañkat. 223,13. Ver. in LA. (III) 28,14. सभावसरे 16,9. सभायां चक्रिरे कथाः *in Gesellschaft* R. 2,69,3. सभा समया परितुष्यते विप्रम् R. Gorr. 2,88,28. जिता सभा वस्त्रवता Spr. (II) 2415. वाचः सभायोग्याः 2356. विषं सभा दरिद्रस्य 2836, v. l. सभा पण्डितैः (भाति) 3345. सभां कारयति 3619. न शोभते सभामध्ये 4800. 6270. सभास्तरे 6401. Kathâs. 46, 161. Bhâg. P. 3,1,7. सभां कृत्वा Hit. 93,3. *Asyl, Zufluchtsort für Reisende* M. 9,264. MBh. 3,2336. fg. 13,1671. R. 1,5,12 (11 Gorr.). Mârk. P. 14,65. Bhâg. P. 10,41,21. *Vorhalle in einem Tempel* Wilson, Sel. Works 1,189. महा° *eine grosse Halle* (wo gespeist wird) Kathâs. 45, 227. in comp. mit dem Namen eines Gottes oder Fürsten so v. a. *Palast, Hof:* धनाध्यक्ष° R. 5,80,7. पुण्यमित्र°, चन्द्रगुप्त° Mudrâr. ed. Bollany. 758. in comp. mit einem im pl. gedachten Worte *Versammlung —, Gesellschaft von:* मन्त्रिसभास्तरे Râja-Tar. 6,261. युवति° Gît. 9,5. विद्वज्जनसभामध्ये Spr. (II) 6109. साधु° 5717, v. l. Bhâg. P. 7,11,1. वृद्ध° 5,12,7 (pl.). असत्सभा 1,8,24. पण्डितसभां कारितवान् Hit. 7,12. शिष्टसभां कृत्वा 100,15. in diesen Verbindungen nach den Grammatikern häufig n. P. 2,4,23. fg. AK. 3,6,3,36. fg. das vorangehende Wort hat den Ton auf der letzten Silbe P. 8,2,98. गोपालसभ, स्त्रीसभ Schol. — एकसभं Çat. Br. 14,9,3,9. घसभं *in die Gesellschaft nicht gehörig* TS. 1, 7,6,7. — Sabhâ und Samiti als Töchter des Prâgâpati AV. 7,12, 12. — Vgl. देव°, नृपसभ (auch Verz. d. Oxf. H. 193,*a*,16), ब्रह्मसभा, मध्येसभम्, मनुष्यसभा, यमसभ und °सभा, राजसभा (fügo *Hof eines Fürsten* und Spr. (II) 2077. 2960. Kathâs. 102,146 hinzu).

सभाकार m. *Erbauer einer Halle* u. s. w. MBh. 5,185. R. Gorr. 2,87,3.

सभाक्ष m. N. pr. eines Mannes Harîv. 2079. 5252.

1. सभाग (सभा + 1. ग) adj. *in die Versammlung —, in den Rath gehend:* घप्यस्य राज्ञः सभागा घागच्छति Çat. Br. 3,3,4,14. Kâṅkh. Up. 5,3,6. — Vgl. सभाचर.

2. सभाग (2. स + भाग) adj. *einen Antheil habend;* s. सभाग्य.

सभागय् (von 2. सभाग), °यति etwa *mittheilen:* पत्सभागयति दक्षिणाः सभागयति AV. 9,6,34.

सभागृह n. *Versammlungshalle* Verz. d. Oxf. H. 28,*b*,17.

सभाग्य (2. स + भा°) adj. (f. या) *glücklich* (von Personen) Harîv. 5754. R. Gorr. 2,53,13. 5,68,33. Mârk. P. 21,59.

सभाचर adj. = 1. सभाग VS. 30,6.

1. सभाजन (von सभाजय्) n. *das Erweisen einer Ehre, einer Aufmerksamkeit* AK. 3,3,7. H. 731. Halây. 4,21. R. 2,57,2. Ragh. 13,43. 14,18. सभाजनान्तराणि पातयिष्यामि (सभाजनानि यात° ed. Tulln. 74,9) Mâlav. ed. Bomb. 113,4. 5. Mârk. P. 110,13 (wo सभाजनमिष्यते st. सभाजनपिष्यते zu lesen ist). Verz. d. Oxf. H. 61,*b*,3 v. u. 173,*b*,3 v. u.

2. सभाजन (2. स + भा°) adj. *reichlich mit Gefässen versehen:* गृह MBh. 4,382. महाजन ed. Bomb.

सभाजय् (denom. von 2. स + भाज्), °यति Daçak. 35,35 (प्रीतिदर्शनयोः: सेवन st. दर्शन v. l.) *Jmd* (acc.) *eine Ehre —, eine Aufmerksamkeit erweisen:* °यति R. 3,35,107. °यत् partic. 106. 4,29,27. Uttarar. 82,2 (105,5). Kathâs. 46,25 (स भा° gedr.). °य imperat. MBh. 12,10889. °यत् imperf. 3, 13227. °याम्रास Bhâg. P. 10,48,8. med. °यन्ते (am Ende eines Çloka) MBh. 5,1718. °यसे Mârk. P. 110,12. 18. °येयाम् MBh. 5,645. °यत imperf. 2,1618. absol. °यित्वा R. 3,35,98. Bhâg. P. 10,32,15. 70,34. सभाज्य MBh. 1,3277. Kathâs. 62,8. °यितुम् MBh. 6,3589. Mâlav. ed. Bomb. 113,2. partic. pass. सभाज्यमान MBh. 1,3112. 4,3213. 14,2673 (nach der

Lesart der ed. Bomb.). R. Gorr. 2, 13, 29. 3, 35, 115. 5, 39, 9. सभाजित MBu. 3, 9913. 4, 2163. R. Gorr. 1, 33, 22 (स भा° gedr.). 2, 4, 12. 4, 10, 23. 61, 44. 5, 8, 20. 53, 24. 7, 37, 8, 61. Rigá-Tar. 1, 336. Mirr. P. 110, 9. 116, 62. Bhâg. P. 2, 9, 9 (स भा° Burn.). 4, 1, 32. 20, 36. 5, 7, 25. 8, 12, 3. 16, 3. 44. सु° 10, 38, 43. (einen leblosen Gegenstand) *ehren*, (eine Sache) *preisen*: केलासं सभाजयितुम् Kathâs. 110, 3. कलिं °यति Bhâg. P. 11, 5, 36. 34, 20. तच्चिकीर्षितम् 3, 24, 11. 6, 18, 21. °यते मम पौरुषाणि 3, 25, 24. सभाजित 4, 21, 8. 5, 14, 43. 7, 11, 1.

— यधि dass.: ताम् — यधिसभाजयामास Bhâg. P. 5, 2, 17.

सभानर (स° + नर) m. N. pr. eines Sohnes des Kakshoja Harîv. 1669. des Anu VP. 444. Bhâg. P. 9, 23, 1.

सभापति m. *Herr* —, *Vorsteher der Versammlung* oder *des Raths* VS. 16, 24. Kathâs. 107, 57. भूमिभर्तुः Rigá-Tar. 4, 494. Bhâg. P. 6, 17, 7. Bein. Bhûtakarman's MBu. 7, 1088. 8, 4587. — Vgl. सभापत.

सभापरिषद् f. *Rathsversammlung* MBu. 4, 534.

सभापर्वन् n. Titel des 2ten Buches im MBu.

सभापाल m. *Vorsteher eines öffentlichen Hauses, Wächter einer Versammlung* TBa. 3, 7, 6, 6. MBu. 1, 7940. fg. 4, 787 (pl.).

सभावत् (von सभा) adj. *in Gemächern* —, *in Häusern bestehend*: रयिं RV. 4, 2, 5. *im Rath* —, *in der Versammlung geführt*: संवाच् (so zu lesen) 1, 167, 3.

सभाविन् (wie eben) m. *Herr eines Spielhauses* (Comm.) TBa. 3, 4, 1, 16.

सभासद् adj. *in dem Gemach u. s. w. sich aufhaltend*; m. *Mitglied einer Gesellschaft* oder *Versammlung*; *Beisitzer im Gericht, Richter* AK. 2, 7, 16. H. 480. यमस्य AV. 3, 29, 1. 7, 12, 2. 19, 55, 6. TBa. 1, 2, 1, 26. मरुतः परिवेष्टारो विश्वे देवाः सभासदः Ait. Br. 8, 21 (= Bhâg. P. 9, 2, 28). MBu. 4, 483. R. 1, 4, 27 (3, 71 Gorr.). 2, 5, 24 (4, 24 Gorr.). 82, 16. Hasn. 15, 29. धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण सभां यत्रोपतिष्ठते । शल्यं चास्य न कृन्तन्ति विद्धास्तत्र सभासदः ॥ Spr. (II) 3136. 5060. M. 8, 13. fg. Jiân. 2, 2. Kathâs. 4, 33. 24, 196. 112, 208. Rigá-Tar. 5, 337. Mirr. P. 114, 4. Pañkat. 40, 23. मत्सभासदः Pañkar. 1, 15, 12.

सभासद् dass. R. 1, 4, 32. Spr. (II) 2185.

सभासार्ह adj. *der übrigen Gesellschaft u. s. w. überlegen, hervorragend* RV. 10, 71, 10. Ait. Br. 1, 13.

सभासिंह m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 140, b, No. 283.

सभास्तार् m. = सभासद् AK. 2, 7, 16. H. 480. *im Rathe des Fürsten sitzend, Richter* Bhar. Nâtjaç. 34, 62. 76. *am Glücksspiel Theil nehmend* MBu. 2, 1787. *ein Beamter, welcher für den Fürsten die Würfel wirft*, 4, 28. 338. 2286.

सभास्थाणु m. *Pfosten eines Spielhauses* Nir. 3, 5. VS. 30, 18. nach Durga zu Nir. *Spieltisch*, nach dem Comm. zu VS. und TBa. scherzhaft für *einen Menschen, der vom Spiel nicht wegzubringen ist.*

सभिक (von सभा) m. *der Inhaber eines Spielhauses* AK. 2, 10, 44. Trik. 2, 10, 17. H. 485. Hall. 2, 233. Jiân. 2, 199. 201. Mudr. 31, 20. 33, 11. 24. Daçar. 69, 17. Kull. zu M. 3, 159. fg.

सभृति (2. स + भृति) adj. *dieselbe Pflege geniessend, Tischgenosse*: या पत्सख्य सभृतयः पृणन्ति RV. 6, 67, 7. = सह श्रियमाणा सविज्ञः Sây.

सभेय (von सभा) adj. *für eine Versammlung und Rath geeignet*, — *tüchtig, in gute Gesellschaft passend* so v. a. *anständig, gewandt* u. s. w. P. 4, 4, 106. वीर RV. 1, 91, 20. विप्र 2, 24, 13. युवन् VS. 22, 22. Çâṅku. Ça. 8, 18, 13. AV. 20, 128, 1. — Vgl. सु°.

सभ्य (wie eben) adj. *in der Halle, Versammlung, Gesellschaft befindlich; dazu gehörig, geeignet* u. s. w. P. 4, 4, 105 (oxyt.). AK. 2, 7, 16. 3, 4, 22, 140. H. 480. Agni AV. 8, 10, 5. 19, 55, 6. Kâty. Ça. 4, 9, 20. 15, 33. Schol. 356, 20. Gaut. 1, 4. Bhâg. P. 2, 13, 26. TBa. 1, 2, 1, 26. 3, 7, 4, 6. एनस् Çat. Br. 12, 9, 3, 3. वृद्धानां सभ्यानाम् *der versammelten Alten* MBu. 2, 2180. 4, 487. Bhâg. P. 4, 6, 2. 21, 20. 6, 17, 9. so v. a. *Zuschauer* Sin. D. 26, 19. श्रीहर्षस्य so v. a. *am Hofe Çrîharsha's lebend* Hall in der Einl. zu Vâsavad. 21. विक्रमादित्य° 6. *Beisitzer im Gericht, Richter* Trik. 2, 7, 8. M. 8, 10. Jiân. 1, 259. 2, 3. Kathâs. 49, 125. 127. 54, 113. 62, 50. 106, 164. 167. Spr. (II) 7033. Rigá-Tar. 6, 12. 21. fg. Pañkat. 40, 22. 25. *Mitspieler* Kathâs. 121, 26. 30. Daçar. 70, 9. *ein Mitglied der guten Gesellschaft, fein gebildet* AK. 2, 7, 2. Trik. 3, 3, 58 (सभ्यो st. सभ्ये zu lesen). H. 379. Kâm. Nîtis. 13, 30. Rasn. 1, 55. Spr. (II) 2608, v. l. Vaṅîn. Bṛn. 8. 60, 17. fg. Rigá-Tar. 3, 188. 4, 67. 5, 32. 86. Bhâg. P. 3, 18, 12 (श्र°). 4, 15, 23. Bhatt. 1, 13. Verz. d. B. H. 288, 9 v. u. als Anrede Bhâg. P. 1, 1, 10. 3, 24, 14. 11, 14, 12. *höflich, anständig* und श्र° *unhöflich, unanständig* von Reden Nir. 5, 2. Spr. (II) 5915. fg. Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 85. — सभ्य fehlerhaft für सत्य Kathâs. 56, 247. Vgl. परि°.

सभ्यकण्ठाभरण n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 826.

सभ्येतर (सभ्य + इ°) adj. *unanständig*: Reden Spr. (II) 3319. Kâvjâd. 1, 63.

1. सम्, सँमति Dhâtup. 19, 82 (यवेज्ञाव्ये, यवेकत्ये, वेज्ञाव्ये). — Vgl. स्तम्.

2. सम् praep. gaṇa प्रादि zu P. 1, 4, 58. Vop. 1, 3. in Verbindung mit Verben und in comp. mit einem Nomen *Vereinigung* (vgl. 2. स) ausdrückend; = एकीभाव Nir. 1, 3. सङ्गार्थे प्रकृष्टार्थे शोभनार्थसमुच्चयोः(!) H. an. 7, 16. शोभनार्थसमर्धयोः ॥ सङ्गार्थे च प्रहृष्टार्थे Med. avj. 54. fg. verdoppelt P. 8, 1, 6. मे सँमिग्वते RV. 10, 191, 1. in defectiven Satzen z. B. यावी यावि यशसः सं हि पूर्वीः sc. *umgeben* u. s. w. 3, 1, 11. समिन्द्रियेण पर्यसाकम् sc. *möge sein*. — *verbunden worden* AV. 6, 124, 1. वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्याः sc. वर्तयतम् 7, 104, 4. ähnlich im Refrain z. B. 8, 12, 22. fgg. 13, 2. 86, 11. fg. — Vgl. सँतरम्.

1. सम enklitisches Pron. Çiṅ. 4, 16. समस्मै, °स्मात्, °स्मिन्, सम् m. pl. gaṇa सर्वादि zu P. 1, 1, 27. Vop. 3, 9. *jeder, irgend einer* Naigh. 4, 2. Nir. 5, 22. 10, 5. AK. 3, 2, 14. H. 1433. an. 2, 340. Med. m. 35. RV. 1, 176, 4. 3, 24, 2. 6, 27, 3. 42, 4. 51, 6. तयो समस्य हृदयमा रिख 53, 8. 8, 21, 5. यन्यके समे 39, 1. 64, 9. स्वनात्समस्य कस्य चित् 9, 29, 5. 61, 20. 10, 29, 4. 34, 5. नमः समस्मात्पूर्वस्मै Vop. 3, 37, Çi. 1. — Vgl. समक्.

2. सर्म 1) adj. (f. या). Verhalten eines fem. vor समा in einem comp. gaṇa प्रियादि zu P. 6, 3, 34. Vop. 6, 13. a) *eben, planus, in gleicher Lage befindlich; parallel* RV. 5, 83, 7. कालः समविषमकरः Spr. (II) 1693 समं च विषमं चैव न प्राज्ञायत (so ed. Bomb.) किं च न MBu. 6, 3644. die Erde, Gegend, Boden, Platz Ait. Br. 6, 35. Çat. Br. 3, 1, 4, 2. MBu. 13, 1436. 14, 1542. Harîv. 358. 360. R. 1, 5, 9. 2, 55, 33. 56, 11. 80, 9. 91, 29. 3, 21, 18. 29, 2. 4, 44, 63. Kâm. Nîtis. 14, 32. 36. 15, 6. Çiç. 5, 14. AK. 3,

4,2,34. Vaitân. Bṛh. S. 9,24. 28,10. 48,17. 53,88. Kauṣ. 18,91. Bhāg. P. 4,17,4. 18,11. 29. 5,9,12. 7,15,31. तीर्थ R. 1,2,7. शिलातल MBh. 1,7716. R. 2,96,6. Weg MBh. 5,5303. 6049. R. Gorr. 2,86,17. Spr. (II) 5481. 6119. 6602. 7463. जिह्मा सुसमा Vaitân. Bṛh. S. 68,83. पिण्ड *glatt* Jñân. 2,105. यदा — देवत्वेन — भविष्यति समं भूमेः *der Erde gleich werden* Kauṣ. 121,147. देवकुलं भूमिसमं कुरु 180. देवगृहं भूमिसमं व्यधात् 182. वेदिमोपया पार्श्वौ समा निधाय Âçv. Çr. 1,1,28. भूसमेन सूत्रेण Vaitân. Bṛh. S. 58,7. गमने (einer Person) कर्णासमश्चेत् *wenn (eine Krähe) in der Höhe des Ohres* (vorbeifliegt) 93,25. °जठरशिरम् adj. *Bauch und Kopf in gleicher Höhe haltend* Z. d. d. m. G. 27,26. — *b) gleich* (ähnlich) AK. 2,10,37. 3,4,44,80. H. 1461. an. 2,340. Med. m. 35. Hall. 4,9. ṚV. 8,1,6. समो चिद्धस्तो न समं विविष्टः 10,117,9. AV. 2,11,1. Ait. Br. 4, 19. Çat. Br. 6,2,1,19. 9,5,2,9. 12,2,2,3. Kâty. Çr. 2,3,21. Âçv. Gṛhy. 2,8,3. केशाश्मश्रुः Çâṅkh. Gṛhy. 1,5. ṚV. Pâr. 17,22. TS. Pâr. 17,2. वृत्त *gleichartig* d. i. *aus gleichen Theilen* (Pâda) *bestehend* Ind. St. 8, 326. 408. मौञ्जी त्रिवृत्समा मेखला so v. a. *mit gleich langen Fäden* M. 2, 42. 3,49. 4,224. मा कृधि विषमं समम् 228. 8,73. 177. कन्या von *gleichem Range* 366. न समो नासमो 10,73. वंशाः 9,116. विभाग 120. 134. सप्तिणः *von beiden Seiten gleich an Zahl und Beschaffenheit* Jñân. 2, 87 (*allesammt* Strenzler; dann müsste aber समे, nicht समाः stehen). समोदक adj. *gleich viel Wasser enthaltend* H. 409. समाहरेत्चतुर्भिः पादैः R. 1, 2,43. 45. दशनाः 3,32,27. 5,14,17. Spr. (II) 3216. 4536. 5941. 6868. Çiç. 57. °वयोरूपसमन्वितः 13,10. Vaitân. Bṛh. S. 47,17. 66,1. 68,4. Kauṣ. 24,115. 32,45. Rîâ-Tân. 4,204. Bhāg. P. 2,3,6. 3,32,24. 4,20,18. यः स्त्रीमुखं च शशिनं च समं करोति *einander gleichstellen* Spr. (II) 3149. सुखदुःखे समे कृत्वा Bhag. 2,38 (vgl. सममुखदुःख). मज्जातः *in Bezug auf Lâṭ.* 2,6,1. घतर° desgl. R. 1,2,21. दिक्समं *der Richtung nach gleich, in derselben Richtung gelegen* Śâṅkh. 4,25. mit instr. oder gen. P. 2, 3,72. Vop. 3,10. 23. समो देवैरुत श्रिया (*in Bezug auf*) ṚV. 6,48,19. Çat. Br. 14,4,2,24. M. 2,131. 172. 4,154. 5,142. 9,130. MBh. 5,6001. न समा मम वीर्यस्य शतांशेनापि पिण्डिताः 10,622. R. Gorr. 2,8,38. 7, 17,24. Rāgh. 2,9. Spr. (II) 329. 5572. 7504. Rîâ-Tân. 5,292. गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः so v. a. *mehr werth* Spr. (II) 2157. शक्रस्य समप्रभावः MBh. 3,955. न समास्तस्य मानुषाः 2098. बुद्धया समो यस्य नरो न विद्यते 15711. न सौभाग्ये u. s. w. समो लोके तव R. 1,24,13. 5,2,9. 10. Spr. (II) 2930. Kauṣ. 24,27. आत्मनः समं कर् *sich selbst gleich stellen* 18,79. in comp. mit der Ergänzung P. 2,1,31. उद्यत° TS. Pâr. 1,42. 45. fg. Çvetâçv. Up. 6,8. M. 1,9. 2,188. 4,85. 8,191. fg. 10,94. 103. 11,41. MBh. 1,5934. 6132. 5,6048. R. 1,1,6. समया पृथिवीसमः 19. 2,26,32. Rāgh. 3,13. 23. Çiç. 136. 187. Spr. (II) 2024. 3053. 3772. 4287. Vaitân. Bṛh. S. 53,30. Ver. in LA. (III) 1,12. Brahma-P. ebend. 50,14. वायुवेगसम = वायुसमवेग R. 2,40,17. किरणमय° = किरण° 4,44,17. *der Bedeutung nach gleich* AK. 1,1,2,33. 2,24. खट्वा 2,6,2,39. Taik. 1,1,124. fg. am Ende eines comp. H. 5. *homogen* (Laut) Vop. 1,4. द्वि:° *doppelt so gross:* दोष Jñân. 3,285. — *c) sich gleich bleibend, nach wie vor —, unter verschiedenen Verhältnissen derselbe, unverändert:* सवैर्देय इत्समः ṚV. 5,61,8. समो दिवा दृदृशे रोचमानः 7,62,1. Kaṭhân. Up. 2, 9,1. मुखराग Rāgh. 12,8. वृत्ति 14,21. Bhāg. P. 3,25,16. 4,30,42. 5,4, 13. 6,17,22. समं मनो धत्स्व 7,8,10. पर्वतकास्तिषु समाः AK. 3,6,8,46. *gleich verfahrend gegen* (loc. oder gen.): सर्वेषु भूतेषु Spr. (II) 2922. MBh. 1,1942. Bhāg. P. 4,16,6. शत्रौ च मित्रे च Spr. (II) 2691. 5136, v. l. Mitr. P. 78,29. 108,17. सर्वस्य लोकस्य MBh. 1,1061. 13,4017. तस्य च तस्य च Jñân. 3,83. — *d) gerade* (von Zahlen), *paar* Vaitân. Bṛh. S. 50,20. Bṛh. 4,14. Lalitâ. 1,9. — *e) das richtige Maass u. s. w. habend, normal* Ait. Br. 3,7. R. 1,1,12. Suçr. 1,130,16. Wunde 15,10. Verband 66,14. Verdauung 128,4. Wiss 327. धातवः Çârîr. Śâṅkh. 1,3,33. TS. Pâr. 23,20. समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः Bhag. 6,13 (vgl. Ind. St. 2,10). प्राणापानौ समौ कृत्वा 5,27. यङ्गानि MBh. 3,10639. ein Tact 13,1338. Harîv. 10054. R. 7,71,15. यम Uvaṭa zu ṚV. Pâr. 13,17. वचस् MBh. 1,7954. 5,25. Bhāg. P. 1,7,49. 19,22. शब्द R. 2,91,27. °साधुवादाः Kauṣ. 20,226. गति Śâṅkh. 2,12. Bhāg. P. 3,23,14. समं कुरुघेतच्छकटं मे so v. a. *in Ordnung bringen* Kauṣ. 61,226. fgg. घर्धरात्रे स्थिते समे so v. a. *gerade um Mitternacht* MBh. 3,418. मध्यानि समानि पदानाम् Vaitân. Bṛh. S. 53,37. — *f) das gewöhnliche Maass u. s. w. habend, mittelmässig:* वृष्टि Vaitân. Bṛh. S. 8,25. 31. फल 38. 42. 20,9. 53, 93. प्रवरसमन्यूनपरिमाण 58,30. 68,105. M. 3,107. सममब्राह्मणे दानं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे 7,85. Menschen 3,107. Spr. (II) 5708. 7405. — *g) neutral, nicht Freund und nicht Feind* Vaitân. Bṛh. 2,16. fg. 21 (19), 4. Lalitâ. 2,10. — *h) harmlos, gut;* = साधु H. an. Med. Menschen Spr. (II) 52. Bhāg. P. 7,1,1. समविषममतीनाम् 5,9,36. *ehrlich zu Werke gehend* M. 9,257. — *i) worüber man leicht hinweg kommt, bequem, leicht* (ein Auftrag) Spr. (II) 7349. — 2) m. *a) Friede:* समो विधीयताम् R. 6, 1,46. समार्धिन् 1,4,27 wohl fehlerhaft für शम; eben so सममीयिवान् Kir. Nitis. 17,19. — *b)* (sc. योग) *Durchschnittspunkt des Horizonts und der Mittagslinie* Gol. Grahagaṇ. 45. fgg. — *c) Strohfeuer* (तृणाग्नि) Hir. 200. — *d) N. pr. α)* eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2731. 4541. 6, 2838. 8,2455. — *β)* eines Fürsten der Nandivega MBh. 5,2738. शम ed. Bomb. — 3) f. या N. pr. einer Welt: ततः परं समा नाम दृश्यते लोकसंस्थितिः (so ed. Bomb.) MBh. 6,473. — 4) n. *a) Ebene:* पर्वतेषु समेषु च AV. 8,7,17. 12,1,2. घनोवार्यां समे जीवनम् TS. 6,1,2,4. समे भूम्याः *auf ebenem Boden* 3,2,5. Çat. Br. 14,9,2,3. समानि विषमाणि च M. 1,24. MBh. 1,4650. Spr. (II) 2177. 6867. R. 2,79,13. पत्र पत्र समं त्वस्या भूमेरासीत्तदा Harîv. 365. समे M. 7,192. Kir. Nitis. 12,30. समे, घसमे 15, 12. — *b) Ausgleichung, Abrechnung:* कर्मणापि समं कुर्याद्धनिकायाधमर्णिकः M. 8,177. — *c) Gleichmässigkeit, Gleichmuth:* समेन वर्तेत सदा धीरः Spr. (II) 2833. — *d) ein richtiges Maass:* समेन so v. a. *genau, präcis* Çat. Br. 12,3,2,7. 8. — *e) d)* vgl. समेन im gaṇa प्रकृत्यादि zu P. 2,3,18, Vârtt. — *e) gute Verhältnisse:* °संस्थित (Gegens. विषमस्थ) Mṛicch. 159,20; vgl. समस्थ. — *f)* in der Rhetorik *das Zusammentreffen zweier ähnlicher Objecte* Prâtiśâkh. 92, *a*, 9. Kuvalay. 105, *b*. — *g) mean; a fourth proportional to the two perpendiculars and the link or segment* Colebr. Alg. 85. — 5) समम् adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. = सक् AK. 3,5,4. H. 1527. Hall. 5,91. *a)* ohne Ergänzung: α) *auf gleiche Weise, gleich:* समो चिद्धस्तो न समं विविष्टः ṚV. 10,117,9. Prâtiśâkh. 3,9. वि-भज् Kâty. Çr. 2,4,34. 5,15. 3,3,15. M. 9, 104. 192. 212. यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् 311. 12,91. Jñân.

2,117. पुत्रेषु सममाचर MBh. 5,1531. 12,13219. R. Gorr. 2,58,24. Spr. (II) 858. 3769. 4185. 4752. 6069. Çiç. 9,44. Vaṛîn. Jogâs. 2,16. Bhâg. P. 1,8,28. 4,11,20. 8,5,30. Vedântas. (Allah.) No. 68. am Anfange eines comp.: समविभक्ताङ्ग R. 1,1,18. समरञ्जित Harîv. 11960. 11997. 12180 (nach Nîlak. = सर्वत्र). °तुलित Vaṛîn. Bṛh. S. 26,1. — β) *zugleich, gleichzeitig* Çat. Br. 12,2,2,6. MBh. 1,3369. 6,262. Harîv. 12795. R. 2, 106,32 (114,36 Gorr.). 3,21,23. 4,19,9. 52,24. Suçr. 2,343,14. Mṛicch. 13,16. 76,6. Râgat. 4,4. 10,60. 12,47. 13,26. 14,1. Vîkr. 88,17. Spr. (II) 2666. 4288. 4686. Kathâs. 6,5. 11,31. 12,33. 64. 16,18. 24,102. 47,83. 48,38. 39. 50,67. 65,136. Râga-Tar. 5,97. Prab. 98,15. Bhâg. P. 9,15,33. — γ) *gerade, prälet:* द्विकं त्रिकं चतुष्कं च पञ्चकं च शतं समम् । मासस्य वृद्धिं गृह्णीयात् M. 8,142. उत्तरेण *nördlich* Vaṛîn. Bṛh. S. 23,4. am Anfange eines comp.: समदिक्स्थ 56,10. °दृतिपोन 87,6. °वर्तुल *ganz rund* Bhâg. P. 5,16,5. am Ende eines comp.: आकर्णासमचोदितैः (बाणैः) MBh. 7,1569. — δ) *auf eine ehrliche Weise:* दत्त (Gegens. व्याजदत्त) R. 4,20,9. — ε) mit einer Ergänzung: α) mit instr. *zugleich mit, mit* P. 2,3,19, Schol. विष्वेव समं कामं मर्तव्यं ब्रह्मवादिना M. 2,113. नाज्ञातेन समं गच्छेत् 4,140. 5,65. MBh. 5,3548. R. 1,69,17. 4,54,12. Mâgh. 96. Râgat. 2,28. 8,63. 10,79. 16,72. 17,34. Çiç. 26. 51. Mâlav. 13. Spr. (II) 1345. 1841. दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत् 2859. 4312. 5816. 5939. 6187. Vaṛîn. Bṛh. S. 78,15. Kathâs. 4,19 (श्रवसं st. श्रवशं zu lesen; vgl. Upam. 17). 18,127. 276. 288. 378. 403. 46,198. Râga-Tar. 1,148. 2,3. 5,157. 316. 335. Pañcat. II, 200. 23,14. 130,17. समत्मरा *grollend mit* Râga-Tar. 6,179. — β) im comp. nachfolgend: यात्म° *in Uebereinstimmung mit den eigenen Kräften, nicht mehr als die eigenen Kräfte es gestatten* Bhâg. P. 1,18,28. सर्व° *zugleich mit* Kâm. Nîtis. 5,91. तत्सम्म् 74,240. 116,8. वाक्सम्म् Pañcat. 221,8. — सम ebend. 63,1 wohl fehlerhaft für स; in der ed. Bomb. fehlt es ganz. — Vgl. य° (*nicht seines Gleichen habend* auch Spr. (II) 1356. Kathâs. 44, 178), चतुः°, द्वि°, निषम्म्, निः°, प्रतिसम, भाषा°, वयः°, विषम, साम्य.

3. सम n. = समा *Jahr* in पाप°, पुण्य°, सुषम.

4. सम (2. स + मा) adj. = सभीक, सलक्ष्मीक Nalod. 2,28. 4,8.

समक adj. = 2. सम *gleich:* प्रयत्ने समके Spr. (II) 4268. — Vgl. मात्रा°, सं°.

समकत (2. सम + कता) adj. *gleich viel wiegend, — geltend:* davon nom. abstr. °ता f. Sin. D. 295,8. °त्व n. 266,5.

समकता f. *Gleichgewicht:* समकता तुलयतः (धर्मः सत्यं च) *halten sich das Gleichgewicht* MBh. 12,6369. — Vgl. समतुला.

समकन्या f. *ein heirathsfähiges Mädchen* Dhanañg. im ÇKDr.

समकर्ण adj. 1) als Beiw. Çiva's MBh. 12,10353 nach Nîlak. = समाः कर्णाः यस्य = क्षुर्वक्रश्च; eher *ebenmässige Ohren habend.* Beiw. Buddha's Vsutp. 12. — 2) *zwei gleiche Diagonalen habend* Colebr. Alg. 38.

समकर्मन् adj. *gleiche Beschäftigung habend* MBh. 3,11243.

समकालम् adv. *gleichzeitig* Jâtâ. 2,109. Râgat. 7,30. Prab. 89,17. मम आज्ञा° *gleichzeitig mit meinem Befehle* R. 1,69,3 (71,3 Gorr.). °काले (v. l. °कालम्) Hit. 116,18. कैरवकोत्तेयसमकालभव *Zeitgenosse von* Râga-Tar. 1,44.

समकालीन adj. *gleichzeitig:* वह्नि° (धूम) Comm. zu Nyâyas. 2,15 (ed. Calc. 1828).

समकोल m. *Schlange* Taik. 1,2,5. Hâs. 15.

समकोष्ठमिति f. *the measure of like compartments, or number of equal squares of the same denomination (as cubit, fathom, finger, etc.) in which the dimension of the side is given; the area or superficial content* Colebr. Alg. 70.

समक्त s. u. यज् mit सम्, समक्त u. यत् mit सम्.

समक्रिय (2. सम + क्रिया) adj. *auf gleiche Weise verfahrend:* तन्मित्रामात्यदि मुखे च समक्रियं पतत् Spr. (II) 4363. तेषु 3524.

समक्त adj. (jünger als das adv.) *vor Augen seiend, sichtbar* Çiç. 190. Bhâg. P. 10,16,38. समक्तम् (von 2. सम् + अक्त *Auge*) *vor Augen, Angesichts, in Gegenwart von* गण शरदादि zu P. 5,4,107. Vop. 6,65. ohne Ergänzung Râgat. 14,61. Spr. (II) 3848 (Gegens. परोक्षे). Bhâg. P. 7, 9,47. mit dat.: समक्तमेनं गृणते नि वर्तिषि ṚV. 10,87,11. AV. 5,14,4. mit gen. M. 8,254. MBh. 1,4726. 5,7226. Harîv. 6661. R. 1,73,23. 2,82, 18 (89,1 Gorr.). 4,63,1. Râgat. 13,72. Kumâras. 3,75. Çiç. 97,10. Mâlav. 10,12. Kathâs. 4,79. Mâh. P. 69,16. Bhâg. P. 9,13,23. Hit. 99, 10. mit der Ergänzung comp.: मत्समक्तम् MBh. 3,2415. fg. Bhag. 11,42. R. 3,21,6. 4,13,42. Mṛicch. 126,18. Kumâras. 3,64. Mâlav. 11,19. Mâlatîm. 47,3. Kathâs. 5,182. 13,3. 39,201. 43,357. 48,124. 133. Daçak. 82,14. समक्तम् *hinter dem Rücken* Bhâg. P. 8,10,11. 22. समक्ततस् = समक्तम् 4,3,15. समक्तात् Liṭ. 4,11,22. समक्तदर्शन n. *Autopsie* M. 8,74. MBh. 2,2332. — Vgl. प्रत्यक्त.

समक्षात *a cavity having the figure of a regular solid with equal sides: a parallelepipedon, cylinder, etc.* Colebr. Alg. 97.

समगन्धक m. *zusammengesetztes Räucherwerk* Çârañg. im ÇKDr.

समगन्धिक n. *die wohlriechende Wurzel von Andropogon muricatus Retz.* Râgân. im ÇKDr.

समर्म und सँमय (2. सम् + अय) adj. (f. आ) 1) *ganz, vollständig, sämmtlich* AK. 3,2,15. H. 1433. Halâj. 4,28. AV. 7,81,4. वाक्या MBh. 1,7188. बल Harîv. 6330. R. 6,1,2. भूमि R. Schl. 2,101,12. सभा R. Gorr. 2,88,28. दृतिणा दिक् 4,31,34. शतयोजन 58,24. सर्व 61,30. Mṛicch. 57. वसुधाधिराज्य Mṛicch. 173,25. त्रीवलोक Spr. (II) 3138. राजमण्डल Mâlav. P. 124,9. ज्ञान Bhâg. P. 3,4,18. 32,27. श्री, लक्ष्मी MBh. 3,1374. R. 1,1,6. Spr. (II) 2398. Pañcat. 3,11,1. कर्मन् *jegliche* Bhag. 4,23. सर्वाः समग्रा ओषधीः AV. 8,7,19. 12,1,16. Bhag. 11,30. सर्वान्हिषतः समग्रान् MBh. 3,13682. चतुर्दश वर्षाणि समग्राणि R. 2,52,78. R. Gorr. 2,88,3. 3,42,54. 51,37. 4,28,30. 61,56. Râgat. 3,30. °संपद् 22. °मलङ्कारक Spr. (II) 568. Kathâs. 45,1. Verz. d. Oxf. H. 123,a,41. ad Vet. 4,5 in LA. (III). समग्रेन्दु *Vollmond* MBh. 1,5974. °घन adj. M. 8,330. समग्राङ्ग adj. 12,1825. Bhâg. P. 3,28,18. °शक्ति Râgat. 6,22. 16,10. R. 2,92,5. Spr. (II) 1339. Bhâg. P. 6,19,25. n. *Alles* R. 6,23,16. Kathâs. 10,100. 18,195. °भक्षणशील adj. Verz. d. Oxf. H. 250,a,34. समय am Anfange eines comp. als adv.: सौवर्ण *ganz von Gold* Kathâs. 18,319. °चर्तिन् *ganz irgendwobei* (loc.) *seiend* Spr. (II) 1672. य° *unvollständig, nicht vollzählig:* °भूषणा Râgat. 3,2. Vîkr. 126. *nicht voll* (Mond) Spr. (II) 2245. समयम् adv. *nicht vollständig, — ganz* Râgat. 3,64. — 2) *vollständig versehen mit* (instr.): सर्वैकृत्यैः समयस्त्वमिव (समयैस्त्वमिव ed. Bomb.) नृपगुणैर्दृश्यते सप्तसप्तिः Mâlav. 33. ह्यं मां समयं सुयोव वैदेह्याः (वैदेह्या?)

कर्तुमर्हसि so v. a. *zusammenführen mit* R. 4,39,8. कोशदण्ड° Spr. (II) 939. — 3) *wer Alles hat was er braucht, dem Nichts fehlt:* दिष्ट्या समयासि धनंजयेन समागता MBh. 3,12579. R. 2,38,6. 39,38. 92,8 (101,8 Gorr.). 3,64,20. — Vgl. सामयी, सामय्य und साय.

समयणी adj. *der allererste:* यत्नभृताम् Bhâg. P. 9,15,32. — Vgl. धयणी.

समयय् (von समय), °यति *vollständig machen, vervollständigen, herstellen:* मत्कृपेव ते सामग्रीं समयायिष्यति Verz. d. Oxf. H. 145,*a*,28.

समङ्क 1) adj. *dasselbe Zeichen tragend* (2. सम् + अङ्क, = समानचिह्न Sâj.) Çat. Br. 3,6,2,1. — 2) m. *a*) *Haken, Klammer* (von अञ्च् mit सम्; vgl. अङ्क) bildlich für *Schmerzen* AV. 1,12,2. — *b*) *ein best. das Getraide zerstörendes Thier* AV. 6,50,2. vielleicht fehlerhaft.

सँमङ्ग (2. सम् + अङ्ग) 1) adj. (f. या) *mit allen Gliedern versehen, vollständig* AV. 18,4,8. als Beiw. der mythischen Kuh Bahulâ MBh. 13,3670. 6042. — 2) m. N. pr. *a*) pl. eines Volkes MBh. 6,368 (VP. 193). — *b*) zweier Männer MBh. 3,14321. 12,10582. fgg. — 3) f. या *a*) Bez. verschiedener Pflanzen: *Krapp* (मञ्जिष्ठा), *Rubia cordifolia* AK. 2,4,8, 9. Bhâvapr. 3. = खदिरी AK. 2,4,8,7. *Mimosa pudica* Ratnam. 244. *Lycopodium imbricatum (ein Moos)* Wise 134. = वाला Râéân. im ÇKDa. — Soça. 1,59,19. 133,17. 141,7. 2,62,13. 440,6. 540,7 (neben मञ्जिष्ठा). Varâh. Bṛh. S. 44,9. 48,39. — *b*) N. pr. eines Flusses MBh. 3,10639. fgg. — Vgl. महासमङ्गा.

समङ्गिन् 1) adj. *in allen Theilen vollständig, mit allen Erfordernissen versehen:* ein Wagen Kâç. Ça. 2,3,12. 7,9,4. — 2) f. °नी N. pr. einer Bodhivṛkshadevatâ Lalit. ed. Calc. 421,17.

समचतुरस्र, °स्र adj. (f. या) *vier gleiche Ecken habend, ein Quadrat bildend* Âçv. Gṛhj. 2,8,9. Varâh. Bṛh. S. 53,28. Bhâg. P. 5,16,29. Ind. St. 10,274. 279. Colebr. Alg. 293. यायत°, द्वि°, त्रि° ebend.

समचतुर्भुज adj. *vier gleiche Seiten habend*, subst. *Quadrat* Colebr. Alg. 58.

समचित्त adj. *gleichmüthig* Spr. (II) 6388. Bhâg. P. 4,20,16. 5,5,2. 7, 13,9. 10,10,41. Davon °त्व n. *Gleichmuth:* इष्टानिष्टापत्तिषु Bhag. 13,9.

समचेतस् adj. dass. Spr. (II) 26. Bhâg. P. 3,24,47.

समज् (von अञ्ज् mit सम्) P. 3,4,36 (vgl. 6,2,144). Vop. 26,171. 1) m. *a*) *Heerde* P. 3,3,69. AK. 2,5,12. H. 1414. Med. ज. 29. — *b*) *eine Gesellschaft von Thoren* Çabdar. im ÇKDa. — 2) n. *Wald* Trik. 2,4,1. Med. — Vgl. समाज.

समजातीय adj. = सजातीय *gleichartig* MBh. 5,2431.

समज्ञा f. v. l. für समाज्ञा *Ruhm* Bharata zu AK. 1,1,8,12 nach ÇKDa.

समर्य्या (von अर्ज् mit सम्) f. P. 3,3,99. Vop. 26,186. 1) *Versammlungsort* Kauç. 120. *Versammlung* AK. 2,7,14. H. 481. Kâṇḍa in Ind. St. 4,173. — 2) v. l. für समाज्ञा *Ruhm* Rîâm. zu AK. 1,1,8,12 nach ÇKDa.

समर्जन (von अर्ज् mit सम्) n. *das Einbiegen, Zusammenziehen* TBr. 3,11,9,2. Çat. Br. 2,1,4,7.

समर्जन (von अर्ज् mit सम्) adj. etwa *zum Schmuck dienend, schmuck* AV. 7,36,1.

समज्जनीय adj. dass.: अप् Çiâm. Gṛhj. 1,12.

समज्ञारी s. पठ°.

समञ्जस (von 2. सम् + अञ्जस्) adj. (f. या) *richtig, in der gehörigen Ordnung seiend, woran Nichts auszusetzen ist* AK. 2,8,1,24. Trik. 3, 1,4. 3,172. H. 742. an. 3,212. Med. p. 58. सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं वा समञ्जसम् Spr. (II) 6838 (M.). शास्त्र Verz. d. Oxf. H. 262,*b*,3. °दर्शन Bhâg. P. 5,9,24. वृत्ति Titel eines *Commentars* Notices of Skt Mss. 2, 103. इति सर्वं समञ्जसम् Sarvadarçanas. 90,8. Comm. zu Âçv. Çr. 1,7,8. प्रज्ञा नातिसमञ्जसा MBh. 1,2127. 5196. बुद्धि 3838 (die ed. Calc. an allen drei Stellen °सी). समञ्जसम् adv. M. 8,256. MBh. 12,2472 (°बुद्धिस° ed. Bomb.). Râéa-Tar. 3,108. स° adj.: किं स्विद्दयमपेतार्थमभिष्टममञ्जसम् । तावुभौ प्रतिवक्ष्यामः MBh. 7,1990. वाक्यैरयुक्तैरसमञ्जसैः 12,11928. यसमञ्जसं च दृष्ट्वा कस्य न परिखिद्यते चेतः Spr. (II) 5281. Kathâs. 45,23. Sâh. D. 13,5. प्रवृत्ति Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 229. Bhâg. P. 5,6,10. Comm. zu Kâç. Ça. 25,5,5. यसमञ्जसममसमञ्जसम् als Ausruf Verz. d. Oxf. H. 141,*b*, No. 289, Z. 20. 22. यसमञ्जसम् adv. Kathâs. 45, 169. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 208. समञ्जस von Personen *trefflich, vorzüglich* Kir. 14,12. Çiv. (als Bein. Çiva's). Bhâg. P. 8,11,25 (Vishṇu). स° *Taugenichts* 7,5,26. — Vgl. स ².

समठ m. *eine best. Gemüsepflanze* (गण्डीर) Hin. 178. Çabdar. im ÇKDa.

समतट N. pr. eines Landes im östlichen Indien Verz. d. B. H. 93(56). Varâh. Bṛh. S. 14,6. Hiouen-thsang 1,451. fg. 2,81. fg. 391. Vie de Hiouen-thsang 181. 183; vgl. समत and ताउक्क LIA. 2,952.

समता (von 2. सम) f. 1) *das Stehen auf einer und derselben Ebene:* यतिदूरादृग्विषये समतामिव संप्रयातानाम् (यक्षाणाम्) Varâh. Bṛh. S. 17,2. — 2) *Gleichheit* Çat. Br. 12,3,8,12. °तामुपसंगम्य MBh. 13,3697. °तां व्रज् Varâh. Bṛh. S. 104,32. mit instr. MBh. 14,179. R. 7,3,19. 35,61. Spr. (II) 3747. 4209. mit gen. Harîv. 1403. am Ende eines comp. Spr. (II) 3068. Râéa-Tar. 4,172. — 3) *ein gleiches Verfahren, — Benehmen* Raçn. 9,6. सर्वस्मिन् M. 6,44. स्वेषु पाण्डुसुतेषु वा MBh. 5,1531. R. Gorr. 2,38,33. Kâm. Nîtis. 2,29. शत्रुमित्रयोः Sâh. D. 95. Paṇḍar. 1, 12,46. सर्वसमतामेत्य M. 12,125. — 4) *Gleichmässigkeit, ein richtiges —, normales Verhältniss* Suçr. 1,130,17. वाते च समतां गते MBh. 3,10994. यदुक्तं चाप्यचिन्त्यं च सर्वत्र समतां गतम् 1,21. समतां नी *in Ordnung bringen* M. 8,178. 9,218. यज्ञ° Spr. (II) 5827. वाक्यस्य Kâvjâd. 1,41 (vgl. 47). Sâh. D. 621. Pratâpar. 68,*a*,2. Verz. d. Oxf. H. 207,*a*,27. 214,*a*,18. — 5) *Mittelmässigkeit* Spr. (II) 7405. — 6) *ein wohlwollendes Benehmen:* बन्धुवर्गः समतया Paṇḍar. 1,14,92. — Vgl. समत्व.

समतिक्रम (von क्रम् mit समति) m. *das Unterlassen:* नित्यानां कर्मणाम् M. 11,203. — Vgl. दुः°.

समतुला f. *gleicher Werth:* कर्पूरकार्षमयोः Spr. (II) 2345; vgl. तुला मे सर्वभूतेषु समा तिष्ठति MBh. 12,9350. — Vgl. समकक्ष fg.

समत्रय n. *gelbe Myrobalanen, trockener Ingwer und Zucker zu gleichen Theilen* Râéân. im ÇKDa.

समत्रिभुज adj. *drei gleiche Seiten habend* Colebr. Alg. 58. 295.

समत्व (von 2. सम) n. 1) *Gleichheit* Kâç. Ça. 1,4,18. 5,3. 7,1,28. VS. Pâit. 1,3. Spr. (II) 4613. Gol. Trip. 6. समत्वं व्रज् Varâh. Bṛh. 12,3. समत्वमेव (so lesen wir) विविदुर्पुध्यमानाः परस्परम् Kathâs. 44,146. mit instr.: गता धीरास्ते विबुधैः समत्वम् MBh. 13,1840. Spr. (II) 1137. mit gen.: मुनेः समत्वं प्राप्य Kathâs. 49,228. Verz. d. Oxf. H. 61,*b*,17. — 2) *ein gleiches Verfahren, — Benehmen* Bhag. 2,48. सख्यिसमत्वेषु Bhâg. P. 4,11,13. तस्मात्समत्वे वर्तस्व पाण्डवेषात्मजेषु च 10,49,19. in comp.

mit der Ergänzung: सर्वभूत° 3,27,7. य° *ein ungleiches —, unfreundliches Benehmen* Maitrjup. 40. — 3) *Gleichmässigkeit, ein richtiges —, normales Verhältniss:* समत्वागतवीर्य adj. Suçr. 1,126,13. — Vgl. समता.

समत्सर (2. स + म°) adj. (f. घा) 1) *unwillig, grollend mit* (समम्) Rigv. Tan. 6,179. — 2) *missgünstig, neidisch auf, neidisch:* काकुत्स्थमुद्दिश्य Ragh. 7,3. Kathâs. 22,37. 39,37.

समर्द f. *Streit, Händel* Naigh. 2,17. häufig loc. pl. RV. 1,5,4. 66,6. 173,7. 2,12,2. कर्तारं श्वोतिः समत्सु 8,16,10. यद्गमो याति समर्दामुपस्थे 6, 75,1. तीव्राः समदो जयेम 3. समदो गमेष्ठाः AV. 5,20,12. यद्द ज्ञनाय समदं कृणोमि RV. 10,125,6. Çat. Br. 1,1,4,24. 3,6,2,3. 4,6,8,12. देवताभ्यः समदं दध्यात् *erregt Händel unter den Göttern* TBr. 2,1,2,10. 3,3,3,2. क्षत्राय च विशे च *zwischen K. und V.* TS. 2,2,11,3. ताभ्य एवाससमदं करोति *macht, dass unter ihnen Frieden bleibt,* Çat. Br. 1,1,2,18. 4,4,3,3. Die beiden Ableitungen सम् + घद् *essen* und सम् + मद् (*weil Trunkene Händel kriegen* Durga), welche schon Nir. 9,17 giebt, obwohl Padap. richtig समद् schreibt, halten wir für gleich unbrauchbar; vielmehr 2. सम् + suff. घद् wie दृषद्, भसद्, वनद्, शरद्; vgl. ὔμαδος.

समद (2. स + मद्) adj. (f. घा) *aufgeregt, berauscht:* Indra Spr. (II) 5972. Weber Ind. St. 3,396. Rt. 3,3. Bienen 6,27. *brünstig:* Elephanten MBh. 1,3344. 7,1162. 12,1892. Spr. (II) 6348. Stiere MBh. 8,4386. Vögel Uttarar. 33,15 (44,10).

समर्दन n. wohl = समद्. स मन्युमीः समर्दनस्य कर्ता RV. 1,100,6. समर्दन Padap.

समदर्शन adj. 1) *gleich, ähnlich:* मकेन्द्र° R. Gorr. 2,1,1. 108,12. — 2) *auf Alles oder Alle mit gleichen Augen schauend* MBh. 12,8027. 13, 2178. Ragh. 8,24. Mârk. P. 59,9. Bhâg. P. 3,29,33. 32,25. 4,13,7. 28, 37. 7,1,42. 9,4,66. सर्वत्र Bhag. 6,29. R. Gorr. 2,7,10. सर्वेषाम् 1,19, 20. — Vgl. तुल्यदर्शन.

समदर्शिन् adj. = समदर्शन 2) R. 7,2,33. Spr. (II) 66. Bhâg. P. 6,17, 25. 7,10,13. सर्वत्र R. Gorr. 1,7,7. Asvalây. 17,15. Mârk. P. 18,13. 30. अलाभे यदि वा लाभे MBh. 1,4604. 12,266. विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च Bhag. 5,18.

समदु (!) f. *Tochter* Trik. 2,6,7; vgl. die Corrigg. und समर्धुका.

समदुःख adj. *den Schmerz mit einem Andern theilend, mitleidig* R. 2, 41,3. Ragh. 8,39.

समदुःखसुख adj. 1) *Leiden und Freuden mit einem Andern theilend* MBh. 1,7632. Çiç. 59. — 2) *Leiden und Freuden gleich wenig beachtend* Bhag. 2,15. Asvalây. 5,4.

समदृश् adj. = समदर्शन 2) Bhâg. P. 1,4,4. 9,21. 2,7,10. 3,24,44. 4, 12,36. 14,41. 6,3,27. 7,11,9. 8,23,8. 10,87,23. सर्वत्र 6,17,24. यद्वो वा कारे वा u. s. w. Spr. (II) 844.

• 1. समदृष्टि f. *das Schauen mit gleichen Augen auf Alles oder Alle:* दुःखे सुखे च विप्रेन्द्र या दृष्टिर्वर्तते सदा (lies समा)। तथा शत्रौ च मित्रे च समदृष्टिश्च सा स्मृता॥ Kâlikâpurâna 16 im ÇKDa. तिस्रस्तदेता दृष्टव्याः समदृष्ट्या सुत त्वया Kathâs. 45,179.

2. समदृष्टि adj. = समदर्शन 2) Spr. (II) 5192. Davon nom. abstr. °त्व n.: सर्वत्र Rigv.-Tan. 1,357.

समर्दन् (von समद्) adj. *streitend:* Indra RV. 6,18,2. 7,20,3.

समद्विद्विभुज adj. *zweimal zwei gleiche Seiten habend, ein Rhomboid* Colebr. Alg. 38.

समद्विभुज adj. *zwei gleiche Seiten habend* ebend.

समधर्म adj. (f. घा) *von gleicher Eigenthümlichkeit, gleich, ähnlich:* सुमनःसधर्माणां स्त्रीणाम् Bhâg. P. 4,29,34.

समधिक (2. सम् + घ°) adj. (f. घा) = अतिरिक्त AK. 3,2,25. 1) *überschüssig, mit einem Ueberschuss versehen, mehr betend:* मास *ein Monat und darüber* MBh. 15,967. मासत्रय Hit. 35,8. वर्षात्समधिकाद्दा Vasish. Bpu. S. 97,8. Kull. zu M. 4,7. शत R. 7,60,7. — 2) *das gewöhnliche Maass übersteigend, gesteigert:* समधिकारम्भ Uttarar. 70,4 (90,4). °लावण्य Sin. D. 52,12. °लज्जावती (adv.) 99. समधिकतरूप *schöner als* (abl.) Ragh. 18,32. समधिकतरोच्छ्वासिन् (adv.) Megh. 100.

समधिगम (von गम् mit समधि) m. *das Verstehen, Begreifen:* वाङ्मनोव्युत्पन्नलोकसमधिगमः Bhâg. P. 5,13,26.

1. समधुर (2. स + म°) 1) adj. *süss.* — 2) f. घा *Weintraube* Ausn. 83.

2. समधुर (2. सम + धुर = धुर्) adj. *eine gleiche Last tragend wie* (gen.) Ragh. 9,24.

समधृत adj. *gleich abgewogen, auf der Wage gleich gemacht:* ते कुण्डले समधृते विज्ञेये रौप्यमाषकः M. 8,136.

1. समन (von 2. सम्) n. *Zusammentreffen, Begegnung,* und zwar 1) *Umarmung:* बाधेरत्ती समनेव (für °नमिव Nir. 9,40) योषा RV. 6,75,4. eben so 4,58,8 (Nir. 7,17). 10,168,2. — 2) *Streit, Kampf* Naigh. 2,17. Nir. 9,14. 18. RV. 6,75,3. 5. वाजो न मतिः समना जिगाति 9,96,2. या यत्नः समने पर्षदः 10,143,4. VS. 9,2. — 3) *Zusammenkunft, Festversammlung:* समनुवो न समनेषञ्जन् *sie schmückten sich wie Jungfern beim Feste* RV. 7,2,5. 2,16,7. केतेव याति समनेषु रेभन् 8,97,17. समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा *er macht die Menschen zu einem bewundernden Zuschauerkreis* d. h. *zieht Aller Augen auf sich* 8,31,9. 10, 55,8. 96,10 AV. 2,36,1. अन्यासां समनं यती *zu Anderer Festen* d. h. *Hochzeiten gehend* 5,60,2. — 4) *Verkehr:* वि या सृजति समनं व्यर्थिनः *welche die Geschäftigen auf Verkehr aussendet* RV. 1,48,6. — Vgl. 1. घ°.

2. समन s. 2. घ°.

समनगा adj. *zur Versammlung gehend:* °गा इव ब्राः RV. 1,124,8 Agni 7,9,4.

समनन (von 2. मन् mit सम्) n. *das Zusammenathmen* Nir. 7,17.

समनन्तर (2. सम् + घ°) adj. *unmittelbar folgend:* तं (प्रवरं शत्रुं) च कृत्वा कृतिष्यामि ये तत्र समनन्तराः R. 5,83,18. Bhâg. P. 6,18,3. यत्नापय विभो कार्यमस्माकं समनन्तरम् *was wir unverzüglich zu thun haben* Harîv. 8215. °क्रिया Pârâsar. ed. orn. 59,3. Sarvadarçanas. 20,3. 5. माल्यानि वस्त्राणि विविधानि च। गन्धतैलं च गन्धाश्च यच्चात्र समनन्तरम्॥ so v. s. und *Anderes* R. 4,24,16. °रम् *unmittelbar hinter:* लक्ष्मणात् R. 6,4,50. शिविका° 4,24,23. *unmittelbar darauf* MBh. 5,6072. R. 5, 89,11. 6,70,17. Kathâs. 6,139. Mârk. P. 16,79. Sin. D. 27,9. *unmittelbar nach* mit gen. MBh. 1,5332. am Ende eines comp. R. 6,101,14 (तद्वाक्यम° zu lesen). Kathâs. 4,24. Sarvadarçanas. 4,6. इच्छामनन्तरसंजात 95,14.

समनर m. = समशङ्क Gal. Tripa. 47. Gamit. Tripa. 26.

समनस् (2. स + म°) adj. *einmüthig, einträchtig* P. 6,1,144, Vârtt. 3.

Vop. 6,73. विश्वे देवाः समनसः सकेताः RV. 6,9,5. 7,43,4. 74,2. यद्दंपती समनसा कृणोषि 5,3,2. विशः VS. 7,25 (VS. Pair. 6,18). 13,35. 19,45. TS. 2,3,9,1. Kauç. 108. — 2) *mit geistigem Vermögen ausgestattet* Bhâg. P. 4,29,68.

समनस्क (wie eben) adj. = समनस् 2) Kathop. 3,8. Sarvadarçanas. 33,8.

समनी (zu 2. सम्, 2. सम oder auch समान; vgl. 2. घसमन) adv. 1) *in einem Punkt, zusammen:* समनी पद्यते समनेव केतुः RV. 1,103,1. — 2) *mit einem Mal, gleichzeitig:* ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् RV. 1,124,3. 168,1. वि समना भूमिरप्रथिष्ट 2,11,7. तमिन्द्रेव्वेव समना समानमभि क्रत्वा धीतिरश्याः *auf ein Mal ganz* 4,3,7. 6,4,1. 4,34,7. 10,73,4. — 3) *ebenmässig, in gleicher Weise:* तस्मा उ घ्रंस समना (सवने SV.) सुतं भर RV. 8,55,7. 4,51,8. 9. समना गिरा पितृणां च मन्मभिः 8,41,2; vgl. Nir. 10,8. घ्रंसघतेव समना संवर्धुक् RV. 10,69,8.

समनीक (2. सम् + घ°) n. *Schlachtreihe* Naigh. 2,17. RV. 10,107,11. °नस् *in Schlachtordnung* Ait. Br. 6,4.

समनुकीर्तन (von कीर्तय् mit समनु) n. *Preis, Lob:* विष्णोः MBh. 3,12625.

समनुग्राह्य (von ग्रह् mit समनु) adj. *der es verdient, dass ihm eine Gnade u. s. w. erwiesen wird* Harîv. 10077.

समनुज्ञ (2. सम् + घ°) adj. *nebst seinem jüngeren Bruder* Bhâg. P. 3,10,12.

समनुज्ञा f. = घनुज्ञा *Einwilligung, Erlaubniss* Vjutp. 153.

समनुबन्ध m. = घनुबन्ध Vjutp. 62.

समनुयोज्य (von 1. युज् mit समनु) adj. *zu verbinden —, zu mischen mit* (instr.): वल्को द्रव्यैरतैः समनुयोज्यः Varâh. Bṛh. S. 57,2.

समनुवर्तिन् (von वर्त् mit समनु) adj. *folgend, folgsam, gehorsam* (mit gen.) R. 2,26,37.

समनुव्रत (2. सम् + घ°) adj. (f. घा) *gehorsam, ergeben* Bhâg. P. 3,23, 4. mit acc.: भर्तारम् MBh. 3,2586. R. 3,2,28. 6,24,25. 72,48. Bhâg. P. 1,19,20. 3,1,35. 41. 4,2,28.

समनुशेष (von स्था mit समनु) adj. *auszurichten, zu vollführen* MBh. 12,12383.

सँमत्त (2. सम् + घत्त) P. 6,2,180 (oxyt., vgl. 5) *b*). 1) adj. (f. घा) *a*) *angrenzend, benachbart:* Himmel und Erde RV. 1,185,5. 7,80,1. AV. 8, 8,12. घत्तरिक्षेण द्यावापृथिवी समत्ते Pârâv. Br. 15,4,3. 19,12,6. घर्मा RV. 10,114,1. — *b*) *sämmtlich, vollständig* AV. Pair. 4,38 (पूरणे und zwar ohne Avagraha in dieser Bed.). समग्रः समत्तो भूयात् गोभिरश्वैः AV. 7,81,4. पुष्करिणीः 4,34,3. — 2) f. घा *a*) pl. *Nachbarschaft:* शतानीकः समत्तासु रुपमादत्त Çat. Br. 13,5,4,21. — *b*) Titel einer Grammatik Colebr. Misc. Ess. 2,49. — 3) n. *a*) N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,242,*b*. घग्नेः oder वसिष्ठस्य 200,*b*. वरुणस्य 232,*b*. — *b*) N. pr. eines Reichs (könnte auch masc. sein) Wassiljew 207. Târân. 147. — 4) adv. *a*) सँमत्तम् *in der Nähe von, vereint mit* (instr.): रथमा तिष्ठ यत्तेभिः समत्तम् RV. 5,4,11. — *b*) समत्तम् *auf allen Seiten, ringsum; vollständig:* पथो वृत्ते लिखुंता समत्तं परियस्वत्ते AV. 6,8,1. 99,2. समत्तं पर्यवयति समत्तमेवेन्द्रियं वीर्यं यजमाने दधाति TS. 2,3,3,4. 7,4,44,1. Ait. Br. 2,19,31. Çat. Br. 3,3,4,5. 9. 2,16. 8,3,4,15. 14,4,2,19. 6,2,2. Gobh. 1,5,15. 7,9. समत्तपर्यायिन् Ait. Br. 8,15. °प्रासादिक Burnouf, Intr. 198. °वृत Wassiljew 299. °संबाध Spr. (II) 3401 (Conj.). °क्षिति-बाहु *auf jeder d. h. auf beiden Seiten* VS. 24,2. — *c*) समत्तात् *von —, auf —, nach allen Seiten, allerwärts, ringsum* H. 1529. Hall. 5,88. Bhâg. 11,30. MBh. 1,1129. 7081. 2,80. 3,2429. 11920. 4,290. 5,5961. 13,2396. Harîv. 13635. R. 2,57,21. 71,20. 73,18. 91,29. 60. 93,10. 3, 79,1. 6,99,28. Mṛicch. 49,1. Ṛt. 1,22. Çiç. 7,23. 77,5. 94,5. Spr. (II) 1129. 4929. 6574. AK. 2,10,46. Varâh. Bṛh. S. 21,38. 53,21. 116. Milatim. 158,4. Mudrâr. 41,15. Prab. 26,7. Sîh. D. 70,14. Brahma-P. in LA. (III) 49,10. Daçâvat. 71,5. Bhâg. P. 3,12,16. 4,6,41. 5,16,19. 7, 8,31. 9,8,5. 22,36. Pañcat. 51,18. 63,8. 148,12. ed. orn. 50,2. *vollständig, gründlich:* समत्तज्ञानं स्यात्समुदागमः Taitt. 3,2,12. mit gen. *im Umkreis von, ringsum:* घग्नेः समत्तात्प्रमार्ष्टि Çâṅkh. Grihj. 1,7. R. 2,98,29. Spr. (II) 7226. Pañcat. 148,10. 159,25. 230,16. — *d*) समत्ततस् dass. AK. 3,5,13. H. Hall. समत्ततः सर्वतः पृथिवीं परीयाय Ait. Br. 8,21. M. 7,190. 8,237. 11,23 (रत्). MBh. 1,1017. 1175. 3,1767. Bhâg. 6,24. R. 1,34,3. 38,14. 50,12. 2,21,3. 31,4. 54,18. 89,11. 93,2. 96,11. 99,2. 3,75,32. 4,2,5. 8,25 (रत्). 24,29. 6,37,102. Suçr. 2,361,7. Kâm. Nîtis. 11,89. Spr. (II) 5906. Varâh. Bṛh. S. 4,15. 43,4. 53,31. 56,12. 26. Kathâs. 12,110. 48,118. Mârk. P. 59,5. Bhâg. P. 4,1,18. 5,1,33. LA, (III) 5,17. 52,8. *vollständig, gründlich* Harîv. 9986. 9989. Spr. (II) 2407. एतेषु च स्वधर्मेषु स्वेषु तिष्ठेत्समत्ततः Mârk. P. 28, 33. mit acc. *ringsum:* तस्थुः समत्ततः खरम् R. 3,29,31. — *e*) समत्तेन *ringsum:* नहि भूतं समत्तेन त्रिषु लोकेषु विद्यते so v. a. *nirgends* MBh. 7,9516. — Vgl. प्रति°, सामत्त.

समत्तकुसुम m. N. pr. eines Devaputra Lalit. 350.

समत्तगन्ध m. 1) *eine best. Blume* Vjutp. 142. — 2) N. pr. eines Devaputra Lot. de la b. l. 2.

समत्तचारित्रमति m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

समत्तदर्शिन् m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 201,5. 268,6.

समत्तदुग्धा f. *eine Euphorbia-Art* AK. 2,4,3,24.

समत्तनेत्र m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21. Risyṛsṛiṅgâl. 2.

समत्तपञ्चक n. N. pr. eines Tirtha in Kurukshetra, wo Paraçurâma die Kshatrija vernichtet haben soll, MBh. 1,13. 270. fgg. 3,10204. 7,6267. 9,3003. VP. 403. Bhâg. P. 9,16,19. कुरुक्षेत्र° MBh. 3,7078. 9,3032.

समत्तप्रभ m. 1) *eine best. Blume* Vjutp. 142. — 2) N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 22. Risyṛsṛiṅgâl. 2.

समत्तप्रभास m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 126.

समत्तप्रसादिक m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21; vgl. °प्रासादिक Burnouf, Intr. 198.

समत्तभद्र 1) m. *a*) *ein Buddha* AK. 1,1,2,3. Trik. 1,1,3. H. 234. Hall. 1,35. — *b*) N. pr. eines Bodhisattva Burnouf, Intr. 117. 120. 357. Lot. de la b. l. 276. fgg. Wilson, Sel. Works 2, 14. fg. 17. Wassiljew 159. fg. 264. Schiefner, Lebensb. 308 (78). Târân. 96. 300. — 2) n. Titel von Kâṇḍrakîrti's Grammatik Târân. 155.

समत्तभुज् m. *Feuer (ringsumher verschrend)* Trik. 1,1,67. H. ç. 167.

समत्तमुखधारणी f. Titel eines buddh. Sûtra Hiouen-thsang 1,395.

समत्तर m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,358 nach der Lesart der ed. Bomb. मद्धुत्तर ed. Calc.

समत्तरश्मि m. N. pr. eines Bodhisattva Risyṛsṛiṅgâl. 2.

समत्तविलोकिता f. N. pr. einer buddhistischen Welt Lalit. ed. Calc. 268, 8.

समत्तव्यूहसागरचर्याव्यवलोकन m. N. pr. eines Garuḍarâǵa Vjutp. 89.

समत्तस्थूलावलोकन *eine best. Blume* Vjutp. 142.

समत्तस्फारणमुखदर्शन m. N. pr. eines Garuḍarâǵa Vjutp. 89.

समत्तालोक m. *eine best. Meditation* Vjutp. 18.

समत्तावलोकित m. N. pr. eines Bodhisattva Rishṭrapâlap. 2.

सँमत्तिकम् (von 2. सम् + घत्तिक) adv. *zusammengrenzend* Çat. Br. 1, 4,1,22. 13,2,6,2. °कतरम् 9,3,1,11. fg.

समत्तिक (von 2. स + मत्ति) adj. *von Sprüchen begleitet:* विवाह् Jiǵñ. 1,13. Ind. St. 1,21,20.

समत्तिन् (2. स + म°) adj. *mit Ministern versehen;* davon nom. abstr. समत्तित्व n. Râǵa-Tar. 5,248.

सँमन्यु (2. स + म°) adj. 1) *gleichgesinnt, einmüthig:* die Marut ṚV. 2,34,2. 5. 6. — 2) *ergrimmt, zornig:* सेनाः ṚV. 7,25,1. R. 1,37,22. 57, 7. Râǵa-Tar. 6,198. 214. Bez. Çiva's Çaṇḍâṛtuak. bei Wilson. — 3) *betrübt* MBh. 3,15670.

समन्वय (von 3. इ mit समनु) m. *unmittelbarer Zusammenhang* Kap. 1,132. Siddhânja. 15. Bîdar. 1,1,4. समुज्झितकाम° adj. Prab. 100,12. Sarvadarçanas. 60,22. fgg. 73,3. 157,5. Bhâg. P. 3,26,49. 7,15,54. 11, 7,42. 28,30. Madhus. in Ind. St. 1,19,27. मनोभिरभिरम्मुस्ते कृष्णं प्रीतिसमन्वयात् so v. a. *in Folge von* MBh. 2,47. 12,4287 (वन्यं st. वनं mit der ed. Bomb. zu lesen). 1,5080 v. l. für समर्थनात् nach Nîlak. °सूत्र Hall 96. 204. Verz. d. B. H. No. 612.

समपद 1) m. *quidam coeundi modus:* योषित्पदो रुदि स्थाप्य कराभ्यां पीडयेत्स्तनौ । पद्भ्यां पीडयेत्तनौ । पद्भ्यां ताडयेद्योनिं बन्धः समपदः स्मृतः ॥ Ratim. und Smarad. im ÇKDr. — 2) = समपाद Bhar. zu AK. 2,8,2,53 nach ÇKDr.

समपदाति adv. गण तिष्ठद्गु u. s. w. zu P. 2,1,17.

समपाद n. *eine best. Stellung beim Schiessen* H. 777; vgl. das Citat aus dem Dhanurveda beim Schol.

समप्राधान्यसंकर m. *künstliche Verwebung zweier Bilder* Kuvalay. 167.

समबुद्धि 1) adj. *gleichmüthig.* — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 82,b,24.

समभागँ (1. सम + भाग) adj. P. 6,2,1, Schol. समँभाग adj. *würde 2. सम + भाग sein.*

समभितम् (2. सम् + घ°) indecl. *hin zu* (acc.): घघ द्वारं समभितो गत्वा स्थित्वा ततो ऽब्रवीत् MBh. 13,1446.

समभिधा f. = घभिधा *Name, Benennung:* पीथेसमभिध adj. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5,508, Cl. 36.

समभिभाषण (von 1. भाष् mit समभि) n. *Unterredung:* मया *mit mir* R. 5,33,24. सीता° *mit* 29,32.

* समभिव्याहार (von कृ mit समभिव्या) m. 1) *gleichzeitige Erwähnung, — Nennung, — Anführung* Kâç. Ça. 1,2,3. 10,2. 4,1,20. 3,25. 9,11, 15. ज्ञातिसंज्ञयोर्गुणक्रियाभ्याम् Schol. zu P. 2,1,57. प्रसिद्धपद° Sin. D. 10,17. Comm. zu TS. Pair. 13,14. वाक्य° Prasoaḍ. 93,b,2. — 2) *Verkehr, Umgang mit* (gen.) Kâm. 8,1,8.

समभिहार (von कृ mit समभि) m. *Wiederholung* H. an. 5,44. Med. r. 309. P. 3,1,149. क्रिया° 22. 4,2. Spr. (II) 4697. nach den Lexicographen auch *Intensität.*

समभूमि 1) f. *ebener Boden* Gaṇiṣṭ. im ÇKDr. R. 1,5,9. °तले 2,56, 11. — 2) indecl. गण तिष्ठद्गु u. s. w. zu P. 2,1,17; vgl. समंभूमि.

समभ्यर्थयितृ (von अर्थय् mit समभि) nom. ag. *ein Bittender* Kumâras. 3,20.

समभ्याश m. = घभ्याश *Nähe, Gegenwart:* °गत MBh. 6,4031. शूद्र° 1,2474. Mâns. P. 32,25. mit श nur ed. Bomb. 6,4031, sonst überall mit स geschrieben.

समभ्युद्धरण (von हृ mit समभ्युद्) n. *das Herausziehen, Herausholen:* दुःखपङ्के निमज्जताम् । राज्ञाम् MBh. 2,933.

समभ्युपगमन (von गम् mit समभ्युप) n. *das Sicherklären für Etwas, Gutheissen* Uvaṭa zu ṚV. Pair. 11,36.

समभ्युपेय (von 3. इ mit समभ्युप) n. ṚV. Pair. 11,36 nach Uvaṭa = समभ्युपगमन.

सममण्डल n. *der erste Verticalkreis* Sûrjas. 3,6. Col. Golab. 3. Tripr. 37. Comm. zu Ganit. Tripr. 13. °शङ्कु *prime vertical staff* Journ. of the Am. Or. S. 6,258.

सममति adj. *gleichmüthig* Bhâg. P. 6,16,24.

सममेय (von 2. सम) adj. (f. ई) etwa *aus Gleichem hervorgegangen* P. 4,3,83, Schol.

सममात्र adj. *prosodisch gleich lang* Ind. St. 10,420.

समंबिल s. unter बिल 1).

समंभूमिँ adv. *dem Boden gleich* Çat. Br. 3,6,2,18. Kâty. Çr. 6,3,12. Kauç. 25. — Vgl. समभूमि 2).

समय् (von 2. सम), समयति *ebnen; in Ordnung bringen;* s. समयितव्य und vgl. समीकृ.

समर्य (von 3. इ mit सम्) m. *am Ende eines adj. comp.* f. घा. 1) *das Zusammentreffen, Zusammenlaufen, Ort des Zusammentreffens* (= समर): सीतानाम् Çat. Br. 7,2,3,3. AV. 2,35,3 (समरे TS.). — 2) *Verkehr:* न तैः समयमन्विच्छेत् M. 10,53. — 3) *Verständigung, Uebereinkommen; eine auferlegte oder übernommene Verpflichtung; Vertrag, Verabredung, Bedingung:* संग्रामे संयत्ते समयकामः TS. 2,1,9,4. Hariv. 10571. 14833. R. 1,3,24. 2,26,22. R. Gorr. 2,123,14. 4,16,18. Jogaś. 2,31. Kathâs. 28,69. 34,33. 86,144. समयाकृष्ट 34,38. तेन समयेन *in Folge dieses Uebereinkommens* Râǵa-Tar. 1,234. समयेन *einer Verabredung gemäss* MBh. 3,10211. R. Gorr. 1,1,73. 39,24. *unter einer Bedingung, bedingungsweise* MBh. 3,2593. 13153. Bhâg. P. 3,22,19. समयात् *einer Verabredung gemäss* Jiǵñ. 1,61 (मिथस्). AK. 2,8,3,66. *unter einer Bedingung* MBh. 3,13256. Hariv. 1375. समयतस् *bedingungsweise* Mṛicch. 18,24. समयबन्धन adj. *an einen Vertrag gebunden* Mârk. P. 80,11. समयं ब्रू *seine Bedingung aussprechen* MBh. 3,13256. वच् dass. Kathâs. 86,113. घभि-धा dass. 110. so v. a. *versprechen* Bhâg. P. 3,23,10. समुग्र समयं मिथः *gegenseitig übereinkommen* 4,25,42. समयं कृ *übereinkommen mit* (instr. oder instr. mit सह); *sich verpflichten, festsetzen, eine Bestimmung treffen, eine Bedingung stellen, stipuliren:* घघर्षुबरूचैः समयं कृत्वा Lâṭj. 4,8,22. Âçv. Çr. 10,5,20. Gobh. 1,6,5 (मिथः). द्वापरेण सह MBh. 3,2254. — 1,2749. 3,16730. 5,7028. 7488. 14,1619. R. 1,38,24. R. Gorr. 1,1,70. 4,30,3. 10. 32,14. 33,4. 5,66,3. 22. 7,104,3. Kathâs.

22,201. Paśśat. 193,12. अद्रोहसमयं कर् Spr. (II) 206. fg. 3242. कृतशपथसमय Paśśat. 34,11. समयं दा *einen Vergleich vorschlagen* Kathās. 18,439. प्रति-पद् *einen Vertrag eingehen, eine Bedingung annehmen* MBh. 4,705. यक् dass. 1,6239. Kathās. 20,193. निस्-तर् R. Gorr. 2, 74,42. रक्ष् Spr. (II) 3332. °परिरक्षण Kir. 1,45. समयं पालय् R. Gorr. 2,11,5. Verz. d. Oxf. H. 32, *b*, 4. Bhāg. P. 8,9,22. त्यज् MBh. 1, 3093. वि-लङ्घय् Kumāras. 3,28. भिद् Harīv. 14374. °भेदिन् M. 8,218. °व्यभिचारिन् 220. fg. समयस्याव्यतिक्रमः Spr. (II) 698. यथा भवेत्समयात् Rājat. 1, 230. समये स्था *seiner Verpflichtung nachkommen, sein Wort halten* Harīv. 14375 (तस्य *diesem gegenüber*). R. 4,30,21. Kathās. 18, 142. समये स्थापय् *in Betreff Jmdes* (acc.) *festsetzen, eine Bestimmung treffen* Mārk. P. 31,111. समयं स्थापय् *festsetzen, bestimmen* Rājat. 4,617. समये नि-वेशय् *Jmd* (acc.) *Bedingungen stellen* MBh. 1,6297. धर्म° *eine übernommene Verpflichtung:* °समयात्प्रच्युतः M. 9,273. — 4) *ein festgesetzter, bestimmter* oder *geeigneter Zeitpunkt; Zeitraum, Frist; Gelegenheit* Kāç. zu P. 5,4,60. अद्य प्रभृति यत्रस्थ समयो हि ते MBh. 14, 2614. R. 4,25,16. Spr. (II) 3612. समये ह्यस्मिन्निवृत्ते R. 2,86,19. 4,53, 17. Çiç. 9,24. Rājat. 4,182. Bhāg. P. 5,21,7. गमय समयम् Spr. (II) 1229. समयस्य लङ्घनम् R. Gorr. 1,4,66. समयोचित Bhāg. P. 6,7,27. Hit. 114,13. अतीत° adj. R. 5,1,78. प्राप्त° adj. Rājat. 5,407. उक्तसमयम् *zur angegebenen Zeit* Daçar. 2,25. वाजिमेधस्य MBh. 14,1937. mit inf. P. 3,3,167. MBh. 3,12281. mit यद् und potent. P. 3,3,168. समये *zu einer bestimmten —, zur rechten, gelegenen Zeit* Spr. (II) 6840. R. 2,56,3. Rāgh. 3,13. Spr. (II) 1943. 4907. 5046. Paśśat. 24,25 (nach der Lesart der ed. Bomb. दृष्ट्वा st. घृत्वा). am Anfange eines comp. in derselben Bed.: समयपरिक्षित Çiç. 100,21, v. l. Rāgh. 7,28 (ed. Calc. besser समर्). Paśśat. 1,11,3. असमय am Anf. eines comp. *nicht zur gewöhnlichen Zeit* Kathās. 18,2. häufig in comp. mit der näheren Bestimmung: अर्धरात्रसमये MBh. 3,2537. सायाह्न° R. 2,57,5. प्रभात° 77, 4. 79,1. 5,9,68. 6,112,61. Varāh. Bṛh. S. 43,19. Kathās. 18, 235. 30, 144. Paśśat. 3,12,20. Paśśat. 55,3. 77,12. 81,19. 229,10. 247,12. Verz. in LA. (III) 10,5. ग्रीष्म° Çiç. 4,4. जलधर° Vikr. 56,1. Spr. (II) 993. वर्षा° Kathās. 19,63. सुरभि° Śiç. D. 24,1. स्तनित° Mṛcch. 22. पुंगात्र° Bhāg. P. 6,9,12. स्त्री° (der Weiber) Paśśat. 74,18. Varāh. Bṛh. S. 78,26. उदय° 16,40. गर्भ° 21,33. fg. प्रसव° 37. गोप्रवेश° 24,38. 28, 16. 33,23. 43,32. शकुन° 53,107. प्रारम्भयान° 95,60. मृत्यु° Bṛh. 25(23), 2. Spr. (II) 3647. 5784. प्राणान्त° Kathās. 94,127. कुसुमप्रसूति° Çiç. 84. Spr. (II) 4860. 5684. 6672. 7536. R. 1,34,33. R. Gorr. 2,38,27. 4,25, 12. Kathās. 53,100. Mārk. P. 62,30. Rājat. 4,639. Prab. 78,8. Bhāg. P. 6,9,28. 7,8,44. Sarvadarçanas. 9,7. 51,19. अकृणसमयवेला Spr. (II) 2468. नापित° *zur Zeit, wenn der Barbier da ist,* 3004. रात्रौ निशीथे स्वाभीले गते ऽर्धसमये *so v. a. nach Mitternacht* MBh. 3,888. अर्धसमये ऽर्धप्राने गते सति लोके तन्द्रावति सतीत्यर्थः Nīlak. — 5) *ein eintretender Fall:* एवंविधे ऽपि समये Paśśat. 42,6. इह समये *in diesem Falle, unter diesen Umständen* Hit. 104,18. 114,3. 115,3. 121,18. विभागसमये Comm. zu TS. Prāt. 3,1. पदसमये वर्तमानः zu 4,5. 6,14. — 6) *allgemeine Art und Weise des Verfahrens, Regel:* देशाचारान्समयान् (= भाषाभेदान् Nīlak.) ज्ञातिधर्मान् MBh. 5,1084. सपीणां समये नित्यं ये वर्तन्ति 13,4319. पतिव्रतानां समयानुरोधिनी R. 3,2,28. आर्य° Bhāg. P. 5,14,29. — 7) *Doctrin, Lehre, Satzung:* नैरुक्त° Nir. 1,12. आख्यान° 7,7. इतिहासम् अलंकृतं प्रुभिः शब्दैः समयैर्दिव्यमानुषैः MBh. 1,33. श्रुति° Spr. (II) 826. तार्किक° Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 162. जैन° Schol. zu H. 90. 193. आर्हत Sarvadarçanas. 43,6. गान्धर्वशास्त्र° 78,3. Paśśat. 3,9,19 (pl.). धर्मं च नानासमयानुरूपम् Bhāg. P. 4,19,37. °सेतुरक्षा 5,4,5. काव्य° Verz. d. Oxf. H. 207, *b*, 4. 250, *b*, 4. शब्दहेतुसमयविद्यासु (d. i. शब्दविद्या, हेतु° und समय°) Daçak. 60,13. हेतुसमयानभिज्ञ Dowra bei Muir, ST. 2,184. — 8) in der Gramm. *eine Veda-Stelle, welche Wiederholung einer früher dagewesenen ist,* ṚV. Prāt. 10,12. 11,12. 15, 14. 18,30. Upalekha 4,14. fgg. 9,20. fgg. — 9) *die conventionelle Bedeutung eines Wortes* Kusum. 22,18. 31,14. — 10) in der Dramatik *das Entfernen —, Schwinden eines Schmerzes* Bhām. Nitsāç. 19,109. Daçak. 1,47. Śiç. D. 400. Pratāpar. 22, *b*, 2. — 11) bei den Çākta N. pr. eines Verfassers von Mantra Verz. d. Oxf. H. 101, *b*, 13. — समये MBh. 5,5990 (Bombay, Chr. 7,15) fehlerhaft für मम ये, wie die ed. Bomb. liest. Die indischen Lexicographen geben dem Worte folgende Bedd.: संविद् AK. 3,4,24,151. H. an. 3,511. संकेत, संकेतक H. an. Med. Hall. 5,83. क्रियाकार H. an. Med. शपथ AK. H. an. Med. काल AK. 1, 1,3,1. 3,4,24,151. H. 126. H. an. Med. Hall. अवसर H. 1309. H. an. आचार AK. 3,4,24,151. H. an. Med. Hall. सिद्धान्त AK. H. 242. H. an. Med. Hall. 1,10.5,83. निर्देश und भाषा H. an. Med. संपद् und नियम H. an. धी Med. कट Hall. 3,34. Vgl. ग्रीष्म°, पुण्य°, पूर्ण°, मक्ष°, यज्ञ°, लग्न°, वसन्त° (unter वसन्त), वसन्तसमयोत्सव, शरत्समय, सामयिक.

समयकार m. = शैली, संकेत Trik. 3,2,25.

समयक्रिया f. *Uebereinkommen, Stipulation:* °क्रियां कर् M. 7,202.

समयज्ञ (समय + ज्ञ) adj. *die rechte Zeit kennend* Vjutp. 67. Vishṇu MBh. 13,5988.

समयधर्म m. = समयक्रिया Paśśat. 53,22. 55,20 (ed. orn. 46,19. fg.).

समयप्रकाश m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 292, *b*, 29.

समयप्रदीप m. desgl. ebend. 273, *b*, 17. 279, *b*, 23. 292, *b*, 29.

समयभेदोपरचनचक्र n. desgl. Tārān. 68. 174.

समयमयूख m. Titel eines Abschnittes im Bhāskara Verz. d. B. H. No. 1171. fg.

समयरत्न n. Titel eines Abschnittes im Dharmâmbhodhi Verz. d. B. H. No. 1031. eines buddhistischen Sūtra Tārān. 121.

समयवज्र m. N. pr. eines Mannes Tārān. 5.

समयविद्या s. u. समय 7).

समयसारनाटक n. Titel eines *Schauspiels* Ind. St. 1,466.

समर्या (von 2. सम) und समर्यी (in der klassischen Sprache) adv. Uṇādis. 4,174. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. 1) *mitten durch, mitten hinein zwischen* (acc.) AK. 3,4,22 (23), 14. 3,5,7. H. an. 7,57. Med. adj. 68. वि वृत्रस्य समर्या पार्श्वारुजः ṚV. 1,56,6. 73,6. यतो वयक्रा समर्या वि वावृते *geht mitten durch die Räder* 166,9. रथः 7,66,15. 9,75,4. 85,5. 97,56. यमि सोमेन समर्या विपृक्षः *du bist vom Soma (Monde) mitten d. h. durchaus geschieden* 1,163,2. किंयत्या यत्समया भवति *wie lange ist es, was dazwischen liegt? d. h. wie gross ist der Zeitabstand?* 113,10. समया धिज्यावातीयात् Çat. Br. 3,6,2,20. 8,2,20. 3,10. कुरुक्षेत्रं समया चचार 11,

3,2,4. पत्समया देवयजनं पन्था विधावेत् Kâtj. 23,2. तर्ह Kauç. 76. auch mit instr.: रथचक्रस्य खेन समया सुरोहति *durch ein Nabenloch hindurch* 13. 72. — 2) *in die (der) Nähe* AK. H. 1534. H. an. Med. Halâj. 3,93. Çiç. 13,9. mit acc. Sidon. K. zu P. 2,3,1. Vop. 5,7. Çiç. 6,73. Daçak. 130,6. Naish. 4,3. mit gen. P. 6,2,23, Schol. mit instr. Çiç. 12,52.

समयीकर् (von समय + 1. कर्), °करोति *die Zeit vertreiben* P. 5,4, 50. Vop. 7,90.

समयाचार (समय + आ°) m. gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34. *ein den Satzungen entsprechender Wandel* u. s. w. R. 2,1,16 (= धर्म Comm.). Bez. best. *orthodoxer* Werke bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 91, *b*,27. 93,*b*,21. *fg.* 109,*b*,3. °तत्त्व Notices of Skt Mss. 2,161. — Vgl. सामयाचारिक.

समयातन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 104,*a*,30.

समयाध्युषित (समया + अ°; s. u. 2. वस् mit अधि) adj. *hälftig aufgegangen:* die Sonne M. 2,15 (= सूर्यनक्षत्रवर्जितः कालः Kull.). Gaṇit. 1, 73. Schol. zu Kîrân. Ça. 4,15,1. Citat im Comm. zu Naiṣâs. 2,57 (ed. Calc. 1828). — Vgl. समयाविषित.

समयानन्दसंतोष m. bei den Çâkta N. pr. eines Verfassers von Mantra Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,35. fg.

समयाविषित (स° + वि°) adj. *halb losgemacht* so v. a. *halb untergegangen* Ait. Br. 3,24. TS. 5,6,44,6. Anupadas. 3,12.

समयास्तमिषित adj. im Comm. zu Taitt. Âr. 442,10 scheint eine Nachbildung von समयाविषित zu sein.

समयितव्य (von समय्) adj. *zu sühnen, zu schlichten, beizulegen:* युद्ध Bhar. Nâṭjaç. 18,76; vgl. Daçak. 3,68.

समयीकर् (समय + 1. कर्) *bedingen:* सत्यं सत्येन °कृतम् (so ed. Bomb.; der Comm. fasst aber समयी als nom. und umschreibt ihn durch सदाचारवान्) *Wahrheit bedingt Wahrheit* R. 2,109,16.

समयुग gaṇa प्रतिज्ञादि zu P. 4,4,99. — Vgl. सामयुगीन.

समयोग H. an. 4,50 fehlerhaft für समायोग.

समयोद्योत (समय + उ°) m. Titel eines Werkes des Hemâdri Verz. d. Oxf. H. 280,*a*,12.

समर् (von सर्ज् mit सम्) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,131 (parox.). m. und n. (dieses nicht zu belegen) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,14. 1) *Zusammenlauf, Zusammenfluss; Ort des Z.:* घनानाम् RV. 10,139,3. 6,9,2. वर्मनाम् 47,6. वधानाम् AV. 5,20,5. सीता° Çat. Br. 7,2,2,3. — 2) *feindlicher Zusammenstoss, Kampf* AK. 2,8,2,73. 3,4,24,66. H. 796. Halâj. 2, 295. Çâṅkh. Ça. 15,15,12. Bh. 7,9 (असमराय). MBh. 1,1174. 3,11979. 15724. Harîv. 5457. Mṛicch. 50. Ragh. 12,32. ed. Calc. 7,33. Spr (II) 3461. 5238. AK. 2,8,2,19. Varâh. Bṛih. S. 4,29. 20,2. 43,1. 47,26. Kathâs. 54,214. Râja-Tar. 1,82. Prab. 83,6. 9. Bhâg. P. 6,12, 17. देवानां सङ्घ दानवैः 3,6,13. 14,7. Hit. 106,19. समराय R. 5,42,14. °व्यसनिन् Mudrâ. 1,20. °विमर्द Varâh. Bṛih. S. 5,60. समरागम *Ausbruch eines Krieges* 8,22. °भूमि 16,4. am Ende eines adj. comp. (f. आ): प्रवरनवराब्दसमरा धरा 27,8. इष्ट° Harîv. 1062. कृत° R. 7, 29,40. वितीर्ण° Râja-Tar. 5,135. असमरम् adv. *ohne Anstoss:* अभ्युदेति Çâṅkh. Br. 8,9. — 3) N. pr. eines Fürsten von Kâmpilja Harîv. 1062. fg. VP. 452. eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 52, 170. eines Bruders des Fürsten Avantivarman Râja-Tar. 5,25. — Vgl. सामरेय.

समरकन्द *Samarkand* Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,45. 339,*b*,24.

समरकर्मन् n. *Kampf* R. 4,9,55.

समरक्षिति f. *Schlachtfeld* R. 6,70,48.

समरजित् m. N. pr. eines Fürsten (*im Kampfe siegreich*) Kathâs. 54. 225. — Vgl. समरञ्जय.

समरज्जु f. *equal or mean string: the mean or equated depth* Colebr. Alg. 312.

समरञ्जय m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 71,*a*,17. — Vgl. समरजित्.

समरण (von सर्ज् mit सम्) n. 1) *Vereinigung* Nir. 3,10. — 2) *das Zusammentreffen, Kampf* Naigh. 2,17. RV. 1,155,2. मा नः समरणे वधीः 170,2. 4,42,5. 10,27,3.

समरत m. (sc. बन्ध) *quidam coeundi modus:* स्वजङ्घाहृयमंयुक्तं कृत्वा योषित्पदद्वयम् । स्तनौ धृत्वा रमेत्कामी बन्धः समरतः स्मृतः ॥ Ratim. im ÇKDr. neutr. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,46.

समरतुङ्ग m. N. pr. eines Kriegers Kathâs. 54,137.

समरथ m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 9,13,24.

समरबल m. desgl. Kathâs. 54,146.

समरभट m. desgl. ebend. 74,29.

समरभू f. *Schlachtfeld* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Cl. 33.

समरवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Râja-Tar. 5,135.

समरवसुधा f. *Schlachtfeld* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,543,1.2.

समरवीर m. N. pr. des Vaters der Jaçodâ Wilson, Sel. Works 1,293.

समरसार m. n. Titel einer astr. Schrift Notices of Skt Mss. 2,204. fgg. Verz. d. B. H. No. 883; vgl. सार समरसिंहस्य S. 265,12.

समरसिंह m. N. pr. eines Astronomen Verz. d. B. H. No. 882. Ind. St. 2,247. 250. fg. 274.

समरस्वामिन् m. N. eines von Samara errichteten Heiligthums Râja-Tar. 5,25.

समराभ्य (समर + आभ्या) m. *ein best. Tact;* s. u. प्रतिताल 1).

समराङ्गण, °न (समर + अ°) n. *Schlachtfeld* Vaṇis. 29,20. Kathâs. 47,91. 54,211.

समरातिथि (समर + अ°) m. *ein Gast im Kampfe* so v. a. *derjenige, mit dem man im Kampf zusammentrifft,* Harîv. 4979. 5458.

समर्ड्प्य adj. = समागत: P. 4,3,81, Schol. — Vgl. सममय.

समरेख (सम + रेखा) adj. *eine gerade Linie bildend, gerade* (Gegens. वक्र) Çiç. 9.

समरोचित (समर + उ°) adj. *zum Kampf geeignet:* ein Elephant H. 1222. Halâj. 2,69.

समरोत्सव (समर + उ°) m. *Kampffesttag* so v. a. *das Vergnügen eines Kampfes:* अलब्ध° adj. Kathâs. 27,139.

समरोद्देश (समर + उ°) m. *Schlachtfeld* MBh. 3,15752.

समरोपाय (समर + उ°) m. *Kriegslist* Varâh. Jogajâtrâ 1,11.

समर्घ (2. सम् + अर्घ) adj. *wohlfeil* Varâh. Bṛih. S. 40,13 (vgl. die Uebersetzung). Nîlak. zu MBh. 13,23,1. — Vgl. सामर्घ्य.

समर्च (2. सम + अर्च) adj. *eine gleiche Verszahl habend:* सूक्त Çâṅkh. Ça. 7,19,18.

समर्चन (von 1. अर्च् mit सम्) n. *Verehrung* Verz. d. Oxf. H. 99,b,36. f. आ dass. Pañkar. 3,15,73. unbestimmt ob n. oder f. Prâçnottarar. 20 in Monatsberr. d. k. pr. Ak. d. Ww. 1868, S. 110.

समर्ण, समर्ण्य s. u. अर्द् mit सम्.

समर्ति f. °र्ति° *das Nichtschadennehmen:* गृह्णामसमर्त्ये TS. 3,3,8,2; vgl. jedoch dafür असमाति AV. 6,79,1. Richtig ist wohl असमार्ति (von अर् mit समा); nach TS. Prâr. 5,9 ist असमर्ति = असमृति.

समर्घ (2. सम् + अर्घ) 1) adj. (f. आ) *a) entsprechend, übereinstimmend, angemessen* Âçv. Çr. 3,2,17. Nir. 1,13. वाच् MBu. 5,1814. उत्तर Râgn. 11,79. किं समर्घं ज्ञनस्यास्य किं प्रियं किं सुखावहम् R. 2,57,14. 5,77,5. mit der Ergänzung comp. Bhâg. P. 4,4,5. — *b) (seinem Zweck entsprechend) tauglich, gut:* ein Baum MBu. 13,288. तिला: Pañkat. 121,24. पशु 169,10. Rosse MBu. 3,2782. = क्षित AK. 3,4,45,89. H. an. 3,321. Med. th. 25. — *c) von gleicher Bedeutung* P. 1,3,42. 2,3,57. 8,1,65. — *d) dem Sinne nach verbunden, — zusammengehörig* P. 2,1,1. 4,1,82. Pat. zu P. 1,1,48. AV. Prâr. 8. 261,11,3. = संबन्धार्थ AK. H. an. = संबन्ध (lies संबद्ध) Med. — *e) im Stande seiend, einer Sache gewachsen, die Macht besitzend, fähig, Etwas zu thun vermögend* AK. H. ç. 106. H. an. Med. समर्थाश्चाप्यदातार: *wohl im Stande seiend und dennoch nicht spendend* MBu. 13,1652. 2206. R. 1,7,18. 2,80,3. 4,3,18. 5,7,45. Kâm. Nitis. 15,16. Spr. (II) 771. 774. 1289. 1496. 1561. 1926. 2392. 2875. 3527. Vaitân. Bhn. S. 13,20. Râga-Tar. 4,479. Sin. D. 111,1. Sarvadarçanas. 10,1. 3. 124,16. °तर Pañkat. ed. orn. 36,24. अति° Hit. 83,13. अ° R. 2,32,33. Die Ergänzung α) im infin. MBu. 3,2980. R. 1,1,7. 34,19. 2,21,9. R. Gorr. 2,91,6. 3,13,31. 4,7,3. 5,36,3. 6,95,3. Mrcch. 42. Spr. (II) 544. 2380. 4907. 5893. 5904. 6005. 6189. 6215. 6977. Kathâs. 7,62. Râga-Tar. 1,35. 2,41. 4,567. Bhâg. P. 3,16, 29. 7,6,17. Hit. 15,10. 21,12. 27,7. 65,1. अ° 15,19. Râga-Tar. 6, 368. Bhâg. P. 3,20,14. Var. in LA. (III) 2,21. statt des infin. das partic. praes.: सने वामीदृशं वाक्यं कः समर्थो ऽनुब्रुवन् Harîv. 13494. — β) im loc.: कार्यनिर्णये Jâán. 2,19. पोषणे MBu. 1,6150. 8399. 13,4084. Harîv. 6432. R. 1,1,5. 11,17. R. Gorr. 2,27,14. 3,1,32. 40,29. 4,8,56. 6,13,23. Sueç. 1,313,19. Kâm. Nitis. 8,18. Spr. (II) 1518. 1685. 2648. Kathâs. 61,88. Pañkat. 86,3. सकलकार्यविधौ Spr. (II) 1431. वेतालाह्वानसाक्ष्ये Kathâs. 73,277. धीविषाणामलत्वे Vaitân. Bhn. 28(26),7. अ° Bhag. 12,10. Spr. (II) 2702, v. l. — γ) im dat.: तेषां त्रयाय MBu. 3,22. 25. 15,222. Harîv. 685. इन्द्रवधार्थाय 240. अ° MBu. 1,3431. — *δ) im gen. Jmd gewachsen:* समर्थस्तव — धनुष्यस्त्रबले मतो R. 4,11,10. 12,5. — *ε)* mit acc.: नेकं युद्धं समर्था: (vielleicht युद्धस° zu lesen) स्म: R. 7,22,10. — *ζ)* im abl.: उभाभ्यां च समर्थो ऽहं शापादपि शरादपि Spr. (II) 7431. — *η)* im comp. vorangehend: प्रतिपक्ष° M. 4,186. Jâán. 1, 218. रात्रव्यसनापोह° Kâm. Nitis. 14,2. उद्यम° Spr. (II) 3789. Sarvadarçanas. 10,2. 11,21. 102,6. Vedântas. (Allah.) No. 110 (अ°). — *f)* fehlerhaft für समर्ध Vaitân. Bhn. S. 40,13. — 2) m. *a)* = सामर्थ्य *Befähigung u. s. w.:* सर्वेषु कार्येषु समर्थयुक्ता बुद्धिस्तवास्त्येव R. 5,43,6. — *b) Verständniss* (vgl. अर्थय् mit सम्) in दु:° (in den Nachträgen). — Vgl. अ° (in den Nachträgen) und सामर्थ्य.

समर्थक adj. 1) (von समर्थ) *im Stande seiend,* mit infin. Var. in LA. (III) 19,13. — 2) (von समर्थय्) *bestätigend, begründend, rechtfertigend* Sin. D. 301,4. 317,12. 15. 19. 318,19. fg. — n. *Amyris Agallocha* bei Wilson angeblich nach AK. beruht auf dem verlesenen und missverstandenen समार्थक AK. 2,6,2,27.

समर्थता (von समर्थ) f. *Fähigkeit, das Vermögen Etwas zu bewirken;* instr. °तया mit gen. *so v. a. kraft, vermöge* Sarvadarçanas. 119,22.

समर्थत्व (wie eben) n. dass. Muir, ST. 4,220. उपकारासमर्थत्व Spr. (II) 3926.

समर्थन (von समर्थय्) 1) n. *Betrachtung, Erwägung;* = संप्रधारणा AK. 2,8,4,25. H. 1374. = समाधि AK. 3,4,42,100. समर्थनं कर् *Betrachtungen anstellen* Kathâs. 25,73. f. आ dass. MBu. 4,106. — 2) n. *Bestätigung, Begründung, Rechtfertigung:* समर्थनप्रपञ्चोक्तिरुक्तस्यार्थस्य विस्तर: Pratâpar. 69,a,6. कार्यकारणसामान्यविशेषाणां परस्परं समर्थनम् 98,a,9. Kuval. 126,b. Comm. zu TS. Prâr. 13,14. पयोव्रतसमर्थनप्रकार m. Titel einer Schrift Hall 192. — 3) f. आ *das Sichversteigen zu Unmöglichem,* = यशको ऽध्यवसाय: Vop. 25,23. — 4) n. = समर्थता. तपसश्च समर्थनात् *so v. a. vermöge* MBu. 1,5080. समन्वयात् eine von Nilak. erwähnte Lesart.

समर्थनीय (wie eben) adj. *zu begründen, zu rechtfertigen, in's Klare zu bringen* Comm. zu TS. Prâr. 16,19.

समर्थय् s. unter अर्थय् mit सम् (auch in den Nachträgen). Nachzutragen wäre die Bed. *bestätigen, begründen, rechtfertigen* Comm. zu TS. Prâr. 5,3. 13,4. 14,4. समर्थित Spr. (II) 4005 = समर्थ *im Stande seiend.*

समर्घ्य (von समर्थय्) adj. *was bestätigt, begründet, gerechtfertigt wird* Sin. D. 301,4.

समर्धक (vom caus. von अर्ध् mit सम्) adj. *Jmd Etwas gewährend, zu Theil werden lassend* AK. 3,1,7. — Vgl. समर्धुक.

समर्धयितर् (wie eben) nom. ag. *Erfüller, Gewährer:* कामानाम् Âçv. Gṛhj. 1,10,23. Kâṭhân. Up. 1,1,8.

समर्धुक (von अर्ध् mit सम्) 1) adj. *a) gerathend, gelingend:* समर्धुकमस्य मुख्यं भवति TS. 3,4,8,2. कृत 6,4,9,2. — *b)* = समर्धक H. 480. wohl fehlerhaft. — 2) f. आ *Tochter* H. ç. 113; vgl. समर्ढु.

समर्पक (vom caus. von अर् mit सम्) adj. *liefernd, hergebend:* इष्टव्यविधेर्विषयसमर्पकाणीतानि Çâṅk. zu Bhn. Âr. Up. S. 179. स्वाकारसमर्पकता Sarvadarçanas. 18,13. fg.

समर्पण (wie eben) n. 1) *das Auflegen, Daraufwerfen* Çat. Bn. 3,3,3, 29. — 2) *das Hingeben, Uebergeben, Ueberlassen, Verleihen, Verabreichen, Anheimstellen:* वालिपुत्र° R. Gorr. 1,4,65. अभिज्ञानमणि° 5,66 in der Unterschr. Kathâs. 4,109. Kuṭṭan. 65,12. भृतेरसमर्पणादिकम् *das Nichtzahlen des Lohnes* Kull. zu M. 8,214. विफलत्व° Spr. (II) 2990. अधिकार° Râga-Tar. 5,299. वाग्दत्तार्थ° 3,272. आत्म° *das Sichhingeben* Bhâg. P. 7,11,11. यद्दत्तानि परै: सात्वात्सर्वकर्मसमर्पणम् 15,64. Sarvadarçanas. 171,14. — 3) = आत्म° *das Sichhingeben* Bhâg. P. 2,6,26. नारायणे समर्पणं भजनम् Sarvadarçanas. 65,11. Pañkat. 1,14,51. — 4) *das Mittheilen, zur-Kenntniss-Bringen:* स्वगोत्रवित्तात्म° Bhâg. P. 10, 85,37. Çaṅk. zu Bhn. Âr. Up. S. 177. वेत्त:° zu Kâṭhân. Up. S. 9. Sarvadarçanas. 157,2. 159,8. — 5) Bez. einer best. Scene im Bhâṇikâ genannten Schauspiel: *im Zorn ausgestossene vorwurfsvolle Worte* Sin. D. 356.

समर्पणीय (wie oben) adj. zu *übergeben*, zu *verabreichen* Kull. zu M. 3,55. 7,96.

समर्पयितव्य (wie oben) adj. dass. Hit. 40,11.

समर्पयितृ (wie oben) nom. ag. *Verleiher:* शिल्पानाम् Hariv. 12162. योगक्षेम° MBu. 13,1921.

समर्प्य (wie oben) adj. *zu übergeben*, *zu verabreichen* Pāṇ. 3,13,12.

समर्य् (von समर्), °र्यति Gaṇaratnam. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27 (संग्रामे). partic. समर्यत् *kampflustig:* मनस् ṚV. 5,44,7.

1. समर्य (सऽमर्य Padap.; oder von यर् mit सम् wie समर्) n. 1) *Ansammlung, Menge:* प्रमृण्यमाणास्तन्वो समर्ये *er in der Menge* ṚV. 4,38, 7. 7,19,2. तमीमण्वीः समर्य आ गृभ्णन्ति योषणो दश *aus der Masse heraus* 5,1,7. 10,27,14. 4,24,8. — 2) *Versammlung, die zu einer Feier u. s. w. vereinigte Gemeinde* ṚV. 1,63,6. प्रेष्ठा वयं वोचेमहि समर्ये 167, 10. समर्ये स्तवते यज्ञमानस्य शंसः 178,4. समर्य आ विदथे वर्धमानः 3,8,3. समर्ये विदथेष्ठाम् 5,3,6. 9,97,27. — 3) *Getümmel des Kampfes* Naigh. 2,17. ṚV. 9,85,2. einzelne der Stellen unter 1) und 2) würden auch hierher sich ziehen lassen.

2. समर्य (2. स + मर्य) adj. *von Leuten besucht, frequens:* पन्थ ṚV. 7, 70,6. यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जनै समर्यो बिभेति *von seinen Leuten begleitet* 5,33,1.

3. समर्य *eine best. hohe Zahl* (bei den Buddhisten) Mél. asiat. 4,638.

समर्यजित् adj. *im Kampf siegend* ṚV. 1,111,5.

समर्यराज्य n. *Reich der Festgemeinde* ṚV. 9,110,2.

समर्याद (2. स + मर्यादा) adj. 1) *benachbart* AK. 3,2,16. Trik. 3,3,212. H. 1451. Halāy. 4,7. am Ende eines comp. (das vorangehende Wort bewahrt seinen Ton) P. 6,2,23. सर्वै° Schol. masc. *Nähe* Med. d. 55. — 2) *begrenzt, innerhalb seiner Grenzen verbleibend* Trik. H. an. 4,146. Med.

समर्हण (vom caus. von अर्ह् mit सम्) n. *Ehrenerweisung, Ehrengabe* Bhāg. P. 7,8,10. 8,21,6 (pl.). 10,53,32 (pl.). 57,23 (pl.). Verz. d. Oxf. H. 253, *a*, 3. समर्हणं प्र-वर्तय् 255, *a*, 1. उप-हृ Bhāg. P. 8,22,14. 10, 80,20. नि-धा 38,17.

समल gaṇa पत्तादि, मध्यादि und संकाशादि zu P. 4,2,80. 1) adj. (2. स + मल) *a*) *fleckig, schmutzig, trübe* Gaṇar. im ÇKDa. चन्द्र Kathās. 106,62. — *b*) *sündhaft* Uṇādis. zu Uṇādis. 1,109. — 2) m. N. pr. eines Asura Hariv. 14291. समर् die neuere Ausg. — 3) n. = कल्क AK. 3,4,4,14. = विष्ठा Çabdar. im ÇKDa. schlechte Schreibart für शमल. — Vgl. सामलायन, सामलेय, सामल्य.

समलम्ब adj. *having equal perpendiculars, a trapezoid* Colebr. Alg. 58. आयत° *oblong with equal perpendiculars; that is, a rectangle* ebend.

समलोष्टाश्मकाञ्चन adj. *dem ein Erdklos, ein Stein und Gold gleich viel gelten* Aṣṭād. 18,88.

समवकार m. Bez. *eines best. dreiactigen Schauspiels* H. 284. Bhar. Nāṭyaç. 18,2. 87. fgg. 19,42. Daçar. 1,8 (व्यायोगसमवाकारौ wie das Metrum verlangt Verz. d. Oxf. H. 203, *a*, No. 484). 3,36. fgg. Pratāpar. 24,*b*,4. 7. Wilson, Hindu Th. 1, XXIX. fg. Sāh. D. 515. समवकीर्यन्ते बह्व्यो ऽर्था यस्मिन्निति समवकारः। यथा समुद्रमथनम् 193,11. fg. समवक्रियन्ते संघातीक्रियन्ते नेतारो ऽत्र समवकारः Comm. zu H. 284. समवाकार Pratāpar. 20,*a*,1. s. H. 284, v. l.

समवतार (von 1. तर् mit समव) m. = तीर्थ *ein heiliger Badeplatz* Kād. 5,7.

समवत्तर्धान adj. *zur Aufnahme der Abschnitte* (समवत्त; s. u. 3. दा mit समव) *bestimmt:* चमस Āçv. Gṛhy. 4,3,11. f. ई (sc. पात्री) *das betreffende Gefäss* Çat. Br. 3,8,2,13. 25. Kāṭy. Çr. 25,7,30. Çāṅkh. Çr. 4,14,27.

समवधान (von 1. धा mit समव) n. *das Zusammentreffen:* तृणपुत्कार°, निर्मन्थनाराणि° u. s. w. Kusum. 7,1. fgg. 10,7. 26,10. Sarvadarçan. 134,2.

समवन (von अव् mit सम्) n. *das Helfen, Schützen:* अवनितल° Bhāg. P. 5,4,1.

समवत्त् s. समावत्त्.

समवबोधन (von 1. बुध् mit समव) n. *das Gewahrwerden, Bemerken, Erfahren* MBu. 1,2284.

समवर्ण adj. (f. आ) *von gleicher Kaste* M. 8,269. 9,156.

समवर्तिन् 1) adj. *a*) *in gleicher Entfernung weilend:* बाणपात° so v. a. *in Pfeilschussweite sich befindend* Çiç. 6,14, v. l. — *b*) *auf gleiche Weise verfahrend.* — 2) m. ein N. Jama's AK. 1,1,6,33. H. 184. Halāy. 1,71. MBu. 12,7552. Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 29.

समवसरण (von सृ mit समव) n. etwa *Versammlungshalle* Çāṅkh. 1, 174. 201. 202.

समवसर्ग्य (von सर्ज् mit समव) adj. *loszulassen, fahren zu lassen* P. 3,1,124, Vārtt. 2. रज्जु Comm. Vop. 26,17. fg.

समवसृज्य (wie oben) adj. dass. Ait. Br. 4,13.

समवस्कन्द (von स्कन्द् mit समव) m. *Brustwehr, Schanze* oder dgl. Kām. Nītis. 16,39.

समवस्था (1. स्था mit समव und 2. सम + था° f. 1) *Lage, Zustand* Rāgat. 19,80. Çiç. 39,20. 82,20. Mālav. 65. ईदृशीं वयःसमवस्थां प्रतिपन्नो ऽस्मि so v. a. *ich bin so alt geworden* Çiç. 60,12, v. l. — 2) *eine gleiche Lage, ein gleicher Zustand* Schol. zu Çiç. 53,5. am Ende eines adj. comp. f. आ Rāgat. 8,41.

समवस्थान (von 1. स्था mit समव) n. 1) *das Sichbefinden:* एकत्र देशे Nilak. 238. — 2) *Lage, Zustand* Bhāg. P. 4,20,10. 5,1,21.

समवस्रव (von स्रु mit समव) m. *Abfluss* Āçv. Gṛhy. 2,7,8.

समवहार (von हृ mit समव) m. 1) (*zusammengetragene*) *Menge, Fülle:* प्रज्ञासमवहारो ऽयं कविभिः संभृतं मधु MBu. 12,5423. — 2) *Mischung* Bhāg. P. 5,14,1. — °रम् absol. s. unter der Wurzel.

समवहास्य (vom caus. von हस् mit समव) adj. *zu verspotten, zu verhöhnen:* गमिष्यामि — लोके °ताम् *ich werde zum Gespött der Welt werden* MBu. 3,17096.

समवाकार s. समवकार.

समवाय (von 3. इ mit समव) m. 1) *Zusammenkunft, Versammlung; Vereinigung, Verbindung, Gemenge, Aggregat* AK. 2,8,40. 3,4,24,153. H. 1412. Halāy. 4,1. जनस्य M. 4,108. राष्ट्राम् MBu. 1,125. 4646. समवायेषु सर्वेषु 5603. 5,8. 13,4544. 7673. Hariv. 2351. 3888. बहूनामप्यसाराणां समवायो जयावहः Spr. (II) 4425. Pañcat. 80,15. Bhāg. P. 4,12, 47. जन° Çiṅkh. Gṛhy. 4,12. Mṛicch. 147,2. Daçak. 61,6. Verz. d. Oxf. H. 216, *a*, 25. 31. Bhāg. P. 6,9,33. Pañcat. 130,7. 9. 57,8. वटपिप्पल° *das Zusammenstehen, Sichberühren* Vaṇīs. Bṛh.-S. 54,96. स्वराणाम्

ṚV. Prāt. 14,24. Suça. 1,4,1. 31,12. पर्युषितकिण्वोदकपिष्ट° *ein Teig aus Hefe, Wasser und Mehl* 81,6. 347,11. दोषाणाम् 2,442,17. Sarvadarçanas. 21,3. 4. मिथः Verz. d. Oxf. H. 104,b,11. समवायं कृ *sich zusammenthun* Pañcat. ed. Bomb. I,88,1. समवायांश्च कुर्वते *scheinen sich zusammen* MBh. 6,51. R. 6,11,37. समवायेन *in Gemeinschaft* Jāān. 2,239. R. Gorr. 2,90,11. Mirk. P. 39,33. समवायात् dass. Pañcat. 81,24. समवाय als Bed. von सप् Dhātup. 11,6. — 2) *eine Conjunction des Mondes mit der Sonne, mit Planeten und Sternen:* शशिनो भास्करस्य च MBh. 3,14272. शशि° Varāh. Bṛh. S. 18,8 (pl.). — 3) *Zusammenstoss, Collision:* समवाये भूयसी कल्पः Lāṭj. 6,4,15. Anupadas. 4,6 in Ind. St. 10,94. तुल्य° Kāty. Ça. 1,5,10. 7,2. 4,3,9. Verz. d. Oxf. H. 216,a,32. Kull. zu M. 2,117. Sarvadarçanas. 159,15. — 4) *inniger Zusammenhang, das Ineinandersein, Inhärenz* (eine der sechs, resp. sieben logischen Kategorien) Kaṇ. 1,1,1. 26. 2,1,26. 4,1,3. 11. 7,2,26. Verz. d. Oxf. H. 240,a,1 v. u. 259,a,N. 4. Ind. St. 1,18,1 v. u. Tarkas. 1. 11. 37. Nilak. 93. Bhāshāp. 1. Sarvadarçanas. 12,21. 31,8. fgg. 104, 19. 105,3. fgg. MBh. 1,2886. 2,137. 13,42. तेन ऋतुसमवायचिह्नं प्रतिपद्यतां लता कुसुमम् Çik. 108,10. — 5) *Verlauf, Dauer:* समवाये च युद्धस्य रामस्यागमनम् so v. a. *während des Kampfes* MBh. 1,556. — Vgl. संयुक्त° (auch Bhāshāp. 58), संयुक्तसमवेत°, समवाय und सामवायिक.

समवायत्व n. nom. abstr. zu समवाय 4) Kusum. 30,11.

समवायन n. nom. act. von 3. इ mit सम्‌ब H. 243, Schol.

समवायप्रमाणवादार्थ m. Titel einer Schrift Hall 45.

समवायाङ्ग n. Titel eines der 12 heiligen Bücher der Gaina H. 243. Wilson, Sel. Works 1,284.

समवायिन् (von समवाय) adj. 1) *aus einer Verbindung* (der humores) *bestehend:* ज्वर Suça. 2,424,21. — पुरुष Jāān. 3,125 nach Strehler *der individuelle Mann.* — 2) *in innigstem Zusammenhange stehend, inhärent* Kaṇ. 1,1,15. 3,1,9. 7,2,19. 9,2,1. 10,1,6. Tarkas. 22. Nilak. 37. 94. Suça. 1,147,17. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 171. 250. Kusum. 18,18. 19,9. 10. Kalis. zu Pat. bei Gold. Mān. 48. Sarvadarçanas. 105,19. समवायिकारणता 132,8. °कारणत्व 106,15. Bhāshāp. 16. स° Kaṇ. 5,2, 24. Tarkas. 16. fg. Nilak. 94. Bhāshāp. 122. असमवायिकेतुत्व 16. अवयवसमवायित्व Sarvadarçanas. 30,4. असमवायित्व Bhāshāp. 96.

समवायीकृ (समवाय + 1. कृ) *versammeln, vereinigen:* °कृता: Hariv. 5002. VP. bei Muir, ST. 4,104.

समवृत्त 1) adj. *gleichmässig rund* oder *gleich und rund* (Comm.): स्तनौ Buic. P. 4,25,24. — 2) n. a) *der erste Verticalkreis* (vgl. समम‌ण्डल) Col. Grahagan. 44. 49. °कर्ण *die Hypotenuse des Schattens zur Zeit, wenn die Sonne den ersten Verticalkreis erreicht,* Ganit. Taipa. 42. °शङ्कु = समशङ्कु 15. 17. — b) *ein gleichmässiges Metrum, ein Metrum mit vier gleichen* Pāda Ind. St. 8,363. fgg. Verz. d. B. H. No. 810. 814.

समवेक्षण (von ईक्ष् mit सम‌ब) n. *das Besichtigen:* गवाम् MBh. 3,14825.

समवेगवश m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,369 (VP. 193; vgl. 2te Aufl. 2,179).

समवेत adj. *inhärirend* (s. o. 3. इ mit सम‌ब in den Nachträgen); davon. abstr. °त्व n. Tarkas. 22. Kusum. 30,11.

समवेध m. *the mean or equated depth* Colebr. Alg. 312.

समवेष m. *eine gleiche Tracht, ein gleicher Anzug:* °वेषं (°वेशे ed. Calc.) न कुर्वीत *er kleide sich nicht wie* (der Fürst) MBh. 4,130.

समशङ्कु m. *die Sonnenhöhe* (eig. *Gnomon*) *zur Zeit, wenn die Sonne den ersten Verticalkreis erreicht,* Ganit. Taipa. 20. 22. Gol. Taipa. 37.

समशन (von 2. अश् mit सम्‌) n. 1) *das Zusammenessen* Kaṇḍ. 78. *das* (undiätetische) *Durcheinanderessen* Suça. 1,246,2. 263,2. Vishn. 1,8. 33. — 2) *das Essen, Geniessen* P. 6,2,71, Schol.

समशनीय (wie eben) adj. *zusammen zu essen* Gorr. 2,3,17.

समशृङ्ग m. *ein gleichhörniger* so v. a. *mit gleichen Hörnern versehener Mond* Varāh. Bṛh. S. 4,11.

समशौर्षिका f. *Gleichstellung:* कल्पद्रुमाश्च सदृशा नार्हन्ति °शीर्षिकाम् Rāga-Tar. 3,135.

समशोधन n. *equal substraction; or transposition, with other preparations of the equation* Colebr. Alg. 245. Misc. Ess. 2,435.

समश्नुव (von 1. अश् mit सम्‌) adj. (f. ई) *erreichend, packend* Âçv. Gṛhj. 4,8,27. fg.

समश्रेणि f. *eine gleichmässige —, in gerader Linie fortlaufende Reihe:* °गतानक्षत्रान् Spr. (II) 6473.

संमिष्टि (von 1. अश् mit सम्‌) f. 1) *das Erreichen, Anlangen am Ziel:* सुवर्गस्य लोकस्य TBr. 1,3,2,3. Ait. Br. 2,17 u. s. w. अर्धनां संनेता समेष्टी TS. 5,1,2,4. Çat. Br. 14,6,2,3. — 2) *Empfang* TS. Comm. 2,379, 10. — 3) *Schluss* TBr. Comm. 3,593,18. 20. — 4) *Aggregat* (Gegens. व्यष्टि *Einzelding*) Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 14. 312. Weber, Rāmat. Up. 348. 350. Vedântas. (Allah.) No. 23. 25. 27. 30. Wilson, Sāṅkhjak. S. 129. muss der Bed. nach wie व्यष्टि 1) b) auch 2. अस् zurückgeführt werden; vgl. Vedântas. No. 30.

समष्ठिल 1) m. *ein best. Strauch,* = भण्डीर Rāgān. im ÇKDr. — 2) f. आ *eine best. Gemüsepflanze,* = गण्डीर AK. 2,4,2,22; vgl. समष्ठोला.

समष्ठोला f. = समष्ठिला Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. अष्ठोला.

समस् s. ऐ°.

समसंस्थान n. Bez. *einer der 10 Weisen des Sitzens bei den Jogin* Sarvadarçanas. 174,6.

समसंस्थित adj. *in guten Verhältnissen sich befindend* Mṛicch. 150,20. — Vgl. समस्थ.

समसंख्यात adj. pl. *in gleicher Anzahl vorhanden,* mit instr.: रज्जोभि: °संख्याता: पार्थिवैरिव तन्तव: Buic. P. 6,14,3.

समसन (von 2. अस् mit सम्‌) n. *das Zusammendrängen, Darlegen in kurzen Worten* AK. 3,3,21. — Vgl. समास.

समसमयवर्तिन् adj. *zu gleicher Zeit stattfindend;* davon °वर्तिता f. *Gleichzeitigkeit* Sarvadarçanas. 26,17.

समसुप्ति f. *allgemeiner Schlaf* so v. a. *Weltende* H. 161. Hall. 1,117.

समसूत्रग adj. *an demselben Durchmesser befindlich* so v. a. *an zwei einander gerade entgegengesetzten Punkten der Erde befindlich, Gegenfüssler* Sūrjas. 14,7. °सूत्रस्थ dass. 12,52.

समसौरभ m. N. pr. eines Mannes MBh. 1,2049.

समस्त adj. s. u. 2. अस् mit सम्‌; in der Bed. *verbunden, vereinigt* auch ṚV. Prāt. 18,22. ganz 24. R. 4,56,16. — Vgl. सामस्त्य.

समस्तवस्तुविषय adj. *auf den ganzen Gegenstand* (d. i. *auf ihn selbst*

und was zu ihm gehört oder zu ihm in Beziehung steht) sich erstreckend (Gegens. एकदेशविवर्तिन्): ein Gleichniss Sin. D. 672. Prasannar. 78,b,5. 8. Beispiel: रावणावयवक्लान्तमिति वागमृतेन सः । अभिवृष्य महत्सस्यं कृष्णमेघस्तिरोदधे ॥ Sin. D. 279,20. fg. = Raghu. 10,49. Hier werden parallelisirt: Kṛshṇa und eine *Wolke*, Rávaṇa und *Dürre*, *Worte* und *Regen*, *Götter* und *Korn*.

समस्थ adj. (f. घा) gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. 1) *bei einer geraden Zahl eintretend* Vaśiṣ. Bṛh. S. 50,20. — 2) *in guten, glücklichen Verhältnissen sich befindend* Spr. (II) 1472. 3891. 6842. R. Gorr. 2,39, 6. — Vgl. सामस्थ्य, समसंस्थित und विषमस्थ.

समस्थली f. *ebenes Land*, Bez. des zwischen der Jamunâ und der Gaṅgâ belegenen Landes H. 949.

समस्या (von 2. घस् mit सम्) f. 1) *Vereinigung, das Zusammensein, Zusammenbleiben:* घासप्रयासास ततः समस्यां निशि Harîv. 8449. घनसमया° *mit* R. Gorr. 1,3,11 (समास्या die andern Ausgg.). 4,45. मार्कण्डेय° (°समास्या ed. Bomb.) MBh. 1,323. गौरीव पत्या सुभगा कदाचित्कत्रींपिमप्यर्धतनूसमस्याम् Naish. 7,83. समस्या = संघटन Bâla bei Mallin. dss. Vgl. समास्या. — 2) *ein Verstheil, den zu ergänzen man einem Andern aufgiebt*, AK. 1,1,8,7. Râśa-Tan. 4, 618. Verz. d. Oxf. H. 87, *a*,3. 123,*a*,42. 211,*a*,2. *b*,9. 10. 217,*a*,10. 261,*a*,22. Aufrecht in Z. d. d. m. G. 27,51. Vgl. मेघदूतपाद° und समासार्धा.

समस्यार्धा f. = समासार्धा = समस्या 2) Bhar. zu AK. 1,1,8,7 nach ÇKDa.

समस्वर adj. (f. घा) *denselben Ton habend* ṚV. Prâr. 3,17.

समक् (von 1. सम) tonloses adv. *irgend, so oder so:* सुदेवः समक्सासति न मर्त्यः ṚV. 5,53,15. क्वाः समक् दीनता 7,89,3. भूरिभिः समक् ऋषिभिः 3,39,14. 1,120,11. AV. 5,4,10. सिन्धौ समक् संगमः 6,24,1. Nach Sây. voc. eines adj. in der Bed. von प्रशस्त, सघन u. s. w.

समक्षम् adj. v. l. für सुमक्षम् SV. I, 5,1,1,5.

समख्या f. *Ruhm* Çabdar. im ÇKDa. unter यशस् nach dors. Aut. समज्या.

सैमा f. Taitt. 3,5,1. 1) ursprünglich wohl *Sommer* (vgl. im Zend hama): *Halbjahr* AV. 1,35,4. 2,6,1. समीः संवत्सरान्मासान् 3,10,9. — — 2) *Jahreszeit* überh., *Wetter:* दारुणा Kâṭy. 93. 102. कल्याणीक् समा भवति Ait. Br. 4,25. सस्यं च समा च Nir. 9,41. — 3) *Jahr* Nir. 11,5. AK. 1,1,8,20. H. 159. Hân. 28. Halâj. 1,116. ṚV. 4,57,7. 10,85,5. 124,4. AV. 5,8,8. 6,75,2. VS. 14,19. 19,46. 38,28. 40,8. Ait. Br. 2,1. TS. 2,3,11,5. 5,1,10,4. Çat. Br. 1,8,1,4. 5. 14,8,12,1. Çâṅkh. Gṛhj. 9,41. M. 3,40. 5,53. 9,76. 11,25. 72. MBh. 1,5245. 7681. 12,9202. R. 1,2,15. 64,20. 2,34,43. 90,12 (99,15 Gorr.). Raghu. 12,6. Vaśiṣ. Bṛh. S. 8,21. 69,30. Bṛh. 7,5. 8,3. 9. Râśa-Tan. 1,272. 3,272. 4,123. 392. समी समाम् *Jahr für Jahr* P. 5,2,12. समाते M. 4,26. °निचय adj. 6,18. त्रिसमः *drei Jahre lang* Jâṭ. 3,254. दिव्य° Bhâg. P. 7,3,19. सक्षमसम adj. 1,1,4. — Vgl. पापसम, पुण्य°.

1. समांश (2. सम + घंश) m. *ein gleicher Antheil:* °कारिन् Dâyat. im ÇKDa. विभज्य च । परस्परं समांशेन *zu gleichen Theilen* Kâṭyâś. 60,216.

2. समांश (wie oben) 1) adj. *gleiche Theile enthaltend* Suçr. 1,165,16. *einen gleichen Antheil erhaltend* M. 9,157. °क (f. समांशिका) dass. Dâyat. im ÇKDa. — 2) f. घा *Sida cordifolia* Ratnam. 167.

समांशिन् adj. dass. Dâyat. im ÇKDa.

समांस (2. स + मांस) adj. = मांसल *fleischig* Vaśiṣ. Bṛh. S. 68,6.

समांसमीना (von समां समाम्) adj. f. *jedes Jahr kalbend* P. 5,2,12. H. 1271. Halâj. 2,117.

समाकर R. 1,13,8 in der Verbindung दीप्तानल° (am Ende eines Çloka) schlechte Lesart für °शिखोपम der ed. Bomb. 16,14.

समाकर्षण (von 1. कर्ष् mit समा) n. *das Heranziehen, Anziehen* Sin. D. 300,1.

समाकर्षिन् (wie eben) adj. (schon aus der Ferne) *anziehend:* ein Geruch AK. 1,1,4,20. H. 1390.

समाकार (2. सम + 1. घा°) adj. (f. घा) *gleiches Aussehens, gleich:* दिवाकर° (so ed. Bomb.) R. 1,13,8. गुञ्जाफल° Spr. (II) 346.

समाकुल (von 3. कुल् mit समा) adj. (f. घा) 1) *erfüllt* —, *voll von, besetzt* —, *reichlich versehen mit* (die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend): न्यायैः MBh. 3,2405. नेगमैः R. Gorr. 2,90,33. Ṛt. 2,16. वीरप्रिया R. Gorr. 5,11,10. क्रोधेन च विलापेन शोकेन च 3,71,3. भयेन Râśa-Tan. 4,445. लतागृह° MBh. 1,1112. 3,2464. शस्त्रवर्ष° (विमर्द) 4075. 5891 (st. द्रुम ist vielleicht द्विज zu lesen). 8246. 3,11333. 12106. 4,692. 13,2843. गावो वत्ससमाकुलाः Harîv. 3883. 8263. 13908. R. 1, 5,16 (9 Gorr.). 2,34,41. 57,17. 75,25 (97,7 Gorr.). 81,10. 94,7. R. Gorr. 2,28,15. 18. 58,6. 73,15. 101,40. 107,18. 3,17,24. 61,17. 4,40,47. Raghu. 7,24. Spr. (II) 3997. 7589. Kathâs. 13,16. 102,60. Râśa-Tan. 3, 238. Pañcat. 8,21. क्रोध° R. Gorr. 1,61,12. शोक° 4,20,1. कन्दर्प° Ṛt. 6,8. बन्धुस्नेह° Spr. (II) 5207. — 2) *verworren, in Verwirrung gekommen, bestürzt:* मही MBh. 5,105. पुर R. 2,40,19. R. Gorr. 2,40,16. 20. सैन्य 5,60,15. Kâm. Nîtis. 18,33. 55. वर्णाः मौ नेति समाकुलो ऽभूत् Raghu. 6,68. R. Gorr. 2,101,19. 111,44. Kathâs. 51,30. मनस् Pañcat. 45,16. धर्मः MBh. 3,13011. सकाभय *wobei es drunter und drüber geht* 6,3235. in comp. mit dem, was die Verwirrung u. s. w. bereitet: श्वासमोह° Spr. (II) 2488. वृष्टिवात° *geplagt von* 2821. व्यायाम° 1897. — Vgl. आकुल, पर्याकुल, व्याकुल, संकुल.

समाक्रन्दन (von क्रन्द् mit समा) n. *das Schreien, Rufen:* °गिरः — शिव शिव शिवेति Spr. (II) 127.

समाक्रमण (von क्रम् mit समा) n. *das Beschreiten, Betreten, Besuchen* Pañcav. Br. 21,1,9. सुरसमाज° Raghu. 9,18.

समातर (2. सम + घ°) adj. *von gleicher Silbenzahl* R. Gorr. 1,2,20. 43.

समातरावकर m. *eine best. Meditation* Vâyup. 18.

समातेप (von 1. तिप् mit समा) m. *das Mahnen an*, in comp. mit der Ergänzung Sin. D. 47.

समाख्या (von ख्या mit समा) f. 1) *Benennung, Name* Nir. 12,41. Kaṇ. 4,2,8. Gaut. 1,30. Müller, SL. 97. Muir, ST. 2,190. Bhâg. P. 5,20,26. 10, 39,21. Kusum. 64,5. 9. Sarvadarçanas. 129,21. 137,2. 3. Comm. zu Âçv. Çr. 5,6,22. 25. am Ende eines adj. comp. Verz. d. Oxf. H. 149,b,11. — 2) *Deutung, Erklärung* Sarvadarçanas. 139,14. fgg. — 3) *Ruhm* Bâṇ. bei Schol. zu H. 273. Halâj. 1,153.

समाख्यान (wie oben) n. 1) *das Nennen, Mittheilen:* संबन्धस्य Kâm. Nîtis. 17,4. — 2) *Erzählung, Bericht* MBh. 12,9155. — 3) *Benennung, Name* Kâç. Çr. 1,8,44. 9,5,32.

समाख्यायम् (wie oben) absol.: अङ्ग° *die Glieder benennend* Ait. Br. 1,21.

समागत 1) adj. s. u. 1. गम् mit समा. — 2) f. या (sc. प्रहेलिका) *ein Räthsel, in dem der Sinn durch den grammatischen Saṁdhi versteckt wird*, Kāvyâd. 3,98.

समागति (von 1. गम् mit समा) f. nom. act. — Mârk. P. 16,16 ist पतिसमा गतिः zu schreiben.

समागन्तव्य (wie oben) n. impers. *zusammen zu kommen, hinzukommen* Paṅkat. 109,4. 186,2. 226,5.

समागम (von 1. गम् mit समा) m. *Zusammenkunft, das Zusammentreffen, Vereinigung.* 1) von Personen MBh. 4,717. समागमाः सापगमाः Spr. (II) 1664. Rāgat. 19,16 (°मं कृ). °क्षणे Rāǵa-Tar. 5,147. परस्पर° R. 1,48,1. a) mit einem gen. α) du. oder pl. *das Zusammenkommen —, Zusammentreffen —, Versammlung* von M. 9,268 (°मं कृ). 11,82. fg. MBh. 3,1840. 2120. 15,784 (mit der ed. Bomb. इमं st. इदं zu lesen). R. 1,4,10. R. Gorr. 1,50,20. 5,32,2. Rāǵa-Tar. 3,74. Bhâg. P. 2,3,16. 4,30,27. 5,13,21. घावयोः *fleischlich* MBh. 1,2402. Spr. (II) 272. द्वेषापाक्षत्ययोः *feindlich* MBh. 6,2192. Harîv. 2664. Vaitân. Bṛh. S. 87,29. — β) *das Zusammentreffen —, Begegnung —, Verkehr mit:* भर्तुः MBh. 3,2676. 15880. R. 2,93,26. पुंसाम् Suçr. 1,318,5. तस्याः स्वप्ने Çiç. 149. Spr. (II) 241. Rāǵa-Tar. 5,384. — b) mit instr. dass.: पाण्डवानां शक्रेण MBh. 3,11933. 4,230. 708. Harîv. 4578. fg. R. 1,3,16. 18. 50,23. Spr. (II) 4981. 5968. 6154. Vaitân. Bṛh. S. 86,25. 87,13. Kathâs. 16,55. 24, 61. Mârk. P. 71,5. Rāǵa-Tar. 6,77. गुणे R. 3,41,29. — c) mit सङ्ग und instr. dass. Spr. (II) 7405. Paṅkat. 37,10. 44,12. 111,5. 6. — d) mit loc.: मम तस्मिञ्जने °मनोरथम् Vikr. 30. — e) am Ende eines comp. α) *Zusammenkunft u. s. w. von:* वीर° *eine Versammlung von* MBh. 3,585. 2876. 13,2877. 14,2697. R. 1,10,12. 59,22 (61,23 Gorr.). Vaitân. Bṛh. S. 45,5. 13. Kathâs. 25,121. — β) *Zusammenkunft u. s. w. mit* R. 1, 3,36. 2,85 und 100 in den Unterschrr. Çiç. 108,13. Vikr. 10,21. Spr. (II) 2623. 4119. 4981. 5717. 7057. तत्पूर्व° adj. 1672. — 2) von Unbelebtem: तयोर्व्रह्मास्त्रयोः MBh. 5,7283. Spr. (II) 6158 (Gegens. विप्रयोग). घट° R. 2,103,29. पाणि° Rāgh. 7,19. पवनाग्नि° 8,6. von Flüssen R. 2,54,21. Vaitân. Bṛh. S. 60,9. *Conjunction* von Gestirnen Sûrjas. 7,1. 20. 22. Vaitân. Bṛh. S. 2, S. 6, Z. 17. 20. 17,11. fg. 20,4. 8. 9. 28, 30. 47,1. Bṛh. 2,20. 14,5. प्रचुरवित्त° adj. (f. या) *das Zusammenkommen —, Zufliessen von Reichthümern* Spr. (II) 6739, v. l. संपत्समागम Z. d. d. m. G. 8,96. — Vgl. धूर्त°.

समागमन (wie oben) n. *das Zusammenkommen, Zusammentreffen* MBh. 3,37. राम° *mit* Verz. d. Oxf. H. 13,b,24. *geschlechtliche Vereinigung* MBh. 1,4265.

समाघात (von हन् mit समा) m. *Zusammenstoss:* संपेटस्तु समाघातः कुड्यसंरब्धयोर्द्वयोः Daçar. 2,54. Sin. D. 421. *Kampf* AK. 2,8,2,74. H. 797. an. 4,127. Med. t. 226. Hall. 2,299. = घातन H. an. = वध Med.

समाङ्घ्रिक (von 2. सम + अङ्घ्रि) adj. *auf* (allen vier) *Füssen gleichmässig stehend:* सिंह Kathâs. 60,201; vgl. पद्येव — चतुर्भिश्चरणैः समम्। उत्थास्यति 197.

समाचयन (von 1. चि mit समा) n. *das Zusammenstellen:* भाण्डानाम् P. 3,1,20, Vârtt. 1.

समाचरणीय (von चर् mit समा) adj. *zu üben, zu verrichten, einzuschlagen:* ईदृशमिदमधर्मवर्त्म धर्मवत्समाचरणीयमामीत् Daçar. 69, 4. 5.

1. समाचार (wie oben) m. 1) *das Verfahren, Benehmen, Verhalten* MBh. 2,1339. सप्तस्त्रीणाम् 3,14658. R. 7,25,18 (pl.). Spr. (II) 7250. Kathâs. 78,14. तत्रधर्मसमाचारात्तत्र (so ed. Bomb.) MBh. 3,13641. वर्णाश्रमसमाचाराः LA. (III) 86,15. Paṅkat. 1,9,8. 15,15. दृढयुद्ध° *das Verfahren bei* MBh. 1,5408. 3,11727. am Ende eines adj. comp. (f. या): वृथाकुल° 1,5411. एकशील° 7624. तथाशील° 5,3668. एवंवृत्त° Suçr. 1,73,12. स्त्री° R. 5,12,46. शुचि° R. Schl. 2,65,7. साधु° Spr. (II) 7398. Paṅkat. 24,20. 41,17. पाप° MBh. 3,13782. R. Gorr. 2,37,18. क्रूर° 6, 98,23. तुद्र° Paṅkat. III,140. — 2) *Herkommen, das im-Gebrauch-Sein* Schol. zu Kâtj. Çr. 60,3. Kull. zu M. 8,143. तादृगेव विधिर्विरुद्धानां बन्धान्मोक्षक्रियासमाचारः (बन्धमोक्षात्मकः ed. Bomb.) so v. a. *Herkömmliche Art und Weise der Befreiung* Paṅkat. 109,11. तस्य च प्रथमं मया। ताम्बूलादिसमाचारः कर्तव्यो हि सदा भवेत्॥ so v. a. *das Herkömmliche Darreichen* Kathâs. 75,128. नीचानार्य° (wohl नीचानार्य° zu lesen) adj. *im Gebrauch stehend bei, gebräuchlich* R. 2,104,6.

2. समाचार (2. सम + चा°) m. *gleiche Sitte, — Gebräuche* MBh. 3,11242.

समाज (von अज् mit सम्) m. Schol. zu P. 2,4,56. 3,3,69. 7,3,60. Vop. 20,170. 1) *Versammlung, Gesellschaft* AK. 2,5,42. H. 491. 1414. Hall. 4,60. Âpast. 1,32,19. fg. M. 9,264. Jâǵñ. 1,84. MBh. 1,5221. 5698. 6972. fg. 4,34. 7,5448. 12,2606. R. 1,5,14 (16 Gorr.). 2,57,13. R. Gorr. 2,48,21. 94,21. 3,42,47. Spr. (II) 3626. Karaka 2,6. Kâm. Nitis. 7,40. Bhâg. P. 10,44,9. Paṅkat. 158,7. ब्रह्मणः, पशुपतेः *bei* MBh. 4,339. राज्ञाम् *von* R. 1,4,24. 5,27,19. Harîv. 2912. 4434. Spr. (II) 7352. Verz. d. Oxf. H. 79,b, No. 136, Z. 10. Bhâg. P. 4,21,12. तितिप° Rāgh. 5,76. सुर° 9,18. ज्ञन° Daçar. 59,5. प्रेता° *eine zum Zuschauen versammelte Gesellschaft* M. 9,84. द्यूत° Daçar. 69,13. प्रीति° Kathâs. 50,113. समाजं कृ *eine Versammlung veranstalten* Harîv. 8189. Verz. d. Oxf. H. 9,b,2. °मश्ववाट्याः (so die neuere Ausg.) Harîv. 4537. °वाट 4538. MBh. 1,6960. — 2) *das Zusammentreffen mit Jmd* (gen. oder im comp. vorangehend) Bhâg. P. 18,60,38. Vaitân. Bṛh. S. 87,17. 104,24. — 3) *Fülle, Menge* Hall. 4,1. सुख° Gît. 11,21. — 4) *eine best. Conjunction der Planeten* Vaitân. Bṛh. S. 20,5. 7. 9. — 5) = समज्ञ *Elephant* Abhidhânar. im ÇKDr. — Vgl. समज्ञ, सामाजिक.

समाज्ञा (1. ज्ञा mit समा) f. 1) (*anerkannte*) *Benennung, Name* Lîlâv. 5, 10,28 (समाख्या v. l.). Taitt. Up. 3,10,2. = ज्ञान, विज्ञान, उपासन Çaṅk. — 2) *Ruhm* AK. 1,1,5,12 (nach ÇKDr. eine von Bharata erwähnte v. l. für समज्ञा des Textes). H. 273. — Vgl. समख्या und समाख्या.

समाज्ञान (2. सम + ज्ञा°) n. *best. Mischung einer Augensalbe* Suçr. 2,341,20.

समातृ (2. स + मातृ°) f. *Stiefmutter* Bhâg. P. 4,8,19.

समाति wohl von 2. सम; s. घ°.

समात्मक (2. सम + आत्मन्) adj. *gleichmüthig* MBh. 13,5231. शमात्मक ed. Bomb.

समात्मन् adj. dass. MBh. 12,5870. महात्मनो (sic) st. समात्मानो ed. Bomb.; die richtige Lesart ist wohl महात्मानो.

समादान (von 1. दा mit समा) n. 1) *das Empfangen, Aufnehmen:* सर्वपापसमादानं नृशंसे चानृते च यत् MBh. 13,4581. = समीचीनग्रहण H.

an. 4,199 (fälschlich समासीन°). Mnd. n. 217. — 2) = नित्यकर्मन् H. an. = सौगताङ्गिक Mnd. *Erwiederung* Vjutp. 109.

समादेय (wie eben) adj. zu *empfangen* Spr. (II) 7194.

समादेश (von 1. दिश् mit समा) m. *Anweisung*, in comp. mit dem obj.: सीता° R. Gorr. 2,38. 3,49 in den Unterschrr. *Geheiss, Befehl:* गुरो: Spr. (II) 4139. Verz. d. Oxf. H. 12,a,34. fg. R. 4,34,10. 5,47,3. पितृ° 2,116,43.

समादेशन (wie eben) n. *das zu-wissen-Thun, Lehren:* एकान्त° Sin. D. 108,17.

समाधा (1. धा mit समा) m. (sic) = निष्पत्ति, विरोधभञ्जन und समाधान ÇKDa.

समाधातव्य (wie eben) adj. *in Ordnung zu bringen, gut zu machen* Hit. 110,13.

समाधान (wie eben) n. 1) *das Anlegen des Feuers* (= धाधान) Gobh. 1,1,13. — 2) in der Dramatik *das Stecken des Keimes* (बीज) Bhar. Nâṭyaç. 19,58. 72. Daçar. 1,26. Sin. D. 345. 164,15. Prataparudrîy. 21,a,5. — 3) *das Beilegen, in-Ordnung-Bringen, Gutmachen:* कार्य° R. 4,42,8. 5,53,11. 69,9. 6,93,31. अर्थदूषणं तु प्रचुरतरार्थदानाच्छक्यसमाधानम् Koll. zu M. 7,53. — 4) *das Versöhnen, Aussöhnen:* भार्याया: MBh. 12,9339. स्त्रीणां पतिसमाधाने काङ्क्षितम् 14,2739. — 5) *Rechtfertigung einer Behauptung, Beweisführung* Schol. zu Kap. 1,91. 151. 159. Sarvadarçanas. 129,3. Sin. D. 324,3. Kuval. 7,6. als Redefigur: मुखेन्दुरपि ते चण्ड मौ निर्दहति निर्दयम् । भाग्यदोषान्ममैवेति (dieses soll die kühne Behauptung rechtfertigen) तत्समाधानरूपकम् ॥ Kuval. 2,92. — 6) *das Aufmerken, Aufmerksamkeit:* बुद्धि° Çaṃk. zu Kâṭh. Up. S. 39. Verz. d. Oxf. H. 266,a,37. समाधानं कर् *aufmerken* Spr. (II) 4560. Paṇḍar. 1,7,70. *die auf das Höchste gerichtete Aufmerksamkeit, tiefe Andacht* H. 1378. Halâj. 1,128. चित्तैकाग्र्यं तु सल्लक्ष्ये (so lesen wir) समाधानमिति स्मृतम् Verz. d. Oxf. H. 223,b, No. 544, Z. 16. Vedântas. (Allah.) No. 12. MBh. 12,356. Asṭâv. 17,18. Spr. (II) 2810. Prab. 115, 19. Daçak. 64,6. Bhâg. P. 3,28,6. 11,29,2.

समाधानीय (wie eben) adj. *zu vereinigen, zu verbinden* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,109.

समाधि (wie eben) m. 1) *Zusammensetzung, Zusammenfügung:* व्यूह° Lâṭj. 7,7,29. *Fuge:* शिरोधरायाः Kir. 16,21. — 2) *Verbindung, Verein, das Ganze:* तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना Raghu. 1,29. पञ्चेन्द्रिय° Harîv. 11797 (= निरोध Nîlak.). वीणां षड्जरागादिसमाधियुक्ताम् (= चित्तैकाग्र्य Nîlak.) 8430. महाव्याहृतिसमाधिसंवृत (एघ) so v. a. *Achtgespann* R. 5,42,2. — 3) *Vollbringung:* तपः° Kumâras. 3,24. 5,6. — 4) *das Beilegen, in-Ordnung-Bringen, Gutmachen:* अपनीतस्य MBh. 13, 4640. — 5) *Rechtfertigung einer Behauptung, Beweis* Sarvadarçanas. 46, 14. 92,21. 135,20. — 6) *das Bringen in Harmonie, in Uebereinstimmung* RV. Prât. 11,33. 36. — 7) *Aufmerksamkeit* MBh. 3,11915. मनःसमाधिसंयुक्त 13,3525. समाधिं श्रवणे कुरु R. 7,20,6. 37,2,7. समाधिं कर्तुमर्हसि । यावन्न त्प्राणिनः सर्वान् (so ist zu lesen) क्लिश्यन्त्यसारिणः ॥ du musst darauf achten, dass nicht 1,41,39. शिथिल° adj. Mâlav. 23. यागं चक्रुः समाधिना Mâlatîm. P. 19,21. *Vertiefung in:* धर्म° R. 7,49,9. ब्रह्म° Bhâg. P. 3,5,46. 27,23. 5,17,16. ohne Ergänzung *die auf das Höchste gerichtete Aufmerksamkeit, tiefe Andacht* H. 83. Maitrâyaṇ. 6,18. 34. Anugîtan. Up. in Ind. St. 9,25. 29. Bhag. 2,44. 53. R. 2,91,22 (100,19 Gorr.). 3,77,38. Kap. 3,1,13. Asṭâv. 12,3. 18,87. 97. Nîlak. 33. Kumâras. 1, 60. 3,50. Spr. (II) 2283. 4633. 5046. 6569. Çiç. 15,1. Weber, Râmây. Up. 341. VP. 657. Mârk. P. 62,18. Prab. 8,14. Bhâg. P. 1,5,13. 2,2, 23. 4,21. 3,4,32. 8,21. 4,1,3. 5,18,1. Sarvadarçanas. 154,5. 9. 11. 156, 20. 160,18. fgg. 164,10. 178,16 (°सिद्धि). Madhus. in Ind. St. 1,22,20. fg. Wassiljew 137. 141. 159. 246. 327 (vier). Lot. de la b. l. 347. 519. समाधिमनु-स्था Asṭâv. 1,14. वि-धा Kathâs. 117,126. सेव् 128. भञ्ज् 127. °भङ्ग Pañcat. 162,24. °भेद् Kumâras. 3,40. Sin. D. 39,1. °भेदिन् Bhag. 8,78. °भृत् Çiç. 4,55. °य Verz. d. Oxf. H. 31,b, N. 3. समाधेरुत्थित: Kathâs. 117,139. समाधौ स्थित: 131. °स्थ Pañcat. 162,23. Hit. ed. Johns. 2464 (°स्थ). °निष्ठ Spr. (II) 6521. am Ende eines adj. comp.: ब्रह्मकर्म° Bhag. 4,24. समापित° Kathâs. 117,127. लग्न° Gîr. 3,15. मृषा° Bhâg. P. 1,18,31. नित्यारूढसमाधित्व 2,33,27. सविकल्पक und निर्विकल्पक (निर्विकल्प) Vedântas. (Allah.) No. 124. 140. Spr. (II) 77. संप्रज्ञात und असंप्रज्ञात Sarvadarçanas. 164,7. fgg. 179,16. fg. सवितर्क 164,16. सविचार 18. सानन्द 19. सास्मित 22. — 8) *eine zur Erinnerung an einen Heiligen errichtete Kapelle* Wilson, Sel. Works 1,30. 93. 99. 180. 357. — 9) in der Rhetorik: *eine best. rhetorische Figur* Sin. D. 614. Verz. d. Oxf. H. 207,a,27. fg. 208,b,17. 214,a,16. *Beilegung, eine übertragene Ausdrucksweise:* सन्यधर्माणामन्यत्राधिरोहणम् Prataparudrîy. 69,a,4. Kuvalaj. 1,93. Beispiel: कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च (ursprünglich dem Auge zukommende Thätigkeiten auf Blüthen übertragen) 94. *das Hinzutreten eines zufälligen fördernden Umstandes, Concurrenz* Kuvalaj. 117,b (141,b). Sin. D. 740. Beispiel: मानमस्या निराकर्तुं पादयोर्मे पतिष्यतः । उपकाराय दिष्टेदमुदीर्णं घनगर्जितम् ॥ ebend. — 10) N. *des* 17ten Kalpa: s. u. कल्प 2) *d*). — 11) N. pr. des 17ten Arhant's der zukünftigen Utsarpiṇî H. 55. eines Vaiçja Verz. d. Oxf. H. 25,b,4. — Die Lexicographen kennen folgende Bedd.: समर्धन AK. 3,4,29,100. H. an. 3,330. Mnd. dh. 38. नियम AK. 1,1,6,14. 3,4, 29,100. H. an. Mnd. प्रणिधान H. 1378. Halâj. 1,128. चित्तैकाग्र्य und मौन H. an. ध्यान Mnd. नीवाक AK. 3,4,28,100. Mnd. प्रतिज्ञा Schol. zu H. 278. सिद्धान्त Taik. 1,1,118. काव्यस्य गुणान्तरम् Mnd. — Vgl. बोधिसत्त्वबुद्धानुस्मृति°, ब्रह्मकर्म°, योग°, सम्यक्° und संधि.

समाधिगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

समाधित (von समाधि) adj. = संधित *verbündet, in freundschaftlichem Verhältniss stehend* Kathâs. 17,156.

समाधित्व n. nom. abstr. zu समाधि 7) Sarvadarçanas. 161,2.

समाधित्सु (vom desid. von 1. धा mit समा) adj. *zusammenzusetzen wünschend* Lâṭj. 7,7,29.

समाधिप्रकरण n. Titel einer Schrift Hall 143.

समाधिमतिका (von समाधिमती) f. N. pr. eines Frauenzimmers (*die Aufmerksame*) Mâlav. ed. Bomb. 32,10. fgg. समाकृतिका ed. Tull.

समाधिमत् (von समाधि) adj. *aufmerksam* R. ed. Bomb. 1,1,12. *andächtig* Vop. 3,134. Asṭâv. 18,97. Kumâras. 1,22.

समाधिराज m. Titel eines buddh. Sûtra Burnouf, Intr. 54. 68. 438. 542. Wassiljew 302. 327.

समाधिविधि m. Titel einer Schrift Hall 138.

समाधिसमानता f. *eine best. Meditation* Vicva. 20.

समाधिस्थल n. N. pr. einer *Oertlichkeit* in Brahman's Welt Kathâs. 115,76. 92.

समाधेय (von 1. धा mit सम्) adj. 1) *in Ordnung zu bringen:* कर्मन् R. 5,41,5. — 2) *zurechtzuweisen, zu unterweisen, zu belehren* MBh. 13, 136. R. 6,90,8. — 3) *einzuräumen, zuzugeben* Kull. zu M. 11,147. 167. Sidd. K. zu P. 6,1,116.

1. समान (von 2. सम) 1) adj. (f. ई in der älteren Sprache, sonst या P. 4,1,30. समानस्मात् ved.) a) *gleich, derselbe:* = एक AK. 3,4,10,130. H. 1461. an. 3,430. Mnu. n. 146. Hall. 4,9. — RV. 2,17,7. अर्थ 4,144,3. दिश् 132,4. समाने चिद्रथमातस्थिवांसा 2,12,8. अधन् 13,3. समानमूर्वं नद्यः पृणन्ति 35,3. समानो राजा विभृतः पुरुत्रा 3,55,4. 5,87,4. पतिरेकः समानः *einer und derselbe* 7,26,3. 57,3. 86,3. समानं नाम विभ्रतो विरूपाः 103,6. 8,88,8. 10,191,3. 4. AV. 12,1,9. Ait. Br. 3,47. 4,14. 6,5. TBr. 1,5,8,4. Kâts. Ça. 19,9,30. 22,4,40. Âçv. Ça. 1,3,22. VS. Pair. 4,171. Spr. (II) 3396. Vedântas. (Allah.) No. 69. mit seinem subst. componirt P. 2,1,59. °पत्ते TBr. 1,8,10,2. °पदे RV. Pair. 5,20. VS. Pair. 3,29 u. s. w. AV. Pair. 1,99 u. s. w. TS. Pair. 4,54. 13,6. P. 8,4,1. समानर्चि VS. Pair. 1,164. °यमे AV. Pair. 1,14. °शयने M. 4,40. °यानकर्मन् M. 7,163. — b) *gleichartig, nicht unterschieden, übereinstimmend* AK. 2,10,37. 3,4,10,130. H. an. Mnu. Sitzungsb. 7. Sarvadarçanas. 47, 30. 112,6. 7. °धर्मार्थसमाकुल R. 4,29,27. निखिललोकसमानकीर्ति adj. Râga-Tar. 5,480. mit instr. Mudrâr. 172,21. Spr. (II) 1077. mit gen. 4861. Vikram. 110. am Ende eines comp.: देव° R. 2,104,10. श्वेत° Varâh. Bṛh. S. 11,40. 53,106. Râga-Tar. 3,242. Bhâg. P. 5,1,34. 4,8. 8,8,42. चन्द्रार्कसमानतेजस् adj. MBh. 3,15711. R. Gorr. 1,15,23. Sûça. 1,78,2. Ragh. 2,74. स्वतनुसमानफलप्रद् Varâh. Bṛh. S. 45,13. *Seinesgleichen, Standesgenosse* VS. 5,22. समानो यज्ञ निष्ठाः TBr. 2,4, 8,2. TS. 6,2,11,2. Mânp. Up. 10. Spr. (II) 6847. Bhâg. P. 4,8,34. एतत्समान Kathâs. 24,24. so v. a. *Altersgenosse* (vgl. °वयस्) Spr. (II) 3772. *gleich groß* Bhâg. P. 5,20,7. 24. *gleich lang der Zeit nach:* अहोरात्राणि 21,3. 4. घनिलो 4,4,25. *von gleicher Bedeutung* AK. 2,9,37. *homogen* (ein Laut) Vop. 1,4. — c) *in der Mitte stehend, der mittlere:* मान्यदैर्घ्यसमानाभिर्गतिभिः Bhâg. P. 5,21,3. — d) *gemeinsam, all, insgesammt* RV. 3,38,6. समना समानान्यति देवान् 6,4,1. 4,5,7. 51,9. 7,33, 13. 8,62,12. 10,10,7. सपर्भं समानानां सपत्नानां विषासहिम् 10,166,1. AV. 3,30,6. 8,2,26. श्रिया समानानति सर्वान्स्याम 11,1,21. ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये VS. 19,45. यर्यं समानानां पर्येति TBr. 1,3,8,3. रुविस् Çat. Br. 1,6,4,3. गरु 4,3,3,13. Kâts. Ça. 8,8,30. कर्मन् Lâṭ. 5, 5,1. Bhâg. P. 4,31,3. — e) *ganz* (eine Zahl im Gegens. zu *Bruch*) P. 5,2,47. Vârtt. 4. — f) = सत् AK. H. an. Mnu. *seiend* nach einem adj. Lot. de la b. l. 409. fg. Burnouf hält das Wort in dieser Bed. für das partic. praes. med. von 1. मन्; vgl. jedoch unser *arm seiend* so v. a. *obgleich arm.* — g) = वर्णाभिद् H. an. — 2) f. ई *ein best. Metrum: 4 Mal 4 Trochäen* Ind. St. 8,329. fg. 468; vgl. समानिका und प्रमाणी. — 3) समानम् adv. *gleich wie, mit instr.* Kir. 18,4. im comp. ohne Flexionszeichen: सोमसमानकाल R. 5,33,40. — Vgl. स°, सामानिक, सामान्य.

2. समान (von 2. मन् mit सम्) m. *eine der fictiven Arten des Athems, in der Medicin gefasst als der Hauch, welcher, im Magen und in den Gedärmen thätig, das Feuer der Verdauung schürt, Durchfall und andere Krankheiten hervorbringt.* Wise 43. Sûça. 1,250,7. 15. AK. 1,1,2,39. Trik. 3,3,268. H. 1109. an. 3,430. Mnu. n. 146. AV. 10,2,18. VS. 22, 33. Ait. Br. 1,7. Çat. Br. 10,1,4,6. 11,8,3,6. 14,4,3,10. Kauç. 2. 73. Praçnop. 3,5. 8. Maitrâjp. 2,6. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,36. fg. MBh. 3,13964. 12,6844. 14,612. fgg. Verz. d. Oxf. H. 225,b,3. 4. 231,a,40. Vedântas. (Allah.) No. 54. personificirt als ein Sohn der Sâdhja MBh. 12,12396.

3. समान (2. स + 1. मान) adj. 1) *in Achtung stehend bei* (gen.) Vet. in LA. (III) 1,15. — 2) *nebst Groll* Bhâg. P. 1,16,36.

समानकरण adj. *dasselbe hervorbringende Organ habend:* Laute AV. Pair. 1,50. VS. Pair. 1,43. 30.

समानकर्तृक adj. *dasselbe Subject habend* P. 3,1,7. Davon nom. abstr. °ता f. Ind. St. 5,398, N. 1.

समानकर्मन् adj. *dieselbe Thätigkeit ausdrückend* Nir. 1,20.

समानकारण adj. *dieselbe Ursache habend:* य° RV. Pair. 11,23.

समानकाल adj. (f. या) 1) *gleichzeitig* RV. Pair. 6,9. 11,23. °कालम् adv. 1. — 2) *gleiche Dauer habend, von gleicher Quantität:* ein Vocal TS. Pair. 1,23.

समानकालीन adj. *gleichzeitig* und °त्व n. *Gleichzeitigkeit* Sâmaçr. im ÇKDa.

समानगति adj. *zusammengehend* so v. a. *übereinstimmend;* davon nom. abstr. °त्व n. Windischmann, Sancara 132.

समानगुण adj. *gleiche Vorzüge besitzend* Vet. in LA. (III) 13,1. 31,16.

समानगोत्र adj. = सगोत्र *demselben Geschlecht angehörig* Vop. 6,98. Çiksh. Ba. 28,15. Âçv. Ça. 12,10,1.

समानग्राम m. *dasselbe Dorf* gaṇa गहादि zu P. 6,2,138. Pân. Gaṇ. 3,10. — Vgl. समानग्रामीय und सामानग्रामिक.

समानग्रामीण adj. *in demselben Dorfe wohnend* gaṇa गहादि zu P. 4, 2,138. Âçv. Gaṇ. 4,4,27.

समानजन m. *Standesgenosse* (Gegens. जन überh.) Kâts. Ça. 22,1,29. Pañkav. Ba. 16,6,9. Lâṭ. 8,2,10. fgg. Anupadas. 4,12.

समानजन्मन् adj. 1) *gleichen Ursprungs* Çat. Br. 3,2,4,8. — 2) *gleichen Alters* M. 2,208.

समानजन्य adj. von समानजन Pañkav. Br. 16,6,9.

समानजाति adj. *gleichartig* Âçv. Ça. 2,1,24.

समानजातीय adj. dass. Vop. 6,98. सव: Çiksh. Ça. 8,9,11. 16,4,5. °त्व n. *Gleichartigkeit* Sidd. K. zu P. 5,2,42. तत्° Sarvadarçanas. 8,16. — — Vgl. सजातीय.

समानतन्त्र adj. *in einer Handlung vor sich gehend* Çiksh. Ça. 2,3,1. 3,12,13. 14,40,29.

समानेतस् (von 1. समान) adv. *gleichmässig oder gemeinschaftlich* RV. 4,51,8.

समानेता (wie eben) f. *Gleichheit:* कर्मण: Çat. Br. 7,3,4,4. RV. Pair. (ed. M.) 1,2. यम्बुधि: । दधौ (so lesen wir) प्रशान्तकोपस्य सज्जनस्य समानताम् Kathâs. 101,186. वासवो ऽपि विक्रमेण यत्समानतां (als comp. zu

fassen) न यति Ind. St. 8,330. Spr. (II) 5441. Verz. d. Oxf. H. 127,b,2 v. u.

समानेत्र (wie eben) adv. *auf demselben Fleck:* तिष्ठन् Çat. Br. 3,4,4, 14. 5,4,34. Liṭ. 18,5,9. 18. Kauç. 3.

समानत्व (wie eben) n. *Gleichheit* Kap. 1,55. 87. यथाग्निरग्नौ संहितः समानत्वमनुव्रजेत् Mânk. P. 40,39. Sarvadarçanas. 149,3. mit instr. Spr. (II) 761.

समानेदृश adj. *übereinstimmend, einträchtig* ṚV. 7,26,2.

समानधर्मन् adj. = सधर्मन् Vop. 6,98. *gleichartig, gleich:* भवति तितीन्दो ज्ञनैरनेत्रेश °धर्मा Kim. Nitis. 15,52.

समानन adj. 1) (2. स + आनना) *in Ehren stehend* Naiṣ. 2,23,a. — 2) (2. सम + आनन) *ein gleiches Gesicht habend:* इन्दुना Naiṣ. 2,23,c.

समाननामन् adj. = सनामन् Vop. 6,98.

समानेप्रभृति adj. = सप्रभृति *gleich beginnend* P. 8,3,84. TS. 5,3,6,2. Kiṭṭ. 20,10. Çat. Br. 2,2,2,9.

समानेबन्धु adj. *derselben Sippe angehörig* ṚV. 1,113,2. Çat. Br. 3,5,4,25.

समानेवर्हिस् adj. *auf derselben Opferstreu vor sich gehend* (so v. a. समानतन्त्र): हविस् Çat. Br. 2,2,4,6. 3,2,5,13. 5,2,3. Kiṭṭ. Ça. 5,7,4.

समानब्रह्मचारिन् = सब्रह्मचारिन् H. 80. Schol.

समानमूर्धन् adj. *ved.* P. 6,3,84.

समानय् (von 2. समान), °यति *gleichstellen:* न मामसञ्ज्ञनेनार्या समानयितुमर्हति R. 2,39,33. Gnat. 20.

समानयन (von 1. नी mit समा) n. 1) *das Zusammenführen, Herbeiholen* Bhâr. Nâiṣ. 19,41. — 2) *das Eingiessen:* घ° Kiṭṭ. Ça. 5,8,39.

समानेयोक्त्र adj. *gleich geschirrt* ṚV. 1,30,18.

समानेयोनि adj. *demselben Schooss entsprungen* Çat. Br. 5,3,4,3.

समानरुचि adj. *denselben Geschmack (an Etwas) habend;* davon nom. abstr. °ता f. Spr. (II) 4973.

समानरूप 1) adj. (f. घा) = सरूप Vop. 6,98. *von gleicher Farbe,* mit gen.: सोमवल्ल्याः Vaṭṭ. Bṛh. S. 54,108. am Ende eines comp.: दर्दुर° 33. *von gleichem Aussehen:* मेषादयो नामसमानरूपाः Z. f. d. K. d. M. 3, 389. — 2) f. घा (sc. प्रहेलिका) *ein Räthsel, in welchem die Worte zugleich in eigentlicher und in uneigentlicher Bedeutung* (शक्य und लक्ष्य) *zu verstehen sind,* Kâvjâd. 3,100.

समानर्ष adj. (f. ई) *denselben* Ṛshi (d. h. *Stammbaum*) *habend* Gobh. 3,5,3.

समानेलोक adj. *denselben Himmel gewinnend* Çat. Br. 3,5,2,16.

समानवचन adj. = सवचन Vop. 6,98.

समानवयस् adj. = सवयस् Vop. 6,98. *im gleichen Lebensalter stehend* Bhâg. P. 3,15,27.

समानेवर्चस् adj. *gleich lebhaft u. s. w.* ṚV. 1,6,7. Nir. 4,12.

समानवर्चस adj. *von gleichem Glanze:* समस्तकज्वलन° MBh. 1,1180.

समानवर्ण adj. (f. घा) = सवर्ण Vop. 6,98. 1) *von gleicher Farbe:* चातक° Vaṭṭ. Bṛh. S. 28,14. — 2) *denselben Vocale zeigend:* विवृति ṚV. Prât. 14,27.

समानशब्द adj. *eine Homonymie enthaltend;* f. घा (sc. प्रहेलिका) Bez. *einer Art von Räthseln* Kâvjâd. 3,103.

समानशय्य adj. *ein gemeinschaftliches Lager habend;* davon nom. abstr. °ता f. Liṭ. 8,12,2.

समानशाखा (so ist zu lesen) f gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. Davon adj. °शाखीय ebend.

समानशील adj. (f. घा) *von gleichem Charakter* Bhâg. P. 3,21,18.

समानसंख्य adj. (f. घा) *von gleicher Zahl,* mit instr. ṚV. Prât. 18,21.

समानसुखदुःख adj. *gleiche Freuden und Leiden habend;* davon nom. abstr. °ता f. Spr. (II) 6480.

1. समानस्थान n. *Zwischenstellung* Bhâg. P. 3,21,3.

2. समानस्थान adj. = सस्थान Vop. 6,98. *dieselbe Stelle im Munde habend* VS. Prât. 1,43. 80.

समानाक्षर n. *ein einfacher Vocal, kurz oder lang* (Gegens. संध्यक्षर *Diphthong*) ṚV. Prât. 1,1(11). 2,6. 8. AV. Prât. 3,42. TS. Prât. 1,2. 10,2. 15,6. zu P. 3,1,8.

समानाधिकरण 1) n. *grammatische Congruenz im Casus:* प्रथमा° *mit einem Nominativ* P. 3,2,124. — 2) adj. *coordinirt, in demselben Casusverhältniss stehend mit* (instr. oder im comp. vorangehend), *auf dasselbe Subject sich beziehend* P. 8,1,73. Taitt. Âr. 5,11. Kuṭṭ. 5,11. fg. 14,19. Sarvadarçanas. 49,21. fg. 106,5. Buḍḍhâr. 138. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 109. Davon nom. abstr. °ता ebend. °त्व n. Sarvadarçanas. 132,6. — Vgl. सामानाधिकरण्य und व्यधिकरण.

समानार्थ adj. (f. घा) *denselben Zweck habend,* — *verfolgend* Âçv. Ça. 1,3,20. Spr. (II) 2648. Davon nom. abstr. °त्व n. Kâç. Ça. 5,7,26.

समानार्षेय (1. समान + घा°) adj. *dieselbe Abstammung habend* Çiṅkh. Gṛhj. 2,2.

समानास m. N. pr. eines Nâga Cit. beim Schol. zu H. 1311; vgl. सुमनास्य, welches aber hier nicht in's Metrum passt.

समानास्यप्रयत्न (समान + आस्य-प्र°) adj. *mit derselben Anstrengung der Organe ausgesprochen werdend* VS. Prât. 1,43. Comm. zu AV. Prât. 1,17.

समानिका f. = समानी (s. u. समान) *ein best. Metrum: 4 Mal 4 Trochäen* Colebr. Misc. Ess. 2,159 (III,6). Ind. St. 8,367.

समानितम् (von 2. स + मानित) adv. *unter Ehrenbezeugungen* Kathâs. 122,8.

समानोत्तममध्यमाधम adj. *dem der Beste, der Mittelmässige und der Schlechteste gleich viel gelten* Bhâg. P. 4,20,13.

समानोदक (1. समान + उ°) adj. *ein entfernter Verwandter, der seinen Ahnen noch die Wasserspende darbringen darf:* सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते । °भावस्तु जन्मनाम्नोरवेदने ॥ M. 5,60. VP. 3,13,31.

समानोदर्क (1. समान + उ°) P. 6,3,84. *gleich endigend* TS. 5,3,8,2. Çat. Br. 3,2,2,9. 7,2,3.

समानोदर्य (von 1. समान + उदर) adj. *von derselben Mutter stammend* P. 4,4,108. 6,3,88. Vop. 6,98. AK. 2,6,2,34. H. 351. Halâj. 2, 353. Ait. Br. 3,37. m. *ein solcher Bruder* Bhaṭṭ. 7,86. — Vgl. सोदर्य.

समानोपमा (1. समान + उ°) f. *ein Gleichniss, bei dem das tertium comparationis lautlich gleich, begrifflich zweierlei Deutung zulässt,* Kâvjâd. 2, 29. Beispiel: बालेवोद्यानमाला सालकाननशोभिनी ebend. Hier ist सालकानन, auf बाला bezogen, in सालक *gelockt* + आनन *Gesicht* zu zerlegen; auf उद्यानमाला bezogen, in साल + कानन.

समान्तक m. *der Liebesgott* H. ç. 77 fehlerhaft für शमान्तक.

समान्तर (2. सम + अ°) adj. *von constanter Differenz* so v. a. woran

alles Andere gemessen wird, die Einheit bildend: समात्तरश्च पुरुषस्तुरंगस्त्रिसमात्तरः । कुञ्जरः स्यन्दनश्चैव पञ्चसमात्तरौ (so ist zu schreiben) स्मृतौ ॥ so v. a. *ein Pferd auf drei Mann, ein Elephant und ein Wagen auf fünf Mann,* Kām. Nītis. 19,23. fg.

समान्यौ (von 1. समान) adv. *gemeinsam, gleichmässig* ṚV. 1,165,1. 3, 54,7. 8,72,5.

समाप m. = देवयजन Vop. 6,71. Siddh. K. zu P. 6,3,97. समा आपो यस्मिन्निति बोध्यम् ebend.

समापक (vom caus. von आप् mit सम्) adj. (f. समापिका) *zu Ende führend, ergänzend:* धर्म° Buan. Niṭ. 18, 66. वाक्यसमापकत्वात् Dukaiv. im ÇKDa.

समापत्ति (von 1. पद् mit समा) f. 1) *das Zusammentreffen, Zusammenfallen* Kumāras. 7,75. Raghu. 7,20. द्वयद्वय° Vsudp. 219. — 2) *Zufall:* °दृष्ट *zufällig* Daçak. 138,5. — 3) *das Erreichen, Gelangen zu:* ज्ञानत्व° Jogas. 2,47. *das Werden zu:* लघुतूल° Verz. d. Oxf. H. 231,a,44. — 4) *das Annehmen der ursprünglichen Form* AV. Prāt. 4,73. fg.; vgl. समापाद्य. — 5) *Vollendung, Beendigung* Āpast. 2,27,18. fg. समाप्ति v. l. — 6) über die Bed. des Wortes bei den Buddhisten s. Lot. de la b. l. 348. fg. Wassiljew 102. 140. 240. 247. 272. — Vgl. समाप्ति.

समापन (von आप् simpl. und caus. mit सम्) 1) adj. *zu Stande bringend, vollführend:* व्रत° Kaṭh. 42. संध्या° MBh. 13,1254. — 2) f. आ *der höchste Grad, die höchste Stufe* MBh. 12,7948. — 3) n. a) *das Zustandebringen, Vollführen, Beendigung* Ait. Br. 3,44. Çāṅkh. Br. 3,20, 7. 4,14,2. 5,2,4. Gobh. 4,6,13. Kaṭh. 67. व्रतस्य M. 5,38. R. Gorr. 1, 4,135. व्रत° Bhāg. P. 8,16,45. पूजा° Kathās. 22,66. मृदुबन्धेनोपक्लाप्तस्य संदर्भस्य मृदुबन्धेनैव समापनम् Comm. zu Kāvjād. 1,45. संस्कार इति च प्राक्तनकार्यस्य समापनम् Sāh. D. 356. = समाप्ति H. an. 4,196. Med. n. 218. — b) *Ende* so v. a. *das zu-Grunde-Gehen:* देहस्यास्या समापनात् MBh. 1,4627. 12,283. = मरण Taik. 3,3,269. = वध H. 371. H. an. Med. — c) *Kapitel, Abschnitt* H. an. Med. दोःसंक्षोत्पत्ति° Mārk. P. 31 in der Unterschr. — d) = समाधान H. an. Viçva im ÇKDa. — e) = लब्धि Dhan. im ÇKDa.

समापनीय (von समापन) adj. *auf die Vollendung bezüglich* Kaṭh. 42. am Ende eines comp. P. 5,1,112. व्याकरण° Schol.

समापयितव्य (vom caus. von आप् mit सम्) adj. *auszustatten, zu versehen* Kauṣh. Up. 2,15.

समापाद्य (vom caus. von 1. पद् mit समा) adj. *in die ursprüngliche Form herzustellen* ṚV. Prāt. 13,11. fg. AV. Prāt. 4,117. 124. Journ. of the Am. Or. S. 16,170. Weber, Prātiçāk. 108. — Vgl. समापत्ति 4).

समापिन् (von आप् mit सम्) adj. *den Schluss von Etwas bildend* Kātjās. 99,26; vgl. 24.

समापिपयिषु (vom desid. des caus. von आप् mit सम्) adj. *zu Stande zu bringen —, zu vollführen wünschend:* सत्त्रम् MBh. 1,6872.

समाप्तचित्त (?) m. N. pr. eines Mannes Wassiljew 75.

समाप्तपुनरात्त und °क adj. *abgeschlossen und von Neuem wieder aufgenommen, n. ein best. Fehler des Ausdrucks: das Nachbringen —, Nachhinken eines Redetheils* Prātiṣākh. 62, b, 8. 64, b, 2. Davon nom. abstr. °पुनरात्तत्व n. Sāh. D. 590.

समाप्तलक्ष्य n. *eine best. hohe Zahl* Lalit. ed. Calc. 168,2 v. u.

समाप्ताल m. = पति Uṇādis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

समाप्ति (von आप् mit सम्) f. 1) *Vollendung, Beendigung, Abschluss, Ende* Med. l. 169. Çat. Br. 3,2,3,10. 13. Çāṅkh. Br. 8,9. Āçv. Çr. 1,2, 13. Kāty. Çr. 12,2,2. 22,1,13. Āpast. 2,27,18. fg., v. l. स्तुते: Nir. 6,18. सम° Lāṭj. 6,1,11. यज्ञस्य MBh. 2,1339. 14,2280. fg. R. 2,45,28 (43, 31 Gorr.). यज्ञ° R. Gorr. 1,43 in der Unterschr. व्रतस्य R. Schl. 1,21, 8. कार्यस्य 5,1,57. Buan. Niṭṣāç. 19,22. वर्षसहस्रस्य R. 7,105,13. प्रारूढ्य° Nilak. 31. Mārk. P. 8. 639, Çl. 7. धर्म° Verz. d. Oxf. H. 177,b, No. 403. उपासन° Çāṅk. zu Kaṭh. Up. S. 70. मण्डल °Vaṭṭa. Bṛh. S. 87,42. ग्रन्थ° Sarvadarçanas. 73,13. als Bed. von इति AK. 3,4,23 (22), 7. Hālār. 5,101. सासमाप्ति Rāja-Tar. 3,260. समाप्तिं सप्तवर्षैः साम्राज्यस्य समासदत् 4,674. समाप्तिं गम् MBh. 9,2288. Spr. (II) 5844. या Kathās. 50,161. प्र-या Spr. (II) 5437. नी Kumāras. 3,27. कृत्वाशेषसमाप्तिम् Vaṭṭa. Bṛh. S. 48,78. ध° Kāty. Çr. 1,4,14. ईषत्समाप्तौ P. 5,3,67. — 2) *Ende* so v. a. *das zu-Grunde-Gehen:* या समाप्तेः शरीरस्य M. 2,244. — 3) = समर्थन Med. — 4) = परिप्राप्ति Çārdar. im ÇKDa. — Vgl. वि°, वे-द्° (auch im gaṇa यावादि zu P. 5,4,29).

समाप्तिक (von समाप्ति) adj. (f. आ) 1) *der seine Studien beendigt hat* M. 3,145. — 2) *den Schluss von Etwas bildend* Kathās. 99,24.

समाप्तिर्या f. v. l. für समस्यार्या Buan. zu AK. 1,1,5,7 nach ÇKDa.

समाप्य (von आप् mit सम्) adj. 1) *zu erreichen, zu erlangen:* सर्वे लोकाः AV. 11,3,19. — 2) *zu vollbringen, abzuschliessen, zu beendigen* Malamāsat. im ÇKDa. unter समापित. n. impers. Sāh. D. 229,15.

समाप्रिय adj. Bhāg. P. 10,13,59 nach dem Comm. = संततानि आ समन्तात्प्रियाणि यस्मिन्.

समाप्लव (von प्लु mit समा) m. *das Baden, Bad:* °प्लवं कृ MBh. 3,10096.

समाप्लाव m. dass.: तीर्थेषु च समाप्लावं कुर्वन् MBh. 1,1031. 3,12612.

समाभाषण (von 1. भाष् mit समा) n. *Unterredung, Unterhaltung:* सुहृत्° *mit* Raghu. 6,16.

समार्म (zerlegt sich in सम् + आम; vgl. 1. व्याम) m. *Länge* AV. 18, 4,70. — Vgl. समाप्य.

समाम्नान (von मा mit समा) n. *das Aufzählen, Verzeichniss* Nir. 3,13.7,13.

समाम्नाय (wie eben) m. 1) *Aufzählung, Verzeichniss, Zusammenstellung* Nir. 1,1. VS. Prāt. 1,33. Gaim. 1,25. यज्ञ° P. Eiul. Bhāg. P. 12, 6,43. तन्त्र° 3,26 in der Unterschr. — 2) *eine literarische Composition, z. B. eine Veda-Redaction* Ind. St. 10,410. 412. Āçv. Çr. 1,1,1. पद्° *ein in Pada-Form redigirtes Stück* 5,9,17. 6,5,3. *die heilige Schrift überh.* Bhāg. P. 3,22,16. 5,4,3. 10,47,24. इत्यशेषसमाम्नायपुराणोपनिषद्रस 87,43. — 3) = संहार *Vernichtung der Welt:* सर्गस्थानसमाम्नायैः Bhāg. P. 7,7,24. — Vgl. पशु°, वर्ण° (auch TS. Prāt. 1,1. Verz. d. Oxf. H. 168,b, No. 374. 179,a, No. 410).

समाम्नायमय (von समाम्नाय) adj. *aus der heiligen Schrift gebildet, dieselbe enthaltend* Bhāg. P. 2,6,24.

समाम्नायिक in पशु° s. u. पशुसमाम्नाय in den Nachträgen.

समाम्य (von समाम) adj. *in die Länge gehend* AV. 4,16,3.

समाय (von 3. इ mit समा) m. *a visit, arrival* Wilson. Zur Bed. *arrival* citirt Benfey Mālatīm. 170,3, wo aber जीवितसमाय der dat. von

जीवितसम ist.

समार्पिन् (wie eben) adj. *gemeinsam —, neben einander auftretend:* ह्वीपि Çat. Br. 11,5,2,6. अ° *nicht für Viele gleichzeitig erreichbar:* स्वर्गो लोक: Ait. Br. 6,26.

समायोग (von 1. युज् mit समा) m. *Verbindung, Verbindung, Contact;* = संयोग und समवाय H. an. 4,50 (fälschlich समयोग gedr.). Mn. g. 36. Bhag. Nirjaç. 19,122 (es ist wohl न स davor zu ergänzen). शिवस-योग: Verz. d. Oxf. H. 92,a,2. mit instr. MBh. 1,5161. यशिना 15,1070. रोक्मिण्या (so ist zu lesen) Wanna, Kshatrâ. 235. पुंसा सक् MBh. 1,3979. Harîv. 12185. क्षेत्रबीज° M. 9,33. Spr. (II) 2037. कु° *mit* Vaiç. Bhp. S. 12,7. घस्य नानासमायोगे प: पश्यति MBh. 15,938. घपूर्वस्त्री° Kathâs. 19,85. धनुष: sc. शरेण R. 1,67,10. *das Zusammentreffen mit* (instr.) Vaiç. Bhp. S. 87,17. धर्मकर्म° adj. *in dem Gerechtigkeit und Thätigkeit sich vereint finden* Kir. Nîtis. 18,35. abl. समायोगात् *durch die Verbindung mit so v. a. mittels, in Folge von:* निश्चलाला° Jîân. 3,147. त-प:सिद्धि° MBh. 3,9919. Verz. d. Oxf. H. 65,a,34. b,23. सुरायान° Sin. D. 544. Daher समायोग = प्रयोजन H. an. Med.

समारभ्य (von रभ् mit समा) adj. *zu unternehmen, zu beginnen:* किं स्यात्समारभ्यतमं मतं व: MBh. 5,24.

समारम्भ (wie eben) m. 1) *Unternehmung, Beginnen* Bhag. 4,19. MBh. 5,3939. R. 3,46,11. 6,99,2. Bhar. Nirjaç. 19,26. Spr. (II) 947. समीक्ष्य *nach reiflicher Erwägung* 1195. घनर्थक Pañkat. 183,2. पस्त्वयार्थं समा-रम्भो रामं प्रति समाख्ति: R. Gorr. 2,9,31. ईक्षमान: समारम्भान् Spr. (II) 1134. समारम्भं कर् Kathâs. 50,163. घपत्यार्थ: समारम्भ: कृतो धर्मेप्सया मया MBh. 3,16639. समारम्भास्तस्य गूढं विपेदिरे Raghu. 17,53. विच्छि-द्यते समारम्भा: Spr. (II) 6062. मया: 6850. यदि दत्त: समारम्भात्कर्मणो भाग्भवते फलम् 5211. व्यूरुणाम् MBh. 5,5733. पुरुस्य R. Gorr. 1,4,107. क्रिया° MBh. 1,3100. घत्युन्माद° 4,400. Harîv. 11785. R. Gorr. 1,4, 140. Spr. (II) 1129. 1912. 5064. Kathâs. 101,163. Mâlav. P. 56,26. *Unternehmungsgeist* Spr. (II) 886. — 2) *Beginn, Anfang:* तरुणिम° Spr. (II) 2502. — समारम्भे Harîv. 14812 fehlerhaft für समारभे, wie die neuere Ausg. liest. समारम्भे bei Kîr. zu Çiç. 48,18 fehlerhaft für स-मारम्भणे.

समारम्भण n. 1) *das Anfassen:* कुशकुसुमसमारम्भणव्यग्रहस्त Z. d. d. m. G. 27,21. — 2) = समालम्भन *Salbe* Kîr. zu Çiç. 48,18.

समारम्भिन् adj. *am Ende eines comp. behängt mit (?):* सुधाफल° Verz. d. Oxf. H. 72,a,23. fg.

समाराधन (vom caus. von राध् mit समा) n. *das Zufriedenstellen, sich-geneigt-Machen* Rasn. 2,5. 18,10. गुरुचरणारविन्दयुगल° Sarvadarça-nas. 91, z. 6. नाथं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् *das einzige Mittel zufrieden zu stellen* Mâlav. 4.

समारुरुक्षु (vom desid. von 1. रुह् mit समा) adj. *hinaufzusteigen wün-schend:* दिवम् Raghu. 3,69.

समारोप (vom caus. von 1. रुह् mit समा) m. 1) *Versetzung in* (loc.) Kîr. Ça. Comm. 377,18. 378,2. 4; vgl. Ind. St. 3,311. — 2) *das Ueber-tragen auf* (loc.), *Beilegen, Zuschreiben* Daçar. 1,7. Sin. D. 703. Pra-tîpar. 87,a,1. 2.

समारोपण (wie eben) n. *das Versetzen z. B. des Feuers an einen an-dern Ort* (s. unter d. Wurzel) Schol. zu Âçv. Ça. 3,10,4. fgg. Sây. zu RV. 8,43 Einl.

समारोहण (von 1. रुह् mit समा) 1) m. *Aufstieg:* der Sonne Nir. 12, 19. स्वर्गस्य लोकस्य Çat. Br. 3,7,2,23. — 2) *das Wachsen:* °हीना: केशा: Mâlav. P. 48,21.

समार्ध scheinbar MBh. 5,4312, wo aber mit der ed. Bomb. शमार्ध zu lesen ist.

समार्धक (von 2. सम + घर्ध) adj. *von gleicher Bedeutung* AK. 2,6,2,37.

समार्धिन् adj. *Frieden wünschend:* रामेण R. Gorr. 1,4,97; vgl. 2. सम 2) a).

समार्बुद (समा + घ°) n. *hundert Millionen Jahre* MBh. 13,663.

समार्ष (2. सम + घार्ष) adj. (f. घा) *von demselben Rshi abstammend* MBh. 13,3036.

समालक्ष्य (von लक्ष् mit समा) adj. *sichtbar, wahrnehmbar* Sin. D. 128.

समालभन (von लभ् mit समा) n. *Salbe* H. 636. Çiç. 49,1, v. l. — Vgl. समालम्भन.

समालम्बिन् (von लम्ब् mit समा) m. *ein best. wohlriechendes Gras,* = भूतृण Râgân. im ÇKDa.

समालम्भ (von लभ् mit समा) m. 1) *das Schlachten* (vgl. लभ् mit घा): पशु° MBh. 12,1235. मनुष्याणाम् 2,864. — 2) *Salbe* AK. 3,3,27. गोरोचना° adj. *gesalbt mit* MBh. 13,6149.

समालम्भन (wie eben) n. 1) etwa *das Salben:* अ° Gobh. 2,7,27. — 2) *Salbe* Taik. 2,6,40. Hall. 2,385. R. 4,25,26. Çiç. 49,1.

समालम्भिन् (wie eben) adj. *schlachtend:* पशु° MBh. 12,1214.

समालाप (von 1. लप् mit समा) m. *Gespräch, Unterhaltung* Spr. (II) 861. Kathâs. 17,81. 74,3. कथापे वरयोषिता। सक् चक्रे समालापम् 17, 125. घन्योऽन्यम् Daçar. 3,12. घन्योऽन्य° Kathâs. 22,238.

समालिङ्गन (von घालिङ्ग्, घालिङ्ग्य् mit सम्) n. *das Umarmen:* कासा° Vaiç. Bhp. S. 74,3.

समाली f. *Blumenstrauss* Taik. 3,2,3.

समालोक (von लोक् mit समा) m. *das Erblicken:* प्रियतम° Gît. 11, 32. Sin. D. 130.

समालोकन n. 1) *das Betrachten, Besehen* Vaiç. Bhp. S. 78,4. — 2) *das Erblicken* Râga-Tar. 4,227. Çâk. 1,62.

समालोकिन् adj. *der hineingeschaut —, studirt hat:* सर्वशास्त्र° Spr. (II) 4977, v. l. 6654.

समालोक्य n. nom. abstr. von समलोक adj. *derselben Welt theilhaftig werdend:* (भार्या:) घापु: समालोक्यं तेनैव Mâlav. P. 119,20. das correcte सामलोक्य wäre an dieser Stelle ein unbeliebter Fuss.

समालोच (von लोच् mit समा) m. als Bed. von संवेदन H. an. 4,200.

समालोचिन् adj. v. l. für समालोकिन् Spr. (II) 6654.

समावच्छस् (von समावत्) adv. *gleich lang* TS. 2,3,8,1. 2.

समावज्जामि adj. *gleichförmig* Ait. Br. 3,27.

समावद्वीर्य adj. *gleich stark* (Gegens. नानावीर्य) TS. 3,2,9,1. 5,4,8,3. 6,1,9,5. Ait. Br. 2,21. 3,27. 49.

समावद्भाज् adj. *einen gleich grossen Antheil habend* Ait. Br. 4,6. Pañkav. Br. 5,10,14.

समावत् (von 2. सम) adj. *gleichartig, gleich gross, gleich viel* Vârtt.

zu P. 5,4,30. Çat. Br. 11,1,6,24. TBr. 1,5,2,4. TS. 1,6,10,5. कनीयंस्, स° , भूयंस् 5,7,10,3. °वत् adv. *gleich viel* 2,5,6,4. समार्वत्यभूनां प्रत्यर्थमानानाम् 5,1,4,3. Kâṭh. 11,3. 19,2. समावद्भ्येव दक्षिणा नयेयुः Âçv. Çr. 9,1,10.

समावर्तन (vom caus. von वर्त् mit समा) n. *das Heranziehen, für-sich-Gewinnen* Daçar. Comm. 187,6.

समावर्त (von वर्त् mit समा) m. *Wiederkehr:* लोके मर्त्यानाम् MBh. 11, 168. unter dem Bilww. Vishṇu's 13,7032.

समावर्तन (wie eben) n. *die Heimkehr des Schülers nach vollendeter Lehrzeit* M. 2,108. Verz. d. B. H. No. 321. 862. 1020. 1031. Verz. d. Oxf. H. 86,b,8. 9. Verz. d. Cambr. H. 68. Çâṅkh. zu Kâṭhân. Up. S. 318. Bhâg. P. 5,9,4. Sarvadarçanas. 124,2. 3. 125,11. अचिरनिवृत्त° adj. Kull. zu M. 2,138. कृत° adj. zu 6,1.

समावर्तनीय (von समावर्तन) adj. *auf die Heimkehr bezüglich* Kâṭy. 42.

समावह् (vom 1. वह् mit समा) adj. *herbeiführend, bringend, bewirkend:* लज्जा° Suçr. 2,147,18.

समावाप (von 2. वप् mit समा) m. *das Vermengen der Feuer, ein Opfer wobei dieses stattfindet* Âçv. Çr. 4,1,9. — MBh. 7,4839 fehlerhaft für समावाय.

समावाय m. = समवाय (die Verlängerung durch das Métrum veranlasst) *Zusammenkunft, Versammlung; Schwarm, Menge; Verbindung, Aggregat* Bhar. zu AK. 2,5,40 nach ÇKDr. राज्ञ° MBh. 1,7066. वीर° 3,308. देव° 13,3889. शलभानाम् 8,891. नानाशस्त्र° m. und auch adj. 7, 4339 (°समावाप ed. Calc.). 7351. 9,531. गुणानाम् R. Gorr. 1,1,103. सर्वलिङ्ग° Suçr. 2,401,14. कर्म° Bhâg. P. 2,8,14.

समावास (von 5. वस् mit समा) m. *Aufenthaltsort:* गजसंघ° MBh. 3, 11562. am Ende eines adj. comp. Paṇḍat. 160,3. — In der Inschr. bei Colebr. Misc. Ess. 2,307 ist °समावासित (s. u. dem caus. von 5. वस् mit समा) st. °समावासात् zu lesen, nicht °समावासो ऽत्र, wie Hall im Journ. of the Am. Or. S. 7,37 annimmt.

समावृत्त s. u. वर्त् mit समा. Davon समावृत्तक = समावृत्त Çabdar. im ÇKDr. यससमावृतक s. u. यससमावृत्ति.

समावृत्ति f. = समावर्तन MBh. 12,8576.

समावेश (von 1. विश् mit समा) m. 1) *das Hineintreten, Hineinfahren* Bâlar. 16. — 2) *das Zusammenfallen* so v. a. *Aufgehen in:* एकात्र° RV. Prât. 3,2. परस्पर° Harîv. 14396. — 3) *das Zusammenfallen* so v. a. *gleichzeitiges Eintreten, das neben-einander-Bestehen:* दोषौषधि° MBh. 14,8716. Daçar. 3,18 = Sîn. D. 293. P. 1,4,1, Vârtt. 1. Schol. zu 2. 3. 5,1,122, Vârtt. Kâç. zu P. 3,2,66. Kiç. zu 84. Schol. zu 4,1,180. 5,1,120. Sîn. D. 94,14. Sarvadarçanas. 44,11. fg. Kusum. 16,20. — 4) *das Zusammenfallen* so v. a. *Uebereinstimmen mit* Uṇâdik. zu Uṇâdis. 1,108 (S. 26, Z. 1. 13). — Statt वज्रिवीरसमावेशे Harîv. 15789 liest die neuere Ausg. °वीरं समावेश्य; die richtige Lesart wird wohl समाविश्य sein.

समाश (von 2. अश् mit सम्) m. *das Essen, Geniessen* P. 6,2,71, Schol.

समाशिर् adj. *gemischt:* Soma RV. 1,30,2. — Vgl. साशिर्.

समाश्रय (von 1. श्रि mit समा) m. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *Verbindung, Anschluss an:* युवतिसमाश्रयसंप्रवृद्धचित्त Vârân. Bṛh. 14, 8. °समाश्रयात् *in Folge von, vermöge* MBh. 1,3169. R. 4,20,14. Verz. d. Oxf. H. 49,b,16. am Ende eines adj. comp.: सदृशजनसमाश्रयः कामः Mṛicch. 127,20. — 2) *Zuflucht, Zufluchtsstätte* Spr. (II) 6852. Kîm. Nîtis. 8,59. समाश्रयं दुर्गमाकुर्मित्रं वा साधुसंमतम् 60. सदातिथिप्रियो रात्रावागतानां समाश्रयः Mârk. P. 61,6. Kathâs. 117,76. कलिविद्राविते स्यैको यो (निषधो नाम देशः) धर्मस्य समाश्रयः 104,81. Râja-Tar. 6,303. Spr. (II) 4822. गृहे तत्र कि रिष्टानामशेषाणां समाश्रयः Mârk. P. 50,39. — 3) *Wohnstätte, Aufenthaltsort:* कुतश्चिन्: Paṇḍat. 126,3. am Ende eines adj. comp.: पक्षकाद्रि° *Bewohner von* Kathâs. 48,63. वनराजि° (मृगाः) R. 4,13,9. गुहां दुर्गसमाश्रयाम् so v. a. *befindlich* —, *gelegen in* 54,13. — 4) *Beziehung, Bezug* Bhar. Nîtiç. 18,48. am Ende eines adj. comp.: कथा धर्मसमाश्रया *sich beziehend auf, betreffend* MBh. 3,13418. Vârân. Bṛh.S. 104,62. — 5) *das Sichbegeben nach, in:* घरण्यसमाश्रयोन्मुख Ragh. 8,13. — 6) MBh. 3,11243 vielleicht fehlerhaft für समाश्रम d. i. 2. सम + श्रा°.

समाश्रयणीय (wie eben) adj. *zu dem man seine Zuflucht nehmen muss* Paṇḍat. 154,13. *in dessen Dienst man sich begiebt* so v. a. *Herr* (im Gegens. zu समाश्रित) *Diener* Spr. (II) 5449.

समाश्रयिन् (wie eben) adj. *einnehmend* (einen Platz), *in Besitz von Etwas gelangend:* सूत्रामविष्टरार्ध° Râja-Tar. 1,100.

समाश्लेष (von 2. श्लिष् mit समा) m. *Umarmung:* °श्लेषमुपेत्य MBh. 1, 7536. Spr. (II) 6853. Milatin. 158,12.

समाश्लेषण n. dass. Paṇḍat. 1,3,48.

समाश्वास (von 1. श्वस् mit समा) m. 1) *das Aufathmen, Sichberuhigen, gutes-Muths-Werden* R. 2,60 und 3,63 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 13,a,4 v. u. — 2) *Trost:* ते स्मार्तानां समाश्वासः MBh. 2,1513. 3,14136. मूर्तिधर् Kathâs. 13,181.

समाश्वासन (vom caus. von 1. श्वस् mit समा) n. *das Trösten* R. Gorr. 2,60 in der Unterschr. Paṇḍat. 162,18. *Trost* Vikr. 28,17.

समाश्वास्य (wie eben) adj. *zu trösten* R. 2,4,22. R. Gorr. 2,31,12. Kathâs. 31,208.

समास (von 2. अस् mit सम्) m. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *Zusammenfassung, Zusammenfügung, Vereinigung, Verbindung:* हेमन्तशिशिरयोः Ait. Br. 1,1. 3,41. Çâṅkh. Br. 5,1. सर्व° Kâty. Çr. 12,6, 18. Liṭ. 2,6,4. 10,12,14. Kâṭhân. Up. 5,4,7. R. 7,94,6. Sarvadarçanas. 140,22. दण्डसमासा वीणा Çâṅkh. Çr. 17,3,9. समासेन *insgesammt* M. 7, 202. — 2) *eine kurze* —, *gedrängte Darstellung;* = संक्षेप H. 1432. am. 3, 758. Mân. s. 43. Hall. 4,61. MBh. 3,10854. Suçr. 1,2,8. समासव्यासयोगतस् Bhâg. P. 1,9,27. Vârân. Bṛh. S. 61,1. इति तत्समासः 68,94. °कृत् 47,2. विस्तरेण समासेन च MBh. 1,27. व्याससमासाभ्याम् 3,67. समासेन *in Kürze, mit kurzen Worten* Kaush. Up. 2,15. M. 2,25. 3,20. 9,101. 12,39. Spr. (II) 5272. Bhag. 13,3. 18,50. Bhar. Nîtiç. 18,40. Suçr. 1, 112,13. 2,146,6. Brahma-P. in LA. (III) 49,6. Verz. d. Oxf. H. 80,a,12. Bhâg. P. 2,7,50. Paṇḍar. 2,3,46. Ind. St. 1,13,2. समासात् dass. Harîv. 8367. Vârân. Bṛh. S. 12, Anf. 56,31. समासतस् dass. 1,5. 8,62. 60,22. 68,117. M. 1,68. 89. 7,136. Bhag. 13,18. R. 4,34,7. 5,56,49. Siddhântaç. 53. Suçr. 1,124,19. Weber, Ġjot. 24. Vikr. 19,10. Kathâs. 25,65. Tattvas. 25. व्याससमासतस् MBh. 12,1296. am Anf. eines comp. ohne Fle-

xionszeichen: समासव्यासधारण MBu. 1,51. समासव्यासकीर्तन 88. °फल Varāh. Bṛh. S. 68,96. Tattvas. 52. — 3) in der Gramm. *a) Compositum* H. an. ṚV. Prāt. 10,10. 11,13. 15,9. VS. Prāt. 1,27. 5,1. AV. Prāt. 2,62. fg. 4,9. 27. 43. Ind. St. 16,408. P. 1,2,46. 2,1,3. 5,3,106. 6,1, 223. Verz. d. Oxf. H. 162,*a*,15 u. s. w. Sin. D. 566. Prātiśāk. 11,*a*,9 (नातिदीर्घ° adj.). नित्य und अनित्य P. 2,1,3, Schol. समासाङ्ग ṚV. Prāt. 1,32. °प्राय Taitt. 3,3,25. Hall. 1,143. तद्धित° Nir. 2,2. दिक्° P. 1, 1,28. तृतीया° 30. षष्ठी° 7,4,60, Vārtt. 1. Sarvadarçanas. 92,10. सप्तमी° Kāç. zu P. 8,4,35. बहुव्रीहि° P. 1,1,28, Schol. — *b*) = संधि VS. Prāt. 5,39. Cit. im Comm. zu 43. — 4) in der Astr. Bez. *eines best. Kreises* Sūrjas. 6,2.6. — 5) = समर्थन, समर्थना H. an. Med. — Vgl. तत्र°, सामासिक und व्यास.

समासक्ति (von सञ्ज् mit सम्) f. *das Hängen an* (loc.) Mārk. P. 40,22. 26. °सक्त्या *mit Hingebung* Rāmāyaṇa-Tāp. 6,167.

समासङ्ग (wie oben) m. *Uebertragung:* स तै कार्यसमासङ्गमवसाय्य कृतमति so v. a. *diese Angelegenheit übertragend* R. 4,42,7.

समासत्ति (von 1. सद् mit सम्) f. *Nähe* P. 3,4,59.

1. समासन (von 2. आस् mit सम्) n. *das Zusammensitzen mit* (सह) MBu. 3,1196.

2. समासन (2. सम + 1. आ°) adj. *auf ebenem Boden sitzend* Mārk. P. 39,29.

समासभावना f. *composition of the sum of the products* Colebr. Alg. 171. *the rule for finding the sine of sum of two arcs* Siddhāntaçir. S. 268.

समासम् (von 2. अस् mit सम्) absol. *zusammenschiebend* Kāṭhaka-Up. 7,15,3. *vereinigend, verbindend* Āçv. Çr. 5,14,14. — Vgl. auch u. 2. अस् mit सम्.

समासमाविनाभावी (?) Sarvadarçanas. 5, N.

समासवस् (von समास) m. *Cedrela Toona* (तुन) Roxb. Rāǵān. im ÇKDr.

समासवाद m. Titel verschiedener Schriften Notices of Skt Mss. 222. Hall 61. Verz. d. B. H. No. 761. Verz. d. Tüb. H. 20.

समासमंहिता f. *eine in gedrängter Form dargelegte astr.* Saṃhitā Verz. d. B. H. No. 854.

समासाद्य (vom caus. von 1. सद् mit सम्) adj. *erreichbar, erlangbar* AK. 3,2,42.

समासान्त (समास + अन्त) m. *ein bei der Bildung eines Compositums daran tretendes Suffix* P. 5,4,68. Pat. zu 6,2,197. Verz. d. Oxf. H. 152,*a*,16. 165,*a*,1 v. u.

समासार्था f. = समस्या 2) AK. 1,1,5,7.

समासार्ध (2. स + मास-अर्ध) adj. (f. आ) *nebst einem halben Monate* Rāǵa-Tar. 4,392.

समासिन् s. व्यास°.

समासेचन (von सिच् mit सम्) n. *das Zusammengiessen* Kauç. 17.

समासोक्त (समास + उक्त) adj. 1) *kurz ausgedrückt, aus wenigen Worten bestehend* Varāh. Bṛh. S. 46,83. Sin. D. 439. — 2) *in einem Compositum stehend* Schol. zu Kāt. Çr. 1,6,28.

समासोक्ति (समास + उ°) f. *kurze Ausdrucksweise*, Bez. *einer Redefigur, bei der eines Andern Art und Weise zu sein auf einen in Rede stehenden Gegenstand übertragen wird in Folge einer Uebereinstimmung der Handlungen, des Geschlechts oder der Attribute* Sāh. D. 703. Kuval. 61,*b* (78,*a*). Prāṭāpar. 86,*b*,1. Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,17. Beispiele Spr. (II) 760 und 6332.

समास्थ MBu. 5,6029 fehlerhaft für समस्थ: vgl. Spr. (II) 3891.

समास्या (von 2. आस् mit सम्) f. *das Zusammensitzen mit, consessus:* तैः MBu. 3,27. अनसूया° R. 1,3,17. मार्कण्डेय° MBu. 1,223 (°समस्या ed. Calc.). 466. 468. मार्कण्डेयसमास्यापर्वन् Titel des Abschnittes Buch 3, Kap. 8 fgg. — Vgl. समस्या.

समाहर (von हृ mit सम) adj. *vernichtend* (vgl. हृ mit सम्): कालः सर्वसमाहरः R. 7,104,2.

समाहर्तृ (wie oben) nom. ag. *Einnehmer* (als Amt) Vjutp. 95. Pāṇ. 156,17. अर्थ° dass. M. 7,60.

समाहार (wie oben) m. 1) *das Ergreifen:* पञ्चद्रव्य° Gṛihjās. 2,44. — 2) *Zusammenfassung, Summirung; Summe* Āçv. Çr. 10,5,7. ṚV. Prāt. 16,7. Comm. zu TS. Prāt. 18,4. zweier Töne TS. Prāt. 1,40. P. 1,2, 31. als eine der Bedd. von च (wo es nämlich mehr als zwei Gegenstände *zusammenfasst*) AK. 3,4,25(22),2. Vop. 6,4, Einl. वागादि° *die Summe* Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 82. त्रयाणां पदानां समाहारस्त्रिपदम् *Zusammenfassung in Eins* Comm. zu TS. Prāt. 1,61. 9,15. 10,6. 14,1. P. 2,1,51. 2,29, Schol. — 3) *Collection, Menge* MBu. 12,3861. Buāc. P. 12,7,2. फलमूलसमाहारैर्मरुद्गणैः MBu. 15,725. यज्ञ° Kathās. 122,63. नानावाक्य° MBu. 1,2336. गुण° Milat. 155,9. देहं निष्फलमाणसमाहारम् Kathās. 38,111. — 4) = प्रत्याहार 4) Vop. 1,1. — 5) *das Zurückziehen* (der Sinne von der Sinnenwelt): सर्वेन्द्रिय° (vgl. प्रत्याहार) Kāś. Nīlas. 2,31. — Zu गङ्गावर्ते समाहारे Verz. d. Oxf. H. 11,*b*,13 v. u. vgl. गङ्गागर्भसमाहारां 49,*b*,28. Nach den Lexicographen: = समुच्चय AK. 3,3,16. H. 1524. = संक्षेप 1432. an. 4,253. Hall. 4,51. = एकत्रकरण H. an.

समाहारवर्ण m. Bez. der *Diphthonge* ऐ und औ Pat. bei Gold. Mān. 41.

समाहार्य (von हृ mit सम) adj. 1) *zusammenzutragen, zu sammeln:* धर्मेणार्थः MBu. 13,6447. — 2) *zusammenzufassen* Çat. Br. 2,3,4,16. Āçv. Çr. 7,8,2.

समाहित s. u. 1. धा mit सम. Bei den Rhetorikern so v. a. *gedämpft, unterdrückt* Sāh. D. 753. Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,7; vgl. Pandit 2,233.

समाहितिका (von समाहिता) f. N. pr. eines Frauenzimmers (*die Aufmerksame*) Mālav. 36,2. fgg. समाधिमतिका ed. Bomb.

समाहृति (von हृ mit सम) f. 1) = संयम AK. 1,1,5,7. H. 257. — 2) *das Zurückziehen:* इन्द्रियाणां विषयेभ्यः H. 83.

समाह्वेय adj. *nebst den Māhoja* Mārk. P. 57,51.

समाह्वय (von ह्वा mit सम) m. 1) *Herausforderung, Streit* H. 797. an. 4,221. Med. j. 128. Hall. 2,299. वाक्यनमोः MBu. 14,640. — 2) *ein Thierkampf mit Wetten* AK. 2,10,46. H. 488. H. an. Med. M. 9, 221. fgg. Jāṭ. 2,203. Verz. d. Oxf. H. 263,*a*,25. — 3) *Benennung, Name* Hall. 5,33. neutr. Pāṇ. 3,3,6. am Ende eines adj. comp. 7. 4,3,32 (S. 249). — Vgl. लक्ष्मी°.

समाह्वा (wie oben) f. *eine best. Pflanze*, = गोत्रिका Çabdam. im ÇKDr.

समाह्वातृ (wie oben) nom. ag. *Herausforderer:* देवनाय MBu. 3,247.

समाह्वान (wie oben) n. 1) *das Herbeirufen, Anrufen* R. 5,29,22. Pāṇ.

KAT. 193,17. — 2) *Herausforderung:* zum Kampfe MBn. 5,2255. 8,1798. R. 4,14,13. zum Würfelspiel MBn. 2,2010. 2494. 3,2261. — 3) *ein Thierkampf mit Wetten* Suça. 2,146,3.

समिक 1) in Ableitungen von compp. mit समा *Jahr;* vgl. द्वै° (auch P. 5,1,86, Schol.). — 2) n. = शेल (vulgo वडसा) ÇKDn. nach ÇABDAR. *a pike, a dart* WILSON nach ders. Aut.

समित् (von 3. इ mit सम्) f. *feindliches Zusammentreffen, Kampf* AK. 2,8,3,74. H. 797. HALLÂ. 2,298. nom. समित् KATHÂS. 30,7. समिति MBn. 3,667. 6,3062. 3339. KATHÂS. 30,103. 103,36. NAISH. 12,75. समितम् abl. KÂRAṆḌ. (II) 67,3. समित्सज्ञ *kampfbereit* RÂÇA-TAR. 4,171. — Vgl. सामिति.

समित 1) adj. (2. स + मित) *gemessen* (Gegens. अमित) KÂRAṆḌ. (II) 67,2. = संमित *gleiches Maass habend, gleich:* वेदै: MBn. 1,3842. अङ्गुष्ठपर्व° Suça. 2,346,3. — 2) f. आ *Weizenmehl* H. 402. BHÂVAPR. 5; vgl. सामित, समीद् und LIA. 1,247, N. 3.

समितर् MBn. 10,357 fehlerhaft für शमितर् *Schlächter.*

संमिति (von 3. इ mit सम्) f. 1) *Zusammenkunft, Versammlung, Rath, Volksversammlung* AK. 2,7,14. 3,4,44,73. TRIK. 3,3,190. H. 481. an. 3, 311. fg. MED. t. 169. HALLÂ. 5,35. ṚV. 1,95,5. राजा न सत्य: समितीरियान: 9,92,6. 10,97,6. 11,8. AV. 6,88,3. 7,12,1. ये मेनिरे समितयस्तेषु चारु वदेम ते 12,1,56. 3,52. सभा च समितिश्च 15,9,2. 3. KÂṬHAK. Up. 5,3,1. राज्ञ° MBn. 1,505. 4417. 3,2195. देव° 10357. समात्य° 12,11991. लोकवीर° BHÂG. P. 9,10,6. — 2) *gemeinsamer Anschlag, Bund* ṚV. 10, 166,4. 191,3. नास्मै समिति: कल्पते AV. 5,9,15. 6,88,3. — 3) *feindliches Zusammentreffen, Kampf* NAISH. 2,17. AK. 2,8,3,74. 3,4,44,73. TRIK. H. 798. H. an. MED. HALLÂ. 2,298. ÇAT. BR. 3,6,4,16. TBn. 1,5, 4,4 (nach Comm.). HARIV. 15379. SUÇR. 1,333,13. ÇIK. 48, v. l. °शोभन MBn. 13,3137. R. 4,18,12 (zusammen zu schreiben). °शालिन् (so zu schreiben) BHÂG. P. 2,7,35. — 4) *Vereinigung* überh.: गुणानाम् BHÂG. P. 11,25,8. — 5) bei den Gaina *Regel des Betragens,* deren fünf SARVADARÇANAS. 37,18. प्राणिपीडापरिहारेण सम्यगयनं समिति: 39,1.2. die fünf समिति sind ईर्या, भाषासमिति, एषणा°, आदान° und उत्सर्ग° 4. fgg. — 6) *Gleichheit* H. an. — Vgl. सामित्य.

समितिंगम adj. *die Rathsversammlung besuchend* ÇAT. BR. 14,9,4,17.

समितिंजय 1) adj. *im Kampfe siegreich* BHAG. 1,8. MBn. 1,2802. 5, 2260. 6,3062. 3339. 14,2343. HARIV. 7135. R. 2,98,28. 6,67,17. 79,49. 80,12. 7,29,29. BHÂG. P. 10,68,1. Jama MBn. 3,10822. Vishṇu 13, 6988. — 2) m. N. pr. eines Kriegers MBn. 2,623.

समित्क am Ende eines adj. comp. von समिध् *Brennholz:* आहित° KAUÇ. 56.

समित्कलाप (समिध् + क°) m. *ein Bündel Brennholz* Ind. St. 3,395.

समित्त्व n. nom. abstr. von समिध् TBn. 2,1,2,3.

समित्पाणि (समिध् + पा°) 1) adj. *Brennholz in den Händen haltend* KÂTJ. ÇR. 4,12,18. KAUÇ. 42. ÇAT. BR. 10,6,4,2. 11,4,4,9. MUṆḌ. Up. 1,2,12. — 2) m. N. pr. eines Schülers des Çaṁkarâkârja Verz. d. Oxf. H. 248,a,1.

समिध् (von 3. इ mit सम्) UṆÂDIS. 2,11. m. *feindliches Zusammentreffen; Zusammenstoss* NAIGH. 2,17. NIR. 3,8. Comm. zu UṆ. (ed. BOHTL.) 2,11. ṚV. 1,55,3. 73,5. 2,24,13. 3,54,4. 4,20,8. 38,9. स कृत्नि वृत्रा समिधेषु शत्रून् 41,2. सपाम् 58,11. 10,48,9. 64,6. = वक्ति UÇÂVAL. = याकुति UPADIṢ. im SAṂKṢIPTAS. nach ÇKDn.

संमिधुन (2. स + मि°) adj. *sammt dem zum Paar Gehörigen* ÇAT. BR. 1,8,4,20. 3,3,3,18.

समिद्ध s. u. 1. इध् mit सम्. superl. °तम auch KÂTJ. ÇR. 3,2,18. 3,22.

समिद्धवत् adj. *das Wort* समिद्ध *enthaltend* KÂTJ. ÇR. 16,1,11.

संमिद्धाग्नि adj. *dessen Feuer brennt* ṚV. 5,37,2.

समिद्धार (समिध् + हार) adj. *Brennholz herbeischaffend* ÇAT. BR. 3, 4,3,6. 4,6,9,6.

समिद्धार्थक m. N. pr. eines Mannes MUDRÂ. 124,1.

संमिद्धि (von इध् mit सम्) f. *das Brennen, Flammen* TS. 5,3,2,4. TBn. 2,1,4,9. ÇAT. BR. 4,4,3,22.

समिद्भार (समिध् + भार) m. *eine Tracht Brennholz* Ind. St. 3,395.

संमिद्वत् (von समिध्) adj. 1) *mit Brennholz versehen:* वह्नय: ÇIR. 83. — 2) *das Wort* समिध् *enthaltend* TS. 2,6,9,1. TBn. 2,1,3,9.

समिंध् (1. इध् mit सम्) 1) adj. *flammend:* समित्समित्सुमना बोध्यस्मे ṚV. 3,4,1. — 2) f. SIDDH. K. 248,a,4. a) *Holzscheit, Brennholz* AK. 2, 4,4,13. H. 827. HALLÂ. 1,69. समिधमाधेहि PÂR. GṚHY. 2,3. TBn. 2,1,2, 3. 9. ÇAT. BR. 3,2,2,1. ÂÇV. GṚHY. 1,20 11. अश्वा-धा VS. 20,24. ÇAT. BR. 1,3,4,5. अया ते अग्ने समिधा विधेम ṚV. 4,4,15. 5,15,7. तं वो समिद्भिर्वर्धयामसि 16,11. 7,14,1. 10,12,2. VS. 3,4. ÇAT. BR. 1,5,4,1. ÂÇV. GṚHY. 3,8,3. MUṆḌ. Up. 2,1,5. अग्नये समिधमाहार्षम् GOBH. 2,10,44. यो-दुम्बरो ÇÂṄKH. GṚHY. 5,10. शाम्याको KAUÇ. 82. समिधो यते TBn. 3,11, 4,1. ÇÂṄKH. ÇR. 4,10,1. समिधमानीय KÂTJ. ÇR. 25,92. pl. M. 2,186. R. 2,25,26. 3,1,26. VARÂH. BṚH. S. 44,12. 46,24. BHÂG. P. 1,18,19. समिदाधान KÂTJ. ÇR. 5,3,25. 6,10,9. KAUÇ. 86. M. 2,176. समिदाहरण ÇIK. 7,9. ÇUK. in LA. (III) 33,6. समिच्छतपा Verz. d. B. H. 90 (26). समिच्छता ÇIK. 17. अमत्कर्मसमिद्धत्त Spr. (II) 3174. द्रौपद्या ससमिद्धणे: R. 2,56,30. समित्कुशम् R. GORR. 1,47,9. KUMÂRAS. 5,32. समिद्दर्भम् P. 5,4,106, Schol. समित्कुशफलाहार RAGH. 1,49. BRAHMA-P. in LA. (III) 49,8. PRAB. 44,8. sieben (oder zu b) VS. 17,79. श्रिय: Spr. (II) 3167. neun und ihre Namen (oder zu b) GAṆAR. 1,28. pl. als Gegenstand des ersten Prajâga ÇAT. BR. 1,5,3,8. 4,1. 6,1,8. ÂIT. BR. 2,4. — b) *das Entflammen, Flamme* (von Bed. a) nicht immer zu scheiden) ṚV. 5,1, 1. 6,4. 5,1,9. वृक्तबर्हिष: समिधा नरस्ते 7,72,4. क्राळे तियत्यग्नेर्विधो: समिध: 10,51,2. 80,2. तमा रभस्व समिधा 87,3. VS. 5,33. 20,23. ÇAT. BR. 4,2,4,21. — 3) संमिधम् infin. ṚV. 1,94,3. संमिधे desgl. 113,9. 7,77,1.

समिध m. 1) *Feuer* TRIK. 1,1,67. — 2) am Ende eines adj. comp. = समिध् *Brennholz:* विलापदु:ख° R. 2,24,6.

समिध्य् (von समिध्), समिध्यति *nach Brennholz verlangen:* fut. समिधिष्यता und समिधिता P. 6,4,50, Schol. VOP. 21,4.

समिध्यमानवत् adj. *das Wort* समिध्यमान (partic. praes. pass. von 1. इध् mit सम्) *enthaltend* KÂTJ. ÇR. 16,1,11.

समिन् s. u. शमिन् 2).

समिन्धन (von 1. इध्, इन्ध् mit सम्) 1) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18,b,16. 19,a,41. — 2) n. a) *das Anzünden* NIR. 8,4. अग्नि° AK. 2,7,21. — b) *Holzscheit, Brennholz* ÇABDAR. im ÇKDn. BHAṬṬ. 2,28. धृतिर्दाक्ष्यम् u. s. w. घनस्येतान्यष्ट समिन्धनानि *die acht Holzscheite des*

Reichthums so v. a. *die acht Mittel zur Vergrösserung des Reichthums* MBh. 12,4388.

समिर m. 1) = समीर *Wind* H. 1106. — 2) ein N. Çiva's (?) H. ç. 45.

समिश्र (2. स + मिश्र) adj. *sich mischend, sich verbindend:* गुणानाम् -समिश्राणाम् Bhâg. P. 11,25,1.

समिष् (इष् mit सम्) f. etwa *Geschoss:* des Indra Vîlabh. 2,2.

समिष्टयजुस् (स° von 1. यज् mit सम् + य°) n. *Schlussopferspruch (sammt Spende)* Ind. St. 9,233. VS. 19,29. °यजुर्वेवासो यज्ञस्य यज्ञार्ध °यजुषो ऽतिरिक्तं तत् Çat. Br. 1,9,2,30. व्यवसर्गो देवतानां °यजूंषि 6,2, 2,28. 3,1,2,6. neun 4,4,4,1. Kâty. Çr. 10,8,11. drei Çat. Br. 2,5,4,21. Ait. Br. 7,21. TS. 2,6,10,4. 5,6,2,1.

समिष्टि (von 1. यज् mit सम्) f. *eine vollständige Opferung:* यज्ञस्य TS. 6,3,9,6. 6,2,1. TBr. 3,3,9,6.

समीक (von अस् mit सम्; vgl. अनीक, अपाक, अभीक, उपाक, पराक, प्रतीक) 1) n. *feindliches Zusammentreffen, Kampf* AK. 2,8,2,72. H. 798. Hall. 2,298. समीकम् nom. Râmâyaṇ. 13,8. समीके Naish. 2,17. RV. 3,30,11. तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके 4,24,3. 8,3,5. 10,42,4. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 1,1711. 1727. 1741. 2,297. Harîv. 9575. Mârk. P. 2,43. fgg. eines Sohnes des Çûra MBh. 1,6999. 2,623. 7,409. Harîv. 1927. 1943. VP. 437. Bhâg. P. 9,4,20. 42. Häufig (auch in den Bomb. Ausgg.) शमीक geschrieben.

समीकर् (2. सम + 1. कर्) 1) *ebnen, nivelliren* Kâty. Çr. 16,3,29. विषमाणि R. Gorr. 2,87,4. मार्गान् R. 4,27,8. क्षितिम् Mârk. P. 47,11. वल्मीकम् so v. a. *der Erde gleich machen* Kathâs. 33,43. सुसमीकृतभूभाग MBh. 3,11037. Gaut. Tirth. 8. — 2) *gleich (gross u. s. w.) machen, ausgleichen:* न तु तत्तुल्यद्रव्यान्तरेण °कृत्य Kull. zu M. 9,119. *gleich stellen, für gleich erklären:* स्त्रीमुखं च शशिनं च Z. d. d. m. G. 27, 40. पद्येन समीकृतम् (ein Vergehen) Kull. zu M. 11,58. — 3) *ausgleichen* so v. a. *in Ordnung bringen, gut machen, beilegen:* त्वमेवैतत्सर्वमतश्च (कृच्छ्रगतश्च ed. Bomb.) भूयः °कुर्याः प्रज्ञया MBh. 5,720. fg. वैराणि R. 4,27,8. दोषम् 6,100,5. कार्याणि Kull. zu M. 8,178.

समीकरण (von समीकर्) n. 1) *das Ebnen, Nivelliren:* निम्नोन्नतादि° Kull. zu M. 7,184. fg. — 2) *das Gleichmachen* Verz. d. Oxf. H. 103,a, 34. विषम° Kull. zu M. 4,225. विषय° 8,231. खण्डपानादि° Vedântas. (Allah.) No. 54. *das Gleichstellen mit* (instr.) Kull. zu M. 11,58. *Gleichung* Colebr. Alg. 186. — 3) *das Ausgleichen, in-Ordnung-Bringen:* धातुवैषम्य° Çâṅk. zu Kaṭh. Up. S. 37 (°शमीकरण gedr.). — Vgl. अनेकवर्ण°.

समीकार (wie oben) m. *Gleichung* Colebr. Alg. 186.

समीकृति (wie oben) f. *das Ebnen* H. 892.

समीक्रिया (wie oben) f. *Gleichung* Colebr. Alg. 186.

समीत (von ईत् mit सम्) 1) n. = संज्ञा Taitt. 3,2,13. समीत्य (wohl richtiger) Mall. zu Çiç. 2,59 nach ders. Aut. समीक्ष्योक्त der Text. — 2) f. धा = समीक्षण und ग्रन्थभेद H. an. 3,744. = निभालन, बुद्धि und तत्त्व Med. sh. 46. = पत्त्र und मीमांसाशास्त्र Çabdar. im ÇKDr. a) *Blick:* अनुरागरुमा° Bhâg. P. 3,4,10. — b) *Meinung, Ansicht:* समीक्षा पाण्डी यस्य (क्षस्य ed. Bomb.) पाण्डवान्प्रति *in Bezug auf die Pâṇḍava* MBh. 3,318. — c) *eine tiefe Einsicht* Bhâg. P. 10,16,49. 11,28,34 (= आत्मविद्या Comm.). — d) MBh. 3,8247 = 13,1752 fehlerhaft für समीक्षा; nach Nîlak. = दर्शनेच्छा. — Vgl. तत्त्व°.

समीक्षण 1) adj. (vom caus. von ईक्ष् mit सम्) *sehen lassend, — machend* Bhâg. P. 3,24,30. — 2) n. = समीक्षा H. an. 3,744. *das Anblicken* Çâṅku. Çr. 2,15,2.

समीक्षितव्य adj. *ausfindig zu machen* Uvaṭa zu RV. Prât. 8,22.

समीक्ष्य 1) adj. dass. RV. Prât. 8,22. — 2) n. s. u. समीक्ष 1). — Vgl. दुः°.

समीर्च Uṇâdis. 4,92. m. = समुद्र Ujjval. — समीची s. u. सम्यञ्च्.

समीचीन (von सम्यञ्च्) adj. 1) *zusammengewandt* (nach einer Mitte), *universus; beisammen bleibend, vereint, vollständig* (Gegens. विषूचीन) RV. 8,3,7. 12,32. समीचीनासः सासते क्रतारः 9,10,7. 39,6. समीचीने धिषणे वि ष्कभायति *Himmel und Erde* 10,44,8. 9,74,2. 4. 90,4. 102, 7. समीचीनं रेतः सिञ्चति TS. 5,2,6,4. 6,4. — 2) *richtig, correct, zutreffend* Taitt. 3,1,4. H. 264. Hall. 1,144. Kusum. 2,1. वचस् Bhâg. P. 2,4,5. उपाय 10,50,42. धर्म Kull. zu M. 2,14. व्यापार Pañkat. 229,1. व्याख्यान Comm. zu Kâty. Çr. 328,3. पाठ Kaush. Up. S. 34, N. 3. Pañkat. S. 280. fg. N.

समीचीनता (von समीचीन) f. *Richtigkeit, Correctheit, das Zutreffen:* वाचाम् Râmâyaṇ. 1,34.

समीचीनत्व (wie oben) n. dass. Nîlak. 18.

समीच्छा MBh. 12,9363 fehlerhaft für समीक्षा.

समीद् m. = समिता *Weizenmehl* Çabdârthak. bei Wilson.

समीन adj. von समा *Jahr* P. 5,1,85. in comp. mit einem Zahlwort 86. द्वि° Schol.

समीनिका adj. f. = समासमीना Çabdak. im ÇKDr.

समीर्य (von 2. सम् + ईर् nach den Gramm.; vgl. अनूप, अन्तरीप, द्वीप, नीप, प्रतीप) P. 6,3,97. 5,4,74, Schol. Vop. 6,70. adj. *nahe*, n. (Siddh. K. 249,a,11) *Nähe* AK. 3,2,16. H. 1450. Hall. 4,7. 5,63. 1) örtlich. 1) adj. *nahe, in der Nähe stehend, angrenzend, benachbart:* पर्वतप्रस्थेषु समीपेषु वनेषु च R. 4,44,58. अन्यस्य समीपमुपोत्तमम् P. 1,2,37. Vârtt. 3, Schol. इक्समीपाद्वलः P. 1,2,10, Schol. in comp. mit seinem subst.: समीपोद्गोचर Suçr. 1,204,7. °सत्कार Çiç. 88, v. l. Pañkat. 244,9. °ज्ञल adj. Varâh. Bṛh. S. 54,49. भूरिसमीपतोय adj. 107. क्षेमसमीपसिताम्बर° 45, 6. — 2) n. *Nähe, Gegenwart, Anwesenheit.* a) acc.: न त्यजामि तवत्समीपम् *ich weiche nicht von deiner Seite* Vet. in LA. (III) 27,4. mit Verben der Bewegung zu — hin; die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend: समीपं पाण्डुपुत्राणां व्यासस्यागमनम् MBh. 1,431. 3,2127. 2637. R. 2,92,7. 3,51,44. 74,23. Hit. 18,16. Vet. in LA. (III) 19,8. 25,2. मत्समीपम् R. 3,64,8. 66,3. Mṛicch. 97. Çiç. 82,8. Vet. in LA. (III) 3,19. राज्ञवेश्मनः MBh. 3,2579. Kathâs. 18,102. Hit. 27,1. अग्नि° Kâty. Çr. 28,2,2. याम° 21,3,7. Hit. 14,17. Vet. in LA. (II) 17,19. — b) ablat. von *der:* कृष्णस्य समीपादृतः Vop. 6,58. तत्समीपादयासरत् Kathâs. 10,26. — c) °तस् α) von — *her:* साग्निधूमश्च पवनो ववौ तस्य स° Harîv. 12351. सोमस्वामि° Kathâs. 37,212. — β) *in der Nähe, nahe:* एष दाशरथी रामः सबलस्तु स° R. 6,7,3. देवमुवाचाग्निं स° 101,26. mit einer Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend *in der Nähe von, neben, bei, in Gegenwart von:* न चास्य दासो न ह्यो न कुञ्जरः स° MBh. 4,219. स्थितो देव्याः स° 13,871. 16,84. R. Gorr. 1,18,26 (22 Schl.).

2,38,27. 4,24,27. 26,7. 43,21. ग्रस्मत्स° MBn. 3,2242. 11935. R. 6,62, 9. ग्राश्रमस्य MBn. 1,2992. 3083. 4,154. Suça. 1,106,10. सभा° MBn. 4, 297. 12,4389. Mârk. P. 22,12. 17. — γ) *Abl.* — *zu:* गत्वा तस्य स° Brahma-P. in LA. (III) 53,2. — d) loc. a) *in der Nähe* Kâṭ. Ça. 7,9, 25. R. 1,9,29. mit einer Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend *in der Nähe von, neben, bei, in Gegenwart von:* तस्याः समीपे तु नलो प्रशशंसुः MBh. 3,2037. 2416. R. 2,26,24. fg. कथं सपत्न्या वत्स्यामः स° 66,19. Çiç. 39,13. Spr. (II) 6704. मत्स° Çiç. 29,7. ग्रपाम् M. 2,104. Râjat. 1,106. ग्राह्वनीय° Kâṭ. Ça. 24,5,33. Varâh. Bṛh. S. 44,13. Ved. in LA. (III) 5,9. — β) *zu — hin:* पासि पितुः स° R. 4,22,37. Pâṇ-ât. 81,17. 83,23. Ved. in LA. (II) 7,3. 19,6. मित्र° गत्वा 9,6. — e) am Anf. eines comp. = समीपे *in der Nähe:* समीपावसित *angesiedelt* Kâṭ. Ça. 8,9,9. Vgl. समीपग u. s. w.; in समीपगमन u. s. w. auch = समीपम्. — II) zeitlich: सुसमीपरागा adj. *in ganz kurzer Zeit —, sehr bald Zuneigung zeigend* Varâh. Bṛh. S. 78,15. संधिवेलासमीपम् *um die Zeit der Dämmerung* Gobh. 3,10,14. समीपतो ऽयः *steht nahe bevor* Varâh. Bṛh. S. 93,8. °समीपे *um die Zeit* Lâṭ. 3,4,21. 23. — Vgl. सामीप्य.

समीपकाल m. *zeitliche Nähe* P. 8,1,7, Schol. — Vgl. समीपदेश.

समीपग adj. (f. घा) *in der Nähe befindlich, danebenstehend* MBn. 4, 451. R. 3,35,42. 4,9,62. Spr. (II) 4672. Kathâs. 20,138. 23,1. 35,124. die Ergänzung im gen. 16,28. 69,146. 123,228. Mârk. P. 57,11. LA. (III) 88,12. im comp. vorangehend Jâṭ. 2,73. Çiç. 82,8, v. l. Mârk. P. 99,6.

समीपगमन n. *das in-die-Nähe-Gehen, Herantreten* Taitt. 3,3,292. *das Hingehen zu* (gen.) R. 5,58,17.

समीपज adj. (f. घा) 1) *in der Nähe wachsend:* गुल्मान्यग्रवस्तस्य ग्रान् MBh. 1,5884. — 2) *auf die Nähe bezüglich* u. s. w.: न मे ऽस्ति सुग्रीव-समीपजा गतिः *so v. a. ich darf nicht in die Nähe von S. kommen, — vor seine Augen kommen* R. 5,14,69.

समीपता (von समीप) f. *Nähe:* परमेश्वर° Sarvadarçanas. 92,4.

समीपदेश m. *örtliche Nähe* P. 8,1,7, Schol. — Vgl. समीपकाल.

समीपनयन n. *das Hinführen zu* (gen.) Çiç. 71,13.

समीपवर्तिन् adj. = समीपग Ṛt. 1,16. Mârk. P. 74,24. Hit. 29,16. die Ergänzung im gen. Spr. (II) 2146. Pañcat. 167,6.

समीपस्थ adj. dass. R. 2,82,20. 3,50,15. 4,1,6. Spr. (II) 2906. fgg. Varâh. Bṛh. S. 53,89. 54,9. Râja-Tar. 6,280. die Ergänzung im gen. MBh. 12,4258. R. 1,4,12. im comp. vorangehend 2,29,6. Râja-Tar. 4, 701. *nahe bevorstehend:* मृत्यु Spr. (II) 2349.

समीपी (von समीप) adv. in Verbindung mit घस्, भू *in die Nähe kommen, mit* कर् *in die Nähe bringen* P. 5,4,80, Vârtt. 3.

समीभू (2. सम + 1. भू) *sich gleich stellen:* वाचि पथि शय्यायामासन इति °भवतो (sc. ग्रुद्रस्य) दण्डताडनम् Âpast. 2,27,15. °भूत *in eine gleiche Lage gebracht:* दंपत्योः पार्श्वसंस्थयोः °शरीरयोः Spr. (II) 119. *gleich gemacht* (an Gewicht): प्रतिमान° Jâṭ. 2,100. *gleichgiltig geworden:* दृष्टि Spr. (II) 3202.

समीय् (von 2. सम), °यते *für gleich gelten bei* (instr.): घस्मैः समीय-मानः समेश्च परिक्षीयमाणसत्कारः Spr. (II) 762.

समीय adj. von 2. सम gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. — Vgl. विषमीय.

समीर् gaṇa संकाशादि (hier vielleicht fehlerhaft für शमीर्) zu P. 4, 2,80. m. 1) = समीरण *Wind* (auch im Körper) AK. 1,1,2,38. H. 1106. Hall. 1,76. MBh. 10,562. Çiç. 4,54. मलय° Gît. 4,2. Kâmandak. 118. Spr. (II) 2000. 5708. Z. d. d. m. G. 27,63. Râja-Tar. 1,208. 2,86. Sin. D. 19,18. Prab. 80,4. Bhâg. P. 5,6,9. 8,21,2. 24,36. Suça. 2,341,5. Çâṅkh. Çr. 1,7,31. Pâraṇ. 3,1,20. — 2) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,360 (VP. 191). मसीर् ed. Bomb. — Vgl. सामीर्य und शमीर्.

समीरण (vom caus. von ईर् mit सम्) 1) adj. a) *in Bewegung —, in Thätigkeit versetzend:* पञ्चेन्द्रिय° (मनस्) MBh. 12,13605. — b) *anregend, befördernd:* मद्° (पान) MBh. 7,4245. Hariv. 5761. बल° (पान) R. 5,37, 79. — 2) m. a) *Wind* (auch im Körper) AK. 1,1,2,38. H. 1106. an. 4, 90. Med. ṇ. 111. Hall. 1,76. MBh. 3,11998. 4,1902. Hariv. 12787. R. 2,94,14. Ṛt. 2,17. Bâlar. 6,26. Kumâras. 1,8. Milârîm. 148,20. Varâh. Bṛh. S. 46,46. Kâmandak. 56. Kathâs. 67,101. Verz. d. Oxf. H. 106,a,8 (am Ende eines adj. comp. f. घा). Sin. D. 113,6. Pañcat. 1,9,29. Suça. 1,148,19. 152,11. 219,12. 2,20,3. 361,6. *der Gott des Windes* MBh. 3, 10257. Bhâg. P. 8,11,1. Pañcat. 1,11,31. — b) *ein Reisender* H. an. Med. — c) *Majoran oder eine ähnliche Pflanze* AK. 2,4,2,59. H. an. Med. — 3) n. *das Schleudern:* घस्त्र° MBh. 8,4284. *das in-Bewegung-Versetzen:* वायुशरीरसमीरणात् *dadurch dass der Wind im Körper eine Bewegung verursacht* TS. Prât. 2,2.

समीयन्ती (partic. praes. von ईय् mit सम्) f. N. einer Vishṇuti Lâṭ. 6,2,22.

समीकृत (von ईक्ष् mit सम्) adj. *der sich Etwas angelegen sein lässt* u. s. w.: Vishṇu MBh. 13,6986.

समीक्षा f. *das Streben, Begehren, Verlangen nach:* रतिभोगार्था Sin. D. 352. समीक्षा तत्त्वावबोधगर्भितः पुरुषस्तनोति Prab. 98,18. परलोक° Spr. (II) 2978. स्वयंकृत° Uddâlak., Upadiç. Einl. 7. भगवदाराधन° Bhâg. P. 5,8,27. सर्वकाम° Kull. zu M. 2,13. Herzustellen ist समीक्ष्या für समीक्षया (= दर्शनेच्छया Nîlak.) MBh. 3,8247 = 13,752 und für समी-क्ष्या 12,9363.

समु *ein Metrum von 76 Silben* Ind. St. 8,107. — Vgl. सेमु.

समुक्षण (von 1. उक्ष् mit सम्) n. *das Besprengen, Begiessen* Milârîm. 48,18 (सम्मुक्षण gedr.).

समुख (2. स + मुख) adj. *bereit* H. 346. Hall. 2,219.

समुचित s. u. उच् mit सम् in den Nachträgen. In der Bed. *passend, angemessen* auch R. 6,95,53. *gewohnt zu* (gen.) Megh. 94.

समुच्चय (von 1. चि mit समुद्) m. = समाहार AK. 3,3,16. H. 1524. = संपद् Taitt. 3,3,218. 1) *das Gesammte:* घष्टादश सङ्ख्यापि संख्या यस्मिन्समुच्चये Suça. 1,44,9. सर्वोपमद्रव्य° Kumâras. 1,50. तयोः (पक्षयोः) समुच्चयो मासः Bhâg. P. 3,11,11. राजनीतेः Kathâs. 34,189. राजनीति° Kîn. 2 in Monatsberr. d. k. pr. Ak. d. Ww. 1864, S. 407 (bei Haas. fehlerhaft समुच्छ्य). — 2) *das Auch, das Sowohl-als-auch* (im Gegens. zu विकल्प *das Entweder-oder*): सप्तनक्षत्रतिथीनामयं समुच्चयः *hier hat man sowohl die Jahreszeit, als das Sternbild und den Wochentag* Kull. zu M. 3,278. यष्पिशब्दः यवणसमुच्चयार्थः *um anzudeuten, dass auch* यवण *gemeint sei,* Comm. zu Kap. 1,60. zu TS. Prât. 15,7. चेति समुच्चयार्थः Nir. 1,4. AK. 3,4,22 (20),2. घापे समुच्चये 10. P. 1,4,96. इदं चेदं चेति समुच्चयः Suça. 2,360,8. समुच्चयस्तुल्यार्थानां विकल्पो

वा Kaug. 63. VS. Prât. 6,19. Kâty. Ça. 1,8,7. 21. 14,3,5. Âçv. Gṛhy. 1,4, 6. Ind. St. 10, 414. 418. P. 3, 4, 3. Kap. 3, 25. Müller, SL. 178, N. 4. Çâṅk. zu Kaṭha-Up. S. 52. Sarvadarçanas. 44, 12. Siddh. K. zu P. 2,2, 29. Comm. zu TS. Prât. 1,15. 21. 21,6. 9. बहूनां पुगपद्ग्रावणां गुम्फः समुच्चयः Kuvalay. 116, a. = गुणक्रियायोगपद्यम् Pratâpar. 100, a, 7. b, 6. समुच्चयालंकार *eine best. Redefigur* Sâh. D. 104, 14. Verz. d. Oxf. H. 208, b, 20. — Vgl. धवलपुराण°, प्रमाण°, बोधिसत्त्वसमुच्चया, भागवतसारसमुच्चय, व्यवकार°, शिक्षा°, षड्दर्शन° (unter 1. षड्दर्शन).

समुच्चारण (vom caus. von चर् mit समुद्) n. *gleichseitiges Ertönenlassen, — Aussprechen:* व्यक्तवाचाम् P. 1,3,48.

समुच्चिचीषा (vom desid. von 1. चि mit समुद्) f. *das Verlangen zusammenzufassen, — zusammenzustellen* Çâṅk. zu Îçop. 12.

समुच्चित (von 1. चि mit समुद्) adj. *vereinigt;* समुच्चितीकृत dass. Naish. 12, 83.

समुच्छेद (von 1. छिद् mit समुद्) m. *Vernichtung:* भूतानाम् MBh. 1, 4270. 6888. समुच्छेदं या 8478. गम् 6, 114. चिकीर्षु 5, 2148. 2150. Kir. 11, 69. Mâlav. P. 16, 72. Prab. 59, 7. Sarvadarçanas. 117, 2. बाधक्य° (so ist zu lesen) Wilson, Śiśup. S. 7. davon nom. abstr. °ता 8.

समुच्छेदन n. dass. Schol. zu Prab. 59, 7.

समुच्छ्रय (von 1. श्रि mit समुद्) 1) adj. *was in die Höhe schiesst:* सर्व समुच्छ्रयम् so v. a. *alles Lebende* R. 7, 81, 10. — 2) m. P. 3, 3, 49, Schol. a) *Aufrichtung:* घ्न° Lot. de la b. l. 323. समुच्छ्रयं (= मरुत्तम् Nîlak.) देवयानीं गताम् *sich aufgerichtet habend* MBh. 1, 3290. — b) *Höhe, Länge* H. 1431. an. 4, 230. Med. j. 129. fg. Hall. 2, 26. पर्वतानाम् Harîv. 12376. कनकपूप° Râgat. 9, 16. भुजयुगलप्रतिमः समुच्छ्रयो ऽस्य (des Menschen *Länge*) Vaṛâh. Bṛh. S. 60, 13. am Ende eines adj. comp. MBh. 1, 2168. 3, 11121. बाहू शक्रध्वजसमुच्छ्रयौ 4, 187. R. 4, 43, 32. H. 133. fg. — c) *Höhe* so v. a. *Berg* MBh. 3, 12341. — d) *das Steigen* so v. a. *Erreichung einer hohen Stellung; eine hohe Stellung:* समुच्छ्रये यो यतते MBh. 2, 1955. पतनान्ताः समुच्छ्रयाः Spr. (II) 6948. चात्म° Kâm. Nîtis. 15, 54. — e) *Steigerung, Erreichung eines hohen Grades; Erregung:* सर्वतेजःसमुच्छ्रयात् Harîv. 8299. विकार° Suçr. 1, 23, 10. पित्तानिल° 2, 403, 2. — f) *Feindschaft* AK. 3, 4, 24, 154. H. an. Med. — g) bei den Buddhisten *Körper* Lot. de la b. l. 335.

समुच्छ्राय m. = समुच्छ्रय 2) e) Daśak. 7, 32. वेदना° Suçr. 1, 30, 16. — Vgl. उच्छ्राय.

समुच्छ्रिति f. dass.: दोष° Suçr. 2, 52, 10. श्लेष्म° 351, 13.

समुच्छ्रीर्षु (vom desid. von रुह् mit समुद्) adj. *fortzuschaffen* —, *zu entfernen wünschend:* भुवो भरम् Bhâg. P. 10, 75, 39.

समुज्ज्वल (von ज्वल् mit समुद्) adj. (f. घा) = उज्ज्वल *glänzend, strahlend, prächtig:* ज्ञातव्रुप Spr. (II) 2566. रत्नकुण्डलयुग्मेन गण्डस्थलसमुज्ज्वलम् *auf der Wange* Pañcar. 1, 12, 33. मणिगणकिरणसमूह° *strahlend von* Gît. 11, 30. नवसिन्दूर° Kathâs. 103, 202. लक्ष्मी° Râga-Tar. 1, 104. रूपभाव° Sâh. D. 278.

समुत्क adj. = उत्क *sehnsüchtig, verlangend nach:* वत्सेशसंगमसमुत्कमनस् adj. Kathâs. 30, 142.

समुत्कच adj. = उत्कच *aufgelöst* Pañcar. 3, 5, 5.

समुत्कण्ठ s. u. उत्कण्ठ.

समुत्कर्ष (von 1. कृष् mit समुद्) m. gaṇa विनयादि zu P. 5, 4, 34. 1 *das Ablegen:* काञ्चीनाम् *der Gürtel* MBh. 13, 5271 (pl.). — 2) *Vorrang, hohe Stellung* Spr. (II) 329. — 3) *Vorzüglichkeit* überh.: धर्मश्रुति° MBh. 13, 4594. फलस्य Bhâr. Nâṭyaç. 19, 4. — Vgl. सामुत्कर्षिक.

समुत्कोश m. = उत्कोश *Messerlier* Çabdar. im ÇKDr.

समुत्क्षेप (von 1. क्षिप् mit समुद्) m. etwa *das Aufheben der Hand:* समुत्क्षेपेण चैकेन वनवासाय — प्रतिज्ञयाऽऽह तं पार्थो ग्लहम् MBh. 2, 2513. एकेनैव वचनोत्क्षेपेण सकृद्याहृतमात्रेणेत्यर्थः Nîlak.

समुत्क्षेपण (wie eben) n. *die Höhe über dem Horizont* (Gegens. नामन) Goladhy. Dṛkkarm. 2.

समुत्तर n. = उत्तर *Antwort* Sâh. D. 177, 13.

समुत्तान adj. = उत्तान *mit der Fläche nach oben gerichtet:* Hände Verz. d. Oxf. H. 202, b, 28.

समुत्तार (von 1. तॄ mit समुद्) m. *das glückliche Hinüberkommen über, Befreiung von:* पापसमुत्तारं न ते पश्यामि R. Gorr. 2, 76, 8.

समुत्थ (von स्था mit समुद्) adj. (f. घा) *entstehend, entstanden, hervorgehend, hervorgegangen, herstammend, herkommend, herrührend:* रोषं समुत्थं शमयन् Bhâg. P. 3, 17, 29. दुःख 10, 60, 56. कुब्रुणामन्त्रः °कालिना 9, 24, 66. ब्रह्म ब्रह्मं दाशार्हेः समुत्थम् *herrührend von* R. 6, 21, 46. gewöhnlich in comp. mit einem abl., seltener mit einem im loc. gedachten Begriffe (bisweilen ist die Scheidung nicht leicht): नानादेश° *herstammend aus* MBh. 6, 5241. 8, 418. नृपतिकुल° Vaṛâh. Bṛh. 11, 12. काम° (व्यसन) M. 7, 45. 8, 353. MBh. 1, 132. Bhag. 7, 27. R. Gorr. 2, 2, 28. 43, 23 (45, 22 Schl.). 3, 13, 3. 4, 13, 34. 31, 12. Suçr. 1, 174, 11. 2, 107, 5. Kâm. Nîtis. 13, 91. Râgat. 2, 75. Spr. (II) 7238. Vaṛâh. Bṛh. S. 5, 94. 46, 21. Mâlav. P. 109, 23. ख° *sich zeigend in* MBh. 5, 7196. सौम्यकाष्ठा° Vaṛâh. Bṛh. S. 24, 24. स्कन्दविशाख° (वैकृत) 46, 11. सवयव° Suçr. 2, 132, 20. स्वशरीर° Spr. (II) 6139. Kathâs. 5, 140. फाल्गुनपुत्र° Vaṛâh. Bṛh. S. 21, 11. शरत्समुत्थ 40, 12. एक° (प्राण) so v. a. *ein einmaliger Athemzug* Comm. zu TS. Prât. 5, 1. — Vgl. स्व°.

समुत्थान (wie eben) n. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *das Aufstehen, Sicherheben* R. 3, 49, 31. *Aufrichtung:* इन्द्रध्वज° Tithyâdit. im ÇKDr. — 2) *das Wiederaufleben* MBh. 3, 17446. 13, 6662. — 3) *das Anschwellen:* उदरस्य R. 3, 49, 19. *Vermehrung:* मानान्यार्थ° Jiṭ. 2, 120. — 4) *Entstehung* Kâraka 2, 1. पित्तरक्त° Suçr. 2, 368, 13. वैरस्य Harîv. 6764. am Ende eines adj. comp.: वैरं पञ्चसमुत्थानम् Spr. (II) 6291. मकारोप° R. 4, 35, 15. — 5) *das an's-Werk-Gehen, Thätigkeit, Unternehmung;* = घभियोग H. an. 4, 200. = समुद्योग Med. n. 215. सर्वे हि स्वं समुत्थानमुपजीवन्ति जन्तवः MBh. 3, 1208. 12, 660. संभूय *eine gemeinschaftliche Unternehmung* M. 8, 4. एकीभूय Kâm. Nîtis. 11, 19. am Ende eines adj. comp.: लघु° (मित्र; = घाडम्बरशून्य Comm.) *schnell an's Werk gehend* Kâm. Nîtis. 4, 70. नानाव्रुप° *mannichfachen Beschäftigungen nachgehend* R. 5, 24, 31. — 6) *Heilung* M. 8, 287. Jiṭ. 2, 222. = निदान H. an. = व्याधीनां निर्णयः Med.

समुत्थाप्य (vom caus. von 1. स्था mit समुद्) adj. *aufzurichten:* स्तम्भाः Vaṛâh. Bṛh. S. 53, 112. fg.

समुत्थेय (von 1. स्था mit समुद्) adj. n. impers. *an's Werk zu gehen:* तस्माद्बलवलेनैव समुत्थेयं विजानता MBh. 12, 2932.

समुत्पतन (von 1. पत् mit समुद्) n. *ein gleichseitiges Auffliegen* Pāṇ. Kāt. 106,2.

समुत्पत्ति (von 1. पद् mit समुद्) f. *Entstehung, Ursprung:* जगत: M. 1,111. मांसस्य 5,49. 6,65. MBh. 13,320. R. Gorr. 1,3,32. 2,119,2 (110, 2 Schl.). Suçr. 1,30,15. 85,16. Spr. (II) 3001. Mārk. P. 99,1. Pāṇ. Kāt. 1,3,84.

समुत्पात m. = उत्पात *eine Unglück verheissende Erscheinung, portentum* MBh. 9,1202. R. 1,90,21.

समुत्पाद (von 1. पद् mit समुद्) m. *Entstehung:* समसमय° Sarvadarç. 79,7. प्रतीत्य *nach Eintritt der dazu erforderlichen Bedingungen* 21, 10. fgg. Burnouf, Intr. 485. 623. fg. Lot. de la b. l. 332. 530. fgg. Wassiljew 240.

समुत्पाद्य (vom caus. von 1. पद् mit समुद्) adj. *hervorzurufen, zu veranlassen, zu verursachen* Spr. (II) 2326.

समुत्पिञ्ज m. *Verwirrung, das drunter-und-drüber-Gehen* MBh. 7,8514. adj. = भृशाकुल: AK. 2,8,2,67. H. 366. — Vgl. पिञ्ज, उत्पिञ्ज.

समुत्पिञ्जलक m. dass. MBh. 1,5356. — Vgl. पिञ्जल, पिञ्जलक, उत्पिञ्जलक.

समुत्पीडन (vom caus. von पीड् mit समुद्) n. *das Drücken, Pressen:* कुचकलश° Daçak. 87,16.

समुत्फाल (von स्फाल् mit समुद्) m. *Galopp* ÇKDr. unter तरंग.

समुत्सर्ग (von 3. सर्ज् mit समुद्) m. 1) *das Entlassen, Vonsichgeben:* मूत्रोच्चार° M. 4,50. = वेग Trik. 3,3,70. — 2) *das Entlassen des Samens:* तस्यां समुत्सर्गं कृत्वा so v. a. *sich begattet habend mit* Kull. zu M. 3,5.

समुत्सव m. = उत्सव *Fest, Festtag* R. 1,49,21.

समुत्साह m. = उत्साह *Willenskraft* Suçr. 2,142,1. समुत्साहं कर् *Willenskraft an den Tag legen* MBh. 13,443.

समुत्साहता f. dass.: दाने so v. a. *grosse Bereitwilligkeit* Spr. (II) 3129.

समुत्सुक adj. (f. आ) = उत्सुक *aufgeregt, unruhig;* insbes. von *einem Verlangen* —, von *Sehnsucht ergriffen* MBh. 12,2543. R. 1,9,32. 42 (41 Gorr.). 3,1,35 (व्यालमृगा:). Ṛt. 2,14 (नलिनी). Raghu. 19,6. Çiç. 80,8, v. l. Vikr. 10. Spr. (II) 683. Kathās. 22,99. 51,123. 56,270. कर्ष° *vor Freude* R. 1,9,37. भर्तृस्नेह° 3,30,24. *sich sehnend, verlangend nach;* die Ergänzung im infin. Pāṇ. 1,6,3. im comp. vorangehend: तद्दर्शन° MBh. 12,12861. रण° R. 6,15,18. यातमन्यु° Raghu. 1,23. भूति° Kumāras. 5,76. स्वदेश° Kathās. 18,392. वाक्° 62,157. — Vgl. परि°.

समुत्सुकत्व (von समुत्सुक) n. *Aufgeregtheit* R. Gorr. 2,71,23. *das Gefühl der Sehnsucht* Ṛt. 2,9. 16. 6,15.

समुत्सुकय् (wie eben), °यति *sehnsüchtig machen:* लक्ष्मी समुत्सुकयितासि भृशम् Kir. 11,31.

समुत्सेध m. = उत्सेध *Höhe;* am Ende eines adj. comp. (f. आ) MBh. 3,11614. 15719. Harīv. 8994. R. 1,15,7 (5 Gorr.). 6,2,6.

समुद्दंशक Pāṇ. 3,8,12 *fehlerhaft, wie schon das Metrum zeigt.*

समुद्दत्त adj. *über den Rand sich erhebend, überzulaufen drohend:* (Milch) समुद्दत्ते कर्पञ्जिवोद्कुढासयेत् Āçv. Çr. 2,3,8 (vgl. उद्दत्तम् TBr. 2, 4,2,1). Ebenso ist zu verbessern Ait. Br. 5,27, wo die Hdschrr. समुद्दत्तम् haben.

समुदय (von 3. इ mit समुद्) m. (n. Maitrāyaṇ. und in Bed. 8) 1) *Vereinigung, Zusammenfluss* Sāṅkhyak. 16. समुदयं कृत्वा बलानाम् *die Streitkräfte gesammelt habend* MBh. 5,7488. सेनासमुदयं कृत्वा 3286. सेना° *ein versammeltes Heer* 6,824. Kathās. 10,196. 107,101. 120,83. *Aggregat* AK. 2,5,40. 3,4,25,103. H. 1411. an. 4,230 (wo das zweite Mal समुदय: zu lesen ist). Mn. j. 129. Hālās. 4,1. यच्च तेषां यत्समुदयं तच्छरीरमित्युक्तम् Maitrāyaṇ. 3,2. Kāraka 3,1. ज्ञान° 4 (°समुदाय v. l.). एके मोतसां समुदयं पुरुषमिच्छन्ति s. नहि केवलं सात्म्यञ्च एवायं गर्भ: समुदयोऽप्यत्र कारणमुच्यते 4,2. येषां समुदयो (= उदयकेतु: Nīlak.) दम: so v. a. *die zusammen genommen den Dama bilden* MBh. 5,2442. 12,5939. 5941. सर्वसंपत्समुदय Kām. Nītis. 12,31. मङ्गलशतलद्° Gīt. 7,38. नवमल्लिका° Śiç. D. 105,9. गुण° Spr. (II) 6139. सामर्थ्यानामिव समुदय: संचयो वा गुणानाम् Uttarar. 107,11 (145,3). मल्लसमुदयं (= संग्रामम् Nīlak.) चक्रे शरै: so v. a. *liess eine Menge Pfeile auf einen Punkt niederfallen* MBh. 6,5420. — 2) bei den Buddhisten urspr. wohl *das zur Hervorbringung einer Existenz Erforderliche, Aggregat von Factoren* oder *Elementen;* später als *Existenz* gefasst. Sarvadarçanas. 23,19. 24,3. 4. Lot. de la b. l. 517. fgg. — 3) *Einkommen, Einkünfte* M. 7,86. सर्व राज्ञ: समुदयमाय (also von व्यय unterschieden) च व्ययमेव च। एकाकं वेद MBh. 3,14704. — 4) *guter Erfolg, Gelingen:* परमसमुदयेनाश्वमेधेन चेष्ट्वा Mṛicch. 1,17. — 5) *Kampf* H. 798. H. an. Mn. Hālās. 2,298. — 6) = उद्गम H. an. = समुद्गम Mn. — 7) = दिवस Çabdar. im ÇKDr. — 8) n. bei den Astrologen = लग्न (s. u. लग् partic. 3) Ghorāśv. im ÇKDr. — Vgl. समुदाय.

समुदागम (von 1. गम् mit समुदा) m. *vollständige Kenntniss* Trik. 3,2,12.

समुदाचार (von चर् mit समुदा) 1) m. a) *Darreichung, Darbringung* oder *Bewirthung mit:* घृतादिसमुदाचार: शय्यासनकृतस्तथा। दिवसे दिवसे तस्य वर्धते न तु क्षीयते ॥ MBh. 3,17050. घृतादिसमुदाचारं प्रति-यत् Harīv. 6818. नृपाल्लब्धा 13052. — b) *ein gutes —, richtiges Benehmen* MBh. 1,3286. 4,57. R. 5,57,14. 66,17. 92,15. — c) *Verkehr:* सद्भि: *mit Guten* MBh. 12,10569. — d) *Anrede* Harīv. 9604. 11392. R. Gorr. 2,97,10. 12. Prab. 105,14. im Prākrit Çiç. 67,9. ed. Cu. 80,13. — e) = अभिप्राय Trik. 3,2,36. — 2) adj. *sich gut —, richtig benehmend* Bālar. P. 7, 10,18. — Vgl. बहु°.

समुदाचारवत् (von समुदाचार) adj. *sich gut benehmend, — betragend* MBh. 13,4966.

समुदानय (von 1. नी mit समुदा) m. 1) *Versammlung:* मल्लानयं कृष्ण कृत: तत्रस्य समुदानय: MBh. 5,4783. — 2) *das Vollenden, zu-Stande-Bringen* Vsuṭp. 167.

समुदाय (aus समुदय) m. 1) *Vereinigung, Aggregat* AK. 2,5,40. H. 1411. an. 4,230. Mn. j. 129. Suçr. 1,151,3. बहूनामप्यसाराणां समुदायो जयावह: Spr. (II) 4425, v. l. शाला° s. u. याम 1) in den Nachtrr. सुहृद्वर्ग° Pāṇ. Kāt. 82,5. वागादि° Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 83. कर्म° Comm. zu Āçv. Çr. 2,1,35. von Lauten, Silben, Worten VS. Prāt. 8,48. Vop. 26,10. Schol. zu TS. Prāt. 3,7. 4,3. zu P. 1,1,72. 2,27. 48. 4,47. 4,1,161. 3,117. 5,4,22. 6,2,23. 7,2,117. इति समुदायार्थ: so v. a. *dies ist der Sinn des Ganzen* Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 106. P. 1,2,53, Schol. — 2) = समुदय 2) Sarvadarçanas. 20,19. fgg. — 3) *Kampf* AK. 2,8,2,74. H. 798. H. an. Mn. — 4) *Hintertreffen* Açva im ÇKDr. — 5) die Bedeutung समुच्छ्राय im ÇKDr. und *rise, ascent* bei Wilson beruht auf einer falschen Auffassung der Mn., wo mit समुच्छ्राय: ein neuer Artikel beginnt. — Vgl. सामुदायिक.

समुदितर् nom. ag. zur Erklärung von समुद्र Nir. 10,22. समुक्षितर् v.l.

समुदीरण (von ईर् mit समुद्) n. *das in-Bewegung-Gerathen* Mân. P. 84,7. लघु° adj. *leicht beweglich*; davon °त्व n. *Beweglichkeit* (des Körpers) Vîsvp. 57.

समुदीर्ण adj. s. u. ईर् mit समुद्. n. Bez. *einer best. Bewegung* MBh. 6,2284. 8,1902. Hariv. 13494.

समुद्र m. AK. 3,6,2,17. 1) *Hülse einer Pflanzenfrucht*: घर्कसमुद्रो Çat. Br. 10,3,4,2. 5. — 2) *eine runde Dose* H. 1015. Hâr. 134. Hall. 4,79. °परिवर्त Jîv. 2,247 (Stenzler übersetzt, als wenn समुद्र *versiegelt* im Texte stände). R. 2,91,68 (100,69 Gorr.). Sucr. 2,469,1. °वद्दिशा-पार्श्वशापिन् (ein Pferd) Varâh. Bṛh. S. 93,12. am Ende eines adj. comp. (f. घा) Kathâs. 39,169. — 3) Bez. *einer runden Tempelform* Varâh. Bṛh. S. 56,17. 23. — Nach P. 7,3,59, Vârtt. 2 und Pat. zu P. 8,3,38 von उब्ज् mit समुद्; anders Mit. zu Jîv. 2,247 (250): मुद्रं पिधानं मुद्रेन सह वर्तत इति समुद्रं (also neutr.) कारण्डकम्.

समुद्रक (von समुद्र) 1) *eine runde Dose*, m. AK. 2,6,2,40. Daçak. 86, 18. Kathâs. 38,47 (Geschlecht unbestimmt). neutr. 49. 31. — 2) m. *eine Art von künstlichen Versen* Wilson und ÇKDr. ohne Angabe einer Aut.

समुद्गम (von 1. गम् mit समुद्) m. *Aufgang, das Aufsteigen*: घर्कस्य Gobhil. Taitt. 2. धूमराजिसमुद्गमैः Kathâs. 111, 98. des Busens Spr. (II) 6858.

समुद्गल in रत्न° wohl fehlerhaft für समुद्रक.

समुद्गार (von 2. गृ mit समुद्) m. *das Ausspeien* Hariv. 12053 (pl.).

समुद्गातिन् (von 1. कन् mit समुद्) adj. in विमति°.

समुद्गिधीर्षु (vom desid. von धृ mit समुद्) adj. *zu retten wünschend*: सर्वाञ्जीवान् Verz. d. B. H. No. 626. — Vgl. उद्गिधीर्षा, उद्गिधीर्षु (in den Nachträgen) und समुज्जिहीर्षु.

समुद्देश (von 1. दिश् mit समुद्) m. 1) *Darlegung, Auseinandersetzung, didactische Behandlung, Lehre* Weber, Gjot. 109. MBh. 13,1125 (कैचित्स° mit der ed. Bomb. zu lesen). Ind. St. 1,56. Verz. d. Oxf. H. 49, *b*, 28. 76, *a*, 7. 215, *b*, 21. fg. 217, *a*, 35. Verz. d. B. H. No. 1006. 1370. Sarvadarçanas. 146,5. 8. — 2) *Localität, Ort, Platz*: रमणीय MBh. 13, 2810. सुदुर्गम R. 4,41,9. केशवस्य *Standort* Hariv. 14609. — Vgl. द्रव्य°, संबन्ध° und उद्देश.

समुद्देशीय (von समुद्देश) am Ende eines comp.: व्याधि° *die Lehre von den Krankheiten betreffend* Sucr. 1,88,20.

समुद्धत s. u. कन् mit समुद्.

समुद्धरण (von कृ mit समुद्) n. 1) *das Herausziehen* AK. 3,4,22,38. शक्तेः MBh. 12,12329. मत्कार्णवमग्नमेदिनी° (s. die v. l.) Prab. 2,5. Verz. d. Oxf. H. 139, *b*, 3. — 2) *das Entfernen, Wegschaffen* Verz. d. Oxf. H. 174, *a*, 1. — 3) *ausgebrochene Speise* AK.

समुद्धर्तर् (wie oben) nom. ag. 1) *Herausnehmer* (aus einer Tiefe, einer Gefahr) MBh. 13,2457. 2476. तेषां मृत्युसंसारसागरात् Bhag. 12,7. मग्नानामापत्सु Mân. P. 19,26. — 2) *Ausreisser, Entwurzeler*: घनघाणाम् Raghu. 4,35.

समुद्धर्ष in ज्ञाति° MBh. 11,492 vielleicht fehlerhaft für समुद्धर्ष *Kampf, Streit* MBh. 11,492.

समुद्धस्त adj. *wiped off by the hand* Wilson.

समुद्धार (von कृ mit समुद्) m. 1) *das Herausziehen*: क्षितेः (sc. सलिलात्) Mân. P. 47,6. *das Herausziehen aus einer Gefahr, Errettung*: घस्मत्समुद्धारकृते Çâk. 10,3. — 2) *das Wegschaffen, Entfernen, Vernichten*: सर्वपाप° Spr. (II) 7487. — 3) N. pr. eines Fürsten, abgekürzt für रुरिकुल्ल° Kshitîç. 10,13. fg.

समुद्धूपर adj. wohl = धूसर *staubfarbig, grau* Pañcat. 3,10,19.

समुद्बोध (von 1. बुध् mit समुद्) n. *das in's-Bewusstsein-Treten* Sin. D. 41.

समुद्भव (von 1. भू mit समुद्) m. 1) *Entstehung, Ursprung* MBh. 1,370. नृपाणाम् Mân. P. 101,2. तव पुत्रस्य R. 1,8,6. सर्वदिक्° Nilak. 15. निमित्तानामीदृशानां समुद्भवे so v. a. *beim Erscheinen* R. Gorr. 2,3,19. तमोगुण° Sarvadarçanas. 131, 18. fg. am Ende eines adj. comp. (f. घा) *hinter dem Dinge a) aus welchem Etwas entsteht*, M. 6,61. 9,173. 11, 145. Bhag. 3,14. Kir. Nîtiç. 15,28. Ragh. 1,69. Spr. (II) 1532. Varâh. Bṛh. S. 32,1. AK. 2,9,49. H. 35. Pañcat. 68,21. fg. III,162. Hit. 7,21. पितॄनुद्धरते सर्वानेकादशसमुद्भवान् so v. a. *von elf Generationen* MBh. 18,311 = Hariv. 16369. — *b) welches Etwas entstehen lässt*: रात्रिं तृट्क्षुत्समुद्भवाम् *aus der Hunger und Durst hervorgehen* Bhâg. P. 3,20,19. — 2) *das wieder-lebendig-Werden*: रातसैर्निहतानां च वानराणां समुद्भवः MBh. 3,16373. — 3) N. des Agni beim व्रतादेश Gobhil. 1,1. — Vgl. कृच्छ्र°, मज्ञ°.

समुद्भूति (wie oben) f. *das Hervortreten, Erscheinen*: सुखदुःख° Sin. D. 277.

समुद्भेद (von 1. भिद् mit समुद्) m. 1) *das Sicherschliessen, Entwickelung*: गर्भबीज° Daçak. 1,38. Sin. D. 335. — 2) *Quelle*: सर्वासां सरितां MBh. 3,8522.

समुद्यम (von यम् mit समुद्) m. 1) *das Erheben, Aufheben*: ब्राह्मणः क्षत्रियत्वं हि याति शस्त्रसमुद्यमात् MBh. 5,7143. 7,6501. — 2) *Bemühung, Anstrengung, an den Tag gelegter Eifer, das Sichanschicken zu Etwas*: तस्मात्कार्यः समुद्यमः Spr. (II) 2838. न रिष्यते क्रातु समुद्यमः क्वचित् Bhâg. P. 8,12,46. 15,27. प्रणामाय कृतः 23,28 शत्रुवधे R. 4,26,28. वस्तुशास्त्रेषु Spr. (II) 6007. in comp. mit der Ergänzung Bhag. 1,22. Kathâs. 49,126. 108,191.

समुद्यमिन् adj. *sich bemühend, sich anstrengend, Eifer an den Tag legend* Kir. Nîtiç. 8,87.

समुद्योग (von 1. युज् mit समुद्) m. 1) *Gebrauch, Anwendung*: शस्त्र° MBh. 7,5792. — 2) *das Sichrüsten, Sichbereitmachen, an's-Werk-Gehen*: समुद्योगेन सैन्यानां शब्दं प्रुश्राव भैरवम् R. 6,9,21. सेना° MBh. 7,4976. कृत्वा सर्वे (so die neuere Ausg.) समुद्योगम् Hariv. 4961. R. 4,38,59. 6, 82,139. 7,6,11. कारिता च समुद्योगं प्रियैः कान्तैश्च भाषितैः Hariv. 10019. न मे मिथ्या समुद्योगं कर्तुमर्हसि so v. a. *vereitle nicht meine Bemühungen* 10816. समुद्योगमुदीर्णानां रक्षसां कारय so v. a. *unternimm Etwas gegen* R. 3,28,21. बहूनां कार्यसाधने कारणानां समुद्योगः *das Zusammenwirken vieler Ursachen* Prâtiçâkh. 100, *b*, 6.

1. समुद्र् (von 2. उद् mit सम्) gaṇa भीमादि zu P. 3,4,74. Çiksh. 1,2. m. Sidd. K. 250, *a*, 4. 1) m. (n. ṚV. 6,72,3) *Sammlung der Gewässer am Himmel und auf der Erde*, daher घवर्, पर ṚV. 7,6,7. उत्तर, घधर 10,98,5. उभौ 136,5. — Naigh. 1,3. 5,6. Nir. 2,10. 10,32. 12,31. Häufig in Apposition mit घर्णव, घर्णस्, पर्वत, सायम् u. s. w., aber nicht als

wirkliches Adjectiv gebraucht. a) *die Fluth in der Höhe:* तिरः समुद्रमर्णवम् RV. 1,19,7. 139,4. 5,73,8. पास्ते पूषन्नवो घृतः समुद्रे क्रिरण्यर्ये वृत्तरिते चरसि 6,58,3. 8,10,1. 54,2. 86,5. 10,114,4. उदीरयथ समुद्रतो वृष्टिम् 5,55,5. — b) *Wassermasse, See; die See* (AK. 1,2,3,1. H. 1073. Halâj. 3,30. 5,52): अर्णसो निः समुद्रात् RV. 1,117,14. 190,7. 2,16,3. 3,33,2. यापः समुद्रं रुध्येव जग्मुः 36,6. 8,50,13. fg. यथा समुद्र एजति 5,78,8. समुद्रस्येव महिमा गभीरः 7,33,8. यो वां समुद्रान्सरितः पिपर्ति *über die Seen, über die Ströme* 70,2. 10,190,1. 2. या समुद्राणो प्रयुः पुन्राणि 6,72,3. तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति *entströmen Wasserfluthen* 1,164,42. विश्वव्यचस् VS. 5,32. 6,28. 11,20. AV. 4,10,5. 27,4. दर्वो भूरिमूलः समुद्रमव तिष्ठति *im Wasser, im See* 6,43,3. समुद्र ईशे सवर्तानाम् 86,3. 10,5,23. न समुद्रः क्षीयते Ait. Br. 3,39. 5,16. यथा समुद्रं प्रव्रवेरन् 6,21. राजानं परिगृह्य तिष्ठति समुद्र इव भूमिम् 8,25. Çat. Br. 7,1,1,13. ऊर्ध्व एव समुद्रो विजते 14. घनत्त 3,1,39. 4,1,9. मनो वै समुद्रः 3,2,53. 9,1,2,3. TS. 2,4,8,2. 7,5,1,2. धाता समुद्रो ऽवरुत्तु पापम् Âçv. Gṛhj. 2,4,14. 3,4,1. Kauç. 74. °योनि Kâṭh. 29,3. घवर, पूर्व Çat. Br. 1,6,3,11. पूर्व, घपर 10,6,4,1. Çiç. 99,18. पूर्व, पश्चिम M. 2,22. R. 4,10,6. drei *Meere* VS. 13,31. त्रीणामपि समुद्राणां युगान्तेषु समागमः ved. Citat in Kiç. zu P. 7,1,53. *sieben* R. 3,78,4. Pañcat. 157,25. सप्तैव समुद्रा घपि कीर्तिताः । लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्घजलास्तकाः ॥ Taik. 2,1,3. सरितां यथा गङ्गा समुद्राणी जलार्णवः Paṭṭâr. 1,1,67. in der Regel *vier* (nach jeder Himmelsgegend eines); vgl. 2) und चतुः°. — M. 8,106. निर्वेग R. 1,55,9. Suçr. 1,193,2. प्रज्ञास्तमनुवर्तन्ते समुद्रमिव सिन्धवः Spr. (II) 1643. 3146. 5433. 6670. Râgat. 3,28. Varâh. Bṛh. S. 12,1. 16,6. समुद्र इव मर्यादां Vet. in LA. (III) 1,15. °मध्ये Kathâs. 18,294. °कुक्षि MBh. 1,1282. 2,1198. 3,12063. °नाभि 793. °तीर Verz. d. Oxf. H. 344,b,7. s. °पारं गतः Vet. in LA. (III) 18,22. °लक्ष्मी Spr. (II) 6860. °वीची 6861. घासमुद्रक्षितीश Râgat. 1,5. am Ende eines adj. comp. (f. घा) MBh. 3,15267. 5,493. Râgat. 2,3. Mârk. P. 53,11. das *Meer* als Bild der unübersehbaren Ausdehnung, der Unergründlichkeit und Gefahrlichkeit: ज्योतिःशास्त्रसमुद्रे प्रमथ्य मतिमन्दराद्रिणा Varâh. Bṛh. S. 106,1. संसारसमुद्रोत्तरण Paṭṭâr. 33,15. personificirt Harîv. 792. fg. 6529. R. 1,1,77. सरितां पतिः 78. 3,32. — 2) m. Bez. *der Zahl vier* (wegen der 4 Hauptmeere) Ind. St. 8,167. Gaṇit. Prastârâdh. 2. Svashṭîdh. 3. — 3) m. *eine grosse* Soma-*Kufe:* समुद्रः स्वः कलशः सोमधानः RV. 8,69,6. 9,29,3. 61,15. 64,17. 73,3. समुद्रासो न सर्वनानि विव्यचुः *die Kufen fassen nicht den Saft* 80,1. 84,4. पवस्व सोम महान्समुद्रः 109,4. रायः समुद्रांश्चतुरः । घा पवस्व सहस्रिणः *ströme Reichthum in die vier Kufen* (चतुः° als Beiw. Indra's 10,47,2 *dem die vier Kufen gehören* und *der die vier Meere beherrscht*) 33,6. समुद्रो घप्सु मामृजे 2,5. TS. 5,5,4,3. उत्तरस्मादधि समुद्रनयो दिव्या घसृजत् RV. 10,98,5 kann hierher wie zu 1) gezogen werden. — 4) m. Bez. *der Zahl* 100,000,000,000,000 (vgl. वार्धि) H. 874, Schol. TS. 7,2,20,1. Çâṅkh. Çr. 15,11,7. MBh. 13,5267. — 5) m. n. *ein best. Metrum* TS. 5,2,6,1. von *104 Silben* Ind. St. 8,107. fgg. *ein* Daṇḍaka-*Metrum* 408. fg. 412. fg. Vgl. समुद्रिय. — 6) m. angeblich so v. a. रुचक Mânḍn. zu VS. 13,16. — 7) m. Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle 7 Planeten in den Häusern 2, 4, 6, 8, 10 und 12 stehen,* Varâh. Bṛh. 12,9. auch तोयालय genannt 17. — 8) m. N. pr. verschiedener Personen: a) ein Daitja Harîv. 12937. — b) ein Gesetzgeber Verz. d. Oxf. H. 14,a,N. — c) angeblicher Verfasser einer Chiromantie Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 68,1. fgg. — d) ein auf dem *Meere* geborener Kaufmannssohn Burnouf, Intr. 367. — 9) m. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,2. — 10) Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 110,b,19. °कार 292,b,20. — 11) समुद्रस्य प्रैयमेधस्य साम N. eines Sâman Ind. St. 3,242,b. समुद्रस्य संसर्पम् desgl. ebend. — 12) f. घा N. zweier Pflanzen: = शटी und शमी Râgân. im ÇKDr. — Vgl. क्षार°, क्षीर°, चतुः° (s. auch u. 3), पूर्व° (dies 27,1), सागर fgg.

2. समुद्र (2. स + मुद्रा) adj. (f. घा) *versiegelt* M. 8,188. Jâân. 2,232. Z. d. d. m. G. 14,571,14. Mṛcch. 96,2.

समुद्रकफ m. = समुद्रफेन Taik. 1,2,14.

समुद्रकल्लोल m. N. pr. eines Elephanten Kathâs. 121,277.

समुद्रकाञ्ची f. *die Erde* (*meerumgürtet*) H. 938, Schol.

समुद्रकान्ता f. *Geliebte des Meeres:* 1) *Fluss* Halâj. 3,48. — 2) *Trigonella corniculata Lin.* Râgân. im ÇKDr. — Vgl. समुद्रदयिता, समुद्रपत्नी.

समुद्रग 1) adj. (f. घा) *sich in's Meer begebend* Ind. St. 8,413. *sich in's Meer ergiessend* Mârk. P. 57,30. — 2) f. घा *Fluss* Hir. 53. MBh. 1,7794. 2,2218. 10215. 7,2256. 9030. Kumâras. 7,43. Spr. (II) 4229.

समुद्रगुप्त m. N. pr. eines Fürsten LIA. 2,951. fgg.

समुद्रगृह n. *ein Badehaus mit Spritzen u. s. w.* Taik. 3,2,2. Hir. 66.

समुद्रचुलुक m. ein N. Agastja's, *der das Meer wie sin Mundvoll Wasser verschluckte,* Taik. 1,1,90.

समुद्रज adj. *im Meer erzeugt, — sich findend:* रत्नानि Spr. (II) 3969. *im Meer lebend* Suçr. 1,202,21. 206,21.

समुद्रेष्ठ adj. *das Meer zum Obersten habend:* घापः RV. 7,49,1.

समुद्रतता f. *ein best. Metrum:* 4 Mal ⏑—⏑⏑—⏑⏑—, ⏑⏑⏑—, ——⏑—⏑⏑— Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XIV,8).

समुद्रतीरीय (von समुद्र + तीर) adj. *am Meeresufer wohnend* Vishṇ. 166.

समुद्रदत्त m. N. pr. verschiedener das *Meer* befahrender Kaufleute Kathâs. 13,169. 25,118. 26,117. 77,51. 84,19. Hit. 110,17. fgg. Vet. in LA. (III) 18,19.

समुद्रदयिता f. = समुद्रकान्ता *Fluss* H. 1080.

समुद्रनवनीत n. 1) *der Unsterblichkeitstrank, Nektar* H. 89, Schol. Med. t. 236. — 2) *der Mond* H. 103, Schol. Med. Hin. 13.

समुद्रनिष्कुट m. *ein am Meere gelegener Lustwald* (nach Nilak.), eher N. pr. eines best. *Waldes* MBh. 2,1831. — Vgl. सामुद्रनिष्कुट.

समुद्रनेमि f. *die Erde (meerumgeben)* Rṛgat. 14,39. °नेमीपति so v. a. *Fürst, König* MBh. 4,324. °नेमीश्वर dass. 386.

समुद्रपत्नी f. = समुद्रकान्ता *Fluss* Rṛgat. 13,58.

समुद्रपर्यन्त adj. (f. घा) *meerumgrenzt:* die Erde Ait. Br. 8,18. Paṭṭâr. 223,3. — Vgl. सागरपर्यन्त.

समुद्रफल n. *ein best. Arzneimittel* Râgân. im ÇKDr.

समुद्रफेन m. *os Sepiae, die Knochen des Tintenfisches* (die so leicht sind, dass sie auf dem Wasser schwimmen) Ratnam. 270. Bhâvapr. 5. Suçr. 1,46,16. 2,56,16. 331,10. 336,15. Rṛgat. 13,11. Vgl. सामुद्रः फेनः Suçr. 2,328,14. फेनः सागरस्य 347,8. Hier und da °फेण geschrieben.

समुद्रमथन 1) m. N. pr. eines Daitja (*das Meer quirlend*) Harîv. 12941.

— 2) n. *das Quirlen des Meeres* Spr. (II) 6859. Titel eines Schauspiels Sin. D. 193,12.

समुद्रमात्र P. 6,2,14, Schol.

समुद्रमालिन् adj. *meerumkränzt:* पृथिवी R. Gorr. 1,41,13.

समुद्रमीड्य adj. *die Kufe in's Schwanken setzend:* Soma ṚV. 9,35,2.

समुद्रमेखला f. *die Erde (meerumgürtet)* Taik. 2,1,1.

समुद्रयात्रा f. *Seereise, Seefahrt* Hariv. 8304. Upavâkar. im ÇKDa.

समुद्रयान n. dass. M. 8,157. Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,30.

समुद्रयायिन् adj. *die See befahrend*, m. *Seefahrer* M. 3,158. Varâha-P. im ÇKDa.

समुद्ररसन adj. (f. आ) *meerumgürtet:* die Erde Raǵa. 15,83. Varâh. Bṛh. S. 43,32. f. आ *die Erde* H. 938, Schol.

समुद्रलवण n. *Seesalz* Riéan. im ÇKDa.

समुद्रवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 52,368. fgg.

समुद्रवसना f. *die Erde (meerumkleidet)* H. 938, Schol. Halâj. 2,1.

समुद्रवह्नि m. *das höllische Feuer im Meer* Halâj. 1,70.

समुद्रवासस् adj. *in die Fluth sich hüllend:* Agni ṚV. 3,91,4.

समुद्रवासिन् adj. *am Meere wohnend* MBh. 1,7659.

समुद्रविक्रम m. N. pr. des Vaters des 22ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 38.

समुद्रव्यचस् adj. *einen See* oder *eine Kufe in sich fassend:* Indra VS. 12,56.

समुद्रशुक्ति m. N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 54,97. fgg.

समुद्रसार n. *eine im Meere gewonnene Kostbarkeit, eine Perle* u. s. w. MBh. 2,1893.

समुद्रसेन m. N. pr. eines Fürsten, Vaters des Kandrasena, MBh. 1, 2690. 6991. 2,1098. 5,85. 8,166. eines Kaufmanns Kathâs. 29,119.

समुद्रस्थलो f. gaṇa घूमादि zu P. 4,2,137. — Vgl. सामुद्रस्थलक.

समुद्रादि (समुद्र + आदि) *die 4te u. s. w. Silbe in einem Pâda, wenn darnach eine Cäsur eintritt*, Ind. St. 3,364. 462. fg.

1. समुद्रान्त m. *Meeresufer* Spr. (II) 514.

2. समुद्रान्त 1) adj. (f. आ) *bis an's Meer reichend:* die Erde R. 5,18, 35. मग° 4,15,8. *in's Meer sich ergiessend:* Flüsse Bâlar. P. 10,47,34. — 2) f. आ Bez. verschiedener Pflanzen: *Alhagi Maurorum Tournef.* AK. 2,4,2,10. H. an. 4,128. fg. Med. t. 225. Bulvapa. 3. *die Baumwollenstaude* AK. 2,4,4,4. H. an. Med. Bulvapa. *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2,4,4,21. H. an. Med. Bulvapa. = पवास (das auch *Alhagi Maurorum* ist) Riéan. im ÇKDa. — 3) m. *Muskatnuss* Çabdar. im ÇKDa.

समुद्राभिसारिणी f. *ein dem Meergott nachlaufendes Mädchen* Vikr. 68,6.

समुद्राम्बरा f. *die Erde (meerumkleidet)* Taik. 2,1,1.

समुद्राप् (von 1. समुद्र), °पत् *dem Meere gleichen* Spr. (II) 2293.

समुद्रायण (1. समुद्र + अयन) adj. (f. आ) *zum Meere hingehend, in's Meer sich ergiessend:* नद्य: Prâçnop. 6,5.

समुद्राह्व m. = पाटभेद (पाठ Med.), तिमिङ्गिल und सेतुबन्ध (°बद्ध fälschlich Med.) H. an. 4,233. Med. r. 301.

समुद्रीय adj. (f. आ) *dem Meere zustrebend:* Gewässer ṚV. 7,49,2.

समुद्रावरण (समुद्र + आ°) adj. (f. आ) *durch's Meer geschützt:* die Erde Spr. (II) 682. Bâlar. P. 12,3,5.

समुद्रिय (von 1. समुद्र) P. 4,4,118. 1) adj. *a) marinus:* वयांसि ṚV. 4,16,7. 7,87,1. अप्: 9,62,26. 8,63,3. AV. 7,107,1. TS. 7,4,22,1. अप्सरस्: °या: 9,78,3. VS. 11,46. 17,87. AV. 7,7,1. f. pl. auch °द्रिय: ṚV. 10, 68,3. नावा: 1,25,7. — *b) in der Kufe befindlich:* देव ṚV. 9,107,16. — 2) n. (oder adj. zu छन्दस्) angeblich *ein best. Metrum* Çat. Br. 7,3,4,39.

समुद्रेक (von रिच् mit समुद्र) m. *das Ueberwiegen:* मन्यु° Nilak. 47. सुप्ति: निद्रा° Prasâdan. 53,*b*,6.

समुद्रेष्ठ (स° loc. von समुद्र + स्था) adj. *in der Fluth befindlich* TS. 3,5,6,2.

समुद्रोन्मादन m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2570. es könnten auch zwei Wesen gemeint sein, wenn man समुद्रो-न्मादन: für eine unregelmässige Contraction von समुद्र उन्मादन: zu halten geneigt wäre.

समुद्वाह (von 1. वह् mit समुद्) m. *Heirath, Hochzeit* MBh. 3,16705. Prasoodar. 2,*a*,3.

समुद्वेग (von 1. विज् mit समुद्) m. *das Erschrecken* (intrans.): समुद्वेग मागन्तुम् R. 3,55,18. समुद्वेगं जनस्यास्य करिष्याम: MBh. 4,151.

समुन्दन (von उद्, उन्द् mit सम्) n. *das Nasswerden* AK. 3,3,29.

समुन्नति (von नम् mit समुद्) f. *Höhe:* द्विगुणा तत्समुन्नति: Varâh. Bṛh. S. 56,11. शिखराणाम् Kumâras. 6,66. *das Aufsteigen, sich-Erheben:* कुचयो: Spr. (II) 5133. *hohe Stellung, hohes Ansehen:* स्वगुरुष्वेषु MBh. 5, 1068. उत्तमै: सङ्ग सङ्गेन को न याति समुन्नतिम् Spr. (II) 7479. 6681. प्रकृति: खलु सा मह्यीयस: सङ्गते नान्यसमुन्नतिं यया Kir. 2,21. मया प्राप्ता समुन्नति: Mâlav. P. 44,19. गुणा यान्ति समुन्नतिम् *erfahren eine Steigerung* Spr. (II) 6191. चित्तं समुन्नतिमभुते *der Geist fühlt sich gehoben* 4282. मनस: so v. a. *eine hohe Denkweise* Kumâras. 6,66. मन:° Raǵa. 3,10. — Vgl. चित्त°.

समुन्नद (von नद् mit समुद्) m. N. pr. eines Râkshasa R. 6,32,15. 18.

समुन्नद्ध s. u. नह् mit समुद्.

समुन्नमन (von नम् mit समुद्) n. *Erhebung, das Aufsteigen:* भू° Sin. D. 190. — Vgl. समुन्नयन.

समुन्नय (von 1. नी mit समुद्) m. *Aufschliessung, Erschliessung:* मञ्जूषाकुक्षिकाशित्पशाब्दब्रह्म° Verz. d. Oxf. H. 178,*a*, No. 404.

समुन्नयन (wie eben) n. *das Emporziehen:* भू° Daçar. 4,19. — Vgl. समुन्नमन.

समुन्नस adj. = उन्नस *eine hervorspringende —, hohe Nase habend* Hariv. 14779.

समुन्नाद (von नद् mit समुद्) m. *gleichzeitiges Geschrei* u. s. w.: जन° MBh. 7,3830.

समुन्नाह (von 1. नह् mit समुद्) m. 1) *das in-die-Höhe-Drängen* Sûçr. 2,202,19. — 2) *Höhe* Bâlar. P. 5,16,7.

समुन्नेय (von 1. नी mit समुद्) adj. *herauszubringen, zu erschliessen* Sin. D. 204.

समुन्मिश्र adj. = उन्मिश्र, मिश्र *vermischt —, vermengt mit, begleitet von* (instr.) MBh. 6,4523. Hariv. 7808.

समुन्मुख adj. = उन्मुख *in die Höhe gerichtet:* °मुखीकृ *aufrichten, aufheben:* °कृत्य नित्तं भुवम् Naish. 12,77.

समुन्मूलन (von उन्मूलय् mit सम्) n. *das Entwurzeln, vollständiges zu-Nichte-Machen* Uttarân. 23,10 (31,9). am Ende eines adj. comp. Prân. 8,15.

समुपक्रम (von क्रम् mit समुप) m. *Beginn* H. an. 3,255. Med. f. 99.

समुपगन्तव्य (von 1. गम् mit समुप) n. impers. *sich zu begeben:* न तस्य विश्वासे °गन्तव्यम् so v. a. *man darf ihm kein Vertrauen schenken* Pañcat. ed. orn. 64,19.

समुपचार (von चर् mit समुप) m. *Huldigung*, pl. Paṇḍar. 2,4,14. 3,13,3.

समुपच्छाद m. nom. act. von 1. छद् mit समुप P. 6,4,96, Schol.

समुपजोषम् adv. = उपजोषम् Rāmāçrama zu AK. 3,5,10 (शमुपजोषम् zwei Worte im Text) nach ÇKDa.

समुपभोग (von 3. भुज् mit समुप) m. *das Geniessen, Essen* MBh. 13,4711.

समुपवेशन (von 1. विश् mit समुप) n. *Lagerstätte* Uttarab. ed. Cow. 161,10 (समुपवेशमङ्ग die ältere Ausg. 119,10).

समुपस्तम्भ (von स्तम्भ् mit समुप) m. *das Stützen:* घन्योऽन्य° Spr.(II) 386 (beide Ausgg. des MBh. °ष्टम्भ).

समुपहूर्व (von हू mit समुप) m. *eine Einladung mit Andern* Çat. Br. 4,6,9,25. देवै: Çāṅkh. Br. 12,5. Liṭ. 2,4,11.

समुपहावम् s. u. हू mit समुप.

समुपहार (von हृ mit समुप) m. *ein verborgener Ort, Versteck* MBh. 14,784. — Vgl. उपहार.

समुपानयन (von 1. नी mit समुपा) n. *das Herbeibringen, Herbeischaffen:* व्यासाध्यातस्य वित्तस्य MBh. 14,1852.

समुपाभिच्छाद (so ist mit der lith. Ausg. des Mahābh. zu lesen) m. nom. act. von 1. छद् mit समुपाभि P. 6,4,96, Vārtt.

समुपार्जन (vom caus. von 1. ऋज् mit समुप) n. *das Erwerben, Erlangen* M. 7,152.

समुपालम्भ (von लभ् mit समुपा) m. *Vorwurf* MBh. 4,648 (मां तु st. इदं तु mit der ed. Bomb. zu lesen).

समुपेक्षक (von ईक्ष् mit समुप) adj. *übersehend, nicht beachtend, vernachlässigend:* दीनानाम् Bhāg. P. 4,14,41.

समुपेप्सु (vom desid. von आप् mit समुप) adj. *zu erreichen trachtend, strebend nach:* धनन्दम् Spr. (II) 2294.

समुपोषक (von 5. वस् mit समुप) adj. *fastend:* व्रयस्त्री° Weber, Kṛṣṇaj. 308.

समुत्खण adj. = उत्खण *klumpig, dick, wulstig:* समुत्खणाङ्ग adj. Vaitān. Bhp. S. 68,113.

समुत्थान (von 1. स्था mit समुद्) m. *das sich-hinundher-Bewegen, Hüpfen, Tanzen:* ग्रयकाय° (beim galoppirenden Pferde) H. 1247.

समुत्थायिन् (wie eben) adj. *strahlend* Spr. (II) 6417.

समुत्लोल (von लिह् mit समुद्) m. als Bed. von उत्सादन H. an. 4,164. Med. n. 170.

समुद्ग scheinbar Harīv. 2751. zu lesen ist mit der neueren Ausg. संमुञ्जन्.

समुद्यर्त (von 3. उष् = वश् mit सम्) adj. *verlangend, liebend* oder *Liebe erweckend* AV. 6,139,3.

समुद्रितर् v. l. für समुदितर् Nir. 10,33.

समुद्रा v. l. für समूह्या der VS. in Çāṅkh. Ça. 6,12,10.

समुर्वरापुरीष adj. *aus zusammengefegtem Schutt* (geschichtet): Agni Çat. Br. 6,7,2,6. Kāty. Ça. 16,5,9. 10.

समूढ, समूल्क (von 1. ऊह् mit सम्) adj. 1) *zusammengefegt, — gestreift:* रक्तम् TS. 1,8,2,2. — 2) *angereiht:* समूल्कमस्य (पदं) पांसुरे *eine Fusstapfe reiht sich an die andere im Staube* RV. 1,22,17. — 3) *regelmässig geordnet* (Gegens. व्यूढ *verschoben*) heissen gewisse Formen, z. B. des Daçarātra, Dvādaçāha, in welchen die Metra der einzelnen Abtheilungen *in normaler Folge auftreten*, Āçv. Ça. 8,7,25. 10,3, 2. Çāṅkh. Br. 27,7. Schol. zu 22,1. °कृन्दम् Çat. Br. 4,5,9,1. Schol. zu Paṅkav. Br. 14,1,5. — Çāṅkh. Ça. 10,2,2. 3,3. 4,3. 11,12,12. Liṭ. 4, 5,22. 6,4. — Nach den Lexicographen = शोधित Taik. 3,1,20. = पुञ्जित, नव (सम्योजात), भुग्न, घनुपप्लुत (घनुपप्लव) 3,3,118. H. an. 3,191. Med. dh. 10. = दमित und विवाहित (von वह्) Dharaṇi im ÇKDa.

समूर m. *eine Antilopenart* H. 1294.

समूरु m. desgl. AK. 2,5,9. — Vgl. चमूरु.

समूर्तक adj. Mālav. P. 96,62 wohl fehlerhaft für संवर्तक.

समूल (2. स + मूल) 1) adj. *a) mit Wurzeln versehen* so v. a. *berast, bewachsen* Çat. Br. 13, 8, 1,12. देवपत्तन Kauç. 60. 83. चैत्य *wurzelnd* so v. a. *lebend, grünend* R. Gorr. 2,70,14. — *b) sammt der Wurzel:* बर्हिस् TBr. 1,6,8,7. Āçv. Gṛhj. 2,5,2. 7,5. Çat. Br. 7,4,2,12. 14,6, 9,34. (वनम्) समूलमुन्मूलयति Spr. (II) 5392. so v. a. *mit Allem was dazu gehört, vollständig:* ततः समाप्ते सकले ग्रगत्यतेर्व्रते समूले Harīv. 14834. (शत्रून्) समूलान्कृन्मि so v. a. *mit Stumpf und Stiel* MBh. 2,2125. Harīv. 1171. R. 5,51,3. Kām. Nītis. 17,21. समूलस्तु विनश्यति Spr. (II) 220. 715. 4041. Rāja-Tar. 4,140. (द्रव्यम्) समूलं विनश्यति so v. a. *bis auf den letzten Heller* Spr. (II) 377. समूलम् adv.: उन्मूलनम् Prab. 67, 18. समूलोन्मूलन Kavirāj. 67,14. — 2) m. N. pr. eines Berges Mārk. P. 55,7. — Vgl. सकृमूर, सकृमूल.

समूलक adj. 1) = समूल 1) *b*): वृक्षानड्वाहकार्षीव मैनान्धार्ता: समूलकान् MBh. 2,2109. — 2) *nebst Rettig* (मूलक): कालशाक MBh. 13,3274. Harīv. 8443.

समूलकाषम् adv. in Verbindung mit कष् so v. a. *mit Stumpf und Stiel ausreissen, — zu Nichte machen* P. 3,4,34. ग्रविच्चाद्य: पञ्च क्लेशा: समूलकाषं कषिता भवन्ति Sarvadarçanas. 155,12. fg. — Vgl. निर्मूलकाषम् unter निर्मूलम्.

समूलघातम् adv. in Verbindung mit हन् so v. a. *mit Stumpf und Stiel ausrotten* P. 3,4,36. Spr. (II) 6865. Sarvadarçanas. 155,18.

समूर्क (von 1. ऊह् mit सम्) m. 1) *Anhäufung* AV. 3,24,7. *Haufe, Schaar, Menge, Aggregat* AK. 2,5,39. H. 1411. Hālā. 4,1. पत्तारत्तसाम् MBh. 3,15640. ग्राहूतेषु (so ed. Bomb.) समूर्केषु तव सैन्यस्य मानद । नाभूल्लोके समः कश्चित्समूर्क इति मे मति: ॥ 7,4977. fg. देव° Harīv. 4330. ज्ञातीनाम् AK. 2,6,4,35. Hālā. 2,336. Varāh. Bhp. S. 53,21. Rāja-Tar. 1,112. Paṅkav. 222,7. गो° Mārk. P. 49,50. Rāja-Tar. 4,172. शलभ° Çiç. 31. पादपानाम् R. 3,17,6. 12. Paṅkav. 1,7,20. सुशिक्षा° (*schönes Haar*) Bhāg. P. 3,20,36. रत्न° Vet. in LA. (III) 2,19. तुष° Varāh. Bhp. S. 53,62. शास्त्र° Paṅkav. 4,2,4. Verz. d. Oxf. H. 33,*b*, 37. fg. द्रव्य° Sāṃkhyak. 1,5,14. 14,1. रोग° 249,13. वाक्समूह 2,266,14. वाक्यं पदसमूह: Tarkas. 49. पद° so v. a. पदपाठ VS. Prāt. 4,174. परमाणूनाम् Bhāg. P. 5,12,9. Sāh. D. 32. Sarvadarçanas. 142,13. 15. fgg. Vedānt. (Allah.) No. 20. VS. Prāt. 1,15. महावात° so v. a. *Sturmwind* MBh. 7,89. — 2) = गण *eine zur Verfolgung bestimmte Zwecks zusammengetretene*

Ansahl von Menschen, Verein, Körperschaft M. 8,221. Jiñ. 2,188. fg. — 3) *Summe, Inbegriff:* सर्वस्मृतिसमूहो ऽयं श्रोतव्यो धर्मबुद्धिभिः MBu. 1,2316. — 4) N. pr. eines göttlichen Wesens (wenn पार्श्वितेभः स° gelesen wird) MBu. 13,4255. — Vgl. काम°, भ°, वन°, सामूर्क्क.

समूर्क्क m: = समूर्क 1): शाल्मलीनाम् Paśkar. 1,7,28.

समूर्क्क्न (von 1. ऊर्क् mit सम्) 1) adj. *zusammenkehrend, zu einem Haufen vereinigend:* पांसु° (अनिल) M. 4,102. — 2) f. ई *Besen* H. 1016. — 3) n. *das Zusammenstreifen* Çiñkh. Gṛhj. 1,7. Vgl. परि°.

संमूर्क्ष (wie eben) adj. *zusammenzustreifen, — fegen* (so v. a. समुत्पुरीष): यज्ञि P. 3,1,131. Vop. 26,11. AK. 2,7,20. TS. 5,4,11,2. Kâṭ. 21,4. VS. S. 165.

समृक्षीक adj. Hariv. 7426. मृक्षीका सत्त्वमुद्दिस्तद्देशेन तया सह क्रियमाणं समृक्षीकम् Nilak. Könnte auch in 2. सम् + ऋ° zerlegt werden; vgl. द्यावर्क्षीक.

संमृत (von ऋ mit सम्) partic. *zusammentreffend* (in Zeit und Ort), *vereinigt* RV. 3,38,2. 10,103,11. °मेघं, °पर्ष TS. 1,6,2,1. Kâṭ. 34,18.

संमृति (wie eben) f. *Begegnung* RV. 5,7,2. तस्मात्रो अद्य समृतेरुरुव्यतम् (Attraction) 8,90,4. *Zusammenstoss, Treffen:* घोरा 4,16,17. समृता कृमि भूर्णसः 1,31,6. वधानाम् 32,6. 127,3. 5,34,6. 7,60,10. 9,71,8. Nach TS. Pâṭ. 5,9 und Padap. zu TS. 3,3,9,2 hieraus angeblich यसमर्ति.

समृद्ध 1) adj. s. u. ऋध् mit सम्. Davon °त्व n. *Trefflichkeit, guter Zustand:* त्रि:समृद्धत्वाय (und °समृ°) aus dem Veda Kâç. zu P. 8,3,106; vgl. TS. 2,4,11,5. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBu. 1,2159 nach der Lesart der ed. Bomb.; es könnte übrigens auch समृद्धपट verbunden werden.

संमृद्धि (von ऋध् mit सम्) f. 1) *das Gelingen, Gerathen, Wohlgedeihen; Trefflichkeit, guter Zustand, Wohlfahrt* AK. 3,3,10. 3,4,9,11. AV. 6,124,3. 10,2,10. 11,1,10. Kaṭhân. Up. 1,1,3. Spr. (II) 5362 (auch ऋ°). 3562 (ऋ° pl.). Varâh. Bṛh. S. 15,32. °काम Çat. Br. 12,7,3,11. °कारण Pâr. Gṛhj. 1,6. °क्षेम Kauç. 5. यज्ञस्य TS. 1,5,2,4. 7,1,9,6. व्यृद्धस्य Çat. Br. 9,5,2,1. 14,3,2,1. कृषेः 11,4,4,1. TBr. 1,4,4,10. 3,7,11,4. Kauç. 3. 5. Ait. Br. 2,10. रेतः° 6,27. तेजसः Maitrâjan. 6,36. काम° R. 1,14,3 (2 Gorr.). सर्वकाम° R. Gorr. 2,52,19. यज्ञ° 18. MBu. 13,1625. सर्वार्थ° Kathâs. 101,42. कर्म° Çiñkh. zu Kaṭhân. Up. S. 7. सर्वसंपदाम् Bhâg. P. 10,81,32 (pl.). भाग्य° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Cl. 18. धनधान्य° *Ueberfluss an* Spr. (II) 7539. *Wohlfahrt, Wohlstand* einer Person Jiñ. 1,264. MBu. 3,16332. समृद्धिवृद्धिलाभाय 4,137. Spr. (II) 1046. 2747. 2991. 4556 (pl.). 4860. Kathâs. 22,30 (pl.). परमा 45,365. Mârk. P. 51,32. 118,15. Bhâg. P. 3,14,10 (pl.). 4,3,21. 10,81,32. Vop. 6,61. तस्य भोजनाच्छादाभ्यधिका समृद्धिर्नास्ति Paśkar. 134,8. Schol. zu Naish. 22,53. बहुतरासु° Spr. (II) 6303. परा समृद्धि लङ्काया: R. 5,73,2. मनः° so v. a. *innere Zufriedenheit* Bhâg. P. 4,9,36. am Ende eines adj. comp.: वृक्षैः फलपुष्पसमृद्धिभिः *mit Früchten und Blumen reichlich versehen* MBu. 1,4868. राज्ञाभिः — अतीव भोगसमृद्धिभिः 2,1201. नवरागसमृद्धिभिर्मुकुरत्वमरीचिभिः *gesteigert durch* Ragh. 9,13. — 2) Bez. *eines best. Gedeihen bringenden vedischen Liedes* Varâh. Bṛh. S. 48,71. — Vgl. द्रुप°.

समृद्धिन् (von समृद्धि) adj. *reich gesegnet, mit Allem vollauf versehen:* गङ्गा MBu. 13,1840. gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: सर्वकाम° 2,822. R. 3,53,3. 5,9,51. सर्वभोग° 31,11. धनधान्य° 6,113,2.

समृद्धिमत् (wie eben) adj. dass.: Garuḍa MBu. 1,1252. रथ 7,85. वह्नि Mârk. P. 99,63. in comp. mit der Ergänzung: फलपुष्प° Kâd. 2,210. सर्वसिद्धि° Paśkar. 4,1,48. समृद्धिवत् (?) Çiñkh. zu Kaṭhân. Up. S. 19.

समृद्धीकर् (समृद्ध + 1. कर्) *in Wohlstand versetzen, reich machen:* °कृत Daçak. 83,6.

समृध् (von ऋध् mit सम्) 1) adj. *Gelingen habend:* समृधो विश्पते कृणु RV. 6,2,10. — 2) f. *das Gelingen:* समृधे त्वा Kauç. 5.

समृध (wie eben) adj. *vollständig, vollkommen:* सर्व तदेषां समृधेव (d. i. समृधमिव) पर्व RV. 7,103,5.

समेडी f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBu. 9,2631. daneben एडी und मेडी.

समेत 1) adj. s. u. 3. इ mit समा. Ṛv. 1,28 hat Gildemeister die v. l. समेतम् adv. *una cum* (instr.) in den Text aufgenommen, wir vermuthen समेत्य. — 2) m. N. pr. eines Berges: समेताद्रि Çaṭr. 1,245. dagegen सम्मेत 388. सम्मेतशैल (समेत° wäre gegen das Metrum) 14,96. Vgl. Colebr. Misc. Ess. 2,212. Wilson, Sel. Works 1,322.

समेद्ध् (von 1. इध् mit सम्) nom. ag. *Anzünder* RV. 8,48,3. 7,1,15.

संमेध (3. स + मेध) adj. *vollkräftig, lebensfrisch:* पशुमालभ्यं पुरोडाशं निर्वपति समेधमेवैनमालभते (=पशोरग्यङ्गविभागयुक्त Comm.) Ait. Br. 2,3. 11.

समेधन (von एध् mit सम्) n. *das Gedeihen, Zunehmen, Grösserwerden:* यज्ञे: समेधनार्थाय गन्धमाल्यं च पुष्कलम् R. Gorr. 2,83,6.

संमोकस् (2. सम् + ओ°) adj. 1) *zusammen wohnend, eng verbunden:* वायुना RV. 8,9,12. समाने योनौ 1,144,4. 159,4. 10,65,2. 8. TBr. 2,4,3,3. Kauç. 108. — 2) *ausgestattet mit, im Besitz von:* वीर्येण RV. 6,18,7. रयिभि: 1,64,10. 100,9.

समोदक (2. सम + उ°) adj. *gleich viel Wasser enthaltend* H. 409. Wilson und ÇKDr. fassen das Wort fälschlich als n. und als Synonym von क्षेत्र 4) *d*).

समोर्क् (von 1. ऊर्क् mit सम्) m. *freundliches Anrücken, Zusammentreffen* Naish. 2,17. RV. 1,8,6.

संमोकम् (wie eben) absol. *zusammenfegend:* इयर्ति रेणुं मघवा समोकम् RV. 4,17,12.

सम्प 1) m. = पत्तन Buḍḍhiprasiddha im ÇKDr. — 2) f. आ = शम्या *Blitz* H. 1104, Schol. (Schreibart der Prâkṛa). Unmâta im ÇKDr. — संपा s. bes.

संपक्व adj. = पक्व. 1) *weich gekocht:* तिलतण्डुलसंपक्वः कृसरः सो ऽभिधीयते Khândogapar. bei Kull. zu M. 3,7. — 2) *reif* von Früchten Suçr. 1,210,14. 211,4. 212,18. — 3) *reif* von Geschwüren Suçr. 2,334,8. — 4) *reif* so v. a. *vollkommen ausgebildet:* कालसंपक्वविज्ञान Hariv. 4271. — 5) *reif* so v. a. *dem Tode verfallen* MBu. 3,11494.

संपत्ति (von 1. पद् mit सम्) f. 1) *Uebereinkommen, Eintracht:* °काम Âçv. Çr. 2,11,17. — 2) *das Zutreffen:* काल° Kâṭ. Çr. 26,2,18. — 3) *das Gerathen, Glücken, Gedeihen, Gelingen, zu-Stande-Kommen:* कर्मसंपत्तिर्मन्त्रो वेदे Nir. 1,2. सर्वसंपत्तये R. 2,25,19. सस्य° Varâh. Bṛh. S.

9,12. 26,15. संकल्प° Kathâs. 11,41. ईप्सित° 22,173. कार्य° 25,71. विवाह° 119,62. सर्व° Sin. D. 300. कर्म तस्यां तादृशन्नृपसंपत्तिः Schol. zu Çiç. 42. — 4) *das Zutheilwerden, Zufallen:* स्वर्गस्य लोकस्य Ait. Br. 2,17. 4,30. Pân. Gaṇ. 2,17. न लोभादूर्ध्वसंपत्तिर्नराणामिह दृश्यते MBh. 3,4363. दुग्धोपलम्भे मुनिभा संपत्तिर्दधिसर्पिषोः Spr. (II) 3106. फल° Kathâs. 27,9. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 221. zu Kaṭhop. Up. S. 58. Kull. zu M. 7,1. सदपत्य° zu 9,30. Bhâg. P. 1,18,31. विषय° Gaupâp. zu Sâṅkhjak. 48. — 5) *das Werden zu —, das Uebergehen in Etwas* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 207. — 6) *das Vorhandensein, Dasein:* भिषगादीनां सत्त्वबलायुषां तथा Suçr. 1,131,2. 136,2. — 7) *das in-gutem-Zustande-Sein, Vorzüglichkeit:* रसव्यापत्संपत्ती Suçr. 1,18,19. शील° MBh. 2,2175 (°संपत्या zu lesen). वृत्ताध्ययन° = ब्रह्मवर्चस Hall. 2,243. — 8) *das Vorhandensein in reichlichem Maasse, Ueberfluss:* धन्य° Spr. (II) 3408. सुख° 6840. सर्वसंपत्तिरस्ति मे *ich habe Alles vollauf* Kathâs. 35,29. वर्ष° Çâṅk. 14,274. सर्वकल्याणसंपत्तिसमवेत (so lesen wir) Mârk. P. 123, 9. — 9) sg. und pl. *ein glückliches Ereigniss, Glücksfall; Glück, Wohlfahrt, Wohlstand* AK. 2,8,2,50. H. 357. Jâṭâ. 1,217. P. 2,1,6. Spr. (II) 2327. 2586. 5483. 6869. fgg. 6918, v. l. Kathâs. 24,160. 49,226. Sin. D. 752. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 263. संपत्त्या so v. a. *auf's Gerathe wohl* Kim. Nîtis. 14,20. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 2,20. — 10) *eine best. als Heilmittel gebrauchte Wurzel* Çârṅg. bei Wilson. — 11) eine Kalâ der Prakṛti und Gattin Îçâna's Verz. d. Oxf. H. 23,*b*,5. — Vgl. घन° (auch Kull. zu M. 11,38), संपद् und विपत्ति.

संपत्तिक am Ende eines adj. comp. von संपत्ति. In der Bed. 7) Kull. zu M. 3,39.

सैंपत्नी (von 2. सम्-+पति) adj. f. *sammt dem Gatten* AV. 14,2,23. 72.

संपत्प्रद (संपद् + प्र°) 1) adj. *Glück verleihend.* — 2) f. या N. pr. einer buddhistischen Göttin Wilson, Sel. Works 2,12. fg. 27. eine Form der Bhairavî Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,13.

संपद् (1. पद् mit सम्) f. P. 3,3,108, Vârtt. 9. 1) *das Uebereinkommen, Einswerden im Handel:* संपत्ते गोः TS. 1,2,2,1. womit zu vgl. ist संपदो गवा ते क्रीणानीत्यन्ततः *am Schluss des Handels sagt er* u. s. w. TS. Comm. 1,354. — VS. 15,8 (neben प्रतिपद् und अनुपद्) nicht zu bestimmen. — 2) *das Gerathen, Glücken, Gedeihen, Gelingen, zu-Stande-Kommen:* माङ° Jâṭâ. 1,221. कार्यसंपत्कर MBh. 1,2017. सर्वकृत्यानाम् Harîv. 7180. इच्छा° Spr. (II) 2332. सर्वार्थसंपत्करी 7610. *Bedingung —, Erforderniss zum Gelingen* u. s. w.: पर्याप्तात्मनो ऽधिकाराण्याः सर्वाः स्युर्यज्ञसंपदः Bhâg. P. 7,4,16. — 3) *das Zutheilwerden, Zufallen:* नित्यसुखादेः Sarvadarçanas. 92,11. Gaupâp. zu Sâṅkhjak. 48. समस्तगुण° so v. a. *Besitz* Vasiṣṭh. Bṛh. S. 53,75. शमदमादि° Vedântas. (Alleh.) No. 9. पुत्र° Bhâg. P. 6,14,42. माङसंपत्समन्वित so v. a. *dem ein* Çrâddha *zu Theil wird* Mârk. P. 33,6. — 4) *das Werden zu —, Uebergehen in Etwas* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 206. — 5) *das Vorhandensein, Dasein* Suçr. 2,507,16. am Ende eines comp. so v. a. संपन्न *versehen mit* R. 4, 44,11. Kathâs. 20,24. Bhâg. P. 3,4,31. 33. — 6) *richtiges Verhältniss, richtige Beschaffenheit* ṚV. Prât. 14,29. चकाराग्यं च लोकं वै कुर्वो नक्षत्रसंपदा so v. a. *mit der vollen Zahl von* Nakshatra MBh. 1,2228. *gute Beschaffenheit, Vorzüglichkeit, Vorzug; Vollauf:* भूयश्च शृणु मे ब्रह्मन्संपदं धर्मसंग्रहे MBh. 3,7146. यथाङ्गस्तथा दर्भाः u. s. w. माङकर्मसु संपदः *sind die Vorzüge bei* M. 3,235. द्रव्यसंपदः 236. सतिता दुर्गसंपदः Spr. (II) 6239. स्मृतिः u. s. w. मन्त्रिसंपत्प्रकीर्तिता 7262. शस्त्र° Suçr. 1, 27,14. Kâm. Nîtis. 4,19. 21. 15,36. समग्र° adj. *mit allen Vorzügen ausgestattet* Râgat. 3,23. रूपस्य so v. a. *eine schöne Gestalt, Schönheit* MBh. 16,3553. fg. रूप° dass. 1,5913. 6008. 7694. 2,2178. 3,2131. fg. 4,396. Harîv. 2080. R. 1,72,3. R. Gorr. 1,66,1. 3,23,22. Kathâs. 17,94. 30, 13. 68. 34,94. रूपयौवन° R. 5,14,33. स्वर° so v. a. *eine schöne Stimme* Harîv. 8690. R. Gorr. 1,3,61. 15,11. 2,88,23. 3,16,15. 4,63,7. वाक्य° 54,6. यज्ञ° MBh. 7,3348. भाग्य° Râgat. 3,13. गुण° so v. a. *Vorzüge* R. Gorr. 1,1,5. 66,15. Kir. 5,24. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 72,2. सर्ग° *ein guter Preis* 8,6. ब्राह्मण° (pl.) *vorzügliche Brahmanen* M. 3,126. पुष्प° *Schönheit, Pracht* R. 3,79,39. Kumâras. 5,27. Râǵa-Tar. 5,112. Bhâg. P. 3, 22,27. 4,25,18. 26,14. सस्यानां संपदः so v. a. *ein schönes Getraidefeld* Râgat. 10,60. सस्य° *eine reichliche Getraideernte* Vasiṣṭh. Bṛh. S. 5,20. 8,44. 18,5. विद्युम° 29,8. सस्यस्य परा संपत् — गवां चाप्या 40,6. गोरस° 45,7. मूषक° *Mäuse in Menge* 93,4. धन° 53,74. Spr. (II) 754. वसु° Kumâras. 6,37. Râǵa-Tar. 6,267. पुरुषद्रव्य° Pañkat. 92,3. 4 = Hit. 119,18. सत्र° AK. 3,1,13. सुख° Vasiṣṭh. Bṛh. S. 49,6. Kathâs. 17,43. सकलसौख्य° (pl.) Spr. (II) 3095. कल्याण° Milarâm. 104,17. भोग° Kathâs. 17,92. Mârk. P. 128,17. अधिकलावण्य° Sin. D. 52,13. सौभाग्य° *ein hoher Grad von* Kathâs. 12,89. अभिताप° Çiç. 9,1. प्रभुशक्ति° Râgat. 8,19. VP. 4,7,15. शक्ति° R. 1,26,24 (27,23 Gorr.). संपद् = गुणोत्कर्ष H. an. 2,237. Med. d. 41. = समुच्चय Trik. 3,3,213. — 7) *richtiger Stand, Vollzahl; Herstellung der Vollzähligkeit oder des Parallelismus durch Rechnung, in der Vorstellung* u. s. w.: व्यूहैः संपत्समोदया ṚV. Prât. 8,22. 17,14. छन्दसः 15. तथा गच्छन्ति संपदम् 16,4. 8. 1,15. सत्र° 16,45 (46). Çat. Br. 10,4,4,8. der technische Gebrauch im Ritual wird erläutert: स्वल्पे कर्मणि अधिककर्मत्वस्य मनसा संपादनम् Comm. zu TS. 1,914. Ait. Br. 2,27. TBr. 3,11,9,2. Çat. Br. 3,1,4,2. 4,4,21. 5,3,4,10. ते यज्ञं संपदा भवन्ति 5,3,4,25. सर्व° 7,4,28. 10,2,2,7. 15. 11,1,2,3. 9. 13. यजमान° *Nachbildung des* Av. Âçv. Çr. 2,6,12. छन्दसः Nid. 1,5. 15. Çikṣâ. Ça. 9,20,30. प्रत्यक्षं संपदा वा *unmittelbar oder künstlich* 15,10,5. daher संपदानुष्टुप् Ait. *durch Umrechnung* 5,6,22. in derselben Bedeutung auch संपदि विराज्, संपदि त्रगती Çikṣâ. Bh. 11,5. 14,3. — 8) (*was Einem zu Theil wird*) *Geschick:* तेन: तमा u. s. w. भवति संपदं दैवीमभिजातस्य Bhag. 16,3. दम्भो दर्पः u. s. w. अभिजातस्य संपदमासुरीम् 4. — 9) sg. und pl. *gutes Geschick, Wohlfahrt, Wohlstand, Glück, Glücksgüter, Reichthum* AK. 2,8,2,49. 3,4,24,72. Trik. H. 357. H. an. Med. परमा Çat. Br. 14,7,2,31. Kaṭhop. Up. 5,2,5. संपदं लभ् MBh. 4,122. संपदान्विताः R. 1,7,11. Kâm. Nîtis. 8,59. 12,31. 15,23. Mahân. 54. Râgat. 1,26. 64. 3,10. 9,11. 17,65. Kumâras. 1,22. Çik. 189. 91,13 (*Vermögen, Besitz*). Spr. (II) 168. 352. 634. 960. 1692. 1790. 2040. 2401. 2416. 2578. 3727. 3796. 4530. 5565. 5579. 5772. 6210. 6648. 6702. 6768. 6875. fgg. 6918. 7439. Asaṭâv. 11,3. 17,15. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 53,104. 63,3. 96,11. Kathâs. 18,288. 27,134. 36,132. 37,235. 39,243. Râǵa-Tar. 3,213. 4,77. 5,231. Sin. D. 78. Bhâg. P. 1,12,5. 3, 22,29. 4,20,12. 5,7,5. 6,9,54. 11,23. 15,21. Sarvadarçanas. 92,5. am

Ende eines adj. comp.: घत्यत्स्य° Spr. (II) 171. घ° Rigá-Tar. 3,164. पशु° 4,226. भूरि° 699. चारु° 6,303. Personificirt (so v. a. लक्ष्मी): यदुर्शनीसंपदा गाढालिङ्गितमानसः Vers. d. Oxf. H. 128,a,8. — 10) *eine Art von Perlenschnüren* H. an. Med. — Vgl. यथा°, संपत्ति und विपद्.

संपद n. = समं पद्युगम् Çabdan. im ÇKDa. संपदात् Kathâs. 45, 366 wohl fehlerhaft.

संपदिन् m. N. pr. eines Grossohnes des Açoka Burnouf, Intr. 427. 430. Schiefner, Lebensb. 310 (80). Tiran. 287. संपदी bei Burnouf und Tiran.

संपदर्ह m. v. l. für संपदह Purushottamad. bei Uéval. zu Unâdis. 3,1.

संपदसु m. N. eines best. Sonnenstrahls VP. 236, N. 2. — Vgl. संपदसु.

संपदिपद् n. sg. copul. Zusammensetzung von संपद् + विपद् P. 5,4, 106, Schol.

संपद्मक्रम m. *eine best. Meditation* bei den Buddhisten Tiran. 324.

संपन्नता (von संपन्न: s. u. 1. पद् mit सम्) f. am Ende eines comp. *das Versehensein mit:* दैव° so v. a. *das Glück-Haben* Kim. Nitis. 4,7.

संपन्न gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90. — Vgl. संपरीय.

संपराय (von 3. इ mit संपरा) m. gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101. 1) *Tod* (vgl. संपरेत *gestorben* Bhâg. P. 5,2,23): ससंपरायाभिमुख Bhâg. P. 4,5, 23. — 2) *das von-Ewigkeit-her-Sein* (= सनादित्व Comm.) Çiṇḍ. 41. — 3) *Kampf* AK. 3,4,24,152. H. 798. H. an. 4,220. fg. Med. j. 128. Hall. 2,229. Daçak. 94,2 (सम्पराय Wilson, साम्पराय ed. Calc.). — 4) *Ungemach, Unglücksfall.* — 5) *Zukunft* AK. H. an. Med. — Vgl. संपराय, सांपरायिक.

संपरायक n. = संपराय 3) Bharata zu AK. 2,8,2,72 nach ÇKDa.

संपरिग्रह (von ग्रह् mit संपरि) m. 1) *das in-Gnade-Aufnehmen Jmds'* सीतायाः Ragh. 15,71. — 2) *Eigenthum, Besitz:* ममेदमिति लोके ऽस्मिन्न भवेत्संपरिग्रहः MBh. 12,3349. — सद्धर्म° s. u. सद्धर्म.

संपरिपालन (von पालय् mit संपरि) n. *das Bewachen, Schirmen, Schützen* R. 2,27,14.

संपरिप्रेप्सु (vom desid. von आप् mit संपरिप्र) adj. *lauernd auf* (acc.): घत्तरं द्वैपायना रूपां प्रति MBh. 3,11438.

संपरिमार्गण (von 1. मार्ग् mit संपरि) n. *das Suchen, Aufsuchen* R. 5,14,61.

संपरिशोषण (von 1. शुष् mit संपरि) n. *das Hinwelken:* मा च कार्षीस्त्वं देवि °शोषणम् R. 2,10,30.

संपरीय adj. von संपर gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90.

संपर्क (von पर्च् mit सम्) m. *Verbindung, Berührung, Contact* (eig. und übertr.) H. an. 3,107. Med. k. 165. Spr. (II) 1726, v. l. Weber, Kṛshṇaj. 307. क्षीरोदक°, स्वरव्यञ्जन° *Verbindung zwischen Milch und Wasser, Vocal und Consonant* Comm. zu TS. Prât. 21,1. सुन्दरीणामाशिञ्जितनूपुरेण Kumâras. 3,26. 7,8. Vikr. 13. कुलीनैः सह Spr. (II) 1841. महाजनस्य *mit* 4755. Rigá-Tar. 3,110. काम° *mit* Maitrâyaṇ. 6,34. काल° MBh. 7,1391 (°संपर्कात् mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 5,14,28. Mṛicch. 49,25. Megh. 26. 43. Ragh. 13,12. Çik. Ca. 143,3. Milav. 44,8. Spr. (II) 1295. 4334. 5975. 6947. 7463. Kathâs. 7,43. 17,87. 60,135. Mâlav. P. 15,75. 37,26. 38,10. Rigá-Tar. 2,122. 6,192. Verz. d. Oxf. H. 18,a,32. Prab. 23,16. Pañcat. ed. orn. 53,10. Schol. zu Kap. 1,19. am Ende eines adj. comp. (f. घा) Milav. 84. Kathâs. 43,128. — = सुरत, रति

coitus H. an. Med.

संपर्किन् (wie eben) adj. P. 3,2,142.

संपर्चन (wie eben) n. nom. act. Daiçp. 20,27. 34,10.

संपर्यासन (vom caus. von 2. यस् mit संपरि) n. *das Umstürzen, Umfallen:* eines Wagens Varâh. Bṛh. S. 46,9.

संपवन (von 1. पू mit सम्) n. *das Läutern:* घाज्यस्य Gobh. 2,6.

संपा (1. पा mit सम्) f. *das Zusammentrinken* TBr. 3,10,8,2. Çat. Br. 3,6,2,26. — सम्पा s. u. सम्प.

संपाक 1) adj. = घृष्ट und तर्पक Med. k. 165. = घल्प und लम्पट Dharani im ÇKDa. — 2) m. *Cathartocarpus fistula Pers.* AK. 2,4,2,4. Med. Ratnam. 21. Suçr. 2,540,13. — Vgl. शम्पाक.

संपाचन (vom caus. von 1. पच् mit सम्) n. *das Reifmachen, Bähen eines Geschwürs durch warme Umschläge* u. s. w. Suçr. 2,6,2. 519,2.

संपाट (von पट् mit सम्) m. 1) = पाट *intersection* Colebr. Alg. 303; vgl. संपात 5). — 2) *Spindel* Çabdan. im ÇKDa.

संपाठ (von पठ् mit सम्) adj. *mit dem man zusammen lesen (studiren) darf:* घ° M. 9,335.

संपात (von 1. पत् mit सम्) m. 1) *Flug, schnelle Bewegung, Fall;* = पतन Bṛihaspatiga im ÇKDa. विद्युत्संपात *das Zucken des Blitzes* MBh. 3,11145. Harîv. 3901. 9228. Vikram. 85,20. शतह्रदा° Daçak. 71,7. वज्राशनीनाम् R. 5,7,64. ताराणाम्, भूषणानाम् MBh. 1,4096. पाषाण° 7110. शर° 2,2634. 7,3630. 4383. 6749. R. 3,34,9. रक्षोधूमास्त्र° MBh. 3,2286. Kathâs. 58,7. शस्त्र° 47,50. Bhag. 1,20. वृष्टि° *Regenguss* Rigá-Tar. 5,275. धारा° 278. Prab. 87,9. पवनाधिकसंपातः खगः Harîv. 2492. रथैः पवनसंपातैः 4997. 5476. घस्खलितमुखसंपातं रथम् Uttarar. 16,6 (22,5). मनःसंपातरंहसम् R. 7,16,18. 33,2. कम्पा = °पाटव H. 1470. *Sturz in:* पयसि Spr. (II) 5972. — 2) *eine best. Art des Fliegens* Gaṇḍîn. im ÇKDa. Pañcat. 114,25. 115,5. II,57. — 3) *Zusammenstoss, das Zusammenprallen:* वज्रपर्वतयोरिव MBh. 2,912. 4,349. घयसाम्, शिलानाम् 7,1355. ससिचर्मणोः 502. 4313. खड्ग° Kathâs. 74,283. तल° R. 6,70, 44. तयोः शिरःसंपाते Pañcat. 35,7 (ed. orn. 31,10). पद्मसंपातजे काले so v. a. *in einem Augenblick* MBh. 3,3170. घपाम् *Zusammenfluss* Varâh. Bṛh. S. 54,118. *das Zusammentreffen:* ग्रुनाम् MBh. 5,2681. कृकिणा सह *beim Spiel* Harîv. 6735. — 4) *eine best. Kampfart* MBh. 6,2234. 8,1902. Harîv. 13494. — 5) *Ort des Zusammentreffens, Berührungspunkt, Schneidepunkt:* वंशानाम् *der Diagonalen* Varâh. Bṛh. S. 53,37. 54. विषुवत्क्रान्तिवलयपोः संपातः स्यात् Goc. Golâr. 17. Kerdjar. 39. कर्णसूत्रस्य कक्षावृत्तस्य च यत्र संपातः Comm. zu Gobh. Srautaṇiâ. 27. fgg. Vgl. संपाट 1). — 6) *das Auftreten, Erscheinen, Sichzeigen, Eintritt:* उभयोरपि (द्विपतोः) Kim. Nitis. 11,28. दस्यु° Kathâs. 101,286. नागरिकपुरुष° Daçak. 74,16. fg. पुरा काकसंपातात् Kauç. 31. 34. द्वारेषु पक्षिसंघसंपाताः (v. l. °संपातः) Varâh. Bṛh. S. 46,70. घपक्षिगण° adj. *wo sich keine Vögel zeigen* R. 7,34,27. Harîv. 12302. प्रशान्ते सर्वसंपाते 12304. प्रशान्ते भृङ्गसंपाते Rigá-Tar. 3,402. वृत्ते शरावसंपाते *wenn die Schüsseln nicht mehr erscheinen d. i. nach der Mahlzeit wieder an ihren Platz gestellt sind* M. 6,56. MBh. 14,1278. तेजोंऽशानाम् MBh. 1,372. नष्टध्वजनसंपाता (नगरी) R. 2,48,27 (°संतापा ed. Bomb., im Comm. aber durch संगम erklärt). पतत्पतगसंपाते so v. a. *zur Zeit der niedersinkenden*

Sonne 5,5,27. विभक्तरश्मि° 49,30. पवन° Prab. 2,7. तमः° Sin. D. 293, 17. व्यसनशत° Spr. (II) 284. शनवज्रिन° Çatr. 14,77. साधसावेग° Kathâs. 21,97. यावत्संपातम् so v. a. *so lange es geht* Kâṭhân. Up. 5,10,5. य° adj. (f. घा) so v. a. *nicht zur Hand seiend* Kauç. 32. — 7) *Rest von Flüssigkeit, der im Gefäss zusammenläuft; Ueberbleibsel eines im Opfer verwendeten Stoffes*, überh. *Brosamen, Abfälle* Kâṭh. 28,8. 35,16. Gobh. 2,3,6. 5,3. Kauç. 3. 10. 20. तण्डुल° 21. 24. 26. 28. 30. 33. 72. 78. 109. 120. 126. 139. घप्सु संपातानानयति 27. स्नाते 5 से संपातानभ्यतिनयति 41. 37. Gobh. 2,9. मन्थे संपातमवनयेत् Kâṭhân. Up. 5,2,4. 5. Vielleicht hierher auch: मरुत्संपाताभिहत Suçr. 2,158,4. 159,14. 160,17. संपातसिक्त Pâṇâr. 3,13,21. — 8) *zusammenstossende* d. h. *in Saṃhitâ und Ritual benachbarte Lieder* (vollständig °सूक्त), z. B. RV. 4, 19. 22. 23. Comm. zu Çâṅkh. Br. 22,1. Ait. Br. 6,18. fgg. Âçv. Çr. 3,4, 14. 16 (wo nach शस्त्वा die Worte संपातानेव in der Ausg. einzufügen sind). 3,10,4. Çâṅkh. Çr. 16,20,15. — 9) N. pr. eines Sohnes des Garuḍa Wilson ohne Aut. einer Aut. fehlerhaft für संपाति. — Die Bed. des Wortes RV. Prât. 16,51 ist nicht zu bestimmen. — Vgl. घा-त्रा°, निः°.

संपातम् (wie oben) absol. in विद्युत्संपातम् *mit der Geschwindigkeit des Blitzes, im Nu* MBh. 12,4395.

संपातवत् (von संपात) adj. 1) *vorhanden, bereit;* mit कृ *bereit machen, zur Stelle bringen; was überhaupt zur Hand ist, der nächste beste, beliebig* (Gegens. घसंपात): निशायां संभारान्संपातवतः करोति Kauç. 23. 12. काम्पीलपुटानपां पूर्णान्संपातवतः कृत्वा 28. घवसिञ्चत्युन्ना: संपातवतीरसंपाताः 32. उदपात्र 24. 27. धनुस् 14. रथचक्र 14. दण्ड 23. 47. गोप्रङ्ग 31. घक्त 34. दामी (= दामनी) ebend. घश्मन: 51. नावम् 52. संपातवतामभ्राति 7. घोषधी: 41. द्रव्य 42. 50. 52. — 2) *mit* Saṃpâta (Bed. 8) *versehen* Âçv. Çr. 3,4,16. fg.

संपाति m. N. pr. 1) eines fabelhaften Vogels, eines Sohnes des Aruṇa von der Çyenî (nach dem R. des Garuḍa) und Bruders des Gaṭâyu MBh. 1,2634. 3,11305. 16045. VP. 149, N. 13. R. 1,1,70 (75 Gorr.). 3, 20,34. 4,56,2. fgg. 6,110,46. Rag. 12,60. Kathâs. 107,25. Mahâvîraḥ. 74,1. — 2) eines Fürsten MBh. 7,804. — 3) eines Sohnes des Bahugava und Vaters des Ahaṃjâti Harîv. 1657. fg.; vgl. संपाति. — 4) eines Affen R. 4,33,13. 39,37. 6,13,8. 22,3. — 5) eines Râkshasa R. 5,12,13. 7,5,45. — Vgl. संपातिन्.

संपातिन् (von 1. पत् mit सम्) 1) adj. a) *zusammen fliegend:* क्षेमा: MBh. 6,3668. — 2) *mitfliegend* so v. a. *gleich rasch* Nir. 12,32. — c) *herunterfallend:* कुसुमानि Uttarar. 30,20 (40,11). — 2) N. pr. a) = संपाति 1) R. 4,56,5. 20. 58,15. 59,21. — b) = संपाति 3): स° adj. R. 6,108,8.

संपाद् m. nom. act. von 1. पद् mit सम् in दु:°.

संपादक (vom caus. von 1. पद् mit सम्) adj. *hervorbringend, bewirkend;* in comp. mit seinem obj. Kull. zu M. 1,17. 19. 3,5. 9,5. °त्व n. nom. abstr. Verz. d. Oxf. H. 267,a,17.

संपादन (wie oben) 1) adj. (f. ई) a) *verschaffend, zu Theil werden lassend:* स्वर्ग° MBh. 1,6458. — b) *ausführend, erfüllend:* दुर्घट° Verz. d. Oxf. H. 238,b,20. घाज्ञा° Spr. (II) 881 (vgl. Jâṇ. 1,76). — 2) n. a) *das Verschaffen, Herbeischaffen, Besorgen:* विचित्रान्नपान° Kathâs. 54, 192. भार्या° Mârk. P. 72,12. तृण° Comm. zu Gaim. 1,16. पूजासाधन° Sarvadarçanas. 55,20. — b) *das Zustandebringen, Ausführen, Erfüllen, Hervorbringen, Bewirken:* स्थूलवस्त्र° Pañcat. 133,1. सत्समीहित° Mâlatîm. 4,4. घात्मचिकीर्षितस्य Kathâs. 15,149. स्वकार्य° Kull. zu M. 1,19. धर्मस्य zu 7,17. याग° zu 11,20. व्रत° Vikram. 37,7. शास्त्रस्थिति° Sin. D. 406. तद्दर्शनिश्चय° Comm. zu Gaim. 1,1. सुख° Sarvadarçanas. 118,18. 169,8. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 14. 206. 261. Comm. zu TS. Prât. 3,1. 14,15. zu TS. 1,914,4. — c) *das Besorgen* so v. a. *in Ordnung-Bringen:* वास्तु° M. 3,255. घर्घ° 7,168.

संपादनीय (wie oben) adj. *zu Stande zu bringen, auszuführen, zu bewirken:* समारब्ध्य Hit. ed. Johns. 1512. मैत्री Kull. zu M. 3,138. दोष्ट्र *zu stillen* Uttarar. 16,5 (22,7).

संपादम् (von 1. पद् mit सम्) absol. *vollzählig machend:* दश दश संपादं जुहोति *jedesmal alle zehn* TBr. 3,8,6,5.

संपादयितृ (vom caus. von 1. पद् mit सम्) nom. ag. 1) *Verschaffer, Herbeischaffer, Besorger:* ईप्सितकुसुमानाम् Sin. D. 181,8. Kumâras. 1, 4 (fem.). — 2) *zu-Stande-Bringer, Ausführer:* प्रारब्ध्य° Kull. zu M. 4, 246. 6,79.

संपादित partic. s. u. dem caus. von 1. पद् mit सम्. Davon nom. abstr. °त्व n. *das zu-Stande-gebracht —, erfüllt-worden-Sein:* सुकृत्संपादितत्वात्साधुतरफलो मे मनोरथ: Çiç. Ca. 160,9.

संपादिन् (von 1. पद् mit सम्) adj. 1) *zusammentreffend mit* so v. a. *sich zu Etwas eignend, passend;* mit instr. P. 5,1,99. 6,2,155. कर्णावेष्टाभ्यां संपादि मुखम् = कर्णालंकाराभ्यामवश्यं शोभते Schol. zu 5,1,99. zur Erklärung der suff. य, इय gebraucht: घधिय = घध्य° Nir. 6,16. यज्ञ° 7,27. 9,37. सोम° 11,19. — 2) *vollbringend, ausführend:* घाज्ञा° Jâṇ. 1,76 (vgl. Spr. (II) 881). इष्ट° Kathâs. 92,35.

संपाद्य (vom caus. von 1. पद् mit सम्) adj. 1) *zu Stande —, zu Wege zu bringen, zu Stande —, zu Wege gebracht werdend:* बीज भक्षेन MBh. 12,4760. Mallin. zu Kumâras. 1,35. कार्य Kull. zu M. 9,297. प्रज्ञा° zu 3,18. Sarvadarçanas. 11,8. त्रेतासंपाद्यानि कर्माणि Kull. zu M. 7,78. Davon nom. abstr. °त्व n.: मातापितृसंपाद्यत्वाज्जन्मन: zu 2,170. — 2) *vollzählig zu machen* TS. 1,6,6,3. Çâṅkh. Çr. 7,27,25 in Ind. St. 3,80. — Vgl. दु:°.

संपार् m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Samara und Bruders des Pâra, VP. 4,19,12.

संपारण (vom caus. von 1. 2. पर् mit सम्) 1) adj. a) *bis zum Ende reichend, dauernd:* वसु RV. 3,45,4. — b) *zum Ziel führend:* स्वर्गस्य लोकस्य Çat. Br. 4,2,5,10. — 2) n. *das Vollenden* Pañcav. Br. 13,10,11.

संपारिन् adj. *überführend:* नौ Ait. Br. 4,13. 6,6.

संपावन (von 1. पू mit सम्) n. *das Mitläutern* Kâṭy. Çr. 25,13,16.

संपावेयश्च n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,242,b.

संपिण्डित s. u. पिण्डय् mit सम्. संपिण्डितताङ्गुलि adj. auch Hall. 2,332.

संपिधान (von 1. धा mit संपि d. i. समपि) n. als eine Bed. von घाच्छादन AK. 3,4,28,127. H. an. 4,159. Med. n. 167.

संपिबे (von 1. पा mit सम्) adj. *hinunterschlingend* AV. 5,135,2.

संपीड (von पीड् mit सम्) 1) m. *Druck* Kir. 7,12. — 2) f. घा *Qual, Pein, Bedrängniss* Gobh. 4,7,14. M. 12,76. व्याधि° Harîv. 11174.

संपीडन (wie eben) n. 1) *das Drücken:* कर° *der Hand* MBu. 2,904. योनि° *der durch die vulva bewirkte Druck* 11,108. — 2) *das Quetschen als Fehler der Aussprache:* यमस्य Ind. St. 4,115,2.

संपीति (von 1. पा mit सम्) f. *Trinkgelage* P. 3,3,95, Schol. (vgl. 6,2,139).

संपुट (2. सम् + पुट) m. 1) *eine halbkugelförmige Schale und Alles was diese Form hat:* शराव° Suçr. 2,235,16. 389,20. Çiçup. Sarn. 3,9, s. कपाल° Mahivirac. 17,18. सागरशुक्ति° Spr. (II) 6781, v. l. कमलिनीपत्रशंपुटा: (so ed. Calc.) Daçak. 106,2. बद्धांजलिं संपुटं कृत्वा Harıv. 14919. पाणि° Kirât. 2,288. हस्त° H. an. 3,624. Med. l. 60. करकंज° Bhâg. P. 1,11,2. संपुटाञ्जलि adj. Pâṇ. 1,3,82. तस्याये कृतसंपुट: (adj. = कृताञ्जलि:) Verz. d. Oxf. H. 62,a,10. स्फुरमाणोष्ठसंपुटा adj. MBu. 1,3009. वक्त्र° Rit. 1,21. — 2) *eine runde Dose* (zur Aufbewahrung von Juwelen u. s. w.) H. 1015. Hit. 134. Hall. 4,79. Verz. d. Oxf. H. 145, b,6. घरणि° Nîlak. zu MBu. 3,17445. — 3) *Hemisphäre:* ब्रह्माण्डकटाहसंपुटतटे Gol. Bhuvanak. 67. — 4) *eine best. Blume,* = कुहक Açoka im ÇKDa. — 5) = एकत्रातीयेभयमध्यवर्तिन् ÇKDa. mit folgendem Belege aus dem Tantrasâra: सकाम: संपुटो ज्ञेय्यो निष्काम: संपुटं विना ॥ केवलां मातृकां कृत्वा मातृका तारसंपुटा । मातृकापुटितं तारं न्यसेत्साधकसत्तम: ॥ Hiermit ist zu vergleichen मातृकां मनुसंपुटाम् Pâṇ. 3,15,18. — 6) *quidam eosundi modus:* संप्रसार्यैभयो: पादौ शय्यागतकपोलक: । भगलिङ्गस्य संयोगाद्रमते संपुटो हि स: ॥ Ratim. im ÇKDa. — 7) संपुटे लिख् *so v. a. Jmd (gen.) Etwas gut schreiben* Kathâs. 6,29. hiermit zu vergleichen: ललाटसंपुटविकटाक्षरमालिका *so v. a. was Einem auf der Stirn gut geschrieben ist, was man im Leben nach des Schicksals Fügung zu erwarten hat* Spr. (II) 1804. — 8) Titel einer buddh. Schrift Târan. 330. fg. चतुर्योगिणी° 331. — Vgl. वक्त्र°, हर्ष°.

संपुटक m. 1) = संपुट *eine runde Dose* (zur Aufbewahrung von Juwelen u. s. w.) AK. 2,6,2,40. संपुटिका f. dass. Spr. (II) 6655. — 2) = संपुट 6) Suçruta.

संपुटीकर् (संपुट + 1. कर्) *durch die entsprechende andere hohle Schale vollständig machen;* davon nom. act. °करण n. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 140.

संपुष्टि (von 1. पुष् mit सम्) f. *vollkommenes Gedeihen* Kâty. Çr. 19, 5,8. Lâṭy. 5,4,19.

संपूजन (von पूज् mit सम्) n. *das Ehren:* मख° M. 3,127. गुरु° MBu. 2,736.

संपूजा f. dass. MBu. 12,13196.

संपूजित 1) adj. *geehrt.* — 2) m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,21. fg.

संपूज्य adj. *zu ehren* M. 2,131. 210. 3,120. 9,110. MBu. 1,2840. 3, 13365. 12,2498. Mâlav. P. 34,1. Pañcat. 3,7,27.

संपूर्ण adj. s. u. 1. पॄ mit सम्. Hinzuzufügen wäre *vollständig, vollzählig:* रागजाति Saṅgîtaratnâkara im ÇKDa. °स्त्रा:, °रागा: Saṅgîtadâmodara ebend. एकादशी Tithâdiṣṭ. ebend. Bez. einer der vier ominösen Bachsteinen Varâh. Bṛh. S. 45,2.

संपूर्णकालीन (von संपूर्ण + काल) adj. *rechtzeitig:* °जनन Kull. zu M. 5,82.

संपूर्णता (von संपूर्ण) f. *Vollständigkeit, das Vollendetsein:* संपूर्णतां सुरगुरुं गमितं तेन भूभुजा *wurde vollendet* Râja-Tar. 6,142. *Vollmaass:* °युक्त *vollauf habend* Spr. (II) 436.

संपूर्णमूर्छा f. *eine best. Kampfart* MBu. 2,968.

संपूर्णव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34,b,35.

संपूर्ति (von 1. पॄ mit सम्) f. *das Erfüllt-, Ausgeführtwerden, Erfüllung:* नलेष्टापूर्त° Naish. 17,160.

संपृक्त (von पर्च् mit सम्) adj. *in Berührung stehend —, bringend* VS. 9,4. 19,11. infin. संपृचस् s. u. पर्च् mit सम् 1).

संपृण (von 1. पॄ mit सम्) adj. *füllend* Çiç. Ça. 1,15,16.

संपेष m. nom. act. von पिष् mit सम् gaṇa संतापादि zu P. 3,1,101. — Vgl. संपेषिक.

संप्रकाशक (vom caus. von काश् mit संप्र) adj. *anweisend, anzeigend:* विपरीतमार्ग° Mâdhavân. 136.

संप्रकाशन (wie eben) n. *das Enthüllen, Offenbaren:* आपत्या: Kir. Nîtis. 17,4.

संप्रकाश्य adj. *zu enthüllen, zu offenbaren:* सर्वं न सर्वस्य च संप्रकाश्यम् Spr. (II) 2785.

संप्रक्षाल (von 2. क्षल् mit संप्र) adj. *die vorgeschriebenen Abwaschungen vollbringend* MBu. 13,646. 6494. 6516.

संप्रक्षालन n. *das Abwaschen, Wegwaschen* so v. a. *Vernichtung* (der Welt) *durch eine Ueberschwemmung:* °काल MBu. 12,13190. लोकानाम् 3,12774.

संप्रणाद (von नद् mit संप्र) m. *Getön:* घानन्दभेरीशत° adj. Harıv. 13205.

संप्रणेतर् (von 1. नी mit संप्र) nom. sg. *Führer:* eines Heeres MBu. 12,6175. दण्डस्य *Führer des Stocks* so v. a. *Verhänger von Strafen* M. 7,26. धर्मार्थयोरापदि *der für die Aufrechterhaltung sorgt* MBu. 3,958.

संप्रतर्दन (von तर्द् mit संप्र) adj. etwa *spaltend, durchbohrend:* Vishṇu MBu. 13,6974. संप्रमर्दन ed. Bomb.

संप्रतापन (vom caus. von 1. तप् mit सम्) n. *das Erhitzen* Suçr. 2, 363,3. — 2) m. oder n. *eine best. Hölle* M. 4,89. Jiṭ. 3,223.

1. संप्रति (2. सम् + 1. प्रति) indecl. gaṇa तिष्ठद्वादि zu P. 2,1,17. 1) *gerade gegenüber von, dicht vor* (acc.): घग्निम् Çat. Br. 3,7,4,16. उर: 7,4,1,43. ब्राह्मणान् Pâr. Gṛhj. 3,14. — 2) *richtig, genau; zu rechter Zeit* Nir. 6,22. यदौषसं जुहोति तदेव संप्रति TBr. 2,1,2,12. Âçv. Br. 5,31. Çat. Br. 1,6,2,22. न किं चन संप्रति शक्नोमि कर्तुम् 6,3,1,14. 10,6,1,2. संप्रतीममात्मानं वैश्वानरमध्येति Kâṭh. Up. 5,11,2. 6,11,1. — 3) *genau so v. a. gerade, eben, just* Nir. 7,21. TS. 2,5,5,3. एष संप्रति यज्ञो यत्पञ्चरात्र: 7,1,10,2. Çat. Br. 1,1,1,21. 4,4,2,12. संप्रति योनौ रेत: प्रजातिं दधाति 8,6,2,11. 13,2,5,2. मध्यंदिने Kâṭh. Up. 2,9,6. तेन *just deshalb* MBu. 3,15604. Bhâg. P. 3,15,47 (von रतिम् zu trennen). — 4) *eben, just so v. a. diesen Augenblick, jetzt* AK. 3,5,22. H. 1530. Kap. 3,6. R. 1,73,2. 2,90,18. 93,8. Çiç. 4,5. 5,13. 41,17. 112,21, v. l. 27. 88. 134 (Gegens. प्रथमम्). Vikr. 13 (Gegens. पुरा). Weber, Rimat. Up. 296. Spr. (II) 1694. 6033. 7500. संप्रत्यती तेष्यभयानि Varâh. Bṛh. S. 91,1. Bhâg. P. 7,1,17. LA. (III) 88,17. Sarvadarçanas. 28,19. 84,14. 118,6. Hit. 8,19. संप्रत्येव Kathâs. 18,186. mit einem imperf. so v. a. *alsbald* 1,26. — संप्रत्ययै: Mbh. 4 fehlerhaft für स प्रत्ययै:. — Vgl. घ°, सांप्रत, सांप्रतिक.

2. संप्रति m. N. pr. des 24ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇi H. 53. Vgl. Wilson, Sel. Works 1,337.

संप्रतिपत्ति (von 1. पद् mit संप्रति) f. 1) *Erlangung, Gewinnung:* धर्म° MBh. 2,72. सत्य° 12,4040. — 2) *richtige Auffassung, Verständniss* Kap. 2,2,38. Pat. zu P. 8,3,82. शेष° *Verständniss für das was zu thun übrig bleibt* MBh. 5,1476. Çiç. 19,38. Sin. D. 286,20, °त्व so v. a. संप्रतिपत्तिमत् MBh. 12,4898. — 3) *das Einverstandensein:* शिष्ट° *mit* MBh. 2,73, v. l. सर्व° *Aller* Verz. d. Oxf. H. 266, a, 39. संप्रतिपत्तिमिवापन्नः Paar. 102, 2, v. l. Kull. zu M. 8,210. 9,127. *Einräumung, Zugeständniss:* युक्ताभियोगं प्रत्यर्थी यदि तं प्रतिपद्यते । सा तु संप्रतिपत्तिः स्याच्छास्त्रविदिरुदाहृता ॥ Bṛhaspati in Vjavahârat. 19.

संप्रतिपत्तिमत् (von संप्रतिपत्ति) adj. *Geistesgegenwart besitzend* MBh. 12,4902. Vgl. उत्पन्न und प्रत्युत्पन्न unter 1. पद्.

संप्रतिपादन (vom caus. von 1. पद् mit संप्रति) n. 1) *das Zukommenlassen, Verabfolgen, Geben:* परिवृढस्य विधिवत्पात्रे Kim. Nitis. 13,57. — 2) *das Einsetzen:* विचित्रवीर्यस्य राज्ये MBh. 1,275 (संप्रति° ed. Calc.).

संप्रतिपूजा (von पूज् mit संप्रति) f. *Verehrung:* यास्त्वेताः प्रतिकृतयः °पूजार्थाः Pat. zu P. 5,3,99. man könnte auch संप्रति (*gerade, just*) पूजार्थाः trennen.

संप्रतिरोधक (von 2. रुध् mit संप्रति) m. etwa *Abwehr* (von Dieben, Räubern u. s. w.) Jâñ. 2,147. = बन्दिग्रहणनियहादि Mit. *Gefängniss* Stenzler.

संप्रतिविद् (संप्रति + 2. विद्) adj. *der die Gegenwart versteht so v. a. der einen gesunden Menschenverstand hat, die höheren Wahrheiten aber nicht kennt* Kaṭh. Up. 1,4.

संप्रतिष्ठा (1. स्था mit संप्रति) f. 1) *Beständigkeit, Beharrlichkeit:* ऊर्ध्वा च दृष्टिर्न च संप्रतिष्ठा Mâṇ. P. 43,30. *der beharrliche Zustand, Dauer* (im Gegensatz zu *Anfang* und *Ende*): न रूपस्येह तवोपलभ्यते नाशो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा Bhag. 13, 3. — 2) *eine hohe Stellung:* संप्रापतुर्मरुतौ संप्रतिष्ठाम् MBh. 12,2786.

संप्रतिसंचर (संप्रति सं° gedr.) m. = प्रतिसंचर *das Wiedereingehen, Auflösung:* ब्राह्म *in das* Brahman MBh. 12,8367.

संप्रतीक्ष्य (von ईक्ष् mit संप्रति) adj. *zu erwarten* Jâñ. 1,77.

संप्रतीति (von 3. इ mit संप्रति) f. *Ruhm* Kir. 3,43.

संप्रतोली f. = प्रतोली MBh. 14,2321. स प्र° ed. Bomb.

संप्रत्ति (von 1. दा mit संप्र) f. *Vermächtniss* Cat. Br. 14,4,3,25. °कर्मन् Comm. zu Kaṭh. Up. 2,18.

संप्रत्यय (von 3. इ mit संप्रति) m. 1) *Uebereinkommen, Verabredung:* s. यज्ञासंप्रत्ययम्. — 2) *Vertrauen, Glaube* AK. 3,4,23,108. Nir. 13,1. कृत° adj. MBh. 4,716. भवतीवचन° Çiç. Ca. 103,18. अ° *Misstrauen* R. Gorr. 1,1,66. — 3) *Gewinnung einer richtigen Vorstellung, Verständniss des Gemeinten:* यद्य गौरित्यत्र कः शब्दो येनोच्चरितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणानां संप्रत्ययो भवति स शब्द इत्युच्यते Pat. in Sarvadarçanas. 141, 6. 7. मुख्यामुख्ययोर्मुख्ये संप्रत्ययः Comm. zu Kâtj. Ça. 77,8. 9. 79,6. zu TS. Prât. 3,24. 10,12. 14,17. गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसंप्रत्ययः Paribhâshâ zu P. 8,3,82. सर्वविशेषासंप्रत्यये P. 4,1,88, Vârtt. 3. 5,1,28, Vârtt. 1. संज्ञासंप्रत्ययार्थम् 1,1,23, Vârtt. 1. Schol. zu Âçv. Ça. 2,4, 14. = सवगम Kâṭ. bei Gold. Min. 166, a. — 4) *Begriff:* एकार्थसंप्रत्ययाः so v. a. *Synonyme* Vaṇis. Bṛh. 1, 4.

संप्रथा Râja-Tar. 4,254 wohl fehlerhaft für सुप्रथा; vgl. Spr. (II) 7014.

संप्रदातर् (von 1. दा mit संप्र) nom. ag. *Geber, Darbringer* M. 9,136.

संप्रदातव्य (wie eben) adj. *zu geben, zu schenken:* तिलाः MBh. 13, 3411. *zu überliefern, zu lehren* 12,12856.

संप्रदान (wie eben) n. 1) *das Geben, Schenken, Zukommenlassen:* उदकुम्भ MBh. 13,3685. उपानह् 3960. (Spr. (II) 1542. भाद्धस्य Pâraṇ. 1,13,21. *das Ueberliefern, Lehren:* वेदस्य VS. Prât. 8,41. fg. *das Uebergeben:* स्वात्मव्यापार° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 304. *Hingabe:* आत्मनः MBh. 12,8958. Spr. (II) 3278. *das zur-Ehe-Geben:* कन्यानाम् M. 7,132. MBh. 1,6526. R. 1,68,15. Verz. d. Oxf. H. 27,a,7. *das Gewähren:* संभाषा° R. 7,64,5. ohne Beifügung eines obj. *Gabe, Geschenk* MBh. 1, 5601. 5,5090. 9,2385. 13,6683. Spr. (II) 1530. पितापुत्रीय *das Vermächtniss eines Vaters an seinen Sohn* Kaṭh. Up. 2,15 (vgl. संप्रति, welches durch संप्रदान erklärt wird). अ° *das Nichtherausgeben, das Zurückhalten einer* (versprochenen) *Gabe* Journ. of the Am. Or. S. 7, 44. — 2) *die Person, für die man Etwas thut, der Begriff des Dativs:* कर्मणा यमभिप्रेति स संप्रदानम् P. 1,4,32. 44. चतुर्थी संप्रदाने 2,3,13. 3, 4,73. देवतासंप्रदाने *wenn die Person, für die Etwas gethan wird, eine Gottheit ist* 2,3,61. यागसंप्रदानं देवता *die Person, für welche ein Opfer geschieht, heisst* Devatâ Kâç. zu P. 4,2,24. — 3) MBh. 12,13204 wohl fehlerhaft für संप्रयाण. — Vgl. सांप्रदानिक.

संप्रदानीय adj. 1) (wie eben) *zu geben, zu schenken:* वर्धिताः (घर्घाः) पात्रे (so die v. l.) Pâraṇ. ed. orn. 3,16. — 2) (von संप्रदान) *die Ueberlieferung* (einer Lehre) *betreffend:* अध्ययन° so v. a. *das Lernen und Lehren betreffend* (das suff. gehört zu अध्ययन und संप्रदान) Sûrya. 1,8,2.

संप्रदाय (von 1. दा mit संप्र) 1) nom. ag. *Verleiher:* श्रेयसाम् Z. d. d. m. G. 27,7,1 (*Aufeinanderfolge* Aufrecht). man könnte aber auch संप्रदायी st. संप्रदायः vermuthen. — 2) m. *mündliche Ueberlieferung* AK. 3, 3,7. H. 80. 1537. Hall. 2,247. 5,91. Kâuç. 1. वृद्ध° Çiñkh. Gṛhj. 2,10. विनाशवत् Weber, Prâtiçâkh. 72. संप्रदाय एव प्रमाणम् 80. Râmat. Up. 313. Verz. d. B. H. No. 302. Verz. d. Oxf. H. 1,b,12. 195,a,8. Râja-Tar. 3, 129. जीर्ण Schol. zu Kâtj. Ça. 1,4,28. 10,1,12. 19,1,21. °विद् Sâj. in der Einl. zu Ait. Br. Sarvadarçanas. 79,18. °विच्छेद 127,18. संप्रदायाविच्छेद 16. fg. °विगम Çiç. 14,79. ह्रास: संप्रदायस्य Kusum. 23,16. °प्रद्योतक 3,11. °प्रवर्तक Wilson, Sel. Works 1,34. Sarvadarçanas. 129, 22. सत्संप्रदायपुक्त Spr. (II) 6748. तदीयपाठ° Müller, Sl. 122. वेदसंप्रदायप्रवर्तक Verz. d. Oxf. H. 264,b,27. लौकिकवैदिक° Sarvadarçanas. 154,18. ब्रह्मविद्यासंप्रदायकर्तर् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 1. घटादि° *über die Anfertigung* Kusum. 23,11. गुरुशिष्य° Verz. d. Oxf. H. 45,a, 22. 227,b,4. घनादि° adj. 199,b, No. 472. विच्छिन्न° adj. Müller, Sl. 233. यविच्छिन्नवेद° adj. Kull. zu M. 3,184. सवासदिव्यास्त्र° adj. (दत्तदिव्या° Cow.) Uttarar. 30,2 (39,12). — Vgl. यवासंप्रदायम्.

संप्रदायिन् adj. 1) (wie eben) *bringend, verursachend:* यशनिभय° Vaṇis. Bṛh. S. 3,38. — 2) (von संप्रदाय) *eine bestimmte Ueberlieferung habend, Anhänger einer auf eine best. Ueberlieferung sich berufenden Secte* Wilson, Sel. Works 1,34. in comp. mit dem Namen der Gottheit, auf die die *Ueberlieferung* schliesslich zurückgeführt wird, शौ°, रुद्र°, ब्रह्म°, सनकादि° 31. 34. fgg. 119. fgg. 139. fgg. 150. fgg.

संप्रदुत (!) m. N. pr. eines Mannes Târan. 160. 172. man könnte सं-

प्रकुत vermuthen.

संप्रधारण (von धृ mit संप्र) n. *das Erwägen, in Betrachtstehen* AK. 3,4,24,138. सर्वेषाम् Buan. Nityaç. 19,71. Daçan. 1,26. Sin. D. 343. 165,1. P. 3,3,161, Schol. f. धा dass. AK. 2,8,4,25. H. 1374. P. 8,1,12, Vârtt. 8.

संप्रधार्य (wie eben) adj. *zu erwägen, in Betracht zu ziehen* B. 5,35, 40. Pat. zu P. 5,3,5 in der lith. Ausg.

संप्रपद (v. सं + प्र°) n. *das Stehen auf den Fusszehen:* दिनं संप्रपदैर्नयेत् Jîân. 3,51. st. dessen तिष्ठेद्धा प्रपदैर्दिनम् M. 6,22. *Umhergehen* Schmidt.

संप्रपुष्पित adj. *reichlich mit Blüthen versehen:* पादप B. 4,53,5. 5,17, 11. — Vgl. प्रपुष्पित und पुष्पित.

संप्रभव (von 1. भू mit संप्र) m. *Entstehung, Erscheinung:* am Ende eines adj. comp.: धनिष्ठादिकसंप्रभव (ein Komet) Varâh. Bṛh. S. 11,15.

संप्रमर्दन (von मर्द् mit संप्र) adj. *zerstampfend, zertretend* u. s. w.: Vishṇu MBu. 13,6974 nach der Lesart der ed. Bomb. (संप्रतर्दन ed. Calc.).

संप्रमाद (von 1. मद् mit संप्र) m. *Sorglosigkeit, Fahrlässigkeit:* स्व° Bhâg. P. 5,5,12.

संप्रमुक्ति (von 1. मुच् mit संप्र) f. *das Lösen:* पशूनाम् Kâṭh. 30,9.

संप्रमेक् m. = प्रमेक् *krankhafter Harnfluss* Kâraka 8,4.

संप्रमोद (von 1. मुद् mit संप्र) m. *grosse Freude, Jubel:* °मल: काम: MBu. 12,4533.

संप्रमोष (von 1. मुष् mit संप्र) m. *Schwund:* दृष्टस्मृति° Bhâg. P. 6,4, 26. अनुभूतविषयासंप्रमोष: स्मृति: Jogas. 1,11. स्व° *das Nichtvergessen* Vâjñ. 61.

संप्रमोह (von 1. मुह् mit संप्र) m. *Geistesverwirrung* MBu. 2,2124. 12,495.

संप्रयाण (von 1. या mit संप्र) n. *Abzug, Aufbruch* MBu. 5,105. Bhâg. P. 1,15,51. auch MBu. 12,13204 wird संप्रयाणे st. संप्रदाने gelesen werden müssen.

संप्रयास (von यस् mit संप्र) m. *Anstrengung, Ermüdung* Bhâg. P. 6,11,22.

संप्रयोक्तव्य (von 1. युज् mit संप्र) adj. *anzuwenden, zu gebrauchen:* संस्कृत Sin. D. 173,16.

संप्रयोग (wie eben) m. 1) *Befestigung:* नेपथ्य° pl. Verz. d. Oxf. H. 217,a,5. दृतेन मोक्षयति भूषणसंप्रयोगान् Mṛicch. 18,4. — 2) *Verbindung, Vereinigung, Berührung, Contact* H. an. 4,51. Med. g. 57. प्राक्संप्रयोगादूनानां नास्ति दु:खं परायणम् Spr. (II) 4296. तयो: MBu. 14,1346. कान्तौ सुलभेतरसंप्रयोगाम् Milav. 78. कल्याणी: सह Âçv. Gṛhj. 1,23,22. सद्भिर्मनुष्यै: सह Spr. (II) 1013. मम त्वया MBu. 1,1907. द्विषद्भि: 2,2124. पतितै: 12,6076. Spr. (II) 476. 4911. 7430, v. l. उभय° Pân. Gṛhj. 2,17. यनिष्ठ° Maitrâjn. 1,3. Spr. (II) 307. ब्राह्मण° MBu. 3,976. Mṛicch. 51, 20. Milatîm. 36,8. Varâh. Bṛh. S. 87,13. 89,13. उपगीतैर्मात्राणां गणवत्सत्संप्रयोगो वा 104,30. सत्संप्रयोगे पुरुषस्येन्द्रियाणाम् Gaim. 1,4. (तालस्य) उच्चत्वमप्यातपसंप्रयोगात् Raghu. 5,54. *fleischliche Vereinigung, coitus* Taitt. 2,7,21. H. 537. H. an. Med. Halâj. 2,414. स्त्रीपुंसयो: MBu. 13,528. पुरुषसंप्रयोगाद्विचारे गर्भिता याति Varâh. Bṛh. S. 78,20. 25. *Conjunction* (von Mond und Nakshatra): प्राजापत्येन्दु° 24,8. — 3) *Ausübung:* कृति° MBu. 8,2126. *Anwendung, Gebrauch, Praxis* Verz. d. Oxf. H. 216,a,26. b,34. 217,a,23. — 4) *Zauberei* H. an. Med. — Nach Açâla im ÇKDa. angeblich adj. = अर्चित. Vgl. संप्रयोगिक.

संप्रयोगिन् adj. = कामुक und कलाकेलि H. an. 4,201. Med. n. 250. = सुप्रयोग H. an. = सप्रयोजन (संप्रयोजक ÇKDa. nach dem Aut.) Med.

संप्रयोज्य (vom caus. von 1. युज् mit संप्र) adj. *auszuführen, darzustellen:* धूर्तविट° (भाण) Buan. Nityaç. 18,101.

संप्रलाप (von 1. लप् mit संप्र) m. *Geschwätz* Sin. D. 214.

संप्रवर्तक (vom caus. von वर्त् mit संप्र) adj. 1) *in's Werk setzend, befördernd:* सर्वस्यास्य Kim. Nitis. 2,24. — 2) *entstehen lassend, Schöpfer:* Çiva MBu. 12,10127.

संप्रवर्तन (von वर्त् mit संप्र) n. *das Sichbewegen, Sichtummeln:* गजाश्वरथपृष्ठेषु पथावत् Kim. Nitis. 13,42.

संप्रवाक् m. = प्रवाक् *Fluss, Continuität, ununterbrochene Fortdauer:* गुण° Bala. P. 8,3,28. 10,27,4. निरस्तमायागुण° adj. Verz. d. Oxf. H. 29,a,4. 5.

संप्रवृत्ति (von वर्त् mit संप्र) f. *das zu-Tage-Treten, Erscheinen, Vorkommen;* pl. MBu. 13,2481.

संप्रवृद्धि (von 1. वर्ध् mit संप्र) f. *Wachsthum, Gedeihen:* फलकुसुम° Varâh. Bṛh. S. 29,1. कोशस्य Spr. (II) 2890, v. l. Kim. Nitis. 9,60.

संप्रवेश (von 1. विश् mit संप्र) m. 1) *Eintritt* (in ein Gemach, eine Stadt u. s. w.), *das Betreten* MBu. 1,7755. वेश्यावेश्मनि, नृपास्पदे Râjat. 5,235. प्रभु° (sc. शालायाम्) Kâṭy. Çr. 7,5,5. R. Gorr. 1,4,127. अयोध्या° 38. 41. 138. 78 in der Unterschr. वन्यानां ग्रामसंप्रवेश: Varâh. Bṛh. S. 97,8. — 2) *ein Ort der von* (gen.) *betreten wird:* कथं यत्ते दृश्यवर्यो विशेस्त्वं विनीतानां विदुषां संप्रवेशम् MBu. 3,10636. — Vgl. वन°.

संप्रश्न (von प्रच्छ् mit सम्) m. *Befragung, Frage* ṚV. 10,82,3. P. 3,3, 161. Vop. 23,22. R. Gorr. 1,4,110. Spr. 2912. 6888, v. l. Halâj. 5,90. 100. Bhâg. P. 1,2,1. 4,4,8. 22,19. 8,4,3. 14,8. 8,24,28. संपृष्ट° adj. 18, 52,36. कुशल° *Erkundigung nach* MBu. 5,3073. Râm. 10,35. कृच्छ्र° Bhâg. P. 1,2,5. प्रश्नो ऽत्र न विद्यते so v. a. *da braucht man nicht zu fragen, das versteht sich von selbst* R. 5,6,5. — Vgl. सांप्रश्निक.

संप्रश्रय m. = प्रश्रय *ein rücksichtsvolles Benehmen, Anspruchslosigkeit, Bescheidenheit* Bhâg. P. 3,23,9.

संप्रष्टव्य (von प्रच्छ् mit सम्) adj. *zu befragen* MBu. 4,1509.

संप्रसर्पण (von सर्प् mit संप्र) n. *das Sichvorwärtsbewegen* Çâṅkh. Çr. 17,7,13.

संप्रसाद (von 1. सद् mit संप्र) m. 1) *Gemüthsruhe* (im tiefen Schlafe) Çat. Br. 14,7,2,40. — 2) *Gunst, Gnade* Uttarâs. 32,3 (42,5). — 3) *Ber. der Seele während des tiefen Schlafes* Kâṭh. Up. 3,3,4. 12,3. Maitrâjn. 2,3. MBu. 12,5947 (°साद् mit der ed. Bomb. zu lesen).

संप्रसाध्य (vom caus. von साध् mit संप्र) adj. *in Ordnung zu bringen, zu regeln:* सर्व Spr. (II) 2672.

संप्रसारण (vom caus. von सृ mit संप्र) n. 1) *das Auseinanderziehen* Anupadas. 10,12. — 2) in der Grammatik *die Auflösung eines Halbvocals in den entsprechenden Vocal, ein auf diese Weise entstandener Vocal* P. 1,1,45. 3,3,72. 5,2,55. 6,1,12. 37. 108. 3,139. 4,131. 7,4,67.

संप्रसूति (von सू = सु mit संप्र) f. *das Gebären zu gleicher Zeit:* हि-

त्रिचतुःप्रभृति° Vaṛâh. Bṛn. S. 46,52.

संप्रकर्ष (von कर्ष् mit संप्र) m. *Freude* MBh. 15,893. Hariv. 5,89. °कर् MBh. 6,3331. R. 7,63,14.

संप्रकर्षिन् (wie eben) adj. *sich freuend, froh* R. 7,37,3.

संप्रकार (von कृ mit संप्र) m. 1) *Kampf* AK. 2,8,3,73. H. 796. an. 4,282. Med. r. 302. Hall. 2,293. MBh. 2,1977. 2115. 3,16374. 8,3290 (wohl संप्रकारे zu lesen). Hariv. 7546. R. 3,30,7. 43,17. 7,18,15. Bhâg. P. 1,13,28. तयोः MBh. 3,439. 11567. 12100. 4,756. Hariv. 10329. R. 3, 33,11. 56,34. 6,69,26. Prâṇ. 87,10. रथिनां रथिभिः MBh. 4,1050. तेषां तैः सह Kathâs. 48,105. mit acc. (!): त्वां संप्रकारार्थमुद्यतः *um dich zu bekämpfen* R. 5,4,61. मदीय *mit mir* 4,9,72. नृप° (= नृपाणाम्) MBh. 6,2631. पादात्त° Pañkat. ed. orn. 57,15. सप्तर्षि° *mit* Çiç. 98,14. संप्रकारं कृ MBh. 8,442. R. 5,63,12. 6,18,20 (मुकेनाग्नौ). प्र-कृ MBh. 6, 2121. द्वंद्व° *Zweikampf:* ईशेन सह Uttarar. 93,14. fg. (121,8. 9). am Ende eines adj. comp.: गदाव्यायत° Ragu. 7,49. प्रवृत्तसंप्रकारस्य Kathâs. 15,140. — 2) = प्रकार *Schlag, Stoss* u. s. w. R. 5,98,26. = कृतन Dharan. im ÇKDa. — 3) = गति H. an. Med.

संप्रकारि (wie eben) Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4,124.

संप्रकारिन् (wie eben) adj. *kämpfend* R. 5,73,21.

संप्रकाम (von कम् mit संप्र) m. *Gelächter, Scherz, Spott:* क्रूरैः सुदुष्टैः संप्रकामः — न कार्यः *man darf nicht scherzen mit* R. 3,24,20. mit acc. der Person *Verspottung* 23,46.

संप्राप्तव्य (von आप् mit संप्र) adj. *zu erreichen, zu erlangen* MBh. 3,11640.

संप्राप्ति (wie eben) f. 1) *Ankunft* MBh. 1,393. 603. R. Gorr. 1,4,136. in comp. mit dem Orte: मृतोत्क्रान्ताश्रम° 47. 52. 138. — 2) *Eintritt:* अद्भुत° *eines Wunders* Sin. D. 401. in der Medicin *Eintritt, Entstehung einer Krankheit:* पथ्या दुष्टेन दोषेण यथा चानुविसर्पता। निर्वृत्तिरामयस्यासौ संप्राप्तिर्जातिरागतिः॥ Mâdhava, Nid. 1,13. Verz. d. Oxf. H. 305,b,17. Kâraka 2,1. — 3) *das Gelangen zu, Erlangung, Gewinnung, das Theilhaftwerden* Med. t. 3. विषयेषु Suçr. 1,250,2. ईप्सितस्यावाप्तस्य MBh. 12,13813. श्लोकार्धस्य R. Gorr. 1,4,140. 21,3 (20,16 Schl.). शक्राद्वरस्य 131. Vaṛâh. Bṛn. S. 79,22. 95,24. शशाङ्कवत्याः Kathâs. 100,5. Wilson, Sânkhyas. S. 11. पुण्यपापयोः Mâns. P. 55,22. in comp. mit seinem Object: किरणभूमि° M. 7,208. राज्य° MBh. 1,7888. पुत्र° 2,705. Vaṛâh. Bṛn. S. 87,1. 15. अभिवाञ्छित° Kathâs. 25,72. 52,207. Mâns. P. 31,22. धर्मार्थकाम° 35,37. Râga-Tar. 3,422. 6,359. प्रसन्नालाप° 3,154. महादुःख° Spr. (II) 5728. — Vgl. मित्र° (auch Pañkat. 104,1).

संप्राप्तिद्वादशी f. Bez. *eines best. zwölften Tages* Verz. d. Oxf. H. 34,b,14.

संप्रार्थना (von अर्थय् mit संप्र) f. *das Begehren nach, das Bitten um:* मुलभद्रव्यालप्य° so v. a. *das wenig-Fragen nach, keinen-Werth-Legen auf* Vaṛâh. Bṛn. S. 78,4.

संप्रार्थ्य (wie eben) adj. *wonach man begehrt oder worum man bitten muss* H. an. 2,344.

संप्रिय (2. सम् + प्रिय) gaṇa राजन्यादि zu P. 4,2,38. 1) adj. *einander liebend* VS. 12,52. Âçv. Gṛhj. 1,7,5. Pâr. Gṛhj. 1,6. संप्रियः पशुभिर्भवति TBr. 1,1,9,1. 9,4. हृदयानि 2,2,17. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Vidûratha's (Vidûra's ed. Bomb.) mit dem patron. Mâdhavî MBh. 1, 3793. — 3) n. *Befriedigung:* लोकानां संप्रियार्थम् R. 7,51,18. — Vgl. संप्रियक.

संप्रीणन (vom caus. von 1. प्री mit सम्) n. *das Ergötzen, Erfreuen* Bhâg. P. 10,82,38.

संप्रीति (von 1. प्री mit सम्) f. 1) *Freude, Lust, das Gefühl der Befriedigung:* धनपा सह संप्रीतिमतुलां समवापुस्ते MBh. 1,3393. Spr. (II) 2740. Mâns. P. 72,8. राज्ये, नारीषु, वेदाध्ययनेषु MBh. 13,565. स्तोत्रश्रवण° Mâns. P. 97,26. संप्रीत्या भुञ्जतां राज्यम् *mit Lust, — Wohlbehagen* MBh. 13,349. °भोज्यान्यन्नानि 5,3261. सु° Unlust 12,8330. — 2) *freundschaftliche Gesinnung, Freundschaft, Liebe* R. Gorr. 2,92,4. सप्त्याद्यैःसंप्रीत्या गृह्णागतान् M. 3,113. 8,146. Kathâs. 72,44. Mâns. P. 125,24. °मित्रवरणानि Vaṛâh. Bṛn. S. 99,6. परस्परम् Spr. (II) 6888. सर्वेषु MBh. 4,1493. 12,1047. तस्य *Liebe zu* Mâns. P. 20,21. 21,61. सुग्रीवेण *Freundschaft mit* R. 4,14,22. धनेन सह Hariv. 6018.

संप्रीतिमत् (von संप्रीति) adj. *froh, zufrieden* MBh. 4,938.

संप्रेक्षक (von ईक्ष् mit संप्र) adj. *zuschauend, Zuschauer* Hariv. 4743.

संप्रेप्सु (vom desid. von आप् mit संप्र) adj. *anstrebend, verlangend nach:* सुखं (so lesen wir) संप्रेप्सुः स्थानं सुचरितादति (सपि ed. Bomb.) MBh. 13, 1888. *Jmd* (acc.) *beizukommen suchend, nachstellend* 7,647.

संप्रेषण (vom caus. von ईष् mit संप्र) n. *Aufforderung, Anweisung, Geheiss* Verz. d. Oxf. H. 215,a,8 v. u.

संप्रेष m. = संप्रेष H. 1520.

संप्रेषण (vom caus. von 1. इष् mit संप्र) n. *Sendung, Absendung:* स्मरणीयो ऽस्मि भवता संप्रेषणनियोजने: MBh. 12,13926. दूत° M. 7,153. Kir. Nitis. 13,46 (pl.). दूती° Hariv. 176 in der Unterschr. Kathâs. 90,64. Sin. D. 156 (pl.). *Verabschiedung:* राज्ञ° R. Gorr. 1,16 in der Unterschr.

संप्रेषिं (von 1. इष् mit संप्र) m. *Aufforderung, Anweisung an fungirende Priester* H. 1520, v. l. Çat. Br. 1,2,5,21. 3,9,2,16. Kâtj. Çr. 8,8,32. Âçv. Çr. 2,16,2. 19,18. 4,7,2. 6,14,13. 9,7,21. Lâṭj. 1,2,18. Kauç. 60. वालखिल्यैः समप्रेषाः (so) Verz. d. Oxf. H. 56,a,8.

संप्रोक्षण 1) n. = प्रोक्षण *Besprengung* Verz. d. Oxf. H. 103,a,26. — 2) f. ई = प्रोक्षणी *Weihwasser* Kauç. 40. 80. 83.

संप्लव (von प्लु mit सम्) m. 1) *Zusammenfluss der Gewässer, Fluth, Sindfluth* Bhâg. P. 12,4,33. सागरस्य *das Anschwellen des Meeres* Hariv. 13811. सागर° R. 1,32,17. उदधि° Bhâg. P. 1,3,15. 10,14,13 (nach dem Comm. hier *Zusammenfluss aller Meere*). मुतिनीतिसंप्लवजलैः Kir. Nitis. 64,16. घनानन्दसंप्लवे लोनः Bhâg. P. 1,6,18. — 2) *Zusammenfluss so v. a. zusammengeballte, dichte Masse, grosse Menge:* मेघानाम् MBh. 7,833. सर्प° R. 6,19,69. Suçr. 2,317,3. Vaṛâh. Bṛn. S. 21,21 (pl.). मशोलूकानाम् M. 4,103. विद्युत्स्तनित° Jâṇ. 1,149. मद्गात्र° MBh. 7, 6175. चक्रलाङ्गल° Hariv. 5596. हंस° (pl.) R. 1,44,24 (45,19). घनानन्द° adj. Bhâg. P. 10,83,4. सर्प° 12,12,51. वार्क्ष° so v. a. *Schlachtgetümmel* Hariv. 5032. रण° dass. R. 7,28,41. — 3) *Untergang im Wasser, Untergang, Ruin* überh.: न यथा संप्लवं मद्गो Hariv. 12373 = VP. 1,4,46 = Mâns. P. 47,10. देश° MBh. 13,1626. लोकानाम् Hariv. 7207. प्लवगाः संप्लवं गताः 3910. विश्व° Bhâg. P. 3,17,15. भूतानाम् MBh. 8,3270. Bhâg. P. 12,8,3. सर्वभूतसंप्लवम् MBh. 3,188. Wilson, Sânkhyas. S. 15. यावद्भूतसंप्लवम् Spr. (II) 4857, v. l. 6205. st. सर्वभूत° findet man hier und da

falschlich याहूत°, z. B. याहूतसंप्रवम् Mrkk. P. 45,14. पावदाहूतसंप्रवम् Jiév. 3,188. पावदाहूतसंप्रवः Mrkk. P. 114,20. गर्भ° so v. a. *Fehlgeburt* MBh. 2,714. प्राकृत्यसंप्रवे so v. a. am *Ende* Bhâg. P. 2,7,5. — 4) *Entstehung* (neben विक्रम und प्रतिसंक्रम): सर्वभूतानाम् Bhâg. P. 2, 8,21. = उद्भव oder प्रवात्तरप्रलय Comm. — Vgl. घम्बु°, गात्र°.

संफल (z. सम् + फल) adj. (f. घा) P. 4,1,64, Vârtt. 2. Vor. 4,15. m. = संफाल H. 1277, Schol. संफलीय adj. von संफल gaṇa उत्कारादि zu P. 4,2,90.

संफाल m. *Widder* H. 1277.

संफुल्ल (von 1. फल् mit सम्) adj. *aufgeblüht, blühend* Pat. zu P. 8,2, 53. Vop. 26,101. AK. 2,4,6,7. H. 1128. Spr. (II) 1218. Riéa-Tar. 3,529.

संफेट m. *leidenschaftlicher Wortwechsel* Daçar. 2,52. 54. Sin. D. 379. 420. fg. 547. Prasannar. 22,a,2. 3. 40,b,3. = संस्फेट, संस्फोट *Kampf* H. 796, Schol.

सम्ब्, सँम्बति Vop. in Dhâtup. 11,30 (गतौ). सम्बँयति Dhâtup. 32,21 (संबन्धने). Vgl. शम्ब्, साम्ब्, सर्ब्.

सम्ब m. = मुषलानल Taik. 2,3,282. — Vgl. शम्ब.

संबन्ध (von बन्ध् mit सम्) m. 1) *Sammlung, Collection:* सप्तति° Çiç. in LA. (III) 34,3. 4. — 2) *Zusammenhang, Verbindung, Beziehung;* = स्वस्वामित्वादि H. 3. 2. Hall. 5,52. Kirt. Ça. 1,5,11. Lit. 9, 6,21. संबन्धे षष्ठी Vop. 5,22. यस्येदमिति संबन्धः Spr. (II) 769. Bhâg. P. 6,16,7. Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 2. 36. Sin. D. 694. Vedântas. (Allah.) No. 5. 16. 95. fgg. P. 1,1,49, Schol. Vop. Einl. Sarvadarçanas. 4, 9. 13, 8. 159, 3. 4. शब्दार्थयोः 166, 12. fg. यत्तेन P. 4,1,33, Schol. उत्तरपदेन सह Comm. zu TS. Prât. 3,1. उत्तरत्र उपादित्यस्यैव संबन्धः स्यात् so v. a. *ist zu ergänzen* P. 1,3,34, Schol. Comm. zu TS. Prât. 10,22. इत्याद्यस्य कः संबन्धः *wie hängt das zusammen?* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 62. am Ende eines comp.; voran geht a) die Species der *Beziehung:* सामानाधिकरण्य° Vedântas. (Allah.) No. 97. विशेषविशेष्यभाव° 98. लक्ष्यलक्षणभाव° 99. सामीप्यादि° Sin. D. 11,5. पाँपरा° P. 8,1,24, Schol. — b) die Dinge, die im *Zusammenhange* oder in *Beziehung* zu einander stehen: स्वस्वामि° P. 2,3,50, Schol. संज्ञासंज्ञि° Sarvadarçanas. 5,2. प्रागुक्तस्कन्धद्वय° 20,14. — c) das, womit etwas Anderes in *Verbindung* tritt oder in *Beziehung* steht: तत्संबन्ध Nir. 11,2. स्व° Kirt. Ça. 22,11,33. Kap. 1,12. 92. धातुसंबन्धे प्रत्ययाः P. 3, 4,1. Spr. (II) 3357. Kathâs. 40,207. Bhâg. P. 2,9,1. 7,1,34. Sarvadarçanas. 34,12. 50,12. येन ऋणसंबन्धो ऽन्यजन्मन्यपि न भवति Pañcat. ed. orn. 64,22. fg. — Am Ende eines adj. comp. (f. घा): यतःपुर° (vielleicht °संबद्ध zu lesen) *in Beziehung stehend —, gehörend zu* Sin. D. 539. — 3) *persönliche Beziehung, ein auf Verwandtschaft, Heirath, Freundschaft, gleichen Studien u. s. w. beruhendes näheres Verhältniss* Pin. Gṛhy. 3,10. ब्राह्मणैर्येनेह संबन्धैः M. 3,187. युक्तरूपो हि संबन्धे त्वं नो राजन्वयं तव MBh. 1,4131. Hariv. 5246. Kâm. Nitis. 15,28. 17,4. संबन्धमाभाषणपूर्वमाहुः Raghu. 2,38. 5,40. Kumâras. 6,22. Spr. (II) 3944. 5064. यावतः कुरुते जन्तुः संबन्धान्मनसः प्रियान् 5474. 5823. Kathâs. 10,196. 13,70. 21,59. 34,221. Riéa-Tar. 1,243. Verz. d. Oxf. H. 25,a,15. 85,a,26. Bhâg. P. 7,1,30. मत्स्यभारतयोः MBh. 4,2225. R. 1,72,6. 4,4,16. Mrkk. P. 65,7. Bhâg. P. 9,18,21. Schol. zu Çik. 51. नेतैः — ब्राह्मान्योनांश्च संबन्धानाचरेत् (so ist zu lesen) M. 2,40. 4,244. MBh. 1,6152. R. Gorr. 1,19,4. Kathâs. 29,8. Mrkk. P. 76,34. 113,6. Riéa-Tar. 5,422. त्वया सह MBh. 3,16703. R. 1,69,11 (71,11 Gorr.). Spr. (II) 1488. यस्माकमपि संबन्धः कपिमुख्यैः महात्मभिः (त्वया?) R. 5,7,31. am Ende eines comp.; voran geht: a) die Species des *näheren Verhältnisses:* घन्योन्योढाक्° Riéa-Tar. 4,251. — b) die Personen (Geschlechter), die in einem *näheren Verhältniss* stehen: सपत्यसंबन्धो युवयोः R. Gorr. 1,74, 3. कुल° R. Schl. 1,72,10. Kathâs. 21,30. — c) diejenige Person, mit der man in ein *näheres Verhältniss* tritt, R. Gorr. 1,71,12. कुरुष स्वामिसंबन्धम् 4,25,7. Milav. 67,19. 74,6. Uttarar. 20,15 (27,15). Spr. (II) 5316. तत्संबन्धं समेत्य Mrkk. P. 21,59. Pañcat. 33,14. सार्धं रायानवैश्येन तत्संबन्धं चकार सः Verz. d. Oxf. H. 25,a,10. स्त्री° so v. a. *Heirath* M. 3,6. Riéa-Tar. 6,366. दार° dass. MBh. 1,7236. — d) das, worauf das *nähere Verhältniss* beruht: विग्रायोनि° P. 6,3,22. धर्मकामार्थसंबन्धं न स्मरामि त्वया सह MBh. 1,3007. R. 1,72,3. — Am Ende eines adj. comp. (f. घा) Spr. (II) 1495. 3993. Milav. 8,17. यसंबन्धा (vielleicht यसंबद्धा zu lesen) योनितः M. 2,129. — Concret so v. a. *Freund, Bundesgenosse* Bhâg. P. 4,27,17. — 4) Bez. *eines best. Ungemachs* Varâh. Bṛh. S. 98,7. nach Utpala = राजकुल घावेशनम्; man könnte संबाध vermuthen. — 5) = समृद्धि und न्याय Açva im ÇKDn. nach dens. Aut. auch adj. = शक्त und क्षिप्त. — 6) fehlerhaft für संबद्ध, z. B. सर्व पर्वतसंबन्धम् (°संनद्धम् Schl.) R. Gorr. 1,39,20. यसंबन्धप्रलापितम् Kâm. Nitis. 14,59. स्वसंबन्धो कथाम् Kathâs. 24,18. संबन्धार्घ AK. ed. Colebr. 3,4,28,39. Verz. d. Oxf. H. 269,a,32. Comm. zu TS. Prât. 11,1 (नियेघसंबद्ध zu lesen). 14,18. für संरब्ध (so die neuere Ausg.) Hariv. 2981. यसंबन्ध fehlerhaft für यसंबाध Kathâs. 18,18. — Vgl. कु°, पिण्ड°, ब्रह्म°, पद्यासंबन्धम्.

संबन्धक n. = संबन्ध 3) MBh. 5,5888. R. 1,10,23. 12,21 (20 Gorr.). R. Gorr. 1,18,7. 7,38,4. यौन Spr. (II) 3680. MBh. 1,4042. त्वया सह 7538. संबन्धकं तुल्यमस्माकं कुरूणाण्डुषु 5,92. 141. 7463. संबन्धकं कृ Spr. (II) 1890. — adj. schlechte Lesart für संबन्धज्ञ Spr. (II) 3944, v. l.

संबन्धतत्त्व n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,b,37.

संबन्धन (von बन्ध् mit सम्) n. *das Zusammenhängen* Nir. 1,24. Dhâtup. 32,21.

संबन्धनिर्णय m. *Untersuchung über die Verwandtschaft* Verz. d. Oxf. H. 215,b,34. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 99.

संबन्धयितृ (vom caus. von बन्ध् mit सम्) nom. ag. etwa *Zusammenfüger* Maitrâyaṇ. 6,4, v. l. für संबोधयितृ.

संबन्धवर्जित n. *ein best. Stilfehler: Mangel an Verbindung des Zusammengehörigen* Prasannar. 65,a,3.

संबन्धविवेक m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,b,38.

संबन्धसमुद्देश m. Titel eines Abschnitts des Vâkjapadîja Hall 164. Sarvadarçanas. 146,5.

संबन्धि = संबन्धिन्. सुख° so v. a. *froh, glücklich* MBh. 7,5971. m. *ein Angehöriger, Verwandter* (insbes. durch Heirath) Hariv. 9687.

संबन्धिता (von संबन्धिन्) f. 1) *das Angehören*, mit gen. der Person Kull. zu M. 8,399. *das Zusammenhängen —, in Beziehung Stehen mit* (instr. oder im comp. vorangehend) Kusum. 46,5. Sarvadarçanas. 35,4.

s. — 2) *Angehörigkeit, Verwandtschaft, Verschwägerung* MBu. 5,20.

संबन्धित (wie oben) n. 1) *das Zusammenhängen* —, *in-Beziehung-Stehen mit* (instr. oder im comp. vorangehend) Sarvadarçanas. 16,2. 76,15. fg. — 2) = संबन्धिता 2) Mârk. P. 76,22.

संबन्धिन् (von संबन्ध) adj. 1) *zusammenhängend, verbunden, in Beziehung stehend* —, *gehörig zu* (gen. oder im comp. vorangehend) Bilar. 9. तातस्य संबन्धि धनुःशरम् *dem Vater gehörig, des Vaters* Kathâs. 39,65. 46,243. 245. 63,107. 171. कस्य संबन्धिन इमे तिलाः *wem gehören?* Pañcat. 121,25. एषां पदानां संबन्धिनो विसर्जनीयस्य Comm. zu ṚV. Prât. 5,19. zu TS. Prât. 4,40. मगधेश्वरसंबन्धी दूतः so v. a. *ein Bote des Fürsten von* M. Kathâs. 17,159. 44,187. 47,3. 120,86. प्रत्राह्मणसंबन्धिनः सर्षपान् 18,199. पितृसंबन्धि कार्मुकम् 39,65. 73. 106,141. Sây. zu ṚV. 1,11,5. यद्शब्दसंबन्धिमकार Schol. zu P. 1,1,12. 56. Durga zu Vop. 3,24. सर्व° *bei der Sache betheiligt* M. 8,64. Jâñ. 2,71. काव्यसंबन्धिनी कीर्तिः *zusammenhängend mit* Spr. (II) 5442. पत्तसंबन्धिनी कथा *Bezug habend auf* Kathâs. 34,66. Daçak. 63,16. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 7. zu Kâṭhân. Up. S. 7. 69. पदसंबन्धी विधिः P. 2,1,1, Schol. Siṃ. D. 11,5. Bhâg. P. 4,1,10. H. 12. Sarvadarçanas. 50,4. Comm. zu TS. Prât. 1,60. 2,3. 50. 14,23. 28. Vedântas. (Allah.) No. 102. 105. सत्ययुगसंबन्ध्याधार्यत्रयम् Verz. d. Oxf. H. 227,b,10. fgg. एक° *zusammenhängend* Suça. 1,264,5. — *b) verbunden mit* so v. a. *bestimmend* Taitt. 3,1,15. परमेश्वरगुण° Sarvadarçanas. 74,4. पशुव° 77,6. 7. — *c) durch Verwandtschaft, insbes. durch Heirath verbunden, verschwägert* u. s. w.; *ein Verwandter von* (gen.); neben ज्ञाति, बान्धव u. s. w. M. 2,132. 4, 179. 183. 5,74. 9,229. Jâñ. 1,108. 157. 220. Bhag. 1,34. MBu. 1,598. 3500. 7286. 3,2022. 4,2346. 5,7435. 7,5970. 13,1538. 2139. 2913. 14, 1546. 1856. Harîv. 7709. R. 1,18,11. R. Gorr. 1,70,18. 74,20. 23. Râgat. 2,58. 7,16. Spr. (II) 4110. Uttarâs. 8,8 (12,4). 76,6 (98,3). Kathâs. 15,25. 17,82. 21,62. 32,21. 35,152. 44,75. 130. 45,7. 123,167. Râga-Tar. 5,251. 298. Mârk. P. 76,33. 135,4. Bhâg. P. 10,72,2. 75, 28. Pañcat. III,141. Hit. ed. Johns. 2750. संबन्धिपुत्रैं P. 6,2,132, Schol. पिण्ड° Mârk. P. 31,3. लेप° 4.

संबन्धु (2. सम् + बन्धु) adj. *blutsverwandt:* द्यावः संबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः ṚV. 3,1,3. = ज्ञाति Nir. 4,21.

सम्बर्ष्य s. संवर्ष्य.

संबल n. 1) = शाम्बल Med. l. 135. Vgl. auch संवल. — 2) *eine best. Ache Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,640.

संबलन s. u. संवनन am Ende.

संबकुल adj. = बकुल Vjutp. 141.

संबाध (von 1. बाध् mit सम्) m. 1) *Gedränge, ein dichter Haufe; ein beengter Raum* AK. 3,2,34. H. 1504. an. 3,330. Med. dh. 37. संबाधमेके संप्राप्य न शेकुश्चलितुं रथाः Harîv. 2677. 12548. चक्रुः संबाधमाकाशमुच्छ्रितेन्द्रध्वजोपमैः (परिघैः) MBu. 7,3093. यथा विन्ध्याटवी प्राप्य सा °रसज्ञताम् Kathâs. 13,45. संबाधे MBu. 7,1894. 3396. विगाढे पुरि संबाधे 3,2776. Mârk. P. 8. 657, Z. 8 (संबाधे zu lesen). कुरिसैन्यैः °वर्तिभिः (v. l. °वर्त्मभिः) Ragh. 12,67. अन्योऽन्यसंबाधे Harîv. 16280. विमुक्तो ज्ञानसंबाधात् *ein Gedränge von Menschen* MBu. 1,7123. ज्ञानसंबाधशालिनः (so ist zu lesen) । प्रदेशान् Kâm. Nîtis. 7,40. गृहसंबाधमालिनी (पूः) Harîv. 6534. am Ende eines adj. comp. (f. या) *beengt durch, dicht besetzt mit, reichlich versehen mit, voll von:* घण्टिनीमत्तसंबाधाम् MBu. 1,2878. प्रासादशत° (नगर) 4345. 4649. 7018. मकुर्षिगण° (आश्रम) 3,11041 (S. 603). शयनासन° 14005. 16056. 4,1400. 2015. 13,1817. 1956. 2076. 14, 2315. 2522. 15,185. R. 1,5,18. 40,22 (41,24 Gorr.). 2,52,91. कृत्स्यशस्त्रसंबाधे युद्धे 75,25 (79,7 Gorr.). 97,12. R. Gorr. 1,5,19. 2,4,21. 48, 19. fg. 94,19. 3,28,20. 35,2. 42,48. 54,16. 61,8. काञ्चन° 11. 78,26. 4,43, 57. 5,12,49. 13,3. 49,16. 74,1. 7,104,6. Suça. 1,135,2. स्तनसंबाधमुरः Kumâras. 4,26. Gît. 11,22. Uttarar. 90,18 (117,2). Vasiṣṭh. Baṇ. S. 48,12. Mârk. P. 21,7. लोकैरन्योऽन्यसंबाधैः *sich gegenseitig drängend* R. Gorr. 2,108,29. समन्तसंबाधमनर्घसारम् (Conj.) von *allen Seiten dicht geschlossen* Spr. (II) 3401. अतिसंबाधो ह्यनेन राजमार्गः *überaus beengt* R. Gorr. 2,4, 16. घ° (s. auch bes.) *unbeengt, geräumig* R. 2,91,24 (100,22 Gorr., wo चतुरश्रम° zu lesen ist). 5,12,43. 74,27. 7,102,3. Kir. 3,53. *unbehindert:* वेग MBu. 6,1953 (घसंवार्य ed. Bomb.). Kâm. Nîtis. 19,38. AK. 3,4,28, 57. Als adj. erscheint संबाध in folgenden Stellen: संबाधं चेत्स्यात् (wenn nicht संबाधयेत् st. संबाधयेत् zu lesen ist) *wenn kein Raum ist* Lîlâv. 5,6,3. घङ्ग *wenig Raum darbietend* Suça. 1,65,20. नितम्बैः संबाधं बहुरपि तदभूद वर्त्म Çiç. 8,2. — 2) *Bedrängniss, Noth;* = भय Med. Çârad. im ÇKDa. पुरा संबाधाद्भ्या वक्तस्व नः ṚV. 2,16,8. दुःसंबाध TS. 7,4,44,2. संबाधतन्द्रीः AV. 19,2,2. शत्रुसंबाधकारक MBu. 4,1309. — 3) *value* H. an. Med. Hall. 5,41. — 4) = नरकवर्त्मन् Çârad. im ÇKDa. — Häufig ungenau संबाध geschrieben. Vgl. घ°, बाध°, निःः.

संबाधन (wie oben) n. = द्वारदेश (st. dessen सदनस्य द्वारम् ÇKDa. nach derselben Aut.), प्रलाप und द्वारपाल (als n.!) Med. n. 230. — Pañcat. I,427 fehlerhaft; vgl. Spr. (II) 3401.

संबुद्ध 1) adj. s. u. 1. बुध् mit सम्. — 2) m. *ein Buddha* Tait. 1,1,10. — Vgl. सम्यक्°.

संबुद्धि (von 1. बुध् mit सम्) f. 1) *das Sichbesinnen, Zuruf:* दूरात् Kîrân. Ça. 1,8,19. P. 1,2,33. Vop. 3,3. — 2) *die Endung des Vocativs sg., der Vocativ sg.* P. 2,3,49. 1,1,16. 6,1,69. 7,1,99. 3,106. 8,2, 8. 3,1. Comm. zu Naish. 22,43.

संबुबोधयिषु (vom desid. des caus. von 1. बुध् mit सम्) adj. *Jmd* (acc.) *aufmerksam zu machen wünschend:* यदं तवार्धो छिपते यो ब्रूयादुत्तमान्वितः । संबुबोधयिषुर्मित्रं (so mit der ed. Bomb. zu lesen) सदश्वमिव सारथिः ॥ MBu. 12,3072. fg.

संवृंहण (vom caus. von 2. बर्हू mit सम्) n. *das Kräftigen:* कृशस्य Kâraka 8,4.

संबोध (von 1. बुध् mit सम्) m. *Erkenntniss, Verständniss:* ज्ञानं तत्त्वार्थसंबोधः MBu. 3,17275. यज्ञातानां विज्ञानात्संबोधादुद्धिरुच्यते 12,281. आत्म° Harîv. 11175. धातुःप्रलयसंबोधाद्धिंसा च न भविष्यति (°प्रलयसंरोधाद्धेशो ऽथ प्रभविष्यति die neuere Ausg.) 11212. Jogas. 2,29. Tattvas. 6. घ° MBu. 12,11289. — संबोध Med. dh. 38 fehlerhaft für संरोध. — Vgl. सम्यक्°.

संबोधन (von 1. बुध् simpl. und caus. mit सम्) 1) adj. *erweckend* MBu. 3,7263 (भीष्म सं° zu trennen). — 2) n. *a) das Innewerden, Merken:* °भयात्पितुः *aus Furcht, der Vater könnte es merken,* MBu. 3,17149. *das Erkennen:* आत्म° Maitrâjan. 6,14. — *b) das Aufmerksammachen,*

Erinnern MBn. 2,160. Harîv. 9404. Verz. d. Oxf. H. 12,b,43. — c) *das Anrufen, Zuruf* P. 2,3,47. हूरात् 1,2,32, Schol. Sân. D. 513. AK. 3, 3,6. H. 261. 1537. Vop. 3,3. — d) *die Endung des Vocativs sg., der Vocativ sg.* Kât. zu P. 7,1,94. Siddh. K. zu P. 7,2,102. Spr. (II) 1724.

संबोधयितृ (vom caus. von 1. बुध् mit सम्) nom. ag. *erkennen machend* Maitrîup. 6,4. संबन्धयितृ v. l.

संबोधि f. *vollkommene Erkenntniss* Kâlâmâkhjâ 3,2. Vajuṣ. 31. — Vgl. सम्यक्°.

संबोध्य adj. *aufzuklären, zur Vernunft zu bringen, zu belehren* Pañkat. 46,25. मुख° Kathâs. 40,25.

संभक्तृ (von भज् mit सम्) nom. ag. *mittheilend* Nir. 9,36, wo संभक्ततमे zu lesen ist.

संभक्ति (wie eben) f. *Vertheilung, Verschenkung* Daśat. 13,21.

संभक्त (von भक्ष् mit सम्) nom. ag. *Verspeiser, Verschlinger* Mudr. ST. 4,299,3 v. u. am Ende eines comp. *sich nährend von:* फलमूलाम्बु° MBn. 3,9932.

संभग Kâm. Nîtis. 7,58 fehlerhaft; vgl. Spr. (II) 3388.

संभर्तृ (von 1. भृ mit सम्) adj. *zusammentragend, herbeischaffend* ṚV. 4,17,4.

संभरण (wie eben) 1) m. N. einer Ishṭaká TS. 5,3,8,4. — VS. 14, 22 nicht zu bestimmen. — 2) f. ई *ein best. grosses Gefäss beim Soma* Kâts. Ça. 9,5,6. — 3) n. *das Zusammenbringen, Zusammensetzung, Herstellung:* उखा° Kâts. Ça. 16,2,1. याज्यापनसंभरणे 2,5,9. des Mondes Śaṅkar. Bh. 4,6. der Ishṭaká Schol. zu Kâts. Ça. 16,1,22.

संभरणीय (wie eben und von संभरण) adj. 1) *zusammenzutragen, zu vereinigen* Comm. zu TBr. 3,4,23. — 2) am Ende eines comp. *auf die Herstellung von — bezüglich:* उखा° (इष्टि) Âçv. Ça. 4,1,21. Çâṅkh. Ça. 9,22,7.

संभर्तृ (wohl von 1. भृ mit सम्) m. *Ernährer* AV. 2,36,1. 14,1,21. 2,66. Kauç. 75. — Vgl. सक्° und शम्भल.

संभव (von 1. भू mit सम्) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. घा. a) *Zusammenkunft,* = मेलक Trik. 3,3,434. Med. v. 53. = संकेत Âśâśa im ÇKDa. — b) *geschlechtliche Vereinigung, Beiwohnung:* ऊर्ध्वं त्रिरात्रात्संभव: Gobh. 2,5,5. 6. — c) *das Rannfinden, Platzhaben, Enthaltensein in etwas Anderem;* = सांधेयधारण Trik. = सांधेयस्याधारानतिरिक्तत्वम् H. an. Med. संभवो ऽप्यनुमानमेव । तदुदाहरणं किं भवति । द्वार्या द्रोण: संभवति । द्रोण: षाढकं संभवति । मल्ले शतमित्यादि Z. d. d. m. G. 7,340, N. 2. संभवो यथा । प्रस्थ इत्युक्ते चत्वार: कुडवा: संभाव्यते Gaṇar. zu Siddh. 4. Am Ende eines adj. comp. *so v. a. enthalten in* MBn. 4,183. 13,1115. Suçr. 1,5,14. — d) *Entstehung, Geburt* H. an. 3,714. Med. VS. 40,10. Çat. Br. 14,6,9,34 (paroxyt.). संकीर्णानाम् M. 1,116. सस्य सर्वस्य 2,25. गर्भे 6,62. 7,1. 9,22. संभवोक्ष विधेनीषु 12, 77. ब्राह्मण: संभवेनैव देवानामपि दैवतम् *schon durch die Geburt* 11,84. संभवानेकविंशतिम् 8,38. MBn. 13,2262. 1,367. 378. मानुषीषु (मानुषीभ्य: v. l.) सस्य नृपस्य Çiç. 25. माक्षिण्यात्कारणाम् AK. 2,10,4. राज्याङ्गानां तु सर्वेषां राष्ट्राद्भवति संभव: Kâm. Nîtis. 6,2. Milavim. 156,6. संभव: स्त्रीकृतो नृणाम् Spr. (II) 2410. 5316. नखोल्काणाम् Jîvân. 3,80. Bhâg. P. 2,8,15. 3,11,25. 31,44. 7,2,36. 9,42. लवकलकृमिरोमभ्य: *das Verfertigtsein aus* H. 668. — पर्जन्यादन्नसंभव: Bhag. 3,14. नाले — एकस्मिन्हित्रिसंभव: Varâh. Bṛh. S. 46,33. येन स्यात्पुत्रसंभव: Kathâs. 39,6. विशल्या° *so v. a. Ursprung, Quelle* Verz. d. Oxf. H. 65,b,36. fg. घ° m. *das Vergehen, Vernichtung* VS. 40,10. असताम् Bhâg. P. 2,4,13. adj. *nicht wieder entstehend, — geboren werdend* (संभव = स्थूलदेह Comm.) 1,15,31. Am Ende eines adj. comp.; voran geht a) der von dem Jmd oder Etwas, woraus Etwas *entsteht* oder *entstanden ist* u. s. w. M. 5,10. 6,13. 8,328. 9,320. Bhag. 10,41. 13,19. MBn. 1,1147. 13,4429. 4504. 4536. Râgân. 3,42. 8,81. Çiç. 11,10. 15,4. 41. 186. Vikram. 8,17. 132. Weber, Rimây. Up. 327. 340. Spr. (II) 5795. Varâh. Bṛh. S. 60,8. Kathâs. 34,55. Pañkat. 141,3. सविषमलिकामंभवस्य n. *das Bereitetsein durch* Suçr. 1,186,2. — β) der Ort, wo Jmd oder Etwas *entstanden, gewachsen* u. s. w. *ist* R. 2,79,16. Uttarâs. 6,17 (10,4). Varâh. Bṛh. S. 41,2. 59,2. AK. 2,4,9,9. Kathâs. 18,73. Pañkad. 1,6,31. Pañkat. 263, 28. H. 632. — γ) das was aus Jmd oder Etwas *entsteht* oder *hervorgeht:* सोम° Weber, Kṛshṇaj. 298. सर्व° 308. Bhâg. P. 2,9,36. 31,8. 6,16,58. भङ्गादिसंभवं क्षेत्रम् *ein Feld, auf dem* Bhaṅga u. s. w. *wächst,* H. 967. — e) *Veranlassung, Grund, Ursache* H. an. Med. चित्तपंद्य न पश्यामि शोकस्य तव संभवम् MBn. 2,1731. Bhâg. P. 2,8,22. Am Ende eines adj. comp.; voran geht a) das was die *Veranlassung* u. s. w. einer Erscheinung ist: संसारगमनं चैव त्रिविधं कर्मसंभवम् M. 1,117. यज्ञा: संकल्पसंभवा: 2,3. 3,32. R. 2,24,17. 30,24. 40,34. 85,18. R. Gorr. 1,38, 12. Kumâras. 6,21. अर्थं मुरारिसंभवम् Vikr. 5. Spr. (II) 4285. Mârk. P. 20,4. Râga-Tar. 4,682. Schol. zu Çiç. 81. H. 2. 320. — β) das was durch Etwas *veranlasst —, bewirkt wird:* योग° Weber, Kṛshṇaj. 295. धर्म° 296. hier könnte संभव auch als m. aufgefasst werden: *Grund —, Ursache von.* — f) *das zu-Stande-Kommen, Erscheinen, Eintreten:* धूमस्य Varâh. Bṛh. S. 93,5. कुतो ऽत्र निर्जने वने तण्डुलकणानां संभव: Hit. 10,2. 8. जन्मन: Spr. (II) 2255. वियोगस्य 6625. Varâh. Bṛh. S. 5, 17. Prab. 33,12. Comm. zu TS. Pair. 10,12. श्लोप° ṚV. Prât. 11,17. Liṭ. 6,1,1. मरण° Spr. (II) 7351. भय° Râga-Tar. 4,459. घ° *das Unterbleiben* M. 11,27. Am Ende eines adj. comp. *so v. a. erscheinend —, eintretend in, bei* Harîv. 7775. Spr. (II) 3576. भु° *bei Tage* Varâh. Bṛh. S. 21,8. शीघ्रमध्यचिरकाल° 94,8. — g) *das Bestehen, Dasein, Existenz;* = सत्ता Trik. उद्भवे संभवे च Çvetâçv. Up. 3,1. नित्यं तस्य वृत्तस्य संभवम् (वक्ष्ये) MBn. 13,290. Kap. 1,4. Siddhânjan. 9. Sarvadarçanas. 85,9. 157, 20. परतस्त्वे प्रमाणसंभवात् 133,8. Spr. (II) 2179. Varâh. Bṛh. S. 80,10. Kathâs. 15,112. 34,58. Sân. D. 55. Comm. zu TS. Pair. 1,25. 3,1. 4, 28. घ° m. *das Nichtdasein, Fehlen, Mangeln* M. 2,185. 8,70. MBn. 1, 4602. R. 5,90,27. Kap. 1,4. 117 (vgl. Siddhânjan. 9). Çaṅk. zu Kaṭhân. Up. S. 36. H. 66. Schol. zu P. 2,1,25. 7,4,51. Vop. 25,21. Sarvadarçanas. 83,8. Comm. zu TS. Pair. 2,18. 35. 11,18. adj. *nicht da seiend* Spr. (II) 767. — h) *Möglichkeit:* नास्ति संभवो गुर्वर्थं दातुम् MBn. 3,13266. सति संभवे Sân. D. 3,17. प्राप्ति° 327. Nilak. 34. 54. Müller, Sl. 97. Sarvadarçanas. 50,22. 120,2. 125,8. 127,7. 155,22. संभवेन *nach Möglichkeit* Mârk. P. 31,50. in der Rhetorik *so v. a. ein möglicher Fall* Kuval. 164,a (197,a). Verz. d. Oxf. H. 206,b,5. घ° m. *Unmöglichkeit, Ungereimtheit* Kâts. Ça. 1,5,17. 6,17. 20. 10,13. 5,2,25. 7,2,24. 9,12,

6. 25,14,2. Çiksh. Gaṇ. 6,3. M. 7,200. Jiñ. 1,136. MBu. 15,232. Nilak. 35. Sin. D. 3,15. Sarvadarçanas. 26,18. 29,19. fg. 50,10. 82,20. 83,20. 140,21. eine best. Redefigur Kuvalay. 98,b. adj. *unmöglich, ungereimt* Ind. St. 1,41,19. Spr. (II) 766. 4193. संभव am Ende eines adj. comp. in Verbindung mit dem was durch Etwas *ermöglicht wird:* प्रवाहैः कायक्लालनसंभवैः Spr. (II) 534. — *i*) = अपाय Aṅga im ÇKDn. — *k*) N. pr. einer Welt bei den Buddhisten Lot. de la b. l. 96. — *l*) N. pr. des 3ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇī H. 26, Schol. H. an.; vgl. शंभव 2). — 2) adj. (f. या) *sich befindend, da seiend* Pāṇkar. 2,6,14. — Vgl. अस्थि°, अमृत°, आत्म° (*f. Tochter* auch R. 3,7,26), कुमार°, कुम्भ°, ह्र°, गर्भ°, चर्म°, पद्म°, पुनः°, बाकु°, ब्रह्म°, भूमि°, भोग्य°, मधु°, मरु°, मरा°, मालतीतीर°, मुख°, पद्मा°, रक्त°, वारि°, विमल°, विश्व°, शंकर°, शब्द°, शुष्क°, शैल°, संधि°, सर्व°, सरु°.

संभवन (wie oben) 1) adj. *enthaltend,* von einem Felde so v. a. *bestanden* P. 5,2,29, Vārtt. 9. — 2) n. *das Entstehen, Werden:* संभवनं कर् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 49.

संभवपर्वन् n. *das über die Entstehung* (der Götter u. s. w.) *handelnde Buch,* Bez. der Adhjâja 65—140 im 1ten Buch des MBu. MBu. 1,312.

संभविन् (von संभव) adj. *möglich* Sin. D. 258. Sarvadarçanas. 120,1. — Vgl. यथा°.

संभवितृ (von 1. भू mit सम्) adj. *Schöpfer, Urheber* Bale. P. 2,17,25.

संभव्य (wie oben) m. *Feronia elephantum Corr.* Çardaṅ. in Verz. d. Oxf. H. 195,b,4 v. u. — Vgl. असंभव्य (verbessert unter 1. भू mit सम् caus. 1) am Ende).

संभाण्डय् (von 2. सम् + भाण्ड), °यते *das Geräthe zusammenstellen* P. 3,1,20 nebst Vārtt. Vop. 21,17. मात्राः संभाण्डय Bhaṭṭ. 5,61.

संभार् (von 1. भृ mit सम्) m. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *das Herbeibringen, Zurüstung,* = संभृति H. an. 3,616. Med. r. 236. अपाम् Çat. Br. 2,1,2,3. पुष्पसंभारतत्पर Kumâras. 2,26. निवृत्तयूप° adj. MBu. 12,5337. संभारान् (so die neuere Ausg.) कर् *Vorbereitungen treffen* Harîv. 11109. देवाग्निकार्योचितः संभारो रचितः Z. d. d. m. G. 27,30. विवाहाय संभारमकरोत् Kathâs. 22,172. विवाह° 34,249. 103,134. विवाहोत्सव° 16,66. बलि° 45,40. समाप्तउलोद्वार° Prab. 81,6 (vgl. die v. l. und Schol. 2). — 2) sg. und pl. *was herbeigeschafft wird: Zubehör, Material, Requisiten, die zu Etwas erforderlichen Gegenstände oder Stoffe* AV. 3,6,1. 11,8,18. Ait. Br. 8,3.17. न संभृत्यै संभाराः TBr. 1,3,6,5. TS. 1,5,2,4. पञ्च Çat. Br. 2,1,4,12. पदीकृतरोषं संभारो भवति TBr. 1,1,2,4. TS. 6,2,6,6. Kâṭy. Çr. 4,9,1.14. 26,1,2.15. संभारमारुरुति Kauç. 7. 43. 47. 83. 80. 140. Verz. d. B. H. 90 (21). MBu. 1,2133. 5,1161. Harîv. 6507. R. 1,11,3.13. 60,8. 2,21,49. 22,5. R. Gorr. 2,61,32. Suçr. 1,14,19. 33,17. 2,62,16. 286,7. 461,5. 468,21 (an den drei letzten Stellen m.). Vaṅs. Bṛh. S. 44,11. 48,23. 34. 36. Kathâs. 34,107. Mârk. P. 72,11. Bhâg. P. 2,6,26. Pāṇkar. 1,3,3. नृपाभिषेकसंबन्धिनः संभाराः Pāṇkar. ed. Bomb. 2,60,6. यज्ञ° R. 1,59,6. R. Gorr. 1,11,17. Bhâg. P. 2,6,22. अभिषेक° R. 1,1,21 (24 Gorr.). Rāgat. 12,4. Râga-Tar. 3,237. am Ende eines adj. comp.: स्तोक° Suçr. 1,191,11. विधेरधिकसंभारो यज्ञः Rāgat. 15,62. अल्पसंभारतम Gorr. 4,1,13. — 3) pl. *die Sprüche zu* संभार् 2) (vgl. Comm.) TBr. 2,2,2,6. 3,10,2. — 4) *Vermögen, Besitz:* सर्वैव सर्वसंभारं स्वमंशं वितरामि ते MBu. 3,2053. — 5) *Vollzahl:* कलासंभारसंभृतः MBu. 3,13976. = सर्वपूर्णत्व Taitt. 2,8,57. — 6) *Fülle, Menge* H. an. Med. शास्त्र° Mârk. P. 20,4. पुस्तक° Verz. d. Oxf. H. 188,a,13. fg. स्वल्प° Râga-Tar. 1,142. कुम्भप्रतिष्ठा° 4,698. मरकर्घान्य° 5,273. ज्वाला° Uttarar. 104,11 (141,5). सुधा° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 25. समस्तवस्तुसंभारसार Pāṇkar. 157,23. पुण्य° Mâlatîm. 171,4. 5. श्लेक° Spr. (II) 5792. ज्ञान° Lot. de la b. l. 795. निरुपाद्दानसंभारम् adv. Sarvadarçanas. 95,18. — 7) Pāṇkar. I, 35 schlechte Lesart für संचार; vgl. Spr. (II) 7188. — Vgl. फल°.

संभारिन् (von संभार) adj. am Ende eines comp. *voll von:* सौरभ्य° Z. d. d. m. G. 27,47.

संभार्य (von 1. भृ mit सम्) 1) adj. P. 3,1,113, Vārtt. Vop. 26,19. *a*) *aus verschiedenen Bestandtheilen zusammenzutragen, — zusammenzusetzen* Kâṭy. Çr. 24,1,16. Liṅg. 1,7,8. Gobh. 2,1,3. 5. Âçv. Çr. 11,7,12. Nirukt. 5,11,5. तृचाः Pāṇkar. Br. 11,1,5. 15,8,18. fg. TBr. 1,8,8,1. — *b*) *zusammenrüsten* so v. a. *durch Uebung tüchtig zu machen:* सव्यो दस्तयोः संभार्यतरः TS. 5,3,3,5. — 2) m. N. eines Ahina Âçv. Çr. 10,3,5. 4,2. 5,6.

संभाव (von 1. भू mit सम्) m. *Stand:* राज° R. 5,51,10.

संभावन (vom caus. von 1. भू mit सम्) 1) adj. *eine hohe Meinung von Jmd* (geht im comp. voran) *habend:* आत्म° Bhâg. P. 4,17,26. — 2) f. (या) und n. (m. n. Sinon. K. 249,a,10). *a*) *das Versammeln:* वीरसंभावनायां क्रियमाणायाम् Pāṇkar. 218,6. — *b*) *das Herbeischaffen:* तीरसंभावनार्थाय R. 1,38,23. — *c*) *Ehrenerweisung, Achtungsbezeigung; Hochachtung, eine hohe Meinung von Jmd* Râga-Tar. 3,186. Pāṇkar. 264,4. Schol. zu Çiç. 160. लब्ध° adj. Spr. (II) 7256. मघवतः (subj.) Çiç. 95,12. संभावना (so mit der ed. Bomb. zu lesen) हि लोकस्य (subj.) मम पार्थस्य चेशितोः (obj.) MBu. 7,1230. Rajat. 4,6. परा संभावना चक्रे कुन्तीपुत्रेषु MBu. 4,1002. त्वय्यस्ति तु मम श्लेकः परा संभावना च मे R. 6, 39,27. MBu. 14,1549. आत्मनि *eine hohe Meinung von sich* 5,1645. AK. 2,8,2,69. H. 317. in comp. mit dem subj. Kumâras. 6,59. mit dem obj.: (तैः) अस्मत्संभावना कृता MBu. 2,597. गुरु° Kull. zu M. 1,60. आत्म° Bhâg. P. 5,26,30. — *d*) *Voraussetzung, Supposition* P. 1,4,96. AK. 2,4,29 (28),16. P. 6,2,21. Vop. 25,17. Kuval. 128,a (153,a). Spr. (II) 7050. Z. d. d. m. G. 7,299, N. 4. Kusum. 27,18.31. संभावना भवते so v. a. *wird vorausgesetzt* Sarvadarçanas. 160,6. संभावनोल्लिखित *nicht vorausgesetzt, in Zweifel gezogen* Râga-Tar. 5,328. भवेत्संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना Sin. D. 686. in comp. mit dem subj.: स्वामि° Kathâs. 18,57. mit dem obj.: मम्मत° Rasik. 5,28. पद्म° Spr. (II) 4811. जीवित° Prab. 43,9. पोरुत्कर्ष° 89,9. द्वेष° Kathâs. 63,39. Râga-Tar. 6,207. सर्पत्व° Vedântas. (Allah.) No. 38. वक्रिमन्यत्व° Kusum. 16,11. भिन्नवृषत्व° (so lesen wir) Comm. zu TS. Prât. 4,11.

संभावनीय (wie oben) adj. 1) *woran man Theil zu nehmen gedenkt:* यदि °यस्ते (sc. स्वयंवरः) N. 18,28. °नीयं ते MBu. 3,2768 ed. Calc. संभाविनीयं ते ed. Bomb. — 2) *zu ehren, ehrenwerth* Verz. d. Oxf. H. 261, *a*,2. — 3) *voraussetzen, annehmen, wahrscheinlich* Sin. D. 245,5. Med. r. 27. स° Mṛkkh. 63,15.

संभावयितृ (wie oben) nom. ag. *Ehre erweisend* Daçar. 180,12.

संभावयितव्य (wie oben) adj. 1) *zu ehren* Prab. 104,15. — 2) *voraus-*

zusetzen, anzunehmen, wahrscheinlich Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 297.

संभावितव्य = संभावयितव्य 1) Bhâg. P. 5,5,26. der Comm. liest संमाननीय.

संभाविन् (von 1. भू mit सम्) adj. 1) *treu zu Jmd haltend* Kathâs. 50, 122. — 2) *zusagend, anstehend* MBh. 3,2768 nach der Lesart der ed. Bomb.

संभाव्य (vom caus. von 1. भू mit सम्) adj. 1) *zu ehren, gut zu behandeln* Harîv. 537 = Mârk. P. 106,8. etwa *ehrenvoll erwähnt werdend:* महापुराण° (könnte auch N. pr. sein) MBh. 1,232. — 2) *anzusehen, zu halten für:* मच्चित्तपा हि रिपवः संभाव्यास्ते विचक्षणैः Spr. (II) 4708. — 3) *voraussusetzen, zu erwarten, wahrscheinlich:* संपन्नं गोषु संभाव्यं संभाव्यं ब्राह्मणे तपः। संभाव्यं चापलं स्त्रीषु संभाव्यं ज्ञातितो भयम् ॥ Spr. (II) 6880. MBh. 1,7043. 5,4621. Harîv. 7180. Kâm. Nîtis. 18,31. Râgat. 13,46. Kathâs. 20,24. 91,23. Râgâ-Tar. 3,94. AK. 3,4,33 (33),13. 16. H. an. 2,412. Halâj. 5,88. Vop. 1,8. Pañkat. 111,10. *angenommen werdend von* (geht im comp. voran) Schol. zu Kap. 1,47. अ° *unerhört, undenkbar, unwahrscheinlich, unmöglich:* अद्भुत MBh. 7,2166. घानृशंस्य 13,272. Harîv. 3947 देवैः *unmöglich für*). Spr. (II) 238. 267. 768. 4104. Kathâs. 6,147. 25,186. 28,60. 36,96. 47,90. 60,230. 120,8. Râgâ-Tar. 6,79. 250. Pañkat. 30,8. ed. orn. 2,13. — 4) *passend, tüchtig* Ind. bei Sây. zu ṚV. 1,125,1. — 5) *im Stande*, mit loc. eines nom. act. Spr. (II) 1669, v. l. wohl fehlerhaft. — संभाव्य Pañkat. 117,11 ist absol. und demnach vom Folgenden zu trennen. Zu असंभाव्य vgl. u. 1. भू mit सम् caus. 1) am Ende.

संभाष (von 1. भाष् mit सम्) 1) m. *Unterredung* Gaṇit. 2, 93. R. 2, 112,8 (ed. Bomb. संभाषा). मित्रेण Spr. (II) 5390 (brauchte nicht geändert zu werden). घदेशकाल° Jâtâ. 2,284. मया सक् ते प्रथमः सेक्संभाषः संजातः Pañkat. 51,28. Gewöhnlich संभाषा f. AK. 3,4,26,95. H. 274. मुक्त्वा वी तात (so zu trennen) संभाषाम् R. Gorr. 2, 122,3. संभाषां कर् *sich unterreden mit* (instr.) MBh. 13,5003. Pañkat. 1,6,28. समा-चर् M. 2,195. 8,361. घा-चर् 362. पोडश् 334. °संप्रदान R. 7,64,8. संभाषासवदान Mârk. P. 69,46. मनोवाग्बुद्धिसंभाषा दत्ता MBh. 7,2145. ग्रह्° *mit* Kâś. Ça. 7,3,8. Sûça. 1,104,16. अ° Pân. Gaṇ. 2,6. am Ende eines adj. comp. (f. घा) MBh. 3,14678. 5,7485. कृत° Mârk. P. 1,31. — 2) f. घा *eine eingegangene Verpflichtung:* °परिपालन Spr. (II) 4840 (Conj.).

संभाषण (wie eben) n. *Unterredung* H. an. 2,236. Med. d. 42. MBh. 13,2198. R. Gorr. 2,109,33. Gît. 5,18 (pl.). Kathâs. 64,75. Mârk. P. 34,33. Vet. in LA. (III) 8,21. सद्भिः *mit* MBh. 3,12443. R. 1,3,29 (24 Gorr.). 5,56,96. स्त्रीणाम् *mit* Sûça. 1,70,2. Verz. d. Oxf. H. 61,b,10. Kathâs. 65,106. Pṛthv. 21,2. Çiç. in LA. (III) 35,5. सीता° *mit* R. Gorr. 1,4,31. 5,31 in der Unterschr. Kathâs. 65,33. Râgâ-Tar. 4,691. Mârk. P. 16,16. Bhâg. P. 4,22,19. संभाषणं कर् R. 5,57,13. तया Kathâs. 28, 63. घा-चर् 101,11.

संभाषणीय (wie eben) adj. *mit dem sich Jmd* (instr.) *unterreden muss* Bhâg. P. 7,13,22.

संभाषिन् (wie eben) adj. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. *sich unterhaltend, sich in ein Gespräch einlassend* Spr. (II) 2915. — Vgl. संभाष्य.

संभाष्य (wie eben und von संभाषा) adj. 1) *mit dem sich Jmd* (gen.) *unterreden darf* MBh. 2,1408. अ° 13,6039. 6105. 6140. Bhâg. P. 11,17, 33. — 2) *anzureden:* भद्रदत्तादिनामभिः Sîm. D. 172,16. — 3) *zur Unterredung geeignet:* घसंभाष्ये देशे M. 8,55.

संभु (von 1. भू mit सम्) P. 3,2,180 (= ज्ञानितृ Schol.). Vop. 26,168. 1) adj. *hervorgegangen, verfertigt aus* (geht im comp. voran): फलसंभु-वाम् Jâtâ. 1,185. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – – – – – ⏑, – – – ⏑ ⏑ –, – – – – – – Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XIV,13); vgl. समु.

संभुज् (3. भुज् mit सम्) f. etwa *Genuss* ṚV. 2,1,4.

संभूत 1) adj. s. u. 1. भू mit सम्. — 2) संभूत m. (संज्ञायाम्) P. 8,2,146, Schol. N. pr. eines Sohnes des Trasadasju Harîv. 714. VP. 371. N. pr. eines Richters Tîrân. 290.

संभूतविजय s. संभूतिविजय.

संभूति (von 1. भू mit सम्) 1) f. *a) Entstehung* VS. 40, 9. 11 (Gegens. विनाश). M. 2,147. Jâtâ. 3,125. घर्मस्य नृषु MBh. 1,375. मांसस्य भुक्तात् 13,5092. Vârâh. Bṛh. S. 82,1. वल्मीक° Çiç. Gaṇ. 5,11. चतुर्युगादि° Harîv. 11461. घनङ्गाङ्ग° Kathâs. 21,32. VP. 5,1,4. Mârk. P. 46,1. 121, 36. Bhâg. P. 4,11,18. 15,3. 12,12,9. Verz. d. Oxf. H. 48,a,23. am Ende eines adj. comp.: ब्रह्मस्त्रीजन° *stammend von* Weber, Râmây. Up. 340, N. 3. घविज्ञात° Râgâ-Tar. 5,72. — अ° VS. 40,9. — *b) Wachsthum:* रेतसि संभूतिं दधाति Çat. Br. 6,6,2,10. *Erstarkung:* पद्यमानस्य Çiç. Ça. 16,22, 10. — *c)* = विभूति (nach dem Comm.) *Machtäusserung* Bhâg. P. 10,70,10. — *d)* N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Marîki's VP. 54. 82. Mârk. P. 50,22. 52,19. der Gattin Gajadratha's und Mutter Vigaja's Bhâg. P. 9,23,11. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Duḥsaha VP. 371, N. 5. eines Bruders des Trasadasju ebend. eines Richters Tîrân. 4. 82. — Vgl. गर्ग°.

संभूतिविजय m. N. pr. eines der sechs Çrutakevalin H. 33. Wilson, Sel. Works 1,336. संभूतविजय v. l.

संभूय absol. *in Gemeinschaft u. s. w. s. u. 1. भू mit सम् 1).*

संभूयंस् (2. सम् + भू°) gaṇa वाङ्घादि zu P. 4,1,96. — Vgl. संभूयि.

संभूयस्य (wie eben), °स्यति *sich vermehren* gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

संभृत s. u. 1. भृ mit सम्.

संभृतक्रतु adj. *in dem alle Einsicht vereinigt ist:* Indra ṚV. 1,52,8.

संभृतश्री adj. *Lieblichkeiten in sich vereinigend, prachtvoll:* die Nacht AV. 19,49,1. प्रावृषा (so ist zu trennen) °श्रीः (जलदः) Mucn. 113.

संभृतसंभार adj. *der alle Zurüstung gemacht hat* TS. 1,5,2,4. MBh. 5,1161. Bhâg. P. 1,12,25. 2,6,27.

संभृताङ्ग adj. *feist an allen Gliedern* TBr. 3,7,6,2. am Ende eines comp. *dessen Glieder überzogen, bedeckt sind mit:* काशकुशचर्मवल्कल° (besser °संवृत ed. Bomb.) MBh. 12,7002.

संभृताश्व adj. *feiste, wohlgenährte Rosse habend* ṚV. 3,34,12.

संभृति (von 1. भृ mit सम्) f. = संभार H. an. 3,616. Med. r. 236. *Zurüstung, Vorbereitungen:* चकार — तद्विवाहाय संभृतिम् Kathâs. 103,176.

संभृत्य (wie eben) adj. = संभार्य P. 3,1,112, Vârtt. Vop. 26,19. *zusammenzutragen, zuzurüsten* TS. 1,5,2,4. TBr. 1,3,6,5.

संभृवन् (wie eben) adj. *zusammenbringend, anhäufend* AV. 3,24,2.

संभेद (von 1. भिद् mit सम्) m. 1) *das Stechen* Sûça. 1,283,8. — 2) *das Sichablösen* (= भेद): घङ्गानाम् Sûça. 1, 270,18; vgl. 18. = स्फुटन *das Bersten* Med. d. 43. — 3) *Trennung Verbündeter, das Entzweien* (= भेद)

Kim. Nitis. 5,14. — 4) *Art, Species* (= भेद): नानापुराणसंभेदाः Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,5. — 5) *das Sichmischen, Ineinanderfliessen:* क्षपानाम् ° Ait. Br. 7,12. द्यौ° Çat. Br. 13,8,4,12. लोकानाम् 14,7,3,24. Kaush. Up. 3,4,1. प्राणानाम् TS. 5,4,4,1. zweier Flüsse, *confluentes* AK. 1,2,2,24. Halây. 3,47. विषाग्नुद्यो: Nir. 2,24 (Sây. in der Einl. zu ṚV. 3,33). Lâṭy. 10,19,4. R. 2,54,6. नदीनाम् M. 8,386. सिन्धुसंभेदः Râǵa-Tar. 3,360. वितस्तासिन्धु° 4,391. घसि° Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,11. संभेदावर्त Râǵa-Tar. 3,90. *Vereinigung, Verbindung, Gemisch* Med. घालोकतिमिर° Mâlatîm. 167,4. मुन्मोक्° H. 312. संमोकानन्द° Sîs. D. 174. काव्यार्थ° *Berührung mit* 23,22. 30,13.

संभेदन (wie eben) n. *das Durchbrechen* Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,34.

संभेदवत् (von संभेद) adj. *zusammengetroffen, zusammengestossen:* कुवलयापीडेन सार्धं रणे Git. 10,16.

संभेद्य (von 1. भिद् mit सम्) adj. 1) *zu durchbohren, zu durchstechen:* तमसि सूचीमुखाद्यसंभेद्ये Spr. (II) 4084. — 2) *zu verbinden, in Verbindung zu setzen:* घनोपप्लवसंभेद्यं देवैरपि sc. mit einem Pfeile Hariv. 4504.

संभोक्तृ (von 3. भुज् mit सम्) nom. ag. *Geniesser:* दैवगवीन° Pâṇ. 4,3,36.

संभोग (wie eben) m. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *Genuss* Taik. 3,3,71. H. an. 3,132. Med. g. 50. Halây. 5,42. पृथिव्याः पर्जन्येन संभोगः Nir. 7,5. Çat. Br. 1,7,3,16. M. 8,200 (so v. a. *Nutzniessung*). MBh. 2,474. Bhar. Nâṭyaç. 16,93 (तेषु). विषयामिषस्य Spr. (II) 6887. 1328. Kathâs. 9,12. Mâlav. P. 20,24. Sîs. D. 78. Kusum. 9,7. राज्ञ° *die Genüsse eines Fürsten* Bhar. Nâṭyaç. 16,45. सत्संभोगफलाः स्त्रियः Spr. (II) 6200. प्रिय° *der Genuss an einem Freunde* (oder zu 2) 1015. घति° Râǵa-Tar. 4,393. स्व° Spr. (II) 769. — 2) *Liebesgenuss, Befriedigung der Zärtlichkeit* Taik. 1,1,127. 3,3,71. H. 537. Med. Halây. Bhar. Nâṭyaç. 19, 75. Daçak. 2,46. 4,47. 63. Sîs. D. 127. 211. 225. Prasannar. 38,*a*,7. MBh. 1,3908. स्नेहप्रणयसंभोगैः (संभोग = सेवा, घत्रयानादिविशेषप्रदान Comm.) R. 2,26,31. Megh. 94. Spr. (II) 622. 3426. Kathâs. 3,69. Mâlav. P. 62,30. Râǵa-Tar. 1,111. 5,230. 6,164. 166. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,42. 208,*b*,30. 218,*b*,22. Paddh. 2,8,10. संभोगं कृ Ved. in LA. (III) 16,15. 21,13. °शृङ्गार Sîs. D. 7,7. 16. भार्या° *Befriedigung des Liebesgenusses mit* Kathâs. 21,25. 28,90. 31,13. Mâlav. P. 18,31. 126, 26. Râǵa-Tar. 1,308. 2,102. 3,504. Sîs. D. 114. घसंभोगो ज्ञरा स्त्रीणाम् Spr. (II) 236. सुरत° dass. Kathâs. 45,218. 334. तया सह सुरतसंभोगं विधाय Ved. in LA. (III) 9,1.2. घात्मप्रदानसंभोगैः MBh. 4,466. — 3) so v. a. *Dauer* in तिथि° Weber, Nax. 2,287. — 4) = कर्ष Çârdar. im ÇKDa. — 5) = प्रपौत्र H. an. — 6) = ज्ञिनशासन Med.; vgl. °काय. — 7) = केलिनागर Gaṇâdh. im ÇKDa.; vgl. संभोगिन्. — 8) N. pr. eines Mannes Hiouen-thsang 1,397.

संभोगकाय m. *der Körper des Genusses*, Bez. einer der drei Körper eines Buddha Vâjrâ. 3. Wassiljew 127. fg. 263. 286. Hiouen-thsang 1,241. Vie de Hiouen-thsang 231. Kâlakâkra 3,16.

संभोगगतिणी (so ist zu lesen) f. N. pr. einer Jogini, die auch Vinâ heisst, Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,40.

संभोगवत् (von संभोग) adj. wohl = 2. भोगवत् *Genüsse habend, ein genussreiches Leben führend* Varâh. Bṛh. S. 66,109.

संभोगवेश्मन् n. *das Schlafgemach einer Geliebten* Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,8.

संभोगिन् (von संभोग) adj. *mit einander oder gegenseitig sich geniessend* Ait. Br. 8,2. Çâṅkh. Ça. 16,21,21. am Ende eines comp. *geniessend:* वस्त्री° *das Liebesgenusses sich enthaltend* Kull. zu M. 6,26. so v. a. *im Besitz von Etwas setzend:* स्तनजघनघनभोगसंभोगिनी Spr. (II) 6642. मुतमुखार्थ° Varâh. Bṛh. S. 70,11. m. = केलिनागर Buddhaprabhâsa im ÇKDa.

संभोग्य (von 3. भुज् mit सम्) adj. = भोग्य *zu geniessen, was genossen —, benutzt wird;* davon nom. abstr. °ता f.: विभूतीः प्राप्य परमाः सतां संभोग्यतां नयेत् Spr. (II) 6169.

संभोज (wie eben) m. *Nahrung* Bale. P. 7,5,38.

संभोजक (vom caus. von 3. भुज् mit सम्) nom. ag. *Koch* oder *Aufseher beim Essen* MBh. 1,7215.

संभोजन (von 3. भुज् mit सम्) 1) n. *a) gemeinschaftliches Essen, ein gemeinsames Mahl* Spr. (II) 6888. — *b) Nahrungsmittel* Suça. 2,105,2. 300,13. 411,21. — 2) f. ई *ein gemeinsames Mahl:* संभोजनी नाम पिशाचभिक्षा Âpast. 2,17,3. संभोजनी नाम पिशाचदक्षिणा MBh. 13,4316. M. 3,141.

संभोजनीय adj. *zu speisen* Bale. P. 13,20,29.

संभोज्य adj. 1) *genossen werdend, geniessbar:* नानाशकुनिसंभोज्यैः फलैः MBh. 13,638. — 2) *mit dem man zusammen speisen darf:* स्व° M. 9, 226. MBh. 12,4046. — 3) *zu speisen* Bale. P. 1,14.43.

संभम (von भम् mit सम्) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. घा. *a) Verwirrung, Aufregung; eine aus einer heftigen Gemüthsbewegung hervorgehende Hast, grosser Eifer;* = संवेग, त्वरा AK. 1,1,2,34. 3,3,26. H. 322. an. 3,474. Med. m. 55. Halây. 4,27. = साध्वस Taik. 3,3,304. Med. = भीति H. an. घभिकारित M. 4,118. संभमे तुमुले प्राप्ते MBh. 1,1160. संभमेषसंभमः 3,16079. 13,3519. Spr. (II) 1628. दुर्भिक्षे संभमे वापि Mâlav. P. 14,70. जगतः (= प्रलय Nîlak.) Hariv. 4511. राज्ञाम् Varâh. Bṛh. S. 4,19. संभमादुत्थितः so v. a. *eiligst* MBh. 1,764. एकागच्छ् पयोदे तं संभमात्किं विलम्बसे Hariv. 3457. R. 1,48,22 (49,23 Gorr.). 2,23,6. 60,5. 16. 62,11. R. Gorr. 1,4,67. 111. 3,60,5. 69,13. 4,32,6. 5,23,24. 57,2. Suça. 1,333,4. 2,349,5. Megh. 22. Raghu. 11,25. Kumâras. 3,56. Çic. 9, 71. Spr. (II) 870. 2018. 3866. 4253. 4883. 5404. Kathâs. 18,17. 20,52. 26,176. 49,118. 58,117. 61,70. 64,10. 72,139. 98,40. Verz. d. Oxf. H. 21,*a*,3. Râǵa-Tar. 2,101. 3,498. 5,306. Daçak. 1,38. Sîs. D. 142. 171. 221. 237. 83,21. Prasannar. 21,*b*,2. 53,*a*,1. Bale. P. 1,18,4. Paddh. 52,16. संभमेण स्नेहः (घनुमीयते) Sarvadarçanas. 18,19. मदभिषेकार्थम् R. Gorr. 2,19,2. गमनं प्रति 20,6. संभमं गम् MBh. 3,15660. संभमं परामास्थाय R. 1,63,27 (65,32 Gorr.). संभमं कृ *in Aufregung gerathen* MBh. 1,6026. Kathâs. 58,130. Bale. P. 3,31,47. 12,77,10. Verz. d. Oxf. H. 259,*a*,22. वज्रसंभमक्रिया 21. तमेवार्हसि कर्तुं त्वं मत्प्रस्थानाय संभमम् *denselben grossen Eifer musst du an den Tag legen bei* R. Gorr. 2,19,2. संभमं त्यज् *sich beruhigen* 4,13,39. वि-मुच् 2,28,4. Am Ende eines comp.: voran geht dasjenige *α)* woran die *Verwirrung* oder *Aufregung* wahrgenommen wird. राष्ट्र° Hariv. 8268. हास्य° Kathâs. 20, 49. — *β)* was die *Verwirrung* oder *Aufregung* bewirkt: घभिषेकार्थे मम

संधाःसंधम: R. 2,22,3. शस्त्राग्नि° Vaitân. Bṛh. S. 30,14. प्रशान्ते गवसंधने Kathâs. 112,77. 116,38. °मय° Sin. D. 152. — मु° Spr. (II) 2144. घ° Bhâg. P. 3,9,31. Am Ende eines adj. comp.: घ° MBh. 3,16079. Râgat. 4,72. Râga-Tar. 5,83. संसंधमम् adv. MBh. 6,2786. ससंधम R. Gorr. 2,4,6. Mṛicch. 169,10. Kathâs. 18,193. 26,87. 45,138. 49,193. 122,39. Râga-Tar. 1,364. Pañkat. ed. orn. 4,14. ससंधममम् adv. R. Gorr. 3,72,11. 5,69,1. Çiç. 6,15. 11,17. 18,13. 40,18. 92,12. Vikram. 25,18. Spr. (II) 1812 (am Ende eines comp.). 7252. Kathâs. 4,26. 10,172. 26, 170. 27,171. 62,63. 77,33. Verz. d. Oxf. H. 259,a,20. Prân. 6,1. 22,3. Pañkat. 27,7. 140,24. 198,9. Hit. 14,21. 42,8. 71,16. 127,13. Çiç. in LA. (III) 36,16. प्रतिसंधम Bhâg. P. 10,81,25. स्वागत° MBh. 13,6294. R. 4, 8,48. 19,34. उद्धिग्न° Râga-Tar. 6,134. ज्ञात° Bhâg. P. 10,48,3. — *b*) *die gegen Jmd an den Tag gelegte Rücksicht, rücksichtsvolles Benehmen;* = सादर Trik. H. an. Med. तव वीर्यवतः कश्चिद्यस्यास्ति भुवि संधमः R. 5,36,30. 68,30. Spr. (II) 7299, v. l. (सा तम्) कथनन्दत्कपाठाद्रोषादिसंधमैः Kathâs. 57,146. Râga-Tar. 3,74. — *c*) *Irrthum, Wahn:* शकारिर्विक्रमादित्य इति संधममाश्रितैः Râga-Tar. 2,6. am Ende eines adj. comp.: किमेतदृश्यते ऽम्बुधौ। पदच्छायाप्रोद्भेदप्रसपत्तगिरिसंधमम् ॥ *das den Irrthum, den Schein erweckt, als wäre es u. s. w.* Kathâs. 26,9. Hierher vielleicht संधम = मकाधम Âgastîja im ÇKDa. — *d*) v. l. für विधम *Anmuth, Schönheit* Spr. (II) 5896. — *e*) = सूत्र Âgastîja im ÇKDa. — *e*) N. pr. einer Schaar Çiva's Verz. d. Oxf. H. 70,a,3. — 2) adj. = व्याकुल (Comm.) *aufgeregt:* Augen Bhâg. P. 1,8,31. — Vgl. निःसंधम.

संधाक्ति f. = संधम 1) *a*) Sin. D. 235. 237.

संमत 1) adj. s. u. मन् mit सम्. — 2) m. N. pr. *a*) eines Sohnes des Manu Sâvarṇa Harîv. 465. — *b*) pl. einer Schule der Buddhisten Burnouf, Intr. 446; vgl. संमतीय. — 3) f. या N. pr. einer Tochter Marutta's Harîv. 1832. — 4) n. *Meinung* (vgl. auch unter मन् mit सम् 1): कवि° Prasannar. 80,a,6.

1. संमति (von मन् mit सम्) f. 1) *Meinung, Ansicht* Kâr. 11 aus Sudhâk. K. zu P. 7,2,10. Verz. d. Oxf. H. 135,b, No. 255. — 2) *Einigung:* विमतानाम् Âçv. Çr. 2,11,10. — 3) *Einstimmigkeit, Zustimmung* H. an. 3, 311. Med. t. 169. fg. °पक्षमिवापन्नः Prasannar. 102,3. संमत्या *mit Einwilligung von* (gen.) Pañkat. 229,1. Hit. 106,19. 116,21. Kull. zu M. 9,200. — 4) *das Ehren, Ehrenerweisung* R. 7,10,39. P. 3,1,126. 3,1,6. 2,102. Rasik. ed. Calc. 8,32 (Sin. D. 332,1). Kâm. 10,26. — 5) *Wunsch* H. an. Med. — 6) = आत्मज्ञान Âgastîja im ÇKDa.

2. संमति (2 सम् + मति) adj. *derselben Meinung seiend, übereinstimmend* gaṇa दृक्शादि zu P. 5,1,123. — Vgl. संमत्य.

संमतिमैन् m. nom. abstr. von 2. संमति gaṇa दृक्शादि zu P. 5,1,123.

संमतीय m. pl. = संमत 2) *b*) Wassiljew 79. 230. fg. 233. fg. 253. Târan. 4. 175. 271. fgg. 294. 297. Hiouen-thsang 1,234. fg. Vie de Hiouen-thsang 123. 204.

संमद् zur Erklärung von समद् Nir. 9,17.

संमर्द (von 1. मर्द् mit सम्) m. 1) *Freude* P. 3,3,68 (vgl. 5,2,44). Verz. 26,171. AK. 1,1,4,2. H. 316. 1528. Hall. 1,122. Harîv. 7440. Âmîs. 275 (nach Benfey). Spr. (II) 4219. Mâlatîm. 77,11. Kathâs. 56,37. 112, 107. Çaṅk. 13,2. Sin. D. 167. — 2) N. pr. *a*) eines Ṛishi Ind. St. 3,242, *b*. — *b*) eines mythischen Fisches VP. 4,2,20. संमाद् ÇKDa. nach ders. Aut. — Vgl. सोमद्.

संमदमय (von संमद्) adj. (f. ई) *voller Freude:* दृशा Kathâs. 26,287.

संमनस् (2. सम् + मनस्) adj. gaṇa दृक्शादि zu P. 5,1,123. *einig* AV. 6,42,1. 73,1. Çat. Br. 4,2,4,22. Kâtj. 98. — Vgl. सोमनस्य.

संमनिमैन् (von संमनस्) m. *Einigkeit* gaṇa दृक्शादि zu P. 5,1,123; vgl. 5,4,155.

संमन्तव्य (von मन् mit सम्) adj. *noch anzuschlagen* MBh. 1,7456.

संमन्त्रणीय (von मन्त्रय् mit सम्) adj. *zu begrüssen* MBh. 12,12312.

संमय m. nom. act. Vop. 26,171, v. l.

संमयन (von 1. मि mit सम्) n. *das Eingraben des Opfa* Çat. Br. 3,7,3,2.

संमर्द (von मर्द् mit सम्) m. 1) *Druck:* beim coitus Prasannar. 56,a,6. *Anprall:* वीचि° Râga-Tar. 4,541. *Gestampf* MBh. 14,2117. 2121. Harîv. 5263. 6391. R. Gorr. 2,107,17. 5,83,11. Rasik. 15,101. Kathâs. 19. 93. Râga-Tar. 5,87. *das Zerreiben* (wohlriechender Stoffe) Hall. 4,84. — 2) *feindlicher Zusammenstoss, Kampf* H. 797. Hall. 2,299. MBh. 5,5859. 7,5446. सेनयोः Milav. 71,3. परात्म° R. ed. Bomb. 5,41,7. सैन्योऽन्य° Kathâs. 3,66. सपि° *Kampf mit* MBh. 1,5252.

संमर्दन (wie eben) m. N. pr. 1) eines Sohnes des Vasudeva Bhâg. P. 9,24,51. — 2) eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 48,78.

संमर्दिन् (wie eben) nom. sg. gaṇa अकृादि zu P. 3,1,134.

संमर्शन (von मर्श् mit सम्) n. *das Bestreichen* Çat. Br. 3,8,3,26. Kâty. Çr. 5,3,16. 13,2,29. Çâṅkh. Çr. 4,21,20.

संमर्शिन् (wie eben) adj. *urtheilsfähig* Taitt. Up. 1,11,4.

संमर्ष (von मर्ष् mit सम्) m. *Ertragung:* दुःख° Bhâg. P. 11,19,36.

संमा (3. मा mit सम्) f. 1) *Gleichmaass, Gleichzahl* Ait. Br. 3,1. Pañkav. Br. 3,1,23. — 2) *ein best. Metrum* ṚV. Prâtiç. 17,11.

संमातर् (2. सम् + मा°) adj. P. 4,1,115. *von derselben Mutter stammend* ṚV. 10,117,9. AV. 5,7,37. Kâṭh. 13,7. — Vgl. सोमातुर.

संमातुर H. 546 schlechte Lesart für सोमातुर.

संमार्ट (von 1. मृज् mit सम्) m. P. 3,3,68, Schol. (vgl. 5,2,144) nicht in der Bed. हर्ष. = संमद 2) *b*) ÇKDa.

संमान (von मन् mit सम्) m. *das Ehren* (einer Person), *Ehren* (pl.) MBh. 1,7064. 3,1814. ज्ञात: R. 2,26,30. Spr. (II) 4034. 5382. 5784. 6890. fg. 6991. Mârk. P. 69,10. Pañkân. 1,11,6. Pañkat. 218,3. ब्रह्मतत्रस्य (obj.) MBh. 12,2778. Spr. (II) 5991. Bhâg. P. 4,8,27. संमानं कृ MBh. 10, 314. fg. Harîv. 6832 (गोविन्दे). Kathâs. 45,195. 197. Mârk. P. 69,46. प्र-युज् MBh. 1,7964. समा-धा Spr. (II) 5425. दान° von *Seiten eines Fürsten* 529. मन्त्रिषु स्वामिसंमानः Râga-Tar. 4,580. आत्म° *der eigenen Person erwiesene Ehren* Spr. (II) 3529. ससंमानं लभ् *Unehre einernten* 453. Wird bisweilen fälschlich सन्मान geschrieben und auch als n. (vgl. Sudhâk. K. 249,a,9. 10) gebraucht.

संमानन (vom caus. von मन् mit सम्) n. *das Ehren* (einer Person) Nir. 7,17. P. 1,3,36. 70. तस्य (obj.) संमाननार्थम् MBh. 13,1332. Kathâs. 14, 34. कृष्णसंमाननार्थम् MBh. 5,3106. f. या dass. Spr. (II) 4170.

संमाननीय (wie eben) adj. *zu ehren* Bhâg. P. 5,5,26, v. l.

संमानिन् (von संमान) adj. *Ehre besitzend, auf Ehre haltend* Spr. (II) 6043.

संमान्य (vom caus. von मन् mit सम्) adj. *in Ehren stehend:* सर्वभूता

नाम् R. 4,44,10. °सलिला R. Schl. 2,50,14.

संमार्ग (von 1. मृज् mit सम्) m. 1) *das Wischen, Reinigung* Comm. zu TBr. 3,497,14. 500,1. zu Kāṭy. Çr. 2,6,46. fg. 50. pag. 190,18. 505,21. वेदि° Kumāras. 1,61. — 2) *Wisch, Grasbüschel* (mit welchem das Brennholz umwunden wird) Āçv. Çr. 1,3,28. 3,1,13. Schol. zu Kāṭy. Çr. 227,20. fg.

संमार्जक (wie oben) 1) adj. *a) kehrend, reinigend; Kehrer* H. 363, Schol. गृहादि° Kull. zu M. 7,136. — *b)* = बकुलधान्यार्जक H. 363, Schol. — 2) m. *Besen* Çabdar. im ÇKDa.

संमार्जन (wie oben) 1) n. *a) das Abreiben, Wischen, Kehren, Reinigen* Ratnam. im ÇKDa. Kāṭy. Çr. 5,5,6. 14. Lāṭy. 1,12,20. 2,3,16. 8,15. M. 3,134. MBh. 12,7002. Hariv. 7908. R. 2,33,20 (31 Gorr.). 71,34. वेश्म° Mārk. P. 35,16. Verz. d. Oxf. H. 11,*a*,16. fg. 16,*a*,9. 30,*b*,43. 83, *a*,20. 85,*a*,45. *b*,16. Bhāg. P. 7,11,26. गृहसंमार्जनकर्तृ Pañcat. 26,22 27,5. 116,21. अग्नि° Comm. zu Āçv. Çr. 1,3,28. — *b) Wisch; Spitzen und Wurzeln des Darbha-Grases, vom Besen* (वेद) *abgeschnitten, welche zum Reinigen der Löffel u. s. w. dienen,* TS. Comm. 1,169,16. TBr. 3,3,1,2. स्रुक्सं° 3,1. Kāṭy. Çr. 2,6,30. 8,6,31. — *c) an Schüsseln u. s. w. haftende Reste, die abgewischt werden:* घृतविकिरसंमार्जनललाशिन् Mārk. P. 31,12. — 2) f. ई *Wisch, Besen* (aus zähen Grasern und Stengeln) AK. 2,2,18. H. 1016. Hālā. 2,147. Kṣemīs. 7,21. Saṃsk. K. 2,5,3. Kull. zu M. 3,68.

संमार्ष्टि (wie oben) f. *Reinigung:* व्रणादि° H. an. 2,90.

संमित 1) adj. s. u. 3. मा mit सम्. प्राण° *lieb wie das eigene Leben* Mārk. P. 90,1. — 2) m. N. pr. eines mythischen Wesens Jiñān. 1,284. — 3) n. प्रजापतेश्चतुस्त्रिंशत्संमितम् und प्रजापतेस्त्रयस्त्रिंशत्संमितम् Namen von Sāman Ind. St. 3,224,*a*.

संमितत्व n. in der Rhetorik *durchgängiger Parallelismus:* यावदर्थपदत्वं तु संमितत्वमुदाहृतम् Prataparu. 69,*a*,8. Beispiel: काकतीयनरेन्द्रस्य कीर्तिचन्दनचर्चनम्। दिगङ्गना वितन्वन्ति यतसौकृततद्गुणाः॥

संमिति (von 3. मा mit सम्) f. *Gleichstellung* P. 4,4,135.

संमिमर्दिषु (vom desid. von मृद् mit सम्) adj. zu *zerdrücken —, zu zermalmen beabsichtigend* MBh. 8,856 nach der Lesart der ed. Bomb.

संमिमानयिषु (von desid. des caus. von मन् mit सम्) adj. zu *ehren beabsichtigend:* वीरान् MBh. 7,1641.

संमिश्र (2. सम् + मिश्र) adj. (f. श्रा) *gemischt, vermischt:* संमिश्राध्यान *Vermischtes* Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,43. fg. *gemischt —, im Verein mit, sich berührend mit* (instr. oder im comp. vorangehend): उदकेन R. ed. Bomb. 6,113,119. Bhar. Nāṭyāç. 19,104. संमिश्रा या चतुर्दश्या अमावास्या भवेत्क्वचित् Tithyādit. im ÇKDa. पिण्याकसंमिश्रमशनम् MBh. 13,5518. Mārk. P. 15,21. Schol. zu P. 8,2,104. Siddh. K. zu P. 2,1,31. कास्तासंमिश्रदेह Mālav. 1. केसरोत्कर° (वदन) *behaftet mit* MBh. 3,11130. विमर्ग° *versehen mit* Çrut. 2.

संमिश्रण (von मिश्रय् mit सम्) n. *das Hineinmischen —, mengen:* घृतदध्य° Kull. zu M. 7,198.

संमिश्र adj. = संमिश्र *sich verbindend, sich mischend, im Verein mit* (instr. und loc.) RV. 1,7,2. तविषीभिः 64,10. पतीः 2,36,2. श्रिया 7,56, 6. धेनुभिः 9,61,21. यः संमिश्रो वृषभिः 8,33,4. 1,166,11. शुभे संमिश्राः पृषतीरयुक्षत 3,26,4. 8,30,18. संमिश्रो घर्मिरा सिषर्ति देवान् 10,6,4.

संमीलन (von मील् mit सम्) n. 1) *das Schliessen (der Augen):* नयन° Sūçr. 1,155,18. मनःसंमीलनं निद्रा *Einstellung der Thätigkeit des M.* Daçar. 4,21. चेतःसंमीलनं निद्रा Sāh. D. 185. — 2) *vollständige Verfinsterung* Gaṇit. Kālakṛ. 16. 19. Sūrjag. 16. — Vgl. निमीलन.

संमील्य (wie oben) n. N. eines Sāman Ind. St. 3,242,5. संमील्योत्तर n. desgl. ebend.

1. संमुख (2. सम् + मुख) n. 1) *ein zugekehrtes Gesicht* P. 5,2,6. Davon *a*) acc. संमुखम् α) *entgegen* (kommen u. s. w.) Spr. (II) 2356 (Conj. für संमुखे). Kathās. 26,116. 65,110. Mālav. P. 43,21. Rājā-Tar. 5,146. mit gen. Kathās. 48,33. 78,22. 85,78. Pañcat. 238,28. स्वात्मनः संमुखं निर्त्य प (ein Weber) स्वाकर्षति *zu sich heran* Spr. (II) 3985. — β) *in's Gesicht:* संमुखं नैव पश्यति Sāh. D. 59,1. — γ) *gegenüber:* युयुधे तेन सं° Kathās. 44,150. vor *Jmds Augen* MBh. 12,4284. *in Gegenwart von* (gen.) Sadān. P. 4,23,*a*. — *b*) loc. संमुखे α) *gegenüber, davor, in Gegenwart von* MBh. 12,4272. Sāh. D. 59,17. दासवनस्यापि — नाशकत्संमुखे स्थातुम् *so v. a. in's Gesicht sehen* Kathās. 4,70. — β) *entgegen:* ययौ संमुखे तस्य Mārk. P. 108,5. न बभूव तदा कश्चिद्युयुत्सोरस्य संमुखे *setzte sich entgegen* R. 7,28,5. — Am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen in der Bed. von संमुखम् *entgegen:* संमुखायात Spr. (II) 3246. संमुखागत Kathās. 10,133. *in's Gesicht:* °दर्शन Kāraṇḍ. 18. — 2) *Beginn, Anfang:* स्थितौ यौवनसंमुखे (°संमुखौ die neuere Ausg.) Hariv. 9104.

2. संमुख (wie oben) adj. (f. ई und श्रा) 1) *Jmd* (gen.) *das Gesicht zuwendend* Trik. 3,1,16. Sāh. D. 60,10. वैरिमृगा यस्य नेवासन्संमुखा क्वचित् Kathās. 27,126. धावत् — यस्य संमुखः *ihm entgegen* 47,87. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,16 (f. श्रा). Kathās. 84,29 (श्र°). Pañcat. 36,16. 125,15. संमुखो भू *entgegenkommen* 104,15. 169,12. 240,13. वटपादपसंमुखो गच्छति *geht auf — los* 104,17. मदाननसंमुखी Çiç. 30. *zugewandt, zugekehrt* von Unpersönlichem Çat. Br. 3,9,2,2. Kāṭy. Çr. 2,1,5. Gṛ. 12,21. Pañcat. 218,2. स्वसंमुखो (करोति) Verz. d. Oxf. H. 202,*b*,30. — 2) *zeitlich zugekehrt* so v. a. *im Beginn von — stehend:* स्थितौ यौवनसंमुखो Hariv. 9104 nach der Lesart der neueren Ausg. — 3) *zugeneigt:* das Volk Ait. Br. 8,25. mit gen. der Person Mārk. P. 75,6. vom Schicksal Kathās. 104,198. Spr. (II) 356. *geneigt zu:* प्रसाद° Pañcat. 23,21 (°मन्मुख gedr.) = ed. orn. 22,13. — 4) *bedacht auf:* प्रभुकर्मणि Çatr. 2,17. स्वर्गैक° Kathās. 12,171. देवत्यागैक° 16,51. 38,92. — संमुखे नेदमाह Mṛcch. 101 fehlerhaft für मन्मुखेनेदमाह Vgl. अभि°.

संमुखित्र m. *Spiegel* Çabdaratnam. bei Wilson.

संमुखीकृ (2. संमुख + 1. कृ) *gegenüberstellen:* सौमित्रिणा बाणैः °कृतः *so v. a. zur Zielscheibe der Pfeile gemacht* Rāghavap. 12,21.

संमुखीन (von 1. संमुख) adj. *zugekehrt* P. 5,2,6. H. 1437. *so v. a. zugeneigt:* संमुखीनो हि जयो रन्ध्रप्रहारिणाम् Rāgh. 15,17. Davon nom. abstr. °त्व n. *das Zugekehrtsein* Kull. zu M. 4,52. *das Gegenüberstehen, Gegenwart* Sāh. D. 107,18.

संमुखीभू (2. संमुख + 1. भू) *sich gegenüber —, sich entgegen stellen:* °भूय गृह्यमाणा: Kull. zu M. 7,89.

संमुद् s. स्वादु°.

संमूढ s. u. 1. मुह् mit सम्. Davon nom. abstr. °ता f. *der Zustand, da man kein klares Bewusstsein hat:* °तां ययौ Kathās. 105,13. °त्व n. dass.

Maitrâyaṇ. 3,2.

संमूढपिडका f. Bez. *gewisser Eruptionen am männlichen Gliede* (zu den मूकदोष gehörig) Suçr. 1,298,7. 19. 2,124,4.

संमूत्रण (von मूत्रय् mit सम्) n. *das Bepissen:* शुष्क° (von einem Hunde) Varâh. Bṛh. S. 89,1.

संमूर्छ (von मूर्छ् mit सम्) m. *das Wuchern:* °आस्तृणादयः H. 1201.

संमूर्छन (wie eben) n. 1) *das Stehballen, Sichverdichten, Sichanhäufen:* वायोर्वायुसंमूर्छनं नानात्वलिङ्गम् Kap. 2,1,14. मत्स्याद्यः संमूर्छनोद्भवाः H. 1356. = घनिभ्यासि AK. 3,3,6. H. 1517. an. 4,197. Med. n. 215. = उच्छ्राय Med. — 2) *Verlust der Besinnung* (मोह) H. an. Med.

संमेघ (2. सम् + मेघ) m. *die wolkige Jahreszeit* Pañcav. Br. 5,9,10. — Vgl. संमेघ्य.

संमेत m. N. pr. eines Berges Çatr. 1,358. 14,96. — Vgl. समेत.

संमेलन (von मिल् mit सम्) n. *das Zusammenkommen, Vereinigung, Vermischung* Uttarar. ed. Cow. 177,9. Sin. D. 252,7. खण्डमरिचादीनाम् 27,18. विभावादि° 19. शरीरार्ध° Comm. zu Naish. 7,82.

संमोद (von 1. मुद् mit सम्) m. 1) *Freude* Çabdar. im ÇKDr. — 2) = घनसंमोद, मोद *Wohlgeruch* MBh. 2,2178 nach einer von Nilak. erwähnten Lesart.

संमोदन (wie eben) 1) n. gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101. *Wohlgeruch:* धूप° R. 2,71,35. पुष्पसंमोदने काले MBh. 12,5616. — 2) f. ई etwa *freundliche oder gegenseitige Begrüssung* Burnouf, Intr. 402, N. 2. — Vgl. सांमोदनिक.

संमोह (von 1. मुह् mit सम्) 1) m. *a) Verlust der Besinnung, Mangel an klarem Bewusstsein, das Irresein, Trübung —, Verblendung des Geistes* (vgl. मोह) Cat. Br. 14,7,2,1. Kaush. Up. 3,3. 4,13. Maitrâyaṇ. 3,5. 6,28. M. 7,13. Bhag. 2,63. 7,27. MBh. 1,2061. 5,755. 14,993. R. 2,59,21. 63,11. 71,28. Suçr. 1,115,13. 2,425,9. Spr. (II) 6673. Çik. 110,12. Uttarar. 83,7 (107,8). Kathâs. 60,97. Mâlav. P. 21,26. Bhâg. P. 1,3,24. 3,22,27. 25,10. Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,330. Pañcar. 1,1, 31. Verz. d. Oxf. H. 129,b, No. 234. संमोहानन्दसंभेदो मदः Sin. D. 174. मनस् Çik. 183. मनः° Kathâs. 16,73. बुद्धि° Harîv. 1505. मति° R. Gorr. 2,113,8. चित्त° Sin. D. 183. सीता° R. 5,30 in der Unterschr. ज्ञात° adj. MBh. 14,1581. गत° adj. Bhâg. P. 2,9,2. घ° *klares Bewusstsein, Besonnenheit* R. Gorr. 1,67,15. 4,28,31. Suçr. 1,15,15. — *b)* संमोहे Naish. 2,17 unter den Wörtern für *Kampf.* — *c)* in der Astrol. *eine best. Conjunction der Planeten* Varâh. Bṛh. S. 20,5. 6. 9. — 2) f. घा *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2,138 (V,2).

संमोहक (vom caus. von 1. मुह् mit सम्) adj. *irre führend, verwirrend, bethörend* MBh. 12,7727.

संमोहन (wie eben) 1) adj. (f. ई) dass. Pañcar. 3,15,33. दुष्कृतीनाम् Harîv. 7428. भूत° MBh. 1,4867. 5371. 8,230. जगत्सं° Kathâs. 15,74. 104,28. विश्व° 68,8. — 2) m. N. eines der fünf Pfeile des Liebesgottes Verz. d. Oxf. H. 184,b, No. 419. 190,b,40. Schol. zu Gît. 8,1. Kumâras. 3,66. — 3) f. ई N. eines best. Blendwerks (माया) Harîv. 9380. — 4) n. *a)* Bez. eines best. mythischen Geschosses (अस्त्र) MBh. 4,2112. Râm. 3,37. Kathâs. 14,29. — *b) das Irreführen, Verwirren, Bethören* Mâlav. P. 24,25. Bhâg. P. 3,28,22. — Vgl. महा°.

संमोहनतन्त्र n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,b,22. 102,a,2. 3. 104,a,21.

सम्यक् s. u. सम्यञ्.

सम्यक्काफण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,1. 2.

सम्यक्कर्मान्त m. *richtige Beschäftigung* Lot. de la b. l. 519.

सम्यक्चारित्र n. *richtiger Lebenswandel* (bei den Gaina) Sarvadarç. 32,19.

सम्यक्ता (von सम्यञ्च्) f. *Richtigkeit, richtiges Verfahren:* सम्यक्तया als Umschreibung von तत्त्वतस् Schol. zu Prab. 27,11.

सम्यक्त्व (wie eben) n. dass.: ये चित्तमभिपद्यन्ते सम्यक्त्वं तेषु दुर्लभम् MBh. 12,787. *Vollkommenheit:* केचित्सम्यक्त्वं च प्रपेदिरे Çatr. 14,67. तायिक° Wilson, Sel. Works 1,318. °कौमुदी Titel einer Schrift 283. सम्यक्त्वाध्यापन (zu lesen °ध्यापन oder °ध्यपन) desgl. 282.

सम्यक्पाठ m. *richtige Aussprache* VS. Prât. 1,1.

सम्यक्प्रवृत्ति f. *richtige Function* (der Sinne) Colebr. Misc. Ess. 1,383.

सम्यक्प्रहान n. *richtiger Glaube* (bei den Gaina) Sarvadarç. 31,19.

सम्यक्संकल्प m. *richtiger Wille* Jâtîs. 1,7. Lot. de la b. l. 519.

सम्यक्सत्त्व n. Titel eines Commentars Târân. 301.

सम्यक्सत्य m. N. pr. eines Mannes Târân. 69.

सम्यक्समाधि m. *richtige Meditation* Lot. de la b. l. 519.

सम्यक्संबुद्ध adj. *vollkommen erleuchtet,* Bez. Buddha's Wassiljew 223.

सम्यक्संबोध m. *vollkommene Erleuchtung* (Buddha's) Kathâs. 28,12. °बोधि Lalit. ed. Calc. 375,10. 14. Hiouen-thsang 1,309. 2,18.

सम्यक्स्थिति f. *das Zusammenbleiben* Comm. zu Bhâg. P. 10,40,20.

सम्यक्स्मृति f. *vollkommenes Gedächtniss* Lot. de la b. l. 519.

सम्यग्अवबोध m. *richtiges Verständniss* P. 1,3,47, Schol.

सम्यग्आजीव m. *richtiger Lebensunterhalt* Lot. de la b. l. 519.

सम्यग्गुण m. *wahrer Vorzug, wahre Tugend* Vet. in L.A. (III) 29,15.

सम्यग्ज्ञान n. *richtige Einsicht, wahre Erkenntniss* Mund. Up. 3,1,5. Siddh. 67. Spr. (II) 2673. Sarvadarçanas. 32,1. 2.

1. सम्यग्दर्शन n. *richtige Einsicht:* °संपद् M. 6,74. Sarvadarçanas. 116,5. 180,15. bei den Gaina *die wahre Theorie* so v. a. *der wahre Glaube* 29,15. fg. 31,9. तत्त्वार्थे श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् 18. सम्यग्दर्शनादित्रितय so v. a. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान und सम्यक्चारित्र 15. fgg. सम्यग्दर्शनव्रतम् Verz. d. Oxf. H. 397,a,10.

2. सम्यग्दर्शन adj. (f. घा) *die richtige Einsicht habend* Bhâg. P. 1,5, 38. 4,20,10. बुद्धि 3,31,46.

सम्यग्दर्शिन् adj. dass.: घ° Mâlav. P. 38,2.

सम्यग्दृश् adj. dass. Verz. d. Oxf. H. 58,b, N. 2.

सम्यग्दृष्टि f. *richtige Einsicht, der wahre Glaube* Lot. de la b. l. 519.

सम्यग्बोध m. *richtiges Verständniss* P. 1,3,47, Schol.

सम्यग्योग m. *ein wahrer Joga* Maitrâyaṇ. 6,28. Bhâg. P. 3,2,19.

सम्यग्वर्णप्रयोग m. *richtige Anwendung der Laute, richtige Aussprache* Çaunak in Ind. St. 4,269.

सम्यग्वाच् f. *richtige Sprache* Lot. de la b. l. 519.

सम्यग्व्यायाम m. *richtige Anstrengung des Körpers* Lot. de la b. l. 519.

सम्यञ्च् (2. सम् + अञ्च्) 1) adj. P. 6,3,92. Vop. 26,31. f. समीची, n. du. समीची. = सत्य AK. 1,1,5,22. H. 264. Hâlây. 1,144. = मनोज्ञ und

संगत Mān. k. 19. a) *zusammen* —, *auf einen Punkt gerichtet* (Gegens. विषक्); *vereint, gemeinsam; universus, all* ṚV. 1,96,5. 179,3. 2,3,6. 3,1,7. दश स्वसारो अग्रुवः समीचीरधि सानवि 29,13. 31,13. 55,13. वर्तयातपते समीचीः 4,17,9. 5,7,1. 8,31,6. 10,61,25. प्राणो दीर्घानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि Śat. Br. 14,8,14,3. ब्रह्म वैवास्मै तत्र वं समीचीं दधाति *wendet ihm zu* TBr. 1,7,8,5. TS. 2,3,2,2. 5,2,9,4. घृतेनौषधीभिः सम्यञ्चं दधाति 6,6,2,4. Ait. Br. 1,3. 4,25. सम्यञ्चः सर्वे साकम् *alle vereint* 7,18. Çāṅkh. Ça. 14,38,7. — b) *gegen einander gewandt* (mit dem Gesicht), *adversus:* समीची उर्वसा VS. 11,31. सम्यञ्चो भूत्वा द्विपदो रेतः सिञ्चति Ait. Br. 2,38. Śat. Br. 3,8,3,28. दिशः 7,3,1,24. fem. du. समीचौ *Himmel und Erde* (vgl. 3,30,11. 8,6,17), als mit den Vorderseiten *sich gegenseitig zugekehrt*, ṚV. 1,69,1. उभे यत्तस्मै पीपयतः समीची 2,27,15. 3,55,20. — 10,24,4. 5. — c) *in einer Linie liegend:* समीचः पशुः पदो कृणोत् Śat. Br. 3,8,3,27. — d) *richtig* Baudh. P. 2,6,29. — 2) f. समीची a) angeblich N. einer Gemahlin: सोमः स्वस्त्या वरुणः समीच्या (so betont: = अनुकूला देवी Comm.) TBr. 1,4,8,6. N. pr. einer Apsaras MBh. 1,7858. 2,394. Harīv. 12690. — b) *Lob, Preis* Taitt. 2,7,10. — c) *Gazellenweibchen* Uṇâdis. zu Uṇâdi. 4,92. — 3) सम्यक् adv. वादे und स्तुतौ H. an. 7,54. दृढप्रशंसयोः Mān. ârj. 16. a) *nach einem Punkt gewandt, zusammen, zumal:* पस्त्यार्चयः सम्यक्संयत्ते ṚV. 5,9,5. 66,2. 70,2. 4,59, 6. 9,73,2. गत्वे यः सम्यगतिष्ठेत्स गच्छेदध्वतो मम so v. a. *verkehren mit* MBh. 3,1304. — b) *in einer Linie* (Gegens. वक्रया *schräge*) Śat. Br. 2, 5,4,14. 8,3,27. Kāṭy. Ça. 8,5,4. — c) *richtig, recht, genau, auf die gehörige Weise, wahrhaft* (dem dazu gehörigen Worte unmittelbar vorangehend oder folgend, nicht selten aber auch durch andere Worte davon getrennt) Muṇḍ. Up. 1,2,13. Prāçnop. 5,6. M. 1,4. 2,5. 14. 53. 89. 101. 160. 3,25. 76. 87. 157. 208. 262. 279. 7,60. 100. 194. 8,305. 9, 262. 10,74. 11,71. Jâán. 1,154. 245. सम्यक्तु दण्डनम् 356. 3,161. 185. Bhag. 5,4. MBh. 3,2284. 2367. 2447. 2451. 2979. 12163. 13,97. Harīv. 7066. R. 1,1,37. 3,2. 7. 4,28. 42,5. 60,5. 2,44,4. 72,25. 80,19. 82,30. 111,20. R. Gorr. 1,4,94. 4,9,52. Suçr. 1,7,10. 34,15. 128,5. 6. 2,47, 18. 185,11. Śārṅgad. 71. Rāgh. ed. Calc. 1,26. 89. Çiç. 4,16. 10,1. 15, 15. 97, v. l. Vikr. 39,7. 90. Milav. 13,19. Spr. (II) 630, v. l. 698. 1009. 1778. 1838. 1927. 4203. 5215. 6882. 6883, v. l. 6894. 6910. 6994. सम्यक्शास्त्रमिदं स्थितम् Varāh. Bṛh. S. 2,15. 21. 8,12. 9,39. 19,9. 11. 50, 26. 55,13. Kathās. 11,1. 39,203. 48,5. Bhôj-Tar. 3,179. Prab. 22,16. 24,16. 114,11. Mārk. P. 53,1. 92,5. Weber, Rāmây. Up. 310. 327. 357. Kāmaṇḍ. 287. Dūrtas. 83,6. Baudh. P. 1,7,4. 2,9,19. 4,1,32. 18,4. 25, 32. 7,12,24. 9,16,6. Sāh. D. 1,18. 27,10. Pañcat. 72,17. 128,17. 134, 7. 167,6. Z. d. d. m. G. 14,372,6. praedicativ gebraucht: तव प्रज्ञा न सम्यक् MBh. 1,7416. 14,41. तनु न सम्यक् Suçr. 1,30,7. 135,13. Baudh. P. 2,5,9. Schol. zu Kap. 1,46. Uttarar. ed. Cow. 53,16, N. — इत्यादि° Kathās. 37,47. अ° *nicht in der gehörigen Weise* Mārk. P. 81,14. °कारिन् M. 9,259. — d) *vollständig, durchaus:* निष्क्रवः स° M. 9,21. विज्ञेतुम् Spr. (II) 1648. 5367. सम्यङ्नान्येन केनचित् *durchaus nicht* M. 1,103. याचते न जलं देयं सम्यक् N. ed. Bapat 23,3. विज्ञानं चात्र तादृक्षे सम्यक्किंचित्र विद्यते Kathās. 32,134. — Vgl. समीचीन.

सम्राज् (2. सम् + राज्) VS. Pāṇ. 4,5. AV. Pāṇ. 2,26. P. 3,3,25. Vop. 2,22. m. (nom. सम्राट्) 1) *Beherrscher des Alls, oberster Regent*, so heisst a) Varuṇa und die Âdityа ṚV. 2,25,5. 5,63,2. 7,82,2. 8,42,1. VS. 4,30. ṚV. 1,136,1. 2,41,5. 8,25,4. 3,54,2. 7,38,4. 8,27,21. 10,63,5. सम्राट्पति Śat. Br. 11,4,3,10. — b) Indra (vgl. ṚV. 7,82,2): सर्वासामत्त त्रिवर्पा न देवा भुवः सम्राळिन्द्र मत्योनिः ṚV. 4,19,2. 1,100,1. 7,6,1. 38, 4. VS. 8,37. — 2) *Oberherr, Oberkönig, unumschränkter Herrscher* (über Menschen) AK. 2,8,4,2. H. 690. Halāy. 2,267. Indra ṚV. 8,16,1. 46,20. 10,134,1. Agni 3,10,1. 5,7,1. AV. 4,1,3. ŚV. II, 8,2,20,2. VS. 12,117 (vgl. 3,38). विद्वेषु ṚV. 3,55,7. 56,3. 4,21,3. त्रासदस्यव 8,19,32. 8,27,3. VS. 9,24. कामयते वै राजा सम्राड्भवितुम् Śat. Br. 5,1,1,13. fg. 5,3,4,2. 11,3,1,2. 14,1,1,19. 6,10,1. 7,1,1. ṚV. 1,188,3. VS. 5,32. 13,35. 20, 5. Kauç. 45. Mahāvīr. 6,3. MBh. 1,2362. 3,12704. 4,221. 635. 12,1509. Spr. (II) 4010. Rāgh. 2,5. 4,35. Çiç. 82. Kathās. 19,114. Bhôj-Tar. 3, 62. 5,125. Prab. 99,15. LA. (III) 92,1. स्वायंभुव Baudh. P. 3,13,2 (vgl. VP. 93). सर्वमरीचितिताम् MBh. 2,489. R. Gorr. 2,9,13. — 3) N. pr. eines Sohnes der Kāmjā Harīv. 59 (einer Tochter derselben VP. 161. Mārk. P. 53,14). eines Sohnes des Kṛitaratha Baudh. P. 3,15,13. N. pr. eines neueren Autors mit dem Bein. Agnikīl Verz. d. B. H. No. 133. 226. 260. 914. 1100. — 4) *ein best. Metrum* ṚV. Prāt. 17,4. Ind. St. 3,107. 111. — Vgl. साम्राज्य.

सम्राज्ञी f. *Oberherrin:* सम्राज्ञे ṚV. 10,85,46. AV. 14,1,43. TBr. 3,11,3,1.

सम्राडासन्दी f. *der Stuhl für den* Pravargja-Gharma (als सम्राज् Leben Soma राजन्) Śat. Br. 14,1,3,3. 3,4,21. Kāṭy. Ça. 26,2,17. Līṭ. 1,6,1. 36. 5,8,11.

सम्राड्घा f. *die Kuh, welche die Milch für den* Gharma *liefert*, Śat. Br. 11,3,4,1. 4.

सय्, सयते (गतौ) Dhātup. 14,3 (Einschiebung).

1. सय (von सि) s. सयत्र.

2. सय adj. *nebst* प ṚV. Prāt. 14,18.

सयति (2. स + 3. यति) adj. *mit Cäsur* Ind. St. 3,206.

सयत्र (2. स + यत्र) adj. *bemüht, bestrebt, sich angelegen sein lassend; mit* Infin. Hit. 11,17. 23,11. अधिक° *ein heftiges Verlangen spürend nach* (acc.) Verz. d. Oxf. H. 37,a, No. 90.

सयत्व (von 1. सय) n. *Verbindung, Befestigung* TS. 6,6,4,5. TBr. 1, 2,2,2. 3,2,5,7. Kāṭy. 24,10.

सयन 1) n. (von सि) *das Binden* Nir. 5,19. 6,28. — 2) m. N. pr. eines der Söhne des Viçvâmitra MBh. 13,257. सेयन ed. Bomb.

1. सयव (2. स + यव) adj. *mit Gerste vereint* Kauç. 28. 45. 71. 94.

2. सयव adj. *ein* प *oder* व *enthaltend* VS. Prāt. 1,111.

सयावक (2. स + 2. या°) adj. *mit Lackfarbe bestrichen* Kir. 5,40.

सर्यावन् (2. स + या°) adj. (f. °वरी) *mitfahrend, mitgehend, begleitend* ṚV. 1,44,12. 84,16. इव 5,35,7. महत्वती वाणी 7,31,5. 10,22,11. देवाः 113,2.

सयुक्त्व (von सयुज्) n. *das Verbundensein* Śat. Br. 13,1,2,4.

सर्युग्वन् (von सयुज्) adj. 1) *verbunden mit* (gen.) ṚV. 10,130,4. — 2) etwa *mit einem Zweigespann versehen* Kaṭha-Up. 4,1,3. 5. 8.

सयुज् (2. स + 2. युज्) 1) adj. *verbunden, vereint; Begleiter, Gefährte* ṚV. 1,164,20. 3,30,11. 10,124,9. ताभिः सयुक्सरथं देव ईयसे 168,2.

AV. 5,14,7. प्राणापानौ सयुजाविव् स्तोम् 7,53,1. वैश्वानरेण सयुजा सजोषा: 108,2. 11,1,9. 2,14. VS. 11,15. 21,18. 28,4. Ait. Br. 3,45. TS. 4,4,5,1. 5,6,8,3. Çat. Br. 1,4,4,7. 3,2,2,7. ब्रह्म तत्रं च सयुजौ करोति Pañcav. Br. 11,11,9. Âçv. Çr. 5,3,1. — 2) f. Bez. gewisser Ishṭaki TS. 5,3,9,1.

सयूथ्य (von 2. स + यूथ) adj. in derselben Heerde laufend P. 4,4,114. 5,3,54. सखा VS. 4,20. 8,9. Ait. Br. 2,6.

सयेफर्ख m. N. pr. eines Fürsten Kaurić. 23,12 (vgl. den Index).

सयोग 1) adj. (2. स + योग) im Besitz des Joga seiend Rasn. 18,32. — 2) m. = संयोग Vereinigung (Gegens. वियोग) Bhâg. P. 7,9,17. — 3) n. (sc. स्थान) Bez. der vorletzten unter den 14 Stufen, die nach dem Glauben der Gaina zur Erlösung führen, Verz. d. Oxf. H. 397,a,15.

सयोनि (2. स + यो°) 1) adj. a) gemeinschaftlichen Schooss d. h. g. Ursprung habend ṚV. 1,159,4. सधर्त्यो मर्त्येन 164,30. 3,1,6. 10,30,10. वीरो वीरेण AV. 3,5,8. 7,19,1. 13,52,1. — b) sammt dem Schooss, — der Heimath, — dem Ort u. s. w., damit verbunden AV. 6,122,4. सयोनिलोकमुप यास्यतम् 12,3,19. 52. Kâṭy. 29,7. सग्नि TS. 5,1,6,2. 2,6,5. 4,8,1. सब्रह्म 5,1,9,4. 4,8,3. सक्षत्र 6,1,8,7. — 2) m. a) ein N. Indra's. — b) proximity to a wife. — c) a pair of nippers for cutting betel-nut Wilson nach Çabdârthak.

सयोनिता (von सयोनि) f. Gleichheit des Ursprungs, — der Heimath u. s. w. Ait. Br. 8,2.

सयोनित्व (wie oben) n. dass. TS. 5,1,4,4. 4,8,3. 6,3,8,1. ṬBr. 3,2,8,1.

सर्, सर्रति (nach P. 7,3,78 angeblich nicht im Gebrauch, st. dessen धावति) Daśrûp. 22,37 (गतौ). स्रियात् Vop. 8,93. सिसर्ति (ved.) Naigh. 2,14. Daśrûp. 23,17. सिस्रति (v. l. सस्रति) Naigh. 2,14. सिस्रते 3. pl. असरत् aor. P. 3,1,55. 7,4,16. Vop. 8,91. fg. सर्रत्, सरन्; चमार्षीत् Vop. 8,91. fg. सर्षत् AV. 4,11,2. ससार, सस्रुस् P. 7,2,13. Vop. 8,57. सस्रुस्, (परि) सस्रतुस्, (प्र) सस्रिथे; falsche Form सिस्रतुस् Vâlakh. 11,2. सस्रुषस्, fem. सस्रुषी ṚV. 1,96,5. 3,9,5. 8,1,15. AV. 6,23,1. सस्रुवेव (für सस्रुवानिव) Çat. Br. 1,8,2,6. सस्राणा, सस्राणा; सरिष्यैति; सर्तुम्; सर्तवे ṚV. 1,32,12. 116,12. सर्तवै 55,6. 57,6. 5,29,2. सर्तवाजौ (d. i. °वै वाजौ) 3,32,6. सृत्वा; pass. स्रियते Vop. 8,93. सृत partic. rasch laufen, gleiten, fliessen, zerfliessen; entlaufen: धारस्त पर्वतशित्सरिष्यन् ṚV. 2,11,7. 24,14. सर्त्राय: 4,17,2. 7,101,4. कृत्यानि 3,32,2. ससार सी परावत: 4,30,11. 38,6. 9,22,4. वाजम् wettlaufen 37,5. TS. 1,7,8,4. सृत्वाजिम् dass. in übertr. Bed. so v. a. sein Möglichstes gethan habend Spr. (II) 1888. — ṚV. 3,66,6. 86,13. 44. 101,14. 10,61,3. 23. ता सञ्जयो ऽकृणवो न सस्रु: 95,6. यस्येदं दूतीरसरम् 108,4. 111,9. Vâlakh. 11,1. VS. 2,7. 14. एतश ṚV. 4,17,14. Çat. Br. 11,1,6,23. 13,8,3,4. सरण्युभिरयो यथा निमर्षि nachjagen (mit acc.) ṚV. 3,32,5. — ससारोत्तरत: पूर्वम् (ein Ross) MBh. 14,2134. मृगा: प्रदक्षिणं ससु: Bhaṭṭ. 14,14. वायो सरति Manu. 54. ससुस्तत्र sie begaben sich dahin Bhâg. P. 10,75,31. sich hinbegeben zu (acc.): दमयन्तीं सृता MBh. 3,2728. losgehen auf: (तम्) ससाराभिमुख: प्रूर: शार्दूल इव कुञ्जरम् 7,561. 8,2729. verfolgen: ससार मृगमेकाकी 1,1696. 14,2399. sich entfernen: सरति सङ्गमा वाङ्मार्धध्यं गताप्यबला सती Milav. 69. Bhâg. P. 4,31,20. hinübergehen über: निष्पाद्य रुरव: सेतुं प्रतीता: ससुरर्णवम् R. 5,95,44. — med. in's Fliessen gerathen (vom Abgehen des Fruchtwassers vor der Geburt): सिस्रतो (für सिसृतो) नार्यृतप्रजाता AV. 1,11,1. — partic. सृत laufend: सृतसृतेषु (सूते: प्र° die neuere Ausg.) तुरगै: Harîv. 6404. वह्नि: herausgetreten Kathâs. 103,169. n. das Davonlaufen, Fliehen: निवर्तधमधर्मज्ञा गुध्यं किं सृतेन व: MBh. 9,1208. 1521. Gang in भुजगशिसृ°. — Vgl. सस्र fg.

— caus. 1) सारयते in's Fliessen kommen: सारयत्स धार: ṚV. 4,17,3. — 2) सारयति laufen machen Nir. 5,4. = स्तृति Vop. in Daśrûp. 32, 107. auch = गति dors. nach ÇKDa. in Bewegung setzen: तस्रो: Manu. 34. entfernen: एकवेणी गण्डभोगात् 89. med. sich fahren lassen Âçv. Gṛh. 3,12,12. pass.: य: सार्यते केणिलं शकृत् laufen lässt, Durchfall hat Suçr. 2,440,1.

— intens. सेसृते Naigh. 2,14. — Vgl. u. प्र, अतिप्र, अनुप्र, उपप्र und परिसर्.

— desid. सिसीर्षति laufen wollen: वाजम् TS. 3,2,4,6.

— अध्वा herbeifliessen: अध्वा नृचक्षा असरत्पवित्रे ṚV. 9,92,2.

— अति s. अतिसर्, अतिसार्, अतीसार्. — caus. अतिसारयामास MBh. 3,665 fehlerhaft für अभि°, wie die ed. Bomb. liest. — pass. Durchfall haben (vgl. अतिसार) Suçr. 1,118,6. सरुधिरमतिसार्यते hat blutigen Durchfall 259,8. 2,165,17. 255,13. 430,18. 439,18.

— व्यति, absol. °सृत्य etwa in jeglichem Falle, bei jeder Gelegenheit: इमान् (नरदेवधर्मान्) विद्ध्याद्व्यतिसृत्य यो वै राजा मही पालयितुं स शक्त: MBh. 12,4402. = गुरुमनुसृत्य Nîlak.

— अनु 1) zufliessen, zulaufen ṚV. 5,52,2. 7,90,4. Jmd (acc.) nachlaufen, nachgehen Nir. 12,10. Harîv. 5122. पृष्ठत: R. 5,31,31. Milav. 41,13. 86,11. Kathâs. 10,29.120. 11,46. 25,185. 42,208. 96,31. L. (III) 87,21. Mârk. P. 21,15. Bhâg. P. 9,2,5. Verz. d. Oxf. H. 49,b,1 v. u. Rîâ-Tar. 3,118. Prab. 48,5. Vedântas. (Allah.) No. 19. Pañcat. 227. 23. मृगम् Çiç. Ca. 4,2. entlang gehen: सरस्वतीम् M. 11,77. MBh. 1. 3989. पन्थानम् 3,11356. पदवीम् Bhâg. P. 5,1,39. मूषकमार्गम् Pañcat. 137,12. तत्रकधाराम् Kathâs. 22,228. 39,76. ब्रह्मवर्त्मनि Mârk. P. 41,1. durchlaufen, durchschreiten: नात्मनो ऽस्ति प्रियतर: (so ed. Bomb.) पृथिवीमनुसृत्य वै MBh. 13,5711. दिवो लोकान् Harîv. 3187. विकारादेशान्सर्वान् R. 3,65,19. seinen Lauf —, seinen Gang richten nach: पुरीम् Manu. 31. उदीचीं दिशम् 58. ज्वालाम् Kathâs. 73,243. कमपि गृह्यमेधिनम् Dubreuil. 74,3. प्रकृतिम् Bhâg. P. 1,10,22. पाखण्डालयेषु (v. l. fügt तम् hinzu) Prab. 45,5. यत्र 53,4. गीतस्वनेन nach der Gegend, von wo der Gesang erscholl, R. Gorr. 1,66,12. gelangen zu: मन:शास्त्रिपदम् Maitrâjup. 6,24. संसारम् Verz. d. Oxf. H. 29,a,19. sich richten nach: सर्वान्धर्मानननुसृत्यैतदुक्तम् so v. a. gemäss MBh. 12,4022. प्राचां गुरूणामनुसृत्य वाचम् Verz. d. Oxf. H. 1,a. गुरुमतम् Sarvadarçanas. 125,19. नृलोकताम् so v. a. nach Art der Menschenkinder Bhâg. P. 10,57,9. nachlaufen so v. a. sich einlassen auf: न चावकाशो ऽस्ति वाक्सम्भ्रमनुसर्तुम् Suçr. 2,266,14. gelangen zu so v. a. in Erfahrung bringen: एतस्माद्गर्गस्यालर्कस्य वृत्तान्तमनुसरिष्यामि Prab. 20,6. — 2) partic. अनुसृत a) mit act. Bed. folgend, nachgehend: पतिमनुसृता पातम् R. Gorr. 2,62,9. तिलेषु वा यथा तैलं घृतं पयसि वा स्थितम् । तथा तमसि सत्त्वे च राज्ञो ऽप्यनुसृतं स्थितम् ॥ so v. a. in ähnlicher Weise sich verhaltend Mârk. P. 46,6. gelangt in: कुक्षिम् Suçr. 2,185,8. hervorgegangen aus

(abl.) Bhāg. P. 3,5,33. — *b*) mit pass. Bed. *gefolgt —, verfolgt —, begleitet von* (instr.) MBh. 13,2086. मृगीं शार्दूलानुसृताम् R. 5,18,13. अलमेभिरतिक्षीवन्मृतैरनुसृतैः so v. a. *höre auf sie zu verfolgen* VP. 4,3,19. गन्धेन Uttarar. 70,8 (90,9). Bhāg. P. 11,2,36. *durchlaufen, durchschritten:* बहवो देशाः R. Gorr. 1,63,16. मातङ्गयूथानुसृतं गिरिम् R. Schl. 2,50,10. *verfolgt* (ein Weg): अननुसृतपूर्वतयन्वमरणाः Verz. d. Oxf. H. 170,*b*,5 v. u. चित्तपदवी Z. d. d. m. G. 27,7. *behaftet mit* (abl.): मोहात् MBh. 5,4290. — Vgl. अनुसर fg., अनुसार fgg. und अनुसृति. — caus. 1) *folgen heissen, nach sich ziehen:* वायुरनुसारयतीव माम् R. 3, 78,8. — 2) *verfolgen:* (दस्यवः) अनुसार्यमाणा बलिभी रात्रिभिः MBh. 1, 4309. 5,2977. *einer Sache nachgehen:* विद्या कर्म च u. s. w. सर्वार्थमनुसार्यते 12,13457.

— अत्यनु caus. *zu sehr verfolgen:* भक्तान् MBh. 12,3675.

— अभ्यनु *in Erfahrung bringen:* योगेन °सृत्य (°सृज्य die neuere Ausg.) Harīv. 1440.

— व्यनु *durchlaufen, durchstreifen:* वनम् MBh. 11,130. *durchdringen* Suçr. 2,361,15.

— अप 1) *herabgleiten:* अनसः RV. 4,30,10. पानेन पश्चादपसृता *zurückrollend* Jāān. 2,299. — 2) *sich entfernen, — wegbegeben, zurücktreten* Maitrāyaṇ. 6,14. MBh. 7,1164 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Mṛicch. 45,13. Çiç. Cu. 53,10. Spr. (II) 409. 810. 5179. Kathās. 7,62. 49,76. 124,141. Rāja-Tar. 4,531. Daçak. 83,11. 88,2. Bhāg. P. 1,11,9. 6,11,11. Pañcat. 71,5. 220,14. Hit. 18,18. 23,9. चोदिष्यः MBh. 7,348. ततः स्थानात् R. 3,35,86. Spr. (II) 410. तत्समीपात् Kathās. 10,26. 26, 38. Hit. 58,18. अपसरति न चतुरो मृगाली Z. d. d. m. G. 27,32. °दुःखमपसरति Pañcat. 80,22. partic. अपसृत Harīv. 13807 (तृणात्). Kām. Nītis. 13,69. 82. Kathās. 20,121. 37,212. — 3) *von einer früheren Aussage abgehen, Etwas aussagen was mit einer früheren Aussage nicht übereinstimmt* Kull. zu M. 8,54 (als Erkl. von अप-धाव्). — 4) सोऽपसृत्य MBh. 12,4475. Harīv. 3632 fehlerhaft für सोप° d. i. स उप°. — Vgl. अपसर fg. und अपसार. — caus. *Jmd oder Etwas fortschaffen, entfernen* M. 7,149. MBh. 7,1788. Mṛicch. 155,22. Kathās. 42,96. fg. 115, 69. fg. Kāvyād. 119,8. पांस्वादिकम् Raghuv. (nach Stenzler). Kull. zu M. 9,282. Pañcat. 13,28 (ed. orn. 13,6). Kusum. 34,2. 3. तनोः Spr. (II) 4320. Kathās. 56,342. Hit. 111,4. Kull. zu M. 3,242. Vgl. अपसार्य (in den Nachträgen).

— व्यप *auseinandergehen, sich von einander entfernen* MBh. 8,168. *sich entfernen, weichen:* व्यपसरति च धातुं चिताल्पतामिव दुर्जनः Spr. (II) 6174. — caus. s. व्यपसारण.

— अपि *darauf fliessen:* यदेषधीरप्यसरत् TBr. 1,4,8,3. Çat. Br. 14,9,4,5.

— अभि *herbeilaufen, — fliessen zu* (acc.) RV. 1,52,6. 9,82,2. *hinzutreten, sich Jmd* (acc.) *nähern, losgehen auf* (auch in feindlicher Absicht) MBh. 1,1175. 3002. 2,2225. 3,2388. 15676. 16863. 6,2535 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 2673. 14,2168. R. 2,87,7 (95,8 Gorr.). 7,37,5, 4. Gīt. 9,2. 11,7. Bhāg. P. 1,9,36. 9,10,21. 10,3,22. 23,19. *sich irgendwohin begeben:* लङ्कां पुद्धाव R. 6,16,24. कर्णिकाकमलम् eine Biene Spr. (II) 4891. केलासकाममुमगामाशाम् Kathās. 19,107. तत्र Bhāg. P. 4, 3,9. insbes. *zum Geliebten gehen, in seine Wohnung sich begeben* Śiç. D. 115. fg. Spr. (II) 1316 (zugleich *in feindlicher Absicht auf Jmd losgehen*). Daçak. 73 9. 10. तदागारमभिसरामि 72,9. 10. — partic. °सृत 1) mit act. Bed. *gekommen, gegangen zu Jmd* (acc.): यस्मानभिसृतैः कामात् MBh. 7,4449. Gīt. 7,11. साक्षताभिसृते द्रोणे *losgegangen auf* 7,3608. 9, 787. *gerichtet nach:* यतः शिखिशिखाभिसृता Vaṛāh. Bṛ. S. 11,62. — 2) mit pass. Bed. *besucht:* यो ऽकृम् — क्षेत्रादभिसृतस्त्वया Kathās. 35, 140. — Vgl. अभिसर fg., अभिसर्तर्, अभिसार fgg. — caus. 1) *zuführen:* सोमदत्तं मदशं दैवेनैवाभिसारिता — सा ते सुता Kathās. 30,189. — 2) *angreifen lassen, zum Angriff führen* MBh. 3,665 nach der Lesart der ed. Bomb. — 3) med. *zu sich bestellen* (eine Geliebte) Śiç. D. 115. — 4) *besuchen, heimsuchen:* मकरन्दौघिर्बकुलैः — अभिसार्यमाणमनिशं दृश्यते मकरालयम् MBh. 1,1221. दृष्टा भवन्तमभिसारयितुमागता Mṛicch. 121,14.

— अत्यभि *Jmd* (acc.) *zu nahe kommen;* partic. mit act. Bed.: संध्यां वसिष्ठमासीनं तमत्यभिसृताः पुरा MBh. 1,3854. = अतिक्रान्तवत्तः Nīlak. *transgredi* Wern.

— अव s. अवसर. — caus. *wegbewegen:* द्वारम् Kauç. 66.

— अभ्यव *sich entfernen* von (abl.) *nach* (acc.): अभ्यवसृत्यैव (so ed. Bomb.) संग्रामाद्दक्षिणां दिशम् MBh. 7,8179.

— समव s. समवसरण.

— आ *herbeilaufen:* आसमाणासः (अश्वाः) RV. 6,37,2. AV. 20,136,5. रथेषु पुनरासृतेषु Çat. Br. 5,1,5,10. Liṭ. 5,12,16. *herbeikommen* Bhāg. P. 4,15,9. Vgl. आसार. — caus. *an Etwas* (acc.) *gehen:* कर्म चासार्यते तत्र विधिदृष्टेन कर्मणा Harīv. 8016. आसारित ein musikalischer Kunstausdruck Harīv. 8431. 8690. = मूर्छित Nīlak. zu 8690. भरतो मुनिश्चतुर्विधमासारितं नृत्यविधानुपदिदेशेति प्रथमं नर्तकीप्रवेशः ततश्चासारिताधाभिनयं नाट्यं ततस्तालानुगत्याङ्गाहरणं ततो देवताधिष्ठद्रूपेण नृत्यम् Comm. zu 8431.

— अत्या (*zuerst*) *herbeilaufen* Kauç. 69. — Vgl. अत्यासारिन् in den Nachträgen.

— अपा *umgehen, vorbeigehen bei* (abl.): मुत्स्कस्थानादपासरन् Jāān. 2, 263. = अपसरति यः Mit., also wohl nur metrische Verlängerung von अप.

— प्रत्या s. प्रत्यासार.

— व्या *durchlaufen:* दिवम् RV. 9,3,8.

— उद् *sich davonmachen:* उदाशवो रथा इव सरिष्यव AV. 3,9,8. मध्येन *glücklich hindurchgehen durch* (acc.): समिद्धं पावकम् MBh. 4,1545. उत्सृत्य v. l. für उत्प्लुत्य *in die Höhe springend* Hit. 27,13. उत्सृत *hoch* Harīv. 3926 (उच्छ्रित besser die neuere Ausg.). Vgl. उत्सर, उत्सर्पा. — caus. *wegtreiben, auseinander treiben, verscheuchen:* गृध्रान् MBh. 11, 322. मृगगणान् Harīv. 14664. R. 4,46,9. 6,99,23. fg. 26. Kathās. 33,57. 47,2. 124,88. तत्सैन्यमुत्सारितवांस्तृणाग्राणीव मारुतः Harīv. 12766. उत्सारयामास गगनान्मेघाणीव मारुतः 13623. रामास्त्रोत्सारितो ऽर्णवः Raghu. 4,53. उत्सारयन्तः प्रभया तमस्ते (so ed. Bomb.) चन्द्ररश्मयः MBh. 7,8412. अन्धकारम् Harīv. 9368. R. 6,19,27. सङ् घनतिमिरौघैर्घोरम् Śiç. 308,17. शैलान् *fortschaffen* Harīv. 359. पांसून् Nīl. zu Gorr. (nach Stenzler). वायुम् (im Körper) Bhāg. P. 4,23,14. उत्सारिता ज्ञाभवन्मार्गास्त-

त्तणं प्रुच: *verscheucht* Kathās. 18,121. 112,103. *abwerfen:* नूपुराणि Mṛicch. 15,5. *fortwerfen* Kathās. 72,87. *bei Seite —, fahren lassen, aufgeben:* मात्सर्यम् Spr. (II) 4811. दूरोत्सारितमत्सरेण मनसा Sarvadarçanas. 1,11. *beseitigen* so v. a. *für nicht vorhanden —, für abgethan erklären* Nilak. 191. Comm. zu TS. Prāt. 14,18. (परमेश्वरस्य) चार्वाकेण दूरोत्सारितत्वात् Sarvadarçanas. 1,14. fg. (in Gute) *Jmd entlassen* Rāǵa-Tar. 2,165. *hinaustreten lassen* so v. a. *hinführen zu:* एकान्तम् MBh. 3,7420. *herausfordern* (zum Kampf) 3,14872. *ausstreuen:* वधूसारित-केमलाक्षा: Kathās. 34,257. — Vgl. उत्सारक fgg. (auch in den Nachträgen).

— घनूद्, absol. सनूत्सारम् *nach einander den Platz räumend* Ait. Br. 3,45.

— प्रोद् caus. 1) *wegtreiben, auseinander treiben, verscheuchen* MBh. 3,10630. 7,2446. 5677. 8,942. Kām. Nītis. 7,39. तम: Harīv. 2588. शिलासंघातम् (d. i. शिलावर्षम्) 9372 (med.). Mṛicch. 84,11. — 2) *anbieten:* प्रोत्सारितार्घासन Spr. (II) 2914.

— समुद् caus. *fortschicken, entlassen* MBh. 6,722. 5824. *verscheuchen:* तम: R. 6,19,26. Pārāç. 116,7. Z. d. d. m. G. 27,5.

— उप *angehen* (um Hilfe, Rath u. s. w.); *herantreten, sich nähern* (mit acc. der Person oder des Ortes): वरुणम् Ait. Br. 7,14 (= उपधाव्). TBr. 2,1,9,3. Taitt. Up. 3,1. fgg. MBh. 2,2595. 3,16810. 12, 4473. Harīv. 3652 (an den zwei letzten Stellen lesen wir सोपसृत्य d. i. स उप°). R. Gorr. 1,72,6. 2,65,18. Raghu. 19,16. Çiç. 12,14. 37,18. Çiç. Ça. 22,8. 58,13. Viṣṇ. 11,11. 46,20. 3 (so v. a. *besuchen*). Mālav. 36,20. Prab. 22,1. Dhūrtas. 75,15. 78,15. 83,16 (उपसृत्य zu lesen). Çic. 9,62. Kathās. 10,27. 49,155. Daçak. 80,1 v. u. 86,5. Bhāg. P. 3, 5,1. 4,12,22. 5,26,33. 6,15,28. 12,6,72. Hit. 15,7. 17,17. 18,16. 58, 19. Vedāntas. (Allah.) No. 19. *sich einem Manne nähern* (um der Liebe zu pflegen) MBh. 3,8887. *sich machen an:* पवमानान् Çāṅkh. Br. 6,8,9. घात्मानम् Kaṭhas. Up. 1,3,12. — partic. उपसृत 1) mit act. Bed. *genaht, gekommen* (insbes. um Hilfe zu finden): पूर्वोपसृत *zuerst gekommen* TBr. 1,4,6,1. Bhāg. P. 5,8,22 (aufzulösen in उपसृतो मृगोतनयो यं स:, nicht in येन स:, wie der Comm. will). तत्पादमूलम् 9,21. 10,16. 26,32. 6,9,42. 7,8,41. 8,12,47. 24,46. शरणोपसृत 1,14,41. उपसृतवत् dass.: इव R. 4,8,24. — 2) mit pass. Bed. *angegangen:* घग्नि: स्वेन भागधेयेनोपसृत: TS. 2,1,4,6. so v. a. *befragt* Çāṅkh. Br. 6,12. घविज्ञोपसृत so v. a. *behaftet mit* Bhāg. P. 4,29,34. — Vgl. उपसर fg., उपसर्तव्य (*womit man sich befassen soll* Nir. 3,2), उपसर्या fg.

— घभ्युप *herantreten, sich nähern* R. Gorr. 2,65,32.

— प्रत्युप *zurückkehren:* पुरीम् Bhāg. P. 4,13,49.

— समुप *herantreten, sich nähern* R. 3,36,25.

— नि s. निसर und निसृत.

— निस् *herausgehen, herauskommen, hervorkommen, hervortreten, zum Vorschein kommen:* प्रमाद्दरणम् M. 6,4. पुरोत्तमात् MBh. 4,811. खड्ग: कोशात् 5,1910. Spr. (II) 2310. नभस: सरस्वती *eine Stimme* Kathās. 23,59. Bhāg. P. 3,13,29. 18,7. पतो पतो नि:सरति मन: 7,15,33. Sarvadarçanas. 150,20. Pañcat. 195,3. 260,16. ed. orn. 34,7. Hit. 20,14. 43,13. Z. d. d. m. G. 14,573,21. बहि: Hit. 14,21. 25,2. 38,3. 105,13. med. MBh. 1,698. 5,1882. 12,8672 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Spr. (II) 7599. Sarvadarçanas. 150,21. fg. partic. नि:सृत Kaṭhop. 6,2. MBh. 1,7702. fg. 2,2180. 3,2837. 7,446. 13,2320. 14,788. Harīv. 3934. 4096. 6445. R. Gorr. 1,31,19 (fälschlich नि:स्रित 30,17 Schl.). 2,62,3. 3,29,29. 50,7. 4,8,51. Ṛit. 1,21. Varāh. Bṛh. S. 46,27. Çāṅkh. Çr. 2, 9,7 (योनि so v. a. *prolapsus*). Spr. (II) 6220. Rāǵa-Tar. 5,283. 6,65. Mārk. P. 14,90. Bhāg. P. 3,24,5. Daçak. 71,9. Pañcat. 229,21. बाणै: खरकार्मुकनि:सृतै: R. 3,34,28. 33,15. 6,79,51. शापं ब्राह्मणनि:सृतम् 7,54,9. क्षेमकुम्भ्यननि:सृतानां पयसाम् Raghu. 2,36. Çiç. 9,25. Bhāg. P. 3,28,22. 4,29,54. नेत्रे *heraustretend* Harīv. 4730. बाकु° (बकु° die ältere Ausgabe) s. Bez. *eines best. Schwertkampfes, bei dem Einem das Schwert aus der Hand gewunden wird,* Harīv. 13977. Vgl. नि:सरण und 1. नि:सार. — caus. 1) *hinaustreiben, hinausjagen, hinauslassen:* ततो ऽसि वज्राद्विप्रर्षे द्रुतं नि:सारितो मया MBh. 3,12995. Jāṭ. 3,83. बिलाद्वानरान् R. 4,52,25. Bhāg. P. 7,5,34. 8,6,9. 10,37,34. 44,32. Pañcat. 26, 24. 29,17. 63,25. 129,13. 227,9. Hit. 65,18. fg. 83,6. 7. Sāh. zu ṚV. 1, 11,3. Kull. zu M. 10,96. बहि: Çāṅk. zu Kaṭhop. Up. S. 42. *entfernen:* घमेध्यम् Kāṭy. 23,6. — 2) *beschliessen, beendigen:* उपकरणम् Bhāg. P. 5,19,14. — Vgl. नि:सारण fg.

— घभिनिस् *hervorströmen* Suçr. 1,266,19. partic. °सृत *hinaustretend* zu (acc.): तासां (नाडीनाम्) मूर्धानमभिनि:सृतैका Kaṭhop. Up. 2,6,6 = Kaṭhop. 6,16. *heraustretend —, hervorkommend aus* (abl.): हृदया-न्नाड्य: Jāṭ. 3,108. यत: शब्दो ऽभिनि:सृत: *von wo der Laut hergekommen war* R. Gorr. 1,29,7.

— समभिनिस्, partic. °सृत *herausgetreten, hervorgekommen:* रुधिरं ततात् Harīv. 12241.

— विनिस् *heraustreten, herauskommen, hervorkommen —, hervorgehen aus* (abl.) MBh. 12,10158 (med.). Harīv. 9853. R. Gorr. 1,47,22. Rāǵa-Tar. 4,129. partic. °सृत MBh. 3,2883. 16871. 6,5575. 13,6321. Harīv. 2774 (so v. a. *davongekommen*). 4714. R. 1,28,7 (fälschlich °स्रित). 39,17. 2,44,9. 3,29,29. 30,41. 77,19. 4,8,49. 7,7,50. Suçr. 1,266, 19 (घ°). Mṛicch. 158,15. Bhag. Nitiç. 18,4. Varāh. Bṛh. S. 54,4. Bhāg. P. 2,8,26. 3,13,21. 4,11,2. 5,16,23. वाग्वि° Spr. (II) 6027. क्रोध° (घग्नि) MBh. 3,187. सत्क्रीर° 1729. R. 3,79,29. Viṣṇ. 43. Varāh. Bṛh. S. 1,5. 33,13. Mārk. P. 56,21 (fälschlich °विनिसृता: gedr.). Bhāg. P. 4,21,20.

— घनुविनिस् *der Reihe nach herauskommen:* पुराणमेतद्वेदाश्च मुखेभ्यो (ब्रह्मण:) ऽनुविनि:सृता: Mārk. P. 45,20.

— परा *davoneilen:* परा दधिक्रा घसरत्सहस्रै: ṚV. 4,38,9.

— उपपरा *dazu hinkriechen:* Ameisen Çat. Br. 14,1,2,9.

— परि *herumfliessen, umfliessen; umlaufen* ṚV. 9,41,6. परि विश्वा-सरद्वाजेना पूयमान: 87,6. पदेन सरस्वती समत्सु परिससार Ait. Br. 2,20. AV. 2,14,6. वर्त्मानि 6,67,1. परिससरुष: *flossen hier und da, — allerwärts* MBh. 3,10933. परिसरति (परिपतति ed. Bomb.) शिखी घात्तिमहा-रियत्नम् *umschreitet* Mālav. 33. प्रदक्षिणं तं परिसृत्य Bhāg. P. 11,29,45. ohne acc. *umherlaufen, umhergehen* 10,15,30. partic. °सृत *durchstreift habend:* सर्वान्देशान् R. 3,75,48. *nach allen Richtungen gehend, — verbreitet:* प्रभा 6,9,26. — Vgl. परिसर fg., परिसर्पा, परिसारक fg., परीसार.

— प्र 1) *hervorgehen, hervorkommen, ausfahren; ausströmen, strömen; sich ausbreiten:* सीर्षः RV. 2,17,3. 11,3. 4,22,6. भानवः 5,1,1. सिन्धवो रथः प्र मर्मृधन्वो यथा 53,7. सरस्वती 7,95,1. 10,35,5. 1,149,3. 158, 1. — व्याला न प्रसरन्ति R. 2,59,10. लोकितोदा मकानद्यः प्रसमुस्तत्र वासकृत् MBh. 8, 2849. गौ गता गगनादेवी सप्तधा प्रससार क Harıv. 11646. शोणितम् Vop. d. Oxf. H. 238,b,38. प्रसरतु परितो वारिधारा गृहेषु Prab. 26,6. कोशेभ्यः शस्त्राणि MBh. 4,1289. Pfeile Gir. 1,28. वाताहताः प्रस्वेदकणिकाः *sprühen* Prab. 23,3. प्रसरतां रसाम् *aufsteigend* Çiç. 8, v. l. नीलाम्भोजम् *hervorkommen* (sc. aus dem Wasser) Spr. (II) 2247. शत्रुः, रोगः *hervorbrechen, ausbrechen* 4995, v. l. मदः *Brunstsaft* 5203. कान्तिः Kathâs. 51,7. दीप्तिः Schol. zu Naish. 22,52. गन्धः MBh. 4, 1773. सौरभम् Kathâs. 62,34. प्रमोदः 23,66. विषमः 47,110. प्रीतिः 69,93. देवदारुः Mâlatîm. 24,17. तव प्रसरदनुरागं बलिरिव Gir. 8,10. प्रसरति कथा बह्वी *strömt* Spr. (II) 2298. यस्मात्सर्वः प्रसरतितरां ज्ञातुकर्तृस्वभावः Verz. d. Oxf. H. 134,a, No. 248. vom *Austreten* der humores Suçr. 1,81,10. — 2) *sich in Bewegung setzen, sich aufmachen* MBh. 5,2933. Makâm. 11,3. Spr. (II) 3359. Râga-Tar. 4,221. Bhâg. P. 3,4,30. प्रससे (pass. impers.) बलैः Kathâs. 18,2. दिशः प्रसमुस्ते वीराः Harıv. 8120. कृष्णः प्रससार भीष्मम् *losgehen auf* MBh. 6,2597. 12,6592. येन येन प्रसरतो वाय्वग्नी सख्यौ वने 7,106. प्रसरति दावाग्निः Bhr. 1,28. कार्यं च प्रसरत्येतच्छस्त्रं कृपणयोर्द्वयोः Kathâs. 21,78. प्रसरति मनः कार्यारम्भे Spr. (II) 4282. *vorfliessen, vorstreichen* 241. *in Gang kommen, beginnen:* प्रसरति मधौ (*Frühling*) 3964. प्रससार चोत्सवः Kathâs. 16,85. pass. dass.: प्रासारि (यज्ञः) Çat. Br. 1,1,4,8. — 3) *zur Geltung kommen, sich geltend machen, Statt haben* Sarvadarçanas. 117,18. 149,15. Schol. zu Gaim. 1, 2. zu TS. Prât. 1,39. 4,3. 6,11. 7,16. 11,18. zu TBr. 3,303,4. मूर्छति = प्रसरति Mallin. zu Naish. 2,34. — 4) *ausstrecken, vorstrecken:* die Arme RV. 2,38,2. 7,62,5. — 5) *versprechen, zusagen:* प्रसृत्यासंप्रदानेन (vielleicht संमृत्या° zu lesen) Journ. of the Am. Or. S. 7,44. — 6) partic. °सृत *a) hervorgeströmt, hervorgebrochen, ausgetreten:* °स्रोत Harıv. 3624 (nach der Lesart der neueren Ausgabe.) लोहितापगा 13656. तस्माद्रसा Kathâs. 25,104. die humores Suçr. 1,258,6. 2,1,9. *Hervorgebrochen, von Tönen so v. a. erklingend:* प्रसृतातोद्यनिर्ह्रादाः Kathâs. 23,88. प्रसृतं (impers.) दुन्दुभिस्वनैः 78. वेलानिलाय प्रसृता भुजंगाः (aus ihren Verstecken) *hervorgekommen* Raghu. 13,12. यत्तान इव भूयस्त्वात्प्रसृते रुद्यादृद्धिः Kathâs. 40,58. प्रज्ञा च तस्मात्प्रसृता पुराणी *hervorgegangen* Çvetâçv. Up. 4,18. Bhâg. 15,4. यत्तत्प्रसृतमाकृत MBh. 6,3573. मायां शाल्वप्रसृताम् Bhâg. P. 10,77,28. — *b) ausgebreitet, sich weithin erstreckend* AK. 3,2,38. H. an. 3,276. fg. Mat. l. 123. यद्यद्योर्ध्वं च प्रसृतास्तस्य शाखाः Bhag. 15,2. यद्यद्योर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्म Mundp. Up. 2,2,11. कुत्याम्भोभिः प्रसृतचपलैः ad Çiç. 14. तस्यैष पाकः प्रसृतो यो ऽयं सव्यपि *der sich auch auf dich erstreckt hat* Kathâs. 43,40. यत्प्रकीर्णप्रसृतत्वम् so v. a. *Weitschweifigkeit* H. 68. *ausgebreitet* so v. a. *mächtig, intensiv:* तेजस् Spr. (II) 3274. मक्षम् Kathâs. 19,70. प्रसृततरं सव्यम् Daçak. 84,3. *verbreitet* so v. a. *gang und gäbe*, von *gewöhnlicher Art* Kîrtiv. 36,3 (auch सु° in Ind. St. 16,89. °छन्दस् Snâpv. Bh. 3,7. वाच् Çat. Br. 3, 2,8,27. Comm. zu Kîrtiv. Ça. 7,5,6. — *c) aufgebrochen, ausgegangen:* सदन्वेषणप्रसृते च मित्रगणे Daçak. 39,3. *davongelaufen, geflohen:* विस्रस्तप्रसृताः कृष्णसाराः Kathâs. 21,13. — *d) eingebrochen:* तमसि प्रसृते Kathâs. 18,104. — *e) ausgestreckt:* तासां दर्शितो बाकुर्न्यङ्क्व घासीत्। मध्ये प्रसृतः TBr. 1,6,4,2. स्थूलोत्तुङ्गस्तनेषु प्रसृतकर° Spr. (II) 6642, v. l. बाहू विधूतप्रसृतौ Kathâs. 108,121. — *f) hingegeben, huldigend, obliegend* Hall. 2,198. 209 (an beiden Stellen प्रसित v. l.). योगप्रसृतेन चेतसा R. Gorr. 1,15,24. यद्यधर्मप्रसृतो जनः 5,76,21. — *g) Hervorgekommenes* so v. a. *Gewächsenes, Vegetabilien:* सैतप्यं ब्राह्मणान् प्रसृतैर्यागैर्मांसैरन्नेन सर्पिषा MBh. 13,3257. Paṇḍar. 3,14,17. ब्राह्मणः प्रसृताशभुक् MBh. 5,2887. 13,2142 (यतिथिः wie in der folgenden Stelle mit der ed. Bomb. zu lesen). 3221. प्रसृताशप्रदायिन् 4740; vgl. यद्यभोज्याः प्रसूतीनाम् 2150. — *h)* fehlerhaft für प्रसित (s. auch u. सि mit प्र) *anspruchlos, bescheiden:* Personen MBh. 3,2445 (यति°). R. 2,106,14. R. Gorr. 2,4,5. 3,68,23. 4,36,16. 5,20,12. (पादपाः) प्रसृता इव 2,104,3. चन्दनरसः कपोलप्रणयी तव Harıv. 7077. वचस्, वाक्य R. Gorr. 1,69,7. 74,19. 2,78,23. 3,18,20. Kâm. Nîtis. 12,10. Mâlav. P. 24,14. *wohlgesetzt, fromm* von Pferden und Elephanten R. Gorr. 2,109,35. — *i)* = वेगिन् H. an. Med. — Vgl. प्रसर fgg., प्रसार, प्रसारिन्, प्रसृत, प्रसृति, प्रसृमर, पक्षविन्दुप्रसृत (*wobei fünf Tropfen* Schweiss *herausgetreten*). — caus. 1) *verwärts treiben* Gorr. 3,6,7. — 2) *ausbreiten, ausstrecken* (Gegens. सम्-यच्) VS. 27,45. TBr. 3,10,4,3. यङ्क्षानि Çat. Br. 8,1,4,7. 10. Çâṅkh. Ça. 1,10,5. Gaṇ. 4,8. MBh. 12,10490 (कूर्मः). यङ्क्षम् Kathâs. 38,68. देहम् Bhatt. 10,44. सुप्रसारितगात्र Sin. D. 507. बाहू, बाहुम् MBh. 3, 845. R. 4,4,12. 5,5,22. Makâm. 95,1. Spr. (II) 991. Kathâs. 67,62. H. 600. भुजम् Kathâs. 18,230. 35,153. Râga-Tar. 4,21. करम् MBh. 7,1182. 14246. Kumâras. 5,43. Spr. (II) 2263. 6336. Çiç. 175. Kathâs. 37,16. 52,121. हस्तम्, हस्तान् Harıv. 7143. R. 7,31,44. Çiç. 102,16. 108,5, v. l. Kathâs. 32,169. Hit. 10,18. प्रसारिताङ्गुली पाणी H. 396. प्रसारिताग्रा यङ्गुलयः Verz. d. Oxf. H. 202, a, 27. चरणौ, पादौ Gorr. 1, 2, 30. MBh. 3, 845. Harıv. 3407. Mâlav. P. 34,10. जानु Râga-Tar. 3, 245. शिरोधराम्, ग्रीवाम् R. 3,73,22. Z. d. d. m. G. 27,26. Hit. 114,13. संधिम् Suçr. 2,29,9. करम् *Rüssel* Kathâs. 38,2 (zu lesen कर्दा°). पत्नी Hit. 85,7. रसनाम् *Zunge* Kathâs. 69,25. केशबाहूङ्घ्रीन् Bhâg. P. 10, 78,9. कृष्णसर्पः प्रसारितभोगः Paṇḍar. 53,5. 6. वल्मीकोपरि प्रसारितं भुजंगमम् 174,11. करान् *Strahlen* (und *Hände*) Spr. (II) 1540. 4286. Kathâs. 29,126. आईवस्त्रम् Verz. d. Oxf. H. 230,b,8. प्रच्छादनपटम् Paṇḍar. 62,11. व्याघ्रचर्म 157,25. जालम् 105,1. पाशम् Spr. (II) 2502. लेखम् *einen Brief ausbreiten* Kathâs. 102,124. कण्ठकम् *Halsschmuck* 54,112. सूत्रम् (des Baumeisters) Varâh. Bṛh. S. 53,108. वाहिनीः सुप्रसारिताः (= सुप्रसारितापणाः Comm.) R. 2,36,3. Waaren *ausbreiten* so v. a. *zum Verkauf ausstellen* P. 6,1,82, Schol. Vop. 26,16. AK. 2,9,32. M. 5,129. वणिजो न प्रसारयन् R. 2,48,13 (नाप्रसारयन्! 45,6 Gorr.). — 3) *ausbreiten* so v. a. *weit aufreissen, — öffnen:* चतुर्थी Makâm. 35,17. वदनाम्भोजम् Bhâg. P. 10,1,33. चित्रयोत्रैः प्रसारितैः Verz. d. Oxf. H. 219, a, No. 520. — 4) *verbreiten:* जगति प्रसारितं शास्त्रम् Varâh. Bṛh. S. 2,5. मुनिप्रसारितमकृत्र Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 112. — Vgl. प्रसारण, प्रसार्य. — intens. *sich ausbreiten, sich erstrecken:* प्र मर्मृजे RV. 4,18,7. प्र मर्मृजते 3,7,1. °मर्मृजाण 5,12,6.

— यतिप्र, partic. °सृत *hervorgebrochen in starkem Maasse:* घास,

कास Suça. 2,235,14. — intens. *überholen:* ज्ञातेर्न ज्ञातमति म प्र सर्सृते RV. 2,23,1.

— अनुप्र caus. med. *sich verbreiten über:* प्रासारयत पुरुध प्रजा धनं RV. 10,56,2. — intens. *sich entlang bewegen* (acc.): प्रसर्स्राणो धनुं वर्क्रिर्वृषा शिप्रीः RV. 5,44,3.

— अभिप्र, partic. °सृत *hingegeben, huldigend, obliegend* (vgl. प्रसृत): कार्याभि° R. Gorr. 2,116,23. — caus. *sich hinstrecken zu:* नेहेवानभिप्रसार्य शया इति Çat. Br. 3,1,2,7. med. *ausstrecken gegen:* अग्निमपो ब्राह्मणो गौ देवता द्वारं प्रति पादं च शक्तिविषये नाभिप्रसारयीत Âpast. 1, 30, 22.

— उपप्र intens. *sich hinbewegen zu:* कृता इवोप कि प्रसर्से सप्सु RV. 2,35,5.

— विप्र *sich weiter ausbreiten:* उद्गेव वि प्रसर्तवे RV. 8,56,12. गङ्गा भूयो विप्रससार MBu. 14, 804. वंशः Rasu. 16, 3. partic. °सृत Suça. 2, 296,6. — caus. s. विप्रसारण.

— संप्र caus. *ausstrecken:* चतुरः पदः VS. 23,20. TS. 7,4,19,1 (med.). *aussinanderziehen:* यत्सामिकानि निधनानि संप्रसार्यन्ति Ânupadas. 10, 12. — Vgl. संप्रसारण.

— प्रति 1) *losstürzen, losgehen auf:* दैत्यः प्रत्यसरद्देवं मत्तो मत्तमिव द्विपम् Harıv. 13299. — 2) *heimkehren, nach Hause gehen:* प्रतिसरन्तु शिवाः सर्व्याः so v. a. *ich sage ihnen Lebewohl* Bhâg. P. 5,2,16. *wieder auf Etwas zurückkommen:* पुनः पुनः प्रतीसारमुपशिक्षतेव Çânku. Br. 23, 5. — 3) *in der Runde fahren* d. h. *von einem Weg und Ort zum andern* (nicht bloss auf der Hauptstrasse): यद्या वर्क्रीयसा प्रतिसारं वर्क्रन्ति TS. 7,2,9,6; vgl. प्रतिसारिन्. — 4) partic. °सृत *begegnet, zurückgedrängt:* दोषे द्विधा प्रतिसृते Suça. 2,555,11. — Vgl. प्रतिसर fg. und प्रतिसारिन्. — caus. 1) *rückläufig machen:* स्रोतस्सु रुद्धो वायुर्यः स चापि प्रतिसार्यते Kâraka 1,7. — 2) *wieder an seinen Platz bringen:* कनकवलयं भ्रस्तं भ्रस्तं मया प्रतिसार्यते Çâk. 61. Kumâras. 7,25. Rasu. 7,20. — 3) *heimgehen lassen* so v. a. *verscheuchen:* शशाङ्कमरीचिभिस्तमसि दूरतां प्रतिसारिते Vikr. 47. — 4) *überfahren* (mit einem Stoff), *rings betupfen:* लोरेण Suça. 1,60,5. 94,6. 2,27,15. लोरेण 107,20. 122,9. 126,8. 332, 6. 333,18. — 5) pass. so v. a. प्रतिसार्यते und zwar des Metrums wegen. यो रक्तं शकृतः पूर्वं पश्चाद्या प्रतिसार्यते *wenn Blut abgeht* Suça. 2,438,17. — Vgl. प्रतिसारण.

— विप्रति s. विप्रतिसार und विप्रतीसार.

— वि 1) *durchlaufen, durchdringen:* वि सिन्धवः समुरश्रिम् RV. 1, 73,6. — 2) *verlaufen:* घर्तर्पयो विसृत (lies. oder auch adj.) उब्जा ऊर्मीन् RV. 4,19,3. — 3) *sich ausbreiten* R. 5,95,13. Çiç. 9,19. med.: वि सानुना पृथिवी संस्र उर्वी RV. 7,36,1. उतो अस्मै तन्वं वि संस्रे *hat sich aufgethan* d. h. *sich hingegeben* 10,71,4. Nir. 1,19. — 4) *sich trennen von* (instr.): व्यापस्तृचयासारन् AV. 3,31,3. *in verschiedene Richtungen gehen, aussinander gehen* MBu. 8,4925. — 5) *hervorkommen* MBu. 12,8672 (med., निःसरते ed. Bomb.). घास्यतो ऽस्य विसरेच्च मनः Pâśâs. 3,8,14. Çiç. 9, 37. — 6) *losstürzen auf* (acc.): किरीटिनं त्वरमाणा विसस्रुः (besser त्वरमाणाभिसस्रुः ed. Bomb.) MBu. 6, 2535. — 7) partic. विसृत *a) ausgespannt, ausgestreckt* AK. 3,2,32. °गुण *Bogensehne* Kir. 10,53. कर AK. 2,6,2,37. ऊर्ध्वविसृतदोःपाणिनृमान 38. *ausgebreitet:* गङ्गा शिरसि देवस्य R. Gorr. 1,45,8. विसृतागुरुधूप 5,12,41. — *b) auseinander gegangen:* सत्र MBu. 9,2463. — *c) entsandt:* बाणावहिसृता (= अपरावर्तिन: Nîlak.) यात्ति स्वामिकार्यपरा नरा: MBu. 12,4345. — *d) entfallen:* गात्रेर्विसृतभूषणैः Harıv. 4766. — *e) hervorgegangen —, hervorgehend —, herauskommend aus:* फुल्लशतपत्रविसृतगन्ध Kâdamb. 143. मृगालिकामुखविसृतवार्ता Daçar. 93,18. संस्पृशती चन्द्रार्कौ तहिसृता वा (उल्का) Varâh. Bṛn. S. 33, 12. *hervorgetreten, hervorspringend:* घनिणी Harıv. 4310. — Vgl. विसर fg. विसर्मन्, विसार, विसारिन्, विसृत्वर, विसृमर. — caus. *aussenden:* निपुणां दृष्टिम् R. 1,42,16.

— अनुवि *sich verbreiten über* (acc.): Wasser TBr. 3,2,8,2.

— प्रवि, partic. °सृत 1) *hervorströmend:* रुधिर Kathâs. 26,144. — 2) *ausgebreitet* Vishn. 1,26,53. यशस् Journ. of the Am. Or. S. 6,530. — 3) *davongelaufen, entlaufen:* न शशाक नियन्तुं तद्यामः प्रविसृतं मनः MBu. 12,12192. — 4) *heftig, intensiv:* वेगादुरुं प्रविसृतं पवनं निरुन्ध्याम् Mâlâv. 10,20. वेपथु Pâśâs. 3,5,26.

— सम् 1) *zusammenfliessen:* समिन्दुर्गोभिरसरत् RV. 9,97,45. — 2) *umhergehen, wandeln* MBu. 12,1882. 10971. Spr. (II) 6633. Kathâs. 69, 4. स्वेन संसरते पथा Spr. (II) 5324. Bhâg. P. 3,9,10. 5,5,15. insbes. *aus einem Leben in's andere wandern und die damit verbundenen Leiden empfinden* Maitrâyp. 6,30. Jâân. 3,169. MBu. 12,1009 (med.). 14, 455. Sâmkhyak. 40. 62. Spr. (II) 6061. Bhâg. P. 3,32,14. 4,2,24. 3,22,25. 18, 70,39. 73,15. 11,9,20. जातीषु MBu. 14,1266. वक्रीर्योनीः 13,1871. 14, 1573 (med.). पापान्संसारान् M. 12,70. — 3) *sich verbreiten in* (acc.): संसरन्ति दिशः सर्वा यशसो ऽस्य श्वेतांशवः MBu. 4, 2276. — 4) *hervorkommen* Bhâg. P. 10,16,8. — 5) partic. °सृत in °मध्यम zur Erklärung von सिलिक° Nir. 4,13. — Vgl. संसरण. संसार, संसारित्, संसृति. — caus. 1) *zu wandern veranlassen* (aus einem Leben in's andere) M. 12,124. Bhâg. P. 10, 54, 45. — 2) *hineinbringen, hineinführen:* मूच्या सूत्रं यथा वस्त्रे संसार्यति वायकः Spr. (II) 7159. — 3) *aufschieben:* कृत्यानि Spr. (II) 6635. — 4) etwa *gebrauchen, anwenden* MBu. 12,11332. — Vgl. संसारण.

— अनुसम् caus. *Jmd* (acc.) *nachgehen lassen* so v. a. *Jmd vorangehen* MBu. 3,11532. = अनुगम् Nîlak. *dimittere* West.

— अभिसम् 1) *zusammenströmen:* अभिसंसारं दिदृक्षितारः Çat. Br. 11, 2,3,12. — 2) *losstürzen auf:* ते ऽन्योऽन्यमभिसंसृत्य Bhâg. P. 8,10,26. — 3) partic. °सृत *herbeigekommen* MBu. 8,4417. — Vgl. अभिसंसार.

— उपसम् *herantreten zu Jmd* (acc.) Bhâg. P. 3,21,47.

1. सर्॑ (von सृ) 1) adj. *a) flüssig:* सतस्य सामन्त्सरमारपत्सो VS. 22,2. — *b)* in der Medicin *laxativ* Suça. 1,151,8. 175,2. 181,10. fg. 2,45,19. Vâgbh. 1,6,16. f. या Râéâv. im ÇKDa. Hierher vielleicht सर = लवण *salzig* H. 1388. — *c)* am Ende eines comp. (s. ई) *gehend* P. 3,2,18. fg. Vop. 26,47. — 2) m. *a) Gang* Med. r. 93. — *b) Sehnur:* मौक्तिक° Uttarâr. 18,6 (24,14). मुक्तामणि° 13,9 (18,6); vgl. मणि° und प्रति°. — *c)* in der Prosodie *ein kurzer Vocal* Colebr. Misc. Ess. 2,151. — 3) f. या *a)* nom. act. Vop. 26,122. — *b) Buch:* सरा पतत्रिणी भूत्वा AV. 5, 5,9. TS. 4,2,6,2 (RV. und VS. सीरा). सरा und सरी *Wasserfall* Bharata im Dvidîpak. nach ÇKDa.; vgl. सरि. — *c) Panderia foetida Lin.* Râéâv. im ÇKDa. — 4) n. = सरस् *Teich* Uéôval. zu Unâdis. 4,188. in सरोदपानानाम् MBu. 14,1225 und सरोपास्ते Pâśâs. 131,15 ist eine

unregelmässige Contraction anzunehmen. — Vgl. सप°, सयतः°, सये°, सप्सर्, खण्ड°, ज्म्बु°, पुनः°, पुरः°, पूर्व°, प्राय°, बिन्दु°, मणि°, मत्सर्, वधूसरा, वेगसर्, सर्व°, स्व°. Was bedeutet aber सर् in प्रणमितसर्मर्त्य Mârk. P. 104, 39?

2. सर् m. 1) = 1. शर् 1) Suçr. 2,53,8. — 2) = 1. शर् 2) Taik. 2,8, 52. — 3) = 2. शर् Med. r. 95.

सरःकाक m. *Gans (Teichkräke)* Taik. 2,5,31.

सरःप्रिय m. *ein best. Wasservogel* Hariv. 12670. सुरप्रिय die neuere Ausg.

सरक (von सृ) 1) adj. etwa *hin und her gehend* P. 3,1,149. Vop. 26, 41. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Taik. 3,5,14. Siddh. K. 249,a,1. *a*) m. n. *Napf, Becher* (insbes. für gebrannte Getränke) AK. 2,10,43. H. 906. an. 3,106. Med. k. 167. Hâr. 170. Hallây. 2,172. Viçva bei Mallin. zu Çiç. 10,12. Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 15,114. R. 5,14, 18. Suçr. 2,35,16. — *b*) *gebranntes Getränk, Arack, Branntwein* Taik. 3,3,47. H. an. Med. k. 167. Viçva und Vaij. a. a. O. neutr. Kaṭuâs. 34,199. 202. — *c*) *der Genuss von Arack u. s. w.* H. an. Med. Viçva und Vaij. a. a. O. सरकं चक्रुः Çiç. 15,114. — *d*) *Karawane* (यच्छिब्बा-घगयङ्गि) Med. — *e*) n. *Perle, Juwel* (मणि) Vaij. a. a. O. kann auf einem Missverständniss von गल्वर्क beruhen. — *f*) n. *See, Teich* (सरोवर) Çabdan. im ÇKDa. — *g*) n. = गमन Uṇâdis. zu Uṇâdis. 5,35 (kann nicht richtig sein, da गमन nicht संज्ञा ist); st. dessen गगन Siddh. K. — *h*) n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,6045. 10518 (nach Nîlak. = सुराग्रकपात्र). — 3) f. सरिका = किङ्किपत्री Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. त्रि° und सारका.

सरक्त (2. स + रक्त) adj. *blutend* Suçr. 2,30,4.

सरक्तगीर् adj. *hellroth* Varâh. Lagaçr. 2,15 in Ind. St. 2,286. richtiger wohl स रक्त° zu trennen; vgl. रक्तश्याम.

सरघ् f. *Biene*: एत एव सरघो मधुकृतो यद्वित्रः Çat. Br. 3,4,2,14. — Vgl. सारघ.

सरघा f. 1) dass. AK. 2,5,26. 3,4,25,179. H. 1213. Hallây. 2,101. TBr. 2,10,10,1. Pañkav. Br. 21,4,4. Rasn. 4,63. — 2) *Pongamia glabra Vent.* Hâr. 101. — 3) N. pr. der Gattin Bindumant's und Mutter Madhu's Bhâg. P. 5,15,13. — Vgl. सारघ.

1. सरङ्ग (2. स + रङ्ग) 1) adj. *nasal gefärbt* Çikshâ in Ind. St. 4,363. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2,160 (VII, 27). — 3) neben नीरङ्ग Z. d. d. m. G. 14,869,16.

2. सरङ्ग m. = सारङ्ग (in der Bed. चतुष्पद् und पक्षिन्) Uṇâdiv. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa.

सरङ्गक *ein best. Metrum: 4 Mal fünfzehn Längen* Colebr. Misc. Ess. 2,161 (X, 6).

सरज 1) adj. (2. स + रज = रजस्) *staubig, schmutzig*: वासस् Bhâg. P. 3,23,24. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,33. — 3) n. = 2. शरज *Butter* Hâr. 60.

सरजस् (ohne Avagraha): मरुद्भिर्ऋतं न सरजस्तमघनैः ṚV. 10,115,3.

सरजस् (2. स + रजस्) adj. 1) *mit Blüthenstaub versehen*: पङ्कज P. 5, 4,77, Schol. — 2) f. *die Menses habend* Taik. 2,6,6. H. 536.

सरजस (von 2. स + रजस्) 1) adj. *stäubend, staubig* Pañkav. Br. 13, 7,11. Liṭ. 10,19,13. — 2) °सम् adv. P. 5,4,77. Vop. 6,64. *sammt dem Staube* so v. a. *bis auf die Neige, — den letzten Rest* P., Schol.

सरट् Uṇâdis. 1,133. 1) f. *Biene*: मधु प्रियं भरतो यत्सुराळ्यः ṚV. 1, 112,21. सरड्ढ वा यस्यास्य सक्थ्यावृक्तम् TS. 5,3,12,12. Çat. Br. 13,3,8,4 (*Eidechse* nach Sây.). Vgl. सरघ्, welches für सरट् als Thema sprechen würde. — 2) (wohl m.) *Wind und Wolke* Uṇâdiv.

सरट m. 1) *Eidechse, Chamäleon* AK. 2,5,12. H. 1299. Hallây. 2,79. M. 12,57. Varâh. Bṛh. S. 53,123. 86,41. — 2) *Wind* Uṇâdiv. zu Uṇâdis. 4,105.

सरटक m. N. pr. eines Bharaṭaka Verz. d. Oxf. H. 155,a,36.

सरटु m. = सरट 1) Uṇâdis. im ÇKDa.

1. सरण (von सृ) 1) adj. *laufend* P. 3,2,150. Gop. Br. 2,7. in Etymologien Nir. 9,3. 10. 11,13. — 2) m. *a*) *ein best. Baum* Colebr. Alg. 315. vielleicht fehlerhaft für सरल. — *b*) N. pr. eines Fürsten Tîrthân. 168 (vgl. शरण). — 3) f. या = प्रसारणी *Paederia foetida Lin.* AK. 2, 4,5,18. auch सरणी Bhân. zu AK. nach ÇKDa. शरणी Çabdar. im ÇKDa. dieses auch = जयन्ती Çabdaç. ebend. सरणा = सरला *eine Convolvulus-Art* Çabdam. im ÇKDa. — 4) n. *a*) *das Laufen, rasche Bewegung*: °ज्ञो-त्रिन् Âçv. Gṛhy. 3,8,15. Çâ. 12,8,4. Kâty. Çr. 12,6,25. आते: *Wettlauf* Kâṭh. Up. 1,3,5. MBh. 1,8368. 6,3219. 7,4444. Nir. 5,28. 6,12. 12,8. मेतो अम्बुसरणी स्वतः AK. 1,2,3,11. H. 1086. *das sich-von-der-Stelle-Bewegen*: षड्गिरेकानाम् Varâh. Bṛh. S. 46,39. — *b*) *Eisenrost* H. 1038. — Vgl. सु°.

2. सरण Pañkat. 173,17 fehlerhaft für शरण (so ed. Bomb.).

सरणदेव m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Alg. 2,49.

सरणि (von सृ) Uṇâdis. 2,102. f. 1) *Weg, Pfad* (auch in übertr. Bed.) AK. 2,1,16. H. 983. an. 3,229. Med. n. 83. Hallây. 2,105. सरला Bâlâ-Tar. 3,299. सज्जनाचरिता Daçak. 169,13. Ânandal. 18. Verz. d. Oxf. H. 170,5 v. u. Comm. zu Gaim. 1,17. संसार° Spr. (II) 127. सूत्र° Comm. zu TS. Prât. 1,18. auch सरणी Ânandal. 37. Verz. d. Oxf. H. 145,a,7. — 2) *Reihe* H. an. Med. — Vgl. रामपूजाशरणि (lies °सरणि).

सरणी s. u. सरण 3) und सरणि 1).

सरण्ड Uṇâdis. 1,128. m. *Vogel* Uṇâdiv. — Vgl. शरण्ड.

सरण्य (von सरण), °र्यति *eilen*: ऊतिभिः सरण्यन् ṚV. 3,1,19. 31, 18. धिया यदि धिषण्यन्तः सरण्यान् 4,21,6.

सरण्यु (von सरण्य) Uṇâdis. 3,81. 1) adj. *eilig, behend*: die Marut सरण्युभिः फलिगं वलं रवेण दरयः ṚV. 1,62,4. सरण्युभिरपो घर्णा मिमर्षि 3,32,8. 10,61,23. fg. — 2) m. *Wind, Wolke, Wasser* Çabdar. im ÇKDa. *Frühling, Feuer* Uṇâdiv. im ÇKDa. शरण्यु *Wind, Wolke* Viçva im ÇKDa. = गरण्यु Çabdam. ebend. मरिण्यु *Wind, Wolke* Med. j. 111. — 3) f. ऊ N. pr. einer Tochter des Tvashṭar, welche dem Vivasvant die Zwillinge Jama und Jamî und in Gestalt einer Stute die beiden Açvin gebiert. Unter den Göttern des himmlischen Gebiets aufgeführt Naigh. 5,6. Nir. 12,9. ṚV. 10,7,2. Vgl. सुरेणु.

सरत् m. = सूत्र Çabdam. im ÇKDa.

सरत्नि m. f. *eine kurze Elle (vom Ellbogen bis zum Ende der geballten Hand)* AK. 2,6,2,37. — Vgl. रत्नि und शरत्नि.

सरत्व n. nom. abstr. zu 1. सर 1) *b*) Suçr. 1,187,21. 2,45,21.

सरथ (2. स + रथ) adj. (f. या) *sammt Wagen* Çat. Br. 5,4,2,22. Ka-

ṣaḍv. 1,23. MBh. 5,7213.

सरथम् (wie oben) adv. *auf einem Wagen zusammen mit* (instr.; Gegens. नानारथम्); überh. *zusammen mit* RV. 1,71,6. 108,1. 3,4,11. 6,9. इन्द्रेण याथ सरथं सुते सचा 60,1. 4,47,3. देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता 5, 11,2. सरथा यातमर्वाक् 43,3. 6,20,3. 10,15,10. 75,6. 84,1. 168,1. AV. 3,21,3. 9,2,9. Kauç. 117. 135. — Vgl. सारथि.

सरथिन् adj. *auf demselben Wagen fahrend* VS. 29,7.

सरदण्डा f. N. pr. eines Flusses R. Gorr. 2,70,14. schlechte Schreibart für शर°.

सरन्ध्र (2. स + र°) adj. 1) *mit Oeffnungen, Höhlungen versehen* AK. 1,2,4,2. — 2) *mit einer Schlinge* (zum Durchziehen) *versehen:* यन्त्रि Âp. Praç. bei Sohler 74.

सरपत्रिका f. = पद्मपत्र *ein Blüthenblatt der Wasserrose* Çabdar. im ÇKDa. शर° wäre die richtige Schreibart.

सरपस्, घर्मपः सरपसस्तराय कम् *du lässest stillstehen fliessende Wasser zum Uebersetzen* RV. 2,13,12. सरऽपसः Padap., *deren Werk das Fliessen ist* Sây.; oder सपस् zu सप् *Wasser.*

सरभ m. = शरभ 5) *e)* Wheel, Râmây. Up. 306.

सरभक m. *ein best. dem Getraide schädliches Thier* Adbh. Br. in Ind. St. 1,40,5. 6. — Vgl. शरभ.

सरभस (2. स + र°) adj. *ungestüm, leidenschaftlich:* मनोरथैस Spr. (II) 2502. सुरत 622. °म् adv. 5780. 6574 (im comp. ohne Flexionszeichen). Uttarar. 106,12 (144,11). Vet. in LA. (III) 20,13.

सरमा f. 1) Indra's oder *der Götter Hündin* (देवशुनी), welche den Versteck der geraubten Heerden aufspürt, Naigh. 5,5. Nir. 11,24. Mbh. m. 56. RV. 1,62,3. विदद्व्यं सरमा दृळ्हमूर्वम् 72,8. 3,31,6. 4,16,8. 5, 45,7. 8. 10,108,1. fgg. AV. 9,4,16. सरमा माता सीमरः पिता श्यावशबलो भ्रातरो Pân. Gaṇ. 1,16. Bhâvpr. 2,17 in Ind. St. 1,114. ein Mantra von ihr ebend. 3,458. — MBh. 1,668. fgg. 2,457. 3,14487. Bhâg. P. 5,24,20. 6,6,25. श्वापदाः °सुताः 26. — 2) *Hündin* überh. AK. 2,10, 28. H. 1281. Mbh. Hin. 172. Hall. 2,127. — 3) N. pr. einer Râkshasî Mbh. R. 5,52,1. 6,9,1. einer Tochter des Gandharva-Fürsten Çailûsha und Gattin Vibhîshaṇa's 7,12,24. 26. einer Gattin Kaçjapa's ÇKDa. nach dem Vâyu-P. — Vgl. सारमेय.

सरमात्मज m. *ein Kind der* Saramâ so v. a. *Hund* Varâh. Bṛh. S. 92,2.

सरयु (von सृ) Uṇâdis. 3,22. 1) m. *Wind* Taik. 1,1,76. — 2) f. Sidd. K. 248,*b*,11. N. pr. eines Flusses RV. 4,30,18. 5,53,9. 10,64,9. सरयू (ganz ausnahmsweise auch सरयु) N. pr. eines Flusses in Oude Uéval. LIA. 1,34. 36. MBh. 1,6485. 2,374. 795. 3,8048. 14230. 6,326 (VP. 182). 13,7233. Harîv. 9506. 12825. R. 1,5,5. 11,14. 24,10. 26,9 (27,8 Gorr.). 2,32,27. 36,19 (20. 23 Gorr.). 49,15. 63,19. 33. 3,22,33. 4,27, 12. 40,19. 44,32. Raghuv. 8,24. 13,62. 14,30. 15,100. Varâh. Bṛh. S. 5, 65. 16,16. Paiṇâçikîtrend. 11,*b*,6. Verz. d. Oxf. H. 10,*a*, N. 1 (lies सर-यूच). 149,*a*,33. Bhâg. P. 5,19,18. 10,79,9. 10. °तट Raghuv. 9,16. dieses N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,13. häufig falschlich शरयू geschrieben. — Vgl. सारव.

सरडुक (wie oben) adj. zur Erklärung von मललूक *sich bewegend* Nir. 6,8.

सरल Uéval. zu Uṇâdis. 1,105. 1) adj. (f. आ) = ऋजु Taik. 3,3,110. *a) gerade (nicht krumm)* H. an. 3,690. Med. l. 142. Viçva bei Uéval. सरणि Râjân-Tar. 3,399. पुनः पुच्छम् Spr. (II) 5377. सुसरलवंशशलाका Gol. Golâr. 1. Blick Spr. (II) 1166. 7260. *gerade so v. a. ausgestreckt* कर Kathâs. 73,277. सरलाङ्गुलिशोभिन् Râjân-Tar. 1,353. कालभुजग Verz. d. Oxf. H. 138,*b*,14. Vgl. u. कौस्तुभ 2). — *b) richtig, correct:* कविता (vielleicht fehlerhaft für सरमा) Spr. (II) 5716. Verz. d. Oxf. H. 110,*a*,19. Comm. zu TS. Prât. 8,13. 9,1. 14,4. — *c) ehrlich, schlicht* AK. 3,1,8. H. 376. H. an. Med. Halâj. 2,230. Viçva a. a. O. प्रेयस् Spr. (II) 283. Freund 3176. ज्ञान 3544. 7110. Milarâm. 38,1. कोकिल Spr. (II) 6124. सरलाशय adj. 7250. Kathâs. 32,8. 61,202. 71,165. निसर्गसरलात्मन् adj. Râjân-Tar. 1,232. — *a) c)* Spr. (II) 3564. 5300. 6811. Pañkat. III,69. — *d)* = विगीत Sârasvatâlaṅkâra im ÇKDa. — 2) m. *a)* proparox. *eine Pinus-Art* (= पूतिकाष्ठ *P. longifolia*) Schol. zu Çiç. 2, 14. AK. 2,4,2,40. Taik. 2,4,16. 6,37. H. an. Med. Halâj. 5,26. Viçva a. a. O. Ratnam. 144. MBh. 3,11575. 8,3884. 12,5837. 13,635. 6369. Harîv. 8264. R. 2,91,48. 4,44,55. 5,9,7. 16,53. 17,15. Suçr. 2,38,10. Journ. of the Am. Or. S. 6,558. Megh. 54. Raghuv. 4,73. Kumâras. 1,9. Bhâg. P. 4,6,14. 8,2,13. 7,14. Pañkat. 1,7,22. zugleich in der Bed. *ehrlich* Spr. (II) 6895. — *b) Feuer.* — *c) ein* Buddha Dharân. im ÇKDa. — *d) Pavo bicalcaratus* Wilson ohne Angabe einer Aut. — 3) f. आ *a) eine Art Convolvulus* (त्रिवृता) AK. 2,4,8,26. = सरल *Pinus longifolia* Suçr. 1,131,19. 146,8. 2,130,5. 379,12. — *b)* N. pr. eines Flusses Buddh. im ÇKDa. — 4) n. *a) das Harz des* Sarala-*Baumes* R. 2,76,16. Suçr. 1,133,11. 183,13. 2,87,19. 94,20. 138,1. 364,16. Kâraka 3,7. — *b) eine best. hohe Zahl* (bei den Buddhisten) Vjutp. 182. Mél. asiat. 4, 639. — Häufig शरल geschrieben.

सरलत्व n. nom. abstr. zu सरल 1) *a)* Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,22. 29.

सरलद्रव m. *das Harz des* Sarala-*Baumes* AK. 2,6,2,30. Taik. 2, 6,37. H. 648.

सरलस्यन्द m. dass. Râjân-Tar. 3,226.

सरलाङ्ग m. dass. Râjân. im ÇKDa.

सरलाभाष्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 292,*b*,30. fg.

सरलाय् (von सरल), °यते *leicht von Statten gehen:* प्रथमं यदि कृच्छ्रे भवेत् तदपि मत्वा धर्माचरणमभ्यस्येत् क्रमात्तदेवातिसरलायिष्यते Comm. zu Baudhâjanadharma 2,14,8.

सरलीकर् (सरल + 1. कर्) *gerade machen:* वंशी °क्रियमाणम् Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,20. Davon nom. abstr. °करण 23. fg.

सरव 1) m. N. pr. *a)* eines Mannes, pl. *sein Geschlecht* Saṁhit. K. 186, *a*,11. — *b)* eines Berges: °पर्वत Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,21. — 2) n. *eine best. hohe Zahl* (bei den Buddhisten) Vjutp. 180. Mél. asiat. 4,640.

सरश्मि (2. स + र°) adj. *strahlend* RV. 1,135,3.

सरष्ट N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,39.

सरस् n. Uéval. zu Uṇâdis. 4,138. 1) *Trog, Becken, Eimer:* त्री सरांसि मघवो सोम्यापाः RV. 5,29,8. 6,17,11. सरो न पूर्णमभितो वदन्तः 7, 103,7. सरो न प्रास्युदरम् 8,1,28. 33. त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्रे मधु 7,10. 45,24. 9,54,2. 97,53. Vîlakh. 1,8. — 2) *Wasserbecken, Teich, See* AK. 1,2,3,27. H. 1094. Med. s. 43. Hall. 3,53. किं समुद्रसमं सरः

VS. 23,47. 48. 30,16. Ait. Br. 3,32. हेतवन Çat. Br. 13,5,4,9. Kaush. Up. 3,5,2. M. 4,203. MBh. 3,2407.2484. सरसामस्मि सागर: sagt Kṛshṇa Bhag. 10,24. R. 2,27,17. Sûrjas. 1,62. Ṛt. 1,17. Çik. 86. Spr. (II) 2817. 2792. 4458. 6032 (wohl abl. von सरस्, nicht adj.). 6797. 6897. Varâh. Bṛh. S. 12,4. 46,39. 48,9. Kathâs. 18,101. Râga-Tar. 5,65. Brahma-P. in LA. (III) 52,4. Bhâg. P. 5,2,18. 8,24,26 (शरस् Burn.). Pañkat. 159, 14. Hit. 10,8. 12,1. 26,12. मानस Vikr. 94. Çiç. in LA. (III) 33,2. नाभि° Bhâg. P. 2,1,27. 3,11,35. क्षिम° Milatîm. 17,9. सरोदपानानाम् (mit unregelmässiger Contraction) MBh. 14, 1225. सरोपात्ते (सरस्तीरे ed. Bomb.) Pañkat. 131, 15. am Ende eines adj. comp. Kathâs. 42, 41. — 3) *Wasser* Naish. 1, 12. Nir. 9, 26. Med. Roots bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — 4) angeblich = वाच् (wegen सरस्वती) Naish. 1, 11. — Vgl. तृणाविन्दु°, यु°, नभ:°, बिन्दु°, ब्रह्म°, मय°, रुद्र°, विधु°, सती°, सरसी, सारस.

1. सरस n. = सरस् *Teich, See* am Ende eines comp. Vop. 6, 45. — Vgl. जल°, देव°, मण्डूक°.

2. सँरस (2. स + रस) 1) adj. (f. या) a) *Saft enthaltend, saftig, kräftig* Ait. Br. 6, 32. याज्ञति TS. 3, 5, 2, 1. 6, 1, 9, 3. Çat. Br. 3, 6, 4, 7. Âçv. Grhj. 3, 2, 2. Kâty. Ça. 9, 5, 6. ओषध Çânkh. Çr. 1, 1, 10. निचुल Mudr. 14. *feucht:* लोकितचन्दन Harîv. 7041. 7053. Ṛt. 1, 2. Spr. (II) 7385. यष्टयष्टि 2470. विसिनीपत्त Milatîm. 51, 8. Z. d. d. m. G. 27, 33. वनराजय: (zugleich in Bed. d) Kathâs. 111, 6. — b) *frisch, neu:* नखक्षत Çiç. D. 60, 17. रागलेखा Mâlav. 46. व्यलीक Çiç. 9, 85. — c) *schmackhaft:* फल Spr. (II) 1725. मोदक Verz. d. Oxf. H. 155, b, 42. 237, a, No. 568. यासव Kathâs. 21, 8. सुधा° *wie Nektar* 42, 224. यति° (कुचकलश) Gîv. 9, 3. — d) *mit Reisen versehen, reisend, geschmackvoll:* कवय: Spr. (II) 77. °कविता 6093 (5716 ist wohl सरसा st. सरला zu lesen). परिस्पन्दो वाचामभिनवविलासोक्तिसरस: 7260. गीत Pañkat. 1, 12, 6. शब्दार्थौ Çiç. D. 4, 8. वस्तु 315. कथा Kathâs. 12, 77. 25, 298. 90, 302. 94, 136. 119, 217. adv. Z. d. d. m. G. 27, 28. सरसाख्यसंगीता adj. Kathâs. 22, 10. — e) von *Verlangen ergriffen, von Liebe —, von Lust erfüllt:* हृदय Spr. (II) 4023. स्वचित्त Kathâs. 21, 8. वनराजय: (zugleich in Bed. c) 111, 6. अन्योऽन्यनवप्रेमसरसौ 89, 13. यदि हरिस्मरणे सरसं मन: Gîv. 1, 3. सरसम् adv. *mit Lust, mit Wonne* Vikr. 37, 11. — 2) m. n. (!) Sinn. K. 249, b, 7. — 3) f. या v. l. für सरला *eine Convolvulus-Art* Râjanirghaṇṭa zu AK. 2, 4, 2, 26 nach ÇKDr. — सरसेन Râga-Tar. 4, 247 fehlerhaft für स रसेन. Vgl. सारसायन, सारसेय, सारस्य.

सरसता f. nom. abstr. zu 2. सरस 1) c) Ait. Br. 6, 12. Çâṅkh. Br. 16, 1. 30, 1.

सरसत्व n. nom. abstr. 1) zu 2. सरस 1) a) Kâty. 24, 4. — 2) zu 1) c) Spr. (II) 2617 (hiernach die Uebersetzung zu verbessern).

सरसप्रत (!) n. *eine best. Pflanze,* = त्रिकण्ट Çabdâs. im ÇKDr.

सरसवाणी f. N. pr. der Gattin Maṇḍanamiçra's Verz. d. Oxf. H. 251, b, 18.

सरसिक s. सरसीक.

सरसिज (स°, loc. von सरस् + 1. ज) P. 3, 2, 97, Schol. Vop. 26, 33. 1) adj. *in Teichen lebend:* Fische Suçr. 1, 207, 7. — 2) n. *Lotusblüthe* Raghuv. 5, 69. Spr. (II) 2792. 6896. Kum. 5, 39. am Ende eines adj. comp. (f. या) ad Çik. 19. स्मेरानन° Kathâs. 23, 94.

सरसी f. 1) (ein eingetrockneter) *Pfuhl, Lache:* दृतिं न पूर्णं सरसी शयानम् ṚV. 7, 103, 2 (vgl. Pat. zu P. 7, 1, 39). *ein grosser Teich* AK. 1, 2, 3, 27. H. 1094. Med. s. 43. Hall. 3, 53. Çârṅgîdh. bei Udâyar. zu Unâdis. 4, 188. Bala bei Mallin. zu Naish. 2, 40. दक्षिणापथे हि महत्ति सरांसि सरस्य इत्युच्यते (sic) Pat. zu P. 1, 1, 19. Racon. 1, 43. 14, 8. Çik. Cu. 85, 12. Kir. 12, 52. Spr. (II) 4684. Naish. 2, 40. Kathâs. 103, 104. Râga-Tar. 2, 166. LA. (III) 90, 4. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑–⏑⏑⏑–⏑⏑⏑–, ⏑⏑⏑–⏑⏑⏑–⏑⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. 2, 163 (XVI, 2). — Vgl. सरस्.

सरसीक (von सरसी) m. = सारस *der indische Kranich* Çabdâs. im ÇKDr. सरसिक Wilson nach dens. Aut.

सरसीरुह (स° + रुह) n. = सरसिज *Lotusblüthe* AK. 1, 2, 2, 39. H. 1162, Schol. Spr. (II) 3910. Milatîm. 169, 9. Pañkâr. 3, 5, 2. 11, 27. सरसीरुहेक्षण adj. Harîv. 15774. Gîv. 8, 2. Verz. d. Oxf. H. 252, b, No. 626.

सरस्य (von सरस्) adj. *zu stehenden Wassern* —, *zu Teichen gehörig* VS. 16, 37. TS. 7, 4, 22, 1. Kâty. Ça. 15, 4, 26.

सँरस्वतिकृत adj. *durch Sarasvati gemacht* VS. 20, 35. सारस्वतीकृत von Sar. *verfasst:* सूत्र Verz. d. B. H. No. 771.

सारस्वतिवत् s. सारस्वतीवत्.

सारस्वतीकण्ठाभरण 1) n. *der Halsschmuck der Sar.* (*der Genius der Rede*) Dudâtas. 67, 7. — 2) n. Titel einer dem Bhoǵadeva zugeschriebenen Poetik Colebr. Misc. Ess. 2, 22. 49. Verz. d. Oxf. H. 110, b, 19. fg. 206, a, No. 489. 211, b, No. 499. Ind. St. 3, 418. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. fg. °कार Verz. d. B. H. No. 757. Verz. d. Oxf. H. 176, a, 2. 3. Ind. St. 3, 226. — 3) m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 576. शिवनारायणदास° 535. 819.

सारस्वतीकुटुम्ब m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125, a, 13. fg. °दुहितृ als Dichterin obend.

सारस्वतीतत्त्व n. Titel zweier Werke Notices of Skt Mss. 140. 253.

सारस्वतीतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67, a, 35. °माहात्म्य 66, a, 4.

सारस्वतीप्रक्रिया f. Titel einer Grammatik Verz. d. Cambr. H. 13. — Vgl. सारस्वती प्रक्रिया.

सारस्वतीबालवाणी f. *die Sprache der Knaben an der Sarasvati,* Bez. eines best. Dialects Colebr. Misc. Ess. 2, 21.

सारस्वतीरहस्य n. pl. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325.

सँरस्वतीवत् adj. P. 8, 2, 18, Schol. von Sarasvati *begleitet:* Indra-Agnî ṚV. 8, 38, 10. Ait. Br. 2, 24. सारस्वतिवत् Kâty. Ça. 3, 1, 20. Schol. zu 3, 9, 27. 9, 9, 7.

सारस्वतीव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34, a, 26.

सारस्वतीसूक्त n. Bez. *einer best. Hymne* Verz. d. Oxf. H. 393, a, No. 144.

सारस्वतीसूत्र n. Titel eines grammatischen Sûtra Verz. d. Oxf. H. 171, a, No. 382. Verz. d. Cambr. H. 13. सारस्वतीकृतसूत्रपाठ Verz. d. B. H. No. 771.

सारस्वतीस्तव m. Titel eines Gedichts Verz. d. Oxf. H. 292, b, 21.

सारस्वतीस्तोत्र n. *ein Lobgesang auf* Sar. Verz. d. Oxf. H. 94, a, 34. Verz. d. Tüb. H. 20.

सँरस्वत् (von सरस्) 1) adj. a) *reich an Wasserbehältern, Teichen u. s. w.; mit ihnen in Berührung gekommen:* मरुन्मन:स्वच्छपय:सारस्वता वातेन

Bhâg. P. 10,15,3. — *b*) *Geschmack* —, *Gefallen an Etwas* (loc.) *haben*; = रसिक Med. t. 223. ग्रहनिधिवचसी पालने Verz. d. Oxf. H. 333, *a*, 29. fg. — 2) m. *a*) N. eines zu den Göttern des oberen Gebietes gezählten *Bewohners der himmlischen Wasser, der durch Regen und Bäche Fruchtbarkeit schenkt*, Naigh. 5,4. Nir. 10,24. वृष्टिभिस्तर्पयंस्तं सारस्वतमवसे जोहवीमि RV. 1,164,52. 7,96,4. fgg. 10,66,5. AV. 7,40,1. 2. 9, 4,9. TS. 2,5,*a*,2. Pañcav. Br. 16,5,15. Ind. St. 3,242,*b*. — *b*) N. eines der Genie Sarasvatî entsprechenden Genius: मनो वै सारस्वान्वाक्सारस्वती Çat. Br. 7,5,*a*,31. 11,2,*a*,9. सत्यवाच् TS. 1,8,10,1. — *c*) *Meer* AK. 1,2,*a*,1. 3,4,44,60. H. 1073. an. 3,207. Med. Halâj. 3,30. Harîv. 11592. — *d*) *Fluss* AK. 3,4,44,60. H. 1091. H. an. Med. — *e*) N. pr. eines Flusses, = सारस्वती Bhâg. P. 4,14,36. — 3) f. सारस्वती *a*) *eine an Wasserbecken reiche Gegend* MBh. 1,7745. — *b*) N. pr. eines mächtigen in das Meer mündenden Stromes (RV. 6,61,2. 8. 7,95,1. 2), vermuthlich *des Indus* und *seiner Genie*, welche die Anwohner ihrer Ufer schützt (5,61,14. 7,96,2) und Güter aller Art verleiht. Dieser Name *Wassermassen*, gleichsam *Teiche* oder *Seen, in sich befassend* wäre als der besondere und heilige, सिन्धु d. i. *der Fluss* als der allgemeine und profane zu betrachten. Auf das Flüsschen in Madhjadeça (s. *c*) hat die spätere Zeit mit dem Namen die Attribute der Heiligkeit übertragen; dass dasselbe aber in der Vorzeit ein Strom gewesen wäre, auf welchen die Schilderung des Veda passen sollte, lässt sich nicht wahrscheinlich machen. Naigh. 5,5. Nir. 2,23. 9,26. 11,25. RV. 1,89, 3. 164,49. यस्त्वितमे नदीतमे देवितमे सारस्वति 2,41,16. fgg. 30,8. 32,8. 3,54,13. 5,42,12. या नो दिवः पर्वताद्या सारस्वती गसु 43. 11. 46,2. 6, 49,7. 50,12. सारस्वतो सिन्धुभिः पिन्वमाना 52,6. 7,9,5. स॰ सप्तवो सिन्धुमाता 36,6. 39,5. 40,3. 8,21,17. fg. 10,17,7. 30,12. 131,5. 184,2. सारस्वत्यर्वसु सप्त सिन्धवः Vilâkh. 6,4. VS. 19,93. fg. पर्षे नर्यः सारस्वतीमपि यासि सश्चोतसः 34,11. AV. 4,4,6. 5,23,1. 6,3,2. 89,3. 7,68,1. 14, 2,15. 20. 18,4,4. 19,31,9. fg. TS. 1,8,22,3. Çat. Br. 1,8,2,4. 11,4,3,3. 12,7,1,12. 3,5. 14,9,3,5. Kâty. Çr. 8,1,18. 8,5. Lâṭy. 5,3,2. Çâṅkh. Gṛhy. 1,12. Kauç. 45. 81. — *c*) N. pr. eines kleinen heilig geachteten *Flusses*, der mit der Dṛshadvatî die Grenzen von Brahmâvarta bildet, im Sande verläuft, schliesslich aber nach der Vorstellung der Inder, unter der Erde fortfliessend, sich mit der Gaṅgâ und Jamunâ vereinigt (vgl. विनशन). Sie erhält öfters den Beinamen पूर्वा oder प्राची. AK. 1,2,*a*,33. H. 1085. H. an. Med. RV. 3,23,4. 10,64,9. 75,5. Ait. Br. 2,19. vielleicht AV. 8,30,1. — Çat. Br. 1,4,*a*,14. TS. 7,2,*a*,4. Lâṭy. 10,15,1. 18,12. 19,4. Pañcav. Br. 25,10,1. Kâty. Çr. 13,3,20. 24,6,22. Çâṅkh. Br. 12,2,3. Âçv. Çr. 12,6,2. 3. Ind. St. 1,41 (°मूल). °दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्। तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते॥ M. 2,17. H. 949. M. 11,77. MBh. 1,8779. 3,7055. 5,7049. 6,321 (VP. 180). Harîv. 7736. 9506. 9515. 12021. 12828. R. 2,71,5. R. Gorr. 2,70,12. 85,5. 100,38. 4,40,24. सावित्री 41,57. सप्तःसलिला Naigh. 3,9. Çiç. Cu. 139,7. Vaṇîs. Bṛh. S. 16,31. Bhâg. P. 1,7,2. 16,37. 3,1,21. 4,19,1. 9,16,33. 10,78, 19. °यमुनासंगम Verz. d. B. H. 143,1. Verz. d. Oxf. H. 10,*c*, N. 1. 23,*b*, 14. 39,*b*,22. 46,*b*, N. 3. 77,*b*,14. 149,*a*,31. — *d*) N. pr. anderer Flüsse MBh. 6,343 (VP. 184). LIA. 1,84. im Dvîpa Çâlmali Bhâg. P. 5,20, 10. — *e*) *Fluss* überh. Naigh. 1,13. Taik. 3,3,188. fg. H. 1080. H. an. Med. Halâj. 3,48. *ein der Sarasvatî an Heiligkeit gleichkommender Fluss:* deren drei AV. 6,100,1. sieben MBh. 9,2188. fg. सर्वाः पुण्याः सारस्वत्यः सर्वा गङ्गाः समुद्रगाः Mân. P. 37,30. — *f*) mit Ilâ und Bhâratî eine der drei Göttinnen in den Âprî-Liedern, auch mit Hotrâ und Mahî genannt, z. B. RV. 1,142,9. 188,8. 3,4,8; vgl. 2,1,11. — Daher *g*) *Genie der Stimme und Rede* Naigh. 1,11. Nir. 2,23. AK. 1,1, 8,1. Taik. 1,1,27. H. 241. H. an. Med. Halâj. 1,8. द्वे सारस्वती मह्य घीभिरस्तु RV. 7,35,11. AV. 5,7,4. 5. 10,8. 6,41,2. 7,57,1. VS. 2,20. 9, 30. 10,30. 18,27. 19,12. Ait. Br. 3,1. 6,7. वाग्वै सारस्वती Çat. Br. 3, 9,*a*,7. 7,5,*a*,31. Ind. St. 3,242,*b*. 398. fgg. Weber, Chor. 112. M. 8,105. वेदानां माता MBh. 12,12920. Harîv. 10243. 12104. Rasa. 4,6. Çiç. 194. Spr. (II) 6025. Vaṇîs. Bṛh. S. 26,2. 46,98. °विलासाः Verz. d. Oxf. H. 196,*b*,5. °विनोदं करिष्यामि Pañcat. 5,5 (ed. orn. 2,10). Hit. 116,8 (समाधिस्थया zu lesen mit Johns.). Wilson, Sel. Works 1,20 u. s. w. 2. 187. fgg. Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,14. 19,*a*,4. 21,*b*,1. 23,*b*,11. 14. 94,*b*,19. 255,*a*,12. 257,*a*,26. 284,*b*,48. ein Hass zwischen der Çrî (Lakshmî) und der Sarasvatî (weil *Reichthum* und *Gelehrsamkeit* selten Hand in Hand gehen) Spr. (II) 3941. Kathâs. 3,78. Râga-Tar. 3,471. °मन्त्र Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,10. fg. Tîrân. 258. प्राजापत्या Prân. 11,8. सारस्वत्याः पुत्रः Ind. St. 3,460. unter den Namen der Durgâ Kathâs. 53,171. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,38. चादित्यस्य सारस्वत्यां जज्ञे पुत्रहयं प्रभुम् Harîv. 11350. als Gattin Vishṇu's Pañcar. 2,3,64. Manu's Med. MBh. 5,3973. Tochter Daksha's VP. 119, N. 12. — *h*) *Rede* überh. Taik. 3,3,188. fg. H. an. Med. ब्रुवंश्चित्रा सारस्वतीम् MBh. 12,2764. सारस्वतीं बहुविधां पूपमुत्पादयिष्यथ (Prösche) 13,4045. स्वच्छन्दादेव ते — प्रवृत्तेयं सारस्वती R. 1,2,34. लघुसंदेशपदा Raghu. 8,76. उदीरयामास सीता सत्यां सारस्वतीम् 15,80. Râga-Tar. 5,415. Bhâg. P. 3,16,13. *Gabe der Rede, Beredsamkeit* Harîv. 3285. so v. a. *Lehre:* यो ब्रूयाच्चापि शिष्याय धर्म्यां ब्राह्मीं सारस्वतीम् MBh. 13,3424. Inschr. *eine vom Himmel kommende Rede, Oracelstimme:* गूढरूपा Raghu. 15,46. चाकाशभवा Kumâras. 4,39. गगणादेवमुद्भूतशरीरा सारस्वती Kathâs. 2,68. 6,20. 9,70. 11,14. 18,313. 20,32. 42,171. 46,126. Râga-Tar. 2,73. — *i*) Bein. *der Kuh* Taik. H. an. Med. VS. 8,43. — *k*) *eine Perle* von *Weib* (स्त्रीरत्न) H. an. Med. — *l*) Bez. verschiedener Pflanzen: = ज्योतिष्मती und ब्राह्मी Râgân. im ÇKDr. = सोमलता Çabdâ. im ÇKDr. = वित्त्व (wegen सारस्वत) H. 815, Schol. — *l*) Bez. *eines zweijährigen Mädchens, das bei der* Durgâ-*Feier diese Göttin darstellt*, Annadâkalpa im ÇKDr. unter कुमारी. — *m*) N. eines der zehn auf Schüler Çaṅkarâkarja's zurückgeführten Bettelorden, dessen Mitglieder das Wort सारस्वती ihrem Namen beifügen, Verz. d. Oxf. H. 227,*b*,16. Wilson, Sel. Works 1,202. — *n*) N. pr. der Gattin Dadhîka's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. Çaṅkarâkarja's Verz. d. B. H. No. 841. Maṇḍanamiçra's (vgl. सरस्वाणी) Verz. d. Oxf. H. 256,*a*,7. — *o*) abgekürzter Titel einer Grammatik Verz. d. Oxf. H. 110, *b*,17. — Vgl. गुप्त°, ज्ञानेन्द्र°, नरसिंह°, नारायण°, नील°, नृसिंह°, भूमानन्द°, मधुसूदन°, मल्ल°, माधव°, माधवरामानन्द°, विमल°, वीर°, शिवानन्द°, सारस्वत.

सारङ्ग m. N. pr. eines Mannes Wassiljew 200. Tîrân. 39. 73. 105.

275. 301.

सराग (2. स + राग) adj. 1) *geröthet:* °नेत्र MBu. 3,16639. क्रोधसरागनेत्र 4,777. नेत्रयुगलात्सरागादश्रुसंततिम् (so lesen wir st. सरागामश्रु°) Kathâs. 11,81. Raghu. 16,15. Kumâras. 5,10. Spr. (II) 4900 (zugleich in der Bed. 3). — 2) *reizend, lieblich:* सरागम् adv.: जगु: Bhatt. 3,43. — 3) von *Leidenschaft* —, von *Liebe erfüllt:* मुनेरपि मनो ऽवश्यं सरागं कुरुते ऽङ्गना Spr. (II) 4900. सरागम् adv.: हरिं परिरभ्य स° Gît. 1,39.

सरागता (von सराग) f. *das Geröthetsein* Spr. (II) 1539.

सराजक (von 2. स + राजन्) adj. *sammt dem Fürsten* Spr. (II) 1350. Kathâs. 62,147.

सराजन् adj. dass. Kâd. Ça. 22,5,29. स्व° st. dessen Lâṭ.

सराट N. pr. einer Localität Verz. d. Oxf. H. 338,b,36.

सराति (2. स + रा°) adj. *gleich günstig, einmüthig* RV. 8,27,14. Ait. Br. 7,18.

सरात्रि adj. = समानरात्रि P. 6,3,85. Vop. 6,97.

सरारी s. कृमि° und vgl. शरारि.

सराव m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,237,19. — Vgl. शराव, wofür häufig सराव geschrieben wird.

सरि (von सृ) f. *Wasserfall* H. 1096. — Vgl. सरा und सरी unter 1. सर.

सरिक adj. = सर in सपे°. सरिका s. u. सरका.

सरिण्यु Mân. j. 111 fehlerhaft für सरण्यु.

सरित् (von सृ) Uṇâdis. 1,99. f. 1) *Bach, Fluss* Naigh. 1,13. AK. 1, 2,3,29. 3,4,28,103. Trik. 3,3,189. H. 1080. Hall. 3,44. RV. 4,58,6. यो वो मयुद्रान्सरित: पिपर्ति 7,70,2. VS. 34,11. AV. 12,2,41. TBr. 1,2, 4,11. M. 1,34. MBu. 1,903. 3,2403. 2484. R. 1,2,39. 2,27,17. 95,19. Suçr. 1,22,13. 264,8. Mâgh. 41. Vikr. 68,5. Kir. 5,10. Spr. (II) 1716 (neben सिन्धु). 4674. 6670. Râja-Tar. 4,530. कृत्रिमा AK. 1,2,3,23. दिव: Bhâg. P. 4,1,14. सरितां काश्यपीनाम् Ind. St. 3,460. पति: सरिताम् *der Herr* oder *Gatte der Flüsse, das Meer* Varâh. Bṛh. S. 12,4. सरितां च पति: R. Gorr. 2,11,5. gewöhnlich सरितां पति: R. Schl. 1,1,78. 16, 23. 2,34,45. 4,9,37. 5,87,2. Kumâras. 2,37. Spr. (II) 1170. als *Zahl* ist सरितां पति: = वार्धि H. 874, Schol. सरितां नाथ: = पति: सरिताम् Paṇḍaçâstrat. im ÇKDr. सरितां वरा (vgl. सरिद्वरा) *der beste der Flüsse* R. 1,35,11. Bez. der Gaṅgâ Paṇḍaçâstrat. im ÇKDr. — 2) *ein Metrum* von *72 Silben* Ind. St. 8,107. — 3) = सूत्र Çabdam. im ÇKDr. — 4) ein N. der Durgâ nach ÇKDr. mit folgendem Belege: क्रियाकारणरूपत्वात्स्मरणाच्च सरिन्मता । संगमाद्गमनाद्रङ्गा लोके देवी विभाव्यते ॥ इति देवीपुराणे ४५ अध्याय: ॥ — Vgl. कु°, सु°, व्योम°.

सरित्पति m. *der Herr* oder *Gatte der Flüsse, das Meer* AK. 1,2,3,1. Hall. 3,30. R. 5,93,22. fg. Spr. (II) 6245. Kathâs. 121,226. Bhâg. P. 5,17,7.

सरित्वत् (von सरित्) m. *das Meer* Çabdârthak. bei Wilson.

सरित्सुत m. *der Sohn des Flusses* (Gaṅgâ), metron. Bhîshma's ÇKDr. und Wilson.

सरिदधिपति m. = सरित्पति Khandom. 73.

सरिद्भर्तृ m. dass.; Bez. *der Zahl vier* Ind. St. 8,345.

सरिद्वरा f. *der beste der Flüsse* MBu. 1,6753. Bez. der Gaṅgâ H. 1082. Hall. 3,51.

सरिन् adj. etwa zu *Hilfe eilend* (von सृ) RV. 1,138,3. — Vgl. इरिन्.

सरिन्नाथ m. = सरित्पति Râjân. im ÇKDr.

सरिन्मुख n. *die Quelle eines Flusses* Wilson.

सरिमन् (von सृ) Uṇâdis. 4,147. m. *Wind* Uṇâdis. — Vgl. सरीमन्.

सरिर् (wie eben) n. *das Wogende; Wassermasse, Fluth* VS. 13,42. 49. 53. 15,4. 53. 17,87. 38,7. TBr. 1,2,4,3. Ind. St. 8,109. = वरुण Naigh. 3,1. — Vgl. सलिल.

सरिल n. = सलिल *Wasser* Bhar. zu AK. 1,2,3,3 nach ÇKDr.

सरिषप m. = सर्षप Trik. 2,9,3. Kâṇḍa bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,141.

सरिसर् (vom intens. von सृ) adj. *zerlaufend* TBr. 3,10,8,4. vielleicht fehlerhaft.

सरीमन् (von 1. सृ) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,147 (oxyt.). infin. loc.: वातस्य सर्गो अभवत्सरीमणि *wie ein Windzug fährt er dahin* RV. 3, 29,11. — Vgl. सरिमन्.

सरीसृप् = सरीसृप Bhâg. P. 7,14,9.

सरीसृप (vom intens. von सृप्) 1) adj. *schleichend, kriechend;* m. und n. (dieses in der älteren Sprache) *ein kriechendes Thier* AK. 1,2,3,7. H. 1303. Hall. 3,18. RV. 10,162,3. AV. 3,10,6. 12,1,1. 48,3. सरीसृपं स्थाणु यत्र दृश्यते Bhâg. P. 5,18,27. VS. 22,29. Çat. Br. 1,5,3,11. 2, 5,4,2. 4,1,3,16. Nir. 13,9. MBu. 1,3387. 7,1320. R. 1,13,32 (31 Gorr.). 2,25,16 (22 Gorr.). 28,19 (10 Gorr.). 4,39,15. 5,84,17. जगत्सर्पसरीसृपप्रभृतय: Suçr. 1,4,21. सेवन्ते यदि सरीसृपास्तृणाग्राणि Varâh. Bṛh. S. 28,13. 70,22. शेषादिकीटान्ता: सरीसृपा: Tattvas. 45. Bhâg. P. 2,6,12. 10,39. 5,20,46. am Ende eines adj. comp. (f. आ) MBu. 3,49. 12542. 7,896. 12,9050. 14,764. Harîv. 15438. Mârk. P. 39,49. — 2) m. ein N. Vishṇu's H. ç. 72.

सरु 1) adj. = सूक्ष्म Buṭṭanâ. im ÇKDr. — 2) parox. = शरु 1) AV. 5,25,1. — 3) m. = त्सरु Sâyaṇ. zu AK. 2,8,3,58 nach ÇKDr.

सरुज् (2. स + रुज्) adj. *denselben Schmerz empfindend* Sân. D. 55,20.

सरुज (2. स + रुज) adj. *leidend, krank* MBu. 3,11156. 16827. R. 4, 39,5. शरीर Mârk. P. 66,15. पद Spr. (II) 2049. नेत्र 3817.

सरुजत्व (von सरुज) n. *das Unwohlsein* Mâlav. 43,12. fg.

सरुजसिद्धाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Verz. d. B. H. No. 1045.

सरुद्भव n. *Lotusblüthe* Ausw. 98. man hätte सरोद्भव (सरउद्भव) erwartet.

सरूप् (2. स + 2. रूप्) adj. *erzürnt* Spr. (II) 6898.

सरूप (2. स + रूप) 1) adj. (f. आ) a) = समानरूप P. 6,3,85. Vop. 6, 98. *gleichartig, gleichförmig, gleich* (Gegens. विरूप) H. 1461. die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend. RV. 8,34,12 ज्योतिस् 10,55,3. 169,2. AV. 1,24,3. 5,23,4. धेनव: 18,4,23. VS. 24,5. TS. 2,4, 9,1. 7,3,16,1. Muṇḍ. Up. 2,1,1. Çvetâçv. Up. 4,5. RV. Prât. 17,24. P. 1,2,64. 2,2,27. Kâr. zu 3,1,7. MBu. 3,12248. Raghu. 6,59. Varâh. Bṛh. S. 24,21. Kathâs. 30,57. Mârk. P. 101,13. Bhâg. P. 3,26,5. 4,6, 43. 10,55,40. Wilson, Sâṅkhyas. S. 48. — b) *mit schöner Gestalt* —, *mit schönem Aussehen begabt, schön* Pârâç. Bh. 24,1,3. रूप Spr. (II) 5793. 7129. wohl fehlerhaft für सुरूप. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Bhûta's und Mutter unzähliger Rudra Bhâg. P. 6,6,17. — Vgl. सादृप्य.

सरूपकृत् adj. *gleiche Farbe bewirkend* AV. 1,24,3.

सरूपकरण adj. (f. ई) dass. AV. 1,24,4.

सदृपता (von सदृप) f. *Gleichförmigkeit, Gleichheit* Ait. Br. 1,6. 3,44. 44. नानाविध° MBh. 13,2220. पत्नी° 3,14312. Kâm. Nîtis. 17,54. ṚV. Prâr. 6,14.

सदृपय् (wie eben) *gleich machen in der Form, einen getreuen Abdruck bilden:* सदृपयितुम् Sarvadarçanas. 19,2.

सदृपवत्सा f. *eine Kuh mit einem Kalbe von gleicher Farbe* Âçv. Gṛhj. 1,13,2. Kauç. 12. 35. Çâṅkh. Gṛhj. 3,5.

सदृपोपमा f. v. l. für समानोपमा Kâvyâd. 2,29.

सरेतस् (2. स + रेतस्°) adj. *mit dem Samen versehen:* सरेता घर्मिराघोर्यः TBr. 1,1,3,5. Çat. Br. 2,1,4,5. Ait. Br. 1,3.

सरेफ (2. स + रेफ) adj. *von र् begleitet* ṚV. Prât. 14,7. 12.

सरोग (2. स + रोग) adj *krank;* davon °ता f. *Kränklichkeit* Spr. (II) 1029.

सरोज (सरस् + 1. ज) adj. *in Teichen vorkommend:* सरविन्द् Taitt. Âr. 43. — 2) n. *a) Lotusblüthe* H. 1162. Hall. 3,57. gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. Kumâras. 5,27. Milav. 78. Spr. (II) 1750. 2082. Weber, Rimat. Up. 308. Varâh. Bṛh. S. 43,36. 47. 58,37. Bhâg. P. 3,9,11. °नाभ 3,6,13. °खण्ड n. *eine Menge von Lotusblüthen* Kâç. zu P. 4,2,51. पाण्डु° Çiç. 9,30. सितेतर° 65. am Ende eines adj. comp. Spr. (II) 3220. Bhâg. P. 1,15,2. — *b) ein Fuss mit sechs Moren* Colebr. Misc. Ess. 2, 152. — Vgl. महा°.

सरोजन्मन् n. *Lotusblüthe* H. 1162.

सरोजिन् (von सरोज) 1) adj. *mit Lotusblüthen versehen.* — 2) m. N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,14. ein N. Brahma's ÇKDa. (auch nach Çabdar.) und Wilson nach derselben Aut. — 3) f. °जिनी *a) eine Menge von Lotusblüthen, Lotuspflanze, Lotusteich* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2, 135. H. an. 4,201. fg. Med. n. 219. Ratnam. 84. — *b)* ungenau für सरोज *Lotusblüthe* H. an. Med. Spr. (II) 3153. 3288. Sin. D. 308,18. — Vgl. वन°.

सरोजीय् (von सरोज), °यति *einer Lotusblüthe gleichen* Z. d. d. m. G. 27,61.

सरोत्सव (सरस् + उत्सव) m. = सारस *der indische Kranich* Çabdar. im ÇKDa.

सरोबिन्दु m. Bez. *eines best. Gesanges* (गीतक) Jâṇ. 3,112.

सरोरुह् n. *Lotusblüthe* H. 1162.

सरोरुह n. dass. H. 1162. Hall. 2,57. Ausn. 109 (= रक्तकमल). gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. Varâh. Bṛh. S. 19,16. Ratnâs. 25,248. L.A. (III) 90,4. Daçâvat. 73,15. Bhâg. P. 1,15,28. 2,9,5. 3,11,35. 5,18,21. 9,14, 2. सरोरुहाक्षी Uttarar. 17,11 (24,1). am Ende eines adj. comp. f. आ Ratnâs. 120,118. — Vgl. रक्त°.

सरोरुहास्य m. N. pr. eines Mannes Tîrthân. 188. 193.

सरोरुहासन (सरोरुह + 1. आ°) adj. *auf einer Lotusblüthe sitzend;* m. ein N. Brahma's H. 212.

सरोरुहिणी (von सरोरुह) f. *eine Menge von Lotusblüthen, Lotuspflanze, Lotusteich* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. H. an. 4,203. Kir. 4,34.

सरोवर (सरस् + 4. वर) m. *ein prächtiger Teich,* — *See* Çabdar. im ÇKDa. (masc. !). Spr. (II) 2502. 5078. 6762 (n.). Ratnâs. 46,37. 56,242. Mîrâ. P. 56,6. 8. Vers. d. Oxf. H. 149,*b*,11. Bhâg. P. 3,24,21 (n.). Pârâs. 1,3,7. 65. Vet. in LA. (III) 5,2. 7,14.

सरोष (2. स + रोष) adj. (f. आ) *erzürnt, zornig* Harîv. 4627. Çiç. 9, 33. Mîrâ. P. 77,3. ein Löwe Z. d. d. m. G. 27,96. पक्ष R. 4,7,22. °म् adv. R. 1,55,26. 59,16. 2,109,26. Çiç. 14,6. 16,6. 68,22. 70,14. 94,1. Vîra. 55,7.

सर्क m. = वायु, मनस् und प्रजापति Uṇâdis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa. — Ind. St. 3,267.

सर्क्ष (2. स + ऋक्ष) adj. (f. आ) *mit dem Sternbild verbunden* Weber, Kṛshṇaj. 228.

सर्ग (von 3. सृज्) m. (n. MBh. 12,11567). am Ende eines adj. comp. f. आ Bhâg. P. 7,6,23. 1) *Schuss:* सर्गो न सृष्टो यद्धावदर्वा ṚV. 3,37,7. 16,1. 22,1. 7,37,1. — 2) *Strahl von Flüssigem, Guss* Naigh. 1,12. अपस्य ṚV. 10,89,2. 2,30,1. 8,35,20. दिवः 3,37,30. 10,25,9. des Soma 9,66,10. 69,16. übertragen 1,190,2. 152,1. *das Hingiessen:* सर्गमकृणोदिन्द्रे एषाम् *stragem fecit* 7,18,11. — 3) *Zug, Stoss des Windes* ṚV. 1,169,7. 3,29,11. — 4) *das Entlassen, Ausgiessen;* = निर्मोक्ष AK. 3, 4,8,23. = त्याग H. an. 2,51. वृष्टि° R. 4,13,39. मूत्रपुरीषयोः MBh. 13, 7567. — 5) *das Loslassen des Rennpferdes u. s. w., Rennen:* यदिन्द्र सर्गे अर्वतश्चोदयासे महाधने ṚV. 6,46,13. 4,3,12. स सर्गेण शवसा तक्तो अर्त्यैः 6,32,3. — 6) *aus dem Stall gelassene Heerde; ein ausziehender Haufe, Schwarm:* मरुतामपूर्व्यं गवां सर्गमिव ह्वये ṚV. 5,56,5. 4,31,8. 52,8. vielleicht auch 23,6. इत्यवनिभृत्सर्गे so v. a. *unter der so grossen Schaar von Fürsten* Râga-Tar. 4,107. — 7) *Schöpfung* AK. H. an. Med. Vaiç. bei Mallin. zu Çiç. 19,38. Maitrâyaṇ. 6,30. M. 1,29. 80. सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थम् 87. 93. प्रजा° MBh. 3,12801. 13,1339. 2254. *fg.* 14,447. सर्गाय निदधे मनः Harîv. 534. R. Gorr. 2,119,6. Siddhânjan. 21. 24. 46. 52. *fg.* 66. Nîlak. 64. Tattvas. 45. Ragh. 3,27. Kathâs. 40, 94. 45,186. Mârk. P. 16,45. Bhâg. P. 1,3,6. 8. 9. 6,25. 2,1,31. 9,28. 10,46. 4,1,11. 17,30. 5,1,3. 7,6,23. 8,7,34. Sarvadarçanas. 49,14. 153, 13. आ सर्गात् so v. a. *vom Beginn der Schöpfung, vom Anfang der Welt* Râga-Tar. 5,116. Gegens. प्रलय *Vernichtung* Bhag. 14,2. प्रत्यवकार Ragh. 2,44. संहार Kathâs. 36,41. विच्छेद 20,70. अप्यय Bhâg. P. 3,7,28. निरोध 3,5,18. समाप्राय 7,7,24. अन्त Weber, Râmat. Up. 341. Kṛshṇaj. 294. die *Erhaltung* wird an denselben Stellen durch स्थिति, स्थान, पालन, रक्षा ausgedrückt. Neun *Schöpfungen* MBh. 12,11567. Mârk. P. 47, 36. Bhâg. P. 3,10,14. fgg. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,12. fgg. im Gegens. zu प्रतिसर्ग, अनुसर्ग oder विसर्ग so v. a. *primäre Schöpfung* 8,*a*,13. Verz. d. B. H. No. 448. 495. Ind. St. 1,18,6. भूतमात्रेन्द्रियधियां जन्म सर्ग उदाहृतः Bhâg. P. 2,10,2. 3,7,25. 12,7,9. 11. H. 252. आत्म° so v. a. *der eigene Ursprung* Bhâg. P. 3,8,26. सर्गे so v. a. *in der geschaffenen Welt, in der Welt* Bhag. 7,27. दैव *ein göttliches Geschöpf, ein Gott* Ragh. 10,44. *das Erzeugen:* दानयज्ञप्रजासर्गैरिते हि दिवमाप्नुवन् MBh. 12,8612. *das Erzeugte, Kind:* पञ्चसप्त° Bhâg. P. 9,6,52. — 8) *das angeborene Wesen, Natur* (स्वभाव, आत्मन्) AK. H. 1376. H. an. Med. Vaiç. इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः Bhag. 5,19. — 9) *Beschluss, fester Vorsatz, — Wille;* = निश्चय AK. H. an. Med. Vaiç. = उत्साह H. an. Med. Vaiç. — P. 1,3,38. गृह्णाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते Raghu. 3,51. 14,42. रणैकसर्ग adj. Çiç. 19,38. — 10) *Einwilligung* (अनुमति) H. an. — 11) = मोक्ष H. an. Med. — 12) etwa *Kriegsgeräth* (= रथादिनिर्माण Nîlak.): सर्गाणां चान्ववेक्षणम् MBh. 11,2165. — 13) *Kapitel in einem epischen*

Gedichte (aber nicht im MBh.) AK. Taik. 3,2,24. H. an. Med. Vaic. सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहम् sagt Krishṇa Bhag. 10,32 (*naturarum* Schl.). R. Gorr. 1,4,29. 7,93,10. — 14) = विसर्ग *der am Ende von Wörtern erscheinende Hauch* Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,33. fg. — सर्गेषु लोकेषु Kathop. 6,4 wohl fehlerhaft für स्वर्गेषु लो°. Vgl. अनिशित°, आदि°, गो°, त्रि°, प्रति°, भूत°, मरा°, रुद्र°, सङ्ग°, सार्गिक.

सर्गक am Ende eines adj. comp. von सर्ग. विचित्रार्थसर्गक so v. a. *hervorbringend* Sarvadarçanas. 49,10.

सर्गकर्तृ m. *Schöpfer:* ब्रह्मन् Mlan. P. 103,13. Davon nom. abstr. °कर्तृत्व Pāṇḍar. 1,1,51.

सर्गकृत् m. dass. Harīv. 7020.

सैर्गतक्र adj. *im Schuss dahinfahrend* ṚV. 3,33,4. 11.

सैर्गप्रतक्र adj. *hinschiessend, rennend* ṚV. 1,65,6.

सर्गबन्ध m. *eine Composition in* Sarga (*Kapitеln*), *ein episches Kunstgedicht:* सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते Kāvyād. 1,14. 13. Sāh. D. 559. Taik. 3,2,23. अ° adj. *nicht in Kapitel eingetheilt:* असर्गबन्धमपि पद्यकाव्यमुदीर्यते (z. B. Sūrjaçataka) Prasiddh. 19,*a*,6.

सर्ग्य (von 3. सर्ज्) adj. s. पाणि°.

1. सर्ज्, सर्जति *knarren:* शकटीरिव सर्जति ṚV. 10,146,3.

— उद् dass.: यत्तो पदुत्सर्जेत् TS. 6,2,9,1. Çat. Br. 6,8,4,10. 3,5,3, 17. तत्पयान: मुसमाक्तिमुत्सर्ज्यायात् 14,7,2,42. TS. 5,2,2,3.

— अभ्युद् *knarren hin zu d. i. zum Schaden von* (acc.): गृहान् TS. 6,2,9,1.

2. सर्ज्, सर्जति *erwerben* (सर्जने) Dhātup. 7,50. सर्जति धनं लोक: Durgāc. im ÇKDr.

3. सर्ज्, सृजति (विसर्गे) Dhātup. 28,121. सर्जितम् 2. du. AV. 5,30,3. सृजेघम्, सृजानै; ससर्ज, ससर्जिथ und सस्रष्ठ P. 7,2,65. Vop. 8,62. 77. 13,4. (यत्र) ससृज्यात्; समसर्जे, समसर्ज्महे, (या) समस्रिरे ṚV. 8,58,6. समसृग्रम् 9,97, 30. 10,31,3. समसृजानै; यमसर्जीत् P. 6,1,58. 1,2,11, Schol. Vop. 8,77. 13,4. सर्जीस्, यमसृजत्, यमसृग्, यमसृष्टम्, यमसृजि, यमसृत्महि, सृताथाम्, यमसृष्ट, यमसृजत 3. pl. यमसृग्रन् 3. pl. ṚV. 9,66, 11. 87,3. 88,6. यमसृग्रम् 1,9,4. 9,62,1. यमसर्जि, सृज्यति, सृज्यते; स्रष्टुम्, सृष्टा: pass. सृज्यते, सृष्ट. 1) (aus der Hand u. s. w.) *entlassen, schnellen, schleudern:* ein Geschoss ṚV. 1,39,10. 66,7. 71,3. AV. 1,13,4. 8,2,14. MBh. 3, 16461. 16519. ग्रामदग्र्याय 5,7185. 7290. R. 2,96,44 (105,43 Gorr.). 5,80,25. Rāgn. 11,44. Kathās. 18,14. Bhatt. 9,48. इन्द्रजित: शालस्कन्धम् MBh. 3,16455. पदा R. 3,56,50. सृष्ट 7,63,20. fg. वज्रो देवसृष्ट: Kāuç. 129. महाब्रह्मर्षिसृष्टा धिग्वाग्दण्डा: R. 2,35,13. — 2) *ausgehen lassen, auswerfen, ausgiessen, entsenden:* Regen ṚV. 1,38,8. 10, 98,6. AV. 4,13,6. TBr. 2,1,2,1. Ströme ṚV. 2,11,2. 15,3. 4,17,1. 7, 18,12. 8,3,10. वायुं सोमा यमसृजत 9,46,2. सोमा असृग्रन् 97,5. 66,11. die Stimme u. s. w.: गिर: 1,9,4. 181,7. Vājas. 4,9. इन्द्रे घोषा यमसृजत 8, 52,7. वि भा सूर्य: ससृजान: पृथिव्याम् *fundens* 7,8,3. सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्याय पातवे *sie werfen die Messschnur aus* 7,8. 8,32,23. 43,32. क्षेत्रा: 82,23. — यम्: Vārāh. Bṛh. S. 28,1. Z. d. d. m. G. 27,4. मोत्राभ्याम् R. 1,44,28. वर्षम्, मूलवर्षम्, पुष्पवर्षाणि, शरवर्षम् MBh. 3,12106. R. 3,79,4. 5,17,2. 58,8. दिगुत्सृष्टा — घानन्दशीतामिव बाष्पवृष्टिं हिमसृतिं हैमवतीं समसर्ज Rāgn. 16,44. नेत्रजं वारि R. 4,61,1. Rāgn. 8,35. Çiç. 89,8, v. l. Bhatt. 3,17. वाक्यं विषम् Harīv. 4473. Spr. (II) 3365. शकृन्मूत्रम् MBh. 1,2343. पुष्पपत्राणि पादपा: R. 2,95,8. धातुर्न रेणुं शैलराज: 3,79,31 (med.). अविभाव्यां गिरम् Spr. (II) 3586. Kumāras. 2,53. घोरान्स्वरान् R. 3,64, 15. 6,14,32. सदृशीं वाणीम् Kathās. 18,217. तस्मै ब्रह्माणी: समृजे पुरस्तात्सप्तर्षिभि: Kumāras. 7,47. दिशामुपान्तेषु दृष्टिम् *richten auf* 3,69. पद्मावतीसृष्टदृत *entsandt* Kathās. 17,153. — 3) *rennen lassen:* Rosse u. s. w. (vgl. *lancer*) ṚV. 4,26,5. 6,32,5. 9,13,6. 64,10. सृजानो घत्यो न सर्वभि: 76,1. घाजी 97,20. Wagen 92,1. *nach —, auf Etwas:* पवित्रमृतस्य 95,2. med. *sulaufen, zueilen auf, s'élancer:* यानि स्वर्नान्यसृक्षत धीरा: Vājas. 11,6. — 4) *loslassen, befreien:* गव्यम् ṚV. 5,34,3. 6,48,11. AV. 8,2,7. संनह्यति, सृजति Kauç. 90. द्वारम् *öffnen* 29. *ausgehen lassen, veröffentlichen;* med.: संपातान् Ait. Br. 6,18. — 5) *fahren lassen, aufgeben:* प्रारब्धं न सर्जन्ति (l) Pāṇḍav. 200,21. असृष्टसमाधि adj. Daçak. 67,7. — 6) *Fäden ausziehen* und *drehen: spinnen* (eine Schnur u. s. w.): रज्जुम् TS. 2,5,6,7. यद्योर्णानाभि: सृजते गृह्णते च Mund. Up. 1, 1,7. स्तुकासर्ग (absol.) सृष्टा भवति (मेखला) *ist wie ein Zopf geflochten* Çat. Br. 3,2,4,13. प्रसलवि ebend. 13,8,4,20. Çāṅkh. Çr. 17,2,10. Kauç. 107. *Zauber spinnen:* यत्ते द्रामिर्धाता च सर्जत: AV. 5,30,5. सृजति मालां मालिक: *windet einen Kranz*, aber सृज्यते (यमसृजि) सत्रं भक्त: *für sich zu einem frommen Zweck* Vop. 23,33. P. 3,1,87, Vārtt. 3. 6. Dhātup. 26, 69. — 7) (*aus sich entlassen;* vgl. सम्-कृ) *erschaffen, erzeugen, hervorbringen;* med.: सृष्टी: AV. 13,1,25. 2,29,7. 3,28,1. 8,5,14. 11,3,53. 19,53,6. 10,7,8. यथैव संसृजे घोरम् 19,9,3. Ait. Br. 4,28. प्रजा: TS. 2, 5,7,1. Ait. Br. 3,36. यज्ञम् Çat. Br. 1,6,2,4. 2,2,4,11. 5,2,11. लोकान् 6,1,2,5. 10. पाप्मानमसृति 11,1,6,9. छन्दांसि 3,6,2,5. स्त्रियम् 14,9,4,2. Ait. Up. 1,1. 2. Taitt. Up. 2,6. Çvetāçv. Up. 4,5. Maitrājop. 2,6. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,72. 86. MBh. 1,4165. Harīv. 50. 10634. R. 1,16,7. 6. 54,17. Mārk. P. 46,17. Bhāg. P. 2,4,6. 3,12,39. 13,42. 6,16,9. 9,24, 55. Pāṇḍar. 1,14,55. Bhatt. 3,13. पुत्रेण शकता चैव सैन्येन समृजे नदीम् Harīv. 6444. act. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,93. 98. Mudr. ST. 4,299,3 v. u. M. 1,8. 22. 23. 32. fgg. 36. 74. 94. 7,3. 14. 9,315. इदं शास्त्रम् 11, 243. Bhag. 4,7. MBh. 1,7692. R. 1,16,9. 54,20. 60,20. fg. 2,110,4. Spr. (II) 807. 1696. 2297. 7163. यपराजा देवता: सृजन्ति — उत्पातान् Varāh. Bṛh. S. 46,4. Mārk. P. 16,31. Bhāg. P. 1,2,30. 3,36. 8,16. 10, 24. 2,9,33. 10,10. 3,9,33. 26,5. 4,6,44. 7,14 (यमसृग्). 8,43 (समसर्ज). 24,73 (मिसृक्षम्). Vedānt. (Allah.) No. 39. Sarvadarçanas. 120,22. कुत्तेर्नीलोत्पलानां वनमिव ककुभामसृजत्सृजे सृजत्त: Prab. 78,15. सृष्टा Taitt. Up. 2,6. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,72. 140. M. 1,51. 9,327. Bhag. 3, 10. स्रष्टुम् R. 1,60,22. 7,63,32. pass.: भूतान्यसृज्यन्त VS. 14,28. M. 1,28. MBh. 1,7689. सृष्टि *erschaffen* H. an. 2,101. fg. Med. ṛ 30. AV. 19,2,28. M. 1,41. 5,30. 39. 7,35. 8,413. 9,96. MBh. 3,6098. 13,212. R. 1,16,7. 3,69,20. Spr. (II) 1038. 2227. 6527. 7164. Varāh. Bṛh. S. 72,1. Kathās. 30,123. Bhāg. P. 2,20,11. 3,31,37. 4,7,32. 9,8,21. 18,12. सृष्टवत् M. 1,61. — 8) *schaffen* so v. a. *herbeischaffen, verschaffen, zukommenlassen, verleihen:* यत्रानो निचयं सर्वं सृजस्व शबले R. 1,52,24. आयु: कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च। पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिन: Spr. (II) 992. तावद्भवति जीवितम्। यावद्दाता पुरासृजत् 3467. सृजाम्यनर्घं ते Kathās. 28,171. समृजे यस्य — दैवतै: रसिद्धि: Rāja-Tar. 4,362. मायाप-

स्रादिशित्यानि पित्रा सृष्टानि मे पुरा Kaṭhās. 29,42. Bhāg. P. 3,31,19. 11,5,8. — 9) *anwenden, gebrauchen:* वसिष्ठविक्तिं वृद्धिं वित्तविवर्धिनीम् M. 8,140. सर्वोपायान् 7,214. Rāǵa-Tar. 4,135. वस्त्वन्तरं किमपि 2, 52. — 10) *hängen —, befestigen an:* स्कन्धदेशे ऽसृक्कस्य स्रजम् MBh. 3,2218. wohl fehlerhaft für ऽसक्तात्. Vgl. अव-सर्ज् 6), व्यव-, समव- und समा-सर्ज्. — मत्यक्ति MBh. 13,7447 fehlerhaft für स्प्रत्यक्ति, wie die ed. Bomb. liest. — 11) das partic. सृष्ट hat noch folgende besondere Bedd. a) *verbunden mit;* = युक्त H. an. 2,101. Med. ī. 30. तिलसृष्टं (so ed. Bomb.) न चाश्नीयात् MBh. 13,5023 (तिलसृष्टं ed. Calc.). *voll —, erfüllt von;* = बकुल AK. 3,4,9,41. (सृष्टं oder सृष्टा st. सृष्टि zu lesen). = प्रचुर H. an. = प्राप्त Med. सृष्टा गौरैः केदारपांसुभिः *bedeckt mit* R. 3,19,4. रोहिणा कर्मणा *erfüllt von* so v. a. nur *daran denkend* Spr. (II) 6021. कृतेन तेन महता (बलेन) R. 3,60,32. — b) *fest entschlossen zu* vgl. सर्ग 9), = निश्चित AK. H. an. (निभृत fehlerhaft). Med. वनवासाय R. 2,30,29 (= निश्चित Comm.). 40,4 (= अनुमत Comm.). — c) = भूषित Aṇṇa im ÇKDa. — d) सृष्टानुवाकलावण्यम् Mālav. P. 18,52 vielleicht fehlerhaft für स्पृष्टा तु वा°. — Vgl. देवसृष्ट, प्रजायति°, शक्र°.

— desid. सिसृक्षति P. 7,2,75, Schol. 1) *zu schleudern beabsichtigen:* नाराचान् Harīv. 3066. — 2) *zu schaffen beabsichtigen;* med.: प्रजाः Kāṭy. 9,17. 13,7. act. Bhāg. P. 1,6,31. 10,22. 3,6,33. 9,36. — Vgl. सिसृता fg.

— अति 1) *über Etwas hin —, vorbei gleiten:* सृजानमत्ति मेध्यः RV. 9, 8,5. पवित्रम् 10,7,25. — 2) *hinüberschaffen:* षड्गान् Āçv. Ça. 2,3,9. fgg. °सृष्ट *fortgeschleudert* Kauç. 90. — 3) *vorübergehen lassen, loslassen; beurlauben, erlauben;* act., seltener med. AV. 4,16,6. 10,5,15. 15,12, 2. fgg. (vgl. Āpast. 2,7,15). 16,1,1. fgg. Ait. Br. 3,42. यो प्रणयेत्यतिसृजेत् Āçv. Ça. 1,12,13. 5,11,1. Gobh. 3,10,8. अति तं सृजते यो ऽतिसृज्यः Çat. Br. 1,9,3,2. ब्रह्मणातिसृष्टः 12,6,4,38. Liṭ. 1,8,10. RV. Prāt. 15,13. Kauṣ. Up. 1,2. *Jmd von Etwas befreien, entbinden;* mit doppeltem acc.: अति मा सृजेनम् (वरम्) Kaṭhop. 1,21. *aufgeben, fahren lassen:* कामान् 2,3. — 4) *zukommen lassen, verleihen, gewähren, schenken* MBh. 4,331. वृत्तिं हितायातिसृजेत् 13,2450. अतिसृज्य (= प्रतिज्ञाय Comm.) ददानीति R. 2,18,33. Mṛicch. 173,4. राघवाय तनयाम् Raghu. 11, 48. 12,27 (s. Corrigg.). Vikr. 15. Bhāg. P. 3,20,50. — 5) med. *darüber —, als etwas Höheres erschaffen* Çat. Br. 14,4,3,23. 26. — Vgl. अतिसर्ग fg. — caus. med. *sich Erlaubniss (Urlaub) erbitten bei* (acc.): उपविष्टमतिसर्जयेत Āçv. Ça. 1,12,11. 2,3,10.

— अभ्यति *vorbeilassen* AV. 10,5,15. 16,1,5.

— समति *Jmd entlassen, verabschieden* Kāṭh. Up. 1,11,3.

— अनु 1) *entlassen, entsenden:* सूपः RV. 10,66,5. *aus der Hand —, loslassen* Çat. Br. 3,6,3,19. 9,3,7. 4,1,4,17. 4,3,21. Çāṅkh. Ça. 17, 13,11. — 2) *überlassen, schenken* R. 1,75,12. — 4) *hinterher —, nach einander schaffen,* med. und act. MBh. 12,7334. Bhāg. P. 3,5,47. 6,9, 24. 10,10,31. *schaffen nach* (acc.): मूलान्यन्यमृतत्सप्त दत्तादीस्तु प्रजापतीन् MBh. 10,774. Çat. Br. 6,1,3,20. अनुसृष्ट nach Manu. *nach einander geboren* (Gegens. संसृष्ट) VS. 24,16. — Vgl. अनुसृष्टि.

— अभ्यनु *in Erfahrung bringen:* °सृज्य Harīv. 1440 nach der Lesart der neueren Ausg. statt °सृत्य der älteren.

— अप, °सृष्टा रणाद्विरात् so v. a. *zogen sich zurück von* R. 7,32,45.

— Vgl. अपसर्जन.

— व्यप *schleudern:* नाराचान् MBh. 8,2717. *abwerfen:* वासः 3,16164.

— अपि *darauf werfen, hinzufügen:* einen Soma-Stengel TS. 3,2, 2,1. 6,4,4,4. 6,9,1. पवित्रे प्रस्तरे Çat. Br. 1,3,3,44. उत्मुकम् 2,4,3, 24. तृणं बर्हिषि 3,2,4,14. 5,3,3,21. *beimengen:* गोषु गाः Liṭ. 3,3,4. घाज्ये 3,3,14. 9,12,12. med. 6,17.

— अभि 1) *ausgiessen für* (acc.): अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु RV. 1,19,9. 3,45,22. एते वामभ्यसृक्षत सोमाः 1,135,6. *zum Zwecke von* (acc.): सौभगा 3,62,1. 63,15. *in oder auf Etwas:* कलशान् 88,6. 106, 12. 10,98,5. AV. 4,27,4. Ait. Br. 3,7. — 2) *loslassen zum Lauf u. s. w.:* ते देवा अभ्यसृज्यन्त Çat. Br. 4,1,3,5. 14,1,1,12. (अग्नेः) सोमधीरभिसृष्टः RV. 10,91,5. Ait. Br. 2,25. 4,5. °सृष्ट *dem man gewähren liess, dem man die Erlaubniss zu Etwas gegeben hat* R. 5,60,6. — 3) *entlassen, von sich geben:* वाचा — अभिसृष्टया Harīv. 4480. — 4) *überlassen, hingeben, gewähren, verleihen:* तेनाभिसृष्टाः — ग्रामा रोते — पूजार्थमभ्यसृक्षस्य R. 1,9,63 (61 Gorr.). R. Gorr. 2,17,15. 33,48. 78,22. ईशाभिसृष्टं दुःखं सुखं वा Bhāg. P. 5,1,15. अभिसृज्याभिषेकं ते पुनः प्रत्यवगृह्णता so v. a. *zusagen* R. Gorr. 2,20,15. वरद्वयम् 34,22. अभिसृष्टं पुरा राज्ञो भर्तृतो वरम् 23,30. भरतायाभिसृष्टाः स्म पित्राय पशवो यथा *anheim —, in die Gewalt gegeben* 45,29. — 5) *losgehen auf Jmd, anfallen:* प्राणा स्त्रियमभ्यसृक्षत् Çat. Br. 14,9,4,2. — Vgl. अभिसर्ग (in den Nachträgen) und °सर्जन.

— अव 1) *schleudern, abschiessen* (Pfeile, Blitze u. s. w.); *ausschütten* RV. 4,27,3. 6,73,10. 7,46,3. AV. 1,3,9. 4,6,7. TS. 6,2,8,2. वाक्सायकान् Spr. (II) 6018. वृष्टिम् RV. 5,62,3. Kaṭhās. 46,91. सम्भृणि *Thränen vergiessen* R. 7,68,3. Bhāg. P. 10,46,28. वीर्यम् *seinen Samen entlassen* 9,20,36. शम्भु बीजम् *hineinwerfen —, hineinthun in* M. 1,3. समुद्रे मत्स्यम् MBh. 3,12769. अवसृष्ट *herausgestossen, herausgedrängt* (aus dem Mutterleibe) Bhāg. P. 3,31,23. पादनखावसृष्टमम्भः *herabgeträufelt* 1,18,21. तद्वरणावसृष्ट *herabgefallen* 4,4,16. — 2) *loslassen, freigeben; fahren —, fallen lassen; hingeben, überliefern:* सर्तवे सिन्धून् RV. 2,12, 12. अपो यद्वो समुद्रम् 6,30,4. 1,24,13. गाः 6,43,3. पशुरवसृष्टः 10,4,3. 28,11. 65,12. 91,14. 108,3. अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियः 1,151,6. 174, 4. AV. 5,27,11. VS. 20,45. मा नो अग्ने अव सृजो अघायाव RV. 1,189,3. 2, 3,10. रुविः 1,13,11. AV. 4,26,1. Kāṭy. Ça. 6,3,5. Liṭ. 4,3,14. Gobh. 3,10,35. Kauç. 14. Ait. Br. 4,13. प्राणान् *seinen Geist aufgeben* MBh. 12,85. क्रोधम् 5,1322. वैरम् 6,3848. *schenken, gewähren:* प्राणानवसृजामि ते MBh. 3,2052. — 3) *entsenden, entlassen:* सुपेशसं मावं सृजन्त्यस्तम् RV. 5,30,12. वक्तुम् 10,85,12. AV. 14,2,32. fg. TS. 2,4,3,1. अवासृजन्त जिह्मयो न देवाः *abgedankt hatten die Götter wie Greise* RV. 4,19,2. अवासृजः प्रस्वः *entbinden* 10,138,2. AV. 1,11,3. — 4) *ablösen* so v. a. *nachlassen, vergeben:* अव द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नः RV. 7,86,5. — 5) *hervorbringen, erzeugen, bilden:* वातं व्यजनेन Harīv. 7057. रैममाणम् Bhāg. P. 3,20,14. — 6) *hängen —, befestigen an:* गुरौ यो मे मृतसर्पमवासृजत् MBh. 1,1973. wohl fehlerhaft für सवासृजत्; vgl. सर्ज् 10), व्यव-, समव- und समा-सर्ज्. — Vgl. अवसर्ग fg. und हृदावसृष्ट. — caus. partic. अवसर्जिता nach dem Comm. = विसृष्टवती (sc. माम्) *verlassen —, im Stich gelassen habend* R. 7,50,23.

— अत्यव *loslassen, die Freiheit geben:* धेनुं सवत्साम् R. Gorr. 2,83,37.

— अन्वव 1) *entlassen nach — hin:* वातं प्राणमन्ववसृजतात् TBa. 3, 6,6,2. रुद्रं प्रजा अन्ववसृजेत् TS. 6,5,6,3. — 2) pass. *in's Leben treten nach* TS. 7,1,1,1. 2. — Vgl. अन्ववसर्ग.

— अभ्यव 1) *entlassen —, entsenden nach:* समुद्रम् AV. 16,1,6. *hinschleudern:* शरम् MBh. 7,5082. अस्त्राणि R. Gorr. 1,55,23. — 2) *loslassen, schiessen lassen:* स्वरश्मीन् MBh. 12,8395.

— उपाव 1) *losschiessen* TS. 6,4,11,3. — 2) *geben lassen zu* (dat.), *zulassen:* मात्रे वत्सम् TS. 1,7,1,3. 6,3,3. उपावामाक् 11,3. TBr. 2,1, 1,3. Ait. Br. 5,27. Çat. Br. 1,5,3,20. उपावसृष्ट heisst daher auch *die Milch der Kuh zu der Zeit, wo das Kalb zugelassen wird* (vgl. उपसृष्ट), Ait. Br. 5,26. — 3) *befördern zu, übergeben an* (acc.) RV. 1,142,11. घर्वं सूदाय देवान् (कविः) 2,4,10. 10,110,10.

— न्याव *aus sich entlassen in* (loc.): रेतः कुम्भे R. 7,56,21.

— प्रत्यव 1) *schleudern auf* (loc.): शक्तिं दैत्येन्द्रे Harıv. 13321. — 2) *wieder überlassen* Çat. Br. 4,5,4,7.

— व्यव 1) *schleudern auf* (gen.): शैलशिखरम् MBh. 3,14233. — 2) *niedersetzen:* कलशम् MBh. 3,10428. — 3) *entlassen, wegschicken:* देवताः Çat. Br. 1,9,3,27. 4,3,4,26. 4,4,5. 5,2,3,28. — 4) *vertheilen, spenden* P. 5,4,2. — 5) *hängen —, befestigen an:* सव्यमस्य धनुः कण्ठे व्यवासृजत (wohl °सज्जत zu lesen; vgl. सर्ज् 10), व्यव-, समव- und समा-सर्ज् MBh. 8,969. — Vgl. व्यवसर्ग.

— समव 1) *schleudern:* शरवर्षं किरातं MBh. 3,1586. — 2) *loslassen, seinem Schicksal überlassen:* (नदीं) स्थलस्थं तमृषिं कृत्वा विषादं समवासृजत् MBh. 1,6749. (तम्) बल्मीकरुपे परिक्षिप्य गङ्गायां समवासृजन् 4205. — 3) *weglassen* Ait. Br. 4,18. — 4) *aufbürden:* गुरुं भारं सौभद्रे समवासृजत् (wohl °सज्जत् zu lesen; vgl. सर्ज् 10), अव-, व्यव- und समा-सर्ज् MBh. 7,1518. — Vgl. समवसर्ग्य, समवसृज्य.

— आ 1) *herschiessen:* यस्तेव विध्य दिव आ सृजानः RV. 10,89,12. — 2) *giessen auf, in, begiessen; einschenken:* सोमं पवित्रे RV. 9,16,3. 62,21. आ यो गोभिः सृज्यत घोषधीषा 84,3. 95,1. इमेन सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय 1,9,3. — 3) *zulassen zu* (loc.): अग्निर्वन आ सृज्यमानः RV. 9,88,3. सत्यो न कंदो दरिरा सृजानः *equus admissus* 97,18. — 4) *verzieren mit* (instr.): आ रुक्मैरजरैरसृजत RV. 5,52,6. — 5) *herbeischaffen:* आसृज यागाः Kâṭy. Çr. 18,4,9.

— अध्या *herlenken auf:* आ कार्यः समस्मिरे ऽरुषीरधि बर्हिषि RV. 8,58,5.

— उपा *richten an* RV. 8,27,11.

— समा 1) *anhängen, befestigen an* (loc.): तस्य राज्ञा धनुष्कोट्या सर्पं स्कन्धे समासृजत् (richtiger °सज्जत् ed. Bomb.) MBh. 1,1699. चीरमेकं स्वस्मिन्स्कन्धे समासृजत् R. Gorr. 2,37,12. स्कन्धे मृतं समासाद्योत्पवगम् (wohl °साङ्गीत् zu lesen) MBh. 1,1703. — 2) *Jmd* (loc.) *übergeben* Harıv. 6434 (wohl °सज्जत् zu lesen). पुत्रे राज्यं समासृज्य (v.l. °सज्य) M. 9,323.

— उद् 1) *schleudern:* बाणान् u. s. w. MBh. 5,7045. 7,5852. 14,2308 (wohl अर्जुने zu lesen; अर्जुनः ed. Bomb.). Bhaṭṭ. 14,45. कालोत्सृष्टा प्रज्वलितामिवोल्काम् MBh. 5,7208. वज्रम्, वाग्वज्रम् R. 2,103,2. बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टा (als Geschoss gedacht) Spr. (II) 1350. शापम् MBh. 13,335. क्रोधम् R. 1,21,7 (22,7 Gorr.). मयि 64,3 (med.). — 2) *ausgiessen:* रुकाञ्जलिम् Âçv. Gṛhy. 4,4,10. *aus sich entlassen, von sich geben:* वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च Bhag. 9,19. गर्भम् MBh. 13,4078 (med.). बाष्पम् *Thränen vergiessen* MBh. 3,2706. 2949. 5,6049. R. 2,72,23. नेत्राभ्याम् R. Gorr. 2,111,12. वारिषम् Spr. (II) 775. दिग्दन्तिणा गन्धवहं मुखेन व्यलीकनिःश्वासमिवोत्ससर्ज Kumâras. 3,28. पुरीषम् Pâraṇ. 102,1. Sarvadarçanas. 39,13. मूत्रश्लेष्मपुरीषाणि वारिणि Mânn. P. 14,79. मेरुर्धातुम् MBh. 5,7153. सकृन्नरगुणमुत्सृष्टुमादत्ते हि रसं रविः Rasn. 1,18. गङ्गायां तेजः (*semen*) R. 1,38,11. *so v. a. ertönen lassen:* उच्चैः स्विष्टकृतमुत्सृजति TBr. 1,3,4,6. वाचम् Çâṅkh. Çr. 5,9,28. 18,1,2. गिरं मन्दाम् MBh. 13,24. — 3) *Etwas abwerfen, fortwerfen, ablegen, fahren lassen* (aus der Hand): सर्वगात्रेभ्यो भूषणानि MBh. 3,2301. 17,20. R. 2,8,1. Rasn. 4,54. वासांस्याभरणानि च MBh. 3,8577. धनुः 5,7237. 7,9288. शस्त्रं दूरतः R. Gorr. 1,57,24. Mṛicch. 18,21. Rasn. 3,60. मूलमुत्सृज्य कस्माच्छाखास्विच्छसि लम्बितुम् R. Gorr. 1,60,3. 2,74,10. Vikr. 70,3. 94. रात्रौ स्वपितुम् MBh. 3,452. उत्सृज्य फलपत्राणि पादपः 13,268. *abnehmen:* वैदेह्या भारम् R. Gorr. 2,116,8. *absetzen —, niederlegen —, hinwerfen —, aussetzen in, auf* (loc.): यत्तेत्रे बीजम् M. 10,71. जले कुमारम् MBh. 1,2774. fg. ग्रामिणं भूमौ 6154. त्वमेवाकाशगा देवि (सरस्वति) मेघेषूत्सृजसे पयः 9,2388. गच्छने ऽग्निम् Spr. (II) 2537. श्मशाने मृतम् Verz. d. Oxf. H. 33,b,30. Spr. (II) 4938. भूमौ भूषणम् R. 4,5,19. Mâṇ. P. 22,23. 51,106 (med.). मयूरपृषतौ भवने Kâm. Nîtis. 7,14. गिरिं जलार्त्ते Bhâg. P. 3,6,30. नदीतोये शफरीम् 24,13. 24. शास्त्राणि परमब्रह्मविद्यायामुत्कावत् Amṛtânanda. in Ind. St. 9,24. *aussetzen* beim Spiel u. s. w. Âk. 3,4,12,49. — 4) *ausstrecken, ausbreiten:* बाहुपोत Kâṭy. Çr. 7,3,10. हस्तैकामञ्जलिम् Weber, Prâtiçâkhya 92. उत्सृष्टदीर्घोर्मिभुजैः Bhâg. P. 3, 13,29. वेलानिलस्पर्शोत्सृष्टधवपटाशम्: Râjat-Tar. 4,535. — 5) *herauslassen* (z. B. aus dem Stalle), *freilassen, freigeben, öffnen:* गवां गोत्रम् RV. 2,23,18. 6,17,6. 32,2. उत्रियाः 3,31,11. 39,4. 7,81,2. 10,67,3. Ait. Br. 7,16. दंसम् MBh. 3,2093. 2617. 2948. R. 3,7,23. Çik. 94,14. नीलं वृषम् Spr. (II) 1475. रासभं पवनेत्रेषु Pâraṇ. 224,4. *freilassen zum Opfer bestimmte Thiere* TS. 5,1,9,3. 2,5,3. Çat. Br. 3,3,2,19. 7,2,3. 5, 2,2,7. Âçv. Çr. 10,6,2. Gobh. 4,8,36. fg. Kâṭy. Çr. 4,10,2. 15,3,15. 24, 5,28. Pâraṇ. Br. 15,10,11. Jâṭ. 2,103. Rasn. 3,39. Bhâg. P. 3,8,3. व्यरोत्सृष्ट vom *Fieber befreit* Suçr. 2,412,12. — 6) *Jmd entsenden:* कुमारीपुरं ताम् MBh. 4,309. *Jmd entlassen, verabschieden* 13,1374. Spr. (II) 4888. पशमानमेव तदन्धुतापा नोत्सृजति *nicht entlassen aus so v. a. festhalten in* Ait. Br. 2,4. pass. *entlassen —, entbunden werden von* Çâṅkh. Çr. 1,15,18. 2,15,3. 3,14,14. — 7) *Jmd verlassen, im Stich lassen* M. 9,171. Jâṭ. 2,132. MBh. 1,6138. fgg. 3,2323. 2360. 2366. 2608. 2972. Spr. (II) 4055 (med.). R. Gorr. 2,6,3. 39,24. 59,13. 3,65,14. 5,1, 74. Suçr. 1,290,12. Vaṇîn. Bṛn. 24 (22), 3. Bhâg. P. 4,29,61. einen Kranken (*aufgeben*) Suçr. 2,514,11. *Jmd übergehen, verschmähen, nicht beachten:* मया हि देवानुत्सृज्य वृतस्त्वम् MBh. 3,2976. Harıv. 1374. 7162. *Etwas verlassen, aufgeben:* फालकृष्टम् M. 6,16. प्राणम् MBh. 7,1685 (med.). संयमम् Mânn. P. 13,12. व्रतम् R. 2,55,22 (55,15 Gorr.). सत्तायोत्समनुवर्तान् 97,5 (106,3 Gorr.). तमावासम् 108,2. Rasn. 4,76. Spr. (II) 1220. 7224. Çik. 70. Kathâs. 11,46. Prab. 83,6. Râjat-Tar. 3,237. Bhâg. P. 1,18,6. 3,4,12. 8,11,16. 9,11,20. Pâraṇ. 170,24. तनुम् Jâṭ. 3,253. Bhâg. P. 1,6,3. 3,19,28. 5,8,30. 9,2. 9,13,6. प्राणान् Maitrâyaṇ.

6,11. संसारचक्रम् Mārk. P. 42,15. उत्सृजमान im Gegens. zu प्रयुञ्जान Śat. Br. 2,6,2,13. घनुतम् 9,5,1,13. Gobh. 3,5,17. Śāṅkh. Br. 8,2 (उत्सर्गम् absol.). न वादेयं समृद्धेऽपि सूक्ष्ममप्यर्थमुत्सृजेत् Spr. (II) 275. सर्वस्वम् 921. घनानि जीवितं चैव 3062. 7353. राज्यम् MBh. 12,537. Rāmat. 4,237. Prab. 52,2. Daśak. 84,13. Bhāg. P. 1,4,11. 2,1,13. वृद्धिम् so v. a. den Zinsen entsagen M. 8,144. शास्त्रविधिम् Bhag. 16,23. सत्यम् MBh. 1,4163. धर्मम् 3,11957. R. 2,81,7. 106,19. Spr. (II) 3707. त्रासम् Harīv. 11034 (S. 790). पशो दूरतः 11035 (S. 791). शोकम् R. 2, 34,24. R. Gorr. 2,109,51. 3,60,31. 64,21. 4,6,10. 46,17. Kām. Nītis. 5,29. Rāgat. 5,51. 6,46. 7,7 (= Kumāras. 7,58). Kumāras. 2,26. 5,86. Vikr. 37,8. Spr. (II) 2033. 4329. Vaitān. Bhāṣ. S. 3,13. Mārk. P. 24,3. Prab. 57,14. 85,2. Bhāg. P. 1,18,3. सङ्कीर्णकम् Spr. (II) 1737. धर्मिष्ठं वाक्यम् so v. a. nicht beachtend R. 5,96,2. weglassen, fortlassen: उत्सृष्टानुबन्ध H. 242, Schol. als unbrauchbar bei Seite liegen lassen, für unnütz erachten Vaitān. Bhāṣ. S. 106,2. so v. a. hinter sich lassen, übertreffen Mālatīm. 10,10. उत्सृष्ट = त्यक्त AK. 3,2,36. H. 1475. Hālis. 4, 39. — 8) auslassen; aussetzen, feiern, aufhören: घर्तः TS. 7,5,6,1. fgg. TBr. 1,3,8,6. स उत्सृष्टास्मः (so zu lesen st. उत्सृ° der Hdschrr.) Pāraśav. Br. 5,10,9. Śāṅkh. Śr. 13,10,1. die Feuer ausgehen lassen Kāty. Śr. 4,11,3. Śāṅkh. Śr. 3,21,11. das Lesen Kātj. 141. तृचान् Śāṅkh. Śr. 10,8,38. 18,1,19. 10,12. Ind. St. 3,433. — 9) Etwas austreiben, vertreiben: प्रघम् Śat. Br. 7, 5,2,39. — 10) herausgeben AV. 12,3,46. übergeben, überlassen: गां पुत्राय Bhāg. P. 9,1,42. तेनेयं मदयन्तिका मित्राय — यस्माभिरुत्सृज्यते (so ist zu lesen) Mālatīm. 172,13. fg. spenden R. Gorr. 1,13,42. 2,32,23. मानम् 3,3,6. — 11) hervorbringen, schaffen: सूनून् AV. 8,36,2. कुम्भारवोत्सृष्टाः पङ्क्त्वा यतशः R. 1,54,18. — Vgl. उत्सर्ग fgg., उत्सृष्टि, पुनरुत्सृष्ट (nach dem Comm. zu TS. 2,296 ein ausgemerzter Ochs; die erste Ausscheidung soll das Verschneiden, die zweite die Freilassung sein), राङुत्सृष्ट. — desid. 1) freilassen wollen: गाम् Pāṇ. Gaṇ. 1,3. — 2) zu verlassen gedenken: घङ्गम् Bhāg. P. 1,14,8.

— घनूद् entlassen zu — hin: तीं दिशम् TS. 5,2,8,4. घारण्यान्पशून्कुर्वम् ७,5.

— घभ्युद् schleudern auf (dat.): पाण्डवेभ्यः शस्त्रम् MBh. 7,3852. — desid. aufzugeben —, fahren zu lassen im Begriff sein: प्राणान् MBh. 12, 833.

— पर्युद् aufgeben, verlassen: स्वकर्म Müller, Sl. 51.

— व्युद् dass.: व्युत्सृत्य एतत्कृपणम् Bhāg. P. 4,4,23 — Vgl. व्युत्सर्ग.

— समुद् 1) schleudern: शरम् R. Gorr. 1,77,42. — 2) aus sich entlassen, von sich geben: नेत्राभ्यामानन्दजं जलम् R. 2,44,21. Z. d. d. m. G. 27,46. गर्भं मेरौ MBh. 13,4083. 4085. R. Gorr. 1,39,17. 7,56,17. शकृन्मूत्रम् Harīv. 4312. यप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं वा M. 4,56. 9,283. Jāān. 1,155. रक्तं पथि Bhāg. P. 9,2,7. चन्द्रकान्तमणिः पयः Mālatīm. P. 43, 48. नाडम् Harīv. 7516. — 3) Etwas abwerfen, fortwerfen, ablegen, fahren lassen Jāān. 1,134. MBh. 3,8844. व्यसनानि 8573. Harīv. 7039. धनुः MBh. 5,7166. 7,9237. 14,2278. Kathās. 23,258. पापं त्वचमिव MBh. 13,3171. मांसपिण्डम् Pāraśar. 226,33. niederlegen —, hinwerfen in (loc.) M. 4,56. घाश्रमे वा वने वापि ग्रामे वा यदि वा पुरे। घग्निम् MBh. 13,1687. घग्नौ 17,22. घन्नाद्यं भुक्तवतामघतः M. 3,244. — 4) freilassen, freigeben: सारूपिकाम् M. 8,347. MBh. 2,2461. 14,1665. — 5) verlassen, im Stich lassen R. 3,66,3. स्त्रीं सेनाम् 5,74,21. Etwas verlassen, aufgeben: पांसुशय्याम् Sūçr. 2,166,5. शरीरम् MBh. 3,8698. Prab. 80,15. प्राणान् MBh. 3,8750. प्रभौ समुत्सृजेदेकौ धूमकेतुस्तथोच्छ्रितम् 1,4162. कामक्रोधौ 2,2265. ईर्षादैन्यं पीतशेषमिवोदकम् R. Gorr. 2,27,9. सुखम् 33, 40. शोकम् Kathās. 6,22. Mārk. P. 63,60 (समुत्सृज्य zu lesen). — 6) verabfolgen, geben: तस्मै सक्तून् हे R. Gorr. 2,32,25. — Vgl. समुत्सर्ग.

— उप 1) schleudern: घथैत्याग्नेयमुपसृष्टेन ब्रह्मशीर्षा Bhāg. P. 1,12,1. — 2) darauf giessen, begiessen, strömen lassen: गोघस्थाम् ṚV. 8,36,6. 10,98,12. घपः VS. 11,38. TBr. 1,4,8,3. TS. 5,1,8,1. शालानग्निः Śat. Br. 3,9,3,26. 4,14. — 3) aussenden zu (acc.); hinlenken, befördern zu, bringen: उप हि वा कामान्मनः संसृजते ṚV. 8,87,7. 1,81,6. 2,35,1. 6,16,27. ब्रह्माणि 7,18,4. सर्गो इव सृष्टं सृष्टीरुपं 8,35,21. 1,180,6. उप पाथो देवेभ्यः सृज 188,10. स्तोतृभ्यो रातिम् 2,1,16. इषध्यै 6,20,8. 48,11. द्विजोपसृष्टः कुक्कुरस्तत्तनकः Bhāg. P. 1,19,15. 4,25,30. — 4) zulassen (das Kalb zur Mutter und umgekehrt) ṚV. 8,61,7. वत्सो न मातुरुपं सर्जूधनि 9,69,1. VS. 8,51. TBr. 2,1,2,1. Śat. Br. 11,5,2,3. 1,7, 4,10. घग्निहोत्रीम् Śāṅkh. Śr. 2,8,1. Liṭ. 1,6,27. Daher उपसृष्ट auch von der Milch zu der Zeit wo das Kalb zugelassen wird TBr. 2,1,2,1. Kāty. Śr. 25,2,8. ungenau wie oben उपाघसृष्ट. — 5) anfügen, hinzusetzen; vermehren: उपसर्गान् Ait. Br. 4,4. याज्यां ब्रपेनोपसृजेत् Āçv. Śr. 1,3,15. उपसृष्टासु देवतासु wenn die Gottheiten mit ihren Eponymen (गुण) versehen sind Śāṅkh. Śr. 1,17,3. 6. 18,1,10. mit einer Präposition versehen Nir. 1,17. 4,23. AV. Paipp. 4,36. P. 1,4,59. स्वराग्युपसृष्ट, स्वराग्यसोपसृष्ट Vārtt. zu 1,3,64. — 6) behaften —, heimsuchen mit; plagen, hart mitnehmen: पाप्मभिः Śat. Br. 14,4,2,7. सापदेरुपसृष्टानि दुर्गाणि MBh. 3,8461. M. 4,61. मयोपसृष्टं कृपणं मलाक्षये R. 3,25,8. 5, 36,70. R. ed. Bomb. 6,95,39. Bhāg. P. 1,16,22. 10,76,23. तुलाऽऽद्याम् 3,20,20. 31,7. रोषेण 4,11,32. व्याध्युपसृष्ट Sūçr. 1,3,5. 40,1. 3. योनिरोगोपसृष्ट 290,15. Rāgat. 8,93. कामोपसृष्ट Bhāg. P. 4,7,28. कालोपसृष्ट 12,10. 10,83,4. उपसृष्टं मे नक्षत्रं दारुणैर्ग्रहैः R. Gorr. 2,3,18. घादित्य (sc. राकुणा) so v. a. verfinstert M. 4,27 = MBh. 13,1971. गणेशेन so v. a. besessen Jāān. 1,271. भूतोपसृष्ट R. Gorr. 2,58,24. 60,1. तेभ्यस्तेभ्यश्च कर्मभ्य उपसृष्टः so v. a. sich abplagend mit Mārk. P. 40,5. सुखं दुःखोपसृष्टम् behaftet —, verbunden mit Spr. (II) 2635. — 7) in Contact kommen mit (acc.): वातः ग्रीष्माणमुरुःस्थमुपसृज्योपशोषयन् Kāraṇḍ. 2,6. — 8) hervorbringen, bewirken: उपसृज्य तमस्तीव्रम् Bhāg. P. 4,19,19. — 9) zu Nichte machen: उपसृष्टम् = घस्तं गतम् (Comm.) Bhāg. P. 3, 15,42. — Vgl. उपसर्ग fg. — caus. aussenden, entsenden: तत्कात् — द्विजपुत्रोपसर्जितात् Bhāg. P. 1,12,27.

— निरुप, partic. °सृष्ट (निस् + उ°) so v. a. निरुपसर्ग unbeschädigt: घङ्कुर Vaitān. Bhāṣ. S. 21,17.

— नि, partic. °सृष्ट 1) geschleudert: शराः शत्रुसैन्येषु R. 3,31,17. द्रुम Harīv. 6650. शैलनिसृष्टवज्र geschleudert gegen Bhāg. P. 3,28,22. घप्णोरवलोकः 31. — 2) freigelassen —, gegeben: न स्वामिना निसृष्टो ऽपि ब्रह्मो दास्याद्विमुच्यते M. 8,414. entlassen, verabschiedet MBh. 1,7563. — 3) ermächtigt M. 2,205 (घ°). वनाय in den Wald zu ziehen R. Gorr. 2,30,35. — 4) = न्यस्त AK. 3,2,38. angelegt: घग्नि Bhāg. P. 1,13,22.

— 5) *anvertraut:* यस्मिन्निमृष्टा ऽर्कं त्वया धातरि R. 2,77,6. — 6) *übergeben, verliehen:* राज्य Harıv. 4893. यस्या: सहस्रं ग्रामाणां निसृष्टमुपजीवनम् R. Gorr. 2,31,16. 35,47. Ragh. 13,67. Kathâs. 34,250. यन्मे त्वं काममेकं निसृष्टवान् *weil du gewährt hast* MBh. 3,15965. — 7) *verfertigt, gemacht:* मृद्दार्वयःकाञ्चनचर्मभिर्निसृष्टभाण्ड यज्ञनम् Bhâg. P. 4,4,6. — 8) = मध्यस्थ Trik. 3,1,16. — Vgl. निसर्ग, निसृष्टार्थ.

— प्रतिनि s. प्रतिनिसर्ग.

— संनि, partic. °सृष्ट *anvertraut:* इयं तु कन्या द्रुपदस्य राजस्तवानुजाभ्यां मयि संनिसृष्टा MBh. 1,7134.

— निस् 1) *hinausgiessen —, schütten, ausfliessen lassen:* Wasser VS. 5,11. ṚV. 1,51,11. 103,3. 10,124,7. — 2) *entlassen, befreien:* गा: ṚV. 10,8,8. 1,131,3. 10,62,7. यस्मृग्विरेनस: AV. 2,10,3. — 3) *trennen:* एकपदानि ṚV. Prât. 11,18. — 4) *wegschaffen:* प्रुचम् Çat. Br. 3, 3,3,8. 10,2,3,5.

— अभिनिस् *ausschütten gegen* (acc.) Çat. Br. 3,5,3,5.

— प्रतिनिस् *treiben gegen:* द्रुपाणि Çat. Br. 2,2,3,4. 5.

— विनिस्, partic. °सृष्ट *geschleudert:* मत्काधनुर्विनिःसृष्टै: शरै: R. 3,33,15.

— परा *spenden:* वित्तम् MBh. 8,1783.

— परि, partic. °सृष्ट *umgossen, umfangen:* परिसृष्टं धारयतु गर्भम् AV. 8,6,20. vielleicht परिष्विष्टम् zu lesen. °सृज्य Çiç. Cr. 78,5 fehlerhaft für °मृज्य. — caus. *vermeiden:* वियोगे दोषदर्शी य: संयोगं परिसर्जयेत् (स विसर्जयेत् ed. Bomb.) MBh. 13,934.

— प्र 1) *laufen lassen, entlassen* ṚV. 2,28,4. यप: 3,31,16. कबन्धम् 3,33,3. (रथ:) यसर्जि 6,63,7. Soma 9,17,1. 64,4. सर्गा: 7. धारा: 97,31. 98,2. 4. प्र वा नमोभिरिन्दव: सोमा यसृजत *hin zu dir* 16,3. Rosse 3, 32,6. इन्द्रियाणां प्रसृष्टानां कृपणामिव वर्त्मसु Spr. (II) 1118. पशून् Çat. Br. 6,4,4,22. 7,2,2,4. Pañcav. Br. 21,4,13. TBr. 3,8,19,2. वत्प्रसृष्ट von *dir entlassen* Kâṭhop. 1,10. क्रोधम् *dem Zorn freien Lauf gewähren* MBh. 3,1080. *senden zu:* प्र वेदमाष्टमभिमां सनेयु AV. 4,28,4. प्रसृष्ट so v. a. *ungezügelt* (= संकीर्णक्रिय Nîlak.) MBh. 8,2078. प्रसृज्यमाण *im Begriff seine Entlassung zu nehmen.* — *abzugehen* Âçv. Gṛhj. 3,10, 1. न तदक्: प्रसृज्येत *gehe nicht ab* Gobh. 1,5,28. Liṭ. 10,19,1. — 2) *ausstrecken:* प्र बाहू सिसाक् ṚV. 4,53,3. 4. — 3) *aufgeben, fahren lassen:* प्रसृष्टवैर Harıv. 4382 (प्रसृष्ट° die ältere Ausg.). मन्युरेष प्रसृष्टो (प्रमृष्टो die ältere Ausg.) कि भवेत् 7133. — 4) *ausstreuen, säen:* यदा प्रसृष्टा ओषध्यो न प्ररोक्ष्यन्ति ता: पुन: Mârk. P. 49,73. — 5) यो ऽनागसि प्रसृजति MBh. 2,856 so v. a. *anbinden* —, *Händel anfangen mit* fehlerhaft für प्रसजति, wie die ed. Bomb. liest. — 6) प्रसृष्ट R. 5,37,3 vielleicht fehlerhaft für प्रमृष्ट *abgewischt.* — Vgl. प्रसर्ग fg. — desid. *entsenden wollen* Çiç. Br. 27,1.

— प्रति 1) *dagegen schleudern:* शापम् Bhâg. P. 4,2,27. — 2) *heimsenden:* शकुन्तलाम् Çiç. 58,5, v. l. प्रतिसृष्ट = प्रेषित *gesandt* H. an. 4,63. Med. 1. 64. — 3) प्रतिसृष्ट = प्रत्याख्यात *verschmäht* H. an. Med.

— वि 1) *abschnellen, schiessen, schleudern* VS. 16,23. Pfeile Ait. Br. 1, 24. AV. 2,3,6. 5,90,3. मा वि स्रोष्टम् 11,21. मा वि स्रातो: (स्रती: Druckfehler) Çat. Br. 1,7,3,4. Kâṭh. 25,1. Śrâut. 3,2 (med.). MBh. 3,15655. 4,1836. पाण्डवं प्रति 7,3731. यस्मवर्षम् Harıv. 12767. शस्त्रं मुनौ R. 2,64,23. यस्मिन् नाराचम् R. Gorr. 2,66,15. 4,18,11. 5,20,30. Ragh. 9,73. 11,59. शस्त्राणि, वचांसि Spr. (II) 2577. प्रहसुनौ कृपाणम् Uttarar. 31,6 (41,3). वाग्वज्रम् Bhâg. P. 1,18,36. 3,18,15. 6,7,19. 9,5,8. Bhaṭṭ. 15,44. 55 (med.). चक्रे *geschleudert, geworfen unter* Bhâg. P. 7,9,23. यग्निं रतोभवनेषु R. 5,50,21. गिरित्राय शापम् Bhâg. P. 4,2,19. fg. *fortschleudern* 1,18,40. स्रष्टा भुवि 4,5,2. *richten auf:* नक्षत्रेषु चक्षु: Çiç. Ça. 10,21,11. उद्विग्नचपलकटाक्षविसृष्टदृष्टि adj. Mṛicch. 9,20. — 2) *Etwas strömen lassen, aus sich entlassen, entsenden* ṚV. 1,48,6. Flüsse 4,18,7. 19,3. 3,89,12. खानि 5,32,1. धारा: 3,1,3. पर्व: AV. 12,1,10. Rauch ṚV. 1,36,3. उल्का: 4,4,2. यग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् 10,31,3. 7,36,1. ग्रसतिम् 38,3. Çat. Br. 11,5,3,11. इन्दो यदिसृस्रहर्षम् R. 4,39,2. ब्रलदा यम्भ: Varâh. Bṛh. S. 21,24. 27. 28,17. 32,17. 104,46. शोणितम् MBh. 3,12129. गङ्गा विन्दुसर: प्रति R. 1,44,13. विषम्, क्रुधम् Spr. (II) 6233. वीर्यम् Bhâg. P. 2,10,13. Ait. Up. 3,3. 11. बाष्पम्, सम्रु, सम्रूणि *Thränen vergiessen* R. 2,23,12. 44,16. 62,10. Çiç. 89,8, v. l. Mâlav. 66,12. Daçak. 81,18. विसृजति — किंगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखै: Çiç. 34. med. *seinen Leib entleeren* Praçnop. 4,3. Laute von *sich geben, ausstossen,* med.: वाचम् Ait. Br. 1,23. 8,3. Âçv. Çr. 2,5,13. Çat. Br. 1,1,4,3. 2,4,3,6. Pañcav. Br. 26, 14,2. नादान् R. 5,61,1. act. MBh. 3, 551. R. Gorr. 2,66,27. 3,1,25. 26,26. 30,28. 51,20. Kâm. Nîtis. 3,22. Daçak. 83,19. Bhâg. P. 4,13, 29. 10,20,9. Vgl. विसृष्टवाच्. — 3) *Jmd loslassen, freigeben* Kaiṭ. Up. 6,14,1. Harıv. 4498. R. 3,24,6. 50,25. धेनुम् Ragh. 2,45. घातस्त्वानगान्यग्नून् Varâh. Bṛh. S. 48,31. Bhâg. P. 9,14,31. *ablösen:* सव्येभ्य: Pâr. Gṛhj. 3,7. med. *sich losmachen von:* वि वि सोतोरसृक्षत ṚV. 10,86,1. act. *Jmd fortschicken, fortjagen:* तीर्थयात्रायाम् Kathâs. 39,39. दुष्टपत्नीम् Pañcat. 200,4. वनाय Sin. D. 38,18. *Jmd entlassen* M. 3,258. MBh. 1,2895. 3,1317. 5,6078. R. 1,63,11 (65,17 Gorr.). 2,112,28. Kâm. Nîtis. 7,57 (Comm. विसर्ज्य caus.). Ragh. 2,9. 8,90. 11,57. 12,18. 14,19. Çiç. Cr. 90,5. Kathâs. 20,146. 22,253. 23,26. 43,234. 45,240. 62,128. Râjat. 4,603. Daçak. 66,4. संवेशाय Ragh. 1,93. पतिकुलम् Çiç. 58,5. निजं गृहम् Kathâs. 22,220. स्वदेशान् 122,8. भुवं स्वां स्वाम् Râjat. 4,414. *Jmd aussenden, entsenden* (insbes. einen Boten) R. 5,56,117. Kathâs. 13,68. 107. 21,47. 27,160. 42,34. 31. 44,126. 46,197. यटवीम् 20,229. 39,123. दूतान्दाशार्णे MBh. 3,7445. रघवे Ragh. 5,39. Çic. 9,69. Kathâs. 9,13. 13,33. 30,74. 45,90. gen. sg. dat. 4,43. 45,278. दुहितुर्निकटम् 24,66. तदन्तिकम् Râjat. 4,428. प्रामठे 6,223. *Jmd im Stich lassen, verlassen, verstossen* MBh. 12,4300. R. 4,9,71. Ragh. 14, 72. Varâh. Bṛh. S. 5,14. Bhâg. P. 1,16,24. 6,1,65. 9,20,29. विसृष्टात्मा सुहृत्सु so v. a. *das eigene Selbst nicht beachtend* R. 5,90,7. *Jmd übergehen* Mârk. P. 106,22. तैर्विसृष्टा: so v. a. *deren ermangelnd* Bhâg. P. 5,19,7. — 4) *Etwas loslassen, aus der Hand lassen* Kâṭj. Çr. 3,4,3. 9,4,30. 10,7. MBh. 14,2277 (med.). Buâc. 1,47. शफरी सरिज्जले *hineinsetzen in* Bhâg. P. 3,24,14 (med.). *ablegen, von sich werfen:* भूषणानि R. 3,60,9. Bhâg. P. 1,15,40. पूर्ववदेहान् Spr. (II) 6235. *fortwerfen* Bhâg. P. 1,19,13. *Etwas verlassen, aufgeben, entsagen:* पूर्वार्धविसृष्टतत्व adj. Ragh. 16,6. लोकमिमम् Bhâg. P. 5,8,26. राज्यं सह बन्धुभि: 9,2,15. वज्रश्रवाश्वोत्तम् 10,86,33. शरीरम् MBh. 13,1840. R. 5,26,26. Ghaṭ. 18. Mârk. P. 74,54. Bhâg. P. 1,9,31. 2,2,21. 3,20,41. प्राणान्

4,4,17. व्यसृजन्कवलासागाः R. 2,41,9. स देशः परराष्ट्राणि विसृज्याभिप्रवर्धितः (विमृज्य ed. Bomb.) MBh. 1,4350. घनार्यां मतिम् R. 2,21,43. चण्डताम् (so mit der ed. Bomb. zu lesen) Milav. 55. Spr. (II) 3882. 6234. 6664. Kumāras. 5,11. Bhāg. P. 2,2,15. 3,23,2. 4,20,18. 5,9,38. 10,84,38. med.: व्रतम् Śat. Br. 1,1,4,3. 6. 9,3,23. स्वाध्यायम् 3,4,3,5. सख्यानि Āçv. Gṛ. 6,12,12. भृत्यसेवाम् Bhāg. P. 7,9,28. — 5) *öffnen:* दृतिम् TS. 3,5,8,2. med. *ausstrecken, ausbreiten:* अङ्गुली: Śat. Br. 2,6,3,21. पत्राणि 10,2,3,1. — 6) *verbreiten:* सार्यो व्रता विसृजतो अधि क्षमि ṚV. 10,65,11. बहुधा विसृष्टा ओषधयो भवन्तु AV. 4,15,16. — 7) *beseitigen* TS. 5,1,6,1. विसृष्टा विसर्जनीयः Comm. zu TS. Prāt. 9,11. *Jmd Etwas erlassen:* उपचारम् Rāmāyaṇa-Tāp. 4,836. — 8) *übergeben:* वधाय त्वाम् R. 5,33,28. तामनलाय Raghu. 8,70. राज्यं सर्वं तस्मै MBh. 4,2317. R. 2,34,41. 5,31,20. Raghu. 18,6. प्रियेषु स्वेषु सुकृतमप्रियेषु च दुष्कृतम् M. 6,79. माधवे राज्यम् Harīv. 3240. Bhāg. P. 9,5,26. आत्मने भार्याम् 4,31,1. मयि दुःखानि R. 2,81,5. mit gen. der Person Uttarar. 86,16 (111,4). भृत्यानां रुक्मे Kathās. 37,37. *überlassen, abtreten, verleihen, geben, spenden* Kumāras. 3,3. R. 2,36,5. Kām. Nītis. 3,29. Raghu. 6,49. ed. Calc. 12,37. Kathās. 16,91. 31,71. न्यूनवर्णविसृष्ट *verliehen an* Mārk. P. 118,4. कामम् *einen Wunsch gewähren* MBh. 15,913. — 9) *schaffen, hervorbringen* M. 1,11. Spr. (II) 1708. Bhag. 9,7. MBh. 13,661. Pārāç. 9,11. Bhāg. P. 2,9,26. 3,20,22. 8,23,5. रजसा तमः 1,14,16. दूतस्य दण्डा बल्वो विसृष्टाः R. 5,48,5. यामेषात्मविसृष्टेषु *so v. a. gegründet* Raghu. 1,44. neben सर्ज् *so v. a. im Einzelnen schaffen* Muir, ST. 4,299, 3 v. u. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,93. प्रजाविसर्गं विविधं कथं विससृजे प्रभुः MBh. 12,6804. — Vgl. विसर्ग, विसर्जन fg., विसृज्य, विसृष्टि. — *caus.* 1) *abschnellen, schleudern:* Pfeile u. s. w. Āçv. Gṛ. 3,12,18. MBh. 3,12349. R. 3,34,7. Bhaṭṭ. 17,44. *richten* (den Blick): यत्र यत्र दृष्टा दृष्टिं व्यसर्जयत् MBh. 8,3167. — 2) *aus sich entlassen:* सूर्यो गाः MBh. 5,3302. तोयं घनाः R. 4,27,33. क्रोधमयं तोयम् 7,65,31 (mod.). *ausstossen* (einen Ton) Śat. Br. 3,2,3,5.7. — 3) *Jmd loslassen, frei geben* MBh. 1,4123. 7,6038. Harīv. 9794. Raghu. 3,20. तुरगमम् Milav. 71,1. *Jmd fortschicken, verbannen:* वनाय R. Gorr. 2,9,33. *Jmd entlassen* M. 3,265. 7,146. Jiān. 1,246. fg. 2,159. MBh. 1,6593. 7710. 3,1346. 2881. 5,6077. 7017. 7234. Harīv. 7979. 8469. R. 1,1,28 (21 Gorr.). 21,17. 2,112,30. R. Gorr. 2,58,4. 96,28. 4,24,39. 7,82,19. 95,16. 108,12 (med.). Kām. Nītis. 7,57 (nach der Lesart des Comm.). Rāmāyaṇa-Tāp. 3,92. Mārk. P. 31,59. 134,63. Pāraśar. 214,3. Bhaṭṭ. 8,125. गृकान् MBh. 14,1510 (med.). स्वमावासम् Mārk. P. 21,103. पूर्वस्थाने Rāmāyaṇa-Tāp. 3,182. *Jmd entsenden* (insbes. einen Boten) Harīv. 8641 (दूत्ये तौ च विसर्जये mit der neueren Ausg. zu lesen). R. 3,42,21. 4,43,63. Kathās. 3,72. 5,65. 18,194. Rāmāyaṇa-Tāp. 6,203. 343. Bhāg. P. 3,6,39. 10,23,4. तस्मै प्रतिहृतम् Kathās. 16,63. gen. st. dat. Rāmāyaṇa-Tāp. 3,248. तं प्रति 188. Kathās. 11,26. तत्पार्श्वम् 34,3. अयोध्याम् Bhaṭṭ. 2,42. *Jmd im Stich lassen, verstossen* MBh. 3,1360. 15,984. वने *aussetzen* Spr. (II) 367. — 4) *Jmd verschonen* MBh. 1,8362. — 5) *Etwas aus der Hand legen, ablegen, fahren lassen* MBh. 5,7303. R. 3,56,47 (med.). मौलिम् Raghu. 9,16. कंसदेशम् Harīv. 4770. *auflegen, auftragen* Ṛt. 6,13 bei Hall. *Etwas wegschaffen* Vaitān. Bhāṣ. 8.43,67. *Etwas verlassen, aufgeben, entsagen:* संयोगम् MBh. 13,924 nach der Lesart der ed. Bomb. क्रोधम् Spr. (II) 2490. कामान् 3192. *Etwas meiden:* वनम् MBh. 5,7476. — 6) *verbreiten, aussprengen:* वार्ताम् Rāmāyaṇa-Tāp. 6,270. — 7) *gewähren* Vaitān. Bhāṣ. 8.36,34. 56. *übergeben:* गौतमीकूस्ते Çiç. 31,11. *herausgeben:* तारामाङ्गिरसे Harīv. 1341. *fortgeben* MBh. 3,2591. — 8) *schaffen, hervorbringen* Bhāg. P. 3,5,21. — Vgl. विसर्जयतिव्य fg.

— धनुषि 1) *schiessen nach* Ait. Br. 3,26. Kāṭh. 34,3. Pāraśar. Br. 3,3,4. — 2) *senden entlang* (acc.): वि पर्जन्यं सृजसि रोदसी धनु ṚV. 5,53,6 (TS. 2,4,8,1 v. l.).

— अभिवि 1) *schiessen nach* Kāṭh. 25,3. देवलोकान्वैसर्जं नैरभिव्यमृजत 26,2. — 2) med. *Jmd* (abl.) *entziehen und in sich aufnehmen:* स यदास्माच्छरीरादुत्क्रामति वागस्मात्सर्वाणि नामान्यभिविसृजते Kauṣīt. Up. 3,4, v. l. (S. 131). fehlerhaft ist die Lesart S. 87.

— उद्वि *Jmd verlassen* Bhāg. P. 4,31,33.

— प्रतिवि *schiessen gegen:* प्रति स्पशो वि सृज ṚV. 4,4,2.

— संवि *Jmd entlassen* R. 4,38,2.

— सम्, ved. °मृज्रतात् angeblich = °मृजत P. 7,1,44, Schol. 1) *treffen mit:* सं वज्रेणासृजद्वृत्रमिन्द्रः ṚV. 1,33,13. — 2) *zusammenbringen, vereinigen:* das Kalb mit der Mutter ṚV. 1,110,8. 5,30,10. 9,104,3. 10,27,10. जायां पत्या 85,22. 27. Ait. Br. 3,1. यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि *in eine Hand bringt* AV. 4,24,7. 12,3,39. VS. 11,33. fg. हृदयानि TBr. 1,2,2,17. संसृजावहै *wir wollen uns verbinden* Śat. Br. 4,1,4,4. Kauṣīt. Up. 1,1,6 (pass.). pass. *in Berührung kommen:* तत्रापराणि दारूणि संसृज्यते परस्परम् MBh. 12,9262. (वायुः) संसृज्यते मरुद्भिः: Raghu. 5,69. सौमित्रिणा तदनु संससृजे 13,73. Kumāras. 7,74. Daçak. 86,12. fg. *eotre* AV. 12,2,39. संसृष्टुम् mit acc. dass. Rāmāyaṇa-Tāp. 3,429. — 3) *verbinden mit so v. a. begaben, theilhaft machen:* तं मा सं सृज वर्चसा ṚV. 1,23,23. fg. सुमत्या 31,18. गोभिः 3,15,4. राया 10,42,9. प्रजया 80,3. बलेन AV. 4,25,4. 3,14,1. 12,1,25. 2,32. पाप्मना Ait. Br. 1,16. Śat. Br. 4,3,3,15. 14,7,1,8. भिषामित्रान् AV. 11,9,12. VS. 20,22. ब्रह्मा रक्षः Ait. Br. 2,7. VS. 18,33. TBr. 1,4,3,4. भेदेनोपप्रदानेन संसृज्यैवोपघेस्तथा MBh. 12,3810. तम् — संभाषणादर्शनादिभिर्न संसृजेत् Caṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 96. pass. 88. — 4) *mischen, mengen;* med. pass. *untereinander gerathen, sich verwirren* ṚV. 1,6,6. मधुना मधूनि 10,34,6. TS. 1,1,8,1. VS. 19,1.7. zwei Feuer Ait. Br. 7,6. Śat. Br. 12,4,4,2. Kāṭh. Çr. 23,14,1. सं कि नाके व्रतानि सृज्यन्ते TS. 1,5,9,5. समेतस्य गृहे वाक्संसृज्यते 2,2. युधः *conserere* AV. 19,10,24. संसृष्टा स युध इन्द्रो गणेन ṚV. 10,103,3. इतराभिराकृतिभिः Śat. Br. 1,7,3,21. 3,6,1.7. 9,3,30. ज्योतिश्च तमश्च 5,1,2,17. घृतलोमभिः 6,5,3,4. चूर्णैः Kāṭh. Çr. 19,1,20. Suçr. 1,320,14. fg. act. st. med. *untereinander gerathen:* लाङ्गले Kauç. 106. तन्तू 107. — 5) *schaffen:* संसृज्य विश्वा भुवनानि Çvetāç. Up. 3,2. Mārk. P. 49,1. Bhāg. P. 3,9,35. — 6) partic. संसृष्ट = संगत H. an. 3,172. = संसर्ग Man. 1.56. = मुद्दं (संमुदं) वसनादिना (वमनादिना H. an.) H. an. Man. *a) gesammelt* ṚV. 10,84,7. *gemeinsam* VS. 24,18. *verbunden, in Verbindung stehend* TBr. 1,2,3,17. M. 1,36. Suçr. 1,45,7 (zwei humores). Kusum. 33,9. परस्परम् 34,9. भ्रातरः *Brüder, die ihr Vermögen zusammenlegen,* M. 9,212. 216. Jiān. 2,139. पूर्वसंसृष्टा भिक्षुकी *so v. a. in naher Beziehung gestanden* Verz. d. Oxf. H. 216,b,1 v. u. संसृष्टं ब्रह्मणा क्षत्रम् ver-

bunden —, in freundschaftlichem Verhältnisse lebend mit MBu. 3, 967. 973. धरण्यै: सह संसृष्टा ग्राम्याश्च मृगपक्षिण: Hariv. 12802. संसृष्टमसंसृष्टञ्च भाषते *so v. a. als Unbekannter spricht er in vertraulicher Weise* MBu. 12, 3841. °भाव *eine nahe Beziehung, Freundschaft* R. 4, 6, 14. संसृष्ट n. dass.: मद्रकेषु MBu. 8, 1845. *Am Ende eines comp. verbunden —, behaftet mit:* पित्त° (वायु) Suçr. 2, 175, 2. विण्मूत्रसंसृष्टकूपजल Verz. d. Oxf. H. 282, *a*, 22. स्वर° (व्यञ्जन) Comm. zu TS. Prât. 21, 1. शाप° R. 1, 27, 18. द्यूतव्यसन° (पुरी) 2, 51, 16. प्रस्थार° Bhâg. P. 4, 28, 12. वैश्रवणसंसृष्ट (so die neuere Ausg.) निधिम् *so v. a. gehörig* Hariv. 6551. — *b) gemischt, vermengt mit* VS. 11, 55. P. 4, 4, 22. धान्यदन्येन M. 8, 203. विषसंसृष्टमन्नम् R. 5, 47, 24. *beigemischt* Çat. Br. 1, 1, 2, 5. स्व° Âçv. Çr. 2, 3, 18. °कर्मन् *gemischte so v. a. mehrere Thätigkeiten bezeichnend* Nir. 3, 10. *gemischt so v. a. nicht von einer Qualität, sowohl gut als schlecht* Çat. Br. 4, 1, 5, 14. — *c) vollzogen, verübt:* °मैथुना Jâtâ. 1, 138. — संसृष्टान् MBu. 12, 7107 wohl fehlerhaft für संसृष्टा (vgl. 9019. 10320). सुसंसृष्टनिवेशन 13, 3876. 6460 fehlerhaft für सुसंसृष्ट° (so ed. Bomb. an der ersten Stelle). Vgl. संसर्ग, संसर्गिन् fg., संसृष्टवित् fgg. und संसृष्टृ. — caus. *an sich heranziehen, für sich gewinnen:* प्राधान्येन हि सर्वत्र सर्वा: संसर्जयेत्प्रजा: (राजा) Kâm. Nîtis. 8, 53. — desid. *an der Schöpfung Theil zu nehmen wünschen* Bhâg. P. 4, 24, 72.

— अनुसम्, partic. °सृष्ट *verbunden mit* (instr.) Bhâg. P. 3, 5, 25.

— उपसम्, partic. °सृष्ट 1) *getroffen:* ब्रह्मशापोपसंसृष्ट Bhâg. P. 11, 30, 2. — 2) *bewirkt, hervorgebracht* Bhâg. P. 4, 19, 26.

— परिसम्, partic. °सृष्ट *von allen Seiten getroffen:* तेजसा तस्य गर्भस्य भास्करस्येव रश्मिभि:। पद्भ्यं परिसंसृष्टम् *so v. a. v. a. S. beschienen* MBu. 13, 4090.

— प्रतिसम् 1) *mischen —, vermengen mit* (instr.) Suçr. 2, 48, 15. partic. °सृष्ट *gemischt —, vermengt mit* (instr.) 134, 10. — 2) प्रतिसंसृष्टभाक् etwa *so v. a. Diät haltend* Suçr. 2, 38, 6. 160, 16. 165, 4.

सर्ज (von 3. सर्ज्) 1) nom. ag. *Dreher;* s. रज्जु°. — 2) m. *a) (Ausschnitzer von Harz) Vatica robusta W. et A.* (s. 1. शाल 2) *a)* AK. 2, 4, 2, 25. H. 1138. Hall. 2, 40. Ratnam. 274. MBu. 3, 935. Hariv. 5369. 8790. R. 6, 15, 1. Suçr. 1, 22, 19. 46, 14. 2, 26, 18. 284, 1. °वसूर्णा 367, 10. Bṛ. 2, 17. 3, 13. Varâh. Bṛ. S. 44, 4. 54, 105. 59, 6. Milâtîm. 148, 14. कामनिवास Gnat. 16. Schol. zu Kâṭ. Çr. 19, 1, 20 (सर्ज st. सर्ज zu lesen). = पोतशाल *Terminalia tomentosa W. et A.* Çabdar. im ÇKDa. — *b) das Harz der Vatica robusta* Bhâr. zu AK. nach ÇKDa. Varâh. Bṛ. S. 77, 11. 16. — Vgl. नदी°, महा°, वने°.

सर्जक m. *Terminalia tomentosa W. et A.* AK. 2, 4, 2, 24. *Vatica robusta W. et A.* Gaṇîkâ. im ÇKDa.

सर्जगन्धा f. *die Ichneumonpflanze* (राजा) Ratnam. 49.

सर्जन (von 3. सर्ज्) 1) n. *a) das Uebergeben, Abtreten:* राज्यार्ध° MBu. 1, 394 nach der Lesart der ed. Bomb. — *b) das Schaffen, Schöpfung* Vaiç. bei Mallin. zu Çiç. 19, 88. ईश्वरस्य जगत्सर्जनं न पुष्यते Sarvadarçanas. 121, 2. — *c) Hintertreffen, Nachzug* Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. ई *eine der drei Falten des Afters (die ausstossende)* Çiñkṣ. Saṁh. 1, 6, 5. — Vgl. स्कम्भ°.

सर्जनाम्न् n. = सर्जरस *das Harz der Vatica robusta* Suçr. 2, 12, 20.

सर्जनिर्यासक m. dass. Riâṇ. im ÇKDa.

सर्जनिर्यासिन् m. dass. Trik. 2, 6, 38. H. 647.

सर्जरस m. 1) dass. AK. 2, 6, 2, 29. Trik. 3, 3, 433. H. 647. Med. s. 64 (सर्व° ÇKDa.). Ratnam. 274. MBu. 1, 5723. 3, 16326. 5, 5132. 12, 8241. 13, 4719. Hariv. 6284. Suçr. 1, 16, 10. 38, 3. 46, 13. 133, 11. 134, 4. 139, 9. 2, 12, 1. 285, 15. Varâh. Bṛ. S. 57, 3. 6. 77, 28. तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् Bhâvapr. 3. द्रुमै: सर्जरसानाम् = सर्जै: Hariv. 5366. — 2) *ein best. Baum* Hariv. 12679. wohl richtiger सर्जार्जुना: die neuere Ausg. — 3) *ein best. musikalisches Instrument* Trik. Med.

सर्जि f. = सर्जिका Ratnam. im ÇKDa.

सर्जिका f. *Natron* Ratnam. 304. Gaṇîkâ. im ÇKDa. Suçr. 2, 115, 4.

सर्जिकाक्षार m. dass. AK. 2, 9, 109. Med. k. 146.

सर्जिक्षार m. dass. Riâṇ. im ÇKDa.

सर्जी f. dass. ebend.

सर्जीक्षार m. dass. Schol. zu Kâṭ. Çr. 176, 5 (सर्जी° gedr.).

सर्ज् 1) m. *Kaufmann.* — 2) f. *Bitte* Med. g. 17.

सर्जै (vgl. 2. सर्ज्) Uṇâdis. 1, 82. m. *Kaufmann* Uṇâval. = धनिसार und क्षार Çabdar. im ÇKDa.

सर्ज्य m. = सर्जरस 1) Ratnam. im ÇKDa.

सर्णोकि n. Çat. Br. 4, 4, 6, 2. *Wasser* nach Naigh. 1, 12.

सर्तर् (von सृ) nom. ag. *Läufer:* das Ross Çat. Br. 13, 1, 9, 5.

सर्दिगर्दि m. ein obscönes Scherzwort, etwa *Schlitz* oder *Scheide* TS. 7, 4, 19, 2. = मध्यमा गर्भधारिणी Comm.

सर्प्, सर्पति (गतिकर्मन्, गतौ) Naigh. 2, 14. Dhâtup. 23, 14. ससर्पत्, ससार्प्सीत् und ससाप्सीत् Vop. 8, 76. fg. 97. सप्स्यति und सर्प्स्यति (vgl. Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10) P. 6, 1, 59. सर्पितुम्, सृप्त; hier und da mod. (des Metrums wegen). स geht nie in ष über P. 8, 3, 110. Vop. 8, 43. 1) *schleichen, schliefen, gleiten, kriechen,* überh. von *leiser und vorsichtiger Fortbewegung:* बोधे सूर्यमिव सर्पन्तम् AV. 4, 20, 7. Schildkröte TS. 2, 6, 2, 2. Schlange Âçv. Gṛhj. 3, 1, 10. Çat. Br. 7, 4, 1, 25. 11, 1, 6, 21. घघोऽन्तम् Çiñkṣ. Çr. 10, 21, 13. यद्य दुरधं पृथिवीमसृप्त *in die Erde schlüpfte* Ait. Br. 3, 27. — सर्पाणामिव सर्पताम् MBu. 6, 4126. Spr. (II) 6919. सन्नानि R. 2, 39, 10. मूषक: Hit. 30, 3. ससंध्यसर्पत्यादात Kathâs. 103, 187. Prab. 40, 6. सर्पत् und सर्पमाण MBu. 4, 1236. (राजा) घ्रमुद्दे मण्डले सर्पन् (= चरन्) Kâm. Nîtis. 8, 2. (घाण:) नोद्विग्यते न सर्पति MBu. 5, 3562. न च बाणान्तरे वायुरस्य शक्नोति सर्पितुम् 4, 1890. सर्पत्सु तरुषु व्रत्यत्सु वा Varâh. Bṛ. S. 46, 30. विप्रा: सर्पत सौम्रतम् *begebt euch fort, ziehet ab* Râm.-Tar. 1, 165. partic. praes. neutr. *das Kriechende:* तस्य: सर्पन्भोग्यं सृपत् AV. 12, 1, 46. TS. 7, 3, 1, 3. TBr. 1, 4, 6, 6. Ait. Br. 3, 33. सृप्त *herausgeschlüpft aus* (abl.): हृदयात् Çat. Br. 14, 6, 9, 28. *Hineingeschlüpft in* (loc.): नाडीषु Kaṭh. Up. 3, 6, 2. — 2) im Ritual: *geräuschlos und in gebückter Stellung, gegenseitig sich anfassend, wegschleichen* (namentlich aus dem Sadas nach dem Bahishpavamâna) Ait. Br. 2, 22. 3, 23. fg. 7, 20. Pañcav. Br. 6, 7, 9. TS. 6, 3, 4, 1. Çat. Br. 4, 2, 4, 10. 6, 9, 13. Kâṭ. Çr. 22, 8, 20. Çiñkṣ. Çr. 8, 15, 8. Lâṭ. 1, 11, 16. 2, 4, 13. 9, 2, 8. Kaṭh. Up. 1, 12, 4.

— intens. partic. सरीसृपतम् P. 7, 4, 65. सरीसृपतो Bhâg. P. 10, 8, 22. — Vgl. सरीसृप् fg.

— अति *hingleiten, hinkriechen über, an* (acc.): पद्भ्यो अतिसर्पति RV. 1,91,21. अक्तिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचम् 1,86,44. उत यो द्यामतिसर्पात् *sich hinausstehlen über* AV. 4,16,4. 20,9. धिष्ण्यान् TS. 6,3,2,5. Lāṭ. 1,9,14. von Flüssigem Ait. Br. 5,27. Vgl. अतिसर्पण.

— व्यति act. P. 1,3,15. Vop. 23,53. fg. *hinundher fliegen:* इषुभिर्व्यतिसर्पद्भिरादित्यो ऽस्तमीयात MBu. 4,1042.

— अधि *darüber hin gleiten:* वसो: Çāṅkh. Ça. 17,14,6. 17,4.

— समधि dass. Çāṅkh. Ça. 17,16,8.

— अनु *nachschleichen, nachgehen;* mit acc. Çāṅkh. Ça. 8,15,6. रामम् Bhaṭṭ. 15,59. क्रन्दितम् Kathās. 53,112. *entlang kriechen* AV. 9,8,7. *sich nähern, herantreten zu:* सर्वास्ताने कैकमनुसर्पति (एकैकमुप° v. l.) MBu. 1,6201. in der Stelle गिरिमन्वसृपत् Bhaṭṭ. 6,27 ist अनु mit गिरिम् zu verbinden: *er bewegte sich nach der Richtung des Berges hin.*

— समनु *herantreten, sich nähern* MBu. 1,6450.

— अप 1) *sich fortbegeben, zurücktreten, weichen* MBu. 1,5286. 6704. 3,14112. R. 2,20,4. R. Gorr. 2,123,1. 5,25,17. 27,24. 7,19,31 (med.). या क्रायेव न तत्पार्श्वात्तृणमप्यपसर्पति Kathās. 104,59. श्रमोऽपैतत्प्रवृद्धे मे हृदयान्नापसर्पति MBu. 5,2349. Spr. (II) 4477. Mārk. P. 16,21. Finsterniss Varāh. Bṛh. S. 5,37 (med.). सर्पद्: Spr. (II) 4411. — 2) *beschleichen so v. a. belauschen, ausforschen:* पौरज्ञानपदान् Uttarār. ed. Cow. 25,5 (उपसर्पितुम् die ältere Ausg.). — Vgl. अपसर्प fg. und अपसृप्ति. — caus. *fortjagen:* °सर्प्य partic. fut. pass. Spr. (II) 874 (Conj.).

— प्रत्यप caus. *zum Zurückweichen zwingen:* (शरै:) प्रत्यपासर्पयद्बलान् R. 6,92,8.

— व्यप *sich fortbegeben, — entfernen, — auf und davon machen* MBu. 4,1899. 8,1923. 15,237.

— अभि *schleichend —, leise u. s. w. sich nahen* (mit acc.) Kāṭh. 28, 8. सर्वानृतून्पशवो ऽग्निमभिसर्पन्ति Nir. 7,19. AV. 3,25,4. Vgl. अभिसर्पण.

— समभि *hinfliegen —, hinschiessen zu* (acc.): (पार्श्वम्) शरा: समभिसर्पन्ति (°सर्पन्तु ed. Bomb.) वल्मीकमिव पन्नगा: MBu. 4,1522.

— अव 1) *hinuntergleiten:* von der zum Untergang sich neigenden Sonne VS. 16,7. Lāṭ. 3,1,12. *zurückweichen:* समुद्रस्यावसर्पत: (so ed. Bomb.) MBu. 13,7257. काले ऽवसर्पति so v. a. अवसर्पिण्याम् Çāṭa. 14, 28. — 2) *beschleichen:* वयाम् TS. 4,2,2,1 (VS. v. l.). AV. 8,6,3. — 3) *allmählich überziehen:* सायंशरम् AV. 11,1,17. — Vgl. अवसर्प fgg. — caus. *zurückzuweichen veranlassen:* समुद्रश्चावसर्पित: (समुद्रस्यावसर्पत: ed. Bomb.) MBu. 13,7257.

— अन्ववं *nachschleichen* Çat. Br. 1,8,4,6.

— उपाव *herbeischleichen* Çat. Br. 14,6,11,1.

— पर्यव dass. Çāṅkh. Br. 27,1.

— प्रत्यव dass. Çat. Br. 14,5,4,21.

— व्यव *sich einschleichen in* AV. 19,44,7. TS. 2,2,9,2. देवानां पुरं मध्यत: TBr. 1,7,2,5. Kāṭh. 28,8. 29,10. Pārāç. Br. 15,11,9.

— सं *herbeischleichen* Kaṭh. Up. 1,12,4.

— उद् s. उत्सर्पण.

— उपोद्, partic. °सृप्त *ausgekrochen* Çat. Br. 7,3,2,11.

— उद् 1) *hervorkriechen, sich erheben vom Sitz u. s. w.:* पृथिव्या: *sich mühsam aufrichten* AV. 4,134,2. Çat. Br. 11,5,2,4. 7. *sich erheben auf, über* (acc.): गन्ता:, सरित्प्रवाकूस्तटम् Rāmāy. 5,46. *sich erheben so v. a. höher werden* Bhāg. P. 8,7,19. ein Durchgang, eine Thür MBu. 3,2930. नोत्सर्पत्युदधि: Bhāg. P. 3,29,42. 11,8,6 (med. zugleich *sich überheben*). *in die Höhe gelangen, eine hohe Stellung erlangen* Kām. Nītis. 19,22. *hervorgehen, entstehen aus, in:* तन्मुखाम्भोरुहोत्सर्पत्काक्षि Kathās. 116, 26. धन्यधावुद्धि: प्रमत्तस्य क्रुधि । उत्सर्पति Bhāg. P. 11,13,9. उत्सृप्त *heraufgekommen, aufgegangen;* von der Sonne Kāṭh. Ça. 4,8,21. अनुत्सृप्त 23. Nir. 12,14. — 2) *sich langsam weiter bewegen:* प्राङ्मा कोतुधिष्ण्याडुत्सर्पेत् TBr. 3,11,9,3. Çat. Br. 2,3,4,21. Kāṭh. Ça. 4,14,27. 15,8,2. Gobh. 1,2,8. 3,10,24. 3,10,20. Āçv. Ça. 4,5,10. fg. — Vgl. उत्सर्पिन्. — caus. *aufsteigen lassen:* धूमान्मूर्धि Bhāg. P. 4,23,15. — desid. *sich zu erheben wünschen:* उत्सिसृप्सतो द्यामारुरुक्षत: RV. 8,14,14. आरुरुक्षन्ति मायाभिरुत्सिसृप्सन्ति ये दिवम् Bhāg. P. 8,11,8.

— उपोद् *hinauskriechen* Ait. Br. 6,1.

— प्रोद् *aus den Fugen kommen* Bhāg. P. 7,8,33 (med.).

— व्युद् *sich herausbewegen* Ait. Br. 5,23.

— समुद् 1) *sich erheben bis — hin* (acc.): धूपे समुत्सर्पति वेत्रयष्टी: Rāmāy. 6,8. — 2) *einbrechen, beginnen:* घासे समुत्सर्पति Spr. (II) 937, v. l.

— उप 1) *hinschleichen zu, sich verkriechen in; beschleichen, sich sachte hinzumachen:* उप सर्प मातरं भूमिमेताम् RV. 10,18,10. 99,12. AV. 5, 11,6. 7,56,6. 8,6,3. 12,1,46. Çat. Br. 3,5,4,21. छायाम् 11,1,8,2. मूलानि 13,8,4,20. Gobh. 3,2,11. Kauç. 135. Ait. Br. 3,46. दीक्षितस्तु वसोर्धारामुपसर्पेत् Āçv. Ça. 4,8,20. *herantreten zu* (acc.), *sich nähern, sich hinbegeben zu* Bālarām. 3,22 (अनुसर्पति MBu. 1,6201). MBu. 2,2701. 3,2513 (उपसर्प nach Nīlak. = उपसमीप; v. l. उपसर्प्य, wofür उपसृप्य zu lesen ist). 14878. 4,1601. 5,7525. 14,1678. Harīv. 4616. R. 3,26,10. 32,2. 4,16,10. 5, 14,12. Spr. (II) 174. 508. 609. 3722. 3913. Çiç. 49,6. 94,4. 109,9. Kathās. 22,84. 25,99. Prab. 22,1. Daçak. 70,3. Bhāg. P. 5,1,6. 8,9,21. 8,3,30. Hit. 73,1. नोपसर्पन्ति ते यमम् MBu. 3,13372. 13,3178. ममोपासिकम् Mālav. 8,17. fg. तत्र M. 9,269. पञ्चरात्रमुपसर्पद्भि: समासादितस्तै: स क्रुद्ध: *fünf Tage lang nach der Richtung hin gehend* Pāṇ. 159, 23. mit gen. der Person Kathās. 28,106. Spr. (II) 1508. med. MBu. 8, 2513. 9,2306. R. 2,96,9. 3,30,32. 4,16,9. 5,101,25. भार्ये *sich geschlechtlich nähern* MBu. 1,3813. *stossen auf:* ग्रामं गच्छन्वृक्षमूलमुपसर्पति P. 1, 4,80, Schol. von Unbelebtem: प्रतिवाते नहि घन: कदाचिदुपसर्पति *sich bewegen, ziehen* Spr. (II) 4408. मयूखैरुपसर्पद्भि: *langsam herankommend* R. 3,22,19. संध्या Bhāg. P. 3,18,26. नोपसर्पद्भिमुखदा शशिनं दृश्यते तम: । विसृत्रश्चोपसर्पश्च तद्वत्पश्य शरीरिणाम् MBu. 12,7436. यत्रोपयातमुपसर्पति देवमाया Bhāg. P. 3,31,20. दु:खम्, सुखम् Spr. (II) 7083 (med.). प्रलयम् *in's Verderben —, zu Grunde gehen* Hit. II,175. — 2) *an Etwas gehen, beginnen;* mit infin. M. 10,105. Hit. 15,7. पुरुषोपमृज्ञानि Verz. d. Oxf. H. 215,b,30. — 3) *Jmd* (acc.) *belauschen, ausforschen* Uttarār. 18,12 (उपसर्पितुम् ed. Cow.). — Vgl. उपसर्पण fg. — caus.: सहिष्णो सुपसर्प्यताम् Spr. (II) 6073 und उपसर्प्य N. 12,84 wohl fehlerhaft für °सृप्यताम् und °सृप्य.

— समुप *herantreten zu* (acc.), *sich nähern* MBu. 1,6441. 6450. R. 4,58,11.

— विनि Āçv. Ça. 6,12,2 (in der gedr. Ausg.) fehlerhaft für विनिम्.

— निस् *hinausschleichen* ÇiKau. Ça. 8,13,8. 7,14,12. 8,8,9. Liṭ. 5, 10,8. *ausziehen, sich in Bewegung setzen* R. 5,73,46. Vgl. पदानिःसृतम्.

— अभिनिस् *sich hinbewegen zu* Âçv. Ça. 5,11,1.

— विनिस् *hinausschleichen* Âçv. Ça. 6,12,2 (विनिसृप्य fehlerhaft die Ausg.).

— परि *umschleichen, sich umherbewegen um* (acc.), *umherstreichen:* यद्वृक्षा पर्यसर्पत RV. 1,161,12. Kauç. 2. MBu. 11,139. 158. Hariv. 1144. R. 3,52,48 (med.). 6,2,23. Spr. (II) 5417. परिसर्पम् absol. Çat. Ba. 7,4, 4,22. 10,5,5,7. *in Jmdes Nähe sich aufhalten, Jmd aufsuchen* MBu. 13, 6740. Vgl. परिसर्प fgg.

— प्र 1) *hin —, hineinschleichen, beschleichen, schliefen ins* सोम इन्द्रम् RV. 8,17,7. प्र कुमारो न वीरुधः सर्पत् 10,79,3. पत्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गम् 97,12. तमसि Pañcav. Br. 18,1,1. im Ritual VS. 10,30. Çat. Ba. 5,4,5,4. सदः TS. 3,2,4,2. Pañcav. Br. 18,2,9. 9,4. ÇiKau. Br. 13, 1. Ça. 6,12,1. 7,7,4. 13,3,13. Âçv. Ça. 5,7,9. पदाप्रभृतं विनिःसर्पति 6, 12,2. — कृद्धा इव मनुष्येन्द्र भुजंगाः कालचोदिताः। प्रसर्पमाणा मेदिन्यां ते व्यरोचन्त मार्गणाः॥ MBu. 7,5226. Bhâg. P. 3,20,48. *sich in Bewegung setzen, sich hinbewegen:* पुरः (so zu lesen) Kâm. Nîtis. 15,16. Verz. d. Oxf. H. 48,b,13. 117,a,6. Bhâg. P. 3,12,29. 10,62,34. Pañcat. 120,9. मृगाः प्रससृपुर्वामम् Bhaṭṭ. 14,20. — 2) *hervorbrechen:* रुधिरेण प्रसर्पता (so mit der ed. Bomb. zu lesen) MBu. 4,1051. *anbrechen:* प्रसर्पति ततो घात्ते Kathâs. 123,172. — 3) *sich verbreiten:* यद्याज्ञानिर्यथा विष्णुर्यथा वायुरि प्रसर्पते Çâṅk. 14,48. व्याप्तकं विषमिव सर्वतः प्रसृतम् Uttarar. 20,6 (27,6). — 4) *zu Werke gehen, verfahren* Kâm. Nîtis. 15,33. Spr. (II) 5812. *in einer best. Weise fortfahren* 5336. — 5) *fortschreiten* so v. a. von *Statten gehen:* कर्म Bhaṭṭ. 2,39. — Vgl. प्रसर्प fgg. — caus. partic. प्रसर्पित *hinschleichend:* भुजंगवद्वक्रगति° (नवोदक) Ṛt. 2,13.

— अनुप्र *herzu —, nachschleichen:* सदो वै प्रसर्पन्तं पितरोऽनु प्रसर्पन्ति TS. 3,2,4,5. कूर्मः 5,2,8,1. यद्दश दशैकैकं चमसमनुप्रसृता भवन्ति Çat. Br. 5,4,5,3. — caus. *herumgehen lassen bei* (acc.): इतरान्नुप्रसर्पयेयुः (चमसम्) Âçv. Ça. 9,3,19.

— अभिप्र *herbeischleichen* AV. 8,6,22.

— प्रतिप्र *wieder herbeischleichen* Âçv. Ça. 5,7,11. 11,1. 6,5,1.

— विप्र *hinundher schleichen, sich hinundher bewegen:* (नदी) शोभते विप्रसर्पन्ती प्रमदेव विभूषिता Hariv. 12103.

— संप्र *hin —, hineinschleichen* ÇiKau. Ça. 17,7,11. Çat. Ba. 4,2,4,9. — Vgl. संप्रसर्पण.

— प्रति *zurückschleichen* Kâṭh. Up. 5,2,6. *hineinschlüpfen:* पर्वतः (so ed. Bomb.) । यस्तो नाम यतः संध्या पश्चिमा प्रतिसर्पति MBu. 3,2806.

— वि 1) *umherschleichen, einherschleichen, einhergehen, sich hinbewegen:* पन्थाम् *den Weg entlang* VS. 23,55. fg. MBu. 1,2386. 3,2096. 14997 (विसर्पमाण). Hariv. 3462. 12108 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. Gorr. 2,102,6. Râgat. 4,53. 11,29. Spr. (II) 4592. Bhâg. P. 3,20,32. 5,7,20. 8, 18. Pañcat. 198,16. Hit. 10,1. von Unbelebtem R. 3,80,20. Pfeile MBu. 7,4161. गङ्गा 3,9956. अलम् R. 1,44,17 (med.). Wolken R. Gorr. 2,5,27. रजो घनम् Vâmân. Bhâg. 8. 38,6. वायुरप्यत्तरा — नाशक्नोत्तम् विसर्पितुम् *in Folge der vielen umherfliegenden Pfeile* MBu. 7,9376. — 2) *auseinandergehen, sich zerstreuen* RV. 10,14,9. — 3) *sich ausbreiten, — verbreiten:* पुरा क्रूरस्य विसृपः (Infin.) VS. 1,28 (vgl. Schol. zu P. 1,1,40. 3,4,17. 6,3,110. 2,3,69, Vârtt. 2). Air. Br. 3,34. शब्दः MBu. 6,2385. पद्माप्सु पतितः शक्र तैलबिन्दुर्विसर्पति 13,3186. धूमसंघातः Hariv. 11823. प्रभा: 11824. नवपरिमलगन्धः (so zu lesen) Spr. (II) 3413. विषाग्निवत् — शोकज्वरः 6231. मनोरागस्तीव्रं विषमिव Milarêp. 32,4. Sin. D. 318. *über* (acc.): सर्वं ते वाष्पौघसंवृत्ति इव मुक्तामणिसरो विसर्पन्धाराभिर्लुठति धरणौ जर्जरकणः Uttarar. 13,9. fg. (18, 6. 7). — 4) *verbreiten:* ते विप्रस्यन्ति च ते पशः Bhâg. P. 4,1,31. — Vgl. विसर्प fgg. und विसृप्ति. — caus. *verbreiten, ausbreiten* Hariv. 12165. R. 5,75,9.

— अनुवि *sich ausbreiten* Mâdhava, Nid. 1,19.

— सम् *sich hin —, hineinschleichen;* mit acc.: स्रोतसमुद्रम् VS. 13, 31. *zusammengehen* Air. Br. 5,23. *einhersehen, sich hinbewegen* MBu. 4,1750 (med.). 7,8384. Kathâs. 121,280. Mucc. 29. छाया 82. *zu Jmd* (acc.) *herantreten* MBu. 12,10681 (med.). Vgl. संसर्प fg. und संसृप्.

— अनुसम् *nachschleichen* Çat. Ba. 5,4,2,2. 5,2. eine Schildkröte 7, 5,2,9. TBr. 1,8,4,1. °सर्पम् absol. Kâṭy. Ça. 24,4,17.

— उपसम् *sich hinschleichen zu:* द्यौदुम्बरीम् Çat. Ba. 4,6,9,21.

— विसम् s. विसंसर्पिन्.

सर्प (von सर्प्) gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. 1) adj. *schleichend;* s. पीठ°. — 2) m. a) (*der Schleicher*) *Schlange, Natter* AK. 1,2,2,7. H. 1302. Halâj. 3,18. RV. 10,16,6 (sonst im RV. nur सर्पि). AV. 10,4,23. 11,3, 47. TS. 1,5,4,1. 3,1,2,1. 5,2,9,5. 6,1,10,4. 7,3,14,1. Çat. Ba. 3,1,3, 7. 4,4,5,2. Pañcav. Br. 25,15,4. सर्पाणां वत्सभीको गुरुः Kâṭy. 31,12. M. 1,44. 4,136. 135. 11,133. 139. 12,42. aus Eiern geboren Suça. 1,4, 19. 203,2. Arten und Namen 2,265. fgg. °दंष्ट्राविरहित Spr. (II) 2677. सर्पाणां च विषं दत्ते 6905. °युक्ते गृहे 6901. सर्पो नावसेयः 6902. सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते 6903. परिच्छिद्रानुसारिणः 6904. सर्पान् — ये नयन्ति वशं नराः 6906. fg. सर्पात्क्रूरतरः खलः 6899. सर्पो मन्त्रौषधिवशः ebend. वरं सर्पो न दुर्जनः 6900. मणिना भूषितः 2850. Vaitân. Bhp. 8. 10, 7. 33,26. 53,122. °विषप्रतिषेध Verz. d. Oxf. H. 309,a,11. Kathâs. 65, 86. 90. Bhâg. P. 7,9,14. am Ende eines adj. comp. f. या Vaitân. Bhp. 8. 25,3. — b) pl. *best. übermenschliche Wesen* (neben Gandharva und ähnlichen Geschlechtern) *auf Erden, in der Luft und im Himmel* VS. 13,6. TBr. 3,1,2,6. Âçv. Gṛhy. 2,1,9. Çat. Br. 7,4,2,28. दिव्य ÇiKau. Gṛhy. 4,15. AV. 8,7,20. 8,15. 10,29. 11,6,15. 9,16. 24. 10,1. 12,1,37. 46. VS. 24,36. सर्पदेवजनाः VS. 30,8. TBr. 3,12,2,2. Çat. Br. 11,5,2,7. Âçv. Gṛhy. 2,1,2. 14. Kauç. 49. M. 1,37. Weber, Gjot. 94. Mân. P. 48,22. Bhâg. P. 3,20,48. भोगवती नाम सर्पाणामालयः पुरी R. 4,41,52. सर्पाणामयनम् *eine best. Jahresfeier* Âçv. Ça. 12,5,1. — c) N. pr. eines der 11 Rudra MBu. 1,2566. Hariv. 11531. VP. 121, N. 17. Weber, Gjot. 34. — d) *eine best. Constellation, wenn nämlich nur die drei ungünstigen Planeten in den drei* Kendra *stehen,* Vaitân. Bhp. 12,3. auch भुजग genannt. — e) *Mesua Roxburghii Wight* Ratnam. im ÇKDa. — 3) f. ई *Schlangenweibchen* Çabdar im ÇKDa. MBu. 1,677. सर्पी दष्टा किल क्रोष्टादत्यानि न वैरतः Spr. (II) 230. — 4) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,242,6. महा° ebend. — Vgl. काल°, कृष्ण°, कोलि°, पीठ°, ब्रह्म°, राज°, वृत्र°, श्वेत°, सार्प.

सर्पसपि m. *Schlangen-Rishi:* Arbuda Air. Br. 6,1; vgl. Âçv. Ça. 12,7,5.

सर्पकङ्कालिका f. = सर्पकङ्काली Ratnam. 245.

सर्पकङ्काली f. *eine best. gegen Schlangengift angewandte Pflanze* Çabdâ. im ÇKDa.

सर्पगति f. *Schlangengang, Schlangenwindung:* bei Kampfern R. 4,92,3.

सर्पगन्धा f. *eine best. Pflanze,* = कृत्राको u. s. w. Gaṇḍa. im ÇKDa. = नाकुली Ausw. 51. — Suçr. 2,280,7. 536,13.

सर्पघातिनी f. *eine der* सर्पकङ्काली *verwandte Pflanze* Ratnam. 246.

सर्पच्छत्र n. *Pilz* Wilson. °क n. dass. Karaka 1,27. — Vgl. अहिच्छत्रक.

सर्पण (von सर्प्) n. *das Schleichen, Sichhinbewegen, langsame Fortbewegung:* der Schlange u. s. w. Ait. Br. 3,43. Nir. 4,26. 6,17. Mahâbh. 50,16. Mâlav. P. 48,22. आयुधानाम् Varâh. Bṛh. S. 46,33. पर्वतस्येव सर्पणम् MBh. 5,2760. शिलानामिव सर्पणम् 7,3848. Im Ritual *das Leisegehen* u. s. w. (vgl. unter सर्प्), *namentlich aus dem* Sadas *weg* (Comm. zu Kâtj. Çr. 10,1,1) Âçv. Çr. 3,2,4. Kâtj. Çr. 3,8,25. 9,1. 14,20. 10, 1,1. 11,1,22. 15,8,16. 20,3,3. मेधि° Pâr. Gṛhj. 2,7.

सर्पता f. *nom. abstr. von* सर्प *Schlange.* सर्पतां गम् *in eine Schlange verwandelt werden* Kathâs. 65,93.

सर्पतृण m. = नकुल ÇKDa. angeblich nach H.

सर्पदंष्ट्र 1) m. *Croton polyandrum Roxb. oder Cr. Tiglium Lin.* (दन्ती) Çabdâ. im ÇKDa. — 2) f. या *Tragia involucrata Lin.* Ratnam. 69.

सर्पदंष्ट्रिका f. *Odina pinnata* (घण्टापत्री) Râǵân. im ÇKDa.

सर्पदण्डा f. *eine best. Pflanze,* = सेंकली Râǵân. im ÇKDa.

सर्पदण्डी f. *eine best. Pflanze,* = गोरक्षी Râǵân. im ÇKDa.

सर्पदत्ती f. *Tiaridium indicum Lehm.* (नागदत्ती) Râǵân. im ÇKDa.

सर्पदमनी f. *eine best. Pflanze,* = वन्ध्याकर्कोटकी Râǵân. im ÇKDa.

सर्पदष्ट n. *Schlangenbiss* Suçr. 2,262,4.

सर्पदेवी f. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8084.

सर्पद्विष् m. *Pfau (Schlangenfeind)* Z. d. d. m. G. 27,86.

सर्पनामन् 1) n. Bez. *gewisser Sprüche* Çat. Br. 7,4,1,23. — 2) f. या = सर्पघातिनी Ratnam. 246.

सर्पपति m. *Schlangenfürst* Harîv. 3665.

सर्पपत्री f. *Tiaridium indicum Lehm.* Râǵân. im ÇKDa.

सर्पफणा m. = फणा *die sogenannte Haube einer Schlange* Suçr. 1,25, 1. °मणि m. *ein best. Edelstein, der in der Haube einer Schlange vorkommen soll,* Çabdâ. im ÇKDa.

सर्पबन्ध m. *Schlangenfessel* so v. a. *List, ein hinterlistiges Mittel* MBh. 5,4373.

सर्पबल = अमृताकरण Verz. d. Oxf. H. 378,a,1.

सर्पबलि m. *eine den* Sarpa *darzubringende Spende* Ind. St. 9,228, N. 2. °कर्मन् Verz. d. B. H. 36,1.

सर्पभुज् m. 1) *Pfau (Schlangenverzehrer)* H. 1319. — 2) *eine Schlangenart,* = राजसर्प Hall. 3,21.

सर्पमाला f. v. l. für सर्पनामा in Ratnam. nach ÇKDa.

सर्पमालिन् adj. *mit Schlangen umwunden;* m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 2,108. सर्पिर्मालिन् ed. Bomb.

सर्पयाग m. *Schlangenopfer* Bala. P. 5,22,25. — Vgl. सर्पसत्र.

सर्पराज m. *Schlangenkönig* Gaut. 3,7,11. Hir. 17,7, v. l. Çesha Ind. St. 3, 458. Arbuda und Kâṇḍapaṭîṭa 459. Vâsuki AK. 1,2,6,5. H. 1308. R. 4,41,52. Kâlîja Harîv. 3667. 3674. 3682.

सर्पराज्ञी f. *Schlangenkönigin,* angebliche Verfasserin von ṚV. 10, 189. TS. 1,5,4,1. 7,3,4,3. TBr. 1,4,6,6. 2,2,6,1. Çat. Br. 2,1,4,29. Ait. Br. 3,23. Vgl. सार्पराज्ञी.

सर्पलता f. *Betelpfeffer* (नागवल्ली) Râǵân. im ÇKDa.

सर्पवल्ली f. dass. H. 1155, Schol.

सर्पविद् adj. *schlangenkundig* Çat. Br. 13,5,2,20. 13,4,3,9. Âçv. Çr. 10,7,5.

सर्पविद्या f. *Schlangenkunde* Çat. Br. 13,4,3,9. Çâṅkh. Çr. 16,2,23. Dafür विषविद्या Âçv. Çr. 10,7,5. सर्पदेवजनविद्या Kaush. Up. 7,1,3,5.

सर्पवेद m. dass. Gop. Br. 1,10.

सर्पशिरस् m. (sc. हस्त) *eine best. Stellung der Hand* Verz. d. Oxf. H. 86,a,27. fg. 202,a,9. b,11. 13. 21.

सर्पशीर्ष 1) m. dass. Verz. d. Oxf. H. 202, b, 10. — 2) n. *Schlangenkopf:* eine Ishṭakâ TS. 5,2,9,3. Kâṭh. 20,5.

सर्पसत्र n. *Schlangenopfer* (von Ganamegaja vollzogen) MBh. 1,3. 2030. fgg. wohl so v. a. सर्पाणामयनम् Kâtj. Çr. 24,4,33. Lâṭj. 10,20. 10. Çâṅkh. Çr. 13,23,6. Pañkav. Br. 25,14,3.

सर्पसत्रिन् m. ein Beiw. Ganamegaja's Çabdâ. im ÇKDa.

सर्पसरा f. = सर्पघातिनी Ratnam. 246.

सर्पसामन् n. N. eines Sâman Ind. St. 3,242,b. Pañkav. Br. 25,15,1.

सर्पहन् m. *Ichneumon (Schlangentödter)* H. 1302.

सर्पहृदयचन्दन m. *eine Sandelart* Hiouen-thsang 2,122.

सर्पाक्त (सर्प + अक्त *Auge*) 1) n. *die Beere von Elaeocarpus Ganitrus Roxb.* Râǵân. im ÇKDa. — 2) f. ई Bez. zweier Pflanzen: = गन्धनाकुली Râǵân. im ÇKDa. = गण्डाली Bhâvapr. ebend. — Suçr. 2, 286,6 (neben गन्धनाकुली).

सर्पाख्य (सर्प + आख्या) m. Bez. zweier Pflanzen: = नागकेसर Ratnam. im ÇKDa. = मत्स्यकन्दभेद Râǵân. im ÇKDa.

सर्पाङ्काभिकृत n. *Geschwulst an einer Stelle, die von einer Schlange gestreift worden ist,* Suçr. 2,263,9. 19.

सर्पाङ्गी (सर्प + अङ्ग) f. Bez. zweier Pflanzen: = सर्पघातिनी Ratnam. 246. = सेंकली Râǵân. im ÇKDa.

सर्पादनी (सर्प + अदन) f. *die Ichneumonpflanze* (नाकुली) Râǵân. im ÇKDa.

सर्पान्त (सर्प + अन्त) m. N. pr. eines der Söhne Garuḍa's MBh. 5,3597.

सर्पाराति (सर्प + अ°) m. ein N. Garuḍa's (*Feind der Schlangen*) H. 231.

सर्पारि (सर्प + अरि) m. *Schlangenfeind:* 1) *Ichneumon* Râǵân. im ÇKDa. — 2) ein N. Garuḍa's: °केतन Beiw. Kṛshṇa's Harîv. 3689.

सर्पावास (सर्प + आ°) 1) m. *Schlangenlager* Harîv. 3677. so v. a. *Ameisenhaufe* Varâh. Bṛh. S. 54,38. — 2) n. *Sandel* Râǵân. im ÇKDa.

सर्पाशन (सर्प + अ°) m. *Pfau (Schlangenverzehrer)* Hall. 2,86.

सर्पास्य (सर्प + आ°) m. N. pr. eines Râkshasa (*Schlangengesicht*) R. 3,29,31.

सर्पाकृति (सर्प + आ°) f. Bez. des Abschnittes TS. 5,5,20 nach Comm.

सर्पि (von सर्प्) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâtsi Ait. Br. 6,34.

सर्पिका f. 1) (von सर्पी) *eine kleine Schlange;* s. तोय°. — 2) (f. zu सर्पक und dieses von सर्प्) N. pr. eines Flusses R. Gorr. 2,46,12.

सर्पित (von सर्प) n. *ein wirklicher Schlangenbiss* Suçr. 2,263,6. 13.

सर्पिन् (von सर्प्) 1) adj. *schleichend, sich langsam hinbewegend:* उद्रसर्पिन् Çat. Br. 7,1,4,2. उपास° (विवस्वत्) Kir. 5,35. शीतानिल° (मार्ग *ein Weg*) *auf dem ein kühler Wind einherstreicht* Harîv. 3386. — 2) f. सर्पिणी a) *Schlangenweibchen* Çabdar. im ÇKDa. — b) *ein best. Strauch*, = भुजगी Rigân. 8, 126. — c) Pañkat. 210, 12 fehlerhaft für सर्पवाणी, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. वम्बुसर्पिणी, पीठसर्पिन्.

सर्पिरद्य adj. *Schmalz essend* RV. 10,27,13.

सर्पिरब्धि m. *Schmalzmeer* Mikk. P. 54,7.

सर्पिरासुति adj. *Schmalztrank schlürfend:* Agni RV. 2,7,6. 5,7,9. 8,63,2. Mitra-Varuṇa 8,29,9.

सर्पिरिला f. N. pr. der Gattin des Rudra Ṛtadhvaga (Kratudhvaga ed. Bomb.) Bhâg. P. 3,12,13. Burnouf macht zwei Namen daraus.

सर्पिर्वत्य adj. (f. ई) *schmalzmackig* TS. 3,2,8,4.

सर्पिर्माण्ड m. *der Schaum auf heisser Butter* Suçr. 1,181,10.

सर्पिर्मालिन् m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 2,105 (nach der Lesart der ed. Bomb., सर्पमालिन् ed. Calc.).

सर्पिर्मेहिन् adj. *schmalzähnlichen Urin habend* Suçr. 2,78,12.

सर्पिष्क von सर्पिस् am Ende eines adj. comp. gaṇa उरःप्रभृति zu P. 5,4,151.

सर्पिष्कुण्डिका f. *Schmalztopf* gaṇa कस्कादि zu P. 8,3,48.

सर्पिष्टम n. von सर्पिस् mit dem suff. des superl. Schol. zu P. 5,4,42. Kâç. zu P. 8,3,101.

सर्पिष्टर n. von सर्पिस् mit dem suff. des compar. Schol. und Kâç. zu P. 8,3,101. Comm. zu AV. Paipp. 2,33.

सर्पिष्टस् adv. von सर्पिस् Kâç. zu P. 8,3,101.

सर्पिष्टा f. nom. abstr. von सर्पिस् Kâç. zu P. 8,3,101.

सर्पिष्ट्व n. desgl. Kâç. zu P. 8,3,101. Kâṭ. 24,7.

सर्पिष्मत् (Accent!) adj. = सर्पिष्वत् Çat. Br. 14,9,4,13. Uttarab. 70,5 (90,9).

सर्पिष्वत् (von सर्पिस्) adj. *mit Schmalz versehen, mit Schmalz bereitet* Kâṭ. 19,12. TS. 3,4,8,7. आतिथ्य 5,2,2,1. TBr. 3,8,9,2.

सर्पिस् (von सर्प्) n. Uṇâdis. 2,109. Vop. 26,68. 1) *zerlassene Butter, Schmalz in flüssigem oder festem Zustande* (nicht verschieden von घृत, obgleich man die Bestimmung findet, सर्पिस् sei *das flüssige*, घृत *das gestandene Schmalz*, Cit. bei Sây. zu Ait. Br. 1,3) AK. 2,9,32. H. 407. Hall. 2,120. 167. RV. 1,127,1. सर्पिषो दर्वी 5,6,9. खाजनेन सर्पिषा सं विशतु 18,18,7. AV. 1,15,4. 9,6,41. तीव्रं सर्पिरयो मधु 18,9,12. घा सिञ्च सर्पिर्घृतवत्समिद्भि 12,3,45. TS. 2,3,10,1. Çat. Br. 9,3,2,4. Pañkav. Br. 24,18,3. 8. Sâṅkh. Br. 5,2. Kâṭ. Ça. 2,1,10. 8,8. 4,6,5. शुक्रोतीत्युक्ते सर्पिः प्रतीयते Çiñkh. Ça. 1,2,21. Liṭ. 2,6,8. 9,8,9. धानाः सर्पिर्निभाः Kauç. 10. Âçv. Gṛhy. 1,24,6. 4,1,18. Ça. 2,6,10. M. 11,119. 212. Suçr. 1,136,18. गव्य 180,18. 181,11. Spr. (II) 7010. Vaṭṭa. Bhp. S. 46,24. 48,30. Bhâg. P. 6,19,21. Wenck, Kâṭantañ. 302. सर्पींषि विविधानि Spr. (II) 2602. मधुसर्पिषी gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31 und दधिपयआदि zu 4,14. M. 3,274. मधुसर्पिषा Vaṭṭa. Bhp. S. 55,24. दधिसर्पिषोः Spr. (II) 3106. हिरण्यमधुसर्पिषाम् M. 2,29. 4,233. 7,131. Suçr. 1,128,17. Spr. (II) 3843. दधिदुग्धसर्पिरशन 7417. सर्पिर्मधुनी gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31 und दधिपयआदि zu 4,14. — 2) angeblich so v. a. उदक Naigh. 1,12. — Vgl. सार्पिष, सार्पिष्क.

सर्पिःसमुद्र m. *das Schmalzmeer* Taik. 2,1,5.

सर्पिस्सात् adv. von सर्पिस् Comm. zu AV. Paipp. 2,33.

सर्पीभू (सर्प + 1. भू) zu *einer Schlange werden:* °भूत Kathâs. 65,21.

सर्पीष्ट (सर्पी + 1. इष्ट) n. = सर्पेष्ट Ratnam. im ÇKDa. wohl fehlerhaft.

सर्पेश्वर (सर्प + ई°) m. *Schlangenfürst* Hit. 27,7. °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 67,a,11.

सर्पेष्ट (सर्प + 1. इष्ट) n. *Sandel* Gaṇiṇ. im ÇKDa.

सर्पौषधि (सर्प + ओ°) N. eines Klosters Hiouen-thsang 1,137.

सर्ब्, सर्बति (गतौ) Dhâtup. 11,30.

सर्भ्, सर्भति und सृम्भति (हिंसायाम्) Dhâtup. 11,40.

सर्म (von सृ) Uṇâdis. 1,139. m. *das Fliessen:* अपः सर्माय चोदयन् RV. 1,80,5.

सर्व 1) adj. (f. आ) Uṇâdis. 1,153. VS. Prât. 2,39. P. 8,1,101. mit pronominaler Decl. 1,1,27. Vop. 3,9. गृहकर्मसु सर्वसु (wohl सर्वशः zu lesen) Gṛhyâs. 1,58. Accent eines damit anlautenden comp. P. 6,2,93. 105. a) *ganz, all, jeder;* m. sg. *Jedermann*, pl. *Alle*, n. sg. *Alles* AK. 3,2,14. H. 1433. Hall. 4,28. सर्वे परिक्रोशं जेहि RV. 1,29,7. सर्वया विशा मदन्ती 39,5. 127,8. नि मामृते पुर इन्द्रः सु सर्वाः 7,26,2. तं वो भग सर्व इज्जोहवीति 41,5. 5,83,2. देवाः 6,75,19. शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय AV. 3, 28,3. 5,23,13. विश्वेषु देवेषु वयं सर्वेषु पशवः स्याम *allen und jedem* 6, 58,2. यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा TBr. 3,1,4,1. एष वै प्रजापतिं सर्वं करोति यो ऽग्निमेधेन यजते सर्व एव भवति सर्वस्य वा एषा प्रायश्चित्तिः u. s. w. TS. 5,3,12,1. Ait. Br. 1,6. सर्वस्यै वाचः सर्वस्य ब्रह्मणः परिगृहीत्यै 2,15. सर्वो वेदः सर्वं ज्ञायते Çat. Br. 6,1,2,11. 3,1,4,9. 10. 9,3. 14, 2,2,46. Çiñkh. Ça. 4,11,3. सर्वमङ्गः Liṭ. 9,2,12. सर्वमायुः Çat. Br. 2,1,2,4. Âçv. Gṛhy. 1,17,14. 2,7. — सर्वं छिद्रम् M. 8,239. सर्वं यामम् 2,185. कुलम् 3,62. सर्वेण प्रयत्नेन 7,71. सर्वः कामात्मानं पश्यति Çiñkh. 25,4. स सर्वस्य क्षितप्रेप्सुः M. 8,46. Kathâs. 14,59. किमब्रवीच्च नः सर्वान् MBh. 3,2183. इदं सर्वम् M. 1,27. 41. यस्य सर्वस्य 33. सर्वमिदम् 62. 81. सर्वस्यास्य 94. गवां सर्वम् *Alles was von den Kühen kommt* AK. 2,9, 50. सर्वे ऽपि (vgl. den Gebrauch von सर्वे नach Zahlwörtern) Vaṭṭa. Bhp. S. 90,5. 104,4. H. 694. सर्व एव M. 9,214. चतुरो वेदान्सर्वान् MBh. 3,2247. सर्वेषामेव चतुर्णामपि M. 3,135. सर्वं निखिलम् R. 1,5,4. mit einer Negation: यस्मात्सर्वा विभक्तिर्नोत्पद्यते *nicht alle Casusendungen* P. 1, 1,38, Schol. सर्वं च तिलसंबद्धं नाश्नात् *er esse Nichts was* u. s. w. M. 4,75. न भक्षयेत् — सर्वान्यञ्जनलोलस्तथा *auch esse er kein fünfkralliges Thier* 5,17. 11,94. न ताः स्म प्रतिगृह्णन्ति सर्वे ते देवदानवाः R. 1,45,35. 74,14. इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्येत Spr. (II) 1121. ज्ञातुं न शक्यं हि किमस्ति सर्वैः 2448. न कुर्योच्च सर्वस्य 3634. सर्वः सर्वं न जानाति 6941. सर्वभूतान्यपीडयन् 3090. सर्वमलज्जाकरमिह 5911. सर्वेषां कृतवैराणामविश्वासः सुखोदयः 6952. am Anf. eines comp. als adj.: °वर्णानाम् M. 1,2. °भूतानि 16. °हितु 3,87. als subst.: सर्वाभावे 9,169. सर्वाभिधक Spr. (II) 3096. °श्रेष्ठ *unter Allen der beste* Mikk. P. 16,18. °मङ्गल *der allergrösste* Kathâs. 23,40. °श्वेत = सर्वेषां श्वेततरः P. 6,2,93, Schol. — b) *allerlei, allerhand*, von *aller Art*, von *welcher Art es auch sei:* खापदः

M. 7, 214. चान्द्रायणं चरेत्सर्वानवकृष्टान्विशुद्ध्य तु Jiñ. 3,262. यज्ञानां निचयं सर्व सृजस्व R. 1,52,24. Varāh. Bṛh. S. 54,21. °सस्यानाम् 29,3. 42,4. 48,41. fg. °रत्नसमन्वित MBu. 3,2492. °शिल्पिभिः R. 1,5,17. विभाण्डकसुतं सर्वोपायैरिकानय 8,15. °संस्थाम adj. Varāh. Bṛh. S. 80,8. — c) in Verbindung mit einem adj. so v. a. *ganz, in allen seinen Theilen, überall:* सर्वाङ्गमस्मि रोमशा *ganz haarig* ṚV. 1,126,7. सर्व एव सुवर्णः *ganz golden* Kāṭh. Up. 1,6,6. gewöhnlich mit dem adj. comp. P. 6,2,93 (Accent solcher compp.). °श्वेत-, °कृष्ण, °सौवर्ण Schol. यः सर्वः मोपण्यो पर्यङ्को निर्मितः *ganz aus — verfertigt* Varāh. Bṛh. S. 79,11. — 2) m. N. pr. (nicht pronominaldecl.) P. 1,1,27, Vārtt., Schol. Bein. Kṛshṇa's: सर्वं समाप्नोषि ततो ऽसि सर्वः Bhāg. 11,40. सर्वाय सर्वेश्वराय सर्वपतये सर्वसंभवाय गोविन्दाय Wassa, Kṛshṇāj. 308. Paṇḍar. 4,3,14. Bein. Çiva's (vgl. शर्व) AK. 1,1,1,26. MBu. 7,9620 (Nīlak. erwähnt die v. l. शर्वं). 12,10363. 13,743. Vop. 3,37, Çl. 3. Verz. d. Oxf. H. 170,a,5. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,b,25. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 59,22. — Vgl. सर्वे° (auch Çat. Br. 2,2,4,14. 4,1,5,10. 5,1,4,5. 2,4,10. 6,3,1,23 u. s. w.), यति°, सार्व.

सर्वंसह P. 3,2,41. Vop. 26,60. 1) adj. *Alles geduldig ertragend* H. an. 4,241. Spr. (II) 4937. 6009. 6943 (= MBu. 13,1664). Verz. d. Oxf. H. 120,a,24. 170,b,2 v. u. 264,a,2. Kathās. 15,83. Sin. D. 16,7. — 2) f. आ *die Erde* AK. 2,1,3. H. 937. H. an. Hall. 2,1. Govārdh. Ārjās. 163 (nach Benfey). — Vgl. सर्वसह.

सर्वंकर adj. *Alles mit sich führend* Çiṅkh. Br. 2,9.

सर्वंकं adj. = सर्व 1) a) ÇKDa. angeblich nach Vop. बर्हिर्बालितिं सर्वंकम् AV. 1,3,6. सर्वंके = सर्वत्र ÇKDa. nach Sīmn. K. सर्विका f. P. 6,3,35, Vārtt. 4, Schol. 7,3,44, Schol. Vop. 4,6.

सर्वकार्य = सर्विका भार्या यस्य P. 6,3,35, Vārtt. 4, Schol.

सर्वकर्तृ nom. ag. *der Hervorbringer von Allem* Verz. d. Oxf. H. 170, a,4. Kiraṇāvalī 2,169. = ब्रह्मन् Çārdar. im ÇKDa. Nom. abstr. °कर्तृत्व Sarvadarçanas. 57,21.

1. सर्वकर्मन् n. pl. *Werke aller Art* Āçv. Çr. 2,6,3. Çiṅkh. Çr. 4,6,10. M. 6,95. 9,219. MBu. 12,1793. am Anf. eines comp.: °कर्मसह 13,2095. °कर्मकारिन् Aṇṇambhaṭṭīya 68. Verz. d. Cambr. H. 28.

2. सर्वकर्मन् 1) adj. *alle Werke in sich enthaltend* Kāṭh. Up. 2,14,2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kalmāshapāda MBu. 12,1793. Hariv. 817. fg.

सर्वकर्मिण (von 1. सर्वकर्मन्) adj. *sich mit Allem beschäftigend, alles Mögliche treibend* P. 5,2,7.

सर्वकाञ्चन adj. *ganz golden* R. Gorr. 2,32,3. Mārk. P. 21,16.

1. सर्वकाम m. pl. *alle möglichen Wünsche, alles Gewünschte* MBu. 2,149. °समृद्ध Spr. (II) 6910. °प्रसिद्धि Weber, Kṛshṇaj. 295. °कामार्थद Rāmat. Up. 328. — Vgl. सार्वकामिक.

2. सर्वकाम 1) adj. a) *Alles wünschend* Āçv. Çr. 11,7,1. Kāty. Çr. 20, 1,1. 21,2,1. Ind. St. 2,299. Bhāg. P. 2,3,10. — b) *alle Wünsche erfüllend* Kauç. 45. वरासन MBu. 1,7717. — c) *alles Gewünschte besitzend* Çat. Br. 10,5,4,12. MBu. 3,3006. — 2) m. N. pr. a) eines Sohnes des Ṛtuparṇa VP. 380. Bhāg. P. 9,9,17. — b) eines Arhant's Tīrthak. 56. 289. 291. 293. 298.

सर्वकामदुघ adj. (f. धा) *alles Gewünschte melkend, — gewährend:* धेनु MBu. 5,3611. मही Bhāg. P. 1,10,4. 4,18,26. 28. — Vgl. कामदुघ.

सर्वकामदुह adj. dass. Verz. d. Oxf. H. 54,a,5 v. u. — Vgl. कामदुह.

सर्वकाममय (von 1. सर्वकाम) adj. *voller Wünsche:* पुरुष Maitrāyaṇ. 6,30.

सर्वकामिक (wie eben) adj. 1) *alle Wünsche erfüllend:* यातिथ्य Bhāg. P. 9,5,19. — 2) *aller Wünsche theilhaftig* Spr. (II) 3380.

सर्वकामिन् (wie eben) adj. 1) *alle Wünsche erfüllend* Sundar. 1,21 (सार्वकालिकीम् MBu. 1,7648). — 2) *ganz nach Wunsch verfahrend* Çiṅkh. Çr. 16,1,19. 10,11. — 3) *aller Wünsche theilhaftig* Spr. (II) 3381. 6623.

सर्वकाम्य, °म्यति *Alles wünschen* P. 8,3,38, Vārtt. 4, Schol.

सर्वकाम्य adj. von *Allen geliebt* Paṇḍar. 4,3,25. Sund. 4,7 fehlerhaft für सर्वकाम, wie MBu. 1,7717 gelesen wird.

सर्वंकारक adj. P. 6,2,105, Schol.

सर्वकारण n. *die Ursache von Allem* Madhus. in Ind. St. 1,23,7. °कारणा n. *die Ursache der Ursache von Allem* Paṇḍar. 1,1,5. 3,44. 8,29 (fälschlich m.). 4,3,16.

सर्वकारिन् adj. *der Alles zu vollbringen im Stande ist* R. 7,59,22. कार्यं कृत्यं तवेषामस्ति ते कारिणस्तेषां कार्यापेक्षिणां सर्वेषाम् Comm.

सर्वकालम् adv. *zu jeder Zeit, stets* Varāh. Bṛh. S. 79,1. Kathās. 120, 34. Spr. (II) 5426. पश्चात्न क्रुध्यति सर्वकालम् *wer niemals zürnt* 5330. °काले = °कालम् 6054, v. l. — Vgl. सार्वकालिक.

सर्वकाषम् absol. in Verbindung mit कष् *völlig aufreiben* Spr. (II) 6231.

सर्वकृच्छ्र adj. *allerlei Noth habend* MBu. 12,12864.

सर्वकृत् adj. *Alles hervorbringend* Hariv. 8313 nach der Lesart der neueren Ausg.

सर्वंकृष्ण adj. *ganz schwarz* P. 6,2,93, Schol.

सर्वकेश N. pr. einer Oertlichkeit gaṇa शिण्डकादि zu P. 4,3,93. — Vgl. सार्वकेश्य.

सर्वकेशर्क adj. *vollständiges Haupthaar habend* AV. 4,37,11.

सर्वकेशिन् P. 5,2,135, Vārtt. 2, Schol. m. *Schauspieler (ganzes d. i. langes Haupthaar tragend)* Pat. zu P. 2,1,69. fg. (lith. Ausg. 2, 344,b. 345,b). H. 328. Çārdar. im ÇKDa. — Vgl. सर्ववेषिन्.

सर्वक्रतु m. pl. *Opfer irgend einer, jeglicher Art:* °क्रतुधिकार Ind. St. 1,48. 54. ag. so v. a. °रूप Bhāg. P. 3,13,28. सर्वं° Çat. Br. 11,5,8,5. सर्वक्रतुता Ind. St. 1,36.

सर्वक्रतुमय (von सर्वक्रतु) adj. *alle Opfer in sich enthaltend:* विष्णु Paṇḍar. 4,3,193.

सर्वक्षार m. *eine Art Alkali* Rāgān. 6,257.

सर्वक्षित् adj. *in Allem wohnend:* ब्रह्मन् Maitrāyaṇ. 6,38.

सर्वग 1) adj. P. 3,2,48. *überall befindlich, allgegenwärtig, überall verbreitet* Muṇḍ. Up. 3,2,5. Çvetāçv. Up. 6,17. Jiñ. 3,130. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,162. fg. MBu. 1,70. 13,743. 801. Suçr. 2,133,21. Verz. d. Oxf. H. 170,a,5. H. 324. Mārk. P. 47,8. Bhāg. P. 4,20,7. 6,8,31. 7,2, 22. Paṇḍar. 4,3,14. स° Schol. zu Kāp. 1,122. सर्वगत्व n. nom. abstr. Suçr. 1,249,19. — 2) m. a) *die Weltseele* Çārdar. im ÇKDa. — b) ein N. Brahman's H. an. 3,133. fg. Mān. g. 49. — c) ein N. Çiva's ebend. — d) N. pr. α) eines Sohnes des Bhīmasena von der Balaṃdharā MBu. 1,3839; vgl. सर्वगत und सर्वत्रग. — β) eines Sohnes des Paur-

ṣamāsa VP. 1, 10, 6. — 3) f. ā Fenchel (प्रियङु) Çabdaś. im ÇKDa. — 4) n. Wasser H. an. Med.

1. सर्वगण m. der ganze Haufe Pāṇ. Gaṇ. 3, 4.

2. सर्वगण (in den Brāhmaṇa proparox.) adj. die Schaar vollzählig habend, eine volle Schaar bildend ṚV. 1, 116, 3. 5, 51, 13. AV. 18, 4, 6. सर्वात्मान: सर्वगणा: TBr. 3, 7, 5, 7. 2, 6, 2, 5. TS. 3, 1, 9, 1. VS. 19, 48. Kāṭy. Çr. 25, 12, 6. Kauç. 45.

सर्वगत 1) adj. = सर्वग Muṇḍ. Up. 1, 1, 6. Çvetāç. Up. 3, 11. 21. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 1, 146. Jñān. 3, 130. Bhāg. 2, 24. Suçr. 1, 311, 13. 312, 9. Kumāras. 5, 38. Bhāg. P. 5, 1, 18. Sarvadarçanas. 13, 3. fgg. Schol. zu Kap. 1, 51. पप्रच्छानामयं चापि तयो: सर्वगतं विभु: so v. a. er fragte, ob sie vollkommen gesund seien, MBh. 3, 2118. यच्च किंचित्सर्वगतं भूमौ वा यदि वा दिवि so v. a. Alles was sich auf Erden oder im Himmel befindet 1, 8316. Davon °ता n. nom. abstr. Bhāsārjv. 23. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Bhīmasena von der Kālī Bhāg. P. 9, 22, 30; vgl. सर्वग und सर्वत्रग.

सर्वगति f. die Zuflucht Aller MBh. 12, 12864. Pāṇ. 4, 3, 24.

1. सर्वगन्ध m. pl. Wohlgerüche aller Art Suçr. 2, 115, 2. 300, 14. 419, 9. Varāh. Bṛh. S. 48, 42.

2. सर्वगन्ध 1) adj. alle Gerüche enthaltend Çat. Br. 10, 6, 3, 2. Kāṭh. Up. 2, 14, 2. — 2) f. ā ein best. wohlriechender Stoff Suçr. 2, 277, 13. 373, 16. 391, 8. vielleicht auch 390, 20. — 3) n. eine best. Mischung verschiedener wohlriechender Stoffe: a) Kakkola, Lavaṅga, Aguru und Sihlaka Çabdaś. im ÇKDa. — b) Karpūra, Kakkola, Aguru, Kuṅkuma und Lavaṅga Bhāvapr. im ÇKDa.

सर्वगन्धमय adj. (f. ī) alle Wohlgerüche in sich enthaltend (vielleicht °मणीति zu lesen oder eine unregelmässige Contraction anzunehmen von °मय इति) Weber, Kṛṣṇaj. 291.

सर्वगन्धिक adj. aus allen Wohlgerüchen bestehend: प्रदेह Suçr. 2, 388, 14.

सर्वगायत्र adj. ganz aus Gāyatrī bestehend Çat. Br. 11, 5, 9, 9. Çāṅkh. Br. 21, 6.

सर्वगु adj. sammt allem Vieh AV. 5, 6, 71.

सर्वगुण adj. für alle Fälle passend Kāṭy. Çr. 1, 3, 28. — Vgl. सार्वगुणिक.

सर्वगुणविप्रुद्गिर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabhūm. 2.

सर्वगुणसंचयगत m. eine best. Meditation Vjutp. 19.

सर्वगुणिन् (von सर्व + गुण) adj. alle Vorzüge besitzend MBh. 2, 530.

सर्वगुरु adj. aus lauter Längen bestehend Ind. St. 8, 429. fgg.

सर्वगुह्यमय (von सर्व + गुह्य) adj. alle Mysterien in sich enthaltend MBh. 1, 8421.

सर्वगृह्य adj. sammt allen Hausgenossen Çāṅkh. Br. 3, 4, 4, 6.

सर्वग्रन्थि m. die Wurzel vom langen Pfeffer Viçva im ÇKDa. °क n. dass. H. 421.

सर्वग्रह m. das Essen von allerlei Speise (ohne bestimmtes Verhältniss) Kāṭhaka 3, 1.

सर्वग्रहरूपिन् adj. etwa den Charakter aller Planeten habend: Kṛshṇa Pāṇ. 4, 1, 36.

सर्वग्रास adj. Alles verschlingend Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9, 147.

सर्वग्रासम् absol. in Verbindung mit अस् so v. a. mit Haut und Haar verschlingen Spr. (II) 1349.

सर्वघस 1) adj. (f. ā) P. 3, 2, 42. Vop. 26, 37. Jedermann bratend, — schindend: क्ल: P. Schol. भक्षितव्यता Mālatīm. 14, 20. — 2) f. ā Titel von Mallināth's Commentar zum Çiçupālavadha.

सर्वचक्रा f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Vjutp. 105.

सर्वचण्डाल m. N. pr. eines Mārapuṭra (ein Caṇḍāla vom Scheitel bis zur Zehe) Lalit. ed. Calc. 395, 18.

सर्वचरु m. N. pr. eines Manpes Ait. Br. 6, 1. Çāṅkh. Br. 29, 1.

सर्वचर्मण (von सर्व + चर्मन्) adj. ganz aus Leder gemacht P. 5, 2, 5. — Vgl. सार्वचर्मण.

सर्वच्छन्दक adj. alle Wünsche erfüllend (nach Nīlak.) MBh. 12, 12864.

सर्वज adj. (f. ā) aus allen drei humores entstanden, daran krank: योनि Suçr. 2, 396, 15. ज्वर 417, 3. विद्रधि 90, 18.

सर्वजन m. Jedermann P. 5, 1, 9, Vārtt. 7. gaṇa प्रतिजनादि zu P. 4, 4, 99. Varāh. Bṛh. S. 68, 117. Bhāg. P. 10, 16, 35. Pāṇ. 2, 15, 20. — Vgl. सार्वजनिक, सार्वजनीन.

सर्वजनता f. = सर्वजन Pāṇ. 5, 4, 21.

सर्वजनप्रिय 1) adj. Jedermann lieb Pāṇ. 3, 15, 22. — 2) ā eine best. Arzneipflanze, = महि Aufr. 70.

सर्वजनीन (von सर्वजन) adj. Jedermann heilsam P. 5, 1, 9, Vārtt. 7. gegen Jedermann gerichtet, Jedermann betreffend: मितभाषणम् Sarvadarçanas. 39, 6. Jedermann eigen Verz. d. Oxf. H. 257, a, N. 3. Davon °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 140, 17. — Vgl. सार्वजनीन.

सर्वजनीय adj. = सर्वेषां ज्ञानाय कृत: P. 5, 1, 9, Vārtt. 8.

सर्वजन्मन् adj. von aller Art AV. 11, 4, 24.

सर्वजय 1) m. vollständiger Sieg Verz. d. Oxf. H. 89, b, 19. — 2) f. ā f. Bez. einer best. Begehung bei Frauen Skanda-P. im ÇKDa.

सर्वजित् 1) adj. Alle besiegend. — 2) m. a) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Kaushītaki Kāuṣ. Up. 2, 7. — b) N. des 21ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus Varāh. Bṛh. S. 8, 37. Verz. d. Oxf. H. 331, b, 3 v. u. — c) N. eines Ekāha Pāṇḍav. Bhār. 16, 7, 2. 22, 6, 1. 4. Kāṭy. Çr. 22, 1, 14. 3, 4. 10, 23. 23, 6, 29.

सर्वजीव m. die Seele von Allem Bhāg. P. 10, 16, 38. Pāṇ. 4, 3, 26.

सर्वजीवमय (von सर्वजीव) adj. die Seele von Allem seiend R. 7, 23, 6, 17.

सर्वजीविन् adj. dessen Ahnen (nämlich Vater, Grossvater und Urgrossvater) sämmtlich leben Āçv. Çr. 2, 6, 28.

सर्वज्ञ 1) adj. (f. ā) allwissend (von Göttern und Menschen gebraucht, insbes. von Ministern und Philosophen); = Çiva AK. 1, 1, 1, 28. Trik. 3, 3, 30. H. 198. an. 3, 152. Med. n. 5. Hall. 1, 11. = Buddha, Sugata, Gina AK. 1, 1, 1, 8. Trik. H. an. Med. = Arhant (bei den Gaina) H. 23. H. an. सर्वज्ञा = Durgā Devī-P. im ÇKDa. — Muṇḍ. Up. 1, 1, 9. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9, 126. 163. Weber, Rāmāy. Up. 338. Jogas. 1, 25. R. 2, 66, 15. 106, 2. Rāgat. 10, 21. Mālav. 15, 15. Spr. (II) 2164. 5188. 6913. Varāh. Bṛh. S. 51, 1. Kathās. 17, 8. 30, 70. 34, 190. 49, 209. Prab. 19, 14. 51, 3. 5. Verz. d. Oxf. H. 3, b, 24. 30, b, 21. 89, a, 25. 38. 256, b, 9. 259, a, 7. 9. 27. b, 30. LA. (III) 89, 7. 90, 9. Z. d. d. m. G. 14, 570, 23. Bhāg. P. 2, 4, 5. 5, 5. 6, 4, 25. Kusum. 36, 16. Sarvadarçanas. 28, 2. fgg. 129, 17. भट्ट° 118, 7 (vielleicht Kumārilabhaṭṭa gemeint). स्व°

Sgr. (II) 2801. श्रीसर्वज्ञाय (Çiva gemeint) नमः Paṇḍav. ed. ord. 1, 1. — 2) m. N. pr. verschiedener Personen Verz. d. Oxf. H. 32,b, 24. 244,a, No. 606. Burnouf, Intr. 542. R. Gorr. I, 353. Hall 23. Hit. 83, 18. 129, 9. 16. — Vgl. भा°, सार्वज्ञ, सार्वज्ञ्य.

सर्वज्ञता (von सर्वज्ञ) f. *Allwissenheit* Kathās. 49, 22. Verz. d. Oxf. H. 250,b, 22. 24. 27.

सर्वज्ञत्व (wie eben) n. dass. MBh. 1, 395. R. Gorr. 1, 67, 14. Nilak. 64. Verz. d. Oxf. H. 7,a, No. 42. Sarvadarçanas. 50, 8. Kusum. 37, 13. Comm. zu Jogas. 1, 25.

सर्वज्ञदेव m. N. pr. eines Gelehrten Tiran. 226.

सर्वज्ञनारायण m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279,b, 38. Verz. d. B. H. No. 392. सर्वज्ञश्रीनारायण 394. 399.

सर्वज्ञपुत्र m. Bein. Siddhasena's Verz. d. Oxf. H. 152,a, N. 3.

सर्वज्ञमित्र m. N. pr. verschiedener Personen Rāga-Tar. 4, 210. Tiran. 159. 168.

सर्वज्ञमन्य adj. *sich für allwissend haltend;* davon °ता f. nom. abstr. Rāga-Tar. 3, 141.

सर्वज्ञरामेश्वरभट्टारक m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 247,a, 35. fg.

सर्वज्ञवासुदेव m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b, 38.

सर्वज्ञविष्णु m. N. pr. eines Philosophen Sarvadarçanas. 1, 7.

सर्वज्ञातृ nom. ag. *allwissend;* davon °ज्ञातृत्व n. *Allwissenheit* Verz. d. Oxf. H. 231,b, 26. 32.

सर्वज्ञात्मगिरि m. N. pr. des Verfassers des Saṁkshepaçārīraka Colebr. Misc. Ess. 1, 335. सर्वज्ञात्ममुनि Hall 90.

सर्वज्ञान 1) adj. *Alles kennend.* — 2) m. N. pr. eines Gottes Tiran. 294. — 3) n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109,a, 1 v. u. °ज्ञानोत्तम n. desgl. 12.

सर्वज्ञानमय adj. *alles Wissen in sich enthaltend* M. 2, 7. R. 7, 23, 4, 32.

सर्वज्यानि f. *vollständiger Verlust der Habe, vollkommener Ruin* AV. 11, 3, 38. fg. 12, 5, 22. Çat. Br. 14, 4, 2, 23. Paṇḍav. Br. 6, 7, 15. 25, 10, 20. Kātj. Çr. 4, 11, 1. 24, 6, 16.

सर्वज्योति oder °तिस् N. eines der vier Sāhasra Paṇḍav. Br. 16, 9, 1. Kātj. Çr. 22, 2, 8.

सर्वज्योतिषसंग्रह m. Titel *einer astronomischen Compilation* Mack. Coll. 1, 121.

सर्वज्वर m. *Fieber aller Art* oder *ein aus den sämmtlichen humores entsprungenes Fieber:* °ज्वरापह Suçr. 1, 142, 15.

सर्वतःपाणिपाद adj. *überall Hände und Füsse habend* Çvetāçv. Up. 3, 16 = Bhag. 13, 13 = MBh. 13, 1012 (°पादस्त्वं mit der ed. Bomb. zu lesen).

सर्वतनु und °नू adj. *an Leib* oder *Person vollständig* AV. 5, 6, 11. 11, 3, 22. Çat. Br. 4, 6, 1, 1. 11, 1, 8, 6. Taitt. Ār. 2, 18, 3. Āçv. Çr. 1, 7, 8.

सर्वतन्त्र adj. = सर्व तन्त्रमधीते वेद वा P. 4, 2, 60, Vārtt. 6, Schol.

सर्वतपोमय (von सर्व + तपस्) adj. *alle Kasteiungen in sich enthaltend* Paṇḍar. 4, 5, 33.

सर्वतर compar. von सर्व P. 6, 1, 191, Schol.

सर्वतश्चक्षुस् adj. *der seine Augen überall hat* Spr. (II) 5389.

सर्वतःप्रभा f. *eine best. Pflanze (durchweg schön),* = प्रियङ्गु Carāṇ. im ÇKDr.

सर्वतःश्रुतिमत् adj. *überall Ohren habend* Çvetāçv. Up. 3, 16 = Bhag. 13, 13 = MBh. 13, 1014.

सर्वतस् (von सर्व) adv. Vop. 7, 97. = परितस्, समन्ततस् AK. 3, 5, 13. H. 1529. Hālis. 5, 83. 1) *von allen Seiten, nach allen Seiten hin, allenthalben, allerwärts, überall:* सर्वतो नो भद्रमा वह RV. 2, 43, 2 (einzige Stelle des RV. und spät). प्र वो धमतु सर्वतः AV. 3, 2, 2. 20, 10. 5, 67, 1. या विश्वतो मुच्यते या च सर्वतः 19, 8, 10. 11, 7, 4. 18, 1, 54. Çat. Br. 1, 1, 3, 5. 3, 4, 1, 14. समन्तं सर्वतः पृथिवीं जयन् Ait. Br. 8, 21. TS. 6, 2, 6, 3. Kātj. Çr. 21, 4, 10. Āçv. Gṛhj. 1, 3, 1. 2, 4, 14. 7, 7. Kaṭh. Up. 4, 1, 1. Kaṭhop. 2, 21. Muṇḍ. Up. 3, 2, 5. Maitrjup. 6, 17. M. 7, 3. Jāgñ. 1, 285. MBh. 1, 7701. 7705. 2, 20. 3, 2277. 5, 5960. 13, 2787. R. 1, 2, 11. 5, 18. 9, 19. 39. 2, 56, 6. 4, 7, 11. 15, 17. Bṛ. 1, 23. 26. Ind. St. 8, 340. Çik. 4, 12. 41, 18. Viṣṇ. 30, 12. Spr. (II) 2535, v. l. 2388. 4761, v. l. Kathās. 15, 21. 24, 105. 25, 134. Rāga-Tar. 3, 462. Bhāg. P. 1, 17, 14. 19, 23. 4, 10, 23. Paṇḍar. 62, 23. भासयन्सर्वतो दिशः MBh. 3, 1668. gewöhnlich ist सर्वतो दिशः so v. a. सर्वतोदिशम् 2741 (°दिशम् ed. Bomb.). 7, 490 (°दिशम् ed. Bomb.). R. 1, 17, 9 (16, 9 Gorr.). 3, 54, 11. 5, 15, 23. 32, 22. Rāga-Tar. 5, 112. — 2) *rings um,* mit acc.: प्रभया सर्वतः शर्वम् Vop. 5, 7. Sidh. K. zu P. 2, 3, 2. — 3) *vollständig, vollkommen, ganz und gar:* निर्वृतिरिति त्वाहे परि वेद सर्वतः AV. 6, 84, 1. प्रसुप्त M. 1, 5. विनाशयति 7, 19. MBh. 1, 6157. 8453. Matsjop. 27. R. 2, 37, 2. 39, 14. Spr. (II) 3083. Bhāg. P. 1, 18, 2. उपपन्न *mit Allem versehen* Spr. (II) 27. — 4) = सर्वस्मात् oder सर्वेभ्यस् Kātj. Çr. 13, 4, 21. Āçv. Çr. 1, 12, 33. मुच्यते सर्वतो भयात् Bhāg. P. 6, 8, 39. तदर्णं प्राप्नुयात्सर्वं दशबन्धं च सर्वतः (d. i. ऋणात्) M. 8, 107. सर्वतो धर्मषड्भागो राज्ञो भवति रक्षतः Spr. (II) 6915. प्रति-यत् von *Jedermann entgegennehmen* M. 4, 247. 251. 10, 102. Jāgñ. 1, 216. सर्वतः सारमादत्ते यथा मधुकरो बुधः Bhāg. P. 4, 18, 2. विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः Spr. (II) 7194. पत्तारपति सर्वतः 5041. अभिविशङ्किन् 4013. आशङ्किन् Vasiṣṭha Dh. S. 74, 3. सम्-रक्ष् M. 7, 135. रक्ष् Bhāg. P. 6, 3, 18. 8, 22, 18. पा *beschützen* Spr. (II) 6415. — Statt सर्वतः R. 2, 54, 27 liest die ed. Bomb. पर्वतः, 104, 29 तत्ततस्, R. Gorr. 2, 87, 3 पुरतस् ed. Schl.

सर्वताति (wie eben) P. 4, 4, 142. f. 1) *Gesammtheit:* यादृस्मन्यमा सुव सर्वतातिम् nämlich der Götter RV. 3, 54, 1. स्वस्तिमेमिळे सर्वतातये *für Alles was zu uns gehört* 6, 56, 6. loc. °ता *in Gesammtheit, insgemein, alle zusammen; überhaupt, durchaus:* या मरुतः सूरीन्स् ° जिगात 7, 37, 4. 18, 19. 5, 69, 3. घनागान्नो वोचत स् ° 3, 54, 19. 1, 94, 15. वेश्यं स् ° *den ganzen Anhang* 4, 26, 3. 6, 12, 2. 15, 18. 10, 74, 3. Çāṅkh. Çr. 5, 14, 9. — 2) *Vollzähligkeit, Vollständigkeit:* त यौदित्या या गत सर्वतातये RV. 1, 106, 2. 9, 96, 4. 10, 36, 14. 100, 1. देवं त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये AV. 6, 3, 3. — Nach Nir. 11, 24 = कर्मतति.

सर्वतापन adj. *Jedermann peinigend;* m. ein N. *des Liebesgottes* Candrabhatṭ. bei Wilson.

सर्वतिक्ता f. *Solanum indicum Lehm. (durchweg bitter)* Rāgān. im ÇKDr.

सर्वतीक्ष्ण adj. *ganz scharf* Ind. St. 4, 139, 2.

सर्वतीर्थ 1) sg. nach dem Comm. N. pr. eines Dorfes R. 2, 71, 14. — 2) n. pl. *alle heiligen Badeplätze* Spr. (II) 6914. 6930.

सर्वतीर्थमय adj. (f. ई) *alle heiligen Badeörter in sich enthaltend* Weber, Kṛṣṇaj. 291 (f. या des Metrums wegen). Paṇḍar. 4,3,192.

सर्वतीर्थात्मक adj. dass. Paṇḍar. 4,1,26.

सर्वतेजस् m. N. pr. eines Sohnes des Vjushṭa von der Pushkariṇî und Vaters des Kakshus (anders Burnouf) Bhâg. P. 4,13,14.

सर्वतेजोमय adj. (f. ई) *allen Glanz in sich vereinigend* Spr. (II) 5384. R. 7,23,2,3.

सर्वतोऽक्षिशिरोमुख adj. *überall Augen, Kopf und Mund habend* Çvetâçv. Up. 3,16 = Bhag. 13,13 = MBh. 13,1013.

सर्वतोगामिन् adj. *überall hindringend:* घस्र Kumâras. 3,13.

सर्वतोदिक्कम् (°दिक्कम् Ta.) Râǵa-Tar. 5,262 fehlerhaft für °दिशम्.

सर्वतोदिशम् (von सर्वतस् + 2. दिश्) adj. *nach allen Richtungen hin*, von a. *R. her* (seltener) MBh. 2,2265. 3,2658. 2741 (nach der ed. Bomb.). 16161. 6,4437. 7,490 (nach der ed. Bomb.). 14,1987. 15,185. R. 4,57, 22. 5,20,12. 75,2. Râǵa-Tar. 5,262 (so zu verbessern). Bhâg. P. 1,7, 31. 12,9. 4,10,25. 14,38. 28,4. 7,7,4. 8,21,27. सर्वतो दिशः s. u. सर्वतस् 1). — Vgl. सर्वतोमार्गम्.

सर्वतोभद्र 1) adj. *durchweg erfreulich, lieblich* u. s. w.: eine Rede Bhâg. P. 10,71,11. Kṛshṇa Paṇḍar. 4,3,16. — 2) m. a) *Azadirachta indica Juss.* (s. निम्ब) AK. 2,4,2,12. H. an. 3,13. fg. Med. r. 309. fg. Ratnam. 31. — b) *Bambusrohr* Çabdaǵ. im ÇKDr. — c) *ein best. Parfum* Varâh. Bṛh. S. 77,26. — d) *eine best. Tempelform* AK. 2,2,10. H. an. Med. द्वारैर्युतश्चतुर्भिर्वृक्षशिखरो भवति सर्वतोभद्रः Varâh. Bṛh. S. 56,27; vgl. °क und 4) a). — e) *eine best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 18, 19. 19,50. — f) *eine künstliche Strophe, in der jede Pâda-Hälfte, umgekehrt gelesen, die andere Hälfte darstellt*, H. an. Med. Beispiele Çiç. 19,27. Rîṭnâv. 13,60. — g) *eine Art Räthsel:* °ज्ञाति Hall. Anth. 294. — h) *Vishṇu's Wagen* Çabdaǵ. im ÇKDr. — i) N. pr. eines Berges Bhâg. P. 5,20,21. — 3) f. या a) *Gmelina arborea Roxb.* AK. 2,4,2,16. H. an. Med. — b) *a sort of yam (Dioscorea)* Çabdaǵ. bei Wilson. — c) *Schauspielerin* H. an. Med. — 4) n. a) *ein Gebäude mit durchlaufenden Gallerien ringsumher:* सप्रतिषिद्धालिन्दं समन्ततो वास्तु सर्वतोभद्रम् Varâh. Bṛh. S. 53,31. — b) *ein best. Diagramm* (चक्र, मण्डल) Verz. d. Cambr. H. 70. Weber, Kṛshṇaj. 270. fgg. 275. fgg. Z. d. d. m. G. 6,93. Verz. d. B. H. No. 914. 920. 922. Verz. d. Oxf. H. 93,a,6 v. u. 95,b,13. 44 (घत्य°). 284,a,31. fgg. °मण्डलदेवता मन्त्राः 396,a,3 v. u. °चक्रव्याख्यान Mack. Coll. 1,126. — c) Bez. *einer best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 11,a, N. 1. — d) N. pr. eines Göttergartens देवोद्यान) Bhâg. P. 5,16,15.

सर्वतोभद्रक 1) adj. छेद *ein Schnitt bei fistula in ano, durch welchen der After in vier Lappen getheilt wird*, Suçr. 2,59,7. — 2) m. = सर्वतोभद्र 2) d) Varâh. Bṛh. S. 56,18.

सर्वतोभाव m. *das Ringsumsein* Nir. 1,3.

सर्वतोमार्गम् (von सर्वतस् + मार्ग) adv. *nach allen Richtungen* Bhâg. P. 10,41,36. — Vgl. सर्वतोदिशम्.

सर्वँतोमुख 1) adj. (f. ई) a) *nach allen Seiten das Gesicht habend, überallhin gekehrt* VS. 32,4. TS. 5,7,2,4. Çat. Br. 2,6,2,14. Çâṅkh. Gṛhj. 3,12. 6,3. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,82. 94. 143. 146. 155 (अति°). ब्रह्मन् ° Mbh. 1,7663. रुद्रस्य ° 7,1337. Brahman Kumâras. 2,3. Verz. d. Oxf. H. 75,b,27. Paṇḍar. 4,3,15. die Sonne MBh. 3,154. तेजस् Bhâg. P. 1,7,26. चैतन्य Sarvadarçanas. 85,8. — b) *allseitig, vollkommen, vollständig:* प्रभुता Çiç. 122. वेदाध्य Mâlatîm. 129,6. 7. — 2) m. a) *eine best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,50. — b) *die Seele;* ein N. Brahman's und Çiva's H. an. 3,9. Med. kh. 19. *ein Brahmane* Çabdaǵ. im ÇKDr. *der Himmel* Çabdaǵ. ebend. — 3) n. a) *Wasser* AK. 1,2,2,4. H. 1070. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 103,a,28. — b) *der Luftraum* H. an. Med.

सर्वतोवृत्त adj. *allgegenwärtig* MBh. 12,12864.

सर्वँत्र (von सर्व) adv. P. 5,3,10. Vop. 7,99. 1) *überall, stets, in allen Fällen, jederzeit* Çat. Br. 2,4,2,9 4,4,4,18. Âçv. Çr. 2,2,5. Kâṭy. Çr. 3,2,6. 5,8. 4,10,5. 9,6,10. 11,1,7. स्वाकारः स° 4,4,18. Liṭ. 6,10, 17. स° चत्वारि 7,11,9. देवशब्दं स° वर्जयेयुः 8,9,8. Kauç. 8. 57. 136. VS. Prât. 2,15. 4,16. 24. 77. 97. AV. Prât. 3,60. TS. Prât. 2,25. 12, 11. 17,2. P. 4,3,22. 6,1,122. 1,1,34, Schol. M. 2,180. 7,52. 8,241. R. 1,4,24. Çik. 15. Vikr. 39,14. Spr. (II) 149. 2999. 6839. 6916. 6918. fg. 7453. Varâh. Bṛh. S. 11,18. 19,1. 53,69. Kathâs. 24,104. Bhâg. P. 7, 7,55. Hit. Pr. 2. 10,14. Dhûrtas. 85,10. सर्वत्रैव ṚV. Prât. 2,27. 4,14. Spr. (II) 6262. सर्वत्रापि 6174. सर्वत्र सर्वदा 2338. Hariv. 15055. Kap. 1, 117. Bhâg. P. 2,2,36. सर्वथा सर्वत्र सर्वदा Sarvadarçanas. 42,6. न स° *in keinem Falle* Varâh. Bṛh. S. 2,16. — 2) = सर्वस्मिन् adj. und subst. शान्तिकर्मणि Mârk. P. 92,15. यज्ञमये Schol. zu Çik. 7,10. कुशलः Hariv. 13054. कुशलम् MBh. 3,2471. R. 1,52,5. 10. भद्रम् Prasn. 30,4. प्रमादी Vikr. 30,14. रमते प्राज्ञः Spr. (II) 6917. पराजितः 7476. योग्यतम् 7478. समदृष्टित्वम् Râǵa-Tar. 1,357. Bhâg. P. 3,24,17. 6,17,34. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते Raǵu. 3,62. सर्वत्राभ्यागतो गुरुः (v. l. सर्वस्या°) Spr. (II) 2172. 4448. दयां कर् 4313. सर्वत्र न शोभनं दारु *Holz für Nichts gut* Varâh. Bṛh. S. 79,37. — Vgl. सार्वत्रिक.

सर्वत्रग 1) adj. P. 3,2,48, Vârtt. 1. *überall hindringend, allgegenwärtig:* तेजस् M. 9,321 (= MBh. 5,482). वायु Bhag. 9,6. घृतात्मन् MBh. 3,10954. Bhag. 13,3. विष्णु MBh. 3, 10919. नारद Hariv. 13055. ज्ञान Spr. (II) 5277. — 2) m. N. pr. eines Sohnes a) eines Manu Hariv. 470 (nach der Lesart der neueren Ausg., संवर्तग die ältere). Mârk. P. 94,21. — b) des Bhîmasena VP. 4,20,11; vgl. सर्वग und सर्वगत.

सर्वत्रगत adj. *auf Alles sich erstreckend, allgemein, vollkommen:* कुशल MBh. 3,2119.

सर्वत्रगामिन् 1) adj. *überall hindringend* — 2) m. *Wind* Çabdaǵ. im ÇKDr.

सर्वत्रसत्र n. *Allgegenwart* Weber, Râmây. Up. 287. — Vgl. सर्वदेवसत्र.

सर्वत्रापि (सर्वत्र + अपि) adj. *überallhin reichend* Paṇḍav. Bh. 6,3,14.

सर्वँत्व (von सर्व) n. *Ganzheit, Gesammtheit, Vollständigkeit:* यज्ञस्य Çat. Br. 1,1,4,1. 3. 2,1,4,3. 3,1,3,12. 13,2,5,4. 5,3,2. सर्वस्य TS. 5, 3,12,2. ब्रह्मन् ° Verz. d. Oxf. H. 44,b,19.

सर्वँथा (wie eben) adv. प्रकारवचने P. 5,3,23. Vop. 7,109. देलुबाख्योः Med. avj. 37. प्रतिज्ञायाम्, भृशे, क्षेपे Çabdar. im ÇKDr. 1) *in allen Fällen, jedenfalls, durchaus* M. 2,15. 7,173. 9,319. MBh. 3,2519. fg. 2737. R. 1,11,11. 32,17. 2,30,41. 34,35. 51,6. 58,24. 3,35,23. 63,12. Spr. (II)

1144. 3283. 6920. fgg. 7055. Mṛcch. 129,15. Çik. 7,7. 15,4. Vikr. 69, 8. Varâh. Bṛh. S. 11,6. 24,28. Kathâs. 34,236. 46,238. 49,34. 57,94. Prab. 27,18. Pañcat. 161,13. Comm. zu TS. Prât. 24,5. सर्वथापि MBh. 1,6162. सर्वथैव M. 4,73. mit einer Negation *in keinem Falle, durchaus nicht:* मा गच्छ स° R. 2,34,38. याचते न ब्रूयं देयं स° MBh. 3,2924. न ज्ञाने नियमः तस्य स° R. 4,6,3. ṚV. Prât. 12,2. Mâlatîm. 154,13. Buâc. P. 1,13,41. Pañcat. 105,1. Hit. 12,16. 16,14. 24,1. Vet. in LA. (III) 18,11. Sarvadarçanas. 42,6. Comm. zu TS. Prât. 1,59. सर्वथैव न Pañcat. 164,2. सर्वधा सर्वत्र सर्वदा Sarvadarçanas. 42,6. — 2) *auf jegliche Weise* R. 2,100,36. *auf welche Weise es auch sei:* स° वर्तमानो ऽपि Bhag. 6,21. 13,23. °भवन् *in beliebigen Verhältnissen sich befindend* ṚV. Prât. 2,18. °विषय adj. Verz. d. Oxf. H. 232,a,11. — 3) *vollständig, im höchsten Maasse* MBh. 14,536. अनुगृहीतो ऽस्मि Çik. 38,15. कृतो ऽस्मि Vikr. 32,8. Prab. 117,3. Hit. 81,22. सर्वथासमर्थः *ganz und gar unfähig* 15,19.

सर्वद् adj. (f. धा) *Alles verleihend* Spr. (II) 6923. Pañcat. 4,3,14. Verz. d. Oxf. H. 132,b, No. 242. 170,a,4. सर्वदेक्षिनाम् 69,q,5.

सर्वदण्डधर् adj. *Jedermann strafend:* Çiva MBh. 14,196.

सर्वदमन 1) adj. *Alles bändigend.* — 2) m. a) Bein. Bharata's, des Sohnes der Çakuntalâ, Taik. 2,8,9. MBh. 1,2995. 7,2383. Hariv. 1722. Çik. 192. — b) N. pr. eines Asura Kathâs. 44,144. 45,382. 47, 27. — Vgl. सार्वदमन.

सर्वदरात्र m. N. pr. eines *Fürsten* (Çâkjamuni in einer früheren Geburt) Hiouen-thsang 1,136.

सर्वदर्शन adj. *allsehend* Buâc. P. 3,12,29. 6,18,21. Çiva Çiv.

सर्वदर्शनसंग्रह m. *Compendium aller philosophischen Systeme*, Titel eines von Sâjaṇa-Mâdhava verfassten und in der Bibl. ind. gedruckten Werkes.

सर्वदर्शिन् 1) adj. *allsehend* MBh. 12,12864. R. 2,106,5. Varâh. Bṛh. S. 51,1 (°दर्शी zu lesen). — 2) m. *ein* Buddha Taik. 1,1,10. ein Arhant bei den Gaina H. 25.

सर्वदा (von सर्व) adv. *allezeit, stets* P. 5,3,6,15. Vop. 7,100. AK. 3,5,22. AV. 1,32,2. 3,6,27. 10,6,22. यस्य देवा निधिं रक्षन्ति सर्वदा 7,23. 9,12. 12, 2,30. 18,4,29. Çat. Bṛ. 7,5,2,54. 9,2,3,42. सर्वदा देवास्य स्वयं कृतं भवति 11, 1,7,4. Kauç. 56. M. 2,61. 74. 160. 194 u. s. w. MBh. 3,2096. R. 1,1,17. 6,10,24. Weber, Râmat. Up. 338. Spr. (II) 1669. 6534. 6891. 6923. Varâh. Bṛh. S. 55,18. Kathâs. 6,148. 22,20. Hit. 14,18. 17,20. 19,2. Vet. in LA. (III) 1,15. सर्वत्र सर्वदा Hariv. 15055. Spr. (II) 2338. 3056. Buâc. P. 2,2,36. सर्वधा सर्वदा सर्वत्र Sarvadarçanas. 42,6. mit einer Negation *niemals* M. 4,21. अकार्यवाद्नर्घ्यवादतथवाद्य स° Spr. (II) 6928.

सर्वदास m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,a,15.

सर्वदुःखक्षय m. *das Verschwinden aller Schmerzen* als Umschreibung von मोक्ष *die letzte Erlösung* H. 75.

सर्वदुष्टासुकृत् adj. *alle Bösewichter vernichtend* Pañcat. 4,3,27 (S. 248).

सर्वदृश् 1) adj. *allsehend* Hariv. 8313 (सर्वकृत् die neuere Ausg.). Buâc. P. 4,22,9. 10,14,39. Pañcat. 4,3,15. — 2) f. pl. *alle Augen* so v. a. *alle Sinnesorgane* Buâc. P. 3,24,50.

सर्वदेवतामय (von सर्व + देवता) adj. (f. ई) *alle Götter in sich enthaltend* Buâc. P. 5,23,8.

सर्वदेवत्य (wie oben) adj. *alle Götter darstellend, — bedeutend, sämmtlichen Göttern zugeeignet:* वामम् TBr. 1,1,2,11 u. s. w. TS. 5,6,20,1. Çat. Bṛ. 6,3,2,21. कृषि 7,2,2,12. 10,6,5,3. अग्निक्षेत्र 11,5,2,11. 13,4,1,13.

सर्वदेवमय (von सर्व + देव) adj. (f. ई) *alle Götter in sich enthaltend* R. 7,23,2,32. Râga-Tar. 3,416. Buâc. P. 3,6,35. 11,1. 14,17. 18, 48. 10,86,54. Pañcar. 4,3,63. ein Brahmane Citat beim Schol. zu Pañcat. Bṛ. 5,3. ein Fürst Spr. (II) 6924. fg. Buâc. P. 4,14,27. ein Gast Spr. (II) 1177.

सर्वदेवमुख m. (!) *aller Götter Mund*, ein N. Agni's Gaṭâdh. im ÇKDa.

सर्वदेवात्मक adj. *die Natur aller Götter habend, alle Götter in sich enthaltend* Sâj. zu ṚV. 7,40,5.

सर्वदेवात्मन् adj. = सर्वदेवात्मक Weber, Râmat. Up. 350 (die bessere Lesart).

सर्वदेवेश (सर्व-देव + ईश) m. *Herr aller Götter:* Çiva MBh. 3,1624.

सर्वदेशवृत्तान्तसंग्रह m. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,99.

सर्वदेशीय (von सर्व + देश) adj. *aus jeglichem Lande stammend* Kull. zu M. 8,143.

सर्वदेश्य (wie oben) adj. *an jeglicher Stelle stehend* ṚV. Prât. 9,20.

सर्वदैवसत्र (सर्वदा-एव + सत्र) n. *das zu-aller-Zeit-Sein* Weber, Râmat. Up. 287. — Vgl. सर्वत्रसत्र.

सर्वद्रष्टृ nom. ag. *Allschauer, allsehend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,147.

सर्वद्यक्ष् adj. = सर्वानसति Vop. 26,79. Vgl. विश्वद्यक्ष्.

सर्वधनिन् adj. von सर्व + धन P. 5,2,135, Vârtt. 2, Schol.

सर्वधन्वन् m. ein N. des Liebesgottes H. ç. 77. wohl °धन्विन् *der beste Bogenschütze* zu lesen.

सर्वधर 1) m. N. pr. eines Lexicographen Colebr. Misc. Ess. 2,20. 35 Verz. d. Oxf. H. 183,a,2. — 2) n. Titel eines medicinischen Werkes des Karatha Verz. d. Oxf. H. 22,b,9.

सर्वधर्मपदप्रभेद m. *eine best. Meditation* Vjutp. 18.

सर्वधर्मप्रकाश m. Titel einer Schrift Hall 177.

सर्वधर्मप्रवेशमुद्रा f. *eine best. Meditation* Vjutp. 16.

सर्वधर्ममय (von सर्व + धर्म) adj. *alle Gesetze in sich enthaltend:* ब्रह्मन् n. Jâḍ. 1,213.

सर्वधर्ममुद्रा f. *eine best. Meditation* Vjutp. 16.

सर्वधर्मसमता f. desgl. ebend. 18.

सर्वधर्मसमवशरणसागरमुद्रा f. desgl. ebend. 17.

सर्वधर्मोत्तरघोष m. N. pr. eines Bodhisattva Wassiljew 139.

सर्वधा (सर्व + 4. धा) adj. *all-labend:* भोजन ṚV. 5,82,1. 8,31,11. मर्त्येषु सर्वधा असि 9,18,1.

सर्वधामन् n. *die Wohnstätte —, Heimath von Allem* Pañcar. 2,1,4.

सर्वधारिन् m. N. *des 22sten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,37. Verz. d. Oxf. H. 331,b,3 v. u.

सर्वधुरावह (सर्व-धुरा + वह) adj. zur Erklärung von सर्वधुरीण AK. 2,9,65.

सर्वधुरीण adj. *zu jedem Anspann tauglich* P. 4,4,78. AK. 2,9,66. H. 1261. — Vgl. एकधुरीण.

1. सर्वनामन् n. *Pronomen* (mit सर्व an der Spitze) Nir. 5,32.7,2. AV. Paiṅ. 2,44. 4,69. P. 1,1,27. fgg. 2,3,27. 5,3,71. 6,3,91. 7,1,14. 52. 3, 114. AK. 3,6,6,43. Comm. zu TS. Paiṅ. 2,7. 8,6. 15,3.

2. सर्वनामन् adj. *alle Namen habend* Nir. 6,36 (zur Erkl. von सर्वगण). Bhāg. P. 6,4,28.

सर्वनामस्थान n. Bez. *derjenigen Casusendungen, vor denen der Stamm in starker Form erscheint*, P. 1,1,42. fg. 4,17. 6,1,199. 4,8. 7,1,70. 86. 3,110.

सर्वनाश m. *vollständiger Mangel:* कविद्याम् Kāṭh. Ça. 25,4,12. *der Untergang von Allem, vollständiger Ruin, Verlust von Allem* M. 8,353. Spr. (II) 6929. 6938, v. l. °नाशं कर् *Alles zu Grunde gehen lassen* 4914.

सर्वनिर्तेपा f. (sc. गणना) Bez. *einer best. Zählmethode* Lalit. ed. Calc. 169,11. सर्वनिर्तेपता Vjutp. 185.

सर्वनिधन m. N. eines Ekāha Çāṅkh. Ça. 15,10,2.

सर्वनियोजक adj. *Alle antreibend, — anweisend:* Vishṇu Paṅkar. 4,3,26.

सर्वनिलय adj. *überall seine Wohnstätte habend* Paṅkar. 1,3,55.

सर्वनिवरणविष्कम्भिन् m. N. pr. eines Bodhisattva Burnouf, Intr. 222.557. Tāran. 67. Wilson, Sel. Works 2,13. fg. 18.

सर्वदद् m. N. pr. eines Mannes Avadānakalpalatā 15.

सर्वदम m. ein Bein. Bharata's (s. सर्वदमन) H. 702.

सर्वदमन m. desgl. H. 702, Schol. vielleicht nur fehlerhaft für सर्वदमन.

सर्वपति m. *Allherr* Weber, Kṛshṇaj. 308.

सर्वपत्त्रीण (von सर्व + पत्र) adj. *den ganzen Wagen einnehmend* P. 5,2,7. सारथि Schol.

सर्वपथीन (von सर्व + पथ) adj. *den ganzen Weg einnehmend* P. 5,2, 7. रथ Schol. धुन्वन्सर्वपथीनं खे वितानं पक्षयोरसौ Bhaṭṭ. 5,101.

सर्वपद् (nom. °पात्) adj. *allfüssig:* पक्ष AV. 10,10,27.

सर्वपद् n. pl. *Wörter aller Art:* °ममाम्नान Naiṣh. 3,12. Nir. 3,13.

सर्वपद्धति f. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,138.

सर्वपरिफुल्ल ad. *ganz aufgeblüht* Vjutp. 143.

सर्वपरु oder °परुस् adj. *alle Gelenke habend* AV. 11,3,32.

1. सर्वपशु m. 1) *ein ganzes Vieh*, N. pr. eines Dummkopfes Verz. d. Oxf. H. 135,b,36. — 2) pl. *alle Thieropfer* Liṭ. 5,4,3.

2. सर्वपशु adj. *für alles Vieh* (d. h. *Thieropfer*) *geeignet, ganz aus Thieropfer bestehend* TBr. 1,2,2,19. Liṭ. (Dhāṅs.) 2,11,18.

सर्वपा f. N. pr. der Gattin Bali's Çaṅkarshaṇa bei Wilson.

सर्वपाञ्चालक m. *ganz aus* Paṅkāla *bestehend* u. s. w. Schol. zu P. 6,2,105. 7,3,13. 1,1,72, Vārtt. 11.

सर्वपात्रीण (von सर्व + पात्र) adj. *die ganze Schüssel füllend* P. 5,2,7. ओदन Schol.

सर्वपाद् m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 2,17.

सर्वपालक adj. *Allhüter, Allbeschützer* Paṅkar. 4,1,35.

सर्वपुण्य adj. *vollkommen (in allen seinen Theilen) schön:* काश्मीरमण्डल MBh. 3,10845.

सर्वपुण्यसमुच्चय m. *eine best. Meditation* (समाधि) Lot. de la b. l. 253. 423.

सर्वपुरक्षेत्रमाहात्म्य n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,88.

सर्वपुरुष und °पूरुष adj. *alle Männer habend* u. s. w. AV. 5,6,11. 10,3,10. Āçv. Ça. 1,7,8. Kauç. 43. In Ableitungen, die eine Steigerung des ersten Vocals erheischen, wird auch der erste Vocal des zweiten Wortes gesteigert nach gaṇa धनुशतिकादि zu P. 7,3,20. In diesem Falle ist das Wort wohl subst. *Jedermann.*

सर्वपूत adj. *durchweg rein* Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,116.

सर्वपूरक adj. *Alles erfüllend* Paṅkar. 4,3,66.

सर्वपूर्णत्व n. = सौभाग्य *Vollständigkeit, Vollauf* Taik. 2,8,37.

सर्वपूर्व adj. *dem ein beliebiger* (Laut) *vorangeht* RV. Paiṅ. 5,25.

सर्वपष्ठ adj. (f. आ) *mit allen (sechs)* Pṛshṭha *versehen:* सोम TBr. 1, 4,2,7. विश्वजित् TS. 5,6,8,2. 7,1,10,4. Çat. Br. 10,2,5,16. 4,6,2,18. इष्टि 9,4,3,11. Kāṭh. 12,5. Āçv. Ça. 7,2,11. 8,4,18. f. (sc. इष्टि) TS. 2, 3,2,1. 2. Çāṅkh. Br. 19,5.

सर्वप्रद् adj. (f. आ) *Alles verleihend* Paṅkar. 1,8,29. 2,4,6.

सर्वप्रभु m. *Allherr* Rāgn. 10,21.

सर्वप्राण m. instr. °प्राणेन *mit ganzem Athem* so v. a. *aus Leibeskräften* R. 2,32,36. Kathās. 54,5.

सर्वप्रायश्चित्त 1) adj. (f. ई) *Alles gut machend* Çat. Br. 11,8,4,5. — 2) n. *eine best. Spende in den* Âhavanîja Âçv. Ça. 1,11,10. 13,7. Kāṭh. Ça. 25,1,10. Çāṅkh. Ça. 3,19,3. Gaṇ. 1,9. 5,1. Pāṇ. Gaṇ. 1,5,5.

सर्वप्रायश्चित्तीय adj. von सर्वप्रायश्चित्त 2) Kauç. 5.

सर्वफलत्यागचतुर्दशी f. Bez. *eines best. 14ten Tages:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,b,28.

सर्वबल n. *eine best. hohe Zahl* Lalit. ed. Calc. 169,2. 3.

सर्वबाकु m. *eine best. Art zu kämpfen* Harîv. 15979. सव्यबाकु die neuere Ausg.

सर्वबाल्य adj. *der alleräusserste* Ind. St. 10,263. fgg.

सर्वबीज n. *der Same von Allem* Paṅkar. 1,3,33. 8,11.

सर्वबीजिन् adj. von सर्व + बीज P. 5,2,135, Vârtt. 2, Schol.

सर्वबुद्धविषयावतार m. Titel eines buddh. Sûtra Wassiljew 161.

सर्वबुद्धसंदर्शन N. einer Welt bei den Buddhisten Lot. de la b. l. 257.

सर्वभक्त 1) adj. (f. आ) *a) Alles* (ohne Auswahl) *essend, — verzehrend* Halâj. 2,196. R. 5,17,34. Spr. (II) 943, v. l. 5751, v. l. das Feuer MBh. 1,910. 921. 9,2455. Spr. (II) 1110. 5382. Çiva MBh. 12, 10363. Hier und da ungenau °भक्ष्य geschrieben. — *b) was ganz aufgezehrt wird:* चमस Liṭ. 5,12,4. Kāṭh. Ça. 9,14,6. घ° 12,7. — 2) f. आ *Geiss* H. 1275.

सर्वभक्तव n. nom. abstr. zu सर्वभक्त 1) *a)* MBh. 1,927.

सर्वभक्तिन् adj. = सर्वभक्त 1) *a)* Spr. (II) 114. 3968. 5751.

सर्वभक्ष्य s. u. सर्वभक्त 1) *a).*

सर्वभट् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Tüb. H. 13.

सर्वभयंकर adj. *Alle in Schrecken jagend* Paṅkar. 4,3,23.

सर्वभवारणि (सर्व-भव + घ°) f. *das Reibholz* (so v. a. *Grund, Ursache*) *aller Wohlfahrt* Mârk. P. 19,7.

सर्वभाज् adj. *vollständig habend:* लिङ्गानां न सर्वभाक् so v. a. *nicht jeglichen Geschlechts seiend* P. II, S. 462.

सर्वभाव m. *das ganze Herz, die ganze Seele:* °भावेन *von ganzem Herzen, mit ganzer Seele* (Jmd lieben, verehren u. s. w.) Spr. (II) 4188. Bhāg. P. 3,32,22. 7,9,54. 8,23,5. am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen in der. Bed.: सर्वभावानुरक्त R. Gorr. 2,18,13. 21,19. am Ende

eines adj. comp. (f. या): तरत° 5,30,17. — Vgl. सर्वकृद् und सर्वात्मन्.

सर्वभावन adj. *Alles werden lassend, — hervorbringend* R. 4,44,120. Paṇḍar. 4,3,14.

सर्वभावाधिष्ठातृ m. *das Oberhaupt aller Wesen*; davon nom. abstr. -ष्ठातृत्व n. Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,27. fgg.

सर्वभास adj. P. 6,2,105, Schol.

सर्वभुज् adj. = सर्वभृत 1) *a*): das Feuer Bhâg. P. 10,33,30.

सर्वभूत 1) adj. *zu Allem geworden* so v. a. *aus dem Alles entstanden ist* Mârk. P. 101,14. — 2) n. pl. *alle Wesen* Çâṅkh. Gṛhj. 4,9. Bhâg. P. 3,4,16. Spr. (II) 5618 (mit einer Negation *kein Wesen*). °क्षय 7811. °कृत् M. 1,18. °भूतानुकम्पक 6,8.

सर्वभूतमय (von सर्वभूत) adj. (f. ई) *alle Wesen in sich enthaltend* M. 1,7. R. 7,23,4,82. Bhâg. P. 2,9,38. 3,4,16. नृप 10,43,35.

सर्वभूतरुतग्रहणी f. (sc. लिपि) N. einer angeblichen Schriftart (*die Laute aller Wesen auffassend*) Lalit. ed. Calc. 144,13. — Vgl. सर्वरुतसंग्रहणिलिपि.

सर्वभूतात्मक adj. *alle Wesen in sich schliessend:* जगत् Mârk. P. 99,45.

सर्वभूतात्मन् m. *die Seele aller Wesen* M. 1,54.

सर्वभूतात्मभूत adj. *die Seele aller Wesen seiend* Bhâg. P. 7,1,42.

सर्वभूताधिपति m. *der Oberherr aller Wesen:* Vishṇu Sarasv. Bh. 5,10.

सर्वभूताधिवास m. *die Heimath aller Wesen* Bhâg. P. 9,19,29.

सर्वभूतान्तक adj. *alle Wesen vernichtend* MBh. 13,742.

सर्वभूतान्तरात्मन् m. *die Seele aller Wesen* MBh. 12,10363. Weber, Rânây. Up. 330. Windischmann, Sancara 128. 144.

1. सर्वभूमि f. *die ganze Erde* P. 5,1,41. fgg. gaṇa घनुशतिकादि zu 7,3,20. — Vgl. सार्वभौम.

2. सर्वभूमि adj. *dem die ganze Erde gehört* Ait. Br. 8,11. — Vgl. सार्वभौम.

सर्वभोगीण adj. *Allen zum Genuss (Vortheil) dienend* Bhatt. 6,97; vgl. P. 5,1,9.

सर्वभोग्य adj. dass. Çiç. 47.

सर्वभौम Vsuṭp. 131 und Kathâs. 69,80 fehlerhaft für सार्व°.

सर्वमङ्गल 1) n. pl. *Alles was Glück bringt:* अर्चित: सर्वमङ्गलै: R. 1, 18,18. °वर्णन Verz. d. Oxf. H. 27,*a*,8. — 2) f. या *a*) ein N. der Durgâ AK. 1,1,4,32. H. 204. Weber, Rânây. Up. 326. Paṇḍar. 2,5,23 (auf Lakshmî übertragen). Hit. 99,7. 100,2. Verz. d. Oxf. H. 25,*a*,34. *b*, N. 5. °मङ्गलायतन 77,*a*,16. Hit. 99,15. — *b*) Titel einer Schrift Hall 198.

सर्वमण्डलसाधनी f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 920.

सर्वमय (von सर्व) adj. (f. ई) *Alles in sich enthaltend* Çat. Br. 14,7,2,6. Nir. 14,5. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,140. 162. MBh. 12,1672. Mârk. P. 99,23. 103,5. Bhâg. P. 5,18,18. 22,10. Verz. d. Oxf. H. 101,*a*, N. 1.

सर्वमलापगत m. *eine best. Meditation* Vsuṭp. 22.

सर्वमस्तु adj. *durchweg gross* P. 6,2,93, Schol. *der allergrösste* (würde den Ton auf der ersten Silbe haben): न्यग्रोधपादप Kathâs. 23,40.

सर्वमागधक adj. *ganz aus Magadha bestehend* u. s. w. Pat. zu P. 1, 1,72 (lith. Ausg. 1,174,*b*).

सर्वमातृ f. *Allmutter* Weber, Kṛshṇaj. 290.

सर्वमात्रा f. *ein best. Virâǵ-Metrum* ṚV. Pârç. 17,12. Ind. St. 9,107.

सर्वमान्यचम्पू f. Titel eines Werkes Mack. Coll. 1,103.

सर्वमारमण्डलविध्वंसनकरी f. (sc. रश्मि, im Lalit. fem.) *ein best. Strahl (die gesammte Schaar der* Mâra *zu Grunde richtend)* Lalit. ed. Calc. 375,16.

सर्वमित्र m. 1) *Jedermanns Freund* MBh. 14,533. — 2) N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 400.

सर्वमूर्धन्य m. N. pr. eines Autors mystischer Gebete bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,4. 5.

सर्वमूल्य n. *Otterköpfchen (der Preis für Alles)* Taitt. 2,9,26.

सर्वमृत्यक m. (*die Alles hinwegnehmende*) *Zeit* H. 126.

सर्वमृत्यु m. *allgemeiner Tod* Paṇḍar. 4,3,71.

सर्वमेध m. 1) *Alldarbringung, ein zehntägiges* Soma-*Opfer* Çat. Br. 13,7,1,1. Kâṭy. Çr. 21,2,1, Çâṅkh. Çr. 16,15,3. Nir. 10,26. Ind. St. 1, 50. 83. 3,457. MBh. 13,1745. 5260. 14,48. R. 4,44,51. — 2) N. einer Upanishad Ind. St. 1,382. — 3) *jedes Opfer* Bhâg. P. 2,6,4. — Vgl. सार्वमेधिक.

सर्वमेध्यत्व n. *allgemeine Reinheit* Spr. (II) 7176.

सर्वभरि adj. *Alles erhaltend, — ernährend:* प्राण Çâṅk. zu Kâṭhân. Up. S. 38.

सर्वयज्ञ m. sg. *jedes Opfer* (ohne Soma nach dem Comm.) Bhâg. P. 3,13,37. 6,19,11. 8,16,60. pl. *alle Opfer* Spr. (II) 6930.

सर्वयत्नवत् (von सर्व + यत्न) adj. *sich jegliche Mühe gebend* Spr. (II) 6843.

सर्वयन्त्रिन् (von सर्व + यन्त्र) adj. *mit allem Geräthe versehen* Kâṭy. Çr. 14,3,9.

सर्वयोनि f. *die Quelle von Allem* Ragh. 10,21. Davon nom. abstr. °त्व n. Çâṅk. zu Kâṭhân. Up. S. 67.

सर्वरक्षण adj. *vor Allem behütend:* कवच Brahmavaiv.-P. im ÇKDr.

सर्वरत्न m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 3,230.

सर्वरत्नक (von सर्व + रत्न) m. N. *eines der neun Schätze bei den* Ǵaina *und der demselben vorstehenden Gottheit* Citat beim Schol. zu H. 193.

सर्वरत्नमय adj. *ganz mit Juwelen besetzt, aus lauter Juwelen zusammengesetzt* MBh. 3,10888. 12199. R. 4,44,93. *aus allen Juwelen gebildet* Kathâs. 46,236.

सर्वरथ m. *das ganze Wagengefolge:* अमित्रपसं सर्वरथा नि यासि ṚV. 5,35,5. सर्वरथा वि क्रमेथे इक्षुं मुञ्च *du mit dem ganzen W.* 10,160,1.

1. सर्वरस m. 1) pl. *Flüssigkeiten* —, *Säfte aller Art* Varâh. Bṛh. S. 42,4. Bhâg. P. 4,19,5. सर्वरसाये नमस् AK. 2,9,49. H. 396. सर्वरसात्मन् (= जलरूप Comm.) Bhâg. P. 4,24,28. — 2) sg. *jeglicher Geschmack* Bhâg. P. 2,6,1. pl. *wohlschmeckende Sachen aller Art* Spr. (II) 3424. — 3) *salziger Geschmack* H. 1389. — 4) *das Harz der Vatica robusta* (vgl. सर्जरस) AK. 2,6,2,29. H. 647. an. 4,334 (सर्वरास gedr.).

2. सर्वरस 1) adj. *a*) *alle Säfte enthaltend* Çat. Br. 10,6,2,2. Kâṭhân. Up. 3,14,2. — *b*) *klug, gelehrt* Çâṅkar. im ÇKDr. — 2) m. *ein best. musikalisches Instrument* (vgl. सर्वरस) H. an. 4,334 (°रास gedr.).

सर्वराज् m. *Allkönig* VS. 5,24. MBh. 2,530.

सर्वराजेन्द्र m. *das Oberhaupt aller Fürsten*, Bez. eines best. göttlichen Wesens Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,21.

सर्वरात्रि m. *die ganze Nacht* P. 5,4,87. Vop. 6,46. °त्रम् *die ganze Nacht über* Kâṭy. Çr. 20,4,33.

सर्वरुतकौशल्य *eine best. Meditation* (समाधि) Lot. de la b. l. 253.

सर्वरुतसंग्रहणीलिपि (sic) f. *eine best. Schriftart* Lalit. ed. Calc. 144, 10. — Vgl. सर्वभूतसंग्रहणीलिपि.

सर्वरूप adj. (f. आ) 1) *alle Farben habend* Çat. Br. 13,4,2,2. Kâṭy. Çr. 28,1,29. Çâṅkh. Çr. 16,1,9. — 2) *alle Gestalten —, Formen habend, — annehmend* Pâṇâd. 1,1,3,44. 4,3,16. — 3) *von allen Arten* Ait. Br. 8,4. Pâr. Gṛhy. 2,11. Muṇḍ. Up. 2,1,9.

सर्वरूपिन् adj. = सर्वरूप 2) R. 7,23,2,33.

सर्वरोग m. pl. *Krankheiten aller Art:* °निवारण Verz. d. B. H. No. 963. °प्रतीकार 976. °निदान Verz. d. Oxf. H. 305,b,14. — Vgl. सार्वरोगिक.

सर्वरोहित adj. *ganz roth* Çat. Br. 3,5,4,23. Kâṭy. Çr. 8,5,26. — Vgl. सर्वलोहित.

सर्वर्तु (सर्व + ऋतु) m. *Jahr (alle Jahreszeiten enthaltend)* H. ç. 25.

सर्वर्तुक adj. *allen Jahreszeiten entsprechend:* गृह M. 7,76. वन R. 6, 15,9. *in a. J. vorhanden* Harîv. 8411. °वन N. pr. *eines Waldes* 8952. 9900.

सर्वर्तुपरिवर्त m. *Jahr* Gaṇḍîn. im ÇKDa.

सर्वलक्षण n. *alle günstigen Zeichen:* °संपन्न Weber, Kṛṣṇaj. 273. °युक्तता R. 5,45,16.

सर्वलघु adj. *aus lauter Kürzen bestehend* Ind. St. 8,430.

सर्वला f. *Spiess, Wurfspiess* AK. 2,8,2,61. H. 787. — Vgl. सर्वली.

सर्वलिङ्गसंन्यासनिर्णय m. Titel einer Schrift Hall 140.

सर्वलिङ्गसाधनी f. desgl. Verz. d. B. H. No. 920.

सर्वलिङ्गिन् (von सर्व + लिङ्ग) adj. *Abzeichen aller Art tragend*, m. so v. a. *Ketzer* AK. 2,7,44. — Vgl. लिङ्गवृत्ति.

सर्वली f. = सर्वला Çabdar. im ÇKDa.

सर्वलोक m. *die ganze Welt* VS. 31,22. Harîv. 9746. °लोके ऽस्मिन् Spr. (II) 752. तं सर्वलोकः कुरुते प्रमाणम् so v. a. *Jedermann* 3002. MBh. 1,3051. R. 2,92,16. 112,21. Pâṇâd. 228,2. Vaṭîn. Bṛh. S. 4,8. सर्वलोकः समूयः *das ganze Volk nebst Fürsten* 47,10. pl. *alle Wesen:* चराचराः 48,68. *alle Welt, Jedermann* R. 1,39,20. Pâṇâd. 3,11,10. am Anf. eines comp.: °प्रिय R. 2,74,5. °स्तुत Ind. St. 8,305. °नमस्कृत Bhâg. P. 3, 15,18. °विलोकन Pâṇâd. 1,11,22. Beinn. Çiva's: °प्रजापति, °भृत्, °कर्तृ Çiv. — Vgl. सार्वलोकिक.

सर्वलोकधातूपद्रवोद्वेगप्रत्युत्तीर्ण m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 113.

सर्वलोकपितामह m. wie पितामह Beid. Brahmaṇ's R. Gorr. 1,39,4.

सर्वलोकभयास्तम्भितत्वविधसमकर m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 113.

सर्वलोकमय (von सर्वलोक) adj. *die ganze Welt in sich enthaltend* R. 7,23,2,32.

सर्वलोकान्तरात्मन् m. *die Seele der ganzen Welt* MBh. 13,743.

सर्वलोकिन् (von सर्वलोक) adj. *die ganze Welt in sich enthaltend* Weber, Rimâj. Up. 328.

सर्वलोकेश m. *der Herr der ganzen Welt*, Bez. Kṛshṇa's Weber, Kṛṣṇaj. 295.

सर्वलोकेश्वर m. dass., Bez. Brahmaṇ's R. 2,101,28. Kṛshṇa's Weber, Kṛṣṇaj. 295.

सर्वलोह 1) n. pl. *Metalle aller Art:* °लोहाध्याय Verz. d. B. H. No. 967. — 2) m. schlechte Lesart für °लोह H. 779.

सर्वलोहित adj. = सर्वरोहित *ganz roth* R. 4,60,17.

सर्वलोह 1) adj. *ganz eisern.* — 2) m. *ein eiserner Pfeil* H. 779.

सर्ववर्ण adj. (f. आ) *allfarbig* Taitt. Âr. 10,24. — Vgl. सार्ववर्णिक.

सर्ववर्णिका f. *Gmelina arborea Roxb.* Gaṇḍîn. im ÇKDa. °वर्तिका Wilson nach ders. Aut.

सर्ववर्तिका s. सर्ववर्णिका.

सर्ववर्मन् m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. 2,44. Verz. d. Oxf. H. 169,a,14. Târan. 76. — Vgl. सप्तवर्मन्, शार्ववर्मन्, सार्ववर्मिक.

सर्ववल्लभा f. *Jedermanns Geliebte, ein unkeusches Weib* Dharan. im ÇKDa.

सर्ववाङ्निधन m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 15,10,4.

सर्ववाङ्मय (von सर्व + वाच्) adj. (f. ई) *alle Rede in sich enthaltend* Bhâg. P. 2,14,48. *ganz aus Rede bestehend* Verz. d. Oxf. H. 200,a,1. 2.

सर्ववादिन् adj.: Çiva MBh. 13,743. vielleicht fehlerhaft für °वेदिन्.

सर्वविक्रयिन् adj. *Alles* (auch Verbotenes) *verkaufend* M. 2,118.

सर्वविद्येपता s. u. सर्वनिद्येपा.

सर्वविज्ञानिन् (von सर्व + विज्ञान) adj. *Alles kennend;* davon °विज्ञानिता f. nom. abstr. Kâm. Nîtis. 8,6.

सर्वविद्य (von सर्वविद्) n. *Allwissenheit* Verz. d. Oxf. H. 259,a,31. b,1.

सर्वविद् adj. *allwissend* AV. 6,107,4. 17,1,11. Muṇḍ. Up. 1,1,9. MBh. 1,3551. R. 3,11,12. Spr. (II) 7352. Verz. d. Oxf. H. 236,b,6. 8. 259,a,8. 27. 30. fg. b,12. Bhâg. P. 7,2,22.

सर्वविद्य adj. *alle Wissenschaft besitzend, allwissend* gaṇa चतुर्वर्णादि in P. 5,1,124, Vârtt. 1. Nir. 1,8. Çvetâçv. Up. 6,2. 16 (fälschlich °विद् य: gedr.). — Vgl. सार्वविद्य.

सर्वविद्या f. *die ganze Wissenschaft* TBr. 2,10,22, 4. 12,3,4. *jegliche Wissenschaft* H. 258. pl. *alles Wissen:* °विज्ञानामोश्वर.

सर्वविद्यामय (von सर्वविद्या) adj. (f. ई) *alles Wissen in sich enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 97,a, No. 150.

सर्वविद्याविनोदभट्टाचार्य m. N. pr. eines Autors Verz. d. Tüb. H. 13.

सर्वविश्व n. *die ganze Welt* Pâṇâd. 2,3,41.

सर्ववीर adj. *aus allen Männern bestehend, vollzählig; von allen Männern begleitet:* विश् ṚV. 1,111,2. सर्ववीरास्तव शर्मन्स्याम *mit allen unsern Mannen* 51,15. 105,19. रयि 2,30,11. 3,62,3. Pûshan 10,17, 3. Ushas 1,113,18. AV. 3,12,4. 7,8,4. 12,2,28. Kauç. 45. *alle Mannen führend:* वीर ṚV. 6,23,4. 9,90,3. — Vgl. स°.

सर्ववीरजित् adj. *alle Helden besiegend* Pâṇâd. 4,3,33 (S. 248).

सर्ववेतृ nom. sg. *Allwisser, allwissend;* davon nom. abstr. °वेतृत्व n. Devî-P. 45 nach ÇKDa. unter सर्वज्ञा.

सर्ववेद adj. *mit allen Veda vertraut* P. 4,2,60, Vârtt. 6, Schol. Halâj. 2,260.

सर्ववेदत्रिरात्र m. N. eines Ahîna Çâṅkh. Çr. 15,22,29.

सर्ववेदमय (von सर्व + वेद) adj. (f. ई) *alle Veda in sich enthaltend* Bhâg. P. 7,11,7. 20. 9,16,48. 10,86,54.

सर्ववेदस् ad. 1) *vollständigen Besitz habend* AV. 19,49,6. — 2) *der nach einem Opfer alle seine Habe den Priestern verschenkt* AK. 2,7,9. H. 819. Halâj. 2,263.

सर्ववेदस् 1) adj. a) *wobei die ganze Habe verschenkt wird:* ein Opfer

TBa. 1,4,2,7. Çâṅkh. Br. 23,14. Pañćav. Br. 9,3,2. Kâty. Ça. 25,11,3. — *b) der nach einem Opfer alle seine Habe den Priestern verschenkt* M. 11,1, v. l. — 2) n. *die ganze Habe* AV. 9,5,17. °सं देयं TBr. 3,11,8,1. TS. 7,1,1,2. Çat. Br. 4,6,1,15. 10,2,5,16. Pañćav. Br. 6,7,15. Kâty. Ça. 22,1,9. Kâṭhop. 1,1. Lâṭy. 8,4,14. °दक्षिण adj. 2,13.17. M. 6,38.

सर्ववेदसिन् adj. *der seine ganze Habe hingiebt* Kâṭy. 12,3.

सर्ववेदात्मन् m. Weber, Rimây. Up. 350 schlechte Lesart für सर्वदेवात्मन्.

सर्ववेदिन् adj. *allwissend* Verz. d. Oxf. H. 170,*a*,4. Vgl. सर्ववादिन्.

सर्ववेषिन् (von सर्व + वेष) m. *Schauspieler (allerlei Trachten habend)* Taitt. 1,1,124. H. 328 (v. l. für °केशिन्). Hân. 153. Ueberall mit ष geschrieben.

सर्ववैनाशिक adj. = वैनाशिक 1) *b)* Colebr. Misc. Ess. 1,303.

सर्वव्यापिन् s. u. व्यापिन्. Auch Ind. St. 1,385.

1 सर्वव्रत n. *Allgelübde* Âçv. Gṛhj. 3,9,1. Baudh. P. 2,10,60.

2. सर्वव्रत adj. *allgelobend* Âçv. Gṛhj. 3,9,1. Kauç. 41. 48.

सर्वशरीरात्मन् m. *die Seele alles dessen, was einen Leib hat*, Bhâg. P. 6,19,12.

सर्वशस् (von सर्व) adv. 1) *in allen seinen Theilen, vollständig, ganz und gar:* सर्व एव सर्वश इध्म आहरीतः TBr. 2,1,10,2. सर्वमाप्नोति सर्वशः Kaṭha. Up. 7,26,2. (ग्रामम्) शमयामास स° MBh. 1,1136. शरैर्नानाविधैस्तूर्णं पार्थं संछाद्य स° 5476. हृतसाराणि R. 2,33,18. तच्छ्रुत्वा मम सर्वशो देयं स° 5,47,18. सर्वशश्च वर्तयेयुर्यामचर्याम् Çâṅkh. Ça. 12,8,3. *im Ganzen, als Ganzes* ṚV. Pârç. 10,12. *insgesammt*, bezogen auf ein im pl. stehendes Subject M. 3,256.272. 5,122. Jâñ. 3,296. Bhâg. 1,18. MBh. 3,2125. 2332. 2767. 12001. R. 1,9,47. 60,28. fg. 2,91,14. R. Gorr. 1,69,30. 2,21,10. Spr. (II) 6532. auf ein Collectivum im nom. sg. R. 2,78,13. auf einen acc. pl. M. 5,14. 16. 6,38. 9,330. 10,88. MBh. 3,2498. 2485. R. 1,9,60. 29,4. 2,71,23. 91,16. R. Gorr. 2,29,2. auf einen gen. pl. M. 4,217. 11,143. MBh. 1,7707. 5,7248. R. 1,2,36. auf ein Collectivum im gen. sg.: बृहबालस्य स° MBh. 5,3428. auf einen instr. R. 1,18,8. auf einen abl. pl. Spr. (II) 714. auf einen loc. pl. MBh. 1,1109. auf ein im pl. gedachtes Wort am Anfange eines comp.: सुहृत्त्यागं स° 3,2341. — 2) *auf jede Weise* M. 2,54. R. 2,32,22. *auf irgend eine Weise* M. 9,320. — 3) *allgemein, stets, überall:* सभ्यो ज्ञाता सर्वशो मूर्तिमाङ्गः TBr. 3,12,9,1. स° ṚV. Pârç. 11,11.

सर्वशाकुन n. *vollständige Augurallehre* Varâh. Bṛh. S. 86,4 und in den Unterschrr. der Adhjâja 86. fgg.

सर्वशान्ति f. *Allberuhigung* AV. 19,9,14. °कृत् ein Beiw. Bharata's, Sohnes der Çakuntalâ, Çârdar. im ÇKDa.

सर्वशास् adj. *Alles befehlend:* Zügel ṚV. 5,44,1.

सर्वशास्त्रमय (von सर्व + शास्त्र) adj. *alle Lehrbücher in sich enthaltend* Pañćar. 4,3,192.

सर्वशीघ्र adj. *der allerschnellste* Ind. St. 10,307.

सर्वशुक्ल adj. (f. या) *ganz licht, — weiss* Z. d. d. m. G. 27,34.

सर्वशुद्धवाल adj. *ganz weissgeschwänzt* VS. 24,3.

सर्वशून्य adj. (f. या) *vollkommen leer:* आकाश Verz. d. Oxf. H. 208,*a*,42. दरिद्रता Spr. (II) 444. 685. *Alles für Nichts haltend* Pañćar. 4,3,158.

सर्वशून्यता (von सर्वशून्य) f. *die Theorie, dass Alles ein Nichts sei, Nihilismus* Sarvadarçanas. 14,14.

सर्वशून्यत्व n. dass. ebend. 9,3.

सर्वश्रेष्ठ adj. *der allerbeste:* °कुल R. Gorr. 2,96,10.

1. सर्वश्वेत 1) adj. *ganz weiss* P. 6,2,93, Schol. — 2) f. श्वा *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,289,21.

2. सर्वश्वेत adj. *der allerweisseste* P. 6,2,93, Schol.

सर्वसमर्गलवण n. *Steppensalz* Râǵân. im ÇKDa.

सर्वसस्थ adj. 1) *allgegenwärtig:* सात्मिणः Harîv. 7801. — 2) *Allen den Tod bringend* Çvetâçv. Up. 1,6.

सर्वसंहार 1) adj. *Alles vernichtend*, m. Bez. *der Zeit* R. 7,104,16. 19. — 2) *die Vernichtung von Allem* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,137.

सर्वसंगत m. *in sechzig Tagen reifender Reis* (षष्टिक) Çabdar. im ÇKDa.

सर्वसङ्गा f. N. pr. eines Flusses MBh. 6,344 (VP. 184). सर्वां गङ्गाम् ed. Bomb. des MBh.

सर्वसंज्ञा f. *eine best. hohe Zahl* Lalit. ed. Calc. 169,4. — In der Stelle: ध्रुवा तु सर्वसंज्ञार्थं यस्यामाज्यं निधीयते H. 829 ist vielleicht सर्वयज्ञार्थे zu lesen.

सर्वसत्त्वपापप्रहरण m. *eine best. Meditation* Lot. de la b. l. 271.

सर्वसत्त्वप्रियदर्शन m. N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 330. eines Buddha (auch Bodhisattva) Lot. de la b. l. 164. 243. fgg.

सर्वसत्त्वोज्ञोत्कारी f. N. pr. einer Râkshasî Lot. de la b. l. 240.

सर्वसत्य adj. *der wahrhafteste* Pañćar. 4,3,52.

सर्वसंनद्धन n. *eine vollständige Kriegsrüstung* AK. 2,8,2,62. H. 789. Hall. 2,306.

सर्वसंनाह m. *das vollständige Gerüstetsein zu Etwas, das mit-Eifer-an-Etwas-Gehen;* = 1. सर्वात्मन् 1) Hall. 5,15.

सर्वसमता f. *das Gleichgesinntsein gegen Alles* M. 12,125.

सर्वसमृद्ध adj. *ganz wohlbestellt, ganz in Ordnung:* कृषिम् Çat. Br. 11,1,6,7. 12. वास्तु Âçv. Gṛhj. 2,7,7.

सर्वसंपन्न adj. *mit Allem ausgestattet* Âçv. Gṛhj. 1,5,5.

सर्वसंपन्नसस्य adj. (f. या) *überall gut mit Getraide bestanden:* वसुमती Spr. (II) 2025.

सर्वसंभव m. *die Quelle von Allem* Mân. P. 47,8. Weber, Kṛshṇaǵ. 308.

सर्वसंमतशिक्षा f. Titel einer Çikshâ Weber, Prâtiçâkh. 112.

सर्वसार m. *best. Geschwüre im Munde* Suçr. 1,308,20. fg.

सर्वसस्य adj. (f. या) *mit Getraide aller Art bestanden* H. 939. Hall. 2,2. Am Anf. eines comp. *Getraide aller Art* AK. 2,1,4.

सर्वसह 1) adj. (f. या) *Alles geduldig ertragend* MBh. 13,3868. 14,533. Spr. (II) 6909. Bhâg. P. 2,5,9. Çiva Çv. — 2) m. *Bdellion* Ratnam. 13. — 3) f. या N. einer mythischen Kuh MBh. 13,6043. — Vgl. सर्वंसह.

सर्वसाक्षिन् m. *der Augenzeuge von Allem* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 147. 163. Pañćar. 4,3,15.

सर्वसाद् adj. Harîv. 7440 nach Nîlak. = सर्वं सीदति लीयते ऽस्मिन्.

सर्वसाधन adj. *Alles zu Wege bringend* oder n. *ein solches Mittel:* वित्त Spr. (II) 718.

सर्वसाधारण adj. (f. या und ई) *Allen gemein* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St.

9, 13. R. Gorr. 2, 54, 23. Spr. (II) 3848. Mârk. P. 53, 32. °प्रयोग m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1337.

सर्वसाधु ädv. *ganz —, sehr gut* (als Ausruf) Hit. 127, 14.

सर्वसामान्य adj. (f. या) *Allen gemein* Spr. (II) 7206.

सर्वसार n. *das Beste von Allem* Verz. d. B. H. No. 90. Davon superl. °तम Verz. d. Oxf. H. 22, b, 8.

सर्वसारङ्ग m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2159.

सर्वसारसंग्रहणी f. (sc. लिपि) N. einer Schriftart Lalit. ed. Calc. 144, 13.

सर्वसारोपनिषद् f. N. einer Upanishad Gild. Bibl. 100. Ind. St. 1, 387.

सर्वसाह् adj. *Alles ertragend, Allem widerstehend* MBh. 2, 530. 3, 877.

सर्वसिद्धा f. Bez. *der 4ten, 9ten und 14ten lunaren Nacht* Ind. St. 10, 207.

सर्वसिद्धान्तसंग्रह m. Titel eines Abschnittes in einem grösseren theologischen Werke Mack. Coll. 1, 15.

सर्वसिद्धार्थ adj. *der sein Ziel vollkommen erreicht hat, der Alles hat was er wünscht* M. 1, 82. R. 2, 25, 39. 7, 59, 2, 8. Paṇḍar. 4, 3, 33. — Vgl. सर्वार्थसिद्ध.

सर्वसिद्धि m. *Aegle Marmelos Corr.* Çabdâ. im ÇKDr.

सर्वसुखदःखनिरभिनन्दिन् m. *eine best. Meditation* Vjutp. 20.

सर्वसुरभि s. सुरभि.

सर्वसूक्ष्म adj. *der allerfeinste:* Kṛshṇa MBh. 12, 1512.

सर्वसेन 1) adj. *die ganze Heerschaar führend:* नि सर्वसेन इषुधीँरसक्त RV. 1, 33, 2. वर्क्षे ऽयं मघवा सर्वसेनः 5, 30, 3. Mitra-Varuṇa 6, 68, 2. — 2) m. N. pr. P. 8, 3, 99, Schol. eines Sohnes des Brahmadatta Hariv. 1067. — Vgl. सार्वसेन fgg.

सर्वसौवर्ण adj. *ganz golden* P. 6, 2, 93, Schol.

सर्वस्तोम P. 6, 1, 191, Schol. 1) adj. *mit allen* (sechs) Stoma *versehen* TS. 7, 1, 8, 1. 4, 1. Çat. Br. 9, 4, 2, 11. 12, 3, 1, 9. 13, 3, 6, 4. ÇâṅkH. Br. 25, 15. अभिजित् Çâṅkh. Çr. 11, 10, 1. Âçv. Çr. 7, 2, 11. 8, 4, 17. 10, 1, 5. — 2) m. N. eines Ekâha Kâty. Çr. 20, 8, 13. 22, 6, 22. Lâṭy. 10, 4, 15. Maçaka im Verz. d. B. H. 72, 1 v. u.

सर्वस्थानगवाट m. N. pr. eines Jaksha Kathâs. 66, 56.

सर्वस्मृत् adj. Maitrâjan. 6, 35 vielleicht fehlerhaft für सर्वस्पृत्; vgl. लोकस्मृत्.

सर्वस्व 1) n. a) *die ganze Habe:* °स्यानि Âçv. Çr. 12, 6, 33. Kâty. Çr. 22, 2, 26. Comm. zu 1, 25. Kauç. 127. M. 7, 214. 8, 274. 11, 76. 80. 116. R. Gorr. 1, 54, 24 (53, 23 Schl.). 74, 17. 2, 10, 26. 37, 2. 3, 68, 28. 7, 44, 19. Spr. (II) 921. 4400. 4798. 5694. 6068. Kathâs. 19, 46. 43, 127. 57, 157. Râga-Tar. 3, 392. 5, 163. Paṇḍar. 1, 1, 48. °भूत adj. *die ganze Habe bildend* R. 5, 70, 13. °नाश Spr. (II) 6938. °हरण 6940. R. 3, 46, 8. °हार M. 9, 242. °हारिन् Râga-Tar. 4, 628. सर्वस्वात्मनिवेदन Spr. (II) 6230. °दक्षिण adj. Ragu. 4, 86. दत्तसर्वस्वदक्षिण Hall. 2, 268. °दण्ड M. 8, 378. °फलिन् (द्रुम) Spr. (II) 1146. am Ende eines adj. comp. (f. या) MBh. 3, 2274. Spr. (II) 183. Kathâs. 38, 95. 81, 102. Râga-Tar. 5, 427. 6, 49. — b) am Ende eines comp. *Gesammtheit, das Ganze:* धन° Spr. (II) 3674. रत्न° Hariv. 1808. कर° (*Abgabe*) 15654. वीर्य° MBh. 3, 10931. R. 6, 91, 7. बल° 3, 33, 39. कार्य° 5, 51, 8. धनुर्वेद° Mṛicch. 18, 21. रति° Çiç. 22. धनङ्ग° Spr. (II) 5776. धर्म° 6578. नीति° Paṇḍar. 111, 6. प्राकृत° Verz. d. Oxf. H. 181, a, No. 112. लावण्य° Kathâs. 17, 109. यात्रक्षसार° Paṇḍar. 4, 3, 193. मीमांसा° Hall 207. मीमांसाशास्त्र° 182. उपाध्याय° = उपाध्यायस्य सर्वस्वम् = सर्वस्व (s. u. उपाध्याय 1) in den Nachtrr.). — 2) f. या = 1) a): वैश्यः सर्वस्वेनमुपतिष्ठते Kauç. 17. — Vgl. घनंकार°, नृत्य°, ब्राह्मण°, रति°, विरक्ता°, वैद्य°, वैद्यक°, शान्ति°, शिव°, शैव°.

सर्वस्वरित adj. *nur mit dem* Svarita *versehen* Comm. zu VS. Prât. 2, 1.

सर्वस्वर्णमय adj. (f. ई) *ganz golden* Spr. (II) 6939.

सर्वस्वार m. N. eines Ekâha Maçaka in Verz. d. B. H. 72 (III, 14).

सर्वस्विन् (von सर्वस्व) m. Bez. einer Mischlingskaste: *der Sohn eines Barbiers und eines Hirtenmädchens* Brahmavaiv. P., Brahmakhaṇḍa 10 im ÇKDr.; vgl. Verz. d. Oxf. H. 22, a, 13.

सर्वकृत्या f. *ein Mord irgend einer Art* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 154.

सर्वकृत् adj. 1) *Alles für sich nehmend* Spr. (II) 3605. — 2) *Alles vernichtend* R. 7, 23, 8, 19. Vaṇ. Bṛh. S. 43, 54. Paṇḍar. 4, 3, 33. m. Bez. Jama's Hariv. 2851.

सर्वकरण n. *das Einstehen —, Wegnahme der ganzen Habe* Kull. zu M. 8, 399.

सर्वकरि m. Bez. *des Liedes* RV. 10, 96, in welchem mit den Worten करि कर्षति u. s. w. gespielt wird, Çâṅkh. Br. 25, 7. 8. Ça. 11, 14, 10.

सर्वकर्षकर adj. *Alle erfreuend* Paṇḍar. 2, 2, 27.

सर्वकायम् adj. *volle Behendigkeit —, volle Kraft besitzend* AV. 8, 2, 7. 10, 5, 22.

सर्वकार m. *Einziehung —, Wegnahme der ganzen Habe:* तस्य सर्वकारं कुर्यात् M. 8, 399.

सर्वकारम् absol. *mit Einziehung der ganzen Habe:* (तम्) सर्वकारमपाकरोत् Kathâs. 74, 60.

सर्वकारिन् adj. *Alles fortnehmend;* m. N. pr. eines bösen Geistes Mârk. P. 51, 97.

सर्वकित 1) adj. *Allen wohlthuend.* — 2) m. Bez. Çâkjamuni's Vaṇ. Bṛh. S. 60, 19. — 3) n. *Pfeffer* Râgân. im ÇKDr.

सर्वकुत् adj. *was vollständig geopfert wird:* यज्ञ RV. 10, 90, 8. 9. मख Lâṭy. 8, 8, 9. TS. 6, 3, 6, 1. Çat. Br. 1, 6, 2, 4. 13, 1, 2, 1. 5, 2, 23.

सर्वकृत adj. dass.: यज्ञ AV. 18, 4, 12. TS. 3, 3, 8, 1. z. B. wobei *alle* Piṇḍa *geopfert werden* Âçv. Çr. 2, 6, 22. Âçv. Gṛhj. 4, 8, 11. Kauç. 10. fg. 24. 47. Kâty. Çr. 1, 9, 12. 2, 13, 12. °त्व n. 27.

सर्वकृति f. *ein Opfer, bei welchem alles Material geopfert wird,* Ait. Br. 7, 2.

सर्वकृत् *das ganze Herz,* instr. °कृदा *mit ganzem Herzen* RV. 10, 160, 3. — Vgl. सर्वभाव und सर्वात्मन्.

सर्वक्रोम m. *das Opfern alles Materials:* घ° Kâty. Çr. 6, 10, 29.

सर्वाकारप्रभाकर m. *eine best. Meditation* Vjutp. 20.

सर्वाकारवरोपेत m. desgl. ebend. 19.

सर्वात (सर्व + घत) adj. etwa *überall seine Augen habend* Paṇḍar. 4, 3, 71.

सर्वाग्नेयोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Hall 199.

सर्वाग्नेय adj. *nur Agni zugeeignet* Çâṅkh. Çr. 14, 4, 6.

सर्वाङ्ग m. N. pr. eines Autors (oder Titel einer Schrift) Verz. d. Tüb. H. 13.

1. सर्वाङ्ग (सर्व + 3. अङ्ग) n. 1) *der ganze Körper* Z. d. d. m. G. 27, 57. Comm. zu TS. Prât. 23, 17 (सर्वास्ये bessere Lesart; s. Weber, Pra-

rigvéda. 76). पादौ हस्तौ मे केतुः सर्वाङ्गं मे नव ग्रहाः ÇKDa. nach einem Tantra. °निन्दितः (so ist zu verbinden) करभः Kathás. 69,107. pl. *alle Glieder* Comm. zu Maitrâjan. 6,6. am Ende eines adj. comp.: भूतले न्यस्तसर्वाङ्गं प्रणामम् Kathás. 71,219. चारुसर्वाङ्गी R. ed. Bomb. 1,32,14. — 2) pl. *alle* Vedâṅga Ind. St. 2,195.

2. सर्वाङ्ग (wie eben) adj. (f. ई) 1) *an Gliedern vollständig* ṚV. 10,161, 5. AV. 8,2,8. 11,3,32. — 2) *vollständig:* श्री Kâm. Nîtis. 8,53. °भङ्ग Spr. (II) 7356. °म् adv. *nach allen Seiten hin, ganz genau:* तैर्निश्चितं स्वबुद्ध्या तत्सर्वाङ्गं परिशोधयेत् Kathás. 34,199.

सर्वाङ्गसुन्दर und °रस m. *eine best. Mixtur* Bhâishagyaratnâv. im ÇKDa.

सर्वाङ्गसुन्दरी f. Titel eines Commentars zum Ashṭâṅgahṛdaja Verz. d. B. H. No. 932.

सर्वाङ्गीण (von 1. सर्वाङ्ग) adj. (f. आ) *den ganzen Körper bedeckend, — erfüllend, über d. g. K. verbreitet* P. 5,2,7. तरुत्वचो Bhatt. 4,10. मलयज Vikram. 51. Kâvjâd. 2,218. यौवन Ragu. 18,51. स्पर्श Vikram. 149. ताप P. 5,2,7, Schol. परिक्लेश Ind. St. 8,218, N. 3. Hier und da fälschlich mit न geschrieben.

सर्वाजीव adj. *Allen Lebensunterhalt gewährend* Çvetâçv. Up. 1,6.

सर्वाणी f. = शर्वाणी AK. 1,1,4,32. Verz. d. Oxf. H. 28,a,34.

सर्वातिथि m. *Jedermanns Gast* wohl so v. a. *der an Jedermann Antheil nimmt* MBh. 13,3566.

सर्वातिरथवृत्रिन् adj. *alle grossen Kämpfer besiegend* Bhâg. P. 9,22,32.

सर्वातिसारिन् adj. *an einem durch alle drei humores erzeugten Durchfall leidend* Suçr. 2,438,12.

1. सर्वात्मक m. = 1. सर्वात्मन्; °केन *mit ganzer Seele, von ganzem Herzen* Bhâg. P. 1,4,26.

2. सर्वात्मक adj. 1) *Alles in sich enthaltend* Spr. (II) 4479. Bhâg. P. 3,6,35. — 2) *in Allem enthalten* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,154. R. 1,36,14. 27.

सर्वात्मकत्व n. nom. abstr. zu 2. सर्वात्मक 1) Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 67.

सर्वात्मत्व n. nom. abstr. von सर्वात्मन् *die Weltseele* Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,325.

सर्वात्मदृश् adj. *überall sich selbst sehend* Verz. d. Oxf. H. 28,b,36.

1. सर्वात्मन् m. 1) *die ganze Person:* सर्वात्मभूतये *zum Heil der ganzen Person* M. 3,91. मन्मथाविष्ट° adj. R. 5,2,20. instr. सर्वात्मना *mit der ganzen Person, mit ganzer Seele, auf das Angelegentlichste* Çat. Br. 11,5,6,4. संभृत्य सर्वैरस्माभिः कार्यः स° वधः MBh. 1,7662. Harîv. 7493. R. 3, 22,30. स° सीता मार्गितव्या 4,41,36. रामं सर्वात्मनाश्रिता 5,57,8. 61,38. 85,22. Spr. (II) 1603. कामः स° क्रोधः 1653. 6674. Bhâg. P. 2,2,36. 7,42. 3, 20,3. 22,11. 4,11,27. 21,38. 6,16,63. 7,10,19. Diese Bed. von सर्वात्मन् ist unter सर्वसंनाह Hall. 5,15 gemeint. Vgl. सर्वभाव und सर्वहृद्. — 2) *die Seele von Allem, die Weltseele* Çvetâçv. Up. 3,21. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,143. MBh. 12,1672. R. 4,44,120. Suçr. 1,249,11. Muir, ST. 4,31. 217. 325. Bhâg. P. 1,9,21. 2,1,5. 25. 7,52. 3,18,26. 4,7,49. 11,13. 12,11. 19,3. 5,17,3. 18,5. 6,9,28. 7,11,12. 8,7,40. 20,20. 23,3. 9,2,11. Pâṇ. 1,13,34.

2. सर्वात्मन् adj. *vollständig an Person, — Wesen, — Leiblichkeit* AV. 5,6,11. Ait. Br. 2,6. Âçv. Çr. 1,7,3. perox. TBr. 3,7,8,7.

सर्वात्मभूति s. u. 1. सर्वात्मन् 1).

1. सर्वादि (सर्व + आ°) m. *der Anfang —, der Erste von Allem* Pâṇ. 4,3,15.

2. सर्वादि (wie eben) adj. *beliebig anfangend* ṚV. Prât. 5,21.

सर्वाग्र (सर्व + 2. आ°) adj. (f. आ) *der allererste, zuerst dagewesen* Pâṇ. 1,3,44. 55. 12,61. 2,3,24.

सर्वाधार m. *der Behälter von Allem* Pâṇ. 1,8,18.

सर्वाधिकार m. *das Kapitel über Allerlei* Verz. d. Cambr. H. 57.

सर्वाधिकारिन् adj. *Allem vorstehend, über Alles zu sagen habend* Râga-Tar. 6,333.

सर्वाधिपत्य n. *die Oberherrschaft über Alles* Çvetâçv. Up. 5,3.

सर्वाध्यक्ष m. *der Oberaufseher über Alles* Pâṇ. 4,3,95.

सर्वानन्द (सर्व + आ°) m. 1) N. pr. eines Mannes Kapiçâvadâna 17. Hall 7 (im Index °मिश्र). — 2) Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. 2,55. — Verz. d. Tüb. H. 13.

सर्वान्वयकारिणी f. Titel einer Schrift Hall 170.

सर्वान्वयाङ्ग adj. (f. ई) *mit vollkommen untadelhaftem Körper* MBh. 3,2154. 2171.

सर्वानुकारिणी f. *Desmodium gangeticum* Râgân. im ÇKDa.

सर्वानुक्रम m. *vollständiges Inhaltsverzeichniss* (zum Veda) Ind. St. 3,270.

सर्वानुक्रमणिका f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 362,a, No. 20. °पद्धति Verz. d. B. H. No. 166.

सर्वानुक्रमणी f. desgl. Verz. d. B. H. No. 49. fgg. 165. °वृत्ति Verz. d. Oxf. H. 378,a, No. 379. °व्याख्या Notices of Skt Mss. 2,270.

सर्वानुदात्त adj. *ganz tonlos* ṚV. Prât. 17,20. Comm. zu TS. Prât. 6,4.

सर्वानुभू adj. *alldurchdringend* Çat. Br. 14,5,5,19.

सर्वानुभूति 1) f. *a) Alldurchdringung* Çiva-P. Guṇ. 2,14. — *b) Convolvulus Turpethum R. Br.* AK. 2,4,8,26. — 2) m. N. pr. *a)* des 6ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇî H. 31. — *b)* des 8ten Arhant's der zukünftigen Utsarpiṇî H. 34.

सर्वान्तक adj. *Allem ein Ende machend* Pâṇ. 1,13,39.

सर्वान्तकृत् adj. dass. Pâṇ. 4,8,103.

सर्वान्तर adj. *in Allem befindlich* Çat. Br. 14,6,8,1. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,154.

सर्वान्तरस्थ adj. dass. Verz. d. Oxf. H. 20,a,15.

सर्वान्तरात्मन् m. *die Weltseele* Pâṇ. 1,1,62. 12,44.

सर्वान्तर्यामिन् m. dass. Muir, ST. 4,44.

सर्वान्नभक्षक adj. *jegliche Speise geniessend, keine Speise verschmähend* H. 428.

सर्वान्नभोजिन् adj. dass. AK. 3,1,22.

सर्वान्त्रीन (von सर्व + यत्र) adj. dass. P. 5,3,9. AK. 3,1,22. H. 428. Hall. 2,196.

सर्वापरत्व n. *das jenseits-gelegen-Sein von Allem* so v. a. *die letzte Erlösung* Maitrâjan. 6,23.

सर्वाप्ति f. *Erreichung von Allem* Ait. Br. 8,7. Kauṣ. Up. 3,3.

सर्वाभाव (सर्व + अ°) m. 1) *das Fehlen Jedermanns, das Nichtdasein irgend Jemandes* M. 9,189. — 2) *absolutes Nichtsein* Gaupar. zu Sâṅ-

KHAṆḌ. 4.

सर्वाभिभू m. N. pr. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 5,13. 201,10.

सर्वाभिसंधक adj. *Jedermann täuschend* Spr. (II) 3096.

सर्वाभिसंधिन् adj. dass. TAITT. 2,7,13.

सर्वाभिसार m. *Gesammtangriff* H. 789. HALLS. 2,306. PAÑCAVIṂŚABR. 4,181 (nach ACHARCHAT).

सर्वाभ्यन्तर adj. *der allerinnerste* Ind. St. 10,263. fgg. 269. 277. 282.

सर्वायस (सर्व + घा°) adj. *ganz eisern* HALLS. 2,312.

सर्वायु oder °स् adj. *alles Leben habend* —, *gebend* u. s. w. VS. 38, 20. उन्मुच्यते सर्वायुः सर्वायुत्वाय सर्वमायुरेति AIT. BR. 2, 7. ÇAT. BR. 14, 3,1,18.

सर्वायुत्व n. nom. abstr. von सर्वायु AIT. BR. 2,7. ÇĀṄKH. BR. 14,4. ÇR. 14,12,8.

सर्वायुष n. *das ganze Leben* TAITT. UP. 2,3.

1. सर्वायुस् n. dass.: घायुर्मे पाहि सर्वायुर्मे पाहि TS. 4,4,7,2.

2. सर्वायुस् adj. s. सर्वायु.

1. सर्वार्थ m. pl. *alle Dinge, Dinge aller Art* MAITRJUP. 6,6. °संतेष Ind. St. 1,22,16.

2. सर्वार्थ 1) adj. *a) zu Allem dienlich, für Alles anwendbar* Comm. zu KĀTY. ÇR. 2,3,2. Davon °त्व nom. abstr. KĀTY. ÇR. 1,1,18. 22,8,22. — *b) auf Alles achtend* PAṆIṆ. 4,3,16. Davon nom. abstr. °ता f. so v. a. *Zerstreutheit* (Gegens. एकाग्रत्व) Verz. d. Oxf. H. 229,b,13. fgg. — 2) m. N. *des 29ten* Muhûrta Ind. St. 10,296.

सर्वार्थकर्तृ nom. ag. *Schöpfer aller Dinge* PAṆIṆ. 4,3,46.

सर्वार्थचिन्तक adj. *sich um alle Dinge kümmernd*, m. *ein oberster Beamter:* नगरे नगरे चैकं कुर्यात्सर्वार्थचिन्तकम् M. 7,121 = MBh. 12,3270.

सर्वार्थचिन्तामणि m. Titel eines Werkes MACK. Coll. 1,127.

सर्वार्थनामन् m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 2.

सर्वार्थसाधक adj. (f. °साधिका) *Alles zu Stande bringend, zu allen Dingen gut* VJUTP. 174. MBh. 7,2894. 8,1377. 13,1116. KATHĀS. 34,118. MĀRK. P. 91,9. Verz. d. Oxf. H. 99,b,45. Vishṇu PAṆIṆ. 4,3,46. Durgā DEVIM. im ÇKDa.

सर्वार्थसाधन adj. dass. oder n. *ein Mittel Alles zu Stande zu bringen* Spr. (II) 4879. 4893.

सर्वार्थसिद्ध 1) adj. *der sein Ziel vollkommen erreicht hat, der Alles hat was er wünscht* R. 7,39,8,16. 27. — 2) m. *a)* Bein. Çâkjamuni's AK. 1,1,4,10. TAITT. 1,1,11. H. 237. LALIT. ed. Calc. 109,15 u. s. w. — *b)* N. pr. eines Fürsten WILSON, Hindu Th. 2,143. fgg.

1. सर्वार्थसिद्धि f. Titel einer Schrift HALL 203.

2. सर्वार्थसिद्धि m. pl. bei den Gaina Bez. einer Klasse von Göttern, einer Abtheilung der Anuttara, H. 94, Schol.

सर्वार्थानुसाधिन् adj. *Alles zu Stande bringend:* Durgā DEVI-P 45 im ÇKDa.

सर्वार्हण adj. *Alles verdienend, auf Alles Ansprüche habend* PAṆIṆ. 4,3,54.

सर्वावत् (von सर्व) adj. *Alles enthaltend* ÇAT. BR. 14,7,2,10.

सर्वावसथ m. *Mitternacht* TAITT. 1,1,107.

सर्वावसु m. Bez. *eines best. Sonnenstrahls* VP. (2te Aufl.) 2,297, N.

सर्वावस्थम् adv. *in allen Stellungen:* निरीक्षमाणा भर्तारं सर्वावस्थम् so v. a. von *allen Seiten* MBh. 3,16745.

सर्वावास adj. *überall seine Wohnstätte habend* MBh. 12,12864. Çiva ÇIV.

सर्वावासिन् adj. dass.: Çiva ÇIV.

सर्वाशिन् (सर्व + घा°) adj. *Alles* (auch Verbotenes) *geniessend* M. 2,118.

सर्वाश्चर्यमय (von सर्व + घाश्चर्य) adj. (f. ई) *alle Wunder in sich enthaltend, aus lauter Wundern bestehend* BHĀG. P. 1,8,16. 2,10,17. PAÑCAR. 4,3,32.

सर्वाश्र्य (nom. abstr. zu सर्वाशिन्) n. *das Essen von Allem* ÇAT. BR. 3,1,2,21.

सर्वाश्रमिन् (von सर्व + घाश्रम) adj. *in jedem beliebigen Lebensstadium sich befindend* Ind. St. 2,14.

सर्वास्तिवाद् m. *die Theorie, dass Alles* (सर्व) *real sei* (घस्ति), °वादिन् adj. *ein Anhänger dieser Theorie* BURNOUF, Intr. 446. WASSILJEW 57 u. s. w. HIOUEN-THSANG 2,2. 132. 200. TĀRAN. 135 u. s. w. KALHAṆA 5,121. °वादविनय Ind. St. 3,186. — Vgl. मूल°.

सर्वास्त्रमहाज्वाला f. bei den Gaina N. pr. einer der 16 Vidjâdevî H. 240. ÇKDa. und WILSON machen nach einer schlechten Lesart zwei Namen daraus.

सर्वास्य (सर्व + घा°) n. *der ganze Mund* WEBER, PRATIÇĀKH. 76. nach einer v. l. im Comm. zu TS. 23,17 adj. *im ganzen Munde erfolgend.*

सर्वाहंमानिन् adj. *Alles für das Ich* (घहम्) *haltend* NṚS. TĀP. UP. in Ind. St. 9,162.

सर्वाह्न m. *der ganze oder jeder Tag* P. 5,4,88. 8,4,7. VOP. 6,38. fg.

सर्वाह्निक adj. *täglich* PAṆIṆ. 4,9,9. 15,18. an beiden Stellen सर्वाह्निक gedr.

सर्वीय (von सर्व) adj. *Allen gut* u. s. w. P. 5,1,10, Vârtt. 1. Verz. d. Oxf. H. 170,a,5.

सर्वेश 1) m. *der Herr von Allem* KAUṢ. UP. S. 134,17. PAṆIṆ. 1,1, 1,5. 8,29. — 2) f. घा *die Herrin von Allem* PAṆIṆ. 2,5,29. 34.

सर्वेश्वर m. 1) *der Herr von Allem* NṚS. TĀP. UP. in Ind. St. 9,125. 140. WEBER, KṚṢṆAJ. 308. BHĀG. P. 6,9,32. PAṆIṆ. 1,5,18. 2,1,4. — 2) Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 968. — 3) N. pr. *a)* eines buddhistischen Heiligen WILSON, Sel. Works 2,17. — *b)* eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 215,a, No. 517.

सर्वेश्वरत्व n. nom. abstr. zu सर्वेश्वर 1) WEBER, RĀMAT. UP. 343.

सर्वेष्ट adj. (f. घा) *alle Wünsche erfüllend* Verz. d. Oxf. H. 148,b,25.

सर्वैश्वर्य n. *die Herrschaft über Alles* PAṆIṆ. 1,5,12.

सर्वोच्छेदन n. *vollständige Vernichtung* PAṆIṆ. 53,24.

सर्वोत्तम adj. *der allervorzüglichste:* °गौरव्य Verz. d. B. H. No. 1006. °स्तोत्र HALL 151.

सर्वोत्तरत्वाभिधान n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 113,b,45. fg.

सर्वोदात्त adj. *einzig den Acut habend* RV. PRĀT. 15,5. 10. Schol. zu VS. PRĀT. 2,1.

सर्वोद्युक्त adj. *mit allem Eifer an Etwas gehend, nach Möglichkeit sich anstrengend* Spr. (II) 5667, v. l.

सर्वोपकारिणी f. Titel zweier Commentare HALL 3. 34. Verz. d. B. H. No. 667.

सर्वोपध adj. *jeden beliebigen Vocal vor sich habend* RV. PRĀT. 4,9.

सर्वोपनिषत्सार Titel einer Upanishad Colebr. Misc. Ess. 1, 97. Weber, Lit. 156. Ind. St. 1, 301. °प्रमोतर् Verz. d. B. H. No. 355.

सर्वोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Notices of Skt Mss. 1, 79. Verz. d. Oxf. H. 394, b, 33. Ind. St. 1, 302. °पदर्थानुभूतिप्रकाश 471.

सर्वोघ m. 1) *ein vollständiges Heer im Anzuge* AK. 2, 8, 2, 62. H. 789. Med. gh. 11. — 2) = गुरुमेद् *ein best. Lehrer* Med. st. dessen गुरुवेग im ÇKDa. nach ders. Aut., *great speed or dispatch* Wilson nach ders. Aut.

सर्वौषधँ 1) adj. *aus allerlei Kräutern bestehend:* सँभार् TBa. 3, 10, 4, 4. — 2) n. *alle Kräuter* Çat. Ba. 3, 2, 2, 15. 7, 2, 4, 12. 10, 1, 5, 2. 14, 9, 3, 1. Liṭ. 5, 8, 4. Taitt. Up. 2, 2.

1. सर्वौषधि f. *alle (allerlei) Kräuter;* sg. Çiṅkn. Ça. 16, 8, 5. pl. Gobh. 3, 2, 22. Spr. (II) 6959. am Anf. eines comp. Çiṅkn. Gṛhj. 1, 11. Gobh. 3, 4, 7. 6, 5.

2. सर्वौषधि m. *eine best. Gruppe von Kräutern:* कुष्ठमांसीकुरिण्डाभि-र्वचाशैलेयचन्दनैः । मुराचन्दनकर्पूरैः (hier soll चन्दन = रक्तचन्दन sein) मुस्तः सर्वौषधिः स्मृतः ॥ Rigân. im ÇKDa.

सर्वौषधिगण m. desgl. Çabdak. und Padmottarakh. 107 im ÇKDa.

सर्वौषधिनिष्यन्दा f. Bez. *einer best. Schriftart* (लिपि) Lalit. ed. Calc. 144, 11. fg.

सर्षप Uṇâdis. 3, 141. 1) m. *Senf, Senfkorn* AK. 2, 9, 17. Taik. 2, 9, 3. H. 1180. Halây. 2, 426. Ratnam. 113. Çiṅkn. Ça. 4, 15, 8. Gṛhj. 3, 1. Sharv. Ba. 5, 2. Kaṭhân. Up. 3, 14, 3. Sûçr. 1, 139, 4. 182, 16. सावपेदुत्तरं पश्य मेरुसर्षपयोरिव MBh. 1, 3071. R. 2, 25, 26. Spr. (II) 334. स्वस्थः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति । आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥ 2043. Varâh. Bṛh. S. 20, 5. 41, 5. 46, 26. Kathâs. 18, 134. fg. 177. 179. 181. 32, 118. 121. 68, 83. 73, 311. fgg. Mârk. P. 51, 105. विश्वं सर्षपवच्छूर्पस्येकदेशे यथा Pañkat. 2, 2, 33. भूर्ये च सर्षपो यथा 99. मस्तकस्येकदेशे च डिम्भः सर्षपवत् 42. °कण Z. d. d. m. G. 27, 31. °तैल Rigân. im ÇKDa. °स्नेह Sûçr. 2, 9, 6. 174, 20. °कन्द giftig 252, 6 (vgl. सर्षप H. 1198 als *ein best. Gift*). °शाक (das ungesundeste *Gemüse*) Karaka 1, 15. तिलसर्षपाः Sûçr. 1, 132, 3. Spr. (II) 2296. यद्वा चाल्पेन माल्येन वासितं तिलसर्षपम् MBh. 12, 10038. ग्रसित° Sûçr. 1, 199, 16. — *b) ein Senfkorn als Gewicht:* त्रयस्त्रि-कापनीवाला: सर्षपार्धं प्रचक्षते । द्विगुणं सर्षपं विद्याद्यवः पञ्च तु सर्षपाः ॥ Ind. St. 8, 436. सर्षपाः षड्यवो मध्यः M. 8, 134. = 3 Rájiká, 1/8 oder 1/12 Java Çiṅkn. Saṅk. 1, 1, 14. 30. सप्त लिक्षाः सर्षपः । सप्त सर्षपा यवः Lalit. ed. Calc. 170, 2. — 2) f. ई *a) ein best. Ausschlag:* पिडका नाति-महती क्षिप्रपाकातिवेदना सर्षपी Karaka 1, 17. Sûçr. 1, 273, 15. 2, 123, 11. — *b) eine Bachstelzenart* Taik. 2, 5, 29. — Vgl. गौर° (auch Pân. Gaṇ. 1, 16. Sûçr. 1, 273, 15), त्रिदश°, देव°, रक्त° (Sûçr. 1, 108, 5), रक्ता°, राज°, श्वेत° (Sûçr. 2, 40, 1), सित° und सार्षप.

सर्षपक (von सर्षप) 1) m. *eine Schlangenart* Sûçr. 2, 275, 17. — 2) f. °र्षिका *a) ein best. giftiges Insect* Sûçr. 2, 289, 21 (°के zu lesen). 290, 1. 2. — *b) ein best. Ausschlag* (vgl. सर्षपी) Wise 362. Sûçr. 1, 273, 12. 298, 12.

सर्षपाय् (wie oben), °यति *klein wie ein Senfkorn erscheinen* Bhâs. P. 6, 16, 48.

सर्षपारुण (सर्षप + अ°) m. N. eines den Kindern feindlichen Dämons Pân. Gaṇ. 1, 16.

सर्षपिक (von सर्षप) m. *ein best. giftiges Insect* Sûçr. 2, 288, 15. — °का s. u. सर्षपक.

सर्षिका f. *ein best.* Virâǵ-*Metrum* ṚV. Pâiṅ. 17, 12. Ind. St. 8, 107. 111.

सल् सलति (गतौ) Dhâtup. 13, 10. — Vgl. सृ.

सल 1) m. *Hand* H. ç. 123. — 2) n. = सलिल *Wasser* Bhâr. zu AK. 1, 2, 3, 3 nach ÇKDa. — Vgl. सलेसृ.

सलक्षण (2. स + ल°) adj. *dieselben Merkmale habend, gleichartig* Bṛhadd. in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. Daçar. 3, 29. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 21. — Vgl. सालक्षण्य.

सलक्ष्मन् (2. स + ल°) adj. dass.: सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति ṚV. 10, 10, 3. 12, 6. VS. 6, 20. TS. 1, 3, 10, 1. 6, 3, 11, 2.

सलखक m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 545. सलक्षण in der Uebersetzung.

सलज्ज s. u. लज्जा.

सलद् und °दी gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41.

सलवण (?) n. *Zinn* H. ç. 159.

सललूँक m. etwa *müssiges Umherschweifen* (von सृ) Naish. 4, 3. Nir. 6, 3. या कीर्वतः सललूकं चकर्ष ṚV. 3, 30, 17.

सलवि s. घप°, प्र°.

सलावकी s. u. सालावृक.

सलिङ्ग (2. स + लिङ्ग) adj. (f. या) *dasselbe Kennzeichen* (d. i. *Kennwort, habend* Âçv. Ça. 3, 2, 3. 4, 8. Kauç. 85. तत्सलिङ्गाभिराशीर्भिः so v. a. *entsprechend* MBh. 7, 2141.

सलिलँ (von सृ) Uṇâdis. 1, 55. 1) adj. (f. या) *wogend, fluthend, fliessend, unstät:* घर्कुपारः सलिलो मातरिश्वा ṚV. 10, 109, 1. समुद्र AV. 4, 15, 11. °वात TS. 4, 4, 42, 3. सप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् ṚV. 10, 129, 3. पार्णवे ऽधि सलिलमय आसीत् *etwas unstät sich Bewegendes* AV. 12, 1, 8. सलिले मधस्थे 10, 3, 8. सलिल (nach dem Comm. *rein wie Wasser;* könnte aber auch loc. sein) एको द्रष्टा Çat. Ba. 14, 7, 1, 31. TS. 3, 3, 10, 3. Kâṭy. 8, 14. 9, 3. देवी Çiṅkn. Gṛhj. 1, 24. — 2) f. या (sc. तुष्टि) im Sâṁkhja *die Befriedigung dessen, der die* बुद्धि *dem* परमात्मन् *gleichsetzt,* Tattvas. 39. — 3) n. *a) das Flüssige, Schwankende; Fluth, Wogen* Naish. 1, 12. देवाः सलिले सुसँरब्धा यतिष्ठत ṚV. 10, 72, 6. 1, 164, 41. प्रविष्टा देवाः सलिलान्यासन् AV. 10, 8, 40. 8, 9, 1. 2. सलिलस्य पृष्ठे 9, 10, 9. 10, 7, 38. 41. 11, 3, 26. 10, 4, 36. — 11, 4, 21. 17, 1, 3. 29. Âit. Ba. 8, 21. यापो वा इदमग्रे सलिलमासीत् TBr. 1, 1, 3, 5 (vgl. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 72). 3, 2, 5. TS. 4, 4, 6, 2. 5, 6, 4, 2. Çat. Ba. 3, 6, 2, 1. 12, 7, 2, 13. fünf *Fluthen* Kâṭy. 32, 6. — *b) Wasser* AK. 1, 2, 3, 3. H. 1069. Halây. 3, 26. सलिलैः नीरोदनमभ्राति Kauç. 18. 24. प्रक्षाल्य सलिलेन MBh. 3, 2290. सलिले शायी R. 1, 63, 25. सलिले क्रीडता त्वया 2, 64, 7. Sûçr. 1, 166, 18. 171, 10. 12. Siddh. 16. Mṛcch. 3. 42. 63. Varâh. Bṛh. S. 12, 4. Spr. (II) 5160. क्रमेण भूमिः सलिलेन भिद्यते 7508. Pañkat. 165, 7. pl. Halây. 3, 41. °पूर Spr. (II) 7143. °निषेक ṚV. 1, 28. सलिलावगाढ़ Çiç. 3. निधान° 39. सलिलं कृ mit gen. der Person *einem Verstorbenen die Wasserspende darbringen* R. 1, 44, 19 (45, 22 Gorr.). 6, 95, 61. दा dass. Harîv. 5718. am Ende eines adj. comp. (f. या) MBh. 3, 2436. 2511. 12552. R. 2, 114, 4 (125, 4 Gorr.). 3, 76, 6. 6, 108, 36. Kâm. Nîtis. 4, 51. Mṛcch. 30. Çiç. 167. Spr. (II) 6336. Mârk. P. 56, 4. Râǵa-Tar. 3, 271. Brahma-P. in LA. (III) 52, 4. — *c) so v. a. Regen:* सलिलं न कोरति *bringt keinen Regen* Va-

ain. Bṛn. S. 3,28. 9,34. °दायिन् 39. पतति न मलिल खात् 44. °निपात 5,96. न चक्रु मलिलं वत्मरे द्वितीये 8,40. मलिलं च न वासवस्त्यजति 17, 21. मलिलमचिराद्दस्ति निःसंशयेन 28,2. प्रचुर° adj. 8,40. — d) *das Wasser der Augen, Thränen:* °गुरुभिः पद्मभिः Mṛcch. 90. नयन° 40. — e) *eine best. grosse Zahl* Çiñkh. Çr. 15,11,7. — f) *ein angebliches Metrum* Ind. St. 9,107. fg. — Vgl. घस्तः°, निः°.

मलिलकर्मन् n. *die einem Verstorbenen dargebrachte Wasserspende* MBh. 18,32.

मलिलकुत्तल m. *Bixa octandra* (eine Wasserpflanze) Trik. 1,2,35.

मलिलक्रिया f. = मलिलकर्मन् R. 1,3,15 (10 Gorr.). 41,37. R. Gorr. 1,4,38.

मलिलचर m. *Wasserthier* Vaiju. Bṛn. S. 5,33. — Vgl. मलिलस्थलचर.

मलिलज adj. *was im Wasser entsteht, — lebt;* subst. *ein solches Wesen* Vaiju. Bṛn. S. 7,6. 9,33. 15,25. 41,7. masc. *Muschel* MBh. 7,5164. neutr. *Lotusblüthe* Rigân. im ÇKDa.

मलिलजन्मन् n. *Lotus:* कन्दे °जन्मनाम् H. 1166.

मलिलत्व n. nom. abstr. von मलिल *Wasser* Bhâg. P. 11,3,13.

मलिलद् m. 1) *Wasserreicher* (ein best. Amt) R. Gorr. 2,32,22. — 2) *Wolke* Vaiju. Bṛn. S. 24,19.

मलिलदायिन् adj. *Regen bringend* Vaiju. Bṛn. S. 9,29.

मलिलधर m. *Wolke* MBh. 1,1187. = घमृतभुजो देवाः Nilak.

मलिलनिधि m. 1) *das Meer* Khandom. 71. Çaç. 3,32 (vgl. jedoch Ind. St. 8,424). — 2) *ein best. Metrum:* ⏑⏑⏑–⏑–⏑⏑⏑–, ⏑⏑–⏑⏑⏑ –⏑⏑⏑ Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XVI,2).

मलिलपति m. *Herr der Gewässer,* Varuṇa Vaiju. Bṛn. S. 32,31.

मलिलपवनाशिन् adj. *nur von Wasser oder Luft sich nährend* Spr. (II) 4376.

मलिलप्रिय m. *Schwein* (*Freund des Wassers*) H. ç. 184.

मलिलमय (von मलिल) adj. *aus Wasser bestehend:* शशिन् Vaiju. Bṛn. S. 4,2.

मलिलमुच् m. *Wolke* Spr. (II) 6126.

मलिलयोनि adj. *aus dem Wasser* (*einer Wasserrose*) *hervorgegangen,* Beiw. Brahman's Harîv. 2790. fg.

मलिलराज m. *Fürst der Gewässer,* Varuṇa MBh. 5,3543.

मलिलवत् (von मलिल) adj. *mit Wasser versehen:* कूप, कूद R. 4,30,18.

मलिलस्थलचर m. *ein im Wasser und auf dem Festlande lebendes Thier, Amphibie* Pañcat. 131,12.

मलिलाकर (मलिल + घा°) m. *das Meer* Spr. (II) 6142. प्रभूत° *mit vielem Wasser versehen* MBh. 12,3242.

मलिलाञ्जलि m. *zwei Handvoll Wasser als Todtenspende:* देयः पञ्चिकनारीणां मलिलः °लिः Spr. (II) 1252. 7325. R. Gorr. 2,85,3.

मलिलाधिप m. *Herr der Gewässer,* Varuṇa Harîv. 13925.

मलिलार्णव m. *das Meer* R. 5,35,5.

मलिलालय m. desgl. R. 5,56,55.

मलिलाशन adj. *nur von Wasser sich nährend* Bhâg. P. 8,24,10.

मलिलाशय m. *Wasserbehälter, Teich, See* R. Gorr. 1,20,15. 2,98,4. 3,7,2. 4,29,16. 5,37,41. Vaiju. Bṛn. S. 45,4. 46,50. Bhâg. P. 8,18,4.

मलिलाहार adj. *nur von Wasser sich nährend* R. 3,10,3.

मलिलेचर adj. *im Wasser lebend:* घात् MBh. 1,5200.

मलिलेन्द्र m. *Herr der Gewässer,* Varuṇa: °पुर R. 7,23,16.

मलिलेन्धन m. *das höllische Feuer* (*Wasser zum Brennholz habend*) Trik. 1,1,68.

मलिलेश m. *Herr der Gewässer,* Varuṇa MBh. 5,3525. R. 6,39,10.

मलिलेशय adj. *im Wasser liegend:* घसुराः MBh. 13,2160. घण्डकोश Bhâg. P. 3,26,53. als Kasteiung Brahma-P. in LA. (III) 49,15, v. l. स-मुद्र° als Kasteiung Harîv. 88.

मलिलोद्भव 1) adj. *aus dem Wasser hervorgegangen* Harîv. 11894. — 2) m. *Muschel* MBh. 9,850. — 3) n. *Lotusblüthe* R. 5,13,28.

मलिलोपजीविन् adj. *vom Wasser seinen Lebensunterhalt habend* (ein Fischer u. s. w.) Vaiju. Bṛn. S. 15,6.

मलिलौकस् adj. *im Wasser lebend* R. 4,40,50. Bhâg. P. 8,24,22.

मलिलौदन m. *in Wasser gekochter Reisbrei* Harîv. 7901. die neuere Ausg. hat st. dessen das neutr., was wohl *Wasser und Reisbrei* bedeutet.

मलील (2. म + लील) adj. (f. घा) 1) *spielend:* धनुरारोपणमास मलील इव *so v. a. mit der grössten Leichtigkeit* MBh. 3,8067. मलीलमिव adv. *so v. a. mit der grössten Leichtigkeit* R. 1,67,16 (69,16 Gorr.). ohne इव dass. Bhâg. P. 2,7,32. — 2) *höhnisch* (*spielend auf Kosten eines Andern*): मलीलं (adv.) ब्रू R. 1,62,13. 66,9 (der Comm. zieht das adv. zum Vorangehenden). — 3) *coquet:* ein Frauenzimmer Çiç. Ca. 36,10. लीवमलीला Ratnâs. 64,105. °कंसगमना 39,4. °परिक्रम Mâlatîm. 85, 6. °विधम Khandom. 83. मलीलम् adv.: गच्छन्ती Mṛcch. 82,23. Ragh. 6,18. Mâlav. 38,11. Kir. 5,33.

मलीलगजगामिन् m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,20. fg.

मलून m. *ein best. Wurm* oder *Parasit:* लेलिह्यश्च मलूनाश्च मोमुराद्याः ककोरकाः Çiñkh. Sâñkh. 1,7,10. शालूरक (v. l. शालूनक) Karaka 3,7.

मलेक (2. म + लेक) m. in einer Formel, soll N. eines Âditja sein TS. 1,5,8,2.

मलेम् in घपमलेम् = घपमलवि Âçv. Gṛhj. 2,5,2.

मलोक (2. म + लोक) adj. 1) *denselben Weltraum bewohnend* Ait. Br. 3,41. Çat. Br. 2,2,4,18. 3,7,1,25. 13,4,3,3. — 2) *sammt den Leuten, — Bewohnern:* नगर Verz. d. Oxf. H. 31,a,8. — Vgl. सालोक.

मलोकता f. nom. abstr. zu मलोक 1) Ait. Br. 1,6. 2,24. 3,44. Çat. Br. 2,6,4,3. 14,4,1,24. Çiñkh. Br. 7,1. Çr. 4,8,7. Kâiñk. Up. 2,20,2. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,86. चन्द्रस्येति °ताम् M. 11,220. Jâjñ. 3,327. स लभेत्र: °ताम् MBh. 1,3689. 2,263. 507. 3,10304. 6,643. 7,6519 (गत्ता मलो° ed. Bomb.). 14,1014. 15,535. R. 2,74,4. R. Gorr. 2,68,36. Mârk. P. 129,33. 132,43 (मलोकतां zu lesen). Bhâg. P. 3,2,21. सुरै: MBh. 7, 2002. इन्द्र° R. 3,10,15.

मलोक्य adj. (f. घा) = मलोक 1): केशवस्य MBh. 13,7448.

मलोकत्व n. nom. abstr. von मलोकमन्. यज्ञस्य TBr. 1,5,11,1. Pañcav. Br. 13,6,2. 11,11,3.

मलोकमन् (2. म + लोक°) adj. *nach demselben Strich laufend, congruent* (Gegens. विलोकमन्) TS. 6,2,5,1. Ait. Br. 8,3. तेह मलोकम यो ऽग्निरन्तत्रे ऽग्नी घादधाति Çat. Br. 2,1,3,1. 4,2,5,14. 5,3,5,26. Pañcav. Br. 20,16,7.

मलोहित (2. म + लोहित°) adj. *gleiches Blut habend* Vop. 6,97.

मल्य und मल्यक s. वि°.

सल्लकी f. = शल्लक 2) b) Hall. 2, 44. Suçr. 1, 138, 8. 141, 14. 145, 16. °फलचूर्ण 94, 8. 2, 124, 7. Çiṅg. Saṁh. 2, 2, 73.

सल्लतणतीर्थ (सल्ल-त° + तीर्थ) n. N. pr. eines Tirtha Wilson, Sel. Works 2, 20.

सल्लदय (सत् + ल°) n. *das rechte, richtige Ziel:* चित्तेकाग्र्यं तु सल्लदये (so lesen wir) समाधानमिति स्मृतम् Verz. d. Oxf. H. 223, b, No. 544.

सल्लाप (vgl. auch Spr. (II) 5264, v. l.) und सल्लापक fehlerhaft für संलाप und संलापक.

सल्लोक (सत् + लोक) m. pl. *gute Menschen* Spr. (II) 6997.

सल्व m. pl. N. pr. eines Volkes Çat. Br. 13, 4, 3, 10. — Vgl. शल्व, शाल्व.

सल्क m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 8, 211. 213. 433. 474. auch सल्ल geschrieben.

सल्कण m. desgl. ebend. 7, 1055. 8, 330. 468. 479. auch सल्लण geschrieben. — Vgl. साल्कणि.

1 सवँ (von 1. सु) m. *Kelterung, Pressung des* Soma Nir. 11, 2. ṚV. 1, 126, 1. श्येनो बभ्रुत्सोमं सहस्रं सवान् 4, 26, 7. 10, 138, 2. Çat. Br. 4, 2, 4, 23. 3, 3, 4, 5. 12, 8, 2, 13. Çāṅkh. Ça. 7, 15, 9. fgg. = संधान (vgl. Bed. 4) A) Mān. v. 29. st. dessen संतान ÇKDa. nach ders. Aut., *offspring, progeny* Wilson. n. *the juice or honey of flowers; sprinkling the juice of the acid Asclepias* Wilson nach Çabdārthak. *Wasser* Gaṇḍm. im ÇKDa. m. *der Mond* Wilson nach Çabdārthak.

2. सवँ (von 2. सु) 1) adj. nom. ag. *der Heissende, Anreger:* सविता वो सवानां सुवताम् VS. 9, 39. सवो वे देवानां वरुणः *der Befehlende* Çat. Br. 5, 3, 2, 5. m. *die Sonne* (vgl. सवितृ) Çabdārthak. bei Wilson. — 2) m. P. 3, 3, 56, Vārtt. 3. a) *Antrieb, Anregung, Geheiss, Befehl; Belebung (die von Savitar ausgehende Wirkung):* प्रसूताः सवितुः सवाय ṚV. 1, 113, 1. 164, 26. 2, 38, 1. 3, 56, 7. 4, 54, 3. ये ते त्रिरह्नस्सवितः सवासः सोमागमासुवत्ति 6. 5, 82, 6. 7, 38, 4. 8, 91, 6. 9, 67, 25. AV. 6, 23, 3. 9, 2, 6. VS. 11, 2 (Çvetāçv. Up. 2, 3). 20, 11. TBr. 1, 2, 8, 13. Āçv. Ça. 9, 9, 3. — b) in den Brāhmaṇa gew. *Opferhandlungen, mit welchen die Weihung* (अभिषेक) *zu einer best. Thätigkeit oder Würde verbunden ist: Einweisung, Einsetzung, Bestallung, Inauguration* (सूयत इन्द्रायवे-नाभिषिच्यत एषिति सवा एकादशिनः Comm.; vgl. राजसूय). TBr. 2, Adhj. 7 zählt auf: बृहस्पति°, वैश्य°, ब्राह्मण°, सोम°, पृथि°, गो°, खोदन° Comm. 2, 750. fgg. Çat. Br. 5, 3, 5, 31. 5, 3, 4, 6. 4, 4, 13. 2, 12. fg. 13, 1, 5, 3. घृति° 5, 3, 4, 7. 9. TS. 5, 6, 2, 1. वरुण° ebend. इन्द्र°, मनु° 7, 5, 25, 2. देव° Kāṭh. 37, 4. TBr. 2, 7, 2, 1. मनुष्य° ebend. Pāraṇ. Br. 18, 8, 1. 10, 1. Ind. St. 3, 385. 388. पशोदन P. 3, 3, 56, Vārtt. 3, Schol. °काण्ड Titel des 8ten Buches im Çatap. Br. Verschieden hiervon ist der Gebrauch für gewisse *Darbringungen* im Kauçika, z. B. यद्गोनाधास्यमानः सवान्वा दास्यन् 60. सवानां संस्कारः 63. 67. fg. सवाग्नि 60. — c) *Opfer* überh. AK. 2, 7, 13. H. 820. Mān. v. 29. Hall. 2, 250. राजसूयाश्वमेधाग्नेः सो ऽयज्ञदक्षिभिः सवैः MBh. 1, 3715. पितृमेधैर्विविधैः सवैः MBh. 7, 2172. बहु° adj. *viele Opfer darbringend* oder *viele Jahre Etwas thuend* (Comm.) Bhāg. P. 3, 9, 18. *viele Opfer* — oder *viele Jahre enthaltend* (Comm.): काल 4, 12, 14.

1. 2. सव vgl. यज्ञः°, यज्ञव, कुथवा, तत्रसव, गो° (auch Bhāg. P. 3, 2, 22), ग्रामणी°, तीव्र°, प्रातः°, बृहस्पति°, ब्रह्म°, भूमि°, मनु°, मनुष्य°, वरुण°, वृष°, वैश्य°, सत्य°.

सवंशा (von 2. स + वंश) f. *eine best. Pflanze* Kauç. 8.

सवचन adj. = समानवचन P. 6, 3, 35. Vop. 6, 98.

सवत्स adj. (f. घा) *mit dem Kalbe* s. unter वत्स 1). Auch Kauç. 62. Weber, Kāṭhaṇ. 302.

सवय m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 8, 1149.

1. सवन (von 1. सु) n. 1) *Kelterung des* Soma (nach dem Ritual drei am Tage; s. प्रातः°, मध्यंदिन°, तृतीय°. Bei der letzten wird nur ein Aufguss auf den Trestern gepresst). सवन = अभिषव AK. 2, 7, 46. = सोमनिर्दलन Med. n. 145. Viçva bei Mallin. zu Kir. 12, 10. *der gekelterte Saft* und *dessen Libation:* Soma-*Fest, Festgelage, wobei es fröhlich zuging.* Naish. 3, 17. Nir. 7, 23. सुत ṚV. 1, 21, 4. इन्द्राय विश्वा सवनानि तातानि सत्तु 131, 1. सवने मादयस्व 2, 18, 7. ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंसमि 43, 2. समी विव्याच सवना पुरूणि 3, 36, 8. 9, 80, 1. सवनेषु प्रवाच्या 4, 22, 5. यथा सुनुर्ह सवनं मदाय 35, 4. सवनस्य पीतये 36, 2. नरो न रण्वाः सवने मदन्तः 7, 59, 7. तिरश्चिदर्यः सवना गंकि 8, 55, 12. राजपुत्रेव सवनावं गच्छन्तः 10, 40, 3. AV. 7, 97, 4. 9, 1, 12. TS. 6, 1, 6, 4. 4, 5, 1. °पङ्क्ति Ait. Br. 2, 24. 3, 27. Kāṭh. Ça. 9, 9, 1. घनुसवनम् 25, 13, 26. यद्यासवनम् 12, 7. 9, 9, 5. °काल 24, 7, 5. °कृत् Çat. Br. 3, 2, 2, 10. °देवता Çāṅkh. Ça. 6, 9, 14. सवनात्त Kāṭh. Ça. 13, 1, 12. सवने सवने gaṇa सवनादि zu P. 8, 3, 110. °त्रय Sāṅkh. Br. in Ind. St. 1, 36. °क्रम VS. Prāt. 1, 30. Weber, Gjot. 91. सवनान्यानुपूर्व्येण चक्रुः MBh. 14, 2625. माध्यंदिन, तृतीय Kālid. Up. 2, 24, 1. MBh. 13, 2059 (ed. Bomb. माध्यंदिनं). fg. R. 1, 13, 6. 7. Comm. zu TS. Prāt. 23, 10. मध्याह्न° Kathās. 69, 167. सवन (= काल Nilak.) neben रुवन Harīv. 2203. सवनाय दीक्षितः Rāgat. 8, 74. Bhāg. P. 3, 33, 6. पुंसः सवनम् so v. a. पुंसवन Jiṭ. 1, 11. °स्थ 3, 252. नेपथ्य° (°संगीतक ed. Bomb.) Mālav. 22, 22 so v. a. *ein Fest in vollem Costume* (besser wäre नेपथ्य°, eine in der ed. Bomb. erwähnte v. l.). सवन = क्रतु, याग, अध्वर Taitt. 3, 3, 269. H. an. 3, 437. Med. Viçva a. a. O. — 2) pl. *die drei Tageszeiten: Morgen, Mittag und Abend:* सवनेषूपयज्ञपः M. 6, 22. Bhāg. P. 3, 13, 27. 5, 23, 2. so v. a. *Zeit* überh.: °विद् 11, 3, 38. — 3) *eine zu den drei Tageszeiten erfolgende Abwaschung,* = स्नान Taitt. H. 638. H. an. Med. Viçva a. a. O. नियम° Kir. 12, 10. — Vgl. तृतीय°, त्रिसवण, पुंसवन, प्राक्°, प्रातः°, यद्यासवनम्, शकुनिसवन, सोम° und सावन.

2. सवन (von 2. सु) n. *das Antreiben, Heissen, in Bewegung Bringen:* उदु ष्य देवः सविता हिरण्ययी बाहू यमस्त सवनाय ṚV. 4, 71, 1. सवनात्सविता Maitrāyaṇ. 3, 7. — Vgl. सत्य°.

3. सवर्न Uṇādis. 2, 74. m. *der Mond* Ujjval. Vgl. 1. सवन.

4. सवन m. N. pr. eines Sohnes 1) des Bhṛgu MBh. 13, 4146. — 2) des Vasishṭha Harīv. 468 (einer der sieben Ṛshi unter Manu Rohita). VP. 1, 10, 13. — 3) des Manu Svājambhuva Harīv. 415. — 4) des Priyavrata VP. 2, 1, 7. 4, 73. Mārk. P. 53, 19. Bhāg. P. 5, 1, 25. fg. (zugleich ein N. *des Feuers*).

5. सवन (2. स + वन) adj. (f. घा) *nebst Wäldern* MBh. 1, 1119. 3, 16215.

सवनकर्मन् n. *Libation:* सायत्तन Çiṅ. 75.

सवनभाज् adj. *an den Libationen Theil nehmend* TS. 7, 5, 6, 4. Çāṅkh. Br. 27, 7.

सवनमुख n. *Beginn der Libation:* °मुखे सवनमुखे gaṇa सवनादि zu

P. 8,3,110. TS. 7,5,5,1. Davon adj. °मुखीय zum *Beginn der Libation gehörig:* Schalen Kāty. Ça. 22,9,4. Līṭ. 2,2,9. Verse 6,9,14.

सवनविध adj. *einer Libation gleich zu achten:* पशु Līṭ. 4,8,19. fg.; vgl. Kāty. Ça. 24,7,26.

सवनशस् (von 1. सवन) adv. *an den einzelnen Libationen* Âçv. Ça. 8, 7,15. Bhâg. P. 10,35,18. 11,6,10.

सवनिक adj. von 1. सवन am Ende eines comp.: तृतीय° Çāṅkh. Ça. 5,3,7.

सवनीय (von 1. सवन) adj. zur Soma-*Libation gehörig, dabei üblich* u. s. w. Bez. des Opferthiers (पशु) Âçv. Ça. 5,3,1. 13,8. 6,11,6. 12,7,1. Âit. Br. 4,19. 22. TBr. 2,7,22,1. Çat. Br. 1,5,2,26. 13,5,1,3. Kāty. Ça. 8,8,26. 9,8,2. 10,9,12. 13,4,10. 22,7,11. °काल Çāṅkh. Ça. 14,40, 19. °वपा Līṭ. 5,9,13. पुरोडाश Çat. Ça. 4,2,8,15. Kāty. Ça. 4,6,15. 12,2,2. 22,8,1. ग्राम्यपशुकाले नवानां सवनीयानिर्वपेयुः Âçv. Ça. 12,8, 16. °पशु Bhâg. P. 4,7,8.

सवन्त् adj. 1. स *enthaltend* Pañcav. Br. 15,1,11.

सवयस् (2. स + 3. वयस्) adj. = समानवयस् P. 6,3,85. Vop. 6,28. von *gleicher Kraft, gleichaltrig;* m. *Altersgenosse, Kamerad* AK. 2,8,4,12. H. 730. ṚV. 1,144,2. 4. 165,1. Rāgat. 3,28. 5,65. Kathās. 62,237. 104, 24. 124,204. Verz. d. Oxf. H. 255,a,23. fem. Çiç. 9,53.

सवयस adj. dass. Bhâg. P. 10,13,28.

सवर् m. = सलिल und शिव Taitt. 3,3,276. — Vgl. शवर्.

सवर्गीय (von 2. स + वर्ग) adj. *zu derselben Consonantengruppe (Gutturale u.s.w.) gehörig* TS. Prāt. 8,2. 14,28. Comm. zu 8,3. 4. 14,12. fg.

सवर्ण 1) adj. (f. या) = समानवर्ण P. 6,3,85. Vop. 6,28. *a) gleichfarbig, gleichartig* H. 1461. कृत्वी सवर्णामद्दुर्विवस्वते ṚV. 10,17,2. Nir. 12, 10. vielleicht ist AV. 18,26,2 सवर्णा st. सुवर्णा zu lesen. ग्रामपत्त्र° *gleichfarbig mit* MBh. 2,1881. इन्द्रायुध° 7,995. fg. 13,2770. fg. Hariv. 13625. R. 4,37,21. fg. Mṛicch. 18. Raghu. 9,51. Varâh. Bṛih. S. 10,20. fg. 30,13. 47,9. 79,35. *gleichartig* MBh. 2,865. von *gleichem Aussehen mit* (gen.) Bhâg. P. 3,3,3. — *b) von gleicher Kaste* Kāty. Ça. 18,6,27. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,6 v. u. M. 2,132. 210. 3,4. 12. 43. 5,167. 7,77. 9, 137. 10,20. Jiân. 1,55. 62. 2,122. MBh. 1,3870. Çik. 11,10. Kathās. 82,124. सवर्णापाणिसंयत्त् Mârk. P. 113,34. Bhâg. P. 5,26,26. Verz. d. Oxf. H. 269,a,5. 282,a,34. — *c) homogen* (von Lauten): समानस्थानकरणास्यप्रयत्नः सवर्णः VS. Prāt. 1,42. तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् P. 1,1,9. ṚV. Prāt. 1,12. 6,12. VS. Prāt. 1,72. 4,50. 108. AV. Prāt. 3,42. Comm. zu 1,27. 4,56. 84. TS. Prāt. 1,3. 5,28. 10,2. 14,33. 21,7 (स°). P. 1,1, 69. 6,1,101. मिथः Schol. zu P. 1,1,9. परस्परम् Kāç. zu P. 1,1,10. प्रत्यय° VS. Prāt. 3,3. पर° Weber, Prātiç. 90. पूर्व° P. 6,1,102. Kāç. zu P. 1,1,50. — 2) f. या N. pr. *a)* der Gattin des Sonnengottes (vgl. die Stelle aus ṚV. unter 1) *a)* Çaṅkar. im ÇKDa. — *b)* einer Tochter des Meergottes und Gattin des Prâcînabarhis Hariv. 86. fg. VP. 107. — Vgl. पर° und सावर्ण्य.

सवर्णात्व (von सवर्ण) n. *Gleichfarbigkeit:* भेष्मणा Saṃh. 1,260,21. Comm. zu Naish. 22,42.

सवर्णय् (von सवर्ण) *auf denselben Nenner bringen:* स्थानान्यप्येतानि °यित्वा Varâh. Bṛih. 8,4.

सवर्णवर्ण MBh. 4,294 wohl fehlerhaft für सुवर्णवर्ण.

सवर्णाभ (सवर्ण + आभा) adj. = सवर्ण *gleichfarbig:* पद्मपत्त्र° Mârk. P. 105,17.

सवर्य adj. nach Comm. *mit trefflichen Eigenschaften ausgestattet* TBr. 3,9,22,1.

सवर्विध adj. = सवनविध Çat. Br. 11,7,2,1.

सवस् n. = 2. सवन in सत्य°.

सवक्का f. v. l. für सरला *eine Convolvulus-Art* Bhâg. zu AK. 2,4,2,26 nach ÇKDa.

सवाचस् (2. स + वाच्) adj. *gleiche Rede führend* AV. 7,12,2. सु° v. l.

सवार्त्त् adj. nach Comm. *dasselbe Kalb habend* VS. 28,6. TBr. 2,6,7,2.

सवार्त्य (VS. oxyt.) adj. nach Comm. von *einer Mutter stammend* VS. 24,16. TS. 1,8,9,2. TBr. 1,7,2,5. Kâṭy. 15,4. Zu vergleichen ist wohl अपिवान्य, अभि°, नि°.

सवार्त्तिक (2. स + वार्त्तिक) adj. (ein Sûtra) *nebst den* Vârttika *studirend* P. 4,2,60, Vârtt. 6, Schol.

सवासस् (2. स + 1. वास्) adj. *bekleidet, mit den Kleidern* Çat. Br. 5,2, 2,5. M. 5,77. fg. 11,174. 223.

सवासिन् (2. स + 2. वास्) adj. *zusammen wohnend* AV. 2,29,6. 3,29,6.

सविंश (2. स + विंश) 1) adj. (f. या) *nebst einem Zwanzigstel* Weber, Ġjot. 104. — 2) m. N. eines Stoma VS. 14,23. TS. 4,3,9,1. 5,3,2,3.

सविकल्प (2. स + वि°) adj. 1) *Verschiedenheit —, Mannichfaltigkeit zulassend, damit behaftet, differentiirt* Vedântas. (Allah.) No. 124. Bibl. 24. — 2) *sammt den Zwischen-Kalpa* Bhâg. P. 2,10,46.

सविकल्पक adj. = सविकल्प 1) Sin. D. 54. Vedântas. (Allah.) No. 124. Bibl. 25. Wilson, Sâṅkhjas. S. 101. Tarkas. 23. Kusum. 16,16. fg. 40,11. Sarvadarçanas. 51,22. 104,20.

सविकार (2. स + वि°) adj. 1) *sammt seinen Umwandlungen, — Derivaten* Bhâg. 13,6. Bhâg. P. 3,7,21. — 2) *verliebt* Gît. 2,11. fgg.

सविग्रह (2. स + वि°) adj. *verkörpert* Râǵa-Tar. 5,7. Daçak. 4,5.

सविचार (2. स + वि°) adj. (f. या) von *Erwägungen begleitet* Jogas. 1,44

सविज्ञान (2. स + वि°) adj. *mit richtiger Erkenntniss ausgestattet* Çat. Br. 14,7,2,3. Davon nom. abstr. °त्व Sây. zu d. St.

सविडालम्भ n. Bhâr. Nîtiç. 20,43 als Bez. *eines best. Scherzes* (नर्मन्) wohl fehlerhaft für सविडाल (2. स + वि°).

सविद्द् adj. Maitrâjan. 6,35 nach dem Comm. = सवितृरूप und विद्वस्. eine etymologische Spielerei.

1. सवितर् (von 2. सु) nom. sg. 1) *Antreiber, Beweger, Belieber;* so heisst Tvashṭar ṚV. 3,55,19. 10,10,5. — 2) gewöhnlich N. eines Gottes, der sowohl dem mittleren Gebiet als auch dem Himmel zugerechnet wird, Naigh. 5,4. 6. Nir. 10,31. 12,12. Mus. ST. 5,162. fgg. Roth in Z. d. d. m. G. 24,307. ṚV. 1,34,10. 123,3. श्रेष्ठं सवं सविता साविषत्तः 164,26. सतं देवाय कृण्वते सवित्त्रे 2,30,1. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि 3,62,10 (Maitrâjan. 6,7). 4,53,1. 5. 54,2. 5,81,3. fgg. स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः 82,2. 6,50,1. 12. 7,38,1. 71,1. fgg. एष मे देवः सविता चचक्रन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम 63,3. 8,27,12. या सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजं कृवे 91,6. श्रेष्ठं स्याम सवितुः सवीमनि 10, 36,12. die Sûrjâ ist seine Tochter 85,9. 12. 149,1. fgg. दैव्य 4,34,3. 54,4. हिरण्यपाणि 1,22,3. सुपाणि 3,33,6. सुजिह्व 7,45,1. सुरत्न 1. वि-

ग्यानर् 76,1. सत्यधर्मन् 16,34,3. सत्यसव 36,13. विश्ववार् AV. 5,27,3. प्रसवानामधिपतिः 24,1. 4,25,3. 6,68,3. 14,1,47. 12,2,18. 13,2,26. Ait. Br. 1,16. 7,20. Çat. Br. 1,1,2,17. 7,4,3. 5,3,4,7. 5,3,4,19. 13,4,2,6. TS. 1,1,10,2. 2,1,4,3. Kauç. 128. 133. Kâty. Çr. 5,2,14. 7,5,15. Âçv. Gṛhy. 1,15,2. 20,7. Âtharvaṇa Ind. St. 3,243,a. सवितुः साम ebend. steht dem Sternbild Hasta vor 1,99. einem Metrum 3,257. fg. unter den 12 Âditja MBh. 1,2328. Harîv. 176. 12456. 14167. VP. 122. Bhâg. P. 6,6,37. *der Sonnengott* Harîv. 372. यत्रैवोक्ता सवित्रासीत्सावित्री ब्रह्मवादिषु MBh. 5,3770. Bhâg. P. 6,18,1 (seine Gattin Prçni). 8,18, 14. Varâh. Bṛh. S. 1,1. 60,19. Herr der 11ten Tithi 99,1. als Vjâsa VP. 272. Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,31. 80,*a*,11. — 3) *die Sonne* AK. 1,1, 2,32. H. 95. Hâlâs. 1,35. MBh. 3,2923. R. 4,44,26. Suçr. 1,22,3. 2, 160,11. Mâlav. 68. Râgh. 4,1. 9,50. Kumâras. 5,20. Ṛt. 1,16. Çik. 57, 1. Vikram. 20. Varâh. Bṛh. S. 3,3. 28,17. Spr. (II) 1806. 6960. Bhâg. P. 3,3,23. Hit. 17,21. — Vgl. सावित्र.

2. सवितर् (von 1. सवितर्) *als Sonne erscheinen:* विधुरपि सवितरति Spr. (II) 6960.

सवितर्क (2. स + वि°) adj. (f. घा) von *Nachdenken begleitet* Jogas. 1,42. °म् adv. *nachdenkend* Mâlav. 30,11. Çik. 33,11.

सवितृतनय m. *der Sohn des Sonnengottes, Saturn* Varâh. Bṛh. 14,3.

सवितृदत्त m. ein Mannsname Kâç. zu P. 5,3,83.

सवितृदेवत und °दैवत m. *das unter* Savitar *stehende* Nakshatra Hasta H. 112 (vgl. Comm.).

सवितृपुत्र m. *der Sohn des* Savitar: किरणयपाणि Ind. St. 3,459.

सवितृप्रसूत adj. von Savitar *geheissen, — angetrieben* TS. 5,1,6,1. Çat. Br. 1,1,2,17. 2,5,4,5. 3,2,2,25. Pâraskar. Gṛh. 16,5,6. Davon °ता f. nom. abstr. Çat. Br. 12,7,2,17. Çâṅkh. Br. 9,5.

सवितृर्ल m. Hypokoristikon von सवितृदत्त Kâç. zu P. 5,3,83.

सवितृसुत m. = सवितृतनय Varâh. Bṛh. 20,9. °दिन n. *Sonnabend* Varâh. Bṛh. S. 104,64.

सवित्र (von सू) n. (करण) P. 3,2,184. Vop. 26,169.

सवित्रिय adj. von 1. सवितर् ÇKDa. nach Siddh. K.

सवित्री (von सू) f. 1) *Mutter* H. 358. Hâlâs. 2,349. Kumâras. 1,24. फल्गस्य so v. a. *Beurtheilerin* Kir. 3,5. — 2) N. pr. einer Gottheit Ind. St. 3,243,*a*; vielleicht fehlerhaft für सा°.

सविद्य (2. स + विद्या) adj. 1) *gelehrt* Spr. (II) 1926. Râm-Tar. 5, 178. — 2) *denselben Studien obliegend:* सगोत्र° d. i. सगोत्र und सविद्य Vop. 6,5.

सविद्युत् (2. स + विद्युत्) n. *Donnerwetter* AV. 4,15,16.

सविध (2. स + विधा) 1) adj. *von derselben Art* AV. Paipp. 3,64. — 2) n. *Nähe* AK. 3,2,16. H. 1450. Hâlâs. 4,5. किमासेव्यं पुंसां सविधमनवद्यं गुसरितः Spr. (II) 1769. सविधमागत्य Kathâs. 53,30. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,3. am Ende eines comp. (das vorangehende Wort behält seinen Ton nach P. 6,2,23) 258,*a*,13. Comm. zu Naish. 22,45. fg. मद्र° *in der Nähe der* Madra P. 6,2,23, Schol. सविधे *in der Nähe* Spr. (II) 5917. 7349. Kâvjâd. 127,14. fg. (= Sâh. D. 260,12. fg.). Sâh. D. 59,3. am Ende eines comp. Râm-Tar. 6,206. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,13. सविध am Anf. eines comp.: °नगरीरथ्या (könnte nur hier adj. sein) Mâlatîm. 7,14. सविधापात Râm-Tar. 3,281. °सविधस्थ 4,279. — 3) सविधम् adv. = विधिवत् *vorschriftmässig* Bhâg. P. 3,3,5.

सविनय (2. स + वि°) adj. *wohlgezogen, bescheiden, anspruchlos* Ṛt. 6,21. Spr. (II) 3898. °म् adv. 2493. Vikram. 86,16. Kathâs. 24,116. Prab. 77,16. Dhûrtas. 68,18. 76,3. Pañkat. 47,1. Hit. 8,6.

सविभास m. als N. einer Sonne VP. 632, N. 6 fehlerhaft für विभास; vgl. Taitt. Âr. 1,7,1. 16,1.

सविशेष (2. स + वि°) 1) adj. a) *Besonderheiten —, specifische Eigenschaften besitzend* Sarvadarçanas. 49,17. 51,20. fg. — b) *ausserordentlich, absonderlich, ungewöhnlich:* सङ्ग Kumâras. 1,27. गर्व Kathâs. 22, 69. द्युति 35,116. तेजस् 45,89. पद 50,102. Sâṅkh. P. 4,20,*a*. — c) *einen Unterschied machend, die Leute nach Verdienst schätzend:* स्वामिन् Hit. 55,18. — 2) °म् adv. a) *mit allen Einzelnheiten, ganz genau* Harîv. 7033. सर्वं स° तस्मै निवेदयन्ती Pañkat. ed. orn. 55,25. — b) *in ganz besonderer Weise, über die Maassen, in hohem Grade, vorzüglich* MBh. 3, 11966. Harîv. 7144. R. 2,22,1. Kumâras. 5,38. Kathâs. 31,72. Hit. 27, 2. ed. Johns. 1220. am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen: सविशेषकान्त Râgh. 16,53. Kathâs. 94,20. सविशेषतरम् Harîv. 8278. R. Gorr. 1,71,13. प्राप्नोति तत्र स° *in noch höherem Maasse, noch mehr* Spr. (II) 4617.

सविशेषक adj. *nebst der Besonderheit* Bâlarâm. 1.

सविशेषण (2. स + वि°) adj. *mit näheren Bestimmungen (Attributen u. s. w.)* H. 242. °रूपक n. *eine aus lauter Attributen bestehende Metapher* Kâvjâd. 2,82.

सविष (2. स + 2. विष) 1) adj. *mit Gift versehen, giftig:* eine Schlange H. 1312. मक्षिका Suçr. 1,186,1. eine Wunde 2,6,12. *vergiftet:* शल्य Çik. 136. अन्न Spr. (II) 3238. — 2) *eine best. Hölle* Jâân. 3,222.

सवीमन् (von 2. सु) n. *Geheiss, Antrieb, Leitung:* nur im loc. Naish. 4,3. Nir. 6,7. प्र वाहू यमावसविता सवीमनि ṚV. 4,53,3. सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम 6,71,2. 10,36,12. 64,7. 8,18,1. VS. 4,23. Çâṅkh. Çr. 8,18,6.

सवीर् (2. स + वीर्) adj. *mit den Zugehörigen* TBr. 3,1,2,2.

सवीर्य (2. स + वीर्य) adj. 1) *mit Kraft begabt* TS. 3,3,2,3. Kâṭh. 29, 7. Çâṅkh. Gṛhy. 6,4. — 2) *gleiche Kraft habend:* देवो देवैः सवीर्यः VS. 28,3. Çat. Br. 3,3,4,22.

सवीर्यत्व n. nom. abstr. zu सवीर्य 1) TS. 5,2,9,2. प्राणानाम् 3,2,5. 4,5. 5,5.

सवीवधता s. u. विवध.

सवृत् in einer Formel VS. 13,9.

सवृध् (2. स + वृध्) adj. *Wachsthum habend* VS. 16,30.

सवृष्टिक (von 2. स + वृष्टि) adj. von *Regen begleitet* Verz. d. Oxf. H. 184,*a*,32.

सवेग (2. स + वेग) adj. 1) *ungestüm:* °म् adv.: उवाच Pañkat. 39,13. — 2) von *gleicher Geschwindigkeit:* वायुवेग° R. 5,35,41.

सवेणी adj. = समानवेणी Vop. 6,97.

सवेदस् (2. स + 2. वे°) adj. *gemeinsamen Besitz habend:* Agni-Soma ṚV. 1,93,9.

सवेश (2. स + वेश) adj. *benachbart* AK. 3,2,16. H. 1450. Hâlâs. 4, 7. am Ende eines comp. (das vorangehende Wort behält seinen Ton)

P. 6,2,23. मर्डसवेशम् Schol. — Vgl. सावेश्य.

सवेशीय n. मरुतां °यम् N. eines Sâman Ind. St. 3,228,b.

1. सव्य् Uṇâdis. 4,109. 1) adj. *a) link* AK. 3,2,34. H. 1466. am. 2,235. fg. Mân. j. 60. Hall. 4,71. दस्त RV. 2,24,5. Ross 1,82,5. 3,4,8. AV. 7,26,8. 30,8. पार्श्व 12,1,34. घत्ति 15,8,2,3. Çat. Br. 2,4,2,2. 6,2,12. 3,8,3,27. पाणि 1,1,2,7. 14,1,2,8. नासिका 11,2,6,4. TS. 5,3,2,4. 5. Ait. Br. 3,26. Kauç. 18. 26. 42. Âçv. Çr. 1,11,8. Gobh. 2,2,16. Kaush. Up. 2,11. 15. M. 2,63. 72. R. 3,52,9. 66,4. 75,6. Varâh. Bṛh. S. 51,41 (unächt). Bhâg. P. 3,19,9. 4,6,38. 5,23,3. सव्यदक्षिणयोर्यत्र विशेषो नोपलभ्यते Spr. (II) 6961. °दृशापत्त Verz. d. Cambr. H. 73. °ज्ञानुविज्ञानु (die ältere Ausg. सव्यं ज्ञा°) *eine best. Art zu kämpfen* Hariv. 15978. °बाहु desgl. 15979 (nach der Lesart der neueren Ausg.). — *b) widrig* H. an. Med. — *c) recht* (Gegens. von *link*) H. an. Varâh. Bṛh. S. 58, 29. 66,2. 89,1. 93,9. Vgl. Kern's Uebersetzung 17, N. 2. — 2) adverbial gebrauchte Casus des adj. *a)* सव्यम् α) *links:* परिक्रामति Kauç. 29. सव्यं दक्षिणमेव च (सव्यद° ed. Bomb.) R. 2,92,18. (मृगपतिना:) तं सव्यं चक्रु: R. 3,64,15. Bhâg. P. 1,14,13. लेखनं सव्यदक्षिणाम् AV. Paric. in Ind. St. 10,318. — β) *rechts* Sûrjas. 12,55. Gol. Tripr. 9. Ârjabh. 4, 16. सव्यापसव्यम् Gol. Bhuvanak. 51. — *b)* सव्येन α) *links* Çat. Br. 11, 4,2,3. Kâtj. Çr. 3,7,18 4,1,10. Bhâg. P. 5,21,5. — β) *rechts (südwärts)* Varâh. Bṛh. S. 24,10. 95,10. — *c)* सव्या *links:* न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या RV. 2,27,11; vgl. सव्याप्रष्टि fg. — *d)* सव्ये dass. Spr. (II) 4149. ध° *rechts* abend. — *e)* am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen. α) *links:* सव्यायतं कृत्वा वेषं विपरिवर्त्य च MBh. 4,809. — β) *rechts:* वामसव्यरुत Varâh. Bṛh. S. 86,72. — 2) m. *a) der linke Arm, die linke Hand:* सव्येन यमति ग्रावधत: RV. 1,100,9. 5,36,4. 8,70,6. TBr. 1,7,10, 1. Çat. Br. 11,4,2,1. Kâtj. Çr. 2,3,34. 5,5,19. Jâén. 1,233. — *b) der linke Fuss* Kâtj. Çr. 3,1,18. 19,4,10. Kauç. 90. Gobh. 2,2,11. fg. — *c)* ein N. Vishṇu's Çabdam. im ÇKDn. — 3) n. (sc. यज्ञोपवीत) *die über der linken Schulter getragene heilige Schnur:* सव्यं कृत्वा *die heilige Schnur über die linke Schulter legend* Schol. zu Kâtj. Çr. 258,10. 262, 11. कृत° so v. a. यज्ञोपवीतिन् 313,17. 324,17. — 4) Bez. *einer der zehn Weisen, auf welche eine Ekliptse erfolgen kann (die rechte Seite)*, Varâh. Bṛh. S. 5,42. °गते तमसि 44. — Vgl. अप°, प्र°, प्रति°, सुसव्य.

2. सँव्य m. N. pr. eines Schützlings des Indra RV. 10.49,5. ein Âṅgirasa und Liedverfasser von RV. 1,51-57 RV. Anukr.

सव्यचारिन् adj. = सव्यसाचिन् (wie die ed. Bomb. hier auch liest): Kṛshṇa MBh. 13,6901.

सव्यञ्जन (2. स + व्य°) adj. *nebst Consonanten* TS. Prât. 1,13. *mit einem Consonanten verbunden* Comm. zu 2,23. RV. Prât. 18,17. 20.

सव्यतस् (von 1. सव्य) adv. 1) *links (auf der unrechten, üblen Seite)* Lâṭj. 9,2,13. नि सव्यत: सादि दस्यु: RV. 2,11,18. मा सव्यत: कुर्वन् *zu meiner Linken sich stellend* MBh. 5,7176. — 2) *rechts* Varâh. Bṛh. S. 30,24; vgl. Kern's Uebersetzung 17, N. 2.

सव्यभिचार (2. स + व्य°) adj. *möglicher Weise falsch, nicht absolut zutreffend;* m. *Unsicherheit, Unbestimmtheit:* केवाभास Nyâs. 1,2,45. धर्मैकात्मिक: सव्यभिचार: 46. Sarvadarçanas. 114,6. 7. Tarkas. 40. °पूर्वपक्षरूप Verz. d. Oxf. H. 241,b,10. सव्यभिचारो नाम सव्यभिचरणं यद्वा भवेदिदमौषधमस्मिन्व्याधौ पैत्तिकमथ वा नेति Karaka 3,8.

सव्यष्ठ्रु so v. a. सव्यष्ठा. °ष्ठारम् Çat. Br. 5,4,2,18. °ष्ठसारथी 2, 4,2. 3,2,3. 4,2,17. — Vgl. सव्येष्ठ्रु.

सव्यष्ठा adj. AV. Paipp. 2,93. P. 8,3,97. *links stehend, der Kämpfer auf dem Streitwagen:* इन्द्र: सव्यष्ठायान्द्रमा: सारथि: AV. 8,8,23. — Vgl. सव्येष्ठ.

सव्यसाचिन् adj. (auch) *mit der linken Hand vertraut, mit beiden Händen geschickt:* Vishṇu-Kṛshṇa MBh. 13,6901 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Pâṇ. 4,3,131. m. Bein. Arǵuna's Tait. 2,8,17. H. 708. Bhag. 11,33. MBh. 3,12006. 4,1246. 1276. उभौ मे दक्षिणौ पाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे । तेन देवमनुष्येषु सव्यसाचीति मां विदु: ॥ 1286. Spr. (II) 5295. Verz. d. B. H. 116,3.

सव्याधि (2. स + व्या°) adj. *krank* Z. d. d. m.-G. 27,79.

सव्यानत adj. *links geneigt*, n. *eine best. Art zu kämpfen* Hariv. 15980 nach der Lesart der neueren Ausg., सव्योन्नत *links gehoben* die ältere Ausg.

सव्याप्रष्टि (स° + प्र°) m. *das auf der Wildbahn links laufende Pferd* Çat. Br. 5,1,4,9. — Vgl. दक्षिणाप्रष्टि.

सव्याप्रुग्य (स° + प्रुग्य) m. *das linke Jochpferd* Çat. Br. 5,1,4,7. 9. 2,4,2,11. — Vgl. दक्षिणाप्रुग्य.

सव्यावृत् (सव्य + वा°) adj. *nach links sich umwendend* Âçv. Çr. 5, 17,6. ज्ञप्ति 6,2,6. Gaut. 4,4,9. Lâṭj. 1,9,17. Kauç. 124.

सव्यावृत्त adj. *nach links gedreht:* कुशमुष्टि Kâtj. Çr. 1,3,23. Kauç. 124.

सव्याप्रून्य (सव्य + ध°) adj. *von der Linken nicht losgelassen* Kâtj. Çr. 24,4,4. 8,12.

सव्याहृति (2. स + व्य°) adj. *nebst den Ausrufen* भूस्, भुवस् *und* स्वर् Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,27. °क (f. घा) dass. Jâén. 1,238. °प्रणवक adj. *nebst diesen Ausrufen und* ओम् M. 11,248. Statt स्रष्टारं सव्याहृतिस्थं Hariv. 7432 liest die neuere Ausg. सृष्ट्वा ईसं (ईसं richtig Nîlak.) व्या°.

सव्येतर (1. सव्य + इ°) adj. *recht* (Gegens. *link*) MBh. 5,3694. Hariv. 10526. Suçr. 1,276,9. Ragh. 12,90. 13,43. 14,49. Pâṇ. 3,11,6. n. Bez. *einer best. Art zu kämpfen* Hariv. 15979.

सव्येतरतस् adv. *links und rechts* Bhâg. P. 4,8,79.

सव्येष्ठ adj. so v. a. सव्यष्ठा. °सारथी TBr. 1,7,9,1. der Comm. versteht darunter *zwei Wagenlenker, den einen rechts, den andern links.* °ष्ठा Pat. zu P. 8,3,97. सव्येष्ठ m. *Wagenlenker* H. 760, Schol. Hall. 2,291.

सव्येष्ठ्रु Uṇâdis. 2,102. Declination Vop. 3,65. = सव्यष्ठ्रु. °ष्ठा सारथि: Pat. zu P. 8,3,97. m. = सारथि AK. 2,8,2,23. H. 760.

सव्योत्तान (1. सव्य + उ°) adj. *nach links ausgestreckt:* die Hände Çâkun. Çr. 5,8,5. Gobh. 4,3,19.

सव्योन्नत s. u. सव्यानत.

सव्रण (2. स + व्रण) adj. *wund:* पादौ MBh. 3,16362. शुक्र Bez. *einer Krankheit des Schwarzen im Auge* Suçr. 2,311,12. 16. *schadhaft, mit einem Fehler behaftet* Hariv. 12245 (die neuere Ausg. hat eine andere, gegen das Metrum verstossende Lesart).

सँव्रत (2. स + व्रत) adj. 1) *sich ineinanderfügend, harmonisch, zusammenpassend:* युवो: सिक्ता विषुव्रतपाणि सव्रता RV. 8,70,3. द्यावापृथिवी वरुणाय सव्रते 10,65,8. सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा AV. 3,30,2. Kauç.

33. सम ज्येष्ठाय सत्रता: VS. 13,25. — 2) *durch eine Regel u. s. w. gebunden* Âçv. Ça. 4,2,18.

सत्रतिन् adj. *gleich verfahrend, gleiche Gewohnheiten u. s. w. habend:* ब्राह्मण° MBu. 3,14638.

सशब्द (2. स + शब्द) adj. (f. घा) *mit Geräusch (Lärm) verbunden, G. oder L. machend, von G. oder L. widerhallend:* °नूपुर Raçu. 8,62. क्षुराघात° भू Kathâs. 14,12. सदः सशब्दं कुर्वद्भिः Râǵa-Tar. 5,361. सशब्दम् adv. *mit Geräusch, laut* Gobh. 1,2,21. TS. Prât. 23,9. दृसन् MBu. 2,1246. fg. भुङ्क्ष P: 8,3,69, Schol. Raçu. 3,45. Spr. (II) 2048. Râǵa-Tar. 3,240. — Verz. d. Oxf. H. 62,*a*,3 ist wohl स ष° zu schreiben.

सशयन (2. स + शयन) adj. (f. ई) *zusammenstehend, benachbart.* द्वे यतरे सशयनी व्यतिषजति Svapv. Ba. 2,1. Liṭ. 7,12,4.

सशर (2. स + 1. शर) adj. *sammt dem Pfeile* R. 1,63,32. *mit einem Pfeile versehen:* ein Bogen Raçu. 3,52. Çâk. 5,1. 93,18.

सशरीर (2. स + शरीर) adj. (f. घा) *sammt dem Körper, leibhaftig:* सशरीर एव स्वर्गं लोकमेति TBr. 3,11,8,3. Pâraṇ. Bh. 21,4,3. R. 1,35,8. *mit dem Gebein* Kâṭh. Ça. 21,3,18. 25,7,12. सशरीरा त्रिर्मूर्धन्यभिषिञ्चेत् *an Haupt und Leib* Gobh. 2,1,7.

सशल्य (2. स + शल्य) adj. (f. घा) *eine Pfeilspitze im Körper habend, durch einen Stachel* (in übertr. Bed.) *gepeinigt, verwundet* R. 1,63,44. व्यावशल्यैस्तैः सशल्येव 6,101,3. Vikr. 29. चेतस् Kathâs. 105,44. Varâh. Bṛh. S. 53,59.

सशस्या f. *Tiaridium indicum Lehm.* Ratnam. im ÇKDr.

सशिरस्क (von 2. स + शिरस्) adj. (f. घा) *sammt dem Kopf* Gobh. 2,1, 16. 6,2. Çiṅkh. Gṛhy. 1,11,2.

सशीर्षन् (2. स + शीर्षन्) adj. *einen Kopf habend* (Gegens. अपशीर्षन्) TS. 5,5,4,3. TBr. 1,1,6,3. 2,3,3,1.

सशुक्र (2. स + शुक्र) adj. *sammt der Klarheit (dem Klaren)* TS. 6,1, 10,1. 4,3,2. Çat. Br. 3,3,3,18. Davon nom. abstr. °त्व n. TS. 6,1,6,5. 3,4,2.

सशूक m. = खास्तिक ÇKDr.

सशेष (2. स + शेष) adj. *einen Rest enthaltend, nicht vollständig geleert:* कोतृचमस Kâṭh. Ça. 24,3,41. सशेषपात्र adj. so v. a. *der seine ganze Portion auffisst, einen guten Appetit hat* Suçr. 2,194,3. 203,17. Davon nom. abstr. °त्व n.: सशेषत्वादायुषः *weil die Lebensdauer noch nicht abgelaufen war* Kathâs. 77,30. 122. 197 (सशे° zu schreiben). सशेषत्वाद्भीमस्य so v. a. *weil es mit Bhîma noch nicht zu Ende gehen sollte* MBu. 3,541.

सशोक (2. स + शोक) adj. *bekümmert, traurig, betrübt* Spr. (II) 4162. 5691. Andere Belege unter 2. शोक 2). Davon nom. abstr. °ता f. MBu. 2,1933. Z. d. d. m. G. 27,75.

सश्च्, सश्चति Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). *stocken:* यदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे *du stockst nicht* d. h. *lässest stets* (den Segen) *strömen* Vâlakh. 3,7. — Vgl. 1. सच्, सञ्ज् und असश्चत्.

सश्चत् (von सश्च्) f. *Stockung, Hemmnis;* concret *ein Hemmender:* अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु RV. 1,42,7. 3,9,4. 7,97,4.

सश्मन् (2. स + श्मन्) adj. *bärtig,* f. *Mannweib* Taitt. 2,6,3. H. 831.

सश्रीक (von 2. स + s. श्री) adj. *prächtig, schön;* davon nom. abstr. °ता f. *Pracht, Schönheit* Spr. (II) 2792.

सश्रेष (2. स + श्रेष) adj. *zweideutig, doppelsinnig* Kâvyâd. 2,186. Davon nom. abstr. °त्व n. Comm. ebend.

सष्टिक gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97. Davon °त्व adj. ebend.

सस्, सस्ति (स्वप्ने) Naigh. 3,22. Dhâtup. 24,70. सस्तु, ससस्तु, ससस्तु, सस्तात्. 1) *schlummern* RV. 1,29,3. 4. 103,7. 7,55,4. यत्रित्रे यत्तः पणयः ससन्तु 4,51,3. 5. 1,124,10. प्रावन्वतीं सप्त्यं सस्तमम् 6,20,6. यत्समस्त ससतो बाधयन्ती 1,124,4. 134,3. AV. 4,1,6. redupl.: ससस्त्यश्वकः TS. 7, 4,19,1. ससस्त्य° VS. 23,18. vielleicht in beiden Fällen स स°. — 2) *unthätig —, träge —, faul sein:* द्वादश द्यून्यदगोह्यस्यातिष्ठद्रयीणां वपुरप्रभूवः ससस्तः RV. 4,33,7. 1,161,11. नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदत् 33,1. यति वायो ससतो यासि शश्वतः 135,7. य इन्द्र सस्त्यव्रतो ऽनुष्वापमदेवयुः 8,80,3.

— वि, विससद्भिः (f) Paṇâd. 4,3,202.

सस्य *Kraut, Gras; Saatfeld* Naigh. 2,7. ससेन चिद्धिमदाय्यावहेम वसु RV. 1,31,3. सस्यं न पक्वमविदच्छचस्तं रिरिक्वांसम् 10,79,3. सस्यस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः *die Streu* 5,21,4. *das Soma-Kraut:* गृभ्णन्ति विक्रयं ससम् 8,61,3. ससस्य चर्मन् 3,5,6. 4,5,7. 7,7. Angeblich *schlafend* Naigh. 4,2; Nir. 5,3. und N. eines Âtreja, Liedverfassers von RV. 5, 21. — Vgl. सस्य.

ससङ्ग (2. स + सङ्ग) adj. *anhaftend, anhängend;* davon nom. abstr. °त्व n. *das Haften an Etwas, Berührung, Contact* Kap. 3,72.

ससंज्ञ (2. स + संज्ञा) adj. *volles Bewusstsein habend, bei Besinnung seiend* R. 1,74,13. 3,73,1.

ससत्निन् m. *Festgenosse* Çat. Br. 11,8,4,1. सैसत्निन् 12,1,3,1.

ससत्त्व (2. स + सत्त्व°) adj. (f. घा) 1) *muthig* MBu. 7,3882. — 2) *von Thieren besetzt:* गर्त M. 4,47. Raçu. 13,10. — 3) f. *schwanger* Çabdar. im ÇKDr. Raçu. 3,9.

ससर्परी f. RV. 3,53,15. fg. nach Bhaṭṭ. (Ind. St. 1,119. fg.) ein N. der Vâk; etwa *Kriegstrompete.*

ससादिक (von 2. स + सादिन्) adj. *vor Zeugen geschehend* Jâǵ. 2,94.

ससाधनोपवर्गनिरूपण n. Titel eines Stabaka in Madhusûdanasarasvati's Çrîmadbhâgavatasâraçikshâ Verz. d. B. H. No. 627.

ससीमन् (2. स + सीमन्) adj. *angrenzend, benachbart* H. 1450. Hall. 4,7.

ससुर (2. स + सुरा) adj. *betrunken* Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,25.

सैसूनु adj. falsche Lesart AV. 5,27,1; vgl. VS. 27,11. TS. 4,1,6,1.

सस्त्रीक (von 2. स + स्त्री) adj. *bewaibt, verheirathet* Z. d. d. m. G. 14,570,3.

सस्थान (2. स + स्थान) adj. = समानस्थान P. 6,3,85. Vop. 6,98. *dieselbe Stellung einnehmend, gleich* P. 5,4,10. *an derselben Stelle des Mundes hervorgebracht* (die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend) RV. Prât. 2,6. 4,10. 13,3. 14,9. 20. fg. VS. Prât. 4,3. AV. Prât. 2,13. 15. 31. 40. 3,30. Comm. zu 1,10 und 8. 261. TS. Prât. 2, 47. fg. 5,37. 38. 9,2. 24,9. स° 12. VS. Prât. 4,119. 125.

सैस्रि (von 1. सन्) adj. *gewinnend, erwerbend; verschaffend, schenkend:* सस्रिर्वाजं दिवे दिवे RV. 1,61,20. 5,35,1. 8,38,1. 10,38,4. Wagen der Açvin 1,18,1. 3,18,5. पत्नीषणा सस्निना युजा 3,23,10. 8,20,4. 10,120,3. सस्निमविन्दच्चरणे नदीनाम् *den Räuber* 139,6 (nach Nir. 5,1 so v. a. संस्रात). superl. °तम Çat. Br. 1,1,3,13.

सप्तेक् (2. स + श्रेक्) adj. (f. घा) *fettig:* नारमांस्य Mit. 5,67 = Mâdh.

P. 35,29. *enthaltig* Spr. (II) 2296 (zugleich in Bed. 2). — 2) *Jmd* (gen.) *in Liebe zugethan* MBh. 13,1665. Spr. (II) 2296 (zugleich in Bed. 1). 6335. Kathâs. 17,59. °म् adv. *liebevoll* R. 2,45,5 (स स्नेकै gedr.). Çiç. 33,7. Pañcat. 187,8.

सस्पिञ्जर s. शष्पिञ्जर.

1. सस्य् (von सस) Uṇâdis. 4,109. n. sg. und pl. *Saat auf dem Felde, Feldfrucht* AK. 2,4,4,15. 3,4,26,203. H. 1130. 1168. Halâj. 2,419. मा नो वधीर्विद्युता सस्यम् AV. 7,11,1. कृषिं च सस्यं च 8,10,24. समर्धुकमस्य सस्यं भवति TS. 3,4,3,3. 5,1,3,3. 7,5,20,1. Çat. Br. 11,2,7,32. आगतं सस्यं भवति *eingeheimst* Çâṅkh. Br. 19,3. गृह्णागतम् Spr. (II) 2424. सस्यं नाम्रीयादग्निक्षेत्रमङ्कत्वा *die neue Frucht* Âçv. Çr. 2,9,2. Kâtjây. 1,6. M. 9,49. 247. Jâṭ. 1,347. 2,161. R. 2,32,13. R. Gorr. 2,9,44. 4,6,20. Suçr. 1,23,1. 135,6. Spr. (II) 7079. Rasar. 1,26. 62. 10,49. 18,58. Kumâras. 2,44. Mârk. P. 15,3. 61,76. Râjat. 3,294. Pañcat. 1,1,72. Hit. 21,9. पयोधराः सस्यमदन्ति नैव Spr. (II) 4082. सस्याद् P. 3,2,68, Schol. Vop. 26,69. °भक्षक Hit. 62,20. 75,8. °क्षेणी Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,48. तथा भूमिकृतं दानं सस्ये सस्ये विवर्धते MBh. 13,3135. 3186. रसवत्ति 1,4338. मन्दम् Varâh. Bṛh. S. 8,40. मध्यानि 5,85. मुकुलानि Mârk. P. 120,16. पक्वानि Kathâs. 20,29. सस्यैः समृद्धा धरा Spr. (II) 1705. सस्यं समृध्यते 2037. सस्यानि नाशयन् MBh. 1,6623. क्वचित्सस्यं प्ररोहति 12,2691. ज्ञायते Varâh. Bṛh. S. 3,16. या वै विदार्य वसुधां सस्यमिवोत्थिता R. Gorr. 2,38,31. सस्यानि पाकमुपयान्ति Varâh. Bṛh. S. 8,12. सस्यस्य वृद्धिः 30. सस्यानां पाकहेतुः Mârk. P. 104,25. °जन्मन् Varâh. Bṛh. S. 2,S. 7,Z. 1. °वृद्धि 4,16. °प्रवृद्धि 7,14. °संपद् 5,20. 8,44. सस्यर्द्धि Mârk. P. 51,23. 81. सस्यापात 120,9. 11. सस्याभिकार MBh. 12,2632. °प्रदा (भूमि) Spr. (II) 2039. °मालिनी R. 1,34,11. °शालिनी 3,22,5. 5,80,31. °पूर्ण (क्षेत्र) Hit. 21,5. °संपन्न (देश) M. 7,69. संतप्तः सस्यानाम् Varâh. Bṛh. S. 5,23. सस्यानामीतिभयम् 52. विध्वंसी 8,16. सस्यस्य नाशः 19. °नाश 5,24. °प्रणाश 9,14. °विमर्द 5,61. 62. °वध 8,4. Daçak. 112,13. सस्यान्ते M. 4,26. am Ende eines adj. comp. (f. आ): सर्व° H. 939. वृष्टिनिष्पाद्य° Halâj. 2,6. Spr. (II) 108. उभयतः° Âçv. Gṛhj. 1,5,5. प्रवृद्धजन° (भूमि) MBh. 1,3719. पक्व° R. 7,59,4,3. बहु° Varâh. Bṛh. S. 19,15. ऊर्ध्व° MBh. 1,4338. घर्मसंज्ञात° 3,2007. R. 5,36,30. 37,2. सम्यक्संज्ञात° 6,9,27. संपन्न° MBh. 4,931. सर्वसंपन्न° Spr. (II) 2025. विपन्न° Varâh. Bṛh. S. 19,9. श्य° Harîv. 3797. — श्यामाक°, व्रीहि° Ind. St. 2,300. शालीतुषवादि° Varâh. Bṛh. S. 8,30. सर्व° *Korn aller Art* AK. 2,1,4. नव° M. 4,26. पूर्व° *zuerst gesätes Korn, Frühkorn* Suçr. 1,238,3. Varâh. Bṛh. S. 8,13. शारद° 5,21. 20. शरत्° 40,1. यौष्म° 3. Häufig (aber nicht in den Bomb. Ausgg.) शस्य geschrieben Vgl. बहु°, सु°.

2. सस्य 1) m. *ein best. edles Mineral*; s. u. 1. सहस्रम. — 2) n. = शास्त्र (vgl. 1. शस्) und गुण (vgl. 1. शस्य) Viçvaçîrsha ÇKDa. Durch गुण wird das Wort auch vom Schol. zu P. 5,2,68 erklärt; die v. l. hat aber शस्य.

सस्यक 1) adj. = सस्येन परिज्ञातः P. 5,2,68. = गुणेन संयुक्तः mit den Beispielen सस्यको वत्सः, सस्यकः साधुः Schol. Im Sûtra wird शस्य als v. l. erwähnt. — 2) m. a) *ein best. Edelstein* (vielleicht *Smaragd*) Taitt. 3,3,46. Mân. k. 165. Varâh. Bṛh. S. 7,20 (v. l. शस्यक). 80,5. = नालिकेरान्तःसस्याभमणि H. an. 3,107. = सर्वगुणयुक्तो मणिः Uçânas. zu Uṇâdis. 4,109. — b) *Schwert* (vgl. 1. शस्) Taitt. H. an. — 3) n. a) in der Verbindung रमालनागाक्षुण्णशस्यकम् R. 6,96,3. नागाक्षुण्णो नागकेशरस्तस्य शस्यकं चूर्णमिति सर्वज्ञः । पूर्वं पुष्पमिदानीं चूर्णमित्यर्थः Comm. — b) *ein best. edles Mineral* Verz. d. Oxf. H. 321,a, No. 761. — Würde wohl richtiger überall mit श geschrieben werden.

सस्यक्षेत्र n. *Saatfeld* Hit. 81,13. श° gedr.

सस्यघ्न (von स्यन्द्, सःस्यद् Padap.) adj. *fliessend:* घर्वं सस्यदः सप्तत् RV. 10,113,4.

सस्यपाल m. *Feldhüter* Râjat. 1,233. 247. श° gedr.

सस्यमञ्जरी f. *Aehre* AK. 2,9,21. श° gedr.

सस्यरक्षक m. *Feldhüter* Hit. 81,15. श° gedr.

सस्यवत् (von 1. सस्य) adj. *reichlich mit Feldfrüchten bestanden:* क्षेत्र. मही Harîv. 3101. R. 6,112,83. Mârk. P. 34,114. 120,16. auch श° gedr.

सस्यशीर्षक n. *Aehre* H. 1181.

सस्यशूक n. *Granne des Getraides* AK. 2,9,21. H. 1181. auch श° gedr.

सस्यसंवर m. *Vatica robusta* (s. शाल) AK. 2,4,2,28.

सस्यसंवरण m. dass. Râjân. 9,83.

सस्यहन् 1) adj. *die Saat auf dem Felde vernichtend:* मेघ MBh. 8,787. — 2) m. N. pr. eines bösen Dämons, eines Sohnes des Duḥsaha, Mârk. P. 51,4. 23.

सस्यहन्तृ m. = सस्यहन् 2) Mârk. P. 51,80.

सस्याकरवत् (von सस्य + आकर, adj. eher = सस्यवत् als *reich an Getraide und Minen* Kâm. Nîtis. 4,31. शस्यानि (so auch der Text) प्राणरक्षणानि, आकराः सुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानानि Comm.

सस्र (von सस्) adj. (f. आ) *fliessend:* नद्यः RV. 10,64,8.

सस्रि (wie eben) adj. P. 3,2,171, Vârtt. 3. *gleitend, laufend* RV. 10,99,4.

सस्रुत् (2. स + स्रुत्) adj. *fluthend, fliessend* Naigh. 1,13. RV. 1,141,1. इन्द्रो यथो मनवे सस्रुतस्काः 4,28,1. समेनं गिरो अर्षन्ति सस्रुतीः 9,34,6.

सस्रोतस् (2. स + स्रो°) adj. dass.: नद्यः VS. 34,11.

सस्वन (2. स + स्वन) adj. (f. आ) *laut:* क्रकाम सस्वनं क्रामम् MBh. 14,2196. पर्जन्य R. 5,12,24. Varâh. Bṛh. S. 33,28. °म् adv. 32,2. R. Gorr. 2,53,30.

सस्वर् adv. *unvermerkt, im Stillen, heimlich* Naigh. 3,25. सस्वरिद्धि तन्वः प्रुष्मिमाना वपावृतम् RV. 7,59,7. सस्वरिद्धि समृतिस्त्वेष्येषाम् 60,10. ब्रवीचचनं पदमस्य सस्वः 5,30,2. 1,88,5. — Vgl. सस्वर्त.

सस्वर (2. स + स्वर) adj. 1) *laut*, °म् adv.: weinen, schreien R. 2,30,22. 41,7. 65,20. 81,3. 104,13. R. Gorr. 2,123,3. — 2) *gleichlautend:* पूर्व° Comm. zu AV. Pâr. 1,101. — 3) *den Ton habend, betont* Ind. St. 10,414. — 4) *einen gleichen Ton habend:* व्यञ्जनं स्वरेण सस्वरम् VS. Pâr. 1,107.

सस्वर्त adj. *heimlich thuend:* यत्सस्वर्तो त्रिरीळिरे यदाविः RV. 7,58,5 — Vgl. सस्वर्.

सस्वेद (2. स + स्वेद) adj. von *Schweiss triefend;* f. आ *eine befleckte Jungfrau* Taitt. 2,6,2. Çâṅkh. im ÇKDa.

1. सह्, सँहति Dhâtup. 34,4. सँहते 20,22 (मर्षणे). über die Dehnung des Wurzelvocals und der Reduplicationssilbe s. RV. Pâr. 9.28. fgg

vedische Formen, act.: सँक्त् RV. 6,73,2. सँक्तम्, सँक्ती; सक्याम् 2. sg. RV. 2,11,4. 3. sg. 1,132,7. सक्युम् 7,90,6. साक्याम 10,83,1 (AV. Paipp. 4,38). सँक्ताम 7,98,4. (प्र) सतत्, सासँक् 5,25,6. 9,75,5. सासँक्म् 6,33, 4. 8,19,15. 20. सासक्याम. med.: सँक्ते, सँक्मान (s. auch bes.), साति 1. sg. RV. 10,49,1. (प्र) सँक्त्व, साक्व 3,37,7. ग्रसक्, ग्रसक्षि, साते AV. 2,27,5. (प्र) सासते, सासीय AV. 19,32,10. ग्रसक्षिष्ट, सक्षियीमँहि, °वहि, (ग्रभि) सासक्षीष्ठाः RV. 6,45,18. समक्षे, ससाक्षे, ससाक्षिषे, सेक्राने, सासक्राने, (उद्) साक्षयेः साढा P. 6,3,112. infin. सँक्ध्यै RV. 6,1,1. 7, 31,12. साढ्वै, absol. साढ्वा P. 6,3,113. partic. साढ AV. Paipp. 3,7. AV. 5,30,9. In der klassischen Sprache act. nur ausnahmsweise, meist des Metrums wegen. ग्रसक्षिष्ट, सेक्ते, साक्ष्यम् P. 6,1,12. Vop. 26, 135. सक्ष्यिता und सोढा P. 6,3,112. 7,2,48. 8,2,31. Vop. 8,79. 125. fg. सक्ष्यिष्यते, (संप्र) सक्ष्यतिः सक्तुम् und सोढुम्; सक्ष्विा; partic. pass. सोढ (= क्त AK. 3,2,46. तदस्य सोढम् P. 4,3,52. Accent eines mit सोढ beginnenden und auf ein partic. auf त auslautenden comp. gaṇa मुखादि zu P. 6,2,170). Der Anlaut der Wurzel geht nicht in ष über, wenn in der Form ढ erscheint (परिसोढा u. s. w.) P. 8,3,115. 1) *bewältigen, gewinnen:* Feinde RV. 1,132,1. दस्यून् 3,29,9. 6,66,9. माया: 7,98,5. वीरुध 8,40,1. 10,34,9. AV. 4,36,3. 8,6,7. स्त्रीसि 13,2,38. Çat. Br. 7,4,2,33. Ait. Br. 6,36. Schlachten RV. 3,24,1. 8,37,2. न शक्रा रावणं सोढुम् R. 1,22,21. Bhatt. 5,56. *Jmd (acc.) Gewalt anthun:* यो मेत्थमसक्षयाः Ait. Br. 6,33. Çat. Br. 14,4,4,9. Ohne Object *siegreich sein:* ग्रस्माकं ब्रह्म पृतनासु सक्ष्याः RV. 1,132,7. 4,6,10. 7,60,10. 10, 145,5. 139,2. AV. 5,20,11. 12,1,54. 17,1,1. सँक्मान Agni 7,63,1. Indra TBr. 3,1,2,2. सासँक्न् (सक्ँम् Padap.) *bewältigend, siegreich:* दुरितानि RV. 7,12,2. 1,58,3. 2,20,6. 3,11,6. 4,21,2. पृतनासु 6,68,7. ससक्ँसम् dass.: ग्रमित्रान् 1,100,5. सासँक्म् 7,92,4. 8,16,10. 46,16. — 2) *Etwas bewältigen so v. a. Meister werden über Etwas, zurückhalten, hemmen:* शोकम् R. 2,26,7. 30,21. क्रोधम् Spr. (II) 5013. बाष्पम् MBh. 3,2919. R. 2,40,27. — 3) *vermögen:* युवं सु नः सक्तं दासथो रयिम् RV. 3,40,1. mit infin. MBh. 3,8812. R. Gorr. 1,39,6 ग्रसक्तो. Spr. (II) 3704 (सक्तुं). 4710. Vaṛiṇ. Bṛn. S. 104,24 (act.). Wilson, Sâṅkhyas. S. 10 (उपायस्त° zu lesen). mit dem loc. eines nom. act.: तं गर्भमसक्तो विधारणे। उत्ससर्ज गिरौ MBh. 9,2458. — 4) *Etwas ertragen, tragen so v. a. aushalten, überwinden, einer Widerwärtigkeit widerstehen, — nicht unterliegen:* नानुद्वान्सक्ते धुरम् (vgl. धूर्षद्) AV. 5,17,18. गङ्गायाः पतनम् — पृथिवी न सक्ष्यिते R. 1,43,28. सो ऽहं कथमिमं भारम् — सहेयम् 2,73,14. ग्रटाभारमिमं कथं सक्ते 100,31. ग्रम्भोनिधिः सक्ति दुःसहवाडवाग्निम् Spr. (II) 203. पदं (acc.) सक्त ग्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं (nom.) न पुनः पतत्रिणः Kumâras. 5,1. बाणवर्षम्, बाणान् Harîv. 8088. वीर्यम्, बलम् MBh. 3,11388 (सक्तिं st. सक्तुं ed. Bomb.). Ragh. 4,69. पराक्रमम् MBh. 1,5960. युधि परिस्पन्दम् 5969. वेगम् 3,1591. 4,767. 14,1718 (ग्रसक्तो). R. 5,3,78 (सक्ष्यिति am Ende eines Verses). Spr. (II) 5675. क्षणसोढारिनियह adj. Ragh. 12,63. सक्ष्यिते तत्प्रथमावलम्बनम् Kumâras. 5,66. प्रीतिरोधम्, कान्तपरिभोगमायतम् Ragh. 11,52. शरव्राताः पुष्पवृष्टिम् 12,94. बहूनायासान् Spr. (II) 2485 (act.). विमर्दम् Bhatt. 17,59. शीतम् P. 5,2,122, Vârtt. 7. R. 5,26,27. Vikram. 135. Spr. (II) 4238. 6330. Kathâs. 17,95. 48. 56,322. Kâraṇḍ. 22. Buâc. P. 1,10,10. 12. 10,60,56. Pañkat. 43,21. 44,2. — 5) *Etwas ertragen, leiden, insbes. geduldig ertragen, sich gefallen lassen, ruhig ansehen, — anhören, — hinnehmen, über sich ergehen lassen:* दुःखमुत्तमम् MBh. 3, 15371. 15376 (सेढुः). 17298 (सेक्ष्यि). R. 2,61,3 (सक्ष्यितः). 115,2 (126, 2 Gorr.). 7,58,12. वेदनाम् Ragh. 8,49. दृशास्तास्ताः Spr. (II) 284. क्रोशम् 5316. 2015. 6467. Kathâs. 15,81. 16,115. Sarvadarçanas. 96,16. सोढः कान्ताविवोगः Spr. (II) 4087. 4315. विद्रुपतां मे सक्तुम् MBh. 1, 4265. fg. बहूनि प्रतिलोमानि Harîv. 7299. सर्वमस्य सहामहे R. 1,14, 13. 7,36,31 (wohl सर्वं st. सर्वे zu lesen). यदन्यस्याभिषेचनम्। नोत्सहे सक्तितुम् 2,23,11. 40,11. ग्रनिष्टवचनम् Kâm. Nîtis. 12,18. न सक्ते संगमं नौ कृतान्तः Manu. 103. Ragh. 4,61. 10,43. Kumâras. 1,57. शब्दं सक्ते मृगाः Çik. 14. ग्रपराधमिमम् Çik. Cr. 36,1. Spr. (II) 2047. 4263 (act.). 5133. 5173. 7500. Z. d. d. m. G. 27,69. Kathâs. 16,9. 17,31. 18,381. 19,70. 28,114. 31,92. 34,26. 37,152. 41,59. 48,48. Râja-Tar. 6,247. Prab. 74,7. Mâlav. P. 68,31. Buâc. P. 1,7,43 (act.). 4,10,7 (act.). न ते भोजनाच्छादनाभ्यधिकां वराटिकामपि सहामि so v. a. gönnen Pañkat. 135,7. कलहममृष्यमानः *nicht ertragen könnend* 221,1. Hit. 15,19. वारं वारं मयेतस्यापराधः सोढः 67,12. LA. (III) 33,8. 90,9. mit acc. der Person: नोच्चिक्षेप सक्ते कमपि *Niemand leidet einen Hochstehenden* Spr. (II) 3829. Kathâs. 33,15. सुचिरं कृत्त न सक्ते कृतविधिरिह सुस्थितं कमपि Spr. (II) 3701. (तया) सोढास्मि न वद्धवने वसती Ragh. 14,63. ohne Ergänzung: तस्मादेतैरधिक्षिप्तः सक्तासह्यवरः सदा M. 4,135. सक्ते ऽपथ्यमप्युक्तः (so der Comm.) Kâm. Nîtis. 5,38. Spr. (II) 2095. 4987. दृष्ट्वात्कुर्वति शक्रे तु कथं ब्रूहि सहामहे Kathâs. 45,168. mit gen. der Person ohne acc. der Sache *Jmd Alles nachsehen, nicht ungehalten sein über:* पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि (d. i. प्रियाया ग्र°) देव सोढुम् Bhag. 11,44. किमर्थं धार्तराष्ट्राणां सक्ते दुर्वृत्तीयसाम् MBh. 3,535. तत्संक्षयाय (so ist zu schreiben, da तत् = तपः ist) मया सोढं तव प्रिये Kathâs. 1,42. so v. a. *Jmd verschonen:* स्वल्पकैरेव समाक्षोभिरसकृो न सक्ष्यिति (am Ende eines Verses) Mâlav. P. 100,33. मृगस्य दृष्टस्य न सक्ते (सिंहः) Pañkat. ed. orn. 44,11. ग्रसक्द्धर्ममागित्रैः so v. a. *mir Nichts gönnend* R. 4,32,4. — 6) *Etwas duiden so v. a. anerkennen wollen:* तमिमं विभागं न सक्ते Sarvadarçanas. 46,14. ग्रसक्षमान 24,18. Sâh. D. 18,4. — 7) कालतेयं सक् so v. a. *sich einige Zeit gedulden* Kathâs. 101,135. कालम् dass. 134. Harîv. 10270. दूतिकागमनकालमपारयन्ती सोढुम् *erwarten* Vet. in LA. (III) 20,17. fg. द्वित्राण्यहान्यर्हसि सोढुम् *zwei, drei Tage dich gedulden* Ragh. 5,25. 15,45. Megh. 93. Kathâs. 49,66. — 8) सँक्त् so v. a. *nachhaltig, solid:* रयिं RV. 5,23,1.

— caus. साक्ष्यति (मर्षणे) Dhâtup. 34,4.

— desid. *bewältigen wollen:* व्रतैः सीसक्षेत्तो ग्रव्रतम् RV. 6,14,3. सीसक्षेत्त मन्युमुर्वः 7,60,11. तेनं सक्ते यं सीसक्षति TS. 2,2,2,4. nach Sây. zu सच्.

— desid. vom caus. सिसाक्ष्यिषति P. 8,3,62. Vop. 19,17.

— intens. hierher liesse sich सासक्षाम u. s. w. ziehen, aber der Padap. hat in der Reduplicationssilbe die Kürze. Vgl. सासक्षि.

— ग्रभि 1) *überwältigen, unter sich bringen* RV. 5,23,1. 6,45,18. 9, 20,1. पतिम् 10,159,1. ग्राशाः Kauç. 45. Nir. 3,3. ग्रभिषह्य तु यः कन्यां कुर्यात् so v. a. *mit Gewalt schänden, nothzüchtigen* M. 8,367. — 2) *Etwas ertragen, nachsehen, verzeihen:* ग्रतमा सा पतिभवः स्वल्पो ऽपि

नाभिसक्यते (sic; Sin. D. 474. — Vgl. अभीषाक् (°षक्).

— उद् 1) *tragen, aushalten, aushalten:* तदग्निर्नोत्सक्ष्यशक्नोत् TBr. 1,1,6,1. यया वाचोत्सक्ष्ये समाप्तनाय Ait. Br. 3,44. Çat. Br. 1,3,2,13. — 2) *vermögen, im Stande sein* (sowohl physisch als auch moralisch): यावदुत्सक्ष्ये मनः Spr. (II) 5471. तत्प्रापय विदर्भान्मामग्रेवोत्सक्ष्ये यदि Kathâs. 36,371. Spr. (II) 4734. यज्ञवत्रोत्सक्ष्यास्त्वम् Bhaṭṭ. 19,16. mit infin. P. 3,4,65. MBu. 1,6139. fg. 4050 (act.). 4231. 5590. 6139. 2,891. 3,2142. 2144. 2252. 2593. 4,2192. 5,6010. 6031. 7124. 7345 (act.). Harîv. 9626 (act.). R. 1,21,12. 60,26. 2,23,10. 30,21. 2,51,17. 4,61,14. 5,36,9. 6,2,49 (act.). Çiç. 60,18. 83,7. 36, v. l. Spr. (II) 1637. 3813. Kathâs. 4,11. 25,80. 39,31. Râga-Tar. 3,293. 429. Bṛhîç. P. 3,2,1. 5,20, 27. 7,6,9. 8,17,6. Pañcat. 22,1. Sarvadarçanas. 161,5. Bhaṭṭ. 3,54. 5, 59. 14,89. mit acc.: परार्थे यत्नमारभ्य कथं स्वार्थमिहोत्सक्ष्ये so v. a. *wie vermag (soll) ich meine eigene Sache zu betreiben* MBu. 3,2175. सेकार्थमुत्सक्ष्यति so v. a. *vermag zu begiessen* Spr. (II, 387. mit loc.: त्रैलोक्यस्यापि रक्षणे R. Gorr. 2,122,16. पराविरूढेषु so v. a. विरूढानि कर्तुम् Spr. (II) 2514. पदक्रमे Z. d. d. m. G. 27,41. mit dat.: वामश्च मैथिलि। नोत्सक्ष्ये परिभोगाय MBh. 3,16543. — Vgl. उत्सक् in दुरुत्सक् und उत्साक् u. s. w. — caus. उत्साक्यति *Jmd* (acc.) *bestärken, aufmuntern, zu Etwas* (loc.) *anstacheln, antreiben* Kathâs. 62,220. विषये पाण्डवैः सक् MBu. 5,5810. प्रियदर्शने 15,461. — desid. vom caus. *Jmd zu bestärken —, aufzumuntern —, anzustacheln bestrebt sein:* स्वात्मीयानुत्तिसासाक्यिषन्निव Bhaṭṭ. 9,69.

— अभ्युद् 1) *Jmd* (acc.) *zu bewältigen —, Jmd zu widerstehen vermögen:* नैनमभ्युत्सक्ष्यन्केचित्तावकाः MBu. 6.2351. — 2) *vermögen, im Stande sein;* mit infin. MBu. 3,13206 (act.). Raghu. 5,22.

— प्रोद् *voller Muth sich anschicken,* mit infin.: ततः प्रोत्सक्ष्मर्वे योद्धुम् Bhaṭṭ. 17,96. Vgl. प्रोत्साक्. — caus. *bestärken, aufmuntern, auffordern, anstacheln, reizen:* ये वो प्रोत्साक्यन्ति MBu. 5,4198. 8,3703. Prâsaçittvand. 30,*a*,2. 70,*b*,5. Kull. zu M. 7,194. Schol. zu P. 1,4,41. रामं वदन्तम् Vop. 8,15. गुरोर्वक्त्रपरिस्पन्दो मनः प्रोत्साक्तीव (= °साक्यति Nilak. mit Erwähnung der v. l. °परिस्पन्दमुत्प्रोत्साक्यति) मे MBu. 1, 2223. विक्रमेषप्रतिरूपं तेजः प्रोत्साक्यान्यदम् R. 4,26,19. प्रोत्साक्ति 2,9,46. 21,12. 35,28. 6,12,6. Kathâs. 14,28. 123,241. Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,35. Rigvîr 13 in der Unterschr. संकल्पेन प्रोत्साक्तिम् impers. Prân. 102,2. प्रोत्साक्यत्तः MBu. 6,4437 schlechte Lesart in der ed. Bomb. st. प्रोत्साद्यत्तः der ed. Calc. Vgl. प्रोत्साक्न.

— समुद् *vermögen, im Stande sein;* mit infin. MBu. 5,836 (act.). R. 7,59,*a*,17. Mârk. P. 75,60. Vgl. समुत्साक्. — caus. *bestärken, aufmuntern, anstacheln* MBu. 2,1412. समुत्साक्य 14,2252 fehlerhaft für समुत्साद्य, wie die ed. Bomb. liest.

— नि, °यक्ते P. 8,3,70. न्यषक्त und न्यसक्त 71. °सोढा 115. Vop. 8,45. 125. Vgl. नीषक्. — caus. aor. न्यसीसक्त् P. 8,3,116. Vop.

— निस् vgl. निःषक्.

— परि, °यक्ते P. 8,3,70. पर्यषक्त und पर्यसक्त 71. °सोढा, °सोढुम् 115. °यक्तिता Vop. 8,45. 125. *ertragen, aushalten, widerstehen:* यत्र व्यसक्तेन्द्रो ऽपि कपिः पर्यसक्तिष्ट तत् Bhaṭṭ. 9,73. — caus. aor. पर्यसीषक्त् P. 8,3,116.

— प्र 1) *besiegen, siegen:* सद्यो देव प्र णस्पुरः RV. 1,62,1. प्रसक्षत्व कर्ता 4,12,1. मायाभिर्मायिनम् 5,30,6. 2,9. 10,99,2. 120,6. शत्रून् 180, 1. AV. 7,35,1. 13,2,31. *fertig werden —, es aufnehmen können mit* (acc.): चतुरङ्गं क्षपि बलं सुमक्त्प्रसक्ष्यसि R. 2,51,7 (48,7 Gorr.). तमुग्यत्तं प्रसक्त कः Kumâras. 2,57. मयाभिगुप्तं भीमत्तं न कश्चित्प्रसक्ष्यति Harîv. 9825. चतुरङ्गं क्षपि बलं प्रसक्ष्ये वयं पुधि R. 2,86,8. प्रसक्षामि R. Gorr. 2,94,9. तो वर्तमानं हि सतो सकाशे नालं प्रसोढुं बलक्षपि शक्रः MBu. 1,3574. R. 2,51,10. 86,11. प्रसोढुम् R. Gorr. 2,48,10. *Gewalt über Jmd haben, Jmd Etwas anhaben können:* यस्मान्न पार्थं प्रसक्ष्यते MBu. 1,5711. — 2) *Meister werden über Etwas, zurückhalten, hemmen:* यो विषादं विषक्ते Spr. (II) 5652. — 3) *vermögen,* mit infin. MBu. 1,1843. 16,281. प्रसक्ष्य partic. mit inf. = शक्य Spr. (II) 4761. — 4) *Etwas ertragen, aushalten, einer Widerwärtigkeit widerstehen, — nicht unterliegen:* न तेजस्तेजस्वी प्रसहतमपरो यो प्रसक्ते Spr. (II) 3274. Raghu. 4,82. कथं तस्य रणे वेगं मनुष्यः प्रसक्ष्यति MBu. 3,2034. — 5) *zu tragen —, zu leiden haben:* सिंक्ष्याघवराक्षाणां निनादं प्रसक्ष्यति R. Gorr. 2,52,29. तीव्राणि दुःखानि प्रसक्ष्यामि (vielleicht प्रसह्यामि zu lesen) MBu. 8,1374 (die ed. Bomb. hat eine andere Lesart). — 6) absol. प्रसक्ष्य *a) mit Anwendung von Gewalt, — Kraft, gewaltsam* Ak. 2,3,10. H. 1539. प्रसक्ष्यापकृत्य (so ist wohl zu lesen) Ind. St. 2,464,19. कन्याक्षणम् M. 3,33. दण्डेनैव प्रसक्ष्यैतान् शनकैर्वशमानयेत् 7,108. यो प्रसक्ष्य वृको कन्यात् 8,335. प्रसक्ष्यो MBu. 1,149. 5,5957. 5981. R. 1,29, 8. 3,42,59. 52,52. 5,36,36. Raghu. 2,27. 3,36. Spr. (II) 4662. Mâlav. 77. Prân. 78,4. Bṛhîç. P. 4,4,17. 13,41. 8,16,12. — *b) in hohem Grade, gar sehr:* प्रसक्ष्य धर्षितस्तत्र सोमो वै राजयक्ष्मणा Harîv. 1358. MBu. 1, 1181. 3,15674. R. Gorr. 2,17,39. सव्यं च नेत्रं स्फुरति प्रसक्ष्य Mṛicch. 143,14. — *c) ohne irgend eine Rücksicht zu nehmen, ohne Weiteres, ohne sich lange zu bedenken:* (ताम्) देवीनामुपरि प्रसक्ष्य कृतवान् Kathâs. 6,167. 12,106. प्रसक्ष्य सिंहासनमारुरोह ततः 20,225. — *d) mit Nothwendigkeit, jedenfalls, durchaus:* तान्प्रसक्ष्य नृपो कन्यात् M. 9,269. Spr. (II) 4283. Varâh. Bṛh. S. 103,7. व्यायामयोगेन हि संप्रवृद्धः प्रसक्ष्य कुर्यात् द्विरदान्प्रतापः Kâm. Nîtis. 15,8. Bṛhîç. P. 4,19,28. 5,26,35. mit einer Negation *durchaus nicht:* न कश्चिन्योषितः शक्तः प्रसक्ष्य परिरक्षितुम् M. 9,10. Kathâs. 36,133. प्रसक्ष्य सः। न तथा प्रतिपेदे तन्निनिन्द्याप्यधिकं पुनः 27,26. प्रसक्ष्य नाशकद्रक्षितुम् 45,210. — Vgl. प्रसक्तिन्, प्रसभम्, प्रसक् fgg., प्रसाक्, प्रासक् fg. und प्रासाक्.

— अभिप्र *vermögen,* mit infin. Kir. 12,18.

— संप्र 1) *Meister werden über Etwas, zurückhalten, hemmen:* एवं स्वराज्यनाशे वं शोकं संप्रसक्ष्यसि MBu. 12,3277. — 2) *Etwas ertragen, aushalten, überwinden:* कथं दुःखमिदं तीव्रं गान्धारी संप्रसह्यति (संप्रसह्यति ed. Bomb.) MBu. 9,3515. — 3) absol. संप्रसक्ष्य *jedenfalls, durchaus* MBu. 5,1896. 1915.

— प्रति *widerstehen, fertig werden mit.* यदिक्षोत्पक्ष्यते भूतं कस्तत्प्रतिसक्ष्यते R. 1,37,8.

— वि, °यक्ते P. 8,3,70. व्यषक्त und व्यसक्त 71. Vop. 8,45. 125. 1) *überwältigen, in der Gewalt haben, es mit Jmd aufnehmen können, fertig werden mit Jmd, Jmd Etwas anhaben können:* इन्द्रो मघानि दयते विषक्षो RV. 7,21,7. शत्रून् AV. 3,10,2. यत्रिणः AV. 4,10,2. 19,46,2.

TS. 4,3,11,2. न मेना शत्रून्विषक्ते युधि Spr. (II) 3632. MBh. 3,17319. य एनं विषक्ते युधि 5,2021. विषक्षापि परस्परम् 12,3546. नान्यस्त्वा विषक्ष्यति Harıv. 10361. पद्मेन न ज्ञासक्तो । विषक्ष्यन्त्यमर्यो लुप्तिपासे u. s. w. MBh. 5,1576. — 2) *vermögen, mit infin.* MBh. 5,36. R. 4,34, 9 (act.). — 3) *Etwas ertragen, aushalten, überwinden, einer Widerwärtigkeit widerstehen, — nicht unterliegen* MBh. 2, 2572 (richtig विषक्ते ed. Bomb., विसक्ते ed. Calc.). बाणावर्षं तुमुलम् 3,671. 17319. वेगम् 9,1686. Rasa. 3,63 (विसोढुम् zu lesen). 4,41. 49. 8, 56. 16,87. Spr. (II) 2033 (pass.). Kathâs. 15,82. 29,196. 31,201 (pass.). 52,243. 55,101. 93,26. Bhâg. P. 7,9,45. Bhatt. 9,78. act. MBh. 1,8168. 2,552. Harıv. 5265. 6530. R. 2,61,4. — 4) *Etwas ertragen, leiden:* किमिदं विषक्ष्यामि विरहानलमचेतना Gîr. 7,3. *geduldig ertragen, sich Etwas gefallen lassen:* न चेमां धर्षणां रामो व्यमक्ष्यद्मर्षणः R. Gorr. 2,62,28. विप्रान्नु को न विषक्षेत Bhâg. P. 3,16,9. न जीवितुं तां विषक्ष्ये *ich kann es nicht dulden, dass du lebst*, R. 2,12,196. — Vgl. दुर्विषक् und विषक्ष. — caus. aor. व्यसीषदत् P. 8,3,116. Vop. 18,1, v. l. (fälschlich व्यसीसदत्). — insens. s. विषामदि.

— सम् 1) *es mit Jmd aufnehmen können, mit Jmd fertig werden:* धनंजयं संयुगे संसक्ष्ये MBh. 8,1984. 1977. — 2) *Etwas aushalten, überwinden, einer Widerwärtigkeit widerstehen, — nicht unterliegen:* शराणां स्पर्शम् MBh. 3,1350. वेगम् 5,55. 7,332. R. Gorr. 2,39,33. दुःखम् 30,33. Spr. (II) 7175.

2. सक्, साक् (= 1. सक्) adj. am Ende eines comp. *bewältigend, tragend, aushaltend, mächtig einer Sache.* Ueber die Dehnung des Vocals in सक् und am Ende des vorangehenden Wortes, über die Wandlung des स in ष und über Avagraha s. RV. Prât. 9,1. 15. 16. 27. VS. Prât. 3,121. 5,20. AV. Prât. 2,82. 92. 3,1. 4,70. P. 3,2,62. 6,3,116. 8,3,56. Vop. 3,24. यामाराषाट् Bhâg. P. 4,23,6. 11,18,4. क्रिमबाव्यग्निवर्षाकातपषाट् 7,12,20. Vgl. अभिमाति°, अता°, अती°, अपि°, चर्षणी°, त्रता°, त्रला°, तुरा°, तुमा°, धन्वा°, धूर्षद्, नृ°, पुरा°, पृतना°, प्राप्तु°, भूरि°, यज्ञा°, रथा°, रपि°, वने°, विन्वा°, विरा°, विश्वा°, वृधा°, शत्रू°, शुचि°, सत्य°, मत्रा°, सदा°, सु° und साक्.

3. सक्, सँक्षति Dhâtup. 26,20 (चक्षर्थे = तृप्तौ; nach Andern शक्तौ). Vgl. सुक्.

1. सकं (von 2. स) indecl. Çiksh. 4,13. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. = सम्, साकम् u. s. w. AK. 3,3,4. H. 1527. Halâj. 3,91. 99. संबन्धे, साहश्ये, योगपद्ये, समृद्धौ, साकल्ये und विद्यमाने H. an. 7,53. Med. avj. 90. fg. सामर्थ्ये Çabdar. im ÇKDa. 1) adv. *gemeinsam, zusammen, zugleich:* मही मदेम सकं नू समानाः RV. 3,58,6. 5,60,13. स्यामं मरुतः सकं 5,53, 14. सकं चित्तमेषाम् 10.191, 3. तस्मिन्देवाः सकं देवीर्विशन्तु (देवीः) AV. 12,3,32. 39. 6,59,2. मन इन्नौ सकासति 7,36,1. 3,30,6. VS. 20,25. 36, 1. Çat. Br. 1,1,2,18. 4,6,9,19. 11,5,2,7. 12,3,2,14. एता देवताः सकं यन्ति 9,4,12. 14,7,2,30. 9,4,19. TS. 7,4,19,1. TBr. 1,1,3,2. 2,1,6,3. सकं नावधोक्षणाव Ait. Br. 2,26. नैकस्मै बह्वः सकं पतयः 3,23. 5,15. Kâty. Çr. 5,9,2. नाना नाना सकं सकं Çâṅkh. Çr. 16,7,9. Âçv. Gṛhj. 1, 6,3. यस्तद्वेदोभयं सकं Îçop. 11. Taitt. Up. 1,3,1. 13,1. 2,1,1. 3,1,1. स्वयं वै तेषां सकं येषां सकं *er selbst gehört mit zu denen, welchen es gemeinsam ist*, Çat. Br. 2,1,2,19. अभवन्मिथुनं त्वष्टुः सरण्यूः त्रिशिराः सकं so v. a. und Bhâsha. in Z. f. vgl. Spr. 1,442. — चरतां धर्मं सकं Jâtâ. 1,60. M. 3,30. 86. 7,206. 214. एवं सकं वसेयुर्वा पृथग्वा 9,111. 210. 215. 12, 19. MBh. 1,7764. करिष्ये मरणं सकं 8371. 3,58. Harıv. 6732. R. 1,46, 14. 2,106,24. R. Gorr. 2,113,26. Spr. (II) 2649, v. l. सकृत्व मृत्युर्व्रजति सकं मृत्युर्निषीदति 6979. AK. 3,1,24. पश्य लक्ष्मीं पद्मेश सकं लोकैरि Kathâs. 3,36. 12,30. 47,81. 61,77. 101,296. मय्यात्मानं सकं (so ist zu trennen) जगद्धत्स्यसि *dich selbst und zugleich die Welt* Bhâg. P. 3,21. 31. 4,23,37. Vet. in LA. (III) 13,7. न च तां सकं जग्राह *nahm sie nicht mit* Kathâs. 13,58. दा *mitgeben* 101,138. ग्रा-दा *mitnehmen* 18,26. कृ dass.: ग्रापयो सकं कृत्वा तो प्रतीक्षारपुलिन्दको so v. a. *in der Begleitung von* 11,22. 60,243. सकं गच्छन्ति गच्छन्तम् *sie folgen ihm nach, wenn er geht*, R. 4,8,26. — 2) praep. *a) mit, sammt, nebst, zugleich mit. a) mit instr.* (vor- oder nachstehend, nicht selten weit getrennt) P. 2,3,19 (अप्रधाने). Vop. 3,10. RV. 1,23,17. 24. सकं वामेन व्युच्छ 48,1. 50,13. 5,53,2. 6,28,3. सूर्यं ज्योतिषा सकं 72,2. 7,83,6. 8,65,10. 10,107,2. VS. 11,15. AV. 1,1,2. 2,36,1. 3,12,9. Çat. Br. 1,8,2,19. Kâty. Çr. 4,2,42. 12,6,3. 15,7,9. Âçv. Gṛhj. 1,11,13. 17,11. 3,9,1. M. 1,18. नासीत गुरुणा सकं 2,203. न शयीत तया सकं 4,40. विकृतैश्चैव स्त्रीभिरन्तःपुरे सकं 7,221. 9,358. राष्ट्रिकैः सकं तद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति 10,61. MBh. 3. 1736. 2188. 2236. 2264. 4,1702. 5,6067. 14,810. R. 1,1,44. 8,3. 9,70. Siddh. 39. 49. Raghu. 3,19. 61. Çiç. 18,21. 23,2. 27,15. 106,8. जीवितं च शरीरेण त्यक्तेव सकं जायते Spr. (II) 2434. 7350. सकं दीर्घा मम यामिनीभिः संप्रति रात्रयः। पाण्डुराश्च ममैवाङ्गैः सकं ताश्चन्द्रभूषणाः ॥ *die Nächte sowohl als meine Seufzer* 6969. नक्तंचरैः सकादमुमुपगच्छति येन Vârâh. Bṛh. S. 8,1. Kathâs. 40,73. Bhâg. P. 5,16,1. वसतस्तत्र रामस्य वने वनचरैः सकं R. 1,1,42. तथा प्रवर्त्यतां पूजा भवद्भिश्च मया सकं 60,3. सपत्न्यैः सकं संभुक्ते ऽवरसे 2,64,37. भोजयेत्सकं भृत्यैस्तौ M. 3,112. fg. 7, 203. यन्धो मत्स्यानिवाम्भसि स नरः कण्टकैः सकं 8,95. 391. 10,56. MBh. 3,2945. R. 1,60,16. 2,64,27. Çiç. 30,10. Vârâh. Bṛh. S. 4,24. 9,43. Kathâs. 18,123. 344. 386. — ग्रयो वशानां भवथा सकं प्रिया RV. 3,60,4. न स्नानमाचरेत् — वस्त्रैः सकं Spr. (II) 3501. ग्रा-गम् *zusammenkommen mit* MBh. 3,2688. Weber, Rmây. Up. 299. (पः) वृषल्या सकं मोदते M. 3,191. मन्त्रयेत्सकं मन्त्रिभिः 7,146. पतितेन सकाचरन् 11,180. एतस्त्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थं कंचित् (so lesen wir) सकाचरेत् 189. सुदेवेन सकैकान्ते कथयन्तीम् MBh. 3,2687. सकं परिक्षयो दृष्ट दृष्टिणैः Spr. (II) 7228. ब्राह्मण्या गुप्तया सकं। विप्लुतो तौ) M. 8,377. विभजेत स तैः सकं 9,216. विवादं कृ 4,139. विवादः सदृशैः सकं 10,53. ताभिर्न कुर्यात्सकं कामधर्मम् Vârâh. Bṛh. S. 78,18. मृङ्गारं वि-धा Vet. in LA. (III) 8,18. साधारणो धर्मः पत्न्या सकं M. 9,96. साम्यमेतेषां मया सकं Hit. 1,39. पूर्वसूत्रेण सकं विषयविभागो यथा स्यात् *Verschiedenheit von* P. 5,2,80, Schol. In Verbindungen, wo die *Gemeinsamkeit* schon durch सम् ausgedrückt ist: सं ज्ञायया सकं पुत्रैः स्याम AV. 12,3,17. यद्यं पक्वेन सकं सं भवेम 6,119. 2. 12,3,10. सकं संगत्य मन्त्रिभिः M. 7,216. सम्-गम् 8,378. MBh. 3. 2994. 3006. संगमं कृ Vet. in LA. (III) 9,15. संवास M. 8,372. संभाषण 360. संसर्ग 11,54. संबन्धान्-कृ 2,40. 4,241. — *β) mit abl.:* ऐश्वर्यात्सकं संबन्धं न कुर्यात् Spr. (II) 1488. — *b) abgeschwächt für den einfachen instr. (wie deutsch mit):* पर्यसा सकं शुन्धत RV. 10,17,14. दिव्यस्त्वा मा धाग्विषुता सकं AV. 8,1,11. 12,1,39. 19,30,8. कः शक्रो वज्रेणापि स-

कारुवे R. Gorr. 2,20,28. मर्क दर्शनेनैव *so v. a. sogleich beim ersten Anblick* Sadun. P. 4,13,6. — 3) am Anf. eines comp. *a)* in Verbindung mit einem Nomen verbale die *Gemeinsamkeit* einer Thätigkeit u. s. w. ausdrückend; s. मर्कर्तृ, मर्कार, मर्चर u. s. w. — *b)* in Verbindung mit dem *Begleitenden, Dabeiseienden* ein adj. comp. bildend P. 6, 3, 82. Vop. 6, 17. मर्कप्रजाः प्रजाः सृष्टाः *die Geschöpfe nebst den Opfern* Bhag. 3,10. मर्कोपपतिवेश्मन् *adj. derjenige, in dessen Hause der Liebhaber seiner Frau wohnt,* Jiéś. 1,164. °दार *sammt den Frauen* MBh. 1,7542. °वाकन 3,2129. °वार्क्षेयशीवल 2641. 2869. सुराः मर्केन्द्राः 11915. R. 1, 1,50. 2,86. 9, 2. 33,22. 59,15. 2,32,27. 33,16. 46,27. 3,35,91. यत्रैः मर्कुटैः Vaśiṣ. Bḥ. S. 105,8. Kathās. 10,116. 33,198. Mārk. P. 57,47. Bhāg. P. 3, 16, 9. 5, 16, 16. मर्कपुत्राय स्वस्ति भूयात् (dem Vater) *nebst Sohne* P. 6,3,83, Schol. मर्कवृद्धितपभावं वक्ति शशाङ्कः कलङ्कमपि Spr. (II) 3752. वनं मर्कचैत्यवत्तम् *so v. a.* वनं मर्कचैत्यम् R. 5,50,21. — *c)* in Verbindung mit einem Zeitbegriff das *Zusammenfallen* mit demselben ausdrückend und ein adv. comp. bildend: °पूर्वाह्णम् *mit dem Beginn des Vormittags* P. 6, 3, 81, Schol. Vop. 6,61. — 4) am Ende eines comp. वैनतेय° *mit* V. Hariv. 5849. 5997.

2. मर्क (von 1. मर्क) 1) adj. (f. घा) gaṇa श्वलादि zu P. 3, 1, 140. *a) gewaltig:* die Marut ṚV. 7, 34, 24. मर्का (मर्काः Padap.) ये सत्तिं मुष्टिरेव रुद्र्याः 8,20,20. वृत्रं मर्कानाम् Agni 10,6,5. unter den Namen Vishṇu's MBh. 13, 6960. — *b) überwindend:* शत्रु° MBh. 3, 15707. 4, 1666. पृतनीक° 8,2122. — *c) einer Sache widerstehend, ertragend, aushaltend, nicht unterliegend, einer Sache gewachsen, trotzend;* = क्षम H. 491. am. 2,602. mit gen.: गदापरिघशक्तीनाम् MBh. 16,264. Hariv. 3032. मर्का भारस्य Spr. (II) 178. विरूक्षस्य Kathās. 38,157. Gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: भूभृद्भार° Kathās. 39,227. भार° Spr. (II) 1095. दुर्ग° Hariv. 5018. व्यायाम° MBh. 4,1209. पीडाकर° Kām. Nītis. 4,55. क्लेश° 29. Suçr. 1,6,11. Mārk. P. 99,7. क्लेशायास° Kām. Nītis. 12,25. तपःक्लेश° H. 811. सुखदुःख° R. 4,21,33. शीतवातातप° MBh. 3,14931. 13,3336 (गुरुभूमि). Pañcat. III, 178. श्रम° Vaśiṣ. Bḥ. 17,11. भाराध° Bḥ. S. 61,16. वियोगासहा Kathās. 15,90. वित्तव्ययभर° Z. d. d. m. G. 27,91. काल° (दुर्ग) Kām. Nītis. 4,58. स्वकार्य° Spr. (II) 6404. राज्यभाराद्य° Kathās 49,29. विचार° Sin. D. 274,8. 305,2. परावृत्ति° *ertragend* so v. a. *zulassend* H. 18. परावृत्यसह 19. — *d) vermögend, im Stande seiend;* mit infin. Rāgat. 18,23. Çiç. 9,59. in comp. mit einem nom. act.: नात्र मे वर्णविभावनसहा दृष्टिः Vikram. 78,10. यसह् mit infin. Kathās. 36,166. — 2) m. *a) ein best. Wintermonat,* = मार्गशीर्ष H. 132. VS. 14, 27. TS. 1, 4, 44, 1. Çat. Br. 6, 3, 1, 18. Kāraka bei Uṇ. zu Uṇādis. 4,138 (oxyt. nach Uṇ.). Vgl. मर्कम्. — *b) eine best. Pflanze* AV. 11, 6, 13. — *c)* = बल (vgl. मर्कम्) H. an. Med. h. 10. — *d)* N. pr. *α)* eines Agni (nach Nīlak.) MBh. 3, 14208. — *β)* eines Sohnes eines Manu (neben andern Monatsnamen) Hariv. 824. — *γ)* eines Sohnes des Prāṇa von der Ūrjasvatī Bhāg. P. 6,6,12. — *δ)* eines Sohnes des Dhṛtarāshṭra MBh. 1,4541. 6981. 8,4263. — *ε)* eines Sohnes des Kṛshṇa von der Mādri Bhāg. P. 10,61,15. — 3) f. घा. *a) die Erde (die Alles Ertragende)* Taitt. 2,1,2 (मक्षा gedr.). H. an. Med. in Verbindung mit लोकधातु bei den Buddhisten *die von den Menschen bewohnte Welt* Lot. de la b. l. 113. 190. fg. Burnouf, Intr. 598. Vgl. मर्कलोकधातु. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Aloe perfoliata Lin.* AK. 2,4, 4,1. H. an. Med. = मर्कदेवा (दण्डोत्पला) H. an. Med. Ratnam. 165. = राज्ञा 49. = शुक्लकिणटी und सर्पकङ्कालो Çabdam. im ÇKDr. = स्वर्णलीरी und पीतदण्डोत्पला Ratnam. im ÇKDr. = तगरीपुष्प Rāgān. ebend. — Vaśiṣ. Bḥ. S. 48, 40. Suçr. 2, 40, 12. 135, 2. 207, 7. 374, 21. beide Sabhā so v. a. तुङ्ग° und मक्षा° 279, 11. 388, 10. Vgl. तुङ्ग°, देव°, मक्षा°, रक्त°, सर्प°. — *c) ein best. Parfum* (नखभेषज) H. an. Med. — 3) n. *a)* = बल (vgl. मर्कम्) Med. — *b) eine Art Salz* (पांशुलवण wohl fehlerhaft für पांसु°) Rāgān. im ÇKDr. — Vgl. घ° *(ungeduldig* auch Kathās. 49,99. dagegen ist 24, 24 zu schreiben वर्धमाना मर्क्येवैतत्समान° *mit meiner Sorge heranwachsend),* अकाल°, अमित्र°, अर्थव्यय°, अनं°, दुः°, दैव°, निः°, भार° (auch Vaśiṣ. Bḥ. S. 61, 8), भूमी°, भेद°, मक्षा°, मित्र°, वात°, विश्व°, वीर्य°, व्यय°, शत्रु°, शीत°, सर्व°, सर्व° und साक्.

3. मर्क adj. zu 1. मर्क. उडुपमर्काः f. *die Gefährtinnen* (= मर्कचरी Comm.) *des Mondes* Bhāg. P. 10,71,36.

मर्कषभ s. मर्कर्षभ.

मर्कक v. l. für सिंरुक gaṇa पत्तादि zu P. 4, 2, 80. adj. *ertragend, aushaltend:* रुक्णास्य Nalod. 2,14.

मर्कंकण्ठक adj. (f. °कण्ठिका) *sammt der Luftröhre* AV. 10,9,15.

मर्कर्तृ nom. ag. *Gehilfe* M. 8,206.

1. मर्कार m. 1) *Mitwirkung, Beistand* Kusum. 50,12. 52,3. Comm. zu Buḍḍhiv. 65. — 2) *eine überaus wohlriechende Mango-Art* AK. 2,4, 2,14. H. 1133. Hall. 2,37. MBh. 3,11591. Kām. Nītis. 13,60. Kumāras. 4,38. Ragh. 4,9. 6,69. 8,60. 9,29. Çiç. 88, v. l. Vikram. 23. Spr. (II) 1252. 6124. 6965. 7415. Dhūrtas. 69,8. neutr. *Mangoblüthe* Hariv. 6046. Māl. 79. Spr. (II) 4682. °तैल Suçr. 1,184,3. Nalod. 2,14. *Mangosaft* Vaśiṣ. Bḥ. S. 77,27.

2. मर्कार adj. *mit dem Laute* क् *versehen* Nalod. 2,14.

मर्कारता f. nom. abstr. zu 1. मर्कार 2) Spr. (II) 6234.

मर्कारभञ्जिका f. *das Brechen von Mangoblüthen,* Bez. eines best. Spiels Verz. d. Oxf. H. 217,b,41.

मर्कारिता f. nom. abstr. von मर्कारिन् Sin. D. 30. Kull. zu M. 2,1.

मर्कारित्व n. desgl. TS. 1,74,3 v. u.

मर्कारिन् adj. *mitwirkend,* subst. *ein mitwirkender Factor, Hilfsmittel* Taitt. 3, 2, 10. Sin. D. 121,6. Buḍḍhiv. 80. Verz. d. Oxf. H. 246,a, No. 619. Sarvadarçanas. 10,7. fgg. 11,2. fgg. 20,3. 6. 96,7. 165,19. fgg. Comm. zu Âçv. Çr. 1,8,2. Kusum. 12,20. 22. 16,6. 18,8. 9. 19,18. °कारिभाव Nilak. 125.

मर्कारिपदेश m. Titel eines von Gopadatta verfassten Avadāna Pariser Hdschrr. 111.

मर्कृत *begleitet von,* am Ende eines comp. Sarvadarçanas. 132,16. fgg. Buḍḍhiv. 65. Kusum. 18,16. 29,18.

मर्कृतृन् adj. P. 3,2,96. Schol. zu 6,3,78. 82. *mitwirkend, helfend* (mit gen.). f. °कृत्री (vgl. P. 4,1,7) Naish. 1,12.

मर्क्रम्य adj. *im Krama anzuschliessen* ṚV. Pāt. 18,18. unter क्रम्य ungenau wiedergegeben.

मर्क्षट्टासन (1. मर्क + क्षट्टा + 1. घा°) n. *das Zusammensitzen auf der-*

selben Bettstelle M. 8,257.

सहगमन n. *das Mitgehen* (mit dem verstorbenen Gatten), *Wittwenverbrennung* Wilson, Sel. Works 2,296. Verz. d. B. H. No. 1020. Verz. d. Oxf. H. 294,*a*,19. fg.

सहगोप oder ॰पा adj. *sammt dem Hirten* RV. 10,27,8.

सहचर 1) adj. *a*) *zusammengehend, mitgehend, begleitend;* m. *Begleiter, Gefährte* H. 730. an. 4,282. Med. r. 301. Medin. 81. 99. Raghu. 19,5. Kumâras. 2,61. Kathâs. 24,132. 38,38. Prab. 33, 9. Pañkat. 1,12,70. Pañkat. 43, 4. 243, 3. आत्म॰ (nur) *sich selbst zum Gefährten habend, allein* Bhâg. P. 5,8,30. ॰चरी *Gefährtin* (auch *Geliebte, Gattin*) H. 512. Hariv. 2,339. Medin. 22. Raghu. 9,57. Vikram. 102. Mâlav. 84. Kathâs. 71,159. Khandom. 72. कृताशनप्रवेशे तस्याः ॰चरी भवामि Prab. 43,14. 100, 5. ॰धर्म = मैथुन *Beischlaf* Hariv. 1216. — *b*) *zusammengehörig* Ait. Br. 5,15. 6,30. — 2) m. *a*) = प्रतिबन्धक H. an. — *b*) *Barleria*, zwei Species: पीत und नील *prionitis* und *cristata* Ratnam. 169. fg. AK. 2,4,2,36. H. an. ॰द्रुम Suçr. 1,137,19. 145,16. auch f. ई AK. Med. Hariv. 2,50. — Vgl. साकचर, साकचर्य.

सहचरभिन्नता f. und ॰भिन्नत्व n. *Verschiedenheit des Zusammengehenden* (*Zusammengestellten*), ein Fehler in der Rhetorik Sâh. D. 576. 229,10. Beispiel: सज्जनो दुर्गतौ मग्नः कामिनी गलितस्तनी । खलः पूज्यः समभ्यर्च्य तापाय मम चेतसः ॥ Hier wird daran Anstoss genommen, dass nach *dem guten Menschen* und *der Geliebten* plötzlich *der Böse*wicht erscheint.

सहचरित adj. *zusammengehend, zusammenfallend:* सहचरितासहचरितयोः सहचरितस्यैव ग्रहणम् Paribh. zu P. 1,3,18. In der Regel selbst heisst es: परिव्यवेभ्यः क्रियः und nach der Paribh. ist वि hier Präposition (nicht *Vogel*), weil परि und अव Präpositionen sind. वसन्तसहचरितमध्ययनं वसन्ताध्ययनम् Pat. zu P. 4,2,63. Schol. zu 3,82. Sâh. D. 332,18. Davon nom. abstr. ॰त्व n. Comm. zu TS. Prât. 2,47. 13,16, v. l. (besser ॰चारित्व).

सहचार m. 1) *das Zusammengehen:* वाणुर्येषां सहचारं जुजोष AV. 2, 26,1. — 2) *das Zusammenfallen* (Gegens. व्यभिचार) Bâlar. 136. Verz. d. B. H. No. 667. Davon nom. abstr. ॰त्व n. Kusum. 55,6.

सहचारित्व (von सहचारिन्) n. *Zusammengehörigkeit, Untrennbarkeit* Comm. zu TS. Prât. 2,47, v. l. 13,16.

सहचारिन् adj. 1) *zusammengehend,* m. *Begleiter, Gefährte* Nir. 7,29. MBh. 1,2573. 9,547 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Hariv. 1221. 1226. R. 1,2,15. 4,29,18. 5,2,38. निर्दयतम् u. s. w. पञ्च स्रोमसहचारिणः Spr. (II) 3738. Kathâs. 8,6. 60,180. Pañkat. 43,1. *gesellig lebend:* Vögel Kâraṇḍ. 1,37. ॰चारिणी f. *Gefährtin* R. 3,76,19. Çik. 83,8. तस्य नित्यं स्त्रीः ॰चारिणी Spr. (II) 1254. Kathâs. 28,58. 113,75. — 2) *zusammengehörig:* गोसहचारिणो गुणाः Sâh. D. 14,15. — 3) *begleitend* so v. a. *nicht wesentlich dazu gehörend* H. 325.

सहच्छन्दस् adj. *sammt den Metra* RV. 10,130,7.

सहज 1) adj. (f. या) = सहसंभव H. an. 3,150. = सहोदर Trik. 3,3, 88. Med. g. 28. = सहोदर, सगर्भ्य u. s. w. AK. 2,6,4,34. H. 551. *gleichzeitig geboren* TS. 3,5,8,2. *gleichzeitig mit* (gen.) *entstanden:* जीवसंज्ञोऽन्तरात्मा सहजः सर्वदेहिनाम् M. 12,13. सुधायाः सहजा सा मे कालकूटविषच्छटा Kathâs. 36,93. *angeboren (ererbt), von der Geburt* —, von *Anfang an dasselbe:* सहजं कवचं बिभ्रत् MBh. 1,4309. 5380. 3,14426. 17187. 17189. द्रोणपुत्रस्य सहजो मणिः शिरसि मे श्रुतः 10, 893. पितृ 3, 2698. लक्ष्मन् Vaṇis. Bṛh. 5, 27. सर्पाणि Suçr. 1, 258, 8. 259, 21. प्रमेह 2,76,18. क्लैब्य 154, 12. कर्मन् Bhag. 18, 48. निद्रा Hariv. 2857. धीरता Raghu. 8,43. गुणाः MBh. 3,1806. R. Gorr. 1,19,27. Spr. (II) 2749. 6968. दोष, गुण R. 5,12,11. बल Spr. (II) 4395. लोभ 5164. बोध 5377. 6451. वीर्य 5402. पशुवर्ग 5590. विलासाः 5857. मलिनवक्त्रभाव 6966. सतां व्रतम् Kathâs. 18,188. सर्वभूतानुकम्पा 22,24. दारिद्र्य Hit. 128,8. 6. MBh. 14,1344. Râga-Tar. 6,364. Hâlar. 8. 9. Sarvadarçanas. 34,3. 13. देश so v. a. *Heimath* Spr. (II) 1269. वैर Pañkat. 110,15. Freund, Feind d. i. *natürlich* MBh. 12,2985. Kâm. Nîtis. 8,56. R. Gorr. 2,7,29. Spr. (II) 4073. 6102. 6658. Freund, Feind und Neutraler Mit. 1,32,5. संयोग, परिणतिविरोग *naturgemäss* Spr. (II) 5193. विकाराः Cit. beim Schol. zu Çik. 13,12. die Sonne ist सहजभूषणं नभसः Vaṇis. Bṛh. S. 1,1. सहजं ते शिरस्तात जटी मुण्डोऽपि वा भव so v. a. *dein Kopf bleibt derselbe, der er von Anfang an war,* Hariv. 4238. Am Anfange eines comp. so v. a. *von Geburt,* — *Natur,* — *Haus aus:* ॰मलिन Spr. (II) 2925. सहजान्धदृश् 6967. ॰धार्मिक Hit. 26,13. ॰वत्सला 87,12. ॰सुहृद् (könnte hier auch attributives adj. sein) Prab. 2,8. Daher wohl सहज m. = निसर्ग Trik. H. 1376. H. an. Med. — 2) m. N. pr. verschiedener Personen MBh. 5,2732 (ein Fürst der Kodi und Matsja). Râga-Tar. 7,675. Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,13. fg. — 3) f. या N. pr. verschiedener Frauen Râga-Tar. 7,851. 854. 8,1934. Tîrân. 290 (?). — 4) n. (sc. स्थान u. s. w.) *a*) Bez. *des 3ten astrologischen Hauses* Gaurîr. im ÇKDr. Vaṇis. Bṛh. S. 104,20. Bṛh. 1,19. 2,18. Lagadh. 1,15. 2,11. Verz. d. B. H. No. 878. Verz. d. Oxf. H. 330,*a*,32. fg. 331,*a*,9. 334,*a*,44. fg. nach ÇKDr. masc. — *b*) *eine Erlösung bei Lebzeiten* Verz. d. Oxf. H. 235,*b*,6. 236,*a*,2. — सहजं जात॰ MBh. 12,5151 fehlerhaft für सहसंजात॰, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. लक्ष्मो॰.

सहजग्धि f. zur Erkl. von सग्धि Nir. 9,43.

सहजन्मन् adj. *von der Geburt an da seiend, ererbt:* भृत्याः Mâlav. P. 74, 4.

सहजन्य 1) m. N. pr. eines Jaksha (nach dem Comm.) Bhâg. P. 12, 11,36. — 2) f. या N. pr. einer Apsaras Vâlp. beim Schol. zu H. 183. VS. 15,16. MBh. 1,1820. 2,393. 3,1735. Hariv. 7226. 12474. 12690. 14165. Vikram. 51,4. fgg. Mâlâ. P. 106,59. Brahma-P. in L.A. (III) 50, 18 (॰जन्मा in allen drei Ausgg.; im Glossar richtig).

सहजपाल m. N. pr. verschiedener Männer Râga-Tar. 7, 534. 8, 541. 1328.

सहजललित m. N. pr. eines Mannes Tîrân. 210.

सहजविलास m. desgl. ebend. 197. Sinhasanâdvâtr. 113.

सहजसिद्धि f. Titel eines Werkes ebend. 192. 270. fgg.

सहजा adj. = सहज RV. 10,84,6.

सहजात adj. 1) *gleichen Alters, Altersgenosse* Kathâs. 124,96 (॰पात gedr.). — 2) *angeboren:* गुणाः Kathâs. 113, 22. = सहोदर und यमज ÇKDr. ohne Angabe einer best. Aut.

सहजाधिनाथ (सहज + या॰) m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf.

H. 275,a,11.

सकृन्नानन्द (सकृत् + घा°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Kop. H. 9,b.

सकृन्नानि adj. *mit dem Weibe* TS. 3,2,8,3.

सकृन्नानुष (von 1. सकृत् + ज्ञनुस्) adj. *sammt der Brut* ṚV. 1,104,3.

सकृन्नित् adj. *sofort siegreich*, Beiw. von Fürsten MBh. 3,13705.

सकृन्नीविन् adj. *zusammenlebend* MBh. 12,3107.

सकृन्नेन्द्र (सकृत् + इ°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 275,a,16.

सकृन्नोषण adj. zur Erkl. von सनोषम् Nir. 8,3.

सकृपाटुक n. *ein best. Fleischgericht* (nach Art des मुद्गमांस) Bhāvapr. 3 (auch im ÇKDa.).

सकृता f. nom. abstr. von 2. सकृत् am Ende eines comp.: क्लेश° *das Ertragen von* Rāja-Tar. 3,215. विचार° *das Vermögen —, im-Stande-Sein zu* Kathās. 17,31.

1. सकृत्व (von 1. सकृत्) n. *Gemeinsamkeit* Āpast. 2,14,16. Kāty. Ça. 21,13,29.

2. सकृत्व n. nom. abstr. von 2. सकृत् am Ende eines comp.: निन्दा° *das Ertragen* Kām. Nītis. 15,29. शब्दपरिवृत्तिसकृत्वासकृत्वाभ्याम् *das Zulassen und Nichtzulassen* Sāh. D. 258,1.

सकृदान n. *gemeinsame Darbringung* (an mehrere Götter) P. 6,3,26, Schol.

सकृदानु adj. *sammt dem* oder *der Dānu* (1. दानु) ṚV. 3,30,8.

सकृद्देव 1) adj. *nebst den Göttern:* सकृद्देवैर्मरुद्गणैः MBh. 1,7732. Bhāg. P. 4,2,9. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer ṚV. 1,100,17. AV. Paipp. in Verz. d. B. H. 91,2 v.u. MBh. 1,6938. 2,297. Sārṅgaja Cat. Bp. 2,4,4,4. Ārr. Bp. 8,34. ein Sohn Sṛṅgaja's R. 1,47,15. VP. 354. der jüngste von den Pāṇḍava, erzeugt von den Açvin wie Nakula, H. an. 4,208. Med. v. 65. Bhāg. 1,16. MBh. 1,2445. 6019. 3,15709. 12,1481. 14,2109. Hariv. 4057. 8547. fg. VP. 437, 459. Bhāg. P. 9,22,27. 29. Lalit. ed. Calc. 24,9. neben Nakula als Arzt (vgl. सधिन्) Verz. d. Oxf. H. 22,a,43. b,3. ein Sohn Harjaçvata's (so die neuere Ausg.; Harj. ist ein Nachkomme Sṛṅgaja's, wie die nächst folgenden) Hariv. 1515. Harshavardhana's VP. 412. Harjavana's Bhāg. P. 9,17,17. Somadatta's Hariv. 1791. fg. Gargasaṁdha's 1811. fg. VP. 456. 465. Bhāg. P. 9,22,9. 44. Divākara's VP. 463. Devāpi's VP. in Verz. d. Cambr. H. 6. Divārka's Bhāg. P. 9,12,10. Sudāsa's 22,1. VP. 455. °शास्त्र Verz. d. B. H. No. 897. ein Sohn Suprabuddha's und Oheim Çākjamuni's Schiefner, Lebensb. 234 (4). 268 (38). ein Rāgaputra (neben Judhishṭhira) Rāja-Tar. 8,199. — 3) f. घा a) Bez. verschiedener Pflanzen: = दण्डोत्पल H. an. Med. Halāy. 2,44. *gelbblühende* Daṇḍotpalā Ratnam. 165. *Sida cordifolia* und *Echites frutescens* H. an. Med. = सक्का H. an. 2,603. — Sūçr. 1,59,20. 317,11. 2,40,12. 387,17. 481,6. v. l. zu Varāh. Bṛh. S. 44,50. 48,40. — b) N. pr. einer Tochter Devaka's und Gattin Vasudeva's Hariv. 1948. VP. 436. Bhāg. P. 9,24,22. 51. — 4) f. ई *eine best. Pflanze*, = सर्पाक्षी H. an. 4,203. fg. Med. = पीतदण्डोत्पला Ratnam. im ÇKDa. = मक्काबला Rāgān. ebend. — Çāṅk. Sāṁh. 1,2,14. Varāh. Bṛh. S. 44,50. 48,40 (°देवा v. l. an beiden Stellen). Pāraṡ. 157,23. Gṛihya-P. 48 im ÇKDa. — Vgl. सकृद्देव fg.

सकृद्देवव्रत entweder adj. *nebst Devaṅga* oder m. Bein. Kṛṣṇa's Bhāg. P. 9,2,34.

सकृद्देवि Rāja-Tar. 8,2171 fehlerhaft für सकृद्देवि.

सकृद्धर्म m. *eine Pflicht, die man mit einem Andern theilt*, MBh. 13, 1351. fgg.

सकृद्धर्मचर् (1. सकृत् + धर्म-च°) adj. (f. ई) *die Pflichten in Gemeinschaft erfüllend*, f. so v. a. *eine Gattin, die mit dem Ehegatten die Pflichten gemeinsam erfüllt*, MBh. 1, 6133. 13, 6751. R. 1,73,24 (75,19 Gorr.). 2,30,40.

सकृद्धर्मचरण (1. सकृत् + धर्म-च°) n. *das Erfüllen der Pflichten in Gemeinschaft* (mit dem Gatten) Çiç. 65,9.

सकृद्धर्मचारिन् (1. सकृत् + धर्म-चा°) adj. dass.: ein Gatte Çiç. 111, 12. गतवती वो °चारिणी (d. i. mit euch Freundinnen) 57,23. eine Gattin 111,5. R. 3,2,38. 69,27. Rāgān. 19,55. Uttarār. 66,12 (85,13). H. 512, Schol.

सकृद्धर्मन् adj. *nebst den Pflichten* u. s. w. Bhāg. P. 3,15,24.

सकृद्धर्मिणी f. = सकृद्धर्मचरी, °चारिणी AK. 2,6,1,3. H. 512, Schol.

सकृद्धान्य adj. *mit Lebensmitteln versehen* Çiç. Gaṇ. 3,4.

सकृन (von 1. सकृ) 1) adj. (f. घा) a) *bewältigend, gewaltig:* zur Erkl. von सिक् Nir. 8,15. — b) *Alles ertragend, sich gefallen lassend, geduldig* AK. 3,1,31. H. 391. घ° (s. auch bes.) *nicht ertragen könnend:* विप्रेयासकृनात्मनो: Kathās. 51,66. तदुणासकृनः खल: 24,207. अन्यप्रवेशासकृन Rāja-Tar. 3,140. — 2) m. proparox. (संज्ञायाम्) gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. — 3) n. *geduldiges Ertragen* H. 391. सर्वदु:खानाम् Verz. d. Oxf. H. 223,b, No. 544, Z. 16. अपमानादे: Sāh. D. 390. सतिवाद° Mārk. P. 51,31. घ° (s. auch bes.) *das Nichtertragen, sich-nicht-Gefallenlassen:* अधिक्षेपापमानादे: Sāh. D. 93.

सकृनर्तन n. *gemeinsamer Tanz* Taitt. 1,1,126.

सकृनोद (von 1. सकृ) adj. *geduldig zu ertragen, zu versehen, nachzusehen:* गर्भकृत्तनमेतन्मे सकृनोदं त्वया कृतम् । पतता मूर्ध्ना Hariv. 3364. R. 7,43,19. 58,14.

सकृत्तम superl. von सकृत्, partic. praes. von 1. सकृ, ṚV. 1,127,9.

सकृत्य (von 1. सकृ) adj. *bewältigend:* Agni ṚV. 1,27,8. 8,11,2. TS. 1,5,10,2. 3,1,10,2. — Vgl. साकृत्य.

सकृपति m. Beiw. Brahman's (*Herr der von den Menschen bewohnten Welt*) Lalit. ed. Calc. 49,5. Vgl. सकृपति und सकृल्लोकघातु. — सकृप्त्या VS. 37,20 offenbar irrig für सकृत्पत्या.

सकृत्पत्नी (von 1. सकृत् + पति) adj. f. *sammt dem Gatten* AV. 14,1,58.

सकृत्पांसुकिल m. *ein Freund aus der Knabenzeit, da man zusammen mit Sand spielte*, Taitt. 2,8,25. सकृत्पांशु° gedr.

सकृत्पांसुक्रीडन n. *gemeinsames Spielen mit Sand* (in der Knabenzeit): °प्रौढसख्य Milaksh. 151,17. सकृत्पांशु° gedr.

सकृत्पाठ m. *das zusammen-erwähnt-Werden:* नियत° d. i. नियते: Kāty. Ça. 1,2,14. प्रसिद्ध° adj. Kuvalay. 138,a (165,a).

सकृत्पान n. *gemeinsames Trinken* Ind. St. 5,339,1. 2. Comm. zu Kāty. Ça. 15,8,19. 21. *Zechgelage* H. 907. °क n. dass. Halāy. 2,178.

सकृत्पिण्डक्रिया f. *gemeinsame Darbringung des Mehlklosses beim Manesopfer* M. 3,218.

सकृत्पीति f. zur Erkl. von सपीति Nir. 9,13.

सर्वपुरुष, °पूरुष adj. *sammt den Männern* AV. 6,56,1. Çiñkh. Çr. 15,14,18.

सर्वप्रम adj. *sammt dem Maasse* ṚV. 10,130,7.

सर्वप्रयायिन् adj. *mitreisend:* (ताम्) °यायिणीं चक्रे Kathâs. 18,87.

सर्वप्रयोग m. *gleichzeitige Anwendung* Schol. zu Kâty. Çr. 117,13. 123,2.

सर्वप्रवाद् adj. = सप्रवाद् ṚV. Prât. 9,2.

सर्वप्रस्थायिन् adj. *mitreisend:* (ताम्) °स्थायिनीं व्यधात् Kathâs. 10, 70. 32,47.

सर्वभक्त adj. *zusammen geniessend* AV. 6,47,1. Lâṭ. 3,2,11.

सर्वभस्मन् adj. *sammt der Asche* Âçv. Gṛhj. 4,6,2.

सर्वभाव m. *Gemeinsamkeit* Kuvalaj. 60,a (75,b). *das Verbundensein in unzertrennlicher Weise* Sarvadarçanas. 8,4.

सर्वभाविन् adj. *mit einander verbunden, — zusammenhängend* Taitt. 3,2,15. *zusammenhängend mit* (geht im comp. voran) Çañk. zu Kaṭhop. Up. S. 5.

सर्वभुज् adj. *zusammen essend mit* (geht im comp. voran) Kusum. 24,8.

सर्वभू adj. zur Erkl. von सचाभू Nir. 5,5. *zusammen erscheinend mit* (geht im comp. voran) Jogan. 1,21. *von Natur eigen* Siñ. D. 243,8 (सह भुवा gedr.).

सर्वभूति f. AV. 4,31,6 v. l. statt सभिभूति im ṚV.

सर्वभोजन n. *das Zusammenessen, Gemeinsamkeit eines Mahles* AK. 2,9,35. Taitt. 3,2,4. H. 425. Pañkat. 2,2,6. *gemeinschaftlicher Genuss:* राज्यस्य MBh. 1,7243.

सर्वभोजिन् adj. *Tischgenosse* MBh. 12,5151.

सर्वम (arab.) n. in der Astrologie *das künftige Schicksal* Ind. St. 2, 256. 273. fg.

सर्वमनस् adj. *verständig* Râm-Tar. 1,272.

सर्वमरण n. *gemeinsames Sterben* d. i. *Wittwenverbrennung* Wilson, Sel. Works 2,295. fgg.

सर्वमातृक adj. *mit der Mutter* Vop. 6,17.

सर्वमान 1) adj. s. u. 1. सर्व. — 2) f. घा a) *eine best. Pflanze* AV. 2, 25,2. 4,17,2. 8,2,6. 7,5. — b) Bez. *der nach Süden gerichteten Seite des Gehäuses der Weltseele* Kaṭhop. Up. 3,15,2.

सर्वमूर adj. *sammt der Wurzel* ṚV. 10,87,19.

सर्वमूल adj. dass.: उद्धर्त्तः सर्वमूलम् ṚV. 3,30,17. — Vgl. समूल.

सर्वमृता adj. f. *mit* (dem Gatten freiwillig) *gestorben, — in den Tod gegangen* (durch Besteigung des Scheiterhaufens) Pañkat. 1,2,77. 4,68.

सर्वयशस् adj. = यशस्वत् TS. 4,4,12,2.

सर्वयात adj. Kathâs. 124,94 fehlerhaft für सङ्घात.

सर्वयायिन् adj. *mitgehend, Reisegefährte* Çiñkh. 57,20. Kathâs. 21,112. 37,24. 89. घावासे भोजने वापि न त्यजेत्सर्वयायिनम् Kâçaka-P., Upariṣṭ. 13 im ÇKDr.

सर्वयुज् adj. *mitangespannt* Nir. 9,24.

सर्वयुधन् adj. (f. eben so) P. 3,2,96. 4,1,7, Vârtt. 1. *mit Jmd* (instr.) *kämpfend* Bhaṭṭ. 6,130.

सर्वर m. N. pr. eines Dânava Harîv. 14284 nach der Lesart der neueren Ausg.: संवर die ältere.

सर्वरत्नम् adj. Bein. des Agni der Asura TS. 2,5,9,6. Çat. Br. 1, 4,4,24. °रत्न VP. 84, N. 9.

सर्वरसा (1. सर्व + रस) f. *Phaseolus trilobus* Çabdar. im ÇKDr.

सर्वराजक (von 1. सर्व + राजन्) adj. *sammt dem Fürsten:* राष्ट्र MBh. 13,3094.

सर्वरि 1) m. a) *Stier.* — b) *die Sonne* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) adv. *gleich* Hari (Vishṇu) Schol. zu P. 2,1,6. Vop. 6,61.

सर्वरुण m. N. eines der zehn Rosse des Mondgottes Vâju beim Schol. zu H. 104. eine falsche, nicht in's Metrum passende Form.

सर्वर्ष (2. स + ऋर्ष) adj. (f. घा) *erfreut* Kathâs. 2,23. 25,154. 27,151. 178. Râja-Tar. 1,303. दृष्टि Cit. beim Schol. zu Çiç. 35. °म् adv. Çiç. 6,5. 11,19, v. l. 28,21. 106,3. Vikram. 6,1. Bhâg. 73,13. — Taitt. 3,3, 111 (= स्पर्धन und मुद्) und R. 4,38,4 fehlerhaft für संकर्ष.

सर्वर्षभ (1. सर्व + ऋ°) adj. (f. घा) *sammt dem Stier:* धेनु TS. 2,6,2,3. सर्वऋ° Çiñkh. Çr. 1,11,1.

सर्वलनीय als Erkl. von सामस्त Ind. St. 10,197 wohl fehlerhaft. *Genosse beim Pflügen, Markgenosse* Kern mit einem Fragezeichen.

सर्वलोकधातु m. bei den Buddhisten Bez. *der von den Menschen bewohnten Welt, der Erde* Vjutp. 81. Burnouf, Intr. 594. fgg. Râja-Tar. 1,172 (श्रवलोक° ed. Tr.). auch in zwei Worten geschrieben सर्वा लोकधातु: Burnouf a. a. O. und Lot. de la b. l. 400. — Vgl. 2. सर्व 4) a), सर्वपति und सर्वापति.

सर्ववत्स adj. (f. घा) *mit dem Kalbe:* धेनु ṚV. 1,32,9. Gobh. 3,8,7.

सर्ववसति f. *gemeinsamer Aufenthalt:* °वसतिमुपेत्य पैः Çiç. 36.

सर्ववसु adj. *sammt der Habe* (N. pr. eines Asura nach Sây.) ṚV. 2,13,8.

सर्ववर्कु adj. *gemeinsam stehend:* Rosse ṚV. 7,97,6.

सर्ववाच्य adj. *zusammen zu sprechen* Lâṭ. 1,11,26.

सर्ववाद् m. *Disputation* MBh. 3,10634.

सर्ववास m. *das Zusammenwohnen* MBh. 3,14475. 7,2236. 14,951. 1222. Harîv. 9809. 12212. Spr. (II) 6124. Kathâs. 10,18. 16,122. 33, 122. 45,201. 52,268. 66,40. 89,89.

सर्ववासिक (von सर्ववास) adj. *einen gemeinsamen Wohnsitz habend, am selben Orte lebend* MBh. 12,9819.

सर्ववासिन् adj. *zusammen wohnend, Hausgenosse* oder *Nachbar* MBh. 12,9821. Mârk. P. 34,118. 68,35. Râja-Tar. 3,110.

सर्ववीर adj. *sammt Männern:* रयि ṚV. 3,54,13. 10,40,13. VS. 27,6.

सर्ववीर्य n. *frische Butter* Âçv. 70.

सर्वव्रत adj. (f. (घा) *gemeinsame Gelübde habend,* f. so v. a. सर्वधर्मचारी *eine Gattin, die alle Pflichten mit dem Gatten theilt,* Harîv. 2007.

सर्वशय s. दिग्घ°.

सर्वशय्या f. *das Zusammenliegen* Âpast. 2,1,21.

सर्वशय्यासनाशन adj. *zusammen schlafend, sitzend und essend* Bhâg. P. 10,69,25.

सर्वशेय्य n. nach Sây. *das Zusammenliegen:* समाने योनौ सर्वशेय्याय ṚV. 10,10,7. Ob es nicht °शेप्याय (von शेप) gelautet hat, ist aus Hdschrr. nicht zu entscheiden.

सर्वस् (von 1. सर्व) Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4,188. 1) adj. = सर्व (vgl. दृत and दृतस्) *gewaltig, siegreich:* इन्द्रेण सर्वसा युजा ṚV. 1,23,9. सर्वसाधित्सर्वसेपान् 10,176,4. 83,1. सर्वः सर्वस् घा नमति 7,56,19. सर्वस्तम 6,

60,1. — 2) m. = 2. सह ein best. Wintermonat, = मार्गशीर्ष AK. 1,1, 3,14. 3,4,30,234. H. 152. an. 2,594 (°मासयोः st. °प्रासयोः zu lesen). Mnn. 3. 42. Hall. 1,114. VS. 7,30 (vgl. 14,27). सहःसह्यौ केमत्तः Suça. 1,19,10. VP. 225. सहोमास Bhâg. P. 12,11,41. Winter H. an. Mnn. — 3) n. a) Gewalt, Macht; Sieg Naigh. 2,9. AK. 2,8,2,70. 3,4,30,234. H. 796. H. an. Mnn. Hall. 4,38. RV. 1,24,6. 51,10. 127,10. 2,17,1. सहसे ज्ञातः 4,20,6. 5,23,4. 31,3. 6,1,1. यस्तस्तम्भ सहसा वि ओ यस्तान् 4,30,1. सहः सोमो बाह्वोर्वो बलं हितम् 5,57,6. 6,3,6. ये सहांसि सहसा सहन्ते 66,9. 7,6,3. 21,7. सोमं सहसे पपाथ 98,2. 3,4,4. 5,10. AV. 4,36,3. 37,5. 9,5,13. उप 3,5,4. सायं RV. 1,103,3. दुष्टर 2,34,7. दैव्य 4,42,6. 10,108,9. देवसूत 7,25,5. — Çat. Br. 12,7,4,5. Ait. Br. 3,5. सहसः स्वनो ऽभवत् Gewalt des Schusses 26. तदस्य सहसादित्सत TS. 1,5,4,1. Agni als der durch Kraft der Reibung erzeugte (vgl. RV. 5,11,6. 6, 48,5) führt die Bezeichnung सहसस्पुत्र: (VS. Pâr. 3,24. TS. Pâr. 8, 28) RV. 2,7,6. 3,16,5. 5,11,6. सूनुः 3,11,4. 5,4,8. 6,1,10. 5,1. यज्ञः 1,26,10. 7, 15,11. युवा 1,141,10. Nir. 8,2. — सहीयसो सहः सहिष्णुः Bhâg. P. 4,5, 5. सह ओजो बलम् 1,16,29. 2,3,26. 10,15. 5,18,18. 25. 20,6. सहो दैर्घतमसम् N. eines Sâman Ind. St. 3,243,a. सहोसहसो ebend. — Adverbial worden gebraucht: 1) instr. sg. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. a) (mit Ungestum) plötzlich, sofort, in demselben Augenblick, ohne zu zögern AK. 3,5,7. H. 1532. Hall. 5,98. इन्द्रः सहसोर्दितिष्ठत् RV. 4,18,8. 28,2. 6,44,22. तदस्मात्सहसोर्ध्वमसृज्यत TBr. 1,1,10,1. AV. 6,72,1. Çat. Br. 2,3,3,9. 4,3,4,18. Kâty. Çr. 4,15,16. fg. 7,8,27. M. 3,225. Bhag. 1,13. MBh. 1,1152. 3837. 3,2219. 2339. 2882. 2542. 2686. 2874. 2934. 2948. fg. 2957. 11903. R. 1,2,27. 9,56. 50,7. 2,34,19. 35,1. 39,22. 57, 21. 64,16. 69,13. R. Gorr. 1,39,17. 3,54,9. 4,1,5. Suça. 1,119,5. Ind. bei Sây. zu RV. 1,125,1. Nâgân. 3,15. 7,6. 16,42. Kumâras. 3,71. Çiç. 9. 28. 74. Spr. (II) 77. 179. 867. 991. 3567. 4039. 4293. 5526. 5577. 6192. 6971. Varâh. Bṛh. S. 33,5. 53,2. Kathâs. 18,97. 157. 222. 249. 260. 34,221. 49,65. Râja-Tar. 6,143. Brahma-P. in LA. (III) 52,20. 54,4. Pras. 86,4. Dhûrtas. 82,9. 85,16. Pañkat. 122,23. 182,14. Hit. 29,12. नाराजके जनपदे दुष्टैः परभवाजिभिः। नराः संयान्ति सहसा so v. a. sie bedenken sich, ehe sie u. s. w. Spr. (II) 3642. oft mit dem Nebenbegriff der Uebereilung, Unüberlegtheit: मयापमर्षः संमोहात्स्त्री केतोः सहसा कृतः (als comp. zu fassen nach P. 6,3,3) R. 2,59,21. सहसा हि कृतं पापम् Kathâs. 42,114. यज्ञानाद्भवतः पुत्रः सहसाभिकृतो मया R. 2,64,18. सहसा विदधीत न क्रियाम् Spr. (II) 6970. चेष्टमानः Kathâs. 64,13. सहसा विपदो न विधिः Hit. ed. Jones. 1875. — β) zugleich mit, mit instr. MBh. 1,7011. मज्जन्तं जनमुद्धरामि सहसा तेनैव मज्जामि वा Z. d. d. m. G. 27,78 (Aufrecht verbindet सहसा mit उद्धरामि, aber तेन ohne praep. kann nicht zugleich mit bedeuten). — II) instr. pl. nachdrücklich, kraftig: व्रता रक्षन्ते अमृता: सहोभिः RV. 1,62,10. 10,46,9. सहोभिः पारि चक्रमू रक्षः 36,5. 7,6,5. — III) acc. sg. scheint ähnlich gebraucht zu sein: सहो[illegible]स्य नीलवत्सधस्थम् RV. 7,97,6. — b) Licht (द्योतिस्) H. an. Med. — c) angeblich Wasser Naigh. 1,12. — Vgl. सत्य°, साक्स.

सहसंवाद m. Unterredung Bhâg. P. 3,1,3.

सहसंवास m. das Zusammenwohnen Râja-Tar. 6,3.

सहसंवेग adj. heftig erregt: मनस् MBh. 5,5878.

सहसंसर्ग m. fleischliche Berührung mit (instr.) MBh. 1,2411.

सहसंजातवृद्ध adj. zu gleicher Zeit geboren und aufgewachsen mit Jmd MBh. 12,5151 nach der Lesart der ed. Bomb.

सहसंभला adj. f. sammt dem Freier AV. 14,1,19. RV. v. l.

सहसंभव adj. = सहज H. an. 3,150. जन्मना so v. a. angeboren Spr. (II) 6103.

सहसादृष्ट adj. unerwarteter Weise erblickt; m. ein adoptirter Sohn ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

सहसान (von 1. सह) Uṇâdi. 2,87. adj. waltend, gewaltig: Agni RV. 1,189,8. 2,10,6. 5,25,9. 7,7,1. Indra 4,17,3. nach Uṇâdi. m. Opfer und Pfau. सहसानु adj. geduldig, m. Opfer und Pfau Uṇâdi. im ÇKDa.

सहसामन् adj. (f. °मी) von Gesang begleitet, in Gesang sich bewegend: घर्क RV. 10,114,1. TS. 4,4,12,2.

सहसावत् adj. = सहस्वत्, meist als Beiw. Agni's im voc. RV. 1, 91,23. 189,5. 3,1,22. 5,20,4. 6,15,12. 7,1,24. 4,6. 9. 10,7. 43,5. 10, 21,4. 115,5.

सहसिद्ध adj. angeboren Citat aus der Smṛti bei Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 134 (vgl. Verz. d. Oxf. H. 47,a, No. 103). Davon °त्व n. nom. abstr. ebend.

सहसिन् (von सहस्) adj. gewaltig: Agni RV. 4,11,1.

सहसूक्तवाक adj. von heiligen Sprüchen begleitet: यज्ञ AV. 7,97,6.

सहसेवित् adj. mit Jmd verkehrend MBh. 12,6107.

सहसोदत (सहसा + उ°) m. N. pr. eines Mannes Buanour, Intr. 138, N. 2.

सहस्सोम adj. sammt Soma-Tränken VS. 8,11.

सहस्कृत् adj. Gewalt gebend: Agni VS. 3,18. TS. v. l.

सहस्कृत adj. (in Kraft gesetzt) gesteigert, angespornt, angefeuert: Agni RV. 1,45,2. 3,27,10. 5,8,1. 6,16,27. 8,43,16. 28. 44,11. इन्द्रम् इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृतम् 8,88,8. सूर्यं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे 3,4. Manu 10,83,1. यज्ञो हविर्वर्धतां सूक्तैः सहस्कृतम् AV. 6,39,1.

सहस्त (2. स + हस्त) adj. 1) Hände habend (Gegens. अहस्त) Spr. (II) 2258 (M.). Bhâg. P. 1,13,44. — 2) der seine Hände zu gebrauchen versteht (insbes. in Bezug auf Waffen) Hall. 2,218.

सहस्तोम adj. sammt den Stoma RV. 10,130,7.

सहस्थ adj. der bei Etwas dabei ist oder war, anwesend; Gefährte Kathâs. 108,156.

सहस्थान n. zur Erkl. von सधस्थ Nir. 3,15. von सदस् 7,24.

सहस्थित adj. = सहस्थ Kathâs. 42,95. 43,130. 46,174. 50,162. 51, 149. 58,25. 44. 124,96.

सहस्य (von सहस्) 1) adj. gewaltig: Agni RV. 1,147,5. 2,2,11. 5, 22,4. 7,1,5. 10,1,7. 87,22. यज्ञ AV. 5,29,9. — 2) m. der zweite Wintermonat (Pausha) P. 4,4,128, Schol. AK. 1,1,2,15. H. 152. Hall. 1, 114. VS. 7,30. 14,27. TS. 1,4,14,1. Çat. Br. 4,3,2,18. Suça. 1,19,10. Nâgân. 14,84. Kumâras. 5,26. VP. 225. Râja-Tar. 7,678.

सहस्र 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Sidd. K. 250,11. Tausend H. 873 (n.); überh. Bez. einer grossen Menge, eines grossen Gutes, insbes. ein Tausend Rinder Naigh. 3,1. a) n. RV. 1,102,7. न सह-

नाय परा देयाम् 8,1,5. वसु सहस्रेणैव मंक्षते *dem Tausend nach* Vâlakh. 2,1. यः सहस्रा सनोति 18,80,4. VS. 13,40. 15,55. 65. सोमो वै सहस्रमविन्दत् TS. 7,1,8,1. 3,12,1. तदेतत्सहस्रं वक्तुमन्वाकोग्यदेतदाश्विनमित्याचक्षते Ait. Br. 4,7. 7,34. किरणयं दद्यात्सहस्रं दद्यात्तेत्र चतुष्पाद्यात् 8,20. त्रिरात्रे सहस्रं ददाति Çat. Br. 4,3,3,1. 14. TS. 7,1,8,5. 7. सहस्रमभिजितो दक्षिणा Kâty. Çr. 22,1,7. 9. सर्वे वै सहस्रम् Çat. Br. 4,6,8,18. 11,4,3,20. Kâṭhaka Up. 4,4,5 (auch ग्र°). सहस्रं शताश्वम् *tausend Rinder und hundert Rosse* Çâṅkh. Çr. 14,28,15. 16,10,10. Lâṭy. 9,9,4. सहस्रं प्रातरनुवाकमन्वाह Pañkav. Br. 16,8,3. 21,1,1. कस्त्यृषभं सहस्रम् Çat. Br. 14,6,10,4. — सहस्रस्य दाता M. 3,177. सहस्रं (sc. Paṇa) दण्ड्यः 8,120. 336. 375. 378. 9,234. Spr. (II) 3856. बलिनो ये सहस्रेण AK. 2,8,2,30. त्री सहस्राणि ṚV. 3,9,9. 4,16,13. 30,21. ग्रष्ट 8,2,41. दशभिः 85,13. षष्टिम् 1,53,9. Çat. Br. 10,2,2,11. 13,4,4,6. 14,5,2,21. शतम् Gobh. 1,9,10. Âçv. Çr. 9,4,2. Spr. (II) 1377. R. 1,1,45. du. Kâty. Çr. 15,6,6. 22,1,13. °त्रय Vaitân. Bṛh. S. 82,3. Das Gezählte steht α) im gen. pl. ṚV. 1,30,2. 4,32,17. गवाम् s. 5,30,12. AV. 1,17,3. Çat. Br. 11,6,3,1. चत्वारि सहस्राणि वर्षाणाम् M. 1,69. 72. 5,159. 11,140. MBh. 1,7705. 3,1749. 2686. 9,407. R. 1,53,17. 19. 62,28. 2,31,22. Spr. (II) 6973. Vaitân. Bṛh. S. 2,22. 11,5. Kâtyâs. 18,124. Pañkat. 43,21. सहस्रं सहस्राणाम् M. 3,131. gen. sg.: दे सहस्रे सुवर्णस्य सार्धे Râǵa-Tar. 6,102. ग्रपित्वा त्रीणि गायत्र्याः सहस्राणि *so v. a. dreitausendmal die Gâyatrî hergemurmelt habend* M. 11,194. — β) in gleichem Casus: सहस्रं भिषजः ṚV. 1,24,9. 126,1. मासः 4,18,4. सूर्यः 8,39,3. गायत्र्यः Çat. Br. 10,3,4,2. गावः Pañkav. Br. 16,8,6. पितॄन् Spr. (II) 1300. R. 2,31,23. परिवत्सराः Râǵa-Tar. 1,52. Bhâg. P. 3,2,25. सहस्रपरिवेषणम् Ait. Br. 5,14. ग्राप्नून्सहस्राणि ṚV. 4,29,4. वर्ष्यैः सहस्रैः 8,62,14. वर्ष्येषु सहस्रेषु 1,29,2. वृत्राणि सहस्राणि 33,6. 4,16,12. कुञ्जरान्सहस्राणि चतुर्दश R. Gorr. 1,54,19. सहस्रैर्दशभिः Verz. d. Oxf. H. 149,b,41. fg. रूपे सहस्राय ṚV. 1,116,9. सहस्रेण नियुता 135,1. 8,4,6. सहस्रान्यूर्णमुदः 5,2,7. सहस्रेण वाकुना Haṛiv. 1873. — γ) in dem von der Construction geforderten Casus, während das Zahlwort in der erstarrten Form सहस्रम् (vgl. सहस्रमूति) erscheint: सहस्रं पथिभिः ṚV. 8,18,11. ऋषिभिः 8,3,4. — δ) am Anfange eines comp.: वृक्ती° Çat. Br. 10,4,2,23. रात्रि° 6,4. ग्रक्ष° Kâty. Çr. 22,11,5. वर्ष° Çat. Br. 14,6,8,10. युग° M. 1,73. दश सूनासहस्राणि 4,86. योनिकोटिसहस्रेषु 6,62. 11,207. MBh. 3,1720. 2720. 12202. 12339. R. 1,1,93 (दश व° zu trennen). षष्टिपुत्रसहस्राणि 5,2. वत्सरवर्षसहस्राणि 31,20. 37,4. 2,70,20. Mṛicch. 54. Spr. (II) 3878. 6525. AK. 1,1,2,21. Bhâg. P. 4,30,17. Pañkat. 130,16. Hit. 27,7. सुवर्ण° Vet. in LA. (III) 23,18. — ε) am Ende eines comp.: सहस्राक्षेण योजितः (रथः) Pañkat. 1,11,17. °चक्रसहस्रक ebend. In einem adj. comp. geht das Zahlwort regelmässig voran. — Am Ende eines adj. comp. (f. घा): वृषभैकसहस्रा गाः *so v. a. tausend Kühe und einen Stier* M. 11,127. Jâǵñ. 3,266. दशकिष्कुसहस्रा (सभा) MBh. 2,20. टङ्कसहस्रसुवर्णम् Vet. in LA. (III) 24,4. षड्यर्ध°, ढि° = °साहस्र P. 5,1,29, Schol. — b) m.: षट्सहस्रा रथिनः MBh. 3,15598. 9,407. पाशान् षट्सहस्रान् Haṛiv. 6833. सहस्रा विंशतिः Çat. Br. 14,93. fg. — 3) f. घा *eine best. Pflanze*, = सम्वष्ठा Bâlav. im ÇKDa. — Vgl. गोसहस्रा, परःसहस्र, परि°, शत° (pl. Spr. (II) 6973), षट्सहस्र, षोडश°, सै° von *Tausend begleitet* ṚV. 7,8,6 und साहस्र.

1. सहस्रक (von सहस्र) 1) n. *Tausend* H. 658. रत्नानाम् Pañkat. 1,4,49. दामीनाम् 50. वर्ष° Haṛiv. 331. नाम° Verz. d. Oxf. H. 99,a,16. fg. vielleicht so v. a. नाम°: ग्रपन्सहस्रकम् Pañkat. 3,9,9. — 2) adj. am Ende eines comp. (f. घा): बहुवर्ष° *viele Tausend Jahre während* MBh. 3,6057. 13,1316. R. 1,31,10. Pañkat. 1,2,4. पुत्रसहस्रिका *tausend Söhne habend* MBh. 12,948. तं ग्रपेन्मासी दिवाकरसहस्रकम् etwa *die tausend Namen der Sonne enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 105,b,30. मूलमन्त्रं ग्रपेन्मासी नित्यमष्टसहस्रकम् 27: vgl. स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं साष्टोत्तरम् 90,a, 4. 5. सहस्रनामसङ्कलम् । ग्रष्टोत्तरशतम् 89,b,25. — षट्सहस्रकी MBh. 3, 5037 fehlerhaft für °सहस्रिकी, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. सहस्रिक.

2. सहस्रक (सहस्र + 3. क) adj. *tausendköpfig* Jâǵñ. 3,119.

सहस्रकर m. *die Sonne (tausendstrahlig)* Vaitân. Jaim. 1,1. Kâtyâs. 120,44.

सहस्रकरपत्रेत्र adj. *tausend Hände, Füsse und Augen habend* Jâǵñ. 3,119.

सहस्रकाण्ड 1) adj. s. u. 1. काण्ड 1). — 2) f. घा *eine weiss blühende* Dûrvâ Râǵân. im ÇKDa.

सहस्रकिरण m. 1) *die Sonne (tausendstrahlig)* Hall. 1,35. Spr. (II) 7050. Vaitân. Bṛh. S. 42,13. Pañkat. ed. orn. 57,13. — 2) N. pr. eines Manes Verz. d. Oxf. H. 227,a,27.

सहस्रकुणप s. u. कुणप.

सहस्रकृत्वस् adv. *tausendmal* M. 2,79.

सहस्रकेतु adj. *tausendgestaltig* ṚV. 1,119,1.

सहस्रगु 1) adj. *tausend Kühe besitzend* M. 11,44. — 2) m. *die Sonne (tausendstrahlig)* Vaitân. Bṛh. S. 28,18.

सहस्रगुण adj. *tausendfach, vertausendfacht* Raǵat. 1,18. davon nom. abstr. °ता f. Râǵa-Tar. 4,501.

सहस्रगुणित adj. dass. Spr. (II) 4342, v. l.

सहस्रघ्नि adj. *tausend tödtend* AV. 11,2,12. wohl °घ्नि zu lesen.

सहस्रचक्षस् und °चक्षु s. u. चक्षस् und चक्षु.

सहस्रचक्षुस् adj. *tausendäugig*, m. ein N. Indra's R. 2,1,35. Vaitân. Bṛh. S. 43,58.

सहस्रचरण adj. *tausendfüssig:* Vishṇu MBh. 5,3827. R. 5,102,22.

सहस्रचित्य m. N. pr. eines Fürsten MBh. 13,6264. 15,543. fgg.

सहस्रचेतस् s. u. चेतस्.

सहस्रजित् 1) adj. *tausend besiegend, — gewinnend* ṚV. 1,188,1. 5. 26,6. 9,55,4. 78,4. 84,4. — 2) m. a) ein N. Vishṇu's H. ç. 66. — b) N. pr. eines Fürsten, wohl = सहस्रचित्य MBh. 12,3605. ein Sohn Jadu's (vgl. सहस्रद) VP. 4,11,3. Krishṇa's Bhâg. P. 10,61,11. Vgl. सहस्राजित्.

सहस्रज्योतिस् m. N. pr. eines Sohnes des Subhrâǵ MBh. 1,44. fg.

सहस्रणी m. *Führer von Tausend oder Tausenden* Bhâg. P. 1,9,30. 3,18,21.

सहस्रणीथ adj. *der tausend Mittel und Wege hat* ṚV. 9,71,7.

सहस्रणीथ s. u. नीथ.

सहस्रतमं (von सहस्र) adj. (f. ई) *der tausendste* P. 5,2,57. TS. 5,5,2,

7. 7,1,8,3. 2,1. 4. Çat. Br. 10,4,3,3. कला 4. एक° P. 5,2,57, Schol.

सहस्रतय (wie oben) n. *ein Tausend:* ईक्षण° Çiç. 9,80.

सहस्रद 1) adj. *tausend* (Kühe) *schenkend* M. 3, 136. R. 1,5,21 (30 Gorr.). R. Gorr. 2,109,48. ग्र° 1,6,13 (15 Schl.). Vgl. सहस्रदा. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Jadu (vgl. सहस्रजित्) Hariv. 1843.

सहस्रदंष्ट्र 1) adj. *tausendzähnig.* — 2) m. *eine Art Weis* (s. पाठीन) AK. 1,2,8,18. H. 1345. Halâj. 3,36. Sûçr. 1,206,7.

सहस्रदंष्ट्रिन् m. = सहस्रदंष्ट्र 2) Çârdar. im ÇKDr.

सहस्रदक्षिण adj. *wobei tausend* (Kühe) *als Opferlohn geschenkt werden* ṚV. 10,33,3. AV. 20,127,12. Lâṭj. 3,3,2. 8,11,15. 12,15,2. Kâṭj. Çr. 13,4,5. 9. 16. 15,1,5. 22,2,6. 23,1,6. Çâṅkh. Çr. 8,11,15. 13,4,7. Pân. Gaṇ. 1,9,3. Ind. St. 5,371. *tausend* (Rinder) *schenkend* 13,336.

सहस्रदल adj. *tausend* (Blüthen-) *Blätter habend:* °पद्म Paṇḍar. 1, 3,71. 2,8,19. 27.

सहस्रदा adj. *tausend gebend* VS. 13,40. SV. I, 6,1,3,9. °तम ṚV. 6, 45,33. — Vgl. सहस्रद.

सहस्रदातु und °दान s. u. दातु und दान.

सहस्रदावन् adj. *tausend schenkend* ṚV. 1,17,3.

सहस्रदृश् adj. *tausendäugig:* Vishṇu R. 6,102,22. m. ein N. Indra's MBu. 3,670. 14,1444. Weber, Râmây. Up. 302.

सहस्रदोस् adj. *tausendarmig*, m. ein N. des Kârtavîrja Arǵuna Gaṇâdh. im ÇKDr.

सहस्रद्वार् adj. *tausendthorig* ṚV. 7,88,5.

सहस्रधा (von सहस्र) adv. *tausendfach, in tausend Theile* (theilen, spalten u. s. w.) ṚV. 10,114,3. AV. 10,7,9. Çat. Br. 7,2,4,27. 14,6, 11,4. 7,4,20. Kâuṣh. Up. 4,19. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,160. MBu. 13,7300. R. 2,61,9. R. Gorr. 1,45,18. 2,62,21. 4,19,15. 6,95,40. Ragh. 6,5. Bhâg. P. 6,10,25. 8,11,31. भू MBu. 3,11961. कृ Kir. 5,17. या Paṇḍat. 190,10. fg. *tausendweise* (vgl. सहस्रशस्): संदर्शनात् Sin. D. 270,17. संभवात् 299,14. क्षयरोगाः स° । सन्वधावन् Kathâs. 18,93. किं पुनर्मोक्षमात्रकस्तत्र तत्र स° MBu. 5,2072. — Vgl. शत°.

सहस्रधामन् s. u. धामन्.

1. सहस्रधार 1) adj. s. u. 1. धार 1). — 2) f. या *ein aus tausend Oeffnungen eines Gefässes hervordringender Wasserstrahl:* °धारया देवीं स्नापयामि सुरेश्वरीम् Durgotsavapaddhati im ÇKDr.

2. सहस्रधार adj. *tausend Schneiden habend*, m. Vishṇu's *Diskus* (Rad) Çabdârthak. bei Wilson.

सहस्रधी adj. *tausendfachen Verstand habend*, als N. pr. eines Fisches Spr. (II) 6361. — Vgl. सहस्रबुद्धि.

सहस्रनयन adj. *tausendäugig*, m. ein N. Indra's Halâj. 1,52. MBu. 13,799. 2137. R. 7,72,8. Kathâs. 101,227. Buddhaćarit. 3.

1. सहस्रनामन् n. am Anf. eines comp. *die tausend Namen* (eines Gottes, insbes. Vishṇu's): °नामोपदेश Verz. d. Oxf. H. 17,a, No. 61. 38,b,5. 89,b,23. °नामपठन Verz. d. B. H. 340,11. °नामविवरण No. 421.

2. सहस्रनामन् adj. (f. °नी) *tausendnamig* AV. 8,7,8. Vishṇu Paṇḍar. 4,3,43. °नाम: स्तवनम् Verz. d. B. H. No. 421. स्तोत्र *tausend Namen enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 90,a,5. Weber, Kṛshṇaj. 301.

सहस्रनिर्णिज् s. u. निर्णिज्.

सहस्रनेत्र adj. *tausendäugig:* Indra MBu. 1,7706. Vishṇu Bhâg. P. nach ÇKDr. m. ein N. Indra's H. 172. MBu. 13,6045. Ragh. 6,23.

सहस्रनेत्राननपाद्बाहु adj. *tausend Augen, Gesichter, Füsse und Arme habend:* Vishṇu Verz. d. B. H. No. 421.

सहस्रपति m. *das Haupt von tausend* (Dörfern) M. 7,115. 117. MBu. 12,2268.

सहस्रपत्र 1) m. N. pr. eines Berges Çaṃk. 1,334. — 2) *Lotusblüthe* (*tausend Blüthenblätter habend*) AK. 1,2,2,39. H. 1161. Halâj. 3,87. MBu. 3,11529. Hariv. 3970. Ragh. 7,11.

सहस्रपद्, °पाद् 1) adj. *tausendfüssig* ṚV. 8,58,16. Purusha 10,90, 1 (Çvetâçv. Up. 3,14). Çâṅkh. Br. 6,1. Sâṅkhây. Br. 4,1. AV. 7,41,2. Brahman Bhâg. P. 3,22,3. Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi MBu. 1,923. 3,985.

सहस्रपर्ण 1) adj. (f. आ) *a) tausendfach befiedert:* ein Pfeil ṚV. 8,66, 7. — *b) tausendblätterig* AV. 8,7,12. — 2) f. आ vielleicht *eine best. Pflanze* AV. 6,139,1.

सहस्रपाशम् und °पाश्यम् s. u. पाशम् und पाश्यम्.

सहस्रपाद् m. 1) = कारण्ड H. an. 3,22. = कारण्ड (कारण्ड und zwar °पतिन् ÇKDr.) Mân. d. 56; vgl. कारण्डव. — 2) *die Sonne.* — 3) = उशनस्पुरुष (ein N. Vishṇu's), °पूरुष H. an. Mân.

सहस्रपुत्र und °पुष्ट s. u. पुत्र und पुष्ट.

1. सहस्रपोष m. s. u. पोष. °काम Lâṭj. 8,8,1. 3.

2. सहस्रपोष adj. *tausendfach gedeihend:* भुवन Çâṅkh. Gṛhj. 3,10 (साकम° Gobh. 3,6,6).

सहस्रपोषिन् adj. dass. ṚV. 8,92,4.

सहस्रपोष्य n. *tausendfaches Gedeihen:* कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः ṚV. 6,35,1.

सहस्रप्रधन s. u. प्रधन (die dortige Verweisung ist zu streichen; kommt nur dieses eine Mal vor).

सहस्रप्राण adj. *tausend Leben habend* AV. 19,46,6.

सहस्रबल m. N. pr. eines Fürsten VP. 386, N. 19.

सहस्रबाक्ष्योष adj. von °बाहु. इन्द्रस्य °षोषम् N. eines Sâman Ind. St. 3,209,a.

सहस्रबाहु 1) adj. *tausendarmig* Bhâg. P. 4,5,3. 8,7,12. 16,62,4. Çiva Çiv. — 2) m. *a)* Bein. Arǵuna's R. 7,33,23. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBu. 9,2561. — 3) m. oder f. N. pr.: सहस्रपिबत्कुरुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाहू ṚV. 8,45,26.

सहस्रबुद्धि adj. *tausendfachen Verstand habend*, als N. pr. eines Fisches Paṇḍat. 246,11. — Vgl. सहस्रधी.

सहस्रभक्त n. Bez. eines best. Festes, an dem *Tausende gespeist* wurden, Râǵa-Tar. 4,243.

सहस्रभर adj. *tausend Kämpfe bestehend* ṚV. 6,20,1.

सहस्रभर्णस् s. u. भर्णस्.

सहस्रभागवती f. N. einer Gottheit Ind. St. 3,243,a.

सहस्रभाव m. *das Tausend-Werden* Âçv. Çr. 12,6,22.

सहस्रभुज adj. (f. आ) *tausendarmig* Devîm. im ÇKDr. लोकेश Daçakaṇṭhavadha 51.

सहस्रभृष्टि s. u. भृष्टि.

सहस्रमङ्गल N. pr. einer Oertlichkeit Rāǵa-Tar. 8,536.

सहस्रमन्यु adj. *tausendfachen Muth habend* v. l. des SV. 1,3,2,5,4 für °मुष्क des ṚV.

सहस्रमीळ्ह adj. *tausend Kämpfe habend:* यात्रि ṚV. 1,112,10.

सहस्रमुष्क s. u. मुष्क.

सहस्रमूति (सहस्रम् + ऊति) adj. *tausendfach helfend* ṚV. 1,32,2. — Vgl. सहस्रातिं.

सहस्रमूर्ति adj. *in tausend Formen erscheinend* Bhāg. P. 3,1,17. Verz. d. B. H. No. 421.

सहस्रमूर्धन् adj. *tausendköpfig* Bhāg. P. 5,25,12. 6,16,48. Pāṇḍav. 2,2,98.

सहस्रमूर्ध्यक्षश्रवणाक्षिनासिक adj. *tausend Köpfe, Ohren, Augen und Nasen habend* Bhāg. P. 1,3,4.

सहस्रमूल adj. *tausend Wurzeln habend* AV. 13,3,15.

सहस्रंभर adj. *tausend bringend* ṚV. 2,9,1.

सहस्रयज्ञ m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 199,11.

सहस्रयज्ञतीर्थ n. N. pr. eines Tīrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,5. 6. 8.

सहस्रयाज adj. = सहस्रयाजिन् Pāṇḍav. Br. 21,1,9.

सहस्रयाजिन् adj. *der ein Opfer austeilt, bei welchem tausend* (Rinder) *als Lohn gegeben werden,* TS. 3,4,8,6. TBr. 1,4,10,4. Pāṇḍav. Br. 17,14,2. 21,1,9.

सहस्रयामन् adj. *tausend Bahnen habend* ṚV. 9,100,5.

सहस्ररश्मि adj. *tausendstrahlig,* m. *die Sonne* Maitrāyaṇ. 6,8. MBh. 3,192. 4,2122. 6,4285. R. 1,24,21. 3,62,12. 6,85,13. Kumāras. 6,7. 7. 41. Çiç. 1,53. Mārk. P. 109,73 अनेक° R. 5,11,1.

सहस्ररश्मितनय m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Varāh. Bṛh. 23(21),13.

सहस्रवृतम् adj. *tausendsamig:* Stier ṚV. 4,5,3. Soma 9,96,8. 109,17.

सहस्रलिङ्ग f. *ein Tausend* Liṅga (*Phallus*) Rāǵa-Tar. 2,129.

सहस्रलोचन adj. *tausendäugig,* m. ein N. Indra's R. 7,32,73. Rāǵan. 11,43.

सहस्रवक्त्र adj. *tausendmündig* Pāṇḍav. 1,3,39.

सहस्रवदन adj. dass., m. ein N. Vishṇu's Candrān. im ÇKDa.

सहस्रवत् (von सहस्र) adj. 1) *tausendfach:* वसु ṚV. 3,13,7. राधस् 1,24,29. — 2) *das Wort* सहस्र *enthaltend* Śat. Br. 11,4,3,19. Kāty. Çr. 5,13,3.

सहस्रवर्चस् und °वत्त्व s. u. वर्चस् und वत्त्व.

सहस्रवाच् m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarāshṭra MBh. 1,2735.

सहस्रवाज adj. *tausendfachen Muth u. s. w. habend, — gebend:* Indra ṚV. 1,81,10. 10,104,7.

सहस्रवीर adj. *für tausend Männer ausreichend:* वर्धम् ṚV. 1,188,4.

सहस्रवीर्य 1) adj. *tausend Kräfte habend* VS. 13,36. AV. 2,4,2. 4,17,1. 6,39,1. 8,1,18. — 2) f. या *weiss blühendes* Dūrvā-*Gras* AK. 2,4,8,24. Dūrvā uberh. Hir. 93. Ratnam. 179. = नीलदूर्वा und महाशतावरी Bhāvapr. 3. — Suçr. 1,71,17.

सहस्रवेध n. = चक्र und कालिकविशेष Rāǵān. im ÇKDa.

सहस्रवेधिन् 1) m. *a) Sauerampfer* AK. 2,4,3,6. H. an. 3,23. Med. n. 253. Rāǵān. 6,130. Bhāvapr. 3. — *b) Moschus* Bhāvapr. und Rāǵān. im ÇKDa. — 2) n. *Asa foetida* AK. 2,9,40. H. 422. H. an. Med. Rāǵān. 6,75. Bhāvapr.

सहस्रशतदक्षिण adj. *wobei hunderttausend* (Kühe) *als Opferlohn geschenkt werden* Śat. Br. 13,3,4,7. Spr. (II) 3696.

सहस्रशल्ल s. u. शल्ल 2)

सहस्रशस् (von सहस्र) adv. *tausendweise* AV. 3,24,1. 8,8,1. 16. 11,9,23. VS. 16,6. 53. TS. 7,5,9,1. Mund. Up. 2,1,1. M. 12,57. 114. Bhag. 11,5. MBh. 1,1169. 3,1745. 12081. 5,6059. 7170. R. 1,53,4. 55,23. 61,9. 2,57,9. 76,21. 91,69. 94,21. Suçr. 1,264,9. Ragh. 6,22. 12,45. Spr. (II) 4140. Varāh. Bṛh. S. 83,1. Kathās. 51,213. Mārk. P. 15,63. Rāǵa-Tar. 3,363. 5,121. Bhāg. P. 2,1,3. 4,25,7. — Vgl. शत°.

सहस्रशाख adj. *tausend Zweige* (eig. und übertr.) *habend* Taitt. Up. 1,4,3. चतुर्वेद Kusum. 24,1.

सहस्रशिखर adj. *tausend Gipfel habend,* m. ein N. des Vindhja Candrān. (bei Wilson). Mārk. P. 55,10.

सहस्रशिरस् adj. *tausendköpfig* R. 4,40,52. Bhāg. P. 5,25,2. 9,14,2. Pāṇḍav. 2,2,32.

सहस्रशिरस adj. dass. MBh. 3,3827.

सहस्रशीर्ष 1) adj. dass. Ind. St. 2,7. — 2) f. या Bez. *eines best. Spruches:* °जापिन् Jāǵ. 3,305.

सहस्रशीर्षन् adj. *tausendköpfig:* Vishṇu Bhāg. P. 3,13,3. 4,9,1. die Sonne Varāh. Bṛh. S. 13,56. Vgl. auch unter शीर्षन्.

सहस्रशृङ्ग s. u. शृङ्ग.

सहस्रशोकम् (शोकम् = 2. शोक) adj. *tausend Flammen sprühend:* वह्नि ṚV. 10,90,4.

सहस्रश्रुति m. N. pr. eines Berges Bhāg. P. 5,20,10.

सहस्रसंवत्सर n. (sc. सत्र *eine tausendjährige Feier* Śat. Br. 10,4,2,2. 12,3,2,1. 5. Pāṇḍav. Br. 25,17,1. 18,1. Kāty. Çr. 1,6,7. Maçaka 11,10 in Verz. d. B. H. 74.

सहस्रसनि 1) adj. *tausend gewinnend,* — *verschaffend:* सत्र Ait. Br. 5,14. वाज Āçv. Gṛhj. 2,6,5. Pār. Gṛhj. 2,6. Smārv. Br. 1,4. — 2) f. (oxyt.) *Tausend-Gabe* Śat. Br. 2,3,4,13.

सहस्रसंमित adj. *nach tausend messend:* यमो लोक: TS. 7,2,8,4. TBr. 3,12,8,3. Śat. Br. 13,1,2,1.

सहस्रसनी adj. so v. a. सहस्रसनि. ऋषि ṚV. 1,10,11. ein Ross 117,9. 118,9. 4,38,10. Agni 1,188,3. 3,13,6. 8,92,3. 9,47,3. *freigebig* 5,34,9. 6,45,33. superl. °नम (AV. Paipp. 4,45) 1,9,8. 10,10. 175,1. AV. 3,28,4.

सहस्रसनाव m. *tausendfältige* Soma-*Kelterung* ṚV. 3,53,7. 7,103,10.

सहस्रसनाव्य n. N. eines Ajana Āçv. Çr. 12,5,22. Nir. 11,7. Maçaka 11,7 in Verz. d. B. H. 74.

सहस्रसमीत und °स्तुक s. unter मीता und स्तुका.

सहस्रस्तुति f. N. pr. eines Flusses Bhāg. P. 5,20,27.

सहस्रस्रोत m. N. pr. eines Berges Bhāg. P. 5,20,26. °स्रोतस् Burnouf.

सहस्रहन् adj. *tausend erschlagend* AV. 8,8,17.

सहस्रहर्याश्व (!) m. Indra's *Wagen* Candrān. bei Wilson.

सहस्रांशु adj. *tausendstrahlig.* Beiw. der Sonne und als m. ein N. *der Sonne* AK. 1,1,2,22. H. 93. M. 1,9. MBh. 5,7162. 13,1492. R. 3,33,12. 75,71. 4,39,8. Varāh. Bṛh. S. 3,3. 27. Mārk. P. 106,64. Verz. d. Oxf. H. 33,a,2. LA. (III) 89,12.

सहस्रांशुज m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Varāh. Bṛh.

2,1. Ind. St. 2,261.

सहस्रार्त्न 1) adj. *tausendäugig:* Indra RV. 1,23,3. TS. 2,3,14,4. Mân. P. 79,5. Purusha RV. 10,90,1. Çiñkn. Bu. 6,1. Gaṇ. 4,9. Hari, Nârâjaṇa, Vishṇu Ind. St. 2,7. MBu. 5,3827. Rudra-Çiva VS. 16,5. 13. 29. Çat. Bu. 9,1,1,6. Taitt. Âr. 10,1,5. MBu. 14,195. Agni VS. 13,47. 17,71. कविम् RV. 10,161,3. स्पशः AV. 4,16,4. 28,3. 6,26,3. 10,3,3. °नेत्रेण हिरण्मयाण्डेन Maitrâyaṇ. 6,8. — 2) m. ein N. Indra's AK. 1,1,8,40. Gaṇâdhj. in Verz. d. Oxf. H. 191,a,32. MBu. 1,1286. 6621. 3,11922. 4,1631. 12,1718. R. 1,26,18 (27,17 Gorr.). 46,10. 62,26. 2,25,30. 3,9,20. Vikram. 35. Mân. P. 18,14. Verz. d. Oxf. H. 303,a. No 741. fg. Buic. P. 6,7,40. 13,14. so v. a. *klarer Himmel:* सप्तभि °कासिभिर् Vaitân. Bṛh. S. 48,9. N. pr. des Indra im 9ten Manvantara Mân. P. 94,6. — 3) N. pr. einer Oertlichkeit: °ने Verz. d. Oxf. H. 39,b,7. — 4) f. ई N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,a,10. fg. 15.

सहस्रातनित् m. = इन्द्रजित् N. pr. eines Sohnes des Râvaṇa Wilson, Rîmây. Up. 299.

सहस्रातधनुस् n. Indra's *Bogen, Regenbogen;* davon adj. °धनुष्मत् *mit einem Regenbogen versehen:* नाग R. 5,40,10.

सहस्रातार adj. *tausendstilbig* RV. 1,164,41. Pañkav. Bu. 18,8,5. 25,9,4. wohl unrichtig AV. 10,8,7. 11,4,22.

सहस्राध्य (सहस्र + आध्य) m. N. pr. eines Berges Çiva. 1,353.

सहस्राङ्क m. *die Sonne* H. ç. 7 wohl fehlerhaft.

सहस्राजित् (सहस्र + जित्) m. N. pr. eines Sohnes des Bhagamâna Harîv. 2003. VP. 4,13,2. Buic. P. 9,24,8. — Vgl. सहस्राजित्, शतजित्, शताजित्.

सहस्रात्मन् adj. *tausend Naturen habend:* Brahman Jâân. 3,126.

सहस्राधिपति m. *Anführer von tausend Mann* MBu. 12,3713. *das Haupt von tausend* (Dörfern) M. 7,119.

सहस्रानीक (सहस्र + अ°) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Çatânîka, Kathâs. 9,11. 30,42. Buic. P. 9,22,38. Verz. d. Oxf. H. 83,a,18.

सहस्रापोषे m. = सहस्रपोष AV. 5,19,3. 7,48,2.

सहस्राप्सस् adj. सहस्राप्साः पतनायाणन यज्ञः RV. 9,88,7.

सहस्रामघ (सहस्र + मघ) adj. *tausend Schätze* oder *Spenden habend* RV. 7,88,1.

सहस्रायु (सहस्र + आयु°) adj. *tausend Jahre lebend* Ait. Bu. 7,33. Vgl. सहस्रायुस्.

सहस्रायुतीय adj. von सहस्र + अयुत. इन्द्रस्य °यम् N. eines Sâman Ind. St. 3,209,a.

सहस्रायुध (सहस्र + आयुध°) 1) adj. *tausend Waffen habend* Sin. D. 274,6. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 44,58.

सहस्रायुधीय (von सहस्रायुध), °यति *aussehen, als wenn man tausend Waffen hätte,* Sin. D. 274,2.

सहस्रायुष्ट्व n. nom. abstr. von सहस्रायुस् 1) Schol. zu Kâtj. Çr. 1,6,21.

सहस्रायुस् 1) adj. = सहस्रायु AV. 17,1,27. Çat. Bu. 11,1,6,6. 15. विधि Pañkav. 1,12,19. Der nom. °युस् könnte auch zu सहस्रायु gehören. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 47,28.

सहस्रार (सहस्र + 1. अर) 1) adj. *tausendspeichig:* Vishṇu's Diskus (Rad) Buic. P. 9,5,4. — 2) m. n. *eine für eine umgestülpte Lotusblüthe geltende Stelle auf dem Kopfe* ÇKDa. nach dem Tantrasâra.

सहस्रारक m. pl. Bez. *einer best. Götterordnung* bei den Gaina, einer Abtheilung der Kalpabhava, H. 93.

सहस्रार्घ s. unter अर्घ 1).

सहस्रार्चिस् adj. *tausendstrahlig:* Çiva Çiv. m. *die Sonne* Ragh. 13,44.

सहस्रावर्तकतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,3.

सहस्रावर्ता f. N. pr. einer Gottheit Vsantp. 103. Daśakumâracarita 32.

सहस्राश्व (सहस्र + अश्व) m. N. pr. eines Fürsten VP. 386, N. 19.

सहस्राशीन s. u. आशीन.

सहस्राह *tausend Tage:* सप्ते सहस्राहस्य Maitrâyaṇ. 1,2.

सहस्राहार्य n. *tausend Tagereisen* AV. 10,8,18. 13,3,14.

सहस्रिक (von सहस्र) 1) n. *Tausend* Harîv. 6310. wohl fehlerhaft für सहस्रक. — 2) adj. (f. ई) am Ende eines comp.: वर्ष° *tausend Jahre während* MBu. 2,427. 3,10513. 7,1281. 12,7890. 13,1316 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Harîv. 14110. शत° MBu. 3,5037 (nach der Lesart der ed. Bomb.). — Vgl. वार्ष° und सहस्रक.

सहस्रिन् (wie eben) adj. P. 5,2,102. 1) *tausend zählend, tausendfältig:* ऊति RV. 1,30,8. राय: 31,10. 64,15. 5,54,12. राति 6,45,32. वाज 1,5,9. 124,13. 3,22,1. इष: 1,188,2. 2,6,5. 7,15,9. गिर: Buic. P. 1,9,30, v. l. बलिनो ये सहस्रेण माहस्रास्ते सहस्रिण: *tausend Mann* AK. 2,8,2,30. H. 764. — 2) *tausend verschaffend, tausendfach gewinnend:* Rosse उत वो ते सहस्रिणो रथ आ यातु पाडसा RV. 4,48,5. नियुत: 1,135,3. पुष्णोतो अर्वा सहुरि: सहस्री 7,58,4. 92,5. 8,1,9. रथ 2,41,1. गिरि *tausenderlei enthaltend* 8,53,5. सविता य: सहस्रो Çat. Bu. 11,4,3,6. — 3) *tausend besitzend* Spr. (II) 1090. 6972. am Ende eines comp. *im Besitz von tausend — seiend:* पुत्र° MBu. 3,12624. गो° 13,4885. वाजि° 14,837. Harîv. 10737. VP. 4,11,3. बहुवर्ष° *viele tausend Jahre alt* MBu. 3,12599. वर्ष° 12,948. 1043. 14,2749. शतवर्ष° 13,1393. — 4) *tausend* (Paṇa als Strafe) *zahlend* M. 8,376. — Vgl. षष्टि°.

सहस्रिय (wie eben) adj. मत्वर्थे P. 4,4,126. संमितो 123. 1) *nach tausend zählend:* ऊर्मय: RV. 1,168,2. — 2) *tausendfach gebend:* Agni VS. 15,52. Savitar TS. 2,4,8,1.

सहस्रीय (wie eben) adj. am Ende eines comp.: वर्ष° *tausend Jahre alt* MBu. 3,12624.

सहस्रोति adj. *tausendfach helfend* RV. 3,34,7. — Vgl. सहस्रमूति.

सहस्वत् (von सहस्) 1) adj. (voc. सहस्वन्, a) *gewaltig, übermächtig, siegreich:* Agni RV. 1,97,5. 127,10. 3,14,2. 4. AV. 11,1,6. Indra RV. 6,22,1. Manju 10,83,1. 8,91,7. AV. 2,4,6. 8,5,3. 9,2,15. 19,32,5. Nir. 10,28. Buic. P. 2,6,44. सहस्वत् adv. *mächtig* RV. 1,6,8. — b) *das Wort* सहस् *enthaltend* Ait. Bu. 8,2. — 2) m. N. pr. eines Fürsten (v. l. सहस्वन्) VP. 387, N. 29. — 3) f. ausser adj. etwa zugleich N. *einer Pflanze* (vgl. सहा, सहमाना) RV. 10,145,3. 5. AV. 2,25,1. 8,2,6.

सहा s. u. 2. und 3. सह.

सहाचर m. = सहचर *eine gelb blühende Barleria* Çabdar. im ÇKDa. Suçr. 2,207,9.

सहादरम् adv. = सादरम् *ehrerbietig* Pañkar. 1,2,10 (सहोदरम् gedr.).

सहाध्ययन n. *Gemeinsamkeit der Studien* MBu. 1,5176.

सहाध्यायिन् *adj. mitstudirend, Studiengenosse:* शिष्य Kauç. 114. Hariv. 7906. Spr. (II) 6980. Kathâs. 101,114. so v. a. *Fachgenosse* Varâh. Bau. S. 2, S. 3, Z. 5 v. u.

सहानुगमन n. = सहमरण ÇKDa. u. d. letzten Worte. °विवेक m. Titel einer Schrift Verz. d. Tüb. H. 20.

सहापवाद (1. सह + प°) adj. *dem Widerspruch ausgesetzt* ṚV. Prât. 11,35.

सहापति m. Bein. Brahman's bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 69,18. fg. 342,19. Burnouf, Intr. 396. fg. 510. सहाम् ist nach unserer Ansicht kein gen. pl. von 2. सह, sondern ein in der klassischen Sprache in dieser Verbindung nicht zu rechtfertigender acc. von सहा = सह-लोकधातु. — Vgl. सहापति.

सहाय (von 3. इ mit 1. सह) m. *Geführte, Genosse, Kamerad, Gehilfe* AK. 2,8,2,39. Taik. 3,2,15. H. 496. 730. Schol. Hall. 2,272. Gobh. 4, 9,6. 8,17. वैरिणां सहायं चैव वैरिणः M. 4,138. आत्मनैव सहायेन 6,49. 8,64. 9,267. MBh. 3,2240. R. 1,1,48. 2,37,18. 52,68. 3,21,21. 4,36,7. Kâm. Nitis. 11,56. Mṛicch. 11. Spr. (II) 349. 1657. मित्रामात्यसहायाः 4866. 5410. 6661. 6975. fg. 7034. Varâh. Bṛh. S. 104,35. Kathâs. 31, 89. Siç. D. 76. 197. Prasâd. 73,3. Daçak. 94,2. Pañcat. 221,22. नामुत्र कि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः so v. a. *als Geführten* Spr. (II) 3607. 4930. LA. (III)51,5. 89,1. °कृत्य R. 4,36,8. धर्मसंग्रहे *Geführte —, Gehilfe bei* Spr. (II) 3675. Çiç. 22,17. शत्रुकुलने Buâs. P. 9,11,20. परलोकसहायार्थम् *Geführte auf dem Wege zu jener Welt* Spr. (II) 3090. आपत्सहाय *Unglücksgenosse* 6878. कुरुकस्य° Kathâs. 32,140. वाचा° Spr. (II) 6980. वचन° Pañcat. 221,22. am Ende eines adj. comp. (f. या): स° M. 7,30. 33. MBh. 3,2585. Spr. (II) 4577. सु° 1254. M. 7,31. स° 8,193. विश्व° *nebst den* V. Hariv. 12614. शिष्य° R. Gorr. 1,2,15. चारमात्र° Kathâs. 12,18. insbes. häufig nach einem fem. (das hier besser hervortritt als in einem adj. comp. mit स): प्रभो° *begleitet von* MBh. 3,12002. R. 1, 10,37. 31,10. 2,95,19. 3,79,11. 7,96,14. Mṛicch. 67. Ragh. 2,24. Vikram. 64,13. — दुःखसहाया *das Leid zum Geführten habend* R. 3,65,3. व्यवसाय° so v. a. स° Spr. (II) 7369. श्रुतिस्मृतिसहायं यत्प्रमाणान्तरमुत्तमम् so v. a. *unterstützt durch* Sarvadarçanas. 72,11. — Vgl. दुः°, धर्म° (auch Kathâs. 24,168. 28,35), प्रज्ञा°, बुद्धि°, मधु° (besser *den Frühling zum Geführten habend*), महत्सहाय, साकायक, साकाय्य.

सहायक von सहाय am Ende eines adj. comp.: नारायण° *nebst* MBh. 3,15896.

सहायता (von सहाय) f. 1) *eine Menge von Geführten* u. s. w. P. 4,2, 43, Vârtt. 1. AK. 3,3,11. H. 1422. — 2) *Genossenschaft, Theilnahme, Beistand, Hilfe:* अन्वेष्टव्या कि वैदेह्या रक्षणार्थं (रक्षणार्थे Gorr.) °ता R. 2,46,9 (44,9 Gorr.). शोके नः स्यात्सहायता 57,28. तस्य नास्ति तेषु °ता so v. a. *der kann von ihm keine Hilfe erwarten* R. Gorr. 2,109,18. °तां मघवतः प्रतिपद्य Ragh. 9,20. मा पश्चेथाः करोति °ताम् Çiç. D. 42,17. कुसुमास्तरणे °तां बकुलः सौम्य गतस्त्वमावयोः Kumâras. 4,25. देवा यान्ति °ताम् Spr. (II) 1875 (vgl. Prasâd. 70,3). — 3) am Ende eines comp. *das Versehensein mit:* कुचेल° so v. a. *das Tragen von schlechten Kleidern* M. 6,44.

सहायत्व n. = सहायता 2) R. 3,40,5. रिपुसाधनमस्य °त्वेन न भवति Pañcat. 39,10. यद्रिमर्दने Kathâs. 30,87. °तं गच्छति 15,28. °से स्थितो ऽत्र नः 45,8. °त्वे च पुत्रो हो तस्यादात् 46,23. को ऽपि ते वाक्यात्रेण °तं न करिष्यति Pañcat. 154,17.

सहायन (1. सह + घ°) n. *das Zusammengehen, Zusammensein, Gesellschaft:* विश्वामित्रसहायने R. 1,3,10.

सहायवत् (von सहाय) adj. *einen Geführten u. s. w. habend* MBh. 3, 16606. 4,1410. R. 2,1,17. Spr. (II) 6832. Mâlav. P. 51,23. लक्ष्मणेन सह L. *einen Geführten habend* R. Gorr. 1,79,45. 4,14,15. तेन राज्ञा °वान् *an dem hat der Fürst einen wahren Geführten* Spr. (II) 5006. 5663. 5839. अ° *keinen Geführten habend* M. 6,42. सु° *einen guten Gef. habend* Sâṃk. 1,30,3. Kâm. Nitis. 17,41. Kathâs. 103,227. दुष्ट° *übermüthige Geführten habend* R. 5,81,2. सदयसी° *in Begleitung von, nebst* MBh. 14,1695. R. Gorr. 2,78,20. 3,47,18. व्यवसाय° (so ist zu schreiben) so v. a. *ausgerüstet —, versehen mit* 70,16. कालदेश° so v. a. *von Zeit und Ort begünstigt* Kâm. Nitis. 11,74.

सहायिनी (das entsprechende f. zu सहाय) *Geführtin* R. 4,22,35. उभयार्थकामकालेषु भार्या पुंसः स° Spr. (II) 3119. भार्या भर्तृ° 4539. लोकयात्रा° 4577. कलानिधि° Verz. d. Oxf. H. 260,b,1 v. u. Das masc. in der Bed. von सहाय nur Pañcat. ed. orn. 49,3.

सहायीभू (सहाय + 1. भू) zum *Geführten werden;* davon nom. act. °भाव m. Vaitp. 74.

सहार m. 1) proparox. = सहकार (und auch daraus entstanden) *eine Mango-Art* Uṇâdis. 3,139. — 2) = सहाप्रलय ÇKDa. angeblich nach Hall., Monier Williams ohne Ang. einer Aut., fehlerhaft für संहार.

सहार्य (1. सह + घा°) adj. *gesund* schlechte Lesart H. 474.

सहार्घ (1. सह + अर्घ) adj. *nebst einem halben* Râja-Tar. 1,198, wo सहार्धाश zu lesen ist.

सहालाप (1. सह + घा°) m. *Unterredung, Gespräch* Schol. zu Çiç. 31,7. कृतभक्त° *mit* Pañcat. 1,2,70. 2,2,5.

सहालिन् m. N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 358.

सहावन् (von सह. सहस्वन् Padap.) adj. *bewältigend, gewaltig, vermögend:* Savitar ṚV. 7,45,2. सहावा पृत्सु तरणिर्नार्वा 3,49,3. एकः कृष्टीनामभवत्सहावा 6,18,2. रयि 14,5. सहावानं तरुतारं रथानाम् 10,178,1.

सँहावन् (ohne Avagraha im Padap.) adj. dass.: पूर्यामः सर्ववीरः सहावान् ṚV. 9,90,3. (मन्युः) सकृत्रिः सहावान् 10,83,4. सहावान् 1, 175,2. 3.

सहासन (1. सह + 1. घा°) n. *das Zusammensitzen* M. 8,281. 11, 184. MBh. 3,29. राजदृष्टैः Râja-Tar. 3,155. Bhatt. 1,3. an den beiden letzten Stellen könnte सह auch mit dem instr. verbunden werden.

सक्ति adj. = संसक्ति P. 6,1,144, Vârtt. 1. Vop. 6,72. 1) *anhaftend, anklebend* (= संलग्न Comm.) Kâç. Ça. 5,3,28. 4,13. 6,24. 7,3,10. 20. — 2) *dicht dabei stehend* MBh. 3,12796. Kâç. Ça. 11,1,8. °सक्तिम् *in der Nähe von* 7,8,17. 8,6,26. — 3) *verbunden, vereinigt* R. 1,2,15. कुम्भक Verz. d. Oxf. H. 234,b,34. fgg. सक्तौ *beide vereinigt, — zusammen* MBh. 1,5939. 7618. 3,2331. 2004. R. 3,47,16. 5,37,12. Varâh. Bṛh. S. 79,16. सक्तिः *vereinigt, im Verein, alle* Spr. (II) 4762. M. 9,

212. MBh. 3,2188. R. 1,38,11. 2,61,20. 99,2. R. Gorr. 1,9,30. 2,48, 10. 3,15,5. 5,82,6. LA. (III) 50,1. सहिताः सर्वे MBh. 3,2179. 12103. 5, 5430. 5443. 7538. सहितम् adv. *zusammen* 3, 11388 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Die Ergänzung *a)* im instr. *verbunden, versehen mit:* स्तनौ सहितौ लक्ष्म्या MBh. 4,392. सहितं ब्रह्म पदस्त्रतेजसा Rāgn. 8,4. Kathās. 37,160. मृगव्रजेन R. 3,43,7. Bhāg. P. 3,11,39. *im Verein mit, nebst:* दुहित्रा MBh. 1,6121. 3,1676. 2258. 2268. 2337. 3009. 11917. R. 1, 4,33. 6,18. 47,9. 61,11. 2,27,19. 52,52. 71,30. 72,52. 93,17. 96,28. 104, 27. 30. R. Gorr. 1,71,5. 3,11,1. 6,107,18. Kathās. 13,179. योत्स्यामि सहितस्त्वया so v. a. *ich werde mit dir kämpfen* MBh. 5, 7081. — *b)* im comp. vorangehend, *verbunden —, versehen mit:* धर्मकामार्थसहितैर्वाक्यैः R. 2,46,7. 102,4. सम्यग्ज्ञानं क्रियासहितम् Spr. (II) 2673. 2755. °मो° 4078. *im Verein mit, nebst* Jāān. 3,299. MBh. 3,2661. 2283. R. 1, 1,65. 55,6. 64,6. 2,70,28. 103,45. Rāgn. 2,72. 11,55. Çik. 62,23. 101, 7. 112,18. Kathās. 13,110. Pañcat. 217,5. Schol. zu P. 1,1,8. — *c)* in der Astr. *in Conjunction stehend mit* (instr. oder im comp. vorangehend): भे शुभसहिते Varāh. Bṛh. S. 23,10. 25,1. 42,14. Bṛh. 4,21. श्र° Bṛh. S. 28,21. — Vgl. साहित्य.

सहितत्व (von सहित) n. *am Ende eines comp. das Verbundensein mit:* व्यञ्जन° Comm. zu TS. Prāt. 1,42.

सहितृ (von 1. सह्) nom. ag. ÇKDa. nach Sidd. K. — Vgl. सोढृ.

सहितव्य (wie eben) adj. *zu ertragen, — erdulden:* दण्ड MBh. 12, 2409. — Vgl. सोढव्य.

सहितास्थित adj. *zusammenstehend:* पुरुषो हा °स्थितो Kathās. 27,152.

सहिताङ्गुल adj. *verwachsene Finger habend* Vājcar. 207.

सहितोरु adj. (f. °ङ्घा) *anschliessende Schenkel habend* P. 4,1,70, Vārtt. Vop. 4,30. — Vgl. संहितोरु.

सहित्र (von 1. सह्) n. (कारणे) P. 3,2,184. Vop. 26,169.

सैहिरण्य (2. स + हि°) adj. *nebst Gold, mit Gold versehen* u. s. w. Çat. Bā. 3,2,4,13. Kāty. Çr. 10,2,10. Kauç. 62. 68. Schiff 71. 86. °पात्र Çat. Bā. 5,1,5,28.

सहिष्ठ (superl. zu 2. सह्) adj. *gewaltigst* ṚV. 6,18,4. Ait. Bā. 2,36. 8,12. — Vgl. सहोयस्.

सहिष्णु (von 1. सह्) 1) adj. P. 3,2,136. Vop. 26,142. *ertragend, aushaltend, ruhig hinnehmend;* die Ergänzung im acc.: सहोषमां सहः Bhāg. P. 4,5,5. परमुच्चमसहिष्णुः Hit. 85,8. im gen.: व्याप्तेषशरवर्षाणां शास्त्राणां च सहिष्णवः (रणाः) MBh. 7,278. वर्षशीतोष्णवातानाम् 12,3225. im loc.: तृट्क्षुत्पिपासाशीतोष्णवातवर्षभयादानेष्वसहिष्णुः Sucr. 1,53,6. 7. im comp. vorangehend: तृट्क्षुधश्रमायासशीतार्ति° MBh. 3,2480. Sucr. 1, 127,1. रविकिरण° Çik. 37. Koll. zu M. 6,8. तपःक्षय° Kām. Nītis. 18,11. fg. सत्यसहिष्णु° Sāh. D. 16,9. प्रत्युपदेश° Prab. 95,7. Hit. 126,16. fg. क्रोधासहिष्णु Spr. (II) 475. Milavik. 144,4. Rāja-Tar. 3,157. 4,472. ohne Ergänzung *Alles geduldig ertragend, sich Alles gefallen lassend, nachsichtig* AK. 3.1,31. H. 390. MBh. 5,763. 14,2098. Sucr. 1,333,21. Rāgn. 2,72. Spr. (II) 1342. Kathās. 46,135. तक्षवत् Kir. 2,30. पितराविव Bhāg. P. 1,12,22. काले सहिष्णुर्गरिष्ठसहिष्णुश्च वह्निवत् Spr. (II) 1706. श्र° 2670. Bhāg. P. 4,9,22. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Harīv. 14154. Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,17. einer der 7 Ṛshi unter dem 6ten Manu Harīv. 436. Mārk. P. 76,54. ein Sohn Pulaha's 52,28. VP. 83. Bhāg. P. 4,1,38. — Vgl. सु°, व्यय°.

सहिष्णुता f. nom. abstr. von सहिष्णु. Die Ergänzung im gen.: श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनाम् Sucr. 2,139,6. अन्यगुणाद्वेनामसहिष्णुता Sāh. D. 196. im comp. vorangehend: क्रोध° Spr. (II) 2678. Kām. Nītis. 1,21. 4. 37. 8,8. Vedāntas. (Allah.) No. 12. पोडनासहिष्णुता Sucr. 1,97,1. कालक्षपासहिष्णुता Sāh. D. 187. ohne Ergänzung Halāy. 4,40. Spr. (II) 296. — Vgl. सु°.

सहिष्णुत्व n. desgl.: दृढ° MBh. 3,17373. मन्मोत्साहासहिष्णुत्व Rāja-Tar. 4,707. ohne Ergänzung MBh. 1,5518. Harīv. 2612. Sucr. 1,335,5. 7. Spr. (II) 1722. °त्वे धर्मागमः MBh. 1,2812. 6,503. Mārk. P. 123,15.

सहोयस् (compar. zu 2. सहस्) adj. *gewaltiger; sehr mächtig, überlegen* ṚV. 1,61,7. राजन् 71,4. 171,6. मर्त 4,33,1. 5,70,2. 10,143,6. सहस्रशित्सहीयान् 176,4. Bhāg. P. 11,23,47. AV. 4,32,4 (सहीयान् ṚV.). 5, 20,10. वीरुध 8,7,11. 10,3,43. Indra Kauç. 78. — Vgl. सहीयस् und सहिष्ठ.

सहोल m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 8,562.

सहोरि (von 1. सह्) Uṇādis. 2,78. adj. *gewaltig, überlegen, siegreich* ṚV. 2,21,3. 4,32,9. वाजिन् 38,7. Indra-Agni 6,60,1. अर्वन् 7,58,4. 8,46,20. 10,83,4. 85,2. 92,8. nach Uṇādis. subst. *die Sonne* und *die Erde.*

सहोहति (2. स + हूति) f. *gemeinsame Anrufung:* इमामूषु ष्वसामा सहोहतिम् ṚV. 10,89,16. 2,33,4. तमा नमस्व सहोहतिभिः 8,64,5 (vgl. 7,32,20, wo गिरा entspricht). 7,27,4. सर्वाभिर्देव्यं जनमग्ने यक्ष्व सहोहतिभिः 1,45, 10. सहोहतौ (instr.) वनतं गिरः 93,9.

सौहृदय (2. स + हृ°) adj. (f. या; 1) *sammt dem Herzen:* सहृदयो ऽग्निराधेयः TBr. 1,1,8,12. 2,4,7. निर्वृतं मे सहृदयं शरीरम् Vikram. 71, 13. — 2) = हृदयालु, घिरूप Bhar. zu AK. 3,1,3 nach ÇKDa. H. 345. Halāy. 2,218. *herzlich:* सौमनस्य *Einigkeit* AV. 3,30,1. *ein warmes Herz für Jmd oder Etwas habend, gefühlvoll, Sinn für's Schöne habend:* दक्षिणो ऽस्यां सहृदयः Daçar. 2,6. कुरु साधु प्रसादं मे बाले सहृदया मयि R. 2,13,16. Çiç. 8,51. Spr. (II) 1388. 2999. 3680. °हृदयज्ञ Z. d. d. m. G. 27,63. Sāh. D. 6,16. 23,15. 112,10. Comm. zu Kuval. 60,*a*.

सहेतिकरण adj. *mit इति versehen* ṚV. Prāt. 10,6.

सहेतिकार adj. dass. ṚV. Prāt. 11,13.

सहेतु (2. स + हेतु) adj. *mit einem Grunde versehen, begründet* Kāvjād. 2,186; vgl. 188.

सहेतुक (von 2. स + हेतु) adj. *nebst dem Grunde* Rāja-Tar. 5,54. *einen Grund habend* Buddhac. 100. *begründet* Comm. zu Kirān. 2,136.

सहेल und °क m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 7,1370. fg.

सहैकस्थान (1. सह + एक-स्थान) n. *das Alleinstehen mit Jmd* Jāān. 2,284.

सहोक्ति (1. सह + उ°) f. 1) *das Zusammensprechen, Sprechen zu gleicher Zeit* Vop. 23,41. — 2) in der Rhetorik *ein Gleichniss in Form der Vergesellschaftung* Sāh. D. 701. Kuval. 60,*a* (75,*b*). Prāṇāp. 85, *b*,2. Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,19. Beispiel Spr. (II) 2306. — Vgl. विनोक्ति.

सहोढा adj. *durch Gewalt erzeugt* (vgl. सहसः सूनुः): Agni ṚV. 1,88, 1. *kraftgeboren:* Indra 10,103,5.

सहोढ्य m. = पर्योढ्य Hir. 41. Colebr. Misc. Ess. 1,115.

सकोढ (f. सक् + ऊढ von वह्) adj. (f. या) 1) *das geraubte Gut bei sich habend:* ein Dieb M. 9,270. — 2) f. *zu gleicher Zeit verheirathet:* परिचारिका R. Gorr. 2,6,1. — 3) *mit in die Ehe gebracht*, d. h. *von einem andern Vater erzeugt aber erst nach Schliessung der Ehe geboren:* ein Sohn Baudh. bei Kull. zu M. 9,158. M. 9,160. 173. MBh. 1,1673. 5. 4728. °ज dass. Jiân. 2,131.

सकोत्थ (f. सक् + उ°) 1) adj. = सकुल Trik. 3,3,88. Med. g. 28. *angeboren:* सतिशया: H. 58. — 2) m. *ein leiblicher Bruder* (Comm.), als Bez. *des 3ten astrologischen Hauses* Varâh. Bṛh. 1,13. — Vgl. सकुत्थ.

सकोत्पत्ति (f. सक् + उ°) f. *gleichzeitige Entstehung* MBh. 12,377.

सकोदक (f. सक् + उ°) adj. = समानोदक Mân. P. 30,20.

सकोदर्य (f. सक् + उ°) adj. *sammt dem folgenden Worte* RV. Prât. 2,27.

सकोदर (f. सक् + उदर) adj. *demselben Mutterleibe entsprossen, leiblich;* m. *ein leiblicher Bruder*, f. *eine l. Schwester* H. 550. M. 9,192. MBh. 3,1963. Spr. (II) 1406. 6980. 7853. Prân. 11,12. Rîga-Tar. 1,261. 6,351. पीयूषसकोदरै: — ज्योत्स्नाबले: so v. a. *dem Nektar ähnlich wie ein leiblicher Bruder* Z. d. d. m. G. 27,68. मायत्तनाभ्युन्नमकोदरलोचना Verz. d. Oxf. H. 130,b,30. Kathâs. 103,203. f. या MBh. 1,7922. 9,258. R. 6. 10,7. Kull. zu M. 2,30. ई Spr. (II) 1068. — सकोदरम् Pañkat. 1,2,10 fehlerhaft für सकादरम्. Vgl. श्री°.

सकोदा adj. *Macht verleihend:* Indra RV. 1,171,5. 174,1. 10. 2,34, 8. 47,5. 6,17,12. 19,11.

सकोपध्म adj. *nebst dem vorangehenden Laute* RV. Prât. 1,17 (27).

सकोपलम्भ (f. सक् + उप°) m. *gleichzeitige Wahrnehmung* Sarvadarçanas. 16,18. 17,13.

सकोर adj. = साधु Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,66.

सकोरु (f. सक् + ऊरु) adj. (f. °रू) P. 4,1,70, Vârtt. Vop. 4,30. — Vgl. संक्लिकोरु.

सकोर्वधु adj. *der Macht froh:* Agni RV. 1,36,2. 3,10,9.

सकोषित (f. सक् + उ° von 3. वस्) adj. *der mit Jmd zusammen gewohnt hat* MBh. 5,2680. Harîv. 1256. 4063. R. 2,7,1.

सकोसम् (f. सक् + ओ°) adj. *mit Gewalt begabt* VS. 10,4. 36,1.

सकौत्र s. u. कौत्र.

सक्त MBh. 2,1029 fehlerhaft für सुक्त, wie die ed. Bomb. liest.

सक्त (von 1. सक्) 1) adj. *zu ertragen, auszuhalten, dem man zu widerstehen vermag* P. 3,1,99. Vop. 26,12. H. an. 2,385. Med. j. 38. Harîv. 7328. 12120. Spr. (II) 2712. 5946. Mân. P. 106,36. युद्ध° R. Gorr. 2,8,11 wohl fehlerhaft für युद्धासक्त. Gewöhnlich स° (s. auch bes.) MBh. 5,3271. 14,1718. R. Gorr. 1,30,6. 2,30,14. 3,28,21. 4,28,20. 7,84,18. Rag. 4,58 Kumâras. 5,54. Spr. (II) 622. 5946. Varâh. Bṛh. S. 19,2. Uttarar. 18,7 (24,13). Kathâs. 33,24. Bhâg. P. 2,7,7. 3,13,21. 19,31. 28,27. 4,5,11. 19,27. 8,3,28. 7,19. Bhaṭṭ. 1,26. कर्मन् so v. a. *nicht zu vollbringen, unmöglich* MBh. 3,12285. fg. — 2) m. N. pr. a) eines Berges und des angrenzenden Gebietes Trik. 2,3,4. 3,3,222. H. an. Med. LIA. 1,159. 161. MBh. 3,16259. 5,883. 14,1173. R. 6,2,24. Kâraka 1,27. Suçr. 1,41,6. 172,6. 2,169,1. Vâgbh. 1,3,12. Rag. 4,52. fg. Kir. 18,5. Varâh. Bṛh. S. 69,30. Gol. Bhuvanak. 42. VP. 174. Mân. P. 67,10: 27, v. l. 34. Bhâg. P. 5,19,16. 7,13,12. Muir, ST. 2,59. Verz. d. B. H. 93 (56). No. 533 (सक्तात्मजा d. i. कावेरी). Verz. d. Oxf. H. 16,b,5. 39,b,16. 82,b,34. 84,b,32. 340,a,19. Verz. d. Cambr. H. 53. Wilson, Sel. Works 2,353. — b) eines Sohnes des Vivasvant MBh. 1,43 (nach einer von Nîlak. erwähnten Lesart st. सक्ष der Ausgg.). — 3) n. a) *Hilfe, Beistand* MBh. 6,1622. वसुंधराया: सक्तार्थम् Harîv. 3057. रामस्य च मया सक्ते वर्तितव्यम् R. 5,36,48. सक्तां कर् MBh. 3. 16011. 16014. 5,816. 1928. 5271. 7,476. 12,13324. Harîv. 2360. R. 5. 7,70. 91,24. 92,9. 10. 108,18. दा MBh. 3,814. 6,3987. 9,3819. fg. R. 5,7,10. °कर्मन् MBh. 1,8195. Die Bomb. Ausg. des MBh. (mit Ausnahme einer Stelle) und die neuere Ausg. des Harîv. überall साक्ष्य. — b) *Gesundheit* Trik. 3,3,322. H. 474. H. an. Med. — साम्य und सुमधुर Çârdûn. im ÇKDn. — सक्ष Pañkat. II,200 fehlerhaft für सत्त्व (so ed. Bomb.). Vgl. नृसक्ष und साक्ष.

सक्तांस् adj. = सकोसम् RV. 1,120,4. 10,93,1. 115,6.

सक्तता f. nom. abstr. von सक्त 1): मनसिकृत: सक्तता पक्वलेव Mâlav. 39.

सक्तु (von 1. सक्) adj. *gewaltig* RV. 6,18,12.

सक्त्र und सक्त्रण s. सत्क्र und सत्क्रण.

सक्त्वन् (von 1. सक्) adj. *gewaltig* Çat. Br. 13,5,4,22.

1. सा s. 1. सन्.

2. सा und षा (= 1. सन्) adj. am Ende eines comp. P. 3,2,67. 6,4,11. 8,3,107. Vop. 26,66. fg. Vgl. अप्सा, अश्व°, ऊरु°, उर्वरा°, क्षेत्रा°, गो°, धन°, नृ°, पशु°, वाज°, शत°, सदा°. सहस्र°, सु°, स्वर्षा.

3. सा, स्यति Dhâtup. 26,33 (अवसर्गणे, नाशे Vop.). P. 7,3,74. Vop. 11,3. स्यन्ध, स्यधम्, असात् und असासात् P. 2,4,73. Vop. 8,87. 11,3. सात्, असुस्, (वि) षाक्; समौ: सेषात् P. 6,4,67. Vop. 8,85. 11,3. absol. °साय (auch °स्य) P. 6,4,69. infin. °सितुम्, ved. (अव) से: pass. सीयते P. 6,4,66. partic. सित P. 7,4,40. Vop. 26,119. (वि) सीमकि RV. 1,25, 3: dagegen ist सोमकै TS. 4,3,13,2 wohl = सोम् ईमकि इमके. Unregelmässige epische Formen s. unter अध्यव u. s. w. साधि MBh. 7. 8128 fehlerhaft für प्राधि, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. सि. — caus. सासयति P. 7,3,37. Vop. 18,6. — intens. सेसीयते P. 6,4,66. Vop. 20,1.

— अभि, °प्यति, °प्यत् Schol. zu P. 8,3,65. 83. 1) *fesseln:* तेष्वा सर्वेभि ध्यामि पाशै: AV. 4,16,2. — 2) *zu Grunde richten:* अभिप्यत: — आत्मन: Bhaṭṭ. 9,71.

— अव 1) *abspannen* (die Zugthiere), *einkehren:* अश्वान् RV. 1,104,1. 4,16,2. 6,40,1. 74,3. 10,61,20. अवसा (अवसे Padap.) या विमोचनात् 3,33,20. अवसात् TBr. 2,3,1,3. Çat. Br. 5,3,1,3. Âçv. Br. 1,12. TS. 2,5, 6,1. *heimkehren* Âçv. Gṛhj. 4,1,4. — 2) *losbinden:* अव वरुणो न: सात् RV. 7,28,4. TS. 5,2,9,1. Çat. Br. 5,7,4,3. — 3) *aufhören, aufgeben eine Arbeit; absetzen, schliessen:* ते चिद्वासुन्नवसातमापु: RV. 1,179,2. पक्व: पुरोडाश: ÇBrâhm. Ça. 7,9,2. 6,3,11. 1,1,23. 5,11,4. RV. Prât. 10,4. 11,12. 18,22. Bhâg. P. 7,9,30. विधिमवसाय (bei Strabon °साप्य) *beendigt Abend* Rag. ed. Calc. 5,76. शक्तिकर्मावसास्यति so v. a. *ist zu Ende* Kir. 16,17. — 4) *Halt machen bei, ankommen; sich aufhalten, verweilen:* पृथिव्यामवै स्पाशं विमुञ्चत: AV. 9,2,14. पुरस्तात्प्रत्यञ्च: शूद्रा अवस्यन्ति *stellen sich auf* TBr. 3,3,94,1. स्वाना मध्ये उवसाय यजेत 2,5,9. — 5) *(stehen bleiben bei Etwas) sich entscheiden für, bestimmen, namentlich einen Ort, Opfer- oder Wohnplatz:* इरिणे TS. 2,3,4,3. अवस्यति क्षेत्र-

यद्गार्हपत्यं चिनोति Çat. Br. 7, 1, 4, 1. 3, 2, 7. अवं स्य वरं या पृथिव्याः TS. 1, 2, 2, 3. — 6) *bestehen auf Etwas:* किमिदं क्लवसीयते MBh. 12, 554. अवसीयसे ed. Bomb., welches Nîlak. durch अध्यवस्यसि erklärt. — 7) *entscheiden* (als Richter): अवसेयाम (= ज्ञास्यसि Comm.) कार्याणि धर्मेण पुरुवासिनाम् Bhatt. 19, 28. — 8) *Gewissheit erlangen über*, pass. °सीयते Bhâg. P. 10, 70, 28. 11, 26, 19. Sarvadarçanas 63, 19. 98, 9. — 9) *gelangen zu, erreichen:* यत्कामस्तदवस्यति Bhâg. P. 11, 15, 3. यत्र कामो ऽवसीयते 17. — 10) partic. अवसित (s. auch bes., auch in den Nachträgen). a) *der abgespannt hat* ṚV. 4, 25, 8. — b) *Halt gemacht habend, an einem Orte verweilend:* इन्द्रो यातो ऽवसितस्य राजा ṚV. 1, 32, 15. — c) *auf den Platz gebracht:* Agni TS. 5, 2, 2, 4. — d) *abgesetzt, geschlossen:* अवसिते ऽवसिते दशसु पदेषु Ait. Br. 3, 28. *abgeschlossen, beendigt:* कर्मन् MBh. 1, 4678. कार्य Harîv. 4242 (गतादित die neuere Ausg.). 11014. Râgat. 11, 37. Mâlav. 23, 22. Pañkat. 202, 18. Bhâg. P. 4, 21, 32. 5, 7, 8. दिन Kathâs. 86, 133. 111, 50. 119, 150. ज्ञातोन्मावसितान्स्वर्थान् *mit* म *endigend* Comm. zu AV. Prât. 1, 9. *in Pausa stehend* TS. Prât. 21, 3. so v. a. *aufgegangen in* (loc.) Bhâg. P. 3, 28, 26. अवसितत्व n. *das Beseitigtsein* Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 182. — e) *der von Etwas abgelassen hat, der Etwas aufgegeben hat;* die Ergänzung im abl. oder im comp. vorangehend: कामात् MBh. 12, 7886. प्रत्यवसित Jâtâ. 2, 183. — f) *festgesetzt, bestimmt:* त्वयैव लोके ऽवसिताश मेतत्वः Bhâg. P. 4, 6, 44. अवसकाल 2, 7, 29. — g) *worüber man Gewissheit erlangt hat* Bhâg. P. 2, 3, 2. 3, 6, 38. 28, 32. 31, 13. 10, 14, 2. अनवसित 5, 3, 14. — h) *entschlossen zu Etwas* (loc.) Bhâg. P. 3, 14, 36. 3, 1, 18. — Vgl. अनवस्यत्, अवसा fg., अवसान, अवसाय fgg. und दुरवसित. — caus. 1) *anhalten* —, *Platz oder Aufstellung nehmen lassen:* देवयजन एवैनं तदवसाययति Ait. Br. 1, 13. अवसाय्य TS. 3, 4, 8, 7. Çat. Br. 6, 7, 4, 15. — 2) *beendigen:* विधिमवसाय्य (°साय ed. Calc.) Râgat. 8, 76. *aufhören machen:* घोत्सुक्यमात्रम् Spr. (II) 1493, v. l. — 3) *Gewissheit erlangen lassen über sich, sich deutlich offenbaren:* अवसाययितुं तमाः मुखं न विधेषेषु विशेषसंपदः Kir. 2, 29.

— अध्यव 1) *aufhören, absetzen, schliessen* ṚV. Prât. 11, 18. — 2) *sich entscheiden für* (acc.); *bestimmen den Ort von Etwas, auswählen:* शालाम् Çat. Br. 3, 1, 2, 11. 7, 1, 1, 1. यज्ञवास्तु Kauç. 137. देवयजनम् Ait. Br. 7, 20. TS. 5, 1, 5, 1. Çat. Br. 10, 2, 2, 1. Pañkav. Br. 24, 18, 5. तेभ्यम् *vod.* Citat in Kâç. zu P. 5, 4, 20. *wählen* überh. Kâṭy. Çr. 22, 3, 12. Çiṃk. Çr. 3, 10, 12. — 3) *sich zur That entschliessen, einen bestimmten Willen an den Tag legen, Etwas beschliessen, wagen, unternehmen:* अष्टमे मासे बुद्ध्यध्यवस्यति ein Fötus Nir. 14, 6. सर्वो हि लोको विचार्याध्यवस्यति Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 91. इति कृत्वाध्यवस्य (absol.) च R. 7, 9, 47. एवमध्यवसाय Bhâg. P. 4, 14, 13. die Ergänzung ein acc.: नाध्यवास्यद्वदा कश्चित्मागरस्य लङ्घनम् MBh. 3, 16254. °सेतुं 7, 9140. °सायीत (°सीयीत ed. Bomb.) 12, 7772. अध्यवास्यत med. R. Gorr. 2, 15, 36. °स्यति 3, 7, 18. मा स्म नाथ मत्कृते ऽध्यवस्यः साहसम् Daçak. 143, 6. वक्तुं सुकरमिदमध्यवसितुं दुष्करम् Venis. 48, 10. Bhâg. P. 2, 2, 34. ein loc.: कार्येषु Spr. (II) 7136. ein infin. R. Gorr. 2, 29, 27. °मसौ Çiç. 9, 76. Bhatt. 7, 91. — 4) *voraussetzen, für wahrscheinlich halten:* नाध्यवस्यंस्तयोर्जयम् MBh. 9, 854. भूतमेवाध्यवस्यन्तो न स्म प्रव्याहरन्भयात् *voraussetzend* so v. a. *halten für* 10, 344. *fälschlich voraussetzen* Siṃh. D. 286, 7. — 5) pass. *sich mit Gewissheit ergeben* Bhâg. P. 2, 10, 7. Comm. zu TS. Prât. 2, 7. Pârâçar. 9, 6, 3. act. dass.: इयं निष्ठा बहुविधा प्रसया त्वध्यवस्यति MBh. 14, 862. — 6) *nachsinnen:* प्रथमपरिगृहीतं स्यात्र वेत्यध्यवस्यन् Çiç. 115, v. l. — 7) partic. °सित a) *beendigt* Çiç. Ça. 1, 12. — b) *beschlossen, unternommen:* दुष्करं व्रतम् Hit. 19, 21. — c) *entschlossen:* एको ऽध्यवसितः को ऽपि साहसी पुरुषो ऽब्रवीत् Râga-Tar. 6, 50. — d) *für gewiss erkannt, zur Gewissheit erhoben:* °सितं (impers.) मया Bhâg. P. 6, 18, 72. °ता nom. abstr. Siṃh. D. 109, 20. — Bhâg. P. 1, 19, 17 ist अध्यवसायगुप्तः zu schreiben. Vgl. अध्यवसाय u. s. w. (in den Nachträgen).

— अन्वव 1) *sich halten* —, *sich anschliessen an* (acc.): पूर्वम् TBr. 1, 4, 4, 7. देवान् 10, 3. तमेतमात्मानमेव आत्मानो ऽन्ववस्यत्ते (°सि Comm.) यथा मेष्टिं त्वाः Kaush. Up. 4, 20. — 2) *streben nach, begehren, Verlangen tragen nach:* अन्ये वै तस्य क्षितमन्ववस्यसि Çat. Br. 5, 7, 2, 5. तृणोदकम् Pañkav. Br. 11, 3, 20. नात्यसमन्ववस्येद्दृत्तिं प्राप्य विद्वमेत् Âpast. 1, 18, 8. 21, 3. — 3) partic. °सित *ergriffen von:* अनन्ववसितं पाप्मना Çiṃk. Br. 11, 1. — Vgl. अन्ववसायिन् *sich haltend, sich anschliessend an* (gen.): TS. 2, 1, 2, 3. Çat. Br. 11, 4, 2, 13.

— उद्व *aufbrechen* (namentlich vom Ort des Opfers), *sich aufmachen, den Schluss machen* AV. 9, 6, 54. Ait. Br. 7, 24. 8, 5. Çat. Br. 2, 5, 2, 48. 6, 2, 19. उदङुद्वसाय 12, 4, 3, 10. Kâṭy. Çr. 5, 3, 1. 7, 8. 19, 5, 21. उद्वस्य absol. Bhâg. P. 4, 7, 56. *den Ort verändern, sich anderswohin begeben:* प्राच्यां दिशि Âçv. Gṛhy. 4, 1, 1. — Vgl. उद्वसान *den Schluss bildend:* कर्मन् Bhâg. P. 4, 7, 56. उद्वसानीय fg.

— अभ्युद्व *sich aufmachen zu:* वसतम्, ऊर्जम् Ait. Br. 4, 26.

— उपाव *sich bei Jmd* (acc.) *niederlassen:* पृथिवीम् TS. 2, 6, 9, 6. °सित *in der Nähe von Jmd* (acc.) *ansässig geworden* Çat. Br. 3, 9, 2, 5. नदीम् Âçv. Gṛhy. 1, 14, 7 (उपाव° zu lesen). — Vgl. उपावसायिन् und सूपावसान.

— निरव, partic. °सित *aus der Gemeinschaft ausgestossen* P. 2, 4, 10. भैक्षे पात्रं संस्कारेणापि न शुध्यति तेन निरवसितः Schol. निरवसितं बहिष्करणम् Kâç. — caus. *abfertigen* so v. a. *ausstatten mit* (instr.), *befriedigen:* पुत्रं धनेन TS. 2, 3, 3, 7. 4, 6, 9, 2. TBr. 1, 5, 2, 1.

— पर्यव *das Endresultat sein* Kusum. 6, 3. *seinen Abschluss finden* —, *schliesslich aufgehen in, hinauslaufen auf* (loc.) Bâlar. 47. Siṃh. D. 101, 7. 9. 122, 16. Kull. zu M. 5, 7. प्रति st. des loc. Naish. 6, 23. — partic. °सित 1) nach dem Comm. *entfernter* (*nicht ganz nahe*) *wohnend* Çat. Br. 3, 9, 3, 8. — 2) *übergesiedelt:* लोकान्तरम् Uttarâr. 127, 11. fg. (172, 4. 5). — 3) *vollkommen abgeschlossen,* — *zu Ende geführt, zum Abschluss gekommen:* आरब्धान्येव कर्माणि सुपर्यवसितानि च । यस्य राज्ञः प्रदृश्यन्ते MBh. 12, 2078. Spr. (II) 3691. यस्य पर्यवसितं जीवितप्रयोजनं रामस्य Uttarâr. 22, 5 (29, 9. 10). Mâlatîm. 78, 3. 4. एवं पर्यवसितप्रयोजने नो माधवं प्रति प्रत्याशा 149, 6. वाक्यार्थ so v. a. *endgültig, definitiv* Siṃh. D. 303, 11. Wilson, Sitzungsber. S. 134. Comm. zu Kap. 1, 62. °पति adj. *vollkommen vertraut mit* (loc.) Bhâg. P. 5, 9, 8. सुपर्यवसितार्थ adj. dass. MBh. 12, 7887. — Vgl. पर्यवसान, °सायिन्.

— प्राव *den Wohnsitz nehmen unter* (acc.): राज्ञा विशम् Çat. Br. 1, 3, 2, 14.

— प्रत्यव am *Orte bleiben* Çat. Br. 3,6,2,29. 12,4,4,1. गृहेषु 13,6,2,20. — partic. °सित 1) प्रत्यवसिता: *fahren zur Hölle* MBh. 13,1639. = धाङ्क्षपतिता: *gestiegen und wieder gefallen* Nilak. — 2) *gegessen* AK. 3,2,60. (einen Tadel enthaltend) etwa *der sich voll gegessen hat* P. 6,2,195, Schol. Vgl. प्रत्यवसान.

— व्यव 1) *sich trennen, in Zwist gerathen:* व्यवस्येतां पितापुत्रौ TBr. 3,9,2,2. Çat. Br. 13,2,4,1. — 2) *trennen, einen Absatz machen* (Gegens. समू घस्) ṚV. Pair. 15,12. 18,29. — 3) *sich entschliessen, sich entscheiden* TBr. 1,8,4,2. Çiñkh. Çr. 1,4,22. यो विविच्य धिया धीरो व्यवस्यति स बुद्धिमान् MBh. 1,6242. विदित्वा °मिष्यामि 6118. Verz. d. Oxf. H. 262,a,3 v. u. °स्यते so v. a. °सीयते pass. impers. MBh. 14,726. die Ergänzung im acc. MBh. 4,1270. कस्तेतद्व्यवसेत् 7,9140 (nach der Lesart der ed. Bomb.). मनसा चिन्तितानर्थान्बुद्धा चैव व्यवस्यति 14,1193. सर्वं वा यदि वा कामं पापम् R. 3,56,18. किं °स्यति so v. a. *vorhaben* Sin. D. 70,18. Bulc. P. 4,26,17. आत्मेच्छा °सीयताम् Spr. (II) 6275. im dat.: प्रणिपाताय धीमतः MBh. 5,54. im loc.: तदाज्ञापय कः कस्मिन्कुतो वापि °स्यतु so v. a. *was und wo Jmd Etwas unternehmen soll* R. 4,28,27. mit सर्वम् zu: भित्तार्थे °सीयताम् *man entschliesse sich zu* Spr. (II) 3328. mit infin. *entschlossen —, Willens sein zu* MBh. 1,4020. 5,52. R. Gorr. 2,15,35. 20,13. 27,26. 84,18. 4,33,18. Çiç. 17. 84. Mlav. P. 61,17. °सेयम् MBh. 1,4163. °सामि 3,16800. — 4) *eine entschiedene Meinung gewinnen oder haben, sich überzeugen, überzeugt sein, erkennen:* व्यवस्य सर्वमस्तीति नास्तिकां भावमुत्सृज्य MBh. 3,1200. 5,6024. 13,1386. अव्यवस्यन् Çiç. 105, v. l. यथा मे गौतमः प्राह् ततो न व्यवसाम्यहम् MBh. 3,12685. इति °स्य Bhâg. P. 10,12,16. °स्यते 3,15. die Ergänzung im acc.: वसत्तम् TBr. 1,8,4,1. एको ऽपि वेदविद्धर्मं यं °स्येत् M. 12,113. Bhâg. P. 4,12,32. भारं हि रथकारस्य न °सति (°स्यति ed. Bomb.) पण्डिताः so v. a. *haben keine richtige Vorstellung von* MBh. 4,1534. नास्तीत्येवं व्यवस्यन्ति सत्यं संशयमेव च ॥ तद्युक्तं व्यवस्यन्ति *von der Wahrheit und dem Zweifel haben sie die Ansicht u. s. w.* 13,7536. fg. यद्येनां दुष्कृतां पूजां शिशुपालो °स्यति so v. a. *halten für* 2,1400. केचिदेनं °स्यन्ति पितामहसुतम् 9,2716. 14,604. R. 2,12,71. Sûçr. 1,95,7. 2,275,1. 312,9. 369,16. 466,19. Bhâg. P. 1,9,17. — 5) *Betrachtungen bei sich anstellen, hin und her überlegen:* इति °स्य MBh. 1,3936. इदं नूनं प्रथमपरिगृहीतं स्यान्न वेति °स्यन् Çiç. 115. — 6) *im Stande sein, vermögen;* mit infin. Mucch. 23. — 7) partic. °सित a) *zu Ende gegangen:* दिन Kathâs. 9,90. — b) *beschlossen, unternommen* Hariv. 9239. R. 2,23,10. 78,6. 3,13,7. 44,22. Mrcch. 112. Spr. (II) 284. 326. 1602. Pañc. 70,3. impers.: दिष्ट्या °सितम् Bhâg. P. 10,73,19. तेनापि ग्रीवोत्सर्गाय °सितम् Pañc. 89,2. °सितं चित्तेन गन्तुं पुरः Spr. (II) 4288. subst. n. *Beschluss, Entschluss, Vorhaben, Unternehmung* Mṛicch. 59,5. Spr. (II) 5203 (pl.). Bhâg. P. 1,13,35. 3,22,22. 4,9,19. 12,22. 6,18,70. 10,71,18. एवं कृतव्यवसितः 5,10,11. नेह युद्धेन वा शक्यं किंचिद्व्यवसितेन वा so v. a. *muthiger Entschluss* R. 5,9,27. — c) *der einen festen Entschluss gefasst hat, entschlossen, den festen Willen habend* Bhâg. 9,30. R. 4,26,13 (यु°). Vikram. 57,2. Milatîm. 21,10. Râjat. 2,93. इति Çiç. Ca. 63,16. Bhâg. P. 9,6,42. 9,48. एवं बुद्धा 9,3,1. 9,1, 21. 10,56,43. die Ergänzung im loc.: पितुर्निर्देशपालने R. 2,24,1. im dat.: राज्ञः प्रव्रजिते Bhâg. P. 4,13,35. im infin. Bhâg. 1,43. R. 1,52,22 (53,21 Gorr.). 70,13. Mṛicch. 1,11. Çiç. 136. Vikram. 125. Mâlav. 22. Kathâs. 15,86. Bhâg. P. 4,14,34. Verz. d. Oxf. H. 145,b,26. °मति mit infin. 283,a,13. — d) *wovon man sich überzeugt hat, erkannt* Bhâg. P. 3,1,7. 11,2,11. सम्यग्व्यवसितं (impers.) भवता 10,72,7. — e) *zu einer Ueberzeugung gelangt:* इति Bhâg. P. 6,5,21. इति बुद्धा 4,17,13. 10,81, 38. सम्यग्व्यवसिता ते बुद्धिः *hat das Richtige getroffen* 1,15. एवं °सितमतिः 11,8,42. mit acc. so v. a. *für das Wahre erkannt habend und dafür lebend:* दानं देवा व्यवसिता इममेव मकर्षणः MBh. 14,755. नानाव्यवसिताः सर्वे सर्पदेवर्षिदानवाः 756. — f) = प्रतारित Buddha. im ÇKDa. — Vgl. व्यवसाय, °सायिन्, °सिति. — caus. *entschlossen —, unternehmend machen:* यद्या नो व्यवसाययात् VS. 3,58. TS. 2,1,8,3. *Jmd Willens machen, veranlassen;* mit infin. Kir. 1,38.

— अनुव्यव *dahinterkommen, erkennen:* दुष्करं परमं ज्ञानं तर्केणानुव्यवस्यति MBh. 8,3457.

— संव्यव s. °स्य.

— समव 1) *sich für denselben Ort oder dieselbe Zeit entscheiden:* दीक्षिष्यमाणाः Çat. Br. 4,6,8,3. *sich entscheiden für* so v. a. *für richtig anerkennen:* धर्मे यं °स्येत् M. 7,13. — 2) *erreichen, gelangen zu:* °स्यति नास्य पारम् Bhâg. P. 2,7,41.

— नि, °व्यति, न्यषात् und न्यषासीत् Vop. 8,45. 11,3. partic. °षित P. 8,3,70.

— परिणि, °व्यति P. 8,4,17, Schol.

— प्रणि, °व्यति P. 8,4,17, Schol. Vop. 8,23. 45. 11,3.

— परि, °व्यति P. 8,3,65, Schol. partic. °षित P. 8,3,70. — Vgl. परिषय.

— प्र. partic. °सित 1) *huldigend, hingegeben, obliegend, besorgt um* AK. 3,1,9. H. 385. v. l. zu Halâj. 2,198. 209. mit instr. oder loc. P. 2, 3,44. 5,2,66. केशैः oder केशेषु Schol. उदयाद्यवर्गयोः Rudr. 8,23. — 2) *anhaltend, beständig:* क्षमित Bhatt. 10,6. — Vgl. प्रसित, प्रसिति, प्रसृत unter सृ mit प्र 6) *f*) und सि mit प्र.

— वि 1) *auflösen, ablösen; freigeben, strömen —, laufen lassen:* व्यन्धिम् ṚV. 9,97,18. 10,143,2. पाशान् AV. 8,121,1. VS. 12,65. TS. 3,5, 6,2. Çat. Br. 3,5,2,25. 5,4,4,20. धाराः ṚV. 1,85,5. तुरीयम् 142,10. प्रजाम् 2,3,9. 40,4. 5,85,8. वस्तिम् Kauç. 25. वि पाशान्मे मुञ्चते मनीषाम् *entfesseln* ṚV. 4,11,2. 9,95,5. वि सूर्यो अमतिं न भिये सात् 5,45,2. *öffnen:* पथः 8,5,9. अद्रिम् 5,45,1. दृतिं कर्षं विषितं (vgl. P. 8,3,70) न्यञ्चम् 83,7. ऊधः 10,30,11. AV. 7,18,1. *geöffnete* d. i. *zum Fang gelegte Schlinge* 4,16,6. — 2) *abzäumen, ausräumen:* शिप्रे ṚV. 1,101,10. partic. pass. Rosse ṚV. 3,33,1. 6,6,4. 12,5. विषितो धातृभिर्गभः 10,27, 14. आदित्य Lâṭ. 3,1,13; vgl. समयाविषित. *abgespannen* so v. a. *weich —, milde machen:* वि ते मनः सोमकृतं ṚV. 1,25,3. — Vgl. 1. विषाण (wo zu setzen ist: *das Ablassen* sc. einer Flüssigkeit) und °यायिन्.

— सं, सं स्यामि AV. 3,19,2. 5 fehlerhaft für सं श्यामि.

4. सा f. pron. s. unter 1. स.

5. सा f. = लक्ष्मी Taitt. 1,1,41. H. 226. — Vgl. 4. स.

सांयमन (von संयमन) adj. *zur Selbstbeherrschung in Beziehung stehend:* अग्निहोत्र Kaush. Up. 2,5, v. l.

सांयमनि (wie oben) m. patron. Çaṇa's MBh. 6,3680. 3687. 3696. 3700.

सांयात्रि gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. Davon सांयात्रिक adj. (f. आ und ई) ebend.

सांयात्रिक (von सांयात्रा) m. *ein zu Schiffe Reisender, Seefahrer* AK. 1, 2,8,12. H. 875. Halâj. 3,32. Hariv. 3282 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Çiç. 3,76. Spr. (II) 2636. 4051. Kathâs. 80,20 (सांया° gedr.). Kiçkn. 7,120 (nach Avvaschr.). Verz. d. Oxf. H. 151,a,2. 3. 5. Daçak. 149,10.

सांयुगीन adj. = संयुगे साधुः gaṇa प्रतिजनादि zu P. 4,4,99. *kriegerisch:* विक्रम Râgân. 11,30. *tapfer in der Schlacht* AK. 2,8,2,15. H. 793. Kumârâs. 2,57. Vikrâm. 87,2. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 26, Çl. 13.

सांयुग्य Râǵa-Tar. 3,279 fehlerhaft für सायुग्य.

सांयोगिक adj. = संयोगाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101. °योगिक *in Verbindung stehend:* घर्वा: Nir. 1,2.

सारर्थ्य n. nom. abstr. von सारथि gaṇa पुरोडाशादि zu P. 5,1,124.

सारविर्य (von सारविन् und dieses von 1. रू mit सम्) n. *allgemeines Geschrei* u. s. w. Schol. zu P. 3,3,44. 5,4,15. Vop. 26,176. Milaṭ. 77,12.

सांवत्सर (von संवत्सर) 1) adj. (f. ई) *jährig* gaṇa सैन्धवेलादि zu P. 4,3,16. द्रगयनादि zu 73. षाण्मास्य: सांवत्सरो वा Âçv. Ça. 3,8,3. व्रत 14,22. Çiñkh. Ça. 6,1,34. Baudh. P. 5,18,53. 2,4,29. °दीक्षा (सांव° die neuere Ausg.) Hariv. 7995. भृति *Jahreslohn* MBh. 12,2292. त्रि° Çiñkh. Ça. 13,28,4. — 2) m. *ein Kalenderkundiger, Astrolog* AK. 2,8,4,14. H. 482. Halâj. 2,248. Verz. d. Cambr. H. 33. Weber, Ǵjot. 110, N. 1. Nax. 2,285. MBh. 5,1985. 12,2232 (गर्ग). 2242. 13,6209. Kâm. Nitis. 4,23. Spr. (II) 6285. P. 1,3,50, Schol. Vaǵas. Bân. S. 2, Anf. 10. fgg. 12,15. 43,30. 53,1. 98. °पाठिन् 2,13 (aus Garga). °सूत्र 2, Anf. — Vgl. अति°.

सांवत्सरक (wie oben) 1) adj. *jährig, nach einem Jahre zahlbar:* ऋण P. 4,3,50. — 2) m. *Astrolog:* घ° adj. Vaǵas. Bân. S. 2,12, v. l.

सांवत्सररथ m. *die Sonne* H. ç. 7.

सांवत्सरिक (von संवत्सर) 1) adj. *jährig* P. 4,3,11, Schol. रेतांसि Âçv. Çr. 4,22. 6.30. Çiñkh. Çr. 25,13. 14. Pân. Gaṇ. 2, 1. बलि *Jahresabgabe* M. 7,80. ऋण *nach einem Jahre zahlbar* P. 4,3,50. *ein Jahr oder Jahre lang dauernd* Âçv. Çr. 2,14,2. Liṭ. 3,2,14. 10,1,6. 5,20. Maç. 9,10 in Verz. d. B. H. 74. *das ganze Jahr hindurchgehend:* निषद Kull. zu M. 6,23. *jährlich:* °कर्मन् Verz. d. B. H. No. 321 (संव° gedr.). श्राद्ध Verz. d. Oxf. H. 87,a,26. Verz. d. Tüb. H. 20. *zu einem Jahr-Opfer gehörig* Liṭ. 10,5,4. am Ende eines comp. nach einem Zahlwort P. 5, 1,87. 7,3,15. — 2) m. *Astrolog* Pârâç. 136,21. घ° adj. (असंवत्सरक v. l.) Vaǵas. Bân. S. 2,12.

सांवत्सरीण (von सांवत्सर) adj.: सिक्थी Ind. St. 3,459,4.

सांवरण (von संवरण) m. patron. eines Manu ṚV. Anukr. zu 9,101.

सांवरणि m. desgl. Vâlakh. 3,1.

सांवर्गजित (von सांवर्गजित्) m. patron. der Gotama (pl.) Liṭ. 4,7,15. Nir. 3,10.

सांवर्त (von संवर्त) n. N. eines Sâman Pârâç. Br. 14,12,6. 7. Ind. St. 3,243,a. इन्द्रस्य desgl. 209,a.

सांवर्तक (von संवर्तक = संवर्त) adj. *beim Untergang der Welt erscheinend:* Feuer R. ed. Bomb. 3,65,1. Baudh. P. 1,7,21. 8,10,49. 18,25,2. 11,3,11. Sonne 12,4,3. Dürre u. s. w. Comm. zu 3,24,46. — Vgl. सांवर्तक.

सांवक्त्र adj. von संवक्तृ (= संवोढृ) P. 4,3,120, Vârtt. 4.

सांवादिक (von संवाद) m. *ein Dialectiker* नैयायिक Ǵaṭâdh. im ÇKDa.

सांवाद्य n. nom. abstr. von संवादिन् gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

सांवाशिन (von संवाशिन् und dieses von वाश् mit सम्) n. *das Zusammenblöken* (der Kühe und Kälber) Kâç. Ça. 12,3,12.

सांवासिक adj. = संवासाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101.

सांवास्यक n. = संवास *das Zusammenwohnen, Zusammenleben* MBh. 12,4967.

सांवाहिक adj. (f. आ und ई) gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116 und gaṇa गुडादि zu 4,102.

सांवित्तिक (von संवित्ति) adj. *auf einer* (blossen) *Empfindung beruhend* so v. a. *subjectiv* (Gegens. पारमार्थिक) Comm. zu Kap. 1,15. Vgl. सांवृत्तिक.

सांविद्य n. = संविद् *Einverständniss* TS. 6,3,3,1. Pârâç. Br. 3,2,6.

सांवृत्तिक adj. = सांवित्तिक und vielleicht nur fehlerhaft Nîlak. 71.

सांवेशनिक adj. = संवेशनाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101.

सांवेश्य n. nom. abstr. von संवेशिन् gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

सांवेषिक adj. = संवेषाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101.

सांवेद्य (von संवेदिन् und dieses von 2. विद् mit सम्) n. *das Sichzusammenfinden; Vereinigung:* नाड्योः Kaṭh. 18.

सांव्यवहारिक (von सांव्यवहार) adj. (f. ई) *im Verkehr üblich, allgemein verständlich:* संज्ञा Comm. zu Liṭ. 1,5,4 (सांव्य° gedr.). zu Âçv. Çr. 1,9,3.

सांशयिक (von संशय) adj. (f. ई. P. 5,1,73. 1) *zweifelhaft* so v. a. *worüber ein Zweifel obwaltet, unsicher* Nir. 7,9. नौ Âpast. 1,32,27. वहि °कं कुर्यात् Spr. (II) 6817, v. l. पत्ते °कं हृदि Mârk. P. 10,44. वरं °कामिष्काद्संशयिकः कार्षापणः Verz. d. Oxf. H. 216,a,41. fg. — 2) *zweifelhaft* so v. a. *zweifelnd, skeptisch* AK. 3,1,5. H. 445, Schol.

सांशयिकत्व n. nom. abstr. zu सांशयिक 1) Verz. d. Oxf. H. 216,a,40. Sarvadarçanas. 133,7.

सांशित्य m. patron. von संशित gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

सांस MBh. 6,64 fehlerhaft für सांम, wie die ed. Bomb. liest.

सांसर्गविद्य adj. = संसर्गविद्यामधीते वेद वा Kiç. zu P. 4,2,60.

सांसर्गिक (von संसर्ग) adj. (f. ई) *durch Berührung —, durch Verkehr entstehend, — sich bildend:* दोष Baudh. P. 5,10,3. धी Kâm. Nitis. 18,33.

सांसारिक (von संसार) adj. *mit dem Kreislauf des Lebens —, mit dem weltlichen Dasein in Verbindung stehend, darauf beruhend* u. s. w. Çârîr. 1,3. Uttarar. 34,10 (45,12). Çâṅk. zu Bân. Âr. Up. S. 247. Baudh. P. 3,31,15. Sarvadarçanas. 49,3.

सांसिद्धिक (von संसिद्धि) adj. (f. ई) *ursprünglich, naturgemäss, natürlich* MBh. 3,1260 (eine von Nîlak. erwähnte Lesart). 11,52. 100. Kap. 3,20. 5,111. Sâṅkhjak. 43. Wilson, Sâṅkhjak. S. 142. Tarkas. 18. Baiśaiṣ. 39. 89. fg. 153.

सांसिद्ध्य (von संसिद्ध) n. *Vollkommenheit:* सांसिद्ध्यमस्मदीयास्तव दर्शनात् so v. a. *unsere Augen haben das höchste Ziel erreicht* Baudh. P. 3,21,13.

सांसृष्टिक (von संसृष्टि) adj. *in unmittelbarer Verbindung stehend, alsbald erfolgend, unmittelbar:* फल Schol. zu H. 162 (v. l. सांदृष्टिक).

सांस्कारिक (von संस्कार) adj. *zum Leichenbegängniss gehörig, — erforderlich:* गृह° (द्रव्य) R. Gorr. 2,93,2.

सांस्थानिक adj. = संस्थाने व्यवहरति P. 4,4,72.

सांस्फोयक adj. von संस्फोय gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

सांस्रविण n. = घृतस्य घृतं व्याप्य सम्यक्स्रावः ÇKDa. nach Uṇādiv. im Śabdakalpadr.

सांस्कृत्य (von संस्कृत) n. *Vereinigung, Verbindung* Kap. 3,32. Comm. zu Prān. 86,18.

सांस्कातिक (von संस्कात) n. (sc. भ, नक्षत्र) in der Nativitätslehre Bez. *des 16ten Nakshatra nach dem Nakshatra, in welchem der Mond bei der Geburt eines Kindes stand,* ÇKDa. Suppl. unter षण्णाडीचक्र.

सांकार MBn. 5,3540 fehlerhaft für संस्कार, wie die ed. Bomb. liest (ausserdem hier संभृतः st. संवृतः).

सांकित adj. (f. ई) *der Saṃhitā eigen, auf ihr beruhend* u. s. w. RV. Prāt. 14, 1. TS. Prāt. 9, 17. 20, 3. Comm. zu 14, 3. P. 4,3,67, Schol. उपनिषद् Ind. St. 1,75. 2,208. 3,386. Verz. d. B. H. No. 152. ख° TS. Prāt. 4,6. Comm. zu 7. 14,3.

सांकितिक = संकितामधीते वेद वा gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. 1) adj. = सांकित Comm. zu RV. Prāt. 3,4. zu AV. Prāt. 4,107. 114 (an den beiden letzten Stellen fälschlich सांहि°). — 2) m. *Verfasser einer astrologischen Saṃhitā* Ganit. Kilam. 30. Gol. Traipraçnav. 11. Verz. d. Cambr. H. 49.

सांक n. = 4. शाक 1) Uṇādis. zu Uṇādis. 3,43.

सांकर्यवत् adj. *verbunden* RV. 10,106,3.

सांकवत् adj. *mit einander rollend:* Räder Pāraśav. Gṛ. 20,13,3. 25,1,6.

सांकवीध adj. *zusammen gras werdend* RV. 7,93,2. 9,68,3.

सांकगर्भ adj. *zugleich trächtig* Kauç. 116.

सांकजात adj. *zugleich geboren* RV. 1,164,13. Çat. Br. 3,4,2,21.

सांकम् (von 2. स) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. = सह u. s. w. AK. 3,5,4. H. 1527. Halāy. 5,91. 1) *mit einander, auf einmal, zugleich, gleichzeitig* RV. 1,37,2. 52,1. सांकं वित्तरे स्वधया दिवो नॄः 64,4. 80,9. सांकं गावः सुवते पच्यते पवः 135,3. 2,24,4. सांकमेकेन कर्मणा 3,12,6. 4,19,5. 26,7. त्री सांकं सरांसि पिबत् 5,29,7. 7,99,5. सांकं वदन्ति बक्वो मनीषिणः 9,72,2. TS. 5,7,4,4. Ait. Br. 7,18. AV. 1,10,2. Weber, Ġjot. 26. Kāṭhaka. 62,55. Baudh. P. 3,20,51. 25,35. — 2) *in Gemeinschaft mit, nebst;* mit instr. RV. 1,47,7. सांकं देवैर्यज्ञियासो भविष्यव 161,2. सांकं देवेभिरवदन्कृतानि 179,2. सांकं जातः क्रतुना सांकमोजसा ववक्षिथ 2,22, 3. 6,66,2. मदेन 9,7,7. 10,97,13. AV. 1,11,6. 5,28,8. 6,129,1. VS. 27. 31. सांकं सूर्येणोद्यता TS. 1,8,4,1. Pāraśav. Gṛ. 3,8,4. Āçv. Gṛ. 2,9,3. संपश्यास्ते परैः सांकं विपदि स्वजनैर्नरः Spr. (II) 6879. सांकं जनन्या गुरुभिश्च सांकम् — सवर्मं चिराय Kathās. 4,136. 10,49. 14,8. 17,105. 18,80. 279. 20,90. 27,193. Ind. St. 3,307. 311. Rāja-Tar. 2,19. Baudh. P. 3,13, 6. 32,10. सांकं त्वचा कररुहाश्च Varāh. Bṛ. S. 68,57. तनयो यौवराज्येन सांकम् Kathās. 24,232. Varāh. Bṛ. S. 77,2. Rāja-Tar. 4,193. दुर्विनयपदा सांकं निर्विशेषं समाप्तितः (बुधैः) 1,856. सांकं कुरङ्गदृशा मधुपानलीलां कर्तुं मुहुश्चिरपि वैरिणि ते प्रवृत्ते Kirāṭ. (II) 103,6. युद्धं सांकमिन्द्रोर्यच्छतोः Varāh. Bṛ. S. 18,8. स्त्रीभिः सांकं विहरन् 89,11.

सांकश्य 1) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Çaunahçepa Ind. St. 3,243,a. — 2) n. N. eines Sāman (nach RV. 5,16,16) Ait. Br. 3,49. Pāraśav. Gṛ. 3,8,4. 11,11,6. Liṭ. 3,6,24. 8,8,13. Ind. St. 3,243, a. Davon °श्य n. nom. abstr. Ait. Br. 3,49.

सांकर्मुत् adj. *gleichzeitig träufelnd, — spritzend:* गण der Marut RV. 7,58,1. सांकमुतो मर्जयन्त स्वसारः 9,93,1.

सांकमेध (सांकम् + मेध) m. 1; pl. Bez. *des dritten* Parvan *der* Kāturmāsja. Fällt Vāiçvadeva auf den Phālguna-Vollmond, Varuṇapraghāsa auf den Āshāḍha, so tritt Sākamedha mit dem Vollmond oder dem 14ten Tage des Kārttika ein. Comm. zu TBr. 1,195. zu TS. 2,50. Weber, Nax. 2,331. TBr. 1,4,9,5. 10,7. 6,9,1. TS. 3,2, 3,3. Çat. Br. 2,3,4,10. 5,2,4,7. Āçv. Çr. 2,18,1. Kāty. Çr. 5,6,1. 24, 4,31. Liṭ. 5,1,11. 8,8,16. Maçaka 4,2. fgg. in Vers. d. B. H. 72. — 2) N. *eines dreitägigen* Soma-*Opfers* Çāṅkh. Çr. 14,8,1.

सांकप्रस्थायनीय (von सांकम् + प्रस्था) adj. याग *eine best. Ceremonie* TS. 2,5,8,3. °प्रस्थाय्य Çāṅkh. Çr. 3,8,2. 10,7.

सांकरुण्ड s. सांकुरुण्ड.

सांकर्णाकायन adj. von सकर्णाक gaṇa पत्तादि zu P. 4,2,80.

सांकर्णाक्य adj. desgl. gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

सांकलायन adj. von सकल gaṇa पत्तादि zu P. 4,2,80.

सांकल्यक Kathās. 117,89 fehlerhaft für सांकल्यक (von 2. स + कल्य) adj. *krank, unwohl.*

सांकल्य (von सकल) n. *Ganzheit, Vollständigkeit, Totalität* P. 2,1,6. 3,4,29. Vop. 6,56, Anf. 7,85. AK. 3,3,2. 3,4,24,150. श्रु(शु), 8. 3,5,3. Çaṅk. zu Bādar. Ār. Up. S. 145. Nalod. 3,19. Sarvadarçanas. 96,7. न चास्य रूपं पश्यामि पार्श्वतो न च पृष्ठतः। एक एवाभियाति सो पश्य सांकल्यमात्मनः so v. a. *sich, wie Alles in der einen Person vereinigt ist.* MBh. 8,4032 (मांकल्यमा° ed. Bomb.). °ल्येन *vollständig, ganz* M. 12, 35. °वचन *vollständiges Durchlesen* H. 839. Halāy. 2,246.

सांकल्यक s. सांकल्यक.

सांकाङ्क्ष (2. स + काङ्क्षा) adj. 1) *ein Verlangen habend, — empfindend* Verz. d. Oxf. H. 85,b,30. °म् adv. *mit Begehren:* परस्य युवतीं भार्यां सांकाङ्क्षं वीक्षते न कः Spr. (II) 3492. — 2) *eine Ergänzung verlangend, in Correlation stehend* P. 2,2,114. 8,1,35. Schol. zu 2,96. 104. Sāh. D. 9,18. 217,11. Kusum. 57,11.

सांकाङ्क्षता f. nom. abstr. zu सांकाङ्क्ष 2) Sāh. D. 576. Comm. zu TS. Prāt. 14,18. भिन्नसा° वाचः H. 67.

सांकाङ्क्षत्व n. desgl. Kāç. Çr. 4,2,2. 4,18. 6,2,16. Schol. zu P. 8,2,104.

सांकाप्रातायन (!) m. patron., pl. Saṃgr. K. 183,b,9.

साकार (2. स + का°) adj. (f. रा) 1) *Form —, Gestalt habend, leibhaftig:* साकारमनृतं विद्धि निराकारं तु निश्चलम् Amṛtab. 1,17. Kathās. 30,6. 103,47 (सकारा gedr.). 112,102. °ज्ञानवाद *die Theorie, dass die Anschauungen aus Bildern bestehen, die aber unabhängig sind von der Aussenwelt* (die Theorie der Jogâkâra) Sarvadarçanas. 26,30. fg.; vgl. 24,11. °सिद्धि Titel eines Abschnittes in einem Werke oder des Werkes selbst 101,15. — 2) *eine schöne Form habend, von schönem Aeussern* Spr. (II) 6983. Mālav. P. 69,31. °म् adv. *schön, anmuthig* Harṣ. 8122. — Vgl. निराकार.

साकारता (von साकार) f. *Leibhaftigkeit:* प्रज्ञापुण्यप्रयोपाक प्रभ °तां

गत: Kathās. 94,97.

साकुरुण्ड m. *eine best. Pflanze* Rāgān. (6,246) im ÇKDn. साकरुण्ड unter वस्त्रभूषण. — Vgl. कुरण्ड.

साकूत s. u. साकूत (auch in den Nachtragen). °कृसित Gir. 2,31. Kathās. 38,28.

साकेत 1) m. Bez. Ajodhjā's Tair. 2,1,12. H. 975. Pat. in Ind. St. 5,131. fgg. °मिथिले AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (36). R. Gorr. 2,38,34. Ragh. 3,31. 13,79. 14,13. 18,35. Varāh. Bṛh. S. 14,4. — 2) m. pl. *die Bewohner von Ajodhjā* Verz. d. Oxf. H. 217,b,23.

साकेतक adj. von साकेत gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

साकेतन n. = साकेत 1) Vājtp. 102. Wassiljew 50. Tāran. 67. 293.

साकोटक Paṇḍān. 1,6,16 fehlerhaft für शाकोटक.

साक्तव (von सक्तु) *ein aus Gerste bereitetes Getränk* (मन्थ) H. an. 2, 219. Med. th. 11.

साक्तुक 1) adj. = सक्तुनि साधु: gaṇa गुडादि zu P. 4,4,103. = सक्तवे प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101. — 2) m. = सक्तुक H. 1198, Schol.

साक्तुसेन्धर्व adj. = सक्तुसिन्धुषु भव: P. 7,3,19, Schol.

साक्, साक्षति (= व्याप्नोति) Nir. 11,21 zur Erkl. von प्रसाक्षते (von 1. सक्). साक्षत s. u. अक्षत 2). साक्षतम् Daṇḍān. 66,4 wohl fehlerhaft für सक्षतम्.

साक्षर (2. स + अक्ष°) adj. *beredt;* davon °ता f. nom. abstr.: किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य Spr. (II) 1778.

साक्षात् (abl. von 2. स + अक्षन् *Auge*) adv. gaṇa स्वादि zu P. 1,1,37. = प्रत्यक्ष und तुल्य (सदृश) AK. 3,4,32(28),5. H. an. 7,26. Med. avj. 33. Halāj. 5,88. 1) *mit Augen, mit eigenen Augen:* साक्षाद्द्रष्टृ P. 5,2, 91. साक्षाद्दृष्टि Sarvadarçanas. 80,8. साक्षाद्दृष्टा ऽसि Kumārās. 6,22. दर्शननुखमनुभवत: साक्षादिव तन्मयेन हृदयेन Çiç. 148. Çiç. 3,9. साक्षात्स्वप्ने च दर्शनम् Sāh. D. 77,19. Kathās. 33,189. 35,83. 36,119. 42,160. Bhāg. P. 6,2,20. Sarvadarçanas. 26,14. Verz. d. Oxf. H. 128,b,35. fg. — 2) (vor *Augen*) *offenbar, in Wirklichkeit, geradezu, recht eigentlich* AV. 12,5,12. TBr. 1,2,1,6. 3,6,1. 6,6,2. 8,2,1. एते हि साक्षादृषय: 3,2,6. 4,10,7. साक्षादेव दीक्षायामागतायां दीक्षते Ait. Br. 4,26. TS. 1,6,7,1. 2,1,3,5. 6,3. 3,12,2. साक्षादेव देवानामास्ये जुहोति 5,6,3. Çat. Br. 2,1,4,6. 13,2,5,2. 3,3,3. साक्षादयोक्षाद्वा 14,6,4,1. एतच्चतुर्विधं प्राहु: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् M. 2,12. 237. Mālatīm. 6,13. Spr. (II) 6184. Kathās. 24,214. 37,21. 40,82. Prab. 48,10. 52,14. LA. (III) 92, 12. — 3) *in Wirklichkeit* so v. a. *in eigener Person, leibhaftig:* कृष्णात्साक्षात्कथयत: स्वयम् Bhāg. 18,75. किं वं साक्षाद्धर्मो दानो वा — अथ साक्षाद्धरिरुप: साक्षाद्वा विष्णुरच्युत: MBh. 1,7101. 7635. 2,2110. 3,1771. साक्षादेवानयाकाय वृतो य: स पुरा मया 2964. 11914. 16895. तदेव न स्पृक्षति साक्षादपि शतक्रतो: 14,562. R. 1,2,30. 14,35. 19,6. 26. साक्षाच्चण्डालतां गत: *zu einem leibhaftigen K. geworden* 50,1. 73,2. R. Gorr. 1,26,5. 2,30,29. 3,71,11. 73,21. 4,38,28. 5,47,25. Megh. 72. Çiç. 6. 143. Mālav. 68. Spr. (II) 6276. Kathās. 7,14. 42,37. 118. 49, 245. ज्ञानं साक्षाद्भगवतोदितम् Bhāg. P. 1,3,30. 7,6. 9,18. 17,15. 3,8,2. 11,41. 4,24,28. 30,32. 38. 5,9,21. 7,14,2. 8,5,24. Pañcat. 46,6. पद्भवतोक्तं तन्मया साक्षादेवानुभूतम् 197,12. साक्षादिव मनु: स्वयम् MBh. 3,2075. 2131. R. 1,23,6 (vgl. 10). 2,46,24. 4,23,35. अद्धेव साक्षात् Ragh. 2,16. निजमक्षतरो: साक्षात्पक्वामिव फलश्रियम् Kathās. 18,368. साक्षाद्भावाविव शरीरिणौ (dieses unnütz) Mālav. 10,19. — 4) *unmittelbar, direct* Sāh. D. 7,21. Koll. zu M. 4,80. Sarvadarçanas. 77,10. साक्षात्परंपरया वा Ind. St. 1,13,3. 19,16. Schol. zu Kap. 1,30. साक्षात्योग im Gegens. zu परंपरासंबन्ध Schol. zu P. 3,1,24. साक्षात्प्रयोजन Sarvadarçanas. 138,22. साक्षाद्व्याप्य 105,19. fg. 106,5. 8. — 5) in Verbindung mit भू *in eigener Person erscheinen* Kathās. 33,103. — 6) in Verbindung mit कृ, साक्षात्कृत्वा und साक्षात्कृत्य P. 1,4,74. Vop. 15,5. *sich vor Augen führen, zu Gesicht bekommen, schauen:* साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवु: Nir. 1,20. यात: खलु साक्षात्कृतधर्मा Mudr. St. 3,210. याचाधय शंकरम् । साक्षात्कृत्य च तम् Kathās. 10,96. Pañcat. 1,13,24. Sāh. D. 207,3. Verz. d. Oxf. H. 177,a, N. 1. Ind. St. 1,20,13. Bhaṭṭ. 5,71. Vedântas. (Allah.) No. 142. Kusum. 45,5. Schol. zu Çik. 142 bei Monier Williams.

साक्षात्कार adj. (Alles) *vor Augen führend, zur Anschauung bringend* Verz. d. Oxf. H. 88,a,19.

साक्षात्करण n. *das Schauen:* संस्कार° ebend. 230,a,26.

साक्षात्कर्तृ nom. ag. *der (Alles) schaut* Verz. d. Oxf. H. 251,a,27.

साक्षात्कार m. 1) *das zu-Gesicht-Bekommen, Schauen, Wahrnehmung* Çaunaka bei Muller, SL. 237,7. Verz. d. Oxf. H. 128,b,35. श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे Tarkas. 26. Nilak. 26. 63. 242. Koll. zu M. 4,258. Schol. zu Kap. 1,57. 59. fg. 103. WebER, Rāmat. Up. S. 349. Vedântas. (Allah.) No. 113. Ind. St. 1,19,13. fg. Sarvadarçanas. 80,1. 3. 103,17. 20. Buissāp. 84. Kusum. 3,4. — 2) *das Gewahrwerden, Erfahren* so v. a. *Lohn* (= फल Comm.): भूमिदानस्य Bhāg. P. 5,24,19.

साक्षात्कारता f. nom abstr. zu साक्षात्कार 1) Sāh. D. 53.

साक्षात्कारवत् (von साक्षात्कार) adj. am Ende eines comp. *eine Anschauung von — besitzend* Sarvadarçanas. 119,2.

साक्षात्कारिन् adj. *schauend* Nilak. 29. Schol. zu Kap. 1,60. Sarvadarçanas. 29,3. 5. Kusum. 20,6. 46,13.

साक्षात्कृति f. = साक्षात्कार 1) Sarvadarçanas. 114,2.

साक्षात्क्रिया f. dass.: शङ्कि° Lol. de la b. l. 821.

साक्षात्पुरुषोत्तमवाक्य n. Titel einer Schrift Hall 116.

साक्षि m. = साक्षिन् in लोक° R. 7,23,3,6.

साक्षिक am Ende eines adj. comp. (f. या) von साक्षिन् *Zeuge:* सुखमात्मसाक्षिकम् Maitrājup. 6,24. भुक्तिरसाक्षिका Spr. (II) 7441. असाक्षिकस्त *ohne Zeugen geschlagen* Jiān. 2,212. ससाक्षिकम् adv. *vor Zeugen* 63. अग्निसाक्षिकम् adv. *coram igne* MBh. 1,7345. Sūçr. 1,7,3. Mālav. 70. — Vgl. अ°, अग्नि°, लोक°, वह्नि°.

साक्षिता (von साक्षिन्) f. *das Zuschauer —, Zeugesein* Nilak. 54. Kusum. 19,21. तस्य साक्षितां ययु: *sie wurden dessen Zeugen* Ragh. 19,42. स्वकुलत्य° Kathās. 22,212. vor Gericht M. 8,80.

साक्षित्व n. dass. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,133. Kap. 1,149 (अ°). 162. Sāṅkhjak. 19. WebER, Rāmat. Up. 343. vor Gericht Sūçr. 2,146,3.

साक्षिन् (von 2. स + अक्षन् *Auge;* vgl. साक्षात्) m. 1) *Zuschauer, Zeuge* (auch vor Gericht) P. 5,2,91. H. 882. mit gen. oder loc. P. 2,3,29. Vop. 3,29. M. 8,18. 45. 58. 57. 60 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 86,a,3. 4. 263,a,17. MBh. 3,2984. 13,319. साक्षी लोकस्य पावक: R.

5,103,5. यात्मैव स्वात्मनः साक्षी कृतस्यापकृतस्य च Spr. (II) 923. 922. त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति साक्षिणः प्रतिभूः कुलम् 2637. 3233. Kathâs. 4,74. 20,15. Bhâg. P. 4,30,26. Pañcat. 1,7,42. साक्षिप्रश्न M. 1,115. Kâm. Nîtis. 14,46. तपः° Kumâras. 5,60. यन्योऽन्य° Kathâs. 32,67. यात्म° Bhâg. P. 1,5,7. पुरुषबुद्धि° 4,3,21. 13,28. 5,18,28. साक्षिणी f.: सुख-दुःखयोः Râga-Tar. 4,70. वियोग° Spr. (II) 1983. शील° Kathâs. 16,113. In der Philosophie *das den Objecten unabhängig gegenüberstehende Subject* Nir. 14,10. Ind. St. 1,301. 9,132. fg. 146. Bâlar. 1. Asaṭîv. 1,2. 11. चिद्रूपो ऽसि सदा साक्षी 15,4. am Ende eines adj. comp.: तत्र प्रत्यक्षं पुनर्द्विविधं जीवसाक्ष्यीश्वरसाक्षि च Nîlak. 223. — 2) N. pr. eines Mannes Saṅgh. K. 184, *b*, 3. pl. 185, *b*, 3 (wohl साक्षिणो zu lesen). — Vgl. कूट°, जगत्°, दुः°, भूत°, मिथ्या° लोक°, विश्व°, सत्य°, सर्व°.

साक्षितस् adv.: वेषं साक्षितमाधाय रक्षकैरेकेन वासमा MBu. 1,7719. वेषं प्रङ्गारमाधाय साक्षितं साक्षितं साक्षेपो मनोवैकल्यं तेन सह यथा स्यात्तथा मूल्यैकवाससो धारितत्वाद्विविक्तावयवत्वेन ज्ञानं व्याकुलयतीत्यर्थः Nîlak. es ist wohl सा क्षिप्रम् zu lesen.

साक्षिभूत adj. *Zeuge seiend* Bhâg. P. 3,16,31. Pañcat. 1,3,80. Vgl. साक्षीभूत.

साक्षिमत् (von साक्षिन्) adj. *einen Zeugen habend, vor Zeugen geschehen* Jîân. 2,94.

साक्षीक m. N. pr. eines Mannes Saṅgh. K. 186, *a*, 8.

साक्षीकर् (साक्षिन् + 1. कर्) *zum Zeugen anrufen:* यग्निं °कृत्य Kathâs. 16,84.

साक्षीभूत R. 2,81,24 wohl fehlerhaft für साक्षिभूत.

साक्षेप adj. und °म् adv. s. u. यक्षेप 6) (auch in den Nachträgen). adv. *vorwurfsvoll* auch Kathâs. 23,7. 24,80. Râga-Tar. 3,87. adj. *eine Einwendung —, eine Einschränkung enthaltend* Kirân. 2,186. Verz. d. Oxf. H. 208, *b*, 20.

साक्ष्य (von साक्षिन्) 1) adj. gaṇa दिशादि zu P. 4,3,54. Accent eines darauf ausgehenden comp. gaṇa वर्ण्यादि zu P. 6,2,131. नेत्रसा° so v. a. *sichtbar für* Bhâg. P. 5,11,7. — 2) n. *das Zeugessein, Zeugniss, Aussage vor Gericht:* साक्ष्यं सिध्यति M. 8,74. वितथ 113. साक्ष्यमर्कृत्ति 62. साक्ष्यं पृच्छेकृतम् 87. यब्रुवन्साक्ष्यमृणादिषु 107. Jîân. 2,76. यः साक्ष्यमनृतं वदेत् M. 8,92. 119. Jîân. 2,74. साक्ष्यं कर् *Zeugniss ablegen für* (gen.) M. 8,63. fg. Kathâs. 23,21. वि-धा 124,232. दा Spr. (II) 3280. नी M. 8, 197. बालवृद्धातुराणां च साक्ष्येषु वदतां मृषा 71. सत्यं साक्ष्ये ब्रुवन् 81. साक्ष्ये ऽनृतं वदन् 82. 97. 11,58. Bhâg. P. 5,26,28. साक्ष्ये यधि-कर् (so ed. Bomb.) MBu. 5,1225. मम साक्ष्ये नियुक्ताः Harîv. 7800. साक्ष्ये दुष्टः Jîân. 2,15. देवसाक्ष्ये, मनुष्यसाक्ष्ये so v. a. *vor Göttern —, vor Menschen als Zeugen* Nirâmas. 3,8 in Ind. St. 10,83. तमेव चाधाय विवाक्साक्ष्ये Raghu. 7,17. महातपःसाक्ष्य इव स्थिताः तपाः Kumâras. 5,35. — Vgl. कोट°.

साख्य s. शाखि.

सौख्यदत्तेय adj. von सख्यदत्त gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

सौख्येय adj. von सखि P. 4,2,80.

साख्य (von सखि) n. *Vereinigung von Genossen, Partei:* यस्मभ्यं त्वाष्ट्रमन्धसः साख्यस्य त्रितायं *dem Trita unserer Partei* RV. 2,11,19. °मरण *Untergang der ganzen (gegnerischen) Partei* Kâd. Ça. 35,14,19. साख्य = सख्य *Freundschaft* Daçakum. im ÇKDr. Wilson, Sel. Works 1,163 (wohl nur fehlerhaft).

सागर (von 1. सगर) 1) m. *a) das Meer* Çiṅk. 1,3 (oxyt.). AK. 1,2,3, 1. H. 1073. Hall. 3,30. nach der Legende das von den Söhnen Sagara's ausgehöhlte Becken, welches Bhagiratha mit dem Wasser der Gaṅgâ füllte, R. 1,43,2. R. Gorr. 1,45,37. VP. 379. Bhâg. P. 9,8,4. vgl. u. 1. सगर 2). M. 6,90. Kâlikop. in Ind. St. 9,20. सरसामस्मि सागरः sagt Kṛishṇa Bhag. 10,24. R. 2,23,29. Suça. 1,264,8. Asaṭîv. 3, 3. Varâh. Bṛh. S. 5,42. 12,2. Naish. 22,48. दुस्तर Ragh. 1,2. सागरा-म्भस् MBu. 1,1127. Spr. (II) 6995. सागरं सुमरुद्वृद्धा (vgl. u. मरुत्) R. 6, 34,14. °बन्धन Verz. d. Oxf. H. 143, *b*, No. 293. °लङ्घनसह 344, *a*, 13. °धीरचेतस् Ragh. 18,2. सागरस्य फेनः so v. a. समुद्रफेन Suça. 2,324,4. 347,8. du. Bhâg. P. 8,10,15. pl. M. 1,24. Harîv. 266. R. 1,65,12. Varâh. Bṛh. S. 48,60. चत्वारः MBu. 6,105. Râga-Tar. 3,136. सप्त R. 3,77, 25. सप्तसागरदान *(sieben Urnen mit siebenfachem Inhalt den sieben Meeren entsprechend;* vgl. unter समुद्र Sp. 727, Z. 20) Verz. d. Oxf. H. 43, *a*, 18. fg. 35, *b*, 10. Am Ende eines adj. comp. (f. या) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,76. MBu. 3,13433. 7,3900. 9,1914. Ragh. 1,20. 11,56. 18,3. Mârk. P. 121,2. Weber, Kṛshṇaj. 297. Pañcat. 1,6,24. — *b*) das *Meer* als Bild der unübersehbaren Ausdehnung, der Unergründlichkeit und Gefährlichkeit: पङ्क° Mârk. P. 43,18. संसार° Asaṭîv. 17,9. Weber, Kṛshṇaj. 295. चिन्ता° R. 1,9,44. शोक° 2,77,18. R. Gorr. 2,37,22. 6, 93,34. Weber, Kṛshṇaj. 265. घनिष्ट° Spr. (II) 5808. पारं गतः सकलदर्शनसागराणाम् Sarvadarçanas. 1,2. विस्मृति° *das Meer der Vergessenheit* Râga-Tar. 1,53. दैत्य° so v. a. *eine unübersehbare Anzahl* von D. Harîv. 10626. 13101. गुण° *ein Meer* von *Vorzügen* als Beiw. einer Person MBu. 3,16762. R. Gorr. 2,14,19. 33,12. Çiç. in LA. (III) 32,16. सङ्ग° Kathâs. 58,115. संगीतसाम° Daçakum. 68,15. — *c*) Bez. *der Zahl vier* Gaṇit. Bhâgaṇâdh. 5. — *d*) Bez. *einer best. hohen Zahl,* = 10 Padma Brahmâṇḍa-P. im ÇKDr. H. 127. — *e*) *eine Gazellenart* Çabdar. im ÇKDr. — *f*) pl. *die Söhne* Sagara's MBu. 3,8861. R. 1,41,7. R. Gorr. 1,43,12. 2,21,32. Verz. d. B. H. No. 452. Verz. d. Oxf. H. 10, *a*, 11. — *g*) N. pr. verschiedener Personen Verz. d. Oxf. H. 135, *b*, No. 285. Râga-Tar. 7,185. Târan. 3.267. Lalit. ed. Calc. 201,10. ein Nâgarâga 249,12. 268,7. 337,2. Lot. de la b. l. 3. 160. Vjutp. 41.85. der 31te Arhant der vergangenen Utsarpiṇî H. 30. — *h*) N. eines der zehn auf Schüler Çaṁkarâkârja's zurückgeführten Bettelorden, dessen Mitglieder das Wort सागर ihrem Namen beifügen, Verz. d. Oxf. H. 227, *b*, 16. Wilson, Sel. Works 1,202. — *i*) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338, *b*, 36. — *k*) (abgekürzter) Titel eines Werkes ebend. 292, *b*, 31. fg.; vgl. यद्भुत°, तन्त्र°, दान°, स्मृति°. — 2) adj. (f. ई) *marinus:* तनु Harîv. 3005. — 3) n. N. pr. einer Stadt Wassiljew 52. 205. — Vgl. क्षीर°, पुष्कर°, पूर्व°, बुद्धि°, ब्रह्म°, रत्न°, युति°.

सागरक 1) m. *Meeresanwohner* als N. eines Volkes MBu. 2,1874. — 2) f. °रिका ein Frauenname Ratnâv. 12,9 u. s. w.

सागरग adj. (f. या) *sich in's Meer ergiessend,* f. *ein solcher Fluss,* insbes. *die* Gaṅgâ MBu. 3,10210. 10932. 5,7361. R. 2,82,8. सागरंगा-मुत *der Sohn der* Gaṅgâ, metron. Bhîshma's MBu. 1,4126. 4441. 6,4936.

सागरगम adj. (f. घा) dass. MBu. 13,6769 (subst. f.). — Vgl. सागरंगम.

सागरगामिन् adj. (f. °नी) dass. Taik. 1,2,29. R. Gorr. 2,49,3. Rasu. 6, 92. Riéa-Tar. 3,93. रामसागरगामिनी रामायणमकामदी R. Einl.

सागरंगम adj. (f. घा) dass. MBu. 3,2436. Harıv. 3642. R. 1,26,4. 2,49, 10. 52,3. 83,23. 4,13,5.

सागरत्व n. nom. abstr. von सागर Meer Harıv. 793.

सागरदत्त m. N. pr. eines Çâkja Schimmer, Lebensb. 266 (36). eines Kaufmanns Païkar. 127,3. Vet. in LA. (III) 18,17. eines Fürsten der Gandharva Katuis. 106,9.

सागरनन्दिन् m. N. pr. eines Dichters Uéôval. zu Uṇâdis. 4,121.

सागरनेमी f. die Erde (meerumfeigt) H. 938.

सागरपरिपृच्छा f. Titel einer Schrift Wassiljew 327.

सागरपर्यन्त adj. (f. घा) meerumgrenzt: die Erde MBu. 1,2472. 4,624. 14,318. R. 5,37,18.

सागरपाल m. N. pr. eines Nâgarâga Tiran. 209.

सागरपुर n. N. pr. einer Stadt Katuis. 52,319. fgg.

सागरमति (?) m. N. pr. eines Mannes Vin de Hiouen-thsang 222.

सागरमुद्रा f. eine best. Meditation Vsuvp. 23.

सागरमेखल adj. (f. घा) meerumgürtet, f. die Erde H. 938. सप्त° adj. Nga. Tîp. Up. in Ind. St. 9,77.

सागरमेघ m. N. pr. eines Mannes Tiran. 219. fg.

सागरलिपि f. eine best. Art zu schreiben Lalit. ed. Calc. 144,6.

सागरवरधरबुद्धिविक्रीडितामिश्र m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 131.

सागरवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Journ. of the Am. Or. S. 7,35.

सागरवासिन् adj. am Meere wohnend, Meeresanwohner MBu. 2,1099.

सागरवीर m. N. pr. eines Mannes Katuis. 52,320. fgg.

सागरव्यूहगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabûm. 2.

सागरसूनु m. der Sohn des Meeres so v. a. der Mond Z. d. d. m. G. 27,70.

सागरानूपक adj. = सागरवासिन् MBu. 3,1989.

1. सागरास्त (सागर + घस्त) m. Meereshüfte R. 4,37,29. 47,12.

2. सागरास्त (wie eben) adj. (f. घा) meerumgrenzt: die Erde MBu. 1, 2690. Spr. (II) 5344. R. 2,99,9. 100,35 (106,24 Gorr.). R. Gorr. 1,5,1. Varâh. Bṛh. S. 88,18.

सागरास्तर्गत adj. im Meere lebend: पार्थिवानि च भूतानि °तानि च R. 5,5,5.

सागराम्बर (सागर + अ°) adj. (f. घा) meerumkleidet, f. die Erde H. 938. R. 2,98,7. Rasu. 3,9. Riéa-Tar. 3,263.

सागरालय (सागर + आ°) adj. im Meere hausend: भुजगा: R. 5,5,29. m. ein N. Varuṇa's Çabdam. im ÇKDa.

सागरावर्त (सागर + आ°) m. Meeresbucht MBu. 3,633. सागरस्य आ समन्ताद्वर्तो वर्तनं यस्मिन् सागरद्वीपे इत्यर्थः Nilak.

सागरिक von सागर in चातुः°.

सागरेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Vers. d. Oxf. H. 66,b,23.

सागरोत्थ (सागर + उत्थ) adj. aus dem Meere gewonnen; n. Seesalz Riéan. 6,103.

सागरोदक (सागर + उ°) n. Seewasser, wohl N. pr. eines geheiligten Badeplatzes MBu. 13,1695.

सागरोपम (सागर + उपमा) eine best. grosse Zahl (bei den Gaina) Wilson, Sel. Works 1,309. Ind. St. 10,282.

सागस् (2. स + घा°) adj. eines Vergehens schuldig Spr. (II) 1634. Z. d. d. m. G. 27,43. Riéa-Tar. 1,139. 3,249. 4,57.

साग्नि (2. स + अग्नि) 1) adj. a) mit dem Feuer Kâtj. Çr. 15,6,14. Kauç. 47. fg. — b) ein Feuer unterhaltend: Manen Miax. P. 52,20. Baiç. P. 4,1,62. — 3) adv. = अग्नियन्वर्यन्तम् P. 2,1,6, Schol. Vop. 6,61.

साग्निक adj. 1) nebst Agni: लोकपाला: MBu. 3,2127. — 2) = अग्निमालिक vor dem Feuer als Zeugen geschlossen: मन्त्र R. 7,33,18.

साग्निचित्य (2. स + अग्निचित्या) adj. mit dem Agnikâjana verbunden: क्रतु Âçv. Çr. 4,1,21. 8,27. सोमयागक्रिया 10,10. Kâtj. Çr. 7,2,3. 22,10,33. Lâṭj. 8,11,5.

साग्र (2. स + 1. अग्र) adj. (f. घा) 1) mit der Spitze Çat. Br. 7,4,2,13. Kâtj. Çr. 7,2,24. — 2) = समग्र ganz, voll, woran nichts fehlt: शत Ind. St. 5,194. R. Gorr. 1,63,21. 3,4,26. 4,58,24. 61,20. 7,23,9. Miax. P. 110,20. Baiç. P. 3,20,15. fernere Belege unter 1. अग्र 6), wo das Wort ungenau als mit einem Ueberschuss versehen (vgl. साधिक) gefasst worden ist.

साग्रह (2. स + आ°) adj. auf Etwas bestehend, hartnäckig Daçak. 4,5.

सांकथिक adj. = संकथायां साधुः gaṇa कथादि zu P. 4,4,102.

सांकरिक (von संकर) adj. aus einer Vermischung der Kasten hervorgegangen, in einer unebenbürtigen Ehe erzeugt MBu. 13,812.

सांकर्य (wie eben) n. Vermischung, Vermengung Sin. D. 123. 140. = शाबल्य Comm. zu Baiç. P. 10,20,24. °खण्डन n. Titel einer Schrift Hall 191. °वाद् = जाति° desgl. 46.

सांकल adj. von संकल P. 4,2,78.

सांकल्पिक (von संकल्प) adj. auf einer Willensbestimmung beruhend, daraus hervorgegangen Kap. 5,111. Comm. zu TS. Paṭ. 23,6.

सांकाशिन (von संकाशिन् und dieses von काश् mit सम्) n. allgemeines Sichtbarsein; instr. so v. a. geradezu Kâtj. Çr. 16,7,4. = प्रगुणम् Comm.

सांकाश्य (von संकाश) P. 4,2,80. 1) m. N. pr. eines Mannes MBu. 2,321. — 2) f. घा N. pr. einer Stadt R. 1,70,8. gewöhnlich m. (oxyt. und paroxyt. Çiky. 3,16) 71,16. R. Gorr. 1,72,3. Burnouf, Intr. 170. 398. fehlerhaft संकाश्य VP. 4,5,12 (संकाश्याधिपति). Hiouen-thsang 1, 236. 2,343. 349. fg. Tiran. 290. Schiefner, Lebensb. 263 (43).

सांकाश्यक adj. (f. °श्यिका P. 7,3,46, Schol.) aus Sâṁkâçja stammend, ein Bewohner von S. Schol. zu P. 4,2,131. 3,91. Ind. St. 13,380.

सांकुचित adj. aus Saṁkukîta stammend gaṇa तक्षशिलादि zu P. 4,3,93.

सांकुची f. = संकोचमत्स्य Çabdar. im ÇKDa. शां° und शंकोच° gedr.

सांकूटिन् (von संकूटिन् und dieses von कूट् mit सम्) n. Manian. lith. Ausg. 4,26,a. Schol. zu P. 3,3,14. 5,4,15. 6,4,164.

सांकृत adj. dem Saṁkṛti eigen, von ihm stammend: °गोत्रज Vers. d. B. H. 13,34.

सांकृति m. patron. von Saṁkṛti MBu. 2,321. 3,16074. 7,2386. 12, 8596. 8966. pl. Saṁhx. K. 184,a,7.

सांकृती f. zu सांकृत्य. सांकृतीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,21.

सांकृत्य m. patron. von संकृति gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Âçv. Çr. 12,12,6. Verz. d. B. H. 56,3. Kâraka in Verz. d. Cambr. H. 22,11. Bulvaṛa. in Verz. d. Oxf. H. 310,a,27. MBu. 12,1012. 8591. 13,6250. Wilson, Sel. Works 2,202. Grammatiker TS. Pair. 8,21. 10,21. 16,16. pl. Hariv. 1467.

सांकृत्यायन m. patron. von सांकृत्य Kâraka 1,12. f. ई N. pr. einer Pravrâjikâ Kathâs. 14,71.

सांकेतिक (von संकेत) adj. *auf Verabredung beruhend, verabredet, unter einander abgemacht* Sâh. D. 329,18 = Z. d. d. m. G. 27,94.

सांकेत्य (wie oben) n. *Uebereinkommen, Verabredung* Bhâg. P. 5,14, 29. 6,2,14. insbes. *mit einem Geliebten* 11,8,31.

सांक्रामिक adj. = संक्रामे साधुः gaṇa गुडादि zu P. 4,4,103. *übergehend auf Andere:* सर्वे गुणाः Spr. (II) 2362.

सांक्षेपिक (von संक्षेप) adj. *in Kürze ausgedrückt, kurz gefasst* Kull. zu M. 7,180. 12,34.

सांख्य (von संख्या) 1) *a) ein Mann, der das pro und contra genau erwägt* oder *ein Anhänger der aufzählenden philosophischen Methode* d. h. *der Sâṁkhja-Lehre* (Gegens. योगिन्, योग) H. 862. Kâlikop. in Ind. St. 9, 16 (wir lesen सांख्या ष°). तं गतिः सर्वसांख्यानां योगिनां तं परायणम् MBh. 3,167. 12741. 12,1642. 7389. 8685. 11088. प्रत्यक्षक्षेत्रवो योगाः सांख्याः शास्त्रविनिश्चयाः 11043. सांख्यानां कपिलो ऋषि 13,916. 1040. 1079. Hariv. 14922. fg. Bhâg. 3,3.5,5. सांख्यैः संख्यातसंख्येयैः सकलोनं पुनर्वसुम् Kâraka 1,13. Weber, Rikâṭ. Up. 335. Verz. d. Oxf. H. 113,b,46. Ind. St. 1,13,9. 23,20. Çatr. 2,383. Sarvadarçanas. 85, 3. 131,19. 147,11. Kusum. 13,5. Vishṇu MBh. 13,901. Çiva 12, 10388. °मुख्य ebend. °शास्त्र 13,1079. Sarvadarçanas. 147,13. °दर्शन 153,22. — *b)* N. pr. eines Mannes Kâraka 1,1 (nach dem Comm. Beiw. von Gautama). Bulvaṛa. (= Kâraka) in Verz. d. Oxf. H. 310, a,25. °योगौ (so ed. Bomb.) MBh. 13,7122. — 2) n. *die auf der genauen Erwägung des pro und contra beruhende Lehre* oder *die aufzählende philosophische Methode* d. h. *die auf* Kapila *zurückgeführte* Sâṁkhja-*Lehre* (Gegens. योग) Taitt. Âr. 3,12. Nir. 14,6. Çvetâçv. Up. 6,13. °योगविभागज्ञ MBh. 2,141. Varâh. 7,8887. योगं यो वेद चात्मनः। यः सांख्यमात्मनो वेद 8,1439. 12,11038. 11041. 13,470. 1842. 7078. Bhâg. 3,39. 5,4. 5. 13,24. 18,13. Prab. 86,10. Bhâg. P. 1,3,10. 2,1,6. 3,3,19. 7,20. 28,31. 10,47,34 (= आत्मानात्मविवेक Comm.). pl. 3,29,2. सांख्यात्मन् MBh. 12,1642. °ज्ञान 1,8132. °योगप्रवर्तिन् 12,10388. °प्रणेतृ Pâṇ. Âr. 4,3,124. सांख्याचार्याः Bhâg. P. 3,24,17. 33,35. Tattvas. 22. Sarvadarçanas. 150,9. Vgl. Hall in der Einl. zu Sâṁkhjapr. — Titel von Werken, die über diese Lehre handeln und das Wort am Anf. eines comp. enthalten: °कारिका Gild. Bibl. 409. 412. fg. °कारिकाभाष्य Hall 5. °कौमुदी 5. 8. Notices of Skt Mss. 266. °क्रमदीपिका Hall 5. °चन्द्रिका 7. Verz. d. Oxf. H. 237,b, No. 569. °तत्त्वकौमुदी No. 570. fgg. Notices of Skt Mss. 266. Verz. d. Tüb. H. 20. Hall 5. °तत्त्वप्रदीप 7. °तत्त्वविभाकर 8. Verz. d. B. H. No. 638. °तत्त्वविलास Hall 6. °तरंग 2. °प्रवचन und °प्रवचनभाष्य herausg. von Hall in der Bibl. ind. Sarvadarçanas. 154,1. °वृत्ति Hall 8. °वृत्तिप्रकाश 6. °वृत्तिसार 1. 3. °सार Verz. d. Oxf. H. 232,a, No. 562. °सारविवेक Hall 7. °सिद्धान्त Verz. d. Oxf. H. 113,b,46. fg. °सूत्र Hall 1. °सूत्रप्रतेपिका 3. °सूत्रविवरण ebend. °सूत्रवृत्ति Verz. d. Oxf. H. 238,a, No. 574. °सूत्रवृत्तिसार Verz. d. B. H. No. 636. सांख्यार्थतत्त्वप्रदीपिका Hall 7. सांख्यार्थसंख्यापिक 6. सांख्यालंकार 3.

सांख्यमय adj. (f. ई) *aus der Sâṁkhja-Lehre bestehend:* नौ Bhâg. P. 3,8,13. Gaupar. zu Siddhânt. 1.

सांख्ययोग 1) m. *ein Anhänger des Sâṁkhja und des Joga* als N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,7123. nach der ed. Bomb., die °योगौ liest, zwei Namen. — 2) n. *das Sâṁkhja und der Joga* MBh. 12,13629.

सांख्ययोगवत् adj. *mit dem Sâṁkhja und Joga vertraut* MBh. 18,185.

सांख्यायन (patron. von सांख्य) m. N. pr. eines Lehrers Âçv. Gṛhj. 3. 4,4, v. l. Taitt. Âr. 10,35. Verz. d. B. H. 59, N. 92,8. Verz. d. Oxf. H. 251,b,30. 271,a,11. Kull. zu M. 2,122. 3,234. 4,53. Bhâg. P. 3,8,7. 8. °गण Verz. d. Cambr. H. 68. °ब्राह्मण, °सूत्र Ind. St. 1,471. pl. *seine Schule* 3,253. daneben die Form शाङ्खायन. — Vgl. मख°.

सांग (2. स + 3. अङ्ग) adj. 1) *mit seinen Gliedern* AV. 13,4,64. Çat. Br. 12,8,2,31. — 2) *mit einem Körper versehen* Kathâs. 34,40. 42. 89,12. — 3) *mit allen seinen Theilen.* — *Anhängen* Kâṭj. Çr. 1,7,28. सामन् Ind. St. 9,86. वेदाः 76. 107. Weber, Rikâṭ. Up. 350. आयुर्वेद Verz. d. Oxf. H. 310,a,10. प्रवचन H. 78. नारकाः 23. so v. a. *vollständig* Sâh. D. 670. — 4) *beendigt, abgeschlossen:* शतसमध्यधाम Uttarâs. 123,2 (166,2). — Vgl. auch unter 3. अङ्ग 5).

सांगतिकं (von संगति) gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34. adj. *auf's Gerathewohl* (vgl. संगति 3) *erscheinend, — sich einstellend* M. 3,103.

सांगत्य (von संगत) n. *das Zusammenkommen —, Verkehr mit* (सह) Spr. (II) 1183. 2859, v. l. (संगत्य).

सांगम m. = संगम Bharata zu AK. 3,3,29 nach ÇKDa.

सांगमनि m. patron. des Agni Anaçnant (in der सभा) Çat. Br. 2,3, 2,1. 3. Schol. zu Kâṭj. Çr. 420,9.

सांगमिधु adj. angeblich Bez. einer Art von सिकता TBr. 3,10,4,4.

सांङ्गरव m. N. pr. eines Priesters MBh. 1,3046. die richtige Lesart शार्ङ्गरव hat die ed. Bomb.

सांङ्गलतण n. st. क्रागलतण Weber, Prâtiçâkh. 105.

सांङ्कुष्ठ (2. स + ष°) 1) adj. *sammt dem Daumen* Âçv. Gṛhj. 1,7,5. Ind. St. 5,331. 369. — 2) f. षा *Abrus precatorius Lin.* Ratnam. 33. शा° ÇKDa. und Wilson nach dors. Aut.

सांग्रहणी (von संग्रहण) adj. (f. ई) *auf Besitzergreifung bezüglich:* इष्टि TBr. 3,8,4,1. TS. 2,3,9,2. Notices of Skt Mss. 2,232. fg.

सांग्रहसूत्रिकं adj. = संग्रहसूत्रमधीते वेद वा P. 4,2,60, Schol.

सांग्रहिकं adj. = संग्रहे साधुः gaṇa कथादि zu P. 4,4,102. = संग्रहमधीते वेद वा gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60.

सांग्रामं adj. von संग्राम gaṇa व्युष्टादि zu P. 5,1,97. — MBh. 3,15867 fehlerhaft für संग्राम, wie die ed. Bomb. liest.

सांग्रामजित्य (von संग्रामजित्) n. *Sieg im Kampfe* AV. 5,20,11.

सांग्रामिक (von संग्राम) adj. (f. ई) gaṇa गुडादि zu P. 4,4,103. संतापादि zu 5,1,101. *auf Kampf bezüglich* Kaç. 14. fg. सांग्रामिकं ततः सर्वं सज्जं चक्रुः MBh. 1,513. 7210. 7216. 3,101. 2713. 8200. सर्वसांग्रामिको-

पेत Bnlc. P. 8,10,17. °विधिज्ञ Harіv. 6192. चरित MBu. 7,9642. मख 2989. पद्मसमाम्नाये सांयामिके च Uttarab. 88,19 (114,6). वार्ता Spr. (II) 6377. रथ *Kriegswagen* MBu. 13,2782. Harіv. 4989. R. 3,67,17. 70,9. 72,19. 6,18,53. Manivikas. 108,19. Paas. 78,18. खाभरण Harіv. 13081. °परिच्छद 14208. चलंकरण Pañkat. ed. orn. 87,12. मृत्यु *Tod in der Schlacht* MBu. 8,4889. Davon nom. abstr. °त्व n. Daçak. 190,19. Hier und da fehlerhaft संयामिक.

सांघटिक adj. = संघटमधीते वेद वा v. l. im gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60.

सांघतृक adj. = संघतृमधीते वेद वा gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60.

सांघाटिका f. 1) *Paar.* — 2) *Kupplerin.* — 3) *Trapa bispinosa* Roxb. Hit. 242. — Vgl. संघाटिका.

सांघातं adj. = संघाते दीयते oder कार्यम् gaṇa व्युष्टादि zu P. 5,1,97.

सांघातिक 1) adj. = संघाते साधुः gaṇa गुडादि zu P. 4,4,103. = संघाताय प्रभवति gaṇa संतापादि zu 5,1,101. *zu einer Gruppe gehörig* Çiçup. Ça. 13,24,18. — 2) n. (sc. मं u. s. w.) in der Nativitätslehre *das 16te Nakshatra nach dem* Ganmarkshа Gortsv. im ÇKDa. unter ममुदयं.

सांघात्य n. = संघात्य, संघातक, संघात्य Daçak. 2,19. 51.

साच् adj. = 2. सच् in अपत्य°, अयज्ञ°, द्रोण°, धाम°, नृ°, रयि°, राति°.

साचार (2. स + चार°) adj. *wohlgesittet* Spr. (II) 7200.

1. साचि adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. *quer, schräg* AK. 3,3,6. H. 1315 (subst.). 1534. साचीव (सचीऽइव Padap., nach unserer Vermuthung सार्चीव) विश्वा भुवना न्यृञ्जते ṚV. 10,142,2. साचीव (= तिर्यगिव Comm.) वयः पक्षौ कृत्वा पतीयः पतति Paṅkav. Ba. 5,1,12. *seitwärts, von der Seite her:* घभिमृत्य Kir. 10,57.

2. साचि (von 1. सच्) adj. *begleitend:* einen Fürsten Çat. Ba. 3,4,4,8. अमध्यंदिन° Ait. Ba. 6,30. — Vgl. क्रम°.

साचिन् (wie eben) adj. s. मध्य°.

साचिवाटिका f. *eine weiss blühende* Punarnavā Ratnam. im ÇKDa.

साचिव्य (von सचिव) n. *das Amt eines Begleiters, Hilfe, Beistand* R. 6,100,16. Bnlc. P. 10,71,2. अत्र मे भगवन्साचिव्यं कर्तुमर्हसि MBu. 14,55. चन्द्रश्च साचिव्यमिवास्य कुर्वन् R. 5,11,1. 20,1. 50,7. Kirân. 2, 146. रामसाचिव्यमागतः *hat Râma's Beistand in Anspruch genommen* R. 6,4,20. वीरसाचिव्यमापेत Kathâs. 75,38. कार्यकारणभावादितर्कमूलकानुमानसाचिव्येन *mit Hilfe von* Kusum. 37,9. 10. Insbes. *das Amt eines fürstlichen Beistandes, Ministeramt* MBu. 12,4099. 4129. Spr. (II) 229. 299. 5626. Vaçîn. Bṛh. 18 (16),2. इत्यात्तसेषु पुत्रस्य साचिव्ये तेषु भूभृता Kathâs. 34,117. °पदवी Pañkat. 13,4. 58,10.

साचिव्यातेप (साचिव्य + घा°) m. in der Rhetorik *eine Erklärung, dass man mit Etwas nicht einverstanden sei trotz des Beistandes, den zu leisten man sich bereit erklärt,* Kirân. 2,146. Beispiel Spr. (II) 2078.

साचीकृ (1. साचि + 1. कृ) *zur Seite wenden:* °करोत्याननम् Mikav. 73. °कृतानन MBu. 2,2369. Ragh. 6,14. Kathâs. 39,53. Rîdâ-Tân. 4. 20. °कृतदृशा मुखेन Kathâs. 17,128. °कृता चारुतरेण तस्थौ मुखेन Kumâras. 3,68. °कृतम् adv. *seitwärts* (Jmd anblicken) MBu. 3,592.

साचीगुण N. pr. eines Ortes Ârt. Ba. 8,23 (Bnlc. P. 9,20,26. = प्रकृष्टगुणवान्देशः Comm.).

साचीविद् adv. = क्षिप्रम् Naish. 2,15.

साचेय (von 2. साचि) adj. *gehörig —, passend zu:* उदग्साचेयं वा घस्राग्रम् Çâṅkh. Ba. 11,8. = 2. स + साचेय (von चि mit घा) = उदग्पूरक Comm.

सांच्य (von 1. सच्) adj. *dem man beispringen —, den man werth halten muss:* घा साच्यं कुर्वय वर्धनं पितुः ṚV. 1,140,8. = समवेतव्य Sây.

साज्ञ (2. स + 1. घज्ञ) adj. *nebst* Pûrvabhadrapadâ Vaṅîn. Bṛh. 8. 10,17.

साज्ञात्य (von सज्ञाति) n. *Gleichartigkeit* Sâm. D. 14,20. Bhâsâîp. 166.

सांचारिक (von संचार) adj. *beweglich:* पक्षाणि MBu. 1,8008.

साज्ञ m. N. pr. eines Autors; s. u. नन्द्यावर्त 2).

साज्ञन (2. स + घ्न°) 1) adj. *mit Schlacken —, mit Unreinem behaftet, nicht ganz lauter:* (पशुः *Geschöpf*) द्विविधः साज्ञनो निरज्ञनश्चेति। तत्र साज्ञनः शरीरेन्द्रियसंबन्धी निरज्ञनस्तु तद्रहितः Sarvadarçanas. 77,6. fgg. — 2) m. = घज्ञन *Eidechse* Çabdar. im ÇKDa.

साज्ञलि (2. स + घ्न°) adj. = कृताज्ञलि *die beiden Hände hohl an einander legend* R. 7,10,28. 23,27.

सांज्ञीवीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Ba. 10,6,5,9. 14,9,4,32.

सांज्ञायनि m. metron. von संज्ञा gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

साट्य, साट्यति Dhâtup. 35,54,r (प्रकाशने).

साठल m. N. pr. Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 481.

साडखान m. N. pr. eines *Chans* Verz. d. B. H. 173,7.

साडि m. patron. von सड P. 8,3,56, Schol.

साढ partic. praet. pass. von 1. सह्; vgl. घषाढ.

सांढृ (von 1. सह्) nom. ag. P. 6,3,113. *Ueberwinder:* उग्रः पृतनासु साढ्वाँ ṚV. 7,56,23. — Vgl. सोढृ.

साढी infin. von 1. सह् P. 6,3,113. सपत्नान् Schol.

साढ्वा absol. von 1. सह् P. 6,3,113. शत्रून् Schol.

साण्ड (2. स + घण्ड oder घाण्ड) adj. *unverschnitten:* ein Stier Kâç. Ça. 15,1,5. 22,3,10. Lâṭ. 9,4,21. Pân. Gaṇ. 3,8.

सात् 1) eine Sautra-Wurzel P. 3,1,133. Vop. 26,33. — 2) n. = ग्रसन् ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

सात 1) adj. s. u. 1. सन् und vgl. सत°. — 2) m. N. pr. eines Yaksha Kathâs. 6,97. 105. — 3) n. = शात = मुख Bharata zu AK. 1,1, 4,3 nach ÇKDa.

सातत्य (von सतत) n. *Beständigkeit, Ununterbrochenheit* MBu. 3,603. वेदना° Suçr. 1,300,14. क्रिया° P. 6,1,144. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu 2, 1,72. Schol. zu 3,3,125. AK. 3,3,1. instr. *beständig, dauernd, ununterbrochen* MBu. 12,3507. Kâraṇ. 3,8. Suçr. 1,167,1. Mâlav. P. 18,31. 130,14. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 282.

सातय adj. P. 3,1,138. Vop. 26,35.

सातला f. = सप्तला und auch daraus entstanden AK. 2,4,8,9. H. an. 3,4. 691. Med. k. 43 (शातला). Ratnam. 184. Rîdân. 4,198.

सातवाह् m. = सातवाहन Rîdâ-Tân. 6,367.

सातवाहन m. N. pr. eines Fürsten, = शालि H. 712. Kathâs. 6,1. सातेन यस्माद्भूता भूतस्मात्तं सातवाहनम्। नाम्ना चकार 105. fgg. 7,18. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 54. शात° Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,22. — Vgl. सालवाहन, शालिवाहन.

सातसइका f. N. pr. eines Gebietes Kshitîç. 23,11.

मातर्हन् adj. *Erworbenes vernichtend, Gewinn vereitelnd* AV. 3,15,5.

1. मार्ति (von मा = मन्) 1) f. P. 3,3,97. 6,4,42. 45. Schol. zu 3,3, 174. Vop. 20,44. AK. 3,6,4,9. *Gewinnung, Erwerb, Besitz; das Beutemachen, Gewinnen des Preises:* तुतुज्यात्मार्तये धियः RV. 1,143,6. क्षेत्रस्य 112,22. 169,2. सूर्यस्य 2,19,4. 8,20,8. 7,30,2. स्वश्च नः मार्तये धाः 3,31,19. 36,6. व्रजस्य 6,10,3. वाजस्य 6. तोकस्य 2,30,5. राधः 3,23,29. वस्वः 7,83,6. वि पथः मार्तये सितम् 8,5,9. रयिं प्राचा मार्तये 1,102,3. मार्तिं रधाय मार्तिमर्वते 111,3.5. 8,45,9. वि मार्तये तन्वं मामृज्रीत 7,93,3. मार्तये कृतम् 10,143,3. 6,19,2. 36,5. = दान AK. 3,4,24,70. H. an. 2,205. Med. t. 69. — 2) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Aushṭrâkshi Ind. St. 4,372. — Vgl. घर्क°, घर्ण°, तोत्र°, गोघाति, तोक°, युम्न°, धन°, नृषाति, मेध°, वाज°, पूर्°, स्वर्षाति.

2. मार्ति (von 3. मा) f. Vop. 20,185. AK. 3,6,4,9. *Beschluss, Ende* 3, 3,29. 3,4,24,70. H. an. 2,205. Med. t. 69. *heftiger Schmerz* Bhar. zu AK. nach ÇKDa.

3. मार्ति *ein best. Metrum* Ind. St. 8,283.

मार्तिक (2. म + घर्ति°) adj. *übermässig, überaus heftig:* मद् Rasa. 19,12.

मार्तिलक s. मार्तीलक.

मार्तिशय (2. म + घर्ति°) adj. *vorzüglich, ausgezeichnet* M. 9,114. Harîv. 8410. Kathâs. 22,76. 73,338.

मार्तिसार (2. म + घर्ति°) adj. *am Durchfall leidend* AK. 2,6,2,10. H. 460. Hall. 2,451.

मार्तीन m. = मर्तीन *eine Erbsenart* H. 1170, Schol. Hall. 2,427.

मार्तीलक m. dass. Râmakrishṇa zu AK. 2,9,16 nach ÇKDa. fehlerhaft मार्तिलक Wilson in der 2ten Aufl. nach dess. Aut.

मार्तु m. vielleicht so v. a. *receptaculum:* न यस्य मार्तुर्न पितुरवारि *dessen Behälter (Aufenthaltsort) nicht gehindert werden konnte (ihn) zu gebären* RV. 4,6,7.

मार्तोवार्क्त adj. von मर्तोवक्ती Lâṭ. 10,6,6. 10. 16. 7,8. 8,1.

मार्त्कर्य n. *Wirkung* beim Schol. zu Kap. 1,115 entweder fehlerhaft für मत्कार्य oder nom. abstr. von मत्कर्.

मात्र (von मत्र) adj. *zu einer Feier gehörig* u. s. w.: मात्राकीनिक Âçv. Çr. 11,2,11.

मात्रिक (wie eben) adj. dass.: घृति Kauç. 18. 22. Çâṅkh. Br. 25,13. 14. Weber, Prâtiçâkhja. 103. Ind. St. 3,383 (v. l. मात्रिक: vgl. 393.).

मात्र (von मत्र) adj. *zur Qualität* मत्र *in Beziehung stehend* u. s. w. Mânn. P. 40,7. 42,4.

मात्रकि m. patron. von मत्रक gaṇa वाकृादि zu P. 4,1,96.

मात्रिक (von मत्र) 1) adj. (f. ई) a) *charaktervoll:* Personen M. 3,263. MBh. 5,1729. 13,4895. Varâh. Bṛih. S. 2, S. 3, Z. 5 v. u. Kathâs. 35, 39. — b) *zur Qualität* मत्र *in Beziehung stehend, von ihr vorzugsweise beherrscht* u. s. w. Maitrâyaṇ. 5,2. M. 12,21. 40. 48. fgg. MBh. 12,7097. Bhag. 7,12. 14,16. Suçr. 1,192,4. 312,18. 335,18. Kap. 2,18. Çârṅgad. 23. 25. Spr. (II) 2741. Varâh. Bṛih. S. 69,8. Verz. d. Oxf. H. 14,a, No. 1. 36,b,10. 80,a,25. 81,a,43. 82,b,17. Mânn. P. 45,37. Bhâg. P. 3,29,19. Tattvas. 19. Vedântas. (Allah.) No. 46. Sarvadarçanas. 148,6. Wilson, Sel. Works 1,12. fg. 252. — c) in der Rhetorik und Dramatik so v. a. *äusserlich in entsprechender Weise hervortretend* Sâh. D. 164. 208. 274. 22,18. 37,19. Verz. d. Oxf. H. 200,a,2. 213,a,1 v. u. AK. 1,1,2, 16. H. 283. 295. 307. Milavin. 16,3. — 2) m. ein N. Brahman's H. 211. — 3) f. ई ein N. der Durgâ Çabdar. im ÇKDa.

मात्म (2. म + घात्मन्) adj. *nebst der eigenen Person* Bhâg. P. 18,14,17.

मात्मक (wie eben) adj. *mit Bewusstsein verbunden:* दुःखात्तो द्विविधः। धनात्मकः मात्मकश्चेति तत्रानात्मकः सर्वदुःखानामत्यन्तोच्छेदरूपः मात्मकस्तु दृक्क्रियाशक्तिलक्षणमैश्वर्यम् Sarvadarçanas. 76,2. fgg.

मार्म्यता (von मात्मन्) f. *Wesensgemeinschaft, Wesenseinheit:* गच्छति ब्रह्मणः °ताम् Çat. Br. 11,3,6,9. MBh. 1,3645. नीता इन्द्रेण °ताम् Bhâg. P. 6,18,18. घच्युतमात्मतां नीतो 7,1,46. गच्छत्यतरमात्मतम् MBh. 12,3328.

मात्मर्व (wie eben) n. *Beseeltheit* AV. 9,6,38. TS. 3,1,2,2. TBr. 1,1,6,4.

मौत्मन् (2. म + घात्मन्°) adj. *beseelt, nebst der Seele* Çat. Br. 12,1,2,3. TS. 5,3,2,2. 6,3. 5,6,3. 6,6,3. TBr. 1,2,1,7. 3,8,10,5.

मात्मीकर् (मात्म्य + 1. कर्) *sich an Etwas* (acc.) *gewöhnen:* निद्रां °कृता Suçr. 1,330,18.

मात्मीभू (मात्म्य + 1. भू) *zur Gewohnheit, — zuträglich werden* Suçr. 2,179,7.

मात्म्य (von 2. म + घात्मन्) 1) adj. *was einer Person passt, zuträglich, gesund für* Suçr. 1,130,9. सर्वप्राणभृतां मात्म्यं क्षीरमिकेष्यते 175, 3. 193,3. 2,493,5. Kâraka 3,1. ऋतु° *zu der bestimmten Zeit zuträglich* 1,6. देश° 3,1. °सेविन् 4,3. अ°: Speise Suçr. 1,48,17. 2,63,18. 428,1. 509,5. °चारिन् *von ungesunden Stoffen oder an ungesunden Orten lebend* 1,207,11. — 2) n. a) *das Zuträglich-, Gesundsein für:* जाति° Suçr. 1,72,20. घात्म्य° Vishṇ. 1,10,7. शरीर° Kâraka 1,26. — b) *gewohnte Lebensweise, Angewöhnung* Kâraka 3,8. Suçr. 1,124,9. 2,400, 20. 428,3. °तस् *in Folge von Gewöhnung* (vgl. अभ्यासतस् 76,3) 1,75, 21. °ज *aus einer richtigen Lebensweise* (der Eltern) *entspringend:* गर्भ Kâraka 4,3. Am Ende eines adj. comp.: क्षीर° *an Milch gewöhnt* Suçr. 2,161,6. मांस° 64,4. क्षेद्° 177,18. शीत° 315,11. घतिलवण° *zu sehr an Salzgenuss gewöhnt* Kâraka 3,1. पेयाम° 8,9. वमन° Suçr. 2, 184, 17. — c) *Wesensgemeinschaft, Wesenseinheit:* इन्द्रेण प्रापिताः मात्म्यम् Bhâg. P. 6,18,19. मात्म्यं क्लेर्यपुः 7,10,39. fg. — Vgl. बाल°.

मार्त्य (von मत्य) 1) adj. *dessen Natur die Wahrheit ist* gaṇa कृत्रादि zu P. 4,4,62. Çat. Br. 14,5,5,12. — 2) m. N. eines Sâman Ind. St. 2,243,a.

मात्यक m. = मात्यकि MBh. 5,653. 7,1441. Harîv. 7534 (°कि die neuere Ausg.). am Ende eines adj. comp. 7460 (समा° zu schreiben).

मौत्यकामि m. patron. von मत्यकाम TS. 2,6,3,3. मौत्यंकामि (!) gaṇa पैलादि zu P. 2,4,59.

मात्यकायन m. patron. von मात्यक oder मात्यकि; pl. Saṅgr. K. 184,a,3.

मौत्यकि (von मत्यक) patron. gaṇa पैलादि zu P. 2,4,59. des Jujudhâna Taitt. 1,1,25. Gaṭiṇu. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,16. Bhag. 1,17. MBh. 1,534. 2432. 2714. 6998. 7910. 4,2257. Harîv. 1935. 5085. 7457. 7488. fgg. 7525. 8050. 14464. fgg. VP. 435. Weber, Kaṇṇaḍ. 289. Bhâg. P. 1,10,18. 3,24,13.

मात्यकिन् m. = मात्यकि MBh. 16,247 (des Metrums wegen).

मात्यंकामि s. मात्यकामि.

मात्यंकार्यि m. patron. von मत्यंकार gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

सात्यहूत (von सत्य-हूत) adj. *den zuverlässigen Boten gehörig;* so heissen *gewisse Opferspenden an* Sarasvatî *und andere Götter* Comm. zu TS. 2,194,11. Dagegen ist सात्यहूतानां क्वींषि ebend. 188,3. 187, 6. 193,4 wohl irrig für सत्य°.

सात्यमुग्र oder °ग्य m. pl. *die Schule des* Sâtjamugri Ind. St. 3,273.

सात्यमुग्रि m. patron. von सत्यमुग्र P. 4, 1, 81. Ind. St. 13,448. Verz. d. B. H. 55,24 (सात्य°). No. 324 (शाट्य°). fem. °ग्री und °ग्र्या P. 4,1,81.

सात्यमुग्र्य s. u. सात्यमुग्र und सात्यमुग्रि.

सात्यमुनि m. patron. Sâṁsk. K. 186,a,7. vielleicht fehlerhaft für सात्यमुग्रि.

सात्ययज्ञि (von सत्ययज्ञ) m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 3,1,4,4.

सौत्ययज्ञि (wie eben) m. patron. des Somaçushma Çat. Br. 11,6, 3,1. 3. 13,4,3,4. 5,2,9.

सात्यरथि m. patron. von सत्यरथ VP. 4,5,12.

सात्यवत (von सत्यवती) m. metron. Vjâsa's Taitt. 2,7,20.

सात्यवतेय m. desgl. Hariv. 2,258.

सात्यकव्यि (von सत्यकव्य) m. N. pr. eines Vâsishṭha TS. 5,6,3,2. Ind. St. 3,474. Ait. Br. 8,23. Verz. d. Oxf. H. 267,a,27.

सात्राजिति (von सत्राजित्) patron. 1) m. des Çatânîka Ait. Br. 8,21. Çat. Br. 13,5,4,19. 21. — 2) f. ई der Satjabhâmâ MBh. 3,14652. 16, 145. Hariv. 6702. 7027. 7046.

सात्रासाहि (von सत्रासाह) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. 1) adj. *allüberwältigend*, Bez. einer Schlange AV. 5,13,6. AV. Paipp. 3,23. — 2) m. patron. des Çuṇa Çat. Br. 13,5,4,16. 18.

सात्रासाह्क adj. von सात्रासाह (देशे) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

सात्वत 1) adj. (f. ई) gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86 (properox.). *a) den* Satvant *oder* Sâtvata *eigen, den* Sâtvata (Kṛshṇa) *betreffend* u. s. w.: विधि MBh. 12,12714. 12719. °ज्ञान 13337. गुण Bhâg. Nâṛâç. 20, 37. श्रुति Bulg. P. 1,4,7. °संहिता 7,6. वृत्ति Bez. *eines best. Stils, Charakters, genre im Drama* Bhâg. Nâṛâç. 20,12. 37. Daçar. 2,49. 52. 56. fg. Sâh. D. 410. 416. Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489. H. 285. — *b)* oxyt. *das Wort* सत्वन् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61. — 2) m. *a)* oxyt. *ein Fürst der* Satvant gaṇa पर्श्वादि zu P. 5,3,117. 4,1,177, Vârtt. 2. Bez. Kṛshṇa's (Taitt. 1,1,33) und Anderer MBh. 1,7896. 7991. 5,2565. 7,3608. 9,787. 12,12968. 13237. 14,1526. Bulg. P. 8,21, 17. = बलदेव H. 224. Halâj. 1,28. pl. Bez. eines Stammes (zu dem auch Kṛshṇa gehört), = सत्वन् gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38 (सत्वन् fehlerhaft). = दशार्ह (ungenau, da dieses häufig daneben erscheint) Taitt. 2,1,10. — MBh. 1,7965. VP. 4,12,16. Bulg. P. 1,14,25. 3,1,29. 9,9,49. 11,27,1. °गुण 1,9,32. सात्वतर्षभ 14,33. 5,25,4. 10,58,42. 11, 27,1. °पति 10,69,12. °यूथप 76,23. — *b) ein Anhänger* Kṛshṇa's Pingalottarakâṇ. 99 im ÇKDa. — *c)* Bez. *einer Mischlingskaste, der Nachkommenschaft eines ausgestossenen* Vaiçja M. 10,23. — *d)* N. pr. eines Sohnes des Âju Bulg. P. 9,24,6. 7. des Aṁçu ÇKDa. nach dem Kûrma-P. — 2) f. °ती *eine Fürstin der* Satvant MBh. 1,8038. Mutter Çiçupâla's ÇKDa. und Wilson.

सात्वतीय m. *ein Anhänger* Sâtvata's d. i. Kṛshṇa's Bulg. P. 5,25,1.

सात्वत्त् m. pl. N. pr. eines Stammes, = सत्वन्, सात्वत; nur im gen. pl. Hariv. 1997 (सत्वताम् die ältere Ausg.). 3038. Bulg. P. 1,1,12. 2, 14. 14,29. 2,4,14. सन्धकवृष्णि° 20. 3,1,24. सर्व° 4,30,24. 8,5,12. 9,5, 15. Pâṇ. 4,3,130.

सादे (von 1. सद्) m. gaṇa श्वलादि zu P. 3,1,140. 1) *das Sitzen auf dem Ross, das Reiten* ṚV. 1,162,17; vgl. साद्य. — 2) *das Einsinken:* चक्राणां सादभङ्ग Vaṛâh. Bṛh. S. 46,60. — 3) *Ermattung, Erschlaffung, Nachlass:* गात्राणाम् Soṇa. 1,51,10. भङ्ग° 90,12. 269,1. Hit. 268. शरीर° Raṇa. 3,2. कर° (*Hand* und *Strahl*) Spr. (II) 1539, v. l. ऊरु° Çiç. 9,77. सन्धि° Soṇa. 1,53,8. 219,12. 242,18. *Schwund:* शपत° der Berge Vikr. 44. गतिविभ्रम° Raṇa. 8,57. जीवित° Naḷod. 3,24. — 4) *Verzweiflung, Kleinmuth* H. 312. Naḷod. 2,36. — Hariv. 13166 in der neueren Ausg. fehlerhaft für साद्; सादोपसाद° Padma-P. 8,19 fehlerhaft für साङ्गोपाङ्ग°. Vgl. घ° (zu setzen *nicht reitend*), चमल°, चश्च°, गो°, गोयादी, पुष्कर°, मूत्रीक°, शकुनि°, सर्व°.

सादेयोनि adj. *seine Stätte besitzend* ṚV. 5,43,12.

सौदन (vom caus. von 1. सद् und metrische Dehnung für सदन) 1) adj. zu *Grunde richtend, vernichtend:* चित्राङ्ग°(so lesen wir; demnach wäre चित्राङ्ग als N. Arǵuna's zu streichen) als N. Arǵuna's H. ç. 137. — 2) f. ई *eine best. Pflanze,* = नकुली Râǵân. im ÇKDa. — 3) n. *a) das Hinsetzen, Hinstellen* (von Gefässen u. s. w.) Kâty. Ça. 1,5,12. 2,14,19. 12, 4, 16. 22. 19,2,14. der Ishṭaká (sammt dem Begleitspruch) Çat. Br. 7, 1, 2, 16. 2, 2, 12. 8,1,4,6. 10,2,4,3. — *b) das Einsinken* (eines Wagens) Vaṛâh. Bṛh. S. 46,2. — *c)* = सदन *Sitz, Ort; Behausung* Bhâg. zu AK. 2,2,4 nach ÇKDa. यम° (s. auch bes.) MBh. 1,7671. 2,2231. 3, 13160. 12,7742. R. 6,68,11. Bulg. P. 3,30,24. 27. vedische Belege s. u. सदन 1) *a*). — *d) Schüssel* (= पात्र Comm.) Bulg. P. 4,7,25.

सादनर्स्पृम् (सदन° Padap.) adj. *die Heimath berührend* d. h. *in die Wohnung gebracht:* वसु ṚV. 3,72,3.

सादन्य (von सादन, सदन्य Padap.; vgl. VS. Paipp. 3, 128 am Ende) adj. *häuslich* ṚV. 1,91,20.

सादमय (von साद) adj. *aus Verzweiflung* u. s. w. *hervorgegangen* Naḷod. 3, 24.

सादयितव्य (vom caus. von 1. सद्) adj. zu *Grunde zu richten, zu vernichten:* नैव सादयितव्यो (रामलक्ष्मणौ) ते मनसापि कश्चन च न R. 4,14,26. तेजांसि, तपांसि 1,66,4.

सादर (2. स + धा°) adj. (f. धा) *alle Rücksichten beobachtend, grosse Theilnahme an den Tag legend, die gehörige Aufmerksamkeit* Jmd *oder einer Sache schenkend* Kathâs. 10, 31. 12, 88. 21, 102. 25, 104. 43, 213 (स सा° zu trennen). 257. 45, 368. Mâlav. P. 69, 14. Bulg. P. 4,4,7. in comp. mit der Ergänzung: धर्मैक° *nur bedacht auf* Kathâs. 27,107. श्रीकृष्णलीलालालितरसकथासादरौ नैव कर्णौ Spr. (II) 3567. सादरम् adv. R. 2,101,2. 112,26. Kathâs. 13,146. 14,49. 23,94. 30,23. 43,239. 45,368 (सादरं zu lesen). Hit. 63,17. Râǵa-Tar. 3,118. Bulg. P. 3,13,10. 4,4,5. 5,9,46. 8,12,3. 9,5,19. Paṇâr. 1,2,10. 22. 4,44. fg. सादरपूर्वकम् dass. 2,5,69. — Vgl. auch unter आदर (auch in den Nachträgen).

सादस adj. *im* Sadas *befindlich* Lâṭj. 2,3,18.

सादसर्त adj. *die Worte* सत्त् *und* असत् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5, 2, 61.

1. सादि (von 1. सद्) Uṇādis. 4,124. m. *Reiter:* क्ष्यान् — ससादीन् MBu. 8,3810. 4589 (ससादीन् zu schreiben). उष्ट्र° P. 6,2,40. गो° 41 (im Sûtra könnte übrigens auch सादिन् gemeint sein). = सारथि Uṇâdis. im ÇKDa. = योढृ Uṇâdis. im ÇKDa. = नवसत्र und वाजु Uṇâdiv. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa.

2. सादि (2. स + वादि) adj. *einen Anfang habend* Comm. zu Gaim. 1, 27. Nilak. 119. 191. Davon nom. abstr. °त्व n. ebend. Comm. zu Gaim. 1,28.

सादिन् (von 1. सद्) adj. 1) *reitend*, m. *Reiter* (insbes. zu *Pferde*) AK. 2,8,2,28. 3,4,28,109. fg. H. 761. an. 2,290. Med. n. 152. Halâs. 2,235. AV. 11,10,24. MBu. 1,5451. 2,1900. 3,12589. 4,1045. 16,210. Hariv. 4989. 5076. R. 2,97,20 (100,19 Gorr.). 5,83,2. Çiç. 12,22. 31. Spr. (II) 3517. Râga-Tar. 5,451. Bhâg. P. 10,71,14. अश्व° Ragu. 7,44. Kathâs. 42,7. तुरंग° Ragu. 7,34. कुञ्जि° MBu. 4,1031. सादिन् = कुञ्जि° H. 762. H. an. Med. = सारथि, रथिन्, रथारोह AK. 3,4,28,109. fg. H. 760, Schol. H. an. Med. — 2) zu *Schanden machend:* वृत्त° R. 2,34,37. — द्रविणसादिन् zur Erkl. von द्रविणस् Nir. 8,2. धीसादिनी zur Erkl. von धिषणा 3.

सादृश adj. = सदृश Çâṅkh. Ça. 4,21,2.

सादृशीय adj. von सदृश gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

सादृश्य (von सदृश) n. *Aehnlichkeit, Gleichheit* Nir. 1,3. Hariv. 15792. R. 4,12,42. Mṛicch. 153,8. Mucu. 83. 102. Kumâras. 5,35. 7,16. Ragu. 1,40. 8,91. 15,67. सत्ति पुनर्नामधेयसादृश्यानि Çâk. 105,8. Çâk. Ça. 63, 6. Kir. 5,26. Spr. (II) 7467. Kathâs. 119,94. AK. 3,4,28,164 (wohl भेदसादृश्ये zu lesen). Râga-Tar. 3,117. Sâh. D. 18. Bhâg. P. 7,15,61. Tarkas. 48. Bhâshâp. 78. Schol. zu P. 1,1,50. zu TS. Prât. 1,3. 13,16. zu Naish. 22,42 (स°). Sarvadarçanas. 68,18. 177,9. Verz. d. Oxf. H. 211,b,9. °वाद Titel einer Abhandlung 244,b, No. 609.

सादेय्य MBu. 6,3900 Druckfehler für सौदर्य (सौदर्य्य).

सादुण्य (von 2. सदुण) n. *Vorsüglichkeit* Âçv. Gṛihj. Pariç. 2,7.

सादुत (2. स + वि°) adj. *erstaunt, verwundert* Kathâs. 56,177. 124,37.

साद्य (von सादिन्) adj. *zum Reiten tauglich*, m. *Reitpferd* Âçv. Ça. 9, 9,14. Daher wird वह्य ebend. *zum Fahren tauglich, Wagenpferd* bedeuten.

साद्यःक्र (von सद्यःक्री) adj. *mit Soma, der am selben Tage gekauft ist, begangen;* so heissen fünf (auch sechs) Ekâha Comm. zu Pañkav. Br. 16,12,1. — Shadv. Br. 4,3. Kâty. Ça. 12,1,2. 22,2,9. 3,24. 26. Lâṭy. 1,3,21. 8,3,1. 3. Çâṅkh. Ça. 14,40,7. Maçaka 3,5. 6 in Verz. d. B. H. 72. Häufig साद्यस्क्र geschrieben, welches nach gaṇa कास्कादि zu P. 8,3,48 allein berechtigt ist. Fehlerhaft साद्यस्क Âçv. Ça. 9, 7,13. षट्साद्यस्काः सर्ववेदेषु दृष्टाः MBu. 3,10663. पञ्च 14864. 12,8908. 13,4934 (सद्यस्क ed. Calc.); vgl. सद्यस्कार.

साद्यस्क adj. 1) (von सद्यस्) *alsbald erfolgend* Spr. (II) 2236. — 2) ungenaue Schreibart für साद्यस्क.

साद्यस्क्र s. साद्यःक्र.

सौद्योत्र adj. von सद्योत्र gaṇa सैकलादि zu P. 4,2,75.

1. साध्, सौध्यति (संसिद्धौ) Dhâtup. 26,71. साध्नोति (संसिद्धौ) 27,16. zu belegen nur सौधति, °ते. Erhält keinen Bindevocal इ Kâr. 4 aus Sidhm. K. zu P. 7,2,10. Vgl. सिध्. 1) *gerade aus zum Ziel kommen; seinen Zweck erreichen:* वि रोदसी पप्रथा याति साधन् RV. 6,66,7. अनु देवान्वि- थिरो यासि साधन् *recta* 3,1,17. यो वामृञ्जे क्रमणाय दृढ़ाश्व स साधति 6, 70,3. यस्मे त्वमायजसे स साधति 1,94,3. med.: साधन्ता नो धियः 6,53,4. 8,19,10. 9,71,3. 1,141,1. zu *Stande kommen:* साध्यति घटः Daçakûm. im ÇKDa. — 2) *gerade lenken, schlichten, in Ordnung bringen; zum Ziel führen:* धियम् RV. 1,2,7. 10,74,3. med. 8,40,9. — यज्ञनाक्षा वयुनानि साधत् 2,19,3. 3,38,9. 4,56,7. 1,96,1. विदथानि 3,1,13. 4,16,3. सृतेन 3,5,3. 7,34,8. सनिं गोर्वर्मानाय साध 3,1,23. साधा दिवः 4,3,8. zu *Stande bringen:* साधोति साध्यति घटं कुलालः Daçakûm. im ÇKDa. — 3) *sich fügen; gehorchen:* वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौः RV. 5,45,3. स नैत्यस्य दुर्यासु साधन् 4,1,9.

— caus. साधयति, °ते (des Metrums wegen), असीषधत्, मेषधत् 1) *gerade —, eben machen, schlichten:* सूक्तायं साधया पथः RV. 9,9,3. गर्भमाधेहि साधय *zurechtmachen* Çâṅkh. Gṛihj. 1,19. — 2) *richtig leiten, zum Ziel bringen:* मतिम् RV. 2,24,1. धियम् 3,3. 7,66,3. मन्म 6,36,4. गवेषणं सातये सोषधो गणम् 5. — 3) *zur Ordnung bringen, Jmd sich dienstbar machen, in seine Gewalt bringen, für sich zu gewinnen suchen:* इमा नु कं भुवना सीषधाम RV. 10,137,1. नहि मांप्रा न दानेन न भेदेन च पाण्डवाः । शक्याः साधयितुम् MBu. 1,7435. 2,647. 6,5048 (med.). 5049. Kâm. Nitis. 9,70. पापान्दण्डेन 12,39. 17,44. 46. 49. fg. Vaṇîn. Jogaçâstrâ 1,11 in Ind. St. 10,165. Spr. 4928, v. l. 7020, v. l. (साधितुम् = साधयितुम्). Kathâs. 107,71. 121,7. Pañkat. 156,19. fg. 211,12. Hit. 59. 21. Bhâg. P. 5,24,16. Bhaṭṭ. 7,31. साधयेद्देहमात्मनः M. 2,248. Jâgn. 1,50. R. 5,15,56. Pañkat. III, 170. तवैव योगी — प्राणं नयति साधितम् Mâlav. P. 39,13. यथा हि साधितः सिंहो मृगान्हन्ति न मानवान् so v. a. *abgerichtet* 19. eine Gottheit, einen Geist *sich dienstbar machen; citiren* Kathâs. 10,10. 28,163. 73,25. fg. einem Schuldner *zu Leibe rücken, ihn zur Bezahlung zwingen* Jâgn. 2,40. साधितः = दापितः AK. 3,1,40. H. 446. — 4) *zurechtbringen, heilen* Suçr. 1,35,4. 68,19. व्याधिम् 123,10. 2,47, 14. — 5) *ausführen, fertig machen, zu Stande —, zu Wege bringen, zubereiten* Kâty. Ça. 25,7,15. Çâṅkh. Ça. 5,19,2. Bhâg. P. 11,27,21. Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,163. इज्या साध्यते मोक्षः MBu. 12,7742. साधयामासम् (!) 13,4945. वार्ता प्रजा Kâm. Nitis. 13,27. Siddhânjan. 37. कमलोन्मेषम् Kumâras. 2,33. Ragu. 17,35. Spr. (II) 5910. Kathâs. 13,56. तामात्मनकमुत्तमम् 35,82. Râga-Tar. 5,62. Bhâg. P. 8,13,30. Sâh. D. 68, 11. Pañkat. 43,20. 191,10. कार्यम् M. 7,173. 9,297. MBu. 1,7514. Hariv. 3978. Spr. (II) 772. 1681. 6950. Vop. 26,30. कर्म MBu. 3,12256. 13,4946. Spr. (II) 1684. 3215, v. l. Daçak. 89,5. कृत्यम् R. 5,9,34. Pañkat. 201,8. परार्थम्, स्वार्थम् Kâm. Nitis. 5,30. वदर्थम् Ragu. 5,25. घर्षम् Kathâs. 30,124. इष्टम् MBu. 2,647. द्रव्यम् 13,1536 (med.). धर्मम् R. 3, 14,30. तपः Mârk. P. 121,3. नैष्कर्म्यम् *sich der Unthätigkeit hingeben* Bhâg. P. 4,23,27. महम् so v. a. *sich des Trinkens enthalten* MBu. 13,2930. Hariv. 1213 (साध्य absol.). मखम् so v. a. *hersagen, lesen* Kathâs. 15, 48. वाक्यम् *ausführen* MBu. 5,117. *zubereiten* (Speisen) Kâraka 3,7. Suçr. 2,161,15. 364,6. R. Gorr. 2,21,20. Kathâs. 9,10. 20,202. 39,9. 41,17. 56,405. Kull. zu M. 3,271. — 6) zu *Wege bringen* so v. a. *verschaffen, herbeischaffen, zu Theil werden lassen:* पर्जन्यः पर्वते वर्षन्किं नु साधयते फलम् Spr. (II) 3991. घर्मान् Vaṇîn. Bṛih. S. 88,29 (med.). तेवापि क्षेमेन साधयामो (so ist zu lesen) वयं सुतम् Kathâs. 13,65. 114.

साधयामो ऽस्य मेदिनीम् 15,18. 26. 21,66. 32,131. 44,100. 109,14. 22. 24. 46,190. Bhāg. P. 1,8,5. 7,3,10. 8,5,10. 8,37. 10,2. 9,1,20 (med.). 10,33,18 साधितुम्. कं ते कामं मनसा साधयामि MBh. 14,272. ये साधयन्ति सन्निणो निन्द्यवाञ्छितम् Verz. d. Oxf. H. 106,a,39. Kathās. 13,89. 17,100. 25,68. 26,196. Bhāg. P. 6,7,37. Sarvadarçanas. 33,12. — 7) *Etwas für sich zu Wege bringen, erlangen, gewinnen, theilhaftig werden:* सर्वान् Cat. Bā. 14,5,2,1 (med.). तत्पदम् M. 6,75. न साधयेत्समुद्रोग ऽप्यर्थां कणाम् Vasiṣṭh. Bṛh. S. 104,62. साधयेत्तमात्मनः MBh. 1,1870. मनोरथान् Verz. d. Oxf. H. 106,a,16. विद्याधरत्वम् Kathās. 26,201. बद्धमूलताम् 34,197. 38,151. 40,21. 35. 46,118. 157. 107, 72. 113,76. Rāja-Tar. 3,466. Daçak. 76,8. आत्मोत्कर्षम् Hit. 91,19. साधिकम् (so v. l.) 92,2. Ved. in LA. (III) 3,11. ohne obj. *zu seinem Ziel gelangen, seines Wunsches theilhaftig werden* MBh. 3,1451. — 8) *eintreiben* (Geld): सर्वम् M. 8,49. fg. 176. Jāṭ. 2,16. 40. 42. प्रुत्कम् Mahān. 107,6. — 9) *ausmitteln, durch Berechnung finden:* यद्या राश्युद्याः साधितास्तथा क्षेत्रादयो ऽपि साध्याः Ganit. Sparçādhy. 60, Comm. *darthun, beweisen* Nīlak. 259. मेघोदये वृष्टिः साध्यते Tattvas. 48. Muir, ST. 2, 190. Schol. zu Kap. 1, 43. Sarvadarçanas. 8, 13. 30, 17. 72, 10. 129, 13. साधितं मया — वैरं भवता सह Pañcat. 237,4. — 10) *machen zu, reddere:* इदं वपुस्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति Çiç. 17. य: साधितो वृत्तिकरः पतिर्नः Bhāg. P. 4,17,10. साधय — त्मानं सुव्रतम् 13,32. 9,6,43 (med.). मे । गर्भे त्वं साधयात्मानम् so v. a. *bringe es dahin, dass du in meinen Mutterleib gelangst* 4,8,13. — 11) *aufbrechen, sich auf den Weg machen:* साधयामस्तावत् MBh. 1,789. 3,16689. साध्यतां तत्र गम्यताम् 13,1405. साधयिष्यामि तत्र यास्यामि 1406. R. 2,34,34. Çiç. 7,19. 70, 21. 101,13. Vikr. 60,13. Mālatīm. 126,5. Spr. (II) 978. Rāja-Tar. 1, 145. im Drama प्रायेण एवत्तकः साधिर्गमिः स्वाने प्रयुज्यते Sāh. D. 430. — Vgl. साधय्. — desid. vom caus. *zu beweisen beabsichtigen:* किमिदं पौरुषेयत्वं सिसाधयिषितम् Sarvadarçanas. 129,4. सिषा° Sāh. D. 122,5. Kusum. 2,8. — Vgl. सिषाधयिषा.

— धनु vgl. धनुसाधिन् in सर्वार्थानु°.

— उप caus. 1) *in seine Gewalt bringen* Pañcat. III,249. — 2) *zubereiten* Bhāg. P. 11,27,20. Speisen Soça. 1,230,2. 2,39,18. Mālav. P. 29, 46. 34,48.

— परि caus. 1) *sich dienstbar machen, in seine Gewalt bringen, bezwingen* Hariv. 4032 (nach der Lesart der neueren Ausg.) Kām. Nītis. 17,37. — 2) *zubereiten:* Speisen Pañcat. 3,9,1. — 3) *eintreiben:* सर्वम् M. 8,157. — Vgl. परिसाधन.

— प्र caus. 1) *zurechtbringen, gehorsam machen, in seine Gewalt bringen:* तावस्मै प्रजाः प्रसाधयताम् TS. 2,2,4,1. सर्वाणि भूतानि दण्डेनैव M. 7, 103. Kām. Nītis. 9,71. Kathās. 17,132. — 2) *Etwas in Ordnung bringen, zurechtmachen* AV. 1,24,4. राष्ट्रम् Kām. Nītis. 6,3. Rāgat. 19,3. Kathās. 32,373. संस्कृताम् Verz. d. Oxf. H. 55,b,19. मनुम् *einen Zauberspruch* Pañcat. 3,9,19. तीरेण सह्यैकध्यं प्रसाध्य Soça. 2,119,11. सप्रसाधित 1, 171,13. *schmücken, putzen* Mahān. 96,15. Çiç. 49,21. Kathās. 50,134. 94,49. 95,67 (सुप्रसाधित). 117,130. 124,116. Daçak. 61,2. AK. 2,6,3, 2. — 3) *zu Stande bringen, vollbringen:* कृत्यानि Spr. (II) 1703. 3249. 3660. Sāh. D. 293. मनोरथम् R. 3,25,38. योगक्षेमम् Kathās. 34,200. — 4) *erwerben, gewinnen:* सर्वमेकम् Spr. (II) 3262. 3514. — 5) *ausmitteln, durch Berechnung finden* Ganit. Pāṭīgan. 16. Goļādhy. Bhuvanak. 60. *beweisen* Nīlak. 256. — Vgl. प्रसाधक fgg. — desid. *ausführen wollen:* धियं धियं सीषधाति प्र पूषा ṚV. 6,40,3.

— संप्र caus. s. संप्रसाध्य.

— सम् caus. 1) *bezwingen, in seine Gewalt bekommen* MBh. 8,4034. Hariv. 4032 (प्रसाध्यताम् st. संसा° die neuere Ausg.). शोको मां संसाधयति वेगेन यथा कूलं नदीरयः R. 2,64,69. — 2. *ausrichten, vollbringen:* सर्वानर्थान् M. 2,100. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 73,6 (med.). संसाधयिष्यथान्योऽन्यं संग्रामम् (so ed. Bomb.) MBh. 7,8389. मद्दं संसाध्य (so ed. Bomb.) so v. a. *sich des Trinkens enthaltend* 13,6549. केचिद्ग्रिमथोत्पाद्य संसाध्य च so v. a. *Speisen bereitend* 1,2841. — 3) *verschaffen* Kathās. 45,15. संभिलाषं ते 72,142. — 4) *erlangen, erhalten:* मयादिष्टा विद्याः Kathās. 46, 35. Bhāg. P. 11,23,30. ohne obj. *das Gewünschte erlangen, sein Ziel erreichen* MBh. 3,1478. — 5) *eintreiben* (Geld) M. 8,50. 218. — 6) *Jmd entlassen:* व्रतिनम् Āpast. 2,9,1. सर्वकामैः — रामः संसाध्यताम् R. 2, 36,9. *befördern zu* (dat.): संसाधयिष्यथान्योऽन्यं स्वर्गाय (संग्रामम् ed. Bomb.) MBh. 7,8389. — Vgl. संसाधक fgg.

2. साध् 1. साध् adj. in यज्ञसाध्.

साध (von 1. साध्) m. *Ausführung:* मन्मनः ṚV. 10,35,9.

साधक (vom caus. von 1. साध्) 1) adj. (f. साधिका) a) *zu Wege bringend, bewirkend:* कार्यस्यैतस्य R. 4,45,14. Sāh. D. 739. सप्तवर्गस्य Spr. (II) 3046. धर्मार्थकाममोक्षाणां वार्त्तायाश्चैव Muir, ST. 1,32. Verz. d. Oxf. H. 216,b,25. in comp. mit seiner Ergänzung: धन्य° ṚV. Prāt. 11,24. सेभाराण्यन्नसाधकान् R. 1,11,2. नत्तत्र° MBh. 13,1151. संकल्प्य° Hariv. 1361 (°साधकं zu lesen). सर्वेष्ट° Verz. d. Oxf. H. 99,b,40. कार्य° MBh. 3,11306. Spr. (II) 648. 4425, v. l. 7401. Mān. P. 8,62. Bhāg. P. 8,19, 30. सर्व° MBh. 1,4785. R. 5,1,16. 5,70,36. Suça. 1,107,20. Bhāg. P. 10,46,18. नानार्थ° Kām. Nītis. 17,60. सर्वसस्यार्थ° Vasiṣṭh. Bṛh. S. 22,8. धर्म° MBh. 14,1321. धर्मार्थ° Sarvadarçanas. 77,16. fg. Verz. d. Oxf. H. 40, b,38. Taitt. 3,3,358. ब्रह्म° MBh. 3,2474. Ohne Object *Verrichter* Wheeler, Rāmāy. Up. 291. 307. साधका (!) als Beiw. der Durgā ÇKDr. nach dem Devī-P. साधक *eine Wirkung hervorbringend, wirksam* P. 1,4,28, Vārtt. उपायाः MBh. 8,355. क्षेत्र Spr. (II) 1685. 6722. दण्ड एवात्र साधकः R. 5,81,43. Kumāras. 3,12. Schol. zu Kap. 1,58. superl. °तम P. 1,4,42. AK. 3,4,23,57. Schol. zu Kap. 1,88. °तमत्व n. nom. abstr. Kap. 2,39. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 98. — *b) einrichtend, heilend:* भगस्य Suça. 2, 31,11. — *c) Nutzen bringend, zweckentsprechend, zweckmässig* MBh. 3, 1378. सर्ग (neben यसाधक) VP. 1,5,7. 11. 14. fg. 17. Mān. P. 47,18 (दृष्ट्वासा° zu schreiben). 21. 24. fg. 37. Bhāg. P. 11,20,32. °ता f. nom. abstr. Kull. zu M. 3,183. — *d) Verehrer* (einer Gottheit) Mālatīm. 74, 6. Verz. d. Oxf. H. 81,b, No. 137. 99,b,20. 100,a,35. fg. 236,b,27. Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 47. Pañcat. 2,3,97. 5,22. Sarvadarçanas. 63,22. — *e) Zauberkraft besitzend:* °वर्ति so v. a. *Zauberdocht* Pañcat. 241,2. यस्तवोपरि साधकः Rāja-Tar. 3,270. 268 (wohl तवास्म्युपरि zu lesen). *Zauberer (der eine Gottheit u. s. w. herbeicitirt)* Vikr. 105. Kālikāpur. 5,87. Kathās. 22,9. 73,286. 303. fg. 92,51. — *f)* Bez. eines im Herzen wohnenden Feuers (अग्नि, resp. पित्त), *welches die Willensbestimmungen*

giebt, Suçr. 1,78,9. Çiṅs. Saṅh. 1,5,10. — *g) beweisend* Schol. zu Kap. 1,48. zu Gaim. 1,3.17. Kusum. 23,14. 39,12 Sarvadarçanas. 12,6. 18,9. °त्व n. nom. abstr. 17,11. 130,16. fg. 149,11. सुसाधक 114,6. °त्व n. nom. abstr. 45,6. Schol. zu Kap. 1,6. — 2) f. साधिका *tiefer Schlaf* H. 313. — Vgl. सर्व°, उत्तर°, मत्त°, लोक°, सर्वार्थ°, स्वार्थ°.

साधदिष्टि adj. *wirksame Opfer, Gebete habend* RV. 3,3,6.

साधन (vom caus. von 1. साध् 1) adj. (f. धा und ई) *a) richtig leitend, zum Ziel führend:* यज्ञस्य RV. 1,44,11. 3,27,2. 8. 8,6,3. 23,9. विदथस्य 3,3,8. मतीनाम् 10,26,4. सुयं दत्ताय साधनः सुतः 9,105,3. 62,9. — *b) zu Wege bringend, hervorbringend, bewirkend:* शब्दब्रह्मस्य MBu. 3,14198. देवदानवयक्षाणां मानवानां च 7,2864. Mârk. P. 99,27. संकल्प° Harîv. 1361 (nach der Lesart der neueren Ausg.). सत्य° so v. a. *wahrmachend* 12044. विक्रम° R. 3,33,18. तत्साधनं कर्म Mcis, ST. 1,140. शतसहस्रं शिष्याणां ध्यानसाधनम् so v. a. *obliegend* Verz. d. Oxf. H. 53,a,9. ohne Object *wirkend:* प्रदीपवत्साधना वृत्तिः Gaupâp. zu Sâṅkhjak. 13. *vermögend:* देवाः Nir. 12,41. ein Mann R. 5,88,4. देवाश्च मुनयश्चैव लिङ्गिनः साधनाश्च ये। भगवन्निति ते वाच्याः Bhârata beim Schol. zu Çiç. 82,3. — *c) verschaffend:* लोकद्वयसाधनी Spr. (II) 3468. — *d) herbeirufend, citirend* (einen Geist): वेतालसाधनं मन्त्रम् Kathâs. 75,16. 121,10. — *e) bezeichnend, ausdrückend:* भाव°, कर्म° Kâṡ. zu P. 1,3,11 bei Gold. Mân. 48. — 2) m. संज्ञायाम् gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Bhauvana, Liedverfassers von RV. 10,157. — 3) f. धा nom. act. in मत्त° = °साधन Kathâs. 49,167. — 4) n. *a) das in-seine-Gewalt-Bringen, Bewältigen, Besiegen:* प्रतिकाय° (= प्रतियत्नवध Comm.) Kir. 14,17. रिपु° Pârâṡ. 59,10. *das sich-zu-Willen-Machen, Citiren* (einer Gottheit, eines Geistes, eines Zaubers) MBu. 3,14332 (?). वेताल° Kathâs. 26,235. 28,163. 55,208. 73,261. शाकिनी° Pârâṡ. 241,2. विद्याखड्गमालादि° Kathâs. 24,17. विमान° 44,36. Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,16. fgg 93,*a*,5. *b*,32. — *b) das Ausführen, zu-Wege-Bringen, Vollführen* Nir. 12,40. उपायाद्यास्य साधने MBu. 14,595. साधनोपायाः Kir. Nîtis. 11,56. कर्मणः R. 5,65,7. दण्डस्य Kir. Nîtis. 13,44. सर्व° Suçr. 1,12,20. Spr. (II) 1683. Rasn. 4,16. कार्य° R. 4,42,9. Spr. (II) 7603. कर्म° Suçr. 1,123,8. साध्य° Spr. (II) 5285. धर्मादि° 1518. धर्माधर्म° Windischmann, Sancara 97. यभिप्रार्थितमनोरथ° Suçr. 1,78,10. यात्रा° Kathâs. 107,134. *das Bereiten:* अमृत° 41,19. यत्नसाधनैः Mârk. P. 19,3. 21,75. विषोपविष° Verz. d. B. H. No. 967. — *c) Heilung:* सर्पाणां साधनोपायः Suçr. 2,46,11. MBu. 3,14308. fg. — *d) das Herbeischaffen:* षोषधि° Kathâs. 46,196. fg. द्रव्य° Bhâg. P. 10, 75,4. — *e) das Erlangen, Gewinnen:* सर्वस्य Bhâg. P. 11,23,17. मन्त्रवर्णयोः Pâṅkar. 3,7,1. कोटि° Spr. (II) 5700. परलोक° 2270. — *f) das Eintreiben* (einer Schuld): सर्वस्य Daçak. 61,13. सर्व° 69,18. — *g) Mittel, Werkzeug, Requisit* (die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend) M. 12,99. R. 1,66,23. 5,72,2. Rasn. 4,36. 8,44. सर्वे हि साधनमिदं कुसुमायुधस्य Ṛt. 6,33. Spr. (II) 6887. Kathâs. 57,146. Macdon. in Ind. St. 1,20,4. Vṛddhâtm. (Allah.) No. 9. Bhâg. P. 3,28 in der Unterschr. 8,11,9. Comm. zu TS. Prât. 22,3. 9. 10. Wilson, Sel. Works 1,164 (bei den Gaina, *duties* Wilson). तपस्तेषां हि साधनम् M. 11, 237. MBu. 14,731. धर्मस्त्वस्याः सुसाधनम् Harîv. 2898. धर्मार्थमोक्षाणां शरीरं साधनम् Çiṅs. Saṅh. 1,5,32. शरीरं धर्मसाधनम् Kir. Nîtis. 6,4. Kap. 1,7. Rasn. 1,19. 82. 3,9. 10,2. 13,50. Kumâras. 5,33. 52. 64. Spr. (II) 822. 3735. 4538. Z. d. d. m. G. 27,38. Kathâs. 15,59. Sîn. D. 2,13. Pañkat. 3,7,1. Vṛddhât. (Allah.) No. 6. 7. Comm. zu Naish. 22,49. 52. am Ende eines adj. comp. (f. धा) Kumâras. 5,22. क्षीण° Spr. (II) 500. स° 772. MBu. 5,1766. स° ebend. त्रिसाधना शक्तिः Rasn. 3,13. — *h) Streitmittel, Streitkräfte* Harîv. 5136. Uttarar. 30,2 (39,12). दस्युविजये रात्रिसाधनं सुमरुत्तव Sîn. D. 212,19. कृश° adj. Harîv. 5261. संभृत° adj. Râga-Tar. 4,377. स° adj. Kir. Nîtis. 4,77. यज्ञ° adj. Rasn. 4,62. 71. गज° 80. Kathâs. 38,4. *ein Mittel eine Gottheit u. s. w. zu citiren:* विघ्नभर्तुः, वह्नेः Kâlakarma 4,1. — *i) Correctionsmittel* euphem. für *Prügel, Knüttel* Comm. zu TBr. 3,377,17. — *k) Genussmittel, Bequemlichkeiten* R. Gorr. 2,33,20. — *l) Zeugungsglied* Thés. H. an. Med. (s. weiter unten). auf diese Bed. wird angespielt Sîn. D. 213,1. — *m*) in der Gramm. α) *Nominalbegriff* (im Gegens. zur *Thätigkeit*), insbes. als *Subject* oder *Instrumental* Schol. zu P. 3,1,24. Pat. in Sidd. K. zu P. 3,3,74. Vârtt. 2 zu P. 2,1,33. Vârtt. 3 zu 5,3,55. das *Object* ist gemeint P. 3,1,44, Schol. — β) = विकरण *ein zwischen Wurzel und Personalendung tretendes stammbildendes Suffix* P. 3,4,30. Vârtt. 1. — γ) *Berechnung, Ausmittelung durch Berechnung* Ganit. Pṛthûdaka 1. *das Beweisen, Darthun* Sîn. D. 447. 711. Sarvadarçanas. 129,20. *Beweismittel, Beweis* 5,6. 8. 7,11. fg. 8,12. 17,16. 74,7. Jiṅân. 2,7. Kap. 1, 139. Tarkas. 45. Kull. zu M. 8,56. — *n) Erfolg, Ergebniss:* वेर° Pañkat. 81,24. 86,24. — Die Lexicographen geben für साधन u. folgende Bedd. an: आराधन AK. 3,4,29,138. मारण, मृतसंस्कार, गति, द्रव्य, घर्षदापन, निवर्तन, उपकरण, अनुव्रज्या 122. शेष Trik. 2,6,23. व्याप्य 3. 2,1. 11. सिद्ध, मेढ्र 3,267. सिद्धि, सैन्य, उपाय, अनुगम, मेढ्र, निवृत्ति, कारक, वध, दापन, मृतसंस्कार, प्रमाण, गमन, धन H. an. 3,433. fg. मृतसंस्कार, सैन्य, सिद्धौषधि, गति, निर्वर्तन, उपाय, मेढ्र, दापन, अनुगम, धन Med. n. 153. fg. उपकरण, करण, द्रविण, लिङ्ग, यातना, सेनाङ्ग, संसिद्धि Halây. 5,80. मैत्र, उद्यम (sic) Dharan. im ÇKDn. मोक्षन, द्रव Âçâ ebend. — Vgl. सर्व°, गण°, क्षीव°, दत्त°, नय°, पशु°, भार°, भूत°, मत्त° (auch Kathâs. 22,9. 49,168. °साधना 167), मन्त्र°, मूल°, मोक्ष°, यज्ञ°, शब्द°, सर्व°, सर्वमण्डल°, सर्वलिङ्ग°, सर्वार्थ°, स्वार्थ°.

साधनक am Ende eines adj. comp. von साधन *Mittel.* पशु° (क्रतु) Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 60.

साधनक्रिया f. *die Thätigkeit des Ausführens* u. s. w. Sidd. K. zu P. 2,3,37. Schol. zu 5,2,80.

साधनता (von साधन) f. *das Mittel-Sein:* सर्वकर्मानुष्ठान° Sarvadarçanas. 114,22. 147,9. Bṛihasp. 147. बहु° nom. abstr. von बहुसाधन adj. *viele Mittel besitzend* Spr. (II) 4226.

साधनत्व (wie eben) n. 1) *Wirksamkeit* Sîn. D. 32,5. — 2) *das Mittel-Sein:* धर्मकामयोः Kull. zu M. 2,224. ब्रह्मज्ञानं प्रति Sarvadarçanas. 56, 20. मोक्ष° 57,3. Bṛihasp. 146. — 3) *das Beweis-Sein* Kull. zu M. 8,56.

साधनपञ्चक n. Titel einer dem Çaṅkarâkârja zugeschriebenen Sammlung von fünf Strophen Hall. Anth. S. 483. fg. Notices of Skt Mss. 2,90.

साधनभाग s. महा°.

साधनमालातन्त्र n. Titel eines Werkes (handschriftlich in der Pariser Bibl.).

साधनवत् (von साधन) adj. *mit Beweismitteln versehen* Sarvadarçanas. 114,2.

साधनसागर m. Titel einer Schrift Tiran. 330.

साधनीभू (साधन + 1. भू) *zum Mittel werden, als Mittel dienen:* °भूत Comm. zu Gaim. 1,4. Kusum. 56,4.

साधनीय (vom caus. von 1. साध्) adj. = साध्य H. an. 2,388. Med. j. 61. 1) *auszuführen, zu Wege zu bringen:* कर्माणि MBh. 3,11207. वस्तूनि Ragh. 17,67. *zu bilden* (von Worten) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,131. — 2) *zu erlangen:* विद्या Kathâs. 38,54. — 3) *zu beweisen* Muir, ST. 2,190. Schol. zu Kap. 1,103. Davon °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 30,12.

साधर्त्त Uṇâdis. 3,128. m. = भित्तु Uṇâdis.

साधर्मित्रिक adj. (f. या und ई) von सधर्मित्र (v. l. साध°) gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

साधय्, °यति 1) caus. von 1. साध्; s. das. — 2) denom. von साधु (वाच्) Vop. 21,16.

साधयितर् (vom caus. von 1. साध्) nom. ag. *der fertig bringt* Nir. 6,33.

साधयितव्य (wie eben) adj. *auszuführen, zu Wege zu bringen* Hit. 40,19.

साधर्म्य (von 2. सधर्म) n. Sidd. K. zu P. 5,3,84. *Gleichartigkeit, Uebereinstimmung* (Gegens. वैधर्म्य) Çiṅkh. Ça. 13,14,5. मम साधर्म्यमागताः Bhag. 14,2. Suçr. 1,29,16. 149,17. 311,11. Ragh. 17,78. Vikr. 65,12. Kap. 1,1,4. 2,2,25. Kap. 1,129. Schol. zu 123. Nyâyas. 1,88. fg. 5,1,1. 2. Siddhânj. 27. Gaupar. zu 10 (am Ende). Mârk. P. 46,4. Verz. d. Oxf. H. 47,*b*,15. 240,*a*,1 v. u. Sin. D. 11,12. 300,12. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 21. fg. Bodhâj. 12. 28. Sarvadarçanas. 81,3. 113,17. 114,10. 148,6. 152,5. 6. Kusum. 30,16. Comm. zu TS. Prât. 1,1.

साधर्व n. nom. abstr. von साधु gaṇa पथ्यादि zu P. 5,1,122.

सौधस् (von 1. साध्) n. *Richtigstellung:* यमग्निं नेत्राय साधसे *wir rufen Agni zur Regelung der Feldmark* ṚV. 8,60,12. Hiernach ist नेत्रसाधस् *der Feldscheider*, z. B. ṚV. 3,8,7 heissen die Jûpa *die Schiedsmänner des Besitzes* unter den Göttern, weil sie je für besondere Gottheiten bestimmt sind.

साधार (2. स + धा°) adj. *eine Stütze habend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,140. Pañcad. 1,8,18. वक्तृ° Kathâs. 101,246.

सौधारण (im Padap. ohne Avagraha) P. 5,4,36, Vârtt. 6. 1) adj. (f. या, häufiger ई) *a) gemeinsam zugehörig, gemeinschaftlich, gemeinsam, gemein* (die Ergänzung im gen., dat., instr. oder im comp. vorangehend) AK. 3,2,31. H. 1472. ṚV. 4,32,13. मानुषाणाम् 7,63,1. विश्वस्मै स्वर्दृशे 9,48,4. पितेव तत्पुत्रेण साधारणं कुरुते TS. 2,6,8,6. कथा पुत्रस्य केवलं कथा साधारणं पितुः 7. Ait. Br. 7,1. Çat. Br. 14,4,3,1. 2. Kâty. Çr. 4,4,22. Çiṅkh. Çr. 1,1,4. 13,4,8. Naish. 1,4. Nir. 2,13. 15. 21. 11,18. 12,26. M. 9,96. MBh. 1,4251. 2,1802. 3,11299. 14,1279. Kumâras. 1,43. Ragh. 16,5. Çiç. 38,15. Vikr. 34. Spr. (II) 2846. 6381. AK. 2,4,4,3. H. 23. Weber, Rânây. Up. 292. Sin. D. 40. Bhâg. P. 2,8,18. 10,46. Madhus. in Ind. St. 1,16,20. Nilak. 39. Bodhâj. 71. fg. Verz. d. Oxf. H. 40,*a*,11. 162,*a*,16. 18. 163,*b*, No. 359. 215,*b*,12. 16. 24. 241,*b*,11. 242,*a*, No. 593. fgg. 265,*b*,33. 268,*b*,11. 272,*a*,10. 335,*a*, No. 787. Sarvadarçanas. 34,5. 113,15. Kusum. 18,1. Comm. zu TS. Prât. 14,5. 18,7. धनञ्य° *keinem Andern gehörig:* दास Milav. 68. *bei keinem Andern sich findend:* शोभा 63,19. °स्त्री *Allen gemein* Sin. D. 96. H. 532. साधारणस्यापलापी so v. a. *Gemeingut* Jâdâ. 2,236. तान्स सर्वान् (यामान्) — विप्रैः समं साधारणं व्यधात् Kathâs. 18,127. घ° *besonder, speciell* Nilak. 46. Tarkas. 15. 21. fg. 41. Verz. d. Oxf. H. 241,*b*,12. 242,*a*, No. 593. fgg. 263,*a*,15. 268,*b*,11. Bodhâj. 71. fg. Sarvadarçanas. 113,15. *nicht allgemein* so v. a. *einzig in seiner Art, ganz ungewöhnlich* Kathâs. 45,368. Râga-Tar. 3,314. Daçak. 66,9. Hit. 15,22. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,25, Çl. 7. — *b) gleich* AK. 2,10,37. H. 1461. mit instr.: येन साधारणी वृत्तिः स शत्रुर्नेतरो जनः Spr. (II) 3681. in comp. mit der Ergänzung: मृत्युसाधारणो रणे Harîv. 5603. वृत्तफल° Suçr. 1,26,20. वात° 203,6. Kumâras. 2,42. Milav. 52. विद्या बन्धुसाधारणी: Kathâs. 25,260. *sich gleich verhaltend:* सर्वत्र Dhûrtas. 85,10. — *c) an zwei entgegengesetzten Eigenschaften Theil habend, die Mitte haltend, gemässigt:* देश *weder trocken noch feucht* Suçr. 1,130,10. 15. fgg. 136,11. Çiṅkh. Saṅh. 1,1,39. Suçr. 2,27,2. बन्ध् *weder zu fest noch zu locker* 6. काल *nicht zu kühl und nicht zu heiss* 46,19. 184,20. 187,3. 353,4. Kîm. Nîtis. 15,12. Weber, Nax. 2,385. Varâh. Bṛh. S. 33,19. — 2) m. Bez. *des 44ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8, 43. fg. Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,6. — 3) f. ई *Schlüssel* H. 1005. — 4) n. *gemeinsame Sache, Bündniss:* सुग्रीव° *mit* Spr. (II) 4169. — Vgl. पुण्य°, सर्व°.

साधारणता f. nom. abstr. zu साधारण 1) *a)*: °तां नी *zum Gemeingut machen* Râga-Tar. 3,134.

साधारणत्व n. nom. abstr. zu साधारण 1) *c)* Suçr. 1,172,6.

साधारणीकर् (साधारण + 1. कर्) 1) *zum Gemeingut machen:* °कृत R. 1,45,25 (46,25 Gorr.). — 2) *gleich machen:* मृत्युसाधारणीकृत MBh. 7,1378.

साधारणीभू (साधारण + 1. भू) *gleich werden:* यथा °भूतं नामास्य धनदस्य च Ragh. 17,30.

साधारण्य (von साधारण) n. 1) *Allgemeinheit, Gemeinsamkeit* Çiṅkh. 24. Z. d. d. m. G. 9, XXXIX. Sin. D. 41. fg. Sarvadarçanas. 20,7. शरीरादीनां सर्वात्मसाधारण्यात् Kusum. 9,14. °ण्यं instr. adv. *gemeinsam, alle mit einander:* यत्रा साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः ṚV. 1,167,4. — 2) *Gleichheit:* कीटानुविद्धरत्नादिसाधारण्येन *nach der Analogie von* Sin. D. 3,21.

साधिक (2. स + धा°) adj. (f. सा) *mit einem Ueberschuss versehen, und etwas darüber:* एकसप्तति Mârk. P. 46,34. 36. 53,8. 5. 73,12. Bhâg. P. 3,11,22. 5,21,10. — Vgl. साध.

साधिन् (von 1. साध्) adj. *zu Wege bringend.* दैवप्रत्यय° Harîv. 11730. — Vgl. दुः°, भार°.

साधिमन् m. nom. abstr. von साधु gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122.

साधिवास (2. स + 3. अधि°) adj. *wohlriechend* MBh. 7,2320.

सौधिष्ठ (superl. von साधु; nach den Grammatikern von वाच्) adj. P. 5,3,63. Vop. 7,56. AK. 3,2,62. = दृढतम und न्याय्य (न्याय gedr.) H. an. 3,178. = सत्तिष्ठ und आर्य (oder सत्यार्य) Med. th. 17. *der geradeste, kürzeste; der förderndste:* पथिभिः ṚV. 1,58,1. 7,64,2. क्रतु 5,35,1. Vâlakh. 5,7. neutr. *das Allerrichtigste:* आचार्यादेव विद्या विदिता सा-

धिन्न प्रापयति Kaiṭ. Up. 4,9,3.

सौधीयस् (compar. von साधु; nach den Grammatikern von बाढ) adj. P. 5,3,63. Vop. 7,56. = साधु und बाढ AK. 3,4,29,237. = अतिशोभन und अतिबाढ H. an. 3,758. fg. = अतिसाधु und अतिबाढ Med. s. 65. 1) *richtiger* Hälfte bei Kull. zu M. 5,66. Kuṭṭ. 62,6. — 2) *angenehmer* Sin. D. 2,9. — 3) *überaus fest:* संधा Daçak. 85,20. — 4) adv. *beschleunigter, eifriger:* इच्छति Ait. Br. 3,9.

साधु (von 1. साध् Uṇâdis. 1,1. 1) adj. (f. साधी, nach den Grammatikern auch साधु). *a) gerade zum Ziel führend, richtig; schlicht:* धीतिं इव साधुनी पथा RV. 10,14,10. 2,27,6. 5,12,6. सत्तु, साधु VS. 37,10. विधुरा न साधुः AV. 16,6,11. वर्त्मन् Bhâg. P. 4,8,37. *richtig treffend:* इषवः RV. 2,24,3. 8,66,11. वस्र Śâṅkh. Br. 3,3. *geschlichtet* so v. a. nicht verworren (Faden) Kauç. 107. — *b) sich fügend, willfährig, gefällig; gewogen:* उभावधी भवतः साधू अस्मै RV. 2,27,15. 3,18,1. दत्त 4,10, 2. अवता *gehorsam* 1,155,1. अश्वासः 6,16,43. 7,37,4. R. Gorr. 2,16,22. — *c) zum Ziel kommend* so v. a. *wirksam:* स्तोम RV. 1,138,4. विप्रमधेषु साधुम् 5,1,7. मन्त्र Spr. (II) 775. — *d) fertig, bereit:* Soma RV. 3, 48,1. देववीति 10,53,3. अनंस्थितं पितृयज्ञस्य साधु (= समाप्तम् Sây.) Ait. Br. 3,27. — *e) geordnet, sicher, friedlich:* क्षेम RV. 1,67,2. 8,19,5. 73, 9. — *f) gut, vortrefflich, schön* AK. 3,2,1. 3,4,28,104. H. 1445. an. 2, 254. Med. dh. 23. Halâj. 4,4. असाधु (P. 6,2,160) *schlecht, böse.* स न साधुना कर्मणा भूयान् एवासाधुना कनीयान् Çat. Br. 14,7,2,24. 3,6,4,7. 11,1,8,7. Kauṣ. Up. 3,8. साधु (Gegens. विगर्हित) कर्म Spr. (II) 5295. न किंचिदूचुः राजसत्तमवीत्साधसाधु वा MBh. 1,4313. Spr. (II) 6990. यज्ञसमृद्धि R. 1,50,2. लक्षण Kâm. Nîtis. 7,59. सुखयोगनिद्रा 15,44. मूर्तिः साधी (zugleich *ein braves Weib*) LA. (III) 87,9. लेखक Spr. (II) 4977, v. l. साधुफल und साधुतरफल adj. Çiç. 108,15, v. l. साधु तस्येदं जीवितम् Spr. (II) 5398. सत्पुरुषव्रत 6019. सोगतधर्म Prab. 48,14. यद्यत्साधु न चित्रे स्यात्क्रियते तत्तदन्यथा Çiç. 141. घट Kathâs. 30,125. Râja-Tar. 3,464. Spr. (II) 1960 (compar. °तर). so v. a. *richtig* Vaṇîn. Bhn. S. 1, 3. Comm. zu TS. Prât. 2,7.13. 13,13. स्व° *falsch* 1,69. 16,12. साधु कर् *Etwas gut machen, verbessern* Spr. (II) 4070 (= R. ed. Schl. 2,106,14). Bhâg. P. 1,10,20. *gut für Etwas* oder *gegen Jemand*, mit loc. P. 2,3,42. 36, Vârtt. 2 (auch असाधु). तत्र P. 4,4,98. fgg. यत्र AK. 2,7,33. ऋणे 2,8, 2,45. H. 793. उपकारिषु, अपकारिषु Spr. (II) 1281. mit loc. oder gen. Vop. 5,29. प्रियश्च नः साधुतमश्च कृष्णः MBh. 5,808. mit dat. Vop. 7,15. mit प्रति P. 2,3,43. mit अनु, अभि, परि oder प्रति Schol. zu P. 1,4,90. fg. Sinn. K. zu 2,3,43. आर्त° *gut gegen* Râgat. 2,28. — *g) gut, edel* von Menschen, m. *Biedermann, Ehrenmann, ein vortrefflicher Mann* AK. 2,7, 2. 3,4,24,36. H. 379. H. an. Med. Halâj. 2,217. Çat. Br. 2,6,2,5. RV. Prât. 11,36. M. 2,6. 11. 80. 109. 4,206. 252 (°तम्). 7,168 u.s.w. MBh. 3,1725. R. 1,1,16. 4,10. 2,35,23. 64,42. 82,18. 90,20. °संमत 93,28. °विगर्हित 106,18. Suçr. 2,395,8. Râgat. 16,5. Spr. (II) 773. 3755. 4313. 4981. 5581. 5717. 6650. 6967. fg. 6992. fg. 6995. fg. 7243. 7511. Vaṇîn. Bhn. S. 15,6. 15. 45,15. 86,45. 106,2. Kathâs. 22,217. 228. 29,154. 38,161. Râja-Tar. 4,30. Bhâg. P. 1,6,33. 3,3,16. Pañcat. 13,6. साधवः लीणदोषास्तु सच्छब्दः साधुवाचकः VP. 3,11,3. साधो voc. R. 2,36,12. Mṛch. 78. Râgat. 2,62. Spr. (II) 2404. 3694. 4460. Râja-Tar. 1,231. Bhâg. P. 3,4,12. साधो इति तपस्वी च प्रशान्तश्चोच्यते बुधैः Sin. D. 172,6. साधो Râja-Tar. 3,178 fehlerhaft für सार्धो. Gegensatz पाप Çat. Br. 14, 7,2,6. M. 8,311. Bhag. 6,9. असत् Spr. (II) 7463. खल 5499. 6099. दुर्जन 3092. 3466. 6991. दुष्ट 6994. Vet. in LA. (III) 1,19. दुष्कृत् Bhag. 4,8. नीच Spr. (II) 2089. 2583. चोर Verz. d. Oxf. H. 154,b, N. 1. Pañcat. 97, 6. खड Spr. (II) 2322. असाधु Çat. Br. 2,6,3,8. M. 3,182. 11,19. Spr. (II) 773. 2345. 5133. 6988. 6996. 7511. Kir. 14,12. 21 (Gegens. सत्). fem. साधी als adj. *treu, brav;* als subst. *eine biedere, treue Frau* AK. 2,6,4, 6. H. 528. Halâj. 2,240. M. 5,66. 6,162. 165. 9,29. 95. MBh. 1,6135. 3,2521. 2676. R. 2,39,24. 74,28. R. Gorr. 2,10,24. 6,33,19. Megh. 86. Ragh. 15,82. Çiç. 188. Spr. (II) 693. 1743. 1955. 4020. 4248. 4948. 5723, v. l. 6194. 6266. Vaṇîn. Bhn. S. 13,6 (अरुन्धती). 103,1. 104,3. Bhn. 24(22),3. Kathâs. 13,120. 123. 36,30. 36. Râja-Tar. 1,322. Bhâg. P. 3,14,23. 17,2. साधीस्त्रीणाम् Spr. (II) 6997. — 2) m. *a) Ehrenmann* s. u. 1) *g*). — *b) ein Heiliger,* Muni H. 76. H. an. *ein* Arhant (bei den Gaina) H. an. Çramaṇa, Sâdhu und Çrâvaka Wilson, Sel. Works 1,303. *ein in die Zukunft sehender Mann* Çiç. 71,11. Mâlav. 69,14; vgl. ed. Bomb. 161. — *c) Wucherer* Trik. 3,3,224. H. an. Med. — *d) Juwelier* Spr. (II) 4874. Hit. 63,7. 65,9. 12. 111,1. II,106. — 3) f. *a)* साधी *eine biedere Frau* s. u. 1) *g*). — *b) eine Heilige* Wilson, Sel. Works 1,303. 2,74. — *c) eine dem Ingwer ähnliche Wurzel* (मेदा) Râgân. 5. 24. — 4) n. *a) das Gerade, Ehrliche, Rechte, Gutes* (असाधु *Falsches, Böses*) RV. 2,27,3 (Gegens. वृजिन). Çat. Br. 11,2,7,33. 14,8,13,2. किमकं साधु नाकरवम् किमकं पापमकरवम् Taitt. Up. 2,9. साधसाधुनी Çat. Br. 14,7,2,27. R. 2,67,31. काले समाचरन्साधु Spr. (II) 6699. तस्यो वं साधु नाचरः Ragh. 1,76. Bhâg. P. 3,25,21. 10,32,22. न चोवाच स मेधावी तमधो साधसाधु वा so v. a. *ein gutes oder ein böses Wort* MBh. 1, 1963. Harîv. 1352. यतो ऽर्हसि तत्तुमसाधु साधु वा Spr. (II) 1963 (= Kir. 1,4). न ते साधु भविष्यति *es wird dir nichts Gutes widerfahren, es wird dir übel ergehen* MBh. 1,3286. 5585. पत्कृत्वा साधु मे भूयात् Bhâg. P. 3, 4,39. एतत्ते सर्वं साधु भविष्यति Mâlav. P. 125,64. नेतत्ते साधु R. Gorr. 1. 60,3. an den beiden letzten Stellen könnte das Wort auch als adj. gefasst werden. साधु मन् *für etwas Gutes halten, gutheissen, billigen* R. 2,63,28. 105,11 (अनु-मन्). 4,21,34. Bhâg. P. 1,19,4. 5,5,4. 7,5,3. fgg. 8,19,31. अमनुत साधिति 4,29,4. in dieser Verbindung auch adj.: स्वयंवरं साधुममंस्त Ragh. 7,13. Fernere Belege s. u. मन् 2). — *b) Güte, Milde, Wohlwollen:* साधु क्षमा दमः शौचम् u. s. w. नित्यानि वनचारिणाम् MBh. 12,162 (साधिति क्षमादिकमेव मोक्षमित्यर्थः Nîlak.). (सूर्यः) इदं सर्वमभिगोपायति साधुना बदसाधुना वत् Çat. Br. 2,6,3,5. असाधुं साधुना जयेत् Spr. (II) 49. 2345. 2572. 5337. — 5) adv. *a) geradeaus, regelmässig, richtig:* सत्यस्य पन्थामन्वेति साधु RV. 1,124,3. 5,80,4. AV. 18,4,3. एकं क्रतुमभि वि यंसि साधु 6,9,3. यज्ञं नय 15,16. यद्वं सत्वं सत्तुभिर्यासि साधु 10,18,5. Gegensatz मिथ्या Vop. 13,54. — *b) überhaupt gut, wohl, recht, gehörig* RV. 2,3,6. AV. 11,1,9. Çat. Br. 1,1,2,7. °संस्कृत 4,10. सत्कृत Kâṭh. Up. 3,8,3. साधु तें यजमान देवता TS. 2,5,9,5. Âçv. Ça. 1, 2,1. RV. Prât. 14,28. नेता चेत्साधु पश्यति M. 7,25. MBh. 4,1583. Daçak. 65,1. साधयं प्रभ उद्दिष्टः MBh. 1,4528. R. 2,44,3. चित्तय 3,49,20. Suçr. 2,354,10. संपन्नो वार्तया साधु (so Comm.) Kâm. Nîtis. 2,14. 4,2.

5,44. 8,1. 9,76. 17,15. 18,58. 19,16. Mṛcch. 17 (von मृष् zu trennen). Kumāras. 5,50. Çiç. 4,11. 99,13. 92. Spr. (II) 1603. 6985 (schön in ironischem Sinne). Kathās. 18,209. 32,20. Pañcat. 9,6. Hit. 116,15. Bhāg. P. 1,2,5. 2,3,25. 3,3,17. 14,4. 4,2,7. 5,10,2. 7,7,32. 10,42,2. Vop. 23, 21. वर्त् *gut verfahren gegen* (loc.) Spr. (II) 5668. कृ *richtig —, fertig —, gut machen:* साधु (so) कृणवत्समर्वते ऋवाभके ṚV. 8,32,16. Çat. Br. 1,8,3,10. 5,4,4,5. 11,2,7,53. 14,8,12,2. Ait. Br. 5,26. स्वप् *schön — sein schlafen* Kām. Nītis. 7,57. धास् *sich wohlbefinden* Bhāg. P. 3,1,20. कौशाम्ब्यां साधु वत्स्यति *glücklich* 9,22,39. साधु (auch wiederholt) als Ausruf so v. a. *gut! schön! bravo!* यत्साधु वदेयुः Çat. Br. 1,8,3,10. 5, 4,4,5. MBh. 3,2219. 5,5442. R. 1,4,14. 11,10. R. Gorr. 1,3,55. 2,88, 22. 7,32,28. Vikr. 6,6. क्वरन्ति न तथा वाचो यथा साधु विपञ्चिताम् Spr. (II) 4667. Kathās. 7,95. 18,313. 47,7. साधसाधिति वा वचः Rāja-Tar. 3,260. 5,17. Bhāg. P. 4,7,6. Hit. 16,11. — *c) gut* so v. a. *sehr, in hohem Grade:* देवं साधु विवर्धते Spr. (II) 5100. विराजते Kām. Nītis. 8,57. परितुष्ट Bhāg. P. 2,7,19. 3,2,4. दुर्ह्रदः साधु निर्दलेत् R. 2,100,26. Spr. (II) 1072. 4533 (vielleicht mit साधुसिकाः zu verbinden). °शुक्ल (°रक्त ed. Bomb.) *ganz weiss* MBh. 4,1261. °सिद्ध *ganz fertig* Suçr. 1,103,7. गत्वे साधुसमत्वरूपे Çiç. 190, v. l. — *d) gut* so v. a. *abgemacht, genug:* साधलं मा व्यनीनशः so v. a. *stehe davon ab!* MBh. 4,426. mit instr.: साधु मातुल गीतेन Spr. (II) 6986; vgl. अलम्. — *e) wohlan,* in Verbindung α) mit einem imperat.: दमयन्त्याः पणः साधु वर्ततां यदि मन्यसे MBh. 3,2299. दमयन्त्या वचः साधु निबोध 2295. यथा कालात्ययो न स्यात्तथा साधु विधीयताम् R. 1,2,5. मक्षिकाशब्दं लभतां साधवम् 63,17. साधु मा शुचः 2,21,47. 27,22. 42,22. 50,24. 51,2. 64,59. साधु सैन्याः प्रतिश्रुत्य विचिन्वन्तु च काननम् 93,19. 106,18. R. Gorr. 2,18,47. 3,15,9. 61,30. 4,14,7. 19,35. साधु तदभिगच्छाव वनम् 51,40. 5,23,4. 89,56. 7, 29,11. Çiç. 11. साधु तावदुपारम MBh. 1,6035. R. 2,96,5. — β) mit einer 1ten Person praes.: पश्चिमं साधु संदेशमिच्छामि श्रोतुमात्मनः R. 2,72,35. साधु यामि Rāgat. 11,91. तस्मात्साधु निरूप्यमुम् Kathās. 18, 332. साधु तावच्छराम्यहम् R. 2,34,38. — *f) wohl, sicherlich:* यदि जीवामि साधेनं पश्येयं सह सीतया R. 2,59,26. रिपुरपि गच्छति साधु (so trennen wir) मित्रताम् Kām. Nītis. 3,38. धरिभूमिं साधु गच्छेत्तायाय 15,60. काले साधु तदादिष्टं प्रज्ञा Spr. (II) 5125. Çiç. 11,19, v. l. — Vgl. महा°, सर्व°.

साधुकर्मन् adj. *der Alles gut —, richtig macht* ṚV. 10,81,7.

साधुकार m. *der Ausruf* साधु *(gut!), Beifallsruf:* तस्य तद्वचनं श्रुत्वा साधुकारो महानभूत् R. 7,60,15. 97,21. — Vgl. साधुवाद.

साधुकारिन् adj. P. 3,2,78, Vārtt. 1. *richtig verfahrend, geschickt* Çat. Br. 14,7,2,7. MBh. 4,890. Suçr. 2,53,6. — Vgl. तत्साधु°.

साधुकृत् adj. dass. Çat. Br. 13,4,3,3.

साधुकृत adj. *richtig —, gut vollbracht:* °सर्वार्थ adj. Bhāg. P. 1,15,46. 6,18,19 würden wir lieber किं तत्साधु कृतं हि तैः trennen.

साधुकृत्य 1) m. a) *Gutmachung, Vergeltung* Bhāg. P. 10,32,22. — b) *Vortheil:* सवेतित° adj. Kām. Nītis. 9,73. — 2) f. ई *richtiges Verfahren, gute Handlungsweise* VS. S. 30. TS. 3,11,3,3. Çat. Br. 4,6,3, 18. 11,2,7,33. 13,3,4,1. Kāṭy. Çr. 12,2,3.

साधुचरण adj. *die Begehungen richtig vollführend oder rechtschaffen* Lāṭy. 1,1,6.

साधुचरित्र n. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1,283.

साधुजन m. *ein guter Mann, Ehrenmann* Kumāras. 5,73. Spr. (II) 2733. ष° Daçak. 81,3.

साधुज्ञात adj. *schön:* वाङ्मु MBh. 3,15134. लता R. 5,11,21. — Vgl. सुज्ञात.

साधुता (von साधु) f. 1) *Richtigkeit:* einer grammatischen Form Verz. d. Oxf. H. 170,b,32. — 2) *Biederkeit, Ehrenhaftigkeit* Kām. Nītis. 4,34. Spr. (II) 3295. 6747. Daçak. 73,17. Kull. zu M. 3,149.

साधुत्व (wie eben) n. Vop. 7,24. 1) *das Richtigsein, Richtigkeit* Lāṭ. 10,5,6. Comm. zu TS. Prāt. 1,53. — 2) *Vorzüglichkeit, Vortrefflichkeit:* वाचाम् Uttarar. 2,20 (4,10). *Biederkeit, Ehrenhaftigkeit:* उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः Spr. (II) 1281. स्त्रीणाम् Uttarar. 2,20 (4, 10). साधसाधुत्व *das Gut- oder Schlechtsein* Vaṇīm. Bṛh. S. 69,5. असाधुत्व n. *Unehrenhaftigkeit* Spr. (II) 6721.

साधुदर्शिन् adj. *eine richtige Einsicht habend:* ष° Çiç. 9,13.

साधुदायिन् adj. P. 3,2,78, Vārtt. 1, Schol.

साधुदर्शिन् adj. *mit Erfolg —, glücklich spielend* AV. 4,38,1.

साधुधी f. *Schwiegermutter* Hir. 201.

साधुपुत्र m. N. pr. eines Mannes Tīrān. 247.

साधुपुष्प n. *die Blüthe von Hibiscus mutabilis* Çabdam. im ÇKDr.

साधुभाव m. *Gutmüthigkeit* MBh. 1,6112.

साधुमती (von साधु) f. 1) N. einer der zehn Erden bei den Buddhisten Vaṃç beim Schol. zu H. 233. — 2) N. pr. einer Tantra-Gottheit Vajrop. 105.

साधुमात्रा f. *das richtige Maass* (Gegens. *Uebermaass*): °मात्रया *mit Maass, nicht zu viel und nicht zu wenig* Kām. Nītis. 14,65.

साधुयी (von साधु) adv. VS. Prāt. 3,20. AV. Prāt. 4,30. P. 7,1,39. Schol. 1) *geradeswegs, dem Ziele zu:* कृतीं वकृत्ति ṚV. 10,33,3. यज्ञं प्र णयत 66,12. ऋजस्य पन्थामन्वेमि 13. 1,46,11. *schlicht* AV. 10,4,21. — 2) *richtig, in Ordnung, gut:* सूर्यस्ते लोकं कृणोतु साधुया zurecht VS. 23,43. तेभिः कल्पस्व साधुया ṚV. 1,170,2. यज्ञिनो यज्ञमुपं वेतु सा° 5,11. 4. योनिमा सीद सा° VS. 14,1. 17,73 (wofür साध्या TBr. 3,7,3,10). घोस्ते नर्तत्रैः सह रूपं कृणोतु सा° TS. 5,2,11,2.

साधुरत्नसूरि m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 379,a, No. 890.

साधुवत् (von साधु) adj. *richtig* ṚV. Prāt. 11,33.

साधुवन्दन n. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,283.

साधुवाद m. 1) *der Ausruf* साधु *(gut!), Beifallsruf, Beifallsbezeugung* MBh. 1,8427. 3,4641. 7,8725. 8,2856. 10,109. Spr. (II) 499. 6968. Kathās. 20,230. 25,135. 43,126. Rāja-Tar. 3,182. 184. Bhāg. P. 1,12,18. 3,1,4. 4,5,25. 21,44. Pañcat. 71,3. °वादं दा *Beifall bezeugen* Kathās. 51,207. 55,51. 65,211. 99,20. °प्रद 30,44. ष° *Bezeugung des Missfallens* Bhāg. P. 3,16,5. 8,22,3. — 2) *der Name eines Ehrenmannes, ein guter Ruf* Bhāg. P. 5,19,3. 8,22,3. — 3) *ein richtiger Ausspruch* Bhāg. P. 6,5,44. 9,8,12.

साधुवादिन् adj. *Beifall rufend* Harīv. 10157 (S. 791). fehlerhaft für °वाहिन् (so ed. Bomb.) MBh. 7,7786.

साधुवाहिन् adj. *gut ziehend* (den Wagen): Rosse AK. 2,8,3,12. H. 1235. MBh. 6,1944. 7,7786 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Stein 3,1409.

साधुवृत्त m. *Nauclea Cadamba* (कदम्ब) Bomb. Çabdaś. im ÇKDa. *Crataeva Roxburghii R. Br.* Râǵan. 9,43.

साधुवृत्त 1) adj. (f. या) *a) schön rund:* भुज R. Gorr. 2,47,18 (50,27 Schl.). 5,18,3. — *b) einen guten Lebenswandel führend, wohlgesittet* MBh. 3,2446. 13,5776. R. 2,29,13. 4,31,7. 5,76,21. Verz. d. Oxf. H. 269,*a*,36. यो° M. 9,80. — *a) b)* Spr. (II) 3886. — 2) n. *das Verfahren eines Ehrenmannes:* न वानरः स्थास्यति साधुवृत्ते R. 4,31,3.

साधुवृत्तता f. nom. abstr. zu साधुवृत्त 1) *b)* Kathâs. 29,91.

साधुवृत्ति adj. = साधुवृत्त 1) *a) b)* Spr. 3886, v. l.

साधुवृत्तिता f. = साधुवृत्तता MBh. 14,1048.

साधुशब्द m. *der Ausruf* साधु *(gut!), Beifallsruf* MBh. 1,5480. °शब्दान्प्रयुञ्जते Verz. d. Oxf. H. 216,*b*,36.

साधुशील adj. *einen guten Charakter habend;* davon °त्व n. nom. abstr. Spr. (II) 2557.

साधुसमाचार m. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1,282. °चारि gedr.

साधूत n. = मयूरसमूक, पण्यवीथी und घातपत्र Âǵâpâla im ÇKDa.

1. साध्य (vom caus. von 1. साध्) 1) adj. = साधनीय H. an. 2,388. Med. j. 61. *a) sich dienstbar zu machen, für sich zu gewinnen, in seine Gewalt zu bringen, gefügig:* Personen Suçr. 1,123,19. Kathâs. 107,69. Spr. (II) 1309. Çiç. 5,49. सुख° Spr. (II) 441. सु° Paṇḍân. 1,8,23. वयत्र° Spr. (II) 5526. उपाय° MBh. 1,7419. मार्दव° 5,67. भेद° R. 5,37,30. Kumârâs. 3,15. Spr. (II) 2229. 3017. 4635. Vaitân. Bân. 17,9 (zu lesen सामेक°). Kathâs. 12,36. Paṇḍân. 2,1,8. सर्व° Mârk. P. 121,17. य° Spr. (II) 774. 6758. सर्वोपायैः Râǵa-Tar. 1,255. सामादेः Kathâs. 11,16. दारुसाध्या कृता रिपुगृहा *zu bemeistern durch* Paṇḍân. 194,19. so v. a. *herbeizuschaffen, herbeizuzaubern* Vikrp. 105. 109. — *b) in Ordnung zu bringen, gut zu machen* Kâm. Nîtis. 13,72 (auch य°). *heilbar:* eine Krankheit. Leiden Suçr. 1,30,21. 87,6. 127,7. तार° 35,5. शस्त्र° 89,1. 193,15. य° *nicht heilbar* 87,7. 131,4. 278,12. Kâç. zu P. 5,2,92. MBh. 4,895. Kathâs. 71,122. दुःखानि Spr. (II) 5287. भिषग्भाम् Raǵa. 8, 92. चन्दनाम्भसा देहोष्माणः Spr. (II) 663. वाग्विषं साधुमन्त्राणाम् 775. घोषघासाध्य Kathâs. 15,15. — *c) zu vervollkommnen:* विद्याश्चतस्रः Spr. (II) 6103. — *d) auszuführen, zu vollführen, zu Wege zu bringen, zu erreichen* (als Ziel); = फल Taitt. 3,3,322. — M. 11,238. Jâǵñ. 2,196. Kâm. Nîtis. 4,8. Raǵa. 17,38. Weber, Râmat. Up. 307. Spr. (II) 1036. 3648. 5285. 6241. वृत्त श्रमेण, व्रतेन समभूः Âçvâsa. 2,12. Kathâs. 21,77. 113, 77. Mârk. P. 18,23. 20,35. Çaṅk. zu Bân. Âr. Up. S. 12. Sin. D. 10,16. Hit. Pr. 1. Paṇḍat. 43,20. Sarvadarçanas. 159,1. Comm. zu Kâty. Çr. 22,8. 122,12. तपसा Spr. (II) 5265. बुद्धेः 1497. एकान्त° Mâlav. 63. सुख° Spr. (II) 1936. वयत्र° Daçak. 78,16. दण्डकाष्ठ° MBh. 14,1722. कर्म° Kap. 1,1,11. Spr. (II) 1682. साम° 7011. बुद्धि° Kathâs. 12,37. सोम° (पाग) Schol. zu P. 4,3,66. Muir, ST. 4,219,9. Sarvadarçanas. 3, 5. य° Jâǵñ. 2,196. Harîv. 15783. Spr. (II) 6352. Kathâs. 30,124. 38, 69. Mârk. P. 20,36. fg. व्यवसायिन् Spr. (II) 2150. 3198. Râǵa-Tar. 4, 332. Paṇḍat. 24,6. 53,14. साध्य *zu bilden* (grammatisch) Vop. 6,8. — *e) was noch in Erfüllung gehen soll:* निमित्तैः साध्यसिद्धेः R. 5,28,16. — *f) ausmitteln, zu erschliessen* Vaitân. Bân. S. 68,102. *durch Berechnung zu finden* Ganit. Kilak. 32. Aduhâs. 4, Comm. Sparshâdhik. 60, Comm. Traipraçn. 27. *zu beweisen:* घातवागनुमानाभ्याम् Raǵa. 10,29. Sin. D. 711. Sarvadarçanas. 5,7.8. 7,11. 30,11. 119,17. Bhâshâp. 137. fg. °व्यापकत्व Tarkas. 45. साध्याभाव 41. 48. — 2) m. *a)* pl. etwa *die zu Gewinnenden,* Bez. *einer best. Götterklasse* (neben den Vasu, Rudra u. s. w.) Naigh. 5,6. Nir. 12,40. AK. 1,1,6,5. Taitt. 3,3,322. H. ç. 2. 6 (zwölf). H. an. Med. Gaṇâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,*a*,38 (zwölf). यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ṚV. 1,164,50. 10,90,7. मर्यि देवा उभये साध्या-श्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्त AV. 7,79,3. 8,8,12. 9,10,24. 10,10,30. fg. VS. 24,37. 29,11. 30,15. 39,3. TBr. 1,1,9,1. TS. 5,6,42,1. 7,42,1. 5,3,6, 8. 5,1. 5,6,1. 7,2,1,1. neben den Âptja Ait. Br. 8,12. 14. 17. 1,16. Çat. Br. 3,7.8,25. 13,4,2,16. Paṇḍav. Br. 3,3,5. 4,1. Kâṭy. 23,8. 24, 10. 26,4. Âçv. Gṛhj. 3,4,1. Kaiṭh. Up. 3,10,1 (mit Brahman an der Spitze). Muṇḍ. Up. 2,1,7. साध्यानां गणः मूल्यः M. 1,22. विराजः सोमसदः साध्यानां पितरः स्मृताः 3,195. 11,29. gehören zu der द्वितीया सात्त्विकी गतिः 12,49. Bhag. 11,22. MBh. 5, 1260. fgg. 12,7540. 10933. fgg. 13,6186. Harîv. 441. 11835. fgg. 11849. 13155. 14171. R. Gorr. 2,25,21. Vaitân. Bân. S. 48,55. VP. 264, N. 20. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*, 1. Bhâg. P. 2,3,4. 3,20,42. fg. 5,1,9. 6,3,14. 6,15. Vishṇu ist der 5te unter ihnen R. 6,102,19. ist °श्रेष्ठ Paṇḍân. 4,3,59. Kinder der Sâdhjâ Harîv. 147. 11535. 11537. 12479. VP. 120. Bhâg. P. 6,6,7. Manu's 15. = ज्ञपाः in einer früheren Geburt Verz. d. Oxf. H. 36,*b*,34. — *b)* N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 3,243,*b*. Verz. d. Oxf. H. 32,*b*,25. — *c) der Liebesgott* (स्मर) Med. — *d)* N. des 21ten astr. Joga (विष्कम्भादि ÇKDa.) H. an. Med. Kosmṛitra. im ÇKDa. — 3) f. या N. pr. einer Tochter Daksha's, Gattin Dharma's (auch Manu's) und Mutter der Sâdhja Harîv. 146. fg. 11523. 11535. 11540. 12450. 12479. VP. 119. Bhâg. P. 6,6,6. 7. — 4) n. *a) Silber* H. ç. 161. — *b)* N. eines Sâman Ind. St. 3, 243,*b*. — Vgl. दुः°, मत्त°.

2. साध्य (von 1. साध्य 2) *a)* adj. *zu den* Sâdhja *in Beziehung stehend:* गण so v. a. साध्य pl. Bhâg. P. 6,6,7. वस्त्र MBh. 3,12021.

साध्यता (von 1. साध्य) f. 1) *Gewinnbarkeit, Besiegbarkeit:* य° Spr. (II) 1309 (zugleich Bed. 2). — 2) *Heilbarkeit:* य° Suçr. 1,82,19. 87,6. 2,198,21.

साध्यत्व (wie oben) n. 1) *Heilbarkeit* Suçr. 1,147,15. य° 2,199,1. — 2) *die Möglichkeit vervollkommnet zu werden:* सिद्धस्य तस्य साध्यत्वाभावेन Sarvadarçanas. 160,13. fg. — 3) *Ausführbarkeit* Kap. 1,83 (82). 86 (85). वानर° R. 4,20,11. Prab. 8,15. Bhâshâp. 145.

साध्यवत् (wie oben) adj. *das zu Beweisende enthaltend* Bhâshâp. 67. 73. Tarkas. 39. Z. d. d. m. G. 7,302.

साध्यवसाना (2. स + वध्यवसान) f. (sc. लक्षणा) *eine best. elliptische Redefigur* Sâh. D. 13,18. गौण° Sarvadarçanas. 173,5. शुद्ध° 6.

साध्यवसानिका f. dass. Sâh. D. 17. Sarvadarçanas. 173,12.

साध्यवसाय adj. *elliptisch* Pratâpar. 8,*b*,8. 9,*b*,2.

साध्यसम adj. *dem zu Beweisenden gleich,* m. (sc. हेत्वाभास) *eine petitio principii* Banerjea 146. Sarvadarçanas. 114,7. Nyâyas. 1,2,45. 49. eine der 24 Gâti 5,1,1. 4. Sarvadarçanas. 114,10. Davon nom. abstr. °त्व n. Nyâyas. 37.

साध्यो adv. für साधुया TS. 4,3,6,1. 6,8,3. 5,1,11,4. TBa. 3,7,9,10.

साध (von सधि) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,243,b. Pañcav. Br. 15,5,28.

साधयासनविधि m. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1,282.

साधर्य (साधु + र्य) adj. (f. या) *treu anhänglich:* गा: ṚV. 10,68,3.

साधर्स n. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,117. selten m. 1) *Bestürzung; Angst* AK. 1,1,3,21. H. 301. Hall. 4,40. MBh. 2,2664 (m.). 3,17220. 4,4291. 7,1638. 8,1720. Hariv. 7508. 8737. °सं गम् R. 1,9,20. Kâm. Nitis. 5, 26. Kumâras. 3, 51. Verz. d. Oxf. H. 116, *b*, 4. Çâk. 12, 1. 21. Vikr. 56. Uttarar. 62,10. fg. (80,10. fg.). Spr. (II) 5385. 5737. Daçak. 4,49 (m.). Kathâs. 21,97. 26,20. 45,260. Mârk. P. 104,32. Râǵa-Tar. 6,207. Bhâg. P. 4,12,21. 6,8,34. Pañcat. 9,13. प्रुत्कस्येवातिसाधसात् *aus allzugrosser Angst* vor Spr. (II) 4914. मा कृधं बन्धुसाधसम् *versetzt die Angehörigen nicht in Angst* Bhâg. P. 10,29,20. कुसुमस्तेय° *Angst* vor Kumâras. 2, 35. Spr. (II) 6234. am Ende eines adj. comp. (f. या) R. 1,67,20. R. Gorr. 2,8,32. 4,9,24. 5,23,25. 85,3. Milav. 20,9. Kathâs. 22,103. 74, 235. Bhâg. P. 1,11,19. 2,1,18. 9,9. 3,16,21. 4,9,3. 24,52. 5,24,18. 6, 4,40. 9,3,8. स° adj. Vikr. 28,10. 47,11. Brahma-P. in L.A. (III) 86,6. Bhâg. P. 3, 17, 25. 4, 7, 23. ससाधसम् adv. Mṛicch. 152, 5. Vikr. 28, 14. Mâlav. 53,21. Mârk. P. 110,2. — 2) in der Dramatik Bez. eines der sieben Theile in der Bhâṇikâ: *eine falsche Nachricht* (*panischer Schrecken*) Sâh. D. 536. — Vgl. नि:°.

1. साधाचार् (साधु + चा°) m. *der Wandel guter Menschen* oder *guter Wandel* Varâh. Bṛh. S. 46,76.

2. साधाचार् (wie eben) adj. *einen guten Wandel führend, sich redlich benehmend* M. 2,192. Spr. (II) 5357.

साधीक am Ende eines adj. comp. von साधी (s. u. साधु) *ein biederes Weib* als Bez. der Arundhatî Varâh. Bṛh. S. 13,4; vgl. 6.

सौनग (von सनग) eigentlich *alt;* Personification TS. 4,3,8,1. Kâṭh. 39,7.

सानत्कुमार (so im Index) adj. von सनत्कुमार. उपपुराण Verz. d. Oxf. H. 80,*a*,3.

सानत्सुजात adj. Sanatsugâta *betreffend:* पर्वन् MBh. 1,330.

सानन्द (2. स + चा°) 1) adj. (f. या) *froh:* Personen Kathâs. 14,8. Hit. 38,21. Pañcar. 1,1,7. 6,7. Comm. zu Naish. 22,43. वदन *Gesicht* Spr. (II) 5915. fg. सत्पुत्र° *froh über* Kathâs. 22,158. *voller Freuden:* सदन Spr. (II) 6998. सानन्दाश्रु *Freudenthränen* Pañcar. 1,6,7. सानन्दम् adv. *froh* Z. d. d. m. G. 27,28. Sâh. D. 70,16. Kathâs. 18,343. Vop. 5,2. Hit. 44,7. — 2) m. N. pr. eines Knaben im Gefolge der Râdhâ Pañcar. 2,4,46. — 3) f. या eine Form der Lakshmî Pañcar. 2,5,25.

सानन्दनी f. N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,19.

सानन्दूर N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 60,*b*,11.

सानर्मि (von 1. सन्) Uṇâdis. 4,107. adj. *Gewinn bringend, erwerbend; Beute machend, siegreich:* सर्वत् ṚV. 4,15,6. 8,91,12. सत्य 2,35,5. 100,4. 106,2. रथ 10,63,14. Indra 8,21,2. मद 1,175,2. क्रतु 10,140, 4. रयि 5. 1,8,1. ब्रह्मन् 75,2. धनो देवस्य 3,59,6. subst. = हिरण्य Uṇâdis. — Vgl. सानुक.

सानाय्य (von सनाय) n. *Beistand, Hilfe:* तत्र देवेन सानाय्यं मे विधीयताम् Kathâs. 38,119. सानाय्यं कुरु मे 75,48. 52,12. राज्ञासानाय्यात् *weil der Fürst keinen Beistand leistete* 93,9.

सानिका f. *Pfeife, Flöte* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. सानेयिका, सानेयी.

सानिन् (von 1. सन्) adj. in Etymologien am Ende eines comp. *gewinnend, verschaffend* Nir. 8,2. 3. 12,36.

सानु Uṇâdis. 1,3. m. n. Taitt. 3,5,9. Siddh. K. 248,*b*,13. *Oberfläche, Rücken,* z. B. eines Berges AK. 2,3,5. 3,4,8,27. 48,90. H. 1035. Med. n. 22 (= प्रस्थ und शिखर). Hall. 2,11. Vîçva bei Uṇâdis. पत्सानो: सानुमारुरुत् ṚV. 1,10,2. पृथिव्या: 6,48,5. 1,146,2. वलस्य 6,39,2. गिरीणाम् 61,2. घटे: 1,117,16. पर्व्ने: 6,6,4. दिव: 4,45,1. 6,7,6. नाकस्य 9, 92,2. भूम्या धर्धि प्रवतो यासि सानुना 10,75,2. des Vṛitra 1,32,7. 80, 5. 6. der Rosse 5,75,12. सं सानु मार्ष्टि 2,35,12. वर्षिष्ठ 9,31,5. धव्यय, धव्य beim Soma 9,26,5. 50,2. 70,8. सानौ धव्यये 86,3. 92,4. नाभा पृथिव्या धधि सानुषु त्रिषु 2,3,7. In der späteren Sprache nur *Rücken eines Berges* MBh. 1,1183. 3,953. 1663. 1738. 11099. 17303. Hariv. 3925. R. 2,31,27. 33,28. 48,12. 93,8. 9 (102,10. 11 Gorr.). 99,13. fg. R. Gorr. 2,103,6. 7. 3,68,13. 4,44,34. Suçr. 1,32,6. Mnu. 2. 79. Kumâras. 1,9. Mâlatîm. 145,10. Spr. (II) 2888. Varâh. Bṛh. S. 46,91. Kathâs. 13,38. 43,215. 107,90. Bhâg. P. 4,6,11. 23,21. 25,13. 7,13,12. धध:सानुगत Kumâras. 1,6. धस्त:° adv. Kir. 5,36. Die Lexicographen kennen noch folgende Bedd.: वन, मार्ग, वात्या, कोविद (बुध) Med. und Vîçva a. a. O. पल्लव Vîçva und Gaṭîdh. im ÇKDa. धर्क Gaṭîdh. ebend. — Vgl. धद्रि°, ऊर्ध°, पृदाकु°, बुध°, रत्न° und सु.

सानुर्क (von 1. सन्) adj. *beutegierig:* Wolf ṚV. 2,23,7.

सानुकम्प्य (2. स + धनुकम्पा) adj. (f. या) *mitleidig* Kathâs. 23,4. रिपुषु भीतेषु 26,246. °म् adv. *mitleidsvoll* Daçak. 63,5.

सानुकूल्य n. = धानुकूल्य *Beistand, Hilfeleistung:* साकाय्यं संकरे पत्स्यात्सानुकूल्यं पास्य Sâh. D. 492.

सानुक्रोश (2. स + धनु°) adj. (f. या) *mitleidig* MBh. 3,2735. R. 2,4. 25. 78,15. 6,9,2. Râǵa-Tar. 3,465. Davon °ता f. *Mitleid* R. 2,96,49 (105,48 Gorr.).

सानुग s. u. धनुग 2).

सानुचर (2. स + धनु°) adj. (f. ई) *mit Gefolge* Kauç. 75. Kâty. Ça. 28. 1,12. 6,19. 8,24.

सानुज (सानु + 1. ज) 1) m. = तुम्बुरु *Koriander* Râǵân. 11,157. — 2) n. *Hibiscus mutabilis Lin.* (oder vielmehr *die Blüthe davon*) Râǵân. 12,150.

सानुताप (2. स + धनु°) adj. (f. या) *Reue empfindend* Kathâs. 18,100. 224. 20,209. Râǵa-Tar. 6,196.

सानुनय (2. स + धनु°) adj. (f. या) *freundlich, Freundlichkeit verrathend:* Personen R. 1,47,1. 6,9,1. वचस् 1,60,23. 2,109,36. प्रश्न Hall. 5,96. °म् adv. Daçak. 77,7.

सानुनासिक (2. स + धनु°) adj. *nasal* Comm. zu TS. Prât. 5,28. 15, 1. 17,5. 22,14. Weber, Prâtiçâkh. 79.

सानुनासिका 1) adj. dass. Comm. zu TS. Prât. 21,14. — 2) n. *Nasalität* Comm. zu TS. Prât. 15,1.

सानुनास्यम् adv. *nasal, näselnd:* वद् Ind. St. 4,271.

सानुप्रस्थ (सानु + प्रस्थ) m. N. pr. eines Affen R. 5,1,39. 6,22,2.

सानुप्रास (2. स + धनु°) adj. (f. या) *mit Alliterationen versehen* Kâvyâd. 1,52; vgl. सुत्यनुप्रास.

सानुबन्ध (2. स + बन्धु°) adj. (f. धा) 1) *ununterbrochen, fortwährend:* संपद्: Rāgat. 1,64. कलह् Suçr. 1,192,7. — 2) *sammt dem was daran hängt, — dazu gehört:* मांस Suçr. 1,56,13. सानुबन्धा हता ह्यसि R. 2, 7,28. कैकेयीं च वधिष्यामि सानुबन्धां सबान्धवाम् 97,27.

सानुमत् (von सानु) 1) adj. *mit einem (Berg-) Rücken versehen:* पर्वता: R. 2,48,9 (45,15 Gorr.). — 2) m. *Berg* Taik. 2,3,1. H. 1027. Halāj. 2,10. Megh. 17. Kumāras. 7,2. Ragh. 2,39. 8,89. Çik. 99,16. Vikr. 76. Mārk. P. 55,6. 12. Rāja-Tar. 5,476. — 3) f. °नी N. pr. einer Apsaras Çik. 77,1.

सानुमान (2. स + बन्धु°) adj. *Schlussfolgerungen machend* (Gegens. निरनुमान) Tattvas. 10. 33.

सानुराग (2. स + बन्धु°) adj. (f. धा) *Zuneigung —, Liebe empfindend; verliebt:* Unterthanen Kām. Nītis. 4,55. Dieser Spr. (II) 467. यौवन 5739. Kathās. 16,123. *verliebt in* (mit loc. der Person) 32,205. 53,74. Mārk. P. 61,36. 40. 60. 62,15.

सानुरुक् adj. *auf einem Bergrücken wachsend, — gelegen:* कानन R. 3,79,44.

सानुवक्रग adj. *nebst dem* धनुवक्र *genannten Laufe* (eines Planeten) Sūrjas. 2,13. Ind. St. 10,206. fg.

सानुशय (2. स + बन्धु°) adj. *Reue empfindend* Rāja-Tar. 1,266. 6,95.

सानुषक् (ohne Avagraha) adv. (= सानुषङ्ग, सातत्य Sāj.): यावो यस्य द्विबर्हसो ऽर्केषु सानुषगसत् RV. 1,176,5.

सानुष्टि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 185,b,2.

सानुस्वार adj. *mit einem* Anusvāra *versehen* RV. Prāt. 18,17. Ind. St. 3,211.

सानूप (2. स + बन्धूप) adj. *mit wasserreichem, feuchtem Erdreich versehen* Harīv. 15444. Kām. Nītis. 4,54. 61 (an beiden Stellen fälschlich माद्रूप).

सानेपिका f. = सानिका *Pfeife, Flöte* Candak. im ÇKDa.

सानेयी f. dass. ebend.

सान्त n. *Freude* H. 1370. — Vgl. 3. शान्त.

सान्तक adj. (f. धा) *nebst* Jama (धन्तक) Rāja-Tar. 1,290.

सांततिक (von संतति) adj. *Nachkommenschaft verleihend* Harīv. 7820.

सांतपनँ (von संतपन) P. 5,4,36, Vārtt. 3. adj. 1) *wärmend, warm,* Beiw. der Marut RV. 7,59,9. AV. 7,77,2. VS. 24,16. TS. 1,8,4,1. TBa. 1,6,6,3. Çat. Br. 2,5,2,3. Kāṭh. Çr. 5,6,3. Agni AV. 6,76,2. Çāṅkh. Çr. 4,15,32. — 2) *zur Sonne in Beziehung stehend* (nach Mahīdh.) VS. 17,85. — 3) *den* Marut Sāṁtapana *geweiht:* पशु Çāṅkh. Çr. 14,10,16. — 4) in Verbindung mit कृच्छ्र (oder m. n. mit Ergänzung von कृच्छ्र) *eine best. Kasteiung* AK. 2,7,31. H. 842 (vgl. Schol.). M. 5,20. 11,124. 164. 173. 212. Jāgñ. 3,318. Pāraçarīyadh. 8,b,3. 9,a, 9. Verz. d. Oxf. H. 283,a,13. — Vgl. महा°, यति°.

सांतपनायन (wie eben) m. patron.; pl. Saṁsk. K. 184,b,4.

सांतपनीय adj. *auf die* Marut Sāṁtapana *bezüglich* Çat. Br. 11, 5,2,4. Kāṭh. Çr. 5,6,22.

सान्तर (2. स + बन्तर) adj. (f. धा) 1) *durch einen Zwischenraum getrennt* MBh. 9,430. = विरल Gaṇit. im ÇKDa. — 2) *verschieden* (Gegens. एकरूप) Vaitān. Bṛh. S. 22,2. — 3) *mit etwas Anderem vermischt* Taik. 3,3,199. vielleicht nur fehlerhaft für सात्त्व. — 4) *mit einer Clausel versehen:* वर MBh. 7,483. निग्रह् 462 (सान्तरे zu lesen). 465. 469.

सान्तरप्लुत n. *eine best. Art zu springen* MBh. 6,3319. 7,4444. = प्रवनान्तरिता गति: Nīlak.

सान्तराय (2. स + बन्तराय) adj. *durch eine dazwischenliegende Zeit getrennt von* (abl.) Sin. D. 28,15. Davon °ता f. nom. abstr. 48.

सांतर्देश (2. स + बन्तर्देश) adj. *sammt den Zwischengegenden* AV. 9,5,27.

सान्तःस्थ (2. स + बन्तःस्थ) adj. *mit einem Halbvocal versehen* RV. Prāt. 14,5. 33. Ind. St. 4,266.

सांतान adj. *von dem* Saṁtāna *genannten Baume genommen u. s. w.:* °माल्य Harīv. 8241. संतान° die neuere Ausg.

सांतानिक (von संतान) 1) adj. (f. ई) *a) Nachkommenschaft wünschend* M. 11, 1. Buic. P. 6,14,11. 9,14,9. — *b) vom* Saṁtāna *genannten Baume genommen u. s. w.:* स्रज् Kir. 18,20. — 2) m. pl. Bez. bestimmter Welten MBh. 13,703 nach der Lesart der ed. Bomb. — Vgl. संतानिक.

सांतापिक adj. = संतापाय प्रभवति P. 5,1,101.

सान्त्र, सान्त्रते = सान्त्वय् MBh. 8,243 (सान्त्रमान).

सान्त्र n. sg. und pl. *gute —, beschwichtigende Worte* (das zuerst empfohlene Mittel um einen Widerspänstigen zu gewinnen; vgl. 3. सामन्) AK. 1,1,8,19. 2,8,4,21. H. 266. an. 2,541. Med. v. 29. Halāj. 1,141. 4,95. MBh. 3,14509. सान्त्रमेव तु बालेषु प्रधानं प्रथमो नय: Harīv. 4220. Spr. (II) 116. 2229. Kathās. 6,62. °मानार्थदानै: MBh. 1,1925. सान्त्रेन प्रशमय्य M. 8,391. MBh. 1,2237. 5566. Spr. (II) 6370. Kathās. 10,123. 22,183. व्याल° 62,104. सान्त्वतम् 75,168. कपट° 62,116. बहुभि: सान्त्रै: R. 2,31,6. 35,38. 3,62,33. 6,31,17. गुणा: सान्त्रस्य MBh. 13,5882. सान्त्रं वदति 6649. इत्युक्त्वा बहु सान्त्वादि 14,2206. °वादै: Spr. (II) 2696. तस्मात्सान्त्रं सदा वाच्यम् Spr. (II) 2519. मरुत्सान्त्रमवर्तयत्, सान्त्रे प्रतिकृते MBh. 4,671. मरुत्सान्त्रं प्रयुज्य 690. 12,3191. त्वयि R. Gorr. 2,6,25. Spr. (II) 6999. कानि सान्त्वानि गोविन्द: सूतपुत्रे प्रयुक्तवान् MBh. 5,4727. सान्त्रं दत्त्वा 2,2132. °द: सर्वभूतानाम् 13,2946. वाक्यं °पूर्वम् 1,6008. R. Gorr. 2,93,8. °पूर्वम् adv. MBh. 5,7298. सान्त्वया instr. fem. Buic. P. 8, 6,21. als adj. könnte das Wort gefasst werden in der Stelle: सान्त्वं वचनमब्रवीत् R. 6,111,39; vgl. jedoch साम प्रयुञ्जीत प्रियं वच: Kām. Nītis. 17,15. Wird hier und da auch शान्त्र (aber nicht in den Bomb. Ausgg.) geschrieben. Wohl verwandt mit 3. सामन्; vielleicht aber auch ursprünglich = शान्त्र. Vgl. अभिशान्त्र (richtiger अभिसान्त्र d. i. अभि + सान्त्र; vgl. सान्त्वय् mit अभि).

सान्त्वन (von सान्त्वय्) n. *das Beschwichtigen durch gute Worte, das Anwenden guter Worte* (das obj. im gen. oder im comp. vorangehend) H. 736. Halāj. 4,64. MBh. 2,1356. 1374. 3,279 und 4,21 in der Unterschr. des Adhj. Harīv. 5752. R. Gorr. 1,4,65. 2,47 in der Unterschr. Suçr. 1,333,16. pl. Spr. (II) 4321. Daçak. 69,18. fem. धा Suçr. 2,442,14. am Ende eines adj. comp.: त्रस्तवास्तव्यकृत° Rāja-Tar. 5,345.

सान्त्वय् (von सान्त्र), °यति Dhātup. 32,22 (सामप्रयोगे). *Jmd* (acc.) *beschwichtigen, beruhigen, besänftigen, durch gute Worte —, durch freundliche Behandlung gewinnen;* act. M. 7,172. 8,79. MBh. 1,5083. 7468. 3,2283. 2335. 2396. 2621. 2771. 2792. 2825. 5,6021. R. 1,9,68 (66

Gobh.). 38, s. 2, 96, 23. 103, 13. 3, 63, 7. 68, 23. Spr. (II) 3524. Mṛicch. 34, 6. Milatim. 146, 2. Varāh. Bṛih. S. 44, 16. Kathās. 33, 87. 42, 13. Rāja-Tar. 2, 163. Bhāg. P. 4, 14, 11. Hit. 93, 8. Bhartṛ. 3, 23. 19, 24. med.: °येथाम् MBh. 4, 436. °यस्व R. 4, 36, 19. 6, 105, 28. °यान MBh. 6, 4910. absol. °यित्वा 1, 3294. 3, 1871. 3055. R. 1, 62, 8 (64, 7 Gorr.). 2, 28, 2. 52, 60. Çik. 102. Bhāg. P. 1, 7, 17. 4, 14, 13. °व्य 10, 45, 24. pass.: मान्व्यताम् Harīv. 4854. मान्व्यमान MBh. 2, 2428. 3, 238 (मु°). 4, 436. 5, 2472 (so zu lesen). R. 2, 30, 1. मान्वित MBh. 1, 175. 2, 2181 (मु°). 3, 2056. 5, 7284. 15, 747. R. 2, 105, 2. 3, 47, 17. Kām. Nītis. 13, 33. Rāja-Tar. 6, 217. Bhāg. P. 4, 14, 12.

— सभि dass. act. MBh. 4, 382. Spr. (II) 6370. R. 2, 32, 29. °मान्व्य (so ist zu lesen) Mārk. P. 63, 62. °मान्वित Kām. Nītis. 17, 24.

— उप dass. act. P. 1, 3, 47, Schol. °मान्व्य MBh. 3, 14330. 15997. °मान्वित R. 5, 72, 1. — Vgl. उपशान्वन.

— परि dass. act. MBh. 1, 3259. 3, 1778. 15756. 8, 3561. 13, 7760 (°मान्वय ed. Bomb.). R. Gorr. 1, 64, 18. 2, 30, 28. 80, 21. Kathās. 52, 82. 74, 320. med. °मान्वयस्व MBh. 3, 234. absol. °मान्व्य MBh. 3, 11907. R. 2, 23, 42. 87, 12. pass. °मान्व्यताम् 6, 95, 45. °मान्वित MBh. 3, 287. 4, 379. R. Gorr. 2, 92, 24. Bhāg. P. 8, 5, 24. — Vgl. परिमान्वन.

मान्वयितर् (von मान्वय्) nom. ag. *der da gute Worte giebt, freundlich verführt* Spr. (II) 5131.

मान्त्रित्य s. u. शाण्डित्य 1) a).

मांदीपनि (von मंदीपन) m. N. pr. des Lehrers von Kṛishṇa und Balarāma, dessen Sohn von Kṛishṇa nach dem Tode wieder belebt wurde, Harīv. 4906. (gg. 5955. 9044. 9138. 9803. VP. 501. Bhāg. P. 3, 3, 2. 10, 45, 31. 80, 39. Paṇḍān. 3, 14, 52. 4, 3, 127.

मांदृष्टिक (von मंदृष्टि) adj. *unmittelbar* —, *alsbald erfolgend:* फल *Lohn* AK. 2, 8, 4, 29. H. 162. Hālis. 1, 113. Nach den Erklärern u. (sc. फल).

मान्द 1) adj. (f. धा) = घन AK. 3, 2, 15. Trik. 3, 3, 378. H. 1447. Med. r. 97. Hālis. 4, 22. a) *dickflüssig, zäh* (Gegens. तनु, द्रव) Suçr. 1, 84, 6. 151, 8. 173, 9. 2, 370, 3. °कफ 491, 18. वस्ति 202, 18. घृति° 1, 33, 5. 2, 74, 1. — b) *dick, dicht* überh.: शर्मन् Çiç. 4, 64. Wolken Bhāg. P. 10, 20, 4. Paṇḍān. 3, 11, 2. संपृक्तसान्द्रमदलेखमिव — करिणः कपोलम् Mṛicch. 7, 28. विलेपन Spr. (II) 2528. अनुलेपन Bhāg. P. 10, 42, 4. कुङ्कुम 75, 18. सुधा Çiç. 4, 28. चन्दन Verz. d. Oxf. H. 146, b, No. 311. रजस् Rāgān. 7, 38. केतकीनां पराग: Milatim. 127, 14. °सिन्दूर Comm. zu Naish. 22, 45. तुषार Ṛt. 5, 3. क्षिप्र Spr. (II) 2788. तुहिन Prab. 13, 13. अमृतवर्ष Milatim. 60, 18. मान्द्रामृतै: कटाक्षपातै: Vṛittaratnāk. im Journ. asiat. 4me sér. 11, 519. Bäume Spr. (II) 6154. Z. d. d. m. G. 27, 34. Ṛt. 6, 15, v. l. Tropfen Kādamb. 12. Verz. d. Oxf. H. 130, b, 31. Dunkelheit, Finsterniss Çiç. 9, 22 (°तम). Mallin. zu Çiç. 4, 67. Rāja-Tar. 3, 309. Schatten Kiratārj. 2, 209. adv.: काश्मीरद्रवसान्द्रदिग्धवपुषम् Spr. (II) 7417. — c) *stark, heftig, intensiv:* चन्द्रमसश्चन्द्रिका Spr. (II) 4890. Çiç. 9, 18. विमर्द Ṛt. 1, 26. कुतूहल Rāgān. 7, 11. स्नेह Spr. (II) 2102. आनन्द Kathās. 14, 28. Prab. 1, 8. Sin. D. 63, 16. कारुण्य Verz. d. Oxf. H. 9, a, 9 v. u. आदर Daçak. 77, 9. सामोद Dhūrtas. 69, 4. adv.: मान्द्रस्निग्ध AK. 3, 1, 30. H. 478. Manu. 97, v. l. मान्द्रतरम् adv. Çiç. 9, 37. — d) *dicht besetzt mit, dicht erfüllt* —, *voll von* (instr. oder im comp. vorangehend) Verz. d. Oxf. H. 17, a, No. 63, Çl. 14. सिन्दूर° Naish. 22, 45. आनन्द° Prab. 1, 11. 41, 2. 98, 2. Verz. d. Oxf. H. 28, b, 37. 187, b, 5 v. u. — e) *weich, zart* Trik. Med. °स्पर्श (माहात) Milav. 39. = स्निग्ध, मनोज्ञ Çabdar. im ÇKDr. — 2) n. *Wald* Trik. Med.

मान्द्रता (von मान्द्र) f. *Dichtigkeit* und zugleich *Heftigkeit, hoher Grad:* गोविन्दस्य मनोरथेन च समं प्राप्तं तम: मान्द्रताम् Gīt. 5, 17.

मान्द्रपद n. *ein best. Metrum: 4 Mal* —⏑⏑—⏑⏑⏑⏑—— Ind. St. 8, 377.

मान्द्रपुष्प m. *Terminalia Bellerica Roxb.* Çabdār. im ÇKDr.

मान्द्रमणि m. N. pr. eines Mannes Saṅgh. K. 184, b, 2.

मान्द्रमेघ m. *eine gewisse Haarsalbe* Çiç. Suçr. 1, 7, 13.

मांद्राविणि (von मंद्राविन् und dieses von 1. द्रु mit सम्) m. P. 3, 3, 44, Schol.

मान्द्रीकर् (मान्द्र + 1. कर्) *dick* —, *dicht machen:* उत्थापित: संयति रेणुरयै: °कृत: स्यन्दनवंशचक्रै: Raghu. 7, 36.

मांधि (von मंधि) 1) adj. *am Berührungspunkt gelegen* Comm. zu Mṛicch. 59 bei Schütz. — 2) m. patron. gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112.

मान्धकार (2. स + ध°) adj. *finster* Kālakārikā 3, 131.

मांधिक (von मंधा) m. *Branntweinbrenner* Çabdam. im ÇKDr.

मांधिविग्रहिक (von मंधि + विग्रह) m. *der über Frieden (Bündnisse) und Krieg entscheidende erste Minister* Spr. (II) 6620. Rāja-Tar. 4, 137. 503. 710. 6, 110. 8, 3455. Sin. D. 7, 3. 8, 13. Vet. in LA. (III) 16, 9. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 340, 2. — Vgl. महा° und मंधिविग्रहक.

मांधिवेल adj. von मंधिवेला P. 4, 3, 16. l. ई = त्रिमंधि Rāgān. 10, 122.

मांध्य (von मंधि und मंध्या) adj. 1) *aus der Vereinigung, Verschmelzung hervorgegangen:* घृत Rudr. Nirukta S. LXII. — 2) *zur Abenddämmerung in Beziehung stehend, abendlich* gaṇa मंधिवेलादि zu P. 4, 3, 16. विधि Rāgān. 2, 23. Kathās. 70, 25. तेजस् Manu. 37. मेघ Rāgān. 11. 60. Çik. 99, 16. किरण Çiç. 9, 15. Prab. 74, 5. मयूख Kām. 5, 3. राग Z. d. d. m. G. 27, 13. Verz. d. Oxf. H. 108, a, N. रजस् Varāh. Bṛih. S. 30, 15. नभस् 46, 37.

मांध्यकुसुमा f. *eine Malvenart* (vgl. त्रिमंध्यकुसुमा) Rāgān. 10, 122.

मांनत (von मंनति) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 243, b.

मांनत्य (wie eben) adj. *auf das Sichneigen bezüglich* Anukr. zu AV. 4, 39.

मांनकनिक adj. von मंनकन ÇKDr. nach Siddh. K.

मानाय्य (von 1. नी mit सम्) n (sc. क्षविस्) *eine aus süsser und saurer Milch gemischte Spende* (namentlich beim Neumondsopfer üblich) P. 3, 1, 129 (vgl. Siddh. K. zu d. St.). 5, 4, 26, Vārtt. 5. Vop. 26, 11. AK. 2, 7, 36. H. 831. Z. d. m. G. G. 9, LIX. Ait. Br. 7, 2. 4. TS. 2, 5, 2, 3. 5, 1. 7, 5, 6, 4. TBr. 3, 2, 3, 11. Çat. Br. 1, 6, 3, 6. 2, 4, 4, 5. 29. 11, 1, 7, 2. 3, 6, 6. Pāraṇ. Br. 25, 10, 3. Kāty. Çr. 4, 2, 12. 3, 14. 4, 6. 25, 4, 41. Ind. St. 1, 73. मानाय्योखा TBr. 3, 2, 3, 1.

मांनाक्षिक (von मंनाक्ष) adj. (f. ई) gaṇa मंतापादि zu P. 5, 1, 101. 1) *zum Sichrüsten in Beziehung stehend:* भेरी *eine Trommel, die das Zeichen giebt, dass man sich zu rüsten habe,* MBh. 1, 7941. — 2) *der eine Rüstung zu tragen vermag, waffenfähig* MBh. 7, 2461. Bhāg. P. 9, 7, 13; vgl. मांनाङ्क.

मांनाङ्क adj. = मांनाक्षिक 2) Ait. Br. 7, 14.

सांनिध्य n. = संनिधि gaṇa चतुर्वर्णादि zu P. 5,1,124, Vârtt. 1. *das in-der-Nähe-Sein, Anwesenheit, das Gegenwärtigsein* (von Belebtem und Unbelebtem): रुद्राणाम् MBu. 3,1840. 5,3851. नित्यं सांनिध्यमिह ते भवेत् MBu. 13,115. fg. 947. 952. प्रविशन्नेव पप्रच्छ सांनिध्यं केशवस्य Hariv. 4361. 7113. R. 5,53,4. R. 7,31,7. Rāgh. 7,3. वदनामलेन्दुसांनिध्यतम् Milatim. 48,8. Śṛṅg. 1,153,15. 317,14. 320,10. 2,445,10. Kap. 1, 168. Vaṁś. Bḥp. S. 5,15. Weber, Rāmat. Up. 337. 341. Kathās. 37,11. 43,204. Mārk. P. 96,34. Rāja-Tar. 1,291. 3,175. Wilson, Sel. Works 1,149. Tarkas. 51. Nīlak. 215. Bhāg. P. 1, 19, 34. 4, 8, 42. 10,79,19. Pañcat. 258,7. Comm. zu TS. Prāt. 1,26 u. s. w. सांनिध्यैः प्रतिमागतैः Rāgh. 17,26. तत्र भगवान्सांनिध्यं न विमुञ्चति Mārk. P. 110,41. °द् Pāṇ. 3,6,1. स्थानेषेतेषु सांनिध्यमुपगच्छन्ति देवताः so v. a. *pflegen zu erscheinen*, — *sich zu zeigen* Vaṁś. Bḥp. S. 56,3. सांनिध्यं कुरु सागरे so v. a. *zeige dich* MBu. 3,11020 (S. 570). 13,954. धर्मो हि सांनिध्यं कुरुते सताम् Kathās. 33,46. मनुज्ञीविना सांनिध्यमवश्यं कारणीयम् *muss anwesend, gegenwärtig sein* Hit. 53,12. 54,21. यावत्सांनिध्यानुपदं भुवि । गत्वा करोमि Kathās. 12,176. मन्त्रैः प्रभावसांनिध्यं देवानां क्रियते दिवि: Rāja-Tar. 4,122. सर्वप्रकृतिसांनिध्यं कारयित्वा स्ववेश्मनि *in sein Haus berufend* MBu. 15,267. परिकल्पितसांनिध्या (सरस्वती) काले काले च वन्दिषु so v. a. *erscheinend in* Rāgh. 4,6. देवब्राह्मणसांनिध्ये *im Beisein von* M. 8,87. MBu. 1,5313. सांनिध्यपदे स्थ् so v. a. *an die Stelle von* (gen.) *treten* Kumāras. 7,33. सांनिध्यं या *sich in die Nähe begeben von* (gen.) R. Gorr. 2,85,4. सत्सांनिध्यं व्रजन्ति हि Verz. d. Oxf. H. 16, *a*,19. स° *Abwesenheit* MBu. 3,610. R. 3,55,50. 7,31,13. Çiç. 28,18.

सांनिध्यता (von सांनिध्य) f. *Gegenwärtigkeit* Hariv. 9815.

सांनिपातिक (von संनिपात) adj. P. 5,1,35, Vârtt. 2. 1) *in Eins zusammentreffend, in unmittelbarer Verbindung stehend* Liṅg. 1, 8, 16. Gorr. 1, 5, 9. Kāṭy. Çr. 25,5,13. 11,16. 14,3. — 2) *aus dem Zusammentreten der humores entspringend* Suçr. 1,103,9. 132,3. 280,8. 2,288, 18. 454,5. Kumāras. 2,46. Mit. 224,8 (संनि° gedr.). कर्मन् *die Behandlung einer auf diese Weise entstandenen Krankheit* Spr. (II) 4706.

सांनिपातिन् adj. = संनिपातिन् *zusammenfallend, zusammentreffend* Comm. zu Kāṭy. Çr. 1066,35. Davon °पातित्व n. nom. abstr. Kāṭy. Çr. 7,9,13. 8,3,24. 5,23. 8,10.

सांनिपात्य adj. = संनिपात्य *zu vereinigen, zusammenzubringen* Kāṭy. Çr. 1, 3, 5.

सांनिवेशिक adj. = संनिवेशं समवैति P. 4,4,42, Schol.

सांन्यासिक (von सन्यास) adj. *der der Welt entsagt hat*, m. *ein Brahmane im 4ten Lebensstadium* H. 809.

सान्यपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,5.

सान्वय (2. स + सन्वय) adj. 1) *nebst Nachkommenschaft, nebst seinem Geschlecht* M. 2,168. 3,208. Spr. (II) 5348. Pañcat. 45,6. — 2) *zur selben Familie gehörig, verwandt* M. 8,198. — 3) *in einer näheren Beziehung zu Jmd stehend* M. 8,331. — 4) = सकार्य oder कारणसंयुक्त (Comm.) Bhāg. P. 3,5,49. — Vgl. निरन्वय.

साप् (von 1. सप्) adj. in शत°, केत°.

सापत्न (von सपत्न oder सपत्नी) adj. 1) *von einem Nebenbuhler* oder *einer Nebenbuhlerin kommend:* शापथ AV. 2,7,2. — 2) *auf Nebenbuhlerschaft, auf angeborener Feindschaft beruhend:* वैर Spr. (II) 6291. — 3) *von einer Nebenfrau stammend* gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. 6,3,35, Vârtt. 3, Schol. भ्रातृ *ein Stiefbruder von Seiten der Mutter* R. 3,53, 30. 54,2. subst. m. dass. MBu. 3,17409. 17411.

सापत्नक (wie oben) n. 1) *Nebenbuhlerschaft unter den Frauen desselben Mannes* (= सपत्नीत्व) MBu. 1,3454. — 2) *Feindschaft:* °कं यत्प्रयुक्तं मुतेस्ते MBu. 8,4228.

सापत्न्य 1) adj. *a*) = सापत्न 2): वैर Spr. (II) 7000. — *b*) = सापत्न 3): भ्रातृ R. Gorr. 2,18,25. Bṛhaspati in Dāyabh. nach ÇKDa. कन्या, पुत्र Kull. zu M. 9,198. — 2) m. = सपत्न *Nebenbuhler, Feind* Rāmāyaṇa zu AK. 2,8,4,10 nach ÇKDa. — 3) n. *a*) *das Verhältniss von Stiefgeschwistern* R. 1,43,16. — *b*) *Nebenbuhlerschaft unter den Frauen desselben Mannes* Çiç. 8,15.

सापत्न्येय adj. (f. ई) = सापत्न 3) Kull. zu M. 9,198.

1. सापत्य (2. स + अपत्य) adj. (f. या) 1) *Kinder habend* MBu. 3,2777. — 2) *nebst Kindern* Bhāg. P. 6,6,3.

2. सापत्य angeblich = सापत्न d. i. सपत्न्याः पुत्रः P. 6,3,35, Vârtt. 3, Schol.

सापद् (2. स + आपद्) adj. *in Noth —, im Unglück befindlich* Spr. (II) 6765.

सापदेश und सापमान s. u. अपदेश und अपमान (Nachträge).

सापराध (2. स + अप°) adj. (f. या) *schuldig, der sich Etwas hat zu Schulden kommen lassen* Kathās. 27,119. Rāja-Tar. 4,486. Prab. 17,6. 7. Kull. zu M. 7,9.

सापक्रव (2. स + अप°) adj. (f. या) 1) *sich verstellend* Kathās. 13,156. — 2) *versteckt, verhüllt:* उत्प्रेक्षा Sāh. D. 294,1; vgl. अपक्रवोत्प्रेक्षा 296,2.

सापाय (2. स + अपाय) adj. (f. या) 1) *der mit Widerwärtigkeiten zu kämpfen hat* Daçar. 3,36. — 2) *Gefahr bringend, gefährlich:* पत्तिन् Pañcat. 192,7. भोग Spr. (II) 2001. विभूतय: Rāja-Tar. 4,388.

सापाश्रय (2. स + अपा°) n. (sc. वास्तु) Bez. *eines Hauses mit einer offenen Gallerie* (वीथिका) *auf der Hinterseite* Vaṁś. Bḥp. S. 53, 21 (सापा° Druckfehler).

सापिण्ड n. = सापिण्ड्य Dattakacandrikā 74,5. 14.

सापिण्ड m. wohl patron. von सपिण्ड gaṇa रेणुकार्यादि zu P. 4,2, 84. सापिण्डैनक adj. von *solchen bewohnt* ebend.; vgl. Saṁsk. K. 185,*b*,3.

सापिण्ड्य n. *das Verhältniss des* Sapiṇḍa Saṁsk. K. 49,*a*,6.fgg. Dattakacandrikā 73,6. 7. 74,4. 8. fg. (vgl. Kull. zu M. 5,60). Verz. d. Oxf. H. 276,*b*,28. °दीपिका und °मीमांसा Titel zweier Schriften 279,*b*,39.

सापेत (2. स + अपेता) adj. 1) *Rücksicht nehmend* R. Gorr. 2,16,40. पाण्डवेषु MBu. 7,468. मातुलं प्रति 8,3933. 12,57. — 2) *Etwas erfordernd, erheischend, voraussetzend* so v. a. *abhängig von* (geht im comp. vorau): वीरमाचिव्यसापेतं मन्त्रसाधनमस्ति मे Kathās. 75,35. Sāh. D. 308,15. Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,N. 7. 264,*a*,23. Nīlak. 37. Sarvadarçanas. 11,5. 19,4. 5. 47,10. 62,3. 79,2. 80,13. 104,4. Kusum. 22,15. Comm. zu TS. Prāt. 21,1. Davon nom. abstr. °ता f. zu 4,40. °त्व n. zu 1,1. Sāh. D. 124,2. Mugdh. ST. 2,190. Nīlak. 38. Weber, Rāmat. Up. 343. Verz. d. Oxf. H. 264,*a*,25. Sarvadarçanas. 62,13. Schol. zu Gaim. 1,5. Kusum. 4,21. 43,12.

1. सप्तन् (von सप्तन्) P. 5,1,61 (वर्गे). adj. *siebenfältig*, n. *Siebenzahl:* रत्नानि त्रिः सप्तानि ṚV. 1,20,7. सप्त सप्तानि TS. 5,4,7,3. Schol. zu P. 5,1,61. Çiñkh.Br. 14,5. Hierher wohl auch (oxyt.): अस्माकेभिः सप्तेभिरेतम् *dreimal siebenmal* Vâlakh. 11,5.

2. साप्त (von सप्ति) 1) oxyt. m. wohl N. pr. Vâlakh. 7,5. — 2) paroxyt. m. vielleicht *Wettrennen* oder *Rennpreis:* अश्याम तत्साप्तम् ṚV. 2,19,7.

साप्ततन्तव (von सप्ततन्तु) m. pl. N. einer Secte Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

सप्तति (von सप्तन्) adj. *siebzig werth* u. s. w. Schol. zu P. 5,1,19. 22. हि° zu 7,3,15.

साप्तदृश्य (von सप्तदृश्) n. *Siebzehnzahl* Çiñkh. Ça. 1,4,11. 16,19. TBr. Comm. 1,174,14. Ait. Br. Comm. 1,1.

साप्तपद् (von सप्तन् + पद्) adj. *auf sieben Schritten beruhend* (vgl. u. साप्तपद्): मैत्र (hier und da fälschlich मित्र, auch मैत्र्य) MBh. 3,15439 (साप्त° ed. Calc.). 16769. 8,1991. 13,2702 (साप्त° ed. Calc.). 4850. Pañkat. II,47. IV,70. Brahma-P. in L.A. (III) 57,13.

सप्तपदीन (wie eben) adj. dass.; n. *Freundschaft* P. 5,2,22. AK. 2,8, 4,13. H. 731. Hall. 4,21. Kumâras. 5,39. Pañkat. ed. Bomb. II,42.

साप्तपुरुष (von सप्तन् + पुंस्) adj. *auf sieben Generationen sich erstreckend:* सापिण्ड्य Sâmk. K. 49,a,6. 8.

साप्तपौरुष adj (f. ई) dass. M. 3,146. Kull. zu 5,60. Mâk. P. 31,5. Dattakak. 74,4.

साप्तमिक (von सप्तमी) adj. 1) *zum siebenten Tag gehörig* Lâṭ. 3,6,27. — 2) *zum siebenten Casus gehörig* ṚV. Prât. 1,18 (28).

सप्तर्षिवाहनि m. patron. Çat. Br. 10,1,2,10.

साप्तरात्रिक (von सप्तरात्र) adj. (f. ई) *siebentägig:* धृतिवृष्टि Hariv. 3976. सप्तरात्रिका die neuere Ausg.

साप्तलापनि m. patron. von सप्तल gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

सप्तलेय adj. von सप्तल gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

सप्ति m. patron. von सप्तन् gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96.

साप्ति (von सप) m. patron. ṚV. 10,48,9. Pañkav. Br. 25,10.

साप्राप्य (von सप्राप) n. *Gleichartigkeit* Lâṭ. 10,7,7.

साफल्य (von सफल) n. *das von-Nutzen-Sein, das Gewinnbringen:* पुरुष्य साफल्यमात्मनः MBh. 7,3810. निज्ञानुषः Z. d. d. m. G. 14,576,4. एतद्धि जन्मसाफल्यम् M. 12,93. Spr. (II) 1451. fg. प्रयत्न° Kathâs. 103, 192. प्रयोग° Comm. zu TS. Prât. 14,28. नयनसाफल्यं कर्तुम् Mâlav. 74, 7. गर्भक्लेशः स्त्रियो मन्ये साफल्यं भजते तदा Spr. (II) 2092. Kathâs. 67, 87. साफल्यं नी Râja-Tar. 3,271. ज्ञानुषः साफल्यं लब्धुम् Verz. d. Oxf. H. 160,b,13. एवमाधत्तः पुत्र धर्मः साफल्यमर्हति Mârk. P. 34,12. am Ende eines adj. comp.: संशयितब्रह्म° Mâlatîm. 72,9.

साबाध (2. स + बाध°) adj. *leidend, unwohl, krank:* वपुस् Çik. 57.

साब्दी f. *eine Weintraubenart* Çabdârthak. bei Wilson.

साब्रह्मचार्य n. nom. abstr. von सब्रह्मचारिन् gaṇa युवादि zu P. 5,1, 130. Vârtt. 1 zu 6,4,144.

सभापर्त adj. von सभापति gaṇa सभापत्यादि zu P. 4,1,84.

सभिकाम, सभिताप und सभिनय s. unter अभिकाम, अभिताप und अभिनय.

साभिप्राय (2. स + अभि°) adj. *eine bestimmte Absicht habend, wissend woran man ist, mit sich eins* Kathâs. 32,156. Râja-Tar. 4,360. वचांसि *Worte, die eine bestimmte Absicht verrathen*, Pañkat. 122,18.

साभिमान (2. स + अभि°) adj. (f. आ) *voller Selbstgefühl, stolz auf* (loc.) Kathâs. 32,151. Râja-Tar. 5,223. 394. °म् adv. R. 1,62,13 (64,13 Gorr.). Pañkat. 83,17.

साभिलाष (2. स + अभि°) adj. (f. आ) *ein Verlangen empfindend* (insbes. nach dem andern Geschlecht): हृदय Çik. 27. दृष्टि Citat beim Schol. zu Çik. 35. क्ष्मी Mârk. P. 66,21. मृगी मृग: 74,27. तस्यां युवा Kathâs. 10,30. परद्रव्ये परदारे च मतिः Mârk. P. 61,79. मानुषाः सुतान्प्रति 81, 29. पुष्पसुताङ्गिपुगदर्शन° Kathâs. 26,283. °म् adv. Çik. 33,12.

साभ्यमूय s. u. अभ्यमूय.

साभ्यास (2. स + अभ्यास) adj. *reduplicirt* Nir. 3,13.

साधङ्किका f. *ein best. Metrum: 4 Mal 15 Längen* Colebr. Misc. Ess. 2,161 (X,6).

साधमती f. N. pr. eines Flusses Çatr. 1,55. Verz. d. Oxf. H. 149,a,17.

1. साम (von 2. सम) n. *Gleichheit* Lâṭ. 8,6,2.

2. सामं = 2. सामन् am Ende eines comp. nach अनु, अव und प्रति P. 5,4,75. Vop. 6,76. — Vgl. auch त्रिसामा und ब्रह्मसाम.

3. साम (2. स + याम) adj. *mit Verdauungsstörung verbunden* Karaka 1,13.

सामक 1) adj. = साम अधीते वेद वा gaṇa क्रमादि zu P. 4,2,61. सामिका (v. l. सामिषा) संहिता Verz. d. Oxf. H. 56,a,2. — 2) m. = तर्कुशाख Trik. 2,10,16. — 3) n. *die ursprüngliche Schuld* (मूलधन) ÇKDa. nach Mit.

सामकलम् (von 3. सामन् + कल) adv. *in beschwichtigendem Tone* VP. 1,13,15.

सामकारिन् adj. Sâman *machend* Snâpv. Br. 1,2.

सामदय s. साम्यत्त.

सामगै und °गी (ṚV.) adj. Sâman-*Sänger* Vop. 26,46. ṚV. 2,43,1. 10,107,6. AV. 2,12,1. Ait. Br. 2,22. 37. 3,4. Çiñkh. Ça. 11,14,1. 15, 2,3. Snâpv. Br. 4,3. Hariv. 1082. R. 2,76,18. 4,27,10. Weber, Prâtiçâkh. 106. fg. Bhâg. P. 1,4,21. 2,7,21. Colebr. Misc. Ess. 1,17. Verz. d. Oxf. H. 55,b,5. 26. 56,a,10. 222,b,2. 383,b,No. 466. °वपोत्सर्गतन्त्र 290,b,No. 698. Gild. Bibl. 482. उद्गेय° VP. 3,6,3. प्रागेय° 4. °गी f. *die Frau eines* Sâman-*Sängers* ÇKDa. und Wilson. Vgl. ज्येष्ठसामग unter ज्येष्ठसामन्.

सामगण m. *die Gesammtheit der* Sâman Ind. St. 3,270 (neutr. fehlerhaft). fg.

सामगर्भ (2. सामन् + गर्भ) m. ein N. Vishṇu's Çabdar. im ÇKDa.

सामगान 1) adj. = सामग Verz. d. Oxf. H. 17,a, No. 63, Çi. 14. 75,b, 2. — 2) n. *das Singen von* Sâman Kâṭy. Ça. 24,6,10. Lâṭ. 4,10,14. 5,4,21. 5,2. °प्रिय als Beiw. Çiva's Çiv.

सामगाय m. Sâman-*Gesang* Jâḍ. 3,112. सामगानं (sic) साम्नो गानात्मकत्वे ऽपि गायमिति विशेषणमगीतमलब्ध्युदासार्थम् Mit. 3,32,b,16. fg. Da गायम् als विशेषण bezeichnet wird, so vermuthen wir, dass der Mit. die Lesart साम गेयम् vorgelegen habe.

सामगिर् (3. सामन् + गिर्) adj. *freundliche Worte redend* Çatr. 14,255.

सामगीत n. Sâman-*Gesang* MBh. 1,2551. vom *Gesumme der Bienen* Bhâg. P. 4,29,34.

सामग्री (von सामग्य) f. Sidd. K. 250,a,8. *Gesammtheit, Vollständigkeit des Zubehörs, — der Factoren, alles Erforderliche zu* (gen. oder im comp. vorangehend) Spr. (II) 6249. 7228. Kathâs. 15,113. 18,359. 40,53. Râǵa-Tar. 4,467. 699. Çaṃk. 10,154. Pañkat. 109,10. 250,5. का ते सामग्री *so v. a. was stehen dir für Mittel zu Gebote?* Hit. 98,11. 130, 1. Z. d. d. m. G. 14,571,9. Sin. D. 96,15. fg. 123,1. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,12 nach Çl. 48. Kull. zu M. 7,121. Nilak. 169. Sarvadarçanas. 10,2. 12,10. 29,15. 95,9. 132,4. 5. 13. fgg. 133,23. Bhâsâp. 63. Kusum. 1,13. 26,6. 41,5. Nilak. zu Hariv. 11192. H. 64, Schol. Comm. zu Taitt. Âr. 2,15. Verz. d. Oxf. H. 145,a,28. °वाद् m. Titel einer Schrift 245,a, No. 612. Hall 43. °विचार् m. Titel derselben und auch einer anderen Schrift Hall ebend. — Vgl. घत्यष्टि°, वि°.

सामग्य (von समग) n. dass. Sidd. K. 250,a,7. 8. MBh. 12,11958. बन्धुषु Hariv. 11197. प्राणे R. 2,96,48 (प्राणै: 105,47 Gorr.). सप्ततन्त्रात्मबीजानाम् *das Vorhandensein aller dieser* Sṃkhya 1,317,15. Kâm. Nitis. 4,2. Ragh. 16,29. 17,30. Kumâras. 3,28. संभृत° adj. Râǵa-Tar. 4,513.

सामन्न 1) adj. = सामोत्य (समोत्य fälschlich H. an.) H. an. 3,180. Med. ǵ. 29. *im Sâmaveda vorkommend:* °स्वर् Çiç. 12,11. — 2) m. *Elephant* Taik. 2,8,34. H. an. Med. Hân. 14. Çiç. 12,11. — Vgl. सामयोनि.

सामञ्जस्य (von समञ्जस) n. *Richtigkeit:* घर्थ° Comm. zu R. ed. Bomb. 2,74,14. घ° Banerjea 109 aus Comm. zu Vedântas.

सामतत्त्व n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 309. Verz. d. Oxf. H. 386,a, No. 504. Ind. St. 1,48. 471. 3,276. Müller, SL. 143. fg.

सामतस् adv. von *Seiten der* Sâman (*Gesänge*) Çâṅkh. Br. 4,1,6,7. 4,8, 11. 5,1,8,10. Âçv. Ça. 1,12,23.

सौमतेजस् adj. Sâman-*Glanz habend* AV. 10,5,28.

सामत्व n. nom. abstr. von सामन् *Gesang* Çat. Br. 14,4,3,24. Ait. Br. 3,23. Çaṃk. zu Kaush. Up. S. 65.

सामदर्पण n. Ind. St. 3,276.

1. सौमन् (von सा = सन्) n. *Erwerb, Besitz; Reichthum, Ueberfluss:* सप्तस्य सामनवणायत्त देवा: ṚV. 1,147,1. VS. 22,2 (vgl. TS. 4,1,2,1). सामन्न रापे निधिमन्वत्नम् *im Ueberfluss vorräthig, aufgespeichert ist Speise* ṚV. 10,59,2. घर्मं न सामन्तपता सुवृक्तिभि: *reichlich* 3,78,7 (vgl. TS. 1, 6,12,2). य: श्रेष्ठतामश्नुते स सामन्भवति *der sitzt in der Fülle* Ait. Br. 3,23. घपां रसेन वरुणो न सामन्द्रे प्रियो ज्ञनयन्नप्सु राजा so v. a. *mit reichlichem Saft der Gewässer* VS. 19,94. स्तुषे पशाय साम्ने *flüchtiger Vorrath* (demnach sind unter पश्च diese Stellen zu 1) zu stellen) ṚV. 8, 4,17. 6,47. Hierher gehören wohl auch die Stellen: यत्खलु साधु तत्सामेत्याचक्षते यदसाधु तदसामेति Kaush. Up. 2,1,1. घथोताप्याकु: साम नो बतेति यत्साधु भवति साधु बतेत्येव तदाकुरसाम नो बतेति यदसाधु भवत्यसाधु बतेत्येव तदाकु: *wir haben vollauf, es geht uns gut* 2.

2. सौमन् Uṇâdis. 4,152. n. 1) *gesungenes Lied, Gesang:* technisch *die zu singendem Vortrag eingerichteten vedischen Verse* Bharat, SV. Einl. XIII. fgg. Nir. 7,12. AK. 1,1,5,4. 2,7,16. Taik. 1,1,116. Med. n. 154. ṚV. 1,62,2. घङ्गिरसो सामभि: स्तूयमाना: 107,2. 164,34. गायत्साम 173, 1. 2,23,16. fg. 43,2. 4,5,2. घर्क, सामन्, गायत्री 8,16,9. 29,10. साम कृण्वन् 9,96,22. सामभिरर्को घर्चति 10,36,5. प्रुड् 8,84,7. गीयमान 70,5. यजुस् 87,1. VS. 10,10. 12,4. AV. 7,54,1. 8,9,4. 16. 10,8,41. 15,6,2. Çat. Br. 1,4,4,1. 10,5,2,20. TS. 2,5,2,1. 4,12,7. 4,4,2,3. 7,5,22,1. ṚK und Sâman ṚV. 5.43,14. 10,85,11. 90,9. VS. 4,1. 9. Ait. Br. 3, 23. Çat. Br. 14,4,3,24. ṚK, Sâman, Yaǵus AV. 10,7,14. 11,7,5. VS. 34,5; vgl. u. ऋच् und यजुस्. Kâty. Ça. 10,3,1. Âçv. Gṛhy. 3,3,1. Lâṭy. 1,12,5. 10,5,8. Kauç. 89. 96. ṚV. Prât. 16,8. 17,10. VS. Prât. 1,127. 131 (wohl सामज्ञप° zu lesen). M. 1, 23. सामधनावृग्यजुषो नाधीयीत कदा च न 4,122. 11,262. 264. Bhâg. 9,17. बृहत्साम (so zu lesen) तथा साम्राम् ist Kṛishṇa 10,35. वेदानां च यथा साम Pâṇ. 4,1,4. याम्यानि, रौद्राणि MBh. 2,2627. Hariv. 1323. R. 2,76,18. 7,16,34. Bhâgav. 12, 17. Varâh. Bṛh. S. 48,31. Kathâs. 6,53. Râǵa-Tar. 6,10. Bhâg. P. 3, 21,34. सप्तसामोपगीत Ragh. 10,22. (घर्) संक्लिता: प्राच्यसाम्राम् Bhâg. P. 3,21,29. प्राच्य° adj. Hariv. 1082. घसामैन् adj. (यज्ञ) Çat. Br. 1,4,4,1. Bildung der Sâman-Namen P. 5,2,59. Aufzählung derselben Ind. St. 3,200. fgg. *profaner Gesang:* कुशला (fem.) नृत्यसामसु MBh. 2,2069. नर्तना गायनाश्चैव कुशला नृत्यसामसु (°कर्मसु (die neuere Ausg.) Hariv. 9113. साम्रा durch *Gesang* und zugleich *in Güte* Spr. (II) 3993. vom *Gesumme* der Bienen (vgl. सामगीत): षडङ्घ्रिगणसामसु (so ist zu trennen) लुब्धकर्णाम् Bhâg. P. 4,29,53. etwa *Melodie:* तत्र स्म गाथा गायन्ति साम्रा (= प्रीत्या Nilak.) परमवल्गुना। गन्धर्वास्तुम्बुरुश्रेष्ठा: कुशला गीतसामसु (*in profanen und heiligen Gesängen*) MBh. 3,1788. त्रि:सामन् und त्रिसामन् als Beiw. der Schlachttrommel MBh. 3,736 (= त्रिस्वरा नीचमन्द्रतारभावेन Nilak.; als v. l. wird त्रि:समा erwähnt). 12,3628. — 2) angeblich so v. a. *die Fähigkeit Laute hervorzubringen* Taitt. Âr. in TBr. Comm. 2,411; vgl. Çat. Br. 14,4,3,24. fgg. 8,44,3. Hierher vielleicht: वर्ण: स्वर: । मात्रा बलम् साम संतान: Taitt. Up. 1,2,1. *die Einheit zweier Silben* scheint das Wort Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 2,81. fgg. zu bezeichnen. — Vgl. श्रेष्ठ°, दु:षामन्, नि:°, परि°, बृहत्°, ब्रह्म°, भद्र°, मङ्गल°, मक्ष°, रात्रि°, विश्व°, संधिषामन्, सद्°, स्वर° u. s. w.

3. सौमन् m. (nur im TBr.) und n. *gute, beschwichtigende Worte, Milde, freundliches Entgegenkommen* (zur Gewinnung eines Gegners); = सान्त्व AK. 2,8,4,20. fg. H. 736. Med. n. 154. Halâ. 4,93. घापो देव्यै वभ्रिरे। संज्ञामेवामामेत्येतत्सामानं व्याचष्टे TBr. 3,2,5,4. 3,6,1. सामादिभिरुपायै: M. 7,107. 109. सामादिभिरुपक्रमै: 189. Jâǵ. 1,344. उपाया: साम दानं च भेदो दण्डस्तथैव च 345. Kâm. Nitis. 17,2. 5 (पञ्चविध). 16. 18. Spr. (II) 6385. 7009. 7013. Varâh. Jogaçâstra 1,11. fg. Bhâg. Nâradîy. 19,38. Daçar. 1,37. Kathâs. 6,62. 11,62. न सामास्य ब्रगृकु: Râǵa-Tar. 1,367. साम प्रयुञ्जीत प्रियं वच: Kâm. Nitis. 17,15. प्रयुञ्जीथा रञ्जयन्साम (der Sprecher meint *gute Worte*, der Hörer versteht es als 2. सामन्) Kathâs. 6,54. Spr. (II) 7018. सामप्रयोग Dhûrtop. 32,33. Kathâs. 17,5. सामपूर्व वच: R. Gorr. 1,76,25. सामपूर्वम् adv. 3,51,26. 7,30,2. सामप्रधान adj. *mild, freundlich* Karaka 1,8. साम्रा *in Güte, durch freundliches Entgegenkommen, in freundlicher Weise:* तदुताप्याकु: साम्नैनमुपागादित्ति साधुनैनमुपागादित्येव तदाकुरसाम्नैनमुपागादित्यसाधुनैनमुपागादित्येव तदाकु: Kaush. Up. 2,1,3. M. 8,197. MBh. 5,7042 (लप्स्यते st. लक्ष्यते ed. Bomb.). 14,2306. R. 3,69,33. Spr. (II) 1682. 3993 (zugleich *durch Gesang*). 4239. 5596. 7019. fgg. Varâh. Bṛh. 17,4. Jogaçâstra 1,11. Daçar. 4,56. Comm. zu Kâty. Ça. 242,4. शिवेन साम्रा विनयेन चैव R. 3,70,21. साम्रा परमवल्गुना MBh. 1,3294. 13,667. 2313. वल्गुना साम्रा Bhâg. P. 4,28,51. साम्रा ब्रह्मणेन चारुणा R. 2,24,34.

सामा कृषकलेन Harıv. 3761. सुसामा Spr. (II) 864, v. l. सामभिः Bhâg. P. 4,14,13. 7,5,9. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen = सामन्, z. B. सामसाध्येषु कर्मेषु Spr. (II) 7011. fg. 7018. Vaitân. Bpu. 17, 9 (सामैक° zu lesen). — Vgl. प्रतिसाम.

सामर्न (von सामन्) 1) adj. (f. या) gaṇa पामादि zu P. 5,2,100. Schol. zu 6,4,125. 167. Vop. 7,21. 1) (zu 1. सामन्) *reich, Ueberfluss habend:* भूमि ṚV. 3,30,9. — *b*) (etwa zu 3. सामन्, zugleich Wortspiel mit 2. सामन्) *ruhig, stätig:* सक्थ्यामाभ्यांमभिदिग्धो गावौ ते सामनावितः ṚV. 10, 85,11. — 2) f. ई *Koppel* (v. l. für दामनी) Sâyaṇ. zu AK. 2,9,74 nach ÇKDn.

सामन्त (von समन्त) 1) adj. *auf allen Seiten befindlich* u. s. w. Kâtj. Çr. 1,7,26. — 2) m. *a*) *Nachbar* Kâṭy. 13,1. M. 8,259. 262. fg. 9,272. Jâṇ. 2,150. 238. Spr. (II) 2188. 3379, v. l. Conj. 6040. — *b*) *Vasall* M. 7,69. न च सामन्तमिच्छन्ति राजानो बलशालिनम् Harıv. 3068. बलज्येष्ठस्य नृपतेर्नास्ति सामन्तजं भयम् 3072. निकृतामित्र° adj. 4378. 9394. यदि ते मनताः सर्वे सामन्ता रिपवो ज्ञाताः R. 1,20,12. Kâm. Nîtis. 11,6. 13,29. 14,22. 15,51. Râgat. 5,28. 6,33. Vîkr. 60. Spr. (II) 4225 (= समात्य Kull.). 6145. 7025. Milaṭîm. 102,6. AK. 2,8,1,2. Vaitân. Bpu. S. 53, 8. Jogaśâṭakâ 1,4. Kathâs. 5,64. 18,5. 25. 86. 126. 20,44. 23,83. 30,138. 42,83. 90. 92. 105. 45,225. 49,62. 123. 53,28. 55. 72. 74,278. 93,74. 121,220. 223. 247. 122,5. Mârk. P. 37,10. S. 650, Z. 7. Râga-Tar. 3,232. 4,555. 642 (zu lesen यास्त सामन्तत्यक्तपृष्ठः). 5,223. 249 (zu lesen सामन्तान्). 341. 354. 394. 430. 445. 6,91. Prân. 2,2. 3. Sân. D. 82. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 18. मालव° Kathâs. 38, 109. so v. a. मन्त्रिन् (!) Spr. (II) 3291, v. l. — 3) n. *Umgebung, Nachbarschaft:* °वासिन् M. 8,258. यद्दूरसामन्ते स्थितः *in der nächsten Nähe* Çuk. in LA. (III) 34,18. — Vgl. प्रति°, महा°, शक्यसामन्तता.

सामन्तक n. *Nachbarschaft, Umkreis:* त्रिंश° Vjutp. 216.

सामन्तेय m. N. pr. eines Mannes Bhâg. P. ed. Bomb. 9,20,24. सामतेय Burnouf.

1. सामन्य (von 1. सामन्) adj. घ° *der keinen Vorrath hat, von der Hand in den Mund lebend:* असामन्य इति हि निन्दन्ति Ait. Br. 3,23.

2. सामन्य (von 2. सामन्) adj. *zu singen geschickt* Schol. zu P. 4,4,95. 5,4,168. सामन्यं कृण्वन्त्सामन्यो वियन्तित् ṚV. 9,96,22. Bhaṭṭ. 4,9.

सामपुत्रि m. patron. Pravâhaṇa. in Verz. d. B. H. 39,2.

सामप्रगाथ m. Bez. *gewisser von den drei* Hotṛaka *zu sprechender Verse* Ait. Br. 4,29. 8,2. Çâṅkh. Çr. 7,21,4. 22,3. 10,8,22. 11,3,4. Âçv. Çr. 3,7,10.

सामभृत् adj. *Lieder bringend* ṚV. 7,33,14.

सामभेष (von 2. सामन्) adj. *aus Sâman bestehend* Ait. Br. 1,22. Çat. Br. 4,3,4,5. 10,5,4,5. Kaṭh. Up. 2,6. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,112. Mânâ. P. 78,13. 102,19.

सामय् (von 3. सामन्), °यति (सात्त्वप्रयोगे) Dhâtup. 35,27. असमसामत् und यसीयसमत् Siddh. K. 151,a,2. 3.

सामयाचारिक (von समयाचार) adj. *auf einen den Satzungen entsprechenden Wandel bezüglich* u. s. w. gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34. धर्म: Notices of Skt Mss. 2, 144. °सूत्र ebend. Wilson, Sel. Works 2, 281. Müller, SL. 99. 101. 134. 206. fgg.

सामयिक (von समय) adj. P. 5,1,104. gaṇa विनयादि zu 4,34. 1) *auf Uebereinkommen beruhend* Kâç. 7,2,20. धर्म Jâṇ. 2,186. चारित्र Wilson, Sel. Works 1,312 (सामायिक gedr.). — 2) m. (*f. Andern übereinstimmend, Gesinnungsgenosse:* स्वसामयिकमध्यग Râga-Tar. 4,666. — 3) *der Zeit entsprechend, rechtzeitig:* घ° Kir. 2,40. — Milav. ed. Bomb. 21, 6 fehlerhaft für सामाजिक oder सामवायिक.

सामयुगीन adj. von समयुग gaṇa प्रतिजनादि zu P. 4,4,99. — Vgl. सांयुगीन.

सामयोनि 1) adj. *aus den* Sâman *hervorgegangen* H. an. 4,203. Med. n. 222. Raçn. 16,3 (mit Anspielung auf den *Elephanten*). — 2) m. *a*) *Elephant* H. 1217. H. an. Med. सामवेदाद्भवोत्पत्तिर्गजशास्त्रे प्रसिद्धा Schol. zu Raçn. 16,3 in der ed. Calc. — *b*) ein N. Brahman's H. an. Med.

सामर् (2. स + घ°) adj. *sammt den Unsterblichen (Göttern)* R. 2,53, 28. Bhâg. P. 8,7,4.

सामराग m. *eine musikalische Weise der* Sâman: पञ्चमवत् P. 5,2, 130, Schol.

सामराज 1) m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. B. H. No. 539. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 138, *b*, No. 273. fg. — 2) n. N. eines Sâman Lâṭy. 3,6,32. 7,1,1.10. Pâṇḍav. Br. 15,3,35. Ind. St. 3,243,5. महा° ebend.

सामराजन् m. N. eines Sâman Pâṇḍav. Br. 15,3,35.

सामराधिप adj. *sammt dem Fürsten der Götter* d. i. Indra R. 3,33,31.

सौमरेय adj. von समर gaṇa सभ्यादि zu P. 4,2,80.

सामर्थ्य (von समर्थ) n. *Wohlfeilheit* Vaitân. Bpu. S. 41,12 (सामर्थ्य gedr.).

सामर्थ्य (von समर्थ) n. 1) *Angemessenheit, das Geeignetsein;* = योग्यता Taitt. 3,3,229. Med. j. 111. सभायां वक्ति सामर्थ्यम् so v. a. *Angemessenes* Spr. (II) 4280, v. l. °योगात् so v. a. *je nach den Umständen* 524. 3671. 4451. तुल्यसामर्थ्यया वाचा Harıv. 5837. 6355. abl. सामर्थ्यात् so v. a. *der Sachlage gemäss, wie es sich von selbst versteht* Kâṭy. Çr. 1,7,31. वाच्यफलेषु स्वर्ग: सा° 10,10. 4,3,2. 4,22. 17,4,13. 18,2,6. Kâm. Nîtis. 12,3. Çaṅk. zu Kaṭh. Up. S. 32. 78. Râga-Tar. 5,457. Sân. D. 216,14. fg. Comm. zu TS. Prât. 4,11. zu P. 8,1,6. zu Naish. 22,55. °तस् dass. Karaka 1, 15 मुतिसामर्थ्याभ्याम् Kâṭy. Çr. 4,15,25. — 2) *Berechtigung, das Haben einer hinreichenden Veranlassung zu* (loc. oder im comp. vorangehend): शोके नास्ति सामर्थ्यमण्वपि Spr. (II) 6533. 3566. नहि मे जीविते किंचित्सामर्थ्यमिह कल्प्यते । यवश्यत्र्या: प्रियं पुत्रम् R. 2, 43, 19 (42, 20 Gorr.). कृतराज्यस्य u. s. w. किं मे जीवितसामर्थ्यम् (= आद्यव Nîlak.) MBh. 3, 16121. R. 2,77,17. — 3) *Gleichberechtigung:* चतुर्णामपि Sûçr. 1,150,4. — 4) *das dem-Sinne-nach-Verbundensein, Zusammengehörigkeit dem Sinne nach* P. 8,3,44. नहि नञो नपुंसकेन सामर्थ्यम् Pat. zu P. 1,1,43. Schol. zu P. 2,1,1 (definirt). पूर्वोत्तरपदयो: zu 35. — 5) *das Vermögen, Macht, Kraft, Fähigkeit, Wirksamkeit* AK. 3,4,24,69. 30,127. Taitt. Med. Vop. 25,17. Bhag. 2,36. R. 4,6,3. 36,14. 5,94,18. Kâm. Nîtis. 11, 12. 17,46. Uttarab. 107,11 (145,3). Spr. (II) 84. Râga-Tar. 3,284. Sân. D. 17,12. Pâṇḍav. 57,3. ed. orn. 40,12. Vedântas. (Allah.) No. 36. Sarvadarçanas. 12,5. 6. 26,2. °क्षीण Hit. 113,20. विक्रम° R. 5,56,24. पराक्रम° 30. विज्ञान° Spr. (II) 4209. मन्त्रगण° Sây. zu ṚV. 3,53,22. मरुण° Comm. zu TS. Prât. 16,19. धन्यसामर्थ्यात् *weil ein Anderer es vermag* Spr. (II) 3615. सामर्थ्यं कृ *sein Möglichstes thun:* लिङ्घ्यामरणे MBh. 3,2214. 13,7302. R. 4,40,11. भज् so v. a. *sich zusammennehmen*

29,28. am Ende eines adj. comp.: अ° MBu. 13,281. तुल्य° Spr. (II) 2584. अदृष्टपर° 6908. कल्पितान्योऽन्य° Kumâras. 6,76. क्षपित° Râga-Tar. 5,384. प्रौढ° 476. Die Ergänzung *a*) im infin. R. 4,34,8. Kathâs. 114,94. Râga-Tar. 4,101. 261. — *b*) im dat.: त्वाराणामेव सामर्थ्यं मलनाशाय वाससाम् Spr. (II) 1239. अपत्योत्पादनाय सामर्थ्यमलभमानः Sâj. zu RV. 1,128,1. — *c*) im loc.: स्वयं राज्ञा विषमस्थः परेषु सामर्थ्यमन्विच्छति MBu. 5,746. तत्सेवनार्थं सामर्थ्यं कस्मिन्न मम कर्मणि Râga-Tar. 5,303. किमर्थक्रिययोः स्थायिनः सामर्थ्यमस्ति नो वा Sarvadarçanas. 9,22. स्वकार्यकारणे 38,17. fgg. — *d*) im comp. vorangehend: सर्वसामर्थ्यलिप्सु *Macht über Alle* MBu. 3,11811. भुवः पालनसामर्थ्ययुक्तः Mârk. P. 18,9. क्षीनदर्शन° adj. Râga-Tar. 5,219. — ब° *Unvermögen, Unfähigkeit* Pañkat. 69,3. Sarvadarçanas. 12,5. 26,2. Kusum. 31,9. — 6) सामर्थ्यात् am Ende eines comp. = वशात् *vermöge, in Folge von, gemäss* Kâty. Ça. 1,1,4. 6,20. 4,1,10. 2,30. 3,1,10. 9,3,1. 12. 31. 18,5,7. 25,4,25. Kap. 3,2,21. Soça. 1,147,9. 2,1,8. Kâm. Nîtis. 1,36. 16,2. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,12. 35. Pañkat. 263,7. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 44. 117. zu Kâṭhân. Up. S. 39. Comm. zu TS. Prât. 1,61. 5,25. 9,13, v. l. 21. 13,14. 16,13. 19. zu P. 1,1,69. 3,46. 2,2,3. 7,1,36. Sarvadarçanas. 17,4. 98,20. fg. 123,22. — 7) *die wirkende Kraft eines Wortes* so v. a. *seine Bedeutung, Function* Kusum. 34,11. 60,5. — 8) fehlerhaft für सामर्थ्य Vaitân. Bṛh. S. 41,12. für सामर्थ Pañkat. 66,9. — Vgl. निःर्°.

सामर्थ्यवत् (von सामर्थ्य) adj. *Etwas vermögend, mächtig* MBu. 2,618.

सामर्ष (2. स + 1. अमर्ष) adj. (f. आ) *ungehalten, empört, entrüstet, aufgebracht* R. 1,63,11. Spr. (II) 4280. 6122. 6240. Kathâs. 38,6 (रिपुं प्रति). 143. 42,74. 74,31. Pañkat. 66,9, v. l. °म् adv. Mṛkkh. 19,17. °ता f. nom. abstr. Ragh. 7,41. Bhaṭṭ. 2,3. — सामर्षविपन्नया (गिरा) Bhâg. P. 4,4,10 ist in सा अमर्ष° aufzulösen.

सामलायनि adj. von समल gaṇa पत्त्रादि zu P. 4,2,80.

सौमलेय desgl. gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

सामल्य desgl. gaṇa सैकाशादि zu P. 4,2,80.

सामवत्त (von सामन्) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 74,*b*,2.3.

सामवर्ण्य (von समवर्ण *gleichfarbig*) n. *Gleichfarbigkeit* Pañkat. 3,9,15.

सामवश adj. *der Ausgleichung des Metrums dienend, dadurch veranlasst* RV. Prât. 1,15 (25). संधि 7,1. 13,12.

सामवाद (3. सामन् + वाद) m. pl. *gute Worte* Spr. (II) 7010.

सामवायिक (von समवाय) 1) adj. P. 4,4,42. *mit etwas Anderem zusammenhängend, inhärent* Schol. zu Kâty. Ça. 490,3. fgg. — 2) m. *a*) *Theilnehmer an einer Versammlung, Zuschauer* Mâlav. ed. Bomb. 21, 6, v. l. — *b*) *Minister* H. 719.

सामविद् adj. *den Sâmaveda kennend* H. 819.

सामविधान n. *die Anordnung der Sâman* Schol. zu Lâṭy. 6,1,1. Titel einer Schrift (vollständig °ब्राह्मण) Ind. St. 1,60. 471 (auch °भाष्य). 4, 375. fgg. Müller, SL. 190. 348. fg. Verz. d. B. H. No. 1173. Verz. d. Oxf. H. 378, *b*, No. 382. herausgegeben von A. C. Burnell, London 1873 (Volume I) und in Calcutta (शाकाब्दाः १७९२).

सौमविप्र adj. *des heiligen Gesanges kundig* RV. 5,54,14.

सामवेद m. *der Veda der heiligen Gesänge* (die Saṃhitâ desselben herausgegeben von Benfey) H. 249. TBr. 3,12,9,1. Âçv. Br. 5,32. Çat. Br. 11, 5,8,3. 12,3,4,9. 14,4,3,12. Çâṅkh. Çr. 3,21,5. 16,2,31. सामवेदः स्मृतः पित्र्यस्तस्मात्तस्याप्युचिर्धनिः M. 4,124. वेदानां सामवेदोऽस्मि sagt Kṛshṇa Bhag. 10,22. MBu. 13,915. Kathâs. 49,157. VP. 3,4,13. 6,1.7. Verz. d. Oxf. H. 25,*a*, N. 2 u. s. w. °विद् M. 12,112. °वेदाङ्ग MBu. 12,13692. °राज् unter den Namen Vishṇu's Pañkar. 4,3,171. °सार desgl. 50. °च्छन्दस् f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 387,*a*,17. °वेदार्थप्रकाश m. 379, *b*, No. 396. fg. °रहस्य n. Mack. Coll. 1,9.

सामवेदिक s. सामवैदिक.

सामवैदीय adj. *zum Sâmaveda in Beziehung stehend* Colebr. Misc. Ess. 1,80. Weber, Prâtiçâkh. 72. Kenop. in der Unterschr.

सामवैदिक adj. dass. Schol. zu Kâty. Ça. 25,1,12. °वैदिक Muller, SL. 230.

सामशिरस् adj. *die Sâman zum Haupte habend* Kaush. Up. 1,7.

सामश्रवस् m. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 14,6,4,3.

सामश्रवस m. patron. von सामश्रवस् Pañkav. Br. 17,4,3.

सामश्राद्ध n. oder vollständig °तन्त्र n. Titel eines Abschnittes im Smṛititattva Verz. d. Oxf. H. 289,*b*, No. 693.

सामसंहिता f. *eine Redaction der Sâman* Ind. St. 1,244. Hariv. 1081.

सामसंख्या f. Titel eines Pariçishṭa des Sâmaveda Verz. d. Oxf. H. 377,*b*,1 v. u.

सामसरस् n. oder °स n. N. eines Sâman Ind. St. 3,210,*b*. 243,*b*.

सामसावित्री f. Bez. *einer best.* Sâvitrî Gobh. 3,3,3 in Ind. St. 10,131.

सामसुर m. oder °स n. N. eines Sâman Ind. St. 3,210,*b*. 243,*b*.

सामसूक्त n. Bez. bestimmter Sûkta (vgl. सामप्रगाथ) Âçv. Çr. 3,7,11. Çâṅkh. Çr. 12,6,3. 16. 8,4.

सामस्त (von समस्त) Pat. zu P. 4,2,104 (lith. Ausg. 4,73,*b*). सामस्तं नाम शास्त्रम् Kaṭh. vielleicht *die Lehre von den zusammengesetzten Wörtern.*

सामस्तम्बि m. patron. (wohl von सम-स्तम्ब) Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,23.

सामस्तिक adj. von सामस्त Vârtt. 19 zu P. 4,2,104.

सामस्त्य (von समस्त) n. *Gesammtheit* Schol. zu Kâty. Ça. 122,14. Prâtiçâkh. 78,*b*,5. 92,*b*,9.

सामस्थ्य (von समस्थ) n. *das Sichbefinden in guten, glücklichen Verhältnissen* gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

सामाङ्ग (2. सामन् + 3. अङ्ग) n. *Theil eines Sâman* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,86.

सामाचारिक adj. von समाचार gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34.

सामाजिक adj. = समाजं रक्षति P. 4,4,32, Schol. m. *Theilnehmer an einer Versammlung, Zuschauer* AK. 2,7,16. H. 481. 284, Schol. Med. bh. 9. Mâlav. 17,22. Mâlatîm. 4,18. Ratnâv. 2,17. Verz. d. Oxf. H. 130, *b*,7. 141,*b*, No. 289, Z. 18. Sin. D. 26,9. 32,2. 229. Prasannar. 59,*b*,1. 3. 60,*b*,6. Comm. zu Daçak. 4,1. 3. zu Kâvjâd. 1,6.

सामातान (2. सामन् + आतान) m. = सामप्रगाथ Çâṅkh. Çr. 15,9,6.

सामात्य (2. स + अमात्य) adj. 1) *nebst den Angehörigen* Âçv. Gṛ. 2, 3,7. — 2) *nebst den Ministern* MBu. 5,7015. 7308.

सामात्साम्य (von समात्, abl. von 2. सम, + 2. सम) n. *Aufeinanderfolge gleicher Ausgänge und Anfänge* Lâṭy. 6,6,2. Comm. zu 5.

सामानग्रामिक (von समानग्राम) adj. *in demselben Dorfe befindlich* u.

s. w. zu Kâr. 1 zu P. 4,3,60.

सामानाधिकरण्य (von समानाधिकरण) n. *grammatische Congruenz, das Stehen in demselben Casus, das Coordinirtsein, das Sichbeziehen auf dasselbe Subject* (Gegens. वैयधिकरण्य) Spr. (II) 369. Sin. D. 15,8. 283,7. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 109. 130. Schol. zu P. 2,1,19. 3,2,124. Vedântas. (Allah.) No. 96. fg. Sarvadarçanas. 3,16. 22. 8,6. 46,6. 7. 50, 1. 117,8. 9. Schol. zu Kap. 1,16. Kusum. 14,20. 33,6. fälschlich सामान्या° Wilson, Sâṃkhyak. S. 75.

सामानिक (von समान) adj. Kâr. 1 zu P. 4,3,60. °सत्रे: Ind. St. 10, 313 vielleicht fehlerhaft für सामाजिक°.

सामान्य (von 1. समान) 1) adj. (f. या) *a) gleich, nicht verschieden* MBh. 14,718. Çiç. 92. — *b) mehreren* oder *allen gemeinsam*, = साधारण AK. 2,2,31. H. 1472. सर्व Jâén. 2,120. द्रव्य 230. MBh. 3,2548. Harîv. 8564. Suçr. 2,331,16. 363,12. मित्र Kâm. Nîtis. 8,51. सामान्यभूदुपोरपि । द्वयोः Ragh. 12,93. °धात्री 13,62. Kumâras. 7,44. Siçupâlak. 11. 29 (auch य°). या (लक्ष्मीः) न वेश्येव सामान्या Spr. (II) 1749. 4310. Râja-Tar. 1, 42. Nîlak. 53. Sin. D. 69. Bailmîp. 91. °नायिका (= साधारणस्त्री 96) Sin. D. 45,17. Vîṣṇ-P. bei Muir, ST. 1,31, N. 56. Pañcat. 264,2. निमित्तानि सामान्यानि च जगतः प्रतिपुरुषं पार्थिवे च Varâh. Bṛh. S. 2, 8. 7, Z. 8. द्वाकारनिद्राभयमैथुनानि सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् Spr. (II) 1077. सामान्यं कृपणस्य धनं परैः 769. Mâṛk. P. 8,256. ध्रुवा चपला च द्यौ (श्रीः) सामान्या बहुभिः सह MBh. 13,3561. अनन्यनारीसामान्यो दासः Vikr. 59. त्रैलोक्यसामान्यगुण adj. Mâlatîm. 6,8. अनन्यसामान्यं सत्त्वम् Kathâs. 25,158. *das Gemeinsame* so v. a. *tertium comparationis* (vgl. सामान्यवचन) P. 2,1,56. — *c) allgemein* so v. a. *nicht nach den Unterarten u. s. w. unterschieden* (Gegens. वैशेषिक) Suçr. 1,96,20. 97,2. 2,1,14. 2,1. 87,13. 134,12. Varâh. Bṛh. S. 17,24. 21,17. 60,22. 86,7. °कविप्रशंसा *der Dichter im Allgemeinen* (nicht der einzelnen Dichter) Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,14. fg. 281,*b*,25. 28. °रोगाधिकार Verz. d. B. H. No. 966. काण्ड *Allgemeines betreffend* AK. am Ende in der Unterschr. सामान्ये so v. a. *in der allgemeinen Grammatik* AV. Prât. 1,2. — *d) von gemeinem, gewöhnlichem Schlage, durch nichts Besonderes ausgezeichnet, wie jeder andere:* Personen Spr. (II) 1460. 2720. 7014. Kathâs. 21,54. 24, 141. 34,211. दिव्यौषा किं न सामान्या 241. 60,2. 63,56. Râja-Tar. 5, 197. 6,85. Pañcat. 4,3,300. विष्णुसामान्यदर्शिन् *in Vishṇu einen gewöhnlichen Menschen sehend* 186. °देशवत् *wie jedes andere Land* Râja-Tar. 1,118. सामान्यतरकौलिका: *ganz gewöhnlichen Schlages* Pañcat. 133,1. प्र° *von nicht gewöhnlicher Art, ungewöhnlich, von der Menge unterschieden, absonderlich:* यत्न MBh. 1,5308. रूप Kathâs. 39,88. वंश Râja Tar. 3,117. गुण 251. स्वामिभक्ति 4,330. आकृति 424. Personen 887. काक Pañcat. 115,7. — 2) m. *a) Gleichheit, Uebereinstimmung* Nir. 12,13. सामान्यमृषिभिर्गत्वा ब्रह्मलोकवासिभिः MBh. 12,9336. सुखदुःखयोः Spr. (II) 6480, v. l. सर्वत्र° Suçr. 1,3,15. 89,3. Çaṃk. zu Kaṭha. Up. S. 7. Comm. zu AV. Prât. S. 261 (4,1,9). zu TS. Prât. 1,39. सामान्यतस् *in gleicher Weise* Bhâg. P. 7,7,38. *nach der Analogie* Kap. 1,104. Siddhânj. 6. — *b) Gleichgewicht, ebenmässiger —, normaler Zustand:* गुण° Nîlak. 43. — *c) Allgemeinheit, Grundbegriff* (Gegens. विशेष, व्यक्ति) AK. 1,1,6,9. 3, 4,46,70. H. 1515. Kâç. 1,1,4. 2,3. 3,1,3. Jogas. 1,49. Gaim. 1,1,31. Tarkas. 4. 56. Sarvadarçanas. 4,14. 12,20. fg. 13,3. fgg. 36,8. fgg. 105,2. fgg. 107, 3. fgg. 130,3. 3. 144,11 (मत्ता°). Bailmîp. 1. 7. Sin. D. 706. Bhâg. P. 12,4,37. सामान्यस्य भेदको विशेषः प्रकारः Schol. zu P. 5,3,69. सामान्यविशेषयोर्विशेषो बलवान् Schol. zu TS. Prât. 16,19. सामान्ये नपुंसकम् P. 2,4, 30, Vârtt. 2. कृतमिति क्रियासामान्ये क्तोक्तिः Schol. zu P. 6,2, 149. कालसामान्ये *wenn die Zeit nicht weiter unterschieden wird* zu 3,3,141. सामान्यतस् *im Allgemeinen, ohne in's Einzelne zu gehen* Kap. 2,1,16. Suçr. 1,95,2. 127,5. 193,7. 261,3. Comm. zu Bhâg. P. 10,33,30. सामान्यात् dass. Comm. zu TS. Prât. 2,9. सामान्येन dass. Kap. 1,139. Verz. d. Oxf. H. 281,*b*,10. Utpala zu Varâh. Bṛh. 19 (17), 1. Comm. zu TS. Prât. 14,28. 15,8. Vedântas. (Allah.) No. 79. Schol. zu P. 1,4,21. इत्येतेषां सामान्येन ग्रहणं ल इति zu 4,1,1. 3,4,28. °ग्रहणा (= सामान्येन य°) zu 3,1,6. 4,77. सामान्योक्त Comm. zu TS. Prât. 5,22. सामान्योक्ति zu 2,28. 10,12. — *d)* als rhet. Figur: *Gleichheit* Pratâpar. 88,*b*,4. यत्र सादृश्यादिशेषो नोपलक्ष्यते Kuval. 142,*a*. Beispiel: पद्माकरप्रविष्टानां मुखं नोपलक्षयति सुभ्रुवाम्. — 4) °म् adv. *a)* am Ende eines comp. *nach Art von, wie:* त्वयाहं तपस्विसामान्यमवेक्षणीया Raghu. 14,67. उद्यानपालसामान्यमृतवस्तमुपासते Kumâras. 2,36. — *b) gemeinschaftlich:* तैः सार्धं चित्तपेत्रित्यं सामान्यं संधिविग्रहम् M. 7,56. = मन्त्रभेदोपनीयम् (als adj.) Kull. — Vgl. त्रि:°, सर्व°.

सामान्यघट Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1403.

सामान्यत्व n. nom. abstr. zu सामान्य 2) *c)* Kusum. 30,12.

सामान्यनिरुक्ति f. *Erklärung des Begriffs* सामान्य Verz. d. Oxf. H. 241,*b*,9. °कोउ Titel einer Schrift Hall 33. °निरुक्त्यभिनवव्याख्या desgl. 37.

सामान्यलक्षण f. Bailmîp. 62. Verz. d. Oxf. H. 242,*a*, No. 593. fgg. °रहस्य Titel einer Schrift 241,*b*,6. 242,*a*,3. 4. Notices of Skt Mss. 290. °ग्रन्थ Verz. d. B. H. 201,*b*,6.

सामान्यवचन adj. 1) *das Gemeinsame ausdrückend* so v. a. *tertium comparationis* P. 2,1,55. — 2) *das Allgemeine —, einen weiteren Begriff ausdrückend* P. 3,4,2 (घञ्यवकृ schliesst पा *trinken* und खाद् *kauen* in sich). 8,1,73 (das Substantiv im Gegens. zu seinem Attribut).

सामान्यवत् (von सामान्य) adj. *Allgemeinheit habend, allgemein*; davon nom. abstr. °वत्त्व n. Sarvadarçanas. 105,6. Kusum. 30,10.

सामान्यशब्द m. *ein Wort von allgemeiner Bedeutung:* °शब्दैश्च विशेषणैश्च MBh. 12,7374. Verz. d. Oxf. H. 210,*b*,5 v. u. °क m. 211,*a*,9 v. u.

सामान्याभाव m. Verz. d. Oxf. H. 241,*b*,1. 242,*a*, No. 593. fgg. °रहस्य n. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 288. °टिप्पनी 294. °ग्रन्थ Verz. d. B. H. 201,*b*,2.

सामायिक adj. von समाय v. l. für समय, सामयिक im gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34.

सामासिक (von समास) 1) adj. *kurz gefasst, in Kürze dargelegt* M. 7, 180. 10,63. 12,34. Bhâg. P. 5,1,1. — 2) *ein zusammengesetztes Wort:* छंदः सामासिकस्य ist Kṛshṇa Bhâg. 10,22. — 3) सामासिका पङ्क्तिः Verz. d. Cambr. H. 77.

सार्मे adv. Nir. 6,23. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. kann mit einem partic. auf त componirt werden P. 2,1,37. 5,4,3. जुगुप्सने (जुगुप्सिते, निन्दायाम्) und सर्धे AK. 3,4,22(20),11. H. an. 7,41. Med. arj. 55. = सत्-

पूर्ण Hall. 4,28. 1) *vor der Zeit, zu früh:* पथा सामि गर्भो व्यथते TS. 5,3, 4,6. Çat. Br. 1,3,1,20. उत साम्यवान्यात् d. h. *ehe der Vers zu Ende ist* 8,14. स सामि निवर्तेत 2,3,3,14. तस्य सामि रेतः प्रचस्कन्द 1,7,5,3. न साम्युद्वासयेत *vorsilig* 2,3,3,4. यदि साम्युत्तिष्ठेत् Pañcav. Br. 9,3,1. — 2) *unvollständig, nur zum Theil, nur halb:* सामि प्राप्नोति सामि मीयते TS. 1,7,4,4. विलोचने सामि निमील्य Verz. d. Oxf. H. 237,a,5. °संस्थित Çat. Br. 1,5,4,25. °चित 7,2,1,18. 5,2,38. °भुक्त Ragh. 19,16. Vikr. 1,12,53. °कृत, °पीत Schol. zu P. 2,1,27. 5,4,5. °नीलोत्पलश्याम Verz. d. Oxf. H. 213,b,5 v. u. — Vgl. सु°, प्र°.

सामिक 1) adj. von सामन् *Gesang* Lâṭj. 7,9,7. — 2) m. *Baum* (?) H. c. 172. — Vgl. सामक.

सामित (von समिता) adj. *aus Weizenmehl gemacht* Suçr. 1,234,18. *mit W. bestreut oder vermengt* 161,16.

सामित्यै (von समिति) adj. *zum Rath u. s. w. gehörig* AV. 8,10,6. सामित्ये 13,1,13 scheint fehlerhaft zu sein.

सामिधेनै 1) adj. *auf Brennholz* (समिध्) *und Anzünden* (सामिन्धन) *bezüglich* Çat. Br. 1,4,1,20. 25. — 2) f. ई a) (sc. ऋच्) *ein Vers von dieser Bestimmung* P. 3,1,129. 4,3,120. Vârtt. 6. Vop. 26,11. AK. 2,7,21. H. 827. an. 4,208. Med. n. 222 (धाय्यायी zu lesen). VS. 19,20. Âçv. Br. 1,1,25. 3,15. 4,19. TS. 1,6,10,4. 2,5,11,3. 5,1,8,5. TBr. 1,5,9,4. समिन्द्धे सामिधेनीभिर्होता Çat. Br. 1,3,5,1. 7. 10. 4,1,20. Âçv. Çr. 1,2,2. 2,1,26. 19,6. सामिधेन्यो ब्रुवते P. 8,2,92. Vârtt., Schol. नवैवोक्ताः सामिधेन्यः पितृणाम् MBh. 3,10666. Verz. d. Oxf. H. 264,a,10. °सादृश्य Wasan, Nax. 2,305. °ब्राह्मण Citat bei Durga zu Nir. 9,26. यावत्सामिधेनि वेद *wie viele S.-Verse nach seinem Wissen die Handlung hat* Kâṭj. Çr. 3,1,9. °क am Ende eines adj. comp.: सप्तदश° Çâṅkh. Br. 1, 1. स° Kâṭj. Çr. 6,10,24. — b) *Brennholz* H. an. Med.

सामिधेन्य adj. मन्त्र = सामिधेनी ऋक् P. 4,3,129. Vârtt. 6.

सामिन् m. Bez. *eines unter einer best Constellation geborenen Wundermenschen* (महापुरुष) Vaitân. Bṛh. S. 69,31. 39. v. l. सावित्.

सामिष (2. स + आमिष) adj. *mit Fleisch —, mit einer Beute versehen:* कुरर Spr. (II) 7015. fg. *nebst Fleisch:* श्राद्ध M. 4,131. — सामिषा (v. l. सामिका) संहिता Verz. d. Oxf. H. 56,a,2.

सामीची f. = वन्दना Hir. 133.

सामीप्य (von समीप) 1) adj. *benachbart, Nachbar* MBh. 3,16665 (कृतं st. गतं mit der ed. Bomb. zu lesen). — 2) proparox. *Nähe* gaṇa चतुर्वर्णादि zu P. 5,1,124, Vârtt. 1. Vop. 5,30. Hall. 5,93. Sâhityad. 7. Sin. D. 11,4. 5. Bâlar. P. 3,29,13. Pañcat. 2,7,3. Sarvadarçanas. 79,5. 92,8. Schol. zu Naish. 22,55. örtlich und zeitlich P. 8,1,7. zeitlich: वर्तमानसामीप्ये 3,3,131. der Zahl nach Kull. zu M. 8,210.

सामीर्य adj. von समीर gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

सामुत्कर्षिक adj. von समुत्कर्ष gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34.

सामुदायिक (von समुदाय) m. (sc. भ, नक्षत्र) in der Nativitätslehre Bez. *des 18ten Nakshatra nach dem Nakshatra, in welchem der Mond bei der Geburt eines Kindes stand,* ÇKDr. Suppl. unter षष्ठाष्टीचक्र.

सामुद्ग (von समुद्ग) 1) adj. *hülsenartig.* — 2) m. (sc. संधि) *gewisse schalenförmige Gelenke wie Schulter, Hüftgelenk* Suçr. 1,340,16. 19. — 3) n. *die Arsenei, welche, vor dem Essen und nach demselben eingenommen, die Speise von beiden Seiten umschliesst,* Suçr. 2,535,10.

1. सामुद्र (von 1. समुद्र) 1) adj. a) *zum Meere gehörend, daher stammend, daselbst wohnend, — befindlich* u. s. w. Med. r. 236. Kaṇ. 19. *Wasser* Suçr. 1,173,20. Bhâg. P. 12,4,3. *Fische* Suçr. 1,206,5. 238,9. Spr. (II) 7017. *Vögel* MBh. 12,6226. *Pferde* 7,1007. *Affen* R. 4,38,56. 39,12. *Salz* Suçr. 1,226,17. द्रव्य Vaitân. Bṛh. S. 87,22. सेतु Bhâg. P. 10,79,15. °बन्धु *der Lakshmi so v. a. der Mond* Kathâs. 110,79. — b) Bez. *eines Regenwassers von einer bestimmten Beschaffenheit, das im Monat Âçvajuǵa fällt,* Suçr. 1,170,2. 6. Vikr. 1,5,4. — 2) m. a) *Seefahrer* Jâtâ. 2,28. — b) *eine Mückenart* (मशक) Suçr. 2,290,20. — c) pl. *Meeranwohner,* N. eines best. Volkes R. 2,82,7 (88,7 Gorr.; nach dem Comm. in der ed. Bomb. entweder समुद्रद्वीपवासिनः oder पोतवणिजः) Vaitân. Bṛh. S. 9,15. Mârk. P. 58,13. — d) patron. eines Kitrasena MBh. 8,165. — 3) f. ई *eine Tochter des Meergottes* Harîv. 87. Bhâg. P. 4,24,11. VP. 85, N. 11. — 4) n. a) *Seesalz* AK. 2,9,11. H. 941. H. an. °मूर्णी: Harîv. 8442. Suçr. 2,329,7. 454,13. — b) *os Sepiae* (समुद्रफेन) Râǵân. 6,225.

2. सामुद्र (von 2. समुद्र) n. *ein bedeutsames Mal am Körper* H. 365. H. an. 3,617. fg. Med. r. 236. *Chiromantie:* °विद् Vaitân. Bṛh. S. 68,1. °शास्त्रिकनिमित्तशते: Jogaśâstra 1,2. Wird auf den Personennamen Samudra von den indischen Gelehrten zurückgeführt.

1. सामुद्रक (von 1. समुद्र) 1) adj. *maritimus:* नौ, मनुष्य (*das Meer befahrend*) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. — 2) f. °द्रिका *eine Blutegelart* Suçr. 1,40,11. — 3) n. a) *Seesalz* Râǵân. 6,102. Suçr. 1,157,8. — b) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8019.

2. सामुद्रक n. = 2. सामुद्र *Chiromantie* ÇKDr.

सामुद्रनिष्कुट m. pl. *Meeranwohner* oder N. pr. eines Volkes MBh. 6,336. — Vgl. समुद्र°.

सामुद्रस्थलक adj. von समुद्रस्थली gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

सामुद्रि (von समुद्र) m. patron. Çat. Br. 13,2,2,14.

1. सामुद्रिक (von 1. समुद्र) adj. *das Meer befahrend:* वणिज् MBh. 5, 1225 (nach Nîlak. subst. *Chiromant*). 12,6318. m. *Seefahrer* 13,1276 (vgl. समुद्रयायिन् M. 3,158). 13,4276.

2. सामुद्रिक (von 2. सामुद्र) 1) m. *Chiromant* Hir. 61. Verz. d. Oxf. H. 113,b,47. — 2) n. *Chiromantie* Verz. d. Oxf. H. 126,a,22. 261,a,40. °ज्ञ Vaiç. bei Wilson, Daçak. S. 61. Verz. d. Oxf. H. 333,a,3. सामुद्रिकाचार्य als Beiw. Kâçînâtha's 261,a,11.

सामूल्लुक adj. *mit* समूल्लुच्छन्द्स् *versehen* Çâṅkh. Çr. 16,30,4.

सामूल्लिक adj. von समूल gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34. Schol. zu 4, 4,42. zu *einem Trupp vereinigt, in Scharen aufgestellt:* पोथगण Kâm Nitis. 13,48.

सामृद्ध (von समृद्ध) n. *das gut-von-Statten-Gehen:* यज्ञ° R. 1,50,8 (51, 8 Gorr.); vgl. यज्ञसमृद्धि 2.

सामोढ (2. सामन् + ऊढ) adj. *mit dem Sâman-Accent versehen* Lâṭj. 7,9,7.

सामोद (2. स + मो°) adj. *froh, heiter* Gîr. 1 in der Unterschr.

सामोद्भव m. *Elephant* Hall. 2,39. — Vgl. सामज und सामयोनि.

साम्न adj. (f. ई) *zu den Sâman (Gesängen) in Beziehung stehend* Ind.

St. 3,231. fg.

सांपद (von संपद्) n. *was zur Ausrüstung, Ausführung gehört, Requisit:* सर्व°, ब्रह्मचारि°, याग° Kauç. 11. 18. 20. fg. 59.

सांपराय (von संपराय) m. 1) *der Uebergang aus dieser Welt in die jenseitige* Kaṭhop. 1,29. 2,6. Âpast. 2,13,7. 24,3. 29,9. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,94. Bîdar. 3,3,27. MBh. 8,2000. 12,7930. Spr. (II) 6580. Bhâg. P. 5,6,5. 14,2 (सांपराय उद्गा° ed. Bomb.). 8,19,2. — 2) *Noth, Bedrängniss* MBh. 1,1921. 2,2576. 3,13813. 7,4176. 4178. शस्त्रायुधानाम् *bewirkt durch* 8,1859. — 3) *Kampf* Prab. 83,18. Daçak. 94,3 (nach der Lesart der ed. Calc.). — 4) etwa so v. a. *ein Retter in der Noth:* नास्त्यदस्मो MBh. 1,723. = त्वयाधिष्ठानभूतो Nîlak.

सांपरायण (von सांपराय) gaṇa घरीकृणादि zu P. 4,2,80. m. als patron. des Todes so v. a. *der Hinüberführer in eine andere Welt* Ind. St. 3,459.

सांपरायणक adj. von सांपरायण gaṇa घरीकृणादि zu P. 4,2,80.

सांपरायिक 1) adj. (f. ई MBh., या Bhâg. P.) = संपराय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101. *a) auf den Uebergang aus dieser Welt in die jenseitige —, auf das Jenseits bezüglich* MBh. 3,17427. विद्या 12,11758. फल *Lohn im Jenseits* M. 11,20 (= MBh. 12,6056). भवेषु सांपरायिकं निधत्स्व केवलं निधिम् MBh. 12,12109. कुरुष्व सांपरायिकम् so v. a. *bereite dich auf den Tod* 12080. उपकल्पय तत्सर्वं तावद्यत्सांपरायिकम् Bhâg. P. 2,1,14. ज्ञातयोऽपि मुमूर्षस्य चक्रुर्यत्सांपरायिकम् *verrichteten die Todtenceremonien* 7,2,59. 10,28. 9,10,29. 11,31,22. क्रिया: 10,37,28. — *b) zur Zeit der Noth heilsam, aus der Noth helfend:* एतावत्सांपरायिकम् MBh. 12,4788. सचिव *ein Helfer in der Noth* Hariv. 3835 (मान्य° die ältere Ausg.). 6353. R. 6,24,17. — *c) zum Kampf in Beziehung stehend, denselben betreffend:* °कृत्य M. 7,188. यंत्रा: MBh. 2,185. समय *die Stunde des Kampfes* Hariv. 5390 (= परलोकोक्ति Nîlak.). रथ *Kampfwagen* Hall. 2,291. — *d) zum Kampf bereit:* सामन्त Kâm. Nîtis. 11,6. Rṛṣn. 17,62. — 2) n. *Kampf, Schlacht* AK. 2,8,3,72. H. 798.

सांपातिक adj. von संपात 8) Âçv. Çr. 2,2,5.

सांपेषिक adj. = संपेषाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101.

सांप्रत (von संप्रति) 1) adj. *a) zutreffend, richtig* AK. 3,5,11. Trik. 3, 3,166. H. 743. an. 7,57. Med. avj. 63. Hall. 5,94. Lîl. 4,3,18. न — इति सांप्रतम् Sarvadarçanas. 110,15. 22. 130,3. अ° (s. auch bes.) *ungebührlich:* कर्मन् Bhâg. P. 9,18,11. यथासांप्रतम् adv. MBh. 5,2255. Hariv. 299. Spr. (II) 3399. — *b) jetzig, gegenwärtig* Hariv. 364 (सांप्रतं st. सांप्रते die neuere Ausg.). 410. 441 (सांप्रतं st. सांप्रता die neuere Ausg.). 442. 543. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,4. प्रभुं भूतभविष्यस्य सांप्रतस्य च सत्पतिम् 47,*a*, No. 103, Z. 6. °काल Siddhânt. 33. सांप्रताधिप Mârk. P. 79,3. अ° *nicht gegenwärtig, nicht der Gegenwart angehörig:* ब्रह्मन् n. 43,34. सांप्रतम् adv. *jetzt, gegenwärtig* AK. 3,5,22. Trik. (चाधुनार्थे zu lesen). H. 1530. H. an. Med. Hall. MBh. 14,93. Hariv. 10379. 14475. 14716. R. 1,1,2. 22,9. 2,46,19. 64,53. 93,13. 95,5. 3,73,15. 5,50,2. 6,34, 13. 37,9. Rṭ. 1,7. Spr. (II) 4781. 6919. Vaṛâh. Bṛh. S. 3,2. Weber, Ġjot. 26. Kathâs. 6,33. 7,69. 10,59. 11,50. 18,235. 257. 309. 24,36. 51,32. 53,71. Mârk. P. 61,47. 81,21. 85,46. Râga-Tar. 1,52. 165. Prab. 10,6. 7. 20,1. Bhâg. P. 4,3,8. 3,5,50. Pañcad. 1,3,1. Pañcat. 161,18. Vet. in LA. (III) 8,9. Dhûrtas. 79,8. Sarvadarçanas. 134,1. — 2) n. *Gegenwart:* सर्व° *Allgegenwart* Çatr. 5,2. — Vgl. अ°.

सांप्रतिक (wie eben) adj. gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34. 1) *zutreffend, richtig* P. 4,3,9. Uttarar. 56,10 (73,3). — 2) *jetzig, gegenwärtig* Kâm. zu P. 3,4,28. Kull. zu M. 7,163.

सांप्रदानिक adj. von संप्रदान gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34.

सांप्रदायिक (von संप्रदाय) adj. *auf Ueberlieferung beruhend, traditionell* Comm. zu Sâṅkhâs. 7,12. Verz. d. Oxf. H. 108,*b*,5. अ° Uttarar. 114,14 (135,8). Verz. d. Oxf. H. 241,*b*, No. 591. Kull. zu M. 3,127 *auf die Ueberlieferung sich berufend, derselben folgend* Weber, Rigv. Up. 282.

सांप्रयोगिक adj. = संप्रयोगे नित्यमर्कति gaṇa छेदादि zu P. 5,1,64. *zur Anwendung —, zum Gebrauch in Beziehung stehend* Verz. d. Oxf. H. 215,*b*,12. 16. 32. 217,*a*,22.

सांप्रेमिक adj. = संप्रेम्ण नित्यमर्कति gaṇa छेदादि zu P. 5,1,64.

सांप्रियक (von संप्रिय) adj. etwa von *Leuten, die sich unter einander lieben, bewohnt* gaṇa रात्र्यादि zu P. 4,2,33.

साम्ब्, साम्बयति (संबन्धने) Dhâtup. 32,21, v. l. für सम्ब्.

साम्ब gaṇa उष्कादि (भावगर्हायाम्) zu P. 6,1,160. 1) m. N. pr. gaṇa वाक्कादि zu P. 4,1,96. *a)* eines Lehrers Ind. St. 4,372 (mit श). वक्ष MBh. 15,312. — *b)* eines Sohnes des Kṛshṇa von der Gâmbavatî, der in den Purâṇa zum Sonnencult und den Maga in Beziehung gesetzt wird. MBh. 1,6997. 7014. 2,129. 3,644. 1994. 7,4194. 13,615. 1023. 16,19. 25. Hariv. 6773. fgg. 7665. 7667. 8057. 8096. 8144. 8401. 8664. 8772. 8777. 8861. 9185. 9392. fgg. 11008. Vaṛâh. Bṛh. S. 58,40. VP. 5,32,2. 35,4. fgg. 37,7. fgg. Bhâg. P. 1,10,29. 11,18. 14,21. 3,1. 30. 19,61,11. 90,33. Verz. d. Oxf. H. 31,*b*,10. 21. 24. 33,*a*,26. fgg. 60,*b*,11. 61,*b*,3 v. u. 62,*a*,5. 8. 11. fgg. 16. 67,*a*,8. 70,*b*,19. 77,*b*,18. 134,*a*, No. 248. °मूर्ति (विश्वेश्वर) 243,*b*, No. 605. °पुराण 84,*b*,10. 183. *a*,1. Ind. St. 1,18. 469. — 2) n. so v. a. साम्बपुराण Verz. d. Oxf. H. 8. *a*,9. 40,*b*,23. 65,*b*,13. 80,*a*,5. — Häufig (aber nicht in den Bomb. Ausgg.) शाम्ब geschrieben. Vgl. त्रैशाम्ब (so auch ed. Bomb.).

सांबन्धिक (von संबन्ध) n. 1) *Verwandtschaft durch Heirath* MBh. 2, 1907. — 2) *eine Unterhaltung, wie sie sich für Verwandte durch Heirath ziemt,* °कं कर् MBh. 5,3120.

साम्बपुर n. *die von Sâmba (dem Sohne Kṛshṇa's) gegründete Stadt* Verz. d. Oxf. H. 62,*b*,12. °पुरी f. 32,*b*,22. 33,*a*,27. fg.; vgl. पुरं यच्छाम्बसंज्ञितम् 31,*b*, N. 6.

साम्बर्ष m. patron., pl. Saṁsk. K. 185,*b*,4. wohl fehlerhaft für सांवर्ष (von संवर).

साम्बवती f. N. pr. einer Hetäre Râga-Tar. 5,295.

साम्बशिव m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 1,*b*,4. 177,*b*, 13. 27. 238,*a*, No. 574.

साम्बादित्य m. *eine Form der Sonne* (die von Sâmba, dem Sohne Kṛshṇa's verehrte) Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,5. 19. °तीर्थ n. 67,*a*,18.

सांम्बि m. patron. von साम्ब gaṇa वाक्कादि zu P. 4,1,96.

साम्बेवासर (?) Kathâs. 70,59.

साम्बेश्वर m. N. eines von Sâmbavatî erbauten Heiligthums Râga-

Tan. 5,295 (°ग्रवि° zu lesen).

सांभवी (von संभव) f. *Wahrscheinlichkeit* Colebr. Misc. Ess. 1,403.

साम्भस् (2. स + 2. ग्रम्भस्) adj. *mit Wasser versehen:* शैलकुञ्ज Bhatt. 2,9.

सांभाष्य n. nom. abstr. von संभाषिन् gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

सांभूयि m. patron. von संभूयस् gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96.

सांमत्य n. nom. abstr. von 2. संमति gaṇa दृष्टादि zu P. 5,1,122.

सांमर्द (von संमद्) m. patron. eines Matsja, Fürsten der Wasserthiere, Çat. Br. 13,4,2,12. Âçv. Çr. 10,7,3.

सांमनस्य (von संमनस्) n. *Sinnesgleichheit* gaṇa दृष्टादि zu P. 5,1,123 (सौ°). AV. 3,30,1.

सांमातुर m. patron. (metron.?) von संमातृ P. 4,1,115. Vop. 7,11. nach H. 546 *der Sohn einer tugendhaften Mutter.* Diese Bed. würde मान्मातुर (von सत् + मातृ) haben.

सांमार्जिन (von संमार्जिन् und dieses von 1. मृज् mit सम्) n. P. 5,4, 15, Schol.

सांमुखी (साम्मुखी gedr.) f. = सायाह्नव्यापिनी तिथिः ÇKDa. mit folgenden Belegen: पञ्चमी सप्तमी चैव दशमी च त्रयोदशी। प्रतिपच्चतुर्थी चैव कर्तव्या साम्मुखी (sic) तिथिः॥ इति पैठीनसिवचनस्य तु। साम्मुख्यं नाम सायाह्नव्यापिनी दृश्यते यदा। इति स्कन्दपुराणेन सायाह्नव्यापितिथेः साम्मुख्यविधानेन (sic) पूजादावनवकाशादुपवासपरत्वम्। सायाह्नव्यापित्वमपि मुहूर्तान्यूनत्वेन ज्ञेयमिति तिथ्यादितत्त्वम्।

सांमुख्य (von 2. संमुख) n. 1) *das Zugewandtsein zu Jmd:* वाग्देवतायाः सांमुख्यमाधत्ते so v. a. *er wendet sich an* Sin. D. 1,4. 17,21. — 2) *Zugeneigtheit zu Jmd* Sin. D. 264,5. Spr. (II) 7513. Râga-Tar. 8,1401. — 3) *das Bedachtsein auf:* राज्य° Râga-Tar. 4,491. — Vgl. वैमुख्य.

सांमेघ्य n. = संमेघ *die wolkige Jahreszeit* TS. 7,4,8,2.

सांमोदनिक adj. = संमोदनाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101.

साम्य (2. सम) 1) n. nom. abstr. Vop. 7,19. a) *Gleichheit, Uebereinstimmung* AK. 3,3,9. H. 1463. पत्नयोः Pañcav. Br. 5,1,12. सर्वसाम्ये यद्यायुषः *bei Gleichheit in allen Stücken geht es dem Alter nach* Âçv. Çr. 12,8,17. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 10. 76,15. Mârk. P. 113,7. Naish. 22,46. Râga-Tar. 3,494. Sin. D. 6,13. 55,19. Bhâg. P. 2,4,14. 9,11, 20. Comm. zu TS. Prât. 2,20. 39. 45. 8,16. Sarvadarçanas. 61,11. 118, 19. चेतसाम् Kâm. Nîtis. 11,58. मल्लिमनः° 59. रसस्य परब्रह्मणा Sarvadarçanas. 103,9. 139,10. 22. साम्यं गतेनाशनिना Kîr. 17,51. जातिद्रव्यबलानां च साम्यमेषा मया सह Hit. 1,30. बकुसाम्यं समुपैति सत्यवाक्यम् *der Ausspruch Satja's stimmt mit dem der Mahrzahl überein* Varâh. Bṛh. 7,9. परमं साम्यमुपैति so v. a. *wird vollkommen eins mit dem Höchsten, geht ganz in ihm auf* Mund. Up. 3,1,3. तथात्मा साम्यमेति योगिनः परमात्मनि Mârk. P. 40,41. तत्साम्यमीयुः Bhâg. P. 11,30,3. *das Gleichstehen in Beziehung auf Rang, Stellung, Macht u. s. w.* M. 11, 176. 195. Jâgn. 1,96. साम्याद्धि सख्यं भवति वैषम्यान्नोपपद्यते Spr. (II) 3666. MBh. 2,679. fg. Varâh. Bṛh. S. 86,11. Bṛh. 8,2. Bhâg. P. 3, 14,36. *Homogeneität von Lauten* Vop. 1,4. अ° *Ungleichheit* MBh. 2, 679. Bhâg. P. 1,18,20. 3,2,21. — b) *Gleichgewicht, ebenmässiger —, normaler Zustand* Kap. 6,42. गुणानाम् MBh. 6,183. 14,316. दोषाणि° Soçr. 1,113,10. 128,4. 194,16. धातु° 2,143,19. विकारो धातुवैषम्यं साम्यं प्रकृतिरुच्यते Kâraka 1,9. Daçak. 60,9. Bhâg. P. 2,7,40. 3,26, 17. 7,6,21. Taitt. 3,3,164. गुरुत्वं लघुता साम्यम् TS. Prât. 24,3. = लय *Tempo* AK. 1,1,2,9. H. 292. Hall. 1,91. °तालविशारद MBh. 2,121 (nach der Lesart der ed. Bomb.). — c) *Gleichheit der Gemüthsstimmung, Gleichmuth:* येषां साम्ये स्थितं मनः Bhag. 5,19. 6,33. साम्ये निविष्टचेतसाम् Kumâras. 5,31. Bhâg. P. 1,12,23. 16,27. 5,4,1. 5, 11. 10,26. सर्वान्प्रति 3,15. तस्य भ्रातृघातमसाम्यम् 4,30,9. न पर्याप्तोऽस्ति यत्साम्यं त्वयि कुर्युः so v. a. *dass sie dir Gerechtigkeit widerfahren liessen* MBh. 5,2681. साम्यं नी *zur Ruhe bringen, beschwichtigen:* शत्रुम्, यन्यिम् Spr. (II) 6368. — d) in der Rhetorik unter den Ubhajâlaṁkâra Verz. d. Oxf. H. 208,b,16. — 2) adj. a) *das gewöhnliche Maass habend, die Mitte haltend, normal:* शेष्यमाण्यसाम्याभिर्गतिभिः Bhâg. P. 5,22,12. — b) *sich gleich bleibend, gegen Alle gleich* Bhâg. P. 8,3,12. — वसाम्यः Harîv. 2711 fehlerhaft für वशाम्यः (so die neuere Ausg.). साम्य Spr. (II) 7019 fehlerhaft für सामा. — Vgl. वारि°.

साम्यत. स देवानां साम्यते (देवानां समते देशे Comm.) तत्पर्यारुरोहोद्गायेत् TBr. 1,2,6,6. यज्ञः कल्प उपतिष्ठति साम्येताय (साम्यदर्शनाय Comm.) Pañcav. Br. 12,13,26. देवतायाः साम्येदयाय (समदृष्टित्वाय Comm.) 21,2, 9. In sämmtlichen Stellen ist सामत्य *das Vorangensein* zu vermuthen.

साम्यग्राह् m. *Tactschläger* R. 2,91,47. शम्या° ed. Bomb.

साम्यता f. = साम्य *Gleichheit:* देवानामेति साम्यताम् M. 12,90. MBh. 12,8803. Miss. P. 39,46. गोसाम्यमिति वै नृणां पश्यन्तः पशुसाम्यताम् Bhâg. P. 4,14,1. 29,32. 6,18,65. 11,9,23 (v. l. सात्मता). 27,52.

साम्यावस्था (साम्य + अव°) f. *ein Gleichheitsverhältniss, Gleichgewicht, ein normaler Zustand:* सत्त्वरजस्तमोगुणानाम् Sarvadarçanas. 147, 17. Wilson, Sâṁkhjas. S. 32. Comm. zu Kap. 1,62. Hall. 5,78.

साम्युत्थान (सामि + उ°, n. *Abbruch* (einer heiligen Handlung) *vor der Beendigung* Kâtj. Çr. 1,6,24. 24,6,15.

1. साम्राज्य (von सम्राज्) m. *der Sohn eines unumschränkten Herrschers* gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

2. साम्राज्य (wie oben) 1) n. VS. Prât. 4,5. TS. Prât. 13,4. *Allherrschaft, Oberherrlichkeit:* नि षीमाद् वरुणः साम्राज्याय RV. 1,25,10. 141, 13. 8,25,8. 17. Çat. Br. 11,4,2,3. साम्राज्येन दिव्यस्य ब्रह्मनक्षेति RV. 7,16,2. नदीनाम् AV. 14,1,43. स्वानाम् TS. 3,1,2,1. VS. 4,24. des Bṛhaspati 9,20. des Agni 18,37. TS. 3,1,2,1. 4,2,1. Ait. Br. 7,32. 8,6. 12. 14. 16. अवरं राज्यं परं साम्राज्यम् Çat. Br. 5,1,1,13. 14,1,2,22. MBh. 2,498. 12,12713. Râgat. 4,5. Kathâs. 4,120. 16,112. 23,69. Prab. 2,14. 3, 10. 97,16. Râga-Tar. 3,272. 364. 486. fg. 4,674. 5,2. 151. 6,85. fg. Bhâg. P. 3,1,36. 10,83,41. °सिद्धिप्रद Verz. d. Oxf. H. 19,a,24. °युवराजत्व Râga-Tar. 3,102. सप्तात्येषु M. 8,387. Spr. (II) 1222, v. l. (wohl नागेषु सा° zu lesen). विद्याधराणाम् über Kathâs. 43,146. 50,101. सुभग° über 14,66. मूर्ख° 61,34. बुद्धेः (subj.) Pañcav. 42,14. am Ende eines adj. comp. Râga-Tar. 2,146. 5,45. — 2) adj. zu 1): लोक TS. 3,1,2,1.

साम्राज्यसिद्धिदा adj. f. *die in der Oberherrlichkeit bestehende Vollkommenheit verleihend;* subst. N. pr. der Familiengottheit der Uddâlaka Verz. d. Oxf. H. 19,a,24.

सामाणिकर्दम n. *ein best. Parfum* (ज्ञवादि) Râgân. 12,72.

सामाणिन n. *ein best. Fruchtbaum* (oder wahrscheinlicher dessen Frucht), = मङ्गल्यपारेवत Râgân. 11,90.

1. सायं a. 1) *Klinkskr:* मो षु ण्य सायं कंरदारे अस्मत् RV. 8,2,20. — 2) *Abend* AK. 1,1,2,3. 3,5,19. Trik. 1,1,103 (masc.). H. 140. an. 2, 338. Med. j. 61. Hallâs. 1,109. वरुणस्य सायम् TBr. 1,3,2,2. सायं भूते Çat. Br. 7,3,2,18. अस्तं यन्सायं ज्यावात्मानं जुहोति Çâṅkh. Br. 2,5. सायं संप्रति वर्तते Spr. (II) 6033. °धूर्त *ein Schelm in der Gestalt des Abends* Naish. 22,52. Personificirt als ein Sohn Pushpârṇa's von der Doshâ Bhâg. P. 4,13,12. Dhâtar's von der Kuhû 6.18,3. in beiden Fällen könnte सायम् auch als adv. gefasst werden. सायँम् adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. *Abends* AK. 3,5,19. H. 1531. RV. 5,77,3. 10,146,4. AV. 3,12,3. 4,11,12. 8,6,10. 11,2,16. न सायमतिथिरपरुध्यः Ait. Br. 5,30. Çat. Br. 2,2,4,17. 3,4,3. 13,1,4,3. Gobh. 3,3,7. Kâṭ. Çr. 4,13,3. 5,5,6. Âçv. Gṛ. 3,7,4. M. 2,186. 3,121. 4,62. 6,6. 11,211. MBh. 3,17056. Ragh. 1,48. 90. Spr. (II) 132. 5628. 7022. Vikr. 77,12 (wir lesen mit der v. l. सायं नि°). Vaṇîs. Bṛ. S. 55,9. Kathâs. 4,33. 18,102. 275. 321. Râja-Tar. 6,62. Bhâg. P. 1,10,36. 7,12,2. 5. सायं सायम् *jeden Abend* MBh. 3,2543. — Wer das Wort auf 3. सा zurückführt, muss der einfachen Wurzel die Bedeutung von अव-सा zutheilen, was seine Bedenken hatte. Vgl. अतिसायम्, प्रति°, सु°.

2. साय = सायक *Pfeil* H. an. 2,388 (शरे st. परे zu lesen). Med. j. 61.

सायंयावन् adj. *Abends fahrend, — kommend:* देवाः TBr. 2,1,3,10. Çâṅkh. Çr. 2,8,20.

सायंसंध्या f. *Abenddämmerung* ÇKDa. °देवता = सरस्वती Kavikalpalatâ im ÇKDa.

सायंसूर्य m. *Abendsonne:* °समप्रभ MBh. 12,1311 vielleicht schriebe man auch Spr. (II) 462. fg. सायंसूर्योढ *von der Abendsonne gebracht* (ein Gast) besser als ein Wort; das später in derselben Bed. gebrauchte सूर्योढ würde nicht dagegen angeführt werden können.

सायक (von 2. सि) 1) adj. *zum Schleudern bestimmt* Naish. 2,20. वज्र RV. 1,32,3. 84,11. 10,83,1. — 2) m. und n. (RV.) *Wurfgeschoss, Pfeil* AK. 3,4,1,2. Trik. 2,8,52. H. 778. an. 3,107. Med. k. 167. Hallâs. 2, 311. अर्कैर्भवन्ति सायकानि धन्वं RV. 2,33,10. 3,53,23. 10,48,4. R. 3, 69,17. 5,33,38. Ragh. 3,53. ed. Calc. 57. Çiç. 11. 36. Gît. 12,19. Pañkat. 120,10. तूणौ चात्तव्यसायकौ MBh. 3,11980. R. 1,1,41. 2,31,30. बाणसायकाः Spr. (II) 6018. तीक्ष्णसूर्यांशुसायकैः Kathâs. 95,12. कन्यामेकामपश्याम कामस्यास्त्रमसायकम् 4,3. स्मरसायकलक्ष्यता 21. — 3) m. Bez. *der Zahl fünf* (wegen der 5 Pfeile des Liebesgottes) Sûr. D. 264. — 4) m. *Schwert* AK. H. an. H. p. 142. Med. MBh. 4,1336. — 5) m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. Prayâgas. in Verz. d. B. H. 59,28. fg. — 6) f. सायिका a) *Dolch* H. p. 145. — b) = क्रमस्थिति Çârad. im ÇKDa. fehlerhaft für शायिका. — Vgl. असम°, पुष्प°, हरिमन्यु°.

सायकपुङ्ख 1) m. = पुङ्ख 1) Ragh. 2,31. — 2) f. आ *eine best. Pflanze,* = शरपुङ्खा Râjân. 4,73.

सायकप्रणुत्त adj. *durch Geschosse vertrieben* AV. 9,2,13.

सायकमय (von सायक) adj. *aus Pfeilen bestehend:* जाल MBh. 4,1883. 1999. 7,5432. Harîv. 13295.

सायकायनि m. patron. von सायक gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. Çat. Br. 10,3,6,10. 5,2,1. Bṛh. Âr. Up. 4,6,2. Ind. St. 3,471. 8,136. pl. Prayâgas. in Verz. d. B. H. 61,4.

सायंकाल (सायम् + काल) m. *Abendzeit, Abend* Trikâṇḍ. im ÇKDa. Comm. zu Naish. 22,52. zu Prab. 117,15.

सायंकालीन (von सायंकाल) adj. *abendlich* Comm. zu Ragh. 16,47 in der ed. Calc.

सायंगृह adj. = यत्र° Prab. 117,8. MBh. 3,471 ist यत्रसायं° zu verbinden, als adj. zu fassen und auf Kṛshṇa zu beziehen (wegen Mbh, ST. 4,215 in der 1ten, 231 in der 2ten Ausg.).

सायंगोष्ठ adj. *Abends in die Hurde getrieben* Ait. Br. 3,18.

सायण, °माधव (auch माधव allein und माधवाचार्य) und सायणाचार्य m. N. pr. des bekannten Commentators vedischer, philosophischer und grammatischer Schriften (des Dhâtupâṭha) Burnell, Vañças. S. X (vgl. Weber im Lit. Centr. 1873, Sp. 1421. fg.). Verz. d. Oxf. H. 167,a, No. 232. 264,a,14. Sarvadarçanas. 1.

सायणमाधवीय adj. von Sâjaṇamâdhava *verfasst* Sarvadarçanas. 7,5.

सायणीय adj. von Sâjaṇa *verfasst,* n. *ein solches Werk* Verz. d. Oxf. H. 279,b,40.

सायतन (2. स + आ°) adj. *sammt Stätte* u. s. w. TS. 5,1,9,4.

सायन adj. *mit dem Worte* Ajana *verbunden:* दर्शपूर्णमासौ Çâṅkh. Çr. 1,4,12. सूर्य *the sun's longitude, with precession added* Journ. of the Am. Or. S. 6,439.

सायंतन und सायन्तन (von सायम्) adj. (f. ई) *zum Abend in Beziehung stehend, abendlich, vespertinus* P. 4,3,23. °समय Pañkat. 35,14. 239, 10. संध्या Bhâg. P. 3,20,37. सवनकर्मन् Çiç. 75. विधि Ragh. 1,86. भोजन Çâṅkh. Sâṅkh. 1,2,2. °मल्लिका Ragh. 16,47. 50. सम्भुज Verz. d. Oxf. H. 130,b,30. अशन Bhâg. P. 10,39,3. सायन्तनं अस्तनं वा न संगृह्णीत भिक्षितम् *zum Abend bestimmt* 11,8,11. fg.

सायंदुघ adj. *Abends gemolken* Ait. Br. 7,4. Çat. Br. 3,2,3,16.

सायंदोह m. *Abendmelkung, Abendmilch* Kâṭ. Çr. 25,3,7. 4,2,35. 7,4,3. Lâṭ. 10,15,7. 16,10.

सायम् s. u. 1. साय 2).

सायमाश m. *Abendessen* Kaṭh. 72. fg. Gobh. 1,3,19. MBh. 12,8013 = 13,4405. — Vgl. प्रातराश.

सायमाहुति f. *Abendopfer* Ait. Br. 5,30. Çat. Br. 4,5,2,16. Kâṭ. Çr. 4,12,1. 10,9,20. Lâṭ. 10,11,3. Gobh. 1,1,23.

सायंपोष m. *Abendnahrung* Çâṅkh. Br. 5,5.

सायंप्रातर् adv. *Abends und Morgens* AV. 3,30,7. 19,39,2. TS. 2,5, 6,2. 6,2,8,2. Çat. Br. 10,1,2,4. Ait. Br. 3,40. Kâṭ. Çr. 4,6,11. 13,1. 15,20. 25,5,2. Âçv. Gṛ. 1,22,4. 2,1,14. MBh. 4,324. 13,3021. सायं प्रातश्च, das häufig vorkommt, ist selbstverständlich kein comp.

सायंप्रातरशिन् adj. (nur) *Abends und Morgens essend* Çat. Br. 2,4,2,6.

सायंप्रातर्होम m. *Abend- und Morgenopfer* Gobh. 1,9,11; vgl. Kaṭh. 73.

सायंप्रातिक adj. von सायंप्रातर् Vârtt. 5 zu P. 6,4,144; vgl. Manasa. lith. Ausg. 6,41,b.

सायंभर्व m. *das Abendwerden* AV. 18,2,16.

सायंभोजन n. *Abendessen* Kull. zu M. 3,106.

सायव्रत m. patron. Çat. Br. 10,6,2,2.

सायसी s. दृत°.

सायाह्न (1. साय + ह्न°) adj. *Abends beginnend* Schol. zu Kāty. Ça. 4,15,1.

सायाशन (1. साय + श°) n. *Abendessen* Schol. zu Kāty. Ça. 2,1,13.

सायास (2. स + यास°) adj. *mit Mühen —, mit Beschwerden verbunden* (Gegens. निरायास) Kathās. 20,195. Journ. of the Am. Or. S. 7,44.

सायाह्ने (1. साय + अह्न) m. *Abend:* °ह्नात् TBa. 1,5,2,3. °ह्ने P. 6, 3,119. Vop. 3,42. M. 11,182. Jiḍ. 3,59. MBh. 1,362. 3339. 3,2373. 2376. 2852. 17039. 9,1608. 1676. 3456. Hariv. 14524. R. Gorr. 2,46, 19. 7,111,9. Spr. (II) 3617. Mīnāṃ. P. 102,17. Verz. d. Oxf. H. 62,b,1. Pāṇḍav. 3,11,12. fgg. °समये R. 2,57,5. im loc. auch °ह्नि und °ह्नि (von सायाह्न) P. und Vop. a. a. O.

सायिन् m. *Reiter* Wilson nach Çabdārthak. fehlerhaft für सादिन्.

सौयुज्य (von सयुज्) n. *Gemeinschaft, Vereinigung:* insbes. *die nach dem Tode erlangte Gemeinschaft mit einer Gottheit* (gen., loc. oder im comp. vorangehend; häufig in Verbindung mit सलोकता und सार्ष्टिता): पशूनाम् Kāṭh. 29,1. देवताभिः सायुज्येन देवा असुराणां राष्ट्रमादत्त 37,11. Ait. Br. 1,6. देवतानाम् 2,24. 3,44. ऋचः TBa. 1,4,10,4. वसूनाम् 3,8, 10,1. आदित्यानाम् 10,9,11. TS. 5,1,8,5. 7,5,7. Çat. Br. 2,6,4,8. 11, 4,4,2. 14,4,4,24. 2,34. Kaṭh. Up. 2,20,2. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9, 86. तव सायुज्यमेति MBh. 7,9468. Hariv. 14717. R. 3,71,8. Kathās. 99, 26 (ममैव zu lesen). 119,216. Rāja-Tar. 1,152. वासुदेवे Bhāg. P. 7,1,13. भवसायुज्यमागताः MBh. 10,296. Kathās. 99,41. Pāṇḍav. 4,1,45. Verz. d. Oxf. H. 106,a,26. °मुक्ति *die in der Gemeinschaft mit einem Gotte bestehende Seligkeit* 13,b,21; vgl. Wilson, Sel. Works 1,166. सौयुज्य Rāja-Tar. 3,279 fehlerhaft für सायुज्य. — Vgl. देव°, ब्रह्म°, राज्ञ°.

सायुज्यत्व n. dass. Maitrāyaṇ. 6,22.

सायौज्य n. dass.: आत्मन् d. i. आत्मनि Maitrāyaṇ. 4,1,4. प्राणैः so v. a. *das am-Leben-Bleiben* Mīnāṃ. P. 131,13.

1. सार (von सॄ) m. 1) *Lauf, Gang* in °सारिन् und पूर्व°. — 2) = प्रसार *Ausstreckung:* सर्वाङ्गत्यग्र° Kālakarṇa 3,137.

2. सौर (सारं P. 3,3,17; vgl. 6,1,159) 1) m. n. gaṇa घर्घर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,b,4. am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) die inneren festen Bestandtheile eines Körpers:* खदिरस्य *Kernholz* ṚV. 3,53, 19. खदिर°, शाल° P. 3,3,17, Schol. तिन्दुकसारेण निर्मितः पर्यङ्कः Vāsiṃ. Bṛh. S. 79,11. अभ्यन्तरगतैः सारैर्यथा तिष्ठन्ति भूरुहाः । अस्थिसारैस्तथा देहाः Suçr. 1,339,18. Çāṇḍ. Saṃh. 1,5,4. अस्थीनि न विनश्यन्ति सारार्थेतानि देहिनाम् Suçr. 1,339,21. साराणि von Früchten neben रस und त्वच् vielleicht *Kerngehäuse* MBh. 3,10064. सार m. = स्थिर P. 3,3,17. = स्थिरांश AK. 3,4,25,173. H. an. 2,466. Med. r. 96. = घनिदृढ Çabdār. im ÇKDr. — *b) Festigkeit, Härte; Stärke, Kraft:* भुजयोः सारमपश्य MBh. 1,6029. 5,1991. Bhāg. P. 5,1,29. °स्थित Suçr. 1,188,3. धरित्रीधारणक्षम eines Berges Kumārās. 1,17. °गुरुभिः पदन्यासैः desgl. 6,80. Kāma's 3,13. अखिलसारसंभृत Vishṇu als Zwerg Bhāg. P. 8,18,20. यदि वः प्रधने श्रद्धा सारं वा तुच्छका हृदि 6,11,5. अङ्गानामेतत्ते हृत्सारं मरुद्दुतम् 7,3,13. आकारस्य *die nährende Kraft* Suçr. 1,43,5. 247,21. Çāṇḍ. Saṃh. 1,6,4. सारोद्धरणदूषित (मांस) Mīnāṃ. P. 34,36. सारं (सारा Padap., wohl für सारम्) रूपभाणाम् *die zeugende Kraft* AV. 4,4,4. वाक्सार *die Kraft der Rede, Beredsamkeit* Vaitān. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 18. fg. am Ende eines adj. comp.: वज्रसमान° ein Mann MBh. 1,7076. मरुन्द्रादिसमान° Raghu. 6,54. मरुभूतौ गिरिभृङ्गसारौ R. 6,37,64. भुजे भुजगेन्द्रसमानसारे Raghu. 2,74. मल° *die Härte* (d. i. *Weichheit, Schwäche*) *des Rohrschilfs habend* MBh. 12,11136. उत्पलपत्र° Raghu. 6,42. सर्वातिरिक्त° (आत्मन्) 1,14. वपुः ससारम् Kumārās. 5,19. दृष्ट° Spr. (II) 6212 (गजेन्द्र). Raghu. 11,47 (वीर्यशुल्का). दृष्टिस्तृणीकृतत्रगत्रयसत्रसारा Uttarar. 111,17 (151,1 = Sāh. D. 38,10). अज्ञात° R. Gorr. 1,39,17. अभेद्य° Rāja-Tar. 4,298. क्षीण° MBh. 13,281. गृहीत° Bhāg. P. 5,14,19. आत्त° 6,10,29. स्मरनुन्न° 10,21,12. महा° *fest, stark:* Bogen R. 2,100,19. अल्प° *schwach* Spr. (II) 1932. Kām. Nītis. 11,8. हृतसारा सुधा *berauschende Kraft* R. 2,61,18. सार m. = स्थामन् Halāy. 5,67. = बल AK. 2,4,12. H. an. Med. — *c) Werth:* सारतम् M. 8,405. Jiḍ. 2,275. (विज्ञातः) राज्ञा हिमवतः सारो राज्ञः सारो हिमाद्रिणा Raghu. 4,79. पुरुषार्थ° Bhāg. P. 3,13,49. महा° adj. *werthvoll, kostbar* R. 3,72,1. 4,33,15. 43,22. अल्प° adj. *von geringem Werth* M. 11,164. गत° adj. *werthlos geworden, nichtig* Spr. (II) 2067. 6122. — *d) Vermögen, Besitz, Reichthum;* neutr. H. 191. H. an. Med. Halāy. 1,80. masc. 5,67. सारापराधो M. 8,126. 9,262. कां दापयामास सारग्रहणपूर्वकम् Mīnāṃ. P. 122,10. सारापहारमकरोत्परिक्षासपुरुस्य Rāja-Tar. 5,160. सारतम् Daçak. 70,13. am Ende eines adj. comp.: नैककोटि° 23,13. सावित्रीमात्र° M. 2,118. गामात्तसारम् Raghu. 5,26. — *e) Kern* so v. a. *Hauptsache, Quintessenz, das Beste, Werthvollste, etwas Werthvolles:* एतत्सारम् (कामः) — धर्मार्थावत्र संस्थितौ MBh. 12,6244. सारं ततो ग्राह्यम् Spr. (II) 243. सर्वतः सारमादद्यात् 439. यत्र न किंचिपि सारमणीयः 554. 777. 1794. 2347. 2954. 5099. 5776. 6605. 6639. fg. 7211. सार इति (besser als रत्नमिति) Vikr. 143, v. l. Kathās. 28,16. 34,190. 39,218. Śiç. D. 23,17. Mīnāṃ. P. 18,43. Ver. in LA. (III) 16,18. Bhāg. P. 1,1,11. 4,18,2. 13. Sarvadarçanas. 158,20. सारात्सारं वदस्व नः Verz. d. Oxf. H. 7,a, No. 42. ग्रहाम् Raghu. 10,10. 33. कृत्स्नस्य जगतः R. 5,12, 27. धर्मस्य Kathās. 33,34. दृष्टः सारस्तस्याः (so ist zu lesen) पुरो भवान् 54,62. तत् — सर्वत्रेतिहासानां सारं सारं समुद्धृतम् Bhāg. P. 1,3,41. Pāṇḍav. 1,15,13. सर्वमन्त्रेषु सारश्च मन्त्रराजः प्रकीर्तितः 2,3,104. Verz. d. Oxf. H. 252,b, No. 626, Z. 4. कथामेव कथासु सारम् । उद्धृत्य पुष्पेभ्य इव Bhāg. P. 3,5,15. °मार्गणम् Spr. (II) 4823. सारादानं षट्पदवत् Kap. 4, 13. °शून्य Spr. (II) 2919. °संग्रह Kām. 1. °ग्राहिन् R. 3,72,1. °दर्शिन् 5,84,7. सारार्थिन् MBh. 4,1567. समुद्र° 2,1393. कथासारो हि सा (कथा) मता 12,12711. लोक° 14,397. त्रिवर्ग° (धर्म) Kumārās. 5,31. मुक्ता° Raghu. 4,50. Pāṇḍav. 1,4,51. 7,49. 11,13. वेद°, यज्ञ°, साम° 4,3,50. आचार° Rāja-Tar. 4,344. मन्दिर° Spr. (II) 473. सकलार्थशास्त्र° Pāṇḍav. Pr. 3. त्रैलोक्य° 49,1. समस्तवस्तुसंभार° 157,22. Dhūrtas. 88,1. वस्तुसाराणाम् Bhāg. P. 2,6,4. 10,6,7. am Ende eines adj. comp.: कृत° R. 2,33,18. R. Gorr. 2,36,12. उपात्त° Milav. 22,19. आत्त° Bhāg. P. 3, 15,23. सार m. = श्रेष्ठ H. an. Halāy. 5,67. — *f) das Vorwaltende, Hauptsache* am Ende eines adj. comp. (vgl. den Gebrauch von पर): तूष्णीं° Ait. Br. 2,31. प्रीति° (काम) MBh. 2,153. R. Gorr. 2,109,61. क्षमा° Hariv. 15624. fg. धर्म° R. 2,33,18. Spr. (II) 3113. Wilson, Rigv. Up. 338. Çaut. 20. Spr. (II) 2789. 3738. 4253. 6233. 6985. Gīt. 5,8. Kathās. 40,48. VP. 1,9,22. Bhāg. P. 1,19,19. 3,5,48. 6,9,50. 8,16,60.

Kaurap. 5. 33. — *g) ein dem Temperamente eines Menschen zu Grunde liegender Hauptbestandtheil des Körpers:* es werden deren acht oder auch nur sieben angenommen: सत्त्व (fehlt bei Vaṛāh.), प्रकृत, मज्जन्, अस्थि, मेदस्, मांस, रक्त und प्रकृत Suçr. 1,125,11. 126,18. त्वक्सार adj. 127,3. Kāraka 3, 3. Vaṛāh. Bṛn. S. 68,1. 26. 69,21. रक्त° adj. 68,27. मांस° adj. 100. Lalitav. 2, 13. fgg. — *h) Bestandtheil* überh.: पद्म° adj. (पेय) Suçr. 2, 421, 5. — *i) das Rechte, Richtige:* neutr. = न्याय्य AK. H. an. Med. नैतत्सारम् Comm. zu TS. Pāṛ. 14,5. तदसारम् zu 1, 21. — *k) Nektar:* यत्तत्रोत्पत्स्यते सारं तत्पान्याम: R. Gorr. 1, 46, 19. सारं तृषो चरणयो: Bhāg. P. 7,6,22. am Ende eines adj. comp.: निर्विष्टसारां पितृभिर्दीर्घमायुरस्यां कलाम् Raghu. 14, 30. — *l) Saft* Kap. 4, 13. Bhāg. P. 1,18,7. — *m) saurer Rahm* Suçr. 2,378,6. दध्ना ससारेण 441, 8. सार n. = दध्युत्तर Çabdar. im ÇKDr. — *n) verdickter als Räucherwerk verwandter Pflanzensaft, Harz* Suçr. 1,133,9. 12. 183,15. 2,12,15. 63,1. 73,21. 83,14. fg. 119, 3. 175, 4. 468, 21. Çiraṇ. Saṃh. 1,1,43. Vgl. सारिन्. — *o) Dünger* Kṛṣiṣ. 8,26. विना सारेण यद्धान्यं वर्धते न फलत्यपि 9,3. — *p) ein Fürst, der einem andern im Kriege zu Hilfe kommt, Bundesgenosse* Vaṛāh. Bṛn. S. 34, 22; vgl. घासार 3) in den Nachträgen. — *q) Bez. des Gürtels bei den Maga* Verz. d. Oxf. H. 33,*b*,30. — *r)* m. in der Rhetorik *eine Art Klimax:* उत्तरोत्तरमुत्कर्षो भवेत्सार: परावधि: Kuvalay. 173,8 (331,15). Sāh. D. 731. Kuvalay. 113,*a*. Pratāpar. 103,*b*,3. Beispiele Spr. (II) 2347. 5776. — Die Lexicographen kennen noch folgende nicht zu belegende Bedd. *a)* m. = मज्जन् AK. 2,4,3,12. H. 1121. H. an. Med. Halāy. 2,28. 3,67. = घनत्व H. 626 (neutr. v. l.). = त्वक्सार 1153, Schol. = वज्रसार Rāgān. 6,236. = वायु (vgl. शार) Gaṇḍoṣ. im ÇKDr. = रोग Dharan. ebend. = पाशक (vgl. शार) Çabdar. ebend. — *β)* n. = जल H. an. Med. = नवनीत Rāgān. im ÇKDr. = लौह Bhāvapr. ebend. = विपिन Çabdar. ebend. — 2) f. या = कृष्णत्रिवृता Çabdar. im ÇKDr. = दूर्वा (vgl. शारी) Çabdāṛ. ebend. — 3) f. ई *der Vogel* Sārikā und = पाशक (vgl. शारी) Çabdar. im ÇKDr. = मसला Rāgān. im ÇKDr. — 4) adj. *a) hart, fest, stark:* °द्रुम Vaṛāh. Bṛn. S. 43, 58. °दारु 54, 118. धनुषी R. Gorr. 1,77,14. °पुङ्ख Çiç. 10. °गात्र (°योध ed. Bomb.) MBh. 6,3316. Suçr. 1,151,5. Kāraka 3,3. मधुसूदन Harīv. 5794. ये तु गर्भाङ्कुरा: सारास्तान्दिव्यान्पर्वतान्विदु: 11446 (die neuere Ausg. hat eine andere Lesart). बल *Kerntruppen* (Gegens. फल्गु) MBh. 2,1631. 5,2205. 2516. fg. 5244. Kām. Nītis. 18,59. 19,59. Spr. (II) 5966. Mālav. P. 122,18. — *b) kostbar, werthvoll:* सारभरण Daçak. 84,11. — *c) der vorzüglichste, beste:* = वर AK. 3, 4, 25. 172. Med. सर्ववेदोद्धृत: सारो मन्त्र: Verz. d. Oxf. H. 106,*a*,32. सूक्त Bhāg. P. 4,22,17. Pāṇḍav. 1,5,22. — *d)* mit einem instr. *voller:* प्रकोप = प्रकोपसार adj. comp. *Samen zum Hauptbestandtheil im Körper habend* Vaṛāh. Bṛn. S. 69,22. — *e)* = शार *bunt, scheckig:* मण्डूका: कृष्ण: सार: (कृष्णसार: ?) कुरुका: Suçr. 2,290,6. सार: शबल: कृष्णशामो सारश्च कृष्णसार: कृष्णमृग: Mallin. zu Kumāras. 3,26. nicht *schwarz und scheckig*, sondern *in dem das Schwarze vorwaltet.* — सारनिपुक Harīv. 4330 wohl fehlerhaft für साधुनिर्व्यूढं, wie die neuere Ausg. liest. Vgl. घ° (*werthlos, nichtig* auch MBh. 14,597. Kāvyād. 36,105. Bhāg. P. 7,5,26), घगुरु° (*das Harz der Aquilaria Agallocha* Suçr. 1,183,13. 2,175,4. Raghu. 6,8), घय°, घदि°, घत्त:° (*innerer Gehalt* Spr. (II) 350. *inwendig hart, — fest* Vaṛāh. Bṛn. 3,7), घम्म:, घर्ष°, घम्म°, कं°, कर्क°, काल°, कुसुम°, कृत्त°, तोर°, गन्ध°, गायत्रि°, गिरि°, घन°, चन्दन° (auch R. 2,78,6), चर्म°, तक्र°, तन्तु°, तस्त्र°, तरु°, तीक्ष्ण°, तृण°, त्वक्°, त्वचि°, द्रव्य°, धान्य°, नय°, नि:°, नीति°, पिङ्ग°, पिच्छिल°, पीत°, पीलु°, पुण्य°, पुष्करसारी, पुष्प°, प्रयत्न°, प्रयोग°, प्राण° (*Lebenskraft* Rāgān-Tar. 6, 268), बक्कु°, बिन्दु°, बिम्बि°, भद्र°, भागवत°, भावसारविवेक, भावनासारसंग्रह, भूत°, भूषणसारदर्पण, मज्जा°, मणि°, मद्°, मन:°, मक्षा°, मांस°, माधसिद्धान्त°, मेघ°, मोच°, यत्न°, यवासारम्, युद्ध°, योग°, रक्त°, लघु°, लोकबिन्दु°, वज्र°, वसु°, वाक्य°, वारि°, विवेक°, विश्व°, वेद°, वेष्ट°, वैद्यकसारसंग्रह, वैयाकरणभूषण° (unter वैयाकरणभूषण), व्यवहार°, व्याख्या°, शाल°, शिला°, शुभ्र°, शैल° (auch Kir. 10,14), श्याम°, श्वेत°, सकलवेदोपनिषत्°, संहित° (unter संहिता), संगीत°, समर°, समुद्र°, सर्व°, सित°, सिद्धान्त°.

सारक 1) adj. *a)* = *laxativ* Bhāvapr. 5. Rāgān. 21,18. — *b)* am Ende eines adj. comp. (von 2. सार) *voll von* Kathās. 73,132. — 2) m. *eine best.* (*abführende*) *Pflanze: Croton Jamalgota Hamilt.* Rāgān. 6,168. — Vgl. तल°, पीत°, विश्व°, वृत°, शिति°.

सारकाण्ड adj. von सारक gaṇa पत्तादि zu P. 4,2,80.

सारकेय desgl. gaṇa सप्त्यादि zu P. 4,2,80.

सारकौ desgl. gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

सारखदिर m. *ein dem Khadira verwandter Baum,* = दुष्खदिर Rāgān. 8,31.

सारगन्ध m. *Sandel (vorzüglichen Geruch habend)* Çabdāṛ. im ÇKDr.

सारगोता f. Titel einer Schrift Hall 15. Verz. d. B. H. No. 1330.

सारग्रन्थसङ्ग्रह f. desgl. Mack. Coll. 1,127.

सारघ (von सरघा) 1) adj. von *der Biene kommend:* मधु RV. 1,4,3. AV. 5,69,2. 9,1,19. VS. 19,91. 95. 38,6. Çat. Br. 3,4,3,14. 14,2,1,10. Bhāg. P. 4,24,66. neutr. *Honig* P. 4,3,117, Schol. Halāy. 2,466. Naish. 9,154. Bhāg. P. 10,15,43. — 2) wohl so v. a. सरघा RV. 10,106,10.

सारङ्ग (सारङ्ग Unādis. 1,121 und Çat. Br.) Voc. 2,13. 1) adj. *a)* (f. ई) *bunt, scheckig* P. 4,1,40, Schol. = शबल AK. 3,4,3,24. H. an. 3,133. Med. g. 50. fg. (शबले st. शरले zu lesen). Halāy. 4,51. Viçva bei Uṇṇādis. कृमि AV. 2,32,2. 5,23,9. TS. 5,6,10,1. 23,1. 7,3,18,1. Rudr. Çat. Br. 13,5,4,2. Ait. Br. 8,21. Pāraṇḍav. Br. 21,14,3. Kāty. Çr. 7,9,21. 22,9. 13. RV. Prāt. 17,8. Ind. St. 3,278. MBh. 7,932. °शबला कृषा: 971. — *b)* von *der Sāraṅga genannten Antilope kommend:* मांस Rāgān. im ÇKDr. — 2) m. *a) ein best. Vogel* gaṇa शकन्ध्वादि zu P. 6,1,94, Vārtt. 2. H. an. Viçva a. a. O. zu den विष्किर gezählt Suçr. 1,201, 1. 228,12. zu den प्रतुद Kāraka 1,27. *der Vogel* Kātaka, *Cuculus melanoleucus* AK. 2, 5,17. 3,4,3,24. 30,228. H. 1329. H. an. Med. Halāy. 2,93. Viçva a. a. O. Spr. (II) 7069. MBh. 12,6646. R. 2,63,15. 4,20,21. Mahān. 21. Z. d. d. m. G. 27,27. मत्त° adj. R. 2,63,17. = कोकिल und मयूर Amarāvat. im ÇKDr. = राजहंस Çabdar. ebend. — *b) Biene* H. an. Viçva a. a. O. Bhāg. P. 1. 11,27 (सारं कृत्वा गायतीति सारंगा भृङ्गा: Comm.!). 18,7. 4,30,32. — *c) eine Antilopenart* gaṇa शकन्ध्वादि zu P. 6,1,94, Vārtt. 2. AK. 3,4,3. 24. H. 1293. H. an. Med. Halāy. 2,75. Viçva a. a. O. Spr. (II) 6411. Çiç. 5. 32. 5,5. Veṇ. 68,9. Kathās. 8,22. Pāraṇḍav. 33,10. Bhatṭ. 3,16. 6,85. 13,28. am Ende eines adj. comp. f. या Raghu. 12,24 (*cuculus Sr.*).

— d) *Elephant* H. an. Med. Viçva a. a. O. — e) = कृष्ण, चित्रमृग, वाग्गेद, वंशुक Çabdar. im ÇKDa. = कामदेव, धनुस्, केश, स्वर्ण, आभरण, पद्म, शङ्ख, चन्दन, कर्पूर, पुष्प, मेघ, पृथिवी, रात्रि, दीप्ति, सिंह Amarâbhar. im ÇKDa. — f) *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – – ⏑ – ⏑ – – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2, 160 (VII, 27; hier मरङ्ग). 159 (I, 8). — g) N. pr. eines Mannes Hall 26. — 3) f. ई *das Weibchen eines best. Vogels* M. 9, 33; vgl. शार्ङ्गी und शारिङ्गका. — b) *eine Art Geige* Wilson nach Çabdârthak. Wilson, Sel. Works 1, 218. °कार Bez. einer Art von Jogin ebend. — c) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – ⏑ ⏑ – – ⏑ – ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2, 159 (IV, 5). Daneben die Form सारङ्गी. — Welche Bedeutung सारङ्ग als Beiw. Çiva's (= पतिविशेष Nilak.) MBu. 13, 1226 und लोक° als Beiw. Vishṇu's 7023 hat, ist nicht zu bestimmen. Hier und da शा° geschrieben. Vgl. कृष्ण° (कृष्णसारङ्गी *das Weibchen der schwarzschackigen Antilope* Kathâs. 59, 13), लोहित°, सर्व°.

सारङ्गदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 347, *a*, 10.

सारङ्गरङ्गदा f. Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 231.

सारङ्गलोचना f. *ein gazellenäugiges Mädchen* Spr. (II) 778. 6985.

सारङ्गाक्षी f. dass. Spr. (II) 6423.

सारङ्गिक adj. *den* Sâraṅga *genannten Gazellen nachstellend*, m. *ein solcher Jäger* P. 4, 4, 35, Schol.

सारचन्द्रिका f. Titel eines medicinischen Werkes Notices of Skt Mss. 2, 58.

सारचिन्तामणि m. Titel einer Compilation ebend. 1, 135.

सारण 1) (vom caus. von सृ) adj. (f. ई) *laxativ* Râgân. 5, 120. 6, 238. — 2) m. *a*) = अतीसार *Durchfall* H. an. 3, 339. Med. p. 83. — *b*) *Paederia foetida Lin.* (vgl. सारणा) Dhan. im ÇKDa. *Spondias mangifera* Çabdâs. ebend. — *c*) N. pr. α) eines Bruders des Kṛshṇa MBu. 1, 7915. 7922. 2, 135. 1274. 3, 736. Harîv. 1931. 6626. 8057. 9095. 8401. VP. 439. Mârk. P. 1, 14, 28. 3, 24, 15. hier und da fälschlich शारण geschrieben. — β) eines Ministers des Râvaṇa H. an. Med. R. 5, 12, 10. 6, 1, 1. 18, 19. — 3) f. आ nom. act. vom caus. von सृ. *a*) *das Ausstrecken:* कारावाहुसारणा Kathâs. 6, 57. — *b*) *das Erklingenlassen eines Tones:* तस्यां (वल्लक्यां) च सारणां एष दर्शत् Kathâs. 49, 18. विस्मृतस्वरसारणा adj. 51, 8. — *c*) *eine bestimmte mit dem Quecksilber vorgenommene Operation* Verz. d. Oxf. H. 320, *a*, 14. 26. Sarvadarçanas. 100, 6. — 4) f. ई s. u. सारणि. — 5) n. *a*) *Buttermilch (abführend)* H. ç. 99. — *b*) *ein best. Geruch* Dhar. im ÇKDa. — Vgl. मेतु°, गन्ध°.

सारणमुन्दर adj. Bez. einer best. Mixtur (रस) Verz. d. B. H. No. 967, सारण wohl in der Bed. von *Durchfall*.

सारणि (von सृ) f. 1) *Bach, Kanal* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2, 103. H. 1069. Hall. 3, 63. °णी dass. Uṇâdis. Med. p. 83. सारणीषु पयस्सु शोभते Kâdaṃb. bei Uṇâdis. — 2) f. ई *Paederia foetida Lin.* Med. Dhanv. 1, 114. Râgân. 5, 24. — Vgl. सारिणी, प्रसारणी, प्रसारिणी.

सारणिक (von सारणि) m. *Reisender, ein herumstehender Kaufmann:* यदा सारणिकावाक्षा पुत्रवत्यरिरन्तति MBu. 12, 3488. शारणिक v. l. bei Nilak.

सारणिकाघ m. *Räuber* Çabdârthak. bei Wilson.

सारणिका f. चित्तामणि: सा° oder तिथि° Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 327, *b*, No. 776.

सारणीश m. N. pr. eines Berges Verz. d. Oxf. H. 149, *b*, 8.

सारण्ड m. = सर्पाण्ड *Schlangenei* Gaṇîn. im ÇKDa.

सारतण्डुल m. *Reis in ganzen Körnern, leicht gebäht* Kâç. Ça. 4, 1, 7.

सारतम (superl. von 2. सार) adj. *der allerbeste;* davon nom. abstr. °त्व n. Glosse zu Çâṅk. zu Kaṭh. Up. S. 12.

सारतर (compar. von 2. सार) n. *der Bessere, Vorzüglichere:* सारात्सारतरम् Verz. d. Oxf. H. 100, *b*, No. 136. 121, *b*, No. 213. adj. (f. या) Çâṅk. zu Kaṭh. Up. S. 12. — Vgl. सारिष्ठ.

सारतरु m. *Musa sapientum* Dhanvañgaça im ÇKDa.

सारता (von 2. सार) f. 1) *Festigkeit:* धनुष: R. Gorr. 1, 34, 10. — 2) *festes Vertrauen:* न च मे सारता तेषु यथा त्वयि R. 5, 43, 9. — 3) *Werth, Gehalt:* बन्धुस्त्रीभृत्यवर्गस्य बुद्धे: सत्त्वस्य चात्मन: Spr. (II) 4387. 4862. 6883. — 4) *die höchste Stufe, das Non-plus-ultra:* सारतां त्रिषु लोकेषु गमिष्यसि R. 1, 24, 17 (25, 17 Gorr.). दृष्टत्यागसारतास् Râga-Tar. 5, 400. — 5) *das Hauptbestandtheilsein im Körper zur Bildung des Temperaments* Kâraka 3, 8. शुक्र° nom. abstr. von शुक्रसार *in dem der Same den Hauptbestandtheil im Körper bildet* Vaṇîn. Bṛh. S. 69, 25. — Vgl. स्व° und सारासारता.

सारत्व (wie oben) n. 1) *Festigkeit:* त्वच: MBu. 1, 5020. कृन्तसाम् Çiç. Gaṇ. 4, 3. — 2) *das Hauptsache-Sein* Sin. D. 23, 18.

सारथि (von सरथ, सरथम्) Uṇâdis. 4, 89. m. 1) *Wagenlenker* AK. 2, 8, 2, 27. 3, 4, 44, 64. H. 760. Hall. 2, 293. यमिष्ठ RV. 1, 55, 7. वोळ्हवे रश्मीन्समयंस्त सारथि: 144, 3. 2, 19, 6. 6, 20, 5. 57, 6. 10, 102, 6. AV. 15, 2, 1. यूयम् RV. 1, 158, 6. सव्येष्ठसारथी TBr. 1, 7, 9, 1. Çat. Br. 5, 2, 4, 9. 4, 2, 17. AV. 3, 8, 23. Kaṭhop. 3, 3. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9, 24. MBu. 3, 2289. 2797. 2898. 4, 220. R. 2, 40, 40. Gîtâs. 1, 17. Ragh. 1, 78. 3, 37. Çiç. 28, 14. 18. Spr. (II) 5712. Bâlarâm. 49 (vgl. Verz. d. B. H. No. 634). मरुत्सेन्द्र° Çiç. 91, 20. रथ° MBu. 4, 1204. क्षेत्र°-Kâuç. 106. वाचा° *Wortführer* R. 4, 31, 36. योगयान° Lalit. ed. Calc. 201, 9. am Ende eines adj. comp.: स° Kâuç. 15. मातलि° Ragh. 3, 67. कर्म° (= सकाश Comm.) Bhâg. P. 5, 23, 2. — 2) N. pr. einer Stadt Lalit. 380. — Vgl. इन्द्र°, कु°, धर्म°, पार्ष्णि°, मधु°, मरु°, यज्ञ°, वात°, शक्र°, संसार°, सुधारवि.

सारथित्व n. nom. abstr. zu सारथि 1) Kathâs. 48, 85.

सारथ्य n. desgl. gaṇa पुरोऽग्न्यादि zu P. 5, 1, 126. MBu. 1, 342. 1092. 3, 2296. 2901. 13149. 4, 1284. 5, 1732. Ragh. 10, 41. Bhâg. P. 1, 15, 4. 16, 17. — Vgl. चक्र°.

सारदा (die bessere Schreibart) s. u. शारद.

सारदातिलक n. = शारदातिलक Verz. d. B. H. No. 1288. Notices of Skt Mss. 2, 145. fg.

सारदारु n. *festes, hartes Holz* Vaṇîn. Bṛh. S. 54, 118.

सारदासुन्दरी Notices of Skt Mss. 2, 31 fehlerhaft für सारसुन्दरी.

सारद्रुम m. 1) *ein Baum von festem Holze* Vaṇîn. Bṛh. S. 43, 88. — 2) *Acacia Catechu Willd.* Râgân. im ÇKDa.

सारधातृ m. *der beste Schöpfer* u. s. w. oder *der Verleiher von Festigkeit* u. s. w. Harîv. 7433. सारस्य बोधस्य च धाता ज्ञानयिता Nilak.

सारधान्य n. *Korn erster Qualität* Vaṇîn. Bṛh. S. 15, 24.

सारधन्वि m. patron. Saṃhir. K. 184, *b*, 2.

सारपत्त adj. etwa *feste —, harte Blätter habend* gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,133. Davon सारपत्तक n. nom abstr. ebend.

सारपद् m. *ein best. zu den Scharrern* (विष्किर) *gezählter Vogel* Kāraṇḍ. 1,27 (v. l. शार° *Buntfuss*). Vīcar. 1,6,47.

सारपाक m. *eine best. giftige Frucht* Suçr. 2,251,19.

सारपादप m. *ein best. Baum*, = धामनि Ratnam. im ÇKDa.

सारफल्गुता (von 2. सार + फल्गु) f. *der Werth oder Unwerth, die Güte oder Schlechtigkeit, die grosse oder geringe Bedeutung:* मित्राणाम् Spr. (II) 590.

सारफल्गुत्व n. dass.: बीजयोन्योः M. 9,56.

सारबोधिनी f. Titel einer Schrift Hall in der Einl. zu Viçvāv. 54.

सारभट्टारक m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,15.

सारभाण्ड n. *kostbare Waare* Jāṭ. 2,247. Pañcat. 8,14 (4,4 ed. orn.). im Prākrit सारभण्डभूमिघरअ (°गेरूक ed. Tull. 44,1) *ein unterirdisches Gemach —, ein Keller zur Aufbewahrung solcher Waare* Mālav. ed. Bomb. 62,1. — Vgl. अफल्गु भाण्डम् Çiç. 3,76.

सारभूत (2. सार + भूत) adj. *die Hauptsache seiend, der vorzüglichste, beste; n. die Hauptsache, das Beste* Spr. (II) 245. 2572. Vaṇīn. Bṛn. S. 1,11. Mārk. P. 41,18. Pañcat. 13,7. Pañcad. 1,1,17. 61. Verz. d. Oxf. H. 21,*a*,5. 23. Schol. zu Naiṣ. 22,57. कुल° Spr. (II) 5349, v. l.

सारभृत् adj. *das Beste nehmend, — aussuchend, sich darauf verstehend* Bhāg. P. 10,13,2.

सारमञ्जरी f. Titel verschiedener Werke Verz. d. Oxf. H. 283,*b*, No. 662. Verz. d. Tüb. Hdschr. 20. Hall 39. citirt im ÇKDa. unter समानकालीन.

सारमय (von 2. सार) adj. 1) *voller Festigkeit, — Stärke, überaus fest* Bhāg. P. 8,11,25. — 2) *aus der Quintessenz —, aus dem besten Bestandtheil von* (gen.) *gebildet:* घर्मा सारमयस्येन्दोः Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,15.

सारमरुत् adj. *überaus werthvoll, — kostbar* Daçak. 71,8.

सारमीति m. angeblich ein N. des Veda (mit der Etymologie सारं यथार्थं मीयते ज्ञायते ऽनेन) ÇKDa. nach H.; vgl. 248, wodurch das Missverständniss erklärt wird.

सारमूषिका f. *eine best. Cucurbitacee*, = देवदाली Rāgān. 3,46.

सारमेय m. *der Sprosse der* Saramā 1) Bez. *des Hundes* AK. 2,10,23. H. 1279. Hālā. 2,136. ṚV. 7,55,2. स्तेनं राय सारमेय s. यति द्रव सारमेयौ श्वानौ 10,14,10. MBh. 1,662. 6,251. 11,109. Harīv. 9336. R. 7,18,6. Vaṇīn. Bṛn. S. 88,9. 89,2. 12. Spr. (II) 7024. Kathās. 75,146. Bhāg. P. 1,14, 12. 4,29,30. Pañcat. 62,22. 110,28. °चिकित्सा Verz. d. Oxf. H. 316,*a*,15. °गणाधिप Beiw. Kubera's Suçr. 2,283,7. सारमेयी f. *Hündin* Çabdar. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Sohnes des Çvaphalka Bhāg. P. 9,24,15.

सारमेयता f. nom. abstr. von सारमेय *Hund* Kathās. 114,130.

सारमेयमय adj. (f. ई) *aus Hunden bestehend, voller Hunde:* यश्चपाटातसारमेयमयी (भू) Kathās. 27,150. Das Suffix gehört auch zu श्वन् (nicht श्वन्, wie gedruckt ist) und पाटात.

सारमेयादन (सारमेय + अदन) m. N. *einer Hölle, in der die Verbrecher von Jama's Hunden gefressen werden*, Bhāg. P. 5,26,7; vgl. 27.

सारय्, °यति (दौर्बल्ये) Dhātup. 35,16.

सारूप (2. सार + रूप) adj. *der beste, vorzüglichste:* समुपिम्नगति मृगदृशां सारूपं पदासीत् Kumārsaṃ. 101. Davon nom. abstr. °ता f. *Hauptsächlichkeit; instr. hauptsächlich, vorzugsweise* Sin. D. 6,21.

सारलक्ष्री f. Titel einer grammatischen Schrift Verz. d. Oxf. H. 212,*a*,1.

सारल्य (von सरल) n. *Geradheit, Schlichtheit, Ehrlichkeit* Spr. (II) 7026. Rāja-Tar. 6,54.

सारवँ adj. vom *Flusse* Sarajū *kommend* P. 6,4,174. AK. 1,2,8,35.

सारवत्ता (von सारवत्) f. *Festigkeit, Härte:* eines Pfeils Rāgān. 3,63. *Widerstandsfähigkeit:* राष्ट्रस्य Kām. Nītis. 12,7.

सारवत् (von 2. सार) 1) adj. *a) fest, stark, widerstandsfähig:* पर्वता: MBh. 6,330. द्रुमा: R. 4,8,6. सैन्य, बल MBh. 2,2478. 5,5145. Kām. Nītis. 18,61. Männer MBh. 6,3330. R. 5,9,2. सर्वलोक Çaṅk. zu Bṛn. Ār. Up. S. 283. गिरिराज° *fest wie* MBh. 4,232. — *b) werthvoll, kostbar:* धन MBh. 4,534. भुज: Spr. (II) 4600. भाण्ड Mallin. zu Çiç. 3,76. समार Z. d. d. m. G. 27,9. — *c) Harz enthaltend:* गण Suçr. 2,468,21. — 2) f. °ती *a) ein best. Metrum: 4 Mal* — ⏑ ⏑ — ⏑ ⏑ — ⏑ ⏑ — Colebr. Misc. Ess. 2,159 (V,9). — *b) eine best. Meditation* Vāyup. 20.

सारवस्तु n. *eine werthvolle Sache, ein Ding von Belang* Pañcat. ed. orn. 15,13.

सारशून्य adj. *alles Guten baar, ganz werthlos* Spr. (II) 2919.

सारस् = सारस *der indische Kranich:* कृकलासकसारसाम् MBh. 13,736.

1. सारस (von सरस्) 1) adj. (f. ई) *zu einem Teich gehörig u. s. w.:* Wasser Suçr. 1,170,11. 12. 173,10. Mṛicch. 116,11. Vaṇīn. Bṛn. S. 26,7. Kāvyād. 3,14. झष: Naiṣ. 2,40. — 2) m. *a) ein best. Wasservogel: Ardea sibirica* AK. 2,5,22. 25. Taitt. 2,5,25. 3,3,452. H. 1328. an. 3, 759. fg. Med. s. 44. Hālā. 2,89. = हंस Çaṅkarāraṇya bei Mallin. zu Çiç. 12,44. — M. 5,12. Jāṭ. 1,172. MBh. 1,5098. 3,1525. 17249. हंससारसयुक्तेन विमानेन 13,5178. 16,39. Harīv. 8793. R. 1,36,7. 2,55,31. 95,3. R. Gorr. 2,47,3. 63,14. 3,20,20. पदन्तरं सारसगृध्रयोर्भवेत् 53,58. Kathās. 1,27. Suçr. 1,205,12. Megh. 32. Ṛt. 1,20. Rāgān. 1,41. 13,30. Mālav. 41. Çiç. 6,75. 12,44 (= हंस). Kām. 8,31. Spr. (II) 6246. Vaṇīn. Bṛn. S. 48,9. 73,1. 88,3. Kāvyād. 3,14. Bhāg. P. 3,10,23. 15,18. 4,9, 64. 8,2,15. Pañcat. 82,6. 158,21. Hit. 120,7. Vet. in LA. (III) 5,1. Verz. d. B. H. No. 897. Verz. d. Oxf. H. 15,*b*,9. 86,*b*,27. 92,*b*,1 v. u. am Ende eines adj. comp. f. आ Naiṣ. 2,10. — *b) der Mond* Taitt. H. an. Med. — *c)* N. pr. α) eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3596. — β) eines Sohnes des Jadu Harīv. 5206. 5231. — γ) eines Buckelichses Mālav. 60,11. fgg. °क ed. Bomb. — 3) f. ई *das Weibchen der Ardea sibirica* Taitt. 3,3,137. H. 1329. Hālā. MBh. 11,532. 682. Megh. 11,1. Naiṣ. 2,40. — 4) n. *a) Lotusblüthe* AK. 1,2,2,29. Taitt. 3,3,458. H. an. Med. Kāraṇḍ. 44. LA. (II) 91,22. — *b)* = सारसन *Gürtel* Çabdaratn. bei Wilson. — Vgl. राज°.

2. सारस (2. स + आरस von 1. रस् mit आ) adj. *schreiend, rufend;* vgl. 2. सारस्य.

सारसंहिता f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,10.

सारसक (von सारस) m. N. pr. eines Buckelichses Mālav. ed. Bomb. 90,1. fgg. सारस ed. Tull.

सारसंग्रह m. *kurze Zusammenstellung des Besten* Kāṇ. 1. Titel verschiedener Werke Verz. d. B. H. 290,2. Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,22. fg.

104,a,31. 285,b, No. 668. 292,b,22. 336,a, No. 790. Verz. d. Cambr. H. 68. Notices of Skt Mss. 1,118. 147. 2,78. 262. Hall 27. चकदत्तसर्व° Verz. d. Kop. H. 104,b.

सारसन n. *Gürtel* AK. 2,6,3,10. H. 664. an. 4,202. fg. Med. n. 221. Hallâj. 2,405. Kin. 18,32 (सारशन). *eine Schärpe, die über die Brust weg auf dem Panzer getragen wird*, AK. 2,8,3,31. H. 767. *Brustharnisch* H. an. Med. *Panzer* (wenn man तनुत्राणे st. तनुत्रीणां liest) Med.

सारसमुच्चय m. *die Sammlung des Besten* als Titel von Schriften Notices of Skt Mss. 2,268. Verz. d. Oxf. H. 95,b,23. Ind. St. 2,132. 145. fg.

सारसायनं adj. von सरस gaṇa पत्त्यादि zu P. 4,2,80. v. l. im gaṇa इक्षुकार्यादि zu 4,2,54. सारसायनंभक्त = सारसायनानां विषयो देशः ebend.

सारसारिन् adj. *Läufe laufend:* Wind und Ross Tha. 3,8,3,1.

सारसिद्धान्तकौमुदी f. Titel einer Schrift Hall 27.

सारसुन्दरी f. Titel eines Commentars zum Amarakoça Colebr. Misc. Ess. 2,56. Wilson, Dict. 1te Aufl. Prof. XXV. Notices of Skt Mss. 2,31. fg. (सारदासुन्दरी fälschlich in der Ueberschr.).

सौरसेय adj. von सरस gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

1. सारस्य (von 2. सरस) n. *Feuchtigkeit, Wasserreichthum* Nalod. 2,40.

2. सारस्य (von 2. सरस) n. *Geschrei* u. s. w. ebend.

सारस्यायन gaṇa इक्षुकार्यादि zu P. 4,2,54. सारस्यायनंभक्त adj. = सारस्यायनानां विषयो देशः ebend.

सारस्वत 1) adj. (f. ई) a) von *der* Sarasvatî (Sarasvant), *dem Flusse oder der Göttin der Stimme und Rede, stammend, ihr gehörig, sie betreffend, an ihr vorgehend* u. s. w.: सरस्वती सारस्वतेभिः ṚV. 3,4,8. उत्स VS. 13,33. यज्ञ 18,20. वीर्य 19,8. 24,1. चरु Çat. Br. 2,5,4,11. 3,9,4,7. 11,5,8,2. 12,8,2,16. TS. 2,4,6,1. 5,6,2. 3,5,4,4. Jâân. 2,33. Wasser Çat. Br. 5,3,4,3. 23. Mocon. 50. सत्र Âçv. Ça. 12,6,1. Kâty. Ça. 13,4,5. 24,4,27. 6,14. 25,8,25. Lâty. 1,4,25. 10,5,10. 13,1. Maçaka 11,8 in Verz. d. B. H. 74. Ind. St. 1,50. तीर्थ MBh. 9,2365. शकुन 3,8375. पर्वन् 1,347. लोक 3,7004. 8044. 9,2244. स्रोतस् Verz. d. Oxf. H. 120,a,16. °व्रत 41,a,5. °कल्प 94,a,4. सारस्वतामृत 210,b, No. 497. इष्टि Mâṇ. P. 72,28. सूक्त 26. सार Spr. (II) 2954. सारस्वती प्रक्रिया Titel einer Grammatik Verz. d. Oxf. H. 171,a, No. 381. सारस्वतोत्सव Titelüberschr. im ÇKDa. प्रङ्कार° Gîv. 12,29. — b) *zum Rishi* Sârasvata *in Beziehung stehend* Ind. St. 3,391. 400. गति MBh. 3,7059. — 2) m. a) pl. *die Anwohner der* Sar., N. pr. eines Volkes in Madhjadeça, AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (56). Vaṇîn. Bṛn. S. 14,2. 16,22. Mâṇ. P. 57,31. 58,7. Bhâg. P. 1,10,24. सारस्वता गणाः (vgl. सारस्वत्यो गणाः 12,2232) dass. MBh. 5,2254. Brahmanen von der Sar. Bhâg. P. 10,89,20. Weber, Vaiḍâs. 256. Hall 120. Colebr. Misc. Ess. 2,179. 188. 213. सारस्वताः = कश्मीराः H. 938. — b) N. pr. eines Rishi, eines *Sohnes der* Sar. Ind. St. 3,398. fgg. 459. MBh. 3,7058. 8189. 9,2226. fgg. 12,7897. 13675. 13,7115. Harîv. 9371. Verz. d. Oxf. H. 52,a,44. b,5. 74,b,2. 80,a,11. VP. 9. 272. Bhâg. P. 2,7,45. सारस्वतेन मुनिना दगार्गलं यत्कृतम् Vaṇîn. Bṛn. S. 54,99. — c) N. *des zwölften* Kalpa oder *Tages* Brahman's; s. u. कल्प 2) d). — d) *ein Stab aus* Bilva-*Holz* H. 815. — 3) f. ई *eine best. Pflanze*, = ज्योतिष्मती Râjân. 3,70. — 4) n. a) *Beredsamkeit:* मुतिपुटो सारस्वतद्राक्षिणो Spr. (II) 7382. Verz. d. Oxf. H. 110,a,19. — b) Titel einer Grammatik, = सारस्वती प्रक्रिया Verz. d. Oxf. H. 172,b,21. fg. Colebr. Misc. Ess. 2,15. — Vgl. सप्त°, सिद्ध°.

सारस्वतकोश m. Titel eines *Wörterbuchs* Verz. d. Oxf. H. 183,a,3. 8.

सारस्वततत्त्व n. Titel einer Schrift ebend. 104,a,32.

सारस्वततीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 65,b,37. fg. 66,a,5; vgl. सारस्वते तीर्थे MBh. 9,2365.

सारस्वतपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. B. H. 117,8.

सारस्वतप्रक्रिया f. Titel einer Grammatik, = सारस्वती प्रक्रिया Verz. d. Oxf. H. 173,a, No. 384. Hall 159.

सारस्वतविलास m. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,24.

सारस्वतसूत्र n. = सरस्वतीसूत्र Verz. d. B. H. No. 770.

सारस्वताभिधान n. Titel eines *Wörterbuchs* Verz. d. Kop. H. 103,a. Notices of Skt Mss. 2,39.

सारस्वतालंकार m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 126,a,23. fg.

सारस्वतीय adj. *zum* Sarasvatîsûtra *in Beziehung stehend* Verz. d. Oxf. H. 171,b,21.

सारस्वत्य adj. = सारस्वत. गण MBh. 12,2232; vgl. सारस्वता गणाः 5,2254.

सारात्सारसमुच्चय m. *ein vorzügliches Compendium des Allerbesten*, Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,41.

सारामुख m. *eine Reiart* (कृत्तमूक Schol.) Verz. d. Oxf. H. 304,a,8.

सारामृत n. Titel einer Grammatik Colebr. Misc. Ess. 2,18.

साराम्भस् n. *ausgepresster Saft:* बीजकसंभव *Citronensaft* Suçr. 2,152,9.

साराल m. *die Setampflanze* Çabdar. im ÇKDa.

सारावं (2. स + सारावं) adj. *schreiend, rufend* Kathâs. 33,172.

सारावली f. Titel verschiedener Werke Verz. d. Oxf. H. 104,a,33. 279,b,40. 292,b,33. 329,a, No. 780. 338,a,27. Verz. d. Cambr. H. 68. Notices of Skt Mss. 1,191. Uppala zu Vaṇîn. Bṛn. 1,19. — Vgl. स्मृति°.

सारासार (2. सार + असार) 1) n. a) *die Stärke und Schwäche:* स्वबले सारासारविचारः क्रियताम् Hit. ed. Jouns. 2206; vgl. ed. Schl. 104,7. — b) *die gute oder schlechte Qualität:* भाण्डानाम् M. 9,331. *das Gute und Schlechte* Râja-Tar. 6,193. — 2) adj. *stark und schwach:* बल MBh. 12,4203.

सारासारता (von सारासार) f. *die starke und schwache Seite:* दृष्ट्वा मयास्य पिङ्गलकस्य सा° Pañcat. 58,9; vgl. ed. orn. 59,12.

सारि 1) = शारि 1) Kaṇḍ. 10. — 2) = शारि 3) Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. पीत°.

सारिक 1) m. a) = सारिका *Predigerkräh* MBh. 13,2835. 5459. शुकसारिको (!) LA. (III) 33,12. — b) N. pr. eines Muni MBh. 2,108. — 2) f. घा AK. 3,6,4,8. a) *Predigerkräh* (fast immer in Verbindung mit शुक *Papagei*) Trik. 2,5,22. H. 1536. Hit. 89. M. 5,12. MBh. 3,11609. 12,8307. 13,5068. 16,38. Harîv. 12684. R. 2,53,22 (24 Gorr.). 5,15, 35. Kâraṇḍ. 1,27. Suçr. 1,201,19 (hier und bei Kâraṇḍ. unter den प्रतुद). Kâm. Nîtis. 7,11. Mocon. 83. Spr. (II) 899. 4879. 5313. Vaṇîn. Bṛn. S. 88,20. Kathâs. 77,8. Mâṇ. P. 15,3. 115,12. Bhâg. P. 4,4, 5. 3,24,9. LA. (III) 16,3. fgg. 32,17. Verz. d. B. H. No. 897. Verz. d. Oxf. H. 86,b,37. 92,b,2 v. u. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 35. शुकसारिकम् Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,127. शुकसारिकाप्रलापन unter den 64

Künsten Vorz. d. Oxf. H. 217,*a*,13. fg. In den Bomb. Ausgg. stets mit म geschrieben, obgleich das vedische शारि eher für श sprechen würde. — *b*) so v. a. *eine Vertraute* (weil die *Predigerkrähe* als stete Begleiterin des Papageien erscheint) Hall in der Einl. zu Vâsavad. 38. Die Zusammenstellung mit अभिसारिका 36 ist nicht zu billigen. — *c*) *die Laute der Kaṇḍâla* H. ç. 82. — *d*) N. pr. einer Râkshasî Verz. d. Oxf. H. 77,*a*,1. — Vgl. मदन°, विद्°.

सारिकामुख m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,257,19. 287,14. mit श geschr.

सारिकावण (सारिक [sic] + वन) n. gaṇa कोटरादि zu P. 6,3,117; vgl. 8,4,4.

सारिन् 1) adj. *a*) (von सृ) *eilend, sich bewegend:* पयो ह्यानां पुरतो हि सा चमूस्तथैव पश्चादतिमात्रसारिणी MBh. 12,1893. *nachgehend, folgend* (in comp. mit der Ergänzung): शोक° Ait. Br. 6,17. दुःख° MBh. 14,2122. 2252. यश° R. Gorr. 1,41,29. धनंजय° MBh. 14,2516. भाराव° 12,3750. वासाय° *befolgend, sich richtend nach* 3,2459. in Etymologien: व्यय° Nir. 3,8. स्वर्य° 5,4. घृत° 12,36. — *b*) am Ende eines comp. von 2. सार. मूर्धसु त्राणसारिषु *so v. a. mit trefflichen Helmen versehen* Kir. Nitis. 13,12. — 2) m. *aus verdicktem Safte gewonnenes Räucherwerk:* निर्यासाः सारिणश्चैव कृत्रिमाश्चैव ते त्रयः MBh. 13,4715. अगुरुः सारिणां श्रेष्ठः 4717. = काष्ठाग्निसंयोगान्निःसरतः Nîlak. Vgl. 2. सार 1) n). — 3) f. सारिणी *a*) (von सृ) *Kanal, Graben* Hir. 125. Vgl. सारणि. — *b*) Bez. vieler Pflanzen, = कार्पासी (Râgân. 4,191), डुरालभा, कपिलशिशपा, प्रसारणी, रक्तपुनर्नवा (Râgân. 5,113) Râgân. im ÇKDr. — Vgl. अग्नि°, पुष्कर°, पूर्व°, मयूर°, सार°, दलसारिणी, न्यङ्कु°, न्याय°.

सारिफलक m. Hall. 5,59 = शारि°.

सारिमेजय adj. *nebst* Arimêgaja (ein Sohn Çvaphalka's) MBh. 1, 6999. Wilson in VP. 435 macht शारिमेजय zu einem Sohne Çvaphalka's; vgl. VP. 4,14,2 und Hall in der 2ten Aufl. von VP. 4,95.

सारिव 1) m. *eine best. zu den* शालि *oder* षष्टिका *gezählte Körnerfrucht* Kâraka 1,27. Vishn. 1,6,2. — 2) f. आ Bez. *zweier Schlingsträucher: Hemidesmus indicus RBr.* (*Country Sarsaparilla*) Ratnam. 20 und *Ichnocarpus frutescens RBr.* (als Substitut für *Sarsaparilla* gebraucht) AK. 2,4,2,30. 3,4,22,145. Ratnam. 21. — Suçr. 1,137,4. 140, 16. 374,10. 376, 16. 377, 15. 2,39,19. 62,13. °द्वय 419,1. प्रतानाः सारिवादयः Paṇḍaçâstrad. 43,*a*,6. Varâh. Bṛh. S. 54,87. Hier und da mit श geschrieben. — सारिवाः Paṇḍar. II,102 fehlerhaft für सारसाः; s. Spr. (II) 6246. Vgl. उत्पलशारिवा und चन्दन°.

सारिष्ठ (von 2. सार) adj. *der allerbeste* Çaṅk. zu Kaṭhân. Up. S. 12. davon nom. abstr. °त्व n. Glosse ebend.

सारिसृक्व s. सारिसृक्व.

सारिसृक्व m. N. pr. eines der Verfasser zu ṚV. 10,142 mit dem patron. Çârṅga. सारिसृक्ष v. l.; so auch MBh. 1,8372. 8406. सारिसृक्व ed. Bomb.

सारिसृक्व s. सारिसृक्व.

सारिस्थाखी m. N. pr. eines *Chans* Kshîrîç. 27,15.

सारी f. s. u. 2. सार 3) und vgl. पुष्कर°, विद्°.

सारु *ein best. Metrum: 4 Mal* — ⏑ Colebr. Misc. Ess. 2,158 (II,3).

सारुढ MBh. 6,3535 fehlerhaft für स्वारुढ (so ed. Bomb.).

सारुप Kâm. Nitis. 4,54. 61 fehlerhaft für सारूप.

सारुपवत्स n. *Milch von einer* सरूपवत्सा Kauç. 16. 19. fg. 39. 46. 50.

सारूप्य (von सरूप) n. 1) *gleiches Aussehen, Aehnlichkeit, Gleichartigkeit, Uebereinstimmung:* सारूप्यमर्जुनस्येव क्रोधरूपं बिभर्ति च MBh. 4, 1264. Mṛicch. 84,6. Sin. D. 464. वपुषः कर्मणो वर्यस्य श्रुतस्याभिजनस्य च । वेषवाग्बुद्धिसारूप्यमाचरन्विचरेदिह ॥ M. 4,18. Milavik. 76,20. Sarvadarçanas. 19,2. 68,20. 131,8. 172,18. Comm. zu TS. Pair. 14,22. सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वम् *gleiches Aussehen* (mit der Gottheit nach dem Tode) Bhâg. P. 3,29,13. 10,41,62. 55,33. Paṇḍar. 2,7,3. Verz. d. Oxf. H. 10,*a*, N. 2. Wilson, Sel. Works 1, 149. — 2) in der Dramatik *ein auf Verwechselung zweier ähnlich aussehender Personen beruhendes heftiges Auftreten gegen einen Unschuldigen* Sin. D. 461.

सारूप्यता f. = सारूप्य 1): वर्णसारूप्यतां याति गगणं सागरस्य वै Hariv. 3585.

सारोद्धार m. *Auswahl des Besten*, Titel eines über Musik handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201,*a*, No. 479.

सारोपा (2. स + धारोपा) f. (sc. लक्षणा) Bez. *einer Art von Ellipse* (*eine Uebertragung enthaltend*) Sin. D. 17. Prâtipar. 8,*b*,8. 9,*a*,8. Sarvadarçanas. 173,11. Davon °त्व n. nom. abstr. Sin. D. 13,6. — Vgl. शुद्ध°.

सारोष्टिक m. *ein best. Gift* ÇKDr. fehlerhaft für सैराष्टिक.

सार्कण्डेय m. patron. von मृकण्डु gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. — Vgl. मार्कण्डेय.

सार्गड s. u. अर्गड.

सार्गल (2. स + अर्गल) adj. *mit einem Riegel versehen, verriegelt:* द्वार Hariv. 3397. in übertragener Bed. so v. a. *gehemmt:* ईप्सित Râgat. 1. 79. — Vgl. unter अर्गड.

सार्गाल (von सृगाल) adj. (f. ई) *einem Schakal eigen u. s. w.:* योनि MBh. 12,6711 (°लीं यामस् mit der ed. Bomb. zu lesen). 13,411. शा° beide Ausgg.

सार्गिक adj. = सर्गाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101.

सार्ङ्गी f. *ein best. Metrum*, = सारङ्गी Colebr. Misc. Ess. 2,159 (IV,5).

सार्चिस् (2. स + अर्चिस्) adj. *flammend, brennend* MBh. 13,863.

सार्ज m. = सर्जिका *Natron* Ratnam. 304.

सार्जन (?) Paṇḍar 3,14,53.

सार्जनाति m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,38. fg.

सार्जयि (von सृञ्जय) m. patron. ṚV. 6,47,25. des Sahadeva Ait. Br. 7,34. Çat. Br. 2,4,4,4. 12,8,2,3. Çâṅkh. Çr. 16,11,11.

सार्थ (2. स + अर्थ) Uṇâdis. 2,5. 1) adj. (f. आ) *a*) *mit einem Auftrag versehen:* सार्थान्प्रेषितानन्यान् Çâṅkh. Br. 8,9. — *b*) *erfolgreich:* प्रार्थना Schol. zu Çiç. 17,14. — *c*) *mit Reichthümern versehen, reich* H. an. 2,222. कार्पटिकानां सार्थः Kâçikh. 12,26 (nach Avadânac.). वणिग्गृह Râga-Tar. 6,41. — *d*) *bedeutungsvoll:* ईश्वरादिपद Kusum. 33,6. — 2) m. *a*) *eine reisende Handelsgesellschaft, Karavane* H. an. Med. th. 13. MBh. 3,2510 (मरु°). 2521. fgg. 2527 (सार्थस्य नेता). 2537. 2546 (°मण्डल). 2552. °क्षीना R. 2,66,4. सार्थादिव परिभ्रष्टा R. Gorr. 2,68,20. Spr. (II) 3155. सार्थः प्रवसतो मित्रम् 7027. Rigat. 17,64 (pl.). Varâh. Bṛh. S. 86, 11. Kathâs. 7,26. 54,123. 125. 57,72 (स° adj.). 64,21. 26. 102,58 (pl.).

Bhāg. P. 5,5,20. 13,1. 2. 11, 18, 24 (pl.). Pañcat. 8, 21. Sarvadarçanas. 153, 7. 8. वणिक्° Kathās. 29,105. 56, 228. Bhāg. P. 5, 14, 1. सत्त्व° 4, 7, 28. नरलोक° 5, 14, 38. — *b) Gesellschaft, Trupp, Schaar, Menge* überh. AK. 2, 5, 41. H. 1412. H. an. Med. Halāj. 4, 1. योषिताम् Varāh. Bṛh. S. 86, 49. कार्पटिकानाम् Kāçikh. 12, 26 (nach Aufrecht). पथिक° Mṛicch. 82, 23. Milav. 67, 19. मुकुत्° Spr. (II) 4288. कामिजन° Çiç. 32, 6. स्वर्वधू° Kathās. 17, 19. 121, 130. घर्घि° 72, 164. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5, 503, Çl. 11. प्रमथ° 502, Çl. 1. नानापथागतानाथ° Rāgat. 2, 58. पार्थिव° Dhūrtas. 66, 17. अशेषप्राणिसार्थ्य Pañcat. 4, 3, 116. नो° MBh. 12, 8477. पदार्थ° Sarvadarçanas. 11, 2. 3 Spr. (II) 6133 (Conj.). — *c)* एकसार्थप्रयात *in einer und derselben Gesellschaft aufgebrochen* so v. a. *ein und dasselbe Ziel verfolgend, ein und dasselbe vorhabend* MBh. 1, 6930 (एकसार्थे ed. Calc.). 10, 207. Rāgat. 5, 374. — Vgl. भङ्ग°.

सार्थक (von सार्थ) adj. 1) von *Nutzen, Gewinn bringend* Verz. d. Oxf. H. 37, *a*, No. 90. जन्मन् Bhāg. P. 10, 41, 45. घृति° Pañcat. 1, 7, 6. ध्व° 2, 2, 66. — 2) *bedeutungsvoll, einen Sinn habend* ṚV. Pāt. 12, 9. Comm. zu TS. Prāt. 3, 1. 4, 11. 8, 16. Siṃh. D. 69, 13. Davon nom. abstr. °त्व n. 260, 20. fg.

सार्थधर् m. N. pr. eines *Karavanenführers* Kathās. 56, 28.

सार्थपति m. = सार्थवाह् 1) Açoкāvad. 23.

सार्थपाल m. *Hüter einer Karavane* Mālav. P. 19, 25.

सार्थभृत् m. = सार्थवाह् 1) Açoкāvad. 24.

सार्थय् (von सार्थ), °यति *erfolgreich —, Gewinn bringend machen* Verz. d. Oxf. H. 130, *a*, 11.

सार्थवत् (von सार्थ) adj. *einen bedeutungsvollen, zutreffenden Namen führend* Verz. d. Oxf. H. 133, *a*, 12. — Vgl. यथार्थ.

सार्थवाह् m. 1) *Führer einer Karavane, ein ansehnlicher Kaufmann, der einer Handelsgesellschaft vorsteht*, AK. 2, 9, 78. H. 868. MBh. 3, 2522. 2526 (स्वार्थ° ed. Calc.). 2527. Mṛicch. 14, 6. Çiç. 90, 18 (Seefahrer). Milav. 68, 8. Varāh. Bṛh. S. 4, 12. 87, 14. Kathās. 13, 188. 22, 89. 26, 182. 29, 179. 54, 172. 56, 38. 84, 4. 86, 35. Siṃh. D. 334. Açoкāvad. 24. Ratnāvadānam. 117. Pañcat. 9, 1. 2. हित° Mṛicch. 2, 8. — 2) bei den Buddhisten N. pr. eines Sohnes des Versuchers (मारपुत्र) Lalit. ed. Calc. 49, 3. 380, 3. 387, 12. Schiefner, Lebensb. 292 (62).

सार्थवाहक m. = सार्थवाह् 1) Kathās. 56, 44.

सार्थसंचय (2. स + घर्थ-सं°) adj. *grosse Reichthümer besitzend* Kathās. 34, 211.

सार्थिक (von सार्थ) adj. und subst. *mit einer Karavane reisend, Theilnehmer einer Handelsgesellschaft* MBh. 3, 2542. neben वणिज् 12, 5808. Bhāg. P. 5, 13, 2. Pañcat. 8, 20. यदेव कर्म केवलं पुराकृतं प्रभाप्रभम् । तदेव पुत्र सार्थिकं भवत्यमुत्र गच्छतः ॥ *pflegt den zur andern Welt Gehenden auf der Reise zu begleiten* Spr. (II) 3373.

सार्थीकृ (सार्थ + 1. कृ) *erfolgreich —, Gewinn bringend machen:* सर्व °कृतं त्वया Verz. d. Oxf. H. 63, *b*, 4.

सार्दागव (patron. von सृदाग्) m. N. pr. eines Lehrers Lāṭ. 7, 9, 13.

सार्द्र adj. = आर्द्र *feucht, nass* AK. 3, 2, 55. H. 1492. सार्द्रे चर्मणि भुञ्जीत *auf einem angefeuchteten Felle sitzend speise er* MBh. 13, 3751. Naish. 12, 73. Kālakārma 3, 22.

सार्ध (2. स + घर्ध) 1) adj. (f. श्रा) *nebst einem halben:* द्वे शते सार्धे *250* M. 8, 138. Mārk. P. 119, 17. Rāgā-Tar. 1, 51. सार्धे वर्षशतम् *150* 172. Kathās. 29, 171. द्वे सहस्रे सुवर्णस्य सार्धे *2500* Rāgā-Tar. 6, 102. पञ्चत्रिंशतमब्दानां सार्धाम् *35½* 1, 196. त्रिंशतं सार्धा (so zu lesen) वर्षाणाम् *30½* 286. दिनद्वयेन सार्धेन *2½* 129. चतुरो मासान्सार्धान् *4½* Varāh. Bṛh. S. 11, 45. 33, 26. 54, 54. Kull. zu M. 4, 95. सार्धत्र्यकुल Suçr. 1, 126, 5. सार्धसप्तन् *7½* Comm. zu Sūrjas. 7, 18. Bhāg. P. 5, 21, 10. Schol. zu P. 1, 2, 32. सार्धनवांशम् *1½ Theile* M. 9, 151. यामिन्या यामः सार्धो (so zu lesen) ऽवशिष्यते Rāgā-Tar. 3, 178. Pañcat. 237, 3. Varāh. Bṛh. S. 54, 6. घर्घपट्टः, सार्धाः *ein halbes Fach einnehmend, anderthalb Fächer einnehmend* 53, 56. — 2) सार्धम् indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. = सह् u. s. w. AK. 3, 3, 4. H. 1527. Halāj. 3, 91. *a)* adv. *zusammen:* स्त्रियः सार्धं यान्ति Cat. Bh. 1, 3, 8, 9. सार्धं जुहोति 2, 3, 8, 14. 6, 8, 7. 3, 6, 8, 7. 4, 8, 5. 5, 3, 8, 27. विहारिन् Vāgīr. 224. आ-दा *mitnehmen* Weber, Rāmāt. Up. 299. — *b)* praep. *mit, zugleich mit:* α) mit vorangehendem oder folgendem instr. Lāṭ. 5, 8, 3. 12. Kāṭhān. Up. 3, 9, 2. M. 1, 27. सासीत गुरुणा सार्धम् 2, 204. नाम्नीपाद्यायया सार्धम् 4, 48. 7, 56. 59. 151. न तत्पुत्रैर्भ्रातृसार्धम् 9, 209. 11, 186. MBh. 1, 5568. संगच्छस्व मया सार्धमेकैनेकः 5089. 3, 1727. 2303. 2697. R. 1, 1, 31. fg. 2, 33, 6. 51, 19. प्रेतैर्वा भाषते सार्धम् Suçr. 1, 110, 1. Varāh. Bṛh. S. 2, 16. 89, 10. Çiç. 93. 109, 1. Weber, Rāmāt. Up. 296. Ragh. 4, 69. Spr. (II) 336. 7028. LA. (III) 36, 17. 51, 6. Rāgā-Tar. 1, 60. Bhaṭṭ. 6, 26. पुत्रेण सार्धं धनवान् P. 2, 3, 19, Schol. रात्रयः षोडश — चतुर्भिरितरैः सार्धमहोभिः सहिगर्हितैः M. 3, 46. तप्यन्तमृषिभिः सार्धं मातुलम् R. 1, 62, 2. मादृक् त्वां धातृभिः सार्धं यद्ब्रवीमि *zu dir und deinen Brüdern* MBh. 1, 5905. नीता रात्रिः क्षणमिव मया सार्धम् Megh. 87. Spr. (II) 4421. प्रदेशिन्यादिभिः सार्धमङ्गुष्ठे वितते सति H. 595. — β) in comp. mit der Ergänzung: कुत्र गोपाङ्गनासार्धं विहरति जगत्पतिः Verz. d. Oxf. H. 26, *b*, 21. का प्रीतिः गणिकासार्धम् Spr. (II) 1633.

सार्धवार्षिक (von सार्ध + वर्ष) adj. *anderthalb Jahre während:* व्रत Kull. zu M. 11, 126.

सार्प adj. zu *den* Sarpa *in Beziehung stehend:* युग Gjot. 24, N. °भ n. *das unter den* Sarpa *stehende* Nakshatra Açleshā Varāh. Bṛh. S. 23, 8. सार्प n. dass. 8, 19. 10, 7. 15, 30. Maitrājp. 6, 14. R. 1, 19, 8 (18, 15 ed. Bomb.). Sūrjas. 8, 19. Weber, Nax. 1, 310. सर्पार्धे Weber, Gjot. 28. 34. fg. सार्पी f. dass. H. 111.

सार्पराज्ञ 1) adj. (f. ई) von *der* सर्पराज्ञी *herrührend:* सत्र: Kāty. Çr. 4. 9, 18. 25, 13, 32. Çāṅkh. Çr. 16, 13, 26. त्रिक Lāṭ. 10, 10, 1. — 2) f. ई = सर्पराज्ञी, angeblich N. pr. der Verfasserin von ṚV. 10, 189, Çāṅkh. Br. 27, 4. Pañcav. Br. 4, 9, 4.

सौर्पाकव m. patron. von सृपाकु gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104.

सार्पाकवायणि m. patron. von सार्पाकव gaṇa कुरितादि zu P. 4, 1, 100.

सार्पिणिका adj. f.: पङ्क्ति Verz. d. Cambr. H. 77.

सार्पिष (von सर्पिस्) adj. *mit zerlassener Butter zubereitet* Halāj. 2, 167.

सार्पिष्क (wie oben) adj. dass. H. 410.

सार्प्य m. = सार्पी (s. u. सार्प) falsche Lesart H. 111.

सार्व 1) adj. = सर्वेषां हितम् P. 5, 1, 10. — 2) bei den Gaina ein Arhant H. 25.

सार्वसक् (von सर्वसक्) n. *eine Art Salz* (रोमक) Rāgān. 6, 108. सार्वसक् v. l.

सार्वकर्मिक (von 1. सर्वकर्मन्) adj. *zu allen Handlungen geeignet:* मन्त्र Kauśikasūtra 71. 73. 75. 79. 92.

सार्वकामसमृद्ध m. N. *des 6ten Tages im* Karmamāsa Ind. St. 18, 296. fehlerhaft für सर्व°, wie schon Weber andeutet.

सार्वकामिक (von 1. सर्वकाम) adj. (f. ई) *allen Wünschen dienend, — entsprechend, alle Wünsche gewährend* Āçv. Çr. 11,2,4. Çāṅkh. Çr. 3, 3,20. 4,10. Gṛihjās. 2,13. Nṛis. Tāp. Up. in Ind. St. 9,109. 112. MBh. 3, 1008. 7, 2306. 13, 3441. 3927. 18, 275. 278. Harīv. 7689. 7837. 7932. 16203. Kir. 18,28. Bhāg. P. 6,19,2. Verz. d. Oxf. H. 51,a, N. 1. °कामिका (!) f. 59,a,28.

सार्वकाल (von सर्वकाल) adj. *zu allen Zeiten stattfindend:* विवाह Āçv. Gṛihj. 1,4,2.

सार्वकालिक (wie oben) adj. (f. ई) *für alle Zeiten geltend, — ausreichend, ewig während* MBh. 1,7648. Mārk. P. 39,23. 99,5. Pāṇḍav. 1, 11,37. Kull. zu M. 2,206.

सार्वकेश्य adj. *aus* Sarvakeça *stammend* gaṇa शणिडकादि zu P. 4,3,93.

सार्वक्रतुक (von सर्वक्रतु) adj. *zu allen Opfern in Beziehung stehend* Schol. zu Lāṭy. 3,1,1.

सार्वगण n. *salzhaltiger Boden* Rājān. 6,106. सर्व° v. l.

सार्वगुणिक (von सर्व-गुण) adj. *alle Eigenschaften besitzend:* गन्धमात्यानुलेपन MBh. 18,279 = Harīv. 16209.

सार्वचर्मीण adj. = सर्वचर्मीण *ganz aus Leder gemacht* P. 5,2,5.

सार्वत्रनिक adj. = सर्वत्रनाय हितः P. 5,1,9, Vārtt. 7.

सार्वत्रनीन adj. = सर्वत्रने साधुः gaṇa प्रतित्रनादि zu P. 4,4,99. — Vgl. सर्वत्रनीन.

सार्वत्रन्य adj. *Jedermann eigen, allgemein:* सुभगत्व Vāmana Bhāṣ. S. 75,3.

सार्वत्त्व n. Pāṇḍav. 1,1,50. Verz. d. Oxf. H. 256,a,38 wohl nur fehlerhaft für सार्वज्ञ्य.

सार्वज्ञ्य (von सर्वज्ञ) n. *Allwissenheit* Sarvadarçanas. 28,22. 31,8. Kusum. 21,8. Verz. d. Oxf. H. 243,b,7.

सार्वत्रिक (von सर्वत्र) adj. *überall stattfindend, allenthalben giltig, allgemein* Comm. zu Āçv. Çr. 1,6,1. 5,4,8. 8,6,10. zu Kāty. Çr. 3,3, 12. 25,1,25. 11,19. Sin. D. 218,21. *von beliebiger Seite kommend:* प्रतिभय Spr. (II) 4602. Davon °त्व n. *allgemeine Giltigkeit, Allgemeinheit* Comm. zu Kāç. 2,179. च° Kusum. 29,21.

सार्वधातुक (von सर्व + धातु) adj. *der ganzen Wurzel d. i. dem Verbalthema, wie es in den Special-Formen erscheint, zukommend, daran gefügt werdend* P. 3,4,113. 1,2,4. 6,1,186. 192. 4,87. 110. 7,2,76. 3, 84. 87. 95. 4,21. Vārtt. zu 3,1,78. — Vgl. आर्धधातुक.

सार्वनाम्य (von 2. सर्वनामन्) n. *Allnamigkeit* Nir. 7,4.

सार्वभूमाचार्य m. N. pr. eines Autors Verz. d. Tüb. H. 13. — Vgl. सार्वभौमाचार्य und सार्वभौमभट्टाचार्य.

सार्वभौतिक (von सर्वभूत) adj. *alle Wesen betreffend:* संसार M. 12,51. °बलिविधि Kauśikasūtra 156.

सार्वभौम (von 1. सर्वभूमि) gaṇa धनुश्शतिकादि zu P. 7,3,20. 1) adj. in Verbindung mit संयोग oder उत्पात so v. a. सर्वभूमेर्निमित्तम् P. 5,1,41. *auf der ganzen Erde bekannt* 43. *über die g. E. verbreitet:* मेघ Çat. Br. 12,3,2,6. *über die ganze Erde herrschend,* m. *Weltherrscher, Kaiser* P. 5,1,42. AK. 2,8,4,2. Taik. 3,3,204. H. 691. an. 4,218. Med. m. 63. Halāy. 2,267. Āpast. Bh. 2,15. MBh. 1,3120. 3591. 3684. 5466. 10316. 3, 3433. 13,7126. Harīv. 1077. R. 2,88,13. Bharata beim Schol. zu Çiç. 22,33. Vāmana Bhāṣ. S. 11,58. Kathās. 6,106. 30,51. 61,204. 68,80 (सर्व° gedr.). 73,370. 118,9. Rāja-Tar. 4,126. Z. d. d. m. G. 5,95,4 v. u. Bhāg. P. 1,17,36. 4,13,6. 5,14,10. 13. 8,13,17. 9,6,47. 18,51. Verz. d. Oxf. H. 152,b,15. fg. °व्रत 58,a,48. °भवन Spr. (II) 7029. °गुरु H. an. 3, 417. Med. n. 129. देवता° *ein Kaiser unter den Göttern* Kovalār. 105, b,4. पति° Verz. d. Oxf. H. 258,a,13. — 2) m. N. pr. a) eines Sohnes des Ahaṁjāti MBh. 1,2788. fg. — b) eines Sohnes des Sudharman Harīv. 1077. — c) eines Sohnes des Vidūratha VP. 457. Bhāg. P. 9, 23,10. — d) verschiedener Autoren oder Beinamen derselben Notices of Skt Mss. 2,76. Verz. d. Oxf. H. 125,a,15. °भट्टाचार्य 72,b,13. fg. Hall 30; vgl. श्रीसार्वभौमो महाभट्टाचार्यः Verz. d. Oxf. H. 108,b, N. गौडीकससार्वभौमभट्टाचार्य Hall 23. रामभद्रसार्वभौमभट्टाचार्य 67. 80. — e) des Weltelephanten im Norden, auf dem Kubera sitzt, AK. 1,1,3,5. Taik. H. 170. H. an. 4,218. Med. m. 63. Hir. 148. Halāy. 1,106. R. 4,44, 43. 5,73,28. 7,31,32. — 3) n. *die Herrschaft über die ganze Erde, Kaiserwürde* Bhāg. P. 5,11,25. 10,16,37. 11,14,14. 27,32. — Vgl. कृष्ण°, सिद्धास°.

सार्वमेधिक adj. *zum* सर्वमेध *in Beziehung stehend:* सरस् R. 4,44,51.

सार्वयज्ञिक (von सर्वयज्ञ) adj. *Opfer aller Art betreffend* Çāṅkh. Çr. 1,2,29.

सार्वरोगिक (von सर्वरोग) adj. *Krankheiten aller Art betreffend:* निदान Verz. d. B. H. 278, Cl. 40.

सार्वलौकिक (von सर्वलोक) adj. (f. ई) *in der ganzen Welt bekannt, allgemein verbreitet* P. 5,1,44. MBh. 6,583. Harīv. 2142. Spr. (II) 1950. Mālatīm. 7,5. प्रसिद्धि Verz. d. Oxf. H. 128,b,29. *Jedermann gestattet:* स्त्रीणां दर्शनम् R. 6,99,34. *allgemein, gewöhnlich* (Gegens. लोकोत्तर): धर्म Kathās. 27,21.

सार्ववर्णिक (von सर्व-वर्ण) adj. 1) *jeglicher Art:* घव्राय M. 3,244. बलि Vāmana Bhāṣ. S. 48,33. — 2) *allen Kasten gemein* MBh. 12,2275. Bhāg. P. 11,17,20.

सार्ववर्मिक adj. von Sarvavarman *verfasst* Verz. d. Oxf. H. 169,b, No. 375. — Vgl. शार्व°.

सार्वविद्य n. nom. abstr. von सर्वविद्य oder vielmehr = सर्वविद्या (so ist wohl zu lesen) gaṇa चतुर्वर्णादि zu P. 5,1,124, Vārtt. 1.

सार्वविभक्तिक (von सर्व + विभक्ति) adj. *die Stelle aller Casus vertretend* Wilson, Sūryas. S. 11.

सार्ववेदस = सर्ववेदस 1) adj. *der nach einem Opfer alle seine Habe den Priestern schenkt* M. 11,1 (v. l. सर्व°). — 2) n. *die ganze Habe:* °दक्षिणा (इष्टि) Jaim. 3,36.

सार्ववेद्य n. *alle* Veda *insgesammt* gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

सार्ववेदिक adj. *aller* Veda *kundig* Kauç. 67.

सार्वसंसर्गलवण (v. l. सर्व°) n. *salzhaltiger Boden* Rājān. 6,106.

सार्वसद् s. सार्वसद्.

सार्वसेन (von सर्वसेन) 1) m. N. eines Pāñcarātra Āçv. Çr. 10,2,27.

— 2) f. ई patron. der Sunandâ, der Gattin Bharata's, MBu. 1,3785.

सार्वसेनि (wie eben) m. patron. des Çaukeja TS. 7,1,10,2. °यण Weber, Nax. 2,329. pl. N. eines Kriegerstammes gaṇa दामन्यादि zu P. 5,3,116.

सार्वसेनीय m. *ein Fürst der* Sârvaseni gaṇa दामन्यादि zu P. 5,3,116.

सार्वसेन्य adj. *aus* Sarvasena *stammend* gaṇa शणिडकादि zu P. 4,3,92.

सार्वायुष (von सर्वायुस्) adj. *volle Lebenskraft habend:* Agni Çat. Br. 8,1,4,6. ein Fürst Ait. Br. 8,15.

सार्षप (von सर्षप) adj. *vom Senf kommend:* तैल, स्नेह *Senföl* Kauç. 30. Jiân. 1,283. Sin. D. 14,7. Suçr. 1,183,1. शाक 218,19.

सार्ष्ट adj. *von gleichem Range, von gleichem Werthe:* यदि सार्ष्टं प्रवृणीरन्मानवेलपोद्गृह्यसेति Âçv. Çr. 12,15,5. स एष प्रथमः सर्वेषामेव सार्ष्टः स्यात् Nidânas. 6,13. — Vgl. सार्ष्टिता.

सार्ष्टि 1) m. *a*) = सार्ष्ट Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,41; vgl. 60, 6. — *b*) patron. Âçv. Çr. 12,10,10. — 2) f. = सार्ष्टिता Buâc. P. 3,29, 13. Pâṇ. 2,7,3. Wilson, Sel. Works 1,149.

सार्ष्टिता f. etwa *Gleichheit des Ranges* oder *Werthes:* सायुज्य, सार्ष्टिता, समानलोकता TBr. 3,9,20,2. 12,8,13. 9,8. Pâṇ. Br. 25,18,6. Kâṭh. Up. 2,20,2. Taitt. Âr. 10,15. Mahân. Up. in Ind. St. 2,94. ब्रह्म° M. 4,232. मत्° Buâc. P. 11,27,31. — Vgl. सार्ष्ट.

साल m. N. pr. eines Fürsten Râja-Tar. 7,218. — Vgl. 1. शाल.

सालकि m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,40.

सालक्षक s. unter शलक्षक.

सालक्षण्य (von सलक्षण) n. *Gleichheit in Merkmalen* Sarvadarç. 14,1. 2.

सालङ्कटङ्कटा f. N. pr. einer Râkshasî, einer Tochter der Samâdhjâ und Gattin Vidjutkeça's, R. 7,4,23. — Vgl. शालकटङ्कट.

सालंकार (2. स + अ°) adj. (f. आ) *geschmückt* Çaut. 18.

सालचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Tîrân. 2. 82. fg.

सालय n. Bez. von Brahman's Wohnort (संस्थान) Kauṣh. Up. 1,3. 5.

सालवल (?) N. pr. eines Ortes Tîrân. 293.

सालम्बन adj. = स्वकीयालम्बनेन सहितम् Verz. d. Oxf. H. 230, *a*, 39. fgg. Vgl. unter आलम्बन.

सालवन s. भद्र°.

सालवाक्न m. v. l. für सातवाक्न H. 712, Schol.

सालस adj. = अलस *matt, träge:* मदनविह्वलसालसाङ्गी Kâdamb. 1. °दृष्टिपात Bâlar. 6,30.

सालाकारी f. *ein im Kampfe besiegtes Weib* Çârdûlav. bei Wilson.

सालावृकी m. etwa *Hyäne* oder *wilder Hund* ṚV. 10,73,2. सालावृकाणी हृदयान्येता 95,15. इन्द्रो यतीन्सालावृकेभ्यः प्रादात् Ait. Br. 7,28. TS. 6,2,7,5. Kauṣh. Up. 3,1 (°केय Comm.). MBu. 1,2211. 3,15674. 6, 2638. 7,1320. 10,462. Harîv. 7420. Buâc. P. 5,8,9. 15. 8,2,21. 9,10. मनुष्य° MBu. 12,4226. f. ई TS. 6,2,4,1 (सला°). Ind. St. 3,458. 466. Comm. zu Taitt. Âr. 4,29. fg. Nach den indischen Lexicographen ist °वृक m. *Hund* AK. 2,4,8,12. H. 1280. an. 4,37. Med. k. 216. Hall. 2,126. Hîn. 283. *Schakal* AK. H. an. Med. *Affe* AK. H. an. Med. Hîn. Vgl. noch Ind. St. 13,191. In den jüngeren Schriften (mit Ausnahme der Bomb. Ausg. des Buâc. P.) stets शाला° geschrieben.

सालावृकीय Ind. St. 4,460. 463 wohl nur fehlerhaft für °वृकेय.

सालावृकेय m. *Junges der Hyäne* oder *des wilden Hundes* Pâraśav. Br. 3,1,1. 13,4,17. 14,11,28. 18,1,9. 19,4,7. Ind. St. 3,465. fg. Kauṣh. Up. 3,1 (nach der Lesart des Comm.).

सालेन्द्रराज m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 201,12.

सालोक्य (von सलोक) n. = सलोकता *das Innehaben derselben Welt* Buâc. P. 3,29,13. Pâṇ. 2,7,3. Çiç. zu Bṛh. Âr. Up. S. 113. सयोषाम् *mit den* Ṛshi Ind. St. 3,398. इन्द्रसाम् 8,120. सखसख्य MBu. 3, 11184. इन्द्रस्य 12,8611. Harîv. 7701. भर्तुः Mârk. P. 129,35. पितृभिः सक MBu. 2,2393. चन्द्र°, यक्ष° M. 4,231. स्कन्द° MBu. 3,14648. सालोक्यादिचतुष्टय d. i. सालोक्य, सार्ष्टि (सार्ष्टिता), सामीप्य und सारूप्य Buâc. P. 3,4,67. Pâṇ. 1,8,22.

सालोक्यता f. dass.: स स्कन्दसालोक्यतामियात् MBu. 3,14627.

साल्क m. N. pr. eines Mannes Tîrân. 290.

साल्कण adj. *dem* Sâlbani *gehörig:* खल Râja-Tar. 8,3217 (man könnte aber auch साल्कणीखले vermuthen).

साल्कणि m. patron. von सल्कण Râja-Tar. 8,2673. 2683. 2702. 2784. 2869. 2884. 2935. 2975. 2996. 3027. 3184. 3248.

सावँ (von 1. सु) m. Soma-*Libation* ṚV. 10,49,7. — Vgl. प्रातः°, सक्षम° und 1. सव.

सावइरिसोले N. pr. eines Districts Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,32,1.

1. सावक (von सु) Pat. zu P. 8,3,65, Vârtt. 5.

2. सावक (2. स + अवका) adj. (f. आ) *mit Bixa octandra belegt* Lâṭj. 3,5,13. Kât. Çr. 12,3,11.

सावकाश (2. स + अव°) adj. (f. आ) *zur Anwendung kommend* Pat. in Mahâbh. 1ith. Ausg. 8,50,*a*. Davon nom. abstr. °त्व n. Schol. zu P. 7,2,106.

सावग्रह (2. स + अव°) adj. 1) *verlegt werdend* (ein zusammengesetztes Wort im Padapâṭha) Comm. zu VS. Prât. 1,143. — 2) *das Wasser zurückhaltend, nicht regnend:* अम्भोद Spr. (II) 1755.

सावज्ञ (2. स + अवज्ञा) adj. *Geringachtung an den Tag legend:* अस्त्रेषु बाहुवीर्ये च Kathâs. 27,139. °म् adv. s. unter अवज्ञा.

सावद्य (2. स + अवद्य) adj. *mit einem Makel versehen, tadelhaft* (Gegens. निरवद्य): कर्मन् MBh. 13,6736. ऐश्वर्य Verz. d. Oxf. H. 81, *a*, N. 1.

सावधान (2. स + अव°) adj. *aufmerksam:* °मनस् Spr. (II) 5802. यतो यूयं तदवलोकने सावधाना भवत Z. d. d. m. G. 14,574,14. °म् adv. Çiç. 88,4. किमु सावधानम् Spr. (II) 3767 fehlerhaft für किमुतावधानम्. Vgl. auch unter अवधान.

सावधानीभू (सावधान + 1. भू) *aufpassen:* तेन °भूय स्थितम् Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,40. Z. d. d. m. G. 14,571,13.

सावधारण (2. स + अव°) adj. *eine Beschränkung auf das Erwähnte mit Ausschluss alles Anderen enthaltend* Nilak. 37.

सावधि s. u. अवधि 2).

सावन (von 1. सवन) 1) adj. *wonach die drei Libationen am Tage bestimmt werden so v. a. der wahren Sonnenzeit entsprechend:* Tag (von einem Sonnenaufgang bis zum andern), Monat (von 30 Tagen), Jahr (von 360 Tagen);

n. (sc. मान) *die wahre Sonnenzeit.* Nid. 5, 4. 12. Schol. zu Kâty. Ça. 4, 4, 29. 20, 3, 5. zu Lâṭy. 4, 8, 3. Sâṅkh. 1, 12. 36. उद्यादुदर्यं भानोः सावनं तत्प्रकीर्तितम् । सावनानि स्युरेतेन पञ्चकालविधिस्तु तैः ॥ 14, 18. fg. सावनं मानम्, सावनं दिनम् Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 2, 8. 4, Z. 7 und zu Bṛh. 8, 10. Ganit. Kâlak. 20 (Comm.). 31. fg. Grahakâṇḍ. 11. Golâdhy. Madhyag. 8. 14. Weber, Gjot. passim. — 2) m. = यज्ञकर्मन्, यज्ञमान und प्रचेतस् Med. n. 153.

सावत्तमिम्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122, *a*, 10.

सावमर्द्द s. unter अवमर्द्द in den Nachträgen.

सावमान (2. स + अव°) adj. *von Geringschätzung begleitet, eine Ger. enthaltend:* °पद्धति Spr. (II) 2053.

सावयव (2. स + अव°) adj. *Theile habend, aus Theilen bestehend:* संवत्सर Pân. Gaṇ. 2, 12. Siddhânjan. 10. Sarvadarçanas. 101, 18. 117, 14. 16. रूपक (begreift in sich समस्तवस्तुविषय und एकदेशविवर्तिन्) Prabôdh. 78, *b*, 8 (= साङ्ग Sin. D. 672). Davon nom. abstr. °त्व Sarvadarçanas. 117, 16. 119, 11. fgg.

सावयवीकर् (सावयव + 1. कर्) *in Theile zerlegen* Pañcad. 3, 6, 14.

सावयस m. patron. (wohl von सवयस) des Ashâḍha Çat. Br. 1, 1, 2, 7.

1. सावर adj. *sammt der Nachgeburt* (अवरा) Çat. Br. 14, 9, 4, 22.

2. सावर m. 1) *Symplocos racemosa* Comm. zu AK. 2, 4, 2, 13 und Çabdar. nach ÇKDa. Suçr. 2, 126, 14. 256, 15. — 2) = पाप und अपराध Viçva im ÇKDa. — Vgl. शावर.

सावरक 1) m. = 2. सावर 1) Suçr. 2, 337, 3. 431, 10. — 2) f. °रिका *eine Blutegel-Art* Suçr. 1, 40, 21. 41, 5.

सावरोह (2. स + अव°) adj. *mit Wurzeltrieben —, mit Luftwurzeln versehen:* °द्रुम adj. Hariv. 3644.

सावर्ण (von सवर्ण) 1) m. N. pr. eines Ṛshi VS. LVI, 10. MBh. 2, 110 (= सावर्णि 293). Bein. eines Manu 13, 1339. Hariv. 464. 467. पूर्वस्य मनोर्धातुः (so die neuere Ausg.) सदृशो ऽयमिति प्रभुः । मनुरेवाभवत्तस्मात् सावर्ण इति चोच्यते 563. 605. 610. Mârk. P. 94, 4. 108, 24. सावर्णा (vgl. मेरु°) मनवः Hariv. lith. Ausg. 7, 43. — 2) Bez. *der auf* Sâvarṇi *zurückgehenden* Saṁhitâ (vgl. सावर्णिका): वालखिल्याः समावर्णाः Verz. d. Oxf. H. 56, *a*, 9. — Vgl. ब्रह्म°, मेरु°.

सावर्णक 1) m. Bez. eines Manu Mârk. P. 108, 24. — 2) सावर्णिका Bez. einer Saṁhitâ Verz. d. Oxf. H. 56, *a*, 6; vgl. वालखिल्याः समावर्णाः 9.

सावर्णलक्ष्य n. *Haut, Fell* Çabdar. im ÇKDa.

सौवर्णि (patron. von सवर्ण) m. N. pr. eines Ṛshi RV. 10, 62, 11. Âçv. Ça. 12, 10, 10. MBh. 2, 292 (°गालवौ). 293 (सावर्ण 110). 5, 3789. 13, 692. R. 4, 43, 50. gaṇa कार्तकौजपादि (सौवर्णिमाण्डूकेयौ) zu P. 6, 2, 37. Saṁsk. K. 183, *b*, 11. Verz. d. Oxf. H. 55, *b*, 41. 56, *a*, 2. Bhâg. P. 12, 7, 3. 5. Bez. eines Manu Hariv. 410 (सावर्ण die neuere Ausg.). 452. VP. 266. fg. Mârk. P. 53, 8. 80, 2. 106, 14. Bhâg. P. 8, 6, 39. 8, 13, 10. fg. — Vgl. इन्द्र°, दत्त°, देव°, धर्म°, ब्रह्म°, मेरु° (auch MBh. 2, 2572), रुद्र°, रौम°.

सावर्णिक 1) adj. (f. ई) *a) zu derselben Kaste gehörig* (vgl. सवर्ण): पुत्राः Mârk. P. 51, 30. — *b) zu* Manu Sâvarṇa oder Sâvarṇi *in Beziehung stehend:* यन्तर, मन्वन्तर Hariv. 606. Wilson, Kâṣhṇaḷ. 232. Mârk. P. 94, 1. 4. संज्ञा 78, 32. — *b*) N. pr. eines Dorfes: सावर्णिकाभिधं (sic) ग्रामम् Râja-Tar. 8, 2278. könnte auch सावर्णिका f. (von सावर्णक) sein.

सावर्ण्य 1) adj. zu Manu Sâvarṇa oder Sâvarṇi *in Beziehung stehend:* मन्वन्तर Verz. d. Oxf. H. 39, *a*, 19. — 2) m. oxyt. patron. von सवर्ण RV. 10, 62, 9. Ind. St. 9, 325. — 3) n. (von सवर्ण) *a) Gleichfarbigkeit* Suçr. 2, 68, 18. — *b) Homogeneität* (von Lauten) Schol. zu P. 1, 1, 69. zu VS. Prât. 1, 72.

सावशेष (2. स + अव°) adj. (f. आ) *einen Rest habend* so v. a. *unvollendet, unbeendigt* Spr. (II) 3648. R. 2, 77, 32 (सावशेषा° mit der ed. Bomb. zu lesen). Çiç. 22, 15. Râja-Tar. 4, 618. °जीवित adj. *noch nicht ganz abgelaufen* Pañcat. 146, 22. °बन्धन adj. so v. a. *übrig geblieben* (die Bomb. Ausg. besser बन्धनशेष) 109, 17. n. *Rest:* आयुषः सावशेषं मे नूनमस्ति Mârk. P. 62, 26.

सावष्टम्भ (2. स + अव°) 1) adj. *Selbstvertrauen zeigend, entschlossen* Spr. (II) 4280. °म् adv. Kathâs. 23, 97. — 2) n. (sc. वास्तु) *ein Haus mit einer offenen Gallerie* (वीथिका) *zur Seite* (gleichsam *eine Stütze habend*) Varâh. Bṛh. S. 53, 21.

सावहेलम् adv. *geringschätzig, von oben herab:* (तम्) भूपालवत्सावहेलं पश्यन्नन्वगकौदिव Râja-Tar. 3, 116. Vgl. unter अवहेला in den Nachträgen.

साविक adj. von सव Kauç. 67.

सावित्र 1) adj. (f. ई) *a) dem* Savitar *gehörig, — geweiht; von* Sav. *stammend* P. 4, 3, 78, Schol. VS. 8, 7. 18, 20. TS. 2, 1, 6, 2. इष्टि Çat. Br. 13, 1, 2, 7. 4, 2, 6. पुरोडाश 2, 5, 2, 10. पशु 12, 3, 5, 1. सूक्त 13, 5, 2, 11. Kâty. Ça. 8, 1, 5. मेरोः शृङ्गम् MBh. 12, 10212. अस्त्र 7, 6954. Hariv. 6854. 10617. नियम 3658. — *b*) Sâvitra d. i. Karṇa *betreffend:* उपाख्यान MBh. 1, 332. — *c) durch die* Sâvitrî d. i. *den* Savitar-*Vers bewirkt:* जन्मन् Bhâg. P. 4, 31, 10. — 2) m. *a*) ein Agni, davon handelt TBr. 3, 10 (z. B. 3, 10, 9, 3. 6. 10. 11, 5). °चिति Ind. St. 3, 386. fg. °चयन Notices of Skt Mss. 2, 236. — *b*) sc. यज्ञ TS. 6, 5, 2, 1. Çat. Br. 4, 3, 5, 22. Âçv. Ça. 5, 18, 1. — *c*) sc. होम M. 4, 150; vgl. MBh. 13, 5014. — *d*) (sc. कल्प) N. *des 10ten* Kalpa Verz. d. Oxf. H. 51, *b*, 42. — *e*) *ein Brahmane* (weil er durch die Sâvitrî zum zweiten Mal geboren wird) H. 813. — *f*) = गर्भ Çabdar. im ÇKDa.. — *g*) *die Sonne* ebend. — *h*) *ein Sohn oder Nachkomme* Savitar's: सावित्रस्य मखः Ind. St. 3, 439. भूमिपालाः Uttarar. 20, 13 (27, 13). चन्द्रकेतु 99, 18 (132, 3). patron. Karṇa's MBh. 1, 5386. 13, 6253 (vgl. 12, 8398). ein N. Çiva's H. an. 3, 618. Med. r. 236. ein Vasu Med. MBh. 12, 7586. 13, 7094. R. 7, 27, 34. ein Marut Hariv. 11545. 13174. 13255. ein Rudra Gaṇâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190, *a*, 38. — कोणे कौताशने च सावित्रः Varâh. Bṛh. S. 53, 48. 3) f. सावित्री *a*) sc. ऋच् *ein* Savitar-*Vers* (insbes. der bekannte तत्सवितुर्वरेण्यम् RV. 3, 62, 10) Taitt. 2, 7, 12. Ait. Br. 1, 16. Çat. Br. 3, 2, 3, 10. 11, 5, 3, 6. Âçv. Gṛhy. 1, 21, 4. 3, 5, 12. Kauç. 56. Gobh. 3, 3, 2. Çâṅkh. Gṛhy. 2, 5. 9, 11. Ind. St. 3, 395 (pl.). M. 2, 77. 83. 101. 104. 118. 11, 191. 194. 225. Jâgñ. 1, 24. 3, 279. MBh. 2, 451. 3, 4025. 5, 3770. 14, 1216. 1217 (सावित्रि wegen Metrums). Hariv. 3280. 7022. 9429. 10244. 12435. 14078. Kathâs. 105, 27 (zweideutig). 29. Bhâg. P. 5, 9, 5. 6, 18, 1 (eine Tochter Savitar's von der Pṛçni). 8, 18, 14. °प्रदानकर्मन् Verz.

d. B. H. 311,3. भारत° MBu. 18,208. — *b*) *die durch das Hersagen der Sâvitrî erfolgende feierliche Einführung in die Kaste, die zweite Geburt eines Mitgliedes der drei oberen Kasten:* या षोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते M. 2,36. आचार्यस्त्वस्य यां जातिम् — उत्पादयति सावित्र्या 148. 170. MBu. 3,12484. °पतित M. 2,39. °परिभ्रष्ट 10,20. — *c*) N. einer Upanishad Ind. St. 3,325. — *d*) *eine Form der Gâjatrî: 4 Mal* ——————— Ind. St. 9,366. — *e*) *Ringfinger* H. 393. — *f*) *eine Tochter* Savitar's: Sûrjâ AV. 6,82,2. 14,2,30. Âit. Br. 4,7. Sitâ TBr. 2,3,10,1. = देवताभेद् H. an. MBu. 1,6522. 3,8071. 9994. 16624. fgg. 12,9449 (सा सवित्री nach Nîlak.). Harîv. 7932. Verz. d. Oxf. H. 24,*a*,29. दुःस्वप्ननाशिनी Ind. St. 3,244,*a*. als Gattin Brahman's Mân. MBu. 13,7635. Kathâs. 47,47. Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,22. fg. 21, *b*,11. 39,*a*,4. 149,*b*,31. als Manifestation der Prakṛti 23,*a*,27. als Gattin Çiva's H. ç. 53. Mân. — *g*) N. pr. einer Tochter Açvapati's und Gattin Satjavant's Mân. MBu. 3,16619. fgg. R. 2,30,6. 3,3,10. Verz. d. Oxf. H. 24,*a*,32. 42,*a*,44. Bhâg. P. 4,2,11. — सावित्री (सावित्रः 13,6283) कुण्डले दिव्ये (परित्यज्य) जगाम लोकमुत्तमम् MBu. 12, 8398. eine Tochter Ashṭâvakra's Kathâs. 105,22. fgg. Gattin Dharma's VP. 149,N. 12. Kaçjapa's Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,42. Bhoǵa's, Fürsten von Dhârâ, 130,*b*, No. 320. — *h*) N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,20,4. als Beiw. der Sarasvatî R. 4,41,37. — *i*) n. *a*) sc. कविस् TS. 5,1,8,1. TBr. 1,3,5,1. Çat. Br. 6,3,4,1. शान्तिकोमाश्च कुर्वीत सावित्राणि (= मन्त्रविशेषान् Nîlak.) MBu. 13,5014; vgl. M. 4,150. — *b*) *das unter* Savitar *stehende* Nakshatra Hasta MBu. 1,3276. Wrzb. Nax. 1,310. Vaṇîn. Bṛh. S. 7,12. 11,36. 98,16. — *c*) N. eines Pariçishṭa des Jagurveda Ind. St. 3,270. — *d*) Bez. verschiedener Sâman Ind. St. 3,205,*a*. 215,*a*. 221,*b*. ein Aṅga eines Sâman's 9,78. 103. — *e*) *die durch das Hersagen der* Sâvitrî *erfolgende feierliche Einführung in die Kaste* Bhâg. P. 3,12,42. = यज्ञोपवीत Çabdar. im ÇKDr. — *f*) Bez. eines Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912. — *g*) N. pr. eines Waldes Mârk. P. 55,2. — *h*) Titel eines Werkes (?) Vaṇîn. Bṛh. S. 60,22. — Vgl. सामसावित्री.

सावित्रँवत् adj. *mit* Savitar-*Versen verbunden* TS. 5,3,4,1.

सावित्रि f. = सावित्री (*der* Savitar-*Vers*) MBu. 14,1217.

सावित्रिक Ind. St. 3,382. 393 nach Wrzb. fehlerhaft für सान्त्रिक; vgl. Ind. St. 12,331. 355.

सावित्रीक am Ende eines adj. comp. von सावित्री in पतित°.

सावित्रीतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,37.

सावित्रीपुत्र m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes gaṇa दामन्यादि zu P. 5,3,116.

सावित्रीपुत्रीय m. *ein Fürst der* Sâvitrîputra ebend.

सावित्रीव्रत n. *eine best. Begehung der Frauen am 14ten Tage in der dunklen Hälfte des* Ǵjaishṭha (ÇKDr.) Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,20. fg. °व्रतक n. dass. Harîv. 7934; vgl. 7932.

सावित्रीसूत्र n. = यज्ञोपवीत Çabdar. im ÇKDr.

सावित्र् 1) adj. (von 1. सु) in मन्युसावित्र्. — 2) m. Bez. *eines best. Wundermenschen* (महापुरुष); s. unter सामित्र्. — 3) f. °त्री *Fluss* Bala im Comm. zu Naish. 9,154. सारघसार° Naish. 9,154.

सावेतस m. patron. Âçv. Çr. 12,10,10. Sâṅkh. K. 185,*b*,3. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,508, Çl. 32. fälschlich सावेधस und सावेदस Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 53,11. — Vgl. महा°.

सावेश्य (von सवेश) n. *Nachbarschaft* Pañkav. Br. 20,16,9.

1. साव्य (von 1. सु oder साव) in महत्र°.

2. साव्य adj. von Savja (RV. 1,51) *verfasst* Çiṅku. Çr. 11,14,25. 27.

सार्शस s. unter द्यार्शसा (auch in den Nachträgen).

साशङ्क (2. स + द्याशङ्क) adj. (f. द्या) von *Furcht, Besorgniss* oder *Misstrauen ergriffen* Z. d. d. m. G. 27,15. Pañkat. 47,15. Kathâs. 16,99. स्वगेकिन्याम् 64,129. द्वाःस्थसंयमम° 20,49. 45,33. °म् adv. Kumâras. 3,23.

साशन (2. स + 2. द्यशन) adj. साशनानशने n. du. *was isst und nicht isst*, wohl *irdische und himmlische Wesen* RV. 10,90,4.

साशयन्दक (?) m. *Eidechse* Çabdârthak. bei Wilson.

साशिक्य N. pr. eines Volkes oder Landes: °नाथ Daçak. 103,11. — — Vgl. शाशिक.

सौशिर (2. स + द्याशिर्) adj. *sammt Beimischung* TS. 6,1,10,2. Çat. Br. 3,3,3,16.

साश्वक m. = कम्बल *eine wollene Decke oder Wamme;* vgl. साक्षा) Hin. 156.

साश्चर्य (3. स + द्याश्चर्य) adj. 1) *erstaunt, verwundert* Kathâs. 18,214. 22,129. 26,84. 43,13. Riǵa-Tar. 4,456. Vet. in LA. (III) 2,9. °कौतुक so v. a. साश्चर्य und सकौतुक Kathâs. 25,271. °म् adv. 29,134. Hit. 17, 5. — 2) *wunderbar:* °चर्य adj. Spr. (II) 3379. Riǵa-Tar. 3,115.

साश्र s. साम्र.

साश्रय (2. स + द्याश्रय) adj. *einen Schutz habend* Spr. (II) 2807.

साश्रु (2. स + द्यश्रु) adj. *mit Thränen versehen* MBu. 5,5996. साश्रुपरिप्लुता R. 3,51,39. 55,23 ist in सा द्यश्रु° zu zerlegen.

साश्रूश्री f. *Schwiegermutter* Trik. 2,6,8.

साश्व (2. स + द्यश्व) 1) adj. *sammt einem Ross* Kâṭj. Çr. 22,2,20. — 2) m. N. pr. eines Fürsten (neben व्याघ्र) MBu. 2,328.

साष्ट (2. स + द्यष्टन्) adj. *nebst acht:* शत *hundertundacht* AK. 3,4,1, 12. H. 658.

साष्टाङ्ग s. unter 1. द्यष्टाङ्ग. °म् adv. auch Hit. ed. Journ. 1145. 2113. °पातम् adv. Hit. ed. Scal. 54,19. 58,19. v. l. 100,3.

सासकर्णि m. patron. Sâṅkh. K. 184,*a*,6 fehlerhaft für शाशकर्णि (von शशकर्ण).

सासव s. unter 2. द्यासव.

सासक्ति (von 1. सञ्ज्, Padap. समक्ति; vgl. VS. Prât. 3,121) adj. P. 3,2,171, Vârtt. 4. Vop. 26,154 (vom intens. von 1. सञ्ज्). 1) *siegreich, überlegen* RV. 1,100,3. उत्सत्वे च प्रसत्वे च 102,1. 2. 171,6. 2.22,3. 23, 11. 3,16,4. वाजेषु 37,6. पृत्सु 8,50,3. 10,133,4. 145,3. AV. 3,21,3. — 2) *zu tragen im Stande seiend:* महागौरव° Naish. 10,15. — Vgl. विषासक्ति.

सासार (2. स + द्यासार) adj. (f. द्या) *regnerisch:* ऋतु R. 2,114,14.

सासु (2. स + द्यसु) adj. *lebend:* देह Bhâg. P. 3,28,38.

सासूय (2. स + द्यसूया) adj. (f. द्या) *ungehalten, unwillig* Riǵa-Tar. 1, 71. Kathâs. 17,21. गणकान्प्रति 33,3. °म् adv. Mṛkkh. 19,5. Çiç. 35. 32,5. 69,17. Vikr. 30,14. Riǵa-Tar. 5,203.

मास्थि (2. स + अ°) adj. *Knochen habend*, subst. *ein solches Thier:* °वध Jiśv. 3,275. Verz. d. Oxf. H. 281,b,22.

मास्थितार्ध्य n. *Messing* Trik. 2,9,33.

मास्नी f. Uṇâdis. 3,15. *Wamme, Brustlappen* (beim Rindvieh) AK. 2, 9,63. Trik. 3,3,384. H. 1264. Halây. 2,111. Pat. in Sarvadarçanas. 141,6. Schol. zu Âit. Br. 7,1. बकुलमास्नगल Paṅkar. 2,5,19. बलद्रु-मास्नम् adv. Çiç. 5,62.

मास्नादिमत् *mit einer Wamme u. s. w. versehen* Sin. D. 10,3. 5.

मास्नावत् adj. *wammig:* Rind Kâç. 2,1,8.

मास्र (2. स + अस्र) adj. (f. आ) *mit Thränen versehen, weinend* Mṛicch. 95,12. Mucn. 100. नयन, दृश्, दृष्टि R. 3,27,6. 29,15. Kathâs. 18,333. 23,71. °म् adv. Kâç. 13,32. Die Bomb. Ausgg. schreiben अस्र, nicht अश्र (wohl aber अश्रु).

मास्वादन (2. स + आ°) n. (sc. स्थान) Bez. der zweiten unter den vierzehn Stufen, die nach dem Glauben der Gaina zur Seligkeit führen, Verz. d. Oxf. H. 397,a,9.

माकृ s. 2. मकृ.

1. माकृ (von 1. मकृ) adj. = मकृ gaṇa ज्वलादि zu P. 3,1,140. *gewaltig* ṚV. 8,20,20 (मकृ Padap.). am Ende eines comp. (माक् und याक्) *überwindend, widerstehend:* सर्वसपत्न° MBh. 4,1681. 8,4592. अमित्र° 4296. 4306. 4681. अनीक° 7,5839. 12,1306. रिपुवीर्य° 8,4678. — Vgl. अभिमाति°, अमित्र°, मित्र°, व्रात°, शत्रु° (auch MBh. 1,7154), शब्द°, सत्रा°, सपत्न°, सभा°, सर्व°.

2. माकृ m. = ओक् in प्रदीय° und मधुकार°. — Vgl. माकि.

माकृकायनि adj. von मकृक (v. l. für सिकृक) gaṇa पत्यादि zu P. 4,2,80.

माकृकार (2. स + अकृ°) adj. von *Selbstbewusstsein erfüllt* Râja-Tar. 5,234. वचस् Kathâs. 60,189.

माकृच्य adj. *an der Pflanze* सकृच्य *befindlich* u. s. w.: पुष्प Suçr. 2,151,20.

माकृच्र्य (von सकृच्य) n. *das Zusammensein, Zusammenstehen, das Verbundensein* Nir. 2,20. 28. 3,16. 7,8. 11,5. Nâgân. 16,87. Kumâras. 3,21. Spr. (II) 7202. Mâlatîm. 6,2. AK. Einl. Çâṅk. zu Kâṭhân. Up. S. 66. Sin. D. 17,10. Tarkas. 29. Schol. zu P. 1,3,19. 6,3,26 (am Ende eines adj. comp.). Siddh. K. zu P. 2,2,11. 3,1,36 (mit instr.). Comm. zu TS. Prât. 13,14. 14,15. 16,13. 26.

माकृत्तिक m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,1087.

माकृत्त m. N. pr. eines Fürsten Hariv. 1845. — Vgl. माकृत्ति.

माकृत्तानी f. N. pr. einer von Sâhasâṅka erbauten Stadt Hariv. 1846.

माकृत्ति m. = माकृत्त VP. 4,11,3.

माकृदेव m. patron. von सकृदेव P. 4,1,114, Schol.

माकृदेवक m. *ein Verehrer* von Sahadeva P. 4,3,99, Schol.

माकृदेवि m. patron. von सकृदेव MBh. 3,10422. 7,4962. Râja-Tar. 8,2667 (मकृ° gedr.).

माकृदेव्य m. desgl.: कुमार ṚV. 4,15,7. s. Âit. Br. 7,24.

माकृत्य adj. so v. a. सकृत्य. Soma AV. 6,7,2. Agni TS. 2,2,8,4.

माकृय nom. ag. vom caus. von 1. मकृ P. 3,1,138. Vop. 26,35.

माकृत (von मकृत्) 1) adj. *a)* Bez. Agni's beim Pâkajaṅña Gaṇjas. 1,8. — *b) überlegt, unüberlegt:* वचस् Hariv. 13576. मा वादी: माकृतम् 13582. — 2) n. Trik. 3,5,7. Siddh. K. 249,b,7. auch m. Vaij. beim Schol. zu H. 736. *a) Gewaltthat, Gewaltthätigkeit* AK. 2,8,1,21. H. 736. an. 3,759. Med. s. 44. M. 7,48. 8,6. 72 (pl.). 332. 345. माकृते वर्त-मान: 346. Jiśv. 2,10. 72. 232. Vop. 23,25. — *b) Ueberanstrengung:* माकृ-तानि सेव् Kâraka 1,28. 2,6. — *c)* m. n. *Strafe*, insbes. *Geldstrafe* AK. 2, 8,4,21. H. 736. H. an. Med. M. 8,120. 138. 263. 276. 354. 9,240. fg. 279. 281. 286. Jiśv. 1,66. 265. 2,153. 250. Spr. (II) 1682. — *d) Wagniss, eine verwegene* (in gutem und in schlechtem Sinne), *tollkühne, übereilte* oder *unbesonnene Handlung* H. an. R. 2,106,13. 3,33,2. Suçr. 2,164,6. Kir. Nitis. 14,56. Çiç. 9,59. Spr. (II) 179. 328. 706. 833. 1038 (pl.). 1247. 3048. 3485. 3669. 7204. 7494. 7565. Varâh. Bṛ. S. 69,28. Bṛ. 10,3. 21,9 (oder *Gewaltthat*). Kathâs. 21,97. 23,103. 178. °धन adj. 27,208. 30,75. 42,24. 43,202. 49,32. 61,262. Râja-Tar. 4,564. 6,145. Daçak. 75,18. Pañkat. 135,8. Hit. 100,3. 103,3. Vet. in LA. (III) 28,9. को हि नाम भवेनार्यो माकृतेन समाचरेत् MBh. 1,7958. माकृतम् घनु-स्था Mṛicch. 59,1. अङ्गी-कृ Kathâs. 25,225. तन् 32,87. अध्यव सा Daçak. 143,6. 7. अव-लम्ब् Z. d. d. m. G. 14,571,17. कृ MBh. 1,7792. 3,17239. 4,664. 13,1898. R. Gorr. 2,59,20. Spr. (II) 6221. 6886. Kathâs. 10,57. 18,324. 26,238. 34,187. 36,30. 42,174. 52,163. Pañkat. 135,6. कर्ध कुर्यु: सत्योल्लङ्घ-माकृतम् Kathâs. 110,38. am Ende eines adj. comp. (f. आ) Suçr. 1,192, 6. Mâlatîm. 75,12. Kathâs. 27,202. दु:माकृ° sind die Weiber 77,47. प्रिय° desgl. 18,238. Spr. (II) 7197. प्रियमाकृतम 2604. धृति° MBh. 3,1632. 4,2166. Mṛicch. 64,24. Varâh. Bṛ. 21,9. — *c)* = हेष H. an.

माकृतवत् (von माकृत) adj. *verwegen, tollkühn* Varâh. Bṛ. 13,7.

माकृताङ्ग (माकृत + अङ्ग) m. N. pr. verschiedener Personen Verz. d. B. H. No. 587. Verz. d. Oxf. H. 119,a,6. 7. 124,b,18. fg. 183,a,3. 187,b,18 v. u. 188,a,20. 25. 27. 189,b,13. Hall 161. in der Einl. zu Vâsavad. 18. Z. d. d. m. G. 27,77. = विक्रमादित्य Gâṭâdh. im ÇKDr.

माकृताङ्कीय adj. *des* Sâhasâṅka: °संमति Verz. d. Oxf. H. 135,b, No. 255.

माकृमिक 1) adj. (f. ई) = सकृमा वर्तते P. 4,4,27. *a) gewaltthätig verfahrend, der sich Gewaltthaten zu Schulden kommen lässt* AK. 3,4,29,219. M. 8,344. 347. 386. MBh. 13,2092. — *b) über seine Kräfte sich anstrengend* Kâraka 2,6. — *c) verwegen* (in gutem und schlechtem Sinne), *tollkühn, unbesonnen zu Werke gehend:* यत्माकृर्य यदा काले ववियार्य करोति य: । स माकृमिक: Uttara zu Varâh. Bṛ. 13,7. R. 4,22,4. Kir. Nitis. 17,33. Mâlatîm. 9,4. 5. 64,4. Spr. (II) 665. 1964. 2896. 3331. 4533. Varâh. Bṛ. S. 101,13. Bṛ. 18,3. Kathâs. 18,325. 25,220. 33,195. 64,60. 112,156. Sin. D. 11,1. Râja-Tar. 8,558. Z. d. d. m. G. 27,79. केचित्तु माकृमिकास्त्रिलोचनमिति पेठु: Mallin. zu Kumâras. 3,44. धृति° Pañkat. 241,3. महा° Sarvadarçanas. 26,14. यमम° Vet. in LA. (III) 4,4. स° Çiç. 9,59. — 2) m. N. pr. eines Kochs Kathâs. 20,198. fgg. — Vgl. महा° (vgl. auch 1) *b*) am Ende).

माकृमिकता (von माकृमिक) f. *Verwegenheit, Tollkühnheit* Kathâs. 37, 170. Verz. d. Oxf. H. 253,a,13. — Vgl. महा°.

माकृमिक्य (von माकृमिक) n. *Gewaltthätigkeit* P. 1,3,32.

माकृमिन् (von माकृम) adj. 1) = माकृमिक 1) *a)* Nârada im Vyavahârat. nach ÇKDr. Jiśv. 2,71. — 2) = माकृमिक 1) *b)* Spr. (II) 3669.

7563. Kathâs. 61,261. Râja-Tar. 6,50. महा° Bhâg. P. 5,24,30.

साहस्र (von सहस्र) 1) adj. (f. ई und घा) *a) tausend zählend, tausendfältig, überaus zahlreich, millitarius* P. 5,1,27. 2,103. वृषभ AV. 9,4,1. पोष 2. पुष्टि Kâṭh. 20,6. 8. माया VS. 13,44. राय: 17,71. साहस्रं शतधारमुत्सम् 13,49. 15,65. लक्ष्मी TS. 2,1,8,2. 7,1,6,7. प्रातरनुवाक Çâṅkh. Ça. 6,6,33. Prâgâpati TS. 5,2,8,2. 4,2,4. Hotar, *der tausend Verse hat*, Çat. Br. 4,5,8,12. इष्टका: Çat. Br. 10,4,4,4. नाराचा: MBh. 4,1330. यूष Spr. (II) 1432. बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिण: AK. 2,8,2, 30. H. 764. दम *eine Strafe von tausend* Paṇa M. 8,333. शतगुण, साहस्र 2,88. सादशैव साहस्रं पुराणम् *aus 17000 Çloka bestehend* Verz. d. Oxf. H. 80,*a*,1. °वत्सर Bhâg. P. 9,22,17. 8,7,14. am Ende eines comp.: द्विषा°, त्रिषा° TS. 5,6,8,2. 3. TS. Prât. 6,13. द्विसा° Mânav. P. 54,11. नव° Verz. d. Oxf. H. 65,*a*,36. दश° MBh. 3,12134. Mânav. P. 60,1. अनोकैर्दशसाहस्रै: कोटिभि: R. 4,39,16. अनीकैर्दशसाहस्रै: कोटीनाम् 26. द्वादश° Mânav. P. 46,31. षष्टादश° Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,31. 65,*a*,39. चतुर्विंशति° MBh. 1,101. R. Gorr. 1,4,147. त्रिंशव° Bhâg. P. 9,20,32. त्रिंशत् R. Gorr. 2,100,44. षष्टि° 1,42,11. षशीति° 5,38,23. तेषामशीतिसाहस्रा: 56,118. चतुरशीति° Mânav. P. 54,18. षष्टाशीति° Jâṭ. 3,186. द्विशतोत्तर° Verz. d. Oxf. H. 28,*b*, N. 2. षष्टशत° MBh. 4,288. अनेकशत° R. 5,2,1. शतसाहस्रसंख्येषु 1,20,18. 4,39,24. शतसाहस्रसंमित Verz. d. Oxf. H. 54,*a*, No. 104. षोडशसाहस्रसंख्याता: Pâṇḍar. 3,15,12. सप्ताष्टादश° 2,7,28. Verz. d. Oxf. H. 45,*a*,32. नवयोजन° (so zu schreiben) Mânav. P. 54,27. R. 7,23,*a*,1. 3. Bhâg. P. 5,16,29. 9,11,18. साशीति: पणासाहस्रो दण्ड: Jâṭ. 1,365. — *b) tausend* (als Dakshiṇâ) *verschaffend* Çat. Br. 10,6,5,2. एकाक्षा: Schol. zu Pâṇâv. Br. 15,8,1. दशपेय Âçv. Çr. 9,4,7. बकुसाहस्री (इष्टि) R. 1,12, 9. — 2) n. = सहस्राणां समूह: gaṇa भिलादि zu P. 4,2,38. AK. 3,3, 42. H. 1415. *ein Tausend:* साहस्रमेनपुण्यत् (Comm. ergänzt धनम्) TBr. 2,3,8,1. त्रीणि साहस्राणि Çâṅkh. Br. 11,3. ऋतावत्ति च दानानां साहस्राणि (सह° ed. Bomb.) MBh. 2,2071. वर्षाणि साहस्रम् Bhâg. P. 5,13, 15. साहस्रेण *zu Tausenden* gaṇa प्रकृत्यादि zu P. 2,3,18, Vârtt. किरीट° Bhâg. P. 3,8,6. 30. 11,23. 20,15. 8,13,37. नागानां दशसाहस्रम् R. 7,19,12. Verz. d. Oxf. H. 65,*a*,31. युवतीनां त्रिसाहस्रम् Bhâg. P. 10,58,30. द्वाष्टसाहस्रं स्त्रिय: 69,2. षोडशसाहस्रं महिष्यश्च शताधिकम् 90,29. बकुयोजनसाहस्रम् R. 7,34,30. 35,29. Bhâg. P. 4,9,22. 12,13. महासाहस्रप्रमर्दनी Sâṅgîtas. 119. am Ende eines adj. comp. (f. घा): षाड्गुण्यसाहस्रा (so ist wohl zu lesen) Hariv. 15828. — Vgl. अध्यर्ध°, त्रि°, दश°, द्वादश°, द्वि°, बकु° (auch R. 2,32,27. 100,30. 3, 39,31. 4,40,2. 5,12,40. 7,68,1), विंशति°, शत°, षोडश°, सप्ति°.

साहस्रक 1) adj. (f. °सिका) *tausend zählend:* कुलरत्नमालिका so v. a. *tausend Çloka enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 238,*b*,37. चतु:° 56,*a*,1. षष्टा° Buhler, Intr. 31. — 2) n. *a) ein Tausend:* नाम्न: Pâṇḍar. 4,8,7. त्रिसाहसाहस्रके: Verz. d. Oxf. H. 148,*a*, No. 318. — *b)* N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,7029. — Vgl. शत°.

साहस्रवत् adj. *tausend* (Wort und Begriff) *enthaltend* TS. 5,4,8,4.

साहस्रवेधिन् m. = सहस्रवेधिन् *Sauerampfer* Kâlakarṇa 5,225.

साहस्रशस् adj. *tausendweise:* दक्षिणा: Âçv. Çr. 10,1,14.

साहस्रानीक m. N. pr. eines Fürsten Vishṇ. 94. — Vgl. सहस्रानीक.

साहस्रि m. wohl patron. Râja-Tar. 8,558.

साहस्रिक adj. *der tausendste:* भाग Vaitân. Dhn. S. 80,13. — Vgl. दश°, शत° (zu verbessern: *aus hunderttausend bestehend*).

साहाय (von सहाय) n. *Beistand, Hilfe:* श्रुतिसाहायरहितमनुमानं न — साधयेदर्थम् Sarvadarçanas. 72,9. wohl fehlerhaft für साहाय्य.

साहायक n. dass. Kâç. und Siddh. K. zu P. 5,1,132. Rasar. 17,5. Kathâs. 9,13. 38,54. 73,270. Râja-Tar. 1,59. 82. 263. 4,477. 5,307. °कं कृ Kathâs. 16,68. 38,134. 45,409. 70,73.

साहाय्य n. dass. Kâç. und Siddh. K. zu P. 5,1,132. MBh. 6,1619. Hariv. 8035. Kathâs. 16,8. 17,80. 24,190. 27,198. 46,24. fg. 48,16. Sâh. D. 471. 492. (धर्म:) तस्योपयाति साहाय्यम् Spr. (II) 5324. साहाय्यं कृ MBh. 1,494. 6034. 6117. 3,2134. 2253. 2284. R. 3,44,15. 75,38. 47. 4,3,13. 43,3. 5,7,2. 11. Brahma-P. in LA. (III) 52,9. Kathâs. 18, 311. 37,32. 52,159. 72,151. 73,275. 75,86. कल्पय् R. 3,63,16. सम्-धा Spr. (II) 6954. भज् Kathâs. 35,52. साहाय्ये स्था MBh. 1,6035. मित्र° R. 6,82,44. राज्य° Kathâs. 49,29. वेतालाख्यान° 73,277. सिद्धि° 109, 11. तत्र नो गतिसाहाय्यं भवान्वै दातुमर्हति R. 4,62,4.

साहाय्यक n. dass. Kathâs. 17,18. 55,208. vielleicht nur fehlerhaft für साहायक.

साहि m. = 2. साह = شاه in चन्द्र°, प्रेम°, भूपाल°, मधुकर°, राम°, संग्राम°, सिंह°.

साहिड m. N. pr. eines Volkes Verz. d. Oxf. H. 340,*a*,32.

साहिती f. = साहित्य *Dichtkunst* Verz. d. Oxf. H. 146,*b*,5.

साहित्य (von सहित) n. 1) *das Verbundensein, Zusammensein, Verbindung:* स्त्रीभि: u. s. w. एकार्थचर्या साहित्यं संसर्ग च विवर्जयेत् Kâm. Nîtis. 5,32. Kap. 1,126. Comm. zu 112. Dhârân. 35,14. Kull. zu M. 3, 211. 5,20. Comm. zu Kâtj. Çr. 88,1. 91,19. Schol. zu P. 1,4,35. so v. a. *das Zusammenstimmen, Übereinstimmung* Prân. 87,1. साहित्येन *zusammen, vereint* Sâh. D. 335,2. Comm. zu Kâtj. Çr. 90,14. — 2) *rhetorische Composition, Dichtkunst* Spr. (II) 7037. Sâh. D. 8,11. Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,35. 139,*a*,14. 196,*b*,21. साहित्याचार्य Verz. d. B. H. No. 643 am Anf.

साहित्यदर्पण m Titel eines über *die Dichtkunst* handelnden Werkes von Viçvanâthakavirâja Sâh. D. 8,14. Z. d. d. m. G. 28,737.

साहित्यमीमांसा f. Titel eines über denselben Gegenstand handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 210,*a*, No. 493.

साहित्यरत्नाकर m. desgl. Mack. Coll. 1,114.

साहित्यसर्वस्व n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 208,*a*,9.

साहित्यसुधा f. *der Nektar der Dichtkunst* Verz. d. Oxf. H. 139,*a*,16. fg. Titel eines Commentars, = काव्यसुधा Verz. d. B. H. No. 825.

साहित्यसुधासमुद्र m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 317,*b*,17. 318,*a*,28. fg.

साहिदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,14.

साहिसुता m. N pr. eines *Fürsten* (साहि) Verz. d. B. H. No. 681 am Ende (°सास्निके zu lesen). Ind. St. 2,245.

साहुडियाण m. Bein. Çôlapâṇi's Verz. d. Oxf. H. 283,*a*,19.

साहुल (?) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 57,23.

साङ्ग (2. स + अङ्ग) adj. *mit dem Tage oder mit einem Tage zusam-*

mengehend, — abschliessend, tägig (Gegens. अक्तोषा): Sonne und Agnishṭoma Ait. Br. 3,44. Gop. Br. 4,10. TS. 6,2,5,1. Pañcav. Br. 18, 11,10. माङ्क्षातिरात्रौ *mit dem Tag beendet und über einen Tag hinausreichend* AV. 11,7,12.

माङ्क्षिक m. N. pr. eines Autors Verz. d. Tüb. H. 13.

माङ्क्षा n. 1) nom. abstr. zu 2. मक्ष् in नृमाङ्क्षा und पतना°. — 2) *Beistand, Hilfe;* mit कृ oder दा *Beistand —, Hilfe leisten* MBh. 1,3168. 3194. 5,140. 3249. 5343. R. 7,84,17. fg. माङ्क्षाय कल्प् 6,37,21. 7,104, 10. पक्षमाङ्क्षाकर R. ed. Schl. 1,59,3. in den folgenden Stellen haben die älteren Ausgaben मक्षा MBh. 1,3195. 3,16011. 16014. 5,514. 516. 5371. 6,1622. 3987. 7,476. 9,3519. fg. 12,13224. Harîv. 2500. 3037. = मेलन, सङ्गतत्व Dharan. im ÇKDa. In dieser Bed. entweder nom. abstr. von 1. मक्ष् oder Zusammenziehung von माक्षाय्य.

माङ्क्षाद (2. स + आद°) adj. *heiter, froh:* वचन Spr. (II) 7036.

माङ्क्ष (2. स + आङ्क्षा) adj. (f. आ) am Ende eines comp. *benannt:* आमुक्तभावमाङ्क्षा Vaṛâh. Bṛh. S. 8,21. — Vgl. इषु°, रथाङ्ग°, विश्व°, वृष°.

माङ्क्षन् s. u. विश्वमाङ्क्ष.

माङ्क्षय (2. स + आङ्क्षय) 1) adj. am Ende eines comp. *benannt:* पुरीं चेदीनां मुक्तिसाङ्क्षयाम् MBh. 14,2467. क्षिम° so v. a. क्षेमत्व Suçr. 1,22, 5. Vgl. काल°, गज° (auch Bhâg. P. 1,4,6), गण्ड°, चामर°, ज्ञेन°, नाग°, मित्र°, वन°, वारण°, वृष°. — 2) m. = समाङ्क्षय *ein Thierkampf mit Wetten* Çabdar. im ÇKDa.

माङ्क्षा m. N. pr. eines Dorfes Râǵa-Tar. 8,1247.

1. मि, मिनोति und मिनुते Dhâtup. 27,2. मिर्नाति und मिनीते 31,5 (बन्धने). zu belegen मिर्नाति, मिनातु, ममिनात्, मिषेत्. (आ) मिषाण. *binden, umschlingen:* यो सेतृभिर्वरूत्रभिः मिनीषः ṚV. 7,84,2. मा नः सेतुं मिषेदयम् 8,56,8. भोगैर्मिनात् TS. 2,1,4,5. 5,4,4,4. मेखलया AV. 6,133,3. 8,6,5. 4,16,6 (die Hdschrr. शिनत्तु und Anderes). पाशेन Pân. Gaṇ. 3,7. ते उभे नानार्थे पुरुषं मिनीतः Kaṭhop. 2,1. inf. मैतवे AV. 5, 6,3 (ṚV. v. l.). partic. 1) मित *gebunden* P. 8,2,44. Vârtt. 4. AK. 3,2, 44. 3,4,43,83. H. 438. an. 2,206. Med. t. 70. ṚV. 1,112,5. पादि 4,12, 6. मृत्युपाशैः AV. 8,8,10. पाशैः Spr. (II) 2971. MBh. 5,2551. 12,566. धर्मपाश° 5,4679. R. Gorr. 2,39,41. सत्यपाश° 35,29. स्नेक्वीर्य° MBh. 5,5888. स्नेह° Bhâg. P. 7,6,11. *verbunden mit, begleitet von:* (समीराः) मिताः पराग्गैः Pârâç. 80,1. क्षारक्षमसिनैः कृत्यैः Râǵa-Tar. 1,90. Vgl. 1. ममित (auch Bhâg. P. 4,20,30). — 2) मित *wohl so v. a. stecken geblieben:* मिनो ग्रासः स्वयमेव P. 8,2,44, Vârtt. 4. Vop. 26,94. — Vgl. 3. मा.

— घाति, partic. घैतिपित *unterbunden:* ऊधम् ṚV. 10,73,9.

— आ *herumschlingen:* नृपर्णा हृदा नक्षमा सिषाय ṚV. 10,28,10.

— उद् *fesseln, fangen.* यस्त्वायातं मुत्तोत्तयेव पदिमुत्सिनाति ṚV. 1, 125,2. partic. उत्सित AV. 6,112,2. 3.

— प्र vgl. प्रसयन und प्रसिति 3) 6).

— 2. सि *schlendern.* — Vgl. सायक und 1. सेना.

— प्र partic. प्रसित *dahinschlüpfend:* यामनि प्रसितस्य वेः ṚV. 4,27, 4. प्रवासो न प्रसितासः परिप्रुषः 10,77,5. — Vgl. प्रसिति 1) 2) 3) 4).

3. मि. मिनोति vgl. ममिन्व, ममिन्वत्.

4. मि indecl. *gaṇa* चादि zu P. 1,4,57.

मिक्ष 1) m. Uṇâdis. 3,62. Siddh. K. zu P. 6,3,109. Çiṣṭ. 2,17. *a) Löwe* AK. 2,5,1. Trik. 2,5,1. 3,3,462. H. 1283. an. 2,604. Med. h. 11. Halâj. 2,59. 5,70. मिक्ष इव नानदति die Marut ṚV. 1,64,8. 10,67,9. 1,95,5. 174,3. नानद् 3,2,11. 9,4. 26,5. सिंक्ष्यं स्तनयोः 5,83,3. 74,4. 9,89,3. 10,28,10. भीम 4,16,14. 9,97,28. VS. 14,9. AV. 4,36,6. 5,20, 1. 2. 21,6. 8,7,15. Kâṭy. 12,10 in Ind. St. 3,464. Çat. Br. 5,5,4,10. °लोमन् 18. 12,7,4,3. 2,3. 9,4,6. Kauç. 13. Kâṭ. Çr. 19,2,22. TS. 5, 5,22,1. wird zu den गुह्याश्व gerechnet Sûçr. 1,202,9. Râǵân. 19,1. zu der मध्यमा तामसी गतिः M. 12,43. — MBh. 3,2102. स प्रविश्याश्रमं पुण्यं सिंक्षगोष्ठं वृको यथा 13618. 12,4285. R. 3,53,46. Hariv. 2,27. सिंक्षवत्पराक्रमेत् Spr. (II) 4378. ग्रसमाने त्रयो यान्ति सिंक्षाः सत्पुरुषा गजाः 2638. 7224. der Donner erschreckt ihn 5363. सिंक्षव्याघ्रमृगेगानामन्येषां पापकर्मणाम्। मनोरथा न सिध्यन्ति तेन जीवन्ति मानवाः॥ 7039. सिंक्षादेकं शिक्षेत् 7041. प्रभूतं कार्यमल्पं वा यो नरः कर्तुमिच्छति। सर्वारम्भेण तत्कुर्यात्सिंक्षादेकं प्रकीर्तितम्॥ 4261. स्थानस्थितः कापुरुषोऽपि सिंक्षः 7523. auch ein junger *Löwe* flösst Achtung ein 7043. begattet sich nur ein Mal im Jahr 7044. tödtet Pâṇini 7045. besiegt den Elephanten 7038. 7040. 7304. dem Schakal gegenüber 7042. — Vaṛâh. Bṛh. S. 43, 37. 48,13. Kathâs. 70,101. Râǵa-Tar. 4,450. °दृप्ती Pañcat. 218,21. सिंक्षान्योन्यतः Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,46. mit dem Âtman identificirt Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,104. 144. 158. 162. अद्भुत° Vishṇu Bhâg. P. 7,10,9. am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 7,28. — *b) der Löwe im Thierkreise* Trik. 3,3,462. H. 116, Schol. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 181,*b*, No. 410. 339,*b*,33. Vaṛâh. Bṛh. S. 5,39. 40,3. 41,4. Lagaṇḍ. 1,12. 22. Mârk. P. 58,76. — *c)* am Ende eines comp. so v. a. *der Beste unter gaṇa* व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. AK. 3,2,9. Trik. H. 1440. H. an. Med. das vorangehende Wort hat den Acut auf der ersten Silbe P. 6,2,72. भरत° MBh. 1,4631. पङ्क° Harîv. 8382. राघव° R. 1,3,24. नृप° 3,42,18. भूपाल° Raghu. 2,38. पुरुष° R. 2,76,7. Spr. (II) 1235. Râǵa-Tar. 1,318. मुनि° R. Einl. कपि° MBh. 4,752. R. 4,18,18. 47,2. तृण° P. 6,2,72, Schol. नागपुर° so v. a. *Fürst, Beherrscher von* N. MBh. 1, 4462. die Bed. *Fürst, König* hat das Wort auch am Anfange mehrerer compp. (z. B. सिंक्षद्वार, सिंक्षासन). — *d) eine best. Tempelform* Vaṛâh. Bṛh. S. 56,18. सिंक्षः सिंक्षाक्रान्तो द्वादशकोणो ऽष्टरुस्तविस्तीर्णः 28. *ein zum Aufbau eines Hauses besonders zugerichteter Platz;* s. u. गृह 4). — *e) eine best. Pflanze* Sûçr. 2,67,16. = रक्तशिग्रु Râǵân. 7,32. — *f)* N. pr. verschiedener Personen P. 5,3,81, Schol. ein Sohn Kṛshṇa's Bhâg. P. 10,61,15. ein Fürst der Vidjâdhara Kathâs. 106,37. ein Kaufmann Burnouf, Intr. 223. Hiouen-thsang 2,132. — Lot. de la b. l. 2. Schiefner, Lebensb. 268 (38). Wassiljew 52. fg. 208. Târan. 3. 38. 146. 158. 299. 306. fg. Râǵa-Tar. 8,959. 1008. 1047. °भूभृत् 2008. °मृगेन्द्र 2021. °नृप Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,14. — 2) f. आ = नाटी Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. ई *a) Löwin:* सिंक्षीं चित्रे क्षेत्र त्रघान ṚV. 7,18,17. VS. 5,10. TS. 1,2,13,2. 6,2,3,1. विजृम्भती Ait. Br. 6,35. Çat. Br. 3,3,4,21. सिंक्षे सिंक्षोव विक्रान्तमहे रामानुव्रता R. 3,33,46. Kathâs. 6,102. 23,49. 70,101. Pañcat. 218,21. सौवत्सरीणा als Verfasserin eines Mantra Ind. St. 3,459. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Gendarussa vulgaris Nees.* AK. 2,4,2,21. Trik. H. an. Med. *Solanum melongena* AK. 2,4,4,2. Trik. H. an. Med. Ratnam. 12. Mad. 1,67. *Solanum Jacquini* H. an. Ratnam. 7. *Hemionitis*

cordifolia Roxb. 11. *Phaseolus trilobus* Mad. 1,90. Râǵan. im ÇKDa. — Pân. Gaṇ. 1, 13 (*Solanum Jacquini* nach Comm.). Suçr. 2, 417, 20. — *c*) = सिंहिका N. pr. der Mutter Râhu's H. an. — Vgl. ग्रसर°, ग्राम°, तृण°, धृति°, नर°, नृ°, पति°, पुरुष°, बाल°, बुद्ध°, धातृ°, मदन°, मनोहर°, महा° (*ein grosser Löwe* auch MBu. 3, 2993), मरेन्द्र°, माधव°, मान°, राज° (in Bed. 1) auch MBh. 4, 288. 12, 725. R. 1, 62, 21. fg. 3, 42, 20. Râǵa-Tar. 4, 450), राम°, रुद्र°, विक्रम°, विजय°, विश्व°, विष्णु°, विहारि°, शक्ति°, शाक्य°, शिव°, शूर°, शृङ्गार°, शोभा°, संग्राम°, सबल°, सभा°, सेम्मत°, मातृसिंही. श्वेत°, सित°, सैंह.

सिंहक gaṇa पताद्दि zu P. 4, 2, 80. 1) m. Hypokoristikon von सिंह und सिंहाजिन Schol. zu P. 5, 3, 81. fg. — 2) n. *gelbes Messing* (vgl. सिंहल) Râǵan. 13, 28. — Vgl. सैंहकायन.

सिंहकर्ण N. pr. gaṇa तत्रशिलादि zu P. 4, 3, 93. — Vgl. सैंहकर्ण.

सिंहकेतु m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 202, 7. eines Bodhisattva 2, 10.

सिंहकेलि m. ein N. des Mañǵuçrî Târ. 1, 1, 22.

सिंहकेसर m. 1) *Mimusops Elengi Lin.* (बकुल) Târ. 2, 4, 16. — 2) *eine Art Confect* H. ç. 97. Verz. d. Oxf. H. 135, *b*, 43. — Auch °केशर geschrieben.

सिंहकेसरिन् m. N. pr. eines Fürsten Burnouf, Intr. 224. °केशरिन् gedr.

सिंहकोश m. N. pr. eines Fürsten (der vollständige Name vielleicht व्यासन°) Târân. 44.

सिंहगिरि m. N. pr. eines Lehrers Hall 165.

सिंहगिरीश्वराचार्य m. desgl. Wilson, Sel. Works 1, 201.

सिंहगुप्त m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 6, 155. fgg. des Vaters von Vâgbhaṭa (v. l. संघगुप्त) Verz. d. Kop. H. 103, *b*. Verz. d. Oxf. H. 303, *a*, N. 1.

सिंहग्रीव adj. *löwennackig* MBu. 2, 2052.

सिंहघोष m. N. pr. verschiedener Männer Daçak. 92, 9. fgg. 123, 1. fgg. eines Buddha Lot. de la b. l. 113.

सिंहचन्द्र 1) m. N. pr. verschiedener Männer MBu. 7, 7009. Vie de Hiouen-thsang 261. Târân. 2. 146. Wassiljew 52. fg. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers Lot. de la b. l. 231.

सिंहजटि m. N. pr. eines Fürsten Târân. 262.

सिंहतल m. *die beiden hohl aneinander gelegten Hände* Râmaçrama zu AK. nach ÇKDa. H. 396. — Vgl. संहतल.

सिंहता f. nom. abstr. von सिंह *Löwe* MBu. 12, 4287. Kathâs. 63, 103.

सिंहताल m. = सिंहतल H. 398, v. l. सिंहतालाख्य m. Schol.

सिंहतुण्ड m. 1) *ein best. Fisch* M. 5, 16. — 2) *eine best. Pflanze*, = सेडुण्ड (सोडुण्ड) Râǵan. im ÇKDa.

सिंहतुण्डक m. = सिंहतुण्ड 1) Jâǵ. 1, 177.

सिंहत्व n. nom. abstr. von सिंह *Löwe* MBu. 12, 4299. Ragu. 2, 38. Kathâs. 10, 42. Sarvadarçanas. 44, 15.

सिंहदंष्ट्र 1) adj. *löwenzähnig* R. 3, 55, 4. — 2) m. *a*) Bez. *einer Art von Pfeilen* R. 6, 20, 27. — *b*) N. pr. eines Asura Kathâs. 46, 38. eines Fürsten der Çabara 56, 22.

सिंहदत्त m. N. pr. eines Asura Kathâs. 47, 16. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 17.

सिंहदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Râǵa-Tar. 8, 1229. 1251. 1440. 3110. 3418.

सिंहद्वार f. *Palasthor* Kathâs. 78, 112.

सिंहद्वार n. dass. H. 993. Kathâs. 43, 175. 53, 3. 12. 98. 55, 37. 78, 15. 19. Râǵa-Tar. 6, 244.

सिंहद्वीप m. N. pr. einer *Insel* Târân. 83.

सिंहधत्त m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 113.

सिंहध्वनि m. *Löwengebrüll* so v. a. *ein herausforderndes Geschrei* Kumâras. 1, 57.

सिंहनाद m. 1) = स्वेडा AK. 2, 8, 2, 73. H. 1404. Halây. 4, 100. *a*) *Löwengebrüll* R. Gorr. 2, 111, 39. Hariv. 12726. Kathâs. 27, 154. Pañkat. 57, 14 (ed. orn. 48, 13). — *b*) *Schlachtgeschrei, ein zum Kampf herausforderndes Geschrei, Ausruf des gesteigerten Selbstvertrauens* Bhag. 1, 12. MBh. 5, 2869. 6, 5144. 13, 1019. Hariv. 4111. R. 3, 31, 42. 4, 31, 20. 5, 1, 1. 9, 22. 39, 9. 6, 72, 39. 84, 1. Prab. 85, 3. Bhâg. P. 6, 10, 22. 8, 10, 18. °रव MBh. 7, 466. R. 7, 7, 44. घम्बुद° Megh. 85, 22. भूयतां समेषं सिंहनादः so v. a. *ein Wort, das ich mit Selbstvertrauen ausspreche und auf das man sich verlassen kann*, Pañkat. 5, 4. Bez. *des Vortrags der buddhistischen Lehre* Lot. de la b. l. 401. Burnouf, Intr. 431. — 2) *ein best. Vogel* (nach Utpala) Varâh. Bṛh. S. 86, 20. — 3) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑–⏑–– Colebr. Misc. Ess. 2, 161 (VIII, 7). — 4) N. pr. *a*) eines Asura Kathâs. 47, 29. — *b*) eines Çâkja LJA. 2, Anh. II. Schiefner, Lebensb. 233 (3). — *c*) eines Fürsten von Malaja Mudrâr. 18, 16. — *d*) eines Feldherrn Hall in der Einl. zu Vâsavad. 32. — *e*) eines buddhistischen Heiligen (vielleicht eine Form des Lokeçvara) Vaǵrâsanasiddhanâmâlâ 9. Dharmasaṅgraha 31. Târân. 151. °साधन Titel eines Werkes ebend.

सिंहनादक 1) m. *Löwengebrüll* Hit. 194. — 2) f. °दिका *Alhagi Maurorum Tournef.* Çabdar. im ÇKDa.

सिंहनादनादिन् m. N. pr. eines Bodhisattva Burnouf in Lot. de la b. l. 301. Vâjtp. 22.

सिंहनादिन् m. N. pr. eines Mâraputra Lalit. ed. Calc. 393, 16.

सिंहनाकम m. ein Personenname Kathâs. 23, 32. 98, 25.

सिंहपरिपृच्छा f. Titel eines buddhistischen Sûtra Vâjtp. 42. Index des Kandshur 81.

सिंहपर्णिका f. *Phaseolus trilobus* Ratnam. 53.

सिंहपर्णी f. *Gendarussa vulgaris Nees.* oder *Adhatoda Vasika Nees.* Çabdâm. im ÇKDa. Mad. 1, 37. Râǵan. 4, 48.

सिंहपुच्छिका f. *eine best. Pflanze*, = चित्रपर्णिका Ratnam. im ÇKDa. Râǵan. 4, 37.

सिंहपुच्छी f. *eine best. Pflanze*, = क्रोष्टुविन्ना u. s. w. AK. 2, 4, 2, 11. *Glycine debilis* Ratnam. 52.

सिंहपुर n. N. pr. einer *Stadt* MBh. 2, 1028. Bâlabh. 2, 2, 20 (nach Benfey). Râǵa-Tar. 8, 2444. Hiouen-thsang 1, 162. fgg. 2, 320. 393. Vie de Hiouen-thsang 89. 261. Z. f. d. K. d. M. 2, 32.

सिंहपुरक m. *ein Bewohner von Simhapura* Varâh. Bṛh. S. 5, 42.

सिंहपुच्छी f. *Hemionitis cordifolia Roxb.* Râǵan. im ÇKDa.

सिंहप्रतीक adj. *das Ansehen eines Löwen habend* AV. 4, 22, 7.

सिंहप्रदीप m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 341, *b*, N.

सिंहबल m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 58,108.

सिंहभट m. N. pr. eines Asura Kathâs. 47,30.

सिंहभद्र m. N. pr. eines Lehrers Wassiljew 221. Târan. 200 u. s. w.

सिंहमति m. N. pr. eines Mâraputra Lalit. ed. Calc. 395,8.

सिंहमाया f. *ein best. Blendwerk* Hariv. 9378.

सिंहमुख 1) adj. *ein Löwengesicht habend.* — 2) m. N. pr. *a*) eines Wesens im Gefolge Çiva's Hariv. 14851. — *b*) eines Gelehrten Târan. 219. — 3) f. ई *Glycine debilis* Mad. 1,89. *Gendarussa vulgaris Nees.* Râgân. 4,47.

सिंहयाना f. ein N. der Pârvati (*mit Löwen fahrend*) H. 203.

सिंहरथ 1) adj. (f. या) *mit Löwen fahrend*, Beiw. und N. der Durgâ Hariv. 10246. Taik. 1,1,51. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,82.

सिंहराव m. 1) *Löwengebrüll* Spr. (II) 3866. — 2) *Schlachtgeschrei, ein zum Kampf herausforderndes Geschrei* MBu. 3,14333. — Vgl. सिंहनाद.

सिंहरश्मि (?) m. N. pr. eines Mannes Vie de Hiouen-thsang 218. 261.

सिंहराज् m. = सिंहराज (Grammatiker) Pischel, De gramm. pr. 40.

सिंहराज m. N. pr. eines *Fürsten* Râga-Tar. 6,176. 304. eines Prâkrit-Grammatikers Pischel, De gramm. pr. 39. fgg.

सिंहरोमिका f. N. pr. eines Dorfes Râga-Tar. 3,462.

सिंहर्षभ (सिंह + ऋषभ) m. *ein edler Löwe* R. Gorr. 1,49,3.

सिंहल 1) m. *a*) pl. *die Bewohner von Ceylon* AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (56). MBu. 1,6684. 2,1271. 1894. 3,1989. 7,798. Varâh. Bṛh. S. 14,15. Gjotishattva im ÇKDa. Kathâs. 56,63. fg. 67,52. Râga-Tar. 1,295. Mârk. P. 58,27. fg. *die Insel Ceylon* Bhâg. P. 5, 19,20 (neben लङ्का). सिंहलादीन्द्वीपान् Râga-Tar. 3,386. द्वीपे सिंहले Çatr. 10,112. सिंहलपति Kathâs. 81,32. सिंहलाधिप Varâh. Bṛh. S. 11,60. सिंहलाकर adj. *auf Ceylon gefunden werdend* 81,2. सिंहलोद्भव Râga-Tar. 1,294. — Burnouf, Intr. 223. Hiouen-thsang 1,218. 2,124. fgg. Vie de Hiouen-thsang 183. 194. Târan. 44. 221. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,32. 339, *b*,46. — *b*) N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 223. fg. Hiouen-thsang 2,132. Vie de Hiouen-thsang 198. — 2) f. या *die Insel Ceylon*; s. °स्थान. — 3) n. *a*) *Zinn* H. 1042. *gelbes Messing* (रीति) Râgân. im ÇKDa. सिंहल unsere Hdschrr. 13,28. — *b*) *Zimmet* oder *Cassia-Rinde* (त्वच) Râgân. im ÇKDa. सैंहल unsere Hdschrr. 6,172. — Vgl. सैंहल.

सिंहलक adj. *zu Ceylon in Beziehung stehend, ceylonisch:* शाक Varâh. Bṛh. S. 81,2. द्वीप so v. a. *Ceylon* Verz. d. Oxf. H. 137, *a*, N. 2.

सिंहलद्वीप m. *die Insel Ceylon* Kathâs. 72,319. 81,32. Hit. 63,10. 120,6. Târan. 45. 83. fg. 151. 156. 263. Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,3. Burnouf, Intr. 224.

सिंहलम्ब N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,42.

सिंहलास्था f. *eine Art Pfeffer*, = सैंहली Râgân. 6,18.

सिंहलास्थान m. *ein der Weinpalme ähnlicher Baum* Çabdam. im ÇKDa.

सिंहलील m. *quidam coeundi modus* Ratim. im ÇKDa.

सिंहवक्त्र 1) m. N. pr. eines Râkshasa (*Löwengesicht*) R. 6,84,12. — 2) n. *a*) *Löwengesicht* Verz. d. Oxf. H. 202, *b*, 6. — *b*) N. pr. einer Stadt Târan. 130 (Conj. für °वक्त्र).

सिंहवत्स m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 89.

सिंहवर्मन् m. ein Personenname Kathâs. 19,58. 62,2. Daçak. 52,9.

सिंहवाह adj. *auf einem Löwen reitend* Bhâg. P. 8,11,15.

सिंहवाहन adj. (f. घी) dass.; f. ein N. der Durgâ H. 203, Schol.

सिंहवाहिन् adj. dass.: Durgâ Devi-P. 45 nach ÇKDa.

सिंहविक्रम m. 1) *Pferd* H. ç. 177. — 2) N. pr. eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 59,117. = चन्द्रगुप्त LIA. 2,404. N. pr. eines Diebes in Simhaladvipa Kathâs. 72,319.

सिंहविक्रान्त 1) m. *Pferd* Hân. 52. Çabdam. im ÇKDa. — 2) n. *a*) *Löwengang:* °गामिन् Vjutp. 10. — *b*) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2,164, *b*.

सिंहविक्रीडित (– ⏑ – – ⏑ – ⏑ –) 1) n. *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – – ⏑ – – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – Ind. St. 8,398. — 2) m. *a*) *eine best. Meditation* Vjutp. 16. — *b*) N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 22.

सिंहविजृम्भिता f. *eine best. Meditation* Vjutp. 17.

सिंहविद्या f. *Glycine debilis* Râgân. im ÇKDa.

सिंहविष्टर m. n. wohl = सिंहासन *Thron* Râga-Tar. 3,413.

सिंहव्याघ्र *der Löwe und der Tiger*, ein philosophischer terminus Verz. d. Oxf. H. 241, *a*, No. 590. 242, *a*, No. 593. fgg. Verz. d. B. H. 201, *a*, 3. °टिप्पणी Notices of Skt Mss. 1,295. °रूपक 287. fgg.

सिंहश्री f. ein Frauenname Kathâs. 23,49.

सिंहसंहनन adj. *von kräftigem und edlem Körperbau* AK. 3,1,12. H. 355.

सिंहसाहि m. N. pr. eines *Fürsten* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13, Cl. 51.

सिंहसेन m. N. pr. eines Mannes MBu. 7,650. des Vaters des 14ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi H. 37.

सिंहस्कन्ध adj. *löwenartige Schultern habend* MBu. 1,5943. R. 2,67, 3. R. Gorr. 2,108,24.

सिंहस्वामिन् (श्री°) m. N. eines dem Simharâga zu Ehren errichteten Heiligthums Râga-Tar. 6,304.

सिंहहनु 1) adj. *Kinnbacken eines Löwen habend* Vjutp. 9. — 2) m. N. pr. eines Çâkja, des Grossvaters von Çâkjamuni, Lalit. ed. Calc. 176,12. Schiefner, Lebensb. 233(3). LIA. 2, Anh. II. Vjutp. 22.

सिंहहात m. N. pr. eines Fürsten (*Löwenauge*) Kathâs. 66,29.

सिंहाचल m. N. pr. eines *Berges* (धवल): °माहात्म्य Mack. Coll. 1,89.

सिंहाचार्य m. N. pr. eines Astronomen Kern in der Vorrede zu seiner Ausg. von Varâh. Bṛh. S. 53; vgl. Weber, Gjot. 10.

सिंहाजिन (सिंह + अजिन) m. ein Personenname Schol. zu P. 5,3, 99 und zu Kâr. 3 zu P. 4,3,60.

सिंहाण n. = शिंहाण *Rotz* Hin. 194. °क m. dass. H. ç. 105 (°नक). Suçr. 1,84,10. न क्रियासु मेध्यसिंहाणार्क (v. l. सिङ्घा°) मुञ्चेत् Karaka 1, s. 2,2. °प्रस्रवण 7. Schol. zu Kâç. Ça. 23,3,13. — Vgl. सिङ्घाण.

सिंहाय् (von सिंह), °यते *sich wie ein Löwe gebärden* Spr. (II) 4126. 7042.

सिंहार्क (सिंह + अर्क) m. *die im Löwen stehende Sonne* Weber, Kṛshṇaj. 226.

सिंहावलोक m. *ein best. Metrum: 4 Mal 16 Moren* Colebr. Misc. Ess. 2,157 (III,31).

सिंहावलोकित n. *des Löwen Art und Weise zu blicken:* मृगयाल°

adj. Bhāg. P. 3,2,23. instr. °नेन und °न्यायेन *so, dass man bald vorwärts, bald rückwärts schaut, d. i. bald weiter greift, bald auf etwas Abgemachtes wieder zurückkommt* Comm. zu TS. Prāt. 2,51. 4,4. 13,3. 15. zu Çāṅkh. Br. 13,6. 9. 16,1. Nilak. zu MBh. 3,14176.

सिंहावलोकित n. dass.: पुनरुक्तमतिक्रान्तं यच्च सिंहावलोकितम् Gaṇit. 2,102. °न्यायेन Ind. St. 8,329.

1. सिंहासन (सिंह + 2. सद) n. 1) *Löwensitz* so v. a. *Thron* AK. 2,8, 2,21. H. 717. Hālā. 2,268. MBh. 2,2058. 5,5006. R. 1,4,26. Rāgh. 4, 4. 18,39. Milav. 11. Rāja-Tar. 1,80. 3,331. 4,470. 5,347. Pañcat. 157,24. Hit. 77,22. Vet. in L.A. (III) 1,13. Ind. St. 13,313. Hiouen-thsang 1,67. 193. 250. सिंहासनस्थ भट्ट॰, °गृण R. 5,89,13. °स्थ MBh. 5,5012. Weber, Rāmat. Up. 300. Pañcat. 159,10. fg. °गत R. Gorr. 2,35,2. 4, 23,7. सिंहासनार्धभाज् Rāgh. 17,7. रत्न° Kathās. 18,44. रत्नमिश्रित° Weber, Rāmat. Up. 323. नागफणोत्तिप्तसिंहासनविधेदुषी Rāgh. 15,33. Als Titel von Erzählungen: °द्वात्रिंशति Gild. Bibl. 368 (°ती gedr.). °द्वात्रिंशतिका Verz. d. Cambr. H. 9. 11. °द्वात्रिंशत्काया Notices of Skt Mss. 1,70. °द्वात्रिंशत्पुत्रिकावार्ता Verz. d. Oxf. H. 132, *a*, No. 326. — 2) Bez. *einer best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 234, *a*, 23.

2. सिंहासन (wie oben) m. *quidam coeundi modus* Rati. im ÇKDr.

सिंहासनचक्र n. Bez. *eines best. astrologischen Diagramms* (चक्र) Jyotistattva im ÇKDr.

सिंहास्य (सिंह + आस्य *Gesicht*) 1) m. *a*) *ein best. Fisch* Wilson, Vishṇus. 256; vgl. सिंहतुण्ड. — *b*) *Gendarussa vulgaris Nees.* AK. 2, 4,2,22. *Bauhinia variegata* Rājan. 157. — *c*) Bez. *einer best. Stellung der Hand* Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 31. 202, *a*, 11. *b*, 8. — 2) f. आ *Gendarussa vulgaris Nees.* oder *Adhatoda Vasika* (वासक) *Nees.* Mad. 1,37.

सिंहिका (von सिंही) f. 1) *Gendarussa vulgaris* Rāgān. 4,47. = वृहती 22. — 2) N. pr. einer Tochter Daksha's, Gattin Kaçjapa's (auch Tochter Kaçjapa's und Gattin Viprakitti's) und Mutter vieler Asura, insbes. des Rāhu, MBh. 1,2530. 2539. Harīv. 213. 9498. VP. 122, N. 19. 124. 148. Bhāg. P. 6,6,35. 18,13. °तनया: MBh. 3,13926. °सूनु d. i. Rāhu Çaṅkar. im ÇKDr. Spr. (II) 5820. °तनय desgl. Z. d. d. m. G. 27,70. — 3) eine Form der Dākshājaṇī Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 23. fg. — 4) N. pr. einer Rākshasī R. 1,3,27. 4,31,38. 5,8,1. 56,62. — Vgl. सैंहिकेय.

सिंहिकेय m. Harīv. 12867 (in der neueren Ausg.) und Ind. St. 2,361 (schon von Weber beanstandet) fehlerhaft für सैंहिकेय.

सिंहिनी (von सिंह) f. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Wilson, Sel. Works 2,22. 33.

सैंहिक्य und सिंहिल्य m. Hypokoristika von सिंह P. 5,3,81, Schol.

सिंहीकर् (सिंह + 1. कर्) *in einen Löwen verwandeln* MBh. 2, 1426. 3,10643. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,154.

सिंहीभू (सिंह + 1. भू) *in einen Löwen verwandelt werden* Kathās. 22,142. 96,39.

सिंहीलता f. = सिंही *die Eierpflanze* Bhāvapr. im ÇKDr.

सिंहेन्द्र (सिंह + इन्द्र) m. *ein mächtiger Löwe* Pañcat. 1,7,37.

सिंहोद्धता f. *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ ⏑ – ⏑ – ⏑ – – Ind. St. 8,387.

सिंहोन्नता f. dass. Colebr. Misc. Ess. 2,161 (IX,4). Ind. St. 8,387.

सिकता f. 1) *Gries, Kies, Sand;* meist pl. Taitt. 3,5,2. Siddh. K. 248, *a*, 5. Kāç. zu P. 1,2,53. AK. 3,4,24,76. H. 1089. an. 3,313. Mān. 1. 171. Hālā. 3,48. Rāgān. 13,141. AV. 7,110,2. 11,3,12. शर्करा: सिकता यस्मान: 7,21. VS. 18,13. TS. 5,2,2,2. 6,1. TBr. 1,1,3,1. सिकताभिरनुकिरति Çat. Br. 3,5,4,26. 6,1,4,12. ते सिकते प्रुक्ता च कृक्ता च 7,3,4,38. 43. 5,2,39. 10,6,4,1. Kāty. Çr. 17,3,13. 18. 26,2,10. Kātj. 26. 35. 69. MBh. 2,2624. 2625. 7,270. 2215. R. Gorr. 1,79,38. Suçr. 1,134,18. 167,11. Kir. Nitis. 14,20. 19,11. Spr. (II) 2412 5837. Pañcat. II,62 (सिकता रे° mit der ed. Bomb. zu lesen). Kathās. 40,16. 19. Mālav. P. 15,71. सिकता सशर्करा Varāh. Bṛh. S. 54,15. 60,7. बकुलै प्रायिकम् एका च सिकता (*Sandhorn*) तैलदाने यसमर्थेति यथवत्सूत्रे भाष्यप्रयोगात् Suçr. K. 248, *a*, 5. 7. सिकतोत्तर *kiesig* Āçv. Gṛhj. 2,8,6. °सेतु Spr. (II) 6515, v. l. Kathās. 40,12. am Ende eines adj. comp. (f. आ) MBh. 3,8297. R. 5,16,25. Çāk. 56. Vikr. 79. Varāh. Bṛh. S. 54,13. 44. Kathās. 56,20. *Sandboden* P. 5,2,105. H. an. (सैकते zu lesen). Mān. सिकता Prāb. 101,15 fehlerhaft für सिकतिल. — 2) *Gries als Krankheit* H. an. Suçr. 1,120,11. — 3) pl. Bez. eines Ṛshi-Geschlechts MBh. 7,8728. 12,774. 6143. Harīv. 11533. सिकता निवावरी शर्षिगणा: angebliche Verfasser von RV. 9,86, 11—20; vgl. शर्षिगणा: सिकता निवारीरुद्भिरस: (I) Ind. St. 3, 244, *a*. — Vgl. सैकत.

सिकताव n. nom. abstr. von सिकता *Sand* Rāgh. 15,22.

सिकतामय (von सिकता) adj. *griesig, sandig* AK. 1,2,2,9.

सिकतामेह m. *eine Harnkrankheit: sandiger Niederschlag im Harn* Wise 360. Suçr. 1,263,12. Çāṅg. Saṅg. 1,7,13.

सिकतामेहिन् adj. *an der eben genannten Krankheit leidend* Suçr. 2,78,1.

सैकतावत् (von सिकता) adj. *griesig, sandig* P. 5,2,105. AK. 2,1, 11. AV. 1,17,4.

सिकतावर्त्मन् *eine best. Krankheit des Augenliedes* Çāṅg. Saṅg. 1,7,87.

सिकतासिन्धु N. pr. einer Oertlichkeit Rāja-Tar. 4,279.

सिकतिन s. सिकतिल.

सिकतिल (von सिकता) adj. *kiesig, sandig* P. 5,2,105. AK. 2,1,11. Mān. 1. 171. नदीतीर Spr. (II) 5039. कनकसिकतिलस्थली Prāb. 101, 15 nach der richtigen Lesart (सिकता im Text, सिकतिन der eine Schol.; त्र gehört nicht zum Verse).

सिकत्य (wie oben) adj. dass. VS. 16,43.

सिक्त s. u. सिच्. Davon °ता f. *das Begossenwordensein:* तरोरिवार्कतापेन नेशाम्बुलवसिक्तता (यत्तर्धीयते) Rāja-Tar. 3,266.

सिक्ता f. = सिकता Rāgān. 13,141.

सिक्ति (von 1. सिच्) f. *das Giessen, Ausgiessen* RV. 10,100,11. रेतस: Ait. Br. 2,38.

सिक्थ्य Uṇādis. 2,7. 1) *der Satz von gekochter Reisbrühe:* तण्डुलानां सुसिद्धानां चतुर्दशगुणे जले । रस: सिक्थ्यैर्विरहितो मण्ड इत्यभिधीयते ॥ Bhāvapr. im ÇKDr. unter मण्ड. Suçr. 1,229,14. °क्लेद 170,6. 2,119,1. am Ende eines adj. comp. (f. आ) 230,1. 1,229,15. — 2) m. *ein Mundvoll gekochten Reises, in eine Kugelform geknetet,* Taitt. 3,3,201. H. an. 2, 223. Mān. th. 14. Viçva bei Uṇādis. zu Uṇādis. 2,7. Kāçikā. 81,28 (nach

Auswahl). भक्त° dass. Halâj. 5,48. °हृद Kathâs. 108,77. प्राग्भुक्तसिक्थे (neutr. du.) 80. — 3) n. *Wachs* Taik. H. an. Med. Viçva a. a. O. Râéân. 13,77. Verz. d. Oxf. H. 105,b,25. Kâlikâkhaṇḍa 2,144. 3,22. — 4) n. *vierzig Perlen im Gewicht von einem* Dharaṇa Vaṇîn. Bṛh. S. 81, 17 (vgl. v. l.). — 5) n. *Indigo* H. an. Viçva a. a. O.

सिक्थक 1) = सिक्थ 1) am Ende eines adj. comp.: घ° Mân. 11,9. घनसिक्थिका s. — 2) भक्त° = सिक्थ 2) AK. 3,4,8,5. — 3) n. *Wachs* AK. 2,9,108. H. 1214. Halâj. 2,400. Râéân. 13,77. Bâla im Comm. zu Naish. 3,122. Soḍh. 2,153,1. Vaṇîn. Bṛh. S. 26,8. — Vgl. मधु°.

सिक्य m. *Krystall* Çabdaratn. bei Wilson.

सिक्यडी und सिक्युडी f. *eine best. Pflanze* Râéân. 4,167. — Vgl. शिक्युडी.

सिङ्गापिदि m. N. pr. eines Dichters Z. d. d. m. G. 27,95.

सिङ्गभट्ट m. N. pr. eines Autors; davon °भट्टीय *ein von ihm verfasstes Werk* Verz. d. Oxf. H. 279,b,41.

सिङ्गणदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 199,b, No. 471.

सिङ्गाण m. = शिङ्गाण *Rost:* लोह° Schol. zu Kâç. Ça. 15,3,19.

सिङ्गाणक m. = शिङ्गाणक *Rotz* Schol. zu Kâç. Ça. 20,3,13.

सिच्, सिञ्चति, °ते Dhâtup. 28,140 (तृप्णे). P. 7,1,59. Vop. 13,1. सिषेच, सिषेचे, in der älteren Sprache सिसिचतुस्, सिसिचे; aor. असिचत्, med. असिचत und असिक्त P. 3,1,53. fg. Vop. 8,91. 13,1. सेक्ष्यति, सेक्ता vgl. Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10). pass. सिच्यते, (अभि) सेचि; सेक्तुम्; सिक्त्वा und सिच्य (episch). 1) *ausgiessen, begiessen; einschenken* (eine Flüssigkeit): उत्सम् RV. 1,85,11. 2,16,7. अवतम् 1,61,10. कुम्भान् 1,116,7. मधु AV. 5,22,3. 132,1. सेकेव कोशं सिसिचे पिबध्यै RV. 3,32, 15. सिन्धुर् वा रथ्येव सिस्रदश्वान् 4,43,6. 10,21,3. Vâlakh. 1,6. VS. 20,28. घर्मं पयः Çâṅkh. Br. 5,10,10. सर्पिर्वोदकं वा Kaṭh. Up. 4,15,1. अभिसिस्रुदकम् R. Gorr. 2,111,31. अम्भांसि रुक्मकुम्भेन मूर्ध्नि Bhaṭṭ. 19, 22. वाचि सत्यम् Spr. (II) 2376. अमृतमिव ते सिञ्चतु वचः Z. d. d. m. G. 27,28. अपि सिञ्चः कृशानो वं दर्पम् Bhaṭṭ. 8,92. सिषिचुस् R. 2,103,35. सुरायां सिच्यमानायाम् AV. 5,69,1. पूर्णं पूर्णेन सिच्यते 18,8,29. वारिधाराः सखीभिर्वदनेषु सिक्ताः Raghu. 16,66. सिञ्चस्तोयेन कौरवम् MBh. 8,80. वृतं पयसा Spr. (II) 980. Mṛicch. 27. Mâlav. P. 16,9. वाप्येवंसुंधराम् Râéa-Tar. 4,361. जलैर्यामान् so v. a. *mit Wasser versehen* 5,110. सिञ्चत्यः पुंसः *mit Wasser bespritzend* Bâlar. P. 4,6,25. 7,2,32. 9,18,8. सिषेच R. 4,22,24. सिषिचुस् MBh. 1,5153. 7,307. 1181. 1184 (श्री). R. 2,103,5. Mâlav. P. 66,27. Bâlar. P. 1,10,4. 11,30. सिषिचे MBh. 1,5422. R. 5,20, 1. असिचन् Kathâs. 26,57. सिक्ता MBh. 7,1177. Kathâs. 49,21. Vet. in LA. (III) 15,1. सिच्य Harîv. 7770. सिच्यमान इव द्रुमः M. 9,255. Spr. (II) 5099. सिक्ता राजमार्गाः MBh. 3,2015. R. Gorr. 1,78,6. 3,70,10. 76,32. 4,44,38 (मुषिक). Kâm. Nîtis. 19,60. Mṛicch. 104. Raghu. 1,70. 3,3. 12,5. Çiç. 84, v. l. (घ°). Spr. (II) 2488. 5176. 6691. Vaṇîn. Bṛh. S. 54,112. 53,26. 59,2. 69,16. Kathâs. 27,121. 34,14. Râéa-Tar. 5,376. Bâlar. P. 1,11,15. 4,7,41. (सपत्न्यस्ते) अवमानावसेकेन त्वया सिक्ताः Harîv. 7025. सिक्तसंमृष्ट gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. MBh. 5,7324 (सिक्त संमृष्टशोभितम् od. Calc.). Bhaṭṭ. 5,90. यस्य मूर्ध्नि (st. मूर्धानं) स्त्रीषधार्या। सिञ्चत्यो Paṇḍân. 3,15,9. ohne Object: शरदि मेघानां सिञ्चतामपि गर्ज्जताम् Spr. (II) 5141. — 2) namentlich den Samen *ausgiessen* RV. 6,70, 3. 7,33,13. AV. 11,5,13. उत्तानायां स्त्रियां पुमावेतः सिञ्चति Kâṭh. 20, 6. Mṛicch. Up. 2,1,5. स्वप्ने रेतः सिक्ता M. 2,181. 11,170. 173. रेतः सिषिचतुः कुम्भे Bâlar. P. 6,18,5. स्त्रियां सिञ्चति Ait. Up. 4,1. यदा वै स्त्रियै च पुंसश्च संतप्यते ऽथ रेतः सिच्यते Çat. Br. 3,5,3,16. रेतः सिक्तम् Ait. Br. 3,33. Çat. Br. 1,7,3,14. 11,4,2,7. — 3) *giessen* (Erz u. s. w.): वर्षम् AV. 11,10,13. Ait. Br. 4,1. TS. 2,4,12,3. 5,3,2. पुवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता RV. 6,70,3.

— caus. सेचयति *begiessen:* Bâhme Spr. (II) 1171. Vaṇîn. Bṛh. S. 55, 15. सेचित 21. राजमार्गेषु चन्दनोदकसेचितम् (so die neuere Ausg.) so v. a. राजमार्गाः °सेचिताः Harîv. 6282.

— desid. सिसिक्षति P. 8,3,61, Schol. Vop. 19,17.

— अन्वति *darüber hingiessen:* über eine Fussspur TBr. 1,4,2,6.

— व्यति, partic. °षिक्त häufig fehlerhaft für °षक्त. Ausser den unter सञ्ज् mit व्यति erwähnten Stellen (st. MBh. 10,7329 ist 13,7329 zu lesen) auch Harîv. 11799 nach der Lesart der neueren Ausg. st. व्यतिरिक्त der älteren; nach Nîlak. auch hier = मिश्रित.

— अनु *giessen in, auf* loc.): रेतः स्त्रियामनु षिच्यते AV. 6,11,2. कर्णे Liṭ. 8,8,3. Çat. Br. 3,8,2,7. Kâṭy. Çr. 6,6,4. घृतानुषिक्तं *begossen mit* TS. 5,2,2,4.

— अप *giessen auf* (loc.) Sarvadarçanas. 25,15 wohl fehlerhaft für अव oder उप.

— अभि, °षिञ्चति, अभ्यषिञ्चत् VS. Pâit. 3,63. P. 8,3,65. 66. 1) *hingiessen, begiessen, besprengen* RV. 1,121,6. मूलानं कोशमुदचाभि षिञ्च AV. 4,15,16. 5,57,3. 122,5. 136,3. 19,9,27. स्थाणुमुदकेन Çat. Br. 9,5, 2,14. अग्निं घृतेन 2,2,2,19. 4,3,16. 23. 5,2,2,12. Ait. Br. 3,36. यं दीक्षयत्यद्भिरभिषिञ्चति 1,3. Gobh. 2,1,7. 3,4,7. Âçv. Gṛihy. 1,11,10. Jâim. 1,230. मन्त्रपूतेन जलेन Ind. bei Sây. zu RV. 1,125,1. शरीराणि जलैः MBh. 3,9938. तं ते ऽभिषिषिचुर्बाणैर्मेघा गिरिमिवाम्बुभिः 7,1842. 4393 (med.). R. 1,38,14 (med.). शितशरशतैः, धारापातैः Mṛicch. 49. Kathâs. 6. 114. Bâlar. P. 9,10,46. Paṇḍat. 50,9. 10. Bhaṭṭ. 6,21. 15,3 (अभ्यषिञ्चस्तोयैः zu lesen). अमृताभिषिक्ता Kâdab. 29. जलेनाभिषिक्ताः (= संक्लिन्नाः, संतर्पिताः Comm.) Maitrâjan. 6,12. *hingiessen, sprengen:* अभ्यषिञ्चताम्भः, अभ्यषिक्त वारीणि पितृभ्यः Bhaṭṭ. 6,22. *besprengen* und zugleich *weihen* Kathâs. 14,66. 113,87. Râéa-Tar. 5,476. med. *sich begiessen:* जलेनाभिषिञ्चते (so ed. Bomb.) MBh. 12,8894. pass. dass.: मङ्क्षुवास्य त्रिस्थाने यो नरस्त्वभिषिच्यते 13,1702. — 2) *begiessen* (mit Wasser) zum *Zeichen der Weihe, weihen* AV. 3,22,6. 4,8,5. 18,1,9. 19,31,12. साम्राज्येन VS. 9,30. 10,1. TS. 3,1,2,11. TBr. 2,7,6,2. श्रिया 3,10,6,13. सौत्रामण्या Çat. Br. 12,8,3,1. तत्रेण 25. Ait. Br. 8,5. 7. 12. Çat. Br. 5. 2,2,18. fg. पृथौ वैन्ये मनुष्याणां प्रथमो ऽभिषिषिचे *wurde geweiht* 3,3, 4. येनैनमेतदभिषिञ्चति तस्याभिषिक्तस्य केशान्प्रथमान्प्रोप्यति 5,3,1. इदं ते राज्यमभिषिक्तो ऽस्मि 1,3,2,11. स्थापत्याय Paṇḍav. Br. 17,11,6. — MBh. 3,16912. 4,1139. 5,60. विचित्रवीर्यं राजानम् 3947. fg. R. 1,38,30. रामं युवराजानम् 2,2,19. 35,29. 44,15. 67,33. 72,27. R. Gorr. 2,3,20 (अभिषेक्ष्ये zu lesen). 22. 61,6. 3,53,7. 4,25,24. fg. Raghu. 17,13. 19,1. Vaṇîn. Bṛh. S. 48,50. 54. fg. Kathâs. 20,111. Mâlav. P. 25,3. Verz. d. Oxf. H. 268,b,3. Râéa-Tar. 5,413. 462. Bâlar. P. 1,15,38. 4,14,2. 5,9,16. 15,8. 9,4,31. आर्यपादुके acc. du. R. 2,115,24 (127,16. fg. Gorr.). राज्ये MBh. 1,3531. 5178. 14,72 (med.). R. 1,43,11. 71,14. R. Gorr. 2,5,21. Kathâs.

7,102. 20,215. Rāǵa-Tar. 5,287. Bhatt. 3,2 (med.). राज्येषु R. Gorr. 1, 73,18. लङ्काराज्ये R. Gorr. 1,4,101. यज्ञवीराज्ये Hit. 41,1. 112,15. साम्राज्ये Pras. 3,10. यौवराज्ये R. 2,52,22. Kathās. 30,57. Rāǵa-Tar. 5,22. सैनापत्ये MBu. 1,220. 3,14424. Yiga. 161. Kathās. 123,68. सर्वशापदप्रभुत्वे Pañcat. 63,17. लङ्कायाम् so v. a. लङ्काराज्ये R. 1,1,79. सौकाश्ये 71,19 (अभ्यषिञ्चम् mit der ed. Bomb. zu lesen). सप्तसु द्वीपेषु Mārk. P. 53,16. पतत्रीणामिन्द्रत्वेन (Nīlak. zerlegt इन्द्रत्वेनाभ्यषिञ्चत in इन्द्रत्वे नाभ्य° und erklärt ना durch नरः = हिरण्यगर्भः!) MBu. 1,1470. राज्येन R. 5, 89,16. 23 (लङ्कायाम्). सैनापत्येन देवानाम् MBu. 3,7036. 8,389. med. *sich weihen, sich weihen lassen:* अभिषिञ्चस्व MBu. 3,14414. देवानां सैनापत्ये (so ed. Bomb.) 14423. मङ्गलैः R. 2,23,30. राज्येन 101,9. एतद्वतकाराज्ये च देवदेवो वृषध्वजः । पुराभिषिषिंसिचे (!; die neuere Ausg. hat eine ganz andere Lesart) Harīv. 7822. st. °षिञ्चस्व fehlerhaft °षिच्यस्व Harīv. 4004 (°ञ्चस्व die neuere Ausg.). R. Gorr. 2,20,34 (°ञ्चस्व Schl.). राज्ये 119,33. राज्येन 110,7 (°ञ्चस्व Schl.). sogar in act. Bed. diese Form: अभिषिच्यस्व लङ्कायाम् — Vibhīshaṇam 5,92,2. — Vgl. अभिषेक fgg. und मूर्धाभिषिक्त (auch R. 2,26,13). — caus. 1) *begiessen:* तोयधाराभिषेचित Harīv. 6227. Pañcat. 3,9,15 (अभिषेचयतात्). 14,18. — 2) *weihen* Harīv. 2336. R. 2,22,12 (med.). 3,53,4. 13. 6,2,20. Rāǵa-Tar. 5,286. विद्यायाम् MBu. 1,1989. राज्ये Harīv. 12302. R. Gorr. 2,74,63 (आत्मानम् med.). 106,18. 4,8,53. Rāǵa-Tar. 1,70. 5,302. महाराज्ये MBu. 5,3946. यौवराज्ये 1,2118. 3,16912. Harīv. 12501. R. Gorr. 2,6,7. 9,33. Kiu. Nitis. 7,6. कौलपत्ये R. 7,59,2,39. प्राच्यां दिशि Harīv. 12509. लङ्कायाम् R. 6, 4,29. यौवराज्येन 2,9,2 (med.). °षेचितुम् (oder zum simpl.) Harīv. 6112. R. Gorr. 2,45,24. आत्मानम् *sich weihen lassen* R. 2,53,27 (med.). 79, a. 102,2. उर्व्याम् 72,53 (med.). med. allein dass.: शन्तनुः कनीयानभिषेचयां चक्रे Nīl. 2,10. act. in derselben Bed. R. 2,82,6. — desid. अभिषिषिक्षति Schol. zu P. 8,3,64. 112 und zu 8,3,64, Vārtt. 3. — intens. अभिसेसिच्यते P. 8,3,112, Schol.

— अन्वभि med. *sich von Jmd* (acc.) *weihen lassen* MBu. 12,2803.

— समभि 1) *begiessen, benetzen:* ता (नद्यः) मां समभिषिञ्चतु Harīv. 9318. — 2) *weihen* Kathās. 50,203.

— अव 1) *begiessen, hingiessen auf* (acc., loc.): अर्चिः Kāṭy. Ça. 4,4, 12. 18,4,2. शिरसी उदकुम्भेन Āçv. Gṛhj. 1,7,20. चात्वाले Kāṭy. Ça. 6, 6,12. पार्श्वदेशे Kauç. 44. 7. गोमूत्रेण 41. 88. Gobh. 2,2,16. °सिक्त *begossen, besprengt* MBu. 1,4983. 7730. 4,1639. 7,4394. 13,291. Harīv. 8440. R. 2,64,26 (66,26 Gorr.). 5,20,18. 49,12. Sarvadarçanas. 25,11. अवसिक्तेव (अवातिकेव! die neuere Ausg.) रोषेण Harīv. 7064. अवसिञ्चित (st. dessen अवसेचित 6,4434) dass. MBu. 7,7319. — 2) *ausgiessen:* अपामञ्जलिम् Gobh. 3,4,9. पीतशेषम् 10,19. — अवसिक्त Harīv. 4301 (in der neueren Ausg.) und R. 5,52,5 fehlerhaft für अवसक्त. Vgl. अवसेक fgg. und मूर्धावसिक्त. — caus. *begiessen, besprengen* MBu. 6,4424. 13,3036. Vaniu. Bṛh. S. 55,20.

— आ 1) *eingiessen, einschenken, einfüllen* ṚV. 3.48,2. आसिञ्चन्नोरुवनयः समुद्रम् 8,85,6. आ तू षिञ्च कण्वमत्तम् *giesse voll d. h. gieb reichlich zu trinken* 8,2,22. 9,7. 17,5. आ तु हि षिञ्च सोमं वीराय 32,24. 61,13. Vālakh. 5,3. रसमोषधीषु AV. 4,27,2. घर्मं पयः 7,73,6. अन्वन्युदकम् 6,100,2. मुखे Çat. Br. 3,5,3,3. रेतः 14,9,4,20. सर्पिः 2,1,4,5. Āçv. Gṛhj. 1,20,4. Çāṅkh. Gṛhj. 4,3. Kāṭy. Ça. 6,2,17. 8,13. 7,3,18. शीतास्वप्सूक्षाः Pān. Gṛhj. 2,1. med.: आ व इन्दुं क्रिविं यथा सिञ्च इन्दुभिः ṚV. 1,33,1. आ सिञ्चस्व जठरे मधु ऊर्मिम् *giess dir ein* 3,47,1 आसेचम् absol. Kāṭy. Ça. 5,4,16. partic. आसिक्त AV. 4,7,1. 12,3,24. Çat. Br. 12,1,3,23. पयोदकं प्रुक्षे प्रुक्षमासिक्तम् Kaṭhop. 4,13. — 2) *begiessen, besprengen:* ब्रह्माण्डं तरंगैः Spr. (II) 914. नेत्रैर्दिदिक्षुः शिखाः Bhāg. P. 3,22,28. 4,28,47. 5,20,19. 7,5,21. 8,9,11. 11,26. 10,5,14. 60,22. Pañcat. 3,14,36. अमृतेन मुतिम् Kathās. 47,112. — Vgl. आसिच्, आसेचन. — caus. *eingiessen, zugiessen:* Wasser Kauç. 68. 136. Āçv. Gṛhj. 2,8,15. 9,5. तप्तमासेचयेत्तैलं वक्त्रे श्रोत्रे च पार्थिवः (eine caus. Bed. anzunehmen ist nicht unerlässlich) M. 8,372. med. *sich aufgiessen lassen* Āçv. Ça. 1,8,2.

— अन्वा s. अन्वासेचन.

— अन्या *begiessen:* बलिशेषमद्भिः Gobh. 1,4,19. Sāṅkh. 1,164,10.

— अवा *eingiessen:* कंसे रसम् Gobh. 1,4,6.

— अभिपर्या *umgiessen:* सुचि Ait. Br. 7,5.

— व्या (*vertheilend*) *giessen* Āçv. Ça. 3,10,25.

— समा *zusammengiessen, — schütten* Kāṭy. Ça. 5,5,25. 8,8,33. Kauç. 17. Çat. Br. 3,2,3,1. Kāṭy. Ça. 18,3,5. 7. समासिञ्चतु ein damit anfangender heiliger Spruch Jāṭ. 3,282. ते मां समासिञ्चन्ति शास्तारः सौम्यं मधिव मक्षिकाः *so v. a. die giessen* (Weisheit) *in mich wie Bienen Honig* (in die Waben) MBu. 12,4585 = 13,2171. — Vgl. समासेचन.

— अभिसमा dass.: शास्त्युदकमुक्षोदकं चेकधा Kauç. 83.

— उद् 1) *aufgiessen, auffüllen; überfüllen:* उद्धा सिञ्चध्वमुर्वि वा पृणध्वम् ṚV. 7,16,11. 18,103,10. VS. 20,23. तद्वैक उत्सिच्य चर्कृषति Çat. Br. 12, 4,2,9. 1,1,4,13. Çāṅkh. Ça. 2,9,21. क्षीरोत्सिक्त, मधूत्सिक्त Kauç. 48. 82. घृतोत्सिक्त Çat. Br. 3,2,2,19. Kāṭy. Ça. 7,4,29. — 2) pass. *überlaufen* (von Flüssigkeiten beim Kochen): उत्सिच्यमाने पयसि Bhāg. P. 10,9,8. in übertragener Bed. so v. a. *übermüthig werden:* न धास्योत्सिषिचे मनः Raghu. 17,43. उत्सिक्त *überlaufend, überschwänglich:* वित्त Rāǵa-Tar. 6,150. मद् Bhāg. P. 3,17,29. भक्ति 10,84,26. धनुस् wohl so v. a. *zu bersten im Begriff stehend* Harīv. 1876. शेफस् *strotzend, gespannt* Kāraka 3,7. am Ende eines comp. *überfliessend von, sich nicht zu halten wissend vor, übermüthig gemacht durch:* वीर्यबलोत्सिक्त MBu. 1, 2491. R. 3,29,20. वीर्योत्सिक्त 1,21,13. 5,78,8. 6,103,7. मद° Vaniu. Bṛh. S. 16,29. पितामहवरोत्सिक्त R. 4,10,4. Rāǵa-Tar. 5,127. Bhāg. P. 3,17,22. 5,9,18. ohne Ergänzung *überkochend, sich überhebend, übermüthig* MBu. 1,5545 (उत्सक्त ed. Bomb., = उत्कर्षेण सर्वत्र व्याप्तः Nīlak.). 7,6050. Harīv. 2133. 4308. R. 5,9,56. Kathās. 18,86. Rāǵa-Tar. 3, 282. Bhāg. P. 4,14,5. 6,10,13. 8,10,24. °मनस् adj. (= उपप्लुतमनस्. मत्त, उन्मत्त u. s. w. Kuzl.) M. 8,74. — Vgl. उत्सिक्त, उत्सेक.

— अन्युद् = उद् 1): व्रतम् Çat. Br. 3,4,2,14. 14,3,2,25. घट्टिः Çāṅkh. Gṛhj. 3,8.

— उपोद् dass.: व्रतम् Çat. Br. 3,2,2,19.

— प्रोद्, partic. प्रोत्सिक्त *sich stark überhebend, gar zu übermüthig* Sāh. D. 130,2.

— समुद्, partic. समुत्सिक्त *überfliessend von, übermüthig gemacht durch:* वलदर्प° MBu. 1,2412. R. 4,45,4. 6.

— उप *begiessen, aufgiessen* ṚV. 4,57,6. ग्रलायेणा AV. 6,57,2. य: क्षीरमुपसिञ्चात्यक्षरेति 9,6,40. Çat. Ba. 14,9,2,22. मूलेषु Kâṭh. Çr. 2, 7,20. 6,3,13. 19,3,18. उदकेन 25,2,9. महाभूद उपसिञ्चति पदो Kauç. 17. 49. 62. 64. व्यञ्जनेरुपसिक्ते P. 6,4,26. — Vgl. उपसेक्तृ fg.

— नि, °षिञ्चति, न्यषिञ्चत्, निषिषेच Voc. 8,45. 13,1. 1) *nieder —, eingiessen, aufgiessen:* घृत: ṚV. 5,83,6. 8. तीव्रं सुतं पवित्रं नि षिञ्चम् 10,27,2. Çat. Ba. 1,7,4,4. 14,9,2,15. Kâṭh. Çr. 4,1,19. 5,4,12. उदपात्रम् 6,10,4. कुशेषु Çâṅkh. Çr. 4,4,7. नस्तो दक्षिणत: *in das rechte Nasenloch* Gaut. 1, 19. fg. मातरि रेत: Kauṣh. Up. 1,2. उरसि लाजम् R. Gorr. 2,63,3. घृतं त्वचि Kauç. 3,20. घास्ये वह्निना द्रवमाणां कालायसम् Bhâg. P. 5,26,29. कस्माद्धोत्रया घस्तमपां कुम्भे निषिञ्चसि MBh. 13, 4816. यस्य त्रया — तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशमूचिविद्धे Çiç. 89. निषिक्त ṚV. 1,71,8. पुष्करे मधु 8,61,11. Soça. 1,264,16. Mṛicch. 76,14. रेतस् Kumâras. 2,37. — 2) *begiessen:* पलाशान् Spr. (II) 1391. Vṛkṣ. 23. स्तनद्वयं बाष्पबिन्दुभि: Bhâg. P. 6,14,32. निषिक्त ṚV. 2,12. — निषिक्त Vaśiṣ. Bḥm. S. 2,5 nach Kern fehlerhaft für नियक्त. — Vgl. निषिक्तपा, निषेक fgg. — caus. *begiessen:* पलाशान् R. 2,63,9. *einweichen, netzen* Soça. 2,353,21. — intens. निसेसिच्यते P. 8,3,112, Schol.

— सं नि *eingiessen:* य: स्रोत्रयोरमृतं संनिषिञ्चेत् (so ed. Bomb.) MBh. 1,2246.

— निस्, निष्षिञ्चति P. 8,3,65, Vârtt. 1. *ab —, weggiessen:* निष्पिद्धेतदुष्टमदुष्टमभिपर्यासिञ्च Âit. Br. 7,5. नि:पिक्तमस्मात्पापकम् Nir. 6,1.

— परा *weggiessen, wegschütten;* überh. *wegwerfen, beseitigen:* मा नो गयमारे अस्मत्परा सिच ṚV. 2,31,2. परा तत्सिच्यते राष्ट्रम् AV. 5,19,6. TS. 2,5,5,1. विषूचीनं रेत: परासिञ्चति 5,2,6,2. पूर्णपात्रम् Çat. Ba. 1, 5,2,15. 12,4,2,9. 9,2,6. मार्कं प्रत्रा परासिचम् Âçv. Çr. 1,11,8. 6,12,14. मा परासेचि मत्पय: Kâṭh. Çr. 25,5,28. Liṭ. 2,1,7. अपपरासिक्त (रेतस्) Çat. Ba. 7,3,1,11. परासिक्तं विपुलं स्वं बलीवम् *bei Seite geschoben, unschädlich gemacht* MBh. 5,1330. 858.

— परि, °षिञ्चति, पर्यषिञ्चत् VS. Prât. 3,45.62. P. 8,3,62.65. 1) *umgiessen* (in ein anderes Gefäss), *einschenken:* घृतं वा परि षिच्यते सोम: ṚV. 4,49,2. घर्म: 8,9,4. 9,11,3. 17,4. 78,3. 107,1. AV. 10,8,29. VS. 20, 28. परिषिक्त ṚV. 1,108,4. 2,18,6. 4,1,19. मधूनि 1,177,3. 4,35,9. 6, 68,1. — 2) *umhergiessen, übergiessen:* घव्यो वारेषु ṚV. 9,63,10. TS. 5,4,4,1. 2. TBr. 2,1,11,1. Çat. Ba. 2,6,1,41. पयसा 12,8,3,3. 14,3,1, 25. वेदिम् Kâṭh. Çr. 5,9,14. 25,4,5. Çâṅkh. Çr. 1,15,11. Liṭ. 1,6,7.8. पिण्डान् Gobh. 4,3,26. Âçv. Gṛhy. 1,22,21. गुल्फान् Kauç. 39. 86. 88. MBh. 1,4247. Harîv. 11758. वृथ्या पवायि: परिषिच्यमान: R. Gorr. 2, 64,20. 83,38. Soça. 1,101,13. Spr. (II) 2229. Bhâg. P. 10,75,16. घोदनम् P. 8,1,5, Schol. °सिञ्चिता (!) Sarvad. P. 4,16,a. परिषिक्त Liṭ. 5, 2,9. — Vgl. परिषेक fgg. — caus. *benetzen, besprengen; einweichen* Soça. 1,42,18. 47,18. 2,342,10. शीताभिरद्भिरच्छीलामिमां च परिषिञ्चय (warum nicht °षेचय?) MBh. 1,4300. — desid. परिषिषिक्षति P. 8,3, 64, Schol.

— प्र 1) *ausgiessen, vergiessen:* Samen Çat. Ba. 2,1,4,5. 2,4,15. Âçv. Çr. 2,16,19. Liṭ. 4,12,17. स्कम्भस्तदये प्रासिञ्चदिरण्यं लोके धंसत्रा AV. 10,7,28. घृतायी घर्मम् TS. 5,4,8,2. Gobh. 1,3,2.13. Kauç. 40. 122. सकृत्प्रसिञ्चत्युदकम् Jâim. 3,3. उदपानात्र कुम्भात्र प्रासिञ्चन्क्षत्रो ग्रलम् MBh. 5,2999. यतोयं तस्मिन्नेव (तोये) प्रसिच्यते 12,10712. कथं नु (wohl न zu lesen) म्रियेत न च म्रवेत न च प्रसिच्येदिति रक्षितव्यम् *ausgiessen* 3,14767. द्रोण: प्रसिच्यते *ergiesst sich* Soça. 2,8,6. प्रसिक्त *ausgegossen* Çiç. 152. संक्षोभनोपधिरसो नु हृदि प्रसिक्त: Uttarar. 44,4 (38,4). — 2) *begiessen:* वह्निं वारिभि: Harîv. 12227. घाज्यप्रसिक्तो हि यथा हुताश: MBh. 8,4231. उदकमानीय त्रि: प्रसिच्योदपात्रम् *füllend* Kaṭh. Up. 2,7. इत्येभिर्हेतुभिस्तस्य त्रिभिश्चित्तं प्रसिच्यते *wird begossen so v. a. erquickt* MBh. 12,839. — Vgl. प्रसेक. — caus. *eingiessen:* पितृपात्रेषु प्रेतपात्रं प्रसेचयेत् Jâim. 1,252. पात्रत्रये प्रेतपात्रमर्घ्यं च प्रसेचयेत् Mâṇ. P. 30,16.

— संप्र pass. *sich ergiessen:* स कृष्णेनाभिपतता तोयेनेव यमुनाह्रद: । संप्रासिष्यत (zu lesen °सिच्यत: संप्राशिर्यत die neuere Ausg., womit °शीर्यत gemeint ist) वेगेन भिद्यमान इवाम्बुद: ॥ Harîv. 3654. मांसादेव ततात्तिप्रं शोणितं संप्रसिच्यते Soça. 1,327,5.

— प्रति 1) °षिञ्चति *zugiessen, beimischen* TBr. 2,1,2,2. Âçv. Çr. 1, 3,6. Kauç. 68. — 2) °सिञ्चति *eine Begiessung —, eine Besprützung erwiedern* Bhâg. P. 10,90,9. — वृतं वृतं प्रति सिञ्चति *er begiesst einen Baum nach dem andern* P. 1,4,90, Schol. gehört zum simpl. — Vgl. प्रतिषिच्य, प्रतिषेक.

— वि *vergiessen* TBr. Comm. 3,557,6 v. u. विषिक्त *vergossen:* Samen Çat. Ba. 11,5,4,16. — व्यषिच्यत MBh. 13,1952 fehlerhaft für म्यषिच्यत, wie die ed. Bomb. liest. — intens. विसेसिच्यते Voc. 6, 48. 20,4.

— अनुवि *nachgiessen* nach (acc.) AV. 8,10,23.

— सम् 1) *zusammengiessen, begiessen* ṚV. 10,17,13. AV. 2,26,4. सं मा सिञ्चतु प्रजया 7,33,1. Soça. 2,344,1. संसिक्त *begossen, besprengt* MBh. 1,6785. 6,1772. 9,914. 11,514. 12,6330. R. 1,5,8. 2,80,14. R. Gorr. 2,87,17. Kir. Nitis. 16,26. Spr. (II) 5788. Kathâs. 7,7. 33,85. 44,74. 107,43. Râga-Tar. 4,329. Bhâg. P. 10,5,6. 41,22. Pañcar. 3,8, 11. — 2) *giessen* so v. a. *bilden:* सर्वं संसिच्य मर्त्यम् AV. 11,8,13. — Vgl. संसिच्, संसेक.

2. सिच् f. 1) *Saum, Zipfel eines Gewandes* Halâj. 2,396. पितुर्न पुत्र: सिचमा रभेत ṚV. 3,53,2. माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि 10,18, 11. AV. 14,2,51. सिचि वधीते Çat. Ba. 3,2,4,18. सिच्यवगूहति Kauç. 32. उत्तर° 58. 88. Pâṇ. Gaṇ. 3,15. = वस्त्र H. 666. — 2) du. *die beiden Ränder* so v. a. *Horizont:* उभे सिचौ यतते भीम ग्रञ्जन् ṚV. 1,95,7. — 3) *die äussersten Reihen —, Flügel einer Heeresaufstellung:* राजेव पृथौ नयसि त्वमित्सिचौ ṚV. 10,75,4. यमित्राणामूर्: सिच: AV. 11,9,18. 10,20.

3. सिच् ungenaue Schreibart für शिच् *Netz* Bhâg. P. 6,12,8 (सिच् ed. Bomb.).

सिचय m. *Gewand, Tuch* Taitt. 2,6,23. H. 666. Halâj. 2,392. Vṛkṣ. 7. Râga-Tar. 1,1. Wilson, Sânkhyak. S. 174. घोन° (vgl. घोनांशुक) Pâṇ. Gaṇ. 3,3,28.

सिचि gaṇa पवादि zu P. 8,2,9. davon °मत् adj. ebend.

सिचिता f. *langer Pfeffer* Çabdam. bei Wilson, सिचिता ÇKDa. nach derselben Autorität.

सिञ्चायत्य n. copulative Zusammensetzung gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. सिञ्चास्य v. l. सिञ्चा vielleicht = सिचता.

सिञ्जित s. u. शिञ्ज्. नूपुरसिञ्जितानि Kumâras. 1,34.

सिट्, सेटति (घनादौ) Dhâtup. 9,18. — Vgl. शिट्, सुट्.

सिण्डाकी f. = शिण्डाकी Sucr. 1,224,16. 233,5.

1. सित (von 3. सा) partic. *beendigt* AK. 3,2,48. H. an. 2,206. Med. t. 70.

2. सित partic. *gebunden* s. u. 1. सि.

3. सित (aus 2. धसित, wie सुर aus धसुर) Unâdis. 3,89. 1) adj. (f. धा) a) *weiss, hellfarbig, hell* Nir. 9,26. AK. 1,1,4,22. 3,4,48,83. H. 1392. an. 2,206. Med. t. 70. Hâlâs. 4,47. वर्णोनीलिपीतसितारुणैः R. 2,94,20. Ind. St. 2,258. 278. 3,273. Sucr. 1,296,7. Varâh. Bṛn. S. 3,19. 42. 12, 8. 24,35. 53,96. Rinder, Pferde M. 11,130. MBh. 3,11893. R. 5,11,7. 12,24. Katuis. 22,182. Bhâg. P. 3,2,29. Bart, Haupthaar MBh. 1,3471. 5320. Bhâg. P. 2,7,26. Zähne 3,13,27. 33. Augen Hâlâ. 2,283. Blüthen Varâh. Bṛn. S. 15,1. AK. 2,4,2,31. 3,25. Senf Pâraśar. 158,3 (ed. orn. 57,13). Reis Spr. (II) 2635. Pâṇân. 3,9,1. किंसित (= प्रभु Comm.) Bhâg. P. 5,3,6. °तटसानुकन्दर MBh. 3,1663. सितोच्चशैलोत्तमशृङ्ग R. Gorr. 2,12,38. Gewand, Tuch Spr. (II) 2426. 4102. Vish. 53. धङ्राग Kumâras. 7,32. Gesicht bei Kindern Spr. (II) 7423. कोपस्तिमितसिताधर (*bleich*) Râǵa-Tar. 3,293. 5,324. Sonnenschein Racu. 3,70. Katuis. 18,4. 403. Bhâg. P. 1,10,17. 11,28. 3,10,13. चामरव्यजन MBh. 2,37. Racu. 9,66. गृहे सुधया सितम् R. 4,33,31. Rt. 1,9. Katuis. 27,136. भूति° (गिरि) *weiss wie oder durch Asche* 50,173. 123,211. गाङ्गमम्बु Spr. (II) 2101. तिल Sucr. 1,198,18. इन्दोर्भाभिर्निशाः सितं भवत्यर्धम् *hell* Varâh. Bṛn. S. 4,1. 11,17. 19. सुरान्सितमुखुरत्वान् 12,1. ज्योत्स्ना° (eine Nacht) Katuis. 123,211. °च्छाया Racu. ed. Calc. 4,5. रात्र्याः Spr. (II) 1700. घातप Râǵa-Tar. 2,167. °सप्तमी *der 7te Tag in der lichten Hälfte des Monats* Bhâg. P. 7,14,32. Râǵa-Tar. 5,327. पोष 6,137. पक्ष 311. घकृन् 312. — *b) rein, lauter:* °कर्मन् adj. MBh. 1,3641. — 2) m. *a) die lichte Hälfte eines Monats* Varâh. Bṛn. S. 21,9. माघसितोत्थ 10. — *b) der Planet Venus* Çabdar. im ÇKDa. Varâh. Bṛn. S. 4,22. 9,11. 27. 34. 38. 42. 45 (सिताक्षयः). 17,24. fg. 27. 27,42. Ind. St. 2,279. 283. fgg. — *c) Zucker:* सितशैलमुस्ताः Varâh. Bṛn. S. 77,11. — *d) Saccharum Sara Roxb.* (शर) Nighaṇṭuhaduvanim. im ÇKDa. *Pfeil* Wilson. — *e) Bauhinia candida* Ratnam. 158. — *f)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2571. — 3) f. धा *a) Zucker* AK. 2,9,43. Trik. 3,3,192. H. 403. H. an. Med. Sucr. 1,377,18. °गुडेन सर्पिषा 2,327,1. 341,19. 410,20. 449,3. क्षीरं ससितम् 149,5. Varâh. Bṛn. S. 76,6. Spr. (II) 7044 (Conj.). Pâṇân. 3,9,1. Vgl. त्रि°. — *b) Mondlicht* Râǵan. im ÇKDa. — *c) Branntwein* Râǵan. ebend. — *d)* Bez. verschiedener Pflanzen, = पर्वतजातापराजिता Ratnam. im ÇKDa. = श्वेतकण्टकारी Râǵan. 4,33. = वाकुची 63. = विदारी, श्वेतदूर्वा, कुटुम्बिनी, पिङ्गा (?), त्रायमाणा, तेजनी Râǵan. im ÇKDa. — Sucr. 1,133,19. 2,276,15. — *e)* Bez. einer der 8 Devî bei den Buddhisten Kâlâkâra 4,18. — 4) n. *a) Silber* H. 1043, Schol. Râǵan. im ÇKDa. — *b) Sandel* Ratnam. 137. — *c) Rettig* Râǵan. 7,14. — *d) Kümmel* Ratnam. 100.

4. सित *geschärft, scharf* fehlerhaft für शित (s. u. 2. शा) Anâ. 7,7 (°सित MBh. 3,12109). MBu. 7,1078 (शित od. Bomb.). Spr. (II) 3162.

सितकं adj. von सित gaṇa मयड्वादि zu P. 4,2,80.

सितकण्ठ und सितकण्ठारिका f. = श्वेतकण्टकारी Râǵan. 4,33.

सितकपठ m. *eine Hühnerart (weisshalsig)* = दात्यूह Çabdar. im ÇKDa.

सितकमल n. *eine weisse Lotusblüthe;* davon adj. °मय Kâlâkâra 2,156.

सितकर m. 1) *der Mond (weissstrahlig)* Râǵa-Tar. 3,416. — 2) *Kampher* (wie alle Worte für *Mond*) Râǵan. im ÇKDa.

सितकर्णिक m. *Gendarussa vulgaris* Sucr. 2,472,3.

सितकर्णी f. dass. Râǵan. im ÇKDa.

सितकाच m. *Bergkrystall* H. 1243.

1. सितकुञ्जर m. *ein weisser Elephant* Çabdârthan. bei Wilson.

2. सितकुञ्जर 1) adj. *einen weissen Elephanten habend, auf einem solchen reitend.* — 2) m. ein N. Indra's Çabdârthan. bei Wilson.

सितकुम्भी f. *weisse Bignonia* Râǵan. 10,51.

सितकेश 1) adj. *weisses Haupthaar habend.* — 2) m. N. pr. eines Dânava Hariv. 12933.

सितकार n. *eine Art Borax* Râǵan. 6,245.

सितगुडा f. = सितकण्टारिका Râǵan. 4,33.

सितगुञ्जा f. = श्वेतगुञ्जा Râǵan. im ÇKDa.

सितचिह्न m. v. l. für सिताङ्ग Hit. 190 nach ÇKDa.

सितच्छत्र n. *ein weisser Sonnenschirm* Buḍḍhip. im ÇKDa.

सितच्छत्रा f. *Anethum Sowa Roxb. (weisse Blätter habend)* AK. 2,4,8,17.

सितच्छत्रित (von सितच्छत्र) adj. *in einen weissen Sonnenschirm verwandelt, einen solchen darstellend:* कीर्तिमण्डल Naish. 1,1.

सितच्छद 1) adj. *weisse Flügel oder Blätter habend.* — 2) m. *Gans* H. 1335. — 3) f. धा *weisses* Dûrvâ-*Gras* Râǵan. 8,112.

सितजटा f. = सिताक्षण्ड Râǵan. 14,104.

सितदर्भ m. *weisses* Kuça-*Gras* Râǵan. im ÇKDa.

सितदीधिति m. *der Mond (weissstrahlig)* ÇKDa. und Wilson.

सितदीप्य m. *weisser Kümmel* Râǵan. im ÇKDa.

सितदूर्वा f. *weisses* Dûrvâ-*Gras* Ratnam. im ÇKDa.

सितद्रु m. = क्षीरमोरट (vielleicht eine *Clematis*) Ratnam. 237.

सितद्रुम m. vielleicht *eine Birkenart* Hariv. 12410.

सितधातु m. *Kreide* Râǵan. 13,134.

1. सितपक्ष m. *die lichte Hälfte eines Monats* Varâh. Bṛn. S. 21,8. 12. 60,20.

2. सितपक्ष m. *Gans (weisse Flügel habend)* Çabdar. im ÇKDa.

सितपट adj. *ein weisses Gewand tragend;* m. N. pr. eines Autors (Conjectur) Weber, Ind. Streifen 1,212. 220.

सितपद्म n. *eine weisse Lotusblüthe* Bhâg. P. 3,21,9.

सितपाटलिका f. *weisse Bignonia* Râǵan. 10,51.

सितपीत adj. *weiss und gelb* Weber, Kṛshṇaǵ. 270.

सितपुङ्खा f. = श्वेतशरपुङ्खा Râǵan. 4,74.

सितपुष्प 1) m. *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: = नगर Çabdar. im ÇKDa. = श्वेतरोहिष und काश Râǵan. ebend. = शिरीष Râǵan. 9,58. — 2) f. धा *Jasminum Zambac* Çabdar. im ÇKDa. *Sida cordifolia* Râǵan. 4,103. — Sucr. 2,285,15. — 3) f. ई = श्वेतापराजिता Râǵan. im ÇKDa. — 4) n. *Cyperus rotundus* Gaṇâdh. im ÇKDa. auch शित° geschrieben ebend.

सितपुष्पिक *eine Art Aussatz* Vjutp. 220.

सितप्रभ (3. सित + प्रभा) adj. (f. धा) *weiss:* सभा MBh. 2,382.

सितमणि m. *Krystall;* davon °मय adj. *krystallen* Mbon. 67.

सितमरिच n. *weisser Pfeffer* Rágán. 6,34.

सितमाष m. *Dolichos Catjang* Hín. 182.

सितमेघ m. *eine weisse Wolke* R. 2,91,38 (100,31 Gorr.).

सितरक्त adj. (f. आ) *weiss und roth* Nga. Típ. Up. in Ind. St. 9,12.

सितरञ्जन adj. *gelb* H. 1394.

सितरश्मि m. *der Mond (weisstrahlig)* ÇKDa. und Wilson.

सितलता f. = अमृतस्रवा Rágán. 3,129.

सितवर्षाभू f. *Boerhavia procumbens Roxb.* Rágán. im ÇKDa.

सितवल्लीज n. *weisser Pfeffer* Rágán. im ÇKDa. unter सितमरिच.

सितवारण m. *ein weisser Elephant* Bnác. P. 8,4,23.

सितशर्करा f. *weisser Zucker* Sín. D. 2,8. 9. सु° Paṇkán. 3,11,8.

सितशायका s. सितसायका.

सितशिंशपा f. = श्वेतशिंशपा Rágán. 9,134.

सितशिम्बिक m. *eine Weizenart* H. 1174.

सितशिव n. *Steinsalz* AK. 2,9,42. Varianten: शितशिव, सितसिव, शीतशिव Comm. zu AK. nach ÇKDa.

सितशूक m. *Gerste* AK. 2,9,15 (nach ÇKDa. eine von Bharata erwähnte v. l.). Taik. 2,9,4 (शित°). Rágán. 16,33. — Vgl. शीतशूक.

सितशूरण m. *eine Arum-Art,* = वनशूरण Rágán. im ÇKDa. °सूरण Rágán. 7,65.

सितसप्ति 1) adj. *mit weissen Pferden fahrend.* — 2) m. Bein. Arǵuna's Kir. 13,19.

सितसर्षप m. *weisser Senf (— Senfkorn)* Rágán. im ÇKDa. Varáh. Bṛn. S. 80,12.

सितसायका f. = श्वेतशरपुङ्खा Rágán. im ÇKDa. °शायका gedr.

सितसार m. *Achyranthes triandra Roxb.* Ratnam. 233. °क Rágán. im ÇKDa.

सितसिंही f. = श्वेतकण्टकारी Rágán. 4,33.

सितसिन्धु f. *die Gangá* Candan. im ÇKDa.; vgl. Spr. (II) 2101.

सितसिव s. सितशिव.

सितसूरण s. °शूरण.

सितहूण m. pl. *die weissen Hunnen* Varáh. Bṛn. S. 11,61; vgl. श्वेतहूण 16,38.

सितांशु m. 1) *der Mond (weisstrahlig)* H. 105, Schol. Spr. (II) 1039. 2655. Naish. 1,12. — 2) *Kampfer* (wie alle Wörter für *Mond*): °तैल Rágán. im ÇKDa.

सिताखाड m. *Zucker in Stücken* Rágán. 14,104.

सिताक्ष्य (3. सित + आक्ष्या) 1) n. *weisser Pfeffer* Rágán. 6,34. — 2) f. आ = श्वेतदूर्वा Rágán. 8,111.

सिताग्र m. *Dorn* Hín. 91 fehlerhaft für शिताग्र *eine scharfe Spitze habend.*

सिताङ्ग m. *ein best. Fisch,* = वालुकागड Hín. 190.

सिताङ्ग (3. सित + 3. अङ्ग) m. 1) *eine best. Pflanze,* = श्वेतरोहित Rágán. im ÇKDa. — 2) ein N. Çiva's H. ç. 43 (सिताङ्ग die Hdschr.).

सिताजाजी (3. सित + अ°) f. *weisser Kümmel* Rágán. im ÇKDa.

सितात्रय und °त्रिक n. = त्रिसिता Rágán. 22.

सितादि (सिता *Zucker* + आदि *Anfang*) m. *Melasse* Rágán. im ÇKDa.

सितानन (3. सित + आनन) 1) adj. *ein weisses Gesicht habend.* — 2) m. *a)* ein N. Garuḍa's Candiatrad. im ÇKDa. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Hariv. 14832.

सितापाक m. *geläuterter Zucker* Bhávapr. 5.

सितापाङ्ग (3. सित + अ°) m. *Pfau* Taik. 2,5,26. Hín. 90.

सिताब्ज (3. सित + अब्ज) n. *eine weisse Lotusblüthe* Rágán. 10,182.

सिताभ 1) m. = सिताभ्र *Kampfer* Rágán. zu AK. 2,6,2,32 nach ÇKDa. — 2) etwa *Zucker* Paṇkán. 3,10,22. vielleicht सिताभिन्न zu lesen. — 3) f. आ *eine best. Pflanze* (तक्री) Rágán. 4,163.

सिताभिकटभी f. v. l. für सितालिकटभी; s. ÇKDa. unter श्वेतकिणिही.

सिताभ्र (3. सित + अभ्र) m. 1) *eine weisse Wolke* MBh. 3,1719. 13. 836 (शिताभ्र ed. Calc.). — 2) *Kampfer* AK. 2,6,2,32. H. 643. Hín. 104 (neutr.). °शकल Spr. (II) 7527 (hiernach die Uebersetzung zu verbessern). — Vgl. सितगेघ.

सिताभ्रक n. *Kampfer* Ratnam. im ÇKDa.

सितामोघा (सित + अ°) f. *weisse Bignonia* Rágán. 10,51.

सिताम्बर (3. सित + अ°) 1) adj. (f. आ) *weiss gekleidet:* शाहघू Z. d. d. m. G. 27,72 — 2) m. Bez. *bestimmter Gaina-Mönche* (vgl. श्वेताम्बर, श्वेतवासस्) Hall. 2,189.

सिताम्बुज (3. सित + अ°) n. *eine weisse Lotusblüthe* Hall. 3,55. Ratnam. 146.

सिताम्भोज (3. सित + अ°) n. dass. AK. 1,2,2,40. H. 1162.

सितार्जक (3. सित + अ°) m. *weisses Basilienkraut* Rágán. 10,161.

सितालक 1) m. = श्वेतमन्दारक Rágán. im ÇKDa. fehlerhaft für सितालर्क. — 2) f. °लिका *eine best. Muschelart, die Wendeltreppe* Hín. 111.

सितालता f. *weisses* Dúrvá-*Gras* Ratnam. 180.

सितालर्क m. *weisse Calotropis* Rágán. 10,33.

सितालिकटभी f. *eine best. Pflanze,* = श्वेतकिणिही Rágán. im ÇKDa.

सितावर 1) m. *eine best. Gemüsepflanze* (vulgo सुसुनी) Bhávapr. im ÇKDa. das Synonym श्वेतावर् spricht für die Form सितावर्; dagegen सूच्याद्र, सूचीपत्रक, सूचीदल für शितावर्. — 2) f. ई *Vernonia anthelminthica* Rágán. im ÇKDa.

सिताश्व (3. सित + अश्व) 1) adj. *mit Schimmeln fahrend.* — 2) m. *a)* Bein. Arǵuna's MBh. 3,11898. — *b) der Mond* H. 104, Schol. — Vgl. 2. श्वेताश्व.

सितासित (3. सित + 2. असित) 1) adj. *a) weiss und schwarz:* रूप्य: Maitrjup. 6,30 (= Ját. 3,166). व्योमि बलाकेव MBh. 7,5442. Miṛk. P. 109,65. Bhág. P. 4,27,14. °रोग wohl *Krankheit des Weissen und Schwarzen im Auge* Verz. d. B. H. No. 934. — *b) gut und schlimm:* कर्मफलानि Maitrjup. 2,7. — 2) m. *a)* ein N. Baladeva's H. 224. — *b)* du. *die Planeten Venus und Saturn* Gjotist. im ÇKDa.

सिताक्ष्य (3. सित + आ°) m. 1) *der Planet Venus* Varáh. Bṛn. S. 9. 45. — 2) Bez. zweier Pflanzen: = श्वेतशिग्रु Rágán. 7,30. = श्वेतरोहित Rágán. im ÇKDa.

सिति adj. = शिति *weiss; schwarz* Ramán. zu AK. 3,4,44,55 nach ÇKDa.

सितिमन् (von 3. सित) m. *Weisse* Çiç. 1,25.

सितीकर् (3. सित + 1. कर्) *weiss —, licht machen* Sín. D. 305,7.

सितेतु m. = श्वेतेतु Rágán. 14,78.

सितेतर (3. सित + इतर) 1) adj. *a) schwarz (dunkelfarbig)* H. 17. Kumâras. 1,38. Varân. Laghuv. 1,6. H. 1326. Halâj. 2,97. — *b) weiss und schwarz* Bhâg. P. 10,41,41. — 2) m. Bez. zweier Pflanzen: = श्यामशालि und कुलत्थ Râǵân. im ÇKDa.

सितेतरगति m. *Feuer* Halâj. 1,62.

सितेतरसरोज n. *eine blaue Lotusblüthe* Çiç. 9,65.

सितोत्पल (3. सित + उ°) n. *eine weisse Lotusblüthe* Hân. 179 (शितो° gedr.). Varân. Bṛh. S. 12,4. 9. 13,1. Spr. (II) 6897. Vet. in LA. (III) 5,4.

सितोदर (3. सित + उ°) m. ein N. Kubera's (*weissbauchig*) H. 189.

सितोदव (3. सित + उ°) n. *weisser Sandel* Ratnam. 140.

सितोपल (3. सित + उ°) 1) m. *a) Kreide* Trik. 2,3,6. — *b) Krystall* Râǵân. 4, 152. — 2) f. आ *Zucker* H. 402. Ratnam. 307. Suçr. 1,162, 14. 2,449,20. 504,9. 496,20. 504,8 (शितो° an den beiden letzten Stellen). Paṅkân. 3,13,12. auch °पल 8,12. म° adj. 13,6.

सिद्ध s. u. 1. und 2. सिध्.

सिद्धक (von सिद्ध) 1) m. *Vitex Negundo Lin.* und *Vatica robusta* Râǵân. im ÇKDa. — Suçr. 2,238,16. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑ ⏑–⏑–⏑⏑⏑– + ⏑⏑–⏑⏑–⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XVI,2).

सिद्धकज्जल n. *Zauberkraft besitzender Lampenruss* Schol. zu Kirâṭ. 2,151.

सिद्धकल्प (?) m. Bez. einer best. *Weltperiode* Vie de Hiouen-thsang 165.

सिद्धकाम adj. *dessen Wünsche in Erfüllung gegangen sind* R. 4,44,105.

सिद्धकामेश्वरी f. *eine der fünf Formen der* Kâmâkshjâ Kâlikâ-P. 61 im ÇKDa.

सिद्धकार्य adj. *der seinen Zweck erreicht hat* Kathâs. 121,134.

सिद्धकोरल n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 138.

सिद्धक्षेत्र n. *ein von Siddha's bewohntes Gebiet, ein Land der Glückseligen; auch* N. pr. bestimmter *heiliger Gebiete* MBh. 3,8240. Kathâs. 18,234. 348. 66,2. 107,73. 80 (°पर्वत). Mârk. P. 109,38. Râǵa-Tar. 3, 378. Paṅkân. 2,6,4. Verz. d. Oxf. H. 20,*b*,43. 21,*a*,32. 53,*a*,6. 79,*a*, 30. क्षेत्रं सिद्धसमाख्यम् 149,*b*,10. fg. — Vgl. सिद्धिक्षेत्र.

सिद्धखण्ड Titel eines *Abschnittes* im Rasaratnâkara Verz. d. B. H. No. 963.

सिद्धगङ्गा f. *die* Gangâ *der Glückseligen*, ein N. der Mandâkinî Gaṇiṅ. im ÇKDa.; vgl. R. 2,95,9.

सिद्धगति f. in eig. und übertr. Bed. (प्रतिकृतौ) gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

सिद्धगुरु m. N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 82,9.

सिद्धग्रह m. *der Dämon der Glückseligen*, Bez. *eines best. Tobsucht erzeugenden Dämons:* ग्रहमन्यति यः सिद्धान्कुद्धाप्यपि शपति पम्। उन्माद्यति स तु तिग्रं ज्ञेयः सिद्धग्रहस्तु सः॥ MBh. 3,14302.

सिद्धजन m. *die Glückseligen* (s. सिद्ध) R. 2,95,9.

सिद्धजल n. *das Wasser der Glückseligen*, Bez. *des sauren Reisschleims* Hân. 115. — Vgl. सिद्धसलिल.

सिद्धतापस m. *ein mit übernatürlichem Wissen und Vermögen ausgestatteter Büsser* Daçak. 21,1 v. u. fem. ई Kathâs. 42,26. 43,192. 198. 65,239.

सिद्धत्व (von सिद्ध) n. 1) *richtiges Auskommen, das Sichergeben, Sichherausstellen in genügender Weise* AV. Pariç. 4,6. Siddhânjan. 4. Vârtt. zu P. 4,1,130. Nilak. 52. Sân. D. 36,3. — 2) *das Bewiesensein* Sarvadarçanas. 9,14. 51,16. — 3) *das Bekanntsein* Bhâg. P. 7,6,19. — 4) *Vollkommenheit, ein vollkommener Zustand* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,162 (daneben ष्ण°). — 5) *die Stellung eines* Siddha, *eines Glückseligen* R. 3,65,5. Paṅkân. 1,8,23.

सिद्धदर्शन n. *das Schauen der Glückseligen* (obj.) Verz. d. Oxf. H. 230,*b*,45.

सिद्धदेव m. ein N. Çiva's Çabdan. im ÇKDa.

सिद्धद्रव्य n. *ein mit Zauberkraft versehener Gegenstand* Verz. d. B. H. No. 905.

सिद्धधातु m. *Quecksilber* Trik. 2,9,31.

सिद्धधामन् n. *die Stätte der Glückseligen*, = सिद्धक्षेत्र Kathâs. 18,351.

सिद्धनागार्जुन m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 904, davon adj. °नीय *von ihm verfasst* Notices of Skt Mss. 1,137.

सिद्धनाथ m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 110,*a*,26. Aufrecht scheint das Wort als Appellativum zu fassen.

सिद्धपति m. Bein. Mudgaragomin's Târân. 64.

सिद्धपथ m. *die Bahn der Glückseligen* so v. a. *der Luftraum* Bhâg. P. 5,10,25.

सिद्धपद n. N. pr. einer heiligen Oertlichkeit Bhâg. P. 3,33,31.

सिद्धपात्र m. N. pr. 1) eines Wesens im Gefolge Skânda's MBh. 9, 2568. — 2) eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 346,11.

सिद्धपाद m. N. pr. eines Joga-Lehrers Wilson, Sel. Works 1,214. Hall 16. Verz. d. Oxf. H. 233,*b*,1 v. u. Varianten: प्रुद्धपाद und श्रीपाद.

सिद्धपीठ m. *eine Stätte der Glückseligen* ÇKDa. nach einem Tantra.

सिद्धपुर n. *die Stadt der Glückseligen*, N. pr. einer in den äussersten Norden verlegten mythischen Stadt Goldus. Bhuvanak. 17. 27. Comm. zu 30. 44. Ârjabh. 3,13. Reinaud, Mém. sur l'Inde 341. Verz. d. B. H. No. 1240. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,25. verkehrt ist die Auflösung सिद्धात्पुरात् Goldus. Bhuvanak. 26.

सिद्धपुष्प m. *wohlriechender Oleander, Nerium odorum Ait.* Râǵân. 10,11.

सिद्धप्रयोजन 1) m. *weisser Senf* Râǵân. im ÇKDa.; vgl. सिद्धसाधन. — 2) f. आ *Kresse, Lepidium sativum* Dhanvân. in Nigh. Pr.

सिद्धबुद्ध m. N. pr. eines Joga-Lehrers Verz. d. Oxf. H. 233,*b*,2 v. u. Hall 16. प्रुद्धबुद्धि v. l.

सिद्धभूमि f. *Zauberland* Paṅkat. 242,5.

सिद्धमत n. *die Ansicht der Glückseligen* Verz. d. Oxf. H. 251,*a*,41.

सिद्धमनोरम m. Bez. *des zweiten Tages im* Karmamâsa Ind. St. 18,296.

सिद्धमन्त्र m. 1) *Zauberspruch* v. l. in Vet. in LA. (III) 14,14. 22. Spr. (II) 7046. Gîr. 10,12. — 2) Titel eines von Keçavabhaṭṭa verfassten Nighaṇṭu Nigh. Pr. Einl.

सिद्धमातृका f. 1) Bez. *eines best. Alphabets* (سر مادرك) Reinaud, Mém. sur l'Inde 297. — 2) N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,25.

सिद्धमानस adj. *befriedigten Herzens* R. Gorr. 1,67,19.

सिद्धमोदक m. *eine Art Zucker* (तवाक्षीरोद्भवखण्ड) Râǵân. im ÇKDa.

सिद्धयात्रिक s. सिद्धियात्रिक.

सिद्धयामल n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,b,23. सिद्धि° v. l.

सिद्धयोग m. *ein richtiges, wirksames Mittel* Kathâs. 20,190 (vielleicht सिद्धियोग zu lesen). Verz. d. B. H. No. 966. °संपद् m. Titel einer Schrift No. 904. Verz. d. Oxf. H. 113,b,47. fg. als neutr. (!) in der Bed. *Zaubermittel* Verz. d. B. H. No. 904.

सिद्धयोगिनी f. 1) *Zauberin, Fee, Hexe* Kathâs. 37,161. 192. — 2) ein N. der Manasâ Verz. d. Oxf. H. 24,b,38.

सिद्धयोगेश्वर n. (sc. तन्त्र) Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 97,a, No. 151.

सिद्धरङ्गकल्प m. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,89.

सिद्धरत्न adj. *im Besitz eines Zauberjuwels seiend* Kathâs. 108,197. 109,15. 79. 92.

1. सिद्धरस m. *Quecksilber* Med. s. 65. Agastjamata im ÇKDn.

2. सिद्धरस adj. = रससिद्ध *der durch Quecksilber bei Lebzeiten ein Siddha wird, nicht mehr den Gesetzen der Materie unterworfen ist* Agastjamata im ÇKDn. = धातुप्रभृति Med. s. 65.

सिद्धरसायन adj. *der im Besitz eines Lebenselixirs ist* Kathâs. 41,11.

सिद्धराज m. N. pr. eines *Fürsten* Râga-Tar. 7,263. Journ. of the Am. Or. S. 7,39. fg.

सिद्धरुद्रेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 67,b,1.

सिद्धरूप n. *das Richtige* Kap. 1,99. Comm. zu TS. Prât. 8,19.

सिद्धल N. pr. eines Dorfes Z. f. d. K. d. M. 3,165.

सिद्धलक्ष adj. *das Ziel treffend:* बाण Kathâs. 112,56.

सिद्धलक्ष्मण m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 332,6.

सिद्धलक्ष्मी f. wohl *eine Form der* Lakshmî: °मत Verz. d. Oxf. H. 98,a, N. 3.

सिद्धलोक m. *die Welt der Glückseligen* Bhâg. P. 4,29,80.

सिद्धवट 1) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 60,b,19. — 2) f. ई N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 18,b,29 (Erklärung des Namens in N. 9). 19,a,34.

सिद्धवत् (von सिद्ध) adv. *als ausgemacht, als bewiesen;* °कर् *für feststehend —, für ausgemacht —, für bewiesen halten:* °कृत्य absol. Sarvadarçanas. 116,13. 132,2. Comm. zu TS. Prât. 14,28.

सिद्धवन n. *der Hain der Glückseligen*, N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,b,25. सिद्धपुर v. l.

सिद्धवर्ति f. *Zauberdocht* Pâśup. 241,6. 242,13, 17. सिद्धि° ed. Bomb.

सिद्धवस्ति m. *ein stärkendes* (öliges u. s. w.) *Klystier* Suçr. 2,198,1. 228,1. 229,2. 6.

सिद्धवस्तु *ein Syllabar* Hiouen-thsang 1,72. fg.

सिद्धवास m. *Wohnsitz der Glückseligen*, N. pr. einer Oertlichkeit Kathâs. 36,114.

सिद्धविद्या f. 1) *die Lehre der Glückseligen* Pâśup. 1,10,4. — 2) *eine Form der* Mahâvidjâ Tantrasâra im ÇKDn. °दीपिका f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 1,141.

सिद्धवीर्य m. N. pr. eines Muni Mbh. P. 74,38.

सिद्धसंबन्ध adj. *dessen Verwandtschaft bekannt ist;* s. u. सिद्धार्थ 1) c).

सिद्धसलिल n. *das Wasser der Glückseligen*, Bez. *des sauren Reisschleims* Taitt. 2,9,10. — Vgl. सिद्धजल.

सिद्धसाधन 1) m. *weisser Senf* Râgân. im ÇKDn.; vgl. सिद्धप्रयोजन. — 2) n. a) *das Beweisen von schon Bewiesenem* Gadâdhara im ÇKDn. — b) wohl *das Citiren eines Glückseligen* Verz. d. Oxf. H. 88,a,31.

सिद्धसाधित adj. भिषज् *ein Arzt, der ohne eigene Studien die Kunst von einem Andern in der Praxis erlernt hat,* Kâraka 1,11.

सिद्धसाध्यक adj. Bez. *eines best. Zauberspruches* Tantras. im ÇKDn.

सिद्धसारस्वत Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 95,b,24. °दीपिका f. desgl. 110,a,2 v. u.

सिद्धसिद्ध adj. *überaus wirksam*, Bez. *eines best. Zauberspruches* Tantrasâra im ÇKDn.

सिद्धसिद्धान्तपद्धति f. Titel einer Schrift Hall 15.

सिद्धसिन्धु f. *der Fluss der Glückseligen*, Bez. *der* Gañgâ Taitt. 1,3, 31. — Vgl. सिद्धापगा.

सिद्धसुसिद्ध adj. Bez. *eines best. Zauberspruches* Tantrasâra im ÇKDn.

सिद्धसेन m. 1) ein N. Kârttikeja's Taitt. 1,1,56. Çaṅkar. im ÇKDn. — 2) N. pr. eines Astronomen Varâh. Bṛh. 7,7. Verz. d. B. H. No. 863. °दिवाकर Verz. d. Oxf. H. 152, a, No. 326. 170, b, 1 v. u. Hall 166. °दिवाकृत् ebend. °वाक्यकार Sarvadarçanas. 26,12.

सिद्धसेवित adj. *von den Glückseligen verehrt als* Beim. Bajrakabhairava's ÇKDn.

सिद्धसोपान n. *die Leiter zu den Glückseligen* als Titel einer Schrift Hall 18.

सिद्धस्थल n. = सिद्धस्थान Pâṇ. 1,6,26.

सिद्धस्थान n. *ein Ort der Glückseligen* Taitt. 3,3,237.

सिद्धहेमकुमार m. N. pr. eines Fürsten H. 1535, Schol.

सिद्धहेमन् n. *gereinigtes Gold* Verz. d. Oxf. H. 170,b, No. 380.

सिद्धागम (सिद्ध + आ°) m. Titel einer Schrift Hall 198.

सिद्धाङ्गना (सिद्ध + अ°) f. *Fee, Hexe* Kathâs. 28,190.

सिद्धाचल (सिद्ध + अचल) m. *der Berg der Glückseligen:* °मूला Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,283.

सिद्धाज्ञ (सिद्ध + आज्ञा) adj. *dessen Befehle vollführt werden* Varâh. Bṛh. S. 43,9.

सिद्धाञ्जन (सिद्ध + अ° oder आ°) n. *Zaubersalbe* Kathâs. 48,86. Daçak. 30,17.

1. सिद्धादेश (सिद्ध + आ°) m. *eines Wahrsagers Vorhersagung* R. Gorr. 2,29,10. Mṛicch. 105,19. hierher oder zu 2. सिद्धादेश 66,24. 98,8. Vgl. सिद्धानामयमादेशः Spr. (II) 6758.

2. सिद्धादेश adj. *dessen Vorhersagung sich erfüllt,* m. *Wahrsager* Mṛicch. 35,22. Milav. ed. Bomb. 104,10. Ratnâv. 95,6.

सिद्धान्त (सिद्ध + अन्त) m. 1) *das letzte Ziel, Vorhaben:* सम° adj. *gleiche Ziele verfolgend* Âçv. Çr. 12,8,15. — 2) *ein endgiltiger, feststehender, begründeter Satz, Lehre, Doctrin* (राद्धान्त, कृतान्त, समय, तन्त्र) AK. 1,1,4,13. 3,4,44,67. 86,151. 88,187. Taitt. 1,1,115. H. 242. Hall. 1,10. 5,83. fg. प्रमाणैरुपपन्नो ऽर्थः सिद्धान्तः Sarvadarçanas. 113,18. यः परीक्षकैर्बहुविधं परीक्ष्य हेतुभिश्च साधयित्वा स्थाप्यते निर्णयः स सिद्धान्तः Kâraka 3,8. तन्त्राधिकरणाभ्युपगमसंस्थितिः सिद्धान्तः Nyâyas. 1,26. er ist vierfach: सर्वतन्त्र°, प्रतितन्त्र°, अधिकरण°, अभ्युपगम° 27. fgg. Kâraka a. a. O. Ind. St. 2,295. MBh. 1,2887. Kap. 1,21. Sâṁkhjas. 71.

Nilak. 49. 180. Einl. zu Gaim. Hall in der Einl. zu Vîsavâd. 10. Cômm. zu Visavad. S. 18. Spr. (II, 3231. Pañcâr. 4,2,16. Sin. D. 31,10. Kull. zu M. 9,209. Verz. d. Oxf. H. 17,a, 2. 23,b, N. 5. 86,b,47. 160,b,7. 227, a, No. 337. Sarvadarçanas. 46,1. पारमेश्वर Paas. 57,11. वेदान्त° 54,10. स्वशास्त्र° Sucn. 1,50,16. शालाक्य° 2,370,14. बुद्ध° L.A. (III) 90,1. दिगम्बर° Paas. 46,5. प्रभाकरगुरूणाम् Sarvadarçanas. 135,2. भट्टाचार्याणाम् 134,22. रामेश्वर° 98,21. fg. व्यवहार°, स्व° Comm. zu Kap. 1,106. म° Sucn. 1,149,14. — 3) im System der Karmamimâmsâ *Conclusion und Refutation des erhobenen Einwandes* (das 4te Glied im Adhikarana) Sarvadarçanas. 122,21. 124,6. — 4) *ein astronomisches Lehrbuch* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 2. Garyâdhj. Kâlam. 6. Verz. d. B. H. No. 802. 939. Weber, Ind. Stud. 98. Journ. of the Am. Or. S. 6, 418. fgg. Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 24. fg. — 5) Bez. einer Klasse von Werken bei den Buddhisten Wassiljew 60. 260. bei den Gaina Wilson, Sel. Works 1,280. fg. Titel eines best. Gaina-Werkes Sarvadarçanas. 41,1. bei den Tântrika steht dem Ansehen nach सिद्धान्त neutr. zwischen वाम und कौल Verz. d. Oxf. H. 91,a,18. — Vgl. अप°, कन्दर्प°, कार्त्तिक°, ज्ञात°, ज्योतिः°, न्याय°, ब्रह्म°, ब्रह्मस्फुट°, भक्ति°, मल्ल°, महादेव°, माघ°, वसिष्ठ°, वाक्य°, वैयाकरण°, व्यास°, शास्त्र°, शिव°, सिद्ध°, सोम° u. s. w.

सिद्धान्तकल्पतरु m. Titel einer philosophischen Schrift Colebr. Misc. Ess. 1,337.

सिद्धान्तकौमुदी f. Titel einer Grammatik Gild. Bibl. 379. fg. — Vgl. मध्य°, सार°.

सिद्धान्तगर्भ m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 276,a,22.

सिद्धान्तगीता f. desgl. Notices of Skt Mss. 1,170.

सिद्धान्तचन्द्रिका f. Titel verschiedener Schriften Mack. Coll. 1,17. Verz. d. Oxf. H. 173,a, No. 386. fg. Verz. d. Pet. H. No. 92. Hall. 110. 173. °टीका 110.

सिद्धान्तचन्द्रोदय m. Titel eines Commentars zum Tarkasamgraha Hall 70. fg. Notices of Skt Mss. 2,250.

सिद्धान्तचिन्तामणि m. Titel eines Werkes Ind. St. 2,246.

सिद्धान्तचूडामणि m. desgl. Verz. d. Cambr. H. 43. 54.

सिद्धान्ततत्त्व n. Titel eines philosophischen Werkes Hall 76. °बिन्दु desgl. 108. °बिन्दुसंदीपन desgl. ebend. °सर्वस्व n. desgl. 77. °विवेक m. Titel eines astr. Werkes Colebr. Misc. Ess. 2,483. Verz. d. Cambr. H. 56.

सिद्धान्तदीप m. Titel eines philosophischen Werkes Notices of Skt Mss. 1,298.

सिद्धान्तदीपिक (!) n. desgl. Verz. d. B. H. No. 609.

सिद्धान्तदीपिका f. desgl. Hall. 99.

सिद्धान्तपञ्चानन m. N. pr. eines Gelehrten Notices of Skt Mss. 1,165.

सिद्धान्तपद्धति f. Titel eines philosophischen Werkes Verz. d. B. H. No. 649.

सिद्धान्तबिन्दु m. = सिद्धान्ततत्त्वबिन्दु Verz. d. B. H. No. 626. Hall 108. °व्याख्या 109.

सिद्धान्तभेदलवसंग्रह m. = सिद्धान्तलेश Verz. d. B. H. No. 632.

सिद्धान्तमञ्जरी f. Titel eines philosophischen Werkes, = न्याय° Verz. d. B. H. No. 609.

सिद्धान्तमणिमञ्जरी f. Titel eines astrologischen Werkes Notices of Skt Mss. 1,173.

सिद्धान्तमुक्तावली f. Titel verschiedener Schriften Gild. Bibl. 415. Verz. d. B. H. No. 693. fgg. Hall 73. 99. 146. °प्रकाश m. 74. Notices of Skt Mss. 2,273.

सिद्धान्तय् (von सिद्धान्त), °यति *feststellen, begründen, in's Klare bringen* Comm. zu Kap. 1,3. सिद्धान्तित Kull. zu M. 1,8.

सिद्धान्तरत्न n. Titel einer Schrift, = दशश्लोकी Hall. 114.

सिद्धान्तरहस्य n. Titel verschiedener Werke Verz. d. B. H. No. 845. Verz. d. Oxf. H. 226,b, No. 535. Verz. d. Cambr. H. 46. 57. Ind. St. 2, 252, N. 2. Wilson, Sel. Works 1,131.

सिद्धान्तलक्षणागमदीपी f. Titel einer Schrift; s. unter संयोगिन्.

सिद्धान्तलक्षणाकोड m. desgl. Hall 33. 37.

सिद्धान्तलघुखमाणिक Titel eines astr. Werkes Verz. d. Cambr. H. 43.

सिद्धान्तलेश m. Titel einer Schrift, = शास्त्रसिद्धान्तलेशसंग्रह Hall 153. °संग्रह Verz. d. B. H. No. 632. °टीका Notices of Skt Mss. 1,33.

सिद्धान्तवागीश m. N. pr. zweier Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 106,b, N. 1. 201,a,17. fg. — Vgl. भवानन्द°.

सिद्धान्तवेला f. Titel einer Schrift Hall 171.

सिद्धान्तशिखा f. desgl. Weber, Prâtiçâkh. 73.

सिद्धान्तशिरोमणि m. Titel eines von Bhâskara verfassten astronomischen Lehrbuchs Golâdhj. Prâçnâdhj. 58. Gild. Bibl. 505. fgg. Verz. d. B. H. No. 828. 842. fgg. 1166. Verz. d. Oxf. H. 110,b,20. 279,b,41. 338,a,24. 341,a,42. Verz. d. Cambr. H. 43. Ind. St. 1,467 (°प्रकाश). Hall 120.

सिद्धान्तशेखर m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1025. Verz. d. Oxf. H. 104,a,32. 279,b,42. 285,a,35. 341,a,42. Verz. d. Cambr. H. 43. Hall 18. — Vgl. शैव°.

सिद्धान्तसंक्षिप्तासारसमुच्चय m. desgl. Colebr. Misc. Ess. 2,451. Hall 120.

सिद्धान्तसंग्रह m. desgl. Hall 27. Notices of Skt Mss. 1,194. सिद्धान्तसारावलिः Verz. d. Oxf. H. 263,b, No. 635.

सिद्धान्तसंदर्भ m. Titel eines astr. Werkes Verz. d. Oxf. H. 292,b,33.

सिद्धान्तसार Titel verschiedener Werke Verz. d. Pet. H. No. 23. Wilson, Sel. Works 1,167. °कौस्तुभ Verz. d. Cambr. H. 74. fg.

सिद्धान्तसार्वभौम Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. 2,324 u. s. w.

सिद्धान्तसुन्दर desgl. Colebr. Misc. Ess. 2,326. fg. 451. Verz. d. B. H. No. 833. Verz. d. Cambr. H. 43. Hall 120.

सिद्धान्तसूक्तिमञ्जरी f. desgl. Notices of Skt Mss. 2,3. Hall. 153. °प्रकाश 154.

सिद्धान्तित s. u. सिद्धान्तय्.

सिद्धान्तिन् (von सिद्धान्त) m. = मीमांसक Buddhaprajoga im ÇKDr.

सिद्धापगा (सिद्ध + म°) f. *der Fluss der Glückseligen, die* Gangâ H. 1082.

सिद्धाम्बा (सिद्ध + म°) f. *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 109,a,27.

सिद्धायिका f. N. pr. einer Göttin, die die Befehle des 24ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpini ausführt, H. 46.

सिद्धारि (सिद्ध + धरि) m. Bez. *eines best. Zauberspruches* ÇKDa. nach dem Tantrasâra.

सिद्धार्थ (सिद्ध + अर्थ) 1) adj. (f. आ) *a) der seinen Zweck erreicht hat* MBh. 5,7546. Hariv. 10003. R. 1,6,7. 42,4. 2,40,25 (39,31 Gorr.). 51, 18 (48,18 Gorr.). 72,27 (74,41 Gorr.). 86,18 (94,18 Gorr.). 88,16. 103,10. R. Gorr. 2,38,10. 109,60. 3,24,10. 4,40,70. Spr. (II) 2692. 3639. Çiç. 27,9. Kathâs. 57,100. 99,9. 108,17. Bhâg. P. 9,4,32. सु° MBh. 3,3006. अ° R. 3,55,20. Bhâg. P. 4,9,28. — *b) zum Ziele führend, wirksam:* उपाय Hariv. 3145. ओषधी R. 2,25,36. — *c) dessen Absicht, Vorhaben bekannt ist:* सिद्धार्थं सिद्धसंबन्धं श्रोतुं श्रोता प्रवर्तते। तस्मात्तेन वक्तव्यः संबन्धः सप्रयोजनः॥ इति व्याकरणटीका ÇKDa. — 2) m. *a) weisser Senf (Senfkorn)* AK. 2,9,18. Trik. 3,3,200. H. 1180. an. 3,324. Med. ih. 25. Hâlây. 2,426. Suçr. 1,71,17. 2,231,3. Varâh. Bṛh. S. 44,5. Kathâs. 32,183. Bhâg. P. 4,9,38. 5,17,21. 25,2. Bhâvapr. 14,91. गौर° Kumâras. 7,7. सित° Paṇḍar. 138,3. — *b)* = वटवृक्ष Rigân. 11,131. — *c)* Bez. *des 53ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,48. fg. — *d)* N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,25. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2566. eines Fürsten 1,2696. eines Rathgebers des Daçaratha R. 1,7,3. 2,36,18. 68,5 (70,5 Gorr.). 7,59,8,26. weltlicher N. Çâkjamuni's Trik. (lies वृद्ध st. वृद्ध). H. an. Med. Hâlây. 1,55. Lalit. ed. Calc. 279,4. Burnouf, Intr. 70, N. Lot. de la b. l. 388. 607. Wassiljew 9. 10. N. pr. eines Versuchers (मारपुत्र) Lalit. ed. Calc. 393,7. des Vaters von Mahâvîra (dem 24ten Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇî) H. 38. H. an. Colebr. Misc. Ess. 2, 318. Wilson, Sel. Works 1,292. fg. — Kathâs. 44,25. 121. — 3) f. आ N. pr. der Mutter des 4ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 39. — 4) n. (sc. वास्तु) *ein Gebäude mit zwei Hallen, einer im Westen und einer im Süden,* Varâh. Bṛh. S. 53,39. fg. — Vgl. सर्वार्थसिद्ध.

सिद्धार्थक (von सिद्धार्थ) 1) m. *a) weisser Senf (Senfkorn)* Suçr. 1,145, 2. 199,18. 370,14. °तैल 15. 374,11. 2,70,15. 346,11. 393,7. 431,9. Kâraka 8,7 (neutr.). Varâh. Bṛh. S. 48,35. Mâlav. P. 31,51. 35,10. सित° Paṇḍar. ed. orn. 57,12. Verz. d. B. H. No. 991. — *b)* N. pr. zweier Beamter Mudrâr. 152, 2. 3. — 2) n. Bez. *einer best. Fettsalbe* Suçr. 2,340,9.

सिद्धार्थमति m. N. pr. eines Bodhisattva Lalit. ed. Calc. 2,11.

सिद्धार्थिन् m. = सिद्धार्थ *das 53te Jahr im 60jährigen Jupitercyclus* Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,6.

सिद्धाश्रम m. *die Einsiedelei* (आश्रम) *der Glückseligen*, N. pr. einer best. *Einsiedelei* R. Gorr. 1,4,20. 32,2 (31,3 Schl.). Ragh. 6,46. Verz. d. Oxf. H. 9,*b*,10. 22. 27,*a*,41. 77,*b*,26. (neutr. mit Ergänzung von तीर्थ). Çiç. in LA. (III) 33,1. °पद R. Gorr. 1,32,18.

1. सिद्धासन (सिद्ध + 1. आ°) n. *eine best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 234,*a*,21. 236,*a*, No. 367. 237,*a*,6.

2. सिद्धासन (wie eben) m. ein N. Skanda's H. ç. 62.

सिद्धि (von 2. सिध्) f. 1) *das Gelangen an's Ziel, Treffen:* वरस्थिरेषु लक्ष्येषु (लक्ष्येषु) बाणसिद्धिः Kâm. Nîtis. 14,25. 27. — 2) sg. und pl. *das Zustandekommen, Gerathen, Gelingen, glücklicher Erfolg* (einer Sache): = निष्पत्ति H. an. 2,235. Med. dh. 25. सर्वकर्मणाम् Bhag. 18,13. Mârk. P. 118,15. स्वार्थस्य Spr. (II) 1310. 2564. Râga-Tar. 2,97. वाञ्छितार्थस्य Varâh. Bṛh. S. 68,92. कार्ये नः सिद्धिप्रायं यद्येप्सितम् Kathâs. 33, 84. सिद्धिं गम् M. 2,97. तद्येतत्सिद्धिमेतु मे Mârk. P. 61,79. नावस्तुनो वस्तुसिद्धिः Kap. 1,79. साध्य° Spr. (II) 6241. कर्म° Maitrâyaṇ. 4,3. R. 1, 57,13. Varâh. Bṛh. S. 71,9. क्रिया° Spr. (II) 5712. 6145. कार्य° R. 5, 35,40. 39,10. Varâh. Bṛh. S. 89,1. यात्रा° 87,6. यज्ञ° M. 1,22. 11,12. R. 2,32,11. धर्म° M. 7,10. Spr. (II) 1494. 3106. तपः° Ragh. 1,91. सर्व° M. 7,215. R. 2,50,1. Varâh. Bṛh. S. 30,24. 51,10. 69,91. 71,6. 85,4. 86,52. Vop. 5,4. Bhâg. P. 4,21,33. स्वार्थ° Spr. (II) 6320. LA. (III) 86, 9. कार्यार्थ° M. 7,167. योगक्षेमार्थ° Jâjñ. 1,100. प्रार्थना° Ragh. 1,13. वाञ्छा° Râga-Tar. 3,344. वाञ्छित° Vikr. 28. अभिप्रेत° Çiç. 110,7. मनोरथ° Hit. 21,13. अभीष्ट° Vedântas. (Allah.) No. 2. प्रार्थितार्थ° Çiç. 41,11. fg. अभिमतार्थ° Prab. 61,11. एकान्तफल° Spr. (II) 1814. विषय-सुख° 4143. 4633. मत्त° 6370. विविधघटना° Râga-Tar. 2,93. अभिज्ञान° Kathâs. 3,71. प्रतिज्ञा° 124,13. Râga-Tar. 3,49. Sarvadarçanas. 39,10. 64,13. 80,3. आधेः स्वीकरणात्सिद्धिः so v. a. *Gültigwerdung* Jâjñ. 2,60. — 3) *das in-Ordnung-Kommen:* विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं विनियोजितः so v. a. *Beseitigung* Jâjñ. 1,270. व्यापत्तिसिद्धि, वस्तिव्यापत्तिसिद्धि Verz. d. B. H. No. 933. = यत्नसिद्धि Med. — 4) *das Zutheilwerden:* स्वर्गादेः, लिप्सय° Vop. 25,6. त्रैवर्गिकी Bhâg. P. 3,4,16. ब्रह्म° 25,19. — — 5) *glücklicher Ausgang einer Krankheit, Heilung:* भिषक्° *durch einen Arzt* Jâjñ. 1,266. — 6) *das in-Ordnung-Kommen* —, *Eingehen ausstehender Gelder:* धनमर्णार्थ° M. 8,47 — 7) *persönlicher Erfolg, Erreichung eines erwünschten Ziels; Glück* M. 6,42. 7,1. 10,62. R. 1,57,19. परा 5,13,20. सोपसर्गा 18,13. 65,2. Kâm. Nîtis. 5,10. Ragh. 1,72 (pl.). 87. Spr. (II) 415. 1714. 2847. 4904, v. l. 6771. 7049. fg. Kathâs. 6,150. 37,42. °विघ्नाः Râga-Tar. 2,133. Bhâg. P. 3,2,19. 4,11. 5,20,6. Paṇḍar. III,76. 256,23. Hit. Pr. 1. Çiç. in LA. (III) 36,3. सिद्ध्यसिद्धयोः समो भूत्वा Bhag. 2,48. 4,22. सिद्धये Mâlav. 45,9. Bhâg. P. 4. 24,62. Kathâs. 18,241. सिद्धौ 316. सिद्धिं शंसन्ति मृगाः R. 3,78,11. 4. 42,14. सिद्धिं दृष्ट्वा सुविपुलाम् Varâh. Bṛh. S. 48,79. घञ्-घाप् 87. R. 1, 62,20. Brahma-P. in LA. (III) 48,17. प्र-घाप् Râga-Tar. 4,716. भञ् R. 7,26,21. गम् 4,57,2. Spr. (II) 4061. अनु-गा Bhâg. P. 9,6,22. नि-गम् (-यम् fehlerhaft) M. 12,11. Spr. (II) 1117. उप-इ Bhâg. P. 1,15,51. सम्-उप-इ Spr. (II) 1707. समा-सद् Râga-Tar. 4,392. = मोक्ष *Befreiung von allen Banden der Welt, Erlösung* H. 74. H. an. — 8) in der Philosophie *Vollkommenheit der Person und Machterlangung des Geistes über die Natur, in Folge derer man Wunder zu vollbringen in Stand gesetzt wird,* Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,34 (vielleicht सिद्धिमृत्वा zu lesen). Sâṅkhyak. 46. fg. 49. 51. Jogas. 2,43. Tattvas. 41. fg. (acht). Sarvadarçanas. 96,13. 154,11. 170,6. fgg. 179,3. fgg. Verz. d. Oxf. H. 50,*b*,12. 88,*b*,18. fgg. 33. VP. 45. Mâlav. P. 56,23. Bhâg. P. 4,18,19. 6,11,25. 8,22,6. 11,15,3. fgg. (achtzehn). Paṇḍar. 1,4,17. — 9) *Zaubermacht* überh. (öfters in comp. mit dem Gegenstande, der die eigentliche Zauberkraft enthält) Kathâs. 18,375. 20,52. 102. fgg. 25,104. 206. 39,161. 49,164. 167. fgg. 65,52. fg. 73,298. fg. 326. Râga-Tar. 3,268. 465. 467. Paṇḍar. 241,3. Verz. d. Oxf. H. 92,*b*,1 v. u. 93,*a*,1. 11. 94,*b*,27. 99,*a*,9. fgg. Wassiljew 191. fgg. 196. Tîrân. 74 u. s. w. am Ende eines adj. comp. °क Kathâs. 124,14.

सिद्धि = योग (von Wilson und im ÇKDa. in der astr. Bed. gefasst) H. an. Med. = पादुका (vgl. गुटिकापादुका° Verz. d. Oxf. H. 99, *a*, 9. fg. Tîrân. 101) Med. — 10) *Wirkungskraft, Leistungsfähigkeit:* यथा काकपदाः प्रोक्ता पदार्थानामभव्यस्तिलाः । नाममात्रा न सिद्धो (v. l. सिद्धौ) हि धनस्तोनास्तथा नराः ॥ Spr. (II) 3091. सिद्धिर्भूषयते विद्याम् (fasst man विद्या als *Zauberspruch*, so bedeutet सिद्धि *Zaubermacht*; vgl. 3754) 2167. 2119. सामसिद्धिं न वेत्सि Pañkat. 91,17. — 11) *das Klarwerden, Verständlichwerden:* शब्दस्य Bhâg. P. 3, 6, 17. — 12) *das Sichergeben* (durch Berechnung u. s. w.), *das sich-als-richtig-Herausstellen, das Folgen, Bewusstsein* Gaut. Bhâshârjâl. 9. Goldâdhj. Golâdh. 24. RV. Prâv. 11, 34. fg. Kâtîj. Up. 3, 3. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 162. Kap. 1, 89. 103. fg. Siddhânta. 4. Nilak. 64. Vedântas. (Allah.) No. 4. Sarvadarçanas. 25, 20. fg. 26, 3. 28, 14. 29, 20. 30, 2. 62, 19. fg. 72, 20. fg. 112, 19. 125, 18. Bhâsâp. 15. 74. fgg. Comm. zu TS. Prât. 2, 20. 25. 47. 4, 11. 23. 52. 5, 22. 8, 13. 18. 13, 4. 14, 17. 16, 2. 12. 21, 5. वापीकूपतडागानां गृहस्योपवनस्य च । सामन्तप्रत्ययात्सिद्धिः Spr. (II) 6040. — 13) in der Rhetorik *das Hervorheben verschiedener, sonst nur getrennt erscheinender Vorzüge, an einer und derselben Person*, Sâh. D. 434. 434. — 14) etwa *Kunstwerk:* यामं स्तुत्यं चैत्यादिसिद्धिभिः Râgâ-Tar. 3, 281. — 15) *eine best. Heilpflanze*, = ऋद्धि, वृद्धि AK. 2, 4, 2, 31. Med. Râgân. 5, 28. — 16) *der Erfolg* personificirt als göttliches Wesen MBh. 1, 2794. Varâh. Bṛh. S. 48, 36. Verz. d. Oxf. H. 78, *b*, 32. fg. (°पराजय). unter den sieben Müttern (s. u. 1. मातृ) H. 201, Schol. (ब्राह्मणीसिद्धो zu lesen). unter den Namen der Durgâ Kâtîs. 53, 171. Devî-P. 45 im ÇKDa. eine Tochter Daksha's und Gattin Dharma's VP. 54. Mârk. P. 50, 21. 28. N. pr. einer Freundin der Danu Kâtîs. 50, 112. der Gattin Bhaga's und Mutter Mahiman's Bhâg. P. 6, 18, 2. — Vgl. धृति°, धर्म° (als N. pr. eines Sohnes des Pushja oder Pushpa Harîv. 828), ध्रुव°, प्रबोध°, ब्रह्म°, मनोरथ°, मख°, मघा° (*eine grosse Vollkommenheit* Bhâg. P. 5, 20, 40), रस°, वृद्ध°, व्यवसाय°, शंकर°, शब्द°, सकल°, संग्राम°, सर्वार्थ°, सङ्कल्प°.

सिद्धिका 1) adj. (f. ई) *Gelingen —, Glück bringend* Spr. (II) 4119, v. l. (°कारी wäre richtig). 6349. Varâh. Bṛh. S. 98, 9. 99, 2. — 2) f. ई N. pr. einer *Zauberin* Kâtîs. 13, 91.

सिद्धिकारक adj. *eine Wirkung ausübend, Etwas bewirkend* Spr. (II) 4821.

सिद्धिकारिन् adj. *ausführend:* कार्यस्य Sâh. D. 88.

सिद्धिक्षेत्र n. *das Gebiet des glücklichen Erfolges, — des Glücks:* तपसाम् Çiv. 99, 18. als N. pr. eines heiligen *Gebiets* Harîv. 1556. eines Berges Çatr. 1, 332. — Vgl. सिद्धक्षेत्र.

सिद्धिचामुण्डातीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 77, *a*, 20.

सिद्धिज्ञान n. *sicheres Wissen* Sarvadarçanas. 76, 3. 9.

सिद्धिद 1) adj. (f. धा) *Gelingen gebend, Glück bringend* Bhâg. P. 3, 33, 33. Verz. d. Oxf. H. 23, *a*, 30 (neben ध°). Çiva Çiv. ein best. Tag Titthâdit. im ÇKDa. धर्म° Kâtîs. 32, 137. — 2) m. *a) Putranjiva* (पुत्रंजीव) *Roxburghii Wall.* Râgân. 5, 28. — *b)* = वटुकभैरव ÇKDa.

सिद्धिदातृ nom. ag. dass.; °दात्री *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 110, *b*, No. 174.

सिद्धिबीज n. *etwa der Samen —, die Quelle der Zaubermacht* Pañkat. 1, 8, 24.

सिद्धिभूमि f. *das Land des glücklichen Erfolges, der Glückseligkeit* Bhâg. P. 3, 33, 1.

सिद्धिभैरव n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 108, *b*, No. 169. °तन्त्र 109, *a*, 20. fg.

सिद्धिमत् (von सिद्धि) adj. 1) *Erfolg habend, glücklich von Statten gehend* Raghu. 11, 55. — 2) *mit Vollkommenheit versehen, ein vollkommener Mann* B. Gorn. 1, 67, 20. स्वाधीनकुशलाः सिद्धिमतः Çiç. 64, 23. — 3) *mit Zaubermacht versehen, Z. besitzend* Kâtîs. 6, 162. 108, 204.

सिद्धिमन्त्र m. *Zauberspruch* Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 1 v. u.

सिद्धिमन्दिरतीर्थ n. N. einer Oertlichkeit Journ. of the Am. Or. S. 7, 41.

सिद्धिमार्ग m. *der zum Zauberlande führende Weg* Pañkat. ed. Bomb. 5, 54, 15. सिद्धभूमिमार्ग ed. Kosm. 242, 5.

सिद्धियात्रिक (so ed. Bomb.) m. *Glücksjäger* Pañkat. 240, 16 (सिद्ध°).

सिद्धियोग m. 1) *Anwendung von Zaubermacht, — Zaubermittein* Kâtîs. 18, 274. 20, 190 (सिद्धयोग wohl fehlerhaft). — 2) *eine best. Constellation* Verz. d. Cambr. H. 64. प्रवे नन्दा वुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया। गुरौ पूर्णा च संयुक्ता सिद्धियोगः प्रकीर्तितः ॥ Gjotishsâra im ÇKDa.

सिद्धियोगिनी f. Bez. *einer Art von Feen* ÇKDa. nach dem Tantrasâra und Vahni-P.

सिद्धिराज् m. N. pr. eines Berges Çatr. 1, 354.

सिद्धिली f. *eine kleine Ameisenart* Çabdâtthak. bei Wilson.

सिद्धिवर्ति (so ed. Bomb.) f. *Zauberdocht* Pañkat. 241, 6 (सिद्ध°).

सिद्धिवाद m. MBh. 13, 6528. fg. = ज्ञानगोष्ठी nach Nilak.

सिद्धिविनायक m. *eine Form des* Ganeça: °ज्ञानविधि Verz. d. B. H. 136, *b* (161). °व्रत Verz. d. Oxf. H. 284, *b*, 24.

सिद्धिसाधन n. *ein Mittel zur Glückseligkeit, Vollkommenheit* oder *Zaubermacht* Pañkat. 1, 8, 23.

सिद्धिसोपान n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, 37. fg.

सिद्धिस्थान n. *ein Ort der Glückseligkeit* Devî-P., Kumârap. nach ÇKDa. N. pr. einer best. Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 289, *a*, 4. Çiv. in LA. (III) 34, 11.

सिद्धेश्वर (सिद्ध + ई°) 1) m. *Herr der Zaubermächte*, ein N. Çiva's Kâtîs. 114, 75. 119, 143. fg. — 2) n. N. pr. eines dem Çiva geheiligten Gebiets Kâtîs. 114, 140. 115, 110. 113. 122.

सिद्धेश (सिद्ध + ईश) m. *Herr der Glückseligen* Bhâg. P. 1, 3, 10. 6, 15, 16.

सिद्धेश्वर (सिद्ध + ई°) 1) m. *a) Herr der Glückseligen* Bhâg. P. 2, 2, 26. 3, 21, 34. — *b)* N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 1032. — *c)* N. pr. eines Berges LIA. 1, 159. — 2) f. ई *Herrin der Glückseligen* Verz. d. Oxf. H. 23, *a*, 19. Vâsiṣṭha-P. und Mundamâlâtantra im ÇKDa.

सिद्धेश्वरतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. der Oxf. H. 95, *b*, 25. 106, *b*, No. 162.

सिद्धेश्वरतीर्थ n. N. pr. verschiedener Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, *b*, 44. 67, *a*, 1. 16. 27. fg. 77, *b*, 25.

सिद्धेश्वर्य (सिद्ध + ऐ°) n. *Herrschaft über die Glückseligen* Pañkat. 1, 8, 24.

सिद्धोदक (सिद्ध + उ°) n. N. pr. eines Tîrtha Kâtîs. 119, 81.

सिद्धोघ (सिद्ध + ओघ) adj. Bez. *einer Klasse von Autoren* (गुरु) *mystischer Gebete bei den* Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101, *b*, 4. 7. 12. 18.

सिद्धौषध (सिद्ध + धो°) n. *Zauberkraut* Gaṇa beim Schol. zu Vâsav. 104. Verz. d. Oxf. H. 215,*a*, No. 344. 261,*a*, 10.

सिद्धौषधिक n. *eine Zusammenstellung von fünf Heilmitteln:* तैलकन्द, सुधा°, क्रोड°, रुद्रजटिका und सर्पनेत्रा Râéân. 22.

1. सिध्, सेधति Naigh. 2, 14 (गतिकर्मन्). Dhâtup. 3, 10 (गत्याम्). 11 (शास्त्रे माङ्गल्ये च). असेधीत् Vop. 8, 46. असेधिष्टाम्, असैत्सीत् 47. असेद्धाम् 48. partic. सिद्ध. *scheuchen, treiben; vertreiben:* द्वेषः ṚV. 1, 34, 11. 137, 4. रक्षांसि 79, 12. 8, 49, 20. 6, 44, 9. ते सेधन्ति पथो वृकम् 1, 105, 11. अघशंसोवाः 8, 35, 16. 9, 71, 8. 10, 76, 4. Kauç. 97. वाचा सिद्धाः Thiere Paṇḍav. Ba. 10, 3, 12. अपि स्तुत्वापि सेधास्मांस्तव्यमुक्तम् so v. a. *du magst uns loben oder strafen* Bhaṭṭ. 8, 92.

— desid. vom caus. सिसेधयिषति P. 8, 3, 61, Schol.

— intens. सेधिध्यते ebend.

— मनु intens. *der Bahn entlang treiben, herleiten:* उतो स मह्यमिन्दुभिः षड्युक्ताँ अनुसेधिषत् ṚV. 1, 23, 15.

— अप *wegtreiben, verjagen:* रक्षसः ṚV. 1, 35, 10. 8, 47, 31. दूराद्धवीयो अप सेध शत्रून् 29. दस्यून् 5, 31, 7. 8, 18, 10. 68, 9. 10, 25, 7. दुरिता 9, 82, 2. AV. 8, 2, 7. यमदूतान् 11. तं वृता अप सेधन्ति कृपो नो मोप गा इति 5, 19, 9. संवत्सरं पवाकारस्तत्यापमपसेधति M. 11, 193. *abwehren, abhalten* von (abl.): पृष्ठतः परान्वीरान् MBh. 6, 541. नागं प्रभिन्नं गिरिकूटकल्पमुपत्यकां (so ed. Bomb.) हैमवतीं चरन्तम् । दण्डीव यूथादपसेधति (so ed. Bomb., ed. Calc. und Dasav. 5, 5 °सेधसे) त्वम् 3, 18643. भीमसेनादपासेधत्सूतपुत्रम् 7, 5305. 7397 (nach der Lesart der ed. Bomb.).

— अभि, °सेधति P. 8, 3, 65, Schol. °सेधति (गतौ) गाः 113, Schol. partic. °सिद्ध *hergetrieben:* वाचाभिसिद्ध उपावर्तते Ait. Ba. 4, 1. — desid. vom caus. °सिषेधयिषति P. 8, 3, 64, Schol.

— अव *abwehren, abhalten* von (abl.) MBh. 7, 7397 (अप° ed. Bomb.).

— आ, partic. आसिद्ध *verhaftet* Mit. 2, 3, *a*, 4. 5. — caus. *verhaften lassen* ebend. 3. — Vgl. आसेद्धृ fg.

— व्या, partic. °सिद्ध *verboten, untersagt* Jiân. 2, 261. — Vgl. व्यासेध.

— उद् *bei Seite treiben:* पशून् Paṇḍav. Ba. 15, 9, 11. 19, 7, 4. — Vgl. उत्सेध.

— समुद् s. समुत्सेध.

— उप *abwehren, abhalten* von (abl.): वार्द्धत्रिरूपासेधत्प्रवणादिव कुञ्जरः MBh. 7, 1743. es ist wohl °त्रिरूपासेधत् – कुञ्जरम् zu lesen; vgl. 7397.

— नि, °सेधति, न्यसेधत् Vop. 8, 45. 1) *vertreiben* ṚV. 10, 166, 3. सातृणो देवान् AV. 3, 15, 5. भूतगणान्व्यसेधीत् Bhaṭṭ. 1, 15. *Jmd abwehren, abhalten, von Etwas* (abl.) *abzubringen suchen, es Jmd* (acc.) *verbieten:* स न निषेधेत्यावत्कानं शंसेत्येवं ब्रूयात् Ait. Ba. 6, 33. किमर्थं धर्मपालस्य किंकरान्नो निषेधथ Bhâg. P. 5, 1, 36. 17, 12. निषेधत् Harîv. 946. 15964 (निषेधन्निदम् st. निषिद्धन्निदम् zu lesen; खण्डयन् निनदन् ध्रुवन् गर्जितशब्देनैव तेषां निषेधं चकार Nîlak.). Kathâs. 31, 11. न्यषेधत् Bhâg. P. 10, 9, 4. न्यषेधन् 7, 10, 61. निषिषेध Râéa-Tar. 6, 196. निषिषिधुः MBh. 1, 279. निषिध्य Ragh. 5, 18. Kathâs. 16, 19. 22, 217. Râéa-Tar. 3, 93. 281. 4, 447. निषेद्धुम् R. Gorr. 2, 21, 16. Ragh. 11, 43. निषिध्यते Çiç. 101, 19. fg. निषिध्यमान MBh. 5, 3457. Bhâg. P. 3, 15, 31. 4, 2, 19. न्यषिध्यत Râéa-Tar. 4, 601. न्यषेधि Ragh. 2, 4. *Etwas abwehren:* न्यषेधत्पावकास्त्रेण तत् (अस्त्रम्) Bhaṭṭ. 17, 87. निषिद्ध *abgewehrt, abgehalten, dem man Etwas untersagt hat:* तत्र वै विशो निषेद्धा निषिद्धा यसन् Çat. Ba. 2, 5, 2, 27. शत्रु Ragh. 18, 1. रामेण वक्त्रभिः साध्वीः R. 2, 31, 6. मात्रा तपाः Kumâras. 1, 26. Ragh. 13, 32. M. 8, 361. Çiç. 105, 18, v. l. Bhâg. P. 7, 8, 49. Paṇḍat. 227, 23. 243, 7. विधि° so v. a. *der Vorschrift gehorchend* Paṇḍat. 4, 2, 23. अ° Çiç. Ca. 140, 7. निषिद्धवत् *abgewehrt habend* Kathâs. 10, 191. — 2) *Etwas verwehren, verbieten, untersagen, sich gegen Etwas erklären, Einspruch erheben;* mit acc. der Sache: कस्मादस्य (sc. शासनम्) निषेधय Bhâg. P. 5, 1, 33. Comm. zu TS. Prât. 2, 29. अनिषेधत् Kathâs. 121, 52. न्यषेधत् Bhâg. P. 7, 8, 46. निषिषेध Kathâs. 19, 55. 20, 191. 111, 6. निषेधिष्यति Kull. zu M. 4, 218. निषिध्य Râéa-Tar. 3, 79. निषेद्धुम् Comm. zu TS. Prât. 9, 13. निषिध्यते Sarvadarçanas. 110, 8. Comm. zu TS. Prât. 1, 4. 14. 39. 2, 25 u. s. w. न्यषिध्यत Kathâs. 20, 188. न्यषेधि 1, 49. निषिद्ध *verwehrt, verboten, untersagt* H. 859. Jiân. 2, 229. Ragh. 3, 42. Çiç. Ca. 118, 5. Spr. (II) 3138. Kathâs. 24, 32. 34. 26, 75. Râéa-Tar. 5, 56. Verz. d. Oxf. H. 85, *b*, 23. fg. 277, *a*, 18 v. u. 281, *b*, 40. Bhâg. P. 5, 18, 45. Sarvadarçanas. 81, 10. Vedântas. (Allah.) No. 6. 7. Comm. zu TS. Prât. 1, 60. 5, 24. 10, 24. Schol. zu P. 1, 1, 59. 4, 4, 71. Vop. 26, 220. अ° Bhâg. P. 7, 15, 66. Kull. zu M. 4, 218. mit infin.: पतितरो मरुाविद्या — निषिद्धा हरिणा पूर्वं वक्तुमेव हि Paṇḍat. 2, 3, 76. — Vgl. निषिद्धि, निषेद्धृ fgg. — caus. 1) *Jmd wehren, Jmd zurückhalten* Spr. (II) 2985. चन्द्रस्त्वामत्र रुद्र आगच्छन्तं निषेधयति (so ist zu lesen) Paṇḍat. 160, 24. fg. Bhâg. P. 6, 1, 32. — 2) *Etwas verwehren, verbieten, untersagen* Paṇḍat. 212, 9. Kull. zu M. 11, 14. *negiren* Wilson, Sâṅkhyak. S. 7.

— निस् *verscheuchen:* निष्कव्याद् सेध VS. 1, 17. Çâṅkh. Ça. 15, 18, 20. fg. Hierher पुरुनिःषिध् *Viele abwehrend.*

— परा s. परासेध in den Nachträgen.

— पर्, °सेधति Schol. zu P. 8, 3, 65. पर्यसेधत् zu 63. aber °सेधति गाः (weil गतौ) zu 113. द्विषो घ्नन्परिसेधतः (= सागच्छतः, सर्वतो गच्छतः Comm.) Bhaṭṭ. 9, 88. — desid. °सिषेधयिषति P. 8, 3, 64, Schol.

— प्र *vorwärts treiben:* ताभ्यां युक्ता प्रासेधत्स उदञ्चयत् Paṇḍav. Ba. 14, 3, 13. गावो युक्ता मो षु प्र सेधीर्मुकरिर्न्मन्धि *fahre nicht zu* ṚV. 10, 27, 20. med.: धनुष्केणानिषुणा ब्रात्याः प्रसेधमाना पत्ति Lâṭ. 8, 6, 8.

— प्रति 1) *Jmd vertreiben, abwehren, abhalten, von Etwas* (abl.) *abzubringen suchen, Etwas Jmd* (acc.) *verbieten:* रक्षांसि ṚV. 8, 23, 18. MBh. 12, 6581. प्रतिसेधत्सु चाधर्मात् M. 2, 206. पापकात् MBh. 10, 162. शिष्यमकार्यात् P. 8, 3, 113, Schol. प्रत्यसेधत् MBh. 4, 162. 7, 2383. 12, 112. Bhâg. P. 4, 4, 30. 27, 15. 7, 1, 36. 8, 8, 40. 21, 15. med.: प्रत्यसेधत्त MBh. 5, 3456. प्रत्यसेधत Bhâg. P. 4, 19, 29. 9, 7, 16. °सिषेध MBh. 8, 1738. °सिध्य 3, 310. 12, 6392 (°सिध्य ed. Calc.). Bhâg. P. 6, 10, 21. °सेद्धुम् MBh. 3, 16734. R. 2, 27, 11 (24 Gorr.). °सिध्यताम् 4, 31, 28. °सिद्ध *abgewehrt, abgehalten, dem man Etwas untersagt hat* M. 8, 361. 9, 84. MBh. 1, 715. 7, 4607. R. Gorr. 2, 16, 35. 23, 11. 4, 8, 47. 16, 14. 5, 63, 7. Ragh. 12, 26. Çiç. 105, 18. — 2) *Etwas zurückhalten, unterdrücken:* °सिध्य मायाम् Bhâg. P. 4, 7, 26. *Etwas verwehren, verbieten, untersagen, verneinen* Nir. 1, 2. विमर्शयति यत्रैक एकस्य प्रतिषेधति Vaṇiç. Bra. S. 86, 34. Çâṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 39. प्रत्यसेधीः (am Anfange mit der

ed. Bomb. तं zu lesen) MBh. 14,249. यत्तं प्रतिषेत्स्यति 1,1634. 2065. °षिध्य R. Gorr. 2,82,4. Daçak. 191,2. °षेद्धुम् Sarvadarçanas. 105,13. Comm. zu TS. Prât. 8,8. pass. Nir. 2,14. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 39. zu Kaiṭh. Up. S. 61. Daçak. 82,10. Sarvadarçanas. 38,21. Comm. zu TS. Prât. 14,32, v. l. (°त्ते zu lesen). °षिद्ध *unterlassen* R. Gorr. 2, 125,16. Çik. 182. *verwehrt, untersagt, verboten, verneint* Kâty. Çr. 1,6, 3. 25,5,11. अनादिष्टे प्रतिषिद्धे वा Lâṭy. 10,3,3. Kauç. 32. 73. 86. Nir. 2,14. M. 8,399. Jâǵñ. 2,260. MBh. 4,111. Hariv. 4723. R. 3,13,25. Suçr. 1,35,20. Raghu. 8,28. 9,74. Çik. 78,15. Varâh. Bṛh. S. 79,5. Mârk. P. 15,41. Bhâg. P. 1,3,33. 3,32,16. 5,26,3. Kâç. zu P. 4,4,71. Schol. zu 6,3,12. Sarvadarçanas. 115,14. 168,14. Comm. zu TS. Prât. 1,1. *verneint* so v. a. *mit einer Negation versehen* AV. Prât. 4,56. P. 8,1,44. gaṇa याज्ञादि zu 3,1,124. °षिद्धवत् *der Etwas verwehrt —, untersagt hat* Râǵa-Tar. 1,114. — Vgl. प्रतिषेद्धृ fgg. — caus. 1) *abwehren, abhalten, abweisen:* यमात्यान् Âçv. Gṛhy. 4,8,33. नक्षेताम् — शपन्तीं प्रत्यषेधयत् MBh. 1,1594. 2,1787. 4,468 (प्रत्यषे° mit der ed. Bomb. zu lesen). Hariv. 946. 14247. R. 2,96,42 (105,41 Gorr.). 4,9, 63. यत्नाणि MBh. 5,7171. मृत्युश्च प्रतिषेधितः R. 5,78,14. — 2) *Etwas verwehren, untersagen, verbieten:* मार्गं वातस्य Hariv. 10443. विधावप्रतिषेधिते MBh. 12,350. Comm. zu TS. Prât. 13,3. *negiren* Sarvadarçanas. 8,19.

— विप्रति, partic. °षिद्ध 1) *verwehrt, untersagt* Kâty. Çr. 4,3,19. MBh. 5,4489. — 2) *entgegengesetzt, widersprechend* Nir. 1,15. P. 2,4, 13. Uttarar. 108,3 (146,7). Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 38. यज्ञो (abl.) वृज् विप्रतिषिद्धम् so v. a. विप्रतिषेधात् Vârtt. 2 zu P. 4,2,29. पूर्व° (vgl. पूर्वविप्रतिषेध unter विप्रतिषेध 2) Vârtt. 2 zu P. 2,4,12. 1 zu 85. 2 zu 4,2,39. 1 zu 5,1,2.

— संप्रति *Jmd abhalten:* तथैव सुहृदं प्राज्ञं कुर्वाणं कर्म पापकम् । प्राज्ञाः संप्रतिषेधन्ति यथाशक्ति पुनः पुनः ॥ MBh. 10,184.

— वि, गङ्गां विसेधति (गतौ) P. 8,3,113, Schol. Vop. 8,45.

2. सिध् (vgl. साध्), सिध्यति Dhâtup. 26,88 (संराद्धौ). सिषेध, सेधेत्सीत्, सेत्स्यति (vgl. Kâr. 4. 8 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10). med. nur des Metrums wegen. 1) *zum Ziel kommen, treffen:* इषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले Çik. 38. — 2) *frommen, fruchten, Erfolg haben; gelingen, in Erfüllung gehen, zu Stande kommen:* नाम्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध *nicht half ihm Donner und Blitz* ṚV. 1,32,13. यस्मादृते न सिध्यति यज्ञः 18,7. नहि प्रज्ञापेता धीः का च न सिध्येत् Kaṭh. Up. 3,7. कृतः पुरुषकारश्च सोऽपि दैवेन सिध्यति Spr. (II) 1852. दैवं हि मानुषोपेतं भृशं सिध्यति 2972. 5124. 5161. उपायाः साम u. s. w. सम्यक्प्रयुक्ताः सिध्येयुः Jâǵñ. 1,348. यदि युद्धानि वचनैः सिध्येयुः (सिद्धेयुः ed. Calc., योत्स्यन्ते die neuere Ausg.) Hariv. 10745. सेत्स्यते स च कार्यार्थः 3125. 3979. R. 5,1,91. तथास्य सर्वार्थाः सिध्यन्ति Spr. (II) 5134. Daçak. 89,12. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः Spr. (II) 1249. 3215. 7508. Kathâs. 18,243. Bhaṭṭ. 12, 14. क्रिया साध्येष्वपि न सिध्यति Suçr. 1,127,20. कुशलान्याशु सिध्यन्ति नेतराणि कृतानि यत् Bhâg. P. 1, 18,7. विच्छिद्यन्ते समारम्भाः सिध्यन्ते चापि दैवतः Spr. (II) 6062. पराक्रमाः R. 2,25,19. विक्रमाः 5,80,9. मनोरथाः 2,25,37. Spr. (II) 1248. इच्छा Kathâs. 6,157. वाञ्छा 9,21. ईप्सितम् 22,170. समीहितम् 37,29. मानसः संकल्पः MBh. 5,2339 (med.). Bhâg. P. 8,24,60. प्रतिज्ञा Kathâs. 38,41. यत्ने कृते यदि न सिध्यति को ऽत्र दोषः Spr. (II) 1255. 3514. Varâh. Bṛh. S. 98,7. 104,61. Kathâs. 15,24. 61, 34. 67,52. यदि वचनमात्रादेवाधिपत्यं सिध्यति Hit. 84,7. Verz. d. Oxf. H. 68,*a*,3 v. u. (सेत्स्यति st. सेप्स्यति zu lesen). 256,*b*,9. Râǵa-Tar. 4, 564. Sarvadarçanas. 15,9. 97,12. 126,7. 147,2. Lalit. ed. Calc. 271,13. 16 (सिध्यतामू ohne Noth st. सिध्यतु). so v. a. *entstehen:* सिध्यन्ति जीवन्त्युत वर्धमानाः । लोका यतः Bhâg. P. 8,5,33. — 3) *giltig sein:* समत्वदर्शनात्साद्यं श्रवणाश्चैव सिध्यति M. 8,74. व्यवहारः 163. Jâǵñ. 2,32. (वृद्धिः *Zins*) कृतानुसारादधिका व्यतिरिक्ता न सिध्यति M. 8,152. — 4) *Jmd* (gen.) zu *Theil werden* Pârâs. 61,14. — 5) *in Ordnung kommen, geheilt werden:* काकणं नैव सिध्यति *ist unheilbar* Karaka 8,5. ये ये यक्ष्मा न सिध्यन्ति Suçr. 2,536,8. येनेयं मे कर्शितो ऽतिरिरंसयात्मा । सिध्येत् Bhâg. P. 3,23,11. — 6) *sich aus Etwas ergeben, folgen, sich als richtig erweisen, bewiesen sein:* तेन सिध्यति माणवः Kâr. zu P. 4,1,161. Pat. (unzählige Male). तस्मान्न सिध्यति Pañkat. 59,9. Comm. zu TS. Prât. 2,25. 8,8. 16. 9,7. 13,14. 16,18. zu Gaim. 1,9. Sarvadarçanas. 28,16. 126,9 (मा सेत्सीत्). 137,6. — 7) *sich in Jmdes Willen fügen, nachgeben:* एवं कलिङ्गसेनासौ तव — सेत्स्यति Kathâs. 30,17. अपि वीर्योत्कटः शत्रुर्यतो भेदेन सिध्यति 434. 3433 (oder zu 8). — 8) *sein Ziel erreichen, Erfolg haben* (von Personen): सिध्यन्ति कर्मसु मरुत्स्वपि यत्रियोज्याः Spr. (II) 7050. 3435 (oder zu 7). अनर्घाः संशयावस्थाः सिध्यन्ते मुक्तसंशयाः MBh. 3,1244. *das höchste Ziel erreichen, vollkommen —, glückselig werden* 29. 8203. R. 7,36,45. Çaṃk. 1,285. Bhâg. P. 4,12,49. 5,18,10. 6,14,4. — partic. सिद्ध 1) adj. *a) getroffen:* सिद्धलक्षेण बाणेन Kathâs. 112,56. — *b) erfolgt, gelungen, zu Stande gekommen, erreicht, vollbracht;* = निष्पन्न AK. 3,2,50. Trik. 3,3,224 (निष्पन्दन?). H. 1487. an. 2,255. Med. dh. 24. कार्य Spr. (II) 3216. सामसिद्धानि कार्याणि 7012. 7018. साकल्यसिद्धकार्य Varâh. Bṛh. S. 69,28. सत्कर्मन् (सत्कर्म ist° zu schreiben) Râǵa-Tar. 5,115. अर्थ Daçak. 89,9. Bhâg. P. 2,2,3. आरम्भ Megh. 72. मनोरथाः Pârâs. 18,4. प्रयोजन Pañkat. 44,10. समीहित Hit. 44,7. स्वापुधेकसिद्धे मृगयारसे Kathâs. 21,16. निमित्तैः साध्यसिद्धैः *die noch in Erfüllung gehen sollten und die schon in Erfüllung gegangen waren* R. 5. 28,16. — *c) eingegangen* (von Geldern): अर्थ Spr. (II) 4300. — *d) verfertigt:* धर्मसिद्धो दृष्टिदत्तस्तः शङ्कुः Goldhs. Jantrâdhy. 9. *zubereitet, fertig gemacht, gekocht* u. s. w. Trik. 2,7,11. H. 412. M. 3,34. 121. MBh. 13,2769. Hariv. 8441. R. 1,65,8. 3,52,51. Suçr. 2,66,14. Pañkat. 116. 22. Bhâg. P. 4,13,36. अर्ध° Mârk. P. 51,33. सु° Spr. (II) 4216. अनल° MBh. 3,2943. उखा° H. 411. मृगालविसा° Suçr. 2,38,7. वस्ताण्ड° 155. 1. — *e) giltig:* अ° P. 5,1,86. 4,22. 8,2,1. — *f) zu Theil geworden:* तपःप्रभावसिद्धाभिर्विशेषप्रतिपत्तिभिः Raghu. 15,12. नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिः so v. a. *eigenthümlich, eigen* Uttar. 7,1 (10, 8 = Mâlatîm. 160,5). अविकृत° so v. a. *unverkünstelt, natürlich* 113. 16 (154,3). अकरुणत्वम् u. s. w. प्रकृतिसिद्धं हि दुरात्मनाम् *von Natur eigen* Spr. (II) 3. 6147. स्वभाव° 5690. निसर्ग° 5857. जाति° Kathâs. 39,108. सिद्ध = नित्य Trik. 3,3,224. H. an. Bei Pat. in der Einl. zu Mahâbh. (1,12,*a* lith. Ausg.) ist सिद्ध = नित्य so v. a. *unvergänglich, unveränderlich;* so sagt man सिद्धा गौः, सिद्धा पृथिवी, सिद्धमाकाशम्. — *g) in Ordnung gekommen, geheilt:* eine Person Spr. (II) 356. — *h) aus Etwas sich*

ergebend, — folgend, feststehend, sich als richtig erweisend, erwiesen, bewiesen: मतिप्रत्ययसिद्धानि कार्याणि M. 8,178. Spr. (II) 4051. Siṁhâs. 6. 14. 18. *fg.* Tarkas. 40. 43. 59. Buâsûp. 20. Sarvadarçanas. 8,9. 12,14. 16,8. 17,10. Pat. (unzählige Male). Siddh. K. zu P. 2,2,11. Schol. zu 1,1, 62. 3,61. zu TS. Prât. 1,11. 14. 4,3. 5,26. 8,21. प्रत्यक्ष° Sin. D. 2,2. स्वभाव° *selbstverständlich* Kâç. zu P. 1,2,53. — *b) feststehend* so v. a. *bekannt;* = प्रसिद्ध H. an. Çabdar. im ÇKDa. Âçv. Çr. 9,1,2. विश्रारूपङ्कि Ind. St. 8,97. fgg. बृहती 244. 417. 424. 10,407. स्वात्मैव सिद्धो ऽहितीयः 9,162. Râja-Tar. 1,190. प्राक् ° 4,141. सिद्धतर *bekannter, berühmter* R. 1,32,25 (33,24 Gorr.). in comp. mit einem im loc. gedachten Worte, das seinen Ton bewahrt, P. 2,1,41. 6,2,33. 3,19. सांकाश्य° Schol. लोक° Harîv. 3734. Buâg. P. 10,18,16. Sarvadarçanas. 3,14. — *k) wirksam, Zauberkraft besitzend:* leblose Gegenstände Spr. (II) 7046. Vet. in LA. (III) 3,15. Râja-Tar. 1,110. Vgl. सिद्धकज्जल u. s. w. — *l) zu Willen seiend, zu Jmdes* (gen.) *Verfügung stehend* (insbes. von Geistern und andern Zaubermitteln): सिद्धा यस्य सरस्वती भगवती Z. d. d. m. G. 27,77. पत्तिणी Kathâs. 10,178. वेताल 18,177. पिशाच 28,169. 59,184. 109,104. Pañcat. 250,12. °साधन Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,21. सिद्धानि चास्य रत्नानि विद्याश्च Kathâs. 46,138. 109,19. 21. — *m) der sein Ziel erreicht hat* Buâg. P. 10,22,27. *der das höchste Ziel erreicht hat, zur Vollkommenheit gelangt —, Meister geworden in Etwas* (geht im comp. voran) Vaitân. Bân. 21(19),2. मन्त्र° MBh. 1,6310. कर्म° 6356. तपः° 7668. R. 1,47,11. Buâg. P. 7,3,17. अनर्थाय *Meister im Unheilstiften* Kathâs. 28,185. — *n) vollkommen geworden* so v. a. *in den Besitz übernatürlicher Kräfte gelangt, den Naturgesetzen nicht mehr unterworfen;* = मुक्त H. an. सिद्धो ऽत्रैव महातपाः R. 1,31,3. R. Gorr. 1,36,12. 2,98,7. 3,6,22. Çiva MBh. 14,196. Spr. (II) 2784. Kathâs. 5, 135. 121,73. Buâg. P. 3,23,8. 6,12,19. संकल्प° MBh. 5,7490. जन्मौषधितपोमन्त्रयोग° Buâg. P. 4,6,9. नित्य°, योग° Colebr. Misc. Ess. 1,381. यमसिद्धस्य कृता विद्या *verloren ist der Zauberspruch für den, der nicht die Zaubermacht besitzt,* Spr. (II) 3754 (hier anders gefasst). subst. *Seher, Wahrsager, Zauberer* Hit. 161. सिद्धानामयमादेशः Spr. (II) 6758. Ratnâv. 103,16. Kathâs. 44,88. Râja-Tar. 3,468. Pañcat. 242,21. सुवर्णा° 243,1. fgg. — 2) m. *a) ein Vollendeter, Glückseliger,* Bez. einer Klasse von Halbgottern (wie Kapila, Vjâsa, Vasishṭha, Viçvâmitra, Bharadvâga), denen übernatürliche Kräfte, insbes. das Fliegen durch den Luftraum, beigeschrieben werden, AK. 1,1,8,6. H. an. Med. (व्यासादि und मेदो देवयोनेः als zwei Bedd.). Hâlây. 1,87. Âçv. Gṛhj. 3,4,1. MBh. 1,2570. 3,1763. 1765. 1786. 1830. 12,6788. 13,1777. Bhâg. 10,26. 11,21. fg. 36. R. 1,31,33. 2,70,30. 95,13. 112,2. R. Gorr. 2,34,32. 101,23. Megh. 22. 46. 56. Ragh. 3,57. Kumâras. 1,6. Sâhas. 12,28. Vaitân. Bân. S. 13,8. 48,25. 55. 74,19. Spr. (II) 7047. Kathâs. 20,179. 32,30. Râja-Tar. 1,285. 2,165. 3,267. 272. 450. 5,66. VP. 227. Mârk. P. 63,25. Buâg. P. 3,4,9. 20,44. 33,32. 4,15,7. 18,19. 31,2. 9, 3,13. Brahma-P. in LA. (III) 49,15. Sarvadarçanas. 99,5. Pañcar. 1,1, 1. 4,1,5. °योषित् Buâg. P. 4,6,11. सिद्धाङ्गना Megh. 14. सिद्धा f. R. 3, 2,7. 77,8. — *b)* bei den Gaina Bez. eines Gina und daher *der Zahl* siebenundzwanzig Ganit. Prastârâdaç. 22. Spashṭâdh. 4. Tripr. 62. — *c)* Bez. *einer best. Constellation* Med. Kosmolog. im ÇKDa. — *d)* N. pr. *α)* pl. eines Volkes MBh. 6,364 (VP. 192). — *β)* eines Devagandharva MBh. 1,2554. — *γ)* eines Râgarshi MBh. 2,320. eines Fürsten Râja-Tar. 1,276. eines Bruders des Gagga 4,519. eines Brahmanen Tîrân. 4. 24. — *e)* = व्यवसाय (wohl adj. in der Bed. *giltig*) Çârdar. im ÇKDa. = कृष्णधुस्तूर und गुड Râjân. im ÇKDa. — 3) f. आ. *a)* adj. am Ende von Hetärennamen Sin. D. 426. — *b) eine best. Pflanze,* = शङ्खिनी Râjân. 5,28. — *c) eine Art Fee* (योगिनी) Gîtâmbarîyâ im ÇKDa. — *d) eine Vollendete, Glückselige;* s. u. 2) *a)* am Ende. — 4) n. *a) Zaubermacht, übernatürliche Kraft:* पठित्वा पठनात्सिद्धाः सिद्धानि प्राप्नुवन्ति च Pañcar. 1,5,11. अणिमा u. s. w. वाक्सिद्धं सिद्धं सदृशं स्मृतम् 2,8,1. — *b) Kochsalz* (सैन्धवलवण) Râjân. 6,90. मुद्ध v. l. — *c)* सिद्धं पुरम् ungenau für सिद्धपुरम् d. i. सिद्धानां पुरम् Goldmus. Bhuvanak. 26. eben so सिद्धे नारायणक्षेत्रे für नारायणस्य सिद्धक्षेत्रे Pañcar. 1,2,3. — Vgl. अर्थसिद्ध, मनोरथ°, मन्त्र°, यथा°, रस°, श्वेत°, सर्वार्थ°, सङ्क°, स्व°.

— caus. 1) सेधयति (पारलौकिके) P. 6,1,59. *Jmdes Wissen an den Tag legen:* तपस्तापसं सेधयति, स्वान्येवैनं कर्माणि सेधयन्ति = ज्ञानमस्य प्रकाशयति (°न्ति) Pat. oder *glückselig machen.* — 2) साधयति P. 6,1, 49; s. u. 1. साध्.

— घञ् partic. °सिद्ध *allmählich zu Stande gekommen:* तपसा क्रमानुसिद्धेन Buâg. P. 4,23,8.

— अभि 1) *gelingen, zu Stande kommen:* यत्नो ऽभिसिध्यति MBh. 12, 7427. — 2) *erlangen, erreichen, gewinnen;* mit acc. Kâṭh. Up. 7,4,2.

— प्र 1) *gelingen, erfolgen, zu Stande kommen* M. 11,237. शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः Bhag. 3,8. न ब्राह्मणः साधयते कृष्यं दैवात्प्रसिध्यति MBh. 13,1226. प्रसिध्यता समागमेन Spr. (II) 272. यत्नः 3618. Vaitân. Bân. S. 104,61. यत्कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति Vop. 24,8. तासामायाचितम् — वत्प्रसादात्प्रसिध्यताम् (am Ende eines Çloka!) R. Gorr. 2, 1,40. — 2) *sich ergeben, seine Erklärung finden:* सर्वं वेदात्प्रसिध्यति M. 12,97. fg. तवैकवृत्तिता तपोः स्वराज्यं मे प्रसिध्यति Kâr. zu P. 3,1, 122. — partic. प्रसिद्ध 1) *zu Stande gekommen, vollbracht:* यत्प्रसिद्धं कर्म Kumâras. 3,19. — 2) *in Ordnung gekommen, — gebracht, geordnet;* = भूषित AK. 3,4,17,107. H. an. 3,346. Med. sh. 34. Haare Kumâras. 5, 9. 7,16. नेपथ्य 36. — 3) *bekannt* AK. H. an. Med. Hit. 224. प्रसिद्धमेवाघुर्यदेतिणेन प्रयुज्यते TS. 6,5,2,4. Nir. 6,16. °भाष्य zur Erklärung von भाषालोक 4 (vgl. 21). Jiṁ. 2,201. Maitrâyaṇ. 6,10. Kâṭh. 3,1,1. Çaṭ. 38. 44. Çiç. 69,8, v. l. Spr. (II) 224. 544. 1406. 6110. 6138. 7293. 7522. Kathâs. 6,49. 33,90. 39,29. Prab. 51,5. Çâṅk. zu Bân. Âr. Up. S. 50. 267. zu Kâṭh. Up. S. 17. Dhûrtas. 75,1. Buâg. P. 5,4,20. Pañcat. 127,22. Schol. zu P. 1,1,9. 5,2,26. 6,3,26. 8,4,67. zu TS. Prât. 1,21. 2,47. 13,14. *fg.* 19,3. Sây. zu ṚV. 1,11,5. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 17. 543,11. Sarvadarçanas. 9,2. 20,21. 93,4 (so v. a. *in der gangbaren Bedeutung*). 178,11. स्वभाव° Suçr. 1,117,15. लोक° Kâm. Nîtis. 11,49. यङ्क्षपुर° Daçak. 82,3. Prab. 23,11. घात° MBh. 9, 1396. AK. 3,4,28,220. सु° Sin. D. 2,1. Davon nom. abstr. प्रसिद्धत्व n. Sarvadarçanas. 135,7. 140,6. — Vgl. प्रसिद्धि.

— संप्र, partic. °सिद्ध *zubereitet:* घृतं पिचेत्कोतकसंप्रसिद्धम् Suçr. 2,108,19.

— सम् 1) *gelingen, zu Stande kommen:* यस्यारब्धं सर्वमेव संसिध्यति Pañcat. 201,7. — 2) *das höchste Ziel erreichen, glückselig werden:* ज्ञप्येनैव तु संसिध्येद्ब्राह्मणः M. 2,87. Bhâg. P. 11,18,25. संसिध्यस्व MBh. 3,12025. — partic. संसिद्ध 1) *zu Stande gekommen, in Erfüllung gegangen:* कर्मन् R. Gorr. 1,32,11. कार्य 3,44,22. संसिद्धार्थ adj. 2,28,38. इष्ट Verz. d. Oxf. H. 256, *a*, 31. दैवं स्वभावसंसिद्धम् R. Gorr. 2,19,17. — 2) *zu Theil geworden, erreicht, erlangt:* फल Spr. (II) 2846. वार्ता *Lebensunterhalt* VP. 1,6,32 = Mâns. P. 49,75. — 3) *zurechtgemacht, bereitet:* पर्वतान्तरसंसिद्धे बकुपादपसंवृते । धातुसंरञ्जितशिले समे Harîv. 11960. काञ्चन *Gold gemacht* Kathâs. 35,33. *zubereitet* (von Speisen): फलनिर्यूह° R. 2,91,66 (100,64 Gorr.). लवणोदक° Hallâs. 2,167. उष्ण° 168. — 4) *hergestellt, geheilt:* ओषध° Kathâs. 40,69. °व्रण MBh. 1, 3241. — 5) *bereit zu* (dat.): प्रेतभावाय R. 4,21,32. — 6) *fest entschlossen* R. ed. Bomb. 2,40,8. — 7) *befriedigt, zufriedengestellt* R. 2, 92,20. R. Gorr. 1,61,4. — 8) *geschickt, erfahren:* मल्लयुद्धेषु MBh. 4, 1183. — 9) *der das höchste Ziel erreicht hat, der Vollkommenheit erlangt hat, glückselig* MBh. 5,2932. 6,645. 13,3842. R. Gorr. 2,70,16. Brahma-P. in L.A. (III) 48,18. Bhâg. P. 1,19,26. 5,4,43. 16,30. योग° Bhag. 4,38. अनेकजन्म° 6,45. तपश्चरण° R. 1,51,25 (52,24 Gorr.). ज्ञानविज्ञान° Bhâg. P. 11,19,3. — Vgl. संसिद्धि, सांसिद्ध.

1. सिध्मं (von 2. सिध्) adj. *geradeaus (auf's Ziel) gehend:* अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून् ṚV. 1,33,13.

2. सिध्मं 1) adj. *weissgetüpfelt*, nach Andern *aussätzig:* वृशाः TS. 5, 6,22,1. VS. 24,10. — 2) n. Siddh. K. 249,*a*,13. *eine der 18 Arten des grossen Aussatzes* (महाकुष्ठ) nach Karaka 2,5.8,5. *lepra vulgaris* nach Wise, Comm. 260. Hist. of Med. 2,119. Bhâvapr. 7. = सिध्मन् H. 467. Auch masc. Schol. zu Kâty. Ça. 15,3,39.

सिध्मन् n. *eine Art des kleinen Aussatzes* (क्षुद्रकुष्ठ) Suçr. 1,268,4. 269,7. 14. 326,4. Çârîr. Saṃh. 1,5,7. 7,64. AK. 2,6,2,4. H. 467. Hallâs. 2,447. 451. सिध्मापस्मारयोः MBh. 12,11268 (सिध्याप° ed. Calc.) hierher oder zu सिध्म; सिध्मा = कासश्वास: Glosse in der ed. Bomb.

सिध्मपुष्पिका f. desgl. Viçvâmitrasaṃhitâ im ÇKDa.

सिध्मल (von सिध्म) 1) adj. *aussätzig* P. 5,2,97. AK. 2,6,2,12. Taik. 3,3,402. H. 461. an. 3,691. Med. l. 144. Hallâs. 2,451. VS. 30,17. TBr. 3,4,2,14. — 2) f. आ AK. 3,6,4,10. *getrockneter und zerriebener Fisch* Taik. H. an. Med. *eine Art Aussatz* Colebr. zu AK.

सिध्मवत् (wie oben) adj. *aussätzig* P. 5,2,97.

सिध्य (von 2. सिध्) m. Bez. eines best. Nakshatra P. 3,1,116. सिध्यत्यर्था अस्मिन्निति सिध्यः Schol. = पुष्य, तिष्य Vop. 26,20. AK. 1,1,2,23. H. 111. — सिध्यापस्मारयोः MBh. 12,11268 fehlerhaft für सिध्माप°, wie die ed. Bomb. liest.

सिध्र (wie oben) Uṇâdis. 2,13. adj. *dem Ziele zueilend:* दीर्घो न सिध्रया कृपोत्यधी ṚV. 1,173,11. *zum Ziele kommend, erfolgreich, wirksam:* पक्ष 142,8. 2,41,20. स्तोम 5,13,2. धिय: 10,7,4. क्रिया 5,44,6. = साधु und वृत्रघ्नाति Uṇâdis.

सिध्रक m. *ein best. Baum:* °मुसल Kâty. Ça. 20,1,10. im comp. vor वन wird der Endvocal verlängert und das न von वन in ण verwandelt nach gaṇa कोटरादि zu P. 6,3,117 und P. 8,4,4. सिध्रकारण (lies °वण) n. als N. eines der vier Götterhaine Taik. 1,1,65. Aus diesem comp. ist das fem. °का AK. 3,6,1,8 geschlossen worden.

सिन (von सा = सन्) m. *Bedarf, Proviant, Vorrath;* = धन Naigh. 2,7. 4,2. Nir. 3,5. 11,11. यो वृत्राय सिनमत्राभरिष्यत् ṚV. 2,30,2. येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः 3,62,1. dazu तर्त्सिन *das erwerben wollend, — bedürfend, d. h. Besteller:* यस्मा इदु स्तोमं सं दिनोमि रथं न तष्टेव तर्त्सिनाय ṚV. 1,61,4. — Nach Uṇâdis. 3,3 सिनै, das nach Uṇâdis. = काण sein soll; nach ÇKDa. ohne Angabe einer best. Autorität = सित *weiss*, f. सिनी ebend. nach Vaijn. m. *Carcya arborea* Roxb. oder *Salvadora persica* Lin. H. 1142. n. = शरीर Uṇâdis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa. सिनी = सिनीवाली Kâçikâ. 14,33 (nach Aufrecht). Vgl. auch unter 1. सि.

सिनवत् (von सिन) adj. *den Bedarf oder Vorrath bildend; genügend oder reichlich:* सुमङ्गलं सिनवदस्तु सातम् ṚV. 10,102,11.

सिनीपति m. N. pr. eines Kriegers Harîv. 3021 (शि° die ältere Ausg.).

सिनीवाक m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,109 nach der Lesart der ed. Bomb., सिली° ed. Calc.

सिनीवाली f. 1) N. einer Göttin, welche fruchtbar macht und die Geburt erleichtert; *die Genie des ersten Neumondstages* und *dieser Tag selbst* Naigh. 5,6. Nir. 11,31. AK. 1,1,2,9. H. 151. Med. l. 165. Hallâs. 1,112. ṚV. 2,32,7. 8. 10,184,2. AV. 2,26,2. 6,11,3. 7,4,1. 14, 2,15. 19,31,10. VS. 11,55. fg. प्र सिनीवाली जनयति TBr. 1,7,3,1. TS. 2,4,6,1. 6. 2,4,6,2. 5,5,22,1. 6,20,1. Ait. Br. 3,47. या पूर्वामावास्यां सा सिनीवाली योत्तरा सा कुहू: 7,11. Çat. Br. 2,5,4,33. Kâtyây. Çr. 4,15,3. Ind. St. 1,39. Weber, Gjot. 39. 101. MBh. 3,14451. 8,1486. Varâh. Bṛh. S. 48,57. Weber, Kṛshṇaj. 250. Saṃsk. K. 59,*a*,8. VP. 2,8,30. Bhâg. P. 4,12,48. 8,16,26. Tochter des Aṅgiras MBh. 3, 14126. VP. 1,10,8. Mârk. P. 52,51. Bhâg. P. 4,1,34. Gattin Dhâtar's und Mutter Darça's 6,18,3. unter den Namen der Durgâ Taik. 1,1, 51. H. ç. 50. Med. Harîv. 9333. सिनीवालीकुहूप्राप्ति f. heisst *eine Cerimonie zur Abwendung böser Folgen des Geborenseins an ihrem Tage* Saṃsk. K. 64,*a*. — 2) N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,24. Bhâg. P. 5, 20,10. — Das Wort wird fehlerhaft auch शि° und सिनीवाली geschrieben; Versuche zur Deutung desselben s. Ind. St. 5,230. fgg.

सिन्दुक m. = सिन्दुवार AK. 2,4,2,48. f. आ Dhanv. 4,40.

सिन्दुवार m. *Vitex Negundo* (निर्गुण्डी) Lin. AK. 2,4,2,49. H. 1147. Hallâs. 2,45. Râgân. 4,154. Suçr. 1,223,17. 2,471,17. Varâh. Bṛh. S. 29,9. 54,101. neutr. *die Beere* Kumâras. 3,52. °सदृशास्तण्डुलान् Pañcat. 105,3. — Vgl. नील° und सिन्धुवार.

सिन्दुवारक m. = सिन्दुवार Dhanv. 4,40. R. 5,74,3.

सिन्दूर Uṇâdis. 1,69. 1) m. *a) ein best. Baum* H. an. 3,618. fg. Med. r. 237. Viçvapr. bei Uṇâdis. — *b)* N. pr. Verz. d. Oxf. H. 79, *a*, 14. 19. — 2) f. ई = रक्तचेलिका, रोचनी (रोचना) und धातकी H. an. Med. Viçvapr. a. a. O. = सिन्दूरपुष्पी Râgân. 10,72. — 3) n. AK. 2,6,2,31. *a) Mennig* AK. 2,9,105. Taik. 2,9,33. H. 1061. H. an. Med. (रक्तचू° st. र-रक्तच्यु° zu lesen). Hân. 44. Viçvapr. a. a. O. Râgân. 13,32. Ṛt. 1,24. Z. d. d. m. G. 27,34. Gîr. 4,23. 11,34. Kathâs. 12,169. 18,122. 19,63. 23,78. 24,1. 35,112. 44,1.149. 54,77. 57,1. 72,7. Naigh. 22,43. Râgân-Tan. 1,453. Kâçîkhaṇḍa.

16. Prab. 81,9. 85,6. Paśśar. 1,4,38. 11,13. 35. 14,61. 2,4,40. fg. Verz. d. Oxf. H. 103,a,24. 121,b, No. 214. Wilson, Sel. Works 2,300. — b) = राजलेख Vicvapr. a. a. O. = राजलेखितदत्तिपा Dharani (nach Aufrecht). = रक्तशासन (schwerlich *Mennig*, wie unter dem Worte angegeben worden ist; vielleicht fehlerhaft für राजशासन) Hem. 175.

सिन्दूरकारण n. *Blei* H. 1041.

1. सिन्दूरतिलक m. n. *ein mit Mennig aufgetragenes Stirnzeichen;* am Ende eines adj. comp. f. आ Kathās. 20,50.

2. सिन्दूरतिलक 1) adj. *ein Zeichen von Mennig auf der Stirn habend.* — 2) m. *Elephant.* — 3) f. आ *Weib* H. an. 6,3. Med. k. 236.

सिन्दूरपुष्पी f. *eine best. Pflanze* (vermuthlich *eine Lilienart*) Rāgān. 10,73.

सिन्दूरप्रकार m. Titel einer Schrift: °टीका Wilson, Sel. Works 1,282.

सिन्ध vgl. कु°.

सिन्धु Uṇādis. 1,12. 1) *Fluss, Strom* (in der älteren Sprache meist m., in der späteren f.) Naigh. 1,13. Nir. 9,26. AK. 2,4,48,103. Trik. 1,2,30. H. 1080. an. 2,256. Med. dh. 23. Halāy. 3,43. 5,52. वं वृतो वरिणा इन्द्र सिन्धून् RV. 4,19,5. 22,3. स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्ष 1, 97,8. तस्मा धावा पृतमर्षन्ति सिन्धवः 123,5. 2,11,9. 25,3. 5. 3,33,9. 5, 51,7. समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः 6,19,5. 7,35,8. वि सिन्धुरिव पप्रथे 10,62,9. AV. 3,13,1. 4,24,2. 10,4,19. 13,3,30. रत्नधा RV. 4,34,8. भात्वलम् 1,143,3. गभीर 3,32,16. पिन्वमान 6,52,1. मातृतमा 3,33,3 (vgl. 10,35,2). पतिः सिन्धूनाममि रेवतीनाम् 10,130,1. Die *sieben Flüsse*, sowohl unbestimmt als auch von *den arischen Siebenströmen* gebraucht RV. 1,35,8. 32,12. 3,12,3. 12. 4,28,1. Vālakh. 6,4. RV. 8,59,12. 9, 66,6. AV. 4,6,2. 5,3,1. 61,3. आर्यात्सप्त सिन्धुषु RV. 8,24,27. पावका सप्त सिन्धवो वितस्थिरे VS. 38,26. TS. 2,2,6,1. — Mund. Up. 2,1,3. MBh. 7,356. R. 1,1,17. Megh. 47. Kumāras. 3,6. Ragh. 4,35. 13,9. Çiç. 117. Spr. (II) 1643. 1716. 2470. 4757. AK. 1,2,2,2. Rāga-Tar. 3, 360. 4,49. 181. 5,112. — 2) m. *Fluth* überh. (auch am Himmel; vgl. समुद्र): युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवम् RV. 1,182,5. सिन्धुं दिव्यस्कभायत् 164,25. 2,15,6. सिन्धुर्द्यौ वो रसया सिष्वदत्यान् 4,43,6. *die Ströme vom Himmel* 8,32,28. 41,2. — AV. 6,1,2. des Soma u. s. w. RV. 9,2,4. 12,3. 14,1. 15,5. 21,2. 86,8. 96,14. vom *Wasser, das der Elephant aus seinem Rüssel spritzt* (वमथु), Med. vom *Brunstsaft des Elephanten* H. an. vom *Nass der Lippen:* मुखसिन्धुसिक्त zu Kumāras. 3,26. — 3) m. *Meerfluth, Meer* AK. 1,2,3,1. 3,4,48,103. Trik. 1,2,3. H. 1073. H. an. Med. Halāy. 5,52. यत्र सिन्धु वरुणो यौरिव स्यात् RV. 7,86,6. समुद्रः सिन्धू रजो यत्तरित्नम् 10,66,1. यदिदिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः 1,94, 16. Stellen wie यापो न सिन्धुमभि यत्समक्तान् 10,43,7. 1,83,1. 5,11,5 sind nach der Anschauung der alten Zeit eher zu der folgenden Bedeutung zu ziehen. Man vergleiche हिमवतः प्र स्रवन्ति सिन्धो समक् संगमः AV. 5,24,1. — Spr. (II) 1095. Rāga-Tar. 6,317. Bhāg. P. 3,11, 30. 4,9,14. 8,7,16. 12,45. 20,24 (sieben). 9,10,13. 47 (vier). भव° *das Meer des weltlichen Daseins* 1,6,35. 3,21,14. 4,23,39. ज्ञान° *ein Meer von Wissen* (शंकर) Paśśar. 1,2,7. दया° *ein Meer von Barmherzigkeit* 2,2,74. कृपा° 7,9. — 4) f. (m. nach den Lexicographen) *der Indus* AK. 2,4,48,103. H. an. Med. RV. 10,75,1. fgg. सुतेजा सिन्धुरुद्रः 1, 122,6. 4,54,6. 55,2. सिन्धावधि क्षियतः 1,126,1. 5,53,9. सरस्वती 7, 95,1. येन सिन्धुं मरुतो रथाँ इव प्रचोदयः 8,12,3. 25,14. 20,25. 26,18. 10,64,9. यद्या सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा AV. 14,1,43. यस्यो समुद्र उत सिन्धुरापः 12,1,3. VS. 8,39. MBh. 1,3720. 3,14229. 6,213. 221 (VP. 180). 8,2055. Harīv. 9514. 12826. R. 1,44,15. 4,43,13. 7,100,11. Ragh. 4,67. Varāh. Bṛh. S. 5,66. 80. Mārk. P. 57,16. Rāga-Tar. 4,391. 534. 5,215. 6,305. Bhāg. P. 5,19,18. 6,5,3. Paśśar. 79,13. Verz. d. Oxf. H. 149,a,26. °षष्ठीनां नदीनामन्तरालीयाः स्त्रियः (vgl. पञ्चानां °षष्ठानां नदीनां ये ऽन्तराभिताः MBh. 8,2030) 217,b,23. fg. उपसिन्धुगान्धाराः Rāga-Tar. 1,66. der Name wird auch von andern Flüssen gebraucht MBh. 6,329 (VP. 183). Varāh. Bṛh. S. 16,19 (in Avanti). Mṛcch. 30. Mārk. P. 57,19. — 5) m. *das am Indus belegene Land und dessen Bewohner* (pl.) AK. H. an. Med. राजा सिन्धूनाम् MBh. 3,15576. सौवीरान्सह सिन्धुभिः 15621. Bhāg. P. 5,12,6. °पुलिन्दकाः MBh. 6,348 (VP. 186). Varāh. Bṛh. S. 4,23. 14,19. 18,6. लाटसिन्धुविषयप्रभृतीन् 60,11. सिन्धौ Varāh. Jogaṣātrā 3,19. देशं °नामकम् Ragh. 15,87. °भर्तृ Mārk. P. 132,47. *der Fürst dieses Landes* (?) Verz. d. Oxf. H. 78,b,36. 38. 79,a,6. fgg. 10. 12. — 6) m. Bez. Vishṇu's (wohl *der Fluthende*): वृषि स्वयावन्सिन्धो पूर्वचित्तये RV. 8,25,12. MBh. 12,1508. Vgl. सोम°. — 7) m. = सिन्दुवार Caṇḍān. im ÇKDa. — 8) m. *eine Art Borax* (सेतटङ्कण) Rāgān. im ÇKDa. nach 6,244 ist सिन्धुतीरसंभव n. gemeint. — 9) m. Bez. *eines best. musikalischen* Rāga Saṅgītasindhu im ÇKDa. — 10) m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva R. 4,41,61. eines Schlangendämons Vsudp. 86. verschiedener Männer Rāga-Tar. 6,264. 269. Colebr. Misc. Ess. 2,298. — Vgl. गु°, नि°, पान°, भक्तिरसामृत°, मर्यादा°, विवेक°, मधु°, सिकता°, सित°, सिद्ध°, सुधा°, सोम°, सैन्धव.

सिन्धुक 1) adj. *am Indus geboren*, von *daher stammend* u. s. w. P. 4,3,93. VP. 472, N. 39. — 2) m. = सिन्दुवार *Vitex Negundo* Caṇḍān. im ÇKDa. Varāh. Bṛh. S. 59,6.

सिन्धुकन्या f. *Meerestochter*, Bez. der Lakshmi Paśśar. 1,12,36. 2. 2,84. 3,61. क्षीरोद° 6,15.

सिन्धुकाक m. = समुद्रकाक u. s. w. *ein Sepiae* Caṇḍān. im ÇKDa.

सिन्धुकार n. *eine Art Borax* (सेतटङ्कण) Rāgān. im ÇKDa. nach 6,244 ist लोकमुद्धिकार n. gemeint.

सिन्धुक्षित् m. N. pr. eines Rāgarshi Paśśāv. Br. 12,12,6. mit dem patron. Praijamedha Verfasser von RV. 10,75.

सिन्धुखेल m. *das am Indus belegene Land* Caṇḍān. im ÇKDa.

सिन्धुगञ्ज m. N. *einer von* Sindhu *errichteten Schatzkammer* Rāga-Tar. 6,266.

सिन्धुज 1) adj. *am Indus geboren, daher stammend:* Pferde MBh. 3, 2784. — 2) f. आ ein N. der Lakshmi (*die Meergeborene*) Gaṇān. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,23. — 3) n. *Steinsalz* AK. 2,9,42. Suçr. 2,206,11.

सिन्धुजन्मन् 1) m. *der Mond* (*der Meergeborene*) Gaṇān. im ÇKDa. — 2) n. *Steinsalz* Ratnam. 85.

सिन्धुडा f. N. pr. einer der Gattinnen des Rāga Mālava Saṅgītas. im ÇKDa.

सिन्धुतस् adv. *aus der* Sindhu u. s. w. AV. 4,10,4. 7,45,1.

सिन्धुतीरसंभव n. *eine Art Borax* Rāgān. 6,244.

सिन्धुदत्त m. N. pr. eines Mannes Daçak. 193,14.

सिन्धुदेश m. *das Indus-Gebiet* Verz. d. Oxf. H. 186,*a*,4. 352,*b*,21.

सिन्धुद्वीप m. N. pr. eines Fürsten MBh. 9,2285. 2294. 14,2843. ein Sohn Ambarîsha's Harîv. 813. fg. VP. 379. Verfasser von ṚV. 10,9. ein Sohn Gâhnu's MBh. 13,203. Nâbha's Bhâg. P. 9,9,16.

सिन्धुनद m. *der Indus* Vaitân. Bṛh. S. 16,16. 21. ein Fluss im Süden Verz. d. Oxf. H. 318,*a*,21. fg. ein best. Land 339,*a*,44. fg.

सिन्धुनन्दन m. *der Mond* (*ein Sohn des Meeres*) Taitt. 1,1,87.

सिन्धुनाथ m. *Meer* (*Herr der Flüsse*) Çiç. 14,68.

सिन्धुपति m. 1) *Flussbeherrscher:* Mitra-Varuṇa ṚV. 7,64,2. — 2) *Fürst der* Sindhu-*Anwohner* MBh. 3,13225.

सैन्धुपत्नी adj. f. *die* Sindhu *zur Herrin habend* AV. 5,24,3.

सिन्धुपथ m. in eig. und übertragener Bed. gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

सिन्धुपर्णी f. *Gmelina arborea* Rîgân. 9,33.

सिन्धुपारज adj. *am Indus geboren, daher stammend:* Pferde Hâlâs. 2,284.

सिन्धुपुत्र m. 1) *der Mond* (*Sohn des Meeres*) ÇKDa. und Wilson. — 2) *eine Art Ebenholz* (मर्कटेन्दु) Çabdaś. im ÇKDa.

सिन्धुपुष्प m. *Muschel* (*Blüthe des Meeres*) Çabdaś. im ÇKDa.

सिन्धुप्रसूत n. = सैन्धव *Steinsalz* Suçr. 2,326,11. 359,20.

सिन्धुमध्य adj. *bei der Quirlung des Meeres entstanden:* अमृत Bhâg. P. 8,12,47.

सिन्धुमध्य N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,4.

सिन्धुमन्थज n. *Steinsalz* (सैन्धव) Ratnam. im ÇKDa. fehlt in unserer Hdschr.; vgl. सिन्धुजन्मन्.

1. सैन्धुमातृ f. *Mutter der Ströme:* Sarasvatî ṚV. 7,36,6.

2. सैन्धुमातृ adj. *die Fluth zur Mutter habend:* die Açvin ṚV. 1,46,2. Soma 9,61,7. यार्वाणः 10,78,6.

सिन्धुमित्र m. N. pr. eines Mannes gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. — Vgl. सैन्धुमित्रिक.

सिन्धुर m. *Elephant* Taitt. 2,8,33. H. 1217. Hân. 14. Hâlâs. 2,39. Râga-Tar. 1,300.

सिन्धुरद्वेषिन् m. *Löwe* (*der Feind des Elephanten*) Çabdârthak. bei Wilson.

सिन्धुराज m. 1) *der Flüsse Fürst* so v. a. *das Meer* Maitrâyaṇ. 6,16. R. 5,74,27. 93,19. Raghu. 6,61. Spr. (II) 2882. — 2) *ein Fürst der* Sindhu-*Anwohner* MBh. 7,3943. Harîv. 6408. Kathâs. 19,108. 122,4. Prab. 73,14. — 3) N. pr. eines Muni R. 3,39,28.

सैन्धुराज्ञी adj. f. *die* Sindhu *zur Königin habend* AV. 5,24,3.

सिन्धुराव m. Pañcat. 1,6,17 fehlerhaft für सिन्धुवार *Vitex Negundo.*

सिन्धुल m. N. pr. des Vaters von Bhoǵa, Fürsten von Dhârâ, Verz. d. Oxf. H. 150,*b*, No. 320.

सिन्धुलवण n. *Steinsalz* Ratnam. 85.

सिन्धुवक्त्र N. pr. einer Oertlichkeit; vgl. सैन्धुवक्त्रक.

सिन्धुवार m. 1) = सिन्दुवार *Vitex Negundo* Taitt. 3,3,121. Çabdar. im ÇKDa. MBh. 3,11888. 17286. R. 3,79,24. Suçr. 2,270,19. 279,11. Pañcat. 1,6,17 (°राव gedr.). — 2) *ein Pferd aus dem Induslande* Taitt. 2,8,43.

सिन्धुवारक m. = सिन्धुवार Çabdar. im ÇKDa. Suçr. 2,277,11.

सिन्धुवारित m. desgl. Çabdar. im ÇKDa.

सिन्धुवासिनी f. N. pr. der Familiengottheit der Mâṇṭi (*die am Indus Wohnende*) Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,11.

सिन्धुवाह्य adj. = नदीनां प्रवाह्यिता nach Sây.: etwa *die Fluth durchfahrend:* die Açvin ṚV. 5,75,2.

सिन्धुवीर्य m. N. pr. eines Fürsten der Madra Mâhâbh. P. 132,46.

सिन्धुवृष m. ein N. Vishṇu's H. ç. 70.

सिन्धुवेतस m. *Gmelina arborea Roxb.* Çabdar. im ÇKDa.

सिन्धुशयन m. ein N. Vishṇu's (*der auf dem Meere Ruhende*) Çabdârthak. bei Wilson.

सिन्धुषामन् n. N. eines Sâman Lâṭj. 1,6,31. Ind. St. 3,244,*a*.

सिन्धुषेण (सिन्धु + सेना) m. N. pr. eines Fürsten *der Indus-Anwohner* Mudrâ. 18,17.

सिन्धुसंगम m. *Flussmündung, Gemünde* Âk. 1,2,3,34. H. ç. 107. Râga-Tar. 4,248.

सिन्धुसागर *das zwischen den Indusmündungen und dem Meere gelegene Land* Reinaud, Mém. sur l'Inde 278. LIA. 1,101, N. 2.

सिन्धुसूनु m. *Sohn des Meeres,* patron. Gâlamâdhara's Verz. d. Oxf. H. 346,*a*,18.

सिन्धुसृत्य n. *das Fliessen in Strömen:* यापो सिन्धुसृत्याय जाताः AV. 19,2,11.

सिन्धुसौवीर m. pl. N. pr. *eines im Indus-Gebiet wohnenden Volkes* AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (36). MBh. 6,361 (VP. 191). 8,2070. R. 1,12,23 (25 Gorr.). 4,43,11. वाल्हीकसिन्धुसौवीरसौराष्ट्रिकास्ते हि पयसापि लवणमश्नन्ति Kâraka 3,1. Vaitân. Bṛh. S. 10,6. 14,17. Mâhâbh. P. 57,26. 58,20. °पति Bhâg. P. 5,10,1. auch Bez. des Landes: °वासिनः MBh. 5,588. sg. so v. a. °पति Vaitân. Bṛh. S. 14,22. — Vgl. सिन्धु und सौवीर.

सिन्धुसौवीरक m. pl. = सिन्धुसौवीर Vaitân. Bṛh. S. 9,19.

सिन्धूत्तम (सिन्धु + उ°) n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,5021. 13,7650 (°त्तमं तपो° ed. Bomb.).

सिन्धूत्थ (सिन्धु + उत्थ) 1) m. *der Mond* H. ç. 11. — 2) n. = सैन्धव *Steinsalz* H. an. 3,510. Hâlâs. 2,459. Ratnam. 85. Suçr. 2,209,1. 223,10. 325,10. 402,15.

सिन्धूद्भव (सिन्धु + उ°) n. *Steinsalz* Ratnam. 85. Suçr. 1,101,10. 19.

सिन्धूपल (सिन्धु + उ°) n. dass. Hân. 85.

सिन्व्, सिन्वति v. l. für निन्व् Dhâtup. 15,81.

सिपाक्षण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,27.

सिपिल m. N. pr. eines Mannes Schiefner, Lebensb. 264 (44).

सिपुन m. *eine best. Pflanze* Kauç. 8.

सिप्र 1) m. *a*) *Schweiss* Taitt. 1,1,123. H. an. 2,468. Med. r. 98. Hân. 154. — *b*) *der Mond* Taitt. 1,1,85. — 2) f. आ *a*) N. pr. eines bei Uǵǵayini vorbeifliessenden Flusses H. an. Med. Harîv. 9309. Mṛcch. 32. Raghu. 6,35. Vaitân. Bṛh. S. 16,9. Kathâs. 24,92. 107. 37,4. VP. 185, N. 30. Mâhâbh. P. 57,20. 24. Pañcat. 240,11. Kâlikâ-P. 23 im ÇKDa. — *b*) *a woman's zone* und *a female buffalo* Wilson ohne Angabe einer

Aut. — 3) n. N. pr. eines Sees, aus dem die Siprá entspringt, Kâśikh. P. 23. 41 im ÇKDa. — Hier und da mit श geschrieben.

सिफिका f. N. pr. eines Dorfes Râéa-Tar. 8,685.

सिभ्, सेभति (हिंसार्थ) Dhâtup. 11,41, v. l. — Vgl. सिम्भ्.

सिम् indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. सिमँ pron. Uṇâdis. 1,143 (सिंम). Çânt. 4,10. fg. (soll auch tonlos sein). gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Vop. 3,9. *jeder, all* Nir. 4,11. उच्चक्रमत्कमन्ते सिमस्मात् ṚV. 1,95,7. यन्मितक्तुः सिमः 102,6. रात्री वासस्तनुते सिमस्मै 115,4. तमित्पृच्छान्न सिमो वि पृच्छति 145,3. सिम उत्तो ऽवमृष्टा घंदत्ति 10,28,11. Angeblich so v. a. श्रेष्ठ. सिम इति वै श्रेष्ठमाचक्षत इति वाजसनेयकम् Sây. zu ṚV. 8,4,1.

2. सिंम so v. a. शिम. यद्यस्य वाजिनंस्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यंत्तीः VS. 23,37. 42, wo das fem. शम्यत्तीः irrig in den Text gekommen zu sein scheint; vgl. TS. 5,2,12,1. nach Mahidh. = सीमा so v. a. रेखा.

सिमसिमाय् (onomatop.), °यते *brodeln, brutzeln* Mâlav. P. 12,37 (°यत्ते zu lesen). Vîsavadatt. 242,1. auch सिमिसिमायते so v. a. *prickeln* Kathâs. 89,90.

1. सिंमा (von 1. सिम) adv. etwa *allenthalben:* सिमा पृङ् नृषूतो यसि ṚV. 8,4,1.

2. सिमा f. pl. *das aus den* Mahânamnî-*Versen gebildete* Sâman Ârṣ. Br. 5,17. Pañkav. Br. 13,3,3. 5,3. 6,5. 9,3. 4. Schol. zu 13,4,1. सिमानां निषेधः N. eines Sâman Lâṭj. 7,4,1. 12. Ind. St. 3,244,*a*.

सिमिसिमाय् s. u. सिमसिमाय्.

सिम्ब m. N. pr. eines Mannes Râéa-Tar. 8,1004. 1041. 1045. 1047.

सिम्बितिका f. *eine best. Hülsenfrucht* Suçr. 1,209,4. 21. — Vgl. शिम्बि, शिम्बिका.

सिम्भ्, सिम्भति (हिंसार्थ) Dhâtup. 11,41, v. l.

सिम्भुक m. N. *eines mythischen Vogels* Pañkat. 191,24.

सिरा (von सॄ) f. Uṇâdis. 2,13. 1) *Rinnsal:* वं वृत्रमाशयानं सिरासु मह्ना वज्रेण सिषपः ṚV. 1,121,11. — 2) *eine der drei Gattungen von Gefässen des menschlichen Körpers, welche Flüssigkeiten führen, Ader* Wise 60. AK. 2,6,2,16. H. 631. an. 2,468. Med. r. 92. Hall. 3,12. deren 700 angenommen Garbhopan. in Ind. St. 2,71. Jîv. 3,100. Suçr. 1,353,20. fgg. धमानाद्धमन्यः स्रवणात्स्रोतांसि सरणात्सिराः Kâraka 1,30. Jîv. 3,31. 101. °जालानि MBh. 3,14222. 12,7779. Suçr. 2,236,4. MBh. 12,7781. fgg. Hariv. 6895. 14532. R. 5,32,11. Suçr. 1,47,8. 84,7. 267, 12. सिराध्मान, °शूल, °शोफ 97,8. 118,3. वातवाहिन्यः n. s. w. 354,8. व्यायुवत्यभितो देकं नाभितः प्रसृताः सिराः 357,13. विद्धा 359,21. 363,1. 4. Vârâh. Bṛh. S. 61,8. 68,2. 7. 69. 71. °नद्ध Kathâs. 12,52. 97,22. Mîrk. P. 37,40. Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,4 v. u. जलवाहिन्यः im Auge Vîsn. 8,10,1. am Ende eines adj. comp.: व्यध्यसिर Suçr. 1,358,13. 359,1. पादाकृतसिर MBh. 2,903. *Wasserader:* पुंसां पद्माङ्गेषु सिरास्तथैव तितावपि Vârâh. Bṛh. S. 54,1. fgg. 124. *aderartig sich kreuzende Linien* 53,65. — 3) = धम्यवाहिनी H. an. — Das Wort wird häufig und namentlich in der Bomb. Ausg. des MBh. mit श geschrieben. Vgl. दृत्तशिरा, पत्र°, विसिर, सप्त°.

सिरापत्र m. *Ficus religiosa* Çabdak. in Verz. d. Oxf. H. 195,*b*,6 v. u. = हिन्ताल Râéân. 9,92.

सिराप्रकर्ष m. = सिराकर्ष Suçr. 2,315,4.

सिराबीज n. gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31.

सिरामूल n. *Nabel* H. ç. 126; vgl. Suçr. 1,357,13.

सिरामोक्ष m. *Aderlass* Suçr. 2,321,10.

सिराल (von सिरा) 1) adj. (f. आ) *mit vielen oder starken Adern versehen* Vârâh. Bṛh. S. 68,8. 28. 70,17. 23. Kâçikh. 37,14 (nach Dekkan). Daçak. 154,2. Bhatt. 2,30. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 33. — 3) f. आ *eine best. Pflanze,* = सप्तला H. an. 3,453. Med. bh. 12. — 4) n. *die Frucht von Averrhoa Carambola Lin.* Çabdak. im ÇKDa.

सिरालक m. *eine best. Pflanze,* = ग्रन्थिपर्ण Çabdak. im ÇKDa.

सिरालु adj. = सिराल Vârâh. Bṛh. 17,11 wohl fehlerhaft.

सिरावत्त n. *Blei* Râéân. 13,25.

सिरावेध m. *Aderlass* Verz. d. B. H. 280,8. Râgnavall. 12,25.

सिराव्यध m. dass. Suçr. 1,357,16. 362,16. 2,43,17. Verz. d. Oxf. H. 305,*a*,17.

सिराव्यधन n. dass. Suçr. 1,45,11.

सिराकर्ष m. *eine gesteigerte Form von* सिरोत्पात Wise 294. Suçr. 2, 326,16. 328,4.

सिरिन्ध richtige Lesart für सिरिध im gaṇa कुलालादि zu P. 4,3, 118. — Vgl. सैरिन्ध.

सिरी f. etwa *Weberin:* सिरीस्तन्ते तन्वते अप्रजस्तयः ṚV. 10,71,9.

सिरोत्पात (सिरा + उ°) m. *eine best. Krankheit des Weissen im Auge* Wise 293. Suçr. 2,315,3. 326,16. Vîsn. 3,10,20. Çârîr. Saṃh. 1,7,19.

सिल्, सिलति (उञ्छे) = शिल् Dhâtup. 28,70.

सिलक m. N. pr. v. l. für शिलक Ind. St. 1,193. 255.

सिलाची f. *eine best. heilkräftige Pflanze* AV. 5,5,1. 8.

सिलाञ्जाला f. wohl *eine best. Pflanze* AV. 5,16,3.

सैलिकमध्यम adj. Beiw. der Sonnenrosse (nach Nir. 4,13 so v. a. संमृतमध्यम [= निरुदर Durga] oder शीर्षमध्यम) ṚV. 1,163,10.

सिलीवाक m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,109. सिनी° ed. Bomb.

सिल्हकी f. = शल्लकी *Weihrauchbaum* Bharata zu AK. 2,4,6,12 nach ÇKDa.

सिल्हन m. N. pr. eines Mannes Râéa-Tar. 7,183.

सिल्हराज m. desgl. Râéa-Tar. 7,1267.

सिल्क् m. *Olibanum* H. 648. सिल्ह् v. l. und AK. 2,6,2,30. Trik. 2,6,37.

सिल्कक (सिल्हक geschr.) 1) m. dass. AK. 3,4,2,9. Trik. 3,3,26. H. an. 3,718. Ratnam. 42. Râgân. 12,105. — 2) f. ई *Weihrauchbaum* (vgl. शल्लकी) Çabdar. im ÇKDa.

सिल्कभूमिका (सिल्ह° geschr.) f. *Weihrauchbaum* Çabdar. im ÇKDa.

सिल्कसार m. *Olibanum* Râéân. 12,105. सिल्ह° geschr.

सिव् s. सीव्.

सिवत m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 128.

सिवर m. *Elephant* Gaṭâdh. im ÇKDa.

सिषंग्रामयिषु s. सिसंग्रामयिषु.

सिषाधयिषा (vom desid. des caus. von 1. साध्) f. *die Absicht zu beweisen* Bulaiṇ. 69.

सिषाधयिषु (wie eben) adj. 1) *zu Wege zu bringen beabsichtigend, Etwas* (acc.) *im Auge habend:* सर्वम् Âpast. 2,12,17. वैरम् Bulg. P. 1.

16,10. — 2) *zu beweisen beabsichtigend* Comm. zu Gaut. 1,6 (सिसा°).

सिषासंतु (vom desid. von सा = सन्) adj. *zu gewinnen begierig:* रयीणाम् RV. 9,47,5.

सिषासंनि adj. dass. RV. 10,53,11.

सिषासु adj. *zu empfangen oder zu gewinnen begierig; zu geben bereit* RV. 1,102,6. सिषासवो वा एते यद्दीक्षिताः Ait. Br. 6,7. AV. 8,21,2.

सिषेवयिषु (vom desid. des caus. von सेव्) adj. *zu verehren beabsichtigend:* विरञ्चिकरिगिरिशान् Verz. d. Oxf. H. 200,*a*,3. 2 v. u.

सिस्नासु (vom desid. von स्ना) adj. *zu baden beabsichtigend* MBh. 8, 1924 nach der Lesart der ed. Bomb., सिस्नासु ed. Calc.

सिसु (vom desid. von 1. सन्) adj. *zu geben bereit* RV. 3,19,21.

सिसंयामयिषु (vom desid. von संयामय्) adj. *zu kämpfen beabsichtigend* Bhatt. 3,47. सिसं° Wilson.

सिसाधयिषु s. सिषाधयिषु.

सिसृक्षा (vom desid. von 3. सर्ज्) f. *die Absicht zu schaffen* M. 1,75. Hariv. 534. Bhâg. P. 2,9,5. 10. विश्वस्यास्य 3,5,28. लोक° 1,3,1. 2,7, 5. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 43.

सिसृक्षु (wie oben) adj. 1) *auszustossen —, auszuschütten beabsichtigend:* क्रोधविषम् MBh. 8,4345. — 2) *zu schaffen —, hervorzubringen beabsichtigend:* प्रजाः M. 1,34. MBh. 1,2133. 3,11875. 10,769. 13,7393. Hariv. 33. R. 7,89,8,46. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 143. VP. 1,6,3. Mârk. P. 48,4. 101,9. Bhâg. P. 4,24,72. 7,1,10. 10,59,29.

सिस्नासु s. सिस्नासु.

सिहुण्ड m. *Euphorbia antiquorum* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. सीहुण्ड.

सिह्न und सिह्नक s. u. सिल्ह् und सिल्ह्क.

1. सी. Eine solche Wurzel in der Bed. *eine gerade Linie ziehen, gerade richten* kann aus सीता, सीमन्, सीमन्त, सीर, सेना *Schlachtreihe* vermuthet werden.

2. सी s. गृधसी.

सीक्, सीकते = शीक् Dhâtup. 4,1, v. l.

सीत् s. desid. von 1. सद्.

सीखा f. N. pr. eines Dorfes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 512,1 v. u.

सीघार्वी f. *ein best. Vogel* VS. 24,25.

सीतवन m. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,6029 (nach der Lesart der ed. Bomb., शीतवन ed. Calc.). सीतावन Verz. d. Oxf. H. 46,*b*, N. 3. शीतवन N. einer Leichenstätte in Kâçmîra Wassiljew 40. Tibet. 13. 228.

सीता (von 1. सी) *L. Uçênas.* zu Uṇâdis. 3,90 (शीता). 1) *Furche* AK. 2,9, 14. Trik. 3,3,191. H. 891. an. 2,207. Med. t. 71. Hall. 2,421. RV. 4,57,6. 7. AV. 11,3,13. VS. 12,70. सीताः कृणति TS. 5,2,3,4. अनुसीतम् (TS. Prât. 6,13) *in jede Furche* 5. 6,2,5. चेतुःसीत 4,11,1. सकृत्सीत Âçv. Gṛhj. 2,8,9. — Çat. Br. 7,2,2,3. 5. 13. 15. 13,8,2,6. Gobh. 2,1,3. 4, 9,13. Kâty. Çr. 21,4,1. Kaçç. 20. 106. °गोतम् Pân. Gaṇ. 2,17. °लोष्ट (vgl. MBh. 13,2125) Gobh. 4,9,23. Çâṅkh. Gṛhj. 4,17. MBh. 7,3944. fg. Hariv. 3281. R. 3,4,17. Kumâras. 5,61. °द्रव्य *Pflug, Ackerwerkzeug* M. 9,293. — 2) personificirt als सीता सावित्री TBr. 2,3,10,1. इन्द्रपत्नी Pân. Gaṇ. 2,17. 18. als Gattin Râma's und Tochter Janaka's, die beim Pflügen eines Ackers aus einer *Furche* sich erhob; wird mit Lakshmî identificirt, wie Râma mit Vishṇu. Trik. 2,8,4. 3,3,191. H. 703. H. an. Med. R. 1,1,27. 66,14. 3,4,17. Hariv. 2331. fgg. VP. 384. 390. Bhâg. P. 9,13,18. Wilson, Sel. Works 1,38 u. s. w. °स्तव Weber, Râmat. Up. 363. °रामविवाहकाव्य Notices of Skt Mss. 1,17. 42. eine Form der Dâkshâjanî Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,18. — 3) Titel einer Upanishad Ind. St. 3,326,1. — 4) N. pr. eines Flusses (häufig शीता geschrieben, aber nicht in den Bomb. Ausgg.) LIA. 1,843. 846. MBh. 3,11063. 12907. 6,343. 433. 12,3099. Hariv. 9510. 12829. R. 1,44, 18. 4,41,30. Gorâkhs. Bhuvanak. 38. VP. 2,2,32. Mârk. P. 59,7. Bhâg. P. 5,17,6. = व्योमगङ्गा Trik. 3,3,191. = गङ्गाभेद H. an. = स्वर्गगङ्गा Med. — 5) N. pr. einer Dichterin Verz. d. Oxf. H. 150,*b*,6 v. u. 151, *a*,17. — Vgl. कृष्णसीत.

सीताकुण्ड N. pr. *einer der Sîtâ geweihten und mit Wasser gefüllten kleinen Höhlung im Erdboden* Wilson, Sel. Works 2,169.

सीतापति m. *der Gatte der* Sîtâ d. i. Râma Çabdar. im ÇKDa. Weber, Râmat. Up. 362. Verz. d. Oxf. H. 28,*b*,27.

1. सीतायज्ञ m. *ein der Furche geltendes Opfer* Pân. Gaṇ. 2,13. Gobh. 4,4,24.

2. सीतायज्ञ adj. *der Furche opfernd:* कर्षकाः Hariv. 3816.

सीतावन s. सीतवन.

सीतावल्लभ m. *der Geliebte der* Sîtâ d. i. Râma Weber, Râmat. Up. 313.

सीतीलक m. = सतीलक Râjam. zu AK. 2,9,16 nach ÇKDa.

सैत्य (von सीता) 1) adj. *gepflügt* P. 4,4,91. AK. 2,9,8. H. 968. — 2) n. *Getraide* H. 1168. Hall. 2,419. Vishṇ. 198. — Vgl. त्रि°, द्वि°.

सीद् s. 1. सद्.

सीद s. कु°.

सीदत्सोय (von सीदत्सम्, dem Anfange von RV. 8,21,5) n. प्रजापतेः N. eines Sâman Ind. St. 3,224,*b*.

सीद्य (von 1. सद्) n. *Trägheit* Buddh. im ÇKDa.

सीधु Uṇâdis. 4,28 (शीधु). m. n. gaṇa घर्घर्यादि zu P. 2,4,21. AK. 2, 6,*a*,34. Trik. 3,5,9. Sidd. K. 248,*b*,12. 251,*a*,12 (m. f.). *Branntwein aus dem Saft des Zuckerrohrs, Rum* AK. 2,10,42. Trik. 3,3,47. H. 904. Hall. 2,174. इक्षोः पक्वरसैः सिद्धः सीधुः पक्वरसश्च सः । यावस्तेरेव पः सीधुः स च शीतरसः स्मृतः ॥ Bhâvapr. 5 (vgl. Madanav. 8, 74). MBh. 4, 195. 8,1842. R. 5,14,47. 53. Suçr. 1,70,10. 189,17. 20. 190,13. 191,5. 2,551,10. सीधुरवधमति Karaka 1,27. 8,4. Çiç. 9,87. Kathâs. 20,220. 21,6. °गन्धिललनावक्त्र Prasan. 19,12. विशद् Spr. (II) 7263. पुराण Rasar. 16,52. Flüsse, die *Rum* führen, Bhâg. P. 7,4,17. °प adj. (f. ई) P. 3,2, 8, Vârtt. °पान MBh. 3,1827. Rt. 6,33. Trik. 2,3,47. वदनैः समीधुभिः Rt. 2,18. unmg. so v. a. *Nektar:* मधुर° Gît. 10,2. 12. Bhâg. P. 10,31, 8. त्वदुणवादसीधुपीयूष 3,21,17. मुकुन्दचरितामृत° 4,22,24. Wird häufig (aber nie in den Bomb. Ausgg.) शीधु geschrieben.

सीधुगन्ध m. *Mimusops Elengi Lin.* Trik. 2,4,18. Râjân. 10,64. Çabdar. im ÇKDa.

सीधुपुष्प 1) m. dass. und *Nauclea Cadamba* (कदम्ब). — 2) f. ई *Grislea tomentosa Roxb.* Râjân. im ÇKDa.

सीधुरस m. *Mangifera indica Lin.* Râjân. 11,10.

सीधुमंथ m. *Mimusops Elengi Lin.* Rāǵān. 10,64.

सीध n. *After* Çabdaratnāk. bei Wilson.

सीप m. *ein best. Opfergefäss* Vaitānasūtra im ÇKDa.

सीपाल wohl = शीपाल gaṇa काशादि zu P. 4,2,80. Davon adj. सिपालिल ebend.

सीबला f. *eine best. auf dem* Himavant *wachsende Pflanze* TBa. 2, 5, 6, 4. 5.

सीम् enklitische Partikel gaṇa चादि zu P. 1,4,57. meist nach Pronomina und Präpositionen mit kaum hervortretender Bedeutung, etwa wie — ἄν, — cumque. Nach Nir. 1,7 vorallgemeinernd oder expletiv. Nach पद् RV. 1,37,6. 9. 179,3. 3,30,14 u. s. w. परि पद्भ्येण सीमर्पच्छत् 1,61,11. यम् 36,1. 4,13,3. 38,3. यान् 8,40,8. त्वम् 6,1,1. यमि 3,54,6. 4,38,8. या 3,7,3. नि 38,3. 8,89,7. निस् 5,31,9. परि 1,93,3. 3,56,4. प्र 2,28,4. प्रति 7,78,3. सम् 3,2,10. न 8,59,7. मा 69,8. nach विश्वतस् am Versende 1,33,9. 116,20. 5,47,2. विश्वस्मात् 4,2,6. पूर्व्यम् 3,23,3. sollen nach Verbis 1,117,19. 2,36,1. 3,1,8. Fehlt bereits im AV.

सीमक am Ende eines adj. comp. von सीमन् *Grenze:* गणनागुण° Pāṇ. 4,3,98. स° *nebst der Mark* Pat.; s. u. ग्राम in den Nachträgen.

सीमर्तम् (von सीमन्) adv. vom *Scheitel her:* वि सीमतः सुरुचो वेन आवः VS. 13,3. Nir. 1,7, wo auch die Bed. सर्वतस् versucht wird.

सीमन् (von 1. सी) Uṇādis. 4,150 (सीमन्). f. P. 4,1,11. Schol. Vop. 4, 23. 1) m. *Haarscheide, Scheitel:* पाः सीमानं विकृन्तति मूर्धानं प्रत्यर्पणीः AV. 8,8,13. Çat. Br. 7,4,1,14. Ait. Br. 5,7. सीमानमभिनत् Pāraṇ. Br. 13,4,1. 15,5,20. स ऋतमेव सीमानं विदार्य Ait. Up. 3,12. — 2) f. *Grenze* (auch in übertr. Bed.) AK. 2,2,19. H. 962. Med. n. 155. Halāy. 2,104 (neutr.). सीम्नि M. 8,254. fg. 259. सीम्नो विवादे Jāán. 2,150. सीमानं नी 151. Çiç. 3,57. Uttarar. 33,1 (43,6). Bhāg. P. 5,16,11. व्योम्नः सीम्नि Z. d. d. m. G. 27,85. ग्रामाणामुपशल्यसीमनि 86. तीरसीमनि Kathās. 24,92. गगणसीम्नि Prab. 79,8. वङ्गुलसीमनि Gīt. 11,2. Rāǵa-Tar. 3,412. Sāh. D. 7,9. मेदिनी° Dhūrtas. 66,9. अ° adj. *unbegrenzt* Spr. (II) 1229. unbestimmt ob सीमन् oder सीमा Taik. 3,3,272. M. 8,149. 247. Spr. (II) 7053. fg. Bhāg. P. 5,1,41. Bhaṭṭ. 1,6. अ° adj. im comp. Gīt. 10,1. — 3) f. *Markung eines Dorfes* Med. यप्रतीभायां सीम्नो निवर्तेत Āpast. 2,9, 1. सीम्नि प्रज्ञातमपि शोधमुपैति सस्यम् Varāh. Bṛh. S. 19,8. Hierher oder zu सीमा Taik. 3,3,272. कृष्यत्ता प्रविता सीमा Harīv. 3812. नास्ति ग्रामः कुतः सीमा Spr. (II) 7575. — 4) f. *Höhepunkt, das Non-plus-ultra:* तपः°, सकलगुण°, कला°, जननमुख°, भिषः, सुकृतकुल°, सुधा°, मतिमुखर° Spr. (II) 2493. मल्लीमुखाम् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,25, Çl. 9. Ueberall nom., so dass auch सीमा möglich wäre. — 5) f. *Hodensack* (wegen der *Naht* desselben) Med. सीम्नि पुष्कलको वृक्तः Par. zu P. 2,3,36. — 6) *eine best. hohe Zahl* Mél. asiat. 4,637. — Vgl. निः°, लोकसीमातिवर्तिन्, स°, सीमा, सीमन्त.

सीमन्त m. Vop. 2,12. AK. 3,6,2,19. 1) *Scheitel* AV. Paiṅ. 3,43. P. 6, 1,94, Vārtt. 3 (vgl. gaṇa शकन्धादि). H. 571. Halāy. 2,374. Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 8,69 (m. und n.). क्लिनत्ता वज्र तं सीमन्तमन्वक्षमनु पातय AV. 6,134,3. यत्सीमन्तं कङ्कतस्ते लिलेख TBa. 2,7,12,3. °सं व्यूहति Āçv. Gṛhy. 1,14,4. उन्नयति Gobh. 2,7,8. विवृणति Kāç. 79. धनुर्व्रतो Çiç. 8,69. येन दानवनारीणां सीमन्तोद्धरणं कृतम् Harīv. 2712. यावत्सीमन्ता: केशा: 4097. Jāán. 1,282. Mṛcch. 66. Prab. 81,9. °पुञ्जिताञ्जलि Rāǵa-Tar. 3,19. °विधि Verz. d. B. H. No. 1036. (यात्तमाकाशे नागम्) सीमन्तमिव कुर्वाणं नभसः MBh. 1,1804. 7,7451. 8221. मध्येन चास्य (भीष्मस्य) कालिन्दी सीमन्तमिव कुर्वती Harīv. 3501. सेतुः सीमन्त इव सागरे R. 5,95,42. 41. — 2) so v. a. सीमन्तोन्नयन Jāán. 1,11. Verz. d. B. H. 258,17. — 3) *Scheidelinie am Körper,* deren vierzehn angenommen werden und den Fugen der Knochen (अस्थिसंघात) entsprechen, Suçr. 1,338,21. 351,6. 357,11. Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,2 v. u. — 4) *Grenze:* लोकस्य °करी मर्यादा MBh. 12,2698. — 5) N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 74,*b*,30. eines Dichters 150,*b*, No. 320. — Harīv. 3812 fehlerhaft für सीमान्त.

सीमन्तक (von सीमन्त) 1) adj. f. °न्तिका *mit einem Scheitel versehen* (zum Zeichen der Schwangerschaft): नारी Gṛhyās. 2,4. — 2) m. N. pr. eines Fürsten in einer der 7 Höllen der Ǵaina H. 1362. — 3) n. *Menig* (der *Scheitel* wird damit gefärbt) Rāǵān. im ÇKDa.

सीमन्तय (wie oben), °यति *scheiteln* so v. a. *mit einer geraden Linie durchschneiden:* वलैः सीमन्तयञ्जलम् — प्रोत्तार स वारिधिम् Rāǵa-Tar. 3,71. तन्मदासरितो वारि सेतुसीमन्तितं व्यधात् 345. रघाङ्गसीमन्तितसान्द्रकर्दम Kir. 4,18. Kathās. 21,1. सीमन्तितं = सीमन्तो ऽस्य संवृत्तः gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36.

सीमन्तवत् (wie oben) adj. *gescheitelt,* von *einer geraden Linie durchschnitten* Mallin. zu Kir. 4,18.

सीमन्तिन् (wie oben) 1) adj. *gescheitelt:* Haare Suçr. 1,115,2. eine Schwangere Schol. zu Çiśiṇ. Gṛhy. 1,22. — 2) f. °नी a) *Weib* AK. 2, 6,2,3. H. 504. Halāy. 2,326. MBh. 3,15613 (मुष्यायां mit der ed. Bomb. zu lesen). 17060. 5,2315. 2690. 3221. 9,3562. Harīv. 7105. 7133. R. 2, 53,21 (23 Gorr.). Mṛcch. 98. Çaṅk. 23. Spr. (II) 2324. 2605. 3746. Rāǵa-Tar. 4,170. Bhaṭṭ. 5,22. — b) N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 74,*a*,39.

सीमन्तोन्नयन (सीमन्त + उ°) n. *das Ziehen des Scheitels* (an einer Schwangeren) Taik. 2,6,12. Āçv. Gṛhy. 1,14,1. Pār. Gṛhy. 7,18. Çiśiṇ. Gṛhy. 1,22. 5,7. Saṁsk. K. 32,*b*. Verz. d. B. H. No. 321. 1020. fg. 1031. 1035. 1037. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,1. 85,*a*,16. 398,*a*, No. 144. Verz. d. Cambr. H. 68.

सीमंधरस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes (*die Schranken beobachtend*) Çatr. 1, 163.

सीमलिङ्ग m. *Grenzzeichen* M. 8,254. — Vgl. सीमालिङ्ग.

सीमा f. Uṇādis. zu Uṇādis. 4,150. P. 4,1,13, Schol. Vop. 4,3. 1) = सीमन् 1) in सुसीम. — 2) = सीमन् 2) AK. 2,2,19. Taik. 3,3,120. H. 962. an. 2,341. Med. m. 35. Halāy. 2,104. Nir. 1,7. M. 8,231. सीमां प्रति समुत्पन्ने विवादे 245. °विवाद् 6. Verz. d. Oxf. H. 263,*a*,19. °वादविनिर्णय M. 8,252. °विनिर्णय 258. 266. °ज्ञान 249. सविषयका 265. सीमां नो 252. Jāán. 2,152. नि-बन्ध् M. 8,235. Jāán. 2,228. Rāǵa-Tar. 16,2. °प्राप्त Kathās. 54,214. सुपरोत्तितरङ्गितात्तसीमा (मृगाश्वी) Kām. Nītis. 7,36. उदधिरयामसीमां धरित्रीम् Çiç. 48. मुक्तिकृतां सीमामिमामुत्कृतः *Grenze. Schranken* Goldmus. Kundjak. 9. Nalod. 3,28. विप्रधर्मोक्तिसीमां मर्यादाम् MBh. 1,3231. — 3) = सीमन् 3) H. an. Med. °गता वन्यमृगाः Varāh. Bṛh. S. 91,1. सीमामतीत्य वेदात्रौ वासः प्रवसनं स्मृतम् Comm. zu

Kâṭy. Çr. 397, 3. मसस्या Hariv. 3376. सुसस्या 4016. सुसीमा मही R. Gorr. 2, 35, 48. ग्रामान्सुकृष्टसीमान् 46, 5. 109, 22. — 4) = सोमन् 5) Med. — Vgl. सुसीम.

सीमाकृषाण adj. *an der Grenze einer Mark pflügend* Jâṭ. 2, 150.

सीमागिरि m. *ein die Grenze bildender Berg* Bhâg. P. 5, 20, 15.

सीमातिक्रमणोत्सव m. *ein in der Ueberschreitung der Mark bestehendes Fest* (am 10ten Tage in der lichten Hälfte des Âçvina) Verz. d. Oxf. H. 336, b, No. 846.

सीमाधिप m. *Grenzwächter, Markgraf* Pañcat. 46, 20.

1. सीमान्त (सीमन् oder सीमा + अन्त) m. 1) *Grenze* Comm. zu AV. Paiṭ. 3, 43. Bṛhaspati bei Kull. zu M. 8, 251. Kâm. Nîtis. 9, 76. 16, 12. Kathâs. 30, 107. 53, 20. 103, 1. 172. ग्रामसीमान्तम् 56, 206. Jâṭ. 1, 113. अकार्याणां स (धर्मः) सीमान्तकरः स्मृतः *Schranken* MBh. 12, 3379. °मार्ग Pañcat. 4, 8, 99. — 2) *Markung eines Dorfes* Varâh. Bṛh. S. 95, 32. ग्रामान्विकृष्टसीमान्तान् R. 2, 49, 3. — Vgl. सीमन्त.

2. सीमान्त (wie eben) adj. (f. आ) *durch eine Mark begrenzt:* कृष्यन्ता प्रविता सीमा सीमान्तं (so die neuere Ausg.) भूयते वनम् Hariv. 3812.

सीमान्तर (सीमन् oder सीमा + अ°) n. = 1. सीमान्त 2) MBh. 4, 1554. Ṛt. 3, 16. 4, 8.

सीमापहारिन् (सीमन् oder सीमा + अप°) adj. *der Grenzzeichen fortnimmt* Pañcat. 1, 6, 47.

सीमापाल m. *Grenzwächter, Markgraf* Mârk. P. S. 656, Z. 6.

सीमालिङ्ग n. = सीमलिङ्ग *Grenzzeichen* M. 8, 249. Kull. zu 246.

सीमावृक्ष m. *ein als Grenzzeichen dienender Baum* M. 8, 246. in übertr. Bed. so v. a. *nach dem sich Alle richten:* सीमावृक्षे निपतिते कुञ्जराणां समितिंजये (भीष्मे) MBh. 6, 5698.

सीमासंधि m. *der Ort, an dem zwei Marken zusammenstossen*, M. 8, 248. 261.

सीमासेतु m. *Grenzzeichen* M. 8, 262.

सैमिक (auf स्यम् zurückgeführt) Uṇâdis. 2, 43. 1) m. *ein best. Baum* Uṇâval., ausserdem *Ameisenhaufe* und *ein best. kleines Insect* Uṇâdiv. im ÇKDa. — 2) f. सी *Ameise* Nir. 3, 20.

सीमीक im ÇKDa. nach Sidh. fehlerhaft für सीमिक.

सैर (von 1. सी) Uṇâdis. 2, 25. m. Sidh. K. 250, b, 6. 1) m. und n. (dieses in der älteren Sprache) *Pflug* AK. 2, 9, 14. Taik. 3, 3, 378. H. 890. an. 2, 468. fg. Med. r. 90. Hal. 2, 420. पुनर्न सीरा वि युगा तनुध्वम् ṚV. 10, 101, 3. 4. यङ्योग AV. 8, 9, 16. द्वादशगव TS. 1, 8, 2, 1. TBr. 1, 7, 2, 2. शुनावत् 2, 5, 2, 12. VS. 18, 7. Çat. Br. 2, 6, 2, 2. 7, 2, 2, 2. 13, 8, 2, 3. Kâṭy. 15, 2. Kâtj. Çr. 5, 11, 12. 17, 2, 3. 22, 2, 27. Çâṅkh. Gṛhj. 4, 12. Kauç. 37. 83. 94. 120. °योग 27. MBh. 5, 3249. Bhâg. P. 3, 13, 18. सीराकर्षणं कर् R. 3, 4, 7. सीरोत्कर्षण Mṛcch. 16. °क्षत्रभूतल Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 25, Cl. 5. सीराङ्ग als Erklärung von कूर् AK. 3, 4, 9, 39. Hier und da शीर geschrieben. — 2) m. angeblich *die Sonne* Nir. 9, 40. Taik. H. an. Med. — 3) m. *Calotropis gigantea* (wie alle Wörter für *Sonne*) ÇKDa. — Vgl. परि°, प्रतिसीरा, शुनासीर, सैरिक, सैर्य.

सीरक gaṇa पत्ताद्यादि zu P. 4, 2, 80. m. *Delphinus gangeticus* Çabdam. im ÇKDa. — Vgl. सैरकायण.

सीरक्ष N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, a, 8.

सीरदेव m. N. pr. eines Grammatikers Verz. d. Oxf. H. 162, b, 29. Colebr. Misc. Ess. 2, 12 (शीर°).

सीरध्वज adj. *einen Pflug im Banner führend;* m. Bein. Janaka's Uttarar. 76, 11 (98, 8. 9). Mâlavikâ. 5, 9. ein Sohn Hrasvaroman's VP. 4, 5, 12. Bhâg. P. 9, 13, 18.

सैरपति m. *Herr des Pflugs* AV. 6, 30, 1. Pâr. Gṛhj. 3, 1.

सीरपाणि adj. *einen Pflug in der Hand habend;* m. Bein. Balarâma's AK. 1, 1, 1, 19.

सीरभृत् adj. *einen Pflug tragend;* m. Bein. Balarâma's HBh. 9, 3359.

सीरवाह् adj. *den Pflug ziehend* TS. 5, 6, 21, 1.

सीरवाहक m. *Pflüger* Vivâd. 48, 9.

सीरा (von सर्) f. *Strom* Naigh. 1, 13. सर्वतः ṚV. 1, 174, 9. परिष्ठिता घर्तृणत्सीरा इन्द्रः सवितवे पृथिव्या 4, 19, 8. 10, 49, 9. पतत्त्रिणीः 97, 9.

सीरिन् (von सीर) 1) adj. subst. *pflügend, Pflüger* Vivâd. 48, 9. — 2) Bein. Balarâma's (Çesha's) AK. 3, 4, 26, 197. Taik. 3, 3, 440. Hal. 1, 38. Gaṇâṣṭ. in Verz. d. Oxf. H. 190, b, 41. Hariv. 6309. — Vgl. अघ°.

सीर्य s. परि°.

सोलन्ध m. *ein best. Fisch* Bhâvapr. im ÇKDa.

सोलोमावत् adj. Beiw. von युवति ṚV. 10, 75, 8. v. l. des Çâṅkh. Gṛhj. 3, 3 st. सूनृतावती des AV. 3, 12, 2.

सोल्हन m. v. l. für शित्कृन Verz. d. B. H. No. 584.

सीव् (सिव्), सीव्यति (तन्तुसंताने) Dhâtup. 26, 2. P. 1, 2, 77. Vop. 11, 1. असेवीत् P. 8, 2, 28, Schol. Vop. 11, 1. सिषेव P. 8, 3, 59, Schol. partic. स्यूत. *nähen:* सीव्यत्वपः मृण्या ṚV. 2, 32, 4. Nir. 11, 31. सीव्यन् partic. ṚV. 2, 17, 4. वर्म सीव्यधम् 10, 101, 8. वर्मेव स्यूतं परि पासि 1, 31, 15. TBr. 3, 10, 11, 7. राका पुरुषस्य सेवनीं सीव्यति पेपा शिम्रे ऽधि Âṭr. Br. 3, 7. Kâṭy. 25, 8. Kâtj. Çr. 7, 3, 20. 15, 5, 11. सीव्येत्सूत्रेण सूत्रेण Suçr. 1, 93, 18. स हि स्रोतात्मकस्तन्तुरत्सर्गमाणि सीव्यति Uttarar. 97, 14 (128. 5). तदप्यसूच्या सचिवेन कामिनोर्मनोभवः सीव्यति दुर्यशःपटौ Naish. 1, 80. स्यूत AK. 3, 2, 50. H. 1487. Med. t. 73. fg. Spr. (II) 4787. Prasâd. 116, 8 (स्यूत Druckfehler). Rûpa-Tân. 7, 1652. मत्स्यो ऽम्भसीव स्यूतास्यः MBh. 3, 11495 चित्तासंततितन्तुजालनिबिडस्यूतेव लग्ना प्रिया Mâlatîm. 77, 4. — Vgl. सूत्र, स्यूत, स्यूति, स्यूमन्.

— caus. सीवयति dass. Lalit. ed. Calc. 334, 1.

— अनु, partic. अनुस्यूत 1) *verwebt in:* सर्वानु° so v. a. *mit Allem verknüpft* Bhâg. P. 3, 27, 11. सर्वानुस्यूतत्व n. Vedântas. (Allah.) No. 62. — 2) *anhaltend:* कृसित H. 298.

— अभि *umnähen:* चर्मणा Çâṅkh. Gṛhj. 17, 3, 8. 5, 9.

— आ *zusammennähen:* विशीर्णाशीर्णवसनैरास्यूतकन्थाधरः Spr. (II) 4583.

— उद् *einnähen:* कृरिणाचर्मणि Kauç. 16. 26. — Vgl. पुनरुत्स्यूत.

— नि, °षीव्यति, न्यषीव्यत् P. 8, 3, 70. fg. Vop. 8, 45. न्यषेवीत् und न्यसेवीत् 11, 1. partic. निष्यूत *eingenäht* so v. a. *gestickt* Çat. Br. 5, 3, 5, 20. 6, 7, 4, 6. 7. Kâṭy. Çr. 16, 5, 1. — caus. aor. न्यसीषिवत् P. 8, 3, 116, Schol.

— परि, °षीव्यति, पर्यषीव्यत् P. 8, 3, 70. fg. *umnähen, umschlingen* Kâṭy. Çr. 8, 4, 21. Vgl. परिषीवण. — caus. aor. पर्यसीषिवत् P. 8, 3, 116, Schol. Vop. 8, 45. 18, 1 (पर्यसीसि° fehlerhaft).

— प्र *zunähen:* लस्पूतन्या Çat. Ba. 3,6,2,25. — Vgl. प्रसेव्य fg. und प्रासेव्य.

— प्रति *annähen:* पादम् Kâṭy. 23,3. — Vgl. प्रतिषीव्य.

— वि, °षीव्यति, व्यषीव्यत् P. 8,3,70. fg. *an verschiedenen Stellen annähen, durchnähen:* तार्प्याणि Kâṭy. 12,4. तिर्यञ्चं पुरस्ताद्देशं विषीव्यति 25,8. नवधा शिरो विषूतम् TS. 6,2,2,4. 5,4. सीमा मर्यादा विषीव्यति देशाविति Nir. 1,7.

— सम् *zusammennähen:* मूर्धानम् AV. 10,2,26. — partic. संस्यूत *durchstochen:* गण्डैस्तिमिरिवार्कस्य संस्यूतो ह्रदो महान् MBh. 6, 2857. 4569. 7,1187. 5599. *zusammengenäht* so v. a. *untrennbar verbunden:* संस्यूतान्यातिभिः सार्धं धनुर्भिश्च तथापरान्। पदातीन्सादिसंघांश्च 6449. 9043. रथांश्च नागांस्तुरगान्यदातीन्संस्यूतदेहान् 8,676. 725. 979.

सीवक (von सीव्) nom. ag. *Näher*, f. सीविका Kâlakârma 3,131.

सीवन (wie eben) 1) n. *das Nähen* Vop. 26,172. AK. 3,3,5. Trik. 3, 3,271. H. 912. Suçr. 2,8,2. वर्मादि° Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,22. सूची लोके सीवनसाधनम् Schol. zu Vîsavad. 20. Vgl. सेवन. — 2) f. ई *frenulum praeputii* H. 611. Verz. d. Oxf. H. 102,*b*,17 (सीवन्याः verbessert Aufrecht für सीमन्याः).

सीव्य (wie eben) adj. *zu nähen* Suçr. 1,14,20. 29,8. 93,7.

सीस VS. Pâṭ. 3,80. 1) n. *Blei* (wird auch als Geld gebraucht) H. 1040. Râgân. 13,24. AV. 1,16,2. 4. 12,2,1. 19. fg. 53. VS. 18,13. TBr. 3,12, 6,5. *Bleigewicht* des Webers VS. 19,80. — Çat. Ba. 5,1,2,14. 4,2,9. 12,7, 2,7. 3,10. Kâṭy. Çr. 14,1,14. 15,5,2. 9,28. 19,1,18. Kauç. 8. 16. 34. 51. 71. °चूर्ण 34. Kâṭh. Up. 4,17,7. सेयं त्रपुमलं सीसं सीसस्यापि मलं मलम् MBh. 5, 1526. Kap. 2,1,7. Suçr. 1,142,17. 228,4. लोहेन त्रपुसीसयोः (विशुद्धिः) Mâṇ. P. 35,17. — 2) adj. (f. या) *bleiern* VS. 23,37. Kâṭy. Çr. 20,7,2. — Vgl. सैस.

सीसक n. 1) *Blei* AK. 2,9,106. H. ç. 138. Hâlây. 2,17. M. 5,114. Jâṭ. 1;190. 3,38 (masc.). 273. R. 1,38,20 (39,19 Gorr.). Suçr. 1,99,5. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 57,8. — 2) = शूल Trik. 2,8,56.

सीसताण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,7. *b*,44.

सीसपत्र n. *Blei* Trik. 3,3,61. H. an. 2,35. Hâlây. 2,17. °क n. H. 1040. an. 2,419.

सीसर m. N. *eines gespenstischen Hundes* (बालयक्ष): यत्ते सरमा माता सीसरः पिता Pân. Gṛhy. 1,16.

सीहु s. सुगन्धि°.

सीहुण्ड m. *Euphorbia antiquorum* AK. 2,4,2,24. — Vgl. सिहुण्ड und सिंह्लुण्ड.

1. सु. सुनोति Dhâtup. 27,1 (अभिषवे. संघाङ्कोदपीडामन्थे Vop.). सुनोत RV. 7,32,8. सुनोतन 5,34,1. सुनुत 10,14,13. सुन्वत् und सुन्वत् 27,22. सुन्वन् partic.; med. सुन्वे 3. sg. 7,29,1. 9,88,1. सुन्विरे, सुनुधम्, सुनवै 8,80,1. सुवानै partic.; सुषाव, सुषुमे, सुषुविव (Vop. 12, Anf.), सुषुवंस्, सुषुवंयम् 10,94,14. सुषाणो med. 4,29,2. 10,148,1. passivisch 9,6,8. सोत, सोतन, सुषति 3. pl. (wohl praes.) 2,16,3. असावीत्, असोष्ट und असावीत् P. 7,2,72. Vop. 11,1. 12, Anf. सोष्यति und सविष्यति 8,46. 12, Anf. सोष्यत् Kâṭy. Çr. 16,6,10. (अभि) सविष्यत् Çat. Ba. 2,5,2,66. infin. सोतवे (s. auch सोतु) RV. 1,28,1. pass. सूयते. असावि; partic. सुत. *auspressen, keltern* (den Soma): सुनु सोमम् RV. 1,28,6. 101,9. 137,1. यं ते सुषाव (सद्दिः) 7,22,1. सन्धः 4,16,1. 5,30,6. 7,21,1. सधा सुनुध्वं सवनं मदाय 4,35,4. कृवं यजमानस्य सुन्वतः 6,60,15. AV. 6,6,1. 54,3. सोता हि सोममद्रिभिः 8,1,17. असोष्यंशुः 9,62,4. सोमं उ सुवाणाः सोतृभिः 107,8. द्यावभिः Çat. Ba. 12,8,2,11. पयसा 15. Kâṭy. Çr. 9,6,23. सोष्यत्यसोष्ट (zugleich zu 4. सु) Kâṭh. Up. 3,17,5. शश्वत्सूयमानात्सूर्यः Maitrây. 6,7. सुषाव च बहून्सोमान्सोमसंस्थास्तंतान च MBh. 1,4695. सर्वे सुन्वतः P. 3,2,132, Schol. सुरां सुनोति so v. a. *brant* ebend. — असुन्वन् Ait. Br. 1, 17 fehlerhaft für असन्वन्; s. u. 1. सन्. — सुतं partic.: सुता यज्ञैः RV. 8,2, 2. 2,11,11. 4,18,3. शंशु 23,3. सोम 41,3. 6,40,1. सुतास इन्दवः 8,6,21. सुते यज्ञे 10,94,14. Çat. Ba. 12,8,2,3. पिबस्व सोमं सुतमद्य तै मया MBh. 14,277. सुते सोमसदसे 1,8052. सुतम् Spr. (II) 2694 wohl fehlerhaft für कृतम्. masc. sg. und pl. *der Saft* d. h. Soma Naigh. 2,7. सुषाणः पवते सुतः RV. 9,6,8. परीतो षिञ्चता सुतम् 107,1. 2. 1,135,1. 2,15,1. 4,32. 11. प्रातः सुतमपिबः 35,7. गर्धन्तः 7,90,1. 10,27,2. TS. 7,3,11,3. Çiṭas. Ça. 7,10,13. AV. 4,29,2. Çat. Ba. 14,5,2,3. °तेजस् 10,6,1,5. = सोमयाग Bhâg. P. 7,15,48. neutr. Kâṭh. Up. 5,12,1. — Vgl. 1. सव, 1. सवन, सुमत, अद्रिसुत, ब्रह्मसुत, सुसुत.

— अधि dass.: अधि सुवानो नकिर्येभिरिन्दुः RV. 9,91,2. — Vgl. अधिसवण.

— अभि, °सुणोति, अभ्यसुणोत् P. 8,3,63. 65. °सोष्यति, अभ्यसोष्यत् 117. 1) *kelternd verarbeiten, pressen, mit Steinen ausschlagen* u. s. w. Çat. Ba. 1,1,2,7. 2,2,2,1. 4,2,15. 3,3,2,6. 4,5,10,2. अभिसुण्वत्त आसते Ait. Br. 4,14. 3,15. 7,17. द्यावाणि 30. रात्रानम् 32. स्त्रीयम् TS. 5, 1,6,4. 3,2,2,1. रुविधाने चर्मन्नधि द्यावभिरभिसुत्यं 6,2,11,4. घृत्तिं वा दृतत्सोमं यदभिसुण्वन्ति 4,4,4. 5,1. स यद्यभिसुण्यमाणः किंचिदाप्यते Çat. Ba. 12,6,1,21. Kâṭy. Çr. 9,5,1. 10,3,12. अभिसुत्य R. 1,13,3, v. l. अभिषूय (so ed. Bomb.) सोमम् MBh. 14,2624. सोमे व्यभिसुण्यमाणे 13,372. *mit Flüssigkeit ansetzen und ausdrücken:* यानि चेत्राभिसुण्यन्ते पुण्यमूलफलैः शुभैः M. 5,10. नीरेणाभिसुत्य (v. l. अभिसुत्य) Suçr. 1,317,12. किण्वपिष्टम् 2,73,17. partic. अभिसुत Çat. Ba. 2,4,4,16. 4,1,2,13. 6,1,9. 14,3,2,30. Kâṭy. Çr. 9,1,9. Liṭy. 1,9,20. — 2) *bespritzen:* अभिसोष्यन्तं रक्षो रक्षांसि Bhaṭṭ. 9,90. — caus. °सावयति P. 8,3,65, Vârtt. 3, Schol. — Vgl. अभिषव fg., °सुत, °सोतृ, °सुमन्.

— आ *keltern* u. s. w.: आ सोता परि षिञ्चत RV. 9,108,7. यो धर्मे तीव्रान्सोमाँ आसुनोति 10,42,5. Çat. Ba. 12,7,2,6. 12. तस्मात्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते Kâṭh. Up. 5,12,1. — Vgl. 2. आसव, आसाव, आसाव्य (Bhaṭṭ. 6,64). 2. आसुति.

— उद् *aufregen:* उत्सुनोयोत्तमाणानां कन्दुकक्रीडया मनः Bhâg. P. 3. 20,35. Der Bedeutung nach eher zu 2. सु (wie auch उत्सव).

— नि desid. vgl. निसुसूषन्.

— निस्, निःसुणोति P. 8,3,65, Vârtt. 1, Schol.

— परि, °सुणोति, पर्यसुणोत्, °सोष्यति, पर्यसोष्यत् Schol. zu P. 8,3. 63. 65. 117. in Stellen wie RV. 9,10,4. 87,7 ist die Präposition zum Verbum finitum zu ziehen.

— प्र *fortkeltern;* partic. *fortgesetzt gepresst, der Soma einer nicht bloss einmaligen, sondern andauernden Kelterung:* पूर्णमासे वै देवानां सुतस्तेषामेतमर्धमासं प्रसुतः TS. 2,5,5,4. अकारकः सुनः प्रसुनो भवति Çat. Ba. 14,5,2,3. 4,1,2,6. संवत्सरम् Pârâṣ. Bh. 25,5,1. 2. 18,3. Kâṭy.

Ça. 6,6,27. 8,16. 7,1,26. Lâṭ. 3,3,29. 7,8. तस्मात्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते Kâṭhaka Up. 5,12,1. medial: हादृशाद्दे प्रसुतो भूत्वा Ait. Br. 4,24. — Vgl. 1. प्रसव, प्रसुत्. — caus. *fortgesetzt keltern lassen:* प्रसावयेत् Nidânas. 5,11,3 bei Weber, Nax. 2,284.

— वि, व्यपावीत्; विसोष्यति und विसविष्यति Vop. 8,45. 12, Anf. *zerkeltern:* सुषाणासो व्यद्रिभिः ṚV. 9,101,11.

— सम् *gleichzeitig* (Soma) *keltern:* यो द्वा संसुनुतः TBa. 1,4,6,1. संसुत TS. 7,3,5,1. Kâṭy. 34,4. Pâraskâr. Gṛ. 3,4,1. — Vgl. संसव, संसुतसोम.

— अभिसम् *gleichzeitig keltern für* (acc.): एकं वा इतावेन्द्रमभि संसुनुतः TBa. 1,4,6,1.

2. सु (सू), सौति (प्रसवैश्वर्ययोः) Dhâtup. 22,43. सुवति 28,113 (प्रेरणे, Vop. तथे). सुवतात्; med. (in den Brâhmaṇa): सुवते 3. pl. Çat. Br. 5,3,2,13. सुवाते 14. सुवत्ते TS. 5,6,2,1. सुवै, सुवावहै P. 7,3,88, Schol.; später (auch Çat. Br.; s. u. प्र) सौति Dhâtup. 24,32 (प्रसवैश्वर्ययोः). सावियत् (ved. P. 3,1,34, Vârtt., Schol.), असावीत् P. 7,3,96, Schol. Vop. 13,1. सावीम्; सुषुवे AV. pass.: सूयते, सूये; partic. सुत Çat. Br. 9,3,4,5. 4,2, 14. सूत (= ईरित, प्रेरित H. an. 2,208. Med. t. 72. fg.) in नयूत; s. auch unter परि und प्र. *(in Bewegung setzen), veranlassen, zum Vorschein bringen; bescheeren, schicken* (von Savitar's Wirkung); *aufstellen, bestimmen, weihen für Etwas; Ermächtigung geben zu Etwas;* med. *sich weihen u. s. w. lassen:* सविता सुवाति ṚV. 7,40,1. श्रेष्ठं सवं सविता साविषतः 1,164,26. AV. 6,1,3. देवेभ्यो हि प्रथममृतत्वं सुवसि भागम् ṚV. 4,54,2. fgg. 5,42,3. 82,4. वाममस्मभ्यं सावीः 6,71,6. यदद्य सूर उदिते सुवति सविता भगः 7,66,4. AV. 7,14,2. 14,1,33. 19,8,4. यया सिन्धुनदीनां साम्राज्यं सुषुवे 14,1,43. सुषुवाणा *in der Weihe begriffen, geweiht* TS. 2,1,2,1 (P. 3,2,106, Schol., wo सुषुवाणाम् zu lesen ist). 5,6,2,4. 7,5,25,2. TBa. 1,8,4,1. Çat. Br. 5,4,2,23. 4,3. 5,2,1. Pâraskâr. Gṛ. 18, 9,1. 10,1. pass.: यो वै सोमेन सूयते (= निष्पद्यते Comm.) TBa. 2,7,5, 1. सूयते रु वा अस्य तत्रम् Ait. Br. 8,5. Çat. Br. 5,3,4,2. 3,11. 15. 3,3, 4,6. अग्निसवेन सुतो भवति 9. सर्वं वस्तत्सुतम् *zu all diesem seid ihr ermächtigt* 13,4,2,17. सूयते वा एष यो ऽग्निं चिनुते TS. 5,6,2,1. यस्मादेवमेते चन्द्रसत्तयरुसंवत्सरादयः सूयन्ते (= अभिपूयन्ते आप्यायन्ते Comm.) so v. a. *in Thätigkeit gesetzt werden* Maitrâyaṇ. 6,16. मा न सावीर्मरुत्वाणि so v. a. *schleudere* Bhaṭṭ. 9,30. — प्रजापतेः सुतं ऋषिष्ठम् N. eines Sâman Ind. St. 3,225,a. — Vgl. 2. सव, 2. सवन, 1. सवितर्, सवीमन्.

— धनु *nach Andern antreiben u. s. w.:* पयून् Çat. Br. 5,5,4,19. धनु प्र (vgl. unter निर्) Taitt. Âr. 2,6,4 falsch; vgl. AV. 6,121,4. 117,3.

— धव *wegschicken, vertreiben* ṚV. 10,37,4. धवार्मेवो सविता साविषन् 100,8. यत्तत्रेतो धव तत्सुवामि AV. 6,119,3. VS. 35,11.

— धभि. °सुवति, °सुषुवत् P. 8,3,63. 65. *weihen für* (acc.): योषधीः Çat. Br. 5,2,2,9. *begaben mit:* पाप्मनैवैनमभिसुवति Kâṭy. 13,2. — desid. °सुसूषति P. 8,3,64, Vârtt. 1, Schol.

— आ *zutheilen, zusenden, schicken:* von Savitar ṚV. 1,110,3. आ स्मभ्यमा सुव सर्वतातिम् 3,54,11. 56,6. सौभगम् 4,54,5. 5,82,5. दाशुषे वामम् 6,71,4. वसूनि 7,45,3. 10,35,7. वयः 100,3. AV. 2,29,2. 7,14,2. 4,24,5. Çat. Br. 13,4,2,9. med. ṚV. 7,38,2. Pâraskâr. Gṛ. 21,10,15. आ सुवोर्जीम् (अग्ने) ṚV. 3,66,19. (इन्द्रः) आ सावियदर्शमानाय शरुम् *sende so v. a. werfe auf* 10,99,7. *herbeischaffen, herzeitiren:* आ ते प्राणं सुवामसि AV. 7,53,6. — Vgl. 1. आसव, आसवितर् und 1. आसुति.

— उद् *aufwärts gehen heissen:* ऊर्धामेव वरुणमेनिमुत्सुवति Kâṭy. 19,5.

— नि, partic. °सुत *hineingegeben, eingeworfen:* चमसे ऽष्टातपानि निसुतानि भवन्ति Ait. Br. 8,5.

— निस् *fortschenken, fortgehen heissen:* दुःष्वप्न्यं दुरितं निः सावीत् (सुव) AV. 6,121,1. 7,83,4. 19,57,2. 1,81,1. 2. निरितस्तत्सुवतु ṚV. 7,50,3.

— परा *wegschenken u. s. w.:* परा सुणा सावीः ṚV. 2,28,9. दुरितानि परा सुव 5,82,5. 10,137,4. AV. 6,127,3. 7,33,6. 19,39,10. VS. 16,5. TS. 1,3,14,4.

— परि. °सुवति, पर्यसुवत् P. 8,3,63. 65. partic. *geheissen, (heraus) getrieben* (vom Grase): देवानां परिसूतमसि वर्षवृद्धमसि TS. 1,1,2,1. TBa. 3,2,2,4. इति *(bei Gelegenheit dieses Spruches)* दर्भान्परिषोति Âpast. in TS. Comm. 1,53,2 v. u. so v. a. *zusammenraffen.* — Vgl. परिसूति.

— प्र *in Bewegung bringen, erregen, zur Thätigkeit rufen* (namentlich von Savitar gesagt); *heissen, veranlassen; Jmd Etwas verstatten, überlassen:* निवेशयं च प्रसुवं च भूमं ṚV. 7,45,1. 77,1. 4,53,3. 5,82,9. प्रासावीद्देवः सविता जगत्पृथक् 1,157,1. धर्मेमित्थे 124,1. भद्रं द्विषेदे 5, 81,2. मतिम् 9,21,7. प्र वो यावाणः सविता सुवतु 10,175,1. AV. 1,10, 2. सौभाग्याय 18,2. यज्ञम् TBa. 3,1,1,9. दानम् VS. 18,33. ओवार्तवे 67. Çat. Br. 1,7,2,5. अघर्युम् 5,2,1. 8,2,20. 2,5,2,30. ओमिति ब्रह्मा प्रसौति Taitt. Up. 1,8. ओक्यं प्रासुवत् Maitrâyaṇ. 2,6. सुनिम् TS. 2,1,6,2. अवम् Çat. Br. 3,3,4,1. वह्नून् प्रसुवीरन् *zur Verfügung stellen* Âçv. Çr. 2,18,8. पुरुषान् Çat. Br. 13,6,2,9. यमं द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि *hingeben* AV. 12,2,3. स्वानं प्रसौति *überlassen* (zum Todtschlagen) TBa. 3, 8,4,1. प्रसुरि (v. l. °सूरि, in paralleler Stelle °सुव) Kâṭy. Çr. 9,14, 19. so v. a. *schleudere* Comm. zu Bhaṭṭ. 9,30. — partic. प्रसूत *angetrieben, gesandt, geheissen; verstattet, dem es verstattet ist* ṚV. 1,113, 1. अर्षन्त्यापस्त्वयेव प्रसूताः 3,30,9. दूत 54,19. जनाः सूर्येण प्रसूताः 7,63, 4. पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः *entsandt* (Pfeil) 6,75,5. 11. प्रसूतो भक्तमकारम् 10,167,4. AV. 6,63,1. 19,51,2. सवित° Ait. Br. 1,7. 2,28. 7,22. Çat. Br. 1,1,2,17. 5,1,1,4. TS. 2,5,2,6. 5,3,4,4. — Âçv. Gṛhy. 1,15, 1. वरुण° Kauç. 3. अ° *keine Erlaubniss habend* Çâṅkh. Çr. 14,7,2. *nicht gestattet, nicht erlaubt* Çat. Br. 4,1,4,3. — AV. 3,1,4 ist (vgl. ṚV. 3,30,6) zu verstehen प्र सू ते. — Vgl. 2. प्रसव, 1. प्रसवितर्, 1. प्रसूति, इन्द्रप्रसूत, बृहस्पति°, ब्रह्म°, वात्र°, सूर्यप्र°.

— अधिप्र *wegschicken von* (abl.): प्रजापतिरिन्द्रं वज्रादधि प्रसुवति Kâṭy. 14,7.

— अभिप्र *hintreiben zu:* यदेनामभिप्रसुवन्ति नद्यः Nir. 9,26. °सूत *veranlasst, geheissen* 11,12.

— प्रतिप्र, partic. °सूत *wieder verstattet* Schol. zu Kâṭy. Çr. 6,6,28.

— वि, °सुवति, व्यपावीत् Vop. 8,45. 13,1.

3. सु adj. in दावसु vielleicht auf 2. सु zurückzuführen.

4. सू (सू), सूते Dhâtup. 24,31 (प्राणिगर्भविमोचने). P. 6,1,136. Vop. 9, 39. सुवे 1. sg. ṚV. 10,125,7. सुवे Vop. 9,40. सुवाते, सुवते 3 pl., सुवानै; असूत, सूत; später auch सूयते Dhâtup. 26,23 (प्राणिप्रसवे). सवति und सोति s. u. प्र. सुषुवे, सुसाव, समूव (P. 7,4,74) ṚV. 4,18,10. 10,86,33. AV. 10,1,33. असविष्ट und असोष्ट (Kâṭha Up. 3,17,5) Vop. 8,40. 46.

11,5. सविता und सोता P. 7,2,44. सोष्यते und सोष्यति (Kâṭhaka-Up. 3, 17,5); सूष्यन्ती und सोष्यन्ती Çat. Br. 14,9,4,22. सूतवे ṚV. 10,184,3. AV. 1,11,2. सवितवे 6,17,1. सूत्वा Kâç. zu P. 7,2,44. TS. 2,1,5,4. partic. सूत, सुत (s. besonders; nur wegen सुत und सुषुति ist die Annahme von सु mit kurzem उ gerechtfertigt) und सून (P. 8,2,45. Vop. 26,88. fg.). *zeugen, gebären* ṚV. 1,135,5. 164,17. 168,9. नारी नर्यं सुषाव 7, 20,5. सूयन्ती 5,78,5. घसूत पूषा वृषभः *wurde geboren* 3,38,5. यदी सुवीते उषसो 5,1,1. 2,2. स्तरीर्यत्सूतं 10,31,10. सुवाना पुत्रान् AV. 2,36, 3. *brüten* (von Vögeln) ṚV. 1,164,22. pass. wohl hierher: घसावन्यो घसुर सूयत द्यौः 10,132,4. — In der späteren Sprache meist in der Bed. *gebären:* घायुष्मत्तं सुतं सूते M. 3,263. 9,9. 10,39. Spr. (II) 1748. Vasiṣṭha-Dh. S. 31,41. सुषुवाते R. 1,23,14. घसूत Raghu. 3,13-15,13. Kumâras. 1,20. Kathâs. 23,64. 28,66. 42,70. Prab. 11,10. Bhâg. P. 3,1, 30. 17,18. 26,19. 4,1,34. 35. 13,15. 24,8. 9,20,17. 21,47. सूयते Kâlikop. in Ind. St. 9,12. घसूयत MBh. 1,2599. Bhâg. P. 4,1,39. 51. सुषुवे MBh. 1, 2539. 5908. 3,8844. 16638. R. 2,90,11. 92,21. R. Gorr. 2,99,14. 5,36, 37. Raghu. 3,36. 7,54. Mârk. P. 104,8. Râja-Tar. 1,74. Bhâg. P. 3,23, 48. 4,13,18. 5,18,11. 9,11,11. Pañkat. 238,6 (सुषुवे gedr.). सुषुविरे Kathâs. 39,18. सुषाव MBh. 1,4765. R. Gorr. 1,39,16. Mârk. P. 104,6. सुषुवुस् 49,9. सोष्यते Kathâs. 21,35. 34,43. सूत्वा Bhâg. P. 5,2,19. सूय MBh. 3,10004. pass.: कौसल्ययासावि सुखेन रामः प्राक् Bhaṭṭ. 1,14. *erzeugen:* सूते M. 10,32. 34. सुषुवे (subj. Manu und Weib) Çiç. 186. pass.: घक्रूरः सुषुवे तस्मात् Harîv. 1916. *erzeugen* uneig.: प्रकृतिः सूयते सचराचरम् Bhag. 9,10. फलं सूते पादपः Kathâs. 27,99. घसूत सद्यः कुसुमान्यशोकः Kumâras. 3,26. खनिभिः सुषुवे रत्नं लेत्रैः सस्यं वनैर्गजान् (भूः) Raghu. 17,66. पयः सूते ऽद्य मेदिनी, रत्नं वैडूर्यभूः Râja-Tar. 4,300. सूयत्न् Bhâg. P. 3,8,13. धूमात् — पयः सूते घनस्याद्रेः Spr. (II) 3162. धर्मं सूयति प्रजाः MBh. 3,11298. — partic. सून mit act. Bed. = प्रसूत H. an. 2,208. Med. l. 72. fg. सूना *gekalbt habend* M. 8,243. घन्ये मत्ते सूते *wenn ein wildes Thier Junge geworfen hat* Varâh. Bṛh. S. 91,3. — Vgl. सवित्रो.

— निस् vgl निःसूति.

— प्र 1) *gebären:* प्रसूते स्म सुतम् Kathâs. 39,19. 56,237. Mârk. P. 51,114. प्रासूत R. 7,35,21. Kathâs. 17,65. कन्या प्रसूयते MBh. 3,13057. 4,71. Śârṅg. Bh. 5,11. Suçr. 1,367,18. Spr. (II) 1403. Varâh. Bṛh. S. 3,8. 11. 16. Pañkat. 1,8,24. गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते Schol. zu P. 5,2,12. प्रसूयन्ते मिथुनान्येव ताः Mârk. P. 49,10. प्रसवन्ति MBh. 1,6077. प्रसवन्ती M. 4,41. प्रसुषुवे Bhâg. P. 3,17,2. प्रासोष्ट Râja-Tar. 3,106. 4,39 Bhaṭṭ. 1,14. प्रसविष्यसि R. 7,9,24. Mârk. P. 51,113. 77,6. Bhâg. P. 3,21,29. प्रसोष्यन्ती 11,1,15. प्रसूय Çiç. 94. 95, v. l. Kathâs. 14,38. Prab. 11,10. प्रसोतुम् Bhaṭṭ. 1,13. *erzeugen:* प्रसूयते M. 10,27. 30. fg. घनेन प्रसविष्यधम् *Nachkommenschaft haben* Bhag. 3,10. *erzeugen* in uneig. Bed.: (बुद्धिः) प्रसूते हि फलं धीमदरणीव हुताशनम् Kâm. Nîtis. 13,2. Spr. (II) 7062. धूमं प्रसौति (घग्निः) Râja-Tar. 5,125. घष्टमासधृतं गर्भम् — द्यौः प्रसूयते R. 4,27,3. प्रसूयते संगतिः स्त्रियम् Prab. 86,18. (द्रुमाः) शयनानि प्रसूयन्ते चित्रास्तरणवन्ति R. 4,44,99. Mârk. P. 49,30. 59,19. दीपः कज्जलं प्रसूयते Spr. (II) 2816. तरवः प्रासूयन्त *trugen Früchte* Bhâg. P. 4,19, 4. यथा प्रसूयमानस्तु फली दद्यात्फलं बहु MBh. 14,498. (शास्त्रविटपी) फलं प्रसूय Spr. (II) 3426. — 2) *geboren werden, entspringen, entstehen:* कारावो निषादात्तु चर्मकारः प्रसूयते M. 10,36. तिर्यग्योनौ प्रसूयते MBh. 3,12500. घस्यामेव प्रसूयध्वम् 1,2502. 2504. एतस्माच्च जगत्सर्वं प्रसूयते ज्ञानार्दनात् Harîv. 11053. प्रसूयतम् 2. du. MBh. 13,2565. प्रसूयामम् Harîv. 173 = VP. 1,13,128. सर्वेषां खलु मर्तव्यं मर्त्यलोके प्रसूयता Spr. (II) 6949. सिन्धोः प्रसूय कमला Râja-Tar. 6,317. प्र केशोः सुवते TBr. 2,7, 12,1. शब्दः u. s. w. वेदादेव प्रसूयन्ते M. 12,98, v. l. — 3) partic. प्रसूत *a)* mit act. Bed. f. घा *geboren habend, niedergekommen* (die Ergänzung im acc.: hier und da statt des verbi finiti) AK. 2,6,4,16. Med. l. 124. Hall. 118. 285. 343. AV. 12,1,62. Jiñân. 2,145. Suçr. 2,180,8. देवमदृशान्पुत्रान् Harîv. 4625. R. 7,66,3. Uttarar. 38,7 (32,1). Weber, Kṛṣṇaj. 249. 282. fg. 289. Kathâs. 21,117. 29,137 (शतपदी). Mârk. P. 51,101. Schol. zu P. 2,1,65. Pañkat. 218,21. Hit. 72,14. सु° Spr. (II) 2035. प्रत्यग्र° Schol. zu Kâṭy. Çr. 24,6,8. ज्ञननी प्रसूततनया *deren Tochter niedergekommen ist* Spr. (II) 6033. प्रसूतमात्रा *eben niedergekommen* Kathâs. 28,67. — *b) geboren, erzeugt, entsprungen, entstanden* H. an. 3,272. Med. mit gen. oder loc. (auch abl.) P. 2,3,39. Vop. 5,29. Çvetâçv. Up. 5,2. Kaush. Up. 1,2. तस्याम् M. 3,19. ततः MBh. 1,35. मम कायात् R. 2,74,21. तदन्वये Raghu. 1,12. नीचकुले Spr. (II) 6475. यस्य तस्य 5369. Mârk. P. 104,8. R. 1,16,26. Çiç. 178, v. l. Spr. (II) 1431. Varâh. Bṛh. S. 48,11. Bṛh. 23,14. Mârk. P. 76,17. Weber, Kṛṣṇaj. 266. 284. एतद्देश° M. 2,20. कालनेमि° Çiç. Cr. 144,4. Kathâs. 59. 139. Bhâg. P. 6,6,24. 9,6,3. कुल° R. 2,82,31 (Pferde). Spr. (II) 5970. Bhâg. P. 9,3,21. नन्दकुल° Pañkat. 45,2. वेद° Prab. 86,19. विन्ध्यपाद° (नदी) Mârk. P. 57,25. Bhâg. P. 9,9,14. Pañkat. 1,7,40. कल्पवल्ल° (मधु) Megh. 67. मत्प्रसूतं भयम् MBh. 3,2844. मत्प्रसूतेन तेजसा 11970. भीष्म° (दुःख) 5,7029. धर्मविशेष° Kâm. 1,1,4. सरलद्रुमाणां सुततीरतया प्रसूतो गन्धः Kumâras. 1,9. प्रसूतं तर्हि सौष्यं नः Z. f. d. K. d. M. 2,426. — *c)* n. als Synonym von घध्यक्ष Tattvas. 3. — 4) partic. प्रसून *a)* = प्रसूत H. an. 3,388. = ज्ञात Med. n. 87. — *b)* n. *Blüthe, Frucht;* s. u. प्रसून. In der Bed. *Blüthe* auch Spr. (II) 7411, v. l. Uttarar. 98,6 (129. 12). Milavîn. 57,13. Bhâg. P. 3,18,3 (*engendré* Burnouf). Pañkat. 1,7. 50. — Vgl. 3. प्रसव, प्रसवन, 2. प्रसवितर्, 2. प्रसविन्, प्रसूत, 2 प्रसूति. प्रसून, देवप्रसूत (hierher oder zu 2. सु).

— घनुप्र, partic. °सूत *darauf entstanden:* सृष्टिस्तथैवेयमनुप्रसूता MBh. 13,7361.

— घभिप्र, partic. °सूत *erzeugt, geboren:* मातुः पितुः कर्मणाभिप्रसूतः संवर्धते विधिवद्दोषनेन MBh. 5,964.

— संप्र 1) *erzeugen:* °सूते MBh. 13,2582. °सूयते M. 10,22. — °सूयते MBh. 13,3880 fehlerhaft für °सूयते, wie die ed. Bomb. liest. — 2) *geboren werden:* तदाहं संप्रसूयामि गृहेषु शुभकर्मणाम् MBh. 3,12978. — 3) partic. °सूत *erzeugt, geboren:* बह्वीः प्रजाः पुरुषात् Mahâp. Up. 2,1,5. शर्मिष्ठया MBh. 5,3044. ब्रह्मास्यतस्, बाहुभ्याम् 12,11814. 13,4426. गुणविपुलेषु कुलेषु R. 4,41,79. माया गुणसंप्रसूता Bhâg. P. 11,10,13. — Vgl. संप्रसूति.

— वि *gebären:* सुमत्यपि गर्भे तुम्बे व्यसूयत R. Gorr. 1,40,17.

— सम् dass.: शारङ्गतस्य (so die neuere Ausg.) दायादमकृत्या समसूयत Harîv. 1784. *erzeugen* in uneig. Bed.: दृप्तं मेघांसि संसूते (Conj.) Spr.

(II) 4232.

3. सु, सौवति v. l. für सु (गतौ) Dhâtup. 22,42. Vop. 8,95. असावोत्, सुषविष, सुषुविव, सविता und सोता 96.

6. सु adv. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. Vop. 1,8. über die euphonischen Veränderungen des Wortes (षु, षू), über die Dehnung eines vorangehenden Vocals und über den Wandel eines nachfolgenden न in ण handeln VS. Paâr. 4,183. TS. Paâr. 3,7. 14. P. 6,3,134. 8,3,107. 4,27. *wohl, gut:* überhaupt verstärkend oder versichernd: *gewiss, leichtlich, völlig* u. s. w. wie *wohl* in älteren deutschen Liedern. Die indischen Lexicographen geben dem Worte folgende Bedeutungen: पूजन (पूजा) AK. 3,3,5. Med. avj. 79. निर्भर AK. 3,3,2. H. 1535, Schol. Med. भृश, अनुमति, कृच्छ्र, समृद्धि Med. अनायास Bhar. zu AK. nach ÇKDa. 1) selbständig; nie am Versanfang; im AV. selten und meist in Verbindung mit उ. उ षु RV. 1,26,5. 4,6,2. 20,4. विश्वो वस्य मातरम् AV. 1,2,1. 6,84,3. मो षु RV. 2,18,3. 3,55,2. AV. 5,11,7. मा सु VS. 11,68. उत सु RV. 8,2,42. इत्सु 4,22,10. धा सु 8,34,12. प्र सु 1,136,1. 8,6,32. वि षू 2,28,7. 8,32,19. नि षु 5,13. अधि षू 8,24,7. पर्षू षू 9,110,1. अस्मात्सु 1,9,6. 17,7. अस्मभ्यं सु 3,30,21. अस्माकं सु 31,14. अस्माभिः सु 8,70,8. वं सु VS. 4,14. अस्मे सु 4,32,14. स सु 12,1. इमं सु 2,35,2. इदं सु AV. 14,2,8. यं स्वश्वं जघानं RV. 2,14,5. सकृत्सु 16,8. 8,1,14. नमः सु ते VS. 12, 62. वस्वी षु ते RV. 7,20,10. जीवातवे सु 10,39,5. नि सीमुते पुर इन्द्रः सु नर्वाः RV. 7,26,3. सु कम् am Ende 1,191,6. 3,53,3. नास्माल्लोकात्स्वेतव्यमिव *nicht wohl* TS. 6,1,1,1. बोधा सु RV. 7,22,3. जुषस्व सू 3,24, 2. मन्दस्वा सु 8,6,39. पिबा सु 17,4. AV. 6,32,1. जहा सु गच्छ 19,24, 5. न वै सु विदुरिव मनुष्या नक्तत्रम् Kâṭh. 8,3 bei Weber, Nax. 2,296. सु वेद Kenop. 9. सूर्मी ज्वलन्तीं स्वाभिष्येत् M. 11,103. सु विराजते स्म MBh. 4,2089. स्वनुयास्यन्ति 8,1321. सु शक्यते R. 2,33,4. सु समीक्ष्यताम् Spr. (II) 1402. सु संदधीत 1961, v. l. सु शोभते 4157. स्वनुष्ठीयताम् 6278. स्वशिक्षयत् Rîâ-Tar. 4,51. — MBh. 3,14393 und 7,8603 hat die ed. Bomb. तु und कि st. सु. Vor einem absol. MBh. 7,8783 (सो ऽभिद्रुत्य st. स्वभिद्रुत्य ed. Bomb.). विचिन्त्य Mṛicch. 103,16. बद्ध्वा 176,1. चिन्त्य und विचार्य Spr. (II) 7100. ज्ञाता Wilson, Kâṣmîrâ. 201. — 2) am Anfange eines comp. vor Adjectiven und Substantiven (über solche compp. handelt P. 1,4,94. 2,1,6. 5,4,69. 6,2,117. fgg. 148. 172. fgg. 195. 7,1,68. 3,1,67. fg. Vârtt. 4 zu 1,4,60. Vârtt. 1 der Saṃjñâ zu 2,2,18. Vop. 6,88). स्वलंकृत *schön geschmückt* MBh. 3,2114. सुरक्षित *wohl gehütet* 2144. सुप्रीत *hocherfreut* R. 1,1,76. सुच्छिन्नधन्व 2,43,10. सुसंरब्धतर 6,31,44. सुसाध्य *gut zu handhaben* Pâṇ. 1,8,33. सुमनोहर *überaus reizend* MBh. 1,5976. सुदारुण R. 1,8,12. सुसूक्ष्म Varâh. Bṛ. S. 11,44. सुनिश्चितम् *ganz vollständig* Harîv. 7034. सुप्राकृत *ganz gemein* R. Gorr. 2,11,24. सुसित *schön weiss* Pâṇ. 3,11,8. सुसुगन्ध *sehr wohlriechend* Varâh. Bṛ. S. 48,32. सुदुष्कर *sehr schwer zu vollbringen* MBh. 1,6118. सुनिस्त्रिंश *ein schönes Schwert* MBh. 6,3639. सुभक्ष्य *eine prächtige Speise* Spr. (II) 7113. सुसकाश *einen guten Geführten habend* M. 7,31. सुललाट *eine schöne Stirn habend* R. 1,1,12. सुकर (s. d.) *leicht auszuführen*, सुलभ (s. d.) *leicht zu erlangen*, सुसंतोष (s. d.) *leicht zu befriedigen*. — सु verhält sich wohl zum demonstrativen स wie कु zum interrogativen क. Vgl. सुतराम्.

सुऊर्ति f. *gute Hilfe:* सुऊतयो व ऊतयः RV. 8,47,1.

सुकक्ष m. N. pr. eines Âṅgirasa, Liedverfassers von RV. 8,81. fg. RV. Anukr. Ind. St. 3,244,a.

सुकङ्कवत् m. N. pr. eines Berges Mâk. P. 55,1. वेकङ्क VP. 2,2,28.

सुकणिका f. *Aloe indica Royle* Râǵân. im ÇKDa.

सुकण्ठ 1) adj. (f. ई) *eine schöne Stimme habend:* गन्धर्वी Bhâg. P. 10, 84,46. — 2) m. N. pr. eines *Sängers* Verz. d. Oxf. H. 141,b,40.

सुकण्डु m. = कण्डु *Jucken, Krätze* Çabdar. im ÇKDa.

सुकथा f. *eine schöne Geschichte* Kathâs. 124,251.

सुकन्द m. *die Wurzel von Scirpus Kysoor* (कशेरु) Rozb. Râǵân. 8,145.

सुकन्दक m. 1) *Zwiebel* AK. 2,4,5,13. = मुस्तालु Râǵân. 7,67. = वाहीकन्द 86. — 2) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,360 (VP. 191).

सुकन्दिन् m. = प्रपुण्ड Râǵân. 7,62.

सुकन्यक adj. *eine hübsche Tochter habend* Vop. 7,23. — Vgl. सुकन्याक.

सुकन्या f. N. pr. einer Tochter Çaryâta's (Çaryâti's) und Gattin Kjavana's Çat. Br. 4,1,5,6. 10,13. MBh. 1,939. 3,10321. fgg. 17035. 5,3970. Harîv. 643. VP. 354. Bhâg. P. 9,3,2. fgg. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 50. Mutter Mâṅkaṇaka's (Vater Mâtariçvan) MBh. 9,2245.

सुकन्याक adj. = सुकन्यक Vop. 7,23.

सुकपर्द adj. (f. आ) *schönes Haargewinde habend* VS. 11,56.

सुकपोल adj. (f. आ) *schönwangig* Bhâg. P. 4,25,22. सुकपोलास्य *ein Gesicht mit schönen Wangen habend* 24,46.

सुकमल n. *eine schöne Lotusblüthe* Kâlaṅkara 2,122.

सुकर adj. (f. आ) P. 3,3,126. Vop. 26,197. 1) *leicht ausführbar* RV. 8,69,6. P. 5,1,93. M. 7,55. R. 3,52,90 (nach dem Comm. सु°). 57, 20. परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् Spr. (II) 3987. 4071, v. l. 7055. Sâm. D. 740. Daçak. 68,11. Hit. 113,16. सु° MBh. 8,99. R. Gorr. 2,15,26. 4,21,8. Spr. (II) 4354. mit einem infin. *leicht zu* 90. Kathâs. 22,38. Sarvadarçanas. 82,1. — 2) *leicht zu behandeln, fügsam, fromm:* eine Kuh AK. 2,9,71. H. 1271. — 3) *mit Leichtigkeit Etwas ausführend, — zu Wege bringend* Vop. 24,8. — Vgl. सोकारीय, सोकार्य und दुष्कर.

सुकरत्व n. nom. abstr. zu सुकर 1) Sarvadarçanas. 119,16. Nilak. 114.

1. सुकर्ण m. *ein schönes Ohr* Bhâg. P. 8,12,30.

2. सुकर्ण 1) adj. *schönohrig.* — 2) m. N. pr. eines Râkshasa R. 6, 18,12. — 3) f. ई *die Coloquinthen-Gurke* Râǵân. im ÇKDa.

सुकर्णक 1) m. *ein best. Knollengewächs* (हस्तिकन्द) Râǵân. 7,80. — 2) f. सुकर्णिका *Salvinia cucullata* Roxb. Çabdar. im ÇKDa.

1. सुकर्मन् n. *ein gutes Werk* Pâṇ. 1,6,42.

2. सुकर्मन् 1) adj. P. 6,2,117. a) *kunstfertig, geschickt;* subst. *Künstler* RV. 4,2,17. 33,9. Nir. 8,13. भिषजौ VS. 20,75. die Finger RV. 9,70,4. 8. 99,7. = देवशिल्पिन् *der Künstler der Götter* H. an. 3, 435. Med. n. 224. — b) *tugendhaft* H. an. Râǵa-Tar. 1,190. 5,113. — 2) m. a) Bez. eines astr. Joga (der 7te im विष्कम्भादि ÇKDa.) H. an. Med. Kosmetik. im ÇKDa. — b) N. pr. α) eines Fürsten MBh. 2,122. eines Sohnes des Çvaphalka Bhâg. P. 9,24,15. — β) eines Lehrers VP. 3,6,1. 2. Verz. d. Oxf. H. 55,a,39. fg. 44. Bhâg. P. 12,6,76. Colebr. Misc. Ess. 1,17. — γ) pl. einer Klasse von Göttern unter dem

12ten Manu VP. 3,2,33. unter dem 13ten 36. Mâns. P. 94,28. Bhâg. P. 8,13,33.

सुकल (wohl 6. सु + कालं) 1) adj. *der von seinem Vermögen den richtigen Gebrauch macht, der da spendet und geniesst* AK. 3,1,8. H. 387. — 2) m. N. pr. eines Mannes: सुकलोपाख्यान Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,2. 3.

सुकलित MBu. 7,1447 fehlerhaft für सुकलिल.

सुकलिल adj. *gut besetzt, vollzählig:* युद्ध MBu. 7,1447 nach der Lesart der ed. Bomb., सुकलित ed. Calc.

सुकल्प adj. 1) parox. *leicht zu machen, — einzurichten* AV. 12,2,5. — 2) *einer Sache vollkommen gewachsen, überaus geschickt* Bhâg. P. 10,14,7. 11,20,17. *vollkommen gesund* (सुकल्य?): देह 28,11.

सुकल्पित adj. *gut ausgerüstet:* Elephant MBu. 7,1216. Wagen 1813.

सुकवि m. *ein guter Dichter* Çaut. 38. Vaṇîç. Bṛh. 19 (17),6. Kavyâd. 31,227. Spr. (II) 3934. Râga-Tar. 5,204. °हृदयानन्दिनी f. Titel eines Commentars zum Vṛttaratnâkara Notices of Skt Mss. 1,84.

सुकविता f. nom. abstr. von सुकवि Spr. (II) 2016.

सुकष्ट adj. *sehr schlimm:* मयथु Sûçr. 1,308,16.

सुकाण्ड m. *Momordica Charantia Lin.* (कारवेल्ल) Râgân. im ÇKDr. nicht in unseren Hdschrr.

सुकाण्डिका (so ÇKDr., सुकाण्डका die Hdschrr.) f. dass. Râgân. 3,112.

सुकाण्डिन् m. *Biene* Râgân. im ÇKDr.

सुकात्ति m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,10.

सुकामव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. B. H. 142,17 v. u. काम्यव्रत st. dessen Verz. d. Oxf. H. 38,*a*,44.

सुकामा f. *eine best. Pflanze,* = त्रायमाणा Râgân. 5,55. सुकाम्या v. l.

सुकाल m. pl. Bez. bestimmter Manen (पितर:) Hariv. 985.

सुकालिन् m. pl. desgl. M. 3,197. fg. Mâns. P. 96,33. VP. 321, N. 1.

सुकालुका f. = डोटी Râgân. im ÇKDr. fehlerhaft für सुवालुका.

सुकाशन adj. *schön scheinend, — schillernd* Nir. 12,8.

सुकाष्ठक f. *eine* Devadâru-*Art* (देवकाष्ठ) Râgân. 12,39.

सुकाष्ठा f. *eine best. Pflanze,* = कदली Râgân. 3,127. = काष्ठकदली 11,49.

सुकिंशुक adj. Bez. des Wagens der Sûrjâ, nach Nir. 12,8 so v. a. सुकाशन oder so v. a. *mit schönen* (rothen) *Blüthen versehen* (सुपुष्पित Durga) RV. 10,85,20.

1. सुकीर्ति f. *würdiges Lob, — Preis* RV. 1,60,3. सुकीर्ति भिक्षे वरुणस्य भूरे: 2,28,1. 5,10,4. 8,26,19. तवेदु ता: सुकीर्तयो ऽसन्नुत प्रशस्तय: 45,33.

2. सुकीर्ति 1) adj. *a*) *wohl —, leicht zu preisen:* यस्मत्था नो वरुण: सुकीर्ति: RV. 1,186,3. — *b*) *ruhmreich:* Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. eines Kâkshîvata, Liedverfassers von RV. 10,131. Daher auch Bez. *dieses Liedes* Ait. Br. 5,15. 6,29. Çâṅkh. Br. 30,5.

सुकुक्ष adj. f. *einen schönen Busen habend* MBu. 3,2465.

सुकुट्ट m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 2,890 nach der Lesart der ed. Bomb., सुकुट्ट ed. Calc.

सुकुत्स m. pl. desgl. MBu. 6,347 (VP. 185). कुशल्य ed. Bomb.

सुकुण्ठी f. s. u. सुकुण्टी.

सुकुण्डल m. N. pr. eines der Söhne des Dhṛtarâshṭra MBu. 1,2733.

सुकुन्दक m. = सुकन्दक *Zwiebel* Çabdar. im ÇKDr.

सुकुन्दन m. *eine best. Pflanze,* = बर्बर Râgân. im ÇKDr. सुकन्दन ebend. unter बर्बर, सुस्कन्दन unsere Hdschrr.

सुकुमल Pañkat. 139,25 fehlerhaft für सुकोमल, wie die ed. Bomb. liest.

सुकुमार 1) adj. (f. ई) *zart* AK. 3,2,27. H. 1387. an. 4,234. Med. r. 302. Hit. 124. Personen, insbes. Frauen MBu. 1,3888. 3907 (compar.). 5949. 3,2339. 4,61. 78. 5,6029. R. 2,39,4. 59,7. 61,4. 77,14. 87,2. 103,37. R. Gorr. 2,34,14. Kathâs. 85,37 (compar.). Bhâg. P. 4,23,19. Çiva Çiv. Körper und Körpertheile Vâsup. 11. MBu. 1,5978. 3,2147. 2894. 2908. R. 1,9,39. 47. 4,52,24. Mudrâ. 153,24. Bhâg. P. 1,19,26. 5,5,31 (धृति°). Blatt Spr. (II) 6872. वचस् R. 2,64,30. घनिष्ठुरातप्राय सुकुमारमिवेष्यते Kiṭâd. 1,69. सुकुमारातरप्राय Prasâdap. 68,*a*,6. गात्रेषु सुकुमाराणि मनोज्ञानि R. 1,9,48 (47 Gorr.). °बुद्धि Sin. D. 2,5.6. परममुकुमारो ऽयं शोणितावसेचनेनापायो ऽभिहितो ऽलोकस: Sûçr. 1,39,15. fg. प्रकृते: सुकुमारतरं न किंचिदस्ति *zarter, fein fühlender* Siddhânt. 61. st. °जाति Hariv. 8460 liest die neuere Ausg. ऽथ कुमार°. — 2) m. *a*) Bez. verschiedener Pflanzen: = पुण्ड्रेक्षु H. an. Med. = अशोक Râgân. 10,60. = लव 16,66. = श्यामाक 85. = प्रियङ्गु 89. = वनचम्पक Râgân. im ÇKDr. — *b*) N. pr. α) eines Schlangendämons MBu. 1,2150. — β) eines Daitja Çabdâtnak. bei Wilson. — γ) eines Fürsten MBu. 1, 6990. 2,1069. Sohnes des Ânarta (Suvibhu, Vibhu) und Vaters des Dhṛshṭaketu Hariv. 1393. 1751. fg. VP. 409 nebst N. 15. Sohnes des Dhṛshṭaketu Bhâg. P. 9,17,9. — δ) wohl eines Varsha MBu. 6,426 wie Mârk. P. 53,21. fg.; hier zugleich N. pr. eines Sohnes des Bhavja, der diesem Varsha vorsteht. — 3) f. आ Bez. verschiedener Pflanzen: = नवमालिका Râgân. 10,94. = त्रिसंधि 122. = कदली 11,36. स्पृक्का 12,135. = जाती und मालती Râgân. im ÇKDr. — 4) f. ई *a*) = मालती Râgân. 10,75 (v. l. आ). = नवमालिका Râgân. im ÇKDr. — *b*) N. pr. eines Flusses MBu. 6,422. — Vgl. सौकुमारक, सौकुमार्य.

सुकुमारक (von सुकुमार) 1) adj. *zart*, m. *ein zarter Jüngling* Hariv. 2067. Pañkat. 1,2,9. — 2) m. *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रक) Râgân. 14. 76. 80. — 3) n. *ein best. Theil des Ohres:* कर्णश्रोत: सुकुमारकं च नयनप्रबन्धसमम् Vaṇîç. Bṛh. S. 38,7.

सुकुमारता (wie eben) f. *Zartheit:* der Rede Kiṭâd. 1,63. Prasâdap. 67,*a*,7. Verz. d. Oxf. H. 214,*a*,16.

सुकुमारत्व (wie eben) n. *Zartheit:* वपुष: Kathâs. 73,146.

सुकुमारवन n. N. pr. eines *Waldes* Bhâg. P. 9,1,25.

सुकुमारीक adj. *eine hübsche Tochter habend* P. 6,2,173, Schol.

सुकुरीर adj. (f. आ) *einen schönen Kopfschmuck habend* VS. 11,56.

1. सुकुल n. *ein edles Geschlecht:* °ज Spr. (II) 6117, v. l. °जन्मन् 7057.

2. सुकुल adj. *aus edlem Geschlechte stammend* Spr. (II) 2743. 7056. 7058. 7225.

सुकुलता f. nom. abstr. von 2. सुकुल Spr. (II) 6387.

सुकुलीन adj. = 2. सुकुल = कुलीन Spr. (II) 6054.

सुकुसुमा f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBu. 9,2642.

सुकूकर m. N. eines den Kindern nachstellenden Dämons Pân. Gaṇ. 1,16. — Vgl. कूकर.

सुकृत् adj. P. 3,2,89. 1) *Gutes thuend, — erweisend; rechtschaf-*

fen, gut, fromm Taitt. 3,1,12. पुत्रत्वम् RV. 1,31,4. यज्ञमान 92, 3. °तो दुरेणाम् 117,2. 183,1. 4,13,1. 1,125,3. 147,3. इन्द्राय विष्णुः सुकर्ते सुकर्तरः 156,5. 8,46,37. superl. 9,83,4. क्व्या देवेषु द्रविणं सुकर्तम् 7,9,1. वयं देवेषु सुकर्तः स्याम 5,4,8. 7,70,3. 10,122,3. AV. 3,28,5. 4, 24,1. देव 5,27,3. 6,124,1. VS. 8,43. 27,13. सुकर्ता सुकृतानि RV. 7,35, 4. 9,73,1. 10,17,7. सुकृतं दैव्यं जनम् 63,9. TBa. 3,1,2,6. 3,4. Spr. (II) 3728. Ragh. 11,50. 88. Rîga-Tar. 1,94. 4,315. 5,119. *Die Guten, Frommen* in ausgezeichnetem Sinne sind *die hingeschiedenen Väter, welche im Jenseits in der Welt der Guten* (सुकृतामु लोके) *den Lohn ihrer Werke geniessen;* vgl. यत्रासते सुकृतः RV. 10,17,4. AV. 3,28,3. 6. — RV. 10, 16,4. AV. 7,79,2. 80,4. 9,5,1. 5. 8. 9. 11,1,17. fg. 25. 12,3,9. 18,3,20. 71. 4,1. 11. 14. 44. 19,56,5. गच्छेम सुकृतो वयम् TS. 3,5,4,1. 5,4,2,2. सुकृद्भिः सलोकाः Çat. Br. 13,2,2,12. Çâṅkh. Br. 5,10. Kâty. Ça. 2,2,8. — 2) = सुकर्मन् *geschickt, Künstler:* Tvashṭar RV. 3,54,12. Ṛbhu 60,2. 7,35,12. — Vgl. वि°.

1. सुकर्त् 1) n. a) *eine gute That, ein gutes Werk, Rechtschaffenheit, Tugend; Verdienst der guten Werke* AK. 1,1,4,2. 3,4,30,222. H. 1379. an. 3,313. Med. t. 172. Hall. 1,125. RV. 3,60,4. सुकर्ता सुकृतानि 7, 35,1. Weg *der Tugend* 10,71,6. Welt *der Tugend* so v. a. *der Guten* (der ältere Ausdruck सुकृतामु लोकः) 85,24. AV. 2,10,7. 4,11,1. 6. 14, 6. 6,119,1. 120,1. 121,1. 2. 7,83,1. 9,5,19 u. s. w. TS. 1,1,10,2. 3,5, 4,1. TBa. 3,3,6,11. 10,2. VS. 15,50. Kaṭhop. 3,1. Muṇḍ. Up. 1,2,1 (स्वकृतस्य in der Bibl. ind., सुकृतस्य bei Poley). सुकृतस्य योनौ etwa *Stätte der Frömmigkeit = heilige Stätte* RV. 10,61,6. सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ 3,29,8. इमं यज्ञं ते वयाम्नि सुकृतस्य (Comm. कर्मणः, nämlich ज्योतिष्टोमस्य) मध्ये TS. 3,1,4,1. प्रीतिः सुकृतस्य *Lohn der Tugend* RV. 10,95,17. Çat. Br. 1,6,4,19. पुरुषस्य सुकृतं त्रिगुणतः 2,3,2,11. 4,1,4,3. 5,2,17. Sâṅkhy. Br. 1,6. एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञम् AV. 11,1,36. मं ते वज्रे सुकृतम् TS. 7,3,14,2. TBa. 1,2,6,7. Kaṭh. Up. 2,4,1. °दुष्कृते Kaṭh. Up. 1,4. M. 3,37 (°कृत्). 100. 6,79. 7,93. 8,256. Jâgñ. 2,75. Bhag. 5, 15. Hariv. 1224. सत्येन सुकृतेन च ते शपे R. 2,34,17. R. Gorr. 2,18,54. 35, 50. 5,34,7. 1,19,5. 35,32. यदि नः सुकृतं किंचित् 2,14,6. 38,44. 4,41, 69. 5,9,16. 51,18. Megh. 17. Ragh. 14,16. 18,21. Kumâras. 6,47. Çiç. 88. Spr. (II) 1353. 1776. 1857. 3389. 3906. 4391. 5443. 6580. 7060. 7508. Z. d. d. m. G. 27,37. fg. Kathâs. 17,133. 27,99. 37,196. 42,110. 46,215. Mâlav. P. 14,72. Rîga-Tar. 1,215. 305. 351. 3,354. 4,59. 122. 700. 5, 24. 6,299. Pañkat. 213,21 (जन्मसुकृतं zu schreiben). Sarvadarçanas. 116,1. 121,8. Bhâg. P. 5,19,8. यकृत° adj. 8,13. 17. तीर्ण° adj. 3,32, 21. *eine gute That in Bezug auf Jmd, Wohlthat, Dienst, Gefallen:* यस्यास्ति ते किंचिन्मयापि सुकृतं कृतम् R. 2,39,33. 111,29. 3,53,6. स कस्य सुकृतं स्मरेत् 4,55,5. Spr. (II) 1366. कृत्वा सुकृतं राज्ञो दुष्कृतम् 5006. 6236. 7256. — *b*) geradezu für सुकृतस्य लोकः *Welt der Tugend, Himmel:* इमां नारीं सुकृते दधात AV. 14,1,59. सं पत्नी पत्या सुकृतेन गच्छताम् *die Gattin werde mit dem Gatten im Himmel vereinigt* TBa. 3,7, 8,11. संनह्यो सुकृताय (अमृताय AV.) कम् TS. 1,1,10,1. — 2) adj. *richtig gemacht:* सुकृता तच्छमितारः कृण्वन्तु (vgl. शमितारो यदत्र सुकृतं कृणवन्) Ait. Br. 2,7) RV. 1,162,10. scheint unrichtig betont zu sein und eigentlich zum Folgenden zu gehören. — Nach P. 4,1,83, Vârtt. ist सुकर्ते ein adj. comp. (f. या). — Vgl. वि° und सुजात zur Verschiedenheit der Betonung der zwei सुकृत.

2. सुकृत 1) adj. VS. Pair. 2,45. *wohl —, richtig gemacht, — zubereitet; wohl gebildet, geschmückt, gut eingerichtet* H. an. 3,313. Med. t. 172. Weg RV. 1,35,11. Gewänder 5,29,15. Bogen 8,66,11. वज्रदंश 10,44,9. Donnerkeil 1,85,9. पाणी 4,21,9. Sindhu 10,75,9. Sonne 7,62,1. Indra 6,19,1. 41,2. Indra's Stärke 10,100,6. Soma 1,134,2. 9,74,3. योनि 70,7. 10,34,11. यज्ञ 15,13. AV. 17,1,27. रूप 12, 3,33. गर्भ VS. 19,94. सत्रावः Gobh. 3,7,6. कर्म पुरुषाणां *gut ausgeführt* RV. 3,32,8. 34,6. ता यद्ब्रुवन्सुकृतं वतेति *so ist es recht* Ait. Up. 2,3. यत्रः सु लोकं सुकृतं पृथिव्याम् im Sinne von सुकृतस्य लोकः VS. 11,22. Ait. Br. 8,15. ब्रह्मलोक Mund. Up. 1,2,6. नाकस्य पृष्ठे सुकृते 10. — वर्णाक MBh. 4,635. तडाग 13,2283. शय्या R. 2,53,24. सभा 56,32. MBh. 2,1771. पादुके R. Gorr. 2,124,13. निकेताः 4,33,10. 5,14, 43. 16,35. 19,12. 72,9. 95,42. 7,54,18. 55,6. यत्रो एतज्जगत्स्रष्टः सुकृतं वत ते कृतम् Bhâg. P. 3,20,31. प्रारम्भ *gut ausgeführt* Spr. (II) 7122. कर्मन् 7281. Bhâg. P. 8,23,31. सुकृताधिकार adj. Çic. 20,80 सुकृतान्यपि कर्माणि राजभिः सगरादिभिः so v. a. *obgleich die Thaten, welche die Fürsten* Sagara *und Andere vollbrachten, gute Thaten waren* Spr. (II) 7039. in der Regel ist सुकृतं कर्म so v. a. सुकृत n. *ein gutes Werk* Bhâg. 14,16. Hariv. 1064. R. 2,96,33. R. Gorr. 1,19,7. 3,61, 39. 6,71,8. Spr. (II) 5019. सुव्याकृतानि सूक्तानि सुकृतानि 7137. वर्तते सुकृता मतिः so v. a. *es ist ein richtiger Beschluss gefasst worden* R. 2, 45,26. मेम तत्सुकृतं त्वया so v. a. *damit hast du gut an mir gehandelt* 4,15,12. किमत्र सुकृतं भवेत् so v. a. *was thäte man hier am besten?* 5, 77,5. Mârk. P. 71,1. किं कृते सुकृतं भवेत् dass. 99,19. सुकृतं ते ऽस्तु so v. a. *mögest du es wieder gut machen* R. 2,57,28. सो ऽनघः सुकृतो भवेत् *wieder gut gemacht* 5,90,16. R. Scht. 2,64,2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu Hariv. 1064; vgl. 2. सुकृति.

3. सुकृत angeblich = स्वकृत in der Stelle: यमेवा इदमग्र आसीत् ततो वै सदजायत। तदात्मानं स्वयमकुरुत। तस्मात्तत्सुकृतमुच्यत इति। यदै तत्सुकृतम्। रसो वै सः Taitt. Up. 2,7; vgl. Ind. St. 9,74.

1. सुकृतकर्मन् n. *ein gutes —, verdienstliches Werk* Spr. (II) 4222. 7360. भोगभूमिः सुकृतकर्मणाम् Kathâs. 24,72. Prab. 100,13. °कर्मकारिन् Vishṇ. 33.

2. सुकृतकर्मन् adj. *guten Werken obliegend, tugendhaft* MBh. 13,4696. R. 1,62,11. 4,44,105.

सुकृतद्वादशी f. Bez. *eines best. zwölften Tages:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,b,17.

सुकृतव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 286,b,10. fg.

सुकृतात्मन् (d. सु + कृतात्मन्) adj. *dessen Geist schön gebildet, — geläutert ist:* मकूर्षणः R. 3,77,33.

1. सुकृति f. *eine gute* d. i. *richtige Handlungsweise* Spr. (II) 7061, v. l.

2. सुकृति 1) adj. *der Gutes thut, rechtschaffen, tugendhaft* Verz. d. Oxf. H. 21,a,16. — 2) m. N. pr. a) eines Sohnes des Manu Svârokisha Hariv. 419. — *b*) eines der 7 Weisen im 10ten Manvantara Hariv. 472. Bhâg. P. 8,13,22. — *c*) eines Sohnes des Pṛthu VP. 4,19,12; vgl. 2. सुकृत 2).

सुकृतित्व n. nom. abstr. zu सुकृतिन् 1) a) Hariv. 7421.

सुकृतिन् (von 1. सुकृत) 1) adj. a) *guten Werken obliegend, tugendhaft* Bhag. 7,16. MBh. 3,1731. Hariv. 6806. 9116. R. Gorr. 1,13,24. 2,118, 30. 3,2,27. Spr. (II) 203. 2743. 5736 (M.). 6039. 6818. 7263. Kathâs. 16,117. 22,55. 255. 45,146. Râga-Tar. 1,107. 347. 3,290. 320. 4,362. Prab. 70,3. Bhâg. P. 9,10,23. — b) *dem es wohlergeht, glücklich* (vgl. पुण्यवत्) AK. 3,1,3. H. 489. Spr. (II) 640. Kathâs. 40,38. — c) *klug, gebildet* Verz. d. Oxf. H. 37, a, No. 90. Spr. (II) 2215. 2939. *klug* und zugleich *tugendhaft* 2343. — 2) m. N. pr. eines der sieben Weisen unter dem 10ten Manu (vgl. सुकृति) Mârk. P. 94, 14.

1. सुकृत्य n. 1) *ein gutes Werk, das man zu vollbringen hat, Pflicht:* किं वावशिष्टं युवयोः सुकृत्यम् Bhâg. P. 10,46,33. °प्रकाश m. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2, 136. — b) *eine gute* d. i. *richtige Handlungsweise* Spr. (II) 7061.

2. सुकृत्य 1) adj. *seinen Pflichten obliegend:* पितरः TBr. 3,1,8,6. richtig wäre vermuthlich सुकृत्या instr.; vgl. RV. 3,60,3. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. — Vgl. सौकृत्यायन.

सुकृत्या f. *Kunstfertigkeit; gutes —, richtiges Thun, Tugend;* Beides gilt von den Ṛbhu RV. 1,20,3. विष्ट्वी शमीभिः सुकृतः सुकृत्यया 3, 60,3. 4,35,2. 7. auch von den Aṅgiras 7,83,4. im Opfer 9,47,1. 48, 1. 10,94,2. नक्षत्त इन्द्रमवसे सुकृत्यया Vâlakh. 6,2.

सुकृत्वन् adj. *geschickt* (als Opferer) oder *rechtthuend* RV. 8,13,7. 46,27.

सुकृष्ट adj. *wohlgepflügt* Âpast. Bs. 3,38. Spr. (II) 5608.

सुकृष्ण adj. *überaus schwarz:* विकृतः कोकिलः R. 2,52,2.

सुकेत adj. *gute Absichten hegend, wohlgesinnt:* Savitar TS. 1,1,10, 2. als N. eines Âditja: केतः सकेतः सुकेतस्ते नः यादित्या यार्यं वियन्तु 5,3,2; vgl. Pân. Gaṇ. 3,4.

सुकेतन m. N. pr. eines Sohnes des Sunitha Bhâg. P. 9,17,8.

सुकेतु 1) adj. *sehr hell:* Morgenröthe RV. 3,7,10. — 2) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1, 6969. Hariv. 3302. Sohnes des Kîrtaketu MBh. 8, 2630. des Sagara Hariv. 790. des Nandivardhana R. 1,71,5. 6 (73, 4. 5 Gorr.). VP. 409. Bhâg. P. 9,13,14. des Ketumant Hariv. 1593. VP. 409, N. 14. des Sunitha ebend. N. pr. eines Fürsten der Jaksha und Vaters der Tâḍakâ R. 1,27,4. fgg. (28,4. fgg. Gorr.). Raghu. 11,14.

सुकेश 1) adj. (f. ई) *schönes Haupthaar habend* MBh. 3,2465. 13601. R. 3,23,16. 52, 35. 5,17,25. — 2) m. N. pr. eines Râkshasa, eines Sohnes des Vidjutkeça, R. 7,4,32. — 3) f. ई N. pr. a) einer Apsaras Hall. 1,88. Verz. d. Oxf. H. 184, a, 27. MBh. 13,1425. — b) einer Tochter Kotuvirja's Mârk. P. 132,46.

सुकेशन् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Bhâradvâga Paraçar. 1,1.

सुकेशान्त adj. (f. या) *schöngelockt* MBh. 1,4745. 3,2127. 13,6743.

सुकेशि und °न् 1) m. N. pr. eines Râkshasa, = सुकेश Verz. d. Oxf. H. 46, a, 18. 20. 27. — 2) f. °नी *eine best. Pflanze,* = शङ्खिनी Ratnâk. in Nigh. Pr.

सुकेशीभार्य adj. *der eine Schönhaarige zur Gattin hat* Vop. 6,14.

सुकोल 1) m. *Citrus medica Lin., Citrone* Râgân. 11,149. — 2) n. N. *zweier Metra* Colebr. Misc. Ess. 2,161 (IX,14). Ind. St. 9,390. 392. — Auch °कोशर geschrieben.

सुकोमल adj. *sehr weich, — zart:* °भूमि Pârâśar. ed. Bomb. 3,62,9. पद्म Spr. (II) 2988. °वचन Çuk. in LA. (III) 38,4.

सुकोली f. = तीरकाकोली Ratnam. 309.

सुकोशक m. = कोशाम्र Râgân. im ÇKDa. fehlt in unseren Hdschrr.

सुकोशा f. = कोशातकी Râgân. 7,169.

सुक्रतु 1) adj. P. 6,2,118. *einsichtig, weise; klug, geschickt:* Götter RV. 1,23,10. 12. 2,31,3. 7,2,2. 3,9. 9,3. 61,2. 8,1,18. 33, 5. सुदेवो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुः (अग्ने) 10,91,3. 122,6. त्वां मोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदेवो विश्ववेदाः 1,91,2. 9,2,3. 102,3. 10,25,6. Priester und dgl.: पुरोहित 1,128,4. स सुक्रतुर्यस्तचिदस्तु देवता 7,85,4. 1,12,1. 3,3,7. 4,4,11. 8,19,3. यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः 1, 65,1. — 2) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,229. eines Enkels des Janaka, Fürsten von Videha, 13,2466.

सुक्रतूय (von सुक्रतु), °यते *seine Weisheit zeigen:* वर्तिर्यज्ञे परिण्यसुक्रतूयते RV. 10,122,6.

सुक्रतूया (von सुक्रतूय) f. *Einsicht, Erleuchtung:* द्यावि॑र्भव सुक्रतूया विवस्वति (अग्ने) RV. 1,31,3. वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया 160,4.

सुक्रुद्ध adj. *sehr aufgebracht* Çat. Br. 2,4,4,14. R. 3,31,19.

सुक्लेश adj. *mit grossen Leiden verbunden:* विरुद्ध Kathâs. 51,201.

सुक्वाण m. *schöner Klang:* वीणायाः Colebr. und Lois. zu AK. 1,1,6,3.

सुक्षत adj. *sehr versehrt* AV. 7,76,4. — H. ç. 1 wohl fehlerhaft für सुक्षेम.

सुक्षत्र 1) adj. *wohl herrschend:* Götter RV. 1,19,3. 8,32,3. 38,1. 4, 49,1. 51,4. 10. 7,64,1. 89,1. VS. 21,22. राजन् RV. 3,59,4. राधि *Macht verleihend* 1,116,19. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Niramitra VP. 4,23,3; vgl. सुनक्षत्र.

सुक्षत्रिय m. *ein guter* Kshatrija Râga-Tar. 1,64.

सुक्षत्र्य adj. *wohl untergebracht:* द्यवं वेति सुक्षत्र्यं सुते मधु RV. 10,23,4.

सुक्षितिं f. *gute Wohnung, sicherer Schutz; Sicherheit; Zuflucht:* सुक्षितिं जनाय RV. 2,35,15. 19,8. इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः 10, 20,10. अग्ने येन सुक्षितये तरेम 7,56,24. उत त्रिधातु सुक्षितिम् 74, 6. भये चित्सुक्षितिं दधे 1,40,8. भरेषुजां सुक्षितिम् 91,21. 5,6,8. 8,2. 11. 7,64,4. तुभ्यं ता विश्वाः सुक्षितयः पृथक् (येमिरे) *die Feuerstätten* 8. 43,13. 29. VS. 37,10. पञ्च ईशे सस्यानामुत सुक्षितीनाम् TBr. 2,5,8,1. TS. 3,4,3,2. Çat. Br. 14,1,2,24.

सुक्षुब्ध adj. *sehr aufgeregt:* ब्राह्मण Pârâśar. 1,2,69.

1. सुक्षेत्र n. *eine schöne Flur, ein guter Acker* Vjutp. 126. सुक्षेत्रा॑क्षण्वन्यत्त सिन्धून् RV. 4,33,7. M. 10,69. R. 4,6,20. Spr. (II) 1736. 7062.

2. सुक्षेत्र 1) adj. (f. या) a) *eine schöne Flur —, einen schönen Wohnplatz darbietend:* सिन्धु RV. 1,122,6. सुराणामपि Hariv. 6543. *mit schönen Aeckern versehen* R. 1,34,10. — b) *einem guten Mutterleibe entsprossen* Sûrjas. 1,124,17. — 2) m. N. pr. eines der Söhne des 10ten Manu Mârk. P. 94,15. — 3) n. (sc. वास्तु) *ein Haus mit drei Hallen (nach S., W. und N.):* प्रावृषालया वियुक्तं सुक्षेत्रं वृद्धिदं वास्तु Varâh. Bṛh. S. 53,27.

सुक्षेत्रिया f. *Begehren nach schönem Felde;* instr. eben so RV. 1,97, 2; vgl. P. 7,1,39, Vârtt. 3.

सुक्षेम n. *gute Sicherheit im Lande, sehr friedliche Zeiten:* °कृत् Va-

śiṃ. Bṛh. S. 10,2. Vgl. H. c. 1, wo vielleicht सुतेम st. सुतत zu lesen ist.

सुतेमन् n. unter den Bezeichnungen für *Wasser* Naigh. 1,12.

सुतेम्य adj. *leicht aufzuregen:* ग्रथापगाः, स्त्रियः Spr. (II) 7383.

सुर्म्म adj. (f. या) VS. 1,27 *aus guter Erde* (त्मा) *bestehend* nach Mahidh. An सुखा liesse sich denken, weniger an सूक्ष्म, da dieses erst spät vorkommt.

सुर्ख (6. सु + 2. ख) Çiṅk. 1,6. 1) adj. (f. या) *a*) in der alten Sprache nur vom Wagen, *der gut gebohrte Naben* (ख *Loch der Nabe*) *hat*, also so v. a. *leicht laufend* (vgl. εὔτροχος bei Homer) ṚV. 1,20,3. 49,2. 120, 11. स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधि तिष्ठ 3,35,4. 41,9. 5,5,3. 60,2. 63,5. यद्गो वोळ्हो सुखं रथमिच्छति 3,112,4. 10,75,9. सुखो रथ इव वर्तताम् AV. 5, 14,5. 13. 8,1,6. 13,1,24. Einschiebung nach Vilāsa. 10. superl. ṚV. 1,13,4. 16,2. — *b*) *angenehm, lind, behaglich:* भेषजम् सुखं (सुगं TS. und sonst) मेषाय मेष्यै VS. 3,59. चित्रा शिवा स्वातिः सुखो मे ग्रस्तु AV. 19, 7,3. Sitz, Lager Çat. Br. 11,5,3,4. MBh. 3,10036. R. 2,42,15. 51,2 (48,2 Gorr.). 55,15. 86,3. Spr. (II) 4772, v. l. स्थान MBh. 13,1883 (wir lesen सुखं). पुरी R. 2,51,16 (48,16 Gorr.). निवास 54,31. Wind 44,9. Rāgh. 3,14. Mārk. P. 59,20. स्पर्श Spr. (II) 3420. सुखा पृष्ठा च शर्वरीम् MBh. 12,1916. R. 2,89,8 (97,13 Gorr.). दिवसाः 3,22,10. प्रदोषाः Ṛt. 6,3. ग्रतिसुखे काले R. 2,63,19. ईक्षा धनस्य न सुखा Spr. (II) 1156. एते मम सुखाः सौम्या मृगाः सर्वे प्रदक्षिणाः R. 3,78,12. किं स्यात्सुखतरं ततः 30,16 (14 Schl.). पालने न च ते (ग्रर्याः) सुखाः so v. a. *leicht zu hüten* Spr. (II) 2630. ग्रेयांसि लब्धुमसुखानि विनान्तरायैः Kir. 5,49. in comp. mit seinem subst.: सुखालेप Sūçr. 2,346,10. °योगनिद्रा Kām. Nītis. 15,44. सुखानिल adj. (काल) R. 3,79,3. °शीतोष्णमारुता (रात्रि) MBh. 3,6007. Am Ende eines comp.; voran geht *a*) was die angenehme Empfindung u. s. w. hat P. 2,1,36. das vorangehende Wort bewahrt seinen Accent 6,2,15. fg. नखपद् ° Mṛcch. 36. स्मृति ° R. 1,20,24 (21,23 Gorr.). Rāgh. 9,43. Bhāg. P. 7,9,25. कर्ण ° R. 2,103,13. 5,11,9. श्रोत्र ° R. Schl. 2, 91,18. Rāgh. 7,16. Vārāh. Bṛh. S. 77,24. श्रोत्राशय ° R. 1,4,30. मनःकर्ण ° R. Gorr. 2,5,14. — β) was die angenehme Empfindung u. s. w. erzeugt: रथेन — ग्रनुद्घातसुखेन Rāgh. 2,72. सम्बुभिरयाचितसुखैः Spr. (II) 1637. सुहृत्समागमसुखा दिवसाः Kathās. 22,158. स्पर्शगन्ध ° (मत्स्य; es ist mit Matsjop. 24 °सुखश्च zu lesen) MBh. 3,12770. — *c*) = सुखिन् *sich behaglich —, wohl fühlend:* द्रक्ष्यामि त्वां सुखं (könnte auch adv. sein) वत्स सुस्थितं रात्रवर्त्मनि R. 2,25,29. सुखा (सुखं adv.?) धर्मं चरिष्यन्ति मुनयः 3,35,113. — 2) m. *a*) (sc. दण्ड) Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kām. Nītis. 19,45. — *b*) N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 3) f. या Taitt. 3,5,20. *a*) im Sāṁkhja *fromme Bemühung zum Zweck künftiger Seligkeit, Frömmigkeit* Tattvās. 31. — *b*) Bez. *der Stadt* Varuṇa's H. an. 2,28. Mān. kh. 8. — 4) n. AK. 3,6,2,23. Taitt. *a*) *Wohlbefinden, Wohlbehagen, Lust, angenehme Empfindung, Genuss, Freude* AK. 1,1,4,3. 3,4,2,24. H. 1370. H. an. Mān. Hall. 1,122. 5,61. mit dat. der Person (ग्राशिषि) P. 2,3,73. सुखं च मे शर्मन च मे (vgl. jedoch सुखे शयने Çat. Br. 11,5,3,4) VS. 18,6. °नामानि Naigh. 3,6. Nir. 8,9. °दुःखे Kāṭh. Up. 2,13. ईदृशैः सुखदुःखादिभिः M. 1,26. घनत्त 4,149. घनत्य 239. ग्रत्यत्त 5,46. शाश्वत 6,80. ग्रनुत्तम 2,9. 8,242. Jogāc. 2,42. सुखं चेदेच्छता M. 3,79. सुखस्य नित्यं दातेह 5,158. येन वेद्यते सर्वं सुखं दुःखं च जन्मसु 12,13. स्वर्गे सुखमश्नुते 20. सुखमाप्नुहि MBh. 3,13635. 12,4294. मातुर्नो न भवेत्सुखम् R. 2,31,17. 34,44. सुखानि लब्धुम् 51,9. 72,6. 86,10. Sūçr. 1,130,8. 153,5. 2,411,19. सुखमन्वभूत् Rāgh. 1,21. शरीरयोगजैः सुखैः 3,26. घनेन स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं मम Çik. 178. वनाद्न्यत्कुतः सुखम् Spr. (II) 169. षट्त्रीवलोकस्य सुखानि 600. 1013. सप्त 7225. नालं सुखाय सुहृदः, सुखेभ्यः 3651. 3680. 4241. 4604. सर्वमात्मवशं सुखम् 5272. 6087. 6136. 7063. fgg. 7072. fgg. 7079. fgg. सुखे वर्तमानः 7091. सुखधनैर्वियुतः Vārāh. Bṛh. S. 12,15. सुखयशोऽर्थवृद्धिकर 48,82. 53,66. सुखेषकात्ततत्परः Kathās. 11,2. सुखाय कर्माणि करोति लोकः Bhāg. P. 3,5,2. Çiṅk. in LA. (III) 33,16. सुखमेव पुरुषार्थः Sarvadarçanas. 2,13. 20, 14. 41,3. सर्वेषामनुकूलवेदनीयं सुखम् Tarkas. 53. मनसः R. 2,28,3. रघुचर्याकृत, वनवासकृत 52,17. विषयाणाम् 1,9,3. काव्यस्य *Freude an* 4, 8. °संयोग M. 6,64. सुखास्वाद Spr. (II) 7090. सुखादर Rāja-Tar. 4,337. °लव Vārāh. Bṛh. S. 74,3. सुखार्ह MBh. 3,2675. °पर Vārāh. Bṛh. 24 (22),13. °परिक्षीण Bṛh. S. 68,26. सुखान्वित 17. सुखदुःखसमन्वित M. 1, 49. मनोभव ° Vārāh. Bṛh. S. 75,1. वन्य ° Pārāśar. 216,10. मनः ° Bhāg. P. 3,18,51. लोकोत्तर ° Rāgh. 1,69. दर्शन ° Çik. 148. राज्य ° Vārāh. Bṛh. S. 77,4. am Ende eines adj. comp. (f. या): ग्रनिर्देश्य ° Vikr. 59. तुल्य ° Rāja-Tar. 4,691 (zu lesen °सुखानि °). लब्धनिद्रा ° Mṛcch. 93. विप्रियतमागम ° Spr. (II) 3310. सुखं कर् *wohlthun, frommen:* सुखं करोत्यौषधपानम् P. 5,4,63, Schol. — *b*) personificirt ist das *Wohlbehagen* u. s. w. ein Kind Dharma's von der Siddhi VP. 35. Mārk. P. 50,28. — *c*) *Himmel* H. an. Med. — *d*) Bez. *des 4ten astrologischen Hauses* Vārāh. Bṛh. 2,15. 4,10. 5,17. Lacôté 2,16. Verz. d. B. H. No. 878. Verz. d. Oxf. H. 330,*a*,36. 331,*a*,14. fg. — 3) adverbial in der Bed. *behaglich, angenehm, mit Behagen, mit Lust, zum Behagen; ohne Mühe und Anstrengung, leicht. a*) सुखम् acc. Einfluss auf den Ton eines verbi finiti gaṇa काष्ठादि zu P. 8,1,68. प्रिया जाया पतिं सुखं शिवमुपस्पृशत्या विस्रसः Ait. Br. 8,20. परिष्वस्पृशे चैनं पीनैरुरसिजैः सुखम् R. 1,9,38. (ग्रनिलः) ववौ सुखं शिवः 2,91,24. स्वपिति Çat. Br. 11,5,3,1. M. 1,54. Sūçr. 2,383,16. Spr. (II) 7078. Kathās. 18,115. वि-यम् 49,235. शी Kathop. 1,11. Spr. (II) 25. 3083. 5731. 6521. 6892. 7417. समुद्-स्था 28. प्रति-बुध्, चर् 6892. जीव् 2296, v. l. 5473. 7069. fgg. Hariv. 7209. Sarvadarçanas. 1,16. ग्रास् R. 2,52,97. Spr. (II) 614. 1241. Vikr. 65,17. स्था Spr. (II) 1956. Kathās. 32,145. रुध् M. 7,113. MBh. 1,5591. Spr. (II) 225. 1387. वस् M. 6,95. MBh. 3,1737. 2333. 2711. 3024. R. 2,54, 21. Spr. (II) 6304. नि-वस् R. 2,27,12. Hit. 38,8. 80,14. Bhāg. P. 8,24, 18. प्र-वस् R. 2,36,8. गत्वा 54,8. ग्रागमिष्यामि MBh. 3,1816. स्नातुम् Spr. (II) 4983. सुखं परेषां व्यसनेषु कथ्यते 2404. भद्रं मां सुखम् Kathās. 19,37. सुखं तपश्चरिष्यामः R. 1,61,3. सुखं संतारितो मया 2,86,21. सुखं योक्तनपक्षाशत्क्रमेषम् 5,1,45. (मम) निशौरैरधभिर्विशतः सुखम् Rāja-Tar. 6,46. सुखमर्थः समासेन मरुतोऽप्युपलभ्यते *ohne Mühe, leicht* Verz. d. Oxf. H. 30,*a*,12. सुखं बन्धात्प्रमुच्यते Bhag. 3,3. सुखमाराध्यः, सुखतराराध्यते Spr. (II) 103. सुखम् — न पुनः *leichter — als* 3824. mit einem infin. *leicht zu:* (सः) भविष्यति सुखं क्रतुम् MBh. 3,220. कर्तुम् Bhag. 9,2. रथं चिच्छेद कदलीसुखम् *so leicht wie eine Kadalī* Rāgh. 12,96. ग्रधिक ° *überaus angenehm:* नीत्वा दिनम् Kathās. 45,231. — *b*) सुखेन instr. P. 8,1,13. Siddh. K. 37,*a*,1. कच्चित्सुखेन राजर्षे व्युष्टा ते MBh. 12,1939.

जागर्ति Spr. (II) 7388. निवसति Hit. ed. Johns. 1685. वसतः स्म Pañcat. 33,17. तस्य सदसः समीपं जगाम Hit. 27,1. कालं नयमाना Pañcat. 60,25. वर्षाणि पञ्च पञ्च च — व्यतिचक्रमुः R. 1,63,9. R. Gorr. 2,25,37. Pañcat. 261, 11. सुखेन गच्छेत्त्र मृतो ऽपि सद्गतिम् R. Gorr. 1,4,149. 5,7,4. कुर्वन्नास्यम् Kathâs. 40,71. तत्फलं लभते नारी सु° Spr. (II) 1663. 4626. Vaitân. Bpn. S. 49,6. सिद्धि 86,55. Pañcar. 4,2,22. Kathâs. 11,25. Râga-Tar. 4,146. Pañcat. 48,2. 52,28. ददाति so v. a. gern P. 8,1,13, Schol. — c) सुखात् abl.: चतुर्वर्गप्राप्तिः सुखादेव जायते ohne Mühe, leicht, schnell Sin. D. 2,5. — d) am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen; Accent eines solchen comp. P. 6,2,170. gaṇa काष्ठादि zu 8,1,67. °शीतल Verz. d. Oxf. H. 46,a,39. fg. सुखास्तीर्णोपधानक 40. — Vgl. घ°, घत्तः°, ग्राम°, ग्राम्य°, निः°, पत्°, पुनः°, मनः° (n. Herzenslust Bhâg. P. 9,18, 51), मद्रा°, मुख°, यथा°, राज°, वि°, वोर्°, सोख, सौखिक, सौखीय, सौख्य.

सुखंमुण m. Bez. von Çiva's Waffe (खट्वाङ्ग) H. 200. — Vgl. सुखंघुण.

सुखकार adj. 1) Wohlbehagen —, Lust —, Freude bewirkend Nir. 12, 9. Verz. d. Oxf. H. 161,a, No. 355. Kâlakarma 1,112. 4,173. — 2) = सुकर leicht zu vollbringen, — bewerkstelligen Dhûrtân. zu Vop. nach ÇKDa. धर्मः सतां R. 5,86,12.

सुखकृत् adj. = सुखकार 1): सर्व° Spr. (II) 2700.

सुखक्रिया f. das Bewirken von Wohlbehagen u. s. w. Dhâtup. 35,73.

सुखगन्ध adj. (f. आ) = सुगन्ध wohlriechend R. 3,55,45.

सुखगम adj. = सुगम leicht zu betreten, gangbar: पन्थाः MBh. 13,4640.

सुखगम्य adj. dass.: घटवी Kâm. Nitis. 7,36.

सुखग्राह्य adj. 1) leicht zu packen, — erhaschen Kathâs. 61,33. — 2) leicht zu fassen, — begreifen Kumâras. 7,90.

सुखघात्य adj. leicht zu tödten Pañcat. 194,6.

सुखंकार 1) adj. (f. ई) = सुखकार 1). — 2) f. ई eine best. Pflanze, = जीवन्ती Râgân. im ÇKDa.

सुखंघुण m. = सुखंमुण Taik. 1,1,48.

सुखचर m. N. pr. eines Dorfes ÇKDa.

सुखचार m. ein rasches Pferd Çabdam. im ÇKDa.

सुखच्छाय adj. angenehmen Schatten gewährend: द्रुम R. 3,16,6.

सुखच्छेद्य adj. leicht zu vernichten: ein Feind Spr. (II) 3859. 7092, v. l. Kâm. Nitis. 8,51. सुखोच्छेद्य v. l.

सुखजात 1) adj. Accent P. 6,2,171. 4,1,33, Vârtt. 4. sich behaglich fühlend Bhatt. 5,38. — 2) n. irgend etwas Angenehmes: जनय रदखण्डनं येन वा भवति सुखजातम् Gîv. 10,3.

सुखतस् (von सुख) adv. behaglich: शेते R. 3,28,18.

सुखता (wie eben) f. Behaglichkeit, Annehmlichkeit: स्वप्नस्य R. 5,31,38.

सुखत्व n. nom. abstr. von सुख Wohlbehagen, Lust: को न प्रहृष्येद्दुःखेन सुखत्वपरिवर्तिना Kathâs. 22,252. सङ्क्रन्दनवनितादो सुखत्वारोपः Sarvadarçanas. 167,1.

सुखद 1) adj. (f. आ) Wohlbehagen —, Lust —, Freude gewährend: आदित्याः, दैत्याः R. 2,25,14. (प्राणत्यागे मित्रदर्शनम्) दाभ्यां सुखदं पञ्चत्वजीवतो ऽपि मृतस्य च Spr. (II) 4308. 1297. गङ्गा Gaṅgâpraṇâmamantra im ÇKDa. विष्णु unter dessen 1000 Namen ÇKDa. शृङ्गारे सुखदा Pañcar. 1, 14,69. मनसः Vaitân. Bpn. S. 104,28. मृति° 64. बहुसत्त्वसंघ° Spr. (II) 2309. — 2) m. a) Bez. einer Klasse von Manen Verz. d. Oxf. H. 40,a, 2 (v. l. स्वस्वध). गण Mîmâ. P. 96,47. — b) ein best. Tact (ताल) Saṅgîtadâm. im ÇKDa. — 3) f. आ a) eine best. Pflanze, = शमी Râgân. 8, 34. — b) eine Apsaras Çabdân. im ÇKDa. — c) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2646. — 4) n. Bez. von Vishṇu's Stätte Çabdârthak. bei Wilson.

सुखदायक adj. = सुखद 1) Pañcar. 1,14,46.

सुखदुःखमय (von सुख + दुःख) adj. (f. ई) aus Freud und Leid bestehend: दशा Kathâs. 117,140. Freude und Leid empfindend 113,83.

सुखदुःखिन् (wie eben) adj. Freude und Leid empfindend Bhâg. P. 10,60,38.

सुखदृश्य adj. gern gesehen, lieblich anzusehen Pañcar. 1,3,74. 4,3. 2, 3,22. शोभा मुमुक्षुदृश्येषु (so ist zu schreiben) 1,1,78.

सुखदेव m. N. pr. eines Mannes Târân. 170. fg.

सुखदोह्या adj. f. sich leicht melken lassend H. 1268. °दोह्यसौरभेयी H. an. 3,314. — Vgl. सुखसंदोह्या.

सुखधन m. N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 43,73. fgg.

सुखन n. nom. act. von सुखय् Dhâtup. 28,38.

सुखनाथ m. N. pr. einer in Mathurâ verehrten Gottheit Verz. d. Oxf. H. 148,b,40.

सुखनिविष्ट adj. behaglich —, bequem sitzend Pañcar. 3,5,6.

सुखपर adj. dem es hauptsächlich um Freuden zu thun ist, genusssüchtig Çik. 162, v. l. Vaitân. Bpn. 24(22),13.

सुखपेय adj. behaglich —, ohne Mühe zu trinken Spr. (II) 6762.

सुखप्रकाशमुनि m. N. pr. eines Mannes Hall. 135. 206.

सुखप्रणाद् adj. angenehm klingend: केपितं कपीनाम् MBh. 6,137.

सुखप्रद adj. Wohlbehagen —, Lust bewirkend Mîmâ. P. 106,58.

सुखप्रबोधक adj. (f. °धिका) leicht verständlich Verz. d. Oxf. H. 170, b, No. 380.

सुखप्रवेप adj. leicht erzitternd: तरु R. 2,96,3 (105,3 Gorr.).

सुखप्रश्न m. eine Erkundigung nach dem Wohlbefinden Jmdes: °प्रश्नमुदाहरेत् MBh. 12,7050. दा 4261. °द् 4260.

सुखप्रसव m. eine glückliche Niederkunft: °मय Verz. d. Oxf. H. 94,a,13.

सुखप्रसवन n. dass. Weber, Kâtjây. 266.

सुखप्रसुप्त adj. behaglich —, süss schlafend Ṛt. 1,9. — Vgl. सुखसंसुप्त und सुखसुप्त.

सुखप्राप्तधन adj. ohne Mühe zu Geld gekommen Sin. D. 111.

सुखप्राप्य adj. leicht zu erlangen, — gewinnen: ein Mädchen Kathâs. 33,168.

सुखप्लव adj. wo man behaglich baden kann R. 2,91,71. सुखाप्लव ed. Bomb.

सुखबद्ध adj. lieblich, reizend: सुखबद्धमसंबद्धं तया क्षेप प्रभाषते R. 2,96,14.

सुखबन्धन adj. an der Lust —, an den Freuden der Welt hängend Kâm. Nitis. 7,6.

सुखबुद्धि f. leichtes Verständniss: बालानां °बुद्धये Verz. d. Oxf. H. 197,b, No. 462.

सुखबोध m. dass.: बालानां °बोधाय Verz. d. Oxf. H. 161,a, No. 334. °बोधार्थम् 132,a, No. 240. °कृत् Çatr. 1,15. °रूप adj. leicht verständ-

lich, — erkennbar Spr. (II) 4479.

सुखबोधन n. dass. Verz. d. Oxf. H. 133,*b*,11 (so zu lesen st. सुषबो°). °दीपिका Titel eines Commentars Hall 91.

सुखभञ्जन m. *eine Moringa-Art* (श्वेतमरिच) Dhanv. 4,23.

सुखभागिन् adj. zu *Freuden berechtigt, auf Freuden angewiesen, in glücklichen Verhältnissen lebend, glücklich* R. 2,88,14. Spr. (II) 7195.

सुखभाज् adj. dass. Vop. 26,64. Spr. (II) 5942. Varâh. Bṛh. S. 47,5. 68,25. 60. 81. 106.

सुखभुज् adj. *Freuden geniessend, glücklich* Varâh. Bṛh. S. 68,100.

सुखभू adj. zur Erklärung von शंभू Nir. 5,3. von मयोभू 9,27.

सुखभेद्य adj. *leicht zerbrechlich, — zu trennen, zur Untreue geneigt:* मृदङ्ग, दुर्जन Spr. (II) 4971. रिपु 5859, v. l.

सुखभोग्य adj. *leicht zu geniessen, worüber man ohne Weiteres verfügen kann:* धन Kathâs. 24,153.

सुखभोजन n. *eine wohlschmeckende Speise* Med. ç. 29.

सुखमद् adj. *angenehm berauschend* Kâraka 1,27.

सुखमय (von सुख) adj. (f. ई, des Metrums wegen auch या) *voller Freuden:* दिश: Spr. (II) 26. 5192. Bhâg. P. 11,14,13. Sarvadarçanas. 121,7. 8.

सुखमानिन् adj. *an Freuden glaubend, Freuden voraussetzend:* दु:खे so v. a. *Leiden für Freuden haltend* Bhâg. P. 3,10,24.

सुखमालिका ? Pañkat. 236,16.

सुखमुख m. N. pr. eines Jaksha Târan. 309.

सुखमेधस् s. u. 2. एधस्.

सुखमोदा f. *Weihrauchbaum (angenehm riechend)* Râgân. 11,197.

सुखय् (von सुख), °यति Dhâtup. 35,75 (सुखक्रियायाम्). *Wohlbehagen bewirken, erquicken, erfreuen* (mit acc.): न तथा सुखयत्यग्निर्न प्रावारा न कम्बला: । शीतवातार्दितं लोकं यथा तव मरीचय: ॥ MBh. 3,181. Megh. 86. Çiç. Ch. 49,9. Vikr. 61. Spr. (II) 1039. 2215. Mâlatîm. 150,19. Gîr. 2,20. 4,18. 9,9. Kathâs. 87,15. Bhâg. P. 5,8,17. 6,13,11. Kull. zu M. 7,65. Verz. d. Oxf. H. 161,*b*,32. सुखित gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36 (auf सुख zurückgeführt). *Wohlbehagen empfindend, froh, glücklich* R. 1,17,18 (7 Gorr.). 2,42,31. 58,4. R. Gorr. 2,109,6. Varâh. Bṛh. S. 100,1. Bṛh. 12,14. 20,8. Spr. (II) 1627. 5393. 5715. Kathâs. 11,48. 33,10. पराधीनसुख° Vikr. 59,1. निधानप्राप्ति° Kathâs. 23,50. 24,195. 54,93. Râga-Tar. 4,666. सुखितम् adv. *froh, glücklich:* सुखितमास्व (d. i. आस्स्व) तत: शरदां शतम् Sin. D. 12,14.

सुखयितृ (von सुखय्) nom. ag. *Erfreuer, Beglücker:* सताम् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 34.

सुखयु adj. als Umschreibung von शंयु Nir. 4,21.

सुखरथ adj. *der einen leicht laufenden Wagen hat* RV. 5,30,1.

सुखरात्र m. N. pr. zweier Männer Râga-Tar. 5,206. 213. 222. 8,1303.

सुखरात्रि f. gaṇa सुप्रातादि zu P. 4,4,1, Vârtt. 3. *eine behagliche Nacht;* nach ÇKDa. Bez. *einer durch Lampen erhellten Neumondsnacht.* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,41. °रात्रिका dass. ÇKDa. Verz. d. Cambr. H. 64 (द्वाभ्यामिने मासि). — Vgl. सौखरात्रिक.

सुखलक्ष्य adj. *leicht zu erkennen* Hariv. 5828 (= सौम्य Nilak.). man hätte eher दु:खलक्ष्य erwartet.

सुखलेखन n. Titel einer Schrift, die Einem *das Schreiben erleichtern soll,* Notices of Skt Mss. 2,29.

सुखवत् (von सुख) adv. *einer Freude u. s. w. gleich:* कुर्वन्दु:खप्रतीकारं सुखवन्मन्यते गृही *hält dieses für eine Annehmlichkeit* Bhâg. P. 3,30,10.

सुखवत्ता (von सुखवत्) f. *Behaglichkeit, Annehmlichkeit:* देशस्य R. ed. Bomb. 1,28,19. सुखवर्ता ed. Scht.

सुखवत् (von सुख) adj. *voller Freuden, — Genüsse;* f. °वती N. der von Buddha Amitâbha bewohnten Welt Burnouf, Intr. 100. fg. 222. 594. Lot. de la b. l. 251. 267. Wassiljew 156. 178. 203. Târan. 93. 269. 313. Schiefner, Lebensb. 310 (80). °व्यूह m. Titel eines Sûtra Burnouf, Intr. 99. — Vgl. सुखावती.

सुखवर्चक m. *Natron* AK. 2,9,109. H. 943.

सुखवर्चस् m. desgl. Râgân. im ÇKDa.

सुखवर्ता R. 1,30,7 fehlerhaft für सुखवत्ता.

सुखवर्मन् m. N. pr. zweier Männer Râga-Tar. 4,707. 713. 5,129. 250.

सुखवह् adj. *bequem zu tragen* MBh. 2,716.

1. सुखवास m. *ein behaglicher Aufenthalt:* उषित्वा सुखवासम् R. 1, 17,17 (6 Gorr.).

2. सुखवास adj. *der an einem Orte behaglich gelebt hat* R. 1,17,20 (9 Gorr.).

3. सुखवास adj. *wohlriechend;* m. *Wassermelone* Ratnam. im ÇKDa.

सुखवासन m. schlechte Lesart für सुखवासन Çabdar. im ÇKDa.

सुखवी Med. v. 55 fehlerhaft für सुषवी.

सुखवीज्य adj. *leicht zu befächeln:* °ये मुतल्पे Pañkar. 1,6,39. vielleicht fehlerhaft für सुखशीते (v. l. सुशीते च).

सुखशयन n. *behagliches Ruhen, — Schlafen* gaṇa सुप्रातादि zu P. 4,4,1, Vârtt. 3. — Vgl. सौखशायनिक.

सुखशया f. N. pr. einer Zauberin Kathâs. 37,109. fgg.

सुखशय्या f. 1) *ein behagliches —, bequemes Lager* Ved. in LA. (III) 9,1. — 2) *ein behagliches Ruhen, — Schlafen* R. Gorr. 2,97,10.

सुखशायिन् adj. *behaglich —, süss ruhend, — schlafend* Verz. d. Oxf. H. 268,*a*,33. fgg.

सुखशीत adj. *angenehm kühl:* मारुत R. 3,78,13.

सुखशीतल adj. dass.: शयन Verz. d. Oxf. H. 40,*a*,39. fg.

सुखश्रव adj. *angenehm zu hören* Ragh. 3,19.

सुखश्रव्य adj. dass.; davon nom. abstr. °ता Hariv. 11084.

सुखसंवृद्ध adj. *in Freuden —, im Glück aufgewachsen* R. 2,61,3.

सुखसंवेश adj. *angenehm —, süss schlafend* MBh. 12,8468.

सुखसंसुप्त adj. dass. R. 2,51,10. — Vgl. सुखप्रसुप्त, सुखसुप्त.

सुखसंस्थ adj. *sich behaglich fühlend* Pañkat. 94,2.

सुखसंस्पर्श adj. (f. या) *angenehm bei der Berührung, — für das Gefühl* Vsantp. 166. Wind MBh. 4,933. R. 3,79,6. पाणि 2,112,19. समा MBh. 2,857. सर्वर्तु° (भूमि) 12,3822. — Vgl. सुखस्पर्श.

सुखसंचार adj. (f. या) *wo man sich mit Behagen ergeht, wohin man sich gern begiebt, einladend* Hariv. 3499 (nach der Lesart der neueren Ausg.). 3648. Spr. (II) 2080 (स्व°). Davon nom. abstr. °ता f. Sin. D. 308,13. °त्व n. 16.

सुखसंचारिन् Hariv. 3490 schlechte Lesart für °संचार.

सुखसंदोह्या adj. f. *leicht zu melken* Bharata zu AK. 2,9,72 nach ÇKDa.

सुखसंदोह्या adj. f. dass. AK. 2,9,72. Mun. 1. 172.

सुखसंबोध्य adj. *leicht aufzuklären, — zur Vernunft zu bringen* Kaṭhās. 40,28.

सुखसलिल n. *behagliches d. i. lauwarmes Wasser:* °निषेक Ṛt. 1,38. — Vgl. सुखाम्बु und सुखोदक.

सुखसागर N. pr. eines Dorfes Ksuvīç. 39,12. fg. 15; vgl. Wilson, Sel. Works 1,157. 171.

सुखसाध्य adj. 1) *leicht in seine Gewalt zu bringen, mit dem man leicht fertig wird:* द्विषां सैन्यम् Spr. (II) 441. — 2) *leicht zu heilen:* °तमो गदः Suçr. 1,131,3. — 3) *leicht zu Wege zu bringen* Çaṃk. zu Kaiṭh. Up. S. 8. भेत so v. a. *leicht zu erlangen* Spr. (II) 1956.

सुखसुख n. instr. °सुखेन *ganz gern* P. 8,1,13. ददाति Schol.

सुखसुप्त adj. *angenehm —, süss schlafend* MBu. 1,5959. 6003. Rāǵat. 3,174. 4,83. — Vgl. सुखप्रसुप्त und सुखसंसुप्त.

सुखसुप्ति f. *ein angenehmer —, süsser Schlaf:* °प्रबोधित als Beiw. Çiva's Çiv. °का H. ç. 88. — Vgl. सौखसुप्तिक.

सुखसेवक m. N. pr. eines Schlangendämons MBu. 1,2156. besser सुख° ed. Bomb.

सुखसेव्य adj. *leicht zu besuchen, dem man sich leicht nahen kann:* कैलासशिखर Paṇḍar. 3,1,2. Davon nom. abstr. °त्व n.: राज्ञः, क्षेमस्य भास्वतः Rāǵat. 6,298.

सुखस्थ adj. *in angenehmen Verhältnissen sich befindend, sich wohl fühlend, glücklich* Spr. (II) 692. Kaṭhās. 44,172.

सुखस्पर्श adj. (f. श्रा) = सुखसंस्पर्श. Wind R. 1,24,4. R. Gorr. 1,66, 11. 3,78,28. Rāǵat. 1,38. Mārk. P. 61,33. वाल्कारत्तरम् MBu. 3,2362. पाणि R. 2,72,31 (74,32 Gorr.). 104,17. R. Gorr. 2,95,8. ein Weib Prab. 57,6. Gürtel Kull. zu M. 2,42. Bäume R. 4,44,24. श्रध 7,54,8. पद° Mṛcch. 61.

सुखस्वाप m. *ein angenehmer —, süsser Schlaf* Kaṭhās. 45,122.

सुखहस्त adj. *eine zarte, weiche Hand habend:* °मधुवर्धक R. 6,112,16.

सुखाकर् (सुख + 1. कर्), °करोति *Jmd erfreuen, beglücken* P. 5,4, 63. Vop. 7,91.

सुखागत (सुख + श्रा°) n. *Willkommen:* स्वागतं ते हरिश्रेष्ठ सुखागतमरिंदम R. 6,85,4. Paṇḍat. III,164.

सुखाजात adj. als Beiw. Çiva's MBu. 13,1242. सुखरूपेण श्राजातः वृत्तिविलये सति श्राविर्भूतः Nīlak.

सुखादि (6. सु + खादि) adj. *schöne Spangen tragend:* die Marut ṚV. 1,87,6.

सुखादित (6. सु + खा°) adj. *wohl verkaut* VS. 11,78.

सुखाधार (सुख + श्रा°) m. *die Stätte der Freuden,* Bez. *des Himmels* Çabdam. im ÇKDa.

सुखानन्द (सुख + श्रा°) m. bei den Çākta N. pr. eines Autors mystischer Gebete Verz. d. Oxf. H. 101,b,2.

सुखाप (सुख + श्राप von श्राप्) adj. *leicht zu gewinnen:* नायं सुखापो भगवान्देहिनां गोपिकासुतः Bhāg. P. 10,9,21.

सुखाप्लव (सुख + श्रा°) adj. *wo man sich behaglich baden kann* R. ed. Bomb. 2,91,79. सुखाप्लव Schol.

सुखाभियोज्य adj. *leicht anzugreifen* Spr. (II) 6802.

सुखाभ्युदयिक (von सुख + श्रभ्युदय) adj. *Freuden bringend* M. 12,85.

सुखाम्बु (सुख + श्र°) n. *laues Wasser* Suçr. 2,33,4. 442,5. 444,13. — Vgl. सुखसलिल, सुखोदक.

सुखाय् (von सुख), °यते *Wohlbehagen —, Lust empfinden, selig sein* P. 3,1,18. 7,4,25. Vop. 21,10. Verz. d. Oxf. H. 222,b,37. Bhaṭṭ. 5,74. श्रमुखायिषत किल मे गात्राणि Daçar. 130,2.

सुखायत und सुखायन adj. *gut gezogen* (Pferd) Çabdam. im ÇKDa.

सुखाराध्य (सुख + श्रा°) adj. *leicht zu gewinnen:* eine Gottheit Bhāg. P. 3,19,36.

सुखारोहण (सुख + श्रा°) adj. *leicht zu ersteigen:* सोपान MBu. 2,1281.

सुखार्थ (सुख + श्रर्थ°) m. *eine Sache des Wohlbehagens, — der Lust:* श्रप्रयत्नः सुखार्थेषु M. 6,26. सुखार्थाय *der Annehmlichkeit wegen, zur Erleichterung* Spr. (II) 6374.

सुखार्थिन् (सुख + श्र°) adj. *dem es um Wohlbehagen, um Freuden zu thun ist* M. 6,49. Spr. (II) 6708. 7088. fg.

सुखालुका f. *eine best. Pflanze,* = डोडी Rāǵān. im ÇKDa. unter dem letzten Worte, सुकालुका in der alphabetischen Reihenfolge; die richtige Form ist सुवालुका.

सुखावगम (सुख + श्र°) m. *leichtes Verständniss* Comm. zu Jogās. 2,49.

सुखावतीव्यूह (Comp. von Avadāna) bei den Çākta fl. pl. Bez. einer Klasse von Autoren mystischer Gebete Verz. d. Oxf. H. 101,b,5.

सुखावत् 1) adj. = सुखवत्. वर्ति Bez. *einer best. Pille* Kāraḍatta 417. — 2) f. °वती *a*) = सुखवती: सुखावतीश्वर m. N. pr. eines Buddha (wohl Amitābha's) Taik. 1,1,15. °व्यूह = सुखवतीव्यूह Verz. d. Oxf. H. 403,*a*, No. 3. — *b*) N. pr. einer Gattin des Sūrjaprabha Kaṭhās. 46,24.

सुखावबोध (सुख + श्र°) m. *leichtes Verständniss* Çaṃk. zu Kaiṭh. Up. S. 80.

सुखावल (von सुख) m. N. pr. eines Sohnes des Nṛkakshus VP. 4,21, 3. — Vgl. सुखीनल und सुखोवल und VP. (2te Aufl.) 4,165.

सुखावह (सुख + श्रा°) adj. (f. श्रा) *Wohlbehagen —, Freuden bringend* Harīv. 3514. R. 2,57,14. Spr. (II) 2327. 2614. 6939. Varāh. Bṛh. S. 68,87. Paṇḍar. 1,1,39. Paṇḍat. 211,14. श्रोतृसुति° R. 1,4,8. सर्वकाल° Bhāg. P. 3,23,14. परिणाम° Paṇḍar. 1,2,13. 4,7. श्र° MBu. 1,4733.

सुखावृत (सुख + श्रा°) adj. *erfüllt von Behagen, — Lust:* मनीकायाः (von सुख abhängig) Bhāg. P. 7,7,42.

1. सुखाश (सुख + श्राश) m. 1) *eine wohlschmeckende Speise* H. an. 3, 738. Med. ç. 29. — 2) *Cucumis sativus Lin.* Taik. 2,4,26. H. an. Med. Hin. 181.

2. सुखाश (wie eben) adj. *Wohlschmeckendes geniessend;* m. ein N. Varuṇa's H. an. 3,738. Med. ç. 29.

सुखाशक m. *Cucumis sativus Lin.* Çabdam. im ÇKDa.

सुखाशा (सुख + श्रा°) f. *Erwartung von Freuden* Spr. (II) 3062 (Conj.)

सुखाश्रय (सुख + श्रा°) adj. *mit Wohlbehagen verbunden, W. bewirkend:* नाटक Sāh. D. 189,7.

सुखासिका (सुख + श्रा°) f. *Wohlbefinden* Rāǵa-Tar. 4,14.

सुखासीन (सुख + श्रा°) adj. *behaglich —, bequem sitzend* R. 1,51,3.

2,53,24. Spr. (II) 7254. Buic. P. 6,14,15. Hit. 29,12. — Vgl. सुखोपविष्ट.

सुखासुख (सुख + ष°) n. sg. *Freuden und Leiden* M. 12,19.

सुखिता (von सुखिन्) f, *Wohlbehagen, das Gefühl der Lust:* गात्रे Çiç. 178, v. l.

सुखित्व (wie oben) n. dass. Vedântas. (Allah.) No. 38.

सुखिन् (von सुख) adj. P. 5,2,131. *A) Wohlbehagen empfindend, sich wohl befindend, wohl gedeihend, froh, glücklich* Suçr. 2,411,12. 425,15. Buic. 1,37. 5,23. MBh. 3,1792. 3057. R. 1,23,2. 2,53,11. 68,2. 4,40, 71. Kap. 4,11. fg. Manu. 3. Çiç. 61,17. Spr. (II) 252. 2123. 2455. 5595. 6171. 6467. 6751. 7032. 7150. Varâh. Bṛh. 8. 68,7. 10 (Gegens. निःस्व). 21. 59. Bṛh. 4,10 (गर्भ). 13,1. Kathâs. 14,90. 21,3. 27,58. 28,162. 44,188 (vom Vorhergehenden zu trennen). Râǵa-Tar. 1,155. Mâlav. P. 15,59. Prab. 68,10. Buic. P. 5,13,3. Sarvadarçanas. 120,22. Pañkat. 262,10. Hit. 21,4. 44,7. 78,3. 133,12. सुखिस्वभाव *ein frohes, glückliches Naturell* 106,16. सत्यन्त° MBh. 13,1042. निकाम° Çiç. 4,54. एकान्त° Kathâs. 1,47. Verz. d. Oxf. H. 33,a,17. निर्भरनिद्रा° Hit. 85,7. s. ष° R. 3,79,43. Spr. (II) 6171. — 2) *behaglich, Behagen bereitend:* मनोवतीनवाम्भोषसुखिनीमनयन्निशाम् Kathâs. 44,231.

सुखी adj. Decl. Vop. 3,61.

सुखीनल m. N. pr. eines Sohnes des Sukakshus Buic. P. 9,22,40. — Vgl. सुखावल und सुखीवल.

सुखीललिता (!) f. N. pr. einer Jungfrau Târân. 277.

सुखीवल m. = सुखावल, सुखीनल VP. 462 (vgl. Verz. d. Cambr. H. 6,5). Verz. d. Oxf. H. 40,b,15.

सुखेतर (सुख + इ°) n. pl. *Freuden und Leiden* Çvetâçv. Up. 1,1.

सुखेष्ठ (सुख loc. + स्था) adj. *in Freuden lebend:* Çiva Çiv.

सुखेधित (सुख + इ°) adj. *in glücklichen Verhältnissen aufgewachsen, — geübt habend* MBh. 5,1198. 14,2261.

सुखोच्छेद्य (सुख + उ°) adj. *leicht abzureissen, — auszurotten, — zu vernichten:* शिरीष, संसार Spr. (II) 6459. ein Feind 5859, v. l. 7092. Kâm. Nîtis. 8,51 nach der Lesart des Comm.

सुखोत्सव (सुख + उ°) m. *Gatte (ein Fest der Lust)* Trik. 2,6,10.

सुखोदक (सुख + उ°) n. *laues Wasser* Ratnam. im ÇKDa. °प्रतम Suçr. 2,331,18. — Vgl. सुखसलिल, सुखाम्बु.

सुखोदय (सुख + उ°) 1) adj. (f. या) *Wohlbehagen —, Lust im Gefolge habend, Freuden —, Glück verheissend:* दुःख Spr. (II) 7075. सर्वविद्यास 6952. काल MBh. 1,6047. वृद्धि 7439. नवस्येन्दोर्बिम्बम् Z. d. d. m. G. 27,50. सु° देश R. Gorr. 1,31,20. ष° M. 4,70. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Medhâtithi, n. N. pr. des von ihm beherrschten Varsha Mârk. P. 53,28. fg.

सुखोदर्क (सुख + उ°) adj. (f. या) = सुखोदय M. 9,28. MBh. 3,11535. 16899. R. 2,48,15. 92,29 (101,32 Gorr.). 3,62,16. ष° M. 4,176. 11, 10. 12,18. Buic. P. 5,14,15.

सुखोद्य (सुख + उद्य) adj. *leicht auszusprechen* M. 2,22.

सुखोपगम्य (सुख + उ°) adj. *leicht zugänglich:* eine Person Kâm. Nîtis. 15,49. *leicht zu erreichen:* उद्यान Mâlav. 113,4.

सुखोपविष्ट (सुख + उ°) adj. *behaglich —, bequem sitzend* MBh. 3, 2693. Harîv. 4569. R. 1,52,6. 5,11,18. Varâh. Bṛh. 8. 85,3. Hit. 8,15.

1. सुखोपाय (सुख + उ°) m. *ein leichtes Mittel* Comm. zu Buic. P. 11, 29,2. instr. *mit Leichtigkeit, ohne Mühe* Pañkat. 211,10. 19.

2. सुखोपाय (wie oben) adj. (f. या) *leicht zu erlangen:* वृत्ति Spr. (II) 5664 (Conj.).

सुखोर्द्रिक m. = मर्द्रिका *Natron* Râǵân. im ÇKDa.

सुखोषित (सुख + उ°) adj. *der die Nacht gut zugebracht hat, einen behaglichen Aufenthalt gehabt habend* MBh. 3,3002. 10866. R. 2,92,5 (रजनीम्). सु° 6. wohl fehlerhaft für सुखोचित *an Freuden gewöhnt* Harîv. 4833.

सुखोष्ण (सुख + उष्ण) adj. *lauwarm* Suçr. 2,27,9. 34,7. 21. 66,14. 346,14. गोमय 294,4.

सुखोष्य (सुख + उष्य von 3. वस्) adj. *wo man sich behaglich aufhalten kann:* वन Harîv. 3514.

सुख्य (von सुख), सुख्यति = सुखय् gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

1. सुगँ, सुगी (6. सु + 1. गँ, गी) P. 3,2,48, Vârtt. 3 (सुग ग्रधिकरणे). 1) adj. *a) leicht gangbar, wegsam:* ein Pfad ṚV. 1,35,11. 41,4. 8,31,13. 2,27,6. कृणोति विश्वा सुपथा सुगानि 6,64,1. सुगान्पथः कृणुहि देवयानान् 10,51,5. AV. 14,2,3. TBr. 3,1,2,10. fg. Liṭ. 4,1,5. भूयाक् *leicht zugänglich* Kathâs. 39,31. — *b) leicht zu erreichen* ṚV. 1,165,3. भेषज TS. 1,8,6,2. दविष्ठमस्य कृधी सुगम् 6,51,13. 10,63,7. न सुगं दुष्कृते भुवम् so v. a. *ich will es dem Uebelthäter nicht leicht machen* 86,5. ग्रगम्यं मन्यते सुगम् Spr. (II) 41. — 2) n. *a) Wegsamkeit, guter Pfad; glücklicher —, leichter Fortgang* (Gegens. दुर्ग) ṚV. 1,42,7. 43,6. सदमित्रैः सुगं कृधि 106,3. 5,54,6. दुष्कृते मा सुगं भूत् 7,104,7. 8,47,11. पिपर्तु नो यति द्वेषा-स्यर्यमा सुगेभिः 2,27,7. सुगेभिर्यात्यर्धनः 8,27,17. 10,85,32. सुगेषूत दुर्गेषु पथिकृत् 8,21,12. पुत्स्वा स्मन्यं मरुद् वरिवः सुगं कः 44,13. VS. 8,13 (vgl. AV. 7,97,4). — *b) faeces* Çârdûl. im ÇKDa.

2. सुग (6. सु + 2. ग) adj. *schön singend* Buic. P. 10,12,34.

सुगण् künstliches adj. von गणय् mit सम् Schol. zu P. 3,2,75. 8,3, 32. zu AV. Pâr. 3,27. Vop. 2,26.

सुगण (6. सु + गण) 1) m. N. pr. eines Râǵaputra Kathâs. 47,87. 89. — 2) f. या N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's (neben गणा) MBh. 9,2645.

सुगणक (6. सु + ग°) m. *ein guter Astronom:* °ज्ञानाधिराज (ज्ञानाधिराज gedr.) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 132,a, No. 240.

सुगत (6. सु + गत) 1) adj. als Erkl. von सुविद Nir. 4,17. *a) einen guten Gang habend, gut laufend:* Zugstiere Varâh. Bṛh. S. 61,12. — *b) dem es gut ergangen ist, der es sich hat wohl gehen lassen* Spr. (II) 7389. — 2) m. *a) ein* Buddha (vgl. तथागत) AK. 1,1,1,8. 3,4,1,6. H. 232. Hall. 1,35. Burnouf, Intr. 77. 626. Müller, SL. 102. Lalit. ed. Calc. 140,3. 208,13. 293,2. 460,7. Spr. (II) 6727. Kathâs. 29,40. Prab. 49,8. Râǵa-Tar. 4,260. Pañkar. 4,8,31 (neben बुद्ध). Wilson, Sel. Works 2,6. 37. Inschr. bei Colebr. Misc. Ess. 2,251. सुगतायतन Kathâs. 13, 88. °शासन 72,93. °बिम्ब Râǵa-Tar. 4,269. °प्रतिमारीति 6,172. — *b)* = सौगत *ein Buddhist* Verz. d. Oxf. H. 253,b,7.

सुगतचेतना f. N. pr. eines Frauenzimmers Lot. de la b. l. 231.

सुगतमित्र m. N. pr. eines Mannes Vie de Hiouen-thsang 94.

सुगतावदान n. N. eines buddhistischen Sûtra Lot. de la b. l. 333.

1. सुगति (6. सु + गति) f. *Wohlfahrt, Wohlergehen, ein glückliches Loos, Seligkeit:* पश्याम्यहं भित्तवो दिव्येन चक्षुषा लोकानां सुगतिं दुर्गतिं च Prab. 49,8. 9. सुगतिं गम् MBu. 1,615. 5,2448. Mârk. P. 95,7. 8 Hariv. 11273. यज् 8197. प्र-याप् MBu. 3,10511. Hariv. 4870. °प्रद Paṅkar. 4,3,44. नारकरिपुरस्तु स निखिलसुगतिः so v. a. *sichere Zuflucht* Khandom. 73.

2. सुगति (wie oben) 1) adj. *einen guten Stand habend, eine günstige Stelle einnehmend:* ein Planet Varâh. Bṛh. S. 9,45. — 2) m. N. pr. ein Arhant der vergangenen Utsarpiṇî ÇKDa. angeblich nach H.; wohl fehlerhaft für सुमति. Sohn Gaja's Buic. P. 5,15,12. ein Autor ÇKDa. mit folgendem Belege: सुगतिसोपानप्रभृतयो ऽप्येवमिति स्मार्तलिखनम्.

सुगम्य (6. सु + ग°) adj. *leicht gangbar* Lîl. 4,1,5.

1. सुगन्ध (6. सु + ग°) m. *Wohlgeruch* R. 3,16,6. 5,13,9. *ein wohlriechender Stoff, Parfum* Jâṅ. 1,287. Varâh. Bṛh. 18,1. Vet. in LA. (III) 8,22. °युक्ति unter den 64 Künsten (vgl. गन्धयुक्ति in den Nachträgen) Comm. zu Buic. P. 10,45,36. स° adj. Varâh. Bṛh. S. 60,10. ध° *ein übler Geruch* (der Comm. zerlegt das Wort in ध्रमु = श्वास + गन्ध) Buic. P. 5,13,13.

2. सुगन्ध (wie oben) 1) adj. (f. श्रा) *wohlriechend* MBu. 1,7315. 5,2. Hariv. 8447 (तथाऽनालांश्च बहुप्रकारान् die neuere Ausg.). 8714. 16116. R. 1,9,6. R. Gorr. 2,100,21. 4,44,36. 48,10. 50,23. 6,37,36. Suçr. 1, 113,12. Spr. (II) 7093. 7144. Varâh. Bṛh. S. 48,17. 88,40. Mârk. P. 59, 20. 121,14. Buic. P. 5,16,19. 10,41,49. Paṅkar. 1,10,42. Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,39. 148,*a*, No. 318, Z. 3. सु° MBu. 3,1739. Varâh. Bṛh. S. 48, 32. 60,10, v. l. ध° R. 1,6,8 (16 Gorr.). — 2) m. *a) Schwefel* Râǵan. 13,73. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: = चणक Râǵan. 16,46. = भूस्तृण 8,122. = तुम्बुरु 11,188. = रक्तशिग्रु Râǵan. 7,21. *Majoran* Ratnam. 106. — *c)* N. pr. eines Berges Golâṅg. Bhuvanak. 32. — 3) f. श्रा *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: = राम्ना AK. 2,4,4,2. = शटी Çabdar. im ÇKDa. = नवमालिका Râǵan. 10,94 (auch Ratnam. 177). = माधवी 109. = स्पृक्का 12,134. = पूथी 10,99. = गङ्गापत्री 166. = शल्लकी 11,196. = शताह्वा 4, 12. = नाकुली 7,93 (auch Ratnam. 49). = ऋषभा 6,62. = मातुलुङ्गी Ratnam. 67. = घनसमूल 26. = रुद्रजटा Râǵan. 3,67. = वन्ध्याकर्कोटकी, शतपुष्पा und स्वर्णयूथिका Râǵan. im ÇKDa. = तुलसी Ratnam. im ÇKDa. Karaka 1,27. Suçr. 1,59,11. — *b)* N. pr. α) eines heiligen Badeplatzes MBu. 3,7088. — β) einer Apsaras Vâyup. beim Schol. zu H. 183. MBu. 1,4819. Hariv. 12473. 14164 (पुण्डरीका सु° die neuere Ausg.). — γ) einer Form der Dâkshâjaṇî Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,11. — δ) eines Frauenzimmers Râǵa-Tar. 5,156.220.237.342.343.355.469. — 4) f. ई N. pr. einer Dienerin des Vasudeva VP. 439,*N*. 2. — 5) n. *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: = नीलोत्पल Râǵan. 10,202. = श्वादि 12,73. = पत्राङ्ग (v. l. सुरङ्ग) 19. = तुरुष्कीरक Ratnam. 101. = कत्तृण 257. = गन्धतृण Ratnam. im ÇKDa. = यन्थिपर्णा Bhâvapr. ebend. = चन्दन Râǵan. ebend. — *b)* N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBu. 3,8014. — Vgl. त्वक्°, त्वचि°, नाग°, मक्षा°, सौगन्धिक, सौगन्ध्य.

सुगन्धक 1) m. *a) Schwefel* Ratnam. 288. — *b) eine zu den* शालि *gerechnete Körnerfrucht* Suçr. 1,73,5. 193,6. *eine best. Gemüsepflanze* 138,16. 217,4. *Orangenbaum* Trik. 2,4,12. *Momordica mixta* Roxb. H. 1190. = धारणीकन्द Râǵan. 7,91. = रक्ततुलसी Ratnam. im ÇKDa. — 2) f. सुगन्धिका *eine best. Pflanze*, vielleicht = शताह्वा Suçr. 2,101,5. 103,2. 285,12. — 3) n. = सुरपर्णा Râǵan. 10,175.

सुगन्धतैलनिर्यास m. = श्वादि Râǵan. im ÇKDa.

सुगन्धपत्रा f. = रुद्रजटा Râǵan. 3,67. = रुद्रजटा Râǵan. im ÇKDa.

सुगन्धभूतृण n. = गन्धतृण Râǵan. im ÇKDa.

सुगन्धमूला f. = लवली Dhanv. 5,19. = स्थलपद्मिनी Râǵan. 5,79. = राम्ना Râǵan. im ÇKDa.

सुगन्धाढ्य (f. सुगन्ध + आढ्य) 1) adj. *überaus wohlriechend* R. 3,16,6. — 2) f. श्रा = मल्लिका Râǵan. 10,85.

सुगन्धादित्य m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5,268. 280. 282.

सुगन्धामलक m. *eine best. Arzenei:* सर्वौषधिसमायुक्ताः पुष्कास्त्वामलकत्वचः । पदा तदायं योगः स्यात्सुगन्धामलकाभिधः ॥ Râǵan. im ÇKDa.

सुगन्धार m. MBu. 13,1242 unter den Beinn. Çiva's. शोभनो गन्धारदेशोद्भवः Nîlak.

सुगन्धि 1) adj. oxyt. und parox. ṚV., oxyt. nach P. = सुगन्ध *wohlriechend* P. 5,4,135. Vop. 6,87. AK. 1,1,4,20. H. 1391. ṚV. 7,59,12. 8,19,24. MBu. 3,1739. 2938. 11999. Hariv. 8792. 12100. 16116 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 1,9,5. 39. 2,57,4. R. Gorr. 2,8,18. 3,79,6. 6,37,35. 7,31,29. Karaka 1,8. 27. Suçr. 1,113,7. 171,10. 200, 15. 2,532,5. Kâm. Nîtis. 15,10. Ṛt. 6,2. Râgat. 4,45. Kumâras. 3,56. Spr. (II) 1418. 1735. 2503. Varâh. Bṛh. S. 44,33. 67,7. 79,26. 104,61. Kathâs. 16,28. Verz. d. Oxf. H. 103,*b*,24. Buic. P. 5,16,18 (neben सुरभि). Paṅkar. 1,7,38.62. Kâtyâr. 42. अति° Suçr. 1,184,3. सु° MBu. 7,2910. R. 1,9,15. 7,75,3. Varâh. Bṛh. S. 54,122. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: = सहकार Çabdar. im ÇKDa. = भद्रमुस्ता Râǵan. 6,141. = कशेरु 8,145. = वनबर्बरिका 10,164. — 3) n. Bez. verschiedener *wohlriechender* Stoffe und Pflanzen: = एलवालुक AK. 2, 4, 4, 9. Ratnam. 126. = मुस्ता, कशेरु, गन्धतृण, धान्यक und पिप्पलीमूल Râǵan. im ÇKDa. *eine Art Sandel* Râǵan. 12,23. Weber, Ksḥṇâǵ. 278. — Vgl. मक्षा°.

सुगन्धिक 1) m. *a) eine best. Körnerfrucht* (vgl. सुगन्धक) H. 1169. Vîsḥṇ. 1,6,1. — *b)* = तुरुष्क *ostindischer Weihrauch* Râǵan. 12,105. — *c) Schwefel* Râǵan. zu AK. 2,9,103 nach ÇKDa. — *d) Löwe* H. ç. 183. — 2) n. *die weisse Wasserlilie* Çabdar. im ÇKDa. = गौरसुवर्ण Râǵan. 7,152. = उशीर 12,160. = पुष्करमूल und सुरपर्णी Râǵan. im ÇKDa.

सुगन्धिकुसुम 1) m. = पीतकरवीर Râǵan. 10,16. — 2) f. श्रा = एका Gaṇâd. im ÇKDa.

सुगन्धिता (von सुगन्धि) f. *das Wohlriechendsein, Wohlgeruch* Halâ. 1,77. Çiç. 3,54. Varâh. Bṛh. S. 77,24.

सुगन्धितैजन Çânt. 3,11 (auch mit dem Acut auf der ersten oder zweiten Silbe) n. *ein best. wohlriechendes Gras* (रोहीत, रोहिणपुष्प Schol.) TS. 6,2,*a*,4. Âit. Br. 1,28. Çat. Br. 3,5,*a*,17. Âçv. Çr. 11,6,3. Paṅkav. Br. 24,13,5. Kâtj. Çr. 5,4,17. 24,3,12. masc. (vgl. Comm. zu Çânt. 3,11) Kâtj. 25,6.

सुगन्धित्रिफला f. *Muskatnuss, Betelnuss und Gewürznelke* Râǵan. 22,3.

सुगन्धिन् 1) adj. = सुगन्धि *wohlriechend* MBu. 1,2792. 3,12041. 13, 959. R. 3,76,22. 4,59,12. 7,26,22. — 2) f. °नी *eine best. Pflanze.* = धारामशीतला Râǵan. im ÇKDa. = केतकी Dhanv. 4,133.

सुगन्धिमूल 1) n. *Rettig* Rāǵan. 12,162. — 2) f. आ = रास्ना Dhanv. 1,103. Rāǵan. 6,82. = शटी 229.

सुगन्धिमूषिका f. *Moschusratte* Rāǵan. 19.

सुगन्धिसोक m. N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 6,319. 7,24. 27. 45.

सुगन्धेश m. N. eines von Sugandhā errichteten Heiligthums Rāǵa-Tar. 3,157.

सुगन्मन् (6. सु + गा°) adj. Vop. 26,68.

सुगभस्ति adj. *schönarmig:* Tvashṭar ṚV. 6,49,9. die Soma Prossenden 9,72,2. 5,43,4.

सुगम 1) adj. (f. आ) *a) leicht gangbar:* पति° (मार्ग) Kathās. 19,64. असुगमे ऽध्वनि Bālār. P. 5,14,1. — *b) leicht zugänglich:* गुहा Kathās. 46,206. शैलो सुकृतिसुगमो Spr. (II) 6039. — *c) leicht zu finden, sich von selbst ergebend, selbstverständlich, leicht zu verstehen:* संशयः सुगमस्तत्र निर्णयस्तत्र दुर्गमः MBh. 13,7335. Bhāg. P. 10,84,36. Comm. zu Gobhāṇ. Bhuvanak. 36. zu Ganit. Spashṭādh. 71. Vop. 9,55 und oft bei den Commentt. — 2) m. N. pr. eines Dānava Kathās. 47,22.

सुगमन adj. *leicht zugänglich* Nir. 6,2.

सुगम्भीर adj. (f. आ) *sehr tief:* नदी MBh. 12,4973.

सुगम्य adj. *leicht zu passiren:* परिखा Pañcat. 1,7,57.

सुगर (6. सु + गर) n. *Mennig* Rāǵan. 13,58.

सुगला (6. सु + गला) f. N. pr. eines Frauenzimmers Rāǵa-Tar. 7,686. 813. 831.

1. सुगव m. *ein kräftiger Stier* MBh. 12,2047.

2. सुगव adj. *schöne —, viele Rinder besitzend* ṚV. 1,116,25.

सुगवि m. N. pr. eines Sohnes des Prasuçruta VP. 4,4,47. सुसंधि Wilson.

सुगव्य n. *Besitz guter —, vieler Rinder* ṚV. 1,102,22. 8,12,33.

सुगरुत adj. *überaus dicht:* वृति AK. 2,7,18. H. 824.

सुगातु fehlerhaft AV. 6,1,3; wohl zu ändern: उभे सुती सु गातवे.

सुगातुर्या f. instr. *aus Verlangen nach guten Wohnsitzen* ṚV. 1,97,2. st. dessen fehlerhaft सुगात्रिया P. 7,1,39, VArtt. 3, Schol.; vgl. Manibh. lith. Ausg. 7,66,b.

सुगात्र adj. (f. ई) *schöngliedrig, einen schönen Körper habend* Kathās. 30,62. 32,194.

सुगात्रिया s. सुगातुया.

सुगार्ध adj. *wohl furtbar, durchwatbar* ṚV. 7,97,8.

सुगार्हपत्य m. (Agni als) *guter Hausherr:* °त्यो वितपन्नातिम् AV. 12,2,45. TBr. 1,2,1,20. °त्याः (°त्यः zu vermuthen) समिधो दिदीहि ṚV. 5,4,2.

सुगीत n. *schöner Gesang* Bhāg. P. 4,15,19.

सुगीति f. *ein Metrum von 32 + 27 Moren* Colebr. Misc. Ess. 2,154.

सुगु adj. P. 6,1,182, Schol. *gute —, viele Rinder habend* ṚV. 1,125, 2. AV. 14,2,43. TBr. 2,4,3,4.

सुगुणिन् adj. *grosse Vorzüge besitzend* Spr. (II) 2375.

सुगुप्त 1) adj. *wohl bewacht* Cat. Bh. 1,1,2,22. भवन R. 5,13,7. *wohl versteckt:* दम्भ Spr. (II) 7112, v. l. °तरं सरः Pañcat. 256,6. सुगुप्तम् adv.: रक्ष्यमाणो रासभः Spr. (II) 7094. समावेदनीयम् *ganz im Geheimen* Pañcat. 231,17. — 2) f. आ *Mucuna pruriens Hook.* Ratnam. 17.

सुगुप्तीकर् (सुगुप्त + 1. कर्) *wohl verwahren:* °कृत Pañcat. 208,21.

सुगुरु adj. *sehr schwer:* एनस् M. 11,256.

सुगूढ adj. *gut versteckt, — verwahrt, — geborgen* MBh. 3,13158. Spr. (II) 6490. °म् adv. *ganz im Geheimen* Daçak. 94,8.

सुगृह् 1) adj. *ein gutes Haus habend* AV. 14,2,43. — 2) m. *Sylvia sutoria* (ein Singvogel) Taik. 2,3,29. H. 1341. — 3) f. ई N. *eines zu den* प्रतुद् *gezählten Vogels* Suçr. 1,201,20.

सुगृहपति m. *ein guter Hausherr:* Agni VS. 2,27.

सुगृहिन् adj. *ein gutes Haus habend, gut gebettet:* ein Vogel Spr. (II) 1286.

सुगृहीत adj. 1) woran man *sich festhält:* °मलिनपक्ष Spr. (II) 7095. — 2) *zum Heil in den Mund genommen, durch blosses Aussprechen schon Glück bringend:* यः प्रातः स्मर्यते प्रभुकाम्यया ॥ स सुगृहीतनामा (so ÇKDa. und Wilson st. स्वगृहीत° der Ausg.) स्यात् Taik. 2,7,27. fg. सुगृहीताभिध Rāǵa-Tar. 4,262. सुगृहीताभिधः (so hat Ball. gelesen) पूज्यः शिष्याग्रेर्विनिगद्यते Sin. D. 172,7.

सुगेवृध् (सुगे loc. von सुग) adj. *am guten Fortgang sich freuend* ṚV. 8,18,2.

सुगो f. *eine schöne Kuh* P. 5,4,69, Schol.

1. सुगोपा m. *ein guter Beschützer* ṚV. 1,120,7. 2,23,5. 5,44,2. 6,31,11. 10,108,7.

2. सुगोपा adj. *gut behütet:* धेनवः ṚV. 3,45,2. 5,38,5. superl. °तम VS. Pair. 5,3. TS. Pair. 3,5. ṚV. 1,86,1.

सुगोप्य adj. *sehr geheim zu halten* Pañcat. 1,4,105.

सुगौतम m. = गौतम als Bez. Çākjamuni's Lalit. ed. Calc. 428,16.

सुग्म्य (ohne Avagraha von 6. सु + ग्मा) adj. *rüstig fortschreitend:* रथेष्ठाः ṚV. 1,173,4. 8,22,15. *zunehmend:* रयि 1,48,13. = सुख Naigh. 3,6.

सुग्रथित adj. *fest geflochten, gut verknüpft* ṚV. 1,121,10.

सुगन्धि 1) m. *ein best. Parfum,* = चोरक Rāǵan. 12,145. — 2) n. = पिप्पलीमूल Rāǵan. 6,23.

सुग्रह adj. (f. आ) 1) *einen guten Griff habend:* धनुस् MBh. 4,1226. पक्ष Suçr. 1,24,5. — 2) *leicht zu erlangen, — haben:* वधोपाय Kathās. 15,124. — 3) *leicht zu verstehen, — einzusehen* Sin. D. 121,17.

सुग्रहण n. *Hochachtung:* पितृमातृपादाम्बुजसुग्रहणापर Inschr. im Journ. of the Am. Or. S. 6,542.

सुग्रीव 1) adj. *schönnackig.* — 2) m. *a)* N. pr. α) eines Rosses des Kṛshṇa Taik. 1,1,34. Med. v. 54. MBh. 2,35. 4,1413. 7,2812. Hariv. 9720. Bhāg. P. 10,53,5. 70,14. 89,49. — β) eines Affen, Bruders des Bālin und Sohnes des Sonnengottes, Taik. 2,8,7. H. 705. Med. MBh. 3,11194. 4,752. Hariv. 2336. 10410. R. 1,1,58. 68. 16,14. 3,75,38. fgg. 78,18. 4,2,17. 6,4,48. 5,2. Ragh. 12,58. Weber, Rāmây. Up. 298. fgg. 361. Rāǵa-Tar. 8,2077. सुग्रीवाग्रज m. Bez. Bālin's H. 704, Schol. सुग्रीवेश Bez. Rāma's Çārdar. im ÇKDa. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): निः° R. 6,19,58. — γ) eines göttlichen Wesens Vaniṃ. Brh. S. 53,44. — δ) des Vaters des 9ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇī H. 37. — *b)* Wilson giebt nach Çārdārṇav. noch folgende Bedeutungen an: Çiva; Indra; *a goose; a hero; a piece of water; the name of a mountain; a sort of weapon; the countenance*

of a friend; a serpent of Pâtâla. — 3) f. घा s. u. 4) *b*). — 4) f. ई N. pr. *a*) einer Tochter Daksha's, Gattin Kaçjapa's und Mutter der Pferde, Kameele und Esel Harıv. 222. fgg. VP. 1,21,15. fgg. Gâruḍa-P. 6 im ÇKDa. — *b*) einer Apsaras Harıv. 14164. सुग्रीवा die neuere Ausg.

सुग्ल (6. सु + ग्ल von ग्लै) adj. P. 3,1,136, Schol.

सुघट adj. *leicht zu Stande zu bringen;* davon nom. abstr. °त्व n. Kusum. 44,7. — Vgl. दुर्घट.

सुघोर adj. (f. घा) *sehr schaurig, — grausig* MBh. 3,1607. 13,547. R. 5,6,4. Bhâg. P. 10,39,51. n. *etwas sehr Schâuriges* MBh. 5,7247.

सुघोष 1) adj. *wohlklingend* R. Gorr. 2,82,2. Mallin. zu Kir. 5,27. — 2) m. *a*) Bez. *der Muschel* Nakula's Bhag. 1,16. MBh. 6,2116. — *b*) N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,18. — *c*) N. pr. eines Agrahâra Kathâs. 73,200. °ग्राम Verz. d. Oxf. H. 135,*a*,16. *fg. b*,36. — Vgl. नन्दिमुख°.

सुघोषवत् adj. *einen schönen Klang habend:* eine Muschel MBh. 2,65.

सुघ्न m. *leichtes Erschlagen* RV. 8,59,11.

सुचक्र 1) adj. *mit guten Rädern versehen:* रथ AV. 4,12,6. MBh. 2, 2063; vgl. 14,2216. — 2) m. *a*) *ein guter Wagen* RV. 5,37,3. 10,85,20. — *b*) N. pr. α) eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2561. — β) eines Sohnes des Vatsapri von der Sunandâ Mârk. P. 118,1.

सुचेतस् adj. *wohl sehend, scharfsichtig* RV. 10,37,7. Âçv. Gṛhy. 3,6,7.

सुचक्षु oder °स् N. pr. eines Flusses R. 1,44,15 (43,13 ed. Bomb.). LIA. 1,843. fgg.

सुचक्षुस् 1) adj. *schönäugig:* Çiva Çiv. — 2) m. *Ficus glomerata* Gaṭṭon. im ÇKDa.

सुचतुर adj. P. 5,4,77. Vop. 6,29. *sehr gewandt, — geschickt* (nicht von चतुर्, wie die Grammatiker sagen) Kâm. Nîtis. 1,3.

सुचन्द्र 1) m. *eine best. Meditation* Vsuṭṭ. 16. — 2) N. pr. *a*) eines Devagandharva MBh. 1,2555. 4814. — *b*) eines Sohnes der Simhikâ MBh. 1,2539. — *c*) eines Sohnes des Hemakâṇḍra und Vaters des Dhûmrâçva R. 1,47,14 (48,15. fg. Gorr.). VP. 354. — *d*) eines von Râma erschlagenen Fürsten Verz. d. Oxf. H. 26,*a*,39. 41. eines andern Fürsten Kâlakarṇa 1,1. — *e*) eines Bodhisattva Vsuṭṭ. 23. — *f*) einer Ficus indica R. 3,39,38.

1. सुचरित 1) adj. *gut ausgeführt:* °व्रत adj. M. 11,116. सुचरितार्थपदैर्वचोभिः Kumâras. 4,45. — 2) n. sg. und pl. *gutes Benehmen, guter Wandel, ein gutes Werk* VS. 4,28. TBr. 3,3,9,10. Taitt. Up. 1,11,2. Mṛcch. 31. Spr. (II) 4363. 6336. Çik. 138. काय°, वाक्°, मनः° Vsuṭṭ. 53.

2. सुचरित 1) adj. (f. घा) *einen guten Wandel führend, gesittet* M. 9, 261. fem. = सती, साध्वी Hall. 2,340. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 137,*a*,20.

सुचरित्र adj. (f. घा) = 2. सुचरित 1) AK. 2,6,2,6. H. 528.

सुचर्मन् 1) adj. *eine schöne Haut (Rinde) habend* P. 4,1,12, Schol. — 2) m. *eine Birke mit glatter Rinde, Betula Bhojpatra* (भूर्जपत्र) *Wall.* Râgân. 9,116.

सुचारा f. N. pr. einer Tochter Çvaphalka's Bhâg. P. 9,24,16. सुचीरा ed. Bomb.

सुचारु 1) adj. *sehr lieblich, — schön:* °रूप adj. MBh. 5,7514. सुचार्वङ्गी Mârk. P. 18,39. °दर्शना ÇKDa. nach dem Kâlikâ-P. °चक्रचरण Harıv. 2454. — 2) m. N. pr. *a*) eines Sohnes des Kṛshṇa von der Rukmiṇî MBh. 13,621. Harıv. 6608. 11069 (?). VP. 578. Bhâg. P. 10,61,8. — *b*) eines Sohnes des Vishvaksena und Adoptivsohnes des Gandûsha Harıv. 1939. fg. — *c*) eines Sohnes des Pratiratha Harıv. 9203. — *d*) eines Sohnes des Bâhu VP. 440.

सुचारुता (von सुचारु) f. *Schönheit* Utpala zu Varâh. Bṛh. 21,10.

सुचित्त adj. (f. घा) *wohlgesinnt* MBh. 3,1820 nach der Lesart der ed. Bomb. (vgl. Indrad. 5,4), स्वचित्ता ed. Calc.

सुचित्र 1) adj. (f. घा) *a*) *ausgezeichnet* AV. 7,15,1. — *b*) *von der mannichfaltigsten Art* Harıv. 4532 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 1,9,5. — 2) m. N. pr. *a*) eines Schlangendämons MBh. 1,2139. — *b*) eines Fürsten MBh. 1,6290. Verz. d. B. H. 116 (58. fg.). — 3) f. घा *eine Gurkenart* (चिर्भिटा) Râgân. 7,208.

सुचित्रक m. 1) *Eisvogel.* — 2) *eine Schlangenart* (चित्रसर्प) Çabdar. im ÇKDa. — 3) N. pr. eines Asura Vsuṭṭ. 88.

सुचित्रवीजा f. *Embelia Ribes* (विडङ्ग) Râgân. 6,50.

सुचिन्तितचिन्तिन् adj. *ganz richtig denkend* Vsuṭṭ. 33.

सुचिन्तितार्य m. N. pr. eines Mâraputra Lalit. ed. Calc. 396,11.

सुचिर adj. *überaus lang* (von der Zeit): काल R. 1,52,11. 2,49,10. 5,56,51. °यम Bhâg. P. 3,13,4. सुचिरम् adv. *sehr lange* MBh. 3,2091. Spr. (II) 2204. 3701. 7096. *fg.* 7242. Varâh. Bṛh. S. 54, 118. 63,3. Bhâg. P. 2,10,19. सुचिरेण dass. R. 5,10,28. सुचिरात् *nach sehr langer Zeit* Kathâs. 45,183. 103,137. 222. सुचिर am Anf. eines comp. als adv.: सुचिरोषित R. 2,32,17. सुचिरार्पित Spr. (II) 2489. सुचिरोत्सुक Kathâs. 103,134.

सुचिरायुस् adj. *sehr lange lebend;* m. *ein Gott* Çabdar. im ÇKDa.

सुचीरा f. N. pr. einer Tochter Çvaphalka's Bhâg. P. ed. Bomb. 9, 24,17. सुचारा bei Burnouf.

सुचीर्णधन m. N. pr. eines Fürsten der Kumbhâṇḍa Vsuṭṭ. 89.

सुचुक्रिका f. *Tamarindus indica* Râgân. 11,165.

सुचुटी f. *Zunge* Med. k. 219.

सुचेतन adj. *bemerkenswerth, ausgezeichnet* AV. 20,135,10.

सुचेतस् 1) adj. *verständig* RV. 4,36,2. क्रतु 7,3,10. 60,6. Çâṅ. 20,31. *einsichtsvoll* oder *wohlgesinnt* Râgân-Tar. 1,22. — 2) m. N. pr. *a*) eines Sohnes des Gṛtsamada MBh. 13,2000. entweder dieses oder das folgende सुतेजस् fehlerhaft. — *b*) eines Sohnes des Prakotas Harıv. 1841.

सुचेतीकर् (von सुचेतस् + 1. कर्) *wohlgesinnt machen, für sich gewinnen, Jmdes Vertrauen gewinnen:* °कृतपोरभृत्य Bhaṭṭ. 3,2.

सुचेतु nur instr. *mit huldvoller Aufmerksamkeit, gnädig:* घा नः सुचेतुना रयिं धेहि ज्रीवसे RV. 1,79,9. 127,11. 159,5. 166,6. 5,51,11. तो बाळ्हा सुचेतुना प्र यंसतमस्मा यर्चते 64,2. 65,3. So wohl auch 9,81,3 st. सु चेतुना.

सुचेतुन adj. so v. a. सुचेतन, wenn die Lesart richtig ist. घा रयिमा सुचेतुनम् (वृणीमहे) RV. 9,65,30.

सुचेलक m. *ein schönes Gewand* AK. 2,6,2,17.

सुचेष्टरूप m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,19.

सुच्छत्री f. N. pr. eines Flusses, = शतद्रु Çabdar. im ÇKDa.

सुच्छद adj. *schöne Blätter habend* R. 5,16,27.

सुच्छर्दिस् adj. *ein gutes Obdach bietend:* सुम्न ṚV. 7,66,13.

सुच्छाय 1) adj. *schönen Schatten gewährend* und *prächtig* Kâṿjâd. 2, 210. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Çîshṭi's Hariv. 68. VP. 98.

सुजघर्न adj. *ein schönes Hintertheil habend* Hariv. 14160 nach der Lesart der neueren Ausg. so v. a. *einen schönen Schluss habend:* व्रत TS. 6,2,8,2. Bez. einer Cerimonie TBr. Comm. 3,813,16.

सुजन m. *ein guter, wohlwollender Mensch* R. 5,30,6. Spr. (II) 2318. 4971. 6174. 7098. fg. Varâh. Bṛh. S. 104,48. 100,2. 3. Kathâs. 55,13. Râǵa-Tar. 1,375. 4,31. Bhâg. P. 5,8,13. 13,25. स्वभावसुजनो जनः so v. a. *gutmüthig, wohlwollend* Spr. (II) 3926. mit einem fem. verbunden: गणिका: Kathâs. 12,92. Oefters werden सुजन und स्वजन verwechselt, z. B. Spr. (II) 3. Kâm. Nîtis. 3,13. fg. — Vgl. सौजन्य.

सुजनता (von सुजन) f. *Gutmüthigkeit, Leutseligkeit* Spr. (II) 773. 1487. 7230. Sâh. D. 12,13. mit स्वजनता verwechselt Spr. (II) 4594.

सुजनत्व (wie oben) n. dass. Çâk. Cr. 56,2.

सुजनंमन्य adj. *sich für einen guten Menschen haltend* Verz. d. Oxf. H. 252,b,4 v. u.

सुजनाकर (सुजन + आ°) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,315.

सुजनिमन् adj. *Edles zeugend, — schaffend:* Âditja ṚV. 7,62,4. Tvashṭar 10,2,7. 18,6.

सुजन्तु m. N. pr. eines Sohnes des Gahnu VP. 4,7,3. सुमन्तु Wilson.

1. सुजन्मन् n. *eine Glück bringende Geburt* Weber, Kṛshṇâ. 306. सुजन्मादित्रत Nax. 2,281, N., Z. 3 v. u.

2. सुजन्मन् adj. 1) = सुजनिमन्. Himmel und Erde ṚV. 1,160,1. AV. 5,1,1. — 2) von *edler Herkunft* oder *dessen Geburt Segen bringt* Ragh. 3,15. Spr. (II) 3151. 6777. Kathâs. 30,45. 112,172.

सुजम्भ adj. *mit gutem Gebiss versehen:* Agni ṚV. 8,49,13.

सुजम्भन् adj. dass. P. 5,4,125.

1. सुजय m. 1) *ein grosser Sieg, — Triumph* Bhâg. P. 5,1,10. — 2) N. pr. eines Mannes (neben जय) Târan. 4. 18. fgg.

2. सुजय adj. *leicht zu besiegen:* बलममरै: MBh. 7,67.

सुजल 1) adj. (f. आ) *mit gutem Wasser versehen:* तीर्थ R. 1,2,7. नदी Spr. (II) 2477. सिरा Varâh. Bṛh. S. 54,11. — 2) n. *eine Lotusblüthe* Râǵân. im ÇKDh.

सुजल्प m. *eine schöne Unterhaltung:* पत्रार्जवात्मगाम्भीर्ये सदैन्यं मक्षचापलम् । सोत्कण्ठं च कृरि: स्पष्ट: स सुजल्पो निगद्यते ॥ Uddâmalaka-mani im ÇKDh.

1. सुजात 1) adj. *wohl geboren* d. i. *gut geartet, wohlgebildet; ächt,* γενναῖος: गर्भे सुजातम् ṚV. 1,65,4. (भ्रातर:) यनु जायत्ता बन्धव: सुजातम् (अग्निम्) AV. 2,13,5. 4,23,4. VS. 11,53. तन्वे: ṚV. 1,72,3. नर्य 10,98, 10. शिशु 3,4. (अग्नीजनन्) सुजातं मातृषु प्रियम् 3,23,3. 10,79,7. स नृतमो नकृषो ऽस्मत्सुजात: 99,7. यज्ञ AV. 7,20,5. सुजाता ज्योतिषा सह VS. 11,60. In den Stellen ṚV. 5,53,12. 56,9 erwartet man eher सुजातै. In der späteren Sprache *wohlgeformt, schön:* Personen, Körper und Theile des Körpers (insbes. *Brüste*) MBh. 3,583. 2669. 4,392. R. 2,39,17. 5,21,16. 20. 28,15. 17. 6,35,13. 36,114. Ragh. 8,37. Bhâg. P. 1,19,26. 4,24,45. 26,25. 10,60,23. Pañkat. 3,5,12. 11,3. Blätter, Blüthen, Wurzeln, Früchte MBh. 6,3600. 13,4555. R. 4,37,32. Kumâras. 7,20. Ragh. 3,8. तमाल 13,49. भक्ति so v. a. *ächt, aufrichtig* Bhâg. P. 6,3,32. in der Bed. *wohl geboren* so v. a. *in Wirklichkeit geboren, nicht umsüts geboren* Spr. (II) 6680, v. l. (besser स ज्ञात:). — 2) m. N. pr. a) verschiedener Personen: ein Sohn Dhṛtarâshṭra's MBh. 9,1405. 1418. Bharata's VP. 4,11,5. — Burnouf, Intr. 260. Schiefner, Lebensb. 232 (2). — b) eines Stiers Lalit. 356. — 3) f. आ a) *eine Lehmart* aus मुराष्ट्र (तुवरी) Râǵân. 13,65. — b) N. pr. verschiedener Personen: eine Tochter Uddâlaka's und Gattin Kahoḍa's MBh. 3,10605. fgg. — Mâlav. P. 75, 15. Lalit. ed. Calc. 331,19. fgg. — 4) n. *ein schönes Geborensein* so v. a. *ein Geborensein unter einem glücklichen Gestirn:* धन्य: कुन्तीसुतो राजा सुजातं चास्य धीमत: MBh. 7,445. सुजातं पश्य मे 8,1828. R. 5,13, 70. — Vgl. सनत्°, साधुजात und सुकृत zur Verschiedenheit der Betonung der zwei सुजात.

2. सुजातै adj. von *guter Abkunft, edel,* εὐγενής: यत्रा नर: समासति सुजाता: ṚV. 7,1,4. वीरा: 15. सूर्य: 2,2,11. 5,6,2. 8,20,8. (मरुत:) सुजातासो जनुषा 5,57,5. 59,6. 1,166,12. 88,3. die Açvin 118,10. Agni 2,1,15. 6,2. 3,15,1 u. s. w. Âditja 6,51,3. 7,64,1. 8,25,2. Ushas 1, 123,3. 5,79,1. कुमारमुभयत: सुजातम् Çâṅkh. Gṛhj. 1,16. — ṚV. 7,56, 21 hätte man सुजात erwartet.

सुजातता (von 2. सुजात) f. *edle Art* ṚV. 10,172,4.

सुजातवक्त्र m. N. pr. eines Lehrers Âçv. Gṛhj. 3,4,4.

सुजामि adj. *reich an Geschwistern* oder *Verwandten:* इमे जीवा वविधवा: सुजामय: Kauç. 72.

सुजिह्व 1) adj. *schönzüngig; einen schönen Ruf —, eine schöne Stimme habend:* रोहितो ṚV. 1,13,8. Agni 14,7. 142,4. 10,110,2. die Marut 1. 166,11. Savitar 3,54,11. 7,45,4. — 2) m. *Feuer* Vâiç. bei Mallin. zu Çiç. 2,107.

सुजीर्ण adj. *wohlverdaut:* अन्न Spr. (II) 7100.

सुजीव adj. n. *leicht zu leben* oder n. *ein leichtes Leben* (Gegens. दुर्जीव): सुजीवं नित्यशस्तस्य य: परैरुपजीव्यते Spr. (II) 7101.

सुजीवन्ती f. *eine best. Pflanze,* = स्वर्णजीवन्ती Râǵân. im ÇKDh.

सुजीवित n. *ein schönes Leben:* अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् R. Gorr. 1,21,20.

सुजुष्ट adj. *beliebt* ṚV. 8,61,10.

सुजूर्णि adj. *glühend:* पृता सुजूर्णी रातिनी घृताची ṚV. 4,6,3. या सुजूर्णि: श्रेणि: सुम्नयन्ती: 10,95,6.

सुजूक m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1313.

सुजि m. desgl. ebend. 8,1048. 1062. 1090. 1128. u. s. w.

1. सुज्ञान n. 1) *leichtes Verständniss* Kâṭhâr. 2,9. — 2) *gute Kenntnisse* Kâm. Nîtis. 5,75. — 3) N. verschiedener Sâman Pañkav. Br. 11. 10,14. Lâṭj. 4,6,14. 7,10,7. Ind. St. 3,244,n. इन्द्रस्य 209,a.

2. सुज्ञान adj. *gute Kenntnisse besitzend* Kâm. Nîtis. 5,75 nach der Lesart des Comm.

सुज्येष्ठ m. N. pr. des Sohnes des Agnimitra VP. 471. Bhâg. P. 12,1,15.

सुज्यैष्ठ्य adj. *ein gutes Erstgeburtsrecht besitzend, — ausübend:* पुत्र AV. 14,2,24.

सुज्योतिस् adj. *schön schimmernd:* Götter ṚV. 3,20,1. 6,50,2. सूनृता: 10,89,15. VS. 37,21.

सुद् सुदति (घनादरे, Vop. तोदृद्धौ) Dhâtup. 32,26. — Vgl. सिद्, शिद्.

सुडौनक n. Bez. *eines best. Fluges* MBh. 8,1900.

सुणक्षमक N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,3 v. u.

सुत् (von 1. सु) adj. am Ende eines comp. *auspressend, kelternd;* s. तीव्र°, मधुसुत्, सोमसुत्. = स्तोतृ Naish. 3,16.

1. सुत adj. *gekeltert;* m. Soma-*Saft* s. unter 1. सु.

2. सुत adj. *angetrieben* u. s. w. s. unter 2. सु.

3. सुत (von 4. सु) 1) m. *a*) *Sohn* AK. 2,6,4,27. 3,4,44,63. H. 342. an. 2,207. Med. t. 71. Hall. 2,242. M. 1,62. 2,28. 208. 3,16. fg. 38. 41. 174 u. s. w. MBh. 3,2072. R. 1,1,20. Sch. 1,322,14. Râgat. 3,4. 8,6. Vaitân. Bhp. S. 7,5. 11. 16,42. 51,40. Spr. (II) 2991. 4848. Bhâg. P. 3,1,7. Vet. in LA. (III) 23,14. Çuk. obend. 32,9. सुतौ du. auch für *Sohn und Tochter* MBh. 1,6150. fg. 3,2946. दारसुतम् *Frau und Kinder* Jâtâ. 2,178. निष्पतिसुता adj. H. 330. — *b*) *Fürst* AK. 3,4,44,63. H. an. Med. — *c*) Bez. *des 5ten astrologischen Hauses* Vaitân. Bhp. S. 104, 21. Bhp. 9,4. 11,7. Laghuj. 1,15. °भाव Verz. d. B. H. No. 378. Verz. d. Oxf. H. 330,*a*,40. fgg. 331,*a*,17. — *d*) N. pr. eines Sohnes des 10ten Manu Harîv. 474. — 2) f. या *a*) *Tochter* AK. 2,6,4,27. fg. H. 342. Med. M. 3,28. 9,127. MBh. 1,6153. 3,2110. 2273. 5,5950. Ragh. 1,81. 3,33. Git. 12,27. Kathâs. 18,163. 25,197. Dhûrtan. 77,1. Çuk. in LA. (III) 32,10. Pañkat. 2,4,52. am Ende eines adj. comp. (f. या) Kathâs. 25, 198. — *b*) *Alhagi Maurorum Tournef.* Çabdak. im ÇKDr. — Vgl. गिरि°, ग्रह°, जीव°, धर्म°, बल°. बुध°, भू°, भूप°, भूमि°, भृगु°, मरुत्°, मही°, मृत्यु°, राज°, रोहिणी°, वि°, शक्र°, शशाङ्क°, शुक्र°, शैल, सुत°.

सुतकीर्ति (1. सुत + कीर्ति) f. *Erwähnung des (fertigen)* Soma Âit. Br. 3,19.

सुतंगम (सुतम् acc. + गम) m. N. pr. P. 4,2,80. Schol. zu P. 3,2,17. — Vgl. सौतंगमि.

सुतञ्जीवक m. *ein best. Baum,* = पुत्रंजीव Râgân. im ÇKDr.

सुतंजय (सुतम् acc. + जय) m. N. pr. eines Mannes MBh. 8,1078.

सुतत्व n. nom. abstr. von सुत *Sohn.* सुतत्वेन तमग्रहीत् *nahm ihn an Sohnes Statt an* Kathâs. 73,321.

सुतदा f. (*Söhne gebend*) Bez. eines best. göttlich verehrten Weibes Pañkat. 3,7,36.

सुतनय adj. (f. या) °*schöne Kinder habend* Vaitân. Bhp. S. 52,6. Weber, Kâtjây. 287.

सुतनु 1) adj. *überaus schlank:* सुतनु voc. fem. Çiç. 183. fg. Spr. (II) 7102. 7351. सुतनु f. = नारी Râgân. im ÇKDr. — 2) m. N. pr. *a*) eines Gandharva R. 2,91,44. — *b*) eines Sohnes des Ugrasena Harîv. 2028. — *c*) eines Affen R. 5,2,24. — 3) f. सुतनु N. pr. einer Tochter Âhuka's und Gattin Akrûra's MBh. 2,597. einer Beischläferin von Vasudeva Harîv. 1949. 9201. 9202 (सुतनू). einer Tochter Ugrasena's 2029. VP. 4,14,5.

सुतनुज adj. (f. या) *schöne Kinder habend* Weber, Kâtjây. 287.

सुतनुता (von सुतनु) f. *grosse Schmächtigkeit:* वपुषि Dhûrtan. 72,10.

सुतनुत्त 1) adj. etwa *schöne Nachkommenschaft habend:* Vishṇu MBh. 13,7033. Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,22.

सुतन्त्रि adj. von *schönem Saitenspiel begleitet:* गीत Ṛt. 1,3.

सुतप (= सुतपस्) m. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern unter dem 8ten Manu VP. 3,2,15. Mârk. P. 80,5. Çatâpan. bei Uṇâdis. 4,188.

सुतपस् 1) adj. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,226 (proparox.). *a*) *wärmend:* Himmel und Erde AV. 4,26,3. — *b*) *strengen Kasteiungen obliegend* Kathâs. 112,141. — 2) m. *a*) *die Sonne* ÇKDr. nach Sîddh. K. — *b*) *ein* Muni ÇKDr. und Wilson. — *c*) N. pr. α) pl. einer Klasse von Göttern unter dem 8ten Manu (vgl. सुतप) Bhâg. P. 8,13,12. — β) verschiedener Ṛshi unter verschiedenen Manu Harîv. 481. 487. Mârk. P. 94,28. 30. verschiedener Söhne verschiedener Manu's Harîv. 428. 489. eines Sohnes des Vasishṭha VP. 83. Mârk. P. 52,26. des Nirṛtilakshaṇa 74,27. des Parâçara Verz. d. Oxf. H. 12,*a*,25. des Phena (Hema) Harîv. 1682. VP. 444. Bhâg. P. 9,23,4. des Antarikshaṇa 12,12. des Pariplava Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,16. — 25,*a*,20. 26.

सुतपस्विन् adj. *überaus fromm* Weber, Kâtjây. 274.

सुतपा adj. *den Saft* (Soma) *trinkend* Ṛ. 1,155,2. 4,25,7. 6,23,6. 24,1. 68,10. 10,100,1.

सुतपादिका f. *eine Mimosa,* = हंसपादी Râgân. 5,114. v. l. °पादुका.

सुतपावन् adj. = सुतपा Ṛ. 1,5,5. 6,24,9. 8,2,7.

सुतपेय n. Soma-*Trank* Ṛ. 4,44,2.

सुतप्त 1) adj. *a*) *sehr heiss* Çat. Br. 1,2,4,12. — *b*) *stark geglüht:* हेममये कोशे सुतप्ते so v. a. सुतप्तहेममये कोशे MBh. 4,1339. — *c*) *gut gebüsst:* तपस् *eine gut ausgeführte Kasteiung* M. 11,239. MBh. 12,13566. Spr. (II) 7281. — 2) f. या (*die brennende*) *Mucuna pruritus* Ratnam. 17.

सुतमिस्रा f. *dichte Finsterniss* Çat. Br. 4,1,2,13 (°या).

सुतभर् (सुतम् acc. von 1. सुत + भर्) 1) adj. *den* Soma *entführend,* — *an sich nehmend* Ṛ. 5,44,13. (तं रसम्) सुतं भराय (सुतंभरायै zu vermuthen) सं सृज 9,6,6. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi mit dem patron. Âtreja, Verfassers von Ṛ. 5,11—14.

सुतर् adj. (f. या) 1) *leicht zu überschreiten:* द्विषः Ṛ. 8,60,11. MBh. 7,503. — 2) *leicht hinzubringen:* Nacht Ṛ. 10,127,6. — 3) दु° *nicht leicht zu überschreiten* und *nicht leicht zu erforschen* Kir. 5,18.

सुतरण adj. *leicht zu überschreiten:* Fluss Ṛ. 4,19,6.

सुतराम् (von 6. सु) adv. *noch mehr, in noch höherem Grade; gar sehr, in hohem Grade* MBh. 3,15553. 6,699. Mahân. 108. Ragh. 2,32. 7,18. 14,9. 18,24. Kumâras. 1,24. Çik. 65,17. Z. d. d. m. G. 27,10. Spr. (II) 1283. 1605. 1736. 5555. 6191. Çiç. 9,55. 67. Vaitân. Bhp. S. 12,1. 75,10. Viçva. 1,12,2. Kâtjây. 34. Kathâs. 5,126. 15,3. 149. 16,44. 18,309. 19,51. 23, 76. 33,9. 34,251. 39,28. 48,187. 50,70. 56,403. 61,21. 106,100. Mârk. P. 62,2. 107,7. Bhâg. P. 3,3,21. 5,8,2. 7,11,10. 8,10,14. 9,4,42. 11,26. Çaṅk. zu Bhp. Âr. Up. S. 239. Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,41. Pañkat. 163, 3. Sarvadarçanas. 1,9. 110,16. Kull. zu M. 3,179. 7,38. Comm. zu TS. Prât. 2,25. मय्यप्यास्था न ते चेद्यवि मम सुतराम् *wenn du dir Nichts aus mir machst, so mache ich mir noch weniger aus dir* (hiernach die Uebersetzung zu ändern) Spr. (II) 606. सुतरां न *noch viel weniger* Sarvadarçanas. 47,10. नाहं सुतरां पश्यामि *ich sehe nicht ganz gut* Pañkat. 199,24.

सुतर्कारी (6. सु + त°) f. *ein best. Cucurbitacee,* = देवदाली Râgân. 3.

47 und im ÇKDa. wohl fehlerhaft für च तर्कारी (so auch Nigh. Pr.).

सुतर्दन (6. सु + त°) m. *der indische Kuckuck* Taik. 2,5,19.

सुतर्मन् adj. *gut übersetzend:* Schiff RV. 8,42,3.

सुतल (6. सु + तल) 1) m. = अट्टालिकाबन्ध H. an. 3,692. Med. l. 145. — 2) m. (zu belegen nur n.) N. *einer best. Unterwelt* H. an. Med. Anuçikop. in Ind. St. 2,178. VP. 204. Bhâg. P. 2,1,27. 5,40. 5,24,7. 18. 8, 13,14. 22,32. 10,85,34. Verz. d. B. H. No. 1280. Verz. d. Oxf. H. 13, a,29. 42,b,30. 74,a,46. Pañkar. 2,2,45. Vedântas. (Allah.) No. 70. सुतलालय Bhâg. P. 8,23,9.

सुतल्प n. *ein schönes Lager* Pañkar. 1,6,29.

1. सुतवत् (von 1. सुत) adj. *das Wort* सुत *enthaltend* Ait. Br. 6,9,11. — Vgl. सुतावत्.

2. सुतवत् (von 3. सुत) adj. *reich an Söhnen* Varâh. Bṛh. S. 68,42.

सुतवत्सरा f. *eine Mutter von sieben Söhnen* (3. सुत) Taik. 2,6,4.

सुतश्रेणी (3. सुत + श्रे°) f. *Salvinia cucullata* Roxb. AK. 2,4,2,6. — Vgl. प्रत्यक्श्रेणी.

सुतष्ट adj. *wohl ausgearbeitet, künstlich gemacht:* Wagen RV. 7,34,1. मन्त्र 2,35,2.

सुतसुत (3. सुत + 3. सुत) m. *Enkel* Mân. P. 129,7.

सुतसोम 1) adj. *der den* Soma *bereitet, fertig hat, eine Libation bringt* RV. 1,2,2. 44,8. 142,1. 2,12,6. 3,32,13. 5,37,2. पेा मे कुत्सो सुतसोमः पृणाति 10,28,2. *wobei der* Soma *bereit ist:* यधर् 8,55,1. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Bhîmasena von der Draupadî MBu. 1,2451. 3827. 3839. 3842. 3,11913 (°मात्रे zu lesen). 7,979. 1057. VP. 4,20,11 (सुतसोम Wilson). — 3) f. आ N. pr. einer Gattin Kṛshṇa's Harîv. 9196. सुतसोमा die neuere Ausg.

सुतसोमवत् (von सुतसोम) adj. *unter denen solche sind, die den* Soma *bereitet haben:* नर्ः RV. 10,69,11.

सुतसोमावदान n. Gâtakamâlâ 81.

सुतात्मज (3. सुत oder सुता + आ°) m. *Enkel*, f. आ *Enkelin* AK. 2,6,2,29.

सुतान (6. सु + तान) adj. *wohl klingend* Pañkar. 1,11,2.

सुतापति m. *Tochtermann* Schol. zu Kir. Ça. 423,3.

सुताभाव m. nom. abstr. von सुता *Tochter* Kathâs. 1,14 (सुताभावं zu schreiben).

सुतार (6. सु + तार, तारा) 1) adj. (f. आ) *a) sehr hell* R. 6,73,39. Varâh. Bṛh. S. 8,18. शङ्ख Kathâs. 86,74. — *b) sehr laut* Spr. (II) 127. — *c)* im Sâṁkhja Bez. einer der 9 Arten von तुष्टि Tattvas. 39. einer der 8 Arten von Siddhi 41. neutr. Gaṇar. zu Siddh. 31. — *d) mit einem schönen Augenstern versehen:* लोचन Bhâg. P. 4,25,31. — 2) m. *a) ein best. Parfum* (vgl. तार 16) 19) Soç. 2,239,6. — *b)* N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 52,a,19. Wilson, Sel. Works 1,211. — 3) f. आ N. pr. *a)* einer Tochter Çvaphalka's VP. 4,14,2. — *b)* einer Apsaras Kâlakaksha 4,31.

सुतारका (6. सु + ता°) f. N. pr. einer Göttin, die die Befehle des 9ten Arhant's ausführt, H. 44.

सुतार्णव (3. सुत + अ°) m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. 290,2.

सुतार्थिन् adj. *sich einen Sohn wünschend* M. 3,262.

सुताल (6. सु + ताल) m. *ein best. Tact:* पाणितालैः सुतालैश्च (पाणितालसु° ed. Bomb.) शम्पातालैः समैस्तथा MBh. 13,1398.

सुतावत् (von 1. सुत; सुतञ्वत् Padap.) adj. VS. Prât. 3,96. *der* Soma *bereitet hat* RV. 1,3,5. 84,9. 3,25,4. 8,17,3. 4. 26,23. 86,4. Vâlakh. 3,6.

सुतासुर्तिन् (von 1. सुत + असुत) adj. *der Geholfenes* (Soma) *und nicht Geholfenes* (Milch u. s. w.) *hat* TBr. 2,6,25,1.

सुति s. कुरु° und पृत्सुति.

सुतिक्त 1) adj. *sehr bitter.* — 2) m. *eine best. Arzneipflanze,* = पर्पट Râgân. im ÇKDa. — 3) f. आ *eine best. Cucurbitacee,* = कोशातकी Râgân. im ÇKDa.

सुतिक्तक 1) adj. *sehr bitter.* — 2) m. Bez. zweier Pflanzen: = पारिभद्र Gaṇâdh. im ÇKDa. = भूनिम्ब Çabdar. ebend.

सुतिन् (von 3. सुत) adj. *einen Sohn* (oder *Söhne*) *habend* Spr. (II) 2144.

सुतिन्तिडा f. = तिन्तिडी *Tamarindus indica* Râgân. 11,165. °डी Dhanv. 5,18.

सुती (von सुतीय्) adj. Vop. 3,61.

सुतीक्ष्ण 1) adj. *überaus scharf* (eig. und übertr.): दंष्ट्राः सुतीक्ष्णाग्र्याः MBh. 1,5935. *Pfeil* Harîv. 13419. R. 4,21,6. Bṛ. 6,27. वाक्य MBh. 1, 7660. R. 5,28,1. — 2) m. *a)* Bez. zweier Pflanzen: = शोभाञ्जन und श्वेतशिग्रु Râgân. im ÇKDa. — *b)* N. pr. eines Muni, Bruders des Agastja. R. 1,1,40 (43 Gorr.). 3,9,31. 16,11. Raghu. 13,41. Bhaṭṭ. 4,5.

सुतीक्ष्णक m. *ein best. Baum,* = मुष्कक Râgân. 11,212.

सुतीभू (3. सुत + 1. भू) *zum Sohne werden:* °भूत Kathâs. 73,56.

सुतीय् (von 3. सुत), °यति *Jmd* (acc.) *wie einen Sohn behandeln* Siç. D. 271,20.

1. सुतीर्थ n. 1) *eine gute Strasse:* कारुं इन्द्रः सुतीर्थाभयं च RV. 4,29, 3. 8,47,11. — 2) *ein sehr heiliger Badeplatz* Spr. (II) 3270. — 3) *ein Gegenstand hoher Verehrung:* उपलब्धसुतीर्थकृति Bhâg. P. 3,16,6. — 4) *ein guter Lehrer* Çiksh. in Ind. St. 4,368. Mâlav. 11,16 (तीर्थ ed. Bomb.).

2. सुतीर्थ 1) adj. (f. आ) *b) gut zum Ziele führend:* (धीः) सुतीर्था (सुपारा TS.) नो अस्मद्वेषे VS. 4,11. — *a) leicht zugänglich:* Flüsse und andere Gewässer MBh. 2,375. Harîv. 3189. R. 2,50,33. 91,71. 103,24 (111,30 Gorr.). R. Gorr. 2,87,13. 98,5. Çiva MBh. 14,195 nach der Lesart der ed. Bomb. — 2) m. N. pr. eines Fürsten (v. l. सुनीथ) VP. 462, N. 10.

सुतीर्थक n. *ein sehr heiliger Badeplatz* oder N. pr. MBh. 3,6024. 6026.

सुतीर्थराज् m. N. pr. eines Berges Çâk. 1,353.

सुतुक (6. सु + तुक und dieses von तुक् = तक्) adj. (f. आ) *rasch laufend, flüchtig;* überh. *behend* Naigh. 4,1. Nir. 4,16. यद्गिः सुतुकैः सुतुकैभिरश्वैः RV. 10,3,6. मर्ता यो अस्मे सुतुका ददाश 1,149,5. यार्पथिदस्मे सुतुका यवेषन् 178,2. वृत्रा कारः सुतुका so v. a. *brachtest zum Fliehen* 6, 22,10. 7,18,9. 10,42,3.

सुतुकन adj. zur Erklärung von सुतुक Nir. 4,18.

सुतुङ्ग m. 1) *der höchste Stand eines Planeten* Saṁkrtjâmuktâvalî im ÇKDa. — 2) *Kokosnussbaum* Hîn. 100. Râgân. 11,47. — 3) N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 7,2851. सतुङ्ग ed. Bomb.

सुतुस् (6. सु + तुस्) adj. *schön tönend* Vop. 3,151.

सुतूलिका und सुतूली f. *eine schöne Matratze* Weber, Râmây. Up.

सुट्, सुट्यति (घनादरे, Vop. तोच्छे) Dhātup. 32,26. — Vgl. सिट्, शिट्.

सुडौनक n. Bez. *eines best. Fluges* MBh. 8,1900.

सुणक्कासफ N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,3 v. u.

सुत् (von 1. सु) adj. am Ende eines comp. *auspressend, kelternd;* s. तीव्र°, मधुसुत्, सोमसुत्. = स्तोतृ Naigh. 3,16.

1. सुत adj. *gekeltert;* m. Soma-*Saft* s. unter 1. सु.

2. सुत adj. *angetrieben* u. s. w. s. unter 2. सु.

3. सुत (von 4. सु) 1) m. *a*) *Sohn* AK. 2,6,1,27. 3,4,44,63. H. 542. an. 2,207. Med. t. 71. Hall. 2,343. M. 1,62. 2,28. 208. 3,16. fg. 38. 41. 174 u. s. w. MBh. 3,2072. R. 1,1,20. Soçr. 1,322,14. Bhag. 3,4. 5,6. Vaitân. Bhn. S. 7,5. 11. 16,42. 51,40. Spr. (II) 2991. 4848. Bhâg. P. 3,1,7. Ver. in LA. (III) 23,14. Çiç. ebend. 32,2. सुतौ du. auch für *Sohn und Tochter* MBh. 1,6150. fg. 3,2945. दारसुतम् *Frau und Kinder* Jâtâk. 2,175. निष्पतिसुता adj. H. 530. — *b*) *Fürst* AK. 3,4,44,63. H. an. Med. — *c*) Bez. *des 5ten astrologischen Hauses* Vaitân. Bhn. S. 104,21. Bhn. 9,4. 11,7. Lalabhâ. 1,15. °भाव Verz. d. B. H. No. 878. Verz. d. Oxf. H. 330,*a*,40. fgg. 331,*a*,17. — *d*) N. pr. eines Sohnes des 10ten Manu Harîv. 474. — 2) f. सुता *a*) *Tochter* AK. 2,6,1,27. fg. H. 542. Med. M. 3,28. 9,127. MBh. 1,6153. 3,2110. 2273. 5,5950. Ragh. 1,81. 3,33. Gît. 12,27. Kathâs. 18,163. 25,197. Dhûrtas. 77,1. Çiç. in LA. (III) 32,10. Pañcat. 3,4,51. am Ende eines adj. comp. (f. सुता) Kathâs. 25, 193. — *b*) *Alhagi Maurorum Tournef.* Carâk. im ÇKDa. — Vgl. गिरि°, ब्रह्म°, जीव°, धर्म°, बक्क°, बुध°, भू°, भूप°, भूमि°, भृगु°, मरुत्°, मही°, मृत्यु°, राज्ञ°, रोहिणी°, वि°, शक्र°, शशाङ्क°, सुक्र°, शैल°, सुत°.

सुतकीर्ति (1. सुत + कीर्ति) f. *Erwähnung des (fertigen)* Soma Ait. Br. 3,13.

सुतगम (सुतम् acc. + गम) m. N. pr. P. 4,2,80. Schol. zu P. 3,2,47. — Vgl. सौतगमि.

सुतजीवक m. *ein best. Baum,* = पुत्रजीव Râgân. im ÇKDa.

सुतञ्जय (सुतम् acc. + जय) m. N. pr. eines Mannes MBh. 8,1078.

सुतत्व n. nom. abstr. von सुत *Sohn.* सुतत्वेन तमयकरोत् *nahm ihn an Sohnes Statt an* Kathâs. 73,321.

सुतदा f. (*Söhne gebend*) Bez. eines best. göttlich verehrten Wesens Pañcar. 3,7,36.

सुतनय adj. (f. या) *schöne Kinder habend* Vaitân. Bhn. S. 52,6. Weber, Kṛshṇaj. 287.

सुतनु 1) adj. *überaus schlank:* सुतनु voc. fem. Çiç. 183. fg. Spr. (II) 7102. 7531. सुतनु f. = नारी Râgân. im ÇKDa. — 2) m. N. pr. *a*) eines Gandharva R. 2,91,44. — *b*) eines Sohnes des Ugrasena Harîv. 2028. — *c*) eines Affen R. 5,2,24. — 3) f. सुतनु N. pr. einer Tochter Âhuka's und Gattin Akrûra's MBh. 2,597. einer Beischläferin von Vasudeva Harîv. 1949. 9201. 9202 (सुतनू). einer Tochter Ugrasena's 2029. VP. 4,14,5.

सुतनुज adj. (f. या) *schöne Kinder habend* Weber, Kṛshṇaj. 287.

सुतनुता (von सुतनु) f. *grosse Schmächtigkeit:* वपुषि Dhûrtas. 72,10.

सुतनु 1) adj. etwa *schöne Nachkommenschaft habend:* Vishṇu MBh. 13,7033. Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,21.

सुतपि adj. *von schönem Saitenspiel begleitet:* गीत Ṛt. 1,3.

सुतप (= सुतपस्) m. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern unter dem 8ten Manu VP. 3,2,15. Mârk. P. 80,3. Çaṇḍiân. bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,188.

सुतपस् 1) adj. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,226 (proparox.). *a*) *wärmend:* Himmel und Erde AV. 4,26,3. — *b*) *strengen Kasteiungen obliegend* Kathâs. 112,141. — 2) m. *a*) *die Sonne* ÇKDa. nach Siddh. K. — *b*) *ein* Muni ÇKDa. und Wilson. — *c*) N. pr. α) pl. einer Klasse von Göttern unter dem 8ten Manu (vgl. सुतप) Bhâg. P. 8,13,12. — β) verschiedener Ṛshi unter verschiedenen Manu Harîv. 481. 487. Mârk. P. 94,38. 39. verschiedener Söhne verschiedener Manu's Harîv. 428. 489. eines Sohnes des Vasishṭha VP. 83. Mârk. P. 52,26. des Nirvṛtikakshus 74,27. des Parâçara Verz. d. Oxf. H. 12,*a*,25. des Phena (Homa) Harîv. 1682. VP. 444. Bhâg. P. 9,23,4. des Antarikṣha 12,12. des Pariplava Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,16. — 25,*a*,20. 26.

सुतपस्विन् adj. *überaus fromm* Weber, Kṛshṇaj. 274.

सुतपा adj. *den Saft* (Soma) *trinkend* Ṛv. 1,155,2. 4,25,7. 6,23,6. 24,1. 68,10. 10,100,1.

सुतपादिका f. *eine Mimosa,* = कैसपादी Râgân. 5,111. v. l. °पाडुका.

सुतपावन् adj. = सुतपा Ṛv. 1,5,8. 6,24,9. 8,2,7.

सुतपेय n. Soma-*Trank* Ṛv. 4,44,3.

सुतप्त 1) adj. *a*) *sehr heiss* Çat. Br. 1,2,1,13. — *b*) *stark geglüht:* हेममये कोशे सुतप्ते so v. a. सुतप्तहेममये कोशे MBh. 4,1339. — *c*) *gut gebüsst:* तपस् *eine gut ausgeführte Kasteiung* M. 11,239. MBh. 12,13566. Spr. (II) 7281. — 2) f. या (*die brennende*) *Mucuna pruriens* Rajan. 17.

सुतमिस्रा f. *dichte Finsterniss* Çat. Br. 4,1,2,13 (°या).

सुतंभरि (सुतम् acc. von 1. सुत + भर) 1) adj. *den* Soma *entführend, an sich nehmend* Ṛv. 5,44,13. (तं रसम्) सुतं भराय (सुतंभरायै zu vermuthen) सं सृज 8,6,6. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi mit dem patron. Âtreja, Verfassers von Ṛv. 5,11—14.

सुतर adj. (f. या) 1) *leicht zu überschreiten:* खुर: Ṛv. 5,60,11. MBh. 7,508. — 2) *leicht hinzubringen:* Nacht Ṛv. 10,127,6. — 3) अ° *nicht leicht zu überschreiten* und *nicht leicht zu erforschen* Kir. 5,18.

सुतरण adj. *leicht zu überschreiten:* Fluss Ṛv. 4,19,6.

सुतराम् (von 6. सु) adv. *noch mehr, in noch höherem Grade; gar sehr, in hohem Grade* MBh. 3,15333. 6,699. Mṛcch. 108. Ragh. 2,52. 7,18. 14,9. 18,24. Kumâras. 1,24. Çik. 65,17. Z. d. d. m. G. 27,10. Spr. (II) 1283. 1605. 1736. 5355. 6191. Çiç. 9,58. 67. Vaitân. Bhn. S. 12,1. 75,10. Vikr. 1,12,3. Kâdab. 34. Kathâs. 5,126. 15,3. 149. 16,44. 18,309. 19,31. 23, 76. 33,9. 34,251. 39,23. 48,137. 50,70. 56,103. 61,21. 106,100. Mârk. P. 62,3. 107,7. Bhâg. P. 3,3,21. 5,8,2. 7,11,10. 8,10,14. 9,4,18. 11,26. Çâṅk. zu Bhn. Âr. Up. S. 239. Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,41. Pañcat. 163, 3. Sarvadarçanas. 1,9. 110,16. Kull. zu M. 3,179. 7,38. Comm. zu TS. Prât. 2,25. मय्यप्यास्था न ते चेत्तयि मम सुतराम् *wenn du dir Nichts aus mir machst, so mache ich mir noch weniger aus dir* (hiernach die Uebersetzung zu ändern) Spr. (II) 606. सुतरां न *noch viel weniger* Sarvadarçanas. 47,10. नाहं सुतरां पश्यामि *ich sehe nicht ganz gut* Pañcat. 109,24.

सुतर्कारी (6. सु + त°) f. *ein best. Cucurbitacee,* = देवदाली Râgân. 3.

47 und im ÇKDa. wohl fehlerhaft für च तर्कारी (so auch Nigh. Pr.).

मुतर्दन (6. मु + त°) m. *der indische Kuckuck* Trik. 2,5,19.

मुतर्मन् adj. *gut übersetzend:* Schiff ṚV. 8,42,3.

मुतल (6. मु + तल) 1) m. = घण्टालिकाबन्ध H. an. 3,692. Med. l. 145. — 2) m. (zu belegen nur n.) N. *einer best. Unterwelt* H. an. Med. Anuçâs. in Ind. St. 2,178. VP. 204. Bhâg. P. 2,1,27. 5,40. 5,24,7. 10. 8, 13,14. 22,32. 10,85,34. Verz. d. B. H. No. 1280. Verz. d. Oxf. H. 13, a,39. 42,b,30. 74,a,46. Paṇḍar. 2,2,48. Vedântas. (Allah.) No. 70. मुतलालय Bhâg. P. 8,23,9.

मुतल्प n. *ein schönes Lager* Paṇḍar. 1,6,39.

1. मुतवत्त् (von 1. मुत) adj. *das Wort* मुत *enthaltend* Ait. Br. 6,9.11. — Vgl. मुतावत्.

2. मुतवत्त् (von 3. मुत) adj. *reich an Söhnen* Varâh. Bṛh. S. 68,42.

मुतवत्करा f. *eine Mutter von sieben Söhnen* (3. मुत) Trik. 2,6,4.

मुतश्रेणी (3. मुत + श्रे°) f. *Salvinia cucullata* Roxb. AK. 2,4,2,6. — Vgl. प्रत्यक्श्रेणी.

मुतष्ट adj. *wohl ausgearbeitet, künstlich gemacht:* Wagen ṚV. 7,34,1. मस्त्र 2,33,2.

मुतसुत (3. मुत + 3. सुत) m. *Enkel* Mârk. P. 129,7.

मुतसोम 1) adj. *der den* Soma *bereitet, fertig hat, eine Libation bringt* ṚV. 1,2,3. 44,8. 142,1. 2,12,6. 3,32,12. 5,37,2. यो मे कुत्सो मुतसोमः पृणाति 10,28,2. *wobei der* Soma *bereit ist:* सधर 8,55,1. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Bhîmasena von der Draupadî MBh. 1,2451. 3827. 8039. 8043. 3,11913 (°मात्रे zu lesen). 7,979. 1087. VP. 4,20,11 (सुतसोम Wilson). — 3) f. घा N. pr. einer Gattin Kṛshṇa's Harîv. 9196. सुतसोमा die neuere Ausg.

मुतसोमवत्त् (von मुतसोम) adj. *unter denen solche sind, die den* Soma *bereitet haben:* नॄ: ṚV. 10,69,11.

मुतसोमावदान n. Gâtakamâlâ 81.

मुतात्मज (3. मुत oder सुता + घा°) m. *Enkel*, f. घा *Enkelin* AK. 2,6,2,29.

मुतान (6. मु + तान) adj. *wohl klingend* Paṇḍar. 1,11,2.

मुतापति m. *Tochtermann* Schol. zu Kâç. Ça. 423,3.

मुताभाव m. nom. abstr. von सुता *Tochter* Kathâs. 1,14 (सुताभावं zu schreiben).

मुतार (6. मु + तार, तारा) 1) adj. (f. घा) *a) sehr hell* R. 5,73,32. Varâh. Bṛh. S. 8,18. शङ्ख Kathâs. 86,74. — *b) sehr laut* Spr. (II) 127. — *c)* im Sâṁkhja Bez. einer der 9 Arten von तुष्टि Tattvas. 39. einer der 8 Arten von Siddhi 41. neutr. Gaupâp. zu Sâṁkhjak. 51. — *d) mit einem schönen Augenstern versehen:* लोचन Bhâg. P. 4,25,31. — 2) m. *a) ein best. Parfum* (vgl. तार 16) 19) Suçr. 2,259,6. — *b)* N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 82,a,19. Wilson, Sel. Works 1,211. — 3) f. घा N. pr. *a)* einer Tochter Çvaphalka's VP. 4,14,2. — *b)* einer Apsaras Kâlikâkha 4,31.

मुतारका (6. मु + ता°) f. N. pr. einer Göttin, die die Befehle des 9ten Arhant's ausführt, H. 44.

मुतार्णव (3. मुत + अ°) m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. 290,2.

मुतार्थिन् adj. *sich einen Sohn wünschend* M. 3,262.

मुताल (6. मु + ताल) m. *ein best. Tact:* पाणितालैः मुतालैश्च (पाणितालमु° ed. Bomb.) शम्पातालैः समैस्तथा MBh. 13,1398.

मुतावत्त् (von 1. मुत; सुतश्वत्त् Padap.) adj. VS. Prât. 3,96. *der* Soma *bereitet hat* ṚV. 1,3,5. 84,2. 3,28,4. 8,17,3. 4. 26,22. 86,4. Vâlakh. 3,6.

मुतासुर्तिन् (von 1. मुत + असुत) adj. *der Gekeltertes* (Soma) *und nicht Gekeltertes* (Milch u. s. w.) *hat* TBr. 2,6,14,1.

मुति s. कुरु° und पृत्सुति.

मुतिक्त 1) adj. *sehr bitter.* — 2) m. *eine best. Arzneipflanze,* = पर्पट Râgân. im ÇKDa. — 3) f. घा *eine best. Cucurbitacee,* = कोशातकी Râgân. im ÇKDa.

मुतिक्तक 1) adj. *sehr bitter.* — 2) m. Bez. zweier Pflanzen: = पारिभद्र Gaṇâbh. im ÇKDa. = भूनिम्ब Çabdam. ebend.

मुतिन् (von 3. मुत) adj. *einen Sohn* (oder *Söhne*) *habend* Spr. (II) 2144.

मुतिन्तिडा f. = तिन्तिडी *Tamarindus indica* Râgân. 11,165. °डो Dhanv. 5,18.

मुती (von मुतीय्) adj. Vop. 3,61.

मुतीक्ष्ण 1) adj. *überaus scharf* (eig. und übertr.): दंष्ट्राः मुतीक्ष्णायाः MBh. 1,5935. *Pfeil* Harîv. 13419. R. 4,21,6. Ṛt. 6,27. वाक्य MBh. 1, 7660. R. 5,28,1. — 2) m. *a)* Bez. zweier Pflanzen: = शोभाञ्जन und श्वेतशिग्रु Râgân. im ÇKDa. — *b)* N. pr. eines Muni, Bruders des Agastja, R. 1,1,40 (43 Gorr.). 3,9,31. 16,11. Raghu. 13,41. Bhaṭṭ. 4,5.

मुतीक्ष्णक m. *ein best. Baum,* = मुष्कक Râgân. 11,212.

मुतीभू (3. मुत + 1. भू) *zum Sohne werden:* °भूत Kathâs. 73,56.

मुतीय् (von 3. मुत), °यति *Jmd* (acc.) *wie einen Sohn behandeln* Siç. D. 271,20.

1. मुतीर्थ n. 1) *eine gute Strasse:* कारुं इन्द्रः मुतीर्थाभयं च ṚV. 4,29, 3. 8,47,11. — 2) *ein sehr heiliger Badeplatz* Spr. (II) 3270. — 3) *ein Gegenstand hoher Verehrung:* उपलब्धमुतीर्थकृति Bhâg. P. 3,16,6. — 4) *ein guter Lehrer* Çikshâ in Ind. St. 4,368. Mâlav. 11,16 (तीर्थ ed. Bomb.).

2. मुतीर्थ 1) adj. (f. घा) *b) gut zum Ziele führend:* (घोः) मुतीर्था (सुपारा TS.) नौ असद्वशे VS. 4,11. — *a) leicht zugänglich:* Flüsse und andere Gewässer MBh. 2,375. Harîv. 3169. R. 2,56,33. 91,71. 103,24 (111,30 Gorr.). R. Gorr. 2,87,15. 98,3. Çiva MBh. 14,195 nach der Lesart der ed. Bomb. — 2) m. N. pr. eines Fürsten (v. l. सुनीथ) VP. 462, N. 10.

मुतीर्थक n. *ein sehr heiliger Badeplatz* oder N. pr. MBh. 3,6024. 6026.

मुतीर्थराज् m. N. pr. eines Berges Çat. 1,252.

मुतुक (6. मु + तुक und dieses von तुक् = तक्) adj. (f. घा) *rasch laufend, flüchtig;* überh. *behend* Naigh. 4,1. Nir. 4,16. घाभिः सुतुकैः भिरश्वैः ṚV. 10,3,6. मर्ता यो अस्मे सुतुको ददाश 1,149,5. यार्पश्चिदस्मे सुतुका यवेषन् 178,2. वृत्रा कारः सुतुका so v. a. *brachtest zum Fliehen* 6, 22,10. 7,18,9. 10,42,3.

मुतुकन adj. zur Erklärung von सुतुक Nir. 4,18.

मुतुङ्ग m. 1) *der höchste Stand eines Planeten* Sûryasiddhântâvali im ÇKDa. — 2) *Kokosnussbaum* Hir. 100. Râgân. 11,47. — 3) N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 7,2881. सतुङ्ग ed. Bomb.

मुतुस् (6. मु + तुस्) adj. *schön tönend* Vop. 3,151.

मुतूलिका und मुतूली f. *eine schöne Matratze* Weber, Râmat. Up.

321. 323.

सुतृप् adj. *leicht zu sättigen:* अ° *unersättlich:* वृक Bhâg. P. 4,29,33. 7,15,10. 10,1,67. 38,42. 60,37. 11,21,28. der Comm. zerlegt das Wort in असु (= प्राण) + तृप्.

सुतृष्ण (?) N. pr. eines Reichs Hiouen-thsang 1,17. fgg.

सुतेकर् (सुते loc. von 1. सुत + कर्) adj. *beim* Soma *thätig* (1. कर्) oder *beim* Soma *recitirend* (2. कर्) ṚV. 10,71,9.

सुतेगृभ् (सुते + गृभ्) adj. *in den* Soma *greifend* (um zu schöpfen) ṚV. 5,44,5.

सुतेजन (6. सु + ते°) m. 1) *Athagi Maurorum Tournef.* Buâvapr. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Kriegers MBh. 7,7009.

सुतेजस् 1) adj. Uśéval. zu Uçanas 4,226 (proparox.). *a) schneidig:* नर् AV. 8,2,17. — *b) schön glänzend* Kaiṇḍ. Up. 5,12,1. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Gṛtsamada MBh. 13,2000. entweder dieses oder das vorangehende सुचेतस् fehlerhaft. — *b)* des 10ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇi H. 51.

सुतेजा f. *eine best. Pflanze,* = सादित्यभक्ता Râǵân. 4,182. सुतेजस् m. ÇKDa. Dieses wäre möglich, wenn eine unregelmässige Contraction im Texte angenommen würde.

सुतेजित adj. *stark geschärft, sehr scharf:* Pfeile MBh. 5,7169. 6,3183.

सुतेमनस् (सुते loc. von 1. सुत + मनस्) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Çâṇḍiljâjana Ind. St. 4,372. fg.

सुतेरण (सुते + रण) adj. *beim* Soma *sich ergötzend* ṚV. 10,104,7.

सुतेल adj. *gutes Oel gebend;* f. या ein N. der महाज्योतिष्मती Râǵân. 3,71.

सुतोय adj. (f. या) *schönes Wasser habend:* Fluss Vaitâl. Bhn. S. 16,12.

सुतोष adj. *leicht zufrieden zu stellen* R. 3,19,11.

सुत्य (von 1. सु) 1) adj. in Verbindung mit अहन् oder n. mit Ergänzung von अहन् *Kelterungstag,* Soma-*Tag* Kâtj. Çr. 6,4,3. 14,1,28. fg. Âçv. Çr. 7,1,3. Lâṭj. 1,3,1. 17. 20. Çâṅkh. Çr. 5,10,13. MBh. 5,4803 nach einer von Nîlak. erwähnten Lesart. सुत्याह्ने (so nach Aufrecht) Verz. d. Oxf. H. 7,*b*,9 v. u. — 2) f. सुत्या P. 3,3,99. Vop. 26,186. *die feierliche Kelterung des* Soma: स्वस्ति ते सोम सुत्यामशीय VS. 5,7. TS. 2,5,5,6. Ait. Br. 6,34. Âçv. Çr. 6,11,13. सुत्यार्थ 12,4,13. Çat. Br. 3,1,2,28. 2,2,7. 3,4,19. सोम° 12,8,2,13. Kâtj. Çr. 4,6,15. 7,5,9. Lâṭj. 1,4,28. 5,5,1. °मास 10,10,6. — Verz. d. Oxf. H. 47,*b*,10. — Vgl. अग्न्य°, अह:°, सव्य:°.

सुत्यर्ह् adj. *leicht loslassend, — entfliehend:* Agni ṚV. 8,49,16.

सुत्रात adj. *wohlbeschützt* Çat. Br. 5,5,4,12. 12,7,1,14.

सुत्रात्र् adj. 1) *wohl schützend* ṚV. 5,70,3. 6,51,11. — 2) *wohl beschutzt:* रयि ṚV. 8,68,7.

सुत्रामन् adj. *wohl beschützend* ṚV. 10,63,10. AV. 18,3,61. Beiw. und Bein. Indra's AK. 1,1,4,28 (सु° nicht der Text, sondern Rudra zu AK. nach ÇKDa.). H. 172. Hall. 1,53. ṚV. 6,47,12. fg. 10,131,6. VS. 10,31. fg. 19,35. 20,33. 35. TS. 2,2,9,4. Çat. Br. 5,5,4,1. Kâtj. Çr. 15,10,6. Âçv. Çr. 3,9,3. सुत्रामाणमिति (ṚV. 10,63,10) पठन् Verz. d. Oxf. H. 268,*a*,26. सुत्रामर्षी adj. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 26,14. pl. Bez. einer Klasse von Göttern unter dem 13ten Manu VP. 3,2,35. Bhâg. P. 8,13,32. — Vgl. सूत्रामन्, सौत्रामणी.

सुत्वक् (von 6. सु + त्वच्) adj. *eine schöne Haut habend:* यानन Suçr. 2,137,20.

सुत्वन् (von 1. सु) 1) adj. (f. सुत्वरी P. 4,1,7) P. 3,2,103. Vop. 26,69. Soma *kelternd* AK. 2,7,10. ṚV. 10,99,11. AV. 20,128,1. — 2) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Kairiçi Ait. Br. 8,23. — Vgl. पाक°, सोम°, सौत्वन.

सुदंशित adj. *überaus dicht:* Pfeile MBh. 5,7184. सुसंशित ed. Bomb.

सुदंष्ट्र 1) adj. *schöne Spitzzähne habend:* Kṛshṇa MBh. 5,3384. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sohnes des Kṛshṇa Harîv. 8038. 9162. — *b)* eines Sohnes des Çambara Harîv. 9254. — *c)* eines Adoptivsohnes des Asamañǵas Harîv. 2039. — *d)* eines Râkshasa R. 6,35,18.

सुदंसस् adj. *herrliche Thaten verrichtend:* Indra ṚV. 1,62,7. 9. 3,32, 8. die Marut und Andere 1,85,1. 139,1. 2,2,3. 6,70,6. 8,10,3. 10,66, 4. सुदंससा भवसा या विभासि (उष:) 1,92,8. 3,61,4. ते सूनव: स्वपस: सुदंसस: 1,139,3.

सुदक्ष 1) adj. *sehr geschickt,* — *klug,* — *tüchtig;* meist von Göttern: वं दक्षै: सुदक्षा: ṚV. 1,91,2. 10,91,3. वीर 3,4,9. 6,19,3. होता 2,9,1. Soma 9,87,2. 105,4. 108,10. बन्धस् 4,16,1. 8,81,4. Mitra-Varuṇa 7,66,2. Indra 1,101,9. 10,47,4. die Açvin 3,58,7. Agni 3,23,2. 5, 11,1. 7,1,6. 2,3. 8,19,13. Savitar 5,71,1. TS. 1,2,3,1. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa सुभ्रादि zu P. 4,1,123. — Vgl. सौदक्ष, सौदक्षेय.

सुदक्षिण 1) adj. *a) sehr geschickt* MBh. 8,109. — *b) überaus liebenswürdig, — zuvorkommend* MBh. 13,99. — *c) der eine treffliche Rechte hat:* Indra ṚV. 7,32,3. 8,33,6. — 2) m. N. pr. *a)* eines Fürsten der Kâmboǵa MBh. 1,6995. 2,1912. 5,590. काम्बोजा: ससुदक्षिणा: 6,662. — *b)* des Sohnes eines Pauṇḍraka Bhâg. P. 10,60,27. fgg. — 3) f. या N. pr. der Gattin Dilîpa's Rajat. 1,31. 2,64. 3,67.

सुदग्धिका f. *eine best. Pflanze,* = दग्धा Râǵân. 7,41.

सुदण्ड (6. सु + दण्ड) m. *eine Calmus-Art,* = वेत्र Râǵân. 5,94.

सुदण्डिका f. *eine best. Pflanze,* = गोरक्षी Râǵân. 5,94.

सुदत्त (6. सु + दत्त) Kârikâ zu P. 7,4,47. gaṇa सेकादि zu P. 4.2. 75. 1) m. N. pr. *a)* eines Sohnes des Çatadhanvan Harîv. 2037. सुदात्त die neuere Ausg. — *b)* eines reichen und *freigebigen* Mannes, bekannter unter dem Beinamen Anâthapiṇḍada, Burnouf, Intr. 24. Schiefner, Lebensb. 258 (28). — 2) f. या N. pr. einer Gattin Kṛshṇa's Harîv. 9179. 9187. — Vgl. सौदत्त.

सुदत्र adj. *gute Gaben gebend* Naigh. 4,3. Nir. 6,14. यो रत्नधा वसुविद् यि: सुदत्र: ṚV. 1,164,49. Agni 7,8,3. Tvashṭar 34,22. VS. 2,24. Indra SV. 1, 4,2,3,7.

1. सुदत्त् m. *ein schöner Zahn:* सुदता so v. a. *durch schöne Zähne* Bhâg. P. 3,23,33.

2. सुदत्त् adj. *schöne Zähne habend* P. 5,4,141. f. °दती MBh. 1,3891. 3,15555. Ragh. 6,37. Çrut. 36. Gît. 10,3. Kathâs. 39,83. Kâdamb. 19. Mârk. P. 123,20. Bhâg. P. 4,15,8. 25,32. 26,23. 7,4,11.

सुदत्त 1) adj. *mit schönen Zähnen versehen:* वक्त्र R. 5,32,48. — MBh. 8,1765 fehlerhaft für सुदात्त (so ed. Bomb.) — 2) m. *a) Schauspieler* ÇKDa. und Wilson. — *b)* N. pr. eines Mannes gaṇa सुभ्रादि zu P. 4,1.

122. — 3) f. ई N. pr. des Weibchens eines Weltelephanten Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. सौदर्शेय.

सुदम्भ adj. *leicht zu bewältigen* zur Erklärung von दभ्र Nir. 3,20.

सुदयित adj. *sehr geliebt, — am Herzen liegend:* वस्त्र MBh. 5,7258.

सुदरिद्र adj. *sehr arm* Harîv. 1264.

सुदर्भा f. *eine best. Pflanze,* = इक्षुदर्भा Râgân. 8,137.

सुदर्श adj. = सुदर्शन Vop. 26,199. 1) *leicht zu erblicken, sich den Augen Anderer nicht entziehend:* सर्वभूतानाम् MBh. 1,1944. R. 2,54,23. hierher oder zu 2) compar. ṚV. 1,127,5. — 2) *lieblich anzusehen, ein angenehmes Aussehen habend* MBh. 12,2005. = प्रसन्नवक्त्र Nîlak.

सुदर्शन 1) adj. (f. आ) = सुदर्श Vop. 26,199. *a) leicht zu erblicken, — schauen:* पतिभि: Vop. 5,26. — *b) lieblich anzusehen, ein angenehmes Aussehen habend, schön, prächtig:* पूर्णचन्द्र° (मुख) MBh. 11,638. 13, 103. 120. पर्णशाला R. 2,56,17. तूण 4,2,14. चन्द्र Vikr. 38,11. Bhâg. P. 4,24,31. 10,38,14. — 2) m. *a) Geier* H. ç. 194. Çabdârthak. bei Wilson. — *b)* N. pr. *α)* verschiedener Personen: eines Fürsten von Mâlava MBh. 2,123. 7,7011. 9400. eines Sohnes des Feuergottes und der Sudarçanâ 13,120. eines Sohnes des Çaṅkhaṇa R. 1,70,39 (72,28 Gorr.). 2,110,31. des Khanitra R. Gorr. 2,119,28. des Arthasiddhi Harîv. 828. des Dhruvasaṁdhi Rgv. 18,34. VP. 387. Bhâg. P. 9,11,5. Verz. d. Oxf. H. 81,*b*,7. des Dadhîki 64,*a*,17. des Agamîḍha Harîv. 1799. des Bharata Bhâg. P. 5,7,3. eines Schwiegersohnes des Pratîka 9,2,18. N. pr. eines Fürsten von Ujjajinî Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,20. von Pâṭaliputra Hit. 4,6. N. pr. eines Muni Bhâg. P. 1,9,7. eines Vidjâdhara 10,34,12. 11,16,29. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,17. eines Spielers Kathâs. 52,292. fgg. eines Autors Ind. St. 1,469. सुदर्शनाचार्य Hall 92. 180. Bei den Buddhisten N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,15. eines Patriarchen Wassiljew 35. 45. 58. 74. Târan. 42. 45. 58. fg. Schiefner, Lebensb. 310 (80). eines Fürsten der Nâga Lalit. 380. eines Ćakravartin Vjutp. 92. pl. einer Klasse von Göttern 82. Burnouf, Intr. 202. 615. fg. Lalit. ed. Calc. 171,7. Bei den Gaina N. pr. des 5ten unter den 9 weissen Bala H. 698. des Vaters des 18ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî 38. — *β)* eines Gambû-Baumes MBh. 6,273. = मेरुजम्बुद्रुम (woraus ÇKDr. und Wilson zwei Bedd. machen) Med. n. 223.; vgl. 3) *e) δ).* — *γ)* eines Berges Vjutp. 102. Taitt. Âr. 1,31,2. R. 4,44,23. — *δ)* eines Dvîpa MBh. 6,188. 197. — 3) f. आ *a) eine Nacht in der lichten Hälfte eines Monats* TBr. 3,10,4,1. — *b) Befehl* (आज्ञा) H. an. Med. — *c) Cocculus tomentosus* Rathn. 227. = ओषधिभेद H. an. Med. — *d) eine Art Branntwein* H. an. — *e)* N. pr. *α)* einer Tochter Durjodhana's von der Narmadâ MBh. 13,103. einer Princessin Pârâçar. ed. orn. 53,19. 55,22. 25. — *β)* der Stadt Indra's Gaṇḍa. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,37. — *γ)* eines Lotusteiches R. 2,52,26. 4,40,47. — *δ)* eines Gambû-Baumes MBh. 13,4862. R. 4,44,56. = मेरुजम्बू H. an.; vgl. 2) *b)β).* — 4) f. ई N. pr. der Stadt Indra's H. an. — 5) n. *a)* (sc. चूर्ण) *ein best. aus vielen Species gemischtes Pulver* Çârṅg. Saṁh. 2,6,12. — *b)* N. pr. *α)* der Stadt Indra's Med. H. ç. 34. — *β)* eines Tîrtha Bhâg. P. 10,78,19. — *6)* m. (nach den Lexicogra-

phen) und n. Vishṇu's *Discus (die Sonnenscheibe)* AK. 1,1,4,23. H. 222. H. an. Med. Hall. 1,26 (neutr.). Gaṇḍa. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,17. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,109. fgg. MBh. 1,1178. 6,2599. Harîv. 2745. 5362. Kathâs. 50,56. Bhâg. P. 1,8,13. 4,15,16. 5,24,3. 28. 8,4,19. 6,7. 20,30. 9,4,51. 5,12. 11,27,27. Pârâç. 1,1,30. 2,33. 2,2,73. 4,3,168. Sarvadarçanas. 64,17. 65,1.4. Verz. d. Oxf. H. 64,*b*,9. °चक्र 100,*a*,12. Pârâçar. 47,5. सुदर्शनास्त्र Bhâg. P. 3,19,22. — Vgl. महा°, लघु°, सौदर्शनिका fgg.

सुदर्शनभाष्य n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,42.

सुदर्शनविजय m. Titel eines Schauspiels Mack. Coll. 1,111.

सुदर्शनसंहिता f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 107,*a*, No. 163. fg.

सुदर्शनीय adj. *leicht zu schauen* MBh. 9,2544.

सुदर्शिनी f. = सुदर्शन 3) *e) γ)* R. Gorr. 2,32,34.

सुदल (6. सु + दल) 1) m. N. zweier Pflanzen: = तीरमोरट Ratnam. im ÇKDr. = मुचुकुन्द Râgân. 10,105. — 2) f. आ desgl.: = तरुणी (तरुणी ÇKDr.) Râgân. 10,128. = शालिपर्णी (शालपर्णी ÇKDr.) 4,17.

सुदशन adj. (f. आ) *schöne Zähne habend* Mârk. P. 21,18. Brahma-P. in LA. 50,19.

सुदा adj. *viel —, gern gebend* ṚV. 8,67,4.

सुदातु adj. *leicht theilbar:* सोभगा सुदातुपरिहृता ṚV. 8,67,3.

सुदान n. *eine schöne —, reichliche Spende* Spr. (II) 2765. fg.

सुदानु adj. *reichlich triefend,* theils eigentlich von den Marut, Indra u. s. w., theils so v. a. *strotzend* oder *mit vollen Händen austheilend* (z. B. von Opferern, Göttern). Am häufigsten von den Âditja und Marut gesagt. सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर्यस्त्वा पिप्रीषति ṚV. 4,4,7. स इत्सुदानुः स्वपा अस्तावा यो वां दाशति 6,68,5. 7,96,4 (vgl AV. 14,2,72). देवयवः 8,92,7. सुदानवः पृणन्ति तं नरः 9,74,4. सुदानवः। विश्वे ब्रुवस्त कामिनः 6,16,8. Agni 3,26,1. 29,7. 6,2,4. Indra 6,38,1. 60,5. die Âditja 1,141,9. 5,67,4. 6,67,2. 7,61,3. 66,5. die Marut 1,15,2. 23,9. 39,10. 40,1. आ ये नरः सुदानवो दिवः कोशमचुच्यवुः 5,53,6 u. s. w. AV. 4,15,2. 7. 9. 6,30,1. die Açvin 1,180,6. 184,4. 3,58,7. Götter überh. ṚV. 6,51,15. 10,65,11. 66,12. सा नः सुदानुर्मृळयन्ती देवी गम्याः 5,41,15. AV. 7,20,4. 18,3,61.

सुदान्त 1) adj. *wohl gezähmt:* Rosse MBh. 8,1765 nach der Lesart der ed. Bomb. — 2) m. *a) ein Pratjekabuddha* Taik. 1,1,13. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Çatadhanvan Harîv. 2037 nach der Lesart der neueren Ausg. (सुदत्त die ältere).

सुदान्तसेन m. N. pr. eines Arztes Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,25.

सुदाम (= सुदामन्) 1) m. *a)* pl. N. pr. eines Volkes R. Gorr. 2,70,15, v. l. für सुदास; in den andern Ausgaben st. dessen सुदामन् als N. pr. eines Berges. — *b)* N. pr. eines Hirten im Gefolge Kṛshṇa's Pârâç. 3,7,27. — 2) f. आ *a)* N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2623 (besser दामा ed. Bomb.). 2628. — *b)* N. pr. eines Flusses R. 2,71,1.

सुदामन् 1) adj. P. 3,2,74, Schol. *gern —, reichlich gebend* Vop. 26, 68. ṚV. 8,20,7. — 2) m. *a) Wolke* H. an. 3,435. Med. n. 226. — *b) Meer* Çabdar. im ÇKDr. — *c)* N. pr. gaṇa सुखादि zu P. 4,1,123 (eines Mannes). *α)* pl. eines Volkes MBh. 6,362 (VP. 192). — *β)* eines Für-

sten von Daçârṇa MBh. 3,2707. — γ) eines Gandharva R. 5,92,70. Mâns. P. 109,55. — δ) eines Hirten im Gefolge Kṛshṇa's Verz. d. Oxf. H. 24, a, N. 1. 25, a, 4. Wilson, Sel. Works 1, 175. — ε) eines armen Brahmanen, den Kṛshṇa reich machte, Brahmavaiv.-P., Kaśmîra-Ausg. 112 nach ÇKDa. — ζ) eines Kranzwinders (vgl. 4. दामन्) Bhâg. P. 10,41,43. — η) eines Fürsten Kull. zu M. 8,110. fehlerhaft für सुदास्. — ϑ) des Elephanten Indra's Taitt. 1,1,62. — ι) eines Berges H. an. Med. (nicht *Berg* überh., wie ÇKDa. und Wilson angeben). MBh. 2,1020 (könnte auch N. pr. eines Fürsten sein). R. 2,68,18. Schol. zu P. 4,3,113. fg. — κ) eines Flusses Pañcav. Br. 22,18,1. — Vgl. सौदामनी.

सुदामन 1) m. N. pr. eines Rathgebers des Janaka R. 1,70,10. — 2) n. *eine best. mythische Waffe* R. 1,29,19. सुदारुण ed. Bomb.

सुदामिनी f. N. pr. der Gattin Çamîka's Bhâg. P. 9,24,42.

1. सुदाय m. *Hochzeitsgeschenk* H. 520.

2. सुदाय adj. *ein schönes Hochzeitsgeschenk gebend:* °संबन्धिभ्यो लब्धं सौदायिकम् Dâyabh. 124,3 v. u.

1. सुदारु n. *gutes Holz* Spr. (II) 4626.

2. सुदारु 1) adj. *gutes Holz liefernd.* — 2) m. N. pr. eines Berges, = पारियात्रिक H. 1031.

सुदारुण adj. (f. आ) *sehr streng, — heftig, überaus schrecklich:* तपस् MBh. 5,7359. उत्पाताः 16,54. युद्ध Mâns. P. 104,18. अनावृष्टि R. 1,8, 12. अस्त्र R. ed. Bomb. 1,27,19 (oder n. als N. einer best. mythischen Waffe). n. *etwas Schreckliches* Harîv. 8892.

सुदारुमूल m. *Alhagi Maurorum Tournef.* Râgân. 4,44.

सुदावन् adj. P. 3,2,74, Schol. *gern —, reichlich gebend* ṚV. 1,76,3.

सुदास् (सु॰दास् Padap.) 1) adj. *ein treuer Verehrer* (der Götter) ṚV. 1, 47,6. कस्मै ससुः सुदासे अन्वापयः 5,53,2. रातक्व्याय दाशुषे सुदासे 7,19, 6. 20,2. 33,3. 60,8. — 2) m. N. pr. eines berühmten Fürsten der Tṛtsu, Sohnes des Divodâsa mit dem patron. Paigavana Nir. 2,24. ṚV. 1, 63,7. 112,19. विश्वामित्रो यदवकृत्सुदासम् 3,53,9. अर्धं राये प्र मुंचता सुदासः 11. 7,18,8. fgg. 25,3. 32,10. 33,3. 64,3. 83,1. fgg. Ait. Br. 7,34. Çâṅkh. Çr. 16,11,1. 4. Gobh. 1,9,10. M. 7,41, wo mit mehreren Hdschrr. सुदाः पैजवनश्चैव zu lesen ist. — Die gangbare Etymologie ist nach Nir. 2,24 = कल्याणदान; nach unserer Ansicht könnte दास् = दाश् sein.

सुदास m. N. pr. 1) pl. eines Volkes R. Gorr. 2,70,18. v. l. सुदास und सुदामन्. — 2) eines Fürsten: सुदासस्य तीर्थम् Bhâg. P. 3,1,22. eines Grossohnes des Ṛtuparṇa Harîv. 816. eines Sohnes des Sarvakâma VP. 4,4,19. Bhâg. P. 9,9,18. des Ajavana 22,1. VP. 4,19,18. des Bṛhadratha Bhâg. P. 9,22,41. Vaters von Mitrasaha Verz. d. Oxf. H. 10, a, 11. Ueber die wahrscheinliche Identität von सुदास und सुदास् s. Muir, ST. 1,119. fgg. — Vgl. सौदास.

सुदास्तर compar. zu सुदास् 1): अर्यो दिवो नर्याता सुदास्तराय ṚV. 1, 184,1. भूरि चिदर्यः सुदास्तराय *reichlich* (gebot) *dem der getreuer ist als der Unfromme* 185,9.

सुदिति adj. in einer Formel (mit Anklang an अदिति): सुदितिरस्यादित्यैभ्यस्त्वादित्यां ञिन्व Vaitân. 22.

सुदिन 1) adj. (f. आ) *hell, klar* (nur von Tag und Morgen); übertragen *heiter, ungetrübt* ṚV. 7,11,2. अक्तो यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान् 30,3. रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः 1,124,9. 7,90,4. उभे अक्तोः सुदिने विवस्वतः 10,39,12. — 2) n. *a) klarer Himmel, serenum, ein klarer Tag; gute Zeit* Naigh. 3,6 (= सुख). सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान् ṚV. 7,18,21. सुदिनेषु क्रतुम् 4,37,1. सूषासो मे सुदिनं च मे VS. 18,6. यशस्तिमेपि सुदिने वाधमानः AV. 17,1,17. सुदुघा पृश्निः सुदिना (acc.) मरुद्भ्यः 5,60,5. MBh. 3, 812. 12,3705 (pl.). चित्रं सुदिनं तदहर्दिनम् Kathâs. 110,84. Spr. (II) 2566 (pl.). Râgat. 3,247. Brahmavaiv.-P., Çaṅkarâcâryak. 43 nach ÇKDa. — *b*) N. pr. eines Tîrtha (neben अक्तम्) MBh. 3,6070. — दिन hat in diesem comp. wohl die Bed. *licht;* दिन kommt im ṚV. sonst nur noch in मध्यंदिन vor. — Vgl. दुर्दिन.

सुदिनता f. nom. abstr. von सुदिन *ein klarer Tag:* दुर्दिनं सुदिनतां याति Spr. (II) 1067.

सुदिनत्व (wie oben) n. *serenitas*, übertr. *Glückszeit:* अक्तोः ṚV. 2. 21,6. 3,8,5. 23,4. 7,88,4. 18,70,1.

सुदिनाय् (wie oben), °यते *sich aufklären, heiter werden* P. 3,1,17. Vârtt. 2.

सुदिनार्क (सुदिन + अक्त = अक्तन् *Tag*) n. *ein heiterer Tag* P. 2,4,29. Vârtt. 2. Schol. zu P. 5,4,90. AK. 3,6,2,29.

सुदिव् adj. *schön leuchtend:* Agni ṚV. 10,3,5.

सुदिव n. *ein schöner Tag* AV. 19,8,3. nach P. 5,4,120 ein adj. comp. = शोभनं दिवास्य Schol.

सुदिवस n. *ein schöner, heiterer Tag* Spr. (II) 2034. 3889.

सुदिवातिथि (6. सु-दिवा + त°) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 12,6900.

सुदिष्ट adj. *wohl geglättet, blank, scharf:* Zähne Vait. 10; vgl. अभिदिग्ध AV. 5,18,8, das wohl ebenso zu fassen ist.

1. सुदीति f. *schönes —, helles Flammen:* सुदीती दिदीहि ṚV. 7,1. 21. instr. pl. 5,8,4. 25,2. 64,5. 8,48,3.

2. सुदीति 1) adj. *flammend, glänzend:* Agni ṚV. 3,2,13. 17,4. 27. 10. नर्यः 5,46,6. कवयः 1,139,4. 8,20,2. 86,12. — 2) m. N. pr. eines Mannes ṚV. 8,60,14. mit dem patron. Âṅgirasa Liedverfasser von ṚV. 8,60 ṚV. Anukr. — 8,60,14 und 86,12 könnte सुधीति gestanden haben.

सुदीतिदिति adj. = 2. सुदीति. Agni ṚV. 3,9,1. 8,19,4.

सुदीर्घ 1) adj. *sehr lang* (im Raum und in der Zeit): परिघार्गल Kathâs. 18, 286. सुदीर्घेणापि कालेन Vjâsanidar. im ÇKDa. °काले Spr. (II) 7100. — 2) f. आ *eine Gurkenart* (चीनाकर्कटी) Râgân. im ÇKDa. सुदीर्घराजीवफला in unseren Hdschrr.

सुदीर्घधर्मा (von सु° + धर्म) f. *eine best. Pflanze*, = असनपर्णी Çabdâ. im ÇKDa.

सुदीर्घफलिका (von सु° + फल) f. *eine Art Solanum* Ratnam. im ÇKDa.

सुदीर्घराजीवफला f. *eine Gurkenart* Râgân. 7,216; vgl. सुदीर्घा und राजिफला.

सुदुःख 1) adj. (f. आ) *sehr beschwerlich:* मार्ग R. 2,28,10. प्रव्रज्या MBh. 5,6029. *überaus schwierig:* पुरुषज्ञान Spr. (II) 7103. mit inf.: सुदुःखा खलु कार्याणां गतिर्विज्ञातुमात्मतः MBh. 4,884. — 2) n. *ein grosses Leid.* pl. Spr. (II) 4766. — 3) °म् adv. *unter Beschwerden, sehr unbehaglich:* अवसं त्वयि सु° MBh. 3,2842. *sehr schmerzvoll:* मात्रा सहाभ्यर्दनं मे (मा

ed. Bomb., das der Comm. als adv. fasst, indem er कुरु ergänzt und सुदःख als subst. erklärt) R. 2,21,55. तेन त्वामपि शप्स्ये ऽद्य सुदःखमतिदारुणम् 64,51.

सुदःखित adj. *sehr betrübt, — unglücklich:* Personen MBu. 3,2412. 5,6045. Mārk. P. 15,59. Bhāg. P. 3,5,3.

सुदुकूल adj. *aus sehr feinem Zeuge bereitet:* °मेखला Ṛt. 1,4.

सुदुघ adj. (f. घा) *gut milchend* (eine Kuh), überh. *nährend, viel gewährend:* f. घा *eine gute Milchkuh* ṚV. 1,4,1. 164,26. 186,4. 2,35,7. 6,35,4. 7,18,1. 9,77,1. इयं दुरुन्मुदुघाम् 10,122,6. 5,60,5. AV. 7,103,1. 12,4,35. VS. 19,56. Morgen und Nacht ṚV. 2,3,6. Gewässer 7,36,6. 43,4. 10,43,9. — Vgl. सुदुघ.

सुदुराधर्ष adj. *ganz unerträglich:* यदा वः (so die neuere Ausg.) सुदुराधर्षं दानवेन्द्रो भयं भवेत् Harīv. 2787.

सुदुरासद् adj. *dem sehr schwer beizukommen ist* R. 6,6,20.

सुदुरुक्ति f. *sehr harte Worte* Bhāg. P. 4,8,14.

सुदुर्गम adj. *sehr schwer zugänglich:* शैलपृष्ठ MBu. 3,14311.

सुदुर्जय 1) adj. *sehr schwer zu besiegen, — bewältigen:* सर्वास्त्रविदांसो देवैरपि सुदुर्जयाः MBu. 3,1943. 5,7420. 6,2901. R. 6,75,31. क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुः Spr. (II) 7511. मूत्रदोषाः Suçr. 2,528,10. अस्त्र R. 1,56,6. *sehr schwer zu ersiegen, — erlangen:* विष्णुपद Bhāg. P. 4,12,25. — 2) m. *a*) Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kām. Nītis. 19,45. — *b*) N. pr. α) eines Sohnes des Suvīra MBu. 13,93. — β) eines Brahmanen Tīrān. 132. — 3) f. आ N. einer der 10 Erden bei den Buddhisten Vaipl. beim Schol. zu H. 233.

सुदुर्ज्ञेय adj. *sehr schwer zu erkennen, — kennen zu lernen* MBu. 12,9673.

सुदुर्दर्श adj. = सुदुर्दृश Comm. zu R. 7,33,5.

सुदुर्दृश adj. *sehr schwer zu sehen* Mārk. P. 104,34. *sehr schwer anzublicken* R. 7,33,5.

सुदुर्बल adj. *überaus schwach* Spr. (II) 7104.

सुदुर्बुद्धि adj. *sehr einfältig, — thöricht:* Person MBu. 3,2212.

सुदुर्भग adj. (f. आ) *sehr unglücklich* Bhāg. P. 6,19,25.

सुदुर्भिद् adj. *sehr schwer zu sprengen* MBu. 7,3110.

सुदुर्मति adj. *sehr thöricht* oder *— übel gesinnt* MBu. 6,1991.

सुदुर्मनस् adj. *sehr kleinmüthig, — betrübt* MBu. 13,386. Kathās. 86,69.

सुदुर्लभ adj. *sehr schwer zu erreichen, — erlangen* MBu. 12,3618. R. 3,53,16. Z. d. d. m. G. 27,88. Brahmavaiv.-P., Çaṅkhanābhamāh. 97 nach ÇKDn. Pāṇ. 1,15,22. Vop. S. 176. mit infin. *schwer zu* MBu. 3,1726. fg.

सुदुर्वह adj. *sehr schwer zu tragen* MBu. 13,1918. राज्य R. 6,112,7.

सुदुर्विद् adj. *sehr schwer zu wissen:* धर्मप्रश्न MBu. 3,13628.

सुदुश्चर adj. 1) *sehr schwer zu betreten, ganz unzugänglich:* सुदुश्चरो गिरिश्चायं पक्षिणामपि R. 2,97,11. — 2) *sehr schwer auszuführen:* तपस् M. 1,34. Śāṅkh. 1,3.

सुदुष्कर adj. (f. आ) *sehr schwer zu machen, — vollbringen* MBu. 1,6118. 12,9673. Bhāg. P. 4,8,69. इमां वेदापदं घोरां तराम्यद्य सुदुष्कराम् (सुदुस्तराम्?) *sehr schwer zu ertragen* MBu. 10,263.

सुदुष्कृत n. *eine sehr grosse Uebelthat, — Sünde:* प्राप्नुवन्ति सुदुष्कृतम् MBu. 13,502. प्राप्नुवन्तीह सु° ed. Bomb.

सुदुष्ट adj. *sehr schlimm —, böse:* वाक्य R. 3,53,61.

सुदुष्प्रसाध्य adj. *mit dem sehr schwer fertig zu werden ist:* Feind Spr. (II) 1843.

सुदुष्प्रेक्ष्य adj. *sehr schwer zu sehen, — zu Gesicht zu bekommen* MBu. 13,988.

सुदुस्तर् adj. *sehr schwer zu überschreiten, — passiren, — überwinden:* पङ्क Hit. I,4. भवार्णव Bhāg. P. 10,2,31. योगचर्या 11,29,1. तपस् Verz. d. B. H. 233,6.

सुदुस्तार् adj. (f. आ) dass. MBu. 6,2337.

सुदुस्त्यज adj. *sehr schwer aufzugeben, dem man sehr schwer entsagt* MBu. 5,7203. Bhāg. P. 11,29,46.

सुदुःसह् adj. *sehr schwer zu ertragen, ganz unüberwindlich* Raghu. 3,37. Spr. (II) 347.

सुदुःस्पर्श adj. *sehr unangenehm für das Gefühl:* वायु Bhāg. P. 3,17,3.

सुदुह् adj. (f. आ) *sich willig melken lassend:* Kuh Spr. (II) 4616. — Vgl. सुदुघ.

सुदूर् adj. *sehr weit, — entfernt* AK. 3,2,13. दूरात्सुदूरे *in der allerweitesten Ferne* Mudr. Up. 3,1,7. सुदूरम् adv.: गत्वा R. 2,52,96. नीत्वा Daçak. 65,14. सुदूरपराक्रान्तव so v. a. *in sehr hohem Grade, vollständig* Avadānaçatakasaṅgīdīpanāma im ÇKDn.

सुदृढ adj. *sehr fest* Çārṅgad. im ÇKDn. AV. 10,2,3. पाश Bhāg. P. 11,29,39. °स्मृति Kām. Nītis. 18,37. *gut verschlossen:* Gemach Weber, Kaṭanāś. 266.

सुदृढत्वचा f. *Gmelina arborea* Rāǵān. 9,35.

सुदृश् 1) adj. (im Veda f. ई) *a*) *scharfsichtig:* स्पर्श ṚV. 9,73,7. Agni (hierher oder zu *b*) 3,17,4. 8,15,10. दर्शनात्तस्य सुदृशो विस्मयामो पारदृश्नः Kām. Nītis. 1,7. — *b*) *schön aussehend, ansehnlich:* पुष्टि ṚV. 4,16,15. श्रिये सुदृशो वपुरस्य सर्गाः 23,6. 5,44,2. तवं श्रिया सुदृशो देव देवाः 5,3,4. सूर्यस्य श्रिया सुदृशो विराजथः 1,122,2. — *c*) *schönäugig:* स्त्रियः Bhāg. P. 10,30,23. gewöhnlich subst. f. *ein schönäugiges Mädchen* Spr. (II) 783. Z. d. d. m. G. 27,13. Kathās. 7,78. 25,264. 44,185. 47,107. 109,139. Verz. d. Oxf. H. 137,*b*, No. 267. Pāṇ. 3,12,8. गोप° 13,18. LA. (III) 89,10. — 2) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 171,7. Burnouf, Intr. 202. 615.

सुदृशीक adj. gaṇa क्षत्रादि zu P. 6,2,118. *schön anzusehen, — aussehend* ṚV. 4,16,4. Agni 5,4,2. अश्व 7,77,5. Soma 9,86,45.

सुदृशीकरूप adj. *schönfarbig:* Feuer ṚV. 4,5,15.

सुदृशीकसंदृश् adj. *einen prächtigen Anblick gewährend:* Ushas ṚV. 7,77,2.

सुदृश्य adj. 1) *leicht zu erblicken, sich den Augen nicht entziehend* MBu. 12,13225. — 2) *schön anzusehen, hübsch:* सुन्दरमुख Pāṇ. 4,14,82.

सुदृष्ट 1) adj. *gehörig angesehen:* सर्वाः सुदृष्टा कुरुत शास्तां *seht euch alle die Çāntā gehörig an* R. 1,17,22. तेजसा च सुदृष्टो त्वं न करिष्यति काश्य न MBu. 1,7734. सुदृष्टः क्रियतां लोकः *sieh dir die Welt noch einmal gehörig an* ruft man einem dem Tode Verfallenen zu MBu. 7,1269. 1847. eben so सुदृष्टं कुरु त्रीवलोकम् R. 7,68,20. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6,358 nach der Lesart der ed. Bomb. सुदृष्ट ed. Calc.

सुदृष्टि m. *Geier (gute Augen habend)* Dhanv. 6,95.

सुदेल m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6,354. सुदेल ed. Bomb.

1. सुदेव m. *ein rechter, wirklicher, guter Gott* Nir. 5,27. Varuṇa ṚV. 8, 58,12. 10,93,14 (vgl. Çat. Br. 11,5,8,13). AV. 20,136,12. Çat. Br. 7,5,2,52.

2. सुदेव 1) adj. *a) die rechten Götter habend, von einem guten Gotte behütet:* सुदेवः सुवीरः स मर्त्यः । यं त्रायधे ṚV. 5,33,15. wessen Bote Agni ist, den nennt man सु° 1,74,5. 84,18. दाशुषे 8,5,6. Vâlakh. 7,4. पितॄः TS. 3,2,8,3. — *b) für die rechten Götter bestimmt:* बर्हिस् VS. 21,48. TBr. 3,6,18,1 (oder zu *a*). — 2) m. N. pr. verschiedener Personen: Kâçjapa Taitt. Âr. 2,18. ein Brahmane MBh. 3,2660. Heerführer des Ambarîsha 12,3617. 3622. Sohn des Harjaçva und Fürst von Kâçi 13,1952. Fürst von Vidarbha R. 7,78,3. Sohn des Akrûra Harîv. 2087. des Paunḍra Vâsudeva 6387. 6626. des Kaṅku 758. VP. 4, 3,15. des Kampa Bhâg. P. 9,8,1. des Devaka 24,21. VP. 4,14,5. des Vishṇu Bhâg. P. 4,1,7. N. pr. eines Autors Verz. d. Tüb. H. 13. — Mârk. P. 114,26. 123,16. — 3) f. आ N. pr. verschiedener Frauen: Gattin Ariha's, eine Âṅgeji, MBh. 1,3777. Gattin Vikuṇṭhana's, eine Dâçârhi, 3789. — Harîv. 2026 (सन्देवा die ältere Ausg.). 9194.

सुदेवन n. *leidenschaftliches Würfelspiel* MBh. 3,2388.

सुदेवि (metrisch für सुदेवी) f. N. pr. der Gattin Nâbhi's und Mutter Ṛishabha's Bhâg. P. 2,7,10.

सुदेव्य n. *die Schaar der rechten, — guten Götter:* इमं नं उक्षा प्रथमा सुदेव्यम् (व्युवक्तु) ṚV. 10,33,4. याभिः सुदासं ऊर्ध्वः सुदेव्यम् 1,112,19.

सुदेश m. *ein guter, passender Ort* Vasiṣṭha, Kâçmîrâ. 270,1.

सुदेष्ट m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,358 (VP. 190). सुदृष्ट ed. Bomb.

सुदेष्ण (6. सु + देष्ण) 1) m. N. pr. *a)* pl. eines Volkes MBh. 6,354 nach der Lesart der ed. Bomb. सुदेष्ट ed. Calc. — *b)* eines Sohnes des Kṛishṇa Harîv. 6697. VP. 578. Bhâg. P. 10,61,8. eines Adoptivsohnes des Asamañgas Harîv. Lange. 1,169. सुदेष्ट die gedruckten Texte. — 2) f. आ N. pr. *a)* der Gemahlin des Königs Bali MBh. 1,4214. Harîv. 1690. — *b)* der Gemahlin des Königs Virâṭa MBh. 4,80. 252. fgg. 374. fgg.

सुदेष्णा f. N. pr. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,16 (wohl विराटभार्या zu lesen; also = सुदेष्णा).

सुदेह m. *ein schöner Körper* Bhâg. P. 9,14,35.

सुदोघ adj. (f. आ) *gut milchend* so v. a. *spendend:* द्यावः RV. 3,15,6.

सुदोह adj. *sich willig melken lassend:* °गो Taitt. 3,3,192.

सुदोहन adj. (f. आ) dass.: सुदोहनामकृणोद्ब्राह्मणो गाम् ved. Citat beim Schol. zu P. 3,3,120. zur Erklärung von सुदुघ Nir. 11,43.

सुद्यु (6. सु + द्यु = दिव्) m. N. pr. eines Sohnes des Kârupada Bhâg. P. 9,20,3.

सुद्युत् adj. *schön leuchtend:* Agni ṚV. 1,140,1. 143,3. 8,23,4.

सुद्युम्न 1) adj. (f. आ) *glänzend:* घृताची ṚV. 3,19,2. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Maitrâjup. 1,4. Ind. St. 1,199. MBh. 2,327. 12,667. fgg. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 41. Sohn eines Manu MBh. 13,6263. 8331. Harîv. 72. 636. fgg. VP. 98. 350. Mârk. P. 111,12. 15. Bhâg. P. 8,5,7. 9,1,22. Verz. d. Oxf. H. 39,*a*,26. 80,*a*,37. ein Sohn Abhajada's Bhâg. P. 4,19,1.

सुद्यौत्मन् (स्यो° von 1. द्युत्) adj. *glänzend:* Agni ṚV. 1,141,12.

सुद्रविणस् adj. *reich an Gut, treffliche Habe besitzend:* Aditi ṚV. 1, 94,15. Agni 10,61,21. TBr. 3,5,9,1.

सुद्रु m. *starkes Holz, ein tüchtiger Balken:* (द्या नमे) नेमिं तष्टेव सुद्रुम् ṚV. 7,32,20. नि सुद्रुं दधतो वनर्षासु 10,28,8.

सुदन्त adj. (f. आ) *mit schönen Zähnen versehen* MBh. 3,2465. Bhâg. P. 3,20,30. 4,21,15. 24,46.

सुधन्व 1) adj. *reich:* क्षत्र ṚV. 5,34,9. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Wilson, Sel. Works 2,24. Schiefner, Lebensb. 319(89). Târân. 308. Çiç. in LA. (III) 37,2. — Vgl. सौधन्व.

सुधनुस् m. N. pr. eines Sohnes des Kuru Harîv. 1801. VP. 435. Bhâg. P. 9,22,4. 5. — Wassiljew 40. fg. Târân. 2. 12. fg. 18 (सुधनु und सुधानु). 46. N. pr. eines Vorfahren Çâkjamuni's LIA. 2, Anh. II.

सुधन्वन् 1) adj. *einen guten Bogen führend* H. an. 3,435. Med. n. 223. ṚV. 5,42,11. 57,2. VS. 16,26. Pân. Gaṇ. 2,17. R. Gorr. 2,109,9. Bhâg. P. 3,21,37. — 2) m. *a)* ein N. Vishṇu's H. ç. 73. — *b)* ein N. Tvashṭar's oder Viçvakarman's H. an. Med. Vater der Ṛibhu; s. सौधन्वन. — *c)* Bez. *einer best. Mischlingskaste: der Sohn eines ausgestossenen* Vaiçja M. 10,23. — *d)* N. pr. verschiedener Personen: Âṅgirasa Çat. Br. 14,6,8,1. MBh. 2,2313. fgg. 3,1188, fgg. 13,1764. 4148. ein Sohn Vairâga's und Hüter des Ostens Harîv. 273. fg. ein von Mândhâtar besiegter Fürst MBh. 7,2281. ein Sohn des Sâṁbhûta Harîv. 715. des Ahînagu 825. fg. des Abhajada 1637. des Kuru 1801. fg. Fürst von Sâṁkâçja R. 1,71,16. fgg. (73,15. fgg. Gorr.). ein Sohn des Çâçvata VP. 4,5,12. des Satjadhṛta 19,19. — Verz. d. Oxf. H. 254,*a*,7. fgg. 258,*a*,15. fgg. Verz. d. B. H. 114 (29).

सुधप् (von 2. सुधा), °पति *erquicken* Bhâg. P. 5,8,22. स्वधपति ed. Bomb.

सुधर m. N. pr. eines Arhant Târân. 309.

1. सुधर्म m. *das gute Recht, Gerechtigkeit:* सुधर्मः स्थापितः पथि R. 7, 6,40. सुधर्मस्याविरोधेन Mârk. P. 109,8.

2. सुधर्म 1) adj. *Gerechtigkeit übend, wo Gerechtigkeit geübt wird.* — 2) m. N. pr. *a)* eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 11,*a*,26. — *b)* eines Mahâbrahman Lot. de la b. l. 105. — *c)* pl. einer Gruppe von Kiṁnara Lot. de la b. l. 3. — 3) f. आ *a)* N. pr. der Gattin Mâtali's MBh. 5,3519. 3521. — *b)* N. der Versammlungshalle der Götter AK. 1,1,1 44. H. 178. MBh. 2,84. Harîv. 6565. 6569. 15330. 15338. 15342. R. 2, 56,32. 81,10 (82,9 Gorr.). Rag. 17,27. Kathâs. 106,163. Bhâg. P. 1, 14,34. 38. 10,50,55. 68,35. 70,17. 11,30,4. Paṇḍar. 1,4,66. VP. 5,21, 14. 38,7. Lot. de la b. l. 219. — 3) f. ई = सुधर्मा *b)* Comm. zu AK. nach ÇKDr. — Vgl. सौधर्म.

सुधर्मन् 1) adj. P. 6,2,117, Schol. Vop. 6,28. *a) wohl stützend, — wahrend* in einer Formel VS. 38,14. — *b) Gerechtigkeit übend:* Kṛishṇa Harîv. 6569. क्षत्रिय Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,151 (als N. pr. von Agvaghoshi gefasst). — 2) m. *a)* N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens Harîv. 11536. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 74,*b*,31. der Daçârṇa MBh. 2,123. 1063. eines Sohnes des Dṛḍhanemi Harîv. 1076. fg. des Kîtraka 1921. pl. Götterklassen unter verschiedenen Manu VP. 268. fg. Mârk. P. 94,5. 22. 38. sg. bei den Gaina N. pr. eines Gaṇâdhipa H. 32. Colebr. Misc. Ess. 2,216. 316.

fg. Ind. St. 3,127. Wilson, Sel. Works 1,299. fg. 304. 336. — *b*) = देवसभा und कुटुम्बिन् Uṇâdik. im ÇKDa.

सुधर्मिन् adj. = सुधर्मन् 1) *b*) Daçak. 10,7 fehlerhaft für सुधर्मन्, wie die ed. Calc. liest.

सुधर्मिष्ठ adj. (f. धा) *seinen Pflichten genau nachkommend* u. s. w.: प्रजाः MBh. 3,13217.

सुधर्ष und सुधर्षण adj. *dem man leicht Etwas anthun kann* Vop. 26,199.

1. सुधी (6. सु + 2. धा) f. *Wohlbefinden, Behagen:* सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् AV. 17,1,6. सुधायां कृ वै वाजी सुस्तिो दधाति Ait. Br. 3, 39. 47. fg. *Himmel* nach Sây.; vgl. सुधायम् TS. 5,3,10,7.

2. सुधा (6. सु + धा = 3. धा) f. 1) *der Trank der Götter, Nektar* AK. 1,1,1,11. 3,4,10,104. H. 89. an. 2,256. Med. dh. 26. Hall. 1,133. सुधो तीरनिधिं मन्थाति Sidd. K. zu P. 1,4,51. MBh. 1,3222. 3,13158. 13161. Hariv. 373. R. 2,61,13. 5,3,68. चान्द्रमसी Ragh. 2,39. Speise der Schlangen Spr. (II) 3148. Sucr. 1,139,4. क्षुद्धरसीधुसुधा Gît. 10, 12. Spr. (II) 1537. 2817. 3239. 4005. 4680. 4881. 5897. 5934. 6330. 6413. 7599. Kathâs. 12,139. 29,58. 42,224. Mârk. P. 81,54. Kâdab. 46. वाणी °स्पर्धिनी Sin. D. 41,14. Prab. 60,8. Bhâg. P. 5,2,12. 8,3,10. Pañkar. 1,7,9. Pañkat. ed. orn. 54,24. सुधासार (d. i. सुधा + धासार) Kathâs. 26,32. 38,125. 100,12. °वर्ष 44,21. °सेक 121,238. °पूर Pañkat. 46, 16. °क्षुद् Kathâs. 26,69. सूक्ति कर्णसुधाम् Spr. (II) 7154. कृत्ताङ्गि° Bhâg. P. 3,2,4. वाक् ° Kathâs. 22,123. 33,215. शम° Spr. (II) 4385. Râga-Tar. 4,381. सदाचार° 3,47. स्मित° Kâdab. 17. Bhâg. P. 3,16,11. — 2) *Milch* Varâh. Bṛh. S. 54,113. Pañkar. 1,8,5 (pl.). 3,9,3. — 3) *Kalk, stucco* AK. 3,4,10,104. H. an. Med. Hâr. 135. Dhanv. 2,10. 32, 13 (°शर्करा:). (गृहम्) सुधया सितम् R. 4,33,21. °मृत्तिकालेपन MBh. 5, 7477. °पङ्कविलेपन Hariv. 6281. समुधाकुट्टिमतल R. 2,80,13 (87,16 Gorr.). °तल इव भीमान्प्रासादचन्द्ररश्मिभिः (यति विराजते) Kâm. Nîtis. 3,14. Sucr. 2,110,12. सान्द्र° Çiç. 4,28. °द्रवानुलेप Mṛkkh. 92,6. °भित्ति Daçak. 92,6. सुधावदात MBh. 5,1794. 13,764. R. 4,33,10. °शशाङ्कधवल Varâh. Bṛh. S. 28,15. °धवलित Hall. 2,139. Weber, Kṛshṇaj. 278. °शुध Spr. (II) 7106. °लालित Çiç. 12,62. °धौत Kathâs. 11,31. स्वच्छकान्तिसुधासिक्ताम् — कन्दर्पराजधानीम् 34,14. यशःसुधया प्रुष्टं व्याधाद्रक्षाण्डमण्डलम् Râga-Tar. 1,108. am Ende eines adj. comp.: कालान्तरश्यामसुधेषु कुड्येषु Ragh. 16,18. — 4) *Backstein* H. an. Med.; vgl. सुधामय 2). — 5) Bez. verschiedener Pflanzen: *Euphorbia antiquorum* (oder *eine andere Species*) AK. H. an. Med. Ratnam. 228. Sucr. 1,139, 19. °पयस् 160,18. 163,21. 2,25,17. 62,15. *Sanseviera Roxburghiana Schult.* H. an. Med. *Glycine debilis* Râgân. 4, 18. *Myrobalane* (धात्री) Nirârthadhvanim. im ÇKDa. — 6) *Wasser; Saft* Nirârthadhvanim. im ÇKDa. *Honig* Çabdar. ebend. — 7) *Blitz* Nirârthadhvanim. ebend. — 8) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – – – – – ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ –, – – ⏑ ⏑ ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2, 162 (XIII, 3). Ind. St. 2,398. fg. — 9) ein N. der Gañgâ H. an. Med. — 10) N. pr. der Gemahlin eines Rudra Bhâg. P. 3,12,13. — Vgl. भक्ति°, लघुन्याय°, वाक्य°, व्याख्या°, शक्र°, सौध.

सुधांशु (2. सुधा + अंशु) m. 1) *der Mond (dessen Strahlen Nektar sind)* AK. 1,1,2,15. H. 105, Schol. Spr. (II) 1538. 5288. 6039. 7105. Kathâs. 101,128. 115,139. Mârk. P. 107,9. Râga-Tar. 4,394. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Çl. 5. यशः° 506, Çl. 20. — 2) *Kampfer* (wie alle Wörter für *Mond*): °तैल *Kampferoel* Râgân. im ÇKDa.

सुधांशुरत्न n. *Perle* Râgân. 13,155.

सुधाकण्ठ m. *der indische Kuckuck* (*Nektar in der Kehle habend*) H. ç. 189.

सुधाकर (2. सुधा + आकर) m. 1) *der Mond (die Fundgrube des Nektars)* Çabdar. im ÇKDa. Spr. (II) 5913. Verz. d. Oxf. H. 121,*b*,12 v. u. 141,*b*, No. 289, Z. 16. 187,*b*, No. 428, Z. 9. — 2) N. pr. *a*) eines Grammatikers Sidd. K. zu P. 1,2,6. Colebr. Misc. Ess. 2,48. Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,29. fg. — *b*) eines Verfassers von Gebeten bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,34. — Vgl. प्रबोध°, बोध°.

सुधाकार (2. सुधा + कार) m. *Tüncher* R. 2,80,3. 83,14 (90,13 Gorr.).

सुधाकिर् oder °र् adj. *Nektar träufelnd* Sin. D. 263,9.

सुधाङ्ग (2. सुधा + 3. अङ्ग) m. *der Mond (dessen Körper Nektar ist)* Trik. 1,1,55. Hir. 13.

सुधाजीविन् (2. सुधा + जीव°) m. *Tüncher* Trik. 2,10,2.

सुधात adj. = सुधौत (Comm.) *gut gereinigt* Çvetâçv. Up. 2,14.

सुधातृ nom. ag. P. 4,1,97. *guter Ordner* u. s. w. Pañkav. Ba. 21. 10,16. Kâç. Ça. 23,3,1. — Vgl. सौधातकि.

सुधौतु adj. 1) *wohlgelegen:* उरुलयाय चक्रिरे सुधातु ṚV. 7,60,1. — 2) etwa *wohlgegründet* so v. a. *wohlhabend:* यज्ञपति VS. 1,12.

सुधौतुदक्षिण adj. etwa *derjenige, bei welchem der Opferlohn die richtige Stätte findet* d. h. *wohl angebracht ist (der edles Metall als Opferlohn erhält* Comm.): ब्राह्मण VS. 7,46. Kâṭh. 28,4. Kauç. 67.

सुधादीधिति m. *der Mond* (vgl. सुधांशु) Golâdh. Trip. 13.

सुधाद्रव (2. सुधा + द्रव) m. *Tünche* Mṛkkh. 92,6. Hiervon denom. सुधाद्रवति *weiss wie Tünche erscheinen* Dhûrtas. 67,15.

सुधाधार (2. सुधा + धार) m. *der Mond (Behälter des Nektars)* Çabdar. im ÇKDa.

सुधाधारा (2. सुधा + 1. धारा) f. *Nektarstrom* L.A. (III) 89,4. Gildemeister zerlegt das Wort fälschlich in सुधा + धाधार्.

सुधानन्दसूरि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 399,*b*,1 v. u.

सुधानिधि (2. सुधा + नि°) m. 1) *der Mond* Çabdar. im ÇKDa. — 2) Titel eines astr. Werkes Ind. St. 2,252. तान्त्रिक° ebend. — Vgl. योग°, राधारस°, शिवतत्त्व°.

सुधापाणि adj. *Nektar in der Hand haltend*, m. Bein. Dhanvantari's Çabdârthak. bei Wilson.

सुधाभुज् adj. *Nektar geniessend*, m. *ein Gott* H. 88.

सुधाभृति m. 1) *der Mond.* — 2) *Opfer* Med. t. 227. — सुधासूति eine Hdschr. nach ÇKDa.

सुधामन् (6. सु + धा°) m. N. pr. 1) eines Ṛshi Hariv. 435. 14153. R. 7,23,1,78. VP. 82, N. 3. 153. 226. Mârk. P. 75,73. Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,39. *b*,29. Bhâg. P. 5,20,21. — 2) pl. einer Klasse von Göttern unter dem 10ten Manu VP. 3,2,24. — 3) eines Berges VP. 180, N. 3 (सुधाम die ältere, सुधामन् die neuere Ausg.).

सुधामय (von 2. सुधा) adj. (f. ई) 1) *aus Nektar bestehend, Nektar enthaltend:* der Mond und seine Strahlen Z. d. d. m. G. 27,88. Kathâs. 34,165. 101,70. 104,114. वदन Gît. 1,48. सौभाग्यसुधामयी ein Weib

Rāǵa-Tar. 4,22. — 2) (aus Backsteinen aufgeführt und) *getüncht:* प्रासाद् *Palast eines Fürsten* Çabdar. im ÇKDa.

सुधामित्र (2. सुधा + मित्र) m. N. pr. eines Mannes gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. — Vgl. सौधामित्रिक.

सुधामुखी f. N. pr. einer Apsaras (*Nektar im Munde habend*) Paṇḍar. 1,10,88.

सुधामोदक (2. सुधा + मो°) m. *eine Art Zucker* (तबराज) Rāǵān. 14,106.

सुधाय m. = 1. सुधा TS. 5,5,10,7.

सुधायुक (wohl 6. सु + धा°) m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69.

सुधायोनि m. f. *die Heimath des Nektars* als Beiw. des Mondes Mān. P. 56, 2.

सुधारुचि adj. *in schönem Strahl fliessend* RV. 7,36,6. 9,96,24. Soma 109,7.

सुधारश्मि (2. सुधा + र° m. *Mondstrahl* Gīr. 7,40.

सुधारस m. 1) *Nektarsaft* MBh. 13,5291. Kathās. 21,146. 45,130. Rāǵa-Tar. 2,60. 4,212. — 2) *Milch* Paṇḍar. 3,6,19.

सुधारसमय (von सुधारस) adj. (f. ई) *aus Nektar bestehend, Nektar enthaltend:* वक्त्र Kāmap. 41. शब्दरत्नावली Verz. d. Oxf. H. 193,*a*,13.

सुधावत् (von 2. सुधा) m. N. pr. eines Mannes gaṇa वाकृादि zu P. 4,1,96. — Vgl. सौधावति.

सुधावर्षिन् adj. *Nektar regnend;* m. N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,15.

सुधावास (2. सुधा + आवास oder 2. वास) 1) m. (*die Stätte des Nektars*) m. als Beiw. des Mondes Weber, Rámájan. 296, N. 7; vgl. das Citat aus Tiruvāymoḷi im ÇKDa. — 2) f. आ *eine Gurkenart,* = त्रपुषी Rāǵān. im ÇKDa.

सुधासंग्रह m. Titel eines medicinischen Werkes: ग्राजसिंह° Verz. d. Cambr. H. 24.

सुधासव (2. सुधा + आ°) m. *ein best. kosmetisches Mittel* Bhāg. P. 10,48,5.

सुधासित (2. सुधा + 3. सित) adj. *weiss getüncht* Çiç. 179, v. l. Davon nom. abstr. °ता *die Weisse der Tünche* Kathās. 1,16.

सुधासिन्धु m. *das Nektarmeer* Ānandal. 8. Spr. (II) 845.

सुधासू m. = अमृतसू *der Mond* H. 104, Schol.

सुधासूति m. 1) *der Mond* Çabdar. im ÇKDa. Rāǵa-Tar. 1,279. — 2) *Opfer.* — 3) *Lotus* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. सुधाभृति.

सुधास्रवा f. 1) *Zäpfchen im Halse* Trik. 2,6,31. H. 585. auch सुधाम्रवा geschrieben. — 2) *eine best. Pflanze,* = रुदन्ती, अमृतस्रवा Rāǵān. 5,58.

सुधाहर् m. *Nektar-Entwender,* Bein. Garuḍa's Trik. 1,1,48. Çabdar. im ÇKDa.

सुधाहर्तर् m. desgl. Kathās. 110,126.

सुधाहुत् m. desgl. H. 231.

सुधि s. 2. सुधी.

1. सुधित (6. सु + 1. धित) adj. P. 7,4,45. 1) *wohlgeordnet, gut eingerichtet; behaglich, bequem:* बर्हिस् RV. 7,7,3. सधर् 4,2,10. प्रयांसि *bereit, aufgetragen* 1,135,4. 6,15,15. 8,49,4. 10,53,2. 70,8. सुधितो दम आ 7,42,4. घोकसि स्वे 4,50,8 (सुक्षित Ait. Br. 8,26). आ सधस्थे Agni 2,23,1. गर्भ 29,2. 10,27,16. 8,15,2. *wohl befestigt:* स्वक्ष 4,6,2. 1,167, 2. *wohlgesetzt:* मक्ष 7,32,12. मन्मन् 1,140,11. — आपूंषि 2,27,10. लोक TBr. 3,12,8,4. — 2) *gut aufgenommen, wohlgepflegt;* auch wohl *gut gestimmt, zugethan:* मित्र RV. 4,6,7. 5,3,2. 6,15,2. 8,23,8. 10,115,7. सुप्रणीते सुधिते Morgen und Nacht VS. 28,14. — 3) *festgesetzt, bestimmt, beabsichtigt:* सर्वं चिदस्य सुधितं पदेव आवर्तयन्ति दाशुषे RV. 8,58,17. परि विश्वानि सुधितानि नो ऽग्नाम् मन्मभिः 3,11,2. — Verdorben zu sein scheint: रिणाति पश्वः सुधितेव बर्हणा 1,166,6, wo स्वधितीव (für स्वधितिरिव) nach 5,7,8 zu vermuthen ist. Eine ähnliche Aenderung scheint वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कैः 6,33,2 darzubieten, wo अत्क unverständlich ist.

2. सुधित (von 2. सुधा) adj. *nektarähnlich:* °रासनिरीक्षण Bhāg. P. 10,33,22.

सुधिति = स्वधिति Ṛiśam. zu AK. nach ÇKDa.

1. सुधी f. *ein guter Verstand, Klugheit* Vop. 3,32. Spr. (II) 3817.

2. सुधी adj. comp. Declination P. 6,4,85. fg. Vop. 3,58. fg. सुधि n. 93. सुध्युपास्यः (ohne Nominativzeichen!) P. 1,1,58, Schol. 1) adj. *a*) *von guten —, frommen Gedanken erfüllt* RV. 1,51,14. 4,2,14. एतो न्वश्य सुध्योऽ भवाम 5,45,5. 6,1,7. यदी वाजाय सुध्योऽ वहन्ति (etwa *gutwillig,* aber eher सुधुरो) 4,21,8. — *b*) *klug, verständig;* subst. *ein kluger Mann* AK. 2,7,4. H. 341. Hall. 2,178. R. Gorr. 2,1,23. 6,11,46. Kir. Nitis. 4,80. Spr. (II) 1297. 1568. 1636. 3848. 4096. 4825. 4833. 4934. 4985. 6452. 6602. 6925. 7115. Ganit. Ardhakās. 2. Golādhy. Kṛṣṇaj. 8. 11. Kathās. 39,103. 40,24. 52,286. Rāǵa-Tar. 1,177. 4,292. 697. 5,22. Bhāg. P. 1,12,22. 4,7,12. 20,3. 5,19,4. 6,3,26. 7,9,49. Paṇḍar. 2,3,12. Hit. ed. Johns. 1180. Bhatt. 12,6. — 2) m. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern im 4ten Manvantara VP. 3,1,16. Mān. 74,57.

सुधीर adj. *sehr beherzt:* रणे Spr. (II) 3270, v. l.

सुधीवन् (6. सु + धीवन्) adj. P. 3,2,74, Schol.

सुधुर् adj. *gut unter dem Joch* (des Streitwagens) *gehend, ein gutes Wagenpferd:* शकेम रायः सुधुरो यमं ते *deine Rosse des Reichthums bei uns anzuhalten* RV. 1,73,10. 3,43,4. हरी पृक्षा सुधुरा 5,27,2. 43,3. रोहितं सुधुरं कक्ष्यप्राम् 8,3,22.

सुधुर adj. dass.: वत्सो न वाजी सुधुरो जिगानः RV. 3,38,1.

सुधूपक m. *das Harz der Pinus longifolia* Rāǵān. 12,158.

सुधूम्य m. *ein best. Parfum,* = स्वादु Rāǵān. im ÇKDa.

सुधूम्रवर्णा (6. सु-धूम्र + वर्णा) f. Bez. *einer der 7 Zungen des Feuers* (*dunkelroth*) Muṇḍ. Up. 1,2,4. — Vgl. सधूमवर्णा und सधूम्रवर्णा.

सुधृत् (6. सु + धृत्) m. N. pr. eines Sohnes des Mahāvīrja Bhāg. P. 5,13,15. — Vgl. सुधृति.

सुधृत adj. *sehr anhaltend:* स ईषि सुधृतस्तपन् AV. 13,2,12.

सुधृति (6. सु + धृ°) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Mahāvira (Mahāvīrja) R. 1,71,7. 8 (73,6. 7 Gorr.). Bhāg. P. 9,13,15. des Rāǵavardhana 2,29. VP. 353. — Vgl. सौधृतेय.

सुधृष्टम (superl. von सु-धृष् von धर्ष्) adj. *sehr muthig:* Narāçaṁsa RV. 1,18,10. रोदसी 160,2. die etymologische Bed. scheint nicht zu passen.

सुधोदय (2. सुधा + उ°) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 274, *a*, No. 649.

सुधोदव (2. सुधा + उ°) 1) m. ein N. Dhanvantari's Trik. 2,7,21;

vgl. सुधापाणि. = 2) f. घा *Terminalia Chebula Willd.* Taik. 2,4,15.

सुधीत adj. *gut gereinigt* Soça. 1,163,12.

1. सुनक्षत्र n. *ein gutes Sternbild* AV. 19,7,3.

2. सुनक्षत्र 1) adj. *unter einem guten Sternbilde geboren* u. s. w. — 2) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Marudeva, VP. 463. Bhâg. P. 9,12,11. des Niramitra 22,45. — 3) f. घा *a*) Bez. *der zweiten Nacht im* Karmamâsa Ind. St. 10,296. — *b*) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2627.

सुनति m. N. pr. eines Daitja Harîv. 12696. सुमति die neuere Ausg.

सुनन्द (6. सु + नन्द) 1) m. *a*) *ein Palast von bestimmter Form* Jukt. 1,241. 242. — *b*) N. pr. verschiedener Personen: °भारतसंवाद Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,17. fg. eines Sâtvata in der Umgebung Kṛshṇa's Bhâg. P. 1,14,32. 2,9,14. 4,7,25. 12,22. 19,5. 7,8,39. 8,20,31. 21,16. 10,89,57. eines buddhistischen Çrâvaka Lot. de la b. l. 2. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 4,16. 6,20. — 2) f. घा *a*) *Aristolochia indica* Ratnam. 227. — *b*) *ein best. gelbes Pigment* H. an. 3,340. Med. d. 43. — *c*) *Weib* H. an. Vîçva im ÇKDa. — *d*) Bein. der Umâ Med. — *e*) N. pr. α) verschiedener Personen: eine Schwester Subâhu's, Fürsten der Kedi, MBh. 3,2604. fgg. 2661. eine Kaikeji und Gattin Sârvabhauma's 1,3769. eine Kâçeji Sârvasenî und Gattin Bharata's 3785. eine Çaibjâ und Gattin Pratîpa's 3797. eine Gattin Kṛshṇa's Harîv. 8988 (सुवार्ता die neuere Ausg.). Pañcat. 3,15,10. ein anderer N. der Mudâvatî Mârk. P. 116,64. 118,1. eine Thürhüterin Ragu. 6,20. 37. eine Freundin der Umâ Çaṇḍîk. im ÇKDa. Mutter Bâhu's und Bali's H. an. — β) eines Flusses Bhâg. P. 5,1,3. — 3) m. N. pr. einer von Tvashṭar verfertigten Keule Mârk. P. 116, 19. 63. der Keule Balabhadra's Çaṇḍîk. im ÇKDa. — Vgl. सोनन्द.

सुनन्दन (6. सु + न°) 1) m. N. pr. verschiedener Personen: ein Sohn Kṛshṇa's Bhâg. P. 10,90,34. Purishabhîru's 12,1,33. ein Bruder Bhânanda's Kathâs. 73,91. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses Hem. ç. 166. — 3) n. Bez. *des 12ten* Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912.

सुनन्दिनी (6. सु + न°) f. 1) *eine best. Pflanze*, = घृतकुमारी Râgân. 10,177. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑–⏑–, ⏑–⏑–⏑–– Colebr. Misc. Ess. 2,161 (VIII,5).

सुनफा f. = सुनफ़ *eine best. Constellation, wenn nämlich einer der Planeten* (mit Ausnahme der Sonne) *in der zweiten Stelle steht, während der Mond sich in der ersten befindet*, Varâh. Bṛh. 13,3. fgg. Lacôté 9,1. Verz. d. Oxf. H. 330,*b*,43. fgg.

1. सुनय m. *kluges Benehmen, Klugheit* H. an. 3,314. MBh. 1,129. R. 5,85,13. Kâm. Nîtis. 13,95. 15,32. Spr. (II) 4355.

2. सुनय 1) adj. *sich klug benehmend.* — 2) m. N. pr. *a*) pl. eines Volkes MBh. 6,371 (VP. 193). — *b*) eines Sohnes des Ṛta VP. 390. — *c*) eines Sohnes des Pariplava VP. 462. Bhâg. P. 9,22,41. — *d*) eines Bruders des Khanitra Mârk. P. 118,23. 25.

सुनयकर्मी m. N. pr. eines Mannes Târân. 261.

सुनयन 1) adj. (*f.* घा) *schönäugig*, f. *ein schönäugiges Mädchen* (= नारी Râgân. im ÇKDa.) Ragu. 9,52. Çaut. 26. Vikr. 68,7. 8. Prab. 7,5. — 2) *Antilope* Çaṇḍîk. im ÇKDa.

सुनयमी und °मित्र m. N. pr. zweier Männer Târân. 261.

सुनस 1) adj. *mit einer schönen Nase versehen* MBh. 1,723. R. 6,8,1. वदन, वक्त्र, मुख MBh. 3,15688. Bhâg. P. 3,8,27. 10,46,19. शिरस् MBh. 3,16487. 4,1047. 6,3908. 7,1368. — 2) f. घा N. pr. eines Flusses MBh. 6,338 (VP. 184).

सुनक्षु m. N. pr. eines Sohnes des Gâhnu Harîv. 1423. सुमक्षु die neuere Ausg.

सुनाकुत m. *Curcuma Zerumbet Roxb.* Çaṇḍîk. bei Wilson. सुनाकृत ÇKDa. nach ders. Aut.

सुनाग m. N. pr.; s. सोनाग.

सुनाथ adj. *eine gute Zuflucht bildend* AV. 12,3,27.

सुनादक (6. सु + ना°) m. *Muschel* Râgân. 13,124.

सुनाभ 1) adj. *mit einer schönen Nabe versehen:* चक्र MBh. 3,178. 6, 2596. 10,625. Verz. d. Oxf. H. 11,*b*,17 v. u. धनुस् *mit einem schönen Mittelstück —, mit einer schönen Griffstelle versehen* R. 1,33,13. — 2) m. *a*) *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. Gorr. 1,31, 7. — *b*) N. pr. α) verschiedener Personen: ein Rathgeber des Varuṇa MBh. 2,380. ein Sohn des Dhṛtarâshṭra 1,4544. 6,3899. ein Bruder des Vaǵranâbha Harîv. 8761. 8908. — β) eines Berges MBh. 2, 413. = हिरण्यनाभ, मैनाक Taik. 2,3,2. H. 1028. R. 5,7,36. 39. 55,13. — 3) wohl n. = चक्र *Rad, Discus* Bhâg. P. 3,3,6. 13,31. 19,5. 9,5,6.

सुनाभक m. = सुनाभ 2) *a*) R. 1,30,5.

सुनाभि adj. *mit guter Nabe versehen* AV. 4,12,6.

सुनाभ्य adj. Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,34 wohl nur fehlerhaft für सुनाभ; vgl. 11,*b*,17 v. u.

सुनामद्वादशी f. Bez. *eines best. zwölften Tages* Vâyu-P. im ÇKDa.

सुनामन् 1) adj. *einen guten Namen führend* AV. 8,6,4. — 2) m. N. pr. verschiedener Personen gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. भ्रुवादि zu 123. ein Sohn des Suketu MBh. 1,6989. des Ugrasena 2,598. 7,388. Harîv. 2028. 4778. 9098. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,23. des Vainateja MBh. 5,3587. ein Wesen im Gefolge Skanda's 9,2561. ein Daitja Harîv. 12696. सुमनस् die neuere Ausg. — 3) f. सुनामी N. pr. einer Tochter Devaka's und Gattin Vasudeva's Harîv. 1948. 2027. — Vgl. सोनामि, सोनामेय.

सुनायक m. *ein guter Führer* u. s. w., f. सुनायिका P. 7,3,46, Vârtt. 5, Schol.

सुनार m. 1) *Hundemilch* (शुनीस्तन्य). — 2) *Schlangenei.* — 3) *Sperling* H. an. 3,620. Med. r. 238. — Statt सुनारफणिकारी Ind. St. 8,165 ist nach Kern पुना रेफलकारी zu lesen.

सुनालक (von 6. सु + नाल) m. *Agati grandiflora* Çaṇḍîk. im ÇKDa.

सुनास adj. (f. घा) *eine schöne Nase habend* Bhâg. P. 3,20,30. 4,8,48. 21,13. 25,23. सुनासातिधुवाणि मुखानि MBh. 3,2197.

सुनासिक 1) adj. dass. Bhâg. P. 4,24,46. — 2) f. सुनासिका *Lasa hirta Banks* (काकनासा) Râgân. im ÇKDa.

सुनासीर s. शुनासीर. pl. (ed. Bomb. शु°) Bez. *bestimmter Götter* Bhâg. P. 4,7,7.

सुनिक m. N. pr. eines Ministers des Ripuñgaja VP. 466 (vgl. Verz. d. Cambr. H. 7,10). der gedr. Text. शुनक.

सुनिकृष्ट adj. *sehr niedrig, — gemein:* योनि MBh. 1,3067.

मुनिखात adj. *tief gegraben* Vjutp. 163.

मुनिक्षिप्तम् adv. *vollständig:* तच्च मुक्त्वा मु° Harıv. 7034.

मुनितम्बिनी s. u. नितम्बिन् 1).

मुनिद्र adj. *gut schlafend* Spr. (II) 4427.

मुनिद्रा f. *ein guter Schlaf:* °जननी नृणाम् Paṅkar. 2,8,8.

मुनिधिं m. *eine gute Stätte:* मुनिर्मधा निर्मथितः सुनिधा निष्कृतः कविः ṚV. 3,29,12. nach Sāy. instr.

मुनिनद् adj. *wohlklingend* Kir. 5,27.

मुनिभृतम् adv. *ganz im Geheimen* Hit. 21,8. 73,16.

मुनिमय adj. etwa *leicht zu vertauschen* P. 6,1,50, Vārtt., Schol.

मुनियत adj. *der sich gut zügelt:* वाचा so v. a. *die Rede unterdrückend* MBu. 3,16695.

मुनिरेत adj. *leicht auszutreiben* ṚV. 1,10,7.

मुनिलुपित s. u. लुपय् mit नि.

मुनिवृक्षण n. *ein gutes Ausleerungsmittel* Çiku. Saṃh. 3,6,8.

मुनिर्विण्ण s. u. निज् mit निस्.

मुनिर्मथ्य m. *richtige Anreibung* (des Feuers) ṚV. 3,29,12.

मुनिर्मल adj. *überaus rein* Açoṅâvad. 20.

मुनिर्मित m. N. pr. eines Dovaputra Lalit. ed. Calc. 49,4. 68,1. 378,6.

मुनिर्यास adj. *gutes Harz gebend;* f. या *eine best. Pflanze,* = तिङ्गिनी Bhâvapr. im ÇKDr.

मुनिशित adj. *gut gewetzt,* — *geschärft* MBu. 5,7155. 6,3342.

1. मुनिश्चय m. *ein fester Entschluss* R. 7,19,2.

2. मुनिश्चय adj. (f. या) *vollkommene Gewissheit über Etwas habend* Kathâs. 21,127.

मुनिश्चल adj. *ganz unbeweglich* Açoṅâvad. 23.

मुनिश्चित 1) adj. *fest entschlossen,* — *beschlossen,* — *stehend* H. 1491. Hall. 2,247. स्थितं मनः शत्रुवधे मुनिश्चितम् R. 3,28,10. मुनिश्चितां मतिं कृत्वा पश्चाद्व्ये R. Schl. 1,8,3. °म् adv. *ganz sicher* Spr. (II) 6192. — 2) m. *ein* Buddha Trik. 1,1,10. H. ç. 80 (मुनि° die Hdschr.).

मुनिश्चितपुर n. N. pr. einer *Stadt* Rāǵa-Tar. 4,183.

मुनिषण m. und n. (nämlich शाक) = मुनिषणक Trik. 2,4,33. H. an. 4,258. Med. n. 129. r. 266. Suçr. 2,471,17.

मुनिषणक m. und n. (nämlich शाक) *Marsilea quadrifolia* (ein als Gemüse gebrauchter Wasserfarn) AK. 2,4,5,11. Rāǵân. 4,30. Karaka 1,27. Suçr. 1,72,3. 73,9. 157,21. 221,3. 11. 2,342,20 (n.). Vâgbh. 1,6, 73. Kaiyadatta 73.

मुनिष्कं adj. *mit schöner Kette oder schönen Ringen geziert* ṚV. 4, 36,4. 7,56,11.

मुनिष्टप्त adj. *stark erwärmt, ganz flüssig gemacht:* घृत Harıv. 8440. *ganz gar gemacht:* तं मृगं सुप्तं कृत्वा सुनिष्टप्तं च R. Gorr. 2,56,25.

मुनिष्ठित s. u. स्था mit नि.

मुनिष्ठुर adj. *sehr rauh,* — *hart:* वाक्य MBu. 7,7477.

मुनिस्त्रिंश (6. सु + नि° m. *ein schönes Schwert* MBu. 6,5629.

मुनीत 1) adj. *a) gut geführt,* — *geleitet* (eig. und übertr.): चमूः । बलमुख्यैः सुनीता MBu. 2,197. सर्वं Spr. (II) 2979. कर्मन् 5557. नयाः 6868. — *b) gut gebahnt:* शिवः पन्थाः सुनीतो ऽत्र मया पूर्वतरं कृतः MBu. 2,1423. = सुनीतिसम्पन्न Nilak. — *c) von guter Führung,* — *gutem Benehmen:* पापं कृत्ति पुनीतानां (so beide Ausgg.) पद्माप्नोति सो ऽग्रम् MBu. 12, 11074. पुनीतानां नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यत इति स्मृतेर्ज्ञानेन पवित्राणां सौष्ठ्यानामित्यर्थः Nilak. — 2) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Subala, VP. 4,23,2. — 3) n. *gutes* —, *kluges Benehmen, Klugheit* (Gegens. अपनीत) MBu. 6,888. Spr. (II) 398. 7073. R. 3,46,11.

1. सुनीति und सुनीति f. 1) *gute Führung, richtige Leitung:* सुनीतिर्नयसि त्रायसे जनम् ṚV. 2,23,4. 10,63,13. TBr. 1,4,8,6 (instr.). ṚV. 5,43, 1. 8,49,11. — 2) *kluges Benehmen, Klugheit* H. an. 3,314. Med. t. 173. Mâlav. 10,14. Kathâs. 19,57. Daçak. 86,6. 7.

2. सुनीति und सुनीति 1) adj. *gut führend* ṚV. 10,78,2. 6,47,7. Kauç. 135. Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vidûratha Mârk. P. 116,10. — 3) f. N. pr. einer Gattin Uttânapâda's und Mutter Dhruva's Trik. 1,1,96. H. an. 3,314. Med. t. 173. Bhâg. P. 4,8,8. 15.

सुनीथ P. 6,2,144, Schol. 1) adj. *a) gute Leitung gewährend:* Âditja ṚV. 3,8,8. 5,67,4. दृढाय्वे 2,8,2. Sonne 1,35,7. 10. 62,13. 6,51,11. 10,47,2. — *b) gute Führung geniessend:* सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतः पात्ति ṚV. 8,46,4. — *c) sich gut betragend,* = धर्मशील Uṇâdis. 2,2. — 2) m. *a) ein Brahmane* Uṇâdis. im Sâṃkhjatattvak. nach ÇKDr. — *b)* N. pr. verschiedener Personen ṚV. 5,79,2. MBu. 1,2188 (schützt vor Schlangen). 2,297. Harıv. 1750 (verdorben). Kâpaṭava Ind. St. 4, 372. ein Sohn Kṛshṇa's Harıv. 9186. = Çiçupâla 5888. fg. MBu. 1,7019. 7051. 2,1410. ein Sohn Saṃnati's (Saṃtati's) Harıv. 1592. VP. 462. Bhâg. P. 9,17,3. Sushena's 22,40. VP. 469. Verz. d. Oxf. H. 40,b,13. Subala's (vgl. सुनीत) Bhâg. P. 9,22,47. ein Dânava Kathâs. 45,43. — 3) f. या N. pr. einer Tochter Mṛtju's (*des Todesgottes*), Gattin Aṅga's und Mutter Vena's, MBu. 12,2214. Harıv. 293. VP. 99. Bhâg. P. 4,13,18. 24. 14,2. st. dessen सुनीथकन्या Harıv. 74.

सुनील 1) adj. *dunkelblau.* — 2) m. *Granatbaum* Rāǵân. 11,76. — 3) f. या *gemeiner Flachs* Rāǵân. 16,74. = चणिका 8,147. *Clitoria ternatea Lin.* und = व्रततीतृण (?) Rāǵân. im ÇKDr. — 3) n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* ebend.

सुनीलक m. 1) *Eclipta prostrata* Roxb. (mit den Blättern färbt man *tief dunkelblau*) Rāǵân. 4,140. *ein der Terminalia tomentosa ähnlicher Baum* 9,140. — 2) *Sapphir* Rāǵân. 13,183.

सुनु adj. n. zum m. f. सुनौ *mit einem schönen Schiffe versehen* Vop. 3,96.

सुनृप m. *ein guter Fürst* Kâlakâkra 1,41.

सुनेतृ (6. सु + ने°) m. Bez. eines der 16 Ṛtvig Harıv. 11363. sonst उन्नेतृ.

सुनेत्र gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75. 1) adj. *einen guten Führer habend* oder *schönäugig.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBu. 1,3749. des Vainateja 5,3587. des 13ten Manu Harıv. 489. Mahâbh. P. 94,31. des Suvrata VP. 465, N. 13. N. pr. eines Mâraputra Lalit. ed. Calc. 390,5. eines Kâkravâka Harıv. 1217. — 3) f. या Bez. einer der neun Tushṭi im Sâṃkhja Tattvas. 39. — Vgl. सौनेत्र.

सुनेत्राधिपति m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 89.

सुनौ f. *ein gutes Schiff* VS. 21,7. — Vgl. सुनु.

सुन्द m. unter den Namen Vishṇu's MBu. 13,7034. N. pr. eines

Asura 1,76,31. fgg. Hariv. 218. R. 1,26,26. 27,7 (28,7 Gorr.). R. Gorr. 1, 23,24. 3,48,19. Spr. (II) 3661. 5511. Kathâs. 15,135. VP. 147, N. 1. eines Affen R. ed. Bomb. 6,41,3. — Vgl. उप°, देव°, नि°.

सुन्दर 1) adj. (f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. आ verdächtig) *schön* AK. 3,2,1. 3,4,24,163. H. 1445. Med. r. 239. Hall. 4,4. Personen Spr. (II) 7107. Râga-Tar. 5,76. Pañkar. 1,3,27. fem. MBu. 3,2085. 13583 (घति°). R. 7,5,34. Vishṇu MBh. 13,7036. °त्रिविक्रम Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4,1. 12, Çl. 48. सुन्दर voc. Kathâs. 13,107. 18,219. Bhâg. P. 9,14,20. सर्वाङ्गसुन्दरी Kathâs. 28,73. 32,103. सर्वाङ्गसुन्दरा (!) Z. d. d. m. G. 14,569,19. °सर्वाङ्ग Pañkat. 184,14. धू Bhâg. P. 4,24,46. 5,18,16. भुज 25,7. मुख 7,4,11. अधर (सुन्दरतर) 3,13,44. भङ्गीसंगीत° (वासवेश्मन्) Kathâs. 22,103. निराडम्बर° (विन्ध्येश्वर) Râga-Tar. 2,128. स्वभावसुन्दरं वस्तु Spr. (II) 7297. हास Bhâg. P. 1,11,10. गिर् Spr. (II) 6452. ध्वनि° Pañkar. 1,7,3. समन्दरमस्यन्दसुन्दरेयं (°रीयं) राजतरंगिणी Râga-Tar. 1,24. समृतास्वाद° (वासर) Kathâs. 34,130. ज्ञाति so v. a. *edel* Spr. (II) 2199. स्वाचारैः कति सुन्दराः 6110. न त्वया सुन्दरं कृतम् so v. a. *gut, recht* Pañkat. 130,4. 164,11. यदि मम मृत्युर्भविष्यति तदपि सुन्दरतरमेव 47,18. 88,15. तदसुन्दरम् *nicht gut, — richtig* Kull. zu M. 4,222. — 2) m. *a*) = तिलक *Clerodendron phlomoides* (nach Watson) Râgân. 10,43. vulgo सुँदरी Subhadrâ im ÇKDa. — *b*) *ein Palast von bestimmter Form;* s. u. सुनन्द 1) *a*). — *c*) *der Liebesgott* Çârdûlav. bei Wilson. — *d*) N. pr. verschiedener Personen Burnouf, Intr. 433. ein Fürst LIA. 2,25. ein Sohn Pravillasena's VP. 4,24,12. ein Autor Verz. d. Oxf. H. 137,*b*, No. 269. 385,*b*, No. 492. Harr. Anth. 236. Notices of Skt Mss. 1,230. ein Schlangendämon Vjutp. 86. — 3) f. ई *ein schönes Weib* und *Weib* überh. AK. 2,6,3,4. H. 505. an. 3,619. Med. Hall. 2,226. Spr. (II) 1425. 1384. Varâh. Bṛh. S. 103,13. Râga-Tar. 1,254. वर° Kâraṇḍ. 22. सुन्दरि voc. R. 3,52,29. Çiç. 38,18. 39,30. 107,9. Milav. 41,14. Spr. (II) 1516. Çuk. in LA. (III) 36,19. यशःपुर° Râgat. 16,59. Sâh. D. 33,20. महासुर° Kathâs. 29,34. त्रैलोक्य° (voc.) 30,64. भुवर° 109,152. नृप° Râga-Tar. 6,138. विद्याधर° Kumâras. 1,7. सकलवैरिवृन्द° Verz. d. Oxf. H. 139,*b*, 4. पिक° *Kuckucksweibchen* Z. d. d. m. G. 27,76. — *b*) *eine best. Pflanze* H. an. Med. (तनु fehlerhaft für तरु). *Solanum indicum* Râgân. 4,136. *Gelbwurz* Çârdaṇ. im ÇKDa. — *c*) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XVIII,3). — *d*) *eine best. Gottheit,* = त्रिपुरसुन्दरी Tantrasâra im ÇKDa. °भवन Râga-Tar. 5,100. Verz. d. Oxf. H. 94,*b*, 25. 99,*b*, 35. als Verfasserin mystischer Gebete bei den Tântrika 101,*b*, 6. N. pr. einer Fee (योगिनी) Tantrasâra im ÇKDa. — *e*) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Kathâs. 10,144. 45,236. 49,205. 57,75. Lalit. ed. Calc. 331,18, eine Tochter Çvaphalka's Hariv. 1918. 2085. Vaiçvânara's VP. 147, N. 7. Gattin Mâljavant's R. 7,5,34. — 4) n. Bez. *des 5ten Buches im* Râmâjaṇa R. Gorr. 1,4,75. 95. im Adhjâtmarâmâjaṇa Verz. d. Oxf. H. 29,*b*, 17. — Vgl. दिक्°, पुण्य°, रति°, राम°, रुद्र°, लोक° (in der ersten Bed. auch MBh. 3,13383), ब्रह्म°, शिव°, सर्वाङ्ग°, सौर°, सारण°, सिद्धान्त°, सुर°, सुरलोक°, सौन्दर्य.

सुन्दरक (von सुन्दर) 1) adj. *recht schön.* — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 20,117. Daçak. 67,14. — 3) °रिका *a*) N. pr. eines Frauenzimmers Schiefner, Lebensb. 265 (35). — *b*) °तीर्थ N. pr. eines Tirtha MBh. 3,8035. °क्षेत्र desgl. 13,1707. — Vgl. योष्म°, करिसुन्दरिका.

सुन्दरनामातृमुनि m. N. pr. eines Autors Hall 112.

सुन्दरता (von सुन्दर) f. *Schönheit:* रूपे Spr. (II) 3129. सर्वाङ्ग° Kâraṇḍ. 20.

सुन्दरदेव m. N. pr. zweier Autoren Hall 17. 200. Verz. d. B. H. No. 648. Notices of Skt Mss. 1,102. 113.

सुन्दरनन्द m. N. pr. eines Mannes Vjutp. 32. Lalit. ed. Calc. 164, 16. fgg. 175,14. fgg. Hiouen-thsang 1,313. — Vgl. सुन्दरानन्द.

सुन्दरपाण्डदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Z. d. d. m. G. 27,101. सुन्दरवीरपाण्ड्य v. l.; vgl. LIA. 2,25. 110.

सुन्दरपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 51,15. 52,4. °माहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 30,*a*, 16. Mack. Coll. 1,89.

सुन्दरमन्य adj. *sich für schön haltend* Daçak. 85,12.

सुन्दरवंश m. pl. N. pr. eines Volksstammes MBh. 3,2731.

सुन्दरवती (von सुन्दर) f. N. pr. eines Flusses LIA. 1,103.

सुन्दरवर्ण m. N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 4,16.

सुन्दरवीरपाण्ड्य s. सुन्दरपाण्डदेव.

सुन्दरशुक्ल m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 384,*a*, No. 473.

सुन्दरसेन m. N. pr. eines Prinzen Kathâs. 101,46.

सुन्दरुचि m. N. pr. eines Fürsten Târan. 263.

सुन्दरानन्द m. N. pr. zweier Personen Colebr. Misc. Ess. 2,57. Schiefner, Lebensb. 236 (6). — Vgl. सुन्दरनन्द.

सुन्दरारण्य n. N. pr. eines *Waldes:* °माहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 30, *a*, 16. Mack. Coll. 1,89.

सुन्दरीतापनी f. Titel einer Upanishad Ind. St. 1,250. 252. 471. Weber, Rîmat. Up. 271. °तापिनी Verz. d. Oxf. H. 390,*b*, No. 35.

सुन्दरी देवी f. N. pr. einer *Fürstin* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, Çl. 42.

सुन्दरीशक्तिदान n. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 1,272. °स्तोत्र 221.

सुन्दरेश्वर m. *eine Form* Çiva's Mack. Coll. 1,89. 91. LIA. 2,24. fg. 110.

सुन्द्र m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,895. 953.

सुन्वत्स् m. (nom. सुन्वान्) N. pr. eines Sohnes des Sumantu Bhâg. P. 12,6,75. सुन्वान Verz. d. Oxf. H. 55,*a*, 38.

सुन्वान s. सुन्वत्स्.

सुपक्व 1) adj. *vollständig gar, ganz reif* (eig. und übertr.) AV. 5,29. 6. Sucr. 1,161,9. Spr. (II) 5943. Pañkar. 1,6,37. Bhâg. P. 1,8,40. योग 3,15,7. — 2) m. *eine Mango-Art* Çârdaṇ. im ÇKDa.

सुपर्ण adj. *schöngeflügelt* AV. 13,2,2.

सुपक्ष्मन् *mit schönen Augenwimpern versehen* Varâh. Bṛh. S. 12,10.

सुपङ्क m. n. *guter Lehm* Spr. (II) 6588.

सुपतन adj. *gut fliegend* zur Erklärung von सुपर्ण Nir. 3,12. 4,3.

सुपति m. *ein guter Gatte* Hariv. 4833.

1. सुपत्र n. *schönes Blatt,* Bez. *des Blattes der Laurus Cassia* Çârdaṇ. im ÇKDa.

2. सुपत्र 1) adj. *schöne Flügel oder Blätter habend.* — 1) m. *a*) *ein best. mythischer Vogel* Mân. P. 1,21. — *b*) *eine Schilfart* (पल्लिवाह) Râgân.

8,126. angeblich *Helianthus annuus* 4,176. — 3) f. या *Asparagus racemosus* Râǵan. 4,119. *Glycine debilis* 19. *Prosopis spicigera* 8,24 = रुद्रजटा 3,67. *Beta bengalensis* Râǵan. im ÇKDm. — 4) f. ई = गङ्गापत्री Râǵan. 10,166.

सुपत्त्रक 1) m. *Moringa pterygospermum* Râǵan. 7,26. — 2) f. सुपत्त्रिका *Glycine debilis* Râǵan. 4,17. = उत्तुका *eine best. Schlingpflanze* 3,114.

सुपत्त्रित adj. *schön mit Federn besteckt:* बाण Harîv. 16314. so ist wohl auch MBh. 8,4246 st. सुपत्त्रित zu lesen.

सुपत्नी (von d. सु + पति) adj. f. *einen guten Gatten —, Herrn habend:* रोदसी ṚV. 6,3,7. घर्मंकृणोड्वर्सः सुपत्नीः 44,23. नारीरविधवाः सुपत्नीः 10,18,7. AV. 11,1,14. VS. 20,40. TS. 1,1,10,1. 3,5,6,1. Indrâṇî TBr. 2,4,2,7.

सुपद्य u. s. w. = सुपथ gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80. nom. सुपन्थाम् AK. 2,1,16. H. 981. Spr. (II) 7434. — Vgl. सोपन्थ्य.

सुपथ 1) n. (in der späteren Sprache m.) *guter Pfad, gangbare Strasse* Çaṇḍan. im ÇKDm. ṚV. 1,25,12. 42,7. नयं सुपथा राये अस्मान् 189,1. 6, 64,1. सुगेतं तें सुपथा पर्वतेषु 4. 8,86,13. 10,44,2. Nir. 12,42. *der Weg des Rechten:* विषयाकृष्यमाणा हि तिष्ठन्ति सुपथे कथम् Kathâs. 20,192. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 134,a,17. fg.

सुपथितर compar. zu सुपथिन् P. 8,2,17, Schol.

सुपथ्य 1) adj. *leicht gangbar; sehr zugänglich.* — 2) f. या = श्वेतच्छदा *eine Spinatart* Râǵan. 7,127. — 3) n. *ein gangbarer Pfad* VS. 18,11.

सुपद् adj. nom. सुपात्, f. सुपदी P. 5,4,140. gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139. Vop. 3,145. fg. 6,31. *schön —, schnellfüssig:* Saramâ ṚV. 3,31,6.

सुपद् n. 1) *ein schönes Wort* MBh. 3,16798. — 2) *das Wort* सु VS. Pair. 4,21. 186. 188.

सुपद्म 1) m. Titel einer Grammatik Verz. d. Oxf. H. 176,b,No. 401. 192,a, 25. Verz. d. Kop. H. 102,a. Colebr. Misc. Ess. 2,47. 56. °धातुपाठ, °परिशिष्ट, °मकरन्द 47. — 2) f. या *eine best. Wurzel,* = वचा Çaṇḍaṛ. im ÇKDm.

सुपप्तनि f. *guter —, rascher Flug:* सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः ṚV. 1, 185,5. nach ṚV. Pair. 7,15 Dehnung von °नि; ist wohl als instr. zu fassen.

सुपर्णयस् adj. P. 6,2,117, Schol. Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4,222 (सुँ° Aufrecht).

सुपरमतुरिता f. N. pr. einer Gottheit Kâlakârma 4,32.

सुपराक्रम adj. *überaus mächtig, — gewaltig* Hit. 4,14. सपराक्रम MBh. 1,5996.

सुपरि gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80. Bildung eines Hypokoristikons von einem mit सुपरि beginnenden Namen P. 5,3,84. — Vgl. सोपर्व.

सुपरिक m. Hypokoristikon von सुपरिदत्त u. s. w. P. 5,3,84, Schol.

सुपरिदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Schol.

सुपरिपूजित adj. *hoch geehrt* Vsuṭṭ. 165.

सुपरिपूर्ण adj. *sehr voll* Vsuṭṭ. 12.

सुपरिभाष adj. (f. या) *etwa mit schönen Erläuterungen, Nutzanwendungen versehen:* कथा: Verz. d. Oxf. H. 47,a,11 v. u.

सुँपरिय und सुपरिल्ल m. Hypokoristika von सुपरिदत्त u. s. w. P. 5, 3,84, Schol.

सुँपरिविष्ट (विष्) adj. *wohl zugerüstet* VS. 6,13.

सुपरिव्राज् m. *ein anständiger Mönch* Vaṇîn. Bṛn. S. 51,20.

सुपरिशुद्ध adj. *sehr rein* Vsuṭṭ. 20.

सुपरिश्रान्त adj. *sehr ermüdet* MBh. 3,2535.

सुपरीक्षण n. *genaue Prüfung, — Untersuchung* Kâm. Nîtis. 4,2.

सुपरीक्षित adj. *genau geprüft, — untersucht* M. 7,60. 217. Kâm. Nîtis. 7,36. Spr. (II) 405.

सुपरुष adj. *überaus rauh:* वायु Vaṇîn. Bṛn. S. 27,3.

सुपर्ण 1) adj. (f. ई) *a) schön geflügelt:* पुत्रान इन्दो रुरितः सुपर्णः (oder *Adlerweibchen*) ṚV. 9,86,37. उषसः 10,88,19. = रात्रयः Nir. 7,31. — *b) schöne Blätter habend.* — 2) m. *a) ein best. grosser Vogel, Raubvogel: Adler, Geier* (nach H. an. und Med. = स्वर्णचूड); später (schon bei Manu) *ein mythischer Vogel;* wird mit Garuḍa, dem Vehikel Vishṇu's, identificirt (Garuḍa ist aber auch König der Suparṇa). AK. 1,1,1. 25. H. 231. an. 3,231. fg. (सुपर्णा: st. सुवर्णा: zu lesen). Med. n. 83. Hâlây. 1,30. Gaṇâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,22. हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि AV. 12,1,31. मा त्वा श्येन उदधोन्मा सुपर्णाः ṚV. 2,42,2. 1,164, 20. bringt zu den Menschen den Soma 4,26,4. 8,89,8. 9,48,2. 85,11. 86,24. श्येनस्य पुत्रः 10,144,4. Ait. Br. 4,20. 6,14. सुपर्णो वस्ते *kleidet sich als Vogel* ṚV. 8,75,11. Nir. 9,19. वर्षः सु° ṚV. 10,73,11. AV. 1, 24,1. 2,27,2. 30,3. 4,6,3. 20,3. VS. 12,4. 17,72. मरुत् 24,25. 34. 37. Çat. Br. 6,1,2,35. 14,6,2,2. TS. 7,5,6,5. Çâṅkh. Br. 18,4. यतरत्तःपिशाचांश्च गन्धर्वाप्सरसो ऽसुरान् । नागान्सर्पान्सुपर्णांश्च पितॄंश्च पृथगगणान् ॥ M. 1,37. 3,196. 12,46. MBh. 3,11646. सुपर्णानां पतिर्गो पक्षिणाम् 5,3586. 7,2572. 12,1315. 13,1378. 16,62. Harîv. 225. 11830. R. 1,39,14. 2,25,31. R. Gorr. 2,25,27. 117,9. 3,33,20. 35,91. 39,13. 29. 43,20. 44,18. 4,18,23. 5,22,29. Raghu. 10,62. VP. 149. Mârk. P. 22,30. Bhâg. P. 3,1,33. 3,3 (so v. a. *wie ein zweiter* Garuḍa). 5,16. 21,22. 28,24. 4,1,24. 18,24. 5,24,6. 8,4,19. 5,29. 18,9. 10,17,1. 11. 11,6. so heissen die Açvin ṚV. 4,43,3. MBh. 1,722. Bildlich insbesondere *a) die Sonne als Vogel* Naigh. 5,4. Nir. 10,45. ṚV. 1,35,7. दिव्य 164,46. 5,47,3. यरुण 10,30,3. 35,6. 114,4. 123,6. 149,3. AV. 7, 41,2. du. *Sonne und Mond* ṚV. 10,114,3. — *β) der Mond* ṚV. 1,105, 1. 164,52. 9,71,9. daher auch = सोम 86,1. 97,38. 10,114,8. — *γ) Wolken* ṚV. 1,164,47. — Drei Suparṇa (vgl. त्रि°) AV. 5,28,8. 11, 4,4. — Nach den Commentatoren so v. a. रश्मि Naigh. 1,5. Nir. 4,3. 7,24. so v. a. यज्ञ (weil auch *Sonne*) Naigh. 1,14. — *b) Bez. einer best. Truppenaufstellung* MBh. 7,795. fg. — *c)* personificirt als angeblicher Ṛshi TS. 4,3,3,2. Kâṭh. 39,7. MBh. 12,13566. fgg. Verfasser von Vilakh. 11. mit dem patron. Târkshjaputra Verfasser von ṚV. 10,144. unter den Devagandharva MBh. 1,2550. 2555. ein Asura 2672. — *d)* N. pr. eines Berges Bhâg. P. 5,20,4. — *e)* = n. *ein best. Abschnitt vedischer Verse:* पः सुपर्णो यजुर्नाम ऋग्देगात्रस्त्रिवृच्छिराः MBh. 12,1032. — *f) Cassia fistula Lin.* H. an. Med. — 3) f. या *a) die Mutter Garuḍa's* H. an. Med. Bhâg. P. 6,6,22. nach Sîs. die Mutter von Prâǵâpatja Âruṇi Suparṇeja Ind. St. 2,93. — *b) Lotuspflanze, Lotusteich* H. an. Med. — 4) f. ई *a)* unbestimmte Personification neben Kadrû TS. 5,1,6,1. Çat. Br. 3,2,4,1. 6,2,2. fgg. Kâṭh. 23,10. = गरुडी MBh. 3,14208. fgg. — *b)* N. einer Zunge des Agni Gṛihya 1,22. — *c) eine*

best. Schlingpflanze, = पलाशी Râǵân. 3,139. = रेणुका (vgl. सुपर्णिका) 6,114 (v. l. सपर्णी). — 4) n. *ein best. Abschnitt vedischer Verse* (103 an Zahl) Çâṅkh. Çr. 9,20,14. सू° Ind. St. 3,276. N. eines Sâman 244,a. — Vgl. त्रि°, महा°, सोपर्णा, सौपर्णीय.

सुपर्णक 1) m. *Alstonia scholaris* Gaṇîn. im ÇKDr. Râǵân. 12,35. *Cassia fistula Lin.*-Ratnam. 21 falsch für सुवर्णक. — 2) f. सुपर्णिका *Glycine debilis* Râǵân. 4,17. = स्वर्णजीवन्ती 3,30. = पलाशी, रेणुका und वाकुची Râǵân. im ÇKDr.

सुपर्णककुमार m. pl. *eine best. Klasse von Göttern* bei den Ǵaina H. 90.

सुपर्णकेतु m. Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's Hall. 1,22. MBh. 3, 12330. Bhâg. P. 3,33,37.

सुपर्णचित्त् adj. *als* Suparṇa *geschichtet* VS. 27,15. Çat. Br. 5,7,2,3.

सुपर्णचित्य adj. dass. Verz. d. B. H. No. 259.

सुपर्णीवातु m. *best. Dämonen der Gattung* Jâtu ṚV. 7,104,22.

सुपर्णराज m. Bez. Garuḍa's R. 5,3,62.

सुपर्णसद् adj. *auf dem* Suparṇa *sitzend* TS. 4,4,2,1.

सुपर्णसुवन adj. *wo die Adler nisten:* गिरि AV. 5,4,2.

सुपर्णाध्य (सुपर्ण + ध्याध्या) m. *Mesua Roxburghii* Taik. 2,4,20.

सुपर्णाध्याय m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 95. fgg.

सुपर्णिन् (!) m. = सुपर्ण = गरुड Burnouf, Intr. 330.

सुपर्णीतनय m. metron. Garuḍa's Hall. 1,30.

सुपर्णेय m. metron. von Suparṇâ (nach Sây.) Ind. St. 2,95. — Vgl. सौपर्णेय.

सुपर्यवसित adj. *glücklich zu Ende geführt* Spr. (II) 3691. MBh. 12, 3078. सुपर्यवसितार्थ *vollkommen vertraut mit Etwas* 7887.

सुपर्याप्त adj. *recht geräumig:* गृह M. 7,76.

सुपर्याशीर्दत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Vârtt. 1, Schol.

सुपर्वण adj. = सुपर्वन् *hoch gefeiert* MBh. 13,1233. Nîlak. fasst सुपर्वणः als gen.

सुपर्वत m. N. pr. eines Sâdhja Harîv. 11537.

सुपर्वन् P. 6,4,144, Vârtt. 1. 1) adj. P. 4,1,12, Schol. *a) mit schönen Knoten versehen:* Pfeil R. 5,23,19. — *b) hochgefeiert, berühmt* Kîm. Nîtis. 1,4. Journ. of Am. Or. S. 6,518 (*of good progeny* Hall). 7,12, Çl. 47 (*deity* Hall). — 2) m. *a) Rohr, Bambusrohr* Taik. 3,3,272. H. an. 3,436. Med. n. 225. Hit. 108. — *b) Pfeil.* — *c) Rauch* Taik. H. an. Med. — *d) eine Gottheit* AK. 1,1,2,2. Taik. H. 88. H. an. Med. Hall. 1,4. — *e)* = पर्वन् H. an. Med. — *f)* N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens Harîv. 11543. eines Sohnes des 10ten Manu Mârk. P. 94,16. Antarikshа's VP. 463, N. 14. — Vgl. सोपर्व.

सुपर्वा f. = श्वेतदूर्वा Râǵân. 8,112.

सुपलाशित n. *ein Fliehen zu rechter Zeit* Spr. (II) 7121.

सुपलाशी adj. *schön belaubt* ṚV. 10,43,4. 135,1. Nir. 12,29.

सुपविं adj. *mit guter Radfelge versehen:* Wagen AV. 4,12,6.

सुपवित्र n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑, ⏑⏑⏑⏑– – Colebr. Misc. Ess. 2,161 (IX, 9).

सुपाकक adj. f. सुपाकिका P. 7,3,46, Vârtt., Schol.

सुपाकिनी f. *eine der* शटी *verwandte Pflanze* (गन्धपत्रा) Râǵân. 6,233.

सुपाक्य n. *eine Salsart* Râǵân. 6,98.

सुपाञ्चालक adj. Schol. zu P. 7,3,13 und zu 1,1,72, Vârtt. 11. Vop. 7,2. 18.

सुपाणि adj. *schönhändig:* Mitra-Varuṇa ṚV. 1,71,9. 3,56,7. die Açvin 1,109,4. Savitar 3,33,6. 7,45,4. VS. 11,63. *eine geschickte Hand habend:* Tvashṭar ṚV. 3,54,13. 7,34,10.

सुपात्र 1) m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 52. — 2) n. *a) ein schönes Gefäss* Pâṇ. 3,7,30. — *b) eine* (insbes. zum Empfang einer Gabe) *sehr würdige Person* Spr. (II) 2751. 3841. 4256. 5793. 6002. 7189. Praçnottarân. 29 in Monatsberr. d. K. Pr. Ak. d. Ww. 1868, S. 111. Bhâg. P. 7,14,41.

सुपान adj. *bequem —, leicht zu trinken* P. 3,3,128, Schol. Vop. 26,196.

सुपानान्न n. sg. *schöne Getränke und Speisen* Varâh. Bṛh. S. 52,6.

सुपामन् m. N. pr. eines Mannes gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

सुपार adj. (f. आ) 1) *leicht zu überschreiten:* Flüsse ṚV. 3,33,9. 7,18, 8. — 2) *leicht zu ertragen:* गोभिर्मिमिनुं दीधिरे सुपारम् ṚV. 3,30,3. — 3) *leicht vorübergehend:* Regen ṚV. 1,152,7. — 4) *glücklich hinüberbringend, zum Erfolg führend:* नवो सुपारो अतिपारयो नः ṚV. 6,47,7. सुपारः सुन्वतः सखा 1,4,10. 8,13,2. 3,30,8. द्यौ TS. 1,2,2,1 (सुतीर्था VS.). — 5) Bez. einer der neun Arten von Tushṭi im Sâṁkhja Tattvas. 39.

सुपारितत्र adj. *der sein Gebiet leicht bemeistert:* Varuṇa ṚV. 7,87,6.

सुपारग m. unter den 34 Ǵâtaka Çâkjamuni's Vaiḍ. beim Schol. zu H. 233. Ǵâtakamâlâ 34. zerlegt sich in 6. सु + पारग.

सुपारण adj. *leicht zu lesen, — studiren* Harîv. 12107.

1. सुपार्श्व m. n. *eine schöne Seite, — Rippengegend:* कवी सुपार्श्वे MBh. 2,907.

2. सुपार्श्व 1) adj. (f. आ) *schöne Seiten, — Seitentheile habend:* धनुस् MBh. 4,1326. गदा 5,2041. — 2) m. *a) Ficus infectoria* Râǵân. 11,125. Dhanv. 3,43. — *b)* N. pr. α) verschiedener Männer Harîv. 9204. ein Fürst MBh. 1,2665. 5,77. ein Sohn des Rukmaratha Harîv. 1079. des Çrutâju VP. 390. des Dṛḍhanemi 453. Bhâg. P. 9,21,27. fg. N. pr. des 7ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 27. — β) eines Râkshasa R. 6,69,14. 7,5,39. 6,93,38 (ed. Bomb.). — γ) eines mythischen Vogels, Sohnes des Sampâti, R. 4,61,34. 50. — *d)* eines Berges MBh. 2,1031. Goldm. Bhuvanak. 32. VP. 168. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,9. Mâlav. P. 54,20. fg. 56,16. Bhâg. P. 5,16,12. 23. Pâṇ. 1,10,17.

सुपार्श्वक m. 1) *Ficus infectoria* AK. 2,4,2,28. — 2) N. pr. *a)* eines Sohnes des Kîtraka Harîv. 1920. 2088. — *b)* eines Sohnes des Çrutâju Bhâg. P. 9,13,33. — *c)* des 3ten Arhant's in der zukünftigen Utsarpiṇî H. 53.

सुपार्व adj. *gut sich läuternd:* Soma TS. 7,5,20,1.

सुपाश adj. etwa *eine schöne Schlinge führend:* Gaṇeça Verz. d. Oxf. H. 132,*b*,4 v. u.

सुपाशी f. *eine tüchtige Schlinge* AV. 3,11,8.

सुपिङ्गल gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75. f. आ Bez. zweier Pflanzen: = द्योतिष्मती Râǵân. 3,70. = ब्रोवत्ती 26. — Vgl. सौपिङ्गल.

सुपित्र्य adj. *das Väterliche wohl bewahrend* ṚV. 10,113,6.

सुपिप्पली adj. (f. आ) *gute Frucht (Beeren) tragend:* Kräuter ṚV. 7, 101,5. AV. 3,17,5. VS. 6,2. 11,28. 48. 21,56. 28,20. TS. 7,5,20,1.

TBa. 2,7,16,4.

सुपिंश् adj. etwa *schmuck:* पिशा इव सुपिशः RV. 1,64,8.

सुपिष्ट m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. pl. *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि zu 2,4,69. — Vgl. सौपिष्ट fg.

सुपिस् adj. *gut gehend;* Declination P. 8,3,59, Schol. Vop. 3,151.

सुपीडन n. *starkes Drücken* Çabdârthak. bei Wilson.

सुपीत 1) m. N. des 5ten Muhûrta Ind. St. 10,296. — 2) n. a) *Möhre, gelbe Rübe, Daucus Carota* Râǵan. 7,34. — b) *gelber Sandel* Ratnam. 141.

सुपीन adj. *hübsch feist, — dick:* कपोलौ R. 3,52,29.

सुपीवन् adj. P. 3,2,74, Schol. Vop. 26,69.

सुपीवस् adj. *feist* RV. 10,94,11.

सुपूत oder सुपूय adj. *gut läuternd:* पवित्रेण सुप्वा VS. 1,3. सुपुनो AV. 12,2,11.

सुपुंसी adj. f. *einen guten Mann habend* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,177.

सुपुङ्ख adj. s. u. पुङ्ख 1). Auch MBa. 8,4246.

सुपुट m. Bez. zweier Knollengewächse: = कोलकन्द Râǵan. 7,83. = विसुकन्द 89.

1. सुपुत्र m. *ein guter Sohn* Spr. (II) 1418. 4370. 6428.

2. सुपुत्र 1) adj. (f. आ) *treffliche —, viele Kinder habend:* Aditi RV. 3,4,11. TBa. 3,7,5,10. RV. 10,85,25. AV. 14,2,42. MBa. 3,1871. Weber, Kṛṣṇaǵ. 291. — 2) n. *die Frucht der Flacourtia cataphracta, welche zehn Körner enthält,* Ausw. 77.

सुपुत्रिका f. *eine best. Pflanze,* = डसुका Râǵan. 3,114.

सुपुर n. *eine schöne Burg* Harîv. 8669 nach der Lesart der neueren Ausg; स्वपुर die ältere Ausg.

सुपुरुहूत adj. *unter vielen schönen Namen angerufen* Bhâg. P. 6,9,30.

सुपुष्कर 1) m. *Kugelamaranth* Râǵan. 10,130. — 2) f. आ *Hibiscus mutabilis Lin.* Râǵan. 5,79.

सुपुष्कल adj. *sehr reichlich:* भक्ष्यभोज्यैः MBa. 1,7714. ज्ञान Bhâg. P. 11,9,31. 29,26.

सुपुष्ट adj. *wohlgenährt:* शिशुगोयुग Pañkat. 182,13.

सुपुष्टि f. *gutes Gedeihen* AV. 13,7,4.

1. सुपुष्प n. 1) *schöne Blüthe,* Bez. *der Gewürznelke* Râǵan. im ÇKDa. — 2) *die Menses der Frauen* Tantrasâra im ÇKDa.

2. सुपुष्प 1) adj. *schöne Blüthen habend.* — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: *Pterospermum suberifolium* Râǵan. 10,105. *Kugelamaranth,* = दरिद्र und शिरीष Râǵan. im ÇKDa. = रक्तपुष्पक Çabdaṃ. im ÇKDa. — 3) f. आ *Anis* Râǵan. 4,15. = द्रोणपुष्पी (wohl *Phlomis ceylanica Roxb.*) 5,138 *Clitoria ternatea* (v. l. ई) 3,76. — 4) f. ई *Andropogon aciculatus* Râǵan. 3,120. *Clitoria ternatea* (v. l. आ) 3,76. = श्वेतापराजिता, जीर्णफञ्जी, गिम्रेया (*Anis*) und द्रोणपुष्पी Râǵan. im ÇKDa. = कदली Çabdaṃ. ebend. — 5) n. *Curcuma longa* Râǵan. 9,125. *Hibiscus mutabilis* 12,150. *Tabernaemontana coronaria* 4,170. = तूल 9,97.

सुपुष्पक 1) m. = शिरीष Râǵan. 9,58. — 2) f. सुपुष्पिका *Argyreia speciosa* oder *argentea* Râǵan. 3,106. *Bignonia suaveolens* Râǵan. im ÇKDa. रक्तपुष्पिका unsere Hdschrr. 10,59.

सुपुष्पित adj. *mit schönen Blüthen versehen:* वन MBa. 1,4867. 13, 4562. R. 3,55,45. Spr. (II) 7108. *mit schönen Blumen geschmückt:* Person MBa. 3,13595.

सुपुष्य m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 3,13.

सुपूजित adj. *hoch geehrt, in hohen Ehren stehend* Spr. (II) 2444. MBa. 5,7538. 16,62. R. 1,48,14. R. Gorr. 1,17,1.6. Verz. d. Oxf. H. 30,a, No. 75, Z. 9. *mit grosser Sorgfalt behandelt* so v. a. *gut gereinigt:* कलश Vaitân. Bṛh. S. 24,7.

सुपूत gaṇa सैकलादि zu P. 4,2,75. adj. *wohl geklärt:* घृत RV. 4,57, 3. 5,12,1. 7,4,1. ऊर्मि 10,30,3. — Vgl. सोपूत.

सुपूर 1) adj. (fg. आ) *leicht zu füllen:* कुलादिका, मूषिकाञ्जलि Spr. (II) 7109. — 2) m. = सुपूरक *Citrone* Râǵan. im ÇKDa.

सुपूरक m. 1) *Citrone* (vgl. बीजपूर) Râǵan. 11,149. — 2) *Agati grandiflorum* Ratnam. 76.

सुपूर्ण adj. *ganz voll:* Schlauch RV. 6,48,18. पिबा सुपूर्णमुदरम् 8,2,1. 3. VS. 3,49. Âçv. Çr. 1,11,6. R. 1,53,4. Vaitân. Bṛh. S. 24,37. कुण्डलाभ्यां सुपूर्णाभ्यां कर्णाभ्याम् so v. a. *mit Ringen schön geschmückt* MBa. 4,189.

सुपूर्वाह्ण loc. *zeitig am Vormittag* Ait. Br. 1,23. Âçv. Çr. 4,8,11. Kâty. Çr. 8,2,37.

सुपूर्वी adj. *speisereich:* नर्तस इन्द्रं शरदः सुपूर्वीः RV. 7,37,7.

1. सुपेश m. *schönes Gewebe:* ऊर्णानाभिः °कृत् Bhâg. P. 11,7,34.

2. सुपेश adj. = सुपेशस्. लीलावतारः पुरुषस्य Bhâg. P. 2,6,45.

सुपेशस् adj. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,222. *reich an Schmuck, schön verziert: schön, zierlich:* रथि RV. 1,48,13. Wagen 47,2. 49,2. Rosse 8,57,16. Hand 1, 30,13. Weib 10,27,12. 114,3. TBa. 3,1,2,4. वर्ण RV. 2,34,13. नक्षोषासा 1, 13,7. 188,6. Himmel und Erde 6,70,1. देवी: 9,5,8. die Açvin VS. 20,74. नर Âçv. Gṛhy. 1,17,16. सुमतयः RV. 2,32,5. मक्ष 7,32,13. वाच् Çiks. Ça. 7,10,13. RV. 5,57,4. 9,79,5. 81,1. रत्नानां पद्मरागोऽस्मि पद्मकोशः सुपेशसाम् Bhâg. P. 11,16,30. Männer 2,9,11.

सुपेषस् adj. *gedeihlich:* सुपेषः पेषैः VS. 3,37. TBa. 3,6,2,2.

सुप्त s. u. स्वप् und vgl. सौप्तिक.

सुप्तक (von सुप्त) n. *Schlaf:* घलीकसुप्तकं कर् so v. a. *sich schlafend stellen* Kathâs. 68,9. व्याजसुप्तकं कर् dass. 70,33. अर्धसुप्तिका adj. f. *halb schlafend* Weber, Kṛṣṇaǵ. 273.

सुप्तघातक adj. *einen Schlafenden tödtend,* = दृशेर् Taik. 3,1,19.

सुप्तघ्न 1) adj. dass. — 2) m. N. pr. eines Râkshasa R. Gorr. 1,4. 107. 5,80,1. 6,18,14. 69,11. 7,5,36.

सुप्तच्युत adj. *im Schlafe herabgefallen* Kathâs. 15,92.

सुप्तज्ञान m. *Mitternacht* (*da die Leute schlafen*) Kâśa beim Schol. zu H. 145. Ǵaṭâdh. im ÇKDa.

सुप्तज्ञान n. *Traum* Taik. 3,3,270. Ǵaṭâdh. im ÇKDa. — Vgl. सुप्तविज्ञान.

सुप्तता (von सुप्त) f. *das Eingeschlafensein —, Taubsein eines Körpertheils* Suçr. 1,98,14. 2,281,15.

सुप्तत्व (wie eben) n. dass. Suçr. 1,253,15.

सुप्तप्रबुद्ध adj. *aus dem Schlaf erwacht* Kathâs. 3,22. 14,21. 50,104. 73,355.

सुप्तप्रलपित n. *das Sprechen im Schlafe* P. 6,2,149, Schol.

सुप्तमालिन् m. Bez. *des 25ten* Kalpa: s. u. कल्प 2) d).

सुप्तवाक्य n. *das im Schlafe Gesprochene* Spr. (II) 6490.

सुप्तविषद् adj. etwa *den Schlaf zum Leibe habend* so v. a. *als Schlaf erscheinend:* Kṛshṇa Paṇḍar. 4,8,33.

सुप्तविज्ञान n. = सुप्तज्ञान Gaṭâus. im ÇKDn.

सुप्तस्थ adj. *im Schlafe befindlich, schlafend* Kathâs. 73,6.

सुप्ताङ्गता (von सुप्त + षङ्ग) f. *Taubheit der Glieder* Suçr. 2,402,7.

सुप्ति (von स्वप्) f. 1) *Schlaf*, insbes. *tiefer* H. an. 2,207. Med. t. 72. Bhâg. P. 4,29,71. Bilâs. 10. Çâṇḍ. zu Vedântas. 3,2,7. *Schläfrigkeit:* सुप्तिर्निद्रासमुद्रेकः Prabîpan. 53,*b*,6. — 2) *das Eingeschlafensein —, Taubheit eines Körpertheils* Suçr. 1,251,12. 2,34,1. — 3) = विस्रम्भ Med. es ist wohl *Sorglosigkeit* gemeint. — Vgl. सम° und सुषुप्ति.

सुप्तोत्थित (सुप्त + उ°) adj. *aus dem Schlaf erwacht* Çik. 46,5. Kâdamb. 1. Kathâs. 2,25. 11,36. Mârk. P. 47,3. Râǵa-Tar. 2,106.

सुप्रकाश adj. (f. आ) *schön hell:* गुहा Kathâs. 46,207. *schön sichtbar, deutlich zu sehen* M. 8,245.

सुप्रकीर्णेन्द्रिय adj. *der seinen Samen reichlich vergossen hat, im Uebermaass den Weibern gehuldigt hat* Vaitân. Bṛh. 21,10.

1. सुप्रकेत adj. 1) *sehr wahrnehmbar, auffallend:* युभिः ṚV. 10,3,3. *merklich, notabilis:* मन्मन् 36,5. die Marut 1,171,6. — 2) *aufmerksam* (vgl. 2. सुप्रकेत) ṚV. 4,50,2.

2. सुप्रकेत adj. *wohl bedacht, — merkend:* स सुप्रकेतो घृष्वक्रमीदिर्पः ṚV. 9,108,2.

सुप्रज्य N. pr. eines Mannes; s. सौप्रज्य.

सुप्रगमन adj. *wohl zugänglich* Nir. 4,18.

सुप्रगुप्त adj. *wohl verborgen, sehr geheim* Spr. (II) 7112, v. l.

सुप्रचेतस् adj. *verständig* ṚV. 1,159,4.

सुप्रच्छन्न adj. *wohl verborgen:* चौर्य Daçar. 77,4.

सुप्रजस् adj. (f. आ) = सुप्रजास् ṚV. 4,50,6 (nom. pl. °जास्). MBu. 3, 14184. R. Gorr. 2,72,18. 5,33,10. 36,61. Spr. (II) 3532, v. l. Bhâg. P. 4,13,32. 5,9,23. 14,40. °तम 4,23,33.

सुप्रजास् adj. P. 5,4,122. Vop. 6,26. *kinderreich, gute Kinder habend* ṚV. 3,114,1. AV. 3,10,3. 4,11,3. 14,1,49. 2,22. fg. 74. 18,4,63. सुप्रजाः प्रजाभिः VS. 3,37. 7,18. TS. 1,1,10,1. 3,2,4,3. Kâṇ. 77. MBu. 13,275. 14,1950. R. 1,25,2. केकेयी सुप्रजास्त्वया so v. a. *hat an dir einen guten Sohn* 2,70,17. 97,3. R. Gorr. 2,13,11. 106,7. 109,27 (केकेयी सु° zu schreiben). 3,8,10. 5,65,6. Ragh. 8,22. 18,28. Bhâg. P. 7,10,21.

सुप्रजास्त्व n. nom. abstr. von सुप्रजास् Bhâg. P. 5,4,4. 6,5,23. 9,1,20. — Vgl. सुप्रजास्त्व.

सुप्रजात adj. *reich an Nachkommenschaft* Harîv. 3254. प्रजावत् die neuere Ausg.

सुप्रजावनि adj. *Kinderreichthum gewährend, — verschaffend* VS. 5, 12. TS. 1,3,1,2.

सुप्रजीवस् adj. *mit Kindern verbunden:* इषम् ṚV. 1,111,3.

सुप्रजास्त्व n. *Kinderreichthum* ṚV. 10,62,3. VS. 3,63. TS. 1,1,10,3. 2,6,9,7. 3,2,5,1. 8,5. — Vgl. सुप्रजास्त्व und सौप्रजास्त्व.

सुप्रज्ञ adj. (f. आ) *sehr verständig, — klug* (von Personen) Spr. (II) 7111. Kathâs. 13,136.

सुप्रज्ञान adj. *leicht zu erkennen, — zu finden* Kiṭ. 29,7.

1. सुप्रणीति f. *sichere Führung* ṚV. 5,42,18. Çiraṇ. Ça. 18,15,5.

2. सुप्रणीति adj. *richtig leitend, sicher führend:* सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शासुः ṚV. 1,73,1. Agni 3,1,16. 15,4. त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः 4,2, 13. Götter 8,27,12. 10,124,6. Väter 15,11. Aditi 63,10. AV. 5,11,5. 7,20,4. 19,4,4. Kauç. 135.

सुप्रतर adj. (f. आ) *leicht zu passiren:* नद्य: Ragh. 4,31.

सुप्रतर्क m. *richtiges Urtheil, richtiger Verstand* MBu. 5,3063.

सुप्रतार adj. (f. आ) *gut hinüberführend:* नौ R. 2,52,5.

सुप्रतिकर adj. *leicht zu vergelten* Spr. (II) 5307.

सुप्रतिगृहीत adj. *wohl ergriffen* Çat. Br. 1,1,4,22.

सुप्रतिचक्ष adj. *schön anzuschauen:* Agni ṚV. 7,1,2.

सुप्रतिच्छन्नम् adv. *ganz im Geheimen* MBu. 1,4894.

सुप्रतिच्छन्न adj. *gut vertheilt* Vishṇ. 196.

सुप्रतिज्ञ m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,20.

सुप्रतिभा f. *Branntwein* Râǵân. 14,137.

सुप्रतिम m. N. pr. eines Fürsten MBu. 1,228.

सुप्रतिवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Paṇḍat. ed. orn. 58,14. 17.

सुप्रतिश्रय adj. *ein gutes Obdach habend* R. 2,92,6.

सुप्रतिष्ठ 1) adj. (f. आ) *schöne Füsse habend* MBu. 3,2466. = सुप्रतिष्ठिता Nilak. — 2) m. *a*) Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,44. — *b*) Bez. *des zweiten Monats* Ind. St. 10,298. — *c*) *eine best. Meditation* Vishṇ. 23. — 3) f. आ *a*) *sicherer Grund, feste Stellung* Çvetâçv. Up. 1,7. — *b*) *ein Metrum von 4 × 5 Silben* Colebr. Misc. Ess. 2,138. Ind. St. 8,113. 283. Kâṇḍom. V. — *c*) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBu. 9,2647.

सुप्रतिष्ठानै adj. *sicher —, fest stehend* VS. 8,8.

सुप्रतिष्ठित 1) adj. *a*) dass. AV. 12,1,63. Wagen MBu. 2,2063. Bäume Spr. (II) 4762. — *b*) *gehörig aufgerichtet:* यस्मापि याति देवत्वं मरुद्भिः सुप्रतिष्ठितः Spr. (II) 1782. — 2) m. *a*) *Ficus glomerata* Râǵân. 11,129. — *b*) N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 346,10. — 3) n. N. pr. einer Stadt in Pratishṭhâna Kathâs. 1,65. *β*,8. 112,89.

सुप्रतिष्ठितचारित्र m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 182.

सुप्रतीक 1) adj. (f. आ) gaṇa क्रत्वादि zu P. 6,2,118. *a*) *wohl aussehend, ansehnlich, schön* H. an. 4,39. Med. k. 220. यस्मीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् ṚV. 6,28,6. Ushas 1,92,6. 5,5,6. Agni 1,94,7. 143,3. 3, 29,3. AV. 5,27,1. VS. 11,22. 27,11. Himmel und Erde 1,185,6. Savitar's Arme 6,71,3. Wasser AV. 10,5,24. Elephanten MBu. 7,2380. Vishṇu Bhâg. P. 5,3,2. — *b*) *ehrlich* Bhâg. P. 10,8,31. — 2) m. *a*) ein N. des Liebesgottes und Çiva's (auch Çiv.) Çabdârthak. bei Wilson. — *b*) N. pr. α) verschiedener Personen: ein Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 17,*b*, No. 63, Çl. 2. 18,*b*,14. jüngerer Bruder des Vibhâvasu MBu. 1, 1354. fgg. ein Fürst 228. Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,34. ein Sohn Bhânuratha's VP. 4,22,3 (सुप्रतीथ fälschlich Wilson in der 1ten Ausg.). Pratîtâçva's VP. in Verz. d. Cambr. H. 6. Pratikâçva's Bhâg. P. 9,12,11. N. pr. eines Heerführers Kathâs. 9,14. eines Jaksha 1,59. — β) eines mythischen Elephanten (des Weltelephanten im Nordosten nach den Lexicographen) AK. 1,1,2,6. H. 170. H. an. Med. Hla. 148. Hâlâs. 1,104. Uǵǵvaḍ. zu Uṇâdis. 4,25 (im Südosten). MBu. 1,631. 5,

3561. 6,475. Raeu. 3,75.

सुप्रतीकिनी f. N. pr. des Weibchens des Weltelephanten Supratîka Mnd. m. 58.

सुप्रतीत 1) adj. *wohlbekannt* Sin. D. 1,13. fg. — 2) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Aulunâja Ind. St. 4,372.

सुप्रतूर् adj. (nom. °तूस्) *siegreich* RV. 8,23,29.

सुप्रतूर्ति adj. gaṇa क्रत्वादि zu P. 6,2,115. dass.: इळा RV. 1,40,4. Himmel und Erde 185,7. Agni 3,9,1. TS. 1,6,3,2. Mitra-Varuṇa TBr. 2,8,3,6.

सुप्रत्यञ् adj. (f. °ञ्ची) *wohl rückwärts gewandt* VS. 4,19.

सुप्रत्यवसित adj. P. 6,2,195, Schol.

सुप्रदद् adj. *freigebig* AV. 20,128,9.

सुप्रदर्श adj. (f. श्रा) *einen schönen Anblick gewährend:* भूमि MBu. 13,2971.

सुप्रदोह adj. f. *sich willig melken lassend* MBu. 3,12723.

सुप्रधृष्य adj. *dem man leicht Etwas anhaben kann, dem Angriff sehr ausgesetzt* MBu. 12,13214.

सुप्रपञ्चकीन adj. *aller Mannichfaltigkeit baar* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,140.

1. सुप्रपाण n. *gute Tränke* RV. 5,83,8. गृहा घ्रयः सुप्रपाणे पिबन्ती: 6,28,7.

2. सुप्रपाण adj. *wo sich gut trinken lässt:* वेशन्त AV. 20,128,9. तीर्थ RV. 10,40,13.

सुप्रबुद्ध 1) adj. *schön erleuchtet:* ein Buddha Vicitr. 63. — 2) m. N. pr. eines Fürsten der Çâkja Lalit. ed. Calc. 31,20. Schiefner, Lebensb. 233 (3).

सुप्रभ 1) adj. (f. श्रा) *wohl aussehend, schmuck, hübsch:* Frauen Hariv. 5235. fg. पद्मकिञ्जल्क° *wie* MBu. 1,981. Kuh 3,12723. Elephant 6, 2866. Gesicht R. 3,30,8. Wange 52,28. शूल 8,5. Schmucksachen 5, 22,21. Haus 7,61,15. गन्धमाल्यै: *vorzüglich* MBu. 3,1818. — 2) m. N. pr. eines Dânava Hariv. 14295. eines Devaputraka Kathâs. 53,117. des 4ten der 9 weissen Bala bei den Gaina H. 698. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 58,*a*,20. — 3) f. श्रा *a*) *Vernonia anthelmínthica* Râgân. 4,63. — *b*) N. *einer der sieben Zungen des Feuers* Halâs. 1,68. Tantrasâra im ÇKDr. — *c*) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBu. 9,2628. der Gattin Aṣṭâvakra's 13,1392. einer Fürstin Mâlav. P. 114,24. einer Tochter Svarbhânu's und Gattin Namuki's Bhâg. P. 6,6,31. einer Gattin Daçaratha's und Mutter Çatrughna's Çâk. 9,96. der Mörderin von Mahâsena Hall in der Einl. zu Vâsavad. 33. — *d*) N. pr. einer der sieben Sarasvatî MBu. 9,2189.

सुप्रभदेव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 118,*b*, No. 94; vgl. Çiç. 20,80, wo सुप्रभचन्द्र gegen das Metrum verstösst.

सुप्रभपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 135,*a*,37.

सुप्रभात 1) adj. (f. श्रा) *vom Morgenroth schön erhellt:* निशा R. 1,20, 19. 36,1. R. Gorr. 2,11,17. — 2) f. श्रा N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5, 20,4. — 3) n. *a*) *ein schöner Morgenanbruch:* रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम् Spr. (II) 5777. — *b*) *Morgengebet* Vimâna-P. 14 im ÇKDr.

सुप्रमधु m. N. pr. eines Brahmanen Târân. 5. 72.

सुप्रमय adj. P. 6,1,50, Vârtt., Schol.

सुप्रयस् adj. *sich gütlich thuend* RV. 2,2,1.4,1. 4,41,3. 8,11,4. VS. 27,15.

सुप्रयी adj. *angenehm zu betreten* Nir. 5,28. बर्हिस् RV. 7,39,2; vgl. 6,63,3.

सुप्रयोधन् adj. *gut fahrend:* यदीं गणं भजति सुप्रयाभिः (Rosse) RV. 5,44,12.

सुप्रयुक्त adj. 1) *gut geschleudert, — abgeschossen:* °शर् H. 772. — 2) *richtig hergesagt:* शब्द Sin. D. 1,18. — 3) *wohl angelegt:* दम्भ Spr. (II) 7112.

सुप्रयोग 1) adj. *a*) *gut geschleudert, — abgeschossen:* विशिख AK. 2, 8,3,36. — *b*) *leicht aufzuführen:* नाटक Sin. D. 189,7. — 2) f. श्रा N. pr. eines Flusses MBh. 3,14232. 6,328 (VP. 182. fg.). Mârk. P. 57,26.

सुप्रलम्भ adj. P. 7,1,67, Schol.

सुप्रलाप m. *Beredsamkeit* AK. 1,1,5,17. H. 276.

सुप्रवाचन adj. *preiswürdig, was man gern preist:* उक्थ्य RV. 1,105, 12. पितर: 106,3. वीर्य 2,13,11. 4,36,3. हृदिस् 10,35,12.

सुप्रवृक्ण adj. *wohl zerlegt* zur Erklärung von ऊर्ण Nir. 3,9.

सुप्रवृत्ति f. zur Erklärung von सुवृक्ति Nir. 2,24.

सुप्रवृद्ध m. N. pr. eines Sauvîraka MBh. 3,15597.

सुप्रवेश adj. (f. श्रा) *einen schönen Eingang habend:* सभा MBh. 2,1774.

सुप्रव्रजित adj. *wohl umherwandernd* Vikr. 33.

सुप्रशस्त adj. *sehr gelobt, vortrefflich* AV. 5,11,11. *sehr bekannt, — berühmt* Pañcat. 1,2,2.

सुप्रश्न m. wohl so v. a. सुखप्रश्न *eine Erkundigung nach dem Wohlbefinden* MBh. 12,8407.

सुप्रसन्न 1) adj. *ganz klar:* गङ्गा MBh. 13,1844. *ganz heiter, — froh* Açokâvad. 4. खास्थ्य Spr. (II) 2544. 3972. मनस् Suçr. 1,285,21. *sehr gnädig, — hold* Mârk. P. 105,7. — 2) m. ein N. Kubera's H. ç. 39. Çabdam. im ÇKDr.

सुप्रसवक m. *eine best. Pflanze,* = वनवर्वरिका Râgân. 10,164.

सुप्रसरा s. सुप्रसारा.

सुप्रसाद 1) adj. *leicht zu besänftigen, versöhnlich* M. 3,213 (= प्रसन्नमुख Kull.). MBh. 12,2077. R. 4,38,20. — 2) m. *a*) ein N. Çiva's Taitt. 1,1,16. H. ç. 40. — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 5,2373. eines Asura Hariv. 12942. — 3) f. श्रा N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2631.

सुप्रसारा f. *Paederia foetida* (प्रसारिणी) Râgân. 5,34. सुप्रसरा ÇKDr. nach ders. Aut. und Nigh. Pa.

सुप्रसिद्ध adj. *wohlbekannt* Sin. D. 2,1. Kshitiç. 1,2.

सुप्रसू adj. *leicht —, gut gebärend:* Kuh Çâñkh. Grhj. 1,19.

सुप्रहार m. N. pr. eines Fischers Kathâs. 112,114. fgg.

सुप्राकार m. *ein schöner Wall* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7. 6, Cl. 13.

सुप्राकृत adj. (f. श्रा) *ganz gemein:* Personen R. 2,22,19. R. Gorr. 2,11,34.

सुप्राञ्च् adj. *wohl vorwärts gewandt* RV. 1,162,2. VS. 4,19.

सुप्रातर् (von 6. सु + प्रातर्) 1) adj. P. 5,4,120. *eines ganz frühen oder schönen Morgens:* घर्म Bhâṣ. 8,3. — 2) n. *ein schöner Morgen;* s. u. मङ्गलपाठक.

सुप्रातर् adv. so v. a. *ein schöner Morgen* AV. 19,8,3.

सुप्राप adj. *leicht zu erlangen, — haben:* सोम्यो ऽयं वर्तते मासः °पवसेच्यनः MBu. 3,4828. R. 3,12,13.

सुप्राप्य adj. dass. Kathâs. 61,79. तवापि किमसुप्राप्यं नामास्त्यत्र ब्रह्मन्ये 117,74.

सुप्रापण adj. *gut —, angenehm zu beschreiten* Naigh. 4,1. Nir. 4,18. Thore RV. 2,3,5. 5,5,8. 10,110,5. वर्त्तिः सुप्रापणातमम् 6,63,3; vgl. सुप्रया.

सुप्रावर्ग adj. *sich sehr hervorthuend* RV. 8,22,18. प्रावर्ग st. प्रवर्ग mit Dehnung des व vor व, wie auch sonst.

सुप्रावी adj. *sehr aufmerksam, — dienstfertig, — eifrig:* हूत RV. 1,60,1. मर्त्य 83,1. 2,26,1. प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी 4,25,5. 6. सुप्राव्ये सुप्राव्याई AV. 4,30,6; vgl. AV. Paipp. 4,11) यज्ञमानाय 18,125,2.

सुप्राव्य adj. dass. RV. 1,34,4. 2,13,9.

सुप्रिय 1) adj. (f. या) *sehr lieb, — angenehm* AV. 7,38,2. Spr. (II) 7450. Pañcat. 2,4,10. सुप्रियात्मन् (घनिल) R. 2,91,24. — 2) m. *a) Pyrrhichius* Colebr. Misc. Ess. 2,151. — *b)* N. pr. eines Gandharva Burnouf, Intr. 78. 132, N. 1. Schiefner, Lebensb. 292 (62). — 3) f. या N. pr. *a)* einer Apsaras MBu. 1,2559. 4819. Harîv. 12473. — *b)* eines Bauermädchens Lalit. ed. Calc. 331,17.

सुप्रीत adj. *wohl zufrieden mit* (loc.), *sehr erfreut* RV. 5,21,2. 6,15,2. 8,23,13. VS. 7,15. 8,36. 28,14. Çat. Br. 4,2,5,18. MBu. 1,5133. R. 1,1,76. *sehr lieb* Pañcat. 1,7,32.

सुप्रीतिकर m. N. pr. eines Fürsten der Kiṁnara Vjutp. 89.

सुप्रेतु adj. *wohl gangbar:* Pfad RV. 1,190,6.

सुप्रोष्ठ adj. *ganz erwachsen*, f. या *eine mannbare Jungfrau* Spr. (II) 4441 (Conj.).

सुप्लव् m. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 2,4,4,4. 12,8,2,3.

सुप्सरस् adj. *etwa gern schmausend, lecker:* (वायो) सो कि सुप्सरस्तमं नृषदनेषु हूमहे RV. 1,26,24.

सुफल 1) adj. *a) schönfrüchtig, fruchtbar* RV. 4,57,6. सस्यानि Mârk. P. 120,16. — *b) mit einer schönen Klinge versehen:* निस्त्रिंश MBu. 4,1364. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: *Feronia elephantum Corr.* Çabdak. in Verz. d. Oxf. H. 195,*b*,4 v. u. *Citrone* Ratnam. 66. *Pterospermum acerifolium* Rîgan. 9,42. *Granatbaum* 11,74. *Zizyphus Jujuba* 140. *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) Lin. 16,37. — 3) f. या Bez. verschiedener Pflanzen: *eine Art Kürbis oder Gurke* (कर्कोटिका) Rîgan. 7,158. *Gmelina arborea* 9,37. *Weinstock mit röthlichen Trauben* 11,104. *Coloquinthen-Gurke, Benincasa cerifera Sav.* und *Musa sapientum* Rîgan. im ÇKDr.

सुफलीकृत adj. von *Hülsen wohl gereinigt* Çat. Br. 11,1,8,2. Gobh. 4,2,8. Kauç. 2.

सुफाल m. *eine gute Pflugschar* AV. 13,17,5 (RV. v. l.).

सुफालिक N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,18. सुफालीक desgl. *a*,16. सुफालिल desgl. 2.

सुफुल्ल adj. *schön blühend, mit schönen Blüthen versehen:* सरांसि R. 2,68,14.

1. सुफेन n. *schöner Schaum* so v. a. *os Sepiae* (s. समुद्रफेन) Rîgan. 2,225.

2. सुफेन adj. (f. या) *schönschaumig* TS. 2,4,3,2.

सुबद्ध adj. 1) *fest gebunden* RV. 10,85,25. — 2) *fest geschlossen, — geballt:* मुष्टि Harîv. 3779.

सुबन्ध m. *Sesam* Çabdak. im ÇKDr.

सुबन्धन n. *ein festes Band:* °विमोचन Çiva MBu. 13,1214.

सुबन्धु 1) adj. *nahe verbunden, verwandt;* m. *ein guter Freund* RV. 1,126,5. 162,7. 3,1,3. यूया सुबन्धूरिव या पविव्याः 6,58,4. 10,61,26. AV. 14,1,17. Spr. (II) 4786. so wohl auch RV. 10,39,8. 60,7. 10 (nach dem Comm. N. pr.). — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 3,459. Verz. d. Oxf. H. 53,*a*,32. mit dem patron. Gaupâjana oder Laupâjana RV. Anukr. N. pr. des Verfassers der Vâsavadattâ Z. d. d. m. G. 27. 77. Verz. d. Tüb. H. 13. Verz. d. Oxf. H. 150,*b*, No. 320. eines Kaufmanns 154,*a*,16. eines Brahmanen Kathâs. 5,115. fgg.

सुबभ्रु adj. *dunkelbraun:* Kṛshṇa MBu. 12,1311.

सुबाकृत् adj. *der eine gute Opferstreu hat* RV. 1,74,5. 8,20,25. VS. 21,16. 28,27.

सुबल 1) adj. R. 2,63,31 fehlerhaft für सुबाल, wie die ed. Bomb. liest. — 2) m. N. pr. *a)* eines Fürsten der Gândhâra, Vaters des Çakuni und der Gattin des Dhṛtarâshṭra, MBu. 1,2439. 4371. 5685. 2,1265. 13,25. Harîv. 4970. Bhâg. P. 1,13,28. — *b)* eines Sohnes des Manu Bhautja Mârk. P. 100,33. — *c)* eines Sohnes des Sumati VP. 4,23. 3. Bhâg. P. 9,22,47. — *d)* eines mythischen Vogels (सुपर्ण), Sohnes des Vainateja, MBu. 5,3588. — *e)* st. इक्ष्वाकुराज: सुबलस्य MBu. 3,13596 liest die ed. Bomb. इ° सुभवस्य. — Vgl. सौबल.

सुबहु adj. *sehr viel, — zahlreich:* धन R. Gorr. 1,17,4. दिवसा: MBu. 5,7142. M. 10,29. Varâh. Bṛh. S. 24,33. Kathâs. 19,356. 373. प्रेतासु तु सुबहुषीषु (तासु ब° die neuere Ausg.) Harîv. 8702. adv. *vielfach, sehr oft:* कोपिता: Bhâg. P. 11,1,2.

सुबहुशस् adv. *vielfach, sehr oft:* उपालब्ध: MBu. 3,16832. Mârk. P. 10,13.

सुबहुश्रुत adj. *überaus gelehrt* R. 1,12,8 (7 Gorr.).

सुबाल 1) adj. *überaus unerfahren, — thöricht* R. ed. Bomb. 2,63,32. सुबल Schol. 31. — 2) m. *ein Gott (schöner Knabe)* H. ç. 3 (सुबाल die Hdschr.). — 3) n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3,325. Notices of Skt Mss. 1,33.

सुबालक m. N. pr. des Verfassers eines Kâmaçâstra Verz. d. Oxf. H. 40,*a*, N. 2.

सुबालाग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Verz. d. Oxf. H. 135,*b*,9.

सुबाहु 1) adj. P. 6,2,119, Schol. *schönarmig* RV. 2,32,7. 8,17,8. 10,86,8. VS. 11,63. — 2) m. N. pr. *a)* verschiedener Männer: Fürsten MBu. 1,2660. 2696. 3,10864. 5,77. 13,5668 (enthält sich des Fleischgenusses). Kathâs. 56,328. 58,5. Lalit. ed. Calc. 23,21. Wassiljew 40. 46. Târan. 2. 10. fg. von Kâçi MBu. 2,1080. der Kedi 3,2531. von Videhâ Schiefner, Lebensb. 235 (5). ein Sohn Dhṛtarâshṭra's MBu. 1,2729. 4542. 5461. 6,4349. Matinâra's Harîv. 1716. Kîtaka's 1921. 2089. Kṛshṇa's Bhâg. P. 10,61,14. Çatrughna's R. 7,108,10. fg. VP. 385. 386, N. 17. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,14. fgg. Bhâg. P. 9,11,12. Pratibâhu's 10,90,38. Kuvalajâçva's Mârk. P. 26,4. Bruder Alarka's 37. 7. ein Bodhisattva Wassiljew 191. ein Bhikshu Lalit. ed. Calc. 1,10. Sohn eines Hausbesitzers in Vârâṇasî Vjutp. 33. Schiefner, Lebensb. 248 (18). — *b)* eines Schlangendämons MBu. 1,1559. 5,3632. Vjutp. 83. — *c)*

eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2575. — *d*) eines Dânava Harîv. 12943. 12939. Kathâs. 47,12. 115,57. — *e*) eines Râkshasa Harîv. 2328. R. 1,22,18. R. Gorr. 1,23,24. 33,10. Rasu. 11,29. °शत्रु = राम Uttarar. 80,2 (103,2). — *f*) eines Affen R. 4,33,13. 6,82,20. — 3) f. N. pr. einer Apsaras Vâyu bei Schol. zu H. 183. MBh. 1,2558. 4819. Harîv. 12472.

सुबाहुपरिपृच्छा f. Titel einer Schrift Wassiljew 190. Kanjûsamuccaya 159. Index des Kandgur 11, No. 70.

1. सुबीज n. *guter Same* M. 10,69.

2. सुबीज 1) *adj. schönen Samen habend.* — 2) m. *Mohn* Râgân. 4,166.

1. सुबुद्धि f. *guter Verstand* Spr. (II) 4827.

2. सुबुद्धि 1) *adj. verständig, klug* Spr. (II) 1538. 6453. Kathâs. 40,39. Pañkar. 1,3,14. सीसुबुद्धिमिश्रमहेश्वर Verz. d. Oxf. H. 208, *a*, 8. — 2) m. N. pr. *a*) eines Mâraputra Lalit. ed. Calc. 389,6. — *b*) zweier Fürsten Kshitîç. 7,14 (°राय). 10,16. 12,7 (°राग). — *c*) einer Krähe Hit. 17,22.

सुबुद्धिचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Kathâsâritsâgara 11.

सुबुध adj. (f. धा) *wachsam* AV. 14,2,31. 75.

1. सुबोध m. *richtiges Verständniss:* आत्म° Bhâg. P. 11,29,39.

2. सुबोध 1) adj. (f. धा) *leicht zu erkennen:* देहाभ्यभिः सुबोधं ते सखि कामातुरं मनः Spr. (II) 663. *leicht verständlich* Pañkat. ed. orn. 38,20. Kull. zu M. 4,199. Verz. d. Oxf. H. 63,*a*,14. °म् adv. *auf leicht verständliche Weise* Bhâg. P. 5,12,3. — 2) f. धा häufiger Titel von Werken, namentlich von Commentaren (टीका), Verz. d. B. H. No. 869. Verz. d. Oxf. H. 118, *b*, No. 198. 123,*b*, No. 218. 174,*b*, No. 395. fg. Notices of Skt Mss. 1,223.

सुबोधन adj. (f. ई) *leicht verständlich;* f. °नी als Titel von Commentaren Verz. d. Oxf. H. 3,*b*, No. 25. 128,*a*, No. 230. 352,*b*, No. 835. Verz. d. Tüb. H. 20 (auch सुबोधिनी).

सुबोधिन् adj. *das Verständniss erleichternd;* f. °नी als Titel von Werken, insbesondere Commentaren, Colebr. Misc. Ess. 1,334. 337. 2,46. Wilson, Sel. Works 1,131. Ind. St. 1,60. Verz. d. B. H. No. 393. 690. 938. Verz. d. Oxf. H. 2,*b*,2. 262,*b*, No. 633. 365,*a*, No. 73. Verz. d. Tüb. H. 20. Hall 91. 94. 101. 118. 123. Notices of Skt Mss. 1,81. 100. Vaddhamâna. Einl.

सुब्रह्मण्य adj. *auf den* Subrahmanja *bezüglich* u. s. w. Schol. zu Lâṭj. 1,2,17. 5,1.

सुब्रह्मण्य 1) adj. *den Brahmanen sehr hold:* Vishṇu Pañkar. 4,3,78. Çiva Çiv. Kârttikeja (vgl. ब्रह्मण्य) Verz. d. Oxf. H. 254,*a*,4. — 2) m. N. *eines der drei Gehilfen des* Udgâtar Çat. Br. 3,3,4,9. Pañkav. Br. 25, 4,6. 18,4. Âçv. Ça. 4,1,6. Lâṭj. 1,1,13. 2,2,3. MBh. 5,4790. — 3) f. या *eine von diesem Priester zu sprechende Einladung zum Soma an die Götter, beginnend mit den Worten* इन्द्रागच्छ हरिव मागच्छ. °यामाह्वयति Ait. Br. 6,3. Sâṅkh. Br. 1,1. TBr. 3,8,4,2. Âçv. Gṛhj. 3,13, 28. 12,4,19. Çâṅkh. Br. 27,6. P. 1,2,37. der Priester selbst heisst nach seiner Rolle °ण्या, z. B. यत्र: सुब्रह्मण्यायै so v. a. *ein Bock für den* S. Âçv. Ça. 3,4,11 (vgl. Ait. Br. 6,3). Çat. Br. 4,3,4,22. Pañkav. Br. 18, 9,19. Ait. Br. 7,1. Kâṭj. Ça. 8,2,14. 39. — 4) n. *a*) = 3): सुब्रह्मण्यं प्रयुज्यते Harîv. 13221. ब्रह्मण्यं सु प्र° die neuere Ausg. — *b*) N. pr. einer Oertlichkeit im Süden Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 138. 248,*b*,2. Wilson, Sel. Works 1,140. 149. °क्षेत्र Mack. Coll. 1,90.

1. सुब्रह्मन् 1) m. *a*) *ein guter Brahmane* (Gegens. अ°): सुब्रह्मा ब्रह्मण: पुत्र: Çâṅkh. Ça. 12,21,2. — *b*) N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 70,11. 460,11. Purohita genannt 49,6. — 2) n. *ein gutes Brahman:* वाग्वै ब्रह्म च सुब्रह्म चेति Ait. Br. 6,3. Sâṅkh. Br. 1,1. 2.

2. सुंब्रह्मन् adj. *gute Gebete u. s. w. habend* oder *einen guten Brahman habend:* यत्र RV. 7,16,2. 10,47,3.

सुब्रह्मवासुदेव m. Kṛshṇa *als* Brahman Titulatur im ÇKDa.

सुभ् सुभाति etwa *ersticken:* तद्रक्षांसि रात्रिभिरमुभन् तान्सुध्यान्मृतान्-भिर्योच्छत् TS. 2,4,8,1. सुम्भन् Kâṭh. 10,7. — सोभति und सुम्भति v. l. für शोभति, प्रुम्भति Daçak. 11,42. Vgl. सोभ्य.

सुभक्ति f. *grosse Hingebung, — Liebe* Açokâvadâna 21.

सुभक्ष्य n. *eine prächtige Speise* Spr. (II) 7113.

सुभग 1) adj. (f. धा) gaṇa क्रत्वादि zu P. 6,2,113. in Ableitungen werden die Vocale beider Wörter gesteigert P. 7,3,19. ein fem. bewahrt davor in einem adj. comp. seinen fem. Charakter gaṇa प्रियादि zu P. 6, 3,34. Vop. 6,13. *a*) *glücklich; im Wohlsein* oder *Genuss befindlich; geliebt, beliebt* (insbes. beim Gatten) H. 547. देवानां सुम्ने सुभग: स एधते RV. 2, 25,5. रुविर्न दीधाय सुभगो यथाससि 26,2. 27,15. 28,2. 1,86,7. स्तोतृ 2, 18,5. 4,4,7. नेतर्नितती: सुभगो नाम पुष्यन् 5,37,4. 7,30,3. 8,19,14. सुपुत्रा सुभगा 10,85,25. गृहा: AV. 7,60,6. सुभगां पत्यै कृणोतु 14,1,49. कल्याणी रूपसंपन्ना दुर्भगा शत्रु दृश्यते। चलत्तणा विरूपा च सुभगा दृश्यते ऽपरा ॥ MBh. 12,8121. R. 2,43,3 (42,3 Gorr.). सुभगातनय 3,40,15. सुभगामुत AK. 2,6,1,24. R. Gorr. 2,7,4. Spr. (II) 3687. 6947 (Conj.). Vaṇîn. Bṛh. S. 68,27. 36. 42. 98. 75,1. 4. 101,1. 5. 14. Bṛh. 12,14 (= सर्वव्रतवल्लभ Comm.). °सामाख्य Kathâs. 14,66. 19,107 (घाशा als Weib). 30,7. 58,3. क्रतु °पताकाम् Daçak. 68,2. 6. Bhâg. P. 6,19,25. Sarvadarçanas. 64,20 (aus Çâkalasaṅhitâpariçishṭa). अ° Megh. 30. — *b*) *beglückend, erfreuend; lieblich, liebenswürdig; reizend, schön* H. 448. Hall. 2,212. Agni RV. 1,36,6. 3,1,4. Ushas 1,48,7. 2,31,5. Sarasvatî 1,89,3. 181,4. 185,7. 2,32,4. 3,33,7. 4,57,6. Marut 5,60,6. Sûrja 7, 63,1. Sindhu 10,75,8. रात्रन् 3,4,19. Indrâṇî 10,86,11. Pflanzen 143, 2. नारी AV. 2,36,2. देवी 6,38,1. VS. 29,5. TBr. 3,1,2,9. Çâṅkh. Gṛhj. 1,12. सूर्य: RV. 5,42,8. रात्रि 10,140,5. — Männer und Frauen MBh. 1,6398. R. 5,31,49. Suçr. 1,333,20. Vikr. 123. Spr. (II) 800. 4915. 6332. 6512. Gît. 5,19. Kathâs. 12,81. 26,177. 28,13 (घति°). 44,138 (घति°). 52,223. 56,100. Bhâg. P. 3,8,33. 22,13. Dhûrtas. 92,14. सुभगे häufige Anrede an Frauen oder weiblich personificirte Dinge: घन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् RV. 10,10,10. 12. 109,5. AV. 5,5, 6. 6,30,2. 7,79,1. 19,49,2. TS. 7,4,19,1. Kauç. 106. M. 2,129. MBh. 3, 1853 (सुभगे ed. Calc.). 15599. R. 2,52,79 (19 Gorr., beide सुभगे). R. Gorr. 2,30,38. Spr. (II) 3882. Brahma-P. in LA. (III) 33,9. Pañkat. 45,1. 225,25. 262,12. अघनाभोगसुभगे Çaut. 40. सुभग in der Anrede an Männer Spr. (II) 978. Kathâs. 26,53. 272. Sîm. D. 55,13. Pañkat. 262,5. Bhâg. P. 5,2,1. — *reizend, schön* vom Körper und seinen Theilen Gît. 7,19. स्मितसुभगमुख (प्रभग gedr.) Dhûrtas. 66,6. Bhâg. P. 5,5,21. 8,20.

18,16. 25,7. 9,24,64. किसलय 5,24,10. चित्रकूट R. 2,99,10. रव्यवाकृत 3,22,5. नवाम्बुद Rāgh. 11,80. प्रियगात्रभस्मन् Kumāras. 4,34. न भीष्मस्येव सुभगमपराद्धं युवतिषु Çiç. 57. °सलिलावगाह् adj. 3. प्रवात° (उद्देश) 32,16. तीरोपान्तस्तनित° (पयस्) Megh. 23. 77. Viks. 26 (°सुभगं besser als °सुलभं). बुद्धि R. 3,28,9. दिवसा: 22,10. ललितललनाभोग° (काल) Spr. (II) 127. 1920. स्वभावमकृत्मन् 1010. प्रकृतिसुभगा: स्त्रीलाया: 4218. एकाधारे सकलसुभगे दुर्लभे हि त्रिलोके 7007. सुभगाश्लेष्भूमित्व Kathās. 13,120. 23,92. प्रगीतभृङ्ग° 35,6. घोषसुभगा गङ्गा 49,23. Rāgā-Tar. 3,43. 226. 260. 4,27. Prab. 11,17. नयन° *reizend für die Augen* Verz. d. Oxf. H. 145,b, No. 306, Z. 5. Megh. 9. श्रवण° *für die Ohren* 11. Mālav. 39. स्खलितसुभगम् adv. Megh. 29. 43. सुभगम् als v. l. für सुतराम् Çiç. 65,17 *schön so v. a. sehr, in hohem Grade.* — c) *sich zu Etwas wohl eignend:* चरणोपराग° (लाक्षारस) Çiç. 80, v. l. — 2) m. a) ein N. Çiva's H. ç. 41. Çiv. — b) *Borax* Rāgān. 6,241. — c) Bez. verschiedener Pflanzen: = चम्पक, रक्ताम्लान und सशोक Rāgān. im ÇKDa. — d) N. pr. eines Sohnes des Subala, Fürsten der Gāndhāra, MBh. 7,6944 nach der Lesart der ed. Bomb. — 3) f. घा a) loc. pl. wohl so v. a. *in Lust, in Fröhlichkeit:* एता (रात्री:) धारुणिकोतारः सुभगासूपयन्ति Pāraśav. Br. 23,1,5. Comm. ergänzt प्रज्ञासु oder नदीषु. — b) Bez. *eines fünfjährigen Mädchens, das bei der Feier der* Durgā *diese Göttin vertritt,* Annadākalpa im ÇKDa. unter कुमारी. — c) Bez. verschiedener Pflanzen: = सुवर्णकदली *eine Musa* Rāgān. 11,44. *rother Amaranth* 10,133. *Glycine debilis* 4,18. = दूर्वा (नीलदूर्वा ÇKDa.) 8,109. *Basilienkraut* 10,151. = प्रियङ्गु 12,45. = कस्तूरी 47. = केवर्ती und हरिद्रा Rāgān. im ÇKDa. = वनमल्ली Dhanv. 5,79. Çārdar. im ÇKDa. — d) N. pr. α) einer Tochter der Prādhā MBh. 1,3554. Harīv. 12471. — β) einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2636. einer Fee Tāran. 84. 227. — 4) n. *Erdharz* Rāgān. 12,42. — Vgl. गर्भ°, सौभग u. s. w.

सुभगीकरण P. 3,2,56. Vop. 26,62. 1) adj. (f. ई) *glücklich machend, beglückend* AV. 6,139,1. °करणं किंचिच्चण्डालतरुणे भवत् *was* (ein Weib) *glücklich machen konnte, etwas Bezauberndes* Rāgā-Tar. 6,78. — 2) n. *das Bezaubern, Fürsichgewinnen* (eines Weibes) Verz. d. Oxf. H. 216,a,10.

सुभगता (von सुभग) f. *Beliebtheit, Eheglück* Vaitān. Bhn. 24,(22),1.

सुभगत्व (wie oben) n. *Glück, Wohlsein* RV. 2,21,6. Pāṇ. Gaṇ. 1,18. *Beliebtheit:* सार्वज्ञ्य Vaitān. Bhn. S. 75,8. दातिण्यमेकं °हेतु: s. भवति सुभगत्वमधिकं विस्तारिपरगुणस्य सुजनस्य Spr. (II) 4532 (hiernach die Uebersetzung zu ändern). °कर Pāṇ. 3,3,5.

सुभगमानिन् adj. *sich für beliebt haltend* R. 2,92,25. Daçak. 35,12.

सुभगंभविष्णु adj. etwa *beliebt werdend* P. 3,2,57. Vop. 26,63. असुभगंभावुक P. 6,2,160.

सुभगंभावुक adj. dass. P. 3,2,57. Vop. 26,63.

सुभगंमन्य adj. *sich für beliebt —, für einen glücklichen Liebhaber haltend;* davon nom. abstr. °भाव Megh. 92 (vgl. Praef. VIII).

सुभगय् (von सुभग), °यति *verschönern, zieren* Bhāg. P. 3,15,39.

सुभगसेन m. N. pr. eines Fürsten, von Schlegel aus Σοφαγασηνος geschlossen, Ind. Bibl. 1,248.

सुभगानन्दनाथ m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 1336.

सुभगोदय m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 108,a,7 v. u.

सुभङ्ग m. *Nokomnussbaum* Gaṭṭan. im ÇKDa.

सुभट 1) m. a) = भट *Söldling, Soldat* H. 1404. Spr. (II) 2523, v. l. 3611, v. l. 3939, v. l. Kathās. 48,4. Rāgā-Tar. 4,703. Hit. ed. Johns. 2216. Vet. in I.A. (III) 23,20. — b) N. pr. verschiedener Männer Kathās. 44. 48. 58,5. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 139,a, No. 276. — 2) f. घा N. pr. einer Fürstin Rāgā-Tar. 7,730. °मठ ebend.

सुभटवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Çl. 14.

सुभद्र 1) adj. (f. घा) *prächtig, herrlich:* सुभद्रमर्य भोजनं बिभर्षि RV. 8, 1,34. संविद् 10,10,4. मलोदधि MBh. 1,8420 (समुद्र v. l. bei Nīlak.). °श्रवस् adj. Bhāg. P. 2,4,15. fg. कथा 3,13,47. भगवतो रूपम् 4,8,32. मुख 11,26,20. — सुभद्रमुस्त RV. 1,17 werthlose v. l. für सभद्रमुस्त. — 2) m. a) *Azadirachta indica Juss.* (निम्ब) Aufr. 78. — b) ein N. Vishṇu's H. ç. 64. Çārdar. im ÇKDa. — c) wohl Bein. Sanatkumāra's Pāṇḍar. 1,3,33. 4,18. fgg. 15,22. — d) N. pr. α) eines Sohnes des Vasudeva Bhāg. P. 9,24,46. — β) eines Sohnes des Kṛshṇa Bhāg. P. 10,61,17. — γ) eines Sohnes des Idhmajihva Bhāg. P. 5,20,2. 3. — δ) des letzten von Çākjamuni zum Buddhismus bekehrten Mannes Burnouf, Intr. 78. 173. Lot. de la b. l. 335. Schiefner, Lebensb. 292(62). Hiouen-thsang 1,337. — ε) eines Berges Pāṇḍar. 1,10,40. — 3) f. घा a) Bez. verschiedener Pflanzen: *Ichnocarpus frutescens* Rātnām. 27. *Curcuma Zedoaria* Rāgān. 6,230. *Prosopis spicigera* 8,33. *Gmelina arborea* 9,35. = श्यामालता Çārdar. im ÇKDa. = घृतमण्डा Çārdar. ebend. — b) *eine Form der* Dākshājaṇī Verz. d. Oxf. H. 39,b,25. — c) N. pr. α) einer jüngeren Schwester Kṛshṇa's und Gattin Arǵuna's MBh. 1,3273. fg. 2449. 3330. 7919. fgg. 7,1533. 2501. Harīv. 1954. 7708. Weber, Kṛshṇaj. 288. Bhāg. P. 1,10,9. 13,1. 9,22,32. 24,54. P. 4,2,56, Schol. °पूर्वज Bez. Kṛshṇa's Pāṇḍar. 4,1,21. °रूपा Harīv. 8396. — β) einer der vielen Gattinnen Durgama's Mārk. P. 75,45. — γ) einer Tochter Bali's und Gattin Avikshita's Mārk. P. 123,16. — δ) einer Enkelin Rukmin's und Gattin Aniruddha's VP. 4,15,21. — ε) einer Tochter des Asura Sumāja Kathās. 48,333. — ζ) einer mythischen Kuh MBh. 5,3610. — 4) m. a) *Heil* (vgl. भद्र): सुभद्रं ते Bhāg. P. 4,12,23. — b) N. pr. α) eines Kaivara MBh. 8,2031. — β) eines von Subhadra beherrschten Varsha im Plakshadvipa Bhāg. P. 5,20,3. — Vgl. सौभद्र.

सुभद्रक 1) m. a) *Götterwagen* Çārdar. im ÇKDa. — b) *Aegle Marmelos Corr.* (बिल्व) Çārdar. im ÇKDa. — 2) f. सुभद्रिका a) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑⏑–⏑–⏑– Ind. St. 8,377. — b) *Freudenmädchen* VS. 23,18. — c) N. pr. = सुभद्रा Kṛshṇa's jüngere Schwester Pāṇḍar. 3, 7,22. — 3) n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑–, ⏑⏑⏑–⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,161 (X,7).

सुभद्राणी f. *eine best. Pflanze,* = त्रायमाणा Rātnām. 119.

सुभद्रेश m. *der Herr (Gatte) der* Subhadrā, Bez. Arǵuna's Tair. 2. 8,17. H. 709.

सुभयंकर adj. *grosse Furcht erregend, grosse Gefahr bringend* MBh. 4,160.

सुभयानक adj. *grosses Grausen erregend:* रूपाणि MBh. 10,59.

सुभर adj. (f. या) 1) *massig, dicht; gedrungen, reichlich:* वर्दि:, स्तीर्णं राये सुभरम् RV. 2,3,4. ह्रदिम् 10,35,12. भन्दना: 9,86,41. यसस्वत: 1,112,2.20. वीर 2,3,9. — 2) *leicht zu tragen, — zu handhaben* Çat. Br. 1,4,5,1.

सुभव 1) adj. VS. 7,3 nach Mahidh. = उत्तमजन्मन्; सुभवम् v. l. TS. 1,4,2,1. — 2) m. N. pr. eines Fürsten der Ikshvâku MBh. 3,15896 nach der Lesart der ed. Bomb.

सुभवस् s. u. सुभव 1).

सुभर्तृ adj. καλλίπυγος; compar. सुभर्तरा RV. 10,86,6.

सुभार्ग adj. (f. या) *vermöglich, reich* RV. 1,167,7. 10,78,3.

सुभाग्य adj. *vom Glück besonders begünstigt:* सो अङ्ग सुभाग्यो वन्धूनां सुहृदां च so v. a. *die Angehörigen und Freunde können mich beneiden* R. 4,7,4.

सुभाजन m. = शोभाजन Bharata im Dvidûpak. nach ÇKDa.

सुभानु 1) adj. *schön leuchtend:* die Sonne Kaṭç. 135. शस्त्रैर्यस्ते: कवचै: केतुभिश्च सुभानुभिर्मुखवर्णैश्च पूनाम् MBh. 12,3764; vgl. 6,137. — 2) m. *a)* Bez. *des 17ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,35. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*,4 v. u. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,61,10.

सुभाषित adj. *wohl eingeweicht* Suçr. 1,163,11.

सुभाषित n. *das Gutseinmüssen:* कर्म° Açoḳâvadâna 8.

सुभाषण m. N. pr. eines Sohnes des Jujudhan Bhâg. P. 9,13,25.

1. सुभाषित 1) adj. (f. या) *schön gesprochen:* वाच् so v. a. *eine freundliche Rede, freundliche Worte* Spr. (II) 510. 3019. — 2) n. *ein schönes Wort, ein schöner Ausspruch* Mbh. 1. 227. R. 4,29,28. 7,36,19. Kâm. Nîtis. 11,51. Spr. (II) 1865. 2595. 3135. 4186. 4488. 4776. 6127. प्राह्यं बालादपि सुभाषितम् 6228 (M.). 6655. 7115. fg. 7194 (M.). Z. d. d. m. G. 27,29. Kathâs. 55,180. Verz. d. Oxf. H. 47,*a*,15 v. u. 123,*a*,46. Paṇḳat. 31,4. 207,14. °भाषिन् Vṛitt. 33. °रत्नसंदोह m. Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. 2,53. 462. सुभाषितार्णव m. desgl. Spr. (II) Th. 1, S. XV.

2. सुभाषित 1) adj. (f. या) *schöne Reden führend, beredt* MBh. 3,2278. Çalt. (Bk.) 36. — 2) m. *ein Buddha* Târan. 1,1,11. Mvh. 1. 227. Avadânakalpalatâ 20.

सुभाषितगवेषिन् m. N. pr. eines Fürsten Avadânakalpalatâ 12.

सुभाषितमय (von 1. सुभाषित) adj. *in schönen Aussprüchen bestehend:* इष्य Spr. (II) 7114.

सुभाषिन् adj. 1) *freundliche Worte redend* MBh. 13,7610. — 2) *freundlich gesprochen:* स्वरेण सुभाषिणा *in freundlichem Tone* Harîv. 12237.

सुभास् adj. *schön leuchtend:* Feuer RV. 8,23,20.

सुभास m. N. pr. 1) eines Sohnes des Sudhanvan VP. 4,5,12. — 2) eines Dânava Kathâs. 47,24.

सुभित 1) adj. (f. या) *vollauf zu essend habend, mit Nahrungsmitteln reichlich versehen* (von Personen und Gegenden) Kâṇḍ. Up. 1,10,5. MBh. 1,6416. R. 2,92,6 (101,6 Gorr.). Lalit. ed. Calc. 22,19. 23,5. 20. 82,9. 257,16. *reichliche Lebensmittel verschaffend* Varâh. Bṛh. S. 33,10. — 2) f. या *Grislea tomentosa* AK. 2,4,5,12. Râgân. 6,216. — 3) n. *Ueberfluss an Lebensmitteln, gute Zeiten* MBh. 3,13101. Harîv. 11197. R. 7, 99,12. Spr. (II) 6039. 7117. 7547. Varâh. Bṛh. S. 4,9. 11. 27. 5, 21. 23. 8,13. 9,8. 11,38. सोमसुभितम् 5,53. 55. °कर 9,10. 11,50. 18,3. °कारिन् 4,20. °कृत् 5,79. °द 89. सुभितावह 4,18. fg. 11,14. मख° (pl.) Râja-Tar. 5,116. सु° R. 6,109,3. — सुभिताणि Paṇḳat. IV,82 schlechte Lesart für सुभत्याणि; vgl. Spr. (II) 7113.

सुभिषज् adj. *gut heilend;* superl. °यक्तम AV. Paipp. 4,46. AV. 2,9, 3. 6,24,2.

सुभीत adj. *eine grosse Scheu habend vor* (gen.) Spr. (II) 7118.

सुभीम 1) adj. *überaus furchtbar.* — 2) m. N. pr. eines der Deva Jaǵńamush MBh. 3,14166. — 3) f. या N. pr. einer der Gemahlinnen Kṛshṇa's, einer Mâdri, Harîv. 8984. 9180.

सुभीरक m. *Butea frondosa* ÇKDa. und Wilson nach Hân. 107. सुभीरव die gedr. Ausg.

सुभीरुक n. *Silber* H. ç. 160.

सुभुक्त adj. P. 6,2,145, Schol.

सुभुज adj. *schöne Arme habend* Bâlar. 6,55.

सुभू adj. Declination Siddh. K. 233,*a*,12. Vop. 3,65. 82. *von guter Art* oder *Natur; kräftig, gewaltig:* Marut RV. 5,55,3. सत्या इव सुभ्वर्-याश्च: स्थन 59,3. 87,2. Rudra 6,66,2. Rosse 7,67,8. Soma 9,79,5. पर्वतास: 4,17,3. 6,52,1. वर्ष: 5,41,13. Speise 2,35,7. 1,52,1. 4 (vgl. AV. 4,8,7). in Formeln AV. 13,4,52. Çâṅkh. Ça. 17,13,10. Âçv. Ça. 10,4,5. Liṭj. 2,11,6. 3,11,4.

सुभूत gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75. 1) n. *Wohlsein, Wohlstand* (Gegens. दुर्भूत) AV. 1,31,3. 4. 6,40,2. 12,1,55. TBr. 1,2,6,7. 3,7,6,20. 11,2,1. Çat. Br. 1,8,2,15. Çâṅkh. Ça. 2,3,15. °कृत् 7. — 2) f. या Bez. *der nach Norden gerichteten Seite des Gehäuses der Weltseele* Kaṭh. Up. 2,15,2. — Vgl. सोभूत.

1. सुभूति f. *Wohlsein, Wohlstand* AV. 3,14,1. 19,45,6.

2. सुभूति 1) wohl adj. TS. 3,4,2,2. 4,4,11,5. — 2) m. N. pr. eines Lexicographen Verz. d. Oxf. H. 183,*a*,2. Uṇâdis. zu Uṇâdis. Einl. 3. zu 1,28. 2,111. eines Brahmanen, Sohnes des Vasubhûti, Kathâs. 73, 208. eines buddhistischen Lehrers Lalit. ed. Calc. 1,18. Burnouf, Intr. 465. fgg. Lot. de la b. l. 2. 91. Schiefner, Lebensb. 267 (37). Hiouen-thsang 1,240. Vie de Hiouen-thsang 189. Wassiljew 154. Târan. 90. °पाल 226. °चन्द्र Colebr. Misc. Ess. 2,49. 54. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 2,10. 88. 3,42. 4,1. 12. 52. 200. 5,70. Kaṭhinâvadâna 16.

सुभूतिक m. *Aegle Marmelos Corr.* Râgân. im ÇKDa.

सुभूम m. N. pr. des 8ten Ḳakravartin in Bhârata H. 693; vgl. Comm.

1. सुभूमि f. *ein guter Platz* Gobh. 1,4,5. Weber, Ḳâṇḍâḳ. 266.

2. सुभूमि m. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena VP. 436. स्वभूमि der gedr. Text. — Vgl. सुभूमिय und सुभूषण.

सुभूमिक n. *ein guter Platz,* N. pr. einer Oertlichkeit an der Sarasvatî MBh. 9,2121. f. या 2126.

सुभूमिय m. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena Harîv. 2028 nach der Lesart der neueren Ausg. — Vgl. 2. सुभूमि und सुभूषण.

सुभूयस् adv. *weit mehr* Çat. Br. 4,3,2,12.

सुभूषण 1) adj. (f. या) *schön geschmückt* Kâm. Nîtis. 7,49. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena Harîv. 2028. — Vgl. 2. सुभूमि und सुभूमिय.

सुभृत adj. *wohl gehalten, gepflegt, gehütet:* वरुत्यति य: सुभृतं चिदर्ति RV. 4,50,7. Agni 2,1,12. पुत्र 8,19,27. 9,97,24. रायं: 10,147,4.

170,2. AV. 6,39,1. 13,1,1. गर्भ VS. 8,26. SV. I,1,2,3,7 v. l. für सुधित des RV. Kaṭhop. 4,8. wohl besoldet Vaniṣ. Bṛh. S. 2, S. 7, Z. 11.

सुभृशम् adv. gar sehr, in sehr hohem Grade Candam. im ÇKDa. प्रार्थयति MBu. 1,774. 14,220. Bhâg. P. 4,28,4.

सुभेषज n. 1) ein gutes —, wirksames Heilmittel AV. 2,3,1. TS. 1,8,6,1. — 2) Sammlung von Heilsprüchen, Bez. eines vedischen Buches (vielleicht ist der AV. gemeint) ṚV. Paiṭ. 16,54(55). — Vgl. सेभेषज.

सुभोग्य adj. leicht zu geniessen: श्री Spr. (II) 45.

सुभोज adj. gut essend MBu. 12,8462.

सुभोजन n. gutes Essen MBu. 4,262.

सुभौजस् adj. freigebig AV. 4,26,1. SV. Naig. 4,8.

सुध MBu. 8,1765 fehlerhaft für प्रुध (so ed. Bomb.).

सुधातृ m. (nom. सुधाट्) N. pr. eines Sohnes des Devabhrâǵ und Nachkommen des Sonnengottes MBu. 1,48. fg.

सुधातृ m. dass. MBu. 9,2533.

सुधातर् m. ein guter Bruder gaṇa युवादि zu P. 5,1,130. — Vgl. सोधातर्.

1. सुधु, सुधू f. schöne Brauen: सुधुवा Bhâg. P. 3,23,33. सुधु im comp. Spr. (II) 2489.

2. सुधु, सुधू 1) adj. schönbrauig, f. ein schönbrauiges Mädchen Gaṇân. im ÇKDa. Declin. Vop. 3,76. 82. सुधुवम् acc. m. Bhâg. P. 4,8,45. सुधूस् nom. f. MBu. 1,6399. Spr. (II) 1633. Mârk. P. 21,28. Daçak. 106, 6. Bhâg. P. 9,1,35. Dhûrtas. 90,15. सुधुम् nom. f. Mârk. P. 71,19. 123,1. सुधु voc. f. MBu. 1,3267. 4,420. 13,2314. 6748. Çaṃk. 41. Kumâras. 5,43. Spr. (II) 241. Bhâg. P. 4,3,20. 25,27. 26,28. 9,19,13. Brahma-P. in LA. (III) 53,10. Çiv. ebend. 36,19. Bhaṭṭ. in Sidḍh. K. 18,a,4. सुधूस् voc. f. Sidḍh. K. 18,a,4. Bhâg. P. 10,42,12. 62,13. सुधूम् acc. f. MBu. 1,7723 (सुधुम् Suśr. 4,13. 23). Mârk. P. 21,17. सुधुवा instr. f. Râǵa-Tar. 6,141. सुधुवस् gen. f. 4,430. Spr. (II) 6701. Siṃh. D. 40,7. सुधुवाम् gen. pl. f. Spr. (II) 6782. अन्न° Khaṇḍ. 47. सुधु nom. acc. n. R. 6,8,1. 95,24 (सुधु सु° zu schreiben). Bhâg. P. 4,25,31. सुध्वा instr. n. 3,8,27. सुधानन adj. Bhâg. P. 1,19,26. — 2) f. सुधू N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBu. 9,2626.

सुधुनासातिकेशात्त adj. dessen Brauen, Nase, Augen und Locken schön sind MBu. 1,5975.

सुंभ्वन् liest Sây. st. प्रुंभ्वन् ṚV. 4,38,6. so v. a. wohlausschend (von 6. सु + 1. भू).

सुम 1) m. = चन्द्र und नभस् Uṇâdis. im Saṃkshiptas. nach ÇKDa. — 2) n. = कुसुम Blume, Blüthe Bharata zu AK. 2,4,2,17 nach ÇKDa. H. 1124. Spr. (II) 2921. Çaṃk. 14,222.

सुमख 1) adj. lustig, munter, freudig: Marut ṚV. 1,64,1. 85,4. ते रुद्रासः सुमखा यापयो यथा 5,57,7. 4,3,7. Indra 1,165,11. 2,18,4. Agni 4,3,14. सदस् 10,50,1. Çiṃśu. Ça. 7,10,10. — 2) n. Lust, Freudenfest: °स्य मूरिः ṚV. 1,181,4. यापश्चाक्रा सुमखाय वोचम् 5,41,14.

सुमखस्यमान partic. festfeiernd, freudig TS. 3,2,8,5.

सुमगध m. pl. und °म् adv. Ind. St. 13,373.375. f. ई f. Titel eines buddh. Sûtra Wassiljew 176. — Vgl. सुमागध.

सुमङ्गल gaṇa saṃkalâdi zu P. 4,2,75. 1) adj. (f. ई; nach P. 4,1,20 ved. सुमङ्गली, später या). a) Glück bringend: Vogel ṚV. 2,42,2. Soma 9,80,3. 10,102,11. दत्ती AV. 5,140,3. 8,5,1. 16. वासस् 14,1,30. VS. 16. 6. 20,4. Kauç. 50. °नामन् Çat. Bṛ. 5,4,4,14. सुमङ्गलीरियं वधूः (vgl. P. 5,2,109, Vârtt. 2, Schol.) ṚV. 10,85,33. 1,113,12. AV. 3,10,2. 14,1,60. 2,25. fg. Kauç. 24. 39. 76. घाशीर्वादाः MBu. 3,2764. Bhâg. P. 2,6,35. कथा लोकसुमङ्गलाः 8,2. — b) einen guten Wandel führend (= सदाचार Comm.) Bhâg. P. 2,4,17. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Ind. St. 4,333. Hall 69. — 3) f. या a) eine best. Arzneipflanze, = वायसोली Ratnam. im ÇKDa. — b) ein Frauenname Kathâs. 124,175. — c) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBu. 9,2630. — d) N. pr. eines Flusses in Kâmâkhjâ Kâlikâ-P. 81 im ÇKDa. — 4) f. ई संज्ञायाम् gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. — 5) n. ein Glück bringender Gegenstand: ब्राह्मणैः ससुमङ्गलैः Bhâg. P. 1,11,19. — Vgl. सोमङ्गल, सौमङ्गल्य.

सुमङ्गा f. N. pr. eines Flusses VP. 184, N. 74 (angeblich im MBu.).

सुमज्जानि सुमत् + जा°) adj. sammt Frau: Vishṇu ṚV. 1,156,2.

सुमणि 1) adj. mit Kleinoden geziert AV. 20,128,7. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's (neben मणि) MBu. 9,2534.

सुमण्डल m. N. pr. eines Fürsten MBu. 2,997.

सुमत् adj. zusammen, zugleich: Nacht und Morgen सीदतां बर्हिरा सुमत् ṚV. 1,142,7. उप प्रागात्सुमन्मे ऽधायि मन्म देवानामाशाः Ein ging er — mitgegeben wurde ihm mein Gebet — in das Land der Götter 162, 7. सुमक्षूयं (vielleicht सुमक्षूयं) न 5,2,4. mit instr. mit: ज्ञायां पतिं वरुति यमुना सुमत् 10,32,8. Nach Naigh. 4,3. Nir. 6,22 so v. a. स्वयम्. Wir halten es für eine andere Aussprache von स्मत्; so ist z. B. ṚV. 7,3,8 statt स्मत्सूरीन् wohl zu sprechen सुमत्सूरीन्. Vgl. सुमज्जानि, सुमत्तर u. s. w.

सुमत m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. — Vgl. सौमतायन.

1. सुमति f. gen. pl. सुमतीनाम् und सुमतीनाम् Sidḍh. K. 233,a,16. 1) Wohlgesinntheit, Huld, Gnade; Gunsterweisung ṚV. 1,24,9. °तिं भिक्ष 73,6. 171,1. 7,6,6. °ती स्याम 1,98,1. 3,1,15. 4,50,11. 10,11,7. धीति, सु° 5,25,3. 8,15,9. 8,22,4. प्र तें मक्षो सुमतिं वेविदाम 7,24,6. 10,89,17. AV. 2,36,1. 7,17,2. mit obj. gen.: विधतः ṚV. 5,65,4. mit gen. der Sache: सुमतिं रोसि वस्वः 3,4,1. 57,6. 7,39,2. वाजवती 1,31. 18. भद्रा 3,30,7. भूरिदावरी 8,2,21. स्वादिष्ठा 75,4. नवीयसी 7,59,4. 8,92,9. 10,160,5. pl. 2,16,8. 7,18,20. 8,26,9. 10,47,7. तेषु मा (wenn nicht मे zu lesen ist) सुमतिं कृधि mach mich zu einem Gegenstand der Gunst AV. 17,1,7. Wohlwollen Spr. (II) 4601, v. l. — 2) Andacht, Gebet: यच्छा गिरः सुमतिं गन्तम् ṚV. 1,151,7. 166,6. 7,18,4. अर्चामि ते °तिम् 4,4,8. 23,2. प्र सुमतिं कृणुधम् 7,31,10. °तिभिः प्र स्तुवीमहि 8,22,6. 9,74,1. 10,40,12. AV. 4,23,2. — 3) Wohlgefallen so v. a. wohlthuende Empfindung: यापो न मलू सुमतिर्भवा नः ṚV. 9,88,7. ऊर्ज च तत्र सुमतिं च पिन्वत AV. 6,22,2. — 4) ein richtiger Sinn für Etwas (loc.): न ते ऽस्ति सुमतिर्धर्मे R. 4,16,27. — Vgl. देव°.

2. सुमति 1) adj. klug, verständig Spr. (II) 3116. 7119. Z. d. d. m. G. 27,17. Pâṇ. 3,7,27 (समुति° gedr.). Bhâg. P. 10,60,38. Pâṇ. 25. 13. Daçak. 2,8 (mit der ed. Calc. सुमतिर्ली° zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 148,a,4 v. u. vollkommen vertraut mit (gen.): विद्यानां कलानां च सर्वासाम् Kathâs. 44,22. — 2) m. N. pr. a) eines Daitja MBu. 2,365. Ha-

xiv. 12696 nach der Lesart der neueren Ausg., सुनति die ältere. — *b*) verschiedener Männer: ein Ṛshi MBh. 13, 1761. Verz. d. Oxf. H. 264, *a*, 5. unter Manu Sâvarṇa Harîv. 465. ein Sohn Bhṛgu's Ind. St. 1, 235. eines Bhârgava Mârk. P. 10, 8. fgg. ein Âtreja Verz. d. Oxf. H. 55, *b*, 40. ein Schüler Sûta's VP. 283. ein Fürst Verz. d. Oxf. H. 10, *b*, 8. ein Sohn Bharata's VP. 164. Mârk. P. 53, 41. Bhâg. P. 5, 7, 3. 15, 1. Somadatta's 9, 2, 36. R. 1, 47, 17. 20. Supârçva's Harîv. 1079. fg. VP. 453. Bhâg. P. 9, 21, 28. Ganameǵaja's VP. 354. Dṛḍhasena's 465. Bhâg. P. 9, 22, 47. Nṛga's 2, 17. Ṛteju's 20, 6. 7. Vidûratha's Mârk. P. 116, 10. N. pr. des 5ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 26. des 13ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇî 52. — Mâlav. 67, 16. Kathâs. 120, 14. Daçak. 9, 20. Pañkat. 4, 16 (1, 19 ed. orn.). Lalit. ed. Calc. 202, 5. Lot. de la b. l. 12. — 3) °ति und °ती N. pr. einer Frau Sagara's R. 1, 39, 4. 14 (40, 14. 17 Gorr.). VP. 377. Bhâg. P. 9, 8, 8. einer Tochter Kratu's VP. 83, N. 7. der Frau des Vishṇujaças und Mutter Kalkin's Kalki-P. 2 im ÇKDa. einer Fee Târân. 277.

सुमतिञ्जय m. ein N. Vishṇu's H. ç. 69. ohne Zweifel fehlerhaft für समितिञ्जय.

सुमतित्सरु adj. von unbekannter Bed., Beiw. des Pfluges TS. 4, 2, 5, 6. die v. l. सोमपित्सरु VS. 12, 71. Kâṭh. 16, 12 und सोमसत्सरु AV. 3, 17, 3 zeigt, dass man das Wort nicht mehr verstand.

सुमतिभद्र m. N. pr. eines Mannes Siddhanamâlâ. 190.

सुमतिमेरुगणि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 186, *a*, 4. 5.

सुमतिरत्नार्य m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 400, *a*, 1.

सुमतिरोण m. N. pr. eines Schlangendämons Vâstuv. 89.

सुमतिशील m. N. pr. eines Lehrers Târân. 211.

सुमतिसुत Suçr. 2, 66, 19 wohl fehlerhaft für समति°.

सुमतीकृत s. u. मतीकृ.

सुमतीवृध् adj. VP. Pait. 3, 96. *des Gebets sich freuend* VS. 22, 13.

सुमर्त्तर (सु° + तर्) adj. *tränfeind, vollsaftig* VS. 21, 43.

सुमर्दंशु (सुमत् + दंशु) adj. etwa *sammt Zügel* ṚV. 1, 100, 16.

सुमदन m. *Mangifera indica Lin.* (आम्र) Râǵân. 11, 11.

सुमदात्मजा f. *eine* Apsaras Trik. 1, 1, 64.

सुमर्दृण (सुमत् + गण) adj. *sammt der Schaar* ṚV. 2, 36, 3.

सुमर्दु (सुमत् + गु) adj. *sammt Gespann* AV. 5, 1, 7. unsichere Stelle.

सुमद्र m. pl. und °म् adv. (= मद्राणां समृद्धिः) Ind. St. 13, 373. 385. P. 2, 1, 6, Schol. Vop. 6, 61.

सुमर्द्रथ (सुमत् + रथ) adj. *sammt Wagen* ṚV. 3, 3, 9. Vâlakh. 8, 5. या ते हरी गृभ्णे सुमद्रथा ṚV. 8, 45, 39.

सुमधुर 1) adj. *a*) *überaus süss.* — *b*) *überaus lieblich*, — *zart:* गीतिधनि MBh. 13, 2839. वचस् R. 1, 9, 32. = साम्न H. 266. *überaus lieblich singend:* कंसा: MBh. 13, 2839. °म् adv.: कूजन् Brahma-P. in LA. (III) 52, 3. — 2) m. *eine best. Gemüsepflanze*, = जीवशाक Râǵân. 7, 80.

सुमध्य adj. (f. या) 1) *schön in der Mitte* so v. a. *mit schönem Füllsel versehen:* मांसानि R. ed. Bomb. 2, 91, 52. सुमेध्य ed. Schl. — 2) *eine schöne Taille habend:* ein Weib Harîv. 14161 (die neuere Ausg. überall pl.). Mârk. P. 22, 5. Brahma-P. in LA. (III) 50, 5.

1. सुमध्यम adj. *sehr mittelmässig* Kâm. Nîtis. 16, 20.

2. सुमध्यम adj. (f. या) = सुमध्य 2): ein Weib MBh. 1, 5968. 3, 2081. 2089. 5, 6093. R. 1, 23, 14. 2, 49, 43. 52, 43. 49. 79, 16. Çaut. 31. Raǵat. 11, 84. Brahma-P. in LA. (III) 53, 10. 57, 18. Bhâg. P. 3, 24, 14. 4, 30, 16. 5, 18, 34.

सुमन 1) adj. *lieblich, hübsch* Çabdar. im ÇKDa. — 2) m. *a*) *Weizen* AK. 2, 9, 18. H. 1174. — *b*) *Stechapfel* Çabdam. im ÇKDa. — *c*) N. pr. eines mythischen Wesens MBh. 2, 303. einer der vier Bodhivṛkshadevatâ Lalit. ed. Calc. 347, 8. eines Schlangendämons Schiefner, Lebensb. 256 (26). — 3) f. या *a*) *Jasminum grandiflorum* AK. 2, 4, 2, 53 (könnte auch सुमनस् sein). Çabdar. im ÇKDa. Râǵân. 10, 75. *Rosa glandulifera* oder *Chrysanthemum indicum* 80. — Suçr. 2, 97, 21. 112, 3. 122, 11. 347, 3. 419, 12 (= जाती Comm.; सुमनस् der gedr. Text). वेश्या: श्मशानसुमना (wohl *Blume* überh.) इव वर्ज्जनीया: Spr. (II) 1458. — *b*) N. pr. einer Kaikeǵî MBh. 13, 5859. fgg. Gattin Dama's Mârk. P. 134, 3. 10. 59. fg. 135, 5. 6. Verz. d. Oxf. H. 12, *b*, 43. fgg.

सुमन:पत्र n. *Muskatblüthe* Suçr. 2, 66, 1.

सुमन:पत्रिका f. dass. Dhanv. 3, 21. Râǵân. 12, 78.

सुमन:फल 1) m. *Feronia elephantum Corr.* Çabdam. in Verz. d. Oxf. H. 195, *b*, 4 v. u. — 2) n. *Muskatnuss* Râǵân. 12, 80.

सुमनक *Blume* Pañkat. 3, 8, 10.

सुमनस् 1) adj. *a*) *wohlgesinnt, günstig, hold* ṚV. 1, 91, 4. 2, 32, 2. 3, 4. 1. शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि 35, 6. 54, 22. 4, 3, 15. 10, 32, 2. 85, 44. 100. 4. 141, 1. वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना 149, 4. जाया: पुत्रा: सुमनसो भवन्तु AV. 3, 4, 3. 12, 5. ओषधय: Gobh. 2, 6, 6. VS. 15, 1. Kâṭhaka 1, 10. — *b*) *wohlthuend:* घृतं तृष्टं वेवनिवाधेव सुमना घसि ṚV. 3, 9, 3. 18, 1. सदा वे सुमनस: स्याम *dir angenehm* 7, 4, 4. — *c*) *wohlgemuth, heiter, fröhlich, behaglich:* क्रीळन्तस्त्वा सुमनस: सपेम ṚV. 4, 4, 9. 6, 52, 5. 7, 1, 9. 78, 3. कदा मृळीकं सुमनो भुवि ब्याम् 86, 2. 10, 37, 7. AV. 3, 4, 7. 5, 99, 3. 7, 60, 1. 12, 2, 49. राया वयं सुमनस: स्याम 14, 2, 36. VS. 3, 41. Lâṭy. 3, 3, 1. गृहा: Âçv. Ç. 2, 5, 17. MBh. 1, 1943. 6097. 3, 981. 1203. 15, 574. Harîv. 9072. Kâraka 1, 3. Çiñkh. Saṃh. 1, 1, 39. Spr. (II) 4990. Varâh. Bṛh. S. 48, 13. Mârk. P. 134, 59. Brahma-P. in LA. (III) 53, 20. Verz. d. Oxf. H. 32, *a*, 43. — *d*) *klug, verständig* Trik. 3, 3, 452. H. an. 3, 760. Med. s. 66. Vaij. bei Mallin. zu Çiç. 16, 24 देवबुधो: nach Stenzler zu lesen). R. 1, 7, 6 (11 Gorr.). Spr. (II) 3800. 3580. Verz. d. Oxf. H. 160, *b*, 8. 263, *b*, No 636. fg. pl. *Kluge* und zugleich *Blumen* Spr. (II) 118. Çiç. 16, 24. Kathâs. 73, 21. — 2) m. *a*) *ein Gott* AK. 1, 1, 8, 2. Trik. H. 88. H. an. देव st. देव zu lesen). Med. Hall. 1, 4. Vaij. — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: *Guilandina Bonduc* Çabdam. im ÇKDa. *Azadirachta indica Juss.* Râǵân. im ÇKDa. *eine Art* Karañǵa (मकारञ्ज) Râǵân. 9, 67. *Weizen* 16, 30. — Suçr. 1, 132, 12. 134, 11. 146, 4. 157, 15. — *c*) pl. Bez. einer Klasse von Göttern unter dem 12ten Manu VP. 268. Mârk. P. 94, 33. — *d*) N. pr. eines Dânava MBh. 2, 365. Harîv. 12696 nach der Lesart der neueren Ausg., सुनामन् die ältere. — *e*) N. pr. verschiedener Männer Harîv. 1265. MBh. 2, 120. 322. Kathâs. 56, 226. 59, 22. ein Sohn Ûru's von der Âgneǵî Harîv. 73. VP. 98. ein Sohn Ulmuka's Bhâg. P. 4, 13, 17. Harǵaçva's VP. 371 (besser वसुमनस् der gedr. Text 4, 3, 12). — Daçak. 3, 8. 9, 20. — 3) f. *a*) pl. *Blumen* AK. 2, 4, 2, 17. Trik. H. 1123. H. an. Med. Hall. 2,

21. Vaiś. (zu lesen nach Stenzler सुमना: पुष्पमालत्यो:). Çâṅku. Gṛhy. 1, 4, 4, 15. Pân. Gṛhy. 2, 6. M. 2, 182. सुमनस: (nach Nîlak. gen. sg. in der Bed. *Gott*) शेषा: प्रतिगृह्य MBh. 3, 16644. मनो ह्लादयते यस्माच्छ्रुतं चापि ददाति च। तस्मात्सुमनसः प्रोक्ता: 13, 4696. fgg. 14, 2294. 15, 422. R. 2, 24, 26. 43, 14 (42, 16 Gorr.). 100, 31 (108, 33 Gorr.). R. Gorr. 2, 25, 18. 3, 76, 13. 6, 97, 19. Çiç. 7, 2. 8, 10. Spr. (II) 93. 6037. Bhâg. P. 3, 13, 19. 24, 8. 4, 29, 53. 5, 2, 6. 5, 18, 36. im comp.: शमीसुमनोमालिन् Âçv. Gṛhy. 4, 6, 4. R. 5, 11, 20. Suçr. 1, 103, 12. 243, 19. Çiç. 48, 20. Spr. (II) 1782. Vârâh. Bṛh. S. 48, 35. Râja-Tar. 4, 245. Verz. d. Oxf. H. 103, *b*, 25. Bhâg. P. 4, 15, 7. 29, 31. 5, 2, 9. 8, 7, 12. सुमनोगन्धमाहात्म्य Verz. d. B. H. 142, 10 v. u. du. P. 2, 4, 75, Schol. pl. (oder im comp.) *Blumen* und zugleich *Klugo* Spr. (II) 118. Çiç. 16, 24. Kathâs. 73, 21. — *b*) *Jasminum grandiflorum* AK. 2, 4, 2, 53 (oder सुमना). Taik. H. an. Med. Vaiś. — *c*) N. pr. verschiedener Frauen Kathâs. 123, 219. fgg. Gattin Madhu's und Mutter Viravrata's Bhâg. P. 5, 15, 13. — 4) n. *Blume* Bhâsâ zu AK. nach ÇKDa. विना गन्धं च सुमन: Çâṅk. 10, 185. — Vgl. सोमनस, सौमनस्य.

सुमनस्य् (von सुमनस्), nur partic. °स्यमान 1) *günstig, hold* RV. 6, 74, 4. 7, 33, 14. 10, 51, 5. 7. AV. 1, 35, 1. 2. 35, 3 u. s. w. VS. 15, 2. — 2) *fröhlich, wohlgemuth, nach Herzenslust* RV. 6, 75, 5. AV. 7, 43, 1. 14, 2, 17. 31. 39. VS. 12, 57. TBr. 3, 7, 5, 3. क्षेत्रास्तृप्यत सु° Lâṭ. 2, 9, 1. Âçv. Gṛhy. 1, 7, 6. Pân. Gṛhy. 1, 6, 3.

सुमनामुख adj. (f. ई) *heiteren Antlitzes* Çâṅkh. Gṛhy. 3, 12. 14.

सुमनाय् (von सुमनस्), °यते *wohlgemuth —, heiter werden* gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 12.

सुमनायर्न m. patron. Sâṅkh. K. 184, *b*, 11 wohl fehlerhaft für सौम°.

सुमनास्य m. N. pr. eines Schlangendämons Hariv. 9503. — Vgl. समानास und सुमनोमुख.

सुमनीकर् (सुमनस् + 1. कर्), °करोति *erfreuen* Bhaṭṭ. 3, 2.

सुमनोकस (सुमनस् + ओकस्) *Götterbehausung, Götterwelt:* °सं व्रगाम Hariv. 7455. सुमनो° die neuere Ausg.

सुमनोज्ञघोष m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5, 19.

सुमनोत्तरा f. N. pr. eines Frauenzimmers und Titel der über sie handelnden Erzählung P. 4, 3, 87, Vârtt., Schol.

सुमनोमत्तक m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 6, 339. 347. nach Taoverr zwei Namen.

सुमनोमुख m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 5, 3628. — Vgl. सुमनास्य.

सुमनोरज्स् n. *Blüthenstaub* AK. 2. 4, 2, 17.

सुमनोलता f. *eine blühende Schlingpflanze* Spr. (II) 378.

सुमनोरुच् adj. (f. या) *überaus reizend, — lieblich:* Vogel MBh. 1, 1106. व्रप 5976. वेश्मन् 3, 1834. गङ्गेर्मय: 13, 1839. गोतमीतीर Brahma-P. in I. A. (III) 49, 7. Pañcat. 1, 8, 1. शास्त्र Pañcat. Pr. 3.

सुमनोकस s. सुमनोकस.

सुमन्तु 1) adj. *leicht kenntlich, wohlbekannt:* नामन् RV. 10, 12, 6. 64, 1. — 2) m. N. pr. eines Lehrers (Schülers Vjâsa's und Verfassers eines Dharmaçâstra) Âçv. Gṛhy. 3, 4, 4. Çâṅkh. Gṛhy. 4, 10. 6, 6. Ind. St. 1, 233. fg. 4, 57. MBh. 1, 2418. 2, 106. 12, 1693 (यष्मकसुमन्तुना). 12337. Harîv. 7099. VP. 276. 282. Verz. d. B. H. 92, 4. No. 1017. 1028. 1166. Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 8. 19, *a*, 19 (pl.). 30, *b*, 32. 53, *a*, 32. 54, *b*, 2. 6. 55, *a*, 38. *b*, 28. 62, *a*, 22. 266, *b*, 3, 21. 271, *a*, 12. 279, *b*, 42. 350, *a*, 34. Bhâg. P. 1, 4, 22. 12, 6, 53. 75. Kull. zu M. 3, 66. 11, 141. °सूत्र citirt unter महाघनिक. N. pr. eines Fürsten Weber, Kâṇḍân. 231. eines Sohnes des Gâhnu VP. 399. सुमन्तु der gedr. Text. — Vgl. सोमन्त.

सुमन्तुनामन् adj. *einen wohlbekannten Namen führend* RV. 6, 16, 13.

सुमन्त्र 1) adj. *einen guten Rath habend, gute Pläne machend* Spr. (II) 6558. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer: ein Lehrer mit den patronn. Bâbhrava Gautama Ind. St. 4, 373. ein Rathgeber und Wagenlenker Daçaratha's R. 1, 7, 3. 8, 4. 2, 34, 10. 53, 2. R. Gorr. 2, 39, 18. 89, 3. 7, 59, 3, 26. Weber, Bhag. Up. 302. Raghu. 13, 59. 14, 47. ein Rathgeber Harivarman's Kathâs. 52, 264. ein Sohn Antarikshaka's VP. 463, N. 14. ein älterer Bruder Kalki's Kalki-P. im ÇKDa. — Daçan. 3, 9. 9, 20.

सुमन्त्रक m. = सुमन्त्र N. pr. eines älteren Bruders des Kalki Kalki-P. im ÇKDa.

सुमन्त्रित adj. *gut gerathschlagt;* impers.: मया न मन्त्रकुशलैर्वै दे: मन्त्र सुमन्त्रितम् R. 2, 59, 20. सुमन्त्रितं कर् *gut rathschlagen* Spr. (II) 7121. *gut berathen:* कर्मन् 3557. प्रारम्भ 7122.

सुमन्त्रिन् adj. *einen guten Minister habend* Spr. (II) 2878. — 3606 *ein guter Minister*, aber offenbar schlechte Lesart.

सुमन्दबुद्धि adj. *von sehr geringem Verstande* MBh. 5, 7297.

सुमन्दभाग् adj. *sehr unglücklich* MBh. 1, 5968.

सुमन्दा f. Bez. einer Çakti Pañcar. 3, 2, 6.

सुमन्द adj. *sehr gedämpft, — leise* Âçv. Çr. 2, 15, 11. 4, 8, 21.

1. सुमन्मन् n. pl. *gute Wünsche:* घा नो यसं वीक्षि सुमन्मभि: RV. 8, 90, 9.

2. सुमन्मन् adj. *gute Andacht verrichtend, gute Wünsche aussprechend:* कारु RV. 7, 68, 9. 3, 2, 12.

सुमन्यु m. N. pr. eines Devagandharva MBh. 1, 4814 (सुमन्यु ed. Bomb.). eines freigebigen Mannes 13, 6166 nach der Lesart der ed. Bomb., सुमन्यु ed. Calc.

सुमर 1) adj. n. impers. *leicht zu sterben* oder n. *ein leichter Tod:* यथा न मन्ये दुर्जीवं तथा न सुमरं ध्रुवम् R. Gorr. 2, 57, 20. — 2) m. *Wind* H. ç. 171.

सुमरीचिका f. Bez. *einer der neun Arten von Tushṭi im Sâṁkhja* Tattvas. 39.

सुमल्लिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 362 (VP. 192 सुमल्लि, सुमल्लिक in der neueren Ausg.).

सुमरु m. N. pr. eines Sohnes des Gâhnu Harîv. 1423 nach der Lesart der neueren Ausg., सुनरु die ältere.

सुमरुत्् adj. *sehr gross, valde magnus* (im Raume, in der Zeit, der Zahl, der Menge, dem Grade nach): शरण Nir. 5, 22. सुमरुदधानम् (über diese neutrale Form s. u. मरुत्) MBh. 3, 16236. काय, वपुस् R. 3, 50, 26. 55, 1. सागरं सुमरुत् 6, 34, 14. नारायणसरस्तीर्थ Bhâg. P. 6, 5, 2. घन्ववाय Harîv. 2014. घपत्यलाभ (zu घपत्य gehörig, also *überaus zahlreich*) R. 1, 39, 7. ज्ञन 6, 101, 23. शास्त्राणि Spr. (II) 7123. भोज्यानि Vârâh. Bṛh. S. 46, 81. खल Nir. 11, 2. वध R. 2, 21, 23. साहस MBh. 3, 2285. वीर्य R. 1,

3,9. तेजस् Spr. (II) 2690. दुःख M. 4,167. MBh. 5,6047. तपस् R. 1,57, 8. Brahma-P. in LA. (III) 49,13. पीडा Varâh. Bṛh. S. 3,36. भय 46,35. 44. विस्मय R. 6,18,1. महानाद् s. शब्द, स्वन MBh. 1,3331. 3,2013. कार्य 2110. 2273. R. 1,64,1. Kathâs. 18,81. कर्मन् Râgat. 12,56. वाक्य R. 1,60, 23. केतस् erhaben ṚV. 7,8,2. सुमक्ष am Anf. eines comp.: °शाल R. 1, 5,12. सुमक्षोत्सव Weber, Kâtjâjan. 307.

सुमक्षस् adj. *herrlich:* Agni ṚV. 4,11,2. 10,7,7. Sûrja 6,50,3. Âditja 2,18,8. überall voc.

सुमक्षाकपि m. N. pr. eines Dämons Harîv. 9562.

सुमक्षातपस् adj. *sehr strenge Askese übend, überaus fromm* MBh. 3, 6044. Harîv. 383.

सुमक्षात्मन् adj. *von sehr edler Natur, überaus hochherzig:* शक्र MBh. 3, 208.

सुमक्षात्यय adj. *sehr grosse Leiden verursachend, überaus verderblich:* युद्ध MBh. 5,7250.

सुमक्षावल adj. (f. आ) *überaus mächtig* MBh. 5,7447. Harîv. 16312. *überaus wirksam:* ओषधी MBh. 2,1862.

सुमक्षावाहु adj. *überaus lange Arme habend* MBh. 5,7273.

सुमक्षामनस् adj. *überaus hohen Sinnes* MBh. 3,2764.

सुमक्षाय m. *ein sehr grosser Kriegsheld* MBh. 7,8635.

सुमक्षासत्त्व adj. *von überaus edlem Wesen* Harîv. 221.

सुमागध 1) m. N. pr. eines Mannes R. 7,43,2. — 2) f. आ N. pr. einer Tochter Anâthapiṇḍika's Burnouf, Intr. 312. 399. 566. Schiefner, Lebensb. 283 (53). सुमागधा Index des Kandjur 52. — 3) f. ई N. pr. eines Flusses in Magadha R. 1, 34,9 (35,8 Gorr.).

सुमागधक s. Ind. St. 13,384.

1. सुमातर् f. *eine gute oder schöne Mutter;* s. सौमात्र.

2. सुमातर् adj. *eine schöne Mutter habend* ṚV. 10,78,6.

3. सुमातर् nom. ag. *ein guter Messer (mattitor);* s. सौमात्र.

सुमानिका f. Bez. zweier Metra: 1) *4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,159 (II,5). — 2) *4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑ ebend. (III,6).

सुमानिता f. *Selbstbewusstsein, Stolz* MBh. 9,65.

सुमार्य 1) adj. *guter Anschläge voll* Nir. 11,13. Marut ṚV. 1,88,1. 167,2. — 2) m. N. pr. eines Fürsten der Asura Kathâs. 45,224. 322. 46,38. eines Vidjâdhara 48,121. — 3) f. आ N. pr. einer Tochter Maja's Kathâs. 45,340.

सुमायक m. N. pr. eines Vidjâdhara, = सुमाय Kathâs. 48,136.

सुमारुत n. etwa *das gute Volk der Winde* ṚV. 10,77,1. 2.

सुमात्र adj. *sehr fein* Çat. Br. 6,1,2,4.

सुमाल m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1029. चोल ed. Bomb.

सुमालती f. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,159 (I,10).

सुमालि und °न् m. N. pr. eines Râkshasa Harîv. 385. R. 7,5,6. Bâlar. P. 6,10,21. 8,10,36. Verz. d. Oxf. H. 26,a,11. eines Affen R. 6, 32,19. eines Sohnes des Brahmanen Vedamâli Verz. d. Oxf. H. 11,a,3.

सुमाल्य m. N. pr. eines Sohnes des Nanda VP. 468. Bâlar. P. 12,1,10.

सुमाल्यक m. N. pr. eines Berges Golâbh. Bhuvanak. 30.

सुमार्ष adj. P. 6,2,171, Schol. °क desgl. 174, Schol.

1. सुमित adj. *wohl gemessen* ṚV. 10,29,6.

2. सुमित adj. *fest gegründet:* स्थूणा ṚV. 5,45,2.

सुमिति f. *gute Befestigung:* eines Pfostens ṚV. 3,8,3.

सुमित्र 1) adj. (f. आ) *ein guter Freund* ṚV. 1,91,12. 10,105,11. TS. 1,4,45,2. सुमित्रः सन्कूरमकः Pârask. Bh. 13,6,10. 9. सुमित्र voc. Bâlar. P. 3,19,33. — 2) m. N. pr. *a)* eines Unholds MBh. 3,14167. — *b)* verschiedener Männer: ein Ṛshi und Liederverfasser mit dem patron. Vâdhrjaçva ṚV. 10,69,3. 5. pl. 1. 7. 8. Kautsa, Liederverfasser von 10, 105. — MBh. 2,105. ein Fürst der Sauvira MBh. 1,3699. 5537. 2,120. 1069. 12,4639. fgg. von Mithilâ Lalit. ed. Calc. 24,13. Schiefner, Lebensb. 235 (5). von Magadha und Vater des Arhant Suvrata H. 38. Çâṅk. 10,333. Wagenlenker Abhimanju's MBh. 7,1537. Sohn Gada's Harîv. 9193. Çâma's 1943 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Çamika's (Samika's) Bâlar. P. 9,24,43. Kṛshṇa's 10,61,11. Pârâs. 2, 4,46 (?). Vṛshṇi's VP. 424. Bâlar. P. 9,24,11. Agnimitra's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. Suratha's, mit ihm erlischt das Geschlecht Ikshvâku's VP. 464. Bâlar. P. 9,12,15. — Daçak. 3,10. 9,20. — 3) f. आ N. pr. *a)* einer Jakshiṇî Kathâs. 108,48. — *b)* einer Gattin Daçaratha's, Mutter Lakshmaṇa's und Çatrughna's, R. 1,19,7. 2,31. 11. 40,3. 64,73. Râgat. 10,86. 14,51. der Mutter Mârkaṇḍeja's Verz. d. Oxf. H. 82,b,31. Gajadeva's 142,a,4. 5. — Vgl. सौमित्र fg.

सुमित्रभू m. N. pr. des 21en Ćakravartin in Bhârata, = मघ H. 692.

सुमित्र्य adj. *wohlbefreundet* ṚV. 10,65,3. VS. 6,22.

सुमीळ्ह (सुमीळ्ह्) m. N. pr. eines Mannes ṚV. 6,63,9. eines Sohnes des Suhotra MBh. 1,3720.

सुमोन m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,30.

1. सुमुख n. 1) *ein schöner Mund* Spr. (II) 7124. — 2) *ein heiteres Gesicht,* instr. so v. a. *wohlgemuth* Kâm. Nîtis. 15,6.

2. सुमुख 1) adj. (f. आ und ई, in übertragener Bed. aber nur आ) P. 4,1, 54. Vop. 4,17. *a) schön von Gesicht* Çârṅgar. im ÇKDr. R. Gorr. 1,1. 14. 3,23,15. Kathâs. 42,228. Bâlar. P. 4,21,15. स्वभावकास° 5,5,21. häufig f. ई auch als subst. Kumâras. 1,26. Çâk. 181. Spr. (II) 6435. Gît. 5,19 (सुमुखि सु° zu trennen). Kathâs. 26,154. 43,116. 72,60. 84. 13. Z. d. d. m. G. 14,574,19. Bâlar. P. 3,6,4. — *b) ein heiteres Gesicht zeigend, guter Dinge, froh* MBh. 5,3672. 8,4676. रात्रप्रवेश° R. 1,77,7. Milârâm. 150,12. — *c) geneigt, gewillt zu Etwas;* in comp. mit प्रसाद् Harîv. 9856. 10845. 10850. Raṅg. 4,19. Mâlav. 93. Mârk. P. 8,64. 248. 19,13. 64,17. 105,8 (zu lesen प्रसादसु°). Brahma-P. in LA. (III) 54,18. Bâlar. P. 2,7,23. 3,15,39. 4,24,25. 7,10,24; vgl. प्रसादसंमुख Pârâs. 25,21. — *d) günstig, hold:* मारुत R. 6,92,67. — *e) gelehrt* H. an. 3,115. — *f) mit einer schönen Spitze versehen:* Pfeil MBh. 3,16522. 6,5178. Harîv. 13419. — *g) mit einem schönen Eingang versehen:* सुमुखा शाला Sudr. K. zu P. 4,1,54. Vop. 4,17. — 2) m. *a) eine best. Gemüsepflanze* Med. kh. 13. Çabdar. im ÇKDr. *Ocimum basilicum pilosum* Râgân. 10,161. *ein wildes Ocimum* 165. *eine dritte Art* (बर्बर) 173. Dhanv. 4,29. — Kâraka 1,27. Suçr. 1,138,16. 157,10. 217,3. 218,11. Vîrân. 1,1,107. 109. — *b) ein best. in Schaaren lebender Vogel* Kâraka 1,27. v. l. सुमु-

ख्या. — c) Bein. Ganeça's Çabdar. im ÇKDr. — d) N. pr. α) eines Sohnes des Garuḍa Trik. 3,3,33. H. an. Med. MBh. 5,3587. 3597. 6,208. des Droṇa (ein mythischer Vogel) Mirk. P. 1,21. — β) eines Schlangendämons H. an. Med. MBh. 1,1559. 5,3639. fgg. 3672. Hariv. 220. — γ) eines Asura Hariv. 12936 nach der Lesart der neueren Ausg. — δ) pl. einer Klasse von Göttern Burnouf, Intr. 616. — ε) eines Ṛshi MBh. 2,145. R. 7,1,8. Verz. d. Oxf. H. 52,a,29. eines Fürsten Verz. d. Cambr. H. 1. der durch schlechtes Benehmen zu Grunde ging M. 7,41. — ζ) eines Affen R. 5,4,8. — 3) f. ई a) *Spiegel* Çabdarthak. bei Wilson. — b) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–,⏑⏑–⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,160 (VI,12). Ind. St. 8,376. — c) N. pr. einer Apsaras Viṣṇ. beim Schol. zu H. 183. MBh. 13,1425. Hariv. 12472. — 4) n. *eine durch Fingernägel hervorgebrachte Verletzung von bestimmtem Aussehn* Çabdar. im ÇKDr.

सुमुखसू m. *der Vater* Sumukha's d. i. Garuḍa Trik. 1,1,13.

सुमुखीकृ (सुमुख + 1. कृ) *mit einer schönen Spitze versehen:* °कृत ein Pfeil MBh. 8,4668.

सुमुण्डीक m. N. pr. eines Asura Kathās. 45,49. 52. 375. 50,49.

सुमुष्टि m. *Hoya viridiflora R. Br.* Rāǵān. 4,135.

1. सुमुहूर्त m. n. *eine glückliche Stunde:* °र्ते Kathās. 121,181. Daçak. 9,17.

2. सुमुहूर्त adj. *zu einer glücklichen Stunde Statt findend:* युद्ध MBh. 3,1608.

सुमूर्त्य eine verdächtige Lesart für मौर्य VP. 470, N. 26.

सुमूल 1) adj. *eine schöne Wurzel habend.* — 2) m. *Moringa pterygosperma Gaertn.* Rāǵān. 7,20. — 3) f. या *Glycine debilis* Rāǵān. 4,18. *Hemionitis cordifolia Roxb.* Rāǵān. im ÇKDr.

सुमूलक n. *Daucus Carota Lin., Möhre* Rāǵān. 7,24.

सुमृगं n. *gutes Wild* so v. a. *gute Jagd* AV. 19,8,3.

सुमृडीक (सुमृळीक) 1) adj. *erbarmungsvoll, mitleidig; gnädig* ṚV. 1, 35,10. 91,11. 118,1. 4,1,20. 3,3. 6,47,12. 8,56,1. 10. VS. 4,11. 22,20. AV. 7,68,2. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18,a,15. 19,b,36. — 3) n. *Erbarmen:* सुमृळीके यस्य सुमतौ स्याम AV. 7,20,3; vgl. ṚV. 8,48,12.

सुमृत्यु m. *ein schöner —, leichter Tod* Pāṇ. 1,3,11.

सुमृष्ट adj. 1) *schön rein:* °मणिकुण्डल MBh. 1,3295. 4,541. R. 1,13, 19. 5,16,39. Bhāg. P. 3,8,33. — 2) *überaus lecker, — wohlschmeckend* Spr. (II) 4961. Pāṇ. 113,8.

सुमेक (मेक von 1. मि) adj. *wohlgegründet, fest:* Pfosten ṚV. 4,6,3. Pfad 10,92,15. *feststehend, unerschütterlich in Ordnung, Folge u. s. w.:* Himmel und Erde ṚV. 1,146,3. 3,6,10. 15,3. 57,4. 4,42,3. 56,3. 6,66, 6. 7,56, 17. 87,3. Tag und Nacht 1,113,3. Jahr Çat. Br. 1,7,3,26. Meer TS. 4,4,7,2.

सुमेक्षल m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) *Roxb.* Rāǵān. im ÇKDr.

सुमेघ m. N. pr. eines Berges (*schön bewölkt*) R. 4,43,40.

1. सुमेधं adj. (f. धा) *saftig, kräftig:* गव्यूति ṚV. 8,5,6.

2. सुमेध adj. wohl so v. a. सुमेधस्; im Wortspiel ṚV. 10,132,7.

सुमेधस् 1) adj. P. 5,4,122. Vop. 6,27. *eine gute —, richtige Einsicht habend, verständig, weise* H. an. 3,760. Med. s. 66. °धाम् acc. ṚV. 10, 47,6. 125,5. — 1,185,10. केतम् 2,3,9. 10,45,7. ब्रह्मन् AV. 9,1,6. देवा धत्का दीद्यानः सुमेधाः ṚV. 3,15,5. 38,1. त्विक्षा *Ruf* 3,57,5. स्वादोरभूत् वयसः सुमेधाः *mit Verstand* 8,48,1. 6,67,5. 7,91,2. 10,62,1. Soma 9, 92,3. 93,3. Bṛhaspati 10,65,10. AV. 5,11,11. 7,60,1. 61,1. 2. VS. 3,41. Çat. Br. 14,9,4,5. Taitt. Up. 1,10,1. Kāṭh. Nirṛ. 15,30. Kathās. 27,149. 40,25. 103,144. Çatr. 1,285. Bhāg. P. 3,4,3. — 2) m. N. pr. α) einer Klasse von Göttern unter dem 8ten Manu VP. 1,3,21. Mirk. P. 75,71. — b) eines Ṛshi Ind. St. 3,244,b. Verz. d. Oxf. H. 52,a,44. unter Manu Cākshusha 76,54. eines Sohnes des Vedamitra 74,b,1. — 3) f. *Cardiospermum Halicacabum* H. an. Med.

सुमेध्य adj. *überaus rein* (in rituellem Sinne): मैसानि R. 2,91,30. सुमध्य ed. Bomb.

सुमेरु 1) m. α) N. pr. eines Berges, = मेरु (bei den Buddhisten unterschieden) AK. 1,1,1,45. H. 1032. Hall. 1,136. R. 3,61,5. 75,74. 7,35, 19. Kumāras. 6,72. Ragh. 8,30. Spr. (II) 82. 2271 (Conj.). 4036. Viṣṇ-P. bei Mus, ST. 1,30. Ind. St. 10,267. fg. Verz. d. B. H. No. 1240. Lalit. ed. Calc. 175,3. Lot. de la b. l. 216. Wassiljew 158. 187. Tāran. 75. 207. Vie de Hiouen-thsang 14. 76. — LIA. 1,50. — b) N. pr. eines Vidjādhara Kathās. 45,7. 8. 46,32. — c) ein N. Çiva's Çabdarthak. bei Wilson. — 2) adj. *best, excellent* ebend.

सुमेरुता f. N. pr. eines Flusses (*auf dem Sumeru entspringend*) Mirk. P. 57,28.

सुमेरुवत्स m. N. pr. eines Schlangendämons Vīrūp. 89.

सुम्न (या = मन्) n. 1) *Wohlwollen, Gunst, Huld, Güte;* pl. *Gunsterweisungen:* der Götter ṚV. 2,25,5. 8,19,4. 20,16. पक्षो देवानां प्रत्येति सुम्नम् 1,107,1. 169,1. या ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु 2,33,1 (vgl. Vārtt. zu P. 2,1,2). यद्धि सुम्नाय दधिरे पुरः *um Gunst zu erweisen* 3,2,5. 32,13. 4,30,19. 5,53,1. 75,6. सुमेधिहो घत्तमा मदेम 6,52,14. 53,9. 8,13,3. या नः सुमेषु यामय 3,3. 10,132,1. गोमत् Vīlakṣ. 1,9. TS. 5,4,6,6. — 2) (*Ausdruck der Zuneigung*) *Andacht, Gebet* u. s. w. ṚV. 1,41,3. 106,1. मरुतः सुम्नमर्चत 3,14,4. 6,68,2. 10,93,2. — 3) (*angenehme Empfindung*) *Frohsinn, Behagen; Befriedigung, Frieden* ṚV. 1,114,9. इयमूषू सुतिर्मम सुम्नमीयुः 2,19,8. 23,3. उक्थ्या 4,53,2. यत्तं सुम्नम् 5,67,2. 6,63,11. सुक्षत्रदिष्टम 7,66,13. यो वां सुम्नाय तुष्टवत् *zu eurer Zufriedenheit* 8,8,16. यद्धा नः सुम्ने नैषि 10,12. 27,10. 9,98,5. देवभक्त 10,45,9. — 4) N. eines Sāman Ind. St. 3,244,b. — adj. Gebrauch ist möglich, aber nicht nothwendig anzunehmen in den Stellen VS. 2,19 (v. l. TS.). ṚV. 5, 73,6. 8,26,7. das Wort fehlt ganz im AV. — Vgl. पतिसुम्न, बृहत्सुम्न, सुषुम्णा.

सुम्नयापि (सुम्ने + या°) adj. etwa *in Gunst nahe* ṚV. 10,95,6.

सुम्नय् und सुम्नाय् (ṚV. Pair. 7,5. 9. TS. Pair. 3,2. P. 7,4,38), partic. सुम्नयंस् und सुम्नायंस् *wohlwollend, günstig:* सुम्नायमिद्विशो अस्माकमा चर ṚV. 1,114,3. मनम् 2,32,3. 8,49,1. *frohlockend* 1,138,1. 8,7,11.

सुम्नयी (von सुम्नय्) f. gleichlautender instr. (VS. Pair. 5,20. AV. Pair. 4,30) als adv. *andächtig, gläubig:* देवेषु ṚV. 10,101,4. *wohlwollend* AV. 7,55,1.

सुम्नयि voc. f. AV. 19,47,4 wohl fehlerhaft.

सुम्नयु und सुम्नायु (von सुम्नय्, सुम्नाय्) adj. Schol. zu P. 3,2,170. 7,4,38.

1) *andächtig, gläubig:* प्र भेरस्व सुम्रयुर्गिरः RV. 1,79,10. 3,30,11. 3, 27,1. 5,8,7. 6,1,7. 2,3. AV. 7,11,1. — 2) *günstig:* वर्षणः RV. 7,71, 3. — सुम्रयो AV. 3,17,1 kann nicht richtig sein; °या RV.

सुम्रहृद् adj. *Gunst herbeirufend:* पत्त VS. 17,62. TS. 5,4,6,6.

सुम्राय् und सुम्रायु s. u. सुम्रय् und सुम्राय.

सुम्रावरी (von सुम्र) adj. (f. वरी) *Gunst —, Befriedigung bringend:* Ushas RV. 1,113,12. Naigh. 1,8.

सुम्रिन् (wie eben) adj. TS. Pair. 4,12. *günstig, hold* TS. 1,1,13,3. 3,12,1.

सुम्पलुण्ठ m. *Curcuma Zerumbet Roxb.* Çabdar. im ÇKDa.

सुम्भ् s. unter सुभ्.

सुम्भ m. pl. N. pr. eines Volkes R. 4,40,25. sg. N. pr. eines Landes Çabdar. im ÇKDa.

सुम्भनि m. N. pr. eines Fürsten Rāja-Tar. 4,515.

सुर्यज्ञ् 1) adj. *gut* (die Götter) *ehrend, — opfernd* RV. 5,8,3. VS. 28, 9. — 2) f. *ein gutes —, richtiges Opfer* VS. 5,4. TS. 3,1,4,1. TBr. 1, 2,2,11. Çat. Br. 1,4,2,17.

सुयज्ञम् m. N. pr. eines Sohnes des Bhumanju MBu. 1,3714.

1. सुयज्ञ m. *ein schönes Opfer* R. 7,83,6.

2. सुयज्ञ gaṇa घरोरुणादि zu P. 4,2,80. 1) adj. *auf Opfer u. s. w. sich wohl verstehend:* Agni RV. 3,17,1. कवि 51,7. 5,45,4. *dessen Opfer wohl gelingen:* Indra 2,21,4. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer: ein Lehrer Āçv. Gṛhj. 3,4,4. Çāṅkh. Gṛhj. 4,10. 6,1. AV. Paric. in Verz. d. B. H. 92,7. s. Bein. Utkala's, eines Sohnes des Dhruva, Verz. d. Oxf. H. 25,a,20. 27. fg. ein Sohn Ruki's von der Ākūti, eine Incarnation Vishṇu's, Bhāg. P. 2,7,2. Pañkar. 2,4,9 (?). ein Sohn Vasishṭha's und Rathgeber Daçaratha's R. 1,11,6 (9 Gorr.). 2,31, 37 (32 Gorr.). 32,1. fgg. ein Sohn Antara's (घत्तस्य st. घनत्तर् die neuere Ausg.) Harīv. 1974. ein Fürst der Uçînara Bhāg. P. 7,2,38. — 3) f. या N. pr. der Gattin Mahābhauma's, einer Prāsenajiti, MBu. 1,3773. — Vgl. सोयज्ञक.

सुयत adj. *wohl gezügelt:* Ross RV. 7,22,1. *gut geknebelt* AV. 6,111,1.

सुयतात्मवत् m. N. pr. eines Ṛshi MBu. 13,1761.

सुयन्तु adj. *wohl lenkend.* Zügel RV. 5,44,4.

सुयक्षित und °त्र s. u. पक्षय्. सुयक्षित (Pfeil) MBu. 8,4246 wohl fehlerhaft für सुयत्रित.

सुयभ्य s. यभ्य.

सुयम 1) adj. *a) dem Zügel folgend, lenksam:* Ross RV. 1,180,1. 3,61, 2. 5,55,1. 9. 96,15. TBr. 2,1,2,10. Sarasvatī RV. 2,41,4. — *b) leicht in Ordnung zu halten, — zu behandeln, geregelt* VS. 2,7. क्षत्र 27,4 (vgl. AV. 7,82,3). क्षास्पत्य *gutes Hausregiment* RV. 5,28,3. 85,23. रा-य: 2,24,15. 27,17. AV. 14,2,17. fg. प्रं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः RV. 7, 35,3. — 2) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern Bhāg. P. 2,7,3.

सुयवस (im RV. सू° RV. Pair. 9,2) 1) adj. (f. या) *weidereich:* पन्थाः RV. 1,190,6. पथः 2,27,13. — 2) m. N. pr. eines Mannes; vgl. सोयवसि. — 3) n. *eine gute Weide* RV. 1.42,3. 5,28,7. 7,18,4. TS. 1,7,5,2. Bhāg. P. 10,21,18 (सू°). सुयवसे यजेत Çat. Br. 11,7,2,1 nach dem Schol. zu Kāty. Çr. 5,1,1 so v. a. *zu einer Zeit wo die Weide gut ist.*

सुयवसाद् (सू°) adj. *auf guter Weide gehend* RV. 1,164,10. 10,106,10.

सुयवसिन् (सू°) adj. *gute Weide habend* RV. 7,99,3.

सुयवस्यु (सू°) adj. *gute Weide verlangend:* गावो RV. 6,27,7.

सुर्यशस् 1) adj. P. 6,2,117, Schol. *hochberühmt:* Personen Bhāg. P. 3, 15,25. 4,1,15. 23,34. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Açokavardhana VP. 470. Bhāg. P. 12,1,13. — 3) f. N. pr. einer Gemahlin Divodāsa's Harīv. 1564. der Mutter des 14ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇī H. 40.

सुयष्टव्य m. N. pr. eines Sohnes des Manu Raivata Mārk. P. 75,73.

सुयाति m. N. pr. eines Sohnes des Nahusha Harīv. 1600.

सुयामन् 1) adj. *gut bindend, — zügelnd:* रश्मयः RV. 3,7,9. — 2) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern Vāyuv. 83. MBu. 13,1371. sg. N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 49,4. 67,13. 15. 299,8. 415,15. 469,4.

सुयामन् m. eine Personification: Kākshusha AV. 15,7,7.

सुयामन m. 1) *Palast* (प्रासाद) H. an. 4,208. fg. Med. n. 224. — 2) ein N. Vishṇu's Taitt. 1,1,32. H. ç. 75 (सुयामन falschlich). H. an. Med. — 3) N. pr. eines Fürsten, = वत्स H. an. Med. — 4) N. pr. eines Berges H. an. Harīv. 4589. — 5) Bez. einer best. Wolke Med.

सुर्यामन् adj. *madens in coitu:* °तर् RV. 10,86,6.

सुयुक्त 1) adj. *sehr gesammelt, — aufmerksam* Maitrāyaṇ. 4,4. — 2) *sehr günstig:* मुहूर्त R. 5,72,20.

सुयुक्ति f. *ein gutes Argument* Verz. d. Oxf. H. 244,b,No. 609.

सुर्युज् 1) adj. P. 7,1,71, Schol. Vop. 3,134. *a) wohlgeschirrt, gut im Geschirr gehend:* Wagen RV. 1,113,14. 117,15. 4,14,3. Rosse 1,121, 12. 3,30,11. 7,78,4. AV. 5,20,3. — 2) *wohlgesetzt:* काम RV. 4,23,5. Zähne AV. 6,140,3 (vielleicht richtiger सयुजो). — 2) adv. *gut im Geschirr:* सुयुग्वहन्ति प्रति वामृतेन RV. 3,58,2.

सुयुद्ध n. *ein rechter —, energischer Kampf:* सुयुद्धे समा-चर् M. 7,176. कर् Spr. (II) 7121. 7281. *ein ehrlicher Kampf* MBu. 7,5640. Harīv. 7335.

सुयोधन m. N. pr. des ältesten Sohnes von Dhṛtarāshṭra, = दुर्योधन Taitt. 2,8,13. MBu. 1,6040. 3,1481. 5,136. 9,1701. Spr. (II) 7438. Verz. d. B. H. No. 325. Bhāg. P. 3,1,44. eines Sohnes des Kakutstha VP. 361, N. 13. — नाना° adj. MBu. 6,3326 schlechte Lesart für °योधन (so ed. Bomb.).

सुय्य 1) m. N. pr. eines Mannes, eines Pflegekindes der Sujjā, Rāja-Tar. 5,73. 78. 91. 98. 6,133. — 2) f. या N. pr. der Pflegemutter des Sujja ebend. 5,120. °कुण्डल N. pr. eines nach ihr benannten Dorfes ebend. °सेतु eines nach ihr benannten *Dammes* ebend.

सुर्, सुरति (ऐश्वर्यदीप्त्योः) Dhātup. 28,30. न्यपोरीत् P. 7,2,2, Schol. — सुरयति (धातौ) Dhātup. 33,11, v. l.

सुर (aus असुर) Uṇādis. 2,24 (es konnte auch सुरा gemeint sein) m. 1) *ein Gott* AK. 1,1,1,2. H. 88. H. ç. 3. an. 2,469. Med. r. 99. Halāy. 1,4. 119. Maitrāyaṇ. 1,4. 6,35 (S. 187). Jogatattvop. in Ind. St. 2,49. MBu. 1,1109. 3,2116. Harīv. 2451. 2514. सुराप्रतिपक्षदेवाः सुरा इत्यभिविश्रुताः R. 1,45,38 (46,38 Gorr.). °गणाः 60,16. 63,1. Raghu. 3,30. ad Çiç. 193. Vikr. 48. Spr. (II) 7193. Vaṛāh. Bṛh. S. 12,1. 43,3. Pañkat. III,69. Kathās. 23,76. Brahma-P. in LA. (III) 52,10. Bhāg. P. 1. 12,6. Verz. d. Oxf. H. 78,b,37. Dhūrtas. 85,11. सुराणी कृत्ता N. einer

best. Feuers, eines Sohnes des Tapas, MBh. 3,14168. — 2) Bez. der Zahl dreiunddreissig Ganit. Karaṇiḍ. 5. — 3) ein Gelehrter. — 4) die Sonne Çabdârṇav. bei Wilson. — 5) MBh. 13,4108 fehlerhaft für स्वर (so ed. Bomb.). — Vgl. भू°, मही°.

सुरर्षि m. = सुर्षि Bhâg. P. 6,16,45. 7,1,14.

सुरल (von सुरा, adj. = सुराप्रकार, सुरावर्ण von einer Schlange gaṇa स्थूलादि zu P. 5,4,3 und Siddh. K. zu d. St.

सुरकरिन् m Götterelephant Kir. 5,25. सुरकरीन्द्रदर्पापह्ना Beiw. der Gaṅgâ Kâlik-P. 34 im ÇKDa.

सुरकामिनी f. ein Götterweib, eine Apsaras: °जना: Kumâras. 4,20.

सुरकार m. der Künstler der Götter d. i. Viçvakarman ÇKDa.

सुरकार्मुक n. Götterbogen so v. a. Regenbogen Vikr. 137.

सुरकार्य n. eine Angelegenheit —, ein Auftrag der Götter R. 1,49,3. R. Gorr. 1,66,1.

सुरकाष्ठ n. = देवकाष्ठ Suçr. 2,325,9.

सुरकुल n. Gotteshaus, Tempel Kathâs. 12,80.

सुरकृत् m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,356 nach der Lesart der ed. Bomb., सूरकृत् ed. Calc.

सुरकृत 1) adj. von den Göttern gemacht, — bewirkt Kathâs. 23,76. — 2) f. आ Coccinia cordifolia DC. Râǵân. im ÇKDa.

सुरकेतु m. der Götter —, Indra's Banner Varâh. Bṛh. S. 43,41. — Vgl. शक्रकेतु.

सुरक्त adj. 1) schön roth: °चीवरावृत Açokâvad. 27. 34. — 2) sehr lieblich, — reizend: वाणी R. 2,71,24.

सुरक्तक 1) m. eine best. Pflanze, = कोशाम्र Râǵân. 11,14. — 2) n. eine Art Röthel ebend. 13,62.

सुरक्त m. N. pr. 1) eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 32,b,31. — 2) eines Berges Mârk. P. 55,9.

सुरक्षित 1) adj. wohl behütet, — bewacht Pân. Gaṇ. 3,3. सुरक्षितं दैवकृतं विनश्यति Spr.(II)567. घनानि 7142. वेश्मन्, गृह MBh. 3,2144,2155. Pañkat. 45,12. शीलनिधि MBh. 3,2992. मल्ल Spr. (II) 4704. राज्य Râǵa-Tar. 2,159. Personen M. 9,12. Jâǵ. 1,78. Spr. (II) 5125, v. l. Kathâs. 30,113. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 39,27. fgg. 224.

सुरखण्डनिका f. eine Art Laute Çabdar. im ÇKDa. सुरमण्डलिका v. l.

सुरगज m. Götterelephant Megh. 52. Ragh. 5,75. 10,27. Kir. 5,47.

सुरगण m. 1) die Schaar der Götter, sg. Pañkat. 3,7,20. pl. R. 1,60, 16. Varâh. Bṛh. S. 48,50. — 2) N. pr. eines Dorfes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

सुरगण्ड m. Bez. einer Art von Beulen Bṛihatsaṃhitâ im ÇKDa.

सुरगति f. das Loos als Gottheit geboren zu werden Wilson, Sel. Works 1,309.

सुरगायक m. ein Sänger der Götter, ein Gandharva Bhâg. P. 3,22,33.

सुरगिरि m. der Götterberg, Bez. des Meru Bhâg. P. 5,1,30.

सुरगुरु m. der Lehrer der Götter d. i. Bṛhaspati Varâh. Bṛh. S. 48, 1. Spr. (II) 3351. Kathâs. 115,72. als Planet Jupiter Thom. 1,1,91. Varâh. Bṛh. S. 98,18. 103,4. Lagadh. 2,11. Kâlakakra 5,124.

सुरगुरुदिवस m. Donnerstag Varâh. Bṛh. S. 104,62.

सुरगृह m. Gotteshaus, Tempel Râǵa-Tar. 5,168. 6,142. 307. 8,881.

सुरग्रामणी f. der Anführer der Götter, Bez. Indra's Thom. 1,1,57.

सुरघु m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 193,12. fg.

सुरङ्ग 1) adj. schön gefärbt. — 2) m. Orangenbaum Râǵân. 11,174. Verz. d. Oxf. H. 72,a,24 (neben नारङ्ग). °धूली Spr. (II) 5024. — 3) f. आ eine best. Pflanze, = केवर्तिका Râǵân. 3,108. — 3) f. ई Bez. zweier Pflanzen: = काकनासा Râǵân. 3,95. = रक्तशोभाञ्जन Ratnam. 230. — 4) n. Mennig Râǵân. 13,58. — Vgl. सुरङ्ग.

सुरङ्गद n. Caesalpina Sappan Râǵân. im ÇKDa.

सुरङ्गधातु m. Röthel Râǵân. im ÇKDa.

सुरङ्गपुत्र s. सुरङ्गपुत्र.

सुरङ्गिका f. Sanseviera Roxburghiana Schult. Râǵân. im ÇKDa.

सुरचाप m. n. Götterbogen d. i. Regenbogen Varâh. Bṛh. S. 3,27. 5, 59. 98. 21,46. 24,15. 30,2. 35,8. 47,20. Kir. 5,12.

सुरचःफल (सुरचस् + फल) m. Artocarpus integrifolia Lin. (पनस) Bhâvaprakâça im ÇKDa.

सुरजनी (s. सु + र°) f. Nacht Çabdar. im ÇKDa.

सुरजस् adj. mit schönem Blüthenstaub u. s. w. versehen gaṇa भृशादि zu P. 3,1,13.

सुरजा f. N. pr. einer Apsaras MBh. 1,2558.

सुरजाय् (von सुरजस्), °यते schönen Blüthenstaub ansetzen gaṇa भृशादि zu P. 3,1,12.

सुरज्येष्ठ m. der oberste Gott, Bez. Brahman's AK. 1,1,4,11. H. 213. Hall. 1,6. Verz. d. Oxf. H. 31,a,18.

सुरञ्जन m. Betelnussbaum Trik. 2,4,40.

सुरण (s. सु + रण) 1) adj. fröhlich, munter Nir. 11,30. Agni ṚV. 3, 3,9. न नि मिषति सुरणो दिवे दिवे 29,14. 10,104,8. 69,1. — 2) n. Lust, Fröhlichkeit: सुरणं गृके ते ṚV. 3,53,6. सुरणानि विश्वती 5,56,8.

सुरत (s. सु + रत) 1) adj. (vgl. सूरत) a) sich vergnügend, im Spiel begriffen, = क्रीडासुक्त Uṇâdis. zu Uṇâdis. 5,14. — b) mitleidig Med. n. 2. Sidh. zu AK. nach ÇKDa. — 2) m. N. pr. eines Bottlers Schiffes, Lebensb. 261 (31). — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras MBh. 1,2558. Brahma-P. in LA. 31,11; vgl. सुरथा. — 4) n. a) grosse Freude: सुरतं ते ऽस्तु MBh. 13,152. — b) Liebesgenuss, Beischlaf Trik. 2,7,21. H. 536. Med. t. 171. Hall. 2,414. 5,29. Suçr. 1,192,5. Pañkat. 221,17. °वारात्रिषु Ragh. 19,18. °प्रदोषा: Kumâras. 1,10. °विशेष Kir. 5,22. °भेदा: Verz. d. B. H. 173 (III). °वर्णन Verz. d. Oxf. H. 116,b,1. °निवृत्ति 123, a,47. °ग्लानि Megh. 32. मद्गग्लानिं °ग्लनिताम् 71. °विधि Varâh. Bṛh. S. 98,10. °सौख्य Vet. in LA. (III) 10,4. तया सह नानाप्रकारै: °संभोगं विधाय 9,1. 2. °व्यापारज्ञातश्रम Spr. (II) 1992. सुरतोपचारकुशल Varâh. Bṛh. 17,3. सुरतोत्सुका Bhâg. P. 3,23,44. °प्रसङ्गिन् Ṛt. 6,1. मिषेवे °क्रीडामुखा सह शंकर: Kathâs. 20,72. °केलि Verz. d. Oxf. H. 123,a,16. fg. सुरतोत्सव Spr. (II) 2111. 2653. Kathâs. 45,318. Râǵa-Tar. 5,281. am Ende eines adj. comp. (f. आ): विचित्रसुरता Sîtâ-D. 100. वर° Spr. (II) 3737.

सुरततालो f. 1) ein auf dem Kopfe getragener Kranz. — 2) Liebesbotin H. an. 5,47. Med. t. 170.

सुरतप्रभा f. ein Frauenname Kathâs. 60,16.

सुरतप्रिय 1) adj. den Liebesgenuss mögend Varâh. Bṛh. 17,6. — 2) f.

N. pr. eines Frauenzimmers Dudâras. 73,10.

सुरतमञ्जरी f. N. pr. einer Tochter des Vidjâdhara Matanûgadeva Kathâs. 112,9. fgg. 80. 109. 171. fgg. nach ihr ist der 16te Lambaka im Buche benannt 1,9.

1. सुरतरंगिणी (सुर + त°) f. *der Götterfluss* d. i. *die Gañgâ* Spr. (II) 4902.

2. सुरतरङ्गिणी (सुरत + र°) adj. f. *am Liebesgenuss Vergnügen findend* ebend.

सुरतरु m. *Götterbaum* Hall. 1,135. Paṇḍar. 3,14,41. = कल्पतरु Bhâg. P. 7,9,27. 10,72,6.

सुरता (von सुर *Gott*) f. 1) nom. abstr. Mṛcch. 1. 171. MBh. 5,3535. — 2) nom. coll. Gaṇeç. in Verz. d. Oxf. H. 190,*a*,22.

सुरतानसिंह m. N. pr. eines *Fürsten* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Çl. 5.

सुरतरु (सुर + तरु) m. = सुरपुंनाग Râgân. 10,35.

सुरतापक m. Bez. *des Juwels* Kaustubha (*die Götter erfreuend*) Çabdar. im ÇKDr.

सुरत्न adj. (f. या) *Kleinode besitzend, — bringend, schätzereich:* Savitar ṚV. 7,45,1. 67,6. नारी 10,18,7. 70,9. 78,8.

सुरत्व (von सुर) n. *die Würde eines Gottes* Spr. (II) 2220. Mârk. P. 96,30.

1. सुरथ m. *ein schöner Wagen* MBh. 3,15672.

2. सुरथ 1) adj. P. 6,2,119, Schol. *einen guten Wagen habend, ein guter Wagenkämpfer* ṚV. 1,22,2. 4,2,4. 4,8. 5,57,2. 10,75,8. TBr. 3,7,4,3. त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि ṚV. 3,14,7. *einen guten Wagen oder guten Führer habend:* Rosse 2,18,8. 7,36,4. 8,57,16. 63,14. रयि *in guten Wagen bestehend* 8,5,10. — 2) m. N. pr. verschiedener Fürsten MBh. 1,2697. R. 7,19,5. Mârk. P. 113,11. fgg. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,26. fg. Vater Koṭikâsja's MBh. 3,15593. Sohn Drupada's 7,6910. Gajadratha's 14,2276. 2288. Sudeva's R. 7,78,4. Ganameǵaja's Harîv. 1815. fg. Adhiratha's Verz. d. Oxf. H. 25,*b*,2. 3. Gahnu's VP. 457. Bhâg. P. 9,22,9. Kuṇḍaka's VP. 464. Raṇaka's Bhâg. P. 9,12,14. Kaitra's ÇKDr. nach dem Brahmavaiv. P. — 3) f. था N. pr. *a*) einer Apsaras Harîv. 14164; vgl. सुरता. — *b*) eines Flusses Mârk. P. 57, 21. — 4) n. N. pr. eines Varsha in Kuçadvîpa Mârk. P. 53,25; vgl. सुरथाकार.

सुरथदेव m. N. pr. eines Boten Kathâs. 101,94.

सुरथाकार n. N. pr. eines Varsha MBh. 6,454; vgl. सुरथ 4).

सुरदारु n. = देवदारु *Pinus Deodora Roxb.* Ratnam. 72. Râgân. 12, 27. Suçr. 1,377,12. 378,4. 2,209,8. 415,14. Varâh. Bṛh. S. 89,8. 79,2. Bhâg. P. 8,2,12.

सुरदीर्घिका f. *die Gañgâ der Götter,* = मन्दाकिनी AK. 1,1,*a*,44.

सुरडुन्डुगि m. *Basilienkraut* Râgân. 10,151.

सुरदेवता f. *eine Göttin* MBh. 4,2305.

सुरद्रु *Götterbaum* Khandom. 83.

सुरद्रुम m. *Götterbaum,* = कल्पवृक्ष Naish. 12,79. Bhâg. P. 10,38,22. *eine Rohrart, Arundo bengalensis Retz.* Râgân. 8,106. — °मूलकल्पितोत्तंस Paṇḍar. 3,5,8.

सुरद्विप m. *Götterelephant* Raghu. 3,55. 16,8.

सुरद्विष् (nom. °द्विट्) m. *ein Feind der Götter, ein Dämon,* Asura (auch Râkshasa); pl. AK. 1,1,*a*,7. MBh. 3,13246. Raghu. 9,21. 10,15. 12,50. 86. Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,32. Spr. (II) 1389. Bhâg. P. 1,3,24. 8,33. 13,46. 6,7,29. 8,9,10. sg. *der Dämon* so v. a. Râhu Raghu. 2,39. Varâh. Bṛh. S. 97,2.

सुरधनुस् n. *Götterbogen* so v. a. *Regenbogen* Gaṇeç. im ÇKDr. Vikr. 70. Kir. 7,16. Varâh. Bṛh. S. 47,23.

सुरधामन् n. *Götterstätte* Verz. d. Oxf. H. 258,*a*,25.

सुरधूप m. *der Götter Räucherwerk* d. i. *das Harz der Shorea robusta* Râgân. 12,117.

सुरधेनु m. = सुरकेतु; s. u. बेताल in den Nachträgen und vgl. सुराधेनु.

सुरनदी f. *Götterfluss,* Beiw. und Bein. der Gañgâ Buchanrajoga im ÇKDr. MBh. 6,3643. R. 1,36,22. Spr. (II) 2493.

सुरनन्दा f. N. pr. eines Flusses Çabdar. im ÇKDr.

सुरनायक m. *Führer der Götter,* Bez. Indra's Râga-Tar. 1,103. als Verfasser von Gebeten bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,9.

सुरनाल m. *eine Rohrart, Arundo bengalensis Retz.* Râgân. 8,106.

सुरनिम्नगा f. *Götterfluss,* Bez. *der* Gañgâ AK. 1,2,*a*,30. Kathâs. 52,243.

सुरनिर्गन्ध n. *das Blatt der Laurus Cassia* Râgân. im ÇKDr. fehlerhaft für सुरभिगन्ध.

सुरनिलय m. *der Götter Wohnstätte,* Bez. *des* Meru Varâh. Bṛh. S. 24,2.

सुरन्धक N. pr. einer Oertlichkeit Paṇḍar. 1,10,15.

सुरन्ध्र desgl. ebend.

सुरपति m. *der Götter Herr,* Bez. Indra's AK. 1,1,*a*,28. Hall. 1, 52. MBh. 7,3862. R. 1,28,27. 48,25. 64,3. R. Gorr. 1,66,4. 3,75,29. 5,8,16. ad Çik. 193. Spr. (II) 1894. 2220. Varâh. Bṛh. S. 32,7. 16. 86. 75. Kâurâp. 38. Prab. 8,2. 35,8. Bhâg. P. 7,7,8. 8,11,22. Kshitîs. 26, 6. Çiva's R. 1,37,17.

सुरपतिगुरु m. Indra's *Lehrer,* Bez. Bṛhaspati's, *des Planeten Jupiter* Varâh. Bṛh. S. 5,62. Bṛh. 11,5.

सुरपतिचाप n. Indra's *Bogen* d. i. *Regenbogen* Varâh. Bṛh. S. 30,8. 33,29.

सुरपतित्व (von सुरपति) n. *Herrschaft über die Götter:* सकल° Spr. (II) 2220.

सुरपतिधनुस् n. = सुरपतिचाप Megh. 73. Milatîm. 150,20 (सुरपति° gedruckt).

सुरपथ m. *der Pfad der Götter,* Bez. *des Luftraums* H. 163.

सुरपर्ण 1) n. = देवपर्ण *ein best. heilkräftiges Kraut* Râgân. 10,173. — 2) f. ई *eine best. Schlingpflanze,* = पलाशी Râgân. 3,138.

सुरपर्णिका f. *Rottleria tinctoria Roxb.* H. 1134. Hall. 2,53. *Elaeocarpus Ganitrus Roxb.* Râgân. 10,35.

सुरपर्वत m. *Götterberg,* Bez. des Meru Hall. 1,135.

सुरपादप m. *Götterbaum* Bhâg. P. 8,4,17.

सुरपाल m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 324,*b*, No. 768.

सुरपुंनाग m. *Elaeocarpus Ganitrus Roxb.* Râgân. 10,35.

सुरपुर n. *die Stadt der Götter,* Amarâvatî Kathâs. 10,34. °पुरी f. dass. Taik. 1,1,60.

सुरपुरोधस् m. *der Hauspriester der Götter,* Bez. Bṛhaspati's Kâm. Nîtis. 2,4.

सुरपुष्प n. *Götterblume, eine himmlische Blume:* °वृष्टि Kathâs. 23,92.

सुरप्रतिष्ठा f. *die Aufstellung eines Götterbildes* Râéa-Tar. 6,173.

सुरप्रवीर m. N. *eines best. Feuers*, eines Sohnes des Tapas, MBh. 3,14168.

सुरप्रिय 1) adj. *den Göttern lieb.* — 2) m. *a) ein best. Wasservogel* Hariv. 12670 nach der Lesart der neueren Ausg., सुर:प्रिय die ältere. — *b) eine best. Pflanze*, = यवासत्यपुष्पवृक्ष Râéan. im ÇKDa. *ein Elaeocarpus* Çabdâmrtan. bei Wilson. — *c) Beim Indra's und Bṛhaspati's* Çabdâmrtan. bei Wilson. — *d)* N. pr. eines Berges Çat. Br. 1,334. — 3) f. या *a) eine Geliebte der Götter, eine* Apsaras Bhâg. P. 8,13,19. — *b)* Bez. zweier Pflanzen: = जाती und स्वर्णयूथिका Râéan. im ÇKDa.

सुरभयु (von सुरभि), °यति *wohlriechend machen* Spr. (II) 1309. 7099.

सुरभित Mṛcch. 53. Z. d. d. m. G. 27, 82. यश:सुरभिता नीतिलतिका Verz. d. Oxf. H. 264,*a*,11. uneig.: कीर्त्याभित: सुरभित: (= ख्यात Comm.) Daçak. 2,3.

सुरभवन n. *Gotteshaus, Tempel* Varâh. Bṛh. S. 79,4.

सुरभाव m. *die Würde eines Gottes* Spr. (II) 2220.

सुरभि (im Padap. ohne Avagraha) VS. Prât. 3,37. 1) adj. (f. ई, in der späteren Sprache auch ई) *a) wohlriechend, duftig* AK. 1,1,4,20. Trik. 3,1,19. H. 1390. an. 3,460. fg. Med. bh. 22. fg. सुरभ RV. 4,39,6. य ईमाङ्ग: सुरभिर्निर्ऋतिं 1,162,13. रूप्य 10,15,12. सुरभा उ लोके so v. a. *auf der Strasse* 5,1,6. 10,70,4. योनि 107,9. 7,1,18. Soma 9,97, 19. Agni 10,53,3. Aranjâni 146,6. AV. 6,124,3. Kräuter 11,4,6. 12, 1,33. 59. 14,2,44. गन्ध 19,38,1. Śrâdhv. Br. 2,3. Çat. Br. 13,4,3,7. 14,1,3,12. Âçv. Çr. 3,13,11. TBr. 3,9,2,5. M. 3,209. 227. MBh. 1,5057. 3,2194. R. 2,93,12. R. Gorr. 2,103,14. 3,38,23. 79,3. 5,14,24. 76,23. Suçr. 1,191,18. 215,8. Kâm. Nîtis. 7,49. Mṛcch. 16. 21. 23. 33. 104. 106. Ragh. 3,3. 12,102. 15,3. Vîra. 103. Çiç. 3. 53. 66. Spr. (II) 1509. 4347. 7106. Varâh. Bṛh. S. 12,16. 13,3. 16,28. Râéa-Tar. 2,122. Prab. 7,6. Weber, Kâéinâth. 290. Bhâg. P. 5,2,11. 5,33. 16,18. 8,21,6. Pañcat. 3, 8,13 (°तर compar.). Tarkas. 14. uneig.: यशोभि: Ragh. 2,3; vgl. unter सुरभयु. — *b)* überh. *lieblich, angenehm* H. an. Med. यत्क RV. 6,29,3. 10,123,7. घर्घ स्याम सुरभयो गृहेषु AV. 18,3,17. घास्यं वै देवानां सुरभि Ait. Br. 1,3. — *c)* = श्रेष्ठ Halâj. 3,14. = विख्यात Dharan. im ÇKDa. so v. a. *in gutem Rufe stehend* (und zugleich *Frühling*) Spr. (II) 2017. — *d)* = धीर Dharan. im ÇKDa. — 2) m. *a)* Bez. verschiedener *wohlriechender* Pflanzen und Stoffe: = चम्पक H. an. Med. Râéan. 10,59. = कदम्ब 9,101. = वकुल 10,64. = मुद्गर 79. = बर्बर 12,33. = गन्धशालि 16,51. = शमी, कणगुग्गुलु und गन्धतृण Râéan. im ÇKDa. = गन्धपाल Çabdar. ebend. *Muskatnuss* H. an. Med. *das Harz der Shorea robusta* Râéan. 12,117. — Suçr. 2,38,11. 18. — *b) Frühling* AK. 1,1, 3,18. Trik. 3,3,291. H. 156. H. an. Med. Hia. 132. Spr. (II) 1920. 2017. 6489. Kâm. 10,30. Bez. *des Monats* Kaitra H. an. — 3) f. ई und ई *a)* Bez. verschiedener *wohlriechender* Pflanzen: = शल्लकी AK. 2,4,4,19. H. an. Med. Ratnam. 195. Râéan. 11,196. = मुरा Med. Râéan. 12,139. = रुद्रजटा 3,67. = शमी 8,33. = नवमालिका 10,94. = तुलसी 151. = पाची 168. — *b)* = मुरा Med. v. l. für मुरा nach ÇKDa. — *c)* = मातृभेद, °भिद् H. an. Med. N. pr. einer mythischen Kuh, der Mutter des Rindes (erscheint auch als Tochter Daksha's, Gattin Kaçjapa's und Mutter der Rudra) MBh. 1,2635. 2681. 3927. 2,457. 3,325. fgg. 14486. 5,3602. fgg. 12,6432. fgg. 13,3906. fgg. Hariv. 164. 170. 233. 3149. 11527. 11533. fg. 12417. R. 2,74,12. 15 (76,17. 19. fg. Gorr.). सुरभे: सुता: so v. a. *das Rindvieh* 91,53. 3,20,23. 28. 7,23,21. 24. Ragh. 1,75. 81. Kathâs. 28,191. 110,52. LA. (III) 89,16. Verz. d. Oxf. H. 24,*b*,43. VP. 76. 122. Mârk. P. 21,32. 41. 58. Bhâg. P. 5,6,25. fg. Pañcat. 1,1, 69. — *d) Kuh* überh. AK. 3,4,28,139. H. 1265. H. an. Med. Halâj. 2. 113. सुरभीमांस Spr. (II) 4084. — *e) die Erde* Dharan. im ÇKDa. — 4) n. *a) ein wohlriechender Stoff, Parfum* Gorr. 4,3,17. 4,8. Çiçup. Gaṇ. 1,11. सर्व° Çat. Br. 3,2,2,15. 12,8,3,16. Kâty. Çr. 7,4,24. 19,4,14. Kâuç. 76. 82. fg. 83. देव° Pañcav. Br. 24,13,5. Lâṭy. 10,4,10. Kâlâd. Up. 1,2,2. R. Gorr. 1,9,8. — *b) Gold* H. an. Med. — *c) Schwefel* Çabdar. im ÇKDa. Med. (गन्धोपल = गन्धाश्मन् st. गन्धोत्पल zu lesen). — Vgl. सौरभ u. s. w.

सुरभिकन्दर m. N. pr. eines Berges Vîra. 65,17. fg.

सुरभिका (von सुरभि) f. *eine best. Pflanze*, = सुवर्णकदली Râéan. 11,44.

1. सुरभिगन्ध m. *Wohlgeruch:* महा° Bhâg. P. 5,20,24.

2. सुरभिगन्ध 1) adj. *wohlriechend.* — 2) f. या *Jasminum grandiflorum* Râéan. 10,75. — 3) n. *das Blatt der Laurus Cassia* ebend. 6,176. सुरभी° die Hdschrr.

सुरभिगन्धि adj. *wohlriechend* P. 5,4,135. Vop. 6,87. R. Gorr. 2,76, 19. Spr. (II) 2660. °न् R. 2,74,14. 4,51,5.

सुरभिचूर्ण n. *Pulver aus Wohlgerüchen* Kâuç. 26. 58. 76. 82.

सुरभितनय m. *ein Sohn der* Surabhi so v. a. *Stier* Varâh. Bṛh. S. 41,3. f. का so v. a. *Kuh* Mṛcch. 46. — Vgl. सुरभिपुत्र, सुरभीगोत्र, °सुत.

सुरभिता (von सुरभि) f. *Wohlgeruch* Verz. d. Oxf. H. 145,*a*,6.

सुरभित्रिफला f. = सुगन्धत्रिफला Râéan. im ÇKDa.

सुरभित्वच् f. *Kardamomen* (एला) Râéan. 6,85.

सुरभिदत्ता f. N. pr. einer Apsaras Kathâs. 27,60. 73. 34,220.

सुरभिदारु m. *eine Pinus-Art*, = सरल Râéan. im ÇKDa.

सुरभिन् (von सुरभि) adj. *mit Wohlgerüchen eingerieben, parfümirt* Kâuç. 67. 140. compar. सुरभिंतर *schönduftend:* Soma RV. 9,107,3.

सुरभिपत्र 1) m. *eine Art Ocimum* (मरुव) Râéan. 10,157. — 2) f. या = ब्राह्मी Râéan. 11,24. auch = राजब्राह्मी Râéan. im ÇKDa.

सुरभिपुत्र m. = सुरभितनय Varâh. Bṛh. S. 46,36.

सुरभिबाण adj. *wohlriechende Pfeile* (d. i. Blumen) *führend;* m. ein N. *des Liebesgottes* Çabdâmrtan. bei Wilson.

सुरभिमत् (von सुरभि) adj. 1) *mit Wohlgerüchen versehen:* Agni Ait. Br. 7,9. TS. 2,2,3,3. *wohlriechend* Bhâg. P. 11,27,43. — 2) *das Wort* सुरभि *enthaltend:* ऋच् TBr. 3,9,3,5. Çat. Br. 13,2,9,9. 3,3,9.

सुरभिमालुत adj. *mit wohlriechenden Winden versehen;* n. N. pr. eines Waldes Kathâs. 69,109.

सुरभिमास m. *der Monat* Kaitra ad Çiç. 135.

सुरभिवत्स m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 52,71.

सुरभिवल्कल n. = गुडत्वच् Çabdar. im ÇKDa.

सुरभिष्टम (von सुरभिस्, nom. von सुरभि) adj. superl. *duftendst, lieblichst* RV. 1,186,7.

सुरभिसमय m. *Frühlingszeit* Sin. D. 21,1.

सुरभिस्रवा f. *Weihrauchbaum* Rigân. 11,196.

सुरभीकर (सुरभि + 1. कर), °करोति *wohlriechend machen, mit Wohlgeruch erfüllen* Kumâras. 1,9. Bhâg. P. 5,2,11. °कृत Harîv. 1125. Rt. 2,22. 4,11. Verz. d. Oxf. H. 17,*b*,3 v. u. 130,*b*,6. Pañkad. 1,6,39. 7,4. 37. Çatr. 1,41. uneig.: विवेचकतया तस्य शाघ्यया °कृताः । लक्ष्मी-विलासाः श्लाघ्यन्ते Râga Tar. 3,359.

सुरभीगन्ध s. u. सुरभिगन्ध.

सुरभीगोत्र n. *das Geschlecht der* Surabhi so v. a. *Rinder, Kühe* MBh. 13,715. — Vgl. सुरभितनय u. s. w.

सुरभीपट्टन n. N. pr. einer *Stadt* MBh. 2,1171.

सुरभीरसा f. *Weihrauchbaum* Mathurânâtha zu AK. 2,4,2,11 nach ÇKDa. — Vgl. सुरभी und सुरसा.

सुरभीसुत m. *ein Sohn der* Surabhi, pl. so v. a. *das Rindvieh* R. Gorr. 2,100,52.

सुरभूरुह m. *Götterbaum*, Bez. *der Pinus Deodora Roxb.* Bhâvapr. im ÇKDa.

सुरभूषण n. *Götterschmuck*, Bez. *eines Perlenschmucks aus 1008 Schnüren und 4 Hasta lang* Vân. Bpn. S. 81,31.

सुरभ्यास्य (सुरभि + आस्य) adj. *einen wohlriechenden Mund habend;* davon nom. abstr. °त्व n. Çiçup. Ça. 1,12,5.

सुरमणीय adj. *überaus ergötzlich, — anmuthig, — schön* zur Erkl. von सुरणा Nir. 11,50.

सुरमण्डलिका s. u. सुरखण्डलिका.

सुरमण्य adj. = सुरमणीय Harîv. 6371.

सुरमन्दिर n. *Gotteshaus, Tempel* Spr. (II) 7126. Kathâs. 7,69. Râga-Tar. 5,29.

सुरमृत्तिका f. *eine best. Lehmart* (तुवरी) Rigân. 13,64.

सुरमेदा f. *eine best. Wurzel*, = महामेदा Rigân. 5,26.

सुरम्य 1) adj. = सुरमणीय R. 2,54,41. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Pañkad. 1,10,45, v. l.

सुरयान n. *Götterwagen* H. 89, Schol.

सुरयुवति f. *Göttermädchen* so v. a. *eine* Apsaras Megh. 62. Çiç. 41. 48. Vân. Bpn. S. 24,1.

सुरयोषित् f. *Götterweib, eine* Apsaras Kathâs. 121,110. Bhâg. P. 8,2,9.

सुरराज् m. *Götterfürst*, Bez. Indra's MBh. 6,2101 Bhâg. P. 10,74,51.

सुरराज m. dass. MBh. 3,11910. R. 2,74,16. 18. 5,25,7. Râga-Tar. 5, 157. Bhâg. P. 5,10,18.

सुरराजगुरु m. *der Lehrer* Indra's d. i. Bṛhaspati, *der Planet Jupiter* Vân. Bpn. S. 19,15.

सुरराजन् m. = सुरराज् R. 2,74,14.

सुरराजवृक्ष m. Indra's *Baum*, Bez. des Pârigâta Rgan. 16,79.

सुररिपु m. *ein Feind der Götter* Vân. Bpn. S. 12,1.

सुरर्षभ (सुर + ऋषभ) m. *der Beste unter den Göttern*, Bez. Indra's H. 173. Çiva's Bhâg. P. 8,12,30.

सुरर्षि (सुर + ऋषि) m. = देवर्षि *ein göttlicher —, ein unter den Göttern weilender* Ṛshi AK. 1,1,2,43. MBh. 1,223 (Nârada). R. 1,59, 12. 6,110,56. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,39. Bhâg. P. 4,24,63 (*die Götter und* Ṛshi nach dem Comm.). 31,5. 5,1,22. 7,1,12. 9,28. 9,14,16. — Vgl. सुरऋषि.

सुरलता f. *eine best. Pflanze*, = महाज्योतिष्मती Rigân. 3,71.

सुरला f. N. pr. eines Flusses H. ç. 166. Çabdak. im ÇKDa. = पुरंदरा Hin. 151.

सुरलासिका f. *Flöte* Çabdak. im ÇKDa.

सुरलोक m. *die Götterwelt, der Himmel* AK. 1,1,2,1. R. 1,36,22. R. Gorr. 2,110,23. Spr. (II) 2282. Bhâg. P. 7,10,12. 8,8,6. °राज्य n. *die Herrschaft über d. G.* Spr. (II) 5302.

सुरलोकसुन्दरी f. *eine Schöne der Götterwelt, eine* Apsaras Vikr. 21.

सुरवधू f. *ein Götterweib, eine* Apsaras Rgan. 9,20. Kathâs. 121, 120. Verz. d. Oxf. H. 64,*b*,6 v. u.

सुरवन n. *Götterhain* Bhâg. P. 3,23,40.

सुरवर m. *der Beste unter den Göttern:* °नगर so v. a. Indra's *Stadt* Spr. (II) 5229. °वनिता *ein Götterweib, eine* Apsaras Bhâg. P. 5,2,2.

सुरवर्चस् m. N. eines best. Feuers, eines Sohnes des Tapas MBh. 3,14168.

सुरवर्त्मन् n. *der Pfad der Götter* d. i. *der Luftraum* AK. 1,1,2,1. Mân. kh. 20.

सुरवल्लभा f. *weisses* Dûrvâ-*Gras* Rigân. 8,112.

सुरवल्ली f. *Basilienkraut* Rigân. im ÇKDa.

सुरवाहिनी f. *der Götterfluss* d. i. *die himmlische* Gaṅgâ Kathâs. 116,74.

सुरवीथी f. *die Strasse der Götter*, Bez. *der Bahn der Nakshatra's* MBh. 3,1767.

सुरवेला f. N. pr. eines Flusses H. ç. 166.

सुरवेश्मन् n. 1) *die Behausung der Götter, der Himmel* Z. d. d. m. G. 27,39. — 2) *Gotteshaus, Tempel* Spr. (II) 6012. Râga-Tar. 6,140.

सुरवैरिन् m. *ein Feind der Götter, ein* Asura Çabdar. im ÇKDa.

सुरशत्रु m. dass. Hariv. 1,5. °क्षय् Beiw. Çiva's Çiv.

सुरशाखिन् m. *Götterbaum* so v. a. कल्पवृक्ष Gâyâdh. im ÇKDa. Spr. (II) 493. Kirân. 3,180.

सुरश्मि 1) adj. *schönstrahlig:* Soma ṚV. 10,36,8. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 3,465, N. 3. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,15.

सुरश्रेष्ठ 1) m. *der Beste unter den Göttern*, Beiw. Vishṇu's R. 1,45, 25. Çiva's 24. Indra's 46,15. Brahma-P. in LA. (III) 50,11. Dharma's Harîv. 11526. Gaṇeça's Pañkad. 1,7,85. fg. — 2) f. श्रा *eine best. Pflanze*, = ब्राह्मी Rigân. 5,61.

सुरस (6. सु + रस) 1) adj. (f. श्रा) *a) wohlschmeckend* H. an. 3,761. Mân. 8. 45. आपः R. 5,73,59. Vân. Bpn. S. 54,73. 102. 122. — *b) reizend:* प्रौढत्वसुरसा ein Weib Kathâs. 47,110. — 2) m. *a) Vitex Negundo Lin.* Çabdar. im ÇKDa. *Andropogon Schoenanthus Lin.* Rigân. 8,124. Vgl. 4). — *b) das Harz der Gossampinus Rumphii Sch. et Endl.* Rigân. 8,12. — *c)* N. pr. α) eines Schlangendämons MBh. 5,3632. — β) eines Berges Mârk. P. 55,9. — 3) f. श्रा *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: = रास्ना AK. 2,4,4,2. Mad. Rigân. 6,82. = मिश्रेया 4,15. Çabdak. im ÇKDa. = पर्णास H. an. = महाशतावरी Rigân. 4,122. = शोफा-

लिका 157. = ब्राह्मी 5,68. Ratnam. 243. = कपित्थपर्णी 112 = तुलसी 109. Dhanv. 4,26. = घन्टाक 88. Vgl. 4). — *b*) *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – ⏑ – ⏑ –, ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ –, – ⏑ ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2, 163 (XIV, 9). — *c*) Bein. der Durgâ ÇKDn. und Wilson. — *d*) N. pr. α) einer Tochter Daksha's, Gattin Kaçjapa's und Mutter der Schlangen, Mbh. MBh. 1,2625. 2633. fg. 2,456. 5,3620. Hariv. 169. 3282. 11521. 11552. 12448. R. 3,20,23. 29. 5,6,2. fgg. 56,30. 6,108,18. Vasiṣṭh. Baudh. S. 48,57. VP. 122. Bhâg. P. 6,6,25. — β) einer Apsaras Vâjpi beim Schol. zu H. 183. MBh. 1,4819. Hariv. 12473. — γ) einer Tochter Raudrâçva's Hariv. 1661. — δ) eines Flusses VP. 176. Bhâg. P. 5,19,18. — 4) m. f. wohl *Basilienkraut* im Suçr., das Geschlecht wechselt auch bei den Comm. m. 1,218,10. 2,453,4. f. घा 1,138,16. 145,7. 146,6. 157,10. 217,4. 2,15,6. 25,9. 114,5. 459,11. in der Hauptstelle 1,138,16 liest Kâsikâvivaraṇapañgikâdatta °रस: und erklärt सुरभिमल्लिका. f. ई ebend. 17 nach Kâs. = कपित्थपत्रिका und nach Andern *weisser Sinduvâra*; so auch Dhanv. 4,11. m. auch Karaka 1,27. Vishn. 1,6,107. 109. °लेप erhöht den Glanz des Goldes Spr. (II) 6968. — 5) n. α) *Herz* H. 623. — *b*) *Basilienkraut* Med. (m. n. und m. f. in einigen Hdschrr. nach ÇKDn.). = गन्धतृण Râgân. 10,151. — *c*) *Cassia-Rinde* Râgân. 6,172. — *d*) *Myrrhe* Râgân. 6,116. — Vgl. इन्द्र°, चन्द्र°, श्वेत°, सौरभ und सौरभेय.

सुरसख m. *der Freund der Götter*, Beiw. Indra's Çiç. 162.

सुरसद्मन् n. 1) *der Götter Sitz, Himmel* Hall. 1,3. — 2) *Gotteshaus, Tempel* Kathâs. 25,228. 93,83. Râga-Tar. 5,158.

सुरसंभवा f. *eine best. Pflanze*, = घादित्यभक्ता Râgân. 4,182.

सुरसरित् f. *der Götterfluss* d. i. *die* Gañgâ Hall. 3,51. Bâgh. 2,75. Spr. (II) 3328. Prab. 80,1. 10.

सुरसर्षपक m. = देवसर्षप Râgân. im ÇKDn.

सुरससंग्रह m. Titel eines medicinischen Werkes Mack. Coll. 1,160.

सुरसायन n. wohl = सुरसायणी Suçr. 2,294,3.

सुरसायणी (सुरस + ष°) m. *weisses Basilienkraut* Nigh. Pr.

सुरसाह्वय wohl so v. a. तुलसीपत्र Suçr. 2,276,18.

सुरसाष्ट (सुरस + षष्टन्) m. ein Collectivname für folgende sechs (!) Pflanzen: निर्गुण्डी, तुलसी, ब्राह्मी, वल्ली, कण्टकारिका und पुनर्नवा Çabdâm. im ÇKDn.

सुरसिन्धु f. = सुरसरित् Kathâs. 18,62.

सुरसुत m. *Göttersohn, Götterkind* MBh. 3,2946. R. Gorr. 1,79,7. f. घा 1,56. R. Schl. 2,96,17.

सुरसुन्दर 1) adj. (f. ई) *schön unter den Göttern, eine göttliche Schönheit*; m. Bhâg. 4,8,45. f. *die Schöne eines Gottes, ein Weib der Götter, eine* Apsaras 5,17,13. Çik. 164. Kir. 5,23. Kathâs. 28,55. Bez. der Durgâ ÇKDn. und Wilson. — 2) f. ई N. pr. α) *einer Fee* ÇKDn. — *b*) eines Frauenzimmers Vet. in LA. (III) 16,1.

सुरसेना f. 1) *das Heer der Götter*. °गणपति R. 1,38,20. — 2) N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. 118,4.

सुरस्कन्ध m. pl. Bez. einer Klasse von Asura Lot. de la b. l. 3.

सुरस्त्री f. *das Weib eines Gottes* oder *eine* Apsaras H. 183, Schol. Vikr. 3. Vaṛâh. Bṛh. S. 48,26. Kathâs. 31,35. 52,261. 110,117. Bhâg. P. 4,6,25. 7,8,35. 9,6,42.

सुरस्त्रीश m. *der Herr der* Apsaras, Bez. Indra's H. 173, Schol.

सुरस्थान n. *Gotteshaus, Tempel* Spr. (II) 2574.

सुरक्षस् n. *ein ganz einsamer Ort:* °सि Pañkat. 1,10,38. °क:स्थान dass. 6,13.

सुरा (von 1. सु; vgl. सोम) f. Nir. 1,11. Uṇâdis. 2,24 (wohl dieses gemeint, nicht सुर). am Ende eines comp. auch सुर n. P. 2,4,25. AK. 3, 6,6,40. 1) *ein geistiges Getränk; vorzugsweise Branntwein*, namentlich *Kornbranntwein; Liqueur* AK. 2,10,39. 3,4,22,54. H. 903. an. 2,469. Med. r. 99. Hall. 2,174. शतं कुम्भान्सुरायाः RV. 1,116,7. 8,2,12. 7, 86,6. भोक्ता त्रिंगुरुत्तःपेयं सुरायाः 10,107,9. 131,4. AV. 5,69,1. 10,6,5. 14,1,25. fg. 15,9,1. VS. 19,5. 7. 14. 23. 24. Ait. Br. 8,5. 8. 20. Çat. Br. 1,6,2,4. °मर्क 5,1,2,10. Verz. d. Oxf. H. 80,*b*,4. Bhâg. P. 11,5,11. Çat. Br. 5,1,2,14. 5,28. 12,7,1,7. मदाय सोमो मदाय सुरा 2,12. °मद ebend. सुराकृति 5,5,4,21. Âçv. Çr. 3,9,3. Gṛhj. 2,5,3. Kauç. 11. fg. 66. 92. Nir. 1,4. Kaṭhân. Up. 5,10,9. M. 11,90. सुरा वै मलमन्नानाम् 93. 150. गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा 94 = Gṛhjas. 2,26. शालिषष्टिकपिष्टादिकृतं मद्यं सुरा मतम् Madan. 8,58; vgl. Schol. zu Kâty. Çr. 19,1,20. नलिनी नारिकेरस्य सुरा तालस्य तालकी (तालतो gedr.) Taik. 2,10,10. — MBh. 1,3238. 4,435. 14,2652. °प्रिया Hariv. 10247. पीतमण्डा R. 2,36,12. हृतसारा 61,18. 91,15 (100,13 Gorr.). 50. R. Gorr. 2,34,27. 80,4. 5,25,31. Suçr. 1,189,4. 10. 237,16. 2,73, 15. 326,12. श्वेता *aus Melonen u. s. w. bereitet* (nach Comm.) 1,189,6. 2,440,3 (so v. a. पैष्टी सुरा Comm.). पिबति सुरां नृकपालेन Spr. (II) 1346. 2993. न पानेन सुरां जयेत् 3504. Vaṛâh. Bṛh. S. 48,28. 54,114. Kathâs. 11,5. Prab. 59,10. Mârk. P. 51,35. Bhâg. P. 1,8,32. यद्वाणभक्तो विक्षिप्तः सुरायाः 11,5,13. Verz. d. Oxf. H. 91,*b*,5. °कुम्भ Pañkat. 1,2,28. °घट R. 2,52,53. 55,20. °भाजन M. 11,747. Personificirt als Tochter Varuṇa's (vgl. वारुणी), die bei der Quirlung des Milchmeeres zum Vorschein kam, MBh. 1,1146. 2616. Hariv. 3286. 10247. R. 1,45,38 (46,28 Gorr.). — 2) unter den Bezz. für *Wasser* Naigh. 1,12. — 3) *ein Trinkgeschirr für berauschende Getränke* H. an. Med. — Vgl. इन्द्र°, मुख°, यव°, स°.

सुराकर (सुरा + घा°) m. 1) *Kokosnusspalme* Çabdârthan. bei Wilson. — 2) *Branntweinbrennerei* Baudh. im Çabdârth. nach ÇKDn.

सुराकर्मन् n. *eine Cerimonie mit* Surâ Lâṭj. 5,4,11.

सुराकार m. *Branntweinbrenner* VS. 30,11.

सुरागार (सुरा + ष° oder घा°) n. *Schenke* Mârk. P. 51,33.

सुरागृह n. dass. Taik. 3,3,82.

सुराङ्गना (सुर + ष°) f. *das Weib eines Gottes, ein Weib der Götter, eine* Apsaras N. 12,39. Bâgh. 6,27. 7,48. 8,78. 13,42. Vikr. 19. Spr. (II) 2344. Kir. 8,45. Z. d. d. m. G. 27,93. Kathâs. 23,79. 32,117. 45, 186. Khandok. 83. Prab. 62,10. Bhâg. P. 10,27,24.

सुराचार्य (सुर + घा°) m. *der Lehrer der Götter*, ein N. Bṛhaspati's AK. 1,1,2,25. H. 118.

सुराजक m. = भृङ्गराज Çabdam. im ÇKDn.

1. सुराज्ञ् m. *ein guter Fürst* Schol. zu P. 5,4,69. 8,2,12, Vârtt. Vop. 6,88. — Vgl. सौराज्य.

2. सुराजन् 1) adj. *einen guten Fürsten habend:* देश AK. 2,1,13. — 2) f. **सुराजी** N. pr. eines Dorfes P. 4,1,99, Schol.

सुराजि m. N. pr. eines Mannes R. 7,43,2.

सुराजीव (सुर + धा°) m. *Lebensunterhalt der Götter*, unter den Beinn. Vishṇu's Paṇḍar. 4,3,120.

सुराजीविन् (सुरा + जी°) adj. von *Branntwein lebend;* m. *Branntweinbrenner* oder *Schenkwirth* H. 901. Jiṭ. 1,164.

सुराजी s. u. 2. सुराजन्.

सुराणायनीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,274.

सुरातिं adj. *gute Gaben bringend:* वज्रेण RV. 5,79,4. Götter 9,81,4. 10,65,4. 78,3.

सुरादति m. *Branntweinschlauch* Paṇḍav. Bn. 14,11,26.

सुराधम (सुर + ध°) adj. *der Niedrigste —, Schlechteste unter den Göttern* Bhāg. P. 3,18,3.

सुराधर (सुरा + धर) m. N. pr. eines Asura Kathās. 47,15.

सुराधस् 1) adj. *a) Wohlthaten erweisend, freigebig* RV. 3,33,12 (pl. °धास्). 4,2,4. 5,4. दाता मघानि मघवा सुराधाः 17,3. 3,14,12. 46,24. 54,12. 57,6, 18,143,4. Vâlakh. 1,1. 2,1. VS. 20,11. Âçv. Çr. 2,10,6. — *b) Gaben empfangend, wohlhabend* RV. 1,23,6. 3,53,13. — 2) m. N. pr. eines Mannes (nach Comm.) RV. 1,100,17. mit dem patron. Vârshâgira RV. Anukr. Âṅgirasa Ind. St. 3,244,b.

सुराधान (सुरा + 2. धान) adj. (f. ई) Surâ *enthaltend:* कुम्भी VS. 19,16.

सुराधिप (सुर + ध°) m. *der Fürst der Götter*, Bein. Indra's MBh. 3,11938. R. 1,63,27. R. Gorr. 1,66,2. Kathās. 53,131. LA. (III) 92,6. Bhāg. P. 10,18,28.

सुराधीश (सुर + ध°) m. *ein Fürst der Götter*, pl. Bhāg. P. 10,63,9. sg. Bein. Indra's Naish. 22,49.

सुराध्यक्ष (सुर + ध°) m. *Leiter der Götter*, Beiw. Brahman's Hariv. 9874. Kṛishṇa's 10403. Çiva's Çiv.

सुराध्वज (सु° + ध्वज) m. *die Fahne —, das Aushängeschild eines Schenkwirths* M. 9,237. MBh. 5,3120 (vgl. u. वेडाल in den Nachträgen).

सुरानक (सुर + धा°) m. *eine Trommel der Götter* Bhāg. P. 7,8,36.

सुरानन्द (सुर + धा°) m. N. pr. eines Lehrers der Haṭhavidjâ Verz. d. Oxf. H. 233,b,1 v. u.

सुरान्त (सुर + धन्त) m. N. pr. eines Râkshasa Bhāg. P. 9,10,18.

सुराप adj. *Branntwein trinkend, -trinker* Çiksh. Ça. 15,15,14. Kauç. 11. M. 9,235. 11,49. 149. 249. 12,56. Jiṭ. 3,207. MBh. 5,270 (वक्त्र). 12,5969. R. 2,91,50 (100,49 Gorr.). Spr. (II) 2198. Weber, Kṛishṇaj. 224. Mârk. P. 14,91. Bhāg. P. 6,2,9. f. धा und ई P. 3,2,8, Vârtt. धा Bhāg. P. 6,2,27. ई M. 5,90. Jiṭ. 1,73. 3,6.

सुराप्गा (सुर + धा°) f. *Götterfluss*, Bez. der Gaṅgâ Gaṭâdh. im ÇKDr. Kir. 5,40. Kathās. 73,97. am Ende eines adj. comp. Sin. D. 128,13.

1. सुरापाण (°पान) n. Surâ-*Genuss* Çat. Br. 1,6,3,2. 4. °पान TS. 2,5,4,1. Nir. 6,27. M. 9,237. 11,56. 93. 95. MBh. 1,3248. fg. 7734. 13,4639. Spr. (II) 4492. Ind. St. 2,14. Weber, Rimat. Up. 353. Mârk. P. 17,33. 115,5. Verz. d. Oxf. H. 8,a,40. 281,b,11.

2. सुरापाण (°पान) 1) adj. Surâ *trinkend* Spr. (II) 4778 (°पान). — 2) °पाण m. pl. Bein. der Prâkṛja P. 8,4,9, Schol.

सुरापान s. सुरापाण.

सुरापीत adj. (f. धा und ई) *der* Surâ *getrunken hat* P. 4,1,53, Schol.

सुरापीव 1) m. = 1. सुरापाण Ait. Br. 8,3. — 2) adj. = 2. सुरापाण Bhāg. P. 6,9,1. 3.

सुराबलि m. *eine* Surâ-*Darbringung empfangend* TBr. 1,7,6,3.

सुराब्धि m. *das Branntweinmeer* Mârk. P. 54,7.

सुराभाग m. = सुरामण्ड Çabdar. im ÇKDr.

सुराम (d. सु + राम) adj. VP. Paiṭ. 3,37 (ohne Avagraha) *erpressend:* Soma RV. 10,131,4. 5.

सुरामण्ड m. *die schmackhafte obere Schicht vom Branntwein* AK. 2,10,43.

सुरामन् adj. = सुराम. Soma VS. 21,42.

सुरामय (von सुरा) adj. *aus* Surâ *bestehend* Mahidh. zu VS. 20,76.

सुरामुख 1) adj. Surâ *im Munde habend.* — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1553.

सुरामेह (सुरा + मेह) m. *eine best. Harnruhr* Çiṇḍ. Sah. 1,7,42.

सुरामेहिन् adj. *an dieser Krankheit leidend* Suçr. 2,77,21.

सुरायुध (सुर + धा°) n. *ein Geschoss der Götter* Kumâras. 2,30.

सुरारि (सुर + धरि) m. 1) *ein Feind der Götter, ein* Asura (auch Râkshasa) H. 238. R. 4,43,33. Mahâbh. 174,1. Rāgat. 14,20. Kumâras. 3,9. Spr. (II) 7127. Kathās. 45,373. Mârk. P. 18,54. fg. °कुलप्र Beiw. Vishṇu's Tirthâbhiṣ. im ÇKDr. — 2) N. pr. *a)* eines Fürsten MBh. 5, 73. — *b)* eines Krankheitsdämons Hariv. 9561.

सुरारिघ्न m. N. pr. eines Krankheitsdämons Hariv. 9560.

सुरार्दन (सुर + ध°) m. *Peiniger der Götter* so v. a. *ein* Asura Mârk. P. 18,44.

सुरार्ह (सुर + धर्ह) 1) adj. *der Götter würdig.* — 2) n. *a) gelber Sandel* Râgân. 12,25. — *b) Gold* Çabdâmṛiṭ. bei Wilson.

सुरार्हक m. *eine best. Pflanze*, = वर्वर Râgân. 10,172.

सुराल m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,b,12.

सुरालय (सुर + धा°) m. 1) *Götterwohnung:* रैवतं च गिरिश्रेष्ठं कुरु देव सुरालयम् Hariv. 6370. *der Himmel* H. 87. R. 4,42,2. Rāgat. 16,34. Kathās. 52,361. Mârk. P. 61,54. Bez. des Sumeru AK. 1,1,8,45. — 2) *Gotteshaus, Tempel* Jiṭ. 2,228. Karaka 1,8. Varâh. Bṛh. S. 9,42. 59,2. 96,4. Kathās. 27,152. 189. 121,181. Buddh. P. 7,15,42. 10,69,6. — 3) *Wind* H. g. 170, wenn सु° st. सु° gelesen wird.

सुराव (d. सु + राव) m. N. pr. eines Rosses MBh. 3,8631.

सुरावनि (सुर + ध°) f. *der Erdboden* — so v. a. *die Mutter der Götter*, Bein. der Aditi Mârk. P. 105,15.

सुरावत् (von सुरा) adj. *mit* Surâ *versehen* RV. 1,191,10. धत्त VS. 19. 82. Çat. Br. 12,8,3,2.

सुरावली f. Titel einer Schrift Verz. d. Tüb. H. 20.

सुरावारि m. *Branntweinmeer* H. 1075.

सुरावास (सुर + धा°) m. *Aufenthaltsort der Götter*, N. eines Tempels Râga-Tar. 1,26.

सुरावृत adj. von *Branntwein umgeben*, m. Bez. *der Sonne* H. g. 8.

सुरार्ण (सु°+ ऋ) adj. von *Branntwein übermüthig*, pl. °र्णस् RV. 8,21,14.

सुराम्बय (सुर + घा°) m. *Stätte der Götter*, Beiw. des Meru Śāśvas. 12,41. Kaṭhās. 110,13.

सुराष्ट्र 1) adj. (f. घा) *gute Herrschaft habend* u. s. w.: घार्प: TS. 2,4, 3,2. — 2) m. sg. N. pr. eines Landes, eines Theiles des heutigen Guzerat; m. pl. Bez. des Volkes und des Landes Hiouen-thsang 2,165. 405. m. pl. MBh. 3,8244. 8,2098. 14,2477. Hariv. 12837. R. 4,43,5. Manāsn. ed. Ball. 62. Varāh. Bṛh. S. 5,79. Mārk. P. 57,52. sg.: °ष्ट्रे R. Gorr. 1,12,23. °ष्ट्रे विषये Varāh. Jogāj. 3,19 in Ind. St. 13,175. °ष्ट्रम् acc. Bhāg. P. 3,1,24. im comp.: सुराष्ट्रावन्तय: MBh. 4,12. Varāh. Bṛh. S. 4,22. 10,6. 14,19. 69,10. °सौवीरकयोर्यदन्तरम् R. 3,53,56. कुन्तिसुराष्ट्रा:, चित्तिसुराष्ट्रा: gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. Z. f. d. K. d. M. 4,171. सुराष्ट्राधिपति MBh. 2,1165. °विषय Hariv. 5162. °ब्रह्मन् m. *ein Brahmane aus S.* P. 5,4,104, Schol. सुराष्ट्रा f. wohl N. der Hauptstadt AV. Paric. in Ind. St. 13,317. Çāṭh. 2,6. 10,140. — 3) m. N. pr. eines Rathgebers des Daçaratha Weber, Rāmāy. Up. 302. 305. Agastyasaṃh. im Titthapr. nach ÇKDa. — Vgl. सौराष्ट्र u. s. w.

सुराष्ट्रज 1) adj. (f. घा) *aus Surâshṭra stammend* Mārk. P. 75,45. — 2) m. *a) eine best. schwarze Bohne* Rājān. 16,38. — *b) ein best. Gift* Çaṇḍaś. im ÇKDa. — 3) f. घा *eine best. Thonerde* (तुवरी), wohl *Alaun* Rājān. 13,64. Suçr. 1,132,17. 2,9,10. 102,15. 449,18. — 4) n. dass. AK. 2,4,8,19.

सुराष्ट्रादवा f. *Alaun* Suçr. 2,132,19.

सुरासमुद्र m. *das Branntweinmeer* Taik. 2,1,5.

सुरासव (सुरा + घा°) m. n. *ein durch Maischen unreifer Fruchtkörner gewonnener Branntwein* Kāraka 1,27. Suçr. 1,190,6. यवपिष्टकृतं मद्यं प्रोक्तो यवसुरासव: Madan. 8,67. यदपक्वोषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं सुरासव: Bhāvapr. 5. M. 11,95 (n.). गौड MBh. 8,2050. 13,4737. Hariv. 8419. Bhāg. P. 4,2,29. 18,16. nach den Comm. Surā und Āsava.

सुरासुर m. pl. *Götter und Asura* MBh. 13,886. Hariv. 2666. R. 1, 60,28. 3,51,6. Weber, Kṛshṇaj. 282. °सैन्यसंघात Verz. d. Oxf. H. 116, *b*,29. sg.: सुरासुरस्य जगत: MBh. 9,2236. °कन्यका: Kathās. 24,34. °गुरु Bez. Çiva's MBh. 13,569. Kaçjapa's Çiç. 168. समुरासुरमानुष adj. Weber, Kṛshṇaj. 279.

सुरासुरमय adj. *durch die Götter und Asura bewirkt* Verz. d. Oxf. H. 57, *a*, No. 105, Çl. 7 (wir lesen °मये).

सुरासुराचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Wilson, Sel. Works 1,201.

सुरासोमौ m. du. *Surâ und Soma* VS. 21,59. °विक्रयिन् Kiṭ. Ça. 19,1,18. sg. *Soma in Gestalt von Surâ* Çāṅkh. Çr. 14,13,4. 15,15,5.

सुरास्पद (सुर + घा°) n. *Tempel, Heiligthum eines Gottes* Rāja-Tar. 4,26. 701. 710.

सुराह्व (सुर + घाह्वा) 1) m. *Pinus Deodora* (देवदारु) Roxb. (dieses sonst n.) Çaṇḍar. im ÇKDa. = हरिदु Rājān. 9,125. मरुवक Rājān. im ÇKDa. — 2) f. घा *eine best. Pflanze*, = रुद्रजटा Rājān. 3,67.

सुराह्वय (सुर + घा°) 1) m. *eine Art Ocimum* (मरुव) Rājān. 10,186. — 2) n. *Pinus Deodora* Roxb. Rājān. 12,29.

सुरि adj. s. सुरी.

सुरिस s. इन्द्र°.

सुरीक m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,30.

सुरुक्मे adj. (f. घा) *schön geschmückt* Nir. 8,11. Ushas und die Nacht RV. 1,188,6. 10,110,6. VS. 20,41.

सुरुङ्ग 1) m. *Moringa pterygosperma* Gaertn. Çaṇḍar. im ÇKDa. — 2) f. घा AK. 3,6,8,8. (= σύριγξ nach Benfey) *ein unterirdischer Gang, Mine, Bresche* Taik. 2,10,9. 3,3,225. H. 985 (सुरङ्गा). an. 2,235. Halāj. 4,86. Gaṭādh. im ÇKDa. MBh. 1,279. 2252. 3830 (सुरङ्गा ed. Bomb.). Mudrār. 42,12. 15 (सुरङ्गा an beiden Stellen). Kathās. 29,94. 40,61. fg. 64,54. 58. 59 (am Ende eines adj. comp.). 71,31. Daçak. 26,6. 89,1. 93,16. 126,6. 7. 127,4.

सुरुङ्गपुङ् m. = सुरुङ्गादि Çaṇḍar. im ÇKDa. सुर° geschr.

सुरुङ्गादि (सुरुङ्गा + अदि) m. *ein Dieb, der durch einen unterirdischen Gang u. s. w. in ein Haus einbricht*, Taik. 2,10,8 (°खिधचौरे zu lesen mit ÇKDa.).

1. सुरुचे f. *Glanz, Helle* RV. 3,15,6. भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्या: 6,35,4. AV. 4,1,1.

2. सुरुचे 1) adj. VS. Pair. 5,31. *strahlend, hell* RV. 1,112,1. 3,2,5. चन्द्रमिव सुरुचं व्वार घा दधु: 2,2,4. AV. 4,1,3. RV. 1,190,1. 3,7,5. 4, 2,17. 5,33,10. Bhāg. P. 2,9,11. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3388.

1. सुरुचि f. *Wohlgefallen, grosses Behagen an* (loc.) Spr. (II) 4521, v. l.

2. सुरुचि 1) adj. *strahlend, hell* u. s. w. — 2) m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva Hariv. 388. eines Jaksha (nach dem Comm.) Bhāg. P. 12,11,39. — 3) f. N. pr. einer Gattin Dhruva's und Mutter Uttama's Mārk. P. 69,2. Bhāg. P. 4,8,8. fgg. 30. Verz. d. Oxf. H. 69,*b*,7.

सुरुचिर adj. (f. घा) *überaus strahlend, — hell, — prächtig, — schön:* राजसभा MBh. 5,1794. सरस् 13,536. 547. शयन R. 2,72,19. वचस् 1,63, 2 (65,2 Gorr.). Notices of Skt Mss. 1,172,21.

सुरुन्दला f. N. pr. eines Flusses H. ç. 166.

सुरुण्ड m. pl. N. pr. einer Dynastie Bhāg. P. in VP. 475, N. 64. गुरुण्ड die gedr. Ausg. 12,1,28. — Vgl. मुरुण्ड.

सुरुप 1) adj. (f. घा) *wohl aussehend, schön* RV. 3,4,9. TS. 7,3,18,1. Çāṅkh. Br. 16,3. Çr. 8,16,21. पशव: Kāṭh. Up. 2,15,2. Personen, insbes. Weiber R. 2,53,40. 69,27. 5,10,19. Çāk. 27. Spr. (II) 3822. 6312. 7128. fg. Varāh. Bṛh. S. 58,40. 68,99. Kathās. 5,51. fg. 27,183. 32,148. 42,139. 123,163. Mārk. P. 100,36. Paṇḍar. 1,3,74. स्तनौ R. 5,2,18. रूप Spr. (II) 5793. °रूपाणि रत्नानि MBh. 3,10071. सुरूपस्तु बुधे रम्ये प्राप्तरूपाभिरूपवत् H. an. 3,446. = विदंस् u. s. w. Gaṭādh. im ÇKDa. — 2) m. N. pr. *a*) eines Asura Hariv. 12897. — *b*) pl. einer Klasse von Göttern unter Manu Tāmasa VP. 262. Mārk. P. 74,37. — 3) f. घा *a*) Bez. verschiedener Pflanzen: *Glycine debilis* Rājān. 4,18. = भार्गी 6,152. = मल्लिका 10,67. *Bignonia suaveolens* Schol. zu Çiç. 1,2. — *b*) N. pr. α) einer Apsaras Hariv. 12472. — β) der Tochter eines Schlangendämons Kathās. 123,81. — γ) einer mythischen Kuh MBh. 5,3609. — 4) n. *a*) *eine best. Pflanze*, = तूल Rājān. 9,97. — *b*) N. eines Sāman Paṇḍav. Br. 14,11,10. 15,3,5. Liṭ. 3,6,25. Ind. St. 3,244,*b*. सुरूपाग्र n. und सुरूपोत्तर n. desgl. ebend.

सुरूपक adj. = सुरूप Taik. 3,3,218.

सुरूपकर्तृ adj. *Schönes bildend* RV. 1,4,1.

सुरूपता (von सुरूप) f. *schönes Aussehen, Schönheit* Harıv. 7868. Kim. Nitis. 17,52. Spr. (II) 5772. 6387. Mârk. P. 69,34.

सुरूपवर्षवर्ण adj. *schönregenfarbig* TS. 1,6,2,1. 7,1,1.

सुरूपक m. *ein eselfarbiges Pferd* H. 1240.

सुरूपकृत्नु adj. *reich* ṚV. 6,16,26.

सुरेखा f. *eine hübsche Linie* Varâh. Bṛn. S. 70,11. Kathâs. 98,26.

सुरेज्य (सुर + ई°) 1) m. *der Lehrer der Götter* d. i. Bṛhaspati Wasan. Gjot. 24. Varâh. Bṛn. S. 8,33. als *Planet Jupiter* 27. 69,5. Bṛn. 2, 11. Lagucâ. 2,6. — 2) f. आ Bez. zweier Pflanzen: = ब्राह्मी Râǵân. 5. 62. = तुलसी 10,151.

सुरेणु 1) m. = रेभरेणु. त्रसरेणु Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,38. — 2) f. N. pr. *a)* eines Flusses, einer der 7 Sarasvati, MBh. 9,2159. — *b)* einer Tochter Tvashṭar's und Gattin Vivasvant's Harıv. 546; vgl. सरण्यू.

सुरेणुपुष्पध्वज m. N. pr. eines Fürsten der Kiṁnara Vjutp. 89.

सुरेतर (सुर + इ°) m. *ein Asura* Bhâg. P. 2,7,36. 3,16,26. 7,9,26.

सुरेतस् adj. *samenreich, zeugungskräftig:* पितरो ṚV. 1,159,2. वृषभ 160,3. VS. 21,38. ṚV. 3,1,16. द्यौः 10,45,8. 1,121,5. Tvashṭar VS. 28,9. 32. TS. 1,2,8,2. Çâṅku. Ça. 8,19,5.

सुरेतोधा adj. *gute Zeugungskraft gebend:* Tvashṭar Pârâśâv. Bṛ. 21, 10,22. Kâṭj. Ça. 23,3,1.

सुरेन्द्र (सुर + इन्द्र) m. 1) *ein Götterfürst, ein oberster Gott* M. 7,5 (deren 8). Ragh. 3,11. Spr. (II) 5975. Bhâg. P. 3,7,31. 10,34. Bez. Indra's Râǵa-Tar. 1,92. — 2) N. pr. eines Fürsten, Sohnes des Khagendra, Râǵa-Tar. 1,91. fg. eines Lehrers Hall 113. — 3) = सुरेन्द्रकन्द Nigh. Pa.

सुरेन्द्रक m. = सुरेन्द्रकन्द Nigh. Pa.

सुरेन्द्रकन्द m. *eine best. Knolle* (Arum) Nigh. Pa. Suçr. 1,225,17.

सुरेन्द्रगोप m. = इन्द्रगोप *Coccinella* Suçr. 1,93,3. 2,295,6.

सुरेन्द्रचाप n. Indra's *Bogen* d. i. *Regenbogen* Z. d. d. m. G. 27,90.

सुरेन्द्रजित् m. Indra's *Besieger*, Bez. Garuḍa's Hâlâs. 1,30.

सुरेन्द्रता (von सुरेन्द्र) f. *die Würde eines obersten Gottes, die Herrschaft über die Götter* Kathâs. 110,17.

सुरेन्द्रलोक m. Indra's *Welt* Bhâg. 9.20.

सुरेन्द्रवती (von सुरेन्द्र) f. N. pr. einer Fürstin Râǵa-Tar. 3,225.

1. सुरेभ (सुर + इभ) m. *ein Elephant der Götter*, Indra's E. Kathâs. 36,13.

2. सुरेभ (vielleicht fr. सु + रेभ) n. *Zinn* Taik. 2,9,34.

सुरेवट m. *Areca triandra* Roxb. Taik. 2,4,41.

सुरेश (सुर + ईश) 1) m. *a) ein Götterfürst, ein oberster Gott* Bhâg. P. 3,11,24. 5,17,32. 9,4,54. Bez. eines best. *Gottes* MBh. 13,4360. Agni's 2,1147. eines best. Agni, eines Sohnes des Tapas, 3,14168 nach der Lesart der ed. Bomb. (सुवेश ed. Calc.). Indra's H. 173, Schol. Varâh. Bṛn. S. 43,55. Kathâs. 56,269. Bhâg. P. 5,11,19. Vishṇu's oder Kṛshṇa's Verz. d. Oxf. H. 57, *a*, No. 105, Z. 8. Çiva's Çiv. — *b)* N. pr. einer Oertlichkeit: सुरेशस्य निकटे Pârâśâr. 1,10,40. — 2) f. ई Bez. der Durgâ Spr. (II) 4801.

सुरेशलोक m. Indra's *Welt* Bhâg. P. 5,19,24.

सुरेश्वर (सुर + ई°) 1) m. *a) ein Götterfürst, ein oberster Gott* R. 3, 9,6. 5,47,4. Bhâg. P. 4,15,9. 9,18,13. Bez. Brahman's R. 1,14,8 (4 Gorr.). Çiva's 4,34,29. Indra's 1,64,2. Ragh. 3,64. Çik. Ca. 146,14. Bhâg. P. 6,9,4. 8,13,22. eines Rudra Gaṇa Verz. d. Oxf. H. 190, *a*, 36. MBh. 12,7555. VP. 121, N. 17. — *b)* N. pr. verschiedener Männer Burnouf, Intr. 533. Weber, Râmây. Up. 284. 349. Verz. d. B. H. No. 627. Verz. d. Oxf. H. 251, *b*, 24. 253, *a*, 11. 256, *a*, 23 und N. 4. 257, *a*, 29. fg. *b*, 3. 24. 279, *b*, 44. 390, *b*, No. 37. fgg. 392, *a*, No. 68. fg. Wilson, Sel. Works 1,202. सुरेश्वराचार्य Colebr. Misc. Ess. 1,62. Verz. d. Pet. H. No. 99. Verz. d. B. H. No. 616. Verz. d. Oxf. H. 72, *b*, 14. 226, *a*, No. 554. Hall 18. 90. 110. 139. 154. 159. °पण्डित Notices of Skt Mss. 1. 32. — 2) f. ई Bez. der Durgâ Verz. d. Oxf. H. 102, *b*, 7. सुरेश्वरप्रिय Kathâs. 51,48. Râǵa-Tar. 5,40. fg. der Lakshmî Verz. d. Oxf. H. 132, *b*, No. 242. der Râdhâ 24, *b*, 48. Pârâśar. 2,4,18. 24. der himmlischen Gaṅgâ Çaṅkar. im ÇKDa.

सुरेश्वरधनुस् n. Indra's *Bogen* d. i. *Regenbogen* Spr. (II) 997.

सुरेश्वरप्रभ m. N. pr. eines Fürsten Burnouf, Intr. 535.

सुरेश्वरक्षेत्र n. N. pr. *eines der Durgâ geheiligten Gebietes* Râǵa-Tar. 5,37. 6,147.

सुरेष्ट (सुर + 1. इष्ट) 1) adj. *den Göttern erwünscht, — genehm.* — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: = वमुक Râǵân. 5,123. = नगेह 10, 35. = शिवमल्ली und शाल Râǵân. im ÇKDa. — 3) f. आ *eine best. Pflanze.* = ब्राह्मी Râǵân. im ÇKDa.

सुरेष्टक (von सुरेष्ट) m. *das Harz der Vatica robusta* Râǵân. 9,81.

सुरै (fr. सु + रै) adj. (n. सुरि) *wohlhabend, reich* Vop. 3,82. 96.

सुरोचन 1) adj. zur Erklärung von सुरुक्म Nir. 8,11. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Jaǵñabâhu und n. N. des von ihm beherrschten Varsha Bhâg. P. 5,20,9. — 3) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2647.

सुरोचिस् m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha Bhâg. P. 4,1,41.

1. सुरोत्तम (सुर + उ°) m. 1) *ein oberster Gott, Götterfürst* MBh. 3, 2187. Harıv. 171. 2519. Bez. Vishṇu's oder Kṛshṇa's 6371. H. ç. 72. der Sonne ÇKDa. und Wilson. — 2) सुरोत्तमाचार्य N. pr. eines *Lehrers* Verz. d. Tüb. H. 13.

2. सुरोत्तम (सुरा + उ°) wohl n. *die oberste Schicht von Surâ* Gorr. 2,1,7 in Ind. St. 5,305.

सुरोत्तर (सुर + उ°) m. *Sandel* Çabdâm. im ÇKDa.

सुरोद (सुरा + उद) adj. *statt Wassers Surâ habend*, m. *ein solches Meer* Gaṇit. im ÇKDa. Bhâg. P. 5,1,34. 20,7. 13. Pârâśar. 2,2,80.

सुरोदक adj. dass. AV. 4,34,6.

सुरोध m. N. pr. eines Sohnes des Tamsu Harıv. 1720. die neuere Ausg. liest aber besser: तंसोः सुतो वै st. तंसोः सुरोधो; eine dritte Lesart haben wir VP. 448, N. 13.

सुरोधस् m. N. pr. eines Mannes, pl. Pravarâdhjâ. in Verz. d. B. H. 59,17.

सुरोमन् 1) adj. *schönes Haar am Körper habend.* — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2151.

सुरोषण m. N. pr. eines Kriegers auf Seiten der Götter Kathâs. 48,17.

सुरोहड m. N. pr. eines Fürsten von Kîra Kathâs. 44,46. 172. 188.

सुरोद्भिका f. N. pr. eines Frauenzimmers gaṇa शिवादि zu P. 4,1, 112. — Vgl. सौरोद्भिक.

मुरोरिकिका f. desgl. ebend. — Vgl. मोरोरिकिक.

मुरोकस् (मुर + यो°) m. *Gotteshaus, Tempel* Rigâ-Tar. 3,483.

मुल् in प्र मुलामि v. l. TS. 7,4,19,4 und TBr. 3,7,9,5 für प्र तिलामि VS. 23,24. wohl falsch; nach dem Comm. = प्रवेशयामि.

मुल gaṇa वलादि zu P. 5,2,136.

मुलइणक wohl *Salonichi* Verz. d. Oxf. H. 338,b,42.

मुलक्कान m. N. pr. eines Mannes Rigâ-Tar. 6,342.

मुलक्षण 1) adj. (f. या) *mit Glück verheissenden Zeichen versehen:* Personen R. 3,49,57. Kathâs. 13,68. 26,201. 29,10. 164. 91,16. आकृति 49,211. — 2) f. या N. pr. *a)* einer Gattin Kṛshṇa's Pañcar. 3,7,31. 15,10. — *b)* einer Freundin der Umâ Çaṅkar. im ÇKDr. — *c)* der Gattin Kaṇḍaghosha's Daçak. 120,11. fg. — Vgl. सौलक्षण्य.

मुलक्षणत्व n. nom. abstr. von मुलक्षण 1) Kathâs. 37,11.

मुलक्षित adj. *gut —, genau untersucht* M. 8,403.

मुलक्ष्मसंपराय m. bei den Gaina s. Wilson, Sel. Works 1,312.

मुलतान m. *Sultan* Verz. d. B. H. 167,14.

मुलभ 1) adj. P. 7,1,68. (f. या) *a) leicht zu erlangen, — finden, — antreffen, — haben; häufig, wohlfeil:* तस्याः मुलभः Bhag. 8,14. परेण R. 4,29,26. फल 5,86,8. अपवाद एव मुलभो दुष्टगुणो दूरतः Mṛicch. 137, 16. विपद् Mahâbh. 99, v. l. Çik. 34. मुढे दर्पणातले मुलभावकाशा (छाया) 191. Spr. (II) 3100. 4615. 6039. 6717. 7130. fgg. Vaṛâh. Bṛh. S. 78,4. Kathâs. 22,239. 25,10. 62. 50,158. Rigâ-Tar. 3,360. Mârk. P. 19,35. Bhâg. P. 4,20,16. 8,20,9. Verz. d. Oxf. H. 57, *a*, No. 105, Z. 24 (स्तुलभा gedr.). आत्मचित्ता° Raghu. 14,20. गुणवत्मुलभं नृपम् *so v. a. zugänglich für* Rigâ-Tar. 3,129. सर्व° Sarvadarçanas. 90,16. य° Çik. 83, 23. Vikr. 19,2. Hit. 37,14. Bhâg. P. 5,3,17. — *b) gewöhnlich bei so v. a. passend, angemessen, entsprechend, eigen, am Platze seiend;* in comp. mit der Ergänzung: पतिसंयोगमुलभं वयः R. 3,4,20. त्रिनेत्रवत्मुलभं चिताभस्मत्रः Kumâras. 5,69. प्रच्छायमुलभनिद्रा दिवसाः Çik. 3. चरणोपभोगमुलभो लाक्षारसः 80. Spr. (II) 4021. 6353. यज्ञान° Weber, Râmat. Up. 362. मनुष्यत्वमुलभाच्चापलात् Kathâs. 7,11. 45,209. 59,168. 104,109. Prab. 7,11. Rigâ-Tar. 1,64. 215. 241. 3,75. 507. 4,236. 269. 5,385. — *c)* Vikr. 26 schlechte Lesart für सुभग. — 2) m. N. pr. eines Mannes Schiefner, Lebensb. 234(4). — 3) f. या *a)* Bez. verschiedener *gemeiner* Pflanzen: = तुलसी Dhanv. 4,26. = धूमपत्रा Râgân. 5,33. = वार्षिका 10,87. *Glycine debilis Lin.* Râgân. im ÇKDr. — *b)* N. pr. einer Lehrerin Âçv. Gṛhj. 3,4,4. Çâṅkh. Gṛhj. 4,10. AV. Paric. in Verz. d. B. H. 92,6. einer Bettlerin MBh. 12,11834. fgg. — Vgl. सौलभ u. s. w.

मुलभत्व (von मुलभ) n. *häufiges Vorkommen, Häufigkeit; Wohlfeilheit:* द्रव्याणाम् Vaṛâh. Bṛh. S. 29,1. तद्विधानाममुलभत्वात् *Seltenheit* Mâlav. 7,17.

मुलभीभू (मुलभ + 1. भू) *häufig —, gemein werden;* davon °भाव m. nom. act.: यदि न मुलभीभावमभत्रः *wenn du (eine Pflanze) nicht so gemein wärest* Z. d. d. m. G. 7,49.

मुलभेतर (मुलभ + इ°) adj. *nicht leicht zu haben:* °संप्रयोगा (कान्ता) Mâlav. 78.

मुललाट adj. (f. या) *eine schöne Stirn habend* R. 1,1,12.

मुललित adj. (f. या) *überaus anmuthig, — lieblich, — schön:* Personen MBh. 13,5901. Kumâras. 2,64. Ind. St. 8,354. Bhâg. P. 5,17,12. वपुस् Vaṛâh. Bṛh. 21,10. Zähne Ind. St. 8,419. मुखरिकामृत Bhâg. P. 5,25,7. स्त्रीमुखपङ्कज Spr. (II) 6204. लता 4368. तिलक Dhûrtas. 70,2. गीत Hit. 17,16. Gesang Ṛv. 1,28. Gang 3,17. Bhâg. P. 5,2,5. 18,16. 18,39,17. दाक्षिण्य Spr. (II) 4818, v. l. °विस्तर s. u. ललितविस्तर.

मुलवण adj. (f. या) *wohl gesalzen* Suçr. 2,526,8.

मुलवत् adj. von मुल gaṇa वलादि zu P. 5,2,136.

मुलाभ adj. = मुलभ P. 7,1,68.

मुलाभिका adj. f. *leicht zu gewinnen, entgegenkommend* Ṛv. 10,86,7.

मुलाभिन् m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

मुलिखित adj. *wohl verzeichnet* Suçr. 1,93,7.

मुलिन् adj. von मुल gaṇa वलादि zu P. 5,2,136.

मुलू adj. *gut schneidend,* Declin. Vop. 3,68.

मुलेक m. angeblich N. eines Âditja TS. 1,3,2,3.

मुलेख adj. *mit Glück verheissenden Linien versehen:* अङ्गुलि Vaṛâh. Bṛh. S. 51,8.

मुलोचन 1) adj. (f. या) *schöndugig* MBh. 3,2147. 15688. 13,7034. Rigâ-Tar. 4,37. 469. — 2) m. N. pr. *a)* eines Daitja Harîv. 14283 nach der Lesart der neueren Ausg. — *b)* eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2729. 4542. 6,2837. 2846. — *c)* eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,13. *d)* des Vaters einer Rukmiṇî Verz. d. Oxf. H. 155,*a*,22. — 3) f. या N. pr. *a)* einer Apsaras Vâṇî beim Schol. zu H. 183. Harîv. 14164. *b)* einer Jakshiṇî Kathâs. 49,173. fgg. — *c)* verschiedener menschlicher Frauen Kathâs. 28,73. fgg. 44,45. 167. fgg. 107,183. Daçak. 118, 4. der Gattin des Fürsten Mâdhava Pâṇḍa-P., Kathâs. 5 im ÇKDr.

मुलोम 1) adj. (f. या) *schöne Haare am Körper habend, aus sch. H. a. K. bestehend* R. 3,49,33. — 2) f. या Bez. zweier Pflanzen: = ताम्रवल्ली Râgân. 3,110. = मांसरोहिणी 12,155.

मुलोमधि m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. in VP. 473, N. 62. सलोमधि (dieses der Name oder adj. *nebst* Lomadhi) die gedr. Ausg. 12,1,23.

मुलोमन् adj. = मुलोम P. 6,2,177.

मुलोमशा f. *eine best. Pflanze,* = काकजङ्घा Dhanv. 4,14. Râgân. im ÇKDr.

मुलोहक *gelbes Messing,* m. Dhanv. 6,5. n. H. 1048.

मुलोहित adj. *ganz roth* Râgân. 6,81. f. या Bez. *einer der sieben Zungen* Agni's (vgl. लोहिता) Çaṅkar. im ÇKDr. Muṇḍ. Up. 1,2,4. Mârk. P. 99,55.

मुलोहिन् m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

मुष्टाण m. N. pr. eines Scholiasten Ind. St. 8,341. 350. 402. fg.

मुष्टाविकार m. N. eines *Klosters* Rigâ-Tar. 8,2419.

मुत्कृण m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 110,b,21.

मुत्करी f. N. pr. einer Oertlichkeit Rigâ-Tar. 8,1332.

मुवंश m. N. pr. eines Sohnes des Vasudeva Bhâg. P. 9,24,50.

मुवंशघोष adj. *einen schönen Flötenton habend* Harîv. 8450. die neuere Ausg. सवंशघोषम्, welches Nîlak. als adv. fasst.

मुवंशेतु m. *eine Art Zuckerrohr,* = वेतेतु Râgân. 14,78.

1. मुवक्त्र n. *ein schöner Mund* Çiksâ in Ind. St. 4,268.

मुवक्त्र 1) adj. *einen schönen Mund habend:* Çiva MBh. 14,193. —

2) m. *a) eine best. Pflanze,* = सुमुख Dhanv. 4,29. — *b)* N. pr. *α)* eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2575. — *β)* eines Sohnes des Dantavaktra Hariv. 6581.

सुवदनम् 1) adj. *eine schöne Brust habend* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,226. — 2) m. N. pr. eines Mannes *gaṇa* सुधादि zu P. 4,1,123.

1. सुवचन n. *Beredsamkeit* AK. 1,1,5,17. H. 276. Spr. (II) 2792.

2. सुवचन adj. *schön redend;* f. ई N. einer Göttin ÇKDr.

सुवचस् adj. *beredt* Gaṇâdh. im ÇKDr.

सुवचस्या f. *ein schöner Spruch* RV. 10,116,9.

सुवज्र adj. *mit einer guten Keule —, Donnerkeil versehen:* Indra RV. 1,100,18. 4,17,4. 6. 7,93,1.

सुवदन 1) adj. *ein schönes Gesicht habend,* f. आ *eine Schöne* Rt. 6,20. Ragu. 9,33. Vikr. 29. Mâlav. 65. Spr. (II) 2495. Varâh. Bṛh. S. 104,6 (mit Anspielung auf das Metrum gleiches Namens). Weber, Kṛshṇaj. 287. Prab. 60,5. Dhûrtas. 79,17. — 2) m. *eine best. Pflanze,* = सुमुख Dhanv. 4,29. — 3) f. आ *ein best. Metrum: 4 Mal* – ⏑ – – – ⏑ – –, ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ – ⏑ – –, – – ⏑ ⏑ ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XV,1). Ind. St. 8, 399. Kshandom. 108.

सुवन vod. Uṇâdis. 2,80. 1) m. *die Sonne* Uṇâdis. *Feuer* Uṇâdis. im ÇKDr. *der Mond* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) n. (von 4. सु) in पुं° und सुपर्ण°.

सुवर्षस् ved. Pat. zu P. 6,2,106. f. *Hermaphrodit* Râśân. im ÇKDr.

सुवर् s. स्वर्.

सुवरत्र adj. *mit guten Riemen versehen* RV. 10,101,6.

सुवरूथ adj. *mit einem guten Schutz versehen:* Wagen R. 6,31,10.

सुवर्ग s. स्वर्ग.

सुवर्गेय Çvetâçv. Up. 2,2 st. स्वर्ग्य der VS. 11,2.

सुवर्चक 1) m. *a) Natron* Gaṇâdh. im ÇKDr. — *b)* N. pr. eines Mannes. = वर्च Nîlak. zu MBh. 3,14164. — 2) f. सुवर्चिका *a) Natron* H. 945. Suçr. 1,33,9. 157,9. 2,63,4. 102,17. 275,17. — *b) eine best. Pflanze,* = शतुका Râśân. im ÇKDr. सुवल्लिका und शसुका unsere Hdschrr. — Vgl. त्रि° (त्रिसुवर्चक ed. Bomb.).

सुवर्चना f. Mîmâṃs. P. 52,9 fehlerhaft für सुवर्चला.

सुवर्चल *gaṇa* कृशाश्वादि zu P. 4,2,80. 1) m. N. pr. einer Gegend Wilson. — 2) f. आ *a) Raute, Ruta graveolens* (eine Gemüsepflanze) Râśân. 5,61. MBh. 12,9814. 13,6062. Karaka 1,27. Suçr. 1,132,12. 134,8. 157,12. 221,3. 222,11. 2,24,19. = आदित्यभक्ता Râśân. 4,182. Dhanv. 4,63. *Flache* Ratnam. 321. = सूर्यमुखीपुष्प ÇKDr. ohne Angabe einer best. Aut. — *b)* N. pr. *α)* der Gattin des Sonnengottes Trik. 1,1,101. MBh. 13,6731. R. 2,30,30. 5,25,26. Çiva's in seiner Manifestation als Sonne VP. 39. Mîmâṃs. P. 52,9 (सुवर्चना gedr.). — *β)* der Gattin Parameshṭhin's und Mutter Pratîha's Buâs. P. 5,15, 3. — *γ)* der Gattin Pratîha's Buâs. P. 5,15,4. — Vgl. ब्रह्म°, सोवर्चल, सौवर्चलीय.

सुवर्चस् 1) adj. *voll Lebenskraft, feurig, glühend* RV. 1,95,1. संगच्छस्व तन्वा सुवर्चाः 10,14,8. 85,44. यन्मीवः सु° AV. 2,29,6. 7. 13,1,22. 14,1,47. 18,2,10. TS. 3,2,8,2. 5,7,6,3. TBr. 3,1,4,12. Âçv. Gṛhj. 3, 6,7. आयुष्मतः सुवर्चसः Kâṭh. 89. आकृतयः सूर्यस्य Mund. Up. 1,2,6. Personen MBh. 3,2078. 2080. 7,916. 1179. Hariv. 11273. R. Gorr. 1, 46,24. Buâs. P. 2,9,11. गाव: R. Gorr. 1,74,29. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3597. — *b)* eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2548. — *c)* eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,3737. 4549. 6983. 6989. 7,1899. 8,4263. — *d)* eines Sohnes des 10ten Manu Hariv. 475. des 12ten 485. — *e)* eines Sohnes des Khanitra MBh. 14,72. — *f)* eines Brahmanen MBh. 3,16367. eines Bruders des Bhûti Mîmâṃs. P. 99,11. 12. 28.

सुवर्चस adj. = सुवर्चस्. शतं सुतानाम् MBh. 3,16786. Çiva 13,1161. सुवर्चसौषधी Mîmâṃs. P. 51,10. रविणा *glänzend* Taitt. Up. 1,1,10.

सुवर्चसिन् 1) adj. dass.: Çiva MBh. 13,1161. — 2) m. *Natron* oder *Alkali* Râśân. im ÇKDr.

सुवर्ण 1) adj. (f. आ) *a) schönfarbig, schön aussehend,* insbes. von *schimmernder Farbe, goldig* (Gegens. दुर्वर्ण) RV. 10,68,3. Wasser AV. 1,33,1. स्तोका: 12,3,28. 13,1,22. 3,16. TBr. 3,7,6,1. दर्भ Kâṭh. 31,14. Śrâdh. Bh. 4,7. RV. Prât. 17,9. Ind. St. 8,273. दासी MBh. 3,14695. 13,3437. Çaut. 22. मार्जार MBh. 5,5437. Besonders von der Farbe des Goldes: सुवर्णं किरणम् TBr. 1,4,3,4. 8,9,1. 2,2,4,5. 3,3,4,5. 8,8,4. Çat. Br. 12,7,2,7. 13,1,4,3. 2,8,2. MBh. 3,2262. R. 1,74,5. किरणं च सुवर्णं च 2,76,15. nach dem Comm. zu R. soll सुवर्ण *Gold* und किरण *Silber* bedeuten. — *b) golden:* सुवर्णरज्जुताभ्यां कुशीभ्याम् TBr. 1,5,10,1. 7. Çat. Br. 10,4,3,2. 12,8,3,11. Kâṭh. Up. 1,6,6. 3,19,1. भूषणानि R. Gorr. 2,99,34. — *c) zu einer guten Kaste gehörig* MBh. 13,2607. — 2) n. *Gold* AK. 2,9,94. H. 1043. an. 3,231. Med. n. 84. fg. Halâj. 2. 18. Ratnam. 87. Râśân. 13,5. AV. 15,1,2. सर्वं सुवर्णं (?) रुरितम् TBr. 3,12,6,6. Çat. Br. 11,4,3,5. Pâr. Gṛhj. 1,16. Kâty. Çr. 20,7,2. M. 8, 131. 321. 11,250. °चौर् 49. °स्तेय 98. fg. 101. MBh. 13,3936. fgg. °नृते: R. 2,32,14. Suçr. 1,142,17. 227,19. °चूर्ण 369,4. दुर्जनकृतागतानि काव्यसुवर्णं विघुट्टमायाति Spr. (II) 2858. 4074. Varâh. Bṛh. S. 41,7. 42,6. Weber, Râmây. Up. 356. Buâs. P. 5,16,21. Pañkat. 191,25. °मणिकुट्टया Râśân-Tar. 1,97. °मुष्टि Lalit. ed. Calc. 202,4. °भस्मन् Verz. d. B. H. No. 994. °दान Verz. d. Oxf. H. 87,a,36. fg. सुवर्णाङ्कुश *aus Gold* R. 1,53,17. 2,81,2. Ragu. 3,64. Hit. 10,9. 11,5. °रूपकशत Râśân-Tar. 6,45. zu den werthvollen Gaben gehören: °धेनु Verz. d. Oxf. H. 35,a,33. °मेदिनी 45,a,24. °वृषभ 26. fg. — 3) m. (seltener n.) *als Gewicht ein* Karsha *Gold* AK. 2,9,87. Ta. 3,3,141. H. 884. H. an. Med. M. 8,134. fg. Jîv. 1,262. Colebr. Alg. 2. Suçr. 2,175,13. Çârîr. Sâm. 1,1,17. Weber, Çat. 83. Verz. d. Oxf. H. 307,b,4. Prâyaçchittatatt. 7. a,2. M. 8,213. 220. 361. शतं शतमलक्षाणि सुवर्णस्य MBh. 3,482. Râśân-Tar. 6,102. साष्टे शते सुवर्णानाम् AK. 2,4,4,12. Mṛicch. 34,13. 18. Verz. d. Oxf. H. 151,a,10. Pañkat. 134,3. fgg. Hit. 98,11, v. l. हिसुवर्णाधनम् P. 6,2,55, Schol. मध्यर्ध°, हि° adj. 5,1,29, Vârtt., Schol. Vop. in LA. (III) 23,18. 28,4. टङ्कसकलसुवर्ण 24,4 schwerlich richtig (सुवर्ण wohl zu streichen). Burnouf, Intr. 238. Hiouen-thsang 2,29. — 4) n. *Geld, Reichthum* H. an. — 5) Bez. verschiedener Pflanzen: = सुवर्णालु (सुवर्णानु Med.) und कृष्णागरु, n. H. an. m. Med. n. = रुरिचन्दन Med. = नागकेसर Râśân. 6,179. = गौरसुवर्ण 7,152. m. = कणगुग्गुलु (vgl. सुवर्णकण) Râśân. im ÇKDr. *Stechapfel* ÇKDr. nach AK. (vgl. 2,4,3,33).

— 6) n. *eine Art Röthel* (स्वर्णगैरिक) Ratnam. im ÇKDa. — 7) n. *richtige Aussprache der Laute* Çat. Br. 14,4,4,23. °विद् 11,4,4,8. — 8) *eine Art Opfer*, n. H. an. m. Med. — 9) m. *ein best.* Daṇḍaka-*Metrum* Ind. St. 8,408. — 10) f. आ Bez. verschiedener Pflanzen: = रुरिद्रा Râǵân. 6,193. = वाट्यालक Çabdâk. im ÇKDa. = स्वर्णतीरी Râǵân. 5,53. — 11) f. ई *eine best. Pflanze*, = आम्रकर्णी Râǵân. im ÇKDa. richtig सुकर्णी unsere Hdschrr. — 12) N. pr. a) m. α) eines Devagandharva MBu. 1,4814. — β) pl. einer Klasse von Göttern unter dem 12ten Manu Mân. P. 94,23. — γ) eines Büssers MBu. 13,4678. fgg. — δ) eines Rathgebers des Fürsten Daçaratha R. Gorr. 2,82,11. — ε) eines Sohnes des Antariksha VP. 463. — ζ) eines Fürsten der Kâçmîra Râǵa-Tar. 1,97. — b) f. आ einer Tochter Ikshvâku's und Gattin Suhotra's MBu. 1, 3787. — c) n. α) eines Tîrtha MBu. 3,7096. — β) einer Erde: सवुर्णाष्ठ्यं जगत् MBu. 5,3551. — Nach gaṇa सर्धचादि zu P. 2,4,31. Taitt. 3,3,10 und Sidd. K. 249,a,5 ist सुवर्ण m. n. Vgl. सौवर्ण u. s. w. und स्वर्ण.

सुवर्णक gaṇa पत्तादि zu P. 4,2,80. 1) m. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* AK. 2,4,2,4. Ratnam. 21. Buîvapr. 5. — 2) n. *Gold:* लभेद्धक सुवर्णकम् MBu. 3,5031. 13,5384. am Ende eines adj. comp.: बक्क° *wobei viel Gold gespendet wird* R. 1,1,91 (98 Gorr.). 7,99,8. — 3) am Ende eines adj. comp. *ein Karsha Gold:* निष्कं (so lesen wir st. निष्क der ed. Bomb.) पञ्चसुवर्णकम् MBu. 18,306. — 4) n. *gelbes Messing* H. 1047. *Blei* 1041. — 5) *eine best. Pflanze* Wise 147. सुवर्णतीरी st. dessen Suçr. — Vgl. बक्क° und सौवर्णकायन.

सुवर्णकण oder °गुग्गुलु m. *eine Art* गुग्गुलु Râǵân. 12,111.

सुवर्णकदली f. *eine Art Musa* Râǵân. 11,44.

सुवर्णकर्तृ m. *Goldschmied* M. 4,215. MBu. 14,90.

सुवर्णकार m. dass. Halâj. 2,433. M. 4,218. R. 2,83,13. Vaǵîn. Bṛn. S. 87,30. Bṛn. 19,2.

सुवर्णकेतकी f. *eine best Pflanze* oder *eine* Ketaki *von Gold* Râǵa-Tar. 4,151.

सुवर्णकेश m. N. pr. eines Schlangendämons Vîṣṇ. 87.

सुवर्णतीरी f. *eine best. Pflanze* Suçr. 1,144,17. 2,33,9. सुवर्णक Wise 147. — Vgl. स्वर्णतीरी.

सुवर्णगणित n. *Berechnung des Gewichts und des Gehaltes von Gold* Colebr. Alg. 46.

सुवर्णगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Vîṣṇ. 21.

सुवर्णगिरि m. N. pr. eines *Berges* Hiouen-thsang 2,380.

सुवर्णगैरिक n. *eine Art Röthel* oder *Ocker* Ratnam. 283. Râǵân. 13,62.

सुवर्णगोत्र n. N. pr. eines Reichs Hiouen-thsang 1,232. 2,331. Z. f. d. K. d. M. 2,28.

सुवर्णचक्र n. *ein goldenes Rad*, °वर्तिन् m. *ein Fürst, der ein solches Rad in Bewegung setzt* (vgl. चक्रवर्तिन्), Hiouen-thsang 1, LXXIII. 38. 2,48. Vie de Hiouen-thsang 70.

सुवर्णचम्पक m. *ein goldgelb blühender* Kampaka Schol. zu Kaurap. 1.

सुवर्णचूड m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBu. 5,3594. — Vgl. स्वर्णचूड.

सुवर्णचूल m. *ein best. Vogel* Katuâs. 65,71; vgl. स्वर्णशिख 48.

सुवर्णजीविक m. *Goldhändler*, Bez. *einer Mischlingskaste: der Sohn eines* Kâṃsajakâra *und einer* Mâṇikî (माणिक *Juwelier*) ÇKDa. unter सुवर्णवणिज्.

सुवर्णज्योतिस् adj. *Goldglanz habend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,96.

सुवर्णता f. in बक्क° nom. abstr. von बक्कसुवर्ण *viel Gold enthaltend* Râǵa-Tar. 4,247.

सुवर्णताल m. *eine Weinpalme von Gold* MBu. 14,2329.

सुवर्णद्वीप m. n. *Goldinsel* d. i. wohl *Sumatra* Reinaud, Mém. sur l'Inde 39. Katuâs. 54,100. 56,62. 123,110. Verz. d. Oxf. H. 66,a,1. Târan. 161. 263. — Vgl. स्वर्णद्वीप.

सुवर्णनकुली f. *eine best. Pflanze*, = महाज्योतिष्मती Râǵân. 3,71.

सुवर्णनाभ m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 215,b,16. 217,b, 7. — Vgl. सौवर्णनाभ.

सुवर्णपत adj. *goldgeflügelt* Taitt. Âr. 10,1,6.

सुवर्णपक्ष 1) adj. dass. — 2) m. *ein best. Vogel* MBu. 5,1912.

सुवर्णपद्म n. *eine goldfarbige Lotusblüthe* Suçr. 2,162,19.

सुवर्णपार्श्व N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 4,672.

सुवर्णपालिका f. *eine Art Geschirr aus Gold* R. 1,73,20.

सुवर्णपुर n. N. pr. einer mythischen *Stadt* Z. d. d. m. G. 7,584. 14,589.

सुवर्णपुष्प 1) adj. (f. आ) *Gold zu Blüthen habend:* पृथिवी Spr. (II) 7133. — 2) m. *Kugelamaranth* Râǵân. 10,130. n. *die Blüthe* Vaǵîn. Bṛn. S. 29,10. — 3) f. आ (v. l. ई) *eine best. Pflanze* Vaǵîn. Bṛn. S. 44,9.

सुवर्णप्रभा f. N. pr. der Gattin des Nâga Kâlika Lalit. ed. Calc. 335,7. 8.

सुवर्णप्रभास m. 1) N. pr. eines Jaksha Schiefner, Lebensb. 248 (18). — 2) Titel eines buddh. Werkes Burnouf, Intr. 7. 9. 68. fg. 528. fg. Wassiljew 153.

सुवर्णप्रसर n. *die wohlriechende Rinde von Feronia elephantum* ÇKDa. nach dem Vaidjaka.

सुवर्णफला f. *eine Art Musa* (सुवर्णकदली) Ratnam. 132.

सुवर्णबलज s. सौवर्णबलज und °बालज.

सुवर्णबिन्दु 1) m. ein N. Vishṇu's H. 217. — 2) N. eines best. Heiligthums Hariv. 9522. Mâlatîm. 143,6. 166,15.

सुवर्णभुजेन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Burnouf, Intr. 531.

सुवर्णभू f. *das Goldland*, Bez. eines nach NW. verlegten *Landes*, Vaǵîn. Bṛn. S. 14,21.

सुवर्णभूमि f. = सुवर्णद्वीप Katuâs. 52,218.

सुवर्णमय (von सुवर्ण) adj. (f. ई) *aus Gold gemacht*, — *bestehend* Weber, Kṛshṇaǵ. 278. Pañcat. 192,16. 235,23. 241,23.

सुवर्णमाक्षिक n. *eine best. mineralische Substanz von hellgelber Farbe, etwa Schwefelkies (the common pyritic iron ore)* Moleew.

सुवर्णमालिका f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 98,a,23. fg.

सुवर्णमाष m. *ein best. Gewicht*, = 5 Kṛshṇala Prâyaçcittenn. 7,a,3.

सुवर्णमाषक m. desgl., = 12 Dhânjamâsha Suçr. 2,175,12.

सुवर्णमुखरी f. N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 84,a,8. 257,b,35.

सुवर्णमोचा f. *eine Art Musa*, = सुवर्णकदली Ratnam. 132.

सुवर्णगूथिका f. = सुवर्णगूथी Nigh. Pr.

सुवर्णयूथी *f. eine Jasminart* Bhâvapr. im ÇKDa.

सुवर्णरत्नाकरच्छत्रकूट m. N. pr. eines zukünftigen Buddha Buddhoc. Iatr. 536. °च्छत्रकेतु 533.

सुवर्णरम्भा f. *eine Art Musa*, = सुवर्णकदली Ratnam. 132.

सुवर्णद्वीपक m. n. N. pr. einer *Inselgruppe* (गणदीप) R. 4,40,33.

सुवर्णरेख m. N. pr. eines Autors Udâyan. zu Unâdis. 3,136.

सुवर्णरेखा f. N. pr. eines Flusses LIA. 1,85.

सुवर्णरेतस् adj. *dessen Same Gold ist:* Çiva MBh. 13,1154.

सुवर्णरेतस m. N. pr. eines Mannes, pl. Pravarâdhjâs. in Verz. d. B. H. 57,13. — Vgl. सोवर्णरेतस.

सुवर्णरोमन् 1) adj. *goldfarbiges Haar am Körper (Wolle) habend.* — 2) m. *a) Widder* Paśâd. 33,1. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Mahâroman VP. 4,5,13.

सुवर्णलता f. *eine best. Pflanze*, = ज्योतिष्मती Dhanv. 1,104.

सुवर्णवणिज् m. *Goldhändler*, Bez. *einer Mischlingskaste: der Sohn eines* Ambashṭha *und einer* Vaiçjâ ÇKDa.

सुवर्णवत्ता nom. abstr. von सुवर्णवत्स् Çiç. in Bṛh. Âr. Up. S. 117.

सुवर्णवत्स् (von सुवर्ण) 1) adj. *Gold enthaltend* und *mit einer richtigen Aussprache der Laute versehen.* — 2) f. °वती N. pr. *a)* verschiedener *Gold führender* Flüsse LIA. 1,84. 103. 105. — *b)* einer Stadt in Dakshiṇâpatha Hit. 43,5.

सुवर्णवर्ण 1) adj. *goldfarbig*, unter den 1000 Namen und Beiwörtern Vishṇu's ÇKDa. — 2) f. या *eine best. Pflanze*, = कुरिण्टा Çabdâ. im ÇKDa.

सुवर्णशिरस् adj. *einen Kopf von Gold habend:* स्वर्भानु MBh. 5,3812.

सुवर्णशिलेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,b,13. fg.

सुवर्णष्ठीवि = सुवर्णष्ठीविन् MBh. 7,2157.

सुवर्णष्ठीविन् adj. *Gold spuckend;* m. N. pr. eines Sohnes des Sṛṅgaja MBh. 7,2163. 12,1045. 1088. fgg.

सुवर्णसं adj. von सुवर्ण gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80.

सुवर्णसानु N. pr. eines Dorfes Râga-Tar. 8,1136.

सुवर्णसिद्ध m. *Goldzauberer* Paśâd. 243,l. 2.

सुवर्णसूत्र n. *eine goldene Schnur, — Kette* Hariv. 7837.

सुवर्णाढ्य (सुवर्ण + आढ्य) 1) adj. Suvarṇa *genannt* MBh. 3,7096. 5,3351. — 2) m. *Mesua Roxburghii Wight.* Ratnam. 132.

सुवर्णाभ (सुवर्ण + आभा) m. 1) *eine Art Diamant*, = राजावर्त Ratnâkara in Nigh. Pa. — 2) N. pr. eines Sohnes des Çaṅkhapada MBh. 12,13384.

सुवर्णार m. *Bauhinia variegata* Nigh. Pa. — Vgl. काञ्चनार.

सुवर्णालु m. *eine best. Pflanze* Trik. 3,3,181. H. an. 3,231. Med. p. 4. 84 (सुवर्णानु gedr.). t. 145. b. 21.

सुवर्णाह्वा (सुवर्ण + आ°) f. *gelber Jasmin* Râgân. 10,99.

सुवर्णीभू (सुवर्ण + 1. भू) *zu Gold werden:* °बभूव Kathâs. 35,86. °भूत Paśâd. 192,2.

सुवर्णीय adj. von सुवर्ण gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90.

सुवर्ण्य adj. = सुवर्णमर्हति gaṇa दण्डादि zu P. 5,1,66.

सुवर्तुल m. 1) *Wassermelone.* — 2) *Gardenia enneandra Koen.* Nigh. Pa.

1. सुवर्त्मन् n. *der richtige Weg* Paśâd. 2,4,18.

2. सुवर्त्मन् adj. *einen richtigen Stand habend* Suçr. 1,38,9.

सुवर्धयितर् nom. ag. zur Erklärung von सुवृध् Nir. 3,11.

1. सुवर्मन् n. *eine gute Rüstung* AV. 19,30,1.

2. सुवर्मन् 1) adj. *gut gerüstet, — gepanzert.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2782. 4845. 8,1079.

1. सुवर्ष 1) m. *ein guter Regen* R. 4,6,20. — 2) या f. pl. *eine gute Regenzeit* Çiç. Gaṇ. 4,18.

2. सुवर्ष 1) adj. *gut regnend* Çiç. Gaṇ. 4,18. — 2) m. N. pr. eines Lehrers und (pl.) seiner Schule Wassiljew 231. Târân. 4.273. °क pl. 271. — 3) f. या *Jasminum Sambac* Ratnâkara in Nigh. Pa.

सुवल्गु adj. *schön hüpfend* u. s. w. Declin. Vop. 3,165.

सुवल्लरी f. *eine best. Pflanze*, = पुत्रदा Râgân. 3,131.

सुवल्लि f. *Vernonia anthelminthica* AK. 2,4,8,14. सुवल्ली Bhar. in AK. nach ÇKDa. letzteres auch = कट्वी Râgân. 3,127.

सुवल्लिका f. *Vernonia anthelminthica* Râgân. 4,68. = ब्रह्मसुका 3,116.

सुवल्लिज n. *Koralle* Nigh. Pa.

सुवस् adj. Declin. Vop. 3,156.

1. सुवसन (6. सु + 1. व°) n. *eine schöne Kleidung* ṚV. 6,51,4. वस्त्रा सुवसनानि *so v. a. schön kleidende Kleidungen* 9,97,50.

2. सुवसन (wie eben) adj. (f. या) *schön gekleidet* Kaṭhâr. Up. 3,8,2. MBh. 1,6973. Z. d. d. m. G. 14,571,6.

3. सुवसन (6. सु + 2. व°) n. N. pr. einer Oertlichkeit Paśâd. 1,10,44, v. l.

सुवसन्त m. 1) *ein guter Frühling* Çiç. Gaṇ. 4,18. — 2) *das Fest des Liebesgottes am Vollmondstage im Monat* Kaitra Trik. 1,1,109.

सुवसन्तक m. = सुवसन्त 2) Med. k. 233. Hân. 119. Verz. d. Oxf. H. 217,b,40. fg.

सुवसु (?) f. N. pr. einer Apsaras Vâlm. beim Schol. zu H. 183.

सुवस्ति Çat. 14,232 wohl fehlerhaft für सुवस्त्या (सुवस्ति passt auch nicht in's Metrum).

सुवस्त्र adj. (f. सा) *schön gekleidet* MBh. 13,3427 (nach der Lesart der ed. Bomb., सुवर्ण ed. Calc.). Kathâs. 52,228.

सुवक् 1) adj. = सम्यक्वक् H. an. 3,770. = सुखवाग्य Med. h. 25. fg. — 2) m. Bez. *eines best. Windes* Golâdh. Bhuvanak. 1. — 3) f. या *a) Laute* Med. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: = शेफालिका AK. 2,4,3,31. H. an. Med. Râgân. 4,157. = राम्रा AK. 2,4,4,3. H. an. Med. Ratnam. 49. = गोधापदी AK. 2,4,4,7. H. an. Med. Ratnam. 247. = शल्लकी AK. 2,4,4,11. H. an. Med. Râgân. 11,196. = दलापर्णी AK. 2,4,8,3. H. an. Med. = दला Ratnam. 117. = त्रिवृत् 18. Çabdâ. im ÇKDa. = मुसली Râgân. 7,117. = गन्धनाकुली 7,94. Dhanv. 4,74. = रुद्रजटा Râgân. 3,67. = रुंसपदी 5,110. = नीलसिन्धुवार Râgân. im ÇKDa. — Sqq. 2,25,15. 499,2. — Vgl. सोवक्.

सुवङ्गि adj. *gutes Gespann habend:* रथ AV. 13,2,7.

सुवङ्गिन् adj. *gut fahrend, ein guter Fuhrmann* ṚV. 6,22,7.

सुवाक्य adj. *wohl redend, eine schöne Rede führend* Spr. (II) 4306. MBh. 12,8463.

सुवाच् 1) adj. *a)* dass. (Gegens. दुर्वाच्) Trik. 3,3,330. ṚV. 1,105,3. क्षेत्रसा 10,110,7. 8,85,1. मदी: AV. 2,5,3. सुवाग्देव दुर्या या वद TS. 1,2,11,1. 5,2,9,1. उषस: ṚV. 3,7,10. — *b) erwähnenswerth:* भाग ṚV. 3,1,19. — 2) m. N. pr. *a)* eines Brahmanen MBh. 3,987. — *b)* eines Soh-

nes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,4518.

सुर्वाचस् adj. = सुवाक. क्रोतारो ṚV. 1,188,7.

सुवाजिन् adj. *mit schönen Federn versehen:* Pfeil Harıv. 13944.

सुवाजिवापु m. N. pr. eines Autors Ind. St. 1,467.

सुवाता (?) f. N. pr. einer Apsaras Vâlpi beim Schol. zu H. 183.

सुवात्र, वाक् सुवात्रम् N. eines Sâman Ind. St. 3,234,*a*.

सुवामा f. N. pr. eines Flusses MBh. 6,336 (VP. 183).

सुवार्ता f. N. pr. einer Gattin Kṛshṇa's Harıv. 8988 nach der Lesart der neueren Ausg.; सुनन्दा die ältere.

सुवालुका *f. eine best. Pflanze,* = दोडी Rigân. 4,187.

सुवास *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑⏑ Colebr. Misc. Ess. 2, 139 (II,6).

सुवासकुमार m. N. pr. eines Sohnes des Kaçjapa Kathâs. 45,409. 46,30. 44. 172. °क 121.

सुवासन m. pl. N. einer Klasse von Göttern unter dem 10ten Manu Bhâg. P. 8,13,22.

सुवासस् adj. *schön gekleidet, geputzt:* Weib ṚV. 1,124,7. 3,8,4. 10, 71,4. 75,3. 107,9. TBr. 3,10,8,4. यन्नोलं सुवाससं दृष्टत्ते Çat. Br. 3, 1,2,16. 13,4,1,15. Pân. Gṛhj. 3,4. Harıv. 11850. Bhâg. P. 4,12,20. 15, 13. 7,13,41. 8,8,7. Kûhe MBh. 9,2003. Bhâg. P. 3,4,33. eine Stadt 11, 28 (सुवाससम् mit der ed. Bomb. zu lesen). *mit schönen Federn versehen:* Pfeile MBh. 5,706.

सुवासित adj. *wohlriechend gemacht, wohlriechend* Harıv. 4533. Ṛt. 1,3. Pañkat. 1,6,37. 2,4,29.

सुवासिनी *f. ein halb erwachsenes, noch im Hause des Vaters weilendes verheirathetes oder unverheirathetes Frauenzimmer* AK. 2,6,2,9. H. 312. an. 3,160. Hall. 2,328. M. 3,114. Jâṭ. 1,105, v. l. Die richtigere Form ist स्ववासिनी.

सुवास्तु f. N. pr. eines Flusses Nir. 4,15. सुवास्त्वा सधि तुर्वनि ṚV. 3,19,37. P. 4,2,77. MBh. 6,333 (VP. 183), zugleich Bez. *der Anwohner* Vasiṣṭha. Bhn. S. 32,19. Nach Arrian Ind. 4,11 ist Soastos ein Nebenfluss des Kophen, heut zu Tage Suwad. — Vgl. सोवास्तव.

सुवास्तुक m. N. pr. eines Fürsten MBh. 5,76.

सुवाह m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2568.

सुवाह्न m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,44.

सुविक्रम 1) adj. (f. आ) *a) einen schönen Gang habend* R. 1,1,11. — *b) überaus muthig, — energisch* MBh. 7,8224. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vatsapri Mâns. P. 118,2.

सुविक्रान्त 1) adj. *muthig:* प्रारम्भ Spr. (II) 7122. — 2) n. *muthiges Auftreten* Spr. (II) 7121.

सुविक्रान्तविक्रमणपरिपृच्छा f. Titel eines Buches Wassiljew 147.

सुविक्रान्तविक्रमिन् m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 2.

सुविग्रह 1) adj. *einen schönen Körper habend, schön gebaut* Kâm. Nîtis. 4,15. besser स्ववपुष् der Comm. — 2) m. ein Botenname Kathâs. 102,130. 124,28.

सुविचक्षण adj. *sehr einsichtig, — klug, — erfahren* Kâm. Nîtis. 10,11. Spr. (II) 7100.

सुविचार 1) adj. *gut überlegend.* — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,7. 8.

सुविज्ञान adj. *leicht unterscheidbar* ṚV. 7,104,12.

सुविज्ञेय adj. *leicht erkennbar* Kâṭhop. 1,21. Weber, Rudrâdh. Up. 354.

सुवित (6. सु + इत; vgl. स्वित) VS. Pârâ. 3,45. 1) adj. *a) gangbar* ṚV. 4, 55,4. — *b) glücklich fahrend:* सुविता दिवं गा: ṚV. 10,56,3. — 2) n. *a) guter Fortgang, glückliche Fahrt* (Gegens. दुरित) Naigh. 4,1. Nir. 4,17. वि नः पथः सुविताय चियन्तु ṚV. 1,90,4. 5,80,3. सप्त स्वसारः सुविताय सूर्ये वहन्ति 7,66,13. 9,41,2. des Wagens 10,40,1. — *b) Wohlergehen, angenehme Verhältnisse, Glück;* auch pl.: सुम्ना, सुविता, सौभगा ṚV. 1,38,3. 141,12. दोदस्यो: 168,1. 3,2,13. 54,3. 7,1,24. 79,3. नव्य 91,2. भूरि 100,2. प्र णः पूर्वस्मै सुविताय वोचत 8,27,10. विद्यान्या भर सुवितानि 8,82,29. 10,148,1. सुविता कल्पयावहै *lassen wir es uns wohl sein* 86,21. AV. 6,35,2. अग्निर्नो देवः सुविते दधातु TBr. 3,1,4,1. 2. 2,3.

सुवितत adj. *wohl ausgebreitet:* जाल MBh. 13,2656.

सुवितल m. *eine Form* Vishṇu's Wilson, Sel. Works 1,141.

1. सुवित्त n. *eine reichliche Habe* TBr. 1,2,4,3.

2. सुवित्त adj. *reich:* दानशते: सुवित्ते: Spr. (II) 3270.

सुवित्ति m. N. pr. eines göttlichen Wesens Verz. d. Oxf. H. 58,*b*,30.

सुविद् 1) adj. *gut vertraut, ein genauer Kenner.* — 2) f. *ein vorzügliches Weib* Râmâçrama zu AK. nach ÇKDn. — Vgl. विश्व°.

सुविद m. 1) = सोविद Râjam. zu AK. 2,8,2,8 nach ÇKDn. — 2) *Fürst, König* Bhân. ebend. nach AK. — 3) = तिलकवृक्ष Nigh. Pr.

सुविदत् (nom. eben so) m. *Fürst, König* zur Erklärung von सोविदल्ल Râjam. zu AK. nach ÇKDn.

सुविदत्र Uṇâdis. 3,108 (proparox). 1) adj. *wohl Acht habend, wohlwollend, günstig* (Gegens. दुर्विदत्र) Naigh. 4,2. Nir. 6,14 (= कल्याणविद्य). König ṚV. 2,1,8. 9,6. die Väter 10,14,10. 15,3. 8. AV. 13, 2,44. 18,3,19. — 2) n. *Gunst, Beweis von Wohlwollen:* बृहस्पतेः सुविदत्राणि राध्या ṚV. 2,24,10. विश्वे सुभूतं सुविदत्रं नो वस्तु AV. 1,31,4. = धन Nir. 7,9. = कुटुम्बक Uṇâdis.

सुविदत्रिय adj. = सुविदत्र. die Väter ṚV. 10,17,3. Nir. 7,9.

सुविदल्ल 1) n. *Gynaeceum.* — 2) f. आ *eine verheirathete Frau* Râjam. zu AK. nach ÇKDn. — Ein zur Erklärung von सोविदल्ल gebildetes und gedeutetes Wort.

सुविदित adj. *wohl bekannt, — erkannt* Çat. Br. 10,6,4,10. Âit. Br. 2,39. तत्सर्वं मे सुविदितम् MBh. 4,70. अर्थं सुविदितं कार्यम् M. 12,105.

सुविदीर्ण n. etwa *ein ordentliches Gemetzel* Spr. (II) 7121, v. l.

सुविद्ध adj. *richtig geschlagen:* eine Ader Suçr. 1,339,19.

सुविद्या f. *gutes Wissen* Spr. (II) 1904.

सुविद्युत् m. N. pr. eines Asura Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,41.

सुविद्वस् adj. *wohl kundig* ṚV. 8,24,28.

सुविध adj. *von guter Art:* शील Spr. (II) 2751.

सुविधान adj. *gut vollbracht* H. an. 3,313.

सुविधि m. 1) *eine gute, angemessene Weise:* सुविधिना दिनम् । नीत्वा Kathâs. 46,53. — 2) N. pr. des 9ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi H. 27. 29. Verz. d. Oxf. H. 186,*b*,15.

सुविनीत adj. *wohlgezogen, gut dressirt:* Pferde Kâm. Nîtis. 7,36. *bescheiden, sittsam* Pañkat. 1,8,33. f. आ *eine wohlgezogene —, fügsame*

Kuh Çabdar. im ÇKDn.

सुविपुल adj. (f. घा) *sehr gross, — bedeutend* u. s. w.: घोतम् R. 1,7,5. शब्द Hariv. 13221. सिद्धि Varâh. Bṛh. S. 48,79.

सुविप्र adj. *wohl unterrichtet* (als Theolog) ṚV. 1,162,5.

सुविभक्त adj. 1) *gut vertheilt* so v. a. *durchaus regelmässig, — proportionirt:* सुविभक्तानवद्याङ्गी MBn. 1,6324. Vishṇ. 11. द्वाराणि MBn. 15,186. R. 1,5,8. 10. — 2) *schön verziert, — geschmückt:* वनघ Hariv. 9269. R. 3,61,7.

सुविभात adj. *schön an's Tageslicht gekommen, — klar geworden* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,132. 147. 149. 160. 164. fg.

सुविभीषण adj. *in grosse Furcht versetzend* R. 3,55,25.

सुविभु m. N. pr. eines Sohnes des Vibhu Hariv. 1593. VP. 409.

सुविलय adj. P. 6,1,50, Vârtt., Schol.

सुविविक्त adj. 1) *ganz abgesondert, — einsam:* घरण्य MBn. 12,7002. — 2) *gut entschieden, — beantwortet:* प्रश्न Bhâg. P. 11,29,25.

सुविवृत् oder °वृत adj. *leicht sich öffnend:* व्रज ṚV. 1,10,7.

सुविशाल 1) adj. *sehr umfänglich* u. s. w. — 2) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 47,13. — 3) f. घा N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBn. 9,2646.

सुविशुद्ध 1) adj. *ganz rein, — lauter:* मनस् MBn. 10,255. Spr. (II) 4033. — 2) m. N. pr. einer Welt Lot. de la b. l. 124.

सुविश्रब्ध adj. *voller Vertrauen, ganz unbesorgt* Pañkat. 34,25.

सुविषण्ण adj. *ganz bestürzt, — verzagt:* °चेतस् R. 3,50,28.

सुविष्टम्भिन् adj. *wohl stützend:* Çiva Çiv.

सुविष्णु m. N. pr. eines Mannes Târân. 3. 72. •

1. सुविस्तर m. *grosse Ausführlichkeit*, abl. *ganz ausführlich* Pâṇkar. 4,2,6.

2. सुविस्तर adj. (f. घा) 1) *sehr umfänglich, — ausgedehnt, — gross:* खड्ग MBn. 12,6187. पदपङ्क्ति Kathâs. 18,334. — 2) *sehr ausführlich:* सृष्टिरुक्ता सुविस्तरा (besser wäre °रम्) Verz. d. Oxf. H. 83,*a*,10. °म् adv. Pañkar. 2,7,50. Hit. 73,18. — 3) *überaus intensiv, — mächtig, — stark, — innig:* समायोग MBn. 12,4974. विभूति Spr. (II) 4093. °म् adv. *auf das heftigste:* विललाप MBn. 3,17291. Hariv. 4839. R. 3,66,7.

सुविस्तीर्णम् adv. *sehr ausführlich* Verz. d. Oxf. H. 23,*b*,19.

सुविस्पष्ट adj. *ganz offenbar, deutlich zu erkennen* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,163.

सुविस्मित adj. *überaus erstaunt* Brahma-P. in LA. (III) 49,17. °मनस् Pañkat. 41,21. fg.

सुविहित adj. 1) *gut vollbracht, — ausgeführt* Med. t. 172. सर्वकामै: सुविहितै: MBn. 3,3024. — 2) *wohl ausgestattet mit* (instr.): सर्वकामै: MBn. 3,2711. 12,1092. सन्नपानै: R. 1,13,16. ohne Ergänzung 69,2. R. Gorr. 1,7,4.

सुविह्वल adj. (f. घा) *sehr erschöpft, — mitgenommen, — verwirrt* MBn. 9,616. Kathâs. 4,38.

सुवीर 1) adj. (f. घा) P. 6,2,120 (adj. comp.). *a) männlich, heldenhaft, kriegerisch;* m. *Held:* विश् ṚV. 7,36,5. Agni 1,31,10. 2,29,9. AV. 11, 1,2. Indra ṚV. 6,17,13. नृभि: सुवीर उच्यसे *Männer nennen dich den Helden* 45,6. die Açvin 8,26,7. Soma 9,23,7. प्र ते सुग्रेव ऽग्निभ्यो वरं नि: सुवीरास: शोशुचत 7,1,4. 24. 1,125,1. 2,27,12. Wagen 6,47,26. प्रक्षान् 3,8,2. इळा 1,40,4. ऊति 8,19,30. Himmel 4,17,4. सक्षम् 5,44,6 घृतव 10,32,5. युष्मेदेति मदेभ्य: सुवीर: 5,38,4. वर्मा 2,3,5. 5,53,11. 6, 50,9. 8,19,7. 48,14. AV. 8,5,2. 12,2,49. 13,1,12. VS. 7,12. Skanda MBn. 3,14627. Çiva Çiv. वानरा: R. 4,37,23. — *b) männerreich, heldenreich; aus Männern bestehend, tüchtige Männer habend:* रयि ṚV. 4,33,2. 10. 7,1,5. 37,6. इष: 3,53,1. 7,24,6. राधम् 5,57,7. स्वयशस्यया वयम् । सुवीरस्त्वमस्मयु: 7,15,8. सुवीरे एधते 8,73,9. वर्धिम् *Helden beherbergend* 2,3,4. द्वार: VS. 20.40. यज्ञ 19,32. सुवीरो वीरै: 3,37. सर्ववीरा: सुवीरा घरिष्टवीरा: AV. 3,12,1. 10,5. राष्ट्र 19,5 (proparox.) प्रजा TS. 5,7,2,1. गृहा: Çâṅkh. Gṛhj. 3,5. — 2) m. *a) Judendorn* (बदर) Râǵân. 11, 140. = एकवीर 8,17. — *b)* N. pr. α) pl. eines Volkes im westlichen Indien MBn. 3, 13734. Hariv. 1681. Varâh. Bṛh. S. 3.79. sg. Bez. des Landes R. 4,43,8. — β) verschiedener Fürsten MBn. 1, 2696. ein Sohn Djutimant's 13,93. Kshemja's Hariv. 1084. VP. 453. Bhâg. P. 9,21,29. Çibi's Hariv. 1680 (von ihm stammen die Suvîra 1681). VP. 444. Bhâg. P. 9,23,3. Devaçravas' 24,40. — Mârk. P. 132, 45. — 3) n. *schwarzes Schwefelantimon* Ratnam. 279. — Vgl. सौवीर.

सुवीरक 1) m. *eine best. Pflanze,* = एकवीर Râǵân. 8,17. — 2) n. *schwarzes Schwefelantimon* Çabdâṅk. im ÇKDn. MBn. 8,1853 (= काञ्जिक Nîlak.; vgl. सुवीराम्ल).

सुवीरत्व n. *schwarzes Schwefelantimon* Râǵân. 13,89.

सुवीरता f. *das Gedeihen tüchtiger Männer* AV. 6,29,3. TS. 3,2,8,2.

सुवीराम्ल n. *saurer Reisschleim* H. 416.

1. सुवीर्य n. 1) *Mannhaftigkeit, Manneskraft, Heldenhaftigkeit,* pl. *Heldenthaten:* (स वं न:) यत्ति देवान्सुवीर्या ṚV. 1,36,6. धनु पद्दो सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति 184,5. घर्वता वा सुवीर्ये ब्रह्मणा वा चितयेमा जनी यति 2,2,10. 4,8,6. 5,6,10. 6,10,5. 8,53,9. 9,8,2. 3,10,3. गुमत् 10,5. घन्नर 6,8,6. प्रजावत् 8,23,27. R. 7,36,43. — 2) *Reichthum an tüchtigen Männern; Vereinigung Tapferer, Heldenschaar* ṚV. 2,1,3. घा देवेषु यतत घा सुवीर्ये 2,16,4. 6,4,6. 8,26,3. सुवीर्यस्य पतय: 4,51,10. 8,12,33. घघावद्गोमद्यवमत् 9,69,3. TBr. 3,1,2,3. — In mehreren Stellen, wo das Wort neben रयि, रै, रत्न adjectivisch (vgl. P. 6,2,120) gebraucht scheint, z. B. 1,129,7. 3,26,3. 7,4,6. 16,12 ist man doch nirgends wirklich zu dieser Fassung genöthigt. AV. 7,97,6 steht es falsch für सुवीरै:; vgl. TS. 6,6,2,2.

2. सुवीर्य 1) adj. *sehr wirksam:* घोषध Spr. (II) 6449. — 2) f. घा Bez. verschiedener Pflanzen: = वनकार्पासी Çabdar. im ÇKDn. = महाशतावरी (vgl. महावीर्या, शत°, सहस्र°) Râǵân. 4,123. = नाडीहिङ्गु 6. 77. — 3) n. *die Beere vom Judendorn* Gaṇiḳ. im ÇKDn.

1. सुवृक्ति (d. सु + शक्ति von वर्च्: vgl. सुवित) f. *treffliches Lob, schöner Preis, Hymnus* Nir. 2,24. ṚV. 1,62,1. 3,3,9. 62,12. ये दधते सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय 5,41,2. 7,8,2. 24,2. 31,11. 70,7. इन्द्रे सुवृक्तिमेरयामहे 94,1. स्तोमा: सुवृक्तयो गिर: 8,8,22. 10,30,1. °भिर्ववामहे 41,4. 64,4. घग्निं मन्द्रामवोचाम सुवृक्तिम् 80,7. instr. °क्ति nur am Ende einer Zeile ṚV. 1,61,2. 4. 16. 184,3. 186,2. 5,41,10.

2. सुवृक्ति (wie oben) adj. 1) *trefflich lobsingend:* पुरो वो मन्त्रं दिव्यं सुवृक्तिमग्निं दैव्यिम् ṚV. 6,10,1. 2,4,1. — 2) etwa *Lob habend* so v. a.

löblich, gepriesen (vgl. सुशस्ति): Indra RV. 10, 74, 5. 104, 7. श्येन TS. 3, 4, 7, 1.

सुवृत्त m. ein schöner Baum Spr. (II) 1418.

सुवर्तन adj. (f. घा) in schönen Ortschaften wohnend: विश् RV. 10, 15, 2.

सुवर्तु adj. sich gut drehend d. h. gut laufend, εὔτροχος: Wagen RV. 1, 47, 7. 4, 36, 2. सुवृद्रथो वर्तते यस्मिन् ताम् 1, 183, 2. 10, 70, 3. 85, 20. TBr. 3, 1, 4, 9.

सुवृत्त 1) adj. (f. घा) a) schön rund: बाहू MBu. 1, 5970. Varâh. Bṛh. S. 70, 2. Paṇḍar. 3, 12, 3. घाति° Spr. (II) 4961. — b) (adj. comp.) von gutem Betragen, wohl gesittet (insbes. von Frauen) MBu. 1, 724. R. 2, 29, 19. 103, 13. 3, 65, 8. 5, 11, 9. 6, 103, 6. Raghu. 8, 76. Spr. (II) 2442. Varâh. Bṛh. S. 104, 7 (mit Anspielung auf das Metrum). Verz. d. Oxf. H. 52, b, 18. Kathâs. 27, 56. 88. 37, 97. घाति° 29, 72. — c) b) Spr. (II) 165. 654. 3886, v. l. 7134. 7140. Kathâs. 29, 9. — c) in einem schönen Metrum verfasst (adj. comp.) und zugleich schön rund Z. d. d. m. G. 27, 90. — 2) m. eine best. runde Knolle, Arum Râgân. 7, 62. — 3) f. घा a) eine Traubenart (mit runden Beeren) Râgân. 11, 196. = शतपत्री (mit runden Blüthen) 10, 80. — b) ein best. Metrum: 4 Mal ⏑ – – – – – ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – – Ind. St. 8, 398. fg. — c) N. pr. einer Apsaras Harîv. 12472. — 4) n. a) Wohlergehen Bhâg. P. 10, 39, 3. — b) gutes Betragen, guter Lebenswandel R. 3, 1, 11. Spr. (II) 4547. 7091. सुवृत्ताच्छकुनया Kathâs. 21, 98.

सुवृत्तता f. nom. abstr. zu सुवृत्त 1) a) b) Spr. (II) 835.

सुवृत्ति f. eine gute Lebensweise, gutes Betragen MBu. 1, 4597.

सुवृध् adj. fröhlich, freudig Nir. 3, 11. त्वया वयं सुवृधा वस्वा दीदीमहि RV. 2, 23, 9. 5, 32, 4. मर्या इव सुवृधो वावृधुर्नरः 59, 5. 9, 68, 6. यः 10, 30, 10. ये सुवृधो यज्ञमीयुः 63, 5.

सुवृध adj. gut heranwachsend, gedeihlich AV. 2, 13, 5.

सुवृश् (d. सु + वृश् von व्रश्च्) adj. Declin. Vop. 3, 148.

सुवृषभ m. ein guter Stier TBr. 2, 4, 2, 2.

सुवृष्ट n. ein guter, tüchtiger Regen TBr. 3, 2, 8, 3. पर्जन्यः सुवृष्टं वृष्ट्वा 11, 2, 3. TS. 1, 6, 2, 5.

सुवृष्टि f. dass. Kâṭhân. Up. 7, 10, 1. Varâh. Bṛh. S. 5, 70. 82. 9, 21. 24, 22. 29. 25, 3. 34, 14.

सुवेग 1) adj. sehr rasch laufend Kâm. Nîtis. 7, 36. — 2) f. घा Cardiospermum Halicacabum Râgân. 3, 72.

सुवेगिन् adj. sehr schnell fliegend: Pfeil Harîv. 13419.

सुवेणा 1) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 56, 232. am Ende eines adj. comp. f. घा 336. — 2) f. घा N. pr. eines Flusses MBu. 3, 12909. Harîv. 12826 nach der Lesart der neueren Ausg.; vgl. वेणा.

1. सुवेद adj. gute theologische Kenntnisse besitzend: ब्राह्मण MBu. 3, 12437.

2. सुवेद adj. leicht zu erwerben, – finden: Agni RV. 4, 7, 6. सुवेदो नो वसूँ करत् 8, 48, 15. 7, 32, 25. 8, 4, 16.

सुवेदनँ adj. (f. घा) dass.: गाम् RV. 10, 112, 5. P. 3, 3, 130, Schol.

सुवेदस् m. N. pr. eines Ṛshi mit dem patron. Çairishi, Liedverfassers von RV. 10, 147, RV. Anukr. Çairisha Ind. St. 3, 245, a.

सुवेनँ adj. (f. ई) sehnsüchtig, verlangend RV. 10, 56, 3.

सुवेम adj. (f. घा) etwa an einem schönen Webstuhl sitzend MBu. 1, 723. 806.

सुवेल 1) adj. = प्रणत und शान्त H. an. 3, 692. Med. l. 145. — 2) m. N. pr. eines Berges H. an. Med. = त्रिकूट H. 1030. — R. Gorr. 1, 4, 102. 106. 5, 8, 26. 6, 5, 22. 6, 33. 13, 36. 14, 1. fgg. 108, 14. 7, 5, 33. Paṇḍar. 1, 10, 47.

सुवेश oft fehlerhaft für सुवेष.

1. सुवेष m. eine schöne Tracht, ein schöner Anzug: °धर Varâh. Bṛh. S. 43, 33.

2. सुवेष 1) adj. (f. घा) schön gekleidet, — aufgeputzt: Personen MBu. 1, 8009. R. 2, 83, 17 (90, 21 Gorr.). Spr. (II) 7135. Gît. 2, 3. Varâh. Bṛh. S. 43, 25. Kathâs. 98, 38. Paṇḍar. 1, 14, 77. 3, 9, 11. Med. n. 210. Pferde u. s. w. Kâm. Nîtis. 7, 36 nach der Lesart des Comm. ein Lager Gît. 12, 2. — 2) m. a) eine Art Zuckerrohr Râgân. im ÇKDn. — b) N. pr. eines Feuers, eines Sohnes des Tapas, MBu. 3, 14168. सुरेश st. सुवेश ed. Bomb.

सुवेषता f. nom. abstr. von 2. सुवेष 1): रामस्य R. 3, 6, 13 (सुवेशता gedr.).

सुवेषवत् (von 1. सुवेष) adj. = 2. सुवेष 1) Kâm. Nîtis. 5, 17 nach der Lesart des Comm.

सुव्यक्त adj. überaus hell, — klar: °लोचन R. 6, 95, 24. ganz deutlich, — vernehmlich Sân. D. 508. °म् adv. ganz offenbar so v. a. sicherlich MBu. 3, 15674. R. 3, 62, 3. 11.

सुव्यवस्थित adj. fest stehend: ब्रह्मन् n. Çikshâ in Ind. St. 4, 268.

सुव्यस्त adj. stark auseinandergeworfen, — zerstreut: सैन्य Spr. (II) 2822.

सुव्याहृत n. ein schöner Ausspruch Spr. (II) 7136. fg. R. 7, 83, 19.

सुव्रत 1) adj. (f. घा) a) recht gebietend, — herrschend: सूर्यः RV. 1, 125, 7. 190, 6. Âditja 8, 49, 1. VS. 21, 5. König RV. 9, 20, 5. 57, 3. — b) gute Gewohnheiten habend, seine Pflichten gewissenhaft erfüllend (von Männern und Frauen); = सद्वृत्त H. an. 3, 313. fg. = शोभनव्रत Med. t. 172. — MBu. 1, 8455. 4, 1228. 8, 1486. 14, 2714. R. 1, 6, 12 (10 Gorr.). 35, 7. 2, 24, 26. 91, 22. R. Gorr. 1, 4, 3. Varâh. Bṛh. S. 15, 2. Mârk. P. 75, 14. 106, 35. Spr. (II) 1943, v. l. Bhâg. P. 6, 18, 2. 8, 22, 30. 9, 1, 29. 10, 71, 15. Paṇḍar. 1, 8, 33. so v. a. ब्रह्मचारिन् Jâtâ. 1, 103. Häufig als Anrede MBu. 3, 12752. 5. 7492. R. 1, 9, 34 (33 Gorr.). 13, 55. 53, 19. 2, 52, 8. 7, 26, 50. Spr. (II) 4605. Weber, Kṛshṇaj. 290. Bhâg. P. 4, 9, 19. 13, 2. 7, 4, 44. 8, 10, 15. Paṇḍar. 1, 13, 15. 4, 2, 11. Lalit. ed. Calc. 209, 1. — c) gutmüthig, fromm: Ross MBu. 4, 1276. Stier 3, 12724. Kuh AK. 2, 9, 72. Taik. 2, 3, 192. H. 1268. H. an. Med. MBu. 13, 2517. 3598. 4427. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBu. 9, 2544. verschiedener Männer Mârk. P. 116, 13. Verz. d. Oxf. H. 5, b, 24. 12, b, 46. ein Prâgâpati R. 3, 20, 7. ein Sohn des Manu Raukja Mârk. P. 94, 21. des Nâbhâga R. 2, 110, 34. des Uçînara Harîv. 1677. des Kshemja (Kshema) VP. 465. Bhâg. P. 9, 22, 46. des Prijavrata Wilson, Sel. Works 2, 193. ein Gelehrter Colebr. Misc. Ess. 1, 108. ein Historiker Râga-Tar. 1, 11. fg. ein Arhant bei den Gaina H. an. der 20te der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 29. Verz. d. Oxf. H. 186, b, 16. Çatr. 9, 3. der 11te der zukünftigen Utsarpiṇî H. 34. — 3) f. घा N. pr. einer Apsaras Vâlm.

beim Schol. zu H. 183. der Mutter des 15ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇī H. 40. — Vgl. मुनि° und सौव्रत्य.

सुशंस adj. *Gutes anwünschend, Glück wünschend, segnend* (Gegens. दुःशंस): सुशंसो बोधि गृणते RV. 1,44,6. प्र सुशंसा मतिभिस्तरिषीमहि 2,23,10. अग्निः सुशंसः सुरुचः पितेव 5,52,6. सवितः सुशंसो यज्ञ दर्शते 7, 16,6. Varuṇa 35,6.

सुशंसिन् adj. *Gutes sprechend* AV. 6,6,2.

सुशंक adj. (f. आ) *leicht ausführbar:* क्षोदु वः सुशका देवयज्या RV. 10,30,13.

सुशकुन n. *ein gutes Omen* Weber, Nax. 2,280.

सुशक्त adj. *wohl im Stande seiend, — fähig* P. 5,4,121, v. l.

1. सुशक्ति f. *leichte Möglichkeit:* सुशक्तिरित्तुभ्यं मावते देष्णम् *es ist dir eine leichte Sache mir zu geben* RV. 7,32,21.

2. सुशक्ति 1) adj. *wohl im Stande seiend, — fähig* P. 5,4,121, v. l. — 2) m. N. pr. eines Mannes Tāran. 303. 307.

सुशब्दता f. = सौशब्य Prātiśāk. 67,a,8.

सुशम m. N. pr. eines Mannes Siddh. K. zu P. 2,4,20. — Vgl. सौशमि.

सुशमि adv. *fleissig, sorgfältig:* गत्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि RV. 5, 87,9. स इद्देवेषु रोचते कविः शमीष्व सुशमि शमीध्व VS. 1,15. TS. 1,1,8,2. TBr. 3,6,6,4.

सुशमी dass.: ऋते शर्मभिः सुशमी बभूवन् RV. 10,28,12. सुव्रक्षा यज्ञः सुशमी वसूनाम् 7,16,2.

सुशर adj. *leicht zerreissend* Nir. 12,8.

सुशरण adj. *gern oder guten Schutz —, Zuflucht gebend* RV. 5,42,13. 7,34,22. MBh. 13,1178 (eine von Nilak. erwähnte v. l. für सुसरण).

सुशरण्य adj. dass.: Çiva Çiv.

सुशरीर adj. *einen schönen Körper habend, wohlgebildet* Vaṇîm. Bṛh. 8. 68,98.

1. सुशर्मन् n. *eine gute Zuflucht* AV. 19,7,3.

2. सुशर्मन् 1) adj. P. 3,2,75, Schol. Vop. 26,69. = सुशरण RV. 1,93, 7. सुशर्मणो वृकतः शर्मणि स्याम् 3,15,1. 5,8,2. 6,51,11. 8,18,4. Aditi 10,63,10. 77,2. VS. 8,8. — 2) m. N. pr. gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. pl. einer Klasse von Göttern: सुशर्माणः पुनर्दश H. ç. 5. unter dem 13ten Manu Mārk. P. 94,28. sg. eines Asura Kathās. 47,18. eines Sohnes eines Manu Hariv. 479 (प्र° die ältere Ausg.). Mārk. P. 94,21. eines Fürsten Uśīnar. zu Uṇâdis. 4,151 (oxyt.). MBh. 1,6939. 5,83. 6,3577. 3580. 8, 1079. der Trigarta 4,971. Bhāg. P. 10,82,25. — Kathās. 7,60. 75. 80. N. pr. eines Vaiçâli Mārk. P. 70,3. eines Kâṇva VP. 471. Bhāg. P. 12,1, 20. eines Çâṇḍapâjana Verz. d. Oxf. H. 55,b,42. सुशर्मणा प्रोक्तं काठकं सौशर्मणम् Kāç. zu P. 4,3,101. सुशर्मा नाम दुर्मेधाः सीमा पापात्मनामभूत् । यनाम्नायविदो वंशे विप्राणां क्रूरकर्मणाम् ॥ Pādmottarakh. 80 im ÇKDa. — Vgl. सौशर्मण.

सुशल्य m. *Mimosa Catechu* (ein *dorniger* Baum) Rāgān. 8,21.

सुशवी s. सुश्वी.

सुशस्त adj. *gut recitirt*, superl. Ait. Br. 3,44.

1. सुशस्ति f. *eine schöne Recitation, ein guter Spruch* RV. 1,20,7. 3, 26,6. नव्यांसी 2,3,24. 23,6. 10,140,3. VS. 11,41. सुशस्ति als instr. am Ende eines Pāda (vgl. 1. सुवृक्ति) RV. 1,186,1. 6,67,2.

2. सुशस्ति adj. *preiswürdig* (vgl. 2. सुवृक्ति): Berge RV. 5,46,6. Indra 10,104,10.

सुशाक 1) m. Bez. verschiedener *Gemüsepflanzen:* = चञ्चु Rāgān. 4, 146. = भिण्डा (so ÇKDa., भेण्डी die Hdschrr.) 4,159. = तण्डुलीय 5,72. — 2) n. *frischer Ingwer* Rāgān. im ÇKDa. (सच्छाकम् unsere Hdschrr.); vgl. सुशाकक.

सुशाकक n. *frischer Ingwer* Rāgān. 6,29. — Vgl. सुशाक 2).

सुशान्त 1) adj. *ganz beruhigt, gelöscht* Kauç. 71. *ganz ruhig* vom Wasser MBh. 3,2511. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Çaçidhvaga's Kalki-P. 22 im ÇKDa.

1. सुशान्ति f. *vollkommene Ruhe, — Friede* Mārk. P. 73,9.

2. सुशान्ति m. N. pr. 1) des Indra unter dem 3ten Manu VP. 261. Mārk. P. 73,7. 9. — 2) eines Sohnes des Agnidhra Hariv. 1707. — 3) eines Sohnes des Çânti VP. 433 (प्र° in der älteren Ausg.). Bhāg. P. 9,21,31.

सुशारद m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Çâlaṅkâjana Ind. St. 4,372.

सुशासित adj. *wohlgezogen:* स्त्री Spr. (II) 7100.

सुशिक्षित s. u. 1. शिक्ष् simpl. und caus.

सुशिख 1) adj. *a) einen schönen Haarbusch u. s. w. habend.* — *b) hell flammend:* दीप Spr. (II) 2447. — 2) m. *Feuer* Gaṭâdhn. im ÇKDa. — 3) f. आ vielleicht *Celosia cristata, Hahnenkamm* Rāgān. 5,48.

सुशिखा f. *ein schöner Haarbusch:* °समूह Bhāg. P. 3,20,36.

सुशिथिलीकृत adj. *stark gelockert, — vermindert:* °प्रयत्न adj. Mudrâr. 42,13.

सुशिप्र adj. *schönwangig*, auch wohl *schöne Kinnbergen tragend* Naigh. 4,3. Nir. 6,17. Indra RV. 1,9,3. 101,10. 2,12,6. 3,30,3. 10,96,3. Rudra 2,33,3. Agni 5,22,4. die Ṛbhu 7,37,1.

सुशिम्बिका f. *eine best. Pflanze mit schwertartiger Schote* (वसिशिम्बी) Rāgān. 7,178.

सुशिरस् adj. *ein schönes Haupt habend* R. 1,1,12. Hariv. 7422.

सुशिल्प adj. (f. आ) *schön gestert, bunt:* Nacht und Morgen RV. 1,3, 6. 10,70,6. VS. 28,29. 29,6.

सुशिशि adj. *gut heranwachsend* (im Mutterleibe) RV. 1,65,4.

सुशिष्टि (von 2. शिक्ष्) f. *gute Hilfe* RV. 1,173,10.

सुशीघ्रम् adv. *sehr rasch:* धावन् Spr. (II) 7138.

सुशीत 1) adj. *ganz abgekühlt, — kalt, recht kühl* Suçr. 2,101,1. 3. Vaṇîm. Bṛh. 8. 35,23. Kathās. 45,189. Paṇḍân. 1,6,39. — 2) m. *ein best. Baum,* = क्रुस्वव्रत Rāgān. 11,126. — 3) f. आ *eine best. Blume,* = शतपत्री Rāgān. 10,80. — 4) n. *gelber Sandel* Çabdam. im ÇKDa.

सुशीतल 1) adj. *schön —, recht kühl* MBh. 3,2535. Kâdamb. 2. Spr. (II) 451. 2215. — 2) n. *weisser Sandel* Ratnam. 140. = कालीय 257.

सुशीम adj. 1) *worauf sich gut liegen oder sitzen lässt;* zur Erklärung von सुपद् Çat. Br. 6,4,4,3. यदङ्गैः सुशीमं वा दुःशीमं वा स्पृशति Çāṅkh. Br. 2,7. — 2) fehlerhaft für सुषीम und सुसीम.

सुशीमकाम adj. (f. आ) *sehr verliebt* (= तीव्रमन्मथा Comm. zu Daçak.) Daçak. 106,6. 7. — (?) Kauç. 77.

1. सुशील n. *eine gute Gemüthsart* MBh. 3,16000. Paṇḍân. 1,1,75.

2. सुशील 1) adj. (f. घा) von *guter Gemüthsart* MBh. 12,8462. Spr. (II) 3270. 5273 (mit einer unbekannten Nebenbedeutung). Bhâg. P. 6,1, 17. 7,12,6. Pañkat. 1,13,18. 14,106. 2,3,11. eine Kuh Jâtâ. 1,204. — 2) m. N. pr. *a*) eines Sohnes eines Kaundinja Hit. 123,17. — *b*) eines Fürsten Z. d. d. m. G. 14,576,5. von Kola Pâdmottarakh. 54 nach ÇKDa. — 3) f. घा N. pr. *a*) einer Gattin Krshṇa's Harîv. 6702. Pâdmottarakh. 68 im ÇKDa. Pañkat. 3,7,21. 15,11. — *b*) eines Wesens im Gefolge der Râdhâ Pañkat. 2,4,44. — *c*) der Gattin Jama's Çabdârthak. bei Wilson. — *d*) einer Tochter Harisvâmin's Verz. d. Oxf. H. 70, *a*, 8. — Vgl. सौशील्य.

सुशीलवत् adj. = 2. सुशील 1) Mahân. 174,7.

सुशीलिन् adj. desgl. Mârk. P. 20,24.

सुशीविका f. = वाराहीकन्द Çabdak. im ÇKDa.

सुशुक्वन् adj. *schön strahlend* RV. 5,87,3.

सुशुक्वनि adj. dass. VS. 11,41. शु° RV.; vgl. auch TS. 4,1,4,1.

सुशुभ adj. 1) *sehr schmuck*, — *hübsch:* Arm R. 5,28,15. — 2) *viel Glück bringend*, — *verheissend:* घरुन् Kathâs. 49,35. — 3) *überaus gut*, — *edel:* कर्मन् R. 2,105,21.

सुश्रोत्र adj. *schön gehört* TBr. 2,4,3,2.

सुश्रुत adj. *wohl gekocht* AV. 7,72,3 (सुश्रात RV.). Çat. Br. 11,4,4,7. 14,1,2,21. Kauç. 14. MBh. 12,7054. R. Gorr. 2,56,25. Bhâg. P. 10,9,7. Pañkat. 3,8,12.

सुशैकु m. nach dem Comm. *Sand* oder *Gries von einer best. Art* TBr. 3,10,8,4.

सुशेव adj. (f. घा) *sehr hold, zugethan, zärtlich; sehr lieb:* Freund RV. 1,187,2. 2,1,9. Sohn 5,42,2. 7,4,8. पितेव सूनवे सुशेवः 8,48,4. Mutter 10,18,10. Weib पत्ये AV. 14,2,26. गृणते RV. 3,59,5. Savitar 10,85, 24. Agni 3,29,5. 5,15,1. 7,7,3. नराम् 10,45,12. 5,30,6. 41,5. 6,50,1. 8,68,7. AV. 2,2,2. दत्त 4,25,8. 5,6,8. 6,1,2. 13,1,17. 14,2,17. 18,3,21. VS. 4,12. 12,71. TS. 7,1,2,2. *lieblich, beglückend:* Pfad Ait. Br. 7,13.

सुशेवस् adj. dass. AV. 14,1,19. 38. RV. v. l.

सुशेव्य adj. *zärtlich geliebt:* Kind RV. 5,43,14.

सुशोक adj. *schön strahlend:* Agni RV. 1,70,1.

सुशोण adj. *dunkelroth:* रोगसुशोणदृष्टि Bhâg. P. 2,7,24.

सुशोभन 1) adj. (f. घा) *sehr schmuck*, — *schön*, — *prächtig:* कन्या Kathâs. 24,31. युवन् Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 23. सूतिकागृह Weber, Hâsapâç. 269. Bäume Pañkat. 1,6,17. सुशोभनमिदं देवदत्तस्य Lalit. ed. Calc. 164, 20. — 2) f. घा N. pr. *a*) einer Gattin Marutta's Mârk. P. 132,17. — *b*) einer Tochter eines Froschkönigs MBh. 3,13174.

सुशोषित adj. *gut getrocknet* Varâh. Bṛh. S. 76,7.

सुश्चन्द्र (6. सु + चन्द्र) adj. VS. Pair. 3,33. P. 6,1,151, Schol. *schön schimmernd:* वर्ण RV. 2,34,13. Agni 4,2,19. 1,74,6. 5,6,5. 9.

सुश्चप adj. *leicht zu kochen*, compar. Çat. Br. 5,5,4,1.

सुश्रम m. N. pr. eines Sohnes des Dharma VP. (2te Aufl.) 4,175. सुश्रुम der gedr. Text.

सुश्रव 1) adj. *hörenswerth* Pañkat. 1,2,68. — 2) f. घा N. pr. einer Vaidarbhî, Gattin Gajatsena's, MBh. 1,3770.

सुश्रवस् 1) adj. *a*) *berühmt:* मन RV. 1,49,3. 91,21. wohl auch AV. 11, 4,19. — Bhâg. P. 4,17,6. 20,26. — *b*) *gut* —, *gern hörend:* उपश्रुणोः सुश्रवा वे श्रुतो असि TBr. 1,2,1,6. 1,3,11 (vgl. TS. 2,5,3,2). Kâṭh. 30, 10. Âçv. Gṛhj. 1,22,21. superl. *sehr gern erhörend:* Freund RV. 1,91, 17. 3,45,5. शृणुध सुश्रवस्तमः 1,131,7. 8,13,2. 20,20. 45,5. — 2) m. N. pr. eines Mannes RV. 1,53,9 (nach Sây.). Kaushîja Çat. Br. 13,5,3,1. Pañkav. Br. 14,6,5. Vârshagaṇja Ind. St. 4,372. N. pr. eines Prâgâpati VP. 50, N. 2. eines Nâga Râja-Tar. 1,303. 317. 363. — Vgl. सौश्रवस.

सुश्रवस्या f. *Bereitwilligkeit zum Erhören* RV. 1,178,4.

सुश्रात adj. = सुश्रुत *wohl gekocht* RV. 10,179,3.

सुश्रान्त adj. *sehr ermüdet* Spr. (II) 694, v. l. Pañkat. 134,18.

सुश्री adj. Declin. Vop. 3,58. *prächtig, prunkend; reich:* Agni RV. 3,3,5. सुश्रियो दार्मन्वतः सुरातयः 5,79,4. 8,8,17. इन्दवः 9,7,1. रयि 43,4.

सुश्रीक 1) adj. (f. घा) *prächtig, schön, hübsch:* पुरी Harîv. 10982. ein Mann Sin. D. 64. Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 22. — 2) f. घा *Weihrauchbaum* Râjân. 11,197.

सुश्रुण adj. *gute Erhörung findend:* वनं ये सुश्रुणी सुश्रुतो धुः RV. 10,74,1.

सुश्रुत् 1) adj. *gut hörend:* Ohr RV. 2,39,6. AV. 18,2,8. RV. 10,74,1. AV. 3,2,8. nom. सुश्रुक् TBr. 3,7,18,2. — 2) m. N. pr. eines Mannes Pat. zu P. 1,1,3. 7,2,117 (Ind. St. 13,429). Vgl. सौश्रुत.

सुश्रुत 1) adj. *a*) *berühmt* RV. 2,36,1. — *b*) *gern* —, *mit Vergnügen gehört:* वाच्यं गोष्ठे तु सुश्रुतम् M. 3, 254. सुश्रुतं श्रुतवानकम् Verz. d. Oxf. H. 18, *a*, 4. — 2) m. N. pr. *a*) des Verfassers des bekannten medicinischen Lehrbuchs, eines Sohnes des Viçvâmitra, MBh. 13, 254. Soça. 1,1,6. 3,3. 74,3. 195,5. 2,17,3. 361,5. Verz. d. Oxf. H. 311, *a*, 4. fgg. ein Çrutarshi Taik. 2,7,16. — *b*) eines Sohnes des Subhâsa VP. 4,3,12. — *c*) eines Sohnes eines Padmodbhava Daçak. 3,10. 9, 20. — Vgl. प्र°, वृद्ध°, सौश्रुत.

सुश्रुति f. *ein gutes Gehör* AV. 18,2,3.

सुश्रुम m. N. pr. eines Sohnes des Dharma VP. 4,23,3. Vgl. सुश्रम.

सुश्राणा f. N. pr. eines Flusses Harîv. 12827 nach der Lesart der neueren Ausg., सुश्रोतम् die ältere.

सुश्रोणि 1) adj. (f. ई) καλλίπυγος s. u. श्रोणि 1). — 2) f. (ई) N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 14.

सुश्रौतु adj. *gern erhörend* RV. 1,122,6.

सुश्लक्ष्ण adj. s. u. श्लक्ष्ण.

सुश्लिष्ट s. u. 2. श्लिष् partic.

सुश्लोक adj. (f. घा) 1) *wohl tönend*, — *redend* u. s. w. VS. 20,4. TS. 1,7,10,6. Vogel Kâṭh. 23,7. कीर्ति Bhâg. P. 11,1,7. — 2) *berühmt:* Personen Bhâg. P. 3,5,7. 6,37. पराक्रमाः 10,87,13.

सुश्लोका n. *eine wohltönende Rede* Âçv. Gṛhj. 1,17,12. fg. Çâṅkh. Gṛhj. 2,2.

सुषर्व adj. = शोभनं षो अस्य *dem ein schöner Morgen bevorsteht* P. 5,4,120.

सुषंसद् adj. *eine gute Gesellschaft habend*, — *liebend* RV. 1,112,7. सुसंसद् Mitra 7,9,3. Soma 9,68,3.

सुषखि adj. *gut befreundet, ein guter Freund* RV. 1,173,3. 8,48,3. 10,31,1. 91,1.

सुषण (6. सु + सन) adj. *leicht zu erwerben* RV. 1,42,6.

सुषणानँ adj. dass.: वसु RV. 7,12,3.

सुषद् (6. सु + 2. सद्) adj. *die Begattung leicht —, gern ausübend:* मृग AV. 2,36,4. 3,22,6.

सुषँद् adj. (f. षा) *wo es sich bequem sitzt, — wohnt:* गोष्ठ AV. 3,14, 1 (oder zu सुषद्). VS. 1,27. सुषदा योनौ 2,20. 37,12. TS. 7,1,3,3. Wagen, Einschiebung nach Vaitân. 10,3. *angenehm zu retten:* Ross VS. 11,44.

सुषदमन् m. N. pr. eines Mannes; vgl. सोषदमन.

सुषंधि gaṇa सुषामादि zu P. 8,3,98. m. N. pr. eines Sohnes des Mândhâtar R. 1,70,25 (72,23 Gorr.). 110,14 (119,14 Gorr.). des Prasuçruta VP. 387 (सुगधि der gedr. Text). Nur an einer Stelle (R. Gorr. 1,70,25) सुष°, sonst सुस°.

1. सुषँम (6. सु + समा) n. *ein gutes Jahr* Çat. Br. 3,2,4,20.

2. सुषम (6. सु + 2. सम) P. 8,3,98. 1) adj. *a) prächtig, schön* AK. 3, 2,1. H. 1444. an. 3,475. Med. m. 57. Halâj. 4,4. संगीत Pañcar. 1,11, 2. — *b)* = सम H. an. Med.; s. सुसम. — *c) leicht verständlich* H. 256, Schol. — 2) f. षा *a) Pracht, Schönheit* AK. 1,1,3,19. H. 1512. H. an. Med. Halâj. 2,410. धुवौ विनीले रेजाते सुषमासुन्दरे विभोः Pârçvanâthan. 4,51. 5,19 (nach Aufrecht). am Ende eines adj. comp.: कुरुवककुसुमं चपलासुषमम् Gîv. 7,23. षाततसुषुम (so ist zu lesen) Kuvalaj. 127,*a*. — *b) eine best. Pflanze:* स्फटसुषमामकारन्द Khandom. 51. — *c) ein best. Metrum: 4 Mal* — ⏑ ⏑ — — — ⏑ ⏑ — Colebr. Misc. Ess. 2, 159 (V,10). — *d)* bei den Gaina Bez. *zweier Speichen im Zeitenrade: der 2ten in einer* Avasarpiṇî *und der 5ten in einer* Utsarpiṇî H. 129. 131. H. an. Ind. St. 16,286. — 3) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. — 4) सुषमम् adv. gaṇa तिष्ठद्वप्रभृति zu P. 2,1,17. — Vgl. दुःषम.

सुषमदुःषमा f. bei den Gaina Bez. *zweiter Speichen im Zeitenrade: der 3ten in einer* Avasarpiṇî *und der 4ten in einer* Utsarpiṇî H. 130. fg.

सुषमिद्ध s. सुसमिद्ध.

1. सुषमिँध् f. *gutes Brennholz* RV. 5,8,7. 7,17,1. TBr. 3,6,2,1.

2. सुषमिध् adj. *gute Brände habend:* Agni Âçv. Br. 2,34. सुस° Çâṅkh. Çr. 7,9,2.

सुषवी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. Bez. verschiedener Pflanzen: *Momordica Charantia Lin.* (कारवेल्ल) AK. 2,4,8,20. H. an. 3,718. Med. v. 55. = तुरुकारवेल्ल Râjân. im ÇKDr. *zwei Arten von Kümmel;* = जीरक und कृष्णजीरक H. an. Med. Râjân. 6,68. Bhâvapr. 5. — Suçr. 2, 38,8. 40,14. — Varianten: सुशवी und सुसवी.

सुषव्यँ adj. *eine gute Linke* (सव्य) *habend:* Indra RV. 8,33,5.

सुषँह् adj. *leicht zu überwältigen:* कार्न्सुषाहा (सुऽसहा Padap.) विद्युं न शर्वः RV. 1,186,2. सुमित्रान्सुषहान्कृधि 6,46,6. 9,29,3. 94,5. 10,38,3.

1. सुषा adj. *leicht erwerbend, — verschaffend* RV. 8,67,5.

2. सुषा f. *schwarzer Kümmel* oder *Fenchel* (vgl. सुषवी) Ausn. 101. Karaka 1,27. शुषा v. l.

सुषाढ adj. unter den Beiww. Çiva's (neben षाषाढ) MBh. 13,1234.

1. सुषामँन् n. *ein schöner Gesang* (2. सामन्) RV. 8,49,18.

2. सुषामन् m. P. 8,3,98. N. pr. eines Mannes RV. 8,25,22. eben so scheint वरो — सुषामन् Name zu sein 23,28. 24,28. 26,2. सुसामन् P. 6, 4,170, Schol. घनंजयानामृषभः सुसामा सामगो ऽभवत् MBh. 2,1238. — Vgl. सोषाम.

3. सुषामन् (6. सु + 3 सामन्) adj. *friedfertig:* ब्राह्मण P. 8,3,98, Schol. f. सुषाम्णी (so ist zu lesen) Bhaṭṭ. 9,95.

सुषारथि m. TS. Prât. 6,13. *ein trefflicher Wagenlenker* RV. 8,73,6. VS. 34,6.

सुषाक् s. सुषक्.

सुषि P. 5,2,107. m. *Höhlung eines Rohrs* Kâṭh. 19,1. Vgl. शुषि 2); die Schreibung सुषि auch bei Bharata zu AK. nach ÇKDr. und beim Schol. zu H. 1363. — Vgl. देव°.

सुषिक्त adj. *gut begossen, — besprengt* R. 4,44,85. सुषिक्तं किं त्वत्र (nicht पूजायाम्) P. 1,4,94, Schol. (verschieden von सुसिक्त).

सुषित Pañcar. 3,12,4 = सुसित.

सुषिरँ Uṇâdis. 1,53 (शु°). 1) adj. (f. षा) P. 5,2,107. *hohl* AK. 1,2,4,2. H. an. 3,613. fg. Med. r. 230. fg. सूर्मो RV. 8,58,12. Çat. Br. 8,7,3,3. Rohr 6,3,4,26. 31. fg. 9,5. TS. 5,1,3,4. Kâṭy. Çr. 18,2,5. Baum Satap. Br. 4,1. Mund RV. Prât. 14,2. Zahn Suçr. 2,128,17. स्रोतस् 1,341,13. 16. 87,15. नाडीचक्र Viṣṇ. 1,25,11. 23. MBh. 12,9513. Ind. St. 2,66. 9,33. 10,314. Varâh. Bṛh. S. 53,36. 54,49. 68,111. 79,29. 33. Kathâs. 29,145. 70,96. 71,160. Râja-Tar. 1,128. 4,317. Verz. d. Oxf. H. 51,b, 32. — 2) m. *a) Rohr, Bambusrohr* Râjân. 7,36. — *b) Feuer* H. an. Med. (m. n.!). Viçva im ÇKDr. — *c) Maus* Med. — 3) f. षा *a) eine best. wohlriechende Pflanze* (नटी) AK. 2,4,4,17. Râjân. 12,163. — *b) Fluss* Duâr. im ÇKDr. beruht auf einer Verwechselung von नदी mit नटी. — 4) n. *a) Höhlung* AK. 1,2,4,1. Trik. 3,3,275. H. 1363. H. an. Med. (n. in der Bed. von विवर, m. n. in der von गर्त). Halâj. 3,2. Ind. St. 1,450. 2,93. Golâdhj. Jantrâdh. 20. 24. 52. स्तम्भ° Kâm. Nîtiç. 17,31. गुह्य° Mârk. P. 11,11. नाभेः 43,20. °विवर einer Schlange Z. d. d. m. G. 27,21. — *b) ein Blasinstrument* AK. 1,1,2,4. Trik. H. 287. H. an. Med. Hariv. 8688. — *c) der Luftraum* Uṇâdis. — *d) Gewürznelke* Râjân. 12,85. — Häufig शुषिर geschrieben. Vgl. सोषिर. सोषिर्य.

सुषिरता (von सुषिर) f. *das Hohlsein* Râja-Tar. 1,110.

सुषिरत्व (wie eben) n. dass. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 20.

सुषिरलोका f. *ein best. Vogel* (nach Manibh.) VS. 24,36.

सुषीम 1) adj. *a) kalt* AK. 1,1,2,20. H. 1385. an. 3,473. Med. m. 57. wohl richtiger सुशीम. — *b) lieblich, hübsch* H. an. Med. — 2) m. *a) eine Schlangenart* Med. P. 2,1,62, Schol. — *b) der Mondstein* Gaṭâdh. im ÇKDr. — Auch सुशीम geschr.; vgl. सुसीम.

सुँषुत adj. *gut gekeltert* (सुत), — *bereitet:* Soma RV. 3,36,7. 50,3. 7,29,1. 9,85,1.

सुँषुति f. *eine gute Geburt* oder *Zeugung* (सुति = सूति) RV. 10,39,7. — Vgl. सुसूति.

सुँषुप्त 1) adj. *tief schlafend* Çat. Br. 14,5,2,21. Kâm. Nîtiç. 12,38. Weber, Kṛshṇaj. 287. Bhâg. P. 6,16,38. Vedântas. (Allah.) No. 145. — 2) n. *tiefer Schlaf* Mânḍ. Up. 5. Weber, Râmat. Up. 338. Ind. St. 1, 301. 9,125. fg. 131. Çâṅk. zu Brahmas. 3,2,10. Bhâg. P. 11,13,27.

सुषुप्ति f. *tiefer Schlaf* Kap. 1,149. Ind. St. 1,386. 450. 2,35. Nilak.

14. 33. Weber, Rámat. Up. 342. Prab. 17, 15. Sarvadarçanas. 163, 8. Bhâg. P. 7, 7, 25. 10, 47, 32. Pañcar. 3, 9, 6. Vedântas. (Allah.) No. 27.

सुषुप्सा (vom desid. von स्वप्) f. *das Verlangen zu schlafen, Schläfrigkeit* MBu. 13, 4051.

सुषुप्सु (wie oben) adj. *zu schlafen verlangend, schläfrig* Suça. 1, 323, 9. Çiç. 12, 52. Bhâg. P. 3, 13, 30. Bhatt. 8, 101.

सुषुर्मत् (सुसुर्मत् Padap.) adj. etwa *treibend, stürmisch* (von 2. सु); nach Sây. = सोमवत् oder शोभनप्रसव. रेवद्दो दत्तोप सुषुर्मो यंदर्शि RV. 10, 3, 1.

सुषुर्मा und °र्मे (so stets RV.) 1) adj. *sehr gnädig, huldvoll* RV. 5, 75, 2. 6, 49, 10. 50, 3. 10, 104, 5. 132, 2. VS. 18, 40. 38, 28. — 2) m. *ein best. Sonnenstrahl* (vgl. VS. 18, 40) Colebr. Misc. Ess. 1, 134. VP. 236, N. 3. — 3) f. या a) *die Kopfader, Carotis* Maitrâyaṇ. 6, 21. Ind. St. 1, 448. 450. 2, 48. 89. 171. fgg. 3, 36. 36. Weber, Râmat. Up. 336 (सुसुम्रा). Verz. d. Oxf. H. 104, b, 33. 41. 107, b, No. 167. 235, a, 6. 18. 236, a, 2 v. u. b, 4. 6. Bhâg. P. 2, 2, 24. Pañcar. 2, 8, 9. 14. Riça-Tar. 8, 2334. Weber, Ġjot. 83. — In der späteren Sprache ist सुषुम्णा, सुषुम्णा die einzig richtige Schreibart. Vgl. सोषुम्णा.

1. सुषूं adj. entweder so v. a. सुषुत oder *sehr erregend*, — *treibend* (2. सु); superl. सुषूतम VS. Prâtiç. 5, 2. यज्ञ VS. 6, 20: vgl. Çat. Br. 3, 9, 4, 5, wo es mit सुसुतम umschrieben wird.

2. सुषूं adj. *leicht —, gut gebärend:* Mutter RV. 5, 7, 8.

सुंषूत adj. *wohl gesungt* RV. 2, 10, 3. vielleicht सुषूस्तम् zu lesen.

सुषूति f. P. 3, 3, 88. — Vgl. सुषुति.

सुषूर्म adj. (f. या) *leicht —, gut gebärend* RV. 2, 32, 7.

सुषूष्, सुषूषते *gern haben, mögen:* शिरः शीतं सुषूषते Kâraka 1, 17. न च स्पर्शमुक्ते वा सुषूषते (v. l. सुसूषते) 18. — Vgl. असूष्, welches man vielleicht in अ-सूष् zerlegte und dazu im Gegensatz सु-सूष् bildete.

सुषेक adj. *gut fliessend, — laufend:* Brunnen RV. 10, 101, 5.

सुषेचन adj. dass. RV. 10, 101, 6.

सुषेण (6. सु + सेना) 1) adj. *ein gutes Wurfgeschoss habend:* Vishṇu-Kṛshṇa Taik. 3, 3, 142. H. ç. 69. H. an 3, 330. Med. ṇ. 84. MBh. 12, 1311. 13, 7007. Indra Vaṃç. Bṛh. S. 43, 55. — 2) m. a) *Carissa Carandas* (कारमर्द) *Lin.* AK. Taik. H. an. Med. *Calamus Rotang Willd.* Râgân. 9, 110. — b) N. pr. α) eines Gandharva VS. 15, 19. Bhâg. P. 12, 11, 29. — β) eines Schlangendämons MBh. 1, 2157. Bhâg. P. 5, 24, 29. — γ) eines Vidjâdhara Kathâs. 50, 164. — δ) eines Affen, Arztes des Sugrîva, Taik. H. an. Med. MBh. 3, 16270. 16468. R. 1, 16, 16 (Sohn Varuṇa's). 4, 21, 14. 31, 29. 39, 17. 43, 2 (Vater der Târâ). 5, 73, 29. 6, 3, 45. 6, 22 (Sohn Dhanvantari's). 22, 2. Weber, Râmat. Up. 306. — ε) verschiedener Männer: ein Fürst MBh. 1, 6996. 3, 11080 (S. 572). 7, 1614. der Çûrasena Raghu. 6, 45. auf dem Berge Kitrakûṭa Kathâs. 28, 51. fgg. ein Sohn des 2ten Manu Bhâg. P. 8, 1, 19. Parikshit's MBh. 1, 3744. Dhṛtarâshṭra's 2732. 4516. Viçvagarbha's Harîv. 3252. Vasudeva's VP. 439. Bhâg. P. 9, 24, 53. Kṛshṇa's Harîv. 6698. 9182. VP. 578. Bhâg. P. 1, 14, 31. Çambara's Harîv. 9252. Vṛshṇimant's (Vṛshṭimant's) VP. 462. Verz. d. Oxf. H. 40, b, 12. fg. Bhâg. P. 9, 22, 40. Karmasena's Kathâs. 103, 145. fgg. eines Arztes des Prabhâkaravardhana Hall in der Einl. zu Vâsavad. 52. — 3) f. या N. pr. einer Prinzessin Kathâs. 111, 35. — 4) f. ई *Ipomoea Turpethum R. Br.* Râgân. 6, 168.

सुषेणकविराज m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. 2, 45.

सुषेणिका f. *eine der Sushṇi verwandte Pflanze* AK. 2, 4, 3, 27.

सुषेध (6. सु + सेध) adj. gaṇa सुषामादि zu P. 8, 3, 98.

सुषोम 1) adj. *guten Soft enthaltend.* — 2) m. und f. (या) Bez. *eines best. Soma-Gefässes* RV. 8, 7, 29. 53, 11. — 3) f. या N. pr. eines Flusses Nir. 9, 26. RV. 10, 75, 5. Bhâg. P. 5, 19, 18.

सुष्कत m. N. pr. eines Sohnes des Dharmasetra Harîv. 1721 nach der Lesart der neueren Ausg., सुष्मत die ältere.

सुष्टरीमन् adj. VS. Prâtiç. 3, 128. TS. Prâtiç. 3, 10. *eine gute Streu bildend* VS. 29, 4. TBr. 3, 6, 3, 1.

सुष्टु adj. *hoch gelobt:* Indra RV. 10, 104, 5.

सुंष्टुत (सुस्तुत P. 6, 2, 144, Schol.) adj. 1) *wohl —, hoch gepriesen* RV. 1, 157, 3. 166, 7. 4, 24, 2. 8, 6, 12. 89, 11. — 2) *richtig ausgesprochen:* वाणी RV. 8, 63, 6. Lâṭ. 2, 1, 6.

सुष्टुति f. *schöner Preis, hohes Lob* RV. 1, 7, 7. 17, 9. 2, 16, 1. राका सुंष्टुती (P. 7, 1, 29, Schol.) कुवे 32, 1. °तिर्भीरयामि 33, 8. नव्यसी 3, 62, 7. मरुद्व्या 4, 43, 1. यत्तं गिरो वनितुः सुष्टुतिं च 5, 43, 10. विप्रस्य 6, 16, 6. 8, 1, 16. गायत्रवर्तनि 38, 6. 85, 12. 10, 91, 12. नद्यो 188, 2. VS. 22, 12. AV. 6, 38, 1. 7, 29, 2.

सुष्टुभ् 1) adj. etwa *einen gellen Schrei ausstossend, gellend:* स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज RV. 4, 50, 5. अग्निस्वर्तीरो अर्के न सुष्टुभः (मरुतः) 10, 78, 4. Çâṅku. Ça. 8, 23, 2. — 2) vielleicht f. so v. a. *greller Ruf:* स सुष्टुभा स स्तुभा (अद्रिं दरयः) RV. 1, 62, 4. सुष्टुभो वां रथे वाणीष्यार्हिता 5, 75, 4.

सुष्ठान adj. *fest stehend:* कृधि सुष्ठाने रोदसी RV. 9, 97, 27.

सुष्ठामन् adj. *ein festes Gestell habend:* Wagen RV. 10, 44, 2.

सुष्ठित R. 1, 13, 36 s. सुस्थित, wie die ed. Bomb. liest.

सुष्ठु (vgl. डुष्ठु der Grammatiker) Unâdis. 1, 36. adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. उञ्छादि zu 5, 1, 129. सुषामादि zu 8, 3, 98 (hier fehlerhaft सुष्टु: vgl. Uṇâdivṛtt. zu Unâdis. 1, 36). *gut, schön, wie es sich gehört* AK. 3, 5, 19. Taik. 3, 3, 464. Med. avj. 17. RV. 8, 22, 18. सुष्ठु खल्विदमुच्यते Vikr. 60, 6. Hit. 73, 21. Pañcat. 176, 11. सुष्ठूक्तम् Kathâs. 49, 54. मित Bhâg. P. 4, 22, 17 (nach dem Comm. als adj. = गम्भीरार्थ mit सूक्त zu verbinden). सुष्ठुलंकृता 24, 11. विद्याम सुष्ठु 10, 69, 17. शब्दः सुष्ठु प्रयुक्तः Sarvadarçanas. 139, 5. सुष्ठु वासुष्ठु पत्कृतम् Verz. d. Oxf. H. 141, a, 26. so v. a. *gar sehr* AK. 3, 5, 2. Taik. H. 1535. Med. सुष्ठु मे प्रियं संपादितं प्रियया Prab. 42, 9. Kathâs. 114, 131. — Vgl. सौष्ठव.

सुष्ठुवेकु adj. *gut fahrend:* Rosse RV. 10, 107, 11.

सुष्म n. v. l. für शुल्ब *Schnur, Strang* Svâmin zu AK. 2, 10, 27 nach ÇKDa.

सुष्मत्त m. N. pr. eines Sohnes des Dharmasetra Harîv. 1721. सुष्कत die neuere Ausg.

सुसव् etwa *laufen, rinnen* (verwandt mit 2. सु): या सुसर्वत्ती सदनं नि योनौ RV. 10, 110, 6. AV. 5, 27, 6. Nir. 8, 11. याः सुसर्वत्त सुदुघाः सुधाराः Flüsse RV. 7, 63, 5. Nach dem Comm. von स्रि, स्वप् oder 3. ई mit सु.

सुंधि (von 1. सु) adj. Soma *kelternd, — darbringend* RV. 1, 61, 15. 4, 24, 2. 25, 6. 7. 6, 23, 2. 3. 9. 9, 21, 3. प्रयक्तासि सुधितराय वेदः 7, 19, 1.

— Vgl. ध°.

सुसंयत adj. *gut im Zaum gehalten, — gezügelt:* Rosse MBh. 3,12110. प्राणा: Bhâg. P. 10,68,4. कस्तो च पादो च मनश्चेव Pañc. 26,1. *der sich gut im Zaum hält, — beherrscht* M. 2,193, v. l. Kathâs. 49,234. Mârk. P. 34,115. Brahma-P. im ÇKDr. Paddh. 1,7,94.

सुसंयुक्त adj. 1) pl. *innig mit einander verbunden* Harîv. lith. Ausg. 21,37. so v. a. *in richtigem Zahlenverhältniss zu einander stehend* R. 2,70,22. — 2) *reichlich ausgestattet mit* (instr.): लाघवेन R. 6,18,47.

सुसंयुत adj. *wohl verbunden mit* (geht im comp. voran) Brahma-P. in LA. (III) 49,14.

सुसंरब्ध adj. 1) *sich fest haltend* ṚV. 10,72,6. — 2) *sehr aufgebracht, — erzürnt* MBh. 3,3032. 5,7182. 6,1724. R. 3,26,11. 4,8,38. Spr. (II) 7141. Paddh. 238,24. °तर् R. 6,31,44.

सुसंवीत adj. 1) *gut gekleidet* MBh. 14, 1994. — 2) *gut geharnischt* MBh. 4,993. 5,7127. — 3) *reichlich versehen mit* (geht im comp. voran): महाऽस° (सलिल) R. 3,62,37.

सुसंवृत adj. 1) *gut verhüllt, vollkommen gekleidet* M. 2,193. MBh. 1, 4934. 4940. *eingehüllt in* (instr.): पर्वतं शरस्तम्बैः सुसंवृतम् 3,14309. — 2) *umgürtet:* मेखलेन R. 5,24,36. — 3) *reichlich umgeben, begleitet von* (instr.): नृभिः Bhâg. P. 10,71,15. — 4) *wohl versteckt, unerkannt* MBh. 4,146. *sehr geheim gehalten:* मत्र R. ed. Bomb. 2,100,16. — 5) *sehr auf seiner Hut seiend* Mârk. P. 32,22. स्व° M. 7,194 wohl fehlerhaft.

सुसंवृद्ध adj. *wohl gediehen, dem es gut ergeht* MBh. 13,3086.

सुसंशाम् adj. *freundlich zurechtweisend* AV. 18,3,16.

सुसंशित adj. *gut geschärft, sehr scharf* ṚV. 5,19,5. AV. 6,105,2. MBh. 5,7184 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 8,4246.

सुसंसद् s. सुषंसद्.

सुसंसृष्ट MBh. 13,5876. 6460 fehlerhaft für सुसंमृष्ट.

सुसंस्कृत 1) adj. *a) gut ausgearbeitet, geschmückt:* Zügel ṚV. 1,38,12. Arme 3,66,11. — *b) gut zugerichtet:* यज्ञ R. 5,89,19. Speisen AK. 2, 9,43. Taik. 2,9,12. H. 411. Lalit. ed. Calc. 262,5. — *c) gut in Ordnung gehalten:* उपस्कार Spr. (II) 6756. गृह R. 3,61,7. — *d) gut Sanskrit* Sucr. 1,13,6. — 2) n. *ein heiliger Brauch* oder *ein richtig zugerichteter Spruch:* (ब्राह्मम्) ब्रुवाणाग्नौ सुसंस्कृतैः MBh. 3,10760. = स्वरवर्णादिसंस्कार पुत्रैर्मन्त्रैः Nîlak.

सुसंस्थित adj. *schön geformt* (vgl. संस्था): भुवौ, कपोलौ R. 3,52,28.

सुसंहत adj. *schön verbunden, — zusammenhaltend:* सक्थ सर्वे: सुसंहता: MBh. 4,981.

सुसंहृष्ट adj. *hoch erfreut* MBh. 3,10870.

सुसक्थ und सुसक्थ्य adj. *schöne Schenkel habend* P. 5,4,131. Vop. 6,25.

सुसंकाश adj. (f. आ) *von schönem Ansehen:* Weib ṚV. 1,123,11.

सुसंकुल m. N. pr. eines Fürsten MBh. 2,1020.

सुसंक्रुद्ध adj. *sehr erzürnt* MBh. 6,3345. 7,2146. R. Gorr. 1,56,6.

सुसंगता f. ein Frauenname Râtnâv. 37,10 u. s. w.

सुसंगृहीत adj. 1) *gut im Zaum gehalten, — gelenkt, — regiert:* °राष्ट्र adj. M. 7,113. — 2) *gut aufgenommen:* eine Person MBh. 12,3962.

सुसंग्रह m. *ein schönes Compendium* Verz. d. Oxf. H. 315,a,No. 748,Z. 9. Vgl. सारात्सार°. — MBh. 7,3862 fehlerhaft für समग्रह, wie die ed. Bomb. liest.

सुसंचित adj. 1) *sorgfältig gesammelt:* धनानि Spr. (II) 7142. °तं (adv.) संचित्य *sorgfältig gesammelt habend* Âçv. Gṛhj. 4,5,7. — 2) *reichlich ausgestattet mit* (geht im comp. voran): रत्नपट्ट° (सैन्य) MBh. 6,3227.

सुसत्कृत adj. 1) *schön zurechtgemacht, — geschmückt:* गामर्घ्यं स सुसत्कृतम् MBh. 5,7804. — 2) *sehr gastfreundlich aufgenommen, hoch geehrt* R. 1,8,19. 53,7. 2,107,1. — 3) *dem die letzte Ehre in gehöriger Weise erwiesen worden ist* R. Gorr. 2,74,30.

सुसत्त्र n. *ein wohl ausgestattetes Verpflegungshaus, — Hospiz* Kathâs. 38,119.

सुसत्त्व adj. *von grosser Entschlossenheit, überaus beherzt* Kathâs. 18, 140. 189. 213. 234. 66,109.

सुसत्या f. N. pr. der Gattin Ganaka's Kâlikâ-P. 37 im ÇKDr.

सुसनि adj. *freigebig:* s. सुसनिता.

सुसनितृ nom. ag. *ein freigebiger Spender* ṚV. 3,18,5. 8,46,20.

सुसनिता (von सुसनि) f. *Freigebigkeit* ṚV. 10,36,9.

सुसंतुष्ट adj. *sehr befriedigt* MBh. 3,14006. Spr. (II) 7109, v. l.

सुसंतोष adj. *leicht zu befriedigen* Spr. (II) 7109.

सुसंत्रस्त adj. *sehr erschrocken* R. 3,55,29.

सुसंदृश् adj. VS. Pâit. 3,30. *schön anzuschauen* ṚV. 1,82,3. 143,3. 5,57,4. भानु 7,9,4. 10,3. 79,1. राजानो न चित्रा: सुसंदृश: 10,78,1. die Sonne 158,5.

सुसंध adj. = सत्यसंध *seinem Versprechen getreu, sein Wort haltend* Kâm. Nîtis. 9,62.

सुसंधि s. सुषंधि.

सुसंनत adj. *wohlgestalt* AV. 2,25,2. 3.

सुसंभोग adj. TS. Pâit. 6,12. *im Rath und in der Gesellschaft gewandt* TS. 7,1,6,1.

सुसम adj. (f. आ) 1) *ganz eben, — glatt:* मार्ग Verz. d. Oxf. H. 31,a. 18. जिह्वा Vârâh. Bṛh. S. 68,53. — 2) *besser als mittelmässig* Vârâh. Bṛh. S. 20,9.

सुसमाप्त adj. ध° *unvollkommen* Nir. 6,9. 28.

सुसमाकृत adj. 1) *wohl beladen:* Wagen Çat. Br. 14,7,1,43. — 2) *seine ganze Aufmerksamkeit auf einen Punkt richtend* M. 3,228. 7,213. MBh. 3,2077. Harîv. 992. 11058.

सुसमिद्ध adj. VS. Pâit. 3,30. *wohl entflammt* ṚV. 1,13,1 (सुष° SV.). 5,5,1. Çâṅkh. Br. 13,5,3. Gṛhj. 3,11. Kauç. 79. Kâty. Ça. 25,14,9.

सुसमिध् s. 2. सुषमिध्.

सुसमृब्ध adj. *fest geknebelt* ṚV. 1,158,5.

सुसमृद्ध adj. 1) *ganz vollkommen* AV. 9,6,40. Çat. Br. 4,1,5,10. — 2) *sehr reichlich, in sehr grosser Menge vorhanden:* °तेजस् adj. R. 2, 104,26. — 3) *sehr reich, — wohlhabend* M. 3,125.

सुसंपद् f. *Vollauf* Taik. 3,2,3.

सुसंपिष्ट adj. *ganz zertrümmert* ṚV. 4,30,11.

सुसंपूर्ण adj. *reichlich angefüllt mit* (geht im comp. voran) MBh. 7,3933.

सुसंप्रस्थित m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 2. Vsuvr. 22.

सुसंप्रीत adj. *sehr erfreut* Bhaṭṭ. 17,28.

सुसंबद्ध adj. *fest verbunden:* कृपातपौ Spr. (II) 3106.

सुसंभव m. N. pr. eines Fürsten Burnouf, Intr. 533.

सुसंभृत् adj. *wohl zusammenfassend* TS. 1,1,8,2.

सुसंमत adj. *hoch in Ehren stehend* MBu. 5,7383.

सुसंमृष्ट adj. *gut geputzt* RV. 3,43,6. Platz, Wohnung MBu. 5,3058. 13,5876 (ed. Calc. सुसंसृष्ट). 6460 (beide Ausgg. सुसंसृष्ट). 6792. R. 2,96, 33. R. Gorr. 2,99,3. 5,16,39. 17,2.

1. सुसरण n. *leichtes Forthommen:* दुर्गे चिद्दा सुसरणम् RV. 8,27,23.

2. सुसरण adj. *leicht zugängtich* (= सुप्राप Nilak.): Çiva MBu. 13, 1173. सुशरण v. l.

सुसर्तु f. N. pr. eines Flusses RV. 10,75,6.

सुसर्व adj. *ganz vollständig* Çat. Bn. 4,1,5,10.

सुसलिल adj. (f. या) *gutes Wasser habend* R. 3,76,6.

सुसव AV. 3,20,6 Druckfehler für सुरुव.

सुसवी s. सुषवी.

सुसस्य adj. VS. Pair. 3,60. TS. Pair. 6,12. *gut in Aehren schiessend:* कृषि VS. 4,10.

1. सुसक् (6. सु + 1. सक्) indecl. *gutes Zusammensein* RV. 10,191,4.

2. सुसक् (6. सु + 2. सक्) adj. *leicht zu ertragen* oder *Alles leicht ertragend:* Çiva MBu. 13,1166. = सौम्य Nilak.

सुसहाय adj. *einen guten Gehilfen habend* M. 7,31. Spr. (II) 1254.

सुसाधन adj. *leicht zu beweisen;* davon °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 119,12.

सुसाधित adj. 1) *gut in Ordnung gehalten,* — *erzogen:* स्त्री Spr. (II) 7100, v. l. — 2) *gut bereitet:* Speisen Lalit. ed. Calc. 262,4.

सुसाध्य adj. *leicht in Ordnung zu halten,* — *lenken, gefügig:* Weib Paṇḍar. 1,8,33.

सुसामन् s. 2. सुषामन्.

सुसायं n. *ein guter Abend* AV. 19,8,3. °म् adv. *am frühen Abend* Kâṭ. Çr. 8,2,27.

सुसायक (?) Wheeler, Râmây. Up. 336, Çl. 20.

1. सुसार m. *der rothe* Khadira Râǵân. 8,26.

2. सुसार MBu. 7,672 fehlerhaft für ससार.

सुसारवत् n *Krystall* Taik. 2,9,29.

सुसार्थवाह m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 2. 303. Vettp. 22.

सुसावित्र n. *gutes Wirken des* Savitar Paṇḍav. Br. 21,10,15. Kâṭ. Çr. 23,3,1.

सुसिकता f. *Zucker* Râǵân. 14,99.

सुसिक्त adj. in der Bed. unterschieden von सुषिक्त P. 1,4,94, Schol.

सुसित adj. *sehr weiss, schneeweiss* Kathâs. 29,53. Paṇḍar. 3,7,31. 9,11. 11,8. 12,1 (सुषित).

सुसिद्ध adj. 1) *gar gekocht* s. u. सिक्थ 1). *fertig* Sûçr. 1,164,11. — 2) *sehr wirksam, eine grosse Zauberkraft besitzend:* घण्टा: Spr. (II) 4216 (oder *gut,* — *richtig zubereitet*). ग्रोषध 7046, v. l.

सुसिद्धार्थ adj. *der sein Ziel vollkommen erreicht hat* MBu. 3,2066.

सुसीम adj. (f. या) *schön gescheitelt:* Weib Âçv. Gṛhy. 1,13,7. Gobh. 2,8,4. Pâr. Gṛhy. 1,11. Kauç. 24. 39. 76. Kaush. Up. 2,8. 10. hier und da सुशीमे (voc. f.) und सुसीमे st. सुसीमे geschrieben. Wenn die Lesart richtig sein sollte, ist auch AV. 3,17,3 hierher zu ziehen: *gute Furchen machend* (vom Pfluge); doch lesen VS. 12,71 und TS. 4,2,5,6 सुशेव. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Bindusâra Burnouf, Intr. 359. Târan. 287. — 3) f. या N. pr. der Mutter Padmaprabha's, des 6ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi, H. 39. — Vgl. सुषीम.

सुसुख adj. (f. या) zur Erklärung von सुशेव Nir. 3,8. von सूनय 6,33. 1) *sehr angenehm,* — *behaglich:* सभा Harîv. 12661. °म् adv.: उवास तत्र सु° R 1,10,36. 24,22. R. Gorr. 1,31,16. 4,20,13. Spr. (II) 244, v. l. सुमुख am Anf. eines comp. als adv.: सुमुखोपित R. 3,92,6. °दृश्येषु (so ist zu schreiben) *unter den Dingen, die man sehr gern sieht,* Paṇḍar. 1,1,78. — 2) *sich sehr behaglich fühlend* R. 3,15,23.

सुसुखिन् adj. = सुसुख 2) R. Gorr. 1,71,25.

सुसुखोदय adj. *grosses Wohlbehagen im Gefolge habend,* — *bewirkend:* देश R. Gorr. 1,31,20.

सुसुगन्ध adj. *überaus wohlriechend* MBu. 3,1739. Varâh. Bṛh. S. 48, 32. 60,10, v. l.

सुसुगन्धि adj. dass. MBu. 7,2920. R. 1,9,13. 7,75,3. Varâh. Bṛh. S. 54, 122.

सुसुतम adj. zur Erklärung von सुपूतम Çat. Br. 3,9,8,5.

सुसुन्दर adj. *überaus hübsch* Açoḳâvad. 23.

सुसुरप्रिया f. *Jasmin* (*den Göttern überaus lieb*) Râǵân. 10,75.

सुसूक्ष्म 1) adj. (f. या) *a) überaus fein,* — *klein,* — *unbedeutend:* Stoff, Gewand MBu. 1,5978. Kâṭhaka-P. im ÇKDa. (unter सूक्ष्म). °तार Varâh. Bṛh. S. 11,44. रन्ध्र Spr. (II) 7143. Feuer 5100. शोक 6330. R. 2,60,9. — *b) überaus fein* vom Verstande MBu. 12,2222. — *c) sehr schwer zu fassen,* — *zu ergründen* Muṇḍ. Up. 1,1,6. सुसूक्ष्मार्थ शास्त्रम् R. 2,78,26 (79,8 Gorr.). — 2) m. oder n. *Atom* Verz. d. Oxf. H. 50,*b*,31.

सुसूक्ष्मपत्त्रा f. = यवमासी *eine Narde* Dhanv. 3,32. — Vgl. सूक्ष्मपत्त्रा.

सुसूत्र adj. wohl doppelsinnig Verz. d. Oxf. H. 120,*b*,2.

सुसूप् s. सुषूप्.

सुसेन hier und da fehlerhaft für सुषेण.

सुसेवित adj. *wohl bedient:* नृपति Spr. (II) 7100.

सुसेव्य adj. *wohl einzuschlagen:* मार्ग Bhâg. P. 3,33,10.

सुसैन्धवी f. *eine schöne Stute aus dem Induslande* Kathâs. 121,278.

सुसौभग n. *eheliches Glück* Bhâg. P. 6,19,23.

सुस्कन्दन m. *eine best. Pflanze,* = वर्वर Râǵân. 10.173. — Vgl. सुकन्दन.

सुस्कन्ध adj. *einen schönen Stamm habend* Varâh. Bṛh. S. 55,6.

सुस्कन्धमार m. einer der vier *Versucher* (मार) bei den Buddhisten Vâlp. beim Schol. zu H. 238.

सुस्तना und °नी adj. f. *schöne Brüste habend* P. 4,1,54, Schol. Vop. 4,17.

सुस्तम्भ m. *ein guter Pfeiler* Spr. (II) 331.

सुस्त्री f. *ein braves* —, *treues Weib* Spr. (II) 2795. Kathâs. 39,2. 166. 104,109. — Vgl. सौस्त्र.

सुस्थ adj. (f. या) *dem es wohlgeht, gesund, sich behaglich fühlend, wohl auf, guter Dinge* M. 1,33. 4,142. 8,216. fg. MBu. 2,269. Harîv. 684. Sûçr. 2,548,8. Siddhântas. 65. R. 3,66,13. 4,13,9. 5,79,16. 6,23,31. 98, 7. Uttarar. ed. Cow. 16,13. Spr. (II) 2982, v. l. 4528, v. l. 4706. 5437. Kâraṇḍ. 27. Sin. D. 132,17. Verz. d. Oxf. H. 128,*b*,14. Mâlav. P. 22, 27 (das Versmaass verlangt स्वस्थ). Paṇḍar. 2,2,73. Hit. 128,13. °चित्त

adj. MBu. 9,243. °मानस adj. R. Gorr. 2,22,6. °वृत्त Suçr. 2,302,12. Kim. Nitis. 5,48. सुसुस्वशरीर adj. Çiç. Cr. 43,10. fg. सुस्थतर R. 6,36, 98. सुस्थ इन्दो Jâán. 1,80 giebt Strenzler durch wenn der Mond glücklich steht wieder; es ist aber wohl der gesunde d. i. volle Mond gemeint. Sehr häufig bietet die v. l. स्वस्थ.

सुस्थता (von सुस्थ) f. *ein Gefühl des Wohlbehagens, Gesundheit* Çabdâs. im ÇKDr. सुस्थतामिती R. 6,26,23.

सुस्थय् (wie oben), °यति *Jmd zum Wohlbehagen bringen, — gesund machen* Bhatt. 3,33.

सुस्थल m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 2,590. vielleicht ist auch im gaṇa भर्गादि zu P. 4,1,178 सुस्थल st. सुस्थाल zu lesen.

सुस्थान n. *ein guter —, schöner Ort* Kathâs. 121,181. zugleich als musikalischer terminus Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 37.

सुस्थाल s. सुस्थल.

सुस्थित 1) adj. *a) eine feste Stellung einnehmend:* ब्रह्मन् R. Gorr. 2, 66,20. — *b) auf dem richtigen Wege befindlich, unschuldig:* यन्मां दिपसि दोषेण वेदात्मानं च सुस्थितम् Harîv. 3080. — *c) dem es wohlgeht, sich behaglich fühlend, guter Dinge* R. 2,25,39. Mâlatîm. 86,11. Kathâs. 27,19. 58,52. 124,51. Spr. (II) 3701. 3968. 7612. पुत्रे शय्यायां सुस्थितं विधाय Pañcat. 238,16. चेतस् R. 1,13,36 (सुष्ठित Schl.). यतरात्मन् 2, 73,23. Spr. (II) 4756. स्व° 2821, v. l. — 2) m. N. pr. eines Daçapûrvin Wilson, Sel. Works 1,336. fg. — 3) n. (sc. वास्तु) *ein Haus, das nach allen vier Seiten eine Gallerie* (वीथिका) *hat,* Varâh. Bṛh. S. 53,21. — Vgl. सौस्थित्य.

सुस्थितत्व n. nom. abstr. zu सुस्थित 1) c); = निर्वृति Trik. 3,3,161.

सुस्थितंमन्य adj. *sich behaglich fühlend* Spr. (II) 6877, v. l.

सुस्थिति f. 1) *ein schöner Standort* Ragh. 8,36. — 2) *ein Gefühl des Wohlbehagens* Mbh. 1. 120.

सुस्थिर 1) adj. (f. आ) *fest stehend, von langem Bestand, sehr dauerhaft:* देह Spr. (II) 20. ज्ञान Bhâg. P. 11,9,31. — 2) f. आ *eine best. Arterie* (oder *Ader*) Pañcar. 2,8,10. 14.

सुस्थिरंमन्य adj. *auf festen Füssen zu stehen meinend* Spr. (II) 6877.

सुस्थिरवर्मन् m. N. pr. eines Sohnes des Sthiravarman Hall in der Einl. zu Vâsavad. 52.

सुस्थेय adj. n. impers. *leicht zu stehen* oder n. *ein leichtes Stehen:* सुस्थेयं नृधारासु निशितासु — धारणासु तु योगस्य दुःस्थेयमकृतात्मभिः MBu. 12,11090.

सुस्ना m. *Lathyrus sativus* Râǵân. im ÇKDr.

सुस्नात adj. *der durch ein Bad ganz rein geworden ist* Spr. (II) 7144. Bhâg. P. 4,27,2. insbes. nach Vollziehung eines Opfers Çârdar. im ÇKDr. — Vgl. सौस्नातिक.

सुस्निग्ध adj. *schön glatt, — weich* Pañcar. 1,7,31. 3,5,7. कृत्ति, छद Varâh. Bṛh. S. 51,2.

सुस्नुष adj. (f. आ) *eine gute Schwiegertochter habend* ṚV. 10,86,13.

सुस्पर्श adj. *angenehm bei der Berührung, sehr weich, — zart* Bhâg. P. 3,33,16. 11,7,60.

सुस्पष्टम् adv. *ganz offenbar* Râǵa-Tar. 7,954.

सुस्मित adj. (f. आ) *anmuthig lachend* H. 307.

सुस्रंस् adj. *schöne Gewinde tragend* AV. 20,128,15. Çat. Br. 13,5,4,15.

सुस्रंस् adj. *leicht abfallend* AV. 7,76,1.

सुस्रोतस् adj. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,222. m. oder f. N. pr. eines Flusses Harîv. 12827. सुस्रोणा die neuere Ausg.

सुस्वध m. pl. Bez. *bestimmter Manen* Harîv. 993; vgl. Verz. d. Oxf. H. 40,*a*,2.

सुस्वधा f. *Wohlergehen:* सुस्वधास्त्विति तान् (d. i. zu den Manen) वदेत् Mârk. P. 31,57.

सुस्वनम् adv. *laut:* रुद् R. Gorr. 2,57,21. प्र-रुस् 7,37,5,33.

सुस्वप्न m. *ein schöner Traum* Râǵa-Tar. 4,497. °दर्शने 5,473.

1. सुस्वर m. *ein richtiger Ton, — Accent* Çikshâ in Ind. St. 4,268. 270.

2. सुस्वर 1) adj. (f. आ) *a) eine schöne Stimme habend* MBu. 1,7056. R. 3, 23,18. *wohlklingend:* वीणा Kathâs. 106,25. पतिणां वाचः Varâh. Bṛh. S. 22,6. यतर Bhâg. P. 5,2,6. °म् adv.: गायति Spr. (II) 5367. — *b) laut:* वाच् Harîv. 5116. °म् adv.: प्राक्रसत् MBu. 2,1814. प्ररुरोद 3,2947. 5, 6049. 7,2071. R. 1,46,19 (47,19 Gorr.). 2,29,26. 30,28. Mârk. P. 52,3. Bhâg. P. 4,28,47. 5,14,32. 9,10,25. 10,39,31. 44,44. — 2) m. *a) Muschi* Râǵân. 13,125. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBu. 5,3599. — Vgl. सौस्वर्य.

सुस्वर्क adj. ṚV. 5,44,8 nach Sây. = शोभनगमन oder शोभनस्तुतिक. — Vgl. स्वर्क.

सुस्वाद् adj. (f. सा) *wohlschmeckend:* सागर Spr. (II) 5241. नद्य: Râǵa-Tar. 4,238.

सुस्वाप m. *tiefer Schlaf* H. ç. 88.

सुस्विन्न adj. *gut gedämpft:* शालि Karaka 1,15. Suçr. 1,230,3. चरु Schol. zu Kâty. Çr. 338,6.

सुस्मल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1188. 1361. 1511 u.s.w. — Vgl. सौस्मल.

सुस्रु, सुस्रुति Dhâtup. 26,21 (चकार्थे, शब्दे, तृप्तौ).

सुस्रुणमुख N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,36.

सुस्रुत adj. *gründlich zerschlagen, — erschlagen* Snâpv. Br. 3,1. शत्रवो हता नहि हता रिपवो भवन्ति प्रज्ञाक्लान्तास्तु रिपवः सुस्रुता भवन्ति Spr. (II) 6437.

सुस्रेन adj. *leicht zu schlagen, — erschlagen:* वृत्रा ṚV. 4,22,9. 7,25, 5. दस्यु 10,105,7. SV. Naig. 4,11.

सुस्रुन adj. *schöne Kinnladen habend;* m. N. pr. eines Asura MBu. 2,365.

सुस्रुस्रु adv. *leichten Schlages:* वं वृत्राणि रन्धया सुस्रुस्रु ṚV. 7,30,1. वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दभीतये सुस्रुस्रु 19,4.

सुस्रुप s. सस्रा°.

सुस्रुर m. N. pr. eines Asura MBu. 1,2660. सस्रुर ed. Bomb.

सुस्रुल und °लि adj. P. 5,4,121.

सुस्रेव 1) adj. (f. आ) *a) der sich leicht rufen lässt, gern hört:* तमिद्ध इन्द्रं सुस्रेव ऊतये ṚV. 4,16,16. 7,93,1. पितेव चारुः सुस्रेवः 3,49,2. 5, 46,7. स्रेवं स्रेवे सु° 8,47,11. 7,40,4. AV. 7,10,1. 20,4. VS. 19,61. — *b) schön anrufend:* सुस्रेवेभिरर्चद्भिः प्रणेतु ṚV. 10,64,4. स्तोम AV. 17, 1,11. प्राण Ait. Br. 2,21. — 2) n. *gelungene —, günstige Anrufung:* शं नो देवानां सुस्रेवानि सन्तु ṚV. 7,35,3. AV. 19,7,2. 8,2. 7,48,1 (ṚV. v. l.). 11,1,26.

सुकर्विस् 1) adj. *der eine gute Opfergabe bereit hat* RV. 4,2,4. — 2) m. N. pr. eines Âṅgirasa Pañcav. Br. 14,3,25. eines Sohnes des Bhumanju MBh. 1,3714. — Vgl. सोकर्विस.

सुकर्वीतुनामन् adj. *dessen Name d. h. Person sich leicht rufen lässt* RV. 9,85,6.

1. सुकर्व्य adj. (f. या) *zur Anrufung geeignet:* सुष्टुति RV. 4,43,1.

2. सुकर्व्य adj. (सुकर्व्या nach gaṇa क्षत्रादि zu P. 6,2,119) *dessen Opfer gelingt* RV. 1,74,5.

सुकर्स्त 1) adj. a) *schönhändig* RV. 3,57,2. 5,42,12. 43,2. TS. 3,10, 8,4. — b) *geschickt mit der Hand:* गोदुह् RV. 1,164,26. Ṛbhu 4,33, 8. 35,3. 9. 7,35,12. Çâṅkh. Ça. 8,20,3. RV. 5,43,4. 9,97,37. 10,30,2. — 2) m. N. pr. a) eines Soma-Wächters VS. 4,27. — b) eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2737. 4549. 7,6938.

सुकर्स्तिन् m. N. pr. eines Daçapûrvin H. 34. Wilson, Sel. Works 1,336. fg.

सुकर्स्त्य 1) adj. *geschickt mit der Hand:* घर्घर् RV. 10,41,3. 1,64,1. या धावत सुकर्स्त्यः (°स्त्याः) 9,46,4. 107,21 ist wohl सुकर्स्त्यां zu betonen. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi mit dem metron. Ghaushoja, Liedverfassers von RV. 10,41, RV. Anukr.

सुकार्द् adj. 1) *der ein gutes Innere* d. h. *einen guten Magen u. s. w. hat:* Indra RV. 8,2,5. — 2) *gutherzig; vertraut, befreundet* (Gegens. दुष्कार्द्); nom. सुकार्दा AV. 2,7,5. यत्र सुकार्दाः सुकृतो मदन्ति 3,28,5. 6. 8, 120,3. 19,32,6. — Vgl. सुकृद्, सोकार्द, सोकार्य.

सुकास adj. (f. या) *anmuthig lachend* Kâdamb. 112.

सुकासिन् adj. dass. unsig.: पुष्प° (तरु) Varâh. Bṛh. S. 51,2.

सुकिंस् adj. Declin. Vop. 3,133.

सुक्षित (क्षित = धित von 1. धा) 1) adj. = विक्षित Viçva im ÇKDa. a) *sehr passend, — angenehm:* क्षेम्यः *den Sinnen* Nir. 3,13. 5,26. — b) *sehr heilsam, — ersprießlich:* वयस् R. Gorr. 1,10,1. — c) (*sich behaglich fühlend*) *vollkommen befriedigt* (insbes. durch den Genuss von Speise und Trank), *ganz satt, voll* H. 426. Viçva im ÇKDa. न सत्रा सुक्षित इव स्यात् Çat. Br. 1,6,2,31. पाययतैनत्सुक्षितं कुरुत 8, 2,9. 2,1,4,4. पशोः सुक्षितस्योत्तरः कुक्षिरुन्नततरो भवति 7,5,2,38. सुक्षितः सुखे शयने शयानः 14,5,2,4. Çâṅkh. Br. 10,1. Ait. Br. 3,39. 47. गृहेषु सुक्षितो वसति 8,26. Liṭ. 5,1,12. Kâṭy. Ça. 2,1,10 (घ°). P. 2,2, 11. Varâh. Bṛh. S. 51,29. मत्स्यादनेन पुष्टः सुक्षितश्च Pañcat. ed. orn. 41,5. Bei dieser Bed. könnte man auch an 1. धि denken. — 2) f. या Bez. *einer der Zungen des Feuers* Gaṭâdh. im ÇKDa. — 3) n. *Sättigung, Fülle:* सुक्षिते मा धाः TS. 1,5,10,1. — Vgl. सोक्षित्य.

सुक्षिरण्यँ adj. P. 6,2,119, Schol. *schönen Goldschmuck tragend, — besitzend* RV. 1,125,2. 4,4,10. VS. 29,6.

सुक्षिरण्यँव adj. dass. AV. 20,128,7. Çâṅkh. Ça. in Ind. St. 5,386.

सुकृत 1) adj. (f. या) a) *richtig geopfert:* क्रविस् RV. 8,49,14. क्रोत्रा VS. 7,15. AV. 6,71,1. 10,9,26. TS. 7,3,12,1. Kâṭy. Ça. 25,9,6. मख R. ed. Bomb. 1,20,28. सुपत्न 7,83,6. — b) *dem richtig geopfert worden ist:* सवन: Bhâg. P. 8,18,31. Pañcat. 182,17. — 2) n. *ein richtiges Opfer* Çat. Br. 14,9,4,24. Âçv. Ça. 2,2,18. Gṛhj. 1,10,23. °कृत् Ça. 2,2,15. °कृत् Gṛhj. 1,10,23.

सुकृतावृध् adj. *ein richtiges Opfer essend* RV. 9,71,4.

सुकृत् 1) adj. *gut —, schön rufend:* Zunge VS. 1,30. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena Bhâg. P. 9,24,28.

सुकृति adj. v. l. AV. 7,4,1 für स्वभूति der VS. 27,33.

सुकृत्ता (von सुकृद्) f. *Freundschaft* R. 2,21,51. 5,90,6. Râga-Tar. 4,114.

सुकृत्य (wie oben) n. dass. R. 6,36,95. Kathâs. 10,20.

सुकृद् 1) m. a) *Freund*, auch *ein politischer Freund, Alliirter* (auch von Planeten) P. 5,4,150. AK. 2,8,1,12. 17. H. 714. 730. Hall. 2,273. Liṭ. 3,3,3. 9,8,6. Kauç. 27. 50. 53. 62. M. 7,32. 9,294. MBh. 3,1810. 2263. R. 2,39,35. Suçr. 1,111,18. 112,18. 118,20. Kim. Nîtiç. 1,16. Megh. 39. 77. 98. Ṛt. 1,27. Çiç. Ca. 141,4. Spr. (II) 844. 1131. 1345. 2608 (सुकृदो जनाः *befreundete Männer*). 4065. 4258. 7145. fgg. 7341. Varâh. Bṛh. S. 2,24. 9,39. 17,4. 19,18. Bṛh. 2,16. 19. 19,4. Lagh. 2, 10. fg. Kathâs. 18,341. Bhâg. P. 3,23,6. 25,21. 5,10,9. 26. प्रिय° Vikr. 11,13. Hit. 14,21. सुकृज्जन R. 2,31,28. 82,30. सुकृन्मित्रम् cop. comp. Spr. (II) 6551. सुकृत्प्राप्ति Siddhânt. 51. सुकृद्रेद् Hit. 4,3. सुकृद्वध M. 11,36. 38. अ°, स° adj. compp. Spr. (II) 784. सुकृत्तम MBh. 1,7491. Spr. (II) 772, v. l. Bhâg. P. 1,9,30. 3,15,31. 4,30,21. 5,2,12. 7,2,34. 10,38, 30. 33. — b) Bez. *des 4ten astrologischen Hauses* Varâh. Bṛh. 11,6. Lagh. 1,15. — 2) f. *Freundin* Gorr. 2,10,40. Kâç. 76. दुर्लभा च सुकृच्चारी Spr. (II) 2876, v. l. — Vgl. अ°, किं°, मधु°, वि°, सुकार्द्, सोकृद्.

सुकृद m. = सुकृद्द *Freund* oder = सुकृदय *gutherzig:* Çiva MBh. 13,1214.

सुकृदय adj. *gutherzig* AK. 3,1,2. अग्निर्वै देवानां सुकृदयतमः Ait. Br. 7,16. Kâṭy. 11,6. schlechte v. l. für सकृदय Spr. (II) 2999. — Vgl. सोकृदय.

सुकेमन् m. *ein guter Winter* Çâṅkh. Gṛhj. 4,18. Pâr. Gṛhj. 3,2.

सुकेतद् und सुकेतद् m. 1) *ein guter Opferer* RV. 7,67,3. TS. 7,1, 8,1. RV. 3,92,12. — 2) N. pr. eines Sohnes des Bhumanju MBh. 1, 3714. des Vitatha Harîv. 1732. — Nach dem Schol. zu P. 5,4,158 adj. comp.

सुकेत्र m. 1) N. pr. verschiedener Personen: Bhâradvâga, Liedverfasser von RV. 6,31. fg. Bârhaspatja Ind. St. 3,244,*b*. aus Atri's Geschlecht Mârk. P. 118,24. — MBh. 3,987. Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,28. ein Lehrer Wilson, Sel. Works 1,211. ein Fürst MBh. 1,224. 7,3184. fgg. 12,917. fgg. ein Kaurava 3,13249. ein Sohn Sahadeva's 1,3832. VP. 460. Bhâg. P. 9,22,30. Bhumanju's MBh. 1,3714. Bṛhatkshatra's Harîv. 1053. VP. 451. Kâṅkanaprabha's Harîv. 1416. VP. 398, N. 3. Kâṅkana's 398. Vitatha's Harîv. 1732. Sudhanvan's 1802. Sudhanus' VP. 455. Bhâg. P. 9,22,5. Kshatravṛddha's 17,2. VP. 406. N. pr. eines Daitja MBh. 12,8268. eines Affen R. 4,41,3. — 2) pl. Bez. *der Verehrer einer best. Form des Feuers* Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,10. — Vgl. सोकेत्र, सोकेत्रि.

सुक्ष्म m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 1,4221. 4453. 2,1029 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 1090. 1099. 8,236. Harîv. 4968. 12832. Râgat. 4,35. Varâh. Bṛh. S. 5,37 (°क्षत्राः). 14,5. 16,1. P. 4,2,31, Schol. Hall. in der Einl. zu Vâsavad. 53. Daçak. 96,7. 142,4. H. an. 2,131. Med. kh. 3 (an den beiden letzten Stellen सुक्ष्म geschr.). Zurückgeführt wird der Name des Volkes auf सुक्ष्म einen Sohn des Dîrghatamas und der

Sudeshṇâ, der Gemahlin Bali's, MBh. 1,4219. 4221. VP. 444. Bhâg. P. 9,23,4. auf einen Sohn Kâṅkaneshudhi's = Bali in einer früheren Geburt Harîv. 1684. — Vgl. प्र° und सौक्ष्म.

सुक्षक am Ende eines adj. comp. = सुक्ष Harîv. 1692.

सुक्षनगर n. *die Stadt der* Suhma P. 6,2,89, Schol. — Vgl. सौक्षनगर.

सुक्षान zur Erklärung von सुक्ख Nir. 11,31. 33.

1. सू (*in Bewegung setzen*) *veranlassen* s. s. w. s. 2. सु.

2. सू (= 1. सू) adj. in 1. सुपू. असुसू Kîs. 15,5 so v. a. असून्प्रेरयति = बाण nach Mallin.

3. सू *zeugen, gebären* s. 4. सु.

4. सू (= 3. सू) m. *Erzeuger* ṚV. 1,146,5. VS. 18,7. f. *Gebärerin* ṚV. 1,32,9. zu vermuthen in der Stelle भर्तेव गर्भं स्वमिच्छ्वो धुः (स्वाम् zu sprechen सुवाम्) 5,58,7. In der späteren Sprache nur am Ende eines comp. in der Bed. *Vater, Mutter* oder *erzeugend* in übertr. Bed. P. 3, 2,61. H. 5. कृतवीर्यसू m. *Vater des* Bhâg. P. 9,23,22. इन्द्रजितसू Bhaṭṭ. 9,2. वेनसुवम् *die Mutter des* Bhâg. P. 4,13,47. व्यास° Trik. 3,3,222. वज्ररत्न° adj. f. *erzeugend, hervorbringend* Râgân. 8,28. स्वर्णधातुसुवं गिरिम् Râga-Tar. 4,394. 604. — Vgl. घ°, घस्रः°, कर्ण°, काम°, कालिन्दी°, कुमार°, शीव°, दत्र°, देव°, धर्म°, नव°, पुत्र°, पूर्व°, बज्र°, विघ्र°, वोत्र°, ब्रघ्न°, भीष्म°, यम°, रत्न°, रुद्र°, विश्व°, वीर°, शत°, सकृत्सू, सप्त°, सप्तपुत्र°, सुधा°, सुमुख° und 2. सुपू.

सूक m. 1) *Wind.* — 2) *Pfeil.* — 3) *Lotusblüthe* H. an. 2,21. Med. k. 38. — 4) N. pr. eines Sohnes des Hrada Harîv. 217 nach der Lesart der neueren Ausg., मूक die ältere. — Vgl. देवसूकक्षेत्र in den Nachträgen.

सूकर 1) m. *a) Schwein, Eber* AK. 2,5,2. 10,22. Trik. 2,5,5. 3,3,96. H. 1281. 1287. Hall. 2,71. 5,46. Râgân. 19,29. ṚV. 7,55,4. AV. 2,27, 2. 5,14,1. 12,1,48. VS. 24,40. Kâṭh. Up. 5,10,7. M. 3,241. 8,239. 295. 11,136. 12,55. Jâgñ. 3,207. MBh. 2,1882. 3,16039. Suçr. 1,74,14. Spr. (II) 1111. 4922. Varâh. Bṛh. S. 9,40. 33,28. 51,34. 55,20. Kathâs. 26, 171. 61,101. Bhâg. P. 3,10,20. 11,36. 13,21. 33. 19,16. 31. 37. 8,10,11. Pârâṇ. 1,2,40. 2,2,68. Verz. d. Oxf. H. 92,b,7 v. u. Pârâṇ. 120,12. Hit. 34,20. दंष्ट्रा सूकरस्य wohl *eine best. Pflanze* Suçr. 2,120,16. Am Ende eines adj. comp. f. घा P. 4,1,14, Schol. Vielleicht in सू-कर *den Laut* sû *hervorbringend* zu zerlegen. Wird in dieser wie in den folgenden Bedd. und compp. häufig शूकर (hier und da auch in den Bomb. Ausgg.) geschrieben. — *b) eine Hirschart* Gaṇiṣn. im ÇKDr. — *c) Töpfer* Çabdar. im ÇKDr. — *d)* Bez. *einer best. Hölle* VP. 207. fg.; vgl. सूकरमुख. — 2) f. ई *a) Sau* Schol. zu P. 4,1,14. 63. Jâgñ. 3,236. R. 5, 17,21. Spr. (II) 1111. Kathâs. 33,118. fg. घरण्य° 39,138. — *b) ein best. Vogel* Varâh. Bṛh. S. 86,37. — *c) Batatas edulis* Râgân. 7,85. *Mimosa pudica* Çabdam. und Çabdar. im ÇKDr. — *d)* N. pr. einer Göttheit Kâlikâkha 1,119. 3,151. 4,26. 5,15. — Vgl. पत्त°, वनशूकरी, सौकरेय.

सूकरक (von सूकर) 1) m. *eine Reisart* Varâh. Bṛh. S. 29,2. — 2) f. सूकरिका *ein best. Vogel* Varâh. Bṛh. S. 88,9. — 3) n. = सूकरनयन Varâh. Bṛh. S. 79,36.

सूकरकन्द m. *Batatas edulis* Râgân. 7,86.

सूकरक्षेत्र n. N. pr. *eines heiligen Gebiets:* °मद्भिमन् Verz. d. B. H. 144,8.

सूकरता f. nom. abstr. von सूकर *Schwein, Eber* M. 3,190.

सूकरदंष्ट्र und °क m. *eine gewisse schmerzhafte Entzündung und Bethung der Haut, mit Fieber verbunden,* Bhâvapr. 7.

सूकरनयन n. *Eberauge* als Bez. *eines Loches von best. Form im Zimmerholze* Varâh. Bṛh. S. 79,32. सूकरनयनं विषमं विवर्णमध्यर्धपर्वदीर्घं च छिद्रम् 34.

सूकरपदी gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139.

सूकरपादिका f. *eine best. Pflanze,* = कोलशिम्बी Râgân. im ÇKDr.

सूकरपादी f. *eine best. Pflanze* Varâh. Bṛh. S. 54,48.

सूकरप्रेयसी f. *die Geliebte des Ebers* als Bez. *der Saw* und *der Erde* (die Vishṇu als *Eber* aus den Wassern zog) Kathâs. 124,221. 222.

सूकरमुख n. *Eberschnauze* als N. *einer Hölle* Bhâg. P. 5,26,7. 16; vgl. सूकर 1) *d*).

सूकरसद्मन् m. N. pr. eines Mannes P. 6,4,144, Vârtt. 1. — Vgl. सौकरसद्म.

सूकराक्षासा f. = वराहक्रान्ता Çabdar. im ÇKDr.

सूकरालिता (von सूकर + अक्षि) f. *eine Deformität des Auges, welche durch eine Operation entstehen kann* (सूकरस्येवाक्षिदृष्टित्वम् Comm.) Suçr. 2,346,5.

सूकरास्या (सूकर + आस्य) f. N. pr. einer Gottheit Kâlikâkha 3,134.4,39.

सूकरिक *eine best. Pflanze* Varâh. Bṛh. S. 54,88.

सूकरिकावदान n. Titel einer *Legende* Burnouf, Intr. 39.

सूकरेष्ट (सूकर + 1. इष्ट) 1) adj. *den Schweinen lieb.* — 2) m. *die Wurzel von Scirpus Kysoor* (कशेरु) Roxb. Râgân. im ÇKDr.

सूक्त (d. सु + उक्त) 1) adj. *wohl —, schön gesprochen, — restituirt:* सूक्तेन वचसा नवेन ṚV. 2,18,2. 1,36,1. 5,44,4. 9,90,6. AV. 20,127,4. VS. 18,5. सूक्तं सुधर्मणा वाचम् MBh. 4,984. 5,2662. Harîv. 8616. Verz. d. Oxf. H. 47,a,11 v. u. Bhâg. P. 4,1,26. 12,10,34. — 2) f. घा *Predigerkrähe* (*schön sprechend*, also adj. comp.) Trik. 2,5,22. — 3) n. *a) eine schöne Recitation, ein guter Spruch, ein schönes, — gutes Wort* ṚV. 2,6,2. सूक्तैरभि गृणीमसि 1,42,10. 171,1. 7,29,3. इदं सूक्तं मरुतो जुषन्त 58,6. काण्वंरते सूक्तैः 68,9. 8,44,2. 9,9,8. 10,61,26. VS. 21,61. सर्वा सूक्तं व्याघलाणः Çat. Br. 13,4,3,3. 1,9,2,1 (parox.). साङ्ग्रन्योन्यसूक्तानि MBh. 8,2037. Harîv. 1398. Mṛicch. 63,9. Ragh. 15,97. Spr. (II) 1348, v. l. 3072. 6330. 7137. सूक्तैस्तुष्टाव तं देवम् Kathâs. 55,179. 180 (= सुभाषित). Râga-Tar. 3,186. Prab. 20,11. Bhâg. P. 1,5,23. 3, 7,18. 25,36. 4,22,17. 5,19,28. 9,14,33. सत्कवि° Pârâṇ. 266,5. ed. orn. 32,9. — *b)* in der technischen Sprache *der Hauptbestandtheil des* Çastra; bei den Comm. *das metrische* Veda-*Lied* Çâṅkh. Br. 14,1. 15,3. Ait. Br. 2,33. 3,11. सूक्तानि शस्यन्ते 4,21. 6,3. TS. 5,4,3,3. 7,1. 3,1. Çat. Br. 13,3,6,18. Lâṭy. 1,8,14. Kauç. 7. 8. 16. Âçv. Çr. 3,1,15. Gaim. 3,8,21. बह्वृनि दशतयीषु सूक्तानि Nir. 11,16. 4,6. ṚV. Pâiṭ. 15, 14. fg. 17,20. 18,30. fg. सूक्तं वाब्र्देवतं वपेत् M. 11,132. पौरुष 231. 260. Weber, Rasuparâs. 303. Vop. 6,75. Bhâg. P. 3,4,4. रवि° Hymne an die Sonne Mârk. P. 109,33. — Vgl. पुरुष°, बज्र°, मत्स्य°, मका°, यम°, रात्रि°, राम°, रुद्र°, लक्ष्मी°, वामन°, विष्णु°, शक्ति°, साम°.

सूक्तभाज् adj. *ein Lied besitzend* d. h. *in einem Liede angerufen* Nir. 2,13. 7,13. 10,42. Bhadd. in Ind. St. 1,113.

सूक्तवाक् n. (m. nach P. 2,4,29, Vârtt. 1) *das Aussprechen eines*

Spruches oder *Liedes, Recitation* RV. 10,88,7. s. VS. 19,29. 21,61. TS. 2,6,9,5. TBr. 3,3,8,11. Çat. Br. 1,8,3,10. 13. 9,4,4. °कं होता प्रतिपद्यते 2,5,3,43. Âçv. Çr. 1,9,1. 3,4,11. 5,3,11. 6,11,4. Weber, Nax. 2,317. 319. Bhâg. P. 5,21,17. — Vgl. सक्°.

सूक्तवाक m. *ein guter —, schöner Spruch, ein gutes Wort* Bhâg. P. 1,1,10. 3,8,14. 11,26,16.

सूक्तवाच् adj. *einen Spruch sprechend* u. s. w.: वक्तृणो RV. 5,49,5. TS. 3,3,3,2. Âçv. Çr. 1,9,1. Çat. Br. 1,9,3,4.

सूक्तानुक्रमणी *f. das Verzeichniss der* Sûkta (*Hymnen*) Brhadd. in Ind. St. 1,102.

सूक्ति (v. सु + उक्ति) *f. ein schöner Ausspruch, ein schönes Wort* Kâm. 34,5 in Ind. St. 3,477. उवाच परया सूक्त्या R. 2,109,1. Spr. (II) 1420. 1548. कवि° 1583. 2752. 3363. 7154. Verz. d. Oxf. H. 110,*a*,24. 120,*a*, 23. °रत्नाकर m. *eine Fundgrube für Perlen von schönen Aussprüchen* Sin. D. 8,12. als Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 721. fgg. °सरस्न. desgl. Z. d. d. m. G. 27,100 (°सारस्न Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,43). — Vgl. सभा°, सिद्धान्त°, सुभ्य°.

सूक्तोक्ति (सूक्त + उ°) f. = सूक्तवाक VS. 8,25.

सूक्तोक्थ्य (सूक्त + उ°) adj. *im* Sûkta *zu sprechen* TBr. 3,5,10,1. Âçv. Çr. 1,9,1.

सूक्ष्म Uṇâdis. 4,176. 1) adj. (f. घा) *a) fein, schmal, dünn, klein* AK. 3,2,11. H. 1427. an. 2,341. Med. m. 36. Halâj. 4,3. Faden Jâén. 2,179. Suçr. 1,93,15. Paṇḍar. 1,7,25. 2,4,25. Stoff, Gewand MBh. 2,1892. Harîv. 3595. R. 1,9,16. 2,37,7. 39,6. 3,52,9. Çiñç. Saṁs. 1,4,18. Paṇḍar. 1,3,26. Haare MBh. 4,214. R. 3,49,3. 6,23,11. Bhâg. P. 4,21, 17. °चक्रेशवाल (वालिन्) Varâh. Bṛh. S. 66,1. सूक्ष्माणि पञ्च दशनाङ्गुलिपर्वकेशाः साकं त्वचा कररुहाश्च 68,87. 96. सूक्ष्मा सूक्ष्मेषु सप्तसु MBh. 3,9939. सूक्ष्मास्यपदविक्रम Varâh. Bṛh. S. 86,9. Linie 68,49. Pfad Suçr. 1,184,18. Spr. (II) 6039. कार्यसिद्धिपथ Mâlav. 64. रज्जु M. 8,132. पिष्टक Spr. (II) 391. Sand R. 1,2,7. घञ्जनचूर्ण R. Gorr. 1,36,16. Tropfen R. Schl. 2,74,14. Spr. (II) 2980. Çiç. 18. fg. बीजाङ्कुर Spr. (II) 5125. शस्तु 7156. स्यन्दन 7158. AK. 2,4,4,13. °तारक Varâh. Bṛh. S. 11,47. 80. कला Suçr. 1,18,20. न तस्य सूक्ष्ममप्यस्ति पदात्रे s. s. w. *die kleinste Stelle* MBh. 1,7694. सदृशय: etwa so v. a. *daumengross* 7,8728. *fein* von einem Tone AK. 1,1,3,3. H. 1410. गम्भीरसूक्ष्मया गिरा Paṇḍar. ed. orn. 53,8. सूक्ष्मतममानुनासिकम् (v. l. सूक्ष्मतरम्) so v. a. *kaum hörbar* Comm. zu TS. Prât. 17,3. सूक्ष्म *das Kleinste, Unbedeutendste* Spr. (II) 275. एनस् M. 11,253. दोष R. 2,101,18. गुणाः प्रारम्भसूक्ष्माः प्रथिमानमापुः Raghuv. 18,48. वर्ग Suçr. 2,275,18. प्रसङ्गाः Spr. (II) 7187. सूक्ष्मकार्यार्थदर्शिन् Raghuv. 4,13. कलौ सूक्ष्मतरो धर्मः *sehr gering* Uśśval. zu Uṇâdis. 4,176. im Gegens. zu दीर्घ so v. a. *kurz:* प्राणायाम Jogas. 2,50. — *b) fein* vom Verstande und seiner Thätigkeit: बुद्धि Kaṭhop. 3,12. R. 1,7,9. 5,76,15 (परम°). Kâm. Nîtis. 13,1. 2. धी 17,29. मति Vîsvâv. 2,2. निश्चय MBh. 5,316. विनिश्चय R. 4,21,14. सूक्ष्मो विवादो विप्राणां स्थूलो नाट्यो ज्यायसी MBh. 8,627. ज्ञान 13,1079. लोकस्य तर्कस्थानानि Kaṭhâs. 24,103. वस्तुविचारणा Prasannar. 20,12. Suçr. 1,13,20. *fein* so v. a. *genau, präcis* Colebr. Alg. 87. — *c) fein* so v. a. *aller Wahrnehmung sich entziehend, unfassbar; nur der Idee nach vorhanden; atomartig:* सूक्ष्मार्थन्याययुक्त MBh. 1,18. ये (अर्थाः) वा स्थूला ये च सूक्ष्मातिसूक्ष्माः Mârk. P. 23,46. प्रधानपुरुषातर Siddhânt. 37. धर्म MBh. 2,1340. 3,13629. Spr. (II) 3263. 7155. धर्मस्य गतिः 5439. MBh. 3,13703. आत्मनो गतिः Bhâg. P. 6,16,61. कर्मन् R. 4,21,6. विधिचेष्टित Kâm. Nîtis. 12,28. अभ्युपाय Spr. (II) 4945. द्रव्यसूक्ष्मविपाक Bhâg. P. 7,15,30. वाच् Weber, Râmat. Up. 336. पुरुष Maitrâyaṇ. 2,5. Tattvas. 17. Ind. St. 1,385. 9,24. 164. रूपाणि Çvetâçv. Up. 5,12. Ind. St. 1,23,13. fg. M. 1,7. 16. fgg. 22. Jogas. 2,10. Varâh. Bṛh. S. 43,4. 75,4 (अति°). Verz. d. Oxf. H. 50,*b*, 36. fg. 51,*a*, N. 1. सूक्ष्माध्येश्वर Weber, Râmat. Up. 319. Bhâg. P. 3,26, 4. 4,24,35. 5,11,7. 16,8. 26,39. 8,4,20. 10,78,10 (°तर). Sarvadarçanas. 29,11. 54,19. 21. 55,10. 57,10. 76,11. देह 87,3. Bhâg. P. 3,19,10. शरीर Colebr. Misc. Ess. 1,245. 372. 418. Verz. d. Oxf. H. 226,*a*,2 v. u. Bhâg. P. 2,10,34 (°तम). Weber, Nax. 2,314. °भूत Sarvadarçanas. 149, 4. 164,17. — 2) m. (nach den Lexicographen) und n. *Atom, Urstoff; ein unfassbares Ding* H. an. Med. पञ्चतन्मात्राणां सूक्ष्माभिधानाम् Sarvadarçanas. 148,6. Siddhânt. 39. fg. Jogas. 1,44. fg. सप्त (= सप्तन्, सप्तकं कार and पञ्च तन्मात्राणि Nilak.) MBh. 13,1018. Mârk. P. 40,24. fg. Verz. d. Oxf. H. 230,*b*,27. सर्व° Bhâg. P. 3,8,13. = सर्वात्मन्, n. AK. 3,4,22,146. H. an. Med. m. Uṇâdis. im ÇKDa. unter सूक्ष्म. — 3) *eine best. rhetorische Figur* Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,4. — 4) = कतक, n. H. an. m. Çabdar. im ÇKDa. n. = केतव Med. m. = कृतक Uṇâdis. im ÇKDa. (unter सूक्ष्म). *feiner Betrug* ist ursprünglich wohl überall gemeint. — 5) Bez. *des Lautes* ऌ Weber, Râmat. Up. 317. fgg. (am Ende eines adj. comp. f. घा). — 6) m. N. pr. eines Dânava MBh. 1,2533. 2654. Harîv. 201. — 7) f. सा Bez. verschiedener Pflanzen: = यूथिका Çabdar. im ÇKDa. = कटभी Râéân. 10,107. = तुरैला und वालुका Râéân. im ÇKDa. — 8) सूक्ष्मम् adv. *fein* so v. a. *scharf* (hinsehen) Uttarar. 114,4 (154, 10). — Vgl. काशिक°, भूत° (auch Bhâg. P. 2,2,30. 3,5,31. 8,11. 21,30. 27,14. 4,24,34), महा°, सर्व°, सु°, सौक्ष्म्य.

सूक्ष्मकशफला m. = मध्यमजम्बुवृक्ष Ratnam. im ÇKDa.

सूक्ष्मघण्टिका f. *die kleine* Ghaṇṭikâ Râéân. 4,69.

सूक्ष्मचक्र n. *ein best. Diagramm* Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,35.

सूक्ष्मजातक n. Titel eines Werkes des Varâhamihira, = स्वल्पजातक Verz. d. Oxf. H. 329,*a*, No. 780.

सूक्ष्मटिक्क m. N. pr. eines Mannes Râéa-Tar. 8,524. — Vgl. बकुटिक्क.

सूक्ष्मतण्डुल 1) m. *Moha* Râéân. 4,166. — 2) f. घा *langer Pfeffer* Râéân. im ÇKDa. तीक्ष्णतण्डुला unsere Hdschr. 6,12.

सूक्ष्मता f. nom. abstr. zu सूक्ष्म 1) *c*): परमात्मनः M. 6,63. Verz. d. B. H. No. 614.

सूक्ष्मतुण्ड m. *ein best. beissendes Insect* Suçr. 2,238,5.

सूक्ष्मत्व n. = सूक्ष्मता Ind. St. 9,125. 133. Bhag. 13,15. धर्मस्य MBh. 1,7262.

सूक्ष्मदर्शिता (von °दर्शिन्) f. *Scharfsichtigkeit* (des Geistes) Mâlav. 21,17.

सूक्ष्मदर्शिन् adj. *scharfsichtig* (vom Geist) H. 344. Halâj. 2,218. Kaṭhop. 3,12. MBh. 13,611. 3037.

सूक्ष्मदल 1) m. *Senf* Râéân. 9,157. — 2) f. घा *Alhagi Maurorum Tournef.* Râéân. 4,51.

सूक्ष्मदारु n. *eine dünne Planke, Brett* Taitt. 2,4,4.

सूक्ष्मदृष्टि f. *ein scharfer Blick:* °दृष्ट्या चीर्णो चक्रुः Paṇḍar. 62,12.

सूक्ष्मनाभ m. ein N. Vishṇu's H. ç. 71.

सूक्ष्मपत्र 1) m. Bez. verschiedener Pflanzen: = कुकुरुन्द, कुकुरबन्ध, कुकुरुड (vgl. कुक्कुरुड) Dhanv. 4,69. Nigh. Pr. eine Art Fenchel oder Kümmel (वनजीर) Râǵân. 6,67. = सुरपर्णा 10,178. rother Reis und eine Art Zuckerrohr (रक्तेक्षु) 14,86. = देवसर्षप, लघुबदर und वनबर्बरी Râǵân. im ÇKDa. = वावल (?) Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. या Asparagus racemosus Râǵân. 4,119. = बृहदारु 3,106. — 3) f. ई = सक्षमासी Râǵân. 12,103. — 4) n. Koriander Râǵân. 6,37.

सूक्ष्मपत्रक 1) m. = वनबर्बरिका Râǵân. 10,164. — 2) f. °पत्रिका = शताकू Râǵân. 4,12. = शतावरी, लघुब्राह्मी, तुण्डेपादकी, दुरालभा und याकाशमांसी Râǵân. im ÇKDa.

सूक्ष्मपर्णा f. = शणपुष्पी Râǵân. 4,69. = डोडी 187. = क्षीर्णफली Râǵân. im ÇKDa.

सूक्ष्मपर्णी f. eine best. Pflanze, = रामदूती Çabdar. im ÇKDa.

सूक्ष्मपिप्पली f. = वनपिप्पली Râǵân. 6,20.

सूक्ष्मपुष्पी f. = यवतिक्ता Râǵân. 3,65.

सूक्ष्मफल 1) m. = भूकर्बुदार Râǵân. 11,208. — 2) f. या = भूम्यामलकी Ratnam. 55.

सूक्ष्मबदरी f. = भूबदरी Râǵân. 11,145.

सूक्ष्मबीज m. Mohn Râǵân. 4,166.

सूक्ष्ममतिका f. Micke Râǵân. 19,122.

सूक्ष्ममूला f. = व्रयन्ती Râǵân. 4,133.

सूक्ष्मलोभक n. (sc. स्थान) Bez. der 10ten unter den 14 Stufen, die nach dem Glauben der Ǵaina zur Erlösung führen, Verz. d. Oxf. H. 397,a,13.

सूक्ष्मवल्ली f. = ताम्रवल्ली Râǵân. 3,110. = ज्ञतुका (ज्ञतुका ÇKDa.) 115. = कारवल्ली 7,179.

सूक्ष्मशर्करा f. feiner Sand Râǵân. 13,141.

सूक्ष्मशाक m. = वर्बूर Râǵân. 8,40.

सूक्ष्मशाख m. = ज्ञालवर्बूर Râǵân. im ÇKDa.

सूक्ष्मशालि m. eine Reisart Râǵân. 16,20.

सूक्ष्मशिरस्क adj. kleinköpfig, Spitzname eines Buddhisten Verz. d. Oxf. H. 250,a,32.

सूक्ष्मषट्पद m. ein best. Insect, = पद्मपूक Râǵân. im ÇKDa.

सूक्ष्मात्त (सूक्ष्म + घत्त) adj. scharfsichtig (Geist); davon nom. abstr. °ता (सूक्ष्मेक्षिता vielleicht richtiger) Râǵa-Tar. 1,352.

सूक्ष्मेक्षिका f. Scharfsichtigkeit Râǵa-Tar. 6,67. wohl fehlerhaft für सूक्ष्मेक्षिता nom. abstr. von सूक्ष्म + ईक्षिन्.

सूक्ष्मैला (सूक्ष्म + एला) f. kleine Kardamomen (auch die Pflanze) Ratnam. 117. Vaǵin. Bṛh. S. 27,4. 77,12.

सूक्ष्म्य Vaǵin. Bṛh. S. 8,16 wohl nur fehlerhaft für सूक्ष्म.

सूखर m. pl. N. einer Çiva'itischen Secte Wilson, Sel. Works 1,32. 236.

सूच s. सूचय्.

सूचँ Uṇâdis. 4,93 (oder सूची gemeint). gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. m. = दर्भाङ्कुर Uǵǵval.

सूचक (von सूचय्) 1) adj. (f. सूचिका) a) Etwas andeutend, verrathend, zu wissen thuend H. an. 3,108. fg. Mân. k. 168. die Ergänzung im gen. Râǵa-Tar. 4,268. im comp. vorangehend: माहात्म्यबल° (भुजनिःस्वन) MBh. 1,5378. Mârk. P. 40,30. Kathâs. 1,37. 21,5. 23,54. 25,71. 53, 59. 74,142. Sin. D. 284. Râǵa-Tar. 1,336. 3,77. Bhâg. P. 1,16,14. 4, 23,28. Vop. 26,219. Verz. d. Oxf. H. 143,b,6. Kull. zu M. 7,63. Schol. zu P. 5,1,28. zu Çik. 15. zu TS. Paiṭ. 1,7. zu Bhaṭṭ. 1,27. hinweisend auf (acc.) Harîv. 15094 (die Lesart steht nicht fest). — b) angeberisch, verrätherisch: वाक्य Kârakâ 1,7. — 2) m. a) Angeber, delator AK. 3,1, 47. 3,4,20,130. Trik. 3,3,47. H. 390. H. an. Med. Vártt. zu P. 3,2, 13. M. 4,71. 11,30. Jiǵ. 3,211. MBh. 13,1634 (पेरेषाम्). R. Gorr. 1, 6,15. Kârakâ 1,7. Vaǵin. Bṛh. S. 16,19. 69,35. — b) Schauspieldirector (als Ankündiger des zu spielenden Stückes) H. 330. — c) Hund Trik. H. ç. 180. H. an. Med. Katze und Krähe (vgl. Z. d. d. m. G. 27,96, Ç. 236) Med. — d) = बुध, सिद्ध und पिशाच Çabdar. im ÇKDa. — e) Nadel (vgl. सूचि) Med. Schol. zu Kâç. Ça. 696,6. — f) eine Reisart, = सूक्ष्मशालि Râǵân. 16,20. — g) Geländer, Brustwehr Vǵutp. 132. — Vgl तोय°, नक्तञ्च° (auch VP. 2,6,16), भ°, विष°, सोचका.

सूचन 1) adj. (f. ई) verkündend; s. शुभसूचनी. — 2) f. या und n. Andeutung, das Zwischenthun: षड्भानां सूचनाक्षिप्ता Sin. D. 312. सूत्र = सूचनाकारियन्थ H. an. 2,469. = शास्त्रादिसूचनायन्थ Med. r. 99. वस्तावीर्थसूचना AK. 3,4,9,33. n. Suça. 1,9,1. Sin. D. 123,22. 124,1. सूत्रं सूचमकृत् H. 284. in comp. mit seiner Ergänzung R. 5,28 in der Unterschr. Kathâs. 15,148. 102,149. Verz. d. Oxf. H. 14,b,32. unbestimmt ob f. oder n. Kull. zu M. 2,151. Schol. zu Kâp. 1,133. n. = गन्धन AK. 3, 4,20,117. Trik. 3,2,20. Hâlây. 3,84. Siddh. K. zu P. 1,2,18 (hier Angeberei; vgl. Vop. 23,19. 35). f. dass. und = सभिनय H. an. Med. = दृश् H. an. = दृष्टि (दृष्टि ÇKDa. nach ders. Aut. und nach Viçva) Med. — 3) f. या das Durchstechen H. an. Med. — 4) f. ई kurze Inhaltsangabe H. 258.

सूचनीय (wie oben) adj. anzudeuten Sin. D. 137,11.

सूचय् (vgl. सूचि 8), °यति Dhâtup. 35,21 (पेषुन्ये). andeuten, verrathen, ankündigen, kenntlich machen: यस्येवमस्यात्मनो महिमानं सूचयसि Mârkaṇḍ. 3,1. तव त्रीणि प्रमाणानि धैर्यमाकृतिः। सूचयन्ति परं तेज भस्म च्छन्नमिवानलम् ॥ R. 4,9,105. Mṛǵ. 15,2. सारङ्गास्ते सूचयिष्यन्ति मार्गम् Megh. 21. Spr. (II) 3538. 4756. 5444. 6032. Vaǵin. Bṛh. S. 93,45 (med.). Kathâs. 18,25. 46,147. 49,131. 108,7. 109,94 (सूचयन्त zu lesen). Bhâg. P. 5,8,20. 10,66,34. Verz. d. Oxf. H. 160,b, N. 265,b,29. 269,b,29. Schol. zu TS. Paiṭ. 14,5. zu Kâp. 1,126. सदृशा यः शपत्तमसू सूचत् Bhâg. P. 4, 8,20. pass.: गत्युत्कम्पादलकपतितैर्यत्र मन्दार पुष्पैः u. s. w. नैशो मार्गः सवितुरुदये सूच्यते Megh. 68. मत्तो न सूच्यते Raǵat. 17,30. प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः (als solche) सूच्यन्त एवोपलाः Çik. 14. Vikr. 6. तेजसा लक्षणीयेष मक्षावाजेति सूच्यते Kathâs. 58,17. 101,290. Bhâg. P. 7,4,36. घसूचि Nalod. 2,6. in der Bühnensprache Etwas andeuten, darstellen, dem Zuschauer zu verstehen geben: दलिणाक्षिस्पन्दम् Mṛǵ. 97,14. 111,1. निमित्तम् Çik. 8,17. 63,11. 101,14. Vikr. 7,4. कोकिलारवम् Çik. 52,11. भयम् 75,2, v. l. partic. सूचितँ (auf सूच zurückgeführt gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36) angedeutet, verrathen, kenntlich gemacht durch (instr. oder im comp. vorangehend): पन्थानं नक्षत्रगणसूचितम् MBh. 1,5376. भूमिष्ठो (dadurch dass er auf dem Erdboden steht) नैयधश्चैव निमेषेण च सूचितः 3,2216. पिशुनानेन सूचिता 2702. 2706. 4,1405. 13,4080. Harîv. 2064. R. 2,96,42 (103,41 Gorr.). 6,101,23. Kumâras.

4,14. 6,26. Rāgn. 3,13. 5,43. Çiç. Ca. 31,17. Milav. 29. 80. Kir. 3,12. Spr. (II) 3807. 5440. Z. d. d. m. G. 27,96. Kathās. 35,92. 43,244. 44, 19. 46,142. 69, 149. 75, 80. 118. 93, 8. 15. 104, 206. Rāǵa-Tar. 3, 336. 4,389. Bhāg. P. 1,18,20. 5,16,2. 8,9,24. 10,16,17. Verz. d. Oxf. H. 51, b, 37. 99, a, No. 153. 265, b, 38. Inschr. in Journ. of the Am. O. S. 6, 543, 9. Sāj. zu RV. 1,6,8. Schol. zu Gaim. 1,1,2. zu Naish. 22,43. सूचितवान् st. des verbi finiti Verz. d. Oxf. H. 265, b, 27. — intens. सोसूच्यते Pat. zu P. 3,1,22. Vop. 20,1. 2.

— अभि dass.: अमन्यत नलं प्राप्तं कर्मचेष्टाभिसूचितम् MBh. 3,2339.

— उप dass.: शरीरलिङ्गैरुपसूचितो ह्यर्थं मूर्धाभिषिक्तस्त्विति मे मनोगतम् MBh. 4,220. — Vgl. उपसूचक in den Nachträgen.

— प्र dass.: नार्घं राज्ञा प्रसूचयेत् MBh. 12,4884.

— सम् dass.: संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् Spr. (II) 6625. Vārāh. Bṛh. S. 46,2. Mārk. P. 30, 25. Kathās. 30, 83. संसूच्य Spr. (II) 1938. संसूच्यते Ṛt. 4,12. partic. संसूचित Bhāg. P. 1,5,32. 2,2,12. Verz. d. Oxf. H. 129, a, 7. Paṇḍat. 138, 7. — Vgl. संसूचक fgg.

सूचयितव्य (von सूचय्) adj. *ausfindig zu machen:* ज्ञातो गतेति कथं मया खलु तत्रभवती सूचयितव्या Vikr. 57,5.

सूचि und सूची f. Uṇ. zu Uṇādis. 4,93. 139. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. AK. 3,6,1,5. 1) *Nadel* Nir. 11,31. Taitt. 3,3,79. H. 911. an. 2,61. Med. k. 12. Viçva beim Schol. zu Vāsavad. 21. RV. 2,32,4. VS. 23,33. TBr. 3,9,6,4. Ait. Br. 3,15. Çat. Br. 13,2,10,3. 3. Kāty. Çr. 20,7,1. Suçr. 1,26, 8. 252, 8. 370, 19. MBh. 3,1378. यावद्धि सूच्यास्तीक्ष्णाया विध्येद्रेणेण मारिष । तावदप्यपरित्याज्यं भूमेर्नः पाण्डवान्प्रति ॥ MBh. 5,2812. 4258. Spr. (II) 311. 6811. 7139. Vārāh. Bṛh. S. 21, 15. सूचीभेदो (doppelsinnig) मणीनाम् Vāsavad. 20, 3. यस्य वज्रमणेर्भेदे भिद्यन्ते लोहसूचयः Bilarin. bei Uṇ. zu Uṇādis. 4,138. त्रपणे तुण्डेव (so ed. Bomb.) सूचिना (nicht fem.!) R. 2,75,16. सूच्या स्पृशसि लोचने 3,53,30. सूच्याग्रयं कर्म Vārāh. Bṛh. 27 (28),7. सूचीवानकर्माणि (सूचीकर्मन् Comm. zu Bhāg. P. 10,45,36) unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217, a, 3. गीतानि सुतिसूचयः für einen von der Geliebten Getrennten Kathās. 104,75. °भेद्य *so dicht, dass man eine Nadel durchstechen kann,* von einer Finsterniss Megh. 38. Hit. 98,22. घनसूचीसंचार *so dicht, dass eine Nadel nicht hindurchgehen kann:* तमस् Spr. (II) 785. ज्ञना: Rāǵa-Tar. 8,930. तपनीय° zum Auftragen von Salben Paṇḍat. 3,13,20. *chirurgische Nadel,* Suçr. 1,26,15. 17. 34,17. 94,2. 2,103,7. *Magnetnadel* Kap. 5,1,15. — b) *Nadel* so v. a. *ein spitzer Gegenstand* überh. Taitt. Prātiç. im ÇKDr. मृणाल° Mālatīm. 91,2. कुश° Rāgn. 13,43. Çiç. 89. शूल° Bhāg. P. 4,5, 10. स्रावित्° so v. a. *Stachel* Hall. 2,78. Kārāka 8,16. केतकै: °भिन्नै: (vgl. सूचिपुष्प = केतक) so v. a. *Staubfäden* Megh. 24. Ṛt. 2,24. क: कां प्रसारयेत्पत्रगर त्वमूचये Kumārās. 5,23. पञ्चसूचि adj. P. 1,2,50, Schol. — 3) *eine best. Heeresaufstellung* M. 7,187. 191. MBh. 7,2674. 3113. Kām. Nītis. 18, 48. 19,40. 44. — 4) *ein kleiner Thürriegel* H. 1005. — 5) *the triangle formed by the produced flanks of the tetragon; the section of a cone or pyramid* Colebr. Alg. 303. — 6) *corrected diameter of the earth* (nach Burgess) Sūrjas. 4,5. — 7) *Gesticulation* H. an. Med. Viçva s. a. O. *eine Art Tanz* Taitt. *quidam cocundi modus* H. an. Viçva s. a. O. — 8) *Inhaltsverzeichniss:* °पत्र häufig in indischen Ausgaben; vgl. सूचय्. — 9) = दृष्टि ÇKDr. ohne Angabe einer best. Aut. — 10) N. pr. Verz. d. B. H. 190. — Hier und da fehlerhaft सू° geschrieben. सूचीत्रस्खिललालसान् MBh. 7,3333 fehlerhaft für घसृचीन् त्रस्खिलाननान्, wie die ed. Bomb. liest (hiernach ist das in den Nachträgen unter त्रस्खि Gesagte zu verbessern). — Vgl. घासवम्°, कर्ण°, ख°, चक्षु°, ज्ञल°, दल°, पत्र°, मक्षा°, वम्र°, सौचिक.

सूचिक (von सूचि) 1) m. gaṇa पुरोक्षित्यादि zu P. 5,1,123. = सौचिक *Schneider* Çārdar. im ÇKDr. Vjutp. 96. Vārāh. Bṛh. S. 10,9. — 2) f. घा a) *Nadel* und *Elephantenrüssel* (vgl. °धर) ÇKDr. und Wilson. — b) *Pandanus odoratissimus* Dhanv. 4,133. — c) N. pr. Verz. d. B. H. 190 (सुचिका die Hdschr.; daneben aber सूची). einer Apsaras (vgl. सुचिका) Vjāp. beim Schol. zu H. 183.

सूचिकाधर m. *Elephant* H. ç. 174. Çārdar. im ÇKDr.

सूचिकाभरण m. (sc. रस) *eine best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 963.

सूचिकामुख m. *Muschel* Hāl. 110.

सूचिकुलाय् (von सूचि + कुल), °यते *wie lauter Nadeln erscheinen:* माला Spr. (II) 2246.

सूचिगृह्क n. *Nadelbüchse* Vjutp. 196. 208.

1. सूचित s. u. सूचय्.

2. सूचित (d. सु + उचित) adj. *sehr geeignet, — passend* Nalod. 2,6.

सूचिता f. nom. abstr. von सूचि *Nadel* ebend.

सूचिन् (von सूचय्) m. *Angeber, delator* MBh. 5,1227. 13,4278. VP. 2, 6,21. = दुष्टसाक्षिन् H. ç. 153.

सूचिपत्रक (so ÇKDr., °पत्रिक unsere Hdschrr.) m. *Marsilea quadrifolia* Rāǵān. 4,50.

सूचिपुष्प m. *Pandanus odoratissimus* Gaṇḍīn. im ÇKDr. — Vgl. सूची°.

सूचिमल्लिका f. = नवमालिका Rāǵān. 10,93.

सूचिरोमन् m. *Schwein, Eber* Hāl. 82. — Vgl. सूची°.

सूचिवदन m. 1) *Viverra ichneumon.* — 2) *Mücke* Rāǵān. im ÇKDr.

सूचिवस्त्र (von सूचि) m. ein N. Garuḍa's Çārdar. im ÇKDr.

सूचिशालि m. = सूक्ष्मशालि Rāǵān. 16,20.

सूचिसूत्र n. *ein Faden zum Nähen* H. 911. सूची° v. l.

सूचीक (von सूची) m. *ein stechendes Insect* RV. 1,191,7.

सूचीकापिश adj. Bez. *einer Art von verbotenen Pfeilen* MBh. 7,8639.

सूचीघात a *pyramid or cone* Colebr. Alg. 97.

सूचीदल m. *Marsilea quadrifolia* Rāǵān. 4,51.

सूचीपङ्क्ति Verz. d. Cambr. H. 77.

सूचीपत्र 1) m. *eine Art Zuckerrohr* Suçr. 1,187,4. °क desgl. 186,15. — 2) f. आ = गण्डदूर्वा Rāǵān. 8,116.

सूचीपदी f. gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139.

सूचीपद्म *eine best. Truppenaufstellung* MBh. 7,3110 (सू° ed. Calc.).

सूचीपाश m. *Nadelöhr* Suçr. 2,316,3.

सूचीपुष्प = सूचिपुष्प Hāl. 92. Ratnam. 251.

1. सूचीमुख n. 1) *Nadelspitze* Suçr. 1,259,2. Sin. D. 249,4. °मुखाग्र n. dass.: तमसि सूचीमुखाग्रसंभेद्ये Spr. (II) 4084. — 2) *eine best. Hölle* Bhāg. P. 5,26,7. 36.

2. सूचीमुख 1) adj. (f. ई) a) *einen Mund* (Schnabel u. s. w.) *so spitz wie eine Nadel habend* AV. 11, 10,3. Verz. d. Oxf. H. 340, b, 18 (सुची° gedr.). चाटका Paṇḍat. I, 437 (vgl. Hit. Comm. S. 134). — b) *spitz wie*

eine Nadel, wie eine Nadel spitz zulaufend: सूनीक MBn. 6,699. 12, 3729. व्यूढ 6, 3895. 3911. योनि so v. a. *enge* Kâraka 1, 19. Çiṅṅo. Saṁh. 1,7,102; vgl. सूचीवक्त्र. — 2) m. a) *eine Art* Kuça-*Gras* Râǵân. 8,93. — b) *Mücke oder ein anderes stechendes Insect* Suçr. 2,288,9. — c) *Vogel oder ein best. Vogel:* दुष्टास्ते पूयनिर्यासभुजः सूचीमुखास्तु ते । जायते गिरिवर्ष्माणः Mârk. P. 14,54. *ein best. Vogel oder N. pr. eines Vogels* Kathâs. 60,208. fgg. Paṅkat. 93, 1. Spr. (II) 3578. — d) *eine best. Stellung der Hand* Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,7. — 3) n. a) *Diamant* H. 1065. — b) *eine Art Pfeil oder eine andere spitze Waffe* Çiṅṅo. Paṅcat. 80,64 (nach Aufrecht, Halâj. Ind. unter सायक).

सूचीरोमन् m. = सूचिरोमन् Trik. 2,5,5.

सूचीवक्त्र 1) adj. (f. आ) *spitz wie eine Nadel:* योनि so v. a. *enge* Bhâvapr. 7. Suçr. 2,396,15. 397,14; vgl. unter सूचीमुख 1) b). — 2) m. N. pr. a) eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2574. — b) eines Asura Harîv. 12942.

सूचीसूत्र s. सूचिसूत्र.

सूच्छ्रित (v. सु + उ°) adj. *schön aufgerichtet:* °धन्न R. 2,43,10.

सूच्य (von सूचय्) adj. *anzudeuten, was angedeutet wird* Sâh. D. 305. Halâj. 1,94.

1. सूच्यय (सूचि + घय) n. *Nadelspitze:* °विद्ध Paṅkat. 62,9. द्रुतं च ते न पश्यामि सूच्यग्रमपि निन्दितम् MBh. 1, 3440. सूच्यग्रेणापि यद्भूमेरपि भिद्येत (so ed. Bomb.) — तन्मात्रमपि येन्मह्यं न ददाति पुरा 9,1805. सूच्यग्रं नात्यजन्: पूर्वम् *so viel Land als eine Nadelspitze einnimmt* 1807. सूच्यग्रेणापि भूमितलं न तेषाम् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 5,348,2. 9.

2. सूच्यय 1) adj. *spitz wie eine Nadel.* — 2) m. *Dorn* AK. 3, 4, 2, 18.

सूच्ययस्थूलक m. *Saccharum cylindricum* Roxb. Ratnam. 311.

सूच्यास्य (सूचि + आ°) 1) adj. *ein Spitzmaul u. s. w. habend* und *spitz wie eine Nadel.* — 2) m. a) *Ratte* H. 1300. — b) *Mücke* Râǵân. 19,132. — c) *eine best. Stellung der Hand* (oder *Hände*) Verz. d. Oxf. H. 86, *a*,28. 202,*a*,7. 33.

सूच्याह्व (सूचि + आह्वा) m. *eine best. Gemüsepflanze,* = सितावर Râǵân. im ÇKDa.

1. सूत partic. *veranlasst, angetrieben, gesandt* u. s. w. s. u. 2. सु und vgl. नृसूत.

2. सूत 1) adj. *geboren habend* s. u. 4. सु und vgl. सुसूत. सूता *Tochter* Paṅkat. 181,5 fehlerhaft für सुता. — 2) *Quecksilber* AK. 2, 9, 100. Trik. 3,3,189. H. 1050. H. an. 2,208. Med. t. 72. Râǵân. 13,112. Çiṅṅo. Saṁh. 3,11,94. 12,51. 13,93. Sarvadarçanas. 99,13. Kâlakarṇa 1,154. 4,226. भस्मसूतकरण Verz. d. B. H. No. 995. — Vgl. बद्ध°.

3. सूत m. 1) *Wagenlenker, Stallmeister* (ein Fürstendiener, der in den älteren Schriften häufig neben ग्रामणी genannt wird): im Epos auch *eine Art Herold eines Fürsten* (neben मागध und वन्दिन्); *der Herold κατ' ἐξοχήν* ist Lomaharshaṇa. Im System ist der Sûta der Sohn eines Brahmanen von einer Kshatrijâ. AK. 2,8,2,27. 2,10,2. 3, 4,22,64. Trik. 3,3,189. H. 760. 794. 808 (als Sohn eines Kshatrija und einer Brahmanin). an. 2,208. Med. t. 72. Halâj. 2,280. 294. AV. 3,5,7. VS. 16,18. 30,6. TBr. 1,7,2,4. 2,7,20,4. Çat. Br. 5,3,4,5. 4,4, 17. 13,4,2,5. 7,2,42. Kâtj. 23,3. Paṅkav. Br. 19,1,4. Kâtj. Ça. 15,7, 12. 20,1,15. सूतग्रामणीनाम्, °ग्रामण्याम् P. 7,1,56, Schol. M. 10,11. 17. 26. 47. Jâṭ. 1,93. MBh. 1,1026. 6940. 3,731. 2265. 2627. 2749. 5,7211 (स° adj.). ब्रह्मक्षत्रस्य विक्षिताः सूता वै परिचारकाः । न क्षत्रियो वै सूतानां प्रणयाञ्च कथं च न ॥ 8,1372. 12,2228. fg. Harîv. 78. 325. 327. 1709. R. 1, 4, 28. 19,13. 2,32,17. 34,1. fgg. 93,15. 111,12. R. Gorr. 2,11,10. fgg. 12,36. 26,14. 67,4. Raghu. 3,42. Çiç. 5,1. fgg. Vikr. 5,4. fgg. Vasiṅ. Bṛh. S. 10,10. 87,20. VP. 102. fg. 276. 283. Mârk. P. 68,26. Bhâg. P. 1,11,21. 4,15,30. 9,15,31. Verz. d. Oxf. H. 12,*a*,1. fgg. 47,*b*,3. 56, *a*, N. 1. °कर्मन् MBh. 3,731. ग्रह° 4,315. — 2) *Zimmermann, Wagner* AK. 2, 4, 44, 64. H. an. Med. — 3) N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,256. — 4) सूत Mârk. P. 35,28 fehlerhaft für मृत, Paṅkat. 176,3 für? — Vgl. वि°, सोत, सोति, सोत्य.

1. सूतक (von 2. सूत) 1) n. a) *Geburt* Trik. 3,3,47. H. an. 3,103. Med. k. 169. Pân. Gaṇ. 3,10. राज्ञो राज्ञेाश्च (vgl. राजसूतक) M. 4,110. 5,58. 62. MBh. 1,2047. 4802. 3,17294. 5,3194. 5644. 13,6330. Mârk. P. 32, 28. 33,48. Weber, Kṛshṇaj. 300. Schol. zu Kâtj. Ça. 423,11. 14. Kull. zu M. 5,79. सूतकान्न *die durch die Geburt eines Kindes* (im Hause verunreinigte) *Speise* Ait. Br. 7,9. Pân. Gaṇ. 2,8. Çiṅṅ. Gaṇ. 4,7. 6,1. Kauç. 141. Verz. d. Oxf. H. 281,*b*,46. सूतकान्नाग्य M. 4,112. — b) *die durch die Geburt eines Kindes bewirkte Unreinheit der Eltern* Jâṭ. 3,18. fg. सूतकान्ते नामकर्म विधेयम् Weber, Kṛshṇaj. 299, N. 2. द्रुती सप्रसवेति सूतकम् Dhûrtas. 76,7. मृता मोक्षमयी माता जातो बोधमयः सुतः । उभयोः सूतके जातम् *Verunreinigung* überh. Spr. (II) 4946. — c) *Hemmniss* (प्रतिबन्धक): व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमे ऽर्चने जपे । श्राद्धे सूतकं न स्याद्नाद्धे तु सूतकम् ॥ Tithjâdit. im ÇKDa. — 2) m. n. *Quecksilber* Trik. 2,9. 34. 3,3,47. H. an. 3,103. Med. k. 169. Hân. 155. Kâlakarṇa 3,204. मृत° m. Sarvadarçanas. 99,16. etwa *Calcination (des Quecksilbers)*: यथा लोके तथा देके कर्तव्यः सूतकः 100,18. — 3) f. सूतका = सूतिका Vârtt. 11 zu P. 7,3,45. Vop. 4,7. — 4) f. सूतिका *Wöchnerin* obend. AV. 8,6,19. Çiṅṅ. Gaṇ. 2,12. 4,7. 11. M. 5,85. Suçr. 1,255,14. 370,8. Spr. (II) 1299. Vasiṅ. Bṛh. S. 51,20. Mârk. P. 35,28. 34. Verz. d. Oxf. H. 294,*b*,16. Verz. d. B. H. No. 269. 858. Weber, Kṛshṇaj. 266. नव° 287. °गृह Çiṅṅo. Saṁh. 1,7,107. सूतिकाग्नि Çiṅṅ. Gaṇ. 1,25. Pân. Gaṇ. 1,16. MBh. 3,14307. सूतिकान्न M. 4,212. सूतिकानां गवाम् *vor Kurzem gekalbt habend* MBh. 12,1217. Jâṭ. 2,163 (ohne गो). — Vgl. मृत°, राजसूतक°, श्राद्ध°, उपसूतिका.

2. सूतक (wohl von 3. सूत) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,31.

सूतकागृह n. = सूतिकागृह Bharata zu AK. nach ÇKDa.

सूतज्ञ m. *Sohn eines Wagenlenkers* MBh. 3,741. *der Sohn (Adoptivsohn) des* Sûta Adhiratha, Bez. Karṇa's Harîv. 1709.

सूततनय m. Bez. Karṇa's H. 711.

सूतता f. nom. abstr. zu 3. सूत 1) Harîv. 4058.

सूतत्व n. desgl. MBh. 3,2901.

सूतदुहितृ f. = सूतपुत्री P. 6,3,70, Vârtt. 10.

सूतनन्दन m. *Sohn eines Wagenlenkers,* Bez. des Ugraçravas MBh. 1,1.

सूतपुत्र 1) m. a) *Sohn eines* Sûta so v. a. *Wagenlenker* MBh. 3,2888. — b) Bez. α) Karṇa's (vgl. सूतज्ञ) Bhag. 11,26. MBh. 8,1374. — β) Kṛ-

kaka's (sg. und pl.) MBh. 4,503. 529. — 2) f. ई = सूतडक्षितृ P. 6,3, 70, Vârtt. 10.

सूतपुत्रक m. = सूतपुत्र 1) b) α) Trik. 2,8,19.

सूतराज् m. *Quecksilber* Râéân. 13,110.

सूतवशा f. *eine Kuh, die nach dem ersten Kalbe nicht mehr trächtig wird*, TS. 2,1,5,4. 6,1,5,6. TBr. 2,7,4,1. Kâṭy. 37,5.

सूतसंहिता f. Titel eines Abschnittes im Skandapurâṇa Mack. Coll. 1,53. Verz. d. Oxf. H. 84,b,33. Verz. d. B. H. No. 1403. Hall 17. 123. °तात्पर्यदीपिका ebend.

सूतसव m. N. eines Ekâha Çiṅku. Ça. 14,22,1.

1. सूति (von सीव्) f. = स्यूति Çaṅkarâkuaṅ. bei Wilson.

2. सूति (von 1. सु nach dem Comm. zu VP.) f. *die Kelterung des Soma oder der Ort, wo der Soma gekeltert wird*, VP. 1,13,51. Verz. d. Oxf. H. 12,a,16; vgl. 47,b,10. ein zur Erklärung von 3. सूत gebildetes Wort.

3. सूति (von 4. सु = सू) 1) f. am Ende eines adj. comp. H. 6. α) *Geburt, Entstehung* TBr. 3,3,6,3. वसिष्ठस्य MBh. 5,3773. 3837 (मूर्ति ed. Bomb.). Vaṅiṁ. Bṛh. S. 46,53. Bṛh. 4,22. 5,9. Bhâg. P. 1,16,1. प्रजा° 12,2,23. जगत्सूतिस्थितिसंयमकारणम् Mârk. P. 1,13. जगत्सूतिकर 101, 10. — b) *Niederkunft:* °काल Hariv. 9693. Kathâs. 64,5. *das Fruchttragen eines Ackers* Spr. (II) 1313. — c) *Geburtsstätte, Ursache der Entstehung:* तपसो सूतिरसूतिरापदाम् Kir. 2,56. जगत्सूतिं परं ब्रह्मऋषिणाम् Śiv. D. 109,17. धर्मादीनाम् Bhâg. P. 4,7,40. — d) *Nachkommenschaft:* तत्सूतिसंभवैर्नरैर्घोरैः Mârk. P. 73,11. तेषां तासां च 104,10. 121,35. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,236. भूति ed. Bomb. — Vgl. दुःसूति, बहुसूति, मृत्यु°, रत्न°, सुधा°.

सूतिक gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128; vgl. सौतिक. — सूतिका s. u. 1. सूतक.

सूतिकागार n. *Wochenstube* Trik. 3,3,90. Gaṭâdh. im ÇKDr. Hariv. 9233. Suçr. 1,367,18. Weber, Kṛshṇaj. 266. fg. Verz. d. Oxf. H. 23,a,N. 3.

सूतिकागृह n. dass. AK. 2,2,3. H. 997. MBh. 3,14490. Hariv. 9210. Suçr. 1,317,6. Mârk. P. 51,105. 76,15. Weber, Kṛshṇaj. 248 u. s. w. Bhâg. P. 10,3,43. Verz. d. Oxf. H. 26,b,19. Utpala zu Varâh. Bṛh. 5,18. fgg.

सूतिकागेह n. dass. Weber, Kṛshṇaj. 267.

सूतिकाभवन n. dass. Hâlâ. 2,344.

सूतिकावास m. dass. Weber, Kṛshṇaj. 268.

सूतिकाषष्ठी f. *der sechste Tag einer Wöchnerin*, personificirt als Göttin ÇKDr.; vgl. unter षष्ठ 3) c).

सूतिगृह n. *Wochenstube* Çaṅkar. im ÇKDr. Bhâg. P. 10,83,20. — Vgl. सूतीगृह.

सूतिमती (von 3. सूति) adj. f. *Kinder gebärend* Mârk. P. 68,33.

सूतिमारुत m. *Geburtswehe als ein besonderer Wind* gedacht Jâéân. 3, 33. Bhâg. P. 3,31,33. — Vgl. सूतिवात.

सूतिमास् m. *der Monat der Niederkunft, der letzte Monat der Schwangerschaft* H. 341.

सूतिमास m. dass. AK. 2,6,1,39. Hâlâ. 2,344.

सूतिवात m. = सूतिमारुत Bhâg. P. 3,31,10.

सूतीगृह n. = सूतिगृह Çaṅkar. im ÇKDr. Bhâg. P. 10,4,3.

सूतीवृत्ति f. Titel eines Commentars zu den Upadiçâtra Udâyan. zu Uṇâdis. 3,140. v. l. सतीवृत्ति.

सूतु (von 4. सु = सू) f. *Schwangerschaft, Tracht* AV. 1,11,1. धनु सूतुं सचेतवे 6,17,1. मा वो प्रजायै भूम्यै मा सूतुः 7,35,3. एतस्यै सूतुमर्षति पा वेरुद्रवति TS. 2,1,8,3. सूतोः परिवाधसे Kâṭy. 13,4. सूतवे infin. s. u. 4. सु.

सूत्कार m. *der Laut* सूत् ÇKDr. und Wilson.

सूत्त adj. so v. a. सुदत्त (vgl. घात, नीत u. s. w.) Schol. zu P. 7,4,47. 8,4,65.

सूत्थान (6. सु + उ°) adj. *sich gehörig anstrengend, sehr thätig* AK. 2,10,19. H. 384. Kâm. Nîtis. 1,19.

सूत्पर n. *das Brennen geistiger Getränke* Çaṅkar. im ÇKDr.

सूत्पलावती (von 6. सु + उत्पल) f. N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,27.

सूत्य 1) n. = सुत्य MBh. 3,4302. सुत्य und सूप v. l. — 2) f. या α) = सुत्या AK. 2,7,46. Verz. d. Oxf. H. 47,b,10 (v. l. सुत्या). — b) oxyt. f. zu 3. सूत gaṇa क्रोड्यादि zu P. 4,1,80.

सूत्र (von सीव्) Uṇâdis. 4,162. n. Siddh. K. 249,b,2. 3. m. n. (nur dieses zu belegen) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) *Garn, Faden, Schnur* AK. 2,10,28. Trik. 3,3,379. H. 913. an. 2,469. Med. r. 99. Hîm. 169. AV. 3,9,3. 18,8,37. Çat. Br. 3,2,4,14. 7,3,2,13. उक्थानि मणिरिव सूत्र ओतानि 12,3,4,2. 7,2,10. 14,6,2,2. Kâṭy. Çr. 4,1,16. Gobh. 1,2,1. Nir. 4,6. Kaṭhâr. Up. 6,8,2. Maitrâyaṇ. 6,25 (त्रि° adj.). M. 8,326. Jâéân. 2,246. व्याप्तिसूत्रा गणाः MBh. 3,2094. छिन्नसूत्रैर्कोटैः Megh. 68. °बद्धानिव द्विजान् MBh. 4,329. ज्ञालं नवसूत्रकृतम् 13,2636. मालेव ग्रथिता सूत्रे R. 5,13,60. Suçr. 1,93,15. fg. 369,1. Çâṅkhâs. 13,21. fg. स्वयं पटः मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः Raçu. 1,4. सूत्रेण विनेव क्षाराः 6, 23. 7,10. 16,63. Vaṅiṁ. Bṛh. S. 48,37. 104,1. Mârk. P. 51,30. Naiṣh. 22,53. °संचारिचालुक्याम् Hit. 65,13. Kuṭṭan. 23,7. Bhâg. P. 5,17,23. 26,32. 36. Hâlâ. 2,394. Sarvadarçanas. 69,6. सूक्ष्म° Pâṇkâs. 1,7,35. 2,4,25. शण° Kâṭy. Çr. 18,5,1. Kauç. 16. 32. 40. 43. 85. सुवर्ण° R. 6, 84,25. Kumârâs. 7,30. क्षेम° Vikr. 140. कनक° Spr. (II) 1305. Pâṇkat. 52,22. 53,1. Hit. 68,12. वडिशो ऽयं यया यस्तः कालसूत्रेण लम्बितः MBh. 3,11495. अन्योन्यगुप्तसूत्रैस्ताः स्त्रीमाला ग्रथिता यथा R. 5,13,59. °प्रत्याशाघनसूत्रबद्धमनस् Spr. (II) 2036. तत्स्नेहसूत्रग्रथित (vgl. v. l.) Prab. 93,15. एवं सूत्रशतैस्तैस्तैर्विद्धानालानि तन्वते Kathâs. 24,199. — 2) *Messschnur:* °हस्तास्ततो मानं चक्रुः Hariv. 6504. चरेण प्रचरेद्राज्ञा सूत्रेणोर्वरितं गृहे Kâm. Nîtis. 12,33. सूक्ष्मं सूत्रप्रचारेण पश्येद्वै विधिचेष्टितम् 28. सूत्रे प्रसार्यमाणे Vaṅiṁ. Bṛh. S. 53,108. °च्छेदे 110. Râéa-Tar. 4,65. तथैव कर्मसूत्रेण फलं धाता ददाति च Spr. (II) 1807. सूत्रपातं कर् oder चर् *abmessen, gegen einander halten* Kathâs. 14,30. 24,93. — 3) *die von den drei oberen Kasten über der Schulter getragene Schnur* Âpastamb. in Ind. St. 2,179. M. 2,174. Bhâg. P. 5,10,17. 12,2,3. — 4) *Gürtel:* वासः समूत्रम् Bhâg. P. 8,12,23. — 5) *Faser:* सूत्रं मृणालादिव राजहंसो (कर्षति) Vikr. 19. मृणाल° Kumârâs. 1,40. 3,19. Çiç. 143. — 6) *Linie* MBh. 12,10983. नवगुणसूत्रविभक्त Vaṅiṁ. Bṛh. S. 53,71. ध्रुवसेन सूत्रेण 38,7. सूत्रं नयेत् Golâdhj. Grahaṇav. 14. सूत्राणि वलनरूपाणि d. i. *welche das* व° *darstellen* 46. समानसूत्रनिपाते (vgl. समसूत्रग, so v. a. *bei den Gegenfüsslern* Bhâg. P. 5,21,9. — 7) *Riss, Plan:* सूत्रं वेतालपतितम् Râéa-Tar. 3,349. वेतालसूत्रपातस्थान्गृहान् 6,191. 4,56.

मत्सूत्रपातनं दृष्ट्वा 3,348. — 8) *das Durchlaufende, Alles Zusammenhaltende, — Regelnde:* त्वमेव दत्तेण सूत्रेण समर्द्धियाधारम् Bhâg. P. 4,6, 44. 11,24,6. 28,16. Hierher vielleicht die Bed. व्यवस्था H. an. Med. und कारण Trik. — 9) *kurzgefasste Regel, Lehrsatz; ein in solchen Regeln abgefasstes Lehrbuch*, Bez. vieler Schriften, namentlich rituelen und grammatischen Inhalts Trik. H. 254. H. an. Med. स्वल्पात्समसंदिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्। अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥ Dhanañ. im ÇKDa. Çat. Br. 14,5,4,10. 7,2,11. Âçv. Grhj. 3,4,3. Maitrâyaṇ. 6,32. P. 4,2,60. 65. 5,1,58. कांस्तित्सूत्राणि सर्वाणि गृह्णासि — कुस्तिसूत्राण्यसूत्राणि रथसूत्राणि च पश्यन् MBh. 2,255. धनुर्वेदस्य सूत्रं वै पक्षसूत्रं च नागरम् 256. R. Gorr. 1,13,21. 7,36,45. Vaśiṣ. Bṛh. S. 15,1. Kâç. zu P. 1,2,25. Schol. zu 1,62. zu Kâty. Çr. 16,9. zu AV. Paipp. 3,96. 4,101. zu TS. Prât. 1,1 u. s. w. Sarvadarçanas. 21,1. fgg. 22,5. 34,17. मूल° Kâṇ. 3 bei Weber. भारत° so v. a. *kurze Darstellung des* Mahâbhârata MBh. 1, Adhj. 61 in der Unterschrift. Bei den Buddhisten, Pâçupata u. s. w. so v. a. *Textbuch* (im Gegens. zu den erklarenden und erörternden Werken) Burnouf, Intr. 35. fgg. 51. 70. fgg. Wassiljew 5 u. s. w. Bei den Gaina bildet सूत्र einen Theil des Dṛshṭivâda H. 246. Wilson, Sel. Works 1,285. °संदर्भ Sarvadarçanas. 37,6. — Vgl. ग्रन्थ° (auch Kumâras. 3,46), ऊर्णा°, कटि° (auch Bhâg. P. 5,16,22), कण्ठ°, कल्प°, काल°, दीर्घ°, धर्म°, नट°, नष्टाग्नि°, निर्वाण°, पशु°, पुण्य°, प्रमाण°, प्राण°, ब्रह्म°, भक्ति°, भिक्षु°, मणि°, मध्य°, मन्त्र°, मान°, मैत्र°, यज्ञ°, रथ°, वि°, विष्णु°, वीत°, वेद°, व्यास°, शण°, शारीरक°, शिव°, श्रौत°, संहिता°, समसूत्रग, सावित्री°, सुवर्ण°, सूचि°, सूची°, सूत्त°, सौत्र.

सूत्रक 1) n. = सूत्र 1) Vaśiṣ. Bṛh. S. 26,6. Kathâs. 37,110. fg. 153. 71,55. 276. — 2) f. सूत्रिका *Nadel* (nach Bühler) Paśâd. 245,22. — Vgl. वृद्धसूत्रक, उरःसूत्रिका.

सूत्रकण्ठ 1) adj. *eine Schnur u. s. w. um den Hals habend.* — 2) m. a) *ein Brahmane* Trik. 3,3,109. fg. H. 812. an. 4,70. Med. th. 21. Hir. 257. — b) *Taube* Trik. H. an. Med. — c) *Bachstelze* H. an. Med.

सूत्रकर्तर् m. *Verfasser eines Lehrbuchs* MBh. 13,693. 1107.

सूत्रकर्मन् n. *Baukunst:* °कर्मविशारद R. 2,80,1 (87,1 Gorr.). °कर्मकृत् *Baumeister* 83,13.

सूत्रकार m. P. 3,2,23. 1) *Spinner;* s. पट्°. — 2) *Zimmermann* R. Gorr. 2,90,16. — 3) *Verfasser eines Lehrbuchs* MBh. 13,1286. Kâraka 4,6. Râgat. 6,27. Weber, Ind. St. 17. 89. 95. 111. Ind. St. 1,47. Schol. zu P. 8,3,5. Sarvadarçanas. 77,21. fg. 78,17. 112,7. Comm. zu TS. und TBr. unzählige Male.

सूत्रकृत् m. = सूत्रकार 3) Trik. 3,5,25. Comm. zu TS. Prât. 1,15.

सूत्रकृत n. Titel des 2ten der zwölf heiligen Schriften (Aṅga) der Gaina H. 243. सूत्रकृताङ्ग Wilson, Sel. Works 1,284.

सूत्रकोण m. *eine Art Trommel* H. ç. 83. Hir. 211. °क m. dass. Trik. 1,1,120.

सूत्रक्रीडा f. *Fadenspiel* unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,8.

सूत्रगणिका f. *ein best. Werkzeug des Webers,* = दृषणी Çabdam. im ÇKDa.

सूत्रग्रन्थ m. *Lehrbuch* Schol. zu Kâty. Çr. 2,6,5.

सूत्रग्रह adj. = यः सूत्रं गृह्णाति धारयति च; dagegen सूत्रग्राह = यः सूत्रं गृह्णाति न तु धारयति P. 3,2,9, Vârtt. 2.

सूत्रजाल n. *Garnnetz* MBh. 12,7427.

सूत्रण a. nom. act. von सूत्रय् zur Erklärung von सूत्रस्थान Suçr. 1, 9,1. *kurze Darlegung des ganzen Sachverhalts* Comm.

सूत्रतन्तु m. 1) = सूत्र *Faden* Hir. 169. Gobh. 4,3,24. Çâṅkh. Gṛhj. 4,15. — 2) = उत्साह *Ausdauer, Energie* Hir. 166.

सूत्रतर्कुटी f. = तर्कुटी Gaṇiṭ. im ÇKDa.

सूत्रदरिद्र adj. *fadenarm* so v. a. *abgetragen, durchsichtig;* davon °ता f. nom. abstr.: घर्मं पटः सूत्रदरिद्रतां गतः Mâlav. 33,14.

सूत्रदीपिका f. Titel eines Werkes Ind. St. 1,471.

सूत्रधर 1) adj. a) *eine Schnur tragend:* रत्न° MBh. 13,894. — b) *Kenner der Sûtra* Vjutp. 124. — 2) m. = सूत्रधार ÇKDa.

सूत्रधार m. 1) *Zimmermann, Baumeister, Architect* H. an. 4,254. Med. r. 303 (पारिपात्रप्रभेद?). MBh. 1,2039. Vaśiṣ. Bṛh. S. 43,12. Verz. d. Oxf. H. 21,*b*, N. 3. 153,*b*,19. 21. Hit. 49,12. Schol. zu Kâty. Çr. 6, 1,5. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,408, Çl. 36. fg. — 2) *Schauspieldirector* H. 330. H. an. Med. Bhâr. Nâṭyaç. 34,99. Sâh. D. 287. Verz. d. Oxf. H. 135, *a*, 6 v. u. Çiç. 3,6. fgg. Viṣṇ. 3,6. fgg. Mâlav. 3, 5. fgg. Uttarar. 1,7. fgg. Mâlatîm. 2,1. fgg. Mudrâr. 1,13. fgg. Ratnâv. 2,9. fgg. Prabodhaç. 2,1. fgg. Daçâvat. 66,13. fgg. सुरततालवृन्तसूत्रधारी f. so v. a. *Hauptperson* Kâdab. 7. — 3) ein N. Indra's Med.

सूत्रधृक् m. 1) = सूत्रधार 1); s. विश्व°. — 2) = सूत्रधार 2) Sâh. D. 292.

सूत्रनड m. N. pr. eines Mannes; in Ableitungen werden beide Wörter gesteigert nach gaṇa घनुशतिकादि zu P. 7,3,20. — Vgl. सौत्रनाडि.

सूत्रपत्रकार n. *Zinn* Râgân. 13,33.

सूत्रपत्रिणी f. *Messing* Râgân. 13,31.

सूत्रपदी adj. f. *fadenfeine Füsse habend* gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139.

सूत्रपिटक m. n. *der Korb* d. i. *die Sammlung der buddhistischen* Sûtra Burnouf, Intr. 35. 448. Hiouen-thsang 1,277. 2,36. Vie de Hiouen-thsang 95. 137.

सूत्रपुष्प m. *die Baumwollenstaude* Trik. 2,4,38.

सूत्रभाष्य n. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1,141.

सूत्रभिद् m. *Schneider* Çabdar. im ÇKDa.

सूत्रभृत् m. = सूत्रधार *Schauspieldirector* Daçân. 2,62. 3,19.

सूत्रमध्यभू m. *das Harz der Shorea robusta* Çabdâṇ. im ÇKDa.

सूत्रमन्त्रप्रकाशक Titel einer Schrift Ind. St. 3,270.

सूत्रमय (von सूत्र) adj. (f. ई) *aus Faden bestehend* Nir. 5,22.

सूत्रय् (wie oben), °यति Dhâtup. 35,54 (वेष्टने, विमोचने, ग्रन्थे). auch °ते P. 3,1,26, Vârtt. 1 (= सूत्रं करोति). 1) *aneinanderreihen, zusammenfügen, veranstalten:* देवाः संगीतकमसूत्रयन् Çat. 14. 21. 55. धात्रा न किं सूत्रितम् Spr. (II) 2682. Kathâs. 100,30. — 2) *Etwas in die Form eines Sûtra bringen, als Sûtra darstellen, in einem Sûtra lehren* Verz. d. Oxf. H. 263, *a*, 31. जैमिनिरपि इदमपि धर्मलक्षणमसूत्रयत्। चोदनालक्षणो ऽर्थो धर्म इति Kull. zu M. 2,1. 8,210. तथा च सूत्र्यते हि भगवता पिङ्गलेन Müller, SL. 241. शौनकेन सूत्रितम् 316. धर्मेषु सूत्रितम् MBh. 12,9671 (st. dessen सूक्ष्मतास् 9727). सूत्रिता ब्रह्मविद्या आत्मेत्येवोपसीतेति Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 193. 233. LA. (III. 89,11. Schol. zu Kap. 1,70. Verz. d. Oxf. H. 2,*a*,18. 264,*a*,32. Wilson.

Siddhânt. S. 107. असूत्रित Comm. zu TS. Prât. 24, 6, v. l. तत्प्रभावमसूत्रयत् so v. s. *verfasste ein Sûtra über* Çâtn. 14, 70.

— intens. सोसूत्र्यते Pat. zu P. 3, 1, 22. Vop. 20, 1. 2.

— आ *bewerkstelligen, ausführen, componere* Vaitân. Bṛh. S. 58, 58. Daçân. 1, 61. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Çl. 36. Râdâ-Tan. 5, 482.

सूत्रयन्त्र n. 1) *Garnnetz* Maitrâjop. 6, 26. — 2) *Weberstuhl* Çabdam. im ÇKDa.; vgl. आवापन.

सूत्रला (von सूत्र) f. *Spindel* Hân. 213.

सूत्रवाय m. *das Weben* AK. 3, 4, 25, 187.

सूत्रविक्रयिन् m. *Garnhändler* R. Gorr. 2, 90, 22.

सूत्रवीणा f. *eine Art Laute* Hân. 211.

सूत्रवेष्टन n. *Weberschiff* AK. 3, 3, 24. H. 913.

सूत्रसमुच्चय m. Titel einer Schrift Wassiljew 208.

सूत्रस्थान n. heisst in medicinischen Büchern (des Kâraka, Suçruta und Anderer) *der erste allgemeine Theil* (auch लोकस्थान genannt) *über Arzt, Krankheit, Heilmittel, Speisen* u. s. w. Kâraka 1, 30. सूचनात्सूत्रणाच्चैव संधानाच्चार्थसंततेः । — सूत्रस्थानं प्रचक्षते Suçr. 1, 9, 3. 6, 1. 8, 3.

सूत्रात्मन् (सूत्र + आ°) adj. *fadenartig* d. i. *wie ein Faden durch Alles hindurchgehend* Vedântas. (Allah.) No. 62. Sây. zu ṚV. II, 248, 19. 249, 1.

सूत्रात्त (gebildet nach der Analogie von वेदात्त, सिद्धात्त) m. Bez. *der buddhistischen Sûtra oder der darin enthaltenen Lehren* Burnouf, Intr. 6. °वाद् Wassiljew 232. — Vgl. सौत्रान्तिक.

सूत्रामन् m. = सुत्रामन् ein N. Indra's AK. 1, 1, 1, 38 (nach ÇKDa.). H. 172, Schol. Vaijay. bei Uéval. zu Unâdis. 4, 144. Râdâ-Tan. 1, 100.

सूत्रालंकार (सूत्र + अ°) m. Titel eines Werkes Târân. 123 u. s. w. Hiouen-thsang 1, 269. Vie de Hiouen-thsang 115. 214. °टीका und °भाष्य ebend.

सूत्राली (सूत्र + आ°) f. *Halsband* Hân. 174.

सूत्रिक in adj. Ableitungen von compp. auf सूत्र; s. सांयक्°.

सूत्रिन् (von सूत्र) 1) adj. *mit Schnüren versehen* Kâlakârma 3, 106. — 2) m. *a*) = सूत्रधार *Schauspieldirector* Daçân. 2, 64. — *b*) *Krähe* Taik. 2, 5, 19. — Vgl. ब्रह्म°.

सूत्री f. wohl *Geburtsglied* (von सू = 4. सु): der Kuh AV. 9, 7, 14.

सूत्रीय in adj. Ableitungen von compp. auf सूत्र; z. B. पोग्या° *die Sûtra der Praxis betreffend* Suçr. 1, 28, 19.

1. सूद्, सूदते (vgl. 2. स्वद्) Dhâtup. 2, 24 (लपाने, v. l. तरणे, auch निवासे d. i. निरासे). der einfache Stamm nur im Veda vorhanden in den reduplicirten Formen सुषूदति, सुषूदम्, सुषूदथ, सुषूदत (AV. 1, 26, 4), सुषूदिमः; sonst nur सूदयति Dhâtup. 33, 43 (लपाने, तरणे, यामवणे, यामुतिकृत्योर्निरासे; st. dieses auch निवासे fehlerhaft). auch mod. 1) *richtig leiten, im Gang erhalten:* यावाये मर्तान्सुषूदः ṚV. 1, 73, 8. देवो यच्छा सवितर्व्या सुषूदति 105, 14. 5, 5, 2. 7, 1, 20. 18, 70, 2. ऋषिं वा यं तावानं वा सुषूदथ 5, 54, 7. तं त्वा वयोभिर्वावृधन्त सूदया सुषूदिम 1, 187, 11. 4, 4, 15. 39, 1. 40, 1. AV. 8, 51, 2 (ṚV. v. l.). — 2) *zurecht bringen, einrichten:* सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि ṚV. 1, 162, 17. विलिष्टम् VS. 23, 41 AV. 1, 18, 3. — 3) *zurecht —, fertig machen, zu Stande bringen; gut unterbringen:* कृधि: ṚV. 3, 4, 10. 7, 16, 9. असूदयत्सुकृते गर्भमद्रिः 3, 31, 7. अग्निः शर्धं ततपत्सूदयच्च 1, 71, 8. 72, 2. यं कृपा सूदयत्तनू इत् । मित्रं न शंसे सुधितम् 8, 23, 3. — 4) *zur Ordnung bringen* so v. a. *den Garaus machen, tödten, vernichten* (Lebendes, aber auch Unbelebtes): सूदयन्विविधान्मृगान् MBh. 1, 2333. ये (असुराः) मे शिष्यानागतान्सूदयन्ति 3238. 3, 14483. 11505. 4, 694. 731. 1995. 15, 846. 849. R. 4, 9, 20. 5, 38, 44. 41, 39 (स्थान्). 56, 124. fg. 128. 58, 16 (लङ्काम्). 7, 29, 1. Bhâg. P. 3, 11, 42. 22, 34. 9, 15, 20. Pañcat. 48, 3. med.: सूदयते R. 6, 95, 38. सूदयधम् Bhâg. P. 7, 2, 10. सूदयान MBh. 6, 2534. partic. सूदित 1991. 7, 434 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 11. 784 (स्थ). R. 1, 41, 8. R. Gorr. 1, 77, 27. 3, 31, 29. 4, 14, 10. Spr. (II) 6398. Verz. d. Oxf. H. 59, *b*, 25. Bhâg. P. 10, 63, 48.

— सनि caus. = सूद् 4) R. 1, 27, 19.

— नि caus. निषू° (so die Bomb. Ausgg.) dass. MBh. 1, 1339. 4, 720. 7, 1451. निसूदयिता Harîv. 6824. निसूदित MBh. 3, 8796. R. 1, 27, 20 (28, 20 Gorr.). 55, 4. 5 (56, 4. 5 Gorr.). 5, 56, 119. Pâr. 88, 9. मूलायाम् so v. a. *hingerichtet* Kathâs. 60, 63. 18, 139. — Vgl. निसूदक (lies निषू°) fg.

— विनि caus. dass.: °सूदित (so ed. Bomb.) MBh. 3, 8814. 9, 33.

— संनि caus. dass.: °सूदित (so ed. Bomb.) MBh. 3, 8742.

— प्र caus. 1) = सूद् 3): कृधि: ṚV. 2, 3, 10. — 2) = सूद् 4): आरम्भान्द्रियतां प्राज्ञः सर्वार्थाश्च प्रसूदयेत् MBh. 12, 4400.

2. सूद् (= 1. सूद्) adj. s. कव्य°.

सूद् m. gaṇa वृषादि zu P. 6, 1, 203. Accent eines auf सूद् ausgehenden comp. 2, 139. 1) *Wasserbehälter, Brunnen* Naigh. 3, 25 (= कूप). अपीपयत्त धेनवो न सूदाः ṚV. 7, 36, 2. मधुः सूदं पवस्व वस्व उत्सम् 9, 97, 44. — 2) *Schlamm eines vertrockneten Pfuhls* Çabdârnav. bei Wilson. व्यर्वाञ्चः सूदैरमितं वेदिम् ṚV. 10, 61, 2. TBr. 1, 1, 2, 5. 2, 2, 3. Çat. Br. 3, 7, 3, 21. Kâty. 21, 3. Ind. St. 2, 40. in der Bed. *Sumpf* vielleicht Râdâ-Tan. 1, 157. 167. — 3) *Koch* (von स्वद् wie 4) AK. 2, 9, 38. Taik. 2, 9, 6. 3, 3, 213. H. 722. an. 2, 237. Med. d. 16. Halâs. 2, 276. MBh. 1, 5231. 6723. 3, 1007. 8452. 4, 232. 237. 7, 2356. 12, 8390 (°ज्ञाः). 15, 614. R. 3, 28, 7. 5, 24, 8. Suçr. 1, 240, 19. Kap. 3, 63. Spr. (II) 5919 (काल°). 6345. Kathâs. 39, 9. 15. 49, 27. 39. Râdâ-Tan. 7, 1635. Bhâg. P. 9, 9, 21. Vielleicht hierher सूदी f. gaṇa गौरादि zu P. 4, 1, 41. — 4) *eine Art Brühe,* = व्यञ्जन AK. 3, 4, 16, 93. Taik. 3, 3, 212. H. 397. H. an. Med. = सूप Vîçva im ÇKDa. °व्यञ्जनकर्तारः Kâm. Nîtis. 12, 15. रुद्रसूदेन भूभुजा Râdâ-Tan. 6, 44. hierher oder zu 3) °स्यन्दनविद्याभ्याम् Kathâs. 56, 338. — 5) = साध्य, अपराध, पाप und लोध्र Âçâpâla im ÇKDa. — Vgl. देव°.

सूदक (von 1. सूद्) adj. *den Garaus machend* u. s. w.

सूदकर्मन् n. *Kochkunst* MBh. 1, 4997. 4, 358. Kathâs. 49, 11.

सूदता f. nom. abstr. von सूद *Koch* MBh. 4, 238.

सूदत्व n. dasgl. Kathâs. 56, 334.

सूददोहम् adj. *wie Brunnen Milch strömen lassend:* पृश्नयः ṚV. 8, 58, 3. f. (sc. ऋच्) heisst der eben citirte Vers Çat. Br. 7, 1, 2, 16. 3, 1, 24. 3, 7, 2, 21. Çâṅkh. Çr. 12, 21, 1.

सूदन (von 1. सूद्) 1) adj. *a*) *richtig führend:* अश्व ṚV. 4, 39, 3. — *b*) *den Garaus machend, vernichtend* Pañcat. 3, 2, 3. in comp. mit seinem Object: दानव° MBh. 1, 1177. अरिगण° 5331. 5430. 2, 1214. 3, 2525. 3666. 16998. 4, 160. 5, 445. 16, 52. R. 1, 1, 56. 52, 8. 53, 1. 2, 110, 15. 3, 30, 46. 32, 9. 33, 22. Kathâs. 27, 81. 120, 11. Bhâg. P. 9, 15, 31. Taik. 1, 1, 23.

क्रोश° Suçr. 2,386,10. विष° 1,227,20, 228,6. f. आ Harıv. 13163. ई Kathâs. 37,46. Çâṅk. 1,166. — 2) n. *das Garausmachen, Vernichten* Hallâs. 2,222. ततः स सूदनं चक्रे वानराणाम् R. 6,77,7. यमुर° Harıv. 9402. — Vgl. अरिष्ट°, यमुर°, कुष्ठ°, पाप°, बल°, मधु°, वल° (auch MBu. 13,3903), कव्य°.

सूदयित्नु (zu सूद) adj. *quellend:* आपः ṚV. 10,64,9.

सूदर (6. सु + उदर) adj. *einen schönen Bauch habend* P. 6,2,107, Vârtt.

सूदशाला f. *Küche* H. 998. Kathâs. 36,395.

सूदशास्त्र n. *Kochlehre, Kochbuch;* s. u. सूदाध्यक्ष.

सूदाध्यक्ष (सूद + ध्य°) m. *Oberkoch* H. 722. Hallâs. 2,276. यमाकार्यः प्रुचिदलधिकितिसविदां वरः । सूदशास्त्रविशेषज्ञः सूदाध्यक्षः प्रशस्यते ॥ Mârkaṇḍ.-P. 189 (202,22 nach Aufrecht) nach ÇKDa.

सूदितर् nom. ag. von 1. सूद P. 3,2,188.

सूदिन् (von सूद) adj. etwa *quellend, überlaufend:* आकृतीः क्षीणाति सूदि कुपोदक्षर्यामपात्रम् Kâṭh. 27,2.

सूद्गातर् m. *ein guter* Udgâtar TS. 7,1,9,1.

सूद्य (von सूद) adj. (f. आ) *einem Pfuhl angehörig* VS. 22,35. TS. 7,4,42,1.

सून 1) adj. (von सू = 4. सु) *erzeugt, geboren* P. 8,2,45, Schol. Vop. 26,38. fg. m. *Sohn* Paṇkat. 198,2 (fehlerhaft für सुत). f. आ *Tochter* H. an. 2,291. Med. n. 24. — 2) f. ऊ Uṇâdis. 3,13. *a)* (wie सूत्र von सिव्) *geflochtener Korb.* — *Schüssel* u. s. w.: सोमं सूनयार्तम् ṚV. 1,161,10. 162, 13. 10,86,15. नास्य क्षत्रा सूनानामेत्यग्रतः AV. 5,17,14. पालाशी Çânku. Çr. 17,3,2. 3. Gobh. 4,2,9. कुश° Âçv. Gṛhy. 4,8,22. 27. — *b) Schlachtbank, Schlachthaus, Schlächterei* H. 930. H. an. Med. Hallâs. 2,440. °चक्रध्वजवतां (das Suffix gehört zu jedem der drei Worte) M. 4,84. दशसूनासमं चक्रम् 85 (MBu. 13,5927). fg. °स्थ 11,135. MBu. 3,13710. पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः । कण्डनी चोदकुम्भश्च so v. a. *diese fünf Gegenstände können den Tod eines lebenden Wesens bewirken* M. 3,68. 71. सूतं यानं स्त्रियः सूना so v. a. *das Tödten eines lebenden Wesens* Bhâg. P. 1,17,38. एकादशेन्द्रियवनुः पञ्चसूनाविनोदकृत् (das *Frohnen der fünf Sinne wird mit der Lust am Schlachten* verglichen) 4,29,30. सूनायामपि so v. a. *sogar wenn Einem das Messer an der Kehle steht, sogar im äussersten Nothfalle* 5,9,18. — *c) Zapfchen im Halse* Ak. 2,4,10,115. H. an. Med. Hir. 129. — *d) Tochter* s. u. 1). — 3) n. = प्रसून *a) Blüthe* Taitt. S. 3,3,270. H. 1125. H. an. Med. सुरद्रुम° Paṇkat. 3,5,8. — *b) Frucht* Taitt. Med. — Vgl. उत्सून, सौनिक.

सूनर् adj. (f. ई) *froh, freudig, wonnig:* Jüngling ṚV. 8,29,1. Weib 1, 48,5. Ushas Naigh. 1,18. ṚV. 1,48,8. 10. 4,32,1. 7,81,1. 144 TS. 1, 6,2,1. *froh* so v. a. *erfreulich:* वसु ṚV. 1,40,4. 5,34,7. In der Stelle वसुः श्रवे मरुतः सूनरो नरिः (यज्ञिः) 10,115,7 fälschlich für सूनृता. — Vgl. सूनृत.

सूनाक (?) Weber, Gjot. 78.

सूनावत् s. u. सून 2) *b*).

सूनिक (von सूना) m. = सौनिक *Metzger, Fleischverkäufer* Vaṃç. Bhâg. S. 51,5. सौनिक v. l.

सूनिन् (wie eben) m. dass. Jâṭ. 1,141.

सूनु Uṇâdis. 3,35. 1) m. *a)* (von 1. सु) = सवितर् *die Sonne* Taitt. S. 3,3,271. H. an. 2,291. Med. n. 25. Viçva bei Uṇâval. = प्रेरयितर् Sây. zu ṚV. 1,103,4. — *b)* (von 2. सु) = सोतर् *Kelterer des Soma* nach Sây. und Durga ṚV. 3,1,12. möglich auch 1,62,9. 103,4 (= प्रेरयितर् Sây.). — *c)* (von 4. सु) *Sohn* Naigh. 2,2. AK. 2,6,4,27. Taitt. H. 542. H. an. Med. Hallâs. 2,242. Viçva a. a. O. loc. सूनवि ṚV. 8,57,15. — 1,26,3. ज्येष्ठं माता सूनवे भागमाधात् 2,38,5. यद्धो सूनुर्न पित्रो विवक्ति 7,67,1. घृतस्य 8,52,9. वनस्पतेर्नाम् 8,23,25. घर्दः 10,20,7. शवसः, सक्षः u. s. w. s. u. d. Ww. नित्य 1,166,3. कुभ्र 5,42,3. तनय 3, 1,23. 10,39,14. VS. 14,8. AV. 8,1,3. 7,2,3. 12,3,32. Agni heisst सूनो st. शवसः सूनो ṚV. 8,4,4. — R. 1,3,31. Raghu. 1,93. 3,18. 54. Vṛtra. 145. Spr. (II) 7160. Râga-Tar. 6,130. Collectiv *Nachkommenschaft:* रुद्रस्य सूनुम् ṚV. 6,66,11. 4,37,4. — *d) ein jüngerer Bruder* Taitt. H. an. Med. Viçva a. a. O. — *e)* N. pr. eines Ṛshi mit dem patron. Ârbhava, Liedverfassers von ṚV. 10,176. mit dem patron. Kâçjapa Ind. St. 3,244,*b*. — 2) f. *Tochter* AK. 2,6,4,27. fg. H. 542. आपो नाम इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः M. 1,10. — Vgl. ब्रह्म°, भृगु°, मही°, राज्ञ°, वायु°, सागर°, सौनेय.

सूनुता (von सूनु) f. *Sohnschaft:* तं दृष्ट्वा पुवनाश्वस्य जठरे सूनुतां गतम् MBu. 7,2274.

सूनुमत् (wie eben) adj. *Söhne habend* ṚV. 3,24,5.

सूनृत (zu सूनर) 1) adj. (f. आ) *a) fröhlich, wonnig:* Ushas ṚV. 1, 124,10. 123,5. 4,53,9. 8,9,17. Indra 8,46,20. etwa auch प्रणीति 4, 48,2 (acc. pl. n. wäre möglich). वाच Ait. Br. 1,30. — *b) freundlich, freundlich wahr* (indem das Wort als aus 6. सु + ऋत zusammengesetzt gedacht wird): von Reden AK. 1,1,8,19. Taitt. S. 3,3,192. H. 264. an. 3,314. fg. Med. t. 173. Hallâs. 1,141. Jâṭ. 1,109. MBu. 13, 349. Spr. (II) 824. 2589. 2752. 6019. 7161. Raghu. 1,93. Çiç. 13,1. Utarar. 101,9 (133,4). Bhâg. P. 1,19,31. 8,19,2. सामाद्यां सूनृतं सत्यं प्रियं स्तोत्रं च कीर्त्यते Kâm. Nîtis. 17,16. भाषते सूनृतं स्निग्धम् Sin. D. 60,11. — 2) f. आ *a) Freude, Wonne; Frohlocken, Jubel, Jubellied* ṚV. 1,30,5. इषे अवसे सूनृतायै 121,14. 123,6. ऊर्ध्वा ते अनु सूनृता मनीस्तिष्ठतु जानती *der Jubel steige auf zu dir, wohin er den Weg kennt,* 134, 1. 135,7. सूनृतानाम्, गिराम् 3,31,18. 21. वसूनि, सू° 10,111,10. ऊर्जा स्वधा सू° AV. 8,10,11. 11,7,13. 12,5,6. सो अस्मे सूनृतां दुहे 10,6,13. नेत्री सूनृतानाम् ṚV. 1,92,7. 3,61,2. 7,76,7. 79,5. वायोरिव सूनृतानामुदर्के 1,113,18. प्र ये वन्दुं सूनृताभिस्तिरन्ते *freudig* 7,69,9. क्रीळन्त्यस्य सूनृताः 8,13,8. 19,22. नरिष्टस्य शर्धतो नियन्ता सूनृतानाम् 32,15. 10, 61,21. 104,5. TS. 1,6,11,2. 3. TBr. 3,7,6,11. Pâṇ. Gaṇ. 3,4. — *b) Freundlichkeit, freundliche (wahre) Worte* Kâṭhân. 1,8. स त्वमप्येनमाराध्य सूनृताभिः पुनः पुनः MBu. 3,16990. उभयोरन्तरं वेद सूनृतानृतयोरपि (kann auch n. sein) *Wahrheit und Lüge* 5,5667. Bhâg. P. 10,49,27. यद्दिनासूनृतास्तेयव्रह्माकिंचनता: (oder n.) यमाः H. 81. am Ende eines adj. comp.: यवितव्य° (eine Person) Raghu. 8,91. Bhâg. P. 1,18,28. स्वर्हणेन समूनृतेन 3,16,23. वाक्यं धर्मयुक्तं समूनृतम् 8,19,1. — *c)* personificirt: देवी ṚV. 1,40,5. 141,2. वैश्वानरी AV. 5,62,2 (VS. und TBr. v. l.). Bhâg. P. 8,13,30. als Gattin Dharma's 1,25. als Tochter Dharma's und Gattin Uttânapâda's Harıv. 61. VP. 86. N. 1. als Apsaras Vishṇ. beim Schol. zu H. 183. — 3) n. *a)* = सूनृता *a)*: क्षिप्त राय: सूनृतां (सूनृता Padap.) मघानि ṚV. 7,57,6. 8,45,13. AV. 19,7,2. = कुशल, मङ्गल

Taik. H. ç. 1. H. an. Med. — *b*) bei den Gaina eine der 5 Tugenden, welche zum richtigen Lebenswandel gehören: *freundliche Aufrichtigkeit* Sarvadarçanas. 32, 22. 33, 3. 15. Hierher könnten auch mehrere der unter 2) *b*) aufgeführten Stellen gezogen werden. — Vgl. सप्त°.

सूनृतावत् adj. (f. °वरी) = सूनृतावत्. Ushas RV. 4,52,4.

सूनृतावत् (von सूनृत) adj. *froh, wonnig, jubelnd* RV. 1,92,1. 7,74,2. इदं राष्ट्रं प्र विश सूनृतावत् (= प्रीतियुक्त Comm. zu TBr.) AV. 13,1,1. सूनृतावतः सुभगा इरावतो रुशमुदः 7,60,6. शाला 3,12,2. युमद्वद दुन्दुभे सूनृतावत् 5,20,6. कशा RV. 1,22,2. पुरुणीथे रेरते सूनृतावान् 59,7. Ushas 92,14. 7,81,6. Naigh. 1,8. राधस् RV. 8,86,6.

सौनीय adj. für सूनीय (6. सु + उ°) *gut auszuschöpfen* TS. 5,2,4,1.

सून्मद und सून्माद adj. schlechte Form für सोन्माद Bharata und Ramâjana zu AK. 3,1,22 nach ÇKDa.

सूप Uṇâdis. 3,26. m. 1) *Brühe, Suppe, dünnes Mus*, namentlich *aus geschrotenen Hülsenfrüchten mit Zuthat von Wurzeln und Salz bereitet* Taik. 3,3,213. H. 397. an. 2,227. Med. p. 13. Viçva bei Uṇâdival. दाली मलिले सिद्धा लवणार्द्रकक्विडुभिः संयुक्ता सूपनाम्नी स्यात् Bhâvapr. 5. Karaka 2,6. Suça. 2,64,2. यूषसूपविकल्पाः 167,4. शाकसूपान्नमांसानि 247,12. 1,230,2. P. 6,2,122. 7,3,69, Vârtt., Schol. M. 3,226. MBu. 4, 29. 239. Harîv. 8190. R. 1,53,8. 2,91,66. न स जानाति शास्त्रार्थं दर्वी सूपरसानिव Spr. (II) 5378. MBu. 10,178. Bhâg. P. 10,24,26. मूलकसूप P. 6,2,122, Schol. मुद्गसूप 122, Schol. Karaka 1,7. माष° 27. Suça. 1, 74,16. 2,156,13. Vîrar. 1,7,33. Varâh. Bṛh. S. 76,8. सूपोदन Karaka 1,15. Suça. 1,240,21. — 2) *Koch* Taik. H. 723. H. an. Med. Viçva a. a. O. Vielleicht hierher सूपी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. — 3) = भाण्ड und शायक (d. i. सायक) Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. सौपिक.

सूपकर्तृ m. *Bereiter von Brühen, Koch* MBu. 4,26.

सूपकार m. dass. AK. 2,9,17. H. 723. an. 2,227. Halâj. 2,276. MBu. 4,359. Spr. (II) 4111. Kathâs. 8,34. 20,198. 49,41. Pañkat. 253,15. Schol. zu Kap. 1,106. सूदपाकोपजीवी यः सूपकार इति स्मृतः Brahmavaiv. P., Prakṛtikh. 27 im ÇKDa. °शास्त्र Ind. St. 1,22,8.

सूपकृत् m. dass. Kathâs. 20,195. 200. 49,42. 56,405.

सूपगन्धि adj. *nur mit ganz wenig Brühe versehen* P. 5,4,136, Schol.

सूपचर (6. सु + उ°) adj. 1) *leicht zugänglich, gefällig:* पिता पुत्राय Cat. Bh. 2,3, 4,20. — 2) *leicht zu haben*, superl. °तम Citat beim Schol. zu Kâç. Ça. 190,16.

सूपचरण (6. सु + उ°) adj. (f. आ) *leicht zu begehen* TS. 2,6,9,6. Cat. Bh. 1,9,2,3.

सूपचार (6. सु + उ°) adj. *leicht zu behandeln, — zufrieden zu stellen* MBu. 12,7998.

सूपत् (सूपद्) indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. — Vgl. कूपत्.

सूपतीर्थ (6. सु + उ°) adj. (f. आ) *mit einem guten Steg zum Wasser versehen:* नदी MBu. 3,11252. 5,5176. 11,804.

सूपदंश (6. सु + उ°) m. *schönes Gewürz, — Zukost* R. 2,61,5.

सूपद्वार (6. सु + उ°) adj. *mit schönen Aussenthoren versehen* R. Gorr. 2,99,2.

सूपधूपन n. *Asa foetida* (*die Brühe würzend*) Taik. 2,9,11. Râéar. 6, 75; vgl. Bhâvapr. unter सूप 1).

सूपपर्णी f. = मुद्गपर्णी Râéar. 3,53. Ratnam. im ÇKDa.

सूपवसति (6. सु + उ°) adj. (f. आ) *zu dem man leicht —, gern hinwankt* RV. 10,18,11.

सूपविष्ट adj. = सुखोपविष्ट *bequem sitzend* Bala. P. 3,12,3.

सूपश्रेष्ठ m. *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) Lin. Râéar. 16,27.

सूपसंस्कृत (6. सु + उ°) adj. *wohl zubereitet:* यूष Karaka 8,6.

सूपसदन (6. सु + उ°) adj. P. 3,3,129, Schol. *bei dem es sich gut sitzt:* यज्ञ TS. 7,5,20,1.

सूपसर्पण (6. सु + उ°) adj. (f. आ) *zu dem man sich leicht —, gern begiebt* AV. 18,3,50. सूपवसथ RV.

सूपस्कर (6. सु + उ°) adj. *mit schöner Ausrüstung versehen:* रथ MBu. 4,1016. 5,4446. 7101; vgl. सुचक्रोपस्कर 2,2068. 14,2316 (स° beide Ausgg.).

सूपस्थ (6. सु + उ°) adj. (f. आ) *einen guten Schooss bildend:* संभिन्नो घरुणो भव सूपस्थाभिर्न धेनुभिः (die *Milch* ist gemeint, mit welcher der Soma *sich mischt*) RV. 9,61,21. वनस्पति VS. 21,60. Çiraṇ. Ça. 5,1,32.

सूपस्थान (6. सु + उ°) adj. *dem man sich gern naht:* Himmel TS. 7,5,20,1.

सूपाङ्ग (सूप + 3. अङ्ग) n. *Asa foetida* Râéar. 6,74; vgl. सूपधूपन.

सूपाय (6. सु + उ°) adj. *ein sicher zum Ziel führendes Mittel* Spr. (II) 4009.

सूपायन (6. सु + उ°) adj. (f. आ) *leicht zugänglich:* पिता सूनवे RV. 1,1,9. 10,18,11.

सूपावसथ (6. सु + उ°) adj. (f. आ) *gute Rast darbietend* TS. 2,6,9,6.

सूपिक = सूप *Brühe* Vishṇ. 197.

सूपीय adj. = सूप्य gaṇa यवूपादि zu P. 5,1,4.

सूपेशाण (सूपे loc. von सूप + शाण) m. P. 6,2,64, Schol.

सूप्य (von सूप) 1) adj. *zu Brühen —, zu Suppen geeignet* gaṇa यवूपादि zu P. 5,1,4. °शाक Karaka 1,27. °धान्य 8,6. Vishṇ. 1,6,26. — 2) n. *Suppenspeise:* मुद्गः सूप्योत्तमो मतः Karaka 1,27. Vishṇ. 1,6,95.

सूभर्व (6. सु + भर्व von भृ) adj. *wohlgenährt:* Stier RV. 10,94,3. 102,5.

सूमन् Uṇâdis. 1,144. n. *Milch* und *Luftraum* (m. in dieser Bed. nach Uṇâdival.) Med. m. 36. *Wasser* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. सुषूम.

सूमय (सुऽमय Padap.) adj. von *guter Arbeit:* Bogen RV. 2,66,11. = सुमुख Nir. 6,32.

सूय (von 2. सु) n. *Kelterung des* Soma MBu. 5,4802 nach der Lesart der ed. Bomb. — Vgl. रास°.

सूयवस, सूयवसाद, सूयवसिन् und सूयवस्य s. u. सु°.

सूर Uṇâdis. 2,24. gaṇa पचादि zu P. 3,1,134 (oxyt., f. ई). संकाशादि zu 4,2,80. m. 1) (von 1. सु) *Antreiber* (nach Sây.) RV. 1,121,7. — 2) (von 2. सु) *der aus der Presse rinnende* (Soma): सूरं चित्समुपीरिषः RV. 1,86,5. सूरा यवं वि तन्वते 9,10,5. 9. सूरो यवं वि यौति 91,2. क्विन्वसि सूरमुक्थ्यः 65,1. 67,9. 66,18. AV. 18,4,58 (सोम RV.). — 3) (von स्वर्) *die Sonne* (vgl. सूर्य) P. 5,4,30, Vârtt. 8. Kâç. zu P. 5,4, 30. AK. 1,1,2,39. H. 96. Halâj. 1,35. RV. 1,121,6. 141,12. सूरादश्वं निरतष्ट 163,2. सूरश्चिदह्नो व्युषन्तमश्नैः 4,45,6. 5,79,9. 6,2,6. 3,2. 7, 45,2. 9,111,2. जगाम सूरो यर्धनो विमध्यम् 10,179,2. सूर उदेते 3,15, 2. 6,51,2. विश्वचक्षस् 1,50,2. चित्र 7,3,6. विश्वदर्शत 9,66,22. Vâlakh.

8,5. AV. 6,61,1. Vgl. 2. शूर. — 4) = सूरि *Gelehrter* Çabdârthak. bei Wilson. — 5) N. pr. a) des Vaters von Kunthu, dem 17ten Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇi, H. 38. — b) eines Verfassers von Gebeten bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,a,28. — Vgl. चर्ल-काय°, घादि°, उत्सूर, सौर्य.

सूरकन्द m. = शूरण 2) Râǵân. 7,62.

सूरकेतु m. N. pr. eines Sohnes der Viçvâmitra MBh. 13,256. सुर-केतु ed. Bomb.

सूरिचत्तम् adj. *hell wie die Sonne:* Indra's Rosse RV. 1,16,1. die Marut 89,7. die Ṛbhu 110,4. 7,66,10.

सूरति adj. दमे Uṇâdis. 5,14. = उपशान्त und कृपालु Ujjval. *mitleidig* AK. 3,1,15. H. 369. f. घा *eine fromme Kuh* Halâj. 2,115. — Vgl. सुरत.

सूरतकल्पतरु m. Titel eines Commentars Hall 202.

सूरतसिंह m. N. pr. eines Fürsten Hall 202.

सूरभू m. N. pr. eines Mannes Hall 176.

सूरमस m. pl. N. pr. eines Volkes P. 4,1,170. — Vgl. सौरमस.

सूरवस् adj. *das Wort* सूर *enthaltend* Pâraṇ. Bh. 13,8,2.

सूरवर्मन् m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 125,a,30. — Vgl. शूर°.

सूरसूत m. *der Wagenlenker der Sonne, die Morgenröthe* AK. 1,1,2, 28. H. 102.

सूरसेन m. pl. N. pr. eines Volkes, = शूरसेन AV. Paric. in Ind. St. 10,319.

सूरसेनदेश m. N. pr. eines Landes Verz. d. Oxf. H. 352,b,13. wohl fehlerhaft für शूरसेन°.

सूरि Uṇâdis. 4,64. m. 1) (von 1. सु) a) (eig. *Antreiber*) *Veranstalter, Auftraggeber, derjenige, welcher Priester u. s. w. zu einer ihm zugute kommenden heiligen Handlung veranlasst und dieselben belohnt,* so v. a. das spätere यजमान *Herr des Opfers* (gewöhnlich ein Reicher oder Vornehmer). पे सूरयो दधिरे पुरो नः RV. 6,25,7. 1,54,11. 73,8. 5,10,3. 6. 42,4. 7,19,7. 32,16. ते स्याम देव सूरिभिः सह 66,9. 13. सूरिषु ये नो राधांसि मघवानो घासत 5,79,6. सूरि, गृणत् 86,6. सूरि, ऽरितर् 7,3,8. neben ऽरन् 67,10. स्तोतर् 2,1,16. 2,12. विप्र 1,22,20. — सुव्रत 125, 7. मघवन् 2,6,4. AV. 3,19,2. मंहिष्ठ RV. 3,46,24. सुव्रात 2,2,11. 5,6,2. namentlich genannt z. B. 5,27,4. 33,8. सुमंखस्य 1,181,4. = ईरयितर् Nir. 12,3. वं सूरिरर्थो पृच्छमान एति RV. 7,1,28. अवः सूरिभ्यो अमृतम् 81,6. ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता *gebilligt* von 84,2. सूरयो वीरैः पृतनासु सत्वभिः 90,6. 92,4. — b) *Herr, Gebieter* überh., *Anführer* (auch von Göttern): इन्द्र सूरीन्कृणुहि स्मा नो अर्धम् RV. 6,44,18. 47,19. विश्वे देवासः उत सूरयो मम 10,66,11. सूरि चिद्ये धनमर्दन्ति वाजैः 1,173,7. 186,3. त्वष्टा गनु स्मत्सूरिभिः 6. die Âdityâ 2,18,4. 83,7. देवाः स्तवन्ते मनुष्याय सूरयः 10,65,4. AV. 2,11,4. f. *Herrin* etwa AV. 13,1,22. — c) *ein Weiser, grosser Gelehrter, Meister im Fache* AK. 2,7,5. H. 341. Halâj. 2, 177. Suçr. 1,248,9. Ragh. 1,4. Milav. 77. Spr. (II) 970. 1420, v. l. 2273. Varâh. Bṛh. 25 (23),21. Goldm. Khandan. 19. Rîǵa-Tar. 1,14. 3, 132. 4,349. Bhâg. P. 1,1,1. 10,22. 2,10,44. 3,13,4. 4,12,25. 20,12. 5,11, 1. 6,17,18. 11,3,43. Tattvas. 4. Sarvadarçanas. 8,22. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 35. Wilson, Sel. Works 1,337. — d) *der Weise unter den Göttern* d. i. Bṛhaspati, *der Planet Jupiter* Varâh. Bṛh. 2,1. 5. 3,6. 22,2. Ind. St. 2,261. — 2) (von 2. सु) *Keltерer —, Opferer des* Soma: वि ओकः एतु पथ्येव सूरेः RV. 10,13,1. 61,18. यावीणः 78, 6. Von den unter 1) angeführten Stellen liessen sich einzelne auch hierher ziehen. — 3) *eine best. Gemüsepflanze* Vîsân. 1,6,107. — 4) nach Sîj. = सरणि *Bahn:* घादस्य ते कृष्णासो दति सूरयः RV. 1,141,3. — 5) = यादव und सूर्य Uṇâdis. im ÇKDr. — Vgl. घन°, गोविन्द°, देव°, नारायण°, माणिक्य°, रुद्र°, वृद्धवाद°, शास्त°, शास्ति°, साधुरत्न°, सुधानन्द°, सूर्य°.

सूरिन् m. = सूरि 1) c) Çabdar. im ÇKDr.

सूरी f. gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. 1) विश्वस्य या ज्ञायमानस्य वेद शिरः शिरः प्रति सूरी वि चष्टे (निर्ऋतिः) TS. 4,2,8,4. etwa f. zu सूरि 1)b). — 2) f. zu सूरि 1) c) Varadarâǵâ bei Ujjval. zu Uṇâdis. 4,64. — 3) (f. zu सूर 3) oder zu सूर्य) *eine Gemahlin des Sonnengottes* (aber keine Göttin) P. 4,1,48, Vârtt. 2, Schol. (= कुन्ती). — 4) = राजसर्षप Rarnam. im ÇKDr.

सूर्त, सूर्तति Dhâtup. 17,15 (घनादरे, घादरे). सूर्त्य, सूर्त्यति 15,2 (ईर्ष्यार्थे). *sich kümmern um* (acc.): घसूर्तत् Kâṭ. 10,6. मा सूर्तत 34,17. नर्तुन्सूर्तेत् (सूर्तेत्) Wasr. nach seiner Aut.) Naiṣadhîjâr. 248, 2. 4 v. u. सूर्तत् Âpast. 2,28,9. Es wird wohl überall einfach त, nicht त्त zu schreiben sein.

सूर्तण (von सूर्त) n. = घनादर (vielmehr घादर) Çabdar. im ÇKDr.

सूर्त्य (wie oben) 1) adj. *worum man sich kümmern —, worauf man Rücksicht nehmen muss* TBr. 1,2,2,1. Kâṭ. 8,15. 9,3. — 2) m. *Phaseolus radiatus* Roxb. Çabdar. im ÇKDr.

सूर्दन m. N. pr. eines Fürsten Notices of Skt Mss. 1,42.

सूर्त ved. partic. von सर्, = सृत P. 8,2,61.

सूर्पात m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,11 wohl fehlerhaft für शूर्पात oder सूर्पात.

सूर्मी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. und सूर्मि 1) *Röhre* (zur Wasserleitung; vgl. कुलीय) Nir. 5,27. सूर्म्ये सुषिराम् RV. 8,58,12. प्रुष्का Çat. Br. 8,7,3,3. — 2) *ein röhrenartiges Gefäss als Leuchter dienend* (für Oel oder Talg): प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नो ऽजस्रया सूर्म्या *mit unverlöschlicher Leuchte* RV. 7,1,3. कर्णकावती *mit Oehr und Handgriff versehen* TS. 1,5,9,6. 5,4,3,3. Kâṭ. 21,9. — 3) *eine (hohle) metallene Säule* (durch deren Glühendmachung Verbrecher, insbes. Ehebrecher, zum Tode befördert werden) AK. 2,10,25. Trik. 3,3,141. H. 1461. Halâj. 1,131. ज्वलितां सूर्मिं परिष्वज्य Âpast. 1,25,2. गुरुतल्पगामी तु सुषिरां सूर्मिं प्रविश्योभयत घादीप्याभिदहेदात्मानम् 28,15. सूर्मीं ज्वलन्तीं स्वाश्लिष्येत् M. 11,103. सूर्म्या लोहमय्या पुरुषमालिङ्गयति स्त्रियं च पुरुषवपुषा सूर्म्या Bhâg. P. 5,26,20. — Vgl. तप्तसूर्मि.

सूर्म्य 1) adj. etwa *in Röhren —, in Kanälen befindlich* TS. 4,3,9,2. सूर्म्या VS. — 2) f. घा N. pr. der Gattin Anuhrâda's Bhâg. P. 6,18,15.

सूर्य (von स्वर्) P. 3,1,114. Vop. 26,20. 1) m. a) = सूर *die Sonne* (auch persönlich gedacht) Naigh. 5,6. Nir. 12,14. Kiç. zu P. 5,4,20. AK. 1,1,2,29. H. 95. Med. j. 62. Halâj. 1,25. 5,53. घा सूर्यो बृहतस्तिष्ठदभ्रान् RV. 4. 1,17. उत्सूर्यो ज्योतिषा देव एति 4,13,1. fgg. 7,60,1. fgg. 63,1. fgg. इन्द्रः सूर्यमरोचयत् 8,3,6. वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः 7,36,1. 81,2. (उषसः

अजीजनत्सूर्यम् 78,2. रदत्पथो वरुणः सूर्याय 87,1. दिवि सूर्यमदधात् 5,85,2.5. 1,125,6. बाडसे सूर्यो इव 8,34,17. यदूं सूर्ये इवातनि sagt Indra 6,10. VS. 8,9. एकाको चरति 23,10. Çat. Br. 2,1,2,19. 3,4,32. ज्योतिषा मेषः TS. 3,1,4,2. sieben *Sonnen* AV. 13,3,10. Kâṭh. 37,9. Taitt. Âr. 1,7,1. fgg. VS. 632; vgl. ṚV. 9,114,3. sieben Rosse der *Sonne* ṚV. 7,66,15. Harîv. 2472. sieben Strahlen ṚV. 8,61,16. चरणा 3,5,5. चक्र 4,17,14. 28,2. चतसः 7,98,6. चतुरः 5,40,5. माति (vgl. स्वर्भाति) 2,19,4. heisst Sohn des Himmels 10,37,1. Ushas ist Tochter der *Sonne* 4,43,2. 5,79,5. TBr. 2,6,4,2. Weib derselben ṚV. 7,75,5. उरुचक्षसम् 35,8. यन्तार 5,27,6. सप्ताश्व 45,9. भ्रक्ष 6,4,2. वृत्रकरून् 8,82,4. दर्शत 9,101,12. यायेय Çat. Br. 1,6,2,24. ज्योतिष्मत् Kâṭh. Ça. 25,3,11. शश्वत्सूयमानात्सूर्यः Maitrâjan. 6,7. यस्माकं बोध्यविता मंहाधने तनूष्वप्सु सूर्ये *im Sonnenschein, — glutk* ṚV. 6,46,4. स्पर्धेत्ते धियः सूर्ये न विशः 9,94,1. प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सोमेष्वे सुषिमावदिन्द्रः (nach Sây. *mit Sûrja*) 1,61,15. Indra, Agni, Sûrja Çat. Br. 4,5,4,1. TS. 6,6,6,3. Agni, Vâju, Sûrja 3,5,4,1. Çat. Br. 11,2,3,11. — Weber, Gjot. 106. 110. M. 1, 65. 2, 219. fgg. 3, 230. 4, 52. 11, 219. MBh. 3, 1749. 2827. Harîv. 12148. R. 1,1,6. 7,17. 63,2. 5,25,26. Mnn. 39. Spr. (II) 7162. Varâh. Bṛh. S. 5,7. 10. 24,30. 30,1. Weber, Kṛishṇaj. 264. Verz. d. B. H. No. 947. Bhâg. P. 4,5,2. Ver. in LA. (III) 1,12. Lalit. ed. Calc. 43,18. 136, 2. Lot. de la b. l. 2. Wilson, Sel. Works 1,20. सूर्यस्य यात्राधाताम् N. eines Sâman Ind. St. 3,245,a. pl. personif. Kathâs. 115,38. सूर्यापाय Mnn. 78. °प्रभवो वंशः Raghu. 1,2. °चार् Verz. d. Oxf. H. 330,a,12. °दर्शनचारफलानि 329,b,7 v. u. °कवच 26,a,37. 94,a,35. Verz. d. Tüb. H. 20. °पूजा Verz. d. Oxf. H. 45,a,22. 85,a,41. °प्रयोग 94,b,20. fg. °महाः 93, b,6. 7. सूर्यादिमन्त्रनिरूपण 100,a,11. °स्तव 85,a,40. fg. am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 1,2269. unter den Namen Çiva's 12,10260. unter den Âditja Weber, Rimây. Ur. 304. 313. — *b*) Bez. *der Zahl zwölf* Weber, Gjot. 101. — *c*) *Calotropis gigantea* (wie alle Worte für *Sonne*) Med. — *d*) N. pr. eines Dânava Vasu-P. im ÇKDr. eines Sohnes des Bali Çabdârthak. bei Wilson; verschiedener Männer Râga-Tar. 8,347. 651. Vie de Hiouen-thsang 189. Verz. d. B. H. No. 53. = सूर्यदास No. 832. Verz. d. Oxf. H. 132,a, No. 240. देवज्ञ° Verz. d. B. H. No. 539. देवज्ञपण्डित Notices of Skt Mss. 1,42. Hall. Anth. S. 468. — 2) f. या *a*) *die Sonne* weiblich personificirt Naigh. 5,6. Nir. 12,7. als Gattin des Sûrja bestimmt P. 4,1,48, Vârtt. 2. Taik. 1,1,101. Mnn. wird von Savitar dem Soma gegeben ṚV. 10,85,9. fgg. Hochzeit derselben AV. 12,1,34. Tochter des Pragâpati, jedoch mit dem Beiw. Sâvitri Ait. Br. 4,7. सावित्री AV. 5,82,2. 9,4,14. वहतुं सूर्यायाः ṚV. 1,184,3. येन पत्नी भवथः सूर्यायाः (sonst Gatten der Tochter der Sonne) 4,43,6. 5,73,5. 8,22,1. S. erhält den Pûshan 6,58,4. — 1,167,5. 8,63, 6. °विवाह् Kaç. 79. — *b*) = वाच् Naigh. 1,6. *das Sûrjâ-Lied* (ṚV. 10,85) Çâṅkh. Gṛhj. 1,14,12; vgl. सूर्याविद्. — *c*) *eine Neuvermählte* Çabdar. im ÇKDr. Bhâg. P. 4,24,12. 10,1,29. 61,40. — *d*) *ein best. Kraut* (ओषधि) Mnn. = इन्द्रवारुणी Râgân. 3,57. — 3) adj. *solar:* मास Weber, Gjot. 88. 112. — Vgl. नाना°, प्रतिसूर्यम्, बालसूर्य, यम°, वज्र°, वि°, शालि°, सार्व°, सौर.

सूर्यक (von सूर्य) 1) adj. *sonnenähnlich* v. l. bei Nilak. zu Harîv. 15094. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,666. eines Fürsten VP. 466, N. 5.

सूर्यकर m. *Sonnenstrahl* Pañkat. 37,20.

सूर्यकान्त m. AK. 3,6,2,16. 1) *ein best. stark funkelnder Edelstein* H. 1067. Hall. 2,21. Râgân. 13,207. MBh. 12,7969. Raghu. 11,21. Spr. (II) 6403. — 2) *eine best. Blume* Çabdar. im ÇKDr. unter सूर्यमणि; vgl. सूर्यकान्ति. — 3) N. pr. eines Berges Mârk. P. 59,22. — Vgl. चन्द्रकान्त.

सूर्यकान्ति f. *eine best. Blume* Çabdar. im ÇKDr.

सूर्यकेतु 1) adj. *die Sonne zum Feldzeichen habend* oder *sonnenhell:* देवसेना: AV. 5,21,12. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Çâṅgârdharjavadâna 2.

सूर्यकाल m. *Tag* (im Gegens. zur *Nacht*) Çabdar. im ÇKDr.

सूर्यकालानल n. (sc. चक्र) Bez. *eines best. Diagramms* Svarodaja im ÇKDr.

सूर्यक्रान्त m. *ein best. Tact* Saṅgîtadâmodara im ÇKDr. Suppl. unter रुद्रकान्त.

सूर्यक्षय m. *die Behausung der Sonne* Bhâdd. in Ind. St. 1,119.

सूर्यगङ्गातीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 77,b,20.

सूर्यगर्भ m. 1) N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 2. Schiefner, Lebensb. 255 (55). Daçabh. 2. Vjutp. 21. — 2) Titel eines Sûtra Wassiljew 168.

सूर्यगुप्त (?) m. N. pr. eines Mannes Wassiljew 207.

सूर्यग्रह m. *Sonnenfinsterniss* Tithjâdiv. im ÇKDr.

सूर्यग्रहण n. dass. Varâh. Bṛh. S. 97,2. Sûrjas. 5 in der Unterschr. Verz. d. B. H. No. 841. 845. Verz. d. Oxf. H. 326,a,5. Verz. d. Cambr. H. 28 u. s. w. °पर्वणि Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,32,10.

सूर्यचतुस् m. N. pr. eines Râkshasa R. 6,69,13.

सूर्यचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 44,139.

सूर्यज 1) m. *Sohn der Sonne,* Bez. *a*) *des Planeten Saturn* Varâh. Bṛh. S. 9,38. 104,44. Bhâg. 23 (21),6. — *b*) *des Affen* Sugriva Gaṇîbh. im ÇKDr. — 2) f. या *Tochter der Sonne,* Bez. der Jamunâ H. 1083.

सूर्यतनय 1) m. *Sohn der Sonne:* Manu Mârk. P. 81,1. *der Planet Saturn* Varâh. Bṛh. S. 103,9. — 2) f. या *Tochter der Sonne,* Bez. der Jamunâ AK. 1,2,3,31.

सूर्यतपस् m. N. pr. eines Muni Kathâs. 25,14.

सूर्यतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,6018.

सूर्यतेजस् adj. *die Kraft —, den Glanz der Sonne habend* AV. 19,3,27.

सूर्यत्वच् adj. *eine Haut —, einen Ueberzug so glänzend wie die Sonne habend:* Wagen der Açvin ṚV. 1,47,9. 8,8,2. die Marut 7,59,11. Apâlâ 8,80,7. AV. 2,2,2. Indra's Gattin TBr. 2,4,3,7.

सूर्यत्वचस् adj. dass. VS. 10,4. Pañkav. Br. 9,2,14. Wagen VS. 33,33. die Marut AV. 1,26,3.

सूर्यदत्त m. N. pr. eines Mannes MBh. 4,1014. 1037. 5,2237. eines Sohnes des Lakshmîdhara Verz. d. B. H. No. 166.

सूर्यदास m. N. pr. verschiedener Manner Colebr. Misc. Ess. 2,421. fg. 428. 431. Verz. d. B. H. No. 133. 914. Verz. d. Oxf. H. 132,a, No. 240. 341,b, N. 338,a, No. 853. Verz. d. Tüb. H. 13. Hall 119.

सूर्यदेव m. *der Sonnengott* Kâlakârak. 4,96. Hiouen-thsang 2,67. Vie de Hiouen-thsang 94.

सूर्यदेवत्य adj. *die Sonne zur Gottheit habend:* सोमाः Kâṭh. 24,9.

सूर्यघ्न m. N. pr. eines Mannes MBh. 1,6990.

सूर्यध्वजपताकिन् adj. *die Sonne auf der Standarte und der Fahne habend:* Çiva MBh. 12,10360.

सूर्यनक्षत्र n. *das Nakshatra, in welchem die Sonne sich zu einer gegebenen Zeit befindet,* Ind. St. 10,300. °योग *die Conjunction der Sonne mit einem Nakshatra* 309. सूर्यनक्षत्रे *unter einem sonnigen* (d. h. *strahlenden* nach Sây.) Nakshatra Çat. Br. 2,1,2,19.

सूर्यनन्दन m. *Sohn der Sonne,* Bez. *des Planeten Saturn* Ind. St. 2,261.

सूर्यनाभ m. N. pr. eines Dânava Hariv. 16254.

सूर्यनारायण m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 196,a, No. 455.

सूर्यनेत्र m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3598.

सूर्यपण्डित m. N. pr. eines *Gelehrten,* = सूर्यदास, सूर्यसूरि Hall 119.

सूर्यपति m. *der Sonnengott* Wilson, Sel. Works 1,266.

सूर्यपत्र m. = आदित्यपत्र Râgân. 4,176.

सूर्यपत्नी adj. f. *die Sonne zum Gatten habend* AV. 8,9,12.

सूर्यपर्णी f. *eine best. Pflanze* MBh. 12,9814. Vishn. 1,6,170.

सूर्यपर्वन् n. *Sonnenknotenpunkt* so v. a. *der Moment des Eintritts der Sonne in ein neues Zeichen* Verz. d. B. H. No. 842. Pañkar. 1,1,42. 2,3,96.

सूर्यपाद् m. *Sonnenstrahl* Hariv. 5320. 12002.

सूर्यपुत्र 1) m. *Sohn der Sonne:* die Açvin MBh. 13,7309. Bez. a) *des Planeten Saturn* MBh. 6,81. Varâh. Bṛh. S. 104,42. Bṛh. 2,2. Spr. (II) 5230, v. l. — b) Jama's Titelâdit. im ÇKDr. — c) Varuṇa's Çabdaratn. bei Wilson. — 2) f. ई *Tochter der Sonne,* Bez. a) der Jamunâ MBh. im ÇKDr. — b) *des Blitzes* Çabdâratn. bei Wilson.

सूर्यपुर n. N. pr. einer *Stadt* Râga-Tar. 8,2229. Verz. d. Oxf. H. 155, b,4. 186,a, No. 423.

सूर्यपुराण n. Titel eines Purâṇa Verz. d. B. H. 135,a(nach 50). No. 1127.

सूर्यपूजाविधि m. Titel einer Schrift über *die Verehrung der Sonne* Mack. Coll. 1,34. Verz. d. B. H. No. 1261. so heisst ein Abschnitt im Liṅgapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 45,a,22.

सूर्यप्रकाश m. Titel eines Commentars Colebr. Misc. Ess. 2,451. Verz. d. B. H. No. 832.

सूर्यप्रज्ञप्ति f. Titel eines astronomischen Werkes (in Mâgadhî) Ind. St. 10,254. fgg.

सूर्यप्रतिष्ठा f. *die Aufstellung eines Bildes der Sonne:* °माहात्म्य Verz. d. B. H. 143,2.

सूर्यप्रदीप m. *eine best. Meditation* Vsudp. 18.

सूर्यप्रभ 1) adj. *den Glanz der Sonne habend.* — 2) m. N. pr. a) des Palastes der Lakshmaṇâ (einer Gattin Kṛshṇa's) Hariv. 8984. — b) verschiedener Fürsten Verz. d. Oxf. H. 153,a,1. Kathâs. 44,11. fgg. 45, 375. 46,56. fgg. 93,3. fgg. nach einem Fürsten dieses Namens ist der 8te Lambaka im Kathâs. benannt, vgl. 1,6. N. pr. eines Bodhisattva Vsudp. 22. eines Schlangendämons 67.

सूर्यप्रभता f. nom. abstr. zu सूर्यप्रभ 2) b) Kathâs. 45,368.

सूर्यप्रभातेजस् *eine best. Meditation* Vsudp. 23.

सूर्यप्रभीय adj. zu Sûrjaprabha *gehörig,* — *sich haltend:* वीरा: Kathâs. 48,19.

सूर्यबिम्ब m. n. 1) *die Sonnenscheibe* Varâh. Bṛh. S. 3,12. — 2) N. pr. eines geheiligten Ortes Verz. d. Oxf. H. 39,b,35.

सूर्यभक्त 1) adj. *ein Verehrer der Sonne* H. an. 4,130. Med. f. 223. Verz. d. Oxf. H. 248,b,35. — 2) m. *Pentapetes phoenicea* H. an. Med. — 3) f. आ *eine best. Pflanze* H. an. 3,355.

सूर्यभक्तक m. = सूर्यभक्त 2) Çabdam. im ÇKDr.

सूर्यभागा f. N. pr. eines Flusses LIA. 1,43. fg.

सूर्यभानु m. N. pr. 1) eines Jaksha R. 7,14,25. — 2) eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Cl. 4.

सूर्यभास् m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,1900.

सूर्यभास्वत् adj. *strahlend wie die Sonne* Kâṭy. 25,5.

सूर्यमणि m. 1) = सूर्यकान्त 1) H. 1067. — 2) = सूर्यकान्त 2) Çabdar. im ÇKDr.

सूर्यमण्डल 1) m. N. pr. eines Gandharva R. Gorr. 2,100,45. — 2) n. *die Sonnenscheibe* Taitt. Âr. 1,7,3. 6. Maitrâjup. 6,30 (= Jîân. 3, 167). Bhâg. P. 5,7,12. 7,10,37.

सूर्यमती f. N. pr. einer Fürstin Râga-Tar. 7,152. 179. °मठ 8,3121.

सूर्यमल्ल m. N. pr. eines Fürsten Çâṅk. 2,13.

सूर्यमाल्य adj. *sonnenbekränzt:* Çiva MBh. 12,10360.

सूर्यमास m. *Sonnenmonat* Ind. St. 9,463.

सूर्यरथ m. *der Sonnenwagen* R. 2,83,2. Bhâg. P. 5,20,30.

1. सूर्यरश्मि m. *Sonnenstrahl* M. 5,133.

2. सूर्यरश्मि adj. *sonnenstrahlig* RV. 10,139,1. VS. 15,15. 17,28. 18,40.

सूर्यराज्य n. *der Sonne Herrschaft* Maitrâjup. 6,26.

सूर्यर्क्ष (सूर्य + ऋक्ष) n. = सूर्यनक्षत्र *das Nakshatra, in welchem die Sonne sich zu einer gegebenen Zeit befindet,* Weber, Gjot. 76. 85.

सूर्यर्च् (सूर्य + ऋच्) f. *eine Hymne an die Sonne* Bhâg. P. 5,7,12.

सूर्यलता f. = आदित्यभक्ता Râgân. 4,182. = सूर्यपत्र Nigh. Pa.

सूर्यलोक m. *die Welt der Sonne* Journ. of the Am. Or. S. 7,45,4. Verz. d. B. H. 146,a (9). Kâçikh. im ÇKDr.

सूर्यवंश m. *das auf den Sonnengott zurückgehende Königsgeschlecht* LIA. 1,496. Anh. IV. Verz. d. Oxf. H. 12,b,15. 13,a,39. fg. b,36. 44,b, 30. 352,b,2. Kshitîç. 1,2. Wassiljew 55. Vsudp. 2.

सूर्यवंश्य adj. *zu diesem Geschlecht gehörig* Râgat. 7,68. 16,10.

सूर्यवल्क m. (sc. रस) Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 997.

सूर्यवन n. N. pr. eines *dem Sonnengotte geweihten Waldes* Verz. d. Oxf. H. 46,b, N. 2. Çat. 2,595.

सूर्यवत् (von सूर्य) 1) adj. *sonnig:* लोक AV. 5,5,15. TBr. 3,7,6,14. Agni Kâṭy. Ça. 25,3,19. Indra TBr. 2,7,15,6. — 2) f. °वती N. pr. einer Fürstin Hall in der Einl. zu Vâsavad. 22.

सूर्यवर m. (sc. रस) Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 998.

सूर्यवर्चस् 1) adj. *herrlich —, leuchtend wie die Sonne* VS. 10,4. Jîân. 3,119. R. 2,91,44. Bhâg. P. 4,22,1. 9,3,16. — 2) m. N. pr. eines Devagandharva MBh. 1,2550. 4841. Hariv. 14157. Bhâg. P. 12,11,44. — 3) वसुरोचिष: सूर्यवर्चस: साम N. eines Sâman Ind. St. 3,233,b. — Vgl. सौर्यवर्चस.

सूर्यवर्ण adj. (f. आ) *sonnenfarbig* AV. 5,5,6.

सूर्यवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten der Trigarta MBh. 14,2149. eines Ḍâmara Râga-Tar. 7,358.

सूर्यवल्ली f. *Gynandropsis pentaphylla* Dec. Ratnam. 239. Suçr. 1,

183,5. 2,174,15. Varâh. Bṛh. S. 55,22.

सूर्यवार m. *Sonntag* Pañkat. 256,7.

सूर्यविकासिन् adj. *mit dem Erscheinen der Sonne sich öffnend, — aufblühend* H. 1163, Schol.

सूर्यविघ्न adj. *Zerstörer der Sonne*, unter den Namen Vishṇu's Pañkar. 4,3,120.

सूर्यवेश्मन् n. *die Behausung der Sonne* Ind. St. 1,119.

सूर्यव्रत n. Bez. 1) *einer best. Begehung* Verz. d. B. H. No. 1212. fg. — 2) *eines best. Diagramms* ebend. No. 920.

सूर्यशतक n. *Hundert* (Strophen zu Ehren) *der Sonne*, Titel eines Gedichts Habe. Anth. 197. fgg. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 8. Burnouf, Intr. 542.

सूर्यशोभा f. *eine best. Blume* Çabdak. und Çabdan. im ÇKDa. unter दिव्यवस्त्र und वेशदान.

सूर्यश्मित् s. सूर्यश्वित्.

सूर्यश्री m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBu. 13,4338.

सूर्यश्वित् adj. *sonnenhell* RV. 10,94,6. °श्मित् v. l. des AV. 6,49,2.

सूर्यसंक्रम m. *der Eintritt der Sonne in ein neues Zeichen* Jîn. 1,217.

सूर्यसंक्रान्ति f. dass. Verz. d. B. H. No. 862.

सूर्यसंज्ञ n. *Saffran* Trik. 2,6,35.

सूर्यसदृश adj. *sonnengleich*, m. Bein. Lîlâvaçra's Tîrak. 215.

सूर्यसम adj. dass.: ज्योतिस् VS. 23,47.

सूर्यसामन् n. N. eines Sâman Ind. St. 3,245,a.

सूर्यसारथि m. *der Wagenlenker der Sonne, die Morgenröthe* Çabdan. im ÇKDa.

सूर्यसावर्णि m. Bein. eines Manu; davon °क *ihm gehörig, unter ihm stehend:* मन्वन्तर Mârk. P. 100,37.

सूर्यसावित्र m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBu. 13,4359.

सूर्यसिद्धान्त m. Titel eines dem *Sonnengotte* zugeschriebenen *astronomischen Lehrbuchs* (herausg. in der Bibl. indica) Varâh. Bṛh. S. 17,1. °टीका Verz. d. Oxf. H. 333,a,24. °मञ्जरी Verz. d. Cambr. H. 47. °टिप्पण 46. °वासनाभाष्य 41. 44. °प्रकाश Mack. Coll. 1,119. °व्याख्यान 118. °व्याख्या 119. LIA. 2,1137. N. — Vgl. वटेश्वर°.

सूर्यसुत m. *Sohn der Sonne*, Bez. 1) *des Planeten Saturn* Varâh. Bṛh. S. 28,19. 103,4. 104,4. Bṛh. 2,6. Lâṭâkh. 2,19. — 2) des Affen Sugrîva Kâm. Nîtis. 8,61.

सूर्यसूत m. *der Wagenlenker der Sonne* Bhâg. P. 6,6,22.

सूर्यसूरि m. N pr. eines Astronomen, = सूर्यदास Colebr. Misc. Ess. 2,451. 454. Hall 119. fg.

सूर्यसेन m. N. pr. zweier Männer Verz. d. B. H. No. 962. 1170. Notices of Skt Mss. 151.

सूर्यस्तुत् m. N. eines Ekâha Çat. Bṛ. 13,7,1,5. Kâty. Çr. 21,2,1. 24,7,16. Âçv. Çr. 9,8,5.

सूर्यस्तुति f. *Preis der Sonne*, Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 358, a, No. 853.

सूर्यस्तोत्र n. dass. Verz. d. Oxf. H. 31,b,23. Titel einer Schrift 134,a, No. 248.

सूर्याकर m. N. pr. 1) pl. eines Volkes R. Gorr. IV, S. 526. — 2) eines Mannes Verz. d. B. H. 312, N. 3.

सूर्याक्ष 1) adj. *sonnenäugig*; vgl. चन्द्र° unter den Beinamen Vishṇu's Harîv. 14189. — 2) m. N. pr. *a*) eines Fürsten MBu. 1,2693. Harîv. 5016. 5496. — *b*) eines Affen R. 4,33,13. — Vgl. सूर्याक्ष.

सूर्याग्नी m. nom. du. *Sûrja und Agni* TS. 3,7,12,1.

सूर्याचन्द्रमसा und °सौ m. nom. du. *Sonne und Mond* RV. 1,102,2. 5,51,15. 10,190,3. Çat. Bṛ. 14,6,8,9. Kaṭhân. Up. 7,12,1. Weber, Nax. 2,293. Gjot. 28. 50. Ind. St. 3,112. MBu. 1,2534 (zwei Dânava). 2535. 3645. 5,306. 8,946. 1480. R. 3,36,17. Vikr. 101. Spr. (II) 4527. Verz. d. Oxf. H. 48,b,3. 11.

सूर्याणी (von सूर्य) f. *die Gattin des Sonnengottes* Vop. 4,24.

सूर्यातप (सूर्य + घा°) m. *Sonnengluth* Megh. 104. Ṛt. 1,10. 19.

सूर्यात्मज (सूर्य + घा°) m. *Sohn der Sonne*, Bez. *des Planeten Saturn* Varâh. Bṛh. S. 10,21. 103,3. Bṛh. 25 (23),5.

सूर्यादिपञ्चायतनप्रतिष्ठापद्धति f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,125. — Vgl. सूर्यप्रतिष्ठा.

सूर्यादि (सूर्य + घ°) m. N. pr. eines *Berges* Mârk. P. 58,26. — Vgl. पूर्वादि.

सूर्यानन (सूर्य + घा°) m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 202,3.

सूर्यापीड (सूर्य + घा°) m. N. pr. eines Sohnes des Parikshita Harîv. 11065.

सूर्यामासा m. nom. du. *Sonne und Mond* RV. 8,83,2. 10,64,3.

सूर्यार्घ्य n. *eine Ehrengabe an die Sonne:* °दानपद्धति f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 1,14. fg.

सूर्यालोक (सूर्य + घा°) m. *Sonnenschein* Râjân. im ÇKDa.

सूर्यावर्त (सूर्य + घा°) 1) m. *a*) *Scindapsus officinalis* Ratnam. 77. = ज्ञामातृ Trik. 3,3,157. = वाराह्यकालिन् Hîn. 94. — Suçr. 2,376,8. 380, 8. Çârṅg. Saṃh. 1,7,85. 2,1,16. — *b*) *eine best. Meditation* Lot. de la b. l. 254. — *c*) N. pr. eines runden Wasserbassins (कुण्ड) Çâṅk. 2,595. 600. — 2) f. घा = घादित्यभक्ता Râjân. im ÇKDa.

सूर्यावसु adj. *die Sûrjâ als Gut besitzend:* die Açvin RV. 7,68,3.

सूर्यावित् adj. *die Sûrjâ d. i. ihr Lied* RV. 10,85 *kennend* Âçv. Gṛhj. 1,8,12.

सूर्याश्मन् (सूर्य + घ°) m. = सूर्यकान्त 1) H. 1067.

सूर्याश्व (सूर्य + घ°) m. *Sonnenross* Trik. 2,8,42.

सूर्यासूक्त n. *das Sûrjâ-Lied* (RV. 10,85) Ind. St. 5,178.

सूर्यास्तंगमन (सूर्य + घ°) n. *Sonnenuntergang* Verz. d. Oxf. H. 123,a,48.

सूर्यास्तमय (सूर्य + घ°) m. dass.: °काल Tithiâdit. im ÇKDa. Davon adj. °वत् in Verbindung mit काल *die Zeit des S.* Kuvalay. 193, a, Schol.

सूर्याह्व (सूर्य + घाह्वा) 1) m. *Calotropis gigantea* (अर्क) Râjân. 10, 27. — 2) n. *Kupfer* Trik. 2,9,32.

सूर्येन्दुसंगम m. *Conjunction des Mondes mit der Sonne, Neumondsnacht* AK. 1,1,8,8. H. 180.

सूर्योढ (सूर्य + ऊढ) adj. *von der* (untergehenden) *Sonne herbeigeführt:* घतिथि *ein Gast, der zur Zeit des Sonnenunterganges eintrifft*, H. 500. Spr. (II) 462. fg. VP. bei Kull. zu M. 3,105 (im ÇKDa. fälschlich durch

अस्तगतसूर्य erklärt). Mârk. P. 29, 40. Pañcat. 35, 16 (ed. orn. 31, 19). — Vgl. सायंसूर्य.

सूर्योदय (सूर्य + उ°) m. *Sonnenaufgang* Vjutp. 189. MBh. 3, 2769. Varâh. Bṛh. S. 45, 10. 89, 2. सूर्योदयास्तौ *Sonnenauf- und -untergang* 46, 93. सूर्योदयास्तकालयोः Verz. d. Oxf. H. 282, *b*, 3. °गिरि MBh. 2, 1864. °संकल्पनाटक n. Titel eines Schauspiels Ind. St. 1, 466. °निबन्ध m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279, *b*, 44.

सूर्योदयन n. dass. Kauç. 7.

सूर्योद्यान (सूर्य + उ°) n. = सूर्यवन Çat. 2, 599.

सूर्योपनिषद् f. Titel einer Upanishad Ind. St. 2, 53.

सौर्य्य (6. सु + ऊ°) adj. *in schönen Becken befindlich* u. s. w. VS. 16, 45.

सूलिक s. शूलिक 2) *b*).

सूवन् (von 4. सु, सू) adj. (f. °वरी) *gebärend; s.* वधू°.

सूष्, सूषति v. l. für प्रूष् (प्रसवे) Dhâtup. 17, 28.

सूषणा f. *Geburtsgitter* oder *Gebärerin* AV. 1, 11, 3.

सूषंस् (6. सु + उषस्) adj. P. 6, 2, 117.

सूषी f. wohl *eine Gebärende* AV. 1, 11, 3. die Stelle ist verstümmelt.

सृक Uṇâdis. 3, 41. m. 1) etwa *Lanze*, = वज्र Naigh. 2, 20. = बाण Viçva bei Uṇâdis. — RV. 1, 32, 13. सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मम् 10, 180, 2. — 2) *Wind.* — 3) *Lotus* Viçva a. a. O. — Vgl. सृग und सृक्कि.

सृकण्डु 1) m. N. pr. eines Mannes gaṇa प्रुधादि zu P. 4, 1, 123. Vgl. मार्कण्डेय und मृकण्डु. — 2) f. = कण्डू *Jucken, Krätze* Çabdar. im ÇKDr.

सृकावित्, सृकाविन् adj. *eine Lanze tragend* VS. 16, 21.

सृकाल m. = सृगाल *Schakal* Çabdar. im ÇKDr.

सृकाविन् adj. = सृकावित् Ind. St. 2, 28.

सृकाहस्त adj. *eine Lanze in der Hand habend* VS. 16, 61.

सृक्क, सृक्कणी, सृक्कन् und सृक्कि s. सृक्क u. s. w.

सृक्कय् *den Laut* सृक् *von sich geben* Vop. 7, 88.

सृक्क 1) *Mundwinkel:* सृक्कस्य Suçr. 1, 303, 4. सृक्क n. Bharata zu AK. nach ÇKDr. — 2) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 3, 458.

सृक्कणी f. = सृक्कन् Bhar. (kennt auch die Form सृक्कणी) zu AK. nach ÇKDr. °प्रान्त P. (nach Aufrecht). त्रिकूपा सृक्कणी लिक्न् Kathâs. 94, 119. सृक्कन्यौ (sic) Suçr. 2, 533, 3.

सृक्कन् m. *Mundwinkel* RV. 1, 164, 28. Nir. 11, 42. in der späteren Sprache n. Halâj. 2, 365. धामृक्कोत्थितपादाभ्याम् Kathâs. 18, 89. gewöhnlich du. सृक्कणी AK. 2, 6, 2, 42. H. 581. लेलिक्न् u. s. w. Jâén. 2, 13. v. l. MBh. 3, 10397. 10653. 11500. 11502. 4, 692. 5, 2047. 5594. Varâh. Bṛh. S. 89, 17, v. l. Pañcat. 55, 7. 85, 3. gewöhnlich सृक्कणी (edd. Bomb. सृक्किणी) geschrieben. — Vgl. वृष°.

सृक्कि n. dass. Bhar. (kennt auch die Form सृक्कि) zu AK. सृक्किणी du. Varâh. Bṛh. S. 89, 17. Buâc. P. 16, 66, 33. सृक्किणी Jâén. 2, 13. MBh. ed. Bomb. 3, 10397. 10653. 11500. 11502. 4, 692. 5, 2047. 5594. 6, 2340. 3707 (in beiden Ausgg.). Harîv. 14382. Varâh. Bṛh. S. 89, 17, v. l. Buâc. P. 16, 16, 28. सृक्किभ्याम् 12, 21.

सृक्किणी f. dass. Râgân. 18, 27. °णीं विलिक्न् MBh. 6, 2340 (सृक्किणी ed. Bomb.). सृक्किणीं परिलिक्न् Pañcat. 262, 20.

सृग m. *Wurfspiess* AK. 2, 8, 2, 39. H. 785. — Vgl. सृक.

सृगाल 1) m. *a) Schakal* AK. 2, 5, 5. Trik. 2, 5, 7. H. 1289. an. 3, 688. Med. l. 140. Halâj. 2, 74. Çat. Br. 12, 5, 2, 5. M. 5, 764. 9, 30. 11, 199. MBh. 1, 5568. 3, 15687. 7, 1979. 13, 440. fgg. R. 2, 53, 36. 4, 16, 33. Suçr. 1, 24, 7. 108, 1. 202, 9. Spr. (II) 4324. Varâh. Bṛh. S. 53, 108. 68, 4. 88, 3. 90, 1. Bṛh. 27 (25), 24. Râgâ-Tar. 6, 181. Verz. d. B. H. No. 897. Buâc. P. 2, 7, 42. 3, 10, 23. 5, 14, 3. Pañcat. 136, 2. 220, 10. Hit. 17, 15. — *b*) *ein best. Baum* (nach Nilak.): °वाटी Harîv. 7964. davon adj. °वाटीय 7989. — *c*) N. pr. α) eines Vâsudeva, Beherrschers von Karavirapura, Harîv. 5322. 5639. 5653. fgg. Verz. d. Oxf. H. 27, *a*, 39. — β) eines Daitja H. an. Med. — 2) f. ई *a*) *Schakalweibchen* H. an. 2, 337. Med. m. 30. Kathâs. 68, 17. 23. Râgâ-Tar. 6, 184. Pañcat. 136, 2. 220, 9. — *b*) *panischer Schreck, allgemeine Flucht;* = विद्रव Trik. 2, 8, 39. = विप्लव H. ç. 181. = उपप्लव H. an. 3, 688. = द्रमर Med. l. 140. — *c*) Bez. *zweier Pflanzen:* = कोकिलाक्ष Râgân. 4, 195. = विदारी Râgân. im ÇKDr. — Gewöhnlich मृगाल geschrieben, die Bomb. Ausgg. schwanken. — Vgl. सार्गाल.

सृगालकण्टक m. *ein best. Strauch* Çabdar. im ÇKDr.

सृगालकोलि m. *eine Art Judendorn* (कोलि) Ratnam. im ÇKDr.

सृगालगर्त N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. °गर्तीय P. 4, 2, 137, Schol.

सृगालघण्टी f. = कोकिलाक्ष Râgân. 4, 195.

सृगालजम्बू f. 1) *Wassermelone*, = गोजम्ब (गोजम्ब ÇKDr.). — 2) *Brustbeere (die Beere von einer Art Judendorn)* H. an. 3, 35. Med. b. 17.

सृगालवदन m. N. pr. eines Asura Harîv. 14291 nach der Lesart der neueren Ausg., कालवदन die ältere.

सृगालवाटी und °वाटीय s. u. सृगाल 1) *b*).

सृगालविन्ना f. *Hemionitis cordifolia* Roxb. Râgân. 4, 87. Ratnam. 11. Suçr. 2, 38, 7. 461, 6. 524, 16.

सृगालवस्ता f. dass. Mad. in Nigh. Pr.

सृगालास्थिमय (von सृगाल + अस्थि) adj. *aus Schakalknochen gemacht* Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, N.

सृगालिका (von सृगाली) f. 1) *Schakalweibchen* Med. k. 217. Kathâs. 68, 19. Pañcat. 226, 20. 24. Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 16, 37. *Fuchs* Trik. 2, 5, 7. — 2) *panischer Schreck, allgemeine Flucht* Hân. 99. Med. — 3) *eine best. Pflanze*, = विदारी Râgân. 7, 99. — 4) N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. 83, 14. fgg.

सृगालिनी f. = सृगाली *Schakalweibchen* MBh. 3, 14276.

सृङ्का f. etwa *Weg* Kathâs. 1, 16. 2, 3.

सृज् (von 3. सर्ज्) adj. 1) *entlassend, schleudernd, entsendend*, von *sich gebend;* in comp. mit seinem obj.: शरधारा° MBh. 7, 3604. कटाक्षसृजो ऽम्बुदाः Varâh. Bṛh. S. 9, 42. सुधासार° (d. i. सुधा + धासार) Kathâs. 100, 42. वक्त्रसूक्ष्मप्रमाण° 54, 17. — 2) *erschaffend, ersinnend, hervorbringend:* दत्तात्प्रज्ञानो सृजा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 506. Cl. 22. in comp. mit seinem obj. H. 3. मायाशत° MBh. 7, 541. 4102. 7875. राजप्रजा° *aus Fürsten Unterthanen machend* Râgâ-Tar. 3, 361. — 3) fehlerhaft für सृत् Spr. (II) 4338. — Vgl. प्रजा°, ब्रह्म°, भूति°, विश्व°.

सृज्न n. Verz. d. Oxf. H. 48, *a*, 6 fehlerhaft für सर्जन *das Schaffen, Hervorbringen*, wie schon das Versmaass zeigt.

सृज्यर्च m. VS. 24, 28 nach Mahîdh. *ein best. Vogel;* °र्ची f. v. l. TS. 5, 5.

14,1 angeblich so v. a. नीलमक्षिका oder शुक्लसर्ष oder नीलमक्षिष.

सृञ्जवान m. N. pr. eines Sohnes des Djutimant VP. (2te Aufl.) 1, 152, N. सृञ्जावण in der 1ten Aufl. 82, N.

सृञ्जावण s. सृञ्जवान.

सृत्रिकात्तार् m. = सर्ङ्किकात्तार् Ramây. zu AK. 2,9,109 nach ÇKDa. (hier fehlerhaft सृञ्ज° gedr.).

सृज्य (von 3. सर्ज्) adj. zu *schaffen*, *hervorzubringen* Bhâg. P. 2,5,17. 3,11,18. 10,56,27. 11,19,16. 12,6,31. Sarvadarçanas. 121,8.

सृञ्जय 1) m. N. pr. eines Geschlechts oder Stammes, pl. AV. 5,19,1. Kâṭh. 12,3. TS. 6,6,2,2. 3. Çat. Br. 2,4,4,4. 5. 12,9,3,1. MBh. 1,5476. 3,1352. Bhâg. P. 1,7,12. 2,7,35. 9,24,62. °नामकान्वाख्यानान् Verz. d. Oxf. H. 267,*a*,28. sg. ṚV. 4,15,4. स सृञ्जयाय तुर्वशं परादात् 6,27,7. N. pr. verschiedener Männer MBh. 1,223. 2,326. 3, 13597. 5, 6059. 6080. 7, 2138. 12, 906. fgg. Hariv. 212. 1514. 1670. 1778. 1970. R. 1,47,15 (48,16. fg. Gorr.). VP. 354. 436. 444. 454. Bhâg. P. 3,1,23. 9,23,1. 24, 28. 41. 10,82,23. Verz. d. Oxf. H. 22,*b*,18. — 2) f. ई N. pr. zweier Gattinnen des Bhaǵamâna Hariv. 2001. *fgg.* सृञ्जरी die ältere Ausg. — Vgl. घट°, पूति°, सार्ञ्जय.

सृञ्जरी s. सृञ्जय 2).

सृणा m. f. Taitt. 3,5,10.

सृणि und सृणी Uṇâdis. 4,49. 104. Naigh. 4,2. m. f. Taitt. 3,5,16. 1) *Sichel:* नेदीय इत्सृण्यः पक्वमेयात् ṚV. 10,101,3 (Nir. 5,28). 106,6 (Nir. 13,5). यदा वा यवं पच्यते ऽथ तत्सृण्योपचरन्ति Çat. Br. 7,2,2,5. जुह्वभिः सृण्या *mit den Zungen (Flammen) als mit einer Sichel* ṚV. 1,58,4. — 2) *ein Haken zum Antreiben des Elephanten* AK. 2,8,2,9. Taitt. 3,3, 339. H. 1230. Hit. 204. Halâ. 2,69. Spr (II) 4189. सिताग्र Çiç. 3,5. ग्र° adj. *ungezügelt* von Personen Bhâg. P. 4,4,17. — 3) m. *der Mond* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,104. — 4) m. *Feind* Çabdam. im ÇKDa.

सृणिक 1) m. = सृणि 2) Râǵa-Tar. 8,812. — 2) f. घी f. *Speichel* AK. 2,6,2,18. सृणीका Uṇâdis. 4,22. H. 633.

सृण्य (von सृणि) adj. 1) nach Sây. *mit einer Sichel versehen:* सृण्यो न त्रेता ṚV. 4,20,5. — 2) ग्र° (ग्रसृण्य Burnouf) *nicht zu zügeln, nicht im Zaum zu halten:* Person Bhâg. P. 3,17,23.

सृत् (von सर्) adj. *rasch laufend* u. s. w.: घात्रि° *einen Wettlauf anstellend* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 130. — Vgl. घदार°, घादार°, वाज्ञ°.

1. सृत partic. von सर्; s. das.

2. सृत Hariv. 8447 fehlerhaft für घृत.

सृतंजय m. N. pr. eines Sohnes des Karmaǵit Bhâg. P. 9,22,46.

सृति (von सर्) f. 1) *Weg* AK. 2,1,15. H. 983. an. 2,208. Med. f. 74. VS. 19,47 (सुति ṚV.). गृणः सृतिं पति धावादबुष्टाम् AV. 10,3,6. Çat. Br. 12,8,2,21. 14,9,4,4. 6,11,3. Bhâg. 8,27. MBh. 5,3774. Bhâg. P. 2,2, 32. 6,20. 5,26,3. गच्छन्त्सृत्या so v. a. *durch den Luftraum* Verz. d. Oxf. H. 255,*b*,24. — 2) *Gang, Wanderung* H. an. Med. insbes. *der Seele nach dem Tode:* योनिकोटिसहस्रेषु सृतीश्चास्यात्तरात्मनः M. 6,62. Bhâg. P. 10,60,42. 11,23,42. — 3) *das Gehen an Etwas* so v. a. *Erschaffen, Hervorbringen* Bhâg. P. 3,2,13. — Vgl. का°, कु°.

सृत्य (wie oben) n. *das Laufen, Fliessen;* s. सिन्धु°.

सृत्वन् (wie oben) Uṇâdis. 4,113. 1) adj. (f. सृत्वरी) *eilend, behend:* घत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ṚV. 3,36,10. वडवा Kâṭh. 12,11. प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरर्षसा Flüsse ṚV. 10,75,1. — 2) m. = प्रजापति Uṇâdis. = विसर्प und वृद्धि Uṇâdis. im Saṁkshiptas. nach ÇKDa. (hier als सृत्वा f. bezeichnet!). — 3) f. सृत्वरी *Mutter* ebend. — Vgl. बाढ°.

सृत्वर adj. (f. ई) = सृत्वन् P. 3,2,168. Vop. 26,137.

सृदर् m. *Schlange* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 5,41.

सृदाकु Uṇâdis. 3,78. m. *Feuer* Taitt. 1,1,66. Mṛip. k. 169. *Waldbrand* H. an. 3,109. *der Donnerkeil; Wind; eine Eidechsenart* (प्रतिसूर्य, °क, welches Wilson hier durch *Sonnenscheibe* wiedergiebt) H. an. Med. *Fluss* (f. nach ÇKDa.) Uṇâdis. — Vgl. पृदाकु.

सृदागु m. N. pr. eines Mannes; s. सार्दागव.

सृध् AV. 2,6,5 schlechte Schreibung für स्निध्.

सृप (von सर्प्) m. 1) *der Mond* (?) H. ç. 10; vgl. सृप्र. — 2) N. pr. eines Asura Hariv. 14291.

सृपाकु m. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. — Vgl. सार्पाकव.

सृपाट m. und °टी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. AK. 3,6,3,38. f. = परिमाणभेद Bhar., = रक्तधारा Govardhana zu AK. nach ÇKDa.

सृपाटिका f. *Schnabel* H. 1317.

सृप्र (von सर्प्) Uṇâdis. 2,13. 1) adj. *schlüpfrig, fettig; glatt* (vgl. सर्पिस्) Naigh. 4,3. Nir. 6,17. करम्भो ṚV. 3,18,5. ऊर्व 4,50,2. °प्रकारिन् zur Erklärung von तृपलप्रभर्मन् = तिप्र° Nir. 5,12. — 2) m. *der Mond* Uṇâdis.; vgl. सृप.

सृप्रकरस्न adj. *glatte Arme habend* Nir. 6,17. Indra ṚV. 8,32,10.

सृप्रदानु adj. *fettig thauend, Fett träufelnd* ṚV. 1,96,3. 8,25,5.

सृप्रभोजस् adj. *fette Speisen habend:* Aryaman ṚV. 8,48,14.

सृप्रबन्धुर adj. *einen glatten, — blanken Sitz* oder *Kasten habend:* Wagen der Açvin ṚV. 1,181,3.

सृंजय m. N. pr. eines von Indra erschlagenen Dämons ṚV. 8,32,2.

सृमर P. 3,2,160. Vop. 26,150. m. 1) *ein nicht näher zu bestimmendes Thier, das an feuchten Orten lebt* (= गवय oder चमर nach den Comm.; unrichtig, weil diese daneben genannt werden), AK. 2,5,11. VS. 24,39, TS. 5,3,14,1. MBh. 1,2626. 3,8703. 7,1320. 3382. Hariv. 3843. 4597. R. 2,29,3. 103,41. 3,20,24. 49,24. 4,59,15. 7,6,49. Kâdaṁb. 1,27. Suçr. 1,204,10. 205,4. 323,14. Vishn. 1,6,52. — 2) N. pr. eines Asura Hariv. 2289 nach der Lesart der neueren Ausg.; vgl. सृमल.

सृमल m. N. pr. eines Asura Hariv. 14291 nach der Lesart der neueren Ausg., समल die ältere; vgl. सृमर 2).

सृष्टमारुत adj. *Winde abtreibend* Suçr. 1,235,4.

सृष्टमूत्रपुरीष adj. *Ausleerung beförderud* Suçr. 1,202,20. 223,10.

सृष्टविण्मूत्र adj. dass. Suçr. 1,177,6. 183,10. Vishn. 1,6,116.

सृष्टि (von 3. सर्ज्) 1) f. *a) Schöpfung* (abstr. und concr.) AK. 3,4,3, 33. H. an. 2,101. Med. f. 30. fg. AV. 3,28,1. 13,1,25. प्रजानाम् TS. 5, 1,9,2. Çat. Br. 11,2,3,3 (oxyt.). 14,1,3,26. 4,3,10. सृष्टिं ससर्ज चैवेमाम् M. 1,25. सृष्टिं विकुरुते 78. इत्येषा सृष्टिरादितः 78. Jâǵñ. 3,203. सृष्टिं ललितां विधातुः सुदतीम् Raghu. 6,37. Çiç. 1. Vikr. 8,18. Megh.

80. Spr. (II) 2239. 7493. रागविरागयोर्योगः सृष्टिः Kap. 2,9. 11. 3,63. Weber, Rámat. Up. 289. Mink. P. 103,2. Bhâg. P. 3,12,2. 4,1,17. 6, 13,2. 7,10,26 (pl.). Pañkat. 2,15,19. 21. 23. Verz. d. Oxf. H. 12,b,19. 44,b,12. 23. Sarvadarçanas. 52,13. 60,6. 10. 84,8. 152,17. fgg. इन्द्रिय° 149,6. स्त्रीरत्न° Çiç. 42. जगत्सृष्टि Bhâg. P. 4,22,35. घर्ष°, शब्द° Weber, Rámat. Up. 335. fg. रूपादि° *Hervorbringung* Nilak. 168. या सृष्टेः so v. a. vom *Anfang der Welt an* Spr. (II) 1472. Kathâs. 20,130. यो यामुत्पयामि सृष्टिम् so v. a. *als was ich auch wiedergeboren werde* Bhâg. P. 1,19,16. सृष्टिं कुरु so v. a. *songe Kinder* Pañkat. 1,10,5. — *b*) *angeborenes Wesen, Natur* H. an. Med. स्वभाव एष हि स्त्रीणां सृष्टिश्च R. 3,19,6. Spr. (II) 7328, v. l. — *c*) *Spenden* M. 3,255. — *d*) Bez. *best.* Ishṭaká Çat. Br. 8,4,3,1. TS. 5,3,4,7. Kâty. Çr. 17,10,17. — *e*) *Gmelina arborea Roxb.* Râgân. 9,36. — *f*) = निर्गुण Çârdar. im im ÇKDa. *the absence of properties* und *the existence of properties or qualities* Wilson nach ders. Aut. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena Bhâg. P. 9,24,23. — 3) AK. 3,4,9,41 fehlerhaft für सृष्ट. — Vgl. कूट°, विश्व°.

सृष्टिकर्तृ adj. *Schöpfer:* देव Bez. Brahman's MBh. 1,1204.

सृष्टिखण्ड m. n. Titel des 11ten *Abschnitts* im Padmapurâṇa Verz. d. Oxf. H 11,b, No. 50. fgg. Notices of Skt Mss. 2,1.

सृष्टिदा f. *eine best. Arzneipflanze*, = शङ्खिनी Râgân. 5,29.

सृष्टिधर m. N. pr. eines Autors Colebr. Misc. Ess. 2,41.

सृष्टिपतन n. Bez. *einer best. Zauberkraft* Pañkat. 2,8,8.

सृष्टिप्रदा f. *eine best. Pflanze*, = पुत्रदा Râgân. 4,161.

सृष्टिमत् (von सृष्टि) adj. *die Schöpfung besorgend:* देव MBh. 5,4300.

से f. ein N. der Gattin Kâma's Taik. 1,1,40.

सेक्, सेकते Dhâtup. 4,7 (गत्यर्थ). Das स geht nicht in ष über Vop. 8,13.

सेक (von 1. सिच्) m. 1) *Guss, Erguss* (z. B. des Samens): गौर्न सेकै RV. 1,181,3. पिता दुहितुः सेकमृञ्जन् 3,31,1. Nir. 3,5. RV. 4,16,3. क्रिविर्न सेकं या गमत् 8,76,1. रेतसः M. 11,120. — 2) *Begiessung, Besprengung* H. 837. M. 5,124. Jâṡ. 1,188. Ragh. 1,51. 19,10. Spr. (II) 387. दग्धानामभितोदकैः 3116. मनःप्रसादपयसा निष्पन्नसेकक्रियः (दानमकीरुकः) 6710. वनस्पतेः Vaṡiṣ. Bṛh. S. 55,18. Râṡa-Tar. 5,111. Mâlav. P. 35,16. Bhâg. P. 11,11,39. Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,10. in der Heilkunde so v. a. *Tropf-* oder *Spritzbad, Waschung* (gewöhnlicher परिषेक): शीत Suçr. 1,37,19. 2,11,19. 138,9. Çârṅg. Saṁh. 3,13,1. 2. 4. 5. — 3) am Ende eines comp. *Erguss* von und *Begiessung —, Besprengung mit:* रेतःसेकः स्वयोनीषु M. 11,55. नवजलकण° Bṛ. 2,26. साञ्जनाश्रु° Ragh. 6,55. क्षिप्र° 8,45. मदवारि° 16,30. वृष्टि° 17,16. Çiç. 152, v. l. मद्जल° Kir. 5,26. घर्मत° Spr. (II) 3991. Vaṡiṣ. Bṛh. S. 55, 16. Kathâs. 29,172. घर्मं वमृतसेको ऽस्य वन्मखो राज्यशाखिनः 33,162. 117,82. 121,280. कनककलश° *Guss* oder *Begiessung aus* Spr. (II) 433. — 4) pl. N. pr. eines Volkes, neben घघर° MBh. 2,1112. — Vgl. सुषेक.

सेकंधर m. N. pr. = اسكندر Verz. d. Oxf. H. 166, N. °पुरी 166,5. 6.

सेकपात्र n. *ein Geschirr zum Ausschöpfen von Wasser* AK. 1,2,3,13. Taik. 3,3,139. H. 878. Med. ḳ. 34.

सेकभाजन n. dass. H. an. 3,186. सेकाया: Med. n. 186.

सेकिम (von सेक) 1) adj. etwa *gegossen:* घृमि P. 4,4,20, Vârtt. 2, Schol. — 2) n. *Rettig* H. 1190.

सेक्तर् (von 1. सिच्) nom. ag. *der Ausgiessende*, = सेक H. an. 3, 110. Med. k. 170. सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्यै RV. 3,32,15. वीर° Kull. zu M. 9,31. गवाम् so v. a. *Beschäler* zu 150. = भर्तर् *Gatte* H. 516. — Vgl. पिएड°.

सेक्तव्य (wie oben) adj. zu *begiessen:* सलिलैः Harîv. 7874. Vaṡiṣ. Bṛh. S. 55,9.

सेक्त्र (wie oben) n. *ein Gefäss zum Ausschöpfen* oder *Begiessen* P. 3,2,183.

सेगव m. pl. *Krebsbrut* Spr. (II) 2191. MBh. 6,5632 (mit der ed. Bomb. zu lesen माघमी सेवगा इव).

सेङ्गर m. = शृङ्गिवर (nach Aufrecht) N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 280,b,1.

सेचक (von 1. सिच्) 1) adj. = सेक्तर्. — 2) m. *Wolke* H. an. 3,110. Med. k. 170. — Vgl. सुख° (सुख°).

सेचन (wie oben) 1) n. *a*) *das Ausgiessen, Ergiessung;* = तर्पण (so mit ÇKDa. zu lesen) Med. n. 186. उदकपूर्णघट° Çâṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 21. — *b*) *das Begiessen, Besprengen* H. 837. Med. स्वात्मनः सेचनमकरोत् MBh. 12,13220. Mârk. 47,9. दध्यादिभिः Weber, Kṛishṇaj. 304. Verz. d. Oxf. H. 105,b,1. Suçr. 2,32,17 (medic. wie सेक). वृत्त° Çiç. 9, 11. 16,20. घटिङ्° Mâlav. P. 31,13. उदक° *mit Wasser* Mârk. 47,5. मुखासव° Z. d. d. m. G. 27,75. — *c*) *das Giessen* (von Metallen) Verz. d. B. H. No. 969. — *d*) *ein Gefäss zum Ausschöpfen von Wasser* AK. 1,2,3,13. H. 878. Med. — 2) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. — Vgl. घम्बुसेचनी, तूलसेचन, नौ°, सुषेचन.

सेचनक n. = सेचन 1) *b*) Çârṅg. Saṁh. 3,13,7 (medic. wie सेक).

सेचनघट m. *Giesskanne* Çiç. 8,28.

सेट *ein best. Gewicht* Colebr. Alg. 3.

सेटु m. *Wassermelone* Taik. 2,4,37 (सेडु gedr.). Hâla. 126. Gaṇit. im ÇKDa.

सेतकी f. gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97. — Vgl. सेतकेय.

सेतर् (von 1. सि, nom. ag. *Fesseler* (vgl. सेतु 1): यो सेतृभिरजुभिः सिनीथः RV. 7,84,2.

सेतव्य (wie oben) adj. zu *binden* Nir. 11,31, v. l.

सेतिकर्तव्यताक (von 2. स + इतिकर्तव्यता) adj. *sammt den Obliegenheiten* Madhus. in Ind. St. 1,14,17.

सेतिका f. = अयोध्या Dhûrtaçuddhitantra im ÇKDa. — Vgl. साकेत.

सेतु (von 1. सि) Uṇâdis. 1,70. 1) adj. *bindend, fesselnd;* m. *Fesseler:* ता भूरिपाशावनृतस्य सेतू RV. 7,65,3. मा नः सेतुः सिषेदयम् 8,56,3. यामिन् 9,73,4. — 2) m. Sindh. K. 248,*b*,18. *a*) *Band, Fessel:* तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ RV. 10,67,4. — *b*) (*Verbindung*) *Damm, Brücke* AK. 2,1,14. Taik. 2,1,18. H. 965. an. 2,209. Med. t. 74. Hâla. 129. Hariv. 3,49. सुवितस्य RV. 9,41,2. तं नस्तुतुरुत सेतुरत्रे तं पन्था भवसि देवयानैः TBr. 2,4,3,6. तं सेतुं कृत्वा तरति Ait. Br. 3,35. TS. 3,2,2,1. 6,1,4, 9. zum Himmel 5,3,3. 7,5,6,3. Kâṡn. 28,4. Çat. Br. 13,2,20,1. 14,7, 2,24. Kaṭhop. 3,2. Kâṡhân. Up. 8,4,1. 2. Çvetâçv. Up. 6,19. Jâṡ. 2,151. 156. भागीरथ्यो सेतुं वालुकाभिश्चकार MBh. 3,10722. fg. बन्धिष्ये सेतुना गङ्गाम् 10727. 16810. 8,782. अथार्या सेतुना गङ्गा 13,2161. R. 1,1,75

(83 Goas.). (वपा) धार्यते साधुवृत्तेन सेतुनेव (*das dammartige Ufer*) मरो-दधिः 5,76,21. Kim. Nitis. 5,78. Raon. 13,2. 16,2. Vasiṇ. Bṛn. S. 16, 17. 19,12. °पृथ्वी Kathās. 69,26. Rāja-Tar. 1,157. 3,344. fg. 354. 8, 120. सैकत MBu. 12,6480. Spr. (II) 2945. सिकता° 6515, v. l. Kathās. 40,12. वालुका° Harīv. 8089. वालुक° Spr. (II) 6515. केदार° *der Damm, nach dessen Durchstechung das Wasser zwischen die Beete des Feldes einströmt:* नद्यभिज्ञे केदारसेतौ पल्वलप्रसेको ऽस्ति Kādaṃb. 3,3. सेतुं बन्धु R. 5,71,13. 15. 94,20. 6,2,16. Raon. 12,70. Spr. (II) 7548. Kathās. 40,18. Rāja-Tar. 1,156. 5,103. Bhāg. P. 3,10,4. 15. सेतोर्बन्धः Spr. (II) 6471. सैन्यैर्बद्धस्थिरसेतुभिः Raon. 4,38. भिन्न MBu. 3,391. R. 2,105,3 (117,3 Gorr.). 6,112,7. Kumārās. 7,53. घम्भसा भिद्यते सेतुः Spr. (II) 541. सेतुर्द्विविधो ज्ञेयः ज्ञेयो बन्ध्यस्तथैव च Mit. 244,14. — *c) die Adamsbrücke* (vgl. नल°, राम°) oder Bez. *einer der Inseln dieser grossen Gruppe* Bhāg. P. 7,14,21. LA. (III) 92,9. Verz. d. Oxf. H. 258,a,17. vollständiger सामुद्र Bhāg. P. 10,79,15. सेतुं गत्वा समुद्रस्य गङ्गासागरसंगमे Spr. (II) 7165. — *d) Grenzzeichen:* सुप्रकाशेषु सेतुषु M. 8,245. 263. — *e) Damm* in übertr. Bed. so v. a. *Schranken:* तैस्तु पूर्वमयं सेतुः शतधा विदलीकृतः MBu. 10,192. दुष्प्रेषुः सर्ववर्णाश्च भिन्धेरन्सर्वसेतवः Spr. (II) 2897. Bhāg. P. 3,21,54. भिन्न° adj. 1,18,35. 4,2,12. सात्मकृतसेतुपरीप्सा 3,9,19. सेतुं विधारणे पुंसाम् 4,2,30. त्वयैव लोके ऽवमिताश्च सेतवः 6,44. स्वेषु सेतुषु स्थापिता 21,21. परिभूत° adj. 7,8,48. सतां सेतुविधानम् Verz. d. Oxf. H. 21,a,22. धर्मस्य सेतुं यद्यामि MBu. 14,1578. धर्मेण धर्मः (N. pr.) परिपाति सेतुम् Bhāg. P. 3,1,36. पत्कृतसेतुपाल 14,28. सेतुं सत्यस्य भेत्स्यामि R. 2,109,17 (118,17 Gorr.). समयसेतुरक्षा Bhāg. P. 5, 4,5. सेतुर्यो लोकसेतूनाम् Harīv. 2174. 3155. जगत्सेतु Pāṇḍav. 4,3,40. — *f) eine Brücke zum Verständniss eines Textes* (vgl. *Eselsbrücke*), *Commentar* Verz. d. Oxf. H. 134,b, No. 250. 198,a, No. 466. 261,a,28. Verz. d. B. H. No. 465. — *g)* Bez. *bestimmter heiliger Silben, die vor einer mystischen Formel ausgesprochen werden,* Verz. d. Oxf. H. 102,b,37. = प्रणव (*die Silbe* ओम्): मन्त्राणां प्रणवः सेतुस्तत्सेतुः प्रणवः स्मृतः। भवत्यनोंकृतं पूर्वं परस्तान्न विदीर्यते ॥ Kālkī-P. 55 im ÇKDa. Vgl. unter ओम्. — 4) *Crataeva Roxburghii R. Br.* AK. 2,4,2,5. Med. — *5)* N. pr. eines Sohnes des Druhju und Bruders des Babhru Harīv. 1837. eines Sohnes des Babhru VP. 443. Bhāg. P. 9,23,14. — Vgl. धर्म° (in der 11ten Bed. auch MBu. 13,2477. 4594. 14,970. Pāṇḍav. 4, 3,40. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28, Cl. 3), नल° (auch R. 1,3,32). मथुरा°, मरु°, राम°, विवादार्णव°, शैल°, सीमा°.

सेतुक m. = सेतु *Crataeva Roxburghii R. Br.* Çabdam. im ÇKDa.

सेतुकर m. *Errichter von Dämmen, Brückenbauer* Vasiṇ. Bṛn. S. 15,18.

सेतुकर्मन् n. *Erbauung einer Brücke* R. 5,94,15. Verz. d. Oxf. H. 344,b,20. fg.

सेतुखण्ड m. n. Titel eines *Abschnitts* im Skandapurāṇa Verz. d. Oxf. H. 84,b,34.

सेतुप्रद m. ein N. Kṛshṇa's Pāṇḍav. 4,7,6.

सेतुबन्ध m. 1) *Errichtung eines Dammes, — einer Brücke:* गतोदके सेतुबन्धो याद्दक्तादृक्तवास्तिस्तव MBu. 6,2008. 7,3065. R. Gorr. 2,8,32. Spr. (II) 3767. घम्भिस्तोये Rāja-Tar. 5,114. R. 5,72,2. 6,1,4. Kathās. 19,5. Verz. d. Oxf. H. 29,b,6. 139,a,3 v. u. 143,a,5. 344,b,21. — 2) *Damm, Brücke:* सेतुबन्धमकारयत्। दशयोजनविस्तारमायतं शतयोजनम् ॥ MBu. 3,16312. Rāja-Tar. 5,92. पाषाण° 91. गङ्ग° Raon. 16,33. Vasiṇ. Bṛn. S. 28,5. — *c) die Adamsbrücke* (vgl. सेतु 2) c) Gaṇiṇ. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 64,a,9. 148,b,39. — *d)* Titel eines Gedichts in Prâkrit Verz. d. B. H. No. 1355. Verz. d. Oxf. H. 204,a,6.

सेतुबन्धन n. 1) = सेतुबन्ध 1) Kṛshṇ. 6,6. MBu. 3,282 in der Unterschr. des Adhj. R. 5,93,13. 6,1,3. — 2) = सेतुबन्ध 2): नल° adj. Kumāras. 4,6. *Damm* in übertr. Bed.: घस्माभिर्भिद्यमानं मर्यादासेतुबन्धनम् Harīv. 7261.

सेतुभेत्तृ m. *Durchstecher eines Dammes* MBu. 13,1688.

सेतुभेद m. *Durchbruch eines Dammes* Spr. (II) 6797.

सेतुभेदिन् m. *Croton polyandrum Roxb.* oder *Croton Tiglium Lin.* Çabdam. im ÇKDa.

सेतुमङ्गलतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 104,a,33.

सेतुमाहात्म्य n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,90.

सेतुवृत्त m. *Crataeva Roxburghii R. Br.* Çabdam. und Rāgān. im ÇKDa. — Vgl. शेतवृत.

सेतुशैल m. *ein die Grenze bildender Berg* Bhāg. P. 5,20,4.

सेतुषामन् n. स्वर्य सेतुषाम N. eines Sâman Ind. St. 3,246,b.

सेतुसरणि f. Titel des in's Sanskrit übersetzten Setubandha Verz. d. B. H. No. 535.

सैत्र (von 1. सि) n. nom. instr. P. 3,2,182. *Fessel* ÇKDa. nach Sidd. K.

सैदि (von 1. सद्) P. 3,2,171, Vârtt. 2. f. *Entkräftung, Verkommenheit* VS. 12,105. यत्र सैदिर्न विद्यते im Himmel 20,26. AV. 2,14,3. 4. 11,10. 8,8,9. 18. 12,5,24. यव सैदि तृत्ता तुधं व्रक्षि Kauç. 70.

सैडुक m. N. pr. eines Fürsten MBu. 3,13262. fgg.

सेध (von 1. सिध्) 1) adj. (f. धा) *treibend, scheuchend;* s. गोसेधा. — 2) m. = निषेध *Verbot:* निवृत्ता विधिसेधतः Bhāg. P. 2,1,7. — Vgl. दुःसेध.

सेधन (von 2. सिध्) adj. P. 3,1,116, Schol.

सेधा f. *Igel* oder *Stachelschwein* Jâṇ. 1,177. °शलाका Schol. zu Kāty. Çr. 5,2,15.

सेन (?) n. *Leib, Körper* H. ç. 116. — Am Ende eines comp. s. unter सेना.

सेनक m. N. pr. 1) eines Grammatikers P. 5,4,113. — 2) eines Sohnes des Çambara Harīv. 9253 nach der Lesart der neueren Ausg. — Vgl. राम°.

सेनकुल n. *die Familie der* Sena d. i. *der Fürsten, deren Namen auf* sena (von सेना) *ausgeht,* Z. d. d. m. G. 27,24.

सेनजित् (für सेना°) 1) adj. *Heere besiegend* VS. 15,19. 17,33. — 2) m. N. pr. eines Fürsten MBu. 5,76. 12,744. fgg. 6464. fgg. ein Sohn Kṛshṇa's Harīv. 9168. Viçvagît's 1057. VP. 452. Bṛhatkarman's 465. Kṛçâçva's Bhāg. P. 9,6,25. Viçada's 21,22. — 3) f. N. pr. einer Apsaras (nach dem Comm.) Bhāg. P. 12,11,40.

सेनट m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 7,483.

सेनय् (von सेना *Heer*) s. घभिषेणय्. desid. घभिषिषेणयिषति auch P. 3,3,54, Schol. परिषेणय्, °यति wohl *mit einem Heere umzingeln* 65, Schol. परिषिषेणयिषति 64, Schol.

सेनस्कन्ध (für सेना°) m. N. pr. eines Sohnes des Çambara Harīv. 9253.

सेनकृत् (für सेना°) m. desgl. ebend. 9252. सेनाकृत् die neuere Ausg.

सेना f. Uṇâdis. 3,10 (vgl. Uéâval. zu d.). 1) (von 2. सि) a) *Wurfgeschoss, Wurfspiess:* सृष्टा RV. 1,66,7. 143,5. 7,3,4. 1,186,9. यन्यं ते यस्मिन् वपसु सेना: 2,33,11. यक्ला: 5,30,9. 8,64,7. 10,23,1. सुरिक्ता AV. 11, 10,4. 8,8,7. — b) N. von Indra's Gattin, *sein Geschoss als seine Braut gedacht* (vgl. शचीपति und इन्द्र°) TS. 2,2,8,1. Ait. Br. 3,22. auch wohl Kauṣh. Up. 4,7. — 2) (von 1. सी) a) *Schlachtreihe, geordnete Heerschaar* AK. 2,8,2,46. H. 745. Hall. 2,302. 5,4. RV. 1,33,6. सर्मन्यवो यत्समर्त सेना: 7,25,1. कुर्पते यस्य सेना 9,96,1. 10,103,1. 4. 7. 142,4. 156,2. सेनां मोहयतु AV. 3,1,1. मरुतो यन्तु सेनया 19,6. 4,19,2. 5,21,9. 31,7. 6,66,1. 67,1. 93,1. ये सेनाभिर्यृधमायत्यस्मान् 66,1. यमित्राणाम् 8,8,1. 5. 11,2,21. 10,25. Ait. Br. 3,22. 8,10. fg. Çiṅkh. Br. 28,6. TBr. 3,7,5,1. Çat. Br. 5,3,4,1. 8,6,4,16. 14,5,2,6. Âçv. Gṛhj. 4,8,22. 29. Kauç. 14. M. 4,121. MBh. 3,3062. R. 4,28,30. Hem. 1,19. 37. Weber, Rikmat. Up. 288. Râja-Tar. 5,140 (vom folgenden zu trennen). सेनानी नेता: Vaṇis. Bṛh. S. 15,16. 44,20. °प्रवाद 2, S. 6, Z. 6. सेनायां समवेता ये AK. 2,8,2,29. सेनयाभिनिर्यायाम् Hall. 2,306. °प्रस्थान Prab. 78,9. °निर्याण Verz. d. Oxf. H. 345,b,34. fg. °प्रयाण 116,b,25. 344,b,7. °संस्तम्भन 108,b,39. °स्तम्भन Verz. d. B. H. No. 904. दैत्य° MBh. 3, 13710. गन्धर्व° Vikr. 11,16. चोर° Kathâs. 10,187. am Ende solcher compp. auch neutr. P. 2,4,25. AK. 3,6,6,40. युक्तसेन adj. Suça. 1,122, 3. — b) *eine kleine Heeresabtheilung, bestehend aus 3 Elephanten, 3 Wagen, 9 Reitern und 15 Fusssoldaten,* H. 748. — 3) am Ende von Personennamen P. 4,1,152. fg. Wassiljew 268. eine best. Dynastie (vgl. सेनकुल) 50. 55. Târan. 201. 262. am Ende von Hetärennamen Siṅh. D. 426. — 4) N. pr. der Mutter Çaṁbhava's, des 3ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇi, H. 39. — Vgl. अभि° (°येण), अयुद्ध°, आप्रु°, इन्द्र°, ऋषि°, ऋष्टि°, चित्र°, श्रयत्°, देव°, धृष्णु°, ध्रुव°, नन्दि°, न्°, पुण्य°, पृतु°, प्र°, प्रचण्ड°, प्रति°, प्रवर°, बल°, बलाल°, बिन्दु°, बुद्ध°, बृहत्°, भद्र°, भरणि°, भरत°, भानु°, भीम°, भूमि°, भूरि°, भोग°, मदन°, मधु°, मरुत्°, माधव°, मित्र°, मुक्ता°, मृत्यु°, यज्ञ°, रति°, रत्न°, राज्य°, रुद्र°, रूप°, रोहिणि°, लक्ष्मी°, वज्र°, वसु°, विक्रम°, विजय°, विश्व°, विषक्°, विक्रित°, वीर°, वृद्ध°, वृष°, व्याघ्र°, शक्ति°, शंकर°, शतभिषक्°, शान्त°, शूर°, श्री°, श्रीधर°, श्रुत°, श्रेष्ठ°, समुद्र°, सर्व°, सिंह°, सिद्ध°, सिन्धु°, सु°, सुन्दर°, सुर°, सूर्य°, सृरि°, स्कन्द°, सेन्य.

सेनाकल्प m. *die Flanke eines Heeres* und zugleich *ein Heer als dürres Gestrüpp* (vgl. मम सैनमयं कलं प्रघट्यति 3, 5287) MBh. 8, 2679. — Vgl. सैन्यकल्प.

सेनाकर्मन् n. *Führung eines Heers* MBh. 5, 5721.

सेनाग्नि m. *Agni des Heeres* Kauç. 60. Schol. zu Pâṇ. Gaṇ. 1,10.

सेनाग्र (सेना + अग्र) n. *Spitze des Heeres* R. 3,29,33. 4,28,31. °ग *an der Spitze des Heeres gehend, Heerführer* R. Schl. 1,1,73. 5,41,4. 43,7. 56,125. 7,35,6.

सेनाङ्ग (सेना + 3. अङ्ग) n. *Alles was einen Bestandtheil des Heeres bildet, zum Heere gehört* AK. 2,8,2,1. H. 751. Hall. 5,80. Hem. 15, 9. Vaṇis. Bṛh. S. 11,62. 95,11. *Heeresabtheilung:* °पति Kâm. Nîtis. 19,33.

सेनाचर P. 3,2,17. m. *Krieger, Soldat* MBh. 1,8084. Râja-Tar. 4,208.

सेनाजीव (सेना + जी°) m. dass. MBh. 3,15112. 15114.

सेनाजीविन् (सेना + जी°) m. dass. Spr. (II) 2216. MBh. 5,1401.

सेनार्ह adj. *pfeilgeschwind:* Wagen RV. 1,116,1.

सेनाधिनाथ (सेना + ध°) m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vișṇup. 11.

सेनाधिप (सेना + ध°) m. *Heerführer* Vaṇis. Bṛh. S. 104,61. Râja-Tar. 5,330.

सेनाधिपति (सेना + ध°) m. dass. Vișṇup. 107. Verz. d. Oxf. H. 250,b,31.

सेनाध्यक्ष (सेना + ध°) m. dass. Harîv. 1094. Spr. (II) 6841. Miṣr. P. 636,3 v. u.

सेनानी P. 3,2,61, Schol. Declination 7,3,116. 6,4,32, Vârtt. 3. 1) *Schaarenführer, Herzog, Feldherr* AK. 2,8,2,30. H. 725. am. 3,137. Med. n. 156. RV. 7,20,5. 9,96,1. यो व: सेनानीर्मरुतो गणस्य 10,34,12. 84,2. VS. 15,15. 16,17. TS. 1,8,9,1. TBr. 1,7,5,4. Çat. Br. 5,3,4,1. 8,6,2,21. Kâṭy. Çr. 15,3,3. MBh. 4,278. 529. सेनानीनामहं स्कन्द: sagt Kṛshṇa Bhag. 10,24. स्कन्दो ऽहं सर्वसेनान्याम् Bhâs. P. 11,16,22. Hem. 2,37. Kumâras. 2,51. Mâlav. 70,12. Spr. (II) 3308, v. l. Vaṇis. Bṛh. S. 69,20. Kathâs. 20,60. 97. fg. 109,53. Râja-Tar. 4,139. शर° 3,33. यमुर° Bhâs. P. 7,10,34. उग्र° Kṛshṇa MBh. 12,1507. — 2) ein N. Skanda's, des *Heerführers* der Götter, AK. 1,1,2,25. H. 208. H. an. Med. MBh. 5,3720. Kir. 15,7. Kathâs. 49,239. 114,115. — 3) N. pr. a) eines Rudra Harîv. 11532. VP. 121, N.17. — b) eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,4548. — c) eines Sohnes des Çambara Harîv. 9252.

सेनापति m. 1) *Heerführer* Med. t. 228. Vișṇup. 95. Ait. Br. 8,23. °कृताध्यक्षौ M. 7,189. MBh. 2,883. 4,276. Harîv. 8402. R. 1,38,1. 2,91,39. R. Gorr. 1,1,78. Kâm. Nîtis. 16,11. Bhâm. Nitiç. 34,69. Çiç. 23,1. fgg. Spr. (II) 1836. Vaṇis. Bṛh. S. 3,21. 15,26. 34,10. 35,7. 49,3. 53,5. 14. 17. 73,4. Kathâs. 18,264. 72,5. Prab. 78,9. Verz. d. Oxf. H. 344,a,43. सर्व° *Oberfeldherr* MBh. 5, 5226. — 2) ein N. Skanda's, des *Heerführers* der Götter, Med. — 3) N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1. 2732. — Vgl. अधि°.

सेनापतित्व n. nom. abstr. von सेनापति 1) MBh. 13,4180. Verz. d. Oxf. H. 116,b,17.

सेनापतिपति m. *Oberfeldherr* MBh. 5,5228. 5711.

सेनापत्य n. *Feldherrnamt* MBh. 3,14428. fg. 13,4213. Kumâras. 2,61. Kathâs. 25,276. 34,114. 123,68. — Vgl. die richtigere Form सेनापत्य, wie MBh. ed. Bomb. überall hat.

सेनापुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 66,b,17.

सेनाप्रणेतर् m. *Heerführer* MBh. 5,176. 5226.

सेनाबिन्दु m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,2036. 6989. 2,1019. 1023. 5,76. 7,916.

सेनाभिगोप्तर् (सेना + गो°) m. *Hüter des Heeres,* Bez. *eines best. Amtes:* पुरोहितामात्यकुमारकृत्या: °गोप्तार इमे प्रधाना: Kâm. Nîtis. 15,30.

सेनामुख n. 1) *Spitze des Heeres* TBr. 3,8,22,1. Çat. Br. 13,2,2,2. — 2) *eine kleine Heeresabtheilung, bestehend aus 3 Elephanten, 3 Wagen, 9 Reitern und 15 Fusssoldaten,* MBh. 1,290. 5,5270. AK. 2,8,2. 49. *aus 9 Elephanten, 9 Wagen, 27 Reitern und 45 Fusssoldaten* H. 748. — 3) *ein zu einem Stadtthor führender verdeckter Gang* Çabdaratn. bei Wilson.

सेनामुखी f. N. pr. einer Göttin Rāja-Tar. 3,461.

सेनारक्त m. pl. *Feldwache* AK. 2,8,2,29. H. 763.

सेनावास m. *Lager, castra* Vaṃśa. Bṛh. S. 48,17.

सेनावाक् m. *Heerführer* MBh. 4,503. 509.

सेनास्थान n. *Lager, castra* Trik. Ind. za 2,8,2.

सेनाव्यूह m. *Aufstellung eines Heeres, Schlachtordnung* Verz. d. Cambr. H. 7,12. fg.

सेनाह्न् s. सेनह्न्.

सेनि s. तोर्य°.

सेनीय adj. am Ende eines comp.: युद्ध° adj. von युद्धसेन *von einem Fürsten handelnd, der an der Spitze eines Heeres (im Felde) steht,* Sūçr. 1,122,2.

सैन्द्र (2. स + इन्द्र) adj. *mit* Indra *verbunden, sammt* L.: देवाः TS. 7,3,11,3. 3,5,8,1. 8,5. यज्ञि 5,4,8,1. 6,1,10,2. Ait. Br. 3,15. Çat. Br. 1,4,2,23. यज्ञ 2,5,2,15. Pāraṇ. Gṛ. 15,5,24. MBh. 13,4180. R. 3,51, 6. Spr. (II) 7166. Davon nom. abstr. °ता f. Ait. Br. 6,17. Çat. Br. 13, 2,2,9. °त्व n. TS. 2,5,8,6.

सैन्द्रगण (2. स + इ°) adj. *sammt* Indra's *Schaaren* MBh. 5,7110.

सैन्द्रिय (2. स + इ°) adj. 1) *mit Vermögen —, männlichem Vermögen u. s. w. ausgestattet.* — 2) *sammt den Sinnesorganen* M. 1,55.

सैन्द्रियत्व n. nom. abstr. zu सैन्द्रिय 1) Ait. Br. 1,4. 17.

सैन्य (von सेना) 1) adj. *durch Speerwurf veranlasst:* वध AV. 1,20, 2. 6,99,2. — 2) m. *Speerwerfer, Kriegsmann* RV. 1,81,2. 7,30,2. AV. 18,1,40 (RV. v. l.). — Vgl. सैन्य.

सैमली f. *Rosa glandulifera* Nirghaṇṭa-P. 52 nach ÇKDr. — Vgl. सुमना.

सैय n. von सा = सन् in शत°.

सैयन m. N. pr. eines Sohnes des Viçvāmitra MBh. 13,257 nach der Lesart der ed. Bomb., सयन ed. Calc.

सैर (2. स + इरा) adj. zur Erklärung von सीर Çat. Br. 7,2,2,2.

सैराक् m. *ein milchweisses Pferd, Schimmel* H. 1238.

सैर्ह (von 1. सि) adj. *bindend, fesselnd* P. 3,2,139. Vop. 26,149.

सैर्ष्य (2. स + ईर्ष्या) adj. (f. या) *neidisch, eifersüchtig* Prab. 17,6. Kathās. 13,75. 17,126. सपत्नी° auf 42,202. °म् adv. 6,145. Bhāg. P. 4, 4,13. 8,10. Pāraṇ. 27,10.

सैल्, सैलति v. l. für शैल् Dhātup. 15,36.

सैल *eine best. hohe Zahl* (bei den Buddhisten) Mél. asiat. 4,640. — Vgl. सैलु.

सैलग m. *Räuber, Wegelagerer* Ait. Br. 7,1. 8,11. Çat. Br. 13,4,2, 10. Âçv. Çr. 10,7,6. — Vgl. सैलग.

सैलु 1) *eine best. hohe Zahl* (bei den Buddhisten) Mél. asiat. 4,639. Vgl. सैल. — 2) = शैलु Sūçr. 1,237,21.

सैल्यपुर n. N. pr. einer *Stadt* Rāja-Tar. 8,201. 202.

सैल्हार N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,a,3.

सैव्, सैवति und सैवते (सेवने) Dhātup. 14,30. सिषेवे, असेविष्ट Vop. 8, 118. सेविष्यते, सेवितुम्, सेवित्वा P. 1,2,18, Schol.: act. nur hier und da des Metrums wegen. Der Gegensatz von सेव् ist त्यज्. 1) mit loc. *sich aufhalten bei:* यत्र श्वेतः स्थाणौ सेवते Çat. Br. 3,6,2,4. 5. — 2) mit acc. *sich aufhalten —, verweilen bei, besuchen, bewohnen, zum Aufenthaltsort erwählen, sich begeben zu, auf:* चतुष्पथम् M. 4,131. तस्या ग्रहम् MBh. 13,1345. Mṛcch. 50. Spr. (II) 4978. तस्यैकं काननं भृङ्ग सेवते यद्दिवाकरः। यपरं रात्रितं भृङ्ग सेवते यन्निशाकरः॥ R. 4,41,41. 3,22,8. तीरनलिनीं कारण्डवः सेवते Vikr. 41. श्मशानम् Spr. (II) 608. गात्रच्छायां मदान्धनागस्य 2213. तम् (वटम्) सघगणः सर्वात्मना सेवते Spr. (II) 1603. सेवते यदि मरीसृपास्तृणाग्राणि Vaṃśa. Bṛh. S. 28,13. राजद्वारमकर्निशं खड्गपाणिः सेवते Hit. 98,18. तं यान्तं दृढमुर्गुघाः क्रव्याद्यश्च सिषेविरे *gingen ihm nach, umschwärmten ihn* Bhaṭṭ. 14,97. सेव्यस्तो मध्यभावेन राजवल्किगुरुस्त्रियः *so v. a. man bleibe in einiger Entfernung von ihnen, komme ihnen nicht zu nahe* Spr. (II) 176, v. l. सेव्यमान (der Ort, Platz) *den man inne hat* R. 2,33,21. सेवित *besucht, bewohnt, eingenommen* (ein Ort) AK. 3,4,16,96. Bālar. P. 1,13,8. यसेवितेश्वरहार Spr. (II) 788. मरो देवगणैः सेवितम् Çiç. in LA. (III) 33,3. देवगन्धर्व° MBh. 1,1104. 5950. 3,1756. 1758. 2402. शार्दूलमृग°-2488. 5,7095. 7351. R. 1,51,23. 2,27,11. 54,27. 68,15. 95,3. 104,2. R. Gorr. 1,34, 22. 37,3. यगस्त्यसेवितामाशाम् 3,22,3. 66,2. 78,3. Spr. (II) 5949. Bālar. P. 1,6,12. 3,33,32. 4,10,5. पद्भ्यो ऽवधूतसेविताः 4,4,21. — 3) mit acc. *bei Jmd verweilen so v. a. Jmd Dienste leisten, aufwarten, seine Achtung, — Unterthänigkeit u. s. w. bezeigen, es mit Jmd halten:* वृद्धान् M. 7,38. Bhāg. 14,36. MBh. 3,27 (act.). Harīv. 1337. 13206. fg. (act.). R. Gorr. 1,60,3. 79,16. Kir. Nīti. 3,14. 11,25. 15,46. Mṛcch. 9. Kumāras. 7,43. Rāgh. 9,19. Çiç. 132. Spr. (II) 606. 1301. 1511. 2597. 2851. 3036. 5457. 5608. 5826. 6173 (act.). 6789. 7104. 7133. Kathās. 6, 1. 18,128. 20,178. 49,8. 179. 223. Rāja-Tar. 3,134. 150. 200. 4,144. 6,152. Weber, Kṛṣṇaj. 287. शिश्नं सिषेव पात्रञ्च स्वयं च श्वेतचामरैः Pāraṇ. 1,4,65. प्रतिदिनं तत्पादुका सेव्यताम् Spr. (II) 6673. सेव्यमानो ऽपि हि स्नेहैः *gepflegt* (ein Kind) Kathās. 14,41. किमको सेवसे स्त्रैरेवं मामीदृशैः *so v. a. bedenken* 38,52. Auch von Unbelebtem, das aber als belebt gedacht wird: तो सरांसि रसवद्भिरम्बुभिः कूजितैः श्रुतिसुखैः पतत्रिणः। वायवः सुरभियुष्परेणुभिश्छायया च तरुदाः सिषेविरे॥ Rāgh. 11, 11. — 4) mit acc. *der Liebe pflegen* (von beiden Geschlechtern): सघन्याम् M. 8,362. उत्तमाम् 366. न सेवेत स्त्रस्वलाम् MBh. 13,7337. Harīv. 8759. Kathās. 12,92. Pāraṇ. 45,10. यालिङ्गनचुम्बनादिभिस्तिस्तनीं सेवितुमुपचक्रमे 263,5. तं च ज्ञारो मनोलौल्यात्पुष्पताम्बूलसदृशः कदाचित्सेव्यसे Hit. 87,1. Daçar. 77,4. — 5) mit acc. *anblasen, anwehen* vom Winde, der gleichsam als *dienstbarer* Geist gedacht wird: मलयं दर्दुरं चैव सेवित्वा चन्दनानिलः। सुगन्धः प्रववौ R. Gorr. 2,100,21. रावणं युक्तशीतोष्णः सेविष्यति सुखो ऽनिलः R. Schl. 2,44,9. Rāgh. 1,38. 2,13. 4,73. तासां वदननिश्वासः सिषेवे रावणं तदा R. 5,14,24. माधवे मासि वायुसेविते 13,60. शीतलानिलसेविते वृन्दावने Pāraṇ. 4,6,9. मुखमारुतेन वपुः सेवते Çiç. Cr. 63,7. — 6) mit acc. *sich einer Sache hingeben, obliegen, pflegen, üben, frönen, geniessen, gebrauchen, häufig gebrauchen:* स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरा RV. 10,117,2. मेथुनम् AV. 5,30, 4. Sūçr. 1,150,5. 2,408,2. धर्मम्, सधर्मम् M. 2,1. 12,21. नियमान्, यमान् 2,175. 4,204. दीक्षाः, श्रुतीः 6,29. fg. मैत्रम् 35. सूतम् 9,227. सध्युपायान् 11,210. निवृत्तं कर्म 12,90. सध्यात्मयोगनिद्राम् MBh. 1,1218 (act.). धर्मकामार्थान् 8052. कामं प्रकामं सेव त्वं मया सह विलासिनि 4,

401. Harîv. 7269 (act.). R. 2,109,20. R. Gorr. 1,80,15. 2,46,17. मधूनि 5,34,10. वादित्रनृत्यादि 7,20,12. Mṛicch. 121,7. Kim. Nîtis. 15,44. Kumâras. 5,38. Ragh. 17,49. Spr. (II) 252. 1092. सुखम् 1190. 1246. 2527 (act.). 3131. 3744. 3779. ब्रह्मासास्थिमयं वपुर्मृगदृशाम् 3838. 4045. 5088. 5271. 7080 (act.). 7172. Kathâs. 11,3. 17,91. 101. सुरतक्रीडाम् 20,73 चन्द्रोदयम् 220. संगीतकम् 21,4. 22,11. 27,166. 36,67. 50,159. 56,292. तया सार्धं रतं सेवितवानस्मि 63,59. 85,9. 94,60. 117,128. Mâlav. P. 49, 9. Râja-Tar. 1,27. 351. 3,113. 5,65. Bhâg. P. 1,17,41. 2,3,19. 4,8,58. 9,6,48. 19,18 (act.). Sarvadarçanas. 32,12. 173,23. 178,8. — 7) mit acc. *sich befinden an, angetroffen werden bei* (von Unbelebtem): मलेन तस्याङ्गमिदं कषमार्यस्य सेव्यते R. 2,100,33 (108,31 Gorr.). Harîv. 7075. (यम्) सिषेविरे गुणास्तुल्यं दिव्योत्थानमिवर्तवः Râja-Tar. 4,47. सेव्यमानमविरतं चन्द्रकान्त्याङ्गलग्नया Kathâs. 3,62. पम्पाकाननसेवित so v. a. *versehen mit* R. 4,3,6. hierher könnte allenfalls शरा मन्युसेविताः MBh. 3,1949 gezogen werden, aber die ed. Bomb. liest besser मन्युनेरिताः. — Vgl. सुसेवित.

— caus. *Jmd dienen, seine Achtung bezeigen:* पृष्ठतः सेवयेदर्कं ज्ञठरेण कृताशनम् । स्वामिनं सर्वभावेन परलोकमभीप्सया ॥ Spr. (II) 4188. *pflegen, hegen:* मानान् (Pflanzen und Fürsten) 1171, v. l.

— desid. vom caus. s. सिषेवयिषु.

— घ्रति *zu häufig geniessen* Suçr. 1,31,16. 2,145,10.

— व्यति pass. *reichlich versehen sein mit:* सर्वास्तु सेना व्यतिसेव्यमानाः पदातिभिः पावकतेलरक्तैः । प्रकाश्यमाना ददृशुर्निशायां पद्मान्तरिक्षे ज्वलदास्तडिद्भिः ॥ MBh. 7,7397 nach der Lesart der ed. Bomb. Man könnte व्यतिसीव्यमानाः *durchzogen, durchwebt* vermuthen; vgl. संस्यूत unter सीव् mit सम्.

— अनु 1) = simpl. 2): = वक्त्रनिम्ने दृशौ R. 4,26,6. — 2) = simpl. 3) Kathâs. 71,155. Bhâg. P. 7,9,42 (act.). — Vgl. अनुसेविन्.

— अभि s. °सेवन.

— आ 1) = simpl. 2) R. 3,52,39. तीर्थम् Bhâg. P. 3,1,22. Kirâtârg. 3, 109. — 2) = simpl. 3) Bhâg. P. 4,30,6. — 3) = simpl. 4): सकामाम् MBh. 3,16564 (act.). Kirâtârg. 3,109. — 4) = simpl. 6) P. 3,4,66. मधुरं रसम् Suçr. 1,155,13. Mucch. 67. धनानि, वस्त्राणि, अलंकारान्, भोजनम् R. Gorr. 2,8,38. द्यूतम् Mṛicch. 35,6. वायुम् Kumâras. 1,15. Vikr. 67,3. Mâlav. 8,5. पानम् Kathâs. 28,121. 33,13. चन्दनम् Ṛit. 6,12. अवरा वस्तीः Râja-Tar. 5,202. षड्वर्गम् Bhâg. P. 9,19,24. मूलभक्षुर्ज्ञनदुष्प्रवादम् so v. a. *sich aussetzen* Kathâs. 24,228. आसेवन्निममध्यायम् so v. a. *lesend, studirend* MBh. 1,234. — Vgl. आसेवन fg.

— प्रत्या Nir. 8,15 zur Erklärung vom caus. von सुप् mit प्रति.

— समा = simpl. 6): मैथुनम् M. 11,174. धर्मम् Spr. (II) 5817.

— उप 1) = simpl. 2) R. 2,56,7. 71,8. Kim. Nîtis. 16,22. Spr. (II) 4603. — 2) = simpl. 3) M. 4,133. 7,175. MBh. 3,11290. 13771. 13,510. Spr. (II) 1005. fg. R. Gorr. 1,80,2 (act.). 5. पादौ 2,99,25. Gît. 11,22. Kim. Nîtis. 1,67. Spr. (II) 3454. 5456. 5457, v. l. Kathâs. 10,85. 50, 192. — 3) = simpl. 4): नारीम् Suçr. 1,290,16. पुरुषम् 2,396,3. — 4) = simpl. 5): शीतो वायुस्तमुपसेवते MBh. 2,390. — 5) = simpl. 6) Kaṭhop. Up. 2,22,1. विषयान् Bhag. 13,9. संधिम्, विग्रहम् MBh. 2,159. 5,832. वृत्तिमन्याम् 12,6726. मूत्रपुरीषयोः (so v. a. *vollbringen*) 13, 7567. पानम् R. 5,14,35. Suçr. 1,155,17. सुखम् Spr. (II) 5088. 7077. स्त्रीसंभोगम् Mahân. P. 18,31. रुतविषयोपसेवमान so v. a. *ausbeutend* Kim. Nîtis. 15,61. — 6) = simpl. 7): चन्दनेन मरुकर्णेन पत्याङ्गमुपसेसेवितम् R. ed. Bomb. 6,99,35. — Vgl. उपसेवक fgg.

— अभ्युप *verehren:* सायं प्रातश्च संध्यां यो ब्राह्मणोऽभ्युपसेवते MBh. 3,12482.

— समुप *sich einer Sache hingeben:* निद्राम् R. 1,35,23.

— नि, °षेवते, न्यषेवत, निषिषेवे P. 3,3,62. fg. 70. Vop. 8,43. 115. 1) mit loc. a) *wohnen bleiben:* ऐकैकेन नि षेवते AV. 11,8,32. — b) *Umgang haben mit:* पदास्वमानुषीषु मानुषो निषेवे ṚV. 10,95,8. — 2) mit acc. a) = simpl. 2) R. 1,31,21. Harîv. 3643. Çiç. 102. Spr. II) 2744. Râja-Tar. 1,30. Bhâg. P. 4,4,15. 7,14,33. गतायुरपि यो वयुधो गात्रेमो विहाय निषेवते *haftet an* R. 4,22,11. मार्गम् *einen Weg einschlagen* Harîv. 4188 (act.). R. 3,57,11. भवत्पार्श्वम् Verz. d. Oxf. H. 61,b,1 v. u. निषेवित *bewohnt, besucht, besetzt* Harîv. 13879 (निसे° die ältere Ausg.). R. Gorr. 2,47,3. मृगव्याल° MBh. 3,2355. 2427. 2495. 2518. 2534. 2566. पितृ° 16896. 12,4256. R. 2,26,28. 30,11. 54,28. 74,27. 92,11. 99,11. 5,13,15 (zu lesen °पनिषे°). Spr. (II) 503. 3112. Pañcat. 31,1. Bhatt. 8,3. — b) = simpl. 3) M. 6,88. कार्याण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते 9,300. Spr. (II) 3997. MBh. 13,2365 (act.). Kumâras. 2,34. Spr. (II) 503. 4888. 7089. Râja-Tar. 3,165. 4,125. Bhâg. P. 4,4. 15. 21,38. 6,7,4. पद्मपत्रम् Spr. (II) 5432. व्यालो घोरविषेव तं मयाबुद्धा निषेविता so v. a. *sich nähern* R. Gorr. 2,34,9. — c) = simpl. 4) M. 5,163. R. 2,75,37. Varâh. Bṛ. S. 104,21. Spr. (II) 7112. Pañcat. 43, 9. — d) = simpl. 5) MBh. 2,94. 8,2854. — e) = simpl. 6): सदाचारम् M. 4,155. दानधर्मम् 237. द्यूतम् 9,228. विषयान् 12,73. कर्म 81. MBh. 1, 6124. स्वप्नम् 3,11877. 13798. वारि पम्पायाः 16100. 4,809. R. Gorr. 1. 35,47. 3,61,40. 7,78,16. Suçr. 1,69,20. 130,8. 254,6. 2,373,16. Kim. Nîtis. 1,49. 63. 18,38. Kumâras. 1,6. 5,76. Çiç. 4,66. 9,68 (निषेवितम् zu lesen). Weber, Rmây. Up. 329. द्रावणयौ *geniessen* so v. a. *theilhaftig werden* Spr. (II) 723. कर्मणा मनसा वाचा यदभीक्ष्णं निषेवते übers. *treiben* 1360. 3779. 4093. 4597. 5308. 5597. 5600, v. l. Varâh. Bṛ. S. 76,6. 77,4. 78,21. Kathâs. 27,18. Râja-Tar. 3,257 न्यषेवत zu lesen. Mâlav. P. 15,5. Bhâg. P. 3,20,18. 32,15. 5,12,13. 11,28,42. Çiç. in LA. (III) 34,22. न चाति ते (मृगाः) निषेव्यन्ते so v. a. *aber man übertreibt nicht die Jagd auf sie* Kathâs. 27,148. — f) = simpl. 7): न्यस्तेनाघ्रतालस्य प्रलम्बोत्तरं प्रति । निषेवमाणां (so der Comm. in der ed. Bomb.) ते ज्ञमुनदीं मध्येन मालिनीम् ॥ so v. a. *befindlich, gelegen, fliessend* R. 2,68,13. — निषेवितम् Kim. Nîtis. 18,42 fehlerhaft für निषेविणम्. Vgl. निषेव fgg. — caus. *sich begeben —, fahren in:* रौरवादीनि Spr. (II) 5912.

— उपनि *sich einer Sache hingeben, nachgehen, obliegen:* सर्वाणि MBh. 14,462.

— परि, °षेवते, पर्यषेवत, °षिषेव P. 3,3,62. fg. 70. Vop. 8,43. 115.

die Texte haben स (auch ed. Bomb.) und ष. 1) *besuchen, aufsuchen:* योनिकेतमलिभिः परिषेव्यमानम् (so Burnouf, °से° ed. Bomb.) Bhâg. P. 3,28,30. — 2) *Jmd mit Auszeichnung behandeln, ehren* Spr. (II) 11. 3295. Bhâg. P. 2,9,14. Pañkat. 1,8,12. — 3) *einer Sache nachgehen:* यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिषेवते Spr. (II) 3600. *häufig —, gern geniessen* 11.

— प्रति, °सेवते Vop. 8,113.

— वि, °षेवते, व्यषेवत, °षिषेव P. 8,3,63. fg. 70. Vop. 8,45. 113.

— सम् 1) *zusammensein mit zur* Erklärung von सच् Nir. 3,9. 9,33. 12,41. — 2) = simpl. 2) Spr. (II) 4840. Pañkat. 3,5,23. — 3) = simpl. 3) MBh. 12,3942. Kir. 18,24. Spr. (II) 3491. 6770. Verz. d. Oxf. H. 193, *a*, 1. 8. Bhâg. P. 10,72,6. 11,26,31. Pañkat. 1,3,79. यागश्चक्रत्यो वेश्म बभारुवेण (v. l. कृष्णा°) संसेवत्यो गाः (d. i. गावः) so v. a. *begrüssen* Vaitân. Bṛh. S. 92,3. — 4) = simpl. 4) Spr. (II) 2877. 6332. — 5) = simpl. 5) R. Gorr. 2,64,11. — 6) = simpl. 6): प्रवृत्तं कर्म M. 12,90. द्वादशवार्षिकं मरुम् MBh. 13,6349. कामम् Vaitân. Bṛh. S. 104,23. Wind 27,6. शयनानि मनोज्ञानि R. Gorr. 2,62,13. — संसेवित in comp. mit श्रेण्यादि gaṇa कृतादि zu P. 2,1,59. — Vgl. संसेवन fgg.

सेव 1) nom. ag. (von सीव् oder सेव्) gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. — 2) n. = सेवि *Brustbeere* Râgân. im ÇKDr.

1. सेवक (von सीव्) m. *Sack* H. an. 3,110 (प्रसेवे zu lesen). Med. k. 170.

2. सेवक (von सेव्) nom. ag. (f. सेविका gaṇa तिमकादि zu P. 7,3,45, Vârtt. 6). 1) *bewohnend:* श्मशानगृह° MBh. 12,13148. — 2) m. *Diener, Dienstmann* AK. 2,8,1,9. Trik. 3,2,5. H. 496. an. 3,110. Med. k. 170. Halâj. 2,273. R. Gorr. 2,32,21. Spr. (II) 1078. 1301. 2431 (नित्य°). 3383 (सेवकोक्तम). 3662. 4217. 4290. 4368. 4619. 5462. 6469. 7167. fgg. 7340. fg. Vaitân. Bṛh. S. 5,34. 15,26. 101,6 (नृप°). Kathâs. 27,137. 38,7. Râgat. 3,140. 167. 4,207. 5,51 देव से° zu trennen, wie schon Benfey bemerkt). 197. Bhâg. P. 7,6,10. 10,5. Pañkat. 217,23. Hit. 41, 22. 51,15. 110,17. Z. d. d. m. G. 14,571,22. व्यापत्सेवक *ein Diener im Unglück* Spr. (II) 803. — 3) *ehrend, Verehrer* Wheler, Râmây. Up. 320. वृद्ध° Jâgñ. 1,308. Bhâg. P. 4,16,16. मल्लिप्रवर° Harîv. 6193. मत्° Bhâg. P. 5,15,7. 10,60,35. मोक्ष° Pañkat. 1,2,23. — 4) *einer Sache obliegend:* किंशुक° *pflegend* Spr. (II) 679. गुडैक° Kathâs. 35, 33. — Vgl. कुल°, क्षित्र°, क्षात्र°, ग्राम°.

सेवकालु (सेवक + आलु) m. *eine best. Pflanze,* = निशाभङ्गा Çabdam. im ÇKDr.

सेवती f. *Rosa glandulifera* Buivapr. im ÇKDr. (Nachtrage).

1. सेवन (von सीव्) 1) n. = सीवन *das Nähen* Vop. 26,172. AK. 3, 3,5. Trik. 3,3,271. H. 912. an. 3,437. Med. n. 157 (an den zwei letzten Stellen zu lesen सीवनोपास्त्योः). Suçr. 1,26,18. Vop. in Daivop. 14,12. — 2) f. ई *a) Nähnadel* H. 911. — *b) Nath, Verbindungsstelle am menschlichen Leibe* (fünf am Kopf, je eine an Zunge und penis oder Hodensack) Buivapr. in Verz. d. Oxf. H. 311, *a*, 2 v. u. Suçr. 1,35,1. 86,14. 262,3. 337,12. 339,17. Ait. Br. 3,37. Çâñkh. Br. 28,9. — Vgl. तुन्न°.

2. सेवन (von सेव्) n. 1) *das Aufsuchen, Besuchen, Hingehen zu:* गङ्गा तरति सेवनात् Spr. (II) 4754. राज्ञो सभासेवनम् 4025. सप्तिसेवनैः 6030. विविक्तसेव° Bhâg. P. 3,28,3. श्मशान° Pañkat. 241,1. — 2) *das Bedienen, Aufwarten, Dienst;* = उपास्ति (auch zu 3) Trik. 3,3,271. H. an. 3,437. Med. n. 157. तपः शूद्रस्य सेवनम् Spr. (II) 4506. °Râga-Tar. 5, 388. Bhâg. P. 1,16,17. नित्य° Mârk. P. 14,33. सेवनं कृ Kâm. Nitis. 5,14. in comp. mit dem Object: प्रभु° M. 11,69. नीच° Bhâg. P. 7,11, 20. Râga-Tar. 5,308. — 3) *das Ehren, Verehrung* P. 1,3,32. द्विजानां वैष्णवानां च Pañkat. 2,7,37. काष्ठपाषाणधातूनां कृत्वा भावेन सेवनम् Spr. (II) 1714. Râga-Tar. 1,123. in comp. mit dem Object: गुरु° Ragu. 18, 29. तत्पादाम्बुज° Spr. (II) 1620. 7315. Vaitân. Bṛh. S. 74,19. Râga-Tar. 5,338. Dhûrtas. 76,5. Bhâg. P. 4,19,6. 7,5,23. Pañkat. 1,2,14. 8,27. Auch f. या Verz. d. Oxf. H. 238, *a*, 27. — 4) *geschlechtlicher Verkehr mit* (geht im comp. voran): वृषली° M. 11,178. — 5) *das Obliegen, Ausüben; Gebrauch, häufiger Genuss:* निन्दितस्य Spr. (II) 6242. धर्मस्यासेवनेन M. 12,52. धर्म° Spr. (II) 1055. शस्त्र° R. 3,13,27. पक्ष° Mâlav. 71,11. शयनासन° Vaitân. Bṛh. S. 79,5. व्यायामानिल° Suçr. 1,176,12. मारुतायास° 316,9. काम° Çiç. in LA. (III) 34,2. अपथ्य° Pañkat. 217, 23. कृषिसेवनादि *Ackerbau u. s. w.* oder *Ackerbau, Dienst u. s. w.* Spr. (II) 4654. इन्द्रिय° *Sinnengenuss* Pañkat. 1,1,53. — Vgl. दुन्दुभिषेवण.

सेवनिन् (von सेवन) m. *Pflüger* (nach Nîlak., der fälschlich auf Med. n. 157 verweist) Harîv. 3609.

सेवनीय (von सेव्) adj. 1) *aufzusuchen:* वन Spr. (II) 1771. — 2) *zu ehren, dem zu huldigen ist* Harîv. 2853. सत्सेवनीयः पूरुवंशः Bhâg. P. 3,8,1. सुन्दरीणां यौवनम् Spr. (II) 1771.

सेवा (wie eben) f. 1) *Besuch* Spr. (II) 2919. तीर्थ° 2754. 3286. — 2) *Dienst* AK. 2,9,2. 3,4,29, 226. H. 496. M. 4,6. 10,116. Jâgñ. 3,43. Vikr. 42. Spr. (II) 7169. fg. 7173. Kathâs. 18,12. Râga-Tar. 3,138. 166. 250. 5,197. 8,14. °धर्म Spr. (II) 4987. Pañkat. 13,5.7. सेवाभिरत Vaitân. Bṛh. S. 15,5. °ज्ञ Bṛh. 17,1. खलेषु Spr. (II) 3794. 7238. कृतघ्नस्य 1630. 3795. सेवां कृ Vet. in LA. (III) 23,15. mit gen. der Person Kathâs. 24,115. Hit. 48,1. वनस्पति° (subj.) Çiç. 50,17. पति° (obj.) M. 2,67. विप्र° 10, 122. स्वामि° Spr. (II) 1035. 3795. 4840. 7402. — 3) *Verehrung, unterwürfiges —, rücksichtsvolles Benehmen* Bhag. 4,34. नारायणस्य Sarvadarçanas. 64,12. तस्य सेवां न लब्धवान् Râga-Tar. 5,154. प्रथमजे ऽद्भुतभूपसेवः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,507, Çl. 26. पितुः (obj.) Spr. (II) 3479. पञ्चशरस्य Kumâras. 7,92. गुरु° M. 12,83. वृद्ध° Kâm. Nitis. 4,6. Spr. (II) 1135. Kathâs. 27,136. Râga-Tar. 2,71. 5,264. Hit. 127,11. पाद° (am Ende eines adj. comp.) Ragu. 16,53. = चाटूक्ति, खालोक Hân. 149. — 4) *geschlechtlicher Verkehr mit:* स्त्री° Spr. (II) 1029. 4638. परदार° 2993. — 5) *das Obliegen, Sichhingeben, Ausübung; Gebrauch, Genuss* (insbes. *häufiger*): पुनःपुनः Nir. 6,27. M. 2,96 (भ्र°). Ragu. 9,69. योग° (obj.) Ind. St. 2,50. N. 2. Bhag. 6,20. पर्याय° Kumâras. 2,36. Kathâs. 27,148. मूर्धजरागसेवां कुर्यात् Vaitân. Bṛh. S. 77,1. Râga-Tar. 5,280. तद्दागमृत° Bhâg. P. 4,16,1. शीत° Suçr. 1,335,5. — Vgl. पर°, क्षात्र°, वार°.

सेवाकौमुदी f. Titel einer Schrift Hall 151.

सेवाजन m. *Diener, Dienstmann* Vaitân. Bṛh. S. 15,30.

सेवाञ्जलि (सेवा + अ°) m. *der im Zusammenlegen der Handfläche bestehende Gruss eines Dieners:* शिरसि येनैको न सेवाञ्जलिः Spr. (II) 6411.

सेवाफल n. oder °स्तोत्र n. Titel einer Schrift Hall 149. °स्तोत्रवि-

वृति ebend. °फलोक्तिविवृति 150.

सेवाभृत् adj. *Ehre erzeigend, ehrend:* गुरु° R. 2,64,43.

सेवालिन् (शे°) adj. von सेवाल (शे°) gaṇa सुवास्त्वादि zu P. 4,2,77.

सेवावृत्ति f. *ein Lebensunterhalt durch Dienst* H. 866.

सेवामी adv. in Verbindung mit कर् u. s. w. v. l. im gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61.

सेवि n. *Brustbeere* Rāǵān. im ÇKDn. — Vgl. सेव und सेविल.

सेविका f. *eine Art Nudeln aus Weizenmehl, in Milch und Zucker gekocht* (vulgo सेवई), Bhāvapr. 5. °मोदक ebend.

सेविल 1) adj. s. u. सेव्. — 2) m. = सेवि Rāǵān. im ÇKDn.

सेवितर् (von सेव्) nom. sg. 1) *Diener* Milav. 70. — 2) *der da ehrt, Verehrer:* वृद्ध° MBn. 3,15947. — 3) *der da obliegt, sich hingiebt einer Sache:* धर्म° MBn. 1,1948. मुख° Ghaṭ. 3.

1. सेवितव्य (von सेव्) adj. zu *nähen* Nir. 11,31.

2. सेवितव्य (von सेव्) adj. zur Erklärung von स्योन Nir. 8,9. 1) zu *besuchen, als Wohnstätte zu erwählen:* ग्रमानुषेर्मरुी Harīv. 3638. — 2) *dem man obliegen muss, auszuüben, zu pflegen:* कर्माणि Taitt. Up. 1, 11,3. धर्म M. 6,91. Spr. (II) 3263. मरुावत् 7171. केशा: Mṛǵ. 16,25.

सेविता (von सेविन्) f. am Ende eines comp. *das Dienen:* क्षीन° (obj.) Mārk. P. 125,12.

सेवित्र (wie eben) n. am Ende eines comp. 1) *das Aufsuchen, Sichhingeben zu:* विविक्तदेश° Bhāg. 13,10. Mārk. P. 51,45. — 2) *das Ehren, ehrfurchtsvolles Benehmen gegen:* वृद्ध° Kāṇ. Nītis. 8,7.

सेविन् (von सेव्) adj. 1) *aufsuchend, bewohnend, sich aufhaltend in:* विविक्त° Bhag. 18,52. शारदोत्पल° (श्री) MBn. 4,256. वन° R. 3,64,19. तडाग° 4, 13,10. कमल° (धमर्) Vikr. 64,1. Mārk. P. 49,15. Ghaṭ. 7. — 2) *dienend, Diener:* माधव° Milav. 67,15. Kām. 5,14. Varāh. Bṛh. S. 69,23. — 3) *ehrend, verehrend, ehrfurchtsvoll sich benehmend:* वृद्ध° M. 7,38. MBh. 3,15706. Ragh. 6,41. मुकुन्द° Bhāg. P. 1,5,19. *sich zu Jmd haltend:* यति° M. 7,188. 186. 9,232. R. 5,88,2. Kām. Nītis. 15, 56. घमत्° Spr. (II) 3655. — 4) *geschlechtlich beiwohnend:* निशार्° Spr. (II) 1745. — 5) *einer Sache obliegend, übend; gebrauchend, geniessend:* युद्धगान्धर्व° MBh. 2,143. कार्य° 12,6276. प्रत्यक्षसुख° R. 2,98, 23. दीर्घरुस्यालाप° Kathās. 27,159. रक्तचन्दन° R. 2,33,9. उच्चतोय° Sṛṅg. 1,165,13. — Vgl. तीर्थ°, रात्र°, सद्°.

सेव्य (wie eben) 1) adj. *a) zu besuchen, besuchenswerth für* (gen.), *einen passenden Aufenthaltsort abgebend* Harīv. 4327. Spr. (II) 4811. 4902. Kathās. 50, 173. Pañcat. 31,1 (घ°). पढतिं साधुसेव्याम् *einzuschlagen* Rāǵa-Tar. 4, 38. घग्निरापः स्त्रियो मूर्खा: सर्पा: राजकुलानि च। नित्यं यत्नेन सेव्यानि so v. a. *diesen soll man stets mit Vorsicht nahekommen* Spr. (II) 64. सेव्या मध्यभावेन राजवह्निगुरुस्त्रिय: 176. — *b) würdig, dass man* (gen.) *ihm diene, dem man dienen muss oder kann, Herr* (im Gegens. zu *Diener*) R. Gorr. 2,39,10. Vikr. 39. Milav. 70. Spr. (II) 841 (घ°). 2997. 3187 (घ°). 7168. Kathās. 52, 137. Rāǵa-Tar. 3,143. 145. 203. सेव्यसेवकयो: Hit. 51,15. = सेवार्ह (auch zu 3) H. an. 2, 289. Med. j. 63. — *c) zu ehren, — verehren, mit Ehrerbietung zu behandeln* Jāṭ. 1,78. MBh. 7,2881. R. Gorr. 2,24,17. Spr. (II) 1044. 3568. 6909. Varāh. Bṛh. S. 74,19. सत्° Bhāg. P. 1, 19, 32. यो यं प्रति सेव्य: तस्माद्वित्त: । यथा भृत्याद्राजा Sarvadarçanas. 63,20. — *d) mit dem oder der man der Liebe pflegen soll oder darf* Spr. (II) 4902. — *e) dem man sich hingeben —, obliegen soll oder darf, zu gebrauchen, — geniessen:* स्थानं वीरासनम् R. Gorr. 2,28,25. भूर° (तनुत्र) MBh. 4,1010. श्लोकस: Sṛṅg. 2, 343, 8. सितांशो: करा: Spr. (II) 1039. सद्गम 1768. प्रार्थना 4343. सुख 7065. 7080, v. l. पुराण so v. a. *zu studiren* Verz. d. Oxf. H. 12, *b*, 19. — 2) m. *Ficus religiosa Lin.* Rāǵān. 11, 115. *Barringtonia acutangula Gaertn.* Çabdar. im ÇKDn. — 3) f. घा *Schmarotzerpflanze* Çabdar. im ÇKDn. — 4) n. *a) die Wurzel von Andropogon muricatus* AK. 2,4,8,30. Med. Sṛṅg. 2,461,13. vielleicht ist auch H. an. सेव्यमुशीरे st. सेव्या: मुशीले zu lesen. — *b) Wasser* H. ç. 163. — Vgl. दु:°, सु°, सुख°.

सेव्यता f. nom. abstr. 1) zu सेव्य 1) *c)* Spr. (II) 3072. 3947. सखीविश्रम्भ° Mālatīm. 46,10. — 2) zu सेव्य 1) *e)* Ṛv. 1,2. 5,2.

सेव्यत्व n. nom. abstr. 1) zu सेव्य 1) *b)* Rāǵa-Tar. 3,193. — 2) zu सेव्य 1) *c)* Sarvadarçanas. 63,20. — Vgl. सुख° unter सुखसेव्य.

सेश्वर (2. स + ई°) adj. *einen Gott habend:* °सांख्य *die theistische Sāṁkhja-Lehre* Sarvadarçanas. 154,1.

सेषु (1. स + इषु) adj. *mit einem Pfeil versehen:* °धन्वन् Çiç. Ça. 14,72.

सेषुक adj. (f. घा) dass. Kāṭ. Ça. 15,3,32. 6,35.

सेंकु m. 1) *ein best. trockener Stoff:* सेंकोरारसतरा: AV. 7,76,1. — 2) *ein best. Organ im Leibe:* सेकुश्च प्लीहा च Kāṭ. 31,12.

सेकुपर्ण m. *eine Art Euphorbia* ÇKDn. unter वज्र, वज्रवृत, सिंक्षुपर्ण und सीकुपर्ण. f. घा = क्षुरी Rāǵān. 8,50.

सैंकु (von सिंकु) adj. (f. ई) *leoninus:* घन MBh. 4,2148. वपुस् Harīv. 2148. माया 9378. 9382. वृत्ति Spr. (II) 5096. द्युति 6139. दृश् Varāh. Bṛh. S. 67,2. सासन Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, N. 1.

सैंकर्ण adj. *aus* Siṁhakarṇa *stammend* gaṇa तत्तशिलादि zu P. 4, 3, 93.

सैंकायनि adj. von सिंकु gaṇa पत्यादि zu P. 4,2,80.

सैंकुल 1) adj. zu *Ceylon* (सिंकुल) *in Beziehung stehend, ceylonesisch:* तट *die Küste von C.* Çāṅk. 10,97. — 2) f. ई *eine Art Pfeffer* Rāǵān. 6. 17. — 3) n. *Laurus Cassia* Rāǵān. 6,172.

सैंहाद्रिक (von सिंह + अद्रि) m. N. pr. einer Völkerschaft LIA. 2,956.

सैंहिक m. = सैंहिकेय Çabdar. im ÇKDn.

सैंहिकेय adj. von der Siṁhikā *stammend:* गण Harīv. 12867. m. *ein Kind der S.*, pl. 214. sg. metron. Rāhu's AK. 1,1,2,28. H. 121. Hālā. 1,19. Spr. (II) 1389. 2807. 3175. Varāh. Bṛh. S. 5,3. 103,3. Bhāg. P. 5,24.

सैक (2. स + एक) adj. *nebst eins* Jnd. St. 3,439. Weber, Ǵyot. 93.

सैकर्त (von सिकता) 1) adj. (f. ई) *sandig, aus Sand bestehend, — gemacht* P. 5,2,104. fg. gaṇa शर्कराादि zu 3,107. AK. 2,1,11. Çat. Br. 1, 1,3,4. सेतु MBh. 12,6480. Spr. (II) 2945. Bhāg. P. 10,22,2. 11,27,12. — सैंकत von सिकत nach gaṇa सैंकलादि zu P. 4,2,75. — 2) m. pl. Bez. eines Ṛshi-Geschlechts (vgl. सिकता) MBh. 12,8202. — 3) n. (am Ende eines adj. comp. f. घा) *Sandbank, angeschwemmter Sand am Ufer eines Flusses* AK. 1,2,3,9. H. 1078. Hālā. 3,48. MBh. 7,5711. Kumāras. 1. 29. 7,15. Ragh. 5,8. 75. 10,70. 13,17. 62. 16,21. 19,40. Çiç. 144. Çic. 4,8. Prab. 44,7. *Sandboden* Spr. (II) 337.

सैकतिक 1) adj. = भात्तिग्रीविन् H. an. 4,40. = मंदेहजीविन् Med. k. 221. — 2) m. = तपणक und संन्यस्त. — 3) n. = मातृयात्रा und मङ्गलसूत्र (°क) H. an. Med.

सैकतिन् (von सैकत) adj. *mit Sandbänken oder sandigem Ufer versehen* Bṛ. 2,9. Çiç. 144, v. l.

सैकतेष्ट (सैकत + 1. इष्ट) n. *frischer Ingwer* Riâân. 6,27.

सैकयत gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80. सैकयतैविध = सैकयतानां विषयो देशः gaṇa भौरिक्यादि zu 2,54.

सैकयत्यी f. zu सैकयत gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80.

सैक्य (von सेक) adj. *mit Begiessung zusammenhängend, davon abhängig* Vaitân. Bḍh. S. 41,6.7.

सैतव (2. स + ऐ°) adj. *gesuckert* Bhâvapr. 5.

सैत m. N. pr. eines königlichen Geschlechts Tîrân. 80.

सैतकेयँ adj. von सैतकी gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97.

सैतव (von सेतु) 1) adj. *aus einem Damm —, aus einer Brücke bestehend:* सैतवेन पथा Ind. St. 8,340. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Çat. Bṛ. 14,5,5,21. 7,3,27. Ind. St. 8,169. 340. 345. 387. fgg. Muller, SL. 148.

सैतवाहिनी f. N. pr. eines Flusses, = बाहुदा AK. 1,2,3,22. H. 1080.

सैद्धान्तिक (von सिद्धान्त) adj. = तात्त्विक H. 483.

सैधक adj. *aus dem Holze des* Sidhraka *gemacht:* मुसल TBr. 3,8,4,1.

सैधकावत adj. von सिधकावत् oder °वती (dieses von सिन्धक) P. 4, 2,72, Schol.

सैनक n. (संज्ञायाम्) von सेना gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,113.

सैनानीक (von सेना + अनीक) adj. *was zur Vorhut gehört* Çâṅkh. Bṛ. 5,5.

सैनान्य (von सेनानी) n. *Feldherrnschaft* Âit. Bṛ. 8,16.

सैनापत्य (von सेनापति) n. dass. Schol. zu P. 4,1,83. 5,1,128. M. 12, 100 (= Buiç. P. 4,22,45). MBu. 1,529. 5,5717. 7,174. 13,6217. Hariv. 11644. Vikr. 161. Kathâs. 20,95. — Vgl. सेनापत्य.

सैनिक (von सेना) 1) adj. *zu einem Heere gehörig* P. 4,4,45. ब्रह्म MBu. 7,8877. m. (am Ende eines adj. comp. f. या) *Soldat*, gew. pl. *Truppen* AK. 2,8,2,29. H. 763. Med. k. 171. MBu. 1,7760 (सैनिकाश mit der ed. Bomb. zu lesen). 7665. 3,797. 15751. 7,8576. 13,7192. R. 2,91,60. 104,27. R. Gorr. 1,76,17. 7,21,11. Râgân. 3,57. 61. Çiç. 24,8. Spr. (II) 675. 2030. 3815. Kathâs. 12,22. 43,104. 56,336. Râja-Tar. 1,256. 5, 258. 430. Buiç. P. 3,17,25. Sin. D. 82. Hit. 102,12. nach den Lexicographen auch = सेनारत, सैन्यरत. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Çambara Hariv. 9252.

सैन्धव (von सिन्धु) 1) adj. (f. ई) *a) zum Meere in Beziehung stehend:* विन्दव: *Tropfen aus dem Meere* Verz. d. Oxf. H. 129,*a*,10. vom *Meere stammend, daselbst wohnend:* मावका: Tîrân. 221. 230. 241. 253. 274. 303. — *b) zum Indus gehörig, vom Indus und Indusland kommend* u. s. w. P. 4,3,93. 93. gaṇa कच्छादि zu 2,135. H. an. 3,715. Med. v. 55. गुग्गुलु AV. 19,38,2. Wasser TS. 7,4,12,1. Pferde (auch m. mit Ergänzung eines Wortes für Pferd) AK. 2,8,2,12. Trik. 3,3,422. H. 1234. H. an. Med. Hall. 2,284. Râgân. 19. Çat. Bṛ. 11,5,8,12. 14,9,3,13. MBu. 3,15673. 7,276. 3898. Buiç. P. 9,1,22. 10,69,35. P. 1,3,35, Schol. — 2) m. *a)* pl. *die Anwohner des Indus* (vgl. सिन्धु) AV. Paric. in Ind. St. 10, 317. MBu. 3,1991. 14,2221. Vaitân. Bḍh. S. 5,71. VP. 2,3,17. Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,24. wohl sg. Bez. des Landes 338,*b*,35. fg. Bez. eines Geschlechts 352,*b*,3. — *b) ein Fürst der Anwohner des Indus* MBu. 1,7001. 2,1267. 3,15850. 4,526. 6,1723. 14,2229. Mudrâr. 18,17. Vaitân. Jogaçâstrai 3,18. Buiç. P. 1,15,16. — *c) ein Pferd aus dem Indusl ande* s. u. 1, *b*). — *d)* N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,37. — *e)* pl. N. einer auf Saindhavâjana zurückgehenden Schule VP. 3,6,12. — 3) m. n. gaṇa घर्घर्यादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 251,*b*,1. *Steinsalz*, das sich im Indusl ande in grossen Lagern findet, AK. 2,9,42. Trik. H. 941. H. an. Med. Hall. 2,459. Ratnam. 85. Râgân. 6,90. °घन Çat. Bṛ. 14,7,2,13. °चिल्य 5,4,12. Maitrâjp. 6,35 (m.). Suçr. 1,134,10. 148, 14. 226,18. °चूर्ण 42,10. °सर्पिस् 368,21. 2,330,7. Vaitân. Bḍh. S. 16,25. 51,32 (so v. a. *etwas Salziges*). Verz. d. Oxf. H. 103,*b*,2. 235,*b*,3. 237,*a*,14. °शिलाशकल Ragh. 5,73. Accent eines darauf auslautenden comp. P. 6,2,72. शुभ्र° *Steinsalz an Weisse, weiss wie St.* Schol. — 4) f. ई N. einer Râgiṇî Wilson angeblich nach Hall. — 5) n. *ein von Musik begleiteter Gesang in Prâkrit eines von seiner Geliebten im Stich gelassenen Liebhabers* Sâh. D. 504. 508. — Vgl. सुसैन्धवी.

सैन्धवक adj. *zu den Anwohnern des Indus gehörig, ihnen eigen* gaṇa कच्छादि zu P. 4,2,134. नृप, राजन् *ein Fürst der Anwohner des I.* MBu. 3,15757. 6,1724. 7,2574.

सैन्धवायन (von सैन्धव) m. N. pr. eines Ṛshi MBu. 13,250. VP. 3. 6,12. Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,37. Buiç. P. 12,7,3. pl. *sein Geschlecht* Hariv. 1465. 1772.

सैन्धवायनि m. patron. von सैन्धव gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

सैन्धवारण्य n. N. pr. eines *Waldes* (अरण्य) MBu. 3, 8368. Verz. d. Oxf. H. 76,*b*, N. 2.

सैन्धी f. *Branntwein aus Palmsaft* Râgân. 14,141.

सैन्धुक्षित (von सिन्धुक्षित्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,245,*a*. Pañcav. Bṛ. 12,12,5. 15,3,11.

सैन्धुमित्रिक adj. (f. या und ई) von सिन्धुमित्र gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

सैन्धुवक्रक adj. von सिन्धुवक्र P. 4,2,126, Schol.

सैन्य (von सेना) 1) adj. von *einem Heere kommend:* रक्षस् MBu. 4,1042. 1066. 6,1663. मूत्र, शकृत् Hariv. 6444. — 2) m. °*a) Soldat* P. 4,4,45. H. an. 2,389 (n.?). Med. j. 63 (adj.). pl. *Truppen* AK. 2,8,2,29. H. 763. R. 2,91,36. 93,19. 23 (102,25 Gorr.). 7,21,44. — *b) Heer:* स वानरमहासैन्य: MBu. 3,16281. Râja-Tar. 8,808. — 3) n. *a*) = सेना *Heer* gaṇa चतुर्वर्णादि zu P. 5,1,124, Vârtt. 1. AK. 2,8,2,46. 3,4,26,197. H. 743. H. an. Med. Hall. 2,302. 3,36. sg. Bhâg. 1,7. MBu. 3,15691. 16275. 16283. fg. 16286. R. 1,55,5. 2,91,10. 92,30. Ragh. 3,40. Spr. (II) 509. 542. 5773. 6145. Vaitân. Bḍh. S. 43,7. 44,26. Kathâs. 18,87. 19,82. 43,105. Prab. 69,3. pl.: दैवसैन्यानि MBu. 3,14379. Spr. (II) 2945. Hit. 102,12. pl. unbestimmt ob m. (zu 2) *a*) oder n. MBu. 3,15717. Kumâras. 2,52. Ragh. 4, 38. 12,67. Spr. (II) 7436. सैन्यानां विद्रव: Vaitân. Bḍh. S. 34,18. Kathâs. 43,105. Râja-Tar. 5,216. im comp.: सर्वसैन्यविसर्जन R. 1,3,27. दैत्यसैन्यगणा: 38,29. °जीवन Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,33. °स्तम्भ 96,*a*,3. 343, *b*, 1 v. u. सैन्योपवेशन 345,*b*,3. 6. °क्षोभ *Meuterei unter den Truppen* Vaitân. Bḍh. S. 34,20. 38,7. °घातक 30,3. °निवेशभूमि 2,8. 6, Z. 7. ससै-

न्यबलवाकृना: Spr. (II) 1983. स° adj. (f. या) R. 5,92,7. Rāgā. 12,14. Kathās. 18,72. Rāja-Tar. 2,119. 5,322. — b) *Lager, castra:* सैन्यायामपुरेषु Vārāh. Bṛh. S. 46,19. 86,11. 90,4. सैन्ये पुरे वा 11. 95,46.

सैन्यकत m. = सेनाकत *die Flanke eines Heeres* und zugleich *ein Heer als dürres Gestrüpp* R. 5,36,108.

सैन्यनायक m. *Heerführer* Kathās. 47,31.

सैन्यपति m. dass. Vārāh. Bṛh. S. 49,5.

सैन्यपाल m. dass. R. 6,33,2.

सैन्यपृष्ठ n. *der Nachtrab eines Heeres* H. 747. °भाग m. dass. Hālās. 5,6.

सैन्यमय (von सैन्य) adj. (f. ई) *aus Truppen bestehend:* मम सैन्यमयं कतं (vgl. सेनाकत und सैन्यकत) प्रधक्ष्यति MBh. 3,8287. भूमि Kathās. 121,280.

सैन्यरक्षतृ m. N. pr. eines Sohnes des Çambara Hariv. 9252.

सैमत्तिक (von सीमन्त *Scheitel*) n. *Mennig* Çabdaratnāk. bei Wilson.

सैर n. 1) *eine Art Branntwein* Prāyaçcittenḍ. 67,b,9. — 2) = सीराणां (= प्रतिसीराणां) समूहः Nīlak. zu MBh. 3,2586 zur Erklärung von सैरन्ध्री. — Vgl. सैरावत्.

सैरकायणी adj. von सैरक gaṇa पक्षादि zu P. 4,2,80.

सैरन्ध्र (so die Bomb. Ausgg.) 1) m. *Kammerdiener;* f. ई *Kammerzofe* AK. 2,6,4,18. H. 521. an. 3,620. Med. r. 239. Hālās. 2,337. Verz. d. Oxf. H. 187, b, 1. fgg. MBh. 3,2586. 2606. 4,77. fg. 246. fg. Spr. (II) 5798. Bhāg. P. 10,42,3. als *best. Mischlingskaste*, m. M. 10,32. f. H. an. Med. MBh. 13,2581. nach H. an. und Med. f. ई auch = मरुल्लिका. — 2) f. ई Bein. der Draupadī, die am Hofe des Fürsten Virāṭa als *Kammerzofe* diente, H. 710. Durgāpr. im ÇKDr. Verz. d. B. H. 113,4. — Häufig सैरि° geschrieben.

सैरावत् adj. nach Sāy. von सैर (2. स + इरा = अन्न) *Proviant und andere Ausrüstung eines Schiffes:* यवा सैरावतीं नावं पारकामाः समारोहेयुः Ārr. Bh. 6,21. Dafür steht स इरावती 7,18 (auch Çāṅkh. Çr. 15, 17,10) gegen das Metrum.

सैरि m. 1) *der Monat* Kārttika H. ç. 23. — 2) pl. N. pr. eines Volkes Vārāh. Bṛh. S. 14,11, v. l.

सैरिक 1) adj. von सीर P. 4,3,124. 4,81. AK. 2,9,64. — 2) m. a) *Himmel* H. ç. 1; vgl. सैरिभ. — b) शैरिक N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 55,b,10.

सैरिन्ध्र m. pl. N. pr. eines Volkes Vārāh. Bṛh. S. 14,29. Varianten: सैरित्य, सैरिभ, सैरिभ्र, सैरिन्ध्य, सैरिन्ध्र, शैरिस; vielleicht ist सैरिन्ध die richtige Lesart; vgl. auch सैसिरिध्र.

सैरिन्ध्र gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118. — Vgl. सैरन्ध्र.

सैरिन्धक adj. von सिरिन्ध्र und सैरिन्ध्र gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

सैरिभ m. 1) *Büffel* AK. 2,5,4. H. 1282. Hāl. 80. Hālās. 2,72. f. ई *Büffelkuh* H. an. 3,740. Med. sh. 42. — 2) *Himmel* Trik. 1,1,4; vgl. सैरिक.

सैरिभ्र m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 58,50.

सैरीय (vielleicht von सीर) m. *Barleria cristata* (ein schön blühender Strauch) Ratnam. 169. Çārṅgar. im ÇKDr. Sūçn. 2,152,6. °क m. dass. AK. 2,4,2,35.

सैरेय m. dass. Dhanv. 1,109. Çārṅgar. und Bhār. zu AK. nach ÇKDr. °क m. dass. Dhanv. 1,109. Rāgān. im ÇKDr. Sūçn. 2,32,2. 40,14. 96, 4. 288,5. n. *die Blüthe:* नीलसैरेयकाणि Mallin. zu Kir. 4,28.

सैर्य (von सीर) gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80. m. *ein best. Gras* und — *Insect* RV. 1,191,3. *eine best. Pflanze*, vulgo काटसेलो Acut. 67.

सैलगे (von सेलग) m. *Raubgesellc* VS. 30,18.

सैलि m. pl. N. pr. eines Volkes Vārāh. Bṛh. S. 14,11, v. l.

सैवालिनि (शै°) adj. von सेवालिन् (शै°) gaṇa सुवास्त्वादि zu P. 4,2,77.

सैस (von सीस) adj. *bleiern*, von *Blei* gaṇa रजतादि zu P. 4,3,134. °क dass. M. 11,132.

सैसिकत m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,365. सैसिरिध ed. Bomb.

सैसिरिध s. u. सैसिकत und vgl. सैरिन्ध.

सैक्रेय adj. von सीक्र gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

सो f. (nom. सास्) ein N. der Pārvatī Trik. 1,1,52.

सौक्थक adj. *mit* Ukthā Çat. Br. 13,5,4,9.

सौक्थ्य adj. *mit* Ukthja Pāraśav. Br. 27,7,1. 8,1.

सोच्छ्रय s. u. उच्छ्रय 1) am Ende.

सोच्छ्वास (2. स + उच्छ्वास) 1) adj. a) *den Athem ausstossend:* तस्य निष्पीड्यमानस्य भुक्तान्नरसगतस्य च । सोच्छ्वासमभवद्वक्त्रम् R. 4,10,20. — b) *Spielraum habend:* ein loser Verband Suçr. 1,66,13. — 2) °म् adv. *aufathmend* (nach einem Schrecken) Çiç. 111,7. Prab. 66,5. Pāraśav. ed. Bomb. 1,24,2.

सोच्छ्वासत्व (von सोच्छ्वास) n. Prātiçāk. 19,a,7.

सोटा f. P. 3,1,17, Vārtt. 1. Davon सोटाय्, °यते denom. ebend.

सोठल m. N. pr. des Vaters von Çārṅgadeva Verz. d. Oxf. H. 199, b, No. 471.

सोढ 1) adj. s. u. 1. सह्. — 2) n. so v. a. *Milch* in अवि°.

सोढृ (von 1. सह्) nom. ag. Schol. zu P. 6,3,112. 8,2,31. *der Jmd* oder *einer Sache zu widerstehen vermag* Bhaṭṭ. 9,31. सोढा को ऽस्य (भूतस्य) भविष्यति R. Gorr. 1,38,9. शस्त्रनिपातानामग्निस्पर्शस्य च MBh. 7,1200. = मर्षणा H. an. 2,132. = तितिक्षासंयुक्त Med. dh. 5. = शक्त (सक्त fehlerhaft H. an.) H. an. Med.

सोढव्य (wie eben) adj. Schol. zu P. 6,3,112. 8,2,31. 1) *zu ertragen:* अनाय: Z. d. d. m. G. 27,91. — 2) *ruhig hinzunehmen, nachzusehen, zu verzeihen:* ब्राह्मणापत्य Hariv. 7489. अपराध Bhāg. P. 10,16,32. प्रक्रमभङ्ग Comm. zu Kāvjād. 2,182. impers.: पवीयस: कथं नाम सोढव्यं स्यान्मुने मया Hariv. 8215.

सोढाय्, °यते denom. von सोढ gaṇa सुखादि zu P. 3,1,18.

सोढिन् adj. von सोढ gaṇa सुखादि zu P. 5,2,131.

सोतृ and सौतृ (von 1. सु) nom. ag. *Kelterer des* Soma, *Presser* RV. 1,28,8. 4,29,2. 7,22,1. 9,16,1. सोतृभिर्नृभ्यमान: 30,2. पूयते 86,12. 10,76,2. यावन् 4,3,3. 7,92,2. Vāsāh. 1,5.

सौतु (wie eben) m. Soma-*Kelterung, Libation:* वेदिमाकुर्तिं सोतुं चक्रिरे RV. 8,19,18. भुरतु नो यशस: सोतन्धस: (instr.) 10,76,6. 86,1. — Infin. s. u. 1. सु.

सोत्क (2. स + उत्क) adj. (f. या) *voller Sehnsucht, — Verlangen* Bṛ. 3,15. Kathās. 21,62. 29,22. 199. 31,5. 27. 38,78. 42,1. 51,144. 185. शक्तियश: ° nach 61,1. 62,4. चिरदर्शनसोत्कया दृष्ट्या 26,271. °स्थित adv. 25,269.

सोत्कण्ठ (2. स + उत्कण्ठा) adj. (f. या) *voller Sehnsucht, wehmuthig* Gaṇḍīn. im ÇKDr. Kathās. 18,19. 31,45. °शिव Verz. d. Oxf. H. 129.

5,16. सोत्कण्ठेवाम्बुधिं प्रति *sich sehnend nach (ein Fluss)* Rāǵa-Tar. 5,93. भाविविप्रिये° *wehmüthig gestimmt über* Kathās. 38,77. °म् adv. Spr. (II) 4648. 7199. Kir. 5,51.

सोत्कर्ष (2. स + उ°) adj. *vorzüglich, ausgezeichnet:* वस्तु Spr. (II) 7014.

सोत्प्रास s. u. उत्प्रास. = घटु, चाटु Candak. im ÇKDa.

सौत्र (von 1. सु) adj. *zu keltern* RV. 10,160,2.

सोत्सव (2. स + उ°) adj. *ein Fest feiernd* so v. a. *froh erfreut* Kathās. 26,92. 43,240.

सोत्साह (2. स + उ°) adj. *voller Willenskraft, — Entschlossenheit, — Muth* Spr. (II) 1222, v. l. Rāǵa-Tar. 5,473. Hit. 35,22. घना: so v. a. *drohende Wolken* Z. d. dam. G. 27,86. °म् adv. *mit Energie, mit Nachdruck:* धाक् (hierher ziehen wir das adv.; सोच्छ्वासम् ed. Bomb.) Pañcat. 24,5. वणिगालोक्य निन्ने कृदि सो° परिचितयशोतारम् so v. a. *lebhaft* Spr. (II) 3937, v. l.

सोत्साहता (von सोत्साह) f. *an den Tag gelegte Willenskraft, — guter Muth:* प्राय: क्रियासु महतामपि दुष्करासु सोत्साहता (so ist zu lesen) कथयति प्रकृतेर्विशेषम् Kathās. 25,296.

सोत्सुक (2. स + उ°) adj. (f. आ) *voller Sehnsucht, — Verlangen* Kathās. 49,95. मनस् Ṛt. 1,6. Auge Kathās. 18,15. 45,143. सुतजन्मनि 21,139. स्वं देशं प्रति 67,99. वत्सेश° 30,69. तत्संदर्शन° 45,243. 18,218. उद्वाह° 66,135.

सोत्सेधम् (von 2. स + उत्सेध) adv. *in einem Ruck:* (शरवारणम्) सोत्सेधमुत्पतद्भवि (वेगेन न्यपतद्भुवि ed. Bomb.) MBu. 6,2709. सोत्सेधमपतच्छिर: 8,4813. शिर: कर्णस्य सोत्सेधमिषु: सो ऽप्यरहद्भुतम् 4814. रुणद्धि मृदु सोत्सेधं (= उच्छ्रापयत् Comm. in der ed. Bomb.) तीरमम्बुरयो यथा R. 2,63,43.

सौदक (2. स + उ°) adj. (f. आ) 1) *mit Wasser versehen, W. enthaltend* TS. 1,7,8,2. 3. Gefäss Kāṭy. Çr. 4,10,34. M. 4,36. Fluss Lāṭy. 10,17,1. पाणि Çāṅkh. Gṛhy. 1,7. Âçv. Gṛhy. 2,8,5. देश R. 3,19,12. — 2) = समानोदक Mān. P. 30,91.

सोदधिल (2. स + उदधि-ल = लघु) adj. *aus vier Kürzen bestehend* Ind. St. 8,295.

सोदय (2. स + उ°) adj. *nebst Zinsen* Jiṭ. 2,67. 146.

सोदयन adj. (f. आ) *nebst Udajana* Kathās. 10,208.

सोदर (2. स + उ°) adj. *demselben Mutterleibe entsprossen:* भ्रातृ *ein leiblicher Bruder* M. 8,299. MBu. 3,16914. Spr. (II) 7181. m. dass. (auch *Bruder überh.*) H. 551. Hālās. 2,253. Jiṭ. 2,138. MBu. 3,16045. 6,3960 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Spr. (II) 5320. Kathās. 103, 195. Rāǵa-Tar. 4,246. 5,42. Prab. 82,12. Bhāg. P. 8,5,3. f. ई *eine leibliche Schwester* Mālav. 9,3. In übertragener Bed. so v. a. *gleichsam ein Bruder, der nächste Verwandte* Rāǵa-Tar. 1,122. fg. 128. 2,169. विष्वग्भूरिव सोदर: Bhāg. P. 3,31,10. स्मेरेन्दीवरदामसोदरवपुस्तस्या: Śiç. D. 41,15. नर्मैकसोदरं हि नव वय: *das jugendliche Alter hat ja nur einen Bruder, den Scherz* so v. a. *denkt nur an Scherz* Kathās. 12, 36. — Vgl. अमृत°, कालिन्दी°, भृङ्ग°, सकोदर und सौदर्य.

सोदरीय = सौदर्य MBu. 3,16238. 16262. 12,10024.

सौदर्क (2. स + उ°) 1) adj. *a) etwa mit einem Thurme —, mit einer Warte versehen:* भवन MBu. 2,1289. — *b) mit demselben Refrain*

versehen Çāṅkh. Br. 22,3. Pāṇḍav. Br. 13,7,9. 8,1. — 2) m. *Schlussrefrain* Çāṅkh. Br. 20,4. 21,4.

सोदर्य adj. (f. आ) und subst. = सोदर P. 4,4,109. 5,3,88. Vop. 6,98. AK. 2,6,4,34. H. 551. Hālās. 2,253. षड्ज Bhāg. P. 5,9,1. भ्रातृ M. 9,212. स्वसृ MBu. 1,1925. m. MBu. 6,2990 (सोदर्या: gedr., सोदरा: ed. Bomb.). Kām. Nītis. 8,61. Rāgat. 15,26. Mālav. 68,11. Spr. (II) 1403. 3370. Kathās. 25,254. °सेतु Car. 53,10. °मूर्तिरमृतस्य Kathās. 43, 248. सोदर्या Mālav. 9,3, v. l. am Ende eines adj. comp. 1. अवज्ञासोदर्य (so ed. Calc. st. °सोदर्य) दारिद्र्यम् so v. a. *Armuth und Verachtung sind Geschwister, gehen Hand in Hand* Daçak. 75,18. 76,1. — Vgl. सोदर्य.

सोदर्यवत् (von सोदर्य) adj. *nebst Bruder* MBu. 2,937.

सोद्धरण s. u. उद्धरण 6) in den Nachträgen.

सोद्यम (2. स + उ°) adj. *gerüstet, kampfbereit* Kathās. 46,38.

सोद्योग (2. स + उ°) adj. *strebsam:* नर Spr. (II) 3727. प्राणप्रयाणसोद्योगरोग *so v. a. eine das Leben stark bedrohende Krankheit* Rāǵa-Tar. 5,133.

सोद्वेग s. u. 1. उद्वेग 1) am Ende. °म् adv. auch Çiç. 105,12.

सोध m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 6,349 (VP. 187). गोध ed. Bomb.

सोनक m. *Lauch, Knoblauch* Candak. im ÇKDa.

सोनादेवी f. N. pr. einer Frau Hall 206.

सोन्माद s. u. उन्माद.

सोपकरण und सोपकार (°क) s. u. उपकरण und उपकार.

सोपक्रम (2. स + उ°) adj. *wozu man Etwas thut, unterstützt* (Gegens. निरुपक्रम): कर्मन् Verz. d. Oxf. H. 230,b,3. fgg.

सोपचय (2. स + उ°) adj. *mit Vortheil verbunden, Gewinn bringend* Kathās. 43,72.

सोपचार (2. स + उ°) adj. *höflich:* वचस् Spr. (II) 4781. °म् adv.: उक्त: MBu. 1,836. R. 5,90,5.

सोपद्रव s. u. उपद्रव.

सोपध (2. स + उपधा) adj. 1) *betrügerisch, unehrlich:* Personen und Handlungen Hariv. 11189. MBu. 10,44. 52. पञ्च सोपधं ददाति Hālāyudha im ÇKDa. — 2) *nebst dem vorangehenden Laute* VS. Prāt. 3,48.

सोपपत्तिक (von 2. स + उपपत्ति) adj. *mit Angabe der Entstehung versehen, begründet* TBr. Comm. 1,126,11.

सोपपद (2. स + उ°) adj. *mit einem begleitenden Worte versehen* Kull. zu M. 2,125.

सोपप्लव s. u. उपप्लव.

सोपम (2. स + 2. उपमा) adj. (f. आ) 1) *ein Gleichniss enthaltend, Aehnliches betreffend:* वाच् MBu. 5,2451. — 2) *eben so verfahrend gegen* (loc.) *wie gegen* (instr.): विद्वान्सर्वेषु भूतेषु आत्मना सोपमो भवेत् Spr. (II) 6118.

सोपवास adj. s. u. उपवास. Auch Weber, Rámnaá. 222.

सोपसर्ग s. u. उपसर्ग 2). *mit einer Präposition versehen* RV. Prāt. 16,37.

सोपहास adj. (f. आ) *spöttisch, spottend* Hālās. 1,49. Kathās. 31,42. °म् adv. 49,54. Fernere Belege s. u. उपहास.

सोपाक m. *eine best. Mischlingskaste: der Sohn eines Caṇḍāla von einer* Pulkasī (Pukkasī) M. 10,38. — Vgl. पाण्डु° und सोपाक.

सोपाख्य adj. *mit Qualification versehen, von dem sich Etwas aussagen lässt* (Gegens. निरुपाख्य) Comm. zu Kap. 1,2,1 (S. 48, Z. 2).

सोपादान (2. स + उ°) adj. *mit Materialien versehen:* ननु सोपादानस्तत्तदादिः प्रासादादीन्मृन्नति Nilak. 180.

सोपाधि (2. स + उ°) adv. *bedingungsweise:* दत्त Vivâdâ. im ÇKDn.

सोपाधिक adj. *eine weitere Bedingung einschliessend, limitirt* Tarkas. 45. Davon nom. abstr. °त्व n. 46. Comm. zu TS. Prât. 2,23.

सोपान n. Siddh. K. 249,*a*,8. n. *Treppe, Leiter* AK. 2,2,17. H. 1013. Hall. 2,146. Harîv. 8966. R. 3,61,12. 5,9,33. 13,11. 38,26. Kumâras. 1,39. Vikr. 39,4. Varâh. Bṛh. S. 28,15. Pañkat. 1,4,37. 7,56. स्वर्गस्य सोपानम् *eine Leiter zum Himmel* ist सत्यम् Spr. (II) 1372. Vishṇu-P. 209 (nach Aufrecht). गावः MBh. 13,2700. क्षमा Harîv. 15627. °भूतं स्वर्गस्य 3337. कृतायतन° Râǵa-Tar. 2,124. स्वर्ग° Harîv. 14521. विष्णुलोकिक° Pañkat. 4,3,175. मोक्षजचरणाम्भोजप्राप्ति° Verz. d. Oxf. H. 26,*b*,13. सोपानाली Spr. (II) 6039. °परंपरा Ragu. 3,69. °पथ 6,3. तीर्थसोपानपथ 16,36. °मार्ग 15. Mṛkkh. 74. Çiç. 94,2. समरतनयस्वर्गसोपानपङ्क्ति Mṛkkh. 51. °पद्धति Râǵa-Tar. 3,247. °कूप *ein Brunnen mit einer Treppe* 6,18. 23. 26. 30. am Ende eines adj. comp. (f. या) MBh. 1,6964. 2,89. 1281. 7,9122. 14,1726. R. 3,61,17. 5,16,35. Kathâs. 26,288. 28, 51. Bhâg. P. 4,6,31. 9,64. 7,4,9. °त्व n. nom. abstr. Mṛkkh. 61. — Vgl. मणि°, सिद्ध°, सिद्धि°.

सोपानत्क (von 2. स + उपानह्) adj. *beschuht* Gobh. 1,2,27. M. 3, 238. Kâraka 1,8.

सोपालम्भ s. u. उपालम्भ. adv. °म् Kathâs. 26,128.

सोपाश्रय (2. स + उ°) adj. *einen Anschluss habend:* °निषदन Bez. *einer best. Art zu sitzen bei den* Jogin Sarvadarçanas. 174,6.

सोभ n. = गन्धर्वनगर Ind. St. 2,38, N. — Vgl. सौभ.

सोभय (2. स + उ°) adj. *Beides umfassend* Weber, Râmây. Up. 288.

सौभरि m. N. pr. eines Liedverfassers mit dem patron. Kâṇva (auch Âṅgirasa Ind. St. 3,243,*a*) ṚV. 8,5,26. 19,2. 20,19. 22,2. pl. 19,22. 20,8. Daneben die Form सोभरी: कुवे पितेव सोभरी 22,15. सोभर्या उप सुष्टुतिम् 92,14. AV. 18,3,15. सोभरि als Sohn Kitragupta's Verz. d. Oxf. H. 341,*b*, No. 799. — Vgl. सौभर fgg.

सोभरीय adj. *die* Sobhari *aufsuchend* ṚV. 8,20,2.

सौम (von सु) Uṇâdis. 1,139. यामादि zu Çâṅkh. 2,15. 1) m. *a*) *Saft, Soma* (eig. und als göttliches Wesen personificirt,; *die* Soma-*Pflanze* (dafür gilt *Sarcostemma acidum R. Br.*, welche einen milden säuerlichen Milchsaft enthält, aber in südlicheren Strecken wächst als die Sitze des Veda-Volkes. Roxb. Fl. ind. 2,31. Voigt, Hort. Calc. 342. Wahrscheinlich hat mit den Wohnsitzen auch die Pflanze gewechselt). Naish. 5,5. Nir. 11,2. H. an. 2,431. fg. Med. m. 36. fg. Das ganze 9te Maṇḍala des ṚV. ist dem Soma gewidmet. सुत ṚV. 3,35,5. सुषुत 4, 20,4. तीव्र 5,27,5. 4,28,1. fgg. शुक्र 7,64,5. मधुमत्त 4,45,5. वधूधूत 5, 30,11. गोसखि 37,4. घर्षिमिन्नतम 6,29,4. सहस्रीथिन् 42,2. मघ 68,10. साकं 7,29,1. दध्याशिर 32,4. शुचि 90,2. अतिरात्र 103,7. घंशुमत्त AV. 8,1,2. वधु 5,7,5. Çat. Br. 1,6,2,3. यन्मा सोमासो ममदन् ṚV. 4,42,6. सोमस्य जठरे पणेयाम् 6,69,7. यर्षाम् सोममृता बभूम 8,48,3. Çat. Br. 5, 1,2,10. wächst auf Bergen: दिवि मूर्धमदधात्सोममर्को ṚV. 5,85,2. AV. 3,3,3. राजन् als *Fürst der Pflanzen* ṚV. 1,91,3. 6,75,13. 8,48,7. 9. 10,97,22. 109,2. Ait. Br. 1,12. 27. 4,7. सोमं नमस्य राजानं यो व्रते वीरुधां पतिः ṚV. 9,114,2. TS. 6,1,9,1. AV. 2,10,2. 36,5. 5,21,11. 6. 13,3. 8,7,20. 12,3,31. VS. 6,26. 9,22. 40. 10,30. 12,98. Çat. Br. 1,6. 2,3. 11,4,2,2. — M. 3,237. 10,88. 11,7. 8. सुधावत स बहून्सोमान् MBh. 1,4695. सुते °सक्ते 8042. अधरग 3,15687. चतुर्विधात्मकं सोमं ये विदित्ति 10,293. 13,7308. 7311. fgg. 14,275. 277. Bhâg. P. 3,13,37. 9,3,24. नष्टसोममिवाधारम् R. 2,61,18. क्रतवश्च यथासोमाः Spr. (II) 5988. पशुसोमानाम् *Thier- und* Soma-*Opfer* M. 11,27. Prab. 107,2. Bhâg. P. 6,18, 1. सोमाप्ते MBh. 1,6803. मप्त सोमाः Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,11. वीरुधं सोमम् MBh. 9,2097. Suçr. 1,133,15. 24 angebliche Arten der Pflanze aufgezählt 2,164,11. fgg. °निर्दलन H. an. 3,428. — *b*) *der Mond* (vgl. इन्दु), *der Mondgott* AK. 1,1,2,16. H. 103. H. an. Med. Hall. 1,62. ṚV. 1,65,10. 91,1. fgg. 163,3. 10,85,1. fgg. 107,2. ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र ममत्तु यः पार्थिवेषु 116,3. AV. 7,38,3. 4,10,6. 6,21,2. VS. 10,17. पितृमत्त 2,29. Çat. Br. 1,6,4,5. 2,6,1,4. 10,4,2,1. सोमो वै चन्द्रमाः TBr. 1,4,10,7. Çâṅkh. Br. 3,1. 7,10. Sâṅkhây. Br. 3,12. Âçv. Gṛhy. 4,9,2. M. 3,85. 4,52. 5,96. 7,7. राजन् 9,129. MBh. 1,1145. 3042. तरुण 5,3804. 7131. 7,979. 2343. 12,7541. 13,7398. fg. Harîv. 7132. कनखलं सोमो वै यत्र घोत्थितः 9521. °वत्प्रियदर्शनः R. 1,1,18. 2,25,10. 91,20. (यैः) तपो चाप्यायितः सोमः (so ist zu lesen) Spr. (II) 5382. Çuç. 1,17,2. 19,12. 135,16. 176,11. Varâh. Bṛh. S. 3,26. 8,22. 43,52. 53, 55. 97,1. Brahma-P. in LA. (III) 58,6. Bhâg. P. 5,20,11. fg. (प्रीणयत्) कलाभिरमृतार्द्राभिः सोमः सुरपितॄनिव Râǵa-Tar. 7,519. °च्छाया Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,28. सत्यात्सोमः प्रभवति R. Gorr. 2,61,12. सोमः शौचं ददौ स्त्रीणाम् Spr. (II) 7176. स्त्रियः पूर्वं सुरैर्भुक्ताः सोमगन्धर्ववह्निभिः 7193. ओषधीनां पतिः सोमः MBh. 14,1178. विप्राणां सोमो राजा 1179. हिरण्यं वीरुधां चैव नक्षत्राण्यक्षयास्तथा। पशूनां तपसा चैव सोमं राज्ये ऽभ्यषेचयत् ॥ Harîv. 258. 1330. 11802. 12491. VP. 133. वनस्पति Bhâg. P. 8,18,15. Sohn Atri's MBh. 7,6028 (und Vater Budha's). Harîv. 1309. fgg. 1663. VP. 83. 392. fg. Mârk. P. 52,22. Bhâg. P. 4,1,15. 9,14,3. unter den Söhnen मारीचस्य काश्यपस्य प्रजापतेः Mârk. P. 80,8. heirathet 27 Töchter Daksha's MBh. 1,2580. 9,2012. fgg. Harîv. 104. 144. 11524. 11837. Bhâg. P. 8,4,22. Vater des Varkas Harîv. 12843. Liedverfasser Ind. St. 3,245,*a*. Verfasser eines Gesetzbuchs Ind. St. 1, 234. verschiedene Legenden über ihn Harîv. 1311. fgg. 2475. fgg. 2583. fgg. VP. 392. fg. Bhâg. P. 5,4,6. fgg. 9,14,1. fgg. Verz. d. Oxf. H. 40, *a*,31. unter den 8 Vasu H. an. Med. Gaṇâdh. in Verz. d Oxf. H. 190,*a*, 34. MBh. 1,2552. 13,7094. Harîv. 152. 11524. 11539. VP. 120. Weber, Râmây. Up. 307. 312. = Vishṇu H. ç. 65. Harîv. 2382. = Çiva 7381. Kathâs. 35,101. = Jama und Kubera H. an. Med. सोमरुद्रौ (°द्रौ) P. 6,2,142. ṚV. 5,74,1. fgg. TS. 2,2,10,5. सोमयमौ M. 3,211. इन्द्रासोमौ ṚV. 7,35,1. 104,1. — *c*) = सोमवार *Montag* Weber, Kṛshṇaj. 222. Inschr. in Journ. of the Am. Or. 7,32,4. 33,6. — *d*) *Kampfer* (wie alle Wörter für *Mond*) H. an. Med. — *e*) *Wind* diess. — *f*) *Wasser* diess. — *g*) *Nektar* Çârṅgadh. bei Wilson. — *h*) N. pr. α) verschiedener Männer: ein Lehrer Ind. St. 3,389. ein Fürst Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. ein Muni mit dem patron. Çushmâjana VP. 3,3,17. Âmushâ-

jaṇa Verz. d. Oxf. H. 80,a,15 (Hall in der 2ten Ausg. des VP. führt noch andere Varianten an und vermuthet सोमग्रुष्मायण). ein Sohn Mudgala's 200,a, No. 475. — Verz. d. B. H. No. 969. Ksurriç. 5,9. — β) eines Affen H. an. Med. — γ) eines Berges Çabdârthak. bei Wilson; vgl. सोमगिरि. — 2) f. या a) *die* Soma-*Pflanze* Râǵân. 3,87. — b) N. pr. α) einer Apsaras MBu. 1,4817. R. ed. Bomb. 2,91,17 (भीमा Schl.). — β) eines Flusses Mârk. P. 56,16. — 3) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. — 4) n. a) *Reisschleim.* — b) *Himmel* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. यज्ञोपोम, नृ°, प्रति°, प्राक्°, वक्तृ°, भद्र°, मरुत्°, यज्ञ°, रुद्र°, वि°, वीर°, शान्ति°, सुत°, संसुत°, सह°, सुषोम, सुत°, सोम्य.

सौमक (von सोम) 1) m. a) N. pr. eines Fürsten mit dem patron. Sâhadevja (Sâhadevi) ṚV. 4,15,9. Ait. Br. 7,34. MBu. 2,819. 3,10422. 10570. fgg. 6,316. 13,3689. 5665. Hariv. 1792. fg. 5015. 5496. VP. 455. Bhâg. P. 9,22,1. Hall in der Einl. zu Viṣṇup. 41. Ṛshi von VS. 11, 35. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,61,14. N. pr. eines Bharaṭaka Verz. d. Oxf. H. 155,a,29. — b) pl. *die Nachkommen des* Somaka MBu. 1,183. 4796. 6975. 5,90. 562. 5943. 6,2. fgg. Hariv. 1794. VP. 455, N. 53. — c) N. pr. eines Landes: सोमकेश्वर Kathâs. 49,68. *der Fürst dieses Landes* 84. नागशूरसुतो नाम्ना सोमशूरोऽस्मि सोमकः (vielleicht adj. *aus S. stammend*) 72,191. — 2) f. सौमिका N. pr. einer Predigerkrähe Kathâs. 77,8. — Vgl. सौमकि.

सौमकत्व n. nom. abstr. zu सौमक 1) b) Hariv. 1795.

सौमकन्या f. *eine Tochter* Soma's: °निवासा: MBu. 13,5279.

सौमकर्मन् n. die Soma-*Bereitung* Nir. 5,12.

सौमकलश m. Soma-*Topf* Hariv. 13224 (°कलस; die neuere Ausg. hat eine ganz andere Lesart).

सौमकल्प m. N. *des 21ten* Kalpa; s. u. कल्प 2) d).

सौमकवि m. N. pr. eines *Dichters* Z. d. d. m. G. 27,96.

सौमकात्त m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 78,a, No. 133. 79,a,30. fgg.

सौमकाम adj. *nach* Soma *begierig:* Indra ṚV. 1,104,9. 3,50,3. AV. 20,34,17.

सौमकीर्ति m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBu. 1, 2734. 4547.

सौमकुल्या f. N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,28.

सौमकेश्वर m. *ein Fürst* von Somaka Kathâs. 49,68. Ṛshabha Verz. d. Oxf. H. 46,a,8. 276,b,18.

सौमक्रतु m. Soma-*Opfer;* vgl. सौमकतव.

सौमक्रयण 1) adj. (f. ई) *als Kaufpreis für die* Soma-*Pflanze dienend* VS. 4,27. TS. 6,1,10,5. Çat. Br. 3,3,3,11. त्रिवत्स: साण्ड: Pârâśar. Bh. 16,3,9. eine Kuh VS. 8,54. Ait. Br. 1,27. TS. 3,1,3,1. — 2) n. *das Kaufen des* Soma TS. 6,1,9,2.

सौमक्षीरा f. = सोमवल्ली Râǵân. 3,87.

सौमगर्भ m. ein N. Vishṇu's Taitt. 1,1,30.

सौमगिरि m. N. pr. 1) eines *Berges* MBu. 13,7689. R. 4,44,117. 122. Vgl. सौम्यगिरि. — 2) eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 128,a, No. 230, Z. 7. b, 25.

सौमगोपा m. Soma-*Hüter:* Agni ṚV. 10,45,5. 12.

सौमग्रह m. 1) *ein Becher* Soma Çat. Br. 5,1,2,10. 4,6,5,5. TS. 3, 5,9,3. — 2) *Mondfinsterniss* Varâh. Bṛh. S. 5,97.

सौमग्रहण n. *Mondfinsterniss* Verz. d. B. H. No. 836. 903.

सौमघृत n. *eine best. Heilsalbe* Kâśjap. 448.

सौमचक्षस् adj. *wie* Soma *aussehend* TS. 2,2,12,4.

सौमचमस m. Soma-*Becher* Pârâśar. Bh. 18,2,10. Lâṭj. 8,9,15. Kâtj. Çr. 22,8,21.

सौमन 1) m. *der Sohn des Mondes, der Planet Mercur* AK. 3,4,9,36. Ind. St. 2,261. — 2) n. *Milch* H. 404.

सौमनर्म्भन् adj. P. 5,4,125.

सौमनी adj. Soma-*geboren* AV. 4,3,7.

सौमनामि adj. *mit* Soma *verwandt* ṚV. 10,92,10.

सौमनुष्ट adj. *an* Soma *sich freuend* AV. 2,36,2.

सौमतीर्थ n. N. pr. eines Wallfahrtsortes, = प्रभास Taitt. 2,1,7 (vgl. MBu. 9,2009. fg.; nach Hariv. 9321 könnte man an कनखल denken). MBu. 3,8089. 8084. 7086. Çiç. 7,16. Verz. d. Oxf. H. 18,b,22. 19,b,13. 60,a,29. 36. 66,a,5. b,39. 67,a,25. b,28. fg.

सौमत्व n. nom. abstr. von सोम *Mond* Mârk. P. 57,13.

सौमदत्त m. N. pr. v. l. für सोमदत्त Ind. St. 3,473,2.

सौमदत्त 1) m. N. pr. verschiedener Fürsten MBu. 1,4911. 6944. 2, 2476. 6,2105. 7,800. 6035. Hariv. 1791. 1821. R. 1,47,16 (48,13 Gorr.). VP. 354. Bhâg. P. 9,2,35. 22,18. Verz. d. Oxf. H. 60,a, N. 3. Kathâs. 30,80. Daçak. 23. fgg. verschiedener Brahmanen Kathâs. 2,80. 7,108. 20,8. 33,37. eines Kaufmanns Çuk. in LA. (III) 32,9. — 2) f. या ein Frauenname Verz. d. Oxf. H. 153,a,9. 10. — Vgl. सौमदत्ति.

सौमदत्ति MBu. 1,536 fehlerhaft für सौ° (so ed. Bomb.).

सौमदर्शन m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 87.

सौमदा f. N. pr. 1) einer Gandharvî R. 1,34,39 (35,37 Gorr.). — 2) einer Brahmanin Kathâs. 37,150. fgg.

सौमदेव 1) m. a) *der Mondgott* R. 1,45,39. — b) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 114,90. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,27, 17. °भट्ट Verfasser des Kathâsaritsâgara (herausgegeben von H. Brockhaus). — 2) f. ई N. pr. einer Gattin des Kâmapâla Daçak. 118,4.

सौमदेवत adj. Soma *zur Gottheit habend* Çat. Br. 14,6,9,24.

सौमदेवत्य adj. dass. Âçv. Gṛhj. 4,7,11.

सौमदैवत adj. dass. AK. 3,4,24,163. नक्षत्र = मृगशिरस् MBu. 13,3238.

सौमधान adj. Soma *enthaltend, — fassend:* कुतप: ṚV. 3,36,8. AV. 7,111,1. कलश ṚV. 8,69,2. 6. 9,97,32. 70,9. 108,16.

सौमधारा f. *die Milchstrasse* Taitt. 1,1,97.

सौमधेय m. pl. N. pr. eines Volkes MBu. 2,1084.

सौमन् (von 1. सु) m. *Kelterer, Bereiter des* Soma Naigh. 4,3. Nir. 6, 10. ṚV. 1,18,1. nach Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4,180 सौमन् = चन्द्र und यज्ञसाध्य.

सौमनन्दीश्वर n. N. pr. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 70,b,42.

सौमनाथ 1) m. N. pr. verschiedener Gelehrter Colebr. Misc. Ess. 1, 299. Verz. d. Oxf. H. 150,b, No. 320. 364,b, No. 68. Hall 208. °भट्ट 176. — 2) n. N. eines berühmten Heiligthums (Liṅga) in Guzerat Colebr. Misc. Ess. 2,90. Wilson, Sel. Works 1,220. fgg. 2,64. Reinaud, Mém. sur l'Inde 269. LIA. 1,106. Wassiljew 73. Vop. 5,35. Verz. d. B. H.

No. 1242. Verz. d. Oxf. H. 64,a,s. 84,a,s. °तीर्थ 66,b,1. 2. °पट्टन 348, b,2. °प्रशस्ति f. Titel einer Schrift 125,a,41. fg.

सौमनेत्र adj. Soma zum *Führer habend* P. 5,4,116, Vârtt. 3, Schol. VS. 9,36.

सोमपं 1) adj. Soma *trinkend*, zum Soma-*Trunk zugelassen* AK. 2, 7,s. 3,4,22,141. H. 818. AV. 2,12,3. 35,3. 5,25,9. Ait. Br. 2,18. TBr. 2,2,11,3. Kâṭh. 13,6. Çat. Br. 5,4,5,4. M. 11,149. Bhâg. 9,20. MBh. 1,4618. 3,2450. गणा देवानामूष्मपाः सोमपाश्च 13,1271. 6495. 7306. fg. 14,288. Vaṣiṣ. Dhn. S. 16,7. Râǵa-Tar. 5,392. Bhâg. P. 4,7,36. 5,18, 66. °मत्तमा: MBh. 14,2624. °पा f. Durgâ Harîv. 10248. सु° Ait. Br. 2,18. Kâṭh. 13,6. 26,9. Liṭ. 2,12,17. M. 11,12. सु° adj. R. Gorr. 2, 109,59. — 2) m. N. pr. *a*) eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBh. 13,4359. — *b*) eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2572. — *c*) eines Asura Harîv. 12943. — *d*) pl. eines Ṛshi-Geschlechts MBh. 12,6142. सोमप ed. Bomb. — *e*) pl. einer Klasse von Manen M. 3,197. fg. MBh. 2,462. Harîv. 940. 997. Mârk. P. 96,40. 43. Verz. d. Oxf. H. 40,a,4. — *f*) pl. eines Volkes Vaṣiṣ. Dhn. S. 3,70. — Vgl. सोमपा.

सौमपति m. *Herr des* Soma: Indra ṚV. 1,76,3. 3,32,1. 8,21,3. *Herr des Mondes:* Kṛshṇa Weber, Kṛshṇaǵ. 298; vgl. सोमस्य पतिः 299.

सोमपत्त्र n. *Saccharum cylindricum* Çabdar. im ÇKDa.

सोमपत्नी f. *Gattin des* Soma MBh. 1,2580.

सोमपद् 1) m. pl. N. pr. bestimmter Welten Harîv. 953. — 2) n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8097.

सोमपरिक्लोधृ adj. *den* Soma *beseitigend*, Soma-*Verächter* ṚV. 1,43,8.

सोमपर्वन् n. etwa Soma-*Festzeit* ṚV. 1,9,1.

सोमपा adj. = सोमप Vop. 26,69. ṚV. 1,4,2. 10,3. 21,3. 2,12,13. 3, 39,7. 41,5. 4,32,14. 8,2,4. 17,3. MBh. 12,10435. fg. Bhâg. P. 3,32,3. वामप्यसोमपाः 8,3,12. 24. °पातम ṚV. 1,8,7. 21,1. 6,42,2. मद 8,12,1. सोमपा m. = ब्राह्मण Halâj. 2,236.

सोमपात्र n. Soma-*Gefäss* Kâṭh. Ça. 8,7,5. 8.

1. सोमपान n. *das Trinken von* Soma Spr. (II) 5842. Verz. d. Oxf. H. 91,b,19.

2. सोमपान adj. Soma-*Trinker* TS. 2,5,4,1. 6,5,9,2. Çat. Br. 1,6,3,2.

सोमपायिन् adj. dass. AV. 18,3,64. MBh. 13,7332.

सोमपाल m. 1) Soma-*Wächter* Ait. Br. 3,26. — 2) N. pr. verschiedener Männer Râǵa-Tar. 7,1350. 8,326. 291. 521. 622. 626. 766. 887 u.s.w.

सोमपावन् adj. Soma-*Trinker* ṚV. 1,30,11. 55,7. 5,40,4. 7,31,1. 32,8.

सोमपित्सरु adj. Beiw. des Pflugos VS. 12,71 vermuthlich verdorben; vgl. die v. l. AV. 3,17,3. TS. 4,2,5,6.

सौमपीति f. Soma-*Trunk*, immer dat. ṚV. 1,2,3. 8,10. 14,1. 6. 21, 3. 3,1,14 u. s. w. AV. 17,1,10.

सोमपीतिन् adj. = सोमपीथिन् AK. 2,7,8. MBh. 1,445.

सोमपीथ 1) m. Soma-*Trunk* ṚV. 1,51,7. 10,15,8. AV. 18,3,21. VS. 8,5. 19,60. Kâṭh. 11,10. 12,10. TS. 2,1,5,5. TBr. 1,2,2,6. 3,10,2. Ait. Br. 1,8. 2,22. 3,30. Çat. Br. 3,6,2,19. 12,7,3,8. सु° *daran nicht betheiligt* Çâṅkh. Ça. 14,62,2. स° *gleicherweise mit* (instr.) *daran betheiligt* Ait. Br. 3,30. — 2) adj. Soma *trinkend* Bhâg. P. 3,20,29. 8,9,1. 5. उरु° 5,15,10.

सोमपीथिन् adj. am Soma-*Trunk Theil habend* H. 818. TBr. 3,7,5. 10. MBh. 3,10315. 13,4896 nach der Lesart der ed. Bomb. Uttarâs. 4, 18 (7,6). Vaṣiṣ. Dhn. S. 13,3. सु° Kâṭh. Ça. 7,1,3.

1. सोमपुत्र 1) m. *ein Sohn des* Soma: सुधर् Ind. St. 3,459. Buddha d. i. *der Planet Mercur* Jtkm. 1,295. Mârk. P. 123,8. — 2) f. ई *eine Tochter* Soma's MBh. 5,3533.

2. सोमपुत्र adj. Soma *zum Sohn habend*, f. या *Mutter des* S. AV. 3,10,13.

सोमपुर n. 1) Soma's *Stadt* MBh. 5,4021. — 2) N. pr. eines buddh. Tempels Wassiljew 54. °पुरी Târân. 209. fg. 230.

सोमपुरुष m. *Diener des* Soma Âçv. Gṛhj. 1,2,5.

सौमपुरोगव adj. *den* Soma *zum Führer habend* VS. 23,14. Çat. Br. 13,2,2,10.

सौमपृष्ठ adj. (f. या) Soma *auf dem Rücken tragend:* Berge AV. 3, 21,10. Agni nach Sây. = सोमघृतपृष्ठ oder (zu TS.) *dem die von* Soma *begleiteten* Prshṭhja Stotra *geweiht sind* ṚV. 8,43,11. 10,91,14. AV. 13,1,12. इडा 7,27,1. सहस्य: ṚV. 8,52,2 (= सोमस्प्रष्टृ Sây.).

सोमपेय n. Soma-*Trunk* ṚV. 1,45,9. 120,11. 2,18,4. 3,25,4. 43,1.

सोमप्रतीक s. u. प्रतीक.

सोमप्रभ 1) adj. *den Glanz des Mondes habend.* — 2) m. ein Mannsname Kathâs. 36,113. 59,61. — 3) f. या ein Frauenname Kathâs. 17,71. 28,100. 29,16. 31,57. 34,149. 65,75. 79,7. 114,22. Verz. d. Oxf. H. 152,b,31. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 10.

सोमप्रयोग m. Titel einer Schrift Ind. St. 1,60. Verz. d. Oxf. H. 384, *a*, No. 471.

सोमप्रवाक m. *Herold des* Soma-*Opfers* Pârâṣ. Br. 16,13,10. Çâṅkh. Ça. 14,40,21. Liṭ. 1,1,9. 12. Âçv. Gṛhj. 1,23,21. TBr. Comm. 3,565,7.

सोमबन्धु m. *eine bei Nacht sich öffnende Lotusblüthe* (*den Mond zum Freunde habend*) Çabdar. im ÇKDa.

सोमभक्त m. *Genuss des* Soma Nir. 11,2.

सोमभव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 352,*a*,4.

सोमभू m. bei den Ǵaina N. pr. des 4ten schwarzen Vâsudeva H. 695.

सोमभूपाल m. N. pr. eines *Fürsten* Colebr. Misc. Ess. 2,274.

सोमभूभुज् m. desgl. Verz. d. B. H. No. 590.

सोमभृत् adj. Soma *bringend:* श्येन VS. 5,1. 6,32.

सोमभोजन m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa (Soma *geniessend*. MBh. 5,3597.

सोममद्दु adj. (nom. pl. °मादस्) von Soma *trunken* ṚV. 7,21,2.

सोममद m. Soma-*Rausch* Çat. Br. 12,7,3,12. 8,4,2.

सोममय (von सोम) adj. (f. ई) *aus* Soma *bestehd*, — *bestehend* gaṇa शरादि zu P. 4,3,144. zur Erklärung von सोम्य Nir. 10,37. P. 4,4,133.

सोममित्र m. ein Mannsname gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. — Vgl. सौममित्रिक.

सोमयज्ञ m. Soma-*Opfer* Z. d. d. m. G. 7,527. MBh. 13,5279.

सोमयशस् m. N. pr. eines Fürsten Çaṭ. 10,303.

सोमयाग m. Soma-*Opfer* Brahmavaiv.-P., Kṛshṇaǵanmakh. 60 im ÇKDa. Çiva. zu Kaṭh. Up. S. 21.

सोमयाज्विन् adj. Soma *opfernd, der ein* Soma-*Opfer dargebracht*

kut H. 817. TS. 2,5,8,1. TBa. 2,2,11,3. Çat. Ba. 10,1,5,4. Verz. d. Oxf. H. 219,7. s. सत° 142,a,5 v. u. — Vgl. माधव°.

सोमपात्र्या f. *die zum Soma-Becher gesprochene Jágjá* Çâṅku. Çr. 7,3,4.

सोमयोग m. Soma-*Verbindung* AV. 10,5,4.

सोमयोनि n. *weisser Sandel* Ratnam. 140.

सोमरक्षित 1) adj. *den Soma bewachend, Soma-Wächter* Çat. Ba. 3,6, 3,9. 9,3,18. — 2) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 3,472.

सोमरति adj. = सोमरत्त Kâṭh. 34,3. Pañcav. Br. 3,5,4.

सौमरभस् adj. *durch Soma wüthend*, compar. RV. 10,76,5.

सोमराज m. Soma *der Fürst, der Mond* Ind. St. 3,459. Bhâg. P. 4, 22,36. 10,84,47.

सोमराजक m. pl. N. pr. eines Geschlechts Âçv. Çr. 12,11,1. °कि unsere Hdschrr. — Vgl. सोमराज्य.

सौमराजन् 1) adj. (f. °जी) *den Soma zum König habend* Ait. Br. 1, 14. Çat. Ba. 2,5,4,4. 5,5,2,3. ब्राह्मणा: TBa. 1,7,4,2. MBh. 13,2110. 7408. घोषघ: RV. 10,97,18. AV. 8,1,17. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,b,23.

सोमराजसुत m. *Sohn des Mondes, der Planet Mercur* Bhâg. P. 9,1,35.

सोमराजी f. 1) *Mondstreifen:* °समा ने यशःश्री: Khandom. 11. — 2) *Vernonia anthelmintica* AK. 2,4,2,14 (nach den Erklärern auch °राजिन् m.). Râéân. 4,63. Kaiyad. 349. Vaṭṭ. Bṛh. S. 44,10. °फल Suçr. 2,277,11. — 3) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ – – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2,159 (1,9). Ind. St. 3,366. Khandom. 11.

सोमराज्य 1) n. *die Herrschaft Soma's* Maitrâjop. 6,36. — 2) m. fehlerhaft für सोमराज्य Verz. d. B. H. 25,23. Müller, Sl. 381.

सोमरात m. N. pr. eines Mannes Çiç. 61,11.

सोमराष्ट्र n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 64,a,5.

सोमरूप adj. Soma-*gestaltig* Çat. Ba. 12,7,3,12. 3,5. 8,3,15. Davon nom. abstr. °ता 21.

सोमरोग m. *eine in neueren medicinischen Büchern beschriebene Harnruhr, welche zur Schwindsucht führt* (daher der Name), Mâdhava, Nid. 113. fg. Çârṅg. Saṃh. 1,7,44. Wise 363. Verz. d. Oxf. H. 316,b,14.

सोमलता f. *Ruta graveolens* Râéân. 5,62 = सोमवल्ली Bhâvapr. im ÇKDa. — Taitt. 3,3,629.

सोमलतिका f. *Cocculus cordifolius DC.* Râéân. 3,1.

सोमलदेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Râéa-Tar. 8,1925.

सोमलोक m. *die Welt des Mondgottes* Praçnop. 5,4. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,90. Verz. d. B. H. 146,a (14).

सोमव m. pl. N. pr. eines Ṛshi-Geschlechts MBh. 12,6143 nach der Lesart der ed. Bomb. wohl nur fehlerhaft für सोमप der ed. Calc.

1. सोमवंश m. *das auf den Mondgott zurückgeführte Königsgeschlecht* Harîv. 102. Verz. d. Oxf. H. 8,a,25. 44,b,30. 332,b,2. Çâṅkh. 10,318.

2. सोमवंश adj. = °वंशीय; m. Bez. Judhishṭhira's Dhan. im ÇKDa.

सोमवंशीय adj. *zum Mondgeschlecht gehörig* MBh. 3,11169.

सोमवंश्य adj. dass. Raghu 6,8. Çâṅkh. 10,304.

सोमवतीतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,32,4.

सौमवत्त् (von सोम) adj. (f. °मावती VS. Prât. 3,116. °P. 6,3,131 (मत्ते). aber auch °मवती) Soma *enthaltend:* Kraut RV. 10,97,7. Çat. Ba. 12,8,2,15. चमस Kâṭy. Çr. 10,4,10. von Soma *begleitet* u. s. w.: वचस्या RV. 10,113,8. Götter TS. 7,3,11,3. Väter Çat. Ba. 2,6,2,4. 7. 27. 5,5,4,28. Âçv. Çr. 2,19,21. सधस्थ AK. 2,7,7. *unter dem Monde stehend:* दिश् so v. a. *Norden* R. 1,41,21.

सौमवर्चस् 1) adj. Soma-*herrlich* AV. 14,1,32. — 2) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gerechneten Wesens MBh. 13,4358. eines Gandharva Harîv. 14157. — Vgl. सूर्यवर्चस्.

सोमवल्क m. *Acacia arabica Willd.* AK. 2,4,2,21. 3,4,1,9. H. an. 4,41. Med. k. 222. Ratnam. 186. = कट्फल AK. 3,4,1,9. H. an. Med. Ratnam. 221. Râéân. 9,20. *eine Art* कारञ्ज, रीठा° 73. घृत° Bhâvapr. S. — Kâraka 9,1. Suçr. 1,133,17 (f. घा). 2,81,8.

सोमवल्लरी f. *Ruta graveolens* AK. 2,4,5,3. Râéân. 5,128.

सोमवल्लिका f. *Vernonia anthelmintica* AK. 2,4,2,14. *Ruta graveolens* Bhar. nach ÇKDa.

सोमवल्ली f. *Cocculus cordifolius DC.* AK. 2,4,2,1. *die Soma-Pflanze* Râéân. 3,87. *Vernonia anthelmintica* 4,63. Çandan. im ÇKDa. = पातालगरुडी Râéân. 3,90. = सुदर्शना Râéân. im ÇKDa. — Vaṭṭ. Bṛh. S. 54,108. Verz. d. Oxf. H. 339,b,4.

सोमवामिन् s. u. वामिन्.

सोमवार m. *Montag* Journ. of the Am. Or. S. 5,177. Verz. d. B. H. No. 1214. fg.

सोमवासर m. n. dass. Weber, Kṛshṇaj. 229.

सोमवाह m. N. pr. eines Mannes Âçv. Çr. 12,15,3. pl. *sein Geschlecht* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,3.

सोमविक्रयिन् adj. Soma-*Verkäufer* Ait. Br. 1,12. TS. 1,2,7,1. 6, 1,9,1. 10,4. Çat. Br. 3,3,2,1. 7. 12,7,2,12. M. 3,158 (MBh. 3,1227. 13,4276). 180 (MBh. 13,4282). MBh. 13,1585. Mârk. P. 31,27.

सोमवीथी f. *Mondbahn* MBh. 13,1896. यत्रोपयाति क° सोमपीथी ed. Bomb.

सोमवृक्ष m. = कट्फल Ratnam. 221. *Acacia arabica Willd.* Râéân. im ÇKDa. — R. 3,17,8. Suçr. 2,77,17.

सोमवृद्ध adj. *durch Soma aufgehettet* RV. 3,39,7.

सोमवेश m. N. pr. eines Muni R. Gorr. 2,73,4. wohl =वेष zu schreiben.

सोमव्रत n. 1) *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 18,b,23. — 2) N. eines Sâman Ind. St. 3,245,a.

सोमशकला f. *eine Gurkenart* (शशाण्टुली) Râéân. im ÇKDa. fehlerhaft für लोमशफला, wie unsere Hdschrr. 7,215 lesen.

सोमशर्मन् m. N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 86,11. Verz. d. Oxf. H. 341,a,42. fg. °शम्भ Verz. d. B. H. No. 1110.

सोमशर्मन् m. N. pr. verschiedener Männer: Sohn Çâliçûka's VP. 470. Bhâg. P. 12,1,13. — Weber, Nax. 2,319. Mcir, ST. 3,201. Verz. d. Oxf. H. 46,b,37. 53,b,22. 59,b,27. Kathâs. 6,8. 124,104. Pañcat. 232,19.

सौमशित adj. *durch Soma geschärft:* वज्र RV. 7,104,19. सूर्य: 10,108,8.

सौमभुम्म m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Sâtjajaṇi Çat.

Br. 11,6,2,1. 3. Manow. zu VS. 2,18. °घुष्मन् Ait. Br. 8,21.

सोमभूर m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 72,191. fgg.

सोमशेखराभ्युदयनिबन्ध m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 292,b,34.

सोमश्रवस् m. N. pr. eines Sohnes des Çrutaçravas MBh. 1,674. eines Kaufmanns Verz. d. Oxf. H. 46,b,27.

सोमश्रेष्ठ adj. *den* Soma *zum Ersten habend* AV. 11,6,15.

सोमसंस्था s. u. संस्था 4) g).

सोमसत्ति adj. Soma *zum Genossen habend* VS. 4,20.

सोमसंन्न n. *Kampfer* Ratnam. im ÇKDa.

सोमसत्सख् s. u. सुमतिसख्.

सोमसद् m. pl. Bez. der Manen der Sâdhja M. 3,195.

सोमसलिल n. Soma-*Wasser* Jâḍ. 3,307.

सोमसव m. Soma-*Kelterung* TBa. Comm. 3,759,6. fgg.

सोमसवन adj. *woraus* Soma *gekeltert wird:* यवत्व Kaṭhân. Up. 8,5,3.

सोमसामन् n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,245,b.

सोमसार m. *Acacia arabica Willd* Râǵân. 8,24.

सोमसिद्धान्त m. 1) Titel verschiedener astr. Werke (vgl. सूर्यसिद्धान्त) Colebr. Misc. Ess. 2,377. 382. Verz. d. B. H. 840. 939 (287,4 v. u.). Verz. d. Cambr. H. 30. fg. 43. 50. — 2) N. pr. eines Buddha Gaṭâdn. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,6. — 3) Personification eines Çiva'itischen Siddhânta; tritt als Kâpâlika auf Prab. 53,3. 5. उमया सह वर्तमानः सोमो महेश्वरः । तत्सिद्धान्तः Comm.

सोमसिन्धु m. ein N. Vishṇu's Tait. 1,1,31. H. 218.

सोमसुत् adj. Soma *pressend* P. 3,2,90. RV. 4,24,8. 7,68,4. 93,5. 8, 46,26. ब्राह्मणः TBa. 2,7,16,4. Âçv. Çr. 2,1,5. MBh. 2,291. Raǵat. 18,26.

सोमसुत 1) m. *ein Sohn des Mondgottes:* Budha Mârk. P. 123,11. Bhâg. P. 5,22,13. so v. a. *ein Nachkomme des M.* Çaṭa. 10,304. — 2) f. आ Bez. des Flusses Narmadâ Râǵân. im ÇKDa.

सोमसुति f. Soma-*Kelterung* RV. 7,93,6.

सोमसुत्या f. dass. Çat. Br. 12,8,2,12. 14. 19. fg.

सोमसुत्वन् adj. = सोमसुत् RV. 1,113,18.

सोमसुन्दर m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 379,a, No. 390.

सोमसूक्त n. *eine an* Soma *gerichtete Hymne* Verz. d. Oxf. H. 18,b, 28. 398,a, No. 144.

सोमसूत्मन् m. N. pr. des Ṛshi von VS. 2,18. सोमघुष्म Manow.

सोमसूत्र n. Bez. *eines Abzugsgrabens an einem* Liṅga ÇKDa. nach dem Tantrasâra. — °पद्धविधान n. Titel einer Schrift Ind. St. 1,471.

सोमसेन m. N. pr. eines Sohnes des Çambara Harîv. 9232. eines Fürsten von Kâmpakapura Verz. d. Oxf. H. 154,b,21.

सोमस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 37,98.

सोमहूति m. N. pr. Ind. St. 3,245,b fehlerhaft für सोमाकृति.

सोमांशक (सोम + अ°) m. *ein Theil des Mondes* R. 7,59,2,15.

सोमांशु (सोम + अंशु) m. 1) Soma-*Gelenk, — Schoss* VS. 19,13. Çat. Br. 4,1,2,9. 12,7,2,13. 8,2,3. Kauç. 16. 24. Kaush. Up. 1,5 (*Mondstrahlen* Comm.). — 2) *Glied des* Soma-*Opfers* (deren zehn) Çâṅkh. Br. 13,4.

सोमाकर (सोम + आ°) m. N. pr. eines Commentators des Ǵjotisha, Weber, Ǵjot. 3. fgg.

सोमाख्य (सोम + आख्या) n. *eine rothe Lotusblüthe* Ratnam. im ÇKDa.

सोमाङ्ग (सोम + 3. अङ्ग) n. *Glied des* Soma-*Opfers* Kâṭj. Çr. 10,9. 22. 16,1,1.

सोमातिपवित (सोम + अ°) adj. *durch* Soma *gereinigt* Pâraṇ. Br. 18, 5,3. Liṭj. 8,10,7. fgg.

सोमातिसुत adj. dass. Çat. Br. 5,5,4,11. 13. 12,7,2,9. Kâṭj. Çr. 15, 10,21. 19,1,2. Vait. 30.

सोमात्मक (von सोम + आत्मन्) adj. (f. °त्मिका) *die Natur des Mondes habend* Ind. St. 1,406, N.

सोमाद् (सोम + 2. अद्) adj. Soma *essend* RV. 10,94,9.

सोमाधार (सोम + आ°) m. pl. Bez. bestimmter Manen Mârk. P. 97,10.

सोमाधि v. l. für सोमापि VP. 465, N. 1.

सोमानन्द (सोम + आ°) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1647. °आचार्य Verz. d. Oxf. H. 324,a,35. °नाथ Sarvadarçanas. 93,5.

सोमाप entweder adj. = सोमप oder m. N. pr. eines Mannes Ait. Br. 7,34. — Vgl. सोमाप.

सोमापि m. N. pr. des Sohnes von Sahadeva VP. 465. Bhâg. P. 9,22,9. — Vgl. सोमक.

सोमापूष्णौ und °णोः m. du. Soma *und* Pûshan RV. 2,40,1. TS. 2,4,4,2.

सोमापौष्ण adj. *dem* Soma *und* Pûshan *gehörig* TS. 1,8,8,1. 2,1,4, 3. 4,4,2. — Vgl. सोमा°.

सोमाभा (सोम + आ°) f. = चन्द्रावली Bhaktirasâmṛtasindhu im ÇKDa.

सोमाम्बुपौ m. du. *der* Soma- *und der Wassertrinker*, Bez. zweier göttlicher Wesen Mârk. P. 51,61.

सोमारुद्र 1) m. du. oxyt. Soma *und* Rudra Çat. Br. 5,3,2,2. 3. — 2) n. (sc. सूक्त) *eine Hymne an* S. *und* R. Verz. d. Oxf. H. 398,a, No. 144; vgl. सोमारौद्र.

सोमारौद्र adj. *dem* Soma *und* Rudra *gehörig* TS. 2,2,10,1. चरु Verz. d. Oxf. H. 264,a,39. n. (sc. सूक्त) Bez. von RV. 5,74 M. 11,151. — Vgl. सोमा°.

सोमार्चिस् (सोम + अ°) m. N. pr. eines Götterpalastes R. 4,43,60.

सोमार्धधारिन् adj. *einen Halbmond tragend*, m. Bez. Çiva's Verz. d. Oxf. H. 219,a, No. 320.

सोमार्ह (सोम + अर्ह) adj. *Ansprüche auf* Soma *habend:* यज्ञियो MBh. 3,10393.

सोमाल (von सोम) adj. *weich, zart* H. 1387. Hân. 124.

सोमावती s. सोमवत्.

सोमाश्रम (सोम + आ°) m. N. pr. eines Wallfahrtortes MBh. 3,8135.

सोमाश्रमायण n. desgl. MBh. 1,6138. सोमाश्रमचन्द्रधरो रुद्रः । तस्य स्थानं सोमाश्रमायणम् Nîlak.

सोमाष्टमी (सोम + अ°) f. Bez. *eines best. 8ten Tages* Weber, Nakshatra. 243. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,b,3. 4.

सोमासन्दी (सोम + आ°) f. *ein Schemel für den* Soma Kâṭj. Çr. 13, 3,7. 19,4,7.

सोमाह्न (सोम + अह्न) m. *Montag* ÇKDa. nach einem Ǵjotisha.

सोमाहुत (सोम + आ°) adj. *mit* Soma *beopfert* RV. 1,94,14.

1. सोमाकृति (सोम + आ°) f. *Soma-Opfer* Ait. Br. 2,14. Çat. Br. 4,

6,4,10. 7,9,10. 8,6,3,7. Bhāg. P. 9,3,26.

2. सोमाकृति (wie eben) m. N. pr. eines Liedverfassers mit dem patron. Bhārgava ṚV. Anukr. fälschlich सोमाहृति Ind. St. 3,245,a.

सोमाक्षा (सोम + क्षा°) f. *die* Soma-*Pflanze* Rāśān. 3,26.

सोमिन् (von सोम) 1) adj. *a) derjenige welcher* Soma *bereit hat* ṚV. 1,22,4. 4,25,3. 7,32,12. 10,57,1. सप्रथाः सोमिनो गृहम् 171,1. — *b)* so v. a. Soma-*begeistert* ṚV. 7,103,3. der Stein 9,34,2. 10,94,1. — 2) f. °नी (संज्ञायाम्) P. 5,2,127, Schol.

सोमिल m. N. pr. 1) eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*a*,12. 125,*a*,21. so und सोमिल Z. d. d. m. G. 27,77. fg. 96. — 2) eines Asura Kathās. 47,13.

सोमिलक m. N. pr. eines Webers Pañcat. 132,23.

सोमीय in Ableitungen von compp. auf सोम, s. z. B. यज्ञियसोमीय.

सोमेज्या (सोम + इ°) f. Soma-*Opfer* Kāty. Ça. 18,6,23. 25,6,7.

सोमेन्द्र adj. *dem* Soma *und* Indra *gehörig* TS. 2,3,2,6. 7.

सोमेश्वर (सोम + ई°) 1) m. *a)* ein N. Kṛshṇa's Weber, Kāmaṇḍ. 298. fg. pl. Bez. best. Götter Rāja-Tar. 7,1647. — *b)* N. pr. verschiedener Männer: ein mythischer Fürst Sarvadarçanas. 99,2. — Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,21. fg. 135,*b*, No. 235. 199,*b*, No. 471. 219,*a*, No. 523. 247,*b*,10. 279,*b*,45 (भट्ट°). 296,*a*, No. 713. 378,*a*, No. 376. 380,*a*,5. Hall 198. °भट्ट 24. 170. 183. °देवदि (!) Colebr. Misc. Ess. 2,272. — — 2) n. N. eines Liṅga in Kāçī Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,21. 64,*a*,29. — — Vgl. भट्ट°.

सोमोत्पत्ति f. *die Entstehung des* Soma (*der Pflanze und des Mondes*) Verz. d. B. H. 142,25. Verz. d. Oxf. H. 398,*b*,1. °परिशिष्ट Ind. St. 1,39.

सोमोद्भव (सोम + उ°) 1) adj. *a) den Mond erzeugend:* Kṛshṇa Weber, Kāmaṇḍ. 299. — *b) vom Monde erzeugt.* — 2) f. आ ein Name des Flusses Narmadā AK. 1,2,2,31. Rāgān. 5,59.

सोम्य (von सोम) adj. Nir. 10,27. P. 6,4,127. fg. 1) *der sich mit dem* Soma *zu thun macht,* Soma-*Opferer* ṚV. 1,31,16. मृडिता सोम्यानाम् 4,17,17. die Bhṛgu 10,14,6. 8,32,5. 10,53,7. 3,30,1. Āçv. Ça. 6,11, 15 (सौम्य die Ausg.). — 2) *aus* Soma *bestehend,* S. *enthaltend* u. s. w.: मधु ṚV. 1,14,10. 19,9. 2,36,4. 4,26,5 u. s. w. घन्धम् 10,94,8. 3,48,1. सर्वास 5,29,8. सदम् 1,182,8. AV. 9,3,19. मद ṚV. 6,37,2. — 3) Soma *liebend, durch* S. *begeistert:* वचस् ṚV. 3,33,5. Indra 31,11. 4,25,2. 8,82,8. — 4) *mit* Soma *verbunden, ihm angehörig* u. s. w.: die Väter ṚV. 6,75,10. 10,15,1. 5. 16,8. AV. 2,12,5. VS. 19,37. Gobh. 4,3,4. Gandharva AV. 4,34,3. — 5) ungenaue Schreibart für सौम्य MBh. 13, 7638 (ed. Bomb. सौम्य). in der Anrede des Lehrers an den Schüler Bṛh. Âr. Up. 3,2,13 (सौम्य Çat. Br. 14,6,2,12). Kāṭh. Up. 4, 4,4. fgg.

सोम्यता Mān. P. 39,63 ungenau für सौ°.

सोराष्ट्रिक n. *ein best. Gift* ungenau für सौ° Bharata zu AK. 1,2,2, 11 nach Wilson.

सोर्मि (2. स + ऊर्मि) adj. *Wellen habend, — schlagend:* वारि Kathās. 40,16. °क dass. Vishṇ. 163 (सौ° geschr.).

सोलङ्क m. N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,7.

सोल्लास (2. स + उ°) adj. *ausgelassen vor Freude* Kathās. 43,186.

सोल्लुण्ठ adj. s. u. उल्लुण्ठा und füge Hariv. 1,149 hinzu.

सोल्लुण्ठन adj. *ironisch* Gaṭṭabu. im ÇKDa.

सोष (2. स + ऊष) adj. *mit salziger Erde vermischt* Jiṅ. 1,186.

सोष्णीष (2. स + उ°) 1) adj. *mit einer Kopfbinde versehen* MBh. 3, 16158. — 2) n. (sc. वास्तु) Bez. *eines Hauses mit einer Gallerie an der Vorderseite:* यस्याग्रतो भवति सा (वीथिका) सोष्णीषं नाम तद्वास्तु Varāh. Bṛh. S. 53,20.

सोष्मता (von सोष्मन्) f. 1) *Hitze* Mārk. P. 51,37. — 2) *Aspiration* ṚV. Prāt. 13,3.

सोष्मन् (2. स + ऊ°) adj. 1) *heiss, warm:* ग्रीष्म Z. d. d. m. G. 27, 53. शरत्काल Kathās. 55,33. निःश्वसित Kumārās. 5,46. मनस् Spr. (II) 2371. — 2) *aspirirt,* m. *eine Aspirata* ṚV. Prāt. 1,3. 6,1. 10. 13,2. 5. 14,6. 24. VS. Prāt. 1,54. AV. Prāt. 1,10. 94. Kāç. zu P. 1,1,50.

सोष्मवत् m. = सोष्मन् 2) ṚV. Prāt. 11,13.

सोष्मस्नानगृह m. *eine Stube mit warmen Bädern, Badstube* Rāja-Tar. 1,40.

सोष्यन्ती f. *eine Gebärende* s. u. 4. सु. °कर्मन् Verz. d. B. H. No. 1031. °होम m. *ein Opfer für eine Gebärende* Gobh. 2,7,13.

सौकृत्रि m. N. pr. eines Sohnes des Kunti Bhāg. P. 9,23,22.

सौकृत्यग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,12.

सौकृत्य m. N. pr. eines Diebes Verz. d. Oxf. H. 153,*b*,36.

सौकन्य adj. Sukanjā *betreffend:* याज्ञान MBh. 1,445. n. mit Ergänzung von याज्ञान Bhāg. P. 12,12,33.

सौकर (von सूकर) 1) adj. (f. ई) *aprinus* Kāraka 1,5. वपुस् Kir. 12,54. Bhāg. P. 1,3,7. 7,1,40. रूप 3,13,20. 40. Mārk. P. 21,4. मूर्ति Kathās. 93,4 (zu lesen saukaryā 'udyatayā). zu Vishṇu *als Eber in Beziehung stehend* Weber, Rāmāy. Up. 314. — 2) n. N. pr. eines Wallfahrtsortes, an dem Vishṇu *als Eber* verehrt wird, Verz. d. B. H. 142,6 v. u. Verz. d. Oxf. H. 60,*a*,28. 153,*b*,18.

सौकरक n. = सौकर 2) Verz. d. Oxf. H. 60,*a*,28.

सौकरमर्म adj. von सूकरमन्यु P. 6,4,144, Vārtt. 1.

सौकरायणी m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,7,2,27. VS. p. LXVI.

सौकरिक (von सूकर) 1) m. *Eberjäger* Çabdārthak. bei Wilson (*Jäger überh.*). Vishṇ. 96. R. Gorr. 2,90,17. Varāh. Bṛh. S. 15,22. 16,33. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 330,*b*,16.

सौकरेय adj. von सुकर und सूकर gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

1. सौकर्य (von सुकर) n. *leichte Ausführbarkeit, Erleichterung:* क्रिया° Suçr. 1,24,17. 2,56,2. Viṣṇ. 12. Sāh. D. 727. Kathās. 29,150. नानाकथाबालस्मृतिसौकर्यसिद्धये 1,12. यज्ञ° 101,265. Çāṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 276. zu Kaṭhop. 3,1. fälschlich °कार्य Kuval. 141,*b*. Verz. d. Oxf. H. 93,*a*, No. 149, Z. 13. 176,*b*, No. 401, Z. 9.

2. सौकर्य n. nom. abstr. von सूकर *Eber* Viçva im ÇKDa. Viṣṇ. 12.

सौकार्य s. u. 1. सौकर्य.

सौकुमारक n. nom. abstr. von सुकुमार gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,123.

सौकुमार्य n. desgl. *Zartheit* MBh. 3,10987. 4,365. 5,7010. Hariv. 11149. R. 3,6,13. 52,36. वक्° Suçr. 1,48,13. °कर 180,2,11. Spr. (II) 806 (गति°). 936. 2131. 2936. Milāvik. 57,11. Kathās. 16,28. 29,155. Daçak. 94,11. Bhāg. P. 3,31,6. सुकुमारातरप्रायं सौकुमार्यं प्रतीपते Pra-

TĀṆḌ. 68,*a*,6. Comm. zu KIRĀT. 1,69. = यथाकृत्य SIDD. D. 619. Verz. d. Oxf. H. 207,*a*, 28. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) MṚCCH. 9,18. KUMĀRAS. 1,41. 3,42. RAGH. 6,36. 18,44. KATHĀS. 82,46. als adj. in der Bed. von सुकुमार in der Stelle राजा तस्याः परं दृष्ट्वा सौकुमार्यं वपुस्तदा MBh. 12,11864.

सौकृति m. patron.; pl. SAṂHIT. K. 184,*a*,1.

सौकृत्य (von सुकृत) n. *das Wohlthun; Gutthandeln* ṚV. 10,136,4.

सौकृत्यायनि m. patron. von सुकृत्य gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

सौक्तिक m. patron. SAṂHIT. K. 184,*b*,2.

सौक्तिक adj. von सूक्त *Hymne* Ind. St. 3,272.

सौक्ष्म्य öfters fehlerhaft für सौदम्य.

सौक्ष्मक (von सूक्ष्म) m. *ein kleines Insect* oder dergl. Ind. St. 1,40.

सौक्ष्म्य (wie eben) n. *Feinheit* (eig. und übertr.) MAITRJUP. 2,7. JÑĀN. 3,76. SUÇR. 1,44,15. 128,19. 191,20. 247,14. 324,18. 2,46,1. घाकाशस्य BHAG. 13,32. KAPILA 1,110. SIṂHAS. 8. NILAK. 40. MĀRK. P. 56,25. कालस्य BHĀG. P. 3,11,3. धर्म° MBh. 2,2243. प्रसंख्याय च सौक्ष्म्येण गुणदोषान् 5,2860. ज्ञानं ज्ञेयेषु भिन्नेषु यदा भेदेन वर्तते। पत्राधिवासिनी बुद्धिस्तत्सौक्ष्म्यमिति वर्तते ॥ 12,11933. बुद्धि° 40,20. 22. यत्तःसौक्ष्म्यलक्षणं शब्दानां सौक्ष्म्यमुच्यते *Zarthoṣt* PRĀTIPAD. 69,*b*,4.

सौक्ष्म्यत्व n. dass. MAITRJUP. 6,14.

सौख्य m. patron. von सुख gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

सौख्यानिक (von सुख + यान) m. *ein Barde, der* (einem Fürsten) *einen glücklichen Marsch wünscht*, H. 794, Schol.

सौखरात्रिक (von सुखरात्रि) adj. *der sich erkundigt, ob die Nacht angenehm gewesen sei*, gaṇa सुखादि zu P. 4,4,1, VĀRTT. 3.

सौखवती L. WILSON, Sel. Works 2,24. 29 fehlerhaft für सुखावती.

सौखशय्यिक m. = सौखशायिक H. 794, Schol.

सौखशायनिक (von सुखशयन) adj. *der sich erkundigt, ob der Schlaf angenehm gewesen sei*, gaṇa सुखादि zu P. 4,4,1, VĀRTT. 3. SIDDH. K. 83,*b*,1 (falschlich °शायिनिक). RAGH. 10,14.

सौखशायिक adj. dass.; m. Bez. *eines best. Fürstendieners* R. GORR. 2,12,36. — Vgl. सौख्यशायिक.

सौखसुप्तिक (von सुखसुप्ति) m. dass. H. 794.

सौखिक adj. = सुखेन जीवति gaṇa वेतनादि zu P. 4,4,12. *auf Wohlbehagen u. s. w. bedacht* MBh. 12,557.

सौखीय adj. von सुख gaṇa कशाश्वादि zu P. 4,2,80.

सौख्य n. = सुख gaṇa चतुर्वर्णादि zu P. 5,1,124, VĀRTT. 1. *Wohlbefinden, Wohlbehagen, Lust, angenehme Empfindung, Genuss, Freude* H. 1370. M. 4,233. MBh. 4,207. 9,3152. HARIV. 8701 (pl.). R. 3,82,30. Spr. (II) 226. 1606. 1929. 2473. 3095. 3166. 3268. 3520. 3703. 4555. 5804. 6314. 6494. 7187. 7503. VARĀH. BṚH. S. 11,8. KATHĀS. 19,101. 42,150. 45,318. 49,216. RĀJA-TAR. 6,167. PRAB. 48,14. PAÑCAT. 3,18 (= 1,10 ed. orn.). दाता सर्वसौख्यानाम् MĀRK. P. 22,36. मक्षा° 23,45. नृपति° KATHĀS. 3,29. 43,268. BHĀG. P. 5,11,3 (गृत्समेधिसौ° zu schreiben). शम° Spr. (II) 2603. 2847. स्वर्ग° 4076. 7057. KATHĀS. 103,239. RĀJA-TAR. 3, 279 (pl.). BHĀG. P. 5,5,1. VET. in L.A. (III) 10,4. am Ende eines adj. comp. (f. आ): मक्षा° Ind. St. 13,312. KATHĀS. 56,99. पृष्टरात्रि° 71,290. — Vgl. तीर्थ°, वि°, विवाद°.

सौख्यदायक m. *Phaseolus Mungo Lin.* (मुद्ग) RĀJAN. 10,79.

सौख्यशायिक m. MBh. 14,2039 wohl nur fehlerhaft für सौख°.

सौगत (von सुगत) adj. (f. ई) *buddhistisch*: नय KATHĀS. 72,91. गति SARVADARÇANAS. 27,19. von Personen, m. *ein Buddhist* H. 335. 861. COLEBR. Misc. Ess. 1,390. WILSON, Sel. Works 1,5. 22. Çiç 2,18. KATHĀS. 27,15. 120,30. PRAB. 48,6. 87,18. Verz. d. Oxf. H. 71,*a*,14. fg. 242,*b*, No. 599. 250,*a*, 21. fg. 254,*a*,5. 11. *b*,2. 6. SARVADARÇANAS. 131, 20. 149,16. Ind. St. 1,13,21. fg. KUTṬ. 3,15. परम° KATHĀS. 27,12. सौगताम्निक MED. n. 217.

सौगतिक m. *a Bauddha mendicant; the mendicant Brahman; doubt, unbelief, scepticism* WILSON nach ÇABDĀRTHAK. *an atheist, an unbeliever* ohne Angabe einer Aut.

सौगन्ध (von 1. सगन्ध) 1) m. *eine best. Mischlingskaste* (*Händler mit Wohlgerüchen*) MBh. 13, 2384. — 2) n. *ein best. wohlriechendes Gras*, = कत्तृण ÇABDAR. im ÇKDh.

सौगन्धक n. *eine blaue Wasserrose* DHARV. 4,121.

सौगन्धिक (von 1. सुगन्ध) 1) adj. *wohlriechend*: पुष्पाणि MBh. 3,1757. 11391. माल्य R. 1,9,15 (17 GORR.). — 2) m. *a) ein Händler mit Wohlgerüchen* H. an. 4,41. MED. k. 222. — *b) ein Schwächling, der durch den Geruch der Geschlechtstheile zur Begattung gereizt werden muss*, SUÇR. 1,318,10. — *c)* Bez. *best. Eingeweidewürmer* KĀRAKA 3,7. — *d) Schwefel* AK. 2,9,103. H. 1058. H. an. (hier n.). MED. RĀJAN. 13,72. PAÑCAV. BR. 24,13,4. सौगन्धिककुरुविन्दस्फटिकेभ्यः पद्मरागसंभूतिः VARĀH. BṚH. S. 82,1. — *e)* N. pr. eines Berges Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,10. — 3) n. *a) die weisse Wasserlilie* AK. 1,2,2,35. H. 1165. H. an. MED. HALĀY. 3,59. MBh. 1,453. पद्म° adj. 3,2583. 11072. 12041. 4,1013. 2292. HARIV. 9001. R. 3,79,26. 44. SUÇR. 1,141,21. 2,474,2. VARĀH. BṚH. S. 29,10. BHĀG. P. 3,15,18. 3,6,45. 10,38,17. *eine blaue Wasserrose* RĀJAN. 10,202. — *b) ein best. wohlriechendes Gras*, = कत्तृण AK. 2,4,3. 32. H. 1191. H. an. MED. — *c) eine Art Ocimum* (गर्दभपुष्प, खर° nach dem Comm.) SUÇR. 1,41,10. — *d) Rubin* H. an. MED. VARĀH. BṚH. S. 80,5. — *e)* N. pr. eines Waldes BHĀG. P. 4,6,23. 28. — Vgl. रक्त°.

सौगन्धिकवन n. 1) *ein Wald d. i. eine dichte Gruppe von weissen Wasserlilien* MBh. 2,330. — 2) N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3, 7082. 11286. 3,3333. Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,3.

सौगन्धिकवत् (von सौगन्धिक) adj. *mit weissen Wasserlilien versehen*: पद्म° (das Suffix gehört zu beiden Wörtern) MBh. 3,11418. HEM. 2,33.

सौगन्धिकाहरण (सौगन्धिक + हा°) n. *das Herbeiholen von weissen Wasserlilien* in den Unterschrr. von MBh. 3,131. fgg. Titel eines Schauspiels SIṂ. D. 192,12.

सौगन्ध्य (von 2. सुगन्ध) n. *das Wohlriechendsein, Wohlgeruch* MBh. 1,2409. SUÇR. 1,218,4. 2,46,1. Spr. (II) 2153. 4336. KATHĀS. 95,60. BHĀG. P. 4,9,12. 5,5,33. 7,15,70. PAÑCAR. 1,6,39. 7,5. — Vgl. त्रि°.

सौचक्य n. nom. abstr. von सूचक gaṇa पुरोहित्यादि zu P. 5,1,128.

सौचि m. = सौचिक ÇABDAR. im ÇKDh.

सौचिक (von सूचि *Nadel*) m. *Schneider* AK. 2,10,6. H. 910. HALĀY. 2. 435. KULL. zu M. 4,214. केवर्तस्य च कन्यायां शौण्डिकादेव सौचिकः PARIÇARAPADDHATI im ÇKDh. unter वरूड und शौचिक.

सौचिर्य n. nom. abstr. von सूचिक gaṇa पुरोडिस्तादि zu P. 5,1,123.

सौचित्ति (wohl von सुचित्त) m. patron. des Satjadhṛti MBh. 5,7649. 6,4151. 7,986. man könnte auch सौचित्रि (von सुचित्र, der MBh. 1,6990 neben सत्यधृति erscheint) vermuthen.

सौचीक m. patron. eines Agni ṚV. Anukr.

सौजन्य (von सुजन) n. *Gutmüthigkeit, Leutseligkeit, Wohlwollen* Mṛicch. 130, 22. Spr. (II) 1048. 1705. 3037. 5881. 7178. Uttarar. 46, 4 (60, 4). Milavik. 66, 2. 140, 10. Rāǵa-Tar. 4, 224. 5, 192. fg. Verz. d. Oxf. H. 209, *a*, 19. 261, *a*, 5. Utpala am Schluss seines Comm. zu Varāh. Bṛ. — Vgl. सुजनता.

सौजन्यवत् (von सौजन्य) adj. *leutselig, wohlwollend* Spr. (II) 6587.

सौज्ञात (von सुज्ञात) m. patron. Ait. Br. 7, 22.

सौज्ञामि (von सुज्ञामि m. N. pr. eines Mannes Āçv. Gṛ. 3, 4, 4.

सौडल m. desgl. Hall 25.

सौत adj. von सूत gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.

सौतंगमि adj. von सुतंगम P. 4, 2, 80. f. ई 1, 65, Vārtt., Schol.

सौतंगमीय adj. von सौतंगमि P. 4, 2, 112, Schol.

सौति m. patron. von सूत (= लोमहर्षण) MBh. 1, 1. 1103. 3, 721. fgg. Bhāg. P. 3, 20, 1. Verz. d. Oxf. H. 20, *a*, 3 v. u.

सौतिर्य n. nom. abstr. von सूतिक gaṇa पुरोडिस्तादि zu P. 5, 1, 123.

1. सौत्य (von सुत्य und सुत्या) adj. *aus Kelterungstagen bestehend:* Monat Āçv. Çr. 12, 4, 11. 5, 10. Jahr Kāty. Çr. 24, 5, 14. Liṭ. 1, 5, 14. 8, 8, 1. *der Kelterung des* Soma *gewidmet:* सौत्ये ऽहनि *an einem Kelterungstage* Harīv. 323. VP. 1, 13, 51. Bhāg. P. 8, 21, 26. 10, 74, 17.

2. सौत्य (von सूत) 1) adj. *zum Wagenlenker in Beziehung stehend:* कर्मन् = सौत्य 2) Bhāg. P. 5, 21, 16. — 2) n. *das Amt eines Wagenlenkers* Bhāg. P. 1, 13, 17. Nalod. 4, 9.

सौत्र (von सूत्र) 1) adj. *einem oder dem* Sûtra (*grammatische Regel*) *eigen* Pat. zu 4, 2, 64. Sidd. K. zu 6, 3, 41. धातु *eine Wurzel, die nur in einem* Sûtra (einer Etymologie wegen) *erwähnt wird,* Schol. zu P. 3, 1, 82. — 2) m. *ein Brahmane* ÇKDa. angeblich nach H.

सौत्रनाडि m. patron. von सूत्रनड P. 1, 1, 72, Vārtt. 1, Schol.; vgl. gaṇa धनुशतिकादि zu P. 7, 3, 20.

सौत्रान्तिक m. *ein Anhänger des* Sûtrânta, Bez. *einer buddhistischen Schule* Verz. d. Oxf. H. 259, *b*, 7. Sarvadarçanas. 9, 2. 22, 6. fgg. 23, 4. 24, 10. Ind. St. 1, 13, 20. Colebr. Misc. Ess. 1 391. fgg. Burnouf, Intr. 123. 445. fgg. LIA. 2, 459. Z. f. d. K. d. M. 4, 402. fg. Köppen 1, 151. fgg. Wassiljew 34 u. s. w. Hiouen-thsang 1, 154. 3, 214. Vie de Hiouen-thsang 89. 104. 106. 274. Târan. 56 u. s. w.

सौत्रामणि (von सुत्रामन्) 1) m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 14, 8, 14. 12, 1. — 2) f. ई *eine best. Cerimonie,* davon genannt, *dass* Indra Sutrâman *dabei Verehrung empfängt; die sechste der* कृविर्यज्ञसंस्था Liṭ. 5, 4, 10. fgg. Ind. St. 10, 349. AV. 3, 3, 2. तदेतत्सर्वमाप्नोति यज्ञे सौत्रामणी सुते VS. 19, 21. TS. 5, 6, 3, 4. न सोमो न सुरा यत्सौत्रामणी TBr. 1, 8, 5, 4. Çat. Br. 5, 5, 4, 13. 12, 7, 1, 14. 3, 4. 8, 1, 2. Kāty. Çr. 4, 5, 14. Verz. d. Oxf. H. 30, *b*, 3. 266, *b*, 38. fg. Bhāg. P. 10, 23, 3.

सौत्रामणि 1) = सौत्रामणी MBh. 9, 2390. 13, 5381. — 2) Titel eines Werkes Hall 192.

सौत्रामणिक adj. *bei der* Sautrâmaṇi *befindlich:* यूप Çat. Br. 12, 9, 3, 16.

सौत्रिक (von सूत्र) 1) m. *Weber* Prâyaçcittenḍ. 23, *a*, 4. — 2) n. *Gewebe:* कार्पास° Jiṭ. 2, 179. — Vgl. धाविक°.

सौत्वन m. patron. von सुत्वन् Schol. zu P. 6, 4, 167. 170.

सौदत्त adj. von सुदत्त gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.

सौदत्तेय m. patron. von सुदत्त gaṇa शुभ्रादि zu P. 4, 1, 123.

सौदत्त adj. von सुदत्त gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.

सौदत्ति (von सुदत्त) m. patron.; pl. Pañcav. Br. 14, 3, 12.

सौदत्तेय m. desgl. gaṇa शुभ्रादि zu P. 4, 1, 123.

सौदर्य (von सोदर oder सोदर्य) 1) adj. *geschwisterlich:* °त्वेक् Çik. 53, 10, v. l. — 2) n. *geschwisterliches Verhältniss* Bhāg. P. 4, 4, 8. — Daçak. 75, 18. 76, 1 fehlerhaft für सौदर्य.

सौदर्शन (von सुदर्शन) m. N. pr. eines Dorfes der Bâhika unter den Uçînara; davon adj. सौदर्शनिक (f. आ und ई) und सौदर्शनीय Schol. zu P. 4, 2, 118.

सौदामनी f. = सुदामाद्रिपोकदृक् P. 4, 3, 112, Schol. 1) *Blitz* AK. 1, 1, 2, 11. H. 1105. an. 4, 205. Med. n. 226. Halāy. 1, 60. MBh. 1, 6557. 3, 10088. 14, 269. Harīv. 8346. R. 3, 58, 19. 21. 6, 80, 24. Mṛicch. 15, 1. Bṛ. 3, 12. Megh. 38. Spr. (II) 785. 4633. Kathās. 116, 33. Daçak. 91, 10. Verz. d. Oxf. H. 260, *b*, 1 v. u. häufig ist die Verbindung विद्युत्सौदामनी यथा am Ende eines Çloka, z. B. MBh. 3, 2083. 8561. R. ed. Bomb. 3, 52, 14. 7, 32, 36. Bhāg. P. 1, 6, 26. 3, 8, 8. 10, 49, 27. nach H. an. und Med. auch *eine bes. Art von Blitz.* — 2) N. pr. *a*) verschiedener Personen Milavik. 144, 2. fgg. eine Jakshiṇî Kathās. 73, 27. 31. eine Tochter des Gandharva Hâhâ 45, 330. eine Apsaras H. an. Med. — *b*) einer Gegend Âǵaja im ÇKDa. — *c*) Titel eines Commentars zum Meghadûta Mack. ed. Sr. v. — Häufig (aber nur ganz ausnahmsweise in den Bomb. Ausgg.) ungenau सौदामिनी geschrieben.

सौदामिनी f. s. सौदामनी.

सौदामेय m. patron. von सुदामन् gaṇa शुभ्रादि zu P. 4, 1, 123; vgl. 6, 4, 144.

सौदाम्नी f. = सौदामनी *Blitz* Taik. 1, 1, 34.

सौदायिक (von 1. सुदाय) adj. *als Hochzeitsgeschenk erhalten:* धन Dâyabh. 123, 14. fgg. Verz. d. Oxf. H. 273, *b*, 26.

सौदास (von सुदास् und सुदास) m. patron., insbes. des Kalmâshapâda Verz. d. B. H. No. 325. MBh. 1, 4736. 6774. 3, 12817. 12, 1792. 13, 326. 3732. fgg. 14, 1651. fgg. Harīv. 816. R. 2, 110, 29. 7, 63, 10. fgg. VP. 4, 4, 19. fgg. 19, 18. Bhāg. P. 9, 9, 19. fgg. Verz. d. Oxf. H. 49, *b*, 35. Rāǵa-Tar. 4, 625. pl. TS. 7, 4, 8, 1. Çâṅkh. Br. 4, 8. Vgl. Muir, ST. 1, 113. fgg.

सौदासि m. desgl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 25, wo wohl आदित्यवर्णसौदासी उभौ zu lesen ist.

सौदेव (von सुदेव) m. patron. des Divodâsa MBh. 13, 1934.

सौद्युम्नि (von सुद्युम्न) m. patron. des Bharata Dauḥshanti Çat. Br. 13, 5, 4, 12. des Juvanâçva MBh. 3, 10432.

सौध (von 2. सुधा) 1) adj. *a*) *mit stucco versehen:* °प्राकारसंवृत R. 2, 80, 19 (87, 22 Gorr.). = सौधसदृश *palastähnlich* Comm. in der ed. Bomb.

— *b) von der Euphorbia antiquorum kommend:* पयस् Sucr. 1,167,21. °रस (?) Paṇḍar. 3,8,13. — 2) m. *Kalkspath* Rāǵan. 13,136. — 3) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. *ein mit stucco überzogenes Haus, das Haus eines vornehmen Mannes, Palast* AK. 2,2,9. H. 992. Hall. 2,139. MBh. 1,7575. 3,14004. Harıv. 6347. Ragu. 7,5. 13,40. 19,2. Milav. 33 (n.). Çic. 1,25. 12,52. Spr. (II) 5776 (n.). Kathās. 18,10. 27,11. Rāǵa-Tar. 1,298. 2,119. 3,359. सौधाग्र 1,346. Kathās. 23,78. °मूर्धन् Prab. 26,8. °शिखर 79,12. °मौलि Verz. d. Oxf. H. 130,b,35. सौधोत्सङ्ग Megh. 28. Spr. (II) 7263. Paṇḍat. 128,8. °तल Ragu. 8,92. — 4) n. *Silber* Rāǵan. im ÇKDa. सौध und सौध्य unsere Hdschrr. 13,15.

सौधकार m. *ein Arbeiter in stucco* MBh. 1,5004.

सौधन्य adj. von Sudhanan *herrührend* Verz. d. Oxf. H. 266,b,28.

सौधन्वन m. *Sohn des* Sudhanvan, pl. die Ṛbhu RV. 1,110,2. 4. 161,2. 3,60,1. 2. 3. 4,35,1. 2. AV. 5,47,2. TS. 3,1,9,2.

सौधर्म gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41 (f. ई). nach dem Schol. zu H. 93 adj. von सुधर्मा = देवसभा. m. N. eines Himmels bei den Ǵaina Wilson, Sel. Works 1,291. 320. °जा: (= सौधर्मे कल्पे जाता: Comm.) Bez. einer Klasse von Göttern bei den Ǵaina H. 93.

सौधर्मेन्द्र m. N. pr. eines Ǵaina-Heiligen Çatr. 1,59. 224. 269.

सौधर्म्य (von 2. सुधर्म oder सुधर्मन्) n. *Rechtlichkeit* Manin. 503.

सौधातकि m. patron. von सुधातृ P. 4,1,97. gaṇa क्रौडादि zu 80. Vop. 7,1. 8.

सौधातकी f. zu सौधातकि gaṇa क्रौडादि zu P. 4,1,80.

सौधामित्रिक adj. (f. या und ई) von सुधामित्र gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

सौधार m. *one of the fourteen parts of a drama* Wilson nach Çarmishṭhak.

सौधाल m. *a temple of* Çiva, *or in the form of* Îçâna Wilson nach Çarmishṭhak.

सौधालय (सौध + या°) m. = सौध 3) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 36.

सौधावति m. patron. von सुधावत् gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96.

सौधृतेय m. patron. von सुधृति Bhâg. P. 9,2,29.

सौधोतकि wohl fehlerhaft für सौधातकि Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 58,3 v. u.

सौन (von सूना) 1) m. *Schlächter:* °धर्म्य MBh. 5,715. °पाला इवावय: Bhâg. P. 10,38,41. — 2) n. *frisch geschlachtetes Fleisch* M. 5,13. Jâǵ. 1,175.

सौनन्द (von सुनन्द, °न्दा) 1) n. N. pr. einer mythischen Keule Harıv. 5035. 5562. Mâtsy. P. 116,23. 24. 64. des Baladeva H. 225. — 2) f. या N. pr. der Gattin des Vatsapri Mâtsy. P. 116,8.

सौनन्दिन् adj. *mit der Keule* Saunanda *bewaffnet;* m. ein N. Baladeva's Tara. 1,1,25. Gaṇiṅ. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,41.

सौनव्य m. patron. von सूनु gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

सौनव्यायनी f. zu सौनव्य gaṇa लोहितादि zu P. 4,1,18.

सौनहोत्रि m. patron. Harıv. 1534 ungenaue Schreibart für सौ°.

सौनाग (von सुनाग) m. pl. N. pr. einer grammatischen Schule Pat. zu P. 2,2,18. 3,2,56. 4,1,74. 87. 3,155. 5,1,98. 3,44. Kâç. zu P. 7,2,17.

सौनामि m. patron. von सुनामन् gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96; vgl. 5,4,144.

सौनिक (von सूना) m. *Schlächter* Hall. 2,440. M. 4,86. R. 2,48,25. Varâh. Bṛ. S. 51,5, v. l. Kathās. 71,73. fgg. Rāǵa-Tar. 3,6. Bhâg. P. 5,26,31. 10,57,6. 77,22.

सौनेत्र adj. von सुनेत्र gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

सौन्दर्य (von सुन्दर) n. 1) *Schönheit, Anmuth, Pracht* Kumâras. 1,43. 5,41. Milatîm. 155,17. Spr. (II) 1592. 5468. 6279. Kathās. 4,7. 27,78. 28,3. धरा °हारिणी 40,44. 43,178. 45,254. 50,183. 56,329. Rāǵa-Tar. 5,148 (am Ende eines adj. comp.). Kâmâṇ. 30. Bhâg. P. 4,22,61. Prab. 70,11. Verz. d. Oxf. H. 199,a,12. Schol. zu Kap. 1,1. सुराणा: Prab. 60. 4. *eine best. rhetorische Figur* Verz. d. Oxf. H. 206,b, No. 487. — 2) *edles Benehmen, Edelmuth:* भ्रातृपुत्र R. 4,21,4. सौहार्द od. Bomb.

सौन्दर्यलहरी f. = आनन्द° Verz. d. Oxf. H. 108,a, No. 168. Wilson, Sel. Works 1,200 (fälschlich सौन्दर्या°). °स्तोत्र Verz. d. B. H. No. 1340. °व्याख्या Mack. Coll. 1,106.

सौप adj. *über die Casusendungen* (सुप्) *handelnd:* सन्ध P. 4,3,66, Schol.

सौपथि m. patron. von सुपथ Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 55,32.

सौपन्थ्य adj. zu सुपथ् gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

सौपर्ण (von सुपर्ण) 1) adj. (f. ई) *dem Falken u. s. w. gehörig, — ähnlich, von ihm kommend, ihn betreffend u. s. w.:* चक्षुस् *Falkenauge* AV. 16,2,5. TBr. 2,5,8,4. रूप MBh. 6,4045. घण्ट 8,2592. Ragu. 16,30. माया Harıv. 9391. घोषस् Uttarar. 100,4 (132,9). पर्वन् *handelnd über* MBh. 1, Adhj. 20. fgg. Ait. Br. 3,25 (सौपर्ण्य v. l.). छन्दांसि Kâṭy. 22,10. पुराण Bhâg. P. 12,13,8. — 2) f. ई *eine best. Schlingpflanze,* = पातालगरुडी Rāǵan. 3,90. — 3) n. *a) Smaragd.* — *b) trockner Ingwer* Rāǵan. 6,26. — *c)* (sc. सूक्त) *das* Suparṇa *Lied* (nach Âçv. Gṛhy. 3,12,11 mit den Worten प्रधारयन्तु (wohl प्र धारा यन्तु) मधुनो घृतस्य beginnend) Ait. Br. 6,25. 8,10. Paṇḍav. Br. 14,3,9. 9,20. fg. Liṭ. 6. 11,4. N. eines Sâman Ind. St. 3,245,b. — Vgl. अति°, ऐड°. त्रि°, विलम्ब°, स्वार°.

सौपर्णव्रत n. *eine best. asketische Begehung* Çiñn. Gṛhy. 2,10.

सौपर्णीकाश्यप adj. von Suparṇî *und* Kadrû *handelnd* Çat. Br. 3. 2,4,1. 6,8,7.

सौपर्णेय m. metron. von सुपर्णा oder °र्णी Schol. zu P. 4,1,113. 120. TS. 5,1,6,1. Bez. Garuḍa's H. 231. f. ई P. 4,1,15, Schol.

सौपर्ण्य 1) adj. = सौपर्ण Ait. Br. 3,25, v. l. — 2) n. *die Natur des Falken u. s. w.;* davon °वत् adj. *Falkennatur besitzend:* चक्षुस् Sucr. 2,159,18.

सौपर्य adj. von सुपरि gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

सौपर्व adj. von सुपर्वन् P. 5,4,144, Vârtt. 1.

सौपस्तम्बि m. patron. Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 55,34.

सौपाक m. *eine best. Mischlingskaste* MBh. 13,2339 (सौपाकक्ष्य° mit der ed. Bomb. zu lesen). पाण्डु° 2338. — Vgl. सोपाक.

सौपातव m. patron.; pl. Saṃhit. K. 183,b,11.

सौपामायनि m. patron. von सुपामन् gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154; vgl. 5,4,144.

सौपिङ्क (von सूप) adj. *mit Brühe übergossen* P. 4,4,26, Schol.

सौपिङ्गल adj. von सुपिङ्गल gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

सौपिष्ट m. patron. von सुपिष्ट gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

सौपिष्टि m. desgl. Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 55,29.

सौपुष्पि m. patron. von सुपुष्प ebend. 59,2.

सौपूत adj. von सुपूत gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

सौप्तिक (von सुप्त) adj. *während des Schlafes erfolgend:* नरेन्द्रसौप्तिकवधे Mahâbh. 46,24. n. *ein Ueberfall während des Schlafes, ein nächtlicher U.* Taitt. 2,8,59. H. 801. Halâj. 2,297. MBu. 10,140. 175. 202. 299. 543. 16,82. R. 6,8,28. न शक्यं सौप्तिकं कर्तुं रामस्य 9,9. Kâm. Nîtis. 18,64. fg. सौप्तिकं पर्व oder सौप्तिकपर्वन् heisst das 10te Buch im Mahâbhârata MBu. 1,347.

सौप्रज्य m. patron. von सुप्रज्य; davon adj. सौप्रज्यैय P. 2,4,64, Vârtt. 1, Schol.

सौप्रजास्त्व n. = सुप्रजास्त्व *Besitz guter, — zahlreicher Nachkommen* AV. 2,29,3.

सौबल (von सुबल) 1) m. patron. Ait. Br. 6,24. des Çakuni Taitt. 3,3,266 (सौवल gedr.). MBu. 1,206. 2238. 2440. 5653. 5920. 2,2018. 3,1797. 4,646. 1150. 2286. 6,2468. 8,3916. 15,329. Bhâg. P. 3,1,14. 3,13. f. ई *die Tochter* Subala's 1,13,29. MBu. 1,4804. — 2) adj. (f. ई) *dem* Saubala d. i. Çakuni *gehörig:* बल, सेना MBu. 6,2460. 2485.

सौबलक 1) m. = सौबल 1) MBu. 3,1948. — 2) adj. = सौबल 2): भूमा: MBu. 6,2469.

सौबलेय m. = सौबल 1) MBu. 3,14. 6,2471. 8,3916. f. ई 1,4496. 9, 3561. 13,45.

सौबल्य m. pl. N. pr. einer Völkerschaft MBu. 6,347. सौशल्य ed. Bomb.

सौभ n. N. pr. einer mythischen, in der Luft schwebenden Stadt, die von einem Fürsten der Çâlva (Hariçkandra) beherrscht wird; m. (selten) = °पति u. s. w. Taitt. 2,1,19. Hir. 122. MBu. 3,491. 615. सौभस्य वध: 636. fgg. 857. 7,895. द्रुमिलो नाम तेजस्वी सौभस्य पति: Harîv. 4576. शाल्वश्च विजित: संख्ये सौभश्च विनिपातित: (zu lesen सौभं च विनिपातितम्; vgl. MBu. 3,491). 9795. Bhâg. P. 10,76,7. 22. 77,9. 14. 37. 78,13. °द्वारु MBu. 5,1886. °द्वार 4405. °निवासिन: 12,12959. °पति 1,4133. 3,808. 491. 5,6076. 6143. 9135. Bhâg. P. 10,76,17. सौभाधिपति MBu. 3,12590. °राज 5,7018. °राज् Bhâg. P. 10,77,10. °वध MBu. 1,428. °प्रमाथ Harîv. 8395. — Vgl. सौभ.

सौभग (von सुभग) 1) n. nom. abstr. gaṇa उक्षान्नादि zu P. 5,1,129 (vedisch). *a) Glück, Wohlfahrt, Genuss;* pl. *Glücksgüter, Genüsse:* पुरो विश्वा: सौभगा संजिगीवान् RV. 3,15,4. ये ते सुवास: सौभगमासुवन्ति 4, 54,6. 5,28,3. 6,5,2. 13,1. वसूनि, सौ° 8,67,8. धरिष्ट 1,112,25. प्रजावत् 5,82,4. भूरि 7,21,8. मरुत् AV. 4,8,7 u. s. w. वरुत् 14,2,30. RV. 8,11,10. 19,36,12. 116,2. पत्या सौभगमस्त्वस्ये AV. 2,36,1. इदं राष्ट्रं पितृषु सौभगाय 7,35,1. VS. 14,2. MBu. 1,724 (in einer Hymne). — *b) Lieblichkeit, Schönheit, Anmuth* (am Ende eines adj. comp. f. या) Bhâg. P. 1,11,3. 14,21. 16,25. 33. 2,6,4. 3,2,12. 23,39. 4,18,17. 24,49. 5, 19,7. 6,19,24. 10,3,9. 29,40. 48. 11,16,40. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Bṛhaddhloka Bhâg. P. 6,18,7. — Vgl. विश्व°, सु°.

सौभगत्व n. = सौभग 1) *a)* RV. 1,34,5. 94,16. गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम् 10,85,36.

सौभद्र 1) adj. Subhadrâ *betreffend:* संग्राम Schol. zu P. 4,2,56. ग्रन्थ zu 3,87. — 2) m. metron. Abhimanju's Bhâg. 1,6. 18. MBu. 1,489. 1947. 2449. 8025. 6,711. 2363. Harîv. 1828. — 3) n. N. pr. eines Tîrtha MBu. 1,7841.

सौभद्रेय m. 1) = सौभद्र 2) ÇKDa. und Wilson. — 2) *Terminalia Bellerica* Roxb. Çabdak. im ÇKDa.

सौभर 1) adj. (f. ई) *dem* Sobhari *gehörig* RV. Pair. 17,21. — 2) m. patron. Çat. Br. 14,5,5,22. 7,2,22. VS. p. LXVI. धौर: पुत्रो वर्चस्य सौभर: MBu. 3,14164. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,245,b. Pañcav. Br. 3,8,9. 12,12,7. Lâṭy. 3,1,8. 12.

सौभरायण m. patron. von सौभर Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,14.

सौभरि (von सौभरि) m. N. pr. eines Ṛshi VS. p. LIV. Verz. d. B. H. 55,21 (सौनरि die Hdschr.). 113,2 v. u. Verz. d. Oxf. H. 341,b, No. 799. VP. 363. fgg. Bhâg. P. 2,7,45. 3,6,39. 10,17,9. 10. 12,6,56. 12,23.

सौभव m. N. pr. eines Grammatikers Ind. St. 5,139.

सौभागिनेर्य (von सुभगा) f. *der Sohn einer in glücklicher Ehe lebenden Mutter* gaṇa कल्याण्यादि zu P. 4,1,126. 7,3,19. Vop. 7,2. 7. AK. 2, 6,1,24. H. 547.

सौभाग्य (von सुभग) 1) n. P. 7,3,19. Vop. 7,19. = सुभगत्व Med. j. 112. *a) Wohlfahrt;* insbes. *das Beliebtsein bei den Menschen, Popularität, eheliches Glück:* सौभाग्यमस्ये दत्त्वायाधास्तं वि परेतन RV. 10,85,38. VS. 20,9. AV. 14,1,42. Kâç. 76. Jîân. 1,264. MBu. 3,15962. 5,404. 13,353. Harîv. 7011. 7028. fg. 7104. 9037. R. 2,53,15 (17 Gorr.). R. Gorr. 2,6,13. 4,29,24. Mahân. 130,23. Mṛcch. 30. Kumâras. 5,1. 49. Z. d. d. m. G. 27,71. Spr. (II) 112. 1259. 4994. 5097. 6136. 6518. 7030. Varâh. Bṛh. S. 48,86. 52,2. 6. 68,6. 77,35. 81,30. 103,13. 104,61. Bṛh. S. 8,15. 21,4. Kathâs. 29,91. 47,115. Râjat. 3,126. 4,3. 22. 683. 5, 230. 283. 6,164. Sin. D. 145. Verz. d. Oxf. H. 68,*a*, No. 110, Z. 9. fg. 105,*b*,17. 129,*a*,29. 200,*a*,14. Pañcat. 3,11,11. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 18. च° Spr. (II) 2290. पश्य नाकपृष्ठगतस्य सौभाग्यमात्मयशस: *sieh, was dein Ruhm für einen glücklichen Erfolg gehabt hat,* Çiç. 98,9. — *b) das Reizendsein, Schönheit* (von Personen und Sachen) MBu. 3,2081 (सौभाग्येन च mit der ed. Bomb. zu lesen). रूप° 13,206. R. Gorr. 1,25,14. 3,22,13. Suçr. 1,126,20. 127,4. गीताध्ययन° 192,5. प्रज्ञा° 317,1. Ṛt. 6,3. Kumâras. 1,3. 2,53. Râgat. 18,18. Uttarar. 114,10 (155,4). Spr. (II) 5793. 5817. 5998. Kathâs. 12,89. Sinh. D. 313. — *c)* Titel einer Upanishad Ind. St. 3,325. — *d) Moschus* Râgân. 13,53. Kâlakarṇa 5,202. 209. auch *Borax* Râgân. im ÇKDa. सुभग m. unsere Hdschrr. 6,241. — *e) eine best. Pflanze* Sârasvatakalpa im ÇKDa. unter °चिन्तामणि, welches s. v. aber nicht vorkommt. — *f)* Bez. eines astr. Joga (des 4ten im विष्कम्भादि nach ÇKDa.) Med. Kosmolog. im ÇKDa. — 2) adj. *Wohlfahrt u. s. w. verschaffend:* ख्याप्यान R. 7,111,4.

सौभाग्यकाण्ड n. Titel eines *Abschnitts* im AV. Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, No. 168.

सौभाग्यचिन्तामणि m. s. u. सौभाग्य 1) *e*).

सौभाग्यतृतीया f. Bez. *des 3ten Tages in der lichten Hälfte des* Bhâdra ÇKDa. in den Nachträgen.

सौभाग्यव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 58,*a*,41.

सौभाग्यशयनव्रत n. desgl. ebend. 41,a,1. 284,b,1.

सौभाग्यसुन्दरीतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha ebend. 66,b,16.

सौभाग्याष्टकतृतीयाव्रत n. *eine best. Begehung* ebend. 34,a,29. सौभाग्याष्टकव्रततृतीयाव्रत Verz. d. B. H. 134,b nach ders. Aut.

सौभाञ्जन m. = शौभाञ्जन Bharata zu AK. 2,4,2,11 nach ÇKDa.

सौभिक (wohl von सौभ) m. *Zauberer, Gaukler* Hin. 151.

सौभित (von सुभिता) in क्षेम° adj. *Sicherheit und Ueberfluss an Lebensmitteln bringend* Vaitân. Bpn. S. 37,1.

सौभूत adj. von सुभूत gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

सौभेय m. *ein Bewohner von* Saubha Bhâg. P. 10,77,4.

सौभेयक adj. *aus den* Subhoshaṭa *bestehend:* छन्दस् Gop. Br. 5,23.

सौमव n. N. eines Sâman, v. l. für सौभर Ind. St. 3,245,b.

सौमातुर (von सुमातृ) n. *ein gutes brüderliches Verhältniss* gaṇa युवादि zu P. 5,1,130. धातृभिस्ते ऽस्तु सौमातुरम् MBh. 2,2449. कश्चित्कुतूहलाणां सौमातुरमव्युच्छिन्नं भविष्यति 3,355. 5,97. 2738. 5059. 13,556. सौमातुरं पाण्डवैः कृत्वा 3,15132. 14,1545. Harîv. 7713. R. 1,1,25. R. Gorr. 2,7,23. 6,104,40. 7,11,13. 13,13. Bhâg. 10,82. 16,1. Râjat. 8,1470. °स्नेह Pañcat. ed. orn. 22,1.

सौमाकि m. patron. von सौमक MBh. 1,5192. 7198. 2,126. 5,4779. 7,3049.

सौमक्रतव (von सौमक्रतु) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,245,b.

सौमङ्गल adj. von सुमङ्गल gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

सौमङ्गल्य (von सुमङ्गल) n. 1) *Wohlfahrt, Wohlergehen:* °गिरो विप्राः Bhâg. P. 10,5,8. — 2) *ein Glück bringender Gegenstand, Amulet* u. s. w. Bhâg. P. 9,11,4. = ग्रहभूषणादिक Comm.

सौमतायनि gaṇa श्वरीकृषादि zu P. 4,2,80. m. patron. von सुमत gaṇa नडादि zu 1,99.

सौमतायनक adj. von सौमतायन gaṇa श्वरीकृषादि zu P. 4,2,80.

सौमदत्ति m. patron. von सोमदत्त Bhag. 1,8. MBh. 1,536 (सो° ed. Calc.). 2,1713. 5,791. 4171. 6,1704. 5187. 7,1116. 11,686. Verz. d. Oxf. H. 55,b,42.

सौमदायन m. patron. von सुमद; pl. Saṅgr. K. 184,b,8. vielleicht ist aber auch सौमतायन gemeint.

सौमनस (von सुमनस्) 1) m. *a) das Wohlgemuthsein, frohe Stimmung* VS. 3,42. 18,8. AV. 3,30,7. — *b)* Bez. *des achten Tages im* Karmamâsa Ind. St. 10,296. — *c)* N. pr. α) des Weltelephanten im Westen R. 1,41,20 (42,19 Gorr.). — β) eines Berges Harîv. 12382. R. 4,40,59. 2) f. आ *a)* = ज्ञातोपत्ती Râjân. im ÇKDa. सौमनसायनी unsere Hdschrr. — *b)* N. pr. eines Flusses R. 4,41,63. — 3) f. ई Bez. *der fünften Nacht im* Karmamâsa Ind. St. 10,296. — 4) n. *a) Wohlgesinntheit, Wohlwollen, Gunst* RV. 3,1,21. यज्ञो मरुद्भ्यः सौमनसाय देवान् 1,76,2. 5,42,11. भद्रं 6,47,18. 10,14,6. — *b) das Wohlgemuthsein, frohe Stimmung* RV. 1,92,6. इन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् 108,4. 6,44,16. 9,97,28. Vâitân. 11,7. AV. 13,1,19. 14,1,42. 19,35,2. 4. — *c) Muskatnuss* H. ç. 130; vgl. सौमनसायनी. — *d)* N. pr. eines Berggipfels R. ed. Bomb. 4,40,57.

सौमनसायन (von सुमनस्) 1) m. patron. gaṇa श्वश्वादि zu P. 4,1,110. — 2) f. ई *Muskatblüthe* Râjân. 12,78.

सौमनस्य (wie eben) 1) adj. *Frohsinn —, gute Laune verschaffend* Bhâg. P. 4,12,44. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Jaṅghâbâhu Bhâg. P. 5,20,9. — 3) n. *a) Frohsinn, gute Laune* Jogân. 2,41. Suçr. 1,243, 10. 372,11. 2,136,3. Bhag. 17,16. Kathâs. 50,113. 56,237. Bhâg. P. 11,26,18. Lalit. ed. Calc. 147,14. 279,3. Saddh. P. 4,14,a. — *b) richtiges Verständniss* Mallin. zu Çiç. 19,88 (°सौमनस्यं zu lesen). — *c) Blumenstrauss* Bhâg. P. 3,8,24. 18,41,29. — *d)* N. pr. des von Saumanasja beherrschten Varsha in Plakshadvipa Bhâg. P. 5,20,3.

सौमनस्यवत् (von सौमनस्य) adj. *froh, guter Laune* Bhag. 15,14.

सौमनस्यायनी (wie eben) f. *eine Knospe von Jasminum grandiflorum* Trik. 2,4,24.

सौमना (von सुमनस्) f. *Blüthe* Suçr. 2,69,1. könnte auch masc. sein.

सौमनायन s. सुमनायन.

सौमन्त adj. von Sumantu *gelehrt* Mit. III, 71,a,3 v. u.

सौमन्त्रिण (von सुमन्त्रिन्) n. *das Versehensein mit einem guten Minister* Spr. (II) 542, v. l. (so vermuthen wir st. सौमन्त्रण).

सौमयोष n. N. eines Sâman Ind. St. 3,245,b.

सौमयोषिन् m. N. pr. eines Ṛshi ebend.

सौममित्रिक adj. (f. या und ई) gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

सौमराज्य m. patron. von सौमराजक Âçv. Çr. 12,11,1.

सौमरुद्भाषण s. u. सोम 1) A) α).

सौमात्र m. metron. von 1. सुमातृ und patron. von 3. सुमातृ P. 4,1, 115, Schol.

सौमार्य m. patron. von सोमार्य Çat. Br. 13,5,2,2.

सौमार्यौद्ध adj. = सोमार्यौद्ध VS. 24,1. Çat. Br. 13,2,2,6. पशु Pañcat. Bp. 23,16,1. Kâtj. Çr. 5,1,12. Vgl. gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61, wo aber nicht bemerkt wird, dass auch das zweite Wort Vṛddhi annehme.

सौमायन (von सोम) gaṇa श्वरीकृषादि zu P. 4,2,80. m. patron. Buddha's Pañcav. Bp. 24,18,6.

सौमायनक adj. von सौमायन gaṇa श्वरीकृषादि zu P. 4,2,80.

सौमारौद्र adj. = सोमारौद्र Kâtj. 11,5,1 in Ind. St. 3,464. Çat. Br. 5, 3,2,1. Kâtj. Çr. 15,3,36.

सौमिक adj. (f. ई) *zum* Soma —, *zum* Soma-*Opfer gehörig* Âçv. Çr. 2, 15,3. Çâṅkh. Çr. 14,10,22. Kâtj. Çr. 15,9,22. मख M. 4,26. वेदि TS. Comm. 1,409,5. f. ई = दीक्षणीयेष्टि: H. 823. — Vgl. प्राक्°.

सौमित्र (von सुमित्र und °त्रा) 1) m. metron. Lakshmaṇa's Çârdar. im ÇKDa. Z. d. d. m. G. 27,83. — 2) n. *a) Freundschaft:* °वर्धन Kâtj. 36,15. 37,9. — *b)* N. verschiedener Sâman (*das des* Sumitra) Ind. St. 3,245,b. Pañcav. Bp. 13,6,8. 14,9,13. Lâtj. 8,11,4.

सौमित्रि gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138. m. metron. von सुमित्रा gaṇa वाह्वादि zu P. 4,1,96. Bez. Lakshmaṇa's Trik. 2,8,5. H. 704. MBh. 3,16071. Harîv. 3084. fgg. R. 1,2,36. 19,8 (du. Bez. Lakshmaṇa's und Çatrughna's). 45,4. 2,31,6. R. Gorr. 2,18,15. 3,49,11 u. s. w. Bhâg. 12,14. 13,33. Weber, Râmây. Up. 337. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 507, Çl. 26. — N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,b,11.

सौमित्रीय adj. von सौमित्रि gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138.

सौमिल m. N. pr. eines Dichters Hall in der Einl. zu Vâsavad. 15. 29. सौमिल्ल Mâlav. 3,12. — Vgl. सोमिल 1).

सौमिलिक *ein best. Stoff* Vjutp. 212.

सौमिवि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,*a*,10. wohl fehlerhaft.

सौमिमि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d B. H. 58,24. vielleicht fehlerhaft für सौमित्रि.

सौमी 1) adj. f. zu सौम्य; s. das. — 2) f. *Mondschein* MBh. 15,668.

सौमुख्य (von सुमुख) n. *Frohsinn, Heiterkeit* R. 6,89,14.

सौमुचि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,*a*,9.

सौमेध (von सुमेध oder °मे) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,246,*a*. Pañkav. Br. 9,2,20. Lâṭj. 8,11,2. 7,1,1.

सौमेधिक (wie eben) m. = सिद्ध Hit. 161.

सौमेन्द्र adj. *dem* Soma *und* Indra *gehörig* P. 7,3,22. Kâṭ. 11,1.

सौमेरव 1) adj. (f. ई) *dem* Sumeru *gehörig:* त्रिकुञ्जशोभा Çiç. 4,31. — 2) n. *a) die Umgegend des* Sumeru Vaiç. bei Mallin. zu Çiç. 4,31. — *b) Gold* Râǵân. 13,10.

सौमेरुक n *Gold* Râǵân. im ÇKDr. ohne Zweifel verlesen für सौमेरव.

सौम्य 1) adj. (f. या und सौमी) P. 4,2,30. *a) dem* Soma *gehörig, ihm geweiht, von ihm handelnd, damit verbunden, dessen Eigenschaften habend* AK. 3,4,24,163. H. an. 2,389. Mnu. j. 64. TBr. 1,8,8,2. 2,2,9, 4. 3,11,9,1. तृच Ait. Br. 1,13. 7,9. याज्या 3,33. सूनवशा TBr. 2,7,4,1. Çat. Br. 7,3,1,15. Kräuter 2,4,27. चरु 2,5,1,9. आप: Ait. Br. 1,7. आर्ति TS. 6,4,4,4. VS. 19,23. सौम्यो वै देवतया पुरुष: TS. 2,1,4,3. 6, 1,1,3. ग्रह Çat. Br. 1,2,5,9. सोमेष्टि: Schol. zu P. 6,4,151. कविस्, सव् zu 4,2,20. तेजस् Harîv. 4338. मन्त्र MBh. 3,11900. 6,3501. 7,9466. 9, 2634. मत्स्य 10,304. Vaṁiç. Bṛh. S. 24,8. चरु 46,36. 5,20. गाव: MBh. 13, 3675. Mârk. P. 32,34. पुरी Bhâg. P. 5,21,7. 11. Verz. d. Oxf. H. 104, *b*,34. 266,*b*,35. — *b)* आग्नेय *heiss trocken* und सौम्य *kühl wässrig* bezeichnen in der Naturlehre einen alle Stoffe durchdringenden Gegensatz, der schon in der alten Literatur seine Wurzel hat: vgl. Ait. Br. 3,22. पक्कुम्बं तदाग्नेयं पदार्द्रं तत्सौम्यम् Çat. Br. 1,6,3,23. 3,2,3,10. Soṁa. 1,4,3. 31,12. 43,12. 135,14. fgg. 134,3. 180,9. der Vindhja ist आग्नेय, der Himavant सौम्य Çâṅkh. Sâṁh. 1,1,28. Harîv. 2181. Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,13. 14. — *c) nördlich:* दिश् Harîv. 14106. Verz. d. Oxf. 17,*b*, No. 63, Çl. 1. Vaṁiç. Bṛh. S. 9,9. 11,21. 24,24. 34,30. 60,1. 95,33. सौम्येन 87,27. सौम्येशान्यो: 11,17. — *d) (wie der Mond) durch ein mildes Wesen wohlthuend auf die Sinne oder das Gemüth einwirkend, ansprechend:* = सुन्दर, मनोज्ञ AK. H. 1445. H. an. Med. Hall. 4,4. Personen: सोमभूतस्तु सौम्यानामग्रभूतो ऽग्निवर्चसाम् (so die neuere Ausg.) Harîv. 2175. MBh. 2,145. R. 1,72,24. R. Gorr. 1,1,19. 4,17,23. 39,5. 7,37,3. Raṁh. 12,36. Spr. (II) 6457 (Conj.). Kathâs. 51,13. शीलत: Mârk. P. 69,31. Bhâg. P. 4,21,15. Pañkat. 3,11,18. 15,7. वपुस् Bhag. 11,30. *fg.* वक्त्र, मधर, रूप u. s. w. MBh. 13,889. *fg.* R. 3,55,3. Vaṁiç. Bṛh. S. 68,34. Kathâs. 99,38. 123,24. Mârk. P. 34,77. 109,73. दृष्टि Ind. St. 8,320. चक्षुस् R. 7,97,23. Çiç. 156. Rodc MBh. 13,239. R. 1, 72,14. 3,20,2. 5,63,24. प्रकाशित 27,26. व्यालमृगा: MBh. 1,2865. गो 13,7638 (सौम्य ed. Calc.). R. 4,37,28. 6,6,23. गिरि Harîv. 12413. तोय R. 1,2,7. विषय 9,61. आश्रम 63,9. नदी 2,91,31. धनिन्त Pañkat. 169,6. मृदुसौम्यशीलिन् R. 5,89,33. °नाभी M. 3,10. Prab. 4,10. Bhâg. P. 4, 22, 55. परमं सौम्यमित्युक्तम् MBh. 12, 1036. ग्र° VP. 1,7,13. सदृष्टि: स्यात्सौम्ये ऽहिण Ak. 1,1,2,37. H. 370. Hall. 4,57. °स्वर AK. 3,1, 37. H. 349. °वाच् Mârk. P. 99,2. — *e)* सौम्य *in der Anrede so v. a. mein Lieber, mein Theurer* (auch höher Stehende so angeredet) Çat. Br. 14,6,1,3. 9,13. Kâṁd. Up. 4,4,4. fgg. Mund. Up. 2,2,3. M. 2,125. 11, 195. MBh. 3,15584. 16633. R. 1,58,18. 62,5. 65,19. 2,23,42. 31,24 35,19. 46,11. 52,3. 53,14. 56,15. 4,39,3 (vom Folgenden zu trennen). 4. Mṛcch. 80. 84. 98. 112. Raṁh. 14,44. 59. Spr. (II) 6837. 7272 (vom Folgenden zu trennen). Ll. (III) 88,7. Daçak. 67,11. Bhâg. P. 1,1,8. 18,11. 3,1,30. 7,6,30. Siṁh. D. 172,10. — *f) Glück bringend, — verheissend faustus;* von Planeten u. s. w.; = धनुष H. an. Med. — Vaṁiç. Bṛh. S. 3,8. 28,1. 40,3. 9. 13. 41,12. 47,17. 58,49. 60,20. 86,16. Jogaçâtrâ 1,15. Mârk. P. 100,45. मृगा: R. Gorr. 1,76,14. 3,78,12. Vögel Çâṅkh. Sâṁh. 1,3,8. 9. चन्द्रमाश्च सनक्षत्र: सौम्यं (adv.) चरति योगत: Harîv. 2881. ध° R. 1,74,10 (76,12 Gorr.). wie मृदु Bez. der Nakshatra Mṛgaçiras, Kîtrâ, Anurâdhâ und Revatî Vaṁiç. Bṛh. S. 33,19. — 2) m. *a)* pl. *die Leute des* Soma Çâṅkh. Çr. 2,14. — *b)* pl. *eine best. Klasse von Manen* M. 3,199. VP. 239. Bhâg. P. 4,1,62. — *c)* patron.: Budha's RV. Anukr. VS. LIV. als *Planet Mercur* AK. 1,1,2,27. H. 117. H. an. Med. Hall. 1,46. Vaṁiç. Bṛh. S. 5,60. 7,19. 9,43. 17,23. 26. 96,15. Bṛh. 1,6. Lagadh. 2,1. 2. 11. Kâlakakṣa 1,43. — *d) Anhänger, Verehrer* Bhâg. P. 2,4,24. *ein Brahmane* Çaṁdam. im ÇKDr. — *e) Ficus glomerata* Râǵân. 11,130. — *f)* N. pr. eines Dvîpa in Bhârata Çaṁdam. im ÇKDr. VP. 2,3,7. Mârk. P. 57,6. neutr. Golâdh. Bhuvanak. 41. — *g)* Bez. *des 43ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Vaṁiç. Bṛh. S. 8,43. Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,3. m. oder n. *das Jahr* Mṛgaçiras, *das 2te Jahr im 12jährigen Umlauf des Jupiters,* Vaṁiç. Bṛh. S. 8,4. *des 7ten* Juga Weber, Ġjot. 24. — *h) eine best. Busse* (auch n.) Jâǵ. 3,322. Verz. d. Oxf. H. 266,*a*,16. 283,*a*,13. Gârudha-P. 105 im ÇKDr. — 3) f. या *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: = गुडूचा Râǵân. 3,101. = शालिपर्णी 4,17. *eine der* Somavallî *nächst verwandte Pflanze* 3,89. = महाज्योतिष्मती 72. *Ruta graveolens* 5,61. *eine Art Süssholz* 6,149. *Curcuma Zedoaria* 6,230. = मल्लिका 10,82. — *b) Perle* Râǵân. 13,134. — *c) das* Nakshatra Mṛgaçiras: सौम्येन्दो (d. i. सौम्य इन्दो) प्रत्युपस्थिते Harîv. 4338. Mârk. P. 58,10. Bez. von *fünf im Haupte des* Mṛgaçiras *stehenden Sternen* H. an. — *d) ein best.* Ârjâ-*Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2,153 (4,1). Ind. St. 8, 319. fg. — *e)* N. pr. einer Gottheit Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,27. — 4) n. *a) Milde* MBh. 1,3682. Spr. (II) 6368. — *b) das unter dem Monde stehende* Nakshatra Mṛgaçiras Maitrâjan. 6,14. Harîv. 7915 (*Mittwoch nach* Nîlak.). Sûrjas. 8,16. Vaṁiç. Bṛh. S. 5,70. 9,26. 11,58. Mârk. P. 33,9. सौम्यर्क H. an. 2,42. = *c)* Bez. *des linken Auges* H. 576. — *d)* Bez. *der Mitte der Hand* H. ç. 152. — *e)* Bez. *des 15ten* Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912. — *f) Silber* H. ç. 161.

सौम्यगन्धा *f. eine best. Blume,* = शतपत्री Râǵân. 10,80. °गान्धी ÇKDr. nach dem Aut.

सौम्यगिरि m. N. pr. eines *Berges* Harîv. 12413; vgl. सोमगिरि 1).

सौम्यगोल m. *die nördliche Hemisphäre* Ganit. Tripraçn. 31. Golâdh. Tripraçn. 3.

सोम्यब्रह्मातर् m. N. pr. eines Mannes Hall 112.

सोम्यता f. nom. abstr. 1) zu सोम्य 1) b): अपां स्रोक्सोम्यता MBu. 12, 9134. — 2) zu सोम्य 1) d) *Milde:* einer Person MBu. 3, 1823. R. 1, 3, 9 (4 Gorr.). 7, 59, 8, 15. सोमस्य MBu. 13, 1637. स्वर° Mârk. P. 39, 62 (°सोम्यता gedr.).

सोम्यत्व (von सोम्य) n. *Milde:* einer Person Bhâg. 17, 16. R. Gorr. 2, 16, 44. विमुच्य रोषं रिपुनिग्रहे तदा प्रशीव सोम्यत्वमुपागमत्क्षनैः 6, 95, 65. 7, 37, 7.

सोम्यदर्शन 1) adj. *einen wohlthätigen Eindruck auf die Augen machend* M. 2, 47. R. 2, 41, 15. 3, 52, 51. — 2) f. आ N. pr. einer Fürstin Kathâs. 120, 13.

सोम्यधातु m. *der somische Grundstoff* d. i. *Phlegma* (कफ) Suçr. 2, 154, 7.

सौम्यन्तक adj. von सुयज्ञ gaṇa यरीकृणादि zu P. 4, 2, 80.

सोम्यवस n. 1) (von सुयवस) *eine grasreiche Zeit* Çiñkn. Ba. 11, 5. — 2) (wohl von सोम्यवसि) N. eines Sâman Ind. St. 3, 246, *a*.

सोम्यवसि m. patron. von सुयवस Ait. Ba. 7, 15. fg. Çiñkn. Ça. 15, 19, 29.

सोम्यामि m. patron. Çiñkn. Gaṇ. 4, 10. AV. Paric. in Verz. d. B. H. 92, 11. v. l. für सौत्रामि des Âçv.

सोम्यामुन m. patron. von सुयामुन; pl. Saṁsk. K. 186, *a*, 9.

1. सोर (von सुरा) adj. *aus Branntwein bestehend* u. s. w. Kâtj. Ça. 14, 2, 4. 3, 20. 19, 2, 6. Vait. 30.

2. सौर (von सूर्य) 1) adj. (f. ई) *zur Sonne* oder *zum Sonnengott in Beziehung stehend, ihm gehörend, daher kommend* u. s. w., *solaris:* अग्नि Maitrâjan. 6, 2. हार 80. वायु Bhâdd. in Ind. St. 1, 119. धामन् Jiñ. 3, 122. तेजस् MBu. 12, 12569. Z. d. d. m. G. 27, 34. प्रभा Kathâs. 34, 101. Bhâg. P. 9, 15, 40. मातर् MBu. 9, 2656. वपुस् Hariv. 15591. रथ Bhâg. P. 5, 21, 12. Verz. d. Oxf. H. 48, *b*, 12. नाडी Ragh. 10, 59. छ Pañkat. III, 187. यन्त्र R. Gorr. 1, 30, 16 (शौर Schl. 29, 18). वंश 22, 2. गण Bhâg. P. 12, 11, 27. दिक्ट Verz. d. Oxf. H. 73, *b*, 3. स्पर्शा: 104, 34. मास, दिवस, मान (auch n. mit Ergänzung dieses Wortes) u. s. w. Weber, Gjot. 24. 35. 92. fg. 107. Nax. 2, 281. 358. Sûrjas. 1, 13. 14, 3. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 4. 7. Goladhj. Madhjag. 10. fgg. 17. Ganit. Kilâm. 19, Comm. मक्षा: M. 5, 86. Verz. d. Oxf. H. 279, *b*, 46. धर्मा: 30, *b*, 17. सूक्त 398, *a*, No. 144. वेद MBu. 3, 10312. पुराण, उपपुराण Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 9. 65, *b*, 6. 13. 80, *a*, 6. 279, *b*, 45. Ind. St. 1, 18, 19. Burnouf, Bhâg. P. I, LXXXIII. संहिता Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 11. गणित Verz. d. B. H. No. 939. सिद्धान्त Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 1. Verz. d. Cambr. H. 43. — 2) m. *a*) *Verehrer* —, *Anbeter der Sonne* MBu. 7, 2926. Verz. d. Oxf. H. 16, *a*, N. 1. 248, *b*, 10. 238, *b*, 11. Paṭ. 86, 6. Colebr. Misc. Ess. 1, 196. 199. Wilson, Sel. Works 1, 19. 28. 33. 266. — *b*) *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* H. 120, Schol. Varâh. Bṛh. S. 5, 68. 10, 4. 17, 14. 19. 69, 3. 103, 7. 104, 45. Bṛh. 2, 5. Lagadh. 2, 2. 11. als Verfasser von Gebeten bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101, *a*, 28. — *c*) N. des 20ten Kalpa; s. u. कल्प 2) *d*). — *d*) *Koriander* Dhanv. 2, 22. Bhâvapr. 5. — 3) f. ई *a*) patron. der Tapati, der Mutter Kuru's, MBu. 1, 3788; st. dessen वैवस्वती 3791. — *b*) *eine best. Pflanze,* = आदित्यभक्ता Râjân. 4, 182. — 4) n. *a*) *eine Sammlung von Gebeten an die Sonne* Verz. d. Oxf. H. 298, *b*, No. 276. Titel eines best. Werkes (wohl so v. a. सौरं पुराणम्) Comm. zu Kap. 1, 19. वृक्षसौरम् N. eines Sâman Ind. St. 3, 238, *b*. — Vgl. सौर्य.

सौरक n. N. pr. einer von Surendra gegründeten Stadt Râjat. Tar. 1, 98.

सौरत्र m. = सौर *Koriander* Râjân. im ÇKDr. सौरभ unsere Hdschrr.

सौरण adj. von सूरण = सूरण *Amorphophallus campanulatus* Çiâbd. Saṁh. 2, 1, 32.

सौरत (von सुरत) adj. *zum Liebesgenuss in Beziehung stehend,* n. *Liebesgenuss* Bhâg. P. 5, 17, 12. 10, 33, 26. 55, 10. 60, 38. 11, 6, 18.

सौरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67, *a*, 14.

सौरत्य (von सुरत) n. *Hochgenuss:* मद्भावात्तिसौरत्यसमन्वागत Vjutp. 34.

सौरथ MBu. 3, 13300 und सौरथेय (nach Nilak. metron. von सुरथा) 13297 wohl fehlerhaft für सौरभ und सौरभेय *Stier.*

सौरधी f. *ein best. Saiteninstrument* H. 286, Schol.

सौरनक्त n. *eine best. Begehung* Nîlam. P. 64 im ÇKDr.

सौरपत m. *ein Verehrer der Sonne* Wilson, Sel. Works 1, 32. 265. fg. an den beiden letzten Stellen °पात; man hätte सौर्यपत oder °पत्य erwartet.

सौरपि (?) m. patron.: pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56, 28.

सौरभ (von सुरभि) 1) adj. *a*) *wohlriechend* Bhâg. P. 4, 25, 48. 29, 11. 8, 2, 8. Bhâvapr. 102 (auch ध°). — *b*) von *der* Surabhi *stammend:* गाव: सौरभा: Hariv. 11353. fehlerhaft für सौरसा:, wie die neuere Ausg. liest. — 2) m. *a*) *Koriander* Dhanv. 2, 22. Râjân. 11, 187. चीनं सौरभम् Suçr. 2, 371, 2. — *b*) *eine Art von* वेसवार (wohl mit *Koriander* gewürzt) Madan. 11, 116. — 3) f. ई *Kuh* MBu. 1, 6120. 5, 3609. Hariv. 3409. 9236. R. 5, 56, 73. — 4) n. *a*) *das Wohlriechendsein, Wohlgeruch* Gît. 1, 29. 3, 15. Naish. 2, 92. Spr. (II) 6644 (Conj. für सौ°). 6684. 7201. Z. d. d. m. G. 27, 96. Sin. D. 270, 19. Kathâs. 16, 28. 73, 162. 124, 23. Bhâg. P. 3, 4, 19. Paṭ. 3, 5, 1. Khandom. 52. Kusum. 40, 9. am Ende eines adj. comp. (f. आ) Spr. (II) 2559. Kathâs. 34, 146. 59, 4. 74, 238. 82, 34. Bhâg. P. 10, 33, 12. अति° AK. 2, 4, 2, 14. — *b*) *Saffran* Taik. 2, 6, 26. — *c*) *Myrrhe* Râjân. im ÇKDr. स्तोभक unsere Hdschrr. — *d*) N. eines Sâman Lâṭj. 7, 2, 1. — *e*) Titel eines Commentars (könnte auch m. sein) Hall 83. — Vgl. कुल°, पिष्ट°, पुष्प°, मञ्जु°, वि°, वेदान्त° (unter वेदान्त am Ende), सम°.

सौरभक n. *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2, 165 (VII, 1). Ind. St. 8, 354.

सौरभेय (von सुरभि) metron. 1) m. Bez. *des Stiers* AK. 2, 9, 60. H. 1257. Hall. 2, 108. VS. 35, 13. MBu. 13, 842. Bhâg. P. 1, 17, 9. personificirt: गोधर्म सौरभेयाच्च सो ऽधीत्य निखिलम् MBu. 1, 4193. pl. *das Rindvieh* 8, 4416. 12, 10261. वयं वामनुयास्यामः सौरभेया इवार्षभम् so v. a. *die Rindviehheerde* 5, 5292. 7, 163. — 2) f. ई *a*) Bez. *der Kuh* AK. 2, 9, 66. H. 1265. Hall. 2, 113. MBu. 13, 1376. 3713. Ragh. 2, 3. Sarvadarçanas. 105, 5. Bhâg. P. 3, 18, 22. — *b*) N. pr. einer Apsaras MBu. 1, 7885. 2. 396. Hariv. 12690. — 3) wohl n. Titel eines Werkes Sarvadarçanas. 89, 12.

सौरभेयक m. = सौरभेय *Stier* Râjân. 19, 25.

सौरभ्य (von सुरभि) 1) m. ein N. Kubera's Çabdar. im ÇKDr. — 2) n. *das Wohlriechendsein, Wohlgeruch* Med. j. 112. Hall. 1, 77. 3, 27. Suçr. 1, 223, 18. Ragh. 5, 69. Spr. (II) 4083 (am Ende eines adj. comp.). 7359. fg. Z. d. d. m. G. 27, 47. Dutâtas. 92, 8. Bhâg. P. 3, 26, 45. Verz.

d. B. H. No. 1000. uneig.: सत्कीर्तिशब्द° Açoka-Vad. 36. nach Med. auch = मनोज्ञत्व und गुणगौरव, nach Trik. 3,3,221 = चारु und सात्विन्.

सौरमर्म m. *ein Fürst der Sûramasa* P. 4,1,170.

सौरस (von सुरस und सुरसा) m. 1) *gesalzene Fleischbrühe* Madan. 11, 118. — 2) *best. Maden, welche das Haar zerstören*, Kâraka 3,7. Çiâñc. Saṁh. 1,7,10. — 3) metron. (f. आ) Harîv. 11535 nach der Lesart der neueren Ausg. Bomb. P. 6,6,28. — 4) N. pr. eines von Surendra erbauten buddhistischen Klosters Râga-Tar. 1,94.

सौरसंहिता f. Titel eines Abschnittes im Skandapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 84,*b*,34.

सौरसिद्धान्त s. u. सौर 1).

सौरसेन m. pl. = शूरसेन Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,24. *fg.*

सौरसेय adj. von सुरस gaṇa मध्यादि zu P. 4,2,80. m. metron. Skanda's Çabdam. im ÇKDa.

सौरसैन्धव adj. von सुरसिन्धु (*die Gaṅgâ*) ÇKDa. und Wilson.

सौरस्य n. nom. abstr. von सुरस; als Erklärung von सौशाम्य (!) Nilak. zu MBh. 14,1330.

सौराकि m. patron. des Vipragâna Kâṭh. 27,5 in Ind. St. 3,477.

सौराज्य (von सुराजन्) n. *gute Herrschaft, gutes Regiment* P. 8,2,14. Ragh. 3,60. 15,29. 16,10. Kathâs. 54,98. 55,26. 93,26. 103,239. Râga-Tar. 4,421. 6,45.

सौराज्यवत् (von सौराज्य) adj. *einer guten Herrschaft sich erfreuend:* पुरी Çaṁk. 14,2.

सौराव m. *gesalzene Fleischbrühe* Madan. 11,118. Soṁç. 1,231,15.

सौराष्ट्र 1) adj. von Surâshṭra *kommend u. s. w.:* Perlen Vaṁç. Bhn. S. 81,4. — 2) m. pl. *a) die Bewohner von* Surâshṭra AV. Paric. in Verz. d. B. H. 93 (56). Vaṁç. Bhn. S. 5,68. 9,19. 16,17. 31. Râga-Tar. 3,328. VP. 2,3,16. Mârk. P. 58,32. Bomb. P. 12,1,36. Daçak. 158,3. Ind. St. 10,75. *fg.* °देश Kathâs. 47,106. Kshitîç. 41,2. Verz. d. Oxf. H. 352,*b*, 14. Verz. d. B. H. No. 1242. °मण्डल 1245 (so zu lesen). Çaṁk. 14,125. °नगर Verz. d. Oxf. H. 16,*b*,8. विषयेषु °मुखेषु 258,*b*,6. मध्यदेश: ससौराष्ट्र: Kathâs. 120,76. — Târan. 62. 163. 265. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,26. 339,*b*,15. 340,*a*,13. — *b) das Harz der Boswellia thurifera* Râgân. 1, 120. — 3) f. ई *alaunhaltiger Thon* H. 1035. Ratnam. 291. Râgân. 13,64. Soṁç. 2,114,14. 544,17. — 4) n. *a) Messing* Çabdârthak. bei Wilson. — *b) ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2,136 (III,37).

सौराष्ट्रक 1) adj. (f. °ष्ट्रिका) = सौराष्ट्र Vaṁç. Bhn. S. 80,6. 81,2. नारी Çiksh. in Prâtiçâkh. 92 (सौराष्ट्रका die Hdschr.). 108. — 2) m. pl. = सौराष्ट्र 2) *a)* Vaṁç. Bhn. S. 32,11. Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,25. — 3) n. *Messing* Hall. 2,15. *eine Mischung von Kupfer, Messing, Zinn, Blei und Eisen* H. 1050.

सौराष्ट्रिक 1) adj. = सौराष्ट्र Vaṁç. Bhn. S. 80,6, v. l. लोका: Çaṁk. 5, 254. — 2) m. *a)* pl. = सौराष्ट्र 2) *a)* Kâraka 3,1. — *b) ein best. Gift* AK. 1,2,2,11. H. 1196. Hall. 3,24. neutr. Çabdam. im ÇKDa. Bhâvapr. 5. — 3) n. *Messing* Râgân. 13,32.

सौराष्ट्रेय adj. = सौराष्ट्र. पार्थिवा: R. 1,12,25.

सौरि m. 1) (von सूर्य) *Sohn der Sonne, der Planet Saturn* AK. 1,1, 3,27. H. 120. Hall. 1,48. Vaṁç. Bhn. S. 104,47. Bhn. 1,6. 24,10. Lassen. 1,8. Hier und da fälschlich शौरि geschrieben. — 2) N. pr. einer Völkerschaft im Dekkhan Vaṁç. Bhn. S. 14,11 (सैरि und सैलि v. l.). N. pr. einer Oertlichkeit Târan. 248. — 3) patron. eines Mannes Saṁsk. K. 185,*b*,2. — 4) = घसनवृक्ष Râgân. 9,138 (शौरि v. l.). = घादित्यभक्ता (richtig सौरी) Râgân. im ÇKDa.

1. सौरिक (von सुरा) adj. *zu Branntwein in Beziehung stehend:* Schulden M. 8,159.

2. सौरिक (von स्वर्) m. = स्वर्ग Çabdam. im ÇKDa.

सौरिन्ध m. N. pr. eines Volkes Vaṁç. Bhn. S. 14,29, v. l. für सैरिन्ध u. s. w. f. ई *eine daher stammende Frau* Mârk. P. 132,47.

सौरिरत्न n. *Sapphir* Râgân. 13,183.

सौरीय (von सूर्य) adj. Pat. zu P. 6,4,149. Vop. 4,12. 7,22. m. *ein best. Baum, dessen Harz giftig ist*, Soṁç. 2,252,2.

सौरेय und °क m. = शुक्लकिणटी Bhâvapr. im ÇKDa.

सौरोक्षिक m. metron. von सुरोक्षिका gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

सौरोक्षितिक m. metron. von सुरोक्षितिका ebend.

सौर्य 1) adj. *a)* (von सूर्य) *der Sonne gehörig, darauf bezüglich* u. s. w., *solaris:* कुण्डासि Ait. Br. 4,9. Çat. Br. 2,6,3,3. 4,6,3,3. 11,5,3,6. Pañcav. Br. 18,9,8. Âçv. Gṛhj. 2,3,13. 4,12 (f. आ). 4,6,18. Kâṭh. Ça. 6,3. 29. Ind. St. 3,276. 393. *fg.* गाव: MBh. 13,3675 (f. आ). घस्त्र R. 1,29, 15. Weber, Nax. 2,286. Gjot. 40. *fg.* 78. Vaṁç. Bhn. S. 24,12. f. सौर्री (vgl. auch unter सौर) P. 6,4,149. Vop. 4,12. VS. 24,33. TS. 2,1, 8,1. 5,6,1. Çat. Br. 4,3,4,8. Çâṅkh. Ça. 14,9,7. — *b)* von सूर gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80. — 2) m. patron. von. सूर्य *Sonne* Çaṁk. zu Praçnop. 1,1. Liedverfasser von VS. 23,30. — 3) n. N. pr. *a)* zweier Kuppen des Himâlaja Pat. zu P. 1,1,57. 6,4,148. — *b)* einer Stadt Kâtj. zu P. 8,2,106.

सौर्यचान्द्रमस adj. (f. ई) *der Sonne und dem Monde geweiht:* इष्टि Âçv. Ça. 9,8,1.

सौर्यप्रभ adj. *dem* Sûrjaprabha *gehörig:* बल Kathâs. 47,93.

सौर्यभगवत् m. N. pr. eines Grammatikers Pat. zu P. 8,2,106.

सौर्ययामन् adj. *der Sonne und dem* Jama *gehörig* VS. 24,1.

सौर्यवर्चस m. patron. von सूर्यवर्चस् AV. 8,10,27.

सौर्यवैश्वानर adj. (f. ई) *der Sonne und dem* Vaiçvânara *gewidmet:* निविद् Nir. 7,23.

सौर्यायणि m. patron. von सौर्य Çaṁk. zu Praçnop. 1,1.

सौर्यायणिन् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Gârgja Praçnop. 1,1. 4,1.

सौर्यिन् (von सौर्य 3) *a)* m. ein N. des Himâlaja Pat. zu P. 1,1,57.

सौर्योदयिक adj. von सूर्योदय Vishṇ. 178.

सौर्वल Soṁç. 1,376,7 Druckfehler für सौवर्चल.

सौलक्षण्य (von सुलक्षण) n. *der Besitz Glück verheissender Zeichen* Kathâs. 91,13.

सौलभ adj. von Sulabha *verfasst:* ब्राह्मणानि P. 4,3,105, Vârtt. 1, Schol. Ind. St. 13,343. 429.

सौलभायन (nach Aufrecht's Vermuthung) adj. desgl.: धर्मा: Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,22.

सौलभ्य n. nom. abstr. von सुलभ *leicht zu finden* u. s. w. Comm. zu

Prab. 76, Cl. 19. Kuvalaj. 76,a.

सौलार्भ pl. zum sg. सौलाभ्य gaṇa काण्वादि zu P. 4,2,111.

सौलाभ्य m. patron. von सुलाभिन् gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105; vgl. 6,4,144.

सौलोक्य pl. zum sg. सौलोक्या gaṇa काण्वादि zu P. 4,2,111.

सौलोक्या m. patron. von सुलोकिन् gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105; vgl. 6,4,144.

सौव्र adj. von स्व und स्वर् Vop. 7,4.18. 1) adj. (von स्वर्) *himmlisch* VS. 13,57. TS. 4,3,2,2. — 2) n. *Verordnung, Befehl* Çabdar. bei Wilson.

सौवत्सेर्य m. patron. von सुवत्स् gaṇa गुधादि zu P. 4,1,123.

सौवयामिक adj. von स्वयाम Vop. 7,4.18.

सौवर्य (von स्वर्) adj. gaṇa द्वारादि zu P. 7,3,4. Vop. 7,4.18. *im Tone bestechend* Çat. Br. 14,5,5,10. *über den Ton handelnd:* ग्रन्थ Kielhorn, Çânt. S. 54 am Ende.

सौवर्चनसि m. patron. TS. 1,7,8,1.

सौवर्चल (von सुवर्चल) n. *ein künstliches Salz, das durch Kochung von Soda mit den Früchten der Emblica officinalis* (धामलक) *erzeugt wird, Sochal Salt* Ainslie 2,41. AK. 2,9,43. H. 943. Med. l. 166. Hin. 155. Halâj. 2,462 (m.). Dhanv. 2,15. Ratnam. 299. Râǵan. 6,94. Bhâvapr. 5. Kaṭç. 36. Hariv. 8440. 8444. R. 5,14,42. Suçr. 1,157,8. 226,21. 2,43,4. 135,6. 431,2. 459,11. 514,17. nach AK. 2,9,110 und Med. auch *Natron.* — Vgl. काच.

सौवर्चलीय adj. von सुवर्चल gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

सौवर्ण 1) adj. *a*) proparox. (f. ई und या) von *Gold, golden* gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. Löffel Âçv. Çr. 9,4,9. मणि Kâty. Çr. 20,5,16. Nadel 7,11. Spiegel Lâṭy. 9,2,14. Gefäss Kaṭç. 126. Kâty. Çr. 20,5,2. स्रुक् 19,4,11. TBr. Comm. 3,567,14. शतवल Çâṅkh. Çr. 14,32,10. Jâǵñ. 1,182. MBh. 4,1826. 7,2344 (f. या). 2361 (निष्कान्सौवर्णान् ed. Bomb.). 12, 1010 (f. ई ed. Calc., या ed. Bomb.). 13,3789. 14,1757. R. 1,38,21 (39,20 Gorr.). 2,72,2. 3,40,26. 44,16. 73,15. 4,51,8. 5,3,38. 97,14. Suçr. 1,170,9. 171,9. 240,11. चूर्ण 378,12. Spr. (II) 7226. Vaṇîn. Bṛn. S. 60,4. Weber, Kṛshṇaǵ. 278. Kathâs. 6,48. 18,319. 25,207. Râǵa-Tar. 1,249. Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 23. Mâṇḍ. P. 104,18. 130,12. Bhâg. P. 5,16,7. दीनार Kathâs. 93,35. 42. Pañkat. 174,22. — *b*) oxyt. *das Wort* सुवर्ण *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61. — 2) m. *a*) *ein Karsha Gold:* सहस्रकोटि° adj. MBh. 4,1325. — *b*) *ein goldener Ohrring* H. 656, Schol. — 3) n. *Gold:* निष्कं सौवर्णस्य (निष्कान्सौवर्णान् ed. Bomb.) MBh. 7,2361. — Vgl. सर्व°.

सौवर्णकायन adj. von सुवर्णक gaṇa पत्यादि zu P. 4,2,80.

सौवर्णनाभ m. pl. *die Schule des* Suvarṇanâbha Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,8.

सौवर्णबलत्र und °बालत्र adj. von सुवर्णबलत्र P. 7,3,23, Schol.

सौवर्णभेदिनी f. = प्रियङ्गु Çabdam. im ÇKDr.

सौवर्णरेतस m. patron. von सुवर्णरेतस् Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 37,13.

सौवर्णिक am Ende eines adj. comp. nach einem Zahlwort *so und so viel* Suvarṇa *schwer oder werth* P. 7,3,17, Schol. चतुः° (निष्क) M. 8, 137. Schol. zu Kâty. Çr. 20,1,9. — Vgl. अध्यर्ध°, द्वि°.

सौवर्णिका f. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,296,16.

सौवर्ण्य n. *das Goldensein und richtige Aussprache der Laute* Çaṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 125; vgl. सुवर्णवत्ता. — adj. Suçr. 2,353,7 fehlerhaft für सौवर्ण.

सौवश्व m. patron. von स्वश्व P. 7,3,3, Schol. Ind. St. 13,429. °भार्य adj. = सौवश्वी भार्या यस्य Vop. 6,14.

सौवश्वि m. desgl. Vop. 7,1.4.

सौवश्व्य (von स्वश्व) n. *Wettrennen:* सौवश्व्यं यो वनुवत्स्वश्वः ṚV. 6, 33,1. प्रेतश्च भूयै पस्पृधानं सौवश्व्ये सुषिमावत् 1,61,15.

सौवस्तिक (von स्वस्ति) Vop. 7,4.18. m. *Hauspriester eines Fürsten (seinen Segen gebend)* H. 721. Halâj. 2,271.

सौवाति adj. von स्वाति P. 4,2,104, Vârtt. 15, Schol.

सौवादुमृदव n. nom. abstr. von स्वादु-मृदु P. 7,3,4, Schol. Vop. 7,4.18.

सौवाध्यायिक adj. von स्वाध्याय Vop. 7,4.18.

सौवास्तव adj. (f. ई) von सुवास्तु P. 4,2,77.

सौविद m. *Haremswächter* AK. 2,8,4,8. H. 727. Halâj. 2,272.

सौविदल्ल m. dass. AK. 2,8,4,8. H. 727. Halâj. 2,272. 5,28. Kathâs. 39,28. 53,2 (nicht Nom. pr.). खड्ग: इमासौविदल्लाः Sin. D. 281,1. °त्व n. nom. abstr. 2.

सौविदल्लक m. dass. Çabdar. im ÇKDr.

सौविष्टकृत adj. (f. ई) *für den* Agni Svishṭakṛt *bestimmt, von ihm handelnd* u. s. w.: ग्रवदान Âçv. Gṛhj. 1,10,18. 22,17. याज्ञ 2,4,15. 3,5,10. Gobh. 1,1.4. Kâty. Çr. 6,8,20. Kaṭç. 4. 45. 73. Âçv. Çr. 2,1,21. Çâṅkh. Gṛhj. 1,18,10 in Ind. St. 5,340.

सौविष्टि m. patron. (wohl von स्विष्ट); pl. Saṅgh. K. 184,*a*,1 (सौ° gedr.).

सौवीर (von सुवीर) 1) m. pl. N. pr. eines Volkes, sg. *ein Fürst dieses Volkes* H. 960. Med. r. 240. P. 4,1,168. MBh. 1,3534. 2,1569. 3,15899. fgg. 15621. 15742. 12,8230. Hariv. 4970. 9151. Kâm. Nîtis. 7,53. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. Vaṇîn. Bṛn. S. 16,31. VP. 2,3,17. सौवीराभीरयोः in collect. Bed. Bhâg. P. 1,10,36. 3,1,24. 5,12,6. 10,71,21. 11,21,8. Reinaud, Mém. sur l'Inde 117. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,29. 339,*b*,1. f. ई *eine Fürstin der* Sauvira MBh. 1,3697. Miṇḍ. P. 132, 45. पारसौवीरम् Ind. St. 13,373. — 2) n. *a*) *saurer Gersten-, Reis-, oder Weizenschleim* AK. 2,9,39. Trik. 3,3,378. H. 416. an. 3,621. Med. Halâj. 2,163. Bhâvapr. 5. Suçr. 2,224,20. 392,20. Sarvadarçanas. 118, 12. — *b*) *die Frucht vom Judendorn* AK. 2,4,2,17. Trik. H. an. Med. Dhanv. 5,51. Suçr. 1,209,4. 20. Vâgbh. 1,6,121. — *c*) *Spiessglanz* AK. 2,9,101. Trik. H. 1031. H. an. Med. Ratnam. 279. Râǵan. 13,89. — Vgl. सिन्धु°.

सौवीरक 1) m. *a*) = सौवीर 1) MBh. 3,15396. Vaṇîn. Bṛn. S. 4,23. सुराष्ट्रसौवीरकयोर्पत्तनम् R. 3,53,56. — *b*) *Zizyphus Jujuba* Râǵan. 11, 139. — 2) f. °वीरिका dass. Madan. 6,27. — 3) n. = सौवीर 2) *a*) Râǵan. 13,90. MBh. 3,16040. Kâmaka 1,27. dessen Bereitung Suçr. 1, 164,7. — 80,7. 157,6. 2,60,1. 62,2. 339,10. 459,6.

सौवीरपाणि (सौ° + पाणि) m. pl. Bez. der Bâhlika (Sauvira-*Trinker*) P. 8,4,9, Schol.

सौवीरभक्त adj. von Sauvira *bewohnt* gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,3,84.

सौवीरसार n. *Spiessglanz* Rāǵan. 13,99.

सौवीराञ्जन n. *eine Salbe von Spiessglanz* Ratnam. 279. Schol. zu Kāṭj. Çr. 7,2,24.

सौवीराम्ल n. = सौवीर 2) *a*) Rāǵan. 13,90.

सौवीरायण (von सौवीर) gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,84. °गोभक्त von *ihnen bewohnt* ebend.

सौवीर्य m. *ein Fürst der Sauvīra* Ind. St. 13,373. f. या ebend.

सौव्रत्य (von सुव्रत) n. *Treue, Gehorsam* VS. 39,9.

सौशब्द्य (von सु-शब्द) n. *richtige Bildung grammatischer Formen:* सुयां तिङां च व्युत्पत्तिः सौशब्द्यम् Prātiśāk. 68,*b*.

सौशमि m. patron. von सुशम. सौशमीनां कन्या = सौशमिकन्या n. Sidd. K. zu P. 2,4,20. Schol. zu 6,2,124.

सौशर्मक adj. von सुशर्मन् gaṇa धरीक्षणादि zu P 4,2,80.

सौशर्मण adj. von Suçarman *verkündet:* काठक Kāśi. zu P. 4,3,101.

सौशर्मि m. patron. von सुशर्मन् gaṇa वाह्वादि zu P. 4,1,96.

सौशल्य m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,347 nach der Lesart der ed. Bomb., सौवल्य ed. Calc.

सौशाम्य n. *Friede, Versöhnung:* कृतो यत्नो मया पूर्वं सैशाम्ये कौरवान्प्रति MBh. 14,1550. = सौहृद्य (?) Nīlak.; vgl. शाम्य.

सौशिल्य Paṇḍān. 1,14,108 fehlerhaft für सौशील्य.

सौशील्य (von सुशील) n. *Güte des Charakters, eine gute Gemüthsart* R. 7,36,43. Spr. (II) 1819. 3986. Verz. d. Oxf. H. 256,*a*,33. Bhāg. P. 3,5,1. Paṇḍān. 1,14,108 सौशिल्य gedr.). 113.

सौश्रव m. patron.: शालङ्कायनसौश्रवाः Hariv. 1771. — Vgl. सौश्रवस.

1. सौश्रवस (von सुश्रवस्) 1) adj. *einen guten Ruf habend:* एवं मां सुश्रवाः सौश्रवसं कुरु Āçv. Gṛhj. 1,22,21. — 2) m. patron. des Upagu Paṇḍāv. Bh. 14,6,3. कण्वाः सौश्रवसाः Kāṭh. 13,12 in Ind. St. 3,474. — 3) n. *a*) *das Tönen des Preises, — Lobes:* पृङ्क्षं रयिं सौश्रवसाय ṚV. 6,68,8. 10,36,7. घा ते भद्रा सौश्रवसेषा उक्था उक्था घा भद्रा 45,10. — *b*) N. eines Sāman Ind. St. 3,246,*a*. Liṭ. 7,1,1..4.

2. सौश्रवस (von 6. सु + 2. श्रवस्) n. *Wettlauf*, überh. *Wettkampf:* तं वयाति सौश्रवसे तरेषे ṚV. 7,98,4. घर्षता त्वष्टरेतं सौश्रवसाय जिन्वति 1,162,8. भद्र 6,1,12. 74,2. सुवीर 13,5.

सौश्रुत 1) adj. von Suçruta *verfasst* Verz. d. B. H. No. 923. — 2) m. patron. von सुश्रुत् Ind. St. 13,429. 462. pl. Hariv. 1465 (vielleicht von सुश्रुत). °पाश्ववाः gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. भार्या° *ein unter dem Pantoffel seiner Frau stehender* S. P. 6,2,69, Schol. — Vgl. कुतप°.

सौश्रुवन m. patron. von सुश्रुवस् Ait. Br. 7,27.

सौष्टाम (von सुष्टामन्) n. N. eines Sāman Ind. St. 3,246,*a*. — Vgl. सौष्टाम.

सौष्ठिर (von सुष्ठिर) m. *eine best. scorbutähnliche Krankheit* (eig. *Hohlheit* sc. der Zahne) Suçr. 1,93,4. 303,9. 21. Çāṅg. Saṃh. 1,7,76. — Vgl. मक्कशौष्ठिर.

सौष्ठिर्य (wie eben) n. *Hohlheit* Viṣṇu. 1,9,10.

सौषुम्ण (von सुषुम्णा) m. Bez. *eines best. Sonnenstrahls* Mārk. P. 105,11 (सौसुम्न gedr.).

सौष्ठव (von सुष्ठु) n. gaṇa उद्गात्रादि zu P. 5,1,129. am Ende eines adj. comp. f. या. = सुवस्तुम्भ Hālā. 4,74. *Tüchtigkeit, Vortrefflichkeit, Vorzüglichkeit, Frische* (im Epos öfters neben लाघव) MBh. 1,5224 (pl.). 5274. 5342. 5368. 5522. 8032. 5,244. Kāraka 3,8. स्थिरसौष्ठवाकृति Kathās. 53,196. मदोद्रेकस्फुरत्सौष्ठवाः (गोमायवः) Z. d. d. m. G. 27,36. वीत° adj. (पृतना, शालिनी) Rāǵa-Tar. 4,295. Bhāg. P. 3,15,42. सङ्गेष-सौष्ठवम् Śiç. D. 222. द्रुप° Hariv. 2164. सङ्गप्रत्यङ्ग° R. 5,19,31. Bhar. Nāṭyaç. 34,80. 82. Mālav. 14,9. 17,8. 20,3. Mālatīm. 11,6. Kathās. 87,3. मुख° Suçr. 2,137,12. वाक्° 1,13,10. इन्द्रिय° Spr. (II) 4330. स्वर° Çvetāçv. Up. 2,13. गात्र° Z. d. d. m. G. 27,61. उत्थान° Kām. Nītis. 12,14. शयनाशनसौष्ठवैः Kathās. 16,28. अखिलसर्ग° Bhāg. P. 10, 39,21. eines Buches Ind. St. 5,159. — 2) *a part of a drama* Wilson nach Çaṅkarārāma.

सौष्मिकि m. patron.; pl. Saṃhār. K. 184,*a*,5.

सौसामं m. patron. von सुसामन् P. 6,4,170, Schol.

सौसायन gaṇa धरीक्षणादि zu P. 4,2,80. Davon सौसायनक adj. ebend.

सौसुक N. pr. einer Oertlichkeit Pat. zu P. 4,2,141. Davon adj. सौसुकैय ebend.

सौसुम s. सौषुम्ण.

सौसुराद m. *eine Art von Made, welche Krankheiten des Haars bewirkt,* Kāraka 3,7. Çāṅg. Saṃh. 1,7,19.

सौस्त्रं n. nom. abstr. von सुस्त्री gaṇa युवादि zu P. 5,1,130.

सौस्थित्य (von सुस्थित) n. *günstiger Stand* (von Planeten), *günstige Lage* (einer Person) Varāh. Bṛh. S. 104,60.

सौस्थ्य (von सुस्थ) n. *Wohlbefinden* H. an. 3,272 (सौस्थ्य gedr.).

सौस्नातिकं (von सुस्नात) adj. *sich nach dem guten Erfolg eines Bades erkundigend* P. 4,4,1, Vārtt. 3. Kāç. 6,61.

सौस्वर्य (von सुस्वर) n. *Wohlklang:* साम्नः Çāṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 116. मत्तधमर° Bhāg. 4,24,22.

सौस्सल adj. *dem Sussala gehörig:* योधाः Rāǵa-Tar. 8,198. बल 465.

सौहविष (von सुहविस्) n. N. eines Sāman Ind. St. 3,246,*a*. Paṇḍāv. Bh. 14,5,24. 15,11,10. Liṭ. 6,12,6.

सौहार्द (von सुहार्द oder सुहृद्) n. *Zuneigung, Freundschaft* gaṇa युवादि zu P. 5,1,130 (vgl. 7,3,19). Vop. 7,19. H. 731. Hālā. 4,21. Çāṅk. Çr. 15,25,4. MBh. 3,2054. R. 2,21,44. सौहार्दं दर्शितं राक्षस्त्वया दशरथस्य हि 3,57,15. 5,36,55. R. 6,106,14. Mṛcch. 113. °निधि Kāç. 14,15. Çāṅk. 13,10. fg. तव तस्याम् Çāṅk. Ça. 83,5. Mālav. 31,18. Mālatīm. 2,18. Spr. (II) 367. 3210. 7179. 7290. सौहार्दं तस्य चक्रिरे *schlossen Freundschaft mit ihm* Kathās. 10,21. 22,132. 101,113. Bhāg. P. 4,30,8. Hit. 65,21, v. l. am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 1,3893.

सौहार्म्य n. dass. P. 6,3,51, Schol. TS. 4,4,8,1. Ait. Br. 7,17.

सौहित्यं (von सुहित) n. gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128. 1) *das Sattsein, Sättigung, Befriedigung* AK. 2,9,56. H. 426. Hāṃ. 141. Hālā. 2, 171. Çāṅk. Ça. 3,8,11. Schol. zu Liṭ. 5,1,11. MBh. 12,8927. 13,5077. °दान 3,1409. सौहित्यं गम् Paṇḍāv. ed. orn. 41,28. सौहित्योपयुक्त Kāraka 1,5. सौहित्यासक्ता Suçr. 2,451,8. गुड° 36,15. अलघूलपौघसौहित्यनिःसृतर (पीतक) Çiç. 5,62. अस्तुत्यकृत्यसौहित्यं स्वप्ने ऽपि न समायेयो Rāǵa-Tar. 4,625. अर्ध° *das Nichtsattessen* Suçr. 1,244,18. Viṣṇu. 1,8,2. घृति° *Uebersättigung* M. 4,62. Kāraka 1,21. — 2) *Liebenswürdigkeit, Freundlichkeit* Śiç. D. 198. Tattvas. 19.

सौहृद (von सुहृद्) 1) adj. vom *Freunde kommend:* वचस् R. 3,75,61. हार्द 4,4,13. — 2) m. a) *Freund* Spr. (II) 7180. — b) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,367 (VP. 192). — 3) n. *Zuneigung, Freundschaft* H. 730. Hall. 4,21. MBh. 3,2388. R. 2,115,17. 3,4,19. 4,31,7 (तच्च सौ° zu lesen). Çiç. 120. तत्सौहृदं यत्क्रियते परस्मिन् Spr. (II) 2483. 5715. 6723. 7181. Z. d. d. m. G. 27,96. Kathâs. 46,33. Bhâg. P. 1,9,20. 3,23, 2. 4,30,8. अधिक R. Gorr. 2,48,24. केतव Spr. (II) 4598. °वद्दो ऽस्मि वृत्रस्य R. 7,83,4. °युक्त Spr. (II) 7150, v. l. गोपेषु Harîv. 5739. यद्यस्ति मयि सौहृदम् R. 5,106,11. सर्वसत्त्वेषु Spr. (II) 247. 3927. Bhâg. P. 4,30, 9. 7,5,26. सौहृदं दर्शितम् R. 4,15,12. सौहृदं कर् (सक्) Hit. 24,12, v. l. सौहृदं सव्युत्क्रमस्यापि समाधारन् Bhâg. P. 3,11,13. सौहृदं वि-भिद् R. 4,34,24. भ्रातृ° zu MBh. 1,5944. R. 2,51,21. 115,6. मुस्निग्धभ्रातृ° R. Gorr. 2,91,6. 4,9,23. भूत° Bhâg. P. 11,18,43. am Ende eines adj. comp. (f. घा) 3,3,21. बद्ध° (mit loc. oder सक्) Harîv. 1122. Kathâs. 38, 159. Bhâg. P. 1,14,23. 4,20,12. स्थिर° R. 4,38,19. धस्थिर° Vaśîn. Bhn. S. 13,13. दृढ° 101,11. Vikr. 10. Spr. (II) 1224. Pañcat. 239,13. अदृढ° R. Gorr. 2,68,6. चल° Vaśîn. Bhn. S. 13,21. अनन्य° Bhâg. P. 2,2,13. विगतसौहृद° MBh. 1,7727. गत° 3,2776. Bhâg. P. 4,28,7. त्यक्त° Spr. (II) 7198. स° n. *Feindschaft* MBh. 15,895.

सौहृदर्य n. nom. abstr. von सुहृदय gaṇa युवादि zu P. 5,1,130.

सौहृदय्य n. desgl. P. 5,3,51, Schol.

सौहृद्य n. = सौहृद *Zuneigung, Freundschaft:* सौहृद्ये स्थिता: MBh. 15,893. पर्यवस्थिता: 838 (सौहृदे ed. Bomb.). Spr. (II) 6378. सुहृदिरपि सौहृद्यं शठे शाठ्यं समाचरेत् 7026. सौहृद्यं कर् (सक्) Hit. 24,12. यथा सौहृद्यमेव तयो: कारितं मया 65,21.

सौह्रोत्र (von सुह्रोत्र) m. patron. des Ágamîḍha und Purumîḍha ṚV. Anukr.

सौह्रोत्रि (wie oben) m. patron. des Gâhnu Harîv. 1416.

सौह्वी m. *ein Fürst der* Suhma P. 4,1,170, Schol.

सौह्वनागर adj. von सुह्वनगर P. 7,3,24, Schol.

सौह्य ind. St. 3,276 wohl Fehlerhaft.

स्कन्द्, स्कन्दति Dhâtup. 23,10 (गतिशोषणयो:). चस्कन्द, चस्कात्सीत्, चस्कान्, स्कान्, स्कन्: °स्कन्स्यति (vgl. Kâr. 3 aus Sidd. K. zu P. 7, 2,10); °स्कन्दितुम्; स्कन्त्वा P. 6,4,31. Vop. 26,203. des Metrums wegen auch med. स्कन्दते; in den Bedd. प्रेव, उद्गतौ, उत्प्लुत्य गमने Vop. in Dhâtup. 2,8 als v. l. von स्कुन्द्. 1) intrans. *schnellen, springen, spritzen; verschüttet —, herausgeschleudert werden, hinausfallen:* Tropfen ṚV. 10,17,11. VS. 7,26. दिवं मा स्कान् TBr. 3,2,9,5 (vgl. VS. 1,26). योनेर्गर्भ: TS. 6,2,8,5. यद्वा स्कन्दादाज्यस्य 1,6,9,2. 2,6,4,7. 3,1,8,3. 5,7,9, 3. TBr. 1,4,3,3. Çat. Br. 1,1,4,2. 3,3,16. विप्रुष: 4,2,5,1. 5,3,7. न स्कन्दते — ब्राह्मणस्य मुखे कृतम् (vgl. चस्कन्नम् — विप्राग्नौ कृतम् Jâtâ. 1,213) Spr. (II) 3493. (गङ्गा) शंभोर्मूर्ध्नि स्कन्ना Bhatt. 22,11. Samay Nîm. 5,13. Çat. Br. 12,4,4,7. 14,9,4,5. Kâty. Çr. 25,11,21. MBh. 1, 5105. 6331. 9,2319 (चस्कन्दे). Harîv. 1958 (न चस्कन्दे ऽप्य पौरुषम् mit der neueren Ausg. zu lesen). Bhâg. P. 3,12,22. चिराम्नोर्ण चस्कन्द तप ऐश्वरम् so v. a. wurde zu *Nichte* 5,6,3. — partic. स्कर्न = पतित u. s. w. AK. 3,3,53. H. 1491. — ṚV. 7,33,11. 10,181,3. Çat. Br. 12,4,4,7. Âçv. Çr. 3,11,11. 13,15. °भाग Kâtyâ. 25,7. Kauç. 6. Samav. Jâim. 3, 278. MBh. 1,2380. 2434. 3,14313. Bhâg. P. 3,12,38. मुरन्ध्रेण स्कन्न्म् sc. रेत: R. 7,37,4,35. यदण्डमध्ये स्कन्नं तु द्रवमासीत् Harîv. 12333. 12336. स्कन्नं गर्भपरिस्रवे R. 1,38,26. fg. शल्यं स्कन्नमिवोद्धृतं Spr. (II) 4307. स्कन्न und धस्कन्न *verschüttet, nicht verschüttet* (beim Opfer) MBh. 12,2318. स्कन्न *dem es fehlgeschlagen ist* Harîv. 3957. — 2) *bespringen* (zur Begattung): धस्कान्पृषो युवा गा: TBr. 3,7,10,3. Çat. Br. 13,3,3,1. — Vgl. धस्कन्न.

— caus. स्कन्दयति 1) *verschütten, vergiessen* Ait. Br. 5,27. न रेत: स्कन्दयेत्क्वचित् M. 2,180. मोघं स्कन्दितमार्षभम् 9,50. — 2) *überspringen* so v. a. *versäumen, unterlassen:* दर्शमस्कन्दयन् M. 6,9. धस्कन्दित-कालबलिप्रभानुष्ठापिन: MBh. 12,7002. धस्कन्दितव्रत adj. Bhâg. P. 1, 6,32. — 3) etwa *hüpfen lassen* R. Gorr. 1,39,26 zur Erklärung von स्कन्द्. — 4) *gerinnen machen, verdicken:* उदकं शीतं स्कन्दयत्यति (= धत्यर्थम्) शोणितम् Suçr. 1,37,16. med. 47,7. 9; vgl. स्कन्दन und स्कन्दयति (समाहतौ) Dhâtup. 35,84, 1.

— intens. चनीस्कद्यते, चनीस्कन्दीति P. 7,4,84. Vop. 20,7. *hüpfen* (von Fröschen): कर्निष्कन् ṚV. 7,103,4.

— धति 1) *bespringen, insilire* ṚV. 5,52,3. — 2) *überspringen:* धतिष्कदे (infin.) ṚV. 8,56,19. धनतिस्कन्द्यर्जन्यो वर्षति *nicht überspringend* so v. a. *gleichmässig* TBr. 3,3,6,4. — 3) *heraus —, hinabfallen:* धतिष्कदम् infin. ṚV. 10,108,2.

— धधि (nach AV. Paipp. 2,104 geht स nicht in ष über) *bespringen* (zur Begattung): पिता यत्स्वां दुहितरमधिष्कन् ṚV. 10,61,7. AV. 5, 25,6. 10,10,16. गौरधिष्कन्ना (!) TS. 2,2,8,2.

— धनु *der Reihe nach hinabspringen;* absol.: गेरानुस्कन्दम्, गेरं गेरमनुस्कन्दम्, गेरमनुस्कन्दमनुस्कन्दम् P. 3,4,56, Schol.

— धभि (nach AV. Paipp. 2,104 geht स nicht in ष über) *besteigen:* वन्दनेव वृतम् AV. 7,115,2. धभिस्कन्दम् 5,14,11 ist wohl als absol. zu fassen.

— प्रत्यभि s. प्रत्यभिस्कन्द्न.

— धव 1) *herabspritzen:* (रेत:) धवस्कन्नं (so zu lesen; धव स्कन्नं die neuere Ausg.) शास्तम्बे Harîv. 1786. *herabspringen:* रथादवस्कन्य Bhâg. P. 10,38,26. — 2) *herbeispringen:* धरण्यात् Sarvp. Bh. 1,1. Anupadas. 8,3. — 3) *Jmd* (acc.) *überfallen, anfallen* Mâlav. 8,18. Kathâs. 123,3. Râga-Tar. 8,2842. eine Stadt R. 5,80,20. 27. Çiç. 1,31. uneig.: क्लेशावस्कन्नहृदया मोहमुपागमत् *überwältigt* R. 6,93,41. — Vgl. धवस्कन्द् fgg.

— धन्यव 1) *hinab-, hinaus-, hinausspringen:* धहारेणान्यवस्कन्य निर्ज्ञगाम बहि: MBh. 4,810. प्राविशद्वैराणि: पार्थानां शिबिरं महत्। धहारेणान्यवस्कन्य 10,327. fg. — 2) *auf Jmd* (acc.) *stossen* MBh. 4,1919. — Vgl. धन्यवस्कन्द् fg.

— पर्यव s. पर्यवस्कन्द्.

— प्रत्यव s. प्रत्यवस्कन्द्न.

— समव caus. *Jmd* (acc.) *überfallen* M. 7,196. — Vgl. समवस्कन्द्.

— धा 1) *hüpfen:* absol. धास्कन्दम् VS. 23,34. शश धास्कन्दयति 35. — 2) *sich hängen an* (acc.): वेदाङ्गानि वेदमास्कन्दति Dhâtup. zu Nir. Einl. — 3) *Jmd* (acc.) *überfallen, anfallen* Mâlatîm. 151,9. Kathâs. 72, 165. 102,49. Bhatt. 17,11. 82. einen Ort Kathâs. 51,92. — caus. partic.

आस्कन्दित *heimgesucht, behaftet mit:* यत्प्रामाण्यशङ्कास्कन्दिताः (प्रत्ययाः) Nilak. 86. — Vgl. आस्कन्द् fgg.

— समा *Jmd* (acc.) *überfallen, anfallen:* शत्रून्समास्कन्त्स्यति को नृणो Bhatt. 16, 10. ततस्तं वैष्णवी माया समास्कन्दति मोहिनी Mārk. P. 11, 19. — समास्कन्न *angefügt an:* स्कन्धो वृत्तस्य समास्कन्नो भवति Nir. 6, 17. *bestreut* (= विप्रकीर्ण Dharan.) 3, 10.

— उद् *davonspringen:* यद्ये दूरमुत्कन्द् P. 8, 4, 61, Vârtt. 1, Schol. wird auch auf कन्द् zurückgeführt.

— परि, das म der Wurzel kann in प übergehen P. 8, 3, 74 (vgl. Sidd. K. zu d. St.). Vop. 8, 98. *umherhüpfen:* मेघनादः परिष्कन्न्यपरिस्कन्दत्तमरिम् (यवधात्) Bhatt. 9, 75. — partic. परिस्कन्न *vergossen:* रेतः MBh. 1, 2331. — Vgl. परिष्कण fgg. — intens. *umherhüpfen:* पिङ्गा परि चनिष्कदत् RV. 8, 58, 9.

— प्र 1) *hervorspringen, — spritzen, hinausfallen:* Tropfen, Thränen, Staub u. s. w. Çat. Br. 4, 2, 4, 11. 9, 1, 2, 6. यत्तरित्रात्प्र स्कन्दति ये प्रूर्यात् TBr. 3, 2, 5, 11. प्रस्कन्द्य TS. 2, 6, 10, 2. 6, 5, 6, 5. Samen Çat. Br. 1, 7, 4, 2. MBh. 1, 2380. 3, 10002. *hinausspringen:* शालायाः Kauç. 25. *aufspringen:* प्रस्कन्दन्निव संभ्रमात् MBh. 1, 134. *herabspringen:* रथात्प्रस्कन्द्य 3, 15587. 15725. 15730. 16486. 4, 1004. 1071. 5, 1804. 6, 4313. 4886. 10, 480. 13, 7435. पादपात् R. 5, 35, 23. *hineinspringen, sich verfangen in* (acc.): प्रविस्कन्द् विनाशाय पाशं मृग इवात्मनः R. Schl. 2, 11, 4. partic. प्रस्कन्न = पतित H. 806. Hall. 2, 324. *verschüttet, verspritzt* Bhâg. P. 3, 7, 46. Samen MBh. 13, 4009. R. Gorr. 1, 39, 17. °विवेकविज्ञान (adj.) so v. a. *verloren gegangen, zu Nichte geworden* Bhâg. P. 5, 14, 28. — 2) *überfallen, anfallen, angreifen:* प्रस्कन्द्य सेनाम् MBh. 9, 960. प्रस्कन्न *mit transit. Bed.:* पाण्डुवाहिनीम् 976. — 3) *ausspritzen, verspritzen:* घृतः Pârâsâr. Gr. 14, 5, 15. प्रस्कन्द्य Çâr. Gr. 4, 5, 10, 7. प्राणं वा एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुध्यन्ते Prâçnop. 1, 13. — Vgl. प्रस्कन्दन fgg. — caus. 1) *in Fluss bringen:* शोणितोदां रथावर्तां नदीं प्रस्कन्दयिष्यामि MBh. 4, 1971 (*transsilire* Wern). Harîv. 13945. — 2) *hinschütten, hingiessen* (von einer Speise, die man geniesst, als Opfergabe) MBh. 13, 5011.

— अभिप्र *hineinspringen in* (acc.): गर्तम् Çâṅkh. Br. 26, 1.

— वि, der Anlaut kann in प übergehen P. 8, 3, 73. Vop. 8, 98. nom. ag. विष्कत्तृ und विस्क° (ष°) *hinundher hüpfend, unstät* Bhatt. 9, 74.

— सम् *abtropfeln, abspringen:* घृतः Çat. Br. 3, 1, 3, 21.

स्कन्द् (von स्कन्द्) m. 1) *das Verschüttet-, Verspritztwerden:* घृतस्कन्दाय Çat. Br. 13, 1, 2, 1. TS. 1, 5, 8, 5. रेतसः 5, 6, 3, 4. घ्राण° so v. a. *das Schnäuzen der Nase* (*Grunzen* in den Nachträgen) Râjân. Tar. 5, 417. — 2) *das Zunichtewerden:* यशोभास्कन्दाय Gît. 7, 42. — 3) *Quecksilber* (wegen seiner *Beweglichkeit*) Râjân. 13, 112. — 4) *der Ueberfaller* personif. als *Heerführer der Götter* und als *Haupt der Kinder-befallenden Krankheitsdämonen;* gilt als der ewig jung bleibende (vgl. कुमार, सनत्कुमार) Sohn Çiva's (auch eines Rudra) oder Agni's, der von den Kṛttikâ (daher auch कार्त्तिकेय genannt) auferzogen wurde. AK. 1, 1, 1, 33. H. 208. Hall. 1, 19. Pat. zu P. 5, 3, 99. Kâṭh. Up. 7, 26, 2. Çâṭân. in Ind. St. 2, 44. AV. Anukr. zu 4, 31. Bhâg. 10, 24. MBh. 1, 6265. 3, 14337. fg. 7, 7837. Harîv. 44. 138. 7219. R. 2, 25, 10. Mudr. 44. Râgat. 2, 36. 7, 1. Varâh. Bṛh. S. 43, 45. 52. 46, 11. 48, 26. 58, 41. LA. (III) 88, 5. 92, 12. Kathâs. 7, 9. VP. 59. Mârk. P. 52, 11. Weber, Kṛshṇaj. 247. 252. 268. 310. Râjâ-Tar. 6, 137. Verz. d. Oxf. H. 25, *b*, 22. 27, *a*, 36. 42, *a*, 14. 46, *a*, 43. 69, *b*, 20. 73, *a*, No. 125. 269, *a*, 21 (als Sprecher im Skandapurâṇa; vgl. 42). Bhâg. P. 8, 6, 14 (fehlerhaft स्कन्ध bei Burn.). Wilson, Sel. Works 2, 22. Lalit. ed. Calc. 137, 6. स्कन्दोत्पत्ति MBh. 3, Adhj. 222. fgg. Verz. d. B. H. No. 485. Etymologie des Namens MBh. 3, 14315. 13, 4099. R. 1, 38, 27 (39, 27 Gorr.). als *Krankheitsdämon* (vgl. °ग्रह) MBh. 3, 14337. fgg. Suçr. 2, 385, 2. 394, 9. 15. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 109. Verz. d. Oxf. H. 307, *b*, 25. °विशाखौ gaṇa दधिपयआदि zu P. 2, 2, 14. neutr. ungenau für स्कन्द् (sc. पुराण) Mârk. P. S. 659, Çl. 3. Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 2; vgl. स्कन्दाख्यम् (so ist zu lesen) 80, *a*, 2. — 5) N. pr. eines Mannes gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98. pl. Saṃhr. K. 186, *a*, 11. — Ind. St. 3, 280 ist स्कन्द् wohl die richtigere Lesart. — 6) *Körper* Trik. 2, 6, 19. — 7) *Fürst* Gaṇḍu. im ÇKDa. — 8) *Flussufer* und *Gelehrter* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. तृण°, नील°, मधु°, रुद्र°, शिव°, स्कान्द् fgg. und स्कन्ध.

स्कन्दकग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Râjâ-Tar. 5, 174. Troyer nimmt स्कन्दक in der Bed. von *Soldat* (so auch Benfey) und verbindet ग्राम mit dem folgenden कायस्थ.

स्कन्दगुप्त m. N. pr. eines Fürsten Journ. of the Am. Or. S. 6, 530. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 52. LIA. 2, 400. 753. 940. 963. — Vgl. कुमारगुप्त.

स्कन्दगुरु m. Skanda's *Vater* d. i. Çiva Çiv.

स्कन्दग्रह m. *der Dämon* Skanda überh. und *ein best. Krankheitsdämon* MBh. 3, 14497. Harîv. 9562. Suçr. 2, 383, 6. 7.

स्कन्दजननी f. Skanda's *Mutter* d. i. Pârvatî Kathâs. 3, 16.

स्कन्दजित् adj. Skanda's *Besieger*, unter den Namen Vishṇu's Paṇḍar. 4, 3, 87.

स्कन्दता f. nom. abstr. zu स्कन्द् 4) MBh. 3, 14315. 13, 4099.

स्कन्ददास m. N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 18, 392.

स्कन्दन (von स्कन्द्) n. *das Verschüttetwerden* u. s. w., überh. *Missrathen:* आकुत्या: Âçv. Çr. 3, 11, 22. Kâṭj. Çr. 25, 2, 10. 6, 6, 10. ज्याघोष° Vait. 12. TBr. Comm. 3, 533, 1. — 2) *das Stopfen des Blutes* Suçr. 1, 47, 6. — 3) *Entleerung des Unterleibes* Trik. 2, 6, 16.

स्कन्दपुत्र m. *ein Sohn* Skanda's, boshaftende Bez. *eines Diebes* Mṛicch. 47, 6.

स्कन्दपुर n. N. pr. einer *Stadt* Râjâ-Tar. 1, 343.

स्कन्दपुराण n. Titel eines Purâṇa Wilson, VP. XLV. Verz. d. Oxf. H. 68, *a*, No. 119. fgg. 95, *b*, 25. 102, *a*, 3. 104, *a*, 33. 163, *a*, 10. 269, *a*, 26. 12. *b*, 7. 271, *a*, 13. 356, *a*, 24. Weber, Kṛshṇaj. 221. fgg. Verz. d. Tüb. H. 15. Davon adj. °पुराणीय Notices of Skt Mss. 2, 117. — Vgl. स्कान्द्.

स्कन्दभट्ट m. N. pr. eines Mannes LIA. 3, 311.

स्कन्दमातृ f. Skanda's *Mutter* d. i. Durgâ H. ç. 53. Verz. d Oxf. H. 110, *b*, No. 174.

स्कन्दयाग m. Titel eines Pariçishṭa zum AV. Verz. d. B. H. 90 (22).

स्कन्दराज m. *der König* Skanda MBh. 12, 12327. स्कन्ध° ed. Calc.

स्कन्दविशाख m. du. Skanda und Viçâkha; sg. unter den Namen Çiva's MBh. 13, 907 (स्कन्ध° ed. Calc.). — Vgl. स्कान्दविशाख.

स्कन्दषष्ठी f. Bez. *des 6ten Tages in der lichten Hälfte des* Kârttika Verz. d. Oxf. H. 284,*b*,41. Wrata, Kâsunâś. 231.

स्कन्दस्वामिन् m. N. pr. eines Commentators des Naighaṇṭuka Rotn, Jîska's Nir. 1. स्कन्ध° Rosen zu RV. 1,2,3.

स्कन्दाणक (स्कन्द् + घ°) m. *Quecksilber* Râǵân. 13,142; vgl. स्कन्द् 3).

स्कन्दापि m. Taik. 1,1,68 fehlerhaft für स्कन्धापि.

स्कन्दापस्मार (स्कन्द् + घ°) m. *ein best. Krankheitsdämon* MBh. 3, 14479. Suçr. 2,380,12. 14. 387,5. 394,7.

स्कन्दापस्मारिन् adj. *von diesem Krankheitsdämon befallen* Suçr. 2,387,3.

स्कन्दिन् (von स्कन्द्) adj. 1) *fliessen —, hervorströmen lassend:* सुधास्यन्द° Spr. (II) 3034 (Conj. für °स्यन्दास्कन्दिन्). — 2) घ° *nicht gerinnend* Suçr. 1,45,2. fgg.

स्कन्दिलाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Verz. d. Oxf. H. 152,*a*,N. 2.

स्कन्देश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,23.

स्कन्दोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Ind. St. 1,302.

स्कन्द्य adj. = स्कन्द् इव gaṇa शाखादि zu P. 5,3,103. am Ende eines comp. von स्कन्द् *Sprung:* वगर्त° Çiñkn. Bh. 11,1.

स्कन्ध्, चस्कन्धे Hariv. 1938 fehlerhaft für चस्कन्दे (so die neuere Ausg., die ausserdem richtig पौरुषं liest). स्कन्धयति (समाकृतौ) Dhâtup. 33,84,1, v. l. für स्कन्दयति.

स्कन्ध् 1) m. Siddh. K. 250,*a*,4. am Ende eines adj. comp. f. घा. *a) Schulter* (an Menschen und Thieren) Nir. 6,17. AK. 2,6,3,29. Trik. 3,3,224. H. 388. 1224. an. 2,253. Med. db. 22. Hâlây. 2,62. pl. AV. 6, 133,1. 8,7,3. 10,2,4. 9,20. 12,3,67. VS. 25,6. TS. 7,3,10,1. sg.: विक्रम 5,7,10,1. °मात्र Kâś. Ça. 26,2,8. घसित° Kâuç. 40. — MBh. 1, 5930. 3,16488. Hariv. 3720. Suçr. 1,124,10. 208,3. 350,13. Mâlatîm. 84,17. Spr. (II) 7393. Varâh. Bṛh. S. 31,42. 52,4. 53,111. स्कन्धमुद्वृत्ति गोपतितुल्यम् Bṛh. 26,8. Kathâs. 49,130. Verz. d. Oxf. H. 103,*a*, 30. 202,*b*,13. Ver. in LA. (III) 13,15. Bhâg. P. 5,23,6. वाल्मीकमानमयःस्रष्टा स्कन्धं नैवापकृन्तति Spr. (II) 6053. चोरमेकं मा स्वस्मिन्स्कन्धे समासज्जत् R. Gorr. 2,37,12. उदकुम्भं स्कन्धे कृत्वा Pân. Gaṇ. 1,3: Pâṇâv. 144, 23. 169,10. स्कन्धेनादाय मुसलम् M. 8,315. स्कन्धे परशुमादाय R. Gorr. 1,76,20. स्कन्धैः समादाय कुमाराभिद्रुताः Hariv. 11200. मृतकं स्कन्धे धृत्वा Ver. in LA. (III) 4,11. 12,13. भारं स्कन्धेन न बाधते Bhâg. P. 4, 29,33. बाहुरोह च तस्यैव स्कन्धे Kathâs. 18,156. तस्य स्कन्ध उपाविशत् 49,134. स्कन्धेनापि वहेच्छत्रून् Spr. (II) 1706. 6013. 7182. कुम्भः स्कन्धगः Varâh. Bṛh. 26,30. द्विस्कन्धाधिरूढा व्रजयः R. 2,45,21. Sarvadarçanas. 153,11. धन्धेन पङ्गुः स्कन्धमारोपितः 9. 10. स्कन्धासक्तसमित्कुशैः Raghu. ed. Calc. 1,50. अवरोप्य गिरिं स्कन्धात् Bhâg. P. 8,6, 39. गज° R. 1,19,19. Suçr. 1,98,9. Spr. (II) 728. Râǵa-Tar. 4,263. वृष° Spr. (II) 7047. असंजातकिण° 2135. विषाणोल्लिखित° 2326. सम° adj. MBh. 1,8035. वृष° adj. 3,17130. R. 3,74,26. eines Pferdes Raghu. 4, 67. Varâh. Bṛh. S. 93,3. सुपर्ण° Bhâg. P. 4,30,5. eines Blutegels Suçr. 1,42,6. — *b*) der *Theil des Baumstammes, an den sich die Aeste ansetzen, Baumstamm* überh. AK. 2,4,4,10. H. 1119. H. an. Med. Hâlây. 2,37. Çiñkn. Gṛhy. 1,20. MBh. 2,326. 3,11032. Hariv. 3707. 12380. R. 2,96,13 (103,13 Gorr.). 97,19. R. Gorr. 2,43,24. 3,78,22. 79,7. 4,18,23. Kâm. Nîtis. 16,37. 39. Megh. 54. Ragh. 4,57. Çiç. 32. 167. Spr. (II) 1129. 1326. Varâh. Bṛh. S. 53,5. 7. Kathâs. 17,106. 28,184. Bhâg. P. 5,16,25. 8,5,49. Pañkat. 1,7,13. Pâṇâv. III, 149. 134,5. Daçak. 201,1. Sarvadarçanas. 25,10. — *c*) *Abtheilung, Theil:* eines Heeres MBh. 5,7630. चतुःस्कन्धेव चमूः Ragh. 4,30. = व्यूह् H. an. eines Berges MBh. 2,619. त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽध्ययनं दानमिति Kâṭhân. Up. 2,23,1. sieben *Striche, Regionen oder Bahnen* (vgl. मार्ग und स्कन्धः = पन्थाः Çaṅkar. im ÇKDr.) der Winde MBh. 3,14569. fg. Hariv. 2479. 2620. 6827; vgl. den Comm. zu R. 5, 82,63 bei Gorr. X,303,75. *Abtheilung eines Lehrbuchs, einer Doctrin:* कटुक°, तिक्त° Kâraka 3,8. ज्योतिःशास्त्रं °त्रयाधिष्ठितम् Varâh. Bṛh. S. 1,9. Bṛh. 27,6. Verz. d. B. H. No. 862. 939. Verz. d. Cambr. H. 37. Muir, ST. 2,170. zwölf des Bhâg. P. Pañkar. 2,7,28. — Verz. d. Oxf. H. 79,*b*, No. 136. 189,*b*,21. Burnouf, Intr. 462. °समन्वित, प्रतिस्कन्धं भिन्नः Prabôdhâc. 19,*b*,3. — *d*) *Menge, die ganze Menge, Gesammtheit, Complex* AK. 3,4,18,103. H. an. Med. पद्मानां अपि निपातेन येषां (मूल्यानां) नीनां भूतानां) स्यात्स्कन्धपर्ययः MBh. 12,449. von Menschen, Elephanten, Pferden Kâç. zu P. 4,2,51. H. 1413. Hâlây. 3,23. घन° Saddh. P. 4,11,*a*. पुण्य° Bhâg. P. 11,23,10. शील°, उपादान° Burnouf, Intr. 513. die fünf Skandha bei den Buddhisten sind रूप°, विज्ञान°, वेदना°, संज्ञा° und संस्कार° H. 233, Schol. H. an. Burnouf, Intr. 475, N. 1. 491. 511. fgg. Wassiljew 91 u. s. w. Sarvadarçanas. 20,10. fgg. 22,8. 23,30. Çiç. 2,28. पञ्चस्कन्धकृतिन् Verz. d. Oxf. H. 264,*a*,3. — *e*) bei den Gaina = पिण्ड *Körper* im weitesten Sinne: द्व्यणुकादयः स्कन्धाः Sarvadarçanas. 36,3. fgg. 38,19. = काय H. an. Med. — *f*) *ein best.* Ârjâ-*Metrum* Med. Colebr. Misc. Ess. 2, 154,*a*; vgl. स्कन्धक. — *g*) bildliche Bez. eines *Fürsten (der Stamm des Ganzen)* H. an. Med.; vgl. Kâm. Nîtis. 16,37. 39 und स्कन्धावार. — *h*) = संग्राम und भद्रादि Med. *a heron; an engagement, an agreement; a wise old man; a learned man, a teacher; match or equality in the humps of a pair of draft oxen* Wilson nach Çabdârthak. — *i*) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2160 (nach der Lesart der ed. Bomb.). eines Mannes gaṇa शैनकादि zu P. 4,3, 106. eines Dichters Z. d. d. m. G. 27,77. — *k*) öfters fehlerhaft für स्कन्द्, z. B. MBh. 13,907 (ed. Bomb. स्कन्द्). Kathâs. 53,173. Bhâg. P. 6. 6,14 (ed. Bomb. स्कन्द्). Pañkat. 4,3,140. — 2) f. घा *Zweig; eine kriechende Pflanze* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. अङ्घ्रि°, कपि°, कर्कर°, काल°, गुरु°, जघ°, तुरंग°, धर्म°, धीर°, नर°, नील°, पीत°, पृथु°, प्रति°, मणि°, महा°, राज°, वात°, वायु°, विष्कन्ध, वृष° (auch R. 3,55,4. Ragh. 1,13. 12,34), शिव°, सं°, सिंह° (auch MBh. 3,10330. R. 2,59,26 = 24 Gorr. 3,62,4. Varâh. Bṛh. S. 61,12), सु°, सुर° und स्कन्धम्.

स्कन्धक n. *ein best.* Ârjâ-*Metrum* Varâh. Bṛh. S. 104,54. Kâvjâd. 1,37. Ind. St. 8,293.

स्कन्धचाप m. *Schulterjoch* Hit. 163.

स्कन्धज adj. *aus dem Stamm hervorschiessend:* शल्लकीमुखाः H. 1200.

स्कन्धतरु m. *Kokosnussbaum* Râǵân. 11,18.

स्कन्धदेश m. 1) *Schultergegend, Schulter* AK. 2,8,3,7. Hâlây. 2,112. MBh. 3,2216. Çiç. 18. — 2) *die Gegend des Stammes* Kathâs. 17,108.

स्कन्धपाद m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 57,23. vielleicht fehlerhaft für स्कन्द्°.

स्कन्धप्रदेश m. = स्कन्धदेश *Schultergegend, Schulter* AK. 2,9,63.

स्कन्धफल m. *Kokosnussbaum* Hin. 100. Râśân. im ÇKDn. *Ficus glomerata* Çabdân. ebend. *Aegle Marmelos Corr.* H. an. 4,299. Med. l. 163.

स्कन्धबन्धना f. *Anethum Panmorium Roxb.* Çabdân. im ÇKDn.

स्कन्धमय adj. von स्कन्ध *Stamm:* बुद्धि° *die Intelligenz zum Stamme habend* MBn. 14,954.

स्कन्धमस्तक m. *Rother* H. 1334.

स्कन्धराज MBn. 12,12327 fehlerhaft für स्कन्द°.

स्कन्धरुह् m. *Ficus indica* Râśân. 11,118.

स्कन्धवत् (von स्कन्ध) adj. *einen Stamm —, einen starken Stamm oder viele Stämme* (wie der न्यग्रोध) *habend* MBn. 12,4932. Harîv. 12676. R. 5,17,35. Mârk. P. 38,8.

स्कन्धवाह् m. *ein zum Tragen von Lasten abgerichteter Stier* Hin. 79. °क m. dass. H. 1258. Halây. 2,111.

स्कन्धविशाख MBn. 13,907 fehlerhaft für स्कन्द°.

स्कन्धशाखा f. *Ast* AK. 2,4,1,11. H. 1119. Halây. 2,37. pl. *Stamm und Aeste* Bhâg. P. 8,5,49.

स्कन्धशिरस् n. *Schulterblatt* Spr. (II) 1524.

स्कन्धशृङ्ग m. *Büffel* Çabdâratnam. bei Wilson.

स्कन्धस् n. 1) *Schulter* Uṇâdis. 4,206. — 2) *Verästung, Krone eines Baumes:* वृक्षस्य स्कन्धः पतित इव शाखाः AV. 10,7,38. स्कन्धांसि कुलिशेन विवृक्णा ṚV. 1,32,5. TS. 7,3,20,1.

स्कन्धस्वामिन् s. स्कन्द°.

स्कन्धाग्नि (स्कन्ध + अ°) m. *ein Feuer von Stammholz* d. i. *von dickem Holze* Hin. 200. स्कन्दाग्नि Taitt. 1,1,68.

स्कन्धात (स्कन्ध + घत) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's (*Augen auf den Schultern habend*) MBn. 9,2562.

स्कन्धानल m. = स्कन्धाग्नि Gaṭâdh. im ÇKDn.

स्कन्धावार (स्कन्ध + आ°) m. *das königliche Hauptquartier im Felde* (*Hut des Stammes* d. i. *des Fürsten*) Taitt. 2,8,1. H. 746. 973. Halây. 2,131. MBn. 1,6980. 5,196. 3159. 5311. R. 6,108,21. Kâm. Nîtis. 16, 28. 33. आवृतस्तु पतः स्कन्धः स्कन्धावारस्ततः स्मृतः 33. 18, 60. Suçr. 1,123,1. Kathâs. 102,105. Hit. 107,21. Inschr. in Journ. of the R. A. S. 1,268 (der neuen Serie). स्कन्धावारं निवेशयेत् Kâm. Nîtis. 16,1. Pañc. 82,3. स्कन्धावारस्य निवेशः Vardh. Bhâ. S. 93,18. °निवेश, °निवेशन MBn. 9,1659. R. 3,2,3. 5,17,15. °वारं नि-बन्ध् Râśân-Tar. 1,60. nach den Lexicographen auch *Heer.*

स्कन्धिक m. = स्कन्धवाह् H. 1258. Halây. 2,111.

स्कन्धिन् (von स्कन्ध) 1) adj. *mit einem* (starken) *Stamme versehen, stämmig:* वनस्पति MBn. 12,5805. — 2) m. *Baum* H. ç. 172. — Vgl. महा°.

स्कन्धिल m. N. pr. eines Mannes Hiouen-thsang 1,184.

स्कन्धेमुख adj. *das Gesicht oder den Mund auf den Schultern habend:* Wesen im Gefolge Skanda's MBn. 9,2591.

स्कन्धोग्रीव (स्कन्धस् + ग्रीवा) adj. (f. ई) Bez. *einer best. Form der* Bṛhatî (8 + 12 + 8 + 8) ṚV. Prât. 16,32 (33). Ind. St. 3,91. 94 fgg. 130. 147. 243. fg. °ग्रीवा fehlerhaft Colebr. Misc. Ess. 2,152.

स्कन्धोपनेय (स्कन्ध + उ°) m. (sc. संधि) Bez. *eines best. Friedensbundes* Kâm. Nîtis. 9,4. Spr. (II) 3958.

स्कन्ध्य adj. = स्कन्ध इव gaṇa शाखादि zu P. 5,3,103 (oxyt.). *zur Schulter gehörig* u. s. w. AV. 8,25,3. मणिका Âçv. Bh. 7,1.

स्कन्न partic. s. u. स्कन्द्. Davon °त्व n. *das Sichstopfen, Dickwerden des Bluts* Suçr. 1,45,14. Vâgbh. 1,22,18.

स्कभ्, स्कम्, स्कंभते (प्रतिबन्धे) Dhâtup. 10,27. स्कंभाति (रोधने, स्तम्भे) 31,8. स्कंभीति P. 3,1,82. Vop. 16,1. स्कभीत, स्कभुर्वेतम् (andere Rec. स्कंभीतम्) VS. चस्कम्भ, चास्कंभ, स्कम्भुम्, स्कम्भुस्, चस्कभानं (तस्तभान ṚV.) AV. 4,2,3. स्कभितवे ṚV. 10,65,7. = स्तभ् *befestigen, stützen, stemmen.* पृथिवीं स्कम्भुरोर्णवा ṚV. 10,65,4. चास्कम्भे चित्कम्भनेन स्कभीयान् 111,5. अधने: VS. 9,18. TS. 1,7,8,1. चस्कम्भ पप्रिवृषभम् Bhâg. P. 2,7,40. स्कम् verschwindet aus dem Gebrauch, während स्तम् bleibt.

— caus. स्कंभायति P. 3,1,84, Vârtt., Schol. 1) *befestigen, stützen* ṚV. 1,154,1. रोदसी 4,1,4. रश्मीन् VS. 8,59. partic. स्कभित P. 7,2,84. ṚV. 1,34,2. 10,149,2. — 2) *hemmen, Einhalt thun:* निर्ऋतिम् ṚV. 10,76,4.

— अप s. अपस्कम्भ.

— अभि, caus. अभि स्कभायत् P. 3,1,84, Vârtt., Schol.

— आ *feststellen in* oder *bei* (loc.) ṚV. 10,6,2.

— उप *durch Stützen aufrecht halten:* उप यो स्कम्भद्: स्कम्भनेन ṚV. 6,72,2.

— नि s. निष्कम्भ fg.

— प्रति *sich entgegenstemmen:* प्रतिष्कभे infin. ṚV. 1,39,2.

— वि, der Anlaut geht stets in ष über P. 8,3,77. Vop. 8,98. 16,1. partic. विष्कब्ध P. 7,2,84, Schol. 1) *befestigen* ṚV. 3,31,12. रोदसी VS. 5,16. ein Geschoss *fügen:* वज्राय विष्कभे (infin.) ṚV. 8,89,12. — 2) *sich losmachen, entfliehen:* विष्कम्भितुम् Bhatt. 9,76. — caus. 1) *befestigen:* रोदसी वितरं वि ष्कंभायत् ṚV. 5,29,4. 6,44,24. द्यिवी 10, 44,9. AV. 4,1,4. partic. विष्कम्भित P. 7,2,84, Schol. ṚV. 6,70,1. — 2) *Jmd zurückdrängen, abweisen:* partic. विष्कम्भित Pañcat. 29,6 (25,13 ed. orn.). 56,9. 10 (47,8 ed. orn.).

स्कंभीयस् (von स्कभ्) adj. compar. *kräftig stützend* ṚV. 10,111,5.

स्कम्भ (wie oben) m. 1) = स्तम्भ *Stütze, Strebepfeiler* ṚV. 1,34,2. दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् 4,13,5. 8,41,10. 9,74,2. 86,46. 10,5, 6. 44,4. AV. 10,7,2. 4. fgg. 8,2. Kâṭhaka in Ind. St. 9,15. fg. — 2) N. pr. eines Mannes gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,95. — Vgl. स्काम्भायन.

स्कम्भदेह adj. *dessen Gabe feststeht:* die Marut ṚV. 1,166,7.

स्कम्भन (von स्कभ्) n. *Stütze, Pfeiler:* वज्र ṚV. 1,160,4. 3,31,12. 8,47,5. 72,2. TS. 1,2,8,2. mit Verlust des Anlauts ṚV. 10,111,5. ṚV. Prât. 4,7. f. स्कम्भनी dass. VS. 1,19.

स्कम्भसर्जन n. *Durchlass an einem Pfeiler* d. h. *die in dieselben eingelassenen Sprossen* TS. 1,2,8,2. f. ई dass. VS. 4,36.

स्काम्भायन (!) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,8. wohl fehlerhaft für स्काम्भायन्य.

स्कान्द 1) adj. von Skanda *herrührend* u. s. w.: वचस् Sarvadarçanas. 72,2. पुराण oder n. mit Ergänzung dieses Wortes 13. VP. XLV, N. 70. 284. Weber, Kṛshṇaj. 221. fgg. Râmat. Up. 332. Ind. St. 1,18,9. Verz. d. B. H. 127, N. 1. Verz. d. Oxf. H. 59,a,39. 65,a,42. 108,a, No. 108. 113,b,48. 126,a,23. 249,a,19. 252,a,13. 279,b,40. 284,b,23. —

2) adj. von Skandasvâmin *herrührend:* °भाष्य Müller, SL. 240. — 3) m. fehlerhaft für स्कन्द (so ed. Bomb.) MBh. 13,2018.

स्कान्दप्रभासखण्ड n. Titel eines *Abschnitts* in einem best. Buche Verz. d. Oxf. H. 287,*b*, No. 679.

स्कान्दविशाख adj. von स्कन्दविशाख P. 7,3,21, Schol.

स्कान्दायन m. pl. zum sg. स्कान्दायन्य gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98.

स्कौन्दायन्य m. patron. von स्कन्द ebend.

स्कान्धिन् m. pl. *die Schüler des* Skandha gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

स्काम्भायन m. pl. zum sg. स्काम्भायन्य gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,4 v. u.

स्कौम्भायन्य m. patron. von स्कम्भ gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98.

स्कु, स्कुनाति (घावरणे, घाप्रवणे, घाप्रवने, घप्रक्षरणे, उद्गतौ) Dhâtup. 31,6. auch स्कुनौति P. 3,1,82. Vop. 16,1. (घा) स्कुनोति AV. (घा) स्कौति Çat. Br. *bedecken, überschütten:* (रामम्) घस्कुनाच्चेषुवृष्टिभिः Bhatt. 17,82.

— intens. चोस्कूर्यते *an sich raffen* Naish. 4,3. Nir. 6,22 (चोस्कूर्यमाण = दृढम्). वामम् ṚV. 1,33,3. वसु 8,6,41. विशो मनुष्यान् *an sich ziehen* (zum Schutz u. s. w.) 6,47,16.

— घव s. घवस्कव.

— घा *raffen, abtheilen, trennen:* घङ्गारमास्कौति (= विभजति Comm., entspricht dem घाकृत्य Kâṭy. Çr. 2,4,27) Çat. Br. 1,2,4,5. यो गो: कर्णावास्कुनोति *serren an* (um daran eine Marke zu machen) AV. 12,4,6.

— निम् absol.: घाकृतीरसुरा निष्कावमादन् *zerreissend, sich darum reissend* TS. 6,2,4,5.

— प्रति *in Erwiederung bedecken, — überschütten:* प्रत्यस्कुनोद्दशयोर्वं शरैः Bhatt. 18,73. — Vgl. घप्रतिष्कुत (eig. *nicht weggedrängt*).

स्कुन्द्, स्कुन्दते (घाप्रवणे, घाप्रवने; घाप्रवण = उत्प्लवन, उत्प्लुत्यगमन, उद्गरण) Dhâtup. 2,8. — Vgl. प्रस्कुन्द.

स्कुभ्, स्कुभ्नाति (रोधने, स्तम्भे) Dhâtup. 31,8. auch स्कुभोति P. 3,1,82. Vop. 16,1. etwa *abtrennen:* स्कुब्धा (so ist vielleicht st. स्कुट्टा, स्कुप्त्वा zu lesen) Âpast. 1,31,24.

— वि, °ष्कभ्नाति und °ष्कभोति Vop. 16,1.

स्कोधेषु s. घ°.

स्कोटिका f. *eine Art Bachstelze* Trik. 2,5,30.

स्खद्, स्खदते (स्खदने, विदारे) Dhâtup. 19,6. mit घप, घव und परि caus. स्खदयति und स्खादयति 19,72. Vop. 18,24.

स्खदन (von स्खद्) n. = विदारण, विदार, स्थैर्य, पाटन, क्लेशोत्पादन, हिंसा Durgâd. bei Westergaard unter स्खद् und im ÇKDr.

स्खदा f. gaṇa गवादि zu P. 5,1,2.

स्खैद्य adj. von स्खदा ebend.

स्खल्, स्खलति (संचलने, auch संचये) Dhâtup. 15,37. Nir. 3,10. घस्खालत; hier und da auch med. *straucheln und dadurch in's Schwanken gerathen, taumeln, stolpern, stecken —, hängen bleiben:* घधमुश्चस्खलुश्चान्ये पेतुर्मुस्तघापरे MBh. 7,4568. 8,4666. शरीरेषस्खलन् 11,440. विषयेषु इव स्खलन् Hariv. 4840. R. Gorr. 2,84,1. मरलीव इव स्खलन् 5. Hariv. 10535. 10536 (med.). ते हता रुषस्तात नास्खलन्नापि विव्यधुः R. 5,91,15. Vishn. 1,7,12. Kathâs. 49,89. 123,205. Bhâg. P. 6,14,49. स्खलति चरणौ भूमौ Mṛicch. 143,23. न चस्खाल रथः Kathâs. 18,70. नौः समुद्रे ऽस्खलत्प्रवालाङ्कुरकोटिषु Çata. 10,79. समुद्रं स्खलन्तं कन्दरेषु MBh. 3,8803. सीतितः स्फुरद्गिरिगुरुप्रावस्खलद्रोचसः Spr. (II) 3780. Prab. 43,5. Kâdamb. 28. स्खलदुत्तरीय Mâlatîm. 73,2. स्खलद्बलय Spr. (II) 1436, v. l. Verz. d. Oxf. H. 139,*a*,8. 9. *stocken* von der Rede: स्खलद्वाक्य Jîv. 2,14. स्खलद्विरलपदैः Ragh. 9,76. 18,42. Uttarar. 74,8 (93,12 = Mâlatîm. 162,10). Spr. (II) 1938. 3585. Kathâs. 23,88 (पदानि *Schritte* und *Worte*). Bhâg. P. 3,8,6. LA. 17,6. न दुर्गेषापि चस्खाल यस्याज्ञा *blieb nicht stecken, drang durch* Kathâs. 114,21. स्वरूपास्खलता Bhâg. P. 2,7,40. यस्याग्रिहोत्रं स्खलते Ait. Br. 7,5. *straucheln* so v. a. *irren, fehlgehen, fehlgreifen* Kâraka 3,7. Vîrûp. 1,12,68. Spr. (II) 4774. 5727. Râja-Tar. 1,361. स्खलति न प्रायेण येषां मनः Spr. (II) 3813. यस्य बुद्धिर्न स्खलति Sarvadarçanas. 108,9. Für die Bed. संचय *sammeln* wird von Durgâd. nach ÇKDr. folgendes Beispiel angeführt (d. i. erfunden): स्खलति पुष्पं मालिकः — partic. स्खलित 1) adj. *a) straucheind, stolpernd, taumelnd, unsicher* (Gang) MBh. 12, 2338. Hariv. 8383. निपेतुस्तुरगास्तस्य श्रमेण स्खलिता भृशम् R. 3,29,2. Kathâs. 49,90. Bhâg. P. 6,2,13. 12,12,46. याति स्खलितम् (adv.) Vikr. 113. मदस्खलितगामिन्यः MBh. 1,8070. °विक्रान्त Hariv. 3069. घायाति स्खलितैः पादैः Spr. (II) 998. Kusum. 24,6. गति Çiç. 9,78. °गति adj. Varâh. Bṛ. S. 94,12. Pañcat. 90,21. घस्खलितप्रयाण adj. Spr. (II) 3467. कनकदण्डो ऽङ्के वितानस्खलितो ऽपतत् *schwankend* Râja-Tar. 4,652. घशकुनेन स्खलितः so v. a. *stutzend* Çiç. 9,33. — *b) stockend, stecken —, hängen geblieben, aufgehalten, gehemmt:* वाहन *Schiff* Verz. d. Oxf. H. 151,*a*,6. वलीषु तस्याः स्खलिताः प्रघनोद्बिन्दवः Kumâras. 5,24. Prab. 79,11. विषमशिलातलस्खलिताम्बु (so ist zu lesen) Pañcat. 188,10. वलय Mâlatîm. 148,13. चक्रमस्खलितम् Bhâg. P. 3,20,33. *stockend* von Reden, Worten Kumâras. 5,56. Uttarar. 34,12 (70,6). Spr. (II) 1312. 6371. Kathâs. 64,73. Bhâg. P. 3,4,14. कण्ठेषु स्खलितं पुंस्कोकिलानां रुतम् Çiç. 131. घस्खलितोपचारा *gehemmt, unterbrochen, gestört* Ragh. 8,20. स्खलितवीर्य 11,83. उपक्रमैरस्खलितैः 18,14. Spr. (II) 1601. वेग 3310. भूतार्थवर्णने सर्वप्रकारस्खलिते Râja-Tar. 1,10. सर्वत्रास्खलितादेश: Bhâg. P. 4,21,12. 5,18,34. Prab. 87,14. व्रत Varâh. Bṛ. S. 16, 33. प्रियम्भवस्यस्खलिता मतिर्मम Bhâg. P. 1,5,27. स्खलित im Gegens. zu उत्स्वाण so v. a. *woran Etwas fehlt, mangelhaft,* zu *wenig* Çiñân. Bh. in Ind. St. 2,305. — *c) fehl gegangen, sich irrend:* गोत्रेषु *in den Namen* Çiç. 132. लेख्ये so v. a. *Nichts darin leistend, Pfuscher* Varâh. Bṛ. 18,17. — 2) n. *a) das Straucheln, Taumeln, Stolpern:* पदान्तरे स्खलितं निरूप्य Çiç. 45,2. मदस्खलितं निरूप्य Prab. 61,9. चक्रे च स्खलितम् Kathâs. 64,68. eines Mädchens und eines Flusses Megh. 29. यावदस्खलितं तावत्सुखं याति समे पथि। स्खलिते च मुमत्यन्ने विषमं च पदे पदे ॥ Spr. (II) 3481. *das Straucheln* so v. a. *Fehlgehen, Versehen, Missgriff:* न तेषां स्खलितं किंचिदासीच्चापकृतं तथा MBh. 14,2622. R. 1,13,10 (3 Gorr.). तत्र न्याय्यात्पथः शब्दस्तेः स्खलितमात्मनः Kathâs. 113,14. तस्य स्खलितं मम 42,12. वेधसः स्खलितत्रयम् Spr. (II) 171. 4517. गोत्रेषु *in den Namen* Çiç. 132, v. l. गोत्र° Kumâras. 4,8 (pl.). Kathâs. 14,66. भावस्खलितानि Vikr. 89. प्रमाद° Çiç. 153. Spr. (II) 6878. beim Lesen Siddh. K. zu P. 4,4,68. = घलित (क्वलित H.) und खेय H. an. 3,208.

Mrc. t. 165. — *b) Betrug, List, Kriegslist* AK. 2,9,2,77. H. 804. — partic. स्खलितवत् *fehl gegangen:* चारित्रत: Spr. (II) 1390.

— caus. स्खलयति (nur dieses zu belegen) und स्खालयति Dhātup. 19,69. *stocken machen:* वचनानि स्खलयन्पदे पदे (वाग्मिनीमद:) Kumāras. 4,12. *Jmd zurückhalten, abwehren* (vom Thürsteher) Bhāg. P. 3,15,30.

— अप s. अपस्खल.

— परि *taumeln* Kathās. 87,48. °स्खलित n. *das Taumeln:* मध्येनदि च सा चक्रे परिस्खलितमात्मन: 72,344.

— प्र *straucheln, taumeln, stolpern* MBh. 3,9957 (ein betrunkenes Weib und ein Fluss). 12145. 13,7434. Vikram. 1,7,15. Spr. (II) 1032. Kathās. 64,72. Pañcat. 36,16 (32,21 ed. orn.). Bhāg. P. 10,4,8. रुधवाङ्निन: Harīv. 9298. R. 6,73,35. रुवा: Bhaṭṭ. 14,98. प्रस्खलद्भि: पदैर्ययौ Kathās. 18,223. 40,3. प्रस्खलद्गति adj. 71,191. प्रस्खलित् *straucheln, taumelnd* MBh. 8,707. प्रस्खलितात्तर् *unterwegs* 700. *fehl gegangen* in übertr. Bed. Kām. Nītis. 17,47. — Vgl. प्रस्खलन.

— प्रति, अप्रतिस्खलित zur Erklärung von अप्रतिष्कुत Nir. 6,16.

— वि, partic. °स्खलित *stockend:* विस्खलितालर् Kathās. 13,18. *fehl gegangen, sich geirrt habend:* गोत्र° *im Namen* Rāgat. 19,24.

— सम्, partic. संस्खलित n. *das Fehlgehen, Versehen, Missgriff,* pl. Nigān. 42,4.

स्खल (von स्खल) m. *das Straucheln:* गतौ Prasaṅgān. 10,b. — Fehlerhaft für स्खल Kull. zu M. 7,101.

स्खलन (wie oben) n. 1) *das Straucheln, Schwanken, unsicherer Gang* AK. 1,1,2,36. H. 1522. Suçr. 2,142,17. Kām. Nītis. 7,25. 14,61. Bhāg. P. 5,3,12. — 2) *das Stocken:* वाक् ° gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27. *das Anstossen —, Hängenbleiben an Etwas* Uttarār. 33,18 (44,13). वस्त्रास्तर° so v. a. *Verschiebung* Kaurāp. 13. *das Darüberfahren* (mit der Hand) Çiç. 9,52. — 3) *das Hineinfallen in:* व्युत्कलोत:° Bhāg. P. 5, 14,18. *das Herausfallen:* रेत:° *Ergiessung des Samens* Prāyaçcittend. 17,5,9. Kull. zu M. 3,63. *das Herausfallen aus* so v. a. *das Kommen um:* राज्यात्स्खलनम् MBh. 1,2987. — 4) *das Fehlgehen, Sichirren:* गोत्र° *im Namen* Spr. (II) 4137. Sin. D. 219 (गात्र° Druckfehler in der neueren Ausg.).

स्खुड्, स्खुर्दति (संवरणे) v. l. für स्युड् Dhātup. 28,94.

स्तक्, स्तँकति (प्रतीघाते) Dhātup. 19,20.

स्तन्, स्तँनति (शब्दे) Dhātup. 13,16. (अभि) स्तन, (नि:) स्तनिक्, तस्तान, अस्तानीत्, स्तन् Ṛv. 10,92,8. *donnern, dröhnen; brüllen, brausen:* सिंक् इव अस्तानीत् die Trommel AV. 5,20,2. स्तनतो कूजतो वैव मनुष्यगजवाजिनाम् MBh. 8,4138. स्तनतस्तस्य (अमुरस्य) R. 4,9,19. तस्तनु: नता: Bhaṭṭ. 14,30. (मेघा:) स्तनत: स्तनयित्नुभि: Bhāg. P. 10,25, 9. यस्य विस्फारनिर्घोषै: स्तनति (wohl स्तनसि zu lesen, sonst als trans. zu fassen) दिशो दश R. 7,28,45. — Vgl. 3. तन्.

— caus. स्तनँयति Dhātup. 19,81. 35,7 (देवशब्दे). dass.: अधा: Ṛv. 1, 79,2. 5,83,7. AV. 4,15,6. 5,20,7. 9,1,24. 13,4,51. स्तनयति *es donnert* Çat. Br. 10,6,4,1. Kāṭhak. Up. 2,3,1. 7,11,1. partic. स्तनँयत् Ṛv. 1,38, 2. उत्स 64,6. 140,5. 4,17,12. 5,42,14. यत्पर्जन्य: स्तनयन्हन्ति दुष्कृत: 83,2. 6,45,12. विद्युत् 9,87,3. ब्रह्म 10,40,3. 45,4. 67,5. *der brausende Soma* 9,19,3. 72,6. 86,9. *Wind* 10,168,1. AV. 1,12,1. 8,7,21. *Meer* Bhāg. P. 3,13,29. *knatternd vom Feuer* Ait. Br. 3,4.

— अभि *donnern* AV. 5,126,2. — Vgl. अभिष्टन्. — caus. dass. TS. 1, 6,11,4. — intens.: सिंक् इवाभि तंस्तनीहि (Trommel) AV. 5,20,1.

— निस् (oft scheinbar नि), Wandel des Anlauts in ष्ट VS. Pair. 3, 68. *losdonnern, aufbrüllen; laut stöhnen:* Trommel Ṛv. 6,47,30. निष्टनति च मातङ्ग: MBh. 5,4844. सदा निष्टनसे उदन्वन् Bhāg. P. 10,90,17. क्लिवा सो ऽमून्मुञ्चन्निष्टनित्वा 1,3618. partic. निष्टनत् 3,14060. 16860. 7,785. 3165. 6438. 8,975. 12,3696 (nach der Lesart der ed. Bomb.). R. 2,77,8. 5,69,28. 73,66. 76,44. 7,32,62. — Vgl. निष्टानक, इष्टनि.

— अभिनिस् *erdröhnen:* अभिनि:स्तनति मृदङ्ग: P. 8,3,86, Schol. — Vgl. अनिनिष्टान.

— विनिस् (scheinbar विनि) *laut stöhnen* Kāraka 8,17.

— प्र caus. *hervordonnern:* दिव: प्रुष्णो: Ṛv. 4,10,4. यथाऽदिव वृष्टय: 10,75,2.

— वि *laut stöhnen:* वितस्तान Bhaṭṭ. 14,60.

स्तँन m. Taik. 3,3,4. m. (nur dieses zu belegen) und n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) *die weibliche Brust, Zitze* (bei Menschen und Thieren) AK. 2,6,2,28. 3,4,28,165. H. 603. Hall. 2,371. शशय Ṛv. 1,164, 19. 169,4. स्तनाविव पिप्यतम् 2,39,6. पीपिवंस् 7,96,6. AV. 8,10,13. सकृन्नधारावनिती 9,1,7. 10,2,4. 10,7. 20. 12,4,13. Ait. Br. 1,25. 4,1. वत्स: स्तनं प्रेप्सति TS. 5,4,2,1. 6,2,8,1. 2. Çat. Br. 2,2,4,1. 5,1,3,5. 14,8,12,1. य एष स्तन इवावलम्बते Taitt. Up. 1,6,1. Sāṅkhār. Br. in Ind. St. 1,41. Kauç. 32. °प्रतिधान Gobh. 2,7,17. वत्सा मातृणां स्तनान्पिबन्ति MBh. 1,712. स्तनौ तस्या ववल्गतु: 3,1824. 8,1560. fg. 11,11021 (चतुर: स्तनान् mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,43,16. Suçr. 1,48,14. 321,18. 372,1. 3. Megh. 18. 68. 80. Bṛ. 1,4. 7. Ragh. 2,36. 3,8. 12, 22. °युग Çiç. 18. विधत्तास्त्रीस्तनौ Spr. (II) 1265. 2935. 4438. °कलशयुग 5733. °क्षीणा नारी 6010. गर्भादुत्पतिते ज्ञातौ मातु: प्रस्रवत: स्तनौ 6255. 7184. fgg. Vaṇīn. Bṛh. S. 11,41. 65,3. 70,21. 78,3. 105,11. Mārk. P. 44,13. Bhāg. P. 5,2,6. पिबन्तं स्तनत: क्षीरम् Weber, Kṛshṇaj. 278. पाणयन्ति स्तनं कृत्रिम् ebend. °तट Spr. (II) 1601. 7183. °मण्डल Hall. 2,337. Dhūrtas. 80,15. °वेषधु Çiç. 20. auch *Brustwarze des Mannes* Suçr. 1,105,9. 124,10. Weber, Rāmat. Up. 292. Vaṇīn. Bṛh. S. 51,3. 53,51. स्तनयो: षोडश चात्तरम् 58,24. 68,88. Bhāg. P. 2,1,32. 3,28,25. Am Ende eines adj. comp., Accent P. 6,2,163. fg. ये वै गो: कनीय:स्तना: पशवो ये भूय:स्तना: Çat. Br. 6,3,2,19. उर: काठिन्यमुक्तंस्तनम् Çiç. 58. अर्धपीत° (निंकृशिष्यु) 173. f. या und ई P. 4,1,54. Vop. 4,17. या TS. 5,1, 6,1. Çat. Br. 6,5,2,18. fg. Kumāras. 3,39 (v. l. ई). ई 4,34. Kathās. 34, 231. 108,69. Bhāg. P. 3,23,36. संस्कृत° R. 3,52,35. ऊर्ध्व° Suçr. 1,371, 18. लम्ब° ebend. Kathās. 20,109. घन° Spr. (II) 644. प्रस्रुत° Rāgat. 3,76. कुम्भ° Bhāg. P. 8,9,17. — 2) *ein (zitzenähnlicher) Zapfen an einem Gefäss* Çat. Br. 5,5,2,16. — Vgl. अजगल° (अजगला°), गल°, गले°, गो°, त्रि°, द्वि°.

स्तनकुण्ड n. sg. und pl. N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3,8130.

स्तनग्रह m. *das Nehmen der Brust* (durch das Kind) Kauç. 10.

स्तनचूचुक n. *Brustwarze* Suçr. 1,349,17.

स्तनँय (von स्तन्) m. *Gebrüll:* des Löwen Ṛv. 5,83,3.

स्तनँयु m. dass. AV. 5,21,6. 8,7,15.

स्तनदात्री nom. ag. *die Brust reichend, säugend* Paśkar. 1,10,8.

स्तनदेहिन् adj. *die Brust verschmähend* Suçr. 2,384,15.

स्तनन (von स्तन्) n. *der hohle Ton des trockenen Hustens* Kâraka 8, 16. *Donner; Laut* überh. und = कुन्थन, कुन्थित H. an. 3,428. Med. n. 145.

स्तनंधम adj. Vop. 26,54.

स्तनंधय adj. (f. ई; nach Bhar. zu AK. auch धा) *an der Brust saugend, Säugling* P. 3,2,29. Vop. 26,54. AK. 2,6,2,41. H. 338. Ragh. 14, 75. Mâlatîm. 164,11 (zu lesen mit Bendey दृष्टस्तनयः स्त°). Spr. (II) 3813. Mâṛk. P. 35,14. Daçak. 186,4.

स्तनप adj. (f. धा) dass. AK. 2,6,2,41. H. 338, Schol.

स्तनपातृ nom. ag. dass.: पूतना° Paśkar. 3,14,15.

स्तनपान n. *das Saugen an der Mutterbrust* Spr. (II) 6482. 7447. Daçak. 186,5. °बाल्यव्रतस्थिताः so v. a. *Säuglingsalter* Varâh. Bṛh. S. 96,17. यावद्दोस्तनपानाच्च यावच्छ्रोणोपसेवनात्। तत्तवः कर्णणा वृत्तिमाप्नुवन्ति MBh. 3,1205.

स्तनपायिका f. *ein Mädchen, das noch an der Brust saugt*, ÇKDa.

स्तनपायिन् adj. = स्तनप, स्तनंधय Weber, Kṛshṇaj. 274. 289.

स्तनपोषिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,376 nach der Lesart der ed. Bomb., °पोषिक ed. Calc. und VP. 196.

स्तनबाल m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,371. तनबाल mit der v. l. स्तन° VP. 193.

स्तनभर m. *ein starker Busen* Trik. 3,2,8.

स्तनभव m. *quidam coeundi modus* Smaradîpikâ im ÇKDa.

स्तनमध्य n. *der Raum zwischen den Brüsten* Vikr. 7.— Vgl. स्तनान्तर.

स्तनमुख m. (!) *Brustwarze* H. 603.

स्तनमूल n. *der untere Theil der weiblichen Brust* Suçr. 1,349,16.

स्तनयंदम (स्तनयत्- + 2. घम, adj. *mit Donner hinstürmend:* die Marut RV. 5,54,2.

स्तनयित्नु (vom caus. von स्तन्) m. Uṇâdis. 3,29. P. 5,4,55, Schol. Vop. 26,166. sg. und pl. *Donner* H. an. 4,202. Med. n. 219. RV. 5,83, 6. AV. 1,13,1. 4,15,11. 7,11,1. स्तनयित्नुस्ते वाकप्रेक्षापते 9,1,10. 20. 2,15. 11,4,2. 3. 7,20. VS. 25,2. 36,21. TS. 5,7,12,1. Çat. Br. 11,6,3, 9. 14,3,5, 10. 8,2, 4. Kaush. Up. 4,2. MBh. 2,301. 3,12087. 4,1498. Suçr. 1,7,17. 17,3. Uttarar. 41,8 (55,8). 94,6 (122,12). Bhâg. P. 1,14, 15. 2,6,14. 3,19,19. 4,5,10. 8,20,30. 10,25,9. Kâvjâd. 3,136. pl. personificirt als Kinder Vidjota's (*des Blitzes*) Bhâg. P. 6,6,5. *Gewitterwolke:* रिक्ता: Spr. (II) 4331. Bhâg. P. 3,10,43. *Wolke* überh. AK. 1,1, 2,8. H. 164. H. an. Med. Halâj. 1,58. *Blitz* Çabdar. im ÇKDa. *Tod* und *Krankheit* H. an. — Vgl. तनयित्नु.

स्तनयित्नुमत् (von स्तनयित्नु) adj. von *Donner begleitet:* Wind MBh. 6,731 (ed. Calc. fehlerhaft °वत्). 7,9029.

स्तनयोषिक s. स्तनपोषिक.

स्तनरोग m. *die Krankheiten der weiblichen Brust* Verz. d. B. H. No. 963.

स्तनरोहित m. (v. l. n.) *ein best. Theil der weiblichen Brust* Suçr. 1,349,17.

स्तनवृन्त n. *Brustwarze* H. 603.

स्तनशिखा f. dass. ebend.

स्तनस्पृं (von स्तन) adj. *die Brust suchend, Säugling* AV. 12,3,37.

स्तनाय (स्तन + घय) n. *Brustwarze* Râgân. im ÇKDa.

स्तनान्तर (स्तन + घ°) n. 1) *der Raum zwischen den Brüsten, die Mitte der Brust* (bei Frauen und Männern) H. 603. R. 3,34,26. 38,36. 5,13,52. 68,2. 6. 7. Suçr. 1,65,20. 124,11. Ragh. 10,63. Çâk. 145.— 2) *a mark on the breast, indicative of future widowhood* Wilson nach Çabdârthak.

स्तनाभुज् (स्तन + 4. भुज्) adj. *die Brust (Euter) geniessend:* धेनवः स्तनाभुजो धर्शिमीः *lactentes orbae* RV. 1,120,8.

स्तनाभोग (स्तन + धा°) m. *ein voller Busen* Trik. 3,2,8. Prab. 81,15.

स्तनित (von स्तन्) 1) adj. *donnernd:* घनेषु च महाघोराः स्तनितः श्रूयते स्वनः MBh. 6,67. खातिस्तनिता मेघाः R. 6,11,27. — 2) m. *a) Donner* AK. 1,1,2,10. H. 1406. an. 4,202. Med. n. 219. Kauç. 98. M. 4,103. 106. Jâṇ. 1,149. R. 2,97,8. Mahâbh. 83,21. Spr. (II) 2353. Megh. 22 25. 29. 38. 95. fg. Varâh. Bṛh. S. 5,93. 21,22. 36. 28,12. am Ende eines adj. comp. (f. धा) MBh. 7,332. 6675. — *b) lautes Getön:* धार्त° Harîv. 5601. vom *Laute einer schwingenden Bogensehne* Bhâg. P. 5,1,29. *Händeklatsch* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. मेघ° (auch R. 3,74,15. 5,12,33).

स्तनितकुमार m. pl. bei den Gaina Bez. *einer der zehn zu den Bhuvanâdhipa gezählten Klassen von Göttern* H. 90.

स्तनितफल m. *Asteracantha longifolia Nees.* Râgân. 11,219.

स्तनितृ TS. Prâṭ. 8,8.

स्तनून vgl. तनून.

स्तनोत्तरीय (स्तन + उ°) n. *Busentuch* Ragh. 16,17. Spr. (II) 6199.

स्तन्य (von स्तन) n. (m. Bhâg. P. 3,6,31) *die in der weiblichen Brust enthaltene Milch* H. 404. Halâj. 2,119. MBh. 8,4237. Suçr. 1,48,14. 176,6. 285,16. 369,9. 12. 2,323,2. 324,6. 10. °त्याग 1,49,14. °कर 198,6. °वर्धन 155,10. °नाश 372,20. Nâjâs. 3,1,22. Ragh. 2,69. धा स्तन्यपानात् Spr. (II) 1608. जननी° 1620. 2067. स्तन्यत्यागमात्रके वयसि Uttarar. 26,10 (34,16). Mârk. P. 44,7. Katuâs. 21,42. तद्दालोकमृतस्तन्ये 110,109. Bhâg. P. 4,8,18. 5,11,26. Paṇḍat. 238,7. प्रसू° H. an. 3,620. Med. r. 238.

स्तन्यप adj. = स्तनप *Muttermilch trinkend, Säugling* Suçr. 1,373,20.

स्तंबक (vgl. स्तम्ब, स्तम्बक, स्तिभि) Uṇâdis. 4,96 (zu lesen ऊम्बस्तम्बकौ). m. Siddh. K. 248,b,16. m. n. Trik. 3,3,13. am Ende eines adj. comp. f. धा. *Buschel*, insbes. *Blüthenbüschel* AK. 2,4,2,16. 3,4,6,31. H. 1126. Halâj. 2,32. यशोकं स्तबकैरुत्कम् MBh. 1,2378. 5,7154. मधुव्यस्तबका लता Spr. (II) 2787. R. 2,96,26. R. Gorr. 2,56,32. 59,7. स्तबो °सनिभो 5,21,20. Megh. 73. Ragh. 13,32. Kumâras. 3,39. Vikr. 125. 141. Spr. (II) 1845. Z. d. d. m. G. 27,94. Katuâs. 34,231. 35,11. Bhâg. P. 4,1,18. 5,17,13. 24,10. 10,3,3. 12,4. 12,8,21. Kâdamb. 130. प्रचुरपचेलिमफलत्रीहि° Kull. zu M. 4,172. von den *Schwanzfedern* eines Pfaues Bhâg. P. 10,33,6. so v. a. *Quaste, Troddel* Harîv. 3733. 3970. *Blüthenbüschel* als Bez. der Abschnitte in Werken, welche im Titel लता, लतिका, मञ्जरी, पारिजात und dgl. enthalten, Verz. d. B. H. No. 542. 627. Verz. d. Oxf. H. 198,b, No. 468. 211,a, No. 498. 242,b, No. 599. 275,a, No. 651. fg. Wird in den Bomb. Ausgg. stets mit व geschrieben. — Vgl. कुसुमस्तबक.

स्तबकफल m. *eine best. Pflanze*, = तेजःफल Râgân. 11,216.

स्तबकिर्त (von स्तबक) adj. gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. *mit Blü-*

thenbüscheln u. s. w. versehen Daçak. 66,8. निमग्नकङ्कपक्षाङ्कितैः क्रोडैः स्तबकितेव (घटवी) Kathâs. 42,5. अभिनवकुसुमास्तबकिततरु *mit frischen Blüthenbüscheln besetzt* Vikr. 119. नारीदृङ्नीरस्तबकितो नरनाथमार्गः Râja-Tar. 5,430. स्फुरन्नानारत्नस्तबकिततनु Khandoh. 104. Ueberall स्तवकित geschrieben.

स्तब्ध s. u. स्तभ्.

स्तब्धकर्ण m. *Steifohr*, N. pr. einer Gazelle Hariv. 1210. eines Löwen Hit. 60,6. fgg.

स्तब्धता (von स्तब्ध) f. 1) *Steifheit:* des Gliedes Karaka 7,3. — 2) *Aufgeblasenheit, ein anspruchsvolles Wesen* (= धैर्यत्व Nilak.) MBu. 5, 1536. Kir. Nitis. 13,62. ध° 4,39. — 1) 2) Spr. (II) 2166.

स्तब्धत्व (wie eben) n. = स्तम्भ Hall. 5,48. 1) *Steifheit:* des Nabels Çiñkar. Saṅk. 3,4,24. — 2) *Aufgeblasenheit, ein anspruchsvolles Wesen:* ध° Spr. (II) 3870. — 1) 2) Kathâs. 92,11.

स्तब्धपादता f. *Lähmung der Beine* Suçr. 1,348,15.

स्तब्धमेढ्र adj. *dessen Glied steif ist* Suçr. 1,118,17. davon nom. abstr. °ता f. 291,3. 366,6.

स्तब्धरोमन् m. *Schwein (steifhaarig, steifborstig)* AK. 2,5,2. H. 1288.

स्तब्धसक्थिता f. *Lähmung der Schenkel* Suçr. 1,348,18.

स्तब्धसंभार (!) m. *ein* Râkshasa H. ç. 37.

स्तब्धीकर् (स्तब्ध + 1. कर्) *steif machen:* पादान्स्तब्धीकृत्य Hit. 23,3.

स्तब्धीभाव (von स्तब्धीभू) m. *Unbeweglichkeit* Bâlar. 30. *Lähmung, Hemmung* Vedântas. (Allah.) No. 138.

स्तब्धीभू (स्तब्ध + 1. भू) *gelähmt —, gehemmt werden;* s. स्तब्धीभाव.

स्तभ्, स्तम्भ् (= स्कभ्), स्तंभ्नते (प्रतिबन्धे) Dhâtup. 10,26. स्तभ्नाति (रोधने, स्तम्भे) 31,7. स्तभानं imper. स्तभ्नीति P. 3,1,82. Vop. 16,1. तस्तंभ्म, तस्तंभ्मत् RV. 1,121,3. तस्तम्भे, तस्तम्भिरे, तस्तभानं; अस्तभत् und अस्तम्भीत् P. 3, 1, 58. Vop. 8, 38. (उद्) अस्ताम्भीत्; स्तब्धो. 1) *feststellen, stützen* (namentlich den Himmel) RV. 1,67,3. 121,2. 2. 2, 12, 2. अवस्रसः 17, 5. 8, 42, 1. 78, 5. मह्ना दिवं न तंस्तभुः Vikram. 7, 2. RV. 10, 89, 4. 121, 6. AV. 9, 5, 15. Çat. Br. 6, 3, 3, 15. (द्याम्) अध्वंसपसौ स्तभीताम् TS. 4,4,3,3. आदित्यम् Pañkav. Br. 25,10,11 in Ind. St. 3, 42. — 2) *stützen* so v. a. *anstossen an, reichen bis* (acc.): सो ऽवर्धत दिवं स्तब्धा MBu. 5, 278. अपश्याम दिवं स्तब्धा मद्भक्तं ते महाद्युतिम् 7, 8882. दिवं स्तम्भन् (महाशैलः) Hariv. 13433. म तु शब्दो दिवं स्तब्धा प्रतिशब्दमजीवनत् MBu. 3, 12091. 14, 1899. दिवं स्तब्धेव (so mit der ed. Bomb. zu lesen) निःस्वनः 7, 1358. — 3) *anhalten, hemmen, festbannen* RV. 2, 11, 5. सिन्धुम् 3, 53, 9. Geschosse Hariv. 7501 (तस्तम्भे). Bhatt. 17, 45. सामर्थ्यं चापि सो ऽस्तम्भीद्विक्रमं चास्य नास्तभन् 15, 21. कृतेन येन मनसो स्तभ्नते वाञ्छताधिकम् (वाञ्छिता° gedr.) Verz. d. Oxf. H. 99, *b*, 37. — 4) med. *unbeweglich —, steif werden:* गात्रं तस्तम्भे Bhatt. 14, 55. पृथिवी पर्वता मेघा मूर्तिमन्तश्च ये ऽपरे । सर्वे तद्भयेन शेषमापस्तस्तम्भिरे यतः ॥ *erstarren, zu einem festen Körper werden* MBu. 12, 6807. आपस्तस्तम्भिरे (so ed. Bomb.) चास्य समुद्रमभियास्यतः 1055 = 2244 = Hariv. 322 = VP. 1, 13, 49. — partic. 1) स्तभित ved. P. 7, 2, 34. *festgestellt, gestützt* RV. 10, 121, 5. AV. 13, 1, 7. — 2) स्तब्ध *a) anstossend an, reichend bis* (loc.): वृत्त इव स्तब्धो दिवि Çvetâçv. Up. 3, 9. भृङ्ग (पारियात्रस्य) दिवि स्तब्धम् R. 4, 43, 27. — *b) steif, starr, gelähmt, unbeweglich* Suçr. 1, 115, 8. लोचन 7. 253, 12. °हनु 254, 10. योनि 2, 397, 20. संधि 183, 12. 149, 14. शेफस् Karaka 7, 1. यङ्ग Daçak. 73, 5. °लोचन MBu. 3, 2214. Bhâg. P. 10, 36, 3. °नयन MBu. 13, 2209. °दृष्टि Pañkat. ed. orn. 57, 21. स्तब्धात Hariv. 3716. °कर्णशिरोधर MBu. 7, 731. °श्रोत्र Râja-Tar. 4, 451. स्तब्धोर्ध्वकर्ण Bhâg. P. 7, 8, 21. °बाहु Kathâs. 20, 96. Berg Pañkat. 190, 17. स्तब्धा भयात् Bhatt. 15, 32. R. ed. Bomb. 5, 46, 4. Kathâs. 123, 37. समुद्रः स्तब्धतोयः *dessen Wasser zu einem festen Körper geworden ist* Hariv. 9757. स्तब्धोदः 9763. स्तब्धम् adv. *unbeweglich:* स्थाम् Mâlav. 34, 2. अस्तब्ध *beweglich, rührig:* Vogel R. 3, 79, 22. — *c) aufgeblasen, anspruchsvoll* Kâlid. Up. 5, 1, 2. Bhag. 16, 17. 18, 28. MBu. 13, 3891 (धनैश्वर्याधिकाः mit der ed. Bomb. zu lesen). Hariv. 5921. Spr. (II) 639. 790. fg. 5860, v. l. 7187. 7581. Vaṅs. Bh. 20, 1. 21, 10 (*saumselig* Comm.). परप्रणमति (loc.) स्तब्धासि Gît. 9, 10. Mârk. P. 14, 77. Bhâg. P. 3, 32, 39. 4, 2, 10 (= उचितक्रियाशून्य Comm.). 3, 17. 14, 4. 17, 27. 29, 49. 5, 10, 14. 6, 17, 14. 7, 8, 6. 8, 20, 15. 22, 24. 11, 5, 6. °मति adj. 8, 4, 10. 22, 11. — *b) c)* Spr. (II) 161. 1446.

— caus. 1) स्तभायति *a) feststellen, stützen:* दिवो रुजः RV. 1, 62, 5. 164, 25. अवंशे 2, 15, 2. 18, 3, 2. — *b) anhalten, hemmen, festbannen:* पणिम् RV. 6, 44, 2. — 2) स्तम्भयति, अतस्तम्भत् P. 8, 3, 116, Schol. Vop. 18, 1. partic. स्तम्भित. *a) befestigen:* स्तम्भितस्येव रुद्रेण त्रिपुरस्य विकृपसि Hariv. 3938. *stützen, vor einem Fall bewahren, aufrichten, befestigen* (in übertr. Bed.): सोदर्तं सारथिं रणे MBu. 3, 327. Bhâg. P. 9, 7, 5. सेनाम् R. 5, 1, 14. आत्मनात्मानम् Bhâg. P. 6, 1, 62. अतिनिष्कम्पस्तम्भितात्मःकरण Uttarar. 58, 6 (76, 1). — *b) steif —, unbeweglich machen, lähmen:* die Zunge Suçr. 1, 155, 8. 254, 8. 305, 20. दम्भस्तम्भितकंधर Kathâs. 24, 110. स्तम्भिता देवताः सर्वाश्चित्रपुत्तलिका इव Pañkat. 1, 12, 12. *erstarren machen, in einen festen Körper verwandeln:* Wasser MBu. 1, 207. 5, 2395. 9, 1631 (med.). Hariv. 9733. R. 5, 94, 8. 17 (med.). Mucc. 61. Râja-Tar. 3, 71. — *c) anhalten, hemmen, festbannen* (durch Zauber): तस्य प्रकृतो बाहुम् MBu. 3, 10337. Bhâg. P. 9, 3, 25. म रथः स्तम्भितस्तस्थौ MBu. 7, 3278. तदस्त्रमस्त्रेण रणे स्तम्भयामास तस्य 7267. (मणिः) शत्रोः स्तम्भयते शस्त्रमुत्तमम् Kathâs. 71, 135. Bhatt. 15, 87. ein Heer MBu. 8, 2767. Uttarar. 109, 14 (148, 10). Milatîm. 140, 4. Râja-Tar. 4, 348. आपतत्तम् MBu. 13, 7316. न चेलुः स्तम्भितोपमाः Hariv. 3913. 8076. 12266. 12555. fg. 13285. R. 1, 75, 17 (77, 20 Gorr.). R. Gorr. 2, 59, 10. Uttarar. 117, 5 (159, 3). Vaṅs. Bh. 8. 12, Anf. 6. Kathâs. 44, 58. Pañkar. 1, 14, 6. Çâk. 14, 248. अग्निम्, वायुम्, आदित्यम् u. s. w. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 118. Verz. d. Oxf. H. 90, *a*, 21. 24. 100, *a*, 28. Pañkar. 1, 12, 13. प्रभावस्तम्भितवृक्षाय (वनस्पति) Raghu. 12, 21. दिव्यक्रियाम् so v. a. *ein Gottesurtheil durch Zauber glücklich bestehen* Râja-Tar. 4, 94. *hemmen* so v. a. *unterdrücken:* Thränen, das Weinen Raghu. 12, 12. Çix. 81. das Lachen Kathâs. 15, 52. अस्तम्भितत्व n. *das Nichtgehemmtsein, das Bestehen in ungehinderter Weise;* s. सर्वलोकभयास्तम्भितत्वविधानकर.

— अनु, partic. अनुष्टब्ध *aufgerichtet* in einer Etymologie Çiñku. Br. 24, 4.

— अप s. अपस्तभ्न.

— अभि, अभिष्टभ्नोति, °ष्टभ्नाति, अभ्यष्टभ्नात्, अभितष्टभ्न Schol. zu P.

3,3,63. fg. 67. fg.

— अव (व), °ष्टभ्नोति, अवाष्टभ्नोत्, °तष्टम्भ P. 8,3,63. fg. 67. fg. 1) *stützen, aufrecht erhalten:* अवष्टभ्य Prāṇōp. 2, 2. — 2) *sich stützen auf* P. 8,3,63. दण्डमवष्टभ्य Āçv. Çr. 3,1,20. Hariv. 8515. R. 3,34,23. 72, 2. 4,18,24. 5,79,10. 7, 16,12. 98, 2. Bhāg. P. 4, 12,20. absol. *sich stützend auf* so v. a. *mit Hilfe von:* प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य (so zu lesen) विसृजामि पुनः पुनः Bhāg. 9,8. R. 5,78,11. Nāg. Tīp. Ur. in Ind. St. 9, 141. Bhāg. P. 2, 5, 5. so v. a. *wegen:* वृद्धा भार्यामवष्टभ्य त्वं मां न बहु मन्यसे R. 3,24,16. — 3) *versperren:* रथमार्गमवष्टभ्य R. 3,56,7. — 4) *ergreifen, packen, insbes. gefangen nehmen:* यं माता कुरुतयोः पादयोः पिता। अवष्टभ्नाति मुदुभम् Kāṭhāk. 94,79. अवष्टब्धुम् 43,107. fg. अवष्टभ्य R. 5,25,52. Mahāvīrāk. 74,5. Kāṭhāk. 9,34. 10,169. 11,10. 18,246. 23, 7. 27,160. 51,104. 65,168. 92,19. 112,168. 114,111. 124,234. 236. अवष्टभ्य 18, 30. 22,71. 72,168. 101,330. 124,164. pass. अवाष्टम्भि Rāja-Tar. 6,280. — partic. अवष्टब्ध 1) *fest stehend* R. 3,74,24. — 2) *gestützt auf* (acc.) AK. 3,4,28,106. fg. H. an. 4,148. Med. dh. 40 (धावल° zu lesen). बाहुच्छायामवष्टब्धो यस्य लोकः R. 5,31,50. — 3) *ergriffen, gepackt, gefangen genommen* H. an. Med. Varāh. Bṛh. S. 9,18. नुरिका करेण Kāṭhāk. 71,44. पाणयवष्टब्धपार्श्व 82,40. eine Schlange 9,77. — 20,17. 123,265. — 4) *vor Jmd stehend* P. 8, 3,63, Schol. AK. H. an. Med. R. 5,56,139. Bhaṭṭ. 9,72. *nahe bevorstehend* P. 8,2,13. सर्गे ह्यवष्टब्धे Viṣṇ-P. bei Muir, ST. 1,28, N. 46 (*suspended* Muir). — 5) *steif, starr:* शीतेन P. 8,3,63, Schol. (wohl अवस्तब्ध zu lesen). Davon nom. abstr. °त्व n. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 282. — Vgl. अवष्टम्भ fg. — caus. aor. अवातस्तम्भत् P. 8,3,116, Schol.

— पर्यव *umzingeln:* पर्यवष्टभ्य निघ्नन्ति माम् Uttarār. 94,12 (122,18. = निकटीभूय सामर्थ्यमूरीकृत्य वा Glosse). पर्यवष्टभ्यतामेतत्कालायतनम् Mālatīm. 80,4. पर्यवष्टब्धाः स्मः 8.

— समव 1) *aufrichten* (in übertragener Bed.): तमर्कं समवष्टभ्य पुनरात्मानमाकृषे MBh. 5,7157. — 2) *sich stützen auf:* मुसलं समवष्टभ्य तस्थौ MBh. 16,100. बाहुं समवष्टभ्य मया दृष्टाः so v. a. *mit Hilfe von* R. 7,27,9.

— उद्, beim Zusammenstoss der Consonanten fällt das स der Wurzel ab nach VS. Prāt. 4,95. AV. Prāt. 2,18. P. 8,4,61. Vop. 3,170. gesprochen werden drei स VS. Prāt. 6,39. *in der Höhe befestigen, aufrichten, aufstellen:* नाकम् ṚV. 7,99,2. द्याम् 8,47,3. 10,55,1. उतो स्तभामि पृथिवीं वत्यरिं 18,13. VS. 5,27. 17,72. उदस्ताम्सीत् TBr. 3,7, 10,1. Pāraṇ. Br. 8,8,13. partic. उत्तभित vod. P. 7,2,34. AV. Prāt. 4, 62. ṚV. 10,85,1. उत्तभितेन्द्रकेतु Bhāg. P. 10,34,36. उत्तभितकर्णपुट 21, 13. उत्तब्ध Çat. Br. 14,4,2,23. उत्तब्धवान् st. des verbi finiti *machte hochmüthig:* भार्यां मम Kāṭhāk. 32, 152. — caus. उत्तम्भयति *aufheben:* मूर्ध्नि चोत्तम्भितैर्बाहुः (so die neuere Ausg.) Hariv. 3527. शूलम् Bhāg. P. 5,25,2. किंचिदुत्तम्भितमुन्दरभ्रूमण्डलं 18,16. उत्तम्भितभुजद्वयं Pāraṇ. 3,3,20. *aufrichten* so v. a. *erregen, reizen:* मदमुत्तम्भयितुम् Kir. 2,48. रतिपतिम् Bhāg. P. 10,29,16. वायुम् 12,8,20. घटनोत्तम्भित *angeregt zu* (हृदय) Uttarār. 46, 3 (60, 3). *in die Höhe bringen* so v. a. *zu Ehren bringen:* उत्तम्भ्य (उत्तम्ब्य beide Ausgg.) भूपतां Rāja-Tar. 4,711. — Vgl. उत्तम्भ fgg.

— प्रत्युद् *stützen, spriessen* Ait. Br. 5,16. — Vgl. प्रत्युत्तब्धि fg.

— उप *aufrichten, unterstützen, obenhalten* TBr. 3,7,10,1. कृषिधीनम् Çat. Br. 3,3,3,21. 14,1,1,7. उत्तम्भनेन Kāṭh. Çr. 7,9,25. 8,4,9 (eig. 6). सप्ततमसी स्वयमक्रियतया स्वकार्यप्रवृत्तिं प्रत्यवसीदतो (प्रति gehört zum vorhergehenden acc.) रजसोपस्तम्भ्येते (godr. उपष्टभ्येते; man könnte auch उपस्तम्भ्येते caus. pass. lesen) Wilson, Sāṅkhyak. S. 35. — partic. उपस्तब्ध *gestützt, aufrecht erhalten:* बाहुनोपस्तब्धेन Kāraṇḍ. 4,6. — caus. 1) उप स्तभ्नातीति dass.: उपं स्तभायदुपमिन्न रोधः ṚV. 4,5,1. धूमम् *in die Höhe treiben gegen* 6,2 उप नमो नमसि स्तभायन् 21,5. — 2) उपस्तम्भयति *aufrichten, unterstützen;* s. u. simpl. — partic. उपस्तम्भित *steif, starr* (durch Kälte) Suçr. 1,20,13. *aufgetrieben:* यत्रोपस्तम्भिते कोष्ठे 2, 219,13. — Vgl. उपस्तम्भ fgg.

— समुप vgl. समुपस्तम्भ.

— नि, partic. निस्तब्ध P. 8,3,111. स° *ungehemmt:* स्तनयति Bhaṭṭ. 9,19.

— परा *zurückhalten* Çat. Br. 11,4,3,12.

— परि, °ष्टभ्नोति, °ष्टभ्नाति P. 8,3,67, Schol. — caus. aor. पर्यतस्तम्भत् 116, Schol.

— प्र, partic. प्रस्तब्ध *fest, steif, starr* Çat. Br. 14,9,3,9. Suçr. 2, 384,15 (प्रस्ताङ्ग v. l.). °गात्र 458,8. — Vgl. प्रस्तम्भ.

— प्रति *entgegenstemmen:* धनुः Pāraṇ. Br. 7,5,6. mod. *sich entgegenstemmen:* प्रतितस्तम्भिरे (पतितं स्त° die neuere Ausg.) Hariv. 13251. — partic. प्रतिस्तब्ध P. 8,3,114. 1) *wogegen gestemmt wird* MBh. 5, 3700. — 2) *gehemmt:* अप्रतिस्तब्धविक्रान्त Bhaṭṭ. 9,89. — 3) *verstopft:* गल Suçr. 1,288,17 (v. l. für प्रदिग्ध). 2,376,11. — Vgl. प्रतिष्टभ्.

— वि, °ष्टभ्नोति, व्यष्टभ्नोत्, वितष्टम्भ P. 8,3,63. fg. 67. Vop. 3,45. 16,1. 1) *feststellen:* द्यो यत्तान् ṚV. 4,50,1. रजांसि 1,164,6. रोदसी 6,8. 3. 8,83,11. AV. 13,1,35. Kāṭh. 25,6. Pāraṇ. Br. 12,3,10. 10,7. *befestigen, kräftigen, aufrichten* in übertragener Bed.: विष्टभ्यात्मानमात्मना MBh. 3,7159. Bhāg. P. 1,13,24. चित्तम् 11,20,36. *feststellen* so v. a. *sicher stellen, über allen Zweifel erheben:* विष्टभ्येदं (= निश्चित्य Nīlak.) MBh. 12,8429. — 2) *steif machen:* गात्राणि R. 6,2,21 ऊरू Mālav. P. 30,29. *erstarren machen:* विष्टभ्यापः स्वमायया MBh. 9,1630. — 3) *anhalten, zum Stehen bringen:* विमानानि MBh. 3,2133. ब्रह्मास्त्रम् Bhaṭṭ. 17,19. *hemmen, unterdrücken:* धृतिम् Bhāg. P. 9,14,17. 3,15,15. — 4) *stemmen, andrücken:* मुखं विष्टभ्य बाहुभ्यां Jāṭ. 3,198. विष्टभ्य पादावतिष्ठते द्यौः Spr. (II) 178. — 5) *sich stemmen —, sich lehnen an:* त्रिदण्डम् MBh. 13,6807. हारम् R. 7,23,2,13. Bhaṭṭ. 9,72. — 6) *steif machen* so v. a. *durch und durch erfüllen, hineinfahren in* (acc.): विष्टभ्य वाणीर्गाधं वरुणालयम् R. 5,34,3. गुरुपत्न्याः कलेवरम् MBh. 13,3304. घर्मपवनेनेमा वारि विष्टभ्य (घड़िराः) 7256. ज्वालाङ्गुलीभिर्गगनान्विष्टभ्य स हुताशनः। श्वेताद्रिमिव प्रासादं ज्वलन्भ्यवबृहवान् ॥ R. 5,52,15. विष्टभ्याकृमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् Bhag. 10,42 (*stabilito hoc universo* Schl.). ततः शीलमलंकारो लोकान्विष्टभ्य तिष्ठति MBh. 5,3183. 1,3757. 6694. — 7) von Speisen *sich stopfen, im Magen liegen bleiben* (statt verdaut zu werden): यदुपयुक्तं चिराद्विपच्यते विष्टभ्नाति वा Suçr. 1,171,4. 199,11. 2,178,19. — partic. 1) विष्टभित *festgestellt* AV. 18, 8,2. 11,2,22. — 2) विष्टब्ध a) dass. Çat. Br. 8,4,4,2. 7,2,2. *fest verbunden:* सप्ताङ्गस्येव राज्यस्य विष्टब्धस्य त्रिदण्डवत् M. 9,296.

daher त्रिविष्टब्ध n. so v. a. त्रिदण्ड MBu. 12, 553. 567. 11898. त्रिविष्टब्धक n. dass. Pat. in Mahâbh. lith. Ausg. 1, 48, a. 2, 314, a. 3, 79, a. — *b) steif, starr:* °घ्राण MBu. 7, 731. °गात्र Harîv. 10473. विष्टब्धात्त Suçr. 1, 254, 10. — *c) angehalten, zurückgehalten, gehemmt:* eine Person MBu. 13, 3312. Wagen R. 7, 16, 4. शीतवातविष्टब्धाग्नि Suçr. 1, 20, 8. विगुणानिलविष्टब्धं निवृत्तरुणम् 2, 219, 16. — *d) gestemmt, gestützt:* तान्ममालिङ्ग बाहुभ्यां विष्टब्धाः केचिदुत्थिताः R. 7, 28, 40. मध्यमाङ्गुल्याङ्गुष्ठविष्टब्धया Suçr. 1, 27, 6. — *e) vollgestopft* Pârâç. Bh. 12, 4, 20. — *f) stockend, im Magen unverdaut liegen geblieben* Suçr. 2, 518, 3. Çiñkh. Sâñkh. 1, 7, 6. विष्टब्धाजीर्ण n. *eine Art von Indigestion, Stockung, Verstopfung* Wise 328. — caus. 1) वि स्तभायति *feststellen* RV. 8, 17, 7. — 2) विष्टम्भयति, aor. व्यतस्तम्भत् P. 8, 3, 116. Vop. 8, 45. 18, 1. *a) anhalten, zum Stehen bringen, aufhalten, abhalten* MBu. 3, 10314. 7, 1857. 5906 (med.). 12, 5838. 11059. 13, 7214 (med.). R. 7, 16, 3. Bhaṭṭ. 9, 89. धाक्षो स्वित्प्रसवो ममापचरितैर्विष्टम्भितो वीरुधाम् *gehemmt* Çiç. 106. — *b) durch und durch erfüllen:* (शरवर्षैः) विष्टम्भिता दिशः सर्वाः Harîv. 9710. — *c) durch Verstopfung bewirken:* विष्टम्भयतो ऽलसकं व्यावयतो विपूचिकाम् Verz. d. Oxf. H. 304, a, 22. — Vgl. विष्टब्धि fgg.

— धनुवि s. धनुविष्टम्भ.

— सम् 1) *befestigen* Kâtç. 24. fgg. 76. in übertr. Bed. *kräftigen, aufrichten, ermuntern* MBu. 4, 2107. Kâm. Nîtis. 8, 45. भीतं बलम् Râǵa-Tar. 6, 248. संस्तभ्यात्मानमात्मना Bhâg. 3, 43. MBu. 3, 12153 (संस्तब्धा Anâ. 8, 23). R. 2, 22, 25. Bâlo. P. 4, 18, 1. MBu. 3, 17206. Kathâs. 38, 96. R. Gorr. 2, 11, 12. सिकतम् (so v. a. आत्मानम्) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 144. मनः MBu. 8, 84. Bâlo. P. 4, 7, 12. धृत्वा संस्तभ्य वाग्बलम् R. Gorr. 2, 66, 10. med. संस्तम्भस्व so v. a. वीळुरस्व *sei fest* Nîl. 9, 12. संस्तभ्य *sich fassend, — zusammennehmend* MBu. 9, 3245. 13, 34. R. 2, 14, 18. — 2) *fest machen* so v. a. *erstarren machen:* संस्तभ्यापः MBu. 1, 554. 9, 1717. — 3) *anhalten, hemmen, festbannen* Kathâs. 20, 173. Pañkat. 190, 15. durch Zaubermittel Kathâs. 44, 59. 45, 70. 46, 206. 48, 128. *unterdrücken:* शोकं धैर्येण R. 2, 63, 47. कृच्छ्रेण मुखः (*Thränen*) Bâlo. P. 1, 15, 3. — partic. संस्तब्ध *starr, unbeweglich* Harîv. 4657. — — caus. 1) *kräftigen, stärken, ermuntern* MBu. 1, 6477 (संस्तम्भयित्वा). मनः 15, 998. संस्तम्भ्यात्मानमात्मना R. Gorr. 2, 53, 35. 81, 31. 6, 72, 26. Kâm. Nîtis. 13, 38. Bâlo. P. 12, 6, 19. संस्तम्भयत (संस्तभयत ed. Calc.) *fasset Muth* MBu. 7, 1961. — 2) *fest —, starr machen:* संस्तम्भ्याम्भः Râǵa-Tar. 1, 111. तस्य संस्तम्भिता कोपः समुद्रमभियास्यतः (so ed. Bomb.) MBu. 7, 2402. — 3) *anhalten, hemmen, festbannen:* संस्तम्भितमुख MBu. 7, 9878. संस्तम्भितो ऽभूद्य देवराजस्तेनेतितः स्थाणुरिवावतस्थे 1, 7291. 3, 10819. 6, 3549. 14, 268. Harîv. 2515. तस्य वाक्यम् 4449. *hemmen, unterdrücken:* शोकम् R. Gorr. 2, 114, 24. Kumâras. 3, 31. वृत्तिमिन्द्रियाणाम् 73. मयनत्तं वारि Spr. (II) 2488. प्रसवं वीरुधाम् Çiç. 106, v. l. — Vgl. संस्तम्भ fgg.

— अभिसम् *festmachen* Kâtç. 55. *kräftigen, aufrichten:* मनसः कर्मचेष्टाभिरभिसंस्तभ्य वाग्बलम् R. 2, 64, 11.

— परिसम् *kräftigen, stärken, ermuntern:* परिसंस्तभ्य मानसम् Mân. P. 23, 11.

— प्रतिसम् caus. dass.: प्रतिसंस्तम्भयात्मानं मा च शोके मनः कृथाः R. Gorr. 2, 19, 21.

स्तभ m. *Ziegenbock* H. 1275. Hall. 2, 122. Çârdan. im ÇKDr. — Vgl. स्तुभ, तुभ.

स्तभ्नुयू, partic. act. und med. *sich stemmend, — spreizend, nicht vom Platz gehend* RV. 3, 7, 4. धृषः स्तभ्नूयमान् धार्षयत् 8, 6, 16. नि पस्त्यासु स्तभ्नूयन्सीदत् 10, 46, 6.

स्तम्, स्तंमति (धवैलक्ष्ये, धवैकत्ये, वैलक्ष्ये) Dhâtup. 19, 32. — Vgl. 1. सम्.

स्तम्ब (vgl. स्तवक, स्तिभि) Uṇâdis. 4, 96. m, Siddh. K. 250, a, 3. 1) *Busch, Büschel,* namentlich *Gras; Schopf* AK. 2, 4, 4, 9. 2, 9, 21. 3, 4, 29, 138. 32, 144. H. 1120. 1182. H. an. 2, 306. Med. h. 8. AV. 8, 8, 14. TBr. 3, 2, 2, 4. 3, 2, 4. Kâty. Çr. 17, 4, 1. 22, 3, 4. Kauç. 29. 31. 96. °शाखा Maitrâyaṇ. 4, 3. स्तम्बस्तोयमिव क्रुदात् (क्रुते) Bâlo. P. 4, 22, 30. R. 5, 21, 17. दर्भ° TS. 5, 6, 4, 1. TBr. 2, 7, 17, 3. Âpast. Bh. 2, 23. Çat. Bh. 7, 2, 2, 1. Âçv. Çr. 3, 14, 10. वीरण° MBu. 1, 1316. 1818. 1885. R. 2, 80, 8 (87, 10 Gorr.). इषीका° Harîv. 1330. मुस्ता° Raghu. 15, 19. वेणु° Bâlo. P. 11, 1, 4. घातफलप्रसूतिः स्तम्बेन नीवार इवावशिष्टः Raghu. 5, 15. कारकाधैर्यातफला स्तम्बशेषेव शालिभूः Râǵa-Tar. 4, 295. ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तम् *Alles was zwischen Brahman und dem Gras liegt* MBu. 13, 1080. Sâhityad. 54. Çârîr. zu Bṛh. Âr. Up. S. 156 (स्तम्भ fehlerhaft). Bâlo. P. 12, 6, 67. Sarvadarçanas. 60, 8. घात्रस्यास्तम्बपर्यन्तम् Pañkat. 2, 1, 21. घात्रस्यतृणास्तम्बादीनाम् Bâlo. P. 5, 14, 29. Bildlich: कुल° MBu. 1, 1336. ब्रह्म° Mahâvîrac. 51, 4. 86, 21. — 2) *der Pfosten, an den ein Elephant gebunden wird,* H. an. — 3) *Berg* Çabdâtmak. bei Wilson. — 4) N. pr. verschiedener Männer Harîv. 417. 9194. 14150. VP. 2te Aufl. 3, 4 (v. l. für स्तम्भ). Mârk. P. 67, 4. — n. nach Çabdâtmak. bei Wilson *a post, a pillar in general; stupidity, insensibility;* vgl. स्तम्भ. fehlerhaft für स्तम्भ Çaṅk. 44. — Vgl. कुश° (auch Âçv. Gṛhj. 1, 22, 21, genauer Kuça-*Büschel*), घास°, वन°, शर°.

स्तम्बक m. = स्तम्ब 1): वीरण° MBu. 1, 1035. 1319.

स्तम्बकरि P. 3, 2, 24. m. *Reis oder Getraide überh.* (*Büschel bildend*) Vop. 26, 48. AK. 2, 9, 21. H. 1168. Hall. 2, 424. Çârdan. im ÇKDr.

स्तम्बकरिता (von स्तम्बकरि) f. *das Bilden von Büscheln:* न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते Spr. (II) 2300.

स्तम्बकिर्त adj. von स्तम्बक v. l. für स्तवकिते gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36.

स्तम्बघर्न m. *ein Werkzeug zum Hauen des Grases* u. s. w. P. 3, 3, 83 (vgl. 6, 2, 144). AK. 3, 3, 35.

स्तम्बघात m. *das Hauen von Gras* u. s. w. P. 3, 3, 83, Schol.

स्तम्बघ्न m. = स्तम्बघन P. 3, 3, 83 (vgl. 6, 2, 144). AK. 3, 3, 35.

स्तम्बरि adj. *etwa schopfig, buschig* AV. 8, 8, 5.

स्तम्बपुर f. N. pr. = तामलिप्त H. 979.

स्तम्बमित्र m. N. pr. eines Sohnes der Gârîtâ MBu. 1, 3372. 3407. — Vgl. स्तम्भमित्र.

स्तम्बयजुस् n. eigentlich *Spruch über den Grasbusch* (beim *Wegschleudern* कृण desselben), daher auch *der Büschel und die Handlung selbst* TBr. Comm. 2, 730, 20. TS. 1, 6, 9, 4. 2, 6, 4, 1. Çat. Br. 2, 6,

1,12. Kâṭy. Çr. 2,6,14. स्फ्येन स्तम्बयजुर्हरति Kâṭy. 23,11. Lâṭy. 4,11, 2. 5,1,1. 7,9.

स्तम्बवती (von स्तम्ब) f. N. pr. eines Frauenzimmers Hariv. 9193.

स्तम्बवन m. N. pr. eines Mannes Hariv. 9194.

स्तम्बर्षीन् (von स्तम्ब) adv. *büschelweise:* स्तम्बर्शो वा ओषधयः । तासां व्रश्चनके पशवो न रमन्ते TBr. 3,3,3,4.

स्तम्बकनन n. und °कननी f. = स्तम्बघन Sâyaṇ. zu AK. 3,3,35 nach ÇKDr.

स्तम्बि s. ब्रह्म°.

स्तम्बिन् (von स्तम्ब) adj. *buschig:* Kräuter AV. 8,7,4.

स्तम्बेरम P. 3,2,13. 5,3,14, Schol. m. *Elephant (an Grasbüscheln sich erfreuend)* AK. 2,8,2,3. H. 1217. Halâj. 2,59. Ragh. 5,73. Çiç. 5, 34. Daçak. 56,6. Prab. 2,7. Bhaṭṭ. 6,92.

स्तम्भ् s. स्तभ्.

स्तम्भ (von स्तम्भ्) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *Pfosten, Pfeiler, Säule* AK. 2,4,2,3. 3,3,137. H. 1014. Med. bh. 10. Halâj. 2, 66. 5,48. Kâṭy. 30,9. 31,1. शाला° Kâṭy. Çr. 7,1,36. 8,3,7. Pân. Gaṇ. 3,4. 14. MBh. 1,1753. 2,438. 1982. 3,1779. 2193. 4,796. 13,3076. लक्ष्येव ब्रह्मतः स्तम्भे शाश्वती ब्रह्मती स्थिता Hariv. 3771. शैल° 3953. काञ्चन° 6729. R. 3,61,7. 4,41,67. 5,10,9. 72,15. 6,15,25. स्तम्भो भूत्वा तिष्ठामि Mṛkkh. 30,13. 92,4. Ragh. 1,41. 16,17. Çiç. 5,48. वह्नेः स्तम्भे Spr. (II) 5789. विना स्तम्भे यथा गेहम् 6141. Vaṇîs. Bṛh. S. 46,74. 53, 27. fgg. (verschiedene Arten von *Säulen*). 76. 112. 97,6. Kathâs. 26, 44. 29,59. 34,143. 37,8. 45,136. Râja-Tar. 5,107. 6,96. Bhâg. P. 3,23, 13. 7,8,13. 15. 18. Pañkat. 1,7,56. Hit. 64,7. देवताप्रतिमा° Kâm. Nîtiç. 17,51. कूर्म्य° Râja-Tar. 4,33. मेढी° Bhâg. P. 5,23,2. त्रैलोक्यनगरारम्भमूल° Z. d. d. m. G. 27,52. यज्ञ° Ragh. 7,59. कीर्ति° *Ruhmessäule* 15,102. अनल° *Feuersäule* Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,326,11. fg. भुज° *der Arm als Säule* Râja-Tar. 2,63. द्रो° 3,98. Verz. d. Oxf. H. 181,b,6. *Baumstamm* Pañkat. 10,7. Hit. 49,11. शाल° MBh. 1,3066. 2,825. 5, 5336. कदली° Spr. (II) 4823. Megh. 94. Weber, Kṛṣṇaj. 270. Bhâg. P. 4,9,54. 21,3. रम्भा° Spr. (II) 6468, v. l. (vgl. Sâh. D. 153,12). Çaut. (Bh.) 44 (wir trennen रम्भास्तम्भोरु कान्ते). Pañkat. 1,7,34. — 2) *Befestigung, Kräftigung, Unterstützung:* बीज° so v. a. *Samenvermehrung* Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 758. चित्तस्तम्भे कृ so v. a. *sich zusammennehmen* Spr. (II) 2047. — 3) *Erstarrung, Festwerdung.* स्तम्भे नीयते ऽम्भो मयाम्बुधेः Râja-Tar. 3,69. *Unbeweglichkeit* Kir. 12,29. *Erstarrung des Körpers oder der Glieder, Lähmung* (momentane vor Schreck u. s. w. oder anhaltende): = जडीभाव AK. 3,4,22,127. = जाड्य H. 305. = जडत्व Med. = स्तब्धत्व Halâj. 5,48. स्तम्भश्चेष्टाप्रतीघातो भयकर्षामयादिभिः Sâh. D. 167. 166. 171. 230. 237. Pratâpar. 48,b,6. 50, b,3. Suçr. 1,251,17. 2,37,15. 38,1. उपैति स्तम्भमधिकम् Mâlatîm. 21,7. देह° 80,7. ऊरु° (s. auch bes.) Kâṭy. 36,4. MBh. 5,2757. 10,400. 12,10107. Hariv. 13502. ग्रीवा° Suçr. 2,253,1. — 4) *Hemmung; Bannung* (durch Zaubermittel): अनिल° Suçr. 2,140,16. संतते: Ragh. 1,74. बाष्प° Uttarar. 34,8 (45,3). शक्ति° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 223. Verz. d. Oxf. H. 230,a,44. वज्र°, जल° Pañkar. 2,3,78. सर्व° 97. मनः°, रुद्रः 4,37. 8,18 (wohl रुद्रो st. मृदो zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 97,b,38 (*Bannspruch*). 98,a,6. विवाद° 2. शस्त्र° 322,b,27. Verz. d. B. H. No. 905. — 5) *Vollstopfung, Anfüllung:* न शराः स्तम्भहेतवः *die Pfeile sind nicht dazu da um (den Köcher) vollzustopfen* R. 2,23,21 (20,36 Gorr.). स्तम्भः कस्यचित्काष्ठादेरधःपतनप्रतिषेधः Comm. in der ed. Bomb. — 6) *Aufgeblasenheit, anspruchvolles Wesen* (vgl. स्तब्ध) MBh. 12,5943. 5034. 13,1005. 4990 (zu lesen द्वेषः स्तम्भो ऽभि° mit der ed. Bomb.). 14,995. R. 5,85,1. Spr. (II) 1976. 5883. Kir. Nîtiç. 4,18. 29. 5,12. Bhâg. P. 7,4,32. 8,22, 26. fg. 9,6,47. 10,23,6. 27,13. 17. 11,25,3. — 7) N. pr. eines Mannes gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,99. शोनकादि zu 3,106. eines Ṛshi VP. 200. ऊर्ध्वस्थलः st. ऊर्ध्वः स्तम्बः die gedr. Ausg., ऊर्ध्वस्तम्ब Bhâg. P., स्तम्ब eine von Hall erwähnte v. l. — 8) fehlerhaft für स्तम्ब in ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तेषु Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 156. — Vgl. अग्नि°, अनल°, उद्°, ऊरु°, ऊर्ध्व°, कस्तम्भी, जय°, जल°, दिविष्टम्भ, द्वार°, धनुः°, निः°, निरर्ग°, नेत्र°, पाद°, बन्ध°. मणि°, मन्या°, रण°, वाक्°, शिला°, सु°, स्मर°, स्तम्भायन, स्तम्भिन्.

स्तम्भक (vom caus. von स्तम्भ्) 1) adj. a) *hemmend, bannend* R. 1,20, 9 (31,12 Gorr.). — b) *stopfend* Çaṅk. Sarîr. 1,4,17. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Kathâs. 24,7. — 3) f. ई N. pr. einer Gottheit Kâlakarṇa 3,132. 4,58. 79. 89. — Vgl. शालि° (wohl fehlerhaft für °स्तम्बक).

स्तम्भकर 1) adj. etwa *hemmend* in पुण्य°. — 2) m. *a fence, a railing, etc.* Wilson nach Çabdârthak.

स्तम्भकिन् m. *ein best. mit Leder bezogenes musikalisches Instrument* Wilson nach Çabdârthak.

स्तम्भता (von स्तम्भ) f. *Lähmung:* घड्डे Sîm. D. 64,14. warum nicht स्तब्धता?

स्तम्भतीर्थ n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 126,b, No. 220. 345,b,40. 351,a, No. 829. 356,b,15. °वराह 393,a, No. 84. °विन्दा 404,b, No. 38.

स्तम्भन (vom caus. von स्तम्भ्) 1) adj. a) *hemmend, zurückhaltend; stopfend:* चमू° MBh. 13,1186. वसूनाम् R. 7,23,4,43. यन्त्र R. Gorr. 1, 30,14. Suçr. 1,31,15. 85,10. 156,15. 246,16. — 2) m. Bez. eines der fünf Pfeile des Liebesgottes Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,39. — 3) f. ई etwa *Hemmschuh* Hariv. 3536 nach der Lesart der neueren Ausg. — 4) n. a) *das Befestigen, Kräftigen:* स्वचित्त° Spr. (II) 3949. वीर्य° Pañkar. 1,11,20. बीज° Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 758. — b) *das Starrwerden* Suçr. 2,312,18. — c) *das Hemmen, Lähmen, Festbannen* (auch *ein dazu dienender Spruch*): शत्रूणाम् MBh. 15,237. Verz. d. Oxf. H. 90,a,19. 97,b,10. 26. 30. fg. 98,a,3 u. s. w. 100,a,40. Verz. d. B. H. No. 904. fgg. Suçr. 1,252,3. — d) *ein Mittel das Stopfens* Çaṅk. Sarîr. 1,4,12. जलं स्तम्भनानां श्रेष्ठम् Karaka 1,23. — Vgl. अग्नि°.

स्तम्भनीय 1) adj. zu *hemmen, zum Stehen zu bringen:* यस्तम्भनीयो युधि MBh. 5,570. — 2) etwa *Hemmschuh* Hariv. 3536.

स्तम्भमित्र m. N. pr. = स्तम्बमित्र Ind. St. 3,458.

स्तम्भितरम्भ n. Titel eines Troṭaka Sâh. D. 201,12.

स्तम्भिन् 1) adj. a) *hemmend, festbannend:* शत्रूणां स्तम्भिनीं वगुलामुखीम् (so lesen wir) Verz. d. Oxf. H. 99,b,30. — b) *aufgeblasen, an-*

sprachvoll MBu. 13,6505. 6699. — 2) f. °नी Bez. einer der fünf Dhâraṇâ (s. u. धारणा 3) *c*): *die hemmende, die der Erde* Verz. d. Oxf. H. 237,*a*,6.

स्तम्भीभू (स्तम्भ + 1. भू) *zum Pfosten werden* Spr. (II) 961.

1. स्तॄ, स्तृणोति (आच्छादने) Dhâtup. 27,6. स्तृणुते: स्तृणीति Naigh. 2,19 (वधकर्मन्) und स्तृणीते Dhâtup. 31,14 (आच्छादने). स्तृणानै: स्तरति, स्तर्रते: तस्तार, तिस्तिरै, तस्तिरै, तिस्तिराणा ṚV. 1,108,4. अस्तर्, स्तर्, अस्तृषि Âit. Br. 3,15. अस्तरिष्ट und अस्तृत Vop. 12,2. 3. स्तृषीय: स्तरिषीष्ट und स्तृषीष्ट Vop. 12,2. 3. स्तर्रीतवे AV. 2,27,3. स्तर्तवे, स्तर्तवै (Âit. Br.); स्तीर्त्वा und स्तृत्वी, °स्तीर्य; अस्तारि: über den Bindevocal s. P. 7,2,38. fgg. der Anlaut geht nie in ष über Vop. 8,43. 1) *streuen, hinstreuen*, namentlich die Opferstreu (in dieser Bed. in der älteren Sprache स्तृणाति, स्तृणीते): तिस्तिरे बर्हि: ṚV. 3,41,2. स्तृणीत बर्हिरासदे 5,26,3. 7,43,2. 8,45,1. AV. 12,3,32. VS. 2,2. दर्भमुष्टिम् Gobh. 4,2,15. Çat. Br. 14,9,4,11. प्रस्तरम् Kâtj. Çr. 2,8,10. 7,7,12. विप: *ausstreuen* ṚV. 8,52,7. अस्तृणात् (oder आ°) R. Gorr. 2,120,15. *bestreuen, bedecken:* वेदिम् Kâtj. Çr. 2,7,32. यत्र वेदौ पुण्डरीकै: स्तृणोति MBh. 13,6896. उत्तमाङ्गैर्नृसिंहानां नृसिंहास्तस्तरुमक्षीम् 8,443. शिरोभिर्बर्हिं तस्तार Râgh. 4,63. 7,55. Kathâs. 27,155. Râjat. 1,102. — 2) (स्तृणोति, स्तृणुते) *hinwerfen, niederwerfen* (einen Feind u. s. w.) ṚV. 1,129,4. मा न: स्तरभिमातये 8,3,2. पणिं गोषु स्तरामके 64,7. वधै: AV. 10,5,42. 15. 2,27,3. प्रत्यगेनमभिचार: स्तृणुते TBr. 1,7,3,5. Çat. Br. 1,2,5,22. 2,2,3,14. Âit. Br. 2,1. 33. 3,15. fg. 4,1. 7. 28. 8,28. Kâtj. Çr. 22,11,36. तुस्तूर्षमाणौ न कैनं स्तृणवीयाताम् Kaush. Up. 2,13. — partic. 1) स्तीर्ण *gestreut, hingestreut* ṚV. 2,3,4. AV. 12,3,33 u. s. w. — बकुश: स्तीर्णे (व्रते) R. 1,21,5 fehlerhaft für बकुशस्तीर्णे: बकुशशीर्णे ed. Bomb. — 2) स्तृत *a*) *bestreut:* मुक्तावज्रमणिस्तृता (वेदी) MBh. 7,2350. — *b*) *hingeworfen, niedergeworfen* Kâṭh. 28,8. — Vgl. अस्तृत (in Verbindung mit हिरण्य auch Kaush. Up. 2,11).

— caus. aor. अतस्तरत् P. 7,4,95. Vop. 18,2. *bestreuen, bedecken:* भूमिं सैन्यैरकृते: Bhaṭṭ. 15,48.

— desid. तुस्तूर्षते *niederwerfen wollen* Çat. Br. 3,2,3,14. Pañcav. Br. 12,3,5. Kaush. Up. 2,13.

— अनु s. अनुस्तरण.

— अभि *überstreuen; überziehen, bedecken:* वेदिम् TBr. 3,7,5,13. वायु: सिरा: Suçr. 1,347,17.

— अव *streuen, bestreuen; bedecken:* बर्हि: TS. 5,2,10,4. 11,3. VS. 5,25. Çat. Br. 3,5,4,20. हिरण्यच्छदोभि: पृथिवीमवतस्तार MBh. 7,1568. शरासनज्यातलवारणधनि: — अवतस्तरे दिश: so v. a. *erfüllte* Kir. 14,29. partic. अवस्तीर्ण *bestreut, bedeckt:* दर्भावस्तीर्ण Kâuç. 21. 86. वायुरेरवस्तीर्ण: Suçr. Utt. 50 (fehlt in der Ausg.). — Vgl. अवस्तरण, अवस्तार.

— समव dass.: शरै: पुरुषवरं समवास्तृणोत् MBh. 8,1214. partic. °स्तीर्ण *überzogen, bedeckt, erfüllt:* रजसा तमसा चैव °चेतस: 13,7360. °स्तृत dass.: धूम्रसा 3,12543. पतत्रिभिरुत्तरितं भूमिश्च सर्वत: 6,2021.

— आ *hinstreuen, ausbreiten, aussinanderlegen:* कृष्णाजिनम् Çat. Br. 3,3,3,1. 5,2,1,24. वसनम् Lâṭj. 2,6,4. बर्हि: Âçv. Gṛhj. 4,2,15. वशाचर्म Kâtj. Çr. 13,3,12. 15,3,1. दर्भान् Lâṭj. 3,10,5. दर्भेषु काशिषु Kâuç. 24. कुशान् Jâân. 1,285. दर्भास्तरणम् MBh. 3,15142. आस्तार R. 2,111, 13. आस्तरत् (oder अस्तरत्) 15. चर्म — आस्तरेत् Vaitân. Bhn. S. 48,43 (aus Gaṅgâ). R. 4,7,13. 5,60,11. Bhâg. P. 3,22,31. 8,24,40. *bestreuen, bedecken:* आसन्दीं चर्मणा Kâtj. Çr. 14,5,18. R. Gorr. 2,11,4. लोमभि: Kâuç. 60. 69. कुशै: MBh. 2,1185. R. 2,53,4. Vaitân. Bhn. S. 60,7. Bhâg. P. 4,29,49. — partic. 1) आस्तीर्ण *hingestreut, ausgebreitet* Kâtj. Çr. 16,3,8. अजिन Râgh. 4,65. 14,31. 10,8. शयन Kathâs. 18,115. 25,88. 51,186. Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,40. *bestreut, bedeckt:* वसुधा शिरोभि: MBh. 4,1050. कुशया R. 5,13,14. कुशास्तीर्णा 6,108,22. फलकास्तीर्णा Suçr. 1,341,18. Daçak. 59,16. घनास्तीर्णा कृत्वा Pañcat. ed. orn. 50,4. — 2) आस्तृत *hingestreut, ausgebreitet* VS. 13,16. *bestreut, bedeckt, belegt:* पर्यङ्के राङ्कवास्तृते R. Gorr. 2,13,6. नवपर्णतृणास्तृत 30,14. 7,37,11. Vaitân. Bhn. S. 24,7. मेघास्तृते व्योम्नि Mâlav. P. 16,26. Bhâg. P. 4,10,19. 24,10. घनास्तृता शय्या VP. 3,11,108. *ausgebreitet* so v. a. *ausgedehnt, breit:* आस्तृतायाममार्ग Bhâg. P. 10,12,22. — Vgl. आस्तर् fgg. und स्वास्तीर्ण. — caus. *ausbreiten:* स्वस्तरम् Gobh. 3,9,11. 4,2,17. *bestreuen:* विमितं दर्भै: Kâuç. 83.

— उप a) *ausbreiten:* चत्वार्येतानि चर्माणि तस्या वेद्यामुपास्तरेत् Vaitân. Bhn. S. 48,45 (aus Gaṅgâ).

— प्र, partic. °स्तृत *bestreut, bedeckt* Bhâg. P. 8,10,38.

— प्रत्या s. प्रत्यास्तार.

— समा *bestreuen:* दर्भै: R. 1,73,22. ज्वलत्समाग्निं समास्तरद्भीभि: so v. a. *überschütten* MBh. 1,1495.

— उप 1) *Jmd Etwas überdecken:* यशाय वास: ṚV. 1,162,16. Çat. Br. 13,2,8,1. Çâṅkh. Çr. 16,12,19. — 2) *Etwas umlegen, bedecken, umkleiden mit* (instr.): हिरण्येन घर्मम् ṚV. 8,62,2. Feuer mit Grasern TBr. 3,7,4,18. कुशै: Çâṅkh. Çr. 17,6,5. यच्छरीरेऽपस्तीर्णा सभा MBh. 6,577. मनुष्या इच्छा उपस्तीर्णामिच्छन्ति *etwas gut Belegtes oder Bedecktes* TS. 1,6,2,3. अनुपस्तीर्णशायिन् *auf unbelegtem Boden, auf der blossen Erde* MBh. 12,6574. उपस्तीर्णा सभा *belegt* nämlich mit dem zum Würfelspiel erfordorlichen Tuche oder dgl. 2,2032. — 3) *hinstreuen, hinlegen als Decke u. s. w., ausbreiten, unterbreiten* ṚV. 6,44,6 (उपस्तृणीर्येण infin.). चर्म AV. 14,2,22. Çat. Br. 1,1,4,3. 3,2,4,21. काशिषु 13,1,2,1. दर्भाणां महदुपस्तीर्य *eine dichte Lage* Âçv. Gṛhj. 3,2,3. उपस्तिरे (dat. infin.) सूर्याय *im Sonnenschein auszubreiten* ṚV. 5,85,1. 2,31,3. 4,33, 1. 9,71,1. Technisch im Ritual *das Opferschmalz aufgiessen, so dass es einen Ueberzug bildet:* आज्यस्योपस्तृणाति Âit. Br. 2,14. आज्यभागानुपस्तृणान् TS. 2,6,3,1. TBr. 2,1,2,3. सुचि Gobh. 2,10. Kâuç. 4.5.61. Çat. Br. 3, 3,2,27. auch ohne Beisatz von आज्य 2,4,2,18. 4,3,2,3. उपस्तीर्णे पात्रे निधाय Kâtj. Çr. 2,3,14. Gobh. 1,8,3. ähnlich घृतम् 3,3,18. — Vgl. उपस्तरण, उपस्तृ (vgl. oben die Berichtigungen).

— नि *niederwerfen:* न्यर्बुदमस्त: ṚV. 2,11,20. — Vgl. अनिस्तृत (auch ṚV. 2,33,9, wo Padap. nach Müller und Aufrecht अनि:ऽ, nach mehreren von uns verglichenen Hdschrr. अनि:ऽस्तृत: Padap. zu AV. 7,82,2: vgl. AV. Paipp. 2,86. — TS. 4,1,2,2).

— निस् *abbröckeln:* व्याकृतयो वेदेभ्यो नि:स्तृता: पुरा Gobh. 2,17.

— परि, °स्तरितवै P. 6,2,51, Schol. *rings bestreuen, umlegen:* das Feuer mit Gras Çat. Br. 1,1,1,22. 7,2,2,28. 2,6,1,15. Bhn. Âr. Up. 6,3,1. Kaush. Up. 2,3. Kâtj. Çr. 2,3,6. 4,1,1. 21,4,26. MBh. 1,6975. Bhâg. P.

3,18,19. वेदिम् AV. 7,99,1 (AV. Paipp. 2,20b). Gobh. 1,7,9. Kauç. 2. 22. 28. जगत्परिस्तर्मासि परिस्तरिरे *bedecken* Çiç. 9,18. LA. (III) 92, 18 (zugleich *ausbreiten*). *herumlegen, ausbreiten:* बर्हिः Âçv. Grhs. 2, 5,2. Kauç. 53. 116. मृगस्य त्वचम् R. 3,49,9. कम्बलान्परिस्तरुः Bhatt. 14,11. — partic. °स्तीर्ण *rings bestreut, umlegt:* कुश° (Feuer) R. 4, 25,28. अस्थिकेश° MBh. 11,431. °स्तृत dass. Jâán. 1,227. Bhâg. P. 5, 16,28. — Vgl. परिस्तर u. s. w.

— प्र *hinstreuen, ausbreiten:* ein Fell Çat. Br. 12,5,2,7. Kauç. 1. 87. पशुम् Harîv. 9088. गिरः प्रतस्तार *aussehütten* so v. a. *sprechen* Naish. 12,87. प्रस्तृणतीरार्यधीः *sich auseinanderlegend, — ausbreitend* AV. 8,7,4. — partic. प्रस्तीर्ण *hingestreut, ausgebreitet* Çat. Br. 1,5,2,12. शिलाय *flach* AV. Paipp. 1,24. — Vgl. प्रस्तर u. s. w.

— अनुप्र *hinstreuen:* फलीकरणान् Kauç. 48.

— अभिप्र *ausstreuen* Çat. Br. 3,9,2,18. 15. 24.

— उपप्र med. *sich hinstrecken auf:* इयं महो प्र स्तृणीते मनीषोर्व बर्हिरर्च्छे RV. 6,67,2.

— वि *ausstreuen, ausbreiten:* बर्हिः RV. 3, 4, 8. 7,17,1. विस्तृत्य पक्षौ *die Flügel ausbreitend* R. 5,3,60. *verbreiten:* विस्तृणीहि यशो भुवि Bhâg. P. 3,24,18. विस्तीर्यते यशो लोके M. 7,38. Pañkat. 71,19. *sich weitläufig auslassen über* (acc.): विस्तीर्यैतन्महज्ज्ञानमृषिः संक्षिप्य चाब्रवीत् MBh. 1,51. ब्रूहि विस्तीर्य Z. d. d. m. G. 6,94. तस्यानुचरितमुत्तरस्माद्विस्तरिष्यते (pass.) Bhâg. P. 5,24,27. कथं मदस्यैर्वचनं विस्तरैरुपः *so v. a. Worte wechseln, sich unterreden mit* MBh. 3,16042. — partic. 1) विस्तीर्ण *a) bestreut:* कुशैः R. 2,100,18. Çiç. 83, v. l. *besetzt mit* Kathâs. 72,37. — *b) ausgebreitet, entfaltet:* जाल Hit. 9,14. ein Heer Kathâs. 46,45. fg. परितप्तकायाः Çiç. 75, v. l. — *c) breit, umfangreich* H. 1430. Hall. 4,14. Kauç. 90. MBh. 3,1819. 1826. 2511. 5,7130. Harîv. 2902. 10612. R. 1,1,70. 5,7. 45,7 (सु°). 2,75,15. R. Gorr. 2, 125,18. 3,38,18. 4,2,15. 5,13,14. 6,92,62. Suçr. 1,126,10. 2,358,14. Varâh. Bṛh. S. 49,2. 4. 53, 65. 56,12. fgg. 58, 4. fgg. 67,7. 68, 21. 85. Kathâs. 12,15. 43,221. Râga-Tar. 4,163. 594. Mârk. P. 54,15. Bhâg. P. 3,19,15. 4,24,20. Pañkat. 51,20. 245,25. Hit. 79,13 (सु°). मदम् *so v. a. zahlreich* MBh. 1,9. चमू, बल R. 2,113,20. 3,42,19. विपुलः 5,86, 4. गुणाः 84,4. श्री *ein grosses Vermögen* Kathâs. 54,240. ऐश्वर्ये सुविस्तीर्णे *weit ausgebreitet* Spr. (II) 1489. कुल R. Gorr. 2,23,7. यशस् MBh. 1,3542. व्यवसाय Spr. (II) 6240. °विषयस्य Çâk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 284. प्रासादभोगविस्तीर्णः स्तुतिशब्दः *weithin erschallend* R. 2,63,3. कथा *ausführlich* MBh. 12,12711. कर्णविस्तीर्णया वाचा R. 4,63,7. 11. ग्रन्थाः Râga-Tar. 1,11. Sarvadarçanas. 56,10. सुविस्तीर्णम् *recht ausführlich* Verz. d. Oxf. H. 25,*b*,19. — 2) विस्तृत *a) überzogen, bedeckt mit:* वर्चःशाद्वल° Râga-Tar. 6,120. *versehen mit* Bhâg. P. 4,29,74. — *b) ausgebreitet, ausgestreckt* AK. 3,2,35. पाणी विस्तृताङ्गुली 2,6,2,35. सेनायाः विस्तृतायाः समन्ततः R. Gorr. 2,91,2. चकार द्रुपं प्रवनाय विस्तृतम् 5,2,16. चाकाशमिव विस्तृतम् Bhâg. P. 4,24,60. ततो बालेन तेनास्यं सहसा विस्तृतं (विवृतं ed. Bomb.) कृतम् *weit geöffnet* MBh. 3, 12905. Dhûrtas. 67,9. प्राज्ञातविस्तृतनिबन्धमकर्मवत्ति *so v. a. entfaltet* Spr. (II) 1241. सर्गविस्तृतम् Bhâg. P. 3,12,49. — *c) breit, umfangreich:* द्वियोजनायता वापी विस्तृता चापि योजनम् MBh. 3,12762. त्रिंशद्योजनविस्तृता पुरी R. 3,53,38. Sucr. 1,125,15. Varâh. Bṛh. S. 58, 8. 73,8. Mârk. P. 54,16. Bhâg. P. 3,11,39. 8,2,2. Nalod. 3,14. नाद *weithin schallend* Harîv. 14575. विस्तृतम् *ausführlich* Çatr. 1,288. Bhâg. P. 10, 1,12. — Vgl. विष्टर, विष्टार, विष्टिर, विस्तर, विस्तार, विस्तृत, वक्षविस्तीर्ण. — caus. विस्तारयति *ausbreiten:* बलम् M. 7,188. संक्षेप्तव्योऽपेदल्पान्कामं विस्तारयेद्बहून् 191 = MBh. 6,698 (fehlerhaft विस्तरयेत् ed. Calc.). वटिशम् Spr. (II) 6237. (रेणुः) विस्तारितः कुञ्जरकर्णतालैः Ragh. 7,36. चिन्तानलम् Kathâs. 18,147. Pañkat. 171,3. वंशं तीर्णाम् Harîv. 4376. *verbreiten:* वेदम् MBh. 12,12355. परगुणान् Spr. (II) 4332. यशः Mâlav. P. 21,32. *entfalten:* लक्ष्मीम् Spr. (II) 1162. *sich ausführlich auslassen über* (acc.) Kull. zu M. 10,31. वद विस्तार्य *ausführlich* Verz. d. Oxf. H. 26,*b*,14.

— अतिवि, partic. °स्तीर्ण *überaus umfangreich, — intensiv:* शोभा, कान्ति Siâ. D. 52,8. 10.

— अनुवि, partic. °स्तृत *breit, umfangreich:* दशनल्वानु° (शरीर) R. 6,92,62.

— प्रवि s. प्रविस्तर fg.

— सम् 1) *(nebeneinander) hinstreuen, ausbreiten:* कृष्णाजिनं च पुष्करपर्णं च TS. 5,1,8,3. Çat. Br. 1,9,2,24. कुशान् 14,1,2,1. चर्माणि MBh. 1,7163. तृणानि R. Gorr. 2,85,26. *bestreuen, bedecken:* नवैस्तृणैरगारम् Kathâs. Up. 2,15. Suçr. 1,6,15. स्रजैः सभाम् MBh. 2,1774. तेषां शरीरैः संतस्तार भूमिम् 7,1560. शय्यां दर्भैः 2776. गानवैः संस्तरन्मकोम् 3395. — 2) *ausbreiten* so v. a. *einebnen:* खातनम् Kauç. 16. खादेवनम् 41. — partic. 1) संस्तीर्ण *hingestreut* Kauç. 2. Çiç. 83. *bestreut, bedeckt, belegt:* पुष्पितैः किंशुकैः पर्वतः MBh. 6,4600. तेन भाण्डेन राजनिवेशनम् R. 2,78,18. दिव्यास्तरण° MBh. 3,1819. खट्टिनोत्तर° R. 2,88,4 (96,3 Gorr.). — 2) संस्तृत *bestreut:* पुष्पसंस्तर° MBh. 1,2862. तृण° R. Gorr. 2,96,2. — Vgl. संस्तर fg., संस्तार, संस्तृ.

— अभिसम्, partic. अभिसंस्तीर्ण *bestreut, bedeckt mit* (instr.) MBh. 12,7613.

— परिसम्, *an verschiedenen Orten anlegen* (Feuer): अधीत्य वेदान्यरिसंस्तीर्य चाग्नीनिष्ट्वा यज्ञैः पालयित्वा प्रजाश्च MBh. 5,1558.

2. स्तर् (= 1. स्तर्) 1) *Stern (ausgestreut* am Himmel), im Veda nur im instr. pl. erhalten Naigh. 3,29. Nir. 3,20. RV. 1,68,5. 166,11. 2,2,5. द्यावो न स्तर्भिश्चितयन्त खादिनः 34,2. 4,7,3. स्तर्भिरन्या चिपिशे सूरो अन्या 6,49,2. 12. स्तर्णाम् (soll nom. pl. sein!) Weber, Ind. St. 32. स्तर्णाम् 89. 93 (v. l. स्त्रीणाम्). im comp. स्त्रि (wohl स्त् zu lesen) ebend. und 110. Vgl. 2. तर्. — 2) *Blässe* (am Rind) RV. 1,87,1; vgl. 1. उस्र.

3. स्तर्, स्तर्णाति (प्रीतिपालनयोः, प्राणने) Dhâtup. 27,12, v. l. für स्पर्.

स्तर (von 1. स्तर्) s. स्वस्तर.

स्तरण (wie eben) n. *das Ausbreiten, Hinstreuen:* बर्हे° Âçv. Çr. 3,6. 23 (vgl. 1,11,9). der Opferstreu Kâty. Çr. 1,7,10. 2,6,38. 5,6,14. बर्हेः 8,6,29. Kauç. 137. *das Bekleiden der Wand* (nach Comm.) Âçv. Çr. 2,3,3.

स्तरिमन् (wie eben) Uṇâdis. 4,147. m. *Lager, Bett* Uggval.

स्तरी Uṇâdis. 3,158. f. (nom. स्तरीस्) 1) *die Unfruchtbare, Nichtträchtige,* namentlich *Kuh, Stärke:* स्तर्यै गाम् RV. 1,116,23. 117,20. 7,23,4. 68,8. स्तरीरु वद्वदति सूतवे उ वत् 101,3. स्तरीर्पत्सूतवे 10,31, 10. Vâlakh. 3,7. RV. 1,122,2. न स्तरी रात्रिं वसति *keine unfruchtbare*

bare Nacht bringt er zu TS. 1,5,*a*,4 (Wortspiel zu Vîlarn. 3,7). सहस्रस्तरी *tausend St. habend* RV. 10,69,7. वाचं स्तरीकरोति Kâṭy. 13, 6. — 2) *Rauch* Taik. 1,1,61. H. 1104.

स्तरीमन् (von 1. स्तॄ *ausstreuen*), loc. °मणि als infin.: वर्किष: स्तरीमणि RV. 10,35,9. स्तरीमन् m. = स्तरिमन् Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,147. — Vgl. सुष्टरीमन्.

स्तर्तृ, स्तृणति (गतौ) Dhâtup. 17,9. — Vgl. तर्तृ.

स्तर्य (von 1. स्तॄ) adj. P. 3,1,123. *niederzustrecken* Çat. Br. 2,2,3,10. Sây. ebend.

स्तर्हू, स्तर्हूति (हिंसार्थ) Dhâtup. 28,58. *zermalmen:* स्तर्हूतो गौ नावतीत *wenn eine Kuh Etwas zertritt, soll er sie nicht verrathen*, Âpast. 1,31,9. — Vgl. तर्हू.

स्तव (von 1. स्तु) m. Schol. zu P. 3,3,27. 57. gaṇa उञ्छादि zu P. 6,1,160 (oxyt.). *Lob, Verherrlichung, Loblied* AK. 1,1,3,12. Taik. 1,1, 117. H. 269. Halâj. 1,145. RV. 1,33,2. Harîv. 4937. हृदस्य 10691. 10697. आर्य R. 5,102,24. बलं स्तव: स्तावकानाम् Spr. (II) 4391. परगुणस्य 7332 (Conj.). चक्रु: स्तवम् Mârk. P. 18,24. किमाश्रयो मे स्तव एष योज्यताम् Bhâg. P. 4,15,22. 7,1,22. (भरतम्) तुष्टुवु: स्तवै: R. 2,81,1. वेदोक्तै: स्वकृतैरेव स्तवै: Harîv. 7417. MBh. 3,13498. Mârk. P. 84,29. Weber, Râmây. Up. 363. Bhâg. P. 12,13,1. Wilson, Sel. Works 1,176. देवता° MBh. 13,7662. R. 5,10,14. Bhâg. P. 4,7,11. 16 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 85,*a*,41. पर° R. 2,26,25 (28 Gorr.). आत्म° 3, 35,22. स्वगुण° Z. d. d. m. G. 27,22. मिथ्या° Râǵa-Tar. 3,183. neutr.: स्तवमिदम् (wohl nur fehlerhaft für इमम्) Harîv. 10260. 10280. — Vgl. ब्रह्मतर्क°, संकेत°, सरस्वती°.

1. स्तवक (wie oben) m. = स्तुति Viçva im ÇKDr.

2. स्तवक und स्तवकित schlechte Schreibart für स्तबक, स्तबकित.

स्तवकर्णिन् (?) m. ein anderer N. des Bhavatrâta Burnouf, Intr. 238. soll *qui a des pendants d'oreilles de laque* (!) bedeuten.

स्तवथ (von 1. स्तु) m. *Lob* RV. 7,1,8.

स्तवदण्डक Titel eines Werkes Târân. 177. श्रीवज्रतारा° desgl. ebend.

स्तवन (von 1. स्तु) n. *das Loben, Lob, Verherrlichung* Lâṭy. 10,9,3. Bhâg. P. 1,16,17. Pañâr. 1,1,19. 11,20. 14,90. Verz. d. Oxf. H. 89,*b*, 4. Verz. d. B. H. No. 421. pl. *Lobgesänge* Brahmavaiv. P. 2,83. Bhâg. P. 8,21,7. — Vgl. चम्पक°.

स्तवनीय (wie oben) adj. zu *loben, lobenswerth* Vop. 26,28.

स्तवमाला f. Titel eines Werkes Verz. d. Tüb. H. 20. Wilson, Sel. Works 1,168.

स्तवरक m. *a fence, a railing, etc.* Wilson nach Çabdârthak. ohne Zweifel fehlerhaft für स्तम्भक.

स्तवराज m. *ein Fürst unter den Lobliedern, Hauptloblied* Weber, Râmây. Up. 363. Verz. d. Oxf. H. 3, *a*, No. 35. 22,*b*, 16. 36,*a*, No. 78. गणेश° ebend. — Vgl. भीष्म°.

स्तवान् (überall स्तावान् zu sprechen) fassen wir als nom. sg. zu स्तवंस् (= तवस् von स्तु = तु; vgl. स्वनवान् zu स्वञ्जवस्, स्ववान् zu सुञ्जवस्). *gewaltig*, Bez. Indra's: मुञ्जमुषस: सुगेण स्तवान् RV. 3,20,3. या देवो रिणक्त्यर्याय स्तवान् 19,3. न नमते शर्धते स्तवान् 6,24,3.

स्तवामृतलहरी f. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1,168.

स्तवावलि (स्तव + आ°) f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 212,*a*,1. °ली im Index. — Vgl. बकु°.

स्तवेय्य m. = इन्द्र Uṇâdis. im ÇKDr. — Vgl. स्तुवेय्य.

स्तव्य (von 1. स्तु) adj. zu *loben, zu verherrlichen, des Lobes u. s. w. werth* MBh. 13,7022. Harîv. 7417. 3416. 10239. Mârk. P. 97,24. 104, 37. Verz. d. Oxf. H. 142,*a*, No. 290. अ° MBh. 2,1543.

स्तस्, स्तायति (वेष्टने) Dhâtup. 22,38, v. l. partic. स्तायंस् *verstohlen* AV. 4,16,1. 7,108,1. — Vgl. स्ताय स्तेन, स्तेय.

स्तार्मन् m. nach dem Zusammenhange etwa *Weg:* मा मे सव्युं: स्तुमानमपि ष्ठात AV. 5,13,3.

स्तार्मु adj. = स्तोतृ Naigh. 3,16. वृष स्तोमो अचिक्रदद्वृषा त उत स्तार्मुर्मघवन्नक्रविष्ट RV. 7,20,9. wohl *brüllend, donnernd* (स्तार् = स्तन्).

स्ताम्भायन m. patron. von स्तम्भ gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

स्ताम्भिन् m. pl. *die Schüler des* Stambha gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

स्तार्यु (von स्तॄ) m. = तायु *Dieb* VS. 16,21.

स्ताव 1) adj. (von 3. स्तु) in घृतस्ताव (so die Hdschrr.) von *Schmalz triefend* AV. 12,2,17. — 2) m. = स्तव *Lob, Verherrlichung* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,12, Cl. 47. — 3) f. स्तावी (von 1. स्तु nach Manlon.) N. einer angeblichen Apsaras VS. 18,42 (zwischen ऊर्ज् und इष्टि). — Vgl. विष्टाव.

स्तावक (von 1. स्तु) adj. *lobend, verherrlichend:* सूक्त Sâj. in der Einl. zu RV. 1,103. m. *Lobredner, Lobsänger* · बलं स्तव: स्तावकानाम् Spr. (II) 4391. Bhâg. P. 4,15,21. 24. Sarvadarçanas. 64,3. °त्व n. nom. abstr. zum adj. Kull. zu M. 2,6.

स्ताव्य (wie oben) ved. adj. zu *loben* P. 3,1,123.

स्ति m. pl. *Abhängige, Gesinde, Clientel* und dgl.: उर्वं नो वाजान्मीळ्हुष स्तीन् RV. 7,19,11. उत त्रायस्व गृणत उत स्तीन् 10,184,4. Vgl. çti im Zend.

स्तिघ्, स्तिघ्नुते (घर्षणे) Dhâtup. 27,18.

स्तिघ्, स्तेंघते (तरणार्थ) Dhâtup. 10,3. — Vgl. स्तेघ्.

स्तिघ्र adj. *die Hörigen u. s. w. schützend* Naigh. 4,2. Nir. 6,17. स्तिघ्रा तनूना संरिणाम् RV. 7,66,3. म नं: स्तिघ्रा उत भवा तनूना: 10,69,4.

स्तिभि Uṇâdis. 4,121. m. 1) *Rispe, Büschel* (vgl. स्तबक, स्तम्ब): न्यग्रोध° Kâṭy. Ça. 10,9,30. — 2) *Meer:* Ujjval.; vgl. H. ç. 166.

स्तिभिनी f. = स्तिभि 1): न्यग्रोध° Citat beim Schol. zu Kâṭy. Ça. 10, 9,30. स्तिभिन्यो ऽङ्कुरा: फलानि च ebend.

स्तिम्, स्तेंम्यति (आर्द्रीभावे) Dhâtup. 26,17. zu belegen nur partic. स्तिमित. 1) *schwerfällig, träge: unthätig, still, unbeweglich* Taik. 3,3, 190. H. an. 3,312. Med. t. 170. Kâmaṇḍ. 3,8. स्तिमितं स्तब्धमुदरमाध्मातम् 4,8. गुद 8,12. हृदयं मन्यते स्थानमुदरं स्तिमितं गुरु 8,13. Suçr. 1,151,8. काष्ठ 173,6. 284,19. सानद्ध: स्तिमितैर्दोषै: 2,407,10. वेग Utt. 39 (fehlt in der Ausg.). °प्रवाहा सरित् Ragh. 13,48. °ज्ञव 79. रथेनानुद्वातस्तिमितगतिना Çiç. 192. संचार Spr. (II) 7188. शब्दरहितं स्तिमितं च यातम् Vâmân. Bhâṣ. S. 68, 115. स्तिमिता हृष्टरोमाण वासन्सर्वे सभासद: MBh. 3,2448. 7,487. 13,7692. Harîv. 2912. 3005 (नि:शब्द° an beiden Stellen). R. Gorr. 2,59,9. Ragh. 2,22. Kumâras. 7,87. Kathâs. 19, 112. Augen Megh. 37. 60. 96. Ragh. 1,73. 3,17. 11,45. Kumâras. 3,47.

7,22. Kir. 6, 47. Khandom. 138. आस्य Kathâs. 46, 76. Wasser, Meer MBh. 16, 141. Harîv. 5006 (निःशब्द°). Rasn. 12, 36. Mâlatîm. 50, 13. Kathâs. 52, 330. 101, 186 (निःशब्द°). Bhâg. P. 10, 35, 7. 11, 8, 8. आकाश MBh. 12, 6812. वायु Comm. zu Gaim. 1, 14. किरण Verz. d. Oxf. H. 108, b, 1. Lampen Rasn. 16, 4. 19, 42. Râja-Tar. 2, 44. वलय Spr. (II) 6044. Nacht MBh. 3, 2527 (निःशब्द°). Harîv. 4130. 15230 (°मूका an beiden Stellen). हृदय Mâlatîm. 12, 2. मनस् Kumâras. 2, 59. Sin. D. 83, 5. Bhâg. P. 11, 26, 23. स्तिमितैकदृशेन्द्रिय 10, 13, 56. अन्तरात्मन् Verz. d. B. H. 194 (36). समाधि Kir. 10, 62. स्तिमितम् adv.: स्तिमितं गन्तुमारेभे तदा गोदावरी नदी R. 3, 52, 12 (46, 8 ed. Bomb.). स्तिमितस्थित Kathâs. 112, 67. Mâlatîm. 16, 5. Râja-Tar. 5, 481. n. *Stille, Unbeweglichkeit:* सागर° MBh. 5, 5704. स्तिमितत्व n. dass. Mâlatîm. 47, 2. — 2) *nass* AK. 3, 2, 35. Trik. H. 1492. H. an. Med. स्तिमितवस्त्रमिवाङ्गलग्नम् Kâdab. 21. — Vgl. तिम्, स्तिया, स्तीम, स्त्या.

स्तिमितय् (von स्तिमित), °यति *unbeweglich machen:* कुरङ्गीवाङ्गानि Kirâtârj. 144, 10.

स्तिया (von स्त्या) f. *träges —, stehendes Wasser* Naigh. 4, 3. Nir. 6, 17. वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ṚV. 6, 44, 21. 7, 5, 2.

स्तीम्, स्तीम्यति = स्तिम् Dhâtup. 26, 17.

स्तीमे (von स्त्या) adj. (f. या) *träge, schleichend:* अप्सु स्तीमामुं वृद्धामुं AV. 11, 8, 24. — Vgl. विष्टीमिन्, welches vielleicht *sich verdichtend* heisst.

स्तीर्ण 1) adj. s. u. 1. स्तृ. — 2) m. N. pr. einer Gruppe von Kobolden im Gefolge Çiva's Rudrâm. 29 in Journ. of the Am. Or. S. 6, 523.

स्तीर्णबर्हिस् adj. *derjenige dessen Opferstreu gebreitet ist* ṚV. 5, 37, 2. Opfer 10, 21, 1. VS. 15, 49.

स्तीर्वि Unâdis. 4, 54. m. = घर्घर Ujjval. ausserdem = नभस्, रुधिर, तृणभ्राति, पयस् und शत्रु Unâdis. im Sañkshiptas. nach ÇKDn.

1. स्तु, स्तौति Naigh. 3, 14. Dhâtup. 24, 34. Formen aus der älteren Sprache; act.: स्तुमसि, स्तुत, स्तुर्वन्, स्तुर्वत्, स्तुयुस् Lâṭj. 1, 11, 27. स्तोत 2. pl. ṚV. 8, 1, 1. स्तवा 1. sg. 2, 11, 6. स्तवाम, स्तवद्य, स्तवत्, स्तोत् 7, 42, 6. स्तोषत्, स्तोषम् 1, 187, 1. स्तोयाम, स्तोयाणि 10, 88, 2. घृतुष्टवस् 3, 53, 12. तुष्टवत् 8, 8, 16. तुष्टाव, तुष्टुवुस्, तुष्टुवांसम्, स्तविष्यति, स्तोष्यति, स्तोष्यत्. med.: स्तवे 3. sg. 1, 92, 7. स्तवते 3. sg. 2, 24, 1. स्तुते 3. sg. Bṛihad. स्तुवते, स्तवानै, स्तवान (mit passiver Bed. ṚV. 1, 12, 11. 31, 8. 7, 36, 8), स्तवमान, स्तुवीत, स्तुवीमहि, स्तुवीरन्, स्तुषे 1. sg. und 3. sg. 1, 122, 7. अस्तोषि 1. अस्तोष्ट 77, 5. अस्तोषत 82, 2. तुष्टुविरे, तुष्टुवान 7, 51, 2. स्तविष्यते, स्तविष्यमाण, स्तोष्यामके, स्तोष्यमाण: स्तोतवे, स्तुत्वा, स्तवध्यै 7, 37, 1. 8. pass.: स्तूयते, स्तूयमान, अस्तावि; partic. स्तुत (श्रुत P. 8, 3, 105). *loben, preisen, lobsingen, lobend aussprechen:* अस्तोष्यग्निर्के: ṚV. 1, 141, 13. स्तुषे वामश्विना बृहत् 46, 1. स्तोत्रिया: Çat. Br. 14, 6, 1, 12. तमु स्तुष इन्द्रं तं गृणीषे ṚV. 2, 20, 4. गृणाना जमदग्निवत्स्तुवाना च वसिष्ठवत् 7, 96, 2. स्तुवञ्छन्द्रविणं सद्य धीमि 4, 51, 7. सुते सोमं स्तुमसि शंसदुक्था 8, 23, 8. 29, 4. 62, 8. अस्तोषि मन्म Vîtarâg. 4, 9. ṚV. 7, 18, 18. वयं ते तं इन्द्र ये च देव स्तवन्त 30, 4. स्तुवते रासि वाजान् 93, 6. अपि श्रुत: सविता देवो अस्तु 38, 3. AV. 5, 11, 11. Ait. Br. 3, 42. विश्वामित्र: पुत्रानस्तुष्टाव 7, 18. AV. 4, 23, 7. 13, 2, 2. कामं स्तुवोदकं भिन्दे-यम् 9, 2, 2. Im Ritual vom *Vortrag des* Sâman-*Sängers* (mit loc. des Textes, aus welchem das Sâman gebildet ist): सप्तभि: शंसन्ति पञ्चभिर्यजन्ति सामभि: स्तुवन्ति Nir. 13, 7. Ait. Br. 3, 1. आग्नेयीषु सामगा: स्तुवते 4. अन्नाय गृहीताय स्तुवते उद्य शंसति Çat. Br. 3, 1, 3, 2. 3, 2, 4, 6. 4, 2, 3, 12. 5, 3, 4. 6, 6, 6. सर्पराज्ञ्या ऋतु 6, 17. 8, 1, 3, 4. न वै ब्रह्मा प्रवदति न स्तुते न शंसति 5, 5, 5, 16. Kâtj. Çr. 20, 5, 5. Çâṅkh. Çr. 12, 9, 8. 18, 2, 3. नवर्चं 4. 23, 9. स्तोत्रे स्तुते 14, 32, 14. वैरूपेण Lâṭj. 3, 5, 3. मानसेन 8, 1. शक्वरीभि: 10, 2, 11. Kâṭh. Up. 1, 3, 8. 10. 12. — स्तुत्त n. *Lob* ṚV. 7, 56, 15. so v. a. स्तोत्र, स्तुतशस्त्राणि Çat. Br. 10, 3, 3, 3. Ait. Br. 2, 38. 3, 39. TS. 3, 2, 3, 1. 2. 7, 3, 13, 1. Âçv. Çr. 6, 10, 27. Kâṭh. Up. 3, 17, 3. — Aus der klassischen Sprache haben wir folgende Formen zu verzeichnen (Bed. *loben, preisen*): स्तौति P. 7, 3, 95. Vop. 9, 53. Mudrâr. 113, 11. 16. स्तौषि Spr. (II) 7380. स्तौमि Bhâg. P. 7, 13, 42. Pârâç. 1, 1, 7. स्तवीति P. 7, 3, 95. Vop. 9, 53. स्तवीमि Çâṅk. 13, 1. स्तुमस् Spr. (II) 2926. स्तुवन्ति Bhag. 11, 21. MBh. 3, 13499. 13, 1271. 1276. R. Gorr. 2, 26, 14. Pârâç. 1, 1, 7. स्तुन्वन्ति Bhâg. P. 12, 3, 1 (Praçnop. 2, 4 vielleicht nur Druckfehler). स्तुहि MBh. 1, 721. 2, 1536. Bhatt. 8, 93. स्तुथ 7, 86. स्तुवतु Spr. (II) 3723. अस्तुवत् MBh. 4, 178. Mârk. P. 106, 50. अस्तौत् Bhâg. P. 3, 8, 33. 3, 8, 20. Pârâç. 175, 24. अस्तुवन् MBh. 13, 875. R. 1, 36, 20. स्तुवन् MBh. 3, 13498. R. 2, 26, 12. 65, 3. Spr. (II) 3366. तुष्टाव MBh. 1, 3096. R. 1, 31, 10. Mârk. P. 23, 29. Weber, Râmây. Up. 350. Bhâg. P. 1, 9, 31. तुष्टुव, तुष्टुम P. 7, 2, 13. Vop. 8, 57. 9, 53. तुष्टुषुस् R. 1, 14, 46. 45, 42. तुष्टुवद्भिस् Varâh. Bṛh. S. 43, 60. स्तविता und स्तोता Vop. 8, 79. 9, 52. अस्तावीत् P. 7, 2, 72. Vop. 8, 96. 9, 53. अस्तौषीत् Harîv. 7109. Bhâg. P. 8, 4, 22. अस्तौषम् MBh. 3, 16896. अस्ताविषुस् Bhatt. 15, 70. स्तूयात् P. 7, 4, 28, Schol. अस्तोष्यत् Bhatt. 21, 2. med.: स्तुवे Spr. (II) 2926, v. l. स्तुवीत Bhâg. P. 3, 31, 11. स्तुधम्, अस्तुधम् P. 8, 3, 78, Schol. अस्तोष्ट P. 7, 2, 73, Schol. Vop. 9, 53. स्तोष्यते 25, 30. स्तोष्ये Harîv. 10233. 10672. Mârk. P. 23, 30. स्तोतुम् Harîv. 6297. R. Gorr. 2, 11, 21. Bhâg. P. 4, 15, 20. स्तुत्वा 3, 9, 26. 5, 19, 15. 8, 16, 42. Brahma-P. in LA. (III) 53, 20. pass.: स्तूयसे (so ed. Bomb.) MBh. 4, 122. स्तूयमान 1, 7655. 3, 1766. 5, 7106. 7339. 12, 10363. 13, 1271. 1276. R. 5, 3, 3. Râja-Tar. 4, 50. तुष्टुवे, स्तविता und स्तोता, अस्तावि, अस्ताविषाताम् und अस्तोषाताम्, स्ताविष्यते und स्तोष्यते, अस्ताविष्यत und अस्तोष्यत, स्ताविषीष्ट und स्तोषीष्ट Vop. 24, 2. 3. स्तुत AK. 3, 2, 59. MBh. 12, 10363. Trik. 1, 1, 1. Weber, Râmây. Up. 350. प्रवृत्तानुलोममाहृतस्तुतमङ्गल *als Lob hergesagt* Kir. Nîtis. 16, 32; vgl. अरिष्टुत, अपि° (°श्रुत MBh. 13, 1613 ed. Calc., °स्तुत ed. Bomb.), दु°, पुरु°, यथास्तुतम्, सुष्टुत. — स्तुतवत् = स्तुत Harîv. 6299.

— caus. स्तवयति *loben, preisen* Bhâg. P. 4, 15, 23. स्तावयते *loben lassen* 24.

— desid. तुष्टूषति P. 8, 3, 61. Schol. zu 1, 2, 9. 6, 4, 16. Vop. 19, 17. *zu loben —, zu preisen beabsichtigen:* तुष्टूषित Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 130.

— intens. तोष्टूयते Schol. zu P. 7, 4, 82.

— अति *mehr (über die Zahl) besingen* Pârâç. Br. 3, 3, 7. fgg. Lâṭj. 2, 1, 6.

— अनु VS. Pair. 3, 70. *beloben, laudibus prosequi* ṚV. 5, 73, 4. तमस्य महिमानमनु ष्टुवन्ति पूर्वथा 8, 3, 8. 18, 6. — Vgl. अनुष्टुति.

— अभि, °ष्टौति, अभ्यष्टौत् u. s. w. P. 8, 3, 62. 66. Vop. 8, 45. 9, 53. auch अभ्यस्तोत् Kâç. zu P. 8, 3, 119. *Lob richten an* (acc.), *preisen:* ई-

स्तोमम् RV. 1,54,2. 8,89,3. विप्रैरभिष्टुतः 9,3,6. 27,1. 67,19. fg. AV. 8,7, 11. 9,2,1. Im Ritual speciell vom Hotar: यावणः Ait. Br. 6,1. 2. Çat. Br. 13,5,2,16. 6,2,12. Çiñkh. Çr. 5,9,29. 7,15,2. Kauç. 127. Kâṭhân. Up. 1,3,9. — °ष्टोपि MBu. 1,7393. °ष्टुवन् 3. pl. ohne Augm. 3,8776. °ष्टुवस् Harıv. 13206. R. Gorr. 2,12,36. Bhâg. P. 8,7,12. 10,83,3. °तुष्टाव MBu. 1,2095. 8351. R. 1,62,25. °तुष्टुवुस् MBu. 7,669. Harıv. 4121. med.: °ष्टुवते 3. sg. MBu. 12,7715 (खभी° ed. Calc.). °ष्टुवान Bhâg. P. 6,12,34. — °ष्टूय 4,18,1. 6,19,14. 10,2,42. 14,41. Mârk. P. 22,12. °ष्टूयमान Pañkav. 172,14. fg. °ष्टुत AK. 3,2,39. MBu. 3,5016. 12,10787. 13,1376. R. 1,60,22 (62,33 Gorr.). 5,3,12. 89,19. VP. 1,4,10. Mârk. P. 99,61. Bhâg. P. 2,9,9. 3,18,8. 21,34. 33,35. 4,1,57. 30,43. यौकाराभिष्टुतं सोमसलिलम् so v. l. geweiht Jâén. 3,307. — Vgl. अभिष्टव.

— समभि dass.: °तुष्टुवे MBu. 12,13120. °ष्टुत्य R. 1,14,26. °ष्टुत Bhâg. P. 10,16,54.

— आ s. आस्ताव.

— उप *preisen, besingen:* सवितारम् RV. 1,22,6. 5,42,7. 15. 6,55,4. 7,2,2. 8,75,2. VS. 21,46. उपं त्वा नमसा स्तुमः AV. 3,15,7. TBr. 3,2, 8,7. लोकैरुपस्तौति Schol. zu P. 3,1,25. Vop. 21,17. °स्तूयमान Bhâg. P. 3,13,45. °स्तुत RV. 1,181,7. 2,32,1. 5,76,2. 10,60,1. Im Ritual vom Hotar Çat. Br. 1,4,2,1. 5,2,3. 6,3,2,14. 25. — Vgl. उपष्टुत्, उपस्तुत् fgg.

— नि, °ष्टौति, न्यष्टौत् und न्यस्तौत् P. 8,3,70. fg. Vop. 8,45. 9,83. — निष्टवन् MBu. 12,3606 fehlerhaft für निष्टनन् (so ed. Bomb.).

— परि, °ष्टौति, पर्यष्टौत् und पर्यस्तौत् P. 8,3,70. fg. *loben, preisen:* °स्तुवत् (!) Kâm. Nîtis. 11,64. °ष्टुत *besungen* Çiñkh. Çr. 9,25,1. Pañkar. 1,8,13. — Vgl. °ष्टवनीय, °ष्टुति.

— प्र 1) *preisen:* प्र स्तौषदुर्पं गासिषत् RV. 8,70,5. 10,67,3. प्र तद्दिदुः स्तवते वीर्येण 1,154,2. यत्नैः 159,1. 6,20,10. 5,33,6. सुमतिभिः 8, 22,6. 35,11. VS. 21,46. Çat. Br. 10,4,2,9. स्तोमम् Kauç. 107. तद्या ब्रुवाणा भरतं प्रतुष्टुवुः R. 2,106,33 (113,26 Gorr.). उमापतिरिति प्रस्तूयते Prab. 87,4. Im Ritual vom *Gesang* überh. wie von dem des Prastotar im Bes. (vgl. प्रस्ताव): प्रस्तोता साम प्रस्तौति Çat. Br. 14,4,2,30. Pañkav. Br. 6,4,14. 7,7,1. 15,10,7. Lâṭj. 2,6,11. 9,11. 10,17. 7,6,13. Kâṭhân. Up. 1,10,9. — 2) *zur Sprache bringen, zu reden kommen auf:* युष्मांश्च धर्मज्ञानरतान्पतिणः सर्वे सर्वदा ममापे प्रस्तुवन्ति Hit. 19,2. तमर्थं सैव प्रस्तोष्यति Prab. 105,11. सर्ववृत्तासं °स्तुत्य Hit. 100,16. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 175. 251. Sis. bei Muir, ST. 4,12. संप्रति मित्रलाभः प्रस्तूयते Hit. 8,19. Bhâg. P. 5,12,13. नारकाः पञ्चमे प्रस्तोष्यन्ते H. 23. विस्तरभयान्न प्रस्तूयते Sarvadarçanas. 38,12. 88,14. 114,18. 133, 12. fgg. — 3) überh. *an Etwas gehen, sich an Etwas machen:* प्रस्तूयतां विवादः Mâlav. 13,21. Uttarar. 120,4 (162,10). Mâlatîm. 76,13. Spr. (II) 1633. Daçarûp. 80,16. Bhaṭṭ. 2,28. fg. 8,103. प्रस्तावीर्मा न विक्रमम् so v. a. *bethätige* 9,49. — 4) *voranschicken, an die Spitze stellen:* यशब्दस्य शास्त्रेण प्रस्तूयमानस्य Sarvadarçanas. 158,14. — partic. प्रस्तुत 1) *gepriesen* TS. 5,4,10,2. TBr. 3,10,1,2. Çat. Br. 4,6,9,17. Maitrîup. 6,5. — 2) *zur Sprache gebracht, in Rede stehend, worum es sich handelt* MBu. 12,5012 (प्रस्मित ed. Bomb.). Harıv. 4702 (प्रसृत die neuere Ausg.). R. 5,41,7. Mṛkkh. 89,11. Ragh. 5,19. Mâlatîm. 16,15. Kathâs. 30,136. 45,30. 292. 56,270. Schol. zu Kîrt. Ça. 277,7. 14. fg. Sâh. D. 131,5. 287. 527. Prâtiçâkh. 86, *a*, 9. 92, *b*, 3. 96, *b*, 7. Prab. 18,10. Çañk. zu Kâṭhân. Up. S. 39. Hit. 87,21. 101,18. Bhâg. P. 10,47, 43. Comm. zu 5,6,6 (Gegens. प्रासङ्गिक). Sarvadarçanas. 159,20. fg. ख° Kull. zu M. 1,5. 7,42. Kâvjâd. 2,342. किमप्रस्तुतं ब्रवीषि Pañkav. 30,2. 36,23. यथाप्रस्तुतम् Mâlatîm. 146,3. प्रस्तुतत्व n. Kull. zu M. 2,30. — 3) *woran man gegangen ist, begonnen* R. 7,22,5. Mâlav. 49. Spr. (II) 991. 4014. Z. d. d. m. G. 27,11. Hit. 120,21. Kusum. 64,18. — 4) mit einem infin. *der sich an Etwas gemacht hat:* यागतुं प्रस्तुतश्चारुमेतदर्थं तवान्तिकम् Kathâs. 108,162. Râga-Tar. 3,261. Vgl. संप्र. — 5) wohl fehlerhaft für प्रसृत in निरन्तरप्रस्तुतदानवारिभिः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, CP. 43. — caus. *zur Sprache bringen, anregen:* यथापृच्छद्दृषिस्तत्र कथितप्रस्तावपन्कथाः MBu. 1,6. प्रस्तावित Mâlatîm. 47,1. — Vgl. प्रस्तव, प्रस्ताव, प्रस्तावना, प्रस्ताव्य, प्रस्तुति fg., प्रस्तोतृ und यप्रस्तुतप्रशंसा unter प्रशंसा.

— अभिप्र im Ritual *mit einem* Stoma *besingen* TBr. 1,5,10,2.

— संप्र, partic. °स्तुत *der sich an Etwas gemacht hat:* भोक्तुम् Râga-Tar. 4,229. — Vgl. oben प्रस्तुत 4).

— प्रति s. प्रतिष्टुति fg.

— वि, °ष्टौति, व्यष्टौत् und व्यस्तौत् P. 8,3,70. fg. *Loblieder singen:* सूतमागधसंघाश्च व्यस्तुवंस्तत्र (°संघश्चाप्यस्तु° ed. Bomb.) सुस्वराः MBu. 1,7056. विष्टुत *vielfach besungen* TBr. 3,10,1,2. — Vgl. विष्टुति.

— सम् 1) *besingen zusammen mit* (instr.) Nir. 7,6. यूपान् *alle zusammen* Âçv. Çr. 3,1,10. — 2) *preisen, verherrlichen, beloben* überh.: संस्तौषि MBu. 2,1525. Pañkar. 4,6,16. संस्तुवत्ति Bhâg. P. 5,21,17. संस्तुवत्त् Kathâs. 49,29. 53,73. Bhâg. P. 6,4,35. 8,3,21. 9,5,12. 14,42. 11,4,19 (संस्तुन्वत्; vgl. स्तुन्वत्ति). Vop. 8,26. संस्तूय MBu. 13,4653. Mârk. P. 72,29. Bhâg. P. 1,4,1. संस्तुत्य 10,32,15. Pañkav. 236,15. संस्तोतुम् MBu. 2,1428. संस्तूयसे, °ते, संस्तूयमान Spr. (II) 6923. Bhâg. P. 4,30,36. MBu. 3,1678. 1764. 5,560. 7,2938. R. 5,3,1. 2. Ragh. 13,6. 15,27. VP. 1,4,25. Bhâg. P. 4,12,1. — partic. संस्तुत 1) *zusammen besungen, — gepriesen* TS. 1,7,8,3. TBr. 3,10,1,2. Nir. 12,2. — 2) *gepriesen, verherrlicht, gelobt* überh. Harıv. 10018. fg. R. Gorr. 1,4,147 (सपि°). Varâh. Bṛh. S. 43,5. Mârk. P. 103,12. Bhâg. P. 6,16,49. — 3) *zu einem* Stotra *zusammengerechnet*, überh. *zusammengezählt* TS. 7,4,10,2. 11,1. TBr. 1,2,2,2. यग्निष्टोमस्य संस्तुतस्य नवतिशतं स्तोत्रियाः *alles zusammengenommen* Ait. Br. 3,41. Pañkav. Br. 13,4,3. 13, 22. 19,1,4. संस्तुतानावष्टे तृणानि वोढुङ्गाति यथासंस्तुतम् *sie nennt die Gesammtzahl oder nimmt so viele Grashalme als die Zahl beträgt* Kât. Çr. 5,3,7. 8. — 4) *auf gleicher Stufe stehend mit* (instr. oder im comp. vorangehend): यविट्पाशिष्टशूद्रैः संस्तुतः पुरुषः पशुः Bhâg. P. 2,3,19. वायस° (so ist zu lesen) Kathâs. 61,55. Bhâg. P. 5,26,18. मेने ऽतिदुर्लभं पुंसां सर्वं तत्स्वप्नसंस्तुतम् 3,4,16. — 5) *vertraut, bekannt* (von Personen und Sachen) Uttarar. 38,7 (76,2). Çiç. 3,31. Varâh. Bṛh. 5,19. Spr. (II) 1044. 2204. 3372. Râga-Tar. 3,326 (mit gen.). Bhâg. P. 9,11, 8. अ° *unbekannt, fremd:* गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः Çik. 33. Kir. 3,2. Spr. (II) 1056, v. l. — Vgl. संस्तव fgg., संस्ताव, संस्तुत fg.

— अभिसम् *preisen, verherrlichen, beloben:* °स्तुवत् MBu. 13,3695. °स्तुत 3,12709. Bhâg. P. 10,83,36.

— परिसम् dass.: °स्तूयमान MBh. 1,2132.

2. स्तु (= 1. स्तु) adj. in सुष्टु.

3. स्तु *tröpfeln (zusammenrinnen), conglobari:* स्तुत (v.l. म्रुत) *tröpfelnd* H. 1496. — Vgl. स्ताव 1), स्तुका und स्तोक.

4. स्तु = स्तुका in पृथुष्टु.

स्तुका (vgl. 3. स्तु) f. *Zotte, Flaus, Flocke von Wolle oder Haaren; namentlich die krausen Stirnhaare des Stiers; Zopf* Nir. 11,33. स्तुकेव वीता धन्व ṚV. 9,97,17 (vgl. Taitt. Âr. 3,11,30). घा छिन्नमि स्तुकामिव AV. 7,74,2. Kauç. 27. 32. वले: Çat. Br. 3,3,3,18. °सर्ग (मेखला) सृष्टा भवति 2,3,13. Kâty. 25,6. सर्वस्मस्तुका adj. AV. 7,46,3. Ausnahmsweise auch m. केश° Kauç. 42. Die Erklärung durch ज्ञघन Nir. 11,33 und sonst ist aus ṚV. 10,86,3 abgeleitet. — Vgl. ऊर्णा°, बल्बज°, पृथुष्टुक, विपित°.

स्तुकाविन् (von स्तुका) adj. *zottig* ṚV. 8,63,13.

स्तुकी f. v. l. für म्रुकी Bhâg. P. 4,24,11. = स्तोकघृतधारा Comm.

स्तुच्, स्तौचते (प्रसादे) Dhâtup. 6,15.

स्तुत् (von 1. स्तु) f. *Lob, Lobgesang* ṚV. 1,169,4. 6,63,3. स्तुतश्च यास्वा वर्धन्ति 8,2,29. 43,17. यद्यास्तुत् Kâty. Ça. 22,5,3. — Vgl. घग्नि° (°ष्टुत्), इन्द्र°, इय°, ग्राव°, छन्दः°, देव°, विश्वदेव°, वैश्वदेव°, सूर्य°.

स्तुत s. u. 1. und 3. स्तु.

स्तुतंस्तोम adj. *dessen Lob gesungen ist* VS. 8,12.

स्तुतस्वामितेत्र n. N. pr. *eines heiligen Gebietes* Verz. d. Oxf. H. 60,b,4.

स्तुति (von 1. स्तु) f. 1) *Lob, Lobgesang, Verherrlichung, Lobeserhebung, Hervorhebung der guten Seiten einer Person oder einer Sache* P. 3,3,95. Vârtt. 1 (parox.). AK. 1,1,5,12. 3,4,22,50. H. 269. Hall. 1, 145. 3,74. सूर्यस्तुतीनाम् ṚV. 1,84,2. 8,34,1. ऋतुः 10,31,5. Nir. 7,3. Çat. Br. 7,5,2,39. Gobh. 3,3,15. कौत्सायनी Maitrâyaṇ. 3,1. स्तुतयश्चेन्द्रसंयुक्ताः MBh. 3,12000. मङ्गलैः स्तुतिभिश्चापि 1,7635. °मङ्गलैः Harîv. 3964. R. 1,10,36. 62,26 (रूक्ष्य°). 2,25,24. R. Gorr. 2,96,9. Ragh. 4, 6. 10,31. 34. Uttarar. 102,2 (136,6). Spr. (II) 4853. 5547. मंतुष्यत्युत्तमः स्तुत्या 6793. Varâh. Bṛh. S. 12,13. 48,32. Kathâs. 21,32. Râja-Tar. 3,303. 4,144. 5,352. Prasannar. 80,3. Bhâg. P. 3,7,20. स्तुतये न तत्ते *das gereicht dir nicht zum Lobe* 8,7,32. 10,42. गुण° Hit. 27,7. Nalâs. 2, 1,63. विधेः फलवादलक्षणा या प्रशंसा सा स्तुतिः Comm. Koll. zu M. 1, 100. fg. 110. मांसभक्षण° 5,30. 6,10. °शील adj. R. 2,65,2. °शब्द 3. °पद Spr. (II) 6522. °भूमि AK. 3,3,34. °स्तोम Bhâg. P. 3,12,37. °विपर्यास Râja-Tar. 4,633. स्तुतिं कर् Mârk. P. 100,2. कुर्वन्स्तुतीरात्मनः Spr. (II) 6253. स्तुतिं गातुम् Kathâs. 52,193. ब्रू Bhâg. P. 3,5,25. °वचन Spr. (II) 6898. als m. declinirt: तुष्टस्य स्तुतिना (स्तुतिभिः die neuere Ausg.) किं ते Harîv. 6298. — 2) Bez. der Durgâ Devî-P. 45 im ÇKDn. Vishṇu's MBh. 13,7022. — 3) N. pr. der Gattin Pratihartar's Bhâg. P. 5,15,4. — Vgl. घप्रस्तुत°, दुष्टुति, निः°, पुनः°, पूर्व्य°, राम°, वीतराग°, वेद°, शिव°, सघ°, सत्य°, सुष्टुति, सूर्य°.

स्तुतिगीतक n. *Lobgesang:* वैष्णव *auf* Vishṇu Kathâs. 106,12. केशव° 18.

स्तुतिपाठक m. *Lobsänger* AK. 2,8,2,65. Pañcat. 1,10,22.

स्तुतिब्राह्मण Titel einer Schrift oder N. pr. eines Mannes Burnouf, Intr. 138, N. 2.

स्तुतिमत् (von स्तुति) adj. *Lobgesänge besitzend, — kennend* Harîv. 14902.

स्तुतिव्रत m. = स्तुतिपाठक Thom. 2,8,56. H. 795. Gaṇiṣṭh. im ÇKDn.

स्तुतिशास्त्र (ed. Bomb.) und °शास्त्र (ed. Calc.) MBh. 2,452 wohl nur fehlerhaft für स्तुतशस्त्र (s. u. 1. स्तु).

स्तुत्य (von 1. स्तु) adj. *zu loben, zu preisen, lobenswerth* P. 3,1,109. Vop. 26,17. fg. 25. MBh. 8,1373. 12,10363. 13,1115. R. Gorr. 2,26, 27. fg. Ragh. 4,6. 10,15. 17,73. Çik. 28,2. Spr. (II) 4238. Kathâs. 71, 69. Râja-Tar. 3,281. 4,50. Sâh. D. 264,17. Verz. d. Oxf. H. 57,b,2. Pañcar. 4,3,46. Bhaṭṭ. 6,55. Sarvadarçanas. 64,2. घ° R. Gorr. 2,11, 21. Râja-Tar. 4,635. — Vgl. सघ°.

स्तुत्यव्रत m. N. pr. eines Sohnes des Hiraṇjaretas und des nach ihm benannten Varsha Bhâg. P. 5,20,15.

स्तुनक m. *Bock* Çabdar. im ÇKDn. — Vgl. स्तुभ.

स्तुर्प m. *Schopf* VS. 2,2. 25,2. Çat. Br. 1,3,3,5. 3,3,3,4. — Vgl. विपित°, स्तुका und स्तूप.

1. स्तुभ्, स्तौभति (घर्चतिकर्मन्) Naigh. 3,14. Nir. 7,12. स्तोभते (स्तम्भे) Dhâtup. 10,34. स्तुभ्नाति (रोधने, निष्कोषणे) 31,7. auch स्तुम्भाति P. 3, 1,82. Vop. 16,1. Zu belegen nur स्तोभति, (प्र)स्तुभानं und स्तुब्ध. *einen Laut ausstossen, juchzen, trällern* und dgl.; gewöhnlich von *dem Einfügen verschiedener Singinterjectionen in das* Sâman (vgl. स्तोभ) Vâlakh. 6,1. पदाय पदाय स्तोभेत् Liṭ. 1,6,1. 2,9,19. 3,9,7. 7,7,2. Sâṅkh. Br. 3,1.

— caus. *jauchzen* ṚV. 1,88,6. गोपीभिः स्तोभितो ऽनृत्यद्भगवान् *bejauchzt* Bhâg. P. 10,11,7.

— घनु *nachträllern* Nir. 7,12. daher घनुष्टुभ् nach *dem der* Gâyatrî *nachgeschlagenen vierten* Pâda; ähnlich त्रिष्टुभ् von *den drei überschüssigen Silben.* Vgl. auch घनुष्टोभन.

— घभि, °ष्टोभति, घभ्यष्टोभत् P. 8,3,69. 65. *hinzuträllern* Liṭ. 1, 12,11. व्यतरम् 7,11,6. 8.

— व्यव *sondern durch dergleichen Rufe* Liṭ. 7,6,25. Nidânas. 6,7.

— घा *zujauchzen* Çâṅkh. Çr. 18,15,5.

— परि, °ष्टोभति u. s. w. P. 8,3,63. 65. *umjauchzen* u. s. w. ṚV. 1. 80,9. सुतं परि ष्टोभत्ति नो गिरः 8,81,19. 9,64,28. Pañcav. Br. 8,9,12. 12,1,2. 4,27. — Vgl. परिष्टुभ्, °ष्टोभ.

— प्र *durch einen Zuruf antreiben:* वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः ṚV. 4, 3,12. — caus. *Jmd zujauchzen:* तं वासुदेवो भगवानवतीर्णो जगत्पतिः। इति प्रस्तोभितो बालैर्मेने घात्मानमच्युतम् ॥ Bhâg. P. 10,66,2. *durch Rufe verhöhnen, verspotten* 22,33. — Vgl. प्रस्तोभ.

— प्रति *mit einem Schrei antworten, entgegenjauchzen* u. s. w. ṚV. 1,88,6. प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः 168,8. स्तोमासस्त्वा प्रति ष्टोभन्त्यक्तुभिः 5,84,2.

— वि, °ष्टोभते, व्यष्टोभिष्ट Vop. 8,45. 103.

— सम् in संस्तुभ् *f. Gejauchze* VS. 15,5. Vgl. auch संस्तोभ.

2. स्तुभ् (= 1. स्तुभ्) f. *jauchzender Ruf* ṚV. 1,62,4. सं यं स्तुभो घवनयो न यन्ति 190,7. घनेकुभः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति 3,51,8. सोमं मनीषा

अन्यनूषत स्तुभः 9,68,8. 86,17. 96,18. Çiñkn. Br. 8,3. घर्क° Ça. 8,23, 3. 8. सप्तुभ् adj. TS. Pair. 6,13. छन्दस् TS. 4,3,11,2. — Nach Naigh. 3, 16 = स्तोतर्. — Vgl. अग्निष्टुभ्, सत°, घर्म°, छन्दः°, त्रिष्टुभ्, वृष°, सुष्टुभ्.

स्तुभ् m. 1) N. eines Agni MBh. 3,14190. — 2) *Bock* AK. 2,9,76. nach ÇKDa. Lesart Bharata's; vgl. तुभ्, स्तभ्.

स्तुभ्वन् (von 1. स्तुभ्) adj. *jauchzend:* ऋषि RV. 1,66,4.

स्तुम्प् s. unter तुप् mit प्र.

स्तुवेय्य (= इन्द्र Uggval.) Uṇâdis. 3,98 und स्तुषेय्य bei Wilson und im ÇKDa. nach Uṇ. in Sinn. K. fehlerhaft für स्तुषेय्य. — Vgl. स्तवेय्य.

स्तुषेय्य (von 1. स्तु) adj. *zu loben* RV. 10,120,6.

स्तू s. आयतस्तू.

स्तूणाकर्ण Harîv. 9358. 10474 fehlerhaft für स्थूणा° (so die neuere Ausg.).

स्तूप्, स्तूप्यति Dhâtup. 26,127 und स्तूपयति 32,133 in der Bed. समुच्छ्राय (wegen स्तूप).

स्तूप Uṇâdis. 3,38 (oxyt.; das Sûtra verdächtig). m. AK. 3,6,8,19. 1) = स्तुप *Schopf*, sowohl der *Haarbusch* als der *obere Theil des Kopfes* Nir. 10,38. उर्व स्पश दिव्यं मानु स्तूपैः RV. 7,2,1. प्रज्ञे तीक्ष्णीयसी स्तूपात् Pâraṇ. Br. 13,4,4. विश्वाः TS. 3,3,6,3 (स्तुप VS.). अबुध्रे राजा वरुणो वनस्पार्धं स्तूपं ददते so v. a. *er fasst die Wolke am Schopfe* RV. 1,24,7. — 2) bei den Buddhisten und Gaina *Tope, ein* (ursprünglich) *kuppelförmiges Grabdenkmal mit Reliquien* Köppen 1,533. fgg. Burnouf, Intr. 265. 348. fgg. 372. 423. Lot. de la b. l. 93. 145. 206. 246. 423. 672. fg. Râǵa-Tar. 1,102. 3,10. 13. 4,185. 211 (स्तुप Ta.). Çatr. 14,294. Kilâsakûṭa 3,114. °भेदन Vjutp. 66. Hiouen-thsang 1,34. 107. 417. fg. = कूल H. an. 2,481. Med. k. 10. — Vgl. अरुष°, द्रोण°, निवर्तन°, मल्ल°, हिरण्य°, स्तोपिक.

स्तृणा (von 1. स्तृ) in भूस्तृणा. Vgl. तृणा, welches aus स्तृणा entstanden sein kann.

स्तृणीषन् s. u. 1. स्तृ mit उप.

स्तृति (von 1. स्तृ) f. 1) *Streuung, Bestreuung, Bedeckung* Vop. 9, 39. 12, 3. — 2) *Niederstreckung* TS. 2,2,2,3. 6,5,5. 5,1,6,4. 4,3,4. Kâṭy. 28,8.

स्तृत्य (wie oben) adj. *niederzustrecken* Ait. Br. 2,1. 33.

स्तेगे m. von unbekannter Bed., = रश्मिसंघात्यादित्यः (also von स्त्या) Sây. स्तेगो न तामतेयति पृथ्वीम् RV. 10,31,9. schwerlich dieselbe Bed. in स्तेगान्दंष्ट्राभ्याम् VS. 25,1. nach dem Comm. zu TS. *ein best. Insect* (गोकर्णग).

स्तेन (von स्ता) m. Noten zu gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. m. und n. (= स्तेय Bhar. zu AK. nach ÇKDa.) gaṇa गर्दभादि zu P. 2,4,31. m. *Dieb, Räuber* AK. 2,10,25. H. 381. Hit. 128. Hallâs. 2,182. RV. 2,23, 16. स्तेनो यो दिप्सति नः 28,10. 42,3. 5,3,11. नेत्ता स्तेनं यत्री रिपुं तपोति मूर्या यर्चिषा 79,9. 6,51,13. स्तेनं राय 7,55,3. 104,10. स्तेन इव व्रजमक्रमुः 10,97,10. 127,6. AV. 4,3,4. 5. 36,7. 19,47,6. fgg. 49,7. 50,5. VS. 1,1. 11,77. 12,62. TS. 2,5,8,6. Ait. Br. 5,30. Çat. Br. 14,7,6,22. हिरण्यस्य Kaṭh. Up. 5,10,9. Kauç. 57. M. 3,150. 4,210. 7,83. 8, 301. fg. 314. 317. 334. 340. 343. 356. 9,93. 257. 262. 312. 11,100. 12, 57. 59. Spr. (II) 1132. 3488. 3620. 3639. 6442. Varâh. Bṛh. S. 53,61. Bṛh. 19,1. Bhâg. P. 6,2,9. व्याधि° M. 8,144. वृ° Çat. Br. 14,7,6,22. स्तेनमस्तेनमानिनम् M. 8,197. — Vgl. स्तैन्य.

स्तेनय् (von स्तेन), °यति (चौर्ये) Dhâtup. 35,43. *stehlen, rauben:* द्रव्याणि M. 8,333. वाचम् *am Worte einen Diebstahl begehen* so v. a. *dasselbe fälschlich gebrauchen* Spr. (II) 6027 (M.).

स्तेनहृदय adj. *ein eingefleischter Dieb* VS. 30,13.

स्तेय्, स्तेयते (तृणार्घ) Dhâtup. 10,4. Vgl. स्तिय्, स्तेयायति (स्तेये) Vop. in Dhâtup. 32,133.

स्तेम m. = तेम = समुद्न *das Feuchtsein oder Feuchtwerden* AK. 3,3,29. — Vgl. स्तिम्.

स्तेय (von स्ता) n. *Diebstahl* P. 5,1,125 (auf स्तेन zurückgeführt). AK. 2,10,26. H. 383. Hallâs. 2,184. AV. 11,8,20. 14,1,37. Nir. 6,27. Kauṣ. Up. 3,1. M. 8,6. 72. 213. 314. 332. 337. 9,237. 11,65. 102. 161. 169. Jâǵ. 3,224. Spr. (II) 4492. 6442. Varâh. Bṛh. S. 15,4. Bhâg. P. 5,26,19. °प्रायश्चित्त Paiṭhîn. 33,a,9. Verz. d. Oxf. H. 87,b,22. fg. रूका° u. s. w. M. 11,57. 66. 70. 93. 101. Jâǵ. 3,220. Kumâras. 2,35. Weber, Râmây. Up. 335. स्तेयं कृ Kâṭh. Up. 6,16,1. द्रव्याणामल्पमाराणाम् M. 11,164. MBh. 12,675. Viṣṇ. 139. यु° M. 6,92. 8,339. 10. 63. Jâǵ. 3,66. Spr. (II) 7465, Vedântas. (Allah.) No. 128. H. 81. स्तेयं स्वाहृति so v. a. *Gestohlenes* Bhâg. P. 10,8,29. — Vgl. ब्रह्म°.

स्तेयकृत् adj. *Diebstahl begehend* RV. 7,104,10. सुवर्ण° M. 11,99. सर्व° Spr. (II) 6027.

स्तेयफल s. स्तेयिफल.

स्तेयिन् (von स्तेय) m. 1) *Dieb, Räuber* M. 9,233. MBh. 14,1442. Weber, Râmây. Up. 359. सुवर्ण° Sumantu in Paiṭhîn. nach ÇKDa. Mârk. P. 14,91. — 2) *Manes* Madanav. 12,43. — 3) Bez. *des Goldschmieds* Çabdârthak. bei Wilson.

स्तेयिफल m. *eine best. Pflanze*, = तेजःपाल Râǵân. 11,17. स्तेयी° Hdschrr., स्तेय° ÇKDa. unter तेजःपाल.

स्तैन n. = स्तैन्य Bhar. zu AK. nach ÇKDa.

स्तैन्य (von स्तेन) n. *Diebstahl, Raub* P. 5,1,125, Schol. AK. 2,10,26. H. 383, Schol. Spr. (II) 4311. MBh. 3,15868. 14,1024. कैशंगवीन° Bhâg. P. 10,26,7. विलस्तैन्यं कृ MBh. 13,4514. fgg. — m. angeblich = स्तेन Çabdar. im ÇKDa.

स्तैमित्य (von स्तिमित) n. = जडता Râǵân. im ÇKDa. *Lahmheit, Bewegungslosigkeit, Unthätigkeit:* स्तैमित्यादशीघ्रप्रारम्भलोभविकाराः Kâmaṇḍ. 3,8,8,1. Suçr. 2,431,14. Urr. 39 (fehlt in der Ausg.). Vîrân. 1,7. 60. Spr. (II) 6887.

स्तोक (von 3. स्तु) 1) m. a) *Tropfen* Nir. 2,1 (von घृत् abgeleitet). Çabdârthak. bei Wilson. नेदेसो घृतस्य RV. 3,21,1. 4. 10,93,16. बकुल AV. 4,38,6. अपाम् 5,124,1. 12,3,28. VS. 20,46. गार्ध्यस्य 21,40. स्तोकाः श्रोतसि Ait. Br. 2,12. घर्मोपगत TBr. 2,1,2,1. वर्षति Çat. Br. 12,3,2,5. उद्° (vgl. P. 2,1,65) 1,7,2,18. 3,6,2,3. 8,2,21. मधु° 1,6,2, 5. यो वै स्तोकः स्कन्दति स रुप्तः 4,2,2,2. प्रस्तात्स्तोकमासिच्य Kâṭy. Ça. 25,12,11. Âçv. Ça. 3,1,22. घर्मा स्तोकाः Mârk. P. 49,58. घाज्य° Bhâg. P. 3,6,48. अग्नि° so v. a. *Funken* (vgl. कण) P. 2,1,65, Schol. — b) Bez. *des Vogels* Kâṭaka (vgl. स्तोकक) H. an. 2,21. Med. k. 38. — 2) adj. (f. आ) *ganz wenig, — unbedeutend* AK. 3,2,11. H. 1426. H. an.

Med. Hall. 4,3. 5,96. घृत MBh. 12,4389. वारि R. 2,64,65. 3,23,5. Rāga-Tar. 2,164. भक्त Kathās. 54,171. Verz. d. Oxf. H. 57,a, No. 105, Z. 6. Spr. (II) 1615. न्यग्रोधस्य बीजम् 3841. स्तोकं मरुद्भ्य धनम् 5267. दान 7189. °तिलराशि Pañcat. 121,11. घाकात्स्यर्चना Sin. D. 138. स्तवकमस्मिन् Z. d. d. m. G. 27,94. स्तोकं हि कृतमिन्द्रेण वज्रेणात्र विदारणम् R. 4,54,14. स्तोकानि दिनानि Spr. (II) 4634. Kathās. 6,19. 70, 82. Pañcat. 31,5 (27,14 ed. orn.). भूयांसो वायसाः सन्ति स्तोकाश्च भागिपतिणः Spr. (II) 3907. स्तोकायुस् adj. Bhāg. P. 2,7,36. स्तोकावशेषप्राण Rāga-Tar. 3,410. भुक्ति von kurzer Dauer Jāān. 2,27. घस्तोकविस्मय Milavim. 161,2. n. ein Weniges: तन्ममापि स्तोकं प्रयच्छ Pañcat. 263, 25. स्तोकेनोन्नतिमायाति Spr. (II) 842. 3429. 7190. स्तोकम् adv. ein wenig: नत्वा Spr. (II) 3353. घसर्विंशति 7248. गत्वा Kathās. 10,127. Çiç. 8,9. 98,3. Pañcat. 170,6. यावद्ग्ये किंचित्स्तोकं मार्गं याति 245,13. वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति mehr in der Luft als auf der Erde Çiç. 7. स्तोकान्निर्मुक्त ad 19. स्तोकोन्मिषत्तेजस् Spr. (II) 2685. °नमा Mṛcch. 80. °पाण्डुर Hall. 4,52. Bhāg. P. 10,22,31. allmählich Spr. (II) 6456. स्तोकेन und स्तोकात् (dieses bildet mit dem folg. Worte ein comp.) vor einem partic. auf त so v. a. kaum, mit genauer Noth P. 2,1,29. 3,33. 6,3,2 (vgl. Siddh. K. zu P. 6,2,49). — Vgl. प्र°.

स्तोकक (von स्तोक) 1) m. Bez. des Kātaka, des um einen Regentropfen bittenden Vogels, AK. 2,5,17. H. 1329. M. 12,67. MBh. 3,12546. 12,389. 13869. R. 3,35,28. 6,81,9. विनेदुर्वर्षिणस्तत्र स्तोककात्स्यकृताः (st. स्तोकका घ°) Harīv. 3910. die neuere Ausg. liest स्तोककत्स्यकृताः, welches Nīlak. durch घत्यत्स्यशब्दाः erklärt. — 2) ein best. Gift. = वत्सनाभ Rāgān. 6,225.

स्तोकशस् (wie eben) adv. P. 5,4,42, Schol. Vop. 7,68. tropfenweise: स्तोकशो वृष्टिर्विभक्तोपचरति Ait. Br. 2,12. ददाति zu einem Bischen P., Schol.

स्तोकीय und स्तौक्य adj. (f. घा) auf Tropfen bezüglich, so heissen sowohl die Schmalzspenden (घाकृति) als Sprüche und Verse (VS. 22,6. TS. 7,1,11,1. ṚV. 1,75. 3,21), welche bei fallenden Tropfen angewandt werden: यदाज्ञानाति स्तोकेभ्यो ऽनुब्रूकीति मैत्रावरुणाः स्तोकीया घन्याः Baudh. bei Sāy. zu Ait. Br. 2,12. Mahīdh. zu VS. 22,6. Comm. zu TBa. 3,383. Āçv. Çr. 3,4,1. Çāt. Br. 13,1,3,1. 2. Çāṅkh. Br. 10,5. TBr. 3, 8,6,1. 2. Çāṅkh. Çr. 10,12,15. 15,1,24.

स्तोतृ (von 1. स्तु) nom. ag. Lobsänger, Anbeter; Gläubiger, Anhänger ṚV. 1,11,3. 38,4. 3,18,5. 6,34,3. विश्वा सौभगा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु 7,3,10. 32,18. 53,3. 86,4. रेवाँ इहेवतः स्तोता स्यात् 8,2,13. स्तोता स्यो तव शर्मणि 44,18. 6,45,27. AV. 6,2,1. 19,48,4. neben मघवन् und सूरि ṚV. 1,124,10. 2,1,16. 5,64,4. 7,7,7. Nir. 7,2. neben स्तव्य, स्तव्यप्रिय, स्तोत्र und स्तुति als Beiw. Vishṇu's MBh. 13,7022. घ° der Niemanden lobt 1,3314. Kumāras. 6,83.

स्तोतव्य (wie eben) adj. zu loben, zu preisen Vop. 26,28. Nir. 7,2. Maitrāyaṇ. 6,34. MBh. 13,1268. 4350. fg. Harīv. 7110. 10417. Spr. (II) 7580. Varāh. Bṛh. S. 26,2. Verz. d. Oxf. H. 131,a, No. 237, Z. 10.

स्तोत्र (wie eben) n. P. 3,2,182 (paroxyt.). 1) Lobgesang, Preis, Lob AK. 1,1,5,12. H. 269. Hall. 1,145. ṚV. 1,30,5. स्तोत्रमस्य न तन्दते 138,1. 3,33,14. 5,35,9. इन्द्रस्य स्तोत्रं मतिभिश्चाचि 6,34,5. 9,72,9. 105,1. AV. 5,11,8. 9. MBh. 1,812. 8426. 3,168. 4,1255. दुर्गा° 6,794. Harīv. 329. 10231. Rāga-Tar. 3,62. Mālav. P. 83,39. 97,2. Weber, Kṛishṇaj. 301. fgg. Brahma-P. in LA. (III) 52,19. Bhāg. P. 3,9.38. 40. 4,7,19. 15,23. 25,2. 6,8,27. 19,9. 8,3,31. Pañcar. 1,3,88. 4,22. 9,9. 4,1,16. Verz. d. B. H. No. 496. 1274. Verz. d. Oxf. H. 94,a,36. fgg. कुर्याच्चतुर्विधं स्तोत्रं पत्नयोरुभयोरपि Kām. Nītis. 12,11. सत्यं प्रियं च 17,16. Burnouf, Intr. 542. 557. स्वविक्रमकथा° Rāga-Tar. 3,331. घन्यथा° Jāān. 2,204. मिथ्या° Spr. (II) 7396. इमं स्तोत्रम् Harīv. 15022 wohl nur fehlerhaft für इदं स्तो°. — 2) im Ritual die in singender Recitation vorgetragenen, den Çastra parallelen Abschnitte. Auf die Schöpfung des Soma folgt dieser Gesang des Udgātar und seiner Genossen, dann das Çastra durch den Hotar und Opferung des Tranks. Der Agnishṭoma z. B. zählt an den drei Savana zwölf Stotra mit 190 Versen (स्तोत्रिया). Nach Ait. Br. 3,23 und Sāy. zu d. St. besteht ein Stotra aus fünf Gliedern: किंकार (des Udgātar), प्रस्ताव (des Prastotar), उद्गीथ (des Udgātar), प्रतिहार (des Pratihartar) und निधन (sämmtlicher). Ueber Einzelnes vgl. Sāy. zu Ait. Br. 3,41. Schol. zu Çāṅkh. Br. 16,9. TS. Comm. 3,16. TBr. Comm. 1,99. Ind. St. 10,333.fg. — Çāt. Br. 4,1,1,7. यहाव स्तोत्रं तच्छस्त्रं यासु क्षेव स्तुवते ता एवानुशंसति 8,1,3,4. सचा वै स्तोत्राय गृह्यते यजुषा शस्त्राय Kāṭh. 29,2. यर्क्षं वा गृहीत्वा चमसं वोन्नीयं स्तोत्रमुपाकुर्यात् TS. 3,1,2,4. Çāṅkh. Br. 17,7. Ait. Br. 2,37. 3,46. 4,12. निविदा स्तोत्रमतिशस्तं भवति 3,11. Kāṭy. Çr. 9,14,4. 12,4,16. °प्रसव Çāṅkh. Çr. 8,13,4. स्तोत्रमये शस्त्रात् Āçv. Çr. 5,10,1. Lāṭy. 1,11,22. 2,7,4. 11,1. स्तोत्रवत्प्रस्तावाः 4,10,7. यद्वै वत्सासु स्तुवते सा स्तोत्रदेवता 8,9,4. Schol. zu 1. MBh. 14,742. — Vgl. घातमन्दार°, धनद°, नित्य°, परा°, प्रिय°, भक्तामर°, मरुत्°, राम°, लक्ष्मी°, वाक्यसिद्धान्त°, शिवपञ्चाक्षर°, श्रीगुरुसहस्रनाम°, श्रीकरि°, सहस्रबुद्ध°, सरस्वती°, सूर्य°.

स्तोत्रभाष्य n. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,43.

स्तोत्रय् (von स्तोत्र) °यति durch einen Lobgesang verherrlichen Verz. d. Oxf. H. 127,a, No. 227.

स्तोत्ररत्न n. Titel einer Schrift Hall 203.

स्तोत्रवत् (von स्तोत्र) adj. von Stotra begleitet Kāṭh. 28,10. Çāṅkh. Çr. 7,10,1.

स्तोत्रिय und °त्रीय adj. zu einem Stotra gehörig. 1) m. (nämlich तृच, resp. प्रगाथ) der erste des Bahishpavamāna Ait. Br. 3,4. 14. घात्मा वै स्तोत्रियः प्रजानुरूपः 23. fg. 6,5. 14. 17 (vgl. VS. 19,24). Çāṅkh. Br. 15,4. 5. 19,10. Āçv. Çr. 5,10,13. 15,13. स्तुते होता स्तोत्रियमनुद्रवेत् 6,10,17. षडक्° 7,2,2. तेषो यस्मिन्स्तुवीरन्न स्तोत्रियो यस्मिञ्छः सो ऽनुरूपः 5. 6. एक° 7. 10,8. Pañcar. Br. 11,6,6. 14,1,7. Çāṅkh. Çr. 12,5,4. 6,9. — 2) f. घा (sc. ऋच्) ein Stotra-Vers Çāt. Br. 4,4,4,1. 12,2, 2,3. 14,6,8,13. Ait. Br. 3,41. Pañcav. Br. 19,3,3. Lāṭy. 3,8,1. 4,4,7. Schol. zu Kāṭy. Çr. 24,7,30. — Vgl. याव°, या°.

स्तोभ (von स्तुभ्) m. die in den Text des Sāman-Vortrags eingeschalteten Singinterjectionen, Triller u. s. w. (z. B. कुम्, हो, ओहो, हाऊ, इउम्, इहाकायि u. s. w.) H. an. 2,214. Beispiele beim Schol. zu Pañcav. Br. 5,2,7. 7,5,11. 7,1. 10,6,4. 11,11,13. 13,5,21. 6,13. — Sadv. Br. 3,1. Pañcav. Br. 8,3,7. स्तोभान्तर Nir. 3,13. देवतायै सोमायै

स्तोभमाक्रेत्र पादाय Lāṭy. 1,6,28. 2,9,12. 5,4,18. 6,10,25. 7,2,5. 6,5. 16. Kāṭhāv. Up. 1,13,3. MBh. 12,7268. 7340. 13,625. 4108 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Bṛhad. P. 6,8,27 (wohl स्तोत्रस्तोभच्छ° zu lesen). *Geträll* überh. Bṛhad. P. 6,2,14. स° adj. *so v. a. ohne unnütze Einschiebungen, kurz und bündig;* s. u. सूत्र 9). Nach H. an. auch = स्तम्भन und केलन. — Vgl. उभय°, चतुरिडस्पद°, दश°, नव°.

स्तोभच्छन्दा f. Titel eines Abschnitts in der Sāmavedakhaḍā Verz. d. Oxf. H. 387,*a*,23.

स्तोभन adj. (f. ई) etwa *einen* Stobha *bildend:* त्रिवृद्बृहस्य स्तोभनी Cit. in Nir. 7,12. — °संस्कार s. स्तोभानुसंस्कार.

स्तोभपद् N. eines Tractats über den Stobha, Burnell in Taitsana's Record 1870, S. 651.

स्तोभप्रकृति f. Titel eines zum Sāmaveda gehörigen Abschnittes Verz. d. Oxf. H. 378,*a*, No. 377. 393,*b*, No. 91.

स्तोभवत् adj. *mit* Stobha *versehen* Sāmagāna Tüb. Hdschr.

स्तोभानुसंस्कार m. Titel eines Pariçishṭa zum SV. Verz. d. Oxf. H. 378,*a*,3. स्तोभनसंस्कार Ind. St. 1,60.

स्तोम (von 1. स्तु) Uṇādis. 1,139. °ष्टोम AV. Paipp. 2,96. P. 8,3,105. m. 1) *Lobgesang, Lobgedicht, Preis* Çāṇḍārjuṇ. bei Wilson. RV. 1,114, 9. प्रेढ्यग्निर्वावृधे स्तोमेभिः 3,5,2. स्तोमो यज्ञिनावत्रीगः 58,1. स्तोमंमतन् 5,2,11. यूयं: स्तोमं मनामहे 13,3. 6,10,2. स्तोमं यज्ञं च (वर्च गाय च) 16, 22. यमन्द् 1,126,1. कृधिमत् 4,41,1. शस्यमान 4,18. मतीनाम् 32,15. स्तोम, उक्थ 6,24,7. ब्रह्म, गिरः, स्तोमः 38,3. ज्ञानम् 7,15,4. यधापि 24,3. यथामि 64,5. स्तोमो यचिकद्दृयी ते 20,9. प्रति त्वा स्तोमैरोहते वसिष्ठाः 76,6. 86,3. AV. 6,35,3. सुकृत्व 17,1,11. Āçv. Gṛhy. 1,23,15. Kāṭhop. 2,11 (wohl स्तोमं म° zu lesen). Bṛhad. P. 3,11,34. — 2) im Ritual *die Grundformen der singenden Recitation*, deren gewöhnlich sieben gezählt werden nach der Verszahl (9. 15. 17. 21. 27. 33. 34). Daneben bestehen zahlreiche andere. In diesen Formen setzt sich das Stotra zusammen. Ind. St. 3,229. 276. 10,355. Nach dem Schol. zu Lāṭy. 5, 1,1 bewegt sich der Stoma in den fünf Theilen: प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव und निधन: vgl. unter स्तोत्र. Die einzelnen Namen VS. 9,33. fg. 10,10. fgg. Çat. Br. 3,4,1,10. fgg. 3,2. 3,5,2,5. 12,2,2,5. यन्यदन्यच्छन्दो अन्ये अन्ये हि स्तोमाः क्रियते 13,3,2,2. एकविंशो वै स्तोमानां प्रतिष्ठा 5,4,7. TS. 3,1,9,4. Kāṭhak. Up. 1,3,10. Lāṭy. 2,11,1. 6, 1,5. 2,1. fgg. °योग 1,8,14. 2,1,1. °विकार 10,5,2. स्तोमान्वय Daiva. 3,13,1. Āit. Br. 4,12. एको ह न स्तोममतिशंसेत् 6,2. 33. स्तोमातिशंसन Çāṅkh. Çr. 15,11,5. Āçv. Çr. 3,1,12. Kāṭy. Çr. 25,13,4. यपरिमित° 38. Çāṅkh. Çr. 3,21,7. यथास्तोमं प्रातःसवनम् 12,8,11. 14,19,2. ऋषि° 63,1. क्रतु° 75,1. मास° 76,1. नक्षत्र° 78,1. मुहूर्त° 80,1. निमेष° 81,1. °कल्प Schol. zu Pāṇ. Br. 4,1,7. 15,7,1. Vārtt. 6 zu P. 5,1,58. = यज्ञ u. s. w. H. 820. Halāy. 2,259. — 3) elliptisch für Stoma-*Tag* TS. 7,2,4,2. Pāṇ. Br. 4,1,7. 10,2,2. 13,9,3. 9,5. — 4) Bez. *gewisser* Iṣṭakā (vgl. स्तोमभाग) Çat. Br. 8,4,4,3. fgg. °चिति 4,13. — 5) *Menge* AK. 2,5,29. H. 1411. Halāy. 4,2. स्तोमैः काञ्चनैरिव निर्मिता: R. 4,29,16. शर° Prasannar. 145,14. कुसुम° 146,3. Rāja-Tar. 4,245. तूल° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 14. तमाल° Kuvalay. 127,*b* (152,*b*). धूम° 29,*b* (39,*b*). तमः° Spr. (II) 2817. Z. d. d. m. G. 27,38. Prasannar. 97,1. Kiçāku. 74,30 (nach Aufrecht). घात° Rasatar. 3,11 (desgl.). स्तुति° Bṛhad. P. 3,12,37. यपीनाम् Uttarar. 23,3 (31,7). पथिकस्तोम: (so ist zu lesen) Spr. (II) 1753. दृषावल° Khandom. 129. — n. nach Çāṇḍārjuṇ. bei Wilson: *the head; wealth; grain, corn; a stick or staff bound with iron;* adj. nach ders. Aut.: *crooked, bent.* — Vgl. यग्निष्टोम, यत्यग्नि°, यायु°, यश्वि°, गो°, ज्योति°, त्रि°, परि°, पितु°, पुनः°, पृश्न°, बृहस्पति°, भूमि°, मरुत्°, मरुत्°, साम°, मुहूर्त°, यज्ञा°, यम°, विषुवत्°, वैश्य°, व्रात्य°, शुक्र°, सर्व°, सरु°, स्तुत°.

स्तोमतष्ट adj. *zu einem Loblied gestaltet, gedichtet:* मति RV. 3,39,1. 43,2. (पितरः) क्षेत्राविदः स्तोमतष्टासो (etwa °तष्टारो) अर्कैः 10,15,9.

स्तोमपृष्ठ adj. (f. या) nach Manilos. Stoma und Pṛshṭha habend VS. 14,4. TS. 3,7,2,7 (स्तोमैः साध्यस्तोत्रः Comm.). Āçv. Çr. 1,12,27.

स्तोमभाग 1) m. *gewisse zum* Soma-*Opfer gehörige Sprüche, neunundzwanzig an der Zahl* (रश्मिरसि TS. 4,4,8. fgg. VS. 15,6. fgg.), *welche beim Legen der fünften Schicht* Iṣṭakā *dienen.* Ind. St. 13,261. ज्ञप् Ait. Br. 5, 32. °भागैः °भागान्प्रतिपद्य *mit den Sprüchen die Ziegel* Kāṭy. 34,17. 18. 37,17. TS. 3,5,2,1. Lāṭy. 5,11,1. 2. 15. एकानविंशतिस्तोमभागैः स्तोमभागिकीः (चिन्वति) Vait. 29. — 2) f. या *die betreffenden Ziegel* Çat. Br. 8,5,2,1. 4,2. 6,1,2. 2,3. TS. 5,3,5,5. यत्यत्तस्तोमभागम् *unmittelbar an die* St. Çat. Br. 8,6,1,4. वक्रिः° 3,15. Kāṭy. Çr. 17,7,16. 11,9.

स्तोमभागिक adj. (f. ई) *zu den* Stomabhāga-*Sprüchen gehörig* Vait. 29 (s. u. स्तोमभाग 1).

स्तोमर्मय adj. *aus* Stoma *bestehend* Çat. Br. 10,4,2,26.

स्तोमय् (von स्तोम), °यति *loben, preisen* Dhātup. 35,69.

स्तोमवर्धन adj. *Loblieder steigernd, vielleicht sich freuend an L.* RV. 8,14,11.

स्तोमवाहस् adj. 1) *Lob darbringend* RV. 1,5,1. 4,32,12. 8,4,2. 88,1. — 2) *dargebrachtes Lob empfangend:* भोता तूर्वं गृणतः स्तोमवाहाः RV. 6,23,4.

स्तोमायनि m. Bez. *gewisser Opferthiere* Çat. Br. 4,6,2,3. Kāṭy. Çr. 9, 8,7. 12,6,12. Schol. zu 9,8,6. 23. 21,2,4.

स्तोमीय adj. am Ende eines comp. *auf einen* Stoma *bezüglich:* यहणाया° Çat. Br. 8,4,4,3. घृत° Çāṅkh. Çr. 15,1,32. यज्ञ° 16,22,3.

स्तोम्य adj. 1) *eines Lobgesangs würdig* RV. 1,22,3. 124,13. स स्तोम्यः स कृड्यः (Indra) 3,16,3. 24,19. 10,96,5. — 2) *auf einen* Stoma *bezüglich* u. s. w. Pāṇ. Br. 15,7,2.

स्तोर्न adj. von unbekannter Bed., nach Sāy. so v. a. स्तेन. न ये स्तोना यवासो मुक्ता RV. 6,66,2. vielleicht so v. a. *schwerfällig.*

स्तोपिक (von स्तूप) n. = बौद्धद्रव्य Taik. 3,2,3.

स्तोभ (von स्तोभ) adj. (f. ई) *trillernd, jauchzend:* स्तोभी वाचं विसृजेत् Lāṭy. 1,6,2.

स्तोभक n. *Myrrhe* Rājān. 6,116.

स्तोभिक adj. *in* Stobha *sich bewegend:* वचन Lāṭy. 7,5,7. प्रथमानुगानं स्तोभिकमितराणि क्रतु गीतानि SV. Gāna (Tüb. Hdschr.). Vgl. Weber in Monatsberr. d. K. Pr. Ak. d. Ww. 1868, S. 273. fg.

स्तोर्ल adj. oder f. या von unbekannter Bed., nach Sāy. = स्थूल. मरुद्वात्स्तोलाभिर्धौतरश्मिरुष्या पायुरभवत्समिद्धः RV. 6,44,7.

स्त्या, स्त्यायति (शब्दसंघातयोः, शब्दसंघाते) Dhātup. 22,14 (auch ष्ठा,

ष्ठापति). = घनत्वपादकर्मन् Nir. 3,21. = संकननकर्मन् Durga zu Nir. 6,17. davon स्तूप abgeleitet Nir. 10,33. स्तुक 11,32. *gerinnen, hart werden; sich verdichten, intensiver werden* (vgl. मूर्छ्): स्त्यायते ग्रन्थः Uttarar. 34,1 (45,3).

— नि VS. Pair. 3,68 (nach dem Comm. निस्). *sich verdichtend ansetzen, sich bilden, concrescere:* यत्ते क्रूरं यदास्थितं तन्न ग्रा प्यायता नि ष्ठापताम् VS. 6,15. 38,18. उत म निष्ठायं मृक् वनति TS. 6,2,4,1.

— प्र, partic. प्रस्तीत und प्रस्तीम P. 6,1,23. 8,2,54. Vop. 26,100.

— सम्, partic. संस्त्यान P. 6, 1, 23, Schol. Vop. 26, 100. *geronnen, festgeworden* Nir. 3,19. 4,24. — Vgl. संस्त्याय.

स्त्यान (von स्त्या) 1) adj. *geronnen* H. 1494. Halâj. 2,121. घृत Suçr. 1,97,18. शोणित 2,37,2. Sin. D. 146,5. शोफ Karaka 1,18. *erstarrt:* हृदय 8,13. = स्निग्ध H. an. 2,290. Med. n. 23. — 2) n. *a) das Gerinnen, Verdichtung;* = घनत्व H. an. Med. — *b) Intensität:* दृढति स्त्यानमभ्रकृतानि Uttarar. 33,20 (45,2). — *c) Apathie* Lol. de la b. l. 443. Lalit. ed. Calc. 159,2. Jogas. 1,30. = घकर्मण्यता चित्तस्य Comm. = ग्लानस्य H. an. Med. Hir. 137. — *d) Echo (verstärkter Laut)* H. an. Med.

स्त्यायन (wie oben) n. *Verdichtung, Anhäufung* Nir. 6,17.

स्त्येनँ Uṇâdis. 2,46. m. = स्तेन *Dieb, Räuber* Uǵǵval. = घमृत Uṇâdis. im ÇKDa.

स्त्यैन m. = स्तेन *Dieb, Räuber* Colebr. und Lois. zu AK. 2,10,25.

स्त्र *Stern* s. u. 2. स्तृ.

स्त्रितरा f. = स्त्रीतरा Vop. 7,49.

स्त्रियंमन्य adj. = स्त्रीमन्य *für ein Weib geltend* P. 6,3,68, Schol.

स्त्री f. Uṇâdis. 4,165. Doclin. P. 6,4,79. fg. Vop. 3,20. fgg. 31. fg. 1) *Weib, ein weibliches Individuum, Gattin* (Gegens. पुंस्) AK. 2,6,2,2. Trik. 2,6,1. H. 503. Halâj. 2,326. RV. 1,164,16. 4,30,8. 5,61,6. 7,55,8. 104,24. स्त्रीभिर्वा वृषणं पत्न्यात् 10,27,10. 34,11. स्त्रिया यशास्यं मनुः 3,33,17. 10. न मत्स्त्री सुभसत्तरा 10,86,6. AV. 1,8,1. गन्धर्वः मंचते स्त्रियम् 4,37,11. 5,14,6. 17,8. 6,11,1. 2. 7,90,2. 12,1,28. Ait. Br. 1,27. 3,22. पतयः स्त्रिये प्रतिष्ठा Çat. Br. 2,6,2,14. 14,7,2,14. 21. स्त्रियः पुंसो ऽनुवर्त्मानो भावुकाः 13,2,2,1. न वै स्त्रियं ग्रासि 11,4,2,2. TS. 6,5,6,2. 7,4,10,1. Ait. Up. 4,1,1. M. 2,129. स्त्रियम् 3,10. 15. 48. स्त्रीम् 5,167. 12,67. MBh. 13,518. Spr. (II) 7544. स्त्रियान् M. 2,138. 202. 3,49. स्त्रियस् Spr. (II) 3221, v. l. स्त्रिया M. 4,205. 5,154. स्त्रियाम् loc. sg. 3,62. — 2, 33. 66. fg. 123. 3,48. MBh. 1,6154. 3,2776. R. 1,6,18. Suçr. 1,120,13. 176,16. 181,5. 321,1. Megh. 29. 32. 71. Ṛt. 1,4. Çik. 125. fg. Spr. (II) 3292. 3484. 6496. 7191. fgg. Varâh. Bṛh. S. 5,31. 79. 46,52. नृप° AK. 2,6,4,5. H. 520. भ्रातृमातृ° Trik. 3,3,233. विबुध° Çik. 171. घमर° Kir. 10,15. पान्थ° Spr. (II) 937. निषाद° *eine Frau aus der Kaste der Nishâda* M. 10,39. वणिक्° Trik. 3,3,461. — 2) *Weibchen der Thiere* Çat. Br. 4,5,2,10. शाखामृग° MBh. 3,15613. गजस्य H. 1218. — 3) in der Gramm. *ein Femininum, das weibliche Geschlecht* Nir. 3,21. Çat. Br. 10,1,4,3. 5,4,2. Kâṭh. 23,4. Çânt. 1,3. 3. 2,2. 20. P. 1,2,48. 66. 4,1,3. 120. 176. 6,3,34. Varâh. Bṛh. S. 51,36. — 4) *ein best. Metrum: 4 Mal* — — Colebr. Misc. Ess. 2,138 (V, 2). — Vgl. कुल° (auch MBh. 3,16619. Daçak. 79,1), दुः°, पण°, पण्य°, प्रति°, ब्रह्म°, मु°, सुर°, स्त्रैण.

स्त्रीक (von स्त्री) am Ende eines adj. comp.: स° (s. auch bes.) *nebst Weib* Çik. 61,7. Kathâs. 13,168. Pañkat. 1,4,68. घ° *wahrscheinlich* Bhatt. 4,29. नित्योद्विष्टस्त्रीकं गृहम् Varâh. Bṛh. S. 46,79. कृत° Mṛiṅk. 131,22.

स्त्रीकरण n. *coitus* Med. j. 17.

स्त्रीकाम adj. 1) *nach Weibern lüstern* Ait. Br. 1,27. TS. 6,1,6,5. Nir. 5,16. Bhâg. P. 4,2,23. 9,18,36. — 2) *weibliche Nachkommenschaft wünschend* Âçv. Gṛhj. 1,7,4.

स्त्रीकार्य n. *Beschäftigung mit Frauen, das Hüten derselben u. s. w.* M. 10,47.

स्त्रीकुमार n. sg. *Weiber und Kinder* gaṇa गवाश्वप्रभृतीनि zu P. 2, 4,11. कार्तकौजपादि zu 6,2,37.

स्त्रीकृत adj. (f. घा) *von Weibern gemacht* AV. 10,1,2.

स्त्रीकोश m. *Dolch* H. ç. 145.

स्त्रीक्षीर n. *Frauenmilch* M. 5,9.

स्त्रीक्षेत्र n. *ein weibliches* d. i. *gerades (2tes, 4tes u. s. w.) Zodiakalbild oder astrologisches Haus* Varâh. Laghuj. 2,4. — Vgl. पुरुषक्षेत्र.

स्त्रीग adj. *zu Weibern gehend* d. i. *mit ihnen geschlechtlichen Verkehr habend:* घन्य° M. 8,386.

स्त्रीगमन n. *das Besuchen der Weiber, geschlechtlicher Verkehr mit ihnen* Pâr. Gṛhj. 2,4. R. 3,13,6. Davon °गमनीय adj. *damit in Verbindung stehend, darauf beruhend:* गुरु° (पाप) M. 11,102.

स्त्रीगवी f. *Kuh* P. 3,3,71, Schol. Taitt. 2,9,16. — Vgl. पुंगव.

स्त्रीग्रह m. *ein weiblicher Planet* d. i. *ein gerader (2ter, 4ter u. s. w.)* Ind. St. 2,238.

स्त्रीघातक adj. *ein Weib —, seine Frau mordend* Vet. in LA. (III) 16,33. fg.

स्त्रीघोष m. *Tagesanbruch* Çârdûlak. bei Wilson.

स्त्रीघ्न adj. = स्त्रीघातक M. 9,232. Vorz. d. Oxf. H. 25,a,23. fg. Pañkat. 1,6,45.

स्त्रीचञ्चल adj. *Weibern nachlaufend* Varâh. Bṛh. S. 68,9.

स्त्रीचित्तकारिन् 1) adj. *der Weiber Herz hinreissend.* — 2) m. *Moringa pterygosperma Gaertn.* Taitt. 2,4,10.

स्त्रीचिह्न n. *vulva* H. 610.

स्त्रीचौर m. *Weiberentführer, — verführer* Taitt. 2,10,8.

स्त्रीजन m. 1) *das Weibervolk* R. 2,34,16. Milav. 51,7. Râja-Tar. 1, 73. 4,173. — 2) *ein Femininum* (gramm.): वृत्ताः पुरुषनामानस्ते सर्वे स्त्रीजना भवन् R. 7,87,13.

स्त्रीजन्मन् n. *die Geburt eines Mädchens* Varâh. Bṛh. S. 53,72. 73,1. Bṛh. 4,11.

स्त्रीजातक n. *die Nativität eines Mädchens* Varâh. Bṛh. 24 und Laghuj. 11 in den Unterschrr. Verz. d. B. H. No. 878.

स्त्रीजित adj. *in der Gewalt eines Weibes stehend, von ihm beherrscht* Taitt. 3,3,10. M. 4,217. MBh. 12,1320. R. Gorr. 2,10,8. fgg. 18,8. 23, 19. Spr. (II) 3945. 6117. Varâh. Bṛh. S. 69,36. 101,13. Bṛh. 17,7. Râja-Tar. 1,353. Bhâg. P. 4,8,67. 27,18. 10,47,17. Pañkat. 1,10,24. स्त्रीचित्तस्पर्शमात्रेण सर्वं पुण्यं प्रणश्यति Brahmavaiv. P. im ÇKDa. घ° Spr. (II) 3392.

स्त्रीतरा f. compar. von स्त्री Vop. 7,49.

स्त्रीतानुकोश m. Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,13. fg. *vielleicht fehlerhaft für* स्त्रीतालुक°.

स्त्रीत्व (von स्त्री) n. 1) *das Weibsein, Weibheit* MBu. 3,7427. 7492. 13, 537. R. 5,23,25. 36,3. 6,101,16. 7,37,8,26. Spr. (II) 7207. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,27. Mâṛk. P. 50,11. fg. 111,13. Bhâg. P. 1,10,30. 3,31,41. 7, 7,16. 9,1,36. — 2) *genus femininum* (gramm.) AK. 1,1,3,1. H. 542. Verz. d. Oxf. H. 186,*b*,22.

स्त्रीदेवत adj. (f. घी) *an eine weibliche Gottheit gerichtet:* मघा: पुंदेवता त्रेया विष्या: स्त्रीदेवता: पुन: Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,6. — Vgl. स्त्रीमत्त.

स्त्रीदेहार्ध m. *dessen eine Körperhälfte ein Weib ist,* Bez. Çiva's H. ç. 44. — Vgl. अर्धनारीश.

स्त्रीद्विष् adj. *Weiberfeind* Vaṃiṣ. Bṛn. S. 15,8.

स्त्रीद्वेषिन् adj. dass. Vaṃiṣ. Bṛn. 17,5.

स्त्रीधन n. 1) *das persönliche Vermögen der Frau* Hall. 5,42. M. 3,52. 9,194. Jâǵñ. 2,143. — 2) *Weib und Vermögen:* °लोलुपं जगत् Spr. (II) 1407.

स्त्रीधर्म m. 1) *Frauenrecht, die für Frauen geltenden gesetzlichen Bestimmungen* Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,33. 277,*b*,5. M. 1,114. स्त्रीपुंधर्म 8, 7. — 2) *Eigenthümlichkeit der Weiber* Pañkat. 1,14,74. वर्ष्मिणी चैव विकृतं रागानां च विकूजितम्। यमीदृणमभिप्रेणवत्ती स्त्रीधर्मं सा व्यरोचयत् (स्त्रीधर्ममभि° die neuere Ausg.) || so v. a. *thurde geil* Harîv. 4583. — 3) *die Regeln des Weibes* H. 536.

स्त्रीधर्मिणी adj. f. *die Regeln habend* AK. 2,6,2,20. H. 535. MBu. 2,2695. Râǵa-Tar. 6,270.

स्त्रीधव m. *Mann* Gaṭâdh. im ÇKDa.

स्त्रीधन m. *Elephant* H. 1218, Schol.

स्त्रीनामन् adj. *einen Frauennamen führend* MBu. 5,7553.

स्त्रीनिर्जित adj. = स्त्रीजित Vaṃiṣ. Bṛn. S. 68,6. Bṛn. 17,4. Bhâg. P. 7,12,6.

स्त्रीपर adj. *den Weibern nachlaufend* Çabdârthak. bei Wilson.

स्त्रीपर्वतदेश m. N. pr. einer *Oertlichkeit* Verz. d. Oxf. H. 252,*b*,18.

स्त्रीपर्वन् n. *das Buch* (der Klagen) *der Frauen,* Titel des 11ten Buches im MBu.

स्त्रीपुंस m. 1) du. *a*) *Mann und Weib* P. 5,4,77. Vop. 6,8. H. 538. Hall. 4,15. M. 1,115. 9,25. 101. fgg. Jâǵñ. 3,72. MBu. 13,528. Daç. 65,6. 7. im comp.: पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा (so ist zu schreiben) AK. 2, 6,4,15. Hân. 130. स° adj. (f. घी) Harîv. 3513. R. 2,46,4. 71,38 (73,29 Gorr.). — *b*) *Femininum und Masculinum* (gramm.) Taik. 3,3,293. 5, 16 (स्त्रीपुंसयो: zu lesen). — 2) sg. *Mann und Weib zugleich* MBu. 13, 891. 901.

स्त्रीपुंस् m. 1) du. *Mann und Weib* Çat. Br. 14,4,2,4. Lâṭ. 1,3,19. Çâṅkh. Çr. 17,6,2. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,96. — 2) sg. *Mann und Weib zugleich* MBu. 5,7393. 7580.

स्त्रीपुर n. *Gynaeceum* MBu. 4,2293.

स्त्रीपुष्प n. *Menstrualblut* Kâlakarṇa 2,125.

स्त्रीपूर्वक adj. *früher Weib gewesen* MBu. 5,7553 (°पूर्विक ed. Calc.).

स्त्रीपूर्विन् adj. dass. MBu. 5,7547.

स्त्रीप्रज्ञा adj. f. *den einem Weibe zukommenden Verstand habend* Çat. Br. 14,7,3,1.

स्त्रीप्रत्यय m. *ein Feminina bildendes Suffix* Schol. zu P. 1,2,48. fg. Verz. d. Oxf. H. 162,*a*,11. 164,*a*, No. 360. fg. 166,*a*,6. 171,*b*,15. 330,*b*,16.

स्त्रीप्रधान adj. *dem das Weib über Alles geht, ganz in der Gewalt des Weibes stehend* R. Gorr. 2,112,7. 4,34,32.

स्त्रीप्रसू adj. f. *Töchter gebärend* Jâǵñ. 1,73.

स्त्रीप्रिय 1) adj. *den Weibern lieb.* — 2) m. *Mangifera indica* Trik. 2,4,9.

स्त्रीबन्ध m. *coitus* Taik. 3,3,121.

स्त्रीभव n. = स्त्रीत्व 1) Spr. (II) 2255 (brauchte nicht geändert zu werden). 4834.

स्त्रीभाग adj. *Weibern nachgehend:* Gandharva AV. 8,6,19.

स्त्रीभाव m. *der Zustand einer Frau:* °भावं गम्य् oder उप-नी so v. a. *entjungfern* Harîv. 9929. 10065. 9955.

स्त्रीमत्त (von स्त्री) adj. *bewaibt* Bhaṭṭ. 4,29.

स्त्रीमन्त्र m. *eine weibliche* d. i. *mit* स्वाहा *endigende Zauberformel* Sarvadarçanas. 170,4. — Vgl. स्त्रीदेवत.

स्त्रीमय (von स्त्री) adj. (f. ई) *femineus:* युक्ति Mârk. P. 125,41. माया Bhâg. P. 3,31,38.

स्त्रीमानिन् m. N. pr. eines Sohnes des Manu Bhautja Mârk. P. 100,32.

स्त्रीमुखमधुदोहद (v. l. °दोकल) m. *Mimusops Elengi* Râǵân. 10,64. °मुख m. Râǵân. im ÇKDa. °मुखमधु n. ebend. unter वकुल.

स्त्रीमन्य adj. = स्त्रियंमन्य P. 6,3,68, Schol.

स्त्रीय् (von स्त्री), °यति *nach einem Weibe verlangen* Spr. (II) 3800.

स्त्रीरजस् n. *die monatliche Reinigung* Taik. 3,3,294.

स्त्रीरञ्जन n. *Betelpfeffer* Çabdârthak. bei Wilson.

स्त्रीरत्न n. *eine Perle von Weib;* s. u. रत्न 1) *b*). Bez. der Lakshmî Çiç. 42.

स्त्रीराज Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,32. 340,*a*,15 fehlerhaft für स्त्रीराज्य.

स्त्रीराज्य n. *das Reich der Amazonen* (im hohen Norden) LIA. 1,851. fg. MBu. 3,1991 (m. pl. ed. Calc.). 12,114. Vaṃiṣ. Bṛn. S. 14,22. 16,6. Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,25. Verz. d. B. H. 114 (XXXII). Râǵa-Tar. 4,173. fg. 185. 586. fg. 665. — Vgl. स्त्रैराज्यक.

स्त्रीराशि m. *ein weibliches* d. i. *gerades* (*2tes, 4tes* u. s. w.) *Zodiakalbild* oder *astrologisches Haus* Ind. St. 2,258.

स्त्रीरोग m. *Frauenkrankheit* Verz. d. B. H. No. 958. 975. 1008. Verz. d. Oxf. H. 357,*b*,1.

स्त्रीलक्षण n. sg. *die Merkmale, Eigenthümlichkeiten eines Weibes* MBu. 5,7533. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,22. 31,*a*,29. fg. 85,*a*,22. *b*,45. fg. Vaṃiṣ. Bṛn. S. 2, S. 7, Z. 5. 78,18. Titel des 70ten Adhjâja.

1. **स्त्रीलिङ्ग** n. 1) *die weiblichen Geschlechtstheile* MBu. 5,7491. 13, 528. — 2) *das weibliche Geschlecht* (gramm.) Vop. 4,1.

2. **स्त्रीलिङ्ग** adj. *die Merkmale eines Weibes habend* MBu. 9,2304. *weiblich* (gramm.) Kâṭ. 60. Cit. beim Schol. zu Kâṭ. Ça. 5,3,6. Verz. d. B. H. No. 737. Verz. d. Oxf. H. 174, *b*, 1 v. u. 175, *a*, 2. Comm. zu TS. Prât. 2,7.

स्त्रीलोक m. pl. N. pr. einer Gegend R. Gorr. IV, 526.

स्त्रीलोल adj. *lüstern nach Weibern* Vaṃiṣ. Bṛn. 17,3. 18,10. 24,11.

स्त्रीवध m. *ein an einem Weibe verübter Mord* Wrsha, Kṛṣṇâç. 224.

स्त्रीवश adj. *von Weibern oder einem Weibe beherrscht* Spr. (II) 4066.

स्त्रीवश्य adj. dass. R. Gorr. 2,34,17. 4,34,27. Davon nom. abstr.

°ता f. Harîv. 7266.

स्त्रीवास्य m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,39.

स्त्रीविजित adj. = स्त्रीजित Varâh. Bṛh. 18,15.

स्त्रीवित्त n. *von einer Frau kommendes Vermögen* Spr. (II) 7477.

स्त्रीषंसार्द् m. *Weibergesellschaft* TS. 2,5,4,5.

स्त्रीषर्ख् m. *Weiberfreund* VS. 30,6.

स्त्रीसभ n. *Weibergesellschaft* P. 6,2,98, Schol. Çabdârthak. bei Wilson.

स्त्रीसद्रूपिन् adj. *das Aussehen eines Weibes habend* MBh. 5,7533 nach der Lesart der ed. Bomb., °स्वद्रूपिन् ed. Calc.

स्त्रीसुख n. *die vom Weibe kommende Lust* so v. a. *Beischlaf* Bhâg. P. 9,9,38.

स्त्रीसेवा f. *Frauenhuldigung, geschlechtlicher Verkehr mit Fr.* Spr. (II) 1029. 4038.

1. स्त्रीस्वभाव m. *die Natur des Weibes* MBh. 3,2776. Pañkat. 1,14,74.

2. स्त्रीस्वभाव m. *Eunuch* Çabdam. im ÇKDa.

स्त्रीस्वद्रूपिन् adj. = स्त्रीसद्रूपिन् MBh. 5,7533.

स्त्रीहत्या f. *ein an einem Weibe verübter Mord* Kathâs. 32,144.

स्त्रीहुत n. *Opfer eines Weibes* Kauç. 73.

स्त्रैण (von स्त्री) 1) adj. P. 4,1,87. Vop. 7,13. (f. ई Pat. zu P. 4,1,48) *multebris:* न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति ṚV. 10,95,15. Çat. Bṛ. 11,5, 4,9. Milch Jiân. 1,170. गर्भ AK. 3,4,12,46. लघिमन् Bhaṭṭ. 3,7. चापल 21,7. स्त्रीषु स्त्रैणेषु च Bhâg. P. 11,26,32. 34. *den Weibern ergeben, in ihrer Gewalt stehend* Taik. 3,3,234. Spr. (II) 2193. Bhâg. P. 1,11,40. 4,8,65. 9,10,8. 19,1. 2. 10,10,19. 11,8,21. — 2) n. *a) das Weibsvolk, die Weiber:* स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम् AV. 4,34,2. 8,6,4. R. 5,13,28. Spr. (II) 844. Çiç. 67,22. am Ende eines adj. comp. Uttarâs. 88,15 (114,2). — *b) das Weibsein, Weibheit, weibliche Natur* Uttarâs. 78,1 (100,8). Bhâg. P. 4,4,8.

स्त्रैणपूय n. AV. Pâit. 2,88. 4,83. *Geburt eines Mädchens* AV. 6,11,3.

स्त्रैराजक m. pl. *die Bewohner von* Strirâǵja Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,27.

स्त्र्यध्यक्ष m. *ein Aufseher über die fürstlichen Weiber* R. 2,16,3 (13, 3 Gorr.).

स्त्र्यनुज adj. *nach einem weiblichen Kinde geboren d. i. auf eine Schwester folgend* P. 3,2,100, Schol.

स्त्र्याजीव m. *ein durch Weiber gewonnener Lebensunterhalt (Prostitution der Frau u. s. w.)* M. 11,62.

स्थ und स्थ (von 1. स्था) adj. (f. स्था) am Ende eines comp. P. 3,2,4. 77. 6,2,20. gaṇa कृत्रादि zu P. 4,4,62. 1) *stehend, sitzend, wohnend, weilend, befindlich:* विदेश° Âçv. Gṛhy. 1,12,2. M. 5,75. देशान्तर° 78. एकासन° Çiṅkh. Gṛhy. 4,8. शय्यासन° M. 2,109. शयन° 4,74. इरिण° 120. युग्य° 8,294. द्विरद° MBh. 2,819. शाला° Elephanten 3,2857. प्रासाद° 2894. शाखा°, पञ्जर° R. 2,65,5. रामगिर्याश्रम° Megh. 99. Raghu. 12,15. Çiç. 49,7. 59,1. Spr. (II) 1377. प्रवास° 5974. मञ्चस्था° Kathâs. 4,63. ग्रास° 18,294. सिंह° 22,127. रोध° Râǵa-Tar. 4,249. परवेश्म° AK. 2,6,4,18. Brahma-P. in LA. (III) 51,11. Bhâg. P. 3,23,26. 4,1, 24. भूतल° Pañkat. 106,6. Çuk. in LA. (III) 32,12. पारियात्र° so v. a. *Bewohner von* Varâh. Bṛh. S. 6,10. मानुष° *unter den Menschen weilend* Harîv. 1380. केकय° *bei* R. 2,102,5. घट: सुराभाजनस्था: M. 11,147. पात्रो° Çiṅkh. Çr. 5,8,2. घादित्ये वारिस्थम् *so v. a. im Wasser sich abspiegelnd* M. 4,37. नानापद° (उदात्त) ṚV. Pâit. 20,3. ललाट° Harîv. 12718. 12782. कदलीवनमध्यस्थो वह्नि: Spr. (II) 7492. कूपको नितम्बस्थो AK. 2,6,2,26. स्वाङ्गे प्राणिस्थम् Kâç. zu P. 4,1,54. भानौ नासत्यस्थे Varâh. Bṛh. S. 3,20. कुम्भस्थातपस्थस्य 4,1. पुनर्वसुस्थे सिते (Venus) 9,27. 30. 10,4. 103,5. नक्तञ्चर° (केतु) so v. a. *sich zeigend* 11,4. स्वरुस्त° (सुवर्णकङ्कण) Hit. 11,5. — इरु° R. 2,21,22. 82,14. तत्र° MBh. 3,2683. R. 2,37,2. R. Gorr. 2,28,32. 4,53,24. 63,27. Kathâs. 7,22. 26,102. ह्रद° R. Gorr. 2,38,4. गिरिकन्दरमूर्ध्निस्थ (wohl zu verbinden) 4,10,17. — 2) (in einem best. Alter, Lage, Verhältniss, Zustand) *sich befindend:* दशमी° M. 2,138. यौवन° MBh. 3,16641. Spr. (II) 5686. राज्य° (s. auch bes.) R. 2,58,19. 3,49,27. यौवराज्य° R. Schl. 2,35,22. 58,19. प्रेतभाव° 73,2. घशोक° 5,33,1. प्रीति° Kathâs. 75,2. द्वेष° Gît. 9,10. — 3) *bei Etwas seiend, beschäftigt mit, obliegend, ergeben:* स्वकर्म° M. 10,1. विकर्म° 4,30. 9,214. 11,192. पाषण्ड° 9,225. यज्ञ° Jâǵñ. 1,59. याम° 3,281. सवन° 282. योग° Bhag. 2,48. वैतान° MBh. 13,3515. नियोग° R. 2,52,48. पापकर्म° 1,32,20. स्वयंवर° Ragh. 5,76. मौन° Kathâs. 11, 69. समाधि° Pañkat. 162,22. Hit. Johns. 2464. उद्यम° Spr. (II) 1767. ध्यान° Pañkat. 1,7,22. स्वधर्म° Bhâg. P. 1,17,16. क्रि° Râǵa-Tar. 4, 646. कीर्तनस्थो मृदङ्ग: Spr. (II) 5367. — Vgl. घग्नि°, घग्र:°, घाखो°, एक° (auch Bhâg. P. 6,4,32), गर्भ°, गह्वरे°, गिरि°, गृह°, गो°, धर्म्ये°, वन°, वल°, तट°, त्रि°, दिवि°, दूर°, द्वार°, हि°, धन°, धर्म°, नाक°, परमे°, पशु°, पार्श्व°, पिण्ड°, पूर्व°, पृथिवि°, प्रस्तरे°, बन्धन°, बर्हि°, बल°, बुद्धि°, भय°, भुवि°, भू°, भूत°, भूमि°, मध्य°, मध्यम°, मन:°, मरु°, रथ°, राज्य°, रूप°, लिङ्ग°, वन°, वय:°, विन्ध्य°, विग्र°, विषम°, वीर°, वृत्त°, वृत्ति°, व्रत°, शं°, शक्ति°, शैलेन्द्र°, सत्त्व°, सध°, सम°, समीप°, समुद्रे°, सख्ये°, सरु°, सु°, सुख°, सुखे°, सुत°, स्थल°, कर्म्मे°, हृदि° und 2. स्था.

स्थकर wohl = स्थगर Kauç. 35.

स्थग्, स्थँगति Dhâtup. 19,38 (संवरणे). caus. स्थगयति *verhüllen, verbergen:* पुर: पूर्वामिव स्थगयति दिशं तम:संघात: Ratnâv. 60,6. Çiç. 4,24. स्थगयसि पुनरेष्ट पाणिना दत्तदृष्टम् Spr. (II) 3413. Mâlatîm. 7,8. 149, 15 = Uttarâs. 60,6 (78,2). Naish. 4,56. Varâh. Bṛh. S. 5,6. 11. 38,4. Kathâs. 62,128. 107,78. 118,194. Sâh. D. 224,9. Kuvalaj. 192,*b*. so v. a. *verschwinden machen:* द्राग्घोघं स्थगयतु वार्मुचामनेक: Bîlâr. 131,6. — partic. स्थगित 1) *verhüllt, verborgen* H. 1476. Hâlâ. 4,58. Çiç. 9,21. Kir. 14,21. 18,4. Spr. (II) 6642. Varâh. Bṛh. S. 3,25. 22,1. 24,16. Kathâs. 95,57. 102,88. Râǵa-Tar. 5,416. Sîh. D. 293,7. Khandom. 107. Bhaṭṭ. 12,69. Kull. zu M. 8,203 bei Lois. घति° Verz. d. Oxf. H. 214, *b*, No. 511. — 2) *verschlossen:* द्वार् Mârk. P. 69,27. — 3) *gehemmt, unterbrochen:* °गिर् Bhâg. P. 10,90,18.

स्थग (von स्थग्) *verschlagen, verschmitzt, betrügerisch* Taik. 3,1,14. Çabdar. im ÇKDa.

स्थगन (wie oben) n. *das Verhüllen, Verbergen* H. 1477. Spr. (II) 4382. Sîh. D. 15,11.

स्थगर *ein best. wohlriechender Stoff:* °र्ं पिनष्टि Gorr. 4,2,20. — Vgl. स्थागर, स्थकर und तगर.

स्थगिका (wie oben) f. 1) *ein best. Verband, wie er an Fingern und penis angelegt wird: Däumling* Suçr. 1,65,17. 66,1. 2,112,18. Wir

172. — 2) *the office of the betel-bearer* v. l. zu Pāṇ. 63,23 nach Benfey; eher *Betelbüchse* (vgl. स्थगी). — 3) *a courtesan* Benfey nach einer Hdschr. der Çuk.; sehr verdächtig. — Nicht zu bestimmen Mān. r. 189; vgl. वण्ठर 5).

स्थगी (wie oben) f. *Betelbüchse* H. 718.

स्थगु m. n. *Buckel* Harîv. 4494. fg. nach der Lesart der neueren Ausg. (स्थडु die ältere Ausg. und auch bei Nilak. erwähnt). R. ed. Bomb. 2,9,46. — Vgl. स्थपुट.

स्थडु m. s. u. स्थगु.

स्थण्डिल 1) n. *eine geebnete Bodenfläche* (für Oblationen und dgl.) AK. 2,7,17. H. 810. 824. Hall. 4,77. इषुमात्रावरं सर्वतः स्थण्डिलमुपलिप्य Âçv. Gṛhy. 1,3,1. Çâṅkh. Br. 6,14. Liṭ. 3,2,11. 8,5,5. 9,8,4. Kâṭy. Çr. 22,11,9. Gobh. 1,5,13. 4,8,9. Kauç. 133. Kâṭh. Up. 5,2,8 (स्थण्डिल्य fehlerhaft). Gaṇar. 2,31. सर्वोऽकमपि तेत्रं केवलं स्थण्डिलं भवेत् Spr. (II) 56 (M.). MBh. 3,1615. 7,2775. 13,351. 2941. 6550. fg. Harîv. 2206. R. 2,25,7. 88,8. 103,44. 111,13. समे देशे चतुर्हस्तं चतुरस्रं स्थण्डिलमुपलिप्य गोमयेन Sûçr. 1,6,14. निषेदुषी स्थण्डिल एव केवले so v. a. *auf dem blossen Erdboden* Kumâras. 5,12. Varâh. Bṛh. S. 24,7. 60,7. Râǵa-Tar. 6,87. Weber, Kṛishṇaǵ. 249. 296. 298. fg. Bhâg. P. 3, 16,28. Pāṇ. 3,6,2. सस्थण्डिलक adj. Pat.; s. u. ग्राम 1) in den Nachträgen. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 101,b,22. — Vgl. स्थाण्डिल.

स्थण्डिलशय्या f. *das Liegen —, Schlafen auf geebnetem, blossem Boden* (als Kasteiung) MBh. 3,13455.

स्थण्डिलशायिन् adj. *auf geebnetem, blossem Boden liegend, — schlafend* (auch als Kasteiung) P. 3,2,80, Schol. AK. 2,7,43. H. 810. R. 3, 10,4. 5,22,26. Bhaṭṭ. 3,41.

स्थण्डिलसंवेशन n. = स्थण्डिलशय्या Bhâg. P. 5,9,11.

स्थण्डिलसितक n. = वेदि Hir. 192.

स्थण्डिलेयु (von स्थण्डिल) m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva MBh. 1,3700. Harîv. 1659. VP. 447. Bhâg. P. 9,20,4.

स्थण्डिलेशय 1) adj. = स्थण्डिलशायिन् Çaṇḍar. im ÇKDa. Jîv. 3,32. Brahma-P. in LA. (III) 49,15. Bhâg. P. 4,23,6. 9,10,34. 11,18,3. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 18,b,3. 19,a,20.

स्थण्डिलेशयन n. = स्थण्डिलशय्या MBh. 13,6301. 6515.

स्थण्डिल्य Kâṭh. Up. 5,2,8 fehlerhaft für स्थण्डिल.

स्थपणी s. स्थपनी.

स्थपति (स्थ + पति) m. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,59. 1) *Statthalter, Oberbeamter, Oberhaupt eines Bezirks:* राज्ञः, स्थ° AV. 2,32,4. VS. 16,19. सूत, स्थ° Çat. Br. 5,4,4,17. fg. 13,8,1,17. 9,3,1. Pāraṇ. Br. 17,11, 6. 24,18, 2. Kâṭy. Çr. 1,1,12. 22,5,28. 11,11. Liṭ. 3,7,11. R. 2,50,18. 52, 4. 84, 12. Verz. d. B. H. No. 226. स्थपतीष्टि Mîmâṃs. 6,8,20. एतया निषादस्थपतिं याजयेत् Comm. जगत्पतस्य *Herr, Gebieter* (zugleich *Baumeister* nach Mallin.) Çiç. 1,34. = अधीश H. an. 3,309. = अधिपति und सचिव Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 1,34. — 2) *Baumeister* AK. 3,4,24,63. Trik. 3,3,190. H. 917. Mān. 1. 166. Vaiǵ. MBh. 1,2029. 2177. 12,2243. 13,5073. 14,2520. Harîv. 6505. R. 2,80,2 (87,2 Gorr.). R. Gorr. 2,90,19. Varâh. Bṛh. S. 53,99. 105. 110. 56,30. 60,18. Râǵa-Tar. 3,351. Pañkat. 10,4. Sarvadarçanas. 30,18. वास्तुविधानज्ञो लघुहस्तो जितश्रमः। दीर्घदर्शी च शूरश्च स्थपतिः परिकीर्तितः॥ Mitâkṣ. in ÇKDa. und bei Aufrecht, Uṇâdis. S. 264. — 3) *Veranstalter eines Opfers an* Bṛhaspati AK. 2,7,8. Trik. H. 813. H. an. Mān. Hall. 2, 263. — 4) ein N. Bṛhaspati's H. an. Vaiǵ. — 5) ein N. Kubera's Aǵâpâla im ÇKDa. — 6) *Kämmerer, Aufseher eines fürstlichen Gynaeceums* (vgl. स्थापत्य) Trik. H. an. Mān. — Als adj. nach Mān. = श्रेष्ठ (so die gedr. Ausg., सप्तम ÇKDa. und Wilson). — Vgl. पुष्कर° (welches nach Nilak. = ब्रह्मणोऽस्य स्वामी sein soll) und स्थापत्य.

स्थपनी (v. l. स्थपणी) f. *die Stelle zwischen den Brauen* Suçr. 1,345, 13. 15. 346,11. 351,5. 357,9.

स्थपुट gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. 1) adj. (f. आ) *höckerig* (vgl. स्थगु, स्थडु) Trik. 3,1,3. H. 1468. Hir. 124. Hall. 4,68. ग्रीवा निर्मांसा चिपिटा दीर्घा स्थपुटा न शुभप्रदा Kâçîkh. 37,89 (nach Aufrecht). — 2) n. *Höcker* Mān. k. 185. °गतं कव्यम् Mâlatîm. 78,18.

स्थपुटित (von स्थपुट) adj. gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. *höckerig geworden.*

स्थपुटीकर् (स्थपुट + 1. कर्) *höckerig machen:* °कृत H. an. 4,11. महाकञ्चानिलः प्रायः पर्वतान्दोलनक्षमः। मक्षमोऽभूत्तेन तपतः °कृता Kâçîkh. 88,99 (nach Aufrecht).

स्थर् = स्थ in सव्यस्थर् und सव्ये°.

स्थल्, स्थलति Dhâtup. 20,6 (स्थाने, स्थितौ).

स्थैल gaṇa श्वलादि zu P. 3,1,140 (oxyt.). 1) m. a) *Abschnitt, Kapitel* Verz. d. B. H. No. 595. — b) N. pr. eines Sohnes des Bala Bhâg. P. 9,12,2. — 2) f. आ *Erdaufschüttung* P. 4,1,42, Schol. स्थलयोदकं परिगृह्णाति TS. 1,6,10,3. — 3) f. ई P. 4,1,42. Vop. 4,26. = स्थल n. AK. 2,1,5. H. 940. Hall. 2,3. Accent eines darauf ausgehenden N. pr. P. 6,2,129. a) *Anhöhe, hochgelegene Ebene* Liṭ. 10,19,1. MBh. 3, 6068. R. 3,21,5. Spr. (II) 82. पर्वतस्य R. 3,19,23. Kathâs. 75,59. Paṇ. 101,9. मलय° Ragh. 6,64. 12,34. Spr. (II) 1070. Kathâs. 114,19. गगनात्सो ऽधस्तात्प्रविलोकयन्। स्थलीपरिमितां पृथ्वीं समुद्रान्परिखालघून् 52,7. उत्तटा इव नदीरयाः स्थलीम् (चिक्लिक्षुः) Ragh. 11,58. कनकमिकतिलस्थलीः (adj.) भवन्तीः Paṇ. 101,15. तीर° Ragh. 16,64. नभः° Râǵa-Tar. 5,94. विहायः° Verz. d. Oxf. H. 129,a,16. त्रैलोक्यमौलि° Gît. 5,20. von *gewölbten* Körpertheilen (vgl. तट): जघन° Çiç. 9,45. Spr. (II) 7247. Z. d. d. m. G. 27, 30. Verz. d. Oxf. H. 139, a, s. v. u. नितम्ब° Spr. (II) 5896. Dhûrtas. 80,18. उपस्थ° Spr. (II) 6642. गण्ड° (s. auch bes.) Paṇ. 3,5,9. Daç. 91,4. — b) *Erdboden* überh.: नवाम्भःपुष्पताभिवृष्टा Ragh. 7,66. 12,30. Kumâras. 4,4. °शायिन् Spr. (II) 5437. *Fussboden* Bhâg. P. 3,23,17. 4,25,15 (am Ende eines adj. comp.). 7,4, 11. Paṇ. 3,15,4. — c) *Platz, Ort, Stelle* Ragh. 13,22. मुष्कवंश° Ṛt. 1,25. वनान्त° Spr. (II) 5717. अरण्य° Paṇ. 85,10. त्रिजगतामुत्पत्तिनाश° Verz. d. Oxf. H. 108,b, N. 2. — 4) n. = स्थली AK. H. Hall. a) *Erhebung, Anhöhe, trockenes Land* (im Gegensatz zur *feuchten Niederung*); *Land* (im Gegensatz zum *Wasser*), *Festland* H. 1355. Hall. 3,41. वर्त्म स्थलम् TS. 3,4,8,7. Kâṭy. Çr. 24,6,24. Liṭ. 7,1,19. समे, घनूपे, वृक्षगुल्मावृते, स्थले M. 7,192. 8,247. Jîv. 2,151. समुद्रोर्मिवेगेन स्थले न्यस्तः MBh. 1,6744. निम्न, स्थल 7,3389. 12,4632. 5480. fg. मत्स्या व-

भूवुर्व्यापन्नाः स्थलसंस्पर्शनेन 13,3662. R. 5,94,9. Sṛṣṭi. 1,23,1. 130,18. Kim. Nitis. 12,5. 15,6. 12. Spr. (II) 345. 570. 3058. 4392. गिरेः स्थलानि. 4063. न च नीर्गच्छति स्थले 5186. °गामिन् Varāh. Bṛh. S. 28,4. °संभवौषधि 41,2. उत्तरणं द्विपस्य तोयात्स्थलम् 91,14. 95,39. Kathās. 29,60. Bhāg. P. 2,6,14. 10,40. 5,26,28. 10,75,37. Pañcat. 1,14,5. Hit. 39,10. 42,13. ed. Johns. 2347. 2349. Verz. d. Oxf. H. 23,b, N. 2. P. 1,3,67, Schol. von *gewölbten* Körpertheilen: उरः° Raghuv. 5,52. 13,72. Spr. (II) 3142. 7417. Varāh. Bṛh. S. 44,21. 53,52. 58,33. Prasn. 81,16. Bhāg. P. 2,1, 38. 5,5,31. वक्षः° Spr. (II) 6818. Kathās. 73,307. VP. 1,6,6. Bhāg. P. 2,7,25. 3,8,38. 7,8,22. Pañcat. 1,3,75. 77. 5,15. 2,4,5. जघन° Spr. (II) 7002. Kathās. 47,108. वंस° 83,39. गण्ड° (s. auch bes.) Bhāg. P. 5,25, 4. Pañcat. 1,3,77. 12,23. कुम्भ° Bhāg. P. 6,11,10. — *b) Erdboden:* विदलति स्म कुदालैः स्थलानि च समततः R. Gorr. 2,87,10. स्थलारूढ M. 7,91. Rāgat. 11,14. Spr. (II) 7219. कोमल° Pañcat. 1,10,50. Pañcat. 246,6. नाकाशे नावनिस्थले Harīv. 3864. यस्य देवाः संप्रयाताः समैर्वर्त्मभिरुत्थलैः MBh. 2,2517. *Fussboden:* कूर्म° so v. a. *das flache Dach eines Palastes* Mucch. 67. MBh. 15,191. Bhāg. P. 3,11,22. 10,50,53. Pañcat. 1,10,46. — *c) Platz, Ort, Stelle* MBh. 1,4996. Varāh. Bṛh. S. 24,6. परस्थले Kathās. 45,271. Pañcat. 118,28. 161,15. वेदि° R. 2,56, 29 (vgl. प्रत्यक्स्थली वेदी 3,77,23). तपसः *Stätte für* Pañcat. 1,2,51. तपः° 6,53. कोपाग्नीनाम् 14,6. 38. — *d) Fall:* तथाविधस्थले *in einem derartigen Falle* Sin. D. 18,11. 24,4. 106,14. Saṃvadaṃcanas. 7,14. स्वप्रस्थले Nilak. 168. Schol. zu Kap. 1,57. Kusum. 34,15. 36,7. Comm. zu TS. Prāt. 1,61. 4,11. 33. 11,4. 19,4. 20,2. — *e)* N. pr. (?) einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,26. — Vgl. घट्ट°, घट्टिकृत°, घवि°, घानक°, उत्°, ऋतु°, कण्टक°, कुक्ष°, कुण्डल, केलि°, क्रतु°, गण्ड°, घृत°, तपः°, त्रि°, दाण्डायन° (unter दाण्डायन), धर्म°, नभः°, नाग°, परिघ्वल, पुञ्जिक°, प्र°, प्रसव°, ब्रह्म°, मद्°, मडुक°, मध्य°, मरु°, मल्ला°, मान°, मालुक°, मालिष°, मुनि°, मूल°, मूषिक°, यत्°, यज्ञ°, रात्र°, लोक°, वध°, वन°, वसु°, वारण°, विष्ठल, वृक्ष°, व्याम°, शमिष्ठल, शुभ°, श्री°, सम°, समाधि°, समुद्र°, सलिलस्थलचर, सिद्ध°, सु°, स्थाल.

स्थलकन्द m. = घण्टाकन्द (?) Ratnam. im ÇKDa.

स्थलकमल n. *die Blüthe von Hibiscus mutabilis* Dhanv. 3,54. Bhāvapr. im ÇKDa. Gir. 10,7. — Vgl. स्थलपद्म.

स्थलकमलिनी f. *Hibiscus mutabilis* Mucch. 90.

स्थलकाली f. N. pr. einer Wesens im Gefolge der Durgā Wilson, Sel. Works 2,38.

स्थलकुमुद m. *Nerium odorum* Rāgān. 10,11.

स्थलग adj. *auf dem Festlande lebend:* जलस्थलगैः सत्त्वैः Bhāg. P. 8, 10,12. स्थलखाम्बुगाः H. 22.

स्थलचर adj. dass. (neben जलचर und घत्तरीलचर) R. Gorr. 1,13,29. Hit. Johns. 1925. स्थलसलिलचराणां व्यत्ययः Varāh. Bṛh. S. 93,58.

स्थलज 1) adj. *auf dem Festlande —, trockenem Boden wachsend, — lebend* M. 1,44. 6,18. जलजानि च पुष्पाणि माल्यानि स्थलजान्यपि R. 2,89, 11. 4,25,24. जलजान्यपि सत्त्वानि स्थलजान्यपि R. Gorr. 2,89,10. Ārjabh. 4,7. Rājat. Sāṃ. 1,196,10. स्थलाम्बुजाः Varāh. Bṛh. S. 6. so v. a. जाङ्गल Kāraṇḍ. 1,27. घुत्क so v. a. *Landsteuer* (im Gegens. zu *Wassersteuer*) Jiṭ. 2,168. — 2) f. आ *Süssholz* Rāgān. 6,149.

स्थलतर (von स्थल) n. *ein höher gelegener Platz* Lāṭy. 1,1,17.

स्थलता f. nom. abstr. von स्थल *Festland* Spr. (II) 345. Pañcat. 84, 20. घुष्क° 79,12.

स्थलनलिनी f. *Hibiscus mutabilis*; am Ende eines adj. comp. °क Bhāg. P. 5,8,22.

स्थलनीरज n. *die Blüthe von Hibiscus mutabilis* Pañcat. 3,12,4.

स्थलपथ m. Schol. zu P. 5,4,74. gaṇa देवपथादि zu 3,100 (प्रतिकृतौ संज्ञायाम्). *Landweg, — strasse* (im Gegens. zu *Wasserweg*): °पथेन *zu Lande* (eine Stadt erreichen) Kathās. 101,115. वारिस्थलपथान्विता भू Kim. Nitis. 4,52. स्थलजलपथवाणिज्यादि (स्थल° gedr.) Kull. zu M. 7, 101. वणिक्पथो द्विविधः स्थलपथो जलपथश्च so v. a. *Handel zu Lande* Comm. zu Kim. Nitis. 5,78. — Vgl. स्थालपथ, °पथिक.

स्थलपद्म 1) m. *Arum indicum* Ratnam. im ÇKDa. — 2) n. *die Blüthe von Hibiscus mutabilis* Trik. 2,4,34. Pañcat. 1,7,26. 10,51. Bhatt. 2,3. — Vgl. स्थलकमल.

स्थलपद्मिनी f. *Hibiscus mutabilis* Rāgān. 5,79.

स्थलपिण्डा f. *eine Dattelart* Rāgān. 11,61.

स्थलमञ्जरी f. *Achyranthes aspera* Ratnam. im ÇKDa.

स्थलरुहा f. *Hibiscus mutabilis* Rāgān. 5,80.

स्थलवर्त्मन् n. = स्थलपथ *Landweg:* °वर्त्मना *zu Lande* Rāgat. 4,40.

स्थलविहंग m. *Landvogel* Bhāg. P. 5,2,4. °राज ed. Bomb.

स्थलशृङ्गाट m. *Tribulus lanuginosus* oder *ein ähnliches Gewächs* H. 1156. Hālā. 2,46. Ratnam. im ÇKDa. °क m. dass. Rāgān. 4,42.

स्थलसीमन् m. = स्थण्डिल m. (!) Buddhaprakāça im ÇKDa. *a boundary, a land-mark* Wilson.

स्थलस्थ adj. *auf trockenem Lande stehend:* स्थलस्थं तमृषिं कृत्वा MBh. 1,6749. R. 4,13,10. Bhāg. P. 3,27,12.

स्थलारविन्द (स्थल + अ°) n. *die Blüthe von Hibiscus mutabilis* Kumārās. 1,33.

स्थलीदेवता f. *Localgottheit* Mucch. 105. = वनदेवता ein Schol.

स्थलीभूत adj. *hoch gelegen:* देश Harīv. 3706.

स्थलीय् (von स्थल), °यति *für Festland halten:* ईर्ष्यामयाम् Spr. (II) 3899.

स्थलीय adj. von स्थल *Fall* am Ende eines comp.: s. उद्देश्यविधेयबोधस्थलीयविचार in den Nachträgen.

स्थलेजात 1) adj. *auf dem Festlande, auf trockenem Lande gewachsen (wachsend):* पद्मनी so v. a. *Hibiscus mutabilis* R. 4,48,10. — 2) n. *Süssholz* Ratnam. 57.

स्थलेयु (von स्थल) m. N. pr. eines Sohnes des Raudrāçva Harīv. 1660. VP. 447.

स्थलेरुहा f. Bez. zweier Pflanzen: = दग्धा Rāgān. 9,127. = गुरुकुमारी Rāgān. im ÇKDa.

स्थलेशय N. *eine Amphibie, die zur Nacht an's Land kommt,* Rāgān. im ÇKDa.

स्थलौकस् (स्थल + ओ°) m. *ein auf dem Festlande lebendes Thier:* नभःस्थलौकसः Bhāg. P. 6,4,19.

स्थैवि Uṇādis. 4,56. m. *Weber* Ujjval. = स्थङ्गम und स्थर Uṇādis. im Saṃkṣiptas. nach ÇKDa.

स्थेविमन् (von स्थू) n. *das dicke Theil, die Breite:* स्थ°, मध्य, घणि-मन् Çat. Br. 3,6,3,13. °मतम् *an der breiten Seite* TS. 6,3,9,2. TBr. 3,3,44,2. यवयति Çat. Br. 6,4,4,1. Kâtj. 31,12. m.: यथाकार्यं स्थविमा Kâtj. Çr. 6,1,35.

स्थेविर् (wie eben) Uṇâdis. 1,34 (oxyt.). 1) adj. (f. घा und ई in der älteren Sprache, in der späteren nur घा). *a) breit, dick, derb, massig:* Stier ṚV. 4,18,10. AV. 9,4,3. Rosse ṚV. 7,24,4, 67,4. (इन्द्रस्य) उग्रस्य पुनः स्थविरस्य 3,46,1. 1,171,5. 10,103,5. Vishṇu 7,100,3. MBh. 13,6955. Harîv. 14119. Kühe so v. a. Milch ṚV. 3,56,4. penis TBr. 2,4,12,7. *dicht:* ऋत (so zu lesen st. वत्र) ṚV. 4,20,6. उत्स 10,51,1. übertr.: वात 6,1,11. 18,12. 32,1. 37,3. 7,93,2. वृष्ण 1,54,8. गिरि 181,7. तेजस् Çâṅkh. Gṛhj. 2,2. — *b) (vollwüchsig), alt* (AK. 2,6,4,42. H. 339. Hall. 2,248), (wie πρεσβύτερος) *angesehen, gravis* TBr. 3,10,11,3. Nir. 6,30. Âçv. Çr. 10, 7,2. Çat. Br. 2,2,2,20. 7,2,1,15. 13,4,2,6. Kâtj. 11,2. Gâtukarṇja Çâṅkh. Br. 26,5. Gotama Lâṭj. 2,9,20. Çâkalja ṚV. Prât. 2,44. Kaupâlaja TS. Prât. 17,1. हेमकाण्ण Bhâradv. in Ind. St. 1,105. — Çâṅkh. Gṛhj. 2,14. 3,1. ऊर्ध्व प्राणा क्षुत्क्रामति पुनः स्थविर घायति M. 2,120. 8,70. 163. 394. Jâjñ. 2,150. P. 4,1,163 (°तर). MBh. 1,1971. 2,1343. 1986. 2279. 3,2184. युवस्थविरबालाः 2522. 10630. 5,125. 13,17. 1316. Harîv. 3004. R. 5,31,17. Sucr. 2,142,17. Rasik. 19,57. Spr. (II) 3275. 4910. 7453. Varâh. Bṛh. S. 5,41. Kathâs. 16,11. 25,14. 113,24. Daçak. 93,6. Bâlar. P. 1,11,24. 2,7,15. 12,3,12. Baum MBh. 13,281. स्थविरायुस् *ein hohes Alter erreichend* Harîv. 3021. स्थविरे (v. l. स्थाविरे) काले Spr. (II) 4067, v. l. Bei den Buddhisten Bez. *der ältesten, ehrwürdigsten* Bhikshu (vgl. Udân.), die dem Çâkjamuni am nächsten stehen, Burnouf, Intr. 288. 297. 505. Hiouen-thsang 1,158. 177. 430. 2,311. 3,36. Wassiljew 38 u. s. w. Târân. 4 u. s. w. — *c)* = घचल Uṇâdis. im ÇKDr. fehlerhaft für स्थावर्. — 2) m. ein *N. Brahmaṇ's* H. 211. — 3) f. घा *eine best. Pflanze,* = महाश्रावणी Râjân. im ÇKDr. — 4) n. *Erdharz* (das auch पलित heisst) Râjân. 12,141. — Vgl. स्थाविर्.

स्थेविष्ठ superl. zu स्थूर, स्थूल *dick, grob, dicht* P. 6,4,156. Vop. 7,56. AK. 2,2,61. स्थ°, मध्यम, घणिष्ठ TS. 2,5,8,2. Kâtj. 25,7. (रेतः) मध्यं स्त्रिये प्राप्य स्थविष्ठं भवति Ait. Br. 6,9. Çâṅkh. Br. 28,9. Çat. Br. 2,2,4,19. Kâtj. Çr. 15,3,42. धातु Kulân. Up. 6,5,1. fgg. Maitrâjaṇ. 2,6. तनू 6,6. (नारायणम्) घणीयमामणीयांसं स्थविष्ठं च स्थवीयसाम् MBh. 12,1612. 13,6955. Harîv. 14119. Bâlar. P. 2,1,24. 38. 4,9,13. 5,26,38. 11,12,17. 12,2,22. 9,11. Pâṇ. 4,3,67.

स्थेवीयस् compar. zu स्थूर, स्थूल *dick, grob, dicht* P. 6,4,156. Vop. 7,56. Çat. Br. 5,3,3,7. Ait. Br. 1,21. Pâraṇ. Br. 16,2,6. Sâṅkh. Br. 3,3. Lâṭj. 1,10,1. MBh. 12,1612. 13,1376. Bâlar. P. 2,1,24. 2,14. 4,24,39. Pâṇ. 4,3,67.

स्थेशस् (von स्था) adv. *je nach der Stelle:* स्थेशो जन्मानि सविता व्याकः ṚV. 2,38,8.

1. स्था, तिष्ठति Dhâtup. 22,30 (गतिनिवृत्तौ). P. 7,3,78. Vop. 8,70. तस्थौ, तस्थिवंस्; घस्थात् P. 2,4,77. Vop. 8,25. स्थात्, स्थाति, घंस्थुस्, स्थुस्, स्थेषम्, स्थेयुस् AV. 18,4,7. स्थास्यति; स्थेयात् P. 8,4,67. Vop. 8,85. स्थेयाम; med.: तिष्ठे, तिष्ठमान; तस्थानं; घस्थित P. 1,2,17. Vop. 10,11. घस्थिवस्; घस्थिषत Çat. Br. 3,7,3,9. 9,4,2. absol. स्थायम् Bhaṭṭ. 5,51. pass. स्थीयते P. 6,4,66. partic. स्थित s. bes. Ueber den Uebergang von स्थ in ष्ठ s. AV. Prât. 2,92. fg. 1) *stehen, stillstehen, stehen bleiben, dastehen:* न मेथेते न तस्थतुः ṚV. 1,113,3. 10,10,8. पद्भ्यां तिष्ठन्नरातयः (घघो) 3,8, 1. 5,1,2. घस्थुरुप चित्रा उषसः पुरस्तात् 4,51,2. घाणवतीरापो घूर्वन्-तिष्ठन् 5,45,10. 47,5. नोचीनाः स्युः 1,24,7. तिष्ठाद्गौः AV. 6,44,1. 77, 1. 9,1,24. पदेवेति पतति पक्ष तिष्ठति 10,8,11. घघोष तिष्ठते so v. a. *im Stall stehend* 3,15,3. तिष्ठन्त्योर्यत्परः Çat. Br. 6,7,2,1. 12,2,2,3. TS. 5,1,2,6. पूर्वा संध्यां घपस्तिष्ठेत् — पश्चिमां तु समासीनः M. 2,101. fgg. 193. 195. fgg. प्रपदैः 6,22. तिष्ठ त्वं स्थावर इव MBh. 3,2013. शैलो स्थास्यसि R. 1,64,12. घत्राकं स्थास्ये स्थाणुरिवाचलः Mâlav. P. 15,57. तिष्ठन्तु सर्वदाशाश्च गङ्गामन्वाश्रिता नदीम् R. 2,84,7. तस्थतुः समतलः क्षु-रम् 3,20,31. चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् Spr. (II) 2264. प्र-विश गेहं मा बहिस्तिष्ठ 2468. घग्रे स्थित्वा Pañcat. 72,6. एषा मदीया कन्यका तिष्ठति 189,25. Hit. 22,5. निमेषमात्रमपि हि वयो गच्छन्न ति-ष्ठति Spr. (II) 3732. कृतान्तस्येव तिष्ठतः so v. a. *vor Einem stehend* R. 2,21,9. *stehen bleiben, Halt machen* M. 11,111. MBh. 1,2167 (med.; घ st. ह mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,52,96. R. Gorr. 1,9,10. Kathâs. 4,12. वसिष्ठस्याग्रतः स्थित्वा R. 1,54,7. Çiç. 12,7. 13. 41,5. 57,3. 70, 11. जानुभ्यां स्थित्वा *sich auf die Knie stellend* Vikr. 63,6. mit loc. *stehen auf, in an:* रथेषु ṚV. 5,53,2. MBh. 5,7218. घत्तारिते ṚV. 5,85,5. 10,72,6. घधरेषु 5,63,4. VS. 2,8. पृथिव्याम् AV. 9,3,17. 12,1,27. MBh. 3,2305. द्वारि 2265. R. 7,68,3 (med.). नौकासु R. Schl. 1,9,7. गङ्गानूपे ऽत्र तिष्ठत 2,84,6. तिष्ठत्येकत्वमधिपतिर्द्यौरिति द्यौममध्ये *stillstehen* Vikr. 20. तस्य संदर्शने तस्थुः *stellten sich so, dass er sie sehen konnte,* R. 1,9,13. 5,23,32. घग्रे mit gen. so v. a. *vor Jmdes Augen treten* Rasik. 2,56. — 2) mit acc. *stehen —, sich stellen auf, besteigen:* रथम् ṚV. 8, 18,9. रथीं (wobei ebenfalls der Wagen vorstanden ist) 1,174,4. *sich begeben nach:* तस्थतुः प्राचीं दिशम् R. 3,77,2. — 3) *vor dem Feinde stehen, Jmd* (gen.) *Stand halten* MBh. 3,1973 (med.). 7,662. Harîv. 3861. 11031 (S. 790. med.). 11472. R. 1,22,19. 2,27,18. 4,9,73. 5,22,20. 47, 18. 71,9. Çiç. 94,1. Spr. (II) 4428. 4710. Varâh. Bṛh. S. 43,2. Mâlav. P. 85,72. fg. स्थापिष्यते येन रणे Bhaṭṭ. 1,22. नास्य शक्तः पुरः स्थातुं कृतान्तस्य यथा जनाः Bâlar. P. 8,15,29. — 4) *treu ausharren, — zur Seite stehen:* उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः Spr. (II) 1221. तिष्ठते हि सुहृद्यत्र न बन्धुस्तत्र तिष्ठति 2879. 3254. नामुत्र हि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः। न पुत्रदारं न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलः॥ 3607. न स्त्रियस्तिष्ठन्ति भर्तृषु 3357. 5223. मर्यादायाममर्यादाः स्त्रियस्तिष्ठन्ति भर्तृषु 256. — 5) *bei Etwas* (loc.) *verharren, nicht abgehen von;* med.: यत्र पिता संजानीते तस्मि-न्तिष्ठामहे Ait. Br. 7,18. — 6) *sich zu Jmd* (dat.; *halten, sich für Jmd erklären:* एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः so v. a. *einen zweiten erkennt man nicht an* Çvetâçv. Up. 3,2. med. P. 1,3,23. 4,34. Vop. 5,18. तुभ्यं तिष्ठामहे वयम् Bhaṭṭ. 8,13. घर्काय पत्ये खलु तिष्ठमानाः (धन्वन्तिन्यः) Naish. 7,57. Vop. 23,8. तिष्ठते (= स्वकृत्यं व्यनक्ति) रणउा विकर्मस्थे-भ्यः Saṅkshiptas. im ÇKDr. unter रणउा. act. in Verbindung mit घभि Vop. 5,7. — 7) *bestehen* (Gegens. *vergehen, zu Grunde gehen*): यन्विस्ते मा स्थात् TS. 1,1,2,2. येनेय भूतैस्तिष्ठते कृत्तरात्मा Mund. Up. 2,1,9. यावदेकानुदिष्टस्य गन्धो लेपश्च तिष्ठति M. 4,111. पानुपामित्य तिष्ठन्ति

लोका देवाश्च सर्वदा 9,316. नह्येष स्थास्यति चिरं गत एव नराधमः MBh. 5,472. यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले R. 1,2,39. 44,46. 60, 28. तिष्ठेल्लोको विना भूमिं सस्यं वा सलिलं विना । न तु रामं विना देहे तिष्ठेयुरसवो मम ॥ R. Gorr. 2,9,44. Sâṁkhjak. 41. न के ऽपि स्थातारः सुरगिरिपयोधिप्रभृतयः Spr. (II) 525. अरक्षितं तिष्ठति 567. 3902. 1983. कथं नु शाखास्तिष्ठेरंश्छिन्नमूले वनस्पतौ 2312. यशांसि लोके 2765. 3236. कथं कर्म विना दैवं स्थास्यति 5149. 5482. 7555. Kathâs. 28,117 (wohl अदर्शने zu lesen). 34,103. 40,41. Pańḱat. 31,18. 216,12. Comm. zu Ǵaim. 1, 18. zu Kap. 1,38. zu TS. Prât. 21,7. केवलमेको गङ्गदत्तस्तिष्ठति so v. a. *ist am Leben* Pańḱat. 213,7. 8. — 8) *bleiben, verweilen:* तिष्ठा सु कं मा परा गाः ṚV. 3,53,3. इह 10,19,3. AV. 8,1,9. 10,1,26. Gorr. 3,2,26. गृहाश्रमे M. 6,1. काममा मरणात्तिष्ठेद्गृहे कन्यर्तुमत्यपि 9,89. 12,102. गच्छ वा तिष्ठ वा MBh. 1,5961. 6027. मात्र स्थाः 4,491. Ṛ. 2,40,32. 64,35. 87,23. 3,74,27. 75,2. Megh. 3.19. Çâk. 70,21. 71,10. 136. Spr. (II) 2083. 2436. 4781. Kathâs. 13, 46. 82. 16,35. 18,167. 190. 205. 221. 231. 238. 39,233. Mârk. P. 77,16. 125, 47. Râǵa-Tar. 6,201. 326. Bhâg. P. 4,27,22. 7,3,7. Z. d. d. m. G. 14,572,13. Pańḱat. 69,13. 134,3. Hit. ed. Johns. 2094. Vet. in LA. (III) 17,14. 18, 9. क्षणमासने स्थित्वा 2,5. उच्छेषणं तु तत्तिष्ठेद्यावत् u. s. w. M. 3,265. न स तिष्ठेच्चिरं राज्ये पुष्करे सलिलं यथा R. 3,46,16. यथास्तं गत आदित्ये न तिष्ठन्तीह रश्मयः 6,70,49. अपक्वे तु घटे नीरं चालन्यां सूक्ष्मपिष्टकम् । स्त्रीणां च हृदये वार्त्ता न तिष्ठति कदापि हि ॥ Spr. (II) 394. med. MBh. 2,732. R. 4,12,36. pass. impers. Spr. (II) 3328. Hit. 21,4. pass. = simpl.: तथापि सूनृता सौम्य हृदि न स्थीयते चले । पुत्रानुरागविषमे विद्युत्सौदामनी यथा ॥ Bhâg. P. 10,49,27. *verweilen* so v. a. *warten:* न च शक्यं मया तात स्थातुं क्षणमपि R. 2,34,48. Vikr. 88,17. Mâlav. 12,3. Râǵa-Tar. 5,464. दिनानि कतिचिद्भद्रे स्थीयताम् Brahma-P. in LA. (III) 54,20. किमद्यापि स्थीयते so v. a. *zögern, sich bedenken* Çâk. 23,11, v. l. स्थित्वा मासं दद्यात् so v. a. *nach einem Monat* Varâh. Bṛh. S. 42,11. क्षणं स्थित्वा Çuk. in LA. (III) 36,6. स्थित्वा हरिष्यति मुखस्य तवैव लक्ष्मीम् so v. a. *nach einiger Zeit* Spr. (II) 3910. — 9) *bei Etwas bleiben, einer Handlung dauernd obliegen, in einem Zustande oder Verhältniss verharren;* die Ergänzung a) ein im nom. stehendes adj., insbes. partic.: ते ऽपक्रम्य प्रतिवावदतो ऽतिष्ठन् *widersprachen fortwährend* Ait. Br. 2,3. ये पाशास्तिष्ठन्ति विषिताः AV. 4,16,6. गृहाः पूर्णा वामेन तिष्ठन्तः 7,60,2. 8,10,8. 10,10,16. 2,34,2. Âçv. Gṛhj. 1,18,7. 4,7,16. Kâtj. Çr. 25,5,28. पेपीयमानो मोदमानस्तिष्ठति Ḱhând. Up. 6,11,1. प्रत्यङ्ङ्गांस्तिष्ठति (so liest Çvetâçv. Up. 3,2) VS. 32,4. प्रनष्टमधिगतं द्रव्यं तिष्ठेद्युक्तैरधिष्ठितम् M. 8,34. बुभुक्षितस्त्र्यहं स्थित्वा धान्यमब्राह्मणाद्धरेत् Jâǵń. 3,43. श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला (बुद्धिः) Bhag. 2,53. नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् 3,5. विस्मितः MBh. 3,2620. शोकपरिप्लुतः 3001. उदीचीं दीपयन्दिशम् 11852. अनुच्छ्वसन्नभुञ्जानः R. 1,64, 20. सप्रमाणेव 37,21 (med.). वृक्षमुपाश्रितः 50,35. 51,20. 86,20. R. Gorr. 1,9,22. Sâṁkhjak. 67. Ragh. 1,73. करिष्यमाणः सशरं शरासनम् 3,52. पश्यन्ती Çâk. 11,3. साधसादवचना 12,21. 30. Spr. (II) 1524. 1002. 4528. वर्धमाणमृणं तिष्ठेत् 5992. Kathâs. 2,32. 62. 4,54. 5,91. 7,53 (wir lesen तपसा, welches wir zum Folgenden ziehen). 15,8. 18,95. 128. 153. 167. 24,130. 29,23. 39,67. 244. 40,43. Râǵa-Tar. 4,77. 6,156. 194. Mârk. P. 17, 21. Brahma-P. in LA. (III) 54,16. Bhâg. P. 3,4,31. Pańḱat. 34,25. 127,23. ed. orn. 5,4. Hit. 19,1. सर्पस्तु व्यापादितस्तिष्ठति *liegt todt da* Hit. ed. Johns. 2726. Pańḱat. 10,7. med.: तिष्ठध्वं संधितेषवः MBh. 1,5278. उपवासपरो दीर्घकालमतिष्ठत 8117. अमात्यः स चिरं तिष्ठते प्रियः 121. pass. impers.: नृपशुभिः स्वस्थैः कथं स्थीयते Prab. 20,12. — b) ein absol.: सर्वमावृत्य Çvetâçv. Up. 3,16. MBh. 1,1105. 3,11844. विस्मित्य रूपसंपदा 2132. रुदन्त्यौ तां परिष्वज्य मुहूर्तमिव तस्थतुः 2705. 4,596. 3, 11056 (S. 571). परिवार्य धनेश्वरम् 11775. 5,7298. धर्ममाश्रित्य R. 2,21, 41. 28,20. 93,14. R. Gorr. 2,12,2. Çâk. 40,21. मौनं विधाय Kathâs. 12, 158. 13,152. Râǵa-Tar. 6,64. Bhâg. P. 3,17,17. Hit. 23,8. med. MBh. 13,2291. pass. impers. Prab. 49,14. — c) ein instr.: मौनेन Pańḱat. 93, 10. आहारपरित्यागेन Hit. ed. Johns. 2407. स्वगृहनिर्विशेषेण Hit. Schl. 38,21. नररूपेण Spr. (II) 4446. — d) ein adv.: अन्यथा *sich anders verhalten* R. 4,43,65. तूष्णीम् Spr. (II) 4480. सलज्जम् *verlegen dastehen* Çâk. 38,4. सविस्मयम् Hit. 14,22. निर्विशेषं यदा स्वामी समं भृत्येषु तिष्ठति Spr. (II) 3769, v. l. सुखम् *sich wohl —, glücklich fühlen* Spr. 2390, v. l. Kathâs. 19,49. 32,145. 44,97. — 10) *dasein, vorhanden sein, sich vorfinden* M. 8,158. नेह तिष्ठति कैकेयी R. 2,57,29. यान्यस्माभिर्गृहीतानि तानि तिष्ठन्ति 4,5,10. दयिता यत्र तिष्ठति तद्गृहम् Spr. (II) 6247. विभवे भोजने दाने तिष्ठन्ति प्रियवादिनः 6168. भोजने यो य आहारश्चिन्त्यते स स तिष्ठति Kathâs. 3,50. 43,58. तस्य ह्रदस्य समन्ताच्छशकबिलान्यसंख्यानि — तिष्ठन्ति Pańḱat. 159,25. किंचिदेतन्मृतसत्त्वं तिष्ठति 244,1. दत्तघातस्य पुत्री पद्मावती नाम विद्यते । तयोक्तं तिष्ठति Vet. in LA. (III) 7,8. अयं च वीर संदेहस्तिष्ठतीह ममाग्रतः R. 5,53,7. स मा तिष्ठतु Schol. zu Kâvjâd. 2,159. स्वेषु तिष्ठत्सु M. 5,104. 9,130. MBh. 1,5989. 3,2164. 13,2532. R. 2,106,22. R. Gorr. 2,34,7. 3,40,3. 7,63,2. Spr. (II) 1335. कार्ये ज्यायसि तिष्ठति 5832. mit einem loc. AV. 6,127,2. यावान्पक्षिगणः कश्चिद्दंष्ट्रिणश्च महाबलाः । तिष्ठन्तीह महारण्ये R. 3,35,49. Vet. in LA. (III) 14,19. तदेतद्धनुस्तिष्ठत्यद्यापि कुले ऽस्माकम् R. Gorr. 1,68,13. नो गृहे 69,8. 2,31,26. यदार्जवं त्वयि तिष्ठेन्निम्ने वृष्टमिवोदकम् 124,16. उत्तरश्च चतुर्वर्गो नामहात्मसु तिष्ठति Spr. (II) 1092. त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां त्रिषु तिष्ठताम् M. 12,34. — 11) *sich befinden, sein:* तव पार्श्वतः R. 1,64,6. तव समीपतः R. Gorr. 1,66,6 (med.). यत्परार्थघटनायत्नैर्विना स्थीयते Spr. (II) 6410. तत्र Kathâs. 2,34. शूले Mṛḱḱh. 176,2. प्रव्रज्यासु M. 5,89. गर्भवासे Spr. (II) 1851. मनुजेन्द्राणां मूर्ध्नि MBh. 3,2073. Spr. (II) 1845, v. l. धर्म्ये वर्त्मनि M. 9,1. भर्तृपुत्रगते पथि R. 2,52,53. मर्यादासु Spr. (II) 1839. धुरि Ragh. 1,91. मधु जिह्वाग्रे, हृदये हालाहलम् Spr. (II) 2852. आपदि M. 3,14. हृदयेषु, हृदये R. 2,45,25 (med.). Spr. (II) 6076. मानसे 5569 (स्थितवती). संशये R. 3,41,3. शोके महति 75,18. तद्दुःखे Mârk. P. 63,59. बले Spr. (II) 4810. राज्ये so v. a. *regieren* MBh. 1,3168. साधुवृत्ते so v. a. *obliegen* R. 4,31,2. स्वधर्मे Spr. (II) 4065. सत्ये R. Gorr. 2,11,2. पापेषु कर्मसु Spr. (II) 4233. स्वकर्मणि Kathâs. 19,20. कार्येषु बन्धूनाम् Bhaṭṭ. 19,16. अस्य प्रिये MBh. 3,303. विप्रिये R. 2,21,10. तपसि 64,23. तपस्यनशने Kathâs. 27,123. तेषां शासने so v. a. *gehorchen, folgen* M. 7,37. R. 1,52,8 (53,8 Gorr.). Çâk. 88,16. Vikr. 155. Spr. (II) 7148. नृपतेर्निदेशे Mâlav. 89. वचने तव R. 2,24,18. ईश्वरस्य वशे MBh. 3,1133. Spr. (II) 4454. — 12) *sich bei Jmd befinden, bei Jmd angetroffen werden, zu Jmdes Verfügung stehen, Jmd gehören, esse alicui;* mit gen. und loc. der Person: माया मे तिष्ठते तीव्रा पान्नगी नाम Hariv. 9387.

उद्यमः साहसं धैर्यं बलं बुद्धिः पराक्रमः । षडेते यत्र तिष्ठन्ति Spr. (II) 1247. 2736. तस्य च हे दुहितरौ यौवनस्थे तिष्ठतः Pañcat. 183,28. Pañcat. ed. orn. 4,3. यत्र यावद्योर्भोक्तितशेषाहारः प्रचुरस्तिष्ठति Hit. 50,21. निक्षेपो मे ऽस्मत्कृत्यं त्वयि तिष्ठतु (so ed. Bomb.) MBh. 3,2836. 12275. इदं चैव कृतघ्नानां तदेयं मयि तिष्ठति 3025. R. 1,66,5. — 13) *geheftet —, gerichtet sein auf* (loc.): मनस्तिष्ठति कान्तासु चित्रासु वनराजिषु Harîv. 3841. त्वयि नस्तिष्ठते प्रीतिः Bhatt. 8,12. — 14) *ruhen —, beruhen auf, gegründet —, beschlossen sein in* (loc.): यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः RV. 7,101,4. 1,164,36. VS. 31,19. AV. 6,138,4. धर्मे तिष्ठन्ति भूतानि धर्मो राज्ञि तिष्ठति Spr. (II) 3130. med. P. 1,3,23. त्वयि तिष्ठते विवादः Vop. 23,5. मयि स्थित्वा so v. a. *sich auf mich verlassend* Comm. zu Bhatt. 8,9. — 15) *Jmd still halten zu Etwas, sich fügen in, dienen zu; mit einfachem oder doppeltem Cas.*: एवेव तस्थुः सवितः सवाय ते RV. 4,54,5. यस्मा यायस्तस्थुः 8,85,1. 9,62,27. न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य Çvetâçv. Up. 4,20 = Kaṭhop. 6,9 = MBh. 5,1747 (hier सादृश्ये und दर्शने [ed. Bomb.] st. संदृशे). med.: धर्तिष्ठत्तास्मै ग्रैष्ठ्याय TBr. 1,3,2,2. देवेभ्यः पशवो ऽस्माद्यायात्सम्भायातिष्ठत्त Ait. Br. 2,3. 4,25. 6,5 (तस्थानानि zu lesen; vgl. Ind. St. 9,295). 7,18. श्रियै Çat. Br. 3,4,2,2. 9,4,2. सर्वे वा इदमिन्द्राय तस्थानमास 4,14. fg. 12,2,2,3. 5,4,1. fgg. सर्वानो परिपाणाय तस्थिषे AV. 4,9,2. — 16) *erstehen aus* (abl. oder gen.): ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् RV. 4,51,1. एतस्य वै सोम्यैषो ऽणिम्न एवं महान्यग्रोधस्तिष्ठति Kâṭh. Up. 6,12,2. — 17) *abstehen von Etwas, sich eines Bessern besinnen*: यदि ते तु न तिष्ठेयुरुपायैः प्रथमैस्त्रिभिः M. 7,108. यदीदानीं मम सुतास्तिष्ठेरन्मन्दचेतसः MBh. 3,1946. — 18) *dahingestellt —, unberücksichtigt —, unerörtert bleiben, nicht von Belang sein*; nur im imperat.: तिष्ठतु प्रणयः so v. a. *darauf kommt es zunächst nicht an, davon will ich vorläufig absehen* Mṛicch. 24,18. Ragh. 11,77. Kumâras. 6,24. अभिमुखकृतस्य तिष्ठतु तावज्जयो ऽथ वा स्वर्गः Spr. (II) 490. 1043. लोकः प्रभुस्तिष्ठतु तावदन्यः Z. d. d. m. G. 27,82. Brahma P. in LA. (III) 51,4. पश्चनाप्यर्थं तत्तिष्ठतु Pañcat. 19,17 (ed. orn. 16,12). इति तिष्ठतु तावत् Çâṅk. zu Bṛ. Âr. Up. S. 161. 174. — 19) partic. तस्थिवंस् P. 6,2,67, Schol. *a) stehend* RV. 1,109,1 (auf dem Wagen). गवि तस्थिवांसं केसरिणम् Ragh. 2,29. *was steht, — sich nicht bewegt* (Gegens. जगत्) RV. 7,32,22. 66,14. 101,6. जगतस्तस्थुषां मेष्टः MBh. 2,1214. Harîv. 9649. Bhâg. P. 3,10,18. 13,41. 4,22,37. 23,2. 7,3,29. — *b) sich befindend in* (loc.): यत्रं पदे परमे तस्थिवांसम् RV. 1,72,4. वले मरुति so v. a. *im Besitz seiend* Harîv. 3064. — *c) beschäftigt mit* (loc.), *obliegend*: तस्थुषश्चार्चने राज्ञो भृत्यान् Râjat. 3,270. विपत्तभावे Ragh. 3,62. पितुः शासने so v. a. *dem Vater gehorchend, — folgend* 11,65. *verharrend in* (instr.): प्राणायामेन MBh. 3,165. — *d) der Sinne gehalten hat*: इत्यतामिति चोक्ता वै तथास्त्विति च तस्थिवान् so v. a. *schwieg er* Harîv. 10219. — *e) ausharrend, beharrlich*: स कृत्वा सर्वकार्याणि प्रतस्थे तस्थुषां (= स्थितिमतां Nîlak.) वरः MBh. 2,32. — *f) bereit zu* (dat.): प्रतियुद्धाय Harîv. 5667.

— caus. स्थापयति, अतिष्ठिपत् P. 7,4,5. Vop. 18,9. 1) *stillstehen machen, anhalten* Kâuç. 106. रथम् Çiç. 6,16. 8,10. 100,19. Vikr. 10,19. so v. a. *hemmen, unterdrücken*: रेतः प्रजातिम् Çat. Br. 7,3,1,11. पाप्मानम् 13,8,4,6. — 2) *Jmd festhalten, nicht fortlassen* Kathâs. 14,10. 37,102. Hit. 121,14. स च दत्त्वा धनं भूरि स्वीकृत्य स्थापितो मया so v. a. *ich habe ihn ganz für mich gewonnen* Kathâs. 13,8. बद्ध्वा *Jmd gefangen halten* 28,143. Râja-Tar. 2,4 (wo wir बद्धत्य° lesen). तं संयम्य स्थापयामास निगडैर्दृढम् Kathâs. 37,40. — 3) *wegstellen, bei Seite stellen*: रथम् MBh. 3,2870. Kathâs. 20,164. नारसिंहं वपुस्त्यक्त्वा स्थापयित्वा च तद्वपुः Harîv. 12897. यद्वो न स्थापितं किंचिन्नया गुणवराकृते *bei Seite gelegt, zurückgelegt, aufbewahrt* Kathâs. 39,14. इह केनापि दत्तानि प्राप्य पञ्च फलानि सः । तुल्यामस्त्रीणि मे प्रादादेकं चास्थापयदात्मने ॥ 70, 22. स्थापयित्वा so v. a. *mit Ausnahme von* Lot. de la b. l. 394. — 4) *stellen, hinstellen, setzen —, legen —, thun auf, in* (loc.): स्थाप्रिं AV. 8,77,1. 7,96,1. Çat. Br. 3,5,3,19. उत्सङ्गे मातुः कुमारकम् Çiç. Gṛ. 3,7. Kâty. Çr. 7,9,33. 15,6,13. प्राक्शिरसं वरासनम् R. 4,23,30. यमात्यमुख्यमासने M. 7,141. सिंहासने ऽच्युतम् MBh. 5,5006. सेनयोरुभयोर्मध्ये रथम् Bhag. 1,21. उरसि मणिम् MBh. 14,2390 (med.). 2391. पयो नवे भाण्डे 2888. Harîv. 7904. 8419 (med.). पार्श्वे रत्नावलीम् Mṛicch. 74,20. कोशपेटके मणिम् Vikr. 78,7. तस्माद्धृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद्बुधः Spr. (II) 2217. Varâh. Bṛ. S. 55,22 (स्थाप्यं Druckfehler für स्थाप्य). Kathâs. 10,108. 13,154. 22,195. 24,166. 28,166. 60,28. 94,36. अस्माभ्या देवतास्तत्र Weber, Kṛishṇaj. 272. 276. 278. 284. 296. Verz. d. Oxf. H. 62,b,9. fgg. Çâṅk. zu Bṛ. Âr. Up. S. 23. Bhâg. P. 4,4,25. Hit. ed. Johns. 2417. गा निगूढे कस्मिंश्चित्पर्वते Sâj. zu RV. 3,31,5. हृदि so v. a. *dem Herzen einprägen* Pañcat. 13,7. ब्राह्मणस्य गृहे तत्र कस्यचित्स्थापितो द्विजः so v. a. *einquartirt* Kathâs. 33,134. 65,169. गुल्मान् *hinstellen, aufstellen* M. 7,190. वधकान्देवीगर्भगृहात्तरे Kathâs. 3,39. रत्नकाञ्चामतो निशि कोशात्तः 43,32. — 5) *Jmd einsetzen* in eine Würde, ein Amt (loc.) M. 7,202. R. Gorr. 2,87,18. 4,23,7. Spr. (II) 3024. राज्ये MBh. 3,284 (med.). 13,4215. R. Gorr. 1,3,26. 2,6,22 (स्थापयता zu lesen). 3,54,19. 4,54,20. Bhâg. P. 3,3,16. यौवराज्ये MBh. 13,1975. स्थापत्ये R. Gorr. 1,12,6. मन्त्रिवे Kathâs. 5,124. मध्यस्थाने Dhûrtas. 92,3. रत्नार्थम् so v. a. *als Hüter* Kathâs. 24,7. — 6) *Jmd versetzen, —, führen —, bringen in, auf* (loc.): पथि *auf den rechten Weg* Jâtâ. 1,360. युधि Kâm. Nîtis. 19,22. प्रकृतौ Ragh. 8,75. वशे M. 7,44. MBh. 1,683. R. 3,47,8. 9. 4,32,19. 7,20,19. Kâm. Nîtis. 8,82. Bhâg. P. 9,19,23. स्वे निदेशे (v. l. निषेगे) Mârk. P. 49. संशये R. 7,9,11. 12,2. समये Mârk. P. 51,111. चलतः स्वधर्मेषु 69,61. R. Gorr. 1,1,39. नये so v. a. *einweihen in einen Plan* Kathâs. 20,195. इत्येवं स्थापयेन्मनः *man richte den Geist darauf* d. i. *man vergegenwärtige sich dieses* Spr. (II) 1998. statt des loc. ausnahmsweise auch acc.: सरितो च पतिः सत्यां मर्यादां स्थापितः पुरः R. Gorr. 2,11,5. दुःखम् (vielleicht दुःखे st. दुःखं zu lesen) Kathâs. 52,28. — 7) *übergeben*: ज्येष्ठे राज्यतन्त्राणि R. 2,8,34. मध्यस्थस्थापितं धनम् *einem Unbetheiligten* Jâtâ. 2,44. भर्त्रा स्थापितं धनम् Kathâs. 4,65. भर्तृस्थापित vom *Gatten* 44. तस्य हस्ते त्वदीया सा गृहिणी स्थापिता मया 10,163. 16,22. स्थापित = न्यस्त H. an. 3,312. Med. t. 170. — 8) *errichten, erbauen*: eine Stadt MBh. 1,3787. Verz. d. Oxf. H. 62,b,11. चैत्यान्यायतनानि च R. 2,50,29. निवेशान् 80,17 (87,21 Gorr.). वेदीम् R. Gorr. 1,33,7. — 9) *Bestand geben, befestigen, dauerhaft machen, begründen* MBh. 13,4161. Spr. (II) 5149. Kâraka 3,8. संधीन् Suçr. 2, 28,3. वयः 196,7. वंशम् R. 1,1,92. 6,104,6. Bhâg. P. 9,22,17. राज्यम्

R. 2,112,13. जगत् Bhāg. P. 2,10,42. धर्मम् Spr. (II) 1514. fg. Vop. 5, 15. *Jmd befestigen* so v. a. *unterstützen:* मां चैव धृतराष्ट्रं च पूर्वमेव (so ed. Bomb.) — चित्रकार इवालेख्यं कृत्वा स्थापितवानसि (zugleich *befestigen* in eig. Sinne) MBh. 5,3024. fg. — 10) *feststellen, festsetzen, bestimmen:* वृद्धिम् M. 8,137. 261. घर्मम् Jāṭ. 2,251. यथा च वः (so ed. Bomb.) स्युः पतयो ऽनुकूलास्तथा वृत्तिमात्मनः स्थापयध्वम् MBh. 5,901. वह्निं तथा स्थापयतां (med.) वधाय 14,270. संस्थाम् R. Gorr. 1,62,26. अवधिम् Mṛcch. 85. लग्नदिवसम् Kathās. 73,36. समयम् Rāja-Tar. 4,617. धर्मारण्यादौ कृषपतिणाम् 5,119. गोत्रदेवतम् Verz. d. Oxf. H. 19,*a*, 3. अस्माकं तथागतज्ञानकोशे दायाद्यम् (so ist zu lesen) Saddh. P. 4,23,*a*. *eine Bestimmung in Betreff Jmdes* (acc.) *treffen:* वीर्यशुल्केति मे कन्या स्थापितेयम् R. 1,66,15. *so v. a. einführen:* वेदरूपस्यम् MBh. 1,62. वर्त्म गौतम् LA. (III) 87,12. इक्ष्वाद्यागमचतुष्टयं स्थापयेत् Burnouf, Intr. 49. स्थापित = निश्चित H. an. 3,312. Med. t. 170. — 11) *eine Behauptung —, Thesis aufstellen* Comm. zu Nyāyas. 5,1,21. *setzen* im Gegens. zu *negiren* Sāṁ. D. 730. 329,5. — 12) *machen zu*, mit zwei acc.: ताः सर्वाः पुत्रिकाः स्थापयामास नष्टपुत्रः MBh. 1,2876. लङ्कायामीश्वरं भवन्तं स्थापयिष्यति R. 5,89,28. त्रिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरम् Śvetāçv. Up. 2, 8. तणमभिमुखं स्थापय मुखम् Z. d. d. m. G. 27,28. तेन मध्यनशक्तीनि मित्राणि स्थापितानि Rāgh. 17,55. सुरक्षितम् *gut verwahren, — hüten* Kathās. 30,113. 45,127. रक्षितं मातुलुङ्गम् 53,64. कृत्वा वासवदत्ताम् *verstecken* 15,21. 45,361. 61,270. प्रच्छन्नम् 15,99. सज्जम् *Jmd bereit sein heissen* 12,46. चतुरो निपतान्वर्णांस्तं स्थापय Matsja-P. bei Muir, ST. 1,33, N. 49. परिशेषं न नामापि स्थापयिष्यति *nicht einmal den Namen wird er übrig lassen* Bhaṭṭ. 8,91. — Vgl. स्थापन u. s. w.

— desid. तिष्ठासति Schol. zu P. 1,2,9. 7,4,61. 79. 8,3,61. Vop. 19, 17. *verharren wollen:* बाल्येन Çat. Br. 14,6,4,1.

— intens. तेष्ठीयते P. 6,4,66. Vop. 20,4.

— अति *überstehen:* मूलम् TBr. 3,2,9,10. *sich erheben über; Meister sein;* mit acc.: ज्ञानान् RV. 1,64,13. 10,60,3. भूमिम् 90,1. अतिष्ठाय वर्चसाध्यन्यान् AV. 19,33,5. Çat. Br. 4,5,3,2. समानान् 10,6,4,9. 13,5,4, 12. 7,4,14.

— व्यति scheinbar MBh. 13,5785. fg., wo mit der ed. Bomb. व्यतिष्ठाः st. व्यतिष्ठाः zu lesen ist.

— अधि. Uebergang von स्था in ष्ठ P. 8,3,63. fg. nebst Vārtt. mit acc. P. 1,4,46. 1) *stehen —, sich stellen —, sich setzen auf, besteigen;* mit loc. und acc.: रथे RV. 1,139,4. 164,2. अन्तरिक्षे 2,30,3. 1,123,5. 5,45,31. 9,85,12. विश्वस्य मूर्धन् VS. 18,55. TBr. 1,1,3,6. रथम् RV. 1, 49,2. 164,2. 35,6. das Ross (so v. a. Wagen) 51,11. 103,2. कृत्तौ 6,20, 9. केशवत्ता 10,105,5. सानु 9,86,5. 10,81,4. द्यौम् 9,85,9. सिन्धुम् 10, 123,4. AV. 10,10,13. 12,1,11. VS. 6,2. अधितिष्ठेव केशान् M. 4,76. 182. MBh. 13,4977. शिरः पादेन चास्याक्रमधिष्ठास्यामि भूतले 2,2341. स्यन्दनम् R. 2,46,28 (44,28 Gorr.). रथो ऽध्यष्ठोयत रामेण Bhaṭṭ. 17,95. शाखिनः (acc.) केचिदध्यधुः 15,21. आसनम् M. 8,24. R. Gorr. 1,72,7. Rāgh. 6,73 (°तिष्ठा). Kathās. 49,126. Bhāg. P. 6,16,3. शय्याम् VP. 3,11,103. मामधिष्ठाय *auf mir sitzend* R. 5,36,2. एकेन हि पदा कृत्स्नां पृथिवीं सो ऽध्यतिष्ठत *stand er auf der ganzen Erde, hatte er d. g. E. unter sich* 1,32,14 (31,19 Schl.). *stehen über:* अध्यतिष्ठदकुण्ठेन शतं समाः MBh. 13,1917. — 2) *seinen Aufenthalt haben in, bewohnen, sich befinden —, stecken in:* कस्मिन्वङ्गे तवेयं यस्याधि तिष्ठति AV. 10,7,1. पातालम् Rāgh. 1,80. कुटीरम् Spr. (II) 2776. माधिष्ठा निर्ऋतेर्वनम् Bhaṭṭ. 8,79. अधिष्ठाय दारुं काष्ठमिवानलः Rāja-Tar. 6,64. वितस्तिम् Bhāg. P. 2,6,15. श्रीजपदेवभणितमधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरतम् Gīt. 11,9. पुरुष उपरिष्टात्पधून् Çat. Br. 13,3,6,4. — 3) *sich (siegreich) erheben, bemeistern, höher stehen als, den Vorrang haben über* (acc.): ता इन्द्रो वज्रेणाधि तिष्ठतु AV. 2,14,4. सर्वम् 10,8,1. 13,2,31. Āçv. Gṛhy. 1,24,5. यत्किं च दिशश्च चन्द्रमाश्चाधितिष्ठन्ति Kaushī. Up. 5,19,2. Çvetāçv. Up. 1,3. 4,11. शत्रुम् Spr. (II) 1702. Bhaṭṭ. 9,72. 16,40. उत्थानवीरः पुरुषो वाग्वीरानधितिष्ठति Spr. (II) 1199. केन दैवादि वृत्तेन पाण्डवानधितिष्ठसि MBh. 3,14652. 13,2167. स्वनात्यानधितिष्ठामि नक्षत्राणीव चन्द्रमाः 2172. कीर्तिं प्रच्छाद्य तेषां वै कुरुराजो ऽधितिष्ठति 17,99. सर्वाः सपत्नीः Harīv. 7848. *als Führer vorangehen, anführen:* महाराजदशार्हस्य दाशार्हान्वसिष्ठः Uttarār. 71,2 (91,5). *lenken, regieren:* दैराघणम् Harīv. 8873. MBh. 13,1876. Auch mit gen.: शङ्कूनामधितस्थिरे दैवे गाधिनः Çiksh. Ça. 15, 27,5 (Ait. Br. v. l.). — 4) *vorstehen, beherrschen, verwalten:* दृतान्यामानेतान्यामानधितिष्ठस्व Praçnop. 3,4. मल्लीमिमां कृतज्ञाम् R. 2,1,25 (23 Gorr., wo fälschlich अधितिष्ठन् तम् st. अधितिष्ठत्तम् gedruckt ist). प्राचीमिन्द्रः Kathās. 18,60. पुरम् 124,68. Bhāg. P. 8,15,33. जम्बुद्वीपम् Hit. ed. Jonks. 2702. स्वाराज्यम् Spr. (II) 9. साम्राज्यम् Prab. 97,16. राज्यम् Kathās. 41,55 (°तिष्ठा zu lesen). *besitzen:* अतीन्द्रमपि माहात्म्यं राज्ञस्तस्याधितिष्ठतः Rāja-Tar. 4,322. *in den Besitz gelangen von:* पारमेष्ठ्यं पदम् Bhāg. P. 4,8,20. धिष्ण्याग्र्यम् 12,29. — 5) *sich gründen auf* (loc.): रायस्पोषे यदि यज्ञा यस्त्यात् VS. 17,54. TS. 2,1,8,2. — 6) *Gebrauch machen von, anwenden:* पदपराधिनोरप्यनपराधयोरिव नौ कृते (so lesen wir) प्रसादमधिष्ठितवान् so v. a. *an den Tag legen* Mālatīm. 140,10. fg. absol. °ष्ठाय so v. a. *mit Anwendung von, mittels* Bhaṭṭ. 4, 6. श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च। अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते 13,9. MBh. 1,3614. Bhāg. P. 4,29,5. Sarvadarçanas. 154,15. fg. Burnouf, Intr. 79, N. 2. — 7) bei den Buddhisten *weihen (bénir)* Burnouf a. a. O. — 8) partic. अधिष्ठित und धिष्ठित *a)* in act. Bed. 2) *stehend:* देवमार्गे MBh. 1,2372. पुरस्तादधिष्ठितः शर्वो ममासीत् 13,997. fg. पादाङ्गुष्ठाग्र° 1,7627. 5,7349. सर्पकणाग्र° 13,867. *stockend, stocken geblieben:* दत्तात्तरधिष्ठितम् M. 5,141. अक्षरावधिष्ठिताः शरा: MBh. 5,7193. *stehend* so v. a. *sich befindend:* एष भारः सत्त्ववतां नयः शिरसि धिष्ठितः 2,1962. ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य धिष्ठितम् Bhag. 13,17. Bhāg. P. 1,9,42. कीर्त्यते च पदं विज्ञैर्धर्माख्या यत्र धिष्ठिता: *ihren Sitz habend* Verz. d. Oxf. H. 48,*b*, 11. mit einem acc. *wohnend, seinen Sitz habend in, auf* Vop. 3,2. 26, 129. अदितेर्गर्भम् Bhāg. P. 8,17,24. यानि पदानि 3,1,17. मरुत्सङ्घम् (सिद्धः) Spr. (II) 4204, v. l. Bhāg. P. 3,10,5. 7. — *β) über Andern stehend, obenan stehend, den Vorrang habend* Spr. (II) 42. (नदीम्) सर्वप्राणभृतां तत्र जननीमिव धिष्ठिताम् MBh. 1,2867. 13,567. R. Gorr. 1,38,5. Kām. Nītis. 13,2. *vorstehend* (einem Amte u. s. w.), *vorgesetzt:* धर्माधिकरणाधिष्ठितपुरुषैः Pañcat. 97,1. मारीचतपसि Bhāg. P. 3,17,18. — *γ) beruhend auf* (loc.): (तमायाम्) ब्रह्म च सत्यं च यज्ञा लोकाश्च धिष्ठिताः MBh. 3,1105. R. 1,34,24. — *δ)* mit einem absol. *verharrend* in einer Lage u. s. w.: प्रेक्ष्य *erblickend dastehend* so v. a.

betrachtend MBh. 1,2406. 2,11. चक्रमुद्यम्य *mit erhobenem Discus dastehend* 1,8325. उत्तीर्ण Harıv. 3695. (ककुदम्) स्कन्धमाधूर्य धिष्ठितम् MBh. 13,835. — *b*) mit pass. Bed. α) *bewohnt, besetzt von* (instr. oder im comp. vorangehend): (पुरम्) रत्नद्रुममयैश्चित्रैः सुस्थैश्च पतत्रिभिः। पौलोमैः कालकञ्जैश्च MBh. 3, 12198. मरुः श्रीवैश्यवर्णाश्रयैः R. 1,1,32 (34 Gorr.). Kâm. Nîtis. 4,60. कुमारभृत्याकुशलैरगर्वितैः Raghu. ed. Calc. 3,12. Kathâs. 18,318. 32,59. 43,140. Mârk. P. 100,6. Hit. 36,20. स्यन्दनैः सूतपुत्रैः R. 2,93,15 (102,17 Gorr.). नावो दाशैः 89,17 (97,22 Gorr.). Bhâg. P. 4,8,79. गन्धर्वाधिष्ठिताधन् Siddh. K. zu P. 2,3,12. रावणाधिष्ठितं द्वारम् *besetzt so v. a. vertheidigt* R. 6,16,28. यन्त्रवीरैः पुरुषैरप्रकम्पैर्गजैः *in dem — stecken* Kathâs. 12,5. वेतालाधिष्ठितः शवः 18,81. 88. लोकेशाधिष्ठितो राजा M. 5,97. Mârk. P. 62,2. 4. Pañkat. ed. orn. 57,10. — β) *in Besitz genommen, erfüllt von:* निद्रया Pañkat. 30,5. रागाधिष्ठितमोक्षम् Spr. (II) 1259. मरुत्तेरेण तमसा Kathâs. 25,134. कामाधिष्ठितचेतसम् adj. Hit. 28,2. राजप्रमादाधिष्ठित *so v. a. in voller Gunst beim Fürsten stehend* Pañkat. 29,7. — γ) *verwaltet, versehen:* प्रनष्टाधिगतं द्रव्यं तिष्ठेयुक्तैरधिष्ठितम् M. 8,24. राज्य MBh. 3,22. Harıv. 6487. Spr. (II) 90. Kathâs. 21,68. अधिकार Daçak. 83,13. व्यवकार MBh. 13, 196. fg. (अनुष्ठित 197 ed. Bomb.). आर्याकुन्धतोवसिष्ठाधिष्ठिते रघुकुलगृहे *dem — vorstehen* Uttarar. ed. Cow. 38,13. — δ) *geleitet, geführt, angeführt* (eig. und übertr.) Çvetâçv. Up. 1,1. गुल्म M. 7,114. स्त्रियो वृद्धैरात्तैः MBh. 13,188. Kâm. Nîtis. 19,16. Mṛicch. 175,12. Uttarar. 2, 6 (3,7). 29,5. Kathâs. 23,82. 50,147. Prab. 19,11. Râja-Tar. 3,2. Tattvas. 26. समर्थाधिष्ठित (अश्व) R. 1,11,12 (19 Gorr.). स्वाधिष्ठित Elephant Kâm. Nîtis. 15,11. 16,10. स्वामिनाधिष्ठितः शा Spr. (II) 4136. — Vgl. दुरधिष्ठित. — caus. *stellen auf, Etwas* (acc.) *betreten lassen* Kâty. Ça. 4,9,14. 16,2,17. Kauç. 34.

— समधि 1) *leiten, lenken:* आत्मा प्रयत्नेनार्थेभ्यो मनः समधितिष्ठति *leitet ab von* Kâm. Nîtis. 1,26. — 2) *verwalten, versehen:* कस्मिंस्त्वयि राष्ट्रेषु बह्वयो ऽधिकृतास्तव। सर्वान्समधितिष्ठसि MBh. 2,199. — partic. °स्थित 1) *stehend auf, in* (acc.): विमानम् MBh. 13,2076. — 2) *obenan stehend:* सर्वेषामपि देवानां तेजस्तु Pañkat. 2,3,57. — 3) *geritten:* महानागा राजसैः MBh. 6,2867.

— अनु 1) *nach Jmd stehen bleiben* d. i. *wenn Jmd stehen bleibt* (तिष्ठति oder तिष्ठन्तम्) *gleichfalls stehen bleiben;* mit loc. M. 11,111. Bhâg. P. 4,23,39. mit acc. Spr. (II) 4544. 6409. Mârk. P. 18,24. — 2) *Jmd* (acc.) *nachgehen, folgen:* (दात्यूहकः) स्वकात्तामनुतिष्ठति R. 3,79, 12. — 3) *folgen so v. a. gehorchen;* mit acc.: नाराजके पतिं भार्या यथावदनुतिष्ठति Spr. (II) 3643. mit dat.: पर्वतासो ऽनु व्रतायं तस्थुः ṚV. 3, 30,5. — 4) *befolgen, sich richten nach, nachahmen:* पदे वेहानुतिष्ठसि पूर्वेषां पूर्वजैः कृतम् Bhâg. P. 2,8,25. यद्धतम् 3,12,31. — 5) *sich stellen zu, sich anschliessen, sich beigesellen, im Gefolge sein; hilfreich zur Seite stehen:* ऊर्ध्वा ते अनु सूनृता मनस्तिष्ठतु ṚV. 1,134,1. Wagen 2,31, 3. 1,183,2. प्राणो गानु तिष्ठतु *bleibe* AV. 11,4,24. ऊतयः ṚV. 1,52,4. यज्ञम् *auf die Seite unseres Opfers* 4,20,3. अनु मा ईव तस्थिम *sich halten an, streben nach* 9,112,3. AV. 11,10,27. रात्रिम् 19,48,5. भुवना 17,1,16. अनु द्या स्थास्ये प्रकर् Çat. Br. 5,5,5,2. TS. 2,4,12,7. 6,5,12. — 6) *einer Sache nachgehen, — sich hingeben, — obliegen, Etwas betreiben, ausrichten, ausführen;* mit acc.: किमनुतिष्ठति Çik. 101,6. Mârk. P. 61,44. 16,4. धर्मम् M. 2,9. 5,2. 6,94. 10,130. MBh. 3,1282. Bhâg. P. 4,24,58. Pañkat. 53,25. अधर्मम् Spr. (II) 3101. त्रिवर्गम् R. 1,6,5. धर्मम् Spr. (II) 1644. Daçak. 64,8. 84,6. कर्म Çik. 90,4. Spr. (II) 6275. कार्यम् 7306. Çik. Cu. 41,1. 120,6. कृत्यम् Çik. Bôhtl. 30,5. कारिम्, क्रियाम् Bhatt. 7,75. व्रतम् Bhâg. P. 8,17,1. विवाहदीक्षाविधिम् Kumâras. 7,1. नियोगम् MBh. 1,749 (med.). Çik. 61,1. मम मतम् Bhag. 3,31. अभिप्रेतं तव R. 4,40,6. तस्य वचः Râja-Tar. 1,79. मङ्गलम् Daçak. 73, 2. पस्य शैलाधिपत्यम् Kumâras. 1,17. मङ्गलानि Daçak. 75,8. संगीतकम् 77,9 (ed. Calc. richtig अनुष्ठा°). यथाभ्यर्थितम् Çik. 103,19. यथोक्तम् 106, 5. Vikr. 24,7. Daçak. 77,4. तथा Pañkat. 4,13. 192,10. द्वाराणि मार्गापावरुन्धनाम् *so v. a. eröffnen* Bhâg. P. 3,20,1. प्रमादम् Spr. (II) 4724. दण्डम् *so v. a. Strafe verhängen* Kull. zu M. 8,290. विणमूत्रं नानुतिष्ठेत न कृष्टे न च गोव्रजे *so v. a. sich entleeren* Mârk. P. 34,22. यस्य वधोपायम् *so v. a. sinnen auf* Pañkat. 81,8. 9. — 7) *verbleiben* Kâtjây. 5, 1 (अनुष्ठाय = ध्यात्वा Çâk.). सक्तं तेनर्षिणा — शतद्वयं किंचिदूनं वर्षाणामन्वतिष्ठत Brahma-P. in LA. (III) 55,6. — 8) *sich setzen auf:* अनुष्ठास्यति रामस्य सीता प्रकृतमासनम् R. 2,37,23. — 9) *beherrschen, regieren:* सौवीरान्धर्मेण MBh. 3,13621. — 10) अनुतिष्ठसि Kâṇḍ. Up. 3, 19,3 wohl fehlerhaft für अनूत्ति°. — 11) partic. अनुष्ठित α) mit act. Bed. α) *befolgend, sich richtend nach, nachahmend;* mit acc.: सतां वृत्तम् M. 10,127. — β) *obliegend,* mit acc.: त्रिवर्गम् MBh. 13,2039. युक्तधर्मम् Spr. (II) 4417. — *b*) mit pass. Bed. α) *begleitet, unterstützt:* विश्वैरनुस्थित (sic) TS. 2,4,12,3. — β) *dem man obgelegen hat, betrieben, geübt, ausgerichtet, ausgeführt* ṚV. 10,61,5. Çâṅkh. Gṛhj. 2,10. अनुकृत्यः सद्भिः M. 3,147. धर्म 10,97. R. 5,86,10. Spr. (II) 6383. Bhâg. P. 1,2,8. कार्य Raghu. 12,102. Spr. (II) 7602. ज्ञातकर्मादिक्रिया ad Çik. 191. यज्ञो यथाशास्त्रम् R. 1,12,3. नियमैश्चातुर्गर्भकैर्मम Raghu. 3,12. संबन्धाः सदनुष्ठिताः Kumâras. 6,29. मत R. 1,3,4. संदेश Çik. 70,3. निदेश 97,3. नियोग Çik. Cu. 106,9. आज्ञा Kathâs. 41,23. मरुद्धर्मव्यतिकर Bhâg. P. 4,19,31. पौरोभाग्य Çik. 89,5 (134,3 Cu.). — 84,20. Mâlav. 45,9. Spr. (II) 2609. Pañkat. 43,15. साधु युद्धेनानुष्ठितम् Mârk. P. 109,20. तथानुष्ठिते Pañkat. 37,22. 38,9. 42,1. 43,12. तथानुष्ठिते सति Hit. 43,17. — γ) *begonnen, angefangen:* न युक्तं हि त्यक्तुं कार्यमनुष्ठितम् R. 4,61,59. — Vgl. अनुष्ठा fgg., अनुष्ठेय (स्वार्थ Daçak. 66,7). दुरनुष्ठित fg. — desid. *obzuliegen wünschen:* कुलस्त्रीवृत्तमेवानुतिष्ठासति Daçak. 79,1. 2. Vgl. अनुतिष्ठासु.

— समनु, partic. °स्थित *verbunden —, ausgerüstet mit:* विद्यातपोभ्याम् Âçv. Ça. 9,3,20. — Vgl. समनुष्ठेय.

— अन्तर् *Jmd* (acc.) *den Weg vertreten, aufhalten:* वैश्वानरो नो अन्तस्तिष्ठति दुरितानि विश्वा ṚV. 6,53,2. रोगम् 1,2,6. 10,37,1.

— अप *sich fern halten, abtrünnig werden* ṚV. 8,20,1. अप त्या वस्युरनिरा अमीवाः 48,11. अवपानात् 10,106,2. वृत्रात् 124,8. 9,19,6. — Vgl. अपस्थ fgg. und अपाष्ठ.

— अभि *Jmd* (acc.) *in den Weg treten:* मा मे मय्युः स्तामानमभि ष्ठात (man könnte स्तामन् vermuthen) AV. 5,13,5. देवो ऽभ्यतिष्ठत्स्यन्दमानाः 3,13,4. — partic. अभिष्ठितं (sic) ṚV. 1,145,4.

— अभि, °ष्ठास्यति, °तष्ठौ, अभ्यष्ठात् Schol. zu P. 8,3,63. fgg. 1) *tre-*

ten —, den Fuss setzen auf (acc.): तुर्पेषिम् RV. 1,42,4. अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्वे अभिष्टिताः 10,166,2. मन्युं पार्ष्णी AV. 5,42,3. 5,8,9. 19, 46,5. पदा शिरः Çat. Br. 5,4,4,9. 3,8,2,15. 9,1,1,42. TS. 5,4,8,5. °ष्ठित *unter die Füsse getreten* RV. 10,166,2. वरुणस्य पाशः VS. 8,22. Schlinge AV. 5,14,10. *worauf man getreten ist, — steht* Çat. Br. 2,1,4,3. — 2) *sich erheben über, — auf:* इषासि RV. 1,149,4. 3,14,4. — 3) *treten gegen, zu Etwas hin:* अपरां दिशम् Kaug. 77. Pârâçar. Br. 16,11,15. — 4) *stehen bleiben:* विनतो ऽग्रे ऽभ्यतिष्ठत MBh. 12,4475. — 5) *sich aufhalten, sich befinden:* ते (Missethäter) राष्ट्रे ऽभितिष्ठन्तो बाधन्ते भद्रिकाः प्रजाः MBh. 12,3346. — 6) *widerstehen, bemeistern:* पृत्सुतीः RV. 1,110,7. प्रतिष्ठन्यानि 4,30,7. 8,20,1. 21,7. पूरुं पृतनासु 7,8,4. 8,21,12. पृतनाः AV. 10, 5,36. रुशद्वर्णोरुभि ग्रामंस्थात् RV. 10,3,3. 69,12. 174,2. VS. 6,16. 11,20.

— समभि *besteigen:* einen Elephanten MBh. 8,509 (समभ्य° mit der ed. Bomb. zu lesen).

— अव med. P. 1,3,22. Vop. 23,3. 1) *sich fern halten, — entfernen:* मावे स्थात परावतः RV. 5,53,3. *getrennt sein von, entbehren:* मा रायो अवे स्थाम् 2,27,17. — 2) *sich hinab —, hinein begeben; hinabsteigen:* समुद्रम् RV. 5,44,9. सिन्धुम् 7,87,6. गोमतीम् 8,24,30. 85,13. fg. Çat. Br. 3,4,3,22. — 3) *dastehen, sich hinstellen; stillstehen, Halt machen:* प्राची अधरे अवे तस्थतुः सुमेके RV. 3,6,10. med. Âçv. Gṛhj. 1,20,2. 3, 12,3. गौ दृष्ट्वावतिष्ठेथाः Lâṭj. 3,10,15. 2,7,20. Gobh. 2,6,3. यदा पञ्चावतिष्ठते ज्ञानानि मनसा सह Kaṭhop. 6,10 = Maitrâyaṇ. 6,30. न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः Bhag. 1,30. 14,23 (act.). यदि मे लेखनी तृणम् । लिखतो नावतिष्ठेत MBh. 1,78. 1269. 3,10769. 15909. 8,4037. Hariv. 9353 (अवतस्थिवान्). 13709. R. 3,74,9 (act.). 5,73,23. 7,21,35. चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे Raghu. 2,31. Kumâras. 3,42. Çiç. 9,53. Bhaṭṭ. Sûrya. 1,46,3. Wasser Spr. (II) 6143. चेतः Kathâs. 71,243. Bhâg. P. 2, 2,14 (act.). 5,26,14 (act.). Pârâçar. ed. orn. 19,23. Hit. 47,23. ed. Jonas. 1183. Daçak. 95,10 (अवास्थिषि). — 4) *bleiben, verbleiben* Mṛicch. 132, 7. Spr. (II) 4724 (act.). Kathâs. 25,152. 31,19. Prab. 13,14. Pârâçar. 77,19. fg. Hit. 26,17. 41,1. ed. Jonas. 1939. Bhaṭṭ. 8,11. चतुर्योर्विषये R. 5,24,17. राज्ये Spr. (II) 5015. विषये MBh. 3,1946. प्रमाणे R. ed. Bomb. 2,37,22 (act. am Ende des Çloka ohne Noth). मते न्यायवादिनाम् Spr. (II) 4530. जीवितस्थाने (so zu schreiben) क्षुद्रयम् R. 3,51,2. शासने गुरूणाम् Bhaṭṭ. 3,14. in einer best. Thätigkeit oder Zustande *verharren; die Ergänzung* a) ein adj.: यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते Bhag. 6,18. निर्वीर्ये मनः Hariv. 8727 (act.). ग्रसनं Spr. (II) 4729. मलं ज्ञपसः Kathâs. 37,63. Bhâg. P. 6,11,13. Vedântas. (Allah.) No. 140. 149. — b) ein absol.: परिवार्य MBh. 1,5770. त्रैलोक्यं भस्मीकृत्य (so ed. Bomb.) 3,187. विष्टभ्य पदौ Spr. (II) 178. R. 3,76,37. — c) ein instr.: धैर्येण परमेण MBh. 1,5050. पुरुषवेषेण Kathâs. 29,178. तेन तेनात्मना Çârîr. bei Windischmann, Sancara 142. धारणया Bhâg. P. 2,2,12. स्वरूपेण 3,28,44. समुपूर्णेन निःश्वासेन Pârâçar. 80,13 (°ष्यते impers.). Sarvadarçanas. 48, 17. प्रकृत्या Comm. zu TS. Prât. 9,16. — 5) *bestehen* Bhâg. P. 3,22,20. व्यञ्जने केवलमवस्थातुं न शक्नोति Comm. zu TS. Prât. 21,1. 2. — 6) *sich befinden, — aufhalten, dasein, anwesend sein:* उष्ट्रैः सहैकत्र Jâtâs. 1,272. तत्रावतस्थिरे MBh. 1,4826. 3,11853. 12302. fg. प्रायेणैवंविधे देशे तस्करा अवतिष्ठन्ते Kull. zu M. 9,266. चन्दनकल्कोऽयं समुद्रेऽवतिष्ठत: R. 2,91,68. R. ed. Bomb. 2,45,28. H. 202, Schol. — 7) *anheimfallen;* med. mit dat.: न मृत्यवे ऽवे तस्थे RV. 10,48,2. — 8) *eingehen in* (loc.): ब्रह्मणि M. 6,81. — 9) *gelangen zu* (acc.): ज्योतिर्यस्याः सह दिवं गौ च नित्यं पुरा दिशो विदिशश्चावतस्थे MBh. 13,1845. स्वभावम् *zurückkehren zu* Prab. 4,11. — 10) *feststehen, beschliessen* (?): किमन्यदवत्वीयते Çiç. 23,11. — 11) partic. अवस्थित a) *dastehend, seinen Stand habend, postirt, befindlich:* घनम् Âçv. Çr. 4,4,4. प्रेतकवत् Maitrâyaṇ. 2,7. Bhag. 1,11. 23. 11,23. अविदूरतः R. 2,33,27. R. Gorr. 1,43,7. 1,35, 1. अवस्थितैः समीपस्थैः 50,15. यथाभागमवस्थिते किरीटे Raghu. 6,19. Kathâs. 18,73. Râja-Tar. 3,509. Bhâg. P. 3,13,21. 4,20,21. 5,18,21. Pârâçar. 127,17. स्वेषु धिष्ण्येषु MBh. 3,1751. द्वारि 2268. 4,267. Spr. (II) 2605. Varâh. Bṛh. S. 9,4. 43. 47,7. दारुणि वह्निः Mârk. P. 23,31. Kathâs. 12,120. 21,2. 24,183. Râja-Tar. 6,213. Bhâg. P. 1,8,18. 2,9, 24. 3,19,24. 7,14,2. Hit. ed. Jonas. 2427. Nalod. 2,58 (वस्थित). पीठे देवस्य तिलकशाकम् Râja-Tar. 5,49. दीर्घकालम् *lange Zeit gelegen habend* (Pfand) M. 8,145. सर्वमात्मन्यवस्थितम् *enthalten in* 12,119. Bhag. 9,4. 15,11. आर्षेयप्रसिद्धिः कल्पसूत्रेषु Kumârila bei Gold. Min. 66,b. अनवस्थित *nicht dastehend* R. 4,30,14. *nicht bleiben könnend* Raghu. 19,31. एकस्मिन्प्रदेशे सहावस्थितता *das Zusammensein* Sarvadarçanas. 142, 16. — b) *verbleibend —, verharrend* in einer best. Thätigkeit oder Zustande; die Ergänzung α) ein partic.: व्यास्वनैः पूरयन्दिशः R. 3,30,19. 34. 42,32. कृमस्तत्रैके Kathâs. 5,48. — β) ein instr.: चतुर्मण्डलावस्थानेन Pârâçar. ed. orn. 5,7. सर्वस्यात्मतया Sarvadarçanas. 52,18. 21. 102, 2. प्लवायावस्थितः so v. a. प्लवायेणाव° *erscheinend als* Varâh. Bṛh. S. 11,51. Mârk. P. 37,35. Bhâg. P. 3,11,2. — c) *verbleibend in* (loc.) *so v. a. befolgend:* अनुशासने स्वे Bhâg. P. 3,1,45. मूर्खवाक्येषु Bhaṭṭ. 15, 14. — d) *begriffen in, obliegend, bedacht auf;* mit loc.: योगेषु MBh. 3, 1223. स्वे स्वे कर्मणि M. 8,42. 10,74. चारित्रेषु R. 6,88,14 (अनवस्थित). भूतानां पालने Bhâg. P. 4,17,13. die Ergänzung im comp. vorangehend: ज्ञानावस्थितचेतस् Bhag. 4,23. नानाकथाप्रसङ्गावस्थित Hit. 27,14. — e) *Jmd* (acc.) *obliegend:* मयि सृष्टिर्हि लोकानां रता पुष्पास्ववस्थिता Kumâras. 2,28. — f) *bereit zu* (dat.): पुढाय Pârâçar. 91,6. 7. — g) *feststehend, beständig, keinem Wandel unterworfen* Kaṭhop. 2,22. वाक्य R. 5,56,36. एषा तस्य स्थिरा बुद्धिर्मृत्युभावादवस्थिता *in Bezug auf* 6, 10,32. पितुरस्याः समीपनयनम् *so v. a. fest beschliessen* Çiç. 71,14. °निश्चय adj. Kathâs. 24,229. अनवस्थित *unbeständig* P. 2,1,42, Schol. R. 5,51,10. °चित्त 83,5. Spr. (II) 330. दर्पितासु नृणां प्रेम Kumâras. 4,28. Uttarar. 35,10 (47,4). Bhâg. P. 2,6,39. अवस्थित von Personen *so v. a. standhaft, zuverlässig* M. 7,60. *eine feste Stellung einnehmend* Vikr. 160. अनवस्थिता *wankelmüthig, untreu* M. 11,138. R. 7,30,37. — h) *gelungen:* अनवस्थितं कार्यम् *misslungen* R. 5,51,9. — i) *beschaffen, sich verhaltend:* एवमवस्थिते *unter diesen Verhältnissen* Pârâçar. 180,20. तेन मदीयं यथावस्थितं चित्तं ज्ञातम् 196,18. ते प्रेक्षुर्यथावस्थितं नापितवृत्तान्तम् 237,19. — k) mit acc. α) *stehend bei:* स एष सात्तादिव मामवस्थितः Hariv. 14728. वानरवाहिन्याः सव्यं पार्श्वमवस्थितः *zur linken Seite* R. 5,73,26. — β) *hingegeben, sich hingebend:* अनभाव्यमानशस्यम् MBh. 13,272. पां दर्पम् R. 5,58,12. — Vgl. अवस्थ fgg. — caus. 1) *auseinanderhalten, trennen:* यदनेनाचलेन लोको ऽलोकश्चास्तर्वर्तिनावस्था-

प्यते Bhāg. P. 5,20,26. — 2) *stehen machen, anhalten:* रथम् MBn. 3, 2819. ein fliehendes Heer 7,5923 (द्रवमाणां mit der ed. Bomb. zu lesen). *stehen —, nicht weitergehen —, zurücklassen, nicht mit sich nehmen:* ein Heer MBn. 1,2875. 3,687. Harīv. 6667. R. 2,90,1. 3 (99,1. 6 Gorr.). Rāgat. 13,66 (mit पश्चात्). तामवस्थाप्य क्ष्मां सोमप्रभा ततः Kathās. 31, 51. 32,34. 39,92. 45,66. तं च क्लममवस्थाप्य राज्ञानमगादत्तिकं पितुः 11, 62. Vīra. 35,3. — 3) *hinstellen:* वेश्मनि Lāṭ. 3,10,7. Āçv. Gṛhj. 1,11, 2. Pār. Gṛhj. 2,2. Kauç. 53. Weber, Kṛshṇaj. 284. H. 202, Schol. *hinlegen, thun in, auf* R. 2,111,15 (उपस्थाप्य ed. Bomb.). भिक्षापात्रं नागदन्तके Hit. 27,12. वायुं नाभ्यां कोष्ठेषु Bhāg. P. 4,23,14. मनसि पूरुषम् 8,22. नित्ये मरुत्पात्मानम् *eingehen lassen in* MBn. 3,12502. — 4) *einsetzen, errichten:* देवाद्यम् Mālav. 69,17. — 5) *fest machen, Festigkeit verleihen:* तदवस्थाप्यतां बुद्धिरलं विक्लवता R. 5,35,36. so v. a. *ermuntern, trösten:* मदनपराधीनं मनम् Bilh. 120,8. — 6) *begründen* (eine Behauptung) Comm. zu Nyāyas. 4,2,49. — Vgl. अवस्थापन in den Nachträgen.

— अन्वव *nach Jmd herabsteigen* Cat. Br. 5,4,2,22. fg.

— अभ्यव, partic. °स्थित *widerstehend,* mit acc.: शस्त्रं मुक्तः परिवर्तमानम् Bhāg. P. 5,24,2.

— पर्यव med. 1) *sich befestigen, — kräftigen:* प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते Bhag. 2,65. — 2) *erfüllen, durchdringen;* mit acc. MBn. 12, 9129. — partic. °स्थित 1) *stehend, postirt:* रथाग्रे MBn. 8, 4354. *enthalten in* (loc.) Harīv. 10799. fgg. — 2) *begriffen in, obliegend, hingegeben;* mit loc.: पौरुषे MBn. 1,4029. 4,1528. सौहृदे (so ed. Bomb.) 15,895. कारुण्ये R. 7, 88, 10. — 3) *wohlgemuth, guter Dinge* MBn. 6, 2366. R. 2,31,14. 5,75,36. fg. 7,99,15. Vishṇu MBn. 13,7045. °चेतना Harīv. 10089. — Vgl. पर्यवस्था fgg. — caus. *ermuntern* MBn. 4, 2026. पर्यवस्थापयात्मानं मा विषादे मनः कृथाः 8,251. 3070. 12,6521. R. 6,21,29. 95,42.

— प्रत्यव med. 1) *wiederkehren, sich wieder einstellen* Bhāg. P. 3, 27,20 (mit unnützem पुनर्). — 2) *dagegen aufstehen, einwenden, eine Einwendung erheben* Verz. d. Oxf. H. 248, *a*, 20. 249, *a*, 25. 250, *b*, 19. 251, *a*, 5. Comm. zu Kap. 1,34. 43. zu Nyāyas. 5,1,2. 14. — 3) *wiedererlangen:* प्रत्यवास्थित चोर्वीतम् Bhaṭṭ. 15,33. — partic. °स्थित *in einem best. Zustande* (instr.) *sich befindend:* धैर्येण MBn. 1,7702. — Vgl. प्रत्यवस्था fgg. — caus. *in die ursprüngliche Lage bringen:* °स्थापयत्यात्मानम् *kommt wieder zu sich* Vīra. 8,1.

— व्यव med. 1) *sich trennen, — abtheilen:* संयोगात् Çiṅkh. Ça. 1,1,5. 3,8. — 2) *stehen bleiben, Halt machen:* व्यवतिष्ठत सा सेना R. 2,83,21. *bleiben, verweilen:* व्यवातिष्ठत नैकस्मिन्देशे 4,1,4. ज्ञातसानां सङ्गमेषु न कश्चिद्व्यवतिष्ठत 5,70,48. तज्ज्ञानं (उदकं) नरति न व्यवतिष्ठते Kull. zu M. 2, 99. — 3) *sich rüsten zu* (dat.): युद्धाय R. 4,9,74. — 4) *Stand halten* so v. a. *logisch haltbar sein, sich bewähren:* सत्वं तणिकत्वपक्ष एव व्यवस्थास्यति (sc.!) Sarvadarçanas. 12,14. न क्वचिदपि पक्षे व्यवतिष्ठते 15,4. MBn. 12,2965. — 5) *dastehen —, erscheinen als* (nom.): सादिमात्रः Nyāyas. 14,10. नश्वत् Siddhiv. 42. — 6) partic. °स्थित *a) geordnet stehend* Bhag. 1,20. — *b) stehend:* द्वाभ्यामधर्मः पादाभ्यां त्रिभिर्धर्मो व्यवस्थितः Harīv. 11310. *eine Stelle einnehmend, postirt, stehend —, befindlich auf, bei u. s. w.:* रथमध्ये MBn. 5,7129. मातृमध्ये R. Gorr. 2,38,38. सद्मरे Spr. (II) 5265. नदीतीरे Brahma-P. in LA. (III) 52,18. Varāh. Bṛh. S. 86,29. दिशि यस्यां शकुनः 35. सङ्घ° 61. सप्तः Bhāg. P. 3,19,7. सपे *er stellte sich* Pāṇ. 57,9. 229,21. वरतले 9,38. वयमेव नृपतिव्यवस्थिता मध्यस्थाः *auf Seiten des Fürsten stehend* Daçak. 92, 4. पारमर्कस्य यान्यमे *befindlich in* Bhāg. P. 2,4,13. वृत्तबाह्ये Varāh. Bṛh. S. 104,38. रश्मिशतमूर्ध्वमेव व्यवस्थितम् Maitrāj. 6,30 = Jīān. 3,168. Mārk. P. 54,25. परं ज्योतिस्तमःपारे Kumāras. 2,58. यधोभागव्यवस्थितं किंचित्पुरम् *gelegen* Pāṇ. 76,28. किं ते हृदि व्यवस्थितम् MBn. 13, 2715. *enthalten in:* तस्यां (वार्त्तायां) सर्वे शब्दा व्यवस्थिताः Sarvadarçanas. 144,7. von einem Worte so v. a. *in der Bedeutung* von (loc.) *stehend, — gebraucht werdend* Verz. d. Oxf. H. 167, *b*, 14. — *c) gewartet —, verweilt habend* MBn. 5,7050. — *d) beruhend auf* (loc.), *abhängig von:* विद्वासु लोकः Kām. Nītis. 2,6. निष्पत्तिः कर्मणो दैवे पौरुषे च Spr. (II) 1003. 2981. 5285. Mālatīm. 70,7. तत्रियस्योरसि तत्र पृष्ठे ब्रह्म Z. d. d. m. G. 27,89. — *e) entschlossen zu* (loc.): रणे MBn. 5,7124. 7145. युद्धे R. 4,24,1. — *f) beharrend in, haltend an:* मर्षिर्यथाते पथि R. 2,60,22. 5,14,67. ब्रह्मचर्ये Spr. (II) 4948. सत्यधर्मे Jīān. 2,110. MBn. 5,5431. वचने R. 2,23,42. मविदेशे 95,16 (104,16 Gorr.). गुरुवाक्ये 3,51,38. मित्रभावे Varāh. Bṛh. 9,39. यस्त्रेषेव so v. a. *sich nur um die Waffen kümmernd* MBn. 3,12052. auch in comp. mit der Ergänzung: तत्रधर्म° R. 3,57,14. 5,31,17. देशकाल° so v. a. (contractlich) *gebunden in Bezug auf Ort und Zeit* M. 8,156. — *g) feststehend, festgesetzt:* इति धर्मो व्यवस्थितः M. 3,265. 9,117. 130. 179. 10,68. Spr. (II) 3685. तत्र मे सुव्यवस्थितम् R. 5,14,60. सुव्यवस्थितमत्र adj. 81,5. इति मे। वचनीयमिदं व्यवस्थितम् so v. a. *sicher bevorstehend* Kumāras. 4,21. लग्नं षण्मासासे व्यवस्थितम् Kathās. 32,10. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 145. Mārk. P. 16, 1. 2. Sarvadarçanas. 106,1. 2. *beständig, nicht wechselnd* Soçr. 1,73,21. 147,3. अव्यवस्थितचित्त *unbeständig* Spr. (II) 1988. °विषयाः तत्रधर्माः *genau bestimmt, limitirt* Uttarar. 101,13 (135,3). व्यवस्थितः पृथिव्या गन्धः so v. a. *ausschliesslich eigen* Kaṇ. 2,2,3. विकल्प, विभाषा *genau bestimmt für jeden einzelnen Fall* (Gegens. ऐच्छिक) Dīpāv. 109, 9. Schol. zu Kāty. Ça. 173,3. 252,4. 700,14. zu AV. Paiṅg. 4,27. Kull. zu M. 4, 47. Schol. zu P. 3,1,11. 8,2,31. Siddh. K. zu 1,2,26. 6,3,116. Ind. St. 8,222. — *h) dasselbe, vorhanden, sich vorfindend:* इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ Bhag. 3,34. मयि नाथे व्यवस्थिते R. 3,27,5. स हि — एको व्यवस्थितः पन्थाः 4,61,40. अगत्कृतस्त्रमिति श्रुतिस्मृतिवादाः शतशो व्यवस्थिताः Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 277. भोक्तृभोग्यनियामकभेदेन व्यवस्थितास्त्रयः पदार्थाः Sarvadarçanas. 46,1. 2. — *i) dastehend —, erscheinend als;* die Ergänzung α) ein nom.: यो ऽसौ चतुर्दशेषु शिष्टमोहो व्यवस्थितः Verz. d. Oxf. H. 41, *a*, N. 2. (त्वम्) नभस्यात्मा व्यवस्थितः Mārk. P. 99,39. यावान्कश्चिद्व्यवस्थितः Kām. Nītis. 12,37. कूर्मरूपी Mārk. P. 58,14. ईषद्धासा 87,2. पुंगात्ते सर्वभूतानि यमाविव MBn. 13,942. Harīv. 5052. 7383. R. 2,40,49. R. Gorr. 2,102,27. 3,36,54. 74,23. 5, 56,75. 7,34,25. मनोर्वंशे बोधभूतौ VP. 4,24,46. — β) ein absol.: सोममभ्येत्य यज्ञाः सर्वे R. 2,41,10. तां चित्तां व्यवधूय 5,14,34. — γ) ein instr.: येन रूपेण शीर्षाद्यैर्वा व्यवस्थितः Sarvadarçanas. 31,15. fg. येन स्वभावेन 22. fg. यात्मना Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 139. सर्वत्राधारत्वेन 293. die im

instr. zu denkende Ergänzung im comp. vorangehend: कपिव्रप° R. 5,41, 14. प्रज्ञासत्र° MBu. 13,4893. — *δ*) ein adv.: एवम् Mink. P. 76,32. 113,18. Rága-Tar. 4,565. इत्थम् Bnic. P. 2,2,19. नवधा Varâh. Bgn. S. 14,1. चतुर्धा Mink. P. 47,28. त्रिधा Müller, SL. 170. — Vgl. व्यवस्था fgg., °स्थिति, सुव्यवस्थित. — caus. 1) *hinstellen:* कलशान् Varâh. Bgn. S. 48,37. *richten auf:* मनो हृदि Kumâras. 3,50. विलोचनानि 7,75. — 2) *einsetzen:* नकुलं बालरक्तार्थम् Hit. ed. Jouns. 2721. — 3) *zum Stehen bringen:* वाक्तीम् MBu. 8,3071. *aufhalten* so v. a. *nicht zu Fall kommen lassen:* निजस्थितिम्, पक्षच्युतो शिलाम् Rága-Tar. 1,365. दण्ड इमे लोकम् MBu. 12,6444. — 4) *herstellen, in den natürlichen Zustand wieder versetzen:* वाचम् Kumâras. 5,63. Ragu. 14,52. — 5) *feststellen, bestimmen* Daçak. 68,3. Verz. d. Oxf. H. 208,*a*,1. Comm. zu TS. Prât. 21,3. सीमाम् Kull. zu M. 8,261. पदार्थधर्मं कणभक्षेण व्यावस्थापि Sarvadarçanas. 104,6. *als logisch haltbar darthun* 9,19. — Vgl. व्यवस्थापक, °स्थापन fgg.

— समव, partic. °स्थित 1) *stehend* so v. a. *sich nicht rührend, unbeweglich* MBu. 6,2366 (nach der Lesart der ed. Bomb.). R. 3,34,11. 6,87,8. Vikr. 4. Bnic. P. 3,19,11. — 2) *stehend* so v. a. *seine Stelle habend:* पत्र (मूले) सासीत्समवस्थितः R. 4,1,8. नीचारिभीशे यत्नः Varâh. Bgn. 8,7. Mink. P. 54,32. mit gen. *vor Jmd stehend* Bnic. P. 6,11,14. — 3) *gerüstet —, bereit* zu (dat.): युद्धाय MBu. 3,633. त्रासाय Hariv. 15740. — Vgl. समवस्था fg. — caus. 1) *zum Stehen bringen, anhalten:* रथम् MBu. 3,837. — 2) *befestigen:* (मया कुलम्) समवस्थापितं पुष्मासु कुलतन्तुषु MBu. 1,4365.

— आ 1) *stehen auf, besteigen; sich einstellen bei, sich befinden:* चक्रे RV. 1,164,13. 5,56,3. पर्यंतीषु रथेषु 60,2. 6,66,6. 9,96,7. mit acc.: Wagen 1,35,1. 183,3. 2,12,8. 23,3. आ वा गिरो रथीरिवास्थुः 8,84,1. Rosse (so v. a. Wagen mit Rossen) 1,177,2. AV. 13,2,28. नावम् RV. 1,116,3. उपस्थम् 2,35,9. योनिम् 3,5,7. पथः 2,24,7. विदथानि 3,14,1. 38,5. आ रोदसी चित्रमस्थात् 61,6. सद्मान् 4,1,17. धन्वातिष्ठन्नोषधीः 33,7. 9,84,1. धामानि दिव्यानि 10,13,1. वातान् 136,3. AV. 2,13,4. भुवनानि 7,110,2. 13,2,33. Çat. Br. 5,1,5,15. उपानहौ Âçv. Grihj. 3,8, 19. Çânkh. Çr. 2,21,6. — रथम्, स्यन्दनम् MBu. 1,3077 (med.). 3,11776 (med.). 16651. 4,1027. 5,7101. R. 2,46,30 (44,25 Gorr.). 59,6. 83,1 (90,1 Gorr.). Bnic. P. 3,21,36. गत्तं रथं वा MBu. 3,15650. शिबिकाम् R. 2,92,35. 5,27,11. नावम् 2,52,74 (12 Gorr.). पुरम् (eine fliegende *Stadt*) MBu. 3,12220. *sich begeben zu, nach, betreten:* उद्भ्रान्तं स्थानम् MBu. 3,15734. अपराजितां वास्तुय प्रत्रेष्टिशम् M. 8,21. 11,104. R. 1, 60,21. R. Gorr. 1,58,2. पदम् Kumâras. 6,72. Bnic. P. 4,12,25. *fg.* वैष्णवं मार्गम् R. 2,52,65. कापथम् 108,7. परब्रह्मात्मनास्थीयताम् Spr. (II) 1402. पादयोर्मूलमास्थाय *sich festsetzend in* Suçr. 1,253,16. — 2) *befolgen, sich richten nach:* पितुर्वचनम् R. 1,41,12. तवानुशासनम् Bnic. P. 1,17,37. — 3) *gelangen zu, theilhaftig werden:* पिण्डस्थैर्यम् Sarvadarçanas. 99,20. — 4) *antreten, sich anschicken zu, sich machen an, greifen zu, einschlagen* (ein Verfahren), *sich hingeben; anwenden:* शीघ्रानास्थाय वाजिनः so v. a. *mittels rascher Pferde* (nicht zu *Pferde sitzend*) R. 2,71,13. मकरत्वम् MBu. 3,11964. विषमग्निं व्रतं रज्जुमास्थास्ये 2163. R. 2,29,20. स्वरूपं दिव्यम् MBu. 3,11977. पत्युर्मे रूपम् Hariv. 4619. रातसीं तनुम् R. 1,40,7. 6,1,6. आचार्यमूर्तिम् Sarvadarçanas. 98, 8. तस्य वेषम् Hariv. 8600. कृषिगोरक्षम् M. 10,83. मायाम् MBu. 3,765. 12221. Hariv. 9267. R. 4,4,6. पितुर्भगिन्याम् — मातृवद्वृत्तिमातिष्ठेत् so v. a. *beobachten* M. 2,133. वैश्यवृत्तिम् 10,101. सद्वृत्तम् 123. वायोरतिगतिम् Hariv. 10444. परमं तपः Maitrjup. 1,3. MBu. 3,8514. 8880 (med.). R. 1,65,4 (med.). R. Gorr. 1,44,10 (med.). कौमारं व्रतम् MBu. 4,122. 5,7356. नियमम् R. 1,21,4 (med.). Bnic. P. 2,9,39. 7,12,17. विधिम् M. 11,66. MBu. 1,4627 (med.). एतद्विधानम् M. 7,226. 8,244. यानम् *einen Marsch unternehmen* 7,181. स्वयंवरम् MBu. 3,2787. योगम् *Mittel* 1639. 7,5704. Kathâs. 45,119. den Joga Bnic. P. 2,6,34. उपायान् 4,18,4. कूर्म संकोचम् Spr. (II) 1957. प्रयत्नम् M. 7,68. यत्नम् 8,302. 9,16. 252. 333. MBu. 3,17045 (med.). R. Gorr. 1,60,13. Spr. (II) 1113. 7298. Çâk. in Bgn. Âr. Up. S. 189. दयाम् Spr. (II) 2711. अविश्रासम् 695. संतोषं परम् 6708. ज्ञवं परम् MBu. 3,2793. संधमं परम् R. 1,63,37. मतिं सुदृढाम् Spr. (II) 398. कां बुद्धिमास्थाय so v. a. *in welchem Gedanken? in welcher Voraussetzung?* MBu. 5,7054. R. 3,75,26. — 3) med. *beitreten* so v. a. *anerkennen, für wahr halten* P. 1,3,22, Vârtt. Vop. 23,8. नित्यं शब्दमातिष्ठते Schol. zu P. und Vop. स्थापित्वमास्थाय, यच्चात्मा कश्चिन्नास्थीयेत स्थायी Sarvadarçanas. 24,19. *fg.* इत्यास्थियत 41,2. प्रस्थानात्रयमास्थित 61,14. 97,12. 130,4. — 4) mit loc. *halten zu Jmd* MBu. 3,2804. *halten —, einen Werth legen auf Etwas* Spr. (II) 6479. — 7) *stehen:* पपौ तस्य समुद्रस्य गदापाणिर्विकोषणः । पदेषु प्रतिघातार्थमातिष्ठत्सकृ बान्धवैः ॥ R. 5,93,45. vielleicht fehlerhaft für घतिष्ठत्. — 8) partic. आस्थित *a*) in act. Bed. α) *stehend —, sitzend auf* (acc.): रथम् MBu. 3,2868. 11905. 11909. 12030. 5,7124. 7232. Bnic. P. 1,8,8. 10,12. Ragu. 1,36. हिपम् Kâm. Nitis. 15,31. आसनम् 11,18. Bnic. P. 2,9,16. नौयानवरम् R. 1,9,65 (63 Gorr.). कूर्म्यायम् Kathâs. 30,1. *sich aufhaltend, — befindend an, in:* नदीं दिव्याम् MBu. 13,713. नृपतेः पार्श्वम् 3,16636. आदर्शतलम् R. Gorr. 2,2,23. *betreten habend:* इमं विघ्नकरमार्गम् Kâm. Nitis. 10,41. *eingegangen in:* स्वर्गम् R. 2,64,17. मामेवानुत्तमां गतिम् sagt Krishna Bhag. 7,18. मरुन्विघ्नः प्रवृत्तो ऽयं दक्षिणामास्थितो दिशम् *heimgesucht habend* R. 1,61,2. — β) *gelangt zu:* ऐश्वर्यम् Spr. (II) 5012, v. l. सैसिद्धिम् Bhag. 3,20. *gerathen in:* कामस्य वशम् R. 2,49,4. — γ) *der Etwas angetreten —, zu Etwas gegriffen —, an Etwas sich gemacht —, zu Etwas sich angeschickt hat:* रातसं द्रूपम् R. 3,50,26. किम् Spr. (II) 1998. तपः MBu. 3,11945. व्रतं मौनम् Bnic. P. 3,24,42. चित्तामौनम् Vikr. 130. नियमम् M. 9,75. MBu. 3,16633. 5,5424. नैत्यकं विधिम् M. 2,104. 5,86. ध्यानम् R. 1,2,30. अयनानम् Çiç. 9,64. सद्मम् MBu. 12,4237. यत्नम् Spr. (II) 4375. पितुरानृण्यम् R. ed. Bomb. 1,76,2. धर्मम् R. Schl. 2,45,11. वैरम् MBu. 1,1155. एकत्वम् Bhag. 6,31. सौख्यम्, योगम् 5,4. Bnic. P. 3,3,19. 23,12. पुण्ये विलयमास्थिते LA. (III) 90,19. die Ergänzung im comp. vorangehend: स्तोत्रमत्रास्थिता 32,19. — *δ*) *was (schädigend) zugestossen ist, u. Schaden* (am Körper): तेन ते मुम्भ आस्थितम् AV. 4,17,3. 6,14,1. यत्ते क्रूरं पदास्थितम् so v. a. *was wund und krank ist* (*bevorstehend* Maudh.) VS. 6,15. — ε) *dastehend:* वस्त्रो गृहीत्वा गत्रभीत आस्थितः Bnic. P. 5,13,13. *sich befindend, lebend:* एवामुखम् Hit. 44,6. — ζ) *anerkennend, als wahr annehmend* Sarvadarçanas. 22,11. — *b*) mit pass. Bed.; = आक्रान्त Halâs. 4,96. α) *worauf man sich*

oder *sitzt, eingenommen:* विष्टर् Rāgān. 15,79. दानवास्थितः शैलः R. 4, 12,5. 5,12,39. *betreten* P. 2,3,12, Vārtt. 2. Bhāg. P. 3,31,33 (wenn man आस्थिते liest). अगणितवागुरिकैः प्रथमास्थितं वनम् Rāgān. 9,38. पद्व्यो ऽस्मदास्थिताः Bhāg. P. 4,4,21. वनास्थितं ते पितृभिः पदम् 12,26. — β) *angetreten, worzu man gegriffen —, woran man sich gemacht hat:* तपस् MBn. 1,7641. महाव्रतु R. 1,40,12. पितुरानृण्यम् 76,2. — γ) *geleitet auf* (loc.): असद्वि पथि Bhāg. P. 3,31,32. — Vgl. आस्था fgg., आस्थापिका, आस्थेय. — caus. act. med. 1) *betreten —, besteigen lassen:* Wagen Kāç. 15. अश्ममण्डलम् 54. 76. — 2) *bleiben machen, festhalten:* प्राणान् Kāç. 44. RV. 10,56,6. 102,10. 120,7. आस्थापयत्त युवतिं युवानः 167,6. — 3) *herbeischaffen* R. 3,16,23. — 4) *infigere:* तस्मिन्वधम् Ait. Br. 3,6. *thun in:* कनकाम्बुनं कलशे Kātyār. 25,232. Bhāg. P. 2,2,10. — 5) *Jmd einsetzen, beauftragen mit* (dat.): आत्मजमखिलधरामण्डलस्थितिगुप्तये Bhāg. P. 5,1,22. — 6) *Jmd* (gen.) *Etwas anthun:* मा स्वधितिस्तन्वः मा तिष्ठिपत्ते *thue dir nicht Schaden an* RV. 1,162,20; vgl. आस्थित a) δ) oben. — 7) *stopfen* (wie Ruhr), *stärken:* प्रमेहिणाम् Suçr. 2,77,12. 86,3. — 8) *einleiten, einführen:* स्थापकः काव्यमास्थापयेत् Sāh. D. 283. — 9) आस्थापित *neben einander gestellt, zusammengerückt;* n. Bez. *eines* Samādhi (vgl. 1. धा mit अभिनि 2) AV. Paipp. 1, 49. 4, 125. RV. Pāiṭ. 4,1. — Vgl. आस्थापन.

— अन्वा (*nach einander*) *betreten, besteigen, erreichen:* स्वैरा तिष्ठतानु VS. 8,19. Çat. Br. 5,1,5,7. Pañcav. Br. 16,11,5. Nir. 6,6.

— अपा *sich entfernen nach:* अरण्यम् Ait. Br. 7,14. v.l. उपा Çāṅkh. Çr.

— उदा *wieder erstehen:* मा पर्जन्यस्य वृष्टेरुत्स्थामामृता वयम् AV. 3, 31,11. — partic. °स्थित (s. auch bes.) nach Kull. zu M. 7,154 = प्रव्रज्यावसितप्रायश्चित्त *ein gefallener Bettelmönch* (als Späher verwandt).

— उपा 1) *sich begeben in:* अरण्यम् Çāṅkh. Çr. 15,18,32. v.l. अपा. — 2) *geschlechtlichen Umgang pflegen mit* (acc.): उपातिष्ठस्व माम् (sagt ein Mann) MBn. 3,10784. — 3) *an Etwas gehen, obliegen:* संध्यामुपास्वाप R. 2,32,3. — 4) partic. °स्थित a) *stehend auf:* रथे Çat. Br. 5,1,5,28. — b) *der sich an Etwas gemacht hat:* मौनव्रतम् R. 1,65,7.

— समुपा 1) *herantreten* Hariv. 9724 (समुत्थाय die neuere Ausg.). °स्थित (ed. Bomb. समुपस्थित) *herangekommen* MBn. 3,2278. तं देशम् *an diesen Ort gekommen* R. 4,56,1. — 2) *an Etwas gehen, obliegen:* तं धर्मम् MBn. 1,7452.

— प्रा Prāyoḍ. 2,4. 3,1. 5 fehlerhaft für प्र.

— प्रत्या *Stand halten* AV. 5,5,3.

— व्या caus. (*nach verschiedenen Seiten*) *wegschicken:* दिशः TBr. 1,7,2,1.

— अनुव्या caus. dass.: दिशः TBr. 1,8,2,1.

— समा 1) *besteigen:* रथम् Hariv. 9722. *sich begeben zu:* स्वदारम् R. 2,80,5. — 2) *stehen bleiben, Halt machen* Hariv. 6362. — 3) *erlangen, erhalten:* गोभ्यो वृत्तिम् MBn. 12,6941. — 4) *antreten, sich anschicken zu, sich machen an, greifen zu, anwenden:* अश्मवर्षम् MBn. 3, 11967. मम रूपम् *so v. a. annehmen* R. Gorr. 1,49,26. Mārk. P. 20,44. गोपानां भाषाम् MBn. 4,280. यानम् *so v. a. sich auf den Marsch machen* Kām. Nītis. 15,47. आत्मपौरुषम् R. 4,6,5. तपो मरुत् 1,50,24 (तपोवलम् 57,27 Gorr.). दैवं व्रतम् MBn. 3,8481. धर्ममेतम् R. Gorr. 2,61,18. R. Schl. 2,73,9. ब्रिनधर्मम् Verz. d. Oxf. H. 40,a, N. 2. इन्द्रियाणां ज्ञये योगम् M. 7,44. वृत्तिम् 4,2. R. 2,72,49. क्रूरां मतिम् MBn. 1,7663. एतन्मतं समातिष्ठ *so v. a. ausführen* Bhāg. P. 2,9,36. — 5) partic. °स्थित a) *stehend —, sitzend auf:* रथम् R. 2,46,33. एकाग्रे MBn. 3,15652. शालस्कन्ध° R. 2,96,12. — b) *verharrend in:* सत्ये दमे चैव धर्मेषु च R. Gorr. 1,67,21. — c) *der Etwas angetreten —, zu Etwas gegriffen —, an Etwas sich gemacht —, zu Etwas sich angeschickt hat:* भीमव्रतम् R. 5,50,18. कर्मैतत् MBn. 1,1143. तपो घोरम् 5,7392. R. 1,59,17. परं यत्नम् MBn. 3,2823. — caus. 1) *Halt machen heissen:* बलं सर्वम् R. Gorr. 2, 99,1. — 2) *besorgen:* योगं बलानाम् R. Gorr. 2,89,11.

— उद्, der Anlaut der Wurzel fällt aus VS. Paiṭ. 6, 29 (उत्थ zu sprechen). AV. Paipp. 2,18. P. 8,4,61. Vop. 3,170. ohne Avagraha VS. Paiṭ. 5,28. AV. Paipp. 4,62. 1) *aufstehen* (auch vom Schlafe und Tode), *aufspringen, sich aufmachen:* उत्संकुचास्वात् RV. 2,38,4. 1,33,14. 40,1. 2,15,7. उद्यन्तिष्ठ प्रत्या तनुष्व 4,4,4. 7,33,1. 8,65,10. AV. 4, 12,6. उत 14,2,19. Savitar RV. 2,38,1. 5,71,4. 7,38,2. die Morgenröthe 77,2. देवहूना: सेनयोत्तस्थिवांसः AV. 5,93,1. उत्थाय वक्ती भव VS. 11,64. Çat. Br. 14,5,4,15. — उत्तिष्ठेत्प्रथमं चास्य चरमं चैव संविशेत् M. 2,194. 4,93. 7,37. 145. 225. उत्थायासनं क्षिप्त्वा MBn. 1,7722. 3,548. 2352. उत्तिष्ठ किं शेषे 15195. 15199. 16471. 16548. 5,6042. 7190. R. 1,2,27. 2,42,18. 56,4. 71,20. 72,24. Rāgān. 2,61. Çiç. 16,12, v. l. 18,15. Vikr. 31,18. Çic. 9,39. Spr. (II) 1190. fg. 1205. 1477. Kathās. 18,155. fg. 369. 26,68. 50,103. fg. Bhāg. P. 4,4,21. 24,78. 9,16,8. Pañcat. 64,4. Hit. 23,8. Daçak. 66,1. मेदिन्याः R. 2,42,17. शयनात् Vop. 23,9. Çiç. 28,8. Bhāg. P. 1,11,33. Bhatṭ. 15,17. शयनात् Pañcat. 44, 24. Vet. in L.A. (III) 20,7. उत्तस्थुषः शिशिरपत्ल्वलपङ्कमध्याद्भूतवराहकुलस्य Rāgān. 9,59. शय्याया उत्थायं oder शय्योत्थायं धावति P. 3,4,52, Schol. med. MBn. 3,17419. Bhāg. P. 1,6,19. 8,5,15. चित्तं ब्रह्मसुखस्पृष्टं नैवोत्तिष्ठेत *wiedererwachen* 7,15,35. — मूत्रं नोत्तिष्ठता कार्यम् *aufrecht stehend* MBn. 13,5015. — *aufgehen* (von Sonne und Mond) MBn. 4,1068 (med.). R. 1,35,17 (med.). 3,36,17. Rāgān-Tan. 6,63. *sich erheben, aufsteigen;* von Wolken am Himmel MBn. 3,12379. von Brüsten Spr. (II) 1203. von Wellen Kathās. 25,43. *hervorbrechen,* von Räubern Kathās. 13,29. — 2) von einer Opferhandlung u. s. w. *aufstehen* so v. a. *beendigen, schliessen* Ait. Br. 4,17. उदृचं गत्वोत्तिष्ठति Çat. Br. 4,6,8,2. सत्त्रात् Pañcav. Br. 15,12,2. Liṭ. 8,2,18. यजनात् Pañcat. 208,24. — 3) *sich erheben, aufsteigen, zum Vorschein kommen, erscheinen* (namentlich Licht, Glanz); *entstehen, ausschlagen, auswachsen* (von Pflanzen) RV. 6,64,1. शोचिः 7,16,3. Stimme u. s. w.: वाचः 5,76,1. 10,103, 9. मा घोषा उत्थुः AV. 7,52,2. प्रुष्मासः RV. 9,53,1. AV. 11,5,5. याकृतिभिरग्निः Çat. Br. 10,6,2,8. तत्र उडुम्बरः उदतिष्ठत् TBr. 1,1,3,10. यावत्प्रजनाद्भूतानां भूयांस उत्तिष्ठन्ति TS. 2,5,4,4. 3,5,2,3. यतो हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति Çat. Br. 14,4,2,1. — धन्वन्तरिस्ततो देवो वपुष्मानुदतिष्ठत *kam* (aus dem Meere) *hervor* MBn. 1,1149. यत्र ते इन्द्रस्तत्रोत्थास्यन्ति वाजिनः 13,214. Naish. 22,44. यावत्तोत्तस्थे (impers. तया log. Subj. = मुहूर्तम्) देवात्स्वाहासवेश्मनः (der abl. im Sinne des loc.; vgl. 10, 52) Kathās. 29, 94. उत्थातुकामप्रकृती 37, 74. नास्मात्पतित्वोत्थीयते (impers.) जम्भः Rāgān-Tan. 4,568. पत्तिलमुत्तिष्ठेत् *sich bildet* Suçr. 2,36.

2, 43,12. पदुत्तिष्ठति शक्रकेतौ *sich zeigt* Varāh. Bṛh. S. 43, 37. यासौ वर्षसहस्रान्ते मूर्तिरुत्तिष्ठते मम MBh. 7, 1282. महाब्धेः सम्यानमुदतिष्ठत 2, 2275. उत्थाय रुदि लीयते दरिद्राणां मनोरथाः Spr. (II) 1203. घनर्घाः, अर्घाः 4478. घनर्घपरंपरा Rāja-Tar. 5, 262. दक्षनाकन्दौ समं तत्रोदतिष्ठताम् Kathās. 16, 15. अङ्गपीडा Mālav. P. 69, 11. — 4) *einkommen, eingehen* (von Geldern): ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति P. 1, 3, 24, Vārtt., Schol. Vop. 23, 9. पदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां तयि तत्फलम् Cic. 46. — 5) *sich zu einer That erheben, mit Energie an Etwas gehen;* med. घनूर्धकर्मणि P. 1, 3, 24. ईक्षायाम् Vārtt. Vop. 23, 9. रुदरदीर्वल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ Bhag. 2, 3. तस्मादुत्तिष्ठ पुढाय कृतनिश्चयः 37. उत्तिष्ठध्वं नरव्याघ्राः सज्जीभवत माचिरम् MBh. 3, 14940. R. Gorr. 2, 20, 22 (infin.). 4, 61, 59 (med.). मुक्तावुत्तिष्ठते P., Schol. Vop. 23, 9. कार्याय Spr. (II) 3976. मित्रार्थे Bhatt. 8, 12. 20, 18. उत्तिष्ठमान *an Macht zunehmend* Spr. (II) 1192. — 6) partic. उत्थित *a) aufgestanden* MBh. 5, 7232. R. 5, 3, 6. Ragh. 2, 61. 3, 61. Çiç. 9, 72. जीवन् Kathās. 72, 294. Bhāg. P. 3, 28, 37. 5, 16, 33. Pañcat. 38, 7. Vedānt. (Allah.) No. 89. मृतोत्थिता Kumāras. 7, 4. स्वस्थोत्थित Kathās. 22, 248. शयनात् Mṛcch. 109. धर्मासनात् Çiç. 60, 17. fg. *aufgestanden so v. a. gesund geworden* Harīv. 9521 (vgl. MBh. 12, 13220. fg.). वेदिप्रान्तादृषिणाः *aufgesprungen* ad Çiç. 78. *aufrecht stehend* AV. 9, 7, 19. MBh. 1, 764. 771. घाशोविष Bhāg. P. 3, 18, 24. मरुद्दधि *hoch angeschwollen* R. 2, 41, 12. *aufgerichtet, hoch dastehend* MBh. 3, 2436. Ragh. 12, 12, 49. Fahne Varāh. Bṛh. S. 43, 67. मेघ MBh. 12, 4279. घामृक्तोत्थितपाद Kathās. 18, 89. *emporragend aus:* तोयोत्थित (पुलिन) AK. 1, 2, 2, 9. — *b) herausgewachsen:* दूर्भः पृथिव्याः AV. 8, 43, 2. पृथिव्या घधि TBr. 1, 2, 4, 3. *herausgekommen:* मलिले । घात्मानं मज्जयन्विपाशः पुनरुत्थितः MBh. 13, 192. स्नानोत्थित Kathās. 24, 95. वनदेवताकरतलेरापर्वभागोत्थितैः *herausstechend* Çiç. 80. स्वदेशात् *aufgebrochen von, weggegangen aus* Rāja-Tar. 3, 370. *hervorgegangen, entstanden* RV. 10, 149, 2. घद्यो ग्निर्व्रसतः तत्रमश्नतो लोकम् M. 9, 321. Spr. (II) 6093. Bhāg. P. 4, 16, 11. एषो ग्निरुत्थितः कष्टः MBh. 3, 2847. राज्ञो रुदये ग्निः Ragh. 4, 2. क्रुताशनस्य पूर्वोत्थित इव धूमः 7, 40. वाजिभी रथैसि 6, 32. Çiç. 9, v. l. Varāh. Bṛh. S. 103, 13. दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता । यदि भाः सदृशी Bhag. 11, 12. तत्रोकण्ठोत्थिताः स्वराः AK. 1, 1, 2, 1. वचम् Ragh. 2, 61. व्यसने चोत्थिते रिपोः *zum Vorschein gekommen, sich zeigend* M. 7, 183. मरुत्पाताः R. 3, 29, 16. Varāh. Bṛh. S. 3, 20. 36, 3. 4. 53, 34. 68, 44. मरुती वृद्धिः R. 4, 61, 22. वेगः क्रोधहर्षयोः Spr. (II) 6822. परिसंवत्सरोत्थित (विकार) Suçr. 1, 31, 1. पित्तोत्थित (रोग) 174, 10. द्रोह Bhāg. P. 1, 8, 51. सर्वाङ्गोत्थितवेदन 3, 31, 7. मन्यु 4, 25, 8. उपसर्गाः 11, 28, 35. im comp. *an der unrechten Stelle stehend:* सोत्कृष्टनिरुत्थित (so ed. Bomb.) st. उत्थितसो° MBh. 4, 888. ईषत्पत्तोत्थित st. ईषदुत्थितपत्त Harīv. 1131. रोमाञ्चोत्थिगात्र st. उत्थितरो° 10536; vgl उच्चत unter यम् mit उद् 1). उत्थित = उत्पन्न AK. 3, 4, 24, 37. H. an. 3, 251. fg. Med. L 98. — *c) eingekommen* (von Geldern u. s. w.): सर्वभूम्युत्थितफल Spr. (II) 4600. — *d)* = प्रोद्यत AK. H. an. Med. *zu einer That bereit, mit Energie sich einer Sache hingebend:* सदोत्थितः कर्मसु चैव दक्षः MBh. 1, 3232. Kām. Nītis. 8, 49. सततोत्थित 1, 17. Spr. (II) 3131. लघूत्थित *schnell bei der Hand seiend* Kām. Nītis. 18, 66. धर्मकार्येषु चोत्थिताः MBh. 13, 1660. कर्मणि (so ist zu lesen) R. 5, 33, 20. घाकृत्वे 3, 32, 1. दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थितः Spr. (II) 4503. हिंसायाम् 4604. युद्धाय Pañcat. ed. orn. 57, 10. — *e) hoch* —, *oben an stehend* RV. Prāt. 18, 3. उत्थिता एव पूयसे जनाः (Gegens. शत्रुवत्पतितः) Spr. (II) 1206. = वृद्धिमत् AK. H. an. Med. — *f)* n. ध्रुवं नौ घस्तु चरित्रमुत्थितं च *Gang und Stand* AV. 3, 15, 4. — Vgl. उत्थ fgg., उत्थायिन् fgg., मधूत्थित, सुप्तोत्थित. — caus. 1) *aufstehen heissen, auf die Beine bringen, aufjagen:* eine Kuh AV. 7, 98, 1. 10, 1, 29. उत्थापय सीदतो वृषे 12, 3, 30. Ait. Br. 5, 27. TBr. 2, 2, 6, 7. पशुषा Çat. Br. 12, 4, 2, 2. 13, 3, 2, 2. Kātj. 39. 80. पतितम् MBh. 5, 7251. 14, 2022. R. 2, 57, 26. 72, 28. 77, 9. R. Gorr. 1, 79, 29. Ragh. 14, 39. Mālav. 39, 17. Kathās. 18, 164. Prab. 117, 14. Daçak. 74, 4. तत्पात् Rāja-Tar. 5, 61. *wecken, auferwecken* MBh. 1, 1337. 3245. 3297. 3, 16319. Mṛcch. 96. Kathās. 72, 293. 96, 42. Bhāg. P. 3, 2, 21. 10, 51, 24. 12, 6, 70. Vet. in LA. (III) 26, 2. Verz. d. Oxf. H. 49, *a*, 28. *aufstellen, aufrichten:* न्यग्रोधगुङ्गान् Gorr. 2, 6, 6. पात्रम् Kātj. 6. 42. 52. ein Banner R. 2, 77, 9. Varāh. Bṛh. S. 43, 58. 59 (उत्थापयेत्). einen Gegenstand von der Erde *aufheben* Spr. (II) 3261. Hit. 42, 14. — 2) *errichten so v. a. erbauen:* यामान् MBh. 12, 2620. — 3) *herausholen:* aus einem Sumpfe Hit. 12, 4. *austreiben* Ait. Br. 7, 27. 29. *entsenden* Kathās. 45, 277. उदानं नाभिचक्रतः *heraus — oder hinaufdrängen* Bhāg. P. 4, 4, 25. — 4) *erregen, hervorbringen:* रेणुम् Ragh. 7, 36. वृननी: RV. 1, 86, 10. मायामुत्थापितं वस्तु Sin. D. 420. Verz. d. Oxf. H. 55, *a*, 22. — 5) *beleben:* प्राणो रुदं सर्वमुत्थापयति Çat. Br. 14, 8, 14, 1. Kaush. Up. 3, 3. *ermuntern* Harīv. 8341. R. 4, 24, 40. Kathās. 111, 39. *anstacheln, aufhetzen* Kām. Nītis. 5, 40. Spr. (II) 2770. Rāja-Tar. 1, 136. 5, 438. — Vgl. उत्थापन उत्थाप्य. — desid. 1) *aufstehen wollen:* ein Kind Çat. Br. 11, 1, 6, 3. — 2) *eine heilige Handlung abzubrechen gedenken, vor der Vollendung derselben weggehen wollen* Naishadh. 280, 3.

— घध्युद् *sich aufmachen von:* देशेभ्यः Pañcat. Bṛh. 25, 6, 3.

— घनूद् *aufstehen nach, sich erheben hinter u. s. w.:* घमूर्तो घनु VS. 4, 28. TS. 6, 2, 8, 3. Ait. Br. 1, 22. क्षेत्रारमनूत्थाय यजेत् Âçv. Çr. 4, 10, 7. सुप्तोत्थितो प्रातरनूदतिष्ठत् Ragh. 2, 24. Schol. zu Kāç. Çr. 13, 1, 10. घनूत्थिता प्रियया *gefolgt von* Mālav. 81. तं ज्ञायमानं घोषा उलूलवो ऽनूदतिष्ठन्सर्वाणि (ज्ञ° gedr.) च भूतानि सर्वे च कामाः Kāṭhān. Up. 3, 19, 3.

— घभ्युद् 1) *sich aufmachen gegen, kommen zu* (acc.) AV. 15, 8, 3. Çat. Br. 1, 6, 2, 37. 4, 6, 9, 11. लोकान् 11, 1, 6, 5. पूर्णात्पूर्णम् Pañcat. Bṛh. 15, 12. 3. *sich erheben zu:* ग्राम् Uttarar. 64, 16 (83, 5). *sich erheben um Jmd zu begrüssen, Jmd* (acc.) *entgegen gehen* Çiç. 37, 22. Mālav. 46, 3. 81. — 2) *aufstehen so v. a. sich auflehnen,* — *widersetzen* Mālav. P. 122, 11. — 3) *gehen* —, *sich machen an:* घातिथ्यकर्म MBh. 8, 634. — 4) *abstehen von* (abl.) Çaṅk. zu Kāṭhān. Up. S. 52. — 5) partic. घभ्युत्थित *a) aufgestanden, der sich erhoben hat* Daçak. 69, 10. Pañcat. 249. 10. ein Berg (aus dem Meere) R. 5, 7, 22. *der sich erhoben hat um Jmd zu begrüssen, Jmd* (acc.) *entgegen gehend* Harīv. 9842. 12206. Bhāg. P. 4, 12, 21. *aufgegangen* (vom Monde) Harīv. 4336. R. 5, 11, 1. 19, 35. — *b) hoch stehend, sich auszeichnend durch:* घाभिर्विग्राभिर्विरूपा Verz. d. Oxf. H. 217, *a*, 23. — *c) erschienen, sich zeigend* Ragh. 1, 53. Varāh. Bṛh. S. 34, 21. 79, 23. Viṣṇ-P. bei Muir, ST. 1, 30, N. 53. — *d) gegangen an, sich anschickend zu:* घर्थम् *zu einem Geschäft* Nir. 9, 1. भोक्तुम् MBh. 12.

4130. ohne Ergänzung Bhâg. P. 3,26,62. so v. a. *gerüstet, bereit:* नित्यमभ्युत्थितात्मना Harîv. 4245. — *c) angefallen, angegriffen:* अरेणा रोहिणी R. Gorr. 2,125,3. — Vgl. सभ्युत्थान fgg.

— समभ्युद् *aufgehen* (von einem Gestirn): प्रतिकूलेषु गगणे समभ्युत्तिष्ठते बुधः Harîv. 1336.

— उपाद् *sich aufmachen zu* TBr. 1,4,9,1. *vor Jmd aufstehen, entgegentreten, sich Jmd nähern:* अग्निरुपोत्तिष्ठन्नब्रवीत् Ait. Br. 3,49. उत्तरतः 3,14. 8,9. तस्यै उपोत्थाय कर्णमा जपेत् TS. 7,1,6,5. 5,48,1. Âçv. Çr. 1,10,4. 3,3,19. Çat. Br. 1,1,4,13. 2,4,3. 2,4,2,9. 14,6,9,2. Kauç. 3. 70. उपोत्थित VS. Prât. 6,29. *herbeigeschafft:* कृपायै VS. 8,38.

— पर्युद् 1) *sich erheben von:* उत्तिष्ठन्वोचे परि बर्हिषो नृन् ṚV. 7, 33,1. — 2) *Jmd* (acc.) *erscheinen:* अग्निः Pârâṇ. Br. 8,8,22. — Vgl. पर्युत्थान.

— प्रोद् 1) *aufspringen:* प्रोत्थाय प्रययौ रणात् Kathâs. 30,16. Mṛicch. 84,22. — 2) partic. प्रोत्थित *hervorgebrochen:* °कन्दलोदल Ṛt. 2,5. *hervorgegangen aus:* सम्बुधिप्रोत्थितश्री Prab. 81,14. fg.

— प्रत्युद् *aufstehen vor* (acc.), *entgegengehen:* मेघोसम् Ait. Br. 2,20. Çat. Br. 3,9,3,23. गाः Kauç. 21. M. 2,119. 130. MBh. 1,4917. 3,4023. 10778. 5,1194. 7,2823. 13,2811. 15,737. R. 1,72,14. 7,1,13. Bhâg. P. 1,4,33. 13,36. 5,7,13. 10,8,2. partic. प्रत्युत्थित mit act. Bed. R. 6,82, 143. mit acc. MBh. 13,1413. स्वासनेभ्यः Bhâg. P. 1,19,28. — Vgl. प्रत्युत्थान fgg.

— व्युद् 1) *sich nach verschiedenen Seiten erheben:* उदस्य शोचिरस्थादीदियुषो व्यध्वरम् ṚV. 8,23,4. — 2) *sich abwenden von* (abl.), *aufgeben:* पुत्रेषणायाः Çat. Br. 14,6,3,1. 7,2,26. पश्वभावात् Çâṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 234. — 3) *von seiner Pflicht lassen, sich vergessen* MBh. 13,1511 (med.). R. 6,16,2. — 4) partic. व्युत्थित *a) stark in den Meinungen auseinander gehend:* इदं मेय इदं मेय इत्येवं व्युत्थितो जनः MBh. 14,1362. — *b) stark erregt:* व्युत्थितेन्द्रिय Harîv. 4620. °चित्त Sarvadarçanas. 154,7. — *c) pflichtvergessen* Harîv. 3121. 9639. R. 5,84,9 (mit und ohne धर्मात्). 6,89,3. Mârk. P. 122,12. — Vgl. व्युत्थातव्य, व्युत्थान (die 2te Bed. zu streichen, da die Stellen zu 1) gehören). — caus. 1) *in Frage stellen, ungewiss sein über* (acc.): धर्मम् MBh. 14,1361. — 2) *Jmd abspenstig machen* MBh. 1,7404. — 3) *Jmd beseitigen, absetzen:* (सः) एकाकिनन्दे व्युत्थाप्य देवै राज्ये ऽभ्यषिच्यत Kathâs. 121, 192. इमं (so lesen wir, d. i. पतिं) व्युत्थाप्य पाता (पातेति zerlegen wir in पाता इति, nicht in पात इति) so v. a. *treulos verlassen* 29,89.

— समुद् 1) *aufstehen* (auch vom Schlafe), *sich erheben* Çat. Br. 14,9,4,3. Kauṣh. Up. 2,14. 4,19. Spr. (II) 25. MBh. 5,6059. 7046. 13,2751. Harîv. 9724 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 2,104,16. 3,77,3. 4,49,21. Varâh. Bṛh. S. 78,3. Kathâs. 22,139. 52,116. Mârk. P. 123,29. Pârâṇ. 35,11. 37,22. 48,6. 215,20. Hit. 29,12. द्विजोत्तमङ्गात् R. Gorr. 1,18,25. आसनेभ्यः 2,4,24. *aufrechtstehen* MBh. 1,968. 3,16574. R. 5,103,3. Kathâs. 22,349. Mârk. P. 16,65. *aufstehen nach einer Krankheit, sich erholen* Kâraka 1,10. *sich erheben,* von Wolken MBh. 3,12882. Kathâs. 12,110. 25,41. — 2) *herauskommen —, hervorgehen —, entspringen —, entstehen aus* (abl.), *zum Vorschein kommen, sich zeigen* Çat. Br. 14,5, 4,12. 7,2,13. Kâṭhân. Up. 8,2,1. fgg. 3,4. 12,2. 3. MBh. 3,16626. 13, 215. ज्ञाङ्क्वचीतरात् । तस्मादेव (im Sinne des loc.; vgl. 29,34) समुत्तस्थौ यस्मात्पूर्वमवातरत् ॥ Kathâs. 10,53. यष्टिः पुत्रसहस्राणि MBh. 3,8851. Harîv. 12187. eine Krankheit Çârîr. Gṛhy. 5,6. दोषाः R. 5,87,18. — 3) *sich zu einer That erheben, an's Werk gehen, sich rüsten:* तस्मिन्कर्मणि MBh. 1,1119. तद्विज्ञेतुं गोधनम् 4,1158. Varâh. Bṛh. S. 74,3. — 4) partic. समुत्थित *a) aufgestanden, sich erhoben habend* MBh. 4,862. R. 2, 83,1. R. Gorr. 2,58,1. योगतत्परात् Bhâg. P. 2,10,18. *hoch emporragend:* ein Berg R. Gorr. 2,103,33. 5,7,21. *hochgehend:* Wellen MBh. 3,12080. 13,1339. *aufgezogen:* Wolken Varâh. Bṛh. S. 30,25. *aufgestiegen:* Staub Bhâg. P. 4,14,38. — *b) herausgekommen —, hervorgegangen aus* (abl.), *zum Vorschein gekommen, erschienen:* क्रूरात् MBh. 1,155. Kathâs. 26, 91. अधराग्नेः शिखा R. 2,114,5. अङ्कुरः पर्वणः H. 1119. पालिसमुत्थितश्मश्रु Hit. 130. पत्नी *gewachsen* R. 4,63,3. नादः कूपात् Pârâṇ. 57,15. — — Çvetâçv. Up. 2, 12. R. 2,43,20. Bhâg. P. 3,26,38. परिवेष Varâh. Bṛh. S. 34, 18. उत्पाताः R. 3,30,3. पतग्रेव समुत्थितं दुःखम् MBh. 1, 6118. भय Harîv. 6447. भयं मत्तः समुत्थितम् R. 5,22,2. त्वयि कामः 24,3. निश्चय 5,10,32. पापबुद्धि 2,21,5. धनं दण्डसमुत्थितम् so v. a. *Strafgelder* M. 9,222. — *c) der sich zu Etwas erhoben hat, gerüstet:* समुत्थाने R. 3,49,51. निर्मथितुम् Bhâg. P. 8,7,9. ohne Ergänzung 4,4,10. R. 5,17, 34. — Vgl. समुत्थ fgg. und समुत्थेय. — caus. *Jmd aufstehen heissen, aufrichten, aufheben* MBh. 1,6588. 8,1443. R. 2,42,10. 5,91,20. Bhâg. P. 4,9,46. *auferwecken* R. 1,1,83. — Vgl. समुत्थाप्य.

— उप, °स्थेयम् ved. Schol. zu P. 3,1,86. 4,117 (°स्थेयाम् fehlerhaft). med. मङ्गकरणे, als intrans. und देवपूजासंगतकरणमित्रकरणपथिषु, act. med. लिप्सायाम् P. 1,3,25. fg. nebst Vârtt. Vop. 23, 10. fgg. 1) *stehen bei, sich stellen neben* (loc. acc.): उपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य ṚV. 1,162,21. 2,3,10. चित्रेभिरभ्रेरुषं तिष्ठसो रवम् 5,63,3. 10,117,3. AV. 2,1,4. Gobh. 3,10,4. यत्रे Kâṭh. Çr. 12,6,1. उपस्थायं चरति यत्समारत *auf was er trifft, daran hält er sich und läuft weiter,* ṚV. 1,145,4. — उपस्थाय भास्करम् *sich gegen die Sonne stellend* M. 2,48. उपतिष्ठति तिष्ठन्तम् (das Schicksal) *steht an seiner Seite, wenn er steht,* Spr. (II) 7139. निर्मन्थितान्हि पितर उपतिष्ठन्ति तान्द्विजान् M. 3,189. तमद्यमुपतिष्ठन्तो R. 1,13,38. सर्वाः स्वानालयान्यान्तु एका मामुपतिष्ठतु *bleibe bei mir* MBh. 13, 1454. उपतस्थुः कुलप्राप्या पाण्डवा पाण्डुनन्दनम् *waren in seinem Gefolge* Harîv. 6494. तं परिवार्योपतस्थिरे *umstanden ihn* MBh. 1,3057. 3,11778. — 2) *sich* (bittend, verehrend) *stellen vor, Jmd angehen;* überh. *sich nähern:* इमा उ त्वा गिरो देवयन्तीरुप स्युः ṚV. 7,18, 3. 23,3. 2,5,6. मातरम् 3,48,3. 4,41,3. दिवम् 1,68,1. राज्ञीनम् 6,8,4. धीभिः 8,90,16. 91,13. 10,93,17. अग्निम् (med.) Çat. Br. 1,9,3,18. 22. 7,2,1,18. आदित्यम् (med.) Ait. Br. 7,20. Kauṣh. Up. 2,7. 8. यो गां विकृन्तन्तं भितमाणं उपतिष्ठति VS. 30,18. उप मेष्ठा न माशिषो देवयोर्धामन्नस्थिरन् (धर्मे TS.) AV. 4,25,6. गणान् (med.) Âçv. Gṛhy. 2,10,8. यत्रोपतिष्ठन्ते (आपः) *wohin sie kommen* Çat. Br. 1,1,1,17. — सं *Jmd sich begeben, sich Jmd nähern:* स रात्रानमुपातिष्ठत् MBh. 3,2625. न त्वेनमुपतिष्ठन्ति कृतपुत्रं तदग्रयः 10773. 12046. 13165. 13383. 13,5795. R. 1,29,23. R. Gorr. 2,67,14. शक्रमुपस्थाय Raghu. 1,78. med. MBh. 1, 1120. 2326. 4939. 5946. 2,1589. 3,1614. 2296. 2871. 8693. 12808. 13425. 16809. 4,560. R. 2,50,17 (47,3 Gorr.). R. Gorr. 1,31,15. 2,54,27. 3,

32, 8. LA. (III) 90, 7. Bhatt. 3, 68. 6, 42. 9, 95. सत्तमुपतिष्ठते साधुः Vop. 23, 11. pass.: उपास्थायिषि (so mit der ed. Calc. zu lesen) Daçak. 117, 6. भिनुर्धार्मिकमुपतिष्ठति (oder °ते) *mit einer Bitte angehen* Vop. 23, 12. pass.: उपास्थायि नृपो भद्रैः Bhatt. 15, 51. *sich an einen Ort begeben:* गृहाणि MBh. 1, 3774 (act.). 3, 1834 (med.). समम् Spr. (II) 3136 (med.). *gelangen zu* R. 3, 77, 8 (act.). घर्मो प्रास्ताद्भुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते M. 3, 76. संपदः पदमुपतिष्ठन्ति Çiç. 91, 13. पाषाणो देवत्वमुपतिष्ठते *wird zu einer Gottheit* Spr. (II) 7564. गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते *sich vereinigen mit* P. 1, 3, 23, Vârtt. 1, Schol. पन्थाः सुप्तमुपतिष्ठते *der Weg geht —, führt nach* Sr. ebend. und Vop. 23, 1. ohne obj. *herankommen, sich einstellen;* med. Pañcat. 55, 3. Bhatt. 8, 14. mit infin. *sich irgendwohin begeben um zu* R. 1, 25, 4 (26, 4 Gorr.). — *Jmd zu Diensten sein, — aufwarten:* पतिमुपतिष्ठते नारी Vop. 23, 11. R. Gorr. 2, 100, 40. 5, 14, 37. Kumâras. 2, 64. Kathâs. 22, 10. Bhâg. P. 10, 60, 6. °स्थातुम् R. 5, 14, 36. act. MBh. 2, 102. 395. 3, 943. 1801. 2640. 2643. 3042. 11816. 13498. 14856. 4, 28. 5, 339. R. 1, 16, 38. 2, 8, 10. 65, 7. 91, 13. 5, 26, 30. Kâm. Nîtis. 7, 45. *seine Verehrung bezeigen* (einem Gotte): विष्णुमुपतिष्ठते भक्तः Vop. 23, 11. घादित्यम् P. 1, 3, 23, Vârtt. 1, Schol. MBh. 1, 4405. R. 2, 95, 7. 4, 43, 47. Bhâg. P. 4, 1, 34. 5, 2, 19. 8, 16, 20. 22. 12, 6, 66 (भूपतस्थे). Sarvadarçanas. 77, 22. fg. Bhatt. 1, 8. act. MBh. 3, 11847. R. 3, 12, 3. Bhâg. P. 6, 9, 19. pass. Raghu. 10, 64. mit einem beigefügten instr. *Jmd aufwarten —, seine Verehrung bezeigen mit, durch* med.: वाद्यित्रनृत्याभ्याम् MBh. 1, 7712. नियमेन पर्णैः 3, 17036. वाग्भिरर्घ्याभिः Kumâras. 2, 3. Raghu. 4, 6. रत्नोपहारैः 16, 31. नवेन त्रोटकेन Vikr. 3, 8 (vgl. Çiç. 3, 12). ऐन्द्रा गार्हपत्यम् P. 1, 3, 23, Schol. गायत्र्यार्कम् Vop. 23, 10. सूर्यं मन्त्रैः Bhatt. 8, 13. विधिः किल परे लोके विधानेनोपतिष्ठते *so v. a. sorgt für Einen* R. 4, 36, 4. act.: पाद्यार्घ्याभ्याम् MBh. 3, 12605. सामनपाद्यादिभिः Prab. 22, 6. 7. संभृतैस्तीर्थवारिभिः Raghu. 17, 10. मधुपर्केण प्रतिमाम् Vaitân. Bhr. S. 46, 16. पतिं यौवनेन P. 1, 3, 23, Vârtt. 1, Schol. कन्यकया Daçak. 77, 1. पूजया MBh. 3, 17027. स्तवैः Verz. d. Oxf. H. 235, *a*, 20. Bhâg. P. 3, 13, 32. 4, 1, 54. 5, 3, 4. — 3) *unterstehen, sich einstellen bei, in* (loc. acc.): *sich befinden, zur Hand sein, zur Verfügung stehen:* शर्मन् ṚV. 7, 6, 6. शरणा 6, 47, 8. वृतम् 7, 95, 5. 1, 135, 8. 3, 22, 3. गृहम् 1, 124, 11. 126, 3. 8, 27, 20. छायाम् VS. 2, 8. उर्वं मा मतिरस्थित ṚV. 10, 119, 1. तमः 127, 7. पशवः AV. 8, 7, 26. 16, 4, 7. TS. 5, 4, 8, 4. AV. 17, 1, 8. ममैष राय उर्वं तिष्ठतामिह 18, 2, 37. पक्षम् 7, 27, 1. — वेदास्तं मधुवर्नेदा दिव्यान्यस्त्राणि चेश्वरम्। उपतस्थुः *stellten sich bei ihm ein, — zu seiner Verfügung* MBh. 3, 10455. 11985. रत्नानि चैव राजर्षि स्वयमेवोपतस्थिरे 10458. उपस्थास्यति नः काचिद्विशाला त्वाम् Bhâg. P. 8, 24, 33. दिव्यास्त्वामुपभोगाः — उपस्थास्यन्ति *zu Theil werden* MBh. 3, 16576. mit gen. der Person: act. MBh. 3, 7260. R. 2, 103, 27. 5, 34, 10. Çiç. 91, 13. Kathâs. 43, 130. med. R. 2, 79, 15. Pañcat. 239, 16. ohne Person: नादत्तमुपतिष्ठति Spr. (II) 1207. 1208 (med. v. l.). 4068. पुण्याश्च गन्धाः शब्दाश्च तस्याम् (सभायाम्) — दिव्यानि चैव माल्यानि उपतिष्ठन्ति नित्यशः *sind ansutreffen* MBh. 2, 350. भोजनकाल उपतिष्ठते P. 1, 3, 26, Schol. कृत्यकाल उपस्थास्ये MBh. 3, 11671. नागानके जनपदे नराः संवत्सरोपतिष्ठन्ते वनेषूपवनेषु च Spr. (II) 3024. ज्ञानमुपतिष्ठते Vop. 23, 12. संयोगादिसूत्रम् Comm. zu TS. Pair. 21, 3. यः कालं नोपतिष्ठति Spr. (II) 7549. घापत्सु Kâm. Nîtis. 5, 47. तत्रैक इति पद्यान्तं पदमुपतिष्ठते *da sein* so v. a. *zu ergänzen sein* Schol. zu P. 1, 1, 2. 2, 28. 8, 1, 1. — 4) *aufstehen gegen* (acc.): यस्मुनीनामुप मामरातयः ṚV. 7, 83, 3. — 5) *sich unterstellen, — fügen:* यर्षं व्रतमुपतिष्ठन्त घापः Einschiebung nach ṚV. 7, 96. व्रते AV. — 6) *stehen bleiben:* विष्टभ्य पादावुपतिष्ठते ग्रीः schlechte v. l. für घवतिष्ठते Spr. (II) 178. — 7) *sich rüsten, sich aufmachen:* उपतिष्ठ सखे Daçak. 75, 11. गमनायोपतस्थिरे Harîv. 4418. — 8) *für sich gewinnen, zum Freunde machen;* med. P. 1, 3, 25, Vârtt. 1, Schol. — 9) partic. उपस्थित a) mit act. Bed. = उपसन्न H. 1494. Halâj. 4, 65. b) *herangetreten, gekommen, genaht, erschienen;* von Personen Âçv. Gṛhj. 1, 24, 2. Gobh. 3, 10, 14. भिनुक्षो भोजनार्थम् M. 3, 242. Jâjñ. 2, 62. MBh. 3, 1336. 2135. 13, 5796. Harîv. 8341 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 2, 43, 10. 50, 20. 64, 20. R. Gorr. 1, 69, 28. Suçr. 1, 13, 2. Raghu. 1, 55. 57. 2, 39. 6, 68. 15, 15. Çiç. 76. 90, 1. Spr. (II) 1297. Kathâs. 5, 35. 19, 115. 32, 26. Hit. 21, 12. 29, 12. पुरुषाय Pañcat. gd. orn. 57, 23. mit infin. Raghu. 8, 73. यस्य कृतमास्यात्तरे तपस्विन उपस्थिताः Çiç. 6, 14. mit acc. der Person P. 3. 4, 72, Schol. MBh. 3, 2447. 2900. R. 2, 58, 2. zu Çiç. 62. mit gen. der Person Cat. Bn. 2, 3, 3, 5. गङ्गाम् Harîv. 9631. समुद्रम् 9636. गुरुं M. 3, 103. यज्ञकर्मणि *anwesend —, zugegen bei* 130. सम्भारस्यात्ते संध्यायाः शारदः *aufgezogen, erschienen* R. 3, 42, 35. पवन *der sich erhoben hat* Spr. (II) 2243. काल *gekommen* MBh. 1, 6184. R. 2, 31, 18. R. Gorr. 1, 45, 56. 3, 42, 21. Bhâg. P. 1, 14, 8. रात्रि R. 2, 46, 13. 66, 22. घरैः शिवम् R. Gorr. 2, 12, 20. घनिमित्त Kathâs. 32, 47. घप्रिय Bhâg. P. 1, 13, 12. तदेतदुपस्थितम् *eingetroffen* R. 2, 53, 19. 39, 4. *gekommen* so v. a. *bevorstehend* M. 3, 187. MBh. 3, 2281. R. 3, 46, 21. Raghu. 3, 1. Spr. (II) 1205. 6262. 7483. Vaitân. Bhr. S. 24, 26. Prab. 19, 6. Bhâg. P. 1, 7, 20. Pañcat. 194, 3. Hit. ed. Johns. 1874. 1886. 2409. विपदुत्पत्तिमताम् Raghu. 8, 82. चित्तितोपस्थितायेयद्ध *erschienen sobald er daran gedacht hatte* Kathâs. 18, 116. 146. घ्यातोपस्थित 302. भक्ष्यं भोज्यं च पेयं च लेह्यं चेतदुपस्थितम् *steht bereit, — zur Verfügung* R. 2, 50, 25. 82, 7. Kumâras. 3, 22. Spr. (II) 1296. Bhâg. P. 9, 21, 1. यस्य *zu seiner Verfügung* Kathâs. 2, 79. *zugefallen, zu Theil geworden* Raghu. 8, 2. Çiç. 91, 16. मम *mir* R. 3, 74, 26. शोको भरतस्य R. Schl. 2, 83, 16. Mâlav. 91. *andringend:* क्षुध Suçr. 1, 149, 1. — β) *liegend auf:* पदतल्पम् Spr. (II) 3731, v. l. — γ) *gerichtet auf:* यादृशो ऽयं मम क्रोधो यथा च त्वामुपस्थितः R. 5, 23, 28. घर्वे बुद्धिः 4, 16, 27. — δ) घनुपस्थित *unvollständig* (घपरिमाण Comm.) Çat. Br. 2, 3, 4, 13. — b) mit pass. Bed.: गुरुर्भवता so v. a. *aufgesucht* P. 3, 4, 72, Schol. MBh. 3, 2745. लक्ष्म्या Raghu. 14, 24. महर्षिभिर्गङ्गा Spr. (II) 4003. ये चैव पुरुषाः स्त्रीभिर्गीतिवाद्यैरुपस्थिताः *welchen Weiber mit Gesang und Musik aufwarten* 8524. घावासाः सर्वकामैः *ausgestattet mit* R. 1, 12, 12. — Vgl. उपस्थ u. s. w. und उपस्थित. — caus. 1) *sich stellen heissen neben, gegen:* एनमग्निमुपस्थापयो चकार Âçv. Br. 7, 17. gegen die Sonne Âçv. Çr. 8, 14, 6. zum Weibe *liegen lassen* Kauç. 79. समीपे Kâty. Çr. 7, 9, 23. Çâṅkh. Çr. 15, 23, 6. — 2) *herbeischaffen, herbeischaffen* MBh. 13, 1433. 2761. R. 1, 26, 2 (27, 2 Gorr.). 2, 3, 18. R. ed. Bomb. 2, 111, 15 (120, 15 Gorr.). R. Gorr. 3, 28, 22. 4, 38, 27. 29. 6, 99, 6. 7, 23, 3. Çiç. 28, 18. fg. Uttarar. 16, 6 (22, 8). Kathâs. 43.

62. Bhāg. P. 4,12,27. — 3) gramm. *mit nachfolgendem* इति *versehen* RV. Prāt. 15,10. — उपास्थापिषि Daçak. 117,6 *fehlerhaft für* उपास्थायिषि (so ed. Calc.). — Vgl. उपस्थापन fg.

— अनुप med *nach einander sich stellen zu, kommen zu* (acc.) Çat. Br. 10,5,4,5. तं प्रजाश पशवश्चानूपतिष्ठन्ते Ait. Br. 3,7. अनु मोपतिष्ठधम् *tretet an meine Seite* 20.

— सम्युप act. *vorführen:* सूर्यचा भगवन्तम् Bhāg. P. 5,7,12. — partic. °स्थित 1) *gekommen:* लग्नकाल Kathās. 71,166. *über* (acc.): इदं तद्ब्राह्मणो वोरं वाक्यं मामभ्युपस्थितम् *so v. a. hat sich an mir bewahrheitet* R. ed. Bomb. 6,60,6. — 2) *begleitet von:* सुपोवेण *so v. a. zusammen seiend mit* S. MBh. 3,16132. — caus. *herbeiholen, herbeischaffen* R. 4,38,28.

— पर्युप 1) *um Jmd herum sein, umstehen:* गुहं पर्युपातिष्ठत् MBh. 13, 2337. बन्दिनः पार्थिवम् R. Gorr. 2,67,2. बन्दिनः पार्थिवनिवेशनम् R. Bomb. 2,65,1. कौसल्यामाशीर्भिः 32,15. — 2) med. *sich anreihen* Comm. zu Kāç. Ça. 86,9. — partic. °स्थित 1) *umstehend:* ब्रह्मणाम् MBh. 5, 1915. R. 4,39,30. — 2) *gekommen, bevorstehend:* प्रथमेयं निशा वनवासस्य R. Gorr. 2,44,2. युगान्त MBh. 3,13037. 12,10447. संग्राम 8,1673. अतिक्रान्तसुखाः कालाः पर्युपस्थितदारुणाः 1,4969. Spr. (II) 4477, v. l. सुखं वा यदि वासुखं भूतानां पर्युपस्थितम् 7063. — 3) *entfahren, — entschlüpft:* वाक्यं प्रमादात् R. 2,60,13. — 4) *obliegend:* कामवृत्तानां नियन्ते R. 4,17,36. — Vgl. पर्युपस्थान. — caus. *anreihen* Comm. zu Kāç. Ça. 86,8. 9. Vgl. पर्युपस्थापक in den Nachträgen.

— प्रत्युप med. 1) *sich gegenüberstellen* Çat. Br. 3,3,4,21. 9,2,16. 11,4,3,6. TS. 5,5,9,2. — 2) *Jmd aufwarten* MBh. 4,80. — partic. °स्थित *herangetreten, gekommen, genaht* MBh. 5, 2955. प्रमुखे Harīv. 10734. R. 4,13,19. Bhāg. P. 4,28,11. 10,77,25. mit acc. der Person R. Gorr. 2,92,3. *losgegangen auf* MBh. 6,3833. 7,4335. पोत्स्ये चापि बलिभिररिभिः प्रत्युपस्थितैः *feindlich gegenüberstehend* 4,969. तस्मिन्प्रमुदिते दृङ्गे कथंचित्प्रत्युपस्थिते *so v. a. versammelt* 1,5364. *anwesend, beiwohnend:* तस्यां धर्मदेशनायाम् Saddh. P. 4,4,5. *eingetreten, gekommen* (auch *so v. a. bevorstehend*) *von Unbelebtem:* ग्लान्य 23,a. प्रभु MBh. 5,1013. गुहं पाण्डवैः 3,1920. काममोहाभिभूतस्य विघ्नो ऽयम् R. 1,63,13. तस्मात्प्रज्ञामृतमिदं चिरान्मां प्रत्युपस्थितम् MBh. 12,278. काल 4,660. Spr. (II) 4244. Bhāg. P. 1,9,29. विनाश Spr. (II) 4477, v. l. मृत्यु MBh. 5,5096. तमस् Bhāg. P. 3,14,27. स्मृत्युपस्थित *in's Gedächtniss gekommen, eingefallen* Uttarān. 115,16. fg. (156,14. fg.). *stehend —, sich befindend in* (loc.): सोम्पेन्दौ (d. i. सोम्य इ°) °स्थिते Harīv. 4338. *erscheinend in:* विद्युतः प्रभाशाप्रत्युपस्थिताः Vaitān. Bṛh. S. 22,5. *vorliegend:* सभाय, सभोय Çaṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 75. विषय 286. *andringend:* मूत्र Sucr. 2,325,4. — caus. *vorführen* Çaṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 132.

— समुप 1) *stehen bei, in Jmdes Nähe sein* (zum Dienste bereit) R. Gorr. 1,18,12. मां 6,7,7 (med.). यं (वृत्तं) सीता समुपास्थित (so ist zu lesen) *sich lohnen an* 5,38,18. *hinzutreten zu Jmd* (acc.) MBh. 2,2432. 4,283. — 2) *Jmd* (acc.) *zu Theil werden:* तद्रूपमनघं न ज्ञाने भोक्तारं कमिक् समुपस्थास्यति भुवि Spr. (II) 271. — 3) partic. °स्थित a) *herangekommen, genaht* Bhāg. 1,23. MBh. 3,2278 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 5,7552. R. 2,58,3. R. Gorr. 2,83,2. 4,38,27. Mālav. P. 29,27. त्वाम् MBh. 5,5992. Harīv. 1375. R. 2,32,21. Prasan. 111,12. सागरम् R. Gorr. 1,4,96. — b) *sitzend auf* (loc.) R. 5,56,72. *liegend* 13,39. एवं तयोर्व्रतोपोषणमात्रेणागतः काचिद्वृद्धी समुपस्थिता so v. a. *sie stiessen auf* Pañcat. 226,10. — c) *entstanden:* महानाद Harīv. 8476. — d) *eingetreten, gekommen von Leblosem:* काल: श्रेयसाम् Bhāg. P. 4,8,33. कृत्य R. 4,43,3. उत्पात Harīv. 9301. साध्वस MBh. 4,1291. विवाक् 5,3969. यौवन R. 1,48,3 (49,4 Gorr.). कर्मणो विपाक: 2,64,37. कल्याणं 3,78, 5. मनसो ज्वर: Raghu. 8,33. दास्य Spr. (II) 2598, v. l. विनाश 4477. 6815. व्यसन 6954. विक्रम so v. a. *an der Zeit —, am Platze seiend* 4998. इति समुपस्थिते *da solches bevorsteht* Pañcat. ed. orn. 87,4. *gekommen über* (acc.): तां कश्मलमिदम् Bhāg. 2,2. ब्रह्मशापो माम् R. Gorr. 2,66,37. तं शरत् Raghu. 4,14. *Jmd* (gen.) *zugefallen, zu Theil geworden:* ein lieber Verwandter R. Gorr. 2,38,33. यत्तेमं सुमहत्तव 6,17. 4,56,4. Spr. (II) 1383. Hit. 35,5. यस्थाने वैरकरणं तच्च ते समुपस्थितम् *so v. a. beschlossen worden* R. 3,13,7. — e) *gegangen an so v. a. bereit zu:* युद्धाय MBh. 6, 793. 7,9290. 14,1801. प्रव्राजविसर्गे Bhāg. P. 2,9,18. — caus. *aufstellen* Sucr. 1,240,5.

— नि, न्यङ्गात्, नितरो Vop. 8,45. 87. partic. निष्ठित 1) *stehend —, befindlich an, auf* (loc.) R. 5,12,32. सत्पथे 7,10,5. निगमवर्त्मनि Bhāg. P. 2,7,37. — 2) *erfahren in* (loc.): सर्वास्त्रेषु MBh. 1,5273. वेदे 13,469 (सु°). R. 1,1,15. 12,6 (11,6 Gorr.). 20. 5,32,9. Kām. Nītis. 12,1. साधु° *sehr erfahren* Harīv. 9114: könnte auch निःष्ठित sein. — Vgl. निष्ठ und unter निस्. निष्ठित = निष्ठूत *bespuckt* Bhāg. P. 11,22,38. — caus. *infigere:* तस्यामर्मम् (so v. l. penem) Çat. Br. 14,9,4,8. fgg.

— परिनि, partic. °ष्ठित 1) *befindlich in* (loc.): पुराणे Harīv. 281 (परिकीर्तित die neuere Ausg.). नैर्गुण्ये Bhāg. P. 2,1,9. — 2) *überaus erfahren in* (loc.): नागपृष्ठे ऽश्वपृष्ठे च MBh. 1,2811. नीत्याम् (so ed. Bomb.) 3,10019. धर्मशास्त्रेषु 5,4732. 13,5643. R. 1,4,4. 9,8 (5 Gorr.). 4,21,14. 31,21. 7,44,20 (wohl बुद्धौ st. बुद्धा zu lesen). ध्यान° MBh. 11,113. ज्ञान° 14,1343. R. Gorr. 1,3,31. स° *ganz unerfahren:* रणेषु Harīv. 3672. कर्मसु Sucr. 1,12,10. — अपरिनिष्ठिता Harīv. 3262 *fehlerhaft für* अपरिवेष्टिता (so die neuere Ausg.). Vgl. परिनिस्. — caus. *Jmd* (gen.) *Etwas gründlich lehren* Uttarān. ed. Cow. 33,10.

— निस् 1) *hervorwachsen, sich erheben:* नद्धा इव सरसो निरतिष्ठन् RV. 8,1,33. — 2) etwa *Gewissheit erlangen* (*Ehrerbietung an den Tag legen* Çaṅk.) Kāṭh. Up. 7,20. fg. — 3) *zu Stande bringen, bereiten:* पद्मा मधु मधुकृतो निस्तिष्ठन्ति Kāṭh. Up. 6,9,1. — 4) partic. निष्ठित a) *hervorgewachsen:* वृतो निष्ठितो मध्ये घर्णम: RV. 1,182,7. — b) *fertig, vollendet* Çat. Br. 10,3,5,16. पावेत्तन 13,5,3,2. 14,1,2,17. कर्मन् Lāṭ. 4,3,13. प्रातराश Gobh. 1,3,19. Pat. zu P. 7,3,78. सभा MBh. 2,95. R. 2,56,17. 5,12,39. सु° 1,12,10. 2,91,15 (सुनिष्ठिताम् mit der ed. Bomb. zu lesen). — Vgl. निष्ठ fgg. und नि. — caus. 1) *austreiben:* मूल्वसे पशूञ्निष्ठापयति Kaṭy. 24. — 2) *herstellen, fertig machen:* रुविधानम् Kāṭh. Ça. 8,4,21. 6,14.

— परिनिस्, partic. परिनिष्ठित *ganz fertig, — vollendet:* कार्य MBh. 12,2279.

— परि, °तष्ठौ, °ष्ठास्यति Schol. zu P. 8,3,64. fg. 1) *umstehen, im Wege stehen; hemmen, ändern:* अपो नयात परि तस्थुषीः RV. 2,35,3. सिंहं न कुद्धं परि सः 5,15,3. मा वः परि ष्ठात्मरुतः 53,9. 1,32,8. द्वेषः

167,9. 3,15,6. 36,9. 4,30,12. AV. 5,7,1. यद्वं पूर्वमद्वं पूर्वमिति समस्तात्परितस्थुः so v. a. *drängten sich an ihn heran* Pañkat. 51,19. — 2) *übrig —, am Leben bleiben:* के वीराः पर्यतिष्ठन्न MBh. 8,285. — 3) partic. a) परिस्थित *verharrend in* (loc.): नियमे R. Gorr. 2,103,27. — b) परिष्ठित mit pass. Bed. zu 1) RV. 2,11,2. 4,19,8. 5,17,12. यूपः परिष्ठिता यविष्ठेना 7,21,3. — Vgl. परिष्ठा. — caus. 1) *rings umstellen:* ग्रामं निवाचितम् AV. 4,7,5. — 2) *in der Nähe hinstellen, — bleiben heissen* Kathâs. 16,94 (परिस्थाप्य).

— प्र med. P. 1,3,22. Vop. 23,8. 1) *sich erheben, sich aufstellen, aufgestellt sein* (namentlich vor den Göttern, dem Altar u. s. w.): प्र ते सुतासो मघवन् RV. 1,135,1. 7,68,2. प्र ते मघर्घुरस्थात् 6,41,2. 1,40,7. सोता 7,92,2. प्र वो ऽर्चा सुतुषाणासो अस्थुः 4,34,2. शुक्रो न प्र चे तिष्ठत 10,14,4. 1,140,8. VS. 2,13. ब्रह्मन्प्रस्थास्यामः TS. 2,6,9,1. 2. mit acc. der Person, vor welche man tritt: घृतयो ना प्र तिष्ठानि 4,6,1. 2. Çat. Br. 1,7,4,19. Çiñkh. Çr. 7,6,7. — 2) *auf sein* so v. a. *im wachen Zustande sich befinden:* सम्यग्युक्ता (so ed. Bomb.) स आत्मानमात्मन्येव प्रतिष्ठते । विनिवृत्तव्यापारः (so ed. Bomb.) सुखं स्वपिति चापि सः ॥ MBh. 14,561. — 3) *aufbrechen, sich aufmachen, davongehen;* med. Âçv. Gṛhj. 2,10,5. MBh. 1,761. 4903. 6436. 2,32. 3,2307. 9961. 5,4283 (प्रातिष्ठत mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,52,87. 75,14. 3,50,23. Ragh. 1,89. 2,71. Çik. 52,1. Kathâs. 13,25. 18,101. अम्बुधिवर्त्मना 293. 39, 183. Daçak. 78,4. Pañkat. ed. orn. 19,13. Bhaṭṭ. 3,13. 8,11. तस्माद्देशात् R. 2,54,1. Kathâs. 18, 384. 25,5. पन्थानं यत्र रामनिवेशनम् R. 2, 32,31, वनम् MBh. 3,2401. R. 2,30,10 (प्रस्थातुम्). Ragh. 12,104. Çik. 112,19. Bhaṭṭ. 6,43. 7,102. आश्रमाय 1,24. भद्रो प्रति Kathâs. 18,253. Prab. 77,18. काननाभिमुखम् Pañkat. 63,3. अरिनाशाय Ragh. 12,67. विजयाय Çik. 95,11. Prab. 75,17. तं द्रष्टुम् Bhaṭṭ. 20,18. *sich begeben in, auf* (loc.): वनेषु Spr. (II) 3624, v. l. सनातने वर्त्मनि साधुसेविते 1107. धनुःश्रोत्रे मुखनासिकाभ्यो प्राणाः Praçnop. 3,5 (प्राति° fehlerhaft für प्रति°). act.: प्रतस्थुः MBh. 1,6437. प्रातिष्ठत् 3,2357. गजसाद्भयम् 1,5034. दिशमुत्तराम् Bhâg. P. 1,6,10. मागधं प्रति MBh. 2,788. 3,10867. आकाशे *sich begeben in* so v. a. *sich bewegen —, aufhalten in* R. 3,69,15. — 4) partic. °स्थित a) *aufgestellt,* (als Opfer) *bereit stehend:* हविस् RV. 1,93,7. सोम 23,1. 7,98,3. 10,116,3. Ait. Br. 6,10. Çat. Br. 3,8,2,27. Çiñkh. Br. 13,6. Çr. 10,5,20. 7,7. — b) *sich erhebend:* शोचींषि RV. 3, 4,4. *hervorstehend:* शाखा AV. 10,7,21. — c) *eingesetzt* (in ein Amt): यं राजा सर्वथा लङ्घ्यां प्रस्थितस्तदा । भविष्यसि R. 5,89,29. — d) *aufgebrochen, der sich aufgemacht hat* MBh. 1,7654. 3,2728. 2896. 13,330. Harîv. 9616. R. 1,61,1. Ragh. 1,89. Çik. 16,11. 39,8. 41,5. 44,11. 54, 15. 58,1. Viṣṇ. 6,6. 12,10. Spr. (II) 6471. Pañkat. 34,19. 36,1. 69,14. वनम् MBh. 1,5580. R. 2,26,24. Megh. 28. Kathâs. 25,28. Bhâg. P. 3, 25,5. 7,7,2. Pañkat. 95,23. स्वनगराय Çik. 84,11. पार्थस्य भवनं प्रति MBh. 3,1821. आ 2730. इतः *hierher* Viṣṇ. 37,17. समिदाहरणाय Çik. 7, 9. तपोवनात्स्वनगरागमनाय Çik. Cn. 126,13. युद्धाय Pañkat. 48,7. दूर° *weithin gezogen* (हंसाः) Spr. (II) 1999. विमार्ग° *der sich begeben hat auf* Çik. 105. नाकपृष्ठ° (यशस्) *gelangt bis* 98,9, v. l. impers.: पितृभ्यो प्रस्थिते Bhâg. P. 3,23,1. n. *Aufbruch* Spr. (II) 4646. — Vgl. प्रष्ठ, प्रस्थ, प्रस्थान, प्रस्थायिन्, प्रस्थावन् fgg., प्रस्थित fgg. — caus. 1) *wegstellen* AV. 4,7,4. — 2) *Jmd* (z. B. Boten) *entsenden, fortschicken, entlassen, verbannen* MBh. 1,6174. 3,2654. 2716. 3060. R. 2,75,12. fg. 82,19. 7, 63,1. Ragh. 7,29. Çik. 30,10. Kathâs. 123,117. Hit. 42,6. 130,10. Bhaṭṭ. 3,4. 23. दिशः सर्वाः MBh. 3,2727. R. 1,1,69 (74 Gorr.). 4,41,1. Bhaṭṭ. 7,51. द्रुपदस्य निवेशनम् MBh. 5,7429. गृहान् 14,2677. Harîv. 9753. वनम् R. 2,9,2 (8,6 Gorr.). 3,54,19. 55,42. Ragh. 3,40. 16,27. Hit. 17,3. 133,7. भवत्सकाशम् 40,22. राक्षसेशसमीपम् 133,7, v. l. स्वां प्रति राजधानीम् Ragh. 2,70. वैतरण्यानां वधाय MBh. 13,1976. वनवासाय R. Gorr. 2,75,27, धर्मसद्भयोराकरणाय Prab. 64,12. नैषधान्वेषणे MBh. 3,2889. बोधार्थं कुम्भकर्णस्य Bhaṭṭ. 13,1. *zum Laufen antreiben:* अधःप्रस्थापितास्य (मरुन्नरश्मि) Kumâras. 6,7. ऋक्षुमत्याम्, सरस्वतीम् Râja-Tar. 5,415. प्रस्थापित = प्रेषित H. 1492. — Vgl. प्रस्थापन fg. — desid. *aufbrechen —, sich aufmachen wollen* Bhaṭṭ. 14,78.

— अतिप्र *sich erheben über, einen Vorsprung haben:* प्र नू स मर्तः शवसा जनाँ अति तस्थौ RV. 1,64,12. 8,49,10.

— अनुप्र *nach Jmd aufbrechen, — sich aufmachen* Çik. 70,10. mit acc. der Person: ततः कौतूहलादहमपि तावनुप्रस्थितः (oder तावनु प्र°) Pañkat. 165,5. — caus. *nachsenden, folgen lassen:* अनुप्रस्थापितात्मन् Bhâg. P. 10,39,26.

— अभिप्र 1) *sich aufmachen zu, ausgehen nach, auf:* रयिम् RV. 2,13, 3. अभि प्र स्थातारैव यज्ञम् 7,34,5. AV. 4,1,3. med.: तत्र R. Gorr. 2, 56,4. तपस्विनं द्रष्टुम् 3,16,41. नाड्या हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठते *ziehen sich hin zu* Çat. Br. 14,5,4,21. — 2) *den Vorrang gewinnen* RV. 1,74, 8. ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः 10,63,13. — 3) partic. °स्थित *aufgebrochen, der sich aufgemacht hat* MBh. 1,747. Harîv. 2050 (अपि st. अभि die neuere Ausg.). R. 5,53,2. Pañkat. 165,4. ed. orn. 4,7. — caus. *hinaustreiben* (die Kühe auf die Weide) Kâṭh. Up. 4,4,5.

— प्रत्यभिप्र med. *aufbrechen —, sich aufmachen nach:* तं देशम् MBh. 1,688.

— प्रतिप्र s. प्रतिप्रस्थातर् fg.

— विप्र med. 1) *nach verschiedenen Richtungen sich erheben, auseinandergehen, sich verbreiten* Çiñkh. Gṛhj. 6,6. Pân. Gṛhj. 2,11. तस्माद्भारतवंशस्य विप्रतस्थे मरुत्पथः MBh. 1,3709. यथाग्नेर्ज्वलतः सर्वा दिशो विस्फुलिङ्गा विप्रतिष्ठेरन्नेवमेवैतस्मादात्मनः सर्वाः प्राणा यथायतनं विप्रतिष्ठन्ते Maitrâyaṇ. 4,20. 3,3. — 2) *aufbrechen, sich aufmachen* MBh. 1,6594. 3,15218. act. 1,5140. partic. °स्थित Harîv. 3488.

— संप्र med. 1) *gemeinsam* (vor den Altar) *sich stellen* Çiñkh. Br. 4, 9. — 2) *aufbrechen, sich aufmachen* MBh. 2,1198. Harîv. 10457. R. 2, 56,2. 80,3 (87,3 Gorr.). 4,45,1. यथा वयांसि वासो वृक्षं संप्रतिष्ठन्ते । एवं कृ वै तत्सर्वं पर आत्मनि संप्रतिष्ठते *sich begeben* Praçnop. 4,7. स्वगृहम् MBh. 1,5634. दिवम् 8206. मिथिलाम् 3,13703. act. 1,4644. — 3) partic. °स्थित *aufgebrochen, der sich aufgemacht hat* MBh. 1,7035. 3,8340. 4,1038. R. 2,56,3. R. Gorr. 2,13,19. 5,13,10. Ragh. 5,32. Bhâg. P. 3, 21,35. वनम् R. 2,26,1. 38,13 (37,20 Gorr.). 59,5. R. Gorr. 2,17,35. 25,15. दिवम् 5,13,13. द्वारकायाम् Bhâg. P. 1,14,1. वायसानां संप्रस्थितानां च गमिष्यतां च MBh. 6,135. नावः *sich in Bewegung gesetzt habend* R. Gorr. 2,97,22. — caus. *Jmd entsenden, entlassen* Harîv. 7415. दिशः सर्वा विचारकान् R. 4,45,18.

— प्रति 1) *stehen, dastehen:* प्रति ग्रीवा स्थात् RV. 2,15,7. पद्भ्याम् AV. 5,30,13. ध्रुवा 3,12,2. ऊर्ध्व: 4,12,6. 14,9. प्रति तिष्ठा शरीरै: *bleibe* 2,34,3. 6,123,4. अस्मिँल्लोके TBr. 1,1,4,7. यत्राकूति: प्रत्यतिष्ठत् TS. 3,5,7,3. Kräuter 5,1,2,1. 2,2,6. 5,3. 6,3,2,5. सुवर्गेषु लोकेषु TBr. 1, 2,2,1. गृहेषु Çat. Br. 1,9,2,18. Gobh. 4,10,1. सत्सु *sich befinden unter* so v. a. *verkehren mit* R. Gorr. 2,79,11. — 2) *stillstehen,* von *untergehenden* Gestirnen MBh. 3,11850. 17330. fg. तत्रैव प्रतितिष्ठन्ति पुनस्त्रोदयन्ति च 11888. 14,781. यावत्सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति Bhâg. P. 2,6,37. *aufhören:* यत: प्रवर्तते तत्त्वं यत्र च प्रतितिष्ठति MBh. 14,612. उद्गात्कथकौथुमं प्रत्यष्टात्कठकलापम् P. 2,4,3, Schol. — 3) *gegründet sein —, beruhen auf, in, Bestand haben; festen Fuss fassen, gedeihen:* ओषधीषु RV. 10,16,3. AV. 8,9,19. VS. 20,10. TS. 1,6,11,1. TBr. 2,1,2,8. Ait. Br. 1,5. 11. 4,25. राष्ट्रे Kauç. 98. Kâṭhân. Up. 4,16, 5. Kenop. 34. Taitt. Up. 3,6. संतानश्चैव पिण्डश्च प्रतिष्ठास्त्यत्यसंशयम् MBh. 1,6190. यदास्तित्वं प्रतितिष्ठेत लोके ऽस्मिन् 7759. यथा पुत्रस्तव लोके प्रतितिष्ठेत साधु 3,224. इदं हि चरितं लोके प्रतिष्ठास्यति शाश्वतम् R. 2,60,21. Spr. (II) 3715. 6359. — 4) *Jmd* (acc.) *widerstehen:* परान्युधि MBh. 7,1072. कथमस्मद्विधै: शक्यं प्रतिष्ठातुं रणाजिरे Harîv. 5896. — 5) *sich verbreiten über* (acc.): एवं राजकुलाद्वित्तं पृथिवीं प्रतितिष्ठति Spr. (II) 5166. — 6) partic. °स्थित *a) stehend:* एकपाद्° *auf einem Fusse* R. 1,63,23. वेद्यामस्याम् 73,15. पीठ° Râm.-Tar. 3,239. *der seinen Platz eingenommen hat* (auf dem Wagen) MBh. 3,1731. ब्रह्मघोरुपकण्ठप्रतिष्ठितं नगरम् *gelegen* Kathâs. 25,35. Paṇḍat. ed. orn. 3,3. *seinen Sitz habend —, sich befindend —, enthalten in* (loc.): योनौ रेत: Çat. Br. 1, 9,2,11. Taitt. Up. 3,6. उरसि शब्द: Lâṭj. 5,10,13. M. 11,265. Bhâg. 3, 15. MBh. 1,4003. 2,1393. fg. Harîv. 10902. Spr. (II) 530. 1319, v. l. (मु°). 6299. Vaṇîn. Bṛh. 8. 53, 69. Verz. d. Oxf. H. 65,a,16. WebER, Rân. Up. 344. Burnouf, Intr. 46. यस्या देव्या मनस्तस्मिंस्तस्य चास्यां प्रतिष्ठितम् *so v. a. gerichtet auf* R. 5,19,18. *verharrend in:* सत्यधर्मे R. 1, 35,11. पितुर्वचने 2,106,21. *stehend* in einem Amte (loc.): देवानामाधिपत्ये MBh. 13, 287. — *b) stillstehend so v. a. sein Ende erreichend:* कूल तूतर धार्ष्ट्यो लङ्काकूले प्रतिष्ठित: R. 5,93,41. स्थ° *so v. a. unbegrenzt* Bhâg. P. 3,10,11. — *c) feststehend, seinen Halt habend an, beruhend auf, in:* Pflanzen TS. 5,3,2,5. शयन (मु°) MBh. 4,697. एकादश सहस्राणि योजनानां समुच्छ्रितम् । अधो भूमे: सहस्रेषु तावत्स्वेव प्रतिष्ठितम् (पर्वतम्) *so v. a. wurzelnd* 1,1114. स्कम्भे AV. 10,7,20. विशि राज्ञो VS. 20,9. 34,5. AV. 10,7,1. 22. प्राणे सर्वम् 11,4,15. 17,1,19. यस्मे लोका: AV. Paipp. 4, 105. नगावरा: Spr. (II) 579. राज्ये Râm. 4,3. प्रकृतिषु 8, 10. नारी पुत्रपौत्रप्रतिष्ठिता Spr. (II) 724. प्रज्ञा Bhâg. 2,55. धर्म MBh. 1, 6177. क्रिया: Bhâg. P. 3,20,51. *feststehend so v. a. begründet, bewiesen* M. 8,164. पाणिपादरूपिका मन्त्रा: कन्यास्वेव *festgesetzt —, geltend für* 220. त्वयि वंश: *beruhend auf* MBh. 3, 16836. धर्मे सत्यम् R. 2, 21, 10. सत्ये लोक: 109,10. 3,61,38. Kâm. Nîtis. 12,33. Spr. (II) 7463. Vaṇîn. Bṛh. S. 48,52. Mâlav. P. 29,6. वर्णपाद° s. प्रतिष्ठितमात्रेण तव सुकृता *der festen Fuss gefasst hat* Mṛicch. 175,3. वसुधा *feststehend so v. a. von Feinden nicht bedrängt* Harîv. 5753. तस्मात्त्वं प्रतिष्ठितो ऽसि प्रजया च पशुभिश्च *so v. a. gedeihend* Kâṭhân. Up. 5,17,1. सु° *dem es gut ergeht* R. Gorr. 2, 101,6. अ° *nicht feststehend* u. s. w. TBr. 1,8,10,1. Ait. Br. 1,1. Çat. Br. 1,1,1,13. 6,1,13. 2,1,1,26. 3,1,1,10. 7,4,1,12 u. s. w. — *d) erfahren in:* सूतत्वे MBh. 3,2901. — *e) übergegangen auf* (loc.): (किलकिलाशब्द:) मुहूर्तमन्तरीक्षे ऽभूत्ततो भूमौ प्रतिष्ठित: Harîv. 6813. नाकपृष्ठ° (पशम्) Çiç. 98,9, v. l. — *f)* सु° *ein schönes Gestell d. i. Füsse habend* (vgl. प्रतिष्ठा): ein Weib R. 5,18,25. — *g) unternommen:* तत्सया पुरुमेतत्स्वार्थाय प्रतिष्ठितम् Paṇḍat. 86,20. besser अनुष्ठित ed. Bomb. — Vgl. प्रतिष्ठ fg., °ष्ठातृ, °ष्ठान, °ष्ठि fg., सुप्रतिष्ठित. — caus. 1) *hinstellen, hinsetzen, einbringen in:* योनौ रेत: Çat. Br. 1,9,2,11. 2, 7,2,6. प्रतिष्ठापाम् Ait. Br. 2,5. चमसम् 8,17. शिलासु Âçv. Gṛhj. 2,9,3. अश्मानम् 1,7,3. अग्निम् 3,1. Weber, Ksḥudrak. 309. 290. पादौ भूमौ Çâṅkh. Ça. 17,16,5. ध्रुवौ देशे स्थिरमासनम् Bhag. 6,11. Bhâg. P. 3,28,3. दक्षिणं जानुमण्डलं पृथिव्याम् Sadukt. P. 4,3,b. *aufstellen* (ein Götterbild) Kathâs. 25,128 (सुप्रतिष्ठापित). 73,326. Râja-Tar. 1,313. 4,6. 5,38. Verz. d. Oxf. H. 32,a,3. — 2) *hinführen —, bringen auf:* त्वां समे पथि MBh. 5,6049. — 3) *einsetzen in:* पूरुं राज्ये MBh. 7,2301. 13,563. Harîv. 14339. R. 4,35,15. 55,3. Daçak. 93,16. — 4) *Jmd Etwas vorsetzen, darbringen, übergeben:* सन्वष्टकां पितृभ्य: Âçv. Gṛhj. 2,5,10. ज्ञाननिष्ठेषु काव्यानि M. 3,135. पात्रे धनम् Spr. (II) 5002. पर्यङ्कं त्वयि R. 2,32,9. तस्मिन्नाशब्दम् Rag. 18,2. — 5) *Bestand geben, stützen auf:* पशून् TS. 3,4,9,2. प्रजा: TBr. 1,6,8,1. Maitrâjup. 2,3. 4. 6,21. कुलम् MBh. 13,5079. Harîv. 12401. द्विपदि चतुष्पद: TBr. 2,1,3,9. पक्षे यज्ञम् 6,6,2,3. Ait. 3,30. Çat. Br. 11,2,2,1. — 6) *entgegenhalten:* वदनम् R. 5,56,24. — Vgl. प्रतिष्ठापन fgg. (प्रतिष्ठापम् auch Paṇḍat. Bh. 13,4,11).

— अनुप्रति *bestehen —, festen Fuss fassen —, gedeihen nach* (acc.): ओषधी: प्रतितिष्ठन्ती: पशवो ऽनु प्रति तिष्ठन्ति TS. 5,1,2,1. 2,2,6. Kâṭhân. Up. 4,16,5. — desid. *festen Fussen fassen —, gedeihen wollen nach:* प्रतितिष्ठन्तं त्वानुप्रतितिष्ठाम: Gobh. 4,6,10.

— संप्रति *sich wenden an* (loc.): येषु °तिष्ठेषु: कुरव: पीडिता: पै: MBh. 5, 2302. — partic. °स्थित 1) *bestehend, vorhanden* Verz. d. Oxf. H. 40,b,20. — 2) *feststehend, begründet:* वंश Harîv. 11320. *seinen Halt findend in, beruhend auf* (loc.) Prâçnop. 4,1. Çvetâçv. Up. 1,1. दैवे पुरुषकारे च लोको ऽयम् MBh. 1,4778. 8359. — Vgl. संप्रतिष्ठा. — caus. 1) *einsperren, einschliessen:* die Kühe MBh. 4,1506. *concentriren in* (loc.): आत्मनि सर्वेन्द्रियाणि Kâṭhân. Up. 3,13. — 2) *fest machen, Bestand geben* MBh. 7,2217. मद्वचनम् *so v. a. einführen* Bhâg. P. 11,27,50.

— वि med. P. 1,3,22. Vop. 23,8. 1) *auseinanderstehen, — sich bewegen; sich verbreiten, — zerstreuen in, über* (acc.): पृथ्वालोकं वि तिष्ठध्वम् AV. 11,9,26. RV. 1, 58, 4. 65, 8 (act.). वि यदस्थाद्रातीवोदित: Fouer 141, 7. 2, 4, 7. 33, 3. 8, 49, 14. शोचन्तो यस्य तत्तवो व्यस्थिरन् 9, 83, 2. रप्सा: 80, 3. भानवो यन्तरिक्षा व्यस्थु: 7,75,3. 8,7,8. संवरणात् 7,3, 2. 91,3. वितु 104,18. 8,110,9. ये भूयांसो दिशो रुद्रा वितस्थिरे VS. 16, 62. 34,22. पार्वत्सप्त सिन्धवो वितस्थिरे 38,26. AV. 9,15,19. — 2) *sich trennen, — entfernen —, getrennt werden von* (instr.): प्रजया पशुभि: TBr. 2,1,5,10. TS. 2,5,7,3. पराञ्च: पशवो वितिष्ठन्ते 5,2,3,4. उपस्थात् AV. 14,2,25. — 3) *stehen:* पृथिवी RV. 1,72,9. एकपादेन MBh. 13,1913. तोरणेषु u. s. w. R. 5,52,6. *stehen bleiben* MBh. 1,2171. R. 2,83,21. *Stand halten, nicht weichen:* संयुगे MBh. 6,4736. न तस्य पुरे व्यतिष्ठत Harîv.

9829. *am Orte verbleiben* MBu. 13,1455. R. 4,16,44. Kathâs. 60,133. *dabeistehen* MBu. 13,3715 (act.). *dastehen:* निश्चेष्टो मुहूर्तम् 1,6559. व्यूढानीकाः 3,14965. विलपन्तः R. 2,50,6 (act. ed. Bomb.). वेलामिव समासाद्य MBu. 1,8260. पाण्डुपुत्रमवच्छाद्य व्यतिष्ठत्ताम्बरे शराः 8,945. 9,1631. R. Gorr. 2,33,28. 4,13,28 (act.). 6,81,11. Çiç. 4,4. नातिकम्पम् adv. Ragu. 15,67. ज्ञेषु so v. a. *obliegen* Harîv. 7635 व्यतिष्ठन् st. व्यतिष्ठन् die neuere Ausg.) — 4) partic. विष्ठित a) *auseinanderstehend:* प्रङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रा ṚV. 1,163,11. *verbreitet:* पावद्वत्सु विष्ठितम् ṚV. 10,114,8. यः पशूनां रक्षिता विष्ठितानाम् *zerstreut* TBa. 2,8,4,4. AV. 7, 113,4. — b) *stehend, was steht* im Gegens. zu शगत् ṚV. 6,47,29. 10,25,6. AV. 6,17,4. पादाङ्गुष्ठाग्र° *stehend auf* Suçr. 1,9 (°धिष्ठित MBu. 1,7627). MBu. 13,739. R. Gorr. 1,65,29. विमानाग्रेषु Harîv. 9238 (धिष्ठित die neuere Ausg.). प्रासादोपरि 10061 (धि° die neuere Ausg.). आकाशे R. 2,74,15. 5,95,31. शैलाग्रे 7,16,35. पततां चैव नागानां विष्ठितानां चाम्बरे MBu. 1,2053. वृक्षस्कन्धेषु पक्षिणः R. Gorr. 2, 43,34 (45,31 Schl.). सभ्याग्र° (रथ) 3,9,5. वने *befindlich* N. (Bopp) 12,29 (प्रस्थित MBu. 3,2429). *dastehend* Harîv. 8988. R. Gorr. 2,17,2. 3,35,10. 7, 25,3 (यज्ञ personificirt, = प्रवृत्त Comm.). हृदयेन गतो रामं शरीरेण तु विष्ठितः 5,36,76. पारिप्लवगताश्चापि देवतास्तत्र विष्ठिताः R. Scul. 1,44, 20 (45,13 Gorr.). भूतोपकृतचित्तेव 2,58,30. उपागताः R. Gorr. 2,11,31. देवैः परिवृतः सर्वैः 3,35,106. 52,11. विश्वामित्रं परिवार्य समन्ततः। विष्ठिताः R. Scul. 1,36,10. गिरेर्द्वारं महदावृत्य 4,61,39. द्यावाभामाद्य विष्ठितौ R. ed. Bomb. 4,9,11. 7,1,7. सु° *schön dastehend* R. Gorr. 5,12, 31. — Vgl. 1. विष्ठा. — caus. *ausbreiten* ṚV. 1,56,5.

— अनुवि *sich verbreiten über:* भुवनानि ṚV. 10,125,7. पृथिवीम् 97, 19. AV. 3,9,5. 6,90,2. ṚV. 1,80,5. रजांसि 187,4. घन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः 2,38,7. देवानां विष्ठाम् Kâty. Çr. 2,8,14. — caus.: तं गोभिरनुविष्ठाप्य समभरन् *nach einander aufnehmen lassend* Çat. Br. 1,6,4,6.

— अभिवि med. *sich verbreiten bis zu, über:* अभि ग्रयांसि पार्थिवा ṚV. 5,8,7. अभि त्वा पाजो दृतसो वि तस्थे 6,21,7.

— उपवि med. *da und dort sich befinden* Çat. Br. 7,4,2,14.

— सम् med. P. 1,3,22. Vop. 23,8. 1) *sich sammeln, bleiben bei:* इन्द्रे सं तिष्ठ Soma ṚV. 9,96,12. पक्षा मुचः समस्थिरन् 10,118,2. घृतं पदे Çat. Br. 1,8,1,7. VS. 2,19. Himmel und Erde संतस्थाने *sich zusammen haltend* ṚV. 10,31,7. *still stehen, verweilen, bleiben an einem Orte* MBu. 3,15716 (act.). 13,510. 18,61. तृणं न संतिष्ठति ब्रीवलोकः तयोदपाभ्यां परिवर्तमानः Harîv. 11224. R. Gorr. 2,116,26. 7,19,10 (act.). Mudrâ. 83, 8, v. l. 114,6. Spr. (II) 2570. Mahân. P. 135,8. Saddh. P. 4,13,b (act.). *sich befinden:* न शत्रूणामुपरि च संतिष्ठति MBu. 13,3311. क्षत्रं संतिष्ठते वैरं गूढो ऽग्निरिव दारुषु Spr. (II) 1864. *dastehen:* प्रसक्ता तस्मा सर्वे संतस्थुः कालमोहिताः MBu. 12,7620. Kâm. Nîtis. 16,15 (act.). मूकवत् Spr. (II) 2093. Pañkat. ed. orn. 8,8. वाक्ये so v. a. *gehorchen* Spr. (II) 2780. — 2) *zusammentreffen* (feindlich), *zusammt:* इनाः संतस्थानाः समीके ṚV. 10,42,4. वृत्रेण यत्समस्थिथाः 113,3. — 3) im Ritual: *zum Stillstand kommen* so v. a. *sich abschliessen, fertig werden, vollen Bestand gewinnen:* एतद्वै इष्टेः संतिष्ठते TBa. 1,5,9,3. यज्ञः Çat. Br. 1,5,2,23. 9,2,3,25. सुब्रह्मण्या Ait. Br. 6,3. सवनानि संतिष्ठमानानि यन्ति 17. Çat. Br. 11,2,3,9. यज्ञपुच्छम् 5,3,11. 3,4. स्तोकीयासु 13,1,2,2. हादशाहः Çâṅku. Br. 18,21,18. 18,24,24. Âçv. Çr. 12,7,10. या संस्थातोर्वेद्यां सीदन्ति P. 3,4,16, Schol. सद्यः संतिष्ठते यज्ञस्तथा शौचम् M. 5,91. क्रतुः MBu. 1,3080. Verz. d. Oxf. H. 267,b,1 v. u. Bhâg. P. 12,6,37. सकृत्यवति सर्वार्थाः संतिष्ठन्तीह सर्वशः *zu Stande kommen, gelingen* MBu. 3,16606. — 4) *zu Ende* so v. a. *zu Grunde gehen:* वंशः Verz. d. Oxf. H. 40,b,24 (act.). नाङ्गस्य वंशः संस्थातुमर्हति Bhâg. P. 4,14,42. विद्यम् 3,22,30. कार्यम् *zu Schanden werden* Bhatt. 8,11. *sterben* MBu. 6,3669 (संस्थाता ed. Bomb.). Daçar. 62,14. — 5) *werden zu, die Form annehmen von* (nom.) Lalit. ed. Calc. 401,8. 10. — 6) partic. संस्थित a) *stehend* (Gegensatz *liegend, sitzend*) Jâân. 1,131. *der Jmd gestanden hat* (im Kampfe): एको बहूनां युद्धाय गतानामिव केसरी। यत्संस्थितः Mâlav. P. 125,34. *stehend* so v. a. *seinen Platz habend auf, in* (loc. oder im comp. vorangehend), *liegend —, sitzend —, gelegen —, befindlich auf, ruhend in* Jâân. 3,7. MBu. 3,14540. 6,3603. Harîv. 9266. 13072. R. 2, 100,4. R. Gorr. 2,14,1. 66,69. 4,17,11. 41,56. 7,25,44. Ṛt. 3,3. Ragu. 6,6. 11,66. 19,28. Spr. (II) 2161. 2937. 5807. 6490. 6781. 6818. Vaitân. Bhn. S. 3,32. 11,21. 53,33. 105. 54,33. 58,37. 86,17. 24. 104,16. Kathâs. 18,152 (शवस्योपरि). Muir, ST. 1,22, N. 35, Çl. 14. Mâlav. P. 1, 42. 18,49. 23,31. fg. 114,32. Brahma-P. in LA. (III) 52,11. Bhâg. P. 8,1,16. Pañkat. 1,4,62 (गजेन्द्रोपरि). Pañkat. 60,24. 261,11. H. 1270. *verweilend, bleibend:* घचिर° (केतु) Vaitân. Bhn. S. 11,8. चिर° *lange gelegen* (Speise) Jâân. 1,169. तथैव *in demselben Zustande verbleibend* Ragu. 8,40. *dauernd, nicht vergehend:* °यौवन MBu. 6,272. *dastehend, daliegend:* देवविमानान्यभिपतानि MBu. 3,1768. Harîv. 10393. R. Gorr. 2,42,9. अतिशुक्र भुक्त्वामं संस्थितो सुकृतः Vaitân. Bhn. S. 51,29. निरिष्टे संस्थिते रत्ने पद्मा लोकः प्रवर्तते Comm. zu Kap. 1,97. तत्समावत्य संस्थितम् Mâlav. P. 102,9. नवधा *neunfach erscheinend* 58,8. समीक्षणेषा Spr. (II) 2683. so v. a. *bevorstehend:* विवाद् Harîv. 7333 (nach der Lesart der neueren Ausg.) प्राणत्याग Spr. (II) 40. अ° *nicht zusammenstehend, zerstreut:* बल Spr. (II) 2821. Kâm. Nîtis. 18,52. *unstät:* चेतस् Çiç. 33, v. l. — b) *sich in einer Lage* (*Verhältniss, Zustande*) *befindend:* कामिवशे Vaitân. Bhn. S. 24,31. बले मरुति Harîv. 5209. विवादे 7333. धैर्य° R. 5,99,34. नियोग° Spr. (II) 7053. वार्तायाम् so v. a. *obliegend* R. Gorr. 2,109,24. ग्रपे (so ist wohl zu lesen) 6,82,34. व्यसन° Spr. (II) 861. — c) *beruhend auf:* धर्मार्थावत्र (कामे) संस्थितौ MBu. 12,6244. *gerichtet auf:* चित्तं सर्वावयवसंस्थितम् Bhâg. P. 3,28,20. बुद्धिमेकान्तसंस्थिताम् 7,8,2. *sich beziehend auf, betreffend:* कलत्रेषु कृत्यम् Kâm. Nîtis. 17,62. गाथा गृहस्थाश्रमसंस्थिताः Mârk. P. 29,44. — d) *erfahren in, vertraut mit:* पुधि MBu. 4,2102. यानशस्त्रे तदास्त्रे च तथापत्यास्त्र R. 5, 90,1. — e) *aufgebrochen, der sich aufgemacht hat:* लङ्काभिमुख° R. 5, 5,10. रुद्रलोकाय Verz. d. Oxf. H. 52,b,19. 53,b,2; vgl. प्रस्थित. — f) *abgeschlossen, beendet, fertig* Ait. Br. 1,11. 2,31. यज्ञ Çat. Br. 1,9,3,1. 5,3,21. यज्ञिय कर्म 13,8,1,17. इष्टि 4,3,6. 1,1,1,3. सवन 4,3,3,3. सामि° 9,5,1,28. अक्तनि Kâty. Çr. 25,9,15. पर्वाणि Çâṅku. Çr. 14,10,17. Âçv. Çr. 1,13,7. 5,13,3. °क्रोम Kauç. 3.6.47. गोष्टोम Lâṭy. 2,16,1. कर्मन् Çiç. 32,11. — g) *zu Nichts geworden:* विश्व Bhâg. P. 3,10,12. *gestorben* AK. 2,8,3,55. H. 373. Halây. 3,7. Âçv. Gṛhy. 4,1,6. Çr. 6,10,1. M. 3,247. 5,58. 78. 80. 9,190. 192. MBh. 1,3033. 3,9915. 6,3669 (besser संस्थाता

ed. Bomb.). R. Gorr. 2,66,36. Ragu. 12,55. Spr. (II) 3339. 6644. Bhâg. P. 1,9,13. 3,18,5. 9,9,1. तैः संस्थिते impers. 12,1,30. — *b*) *gestaltet, die Gestalt von — (geht im comp. voran) habend:* वराह° MBh. 3,11952. 11954. 6,188. Harîv. 2723. 12751. 12754. 12844. R. Gorr. 2,103,22. 5,10,4. Varâh. Bṛh. S. 68,71. Mârk. P. 54,16. 57,58. Ind. St. 10,280. सु° *schön geformt* R. 3,52,28. दुः° *schlecht geformt, — gebaut* 2,8,40. — *c*) *besucht:* संस्थाने बहुसंस्थिते M. 8,371. — *d*) n. *a*) *das Verhalten:* वर्णानामाश्रमाणां च Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,30. — *β*) *Form, Gestalt* MBh. 5,5894 nach der Lesart der ed. Bomb. — *c*) संस्थिता MBh. 6,93 fehlerhaft für संप्रति (so ed. Bomb.). — 7) संस्थितवत् *zusammen lebend:* सुखेन संस्थितवत्सौ Pañcat. 96,13. स्थितवत्सौ ed. Bomb. — Vgl. संस्थ, संस्थान, संस्थावन्, संस्थिति, असंस्थित, वि°, वेद°. — caus. 1) *auf die Beine bringen, aufrichten:* gestürzte Pferde MBh. 4,1443. einen gestürzten Fürsten 13,2132. so v. a. *ermuthigen* R. 5,21,38. आत्मानम् so v. a. *sich fassen* Vikr. 29,15. हृदयम् dass. Pañcat. ed. orn. 37,23. — 2) *hinstellen auf, an, bringen auf, in:* पात्रस्कान् Kauç. 47. पश्चिमस्मान् MBh. 5,3880. सीतां समक्षमग्रे: R. 1,73,22. लक्ष्मणस्य शिरः क्रोडे 6,92,10. Mṛicch. 97,5. Kathâs. 7,80. 30,107. 61,195. Mârk. P. 39,88. Bhâg. P. 7,15,31. Pañcat. 174,21. 192,7. 235,24. Hit. ed. Johns. 1240. 1439. *hinsuthun, hinzurechnen:* पण्यस्योपरि व्ययं पण्यसमुद्भवम् Jâtâ. 2.253. — 3) *erbauen:* पुरीम् Harîv. 6513. — 4) *aufspeichern:* Waaren Varâh. Bṛh. S. 42,12. — 5) *Bestand geben, Dauer verleihen, erhalten* Bhâg. P. 3,5,8. 7,4. 13,41. 4,17,34. *begründen:* राजवंशान् R. 7,51,23. *feststen:* धर्मान्युद्धानाम् MBh. 6,27. Harîv. 9162. संविदम् Kathâs. 49,103. *einführen:* पुण्याचारप्रवर्तनम् । आर्यदेशात् (so ist wohl zu lesen) Râjat. 1,314. fg. — 6) *stocken machen:* प्राणान् Ait. Br. 2,28. रेतः 6,3. — 7) *abschliessen, beenden, fertig machen* (namentlich eine heilige Handlung): यज्ञम् Ait. Br. 2,31. MBh. 14,2649. अग्निष्टोमम् Ait. Br. 3,44. TS. 5,1,9,3. 5,6,1. 6,4,5,1. 6,6,1. स्वाकारेण पशुम् Çat. Br. 1,5,2,22. fg. 2,3,4,12. 3,18. आरण्यैः TBr. 3,9,4,2. Kauç. 120. 137. — 8) *abthun, tödten:* पुरुष मा संतिष्ठिप: Çat. Br. 13,6,2,12. Çâṅkh. Ça. 9,27,5. MBh. 1,4610. Bhâg. P. 3,18,4. 12. — 9) *Jmd das Letzte erweisen* d. h. *verbrennen:* स्वैरग्निभिर्यज्ञमानं संस्थापयन्ति Çâṅkh. Br. 5,20. — Vgl. संस्थापक, संस्थापन fg. — desid. vom caus. संस्थापयिषति (ohne Redupl.) *beenden wollen:* यज्ञः Çâṅkh. Br. 25,20.

— अनुसम् 1) *entlang gehen, verfolgen:* यं (पन्थानं) पूर्वे चानुसंतस्थुः Bhâg. P. 4,2,31. — 2) med. *nach — zum Abschluss kommen:* यज्ञः Çat. Br. 1,9,2,25. 3,22. कर्म 3,7,3,6. 4,4,2,2. Ait. Br. 8,2. — 3) partic. °स्थित *a*) *sich an Jmd* (acc.) *schliessend:* सत्यसङ्गःक्षिता विप्रो वयं त्वामनुसंस्थिताः Harîv. 15593. — *b*) *nach Jmd* (acc.) *gestorben:* प्रमदामनुसंस्थितः (oder यनु सं°) प्रभा नृपतिः Ragu. 8,71. — caus. *ermuthigen* R. 5,21,41.

— अभिसम् 1) *sich Jmd anschliessen:* तं विराटो ऽभिसंस्थाता (ऽनुसंधाता ed. Bomb.) MBh. 5,2143. — 2) *stillstehen bei, enden:* गायत्रीमभि प्रातःसवनं संतिष्ठते Çâṅkh. Ça. 14,33,7. — 3) partic. °स्थित *a*) *dastehend* MBh. 6,3739. पापबुद्ध्या so v. a. *Böses im Schilde führend* 12, 4968. — *b*) *besorgt um, bedacht auf:* जीवितार्थे MBh. 4,853. — caus. *stehen bleiben —, enden lassen bei* (acc.) Kâṭh. Up. 1,8,2.

— उपसम्, partic. °स्थित *Halt gemacht habend, stehen geblieben:* निवासाय Harîv. 9700.

— परिसम्, partic. °स्थित pl. *herumstehend* MBh. 1,4827. परितः स्थिताः ed. Bomb.

— प्रतिसम् s. प्रतिसंस्थान.

— विसम् s. विसंस्थित und unter संघर 2) a).

2. स्था (= 1. स्था) adj. (nom. m. n. स्थाम्) *stehend* Nir. 3,2. P. 3,2, 77. स्था इगंश्च ṚV. 1,80,14. 2,27,4. 10,88,4. शकुनं सामनि स्थाम् 3,85, 11. शर्मणि स्थाः 10,35,9. सक्थ्या, यत्रे° Pârâṡ. Br. 15,6,4. मेषस्थाः n. 7,8,2. भूमनेष्ठाः (falsche Bildung) Çâṅkh. Ça. 5,9,10. — Am Ende eines comp. (स्था und स्थ) häufig nach einem loc.; vgl. अग्नि°, अङ्के°, अपाके°, आस°, उत्त°, उत्तु°, गर्ते°, गिरि°, नरे°, पथि°, पथे°, पर्वते°, पशु°, बर्हि:°, भुवने°, मंक्षने°, मध्यम°, मध्यमे°, रथे°, रथि°, रोधन°, वन्दने°, शं°, सव्य°, सव्ये°. Vgl. स्थ.

स्थाग m. 1) *Leichnam* Trik. 2,8,61. — 2) N. pr. eines Dämons im Gefolge Çiva's Vâjas beim Schol. zu H. 210.

स्थागर् adj. *aus dem* स्थगर *genannten wohlriechenden Stoffe gemacht:* अलंकार TBr. 2,3,10,2.

स्थागल wohl = स्थगर् gaṇa किसरादि zu P. 4,4,153. Davon adj. स्थागलिक (f. ई) *mit Sthâgala handelnd* ebend.

स्थाणावीय (von स्थाणु) adj. *dem Çiva gehörig:* धनुस् Bâlar. 15,12.

स्थाणु (von 1. स्था) Uṇâdis. 3,37. 1) adj. *stehend* d. i. *unbeweglich;* n. *das Unbewegliche* Dharaṇi im ÇKDa. Çabdârthak. bei Wilson. जगत्सर्वं चरं स्थाणु M. 3,201. यदिदं स्थाणु जङ्गमम् MBh. 14,1487. Mârk. P. 48,38. लोकान्स्थाणुजङ्गमान् Harîv. 944. neben सरीसृप Bhâg. P. 5,18. 27. स्थाणुभ्यो क्रिमयाऽक्रूरैः Harîv. 3984. die Seele Bhag. 2,24. लोकान्सस्थाणुजङ्गमान् MBh. 1,1524. 6622. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Taik. 3,5,9. *Stumpf, Stock eines Baumes, Pflock;* m. n. AK. 2, 4,2,6. m. (nur dieses zu belegen) Taik. 3,3,142. H. 1122. an. 2,156. Med. ṇ. 132 (m. in der Bed. कील, m. n. in der Bed. ध्रुव). Halâj. 3,11. स्थाणुं पचेत्तमयं दुर्मतिं कृतम् ṚV. 10,40,13. AV. 10,4,1. 14,2,48. fg. शुष्क 19,49,10. Kaṭh. Up. 5,2,3. अग्निहोत्रस्य वै स्थाणुरस्ति तं प्रदक्ष्येत्तस्थाणुमृच्छेत् *das A. hat einen Stumpf* (d. h. *Stein des Anstosses*), *wer sich daran stösst* u. s. w. TBr. 2,1,4,3. TS. 5,1,3,4. यः स्थाणुं कृत्तिं 7,3,4,1. Ait. Br. 3,14. Çâṅkh. Br. 26,4. नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति Nir. 1,16. भारहार 18. Çat. Br. 2,6,2,17. 3,6,2,4. 9, 5,2,13. 14,9,2,15. Kâṭj. Ça. 5,10,21. 14,3,12. Kauç. 49. स्थाणुमन्ये ऽनुसंयन्ति Kâṭhop. 5,7. Ind. St. 4,330. °च्छेद् M. 9,44. R. 2,80,6 (स्थाणून् zu lesen). स्थाण्वादिभ्यो यथा विना छाया Siddh. Kaum. 41. Kâm. Nitis. 14,21. 32. 16,18. 19,11. आलानिक Ragu. 14,38. Spr. (II) 7336. Varâh. Bṛh. S. 94,13. किं स्विन्नरो वा स्थाणुर्वा Bhâsân. 128. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 69. als Bild des *Unbeweglichen:* स्थाणुरिव तिष्ठमानः Maitr. Up. 2,6. MBh. 1,7291. R. 1,63,24 (65,29 Gorr.). Çik. 170. Spr. (II) 437. Bhâg. P. 1,13,32. °भूत MBh. 5,7247. — 3) m. *ein best. Theil des Pfluges* (fünf Vitasta lang) Kâṭj. 9,6. 7. — 4) m. n. *ein best. Geschoss* Nilak. zu AK. nach ÇKDa. — 5) m. *ein best. Parfum,* = शैवक Çabdâk. im ÇKDa. — 6) m. *a nest of white ants* Wilson nach einem Comm. zu AK. — 7) m. ein N. Çiva's (der bei seinen Bussübungen wie ein

Baumstumpf unbeweglich dasteht; anders MBh.) AK. 1,1,4,30. 3,6,22, 31. Trik. 1,1,4. 2,3,142. H. 195. H. an. Med. Hin. 8. Halâj. 1,12. MBh. 1,2365. 7702. 2,72. 3,1318. 7,2046. 9625. 13,7312. 14,194. Harîv. 10587. R. 1,14,3. 25,11. 3,53,60. Bâgu. 11,13. Kumâras. 3,17. Vikr. 1. Râga-Tar. 4,1. — 8) m. N. pr. *a)* eines der 11 Rudra MBh. 1,2567. 4826. Harîv. 14170. Weber, Râmat. Up. 304. 313. — *b)* eines Prağâpati R. 2,20,3. — *c)* eines Schlangendämons Weber, Râmat. Up. 314. — 9) n. Bez. *einer best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, N. 1 (स्थाणु zu lesen). — Vgl. सभा°.

स्थाणुकर्णी f. *eine grosse* इन्द्रवारुणी Ratnâk. in Nigh. Pa.

स्थाणुजाति f. scheinbar Harîv. 233, da mit der neueren Ausg. zu lesen ist वृतलतावल्लीस्तृणजातीश्च.

स्थाणुतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha MBh. 9,2361. Verz. d. Oxf. H. 46, *b*, 22.

स्थाणुदिश् f. Çiva's *Weltgegend* d. i. *Nordost* Vaitân. Bân. S. 24,24. 33.

स्थाणुमती (von स्थाणु) f. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 4,2,80. N. pr. eines Flusses R. 2,71,16 (73,18 Gorr.).

स्थाणुवट N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,7049.

स्थाणिवर्त (von स्थाणिवत) adj. 1) *auf dem blossen Erdboden schlafend* (als Kasteiung) P. 4,2,15. Ak. 2,7,44. H. 810. — 2) *von einem* Sthaṇḍila *erhoben* (als Abgabe) gaṇa प्रोष्ठवाहादि zu P. 4,3,76.

स्थाण्वीश्वर (स्थाणु + ई°) N. pr. einer Stadt, = स्थानेश्वर Hall in der Einl. zu Vâsavad. 31. m. N. pr. eines Liṅga des Çiva Vâmana-P. 42 im ÇKDa.

स्थातर् (von √ स्था) 1) oxyt. n. = स्था *das Stehende, Unbewegliche* (Gegens. जगत्); gen. ṚV. 1, 159, 3. 2, 31, 5. जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी 4,53,6. 6,50,7. 7,60,2. 10,63,3. गर्भश्च स्थातां (स्थात्राम्) गर्भधरीयाम् 1,70,2. als masc. erscheint das Wort in पप्रुंधं स्थातृं (vielleicht स्थात् zu lesen) चरथं च पाहि 72,6. verdorben ist die Stelle जगतः स्थातुर्जगद्रा कृणुधम् 6,49,5. — 2) parox. nom. sg. *Lenker* (von Ross und Wagen): रथस्य रघ्वीः ṚV. 3,45,2. 10,39,1. voc. 1,33,5. 181,3. 6,41,3. 8,24,17. 33,12. 46,1. स्थातारो हि प्रमितौ संदृशि स्थन *in geradem Strich steht man euch* (das Gespann) *lenken* 5,87,6. bildlich: यत्र नः प्रथमं स्थाता मघवन्नेवो वे प्रजापतिः so v. a. *ist unsere Autorität* MBh. 3,12691. — Vgl. पुर°.

स्थातव्य (wie oben) n. partic. fut. pass. impers. *zu stehen, — verweilen, — bleiben* Mṛicch. 33. घर्मेः सक् Spr. (II) 3498. fgg. निशि — घस्मरके 6033. Kathâs. 12,39. 43,31. या तत्समासेरस्माभिस्तत्र 121,124. Pañkat. 221,11. Hit. ed. Jonks. 2341. 2429. *zu stehen* so v. a. *nicht zu weichen* MBh. 3,832. 7,717. कथं तेषां मया रणे *wie vermag ich ihnen Stand zu halten?* R. 1,22,14. *zu verbleiben in* so v. a. *nicht zu weichen von:* सत्ये MBh. 1,6057. निर्देशे मम तुष्यम् 3,12765. त्वया पितुर्नियोगे R. 2,21, 48. R. Gorr. 2,35,26. *in einem best. Zustande u. s. w. zu verharren:* भवता मौनव्रतेन Pañkat. 76,20. त्वया सच्चोकृतक्रमेण 216,3.

स्थातृ n. *das Stehende, Unbewegliche:* स्थातुश्चरथमकृन्व्यूर्णोत् ṚV. 1,68,1. स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः 58,5. 70,7 (wo auch चरथं zu lesen ist).

स्थात्र (von √ स्था) n. *Standort, Stelle:* स्थात्रे (nach Sây. dat. von स्थातर्) रेजन्ते विकृतानि रूपशः ṚV. 1,164,15. — Vgl. भूरि°.

स्थान (wie oben) m. n. Sundn. K. 249, *a*, 9. 1) n. = स्थिति Ak. 3,4, 25,120. H. an. 2,289. Med. n. 23. Halâj. 5,51. = अवकाश Ak. H. an. Med. = पद, आस्पद H. 988. = गृह u. s. w. 991. Halâj. 2,136. = सादृश्य H. an. Med. = संनिवेश H. an. = शयन Halâj. 4,77. *a) das Stehen:* स्थानासनाभ्याम् M. 6,22. 59. 11,224. प्रस्थितायां प्रतिश्रवाः स्थितायां स्थानमाचरेः Râm. ed. Calc. 1,90. रक्षितौ ज्ञातशस्त्राणां स्थानं पश्चाद्विधीयते MBh. 4,110. हारि. अवस्करे 3,14676. यूपस्य Âpast. Bs. 2,3. — *b) das Bleiben, Verweilen, Aufenthalt:* तवास्मिन्यमुनातोये नैव स्थानं दृढाभ्यस्तम् । गच्छार्णवजलम् Harîv. 3690. चिराय सविधे प्रियस्य Śiç. D. 59,8. *das Liegen einer Waare* so v. a. *Aufbewahrung* M. 8,401. — *c) das Standhalten, Nichtweichen:* स्थाने युद्धे च M. 7,190. — *d) das Bestehen, Fortdauer:* जगत्स्थाननिरोधसंभवाः Bhâg. P. 1,5,30. 2,5,13. 7,39. 10,1. 3,26,46. 4,30,29. 5,18,5. 7,7,24. नहि मे जीवितस्थाने (so zu lesen) कृतं धावतिष्ठते R. 3,31,2. so v. a. *status quo* (*weder Ab- noch Zunahme*) Ak. 2,8,4,19. Med. Spr. (II) 5015. MBh. 12,2664. Sûrjas. 1, 153,10. श्री° *Unbeständigkeit, Vergänglichkeit:* शब्दस्य Gaim. 1,7. — *e) das Sichbefinden in, auf:* व्यापदि Kâm. Nîtis. 13,28. प्राप्ति°, वयः° 19,7. श्रोतव्यापत्तिमर्ग°, श्रोतव्यापत्तिफल° Burnouf, Intr. 291. — *f) das Bestehen als* (instr.): विरञ्चेनात्मना Bhâg. P. 1,15,48. — *g) Zustand:* जाग्रदादीनि जीवस्थानानि Bhâg. P. 6,16,54. °त्रय 61. Ind. St. 2,61. am Ende eines adj. comp.: जागरित°, स्वप्न°, सुषुप्त° *sich in dem Zustande des Wachens u. s. w. befindend* Mâṇḍ. Up. 3. fgg. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,123. 133. Weber, Râmat. Up. 338. — *h) vollkommene Ruhe:* इन्द्रियम्। वशीकृत्य ततः कुर्यान्नित्तस्थानं शुभाश्रयम् ॥ Sarvadarçanas. 178. 1. 2. — *i) Stellung des Körpers:* beim Schiessen Ak. 2,8,2,32. H. 777. स्थानं वीरासनम् R. Gorr. 2,28,25. — *k) Stellung, Rang, Würde:* स्थानादपसरणं मुराणाम् Maitrâjan. 1,4. स गच्छत्युत्तमं स्थानं न चेहाजायते पुनः M. 2,249. 3,93. राज्ञो माहात्म्यकम् 5,94. ऐन्द्र 8,344. 7,123. गुरुस्थाने न मां नियोक्तुं त्वमिहार्हसि MBh. 3,1858. 12,4294. पातयित्वा रामं स्थानात् R. 2,43,5. 106,22 (बालः स्था° zu schreiben und demnach der Artikel बालस्थान zu streichen). स्थानाद्यावरोप्यते 3674. 6336. स्थानात्परिभ्रष्टः 6497. 7502. स्थानं प्रधानं न बलं प्रधानं स्थानस्थितः कापुरुषोऽपि सिंहः 7525. °त्यागो नरपतीनाम् Vaitân. Bân. S. 4,15. °प्राप्ति 104,5. स्थानं प्राप्नोति 7. Kathâs. 24,25 (zugleich Bed. *u*). Dhûrtas. 92,3. Bhâg. P. 3,10,29. 5,19,22. P. 4,1,165, Schol. रिपुस्थानेषु वर्तते: *die Stellung eines Feindes einnehmend* Spr. (II) 4113. उच्च° adj. M. 7,121. — *l) Gestalt, Form, Aussehen* (vgl. संस्थान): des Mondes Vaitân. Bân. S. 4,12. — *m) Standort, Wohnstätte, Ort, Stelle, Platz:* इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोकः ṚV. 5,76,4. 7, 70,1. यानि स्थानानि दधिरे दिवो यक्षीषायधीषु विक्षु Ś. Vilâkh. 11,6. VS. 2,3. परम Çat. Br. 2,6,4,2. 11,1,6,16. 14,5,4,1. इदं च परलोकस्थानं च 7,8,9. Praçnop. 3,12. Çvetâçv. Up. 5,11. ऐन्द्र M. 5,93. स्वायंभुव MBh. 13,1809. राजा कक्षा पुरे स्थानं ब्राह्मणाढ्यस्य तत्र तु Jâm. 2. 185. MBh. 5,7523. इदं स्थाने R. 1,47,12. स्थितः स्थान एकस्मिन् 63,24 (65,29 Gorr.). R. Gorr. 2,59,10. 3,35,65 (37,10. 60,20). Sûrjas. 1,21. 13. 169,11. Mâlav. 14. Çâk. 28. 102. 41,11. Vikr. 3,9. 71,11. 43. Spr. (II) 2100. 2107, v. l. 5938. 6033. स्थानमुत्सृज्य गच्छन्ति सिंहाः सत्पुरुषा

गता: 7224. Varāh. Bṛh. S. 4,4. 11,6. 45,16. 48,77. 51,1. 2. 53,109. 55,12. 86,62. स्थानं राजगृहे नाम Kathās. 3,7. 18,130. स्थानाग्र्यो गृहम् 40,31. Rāja-Tar. 1,116 (स्थानम् zu lesen). 2,57. 5,90. 297. 6,168. Bhāg. P. 1,4,3. 17,37. 40. 3,12,11. 13,14. 22,31. 5,13,12. Dharmas. 76, 4. 89,4. Sarvadarçanas. 13,9. 12. fg. Paṇḍat. 37,5. 47,18. 64,8. 85,22. Hit. 25,19. Vet. in LA. (III) 2,2. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,512,1 v. u. स्थाने स्थाने an verschiedenen Orten, hier und da Spr. (II) 4368. Rāja-Tar. 2,131. 4,48. 306. स्थाने स्थानेषु (vgl. स्थानस्थानेषु Kathās. 26,174) dass. Varāh. Bṛh. S. 27,5. ब्रह्मण: MBh. 1,2297. 5,7353. कुबेरस्य AK. 1,1,8,66. मुनीनाम् Hariv. 2,143. हिमवत: Spr. (II) 2033. 7047. नाट्यस्य H. 282. वधस्य 930. स्थानत्रयं यतीनाम् (Pausen) Paṇḍat. V,44. ग्राम्योपलब्धये AK. 3,4,23,212. am Ende eines comp.: Accent P. 6,2,151. गोस्थानैं Schol. यज्ञ°, गज्ञ° Jāḍ. 1,278. अविवेकिजन° Spr. (II) 7492. सैन्य° MBh. 7,464. आश्रम° R. 2,54,25. 3,76,22. माया-पुरी° Kathās. 124,153. यज्ञ° MBh. 5,3686. द्वार° 7,1495. वृत्तैक° R. 2,45,31. कूर्च° Kād. Ç. 4,14,28. इध्म° 5,6,6. सिरा° Varāh. Bṛh. S. 54,124. चित्रक° Hariv. 7074. मुद्रा° Çiç. 67,19. शिर:स्थाने पादौ कृतौ R. 1,46,17 (47,15 Gorr.). दग्धास्थि° 2,77,8. दोल° Kād. Ç. 25,6,8. आघात° Varāh. Bṛh. S. 48,81. खिनोद° Çiç. 80,22. 81,22. 86,17. चर्-ण° Kathās. 26,29. प्रसव° Paṇḍat. 73,25. Stelle am Körper: मूर्ध्नि स्थाने Maitrāyaṇ. 6,23. दश स्थानानि दण्डस्य M. 8,124. Suçr. 1,82,3. 125,8. 2, 189,9. Mārk. P. 18,47. fg. Bhāg. P. 2,2,13. — a) Statt, Stelle: loc. anstatt Ait. Br. 7,4. धनुष्टङ्कान् Çāṅkh. Ç. 10,12,8. पर्वणाम् Āçv. Ç. 3,2, 2. 3,13,14. Kāty. Ç. 10,7,8. 14,3,25. मायदोलस्थाने पुरोडाश: 25,5,7. Lāṭy. 1,4,3. 5,4,6. Āçv. Gṛhy. 3,6,1. Nir. 12,7. ṚV. Prāt. 14,15. 17. P. 1,1,50. 7,3,46. Rāgn. 12,58. Schol. zu P. 1,1,55. Vop. 4,8. मामा-त्मस्थाने वद्धा Paṇḍat. 37,21. तस्मादस्य कुलीरक व्यञ्जनस्थाने करोनि 32,1. विज्ञानस्थाने चतुर: शशकानत्र धृत्वा 35,22. 83,19. त्वं भवस्थाने स्थितम् 131,3. विलोचनस्थानगत die Stelle der Augen vertretend Çiç. 4,4. am Ende eines adj. comp. P. 5,4,10. पितृ° die Stelle des Vaters vertretend, = पितृतुल्य Schol. धाता धातृस्थानो वा Āçv. Gṛhy. 1,7,8. इयङुवङ्स्थानौ यू i und u, an deren Stelle ij und uv treten, P. 1,1,4. Vop. 3,20. स्थाने = मान्ये, सादृश्ये und = कारणे (कारणे Med.) H. an. 7,32. Med. avj. 46. — c) Stelle für so v. a. Behälter: ग्रहाम् M. 1,13. जल° MBh. 1,5888. पाणिपादशलाकाश्च तासां स्थानचतुष्टयम् Jāḍ. 3,85. पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिता: । वेदा: स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥ 1,3. — p) Feld, Fach Varāh. Bṛh. S. 48,24. 53,54. — q) ein rechter, passender Ort Spr. (II) 6953. 7222. 7225. स्थाने am rechten Orte 5001. स्थान एव हि युज्यते भृत्याश्चाभरणानि च 7221. अस्थाने am unrechten Orte Paṇḍav. Br. 10,10. R. Gorr. 2,20,6. Kathās. 121,178 (Gegens. सुस्थाने 181). अस्थाने (so zu lesen) भूषणादीनां विन्यास: Sāh. D. 143. अस्थानोपगतयमुना Megh. 52. अस्थानवर्षेण Daçak. 102,15. स्थाने ver-allgemeinert so v. a. zu rechter Zeit, mit Recht gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. = युक्त AK. 3,5,11. H. an. 7,32. Med. avj. 46 = सत्य Çaṅkar. im ÇKDa. — Bhāg. 11,26. रोष: प्रयुक्त: MBh. 1,6815. 4,2339. R. 3,67, 12. Ragh. 5,16. 7,13. Kumāras. 6,67. 7,65. Çiç. 37,4. 63,7, v. l. Veṇ. 8,16. Mālav. 49. Spr. (II) 4623. Bhāg. P. 3,21,31. अस्थाने R. 2,23,6. 3,13,7. 4,20,10. Mārk. P. 74,18. Paṇḍat. 10,10. अस्थानकुपित R. 4, 32,6. अस्थानक्षय Sāh. D. 188. — r) Ort so v. a. Gebiet eines Gottes nach der Eintheilung in प्रथम, मध्यम, उत्तम Erde, Luft, Himmel Nir. 7,8. fgg. मध्य° und इन्द्र° 22. — s) ein fester Ort, Burg Spr. (II) 2677. 2844, v. l. — t) Ort so v. a. Organ eines Lautes Çāṅkh. Ç. 1,2,4. 5. ṚV. Prāt. 1,20. 21. 23 (10. 11. 13). 6,8. 13,2. 14,2. 7 (तालु° adj.). 18. AV. Prāt. 1,41. TS. Prāt. 2,31. 33. 44. 46 (कण्ठ° adj.). 49 (नासिका° adj.). VS. Prāt. 1,10. उर:कण्ठमूर्ध्यानि 30. 43. 62. 90. Sarvadarçanas. 128,22. 139,17. षष्टस्थानसमीरित Hariv. 16161. षष्टौ स्थानानि वर्णानामुर: क-ण्ठ: शिरस्तथा । जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ॥ Çikshā 13 in Ind. St. 4,107. Weber, Prātiçākhja. 107. वर्णचतु:स्थान Rāmat. Up. 362. एकस्थानत्व Vop. 1,4. Organ überh.: द्रव्योपलब्धि° so v. a. Auge Bhāg. P. 3,31,45. — u) Lage —, Stufe der Stimme (leiser oder lauter, höher oder tiefer): पद्मर्धं हृदयनाभे: कपोलफलकादध: । प्राणसंचारणस्थानं स्थानमित्यभिधीयते ॥ उर: कण्ठ: शिरश्चेति तत्पुनस्त्रिविधं भवेत् । मन्द्रं मध्यं च तारं च Çikshā beim Schol. zu R. ed. Bomb. 1,4,10. प्रथम° Kāty. Ç. 3,1,3. 3,6,17. मध्यम° Āçv. Ç. 4,15,10. प्रेषादिरागुर: स्थाने 3,8,7. मन्द्र, मध्यम, उत्तम ṚV. Prāt. 13,17. 13,3. मन्द्रमध्यगतात् TS. Prāt. 22,11. 23,2. sieben s. 11. प्रमाणे उच्चस्वरे (so ed. Bomb.) स्थाने MBh. 2,132. °मूर्धज्ञकोविद R. ed. Bomb. 1,4,10. °कारणान्वित 7,71,15. 93,13. पञ्चम° Rāja-Tar. 5,362. Kathās. 24,25 (zugleich in der Bed. b). वीणा घ्रुवा स्थानात् so v. a. verstimmt 34,159. सु° (doppelsinnig) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 37. — v) ein eintretender oder eingetretener Fall M. 7,56. 8,8. 119. Jāḍ. 2,226. परिभव° Paṇḍat. 82,12. — w) das am-Platz-Sein, Gelegenheit —, Veranlassung zu (im gen. oder im comp. vorangehend) Kāty. Ç. 3, 3,6. 22,7,1 2. 24,4,21. Lāṭy. 9,12,8. संतापस्यास्य ते स्थानं नाके पश्यामि R. 5,71,3. त्रिविधस्य दु:खस्य Mārk. P. 37,30. दण्डस्य Bhāg. P. 6,1,39. 43. क्रोध° MBh. 3,14677. अमर्ष° 7,7093. हर्ष° 9,2229. अ-प्रीति° (so ed. Bomb.) 14,131. कोप° 15,821. शोक° Spr. (II) 2163. 6525. भय° ebend. R. Gorr. 2,7,2. 3,59,19. प्रमाद° Uttarān. 37,13 fg. (51,5). अनुशय° Mālatīm. 140,5. लाभ° Kathās. 32,138. समाङ्गेयवाक्या° Paṇ-ḍat. ed. orn. 59,9. concret der Gegenstand, der zu Etwas Veranlassung giebt oder geben kann: श्वेतं पद्मं शिरोरुक्णां स्थानं पद्मं परिभवस्य Spr. (II) 6599. आयास° MBh. 12,2112 (nach der Lesart der ed. Bomb.). अ-पि सूक्ष्माणि लोकस्य तर्कस्थानानि चिन्तयन् Kathās. 24,103. विभीषिका° Paṇḍat. 160,21. नाट्य कोपस्थानम् Çiç. in LA. (III) 34,15. तत्काव्यस्या-र्पणस्थानमेक: श्रोतावधान: so v. a. ist allein würdig, dass man ihm dieses Gedicht anvertraut, Kathās. 8,10. मान्य° ein achtungswerther Gegenstand Spr. (II) 6072. — x) Abtheilung einer Disciplin, z. B. der Medicin bei Karaka, Suçruta u. s. w.: सूत्र° oder श्लोक°, निदान°, शारीर° u. s. w. आयुर्वेदस्याष्टौ Ind. St. 1,21,1. ऋग्वेदस्याष्टौ 3,251,1. fgg. = ग्रन्थसंधि Taitt. 3,2,25. — y) ein astrologisches Haus, Unterabtheilung eines astr. H. Varāh. Bṛh. S. 40,9. 44,11. fg. 103,8. Bṛh. 11,15. 23,1. Verz. d. Oxf. H. 330,a,27. 31. 34. 36. 40. 44. b,3. 8. 30. 32. 34,37. — 2) m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva R. 4,41,61. — 3) तत्स्थान Ait. Br. 6,5 nach Sāy. = तत्सदृश; Weber in Ind. St. 3,295 vermuthet तत्-स्थान. — Vgl. कर्म°, गोष्ठान und गोःस्थान, जन्म°, जन्म°, सुरंग°, तूष्णी°, धन° (auch Bez. des zweiten astrologischen Hauses Verz. d. Oxf. H. 330,

a, 31), धर्माधिकरण°, नृत्य°, परि°, पाक°, पीठा°, पुण्य°, प्रति°, प्रव-म°, फल°, बन्धन°, ब्रह्म°, भय°, भर्तृ°, भाण°, भीरुस्थान, भूत°, भोग°, मद्°, मधुस्थान und मधुस्थान, मध्य°, मद्य°, मूल°, पद्या°, रण°, रपि°, लेख्य°, वम्र°, वध°, वध्य°, वयः°, वर्ण°, वि°, विराज्°, विश्राम°, वि-शेषण°, विहार°, वीर°, व्यवहार°, व्याधि°, शयन°, शिरः°, शिल्प-स्थानविद्या, शुल्क°, स°, संकेत°, सन्न°, समान°, सर्वनाम°, सह्°, सहै-क°, सिद्धि°, सुर°, सुस्थान und सुस्थान, सूत्र°, स्व°, हृदय°.

स्थानक (von स्थान) 1) m. N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 8,1247. — 2) n. *a) Stellung des Körpers* (beim Schiessen u. s. w.) Mallin. zu Kumāras. 3,70. Rāǵa-Tar. 7,1719. Bez. *einer best. Stellung* Vikr. 64,21. — *b) Stellung, Rang, Würde* MBh. 13,1852. — *c) Ort, Platz:* स्थान-कस्थानकेषु Pañkat. ed. orn. 49,20. *Stadt* Çabdārthak. bei Wilson. — *d) eine Vertiefung um die Wurzel eines Baumes, in welche das für den Baum bestimmte Wasser gegossen wird*, H. 1095. Halāy. 2,29. — *e) Bez. best. Abtheilungen im Kāṭhaka* Ind. St. 4,69. 3,283. 454. — *f) a bubble or a bead on spirits or wine* Wilson nach Çabdārthak.; vgl. स्थानक. — Vgl. पताका° (auch Sāh. D. 310).

स्थानचञ्चला f. *eine Art Ocimum* (बर्बरी) Çabdak. im ÇKDr.

स्थानचिन्तक m. *Quartiermeister* Pañkat. 156,22.

स्थानच्युत adj. *um seinen Platz gekommen, von seinem Platz entfernt:* स्थानस्थितस्य पद्मस्य मित्रो वरुणभास्करौ । स्थानच्युतस्य तस्यैव क्षोदशोषणकारकौ ॥ Gāruḍa-P. 115 im ÇKDr.

स्थानत्याग m. *das Verlassen seines Wohnorts* Spr. (II) 7381.

स्थानत्व n. nom. abstr. am Ende eines comp.: एक° nom. abstr. von एकस्थान adj. *demselben Organ angehörig* Vop. 1,4. Comm. zu TS. Prāt. 1,33.

स्थानदातृ nom. ag. *Jmd* (gen.) *seinen Platz anweisend*; f. °दात्री Pāṇ. 2,3,58.

स्थानदीप्त adj. in der Auguralkunde *Unglück verheissend wegen des Standortes* Varāh. Bṛh. S. 86,63.

स्थानपर्त adj. von स्थानपति gaṇa यज्ञपत्यादि zu P. 4,1,84.

स्थानपति m. *Herr des Ortes* ebend.

स्थानपाल m. *Hüter eines Ortes* Jāṭ. 2,175. Rāǵa-Tar. 8,812. *Hüter einer Region:* महतां सत्त्व सत्तानां स्थानपाला: R. 1,47,3; vgl. unter स्कन्ध 1) c).

स्थानप्रच्युत adj. = स्थानच्युत. करेणव इवारण्ये °यूथपा: R. 2,65,20.

स्थानभङ्ग m. *Ruin —, Fall eines Ortes* Pañkat. 47,9. 12.

स्थानभ्रंश m. *Verlust seiner Stellung* Varāh. Bṛh. S. 104,26. *Verlust seines Standorts* Spr. (II) 6115.

स्थानभ्रष्ट adj. *seiner Stellung verlustig gegangen, von seinem Platz entfernt* Varāh. Bṛh. S. 104,25. दृप्ता: केशा नखा नरा: Spr. (II) 7223.

स्थानमृग m. Bez. *grosser Fische, des Krebses, der Schildkröte, des Krokodils und des* Makara (weil sie angeblich *an demselben Platze bleiben*) Rāǵan. in Nigh. Pr.

स्थानयोग m. pl. *die respectiven Standorte* (von Waaren) oder *Mittel zur Aufbewahrung* M. 9,322.

स्थानयोगिन् adj. = स्थानेयोग Comm. zu VS. Prāt. 1,136.

स्थानविद् adj. *ortskundig* Kathās. 12,133.

स्थानविभाग m. *Vertheilung —, Anweisung der Plätze* Brahmas. in Ind. St. 1,114. Ueber die Bed. des Wortes bei den Mathematikern s. Colebr. Alg. 6. 10.

स्थानस्थ adj. *auf seinem Platze stehend, sich nicht bewegend* Varāh. Bṛh. S. 89,12. zu *Hause sitzend* (= स्वस्थानस्थ Taik. 3,1,5. H. 477) Halāy. 2,213.

स्थानस्थान n. pl. *dieser und jener Ort:* °स्थानेषु यथाम so v. a. *in allen Ecken und Winkeln* (des Hauses) Kathās. 26,74; vgl. स्थाने स्था-नेषु Varāh. Bṛh. S. 27,5.

स्थानस्थित adj. *an seinem Platze stehend* Spr. (II) 7525 und unter स्थानच्युत.

स्थानाङ्ग (स्थान + 3. अङ्ग) n. Titel des 3ten der 12 heiligen Bücher der Ǵaina H. 243. Wilson, Sel. Works 1,284. 286.

स्थानाध्यक्ष (स्थान + ध्य°) m. *Gouverneur eines Platzes* H. 724.

स्थानापत्ति (स्थान + आप°) f. *das an die Stelle Treten* Kāty. Çr. 4,3,19. Comm. 323,14.

स्थानापन्न adj. *an die Stelle getreten, substituirt* Schol. zu Kāty. Çr. 323,13. 16. fg.

स्थानासनविहारवत् (von स्थान + आसन + विहार) adj. *im Besitz der Wohnstätte, des Sitzes und des Erholungsplatzes seiend* M. 2,215.

स्थानास्थानज्ञानबल n. *die Macht des Wissens dessen, was sich schickt und was sich nicht schickt*, Bunsour in Lot. de la b. l. 783.

स्थानिक (von स्थान) 1) adj. *an die Stelle von — (gen. oder im comp. vorangehend) getreten* Schol. zu P. 7,3,47. 8,1,136. 8,3,58. — 2) m. *Gouverneur eines Platzes* H. 724.

स्थानिन् (wie eben) adj. 1) *eine hohe Stellung einnehmend:* पातित्यं स्थानिनामपि Verz. d. Oxf. H. 14,a, N. 1. 231,b,27. 43 (als gen. zu fassen). — 2) *am Platz —, an der Reihe seiend, hergehörig* Schol. zu Kāty. Çr. 323,17. देवता Āçv. Çr. 3,13,19. घ° 20. *was ursprünglich dagestanden hat*, m. *das Primitive* im Gegensatz zu आदेश *Substitut* Schol. zu P. 3,1,44. 8,1,102. 7,2,80. — 3) *was ursprünglich dagestanden hat oder dastehen müsste, aber nicht dasteht; zu ergänzen* (= अप्रयुज्यमान Comm.) P. 1,4,105. 2,3,14.

स्थानिवत् (von स्थानिन्) adv. *wie das Primitive:* स्थानिवदादेश: d. i. *für das Substitut gelten dieselben Regeln wie für das Primitive* P. 1,1,56. Vop. 2,8. Pat. zu P. 6,4,93. Davon nom. abstr. 1) स्थानिवत्त्व n. Schol. zu P. 1,1,56. — 2) स्थानिवद्भाव m. Pat. zu P. 8,4,93. Kāç. zu P. 1,1,56.

स्थानीय (von स्थान) 1) adj. am Ende eines comp. *a) seinen Stand habend —, sich befindend in:* कण्ठ° Vedāntas. (Allah.) No. 54. — *b) die Stelle von — vertretend* P. 5,4,10. पितृ° Schol. पति° Āçv. Gṛhy. 4,2,18. कपाल° Schol. zu Kāty. Çr. 4,11,3. Verz. d. Oxf. H. 216,b,1 v. u. Çaṅk. zu Kaṭhop. 5,1. zu Bṛh. Âr. Up. S. 233. 301. Daçak. 59. 12. fg. Kull. zu M. 1,31. — 2) n. *Stadt* AK. 2,2,1. H. 972. Halāy. 2, 130; vgl. Vāçaspati beim Schol. zu H. 972.

स्थानेयोग adj. (f. आ) *in der Beziehung von „anstatt (स्थाने)“ stehend:* षष्ठी d. i. *der Genitiv bezeichnet dasjenige, an dessen Stelle Etwas tritt*, VS. Prāt. 1,136. P. 1,1,49.

स्थानेयोगिन् adj. dass.; davon nom. abstr. °योगित्व n. Schol. zu P. 1,1,

47. — Vgl. स्थानयोगिन्.

स्थानेश्वर (स्थान + ई°) 1) m. *Gouverneur eines Ortes* Râǵa-Tar. 6, 282. — 2) n. N. pr. einer Stadt und des Bereichs derselben (Thanesar) Hiouen-thsang 1,211. fgg. 2,339. fg. Verz. d. Oxf. H. 39,b,2. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 51. Nach Lassen (IA. 1,123) soll स्थानेश्वर im MBh. N. pr. eines Wallfahrtsortes sein.

स्थापक (vom caus. von 1. स्था) nom. ag. 1) *Aufsteller eines Götterbildes* Varâh. Bṛh. S. 60,14. 18. Verz. d. Oxf. H. 43,a, N. 1. — 2) *Begründer:* सिद्धान्त° Verz. d. Oxf. H. 160,b,7. — 3) Bez. *einer best. im Vorspiel eines Dramas auftretenden Person, die das Drama einleitet* (verschieden vom Sûtradhâra), Sâh. D. 283. = सूत्रधार H. 330, Schol. — Vgl. स्थिति°.

स्थापत्य 1) m. = स्थपति *Haremswächter* AK. 2,8,1,8. Trik. 3,3,234. H. 727. Hall. 2,272. — 2) n. a) *das Amt eines Oberhauptes eines Bezirks, — Statthalters* Pañkav. Bh. 17,11,6. 7. — b) *Baukunst, Architektur* R. 1,12,6. Bâlg. P. 3,12,38.

स्थापन (vom caus. von 1. स्था) 1) adj. a) *Dauer verleihend, erhaltend;* s. वयः°. — b) *festsetzend, bestimmend:* व्यञ्जनव्यापार° Sâh. D. 124,15. — 2) f. आ a) *das Feststehenheissen, Haltgeben* als eine Eigenschaft der Erde MBh. 12,9133. — b) *eine feste Bestimmung, festgesetzte Ordnung:* स्थापना वै सुमहती त्वया देव प्रवर्तिता MBh. 12,10168. — c) *Begründung,* insbes. *das dialectische Beweisen der Richtigkeit einer These* MBh. 1,2887 (könnte auch n. sein). Kâraka 3,8. Nyâyas. 1,2,44. Comm. zu 5,1,1. 20. Sarvadarçanas. 114,4. — 3) f. ई *Clypea hernandifolia W. et A.* (ein Schlingstrauch) AK. 2,4,2,5. Med. n. 152. — 4) n. a) *das Aufrichten, Aufstellen:* eines Götterbildes Varâh. Bṛh. S. 60,21. Verz. d. Oxf. H. 85,b,2 (लिङ्ग°). 277,a,19 v. u. 332,b, No. 783. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 12, Cl. 46. *das Stellen, Hinstellen:* प्रघात° Suçr. 1,171,20. कलश° Verz. d. B. H. No. 1121. सान्द्रसिन्दूरशिरः° *das Legen auf den Kopf* Comm. zu Naish. 22, 45. = निवेशन H. an. 3, 432. = रोपण Med. — b) *das Feststellen, Versetzen in einen unbeweglichen Zustand:* eines Menschen in einem Zweikampf Bâlg. P. 10,44,5. शङ्ख-पद्मव्योम° so v. a. *das Aufhängen* Verz. d. Oxf. H. 322,b,13. *das Befestigen, Dauerhaftmachen:* der Gliedmassen Suçr. 2,28,3. जगत: Verz. d. Oxf. H. 48,a,1. स्थापनं चक्रिरे तत्र चातुर्वर्ण्यस्य संगतम् R. 7,74,14. वयस: Suçr. 1,167,8. वयः°, आयुः° 2,198,5. स्वधर्मस्थापनं नृणाम् Mârk. P. 27,30. — c) *Mittel zur Befestigung:* गर्भ° Kâraka 4,8. = धास्थापन *Stärkungsmittel* Suçr. 2,228,13. — d) *das Aufbewahren:* बीज° Kâç. 11,14. धान्य° 18,3. 12. Verz. d. Oxf. H. 86,b,27. — e) *das Begründen, das dialektische Beweisen der Richtigkeit einer These:* स्वपक्ष° Madhus. in Ind. St. 1,19,1 v. u. = समाधि H. an. Viçva im ÇKDr. — f) *das Feststellen* so v. a. *Bestimmen, Angeben:* काव्यस्यार्थस्य Sâh. D. 129, 15. *das Statuiren* (Gegensatz प्रतिषेध, निषेध) 683. 685. — g) Bez. *eines best. Processes, der mit dem Quecksilber vorgenommen wird,* Sarvadarçanas. 100,4. उत्थान st. dessen Verz. d. Oxf. H. 320,a,9. — h) = पुंसवन H. an. Med. (hier fälschlich पुंसिवने).

स्थापनीय (wie eben) adj. 1) *an einem Orte zu halten:* देवी कालं कंचन भूगृहे Kathâs. 39,43. सुता तव । सदृश्या *so dass sie Niemand sieht* 61,269. मार्जारस्ते *du musst dir eine Katze halten* d. i. *anlegen* 65,160. — 2) *mit einem Stärkungsmittel zu behandeln* Suçr. 2,198,20.

स्थापयितृ (wie eben) nom. ag. *Befestiger, Begründer:* चतुर्णां वंशानां स्थापयित्री सुता मम MBh. 5,3927.

स्थापयितव्य (wie eben) adj. 1) *an einem Orte zu halten:* यज्ञोक्ता चन्दनं वीणा u. s. w. गृहे MBh. 5,1543. — 2) *fest —, in Zucht zu halten:* पित्रा स्थापयितव्या हि वयमुत्पथगास्विताः MBh. 5,3429.

स्थापयितृ nom. ag. = स्थापयितृ *der da fest hält:* (प्रज्ञानाम्) स्वेषु सेतुषु स्थापिता पृथक् Bâlg. P. 4,21,21.

स्थापिन् nom. ag. vielleicht = स्थापक *Aufsteller eines Götterbildes* Pâṇ. 1,6,46.

स्थाप्य 1) adj. = स्थापनीय. a) *aufzustellen, aufzurichten:* प्रतिमा Varâh. Bṛh. S. 59,7. *hinzustellen:* चर्मण्यानडुहे भद्रासनम् Jâǵ. 1,279. श्लेमेकाक्माकाशे तीरं च मृन्मये 3,17. सादिनामन्तरे पादातम् MBh. 12,3672. त्वया तरुर्नन्दने Harîv. 7653. भ्रातो नृपसुते (so zu schreiben) पदे R. 2, 52,31. दैत्येन्द्रः शेतशैलगुहान्तरे *einsperren* Kathâs. 118,93. पुरस्या-भ्यन्तरे तस्य मनः स्थाप्यं न बाह्यतः MBh. 14,565. क्वगा वेश्मनि *im Hause zu halten* (d. i. *als Hausvieh zu halten*) Varâh. Bṛh. S. 65,1. — b) *festzuhalten in, anzuhalten zu:* राज्ञा वर्णाः स्वकर्मसु Mârk. P. 28,36. धर्मे प्रजाः 125,56. — c) *zu versetzen in* (acc.): दुःखम् Kathâs. 52,27. दुः-स्थितिम् (so ist wohl zu lesen) 40,108. — d) *fest —, im Zaum zu halten:* दस्युगोविनः MBh. 12,2431. — 2) vielleicht *Götterbild* (*was aufgerichtet wird*): °स्वहारिन् Pâṇ. 1,6,47.

1. स्थामन् (von 1. स्था) n. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,144. 1) *Standort* AV. 1,32,2. वृत्त इव स्थामि 4,7,5. 6,77,1. 7,96,1. (वशा) यदा स्थाम् निधो-मति (निरासति) 12,4,29. — 2) *Kraft, Macht* AK. 2,8,2,70. H. 796. Hall. 4,35. 5,67.83. नारायणास्थाममत्त् *die Kraft des N. habend* Lalit. ed. Calc. 364,11. — Vgl. पाक°, महा°, पद्मास्थाम, सुष्ठामन्.

2. स्थामन् n. *Gewicht:* यच्चस्येवास्य यत्स्थाम नदतः प्रदिशो गतम् । यच्चत्थमिव बालो ऽयं तस्माद्बाह्या भविष्यति ॥ MBh. 1,5116.

स्थाय (von 1. स्था) m. *Behälter:* s. ज्ञल°.

स्थायिक adj. unter denjenigen Personen genannt, die कर्तास्थानेषु anzustellen sind, Bṛhaṇ. Nâradîç. 34,52.

स्थायिता (von स्थायिन्) f. *Dauer:* भावस्य Sâh. D. 22,17. 23,2. 75,4. 231.

स्थायित्व (wie eben) n. dass. Sarvadarçanas. 12,1. 14,13. 24,19. 30, 16. भावस्य Prasâdhan. 48,a,7. ग° *Unbeständigkeit* Suçr. 1,53,21.

स्थायिन् (von 1. स्था) adj. गण यास्कादि zu P. 3,1,134. Vop. 26,29. 1) *stehend, an einem Orte sich befindend:* गिरि° Nir. 1,20. पुर:° Spr. (II) 2904. स्थिर° Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,32. संवत्सरस्थायिनी मही *still stehend* MBh. 6,94. कतिपयदिन° (देश) *verweilend* Megh. 24. *sich am Orte befindend, anwesend:* पारिषद्या: Wilson, Sâṅkhyak. S. 171. *am Orte wohnend* (Gegens. आगन्तु) Kathâs. 61,112. fgg. मांस° *am Fleisch befindlich* Suçr. 1,61,3. *in einem Zustande —, in einer Lage befindlich:* कण्ठगतप्राण-संशय° Spr. (II) 6574. यातना° Mârk. P. 15,47. — 2) *ständig, bleibend, dauernd* Âçv. Çr. 8,5,16. MBh. 12,10089. गन्ध, कीर्ति Spr. (II) 2242. 5442. Suçr. 1,306,11. 2,539,3. Varâh. Bṛh. S. 57,4. Prab. 49,10. Sarva-darçanas. 9,17. 22. 10,5. 12,4. 24,20. भाव Daçar. 3,28. 64. 4,1. 32. 34. fg. Sâh. D. 33. 168. 208. 245. Verz. d. Oxf. H. 213,a, No. 506. H. 295. 304. 327.

Hall. 1,91. Çiç. 2,87. कतिपयदिवस° Spr. (II) 993. चिर° 7423. कल्पान्त° 6427. कल्पान्तर° Z. d. d. m. G. 27,85. जन्मपर्यन्त° Schol. zu Kap. 1,33. ध° *unbeständig, nicht von Dauer* Spr. (II) 2304. 3886. Rîâ-Tar. 6,146. — 3) *ausharrend, geduldig* oder *gesetzt:* ein Fürst Çiç. 2,87. eine Frau Buan. Nâyaç. 34,18. 28. — 4) *die Form von* — (geht im comp. voran) *Aabend:* घनुः° (इन्दु) Vasiṣ. Bṛh. S. 47,16. — Vgl. मूल°, राज्य°, वीर°.

स्थाणीभू (von स्थाणिन् + 1. भू) *Bestand gewinnen* Spr. (II) 5905.

स्थाणुक (von 1. स्था) 1) adj. (f. घा) P. 3,2,134. Vop. 26,146. *ständig, dauernd:* श्री Paṇḍav. Bh. 4,8,12. 15,12,3. उद्गातुर्वाक् 7,7,16. Bhaṭṭ. 2,22. *bleibend, verweilend:* यतीते वर्षुके काले प्रनष्ते स्थाणुको गृहे 7, 18. — 2) m. *Vorsteher eines Dorfes* AK. 2,8,4,7. H. 726.

स्थाणुरश्मन् (स्थाणुर° Padap.) adj. etwa *Zügel-lenkend:* die Marut RV. 5,87,5. = स्थिररश्मि Sây. — Vgl. स्थातृ.

स्थाल (nach Andern स्थौल) Uṇâdis. 1,115. = स्थल gaṇa ज्वलादि zu P. 3,1,140. 1) n. AK. 3,6,3,32. a) *Schale, Gefäss, Topf* H. 1026. an. 2,515. Med. l. 55. Hall. 2,172. हिरण्य° Lâṭ. 8,11,24. कांस्य° 25. Kauç. 53. राजत° Spr. (II) 7233. — b) *Zahnhöhle* Jîân. 3,85; vgl. Mit. III, 30,a,1 v. u. und स्थालक. — 2) f. ई a) (gewöhnlich *irdener*) *Topf, Kochtopf, Kessel* AK. 2,9,31. H. 1019. H. an. Med. Hall. 2,159. AV. 3,6, 17. VS. 19,27. 86. TBr. 2,1,2,1. Âit. Br. 1,11. पर्वा स्थालीरस्यति TS. 6,3,10,3. Çat. Br. 3,2,2,21. 4,2,2,1. अभिषा 6,6,4,3. 11,3,2,1. °अक् Kâṭy. Çr. 2,6,25. स्थाल्याः सवेणादाय Âçv. Çr. 1,11,10. चरु° 2,6,5. 6. वाघत्र्याः, सोमयवणीः, सादित्य°, उक्थ्य°, ग्राग्रयण°, ध्रुव° TBr. 1, 4,1,1. 3. Çat. Br. 4,2,2,16. °दर्वी Adbh. Br. in Ind. St. 1,39. MBh. 3, 10295. 12977. 7, 2139. 2367. 12, 1019. 13, 4422. 15, 727. Harîv. 1404. तीर्थे स्थालीपाकम् Suçr. 1, 149, 11. 164, 9. 2, 74, 18. वैदूर्यमयी Spr. (II) 7226. नहि भिक्षुकाः सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रीयन्ते Sarvadarçanas. 2, 20. fg. (= Verz. d. Oxf. H. 216,b,18. fg.). Buâc. P. 5,10,23. 9,14,42. fgg. Paṇḍar. 262,16. Schol. zu P. 1,4,45. 54. Lalit. ed. Calc. 334,18. °पिधान Mân. P. 50, 89. °पुरोष Buâc. P. 5, 9, 12. °दान Verz. d. Oxf. H. 35,a,42. — b) *Bignonia suaveolens* (vgl. काच°) H. an. Med. — Vgl. कांस्य°, चरु°, मरा°, सु°.

स्थालक (von स्थाल) n. *Stützknochen:* der Ribben Jîân. 3,89.

स्थालपर्व (von स्थलपथ) adj. *zu Lande eingeführt* in Verbindung mit मधुक und मरिच P. 5,1,77, Vârtt. 3.

स्थौलपथिक (wie eben) adj. *zu Lande eingeführt, — reisend* P. 5, 1,77, Vârtt. 1.

स्थालिन् (von स्थाल oder स्थाली) adj. *einen Topf besitzend* Pat. zu P. 3,2,82. कर° *die Hände als Topf gebrauchend* MBh. 13,1262.

स्थालीदुम m. (*der Baum, dessen Blatt als Schale gebraucht wird*) = vulgo नांदरुखी, das nach Molesworth *Ficus Benjamina* ist, Ratnâk. in Nigh. Pa. Nach Roxb. 3,541 wird das Blatt der *Ficus indica* so gebraucht.

स्थालीपर्णी f. Nigh. Pa. fehlerhaft für शालिपर्णी.

स्थालीपाक (nach Çânt. 4,4 auch paroxyt. und properoxyt.) 1) m. *Topfspeise* d. h. *ein Gericht von Gerste oder Reis in Milch gekocht* (häufig als Opfergabe) Çat. Br. 14,9,4,18. Kâṭy. Çr. 6,10,36. Gobh. 3,7,20. 8,4. कृसर° 2,7,9. Âçv. Çr. 2,6,10. तिलमिश्र 3,14,3. Gaut. 1,10,1. 11,11. 2,1,4. 2,3. 4. 4,7. 14. 9,9. 4,7,27. 8,21. Kauç. 17. 19. fg. 45. 56. 73. fg. Gaut. 2,10. MBh. 3,14682. Vasiṣ. Bṛh. S. 46,16. 59. Schol. zu P. 1, 4,64 und 6,3,38, Vârtt. 3. — 2) adj. = °पाकीय. मन्त्राः Verz. d. Oxf. H. 398,a,5 v. u.

स्थालीपाकीय adj. *dazu gehörig:* Gerste oder Reis Gobh. 1,3,21.

स्थालीपुलाक m. *taubes Korn im Kochtopf* als sprüchwörtliche Redensart Mahâbhâṣ. im ÇKDr.

स्थालीबिल n. *die Höhlung eines Kochtopfes* P. 5,1,70. davon adj. °बिलीय und °बिल्य *dahin gehörig* d. i. *zum Kochen geeignet* ebend. तण्डुलाः Schol.

स्थालीवत m. = स्थालीदुम Nigh. Pa.

स्थावर (von 1. स्था) 1) adj. (f. घा) P. 3,2,175. Vop. 26,156. a) *stehend, am Orte verweilend, unbeweglich* AK. 3,2,23. H. 1454. Wasser TS. 5,4,9,3. 7,4,23,1. Çat. Br. 4,4,5,10. Kâṭy. 20,3. Nir. 2,13. विष् (Gegens. यपक्रामिन्) Çat. Br. 5,3,3,14. °जङ्गमानि Çânkh. Gṛhy. 4,9. गुल्मैः °जङ्गमैः M. 9, 266. Kumâras. 6, 58. 72. *unbewegliches Gut* Jîân. 2,176. Dîpâvn. 124. fgg. Insbes. von der *Pflanzenwelt* Ait. Up. 3,3. लोकस्य स्थावरस्य चरस्य च Çvetâç. Up. 3,16. Kûlikop. in Ind. St. 9,19. fg. M. 1,40. fg. 46. 5,28. 7,15. 11,240. 12,42. MBh. 1,7642. 7691. 2,12773. 12, 261. 13,1712. R. 2,35,5. सकर्मणो हि जीवन्ति स्थावरा नेतरे जनाः Spr. (II) 1353. 2320. 2381. 6071. 6911. Suçr. 1,4,2. mit den vier Arten वनस्पति, वृक्ष, वीरुध्, ओषधि 18. स्थावरोत्पत्ति 111,3. Râgan. 2,44. Vasiṣ. Bṛh. S. 13,19. 34,12. 14. 99,2. Wheeler, Râmây. Up. 351. Verz. d. Oxf. H. 82,b,18. Mârk. P. 8,146. Buâc. P. 5, 11, 14. 6, 10, 3. 7, 6, 20. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 10. fg. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 8, Cl. 28. Sarvadarçanas. 33, 2. 35, 9. fgg. विष *vegetabilisches Gift* H. 1199. Verz. d. Oxf. H. 314,b,12. Verz. d. B. H. No. 963. Suçr. 2, 251,9. fgg. क्षेत्रा: 1,184,7. 2,174,9. Çiç. 2,87. तिष्ठ त्वं स्थावर इव *wie ein Baum* MBh. 3,2613. संपेदे निश्चेष्टः स्थावराकृतिः Kathâs. 73,128. — b) *fest, beständig, keinem Wandel unterworfen:* स्थान R. 7, 30, 34. तपस् Harîv. 11220. स्थावरात्मवत् 3939. — 2) m. *Berg* Taik. 2,3,1. Çabdar. im ÇKDr. Buâg. 10,25. Kumâras. 6,67. °राज Bez. des Himâlaja 3,52. — 3) f. घा N. pr. einer Göttin (महापृथिवीदेवता) Lalit. ed. Calc. 403,12. 20. — 4) n. a) *Bogensehne* Taik. 2,8,50. — b) *Bestand* Spr. (II) 812. स्थिरत्व v. l.; man konnte स्थाविर् vermuthen.

स्थावरक (von स्थावर) m. N. pr. eines Dieners Mṛicch. 96,17. 125,12.

स्थावरकल्प (so nach den Corrigg. st. स्थितकल्प zu lesen) m. N. einer *Weltperiode* Vie de Hiouen-thsang 165.

स्थावरता (von स्थावर) f. *der Zustand einer Pflanze* M. 12,9.

स्थावरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha oder *ein Tîrtha mit stehendem Wasser* Verz. d. Oxf. H. 13,a,9.

स्थावरत्व (von स्थावर) n. *Unbeweglichkeit* MBh. 14,654.

स्थावरादि (स्थावर + घा°) m. *ein best. vegetabilisches Gift,* = वत्सनाभ Râgan. im ÇKDr.

स्थाविर (von स्थविर) 1) n. *vorgerücktes Alter* gaṇa युवादि zu P. 5,1,130. AK. 2,6,2,40. H. 340. Lâṭ. 8,6,4. Spr. (II) 4067. MBh. 3. 13351. Verz. d. Oxf. H. 216,a,21. Nilak. 122. — 2) adj. *senilis:* काल oder भाव Spr. II) 4067, v. l. — Bernouf, Intr. 447 fehlerhaft für स्थविर.

स्थाविर्य n. = स्थाविर 1) MBh. 12,9507. 11971. Suçr. 2,446,8.

स्थासक 1) m. *Binse auf Wasser* u. s. w. H. 1077. an. 3,103. Med. k. 168. Hla. 165. — 2) *das Einsalben des Körpers mit wohlriechenden Stoffen*, m. AK. 2,6,3,23. H. 649. H. an. Med. neutr. Halâj. 2, 385. unbestimmt ob m. oder n. Taik. 3,3,75.

स्थासु n. *bodily strength or capability* Wilson nach Çabdâtnak. wohl nur verlesen für स्थामन् (nom. स्थाम).

स्थास्नु (von 1. स्था) adj. P. 3,2,139. Vop. 26,144. 1) *unbeweglich* (Gegens. चरिष्णु) Lit. 1,11,1. M. 1,86. Vaiju. Bhn. S. 88,33. Bhâg. P. 2, 6,41. Vgl. unter संस्थानचारिन् und संस्थानुचारिन्. — 2) *dauernd, anhaltend* AK. 3,2,22. H. 1453. यशस् Kir. 2,19. व्यापद् Spr. (II) 6253. परस्तात्कल्पवासिनाम् Bhâg. P. 4,9,20. — 3) *ausharrend, geduldig:* अ° *ungeduldig* Kathâs. 36,55.

स्थिक m. *Hinterbacke* Çabdar. im ÇKDr.

स्थित (partic. von 1. स्था) P. 7,4,40. Vop. 26,119. 1) adj. a) *stehend, stehen geblieben* (Gegens. *gehend, sitzend, liegend*) Taik. 3,3,192. H. 492. an. 2,206. Med. t. 69. Halâj. 2,231. M. 2,196. 8,2. 10. 4,47. MBh. 3,2427. Ragh. 1,59. 2,6. Spr. (II) 913. Çik. 45. 136, v. l. Kathâs. 18, 97. Bhâg. P. 3,28,37. परस्परस्थिती *sich* (feindlich) *gegenüberstehend* Ragh. 11,32. °लिङ्ग adj. *ein stehendes Glied habend* MBh. 7,9635. स्थिर° s. dasselbe 13,7512. — b) *stehend* so v. a. *Stand haltend, nicht weichend:* युद्धे Harîv. 10384. Spr. (II) 3461. — c) *an einem Orte stehend, — verweilend, — befindlich* (von Belebtem und Unbelebtem): स्थाणौ वृक्षः Kâd. Ça. 14,3,12. विषये M. 5,32. स्वे पथि 10,101. R. 2,94,26. Kir. 5,49. M. 12,14. MBh. 1,2403. 3,1722. 2131. 2311. R. 4,21,17. Ragh. 6,11. Spr. (II) 1439. 3902. 5313. 5569. 6443. 7047. Çik. 61,13. Vaiju. Bhn. S. 3,27. 4,28. 13,5. 24,13. 44,13. 51,7. Kathâs. 18,239. 281. 285. 33, 139. 37,60. Râga-Tar. 3,227. fg. Bhâg. P. 4,4,25. Hit. 20,11. LA. (III) 16,3. मनसि R. Gorr. 2,51,6. Spr. (II) 2906. प्रमुखे Harîv. 10216. पार्श्वे R. 1,2,5. अन्तिके Spr. (II) 5811. °सन्निकृष्टे Çik. 23,23. इह Kathâs. 13, 138. 18,219. 385. तत्र M. 7,146. R. 2,87,24. कृत्स्ने तत्रैव दिवसम् 59, 7. यत्र Spr. (II) 7227. Kathâs. 13,180. अग्रे Râga-Tar. 4,319. अग्रतस् MBh. 1,6006. 5,7006. R. 1,4,9. Kathâs. 12,127. अधस् Z. d. d. m. G. 27,30. Miax. P. 18,25. उपरि Harîv. 9640. Çañk. zu Bhn. Âr. Up. S. 238. Kathâs. 18,394. Verz. d. Oxf. H. 31,*b*, N. 3. LA. (III) 19,5. 34,11. पुरस् ad Çik. 135 (zeitlich so v. a. *bevorstehend*). Kathâs. 29,156. 32,5. Râga-Tar. 6,286. पुरतस् Çik. Ca. 60,2. पुरस्तात् Kir. Ça. 4,8,26. बहिस् Pañkat. 226,22. Râga-Tar. 6,42. अन्तर् 57. अभ्यर्कबिम्बम् Çik. 170. अनित्यम् *nicht beständig* —, *nur kurze Zeit verweilend* M. 3,102. in comp. mit der Ergänzung: मध्यभाग° (आपः) M. 11,147. अनन्तर° (so ed. Bomb.) R. 2,87,5. Megh. 7. Ragh. 3,57. Spr. (II) 792. 1193. 2846. 7490. 7525. Vaiju. Bhn. S. 27,1. 68,29. Kathâs. 3,47. 18,141. वृष° so v. a. *reitend auf* Bhâg. P. 3,18,9. मधूच्छिष्ट° *in Wachs stehend* so v. a. *mit Wachs bestrichen* MBh. 3,17132. तट° (vgl. तटस्थ) so v. a. *gleichgiltig, Nichts besagend:* आलाप Uttarâr. 115,10 (156,8). चिर° *lange gelegen* (Speise) M. 5,25. अचिर° 10,90. — d) *in einer Lage —, in einem Verhältniss —, in einem Zustande sich befindend;* die Ergänzung α) im loc.: विषमे R. 2,74,19. राज्ये 99,8. मुखे Spr. (II) 3257, v. l. वित्ते 4341, v. l. आद्ये गृहिणीपदे Çik. 94. शास्त्रते ब्रह्मणि 14,13. आपदि H. 477 पुंसि so v. a. *männlichen Geschlechts seiend* Taik. 2,1,1. स्त्रीलिङ्गे Vop. 4,1. — β) im instr.: प्रकृत्या Spr. (II) 3330. Çañk. zu Bhn. Âr. Up. S. 292. — γ) im ablat.: दैवं पुरुषकारश्च स्थितावन्योऽन्यसंश्रयात् Spr. (II) 2975. — δ) im comp. vorangehend: प्रकृति° Vaiju. Bhn. S. 16, 40. आत्मरूप° 26,8. प्रवास° Kathâs. 3,33. 34,13. मुरत° 21,33. 36,90. दूत्य° 61,226. — ε) im in demselben Casus stehendes Nomen: स्थितास्मि तावत्कन्येव Kathâs. 24,201. तान्समीक्ष्य ततः सर्वान्निर्विशेषाकृतीन्स्थितान् MBh. 3,2201. विनयावनता 2467. विप्रा धर्मपराः Harîv. 11306. R. 1,63,13. स्थितं मनः शत्रुवधे मुनिश्चितम् 3,28,10. विस्मितं कुमारसैन्यं सपदि स्थितं च तत् Ragh. 3,40. Kumâras. 5,82. विलोकयन् Çik. 9,4. 33,4. 66,13. 131. 174. Spr. (II) 6320. Vaiju. Bhn. S. 9,6. 38. Kathâs. 28,162. 29,187. तवैतच्च विदितं प्रागपि स्थितम् 33,10. 44,116. स चास्य पुत्रो मुषितुं सार्थं क्वापि गतः स्थितः 73,209. वृत्ते लम्बमानं स्थितम् 75,45. Râga-Tar. 5,183. Bhâg. P. 1,2,19. Pañkat. 46,24. यत आवयोर्भक्तितशेषाकारः प्रचुरास्तिष्ठति Hit. 30,20. fg. 73,17, v. l. — ζ) im absol.: व्याप्येमान्स्थितो भावान्महान्सर्वानशेषतः M. 12,24. विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् Bhag. 10,42. Harîv. 14733. R. 3,10,7 (°पोडितां zu lesen). 56,7. 74,19. Megh. 59. Ragh. 1,14. Çik. 1. 21,1. 55,1. 77,10. 78,8. Vikr. 1. 15,5. Kathâs. 7,70. 43,54. Pañkat. ed. orn. 50,5. Hit. 9,15. 22,1. LA. (III) 10,7. 14,18. 20,4. 88,15. Bhatt. 1,8. — η) im adv.: तेषु (पवनेषु) सम्यक्शास्त्रमिदं स्थितम् Vaiju. Bhn. S. 2, 18. कथमियत्तं कालं मया विरहिता स्थितासि Vikr. 72,6. तथा Çik. Ca. 123,10. Hit. 23,9. एवं स्थितम् Milav. 14,20. Kathâs. 32,4. इति vor Vop. 8,14. धिक्मां यः — एवमेवाधुना स्थितः Râga-Tar. 3,182. Pañkat. 87,19. एवं स्थिते 149,13. Daçak. 62,8. 79,7. बहुधा Rt. 6,10. द्वादशधा Çik. 186. तूष्णीम् Hit. 14,19. अवनताननम् Râga-Tar. 3,286. — ι) *begriffen in, beschäftigt mit, sich befleissigend, bedacht auf, obliegend, hingegeben:* सर्वपापेषु M. 8,330. प्रतिकूलेषु 9,275. साक्षाद्ये MBh. 1,6025. भोजनाच्छादने चैषाम् 3,14736. धनार्जने Kathâs. 26,139. राजवृत्ते Harîv. 11306. स्वकर्मसु MBh. 3,15640. सर्वकृत्येषु Spr. (II) 3706. स्वधर्मे 4859. अधर्मे 6713. लौल्ये 3092. तपसि R. 1,57,18. 65,26. Kathâs. 20,61. LA. (III) 49,22. Bhâg. P. 4,1,17. शीले सत्ये श्रुते R. 2,39,24. R. Gorr. 2,120,24. तस्याः प्रिये R. Schl. 2,96,28. श्रेयसि 5,90,36. प्रशम° Ragh. 8,15. तपः° Kathâs. 19,6. शौच° Râga-Tar. 5,406. — *f) verbleibend in* so v. a. *sich richtend nach, nachkommend, befolgend:* व्यवहारविधौ M. 8,45. शासने भ्रातुः MBh. 2,1970. निर्देशे 3,989. Ragh. 14,44. वचने H. 432. वेदानामते M. 6,21. R. 1,68,12. समये Harîv. 14375. Kathâs. 18,142. — *g) im Amte stehend* Spr. (II) 803. 7054. — *h) zu Jmd* (loc.) *stehend, es mit Jmd haltend* Harîv. 9129. — *i) dauernd* ṚV. Pâr. 13,3 (auch अ°). *fest bestehend, keinen Wandel erfahrend:* °सौहृद adj. Kathâs. 16,96. 20, 207. 32,10. 63,139. °संकेत adj. 46,27. मैत्र so v. a. *nicht verrathen werdend* Spr. (II) 6603, v. l. — *k) feststehend* so v. a. *allgemein angenommen, — geltend* Çat. Br. 3,7,3,9. तस्मादेतत्स्थितम् Çâṇḍ. Br. bei Weber, Nax. 2,347. या क्षेपा गह्वरी माया निद्रेति जगति स्थिता Harîv. 2845. शाश्वतोऽयं सदा धर्मः स्थितो ऽस्मासु R. 2,102,2. इति स्थितमाहितपति Çañk. zu Kâṭh. Up. S. 22. इति स्थितम् Kâr. 10 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Sarvadarçanas. 60,19. 93,22 (स्थितः fehlerhaft). 146,1. 2. 159,19. पितुः समीपगमनम् *feststehend* so v. a. *beschlossen* Çik. Ca. 108,

2. — *l) fest überzeugt:* आत्मनः प्रतिरूपो ऽसौ लब्धः पतिरिति स्थिते (nom. du. f.) MBh. 1,6140. Spr. (II) 868. *fest entschlossen:* धनतिक्रमणीयं मे सुहृद्वाक्यमिति स्थितो ऽस्मि Çik. 22, 12. fg. त्वां वित्तेतुम् MBh. 3,7140. रामप्रव्राजने R. 2,35,12. रणोद्यमे Vop. 5,3. *bereit zu* (dat.): दानाय Jiéân. 2,84. देहविमुक्तये Kumâras. 4,39. = सत्प्रतिज्ञ Trik. = सप्रतिज्ञ H. an. = प्रतिज्ञातवत् Med. — m) *dastehend, dasitzend, vorhanden, anwesend, gegenwärtig:* को ज्ञातु परमार्थो हि नारीं व्यालीमिव स्थिताम् । वामयेत्स्वगृहे MBh. 5,7071. निवेद्यतां नेषधाय सर्वाः प्रकृतयः स्थिताः 3,2266. न चिन्तयति नः स्थितान् Harîv. 10215. स्थितो ऽस्मि: *da stehe ich, da bin ich* R. Gorr. 1,36,2. Râéa-Tar. 4,22. नौ so v. a. *bereit stehend* R. 2,12,69. स्थितं स्थितं दृष्ट्वा गर्भम् *jeden vorhandenen* Sucr. 2, 297,3. मुनौ तस्करता स्थिता Raçu. 1,27. अर्धरात्रः: *ist da, ist gekommen* R. Gorr. 1,36,14. *zwischen* अनागत *und* अतिक्रान्त Weber, Nax. 1, 312. सप्तात्या (*so zu trennen*) स्थितयान्यया M. 9,87. एतानि शित्यानि मयि स्थितानि *finden sich bei mir vor* so v. a. *ich kenne sie* MBh. 4,292. अपत्ये स्थिते M. 3,171. MBh. 1,5968. R. 2,23,36. 102,2. R. Gorr. 2, 20,41. 3,21,7. 53,59. 4,38,18. Kathâs. 5,4. 15,131. 17,20. 21,117. 31, 81. 34,31. 284. अवश्यस्थिते 42,159. स्थितास्वप्युत्तरासु प्राक्प्राची यान्ति किं नृपाः 18,87. अतिमध्यंदिने स्थिते M. 4,149. 11,218. — n) *Jmd gehörend:* राज्यं तव R. 2,21,14. — o) *gerichtet auf:* गगनतल° दृष्टिनिपात Vaâin. Bhp. S. 28, 6. वृत्तिनिरोधे यत्नः Sarvadarçanas. 168,21. — p) *stehend bei* so v. a. *beruhend auf, abhängig von* (loc.): यस्यां लोकाः प्रनृतिश्च स्थिता नित्यमवो मुखम् MBh. 1,6139. त्रयाणां मे वपि स्थिता R. 6,77,4. सिद्धिस्तु दैवे स्थिता Spr. (II) 4649. — q) *mit dat. zu Etwas dienend, — führend:* पीडनं धर्मनाशाय पापायायशसे स्थितम् Spr. (II) 4204. — r) *übrig geblieben* Kumâras. 4,27. Hit. 98,16, v. l. — s) *der von Etwas abgestanden ist, — abgelassen hat* Spr. (II) 6986. Pañkat. 249,17. — t) *nicht von* इति *begleitet* (im Padapâṭha) ṚV. Prât. 10,9. स्थितोपस्थित *mit und ohne* इति ebend. und 11,18. 31. 15,11. VS. Prât. 1,147. 4, 187. überh. *allein —, gesondert stehend:* स्थिते पदे *so v. a. im* Padapâṭha TS. Prât. 20,2; vgl. पदयुक्ताम्यथास्थितात्पदपाठात् Comm. zu 5,2. — 2) n. a) *das Stillstehen, Stehenbleiben* Spr. (II) 4646. *Art und Weise des Stehens* R. 4,12,41. — b) *das Verharren auf dem rechten Wege* R. 2,39,24. — Vgl. दुः°, पतित°, मध्य°, पद्या°, मरु°, सस्थित°, सु°.

स्थितता (von स्थित) f. *das Sichbefinden an einem Orte* Bṛh. Âr. Up. 4,1,7. स्थितिता Çat. Br.

स्थितधी adj. *festen Geistes* Bhag. 2,56 (desn.).

स्थितपाठ्य n. *in Prâkṛit und in stehender Stellung gesprochene Worte eines von Liebe gequälten Weibes* Sin. D. 304. 306.

स्थितप्रकरण n. Ind. St. 1,468 wohl nur fehlerhaft für स्थितिप्रकरण.

स्थितप्रज्ञ adj. *von fester Erkenntniss* Bhag. 2,55 (desn.).

स्थितप्रेमन् adj. *treu an Jmd hängend* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. स्थिरप्रेमन्.

स्थितबुद्धदत्त m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 3,15. fg.

स्थितवत् (von स्थित) adj. *die Wurzel* स्था *enthaltend* Çat. Br. 6,8,1,14.

स्थितवत्त्व (von 1. स्था) f. = स्थान AK. 3,4,20,120. H. an. 2,306. Med. t. 70. Halâ. 5,31. = आस्था, आसना AK. 3,3,21. H. 1498. = अवस्थादृष्टा H. 1377. = अवस्थान Med. = व्यवस्था Halâ. = मर्यादा AK. 2,8, 4,26. Trik. 3,3,191. H. 744. Med. = सीमन् H. an. Med. = काष्ठा AK. 3,4,20,43. = निवेश, रचना H. 1499. 1) *das Stehen, Stillstehen:* स्थितिमाचरे: *bleibe stehen* Raçu. 1,89. स्थो ऽभवत्तावणोत्से मे दिनाते आप्यतः स्थितिः *ich machte Halt* Râéa-Tar. 6,46. *das Aufrechtstehen* Sucr. 3,148,3. — 2) *das Bleiben —, Verweilen —, Sichbefinden an einem Orte, Aufenthalt* Milaviku. 152,20. एतेषां स्वगृहे स्थितये ददौ Kathâs. 13,116. मठे च विदुषे स्थित्यै दैशिकानां द्विजन्मनाम् Râéa-Tar. 6,304. 4,608. Kathâs. 20,22. 78,25. Hit. ed. Johns. 1794. Sarvadarçanas. 36, 9. चिरम् Râéa-Tar. 3,105. अयोग्य° adj. देश Z. d. d. m. G. 27,83. पोषधभा° *das Verbleiben am Orte* so v. a. *das Nichthernunterfallen* Spr. (II) 3756. उष्ट्रैः पयोदानाम् 2209. गां च सा चात्रा R. Gorr. 1, 39,46. mit einem loc.: रणेगृहे Uttarar. 3,3 (5,1). नार्या भर्तृगृहे Spr. (II) 4430. सन्मुक्तिमार्गे 5046. गर्भे 5960, v. l. पुण्ये ऽरण्ये 7228. Kathâs. 59,84. Çuk. in LA. (III) 33,14. H. 59. गुरौ प्राणात्तिकी Kâm. Nîtis. 2, 22. मूर्ध्नि Uttarar. 7,2 (10,9 = Milaviku. 160,6). मृते मृतस्थितिः Mâlav. P. 50,90. तव कण्ठे कवचस्य Pañkar. 1,4,24. अन्यस्पर्शानामविकृतानां पदात्ते Comm. zu TS. Prât. 14,28. यसंभाव्यस्थितिं तत्र महावभोक्षिनोमिव Kathâs. 25,186. in comp. mit dem im loc. gedachten Worte: चित्त° Kap. 1,59. भव° Spr. (II) 4315. स्वगृह° Kathâs. 4,26. 19,22. Râéa-Tar. 4,507. AK. 2,7,55. Sarvadarçanas. 50,12. स्थितिं कृ *Halt machen, seinen Wohnsitz aufschlagen* Kathâs. 12,126. 15,31. 29,106. Râéa-Tar. 3,287. तुङ्गानामुपरि तितिभृताम् Z. d. d. m. G. 27,62. तरुण्यार्कत° Râéa-Tar. 1,221. 238. गृहस्थितिं कृ Kathâs. 19,43. स्थितिं भक्तृ 20,202. 43,57. 51,71. भज् Kathâs. 24,174 (गृहस्थितिम्). Râéa-Tar. 1,53. वि-धा 3,330. — 3) *Niederlage, Aufbewahrung:* लिखित° Râéa-Tar. 3,286. साक्षिरक्षिता भर्तृधनस्थितिः *eine ohne Zeugen geschehene Ueberlieferung des Geldes des Gatten* Kathâs. 4,45. — 4) *Standort* Çat. Br. 14,6,10,18. बलस्य स्वामिनश्चैव M. 7,167. (सेनायाः) स्थितिः = शिबिर H. 746. der Fische Spr. (II) 2478. सलिल° AK. 3,4,20,132. — 5) *Rang, Stellung, Würde* M. 11,237. कुल° Jâân. 1,242 (*Verhältniss* Sr.). आस्थो Bhag. 2,72. च्युतः पुनर्विन्दति चात्मनः स्थितिम् Harîv. 11273. धैर्यात्कदाचित्स्थितिमाप्नुयात् Spr. (II) 2636. Râéa-Tar. 1,365. 367. — 6) *das Sichbefinden in einem Zustande, — Verhältnisse:* राज्य° *das Herrschen, Herrschaft, Regierung* Spr. (II) 6919. Râéa-Tar. 1,361. Pañkat. 231,9. — 7) *das Obliegen, Hingegebensein, Bedachtsein auf* (loc.): यज्ञे तपसि दाने च Bhag. 17,27. सत्ये MBh. 1,1165. प्रियकृत्ते 6166. धर्मे 3,2228. R. Gorr. 2,18,47. — 8) *das Feststehen, Unbeweglichkeit:* eines Berges Raçu. 12,31. हमो स्थितये बिभर्ति Bhâg. P. 5,25,12. — 9) *Beharrlichkeit, Stetigkeit* Bhag. 6,33. Sarvadarçanas. 169,1. 178,18. — 10) *Bestand, Fortbestand* Çvetâçv. Up. 6,16. शरीर° Raçu. 8,9. कुलस्य Kumâras. 1,18. Vikr. 153. यमीषां बलूनां कतिपयनिमेषस्थितिसुधाम् Spr. (II) 525. सतत° (pl.) 1317. प्राणानुबन्ध° 1637. प्राणानाम् 1965. चेष्टानाम् 5838. जगत्° Kathâs. 41,18. स्थितिः प्राप्ता ततः प्रभृति Râéa-Tar. 4,141. अव्यय° adj. (प्रासाद) 5,37. धर्मस्य कुरुते स्थितिम् VP. bei Mill. St. 4,217. करोति °पालनम् Mâlav. P. 19,26. °प्रद 99,28. °कर्तृ 100, 7. मण्डल° Bhâg. P. 5,1,22. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 280. zu Kâiv. Up. S. 33. Sarvadarçanas. 33,5. ब्रह्मा त्वं सृष्टिकालेषु स्थितौ विष्णुरसि प्रभो । संहारे रुद्ररूपासि Harîv. 14035. स्थित्युत्पत्तिविनाशानाम् R. 6.

102,29. Suça. 1,194,16. 249,12. Siśupâlav. 69. Ragh. 2,44. Spr. (II) 1889. Varâh. Bṛh. 1,1. Kathâs. 35,99. Vâsav., Râmây. Up. 337. 341. Kâdambar. 294. Mârk. P. 103,2. Bhâg. P. 1,2,33. 2,5,18. 8,10. 10,4. 3, 5,16. 22. 42. 7,28. 9,14. 16. 4,1,16. 56. 9,15. 11,16. 29,79. 5,17,21. 18,28. 20,39. 6,3,12. 7,9,31. 8,5,22. Pañcâr. 3,15,23. Sarvadarçanas. 60,6. 10. 84,3. — 11) *Dauer:* मन्वन्तर° Mârk. P. 100,45. 101,1. मनूनाम् 8. 638, Z. 15. नातीव स्वल्पा, नातीव दीर्घा Râga-Tar. 3,152. einer Eklipse Sûrjas. 4,15. Golâdhj. Grahagaṇav. 7. fgg. Ganit. Kâlakrama. 13, 15. 18. fg. *Lebensdauer* Mârk. P. 59,32. — 12) *das Bestehende* so v. a. *Welt* Bhâg. P. 2,6,18. — 13) *das Dasein, Vorkommen, Angetroffenwerden* MBh. 6,391. Siâ. D. 534. 543. 756. Sarvadarçanas. 9,16. — 14) *Verfahren, Benehmen:* स्थितिरियं दुर्जनानाम् Hit. 23,1. 129,17. Kathâs. 64,102. व्यवहार° M. 8,7. — 15) *Zustand:* जीवस्य Prab. 56,5. राजकुलस्य Prab. 100,1. Bhâg. P. 3,4,19. गृहे विधुरस्थिति Kathâs. 2,48. पृथक्° Vikr. 102. निर्व्यापार° AK. 2,4,4,30. *Lage* (eines Menschen): यथा भार्या तथा स्थितिः Spr. (II) 2449. कुटिलस्वभावपरतत्त्ववधू° Kathâs. 29,74. Râga-Tar. 6,146. सर्वेषामपि जन्तूनामेवेयं स्थितिः *in dieser Lage befinden sich alle Wesen, so verhält es sich mit a. W.* Pañcat. 124,4. — 16) *Bestimmung, Vorschrift, Regel* Çat. Br. 4,6,5,4. 5,1,2,25. 13, 4,3,4. Çâṅkh. Bṛ. 11,7. 12,7. ṚV. Prât. 2,44. Nir. 8,22. M. 2,224. 3, 120. 4,38. 5,30. 38. 129. 8,162. 200. 265. 9,189. 282. 10,58. 76. 11, 146. 12,94. Spr. (II) 3685. Jâén. 2,21. 126. Weber, Gjot. 52. 61. Citat im Comm. zu AV. Prât. 1,10. व्यवहारे M. 8,139. स्थितिरेषा हि भैमानां कृता (so die neuere Ausg.) कृत्तेन Harîv. 9310. स्थितिर्नास्त्येव मात्रायाः Çârîr. Saṅgr. 1,1,28. *Verordnung* Kathâs. 13,166. राज्ञा प्रवर्तिताः स्थितयः Râga-Tar. 4,53. *Brauch:* यत्रादिर्देशे तत्रेदृशी स्थितिः Kathâs. 65,23. *Einrichtung, Institution:* यौधिष्ठिरी Râga-Tar. 1,120. — 17) *feste Ansicht, Ueberzeugung:* एषेनः कपोतानन्तीति स्थितिरेषा सनातनो MBh. 3,10581. Jâén. 3,153. एकैव दण्डनीतिस्तु विद्येत्यौशनसी स्थितिः Kâm. Nîtis. 2,5. — 18) *das Bestehen —, Etwas-Geben auf* (loc.): वयसि Spr. (II) 3668, v. l. — 19) *das Verbleiben auf dem Pfade des Gesetzes, der Tugend* MBh. 1,436. 3,2410. R. Gorr. 1,49,6. Ragh. 1,25. Spr. (II) 2478. 7009, v. l. — 20) *die sittlichen Schranken:* भृत्यं भक्तं स्थितं स्थित्याम् R. 2,32,53 (51,21 Gorr.). Spr. (II) 1838. °ज्ञ Kumâras. 1,18. स्थितिं भिन्दन् Bhaṭṭ. 7,68. °भिद् Ragh. 11,65. स्थितेरभेत्ता 3,27. अभिन्न° adj. Çiç. 107. स्थित्यतिक्रान्ति Kâm. 11,34. अनयोग° adj. Ragh. 12,31. — 21) *Form, Gestalt* Mârk. P. 57,4. — 22) *die einfache Stellung eines Wortes ohne* इति ṚV. Prât. 11,15. — 23) fehlerhaft für स्थल (so ed. Bomb.) MBh. 12,6138. — Vgl. नियम°, बल°, यथा°, राज्य°, लोक°, वंश°, सम्यक्°, सु°.

स्थितिर्नेता (von स्थिति) f. *Begründung, Stand* Çat. Br. 14,6,10,18. Am Ende eines comp. s. धर्म°.

स्थितिर्देश m. *Standort* Spr. (II) 337.

स्थितिप्रकरण n. *das Kapitel über den Bestand*, Titel eines Abschnitts im Vâsishṭharâmâjaṇa Verz. d. Oxf. H. 354,a,8.

स्थितिमत् (von स्थिति) adj. 1) *fest stehend, nicht wankend* Kumâras. 6,30 (zugleich in übertr. Bed.). — 2) von *Dauer:* धन्वय Ragh. 3,27. — 3) *innerhalb der Schranken verbleibend:* Meer und Person Vikr. 160. Spr. (II) 7229. *die sittlichen Schranken beobachtend, tugendhaft* M. 9, 74. Kâm. Nîtis. 3,29. Kumâras. 6,30 (zugleich *fest stehend*).

स्थितिस्थापक m. (sc. संस्कार) *Elasticität (den Stand wieder herstellend)* Tarkas. 34. Bhâshâp. 93. 156. Colebr. Misc. Ess. 1,286 (°स्थापक gedr.).

स्थिन् adj. = स्थ in त्रिष्ठिन् und परमेष्ठिन्.

स्थिर, स्थिरति *fest stehen* Nir. 9,11. aus स्थिरा gebildet.

स्थिर (von 1. स्था) Uṇâdis. 1,54. 1) adj. (f. आ) a) *hart, fest, straff:* घन ṚV. 4,7,10. Bhâg. 17,8. बद्ध ṚV. 1,89,3. वायुघ 39,2. धन्वन् 8,20, 12. रथ 1,38,12. 3,35,4. स्थिरा चित्तमयेज्ञवः 3,20,1. कृतिं स्थिराणि 10,89,6. स्थिरमा तनुष 120,4. 1,37,9. 127,3. 6,24,3. 8,14,19. 45,41. भू *harter —, fester Boden* Kâm. Nîtis. 19,10. 12. °लिङ्ग (st. dessen स्थित° 7,9625) MBh. 13,7512. °शुक्र *verhärtet* Suça. 2,154,14. स्थिराघातम् *festgestampft* Gobh. 4,7,5. किनाटं स्राव तत्स्थिरम् *fest* so v. a. *nicht leicht zerreissend* Çat. Br. 14,6,9,32. नीलसूक्ष्मस्थिरालका Mârk. P. 21,18. °बन्धन H. 84. जाल Spr. (II) 2478. प्राणाः Uttarar. 22,10 (30,2). Die Redensart घ्नं स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् *brich den Widerstand* ṚV. 4,4,5. शर्धताम् 8,19,20. 10,134,3 (vgl. 116,6). घ्नं स्थिरा मघवन्वास्तनुष entweder *brich den Widerstand* (der Feinde) *für* oder *sei nachgiebig gegen* 2,33,4. बल्पं दर्पबलं दैत्य स्थिरमक्रोधनं बलम् so v. a. *widerstandsfähig* Harîv. 2729. — b) *fest* so v. a. *unbeweglich* AK. 3,6,1, 5. H. an. 2,467. Med. r. 98. Çat. Br. 3,2,4,14. स्थिरो भव ममायतः R. 3,35,16. Çiç. 94,9, v. l. द्रुम R. 1,16,23. स्थाणु 63,24 (65,29 Gorr.). Berg Spr. (II) 503. प्रदीप Kumâras. 2,38. °बालार्क adj. (उदयाचल) Kathâs. 9,64. चरस्थिरेषु जन्तुषु Kâm. Nîtis. 14,25. Varâh. Bṛh. S. 46,5. 62. 96,1. fgg. 99,6. °ङ्गमानाम् Bhâg. P. 1,17. 34. 3,31,16. 32,12. 4. 28,29. 31,13. 5,16,43. 7,8,3. 11,7,42. स्थिरं सुखं चासनम् 2,2,15. 4,28. 43 (सु°) 7,15,31. Sarvadarçanas. 174,3. in der Nativitätslehre Bez. best. Häuser und Theile derselben Varâh. Bṛh. S. 60,20. 98,18. Bṛh. 5,13. 25. 8,6. Lagaṇ. 1,7. स्थिरतरहृद् Spr. (II) 4560. धृ° Çat. Br. 8, 2,4,11. दृष्टि R. 3,73,20. स्थिरस्थायिन् *fest stehend* Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,32. विक्रम *ein fester, nicht schwankender Schritt* Varâh. Bṛh. S. 86,3. अस्थिर = चल H. 1455. — c) *fest* so v. a. *keinem Wandel —, keinen Schwankungen unterworfen, dauerhaft, anhaltend, ausdauernd, bleibend:* वृषन् Indra ṚV. 3,30,2. 2,41,10. 3,33,9. 81,28. AV. 5,65,3. कर्मणि ṚV. 1,101,4. 167,7. 10,61,20. गावो 3,53,17. AV. 10,4,11. शवस् ṚV. 5,52,2. 7,56,7. Çat. Br. 9,1,2,5. Kauç. 4. स्थिरेन्द्रिय Suça. 1, 124,16. देह Sarvadarçanas. 98,3. मर्यादा R. 4,4,63. Râga-Tar. 5,119. हृदये तत्स्थिरं मम R. 3,3,7. तमस् Gît. 11,10. जलमुचः Mṛicch. 175, 6. स्थिति Bhâg. 6,33. संगर MBh. 3,1811. प्रतिज्ञा R. 2,109,25. °प्रतिज्ञत्व 106,32. प्रसाद Harîv. 1007. आरम्भ M. 7,209. Spr. (II) 269. 3842. प्रीति R. 2,75,19 (79,2 Gorr.). सख 83,3. अनुराग 3,3,4. धर्मयोगेष 31,49. सौहृद 4,38,19. Varâh. Bṛh. S. 15,13. H. 476. भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि Çiç. 99. °संस्कारता Mâlav. 139,14. उद्यम Kâm. Nîtis. 10,41. उपदेश Kumâras. 1,30. निश्चय 3,5. गणपदप्राप्ति Mahâv. 56. प्रतिबन्ध Çiç. 23,18. भक्ति Vikr. 1. कार्य Kap. 1,34. कर्मन् Spr. (II) 797. मैत्री 3078. भोग 4629. 6495. मत्र (so v. a. *geheim bleibend*) 6603. विभव 7160. स्थिरापायः कायः 7231. शैली 7232. श्री, लक्ष्मी 172. 963.

6281. Raghu. 11,19. Kathâs. 4,114. 19,14. 37,142. Pañkat. 203,5. संपद्विपदो Spr. (II) 2040. धृति Vaitân. Bhp. S. 104,14. धर्मस्थिरादर् adj. *beständig um sein Leben besorgt* Râja-Tar. 1,350. 3,77. Sarvadarçanas. 24,8. 56,13. मति Verz. d. Oxf. H. 193,a,6. प्रज्ञा R. 2,1,18. Bhâg. P. 8, 21,28. बुद्धि MBh. 3,16686. R. Gorr. 2,21,28. Râja-Tar. 3,144. धी Raghu. 8,22. Vaitân. Bhp. S. 17,5. हृदय Spr. (II) 7230. मनस् ṚV. 5,30,4. Harîv. 8597. Pañkat. 107,11. Bhâg. P. 3,25,44. चेतस् Verz. d. Oxf. H. 78,b,2. चित्त R. 1,63,47. 4,34,7 (अस्थिर). Bhâg. P. 3,28,9. आत्मन् Kap. 1,33. स्थिरात्मन् adj. *standhaft* Kim. Nîtis. 9,67. Spr. (II) 6813. परिक्रामपुरे चक्रे स्थिरां गुर्वीं स (so zu trennen) पर्विणीम् so v. a. *setzte für immer fest* Râja-Tar. 4,242. Verz. d. Oxf. H. 19,a,5. कुरु त्वं हृदयं स्थिरम् so v. a. *stähle dein Herz, fasse Muth* R. Gorr. 2,26,29. कुरुष्व मनः स्थिरम् dass. Spr. (II) 5249. अ° von *keinem Bestand* Spr. (II) 796. fg. श्रोवित Kathâs. 24,138. = असंकसुक AK. 3,1,43. H. 437. *fest* von Personen so v. a. *standhaft, keinen Wandel der Gesinnung oder der Stimmung in sich aufkommen lassend, zuverlässig* und auch *gutes Muths;* = विश्रब्ध Hall. 2,215. — Mairjup. 2,4. Jiân. 1,211. MBh. 5,7438. 7443. Harîv. 12090. R. 2,21,19 (अ°). 3,68,39. Kim. Nîtis. 4,20. Kumâras. 5,47. Çiç. Cr. 143,3. Milav. 47,11. Spr. (II) 503. 655,v. l. 2375. 5859 (अ°). Vaitân. Bhp. S. 68,109. 69,14. 101,2. Bhp. 17,2. Kathâs. 4, 113. 37,42. so v. a. *fest entschlossen:* स्थिरो ऽकुमारुवे योद्धुम् MBh. 5, 7314. — *d) feststehend* so v. a. *sicher, keinem Zweifel unterworfen:* अपुंस्त्वमप्यस्य निशम्य च स्थिरं कुमारीपुरमुत्समर्ज तम् (so ed. Bomb.) MBh. 4,309. वचस् Kathâs. 18,137. रमणीयं वनं पत्र पुष्पमूलफलं स्थिरम् so v. a. *mit Sicherheit anzutreffen* R. 3,21,2. अ° *zweifelhaft, nicht glaubwürdig:* वाच् M. 8,71. वर्धते पाण्डवा नित्यं वयं चास्थिरवृद्धयः MBh. 2, 1965. — स्थिरतर = स्थास्नु, स्थेयंस् AK. 3,2,22. — 2) m. *a) Baum* Trik. 2,4,3. Çabdar. im ÇKDr. — *b) Grislea tomentosa* Roxb. Bhâvapr. im ÇKDr. — *c) Berg* Çabdar. im ÇKDr. — *d) Stier* Râgân. 19,23. — *e) ein Gott* Çabdar. im ÇKDr. — *f) der Planet Saturn* H. ç. 14. Med. — *g)* ein N. Vishṇu's H. ç. 73. Kârttikeja's Çabdar. im ÇKDr. — *h) ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. Gorr. 1,31, 8. — *i) ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ — Ind. St. 8,331. — *k) die letzte Befreiung der Seele* H. an. Med. — *l)* neben धृति° N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2550. — 3) f. आ *a) die Erde* AK. 2,1,2. Trik. 3,3,277. H. 937. H. an. Med. Hall. 2,1. — *b) Desmodium gangeticum* Dec. AK. 2,4,4,3. Trik. H. an. Med. Ratnam. 9. Suçr. 2,101, 10. 223,7. 256,10. 280,5. 341,8. 417,21. 448,3. du. 284,21. *Salmalia* (शाल्मलि) *malabarica* Sch. und *E.* Çabdar. im ÇKDr. = काकोली Gaṇîn. ebend. — *c)* Bez. *des Buchstabens* ग्री Weber, Rik-Prât. Up. 318. — Vgl. गविष्ठिर°, ज्ञातृ°, धृषि°, भु°, स्थेमन्, स्थेयंस्, स्थेष्ठ und स्थैर्य.

स्थिरक (von स्थिर) m. N. pr. eines Mannes गर्ग नडादि zu P. 4,1, 99. mit dem patron. Gârgja Ind. St. 4,373. — Vgl. पीत्रा° und स्थैरकायण.

स्थिरकर्मन् adj. *ausdauernd in seinen Unternehmungen* Raghu. 8,22.

स्थिरकुसुम m. *Mimusops Elengi* Râgân. 10,54.

स्थिरगन्ध 1) adj. *nachhaltig riechend.* — 2) m. *Michelia Champaca* (चम्पक) Râgân. 10,60. — 3) f. आ *Bignonia suaveolens* Râgân. 10,50. auch *Pandanus odoratissimus* Râgân. im ÇKDr.

स्थिरचक्र m. ein N. Mañgugrî's Trik. 1,1,21.

स्थिरच्छद m. *eine Art Birke,* = भूर्जपत्र Ratnam. im ÇKDr.

स्थिरच्छाय m. *ein Baum, der beständigen Schatten giebt,* Trik. 2,4, 8. *Baum* überh. Çabdar. im ÇKDr.

स्थिरत्रिक m. *Fisch (steifzüngig)* H. 1344.

स्थिरजीवित adj. *ein zähes Leben habend;* f. आ *Salmalia* (शाल्मलि) *malabarica* Sch. *et E.* Çabdar. im ÇKDr.

स्थिरजीविन् adj. dass.; m. N. pr. einer Krähe Pañkat. 155,4.

स्थिरता (von स्थिर) f. 1) *Härte:* मृदूनाम् Suçr. 1,117,17. 239,8. 2, 166,9. — 2) *Bestand, Beständigkeit, Dauerhaftigkeit:* कमलानु Spr. (II) 5902. स्वाचार° 6587. संपदाम् 6702. 6768. भङ्गुरे ऽस्मिन्भवे कस्य स्थिरता Kathâs. 111,88. Sâh. D. 63,20. स्थिरतामुपयन् 243. नी Pañkat. 97, 14. *Standhaftigkeit, Fassung:* स्थिरतामुपेत्य *sich fassend* MBh. 3,14748. बाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम् Çiç. 90.

स्थिरत्व (wie oben) n. 1) *Härte, Verhärtung* Suçr. 1,270,13. दोष° 288,13. अ° 117,16. — 2) *das Feststehen, Unbeweglichkeit:* गिरिः स्थिरत्वे (zugleich *Standhaftigkeit*) Mṛkkh. 50,20. — 3) *Bestand, Beständigkeit:* अर्थाः स्त्रियश्च — नैवाप्तभावमुपयान्ति न च स्थिरत्वम् Spr. (II) 3131. *Standhaftigkeit* MBh. 1,5342. Suçr. 1,130,1. Vaitân. Bhp. S. 69,8. अ° *Unbeständigkeit:* einer Person Maitrâjup. 3,5. स्त्रीबुद्धेः M. 8,77.

स्थिरदंष्ट्र m. 1) *Schlange.* — 2) Vishṇu *als Eber* Med. r. 302. — 3) *Laut* (ध्वनि) Açâs. im ÇKDr.

स्थिरधन्वन् adj. *einen festen Bogen führend:* Rudra ṚV. 7,46,1.

स्थिरधामन् adj. *zu einem kräftigen Geschlecht gehörig:* पेढ AV. 10,4,11.

स्थिरपत्र m. *Phoenix paludosa* Râgân. 9,92.

स्थिरपालत्रिलत m. N. pr. eines Mannes Târân. 240.

स्थिरपीत adj. etwa *kräftigen Schutz geniessend* Nir. 1,20. उत वं मध्ये स्थिरपीतमाहुः ṚV. 10,71,8.

स्थिरपुष्प m. *Michelia Champaca* (चम्पक) Râgân. 10,60. *Clerodendron phlomoides* 42. *Mimusops Elengi* Râgân. im ÇKDr.; vgl. स्थिरकुसुम.

स्थिरपुष्पिन् m. *Clerodendron phlomoides* Râgân. im ÇKDr.

स्थिरप्रेमन् adj. *treu anhänglich* Hall. 2,219. — Vgl. स्थितप्रेमन्.

स्थिरफला f. *Benincasa cerifera* Sav. ÇKDr. ohne Angabe einer best. Art.

स्थिरबुद्धि 1) adj. *festen Sinnes, beständig, standhaft:* न नारो स्थिरबुद्धिः स्यात् Spr. (II) 7568. पार्थिव Râja-Tar. 3,144. — 2) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 45,283.

स्थिरबुद्धिक m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,27.

1. स्थिरमति f. *ein fester Sinn, Standhaftigkeit* Kshemendra. im ÇKDr.

2. स्थिरमति 1) adj. *festen Sinnes, standhaft* Verz. d. Oxf. H. 193,a, 6. — 2) m. N. pr. eines Bhikshu Hiouen-thsang 2,46. 164. Wassiljew 59 u. s. w. Târân. 55 u. s. w. Schiefner, Lebensb. 310 (80).

स्थिरमद् 1) adj. *a) nachhaltig berauschend* Suçr. 1,190,7. — *b) nachhaltig berauscht, — aufgeregt.* — 2) m. *Pfau* H. ç. 187.

स्थिरमाया f. Bez. *eines best. Zaubers* Verz. d. Oxf. H. 90,a,20.

स्थिरयोनि m. *ein Baum, der beständigen Schatten giebt,* Bhâvapr. im ÇKDr.

1. स्थिरयौवन n. *unvergängliche Jugend* Mân. P. 60, 2.

2. स्थिरयौवन 1) adj. (f. या) *von unvergänglicher Jugend, immer jung bleibend* Harîv. 6977. Vikr. 109. Mân. P. 49, 21. 110, 4. 11. मु° Pañkân. 1, 10, 26. 39. — 2) m. *ein* Vidjâdhara Tâik. 1, 1, 64.

स्थिररङ्गा f. *die Indigopflanze (deren Farbe fest haftet)* Râgân. 4, 84.

स्थिररागा f. *eine Art Curcuma (deren Farbe fest haftet)*, = दारुहरिद्रा Râgân. 6, 202.

स्थिरवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 52. — Vgl. मु°.

स्थिरवाच् adj. *auf dessen Wort man sich verlassen kann* Bhar. Nâtjaç. 34, 100.

स्थिरवाहिन् adj. *bei dem die Rosse stillstehen* MBh. 3, 1731.

स्थिरसाधनक m. *Vitex Negundo* (निर्गुण्डी) *Lin.* Râgân. 4, 152. — Vgl. सर्वसिद्धक.

स्थिरसार m. *Tectona grandis* Râgân. 9, 130.

स्थिरांङ्घ्रिप (स्थिर + अं°) m. *Phoenix paludosa* Râgân. im ÇKDa. स्थिराङ्घ्रिप unsere Hdschrr. 9, 92.

स्थिराय् (von स्थिर), °यते *unbeweglich werden:* यस्य स्मरणमात्रेण पवनो ऽपि स्थिरायते (so zu lesen) Verz. d. Oxf. H. 90, *a*, 19. fg.

स्थिरायुस् (स्थिर + आ°) 1) adj. *lange lebend.* — 2) m. *Salmalia malabarica Sch. et E.* AK. 2, 4, 2, 27.

स्थिरीकर् (स्थिर + 1. कर्), °करोति 1) *befestigen, fest stellen:* सिंहासनम् Pañkat. 157, 24. *zum Stehen bringen:* ein Pferd 258, 20. — 2) *befestigen* so v. a. *Bestand —, Dauer verleihen:* विद्युतं कः °कुर्यात् Kathâs. 63, 46. आधिपत्यम् Pañk. 4, 13. व्यवसायम् R. 4, 26, 14. *bekräftigen, bestätigen:* भार्यां लेप्यादिना Kull. zu M. 8, 164. वङ्कशाखास्थिरीकृत Mân. P. 23, 42. *stark machen, stählen:* चेतः Spr. (II) 4649. *Jmd befestigen, ermuthigen;* mit acc. 2404. Pañkat. 129, 23. mit gen.: जिज्ञासेयं प्रयुक्ता मे स्थिरीकर्तुं तव (könnte auch mit जिज्ञासा verbunden werden) MBh. 13, 1515.

स्थिरीकार adj. *fest machend:* दत्तानाम् Sûrjas. 1, 212, 4.

स्थिरीकरण n. 1) *das Härten:* रस° Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, 2 v. u. सत्त्व° *b*, 3. — 2) *das Festmachen, Fixiren:* चित्तस्य विषयान्तरपरिहारेण स्थिरीकरणम् = चित्तस्य धारणा Verz. d. Oxf. H. 229, *b*, No. 561. 236, *b*, N. 4. Sarvadarçanas. 177, 20. *Befestigung, das Verleihen von Bestand:* प्राप्तराज्यस्याभिषेकमङ्गलैः Sîm. D. 163, 3. *das Bekräftigen, Bestätigen:* भार्या° Kull. zu M. 8, 55. — Vgl. मनः°.

स्थिरीकर्तव्य adj. *zu ermuthigen* Çik. 53, 23.

स्थिरीभू (स्थिर + 1. भू), °भवति 1) *steif werden:* गात्राणि R. 3, 78, 9. °भूत *hart —, fest geworden* Sûrjas. 1, 265, 10. 305, 6. — 2) *zunehmen,* घ° *abnehmen:* घोषः Sûrjas. 1, 323, 20. — 3) *Muth fassen, gutes Muths werden* MBh. 7, 3764. 15, 1019. R. 2, 20, 27. Çiç. in LA. (III) 36, 20.

स्थिरिर् m. etwa *Scheffel:* निर्गा ऊपे पर्वमिव स्थिरिभ्यः RV. 10, 68, 3.

स्थिरिमत्त् adj. *mit Scheffeln versehen* RV. 10, 27, 15.

स्थु s. उष्टु und सुष्टु.

स्थुट्, स्थुडति (संवरणे) Dhâtup. 28, 94.

स्थुरिका f. s. u. क्षुरिका 2).

स्थुरिन् m. = स्थौरिन् Râjam. zu AK. 2, 8, 2, 14 nach ÇKDa.

स्थुल n. *Zelt* H. 681. Hall. 2, 296. Çiç. 12, 1.

स्थू als Wurzel anzunehmen für स्थविमन्, स्थविर, स्थूण, स्थूर und स्थूल.

स्थूण (von स्थू) 1) m. N. pr. *a*) eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13, 230. — *b*) eines Jaksha (vgl. स्थूणाकर्ण) MBh. 1, 2438. 5, 7477. 7479. 7544. — 2) f. स्थूणा Uṇâdis. 3, 15 (oxyt.). *a*) *Pfosten, Pfeiler, Säule* AK. 2, 4, 22, 33. 22, 127. Tâik. 3, 3, 141. H. 1014. H. an. 2, 136. Hall. 5, 48. ध्रुवा RV. 8, 17, 14. ऋतां स्थूणौ पितरौ धारयत्तु 10, 18, 13. स्थूणेव जनौ उपमिद्ययन्थ 1, 59, 1. सुमिता 5, 45, 2. 62, 7. स्थूणामधि रोहं वंश *Hauptbalken* AV. 3, 12, 6. 14, 1, 63. Nir. 1, 12. Sûrjas. 1, 77, 4. Çat. Br. 14, 1, 2, 7. 3, 2, 22. 5, 2, 2. Kâtj. Çr. 8, 4, 7. 9. गौ स्थूणायां बद्धा 26, 5, 3. द्वार्य *Thürpfosten* Âçv. Çr. 4, 15, 4. Çâṅkh. Çr. 17, 5, 5. प्रेङ्ख° 10, 14. °गर्त Gobh. 3, 2. Âçv. Gṛhj. 2, 8, 18. °विरोकृण Çâṅkh. Gṛhj. 5, 6. Kâtj. 11. 24. 31. 38. 74. तस्थौ स्थूणेव निश्चला MBh. 1, 3003. °सङ्गमे: 2, 1773. 4, 1765. Verz. d. Oxf. H. 156, *a*, 13. Bhâg. P. 10, 23, 10. Pañkat. 37, 6. इन्द्रार्धा Sîm. D. 13, 16. स्थूणावशेषं गृहम् 63, 7. am Ende eines adj. comp. Bhâg. P. 11, 8, 32. दृढ° Haus Spr. (II) 3098. घस्थि° Körper M. 6, 76. त्रि° von *drei Pfeilern* (den humores) *getragen* MBh. 5, 1070. Sûrjas. 1, 77, 3. Varâh. Laghuj. 2, 16. सहस्र° von *tausend Pfeilern getragen:* सदम् RV. 2, 41, 5. क्षत्र 5, 62, 6. सै° *sammt dem Pfeiler* Çat. Br. 14, 5, 2, 1. °चिह्नवल्मीक *sammt dem Baumstumpf* Kâm. Nîtis. 19, 9. क्षिन्न° von einem Stiere wohl so v. a. *mit zerschlagenen Beinen* MBh. 12, 9468. Nach Sîvan. K. 247, *b*, 12 auch n. — *b*) = मूर्मी 3) AK. 2, 10, 25. Tâik. H. 1464. H. an. Hall. 1, 131. — *c*) *eine best. Krankheit* H. an. — Vgl. घय°, गृह°, स्थौणिक.

स्थूणाकर्ण m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 3, 936 nach der Lesart der ed. Bomb., स्थूलकर्ण ed. Calc.

स्थूणाकर्ण 1) m. N. pr. eines Jaksha MBh. 5, 7476. 7482. — 2) m. *ein best. Krankheitsdämon* Harîv. 9538. — 3) m. Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19, 44. — 4) m. (sc. बाण) und n. (sc. अस्त्र) Bez. *eines best. Geschosses* MBh. 3, 11967. 14995 (स्थूला° fälschlich ed. Calc.). 5, 1913. 4786. 7, 8222. 8226. Harîv. 10474. 13217. — Hier und da fälschlich स्थूणा° geschrieben.

स्थूणापत्त m. Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19, 46.

स्थूणापदी adj. f. *pfostenfüssig* gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5, 4, 139.

स्थूणाभार m. *Balkoniast* gaṇa वंशादि zu P. 5, 1, 50. स्थूणाभार v. l. — Vgl. स्थौणाभारिक.

स्थूणाराज m. *Hauptpfosten* Çat. Br. 3, 1, 4, 11. 5, 2, 1. Çâṅkh. Gṛhj. 2, 3. Pân. Gaṇ. 3, 4.

स्थूणीय und स्थूण्य adjj. von स्थूणा gaṇa यूपादि zu P. 5, 1, 4.

स्थूम m. = दीप्ति und चन्द्र ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut.

स्थूर् (von स्थू, Uṇâdis. 5, 4 (parox.). 1) adj. = स्थूल (vgl. स्थवीयस्, स्थविष्ठ) *dicht, dick, breit; nachhaltig, solid:* गभस्ति RV. 5, 29, 2. स्थूरं न कच्चिदारुक्तः *etwas Schweres* 8, 21, 1. सन्वस्य स्थूरं ददृशे पुरस्तात् *etwas Dickes* 1, 34. स्थूरस्य राये बृहतो य ईशे 4, 21, 4. रत्न 6, 19, 10. राधस् 8, 4, 19. 24, 29. Vâlakh. 6, 8. रयि RV. 10, 156, 3. — 2) m. *a*) du. *Knöchel* (nach Mahîdh.) VS. 25, 3. *Hinterbacken* (nach dems.) 6; vgl. TS. 5, 7, 22, 1 nebst Comm. und स्थूरगुदौ 22, 1. — *b*) *Mensch* Uṇâdis. *Stier* Uṇâdiṣ.

im Saṃkshiptas. nach ÇKDn. — 3) f. घा N. pr. eines Frauenzimmers gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. — Vgl. स्थौर्य.

स्थूरयूप m. N. pr. eines Mannes: °वंत् RV. 8,23,24.

स्थूरि adj. *einspännig* (an einem Wagen für zwei Thiere): नाकिः स्थूरि-तुया यातमस्ति *einspännig ist kein ordentliches Fahren* RV. 10,131,3. wenn für 12 Feuer nur 11 Jûpa da sind, so ist das यद्वा स्थूरिणा यायात् TBa. 3,8,24,3. Âpr. Ba. 5,30. Çat. Ba. 13,3,3,9. स्थूरि पवाचितम् *ein einspänniger Wagen mit Gerste beladen* TBa. 1,8,3,4. Pañcav. Ba. 16,13,12. 18,9,7. — Vgl. घ°.

स्थूरिका s. u. कूरिका 2).

स्थूरिन् m. = स्थौरिन् H. 1263, Schol. Halâs. 2,111.

स्थूल (= स्थूर) 1) adj. (f. घा) Gegens. सूक्ष्म, कृश, अल्प. a) *grob, dick, gross, fett, massiv;* = पीन, पीवर AK. 3,2,10. H. 448. an. 2,516. Med. l. 55. Halâs. 2,187. = दृढ AK. 3,4,28,47. — AV. 11,8,28. पर्दस्या वंक्रभेर्याः कृधु स्थूलमुपार्तसत् *penis* (vgl. RV. 8,1,34) VS. 23,28. यूप Śrâpv. Ba. 4,4. Çat. Ba. 14,6,8,8 (घ°). Ind. St. 2,262. Suçr. 1,151,5. 198, 24. Kumâras. 2,11. Varâh. Bṛh. S. 4,20. 47,17. Bilâs. 2. Pañcân. 1,1,71. नल MBu. 7,1390. 8,893. vom Körper und seinen verschiedenen Theilen Suçr. 1,256,11. Mṛicch. 14. Spr. (II) 6642. Varâh. Bṛh. S. 47,3. 61, 3. 5. 14. 64,2. 67,3. 68,7. 17 (अति°). 67. 99. 69, 33. 70, 21. Pañcân. 1, 14, 57. Z. d. d. m. G. 27, 30 (स्थूलस्थूल). त्वच् (die sonst मांसधरा heisst) Çârîr. Saṃh. 1, 5, 7. verschiedene lebende Wesen R. 3, 76, 8. 5, 10, 17 (अति°). Varâh. Bṛh. S. 45, 2. H. 1299. Suçr. 1, 52, 14 (अति°). 53, 17. 129, 21. Spr. (II) 1739 (auch घ°). 7380 (°तर v. l.). Mârk. P. 43, 6. स्थूलो ज्ञानातीति स्थूलदेक्स्थः Comm. zu TS. Prât. 6,9. Sarvadarçanas. 3,22. Vedântas. (Allah.) No. 82. °तरवरवृक्षस्कन्ध Pañcat. 134,5. गिरिशिखरस्थूलानि पलानि Bhâg. P. 5,16,17. Kathâs. 53, 61. Colebr. Alg. 316. Steine, Steinmassen R. 4,44,115. AK. 2,3,6. H. 1036. Halâs. 2,13. Rîâ-Tan. 1,265. गदा MBu. 5,2041. स्थाल, कपाल Spr. (II) 7235. मञ्जूषा Kathâs. 4,18. पक्ष Suçr. 1,25,21 (अति°). Edelsteine, Perlen, Tropfen R. 3,32,4. Mṛicch. 47. 105. Râgân. 6,28. 15,99. Varâh. Bṛh. S. 81,3. 4. Kathâs. 36,82. Prab. 81,16. योगतारका Sûrjas. 8,19. Zeug Spr. (II) 7233. Varâh. Bṛh. 2,12. Rîâ-Tan. 5,460. Pañcât. 133,1. Haare Varâh. Bṛh. S. 68,32. Lalitâ. 2,19. Spr. (II) 7234. सिन्दूरतिलक *dick* Kathâs. 20, 50. — b) *grob* in übertr. Bed.: एनस् M. 11,253. व्यसन Spr. (II) 6308. मूल्यो विवादो विप्राणां स्थूलो लाभो ज्यायसो MBu. 8,637. वर्ण Farbe (Gegens. स्वल्प) Harîv. 7014. प्रमाद Sarvadarçanas. 120,7. स्थूलेच्छ so v. a. *unbescheidene Wünsche habend* Spr. (II) 2839. °बुद्धिमत् MBu. 12,11344. °मति adj. Varâh. Bṛh. S. 69, 31 (nach einer Hdschr. des Comm. *dumm*, nach einer anderen *klug*). अभिप्राय Pañcât. 168,25. स्थूल = जड *dumm* AK. 3, 4, 26, 206. H. an. = निष्प्रज्ञ Med. *ein dummer Mensch* Spr. (II) 7248. *grob* so v. a. *nicht präcis, praeter propter bestimmt* Colebr. Alg. 70. 87. Gaṇit. Sraṃçûdan. 71. यथास्थूलम् *im Groben, im Grossen* (Etwas beschreiben) MBu. 13, 6526. Suçr. 1,89,4. — स्थूलातिस्थूलमात्रायाम् Amṛitan. Up. in Ind. St. 9,31. — c) in der Philosophie *grob* so v. a. *materiell, für die Sinne wahrnehmbar* (Gegens. सूक्ष्म *atomartig*); m. *der grobe, wahrnehmbare Körper* Mitra. Up. 3. Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. fg. 133. 138. Kap. 1,62. fg. 3,7. °दर्शिन् MBu. 12, 11068. Weber, Rimây. Up. 338. 342. Verz. d. Oxf. H. 225,a,2 v. u. 226,a, No. 554. 229,a,18 v. u. 231,b,2. 8. Verz. d. B. H. No. 1365. Sarvadarçanas. 52,12. fg. 164,14. Bhâg. P. 2,1,23. 10,32. 4, 12,17. 5,11,7. 16,3. 26,39. fg. 7,3,33. 11,3,17. Vedântas. (Allah.) No. 27. — 2) m. a) *Artocarpus integrifolia Lin.* (पनस) Râgân. 11,32. — b) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vâju beim Schol. zu H. 210. wohl fehlerhaft für स्थूण. — 3) n. = कूट H. an. — 4) m. n. gaṇa घर्घरादि zu P. 2,4,31. — 5) f. घा *Scindapsus officinalis Schott.* Çabdâ. im ÇKDn. *Cucumis utilissimus Roxb.* Râgân. 7,204. *grosse Kardamomen* Ratnam. 117; vgl. स्थूलेला. — 6) दृढस्थूल R. Gorr. 2,114,5 fehlerhaft für °स्थूण; vgl. Spr. (II) 5098. स्थूलनिभानि R. 6,89,18 fehlerhaft für स्थल°. — Vgl. अति°, स्थविष्ठ und स्थवीयस्.

स्थूलक (von स्थूल) 1) adj. proparox. P. 5,4,3. oxyt. gaṇa सङ्ख्यादि zu P. 4,2,80. — 2) m. = मूल्यय° Ratnam. im ÇKDn. — Vgl. स्थौलक.

स्थूलकङ्गु m. *eine Getraide-Art*, = वारक Râgân. 16,88.

स्थूलकणा f. *eine Art Kümmel* Râgân. 6,64.

स्थूलकण्टक m. *eine best. Pflanze*, = जालवर्वूर Râgân. 8,39.

स्थूलकण्टिकिका f. *Salmalia* (शाल्मलि) *malabarica Sch. et E.* Çabdâ. im ÇKDn.

स्थूलकण्टा f. *die Eierpflanze* Râgân. im ÇKDn.

स्थूलकन्द 1) adj. *grossknollig* Suçr. 1,226,1. — 2) m. Bez. verschiedener *Knollengewächse: Schalotte* Râgân. 7,81. = मुस्तालु 67. = कस्तिकन्द 80. = मूराण *Arum* Râgân. im ÇKDn. स्थूलकन्दक unsere Hdschrr.

स्थूलकन्दक m. = मूराण *Arum* Râgân. 7,62.

स्थूलकर्ण m. N. pr. eines Ṛishi MBu. 3,986. स्थूणाकर्ण ed. Bomb.

स्थूलकाष्ठदक्ष (nom. °धृग्) m. *ein Feuer von dickem Holze* Gaṭâṣṭ. im ÇKDn. so ist auch zu lesen Taik. 1,1,68 st. स्तृणकाष्ठ°.

स्थूलकाष्ठाग्नि m. dass. Hîn. 200.

स्थूलकेश m. N. pr. eines Ṛishi MBu. 1,942. fgg. Kathâs. 14,77. fgg.

स्थूलकेड m. *Pfeil* Taik. 2,8,52.

स्थूलंकरण adj. (f. ई) *dick* u. s. w. *machend* P. 3,2,56. Vop. 26,62.

स्थूलचञ्चु m. *eine best. Gemüsepflanze* Râgân. 4,148.

स्थूलचाप m. fehlerhaft für तूलचाप Çabdâ. im ÇKDn.

स्थूलचूड adj. *mit starkem Haarbüschel versehen:* किराता: R. 4,40,30.

स्थूलजङ्घा f. N. einer der neun Samidh Gaṇâs. 1,27.

स्थूलजिह्व adj. *dickzüngig;* m. N. pr. eines Bhûta Harîv. 14851.

स्थूलजीरक m. *eine Art Kümmel* Râgân. 6,64.

स्थूलतण्डुल m. *eine Reisart*, = महाशालि Râgân. 16,12.

स्थूलता (von स्थूल) f. *grosser Umfang:* त्रिके Spr. (II) 1670 (zugleich *Dummheit*). कण्ठस्य als Erklärung von उरुता ह्रस्य Comm. zu TS. Prât. 22,10.

स्थूलताल m. *Phoenix paludosa* Râgân. 9,92.

स्थूलत्व n. nom. abstr. zu स्थूल 1) c) Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. 133. Verz. d. Oxf. H. 231,b,4. Sarvadarçanas. 149,3.

स्थूलत्वचा f. *Gmelina arborea* Râgân. 9,37.

स्थूलदण्ड m. *ein best. Rohr* Râgân. 8,6.

स्थूलदत्त m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 30,94. fgg.

स्थूलदर्भ m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) Roxb. Râgân. im ÇKDn.

स्थूलदला f. *Aloe perfoliata Lin.* Rágán. im ÇKDn.

स्थूलनाल m. *ein best. Rohr* Rágán. 8,6.

स्थूलनास m. *Eber (dickschnauzig)* H. 1288.

स्थूलनासिक P. 5,4,118. m. dass. Taik. 2,5,5. Hân. 82.

स्थूलनील m. *ein best. Vogel,* = लम्बकर्ण, रणप्रिय u. s. w. Rágán. 19,86.

स्थूलपट्ट m. *Baumwolle* Çabdan. im ÇKDn.

स्थूलपट्टाक m. *grober Stoff (Zeug)* Çabdan. im ÇKDn.

स्थूलपाद m. *Elephant* Çabdam. im ÇKDn.

स्थूलपिण्ड m. N. pr. eines Mannes; s. स्थौलपिण्ड.

स्थूलपुष्प 1) m. *eine best. Pflanze,* = वक Ratnam. 76. — 2) f. या *eine auf Bergen wachsende* Aparâgitâ Ratnam. im ÇKDn. = कण्टु Rágán. 5, 142. — 3) f. ई *eine best. Pflanze,* = पवतिका Rágán. im ÇKDn. सूक्ष्मपुष्पी unsere Hdschrr. 3,65.

स्थूलपूलाम n. gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31.

स्थूलपृषत 1) adj. *aus grossen Tropfen bestehend:* वर्ष R. 3,32,4. — 2) f. स्थूलपृषती *eine grossgefleckte Kuh* VS. 24,2.

स्थूलफल 1) m. *Salmalia malabarica Sch. et E.* Rágán. 8,5. — 2) f. या = शणपुष्पी Rágán. 4,67.

स्थूलबाहु 1) m. ein Personenname Kathâs. 69,18. 100,56. — 2) f. ऊ (भेदायाम्) P. 4,1,67, Schol.

स्थूलभ adj. so v. a. स्थूल 1) a) AV. 6,72,2.

स्थूलभद्र m. N. pr. eines der 6 Çrutakevalin bei den Gaina H. 34.

स्थूलभाव m. nom. abstr. zu स्थूल 1) c) Çiâs. Sâm. 1,5,39.

स्थूलभुज m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 52,70. fgg.

स्थूलमरिच n. = कक्कोल Rágán. 12,82.

स्थूलमुख adj. P. 5,2,168.

स्थूलमूल n. *eine Art Rettig,* = चाणक्यमूल Rágán. 7,17.

स्थूलभविष्णु adj. *Anlage zum Dickwerden u. s. w. habend* P. 3,2,57. Vop. 26,63.

स्थूलभावुक adj. dass. ebend.

स्थूलय् (von स्थूल), °यते (परिवृंहणे) Dhâtup. 35,50.

स्थूललक्ष adj. *freigebig* Rasam. zu AK. 3,1,6 nach ÇKDn. H. 385. Halây. 2,210. Jâân. 1,308. Inda. 4,11. Matsja-P. 206,39 und Vîtsj. K. 5,5,3 nach Aufrecht. °लक्ष्य dass. AK. 3,1,6. Jâân. 1,308, v. l. MBn. 3,1810. 12, 2005. könnte auch heissen *hohe Ziele verfolgend.* — Vgl. स्थौललक्ष्य.

स्थूललक्षिता f. *Freigebigkeit* Kâm. Nîtis. 8,7. könnte auch heissen *das Verfolgen hoher Ziele.*

स्थूललक्ष्य s. u. स्थूललक्ष.

स्थूललक्ष्यता f. = स्थूललक्षिता Kâm. Nîtis. 4,5.

स्थूलवर्त्मकृत् m. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Çabdam. im ÇKDn.

स्थूलवल्कल m. *roth blühender* Lodhra Gaṭâdh. im KDn.

स्थूलवालुका f. N. pr. eines Flusses (*groben Sand habend*) MBn. 6, 323. 13,4888.

स्थूलवृन्तफल m. = स्निग्धपिण्डीतक Rágán. im ÇKDn.

स्थूलवेदेकी f. *Scindapsus officinalis Schott.* Rágán. 6,12.

स्थूलशर m. *eine Art Rohr* Rágán. 8,83.

स्थूलशाकिनी f. *eine best. Gemüsepflanze,* = राजशाकिनी Rágán. 7,134.

स्थूलशाट m. *grober Stoff (Zeug)* H. 672. °क m. dass. AK. 2,6,3,17. Taik. 2,6,34.

स्थूलशाटि m. schlechte Lesart für °शाट H. 672.

स्थूलशालि m. *eine grosse Reisart* (महाशालि) Rágán. 16,18.

स्थूलशिम्बी f. *eine best. Pflanze,* = घसिशिम्बी Rágán. 7,178.

स्थूलशिरस् adj. *Dickkopf,* m. N. pr. P. 6,1,62, Schol. eines Ṛshi MBn. 2,106. 3,10699. 12,13321. 13,1762. Harîv. 9572. eines Râkshasa Kathâs. 2,18. eines Jaksha 56,95. fgg. — Vgl. स्थौलशीर्ष.

स्थूलशीर्षिका f. *eine Ameisenart mit grossem Kopfe* H. 1207.

स्थूलशूरण n. *grosses Arum* Suçr. 1,225,19 (°सूरण).

स्थूलशृङ्ग m. *eine Wespenart* Buâiva. im ÇKDn.

स्थूलसायक m. *eine Art Rohr* (शर) Rágán. 8,83.

स्थूलस्कन्ध m. *Artocarpus Lacucha* (लकुच) Rosb. Rágán. 9,160.

स्थूलहस्त m. *Elephantenrüssel* Taik. 2,8,37 (n. !). Mucn. 14.

स्थूलाशा (स्थूल + 1. अंश) f. *eine Art Curcuma,* = गन्धपत्रा Rágán. 6,232.

स्थूलाकर्ण MBn. 3,14995 fehlerhaft für स्थूणा° (so ed. Bomb.).

स्थूलाक्ष adj. *grossäugig;* m. N. pr. eines Ṛshi MBn. 13,1764. eines Râkshasa R. 3,29,32. 32,28.

स्थूलाङ्ग (स्थूल + 3. अङ्ग) m. *eine Reisart,* = स्थूलशालि Rágán. 16,18.

स्थूलान्त्र (स्थूल + आन्त्र) n. *Mastdarm* Jâân. 3,95 (*die grosse Höhle* Sr.). Suçr. 1,349,9.

स्थूलाम्र (स्थूल + आम्र) m. *eine grosse Mangoart* Rágán. 11,17.

स्थूलाष्ठीव m. N. pr. s. स्थौलाष्ठीवि.

स्थूलास्य 1) adj. *grossmäulig.* — 2) m. *Schlange* Çabdar. im ÇKDn.

स्थूलिन् m. *Kameel* Çabdârthak. bei Wilson.

स्थूलीकरण (von स्थूल + 1. कर) n. *das Bewirken von Erectionen* Verz. d. Oxf. H. 86,a,1. 2. Verz. d. B. H. No. 1006.

स्थूलेरण्ड m. *eine Art Ricinus* (एरण्ड) Rágán. 8,60.

स्थूलैला f. *grosse Kardamomen* (एला) Dhanv. 2,24. Rágán. 6,85.

स्थूलोच्चय (स्थूल + उ°) m. 1) *ein grosser Felsblock* H. an. 4,231. fg. Med. j. 130. — 2) Bez. *des mittleren Ganges eines Elephanten* AK. 2, 4,34,130. H. an. Med. Hall. 2,67. Çiç. 12,16. — 3) *Ausschlag im Gesicht* H. an. Med. — 4) *Höhlung in einem Elephantenzahn* Çabdam. im ÇKDn. — 5) *Unvollständigkeit* AK. H. an. Med. *Vollständigkeit* Ratnaprakâça bei Mallin. zu Çiç. 12,62. *Haufe, Masse* (wohl °पुञ्जयो: st. °पु° zu lesen) ebend.

स्थेमन् (nom. abstr. zu स्थिर) m. 1) *Festigkeit:* स्थेम्ने बलायाविरमाय Âit. Br. 1,13. 16. Çat. Br. 6,5,4,1. 4. 8,8. TS. 5,1,2,3. Kâṭh. 19,8. — 2) *Stillstand, Ruhe:* यत्कस्यामपि भानुमान ककुभि स्थेमानमालम्बते Naish. 12,81. — 3) *Bestand, Dauer:* प्रेम° Verz. d. Oxf. H. 253,a,3.

स्थेय (von 1. स्था) 1) partic. fut. pass. n. impers. a) *stehen zu bleiben:* यत्राप्ते पोत्रनशते नास्त्रा (so ist zu schreiben) स्थेयम् R. 5,7,54. *zu stehen, Stand zu halten:* यावी Bhâg. P. 3,18,11. — b) *zu verweilen, zu bleiben:* बलिन: सैनिकर्ये तु न स्थेयं पण्डितेन वै Harîv. 5278. R. 3,8,23. इह मया स्थेयं किंपत्रिरम् Kathâs. 115,81. Mârk. P. 106,7. मुहूर्तमपि न स्थेयमत्र न: Bhâg. P. 11,30,3. — c) *zu verharren in, obzuliegen:* शासने ऽस्य प्रिये चैव स्थेयं मत्प्रियकाङ्क्षिभि: MBn. 12,1470. R. Gorr. 2,24,2.

4,38,23. मया वशे तव Mâṅk. P. 62,31. — *d) sich zu verhalten, — benehmen;* die Ergänzung α) ein adj. im instr.: न स्थेयमवलिप्तेन तत्र द्रष्टा सता त्वया Râǵa-Tar. 4,66. — β) ein absol.: भवद्भिः सावधानीभूय स्थेयम् Z. d. d. m. G. 14,572,15. — γ) ein adv.: विपश्चिद्भिः स्थेयम् Spr. (II) 4334. कथम् Harîv. 14328. इत्थम् Râǵa-Tar. 6,34. — 2) adj. in Verbindung mit स्थापम् *in einem Topf aufgestellt* Çiksh. Gaṇ. 1, 18. fg. Pân. Gaṇ. in Ind. St. 5,323. — 3) m. *a) Richter, Schiedsrichter* Taik. 3,3,333. H. 882 (Zeuge). H. ç. 140. an. 2,388. Med. j. 62. Hall. 2, 276. P. 1,3,23. Hit. IV, 1. Râǵa-Tar. 3,139. 6,13. 25. 28. fg. — *b) Hauspriester* Taik. H. an. Med. — Vgl. दुः°, मध्यम°, सु°.

स्थेयंस् (compar. zu स्थिर) adj. P. 6,4,157. Vop. 7,56. AK. 3,2,22. H. 1453. 1) *sehr hart, — fest:* स्थेयानस्थेयसो नोपकुरुते TS. 5,2,6,2. — 2) *sehr beständig, — anhaltend:* सरस्वती Râǵa-Tar. 1,7. उत्साह् Sin. D. 207. *sehr standhaft* 66.

स्थेयीकर् (स्थेय + 1. कर्) *zum Schiedsrichter erwählen:* °कृत Kathâs. 62,173.

स्थेयस् adj. superl. zu स्थिर P. 6,4,157. Vop. 7,56. H. 1453.

स्थैरकायणि m. patron. von स्थिरक gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. des Mitravarkas Ind. St. 4,372 (°कायन).

स्थैर्य (von स्थिर) n. 1) *Festigkeit, Härte:* षड्ज्ञानाम् Jâǵ. 3,86. उदरस्य MBh. 1, 1492. Sûçr. 1, 18, 10. 151, 6. दोष° 2, 338, 7. °कृत् 1, 48, 7. Vâgbh. 1, 6, 16. °कर् Sûçr. 1, 182, 4. व्यायामः स्थैर्यकराणाम् (क्लितमम्) Kâraka 1, 23. Verz. d. Oxf. H. 230, *b*, 44. — 2) *das Feststehen, Unbeweglichkeit* Dhâtup. 3, 13. fg. Vop. 8, 106, Anf. Z. d. d. m. G. 27, 26. Prab. 5, 2. Bhâg. P. 10, 85, 7. 11, 16, 33. आसन° Sarvadarçanas. 174, 12. स्थाने स्थैर्यमवाप्नोति *festes Verbleiben in seiner Stellung* Kâm. Nîtis. 5, 5. मनसः *festes Gerichtetsein des Geistes auf einen Punkt* Verz. d. Oxf. H. 91, *a*, 9. अ° *Unsicherheit* Râǵa-Tar. 4, 81. Sarvadarçanas. 163, 15. — 3) *Bestand, Dauerhaftigkeit* Spr. (II) 5934. शरीर° Kathâs. 94, 135. Sarvadarçanas. 97, 14. fg. 99, 20. प्रीति° Râǵa-Tar. 1, 375 (pl.). Sin. D. 243. Schol. zu Kap. 1, 23. अ° *Unbestand, Vergänglichkeit* Spr. (II) 855. 6279. — 4) *Standhaftigkeit, Ausdauer* Bhag. 13, 7. MBh. 3, 17261. Harîv. 7598. Ṛ. 2, 106, 22. 4, 55, 2. 5, 83, 4. Kâm. Nîtis. 4, 29. 37. 13, 21. 19, 7. Spr. (II) 3482, v. l. 4012. 7049. 7236. Râǵa-Tar. 3, 157. 6, 242. 344. Bhâg. P. 1, 16, 29. 36. 3, 28, 5. मनः° dass. Spr. (II) 7436. — 2) 4): स्थैर्ये च लिम्पतीव MBh. 6, 502. R. Gorr. 1, 1, 20 (18 Schl.). 2, 1, 21. 6, 102, 26. — 5) *festes Hängen an, dauerndes Gefallen an* (loc.): कथं तस्याः स्थैर्ये स्यान्नृपि Kathâs. 52, 282. सा तस्मिन्नासि — नदीव सागरे स्थैर्ये बबन्ध 362. न कथंचिदहृदे स्थैर्यमालम्बते Pañkat. 225, 23. योगमहोत्सवे Spr. (II) 1956. मत्वस्तस्य महीभर्तुः — वास्तव्यबन्धचित्तायां स्थैर्यमाप्यौ Râǵa-Tar. 4, 623.

स्थैर्यवत्त्व (von स्थैर्यवत्) n. *das Feststehen, Unbeweglichkeit:* विषयाक्रान्ते स्थैर्यवत्त्वं न चेतसि *festes Gerichtetsein auf einen Punkt* Mâṅk. P. 38, 18.

स्थैर्यवत् (von स्थैर्य) adj. *fest stehend:* द्रुम Kirâṭ. 2, 210.

स्थैर्यविचारणा n. Titel einer Schrift Hall 161. ders. in der Einl. zu Vîrâvat. 18.

स्थोरिन् m. = स्थौरिन् Bharata, Dvirûpak. nach ÇKDr.

स्थौणाभारिकै adj. von स्थूणाभार gaṇa वंशादि zu P. 5,1,10. स्थौणाभ° v. l.

स्थौणिकै (von स्थूणा) adj. *Pfeiler —, Balken schleppend* ebend.

स्थौणेय (wie oben) n. = स्थौणेयक AK. 2,4,4,20. Suçr. 2,283,20.

स्थौणेयक n. *eine best. wohlriechende Pflanze* Râǵân. 12,137. Dhany. 3,45. Ratnam. 124. *Carotte, Möhre* Dhanv. in Nigh. Pr. — Suçr. 1,139, 9. 2,273,17.

स्थौरै m. pl. zum sg. स्थौर्य gaṇa काण्वादि zu P. 4,2,111.

स्थौरिन् m. *Lastpferd, Lastochs* AK. 2,8,2,14. H. 1263.

स्थौर्य 1) m. metron. von स्थूरा gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. — 2) n. und v. l. स्थौल्य Comm. zu TS. Prât. 24,5. wohl Beides fehlerhaft für साम्य.

स्थौलकै adj. von स्थूल gaṇa सक्थ्यादि zu P. 4,2,80.

स्थौलपिण्डि (von स्थूलपिण्ड) m. patron.; pl. Saṁgh. K. 183, *b*, 11.

स्थौललक्ष्य (von स्थूललक्ष) n. *Freigebigkeit* M. 7,211.

स्थौलशीर्ष adj. von स्थूलशीर्षन् P. 6,1,62, Schol.

स्थौलाष्ठीवि (von स्थूलाष्ठीव) m. N. pr. eines Grammatikers Nir. 7, 14. 10,1.

स्थौल्य (von स्थूल) n. = बल AK. 3,4,28,137. 1) *Dicke, Dicklichkeit* (Gegens. काश्र्य) Suçr. 1, 52; 11. 156, 6. 183, 17. Verz. d. B. H. No. 963. 967. Verz. d. Oxf. H. 337, *a*, No. 849. fg. Bhâg. P. 5, 10, 1. Sarvadarçanas. 4, 1. अति° Suçr. 1, 52, 13. 90, 18. — 2) *ausserordentliche Grösse, — Länge:* कालस्य Bhâg. P. 3, 11, 3. — Vgl. स्थैर्य.

स्न (von 1. स्ना) adj. in नदीस्न.

स्नैपन (vom caus. von 1. स्ना) 1) adj. (f. ई) *zum Bade dienend:* Wasser AV. 14,1,39. — 2) *das Baden, Schwimmen:* eines Rosses Çat. Br. 5,1,4,5. स्नपनं तस्य (eines Besessenen) कर्तव्यम् Jâǵ. 1,276. Harîv. 6010. Kathâs. 21, 50. स्नपनं युवतिभिः कार्येत्रात्मनः Bhâg. P. 7,12,8. विष्णोः *des Bildes* von V. 8,16,50. 10,89,45. mit Ergänzung von आत्मनः Mâṅk. P. 31,12. स्वच्छाम्भः = Çiç. 8,70. तीर्थादि = Weber, Kâṭhakaç. 288. षड्भिरङ्गैश्च° Bhâg. P. 10,52,42. सवभृथ° (sc. आत्मनः) 75,8. सप्तमी° Verz. d. Oxf. H. 41, *a*, 6. °सप्तमी Verz. d. B. H. 135, *a* (48). — Vgl. स्नापन.

स्नव (von स्नु) m. = स्रव *das Triefen* AK. 3,3,9.

स्नम्, स्नंस्यति (क्षेपे, दर्शने, निरसने) Dhâtup. 26,5. — caus. स्नमयति und स्ना° 19,65, v. l. — Vgl. स्नुम्.

स्नसा f. *Band, Sehne* Taik. 2,6,18. H. 631. Hall. 3,12. — Vgl. दृल°, स्नायु, स्नावन्, वस्नसा.

1. स्ना, स्नाति (शौचे) Dhâtup. 24,44. स्नापयति (शौचार्थे Durga) Nir. 7,13. स्नात्वी ved. absol. P. 7,1,49. *sich baden, ein Reinigungsbad nehmen* (insbes. nach Abschluss der Lehrzeit, eines Gelübdes u. s. w.): तीर्थे ṚV. 1,104,3. अप्सु TS. 6,1,4,2. 2,5,4,6. ऊर्ध्वं स्नाती दृशये नो अस्यात् *wie eine Badende* d. i. *unverhüllt* ṚV. 5,80,5. Çat. Br. 3,1,2,10. यत्रोदकं भवति तत्स्नात्ति 13,8,4,5. 11,3,2,2. 7. न नग्नः स्नायात् Âçv. Gṛhj. 3,9,6. 8,9. Kâty. Çr. 7,2,15. सर्वतीर्थेषु स्नाति MBh. 3,6062. Prab. 43. 10. Bhâg. P. 4,28,19. स्नामि Kathâs. 56,183. स्नाहि 4,50. Râǵa-Tar. 3,369. Bhatt. 20,11. स्नायात् M. 4,82. 201. 6,6. Varâh. Bpr. S. 78,21. वेदमधीत्य स्नायादिति स्मृतिः Sarvadarçanas. 124,1. Mâṅk. P. 35,33. सस्नौ P. 7,4,61, Schol. चन्दनसंपुक्तैः पानीयैः MBh. 7,2919. 13.

947. अवभृथम् Bhāg. P. 4,7,36. मधुम् 3,33,7. Bhaṭṭ. 3,28. अस्नासीत् 15,6. स्नास्यसि Bhāg. P. 1,7,16. स्नास्यन् M. 2,245. med.: स्नायते MBh. 13,2987. अलंपांसुभिर्विकेशाः Vārāh. Bṛh. S. 28,13. स्नायीत MBh. 3,7072. Mārk. P. 34,34. 35,28. 32. भस्मना त्रियवणम् so v. a. *sich einschmieren* Sarvadarçanas. 77,20. स्नायमान MBh. 7,2590. स्नास्ये 13,2762. अस्नायि pass. impers. Rāja-Tar. 3,286. स्नातुम् R. 1,63,4. Spr. (II) 4983. Kathās. 20,172. 39,110. स्नात्वा M. 2,176. 181. 3,4. 283. 5,87. 103. 144. 6,69. 11,186. 201. 204. MBh. 1,5573. 5900. 3,5001. R. 1,2,10. 2,50, 25. 64,32. 71,7. गाङ्गैः पयोभिः Spr. (II) 7238. Weber, Kṛshṇaj. 269. कृष्णतैलैर्नखादौ 270. 274. 289. 291 (मु°). विमले 308. fg. Pāṇ. Gaṇ. 1,3, 49. Pāṇ. Gaṇ. 34,21. 97,18. — partic. स्नात 1) *gebadet, gewaschen* (insbes. nach Abschluss der Lehrzeit, beim Eintritt in den Stand eines Hausholters; vgl. स्नातक) AV. 11,5,26. मलादिव VS. 20,20. Kauç. 41. 67. 80. 140. Āçv. Gṛhj. 2,2,2. 4,7,1. Pār. Gṛhj. 2,7. Çāṅkh. Gṛhj. 4,10. Jāṭ. 1,117. स्नातौ स्वं वेद माता च स्नाते पुंसवनाय वै MBh. 3,11059 (S. 871). अवभृथेषु 7,2926. नोदकक्लिन्नगात्रस्तु स्नात इत्यभिधीयते। स स्नातो यो दमस्नातः सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ 13,5257. कृच्छ्रादिव R. 2,63,16. 4, 23,6. विषग्नैरुदकैः Kām. Nītis. 7,10. 45. Çāk. 108. Vārāh. Bṛh. S. 46, 13. 49,72. 98,13 (°मात्र). पांसुस्नैः Vögel 95,16. तुरग 44,15. प्रतिमा सुवर्णरत्नाम्बुभिः 60,10. 14. Kathās. 18,367. Rāja-Tar. 2,187. मृत्तिकास्नैः Weber, Kṛshṇaj. 278. Bhāg. P. 3,23,31. 10,20,49. Daçak. 75,4. Hit. 10,3. वेदव्रतैः so v. a. वेदव्रतस्नात Mahāvīraj. 77,3. मया स्नातं त्वत्र Vop. 5,28. स्नातोपवृत्तैस्तुरगैः MBh. 5,7164. स्नातानुलिप्त P. 2,1, 49, Schol. Suçr. 1,113,5. Rāja-Tar. 3,241. Daçak. 65,16. Hit. 42,1. मु° Spr. (II) 7144. Rāja-Tar. 3,490. ध° Bhāg. P. 4,28,19. पद् ° Kauç. 64. शिरः° (s. auch bes.) Harīv. 1289. R. 5,3,29. 6,99,6. Mārk. P. 34,36. अनुस्नाता R. 2,75,26. Raghu. 1,76. Rāja-Tar. 5,291. Schol. zu Kīrāt. Ça. 4,1,22. मन्मङ्गल° Raghu. 4,41. अवभृथ° M. 11,93. — 2) *der sich in Etwas vertieft hat, erfahren* (vgl. निस्नात) R. Gorr. 1,11,6. परावरे ब्रह्मणि Bhāg. P. 1,5,7. विषये वाचाम् 4,13. धर्म° 4,24,13. — स्नात R. 2, 65,8 schlechte Lesart für स्नान (so ed. Bomb.). Vgl. मृतस्नात, विद्या°, विद्याव्रत° (R. 2,1,14. विद्यावेदव्रत° MBh. 13,4294. R. 6,72,62. वेदव्रत° MBh. 7,2926), व्रत°, शिरः°, मु°.

— caus. स्नपयति und स्नापयति (nur dieses bei Prāpp.) Dhātup. 19, 68. Vop. 18,23. *baden, waschen, schwemmen.* 1) स्नप°: मूतम् AV. 5,19, 14. गोमूत्रेण Kāṭh. Ça. 25,11,16. Çat. Br. 5,1,4,5. Harīv. 9509. 9513. कुचावुत्तैरश्रुभिः R. 2,29,22 (28 Gorr.). 5,25,55. 6,94,11. 93,44. Mṛicch. 172,12. Kir. 5,44. 47. Megh. 44. Kumāras. 7,10. पवनं सलिलैः Spr. (II) 6335. Z. d. d. m. G. 27,68. Uttarāh. 53,10 (69,1). Mālatīm. 60,11. Kathās. 11,49. 14,49. 39,111. 56,188. पयसि Gīt. 1,10. स्मितस्नपिताधरा 12,1. Rāja-Tar. 2,125. *wegwaschen* AV. 19,1,3. *eintunken in* (loc.) Baudhāyan.; s. u. कुण्डलिन् 3) b). — 2) स्ना°: अश्वम् Çāṅkh. Ça. 16,18,10. MBh. 3,14024. 12,12199. 13,1455. 15,947. Harīv. 7793. 9462. R. 1,26, 19 (27,18 Gorr.). 38,26. 2,91,31 (100,30 Gorr.). 6,106,3. Suçr. 1,369, 6. कस्त्यक्षं स्नापयीत यः Vārāh. Bṛh. S. 48,37. Rāja-Tar. 2,117. 3,372. Daçak. 92,1 v. u. स्नानेन Bhāg. P. 3,23,28. 5,6,18. 9,10,40. 10,6,20.

— desid. सिस्नासति: vgl. सिस्नासु.

— अप s. अपस्नात.

— अभि s. अभिस्नात.

— अव, partic. °स्नात *das Wasser, in dem sich Jmd gebadet, gewaschen hat:* अन्यस्य वाप्यवस्नातं दूरतः परिवर्जयेत् MBh. 13,5014. — caus. °स्नापयति *abwaschen* Kauç. 26.

— आ s. आस्नान.

— उद् *aus dem Wasser steigen, heraustreten:* त उत्स्नाय रुशमिभि प्र तस्थुः ṚV. 2,15,5. तीर्थेनोत्स्नायुः Çat. Br. 12,2,4,5. घृत उत्स्नाति *macht sich heraus aus dem Feuer* (Comm.) TBr. 3,7,8,3. — partic. उत्स्नात P. 8,4,61, Schol. in einer Etymologie Nir. 7,13. *aus der Gâyatrî herausgetreten* (mit drei Silben) nach Durga.

— नि *sich vertiefen in* (loc.): शब्दब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे पदि Bhāg. P. 11,11,18. — partic. °स्नात 1) *erfahren, kundig* P. 8,3,89. H. 342. Halāy. 2,180. Jāṭ. 1,321. शब्दब्रह्मणि Maitrāyaṇ. 6,22 (= MBh. 12,8341). सर्वास्नेषु MBh. 1,3988. 2,175. सर्वत्र 3,10020. सर्वासु विद्यासु Harīv. 674. R. Gorr. 1,80,28. कर्मसु Suçr. 1,12,12. Mārk. P. 129,15. रज्जुवर्तने P. 8,3,89, Schol. Bhāg. P. 2,4,10. 3,22,34. 4,24,2. 5,24,24. 11,11,18. यज्ञेषाम् 1,4,21. लोकवृत्तान्त° Çāk. 65,17. fg. कुटिलनय° Mālatīm. 37,3. धर्ति° Daçak. 78,7. धर्मे प्रति निष्णातत्वम् (so ist zu lesen) Kull. zu M. 10,35. — 2) *worüber man sich gereinigt hat* Jāṭ. 2,84. Mālatīm. 174,13. — Nach dem Schol. zu P. 8,3,89 soll in nicht übertragener Bed. निष्णात zu schreiben sein. Vgl. निष्ण.

— प्र *in's Wasser treten:* तीर्थेन Çat. Br. 12,2,4,1. fgg. Pāṇ. Br. 9,4,13. समुद्रम् 14,5,17. Kāṭh. 33,5 (vgl. TS. 7,5,2,2). प्रस्नातोरिवोसाः ṚV. 8,64,8. — Vgl. प्रस्न, प्रस्नातर्, प्रस्नेप. — caus. *sich baden in* (acc.): द्विर्यत्र स्वसारः प्रस्नापयन्त्यूर्मिणम् ṚV. 9,98,6. प्रस्नापिता मृतवत्सान् *gebadet* AV. 10,1,10.

— प्रति, partic. °स्नात in Verbindung mit सूत्र P. 8,3,90. *gereinigt* (मुद्ध) Comm.; sonst °स्नात ebend.

— वि zur Etymologie von विष = उदक Nir. 12,26.

— सम् zur Etymologie von सन्नि = संस्नात Nir. 5,1. — caus. *baden, waschen;* mit kurzem Wurzelvocal Bhāg. P. 8,2,25. mit langem Vers. d. Oxf. H. 10,*a*, N. 2. Çaṃk. 14,188.

2. स्ना, ष्णा (= 1. स्ना) adj. am Ende eines comp. *gebadet, getaucht;* vgl. उदधि°, घृत°, सुस्ना.

3. स्ना, स्नापति (वेष्टने) Dhātup. 22,25. *umwinden, bekleiden:* पाद्यस्याः पद्मपत्राक्ष्याः (so ist zu lesen st. पद्मपात्रा°) स्नापयस्या अघनं घनम् Citat aus dem MBh. bei Sāj. nach Westergaard.

स्नाता f. gaṇa मालादि zu P. 6,2,38. °प्रस्थ ebend.

स्नातक (von स्नात) gaṇa पावादि zu P. 5,4,29. adj. subst. *der das Bad genommen hat, welches die Lehrzeit abschliesst,* AK. 2,7,42. H. 808. Halāy. 2,239; vgl. Āçv. Gṛhj. 3,9,4. — Çat. Br. 12,1,4,10. Gobh. 3,5,12. 4,9,1. Pār. Gṛhj. 2,7. Āçv. Gṛhj. 3,9,6. Kauç. 13. Ind. St. 2, 75. 9,14. M. 1,113. 2,138. fg. 3,119. 4,32. 33. fg. 128. 130. 5,1. 6,1. 10,113. 11,2. Jāṭ. 1,110. MBh. 1,189. 5184. 2,789. 4,542. 7,2918. 13,3093. 4671. Raghu. 7,25. 17,17. Mārk. P. 34,91. Dhūrtan. 71,1. Verz. d. Oxf. H. 163,*a*, N. 1. 268,*b*,26. Hit. 123,19. °राजानौ gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. स्नातकहूत adj. 5,2,1, Schol. त्रयः स्नातका भवन्ति विद्यास्नातको व्रतस्नातको विद्याव्रतस्नातकश्च Hārīta bei Kull. zu M. 3,2. 4,

21. — Vgl. विद्या°, विद्याव्रत°, व्रत°.

1. स्नातकव्रत n. *die Verpflichtungen eines* Snâtaka (meist auf Beobachtung eines gewissen Decorums gerichtet; vgl. Âçv. Gṛhj. 3,9,5. 6) Kauç. 42. Âpast. 1,30,6. M. 4,259. 11,203.

2. स्नातकव्रत adj. *den Verpflichtungen eines* Snâtaka *nachkommend* MBh. 2,340.

स्नातकव्रतिन् adj. dass. MBh. 2,320.

स्नातर् (von 1. स्ना) nom. ag. s. ग°.

स्नातवस्य s. u. वस्य.

स्नातव्य partic. fut. pass. von 1. स्ना; impers. als n.: स्नातव्यं मानसे तीर्थे *man soll sich baden* MBh. 13,5351. Kathâs. 108,144.

स्नातव्रत adj. = स्नातकव्रत R. 5,23,15.

स्नातव्रतिन् in तीर्थ° Paṇḍar. 1,10,80 wohl fehlerhaft für °स्नानव्रतिन्; v. l. तीर्थस्नायी व्रती.

स्नात्र (von 1. स्ना) adj. *zum Baden geschickt, — einladend* Nir. 1,9. क्रुद् ṚV. 10,71,7. उदक Çat. Br. 13,4,2,17.

स्नात्वाकालक (स्नात्वा absol. von 1. स्ना + काल *Zeit*) adj. gaṇa गवाश्वप्रभृति zu P. 2,1,73; vgl. zu 5,2,2.

स्नान (von 1. स्ना) n. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *das Baden, Bad, Waschung* AK. 2,6,2,23. Trik. 2,6,38. H. 638. an. 3,289. Med. n. 24. Hall. 2,283. Kâtj. Çr. 25,11,17. Gobh. 3,1,12. Âçv. Gṛhj. 3, 9,4. Kauç. 69. 92. M. 1,111. 5,66. 85. 144. 7,220. R. 2,65,8 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Suçr. 1,207,16. Megh. 88. सुशीतलजले: Spr. (II) 2215. 4674. 4873. सचैल 5431. 7239. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 2 v. u. 43,36. 46,15. 48,36. 55,8. Weber, Kṛshṇaj. 235. 290. Kathâs. 18,220. Paṇḍat. 100,6. 7. Hit. 10,21. LA. (III) 5,16. 49,14. 54,7. Verz. d. Oxf. H. 14,b,26. 30,b,43. 35,a,3. 85,a,35. 47. b,20. 267,b,8. स्नानं कर् M. 4,152. Spr. (II) 5430. घा-चर् 3501. M. 4,45. 11,174. 254. गोमूत्रेण 109. समा-चर् 4,203. नि-सेव् Varâh. Bṛh. S. 78,21. प्र-कल्प् Kathâs. 18, 366. °तीर्थ Spr. (II) 1640. °मञ्च Verz. d. Oxf. H. 85,b,29. Weber, Kṛshṇaj. 295. °क्रीडा Spr. (II) 6184. स्नानोत्तीर्ण Çiç. 50,23. स्नानोत्थित Kathâs. 24,95. त्रिषवण° Ind. St. 1,23,3. तीर्थ° Kathâs. 34,12. fg. Paṇḍar. 1, 2,39. नदी° Kathâs. 49,85. पांसु° Spr. (II) 2288. भस्म° Sarvadarçanas. 77,19. जल°, दया°, तपः°, ज्ञान° Spr. (II) 2362. जनकतनया° Mucn. 1. हस्ति° Spr. (II) 667. रुद्र° (so v. a. °स्नपन) Verz. d. Oxf. H. 35, a, 3. देवता° 43,a,3. 6. कृतमलस्नाना *Wegwaschung* Bhâg. P. 3,23,36. — 2) *Mittel zum Waschen, wohlriechendes Wasser* u. s. w. H. an. Med. R. 2,91,67 (100,68 Garb.). Mucn. 34. Ṛv. 1,4. Spr. (II) 1910 (nicht *Bad*). Varâh. Bṛh. S. 77,28. Ver. in LA. (III) 8,21. Bhâg. P. 3,23,26. — Vgl. त्रिः°, दुः°, पुण्य°, पुण्य° (Varâh. Bṛh. S. 48,36. 78,22), प्रातः°, मङ्गल°, मृत°, व्रत°, शिरः° (*das Parfümiren des Kopfes* Mâlav. P. 34,35. Bhâg. P. 3,23,31).

स्नानकलश m. *Waschkrug* Râja-Tar. 3,371.

स्नानकुम्भ m. dass. Râja-Tar. 2,126.

स्नानगृह n. *Badehaus, Badestube* MBh. 7,2917. Harîv. 4488. — Vgl. सोम्य°.

स्नानतृण n. Kuça-*Gras* Çabdar. im ÇKDr.

स्नानदीपिका f. Titel eines Commentars zum Snânasûtra Verz. d. Oxf. H. 379,a, No. 388.

स्नानद्रोणी f. *Badewanne* Râja-Tar. 5,46.

स्नानपद्धति f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 1,93. — Vgl. स्नानसूत्रपद्धति.

स्नानवस्त्र n. *Badekleid* Spr. (II) 4903.

स्नानवासस् n. dass. Verz. d. Oxf. H. 103,b,31.

स्नानविधि m. *Bestimmungen über das Baden* Verz. d. Oxf. H. 12,b, 21. 41,a,29. 93,a, 4 v. u. 286,a, No. 670. Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,283. eines Pariçishṭa zum SV. Ind. St. 1,59. Verz. d. Oxf. H. 383,b, No. 466. Notices of Skt Mss. 1,93. देवभाष्यस्नानविधि पद्धति Verz. d. B. H. No. 1100.

स्नानवेश्मन् n. *Badehaus, Badestube* Kathâs. 39,100.

स्नानशाटी f. *Badehose* MBh. 13,1485. Mṛicch. 49,11. Verz. d. Oxf. H. 85,a,40 (°शाठी gedr.).

स्नानशाला f. *Badehaus, Badestube* MBh. 13,1437. 2765.

स्नानसूत्र n. Titel einer Schrift des Kâtjâjana Verz. d. B. H. No. 1098. Verz. d. Oxf. H. 379,a, No. 388. 387,a,14. °पद्धति 13.

स्नानाम्बु (स्नान + ग°) n. *Wasser zum Baden, Waschwasser* Kathâs. 18,363.

स्नानिन् (von स्नान) adj. *sich badend, im Bade befindlich:* स्नानिकव्याम् Çaṃk. 10,934.

स्नानीय (wie oben) adj. *zum Baden geeignet, zum Waschen* u. s. w. *dienend;* n. *wohlriechendes Wasser* u. s. w. AK. 2,4,2,22. H. an. 2,339. Med. n. 24. Kauç. 46. MBh. 13,2766. Râgân. 16,21. Verz. d. B. H. No. 1006. Durgotsavapaddhati im ÇKDr. चूर्ण P. 3,3,113, Schol. °वस्त्र *Badekleid* Milav. 87.

स्नानोदक (स्नान + उ°) n. = स्नानाम्बु Kathâs. 18,358.

स्नानोपकरण (स्नान + उ°) n. *Badegeräth* Paṇḍar. 100,8.

स्नापक (vom caus. von 1. स्ना) nom. ag. *Bader* Kâdaṃb. 1,15. R. 2, 83,13 (90,14 Gorr.). R. Gorr. 2,32,21. 67,6. °स्नापकै *Bader des* gaṇa पाशकादि zu P. 2,2,9 und 5,2,151.

स्नापन (wie oben) n. *das Baden, Waschen* M. 2,209. 211. R. 2,111, 10. Harîv. 6010 (nach der Lesart der neueren Ausg.). einer Zauberformel Sarvadarçanas. 170,6. — Vgl. स्नपन.

स्नायिन् (von 1. स्ना) adj. *sich badend, — abwaschend* Kathâs. 33,30. सकृत् M. 11,214. नित्य° Hit. 19,1. तीर्थ° Bhâg. P. 10,78,29. Paṇḍar. 1,10,80, v. l. तिल° s. u. पट्टिलिन्. प्रातः° (s. auch bei.) Kathâs. 107, 81. त्रिषवण° Jâtîm. 3,18. 326. MBh. 13,5231. Verz. d. Oxf. H. 269,b,2. त्रिकालस्नायिता f. nom. abstr. Kim. Nîtis. 2,22.

स्नेपु Uṇâdik. zu Uṇâdis. 1,1 (oxyt.). f. n. 1) *Band im menschlichen und thierischen Körper*, deren es vier Arten giebt, Suçr. 1,341,12. fg. Nir. 14,5. AK. 2,6,2,17. H. 619. 631. Hall. 3,12. TBr. 1,5,9,7 (n.). neunhundert Nir. 14,7. Garbhop. in Ind. St. 2,71. Jâtîm. 3,100. Suçr. 1,337, 16. 24,12. 81,9. °विद्ध 93,7. °जाल 97,6. °प्रतान 254,9. 13. 338,10. 341, 4. Çiç. Saṃh. 1,5,12. M. 6,76. 8,334. Jâtîm. 3,81. MBh. 7,2672. 12, 6840. Spr. (II) 7322. Varâh. Bṛh. 2,11. प्रुव्केण स्नायुना गवाम् Kathâs. 26,169. Verz. d. Oxf. H. 311,a,4 v. u. Paṇḍar. 182,17. °निर्मिता: पाशा Hit. 21,21. स्नाय्वस्थिशेषे स्वदेहे Râja-Tar. 2,24. 3,408. °मय् adj. Va

ain. Laconé. 2,19. °शोष adj. Kathás. 29,187. °रोग Verz. d. B. H. No. 938. — 2) *Bogensehne* Pañkat. 121,1. °पाश desgl. 120,23. °चर्म desgl. Hit. 35,12. — Vgl. चोर°, तस्कर°, मरा°, स्नसा, स्नावन्.

स्नायुक (von स्नायु) m. (sc. कृमि) *ein best. parasitischer Wurm* Çiráe. Saṅk. 1,7,10. Verz. d. B. H. No. 963. Verz. d. Oxf. H. 316,b,10. fg.

स्नायुमय (wie eben) adj. (f. ई) *aus Sehnen gemacht:* पाश MBh. 12,4936. Pañkat. 144,14.

स्नायुमर्मन् n. *Verbindungsstelle der Bänder* Suçr. 1,345,18.

स्नाय्वर्मन् n. *fleischige Anschwellung des Weissen im Auge* Suçr. 2, 310,9. 18. Çiráe. Saṅk. 1,7,89.

स्नावन् Uṇâdis. 4,111. m. 1) *Band, Sehne* (später wird dafür स्नायु gebraucht) H. ç. 128. AV. 2,33,6. 11,8,11. fg. 12,5,69. VS. 39,10. स्नावसंतताः प्रजा जायते TBr. 3,2,2,7. TS. 5,3,9,1. 7,4,24,1. 5,12,2. Çat. Br. 14,6,9,22. Kâṭy. 31,1. Ait. Br. 3,36. स्नावरज्जु Kaṭh. 15. Nir. 2, 2. Taitt. Up. 1,7. oxyt. Çat. Br. 10,1,2,4. 4,2,17. — 2) *Bogensehne* AV. 7,50,2. — = ऋसिक Uṇâdis.

स्नावन्य (von स्नावन्) du. Bez. *bestimmter Körpertheile des Rosses* TS. 5,7,22,1.

स्नाविर् (wie eben) adj. *sehnig;* s. सु°.

स्निग्ध (partic. von 1. स्निह्) 1) adj. *a) klebrig, geschmeidig, glitschig, glatt; weich, sanft, milde* überh. (Gegens. रूक्ष *rauh*) AK. 2,9,46. H. 113. Med. dh. 24. Hallâs. 4,98 (सु° = पटु). unter den verschiedenen स्पर्श MBh. 12,6856. 14,1416. Suçr. 1,152,19. 153,2. 5. 8. 246,18. स्निग्धं रूक्षं वाभित्य द्रव्यमग्निर्दहति 36,18. 151,8. 2,550,7. सर्पिषा 1,37, 21. स्निग्धाञ्जन Harîv. 3752 (दृग्धाञ्जन die neuere Ausg.). Çiç. 12,62. °भिषाञ्जन Mṛicch. 60. सेक Suçr. 2,349,1. पुटपाक 12. Blut 1,45,4. Milch 175,3. 12. Samen 315,7. रूपरसस्पर्शवत्य आपो द्रवाः स्निग्धाः Kaṇ. 2,1, 2. Fleisch MBh. 1,3935. Suçr. 1,202,11. 204,14. 206,19. भोजन, घृत u. s. w. VS. Paṭ. 1,25. Suçr. 1,231,13. 241,21. Spr. (II) 7394. Kathâs. 14,49. Mâlav. P. 39,54. Haut Kâraṇḍ. 1,13. Vaṭṭu. Bṛn. S. 68,98. स्निग्धा Spr. (II) 3207. वपुस् (सु°) R. 3,49,36. Haare Mṛicch. 18. Vaṭṭu. Bṛn. S. 68,84. Bulg. P. 2,2,11. 3,8,33. Pañkat. 3,5,7 (सु°). Zähne R. 3,52,27. ein See Pañkat. 1,6,14 (सु°). Baumo, Zweige, Rinde, Blätter Mṛicch. 1. Vaṭṭu. Bṛn. S. 54,69. 93. 59,4. Kathâs. 28,13. Bhatt. 2,24. Boden Suçr. 1,134,19. Vaṭṭu. Bṛn. S. 48,17. 53,88. 54,91. Riçâ-Tar. 3,359. वत्मीक Vaṭṭu. Bṛn. S. 54,37. Wolken 21,15. 21. 22,8. R. 2, 63,15 (65,14 Gorr.). *sanft, mild* von Licht- und Farbenerscheinungen R. 1,1,13 (14 Gorr.). 5,49,23. Kir. Nîtiç. 7,17. Vikr. 70. Mṛicch. 38, v. l. 74. Râgat. 1,83. Vaṭṭu. Bṛn. S. 3,25. 7,20. 10,1. 11,8. 17. fg. 29. 16,40. 17,10. fg. 28,3. 30,8. 43,31. fg. 47,17. 27. 82,3. Auge und Blick Suçr. 2,349,13. Mṛicch. 16. स्निग्धं (adv.) वीक्षितम् Çiç. 35. Spr. (II) 537. 5799. 5900. Geruch MBh. 12,6848. 14,1409. Laute und Reden 3,2457. R. 2,96,7. Suçr. 1,126,20. Mṛicch. 65. 97. Râgat. 1,86. 17,11. Spr. (II) 3592. 7240. 7394. Vaṭṭu. Bṛn. S. 43,19. 68,73. 93,7. Riçâ-Tar. 5,368. H. 68 (सु°). पृच्छति स्निग्धम् R. 1,68,4 (70,6 Gorr.). हास Bulg. P. 3,20,30. — *b) Oel —, Fett enthaltend, ölig* Suçr. 1,195,10. 20. 2,36,1. Spr. (II) 7242. स्निग्धोष्णा वस्तयः Verz. d. Oxf. H. 304,b,9. — *c) mit fetten Stoffen, — Arzneien behandelt* Kâraṇḍ. 1,13. सु° ebend. und Suçr. 2,192,7. — *d) hängend an* (loc.): इन्द्रियार्थेषु Spr. (II) 7087. — *e) anhänglich, zugethan, befreundet* AK. 2,7,37. 2,8,4,12. 3,1,14. H. 478. 730. Med. Hall. 2,272. M. 7,33. 120. R. 2,31,10. R. Gorr. 1,12,24 (सु°). 74,30. Suçr. 1,15,4. 124,4. 126,19. ud Mṛicch. 86. Çiç. 24,21. 150. Spr. (II) 3898. 4129. 4510. 4590. 5900. 6964. 7160. 7241. fg. 7268. Vaṭṭu. Bṛn. S. 93,50. Kathâs. 16,110. Bulg. P. 1,1,8. Tattvas. 41. प्रीतिस्निग्धेन चेतसा R. Gorr. 1,12,15. — सान्द्र° = मेदुर AK. 2,1,30. H. 476. — 2) m. *Pinus longifolia* Riçâd. 12,38. *rother Ricinus* Riçâd. 8,58. — 3) f. या *eine dem Ingwer ähnliche Wurzel* (मेदा) Riçâd. 5,21. *marrow* (d. i. मेदस्) Wilson nach ders. Aut. — 4) n. *Wachs* Riçâd. im ÇKDa. — Vgl. स्नेग्ध्य.

स्निग्धकन्दा f. = कन्दली Çabdaratn. bei Mallin. zu Çiç. 6,30.

स्निग्धतण्डुल m. *eine Reisart,* = षष्टिशालि Riçâd. 16,11.

स्निग्धता (von स्निग्ध) f. 1) *Sanftheit:* स्वास्थ्य Comm. zu TS. Paṭ. 22,10. — 2) *Fettigkeit, Oeligkeit* und zugleich *Anhänglichkeit, das Zugethansein* (= प्रियत्व Çabdar. im ÇKDa. = स्नेह Riçâd. ebend.) Spr. (II) 1101.

स्निग्धत्व (wie eben) n. 1) *das Hängen an* (loc.): इन्द्रियार्थेषु Spr. (II) 7087, v. l. — 2) *Anhänglichkeit, das Zugethansein* AV. Paṛiç. in Ind. St. 13,318, wo vielleicht तस्य यो st. पस्य म zu lesen ist.

स्निग्धदल m. = गुच्छकारञ्ज Riçâd. 9,70.

स्निग्धदारु m. *Pinus Deodora* देवदारु Riçâd. 12,37. 30. *Pinus longifolia* 33. eine dritte Art heisst यस्निग्धदारुक.

स्निग्धपत्र m. und f. (या) *Judendorn* Garḍan. im ÇKDa. *Beta bengalensis* Riçâd. 7,131. m. = घृतकारञ्ज 9,63.

स्निग्धपत्रक m. Bez. *eines Grases,* = गर्दभ Riçâd. 8,132.

स्निग्धपिण्डीतक m. *eine Varietät der* Madana Riçâd. 8,70.

स्निग्धफला f. = नाकुली (unter andern *Ichnocarpus frutescens*) Riçâd. im ÇKDa.

स्निह्, स्नेग्यति (गतौ) Çânat. in Dhâtup. 32,37. (स्नेहे) Vop. ebend. 36.

1. स्निह्, स्नेह्यति (वधकर्मन्; vgl. caus.) Naigh. 2,19. स्निह्यति (प्रीतौ) Dhâtup. 26,91. स्नेहित, स्नेग्ध und स्नेह P. 7,2,45. 8,2,33. 1) *geschmeidig —, fett —, feucht werden:* नरः स्निह्यति भुक्त्वा रसं दधः सर्पिष्मतम् *die Wirkung des* स्नेह *empfinden* Kâraṇḍ. 1,13. मध्यकोष्ठस्यतुर्भिर्दिवसैः स्निह्यति Bhâvapr. 5. — 2) *sich heften auf* (loc.): ततश्चास्यां स्वयं तस्य चक्षुः स्निह्यदसंशयम् Kathâs. 11,11. *sich hingezogen fühlen, Zuneigung empfinden zu* (loc. und gen.): किं नु खलु बाले ऽस्मिन्नेवास्म इव पुत्रे स्निह्यति मे मनः Çiç. 102,6. ज्येष्ठे प्रायो गुणिभ्यो ऽपि न च स्निह्यति कस्यचित् Spr. (II) 3032. नन्दतु सर्वभूतानि स्निह्यतु. विश्वनेष्वपि Mâlav. P. 118,12. मनः स्निह्यत् Kathâs. 22,65. auch med.: यतिस्निह्यते भवान् MBh. 7,445. Mâlav. P. 76,13. यो मे ऽद्य स्निह्यते 118,19. स्निह्यमानेन चेतसा 115,13.

— caus. स्नेहयति 1) *besalben, fett —, geschmeidig machen* (स्नेहने) Dhâtup. 32,36. Nir. 7,14. खाण्डवस्थाल्या बिले Schol. zu Kâç. Ç. 5,1, 29. तीरसिद्धो बकस्नेहः स्नेहयति नरम् Kâraṇḍ. 1,13. स्नेहित ebend. —

2) *geschmeidig so v. a. unterwürfig machen:* यस्यापयस्निगुतः स्नेक्त्यश्च RV. 1,97,34. = वधकर्मन् Naigh. 2,19.

— अभि, partic. °स्निग्ध *zugethan:* अमित्रो ऽनभिस्निग्धः R. Gorr. 2, 18,7. — Vgl. अभिस्नेक्.

— उप *geschmeidig —, feucht werden:* केदार इव कुल्याभिरुपस्निक्यते Suçr. 1,354,1. — Vgl. उपस्निक्ति fg. — caus. *zugethan machen, für sich gewinnen:* भूतानामात्तरागाणि तत्राणि Uttarab. 26,11. fg. (34,17. fg.).

— प्र, partic. °स्निग्ध *überaus glitschig:* इङ्गुदीफलभिद् उपलाः Çiç. 14. *überaus sanft, — zart:* केका Raghu. 16,64.

— सम् caus. *mit Fett (स्नेह) behandeln* Çiñkh. Sraut. 3,4,25.

2. स्निक् (= 1. स्निक्) adj. nom. स्निग् und स्निट् P. 8,2,38, Schol. Vop. 3,101.

स्नीहन् (von 1. स्निक्) m. oder स्नीहा f. *Feuchtigkeit der Nase* Cat. Br. 12,7,1,3.

स्नीहिति (wie eben) f. etwa *conglobatio, Rotte:* यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु । अर्तनदाशुषे गयम् RV. 1,74,2. hierher auch यप स्नेहितीरधत्त (स्नीहितिम् SV.) 2,85,13. = वधकारिणी und सर्वस्य हिंसित्री Sây.

1. स्नु, स्नौति (प्रस्रवणे) Dhâtup. 24,29. erhält den Bindevocal इ Kâr. 1 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Vop. 8,60. 69. अस्नावीत् 9,11. pass. refl. स्नुते, अस्नोष्ट (und अस्नाविष्ट Vop.), स्नोष्यते, अस्नोषीष्ट P. 3,1,89. 7,2, 36 nebst Vârtt. Vop. 24,12. *Flüssigkeit, insbes. Muttermilch entlassen:* मातरो स्नुवत्यो Bhâg. P. 10,8,22. partic. स्नुत = स्नुत AK. 3,2,49. *fliessend* von der Mutterbrust: स्नेहस्नुतपयोधरा Bhâg. P. 1,11,30. 5,15,8. 10,9,3. 20,26. 21,13. — Vgl. सु.

— desid. vom caus. सिस्नावयिषति und सुस्रा° Vop. 19,15.

— प्र *Flüssigkeit entlassen, triefen:* प्रास्मा इमे लोकाः स्नुवन्ति (= प्रस्रावयन्ति Comm.) TS. 2,1,4,5. इन्द्रः प्रस्नौतु 3,5,5,2. तस्याः प्रस्नौति स्म च नासिका Kathâs. 13,136. प्रसुते (प्रास्नोष्ट) गौः स्वयमेव P. 3,1,89, Schol. °स्नोष्यते, प्रास्नोषीष्ट, °स्नविता, °स्नवितुम् 7,2,36, Schol. partic. प्रस्नुत *Muttermilch entlassend:* मातर् MBh. 9,2461. R. Gorr. 1,39,28. ता गावः प्रस्नुता वत्सैः शोणितं प्रतरन्ति MBh. 6,88. ऊधस्, स्तन Z. d. d. m. G. 27,70. Râjat. 5,76. Bhâg. P. 10,7,35. — Vgl. प्रस्नाविन्. — desid. प्रसुस्रूषिष्यते P. 7,2,36, Vârtt. 2, Schol.

— अवप्र, partic. °स्नुत (oder °स्रुत) *beschissen* (von einem Vogel) Kâty. Çr. 25,11,22.

2. सु (= 1. सु) adj. *triefend* in 1. घृतसु.

3. सु n. (auch m. nach den Lexicogrr.) = सानु P. 6,1,63, Vârtt. 1. Vop. 3,39. 95. AK. 2,3,5. H. 1035. *Oberfläche, Fläche; Höhe:* एनो बभार बृहतो अधि द्योः RV. 4,27,4. दिवः पृथिव्या अधि सुषुं VS. 17,14. sonst nur instr.: गिरीणां सुभिः RV. 2,46,18. परि द्युनो धन्व 8,97,19. अधि द्युनो बृहता वर्तमानम् 4,28,2. दिवः 8,7,7. अधि द्युनो धन्व 8,97,16. पदिवो बर्हय उत्तरादधि द्युभिः 5,60,7. 87,4. अधि पदवो द्युभिर्यावभिः 7, 98,3. अर्वीनाम् 9,107,5. — Vgl. 2. घृतसु, भूमि°.

4. सु = सानु, सुतम् = सानुतम् Bhâg. P. 3,12,45.

सुकक्ष (2. सु + कक्ष *Blatt*) m. *Lipocercis serrata* Trin. Ratnam. 62.

सुषा f. Unâdis. 3,66. 1) *Schnur (des Sohnes Weib)* Nir. 12,9. AK. 2, 6,1,9. 3,4,28,104. Trik. 2,6,3. H. 514. Hall. 2,349. AV. 5,6,24. सुषा सूर्यस्य प्रशिष्टिमुपासताम् TBr. 2,4,6,12. Ait. Br. 3,22. Kâty. 12, 12. M. 9,57. 62. fg. Jâñ. 3,232. MBh. 1,3873. fgg. 5906. 3,2443. 2497. 16046. 4,2325. 13,3282. R. 1,16,20. 34,53. 2,88,7. 104,22. R. Gorr. 1,68,25. 3,56,6. Raghu. 8,14. 15,72. Spr. (II) 340. 1027. Uttarar. 11,5 (15,8). Kathâs. 17,76. Prasan. 89,16. Bhâg. P. 3,1,7. 3,23,36. सुषूसुषे Kathâs. 39,245. 98,54. ससुषा adj. Bhâg. P. 1,14,27. Vgl. प्र°, सु°. — 2) = स्नुषा Çabdar. im ÇKDr.

सुषात्व n. nom. abstr. von सुषा 1): गुणलेखा सुषात्वेन स्वीचक्रे *nahm zur Schnur* Râjat. 8,462.

सुषाप्रपूर्णा f. (sc. इष्टि) heisst *eine Opferhandlung, welche die Gegner botmässig machen soll, wie die Schnur dem Schwäher unterthan ist,* Âçv. Çr. 2,11,7. 8.

सुस्, सुंस्यति (वदने, वदर्शने, दाने) Dhâtup. 26,5.

1. सुक्, सुंक्ति (उद्गिरणे) Dhâtup. 26,90. स्नोक्ता, स्नोग्धा und स्नोक्ष P. 7,2,45. 8,2,32.

2. सुक् (= 1. सुक्), nom. सुग् und सुट् P. 8,2,38, Schol. Vop. 3,101. f. = सुषा AK. 2,4,3,24. Sûçr. 1,144,17. 2,69,1.

सुका f. = सुषा Bharata zu AK. 2,4,3,24 nach ÇKDr. सुकि f. desgl. H. 1140. Hall. 2,42.

सुषा f. *Euphorbia antiquorum, Wolfsmilch* AK. 2,4,3,24. 3,4,18, 104. Trik. 3,3,233. Râjân. 8,50. Sûçr. 1,32,16. 2,365,12. °क्षीर 1,133, 1. 168,9. 2,13,19. 36,14. 49,10. 134,9. 252,4. — Vgl. त्रिधार°, धारा°.

स्नेय (partic. fut. pass. von 1. स्ना) n. impers. *sich zu baden, — waschen* Kâty. 22,13.

स्नेह (von 1. स्निक्) m. n. (dieses nicht zu belegen) gaṇa अर्धर्चादि in P. 2,4,31. Vaiç. bei Mallin. zu Çiç. 10,49. am Ende eines adj. comp. f. घा. 1) *Klebrigkeit, Adhäsion:* पृथिव्यब्गुणभूयिष्ठः स्नेहः Sûçr. 1,132, 21. 154,18. Tarkas. 3. चूर्णादिपिण्डोभावकेतुगुणः स्नेहो बलमात्रवृत्तिः 18. अभ्यातुः स्नेहं रसं च ब्रनयति Sarvadarçanas. 21,5. 106,18. Bahusip. 4. 96. *Glätte* (auch in übertr. Bed.) Jâñ. 3,77. Vaiç. Bhâg. S. 68,1. स्नेहः पक्षमु लक्ष्यो वाग्विस्रब्धादत्तनेत्रनखसंस्थः 101. 69,5. पक्ष° adj. R. 5,32,14. *sanfter Glanz* Vaiç. Bhâg. S. 30,2. 72,2. स° adj. Çat. Br. 14,6,6,5. — 2) *klebriger und geschmeidiger Stoff: Oel, Fett* Trik. 3,3,462. H. 417. an. 2,605. Mân. h. 12. Çiñkh. Br. 17,5. Nir. 6,19. Maitrâjup. 6,26. M. 5,24. fg. फलसंभव 6,13. 12,120. Jâñ. 1,169. 2,245. Nyâs. Tîp. Up. in Ind. St. 9, 94. MBh. 1,5934. 13,3173. R. 2,64,58. 5,49,12. स्नेहाक्त Sûçr. 2,233,18. स्नेहाभ्यक्त 1,118,11. 230,4. 5. 7. 286,4. °सात्म्य 2,177, 18. 1,230,1. स्थावर *vegetabilisches Fett* (darunter das Sesamöl das beste) 184,7. 2,174,10. ब्रह्मन् *thierisches* (am besten Rindsschmalz) 9. Kâraka 1,13. स्नेहसारो ऽयं पुरुषः प्राणाश्च स्नेहभूयिष्ठाः स्नेहसाध्याश्च भवन्ति Sûçr. 2,174,5. 1,159,12. Manu. 93. Spr. (II) 4945. Vaiç. Bhâg. S. 7,4. 16,20. 41,3. 46,27. 48. 85. 93,1. Bhâg. 5,18. Mirz. P. 35,1. Râjat. 1,260. उद्वृत° adj. M. 4,62. अस्थि सस्नेहम् 5,87. स° adj. Jâñ. 1,169 (Mirz. P. 35,2). Raghu. 4,75. In der Medicin: *Fettmittel, angewandt als* Trank, Salbe, Klystier u. s. w.; davon handeln Kâraka 1,13. Sûçr. 2, 174,4. fgg. सर्वे स्नेहा वातमुपघ्नन्ति 178,6. कषाय° 7. °पाक 176,11. °पान 177,1. द्रुतस्य स्नेहनं स्नेहैरतिस्निग्धस्य द्रुतानाम् 180,21. 235,20. °व्यापद् 1,179,3. °द्विध्, °नित्य Kâraka 1,13. Çiñkh. Sraut. 2,9,1. 3,1,1.

Verz. d. Oxf. H. 304,b,20. 28. 311,b,19. — 3) *Anhänglichkeit, Zuneigung, Liebe* zu (loc., gen. oder im comp. vorangehend), *freundschaftliches Verhältniss mit* (सह) AK. 1,1,3,27. Trik. H. 1377. H. an. Med. Hall. 4,21. 5,29. Maitrjup. 3,5. MBh. 1,5595. 5944. 6128. 3,16768. °वह 12,1262. °वासं वर्त्तयेत् 14,1236. R. 1,1,25. 28,30. 2,21,38. 26,31. 29,2. 50,27. 89,7. 90,9. 3,51,10. Kâm. Nitis. 17,8. Megh. 12. 111 (pl.). Ragh. 1,70. Çik. 53,10. 58,4. 81. 84. 92. Spr. (II) 259. 1686 (pl.). 1929. 2540. दर्शने स्पर्शने वापि श्रवणे भाषणे ऽपि वा । यत्र द्रवत्यन्तरङ्गं स स्नेह इति कथ्यते ॥ 2718. न चापत्यसमः स्नेहः 3690. 4883. 5298. fg. (Gegens. क्रोध). 5401. 6630. 7244. 7246. 7268. Varâh. Bṛh. S. 78, 3. यत्यन्तविरुद्धानाम् 97,12. Bṛh. 8,17. Kathâs. 11,16. 14,41 (pl.). 15, 23. 18,197. 225. 247. 249. 44,64. वैरस्नेहयोः Râga-Tar. 4,106. विस्मयस्नेहयोः 577. Dhûrtas. 76,4. Bulg. P. 1,6,6. 2,1,31. Pañkat. 1,1. Hit. 17,14. 33,12. Vet. in LA. (III) 9,17. तया सह °वचनानि वदति 20,2. Sarvadarçanas. 6,17. 18,19. कस्तेन सह तव स्नेहः Pañkat. 207,3. Hit. 20,19. 24,1. ed. Johns. 1469. °च्छेद Spr. (II) 7242. बद्ध° adj. Kathâs. 3,17. विगतस्नेहसौहृद adj. MBh. 1,7727. स° adj. 12,5136. मयि मनः संभृतस्नेहम् Megh. 92. mit abl.: तस्मात्स्नेहं न लिप्सेत मित्रेभ्यो धनसंचयात् Spr. (II) 6158. रज्जु° *das Hängen des Herzens am Leibgurt* 5660. °बन्ध 2998. कटुक° adj. (स्निह्) *Bitteres mögend* 7412. — 2) 3) Ragh. 12,1. Çiç. 10, 49. Spr. (II) 4334. 7245. Kathâs. 18, 370. Râga-Tar. 6, 272. — 4) pl. Bez. der Vaiçja in Kuçadvîpa VP. 2, 4, 39. — Vgl. अस्थि°, द्विज°, निः°, प्रति°, फल°, मस्तक°, मांस°, वृत°, स°, स्नैहिक.

स्नेहक (vom caus. von 1. स्निह्) adj. *Zuneigung bewirkend, versöhnend:* पार्थोधातृपुत्रयोः Mâlav. P. 118,33.

स्नेहकर्तृ nom. ag. *Zuneigung —, Liebe an den Tag legend* Pañkat. 1,10,8. °कर्त्री ebend.

स्नेहकुम्भ m. *ein Topf mit Oel, — Fett* Suçr. 2,160,4.

स्नेहघट m. dass. Suçr. 2,36,11.

स्नेहन् Unâdis. 1,158. m. *eine best. Krankheit* Uṇâdis. *ein Anhänger, Freund; Mond* Un. in Siddh. K. — Vgl. स्नेहु.

स्नेहन (von 1. स्निह् simpl. und caus.) 1) adj. (f. ई) *a) klebrig —, fettig machend, die Eigenschaften eines Fettmittels besitzend und äussernd* Suçr. 1,180,9. मांसं वृष्यं स्नेहनम् 230, 6. पुटपाक 2,349,11. धूम 233,3. 7. 15. 234,3. वर्ति Bhâvapr. 5. मध्यमा मात्रा स्नेहनी क्षेपा Çârṅg. Saṃh. 3,1,10. नस्य 8,2. Vishṇ. 1,10,13. — *b) Zuneigung empfindend*, neben स्° als Beiw. Çiva's MBh. 13,1393. — 2) n. nom. act. *a)* als Bed. von स्निह् und स्निह् Dhâtup. 18,3. 26,133. 32,8. 36. — *b) das Klebrig —, Fettmachen; das Behandeln mit Fett* oder *fetthaltigen Stoffen* (vgl. स्नेहः Gegens. तृणा) Kâraka 1,13. संधिस्नेहनकृत् Suçr. 1,48,5. 2,180,21. सम्यः° 179,11. 17. 20. सम्यःस्नेहनकारिन् Çârṅg. Saṃh. 3,1,20.

स्नेहनीय adj. *als Fettmittel dienend:* मात्रा Suçr. 2,178,11. Kâraka 1,13.

स्नेहपात्र n. 1) *Oelgefäss, Oelschlauch* AK. 2,9,33. — 2) *ein Gegenstand der Zuneigung, — der Liebe* Pañkat. 1,1,72.

स्नेहपीत adj. *der einen Fetttrank zu sich genommen hat* Suçr. 1,173, 7. 2,178,3. 344,13.

स्नेहप्रिय m. *Lampe (Oel mögend)* H. 687.

स्नेहबीज n. *Buchanania latifolia* Roxb. Râjân. im ÇKDr.

स्नेहभू m. = श्लेष्मन् *Phlegma* H. 462.

स्नेहमय (von स्नेह) adj. (f. ई) *voller Zuneigung, — Liebe* Kathâs. 18, 78. चतुस् Khandom. 139. *in Zuneigung bestehend, Liebe heissend* Megh. 109,18. Spr. (II) 1312.

स्नेहयितव्य adj. *mit Fettmitteln* (स्नेह) *zu behandeln* Kâraka 1,13.

स्नेहरङ्ग m. *Sesam* Çabdar. im ÇKDr.

स्नेहरेकभू m. *der Mond* H. ç. 12.

स्नेहलु (von स्नेह) adj. gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97. *voller Zuneigung:* स्नेहलौ मिथः Çaṃk. 7,2.

स्नेहलवण n. Bez. *einer best. Mixtur*, deren Recept Suçr. 2,36,15.

स्नेहवत् (von स्नेह) 1) adj. gaṇa रसादि zu P. 5,2,95. *a) ölig, fettig* Schol. zu Çiç. 14. — *b) voller Zuneigung, — Liebe:* Personen Mâlav. P. 23,77. 69,7. Hit. ed. Johns. 1839. Nîlak. zu MBh. 13,1203. स° Spr. (II) 2853, v. l. — 2) f. °वती *eine dem Ingwer ähnliche Wurzel* (मेदा) Râjân. 5,23.

स्नेहवस्ति m. *ein öliges Klystier* Suçr. 2,198,7. 14. 498,6. Bhâvapr. 3.

स्नेहविद्ध n. *Pinus Deodora* (देवदारु) Rumph. Gaṇjan. im ÇKDr.

स्नेहसंस्कृत adj. *mit Fett zubereitet* Suçr. 1,230,4.

स्नेहाश (स्नेह + आश) m. *Lampe (von Oel sich nährend)* Trik. 2,6, 42. Hâr. 24.

स्नेहिति s. u. स्नौहिति.

स्नेहिन् (von स्नेह) 1) adj. *gern habend, mögend, ein Freund von:* मधुपोन्नादमुत्ति° Verz. d. Oxf. H. 146,*a*, No. 318, Z. 4. m. = वयस्य *Freund* Trik. 2,8,23. — 2) m. *Mahler* Çabdârthak. bei Wilson.

स्नैह Unâdis. 1,11. m. *eine best. Krankheit* Uṇâdis. — Vgl. स्नेहन्.

स्नेह्य adj. *mit Fett* (स्नेह) *zu behandeln* Kâraka 1,13.

स्नैग्ध्य (von स्निग्ध) n. *Glätte, Geschmeidigkeit* Suçr. 1,117,20.

स्नैहिक (von स्नेह) adj. *fettig, ölig;* z. B. ein Klystier Suçr. 2,198,2. 351,17. 378,9.

स्पन्द्, स्पन्दते (किंचिच्चलने) Dhâtup. 2,13. पस्पन्दे, पस्पन्दिष्ट. *zucken; ausschlagen* (von Thieren): पस्याग्निहोत्री स्पन्देत Âçv. Çr. 3,11,7. Ait. Br. 5,27. उभयतोदतः Çâṅkh. Br. 3,7. von den *zuckenden Bewegungen* des Kindes im Mutterleibe Jâân. 3,78. Kâraka 4,4. गर्भो मन्दं स्पन्दते Suçr. 1, 377,7. 2, 451, 20. Pân. Gṛhj. 1, 14. स्पन्दते मे दृढं बाहुः R. 3, 74,11. Çiç. 172. दक्षिणो भुजः Megh. 105,12. स्पन्दते नयनं सव्यं बाहुश्च कृदयं च मे R. 3,66,4. 5,27,17. सव्यं चक्षुः Megh. 144,14. Bhaṭṭ. 14, 33. 15,27. दक्षिणं चक्षुः Kathâs. 117,141. तृणादपि भयोद्विग्नः स्पन्दमानस्त्रसिष्यसि R. 4,54,18. Schol. zu Kap. 1,125. तासामुच्छ्वासवातेन माल्यं वस्त्रं च गात्रतः । नात्यर्थं स्पन्दते R. 5,13,68. auch act.: स्पन्दति (स्प° ed. Bomb.) चाप्यनिष्टानि MBh. 7,2480. किंचित्स्पन्दत्यद Khandom. 117. त्रिदशा वरुणायैव न शेकुः स्पन्दितुं भयात् *sich von der Stelle bewegen* Harîv. 13898. *aufzucken* so v. a. *in's Leben treten:* पडुदीरितो ऽमुः संस्पन्दते तमनु वाङ्मनइन्द्रियाणि । स्पन्दन्ति वै तनुभृताम् Bhâg. P. 12,8,40. — partic. स्पन्दित 1) adj. *zuckend:* स्पन्दिताधर Sîtâ. D. 228. — 2) n. *das Zucken:* सद्यं मां स्पन्दितैर्बाकुराश्वासयति दक्षिणः Vîrac. 50. चित्त° *das Zucken* d. i. *Thätigkeit* (= चेष्टित Schol. 1.) *des Geistes* Prab. 16,16. — Häufig mit स्पन्द् verwechselt, so z. B. RV. 4,3,10 bei Müller und Aufrecht, MBh. 1,3990 (ed. Calc.). 3,2541. R. 7,31,17.

— caus. *zucken machen:* ततः स्पन्दयते ऽङ्गानि स गर्भशेतनान्वितः MBu. 14,504. अस्पन्दयन्पाञ्चजन्यम् *nicht von der Stelle bewegend* Âçv. Çr. 4,4,2 (अस्य° gedr.). चित्तस्पन्दित *durch den Geist in Bewegung gesetzt, — hervorgerufen* (= जनित Schol. 2.) Prab. 16,16.

— desid. पिस्पन्दिषते P. 7,4,61, Schol.

— intens. s. पनिष्पद्‌.

— आ *zucken:* आस्पन्दतेतणां (vielleicht nur fehlerhaft für अस्प°) वास्य बाकुशेवाप्यदलिणः R. 6,29,10. — Vgl. आस्पन्दन.

— उप caus. s. स्पन्द्‌ mit उप caus.

— नि s. 1. निस्पन्द्‌ und vgl. स्पन्द्‌ mit नि.

— अभिनि MBu. 12,3881 fehlerhaft für °स्पन्द्‌ (so ed. Bomb.).

— परि act. *zusammenfahren* MBu. 12,4361. R. 2,14,12. — Vgl. परिस्पन्द fg.

— प्र med. *zucken* Sṛṅ. 1,279,8. प्रस्पन्दमानपरुषेतरतार Ragu. 5,68 (प्रस्य° beide Ausgg.). वामं प्रास्पन्दतेकं नयनम् R. 5,28,13. *zusammenfahren* 15. MBu. 3,10565 (प्रस्य° ed. Calc.). 7,9176 (प्रस्पन्दमान ed. Calc.). प्रास्पन्दच्छ्रवणे (प्रास्य° ed. Bomb.) कौरवे वृथा मस्यमिव प्लुतम् 13,3495. — Vgl. प्रस्पन्दन.

— वि med. *zusammenfahren* MBu. 3,445. 4,761. 11,673. अविस्पन्दित (अविस्य° gedr.) *nicht zuckend* Kumâras. 3,47. °स्पन्दमान Harîv. 338 (neuere Ausg.) fehlerhaft für °स्यन्दमान.

— सम्‌ med. *aufzucken* so v. a. *in's Leben treten* Bhâg. P. 12,8,40.

स्पन्द (von स्पन्द्‌) m. 1) *das Zucken:* दक्षिणाक्षि° Mṛicch. 97,14. पद्म° Spr. (II) 2003. कर° (*Hand* und *Strahl*) 1539. दक्षिणबाहु° Schol. zu Çiç. 15. वामेतरभुज° Aṇvaçâsana ebend. तृणस्पन्दे जपे शङ्कितम् Râjat. 8,466. मृदुस्पन्दम्‌ adv. Gît. 3,16. *Bewegung* überh.: क्रिया स्पन्दः, ज्ञानस्य स्पन्दनात्मकत्वात् Kusum. 45,4. 54,4. Bulḍâr. 158. मनो मन्दस्पन्दम्‌ (so zu lesen) Spr. (II) 8256. घ° adj. *unbeweglich* Uttarar. 96,10 (125,13). Râjat. 5,364. *unwandelbar:* प्रणय Bhâg. P. 7,4,41. — 2) Titel einer Schrift Hall 197. °कारिका, °निर्णय, °निलय ebend. °विवृति 198. °सूत्र 196. fg. स्पन्दार्थसूत्रावली 198. °शास्त्र Verz. d. Oxf. H. 239,a,18. — Vgl. निष्पन्द, 2. निस्पन्द, तैलस्पन्दा, नील°, श्वेत°, स्पर्श°.

स्पन्दन (wie eben) 1) adj. (f. आ) *ausschlagend:* गो AV. 8,6,17 (स्य° fehlerhaft). — 2) m. *ein best. Baum* gaṇa पलाशादि zu P. 4,3, 141. Hall. 5,26. zur Anfertigung von Betten, Stühlen u. s. w. angewandt Vaṇîn. Bṛn. S. 39,6. 79,2. 17. fg. Vgl. स्यन्दन. — 3) n. *das Zucken:* अक्षि° Âçv. Gṛhy. 3,6,7. वामाक्षि° Mṛicch. 111,1. Milaṇḍa. 5,2,3. दक्षिणाक्षि° Schol. zu P. 5,1,38. दक्षिणबाहु° Schol. zu Bhaṭṭ. 1,27. सर्वशरीर° Sṛṅ. 1,313,3. Vaṇîn. Bṛn. S. 2, S. 6, Z. 5. Sṛṅ. 2,37,15. Verz. d. Oxf. H. 86, b, 35. Sarvadarçanas. 78,3. 9. 11. von den *zuckenden Bewegungen* des Kindes im Mutterleibe Jîv. 1,11. गर्भास्पन्दन Sṛṅ. 1, 49,15. 279,4. *Bewegung* überh. 301,1. Kathâs. 43,14 (स्य° gedr.). सतत° adj. *stets zuckend* Kâraka 5,3. घ° adj. Sṛṅ. 2,47,3. वत्सगु° adj. (स्तन) Bhâg. P. 5,2,6. — RV. 3,53,19 ist स्पन्दने st. स्पन्दने (so Müller und Aufrecht) zu lesen. Vgl. स्पान्दन.

स्पन्दिन्‌ (wie eben) adj. *zuckend:* नयन Megh. 93. जिह्वा Râjat. 5,1.

स्पन्दोलिका f. *das Sichschaukeln* (= दोलालम्बन Comm.) Bhâg. P. 10,18,15. — Vgl. स्पन्दोलिका.

स्पन्धा fehlerhaft für स्पन्धा.

1. स्पर्‌, स्पर्णोति Dhâtup. 27,12 (प्रीतिपालनयोः; st. पालन auch चलन = जीवन; daher प्राणने bei Vop.), स्पर्णुते, पस्पार, स्परत्‌, अस्पार्‌, अस्पर्त 3. sg. अस्पार्षम्‌; inf. स्पर्‌से. *losmachen, befreien, retten; an sich ziehen, für sich gewinnen* (vgl. *spernere*): अन्येनान्यस्याः नामभिः स्परत्‌ RV. 1,161,3. अत्रिमस्पः 5,15,3. अवत्सारस्य स्पणाम रणेभिः 8,19,37. विश्वं वाजम्‌ 44,10. मरुतो नः स्पर्से नु 8,20,3. उतालब्धं स्पणुहि यातुधानात्‌ 10,87,7. 161,2. TBa. 1,1,10,4. 5. घात्मानम्‌ 3, 8,4. 2,3,1. TS. 2,2,10,3. 5,6,8,3. अग्निम्‌ 6,2. यावानेव पुरुषस्तं स्पणोति 10,2,7. 2,6,3. श्रौंल्लोकान्स्वरमाभिरस्पणवन्‌ Ait. Ba. 4,19. Çat. Ba. 1,1,3,13. वज्रेण स्पणुते तौ स्पत्वा स्वीकरोति 3,3,3,3. 5,3,4,24. मृत्योः 8,4,3,2. सूर्याचक्षुः 11,8,4,6. 13,4,4,1. क्षत्रमस्पत सदनमस्पत TS. 1,1,6,3. 5,5, 8,3. Çat. Ba. 3,4,4,4. Kâṭh. 23,10 in Ind. St. 3,464. Taitt. Up. 1,4,1. 7. 2,9. partic.: दिवो वृष्टिर्वाता: स्पृताः TS. 5,3,4,2. VS. 14,24. fg. तेषामाताः स्पृतः स्वर्गो लोक आसीत्‌ Paṇḍav. Ba. 12,11,10. Bei den Commentatoren sehr mannichfaltige Umschreibungen: पालयति, रक्षति, प्रीणयति, बलयति, उत्पादयति, हिंसितवत्‌, बाधितवत्‌ (vgl. 2. स्पर्‌) u. s. w. Vgl. स्पृत्‌.

— अप *abwendig machen, zu Jmd entleiden:* यं न तृप्रा अंहस्पणन्त मुरुतर्दम्‌ RV. 8,2,5. अत्रय आदित्यं तमसो ऽपस्पणवत *losmachen* Çâṅkh. Ba. 24,3.

— अव *losmachen, befreien:* अव स्पधि पितरं योधि विद्वान्‌ RV. 5,3,9. शर्धतो ऽभिशस्तेः 6,42,4. 8,55,14. 10,39,6. निदः 1,70,10. — Vgl. अवस्पर्त्‌.

— आ *an sich bringen:* लोकान्‌ Çat. Ba. 3,3,3,3. 4.

— निस्‌ *befreien:* यंर्ंसस्तमंसः RV. 7,71,5.

— वि *auseinanderreissen, trennen:* संपृतं न वि ष्यद्याम्‌ न सं यमम्‌ AV. 6,36,1. 10,4,3. Vgl. Vendîd. ed. West. 2,31. fg. Hierher wohl auch विऽस्पला.

2. स्पर्‌, स्पणाति v. l. für शॄ (हिंसायाम्‌) Dhâtup. 31,18.

स्पर्‌ m. so v. a. पर und पर:सामन्‌ *best. Sâman-Toga* und *die betreffenden Sprüche und Opfer* TBa. 1,2,4,3. Kâṭh. 33,6. वायोः स्परम्‌ (v. l. परम्‌ und स्वरम्‌) N. eines Sâman Ind. St. 3,235,a.

स्पर्ण (von 1. स्पर्‌) adj. (f. ई) *rettend, befreiend;* vielleicht zugleich Bez. *einer best. Pflanze* AV. 5,5,3. आत्म° TS. 6,5,8,2. TBa. 2,3,9,1.

स्परितर्‌ (von 2. स्पर्‌) nom. ag. *Schmerzbereiter* (von bösen Menschen, Krankheiten u. s. w.) Çârṅgâdharap. bei Wilson.

स्परिश m. = स्पर्श ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut.

स्पर्ध्‌, स्पर्धते Dhâtup. 2,2 (संघर्षे, संकर्षे). अस्पृधन्‌, स्पृधानै (RV. 3,31, 4), पस्पृधे, पस्पृधानै, अंपस्पृधेयाम्‌ (RV. 6,69,8. P. 6,1,36), स्पर्धितुम्‌ (AV. 19,22,1). des Metrums wegen auch act. स्पर्धति, पस्पर्ध u. s. w. *sich den Vorrang streitig machen, wetteifern, wettlaufen; sich bewerben um* (loc.); *streiten um:* अपस्पानो यज्वभिः RV. 1,33,3. सूर्ये 61,15. सूर्यस्य मातौ 2,19,4. देवहूर्ये 7,85,2. स्वर्गे लोके Ait. Ba. 6,34. पुरोधायाम्‌ TS. 2,1,2,9. क्षेत्रे वा सङ्गतेषु वा 2,2,2. आत्मब्रुवयोः 6,1,6,1. मित्रः RV. 1,119,2. गिरः 7,18,3. वर्चसी 104,12. 93,3. Ait. Ba. 2,20. TS. 3,1,2,3. 5,4,11,3. VS. 17,47. गिरयो नार्य उप्रा अंहस्पधन्‌ RV. 6,66,11. वातस्वनमः श्येना अंहस्पधन्‌ 7,56,3. Çat. Ba. 1,1,2,3. 14,4,2,30. Götter und Asura 1,2, 4,3. 14,4,2,1 u. s. w. — एकवस्तुनि Bhâg. P. 8,9,6. परस्परम्‌ MBu. 7,4312.

मया 3,744 (act.). 10816. 12119. 16972. 4,1751. 5,5301. 8,3211 (act.). 14,106. 13,667 (act.). Harîv. 9714. R. Gorr. 1,60,15. Spr. (II) 4746. Kathâs. 33,187. पात्यमाना मही तेन — पस्पर्ध त्रिदशावासवासिभिः Mâlav. P. 130,9. °लत्या स्पर्धच्छिखया वनमालया Bhâg. P. 4,30,7. अस्पर्धिष्ट Bhaṭṭ. 15,65. स्पर्धेत न च तद्गुणैः Spr. (II) 6282. नेष केसरिशिशुस्त्वयोडम्बरैः (so ist zu lesen) स्पर्धते (sc. mit dem Elephanten) Z. d. d. m. G. 27,10. सक् शक्रेण MBh. 2,485. 5,170 (act.). 10,628 (act.). Spr. (II) 5755. 7371. mit acc. MBh. 1,205. 4986. fg. 4991. राजसूयं क्रतुश्रेष्ठं स्पर्धतेऽयं महाक्रतुः 3, 13292. 3, 8110. कंसादीवैः u. s. w. पस्पर्ध गङ्गा गन्धर्वान्युलिनेश्च शिलोच्चयान् 13, 1816. 2348 (act.). 14, 1822. क्षेपितैर्वायुम् Harîv. 4282. न वां स्पर्धते द्वयसंपदा Kathâs. 30, 68. ohne Ergänzung: स्पर्धमाम Bhâg. P. 5,4,2. स्पर्धति 6,16,35. स्पर्धत् 4,19,11. 10,83,31. — partic. स्पर्धित 1) mit act. Bed.: अस्पर्धितमनम् MBh. 14,1273. — 2) mit pass. Bed.: रावणः स्पर्धितो मया R. 4,62,7. — Vgl. स्पर्द्ध, स्पूर्ध्.

— intens. अपास्पाः P. 8,3,14, Schol.

— अधि med. *wetteifern —, streiten um:* अधि यदस्मिन्वाजिनीव प्रभुः स्पर्धते धिर्यः सूर्ये न विशः RV. 9,94,1. इन्द्रे 6,34,1.

— परि s. परिस्पर्धिन् fg.

— प्र med. *sich den Vorrang streitig machen, wetteifern mit:* कृत्तेन Harîv. 6593. mit acc. der Person: सर्वासु विद्यासु तपोविधाने प्रस्पर्धते ध्यं हि गुरुं सुराणाम् R. 7,36,16.

— प्रति dass.: प्रतिस्पर्धते सृक्किभ्यां सव्यासव्ये नगोदरे Bhâg. P. 10, 12,21. — Vgl. प्रतिस्पर्धा fg.

— वि dass.: तयोर्विस्पर्धतोरेवम् MBh. 13,2362. med.: यया सक् 1, 1088. 5,5845. उत्तरैः कुरुभिः सार्धम् 1,4246. mit acc.: चन्द्रं विस्पर्धमानेन मुखेन R. Gorr. 2,8,49. — Vgl. विष्पर्धस्, विस्पर्धा fg.

— सम् med. dass.: संस्पर्धते परस्परम् MBh. 14,94. — Vgl. संस्पर्धा fg.

स्पर्धनीय (von स्पर्ध्) adj. *worum man sich bewirbt, erstrebenswerth:* °त्व als Erklärung von पिञ्चन Nir. 2,24.

स्पर्धस् (wie oben) vgl. विष्पर्धस्.

स्पर्धा (wie oben) f. *Wettlauf* Nir. 9,39. *Streit um den Vorrang, Wetteifer;* = संहर्ष, संहर्षण H. 1515. Med. dh. 21. Hir. 208. Halâs. 4,101. = साम्य und क्रमसमुन्नति Med. als Bed. von द्धा und धा-द्धा Dhâtup. 23,39. P. 1,3,31. Vop. 23,24. — Kâm. Nitis. 17,47. Râśa-Tar. 3,249. Sin. D. 90. स्पर्धया *im Wettlauf, um die Wette* MBh. 1,1221. 7007. 4, 764. R. 1,37,5 (38,7 Gorr.). 40,4 (41,4 Gorr.). Râśa-Tar. 1,290. Halâs. 4,99. बलीयसा Spr. (II) 316. भूपतिरात्मनः स्पर्धा चक्रमे न तु कस्यचित् । आत्मनस्तु बुधैः स्पर्धा शुद्धधीर्बह्वमन्यत ॥ Râśa-Tar. 4,489. 5, 285. स्पर्धया गुणविस्तरैः R. 7,101,12. विकृतं कुर्वाणाः स्पर्धया सक् मयूरैः Spr. (II) 975. वसिष्ठस्पर्धया *im Streit um den Vorrang mit* R. Gorr. 1, 58,2. देवदुन्दुभिनिर्ह्रादस्पर्धयेव Kathâs. 34,111. 38,1. 72,279. Spr. (II) 2113. Râśa-Tar. 1,123. 127. 3,11. लक्ष्मीलवस्पर्धया so v. s. *aus Verlangen nach* Spr. (II) 2391, v. l. स्पर्धी वि-धा *wetteifern:* ससमैः Râśa-Tar. 3,284. कृ dass.: स्पर्धां तपःकृतां तीव्रां चक्रतुस्तौ MBh. 9,2866. Pañkat. 4,3,2. °सौभाग्यकृतस्पर्धैः परस्परम् Râśa-Tar. 6,164. पारिजातकुसुमस्पर्धाकरी मञ्जरी Verz. d. Oxf. H. 213,b, No. 507. — Vgl. सप्त°.

स्पर्धिन् (wie oben) adj. *um den Vorrang streitend, wetteifernd* MBh. 3,4614. 7,3345. 14,96 (अति°). Harîv. 9133. R. 1,45,16 (46,16 Gorr.). अन्योऽन्यस्पर्धिनौ MBh. 1,8159. 3,16448. 7,149. दिनकरस्य° Mucc. ed. Sr. V. तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु Raghu. 13,13. 16,62. Spr. (II) 7186. Z. d. d. m. G. 27,78. Vaṭâs. Bṛn. S. 19,14. Kathâs. 25,211. 54,51. Râśa-Tar. 4,10. Sin. D. 41,14. Pañkat. ed. orn. 3,5. Verz. d. Oxf. H. 187,b, No. 428, Z. 10. भृङ्गीरोत्तरसत्प्रमेयवचनैराचार्यगोवर्धनस्पर्धी कविः Gîr. 1,4.

स्पर्ध्य (wie oben) adj. (*worum man streiten könnte*) *begehrenswerth, kostbar:* आस्तरण MBh. 1,1875. 7942. 2,2031. 3,16925. R. Gorr. 1,3, 68. 2,82,10. अश्विन MBh. 5,3380.

स्पर्ध्, स्पर्धति (संस्पर्धने) Dhâtup. 28,128. पस्पर्श, पस्पर्धितृ: अस्पृक्षत् अस्प्राक्षीत् und अस्पार्क्षीत् P. 3,1,44, Vârtt. Sidd. K. 130,a,8. Vop. 8,76. fg. 13,4. स्प्रद्धति (vgl. Kâr. 3 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10), स्प्रष्टुम्, स्पृष्ट्वा. Hier und da auch med. des Metrums wegen. Der Anlaut geht nie in ष über AV. Paipp. 2,102. P. 8,3,110. 1) *berühren* (acc.), *rühren an* (loc.), *streicheln:* दिवि RV. 1,36,8. दिवः सानु 10,70,8. 8,8, 2. यामग्नेणास्पृतः VS. 6,2. 28,18. 20. उशतीरुशन्तं स्पृशन्ति RV. 1,62, 11. यत्रास्पृक्षत्तन्वः AV. 6,124,2. TBr. 1,5,2,2. स्वर्गं लोकम् Çat. Br. 12, 2,2,11. 14,7,1,29. ते क्षेत्रमेदिष्टं पस्पर्शुः Kâṭhop. 27. fg. अन्योऽन्यं स्पृशतः Schol. zu P. 3,1,87, Vârtt. 3. न स्पृशेच्चैतत् (शिरः) M. 4,82. fg. 143. fg. 8,95. 97. 103. स्पृशन्ति बिन्दवो यदि ये 142. 7,219. 8,358. 11,148. MBh. 3,1730. 3215. यावदस्थि मनुष्यस्य गङ्गायाः स्पृशते जलम् 3236. 13047. मा स्पृक्षात् 13688. 4,278 (mit der ed. Bomb. स्प्रक्षसि st. प्रक्ष्यसि zu lesen). 5,2356 (स्पृक्ष्य absol.). 6,3688. 13,7618. Harîv. 14777. R. 1,34, 28. 2,64,26. 59. 3,46,12. 53,47. 4,16,24. 5,51,17. Saṃk. 1,30,6 (einen Kranken). Çiç. 22. 147. रुद्रःकपोः स्पृशद्विगात्रम् Raghu. 1,85. 2,32. Spr. (II) 1810. अस्पृशन्नेव वितानि 1892. 2056 (med.). 3816. 6810. 7247. स्पृशति शरवत्तोदेणाः स्तोकमन्तर्विशति च 7248. स्पृशन्नपि गजो हन्ति 7249. Vaṭâs. Bṛn. S. 43,16. 44,20. 50,6. 10. 51,24. 70,16. ein Weib Kathâs. 34,9. Verz. d. Oxf. H. 59,b, 1 v. u. (med.). मामकाङ्गानि मा स्प्राक्षीः R. 6,42,6 (41,7 Gorr.). Mṛicch. 131,5. Mâlav. P. 24,20. 61,61. Bhâg. P. 1, 15,16 (नो प° दुरात्मना zu schreiben). 10,83,24 (पस्पृशे med.). वातेन स्पृश्यमाना MBh. 2,2346. Kumâras. 7,31. अन्योऽन्यं दस्तं स्पृशतः Vikr. 11,14. स्पृशेयं तेन सत्येन पादावेतौ MBh. 3,2981. मार्जारो भूमिं स्पृष्ट्वा कर्णौ स्पृशति bei einer Betheuerung Hit. 19,20. 122,3. पाणिना, करेण. हस्तेन M. 4,142. MBh. 3,1778. 5,7066. 11,196. पाणीन्पाणिभिः R. 1, 73,22. 2,42,11. 88. 52,12. 3,72,29. Kumâras. 3,22. Spr. (II) 3282. Kathâs. 36,40. Mâlav. P. 74,17 (med.). पादेनाक्रम् M. 3,229. न चापि राघवादन्यं पादेनापि नरं स्पृशे R. 3,51,29. 41. चरणेनापि वामेन न स्पृशेयं कदा च न (रावणम्) 5,26,27. मुखेन, उरसा Lâṭy. 3,12,8. वक्त्रेण दन्तिणमात्मपार्श्वम् ein Pferd Vaṭâs. Bṛn. S. 93,12. शिरोभिश्चरणौ Harîv. 14085. दृष्टैः Hit. 21,21. सूच्या लोचने R. 3,53,50. कम्बुना बालं कपोले Bhâg. P. 4,9,4. सर्वगात्रेषु तम् MBh. 15,134. प्रियं करे Bhâg. P. 2,9,18. करे ohne acc. 10,84,60. पादयोः 4,20,18. षड्डेषु पाणिना Râśa-Tar. 3,410. partic. स्पृष्ट *berührt:* उरसास्पृष्टम् adv. Kâṭy. Çr. 17,4,10. M. 2,62. 4,207. 8, 358. R. 1,9,39. शीः 5,26,40. Mucc. 106. Raghu. 1,42. Çiç. 58. 178. Spr. (II) 5173. Râśa-Tar. 3,369. Prab. 11,10. Bhâg. P. 1,15,10. 6,11,16. 7, 1,42. कर्पूरः पावकस्पृष्टः Spr. (II) 7291. चरणस्पृष्टा भृङ्गाः LA. (III) 89, 22. कारणा RV. Paipp. 13,3. स्पृष्टं स्पर्शानां कारणम् AV. Paipp. 1,29. ईष-

त्स्पृष्टमन्तःस्थानाम् 30. 33; vgl. P. 1,1,9, Schol. auch von den Lauten selbst: अचो ऽस्पृष्टा यणस्तीषत्रेमस्पृष्टाः शलः स्मृताः। शेषाः स्पृष्टा कलः प्रोक्ताः Çikshâ 30 in Ind. St. 4,118. स्पृष्टता, य°, ईषत्°, घर्ष° Comm. zu VS. Pâtr. 1,73. Vgl. दुःस्पृष्ट und दुःस्पृष्टः स हेयो ऽतिस्पृश्यते Comm. zu RV. Pâtr. 14,8. — 2) घप्, उदकम्, ग्रहम् u. s. w. *bestimmte Theile des Körpers mit Wasser in Berührung bringen, eine Waschung vornehmen, sich den Mund spülen* u. s. w. Çiksh. Gobh. 1,10. Âçv. Çr. 1,7,3. M. 5,76. 99. MBh. 3,10106. R. 1,24,11 (25,11 Gorr.). 31,31. 44,28. 2,52,20. 56,4. 111,23. 4,44,77. Mâlav. P. 61,74. Bhâg. P. 4,4, 24. 5,20,23. ausnahmsweise mit instr. des Wassers und acc. der berührten Theile: खानि चैव स्पृशेदद्भिः M. 2,60. — 3) *durch Berührung einen Eindruck empfangen, fühlen:* घ्राणेति, पश्यति, जिघ्रति, रसयते, स्पृशते Prâçnop. 4,8. स्पृशति Maitrâyan. 6,7. श्रुत्वा, स्पृष्ट्वा, दृष्ट्वा, भुक्त्वा, घ्रात्वा M. 2,98. श्रुतं दृष्टं स्पृष्टम् Spr. (II) 6562. — 4) *berühren* in astr. Sinne: रोहिणीम् स्पृशन्बुद्ग्यति यदा शशाङ्कः Varâh. Bṛh. S. 24,29. भुजंगमं स्पृशेत् 47,12. 11,62. केतुभिराधूमिते ऽह्य वा स्पृष्टे नक्षत्रे 53. von einer gedachten Linie (सूत्र) Goladhj. Madhjam. 24. — 5) *berühren* so v. a. *reichen* —, *dringen bis zu:* तनुवा दिवम् Bhâg. P. 4,5,8. Daçak. 60,5. शब्दो दिवमिवास्पृशत् MBh. 1,1174. गाण्डीवस्य निर्घोषः — घस्पृशद्दिवम् 7,1324. R. 2,89,16 (97,21 Gorr.). Çik. 47. Bhâg. P. 10,46,46. 75,10. स्तोमो यो वां कृदि पस्पर्शत् RV. 4,41,1. याकृतिभिर्हृदि स्पृशन् Bhâg. P. 1,10,30. दुरुक्तैर्मर्म पस्पृशुः 3,4,1. अननुभूतो ऽर्थो न मनः स्प्रष्टुमर्हति 4,29,65. यदि ते कर्णमस्पृशम् so v. a. zu *Ohren kommen* 10,64, 10. नार्थकामो धर्मस्य शततमीमपि कलां स्पृशतः *erreichen, gleich kommen* Daçak. 64,18. fg. न स्पृशन्ति कवयो गिरापि यत् *mit Worten erreichen* so v. a. zu *schildern vermögen* Spr. (II) 5306. Vgl. दिविस्पृशत्. — 6) *berühren* so v. a. *in unmittelbare Beziehung treten:* पौरुषं ज्योतिर्विषयान्स्पृशत् Sarvadarçanas. 37,8. कर्मसु श्रोत्रस्पर्शिघस्पृष्टवस्तुषु Bhâg. P. 4,29,47. घद्यापि मानुषो भावः स्पृशते (!) ह्याम् so v. a. *am Herzen liegen* MBh. 17,106. — 7) *Jmd* (acc.) *berühren mit* (instr.) so v. a. *versehen mit:* इमान्स्पृश मन्मभिः मूर् वार्त्रान् so v. a. *erfülle mit Muth* RV. 4,3,15. — 8) *treffen, zu Theil werden* (insbes. von Uebeln): तं न कश्च न पाप्मा स्पृशति Kaush. Up. 3,6,3. स्पृशेदेनस्तथा च माम् MBh. 1, 4892. Spr. (II) 6062. दोषः MBh. 3,16735. ज्वरा, रोगाः, वैवर्ण्यम् 13,7446. fg. (स्प्रक्ष्यन्ति mit der ed. Bomb. st. स्म° zu lesen). भयम् R. Gorr. 2,36, 10. यावतु कन्यामृतवः स्पृशन्ति Vishṇu in Dissen. 272,3 v. u. भावाः Kumâras. 6,95. तुल्यो दण्डः Spr. (II) 758 (med.). आपदः 1057. शोकाः 4467. व्याधिः 6885. तापः Varâh. Bṛh. S. 5,74. अनर्थः 9,13. 31. दारिद्र्यम् Karmâs. 55,28. पातकम् Bhâg. P. 4,14,11. अघर्मः 6,2,2 (med.). 9,4,39. ब्रह्मशापः 12. अभ्युदयाः Ratnâv. 4,7. pass.: तैर्दोषैर्नरः स्पृश्यते Mṛicch. 137,15. अभिलाषेण पस्पृशे Râjat. 4,19. अनुशयाग्निना 316. सारासारविचारेण 6,193. त्वयोगेण 239. मदेन Daçak. 83,10. असत्यवाददोषेण 90, 1. 2. स्पृष्ट *getroffen, behaftet mit:* बालवधेन MBh. 13,331. दैवस्य मायया Bhâg. P. 3,2,10. 4,6,48. fg. 30,33. कालेन 3,15,2. शङ्का° Mṛicch. 70. अनघ° Raghu. 10,20. ब्रह्मसुख° Bhâg. P. 7,15,35. वैदग्ध्यविमुग्धताव्यतिकरस्पृष्टं विधानं विधेः Spr. (II) 6211. किंचिदावगभीरवक्त्रिमलवस्पृष्टं ममाभाषते Sin. D. 40,11. अस्पृष्टपुरुषान्तर (शब्द) so v. a. *keinem Andern zukommend* Kumâras. 6,75. कलिना so v. a. *besessen, besaubert* MBh. 3,2361. रामया Bhâg. P. 4,28,59. — 9) *anrühren* so v. a. *sich aneignen:* न कर्मणि नियुक्तः सन्धनं किंचिदपि (so ed. Bomb.) स्पृशेत् MBh. 4,131. — 10) *erreichen, theilhaftig werden, an sich erfahren:* परमं श्रियः पदम् Kâm. Nîtis. 4,79. Spr. (II) 6139. महात्मनयम् MBh. 3,318. वेपथुम् 9,1202. अभूतपूर्वं शोकम् R. 7,98,4. महोन्नतताम् Raghu. 3,32. मणिनाकरदोषान्स्पृशति न च सर्वो मणिगुणान् Spr. (II) 773. लाभालाभौ, मरणम्, जीवितम् 7068. तारुण्यम् 7260. उद्योगम् Kathâs. 16,72. स्पृष्टमेधुना M. 8,205. स्पृष्टाकृतिः (स्पृष्टाकृतिः ed. Calc.) पत्ररथेन्द्रकेतोः Raghu. 18,39. अस्पृष्टमद Spr. (II) 317. अस्पृष्टरजस्तमस्का, स्पृष्टमाय Bhâg. P. 6,3,15. स्पर्शः स्पृष्टपूर्वः *ein Gefühl, das man früher empfunden hat,* MBh. 4,744. — 11) im Sinne des caus. *zukommen lassen:* घस्पृशत् — द्विजेभ्यो ऽयुतं गवाम् Wassn. Kâsikâ. 303. अस्पर्शद्वायुतम् (घस्पर्शात् st. अस्पृशत्) Bhâg. P. 10,79,18. — स्पृशेत् im Comm. zu TS. Pâtr. 2,36 schlechte Lesart für स्पर्शयेत्; स्पृष्ट्वा R. Gorr. 2,123,17 fehlerhaft für पृष्ट्वा.

— caus. स्पर्शयति (med. मरुणासंप्रेषणयोः v. l. für स्पश्र्, स्पाशयते Vop. in Dhâtup. 33,7) 1) *berühren lassen* (mit doppeltem acc.), *in unmittelbare Berührung bringen mit* (loc. instr.): पुत्रदारस्य वाप्येनं शिरसि स्पर्शयेत्पृथक् M. 8,114. R. 2,64,27 (66,26 Gorr.). सुवर्णमग्निम् P. 8,3,102, Schol. जिह्वामध्यास्याभ्यां चोतराङ्गम्याम्स्पर्शयति TS. Pâtr. 2,17. येन स्पर्शयति तत्करणम् 34. कनूमूले (loc.) जिह्वामूलेन कवर्गे स्पर्शयति 35. शवर्गे कार्ये जिह्वामध्येन वर्णं तालौ स्पर्शयेत् Comm. zu 36, v. l. वकारे कार्ये ऽधरोष्ठात्ताभ्यामुत्तरदन्तायैः सकृ स्पर्शयेत् zu 43. यज्ञं देवेषु विस्पृशः RV. 8,15,18. स विस्पृशति तन्वि श्रुतस्य विदः *er bespricht mit Geschossen den Leib* 49,12. मेऽङ्गे ऽपेस्तन्वं स्पर्शयस्व *überzieh dich mit* 10,112,3. — 2) *durch Berührung einen Eindruck empfangen, fühlen* (vgl. simpl. 3): घ्राणेति पश्यति जिघ्रति रसयति चैव स्पर्शयति Maitrâyan. 6,7. — 3) *Jmd Etwas zukommen lassen, schenken, hingeben:* ब्राह्मणाय गाम् M. 11,135. MBh. 13,2961 (med.). 3120. Harîv. 14266. R. 7,53,9. 15. Raghu. 2,49. मातापितृविक्रीतो यस्त्यक्तो वा स्वयंकारणात्। आत्मानं स्पर्शयेद्यस्मै स्वयंदत्तस्तु स स्मृतः॥ M. 9,177. आत्मानं स्पर्शयाम्यस्य पाणिं गृह्णीष्व मे spricht ein Weib zu einem Manne MBh. 13, 1302. पत्यर्थं स्पर्शिता R. 7,30,27.

— घधि (*oberflächlich*) *berühren:* वेद्यन्तम् Çat. Br. 11,2,3,23. — caus. *reichen lassen bis zu:* पन्थां वाधिस्पर्शयेत्कर्तृ वा TS. 6,2,6,1.

— अनु 1) *berühren, reichen an* RV. 4,4,2. — 2) *berühren mit* so v. a. *erfüllen mit:* तेनैव मे दशमनुस्पृशतात् Bhâg. P. 3,9,22.

— अप scheinbar MBh. 1,764, da st. अपो ऽपस्पृश्य mit der ed. Bomb. अप उप° zu lesen ist. Vgl. अनपस्पृश्.

— अभि 1) *berühren:* कथमस्मद्विधा नारी जितेन्द्रियमभिस्पृशेत् MBh. 1,2931. — 2) *treffen, heimsuchen:* निद्रा तु वैश्ववीं पाप्मानमुपदिशति। सा स्वभावत एव सर्वप्राणिनो ऽभिस्पृशति Suçr. 1,329,11. fg.

— आ *leicht berühren:* शिरसास्पृश्य (= ईषत्स्पृष्ट्वा Comm.) पादयोः Bhâg. P. 10,44,50. partic. आस्पृष्ट 1,6,9 (nach dem Comm.). Çat. Br. 9,3,4,15.

— उद् *hinaufreichen zu* (acc.): नोदिव दिवमस्पृशन् AV. 5,19,1.

— उप 1) *berühren, hinreichen bis zu:* दिवं मानुं RV. 7,2,1. 10,125, 7. घर्चिषो यातुधानान् 10,87,2. हस्ताभ्याम् 137,7. AV. 1,33,4. वामौ नः स्योनमुप स्पृशात् 14,2,51. आपो पतिं मुखं शिवमुपस्पृशति *berührt zärt-*

tich, liebkost Ait. Br. 8,20. पुत्रा: पितरम् Çat. Br. 12,3,2,6. ब्राह्मणेरमा बर्हि: Âçv. Çr. 1,4,5. 4,4,6. भूमिम् 5,20,6. Gaut. 1,11,2. Çat. Br. 1,7, 4,2. 8,3,19. मुक्तमुपस्पृशते 9,2,7. 3,5,2,22. अपि पृष्ठत उपस्पृष्टो मनसा ब्राह्मणेन 14,4,2,9. Kâtj. Çr. 6,4,12. दत्तेर्दत्तान् MBh. 1,5931. 3,15991. 9,3887. भूमिम् 5,7230. पितु: पादौ R. 1,69,17. स्वशाटकलापेशरणोपधानम् Bhâg. P. 3,3,5. मलयं दर्दुरं चैव — घनिल: । उपस्पृश्य ववौ R. 2,91, 24. — 2) अप:, जलम् u. s. w., auch mit Auslassung dieser Wörter *Wasser berühren* so v. a. *die Hand in ein Wassergefäss eintauchen* (Schol. zu Kâtj. Çr. 166, 9) als symbolische Reinigungshandlung, oder *den Mund mit Wasser ausspülen* oder auch *eine Waschung vornehmen, sich baden* Çat. Br. 1,1,1,1. 11. 7,4,2. 3,6,2,17. Âçv. Çr. 2,3,16. Gaut. 4,5,10. 6,4. Kauç. 7. 69. Çâṅkh. Çr. 1,10,3. 14,23. Gobh. 3, 2,3. 9. — वारि, उदकम् u. s. w. MBh. 3,6030. R. 1,3,2. 2,25,1. 4,10, 28. Râgat. 5,59. Bhâg. P. 1,4,15. 4,2,17. 5,19,17 (अप: — आत्मना). मलगङ्गाम् MBh. 13,1708. कोटितीर्थम् 3,4091. 5087. 8130. Bhâg. P. 6,4, 21. ohne acc. M. 2,53. 5,62. fg. Jâtâ. 3,30. MBh. 1,2949. 3,2256. 14, 1268. सूपस्पृष्टा (= सम्यक्समाप्य Nîlak.) Harîv. 8858. R. 4,9,34. 10,21. 7,106,15. Kathâs. 123,172. Bhâg. P. 4,11,1. Pañkat. 188,15. Bhatt. 2, 11. आलेपेन तीर्थेन M. 2,58. Jâtâ. 1,18. न नग्न उपस्पृशेत् *bade* Kâraka 1,8. नोपस्पृश्य ते एव वाससी विधूयात् ebend. सवस्त्याम् M. 11,132. अप्सु MBh. 3,10003. Harîv. 13858. महाश्रमे MBh. 13,1704. fgg. 1709. 1712. 1719. fg. 1730. Râgat. 18,30. उभौ कालौ MBh. 1,4622. त्रिषवणम् M. 6,24. 11,132. 216. R. 2,95,17 (104,18 Gorr.). auch mit instr. des Wassers und acc. der *berührten* Theile M. 4,142. auch mit Auslassung des instr.: स्नान्याचान्त उपस्पृशेत् M. 5,138. des acc.: उद्धृताभिरद्भि: MBh. 14,1287. partic. उपस्पृष्ट vom Wasser M. 3,208. Bhâg. P. 1,1,15. impers.: मयोत्थितेनोपस्पृष्टम् MBh. 1,771. सप्तानां तु समुद्राणामेषां (d. i. मदात्मनां) तीर्थेषु — उपस्पृष्टम् R. 3,78,4. उपस्पृष्ट = आचान्त (Comm.) Bhâg. P. 1,6,15. — 3) *anrühren* so v. a. *sich aneignen:* न कर्मणि विषुक्त: सन्धनं किंचिदुपस्पृशेत् (अपि स्पृशेत् ed. Bomb.) MBh. 4,131. — Vgl. उपस्पर्श fg. und उपस्पृश्. — caus. zu 2): अप: Çat. Br. 3,2,2,17.

— पर्युप = उप-स्पर्श् 2): गाङ्गेयं (sc. जलम्) पर्युपस्पृश्य (वार्युप° ed. Bomb.) MBh. 3,165.

— प्रत्युप dass.: अप: Gobh. 1,2,31. — Vgl. प्रत्युपस्पर्शन.

— समुप *berühren:* पर्वतेन्द्रं सुनाभं पाणिना R. 5,55,12. स्नान्यद्भि: Jâtâ. 1,20. Wasser MBh. 3,8022. *baden* 10530.

— नि (schmeichelnd) *berühren:* नि स्पृश धिया तन्वं सुतस्य ṚV. 8, 93,11. भूमा यत्तेन कर्व्यस्य निस्पृशे (inf.) 10,91,12. — Vgl. निस्पृश्.

— परि *vielfach berühren, streicheln:* पाणिभ्याम् MBh. 15,130. चरणौ R. Gorr. 2,9,47. खड्गम् 20,3. गात्राणि 66,31. कक्षा: 5,11,12. परिपस्पृशिरे चैनं पीनैरुरसिजैर्मुद्ध: 1,9,38. 46 (38. 47 Schl.). — partic. °स्पृष्ट *ringsum behaftet mit:* रुधिरेणाङ्गम् MBh. 12,54.

— सम् 1) *berühren, in Berührung bringen;* act. med. AV. 12,2,31. अद्भिरात्मानम् 3,30. रोचिष्णुतेन तन्वम् 13,1,34. 14,1,40. समस्पृशत तन्वस्तनूभि: 14,2,32. पृथिव्या: संस्पृशस्पाहि VS. 37,11. 13. प्रियेण धाम्ना संस्पृशेय Çat. Br. 3,9,4,20. 1,9,2,7. दण्डेन Âçv. Çr. 3,1,18. इन्द्रियाण्यद्भि: Gobh. 1,2,10. M. 2,53 गात्राणि Kâtj. Çr. 9,12,4. उरसा Çâṅkh. Çr. 17,16,1. आत्मानम् Kâtj. Çr. 1,9,20. इन्द्रियैरिन्द्रियाणि Kaṭh. Up. 2,15. संस्पृशत: स्वकान्बाहून् im Aerger MBh. 1,4094. अग्निम् 3,2935. श्याम् 8,816 (med. संस्पृशान). R. 2,84,60. R. Gorr. 2,79,3. 3,9,3. 5,3, 40. 55,28. पादौ 2,123,3. Râgat. 11,89. Spr. (II) 6397. Vaṛâh. Bṛ. S. 59,9. तारा: संस्पृशत: परस्परम् 55,12. Râgat. 4,22. Bhâg. P. 10,70, 10. अङ्गै: M. 3,178. गात्रै: R. 5,37,3. पाणिना R. Schl. 1,67,14. R. Gorr. 2,93,3. Râgat. 11,31. कां करेण संस्पृश्य Hit. 1,49 (निष्पिष्य MBh. 1, 5933). दत्तेर्दत्तान् Mâlav. P. 39,30. कं गोविन्दम् Harîv. 9080. मूर्ध्नि पाणिभ्याम् MBh. 3,12054. रश्मिभि: R. 2,44,10. partic. संस्पृष्ट TS. 5,4,6, 4. Çat. Br. 4,1,3,24. 7,1,1,29. 3,1,3,10. M. 4,203. 5,142. Jâtâ. 3,30. तृणाग्रेण Spr. (II) 3595. Vaṛâh. Bṛ. S. 53,106. पवनै: Râgat. 2,124. 6,192. मध्येमूत्रै: u. s. w. M. 5,123. Pañkat. 262,22. सुरा° M. 11,150. अर्चिभि: Mâlav. P. 99,63. 116,24. संव्यतराणि °वर्णानि *sich unmittelbar berührend, mit einander verbunden* AV. Paipp. 1,40. संस्पृष्टरेफमृवर्णम् *mit ṛ verbunden* 37. अर्धमात्रया । रेफो भवति संस्पृष्टो यवाङ्कुश्या नखं तथा Comm. zu 37. — 2) सलिलम्, अप: *bestimmte Theile des Körpers mit Wasser in Berührung bringen, eine Waschung vornehmen* u. s. w. MBh. 3,42. 13142. तीर्थम् Bhâg. P. 5,18,11. mit Ergänzung des acc. R. Gorr. 1,47,7. 7,77,16. — 3) *berühren* in astr. Sinne: सप्त मुनीन् Vaṛâh. Bṛ. S. 11,34. 24,29. 33,12. 47,12. — 4) *berühren* so v. a. *reichen —, dringen bis, zu:* धनुर्ज्यातलशब्दश्च संस्पृश्य गगनं महान् MBh. 1,5160. 6,3092. हृदि Bhâg. P. 3,15,39. दिव्यसंभोगसंस्पृष्टं मनोरथै: *unerreicht* Kathâs. 17,131. — 5) *berühren* so v. a. *in unmittelbare Beziehung treten:* नेत्रस्य दूरं श्रोत्रस्य धनिं संस्पृशत: Spr. (II) 3816. — 6) *treffen, über Einen kommen, sich Jmds bemächtigen:* न मां संस्पृशते मद: R. 5,81,24. प्राणिनं सर्वमापद: Spr. (II) 1037, v. l. मृत्यु: प्रजा: 1473. हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया Çiç. 81. पवनेन *heimgesucht von* (= वातरोगिन् Comm.) Vaṛâh. Bṛ. 23,13. अन्यज्ञानासंस्पृष्टं केवलम् so v. a. *nicht verunreinigt* Sarvadarçanas. 22,13. — 7) *herausnehmen aus* (abl.): संस्पृशान: शरास्तीक्ष्णाँस्तूणात् MBh. 8,788. — Vgl. संस्पर्श fgg. — caus. *in Berührung bringen* Ait. Br. 7,2. TS. 3,6,6,2. 5,4,3,4. TBr. 3,3,7,9. Çat. Br. 3, 7,4,11. सुवौ 4,7. Kâtj. Çr. 3,3,12. उर: Çâṅkh. Çr. 7,4,6.

— अनुसम् caus. *nach Etwas in Berührung bringen* Çat. Br. 1,8,3,2.

— अभिसम् 1) *mit Wasser in Berührung kommen, baden:* तत्र MBh. 3,8080. — 2) *treffen, über Einen kommen, sich Jmds bemächtigen:* तीव्रागो नामाभिसंस्पृशेत् MBh. 12,2140.

— परिसम् *vielfach berühren, streicheln:* सर्वतनं पाणिना MBh. 3,1457. पादौ कराभ्याम् R. Gorr. 2,66,29.

स्पर्श (von स्पर्श्) 1) adj. *berührend, rührend, dringend in:* मन:° Bhâg. P. 3,21,10. = स्पर्शक H. an. 2,355. Med. c. 14. — 2) m. (n. Bhâg. P. 3,5,22) P. 3,3,16. am Ende eines adj. comp. f. घा. a) *Berührung* H. an. Med. रुक्ष स्पर्शेनावरवर्णान: M. 3,241. मल्लिका: u. s. w. स्पर्शे मेध्यानि 5,128. Mucc. 89. Spr. (II) 3418. 6992. तं पतिं स्पर्शे ऽप्यवर्तयत् Kathâs. 27,186. °क्षम Çiç. 27. भूषणवासनाम् M. 8,357. Spr. (II) 3420. 6522. सुतस्य Vikr. 149. पाद° M. 3,220. भस्मपङ्करत:° Jâtâ. 2,213. Mucc. 101. सुत° Râgat. 3,26. 14,2. 12,65. Çiç. 103,19. 125. शस्त्र° Spr. (II) 7175. Vaṛâh. Bṛ. S. 51,30. Minâ. P. 69,9. Kathâs. 4,63. Verz. d. Oxf. H. 283,a,1. fgg. Râgat. 3,411. 4,505. Bhâg. P. 1,8,5. 11,23. Hit. 40,3. am Ende eines adj. comp. R. Gorr. 2,47,2. Mucc. 61. Spr. (II) 6597.

Kathâs. 71,304. Râǵa-Tar. 4,22. — *b) Berührung* in astr. Sinne Varâh. Bṛh. S. 11,6. instbes. *Anfang einer Ekliptse* Garg. Kâṇḍaâsa. 20. Golâdhy. Grahagaṇ. 1. — *c) Berührung, Contact* in übertr. Bed.: वाक्स्पर्शः Bhâg. 5,21. मात्रास्पर्शाः 2,14. Bhâg. P. 1,6,26. विविधविषयरस° Prab. 2,10. गुण° Bhâg. P. 5,18,74. °स 4,9,2. — *d) eine durch Berührung wahrgenommene Eigenschaft der Dinge; Gefühl* AK. 1,1,4,16. H. 1384. सर्वेषां स्पर्शानां त्वगेकायनम् Çat. Br. 14,5,4,11. त्वचा स्पर्शान्वेदयते 6,9,2. वायुः स्पर्शगुणः M. 1,76. 12,95. वायव्यस्तु गुणाः स्पर्शः स्पर्शश्च बहुधा स्मृतः । उष्णः शीतः u. s. w. MBh. 12,6855. fgg. 14,1415. fgg. Kâm. 2,1,9. Naiṣâ. 1,1,14. Suçr. 1,355,13. °दोष 171,1. Tarkas. 14. Tattvas. 12. Verz. d. Oxf. H. 225,a, No. 549. Bhâg. P. 3,5,22. Sarvadarçanas. 19,22. 67,12. 140,4. Baiśaiṣ. 3. Vasishṭhas. (Allah.) No. 60. Burnouf, Intr. 487. 500. स्पर्शान् — त्वगधिगच्छति MBh. 14,668. वेदपे न च संगुप्तान् शब्दस्पर्शरसानकम् R. 2,64,67. ईदृशस्तु त्वया स्पर्शः स्पृष्टपूर्वो न कर्हिचित् MBh. 4,744. स्पर्शं वेत्सि 745. स्पर्शतः सुखः R. 3,22, 20. स्पर्शं ह्रपयित्वा Çiç. 32,15, v. l. Viṣṇ. 47,13. Milav. 29,13. स्पर्शानुकूल Spr. (II) 6403. वज्र° *das bei der Berührung des Donnerkeils empfundene Gefühl* R. 1,40,18. शिरःशूल° *Gefühl von Kopfschmerz* Daçak. 78,6. ईर्ष्या° *Gefühl der Eifersucht* Kathâs. 17,151. am Ende eines adj. comp.: दिव्यगन्धरस° R. 3,17,11. अतिशिशिर° Spr. (II) 543. खर° Bhâg. P. 1,14,16. शीत° Sarvadarçanas. 6,1. इन्द्राशनिसम° MBh. 5, 1271. R. 2,30,12. — *e) ein angenehmes Gefühl* Spr. (II) 2131 (so v. a. *Zartheit der Haut*). — *f) ein krankhaftes Gefühl, Krankheit* Vârtt. zu P. 3,3,16. AK. 3,3,14. Taik. 3,3,423. H. an. Med. — *g) Gefühlssinn:* मृदुशीतोष्णाः स्पर्शयाह्याः Suçr. 1,153,5. Tarkas. 48. अत्तः° adj. Bhâg. P. 3,10,18. — *h) Gabe, Geschenk* Taik. H. an. Med. — *i) quidam coeundi modus* Çârdar. im ÇKDa. — *k) Wind* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer best. Aut. — *l)* in der Gramm. *eine Muta* H. an. RV. Prât. 1,2 (12). 3 (13). 30 (30). 4,1. 6,5. VS. Prât. 1,49. 90. 105. 4,14. 94. 99. 117. 152. 8,20. AV. Prât. 1,6. 29. 44 u. s. w. TS. Prât. 1,7. 10. 2,44 u. s. w. °रेफसंधि RV. Prât. 4,30. स्पर्शोष्मसंधि 33. °वर्ग 5,31. Âçv. Çr. 1,2,16. Kâṭhân. Up. 2,22,3. Bhâg. P. 2,9,6. 3,12,46. 12,6,43. Verz. d. Oxf. H. 104,b,24. 36. — *m)* fehlerhaft für स्पश MBh. 1,5793. Med. ç. 15. — *3)* f. घा von unbekannter Bed. in der Stelle: कीर्तिमाशी दिशं (दिशो die neuere Ausg.) स्पर्शी नमस्यामि सारस्वतीम् Harîv. 10243. *ein untreues Weib* Çârdûlavar. im ÇKDa. — Vgl. अतल°, उदक°, दुः°, मृदु°, वेद°, मुक्ति°, सु°, सुख°.

स्पर्शक nom. ag. von स्पर्श् H. an. 2,555. Med. ç. 14.

स्पर्शता f. in अभूतल° nom. abstr. von अभूतलस्पर्श adj. *den Erdboden nicht berührend* Çiç. 169.

स्पर्शत्व n. nom. abstr. zu स्पर्श 2) d) Bhâg. P. 3,26,36.

स्पर्शद्वेष m. *Empfindlichkeit gegen Berührung* Suçr. 1,232,8.

स्पर्शन (von स्पर्श्) 1) m. *Wind* AK. 1,1,4,57. Taik. 3,3,276. H. 1107. an. 3,429. Med. n. 147. Hâlây. 1,75. — 2) n. a) *das Berühren, Berührung* Taik. H. an. Med. Nir. 5,3. Çvetâçv. Up. 5,11. TS. Prât. 2,33. Jîân. 2,213. Suçr. 1,305,2. Ind. St. 5,312. Racn. 2,80. Spr. (II) 2717. fg. प्रत्यालनाद्धि पङ्कस्य यथेयं नस्पर्शनं नृणाम् 3117 (vgl. Comm. zu TS. Prât. 4,22. 14,1). 3255. Varâh. Bṛh. S. 51,25. 27. 30. 33. Mâṇ. P. 69, 9. Bhâg. P. 1,10,12. 4,23,19. fg. 5,17,20. 7,10,21. 10,12,38. Pâṇ. 163,5. — *b) das Fühlen, Gefühl, Gefühlssinn* H. 1384. H. an. M. 12, 120. Bhâg. 15,9. MBh. 12,12886. 14,610. Naiṣâ. 3,1,1. Bhâg. P. 3,26, 47. Sarvadarçanas. 21,6. 35,17. 102,8. 10. Wilson, Sel. Works 1,314. — *c) das Schenken, Spenden* AK. 2,7,19. Taik. H. 386. H. an. Med. Hall. 2,264. — Vgl. गगण° und स्पार्शन.

स्पर्शनीय (wie oben) adj. 1) *zu berühren:* न मे शरीरं त्वया स्पर्शनीयम् Pañcat. 196,13. — 2) *was gefühlt wird* MBh. 12,13788.

स्पर्शनेन्द्रिय (स्पर्शन + इ°) n. *Gefühlssinn* Suçr. 1,30,11. — Vgl. स्पर्शेन्द्रिय.

स्पर्शमणि m. *der Stein der Weisen:* °प्रभव n. *Gold* Çârdar. im ÇKDa. — Vgl. स्पर्शोपल.

स्पर्शयज्ञ m. *ein in der blossen Berührung der zu opfernden Dinge bestehendes Opfer* MBh. 14,2864.

स्पर्शयितव्य (vom caus. von स्पर्श्) adj. *was gefühlt wird, fühlbar* Prasnop. 4,3.

स्पर्शयोगशास्त्र n. Titel eines *Lehrbuchs* Hall 18.

स्पर्शरसिक adj. *für Berührung Sinn habend* so v. a. *sinnlich, lüstern, geil* Spr. (II) 6854.

स्पर्शलज्जा f. *Mimosa pudica* Râǵân. 8,104.

स्पर्शवज्रा f. N. pr. einer Göttin Kâlaçâkra 3,131. 145. 4,20. 77. 5,14.

स्पर्शवत् (von स्पर्श) adj. गण रूपादि zu P. 5,2,95. 1) *die durch Berührung wahrgenommene Eigenschaft besitzend, tastbar:* वायु Kâç. 2, 1,4. 28. Tarkas. 9. Baiśaiṣ. 25. Bhâg. P. 2,5,28. स्पर्शशब्दवत् d. i. स्पर्शवत् und शब्दवत् 27. ह्रपस्पर्शवत् d. i. ह्रपवत् und स्प° Kâç. 2,1,3. ह्रपरस° 2. ह्रपरसगन्ध° 1. उष्ण° *heiss anzufühlen* Tarkas. 8. — 2) *angenehm anzufühlen* MBh. 1,7360. पत्रः स्पर्शवतां वरः Spr. (II) 4312. Kumâras. 1,36. स्पर्शह्रपवत् d. i. स्पर्शवत् und ह्रपवत् MBh. 3,12067.

स्पर्शगुडा f. *Asparagus racemosus* Çârdar. im ÇKDa.

स्पर्शसंकोचिन् m. *ein best. Knollengewächs,* = रोमालु Dhanv. 4,55.

स्पर्शसंचारिन् adj. *durch Berührung übergehend, ansteckend:* eine Krankheit Râǵa-Tar. 4,524.

स्पर्शस्पन्द् m. *Frosch* Çârdûlavar. bei Wilson; in der 1ten Aufl. und im ÇKDa. fälschlich °स्यन्द्.

स्पर्शहानि f. 1) *Gefühllosigkeit* Suçr. 1,270,8. — 2) *rothe erbsenähnliche Pusteln* (eine zu den श्लीपदरोग gezählte Krankheit) Suçr. 1,298,7. 299,5. 2,124,10. Çârṅg. Saṃh. 1,7,63.

स्पर्शाज्ञ (स्पर्श + अज्ञ) adj. *empfindungslos, taub, eingeschlafen* (von Körpertheilen); davon nom. abstr. °ता H. an. 2,207. Mân. 1. 72. p. 12.

स्पर्शानन्दा (स्पर्श + आनन्द्) f. *eine* Apsaras Taik. 1,1,64.

स्पर्शाशन (स्पर्श + 2. अशन) adj. *dessen Essen in* (blosser) *Berührung besteht, von der* (blossen) *Berührung lebend;* m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern MBh. 13,1372.

स्पर्शासहत्व (स्पर्श + स°) n. *Empfindlichkeit gegen Berührung* Suçr. 1,300,10.

स्पर्शासहिष्णुता f. dass. Suçr. 1,301,2.

स्पर्शिक adj. = स्पर्शवत् 1): वायु Pat. zu P. 5,2,95.

स्पर्शितर् (von स्पर्श्) nom. ag. *der da fühlt* MBh. 12,13788.

स्पर्शिन् (wie oben) adj. *berührend:* प्रेत° Çiṅkn. Gaṇ. 4,7. 11. Pân. Gaṇ. 3,10. माभ्यूरुजघन° MBu. 11,693. पुच्छं मत्कीतलस्पर्शि *berührend* so v. a. *reichend bis* Rîâ-Tar. 4,180. घाकाश° Paṇḍar. 1,4,58. श्रोत्र° *in's Ohr dringend* Bhâg. P. 4,29,47.

स्पर्शेन्द्रिय (स्पर्श + इ°) n. *Gefühlssinn* Sṛṣṭi. 1,313,3. — Vgl. स्पर्शनेन्द्रिय.

स्पर्शोपल (स्पर्श + उ°) m. = स्पर्शमणि *der Stein der Weisen:* यदा-त्स्पर्शोपले तस्मै स्पर्शालोकस्य केमकृत् Çaṅk. 10,130.

स्पर्ष्, स्पर्षते (स्पर्धने) Dhâtup. 16,12, v. l. für पर्ष्.

स्पर्ष्टृ m. = स्प्रष्टृ Bharata zu AK. 3,3,14 nach ÇKDa.

स्पर्ह्, स्पर्ह्यति (ईप्सायाम्) Dhâtup. 35,19. hier und da auch med. Der Anlaut geht nie in ष über nach P. 8,3,110. 1) *eifern um, eifrig begehren nach;* mit dat. P. 1,4,36. Vop. 5,18. न स्वर्प्राप स्पृह्यन्ति ṚV. 8,2, 19. तस्मै यस्पृह्यं पुनः 10,135,2. Çat. Br. 2,2,3,5. नाणेाध्याये न राज्याय R. 2,95,17 (med.). R. Gorr. 2,104,18. 5,95,33. Spr. (II) 1658. 3955. 5936. Paṇ. 60,8. *nach Jmd* Spr. (II) 151. 4094. Çiç. 103,4. Bhaṭṭ. 8, 78. mit gen. der Sache MBu. 14,836 (med.). 14,1293. R. Gorr. 1,9,38. 2,53,39. mit gen. der Person MBu. 3,11077 (S. 572). mit acc. der Sache Sinon. K. zu P. 1,4,36. R. 2,112,3 (med. = 122,3 Gorr.). Harîv. 9941. 11128 (द्वापरसंविदं पुगात्तं die neuere Ausg.). Spr. (II) 7228. 7251. Kathâs. 96,18. Bhâg. P. 3,25,34. 37. 5,6,16. 8,16,37. 10,35,7. 73,14 (med.). mit acc. der Person Spr. (II) 6947. ohne Ergänzung MBu. 15, 826 (दिवानिशम् st. दिवाकाम् mit der ed. Bomb. zu lesen). Bhâg. P. 10, 62,17. — 2) *Neid empfinden, Jmd beneiden;* mit dat. der Person MBu. 3,12582. 3,635. 13,374 (med.). 376. Râm. 16,42. Kathâs. 31,63. mit gen. MBu. 1,5217. 3,12319. 5,2574. 7,582. 14,563. Harîv. 8761. Spr. (II) 5611. 5689. mit acc. Harîv. 1223. ohne Ergänzung 8760. MBu. 2, 2571. — Vgl. स्पर्ध्, स्पार्क् und स्पृक् fgg.

— सम् *eifrig begehren nach,* mit acc. der Sache Bhâg. P. 3,2,19.

1. स्पश् *sehen, erblicken* s. u. 1. पश्. स्पँशति, °ते (बाधनस्पर्शनयोः; st. स्पर्शन auch ग्रन्थन) Dhâtup. 21,32. — partic. स्पष्ट = स्पाशित P. 7,2, 37. Vop. 26,114. 1) *ersichtlich, deutlich, offenbar, klar vor Augen liegend* AK. 3,2,21. H. 1467. Halâj. 4,67. रथ° *durch Wagen* (-*Spuren* Comm.) *kenntlich* TS. 2,5,6,7. तृणोदक Paṇḍav. Bh. 11,5,20. Nir. 5,13. स्पष्टा-ष्टदंष्ट्र MBu. 3,392. Sṛṣṭi. 1,282,1. Râm. ed. Calc. 18,30. स्पष्टार्थ Spr. (II) 2916. 3728. Vaitân. Bhp. S. 1,2. 11,16. 47,9. Gaṇit. Trirâç. 31, Comm. Kâṇḍrâç. 19, Comm. Prân. 1,12. Rîâ-Tar. 1,24. 3,239. 4,668. Ind. St. 1,19,17. fg. इति भाष्ये स्पष्टम् Schol. zu P. 1,2,33. Vedântas. (Allah.) No. 90. Sarvadarçanas. 25,2. 32,9. 95,2. 122,13. 126,21. Paṇḍit. 262, 24. Hit. ed. Johns. 1560. स्पष्टतरं वचः MBu. 2,1407. वाचि सुस्पष्टो विप्रः Kathâs. 18,132. विनिद्रो ऽनुभवः 81,61. Rîâ-Tar. 6,315. यस्पष्ट Sṛṣṭi. 1,97,12. Bhâg. P. 4,15,22. 23,24. Vedântas. (Allah.) No. 31. Schol. zu Çiç. 36. zu P. 4,2,123. zu TS. Prât. 17,8. अतिस्पष्ट ebend. स्पष्टम् adv. Rîâ-Tar. 6,52. 330. — 2) *gerade:* °अङ्ग Vaitân. Bhp. S. 61, 10. स्पष्टेन कस्तिरुद्देन पद्या Kathâs. 75,118. न स्पष्टमुद्दीक्षते so v. a. *gerade in's Gesicht* Spr. (II) 1043. स्पष्टं पृष्टः Çiṅk. in LA. (III) 34,20. — 3) bei den Mathematikern *genau, correct, wirklich* (Gegens. मध्यम) Sûrjas. 2,58. Gaṇit. Grahagaṇ. 13. fgg. Golâdh. Kheṭaj. 16. Grahagaṇav. 40. स्पष्टाधिकार Journ. of the Am. Or. S. 6,190. Verz. d. B. H. No. 842. Verz. d. Cambr. H. 31. 46. — Vgl. सुस्पष्टम् und स्फुट.

— caus. स्पाशयति *bemerklich machen* u. s. w. s. u. 1. पश्. med. (मरणसंप्रेषणयोः) Dhâtup. 33,7. — partic. स्पाशित = स्पष्ट P. 7,2,37. Vop. 26,114.

— प्रति s. प्रतिस्पश् fg.

— वि partic. °स्पष्ट s. bes. Nachgetragen könnte werden adj. R. 3, 61,46. adv. 5,51,2. 82,2. MBu. 3,1955 (विस्पष्टम् fehlerhaft ed. Calc.). सु° adj. Nṛs. Tîp. Up. in Ind. St. 9,163. — Vgl. विस्पश्.

— सम्, partic. *berühmt, bekannt:* यद्य क् वे गार्ग्यो बालाकिरनूचानः संस्पष्ट आस Kaṭh. Up. 4,1.

2. स्पश् (= 1. स्पश्) m. *Späher, Aufseher, Wächter:* प्रति स्पशो वि सृज ṚV. 4,4,3. यद्व हि व्यतायि कूलादिव स्पशः 8,47,11. 50,15. देवानाम् 10,10,5. दिवः AV. 4,16,4. des Varuṇa ṚV. 1,25,13. सदृङ्ङ 6, 67,5. 7,61,3. 87,3. भूर्णि 8,73,4. सदम् 7. स्पशं विश्वस्य जगतः die Sonne 4,13,3. विश्वा इदुस्राः स्पशुरेति सूर्यः 10,35,3. 1,33,3. 5,30,1. VS. 33,66.

स्पश (von 1. स्पश्) m. 1) dass. AK. 2,8,4,13. 3,4,28,216. H. 734. an. 2,535. Med. ç. 15 (स्पर्शः gedr.). Halâj. 2,270. Smârt. Bh. in Ind. St. 1,38. (अग्निः) जगतः स्पशः (so st. स्पृशः zu lesen) M. 8,116. MBu. 1, 5793 (स्पर्श ed. Calc.). स्पशाध्यत Paṇḍav. 156,21. — 2) *Kampf, Krieg* AK. 3,4,28,216. H. an. Med. Halâj. 5,32.

स्पष्ट s. u. 1. स्पश्.

स्पष्टय् (von स्पष्ट), °यति 1) *klar* —, *deutlich machen* Schol. zu Âçv. Çr. 1,12,34. zu Kâp. 1,141. Kull. zu M. 1,20. — 2) *gerade machen:* einen Buckelichen Kathâs. 62,234.

स्पष्टीकृ (स्पष्ट + 1. कृ) 1) *klar* —, *deutlich machen* Sîs. bei Burnouf, Bhâg. P. 1, xvii. Verz. d. Oxf. H. 162, *b*, N. 4. v. l. im Comm. zu TS. 13,15. — 2) bei den Mathematikern *corrigiren, rectificiren* (durch Berechnung) Gaṇit. Spashṭâdh. 39, Comm.

स्पष्टीकरण (von स्पष्टीकृ) n. *das Corrigiren, Rectificiren* Gaṇit. Spashṭâdh. 34, Comm.

स्पष्टीकृति f. dass. Golâdh. Golâdhy. 3. Kheṭaj. 23.

स्पष्टेतर (स्पष्ट + इ°) adj. *undeutlich, unklar* Halâj. 5,56.

स्पान्दन und स्पान्दर्न adj. vom *Baume* Spandana *herrührend, daraus gemacht* gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141.

स्पार्शन (von स्पर्शन) adj. *durch das Gefühl wahrgenommen werdend, fasslich* P. 4,2,92, Schol.

स्पार्ह (von स्पर्ह्) adj. *begehrenswerth, reizend; appetitlich:* रेवणाम् ṚV. 1,31,14. वसु 123,6. 2,23,9. पुत्रान् 4,1,12. Soma 47,1. वर्ण 2,1,12. 4,1,6. 7. 7,15,15. 56,21. 58,3. 72,1. 81,2. 84,3. 3,24,3. 45,10. 9,102, 6. इयः 10,2,6. निर्णुतः 26,1. मधु 49,10. गाः 68,3. स्पार्हा वसानः 1,135, 2. कामाः सुरस्पार्हाः Bhâg. P. 1,12,6. — Vgl. पुरु°.

स्पार्हाराधस् adj. *begehrenswerthe Geschenke habend* ṚV. 4, 16,16.

स्पार्हवीर adj. *in trefflichen Männern bestehend:* रयि ṚV. 5,54,14. निर्णुतः etwa *treffliche Führer habend* 7,91,5.

स्पाशन n. nom. act. vom caus. von 1. स्पश् in einer Etymologie Nir. 3,3.

स्पिङ् s. उप°.

स्पूर्ध् Nebenform zu स्पर्ध्; infin. स्पूर्धसे *zur wetteifernden Bewerbung*

RV. 8,64,4.

— प्र *sich in Streit einlassen:* प्र यद्दो मित्रावरुणा स्पूर्धन्प्रिया धामे पुवधिता मिनन्ति RV. 6,67,9.

स्पृक्का f. *Trigonella corniculata* AK. 2,4,6,21. Rāǵan. 12,124. *Mimosa pudica* 5,103. — Suçr. 1,139,10. Varāh. Bṛh. S. 77,8. 13. 24. — Vgl. पृक्का.

स्पृत् (von स्पृ) 1) adj. *sich befreiend von; an sich ziehend, für sich gewinnend;* s. किल्बिष°, धन°, लोक°. — 2) f. Bez. *gewisser* Ishṭakā Cat. Br. 8,4,2,1. Ind. St. 13,260.

स्पृति (wie oben) f. so v. a. स्पृ Cat. Br. 11,8,4,6. Kāty. Ça. 25,6,11.

स्पृध् (von स्पर्ध्) 1) f. *Nebenbuhler, Gegner* Naigh. 2,17. अर्येम सं पृधि स्पृधः RV. 1,8,3. स्पृधो तरुतारम् 119,10. 174,5. 10. 179,3. 2,11,19. 5, 44,7. विश्वा इत्स्पृधो व्यस्यथ 55,6. 8,14,13. 81,33. 88,5. 9,7,5. 20,1. 16,18,9. 100,12. 113,4. masc. Bhāg. P. 3,18,19. 11,23,21. adj.: इतरेतरस्पृधः *mit einander wetteifernd* 10,73,12. स्वरिक्थ° *Verlangen tragend nach* 1,10,1. एकपति° 4,20,27. पद्माकोश° *wetteifernd mit* 3,23, 33. — 2) f. *Kampf* (auch in einzelnen der unter 1) angeführten Stellen möglich) RV. 7,82,9.

स्पृध्य s. मिथ°.

स्पृश् (von स्पर्श्) 1) adj. am Ende eines comp. P. 3,2,58. Declination Vop. 3,134. 149. a) *berührend:* वेदि° Kāty. Ça. 1,8,28. 17,11,18. 18,5, 6. 25,7,14. शव° M. 5,64. तिति° (so v. a. *Mensch*) Raǵh. 8,80. मातृवर्गवरुण° 11,7. बकु° Spr. (II) 7248. Bhāg. P. 10,37,7. — b) *berührend* so v. a. *reichend bis:* गगन° Raǵh. 3,48. भू° Varāh. Bṛh. S. 61,12. 18. — c) *erreichend* so v. a. *theilhaftig, an sich erfahrend, zeigend, verrathend:* प्रणय° Mālatīm. 76,4. मद° Kathās. 10,24. 110,130. विपुलाक्ष्या° (so zu verbinden) Verz. d. Oxf. H. 200,a,8 v. u. सञ्जनाललोलायित° Rāǵa-Tar. 1,208. भय° 4,132. पक्षच्छेदोग्रम° 164. 5,348. ऐकमत्यस्पृशो (so mit der ed. Calc. zu lesen) द्विजाः 475. विप्लव° 8,918. — 2) f. = स्पृक्का Dhanv. 3,38. — Vgl. अतल°, उपरि°, ऋत°, क्रतु°, घृत°, त्रिदिन°, दिव°, दिवि°, नभः°, भुवि°, भू°, भूमि°, मख°, मर्म°, रजः°, रथ°, विश्व°, हृदय°, हृदि°.

स्पृश 1) (wie oben) a) adj. *berührend, reichend bis:* स्वर्गद्वार° MBh. 2,1147. — b) m. *Berührung* in दुः°. — c) f. आ *eine best. Pflanze,* = भृङ्गघातिनी Çabdar. im ÇKDr. स्पृक्का u. d. letzten Worte. — d) f. ई *Solanum Jacquini Willd.* AK. 2,4,8,12. — 2) M. 8,116 fehlerhaft für स्पृश. — Vgl. हृदि°.

स्पृशि (von स्पर्श्) adj. Harīv. 7433 nach Nīlak. = विषयस्पृश्.

स्पृश्य (wie oben) 1) adj. a) *zu berühren* Spr. (II) 2999. Kull. zu M. 5,77. अ° *nicht berührt werden dürfend* Harīv. 14770. 14772. Spr. (II) 1822. Rāǵa-Tar. 5,401. Verz. d. Oxf. H. 87,b,26. 282,b,45. 283,a,7. 8. Bhāg. P. 10,18,14 (= अस्पृश्यत nach dem Comm.). 11,17,33. अस्पृश्यत्व n. Kull. zu M. 5,62. — b) *fühlbar, tastbar* MBh. 12, 12885. 14,620. अ° 610. शब्दस्यास्पृश्यत्वम् Comm. zu Gaut. 1,22. — c) *anrühren, angreifen, für sich in Gebrauch zu nehmen:* वदीया न मया स्पृश्या त्वयि जीवति संपदः Rāǵa-Tar. 3,219. — d) Rāǵa-Tar. 4,76 vielleicht fehlerhaft für स्पृक्ष *benutzenswerth.* — 2) f. या (sc. समिध्) Bez. *eines der Brennhölzer* Schol. zu Kāty. Ça. 682,1. 684,7.

स्पृष्टव्य Hit. 64,2 fehlerhaft für स्प्रष्टव्य (so ed. Jones.).

स्पृष्टास्पृष्टि adv. *so dass man sich gegenseitig berührt:* तीव्रे विवादे यात्रायां संयामे देशविप्लवे । नगरग्रामदाहे च स्पृष्टास्पृष्टि न दुष्यति ॥ so v. a. *das Dichtaneinander* Bhāradvāǵa im Ratnākara nach ÇKDr. Zur Bildung des Wortes vgl. P. 5,4,127.

स्पृष्टि (von स्पर्श्) f. *Berührung* AK. 3,3,9. Cat. Br. 14,7,1,29. अव° Çāṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 93.

स्पृष्टिका f. dass.: अस्मच्छरीरस्पृष्टिकया (als Zeichen der Betheuerung) ज्ञापितो ऽसि Mudrār. 53,21.

स्पृक्क (von स्पर्क्) s. पृक्क°.

स्पृकण (wie oben) n. *das Begehren nach:* परस्व° MBh. 2, 1939.

स्पृकणीय (wie oben) adj. 1) *begehrenswerth, woran Jmd* (gen.) *oder man Gefallen findet, reizend;* = स्पार्ह Nir. 3,11. रूप MBh. 1,3573. कर्मन् Harīv. 4126. चन्द्रमस् Ṛt. 1,1. वीर्य Kumārās. 3,20. Spr. (II) 4290. ज्ञानस्य Rāǵa-Tar. 3,28. 4,700. सत्स्पृकणीयशील Bhāg. P. 3,1,14. 15, 39. 25,25. वाच् 33. *an dem Jmd* (gen. instr.) *oder man seine Freude hat, zu dem man sich hingezogen fühlt* Harīv. 4383. Raǵh. 7,14. Spr. (II) 2153. 7230. Verz. d. Oxf. H. 61,b,5 v. u. Kathās. 56,252. — 2) *benedenswerth, der beneidet wird von* (gen.) Harīv. 7105. R. Gorr. 2,29,17. Kathās. 52,267. Pañcat. 137,16.

स्पृकणीयता f. nom. abstr. zu स्पृकणीय 1): संबन्ध° Uttarār. 118,1 (160,3). व्रजति नृपः स्पृकणीयतां पराम् Kir. Nitis. 4,30.

स्पृकणीयत्व n. dass.: स्पृकणीयत्वं तत्त्विनः कस्य नागमन् Spr. (II) 1231.

स्पृकर्यदर्ण (स्पृकर्यत्, partic. von स्पर्क्, + वर्ण) adj. *in Aussehen —, Farbe wetteifernd* d. h. *wechselnd* RV. 2,10,5.

स्पृकर्याय्य (von स्पर्क्) Uṇādis. 3,96. P. 5,4,55, Schol. Vop. 26,161. adj. *was man wetteifernd erstreben muss, begehrenswerth:* वसु RV. 4, 7,3. रयि 15,12. 7,4,9. 8,86,15. = स्पृकयालु und नक्षत्र Uṇādis.

स्पृकयालु (wie oben) adj. P. 3,2,158. 5,4,55. Vop. 26,148. *begehrend nach, seine Lust habend an:* भोगेभ्यः Spr. (II) 4787. Rāǵa-Tar. 3,315. तपोवनेषु Raǵh. 14,45. गम्भीरार्थेषु काव्येषु Spr. (II) 2086. mit infin. Verz. d. Oxf. H. 10,b,N. 8. ohne Ergänzung *begehrlich* oder *eifersüchtig, neidisch* MBh. 5,1638. 1718.

स्पृकयालुता (von स्पृकयालु) f. *das Begehren nach:* तृष्णातो° Spr. (II) 1443.

स्पृहा (von स्पर्ह्) f. Vop. 26,192. 1) *das Verlangen, Begehren nach Etwas, Wohlgefallen an* AK. 1,1,2,27. 2,4,3,30. 22,54. 23,105. H. 430. Hall. 4,25. स्पृहा मे जायते ऽत्यर्थम् R. 3,49,3. स्पृहां समुत्थाप्य Spr. (II) 2201. आयुष्मती 4463. यदा मे गलिता स्पृहा Amṛtāv. 14,2. स्पृहा जीवति यावद्वै 16,7. 17,9. नृमांसाभ्यवहारेषु Rāǵa-Tar. 1,132. 3,58. Bhāg. P. 3,9,6. 5,18,14. 19,21. Sarvadarçanas. 65,10. mit dat.: राज्याय R. 4, 9,7. mit gen. MBh. 2,348. 3,1549. mit loc.: कर्मफले Bhag. 4,14. गमने वसुदेवगृहे Harīv. 4464. वक्तव्ये R. 3,35,27. जीविते Amṛtāv. 2,22. विमुच्य तेषु स्पृहाम् Spr. (II) 1716. विलासेषु 1948. AK. 1,1,2,24. पुत्रे वात्मनि वा Kathās. 53,149. Bhāg. P. 2,1,15. 5,1,3. 6,11,5. Pañcat. 1,1. 32. राजपुत्रीं प्रति Kathās. 72,292. in comp. mit der Ergänzung: स्वर्ग° MBh. 3,1549. वनवास° R. Gorr. 2,29,9. 4,9,72. Raǵh. 8,34. Spr. (II) 1373. 4021. Kathās. 10,216. Rāǵa-Tar. 3,399. 5,133. स्पृहां कृ *ver-*

langen —, begehren nach: मूलफलभोगेषु MBh. 12,4277. Mkk. P. 15. 75. Bhâg. P. 3,30,12. 8,8,8. 9,14,10. चक्रे मुन्दरकास्पृहाम् Kathâs. 20, 119. घनस्पृहां (so zu lesen) न कुर्वन्ति Pañkat. 131,19. बन्ध् dass.: शमसुधाभोगैकबद्धस्पृह Spr. (II) 4585. 2027. सस्पृहा Verz. d. Oxf. H. 30,*b*, 12. am Ende eines adj. comp. (f. या): गत° Kâm. Nîtis. 9,62. Spr. (II) 2796. Bhâg. P. 7,10,19. राज्यप्राप्तेः R. Gorr. 2,1,10. सुखेषु विगतस्पृहः Bhag. 2,56. Bhâg. P. 3,15,12. वीत° Kir. 3,12. हित° Bhâg. P. 3,13, 16. 9,16,3. म° Maitrâyan. 3,2. 6,30. त्रपे Kir. 14,36. mit inf. Râga-Tar. 4,380. सस्पृहम् adv. Mudrâr. 22,21. Çik. 11,19. Vikr. 13,18. Pañkat. 3,6,7. अस्पृह M. 6,96. संपूर्णास्पृहत्वा Sâh. D. 198. — 2) *Neid.* चकार रममाणे च चक्रवाकयुगे स्पृहाम् Mkk. P. 62,10. देवैरेव कृतस्पृहः Kathâs. 54,19. सस्पृहम् Ragh. 13,31. Râga-Tar. 2,170. — 3) *eine best. Pflanze;* s. u. स्पृश 1) *c*). — Vgl. निःस्पृह.

स्पृहावत् (von स्पृहा) adj. *verlangend —, begehrend nach, Wohlgefallen findend an:* वस्तुषु Ragh. 3,5. Mârk. P. 65,7.

स्पृहा (von स्पर्ह्) 1) adj. *begehrenswerth, beneidenswerth;* s. u. स्पृश्य 1) *d*). — 2) m. *Citronenbaum* Çabdar. im ÇKDr.

स्प्रष्टृ (von स्पर्श्) nom. ag. 1) *der da berührt, fühlt* Cat. Bh. 14,7,1, 29. Prâçnop. 4,9. Maitrâyan. 6,11. MBh. 14,619. — 2) *Anfall, Krankheit* AK. 3,3,14.

स्प्रष्टव्य (wie eben) adj. zu *berühren* M. 2,72. R. 4,41,60. Hit. ed. Jones. 1343.

स्फञ्ज m. fehlerhaft für स्फूर्ज; s. नर्मस्फूर्ज in den Nachträgen und vgl. Hall in der Einl. zu Daçar. 22.

स्फट्, स्फैटति (विसरणे) Dhâtup. 9,44, v. l. (शोर्णे) Kavikalpadruma im ÇKDr. — caus. स्फाटयति (हिंसायाम्) Dhâtup. 32,90, v. l. स्फाटित (v. l. स्फुटित) *gesprungen, gespalten* Suçr. 1,301,1. *zerrissen:* ein Gewand Hit. 49,11. Varâh. Bṛh. 2,12. सस्फाटित s. u. पट 2) in den Nachträgen.

स्फट 1) m. und स्फटा f. = फट, फटा *die sogenannte Haube der Schlangen* AK. 1,2,4,9. H. 1313, Schol. — 2) f. ई *Alaun* Râgân. 13,121.

स्फटिक (von स्फट्) 1) m. *Bergkrystall* Montgomery Martin, Eastern India 1,243. Hiouen-thsang 1,482. 2,179. AK. 3,4,4,4. Hall's. 2,21. Râgân. 13, 204. Çvetâçv. Up. 2,11. Jtân. 1,296. चित्रस्फटिकसोपाना MBh. 2,59. 14,1728. घर्कस्फटिकप्रख्य 5,3576. Harîv. 13158. R. 2,30,24. Suçr. 1,28,5. 228,5 (unter den edlen Steinen). °पात्र 240,16. 303,6. 315,7. 2,328,13 (v. l. स्फा°). 336,16. Megh. 52. 63. 77. Ragh. 10,19. 13,69. Spr. (II) 4705. Varâh. Bṛh. S. 4,30. 8,52. 12,5. 20. 34,110. 64, 1. 68,59. काचस्फटिकखण्डाः Kathâs. 24,178. 50,191. स्फटिकापाण्डुरत्विष् 109,42. Verz. d. Oxf. H. 238,*b*,7. 250,*a*,16. Pañkat. 1,7,2. स्फटिकात्तमालिका Kumâras. 5,63. मुद्गस्फटिकमाला Pañkat. 1,4,5. 7,83. °कूर्म्य Kumâras. 6,42. °भित्ति Kir. 5,31. °कुड्य Bhâg. P. 3,15,21. 33,17. 4,9,62. °लौहित्य (vgl. लौक्तिकः स्फटिकः P. 5,3,110, Schol.) Schol. zu Kap. 1,59. °मणि Prab. 15,5. 26,5. स्फटिकाश्मन् Çabdar. bei Wilson; गोक्षीर° (vgl. क्षीर°) Ambar. Up. in Ind. St. 2,37. drei Arten Vâkaspati beim Schol. zu H. 1068. — 2) f. या *Alaun* Bhâvapr. im ÇKDr. *Kampfer* Râgân. 12,61. — Vgl. क्षीर°, ह्व°, तैल°, पिङ्ग°, पीत°, विश्व° und स्फाटिक.

स्फटिकमय (von स्फटिक) adj. (f. ई) *krystallen* Kathâs. 50,191.

स्फटिकयशस् m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 59,10. 66,190.

स्फटिकाचल (स्फटिक + च°) m. *der Berg* Kailâsa H. 1028.

स्फटिकात्मन् m. = स्फटिक Çabdar. im ÇKDr. fehlerhaft für स्फटिकाश्मन् (so Wilson nach derselben Aut.).

स्फटिकाद्रिभिद् m. *Kampfer* Çabdârthak. bei Wilson.

स्फटिकारि f. *Alaun* Ratnâv. im ÇKDr. °कारी, °कारिका ÇKDr. nach Bhâsmâdjaratnâv.

स्फण्ट्, स्फण्टति (विसरणे) Dhâtup. 9,44, v. l. स्फण्टयति und स्फण्ड्, स्फण्डयति (परिक्लेशे) 32,4, v. l.

स्फर्, स्फर्रति (स्फुरणे, Vop. स्फूर्तौ चले) Dhâtup. 28,95. — caus. स्फारयति = स्फोरयति P. 8,4,54. Vop. 18,17. *auseinanderziehen, weit öffnen:* कार्मुकं स्फारयामास *er spannte den Bogen* R. 5,44,4. स्फारित *weit geöffnet, aufgerissen:* Augen Milatîn. 60,12. Spr. (II) 2915. Z. d. d. m. G. 27,27. Dhûrtas. 66,8. *weithin verbreitet:* तेजस् Spr. (II) 1419.

— नि oder निस् s. निष्फार in den Nachträgen.

— परि caus. °स्फारयति *verbreiten* Vikrp. 52.

— वि caus. विस्फारयति *auseinanderziehen, weit öffnen:* einen Bogen (so v. a. *spannen*) MBh. 1,6442. 4,1656. 1853 (विस्फार्य mit der ed. Bomb. zu lesen). 1861. 1918. 2032 (विस्फा° mit der ed. Bomb. zu lesen). 6.1957 (विस्फार्य st. विस्फुर्य mit der ed. Bomb. zu lesen). 2011. 2663 (विस्फा° mit der ed. Bomb. zu lesen). 7,4589. 13,4619. Harîv. 2509. 6892. 11062 (S. 791). 13294. 13345. R. 3,30,28. 34,29. 42,32. 68,48. 5,39,17. 40,4. 6,20,12. 36,70. 79,9. 7,22,19. 28,46. विकृष्टविस्फारितचापमण्डल (= निर्घोषित Mallin.) Kir. 11,31. 17,24. Bhatt. 14,17. *weit aufreissen* (die Augen): क्रोधविस्फारितेक्षण MBh. 3,404. 7,654. 7493. R. 1,54,19. 2,22,1. 5,55,38. 93,18. 7,28,12. विस्फारितसर्वाङ्ग *auseinandergerissen* MBh. 7,4126 nach der Lesart der ed. Bomb. (विस्फुटित ed. Calc.). विस्फारित s. *das Schnellen:* गाण्डीवविस्फारितशब्द MBh. 5,762. धनुर्विस्फारितस्वन R. 3,41,25. — Vgl. विस्फार.

स्फर m. *Schild, scutum* H. 783 (v. l. स्फुट). auch °क m. Schol. H. an. 2,467.

स्फरण (von स्फर्) n. = स्फुरण AK. 3,3,10. H. 1323.

स्फल्, स्फर्लति (चले, स्फूर्तौ) Vop. 28,96, v. l.

— या caus. °स्फालयति 1) *anprallen lassen an, schlagen —, patschen auf:* गजेन गजमास्फाल्य रथेन रथयोधिनम् Harîv. 6223. भूमिम् Kârand. 2,8. आस्फालितं प्रमदाकरायैरम्भः Ragh. 16,13. पयोराशेरोधः प्रलयपवनास्फालितः Uttarar. 93,17 (123,4). जलनिधेरास्फालितो वीचिभिः — मलयाचलः Nâgân. 8. शिलायाम् *schleudern gegen* Pañkat. 93,17. लाङ्गूलम् *mit dem Schweife schlagend* Kathâs. 60,102. धनुः Uttarar. 111,10 (150, 8). — 2) *zerreissen:* वासांसि Bhâg. P. 10,67,15. — Vgl. आस्फाल fg.

— समुद् s. समुत्फाल.

— वि s. विस्फाल.

— सम् caus. *patschen auf* oder *zerschellen:* वृषाणौ Taitt. Âr. 1,26, 3. — Vgl. संस्फाल.

स्फा s. स्फाय्.

स्फाक (von स्फाय्) s. पोव°.

स्फाटक 1) m. *Wassertropfen* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) n. =

स्फाटिक *Bergkrystall* v. l. in Çabdar. nach ÇKDa.

स्फाटि s. विश्व°.

स्फाटिक (von स्फाटिका) 1) adj. (f. घा und ई) *krystallen* MBh. 1,2346. 2396. 2,75. 1661. 1667. 3,11698. 13,5316. Harîv. 12093 (f. घा). R. 3, 61,6. 4,50,29. 5,9,17. 6,106,24. Sucr. 2,324,17. Spr. (II) 2132. Kathâs. 21,10. 50,188. 80,119. °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 85,a,45. fg. स्फटिकमाला Pañkat. 3,15,58. Çâk. 8,34. — 2) f. ई (v. l. स्फाटकी) *Alaun* Râgân. 13,121. — 3) n. a) = स्फाटिक *Bergkrystall* Çabdar. im ÇKDa. MBh. 2,1982 (7). 3,14221. R. 5,10,10. 13,11. 16,25. — b) *eine Sandelart* Âçv. Gṛhj. Paric. 2,3.

स्फाटिकोपल m. = स्फाटिक *Bergkrystall* Taik. 2,9,28.

स्फाटीक n. dass. Çabdar. im ÇKDa.

स्फाणि s. विश्व°.

स्फाति (von स्फाय्) f. = वृद्धि AK. 3,3,9. H. 1502. *Fettmachung, Mastung; Aufzucht:* des Viehs RV. 1,188,9. TS. 1,1,6,2. AV. 2,25,3. 3,24,3. 9,6,33. 19,31,1. s. 9. धान्यस्य 3,26,3. °काम Kauç. 21. सर्वस्फातियुतो गिरिः *das Gedeihen* Çâk. 1,31. — Vgl. गव°.

स्फातिंकरण n. N. eines Sâman (*Gedeihen bewirkend*) Ind. St. 3,246,a.

स्फातिर्मत्स् (von स्फाति) adj. *gedeihlich, feist* AV. 3,24,6.

स्फान (von स्फाय्) s. गव°.

स्फाय्, स्फायते (वृद्धौ) Dhâtup. 14,16. स्फायिष्ट und स्फास्त Vop. 8, 46. 115. partic. स्फात und स्फीत (s. bes.) 26,115. *feist werden, zunehmen überh.:* पस्फाये (P. 6,1,22, Schol.) शास्त्रलाघवम् Bhatt. 14,109.

— caus. स्फावयति P. 7,3,41. Vop. 18,11. *mästen; verstärken, vermehren überh.:* स्वं प्रभावम् Bhatt. 12,76. शक्तीः 17,43. सपिस्फवद्बन्धूनां विक्रमम् 4,33. 15,99. Vgl. स्फावयितृ.

— घा *wachsen, zunehmen:* धास्फायतास्य (धस्फा°?) वीरत्वम् Bhatt. 17,80.

— सम्, partic. संस्फान TS. Pair. 11,16. *feist werdend, sich mästend* AV. 6,79,1; vgl. TS. 3,3,6,2. — Vgl. संस्फीय.

स्फार (von स्फर्) Uṇâdis. 2,13. 1) adj. (f. घा) *ausgedehnt, weit, gross* H. 1430. an. 2,467. Med. r. 97. Viçva bei Uéval. zu Uṇâdis. 2,13. स्वनौ Verz. d. Oxf. H. 355,a,3. पयोधयः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 13. स्फारस्फारिरपाङ्गविलोकितैः Sin. D. 42,16. °फुल्ल *voll aufgeblüht* Milatîm. 81,14. °ज्योत्स्ना Spr. (II) 7254. रत्न Kathâs. 103, 208. पुष्प Verz. d. Oxf. H. 130,a,15. नोस्फार *dicht* Râga-Tar. 3,168. *kräftig, stark:* धारव Z. d. d. m. G. 27,57. उत्कण्ठा 45. संस्कार Kathâs. 7,19. — 2) m. = स्फोरण Vop. 26,174. *Prall, Patsch* (vgl. स्फल्): सो (घडधीर्भूत्यः) ऽज्ञानमपि तस्याङ्गे ज्ञानमोत्यभिमानतः। स्फारं ददौ मौर्ख्यबलात्प्रभोस्त्वचमपाटयत् ॥ Kathâs. 62,170. — 3) *eine Blase im Golde oder in einem Schilde* u. s. w.; m. H. an. Med. n. Viçva a. a. O. — Als n. ohne Angabe der Bed. auch Sidon. K. 249,b,1.

स्फारण n. = स्फारण, स्फुरण Rañk. zu AK. 3,3,10 nach ÇKDa. — Vgl. समस्तस्फारणमुखदर्शन.

स्फारीभू (स्फार + 1. भू) °भवति *sich ausbreiten,* — *vermehren* Mṛicch. 49,6. सौरभम् Spr. (II) 6644. धायट्: 2780. 7347.

स्फार्ण (fehlerhaft) s. विश्व°.

स्फाल m. = स्फोलन Vop. 26,174.

स्फालन (vom caus. von स्फल्) n. *das Aufschlagen:* हस्त° *das Schlagen auf Kivas mit der Hand* Kull. zu M. 8,25.

स्फावयितृ (vom caus. von स्फाय्) nom. sg. *Mäster:* गवाम् Âpast. Ba. 1,13.

स्फिकस्राव (स्फिक् + स्राव) m. *eine best. Krankheit* Vaṇîs. Bṛh. S. 69,28.

स्फिगी f. = स्फिक् RV. 3,32,11. 8,4,3. Çat. Br. 12,7,2,7.

स्फिगघातक (स्फिक् + घा°) m. *ein best. Baum,* = कट्फल Çabdar. im ÇKDa.

स्फिच् s. स्फिक्.

स्फिज् gaṇa कर्णादि zu P. 4,2,80. v. l. im gaṇa वेतनादि zu 4,12. f. Siddh. K. 248,a,8. *Hinterbacken, Hüfte* H. 609. Halâj. 2,253. Çâśvat. Gṛhj. 3,11. Jîvân. 3,27. Vaṇîs. Bṛh. S. 70,20. चारु° adj. Kâraka 3,3. स्फिच् AK. 2, 6,3,26 (nach dem Schol. zu Kâç. Ça. 6,7,6 स्फिजौ). स्फिचं वास्यावकर्तयेत् M. 8,281. MBh. 2,712. 3,10475. कर्षति स्फिचौ 8,1853. Sucr. 1,221,6 (Hdschr. स्फिज्). Mârk. P. 11,3. unbestimmt ob स्फिच् oder स्फिज् MBh. 1,5929. 7,7897. Harîv. 2231. 12364. R. 5,5,26. Sucr. 1,49,2. 66,15. 86,12. 269,13. 2,92,11. Milatîm. 78,16. Vaṇîs. Bṛh. S. 51,8. 52,3. 53,33. 61,10. 68,17. — Vgl. बृहत्°, स्फेजापनि, स्फैजिक.

स्फिञ्ज in नर्म° Daçar. 2,44. 47 wohl nur fehlerhaft für °स्फूर्ज: vgl. स्फञ्ज.

स्फिट्, स्फेटयति (क्षेपणे, वृत्याम्) Dhâtup. 32,86, v. l. (अनादरे) 87, v. l. (हिंसायाम्) 90, v. l. — Vgl. संस्फेट.

स्फिट्, स्फिटयति (हिंसायाम्) Dhâtup. 32,90.

स्फिर् (von स्फाय्) Uṇâdis. 1,54. adj. P. 6,4,157. Vop. 7,56. *feist:* उदर RV. 8,1,23. *reichlich, viel* AK. 3,2,13. H. 1426. — Vgl. धृति°, स्फेमन्, स्फेयस्, स्फेष्ठ.

स्फीत (partic. von स्फाय्) P. 6,1,22. Vop. 26,115. adj. *in gedeihlichem Zustande befindlich, wohlhabend, reich, blühend:* Gegend, Land, Reich, Haus MBh. 1,2357. 3,16123. 4,139. 13,2142. Harîv. 1089. 6916. R. 1, 1,3. 26,17. 2,49,12. 52,58. 83,4. 3,61,7. 27. 4,43,5. 5,16,7. Vaṇîs. Bṛh. S. 5,46. Kathâs. 18,53. 54,98. Buâc. P. 1,6,11. कुल Jîvân. 1,54. R. 4,28,18. Buâc. P. 3,4,29. काष्टकिटुमाः Spr. (II) 1736. शास्त्राणि P. 1, 3,23, Schol. *dem es wohlergeht* Kâm. Nîtis. 10,27. 18,18. Vaṇîs. Bṛh. S. 5,46. 69,32. Kathâs. 27,12. Spr. (II) 2936. धन्योधर *voll, regenschwanger* Mṛicch. 85,4. धूम्या *dicht* Milatîm. 75,21. *reichlich, im Ueberfluss vorhanden:* श्री R. Gorr. 2,1,14. 5,75,15. 6,98,41. Râga-Tar. 1, 239. शीलनिधि MBh. 3,2992. स्फीतमध्यपरिपेलवं फलम् Vaṇîs. Bṛh. S. 94,3. Kathâs. 18,377. Râga-Tar. 1,201. आलोक Sarvadarçanas. 63,3. यत्न (wir lesen स्फीतं st. स्फीतः) Pañkat. 1,3,60. परिवर्ह Daçar. 61,3. उत्सवाः MBh. 2,810. गुणाः 7,1489. R. 4,27,13. Spr. (II) 7324. यशस् MBh. 1,3757. 3,10273. Buâc. P. 3,22,13. 4,21,7. शुभं कर्म Spr. (II) 6495. *reichlich gesegnet mit, voll von* (instr. oder im comp. vorangehend): धान्यैर्बहुभिः MBh. 13,6288. रक्त° Prab. 85,13. द्राक्षा° Râga-Tar. 4, 192. मधु° Kathâs. 71,197. बहुलधर्मचरण° 78,7. रस° Ver. in LA. (III) 1,9.

स्फीतता (von स्फीत) f. *ein gedeihlicher Zustand, das Wohlergehen* Kâm. Nîtis. 8,11. P. 1,3,38, Schol.

स्फोति (von स्फाय्) & dass. Riéa-Tar. 3,22.

स्फोतीकर् (स्फोत + 1. कर्) vermehren, verstärken: येन °कृतो नदः R. 2,65,26.

स्फुजिध्वज m. N. pr. eines Astronomen Utpala zu Varâh. Bṛh. 7,9. 12,1.

स्फुर्, स्फुर्रति (विकसने) Dhâtup. 28,80. स्फोरति (विसरणे, विशरणे) 9,44. °ते (विकसने) 8,7. zu belegen nur स्फुरति und स्फोटति (zucken); पुस्फोट, अस्फोटीत्, स्फुटिष्यति. 1) *platzen* (mit einem Geräusch), *aufspringen, reissen, sich spalten:* यदि पुरोडाशः स्फुरेद्वात्पतेत वा Âçv. Çr. 3,14,12. वंशः Kâç. 93. 133. Çat. Br. 9,1,2,9 (स्फोटत्). पृथिवी, दैवतप्रतिमाः Sârdv. Bh. in Ind. St. 1,40. fg. अस्फुरन्मुकुटं राज्ञः MBh. 1,6392. शतधा मूर्धा ते स्फुटिष्यति MBh. 1,2023. 14,154. R. 4,46,12. Kathâs. 75, 168. 79,46. 94,128. (तस्याः) कराभ्यां राजपुत्रस्य ततस्तच्चनुरस्फुरत् Harîv. 1154. हृदयानि Çâk. 1,302,4. स्फुरति सकलदेहे कीलसग्रन्थिसंधिः Dhûrtas. 95, 13. स्फुरत्कपालनेत्रास्यि° Mârk. P. 12, 26. 21, 26. Prab. 116,2 (°स्फुरदुत्कटास्थि zu lesen). नेदानीं हृदयं चेन्मे स्फुटिष्यति सहस्रधा R. Gorr. 2,81,4. 6,95,40 (स्फोटति). Uttarar. 60,3 (77,15). Spr. (II) 7252. Kathâs. 5,100. 10,62. 21,94. 34,19. 41, 57. 86,168. 106, 99. हृदये स्फुटित्वा मरिष्यसि Ver. in LA. (III) 12,9. 10. स्फुटदिदं चेतः Gîr. 7,30. मनो मे न पतत्युस्फोट सहस्रधा Bhatt. 14,56. स्फुटेयुरपि पर्वताः MBh. 10,232. 8,2797. Verz. d. Oxf. H. 257,a,16. येनाण्डकटाहमस्फुरत् Bâlar. P. 7,8,16. Pañkân. 4,3,67. प्राणो ऽस्फोटोद्भटोरसि Bhatt. 15,77. रविमण्डलम् 17,9. — 2) *aufspringen* so v. a. *aufblühen:* स्फुरति कुमुदनिकरे Gîr. 5, 2. Spr. (II) 1411. Kirâd. 3, 167. Bâlar. P. 10,13,5. — 3) *auseinanderstieben:* तुरंगाः पुस्फुरुर्भीताः Bhatt. 14,6. 10,8. — 4) *knacken:* तस्य चेदङ्गुलय ध्मायम्यमाना न स्फुरेयुः Kârâka 5,3. *knistern* vom Feuer Vishn. 1,7,13. Âp. 1,25. — 5) *hervorbrechen, plötzlich erscheinen:* स्फुरत्यर्थो यस्मात्स स्फोटः Verz. d. Oxf. H. 177,b,N. 2. — 6) *vergehen, sich legen* (von einer Krankheit): गुल्मः स्वपमस्फुरत् Kathâs. 15,16. भयाच्छोकाभिघाताद्वा रोगो राज्ञः कदाचन । स्फुरेदयम् 17,28. पुस्फोट हृदव्याधिः 42. — 7) partic. स्फुरित *a) geplatzt, gesprungen, aufgerissen, rissig:* मांसपिण्ड Harîv. 1130. हृदयं सहस्रधा R. 4,19,15. 5,15,28. Mṛicch. 51,21. Kathâs. 2,43. 80,165. °कारचरण Çâk. 1,333,1. 182,7. 253,18. 301,1 (v. l. स्फाटित). 12. ह्रद Harîv. 15892 (स्फुरित die neuere Ausg.). Varâh. Bṛh. S. 50,4. 4,29. पद् 49,7. 71,2. करतल 68,41. ओष्ठ 52. स्फुरितात्मा: Haare 82. 87. 61,14. Kim. Nîtis. 15,10. Z. d. d. m. G. 27,65. Râéa-Tar. 3,181. Pañkat. 104,15. अस्फुरिता शय्या VP. 3,11,107. सुधाद्रवानुलेप Mṛicch. 92,6. गात्र्यानां स्फुरितायतम् Vishn. 1,7,10. Körner Bhâvapr. 8. — *b) aufgerissen* so v. a. *weit geöffnet:* नासिका Çâk. 1,115, 8. स्फुरितात Mbh. 1,8218. Pañkat. 98,1. °नयन 254,24. *aufgeblüht* H. 1128. Mudr. 32.

— caus. स्फोटयति (स्फुरय् s. bes.) 1) *sprengen, spalten* (भेदने) Dhâtup. 33,48. तलघोषेण पर्वतान् MBh. 5,5778. कायेन पञ्जरम् Harîv. 10268. कपालं काष्ठेन Kathâs. 25,103. उपलान् Râéa-Tar. 6,248. उदरम् Pañkat. 87,7. 42,10. अर्धस्फोटित (स्तम्भ) Pañkat. ed. orn. 6,3,7. काष्ठकूटचञ्चा स्फोटितनयनः *ausgestochen* Pañkat. 81,31. fg. — 2) *schütteln, rasch hinundher bewegen:* भुजान् Harîv. 2445. 16020. लाङ्गूलम् R. 6,2,19. अङ्गुलीः Çâk. 2,245,3. जिह्वाम् Vârâh. Bṛh. S. 31,22. अङ्गम् Sin. D. 59,20. परस्पराम् Harîv. 14853. Hierher oder zu या caus.: तथैवास्फोटयंस्तलान् MBh. 10,467. विक्रोड्यास्फोटयद्बाहू Harîv. 3684. — 3) *wegschieben:* मञ्जूषा स्फोटितार्गला Kathâs. 4,80. — 4) *knistern:* उल्काः MBh. 9,3127. स्फोटित (oder या°) n. *Geknister* Vârâh. Bṛh. S. 33,23.

— या caus. यास्फोटयति 1) *spalten, zermalmen:* ततस्तां विकृतिं मत्वा क्रोधादाकृष्य स तिती । यास्फोटयिष्यन्नयाक् पदे Kathâs. 25,160. 52, 128. 121,28. — 2) *schütteln, rasch hinundher bewegen:* बाहू MBh. 3, 1730. लाङ्गूलम् 11139. गात्राणि Ver. in LA. (III) 25,14. ohne Ergänzung *die Arme schütteln* M. 4,64. MBh. 3,11130. 12379. 6,5884. 7, 8181. 12,9217. R. 5,38,28. 6,15,18. 37,40. Suçr. 2,542,3. Journ. of the Am. Or. S. 7,45,5. Bulc. P. 10,16,6. 36,8. Bhatt. 13,38. nach den Erklärern *mit der Hand auf den Arm schlagen:* यास्फोटित n. *das Schütteln:* बाह्वोः Hvariv. 4682. सटाक्षास्फोटित (oder स्फोटित) Verz. d. Oxf. H. 257,a,14. *das Schütteln der Arme* MBh. 1,2220. 3,11132. 6, 3869. R. 5,38,29. 83,5. 6,17,32. 35,2. 37,43. — Vgl. यास्फोट fgg.

— परि *aufspringen, bersten* Suçr. 1,291,14. fg.

— प्र dass.: नागानां प्रास्फुरन्कुम्भाः MBh. 8,885. हृदयं प्रस्फुटिष्यति R. 6,72,55. Comm. zu Prab. 90,11. शमलगिरिसमूहाः (so zu lesen) Hara. Anth. 469,2. — caus. प्रस्फोटयति 1) *spalten* Harîv. 13894. Kathâs. 25,273. — 2) *die Arme schütteln* MBh. 4,2100. — Vgl. प्रस्फुर fgg.

— वि *platzen, aufspringen:* हृदयं विस्फुटिष्यति R. 6,39,31. Mârk. P. 12,26. विस्फुटितसर्वाङ्ग MBh. 7,4126. — Vgl. विस्फुर. विस्फोट fgg.

— सम् s. संस्फुर, संस्फोट.

स्फुर (von स्फुर् 1) adj. (f. रा) *a) offen:* स्रोतस् Suçr. 1,190,19. 2,210, 2. निर्गम Bâlar. P. 3,15,28. *aufgeblüht* AK. 2,4,2,7. H. 1128. an. 2,100. Med. t. 29. MBh. 8,4704. Uttarar. 63,7 (81,5). Khandom. 31. — *b) offen vor Augen liegend, für die Sinne offen, offenbar, deutlich, verständlich, vernehmlich, klar* (häufig °म् adv.) AK. 3,2,31. H. 1467. H. an. Med. Hall. 4,67. 5,51. कोलाक्ल R. 6,8,45. ते शस्त्रयाकृका ब्रूयुः प्रयुक्ताः स्म इति स्फुरम् Kim. Nîtis. 6,12. Mudr. 71. Çiç. 9,79. Kir. 11,44. Spr. (II) 1293. 1409. 1445. 3335. 3375. 3786. 5472. 5966. 6574. 6644. 7017. 7253. Bhar. Nâṭyaç. 34,114. Varâh. Bṛh. S. 3,40. 6,13. 9,45. 101,12. Kathâs. 2,68. 7,6. 16,121. 21,148. 30,14. 36,34. 43,21. 188. 44,21. 45,368. 52,143. Mân. P. 24,26. 70,2. 101,18. Kâvyâd. 12. Daçân. 3, 69. Sin. D. 3,22. 59,11. 310,11. 54. Prab. 81,13. 101,9. Riéa-Tar. 3, 178. 4,486. 6,117. 237. Bâlar. P. 3,22,22. 5,3,4. 20,29. Verz. d. Oxf. H. 110,a,5 v. u. 173,b, No. 389. 256,a,25. Pañkat. 167,15. Sarvadarçanas. 32,11. 117,6. 143,8. fgg. Nalod. 2,41. स्फु°, adj. und adv. (म्) AK. 1,1,9,3. 3,1,27. H. 266. 349. H. ç. 91. Kathâs. 64,128. Bâlar. P. 8,12. 22. Sarvadarçanas. 143,8. — *c)* bei den Mathematikern *genau, correct, wirklich* (Gegens. मध्यम, मध्य; vgl. स्पष्ट) Weber, Gjot. 88. 96. 100. Sûrjas. 1,60. Varâh. Bṛh. S. 3,25. 12,14. Âryabh. 3,22. fgg. Comm. zu 21. fgg. Gaṇit. Kâṇḍaka. 14. 23. Spashṭâdh. 30. 45. Goḷâdh. Khaṇḍak. 42. Madhyag. 25. Golabandh. 25. Grahaṇ. 24. 29. 39. Jantrâdh. 16. Verz. d. Cambr. H. 41. 47. 49. Colebr. Misc. Ess. 2,325. 393. 406. 456. Z. f. d. K. d. M. 4,310. — *d) ausgedehnt, weit, umfangreich;* = व्याप्त H. an. Med. Kaṇḍas. 1,45. 7,73. स्फुरोज्ज्वलचन्द्रिका Spr. (II) 494. — *e) aussergewöhnlich, absonderlich* Kirâd. 1,47 (= विकट Comm.). — *f) weise* H. an. Âgama im ÇKDa. — 2) m. *a)* = स्फट, पट *die sogenannte*

Haube der Schlangen H. 1315; vgl. 3). — *b*) N. pr. eines Mannes गण gaṇa घनादि zu P. 4,1,110. — 3) f. या = 2) *a*) Spr. (II) 2832, v. l. 3770. — Vgl. परि°, स्फोटायन.

स्फुटता (von स्फुट) f. 1) *Deutlichkeit, das Offenbarsein* Kir. 2,27. Sin. D. 116,7. स्फुटतां गम् *offenbar werden* Bhatt. 10,8. — 2) bei den Mathematikern *Genauigkeit, Correctheit, Wirklichkeit:* घ° Goḷâdh. Go-lasvar. 3.

स्फुटत्व n. 1: *das Offenstehen* Sṛṅg. 1,319,2. — 2) = स्फुटता 1) Sin. D. 5,8. Sarvadarçanas. 163,4. घ° Çaṅk. zu Kâṭhak. Up. S. 47. — 3) = स्फुटता 2) Ganit. Grahaṇân. 13, Comm.

स्फुटन (von स्फुट्) n. 1) *das Platzen, Bersten* AK. 3,3,3. H. 1488. Med. d. 43. Ind. St. 1,41. der Haut Viṣṇu. 1,11,22. कृत् ° Çâṅk. 14,274. — 2) *das Knacken* (der Gelenke) Kâraka 1,17.

स्फुटफल m. = तुम्बुरु Râǵân. 11,133.

स्फुटबन्धनी f. v. l. für स्फुटवल्कली Ratnam. im ÇKDr.

स्फुटय् (von स्फुट), °यति (विस्फुरणे) Dhâtup. 35,84, *k. deutlich* —, *offenbar machen* LA. (III) 89,11. Koll. zu M. 2,127. स्फुटयते Sarvadarçanas. 141,3.

स्फुटरङ्गिणी f. *Cardiospermum Halicacabum Lin.* Ratnam. 22.

स्फुटवल्कली f. dass. Ratnam. im ÇKDr. und bei Wilson. Spr. (II) 3716 (Conj.). — Vgl. स्फुटबन्धनी.

स्फुटसिद्धान्त m. Titel *eines astronomischen Lehrbuchs* Colebr. Misc. Ess. 2,391. — Vgl. ब्रह्म°.

स्फुटार्थ (स्फुट + अर्थ) m. *der deutliche, offenbare Sinn* Schol. zu Çiç. 41. Titel eines Commentars (wohl adj. comp. *dessen Sinn klar ist*) Burnouf, Intr. 563.

स्फुटि (von स्फुट्) f. 1) *Blasen an den Füssen* Trik. 3,3,105. H. an. 2,101. Med. f. 29. fg. स्फुटी Çabdar. im ÇKDr. — 2) *eine best. Cucurbitacee* Trik. H. an. Med. Hin. 126. स्फुटी Çabdar. im ÇKDr.

स्फुटिका f. etwa *ein abgesprungenes Stückchen:* कर्पूर° Daçak. 92,5.

स्फुटीकर् (स्फुट + 1. कर्) *deutlich* —, *klar machen* Comm. zu TS. Prât. 9,8. 13,15. Verz. d. Oxf. H. 141,*b*,2.

स्फुटीकरण (von स्फुटीकर्) n. 1) *das Verdeutlichen, Klarmachen* Verz. d. Oxf. H. 173,*b*,1 v. u. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 289. — 2) bei den Mathematikern *Correction* Sûrjas. 2,14.

स्फुटीभू (स्फुट + 1. भू), °भवति *offenbar* —, *deutlich* —, *klar werden* Naish. 12,86. Verz. d. Oxf. H. 222,*a*,9 v. u. Sarvadarçanas. 141,4.

स्फुड्, स्फुडयति (घनादौ) Kavikalpadruma im ÇKDr.

स्फुड्, स्फुडति (संवरणे) Dhâtup. 28,97.

स्फुण्ड्, स्फुण्टति (विसरणे) Dhâtup. 9,44. स्फुण्टयति (परिक्लासे) 32,4, v. l.

स्फुण्ड्, स्फुण्डते (विक्रमने) Dhâtup. 8,25. स्फुण्डयति (परिक्लासे) 32,4.

स्फुर्, स्फुरति Naigh. 2,19 (वधकर्मन्). Dhâtup. 28,98 (स्फुरणे, संचलने). 1) *schnellen* (trans.): यो गा पदा स्फुरति *treten* AV. 13,1,36. मर्तं पदा तुर्ममिव स्फुरत् RV. 1,84,3. यो रौक्मेणमस्फुरद्बर्हिराज्ञः 2,12,12. — 2) *schnellen* (intrans.): उपरि स्फुरन्ति Würfel RV. 10,34,9. स्फुरता धनुषा MBh. 1,7022. स्फुरद्भिः शरैः Harîv. 13505. स्फुरदतिमुक्तलता Gît. 1, 23. Çiç. 8,64. 9,47. *zucken, zittern:* das Auge Kâuç. 38. Mṛṅk. 143,14. Mâlatîm. 5,5. Kathâs. 22,106. स्फुरदोष्ठो MBh. 3,1867. बाहुः 7,1565. R. 3,30,7. बाणनिकृत्तानि शिरांसि 31,21. Sṛṅg. 1,321,6. 2,376,19. Râm. 12,90. Çiç. 15. Gît. 10,2. Spr. (II) 2223. Kathâs. 49,130. स्फुरदोष्ठक H. 298. स्फुरत्तरंगजिह्वा Râǵa-Tar. 5,102. Buic. P. 1,14,11. स्फुरत्पटाकेसर 7,8,20. Bhatt. 1,27 (पुस्फोर). ब्रह्मपुर्यं स्फुरत्पृथिव्यां कृपणं स्फुरत्तम् *sich windend* R. 3,57,24. 58,1. 4,5,3. घस्फुरत्परे रोषात् 5,63, 10. Spr. (II) 4418. Buic. P. 2,7,14. 7,8,29. पुस्फुर्वृषभाः Bhatt. 14,6. स्फुरन्मीना (भू) *zappelnd* Râǵa-Tar. 3,94. med.: स्फुरते नयनं सव्यम् Harîv. 9298. कस्य वा स्फुरते जिह्वा स्तुतो 14902. स्फुरमाणोष्ठ R. 3,57, 26. 62, 33. 5,73,17. pass. impers.: सवामैः पुस्फुरे दैवैः Bhatt. 14,14. — 3) (von einer *zitternden* Lichterscheinung) *blinken, funkeln:* स्फुरातचक्रमिव Maitrâyaṇ. 6,24. विद्युत् R. 4,22,23. 27,6. Mṛṅk. 91,21. Z. d. d. m. G. 27, 32. 86. स्फुरत्प्रभामण्डल Raghu. 3,60. 5,51. 14,14. Kumâras. 1,24. स्फुरत्कान्तिखड्गासु Kâm. Nîtis. 13,14. R. 7,22,35. अग्निः Ṛt. 1,25, v. l. 26. Kumâras. 3,71. Mond Raghu. 7,61. Gold Çaut. 39. स्फुरता रागेण मणेः Vikr. 136. Çiç. 9,25. Gît. 10,6. Spr. (II) 1419. 1445. 2244. प्रदीपः 2303. 2545. 4772. 7106. 7254. Kathâs. 21,55. Nâgân. 22, 88. 25,238. 37,87. 54,127. 81,17. 109,10. 123,208. Prasan. 26,7. Buic. P. 1,12,3. 2,2,3. 3,14,49. 17,17. 4,24,48. 28,41. 6,4,38. 16,30. 8,10, 14. 15,9. 20,32. Pañcat. 1,4,56. 3,5,9. 11,19. 4,6,2. Verz. d. Oxf. H. 127,*b*, No. 228. 128,*a*,7. 242,*a*, No. 593. fgg. 332,*b*,13. Bhatt. 1,6. 3, 24. — 4) *plötzlich erscheinen, hervorbrechen, zum Vorschein kommen, offenbar werden* (von Körperlichem und Unkörperlichem): माया Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,144. यस्मिँल्लोकाः स्फुरन्तीमे ह्रदे शकुनयो यथा MBh. 12,1633. स्फुरति प्रमोदे Vikr. 153. Çiç. 9,75. दृष्टिमोषे प्रदोषे स्फुरति Gît. 11,1. Asaṭîv. 3,3. घनतत्त्वेषणा 18,72. Spr. (II) 415. 776. मुखात्स्फुरन्ती दंष्ट्राम् 1073. स्फुरद्गन्धः 1098. 1147. 1229. 1358. 1986. 2264. 2705. धर्मतः स्फुरति निर्मलं यशः 3093. 3780. 4282, v. l. 4289. 4463. 4786. 5857. 5914. 6039. 6190. 6193. 6420. 6681, v. l. 6739. Z. d. d. m. G. 27,25. 56. 62. 91. Râǵa-Tar. 8,272. Prasan. 11,16. 21,19. 48,13. 67, 2. 81,5. 117,2. Daçak. 67,1 (मा स्फु° zu schreiben). 94,14. Vet. in LA. (III) 30,6. Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,11. 145,*a*,12. Nilak. 231. Sin. D. 31, 15. Pratâpar. 12,*a*,4. Sarvadarçanas. 103,4. Kusum. 24,19. — 5) *glänzen* so v. a. *Aufsehen erregen:* Personen Râǵa-Tar. 6,251. 8,884. 733. गुणाः Kathâs. 74,217. दधे नातिस्फुरद्वपुः Mâlav. P. 105,27. — 6) partic. स्फुरित *a) zuckend, zitternd:* कोपस्फुरिताधर Kumâras. 3,9. Spr. (II) 3350. Vasiṅ. Bṛh. S. 32,5. Kathâs. 71,266. Mâlav. P. 74,33. Buic. P. 3,1,14. 4,8,15. Pañcat. 64,15. Çiç. 7,56. neutr. *das Zucken, Zittern:* der Lippen Kumâras. 7,18 (pl.). Çâk. Cr. 63,3. शफरी° *das Zappeln* Spr. (II) 4496. — *b) blinkend, funkelnd* Harîv. 15700. 15892 (nach der Lesart der neueren Ausg.). रुचि Megh. 15. तडित् 75. Vasiṅ. Bṛh. S. 24,12. Spr. (II) 2401. त्विष् Raghu. 4,75. Mâlav. 47. Mâlatîm. 40,10. Kathâs. 22,6. Buic. P. 4,9,2. impers.: ह्यभीतैः स्फुरितम् Z. d. d. m. G. 27,46. उडुभिः Naish. 2,30. neutr. *das Blinken, Funkeln:* मरकाश्मनि° MBh. 1,1338. Z. d. d. m. G. 27,25. Spr. (II) 6860. शशिनः 7527. — *c) plötzlich erschienen, zum Vorschein gekommen* Spr. (II) 5560. Kathâs. 21,8. Sarvadarçanas. 100,22. neutr. *das Erscheinen:* तृणभङ्गिनि स्फुरिते ज्ञातूनाम् Râǵa-Tar. 1,23.

— caus. 1) स्फोरयति = स्फारयति P. 6,1,54. Vop. 18,17. *ausein-*

anderziehen, spannen (vgl. स्फुर् caus.): धनुश्चापुस्फुरत् Bhaṭṭ. 15,89. — 2) स्फुरयति *erfüllen:* सर्वनगरं दैर्गन्धेन स्फुरयिष्यति (पूरयिष्यति?) Lalit. ed. Calc. 165,8.

— धनु *hinschnellen* RV. 6,67,11. — Vgl. धनुस्फुर.

— अप *wegschnellen, sich rasch entziehen:* नार्य स्फुरो: पर्वसा RV. 6, 61,14. — Vgl. अपस्फुर, धनपस्फुर fgg.

— व्यप med. *zerreissen* (intrans.) Schol. zu Kāṭy. Çr. 5,3,34. — Vgl. व्यपस्फुरण.

— अव *wegschleudern* Nir. 5,17.

— नि, der Anlaut kann in ष übergehen nach P. 8,3,76. Vop. 8,98. 13,6.

— निस् desgl. ebend. *wegschleudern:* वज्रमस्फुरन्निः RV. 2,11,9. 8,3,19.

— परि 1) *zappeln, sich rasch hinundher bewegen:* परिस्फुरन्मीनविघट्टित Kir. 8,48. partic. °स्फुरित *zuckend* (vom Kinde im Mutterleibe) Uttarar. 36,4 (72,10). — 2) *weithin blinken, — funkeln* Bhāg. P. 2,9,11. 3,8,27. 5,25,4. — 3) *erscheinen, hervorbrechen, zum Vorschein kommen* Verz. d. Oxf. H. 146,b,5. Kull. zu M. 8,93.

— प्र 1) *wegschnellen, wegstossen:* प्रेतं पादौ प्र स्फुरतम् AV. 1,27,4. Pāṇ. Gṛ. 6,9,22. — 2) *schüttern, zucken, erzittern:* यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातः RV. 7,89,2. धनुः प्रस्फुरतीव MBh. 6,3202. क्रोधेन प्रस्फुरन्निव Harīv. 15206. Kāraṇḍ. 8,8 (von einem Epileptischen). जिह्वा प्रस्फुरतीव Harīv. 15676. प्रास्फुरन्नयनम् MBh. 7,8329. R. 6,75,36. Kathās. 67,68. प्रस्फुरमाणोष्ठ MBh. 3,1941. 8,4764. Harīv. 13408. R. 2,96,42 (103,41 Gorr.). R. Gorr. 2,30,1. 3,66,20. Māṇ. P. 77,28. प्रस्फुरित *zuckend, zitternd:* प्रस्फुरिताधर MBh. 1,5426. 3,11498. 8, 602. Harīv. 7065. Spr. (II) 7283. Kathās. 20,50. Bhāg. P. 4,18,1. 7,5, 28. Pañcat. 220,1. — 3) *blinken, funkeln* Harīv. 13894 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Kathās. 73,240. Prab. 81,16. Pañcat. 3,8,2. — 4) *erscheinen, auftreten, zum Vorschein kommen, zu Tage treten:* प्रस्फुरत्तिमिरलेख° Vāmān. Bhāṣ. S. 12,3. संस्थितस्य गुणोत्कर्षः प्रायः प्रस्फुरति स्फुटम् Spr. (II) 6644. Kuvalay. 2,b. किंचित्स्वकोपमिति प्रस्फुरितेन *weil dieses zu Tage getreten ist* Verz. d. Oxf. H. 133,b,10. — 5) *glänzen* so v. a. *Aufsehen erregen:* एतेन तु बलेनाद्यौ प्रास्फुरन्नयसत्तमः Harīv. 15083.

— प्रति *dagegen stossen, — treten* u. s. w. RV. 4,3,14.

— वि, der Anlaut geht in ष über Taitt. Prāt. 6,13. kann in ष übergehen P. 8,3,76. Vop. 8,98. 1) *auseinanderschnellen* Nir. 9,40. RV. 6,75,4. Çat. Br. 14,1,1,9. *zucken, zittern:* चापमण्डलं विस्फुरत् MBh. 7,1639. चापं विस्फुरतीव मे R. 3,30,5. तत्कबन्धं पपातास्य विस्फुरद्वरणीतले MBh. 1, 1163. विस्फुरद्भुविटप Bhāg. P. 3,2,18. *sich rasch hinundher bewegen, sich winden* MBh. 1,2036. 4873. 5001. 6288. 4,773. 10,356. 361. 752 (ed. Calc. an den letzten drei Stellen mit ष). Harīv. 307. R. Gorr. 1,47,18. 3,25,17. 7,80, 16. Bhāg. P. 10,81,27. Bhaṭṭ. 9,75. विस्फुरित *zuckend, zitternd:* क्रोधविस्फुरितेक्षण R. Gorr. 1,55,19. विस्फुरिताधर Bhāg. P. 6,5,35. Verz. d. Oxf. H. 116,b,29. — 2) *blinken, funkeln:* विस्फुरद्दंष्ट्र MBh. 12,4271. विस्फुरत्कनकच्छाय Kathās. 3,28. 26,233. 73,64. Bhāg. P. 3,15,40. 28, 29. तडित् 4,10,22. विस्फुरितशस्त्र *blinkend* Uttarar. 91,7 (117,10). — 3) *erscheinen, hervorbrechen, zum Vorschein kommen:* मरुति विस्फुरति Spr. (II) 6067. दिव्यौषधीनां बल्यः प्रभेदा वृन्दारकाणामिव विस्फुरन्ति Çiç. Sāṁ. 1,1,4. — विस्फुर्य MBh. 6,1987 fehlerhaft für विस्फार्य (so ed. Bomb.). विस्फूर्य 3,13639 für विस्फूर्ज्य. Vgl. विष्फुर.

— सम् 1) med. *zusammenstossen:* सभा वा वृषणौ वा Çat. Br. 13, 3,8,7. TBr. 3,8,21,1. — 2) *funkeln* Maitrāyaṇ. 6,35.

स्फुर (von स्फुर्) 1) adj. *zitternd, schwingend:* गाण्डीवस्फुरगुण Spr. (II) 5295. — 2) m. a) *das Zucken* Comm. zu AK. 3,3,10. स° adj. *zuckend* so v. a. *lebend* Bhaṭṭ. 15,100. — b) = स्फार *Schild (scutum)* H. 783, v. l. an. 2,263 (vgl. Corrigg.)

स्फुरण (wie oben) 1) adj. *blinkend, funkelnd* Vāmān. Bhāṣ. S. 4,29. 12, 19. — 2) n. nom. act. Dhātup. 28,93. = स्फारण AK. 3,3,10 (auch f. आ nach dem Comm.). H. 1523. a) *das Zucken:* der Glieder Māṇ. P. 51,15. Schol. zu Çiç. 15. Sūçr. 1,49,19. 156,17. 251,12. योनेः *pruritus* 321,17. गर्भ° 376,2. 2,351,6. einer Wunde 2,4. — b) *das Blinken, Funkeln:* विद्युद्दाम° Megh. 28. Milaviṁ. 143,3. — c) *das Erscheinen, Zutagetreten, Offenbarwerden* Amṛtān. 20,5. Sāh. D. 295,11. 13. 320, 11. fg. सत्वार्थ° (so richtig) Verz. d. Oxf. H. 91,b,16. द्रव्य° Bhāg. P. 3, 26,39. बुद्धि° Pañcat. 42,6 (ed. orn. 38,2). Sarvadarçanas. 100,18. शब्दस्य Prātiṣ. 7,a,9. धर्य° b,2. उभय° 8. अलक्ष्य° adj. Amṛtān. 16, 70. प्रुढ° 71.

स्फुरिका f. s. u. फुरिका 2).

स्फुरित s. u. स्फुर्. davon °त्व n. *das Erscheinen, Vorkommen* Comm. zu TS. Prāt. 2,35.

स्फुर्ज् s. स्फूर्ज्.

स्फुल्, स्फुर्लति Naigh. 2,19 (वधकर्मन्). Dhātup. 28,96 (संचलने, चलने, संचये, स्फूर्ती). स्फुलित *erschienen, zu Tage getreten:* कर्णाभ्यर्णस्फुलितपलित Bilh. 87,15. Vgl. स्फुर्. Nach नि, निस् und वि kann der Anlaut in ष übergehen nach P. 8,3,76. Vop. 8,98. 13,6.

— वि *sich hinundher bewegen* Bhaṭṭ. 9,76.

स्फुल m. *Zelt* Çabdar. im ÇKDr.

स्फुलन n. = स्फुरण Nīlak. zu AK. 3,3,10 nach ÇKDr.

स्फुलमञ्जरी f. *Achyranthes aspera* Ratnam. 40.

स्फुलिङ्ग (von स्फुल् = स्फुर्) m. f. (आ) und n. Taik. 3,5,22. *Funke* AK. 1,1,4,53. m. H. 1103. Hālā. 1,67. MBh. 5,1862. Vikr. 125. Prab. 36,12. 75,6. स्फुलिङ्गावस्था Çiç. 174. स° *Funken sprühend* MBh. 2, 903. R. 3,34,6. — Vgl. विष्फुलिङ्ग, विस्फुलिङ्गक.

स्फुलिङ्गक m. dass. Jāṭ. 3,67. Bhāg. P. 11,29,14.

स्फुलिङ्गाय् (von स्फुलिङ्ग), °यते *Funken gleichen, wie Funken brennen:* मलयजालेपः Spr. (II) 1081. 2246.

स्फुलिङ्गिनी (wie oben) f. Bez. *einer der sieben Zungen des Feuers* Gaṇiṁ. im ÇKDr. Mund. Up. 1,2,4. Māṇ. P. 99,37. स्फुल्लिङ्गिनी Gobhar. 1,14.

स्फूर्ज्, स्फूर्जति (विस्पष्टौ, विस्तृतौ) Dhātup. 7,33.

स्फूर्ज् (स्फुर्ज्), स्फूर्जति (वज्रनिष्पेषे, वज्रनिर्घोषे) Dhātup. 7,61. P. 8,2, 78. der Anlaut geht nicht in ष über nach AV. Prāt. 2,102. 1) *brummen, einen dumpfen Ton von sich geben, dröhnen:* eine Trommel Kathās. 124,8. कपिरस्फूर्जीत् Bhaṭṭ. 15,44. तडित्स्फूर्जित n. *Donner* R. 5,44,4. प्रोद्यज्जलदनिनदस्फूर्जित Spr. (II) 1098. — 2) *hervorbrechen, zu Tage treten, zum Vorschein kommen:* विकटस्फूर्जत्फणा Z. d. d. m. G. 27,

68. स्फूर्जथः क्रोधवक्रेः स्फुलिङ्गाः Prab. 36, 12. स्फूर्जद्व्यायसस्रुग्वाङ्निकरैः 86, 11. Sin. D. 178, 8. यत्तःस्फूर्जदपारमोद Spr. (II) 2303. 3153. स्फूर्जत्तेजस् Rāja-Tar. 4, 647. Z. d. d. m. G. 27, 61. स्फूर्जन्मकाशिवाराव Kathās. 75, 44. स्वजनजस्फूर्जदवमान 96, 12. विततस्फूर्जदुत्सव 117, 1. स्फूर्जदानन्द 102. Rāja-Tar. 4, 471. Verz. d. Oxf. H. 129, a, 14. — Bisweilen fehlerhaft स्फु° geschrieben.

— caus. = simpl. 1): अर्चिर्धा स्फूर्जयन् ṚV. 10, 87, 11. यत्स्फूर्जयन्वावमिव वद्न्दकृति *knatternd, knisternd* Ait. Br. 3, 4.

— घभि *brummen* u. s. w.: वाश्यमानाभि स्फूर्जति AV. 12, 5, 20.

— घव 1) *brummen, grollen, in der Ferne donnern:* घवस्फूर्जन्केतिः VS. 15, 19. 22, 26. TS. 2, 4, 3, 2. घवस्फूर्जत्यधीयीतैव Çat. Br. 11, 5, 6, 9. Taitt. Ār. 2, 14. Āpast. 1, 12, 5. *schnauben* MBh. 6, 774 (nach der Lesart der ed. Bomb.). von der Nase Suça. 1, 115, 6. — 2) *ertönen machen:* घवस्फूर्जन्दिशः सर्वास्तलनेमिस्वनेन MBh. 7, 321. Hariv. 13279.

— वि 1) *schnauben:* विस्फूर्जन्नब्रवीत् MBh. 6, 774. मुखेन विस्फूर्य (so lesen wir statt विस्फूर्य, welches Nīlak. durch फूत्कारं कृत्वा erklärt) 3, 15639. *brummen:* विस्फूर्जन्नएडकोशएड Bhāg. P. 3, 21, 32. विस्फुर्जित n. *Gebrumm, Getön, das Tosen:* घशने: MBh. 3, 1979. 4, 805. 2007. Hariv. 13421. R. 4, 5, 24. 5, 23, 19. वम्र° Hariv. 6902. वायो: 12773. MBh. 3, 12137. विस्फूर्जितैर्घनुष: Bhāg. P. 2, 7, 23. — 2) *hervorbrechen, zu Tage treten, zum Vorschein kommen, erscheinen:* विस्फूर्जित n. nom. act.: मद्दोर्मि° Raghu. ed. Calc. 13, 12 (= वृद्धि Comm.). संपदाम् Spr. (II) 2401. धर्मस्य 5302. मद् Prab. 13, 17. fg. — 3) *sich ausstrecken:* विस्फूर्जितपृष्ठ (= घायामितपृष्ठ Comm.) *ausgestreckt* Suça. 1, 359, 8. könnte auch caus. sein. — 4) *erschüttert werden, in Bewegung versetzt werden:* विस्फूर्जितनभस्तल Bhāg. P. 10, 20, 3. वीर्यशौर्यविस्फूर्जितभू 4, 24, 36. तत्तोभविस्फूर्जितमानस 8, 3, 16. भ्रूविस्फूर्जित n. *das Verziehen der Brauen* 7, 9, 23. könnte auch caus. sein. — caus. *brummen lassen:* den Bogen Bhāg. P. 4, 10, 16. 16, 23. 18, 50, 23. 54, 2. 68, 9. — Vgl. विस्फूर्जथु fgg. und मेघविस्फूर्जित.

स्फूर्ज (von स्फूर्ज्) m. 1) = स्फूर्जक Suça. 2, 42, 8. — 2) N. pr. eines Rākshasa (nach dem Comm.) Bhāg. P. 12, 11, 42. — Vgl. काक°, नर्म°.

स्फूर्जक (wie oben) m. *Diospyros embryopteris Pers.* AK. 2, 4, 9, 19. Rāgān. 11, 78. Ratnam. 209. Çat. Br. 13, 8, 4, 16. Kāty. Çr. 21, 3, 20. *Strychnos nux vomica* Dhanv. in Nigh. Pr. Suça. 2, 415, 1 nach dem Comm. = वनकुरण्टकाकार: फणिज्जकपर्यायः.

स्फूर्जथु (wie oben) m. 1) *Donner* AK. 1, 1, 2, 11. H. 181. Hall. 1, 87. — 2) *Amaranthus polygonoides* Roxb. Rāgān. 5, 72.

स्फूर्जन (wie oben) m. = स्फूर्जक Rāgān. 11, 78.

स्फूर्जि s. विश्व°.

स्फूर्ति (von स्फुर्) f. nom. act. Vop. 13, 6. *das Erscheinen, Zutagetreten, Offenbarwerden, Manifestation:* विप्रविघातविघा° Windischmann, Sancara 12. Verz. d. Oxf. H. 128, b, 32. fgg. Kuval. 143, b (171, a). Spr. (II) 4634, v. l. Rāja-Tar. 8, 3. °मात्र Asiat. 11, 3. 15, 17. Comm. zu Kāty. Çr. 12, 4, 13, wo घस्फूर्ती zu lesen ist. — H. an. 2, 139 fehlerhaft für स्मृति. Vgl. विश्व°.

स्फूर्तिमत् (von स्फूर्ति) m. = पाशुपत Taitt. 3, 1, 13.

स्फूर्मन् m. nom. abstr. zu स्फिर् P. 6, 4, 157.

स्फैर्यस् compar. und स्फैष्ठ superl. zu स्फिर् P. 6, 4, 157. Vop. 7, 14. AK. 3, 2, 62 (स्फेष्ठ).

स्फैलायनि adj. von स्फिल् gaṇa कर्णादि zu P. 4, 2, 80.

स्फैलिकि adj. desgl. gaṇa वेतनादि zu P. 4, 4, 12.

स्फैयकृत adj. von स्फ्यकृत gaṇa ढारादि zu P. 7, 3, 4. Vop. 7, 4. 13.

स्फोट (von स्फुट्) 1) m. a) *das Platzen, Aufspringen, Bersten:* वेणु° MBh. 3, 443. 4, 739. क्षुत्स्फोटेन व्यपद्यत Kathās. 33, 73. 53, 182. 73, 291. 78, 74. 86, 162. क्षुत्स्फोटं प्राप 70, 72. °स्फोटम् absol.: क्षुत्स्फोटं विनष्टा Prab. 90, 11. लाजस्फोटं स्फुरन्ति मणय: Bālār. 121, 4. — b) *Blase* (welche *platzt*), *Pustel* Karaka 8, 3. Suça. 1, 37, 3. 13. 84, 5. 269, 12. 297, 14. 2, 2, 10. 66, 14. 183, 17. 249, 3. 250, 2. 295, 18. 383, 10. °निवारण Verz. d. B. H. No. 943. दारु° Schol. zu Kāty. Çr. 18, 4, 6. — c) (*abgesprungenes*) *Stückchen, Schnitzel:* स्फोटास्तु घणकादीनां दालीति परिकीर्तिता Rāgān. 16, 103. — d) *Gekrach:* शक्राशनि° MBh. 7, 6153. *Gekmister* Varāh. Bṛh. S. 46, 16. *Gebrause:* वायु° adj. MBh. 3, 1713 (= वायुं शनयन् Nīlak.). — e) *das als ein und untheilbar gedachte schöpferische Wort:* शगन्निदानं स्फोटाख्यो निरवयवो नित्य: शब्दो ब्रह्मैव Sarvadarçanas. 140, 1. bei Patañgali und Anderen *der unvergängliche und unvernehmliche Bestandtheil der Laute und Wörter, der als der wahre Träger der Bedeutung betrachtet wird*, 14. fgg. वर्णानां वाचकत्वानुपपत्तौ पदलक्षणार्थप्रतिपत्ति: स स्फोट इति वर्णातिरिक्तो वर्णाभिव्यङ्ग्यो ऽर्थप्रत्यायको नित्य: शब्द: स्फोट: 140, 22. fgg. शतराणामकारस्त्वं स्फोटस्त्वं वर्णसंभव: Hariv. 14958. Bhāg. P. 12, 6, 40. Verz. d. Oxf. H. 177, b, 6 nebst Note 2. वर्ण°, पद°, वाक्य° Note 3. — 2) f. घा a) vielleicht *das Schütteln der Arme* (es könnte auch घास्फोटा gemeint sein) Mālav. P. 50, 44. — b) = स्फुटा, स्फटा, फटा *die sogenannte Haube der Schlangen* Çārṅgadhar. bei Wilson. — Vgl. कपाल°, कर्ण°, दु:°, नर्म°, नागस्फोटा, पाद°, मुक्ता°, शब्द°, श्रुति°.

स्फोटक 1) m. = स्फोट 1) b) H. 466. Hall. 2, 449. Karaka 10, 1. Kalāṅkura 2, 153. — 2) f. स्फोटिका a) dass. Suça. 2, 153, 3. — b) ein best. *Vogel* Taitt. 2, 5, 20. फोटिका v. l. nach ÇKDa.

स्फोटकार m. *Semecarpus Anacardium Lin.* Rāgān. 11, 67.

स्फोटन (von स्फुट्) 1) adj. *spaltend, zermalmend:* वज्र Hariv. 13997. Çiva MBh. 12, 10387. संशय° (vgl. संशयं छिद्) so v. a. *lösend, entfernend* Mālav. P. S. 638, Z. 5 v. u. — 2) m. *der Spalter*, Bez. *des zwischen bestimmten Consonantengruppen hörbaren vocalischen Lautes* AV. Prāt. 1, 102. 2, 38. — 3) f. ई *Bohrer* Bharata im Dvaitav. nach ÇKDa. — 4) n. a) *das Platzen* Suça. 1, 85, 9. — b) *das Spalten, Zerbrechen, Aufreissen, Aufstechen* Bharata zu AK. 3, 3, 5 nach ÇKDa. नखै: Āpast. 2, 20, 13. शङ्ख° Suça. 2, 458, 5. खण्ड° Pañkat. 81, 3. *das Auseinanderrupfen:* तूल° H. 912. in der Grammatik *das Spalten bestimmter Consonantengruppen durch Einfügung eines vocalischen Lautes* VS. Prāt. 4, 162. — c) *das Schütteln:* बाहु° Sin. D. 232. *swelling* Ballantyne. — d) *das Knacken:* अङ्गुलि° Açoкāvad. 18.

स्फोटबीजक m. *Semecarpus Anacardium Lin.* Rāgān. 11, 67.

स्फोटलता f. *eine best. Schlingpflanze*, = कर्णस्फोटा Rāgān. 3, 118.

स्फोटकेतुक m. *Semecarpus Anacardium Lin.* Dhanv. (angeblich) in Nigh. Pr.

स्फोटायन m. N. pr. eines Grammatikers P. 8, 1, 123. Verz. d. Oxf.

H. 178, a, 17 (wohl स्फोटायनसंघर्षेतम् zu lesen). H. 853. Vgl. स्फैटायन und Comm. zu H.

स्फोटिनी f. *Gurke* Dhanv. in Nigh. Pa.

स्फोरण n. = स्फार Vop. 26, 174.

स्फोलन n. = स्फाल ebend.

स्फोटायन m. patron. von स्फुट gaṇa यस्कादि zu P. 4, 1, 110.

स्फ्य m. *Holzspahn* (messerförmig zugeschnitten, armeslang), zu verschiedenem Gebrauch beim Opfer dienend, AV. 11, 3, 9. TS. 1, 6, 8, 2. 2, 1, 8, 2. 6, 6, 6, 1. °वर्तनि Ait. Br. 8, 5. Çat. Br. 1, 2, 4, 2. 3. 5, 20. स्फ्यवादाय परिलिखति 3, 3, 1, 5. 5, 4, 4, 20. खादिर 3, 6, 9, 12. Kâty. Çr. 1, 3, 39. 10, 7. 2, 6, 25. Âçv. Gṛhy. 4, 3, 4. Kauç. 81. M. 5, 117. Jâán. 1, 184. MBu. 14, 3092. P. 3, 3, 47, Schol. *Stab, Spiess beim Schiff* Çat. Br. 4, 2, 5, 10.

स्फ्यकृत gaṇa द्वारादि zu P. 7, 3, 4. Vop. 7, 4. — Vgl. स्फैयकृत.

स्फ्याय adj. *oben zugeschnitten wie der Holzspahn:* Jûpa Âçv. Çr. 9, 7, 16 (Ausg. und Hdschrr. स्फ्याय). Kâty. Çr. 22, 3, 8. Liṭ. 2, 5, 7.

1. स्म enklitische (VS. Prât. 2, 16. also fehlerhaft am Anfange eines Verses Vop. 5, 5.) *leicht bekräftigende* Partikel; पादपूरणे AK. 3, 5, 8. H. an. 7, 16. Med. avj. 49. In der älteren Sprache steht das Zeitwort dabei im praes. (यास् und वेद gelten auch als solche); bisweilen im perf. (z. B. ṚV. 6, 66, 6. 8, 75, 8) und imperat. (z. B. ṚV. 7, 21, 9. AV. 6, 123, 2). In eigenen Stellen des AV. selten. Sie steht 1) nach Partikeln ähnlichen Werthes, wie हि (हि ष्मा VS. Prât. 3, 128) ṚV. 1, 26, 3. 4, 3, 10. यद्ध 1, 101, 4. 2, 31, 2. namentlich nach कु, besonders in den Brâhmaṇa, wie इति कु स्माह u. s. w. Ait. Br. 2, 3. 3, 6. TS. 5, 4, 7, 3. 5, 1, 9, 2. Çat. Br. 1, 6, 2, 3. 2, 3, 44. 14, 8, 4, 1. तदु कु स्माह 1, 1, 1, 10. उत ṚV. 4, 38, 5. 10, 98, 10. इति Ait. Br. 8, 23. यथा AV. 4, 4, 3. — 2) nach Präpositionen: अप ṚV. 1, 42, 2. 10, 95, 8. आ 1, 51, 12. 8, 24, 6. उद् 10, 102, 2. प्र 8, 49, 10. प्रति 1, 12, 3. AV. 4, 18, 4. सम् 12, 3, 2. — 3) nach der Negation न ṚV. 10, 178, 3. मा 27, 24. AV. 5, 22, 11. 12, 3, 46. — 4) nach relat. und demonstr. Pronomina ṚV. 2, 12, 3. 3, 62, 1. 4, 38, 4. AV. 10, 4, 6. ṚV. 1, 12, 8. AV. 1, 8, 2. 5, 22, 10. — 5) nach Zeitwörtern ṚV. 1, 37, 15. 7, 21, 9. 10, 33, 4. 102, 6. 136, 7. AV. 6, 123, 2. das vorangehende Verbum betont ṚV. 6, 44, 18. Die spätere Wirkung des Wortes ist höchstens ṚV. 10, 136, 7 anzunehmen. In Stellen wie 1, 169, 5. 10, 86, 10 liegt nicht in स्म, sondern in पुरा der Ausdruck der Vergangenheit. Hiermit zu vergleichen ist die in den Brâhmaṇa häufige Wendung कामेर्क स्म वै पुरुषयः सत्रमासते Çat. Br. 4, 6, 9, 23. सावित्रं कु स्मैतं पूर्वे पशुमालभते 12, 3, 5, 1. TS. 5, 2, 10, 4. 6, 1, 2. Weitere Beispiele s. u. पुरा. Dagegen ist स्म wirklicher Ausdruck der Vergangenheit in der Stelle म कु नेमिधीयाणामुद्गाता बभूव म कु स्मैभ्यः कामानागायति Kâṭhaka Up. 1, 2, 13. — 6) ausserdem, z. B. क्षेत्रं स्म ṚV. 10, 86, 10. त्रिः स्म 95, 5. 102, 4. AV. 3, 17, 7. Ait. Br. 8, 22. — In der späteren Sprache sind folgende Verbindungen beliebt: इति स्म MBu. 1, 4206. 3, 10247. 4, 1270. 5, 885. R. 1, 9, 26. Kir. Nitis. 10, 40. Raṅg. 3, 5. Bhâg. P. 1, 7, 14. 19, 17. इति स्म कु MBu. 1, 1193. 3, 2448. 14, 144. यत्र स्म 1, 5899. 5941. न स्म 2168. 3, 2340. 2874. 2876. 7, 2561. 6021. 6157. R. 2, 64, 21. मा स्म (s. u. 1. मा 9). कर्हि स्म चित् Bhâg. P. 5, 13, 10. 14, 22. das Verbum steht a) im Präsens α) mit Präsensbedeutung: विपरीतमिदं सर्वं प्रतिभाति स्म MBu. 6, 3333. 3, 1736. 2126. नासौ घिया संप्रति पश्यति स्म 10247. 8, 3846. Raṅg. ed. Calc. 9, 39. पुण्यं कुर्वन्पुण्यकीर्तिः पुण्यं स्थानं स्म गच्छति Spr. (II) 4095. 6493. LA. (III) 88, 17. Bhâg. P. 1, 10, 27. 3, 1, 34. 12, 47. 24, 34. 4, 6, 45. 5, 13, 9. — β) in der Bed. der Vergangenheit P. 3, 2, 118. fg. Vop. 25, 2. AK. 3, 5, 17. H. an. Med. Halâ. 5, 97 (संस्मरणादिषु). im alten Epos wechselt ein solches praes. mit einem praet., aber auch mit einem praes. ohne स्म. N. 7, 3. MBu. 1, 2476. 5891. 3, 1783. 2083. 2152. 2196. 2340. 2816. 2874. 2876. 7, 6157. 6249. Harîv. 5805. R. 1, 1, 58. 2, 36. 41. 74, 8. 2, 33, 6. 47, 2. 3. 12. 60, 14. 5, 7, 41. Raṅg. 3, 5. 9, 47. 10, 62. Spr. (II) 6858. Kathâs. 4, 18. 38. 77. 12, 6. 17, 111. 18, 149. 283. 38, 43. Bhâg. P. 1, 19, 17. 4, 7, 24. 18, 32. 20, 22. 5, 9, 8. Pañcat. 43, 1. यावत् स्म Kathâs. 14, 47. 18, 235. 24, 139. 37, 201. 40, 6. 45, 156. स्मात् 34, 240. mit पुरा P. 3, 2, 123. — *b*) im imperf.: न स्म म प्रापतद्भल्लो MBu. 1, 2168. 4832. 5, 7002. 7, 3561. 6021. यथेतद्प्रभं कर्म न स्म मे ऽकथयः प्रभुम् R. 2, 64, 21. Bhâg. P. 6, 13, 11. 9, 1, 40. — *c*) im aor. N. 13, 32. Bhâg. P. 4, 7, 14. — *d*) im perf. MBu. 1, 3833. 7012. 8, 2709. R. 2, 37, 13. 42, 30. 5, 36, 20. Kir. 3, 18. Bhâg. P. 1, 10, 4. 4, 14, 7. 31, 2. 6, 14, 59. 18, 72, 30. 74, 18. — *e*) im partic. praet. pass. (als verbum fin.): मासौ व्यतिपातौ स्म वार्धिकौ Harîv. 3787. R. 2, 68, 33. — *f*) im imperat. P. 3, 3, 165. fg. MBu. 5, 877 (साधस्व mit der ed. Bomb. zu lesen). — *g*) im potent. MBu. 5, 879. fg. Kir. Nitis. 10, 40. Bhâg. P. 9, 5, 18. — *h*) im fut. MBu. 3, 2973. Bhâg. P. 12, 1, 16. — *i*) स्म vom Verbum finitum getrennt: α) durch ein partic. praes.: इति स्म कुरवः सर्वे विमृशन्तः पृथक्पृथक् । न च — शक्नुवन्ति MBu. 4, 1270. Bhâg. P. 1, 7, 14. 5, 13, 10. 14, 22. — β) durch einen absol. MBu. 1, 2891. 3, 2987. 4, 997. 5, 880.

2. स्म = स्मस् 1. pl. von 1. यास्, z. B. MBu. 1, 7875. 3, 1858. 3062. R. 1, 63, 21. 65, 18.

स्मत् (vgl. सुमत्) adv. *zusammen, zugleich, mit einander (sowohl — als auch); gleichzeitig* Nir. 11, 49. स्मत्सूरिभ्यो गृणते ṚV. 2, 4, 9. 1, 186, 8. 7, 3, 8. स्मन्मीळ्हुषश्चरति ये 3, 20, 18. वत्सः क्रन्दति स्मत् *brüllt mit* 1, 100, 13. 10, 61, 8. mit instr. *mit, sammt:* स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्स्याम 1, 51, 15. 5, 41, 15. 19. 8, 18, 4. 26, 19.

स्मत्पुरंधि adj. *ausgerüstet mit guten Gedanken* u. s. w.: स्मत्पुरंधिर्न या गतिः विश्वतोधीर्न ऊतयें ṚV. 8, 34, 6.

स्मदश्वीय adj. *mit Zügeln versehen* ṚV. 3, 25, 24.

स्मदिभ wohl N. pr. eines Feindes des Kutsa ṚV. 10, 49, 4.

स्मदिष्ट adj. *mit einem Auftrag versehen:* Wächter ṚV. 7, 87, 3. Vgl. übrigens स्मदिष्टि.

स्मद्धून् adj. (f. °धी) *mit (vollem) Euter versehen* ṚV. 1, 73, 6.

स्मदिष्टि adj. *geschult, dressirt:* Rosse ṚV. 6, 63, 9. 7, 19, 33. Diener 10, 62, 10. *eingeübt:* Indra 3, 45, 5.

स्मद्रातिषाच् adj. von *Spenden begleitet* ṚV. 8, 28, 2.

स्मय (von स्मि) m. 1) *Staunen, Verwunderung* Med. j. 60. MBu. 13, 5802. Spr. (II) 2738, v. l. P. 6, 1, 57, Schol. — 2) *Selbstgefühl, Hochmuth* H. 317. Med. Raṅg. 3, 19. Verz. d. Oxf. H. 231, b, 37. 45. fg. सत्यवित° *über* Spr. (II) 1725. स्मयोल्लिखित 1857. 4488. Bilâs. 261, 11. Bhâg. P. 1, 17, 24. 4, 3, 2. 10, 60, 19. am Ende eines adj. comp. 4, 4, 10. विगत° 3, 16, 32. 5, 10, 9. गत° 3, 7, 8. Daçak. 140, 8. personificirt ist der *Hochmuth* ein Sohn

Dharma's von der Pushṭi Baic. P. 4,1,50. — स्मयम् MBu. 12,7889 und 8198 fehlerhaft für स्वयम् (so ed. Bomb.). — Vgl. अप°, उत्°, 2. वि°.

स्मयन·(wie eben) n. *das Lächeln, Lachen:* विवृत° Âçv. Çr. 12,8,5.

स्मृ, स्मरति (चिन्तायाम्) Dhâtup. 22, 35. ससार, सस्मर्थ P. 7,2,63, Schol. Bhaṭṭ. 9,47. सस्मरुस् P. 7,4,10, Schol. अस्मार्षीत्, स्मरिष्यति, स्मर्ता P. 7,2,63, Schol. स्मरयात् 4,29, Schol. स्मर्तुम्, स्मृत्वा, स्मरित्वा MBu. 7,8860. med. (des Metrums wegen) स्मरते u. s. w. pass. स्मर्यते P. 7,4,29, Schol. अस्मारिषातम् und अस्मृषाताम्, स्मरिषीष्ट und स्मृषीष्ट 2,43, Schol. स्मृत. Der Anlaut geht nicht in ष über AV. Prâṭ. 2,103. 1) *sich erinnern* (sowohl *im Gedächtniss haben* als *in's Gedächtniss rufen, sich vergegenwärtigen, gedenken*), *mit Wehmuth sich erinnern, sich sehnen;* mit gen. und acc. P. 2,3,52. यद्या मम स्मरादसौ AV. 5,130, 3. स्मरतात् 2. Nir. 14,6. Kâṭy. Çr. 25,5,15. Liṭ. 3,2,7. Kâṭh. Up. 7, 13,1. Kaṭh. Up. 2,4. ज्ञातिं पौर्विकीम् M. 4,143. यो मां स्मरति नित्यशः Bhag. 8,14. MBu. 1,3006. fg. 4229. 6911. स्मरति ते 3,277. 280. 313. 1792. 2415. 2643. 2648. 2864. 2866. 3043. 12281. 16740. स्मर्तासि वचनस्य मे 5,2319. 2322. 7042. 7382. 7496. 7,33. 43. 14,319. fgg. Harîv. 7121. R. 1,37,1. 2,30,16. 60,1. 70,15. 77,12. R. Gorr. 1,79,30. न बन्धूनां स्मरिष्यामि न मातुर्न पितुर्वने 2,30,18. 3,46,17. 54,17. fg. 79, 42. 4,6,6. 49,12: 54,17. 55,5. 5,31,28. 56. Kâm. Nîtis. 5,37. Mṛcch. 83. Raghu. 12,10. Kumâras. 4,8. Çiç. 32,5, v. l. 53,8. 66,18. 82,7. 76. कामं प्रत्यादिष्टो स्मरामि न परिग्रहं मुनेस्तनयाम् 127. Mâlav. 32,17. Kir. 5, 28. Spr. (II) 3080. 3716. 3963. 5240. 5360. 7255. fgg. 7259. Z. d. d. m. G. 27,31. Kathâs. 1,40. 2,34. 4,42. 12,118. 17,62. 18,19. 208. 240. fg. 19,101. 20,62. 29,6. 32,23. 38,36. 41,5. 59,163. 110,89. 91. Mârk. P. 61,55. Râja-Tar. 3,251. 450. 6,238. 7,727. Kaurâp. 5. Prab. 95,1. Baic. P. 1,8,36. 13,7. 2,1,19. 5,26,32. 7,9,14. 9,16,3. 10,65,10. 73, 13. 11,27,42. अभीष्टदेवताम् Paṇḍat. 55,13. 95,16. LA. (III) 6,2. 35,11. नान्यदृष्टं स्मरत्यन्यः Sarvadarçanas. 84,15. fg. Comm. zu Nyâyas. 3,1, 12. मनसा R. 4,3,1. 62,11. Spr. (II) 1369. Citat bei Sây. in der Einl. zu ṚV. 1,105. चेतसा Spr. (II) 7315. चेतसा कातरेण Mṛcch. 75. हृदि Çuk. in LA. (III) 36,6. 7. med. Maitrâyaṇ. 4,2. MBu. 1,74. 2423. 3005. 3,8246. 8446. 16817. 5,193. 7260. 7,685. 4727. 5369. 12,5084. Harîv. 8522. 11017 (S. 790). 14982. R. 5,66,25. 6,82,124. 7,41,14. Spr. (II) 7374. Baic. P. 2,2,14. 3,28,28. स्मारं स्मारम् absol. Spr. (II) 1404. Paṇḍar. 1,2,9. Verz. d. Oxf. H. 161,b,2 v. u. Vop. 26,219. pass.: स्मर्यते न हि वामोरु यो भवेदुद्ग्राहिः Prab. 41,9. Daçar. 65,9. Paṇḍat. 52,7. अस्मर्यमाणकर्तृ so v. a. *vergessen* Sarvadarçanas. 127,17. 19. die vergangene Handlung, *deren man sich erinnert*, steht im fut., wenn kein यद् *dass* dabei steht; im imperf., wenn dieses nicht fehlt, P. 3,2,112. fg. Vop. 25,29. bei zwei Handlungen kann nach यद् auch fut. stehen. Beispiele: स्मरसि कुत्र काश्मीरेषु वत्स्यामः oder यत्काश्मीरेषु वत्स्यामः, स्मरसि देवदत्त यत्काश्मीरेषु वत्स्यामस्तत्रौदनं भोद्यामहे oder यत्काश्मीरेषूषवसाम तत्रौदनमभुञ्महि P., Schol. स्मरत्यदः — भवान् — हनिष्यति Çiç. 1,68. st. des imperf. das partic. praet. pass. bei यद् Kathâs. 18, 207. — 2) *gedenken* so v. a. *überliefern:* कव्यं स्मर्यते ऋषिः Râja-Tar. 1, 270. 4,549. ननु तत्र व्यासः कर्तेति स्मर्यते Sarvadarçanas. 128,13. कलौ हि पापबाहुल्यं दृश्यते स्मर्यते ऽपि च Vers. d. Oxf. H. 266,a,20. तथा च स्मर्यते Weber, Kṛshṇaj. 221. mit न *mit Stillschweigen übergehen* Râja-Tar. 1,16. 44. — 3) *lehren, behaupten, statuiren* (vgl. 3. इण्). ṚV. Prâṭ. 3,8. 11,11. 14. 33. द्वावपि चानुदात्तावित्युपदेशे स्मरन्ति Kâç. im gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Siddh. K. zu P. 5,2,66. निरतिशयं गरिमाणं तेन ऋणन्याः स्मरन्ति विद्वांसः Spr. (II) 3740. — 4) partic. स्मृत a) *dessen man sich erinnert, an den* oder *woran man denkt* Âçv. Gṛhj. 3,9,1 (oder n. *Erinnerung*). Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 95. स्मृतं पापं मया स्वयम् R. 2,64,36. इदानीं मे स्मृतो मरुद्गणैः 4,46, 12. न स्मृतो राघवो येन 55,8. Spr. (II) 6562. 6565, v. l. साधु स्मृतं त्वया Kathâs. 18,209. Kumârila bei Müller, SL. 310. सुराः स्मृताः स्व Taitt. 1,1,1. °मात्र Paṇḍat. 48,8. °मात्रागत *gekommen sobald man seiner gedacht hatte* Kathâs. 18,347. 380. किं स्मृतो ऽस्मि *weshalb hast du meiner gedacht? weshalb hast du mich citirt?* 32,26. Kumâras. 4,19. अ° *vergessen* Varâh. Bṛh. S. 51,28. — b) *überliefert, gelehrt* Âçv. Çr. 1,6. 7. Comm. zu VS. Prâṭ. 4,185. एष धर्मः स्त्रिया नित्यो वेदे लोके श्रुतः स्मृतः Spr. (II) 6496. मत्तेषा कर्म so v. a. *erwähnt* Schol. zu Kâṭy. Çr. 49,1 v. u. अ° 50,1. — c) *gelehrt* so v. a. *vorgeschrieben:* त्रिरात्रं तेषां स्मृतम् M. 4,119. स्नाने मैथुनिनः स्मृतम् 5,144. 6,53. 9,149. न स्मृतम् *nicht gestattet* Jâán. 2,53. — d) *erklärt für, geltend als:* नाम्नां स्वरूपभावो हि भेभाव ऋषिभिः स्मृतः M. 2,124. मम तुल्यावुभौ स्मृतौ MBu. 1,6138. R. 2,34,31. एकादश Kaṭh. Up. 7,26,3. M. 1,20. 27. 78. 96. तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ 2,14. 67. 85. 90. ब्रह्मघ्नो ये स्मृता लोकाः 8,89. स्त्रियो रत्नं यतः स्मृताः Jâán. 1,81. केवलं स्त्री तु सा स्मृता R. 3,23,15. Raghu. 3,19. Çiç. 112. 137. Spr. (II) 1091. 1947. 2741. 3473. 4033. 6980. Varâh. Bṛh. S. 13,11. 46,91. 93. 53,41. 86,16. 93,5. Baic. P. 2,10,3. शोकोष्णाम्बुकणाः स्मृताः AK. 1,1,2,18. Taik. 1,1,95. 126. 3,3,391. st. des nom. auch loc.: शिवस्य वृषभणऽध्यां बुधैर्गोपुटिकं स्मृतम् 2,2,9. Mṛcch. p. 13. dat.: न कामो हि स्मृतो लाभाय Baic. P. 1,2,9. — बीजादेव फलं स्मृतम् *nur aus dem Samen, so heisst es, kommt die Frucht* Spr. (II) 3597. तदनु श्रवः स्मृतः *darauf folgt, so heisst es,* Plava Varâh. Bṛh. S. 8,39. सूर्येन्दुपर्जन्यसमीरणानां योगः स्मृतो वृष्टिविकारकाले 46,46. — e) *erklärt für* so v. a. *genannt, heissend:* तस्माद्योग इति स्मृतः Maitrâyaṇ. 6,25. तेन नारायणः स्मृतः M. 1,10. 47. 9,177. fg. 10,18. MBu. 5,7419. R. 1, 55,2. 4,46,5. Siddhânjan. 38. Çaṅk. 39. कः पातः स्मृतः Golâdhy. Golasvar. 3. Citat beim Schol. zu Çiç. 13,13. — Vgl. अस्मृतघु unter 2. घु und वेदस्मृता.

— caus. स्मारयति, aor. असस्मरत् P. 7,4,95. Vop. 18,2. *Jmd* (acc.) *erinnern, gedenken lassen* P. 1,3,67, Schol. MBu. 2,2530 (ते gehört zu मर्माणि). 5,859. 13,2385. स्मारये त्वां न शिलये R. 3,13,21. 6,90,8. 7, 98,13. Mârk. P. 21,67. भक्तान्स्मरिः Vop. 23,28. *erinnern* —, *mahnen an Jmd* oder *Etwas* (acc.) Viṣṇ. 161. Mâlatîm. 8,9. 10. Baic. P. 10,47, 51. वाचः MBu. 7,8990. तौ वरौ R. Gorr. 2,8,26. Kathâs. 26,219. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 18. zu Kâṭh. Up. S. 74. Comm. zu Kâṭy. Çr. 85,21. Kull. zu M. 1,27. mit gen. MBu. 12,9521. Baic. P. 10,23,44. *Jmd erinnern an,* mit doppeltem acc.: स्मरन्तं त्वामनघमीड्यं स्मारयिष्याम्यहं पुनः MBu. 2,2484. Harîv. 9401. स्वधर्मं त्वाम् R. Gorr. 2,35,35. Kathâs. 32, 123. Râja-Tar. 5,192. इदं हि त्वां स्मारयामि नोपदेशं करोमि R. 3,71,14. mit gen. der Person und acc. der Sache: भगवांस्मामकं (so zu lesen) स्मारयति तथागतज्ञानदायाद्यम् (so zu lesen) Saddh. P. 4,29,5. pass. *er-*

innert werden an (acc.): मातलिना शस्त्रमस्मार्यत (Schol. hat अस्मर्यत gelesen) Bhaṭṭ. 17,109. *in's Gedächtniss gerufen werden:* यदा ते स्मार्यते कीर्तिः R. 7,36,24. partic. स्मारित *erinnert an* (acc.): राघवम् MBh. 3,11323. पुरावृत्तम् Hariv. 5413. R. 7,30,52. Uttarar. 116,12 (157,14). Kathâs. 45,346. Râǵa-Tar. 3,186. Bhâg. P. 10,43,22. *in's Gedächtniss gerufen* 3,2,1. 11,2,13. Comm. zu Kâty. Çr. 49,17. 85,22. Kuscum. 33, 3. 4. 35,1. °त्व n. 33,2. Auch स्मारयति Dharmap. 19,48 (ग्राध्याने, द्योत्क्यो). *erinnern an*, mit acc. Ragh. 9,53. mit gen. Kir. 6,13. *Jmd erinnern an*, mit doppeltem acc. Vikr. 78.

— desid. सुस्मूर्षते P. 1,3,57. 7,1,102, Schol. (fälschlich °ति). Vop. 23,87. *gedenken wollen:* नष्टम् P. 1,3,57, Schol. रामम् Bhaṭṭ. 8,34.

— intens. सास्मर्यते P. 7,4,80, Schol. Vop. 20,4.

— अनु *sich erinnern, gedenken* (mit acc.): कण्वँव नामानु हि स्मराथः ṚV. 10,106,9. Çat. Br. 13,8,4,2. Pân. Gṛhj. 3,10. सतीं धर्मम् M. 2,217. 7,37. 92. 8,33. 141. मामनुस्मर Bhag. 8,7. शक्रेर्वधम् MBh. 1, 6867. 3, 2385. 2649. 2652. 4, 1605. 8, 1935. Hariv. 5392. 7919. R. 2, 21, 7. 33, 22. 49,4 (46,4 Gorr.). 56,19. 77,11. 87,16. R. Gorr. 2,41,14. 88,5. 3, 43,14. 4,5,31. 5,31,16. Kâm. Nîtis. 9,71. स्मृत्वा — पुनरनुस्मृत्य Mudrâ. 52, 10. Çâk. 22, 4. 82, 20. fg. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 140. Mârk. P. 22,7. Bhâg. P. 1,5,18. 36. 13,34. 2,4,11. 4,12,31. 30,9. 5,26,22. स्वाघम् (so v. a. *beichten*) 10,23,52. 44,10. 43,28. Pâṇḍar. 3,9,9. Pâṇḍat. 227, 25. 238, 25. Mallin. zu Kumâras. 6, 30. Sadukt. P. 4, 10, a. med. Bhâg. P. 10,79,34. pass. 4,30,28. partic. °स्मृत 1) impers.: यद्येव खलु — अनुस्मृतं देवेन सत्यमूढपूर्वा मया तत्रभवती u. s. w. इति Çâk. 79,14. fgg. — 2) *vorgeschrieben, gelehrt, geltend* ṚV. Prât. 11,16. — Vgl. अनुस्मरण. — caus. अनुस्मारयति *erinnern an* (acc.) Kir. 5,14.

— प्रत्यनु *sich entsinnen:* विज्ञोरमोमास्यभागमात्मानं प्रत्यनुस्मरत् *er entsann sich, dass er sei* R. ed. Bomb. 6,59,110. 120.

— समनु *sich erinnern, gedenken:* स्ववंशधर्मम् Hariv. 8468. 11504. med. Sadukt. P. 4,10,a.

— अप *das Bewusstsein verlieren* Karaka 2, 8. Suçr. 1, 121, 17. — partic. °स्मृत 1) *der das Bewusstsein verloren hat* Bhâg. P. 10,18,29. — 2) *vergessen* Milatin. 161,2. Bhâg. P. 10,33,3. — Vgl. अपस्मार fg.

— उप *sich erinnern, gedenken* (mit acc.) Çat. Br. 2,3,3,4. Çâṅk. zu Kaush. Up. S. 48. मनसा Kenop. 3. Kâty. Çr. 4,13,32. — Vgl. पद्योपस्मारम्.

— विनि, partic. °स्मृत *erwähnt:* सर्वयोग° Pâṇḍar. 4,3,49.

— प्र 1) *sich erinnern, gedenken:* प्रास्मारत्त हि तद्वचः (प्रास्मरंस्त हि ed. Bomb.) MBh. 6,3918. — 2) *vergessen:* यदिदमपि प्रस्मर्यते Bâlar. 97,6. प्रस्मर्तव्य 119,12. प्रस्मृत *vergessen* H. 1493, Schol.

— प्रति *sich erinnern, gedenken:* प्रति स्मरेयं तुजयर्दहिरेवैः ṚV. 7,104, 7. धर्मं प्रतिस्मरन् MBh. 12,5628. 1,481. 13,5763. Hariv. 11277. — Vgl. प्रतिस्मृति. — caus. *Jmd an Etwas erinnern:* यदिदं मन्यसे राजन्नायमस्ति कुतः परः। प्रतिस्मारयितारस्त्वा यमदूता यमक्षये ॥ MBh. 12,5612.

— वि *vergessen*, mit acc. R. 4,9,28. 32,10. 35,4. Megh. 84. Çâk. 54, 5. Spr. (II) 637. 2093. 4249. Kathâs. 16,64. 19,100. 27,63. 28,64. 38, 85. 45,297. 52,394. Râǵa-Tar. 1,371. 2,21. fg. 3,526 (मनसा). 4,30. 5, 309. 404. 6,5. Khaṇḍon. 106. Kâlap. 21. Bhâg. P. 2,1,17. 3,2,18. 7, 5,46. 10,47,31. Pâṇḍar. 1,10,37. — विस्मारयति Siv. 5,6 schlechte Lesart für विमृशति (so MBh. 3,16758). — med. MBh. 3,15705. Bhâg. P. 10,47,53. 82,37. act. mit gen. Bhaṭṭ. 17,10. pass. Spr. (II) 2802 (Conj. für विस्मार्यते). 7283. Bhâg. P. 4,9,8. — partic. °स्मृत 1) *der vergessen hat*, mit acc. Ragh. 19,2. Çiç. 71,3. 82,10, v. l. Prab. 14,16. Liṅga-P. bei Muir, ST. 4, 325, 9 v. u. in comp. mit dem obj.: इन्द्रोपस्थान° R. 4,44,111. Spr. (II) 6308. ohne Ergänzung *der Alles vergessen hat* R. 2,38,30. Bhâg. P. 10,88,35. — 2) *vergessen von* (instr. oder gen.) AK. 3,2,36. H. 1495. R. 4,20,3. 5,35,43. Suçr. 1,110,21. Mudrâ. 47, 25. Megh. 93. Ragh. 9,69. Çiç. 4,16. fg. 37,4. 87,17. Milav. 81. Kathâs. 12,93. 18,208. fg. 22,220. 25,70. 27,36. 30,105. fg. 39,14. Mârk. P. 69,57. Râǵa-Tar. 3,518. Spr. (II) 6878. Bhâg. P. 4,2,23. 12,21. 20, 25. Hit. ed. Jouns. 2370. — 3) m. Bein. Bhavabhûti's Tait. 2,7,27. — विस्मृतवत् = विस्मृत 1) Çiç. 82,10. — Vgl. विस्मरण fg., विस्मृति und श्रुतविस्मृत. — caus. विस्मारयति *Etwas* (acc.) *in Vergessenheit bringen* Kull. zu M. 4,114. *Jmd* (acc.) *Etwas* (acc.) *vergessen machen:* स्वर्गं कथं विस्मारयिष्यते (pass.) Vikr. 39. — विस्मार्यते Râǵa-Tar. 5,318 fehlerhaft für विस्मर्यते; vgl. Spr. (II) 2802. — partic. °स्मारित *der veranlasst worden ist Etwas* (acc.) *zu vergessen:* नित्यकृत्यम् Râǵa-Tar. 1,125. *in Vergessenheit gebracht* 2,60. Bhâg. P. 6,9,38. — Vgl. विस्मारक fg.

— सम् *sich erinnern, gedenken;* mit acc. M. 4, 149. Bhag. 18, 76. MBh. 1,6723. 2,612. 3,2597. 4,196. 7,5780. 9402. 8,4563. 18,17. Hariv. 7042. 9415. R. 2,36,6. 63,3. 69,2 (71,2 Gorr.). 102,9. R. Gorr. 2, 41,12. 122,25 (संस्मृत्य zu lesen). 4,9,97. 46,11. 60,1. 5,37,3. Ragh. 1, 76. Kumâras. 4,17. Spr. (II) 3311. 4026. 7230. Kathâs. 1,60. 16,51. 21, 91. 33,170. 43,165. 186. 58,50. Râǵa-Tar. 3,246. Khaṇḍon. 80. Mârk. P. 131,15. Bhâg. P. 1,14,24. 3,25,6. 4,9,24. 6,3,34. 9,4,12. 10,46,27. med. MBh. 8,1877. Mârk. P. 10,20. pass. Râǵa-Tar. 4,115. संस्मर्तव्यस्तदा ते ज्ञम् MBh. 3,2631. act. mit gen. Bhaṭṭ. 6,12. — partic. संस्मृत 1) *dessen man sich erinnert hat* Hariv. 7234. संस्मृतोपस्थित Kathâs. 38,71. Mârk. P. 19,26. — 2) *vorgeschrieben* Hariv. 7791. — 3) *genannt, heissend* Sch. D. 87. — Vgl. संस्मरण fg. und संस्मृति. — caus. संस्मारयति *Jmd* (acc.) *erinnern* MBh. 2,2537. R. 6,92,36. Bhâg. P. 10, 2,37 (संस्मरयन्). *in's Gedächtniss rufen*, mit acc. MBh. 5,4666. कृष्णं त्रैलोक्यसाम् Bhâg. P. 10,47,57. pass. Pâṇḍar. 3,7,4. — partic. संस्मारित *erinnert* Bhâg. P. 11,2,10. *ab* (acc.) 4,3,15. Hariv. 3778. *in's Gedächtniss gerufen* 1301. — Vgl. संस्मारक fg.

— अनुसम् *sich erinnern, gedenken;* mit acc. MBh. 1,6911. 3,2649. 6,3084. mit gen. Spr. (II) 5653.

— अभिसम् dass., mit acc. MBh. 3,15758.

— प्रतिसम् dass.: विज्ञोरचिन्त्यं स्वं भागमात्मनः R. 6,36,86.

स्मर् (von स्मृ) 1) adj. (f. आ) *sich erinnernd:* जाति° (s. auch bes.) Mârk. P. 74,39. — 2) m. a) *Erinnerung, Gedächtniss* Bala beim Schol. zu Naish. 4,52. Kaush. Up. 7,13,1. दुः° adj. *dessen man sich ungern erinnert* Uttarar. 116,12 (157,14). — b) *Erinnerung* so v. a. *Sehnsucht, Liebe* AV. 6,130,1. 132,1. देव Kaush. Up. 2,4. *Geschlechtsliebe* H. 307. स्मरार्ता Spr. (II) 7238. स्मरातुर Vaṇîs. Bṛh. S. 24,31. स्मराकृष्टा Kathâs. 32,87. °पीडित Pâṇḍat. 226,1. °दुर्मद Bhâg. P. 1,15,7. स्मरोपकरण Vaṇîs. Bṛh. S. 104,32. °निपुण Bṛh. 20,3. °रुज् Bhâg. P. 2,7,

33. °ज्वर Ver. in LA. (III) 20,18. स्मरावेश Kathâs. 37,203. °व्याजप्रकट Bhâg. P. 6,1,63. am Ende eines adj. comp. (f. आ) Varâh. Bṛh. S. 12, 9. Kathâs. 101,70. Râga-Tar. 1,250. — c) *der Liebesgott* AK. 1,1,4,20. H. 227. Halâj. 1,32. Kumâras. 4,8. Çiç. 60. 119. 131. Kathâs. 4,7. 16, 75. 18,213. Râga-Tar. 3,525. Hit. 39,20. Daçâratas. 92,1. Bhâg. P. 3,1, 29. Çaṃk. 1,2. ein Sohn der Devaki Bhâg. P. 10,85,51. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) Kathâs. 111,37. — d) *Erklärer des* Veda Bâlar. a. a. O. in dieser Bed. und zugleich *Liebesgott* Naish. 4,32. — e) Bez. *des 7ten astrol. Hauses* Varâh. Bṛh. 3,4. 4,4. 5,17 u. s. w.

स्मरकथा f. *Liebesgeplauder* Varâh. Bṛh. S. 76,2. 78,12.

स्मरकार्य adj. (f. ई) *Liebe weckend* VS. 30,9.

स्मरकूपक m. *die weibliche Scham* (Kâma's *Brünnlein*) Trik. 2,6,22. °कूपिका f. dass. H. 609.

स्मरगुरु m. Kâma's *Lehrer*, Bez. Vishṇu's Çârṅgâdh. bei Wilson.

स्मरगृह n. *die weibliche Scham* (Kâma's *Gemach*) Gaṇâd. im ÇKDr.

स्मरचन्द्र m. *quidam coeundi modus* Smaradîpikâ Tüb. Hdschr. und im ÇKDr. Subhâṣ. 20,45.

स्मरच्छत्र n. *Klitoris* Çârṅgâdh. bei Wilson, *vulva* ÇKDr.

स्मरण (von स्मर्) n. 1) *das Sicherinnern, Gedenken* (das obj. im gen. oder im comp. vorangehend) H. 308. MBh. 13,6102. R. Gorr. 1,4,50. 6,112,106. Kâr. zu P. 1,1,14. Colebr. Misc. Ess. 1,280. Râgat. 10,30. Kumâras. 6,19. Gît. 1,3. Weber, Râmat. Up. 356. Spr. (II) 2912. स्मरणपदवीं ते ऽपि गमिताः 5939. 6225. 6230. 6462. 6790. 6992. 7259. 7506. Varâh. Bṛh. S. 12,13. 78,14. Kathâs. 37,128. Mâlav. P. 30,10. Prab. 72,14. Bhâg. P. 1,8,35. 2,4,15. 3,33,6. 5,3,12. Pañc. 1,7,87. Pañcat. 101,24. 208,14. Schol. zu P. 1,3,46. Vop. 5,12. 9,15. 25,29. Verz. d. Oxf. H. 50,b, N. 3. 238,b, 27. Schol. zu Kâṭj. Ça. 49,18. fg. 86,18. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 6, Çl. 17. Sarvadarçanas. 64,13. 102,10. पितुश्चास्मरणं वधे MBh. 3,10311. Çiç. 119, v. l. चैत्रदृष्टस्य मैत्रेणास्मरणमिव Kusum. 13,11. Sarvadarçanas. 127,20. fgg. — 2) *Gedächtniss:* घनदृष्टित्व° adj. Bhâg. P. 9,23,25. मदनुभवाहस्तुस्मृतिः स्मरणमुच्यते Sâh. D. 668; vgl. स्मृति als Arthâlaṃkâra Verz. d. Oxf. H. 208,b, 9. — 3) *das Ueberliefern:* स्यात्तत्तत्तो स्मरणोचितम् Spr. (II) 3782. इति कात्यायनस्मरणात् Kull. zu M. 3,66. इति कौर्मवाक्ये प्रकृतिपुरुषयोर्गौणोत्पत्तिस्मरणात् (lies गौणोत्पत्ति°) Comm. zu Kap. 1,70. — Vgl. ज्ञाति° und श्रीस्मरणदर्पण.

स्मरणापत्यतर्पक m. *Schildkröte* Çârṅgâdh. bei Wilson.

स्मरणीय (von स्मर्) adj. *dessen man sich erinnern muss:* वाचः MBh. 3,1980. Bhâg. P. 10,47,5. स्मरणीयं स्मरं कुर्वन् so v. a. an Kâma erinnernd Çaṃk. 1,3.

स्मरता f. und स्मरत्व n. nom. abstr. zu स्मर 1) in ज्ञाति°: s. u. ज्ञातिस्मर. °स्मरता auch Jâtâ. 3,161.

स्मरदशा f. *Zustand —, Stadium der Geschlechtsliebe;* deren werden zehn angenommen: नयनप्रीति *Augenweide*, चित्तासङ्ग *Nachdenklichkeit*, संकल्प *Verlangen*, निद्राक्षेद *Schlaflosigkeit*, तनुता *Abmagerung*, विषयनिवृत्ति *Gleichgiltigkeit gegen die Aussenwelt*, त्रपानाश *Schamlosigkeit*, उन्माद *Geistesverwirrung* und मृत्यु *Tod* Uddîpanâbharaṇa im ÇKDr. Andere Zustände aus dem Kâmaç. beim Schol. zu Hâla 185.

स्मरदहन m. Kâma's *Verbrenner*, ein N. Çiva's Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,8, Çl. 29.

स्मरदायिन् adj. *Geschlechtsliebe weckend* Kir. 6,13.

स्मरदीपन 1) adj. dass. Ragh. 9,21. — 2) m. N. pr. eines angeblichen Verfassers von Gebeten bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 101,a,33 (wohl °दीपन: zu lesen).

स्मरदीपिका f. Titel eines über *Erotik* handelnden Buches Verz. d. Tüb. H. 20. Verz. d. Oxf. H. 352,b, No. 835.

स्मरध्वज 1) m. *a) ein musikalisches Instrument* H. 286. — *b) penis* Çârṅgâdh. bei Wilson. — 2) f. आ *eine mondhelle Nacht* Çârṅgâdh. bei Wilson. — 3) n. *vulva* Çârṅgâdh. im ÇKDr.

स्मरप्रिया f. Kâma's *Geliebte* d. i. Rati Gaṇâd. in Verz. d. Oxf. H. 190,b,35.

स्मरमन्दिर n. *die weibliche Scham* (Kâma's *Gemach*) H. 609. Halâj. 2,259. Râgân. 18.

स्मरलेखनी f. *die Predigerkrähe* Çârṅgâdh. im ÇKDr.

स्मरवधूप् (von स्मर + वधू), °पति Kâma's *Weibe gleichen* Kuvalay. 84.

स्मरवत् (von स्मर्) adj. *verliebt:* °वती *ein verliebtes Weib* H. 307, Schol.

स्मरवल्लभ m. Kâma's *Liebling* d. i. Aniruddha Çârṅgâdh. bei Wilson.

स्मरवीथिका f. *Hetäre* Râgân. 18,10.

स्मरवृद्धि m. *eine best. Pflanze, deren Samen für ein Aphrodisiacum gelten*, Râgân. 4,200. — Vgl. 2. कामवृद्धि 2).

स्मरशत्रु m. Kâma's *Feind* d. i. Çiva Vjutp. 83.

स्मरशासन m. Kâma's *Züchtiger* d. i. Çiva Kumâras. 6,3 (Kâmas *dominus* Sr.). Spr. (II) 2423, v. l. Çiv.

स्मरशास्त्र n. *ein Lehrbuch der Erotik* Râga-Tar. 1,339.

स्मरसख m. Kâma's *Freund:* मधु Ragg. 9,35. Bez. *des Mondes* Çârṅgâdh. bei Wilson.

स्मरस्तम्भ m. *penis* Trik. 2,6,24. Çârṅgâdh. im ÇKDr.

स्मरस्मर्य m. *Esel* Trik. 2,9,26.

स्मरहर m. ein N. Çiva's AK. 1,1,4,29. Kâvjâdâ. (1866) 103,14.

स्मरागार n. *die weibliche Scham* (Kâma's *Gemach*) Trik. 2,6,21. Çârṅgâdh. im ÇKDr.

स्मराङ्कुश m. 1) *Fingernagel* (Kâma's *Haken*) Çârṅgâdh. im ÇKDr. — 2) adj. *geil* Çârṅgâdh. bei Wilson.

स्माम्र (स्मर + आम्र) m. *eine Mangoart*, = रक्ताम्र Râgân. 11,16.

स्मरारि m. Kâma's *Feind* d. i. Çiva Trik. 3,3,416. Spr. (II) 7233. Kathâs. 45,141.

स्मरासव m. Kâma's *berauschender Trank* so v. a. *Speichel* Trik. 2,10,16.

स्मरोद्दीपन adj. *Geschlechtsliebe weckend;* m. Bez. *eines best. Haarbüs* Varâh. Bṛh. S. 77,7.

स्मर्तर् (von स्मर्) nom. ag. *der sich erinnert, gedenkt* (das Object im gen. oder im comp. vorangehend): यदा त्वं तेन इत्येव स्मर्ता स्याम् Harîv. 15589. 15591. Bhâg. P. 1,13,18. Kull. zu M. 7,209. fg. Comm. zu Maitrâyaṇ. 6,35.

स्मर्तव्य (wie eben) adj. *dessen man sich erinnern —, dessen man gedenken muss:* स्मर्तव्यो ऽस्मि कथान्तरे MBh. 1,3270. 3,11321. 5,2996. Harîv. 10043. R. 7,40,12. Mṛkâṇḍ. 110,11. Vikr. 29,16. Spr. (II) 4781.

7259. Z. d. d. m. G. 27,75. Kathâs. 37, 179. 42, 82. 54, 62. 118, 191. Çâṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 292. Bhâg. P. 1, 19, 38. 2, 1, 5. 2, 36. Pañcar. 4, 2, 33. Râǵa-Tar. 3, 522. स° 7, 1646. *dessen man sich erinnert* Naish. 3, 1, 13.

स्मर्य (wie eben) adj. dass. Pañcar. 3, 7, 29. — Vgl. स्मर°.

स्माय (von स्मि) m. *das Lächeln* Bhâg. P. 10, 61, 4. 11, 6, 13.

स्मार (von स्मर्) m. *Erinnerung an* (geht im comp. voran) MBh. 3, 264. etwa *Sehnsucht, Verlangen* Ind. St. 2, 98. — स्मारम् absol. s. u. स्मर् 1).

स्मारक (vom caus. von स्मर्) adj. *in's Gedächtniss rufend* Comm. zu Kâtj. Ça. 86, 6. 10. 14. धर्म° Ind. St. 10, 131. Davon nom. abstr. °त्व n. Comm. zu Kâtj. Ça. 86, 11. 139, 7. 8.

स्मारण (wie eben) 1) n. *das in's Gedächtniss Rufen* Çâṅk. zu Bṛn. Âr. Up. S. 18. Siṃh. D. 112, 7. Schol. zu Kâtj. Ça. 86, 19. — 2) n. und f. या *das Nachrechnen, Nachzählen, Controliren:* einer Heerde MBh. 3, 14823. 14836. 14839. 14864. — 3) f. ई *eine best. Pflanze,* = ब्राह्मी Ratnâk. in Nigh. Pa.

स्मारिन् (von स्मर्) adj. *sich erinnernd, gedenkend:* स्वदेश° *Heimweh empfindend* Râǵa-Tar. 4, 111.

स्मार्त (von स्मृति) adj. 1) *das Gedächtniss —, die Besinnung betreffend* MBh. 3, 12115. — 2) *auf Tradition beruhend, althergebracht, in den Rechtsbüchern gelehrt, — verordnet* (neben श्रौत): बलित्रय Âçv. Gṛhj. 4, 9, 4. कर्माणि Z. d. d. m. G. 7, 527. धर्म: श्रुत्युक्त: स्मार्त एव च M. 1, 108. Jâǵñ. 1, 97. 313. Müller, SL. 99. Ind. St. 1, 83. 102. Bhâg. P. 5, 14, 30. Sarvadarçanas. 57, 14. 59, 16. Schol. zu Kâtj. Ça. 171, 4. 7. 402, 7. 8. 622, 3 v. u. 1053, 6. Schol. zu Kap. 1, 7. H. 510, Schol. °कोशपरिशिष्ट Verz. d. Oxf. H. 383, b, No. 466. °व्यवस्थार्णव Notices of Skt Mss. 1, 181. 2, 76. — 3) *die Tradition kennend, ein Anhänger derselben* Spr. (II) 1478. Wilson, Sel. Works 1, 120. 129. 195 fg.

स्मार्तिक adj. (f. ई) = स्मार्त 2) Kull. zu M. 3, 127.

स्मार्य (von स्मर्) adj. *dessen man sich erinnern soll, woran man zu denken hat* Kâr. zu P. 3, 2, 139. Vop. 25, 30.

स्मि, स्मयते Dhâtup. 22, 31 (ईषद्धसे). सिष्मिये ved. der Anlaut geht in ष über Vop. 8, 13. 1) *lächeln, verschämt lächeln, erröthen:* स्मिये स्मयते विभाती (उषा:) ṚV. 1, 92, 6. उप स्मयेते तन्वाउ विरूपे 3, 4, 6. Frauen 4, 58, 8. यत्स्मयेत नग्नंभावुका: स्यु: *wenn sie erröthet* TS. 6, 1, 8, 3. Kâṭh. 25, 6. सिष्मियाण Taitt. Âr. 5, 1, 3. द्यौरिव स्मयमानो नभोभि: *erröthend* (im Wetterleuchten) ṚV. 2, 4, 6. 1, 79, 2. In der späteren Sprache *lächeln:* अस्मयत MBh. 3, 950. 13, 5797. Daçak. 61, 1. स्मयमान MBh. 1, 2900. 3, 1871. 2153. 5, 7126. 7365. 7, 1368. Bhâg. P. 3, 23, 49. 4, 8, 51. 22, 17. 5, 10, 9. 7, 10, 1. Bhaṭṭ. 2, 11. धस्मेष्ट 15, 8. स्मेष्यन्ते 16, 14. स्मित्वा Spr. (II) 5898. Kathâs. 35, 81. act. (des Metrums wegen): स्मयति MBh. 3, 951. स्मयामि 952. अस्मयत् 12, 921. स्मयत्त् 2, 272. 3, 1781. 2878. 3046. 5, 5980. 7121. 7145. 7296. Spr. (II) 7249, v. l. Bhâg. P. 1, 5, 1. 3, 17, 27. 6, 17, 25. 8, 12, 3. 9, 23, 36. 10, 9, 17. — 2) *Hochmuth an den Tag legen* (nach dem Comm.; vgl. स्मय): स्मयन्निव गतस्मय: Bhâg. P. 3, 7, 8. — 3) partic. स्मित a) adj. α) *lächelnd:* दृष्ट° MBh. 13, 2385 (= गर्वित Nîlak.). °मुख adj. R. Gorr. 2, 16, 42. Kathâs. 12, 72. 49, 11. — β) *aufgeblüht* Thom. 2, 4, 4. H. 1127. Hâlâs. 2, 22. Spr. (II) 1411. Çiç. 6, 54. — b) n. *das Lächeln* AK. 1, 1, 2, 34. H. 296. Hâlâs. 2, 412. Vaṭs. beim Schol. zu Bhaṭṭ. 5, 65. MBh. 4, 119. Râgat. 5, 70. Spr. (II) 7260. fg. Varâh. Bṛh. S. 58, 48. 70, 19 (pl.). Kathâs. 16, 46. 61, 13. Râǵa-Tar. 1, 78 (pl.). 3, 293. 4, 302. 5, 224. 365. Brahma-P. in L.A. (III) 55, 2. Bhâg. P. 1, 10, 16. 27. 11, 23. 15, 18. 19, 28. 2, 9, 18. 3, 15, 20. 16, 11. 21, 10. अत्त:° Kâraṇḍ. 14. °पूर्वम् MBh. 1, 5947. 3, 2153. R. 2, 49, 3. Kâm. Nîtis. 15, 49. Kumâras. 7, 47. °वाच् adj. Kâm. Nîtis. 4, 19. स्मितं कर् MBh. 3, 1814. Mṛǵ. 87, 11. Çiç. 21, 6. 28, 18. Çiç. Cr. 2, 5. Vikr. 13, 4. Prab. 89, 3. am Ende eines adj. comp. (f. या): कृत° Çiç. 161. Râǵa-Tar. 3, 246. विकृत° 236. Kathâs. 122, 72. Bhâg. P. 4, 21, 15. स° von *Lächeln begleitet* Ṛt. 1, 12. कथा Kumâras. 4, 33. Bhâg. P. 1, 10, 31. *lächelnd* Râǵa-Tar. 3, 25. स-स्मितम् adv. R. 3, 49, 31. Çiç. 12, 9. 22, 12. 30, 7. 37, 3. Vikr. 28, 12. Râǵa-Tar. 3, 301. fg. 4, 236. Daçar. 93, 4. सविलक्षस्मितम् Pañcat. 19, 16. — Vgl. शुचिस्मित, सुस्मित.

— caus. स्मापयति P. 6, 1, 37. °ते (मनादरे) Dhâtup. 32, 37, v. l.; vgl. स्मिट्.

— desid. सिस्मयिषते P. 7, 2, 74. Vop. 19, 7.

— intens. सेष्मीयमाण Nir. 8, 11.

— अभि *dazu lächeln:* अभिस्मयत्त: MBh. 3, 8732.

— अव *erröthend herabscheinen:* अवं स्मयत्त विद्युत: पृथिव्याम् ṚV. 1, 168, 8.

— उद् *auflächeln,* insbes. *im Gefühl des Stolzes:* उत्स्मयत्त् MBh. 1. 7059. 3, 14969. 7, 1266. 3700. 12, 10258. 13, 471. fg. 5798. Bhâg. P. 1, 16, 34. 3, 2, 5. 10, 9, 17. 26, 25. उत्स्मयित्वा R. ed. Bomb. 1, 1, 65 (उत्स्मायित्वा fehlerhaft Schl. 63). 3, 43, 43. उत्स्मित n. *das Lächeln* Bhâg. P. 3, 15, 12. 8, 9, 18. 11, 6, 49.

— अभ्युद्, nur partic. अभ्युत्स्मयत्त् *anlächelnd, mit acc.* MBh. 2, 2391. Harîv. 3827. *lächelnd* MBh. 3, 7325. 6, 2371. 7, 725. 5375. 11, 752.

— कु s. कुस्मय्.

— उप *anlächeln:* अप्सरा बारमुपसिस्मियाणा ṚV. 10, 123, 3.

— परि caus. s. परिस्मापन.

— प्र *in Lachen gerathen:* प्रस्मयते Nir. 9, 11. प्रस्मयत्त् MBh. 7, 4958. Harîv. 16323.

— वि 1) *betroffen —, bestürzt werden, erstaunen über* (instr., loc., abl.): यत्र वै वृत्राय वज्रं प्राहरं तद्यस्मये न कश्च इवास्मि Çat. Br. 1, 6, 3. 4. 4, 5, 12. विस्मयते MBh. 10, 293. Kathâs. 37, 89. व्यस्मयत्त MBh. 4. 861. 7, 2171. Harîv. 13300. R. 2, 91, 73 (100, 74 Gorr.). 3, 49, 3. विसिस्मिये MBh. 1, 7073. 3, 11271. R. 6, 79, 18. Ragh. 15, 68. Kathâs. 22, 225. 29, 173. 43, 242. 54, 7. 122, 112. Verz. d. Oxf. H. 257, a, N. 3. Bhaṭṭ. 14, 37. विसिस्मिये 3, 51. विसिस्मिरे R. 3, 56, 53. विसिस्मिरे Bhâg. P. 9, 3. 18. व्यस्मयिष्ठास् MBh. 13, 5793. act.: विस्मयेत् Harîv. 3975. विस्मयत्त् MBh. 1, 7214. 2, 1813. 4, 843. विसिस्माय Harîv. 2053. विसिस्मियुस् MBh. 3, 11447. 8, 4508. Harîv. 13148 (विसिस्मयुस् die neuere Ausg.). विसिस्म्युस् Bhâg. P. 4, 24, 23. 10, 84, 1. विस्मयामास MBh. 13, 1356. विस्मित्य 3, 2132. — 2) *stolz sein auf, grossthun mit* (instr.): न विस्मयेत तपसा M. 4, 236. — 3) partic. विस्मित a) *betroffen, erstaunt* Buas. 11, 22. MBh. 1, 6007. fg. 3, 2152. 2186. 2220. 2496. 2582. 2620. 2934. R. 1, 2, 27. 42. 9, 20. 23. 2, 96, 86. 111, 27. 112, 1. 3, 3, 16. 49, 5. Ragh. 2, 38. 62. 3, 40. 5, 51. Çiç. 50, 3. Kathâs. 18, 250. Mâlav. P. 23, 2. Râǵa-Tar.

4,432. Daçak. 66,8. Pañkat. 38,23. Hit. ed. Jones. 1144. 1183. 1541. 1817. Çuk. in LA. (III) 34,15. fg. वनदर्शन° R. 2, 96,4. Çik. 160. v. l. Kir. 5,16. Kathâs. 12,124. Râga-Tar. 3,41. अति° Maitrâyan. 4,1. — *b) worüber man erstaunt, wunderbar:* सुविस्मितं कृत्यम् Bhâg. P. 5,18, 4. सुविस्मिततरं वाक्यम् R. 3,35,32. — *c) stolz, hochmüthig:* अ° Bhâg. P. 6,9,26. — Vgl. 1. विस्मय, विस्मयन fg., विस्मित, विस्मेर und सुविस्मित. — caus. विस्मापयति *in Staunen versetzen*, mit acc. MBh. 8,625. जगत्सर्वम् R. 5,2,40. Ragu. 2,33. Kathâs. 61,256. Rigbhav. 11,7. Bhâg. P. 9,20,27. विस्मापित 1,15,12. Prab. 81,9. दैवाद्भूतेन विस्मापयति (°स्मापयति die neuere Ausg.). Nach P. 1,3,68. 6,1,57 und Vop. 18,18 विस्मापयते, wenn der Agens unmittelbar das Staunen erregt, und विस्मापयति (विस्मापयति Siddh. K. 153,*b*,4), wenn eine nähere Angabe, wodurch dieses geschieht, im instr. dabeisteht: गुणैर्ना विस्मापयते (vgl. Bhatt. 5,58. 8,43. 17,84), द्रव्येण विस्मापयति. — Vgl. विस्मापक fgg. — desid. vom caus. s. विसिस्मापयिषु.

— अनुवि, partic. °स्मित *erstaunt nach einem Andern* (acc.) R. 3,3,16. — सम् *verschämt sein, erröthen:* संस्मर्यमाना युवतिर्ह्राविवर्तनाभि कर्णयो RV. 1,123,10. TBr. 3,6,9,2. — desid. *verlachen wollen:* संसिस्मापयिषमाणो द्विषः Bhatt. 9,52.

स्मिट्, स्मेटयति (अनादरे, गतौ) Dhâtup. 32,37. (स्रेके) 36, v. l.

स्मील्, स्मीलति = स्मील्, मील् u. s. w. (निमेषणे) Dhâtup. 15,12.

स्मृत् (von स्मर्) adj. s. लोक°, सर्व°.

स्मृति (wie oben) f. Vop. 26,183. 1) *Erinnerung, Gedächtniss* AK. 1, 1,3,29. H. 308. an. 2,209 (= स्मरण und धी). Med. t. 74. Çiksh. Gaut. 2,10. Taitt. Âr. 10,10,3. Kaush. Up. 7,26,2. Ait. Up. 5,2. VS. Prât. 4,179. Kap. 3,2,6. Nyâyas. 3,1,13.15. संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः Tarkas. 19. Sarvadarçanas. 58,14. fgg. 59,14. MBh. 12,10146. °क्षीण R. 4, 55,7. Suçr. 1,114,6. 126,18. 231,8. Çik. 181. Spr. (II) 1195. 3800. 7202. Mâlav. P. 101,19. Râga-Tar. 1,11. Sâh. D. 158. 196. Bhâg. P. 1,6,25. 2,2,1. 4,22. 3,26,30. 4,20,25. Bhâsâp. 47. °वैधिर्य Çik. 110,15. सर्वमगात्स्मृतिपथम् Spr. (II) 7025. °विषयतां ते ऽपि गमिताः 5939, v. l. प्राक्कृत्यविषया Bhâg. P. 1,6,4. संदिग्धा R. 5,18,7. सुदृढ° adj. Kâm. Nitis. 18,37. कृता Bhâg. P. 4,3,17. न च मानत्रकात्स्मृतिः MBh. 3,12415. प्रादुर्बभूव Harîv. 9216. आविशत् R. 4,59,6. प्रत्यागत° adj. R. Schl. 2,58, 1. अगलित° adj. Spr. (II) 1836. स्मृतिर्मम लुप्यते R. 2,64,62 (66,58 Gorr.). लुप्त° adj. MBh. 14,37. प्रलुप्त° adj. Râga-Tar. 4,500. अविलुप्त° adj. 5,5. प्लवित° adj. 1,334. सर्वेषां स्मृतिमाक्षिप्य MBh. 13,942. शापव्यवस्थित° Çik. 71,18. स्मृतिर्लब्धा Bhag. 18,73. लब्ध° adj. Râga-Tar. 3,272. Bhâg. P. 3,31,9. नोपलेभे स्मृतिं धीमानभिज्ञातुं तमात्मनाम् MBh. 1,3994. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,25. Çik. 108,7. स्मृतिमपि न ते यान्ति so v. a. *ihrer wird nicht einmal gedacht* Spr. (II) 4597. स्मृतिमद्यापि गच्छति *lebt noch heute in der Erinnerung* Râga-Tar. 1,337. स्मृतावाविर्भूतं तदुक्तम् Uttarar. 78,8 (100,15). अस्मिन्कार्ये स्मृतिमवोन्नयत् *Erinnerung an* Kathâs. 18,218. करो न वक्त्रे ऽचलितां स्मृतिम् Bhâg. P. 4,12,8. दृदर्श °मात्रेण ततेजो नभसि स्थितम् *durch blosses Gedenken seiner* (Krshṇa's) Pañkar. 1,12,12. मुनिसुताप्रणय° *Erinnerung an* Çik. 135. रामपद° Spr. (II) 6051. Kathâs. 1,12. Râga-Tar. 3,250. 431. 5,463. Sâh. D. 668. Bhâg. P. 2,1,6. 8,4,12. Pañkar. 1,11,19. Sarvadarçanas. 75,1. कृत° *an empfangene Wohlthaten* so v. a. *Dankbarkeit* Vaitân. Bau. S. 78,6. स्मृति als Arthâlañkâra Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,9; vgl. स्मरण Sâh. D. 668. — 2) *die Erinnerung* personificirt Harîv. 9498. 14036. als Tochter Daksha's und Gattin des Aṅgiras VP. 1,7,23. fg. 10,7. Mârk. P. 50,22. 52,20. als Tochter Dharma's von der Medhâ Bhâg. P. 4,1,51. — 3) *Verlangen* H. an. ऊर्ध्वभवति Spr. (II) 4282, v. l. für स्पृहा. — 4) *eine als Autorität geltende Ueberlieferung* (mit Ausnahme der श्रुति, *der vedischen Schriften*), *ein solches Werk, Gesetzbuch, ein Ausspruch in einem solchen Werke* AK. 1,1,5,7. Taik. 3,2,12. 3,189. H. 251. H. an. Med. Lex. 6,1,6. 13. Çiksh. Gaut. 2,7. 4,9. 6,6. RV. Prât. 11,32. M. 2,6. 9. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः 10. 12. 4,155. 6,89. वेदबाह्याः स्मृतयः 12,95. स्मृत्योर्विरोधे Jâgn. 2,21. पुराणा Harîv. 534. 3285. R. 5,81,15. Ind. St. 1,19. 44. fg. Ragu. 2,2. इत्यादिस्मृतिभ्यः Weber, Râmat. Up. 349. Gîov. 111. Verz. d. Oxf. H. 63,*a*,9. 10. 125,*a*,43. Daçak. 76,13. Pañkat. 164,20. Sarvadarçanas. 56,4. 122,5. 157,19. 158,3. Vedântas. (Allah.) No. 8. Manôn. zu VS. 8,36 (Bhagavadgîtâ gemeint). स्मृतीनां वेदमूलत्वम् Schol. zu Kâç. Ça. 402,8. °विरुद्ध 1035,10. स्मृतिश्च द्विविधा साधारणी वैशेषिकी चेति Verz. d. B. H. No. 327. अष्टादश Z. d. d. m. G. 27,97. Weber, Râmat. Up. 361. Schol. zu Prab. 86,1.2. — 5) Bez. *eines best. Metrums: a.c.* – ⏑ – – – ⏑ ⏑ – ⏑ – –, *b. d.* ⏑ – ⏑ – – – ⏑ ⏑ – ⏑ – – Journ. of the Am. Or. S. 6,514. wohl nach Ragu. 2,2 benannt, welcher Vers dieses Metrum hat und das Wort स्मृति enthält. — 6) Bez. *des Buchstabens* ग Weber, Râmat. Up. 317. fg. — Vgl. अ°, अय°, मङ्गा°, यया° (*nach der Erinnerung* oder *der Ueberlieferung gemäss* MBh. 1,2144), वेद°, शब्द°, सम्यक्°.

स्मृतिकारिन् adj. *eine Erinnerung weckend* Çik. 148.

स्मृतिकालतरंग m. Titel einer Schrift, = कालतरंग Verz. d. Oxf. H. 286,*a*, N. 1.

स्मृतिकौमुदी f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 275,*b*, No. 653. 279,*b*,47.

स्मृतिकौस्तुभ desgl. Macn. Coll. 1,24. Verz. d. B. H. No. 1033. Verz. d. Oxf. H. 273,*a*,1. 286,*a*,9. Hall 185.

स्मृतिचन्द्र m. desgl. Notices of Skt Mss. 1,299.

स्मृतिचन्द्रिका f. desgl. Macn. Coll. 1,24. Verz. d. B. H. No. 1025. 1028. 1170. Verz. d. Oxf. H. 275,*a*,37. 279,*b*,48. 295,*a*,No. 713. Hall 174. 192.

स्मृतितत्त्व n. desgl. Gild. Bibl. 465. fgg.

स्मृतितत्त्व n. *Gesetzbuch* Spr. (II) 979.

स्मृतिदर्पण m. Titel einer Schrift Macn. Coll. 1,23. Verz. d. B. H. No. 1176. Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,49.

स्मृतिपाठक m. *Rechtsgelehrter* Pañkat. 165,2.

स्मृतिभू m. *der Liebesgott* H. 229, Schol.

स्मृतिभ्रंश m. *Verlust des Gedächtnisses* Bhâg. 2,63. Verz. d. B. H. 278 (46). Pañkar. 3,14,15.

स्मृतिमञ्जरी f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 277,*a*,13. 279,*b*,1 v. u.

स्मृतिमत् (von स्मृति) adj. *der Erinnerung hat* Çik. 112,16. पतितो ऽपि भूतले स्मृतिमानभूत् *hatte seine volle Besinnung* MBh. 13,1799. *sich des früheren Lebens erinnernd* Harîv. 1253. *wobei man Jmdes gedenkt:*

वन्त् Buic. P. 5,19,28. *ein gutes Gedächtniss habend* M. 7,64. Jâǵ. 1,309 (*gesetzkundig* Sr.). Karaka 3,8. MBu. 2,138. 7,2905. R. 1,1,16. 2,1,16. Kâm. Nitis. 4,15. 12,2. Spr. (II) 1837. 2284.

स्मृतिमक्तार्णव m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,1 v. u.

स्मृतिमुक्तावल n. desgl. Mack. Coll. 1,28.

स्मृतिरत्नाकर m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 292,*b*,24.

स्मृतिरत्नावली f. desgl. Verz. d. B. H. No. 1176. Verz. d. Oxf. H. 280,*a*,1.

स्मृतिलोप m. *Verlust der Erinnerung, Vergessenheit* Vaǵâs. Bgn. S. 53,110. 60,13.

स्मृतिवर्धिनी f. *eine best. Pflanze*, = ब्राह्मी Âçvn. 60. — Vgl. स्मारणी.

स्मृतिविभ्रम m. *Gedächtnissstörung* Buic. 2,63. Spr. (II) 6675.

स्मृतिशास्त्र n. *Gesetzbuch* Hariv. 14078.

स्मृतिशेष adj. (f. या) *wovon nur die Erinnerung übrig geblieben ist* so v. a. *zu Grunde gegangen* Spr. (II) 4224.

स्मृतिसंस्काररत्न n. Titel einer Schrift Hall 48.

स्मृतिसंस्कारवाद m. desgl. ebend.

स्मृतिसंस्कारविचार m. desgl. Hall 49. Notices of Skt Mss. 1,77.

स्मृतिसंग्रह m. desgl. Mack. Coll. 1,23. Verz. d. B. H. No. 1020. 1176. Verz. d. Oxf. H. 271,*a*,10. 280,*a*,1. 286,*a*,9.

स्मृतिसमुच्चय m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 280,*a*,2. 283,*b*, No. 662.

स्मृतिसागर m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 292,*b*,35. °संग्रह m. 36. °सार m. 35.

स्मृतिसार m. Titel verschiedener Werke Verz. d. Oxf. H. 104,*a*,34. 273,*a*, No. 647. *b*,3 v. u. 278,*b*,3. 280,*a*,2 nebst Note 2. 292,*b*,38. Verz. d. Cambr. H. 68. Notices of Skt Mss. 2,76 °समुच्चय m. Verz. d. B. H. No. 1017. स्मृतिसारावली Verz. d. Oxf. H. 280,*a*,3.

स्मृतिसुधाकर m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1403.

स्मृतिहर adj. *das Gedächtniss raubend;* f. रा N. pr. einer bösen Fee, einer Tochter Duḥçaha's, Mâhâbh. P. 51,6. = °हारिका 45.

स्मृतो adj. = उ: शंभु: स्मृतो येन स: Siddh. K. zu P. 7,1,90.

स्मृत्यर्थसागर m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 285,*b*, No. 669.

स्मृत्यर्थसार m. desgl. Verz. d. B. H. No. 1170. 1176. 1403. Verz. d. Oxf. H. 274,*a*, No. 649. 275,*a*,37. 279,*b*,29. 280,*a*,3. 4. 286,*a*, No. 670. 292,*b*,35. fg. 294,*b*,31. Hall 174. 177. Pâṇḍâçâuchabh. 12,*a*,6.

स्मृत्युपस्थान s. u. उपस्थान 1); vgl. auch Wassiljew 248.

स्मेर (von स्मि, adj. (f. रा) P. 3,2,167. Vop. 26,158. 1) *lächelnd* (insbes. vom Antlitz) Hariv. 7079. 8383. Râgat. 18,43. Kumâras. 5,70. Çiç. Cr. 129,13. Spr. (II) 991. स्मेर: स्मेरमुख: Gît. 8,11. Kathâs. 23,96. Râǵa-Tar. 3,501. Dhûrtas. 83,1. Prab. 73,10. Daçak. 168,6. Sâh. D. 71,12. Pañkat. 1,14,64. Verz. d. Oxf. H. 146,*a*, No. 310. 204,*b*, No. 483, Z. 5. चक्षुस् Kathâs. 104,34. स्मेरं विधाय नयनं विकसितमिव नीलमुत्पलं मयि सा Sâh. D. 275,9. तस्मेरापाङ्गवीक्षणै: Pañkat. 4,6,6. °भावा दृष्टि: Citat beim Schol. zu Çiç. 35. — 2) *aufgeblüht* H. 1129. इन्दीवर Sâh. D. 41, 15. — 3) am Ende eines comp. so v. a. *voll von:* स्मरस्मेरविलासिनी Spr. (II) 4811. प्रमोदस्मेरवदना Sâh. D. 116. विस्मय° Mâlatîm. 16,10. Kathâs. 4,86. Râǵa-Tar. 3,71. भस्म° 2,170.7,1489. कोकिलकाकलीकलरव-स्मेरा (so ist zu lesen) लतानएउ: Spr. (II) 1039. Bei den ersten Beispielen ist natürlich auch die Bed. *lächelnd* zulassig. — Vgl. अ°.

स्मेरता (von स्मेर) f. *das Lachein* Sâh. D. 191. वदन° 228.

स्मेरविभ्रम m. *Pfau* Çabdârthak. bei Wilson.

1. स्य ved. Pronominalstamm der 3ten Person = स; nur im nom. m. स्यम्, स्य VS. Pâṛ. 3,16. TS. Pâṛ. 3,15. P. 6,1,133 und f. स्या. घृतमु ष्य मुर्मुरो यवोदि ṚV. 7,8,2. स्य इन्द्र: 23,3. 38,1. यो हि स्य रथ: 69,5. 2,33,7. दृष उ स्य पुरुव्रत: 9,3,10. 89,1. दृषा स्या 7,75,4. 80,3. 1,178,1. 8,46,33. 26,18. Fehlt im AV.; TBa. 2,1,2,1 fehlerhaft fur स. — Vgl. त्य.

2. स्य n. = शूर्प Nir. 6,9. Çikshâ. Gaṇa. 1,13,15 in Ind. St. 5,332.

स्यगवि m. *ein junger Krebs* Taitt. 3,2,16. — Vgl. सेगव.

1. स्यद् (स्यन्द्), स्यन्दते Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). Dhâtup. 18,22 (प्रस्रवणे). सस्यन्दे, सस्यन्दिरे: स्यत्स्यति und स्यन्दिष्यते, अस्यत्स्यत् und अस्यन्दिष्यत P. 1,3,92. 7,2,59. ved. सिष्यदे, (प्र) सिष्यन्द्, सिष्यदुस्. असिष्यदत्; स्यन्त्वा P. 6,4,31. Vop. 26,203. स्यन्त्वा Çat. Br. 10,3,3,2 nach der Lesart von Sây. partic. स्यर्त्. *laufen* (von Flüssen und Lebendigem), *fahren* (im Wagen): धेनव: स्यन्दमाना: ṚV. 1,32,2. VS. 22,25. यावद्दार्व: सिष्यदु: AV. 9,2,20. 12,2,27. 13,40,2. स्यन्दन्तां कुल्या: ṚV. 5,83,8. क्रीळन्हरिरत्यं: स्यन्दते वृषा Soma 9,80,3. 27,6. 30,4. 49,5. 106,12. स्यन्त्वा यवी: 5,53,7. वक्रनेन Çat. Br. 2,1,4,4. यत्र वेलां मन्येत तत्स्यन्त्वा 4,1,6. 11,8,4,2. Wasser 3,9,2,1. 4. 14,6,8,9. Ait. Br. 1,7. Âçv. Gṛhj. 2,7,7. Mund. Up. 2,1,9. यद्य: स्यन्त्वा विधूनुते Çat. Br. 8,3,3,8. 10,3, 3,2. मत्स्या उदके स्यन्दन्ते Nir. 6,27. — स्यन्दते (स्यन्दते ed. Calc.) किं त्विषं नाथ सरिच्छ्रेष्ठा यथा पुरा MBu. 1,3990. नदीभि: स्यन्दमानाभि: (lies स्य°) R. 7,31,17. परस्परालिङ्गितयोस्तयोस्ते स्वेदच्छलादिव । घर्तिपीउनत: स्रेक: सस्यन्दे चिरमेतत: ॥ Kathâs. 18,370. स्यन्दमानं मरन्दम् Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,16. पयैव पूर्णादुदधे: स्यन्दन्त्यापो दिशो दश Spr. (II) 3166. स्यन्दत्स्वेदकण Brahma-P. in LA. (I) 59,5. स्यन्त्वा स्यन्त्वा दिव: (गङ्गा) Bhâṛ. 22,11. घात्तं रथे: स्यत्स्यति वक्रिरिन्दो: so v. a. *hervorgehen* 12, 77. इन्दो: स्यन्दिष्यते वक्रि: 16,17. स्यन्न *fliessend* AK. 3,2,12. H. 1196. °स्वेदकण Bhâṛ. 5,83. *fliessen* so v. a. *eine Feuchtigkeit aus sich entlassen:* स्यन्दतामपि (स्य° N. 13,10 bei Boee) नागानाम् *mit fliessenden Schläfen* MBu. 3,2561. गोभि: स्यन्दन्तीभि: *mit fliessenden Eutern* Hariv. 3388. सततं हि स्यन्दते — भारती गौ: MBu. 14,650. fg. तत्रं स्यन्दिग्यते (impers.) मेघै: Bhâṛ. 16,7. अस्यन्दच्चिन्दुमणय: 8,66. mit acc. der Feuchtigkeit: स्यन्दति नैव च पय: प्रचुरं सवत्स्य: Vaǵâs. Bgn. S. 19,1. स्यन्दते (so ed. Bomb.) हि दिवा रूक्षं रात्रौ च MBu. 14,1686. न मणि: स्यन्दते रूक्षाम् Hariv. 2035. सस्यन्दे शोणितं व्योम Bhâṛ. 14,98. सिरामुखै: स्यन्यत एव रक्तम् Sâh. D. 89,18. — die v. l. संसते Sucr. 2,397,2 spräche fur स्यन्दते st. स्यन्दते. Vgl. सस्यद्.

— caus. स्यन्दयति = स्रावयति *fliessen lassen* P. 1,3,86, Schol. अस्यन्दयन्याज्ञमि् Âçv. Çr. 4,4,2 fehlerhaft fur अस्यन्दयन्.

— desid. सिस्यत्सति und सिस्यन्दिषते P. 1,3,92. 7,2,59.

— intens. s. सनिष्यद्.

— अच्छ *hinfliessen:* अच्छा हि सोम: कलशाँ असिष्यदत् ṚV. 9,81,2. — intens. *hineilen:* वातमच्छा सनिष्यदत् ṚV. 9,110,4.

— अति *daruberhin fliessen:* अति वारान्पवमानो असिष्यदत् ṚV. 9,60,3.

— अनु, wann der Anlaut in य übergeht P. 8,3,72. Vop. 8,98. *nach —, entlang laufen:* समानो अधी प्रवतामनुष्यदै (infin.) ṚV. 2,13,2. दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्दध्यै 4,22,7. अनुष्यन्दते oder अनुस्यन्दते जलम्, aber nur अनुस्यन्दते मत्स्य: (als Lebendes) P. 8,3,72, Schol.; vgl. die Erklarer

zu der Stelle. — Vgl. अनुष्यन्द.

— अभि, wann der Anlaut in ष übergeht P. 8,3,72. Vop. 8,98. *hinlaufen an:* मा वृतौ अभि सिष्यदे AV. 5,5,9. Wasser Âçv. Gṛhj. 4,5,7. चतुर्दिशमभिस्यन्दती (नदी) Bhâg. P. 5,17,5. यथाभिस्यन्दमानं (यथा विस्यन्दमानं die neuere Ausg.) मे तीर्थं सर्वत्र भावयेत् Harîv. 338. अभिष्यन्दते oder अभिस्यन्दते द्रुघणम् P. 8,3,72, Schol. अभिष्यन्दमानमेघ *regnend* Uttarar. 12,4 (16,10). स्रोतेन हृदयमभिस्यन्देत् (अभिष्य° die neuere Ausg.) so v. a. *überfliessen* 100,14. fg. (133,9. 10). — Vgl. अभिष्यन्द् fg.

— समभि caus. *hinfliessen machen zu* (acc.): गुदम् Kâraka 10,4.

— अव *herabfliessen:* (भद्रा) मृङ्गवतः मृङ्गादवस्यन्दमाना Bhâg. P. 5,17,3. — Vgl. अवस्यन्दन und अवस्यन्दित (auch Daçak. 3,11. 17. Prabôdhak. 23,b,6. Bhar. Nâṭyaç. 18,108. °क 104) in den Nachträgen; richtiger wäre vielleicht अवस्यन्दित.

— अन्वव *hinfahren zu* Çat. Br. 11,8,4,3.

— आ *herbeilaufen:* Kühe AV. 3,12,3. Çâṅkh. Gṛhj. 3,2. उदकं मुखम् *das Wasser läuft in den Mund* Çiç. 16,18,19. — Vgl. आस्यन्दन.

— उपा *herbeifahren zu:* °स्थ्य सद्मम् Çâṅkh. Br. 26,5. *hinfliessen zu:* इलावृतमुपस्यन्दति (नदी) Bhâg. P. 5,16,20. उपस्यन्दयति (= व्याप्य वहति Comm.) ed. Bomb.

— नि, wann der Anlaut in ष übergeht P. 8,3,72. Vop. 8,98. *herabfliessen:* निष्यन्दमानेन रुधिरेण MBh. 9,2284. निष्यन्दते oder निस्यन्दते मधु P., Schol., aber nur निस्यन्दते (*tröpfelt eine Flüssigkeit*) द्रुस्ती Vop. 8,121. *hinfliessen in* (loc.): स्वमनसि निस्यन्दमानानवरतमुखेन (निष्यन्दमान ed. Bomb., = अतिशयेन स्रवत् Comm.) Bhâg. P. 6,9,33. — Vgl. निस्यन्द् fg.

— अभिनि *hinfliessen zu* (acc.): अभिनिस्यन्दते (अभिनिष्यन्दते od. Calc.) मौर्ख्यं सत्यपि हितो (abl.) ज्ञानम् MBh. 12,2881. — Vgl. अभिनिष्यन्द् in den Nachträgen.

— निस्, wann der Anlaut in ष übergeht P. 8,3,72. Vop. 8,98.

— परि, wann der Anlaut in ष übergeht P. 8,3,72. Vop. 8,98. — Vgl. परिष्यन्द् fg.

— प्र *laufen, fliessen* RV. 9,67,28. 68,1. 78,1. Nir. 2,16. Wasser Âçv. Gṛhj. 2,7,12. 4,1,15. प्रस्यन्दता रुधिरेण MBh. 9,914. रथं पुङ्क्ता प्रसिष्यन्द् *abfahren* Çat. Br. 4,1,5,6. — प्रस्यन्दमान MBh. 3,10565. 7, 9176 (ed. Bomb. प्रस्य° an beiden Stellen). Ragh. 5,63 fehlerhaft für प्रस्पन्दमान: प्रास्यन्दत् MBh. 13,3495 in der ed. Bomb. fehlerhaft für प्रास्पन्दत् (so ed. Calc.). Vgl. प्रस्यन्द् fgg. — caus. *fliessen machen, in Fluss bringen:* पञ्च चाश्वसहस्राणि — रुक्वा प्रास्यन्दयत् — नदीं शोणितवाहिनीम् MBh. 8,3899.

— परिप्र *herumfliessen, erfliessen* RV. 9,14,1. 101,2.

— वि, wann der Anlaut ष wird P. 8,3,72. Vop. 8,98. *ausfliessen, überfliessen* (aus dem Topfe) VS. 39,5. Taitt. Br. 2,1,2,1. Ait. Br. 5, 26. यस्याग्निक्षेत्रमधिश्रितं स्कन्दति विष्यन्दते वा 7,5. Çat. Br. 11,6,2,2. Âçv. Çr. 3,10,24. Kâtj. Çr. 25,2,3. Kauç. 132. partic. विष्यण (so zu lesen) TBr. 3,7,8,1. *reichlich fliessen:* विष्यन्दमानरुधिर Bhaṭṭ. 9,74. यथा विस्यन्दमानं (lies विस्य°, यथाभिस्य° ed. Calc.) मे तीर्थं सर्वत्र भावयेत् Harîv. 338 nach der Lesart der neueren Ausg. *ausfliessen:* विष्यन्दते oder विस्यन्दते तैलम् P. 8,3,72, Schol. यथा ह्यमृतमादाय सोमो विस्यन्दते पुनः so v. a. *fliessen lassen* MBh. 13,2719. — अविस्यन्दित Kumâras. 3, 47 fehlerhaft für अविस्यन्दितं. Vgl. विष्यन्द् fgg. — caus. *ausgiessen, begiessen* Çat. Br. 12,4,3,5. उदकुम्भम् Kauç. 43. सर्पिषा 62. *zerfliessen machen, auflösen:* लवणं विष्यन्दयति Kâraka 1,27.

— अनुवि *überfliessen auf:* पशुं प्रगनुविष्यन्दते Çat. Br. 11,7,4,3.

— अभिवि caus. *begiessen* Kauç. 86.

— सम् *zusammenlaufen:* सिरा: *Adern, die von der Mutter zum Kinde laufen,* Kâraka 4,6. असंस्यन्दमान Kâtj. Çr. 2,5,26. Vgl. संस्यन्द्.

— अनुसम् intens. *nachlaufen:* कर्तुं दधिक्रा अनु संसनिष्यदत् (P. 7,4, 65) VS. 9,14 (RV. v. l.).

2. स्यद् (= 1. स्यद्) adj. *laufend, fliessend in* रघुष्यद्, रुक्वन°.

स्यंद (von स्यद्) m. 1) *das Fahren* Çat. Br. 12,5,4,5. — 2) *Geschwindigkeit* P. 6,4,28 (गो°, अश्व° Schol.). Vop. 26,174. 8,126 (als Bed. von सर्). AK. 1,1,4,59. H. 494. Hall. 2,288. — Vgl. रघु°.

स्यंतर् (wie eben) nom. ag. *fahrend* RV. 10,22,4.

स्यन्द् (wie eben) m. 1) *das Fliessen* AK. 3,4,44,71. स्यन्दात्मक Suçr. 2,311,19. घृत° P. 6,4,28, Schol. मधुमधु° Gîr. 12,11. सुधा° Spr. (II) 5934. घनमकरन्द° 433. अमन्दरस° Râga-Tar. 1,24. धातु° 4,329. — 2) *Fluss* (verschiedener Art, *Katarrh* u. s. w.) Suçr. 1,239,14. 2,342,13. *fliessende Augenkrankheit* 305,5. 312,12. — 3) *triefender Schweiss* Bhâg. P. 5,21,9 (स्यन्द् ed. Bomb., = स्वेदोद्गम Comm.). — 4) *der Mond* H. ç. 11. — मन्द° (मनस्) Spr. (II) 5256 fehlerhaft für °स्यन्द्. — Vgl. पित्त°, मधु°, सरल°.

स्यन्दक (wie eben) 1) m. *Diospyros embryopteris* Râgân. 11,78. wohl richtiger स्यन्दक. — 2) f. स्यन्दिका N. pr. eines Flusses R. 2,49,11.

स्यन्दन (wie eben) Uṇâdik. zu Uṇâdis. 2,76. 1) adj. (f. आ) *a) rasch laufend:* Wagen Kir. 15,16. AV. 8,6,17 fehlerhaft für स्यन्दन. — *b) träufelnd:* घृत° Kathâs. 103,62. — *c) fliessen machend, auflösend* Suçr. 2,63,7. — 2) m. *a) Fahrzeug, Wagen, Kriegswagen* AK. 2,8,2,19. 22. Trik. 3,3,269. H. 731. an. 3,439. Med. n. 148 (m. n.). Hall. 2,289. Viçva bei Uṇâdik. RV. 3,53,19 (स्यन्दने Müller und Aufrecht; vgl. jedoch Sây.). M. 7,192 (= Hit. III,81). Buâg. 1,14. MBh. 3,2291. 4,1075. 6,2778. 2832. 8,857. 9,862. 18,224. Harîv. 4426. R. 2,46,26. 28. 82,25. 93,15. R. Gorr. 2,44,27. 5,12, 21. Spr. (II) 6232. Ragh. 1,26. 40. Çiç. 7. 32. Kir. 15,16. Kathâs. 50,28. fg. 56,338. Prab. 78,14. Bhâg. P. 3,21,36. 4,10,4. 9,4,27. 11,6,39. — — *b) Dalbergia ougeinensis Roxb.* AK. 2,4,2,7. Trik. H. an. Med. Viçva a. a. O. Râgân. 9,119. Kaṇ. 8. MBh. 3,2493. 12,5837. R. 3,21,20. सूक्ष्मोऽपि भारं नृपते स्यन्दनो वै शक्तो वोढुं न तथान्ये महीजाः Spr. (II) 7458. Suçr. 2,324,7. °द्रुम Çabdar. im ÇKDr. — *c) ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. Gorr. 1,31,9. — *d) Wind* Çabdâmrit. bei Wilson. — *e)* N. pr. des 23ten Arhant's der vergangenen Utsarpiṇî H. 53. — 3) f. ई *a)* = स्यन्दनी *Speichel* Râgân. im ÇKDr. — *b) Harnröhre* ÇKDr. ohne Angabe einer best. Aut. — 4) n. *a) das Fliessen* Trik. H. an. Med. Viçva a. a. O. Nir. 9,26. Kaṇ. 5,2,4. Buâsiṇ. 6. 135. Tarkas. 17. Çâṅk. zu Bâd. Âr. Up. S. 22. प्राणस्य so v. a. *Circulation* Gaupân. zu Sâṅkhjak. 29. — *b) Wasser* H. an. Med. Viçva a. a. O. — स्यन्दन Kathâs. 43,14 fehlerhaft für स्यन्दन. Vgl. अ°, स्व:°.

स्यन्दनारोह adj. *zu Wagen sitzend, ein Kämpfer zu Wagen* AK. 2,

8,9,25. Hall. 2,235.

स्यन्दनि m. 1) = स्यन्दन 2) *b*) Ratnam. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Mannes, pl. Sāmañ. K. 184,*a*,10.

स्यन्दनिका (von स्यन्दन) f. *Bach:* यदन्तरं °समुद्रयोः R. 3,33,36.

स्यन्दमय in कान्तिसुधा° adj. (f. ई) von कान्तिसुधास्यन्द *das Fliessen von* Kathās. 51,154.

स्यन्दितोय adj. P. 6,2,108, Schol. wohl fehlerhaft für स्प°.

स्यन्दिन् (von स्यन्द्) 1) adj. *fliessend:* तोये: कोप्यै: स्यन्दिभि: सारसेश Vaṛāh. Bṛ. S. 26,7. स्वेदबिन्दु Kuvalay. 146,*a* (174,*a*). *Feuchtigkeit entlassend:* चन्द्रमणि Uttarar. 16,16 (23,3). von Kühen, *bei denen die Milch von selbst fliesst,* Prāyaçcittend. 52,*b*,3. 53,*a*,3. Gewöhnlich in comp. mit der Flüssigkeit, *die man fliessen lässt:* रुधिरस्यन्दिनी नदी MBh. 6,2336. स्फुटजललव° Megh. 71. घृत° Spr. (II) 533. 6330. 6757. Gīr. 3,15. Kathās. 94,31. Rāja-Tar. 1,220. 4,614. Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,12. Daçar. 77,5. Bhāg. P. 6,11,12. — 2) f. स्यन्दिनी *Speichel* AK. 2,6,2,18. H. 633.

स्यन्दोलिका f. *Schaukel* oder *das Schaukeln* (= दोलावलम्ब Nilak.) Harīv. 3737. — Vgl. स्यन्दोलिका (richtiger), स्पान्दोलक u. s. w.

स्यन्ध्या (von स्यन्द्) f. *Durchzug* d. h. *Schnur, Nestel* u. s. w.: लस्यूञ्ज्या स्यन्ध्यया प्रतीव्यति Çat. Br. 3,5,2,25. 6,1,25. घृतमलवि सृष्टाभि: स्यन्ध्याभि: 13,3,1,19. नीव्रो Çāṅkh. Çr. 17,2,10. Ueberall स्यन्ध्या geschr.

स्यन्द्र (wie oben) adj. *fahrend, eilend:* प्र स्यन्द्रा याव: ṚV. 1,180,9. die Marut 5,52,8. 8,87,3. सद्यो य: स्यन्द्रो विषितो धवीयान् 6,12,5. *flüchtig, schnell vorübergehend:* धनं न स्यन्द्रं बकुलं यो अस्मै तोग्रास्सोमं धासुनोति 10,42,5.

स्यन्न s. u. स्यद्.

स्यम्, स्यँमति (गतौ) Naigh. 2,14. Dhātup. 19,78 (स्यर्मति Vop. nach Westergaard). सस्याम, सस्यमुम् und स्येमुम्, सस्यमिव und सेमिव P. 6, 4,125, Schol. सस्यमीत् 7,2,5, Schol. स्यमु: und सस्यमु: = शब्दं चक्रु: Bhaṭṭ. 14,77. 83. स्यमयति (याते) Kavikalpadruma im ÇKDa. स्यामयति und °ते (वितर्के) ebend. लोक: पुरुषं स्थाणुवेन Dhanañ. ebend. — intens. सेमिस्यते P. 6,1,19. Vop. 20,12. — Vgl. सीमिक.

स्यमन n. zur Ableitung von सीमिका Nir. 3,20.

स्यमन्तक m. N. eines von der Sonne dem Satrāgit geschenkten Juwels, das später in den Besitz Kṛshṇa's gelangte, Taik. 1,1,42. H. 223. Harīv. 2043. fgg. VP. 425. fgg. Bhāg. P. 10,56,1. fgg. Pāṇḍ. 1, 11,27. 4,1,37. Duṇḍa zu Nir. 2,2. वेदान्त° Titel einer Schrift Hall 103.

स्यमन्तपञ्चक MBh. 6,7. 7,2725. Bhāg. P. 10,82,2 fehlerhaft für समन्त°, wie die ed. Bomb. des MBh. liest.

स्यँमिक m. = स्यमीक Uṇādis. zu Uṇādis. 3,46.

स्यँमीक Uṇādis. 3,46. 1) m. *a*) *Ameisenhaufen* H. an. 3,106. Med. k. 166. Vgl. सीमिक, सीमिका. — *b*) *Baum (ein best. Baum* ÇKDa.) H. an. Med. — *c*) *Wolke* und *Zeit* Çabdārthak. bei Wilson. — 2) f. या *eine best. Pflanze,* = नीलिका H. an. Med.

स्यात् (3. pers. potent. von 1. अस्) *es könnte sein, vielleicht.* Die dialektische Skeptik der Gaina kennt folgende sieben Formeln der Skeptik: स्यादस्ति *vielleicht ist es,* स्यान्नास्ति *vielleicht ist es nicht,* स्यादस्ति च नास्ति च *vielleicht ist es und auch nicht,* स्यादवक्तव्य: *vielleicht lässt es sich nicht in Worten ausdrücken,* स्यादस्ति चावक्तव्य: *vielleicht ist es, lässt sich aber nicht in Worten ausdrücken,* स्यान्नास्ति चावक्तव्य: *vielleicht ist es nicht und lässt sich auch nicht in Worten ausdrücken,* स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्य: *vielleicht ist es und auch nicht und lässt sich auch nicht in Worten ausdrücken* Sarvadarçanas. 41,7. fgg. Diese *skeptische Theorie* heisst स्याद्वाद 42,4. 21. 43,14. Çatr. 1,11. Verz. d. Oxf. H. 238,*a*,2. *ein Anhänger derselben* स्याद्वादिन् ebend. Sarvadarçanas. 43,7. स्याद्वादवादिन् H. 861. स्याद्वादिन् m. ist auch = अर्हत् bei den Gaina 5. स्याद्वादमञ्जरी f. Titel einer Schrift Sarvadarçanas. 42,22.

स्यार्ल m. *der Frau Bruder, Schwager* Nir. 6,9. AK. 1,1,3,14. 2,6,1,32. 3,4,24,148. Taik. 2,6,8. H. 333. 352. Hall. 5,84. ṚV. 1,109,2. Bhāg. 1,34. MBh. 1,7508. 2,2662. 4,529. 15,13. Harīv. 6429. R. 6,3,3. 7,23, 18. Çiç. 73,1. fgg. Mālav. 9,6. Kathās. 4,96. 90,96. 112,7. 213. 113, 1. 123,114. Rāja-Tar. 4,216. 410. 662. 5,451. VP. 5,23,1. Sin. D. 81. Häufig श्याल geschrieben, auch in den Bomb. Ausgg.

स्यालक 1) m. dass. Spr. (II) 1896. Prab. 23,18. — 2) f. स्यालिका *der Frau jüngere Schwester* Taik. 2,6,8. H. 353.

स्युत्र n. nach ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut. = घाङ्क्षाद; vgl. स्युम्न.

स्युम्न n. *Happiness, delight* Wilson nach Çabdārthak. — Vgl. स्यूमक, स्युत्र und स्यु.

स्युवक m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 138.

स्यू (von सीव्) f. *Schnur, dünnes Band* u. s. w. (*Nadel* Mahīdh.) VS. 5,21. 30; vgl. TS. 1,2,13,3 und Comm.

स्यूत 1) adj. s. u. सीव्. — 2) m. *Sack* AK. 2,9,26. H. 912. Med. t. 73.

स्यूति (von सीव्) f. 1) *das Nähen* AK. 3,3,5. H. 912. Med. t. 73. Vop. 8,134. — 2) *Sack* Çabdārthak. bei Wilson. — 3) = संतति Med.

स्यूर्न Uṇādis. 3,9. m. 1) = स्यूत *Sack* Bhar. zu AK. 2,9,26 und Çabdar. im ÇKDa. — 2) *Strahl* und *Sonne* (vgl. Uṇādis.) ÇKDa. nach Med.; die gedr. Ausg. n. 25 hat fälschlich सून (das, wenn es richtig wäre, 24 stehen müsste).

स्यूर्म Uṇādis. 1,143. m. *Strahl* Uṇādis. n. dass. und *Wasser* Uṇādis. im Saṅkshiptas. nach ÇKDa.

स्यूमर्क n. = मुख Naigh. 3,6. — Vgl. स्युम्न.

स्यूमगभस्ति adj. *dessen Deichsel aus Riemen* (स्यूमन्) *besteht:* Wagen der Götter ṚV. 1,122,5. 7,71,3. Möglich wäre, dass *eine Art von Doppelzügeln* darunter verstanden würde.

स्यूमगँभ् adj. *den Zügel* (mit den Zähnen) *fassend* (von einem unlenksamen Rosse): स्यूमगभे दधये ऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्ति ṚV. 6,36,2.

स्यूमन् (von सीव्) n. 1) *Band, Riemen, Zügel* (vgl. ὑμήν): स्यूमेना वाच उदियर्ति वाजे: *in einem Bande, — Streifen* d. h. *eine verbundene Reihe bildend* ṚV. 1,113,17. यत्र स्यूमेव विन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी *die Hausherrin macht sich auf, das Band* (das die Thür schliesst, ἰμάς, θεμός bei Homer) *zurückstreifend* 3,61,4. — 2) *Nath* (am Schädel): स्यूमेव मध्ये शीर्षो विज्ञायते Ait. Br. 4,22. यज्ञस्य 3,18.

स्यूमन्यु adj. *auf den Zügel begierig* d. h. *am Zeug zerrend, ungeduldig:* Rosse des Windes ṚV. 1,174,5.

सूर्यरश्मि m. N. pr. eines Mannes RV. 1,112,16. Vilâsa. 4,2. Ind. St. 3,465. Bhârgava Verfasser von RV. 10,77. fg. MBu. 12,9604. fgg. — Vgl. स्यैमरश्म.

स्यैड्ड (von स्यड्) m. etwa *Schleim* AV. 12,1,30.

स्योत m. = स्यूत *Sack* Bhar. zu AK. 2,9,26 nach ÇKDa.

स्योनँ Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,9 (= स्यून). 1) adj. (f. या) *weich, lind, worauf es sich angenehm geht, — sitzt; mild, zart, freundlich* (oft neben शिव) Naigh. 3,6. Nir. 8,13. 9,32. Erde RV. 1,22,15. Pfad 10,73,7. AV. 14,1,63. वक्तु RV. 10,85,20. AV. 14,2,12. Streu RV. 10,70,8. 110,4. यान AV. 12,1,11. Wagen 13,2,7. Wind 18,2,21. Wasser 3,11. Gewand 14,1,30. 2,51. Wohnung 3,12,3. योनि 12,2,43. 13,1,17. लोक VS. 12,35. सदन 14,2. स्योना शिवा Kuh AV. 3,28,2. 12,1,59. Weib 14,2,17. fg. 27. 6,140,3. — 1,33,1. 4,27,3. 8,2,22. 12,2,27. 14,2,9. 18,4,31. VS. 1,27. 4,27. 5,4. 20,39. 29,4. TS. 5,7,2,5. Âçv. Gṛhy. 4, 7,15. Kauç. 39. 124. शंभू: प्रजाभ्यस्तनुवै स्योन: TBa. 1,2,1,24. Çat. Br. 3,4,2,6. — 2) n. *weicher Sitz, — Lager; angenehme Lage:* स्योनाद्वो: प्रतिबुध्यमाना: RV. 4,51,10. स्योन या गृहपतिम् 5,16,42. यद्वा यरीतिमविद: स्योनम् AV. 2,10,7 (vgl. TS. 2,5,6,3). 14,1,19. 18,2,29. स्योनं मे सीद 19,61,1. TS. 1,1,10,2. Liṭ. 3,12,13. TBa. 1,2,1,1. — 3) m. = स्यून *Sack* Bharata zu AK. 2,9,26 nach ÇKDa. *Lichtstrahl; Sonne* ÇKDa. nach Med. (vgl. सून). *happiness, pleasure* Wilson nach Çabdârthas.

स्योनकृत् adj. *einen weichen Sitz u. s. w. bereitend* RV. 1,31,15; vgl. पविकृता स्योनम् = स्योनकृता AV. 18,2,53.

स्योनशी adj. *auf weichem Lager ruhend:* Gast RV. 1,73,1. 7,42,1.

स्यैमरश्म (von स्यूमरश्मि) n. Indras N. eines Sâman Ind. St. 3,209,a.

सृंस्, सृंसते Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). Dhâtup. 18,15 (अवसंसने). 10,33, v. l. (für अस्भ् प्रसादे, प्रमादे). असंसिष्ट und असंसत् P. 1,3,91. 3,1,55. असंसियत, असंसत 3. sg., (अभि) स्रास्; सस्रंसे P. 1,2,5, Schol. सस्रंस: संसित्वा P. 1,2,33, Schol. pass. impers. स्रस्यते P. 6,4,24, Schol. 1) *abfallen, sich ablösen; zerfallen, in Stücke gehen:* गवां असृक्वाराघृणा सृक् VS. 8,28. Çat. Br. 4,3,2,5. उत्ते असंसेतां TBa. 3,2,2,1. गाण्डीवं स्रंसते हस्तात् Bhag. 1,30. नाससत्कारिणां प्रेत्यं Ragh. 4,48. Bhatṭ. 14,72. 15, 61. 84. *herabfallen* vom Augenlide Suçr. 2,332,2. योनि: स्रंसते (v. l. für स्यन्दते) 397,2. स्रंसते (घंसते die ältere Ausg. 60,3) देहबन्ध: *zerfällt, geht auseinander* Uttar. ed. Cow. 77,15. स्रंसत इव मज्जानस्तावकानां (so ed. Bomb.) गात्रात् MBu. 7,3763. संसद्भुकाम्बर *schlaff herabhängend* R. 7,34,17. — 2) *erschlaffen, schwinden, vergehen:* स्रंसते मदनव्यथा Spr. (II) 2669. स्रंसमानजघ Sin. D. 60,13. — 3) partic. स्रस्त P. 6,4,24, Schol. *abgefallen, herabgefallen* AK. 3,2,53. H. 1491. Blätter R. 2,71, 23. Gewand 5,20,20. 54,15. Megh. 64. असृङ्मुकलम् Prab. 113,11. मूर्धाभ्रक Râja-Tar. 1,274. स्रस्तं शरं चापमपि स्वहस्तात् Kumâras. 3,51. मणिबन्धनात्कनकवलयम् Çâk. 61. उरगप्रतिसर Kir. 5,33. पादान्मणिनूपुरम् Kathâs. 23,152. 43,36. Daçak. 87,11. कालशात् *herausgefallen aus* Râja-Tar. 3,372. स्रस्तगात्र *schlaff herabhängend* R. Gorr. 2,122,9. स्रस्ताङ्ग 7,69,12. Suçr. 2,403,5. Megh. 61,21. Kathâs. 96,15. 122,86. स्रस्ताङ्गता Suçr. 1,94,21. 301,2. °विण्टकोलवाणिपाद् 118,14. °मुष्क 17. स्रस्तांस Çâk. 29. °शरीरसंधि *erschlafft* Megh. 48,24. *eingefallen* von Augen Suçr. 1,113,7. स्रस्तापान *mit prolapsus ani behaftet* 2,428, 13. Vgl. स्वयंस्रस्त.

— caus. 1) *abfallen machen, ablösen:* शल्यमसिस्रसन् AV. 7,107,1. वातो जीर्णानि नासंसदृक्षकाणि Ragh. 6,75. पृथुघनात् Spr. (II) 2302. स्रंस्यमाने वसने R. 5,36,37. स्रंसितबन्धन Uttarar. 30,21 (40,12). Kathâs. 13,20. उदरं अंशयित्वा (v. l. असं°) *den Bauch hängen lassend* AV. 4, 16,7. — 2) *vertreiben, verscheuchen:* दोषान् Suçr. 2,190,7.

— intens. सनीस्रस्यते, सनीस्रंसीति P. 6,4,24. 7,4,84. — Vgl. सनिस्रस, सनीस्रंस.

— अति *hinausfallen* so v. a. *sich entziehen:* अतिं सस्रेम वृजनं नोक्ष: RV. 6,11,6.

— अभि *herabfallen lassen auf:* मा नो अभि स्रा मृत्यै देवकृतेभ्य AV. 11,2,19.

— अव *herabfallen:* अस्तंभाद्द्यामवसस्रसं: (abl.) RV. 2,17,5. Suçr. 1,277, 14. partic. °स्रस्त 118,1.

— व्यव *auseinander fallen:* विर्यूची संवत्सरस्य पत्नीसी व्यवस्रंसेयाताम् TBa. 1,2,3,1. — Vgl. व्यवस्रंस.

— सा, partic. सासस्त *abgefallen:* °वस्त्राभरण (असस्त° ed. Bomb.) MBu. 4,777.

— परि s. परिस्रसा.

— प्र *herausfallen, herausdringen* (vom Fötus) Suçr. 1,376,3. — Vgl. प्रस्रंस fg.

— वि *auseinanderfallen, sich ablösen* (auch vom *Brechen der Glieder*), *sich lösen:* ग्रावेव विस्रसं: पातमस्मान् RV. 2,39,4. विस्रसंशरित्रात् 8,48,5. प्रजापति: TBa. 2,3,6,1. यस्य पर्व Çat. Br. 4, 5,2,6. पर्वाणि विस्रसंयु: 1,6,2,35. व्यस्रंसियतास्याङ्गानि 14,6,2,6. प्राक्शरीरस्य विस्रस: Kâṭhop. 6,4. लोष्ट: Çâṅk. zu Bâdar. Âṇ. Up. S. 88. यन्थिरसि मा विस्रस: *los werden* Çâṅkh. Gṛhy. 3,8. या विस्रस: *bis zur Gebrechlichkeit* (des Alters) Ait. Br. 8,20. ब्रह्मा विस्रसामुं लोकमेति TBa. 3,8,20,5. यस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्यस्य देहिन: । देहाद्विमुच्यमानस्य Kâṭhop. 5,4. विस्रंसिरे (so beide Ausgg.) केशा: कुचाग्रे *fallen herab auf* Harîv. 4097. विस्रंसत्कबरीकलाप Pañcar. 3,5,28. — partic. विस्रस्त *auseinandergefallen, aufgelöst:* सं ते मांसस्य विस्रस्तं रोहतु AV. 4,12,4. पर्वन् Çat. Br. 1,6,3,36. 8,1,1,3. 7,4,1,1. 2,3. Ait. Br. 6,23 (अ°). MBu. 14,274. स्नात्रविस्रस्तधातुव Suçr. 1,248,7. *herabgefallen, abgefallen:* देवता (vom Fussgestell) R. 5,21,1. °स्रग्विभूषण MBu. 3,12261. यंसात् Ragh. 6,14. °बन्धन Kathâs. 30,52. °वसन 55,119. °कुसुमस्रज् 104,88. °शिरोरुहाम्बर Buâc. P. 6,14,30. 7,2,32. °रोमपटल 3,33,1. Pañcar. 3,10,17. विस्रस्ताङ्ग so v. a. *erschlafft* MBu. 8,226. °चेतस् (विधस्तचेतन ed. Bomb.) 7,7283. °पात्र Buâc. P. 4,26,26. — caus. *zerfallen machen, auflösen* (Knoten u. s. w.) AV. 9,3,2. Çat. Br. 1, 3,3,5. 6. 9,2,21. TS. 5,1,6,1. 6,2,9,4. TBa. 3,3,6,5. देहिन: Suçr. 1, 51,4. इध्मम् *lösen, losbinden* Kâty. Çr. 2,7,19. 21. नीविम् 4,1,15. Kathâs. 94,61. विस्रंसितकेशबन्धन Buâc. P. 10,9,10. *herabfallen lassen, abwerfen* Mahâvîrac. 73,17. Kumâras. 3,62. वातविस्रंसितोष्णीष Kathâs. 9,24. *lösen* so v. a. *verrathen:* मन्त्रम् MBu. 12,2042. विस्रंसित = विस्रस्त *herausgefallen:* मुखात् Buâc. P. 2,7,12. गर्भ 10,2,15. — Vgl. विस्रंस fgg. und विस्रस् fgg.

— अनुवि caus. *lösen:* संनहनम् Çat. Br. 2,6,1,15.

— सम् *befallen, überfallen:* मा नः सं स्रा दिव्येनाग्निना AV. 11,2,26.

संस (von संस्) m. *Bruch* s. घस्थि°, पर्शु°.

संसन (vom caus. von संस्) 1) adj. *auseinanderfallen machend, auflösend* Suçr. 1,222,20. 223,4. — 2) n. *a) das Lösen:* दोरक° Schol. zu Naish. 22,33. — *b) ein auflösendes Mittel, — Kur, Laxirmittel* u. s. w. Kâraka 1,18. Suçr. 2,69,7. 323,14. 370,20. 455,20. पक्तव्यं यदि पक्वे-वाग्निष्टं कोष्ठे मलादिकम् । नपत्यधः संसनं तत् (wie Cassia fistula) *aperiens* Çârîng. Saṃh. 1,4,4. — Vgl. शस्त्य°.

संसिन् 1) adj. *a) auseinanderfallend:* मांस Mâlatîm. 79,3. *herabfallend:* कुचतटे संसि वस्त्रं विधत्ते Spr. (II) 7190. *sich lösend:* बन्ध Çiç. 29. *heraushängend:* Auge Suçr. 2,332,18, v. l. (संसि रुक्षस्राव°). — *b) fallen lassend, abortirend* (vgl. प्रसंसिन्): योनि Suçr. 2,396,12. — 2) m. *ein best. Baum,* = पीलु AK. 2,4,2,9.

संसिनीफल m. *ein best. Baum,* = शिरीष Çabdam. im ÇKDr.

संसू, संसते = सम्भ् (विश्वासे) Dhâtup. 18,18, v. l.

संस्ति f. *Zacke, Ecke:* यवं स्रक्वो वृष्ण्यावृश्चदिन्द्रः RV. 7,18,17. Kâṭh. Up. 3,13,1. namentlich *die Ecken der* Vedi Çat. Br. 2,6,2,36. 3,5,2, 8. Kâṭy. 34,5. Kâṭ. Çr. 5,9,17. Kauç. 34. 38. 51. 74. नैव° adj. RV. 8, 65,12. — Vgl. दिक्°, चतुः° und स्रक्क.

संस्र्य (von संस्ति) adj. *kantig* AV. 2,11,2. — Vgl. सास्र्य.

संस्क m. *Mundwinkel,* wohl auch so v. a. *Mund, Rachen* RV. 7,55,2. 8,61,15. 9,73,1. — Vgl. स्रक्क fgg. und संस्ति.

संगण (संस्+गण) m. = मालासत्र (Comm.) Weber, Râjas. Up. 318. 320.

संग्धर (संस्+धर) 1) adj. (f. धा) *einen Kranz tragend, bekränzt* MBh. 3,11605. Varâh. Bṛh. S. 104,5. Khandom. 112. Bhâg. P. 8,7,17. सु° 15,8. सुरभि° MBh. 3,2194. जलनिधिलक्ष्मी° Râghavâp. 1,24. — 2) f. *a) ein best. Metrum: 4 Mal* ———⏑⏑—, ⏑⏑⏑⏑⏑—, —⏑⏑⏑⏑— Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XVI,1). Chaut. 44. Ind. St. 8,400. fg. Varâh. Bṛh. S. 104,5. Khandom. 112. Râghavâp. 1,24. — *b)* N. pr. einer buddhistischen Göttin Burnouf, Intr. 542. °स्तोत्र 557.

संग्वत् adj. = संग्विन् P. 5,2,121, Schol. Vop. 7,29.

संग्विन् (von संस्) 1) adj. *bekränzt* P. 5,2,121. Vop. 7,29. M. 2,167. 3,3. 8,256. MBh. 3,11905. 4,202. R. 3,76,28. 77,1. 5,10,20. 39,15. Kâm. Nîtis. 7,49. Ragh. 17,25. Râjat. 2,111. Khandom. 45. Bhâg. P. 7,13,41. 8,8,32. 9,10,48. Pañcat. 4,8,21. सु° R. 1,6,3 (11 Gorr.). — 2) f. संग्विणी *a)* N. zweier Metra: α) *4 Mal* —⏑—⏑—⏑—⏑— Colebr. Misc. Ess. 2,160 (VII,12). Ind. St. 8,380. Khandom. 45. — β) *4 Mal* —⏑—⏑— Ind. St. 8,366. — *b)* N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,26. — Vgl. महा°, सास्विणा.

संङ्क, संङ्कते (गतौ) Dhâtup. 4,9.

संज् (von 3. सञ्ज्) 1) adj. (nom. संट्) *drehend, windend:* रज्जु° P. 8,2, 36, Schol.; vgl. रज्जुसर्ज. — 2) f. (nom. संग्) Sidd. K. 247,*b*,12. Vop. 3,134. 168. *a) Gewinde, Kette von Metall, Blumen* u. s. w., *Kranz* P. 3, 2,59. Vop. 26,71. AK. 2,6,2,26. H. 651. Hall. 2,297. 339. RV. 4,38, 6. 5,53,4. 8,47,15. Vikâkh. 8,3. यधिं वृतादित्व स्रजम् *Blüthenstrauss* AV. 1,14,1. Çat. Br. 3,4,3,13. हिरण्मयी 22. स्रजं कृत्वा प्रत्यमुञ्चत Pañcav. Br. 16,4,1. 18,3,3. हारि° Çat. Br. 13,3,3,2. Âçv. Çr. 9,4,9. Pañcav. Br. 18,7,6. Çâṅkh. Çr. 12,14,3. Âçv. Gṛhj. 3,8,1. 16. 18. Kauç. 80. Gobhila 3,4,20. 3,9. स° Çâṅkh. Çr. 12,16,2. — नात्मनो ऽपकरेत्स्रजम् M. 4,35. न धारयेत्स्रजम् (घृतामन्त्रैः) 66. दिव्याश्चित्राः MBh. 3,2167. स्कन्धदेशे ऽसृजस्तस्य स्रजम् 2218. Suçr. 1,71,8. रक्त° 105,14. रक्तां धारयेद्विक्रमि स्रजम् 110,7. स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया Çiç. 183. Spr. (II) 7263. 7372. Varâh. Bṛh. S. 43,7. 24. 44,15. 24. 46,31. Khandom. 72. Brahma-P. in LA. (III) 84,3. Bhâg. P. 3,17,21. स्रजा कृत इव द्विपः 19,16. 23,15. Vedântas. (Allah.) No. 11. स्रग्दामपूरितशिख MBh. 1,5974. कमल° R. 2,94,24. गले पुष्पमयं बद्ध्वा Râjat. 6,127. 3,529. सितपद्मोत्पल° adj. Bhâg. P. 3,21,9. स्रक्ष° 7,9,15. बबन्धास्य कण्ठे भुजलतास्रजम् *die Arme als Kranz* Kathâs. 18,369. निबिडं संयम्य बाह्वोः स्रजा Z. d. d. m. G. 27,81. *Ring* überh.: एकविंशत्या यवैः स्रजं परिक्रिरति Kauç. 33. — *b) ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑—⏑—⏑—⏑—, ⏑— ⏑—⏑—⏑—⏑— Colebr. Misc. Ess. 2,101 (X,2). Ind. St. 8,390. fg. Khandom. 72. — *c)* Bez. *einer best. Constellation* (दलयोग), *wenn nämlich die* Kendra *von drei günstigen Planeten* (mit Ausnahme des Mondes) *eingenommen sind,* Varâh. Bṛh. 12,2. 11. — Vgl. पुष्कर°, मणि°, मुक्ता°, वन°, वर°, सु°, रुचित°, हिरण्य°.

स्रज 1) = स्रज् *Kranz:* कर्णिकारस्रजप्रिय MBh. 12,10127. बन्धुजीवस्रजोपम R. 6,19,68. am Ende eines adj. comp.: पीताम्बर° Harîv. 4514. — 2) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBh. 13,4358. — Vgl. पुण्डरिकस्रजा, श्रीस्रज.

स्रजय् (von स्रज्), °यति *Jmd* (acc.) *bekränzen* Vop. 21,14. Bhaṭṭ. 18,34.

स्रजम् = स्रज् *Kranz* am Ende eines adj. comp.: ज्ञातद्रुपस्रजांसि (शिरांसि) Harîv. 13456.

स्रञ्चिन् s. परि° (auch in den Nachträgen).

स्रञ्जिवत् adv. = स्रग्वत् (von स्रज्) *wie bei einem Kranze* Bhâg. P. 6,17,30.

स्रैजिष्ठ superl. und स्रैजीयस् compar. zu स्रग्विन् Schol. zu P. 5,3,65. 6,4,163.

स्रज्या f. = प्रज्ञापति (als f.!), रज्जु und तन्तुपटसंघात Unâdiv. im Saṃkshiptas. nach ÇKDr.

स्रड्ढ f. = शर्ध Furz Çaṇḍâyanak. bei Wilson.

स्रैभिष्ठ adj. superl. = सुरभिष्ठ = सुरभितम (zur Erklärung von सुरभि) Çat. Br. 3,3,2,3.

स्रम्भ् s. स्रम्भ्.

स्रव (von सु) 1) m. P. 3,3,27, Schol. *a)* = स्रव AK. 3,3,9. am Ende eines comp. *Ausfluss von:* क्षेत्रस्रवान्प्रस्रवति क्षिप्ता MBh. 1,5934. विपुलौ स्रपयन्तौ सा स्तनौ नेत्रजलस्रवैः R. 5,25,55. घृतक्स्रवोल्लित 42,20. Mârk. P. 14,75. रुधिर° 2072 (°स्रवस् ed. Calc.). क्षौर° (गङ्गा) 3511. मद° R. 7,35,37. मधुदुग्धघृत° R. in LA. (III) 59,3. रक्तधारा° Kathâs. 90, 154. Bhâg. P. 6,12,26. — *b) Wasserfall* H. 1096. — *c) Urin* H. 633. — *d)* fehlerhaft α) für सुव Kathâs. 73,209. — β) für एव Kâṭ. 6 in Z. f. d. K. d. M. 4,375; vgl. Spr. (II) 1340. — 2) f. स्रा *eine best. Pflanze,* = सुवा Râjân. zu AK. 2,4,2,2 nach ÇKDr. = मधुस्रवा und मधु Schol. zu AK. 2,4,2,7. — Vgl. घृत°, तम्बुधि°, गिरि°, बङ्ग°, मधु°, मधुर°, लाला°, सुधा°, सुरभि° und स्राव.

स्रवक (wie oben) nom. ag. Vop. 26,41.

स्रवण (wie oben) n. 1) *das Fliessen* Nir. 5,27. = स्यन्दन Taik. 3,3, 269. H. an. 3,429 (an beiden Orten स्रवण). रुधिरस्रवणै: R. 5,83,12. अश्व° *das Abfliessen des Wassers von einem nass gewordenen Pferde* Kâty. Ça. 20,2,5. — 2) *zu frühzeitiges Abgehen der Leibesfrucht* Varâh. Bṛh. 4,9. — 3) *Schweiss* Çabdar. im ÇKDa. — 4) *Urin* Râǵân. 18 (स्र° unsere Hdschrr., स्र° ÇKDa.). — Vgl. स्रुत°.

स्रवन्ती (wie oben) f. *Fluss* ṚV. 1,190,7. 3,46,4. गभीरा 10,108,4. sieben 1,71,7. 7,18,24. 67,8. 10,49,9. AV. 6,86,2.

स्रवभू (wie oben) m. *das Fliessen:* मधूनाम् ṚV. 3,1,7.

स्रवद्भर्भा (स्रवत् partic. von स्रु + गर्भ) adj. f. *eine Fehlgeburt machend*, von einer Kuh AK. 2,9,69. H. 1267. Halâ. 2,115.

स्रवद्रङ्ग m. *Markt* Hân. 224.

स्रवन्ती (partic. von स्रु) f. 1) *fliessendes Wasser, Fluss* Naigh. 1,12. AK. 1,2,2,29. 3,4,28,114. H. 1080. an. 3,267. Med. t. 164. Halâ. 3,43. neunundneunzig ṚV. 1,32,14 (vgl. 10,104,8). VS. 22,28. sieben Çat. Br. 13,8,4,2. 14,7,1,11. न स्रवन्तीमतिक्रमेत् Gobh. 3,2,15. Pân. Gṛhy. 1,16. Çâṅkh. Ça. 13,5,22. Gṛhy. 4,14. Snâpy. Br. 3,1. M. 11.132. 254. MBh. 5,3817. 13,6506. Ragh. 17,64. Spr. (II) 1908. Varâh. Bṛh. S. 19,1. Pârask. 67,11. 101,13. नदी° Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,9. — 2) *ein best. Kraut* H. an. Med. — 3) = चन्द्रवती H. an. = गुल्मस्थान Med. — Vgl. स्व:°.

स्रवस् (von स्रु) n. = स्रव 1) a) am Ende eines adj. comp.: रुधिर° (°स्रव ed. Bomb.) MBh. 13,2072. — Vgl. मधु°.

स्रष्टर् (von 3. सृज्) nom. ag. 1) *Entlasser, Entsender:* अपाम् P. 2,2, 16, Schol. वारिधाराणाम् MBh. 7,2864. — 2) *der Etwas in Bewegung setzt, ausgehen lässt, Veranlasser, Urheber* Nir. 14,5. अकाण्डताण्ड° Râǵa-Tar. 4,635. — 3) *Schöpfer:* विश्वस्य Çvetâçv. Up. 5,12. सर्वस्य M. 1,33. रत्नसाम् R. Gorr. 1,22,10. in comp. mit der Ergänzung H. S. जगत्° (s. auch bes.) Bhâg. P. 3,9,44. प्रादेशिकेश्वर° (विधि) Râǵa-Tar. 4,126. ohne Ergänzung *der Schöpfer der Welt* Ragh. 1,93. Çâk. 1. 186. Vikr. 159. Râǵa-Tar. 4,110. Bhâg. P. 3,10,28. = ब्रह्मन् AK. 1,1,4,12. H. 3. 213. Halâ. 1,6. = शिव 12.

स्रष्टव्य (wie oben) adj. Schol. zu P. 6,1,58. 8,2,36. *zu schöpfen:* भवता प्रजा: Mârk. P. 96,8.

स्रष्टार m. = स्रष्टर् *Schöpfer:* स्रष्टाराय नम: MBh. 13,902.

स्रष्टृत्व n. nom. abstr. von स्रष्टर् *Schöpfer* Mârk. P. 46,20. Verz. d. Oxf. H. 47,*b*,1 v. u. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 268.

स्रस् (von सृंस्) adj. Declination P. 8,2,72. Vop. 3,106. 153. Vgl. उ-ष्ठा° *aus dem Kochtopf fallend* unter उख 2) a) und सुस्रस्.

स्रस्त adj. s. u. सृंस्. Davon nom. abstr. °ता f. *schlaffes Herabhängen:* वपुषि Ratnabhâsa bei Mallin. zu Kir. 9,50.

स्रस्तर m. *Streu* H. 682. Çâṅkh. Gṛhy. 4,15. Pân. Gṛhy. 3,2. Z. d. d. m. G. 27,33. अघस्रस्तरे (अघ स्र°?) व्यत्यस्तनस्त घासीरन् *Sündenlager* Çvetâçv. im ÇKDa. स्रस्तरं (also m.) शयनार्घासनादि Kâçîkh. (ed. 1866) 68, N. 101.

स्रस्ति f. nom. act. von सृंस् P. 3,3,94, Vârtt. 1, Schol.

स्रा, स्रायति (पाके) Dhâtup. 22,23. — Vgl. श्रा.

स्राक् adv. = द्राक् *eiligst, schnell* AK. 3,5,2. H. 1530. Halâ. 4,12. स्राक्सहस्त्यभिसारिका: H. 1530, Schol.

स्रार्क्य (von स्रक्ति) adj. *kantig:* मणि AV. 8,5,4. 7. 8. Kauç. 39. — Vgl. स्रक्त्य.

स्राग्विणी (von स्रग्विन्) m. patron. Schol. zu P. 6,4,166. n. etwa *ein allgemeines Bekränztsein* zu 164.

स्राण s. स्रक्°.

1. स्रार्म adj. *lahm*, χρομε: स्रार्मं सं रिणीव: ṚV. 1,117,19. AV. 11, 3,45. VS. 30,10. Çat. Br. 11,7,2,4. Kâṭh. Up. 8,9,1. 10,2. — Vgl. स्र°.

2. स्रार्म m. *Siechthum, Seuche* (auch der Thiere): उत मा सार्माण्यक्ष्मिन्द्व: ṚV. 8,48,5. TS. 2,1,6,3. vom यक्ष्म 3,5,3. 12,1. 3. Kâṭh. 20, 3. 13. Çat. Br. 13,3,8,2.

स्रार्म्य (von 1. स्रार्म) n. *Lahmheit* Kâṭh. Up. 8,10,2.

स्राव (von स्रु) m. = स्रव Bharata zu AK. 3,3,9 nach ÇKDa. *Fluss* (insbes. *krankhafter*), *Ausfluss:* ग्रलात्स्राव: प्रवर्तते Harîv. 2192. तेषां (फलानां ग्रम्बूनां) स्रावात्प्रभवति ख्याता ग्रावूनदीति वै Mârk. P. 54,29. गन्धस्रस्तिमद्° (so ed. Bomb.) MBh. 6,3154. रुधिर° 7, 6603. Harîv. 13353. विविधै: शोणितस्रावै: MBh. 9,945. वृत्तात्तोयस्रावे Varâh. Bṛh. S. 46,26. Suçr. 1,34,16. 36,2. 69,16. 84,4. 85,4. शोणित° 277,17. Verz. d. Oxf. H. 315,*a*,4 v. u. Verz. d. B. H. No. 938. ग्रलस्राव Suçr. 2,305, 6. कफस्र° 10. रक्त° 15. पूय° 21. 307,1. 332,18. उदक° *das Abfliessen* Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 51. am Ende eines adj. comp.: सलिल° von *dem Wasser abfliesst* Bhâg. P. 4,15,14. — Vgl. गर्भ°, नासा°, मोच°, रक्त°, लाला° und स्रव.

स्रावक (vom caus. von स्रु) m. *Pfeffer* Çabdar. im ÇKDa.

स्रावण (wie oben) 1) adj. *fliessen machend* Suçr. 1,247,1. स्वेदास्रक् 250,19. — 2) f. ई *eine best. Pflanze*, = सहि ÇKDa. ohne Angabe einer best. Art. — 3) n. *das Fliessenlassen:* स्वात्त्यौ मेघस्रावणम् Kâty. Ça. 25,10,6. ग्रसृक्° Suçr. 1,358,18. रुधिरस्रावणं कर् *Jmdes Blut vergiessen* Kull. zu M. 4,169.

स्राविन् (von स्रु) adj. *fliessend* (sowohl von einer Feuchtigkeit als von dem Dinge, das Feuchtigkeit entlässt): घम्बु Varâh. Bṛh. S. 53,77. Suçr. 1,43,5. 59,5. 60,7. 304,21. स्राविंतर् Çat. Br. 1,4,2,15. in comp. mit der entlassenen Feuchtigkeit: मद्° MBh. 6,2855. ततत्र° Harîv. 5683. सलिल° 10933. Suçr. 1,260,9. 2,2,5. दैत्यगर्भ° so v. a. *eine Fehlgeburt bewirkend* Pâṇ. 4,3,67. — Vgl. गर्भ°, लाला°.

स्राव्य (vom caus. von स्रु) adj. *in's Fliessen zu bringen:* विद्रधि Suçr. 1,92,20. रक्त 2,69,8.

1. स्रिध्, स्रेधति *Etwas falsch machen, fehlgehen, irren:* न स्रेधति न व्यथते ṚV. 5,54,7. मा स्रेधत सोमिन: 7,32,9. न स्रेधन्तं रयिर्नशत् 21. मा पथो वस्य स्रियसे: *fehlschlagen* 34,17. Nir. 10,45. — Vgl. असेधत्, wo zu setzen ist *nicht fehlgehend, nicht irrend.*

2. स्रिध् (= 1. स्रिध्) f. *der Irrende, Sichverfehlende; der Verkehrte*, auch wohl *der Falschgläubige* ṚV. 1,36,7. 48,8. 129,11. 3,9,4. 10,7. 7,81,6. 8,18,8. 10. 68,9. 9,27,1. 71,8. 10,25,7. 126,5. यति स्रिधो ऊर्ध्वयति सुष्टुतिम् *vorüber an den Stümpern kommt er zum richtigen Lobgesang* 9,66,22. तिर यामं इव स्रिध: । घर्षति पूतदक्षस: 8,83,7. यति स्रिधो यति स्रिधो (so zu lesen) ऽत्यर्चतीरति द्विष: AV. 2,6,5; vgl. TS. 4,1. 8,2. — Vgl. असिध्, wo zu lesen ist *nicht fehlgehend, nicht irrend.*

स्रिभ्, स्रेभति und स्रिम्भ्, स्रिम्भति (हिंसायां) Dhâtup. 11,40, v. l.

सिंस m. Bez. *gewisser nächtlicher gespenstischer Wesen* AV. 8,6,10.

सीव् (सिव्), सेव्यति (गतिशोषणयोः) Dhâtup. 26,3. *missrathen:* यानि पञ्चमास्यानि रेतांसि स्रावयन्ते सीव्यन्ति वै तानि Âit. Br. 4,22. partic. सूत P. 6,4,30.

— caus. सीवयति und सेवयति *missrathen machen, vereiteln:* घार्कूतिम् AV. 6,73,2. *fehlgehen machen:* यद्दितिं पर्यसीम् 7,18,8.

सीवयम् und सीवि s. यसीवयस्.

सु, सवति (गतौ) Naigh. 2,14. Dhâtup. 22,42. सुस्राव, सुस्रोथ, सुस्रुम Vop. 8,37.96. P. 7,2,13. यसुसुवत् 3,1,48. Vop. 8,86.96. सुस्राम्, सुस्रात्, सोतवे. स्रवन्ती s. bes. Hier und da des Metrums wegen auch med. 1) *fliessen, strömen, in Fluss —, in Bewegung gerathen, ausfliessen:* सृणेरपः सीरा न स्रवन्तीः RV. 1,174,9. सम्यक्स्रवन्ति सरितो न धेनाः 4. 58,6. 3,13. 19,3. 7,21,3. या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति 49,1. 10,104, 3. AV. 7,112,1. Âit. Br. 3,26. Çat. Br. 3,3,2,3. 3,3,4,24. 12,7,1,1. गवां स्तनेषु रुधिरम् Śrâdhy. Br. 3,9. रसः Maitrâjp. 6,37. मागराम्भसि मरुद्भ्यमाणा निर्यानाः MBh. 1,1137. 3,6087. तरुण्यः स्रवते तेभ्यो विविधं मनसोप्सितम् Harîv. 8236. नहि निम्नात्स्रवेत्तोयम् R. 2,35,15. निःस्यन्दाः 94,13 (103,13 Gorr.). स्रवद्धरि Vârâh. Bṛh. S. 21,17. Bhâg. P. 3, 10,24. Flüsse 3,29,12. 4,29,40. Prab. 87,11. स्रोतसा तेन सुस्राव गङ्गा R. Gorr. 1,43,11. स्रोतांसि गिरिधातुभ्यः R. Schl. 2,63,18. सरसः सरयूः 1,26,9. वार्भिः स्रवद्भिर्निर्विन्ध्यायाः Bhâg. P. 4,1,18. वारि नेत्राभ्यां पुष्कराभ्यामिवोद्गतम् R. Gorr. 2,30,27. 5,31,2. नयनैः सलिलम् R. Schl. 2,40,24. स्रवन्नेत्रजल MBh. 2,2592. Râja-Tar. 2,162. Blut MBh. 5,7273. 6,4038. Bhâg. P. 3,3,1. बाणात्तेभ्यः R. 3,35,51. घास्यात् 73,19. गलात् Bhâg. P. 5,9,19. स्रवन्मद R. 2,94,13. Vârâh. Bṛh. S. 44,23. रेतः MBh. 1,5051. लाला Spr. (II) 3914. मूत्रम् 7186. पयः स्तनाभ्याम् Bhâg. P. 4, 9,50. *fliessen* so v. a. *Saft —, Milch, Flüssigkeit entlassen, — ausströmen:* Baum Kâlid. Up. 6,11,1. धाराभिः मेघाः Manu. 91,7. धेनुः R. 5, 67,3. कुञ्जरः MBh. 6,4073. घनानि — घापोनानीव धेनूनाम् Harîv. 8623. नेत्रम् *thränen* Mâlav. P. 43,25. Verz. d. Oxf. H. 51,b,21. mit acc. der Flüssigkeit: वृता रुधिराणि Śrâdhy. Bh. S. 8. नखतुण्डतताडैव सुस्रुवुः शोणितं बहु MBh. 1,1485. 13,2797. R. 6,20,24. Sûçr. 2,332,12. Bhatt. 15,86. 17,13. नग्नो मैरेयम् R. 2,91,15 (100,12 Gorr.). 5,34,18. प्रस्वेदम् MBh. 7,5104 (सुस्रुवाते). सर्वगात्रेभ्यः स्वेदम् R. Gorr. 2,92,27. गौः पयः MBh. 13,3132. कुञ्जरेण स्रवता मदम्, पर्वतेन तोयं स्रवणेन 6,4264. Kathâs. 14,11. नहि मलयचन्दनतरुः परमुप्तरुतः स्रवेत्पयम् (Conj.) Spr. (II) 401. शुक्रम्मूत्रम् MBh. 3,11118. समृतम् Kâm. Nîtis. 17,15. घाशयः किंचित् Sûçr. 2,18,5. रसान् Harîv. 7010. गन्धान् 7011. सर्वपुष्पफलं गन्धं वराङ्गना: 8030. पारिप्लवाताः सर्वरत्नानि 7192. (दृशा) साम्रया स्रवतीवास्मिन्सुतस्नेहं महीपतौ Kathâs. 23,71. Bhatt. 2,13. धाराः पयसः — तस्यास्ये यौवनाश्वस्य पाणिरिन्द्रस्य चास्रवत् *goss aus* MBh. 7,2279. — 2) *fliessen* so v. a. *rinnen, lecken:* चमसः RV. 10,101,8. AV. 12,3,22. छिद्रम् Âit. Br. 3,11. छिद्रेण Pârâśar. Br. 3,6,13. कुम्भः Kâty. Çr. 15,10,18. उखा 25,9,11. Çâṅkh. Gṛhy. 5,8. तैलपात्रमधः Kathâs. 61,190. — 3) *zerrinnen, missrathen:* ein Opfer TS. 5,4,10,3. Çat. Br. 3,3,4,37. Pârâśar. Br. 3, 6,13. *vergehen, verschwinden, zu Nichte werden:* स्रवन्ति न निवर्तन्ते स्रोतांसि सरितामिव । घायुरादाय मर्त्यानां राज्यन्यानि पुनः पुनः ॥ Spr. (II) 7264. कथं न (so ist zu lesen) भिद्येत न च स्रवेत न च प्रसिद्ध्येदपि (घर्घः) MBh. 3,14707. (ब्रह्म) स्रवत्यनोकृतं पूर्वं परस्ताच्च विशीर्यते M. 2,74. स्रवते ब्रह्म तस्यापि भिक्षाभाण्डात्यथो यथा Bhâg. P. 4,11,11. ततस्ततः स्रवते बुद्धिरस्य छिद्रादकुम्भादिव नित्यमम्भः Spr. (II) 2266. ततोस्य स्रवति प्रज्ञा हृतेः पादादिवोदकम् 3867. तेनो विद्या तपो यशः Bhâg. P. 7,15,19. चित्रा वाचः 11,14,7. धैर्यं नस्तव केतोरसुस्रुवत् Bhatt. 6,18. रुक्स्यम् *so v. a. verrathen werden* Daçak. 89,12. — 4) *zur Unzeit abgehen* (von der Leibesfrucht) TBr. 3,7,3,6. MBh. 2,932. Bhâg. P. 5,24,15. — 5) *fliessen aus* (abl.) *so v. a. hervorgehen, seinen Ursprung nehmen:* कालात्स्रवन्ति भूतानि कालाद्वृद्धिं प्रयान्ति च Maitrâjp. 6,14. घनाद्धि धर्मः स्रवति शैलाद्धि नदी यथा Spr. (II) 3573. शरीरात्स्रवते (Conj.) धर्मः पर्वतात्सलिलं यथा 6124. — 6) *eingehen* (von Zinsen): प्रतिमासं स्रवन्ती (स्रवति v. l.) या वृद्धिः सा कालिका मता Nârada in Mit. 63,14. fg. — — स्रवत्तम् Pâṇ. Gaṇ. 1,346 und स्रवति V,90 fehlerhaft; vgl. Spr. (II) 5842. 2022. — 7) partic. सुत a) *fliessend, strömend, geflossen* AK. 3,2,42. H. 1496. रुधिर, रक्त M. 4,122. MBh. 7,1926. Sûçr. 1,47,17. Varâh. Bṛh. S. 79,25. जल Mahâbh. 26,2. क्षीर Kumâras. 1,9. स्तन्य Kathâs. 110,103. शालारस Ragh. 8,69. हृदयसुतामृत Çiç. 9,15. — b) *ausgelaufen, leer geworden:* कुम्भ Varâh. Bṛh. S. 24,26. fg. — c) *verronnen:* °दोष Sûçr. 2,71,12. गर्भ (der Wolke) Varâh. Bṛh. S. 21,32. — d) n. *Fluth:* सुतासमत्रिर्दिवमुन्निनाय AV. 13,2,4. — Die Schreibart सु (nicht in den Bomb. Ausgg.) erkennen wir nur für die ältere Sprache an; vgl. 2. सु. इत्येवं तुमुला वाचः प्रसुस्रुवुः (so beide Ausgg.) प्रेतकेरिताः MBh. 1,3359 führen wir gegen Westergaard auf 1. सु zurück, da सु nicht vom *Fluss der Rede* gebraucht wird.

— caus. स्रावयति P. 1,3,86. Vop. 22,2. *in Fluss setzen, fliessen machen:* स्यावरा: Kâṭy. 29,3. die Nase Sûçr. 1,155,3. न गात्रात्स्रावयेदसृक् *er vergiesse kein Blut* M. 4,169. श्लेष्मन् Sûçr. 2,348,10. 352,14. 525,9. durch Scarification 7,21. गोमूत्रेण स्रावितः क्षारः *flüssig gemacht* Varâh. Bṛh. S. 54, 115.

— desid. सुस्रूषति P. 7,4,81, Schol.

— desid. vom caus. सुस्रावयिषति und सि° P. 7,4,81. Vop. 19,13.

— यति, partic. °सुत *übergelaufen:* Soma VS. 10,31; vgl. 19,3. — caus. partic. °स्रावित *zu sehr zum Fliessen gebracht durch Scarification* Sûçr. 2,332,18.

— समति, partic. °सुत (सुमति° gedr.; man könnte übrigens auch सुपरिसुत vermuthen) *zerronnen, ganz flüssig geworden* Sûçr. 2,66,19.

— घधि *herablaufen:* von den Fingern Çat. Br. 7,5,2,44.

— घभि *herströmen* RV. 10,9,4. — Vgl. घभिस्रवत्त in den Nachträgen.

— घव *herabfliessen;* partic. °सुत Âçv. Gṛhy. 4,8,28. Vgl. समवस्रव. — caus. *herabfliessen lassen* Kâṭy. Çr. 19,4,14.

— घन्ववस caus. dass. TS. 6,2,10,5. TBr. 1,3,8,2. Çat. Br. 12,8,2,17.

— व्यव caus. *zerrinnen lassen:* घायुः Kâṭy. 28,1.

— घा 1) *fliessen* Çat. Br. 14,6,11,4. घम्बु नेत्रयोः Bhâg. P. 1,11,32. घास्रवन्मद 10,39,15. यतः सरयूरास्रवत् *entspringen* 79,9. — 2) *hinzufliessen:* योगप्रणाडिकया कर्मास्रवति स योग घास्रवः Sarvad. Saṅgr. 36, 18. fg. Hem. Jogaç. 4,73. — 3) *leck —, schadhaft —, unbrauchbar werden:* तद्धे राष्ट्रमा स्रवति AV. 5,19,3. मा तं घा सुस्रोत् 2,29,7. — Vgl. घास्रव, घास्राव. — caus. 1) *schröpfen* Spr. (II) 1072. — 2) *hineinleiten,*

hinführen zu (loc.): आस्रवयति (sic) पुरुषं विषयेष्विन्द्रियप्रवृत्तिरास्रवः Sarvadarçanas. 37,7.

— उप *hinströmen zu:* मेदसः कुल्याः VS. 35,20. — Vgl. उपस्रवण.

— नि *hervorfliessen* so v. a. *hervorgehen, entstehen:* तृणान्निस्रवते तीरं तीरान्निस्रवते विषम् zu Spr. (II) 4031. richtiger wäre निःस्रवते. partic. निस्रुत (besser निःº) *abgeflossen* Suçr. 2,63,21. Vgl. निस्रव fgg. — caus. *abfliessen lassen:* जलस्थायं निस्रेषु MBh. 12,4893. निःस्राº Nilak.

— निस् *zerfliessen, weg —, ausfliessen* Çat. Br. 1,7,4,10. *hervorfliessen, entspringen* Verz. d. Oxf. H. 253,a,17. निःस्रुत *abgeflossen* Suçr. 2,69,3. Vgl. निःस्रव fg. — caus. *abfliessen lassen:* वापीम् MBh. 3,13164.

— अनुपरा *leck werden* u. s. w. *nach* Kâtj. 22,2. 23,9.

— परि 1) *ringsum —, herbeifliessen, abträufeln:* इन्द्रायेन्दो परि स्रव RV. 8,80,2 (Naigh. 3,21. Nir. 6,6). 9,56,4. 61,1. 85,1. *reichlich fliessen:* अम्बुदाम्बुनिवहः Milatîm. 169,2. नेत्राभ्यां जलम् MBh. 3,2966. R. 2, 30,24. परिस्रवदमृधार Kathâs. 22,224. mit acc. *fliessen machen:* वृष्टिं दिवः परि स्रव RV. 9,8,8. 39,2. 55,1. रुधिरम् Harîv. 13875. — 2) *umherschwimmen:* अप्सु Sây. zu Çat. Br. 11,1,6,2. — 3) *ablaufen, zerrinnen* (bildlich): घायुः परिस्रवति भिन्नघटादिवाम्भः Spr. (II) 6323. — 4) partic. °स्रुत *a) fliessend, strömend* Med. t. 208. तीर R. Gorr. 1,39,28. तत्र Kathâs. 42,4. — *b) zerronnen, zerflossen:* धारणाः Varâh. Bṛh. S. 22,2. — *c)* सुपरिस्रुत *wohl durchgeseiht* Suçr. 1,178,5. — caus. *durchseihen* Suçr. 1,32,5.21. 2,36,21.43,10.74,11. — Vgl. परिस्रव, परिस्राव fgg.

— अनुपरि *nachlaufen:* मनस्ततु पुनर्मायुधस्यारान्मृगसुतमनुपरिसुस्राव (oder अनु परिº) Bhâg. P. 5,8,28.

— प्र *hervorfliessen, ausströmen:* क्रिमयतः AV. 5,24,1. TBr. 3,7,4, 1. Bhâg. P. 5,17,6. वारि नेत्राभ्याम् MBh. 3,2968. शोणितं नस्ततः 4, 2211. Kathâs. 28,158. स्तनान्नासृक्प्रसुस्रुवे Bhâg. P. 3,19,23. वातमूत्रपुरीषाणि क्रिमयः शुक्रमेव च । भगन्दरात् Suçr. 1,120,8. 9. स्वादिष्ठं मधुनो घृताच्च रसवत्प्रस्रवत्यन्तरम् Spr. (II) 7337. *fliessen:* सारस्वती प्रतीच्यभिमुखी MBh. 9,2178. तेषां मधूनां वङ्कुधा धारा प्रस्रवते सदा 11, 143. *fliessen* so v. a. *Saft —, Flüssigkeit entlassen:* घचलः 13,4. प्रस्रवत्सु नदत्सु च । उदरेषु नवाधाणाम् Harîv. 3603. मातुः स्तनौ Spr. (II) 6235. नागाः मदमेव प्रसुस्रुवुः Râgat. 4,22. mit acc. der Flüssigkeit: त्रिधा मदम् (गजाः) MBh. 1,8013. 6. 2867. स्निग्धा श्लेष्मवान् 1,5924. शकृन्मूत्रे 8,2975. मूत्रं रुधिरं च 7,721. घना रक्तम् Harîv. 4264. प्रस्रविष्यन्ति तोयानि मरीधराः R. 2,48,13. गौरिव प्रस्रवत्यर्धावसम् MBh. 14,649. मनोरथं प्रस्रवतीं नाम्नाम् Pañkat. 4,1,6. — partic. प्रसुत 1) *hervorgeflossen, entströmt:* सरसः कुमारधारा MBh. 3,8127. क्रिमवत्पार्श्वात्सरित् 9,2207. घातवः Harîv. 8265. निरन्तरप्रसुतदानवारिभिः (so lesen wir st. प्रस्तुत) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, Çl. 43. — 2) *Saft —, Feuchtigkeit entlassend:* घम्बुद Suçr. 1,22,17. पर्वत (पतित st. प्रसुत die neuere Ausg.) Harîv. 10602. ऊधस् Kir. 4,10. Auge Harîv. 5698. Suçr. 1,115,8. अङ्ग 120,4. Elephant MBh. 7,3631. 13,4548. स्वेदन so v. a. *feucht* Suçr. 1,229,19. mit acc.: सर्वगात्रेभ्यः स्वेदम्, क्रिमवान्क्रिमम् R. 2,85,18. — Vgl. प्रस्रव fgg. und त्रिप्रसुत. — caus. med. *pissen* Çat. Br. 4,2,4,7. 18. 14,1,1,33. Pañkav. Br. 1,7,4.

— अभिप्र *ausfliessen* Çat. Br. 1,1,2,5. — caus. med. *pissen gegen* (acc.): die Sonne Çat. Br. 14,1,1,33.

— अवप्र, partic. °स्रुत *bepisst, beschissen:* वायसाव° Kâtj. Çr. 25,11,32.

— संप्र *hervorfliessen, in Fluss kommen:* लोहितोदा महावेगा नद्योघाः संप्रसुस्रुवुः R. 6,19,13. रसः Maitrâjan. 3,2. लोकेभ्यो ऽभितप्तेभ्यस्त्रयी विद्या Kaṭhân. Up. 2,23,3. °स्रुत *hervorgequollen* Suçr. 1,288,9. — caus. *zusammenlaufen lassen, zusammengiessen:* स्रुचौ TBr. 3,3,9,7.

— वि 1) *ausfliessen:* वङ्कुधा Çat. Br. 12,7,2,13. विस्रवन्मिश्र *was vergossenes Blut an sich hat* 11,2,2,23. *hervorfliessen:* नरनागाश्वदेहेभ्यो विस्रविष्यति शोणितम् MBh. 7,2689. 8,4258. पूतिना विस्रवता 9, 2259. *entlassen* (eine Feuchtigkeit), mit acc.: घसृगुल्बणान् 3,825. 14, 2194. मूत्रम् 10,409. मधूनि R. 6,109,17. — 2) *zerrinnen:* तद्धनं ब्राह्मणास्येव लुप्यमानस्य विस्रवेत् MBh. 13,4444. — विस्रुता R. 1,34,9 gehört zu 1. स्रु mit वि. Vgl. विस्रव fg. und विस्रुति. — caus. *ablaufen lassen:* जलम् MBh. 12,2634. *wegspülen:* धातून् Kâraka 10,6. *Blut ablassen* mit gen. oder acc. der Person Suçr. 1,27,4. 28,12. विस्रावित *ausgespült* 2,483,1. Vgl. विस्रावण fg.

— सम् *zusammenlaufen, — fliessen* RV. 9,113,5. यदाकूतात्समसुस्रोदो वा VS. 18,58. AV. 1,13,3. 4. 19,1,1. तस्मिन्वसः सत्रस्रवत् Çat. Br. 4, 4,2,1. TS. 6,5,9,1. पशवः AV. 2,26,2. 3. — caus. *zusammenfliessen lassen* Kauç. 6. AV. 1,13,3. 4. — Vgl. संस्रव fg. und संस्राव fg.

— अभिसम् *zusammenfliessen in* (acc.) Çat. Br. 7,5,2,11.

सुक्क am Ende eines adj. comp. (f. घा) von सुच् R. 1,32,10.

सुक्कार् m. *der Laut* सुक् AV. 9,6,22.

सुग्दारु n. *Löffelholz*, Bez. der *Flacourtia sapida* Roxb. Ratnam. 205.

सुग्मत्त् (von सुच्) wohl N. pr.; vgl. सोग्मत.

सुग्वत्त् adj. *mit einer* सुच् *versehen* Vop. 21,14. — Vgl. सुग्मत्त्.

सुघ्न 1) m. N. pr. einer Stadt im Norden von Hâstinapura Kap. 1, 28. Schol. zu P. 2,1,14. 4,3,25. 86. 1,3,25, Vârtt. 1. 8,4,2, Vârtt. 1. Ind. St. 13,377. fg. Varâh. Bṛh. S. 16,21. Tîrân. 290. Hiouen-thsang 1,115. fgg. 2,340. fg. Vie de Hiouen-thsang LXVII. 105. 446 (vgl. aber Hall in der Einl. zu Vâsavad. 51). — 2) f. ई *Natron* H. 945. — Vgl. सौघ्न.

सुघ्निका f. = सुघ्नी *Natron* Ratnam. 304 (सु°).

सुंच् Uṇâdis. 2,62. gaṇa भीमादि zu P. 3,4,74. f. Siddh. K. 247,b,12. *ein grosser Opferlöffel* (nach der Vorschrift armslang mit handgrossem Kopf, der von der Rindenseite aus eingeschnitten und mit schnabelartigem Ausguss versehen ist) Kâtj. Çr. 1,3,13. 37. Gobhil. 1,52. Z. d. d. m. G. 9,XLI. LXXX. AK. 2,7,24. H. 828. Hall. 2,260. Es sind deren drei: स्रुक्, उपभृत्, ध्रुवा und in dieser Reihenfolge ist auch der Gebrauch von sg., du. und pl. von denselben zu verstehen. RV. 1,84. 13. सुचेव घृतं जुह्वाम 110,6. 144,1. 162,17. घृतस्रुत् 5,14,2. 21,2. 6. 11,5. कविर्यती 8,23,22. 49,2. 12,91,15. 118,2. 3. AV. 5,27,5. सुचाय्यानि जुह्वत 6,114,3. 9,6,17. 12,4,34. 13,4,2. 19,42,2. Ait. Br. 7,5. VS. 2,1. 18,21. 63. TS. 3,5,2,2. मेदसा सुचो प्रीणाति 6,3,44,1. Çat. Br. 1,3,4,11. 2,5,2,6. 3,1,4,2. 7,4,4,36. Çâṅkh. Br. 3,3. सुचो योगः Kâtj. 31,13. Âçv. Çr. 2,3,5. 15. 20. Kâtj. Çr. 3,6,5. सुक्सुवम् 22,7,17. Çâṅkh. Çr. 2,8,16. Lâṭj. 3,2,10. M. 5,117. Jâṅ. 1,183. MBh. 3,10049. 15656. R. 1,73,21. Varâh. Bṛh. S. 44,12. Bṛh. 26 (24), 24. Verz. d. Oxf. H. 286. a, No. 670. Bhâg. P. 3,13,35. 4,19,29. सुग्भाण्ड MBh. 1,1609. 3,11043.

R. 3,1,24. 6,4. 62,23. Verz. d. Oxf. H. 56,*a*, N. 1. सुक्यात्राणि R. Gorr. 2,83,35. घृत° MBh. 4,1639. विकङ्कत° Ragh. 11,25. Häufig fälschlich सुच् geschrieben. — Vgl. उद्यत°, यत° und सोच.

सुचय्, °यति = सुच्यत्तमाचष्टे oder करोति Vop. 21,14.

सुच्य्, सुच्यति denom. von सुच् P. 1,4,15, Schol.

सुंच्य adj. zur Sruk verwandt, — geeignet gaṇa गवादि zu P. 5,1,2.

सुत् (von सु) adj. am Ende eines comp. *fliessend von, aus sich entlassend* (eine Flüssigkeit): घृत° Kumâras. 1,46. Çiç. 9,68. Spr. (II) 4338. चतुषा प्रणयसुता Kathâs. 22,113. — Vgl. सोच°, स° (hier subst. *Fluss*).

सुत 1) adj. und n. s. u. सु. — 2) f. घा = स्त्रिङ्पत्नी Çaṇḍik. im ÇKDr.

सुति (von सु) f. 1) *Ausfluss* Med. n. 148. क्षीर° R. 6,21,5. घृतकुल्याः सुतिभिः Bhâg. P. 8,10,37. क्षीर° Megh. 106. रस° Varâh. Bṛh. S. 55,14. घृतसव° Kir. 5,44. मद्यसुति 16,2. लाला° Z. d. d. m. G. 27,79. क्षार° Râǵa-Tar. 5,111. क्षिम° *Schneefall* Ragh. 16,44. तुषार° Kumâras. 1,5. — 2) *Weg, Strasse* ṚV. 1,42,3. दिवः 46,11. 2,13,12. गवाम् 6,24,4. 8, 80,1. पूर्वीर्हि ते सुतयः सन्ति यातवे 9,78,2. 10,88,5. घृतसोना 32,7. TS. 7,2.8,2. 3,5,3. TBr. 3,12,8,2. Ait. Br. 1,2. 4,17. Çâṅkh. Çr. 7,6, 2. *ein um die* Vedi *geführter Strich* (रेखा) 17,12,5.

सुत्य (von सुति) adj. *zur Strasse gehörig* u. s. w. VS. 16,37.

सुत्रा Uṇâdis. 2,61. gaṇa भीमादि zu P. 3,4,74. 1) m. *ein kleinerer Löffel* (einen Aratni *lang*), *mit welchem das Schmalz aus dem Topf* (स्थाली) *in den Opferlöffel übergeschöpft wird*. Beim Gṛhya-Opfer dient er auch zu der Spende Kâty. Çr. 1,3,13. 38. Gobh. 1,82. Z. d. d. m. G. 9, VIII. AK. 2,7, 24. H. 828. an. 2,541. Med. r. 30. auch beim Soma: सोमंमिव सुवेणा ṚV. 1,116,24. सुवेणा मिश्र 121,6. AV. 18,4,6. खादिर TS. 3,5,2,1. TBr. 1, 3,9,8. Ait. Br. 2,12. Çat. Br. 1,3,1,14. 9,2,1. 16. 2,5,2,6. 5,2,2,4. पालाश, वैकङ्कत 4,15. वारण 13,8,4,3. Kâty. Çr. 2,7,11. 3,1,12. 5,1, 4. सुवाकृति 10,9,9. °रोम Lâṭy. 10,18,2. Çâṅkh. Gṛhy. 1,9. Kâṭh. 2.3. दीर्घदण्ड 15. 40. 47. 81. स्वात्त्याः सुवेणादाय Âçv. Çr. 1,11,10. 2,3,5. 10. °पूरम् *in vollen Löffeln* 12. °दण्ड 1,12,24. Gṛhy. 4,3,6. Kauṣh. Up. 2,3. AV. Paric. in Verz. d. B. H. 91,1. M. 5,117. Jâén. 1,183. MBh. 1,7669 (सव ed. Calc. fehlerhaft). 3,8747. 10049. 10295. 5,1229. 12,1452. 3629. 13,4118. 15,727. R. 1,60,12 (62,12 Gorr.). 73,21. R. Gorr. 2,62,26. 83,33. 6,96,5. 11. fg. Suçr. 1,6,19. Kathâs. 73,307. 309 (°सुवं zu lesen). Prân. 107,2. Bhâg. P. 3,13,35. 4,5,19. Häufig fälschlich सुव geschrieben. सुव m. *Opfer* Gaṇḍîn. im ÇKDr. — 2) f. घा *a*) = 1) Med. — *b*) *Sanseviera Roxburghiana Schult.* सूर्वा AK. 2,4,3,2. H. an. Med. Bhâvapr. im ÇKDr. — *c*) *Boswellia thurifera* Med. Ratnam. 195.

सुवकर्ण adj. *das Zeichen eines Löffels am Ohre habend* P. 6,3,115.

सुवतरु m. *Flacourtia sapida Roxb.* Nigh. Pr.

सुवावृत् m. desgl. AK. 2,4,3,18.

सुव्रु s. वि°.

सू, von सु (= सवति) Uṇâdis. 2,57. Vop. 26,71. von षिव् P. 6,4,20. Vop. 26, 75 (षिव्). f. 1) सुवंव यस्य स्त्रिरिणी विषेततुः ṚV. 10,96,9. Unter Vergleichung von Zend çrû *plumbum* ist man versucht an *die Bleikugel der Schleuder* zu denken. — 2) = सुव Bharata zu AK. 2,7, 24. — 3) = सव *Ausfluss* H. an. 4,13. Med. r. 2 (सु). — 4) *Wasserfall* diess.

सेक्, सेंक्ते (गतौ) Dhâtup. 4,8.

सेकपर्ण adj. *dem Oleanderblatt gleichend* (Comm.): सेकपर्णाष्ठीवन्तो कृणुतात् TBr. 3,6,6,3. Ait. Br. 2,7.

सेमन् etwa mit सा in साम oder mit सीव् *verwandt*, in स° *fehlerlos, vollkommen*.

सेत = सेतस्, m. Vaṇṇavivṛiti bei Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,201. n. Bharata zu AK. nach ÇKDr. am Ende eines adj. comp. (f. घा) *Strömung, Strombett* MBh. 3,2668. 7,895. 12,12489. 13,3812. Hier und da fälschlich सेत geschrieben. — Vgl. सकस° und प्रतिसेतम् (in den Nachträgen).

सेतगापत्ति f. bei den Buddhisten *das Gerathen in den* (zum Nirvâṇa führenden) *Strom* Burnouf, Intr. 1,291. fgg. fälschlich सेत° geschr.

सेतगापन्न adj. *in diesen Strom gerathen* ebend. und Lot. de la b. l. 320. 849.

सेतर्ष m. *das Meer* (*Herr der Ströme*) H. 1073.

सेतःपति m. dass. Spr. (II) 2032.

सेतस् (von सु) n. Uṇâdis. 4,201. 1) *Strömung; Strombett; Strom, Fluss* Naigh. 1,12. AK. 1,2,8,11. 3,4,22,235. H. 1080. 1086. an. 2, 594. Med. s. 45. Hall. 3,44. 47. उशो यषिं निरपः सेतसासृजत् ṚV. 1, 51,11. धन्वन्सेतः कृणुते गातुमूर्मिम् 93,10. निरुणद्धि सेतः Nir. 6,1. सेतोऽभिमुख Âçv. Gṛhy. Paric. 1,9. आपः सेतस्सु Çvetâç. Up. 1,15. 2,8. सेतसो भेदकः, सेतसामावरणम् M. 3,163. MBh. 1,4208. नद्याः सेतोऽन्तरेण 3875. 6752. 13,4929. R. 1,44,8. R. Gorr. 1,45,10. fg. 2,6,12. 3, 31,11. शीघ्रसेतूनाम् 5,22,12. Megh. 52. Ragh. 1,78. 4,36. Çik. 50. 85,1. सेतसेवोह्यमानस्य प्रतीपतरणं मरुत् Vikr. 24. Mâlatîm. 79,19. Spr. (II) 5122. 6338. 6518. सेतोऽन्यत्र Varâh. Bṛh. S. 97,5. Râǵa-Tar. 3,240. 6,317. सेतसामस्मि जाह्नवी sagt Kṛshṇa Bhag. 10,31. सेतोभिरिव सागरः (वर्धते) MBh. 12,3473. सेतांसि सुप्रवुर्गिरिधातुभ्यः R. 2,63,18. पयः सेतसाम् Megh. 13. 46. Varâh. Bṛh. S. 80,10. सर्वसेतांसि गङ्गायाः *Nebenarme* R. 1,38,15. 18. तस्यां (गङ्गायां) विसृज्यमानायां सप्त सेतांसि जज्ञिरे 44,14. Spr. (II) 6095. Bhâg. P. 3,33,32. मूल° Râǵa-Tar. 5,96. दुग्ध° (pl.) Mâlatîm. 60,11. Am Ende eines adj. comp.: शीघ्र° R. 2, 55,13. 103,25. तीक्ष्ण° 4,41,11. 44,47. शुष्क° 5,21,15. बहु° Kathâs. 110,80. भूरि° Râǵa-Tar. 5,96. — 2) *Strom* so v. a. *schnelle Bewegung*: कराल° adj. (कालचक्र) Bhâg. P. 3,21,18. *heftiger Andrang*: तृष्णा° Spr. (II) 4310. घ्राणस्य (so ist zu lesen) सेतसो द्वारं संवृणोति Sarvadarçanas. 39,14. — 3) *Kanal im menschlichen Leibe*; deren dreizehn (für Athem, Wasser, Speise, Speisesaft, Blut u. s. w.) Kârana 3,5. Bhâvapr. in Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,3 v. u. सेतोमार्ग Suçr. 2,354,8. सम्वुवाहिन् 488,4. 5. 11. वातमूत्रपुरीषवह 516,9. 529,12. मुष्क° 57,12. °विशोधन 1,218,6. MBh. 12,6876. — 4) *Ausguss, Oeffnung an einem Topf* Suçr. 1,29,11; an einem Rohr 2,233,12. 234,5. — 5) *Oeffnung am menschlichen und thierischen Leibe* (neun an Zahl: Augen, Ohren, Mund, Nasenlöcher, After, Harnweg; beim Weibe ausserdem Brustwarzen und Blutweg) Suçr. 1,337,11. 338,8. 96,18. 2,57,6. 121,14. 236,17. नासासेतोगत 239,17. शेफ° (so zu lesen) 1,35,1. — MBh. 1,814. 3,13995. 12, 6876. Hem. Jogaç. 4,72. ऊर्ध्वमध्याधरेभ्यो ऽथ सेतोभ्यः प्रकृतीः सप्तन् Sûrjas. 12,26. — 6) *Sinnesorgan* AK. 3,4,22,235. H. 1383. H. an. Med. Hall. 2,380. पञ्चसेतोऽम्बु adj. Çvetâç. Up. 1,5. निगृह्य सर्वसेतांसि R. 7,106,15.

Mân. P. 119,18. निरूढस्रोतोगण Buic. P. 4,22,39. — 7) etwa *Geschlechtsfolge:* कुले स्रोतसि संक्रमे पस्य स्यात्रोनिसंकर: MBn. 13,2606. — Häufig (aber nicht in den Bomb. Ausgg.) स्रोतस् geschrieben. — Vgl. उत्°, ऊर्ध्व°, कर्णस्रोतस् (das hierher gehört), कर्णस्रोतस् (auch Harîv. 2921; könnte an beiden Stellen auch *Ohrloch* bedeuten), गर्भ°, तिर्यक्°, त्रि°, प्रति° (auch Jâón. 3,249), प्रत्यक्°, प्राक्°, वि°, स°, सप्त°, सरस्°.

स्रोतस am Ende eines comp. = स्रोतस्: s. वरुण°, त्रिस्रोतस्.

स्रोतस्य (von स्रोतस्) 1) adj. P. 4,4,112, Schol. *in Strömen fliessend* AV. 19,2,4. — 2) m. *Dieb* und ein N. Çiva's Çabdârthan. bei Wilson.

स्रोतस्वती (wie oben) f. *Fluss* AK. 1,2,3,29.

स्रोतस्विनी (wie oben) f. dass. Bhâshâ zu AK. 1,2,3,29 nach ÇKDa. H. 1080. Hall. 3,44.

स्रोतोञ्जन n. *Spiessglanz, Antimon* Suçr. 2,326,8. 339,15. 347,8. 349, 18. 360,6.

स्रोतोऽञ्जन n. dass. AK. 2,9,101. H. 1031. Ratnam. 280. Rigân. 13,98.

स्रोतोद्भव (स्रोतस् + उद्भव) n. dass. Rigân. 13,98.

स्रोतोनदीभव n. dass. ebend.

स्रोतोरन्ध्र n. *Rüsselöffnung* (beim Elephanten) Mucn. 43.

स्रोतोवह् f. *Fluss, Strom* Çiç. 50.

स्रोतोवहा f. dass. Gaṭâdh. im ÇKDa. Ragh. 6,52. Çiç. 143. fg. Vikr. 67,1.

स्रोत्या (von स्रोतस्) f. *fluthendes Wasser, Welle, Strom;* pl. RV. 3, 33,9. 10,104,8. des Meeres AV. 1,32,3. 4,26,4. पत्र यत्ति स्रोत्या: 6, 98,3. नाव्य 8,7,15. 10,1,16. Ts. 3,4,5,1. Ait. Br. 3,39. nach P. 6,4, 113 auch perisp.

स्रोम्मत (von सुम्मत्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,246,a. Lâṭ. 7,1,1.

स्रोघ्र adj. (f. ई) adj. *in* Srughna *geboren, sich dort aufhaltend, dorthin führend* u. s. w. Schol. zu P. 4,3,25 und 86. Ind. St. 13,377. fg. स्रोघ्रोभार्य, स्रोघ्रोपाशा, स्रोघ्रोमानिनी, स्रोघ्रोपते Schol. zu P. 6,3,39.

स्रोच (von सुच्) adj. *in einem Löffel befindlich* Comm. zu Kâṭ. Ça. 410, Anm.

स्रोत n. N. eines Sâman Ind. St. 3,246,a.

स्रोतिक (von स्रोतस्) n. *Muschel* Rigân. 13,130.

स्रोतोवक् (von स्रोतोवहा) adj. *fluvialis:* स्रोतस् Çiç. 50, v. l.

स्रोव MBn. 5,2779 fehlerhaft für स्रोत (so ed. Bomb.).

स्व्, स्वति = स्व इवाचरति. स्वामास Vop. 21,7.

स्वं Declination gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. 35. 7,1,16. Vop. 3,9. 12. 37. vor स्वा behält ein Femininum im comp. seinen Charakter 6,18. gaṇa प्रियादि zu P. 6,3,34. 1) adj. (f. घा) स्वस्मिन् RV. 1,132,3. स्वस्याम् 9,79, 3. *eigen (mein, dein sein* u. s. w.: Gegens. घरण, पर) AK. 3,4,23. 213. H. 562. an. 1,14. Med. v. 2. प्र स्वा मतिर्मतीनाम् RV. 1,33,12. 119,8. वधीं वृत्रं स्वेन भामेन 165,8. स्वमोको घृणि व: स्याम 7,36,24. तुभ्यं तव स्वाम् 8,11,2. सोदं कोत: स्व उ लोके 3,29,8. स्वे दम घा 4,2,8. रेजद्भूमिर्भियसा स्वस्य मन्यो: 17,2. 7,21,6. नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु 23, 2. न स स्वो दक्षे: 86,6. तनू 8,11,10. सखा 39,11. पन्थां यस्ते स्व: 10,18, 1. 56,2. वर्णा *die eigene* d. h. *gewöhnliche Farbe* AV. 1,23,2. व्रत 5,30, 2. 6,43,1. 49,1. 142,1. 7,108,1. गृह् 14,2,19. पितरो: *unsere* 18,2,29. Çat. Br. 1,4,2,17. देवता 13,1,2,2. 14,3,1,20. TS. 2,1,9,1. यत्त:स्वा RV. Prâr. 2,8. 4,1. 3. 6,1. 6. यावत्स्वम् *so weit sie ihm gehören* Kâṭ. Çr. 4,2,28. — Die Flexion und der Gebrauch des Wortes in der späteren Sprache ergiebt sich aus dem Folgenden. Es wird bezogen a) auf eine 3te Person und zwar α) auf das grammatische Subject: स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवा: M. 2,20. प्रकृतिं स्वाम् Bhâg. 4,6. MBh. 3,2111. गता: स्वं स्वं गृहं मुरा: 1345. R. 1,1,65. 58,9. सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् Mucn. 78. Çiç. 18. 131. स्वयैव प्रभया द्योतते MBh. 3,1746. स्वयोदीरितया (= स्वयमुदीरितया) स्वशक्त्या Bhâg. P. 3,8,12. शरीरात्स्वात् M. 1,8. यस्मात: स्वस्मात् Spr. (II) 7017. स्वस्य नाम्न: M. 2,124. मातु: स्वस्या: Ragh. 12,13. स्वे स्वे ऽन्तो M. 1,63. 8,42. स्वस्मिन्स्वस्मिन्ये R. Gorr. 2,37,12. Kathâs. 25,294. Râjat. 1,18. 3,265. 5,43. स्वा: स्वा: प्रजा: M. 1,61. स्वानि कर्माणि 8. 42. 1,30. स्वै: कर्मभि: 4,3. R. 1,6,6. स्वेभ्य: स्वेभ्यस्तु कर्मभ्य: M. 12,70. स्वेषु कर्मसु 4,155. am Anf. eines comp.: दीप्यमान: स्वयापुषा देववदिवि मोदते 2,232. 3,45. स्वमांसं परमांसेन यो वर्धयितुमिच्छति 5,52. 9, 298. धरविन्दानामामोदमुपजिघ्रन्ती स्वनि:श्वासानुकारिणाम् Ragh. 1,43. 2,4. Çiç. 8,22. Spr. (II) 6704. Kathâs. 103,73. Hit. 17,4. LA. (III) 8, 20. 11,18. 36,6. Buic. P. 1,8,12. — β) auf das logische Subject (instr.): प्रकल्प्या तस्य तैर्वृत्ति: स्वकुटुम्बात् M. 10,124. पय: पूर्व: स्वनि:श्वासकालमुपभुञ्जते Ragh. 1,67. राज्ञा स नीतो भूतस्वर्गमन्दिरम् Kathâs. 18, 246. 249. Buic. P. 3,2,12. — γ) auf einen gen.: स्वे स्वे धर्मेऽभिविष्टानाम् M. 7,35. तेषां स्वं स्वमभिप्रायमुपलभ्य पञ्चकपञ्चक 57. ब्रीवत्तीनां तु तासां ये तद्धरेयु: स्वबान्धवा: 8,29. तेषां दोषानभिख्याप्य स्वे स्वे कर्मणि तत्तत: । कुर्वीत शासनं राज्ञा 9,262. स्वधिगे निश्चयो नास्ति पस्य Spr. (II) 7280. स्वशक्त्या कुर्वत: कर्म (nom.) न चेत्सिद्धिं प्रयच्छति 7327. 7340. स्वमुखं नास्ति साधूनां तामां भर्तृमुखं मुखम् Kathâs. 39,53. तस्या: स्वपति: Mâlav. P. 16,52. यवस्थितानामनुशासने स्वे (d. i. यवस्य) — यवस्य Buic. P. 3,1,45. 8,26. स्वपतां निद्रया स्वया *ein Schlaf, über den sie selbst verfügen,* Spr. (II) 908. — δ) auf einen loc.: स्वगृहेष्वागतेऽपि स्निग्धे पापं विकुर्वते Spr. (II) 7268. — ε) auf einen acc.: यार्धवृषमिवानार्य कर्मभि: स्वैर्विभावयेत् M. 10,57. भ्रातरं स्वपुरं प्रेषयामास MBh. 3, 2033. चातुर्वर्ण्यं च लोके ऽस्मिन्स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति R. 1,1,92. 42,1. Ragh. 2,70. तं स्वोदन्तं पृष्टवान्प: Râjat. 4,278. 614. यवार्द्रानं स्वे (nom. pl.) परिवार्य सैनिका: — यवयन् MBh. 8,708. विहरन्तं स्वभार्यां त्रयान Vârâh. Bṛh. S. 78,1. Spr. (II) 3191. — ζ) auf das im comp. vorangehende Wort: सीतास्वकस्तोपकृताध्यपूत Ragh. 14,19. — η) auf ein zu ergänzendes allgemeines Subject: छाया स्वा दासवर्गस्य so v. a. *die Schaar der Diener ist des Mannes Schatten* M. 4,185. भ्राता स्व: Spr. (II) 873. स्वं चेत्कर्मफलं न स्यात् MBh. 13,312. स्वकृस्तघृतस्रुवसमिदातपत्रम् 1193. स्वगृहे पालव्य: 6515. स्वगुणा परदोषं च वक्तुम् 7266. यव नापिका त्रिविधा स्वान्या साधारणास्त्रीति Sid. D. 96. — b) auf die 2te Person und zwar α) auf das grammatische Subject: पदानि गणयन्गच्छ स्वानि MBh. 3,2618. भ्रातरं स्वं प्रकर्षय R. 6,37,77. त्वमपि स्वं नियोगमनूत्य कुरु Çiç. 24,16. 81,1. मावमंस्था: स्वमात्मानम् Spr. (II) 922. Kathâs. 24,181. स्वशरीरेण स्वर्गं गच्छ R. 1,60,13. Mucn. 96. Spr. (II) 7328. Çiç. 112,18. Kathâs. 41,37. Vet. in LA. (III) 25,22. — β) auf das logische Subject (instr. oder zu ergänzen): बालिशस्त्वं नरमेव गम्यतां स्वयुरम् R. 1,58,5. Vikr. 27,2. — γ) auf einen gen.: स्वमेव स्वानमेतत् Kathâs. 61,120. वल्यं नरकवासस्ते कितवास्ति स्वजातके:

121,189. — δ) auf einen acc.: येन तौ स्वाम्यं प्रापयामि Pañcat. 168, 5. — ε) auf die 1te Person und zwar α) auf das grammatische Subject: स्वमंशं वितरामि ते MBh. 3,3053. R. 2,79,12. Kathâs. 18,296. 35,68. स्वेन भर्त्रा सह 43,186. स्वबाहुबलमाश्रित्य करिष्ये ऽहं वानरान् MBh. 1,3579. गच्छेयं स्वशरीरेण देवतानां परां गतिम् R. 1,57,11. 2,74,19. Kathâs. 23,193. 71,53. Pañcat. 226,14. Hit. 11,5. 18,9. — β) auf den Sprechenden, trotzdem, dass eine 2te imperat. vorangeht: क्षमिष्ये भर्तर्यिष्ये ऽहं प्रविश स्वोदरं प्रति R. 5,56,16. एहि गच्छावो वर्धमानपुरं प्रिये। मा हि स्वा रात्रयानी Kathâs. 39,162. fg. — γ) auf das logische Subject: मया तव प्रवेष्टव्या स्वा तनूः Kathâs. 26,105. स्वशिरो दत्तं मया 41,47. 42,76. सेयं स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण न्याय्या मया मोचयितुं भवतः Bâlar. 2,55. — δ) auf einen gen.: प्रविश स्वोदरं मम R. 5,56,23. स्वं मनस्वदृतं मम Kathâs. 104,59. विद्यते चात्रयोरत्र स्वरुस्तालिखितं मिथः 24,189. — ε) auf einen acc.: स्वनगराय प्रस्थितं माम् Çiç. 84,11. — 2) m. *ein Eigener, Angehöriger; pl. die Eigenen, Seinigen, Freunde* (Gegens. अन्य, अरण, अमित्र, पर) P. 1,1,35. Vop. 3,9. AK. 2,6,2,34. 3,4, 23,213. Trik. 3,3,124. H. 361. H. an. Med. पतिं ज्ञातृंरमात्स्वान् AV. 11,9,8. 3,19,2. 7,52,1. 8,2,14. 10,3,8. 18,2,23. श्रेष्ठः स्वानाम् Ait. Br. 1,5. TS. 3,2,8,2. Çat. Br. 14,8,4,1. Kâṭy. 11,2,6. स्वो ऽभिषिञ्चति Çat. Br. 5,3,5,12. यो ऽस्य स्वो भवति 4,3,1,11. 1,1,4,5. Kauṣh. Up. 4, 20. M. 2,109. स्वः परो ऽपि वा Bhâg. P. 5,16,10. मृतं स्वमिव बान्धवाः (अनुशोचन्ति) MBh. 1,4967. स्वेन Râjat. 1,114. नैव स्वे (gegen P. und Vop.) न परे मनाङ्नानन्यास्यम् MBh. 6,4162. स्वे स्वान्यरे स्वकोयांश्च निग्रहः 7,7608. परे ऽपि स्वा (Conj. für स्व) भवन्ति Spr. (II) 2341. स्वैः 1223. स्वेभ्यो नः सुमङ्गलम् R. 4,18,16. स्वानाम् Bhâg. P. 1,8,1. 2,8,5. 3,15, 42. 4,3,19. 24,44. 5,8,17. 9,18,29. स्वेषु परेषु च R. 1,7,10. Spr. (II) 1657. स्वभय *Gefahr von Seiten der Eigenen* Vârâh. Bṛh. S. 95,10. Spr. (II) 6190. *ein Mann der eigenen Kaste:* न विप्रं स्वेषु तिष्ठत्सु मृतं शूद्रेण नाययेत् M. 5,104. स्वा *ein Weib der eig. K.* Kâṭy. Çr. 18,6,28. M. 3,13. 9,85. fg. — 3) *die eigene Person, das Selbst, das Ich* (fungirt wie आत्मन् als pron. reflex.): m. AK. 3,4,23,213. H. an. Med. n. Trik. स्वं च ब्रह्म च संसारे मुक्तो तु ब्रह्म केवलम् Spr. (II) 7276. यस्तूर्णनाभ इव तन्तुभिः प्रधानजैः। स्वभावतो देव एकः स्वमावृणोत् ॥ *sich* Çvetâçv. Up. 6,10. लङ्कास्थः स्वं (= स्वीयं देहम् Comm.) धारयिष्यसि R. 7,108,25. Spr. (II) 3724. Naish. 1,31. 6,95. Râjat. 3,370. fg. 5,303. Verz. d. Oxf. H. 128, *b*, 22. Prab. 14,16. Çârṅg. 2,21. 14,271. संतानोऽयं स्वम् Vop. 5,13. voc. स्व Naish. 3,30. स्वेन Schol. zu Kâṭy. Çr. 303,1. यदार्युक्त त्मना स्वादधि क्षुभिर्व व्यर्धयः *von selbst, von sich aus* RV. 5,87,1. स्वस्मात् Spr. (II) 5734. स्वस्य 3774. 4719. 5934. 7332. R. 7,37,1,43. Râjat. 1,139. 2,23. 3,439. 4,280. 6,207. Sâh. D. 11,1. 15. Bhâg. P. 3,2,12. Nilak. 62. Çârîr. 14,342. Vedântas. (Allah.) No. 81. नास्ति नः स्वे विचारणा R. Gorr. 1,74,22. रमतः स्व आत्मनः Bhâg. P. 5,19,5. स्वस्मिन्नेव स्वपुत्रे ऽपि प्रेमदर्शनात् Vedântas. (Allah.) No. 81. परेण स्वस्मिन्नाडिते सति Schol. zu Prab. 75, Çl. 18. कटाक्षः प्रस्थं स्वस्मिन्मनाक्षेशयति Schol. zu P. 3,1,52. zu Bhâg. P. 12,4,4. नैनिकाः स्वान्यवर्तन्त स्वामिभक्तिपराङ्मुखाः *kümmerten sich* (nur) *um sich* Râjat. 4,411. Häufig am Anfange eines comp. (auch in der ältesten Sprache, wie man aus den besonders aufgeführten Wörtern ersehen kann): °स्नेहेन R. 6,89,11. Weber, Rik. Up. 293. 301. °भरणव्यापारमात्रोपयोगतः Spr. (II) 2032. स्वानुरूप्येकमान 2789. °लक्षणं तु पो वेद 4986. 7276. °परप्रतारक 7285. स्वापकर्षं परोत्कर्षं दूतोक्तिर्मन्यते तु कः 7339. °परान्तरम् Kathâs. 34,198. 102,145. °पोषणपर Mârk. P. 14,69. °स्मृतिक्षये Râjat. 5,468. Bhâg. P. 9,10,30. 10,38,15. 11,25,2. Sin. D. 11,2. 57. स्वनिस्तरणाशक्तो Kull. zu M. 8,350. — ε) n. (nach den Lexicographen auch m.) *das Eigene, Eigenthum, Besitz* AK. Trik. H. 192. H. an. Med. Hall. 1,80. ध्रुवमस्य यत्स्वम् RV. 7,82,6. यद्देव किं च यत्तमानस्य स्वम् TS. 1,5,9,1. पुरुषस्य TBr. 1,3,7,4. AV. 5,107,1. तदाक्रः स्वस्य गोपनम् 12,4,10. Çat. Br. 5,3,4,1. TS. 3,1,2,3. 4. P. 6,2,17. सर्वं स्वं ब्राह्मणस्येदं यत्किंचिज्जगतीगतम् M. 1,100. स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च 101. स्वादान 8,172. परस्य 197. नहि तस्यास्ति किंचित्स्वम् 417. Jâṭ. 2,175. MBh. 4,1602 (धनम् ed. Bomb.). Spr. (II) 3640. 4849, v. l. 7284. °विनाश Vârâh. Bṛh. S. 79,23. °विक्रय Bhâg. P. 4,23, 4. H. 3. 76. 157. क्षत्र°, मौत्रिय° M. 8,149. ब्राह्मण° 11,18. 126. देव°, ऋषि° 20. 26. 12,60. Jâṭ. 3,212. MBh. 3,15967. Mṛicch. 61,3. Spr. (II) 2945. Kathâs. 33,154. पर° (s. auch bes.) R. 1,6,11. Spr. (II) 247 (pl.). 7367 (pl.). am Ende eines adj. comp. (f. आ): कृत° Vârâh. Bṛh. S. 104, 19. Kathâs. 22,62. 36,74. 38,22. Bhâg. P. 5,13,7. — 3) n. Bez. *des 2ten astrol. Hauses* (= धर्म) Vârâh. Bṛh. 1,16. 4,4. 5,3. 9,1. Lacuné. 2,11. — 6) n. (in Algebra) *plus, or affirmative quantity* Wilson. — Vgl. निः°, पर°, प्रतिस्वम्, ब्रह्म°, पद्म° (adv. auch TS. Prât. 24,4), सर्व° und सौव.

स्वःकाम्य् °यति *nach dem Himmel* (स्वर्) *verlangen* Sidd. K. zu P. 3,1,9. Vop. 21,4.

स्वःपथ m. *der Weg zum Himmel* so v. a. *das Sterben:* स्वःपथाय मतिं चक्रे Bhâg. P. 1,15,32.

स्वःपाल m. *Himmelshüter* Bhâg. P. 10,51,16.

स्वःपृष्ठ n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,246,a. Lâṭ. 7,10,3.

स्वक = स्व 1) adj. (f. स्वका und स्विका) P. 7,3,47. Vop. 4,7. *eigen (mein, dein, sein u. s. w.)* AK. 3,4,3,34. Bezogen α) auf eine dritte Person und zwar α) auf das grammatische Subject: स्वकं पितरमाशयेत् M. 3,220. 4,14. 134. 7,171. 185. 8,50. 387. 9,199. 207. 11,187. 12,71. fg. Jâṭ. 2,44. Bhag. 11,30. MBh. 3,3013. 2233. 2685. 2997. 13580. 4,307. R. 1,8,25. 2,110,25. 3,55,2. 71,8. Kâm. Nîtis. 10,26. Spr. (II) 4239. 5504. Vârâh. Bṛh. S. 19,12. Kathâs. 9,86. 20,40. 23,46. 25,261. 34, 94 (im comp.). 46,128. 61,33. 66,190 (im comp.). Mârk. P. 28,34. Bhâg. P. 1,11,1. 12,29. 13,25. Pañcad. 3,1,19. H. 836. Saddh. P. 4,11,b. — β) im Relativsatze auf das grammatische Subject des vorangehenden Demonstrativ-Satzes: कन्यात्म एनं यो कन्यात्कुलधर्मं स्वकं (स्विकं ed. Bomb.) तनुम् MBh. 6,128. — γ) auf das logische Subject (instr.): यवनेरेष नीयमानः स्वकं तनयम् Bhâg. P. 4,28,23. Spr. (II) 7049. — δ) auf einen gen.: स्वकां भार्यां गच्छताम् MBh. 7,2762. तस्य मतिर्ज्ञाता व्याख्यातु पितरं स्वकम् R. 1,9,27. Sucr. 1,188,1. Kathâs. 32,175. — ε) auf einen acc.: अञ्जयन्ती स्वके नेत्रे M. 4,44. 9,273. MBh. 1,1357. 12,1891. पितरं च न पश्यामि केनाप्य भवने स्वके R. Gorr. 2,74,14. — ζ) auf ein zu ergänzendes allgemeines Subject: भार्या पुत्रः स्वका तनुः so v. a. *die Gattin und der Sohn ist des Mannes Leib* M. 4,184. — *b*) auf die zweite Person und zwar α) auf das grammatische Subject: स्वकां नाभिं — नाभिरोचयसे नेतुं त्वम् R. 2,29,19. — β) auf einen gen.: मा ते स्वको ऽयं नि-

पतेत मोक्षात् MBh. 4,2126 (2127). R. 5,61,8. — c) auf die erste Person: α) auf das grammatische Subject: स्वकं स्थानं प्रतिपन्नाः स्म Hariv. 12878. इतिं स्वकेषु दारेषु नाधिगच्छामि R. 3,53,32. — β) auf den Sprechenden, trotzdem dass im Satz eine 2te imperat. steht: निवेदयाम ते सर्वं स्वके दाशकुले वस R. 2,84,16. — γ) auf einen gen.: स्वको ऽयं मे बालः स्थितः Kathâs. 51,91. — 2) m. *ein Eigener, Angehöriger*; pl. *die Eigenen, Seinigen, Freunde*: तुल्यो मित्रपरस्वकेषु Mârkaṇ. 137,24. Bhâg. P. 1,8,41. 13,13. 3,18,12. 6,11,22. 8,10,2. 21,18. 12,3,41. अन्यस्वकचक्रतो भयम् H. 61. — 3) n. *das Eigene, Eigenthum*: परस्वकेन दात्रा तुष्येन्न परस्वेषु गृध्येत् MBh. 3,225. 5,616. सर्वं बलवतां स्वकम् 15,842. नाराजके जनपदे स्वकं भवति कस्यचित् Spr. (II) 3641. युवयोर्यन्मदीयं तन्मामकं युवयोः स्वकम् Mârk. P. 23,53.

स्वकम्पन m. *Wind* (von *selbst sich bewegend*) Çabdar. im ÇKDr.

स्वकम्बला f. N. pr. eines Flusses Mârk. P. 59,19.

स्वकरण n. *das Sichzueignen* (eines Weibes), *Heirathen* P. 1,3,56. — Vgl. स्वीकरण.

स्वकर्मन् n. 1) *die eigene That*: स्वकर्म ख्यापयन् M. 11,99. 123. Hit. 43,2. 44,3. स्वकर्मत्र *selbstverschuldet*: दुःख R. 2,64,12. — 2) *die Beschäftigung —, Obliegenheit eines Mannes* Çâṅku. Ça. 7,7,4. M. 1,53. 2,188. 8,205. fg. 418. 9,113. 207. 10,1. 24. 40. 50. 74. 80. Kap. 3,35. स्वकर्मानुष्ठीयताम् Çâk. 80,3.

स्वकामिन् adj. *dem eigenen Wunsche nachgehend, Etwas selbst wünschend* Çat. Br. 10,2,6,7.

स्वकाल m. *die eigene Zeit*, loc. *zu seiner Zeit* Çâṅku. Ça. 5,11,16. 15,1,29. M. 4,93. Varâh. Bṛh. S. 86,18. 88,2. सर्वं चैतद्भवति विफलं स्वस्वकाले व्यतीते *wenn die zu jedem der Dinge erforderliche Zeit vorbei ist* Spr. (II) 6471.

स्वकीय = स्व 1) adj. (f. या) *eigen* H. 362. bezogen α) auf eine dritte Person und zwar α) auf das grammatische Subject MBh. 1,7163. Ṛtuâsa bei Sây. zu ṚV. 1,125,1. Râgat. 17,64. Spr. (II) 433. 7265. Pañkat. 42,2. 187,12. ed. orn. 5,6. Vet. in LA. (III) 28,13. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,8, Çl. 26. — β) auf einen gen. Sâh. D. 321. Kull. zu M. 5,97. — γ) auf einen acc. Spr. (II) 2813. — δ) auf ein zu ergänzendes allgemeines Subject: मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम् Spr. (II) 4062. Verz. d. Oxf. H. 282,a,12. fg. — *b*) auf die zweite als Subject stehende Person Pañkat. 44,9. 188,5. — 2) m. pl. *die Eigenen, Seinen, Freunde*: स्वे स्वान्ये स्वकीयाश्च निःशङ्काः MBh. 7,7666.

स्वकीयत्व n. nom. abstr. zu स्वकीय Schol. zu Çâk. 35.

1. स्वकुल n. *das eigene Geschlecht*: मा भूत्स्वकुलसंक्षयः wünscht Jemand von sich Kathâs. 22,42. °क्ष Spr. (II) 2573.

2. स्वकुल adj. *vom eigenen Geschlecht, seines Geschlechts* Spr. (II) 6645.

स्वकुलक्षय m. *Fisch* (*sein eigenes Geschlecht vernichtend*) H. 1344.

स्वकुल्य adj. = 2. स्वकुल Spr. (II) 2575.

स्वकुशलमय (von स्व + कुशल) adj. (f. ई) *das eigene Wohlbefinden betreffend*: प्रवृत्ति Mâlav. 4.

स्वकृत् adj. *das Seinige thuend, seinen Verpflichtungen nachkommend* Bhâg. P. 10,12,34.

स्वकृत 1) adj. α) *selbst vollbracht, — ausgeführt*: कर्मन् MBh. 1,6427. R. Gorr. 2,105,22. 3,45,5. तपस् 5,89,28. यज्ञ MBh. 15,288. दुर्ग Kathâs. 15,50. दोष MBh. 5,6004. *selbsterbaut*: सुरसदन् Kathâs. 25,228. पुर Râǵa-Tar. 1,157. 5,39. *selbstverfasst*: ग्रन्थ 6,11. स्तव Hariv. 7417. Ind. St. 5,70. *selbstgeschaffen*: मक्षी Bhâg. P. 3,5,32. *selbstfestgesetzt*: समय 9,22. वृद्धि Jâǵ. 2,38. — *b*) *von selbst entstanden, natürlich*: इरिण TS. 2,5,1,3. 3,6,4,5. Çat. Br. 5,2,2,2. — 2) n. *eine selbstvollbrachte That*: स्वकृते का नु शान्तिः स्यात् MBh. 13,2. R. 3,75,44. 6,98,39.

1. स्वक्ष adj. *eine schöne Achse habend*: रथ R. 6,86,4. m. *ein Wagen mit schönen Achsen* MBh. 2,1915 (स्वक्षान् st. स्वक्षान् od. Bomb. = शकटान् Nîlak.).

2. स्वक्ष 1) adj. (f. ई) *schönäugig* MBh. 8,1110. R. 7,5,41. Lalit. 2,14. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,358 (VP. 188).

स्वक्षत्र adj. *selbstständig, frei*: Indra's मनस् ṚV. 1,54,3. 5,33,4. 48,1. *ein freier Mann* 1,165,5.

स्वगत 1) adj. *an der eigenen Person befindlich, ihr gehörig, eigen*: त्यज °संतापम् (स्वमनस्तापम् die neuere Ausg.) Hariv. 6342. न स्वगतो यस्य गुणो ऽस्ति देहिनः Spr. (II) 3919. बन्धवः Bhâg. P. 10,84,64. — 2) स्वगतम् adv. = स्वात्मगतम् *für sich* (Etwas sagen, denken): यद्याद्यं खलु पद्मस्तु तदिदं स्वगतं मतम् Sâh. D. 425. Çiç. 12,12. 22,1. Vikr. 30,8. Prab. 22,19. 23,8. 24,8. 34,8. Dhûrtas. 71,8. Pañkat. 27,10. fg. Hit. ed. Jouns. 1198. 2192 (चिन्तयति).

स्वगति f. v. l. für खगति *ein best. Metrum: 4 Mal* ——◡◡—◡◡—◡◡ ——◡◡—◡◡— Ind. St. 8,393.

स्वगा indecl. Opferformel wie स्वाहा, शंयु n. aa. den Wunsch des Gelingens ausdruckend Comm. zu TS. 1,233,20. zu TBr. 2,389,10 (=स्वगतम्). स्वगेदं देवेभ्यो नमः VS. 18,57. स्वगा त्वा देवेभ्यो धर्मं भक्षयामि 22,4. स्वगा देव्या रोहतेभ्यः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः TBr. 3,3,8,11. Çat. Br. 1,8,2,21. कृ *diesen Ruf aussprechen* TS. 2,6,10,1. Çat. Br. 1,8,2. 11. 9,2,14. °कृत 3,7,1,30. यातयामेव रोतस्यधुर्यः स्वगाकृतः so v. a. *abgemacht* TS. 6,5,9,2. 3,5,2,3.

स्वगाकर्तृ nom. ag. *der den Ruf* स्वगा *ausspricht* TS. 2,6,10,1.

स्वगाकार m. *der Ruf* स्वगा VS. 18,21. TBr. 2,1,2,2.

स्वगाकृति f. *die Behandlung mit dem Ruf* स्वगा TS. 2,6,8,1. 3,4. 1,2. 5,4,6. TBr. 2,1,4,3. Kâṭy. 36,7.

स्वगुप्ता f. *Mimosa pudica* (*durch sich selbst geschützt*) Râǵân. 5,105. *Mucuna pruriens Hook.* (vgl. स्वात्मगुप्ता) Çabdar. im ÇKDr. — Varâh. Bṛh. S. 44,10 (गुप्ता v. l.).

स्वगूर्त adj. *frohlockend*: Ströme ṚV. 1,140,13. 10,95,7. वह्नयो 4,19,10. विश्वे देवासो नरो स्वगूर्ताः *pochend auf* 5,68,4.

स्वगृक् m. *ein best. Vogel* (*ein eigenes Haus habend*,) = कलिङ्ग Gaṇar. im ÇKDr.

स्वगृहीत s. u. सुगृहीत 2).

स्वगोचर m. *sich unterthan*: कुर्वन्ति नं स्वगोचरम् Spr. (II) 4106.

स्वगोप adj. (f. या) *sich selbst hütend* ṚV. 10,31,10.

स्वग्नि adj. *der einen guten Agni* (*Feuer*) *hat*: प्रिया: स्वग्नयो वयम् ṚV. 1,26,7. 7,15,8. 8,19,7. 49,6.

स्वघक् m. N. *eines die Kinder befallenden Dämons* (पद्) Çiṅâc. Saṅh. 1,7,109.

स्वग्राम m. *das eigene Dorf*: vgl. सोवग्रामिक.

स्वङ्, स्वँङ्गते = श्वङ् (गतौ) Dhâtup. 5,44, v. l.

स्वङ्ग Vop. 7,3. adj. (parox.) *einen schönen Körper habend, schöngliedrig* H. 355. ṚV. 2,43,4. 10,1,1. fehlerhaft für स्वर्ग R. Gorr. 2,30,11.

स्वङ्गुरि adj. *schönfingerig, geschickte Finger habend:* Sinîvâlî ṚV. 2,32,7. Savitar 4,54,4. VS. 11,63. ṚV. 10,86,8.

स्वचर् adj. *sich selbst bewegend, eine eigene Bewegung habend* Z. f. d. K. d. M. 4,305.

स्वच्छ 1) adj. (f. या) a) *schön klar* (घट), — *durchsichtig*, — *hell:* Wasser (Wasserbehälter) und andere Flüssigkeiten R. 2,91,71. Spr. (II) 4728. 4983. 6717. 6789. 7272. Kathâs. 18,101. 21,8. 42,41. Râǵa-Tar. 1,303. 313. 4,212. Bhâg. P. 4,24,20. Pañkat. 1,7,47. Thränen Spr. (II) 7001. स्फटिक Kathâs. 50,191. Bhâg. P. 3,33,17. Rubine Varâh. Bṛh. S. 82,3. Farbe 68,33. प्रतिमूर्यक 37,1. Mondstrahlen R. Gorr. 1,36,17. कांसि Kathâs. 34,14. Spiegel und Bösewicht (durch Bestreuung von Asche) Spr. (II) 7245. °सिन्दूरभाम् ṚV. 1,24. तनु Bhâg. P. 8,6,3. भगवतः पदम् 3,26,21. पुष्प *hellfarbig* Kathâs. 24,97. Pañkat. 1,6,22. छातपत्र Râǵa-Tar. 4,719. übertragen auf Geistiges: वचस् *klar, deutlich* Kathâs. 17,163. चेतस् *rein, lauter* MBh. 9,2342. हृदय Spr. (II) 2819. घनसारात्मन् 367. वृत्ति 1543. वृत्त Kâm. Nîtis. 5,79. स्वभाव Pañkat. 1,14, 91. गुणाः Râǵa-Tar. 4,40. विद्या Nîlak. 253. — b) *gesund, geheilt* Çabdar. im ÇKDr. aus स्वस्थ entstanden. — 2) m. a) *Bergkrystall* Râǵân. 13, 204. — b) *Judendorn* (बदर) Râǵân. 11, 140. — 3) f. या *weisses* Dûrvâ-*Gras* Râǵân. 8,112. — 4) n. a) *Perle* Râǵân. 13,158. — b) *mit Silber versetztes Gold* Râǵân. 13,139.

स्वच्छक (von स्वच्छ) adj. *schön klar* u. s. w.: कपोलो Spr. (II) 5733.

स्वच्छटी f. *Schnippchen* (अङ्गुलिसंदेश) Hâs. 203.

स्वच्छता (von स्वच्छ) f. *vollkommene Klarheit*, — *Durchsichtigkeit:* des Wassers Spr. (II) 6522. Sarvadarçanas. 34,12. Kull. zu M. 6,67. der Luft Spr. (II) 2248. *Lauterkeit des Herzens* 4853.

स्वच्छत्व (wie eben) n. dass. Çâṅk. zu Brahmas. 2,1,34. Bhâg. P. 3,26,22.

स्वच्छन्द 1) m. *eigener* —, *freier Wille:* स्वच्छन्दो ऽत्र विधीयताम् R. 1,39,11. स्वच्छन्दे न वयं स्थिताः 34,28. स्वच्छन्देन *nach eigenem Gefallen, aus eigenem Antriebe* Kâlikop. in Ind. St. 9,13. Hariv. 7017. R. Gorr. 1,40,11. स्वच्छन्दात् dass. MBh. 9,3347. R. 1,2,34 (33 Gorr.). 3,48,4. स्वच्छन्दतस् dass. MBh. 13,7793. — 2) adj. (f. या) *seinem eigenen Willen folgend, nach eigenem Gutdünken verfahrend* AK. 3,1,18. 16 (स्व°). 3,4,25,194. H. 355. Hall. 2,224. 5,47. Spr. (II) 3808. Asṭâv. 18,21. Varâh. Bṛh. 34,3. Kathâs. 33,184. वशम् (als beliebt gedacht) Kathâs. 22,252. *vom eigenen Willen abhängig, unbeschränkt:* भ्रमण Spr. (II) 578. 5539. °शक्ति Bhâg. P. 3,24,33. 25,2. 8,6,36. Kusum. 42, 8. — 3) °म् adv. *nach eigenem Gefallen, aus eigenem Antriebe* Jâṭ. 2, 224. Spr. (II) 3808, v. l. 5850. 7170. Asṭâv. 18,35. Git. 1,46. Kharsoṇ. 69. — 4) am Anfange eines comp. = स्वच्छन्देन oder स्वच्छन्दम्. °पथगा गङ्गा R. 1,36,17 (37,18 Gorr.). °मरण R. Gorr. 1,67,11. °चर 35,26. °चारिन् Spr. (II) 57. 4381. Asṭâv. 14,4. Kathâs. 18,252. fg. स्वच्छन्दाचरण Daçar. 4,31 = Sin. D. 199. °चारिन् Pañkat. 4,8,78. °वनजातेन शाकेन *von selbst im Walde gewachsen* Spr. (II) 7271. — 5) Titel eines Werkes Hall 197. fg. — Vgl. स्वाच्छन्द्य.

स्वच्छन्दभैरव Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 95,b,35. fg.

स्वच्छन्दशाक्तागम (so im Index, °शाक्तागम im Text) m. desgl. ebend. 321,a, No. 761.

स्वच्छन्दसंग्रह m. desgl. ebend. 108,a,6 v. u.

स्वच्छन्दोद्योत m. desgl. Hall 198.

स्वच्छपत्र n. *Talk* H. 1031.

स्वच्छमणि m. *Bergkrystall* Râǵân. im ÇKDr.

स्वच्छवालुक n. = विमलोपल ebend.

स्वञ्च् (स्वञ्ज्), स्वँञ्चते (परिघङ्गे) Dhâtup. 23,7. P. 8,4,28. Vop. 8,102. 106. घस्वङ्ग Vop. 8,106. मस्वञ्चे und मस्वञ्जे ebend. und Kâç. zu P. 1,2, 6. 8,3,118. erhält keinen Bindevocal Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Hier und da auch act. *umschlingen, umarmen:* कन्याः स्वञ्चेयाः MBh. 5,902. 2960. मातरमस्वञ्चत Râgat. 13,70. स्वञ्चमान MBh. 2,2395. स्वञ्चान 5,4228. मस्वञ्चे 3,2999. R. Gorr. 2,2,19. 25,42 (44 Schl.). Bhâg. P. 10,5,21 (घस्वञ्जे gedr.). स्वञ्जित्वा MBh. 3,14724. Statt गर्भस्य तस्य स्वञ्जति Suçr. 2,93,4 ist mit Bhâvapr. गर्भस्य पाणौ सञ्जति zu lesen. Wohl verwandt mit सञ्ज्.

— अभि, °ञ्चते Schol. zu P. 8,3,65. अभ्यञ्चत zu 63. °घस्वञ्जे, °घस्वञ्जे Kâç. zu 118. dass.: °ञ्चेत् MBh. 12,8796. °मस्वञ्जे (°मस्वञ्चे ed. Calc.) 8,1652. — Vgl. अभिघङ्ग. — des. °विघङ्क्षते P. 8,3,64, Schol.

— नि, °ञ्चते P. 8,3,70. न्यञ्चत und न्यस्वञ्चत 71. न्यघङ्क्त und न्यस्वङ्क्त Vop. 8,106.

— परि, °ञ्चते P. 8,3,65. 70. पर्यञ्चत und पर्यस्वञ्चत 71. *umschlingen, umfangen, umarmen:* वृत्तम् ṚV. 1,164,20. 182,7. 10,10,12. वनौ 8,60,10. AV. 1,2,3. सखायम् ṚV. 6,75,3. 8,41,2. 9,12,5. मयः पतिभ्यो जनयः परिष्वजे (inûn.) 10,40,10. 43,1. 101,10. 133,2. AV. 4,8,7. 6,133, 5. 14,2,39. 18,1,3. °ञ्चते u. s. w. MBh. 13,226. Çiç. 56,6. 106,4. Vikr. 11,3. Mâlav. P. 76,14. Prab. 66,5. पर्यस्वञ्चेताम् (पर्यघ° ed. Bomb.) R. 2,75,9. 103,46 (पर्यस्वञ्चत Schl., पर्यघ° ed. Bomb.). पर्यघञ्चत 5,2,20. 6,10,20. 82,130 (पर्यस्वञ्चत). °ञ्चान R. Schl. 2,83,10. °घस्वञ्जे MBh. 1,3112. 3000. 3,211. 12567. R. 2,87,7. 103,47. R. Gorr. 1,75,2. 4,12, 20. fg. Kathâs. 100,87. °घस्वञ्जिरे R. 1,9,37 (35 Gorr.). °घञ्जिष्ये MBh. 7,4368. act. °ञ्चति 4,518. Spr. (II) 3078 (ohne alle Noth). Mâlav. P. 76,13. °ञ्चेत् R. 2,38,16. °घस्वञ्जुः Bhâg. P. 4,4,7. °घञ्ज्य absol. MBh. 2,40. 3,2705. 2946. 3055. 15195. 5,7189. 7280. R. 2,25,38. 30,26. 32, 38. 39,19. 52,32. 3,48,3. Mâlav. 49,21. 72,19. Prab. 12,3. 57,6. °घङ्क्तुम् R. Gorr. 2,35,14. °घङ्क्त MBh. 2,32.7,713. 4352. 13,2838. Mṛkkh. 91,22. Prab. 16,13. fg. Bhâg. P. 1,10,8. 11,29. मरकतवैदूर्यकिरीटकुण्डलत्विषा परिघटसटमकुटतलम् 10,3,10. Vgl. परिघङ्क fgg. — desid. परिषिषङ्क्षते Schol. zu P. 8,3,64.

— अभिपरि dass.: °ञ्चन्तम् R. 2,44,10.

— संपरि dass.: °ञ्चन्न तावन्माम् R. Gorr. 2,66,20. °ञ्ज्य absol. MBh. 1,3307. 4710. 5,2955. 10,448. 12,9806. 15,135. Hariv. 9074. R. 1,77, 4 (78,4 Gorr.). 2,4,11. 50,21 (47,12 Gorr.). 66,12. R. Gorr. 2,58,15. 4,6,17. 5,19,31. 105,20. 7,72,3. Mâlav. P. 72,33. स्त्रीपुंसौ संपरिघटकौ Çat. Br. 14,4,2,4. प्रियया स्त्रिया °घङ्क्तः 7,6,21. MBh. 1,3063.

— वि, °ञ्चते, व्यञ्चत und व्यस्वञ्चत P. 8,3,70. fg. °घस्वञ्जे und

°षस्वञ्जे Vop. 8,107. dass.: चरणौ काविदालिङ्ग्य काचित्कपठे (wohl कण्ठे) विषस्वञ्जे R. 6,94,9.

— सम् dass. Bhatt. 18,23.

— अभिसम् dass.: पितेव पुत्रानभि सं स्वञ्जस्व AV. 12,3,12.

स्वञ्ज (स्व + ञ) 1) adj. (f. आ) *eigen, angehörig:* वत्रासो न ये स्वञ्जाः स्वर्तवसः RV. 1,168,2. धनुं स्वञ्जं मंकिषवंतत ग्राम् 121,2. बुद्धि so v. a. *im eigenen Kopfe entstanden* R. 2,112,16. — 2) m. a) *Viper (vivipara* oder etwa zu स्वञ्ज्) AV. 3,27,4. 5,14,10. 6,56,2. 10,4,10. 15. 17. 12,3, 58. Ait. Br. 3,26. nach Sis. angeblich *eine Schlange, die an beiden Enden Köpfe hat.* — b) *Sohn* Taik. 3,3,88. Med. g. 17. — c) *Schweiss* diess. — 3) f. आ *Tochter* Çabdar. im ÇKDa. — 4) n. *Blut* Med. masc. Taik.

स्वञ्जन m. *ein Eigener, Angehöriger, Verwandter* (Gegens. पर्, परञ्जन, बाह्य); der sg. häufig auch in collectiver Bed. AK. 2,6,1,24. H. 561. Hall. 2,254. Kir. Ça. 25,4,25. Bhag. 1,28. 45. MBh. 1,3601. 3,2343. 2565. 13,2404. 14,442. R. 2,47,19. 79,4. R. Gorr. 2,53,2. 3. 5,86,21. 89,63. 6,99,28. Ragh. 8,70. 16,86. Kumâras. 4,26. Çik. 136. Spr. (II) 1143. 2125. 2738. 2876. 5734. fg. 6343. 6533. दुर्जनस्वञ्जनपोः 6672. Vaśiṣ. Bṛh. S. 51,25. 69,17. Kathâs. 14,25. 39,186. 48,129. Daçak. 63, 11. Bhâg. P. 3,14,26. 4,3,25. 5,5,18. pl. R. Gorr. 2,16,47. Spr. (II) 1588. 6879. 7052. 7273. Vaśiṣ. Bṛh. S. 104,39. Kathâs. 21,112. Mârk. P. 51,119. Bhâg. P. 1,14,25. 3,24,31. Paṅkat. 98,14. 175,2. Vet. in LA. (III) 27,2. in comp.: सुकृतस्वञ्जनवाक्यानि MBh. 3,2257. 3058. °प्रिय R. 2,73,23. Ragh. 8,85. Spr. (II) 316. 1630. मित्रस्वञ्जनबन्धूनाम् 4863. 6383. 7225. Vaśiṣ. Bṛh. S. 19,18. 80,18. 96,2. Kathâs. 19,22. Bhâg. P. 1,9,36. 4,3,18. 7,15,4. स्वञ्जनञ्जनविद्वेषकारण Mṛicch. 8,19. am Ende eines adj. comp. (f. आ) R. Gorr. 1,1,105. 70,12. Daçak. 72,8. Nicht selten werden स्वञ्जन und सुञ्जन mit einander verwechselt.

स्वञ्जनता (von स्वञ्जन) f. nom. abstr.: सर्वो ह्यनः °तामुपयाति तस्य *wird zu seinem Verwandten* Spr. (II) 4594.

स्वञ्जनय् (wie eben), °यति *Jmd zum Angehörigen haben* so v. a. *ähnlich sein*, mit acc. Bâlar. 130,20 (सुञ्जन° gedr.).

स्वञ्जनाय् (wie eben), °यते *zum Angehörigen werden:* धनिनां पशो ऽपि स्वञ्जनायते Spr. (II) 1143. 1142.

स्वैञ्जन्य n. adj. *selbsterzeugt, leiblich:* शेषम् RV. 7,1,12.

स्वञ्जात adj. dass. AK. 2,6,1,20. H. 550. subst. *ein selbsterzeugtes Kind* Spr. (II) 5849.

1. स्वञ्जाति f. *die eigene Art, — Beschaffenheit* Suçr. 1,147,6. *das eigene Geschlecht* Spr. (II) 7162. *die eigene Kaste* M. 8,377. सु° adj. (hierher oder zu 2. स्वञ्जाति) von *anderer Kaste* 9,86.

2. स्वञ्जाति adj. *einer seines Gleichen* Spr. (II) 7113.

स्वञ्जातिद्विष् m. *Hund (seines Gleichen anfeindend)* H. ç. 180.

स्वञ्जातीय adj. = 2. स्वञ्जाति M. 11,162. Harîv. 4074 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Spr. (II) 2878. 7274. fg. Kathâs. 37,144. 172. Paṅkat. 190,21 (स्वञ्जतीय gedr.).

स्वञ्जात्य adj. desgl. MBh. 13,3167. 3173. Spr. (II) 4689. Paṅkat. 71,11.

स्वञ्जित adj. *selbsterobert:* दिशो दश Bhâg. P. 7,8,11.

स्वैञ्जेन्य adj. = स्वञ्जन्य्. भूमन् RV. 5,7,8.

स्वैञ्जु adj. *(sich leicht wendend) beweglich, gewandt:* Rosse RV. 4,6, 9. 7,56,16. स्पशः स्वञ्जः मृदशो नृषत्तमः 9,73,7. Pûshan 6,58,4. (अग्निम्) सुप्रतीकं स्वञ्जं कव्यवाहम् 7,10,3.

स्वञ्जन adj. zur Erklärung von स्वञ्जम् Nir. 3,7. von स्वर्क 11,14.

स्वैञ्जम् adj. = स्वञ्जु Naigh. 4,2. Nir. 3,7. (अग्निः) घा भानुना यतते मूर्ध्न्यानुक्षानो घृतपृष्ठः स्वञ्जाः RV. 5,37,1.

स्वञ्ज Med. g. 17 wohl nur fehlerhaft für सञ्ज.

स्वठ्, स्वाठयति = अठ् (गत्यसंस्कृतमसंस्कृतेषु) Kavikalpadruma in ÇKDa.; vgl. Dhâtup. 32,29.

1. स्वतन्त्र n. 1) *Selbstständigkeit, Freiheit, Unabhängigkeit* Spr. (II) 1373. — 2) *das eigene System, die eigene Schule* Suçr. 1,44,10. 123,5. 313,14. — 3) *das eigene Heer* (nach dem Comm.) Suçr. 1,7,17. — 4) bei den Buddhisten Bez. *einer best. Lehre* (von *der Selbstständigkeit*) Wassiljew 319. fg. 324. fgg. 332. — 5) Titel eines best. Tantra Verz. d. Oxf. H. 88,a,5. 95,b,26. °तन्त्र 27. Notices of Skt Mss. 1,255.

2. स्वतन्त्र 1) adj. (f. आ) *selbstständig, frei, unabhängig, keine Schranken kennend* (Gegens. परतन्त्र) AK. 3,1,15. H. 355. 521. Lîl. 8,1,16. 9,7,2. 11. Maitrîup. 2,4. 6,18. Nâs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,162. स्वतन्त्राः स्त्रियः कार्याः Spr. (II) 808 (M.). Jîân. 2,16. P. 1,4,54. MBh. 1, 4719. 5879. 2,1990. 12,11913. 13,35. 1497. fg. Suçr. 1,106,20. Kir. Nîti. 11,27. Kathâs. 19,39. 27,63. 31,68. 45,68. Daçak. 2,20. Nilak. 60. Daçak. 61,10. Bhâg. P. 1,6,7. 3,20,11. 5,18,19. 6,5,19. 8,12,42. Paṅkat. 1,13,15. Sarvadarçanas. 30,17. 61,15. fgg. 82,10. °बुद्धि adj. Vaśiṣ. Bṛh. S. 69,17. °वृत्ति Hall. 4,93. पद् *ein selbstständiges Wort* Kull. zu M. 6,14. स्वर्भानु Comm. zu TS. Pât. 21,6. — 2) m. N. pr. eines Kokravâka Harîv. 1217. 1234. 1254. — Vgl. स्वातन्त्र्य.

स्वतन्त्रता (von 2. स्वतन्त्र) f. *Selbstständigkeit, Freiheit, Unabhängigkeit* Spr. (II) 4454 (M.). MBh. 13,1498. Kathâs. 45,112. Mârk. P. 125,39. मामकसंदर्भे नास्ति कापि स्व° so v. a. *Originalität* Verz. d. B. H. No. 636. — Vgl. भगवत्°.

स्वतन्त्रय् (wie eben), °यति *in seine Gewalt bringen, sich zu Willen machen:* प्रजाः स्वतन्त्रयां चक्रे Ragh. 17,74.

स्वतन्त्रलोचन n. Titel einer Schrift Hall 151.

स्वतन्त्रसार desgl. Verz. d. Oxf. H. 239,a,18. fg.

स्वतन्त्रिक m. pl. *die Schule des* Svatantra Wassiljew 207. 317. fgg. 326. Târan. 204. wohl स्वा° zu lesen.

स्वतन्त्रिन् adj. = 2. स्वतन्त्र MBh. 12,6362. = स्वशास्त्रानुसारिन् Nilak.

स्वैतवस् adj. (°वान् nom., °वद्यम् und °वोभ्यम् TBr. — P. 7,1,93. 3, 3,11. 7,4,46, Vârtt.) *selbststark, seiner Stärke sich bewusst,* αὐτάρκης: die Marut RV. 1,85,7. 166,2. 168,2. 6,66,9. 7,59,1. Çat. Br. 2,3,4, 14. Kâṭh. 36,1. VS. 17,85. 24,16. Kir. Ça. 5,1,16. मनस् RV. 1,139,2. 186,10. Indra 8,22,6. भुवस्तस्य स्वतवोः पायुरग्ने 4,2,6. गिरिर्न य स्वतवो रघ्र इन्द्रः *wuchtig* 20,6. 1,64,7.

स्वतस् (von स्व) adv. 1) statt des adj. स्वस्मात्. स्वतो ऽधात् *vom eigenen Theile* M. 8,408. — 2) *aus sich (aus mir selbst, aus dir selbst* u. s. w.), *von sich aus, von selbst* d. i. *ohne Hinzutreten eines Andern* (Gegensatz परतस्, अन्यतस्): स्वतश्च्युतं वह्निमिवाद्रिमूर्धनः न शक्नोति निर्वापयितुम् Ragh. 3,58. नश्यन्ति स्वतः । वदाम्येतत्प्रविश्यान्तः को ऽपि सत्पयतीव माम् Kathâs. 94,56. त्वया व्यक्तीकृतं स्वतः 45,273. MBh. 3,

10031. Kap. 2,44. 3,58. गृह्णाति प्रज्ञा: Kim. Nitis. 13,34. Spr. (II) 2553, v. l. AK. 1,2,2,11. H. 1086. स्यादाचार्यापि च स्वत: so v. a. *selbst unterrichtend* AK. 2,6,4,14. H. 524. स्वतो मे नास्ति विज्ञानम् Kathâs. 2, 8. प्राणभयं स्वत: so v. a. *naturgemäss* 27,38. बन्धान्स्वतश्च्युतान् von *selbst* 37,49. 43,102. 61,33. 101,29. तद्रतेरपचारं (so lesen wir) वं स्वतो वा परतो ऽपि वा so v. a. *Hüte dich selbst und Andere vor* 113,97. — Daçak. 61,8. Çâk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 148. Nilak. 157. Schol. zu Kap. 1,5. Mudr. ST. 2,190. Bulânip. 135. Bhâg. P. 2,2,6. 6,30. 3,7,3. 5. 29. 4,14,4. 21,29. 5,1,12. 11,11. 18,19. 6,14,21. 7,5,10. 30. 14,7. °प्रमाणा Sarvadarçanas. 61,10. °प्रामाण्य 130,5. 132,2. — 3) *vom Eigenen, vom eigenen Vermögen* M. 8,166. — च स्वत: Pañcat. III, 96 schlechte Lesart für शाश्वत:; vgl. Spr. (II) 292.

स्वतस्त्व (von स्वतम्) n. *das Sichvonselbsterzeugen:* प्रमाणा: Sarvadarçanas. 133,10. fg. Verz. d. Oxf. H. 264,*b*,9.

स्वता (von स्व) f. *das Eigenthum an Etwas:* यको कामी स्वतां पश्यति so v. a. *glaubt, dass Alles ihm gehöre,* — *gelte* Çiç. 35. तद्दिदानीं राज्ञ: स्वतामुपपद्यते *fällt dem Fürsten zu* Çiç. Ch. 136,12. यात्त° Rasch. 7,31 nom. abstr. zu यात्तस्व adj. *dem das Eigenthum genommen worden ist.* — Vgl. स्वत्व.

स्वतुल्य adj. *sich gleich:* इन्दुना स्वतुल्य इव निर्मित: Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 25, Cl. 4.

स्वतृतीय adj. (f. या) *wobei das Eigene das dritte ist* Kâç. Ça. 10,1,12.

स्वत्र m. *ein blinder Mann* Çabdâtmak. bei Wilson.

स्वत्व (von स्व) n. 1) = स्वता. चौरस्य तु परस्वेषु स्वत्वं न्याय्यं न जातु चित् Kathâs. 89,114. Bhâg. P. 4,28,16. 6,16,8. 7,14,11. 12. 14. Spr. (II) 5488. H. 13. — 2) *das Fürstselbstsein, Unabhängigkeit* Kâç. 36,1.

1. स्वद् I) स्वँदति, °ते (dieses in der Bed. आस्वादने Dhâtup. 2,17. प्रीतिलिक्षो: Vop.), सस्वदे. Der Anlaut geht in ष über nach Vop. 8,43. 1) act. *a) schmackhaft machen, gut zubereiten, würzen:* घर्मम् ṚV. 1, 119, 2. 3,14,7. 10,70,10. कव्यं मधुना घृतेन 110,10. 7,2,2. VS. 20,45. (सोमम्) स्वदन्ति गाव: पयोभि: ṚV. 9,62,5. Vâlakh. 2,5. VS. 6,10. — *b)* übertr. *lieblich —, angenehm machen:* वाचम् VS. 11,7; vgl. 9,1. TBr. 1,3,5,1. — *c)* (ungenau für med.) *schmecken, angenehm —, zuträglich sein:* ता अस्मभ्यं स्वदन्तु देवीराप: VS. 4,12. — 2) med. *a) schmecken, schmackhaft sein, munden:* स्वदस्वेन्द्राय पीतये ṚV. 9,74,9. 68,2. 97, 44. VS. 6,7. घोषधय: TBr. 2,1,2,3. देवदत्ताय स्वदते ऽपूप: P. 1,4,33, Schol. उप्तं भुज्यमानं स्वदते Kâraka 3,1. Sarvadarçanas. 179,3. सस्वदे मुखमुरं प्रमदाभ्य: Çiç. 10,23. न वै तेषां स्वदते पथ्यमुक्तम् Spr. (II) 3449. — *b) schmecken* so v. a. *eine angenehme Geschmacksempfindung haben, sich schmecken lassen, kosten von Etwas:* त्वया मर्तास: स्वदन्त आसुतिम् ṚV. 2,1,14. कव्या 3,54,22. *Gefallen finden an* (loc.): यत्र य: स्वदते विप्र: तत्रियो वापि — तत्र तत्र तु तस्यैव सर्वं कृतमदश्यत MBh. 9,1996. — II) (स्वाद्), स्वादते (आस्वादने, प्रीतिलिक्षो: Vop.) Dhâtup. 2,27. act. med. *geniessen:* यत्राणि च तवा शीर्ष स्वादेयम् R. 5,25,46. स्वादेतां तौ च ते फले Harîv. 1135. स्वादन्ति Spr. (II) 4082. an allen drei Stellen fehlerhaft für आ°, wie die v. l. bietet. Statt आवृषाय स्वादि Çat. Br. 1, 7,2,17 ist आवृषायस्वादि (अदि) zu lesen. — 2) partic. स्वार्त्त *schmackhaft gemacht, gewürzt* VS. 6,10. *gekostet* in अग्निस्वात्त. Vgl. स्वात्र.

— caus. 1) स्वादयति, सिस्वदत्, स्वदयत्त. *schmackhaft machen, geniessbar machen, zubereiten, würzen, kochen* ṚV. 10,110,2. घर्मान्कव्यानि 1, 188,10. घर्मान्स्वादयन्न भूम 2,4,7. Vâlakh. 1,5. घर्मम् TBr. 1,6,4,10. घोषधी: 2,1,2,2. TS. 3,3,6,4. 6,4,2,2. *mundgerecht machen* 5,1,10,1. Çat. Br. 1,4,4,16. 7,4,19. 2,6,4,7. 12,7,3,4. partic. स्वादितं *schmackhaft bereitet:* कव्य VS. 29,10. स्वादितं पितृभ्य एव TBr. 1,1,2,1. Kâṭh. 12,5. Çat. Br. 1,4,4,15 (वँ°). पृष्ट्वा स्वादितमित्येव तृप्तानाचामयेत्तत: M. 4, 231. पित्र्ये स्वादितमित्येव वाच्यं गोष्ठे तु मुग्धतम् 254. Dieses मुग्धत hatte uns unter 1. यद् verleitet स्वादित in मु + यदित zu zerlegen. — 2) स्वादयति (आस्वादने, संचरणे, स्वादे क्षेपे Vop.) Dhâtup. 33,130. *schmecken, kosten, geniessen* Suçr. 2,193,4. मातिकम् Hem. Jogaç. 3,36. स्वादयत्त: फलरसम् Bhaṭṭ. 7,40.

— desid. vom caus. सिस्वादयिषति P. 8,3,63. Vop. 19,17.

— आ *essen, verzehren:* दुर्बलं बलवन्तो हि मत्स्या मत्स्यं विशेषत: । आस्वदन्ति (besser आदयन्ति Matsjop. 7) MBh. 3,12753. — caus. आस्वादयति *sich's wohlschmecken lassen, kosten, geniessen* überh.: यत्किंचन: परिपतन्मुखमास्वादयिष्यसि Spr. (II) 25. आस्वादयतयोष्ठौ लिक्तो मधुरं रसं क्षेयम् Vaitân. Bhg. S. 51,31. Suçr. 1,243,9 (wir schreiben तथास्वा°). रुधिरम् Pañcat. 35,3. यत्नं पानीयं च 47,24. दर्भाङ्कुरान् 214,29. रसम् Vaitânas. (Allah.) No. 141. मामिषं लोकम् ein Fisch Spr. (II) 2917. आकाशामास्वादयत: कुतो हि कवलग्रह: 713. संयोगम् Manu. 85. med. आस्वादयीत MBh. 14,1281. आस्वाद्य absol.: फलानि R. 1,9,36 (37 Gorr.). 5,25,51. 7,93,7. कषायरसम् Spr. (II) 6314. वेदना: 1074. सरस्वतीम् Bhâg. P. 3,16,12. pass.: आस्वाद्यते फलम् Spr. (II) 3770. काव्यम् 1712. रस: Sâh. D. 24. partic. आस्वादित MBh. 4,239. R. 1,9,36 (38 Gorr.). Raghu. 3,54. Spr. (II) 271. 1073 (Conj. für आस्वादित). 2062. 3836. चारुविस्रामिनी 7316. — Vgl. आस्वाद् fgg. und निरास्वाद् fg.

— समा caus. *kosten, geniessen:* मूलफलं समास्वाद्य R. 5,7,31. Kâm. Nitis. 7,27.

— प्रति caus. dass.: प्रतिघाद्य Comm. zu Kâm. Nitis. 7,27.

— सम् vgl. संमुद्.

2. स्वद्, स्वदति *zurecht bringen so v. a. zähmen* (vgl. 1. सूद्): पुवं मृगं न सोमपासं स्वर्दयो वा ṚV. 8,35,6.

— caus. med. *zahm —, zutraulich machen, an sich locken:* शिप्रिं न यत्ते: स्वदयन्त गूर्तिभि: ṚV. 9,105,1.

स्वदन (von 1. स्वद्) n. *das Kosten, Geniessen* H. 423. Halâs. 2,170. fehlerhaft für स्वेदन Verz. d. Oxf. H. 320,*a*,3.

स्वदयितृ (vom caus. von 1. स्वद्) nom. ag. *schmackhaft machend* TS. 6,4,3,2.

स्वदावत् adj. *etwa Schmecker:* यं ते स्वदावस्स्वर्दन्ति गूर्तय: Vâlakh. 2, 5. ungeschickte Nachbildung von स्वधावत् 1,5.

स्वदृश् adj. *die eigene Person —, die Seele schauend* Bhâg. P. 1,13, 45. 3,14,46. 24,44. 32,36. 4,29,26. 6,16,9. 10,63,39. 86,21. च° 4,22.

स्वदृष्ट adj. *selbstgesehen* Harîv. 2815. die Bed. passt nicht; die neuere Ausg. liest संदृष्ट.

स्वदेश m. 1) *seine Stelle* Comm. zu TS. Prât. 1,59. — 2) *der eigene Wohnort, Heimath* (Gegens. परदेश, विदेश) M. 8,167. Spr. (II) 3239. 4788. 7118. 7277. Kathâs. 20,166. 34,201. Râja-Tar. 4,411. 605. 620.

5, 457. Hit. ed. Jouns. 1757. 2430. pl. so v. a. *Bewohner des eigenen Landes, die eigenen Unterthanen* Bhāg. P. 4,14,21.

स्वदोषज्ञ adj. (f. आ) *selbstverschuldet:* पापद्: Spr. (II) 904.

स्वधय् (von 1. स्वधा), °यति *Jmd beruhigen, besänftigen* (nach Comm.) Bhāg. P. ed. Bomb. 5,8,22. सुधय् ed. Burn.

स्वधर्म m. 1) *das eigene gute Recht:* स्वधर्मे लभ् *Gerechtigkeit erfahren* MBh. 5,7057. — 2) *die eigene Pflicht, — Obliegenheit* Maitrāyaṇ. 4, 3. M. 2, 8. 150. 3, 3. 5, 2. 7,15. 8,41. 391. 9,167. 10, 98. 119. Jāgñ. 1, 360. MBh. 3, 2470. Spr. (II) 4065. 4859. 5955. 7279. Kathās. 5, 2. 18, 252. Daçak. 181,9.

स्वैधर्मन् adj. *seinem Brauch getreu bleibend:* स्वधर्मन्देववीतये भेष्ठं नो धेहि वार्यम् RV. 3,31,2. nach Sāy. loc.

1. स्वधा (ohne Avagraha) f. 1) *Gewohnheit, Sitte, Regel,* Loc: घनु स्वधामृस्वो ज्ञमुरेताम् RV. 4,33,6. उपो घनु स्वधामव 4,32,6. कया पाति स्वधया 13,5. — 2) *gewohnter Ort, Heimath,* Loc: परि देवीरनु स्वधा इन्द्रेण याहि सरथम् RV. 3,103,5. परिष्वेव स्वधा गयः *allenthalben hast du Heimath und Haus* 6,2,5. आगाडुप स्वधा (d. i. स्वधाम् आ) गहि *komme aus der Ferne heim* 3,32,6. स्वधा घवस्तात्प्रयीतः परस्तात् *hier die Heimath, dorthin* (zu den Göttern) *die Gabe* 10,129,5. du. *die beiden Heimstätten, Himmel und Erde* Naigh. 3,30. दधाति रत्नं स्वधयोरुपस्थम् RV. 9,86,10. — 3) *(gewohnter Zustand) Behagen, Wohlbefinden, Vergnügen:* का स्वधामणवः शस्यमानः *welches Vergnügen empfandest du?* RV. 7,8,3. कार् स्या वो मरुतः स्वधासीत् 1,165,6. स्वधा, तृप्ति 9,113,10. स्वधा पितृषु सा वर्षि AV. 18,2,32. घर्व्यावधे स्वधावे VS. 10,21. 29,2. स्वधा पूर्वथा भवति Ind. St. 4,374. Vorzugsweise werden gebraucht a) स्वधामनु, घनु स्वधाम् *wie gewohnt, nach Behagen, nach Wunsch, ungestört* RV. 1,6,4. घतरन्नापः 33,11. स्वधामनु हि नो बभूथ *du kommst uns erwünscht, — eben recht* 165,5. यस्ते घनु स्वधामसत् *der dir recht ist* 3,51,11. 7,56,12. 8,20,7. ववक्षिथ 77,5. 1,88,6. 5,34, 1, wo घनु स्वधाम् घमिता zu verstehen ist. — *b)* स्वधा घनु dass. RV. 8,32,19. उच्चरसि 10,37,5. — *c)* स्वधया *α) in gewohnter Art; β) mit Vergnügen, behaglich, gern; γ) gern* so v. a. *aus eigenem Antrieb, freiwillig, von sich aus.* मदन्ति RV. 1,154,4. 108,12. 3,4,7. 5,32,4. 7,47, 3. 10,14,7. ये मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते 15,14. 124,3. इन्द्र पिब स्वधया चित्सुतस्याग्नेर्वा पाहि जिह्वया *selbst, unmittelbar* 3,35,10. यत्स्वधया सुपर्णो हव्यं भरत् 4,26,4. विशो घनु स्वधया चेतवस्पधः 43,6. 58,4. ज्ञक्षिरे 1,64,4. 164,38. 3,17,5. रथं स्वधया युज्यमानम् *von selbst* 7,78,4. घनक्तया स्वधया वर्तमानम् 10,27,19. 88,1. घानंदवातं स्वधया तदेकम् 129,2. 15,3. AV. 8,96,3. भूम्यां मनुष्या ओषन्ति स्वधयान्ने मर्त्याः ἄσθιον ζώουσι 12,1,22. पासि शोभम् 13,2,3. चरन्ति *frei umherstreichen* VS. 2, 30. 8,61. 11,69. AV. 6,96,3. — *d)* स्वधाभिस् dass.: वत्सो मातृर्वनयत स्वधाभिः *von sich aus* RV. 1,95,4. घवरामती चरति स्व° 113,13. 164, 20. पिबतः सोम्यं मधु 8,10,4. घधि तिष्ठथो रथम् 6. तन्वः पिपिग्रे 5,60, 4. 7,35,3. ये वो भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः *ohne Anlass, muthwillig* 104,9. 1,51,5. 180,6. वर्पिष्ठे रत्नमकत 3,26,8. 9,92,4. मतीर्वनयत 95,1. यज्ञं तनुष्व 10,15,13. 16,3. 17,3. VS. 1,28. AV. 18,4,36. 19,49,2. TBr. 3, 1,1,6. — Vgl. घनुघधम्, सु°.

2. स्वधा (vgl. 2. सुधा) f. 1) *süsser Trank, Labetrank,* namentlich *der von den Manen genossene,* Āpiçali bei Uéèvar. zu Unādis. 4,171. Im Ritual *eine gewöhnliche Schmalzspende,* oft nur *ein Rest des* Havis TBr. Comm. 2,665,19. = उदक Naigh. 1,12. = घन्न Nir. 7,35. स्वधां पितृभ्याय RV. 2,35,7. स्वधया पिन्वमानः AV. 4,34,8. स्वधा धयत् RV. 1,144,2. घादित्स्वधामभिरिषिरा पर्यपश्यन् 168,9. 10,157,5. घनु स्वधा पमुष्यते 1,176,2. AV. 2,29,7. घनु स्वधा चिकिता मोमो घग्निः 5,33,1. 97,2. 8,10,11. 23. 18,2,20. सं सोमेन मदस्व सं स्वधाभिः 3,8. 4,39. स्वधाभिर्वा च नो गृहे 19,31,3. स्वधा पितृभ्यो घवरा कृणोमि 12,2,33. स्वाकृन्ये स्वधयान्ये मदन्ति Götter und Väter RV. 10,14,8. नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यः VS. 2,7. 32. स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन् 34. 19,36. 45. 57. देवा घपश्यञ्जमं घृतस्य पूर्णां स्वधाम् TBr. 1,4,७,1. Ait. Br. 2,23. Çat. Br. 2,4,2,3. 10,5,2,20. 11,5,७,4. 12,7,1,9. स्वधा वै पितृणामवम् 13,8, 1,1. Prāçnop. 2,8. व्यपेतं दृतः स्वधा M. 9,142. Jāgñ. 1,102. Bhāg. 9. 16. स्वधाभिः पितृसेवते MBh. 3,1127. R. 7,23,23. न (ज्ञानन्ति) स्वधां पितरः Spr. (II) 2948. 5148. कथमस्य गृह्णन्ति पितरः स्वधाम् 6416. °संग्रह Rāgān. 1,66. घकृत्वा च पितृस्वधाम् MBh. 12,264. — 2) *der Ausdruck sinkt zum blossen Ausruf herunter, der an die Stelle der Gabe tritt oder diese begleitet in Formeln wie* आ स्वधा घस्तु स्वधा TBr. 1,6,७,3. 3,10,1. नमस्कारो देवानां स्वधा पितृभ्यः (vgl. P. 2,3,16. Vop. 5,16) TS. 5,3,3,3. ओ स्वधा Çat. Br. 2,6,4,14. Kāty. Çr. 5,9,11. Āçv. Gṛhy. 4,7,30. घस्तु स्वधा 31. Kauç. 45. 84. 88. Gobh. 4,2,24. AV. 3,29,1. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. gaṇa चादि zu 4,57. AK. 3,5,3. H. 1538. °निनयन M. 2,172. स्वधेषामस्तु 3,223. 252. स्वधोच्चारण Mārk. P. 95,5. Bhāg. P. 2,7,38. in Verbindung mit कृ gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. Çat. Br. 11,5,७,2. — 3) personificirt als eine Tochter Daksha's und Gattin der oder bestimmter Manen (auch des Āṅgiras) Harīv. 997. 6498. VP. 54. Mārk. P. 50, 23. 52,9. 31. Bhāg. P. 4,1,62. fg. 5,6,19. Pāṇkar. 2,5,46. Verz. d. Oxf. H. 23,b,1. 24,b,21. Zusammenhang mit 1. स्वद् wäre möglich.

3. स्वधा f. = स्वाधिति. (धिषणा) मनुना कृता स्वधया वितष्टा *mit dem Messer geschnitzt* TS. 1,1,2,1.

स्वधाकार adj. *den Manen die Speise darbringend* oder — Svadhā *zurufend* M. 9,127.

स्वधाकार m. *der Ruf* Svadhā *für die Manen* AV. 12,4,32. 15,14. 7. TS. 5,3,2,5. Çat. Br. 14,8,७,1. Kauç. 1. M. 3,232. Mārk. P. 29,9. Lalit. ed. Calc. 313,6.

स्वधाधिप m. = स्वधापति. Bolw. Agni's Harīv. 13934.

स्वधापति m. *Herr —, Eigenthümer des Labetrankes* RV. 6,44,1.

स्वधाप्राण adj. Svadhā *athmend* AV. 10,10,6.

स्वधाप्रिय m. *schwarzer Sesam* Çabdar. im ÇKDr.

स्वधाभुज् adj. Svadhā *geniessend,* m. pl. *die Manen* Taitt. 1,1,6. Buchipraçoga in Verz. d. Oxf. H. 192,a,6. Rāgān. 8,30. Mārk. P. 96,29. 97,13. *ein Gott* H. 88.

स्वधाभोजिन् m. pl. *die Manen* R. 7,23,23.

स्वधामन् m. N. pr. eines Sohnes des Satjasahas und der Sūnṛtā Bhāg. P. 8,13,30. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern unter dem 3ten Manu VP. 3,1,14. Mārk. P. 73,2.

स्वधामय adj. *voller* Svadhā: स्तन Mārk. P. 29,10.

स्वधामृतमय adj. *aus Svadhâ und Nektar bestehend:* आद्य MBu. 1,1966.

स्वधार्विन् adj. *dem die Svadhâ gehört:* Manen VS. 19,36. स्वधाविन् TBa.

स्वधावन् und f. °वरी s. u. 1. स्वधावत्.

1. स्वधावत् (von 1. स्वधा) adj. (voc. °वन् und °वस्) *an der Gewohnheit —, Sitte haltend, regelmässig, beständig, treu* (am häufigsten von Agni und Indra): कविरग्न्यस्यां भवति स्वधावान् RV. 1,95,1. 4,5, 2. 12,3. 5,3,1. 5. घृतब्धस्य स्वधावतो हूतस्य 8,44,20. अव शिरो भरद्वाजस्य स्वधावान् 2,20,6. 7,20,1. 10,42,9. Ṛbhu 7,37,2. Varuṇa 86, 4. 5. 88,5. AV. 5,11,4. Viçvakarman RV. 10,81,5. AV. 4,1,7. गोप 5,9,5. धनुं स्वधावो (vom Stamme °वन्) नितयो नमन्त RV. 5,32,10. Rudra 7,46,1. मृळा उतासि पस्त्य ईनु स्वधावरी मरुद्भ्यो etwa so v. a. *die Heimstätten enthaltend, — bildend* 31,7.

2. स्वधावत् (von 2. स्वधा) 1) adj. a) *Labung enthaltend* AV. 7,41,2 (10,2,10 schlechte v. l.). कुम्भ 10,3,68. fg. Kauç. 88. — b) *das Wort Svadhâ enthaltend* Çiñkh. Çr. 1,4,3. — 2) m. pl. Bez. *einer Klasse von Manen* MBu. 2,344. सुधावत् ed. Bomb.

स्वधाविन् adj. 1) *Labung enthaltend* TS. 4,4,11,3. — 2) *dem die Svadhâ gehört* TBa. 2,6,2,2. स्वधायिन् VS.

स्वधाशन m. pl. *die Manen* (Svadhâ *geniessend*) H. 88, Schol.

स्वधिचरण adj. *worauf es sich gut wandelt* TS. 2,6,2,6. 7,5,20,1.

स्वैधित adj. = 1. सुधित *fest, gesund:* प्रियाण्यङ्गानि स्वधिता पर्वाणि (मुकृता पुरुणि Vaitân. 24) TBa. 3,7,12,1.

1. स्वधिति m. f. *Hackmesser* (des Schlächters), *Beil* (des Zimmermanns), *Messer* überh. AK. 2,8,2,60. H. 786. Hâlây. 2,319. RV. 1,162, 9. वङ्क्रोरन्यस्य स्वधितिः समेति 18. 20. इषोत्रिणेव स्वधितिं म शिशीतम् 2,39,7. 3,2,10. 8,6. 11. 5,7,8. पूषा 7,3,9. 8,91,19. 10,92,13. वज्रेण वृत्रं स्वधितिर्वनेव 89,7. लोहितेन स्वधितिना AV. 5,141,2. 9,4, 6. त्वष्टेव रूपं सुकृतं स्वधित्या 12,3,33. 19,2,35. VS. 2,15. TS. 1,3,2,2. Âçv. Gṛhj. 1,17,9. Kauç. 44. सौनिका इव स्वधितिनावदाय Bhâg. P. 3, 26,31. 10,55,5. = वप्र Naigh. 2,20; vgl. TS. 6,3,2,2. Daneben scheint eine gleichbedeutende Form सुधित m. und vielleicht सुधिता f. (vgl. सुधा, सुधित neben स्वधा, स्वधित) bestanden zu haben nach RV. 1, 166,6. 8,33,2, womit das unter 1. सुधित Gesagte seine Berichtigung findet. — Vgl. परश्वध.

2. स्वैधिति f. = 2. सुधा vermuthen wir in सुचिः प्र यस्मा अत्रिवत्प्र स्वधितीव रीयते *welchem der klare Trank (Schmalz) rinnt wie bei Atri's Opfern* RV. 5,7,8 (RV. Prât. 4,13).

3. स्वैधिति f. *ein best. grosser Baum mit hartem Holze:* श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानाम् RV. 9,96,6 (Sây. *verletzend*, jedoch zu TS. 3,4,11,1 दृढस्वरूपो भास्वान्वृक्षः). न्यस्मै देवी स्वधितिर्नृकृते wie wenn wir sagten *selbst die königliche Eiche beugt sich vor ihm* 5,32,10 (स्वेन धृता द्यौः Sây.).

स्वधितिकैतिक m. *ein mit einer Axt bewaffneter Krieger* Çârdûlak. bei Wilson.

स्वैधितीवत् adj. *aus dem Holze der* Svadhiti *bestehend:* der Wagen der Marut रुक्मो न चित्रः स्वधितीवान्पव्या रथस्य जङ्घनत भूम *blank wie Gold, von Ebenholz ist der Wagen, mit dessen Felgen u. s. w.* RV. 1,88,2.

स्वधिष्ठान adj. *wohl stehend* von einem Wagen so v. a. *gute Räder habend* (Nîlak.) MBh. 5,7101.

स्वधिष्ठित adj. 1) *gern bewohnend, — inne habend:* यानि पद्मानि Bhâg. P. 3,1,17. — 2) *gut geleitet:* Elephant Kâm. Nîtis. 13,11; vgl. साधधिष्ठित 16,10.

स्वधीत n. *gut Erlerntes, gute Studien:* न मन्ये ब्रह्मचर्ये वा स्वधीते वा फलोदयः R. 2,32,16. 7,6,40. Spr. (II) 7281. Bhâg. P. 4,30,29. 7,5,22.

स्वधीति adj. *gut studirend* MBh. 12,2744.

स्वधुर् 1) adj. *selbstständig* (Comm.) Pâraçav. Bh. 7,9,12. fg. — 2) n. N. eines Sâman ebend.

स्वैधृति f. *eigenes Stillstehen* VS. 8,31. 22,19. Ait. Br. 5,22. Âçv. Çr. 8,13,1.

स्वैधेनव adj. *was von eigenen Kühen kommt* RV. 8,32,20.

स्वध्यर्त adj. *wohl zu schauen* TS. 7,5,20,1. Çat. Br. 3,2,4,20.

स्वध्यवसान adj. *wo man sich gern einen Platz wählt* TS. 2,6,9,6.

1. स्वधर् m. *eine gute heilige Handlung* Bhâg. P. 4,7,41. Bildung von Ableitungen ganz स्वागतादि zu P. 7,3,7. Vop. 7,8. — Vgl. स्वाधरिक.

2. स्वधर् 1) adj. *die heilige Handlung wohl verrichtend, derselben entsprechend:* Agni RV. 1,44,3. 127,1. 2,2,3 u. s. w. क्रतु 8,19,24. 92, 12. fg. मन 1,45,1. 8,3,23. यज्ञ 1,142,5. 8,40,13. सोम Vâlakh. 2,5. RV. 9,3,5. 86,7. Wagen der Götter 4,46,4. — 2) n. *eine gute heilige Handlung* RV. 3,6,6. 29,12. 5,17,1. देवान्यजति स्वधरम् 28,5.

स्वधर्यु adj. *einen guten* Adhvarju *habend* TS. 7,1,8,1.

1. स्वन्, स्वनति (शब्दे) Dhâtup. 17,79. स्वनते, सस्वान, सस्वनुस् und स्वेनुस्, सस्वनिय und स्वेनिव P. 6,4,125. Vop. 8,127. घस्वनीत्, स्वानीत्, स्वनि. *schallen* überh.; *tosen, dröhnen*, auch vom *Ruf verschiedener Thiere:* वाणी पद्या वृष्टेव स्वानीत् *wie Wasser in seinem Bett, wie ein Wagenross* RV. 2,4,6. स्वनते शङ्कुः MBh. 7,4170. द्यवः स्वनन्ति 8828. सस्वनुर्देववाश्यानि R. Gorr. 1,50,20. Mâlav. P. 66,26 (°वाश्यानि स° zu schreiben). 116,59. 128,14 (°वाश्यानि स° zu schreiben). शङ्खा भेर्यो मृदङ्गाः (सैन्ये mit der neueren Ausg. zu lesen) Harîv. 15903. Bhatt. 14, 3. वेणवः स्वनन्त्यनिलोद्धताः AK. 2,4,8,27. H. 1153. मरुतो स्वनति गभीरम् R. Gorr. 2,106,7. ऊर्मयः 5,74,36. स्वनद्भोधस् Gnat. 4. 5. Verwundete MBh. 6,3955. Vögel R. 2,65,5. Stier Kathâs. 11,4 (med.). स्वेनुर्वानराः Bhatt. 40,70. *summen* von der Biene Çiç. 22. — partic. स्वनित (स्वान्त s. bes.) P. 7,2,18, Schol. 1) adj. *schallend* u. s. w. AK. 3,2,44. H. an. 3,288. — 2) n. *das Rauschen:* वस्त्रपर्णानाम् AK. 1,1,6, 2. *Donner* H. 1406.

— caus. स्वनयति (auch स्वा° अवतंसने) Dhâtup. 19,62. = simpl.: सुस्य प्रुष्मासः स्वनयन् RV. 10,3,6. घर्तस्वरेण स्वनयन् Bhâg. P. 5,26,16.

— अधि *darüber hin brausen:* अध्यं गोरवधि घाणे *über die Wolle braust es im Strom hin* RV. 9,66,9.

— अनु *nach —, zurufen:* यदि क्रोशमनु घाणे RV. 8,46,11.

— अव 1) *herunter schreien:* अव यच्चेनो अस्वनीद्ध द्यौः RV. 4,27, 3. — 2) अवघणति, अवाघणत्, अवघाण *mit Geräusch versehren* P. 8, 3,63. fg. 69. *beim Gegessenwerden ein Geräusch bewirken:* मांसम् Vop. 8,

45. 127. — Vgl. अवघाण, अवस्वन्य.

— आ *erschallen:* मृदङ्गा घोरमास्वेनुः Bhatt. 14,4. — partic. आस्वनित und आस्वान्त (नस् P., Schol.) P. 7,2,28. Vop. 26,113.

— नि, निस्वनत्यवम् = स्वन् mit अव 2) Vop. 8,127. scheinbar auch Mân. P. 66,26. 128,14, wo aber °वाभानि सस्वनुः zu lesen ist. — Vgl. 2. निस्वन, निस्वनित (auch Kâtjâp. 24), निस्वान; überall richtiger निः°.

— निस् s. निःस्वन.

— परि *klingen*, intens.: गोधा परि॑ सनिष्वणत् ṚV. 8,58,2.

— प्र caus. partic. *tosend:* सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयः ṚV. 1,44, 12. — Vgl. प्रस्वन, प्रस्वान.

— प्रति *zurückschallen:* शब्दः प्रतिसस्वान MBh. 7,3888. — caus. *zurückschallen machen:* स्वगर्जितेन ककुभः प्रतिस्वनयता Bhâg. P. 3,13,24.

— वि 1) *schallen:* विस्वनति मृदङ्गः P. 8,3,69, Schol. वीणा Vop. 8, 127. *heulen*, vom Schakal: व्यस्वनत् Çiç. 18,77. — 2) विष्वणति, व्यष्वणत्, विष्वाण = स्वन् mit अव 2) P. 8,3,63. fg. 69. Vop. 8,25. 147. क्रोष्टा डिम्बं व्यष्वणात् *verscharrte mit Geräusch* Çiç. 18,77. — Vgl. विष्वण fg. und विष्वाण.

2. स्वन् (= 1. स्वन्) adj. *schallend* u. s. w. in तुविष्वन्.

स्वर्न (von 1. स्वन्) m. P. 3,3,63 (parox.). 1) *Schall, das Brausen* Naish. 1,11. der Winde ṚV. 1,38,10. 143,5. 5,60,2. 9,70,6. des Feuers 1,94, 11. 10,3,5. Regens 9,41,3. Wassers 50,1. 10,75,3. *rauschende Wasser* (Comm.) VS. 30,16. TBr. 3,4,8,12. des Donnerkeils 8,27,4. des Ahi 1,52,10. Indra's 10,27,5. In der späteren Sprache von *Lauten* aller Art, unangenehmen und lieblichen, vom *Rollen* und *Krachen* des Donners, vom *Gerassel* des Wagens, von den *Tönen* musikalischer Instrumente, vom *Gemurmel* einer Menschenmenge, vom *Gebrüll* der Thiere und vom *Gesang* und *Gezwitscher* der Vögel AK. 1,1,8,1. H. 1399. Hall. 5,77. am Ende eines adj. comp. f. आ. ननाद विपुलं स्वनम् MBh. 1,6037. कूर्षन्न 3,3013. 6,2774. R. 1,5,19. कोकिलस्य 64,9. 2,39,40. 56,2. 97,4. 8. 113,24 (124,24 Gorr.). बलवत् R. Gorr. 1,27, 5. ज्ञन° 2,73,21. 5,83,5. 7,8,10. Sâç. 1,22,17. 107,9. Râgat. 1,39. 12, 29. 19,13. Vish. 60,13. Varâh. Bṛh. S. 12,6. 24,1. 19. 33,4. 5. 23. 46, 23. 47,10. 56,6. 69,24. 74,16. 88,21. 31. 47. Kathâs. 36,391. Mâlav. P. 8,155. Bhâg. P. 2,23,39. 6,8,32. महास्वन m. R. 2,40,29. 3,1,25. adj. MBh. 3,2856. 9,2662. R. 2,40,19. 6,80,32. स° adj. MBh. 1,1183. Varâh. Bṛh. S. 12, 8. — 2) N. eines best. Agni MBh. 3, 14144. — Vgl. दु°, 1. नि°, मेरोस्वनमहास्वना, बक्कु°, मघा°, मेघ°, रथ°, वात°, स°, सु°, स्वान.

स्वनचक्र m. *quidam coeundi modus* Ratim. im ÇKDa.

स्वनड्वह् adj. *gute Stiere habend;* Declination Vop. vor 3,165.

स्वनद्रथ adj. *dessen Wagen rasselt* ṚV. 8,1,22.

स्वनन्दा f. ein N. der Durgâ H. g. 56.

स्वनय m. N. pr. eines Mannes, eines Sohnes des Bhâvajavja, ṚV. 1,126,2. Sây. zu 125,1. Çâṅkh. Ça. 16,11,5.

स्वनवत् (von स्वन) adj. 1) *schallend* Maitrâjan. 6,5. *laut schallend* u. s. w.: शङ्ख MBh. 4,1443. 8,1734. भूषणानि R. 5,19,11. मेघोघ 4,17, 21. धनुस् Râgat. 9,12. ब्रह्मघोष° (पुरी) R. 1,5,19 (16 Gorr.). द्रोन° (घोषोघ्या) R. Gorr. 2,57,4. स्वनवत् adv. *laut:* lachen MBh. 2,1576. 4,869. 1439. 14,2170. — 2) *hochgerühmt* (= प्रख्यात Nîlak.): लोका: MBh. 1,3670.

स्वनम् = स्वन 1) in तुविष्वणम्, वात°.

स्वनामन् adj. *durch sich selbst einen Namen habend*, — *berühmt* Spr. (II) 7282.

स्वनि m. 1) = स्वन 1) H. 1400. Vgl. तुविष्वणि, मरिष्वणि. — 2) *Feuer* (?) H. g. 169.

स्वनिक s. पाणि°.

स्वनिताकृप m. *eine best. Pflanze*, = तण्डुलीय Râgân. 5,72.

स्वनिष्ठ adj. *an der eigenen Person sich befindend;* davon nom. abstr. °त्व n. Schol. zu Kap. 1,47.

स्वनीक adj. *schön von Ansehen:* Agni ṚV. 2,1,8. 4,6,6. 7,1,23. मुसंदृक् स्वनीक प्रतीकम् 3,6.

स्वनुगुप्त adj. *wohl versteckt:* देशा: MBh. 1,4503.

स्वनुरक्त adj. *treu zugethan:* सुकृज्ञने R. 2,40,4.

स्वनुष्ठित adj. *gut ausgeführt*, — *erfüllt:* धर्म Spr. (II) 6583. R. 5,66, 10. Bhâg. P. 1,2,8.

स्वनोत्माक् (mit der v. l. शनोत्माक्) m. = गणक Çârdar. im ÇKDa.

स्वत्त adj. 1) *ein gutes Ende habend, gut auslaufend:* सर्व स्वत्तं हि भावि तत् Kathâs. 42,21. 100,36. Râgat. 11,62. यशान् *Glück bringend* (oder adv. zu *guter Letzt*) MBh. 12,2738. अ° *Unglück bringend:* निशात Spr. (II) 1808. — 2) *glücklich:* को नु स्वत्ततरो मया (d. i. मत:) MBh. 9, 3488. fgg. 3601. fgg. — स्वत्त (Calc. Ausg. शास्त) Râga-Tar. 3,127 fehlerhaft für स्वात्त (so auch Troyer in den Corrigg. zur Calc. Ausg.).

स्वद्म n. *gute Speise* Bhâg. P. 1,12,14. 4,18,27. 10,82,16.

1. स्वप्, स्वँपिति Naish. 3,23. Dhâtup. 24,60. स्वँपत्ति und स्वर्पति P. 6,1,188. स्वँपस् und स्वर्पत्: स्वप्यात्, स्वँतु AV. 4,3,6. स्वप्त Taitt. Âr. 1,27,2. सुषुप्वस् (vgl. P. 6,1,15. 17. Vop. 8,43. 134). सुषुपिषे ved. P. 3,3,61, Schol. स्वाप्सोम् Âçv. Gṛhj. 1,22,2. erhält keinen Bindevocal Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. 1) *schlafen, einschlafen* ṚV. 5,44,13. 10,164,3. AV. 6,113,2. स्वप्नं सुप्त्वा यदि पश्यसि 10,3,6. VS. 34,55. TS. 6,1,4,6. Çat. Br. 2,2,2,21. 3,2,2,27. 4,1,2,25. सुखम् 11, 5,2,1. मा दिवा सुषुप्या: Pân. Gaṇ. 2,3. — स्वपिति P. 7,2,76. Vop. 9, 27. M. 1,52. 54. R. 2,53,6. Spr. (II) 1095. Hit. 27,12. Bhâg. P. 6,2,5. पश्चात्तान् *bei den* Pâṇ. P. 1,4,81, Vârtt. 2, Schol. स्वापमि R. 2,89, 4. स्वपन्ति MBh. 1,5926. R. 5,11,9. Spr. (II) 3388. स्वपिहि P. 6,4,101, Schol. वर्षशतम् *so v. a. einen ewigen Schlaf* Mṛicch. 50,6. सुखम् Kathâs. 18,115. Daçak. 92,4. Pañkat. 123,18. स्वपन्तु MBh. 1,5997. अस्वापीत् P. 7,3,98. अस्वपत् 99. R. 2,87,13. अस्वपन् MBh. 2,2027. तस्मिन्स्वपति M. 1,52. ज्ञायत: स्वपतश्च ते R. 2,31,27. स्वपतां (gen. pl.) निद्रया स्वया Spr. (II) 908. Varâh. Bṛh. S. 89,1. नैक: स्वप्याच्छून्यगेहे M. 4,57. तप्ते (sc. शयने) व्योमपे *sich niederlegen* 11,103. स्वपेत् 4,99. MBh. 3,12984. Varâh. Bṛh. S. 53,124. स्वपेयुस् R. 2,46,22. सुष्वाप (offers fehlerhaft सुस्वाप) P. 6,1,17. Vop. 8,124. MBh. 3, 2338. एकेन पार्श्वेन 13, 2749. R. Gorr. 1,47,15. Râgat. 12,50. Râga-Tar. 6,262. सुषुपिम P. 6, 1,17, Schol. सुषुप्वस् R. 5,13,56. 58. (सुसु° gedr.). सुप्तस्वाप्तम् Schol. zu Kap. 1,149. मा स्वाप्सी: MBh. 5,6505. स्वप्स्यति u. s. w. R. Gorr. 2,58,5. 3,35,62. Bhâg. P. 7,13,26. med.: स्वपते MBh. 3, 15993. Vet. d. Oxf. H. 46,a,38. 41. स्वपसे 6,1. स्वपे MBh. 14,220. R. 6,88,19. स्वपेत MBh.

13,5002. स्वप्स्ये R. 5,75,7. स्वप्स्यामके R. Schl. 1,47,19. pass. impers.: सुप्यते 2,28,11. Ragh. 8,63. सुप्यताम् Spr. (II) 7110. अस्वापि Rāja-Tar. 3,286. स्वप्तुम् MBu. 13,2744 (सप्तुम् ed. Calc.). R. 2,88,3. Spr. (II) 1622. स्वप्तुकाम MBu. 3,15815. सुप्त्वा P. 1,2,8. M. 5,145. — 2) *den ewigen Schlaf schlafen, todt daliegen:* हताः — उर्व्यां सुषुपुः MBu. 4,1674. Bhatt. 9,58. 14,101. बान्धवा मे स्वपन्ति च 18,11. स्वप्स्यते बहुाणावलपीडितः MBu. 5,7362. स्वप्स्ये R. Gorr. 2,91,19. — 3) partic. perf. act. सुषुप्वंस् *schlafend* ṚV. 1,117,5. 161,13. TS. 5,1,4,7. Çat. Br. 1,6,3,11. 10,5,2,12. प्रजाः सुषुप्वीः प्रबुध्यते Kāṭh. 19,12. — 4) partic. perf. pass. सुप्त a) *eingeschlafen, schlafend* H. 443. VS. 33,1. AV. 7,13,2. 108,2. 11,4,25. TS. 5,4,10,3. Çat. Br. 10,5,2,15. 14,7,1,12 (auch सु°). Kauç. 10. Kāṭh. Up. 3,11,1. M. 3,24. 7,92. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,125 (Weber, Rāmat. Up. 338). मत्तो° MBu. 1,5902. 5924. 5987. 3,2240. 2351. 2360. 2537. 2592. सुचिरं सुप्तो ऽस्मि 16812. 12,4279. R. 2,39,33. 56,3. 5,75,7. Kām. Nītis. 5,48. Mṛicch. 48,13. 20. fg. Mṛicch. 39. °मौन इव द्रुमः Ragh. 1,78. 2,24. Ṛt. 1,3. Çiç. 108. 134. Vikr. 135. Spr. (II) 675, v. l. 1249. 2688. 4664. 5302. 5933. 7110. Weber, Kṛishṇaj. 274. 277. 282. fg. Kathās. 18,116. 168. 192. 106,56. Rāja-Tar. 6,262. Pañcat. 44,21. सुप्तो ऽहं किल विललाप P. 3,2,115, Vārtt. 1, Schol. Bhatt. 3,24. सुप्तस्यैव हि रामस्य निद्रा नैवोपतिष्ठति *der sich zum Schlafen niedergelegt hat* R. 5,34,10. — b) *eingeschlafen* so v. a. *taub, empfindungslos:* °मांस Suçr. 1,36,7. °त्वच् 119,19. — c) *schlafend* von Blumen so v. a. *einen geschlossenen Kelch habend* Mṛicch. 90. Kumārās. 2,3. Ragh. 8,54. — d) *schlafend* so v. a. *ruhend, unthätig, latent:* शक्ति Buic. P. 1,10,21. 4,24,62. 8,24,61. सुप्तं कर्म प्रबोधयन् 3,6,3. — e) n. *Schlaf* H. 313. Spr. (II) 3264. श्लोकमुप्तं चक्रे Kathās. 77,57. व्याप्तमुप्तं चक्रे 123,131. °स्थित 52,204. — Vgl. दुःसुप्त, सुख° (auch MBu. 3,16815), सुप्तव्रज (R. 4,8,37), सुप्तप्रलपित (pl. Kām. Nītis. 14,65), सुप्ति, सुप्तोत्थित (auch Ragh. 2,24) und सुषुप्त.

— caus. स्वापयति, सिषप्त्, सिस्वप् ṚV. 6,20,13. 26,6. सस्वपयिषत् P. 6,1,18. Vop. 18,5. 1) *einschläfern* ṚV. 7,55,8. AV. 4,5,7. Pāṇ. Gṛ. Bh. 12,5,19. — 2) *zum ewigen Schlaf bringen, tödten* ṚV. 1,121,11. 4,30,21. 9,97,54. सप्तषष्टिं प्रवंगानां कोटीर्बाणैरसूषुपत् Bhatt. 15,98. कालं कालं स्वापयति (des Metrums wegen) *zur Ruhe bringen* Harīv. 11298.

— desid. सुषुप्सति P. 1,2,8. 3,61, Schol. Vop. 19,6. *schlafen wollen* Nir. 14,4 (सुषुप्सन्नङ्गानि zu lesen). — Vgl. सुषुप्सा fg.

— desid. vom caus. सुषापयिषति Schol. zu P. 7,4,67 nebst Vārtt. zu 8,3,61. Vop. 8,130. 19,17.

— intens. सोषुप्यते P. 6,1,19. Vop. 20,12. सास्वपीति, सास्वपि, सोषुपीति, सोषोपि 20.

— अनु *fortschlummern:* य ईन्द्र सस्त्यव्रतो ऽनुषापम् (absol.) ṚV. 8,66,3.

— अव, partic. °सुप्त *schlafend* R. 2,56,1. R. Gorr. 2,12,22.

— दुस्, der Anlaut geht in ष über P. 8,3,88. Vop. 8,98. *schlecht schlafen, böse Träume haben:* दुःषुषुपतुस् 9,37. — Vgl. दुःसुप्त.

— नि 1) *einschlafen* ṚV. 7,55,2. 3. — 2) so v. a. *den Tod finden* ṚV. 7,18,14. — caus. 1) *einschläfern* ṚV. 1,29,3. 7,55,7. AV. 4,5,7. Çat. Br. 2,6,2,17. — 2) so v. a. *tödten* ṚV. 7,19,4.

— निस्, der Anlaut geht in ष über P. 8,3,88. Vop. 8,98. — Vgl. निःसुप्त.

— प्र *einschlafen* Ait. Br. 8,28. Çat. Br. 14,7,1,10. सुखं दात्तः प्रस्वपिति सुखं च प्रतिबुध्यते MBu. 12,5937. 13,2143 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 2145. *schlafen* Harīv. 2921. प्रस्वपीत MBu. 13,5003. नासुप्ते प्रस्वपेत च *sich schlafen legen* 12,5844. — partic. प्रसुप्त 1) *eingeschlafen, schlafend* M. 1,5. 74. 9,302. MBu. 1,5912. 3,534. सुचिरं वै प्रसुप्तो ऽसि *du hast geschlafen* 16813. प्रसुप्तो ऽस्मि *ich schlief ein* 16817. 5,7283. Harīv. 6478. R. 2,65,16. 76,4. 103,4. 3,56,2. 71,15. 4,17,17. Kāṇ. 5,1,12. Suçr. 1,248,6. 330,4. Kām. Nītis. 18,52. Ragh. 11,44. नयनाभ्याम् Spr. (II) 3386. Weber, Kṛishṇaj. 277. Kathās. 11,62. 25,239. 18,280. 46,174. Daçar. 91,3. Mārk. P. 69,25. Buic. P. 3,26,21. 29,5. 4,13,47. 5,4,47. 16,55. Pañcat. 117,12. 134,6. Hit. 50,2. Vet. in LA. (III) 18,9. 20,2. 26,2. — 2) *eingeschlafen* so v. a. *taub, empfindungslos* (ein Glied) Suçr. 1,305,16. — 3) *schlafend* so v. a. *ruhend, unthätig, latent:* पारलौकिककार्येषु Spr. (II) 1490. वीर्य R. 4,26,16. Jogaś. 2,4. लोकतत्त्व Buic. P. 3,6,1. वाच् 4,9,6. — Vgl. प्रसुप्त fgg., प्रस्वाप und सुखप्रसुप्त. — caus. *einschläfern, schlafen machen* R. 3,63,10 (med.). Buic. P. 5,21,9. — Vgl. प्रस्वापन fg.

— अभिप्र, partic. °सुप्त *eingeschlafen, schlafend* MBu. 12,3069.

— संप्र, partic. °सुप्त dass. MBu. 1,955. 10,218. R. 2,46,18 (44,18 Gorr.). von Pflanzen, *die ihre Kelche geschlossen haben,* MBu. 7,487.

— प्रति, partic. °सुप्त dass. MBu. 13,5233.

— वि, wann der Anlaut in ष übergeht P. 8,3,88. Vop. 8,98. विस्वपिति, विसुष्वाप 9,27. partic. विषुप्त P., Schol. *eingeschlummert* Kāṭh. 22,2.

— सम्, partic. संसुप्त *eingeschlafen, schlafend* MBu. 1,5967. 3,2341. 13,2746. 2883. 2885. R. 2,46,19. 21 (44,19. 21 Gorr.). 5,14,11. Kām. Nītis. 18,64. Kumārās. 2,42. Spr. (II) 6293. Kathās. 17,102. 33,193. 43,50. 64,92. 106,68. Buic. P. 3,7,13. — Vgl. सुखसंसुप्त.

2. स्वप् adj. *gutes Wasser habend;* Declination Vop. 3,168.

स्वपक्ष m. 1) *die eigene Partei* MBu. 2,171. 15,220. Spr. (II) 6285. 6667, v. l. Mālav. 12,14. Pañcat. 156,9. *ein Mann von der eigenen Partei, Einer von den Eigenen* (Gegens. विपक्ष) Buic. P. 4,11,20. pl. MBu. 2,1090. 3,1. Suçr. 1,104,20. °प्रभवं भयम् AK. 2,8,4,30. °जं भयम् H. 301. — 2) *die eigene Ansicht* Madhus. in Ind. St. 1,19,1 v. u.

स्वपञ्चक adj. etwa *fünfmal mit sich selbst multiplicirt* Weber, Gīṭ. 89. 91.

स्वपति m. P. 4,4,104. *der eigene (ihr u. s. w.) Herr* ṚV. 10,27,5. 31,4. 44,1. °भासिनती *in dem Wahn stehend, dass es ihr Gemahl sei,* Prāyaçcittenp. 39,a,4. — Vgl. स्वापतेय.

स्वपतित adj. *von selbst gefallen, — abgefallen* Vaitān. Bān. S. 59,3. Spr. (II) 2846.

1. स्वपत्य (अपत्य von 1. अप्) 1) n. *gutes —, nützliches Werk:* बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय वृज्यते ṚV. 1,83,6. आ ये विशो स्वपत्यानि तस्थुः 72,9. ये विश्वे नरः स्वपत्यानि चक्रुः 4,34,9. 7,91,3. मित्रा विशो स्वपत्यानि दीधिये 8,13,10. — 2) adj. *ein gutes Werk ausführend* ṚV. 3,19,3.

2. स्वपत्य adj. *mit guter Nachkommenschaft versehen:* तप ṚV. 7,1,12. आयुम् 1,116,19. आयु 3,3,7. रायो च नः स्वपत्या (dat. fem.) इषे धीः 1,54,11. 2,2,12. 4,3. 9,3. 3,16,1. 4,2,11. 10,30,12.

स्वपर्न (von 1. स्वप्) 1) adj. *schläfrig* VS. 30,17. — 2) n. a) *das Schla-*

fon Çabdan. im ÇKDa. Sᴜçr. 1,330,8. Spr. (II) 1622. योगनिद्रया 6524. — *b) das Eingeschlafensein, Taubheit* (der Haut) Sᴜçr. 1,269,1.

स्वपराह्णे loc. *spät am Nachmittag, gegen Abend* Ait. Br. 1,23. Âçv. Çr. 4,8,12.

1. स्वपस् 1) adj. *Gutes wirkend, fleissig, kunstreich, Künstler:* Tvashṭar ṚV. 1,85,9. Ṛbhu 161,6. 4,33,8. 1,130,6. 139,8. 4,2,19. 17,4. 5,2,11. 29,17. स इत्स्वपा भुवनेषास 4,56,3. 5,60,5. 7,88, 4. 9,66, 21. 10,76,8. 110,8. वक्ष *arbeitsam* VS. 25,3. superl. *sehr kunstreich gearbeitet:* Donnerkeil ṚV. 1,61,6. — 2) m. N. pr. eines Mannes स्वपस आङ्गिरस्य साम Ind. St. 3,246,a.

2. स्वर्पस् entstellte Lesart AV. 3,3,1; vgl. ṚV. 6,11,1.

स्वपस्य् (von 1. स्वपस्) °स्यते *gut arbeiten, thätig sein:* स्वपस्यते मघः ṚV. 10,11,6. 1,69,2. समानमर्थम् TS. 4,3,44,3.

स्वपस्य adj. *thätig, fleissig:* Indra VS. 24,1. Çat. Br. 13,2,8,9.

स्वपस्या f. *Thätigkeit, Fleiss, Geschicklichkeit;* nur im instr.: इन्द्रं तमेव स्वपस्यया धिया von *der Geschäftigkeit im heiligen Dienst* ṚV. 1, 32,3. 110,2. 161,11. 3,3,11. 10,113,4. स्वपस्या instr. 4,35,9.

स्वपाक (सुअपाक Padap.) adj. = 1. स्वपस् (Sây.): Agni ṚV. 4,3,2.

स्वपिण्डार्क = पिण्डखर्जूरी Râǵân. im ÇKDa. fehlerhaft für स्थलपिण्डा.

1. स्वपितर् (von 1. स्वप्) nom. ag. *der da schläft* Spr. (II) 3388. die Form ist verdächtig.

2. स्वपितर् m. *der eigene Vater* Spr. (II) 3792. 4004. Kathâs. 21,60. Pañcat. 4,3,202. pl. *die eigenen Manen* MBh. 5,7310.

स्वपिवात (सुअपि° Padap.) adj. Beiw. des Rudra *wohl verstehend, — denkend* ṚV. 7,46,3. = स्वाप्तवचन (*dessen Worte zuverlässig sind;* nach D. = कस्यचिदप्यनतिक्रमणीयाज्ञः) Nir. 10,7.

स्वपिष्ठ m. N. pr. eines Mannes; vgl. स्वापिशि.

स्वपुर n. 1) *die eigene Stadt.* — 2) N. pr. einer *Vorstadt* von Vâǵranagara Harîv. 8668. fg. 8671. सुपुर die neuere Ausg. an zwei Stellen.

स्वपुरम् adv. *vor sich:* मनुष्यान्स्वपुरो दृष्ट्वा Harîv. 15996.

स्वपू (स्व + पू etwa = पवन) kaum Bez. *eines Werkzeugs* sein, *das Staub aufregt,* wie *Besen* u. dgl.: यभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त so v. a. *sie treiben sich gegenseitig den Staub zu* (im Scherz) ṚV. 7,56,3.

स्वपूर्ण adj. *durch sich selbst vollkommen zufriedengestellt* Bhâg. P. 4,31,22.

स्वपोषम् absol. in Verbindung mit पुष्णाति *an seiner Person gedeihen* P. 3,4,40.

स्वप्तव्य (von 1. स्वप्) n. impers. *dormiendum* Pañcav. Br. 16,4,3. MBh. 6,3735. 13,5032.

स्वप्न (wie oben) m. Uṇâdis. 3,10. P. 3,3,91. Vop. 26,180. am Ende eines adj. comp. f. या. 1) *Schlaf* AK. 1,1,2,36. Taik. 3,3,270. H. an. 2,289. Med. m. 22. ṚV. 1,120,12. 2,15,9. 7,86,6. 8,2,18. AV. 4,5,7. 5,40,1. 16,3,1. TS. 5,5,20,4. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,126 (n. 1). 131. Weber, Râmat. Up. 342. fg. ज्ञायत्स्वप्नाभ्याम् Mc 1,37. रात्रिः स्वप्नाय 45. fg. स्वप्ने सिक्ता प्रुक्तम् 2,131. Bhâg. 6,17. Raghu. 12,70. Pañcat. 3, 9,6. रात्रिंदिवा °भाक् Spr. (II) 4910. *Schläfrigkeit* Kâraṇḍ. 18. *vieles Schlafen* M. 12,33. Spr. (II) 4044. या° *Schlaflosigkeit* Varâh. Bṛh. S. 93,3. — 2) *Traum* Taik. H. an. Med. स्वप्ने भयं भीरवे मक्षमाके ṚV. 2, 28,10. 10,162,6. AV. 7,101,1. पाप 10,3,6. VS. 20,16. Çat. Br. 3,2,2, 23. Ait. Up. 1,3,12. स्वप्नो ऽयम् R. 2,88,3. °कृत्य 91,73. यत्स्वप्ने लभते वित्तम् 3,76,30. 5,30,14. Sᴜçr. 1,104,14. 109,17. Kâm. 3,2,7. Çiç. 137. 140. Vish. 29. Spr. (II) 3836. 7316. Varâh. Bṛh. S. 48,32. Bṛh. S. 33. स्वप्नमिव स्मरन् Kathâs. 18,241. 21,147. fg. 23,14. fg. 31. 31,12. Râǵat. 2,112. स्वप्ने स्वप्नोक्तम: 4,100. Prab. 31,1. Dhûrtan. 92,15. स्वप्ने स्वप्नः Bhâg. P. 4,29,34. Pañcat. 134,6. Vedântas. (Allah.) No. 63. स्वप्नायमोक्षितः Bhâg. P. 11,11,8. स्वप्नवदुत्थितः 7,14,4. स्वप्ने पश्यति Çat. Br. 14,7,1,19. Kâty. Çr. 25,11,20. Âçv. Gṛhy. 3,6,5. Praçnop. 4,1. Kaush. Up. 4,19. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. Weber, Râmat. Up. 338. स्वप्नो मे यदि वा दृष्टः (so ed. Bomb.) MBh. 3,16813. 2197. R. 2, 69,1. 2 (71,1. 2 Gorr.). 5,27,6. Prab. 16,17. °दर्शन Harîv. 11379. R. 2, 69 in der Unterschr. 3,58,3. Kathâs. 31,26. 119,95. Çiç. zu Bṛh. Âr. Up. S. 248. °दृश् Bhâg. P. 11,11,8. °निदर्शन Kaṭhân. Up. 5,2,9. Sᴜçr. 1, 8,15. °संदर्शन (pl.) Megh. 105. घालोकित° adj. Kathâs. 32,391. स्वप्ने पितृमद्रातम् R. 2,69,8. Megh. 110. Kathâs. 13,121. 23,3. 54,201. स्वप्नान्तरे Verz. d. Oxf. H. 145,a,14. स्वप्नान्तरगत *geträumt* Vsudev. 134. °गोचरे Pañcat. 1,12,31. °मनोरथा: R. 3,47,14. 61,25. स्वप्नादेश Kathâs. 2, 3. 37,27. स्वप्नावताम् 31,27. °वृत्ति Spr. (II) 3306. °गत R. 3,43,24. °वत्त Raghu. 12,76. °धीगम्य M. 12,122. °न Megh. 88. °लब्ध 95. °रम्भ Schol. zu Kap. 1,20. °फलापत्ति Verz. d. Oxf. H. 154,a,9. स्वप्नाध्याय 86,b,41. 346,b, No. 808. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 30. Gild. Bibl. 213. 602. Verz. d. B. H. 94 (68). No. 902. 1296. °प्रकरण 1025. या° *nicht träumend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,131. — Vgl. या°, ऊर्ध्व°, दिवा°, दुः°, सु° (auch Pañcat. 1,4,41), स्वाप्न.

स्वप्नकृत् 1) adj. *einschläfernd.* — 2) m. *Marsilea quadrifolia* Çabdar. im ÇKDa.

स्वप्नगृह n. *Schlafgemach* Wilson.

स्वप्नचिन्तामणि m. Titel einer Schrift Hall in der Einl. zu Vâsavad. 31.

स्वप्नेलु (von 1. स्वप्) adj. *zum Schlafe geneigt, schläfrig* P. 3,2,178. 7,1,19, Schol. Vop. 26,161. AK. 3,1,23. H. 442. किं स्वित्स्वप्नद्रु निमिषति, Antwort: मत्स्यः सुप्तो न निमिषति MBh. 3,10648. fg. Bhatt. 7, 25. — Vgl. या°.

स्वप्नज्ञान n. *Erkenntniss in einem Traume* Comm. zu Kap. 3,2,5.

स्वप्नदोष m. *Pollution* ÇKDa. und Wilson.

स्वप्ननेशन m. ṚV. 10,86,21 nach Nir. 12,28 *Vernichter des Schlafs.*

स्वप्ननिकेतन n. *Schlafgemach* Wilson.

स्वप्नमाणव und °क m. *Traumbube, Bez. eines best. Zaubers, der eintreffende Träume bewirkt,* Kathâs. 8,137. 72,103. 107. 112. 152.

स्वप्नमुखा f. etwa *Traumerscheinung* AV. 7,100,1. v. l. Kâty. Çr. 25,11,20.

स्वप्नया adv. P. 7,1,39, Vârtt. 4, Schol. (= स्वप्नेन) *im Traume* AV. 5,7,8. स्वप्नया (स्वप्न्यया v. l.) चरति Kaush. Up. 4,18. स्वप्न्यया Çat. Br. 14,5,4,19.

स्वप्नविचारिन् adj. *Träume deutend* ÇKDa.

स्वप्नस् (d. सु + या°) adj. *reich:* Âditja ṚV. 10,63,3. 78,1.

1. स्वप्नस्थान n. *Schlafgemach* Kathâs. 32,68.

2. स्वप्नस्थान adj. *im Zustande des Schlafes sich befindend, schlafend*

(*träumend*) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. 133. Weber, Râmat. Up. 338.

स्वप्नान्त m. *der Zustand des Schlafes, — des Traumes* Çat. Br. 14,7, 1,11. 17. 19. Kâṭh. Up. 6,8,1. Kaṭhop. 4,4. — Vgl. बुद्धान्त.

स्वप्नान्तिक n. *Bewusstsein im Traume* Kap. 2,2,8. — ब्रूप Vâitp. 110.

स्वप्नाभिकरण n. *Einschläferungsmittel* AV. 4,5,7.

स्वप्नाय् (von स्वप्न), °यते 1) *schlafen wollen, schläfrig sein:* °यमान MBh. 7,5281 (°यमानास्त्वपरे mit der ed. Bomb. zu lesen). Harîv. 3940. — 2) *einem Traume gleichen:* स्वप्नायितं नृपसुखम् Bhâg. P. 10,70,25.

स्वप्नालु (wie oben) adj. *schläfrig* Suçr. 1,323,12.

स्वप्नेदुःषप्न्य n. *ein böses Traumgesicht* AV. 16,6,9.

स्वप्नेश्वर m. N. pr. eines Erklärers der Sûtra des Çâṇḍilja und Verfassers der Kaumudiprabhâ Hall 6.

स्वप्न्य (von स्वप्न) n. *Traumgesicht:* पाप AV. 7,101,1. स्वप्नया s. u. स्वप्नया. — Vgl. दुःषप्न्य.

स्वप्रकाश 1) adj. *durch sich selbst offenbar, — klar* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,133. 146. 149. 160. 163. fg. Weber, Râmat. Up. 354. Ind. St. 1,23,21. Paṇḍân. 6,3,21. Siṃh. D. 23,4. Davon nom. abstr. °त्व n. ebend. 60. — 2) Titel eines Commentars Verz. d. B. H. No. 487. °प्रदीपिका Titel eines Werkes Hall 92. °रुस्य desgl. 48.

स्वप्रतिकर adj. *an sich entsprechend, ein Aequivalent bildend* R. Gorr. 2,120,9; vgl. Spr. (II) 5307.

स्वप्रधान adj. *selbstständig, unabhängig* AK. 3,6,8,42. Davon nom. abstr. °ता f. *Selbstständigkeit* Kâm. Nîtis. 8,8.

स्वप्रभुता s. u. प्रभुता.

स्वबीज m. *die Seele* Çârîr. im ÇKDr.

स्वब्दिन् (ohne Avagraha) adj. etwa *lechzend* nach dem Zusammenhange: Stier ṚV. 8,33,2. = स्वभूतशब्द् Sây.

स्वब्रह्मण्या M. 9,126 fehlerhaft für सुब्र°.

स्वभद्रा f. v. l. für सुभद्रा *Gmelina arborea* Râgân. 9,35 nach Nigh. Pr.

स्वभवस् adj. in einer Formel etwa *in dem Selbst befindlich:* Athom TS. 6,4,8,5.

स्वभाजन n. schlechte v. l. für सभाजन Râmân. zu AK. 2,3,7 nach ÇKDr.

स्वभानु adj. *selbstleuchtend:* die Marut ṚV. 1,37,2. 82,2. 5,53,4. 54,1. 6,48,12. 8,20,4. Ushas 6,64,4.

स्वभाव m. *die eigene Art des Seins, inhärentes Wesen, Natur* (vgl. स्वो भावः Spr. (II) 3274) AK. 1,1,2,38. 3,4,8,23. 48,112. 86,203. 89,209. Hit. 144. Hall. 4,97. 5,71. Çvetâç. Up. 1,2 (काल: स्व° zu lesen). 5,4. 5. M. 9,16. कृष्णगतेः नेत्रमनःस्वभावैः MBh. 1,7015. Bhag. 8,3. R. 5,94,6. Kap. 1,8. Kâraka 1,7. Suçr. 1,129,19. 208,20. Spr. (II) 187. 1010. 1471. 3162 (pl.). स्वभावात्स्वस्य रेतसः 3340. 4556. 5204. 6935 (pl.). स्वभावेन रुरेन्मित्रम् 7299. fg. Vârâh. Bṛh. S. 1,7. 68,109. fgg. 80,3. Sarvadarçanas. 10,17. fgg. 14,16. fgg. 53,1. 6 (pl.). Bhâg. P. 1,17,19. 2,5, 14. 34. 7,49. 10,12. 3,7,29. 8,7,23. °वर्ग Verz. d. B. H. No. 896. Burnouf, Intr. 441. Wassiljew 127. प्रवर्तते Bhag. 5,14. न निवर्तते Spr. (II) 2557. अतिरिच्यते 3316. न स्वभावमतिवर्तते 3314. स्वभावं न हरति 7291. न मुञ्चति 7295. स्वभावे वर्तते लोकः 3182. तिष्ठति R. 5,94,5. स्वभावो दुरतिक्रमः Kusum. 7,21. स्वच्छ° Paṇḍân. 1,14,91. सुखि° Hit. 106, 16. स्वभावात् *durch sein eigenes Wesen*, von *Natur*, von *Haus aus*, *durch sich selbst*, von *selbst* R. 3,52,30. Kap. 3,61. Spr. (II) 3191. 4797. 6139. 7298. Vârâh. Bṛh. S. 12,7. Sarvadarçanas. 5,19. 6,2. 7,9. स्वभावतस् dass. M. 2,23. 9,15. 33. Kap. 1,7. Spr. (II) 3282. Gorâkhs. Bhuvanak. 8. Paṇḍât. 166,15. स्वभावेन dass. M. 8,78. Siṃhâs. 33. Spr. (II) 1319, v. l. 2253. Kathâs. 33,110. Sarvadarçanas. 31,22. 32,1. स्वस्वभावेन dass. Mṛicch. 168,16. am Anf. eines comp. in dieser Bed.: °गन्ध so v. a. *der natürliche Geruch* Spr. (II) 2836. °भाव 3290. °सुन्दर *ein von Natur guter Mensch* 3920. °वीर 7294. °शूर 7293. °विरुद्धानि Vârâh. Bṛh. S. 88,34. °कठिन Spr. (II) 7289. °चपल 7420. °चल 6267. °प्रसिद्ध Suçr. 1,117,15. °भद्र Çiva Çiv. °मृदु Spr. (II) 7293. °विनते भ्रुवौ ad Çix. 69, 2. °शुद्ध Verz. d. Oxf. H. 272,b, No. 644. Burnouf, Intr. 633. °संसिद्ध Kâraka 1,20. °सिद्ध Spr. (II) 5690. Kîç. zu P. 1,2,52. °सुन्दर Spr. (II) 7297. °ज von *Natur eigen, natürlich, angeboren:* गुणाः R. Gorr. 1,25, 19. दोषाः Spr. (II) 328. मित्र 3370, v. l. 7290. Siṃh. D. 163. Bhâg. P. 4, 29,41. सतु° Vârâh. Bṛh. S. 46,96. °घनित dass. Spr. (II) 1613. सर्वतु° Vârâh. Bṛh. S. 21,18. 27. °कृत dass. 47,28. सतु° 46,83. °प्रभव dass. 90,2. Am Ende eines adj. comp. (f. या): सिद्ध° Âçv. Çr. 12,4,17. घन-वबद्ध° Suçr. 1,195,1. 2. सतु° Harîv. 7094. क्रूर° R. Gorr. 2,76,3. चल° Spr. (II) 6861. दुष्ट° Vârâh. Bṛh. S. 78,16. पाप° R. Gorr. 2,76,2. 3, 56,20. मुग्ध° Paṇḍât. 44,19. लोल° R. 4,52,10. वाम° Bhâg. P. 1,7,42. विषम° Spr. (II) 4094. शुद्ध° R. 2,74,9 (76,14 Gorr.). सु° MBh. 13,6781. हि° Sûrjas. 14,4. कल्पतरु° Bhâg. P. 8,23,8. विद्या° Nilak. 253. Bemerkenswerth ist die euphemistische Redensart: स्वभावमापत्स्यते so v. a. *er wird der Natur den Tribut bezahlen* (स्वभावः प्रवृत्तेरुपरमो मरणमित्येके ऽर्थः Glosse) Kâraka 1,30. — Vgl. विमल°, स्त्री° (*die Natur des Weibes* auch R. 1,28,11. 2,72,16. 3,51,5. 5,23,18), स्वाभाविक.

स्वभावकृपण adj. *von Natur geizig;* m. N. pr. eines Brahmanen Paṇḍât. 252,9.

स्वभावत्व n. nom. abstr. von स्वभाव Comm. zu TS. Pair. 13,14.

स्वभावार्थदीपिका f. Titel eines Commentars Verz. d. B. H. No. 488.

स्वभाविकी Verz. d. Oxf. H. 89,b,39 wohl fehlerhaft für स्वाभाविकी.

स्वभावोक्ति f. *Schilderung, Beschreibung* Prâtiṣâkh. 87,b,9. Kâvyâd. 2,8. Kuvalaj. 153,a.

स्वभिगूर्त adj. *richtig von Zuruf* (सभिगुर्) *begleitet*, neben स्विष्ट TBr. 3,6,8,2.

स्वभिष्टि adj. 1) *hilfreich, günstig, förderlich:* Indra ṚV. 1,51,2. 8, 19,33. मद 6,33,1. ज्योतिस् 7,101,2. — 2) *begünstigt, aufgemuntert:* स्वभिष्टयो नरां न शंसैः ṚV. 1,173,9.

स्वभिष्टिमत् adj. *hilfreiche Huld erzeigend:* Indra ṚV. 6,20,8.

स्वभीर्त adj. *schön aufgezäumt:* Ross ṚV. 8,87,16. 18.

स्वभू 1) adj. *durch sich selbst seiend* Weber, Râmat. Up. 289. m. Bez. Brahman's AK. 1,1,6,13. Mân. bh. 10. Bhâg. P. 3,12,3. Vishṇu's H. 216. Mân. — 2) f. *das eigene Land, Heimath* Râǵa-Tar. 8,1330.

स्वभूति adj. von *selbst entstehend:* वायु VS. 27,33.

स्वभूत्योजस् adj. *naturwüchsige Kraft habend* ṚV. 1,52,13.

1. स्वभूमि f. *das eigene Land, Heimath* Spr. (II) 542. Verz. d. Oxf. H. 269,a,38. *der eigene* so v. a. *geeignete Platz* Vârâh. Bṛh. S. 56,19.

2. स्वभूमि m. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena VP. 4,14,3. — Vgl.

2. सुभूमि.

स्वभ्यक्त adj. *wohl gesalbt* AV. 20,128,7.

स्वभ्याय adj. 1) *sehr nahe bevorstehend* MBh. 3,11402. — 2) *sehr rasch* (nach Comm.) Âçv. Çr. 5,20,2.

स्वभ्यर्त adj. *von selbst erschrocken* AV. 11,9,17.

स्वमत् (von स्व) adj. in अल्प° *geringen Besitz habend* Çat. Br. 14,109.

स्वमात्र, instr. *nur durch sich selbst* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Çl. 1. *in thy entirety* Hall.

स्वमेक (!) m. n. *Jahr* Titthâdiv. im ÇKDn. — Vgl. सुमेक.

स्वयंवर 1) adj. (f. रा) *selbst wählend:* कन्या *ein Mädchen, das den Gatten sich selbst wählt,* AK. 2,6,1,7. H. 511. M. 9,92. MBh. 1,2259. 2828. 5,5950. Harîv. 8592. Kathâs. 68,13. 121,219. 123,120. Mâlav. P. 124,21. स्त्रिय: (nom. pl.) Hem. Jogaç. 2,74. भर्तृ° MBh. 1,125. — 2) m. *Selbstwahl, freie Wahl:* °सुहृद् *ein Freund, den man sich selbst wählt,* Kathâs. 22,120. 28,116. 104,217. °सुहृत्त्व 10,30. °सखी 28,104. स्वयंवरागता *aus eigenem Antriebe, von freien Stücken* 117,140. Insbes. *die den Mädchen der Kriegerkaste gestattete freie Wahl des Gatten:* वध्वाना: स्वयंवरम् MBh. 1,4082. राज्ञाकूपं नराधिपान्। पित्रा स्वयंवरे दत्ता दुहिता 4414. 3,2111. fg. 2179. 2876. 5,6004. 7117. 7,1065. R. 1,34,20. 35,18 Gorr.). Kathâs. 33,7. Râdâ-Tan. 1,66. 68. Sin. D. 127,19. Bhâg. P. 1,10,29. 9,10,6. °सभा 10,68,1. °पति Kathâs. 30,82. 101,46. °वृत: पति: 106,15.

स्वयंवरण n. *die freie Wahl des Gatten* (obj.): सीता° Sin. D. 127,18.

स्वयंवरप्रभा f. N. pr. der Gattin des Daitja Trailokjamâlin, Kathâs. 118,103.

स्वयंवश adj. *von sich selbst abhängig, frei:* नाहमस्मि °वश: MBh. 1,7796.

स्वयंवह् n. (sc. यन्त्र) Bez. *eines best. Instruments* (von *selbst sich bewegend*) Golâdhj. Jantrâdh. 30. fgg.

स्वयंवाद् m. *eine eigene Behauptung* Râdâ-Tan. 6,236 (getrennt gedr.).

स्वयंविक्रीत adj. *selbstverkauft:* °देह Spr. (II) 7340.

स्वयंवृत adj. *selbsterwählt:* पति Vikr. 101.

स्वयंवेदन n. *spontanes Bewusstsein* Sarvadarçanas. 15,16 (getrennt gedr.). — Vgl. स्वसंवेदन.

स्वयंशीर्ण adj. *von selbst abgefallen:* Früchte M. 6,21.

स्वयंशून adj. *von selbst gereift* Kâm. 15,5.

स्वयंश्रेष्ठ adj. *von Natur der schönste* u. s. w.: Çiva MBh. 13,1155.

स्वयंसमृद्ध adj. *an sich vollständig* Ait. Br. 6,10.

स्वयंसिद्ध adj. *von selbst fertig dastehend:* लोक Hem. Jogaç. 4,105.

स्वयंस्रंस् adj. *von selbst fallend* AV. 7,76,2.

स्वयंस्रस्त adj. *von selbst abgefallen:* Horn Kauç. 31.

स्वयंहारकी f. = स्वयंहारिका Mâlav. P. 51,5.

स्वयंहारिका f. N. pr. einer bösen Fee (*auf eigene Hand raubend*), einer Tochter Duḥçaha's, Mâlav. P. 51,33. 36.

स्वयंहारी f. = स्वयंहारिका Mâlav. P. 51,26. fg.

स्वयंहोतृ nom. ag. *ein Opferer auf eigene Hand* Snâpr. Br. 4,1; vgl. Gobh. 1,9,8.

स्वयंहोम m. *ein Opfer auf eigene Hand* (*einfaches, nicht förmliches*) Çiñkh. Çr. 4,3,12. Schol. zu Kâtj. Çr. 422,19.

स्वयंहोमिन् adj. *der ein solches Opfer darbringt* Çiñkh. Çr. 2,3,23. Kâtj. Çr. 25,6,13.

स्वयंकर्त adj. *selbstgemacht, — bereitet* P. 2,1,25, Schol. वेदि, इध्म (ohne genaue Beobachtung der Vorschriften) TBr. 1,7,2,3. लवण M. 6,12. शय्या R. Gorr. 2,28,20. दु:ख R. Schl. 2,63,11. श्लोक *selbstverfasst* Kathâs. 7,1. मूर्ख्ना Megh. 84. विग्रह *auf eigene Hand unternommen* M. 7,161. so v. a. *adoptirt* Jâdj. 2,131. — Vgl. स्वकृत.

स्वयंकृतिन् adj. *der Etwas selbst thut, selbst Hand anlegt* Sûçr. 1,123,13.

स्वयंक्रान्त adj. *selbstbestiegen:* भवत् °क्रान्तनृपासना *sie bestieg selbst den Thron* Râdâ-Tan. 6,332.

स्वयंखात adj. *selbstgegraben* Gorr. 4,7,3.

स्वयंगुणपरित्याग m. *freiwilliges Aufgeben des Fadens* (*der Tugend*) Spr. (II) 7307.

स्वयंगुप्त 1) adj. *durch sich selbst geschützt.* — 2) f. आ *Mucuna pruritus* Çabdar. im ÇKDn. Râgân. 3,28. Sûçr. 2,136,9. 338,18. 493,12: vgl. स्वगुप्ता und आत्मगुप्ता.

स्वयंगुरुत्व n. *eigene Schwere* Spr. (II) 5892.

स्वयंग्रह m. *das Ergreifen auf eigene Hand, gewaltsames Ergreifen:* °ग्रहाभिषेप Çiç. 1,50. könnte auch adj. *gewaltsam sein.*

1. स्वयंग्राह् m. *gewaltsames Ergreifen:* सुराङ्गना° Z. d. d. m. G. 37,92. Mâlatîm. 135,17.

2. स्वयंग्राह् adj. (f. ग्राही) 1) *gewaltsam ergriffen:* (कन्या:) °ग्राहा भविष्यन्ति युगान्ते समुपस्थिते MBh. 3,13043. — 2) *wobei Gewalt angewandt wird, gewaltsam:* अलंकृतो ऽस्मि °प्रणयेन भवता so v. a. *aufdringlich* Mṛicch. 109,24. °ग्राहम् adv. *gewaltsam:* यमप्रदत्ता यो ऽस्माभि: °ग्राहमधर्षयत् Harîv. 11006 (S. 790). °ग्राहनिपतकवाङ्क Kumâras. 3,7.

स्वयंग्राह्य adj. *wobei Gewalt angewandt wird, was gegen Jmds Willen geschieht:* न कोविदीशते °ग्राह्यस्य MBh. 3,13863.

स्वयंचिति f. *Schichtung auf eigene Hand* TS. 5,7,8,2.

स्वयंजा adj. (f. जा) *von selbst entsprungen:* Wasser RV. 7,49,2.

स्वयंज्योतिस् adj. *von selbst leuchtend* Çat. Br. 14,7,2,10. Weber, Rimat. Up. 354. Bhâg. P. 4,20,7. 5,11,13. 7,3,26. 8,1,13. 7,29. 10,70,5. Verz. d. Oxf. H. 90,b,13 v. u. (getrennt gedr.).

स्वयंतत adj. *der eigenen Richtung folgend* RV. 1,166,4.

स्वयंदत्त adj. *selbstgegeben,* Bez. *eines elternlosen oder von den Eltern verlassenen Kindes, das sich selbst als Sohn einem Andern anbietet.* Baudhâjana bei Kull. zu M. 9,158. M. 9,160. 177. Jâdj. 2,131.

स्वयंदान n. *das Hingeben* (einer Tochter) *auf eigene Hand* Kathâs. 67,77.

स्वयंदीर्ण adj. *von selbst abgerissen* TS. 1,8,8,3. TBr. 1,7,2,3.

स्वयंदृश् adj. *von selbst offenbar* (= स्वयंप्रकाश Comm.) Bhâg. P. 4,7,50.

स्वयंनिर्दिष्ट adj. *selbstbezeichnet* Çat. Br. 3,6,2,16. 9,1,2,39. 3,12.

स्वयंम् indecl. (eig. ein erstarrter nom. von स्व *die eigene Person:* vgl. अयम्, इयम्, इदम्) gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. *selbst* AK. 3,3,16. RV. 1,122,9. 158,5. 2,35,14. स्वयमत्कं वसान: 4,18,5. 10. 5,44,8. स्वयं वर्धस्व तन्वम् 7,8,5. 56,11. 10,7,6. 27,12. AV. 12,4,27. 14,1,57. Çat. Br. 1,6,2,3. 13,2,2,11. 14,7,2,10. Kaṭhop. 2,5. Taitt. Up. 2,7. स्वयं

पत्न्यपि वा पुत्रः Âçv. Gṛhy. 1,9,1. — In der spateren Sprache 1) als nom. zu fassen und zu beziehen a) auf das grammatische Subject M. 1,7. 9. 13. 33. fgg. 33. 58. 3,27. 222. 224. 4,74 u. s. w. MBh. 3, 2736. Harîv. 9705. R. 1,2,36. 8,18. 9,69. 24,1. 61,19. 72,10. 2,64,31. 104,5. Ragh. 3, 20. 48. 12, 64. Spr. (II) 1614. 1224. 3455. 4414. 4328. 5089. 6244. 7305. fg. 7308. fgg. Vaṛâh. Bṛh. S. 9,7. Kathâs. 13,191. 14,38. 18,246. 22, 115. Brahma-P. in LA. (II) 57, 6. Râga-Tar. 1, 35. AK. 2, 6, 1, 14. Bhâg. P. 1,14,27. Pañkat. 163,19. Çuk. in LA. (III) 34,2. क्रियमाणां तु यत्कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति *selbst* d. i. *ohne Beihilfe*, von *selbst* Vop. 24, 8. — *b*) auf das Pradicat: (Nala war) रक्षिता धन्विनां श्रेष्ठः मातादिव मनुः स्वयम् MBh. 3,2075. 2086. — 2) als instr. zu fassen und zu beziehen a) auf das logische Subject (im instr. oder hinzuzudenken): पशवार्थाः पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा M. 5,39. क्षेमः कर्तव्यः स्वयमन्वक्षम् 11,222. R. 1,5,6. ज्ञलं लक्ष्मणेनाहृतं स्वयम् 2,50,24. स्मृतं पापं मया स्वयम् 64, 36. 81,7. 89,17. 4,3,10. 12,18. Ragh. 2,56. Milarip. 70,5. Spr. (II) 484. 4127. 4638. Kathâs. 9, 55. 18, 214. 227. 37, 71. 39, 43. 67, 77. Sin. D. 204. — *b*) auf das grammatische Subject: मां कथं पश्यत्र दूयसे। सिक्तं स्वयमिव (von *dir selbst*) स्नेहाद्दन्द्यमाश्रमवृक्षकम् ॥ Ragh. 1,70. — 3) auf einen gen. zu beziehen: यस्यास्तव पतिस्त्यक्तो रात्रा दशरथः स्वयम् (gehört zu तव) R. 2,35,5. मनसा काङ्क्षितं तस्य ममाप्यागमनं स्वयम् (gehört zu मम) 3,18,13. यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा Spr. (II) 5379. ज्ञातानां च स्वयं (so v. a. von *selbst*) वने M. 11, 144. पतितानामुत्थाने स्वयम् Vaṛâh. Bṛh. S. 46, 28. — 4) auf einen loc.: लग्ने स्थिते वा स्वयमेव मूर्धे Vaṛâh. Bṛh. S. 96, 10. — 5) auf einen acc.: स्वयं च गृहमागतां माम् MBh. 3, 1865. — Haufig am Anfange eines comp., insbesondere vor einem partic. praet. pass. P. 2,1,25.

स्वयमगुरुत्व n. *eigene Leichtigkeit* Spr. (II) 5893. — Vgl. स्वयंगुरुत्व.

स्वयमधिगत adj. *selbsterworben:* वित्त Vaṛâh. Bṛh. 13,5.

स्वयमनुष्ठान n. *eigenes Vollbringen:* धर्मे Spr. (II) 3987.

स्वयमर्जित adj. *selbsterworben, — verschafft, — gewonnen:* द्रव्य M. 9,209. R. 2,53,4.

स्वयमवदीर्ण n. *eine natürliche Erdspalte* Kâvç. 39.

स्वयमवपत्र adj. *von selbst abgefallen:* Ast TS. 1,8,6,2.

स्वयमागत adj. *von selbst gekommen:* °तमपि विधिनापक्रियते Pañkat. 132,18. fg.

स्वयमातृण्णा adj. *von Natur löcherig:* शर्करा Kâvç. 72. Kâtj. Çr. 17,4, 15. eine best. Ishṭaká Ind. St. 13,249. TS. 5,2,6,1. 3,2,1. 2,3. Çat. Ba. 8,3,4,7. चिति 6,2,2,1. 3. — Vgl. अभि°.

स्वयमातृण्णवत् adj. dass. Çat. Ba. 10,4,3,3.

स्वयमासनठीकन n. *eigenhändiges Herbeischaffen eines Sitzes* Hem. Joges. 3,124.

स्वयमाहृत adj. *selbstherbeigebracht* M. 6,11. R. 2,28,16.

स्वयमिन्द्रियमोचन n. *freiwilliger Samenerguss, Onanie* Gobh. 3,1,12.

स्वयमीश्वर m. *sein eigener Herr, ein unumschränkter Gebieter* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,133.

स्वयमीहितलब्ध adj. *durch eigene Anstrengung gewonnen* M. 9,208.

स्वयमुक्ति f. *eigene Aussage* Wilson.

स्वयमुज्ज्वल adj. *von selbst strahlend:* अर्चिस् Vaṛâh. Bṛh. S. 43,22.

स्वयमुदित adj. *von selbst entstanden* Çat. Ba. 5,3,3,6.

स्वयमुद्दीर्ण adj. *von selbst herausgesprungen* (ein Schwert aus der Scheide) Vaṛâh. Bṛh. S. 50,5.

स्वयमुद्घाटित adj. *von selbst geöffnet, — aufgegangen:* Thür Vaṛâh. Bṛh. S. 53,79.

स्वयमुपस्थित adj. *von selbst gemacht, — gekommen:* भार्या Brahmavaiv. P., Çaikasundarâdânmahâ. 62 nach ÇKDa. घ्रिय m. Bhâg. P. 1,13,12.

स्वयमुपेत adj. *von selbst herangetreten* Çat. Ba. 3,8,4,6.

स्वयंपतित adj. *von selbst abgefallen:* Frucht Kull. zu M. 6,21.

स्वयंपाठ m. *der natürliche ursprüngliche Text* Comm. zu TS. Prât. 9,21 (आर्षः स्व° die richtige Lesart, d. i. आर्ष = स्व°).

स्वयंपाप adj. etwa *sich selbst ein Leid zufügend:* कृतमैनाः स्वयंपापो भवति TS. 2,2,4,3. = आत्त Comm.

स्वयंप्रकाश 1) adj. *von selbst offenbar, sich selbst offenbarend* Bhâg. P. 3,3,16. — 2) m. N. pr. eines Mannes: °तीर्थ Verz. d. B. H. No. 636. °यति Notices of Skt Mss. 2,252. fg Hall 102. 136. °योगीन्द्र 131. °सरस्वती 139. °प्रकाशानन्दसरस्वती ebend. und 96. Colebr. Misc. Ess. 1,337. 2,42.

स्वयंप्रदीर्ण = स्वयमवदीर्ण Kâtj. Çr. 15,1,10.

स्वयंप्रभ 1) adj. (f. आ) von *selbst leuchtend* MBh. 2,434. 3,16460. 6, 295. 13,1442. Harîv. 7190. 13928. R. 5,7,20. 7,110,5. Bhâg. P. 3,16, 17. Pañkat. 4,3,21. — 2) m. N. pr. des 11ten Arhant's der zukünftigen Utsarpiṇî H. 34. — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras MBh. 3,1734. einer Tochter Hemaśâvarṇi's R. Gorr. 1,4,71. 4,51,17. 19. Maja's Kathâs. 29,15. fgg.

स्वयंप्रभु Verz. d. Oxf. H. 11,*b*,18 v. u. fehlerhaft: vgl. 49,*b*,33.

स्वयंप्रशीर्ण adj. *von selbst abgefallen* Çat. Ba. 5,3,3,5. Pân. Gaṇ. 2,7.

स्वयंप्रस्तुत adj. *selbstgepriesen* Çat. Ba. 4,6,9,17.

स्वयंभग्न adj. *von selbst abgebrochen, — abgefallen* Kâtj. Çr. 15,3,41. पर्णाशव्यासु °ग्नासु ungenau so v. a. *aus von selbst abgefallenen Blättern bereitet* R. 2,28,11.

स्वयंभु Vop. 26,168. m. = °भू Bez. Brahman's AK. 1,1,4,11 (nach ÇKDa. °भू). Dvirûpak. im ÇKDa. MBh. 3,16632. R. 1,13,48. 2,30,27. Spr. (II) 6408. Çiva's Pañkâk. 4,2,9. — Das adj. n. °भु s. unter °भू.

स्वयंभुव 1) adj. = स्वयंभू MBh. 12,12658. 13,1011. R. 6,102,18. — 2) m. als Bez. des 1ten Manu (ÇKDa. und Wilson) fehlerhaft für स्वा°. — 3) f. आ *eine best. Stande*, = घृतपद्मा Râgân. 5,22.

स्वयंभू Declin. Vop. 3,65. 1) adj. *durch sich selbst entstanden, — seiend, selbstständig* VS. 2, 26. 23, 62. 40, 8. मन्यु RV. 10,83,1. TS. 5,1,6,4. Kâṭhop. 4, 1. Weber, Râmat. Up. 354. ein Fürst Ait. Br. 8,19. Wind (vgl. स्वभूति) Suçr. 1,249,9. Çiva Kathâs. 2,15. Çiva und Vishṇu 63, 54. = घनरहित Naigh. 1, 3. von *einem höchsten Wesen* AV. 10,8,44. 19,53,10. ब्रह्म स्वयंभु Citat in Nir. 2,11. Çat. Ba. 10,6,5,9. 13,7,6,1. 14,5,5,23. 7,3,28. m. Bez. Brahman's H. 211. Hall. 1,7. Ind. St. 3, 391. 395. 398. 4, 374. M. 1, 3. 6. 92. 94. 5, 39. 8, 413. 9, 138. MBh. 3, 1152. 12191. 13, 4377. 4380. Harîv. 37. 12317. 14075. 14081. 14119. R. 1,16,1. 2,110,3. R. Gorr. 2,30,29. 3,36,20. 4,44,120. Suçr. 1,1,17. 6,8. Spr. (II) 7013. Vaṛâh. Bṛh. S. 43,42. 48,2. Râga-Tar. 1,34. 3,485.

VP. 3,3,11. Mâns. P. 46,17. 107,5. Bnic. P. 3,8,15. 12,28. 6,1,10. 3, 20. 8,3,3. 9,1,9. als Vjâsa Verz. d. Oxf. H. 80,a,10. — 2) m. ein Pratjekabuddha Târ. 1,1,13. Bez. Âdibuddha's und eines Buddha überh. Burnouf, Intr. 222. Lot. de la b. l. 336. Wilson, Sel. Works 2, 11. 15. 27. 32. Lalit. od. Calc. 341, l. 362, l. 5. Râga-Tar. 2, 136. ein Arhant bei den Gaina H. 24. — Hiervon 3) adj. zu Buddha in Beziehung stehend: कश्मीरेषु स्वयंभूनि गत्वा तेजांसि पूजय Kathâs. 51,45. — 4) m. N. pr. des 31sten schwarzen Vâsudeva bei den Gaina H. 695. — 5) m. die Zeit Çabdar. im ÇKDa. der Liebesgott Çabdârthak. bei Wilson; = मायपर्णी und लिङ्गिनी Râgân. im ÇKDa. — Vgl. स्वायंभुव.

स्वयंभूपुराण n. Titel eines buddhistischen Purâṇa Burnouf, Intr. 581. Lot. de la b. l. 502.

स्वयंभूमातृकातन्त्र n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,b,27. fg.

स्वयंभूलिङ्ग n. = स्योतिर्लिङ्ग (Comm.) Verz. d. Oxf. H. 254,b,25. fg.

स्वयंभृत adj. selbsterhalten, — ernährt Bnic. P. 3,30,15.

स्वयंभोज m. N. pr. eines Sohnes des Pratikshatra Harîv. 2035. VP. 4,14,7. des Çini Bnic. P. 9,24,25.

स्वयंयमि adj. von selbst rollend Bnic. P. 8,5,8.

स्वयंयथितँ adj. von selbst gebuttert TS. 1,8,9,2.

स्वयंयूतँ adj. von selbst geronnen TS. 1,8,9,2.

स्वयंमृत adj. von selbst gestorben Pâśâd. 230,15. Hit. 23,10.

स्वयंशम् adj. durch sich selbst ansehnlich, — Eindruck machend, — imposant, — herrlich, selbstständig: Agni ṚV. 1,95,2. 5. Âditja 8, 56,12. Indra 3,48,1. 7,22,5. 37,4. 10,49,11. Sindhu 75,9. Wasser 7,85,2. Soma 9,98,6. Pâyu 1,93,9. (मरुतः) श्येनासो न स्वयंशसः 10,77, 5. Rudra 92,9. 14. मंसीमहि स्वयंशसः 1,136,7. तेनो सचध्वं स्वयंशसो हि भूतम् AV. 18,3,19. ṚV. 5,17,2. 10,105,9. compar.: स्वराज्य 5,82, 2. रयि 8,49,11. 3,45,5.

स्वयावन् adj. von selbst oder den eigenen Weg gehend: सिन्धु ṚV. 8,25,12.

स्वयुँ (von स्व) adj. sich selbst überlassen: Vieh ṚV. 2,4,7. frei schaltend: Indra 3,45,5.

स्वयुक्त adj. durch sich selbst geordnet: Marut ṚV. 1,168,4.

स्वयुक्ति f. 1) eigenes Gespann: der Sonne ṚV. 1,50,9. der Açvin 119,4. — 2) °तस् natürlicher Weise, selbstverständlich Kathâs. 21,95. 22,220. 32,28. 42,76. 64,66. 95,65. स्वयुक्त्या dass. 29,98.

स्वयुग्वन् m. ein Verbündeter: विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुग्वभिः ṚV. 9,111,1.

स्वयुज् m. dass. ṚV. 10,67,5. 78,2. 89,7. इन्द्रे स्वयुग्भिर्मत्स्वेह AV. 2,5,4.

1. स्वयोनि f. der Mutterleib, die eigene Geburtsstätte, — Heimathsort: तस्मात्स्वयोनिमापन्नः शैव त्वं हि भविष्यसि MBh. 12,4301. विकृतस्तु कुलीनस्तु स्वयोनिं यस्ते ऽग्निवत् Kâm. Nîtis. 17,27. Harîv. 13966. Bnic. P. 1,2,33. यथामयेश संयोगाद्धेम द्रव्यं च निर्बभौ। तस्मात्तयोः स्वयोन्यैव (d. i. यद्भिः oder यग्निना) निर्णेको गुणवत्तरः ॥ M. 5,113. (समुद्रे) प्रविष्टे सकृमा स्वयोनिं वरुणालयम् R. 5,95,2. ein Mutterleib der eigenen Kaste M. 10,27. fg. — स्वयोनिज MBh. 12,4297 fehlerhaft für सु° (so ed. Bomb.).

2. स्वयोनि 1) adj. (f. auch ई) a) blutsverwandt M. 2,134. 206. 11,88. 170. Yâjñ. 3,231. — b) aus sich selbst entstehend Harîv. 13931. — 2) n. कश्यपस्य स्वयोनि N. eines Sâman Ind. St. 3,213,a.

1. स्वर्, स्वरति Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्). Dhâtup. 22,34 (शब्दोपतापयोः). सस्वार, सस्वरुस् P. 7,4,10, Schol. सस्वरिथ und सस्वर्थ Vop. 8,46. 90. घस्वारीत् und घस्वार्षीत् ebend. ved. घस्वार, घस्वार्ष्टाम्; स्वरिष्यति P. 7,2,70, Vârtt. Kâç. zu 44. स्वरिता und स्वर्ता 7,2,44, Schol. स्वृत्वा Kâç. zu 7,2,44. der Anlaut wird nicht in ष verwandelt AV. Pâr. 2,102. 1) einen Laut von sich geben, erschallen, tönen: घर्षः ṚV. 5,54,2. Opfergesang 8,12,32. Wind 5,54,5. घोमिति घोष (सादित्यः) स्वरतीति (zugleich leuchtend von 2. स्वर्) Kaush. Up. 1,5,1. — 2) erschallen lassen, mit acc.: स्वरन्ति घोषं विततम् ṚV. 5,54,13. घृतश्चुतं स्वारम् 2,11,7. — 3) besingen: स्वरन्ति त्वा सुते नरः ṚV. 8,33,2. इन्द्रं स्तोमेभिः 3,16. सा यस्ते योनिं घृतवत्तमस्वी: 10,148,5. 1,151,2.

— caus. स्वरयति Dhâtup. 35,11 (घातपे). mit dem Svarita-Ton sprechen Lâṭj. 1,6,3. pass. स्वर्यते ṚV. Pâr. 3,3. AV. Pâr. 3,67. Comm. zu 1,93. 3,56. 4,11. TS. Pâr. 20,2. 3. Comm. zu 1,41. Pat. zu P. 1, 3,11 (स्वरयिष्यते u. s. w.). — स्वरित s. bes.

— desid. सिस्वरिषति und सुस्वूर्षति P. 7,2,49. Vop. 8,46. 19,8.

— intens. सास्वर्यते P. 7,4,20, Schol.

— घति den Ton anklingen lassen Pâśâd. Bh. 13,12,11 (घतिमन्द्रन् Comm.). यदा वा सचमाप्रोत्योमित्येवातिस्वरति Kaush. Up. 1,4,4. घतिस्वार्य m. der letzte unter den sieben Tönen TS. Pâr. 23,12. Comm. zu 13.

— घनु caus.: सानुस्वरितरागाणाः सरस्वत्याः etwa nachklingend Harîv. 11873. °रागाया: die neuere Ausg. सानु शिखर उपनिषदिति यावत् स्वरितं स्वर्गतिः तत्साधनं कर्म तास्यां रमाभिरामा तस्याः Nîlak. Vgl. वाचः सानुस्वारक्रियाः 11882. hier hat die neuere Ausg. सानुसारा: und Nîlak. erklärt: घनुसरा: (sic) सकृपाद्यनसाधर्म्यात्यः तत्सक्तिनाः. Vgl. घनुस्वार.

— समनु nachklingen lassen Çikshâ 29.

— घभि mit Tönen begrüssen, singend einfallen, einstimmen: यत्रा सुपर्णा विदथाभिस्वरन्ति ṚV. 1,164,21. घभि स्वरन्ति बकुवो मनीषिणः 1, 85,3. घभि स्वर धन्वा पूयमानः 97,3. इदं स्वोमं घभि स्वराभि गृणीहि 1,10,4. — इक्षं पुंत्रानो रुरी घभि स्वर 8,13,27. घभि स्वरन्तु ये तव विशः 23. In Stellen wie diese von dem Comm. mit घभिगच्छ erklärt: vgl. Naigh. 2,14. Nir. 3,12. Wir finden jedoch keine andern Belege für eine Wurzel mit dieser Bedeutung. घन्यु स्वरेण सप्तसप्तकः स्वरति सेतत्ये den Ton hinüberleiten Pâśâd. Bh. 13,12,13. — Vgl. घभिस्वर fgg.

— घव ertönen: घवं स्वरति गर्गरः ṚV. 8,58,3. austönen, die Stimme sinken lassen Lâṭj. 7,11,12.

— उप einstimmen: मनसा in Gedanken mitsingen Lâṭj. 1,8,9.

— नि zweifelhafte Lesart घन्व निधर (= निर्घच्छ Comm.) TS. 1,1, 4,2, wofür निर्ष्व VS. 6,36.

— निस् wegsingen: इन्द्रियम् Kâṭj. 26,1.

— परि s. परिस्वार.

— प्र einen gesogenen Ton ausstossen: स घोषेमिति प्रस्वरति ṚV. Pâr. 15,3. — Vgl. प्रस्वार.

— सम् zusammentönen, — stimmen; im Chor besingen, anrufen: सोमं मृतो विप्राः समस्वरन् ṚV. 9,63,21. 73,1. 4. fgg. समु त्वा घोषिः स्वरन् 66,3. 67,9. 45,2. इन्द्रं सोमस्य पीतये 8,80,11. 9,101,11. mitsin-

gen (*in demselben Tone*) Lāṭ. 5,10,19. संस्वारम् absol. Çāṅkh. Çr. 1,1, 30. Nach P. 1,3,29, Vārtt. 1 und Vop. 13,14 med. संस्वारिषीष्टाम् (= उपतापय Comm.) Bhaṭṭ. 9,28.

— अभिसम् *einstimmig besingen, — begrüssen, — einladen:* अभि सो पूर्व्यस्तुतये स्तोमेभिः। समीचीनासः समस्वरन् ṚV. 8,3,7. गिरा 9,67, 9. मृतयः 100,11. इन्द्रं ज्ञायमानम् 110,8. कृरिं हि पोनिमभि ये समस्वरन् 10,96,2.

2. स्वर् (vgl. 3. स्वर्), स्वरति *leuchten, scheinen:* राहू राजानं त्सरति स्वरत्तम् Kauç. 100. ओमिति क्षोष (आदित्यः) स्वरत्येति (zugleich *den Laut* om von *sich gebend* von 1. स्वर्) Kāṭhaka Up. 1,5,1. Es fragt sich, ob hierher als partic. mit ungewöhnlicher Betonung सूर्त (P. 8,2,61. = सृत Schol.) *licht, heil* zu setzen sei. घसूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते ṚV. 10, 82,4. st. dessen घसूर्ता सूर्ता रजसो विमाने TS. 4,6,2,2. = सुसमीरित Nir. 6,18; vgl. Maṇḍan. zu VS. 17, 28. — caus. dass.: स्वरयत्समर्चिषा AV. 13,2,3.

— प्रत्या s. प्रत्यास्वर्.

— प्रति s. प्रतिस्वर्.

3. स्वर् Çāṅkh. 4,6. n. सूरा, सूरे und सूरै (ṚV. 4,3,8), सूरम्. Nach den Grammatikern und Lexicographen indecl. P. 1,1,37. Vop. 3,17. Behandlung des Auslautes VS. Prāt. 1,166. fg. AV. Prāt. 2,48. TS. Prāt. 5,10. 9,8. 12. स्वो vor folgendem र् VS. Prāt. 4,44. P. 6,3,109, Vārtt. 7. In Ableitungen zu सोव° gesteigert गुण हारादि zu P. 7,3, 4. Vop. 7,4. 1) *die Sonne* Nir. 2,14. सो षु देवा यदः स्वर्एरवे पादि दिवस्परि ṚV. 1,105,2. 71,2. चित्र 148,1. स्वर्ण दीदेत् 2,2,8. 8,4. 24,2. 4,3,11. स्वर्ण ज्योतिः 10,2. 16,4. 45. उत्स्वर्गात् 5,45,1. 46,2. येना स्वर्ण ततनाम नॄंभि 54,15. 80,1. 7,34,19. शुक्र 10,43,9. Tochter *der Sonne* 7,69,4. चक्र 4,16,12. 6,56,2. Wagen 5,31,11. कृरितः 1,121,13. 9,64,9. एतश 8,1,11. 9,63,8. — 2) *Sonnenlicht, Sonnenschein.* Um *Sonnenschein* oder *Licht* (und Wasser) kämpfen die Götter für die Menschen, aber auch diese unter sich; also in diesem Fall so v. a. *heiteres, freies Dasein* (vgl. उरु, वरीयस् u. s. w.): स्वश नो सातये धाः ṚV. 3,31, 19. स्वः मनिष्यवः 1,131,2. सुसवासः स्वरुषा देवीः 3,34,8. 6,60,2. 73, 3. इयं स्वश धीमहि 7,66,9. 1,168,2. घस्मांकेभिर्नृभिरत्रा स्वर्नय 8,15,12. य घादिः स्वर्नृभिः 46,8. 9,4,2. 9,9. 76,2. कृणो वृत्रे वया स्वः 8,78,4. घस्मिंल्लोके स्वर्कृतम् 9,113,7. 10,121,8. Indra's *Glanz* 8,3,13. des Sonnenrosses 2,35,6. AV. 2,11,8. 4,23,6. 7,1,2. 8,9,14. 10,8,21. VS. 15,49. सूरो घकुषु *bei Tag und Nacht* ṚV. 8,81,31. स्वर्निर्यत्तः *sub dio* 1,70,8. स्वर्यत्ती *in's Freie tretend* (zum Kampf) 131,3. — 3) *der lichte Raum oben, Himmel* (auch als *Sitz der Seligen und Götter*) AK. 1,1, 3,1. 3,4,22 (23), 16. Trik. 3,4,1. H. 1525. Med. avj. 70. Halāy. 1,2. मरुत् ṚV. 3,2,7. बृहत् 10,66,4. 9. पिन्वति स्वः 5,83,4. विधातुं ज्योतिषा स्वः 8,87,3. AV. 4,11,6. 14,2. der oberste 2. 6,47,3. 9,5,14. 10,9,1. स्वरारोहतो घभि नाकमुत्तमम् 11,1,27. 13,1,7. स्वरगामाद्युष्मान्भूयासम् 18,2,45. सुवो रोहाव TS. 1,7,9,1. स्वो रुहाणाः VS. 18,51. Çat. Br. 5, 2,3,10. उत्तर VS. 20,21. Ait. Br. 3,39. Çāṅkh. Çr. 1,6,3. स्वरित्यसौ लोकः Çat. Br. 3,7,4,6. स्वरीयुः Kaṭha Up. 2,14. *Himmel der* Asura AV. 19,13,1. — स्वराक्रमेते सोमाको यदा Weber, Ind. 26. स्वर्गात्यव्यसनो मृतः Spr. (II) 6313. MBh. 14, 2840. घपि प्रयाते स्वः so v. a. *gestorben* R. 2,76,8. Bhāg. P. 3,4,4. Naiṣ. 3,1. उपरिष्टाच्च स्वर्लोको योऽयं स्वरिति संज्ञितः MBh. 3,15442. भुवः स्वश्च मेरुः Gobhil. Bhuvanak. 43. स्वर् als gen. Çiç. 3,35. स्वर्यशस् Bhāg. P. 1,10,27. स्वयूडामणि 3, 15,29. — 4) in der bekannten Opferformel (s. व्याहृति) भूर्भुवः स्वर् Çat. Br. 2,4,4,1. 3,2,1,6. 8,7,4,6. Kāṭy. Çr. 2,1,19. Lāṭ. 2,13,1. Çāṅkh. Çr. 14,16,7. ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिदम् Vaitān. 1. 2. Kauç. 55. 69. fg. 90. Taitt. Up. 1,5,1. Ind. St. 2,7. 9,103. M. 2,76. MBh. 12,10426. भूर् भुवर् स्वर् भूर्भुवःस्वर् Harīv. 14116. Mān. P. 101,28. Bhāg. P. 2,6,6. Verz. d. Oxf. H. 56,b,2. भूर्भुवःस्वर्महर्जनस्तपः सत्यम् die sieben Welten über der Erde Vaijayat. (Allah.) No. 70. — 5) N. eines Ekāha Çāṅkh. Çr. 14,19,1. — 6) = उदक Naigh. 1,4. — Die regelmässige Aussprache ist सुवर् und so wird auch in TS. und TBr. geschrieben. Çvetāçv. Up. 2,8 (= VS. 11,3). स्वरिति प्रतिष्ठा ह्ये प्रतिष्ठे ह्ये एते घन्तरे Çat. Br. 14,8,8,1.

स्वर् und स्वर् (von 1. स्वर्) m. n. gaṇa घर्चादि zu P. 2,4,31. am Ende eines adj. comp. f. घा; in Ableitungen gesteigert zu सोव° gaṇa हारादि zu P. 7,3,4. Vop. 7,1. 1) m. *a) Schall, Ton: Stimme* Naigh. 1, 11. H. 306. 1399. an. 2,465. Med. s. 95. fg. Halāy. 1,138. 5,77. स्वरेणाग्निं दधः ṚV. 1,62,4. तीव्रै सिन्धोरधि स्वरे 8,61,7. AV. 11,7,5. Ait. Br. 3,24. Çat. Br. 11,4,2,10. fg. 14,4,2,27. Pāṇ. Br. 11,5,26. वाग्यीशोच्चावचस्वरान् R. 2,81,2. स्वरवर्णोङ्गिताकारैः *Stimme* M. 8,25. मुक्तभिसमुत्स्वराः Jāṭ. 2,267. दारुण MBh. 3,16139. गायतोर्मधुरस्वरम् R. 1,4,28. 34,12. दीन 42,26. 5,23,1. Spr. (II) 2811. 4880. घार्तस्वरं विसृज्य R. Gorr. 2,66,27. क्षाम° 3,58,14. घोर 64,15. गम्भीर Saṃk. 1, 124,12. दीनस्वर° 107,19. 2,307,11. धीर Bhag. 3,48. धीरप्रशान्त° Çiç. 27,10. क्रूरस्व Spr. (II) 7313. करुण Pāṇ. 82,17. fg. तार 97,19. घाविद्ध Bhāg. P. 6,1,29. मत्तक्रौञ्च° adj. R. 2,49,12. कलक्रौञ्च° adj. 82,9. बाष्पदुष्ण° adj. R. Gorr. 2,58,34. °क्षीण 3,73,3. °मधुरता Spr. (II) 5827. स्वरश्चापि व्यरुध्यत R. 2,36,10. व्यभिद्यत R. Gorr. 2,36,10. Vaṭiṇ. Bṛh. S. 68,1. 85. गर्दभस्तरस्वरुतस्वराः स्युः 95. 69,5. मधुरस्वरविहंगमृग° 30,7. 86,15. 19. 88,11. 15. 17. 26. भिन्नीरवदीनार्तपरुषस्तामस्वराः 86,26. Rāja-Tar. 5,373. सगद्गदस्वरम् Śiç. D. 59,4. = नामासमीरण *durch die Nase entlassene Luft* Med. Verz. d. Oxf. H. 337,b,15. der प्राण ist स्वर Kauṣ. Up. 1,3,2. desgleichen घोम् 4,3. 4. Harīv. 12432. Bhāg. P. 7, 15,53. — *b) Ton* (bei der Recitation u. s. w.), unterschieden nach *seiner Stärke* in den drei Stufen प्रथम मन्द्र नीच नीचैस्तर, मध्यम, उत्तम उच्च उच्चैस्तर oder nach *Höhe* und *Tiefe* in der Tonleiter Āçv. Çr. 5, 12,8. 17,1. व्याख्या° 8,13,6. स्वाध्याय° Lāṭ. 1,8,9. प्रथम°, द्वितीय° 2,9,12. मन्द्र° 1,11,36. Schol. zu Kāṭy. Çr. 234,13. fgg. Prāṭiçāk. 3,b,1. Saṃk. 1,13,7. उच्चादि स्वरं कृत्वा नीचं पश्चात् Vaṭiṇ. Bṛh. S. 86,63. उच्चैः° adj. (Hund) 89,6. स्वरे स्वरे सप्त पवान्तराणि Lāṭ. 1,11,27. — *c) Ton* so v. a. *Accent* (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) AK. 1,1,5,5. H. 2m. Med. Halāy. 5,77. ṚV. Prāt. 3,1. fgg. मन्त्रे स्वरक्रिया Kāṭy. Çr. 1,8,16. भाषिक° 17. स्वरसंस्कारौ Nir. 2,1. ब्राह्मण°, संहिता° Comm. zu Kāṭy. Çr. 1,8,17. MBh. 3, 16773. 13, 4108 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Kār. 9 aus Kāç. zu P. 7,2,10. Schol. zu P. 6,1,158. — *d) ein musikalischer Ton, Note* (deren sieben) AK. 1,1,2,1. H. 1401. H. an. Med. Halāy. Ind. St. 1,48 (auch sechs). 2,67. VS. Prāt. 1,127. Harīv. 4635. 13940. R. 2,91,26. R. Gorr. 1,3,45. 7,94,5. Mālav. 20. Vaṭiṇ. Bṛh. S.

86,40. Mân. P. 23,51. Bhâg. P. 2,1,26. 3,12,47. Verz. d. Oxf. H. 200, b,6. Pañkat. V,43. Çiç. in LA. (III) 33,5. — *c) Vocal* H. an. Med. Hall. ṚV. Prât. 1,11. 21. 14,4. VS. Prât. 1,39. 44. 87. AV. Prât. 1,55. 93. TS. Prât. 1,3. 33 u. s. w. Lâṭ. 6,10,16. Çâṅkh. Ça. 6,1,30. Kâṭy. Ça. 10,7,6. Kâṭhân. Up. 2,22,3. MBh. 1,209. 3,16139. 14,1192. R. 2, 91,22. Vaitân. Bhp. S. 96,15. Mân. P. 23,47. Bhâg. P. 3,12,46. Verz. d. Oxf. H. 104,b,34. — *f)* Bez. *der Zahl sieben* (nach der Zahl der Noten) Vaitân. Bhp. S. 12,14. स्वरांश *ein Siebentel* Bhp. 7,9. — 2) f. आ N. der ersten Gemahlin Brahman's Pâdmottarakh. Kârttikam. 156 im ÇKDa. — 3) n. Bez. gewisser Sâman (vgl. स्वरसामन्) Çâṅkh. Br. 24, 8. 8. Lâṭ. 1,6,48. 7,3,11. Schol. zu Pañkav. Br. 4,5,1. Âçv. Ça. 8,5, 11. °पृष्ठ Çâṅkh. Ça. 11,11,3. 12,10. Lâṭ. 4,6,16. वायोः स्वरम् (v. l. स्यरम्) Ind. St. 4,235,*a*. — Vgl. अ°, ऋषि°, चतुर्थ°, तृतीय°, द्वितीय°, नि°, प्रति°, प्रथम°, भीष्मस्वरात्त, मन्द्र°, मधु°, मधुर°, मनोज्ञ°, मद्रा°, मेघ°, वि°, व्याख्या°, शिता°, श्रुक्र°, स°, सम°, स°, सोवर.

स्वरकर adj. *Stimme machend* Soç. 1,180,11.

स्वरक्षय m. *Verlust der Stimme* Karaka 8,20.

स्वरगु f. N. pr. eines Flusses Mân. P. 56,13.

स्वरघ्न m. *eine best. Krankheit der Kehle*, nach Wise vielleicht *Croup*, Soç. 1,306,15. 308,15. 2,132,14.

स्वरंकृत adj. *wohl hergerichtet:* यज्ञ ṚV. 1,162,5. — Vgl. स्वलंकृत.

स्वरचिन्ता f. *Betrachtung über die Vocale* als Titel eines Abschnittes in einem grammatischen Werke Sarvadarçanas. 136,15.

स्वरण (von 1. स्वर्) adj. *hellklingend, gut bei Stimme:* सोमानं स्वरणं कृणुहि ṚV. 1,18,1. = प्रकाशनवत् Nir. 6,10. = शब्दयितर् Mahidh.

स्वरतन्त्रोदय n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 337,*a*, No. 793; vgl. Notices of Skt Mss. 1,276 und स्वरोदय.

स्वरतन्त्र n. *ein über die magische Kraft der Laute handelndes Lehrbuch* Verz. d. B. H. No. 910.

स्वरता f. nom. abstr. zu स्वर 1) *d)* Verz. d. Oxf. H. 200,b,4. 6. — न-ष्टक्षीनविकलविकृत° nom. abstr. von °विकृतस्वर adj. *dessen Stimme geschwunden u. s. w. ist* Soç. 1,118,8. 9.

स्वरतिक्रम m. *das Uebersteigen des Himmels* so v. a. *das Gelangen nach* Vaikuṇṭha (Comm.) Bhâg. P. 11,6,10.

स्वरदीप्त adj. in der Auguralkunde *ungünstig von Seiten des Lautes, der Stimme* Vaitân. Bhp. S. 86,63. 90,3.

स्वरपत्तन n. *die Stadt der musikalischen Töne*, Bez. des Sâmaveda Tân. 1,1,116.

स्वरब्रह्मन् n. = शब्दब्रह्मन् *das in Laute gefasste* Brahman d. i. *die heilige Schrift* Bhâg. P. 1,6,33. 6,5,22.

स्वरभक्ति f. *Thetivocal*, so heisst *der einem r* (bez. *l*) *vor folgendem Consonanten nachgeschlagene vocalische Klang* ṚV. Prât. 1,17. 2,1. न संयोगं स्वरभक्तिर्विकल्पते 6,10. 13. 13,13. 14,25. TS. Prât. 2,19. 21,6. 15. रेफाद्यूष्मणि स्वरपरे स्वरभक्तिरकारस्यार्धं चतुर्थमित्येके । अन्यस्मिन्व्यञ्जने चतुर्थमष्टमं वा AV. Prât. 1,101. fg. VS. Prât. 4,16.

स्वरभङ्ग m. 1) *das Stottern* Çabdârthak. bei Wilson und N. 21 im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27. — 2) *Heiserkeit* ÇKDa. Hem. Joṅaç. 3,52.

स्वरभञ्जिन् m. *ein best. Vogel* Çabdak. im ÇKDa.

स्वरभूत adj. *vocalisch geworden* d. i. *dessen Halbvocal nebst nachfolgendem Vocal in* u *oder* i *übergegangen ist* VS. Prât. 4,36.

स्वरभेद m. 1) *Heiserkeit* H. 306. Karaka 8,20. Suçr. 2,186,1. 445,20. 507, 7. fgg. Çârṅg. Saṅh. 1,7,22. Verz. d. Oxf. H. 312,b,38. Verz. d. B. H. No. 955. 966. 975. — 2) *Verstellung der Stimme:* °भेदेन *mit verstellter Stimme* Pañkat. 190,20. — 3) *Verrath durch die Stimme:* °भेदभयात्र किंचिदूचे Pañkat. 37,25 (ed. orn. 34,8). — 4) *Verschiedenheit des Accentes* Kiç. im gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. — 5) *Verschiedenheit der musikalischen Töne* und zugleich *Heiserkeit, das Versagen der Stimme* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 37.

स्वरभैरव Titel eines Werkes Verz. d. Cambr. H. 69, Çl. 5.

स्वरमञ्जरी f. desgl.: °कार् Verz. d. Oxf. H. 164,*a*,6.

स्वरमण्डलिका f. *eine Art Laute* Çabdar. im ÇKDa. सुरमण्डलिका v. l.

स्वरयोग m. *Verbindung der Laute* so v. a. *Stimme:* धृष्ट R. 2,69,20 (nicht richtig unter योग 1) *e*) gestellt). Mṛicch. 17,6, v. l. — Vgl. स्वरसंयोग.

स्वररत्नकोश m. und स्वररत्नभाण्ड n. Titel zweier *über die musikalischen Töne handelnder Lehrbücher* Ind. St. 1,48.

स्वरलासिका f. *Pfeife, Flöte* Çabdar. im ÇKDa. — Vgl. सुरलासिका.

स्वरवत् (von स्वर) adj. 1) *klingend, laut:* वाच् Ait. Br. 3,24. — 2) *eine wohlklingende Stimme habend* Çat. Br. 14,4,4,27. — 3) *betont* Çat. Br. 11,4,2,11. यस्वराणि व्यञ्जनानि स्वरवत्तोत्पान्यतरेयः Comm. zu AV. Prât. 3,74.

स्वरविभक्ति f. *Zertheilung eines Vocals* (beim Sâman-Gesang) Pañkav. Br. 19,9,1. 2.

स्वरशास्त्र n. *ein über Laute, Stimme, Accente u. s. w. handelndes Lehrbuch* Weber, Prâtiçâkhya 72. Verz. d. B. H. No. 910. 914.

स्वरस् s. धर्म°.

1. स्वरस n. 1) *der eigene Saft, der aus irgend einem Stoff gewonnene Saft ohne andere Beimischung* Çabdak. und Ratnam. im ÇKDa. घनवदुधिं भूरि स्वरसं चन्दनो यथा MBh. 7,6613. यत्पप्रथीडनाद्द्रव्यम् स्वरस उच्यते Karaka 1,4 (Ausg. 442). Suçr. 1,5,1. 160,11. 17. 2,392,3. दुःस्पर्शा° 515,3. गोमय 281,2. Çârṅg. Saṅh. 2,1,2. दूर्वायाः (so zu lesen) Mad. p. 53. — 2) *Gefühl für die Seinigen* Spr. (II) 6190. — 3) *das Hängen an der eigenen Person, Selbsterhaltungstrieb* Jogas. 2,9. anders der Comm. — 4) *Analogie:* तपाचरः = रात्तसः निशाचरशब्दस्वरसात् ÇKDa. unter तपाचर.

2. स्वरस 1) adj. (f. आ) *gefallend, zusagend:* भार्या Kathâs. 49,218. Comm. zu TS. Prât. 5,22. — 2) m. N. pr. eines Berges Mân. P. 57, 13. Bhâg. P. 5,20,10.

स्वरसंयोग m. = स्वरयोग *Stimme* Mṛicch. 17,6. im Prâkrit Mâlav. 67,6. Çiç. 59,3 (hier die *fortlaufenden Töne* eines Gesanges).

स्वरसंक्रम m. *das Steigen und Fallen der Stimme, Modulation* Mṛicch. 44,13.

स्वरसंदर्भ m. dass. Verz. d. Oxf. H. 199,*b*, No. 472.

स्वरसंपद् f. *Wohllaut der Stimme, eine wohlklingende Stimme* Harîr. 8690. R. Gorr. 1,3,61. 15,11. 2,88,23. 3,16,16. 4,63,7.

स्वैरसंपन्न adj. *wohlklingend:* वाच् Çat. Br. 14,4,4,27. *mit einer wohlklingenden Stimme versehen* R. 1,4,3.

स्वैरसामन् 1) m. Bez. *der drei Tage vor und nach dem* Vishuvant *des* Gavâmajana, also *die letzten des ersten* und *die ersten des zweiten Halbjahrs* Schol. zu Pañcav. Br. 4,5,1. Ait. Br. 4,18. fg. Çat. Br. 12,1,2,2. 3,13. 2,1,3. 2,22. 3,10. Âçv. Çr. 8,5,10. 6,25. 7,13. 11,7,4. Pañcav. Br. 23, 16,1. 24,14,4. Lâṭj. 3, 4, 20. 4, 5, 17. Çâṅkh. Çr. 18,9, 11. 11, 11,1. Maçaka 2, 2. fgg. in Verz. d. B. H. 72. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,246,*b*.

स्वरसार Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 914.

स्वरसिंह m. desgl. Verz. d. Cambr. H. 69.

स्वरसीकृत (स्वरस + कृत) adj. zu *Saft gemacht* Kâraka 8,3.

स्वरसून् m. = स्वरघ्न Çiṅhâs. Saṅh. 1,7,79.

स्वरांश m. 1) *ein halber oder ein viertel Ton* Çabdâmṛtak. bei Wilson. — 2) *ein Siebentel* (nach den *sieben musikalischen Noten*) Varâh. Bṛh. 7,9.

स्वराज् P. 3,2,61, Schol. 1) adj. *selbst herrschend, unabhängig;* m. *Selbstherr:* Âditja RV. 7,66,6. 2,28,1. Agni 1,36,7. Indra 31,15. 61,9. स्वयंभिन्द्र स्वराळसि 3,43,5. 46,1. 49,2. सम्राळन्यः स्वराळन्य उच्यते वाम् 7, 82,2. 8,12,14. 50,2. 70,4. TS. 2,3,6,2. Baudh. P. 2,7,48. 3,26, 38. 4,19,17. 5,7,17. 8,10,24. die Marut RV. 5, 58, 1. Pârâṅjaja 7, 101,5. Brahman VP. 93. Baudh. P. 3,18,20. Vishṇu-Kṛshṇa 1,1,1. 2,6,41. MBh. 12,1509. Pañcav. 4,3,15. Manu Svâjaṁbhuva Baudh. P. 3,12,52. *ein unabhängiger Fürst* Kathâs. 96,3. *sich selbst regierend, — lenkend:* Rosse RV. 1, 181, 2. गोत्र 10,120,8. वृषभाः AV. 9, 1, 9. Soma (wenn die Lesung richtig ist) RV. 9, 83, 4. Gegens. सम्राज्ञन् Kaṭhâr. Up. 7, 25, 2. In vielen Formeln AV. 17, 1, 22. VS. 5, 24. 13, 24. 35. TS. 2, 3, 6, 2. 4, 4, 6, 1. 5, 5, 4, 1. ein Mantha TBr. 2, 7, 2, 2. Wasser Çat. Br. 5, 3, 4, 21. — 2) m. *a*) N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 14, 26, 1. — *b*) Bez. *eines best. Sonnenstrahls* VP. 236, N. 3. — 3) f. (sc. ऋच्) N. *eines Metrums mit zwei überschüssigen Silben* RV. Prâṭ. 17, 2. 4. Ind. St. 8, 132. 254. विराट्स्वराज्ञमभ्येति पश्चात् AV. 8, 9, 9. von *56 Silben* Çat. Br. 10, 5, 4, 2. von *54 Silben* Çâṅkh. Br. 17, 1. — Vgl. विराट् und स्वाराज्.

स्वराज्ञन् adj. = स्वराज्. Indra TS. 2, 3, 6, 1. 2. °राज्ञी TBr. 3, 11, 2, 1. ब्राह्मणाः Lâṭj. 3, 7, 4. विशः 9, 4, 22.

स्वराज्य n. 1) *eine unabhängige Herrschaft* RV. 1, 80, 1. 84, 10. 2, 8, 5. सवितुर्न विमन्ति स्वराज्यम् 5, 82, 2. 8, 82, 11. AV. 10, 7, 31. — 2) *das eigene Reich* R. 4, 7, 3. 7, 39, 6. Kathâs. 11, 35. 30, 141. — Vgl. स्वाराज्य.

स्वरात्त (स्वर् + घत्त) adj. 1) *vocalisch auslautend* VS. Prâṭ. 4, 27. 5, 28. Verz. d. Oxf. H. 171, *b*, 4. 6. 7. — 2) *den* Svarita *auf der letzten Silbe habend* Sarvav. Br. 3, 7.

स्वरापगा f. *der Himmelsfluss* d. i. *die* Gaṅgâ H. 1082.

स्वरार्णव (स्वर् + घ°) m. Titel einer Schrift Verz. d. Cambr. H. 69, Cl. 5.

स्वरालु (स्वर् + घालु) m. *eine best. aromatische Wurzel,* = वचा Çabdâs. im ÇKDr.

स्वराष्टक (स्वर + घ°) n. Titel einer Schrift: शौनकीय° Verz. d. Oxf. H. 164, *a*, 5.

1. स्वराष्ट्र n. *das eigene Reich* Spr. (II) 7312.

2. स्वराष्ट्र m. N. pr. 1) pl. eines Volkes MBh. 6, 356 (VP. 189). Vgl. सुराष्ट्र. — 2) eines Fürsten Mârk. P. 74, 1.

स्वरि (von 1. स्वर्; सुश्वरि Padap.) adj. *laut, lärmend:* इन्द्रः स्वरिरमित्रो ववत्ते रणाय RV. 1, 61, 9. — Vgl. स्वर्य.

स्वरित (vom caus. von 1. स्वर् und von स्वर्) 1) adj. *a*) *erklingen gemacht:* वेणु Bhâg. P. 10, 31, 14. — *b*) *betont, accentuirt* Lâṭj. 7, 8, 5. — *c*) *mit dem klingenden Tone* d. h. Svarita *versehen* RV. Prâṭ. 1, 32. 3, 3. 4. 11, 37. VS. Prâṭ. 4, 47. 89. 130. AV. Prâṭ. 1, 16. fg. 3, 57. TS. Prâṭ. 18, 5. P. 1, 3, 72. 6, 1, 185. 8, 2, 4. 6. 4, 66. Çikṣ. 1, 24. 4, 6. — 2) m. n. *der sogenannte* Svarita Âçv. Çr. 1, 2, 9. RV. Prâṭ. 3, 1. 2. 16. TS. Prâṭ. 1, 40. 10, 12. 16. 12, 9. 14, 29. VS. Prâṭ. 1, 110. fgg. P. 1, 2, 31. 37. 3, 11. — Vgl. मध्य°, सर्व° und Roth, Einl. zu Nir. LVII. fgg.

स्वरितत्व n. nom. abstr. zu स्वरित 1) *c*) und 2) Comm. zu TS. Prâṭ. 23, 17 und in allen Comm.

स्वरितर् (von 1. स्वर्) nom. sg. *Laute erschallen lassend:* (मरुतः) स्वरितार ग्रासभिः RV. 1, 166, 11.

स्वरितवत् adj. *einen* Svarita *enthaltend* VS. Prâṭ. 4, 130.

स्वरित्र adj. (f. घी) *mit guten Rudern versehen* RV. 10, 63, 10. MBh. 14, 1393.

स्वरी f. zu स्वर्य s. u. स्वर्य 1).

स्वरीयम् n. विष्णोः स्व° N. eines Sâman Ind. St. 3, 237, *a*.

स्वरु Uṇâdis. 1, 11. m. *das von einem Stamm abgeschnittene lange Holzstück, starker Pfahl; Opferpfosten* (so v. a. यूप); im Ritual *Spahn des* Jûpa AK. 3, 4, 25, 169. H. an. 2, 465. Med. r. 94. Z. f. vgl. Spr. 19, 218. fg. RV. 1, 93, 5. यत्स्वो स्वधितो रिप्रमस्ति 162, 2. 3, 8, 6. 9. 10. 4, 6, 3. मित 51, 2. स्वरूणां मितयः 7, 35, 7. पशु 3, 45, 3. AV. 4, 24, 4. 12, 1, 13. 18, 3, 12. त एतं स्वरुमपश्यन्यूपशकलम् Ait. Br. 2, 3. TS. 5, 5, 7, 1. 6, 3, 4, 9. TBr. 2, 4, 7, 10. Çat. Br. 3, 7, 4, 24. Kâtj. Çr. 1, 7, 17. 6, 4, 13. 9, 12. 10, 9, 13. Schol. zu 6, 3, 17. Nach den Lexicographen noch *Donnerkeil* AK. 1, 1, 4, 43. H. 180. H. an. Med. Halâj. 1, 56. Gaṇâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191, *b*, 1. *Pfeil* und *Opfer* AK. 3, 4, 25, 169. H. an. Med. *Sonnenschein* (*Sonnenstrahl* ÇKDr.) und *eine Art Scorpion* Çabdâmṛtak. bei Wilson. — Vgl. सु°.

1. स्वरुचि f. *eigenes Gefallen, — Wille, — Lust:* स्वरुच्या *nach eigenem Willen* Jâṅ. 2, 34. Kull. zu M. 3, 222.

2. स्वरुचि adj. *dem eigenen Willen —, der eigenen Lust folgend, sich gehen lassend* H. 355. Halâj. 2, 224. Mârk. P. 65, 5.

स्वरुस् m. = स्वरु *Donnerkeil* Nilak. zu AK. 1, 1, 4, 43 nach ÇKDr.

स्वरूप 1) n. am Ende eines adj. comp. f. घा. *a*) *die eigene Gestalt, — Form:* °धारिन् MBh. 3, 2620. स्वरूपं दिव्यमास्थाय 11977. 5, 7337. 12, 4370. विष्णु° Vishṇu's *Gestalt* Pañcat. ed. orn. 54, 16. Bhâg. P. 1, 9, 39. व्यवस्थानं °तः 2, 8, 22. 3, 2, 15. यज्ञस्वरूपधृक् 4, 1, 4. °स्थ 23, 18. 8, 8, 31 (pl.). शब्दस्य *Lautform* Schol. zu P. 1, 1, 68. शब्द° zu 39. 2, 2, 34. स्वरूपम्, पर्यायाः, विशेषाः *das Wort selbst, die Synonyme, die Unterarten* (*Species*) Sidd. K. zu 4, 4, 35. am Ende eines adj. comp.: स्त्री° *in weiblicher Gestalt* MBh. 5, 7581. घ° *gestaltlos* (Gegens. रूपवत्) Bhâg. P. 2, 6, 44. — *b*) *die eigene Beschaffenheit, Eigenthümlichkeit, Wesen, Natur, Charakter* AK. 1, 1, 2, 38. 3, 4, 26, 204. Trik. 3, 3, 145. Halâj. 5, 78. नाम्नो स्वरूपभावो हि भोभाव ऋषिभिः स्मृतः so v. a. भोस् *gilt ja gerade dasselbe wie der eigentliche Name* M. 2, 124. Jogan. 1, 3. 2, 23. 54. Verz. d. Oxf. H. 231, *b*, 3. 21. Spr. (II)

2165. 6420. Varâh. Bṛh. S. 32,16. 47,3. Kathâs. 18,215. 20,103. 24,187. 48,77. 111,97. 120,86. Mârk. P. 34,9. 51,90. 68,3. Siṃh. D. 2. Prasannar. 3,b,6. Bâlar. P. 3, 28, 27. 7, 9, 20. Pañcat. 43,12. 137,19. 145,16. 233, 11. ed. orn. 19,4. Hit. 99,12. 113,12. Z. d. d. m. G. 14,572,5. Hem. Jogaç. 4,52. स्वास्वरूप 45. पठ किंचित्कालस्वरूपम् Vet. in LA. (III) 29, 18. Madhuc. in Ind. St. 1,14,2. Comm. zu TS. Prât. 21,10. 15. 24,4. Sarvadarçanas. 31, 21. 34, 3. 17. 47, 15. fgg. 60,9. 99, 12. 17. 169, 13. 174,11. 180,3. °तस् Mârk. P. 73,3. स्वरूपमकृत्मन् so v. a. von *Natur* 134,8. स्वरूपासिद्ध so v. a. *in sich als falsch sich erweisend* (z. B. der Laut ist eine Eigenschaft, weil man ihn sieht) Tarkas. 43. fg. am Ende eines adj. comp.: पूर्व° RV. Prât. 6,11. ब्रह्म° (so lesen wir) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,76. ग्रबाह्य° 163. Pañcar. 2,3,51. 4,5. Sarvadarçanas. 174,13. — 3) adj. = बुध und मनोज्ञ (vgl. घभिरूप, प्रातिरूप und सुरूप) AK. 3,4,19,134. fehlerhaft für सरूप (so Wilson's Ausg.) Siṃhâs. 8. für सुरूप Vet. in LA. (III) 16,14. — 4) m. N. pr. eines Daitja MBu. 2,366. eines Sohnes der Sunandâ Mârk. P. 118,2. eines Schülers des Kaitanja Wilson, Sel. Works 1,135. — 5) N. pr. einer Oertlichkeit (vgl. स्वारूप) Verz. d. Oxf. H. 338,b,22. — Vgl. नील°, विधिस्वरूपवादार्थ, श्री°.

स्वरूपक am Ende eines adj. comp. = स्वरूप 1) b) Pañcar. 1,2,47.

स्वरूपता f. nom. abstr. 1) zu स्वरूप 1) a) MBu. 15,927. Bâlar. P. 7, 1,27. स्वरूपतया so v. a. *buchstäblich, in Wirklichkeit* Schol. zu Çâk. 51. — 2) स्वरूप 1) b) Siṃh. D. 40. — 3) fehlerhaft für सुरूपता Râja-Tar. 3,489.

स्वरूपत्व n. nom. abstr. zu स्वरूप 1) b) Siṃh. D. 4,4.

स्वरूपनिरूपण n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. 180,9 v. u.

स्वरूपनिर्णय m. Titel zweier Schriften Hall 129. fg. °टीका 131.

स्वरूपवत् (von स्वरूप) adj. am Ende eines comp. *die Gestalt von — habend:* स्त्री° MBu. 5,7526.

स्वरूपसंबोधन n. Titel einer Gaina-Schrift Sarvadarçanas. 34,17. fg.

स्वरूपानुसंधानस्तोत्र n. Titel einer Schrift Hall 131.

स्वरूपिन् (von स्वरूप) adj. *seine eigene* d. i. *natürliche Gestalt habend* MBu. 3,2998. *mit einer Gestalt versehen, leibhaftig* 5,7113. घर्म 14,615. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 6, Çl. 18. 11, Çl. 42. am Ende eines comp. *in der Gestalt von — erscheinend:* दैत्य° R. 7,15,31. ब्रह्म° Mârk. P. 47,4. 97,13. Bâlar. P. 5,20,16. Pañcar. 1,14,117. — Vgl. नग° (नागस्वरूपिणी zu streichen), श्री°, स्त्री°.

स्वरूपोत्प्रेक्षा f. Bez. *eines best. Gleichnisses* Siṃh. D. 291,17.

स्वरूपोपनिषद् f. N. einer Upanishad Ind. St. 1,471.

स्वरेणु f. N. pr. einer Gemahlin des Sonnengottes Taitt. 1,1,101. — Vgl. सुरेणु 2) b) und सरेणू.

स्वरोचस् s. u. 2. स्वरोचिस् 1).

स्वरोचिष Mârk. P. 61,4 fehlerhaft für स्वा°.

1. स्वरोचिस् n. *eigenes Licht* Bâlar. P. 2,5,11. 3,8,14. 5,24,31. 9,11, 6. 31. स्वरोचिभिः Mârk. P. 63,7 wird wohl स्वरोचिर्भिः zu lesen sein.

2 स्वरोचिस् 1) adj. *durch sich selbst leuchtend* RV. 3,38,4 (v. l. स्वरोचस्). TBa. 2,7,8,1). 3,87,5. Bâlar. P. 4,24,24. 8,3,12. 9,2,15. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Gandharva Kali und der Apsaras Varûthinî Mârk. P. 63,7. fgg. — Vgl. स्वारोचिष.

स्वरोदय 1) adj. *einen Vocal nach sich habend* RV. Prât. 4,26. 5,5. — 2) n. (m. ÇKDa.) Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,129. Notices of Skt Mss. 1,276. Verz. d. Oxf. H. 337,a, No. 793 (= स्वरतन्त्रोदय). Verz. d. Cambr. H. 69. Hall 18. °विवरण 200.

स्वरोपघात s. u. उपघात 1).

स्वरोपध adj. *einen Vocal vor sich habend* RV. Prât. 6,12. 11,24.

स्वर्क adj. *schön singend:* die Marut RV. 1,88,1. 7,35,9. 38,7. पर्व-माना: VS. 19,22.

स्वर्ग (सुवर्ग TS. TBa.; vgl. P. 6,4,77, Vârtt.) 1) adj. *zum Licht —, zum Himmel gehend* (1. गा), — *führend; im Himmelslicht befindlich, himmlisch:* ब्रह्मोदनो दैवयानः स्वर्गः AV. 11,1,20. कृण्वे पन्थां पितृषु स्वर्गः 28. 20. 22. 18,4,14. 4,34,8. 9,5,16. SV. I, 5, 1,5,9 (verdorbene Stelle; vgl. स्वर्गमर्वतो ग्रगत Çâṅkh. Çr. 16,17,7). समुद्र VS. 13,31. पर्ते देवेषु गमिमा सुवर्गः TBa. 1,2,4,21. संतोषो वै स्वर्गतमः (könnte auch bedeuten *der schönste Himmel*) MBu. 12,616. Namentlich लोक (vgl. स्वर्गलोक) *Lichtwelt, Himmelsraum* AV. 8,120,3. 9,5,26. 7,4. 11,1,2. 12,3,16. fg. 18,4,2. VS. 35,22. pl. AV. 12,3,6. 18,4,4. Kâṭh. 33,7. Kaṭhop. 6,4 (सर्गेषु लोकेषु gedr.). Kauṣ. Up. 2,15. — TS. 1,5,9,4. 2,2,8, 4. 5,2,8,4. Çat. Br. 1,6,4,11. 3,8,4,16. 4,2,5,5. 6,3,3,14. एतस्मिन्नाके स्वर्गे लोके देवा ग्रसीदन् 8,6,4,1. 14,3,1,28. Ait. Br. 1,3. 8. 2,3. 6. 14. 17. Kaṭhop. 1,12. Taitt. Up. 1,3,1. Spr. (II) 741. Bâlar. P. 1,1,4. sechs Ait. Br. 4,18. sieben 5,10. neun 4,16. TBa. 1,2,3,1. Kâṭh. 33,4. Thore *des Himmels* TBa. 3,12,3,9. 4,7. Ait. Br. 3,42. Çat. Br. 6,6,3,4. — 2) m. a) *Himmel*, meist als *Aufenthalt der Götter und Seligen, himmlische Freude* AK. 1,1,1,1. H. 87. Halâj. 1,3. 5,60. 62. स्वर्ग उ त्वमपि मादयासे RV. 10,95,18 (einzige Stelle im RV.). स्वर्गो ज्योतिषावृतः AV. 10,2,31. 8,18. 9,3. 12,3,54. स्वर्गं यान्ति पथिभिर्देवयानैः 2,34,5. 18,4,2. स्वर्गं यतः पितृषु 56. 64. drei 12,3,42. — Çat. Br. 12,5,2,3. ज्ञेय° 6,4,29. Çâṅkh. Çr. 16,17,11. — Kâṭy. Çr. 1,10,10. सर्गस्वर्गापवर्गहेतु Maitrâjp. 6,30. M. 9,28. 10,122. MBu. 13,307. Vikr. 39. Spr. (II) 3815. 7314. 7317. 7320. स्वर्गे सुखमुपाश्नुते M. 12,20. 8,313. मरीयते Spr. (II) 3686. R. 1,1,95. घतप M. 3,79. तपिन् Spr. (II) 7318. स्वर्गः पठेते ग्रगतीत्तरे ऽस्मिन् 3060. लब्धप्रातमरे मन्ये स्वर्गे तव R. 1,39,8. स्वर्गादधिकां निर्वृत्तिस्थानम् Çiç. 100,17. स्वर्गमध्यरुरुत् R. 2,64,48. °सोपानपङ्क्ति Mṛcch. 51. इच्छन्ति स्वर्गम् M. 6,84. न च स्वर्गे स गच्छति 3,18. 4,235. Spr. (II) 4948. 6475. यांति 3343. M. 7,89. Vop. 25,6. ग्रायासि Spr. (II) 5736. स्वर्गं प्राप्तः MBu. 3,1736. स्वर्ग एवायं मया प्राप्तः Hit. 33,12. स्वर्गं गम् auch so v. a. *sterben* MBu. 1,6188. R. 1,1,32. ग्रा-स्था desgl. 2,64, 17. ग्रा-पद् desgl. 77,17. प्रेत्य स्वर्गे रमन्ते M. 11,6. ग्रवेत्स्वर्गम् 4,246. नारी लभते स्वर्गमुत्तमम् Spr. (II) 4548. °भाज् Hem. Jogaç. 2,72. स्वर्गं रुति M. 11,40. °द् Spr. (II) 1478. °प्रद 6038. स्वर्गाय्यते M. 3,140. 8. 103. °च्युत Spr. (II) 7315. स्वर्गाच्च क्षीयते M. 8,75. परिक्षीयते 9,284. °कोशस्य वर्धनम् Spr. (II) 4204. स्वर्गैकदेश Hit. ed. Johns. 1677. स्वर्गामृतद्वार Lalit. ed. Calc. 213,9. वैकुण्ठ Pañcat. ed. orn. 56,31. neutr.: धर्मागतेन त्यागेन स्वर्गमस्त चेत् MBu. 14,2646. — b) N. eines Ekâha Çiṅkh. Çr. 14,37,1. — Vgl. भू°, रुद्र°.

स्वर्गकाम adj. *den Himmel wünschend* Ait. Br. 2,3. Pañcav. Br. 16,3,1. 15,5. Kâṭy. 19,10. Kâṭy. Çr. 4,15,12. Kauç. 83. Ind. St. 2,299. Maitrâjp. 6,36.

स्वर्गखण्ड n. Titel des 3ten *Abschnitts* im Padmapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,12.

स्वर्गगति f. *der Gang in die Himmelswelt* Spr. (II) 2451.

स्वर्गगमन n. *das Eingehen in den Himmel, Sterben* R. 3,73,40. Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,23.

स्वर्गगामिन् adj. *in den Himmel kommend* Spr. (II) 6943. Karmalokana im ÇKDn.

स्वर्गङ्गा f. *die Gañgâ des Himmels* d. i. *die Mandâkinî* Çabdan. im ÇKDn.

स्वर्गजित् adj. *den Himmel gewinnend*, superl. MBn. 12, 3865.

स्वर्गत (स्वर् + गत) adj. *im Himmel sich befindend* Bhâg. P. 8,6,34. 10,81,12. so v. a. *gestorben* 3,16,15. MBh. 1, 6130. 6196. R. 2, 66, 4. 82,4. 83,24. 103,7. 105,32. R. Gorr. 1,44,1. 2,68,1. Kathâs. 10,8.

स्वर्गतरंगिणी f. *Himmelsstrom:* कीर्तेः स्वर्गतरंगिणीभिरभितो वैकुण्ठमाप्लावितम् Spr. (II) 1783. Bez. *der Gañgâ* Kathâs. 75,60.

स्वर्गतरु m. *ein im Himmel wachsender Baum* Spr. (II) 7498.

स्वर्गति f. *der Eingang in den Himmel* Bhâg. 9,20. MBh. 1,263. 12, 3674. so v. a. *Tod:* °गतिं प्राप्तः Harîv. 5190. R. 2,103,15. Ragh. 12,15. °गतिं प्रापितो मया Kathâs. 81,100.

स्वर्गद्वार n. 1) *Himmelsthor* ṚV. Paiṅg. 15,4. Spr. (II) 7316. die Sonne MBh. 3,136. — 2) N. pr. eines geheiligten Badeplatzes MBh. 3,7026. 8005.

स्वर्गधेनु f. *die Himmelskuh*, = कामधेनु Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,33.

स्वर्गपति m. *der Herr des Himmels* d. i. Indra H. 173. Hit. ed. Johns. 1677.

स्वर्गपथ m. *der Weg zum Himmel*, wohl Bez. *einer best. Strasse am Himmel* R. 2,80,14 (सुरपथ ed. Bomb.). 93,18 (= स्वर्गप्रदेश Comm.). — Vgl. स्वर्गमार्ग.

स्वर्गपर्वन् n. Titel des 18ten *Buches* im Mahâbhârata MBh. 1,634. — Vgl. स्वर्गारोहणपर्वन्.

स्वर्गपुरी f. *die Himmelsstadt* d. i. Amarâvatî R. Gorr. 1,46,10. 7,102,9.

स्वर्गमन n. *das Eingehen in den Himmel* so v. a. *Sterben* MBh. 8,4088.

स्वर्गमन्दाकिनी s. u. मन्दाकिनी 1).

स्वर्गमार्ग m. 1) *der Weg zum Himmel* MBh. 3,1735. Bez. *einer best. Strasse am Himmel* R. 5,3,44. Çiç. 98,18. — 2) N. pr. eines geheiligten Badeplatzes MBh. 13,1747. — Vgl. स्वर्गपथ.

स्वर्गयाण m. *der Weg zum Himmel* Ait. Br. 1,2.

स्वर्गयोनि f. *Stätte des Himmels* so v. a. *was zum Himmel führt:* दश Spr. (II) 6716.

स्वर्गराज्य n. *die Herrschaft über den Himmel, Himmelreich:* °राज्यमिव लब्धत्रयुगलमासाद्य Pañcat. 29,18.

1. स्वर्गलोक m. *die Himmelswelt* Âçv. Gṛhj. 4,4,2. MBh. 3,1753. 12, 2746 (pl.). R. 1,42,20. 60,16. Mân. P. 137,3. P. 3,3,7, Schol. — Vgl. 1. स्वर्लोक.

2. स्वर्गलोक adj. *der Himmelswelt angehörig, dort weilend* Çat. Br. 11,4,3,12. Pañcav. Br. 12,11,12. Kaṭhop. 1,13. — Vgl. 2. स्वर्लोक.

स्वर्गलोकेश m. *der Körper* (*der Herr der Himmelswelt*) Gaṇit. im ÇKDn.

स्वर्गवधू f. *eine* Apsaras ÇKDn. angeblich nach H.

स्वर्गवत् (von स्वर्ग) adj. *im Besitz des Himmels seiend* R. 5,7,62.

स्वर्गवास m. *Wohnort im Himmel* Suçr. 1,96,4. Verz. d. Oxf. H. 62,*a*,2.

स्वर्गसद् m. *ein Bewohner des Himmels, ein Gott, ein Seliger* MBh. 8,447. 15,897.

स्वर्गसरिद्वरा f. *der Himmelsfluss* d. i. *die Gañgâ* Râmây. 14,16.

स्वर्गस्त्री f. *ein himmlisches Weib, eine* Apsaras Râja-Tar. 4,380.

स्वर्गस्थ adj. *im Himmel weilend* so v. a. *gestorben* Spr. (II) 5397. R. 2,66,1. 67,5. R. Gorr. 2,122,6.

स्वर्गस्थित adj. *im Himmel weilend* so v. a. *ein Gott, ein Seliger* Spr. (II) 1585. so v. a. *gestorben* 7319.

स्वर्गह्राद adj. P. 3,2,2, Schol.

स्वर्गापगा f. *der Himmelsfluss*, Bez. *der Gañgâ* H. 1082. Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,16.

स्वर्गामिन् adj. *in den Himmel eingehend* so v. a. *sterbend* Kathâs. 29, 151. *in den Himmel eingegangen* so v. a. *gestorben* Ragh. 18,33.

स्वर्गारोहण n. *das Ersteigen des Himmels, Himmelfahrt* Wadan, Râmây. Up. 328. Verz. d. Oxf. H. 143,*b*, No. 295. 345,*b*,39. °पर्वन् Titel des 18ten *Buches* im Mahâbhârata MBh. IV, 432.

स्वर्गारोहणिक adj. *die Himmelfahrt betreffend:* °पर्वन् = स्वर्गपर्वन् MBh. IV, 433. fgg.

स्वर्गार्गल m. n. *der Riegel an der Himmelsthür* Spr. (II) 599.

स्वर्गावास m. *Himmelsbehausung* Harîv. 8347.

स्वर्गिगिरि m. *der Berg der Götter, — der Seligen* d. i. Meru H. 1032.

स्वर्गिन् (von स्वर्ग) adj. *des Himmels theilhaftig*, m. *ein Gott, — Seliger* Taitt. 1,1,5. H. 83, Schol. MBh. 3,13431. 8,2188. Harîv. 14794. R. 7,77,11. 15. 110,5. Mucch. 31. Kumâras. 2,45. Verz. d. Oxf. H. 116, *b*,28. Çiç. 193. Bhâg. P. 5,17,11. 8,8,7. 22,33. 10,64,6. 11,20,12. Schol. zu Kap. 1,58. so v. a. *heimgegangen, gestorben* Ragh. 12,17.

स्वर्गिरि m. = स्वर्गगिरि H. 1032.

स्वर्गिवधू f. *ein Weib der Götter, eine* Apsaras H. 183.

स्वर्गिस्त्री f. dass. H. 183, Schol.

स्वर्गीय (von स्वर्ग) adj. *zum Himmel in Beziehung stehend, himmlisch:* वास MBh. 13,6408. रत्नानि Harîv. 7257. युद्धयज्ञ *zum Himmel führend* 13213. कार्य so v. a. *Verbrennung eines Leichnams* R. 6,96,1.

स्वर्गौकस् m. *Himmelsbewohner, ein Gott, ein Seliger* Hariç. 1,4. Harîv. 7262. Kumâras. 1,59. Varâh. Bṛh. S. 60,18.

स्वर्ग्य, सुवर्ग्य (von स्वर्ग) adj. *zum Himmel führend, himmlisch* P. 5, 1,111, Vârtt. 2. Schol. zu P. 5,1,39 (paroxyt.). VS. 11,2. TS. 5,3,10,7. 5,4,4. आकृति Ait. Br. 1,16. 6,24. नौ Çat. Br. 3,3,3,15. Pâṅg. 3,9,3, 20. 11,4,4,5. Kâṭy. Çr. 4,14,13. स्थान so v. a. *die Seligkeit verschaffend* VS. Paiṅg. 8,37. M. 2,37. 4,13. 5,43. Spr. (II) 3455. MBh. 1,2309. Harîv. 7268 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 1,44,63. R. Gorr. 1,4,4. 36,9. Suçr. 1,3,15. Bhâg. P. 4,12,44. 6,11,4. 8,4,14. *des Himmels theilhaftig* Mân. P. 24,7. स्वर्ग्यस्य (स्वर्गस्य?) लोकस्य गमनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,246,*b*. स्वर्ग्यं सेतुयाम desgl. ebend. सु° Çat. Br. 10,5,3,5. M. 5,104. 8,127. Spr. (II) 1559. Bhâg. 2,2. R. 2,82,13. 5,91,12.

स्वर्चक्षस् adj. *aussehend wie Licht* ṚV. 9,97,46.

स्वर्चन adj. zur Erklärung von स्वर्क Nir. 11,14.

स्वर्चनस् adj. etwa *angenehm wie das Himmelslicht* oder *dem Himmel gefällig* RV. 3,34,5.

स्वर्चि adj. *schön strahlend* RV. 2,3,2. zur Erklärung von स्वर्क Nir. 11,14.

स्वर्जि f. = सर्जि *Natron* H. 945. Suçr. 2,516,20. स्वर्जिन् m. Râǵân. 6,252.

स्वर्जिक m. dass. Râǵân. 6,252. f. घा dass. H. 945. Mad. 2,69. Suçr. 1,227,18. 2,453,18. 454,17. Çiñç. Saṁh. 2,6,11. 3,11,28.

स्वर्जिकाक्षार m. dass. H. 945. Suçr. 1,227,19.

स्वर्जिक्षार m. dass. Râǵân. 6,252. Suçr. 2,496,2.

स्वर्जित् 1) adj. *Licht —, Sonne —, Himmel gewinnend, verschaffend* RV. 2,21,1. 3,27,2. 10,167,2. AV. 13,2,30. 17,1,1. यज्ञ VS. 11,8. — 2) m. *a) ein best. Opfer* M. 11,74. — *b)* N. pr. eines Mannes mit dem patron. Nâgnagîta Çat. Br. 2,1,4,10.

स्वर्जेषे m. *Gewinnung von Licht* u. s. w. RV. 1,132,2.

स्वर्ज्योतिस् adj. *im Himmelslicht glänzend* VS. 5,32. बृहतः कौमुदस्य स्वर्ज्योतिर्निधनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,226,*b*.

स्वर्ण (aus सुवर्ण) 1) n. *Gold* AK. 2,9,94. 2,6,3,6 (pl.!). Trik. 2,9,31. H. 1043. Hall. 2,18. Ratnam. 87. Spr. (II) 6140. °भारिरलभ्यम् 7321. Weber, Rimat. Up. 324. Râǵa-Tar. 4,478. Bhâg. P. 4,25,14. 8,12,8. °स्तेय Verz. d. Oxf. H. 281,*b*,11. Weber, Rimat. Up. 335. °क्षरण 336. °घुर्घम् *Gold und ein Lastthier* Jâṭ. 1,210. कूट° *verfälschtes Gold* 2,207. — 2) m. n. als *Gewicht ein* Karsha *Gold:* दशस्वर्णस्य कारणात् Mṛicch. 34,18. बहुस्वर्णालक्तमूल्य Kathâs. 22,97. 35,28. °शत 33. — 3) *eine Art Röthel* (vgl. °गैरिक): °धारा: R. 7,7,15. — 4) n. Bez. verschiedener Pflanzen: *Stechapfel* ÇKDa. = गौरसुवर्णशाक Râǵân. 7,151. = नागकेसर 6,179 (dies Metrum verlangt aber सुवर्ण). — Bhâg. P. 4,6,16. — 5) m. N. eines Agni Hariv. 10467. — Vgl. रात्र° und सुवर्ण.

स्वर्णक (von स्वर्ण) 1) n. *Gold* Jâṭ. 1,296. — 2) m. *ein best. Baum* Hariv. 3843.

स्वर्णकण m. = सुवर्णकण *eine Art* गुग्गुल Râǵân. 11,111.

स्वर्णकणिका f. pl. *Goldstaub* Kâlikâ-P. 82 im ÇKDa.

स्वर्णकाय m. ein N. Garuḍa's (*einen goldenen Körper habend*) H. 231.

स्वर्णकार m. = सुवर्णकार *Goldschmied* AK. 2,10,8. Trik. 2,10,3. H. 908. Jâṭ. 1,163. R. Gorr. 2,90,14. Kathâs. 61,30. Verz. d. Oxf. H. 21,*b*, N. 3. Spr. (II) 6140. कुम्भादिस्वर्णकारता d. i. कुम्भादिकारता und स्वर्णकारता Hem. Joǵaç. 3,100.

स्वर्णकूट (°कूठ gedr.) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,40.

स्वर्णकृत् = स्वर्णकार Çabdam. im ÇKDa.

स्वर्णकेतकी f. *Pandanus odoratissimus* Râǵân. 10,70. — Vgl. सुवर्णकेतकी.

स्वर्णतीरिणिका f. = स्वर्णतीरी Dhanv. 1,90.

स्वर्णतीरी f. *eine best. Pflanze*, vulgo पितोरा, पितोळा, welche durch ihren Geruch Fliegen (पिस्सू) vertreibt, Molesw. AK. 2,4,2,3. Râǵân. 3,53. Ratnam. 80. Dhanv. 1,90. — Vgl. सुवर्णतीरी.

स्वर्णखण्ड m. n. *ein Stück Gold;* davon denom. °खण्डाय्, °यते *dazu werden:* वर्णमात्रेण शीत्यंशः स्वर्णखण्डायते कचम् Âtr. Râǵa-Tar. 12.

स्वर्णगणपति m. *eine Form des* Gaṇeça Verz. d. Oxf. H. 249,*a*,N. 4. Wilson, Sel. Works 1,20.

स्वर्णगिरि m. N. pr. eines *Berges* Çat. 1,34. — Vgl. सुवर्णगिरि.

स्वर्णगैरिक n. = सुवर्ण° *eine Art Röthel* Ratnam. 283. Suçr. 2,339,8.

स्वर्णगौरीव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284,*b*,9.

स्वर्णग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Colebr. Misc. Ess. 2,179.

स्वर्णघोष 1) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's (*goldhalsig*) MBh. 9,2577. — 2) f. घा N. pr. eines auf der Ostseite des Nâṭaka entspringenden Flusses Kâlikâ-P. 82 im ÇKDa.

स्वर्णघर्म Bez. eines best. Anuvâka Baudh. P. 11,27,31.

स्वर्णचूड m. 1) *der blaue Hölzhäher* Med. k. 124. Gaṭâdh. im ÇKDa. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,41. auch *Hahn* Wilson ohne Angabe einer Aut. — 2) N. pr. eines Yavana Hall in der Einl. zu Viśâkh. 53.

स्वर्णचूडक m. = स्वर्णचूड 1) H. an. 3,71.

स्वर्णचूल m. wohl dass. Kathâs. 65,78. 81. fg. — Vgl. सुवर्णचूल.

स्वर्णत्न n. *Zinn* (*aus Gold entstanden*) H. 1042.

स्वर्णजातिका und °जाती f. *eine Jasminart* Ratnâk. in Nigh. Pr.

स्वर्णजीवन्तिका und °न्तीवा f. *eine Art von* Givanti (vulgo कृष्णवेल oder कृष्णदोडी d. i. *Hoya viridiflora R. Br.* nach Molesw.) Râǵân. 3,31.

स्वर्णजीरी f. *eine best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 998. wohl fehlerhaft.

स्वर्णद 1) adj. *Gold spendend* Râǵa-Tar. 1,97. — 2) f. घा *Tragia involucrata* Râǵân. 9,30. fehlerhaft °दी ÇKDa. nach ders. Aut.

स्वर्णदामा f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,10.

स्वर्णदी (3. स्वर् + नदी) f. *der Himmelsfluss* d. i. *die* Gaṅgâ Spr. (II) 1443. Pâṇḍar. 1,2,5. 9. 4,70. Kshitîç. 24,16. = मन्दाकिनी AK. 1,1,1,44.

स्वर्णदीधिति m. *Feuer* (*goldstrahlig*) Trik. 1,1,66.

स्वर्णदुग्धा und °दुग्धी f. = स्वर्णतीरी Râǵân. 3,53. Dhanv. 1,90.

स्वर्णदु m. *Cassia fistula* Râǵân. 9,45.

स्वर्णद्वीप m. n. = सुवर्णद्वीप Kathâs. 36,80. 37,72. Çat. 14,193 (°दीप die Hdschr.).

स्वर्णधातु m. = स्वर्णगैरिक *eine Art Röthel* Râǵân. 13,62.

स्वर्णनाभ m. 1) *Ammonit* (Comm.) MBh. 3,1543; s. शालग्राम. — 2) *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. 1,30,7; vgl. स्वर्णलाभ.

स्वर्णनिभ n. = स्वर्णगैरिक *eine Art Röthel* Ratnâk. in Nigh. Pr.

स्वर्णपक्ष m. ein N. Garuḍa's (*goldgeflügelt*) Trik. 1,1,43.

स्वर्णपद्मा f. *die himmlische* Gaṅgâ (*goldene Lotusblüthen habend*) Çabdar. im ÇKDa.

स्वर्णपर्णी f. = स्वर्णजीवन्ती Râǵân. 3,30.

स्वर्णपाठक m. *Borax* Çabdam. im ÇKDa.

स्वर्णपारेवत n. *ein best. Fruchtbaum*, = मरुपारेवत Râǵân. 11,99.

स्वर्णपुष्प 1) m. *Cassia fistula* Râǵân. 9,45. *Michelia Champaka* (चम्पक) 10,58. — 2) f. घा *Methonica superba Lam.* Râǵân. 4,131. — 3) f. ई *Cassia fistula* Hall. 2,43. Çabdâm. im ÇKDa. = स्वर्णाली Râǵân. 4,165. = मल्लिका 198. *Pandanus odoratissimus* 10,71. in den beiden letzten Bedd. f. घा ÇKDa. nach ders. Aut. — Vgl. सुवर्णपुष्प.

स्वर्णपुष्पिका f. *Jasmin* Mad. 3,93.

स्वर्णप्रस्थ m. N. pr. eines Upadvîpa im Gambudvîpa Bhâg. P. 5, 19,30. VP. 175, N. 3.

स्वर्णफला f. *eine Art Musa* Râǵân. im ÇKDa. सुवर्णफला (gegen das Metrum) unsere Hdschrr. 11,45.

स्वर्णबिन्दु m. 1) ein N. Vishṇu's Taik. 1,1,30. — 2) N. pr. eines Tîrtha MBh. 13,1696. °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 67,*b*,5. — Vgl. सुवर्णबिन्दु.

स्वर्णभाङ् m. N. einer Sonne Schol. zu VP. 6,3,20; vgl. स्वर्णार् 2) *a*).

स्वर्णभूमिका f. *Zimmt* oder *Cassiarinde* Ratnâk. in Nigh. Pr.

स्वर्णभूषण n. = स्वर्णगैरिक *eine Art Röthel* ebend.

स्वर्णभृङ्गार m. 1) *ein goldener Wasserkrug* Râǵa-Tar. 4,475. — 2) *eine der Eclipta prostrata verwandte Pflanze* Râǵân. 4,141.

स्वर्णमण्डन n. = स्वर्णभूषण Mad. in Nigh. Pr.

स्वर्णमय (von स्वर्ण) adj. *golden* s. सर्व°.

स्वर्णमरी f. N. pr. eines Flusses Kâlikâ-P. 82 im ÇKDa.

स्वर्णमाक्षिक n. = सुवर्ण° *Schwefelkies* (zu den Upadhâtu gerechnet): किंचित्सुवर्णमाक्षिकत्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् Bhâvapr. 5; vgl. Madanav. 4,23. Râǵân. 13,85.

स्वर्णमातृ f. *eine best. Pflanze*, = मकाह्वा Râǵân. 11,26.

स्वर्णमूल m. N. pr. eines Berges Ratnâk. 12,138.

स्वर्णयूथी f. *gelber Jasmin* Mad. 3,92. Gaṇâdh. im ÇKDa. Bhâg. P. 8, 2,17. — Vgl. सुवर्णयूथी.

स्वर्णर् adj. voc. pl. स्वर्णरम् von den Marut; vielleicht missverständlich (*Männer des Himmels*) st. स्वर्णाराम् RV. 5,54,10.

स्वर्णर (स्वःनर Padap.) 1) adj. *licht, ätherisch:* Agni RV. 2,2,1. 6,15,4. 8,19,1. — 2) m. *a*) N. einer Sonne Taitt. Âr. 1,7,1. 16,1. — *b*) vielleicht N. pr. eines Mannes RV. 8,3,12; vgl. übrigens 12,2. — 3) n. *Lichtraum, Aether:* पृथा प्रसवीषे दिवो मादयासे स्वर्णरे RV. 3,54, 2. सेमर्या उप सुष्टुतिं मादयस्व स्वर्णरे 92,14. 6,39. 5,18,4. परि द्यावेव वाजेभिर्गन्वांसा स्वर्णरम् 64,1. स्वर्णरमत्तरिक्षाणि रोचना 18,65,4. Indra kommt स्वर्णरादवसे नः 4,21,1. 8,12,2. 9,70,6.

स्वर्णरम्भा f. *eine best. Pflanze*, = सुरप्रिया Râǵân. im ÇKDa. unter dem letzten Worte. — Vgl. सुवर्णरम्भा.

स्वर्णरेखा f. 1) *Goldstrich* (auf dem Probirstein) Spr. (II) 7179. — 2) N. pr. einer Vidjâdharî Hir. 63,9. 64,1. II,106.

स्वर्णरेतस् adj. = सुवर्णरेतस् *dessen Same Gold ist:* die Sonne Wasser, Râmây. Up. 313.

स्वर्णरेतस् m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Mahâroman, R. 1,71,12. Bhâg. P. 9,13,17. des Kṛtiroman R. Gorr. 1,73,11. — Vgl. सुवर्णरेतस् 2) *b*).

स्वर्णलता f. N. zweier Pflanzen, = द्योतिष्मती Râǵân. 3,70. = स्वर्णक्षीरी 81. — Vgl. सुवर्णलता.

स्वर्णलाभ m. = स्वर्णनाभ 2) R. Gorr. 1,31,9.

स्वर्णाली f. *eine best. Pflanze*, = केसपुष्पी, स्वर्णपुष्पी, vulgo सोनुली Râǵân. 4,165. स्वर्णुली ÇKDa. nach ders. Aut.

स्वर्णवज्र n. *eine Art Stahl* ÇKDa. unter वज्र.

स्वर्णवणिज् m. = सुवर्णवणिज् *Goldhändler* (*eine Mischlingskaste*) Brahmavaiv. P., Çatuṣpañcâçadadhy. 85 nach ÇKDa.

स्वर्णवर्णाभ्र f. *Terminalia Chebula* Râǵân. 11,238.

स्वर्णवर्णा f. *Gelbwurz* Râǵân. 6,198. Mad. 1,216. — Vgl. सुवर्णवर्णा.

स्वर्णवर्णाभा f. *eine best. Pflanze*, = जीवन्ती Mad. 1,12.

स्वर्णवल्कल m. *Bignonia indica* Çabdam. im ÇKDa.

स्वर्णवल्ली f. *eine best. Schlingpflanze*, = रक्तफला Râǵân. im ÇKDa.

स्वर्णविद्या f. wohl *die Kunst Gold zu machen* Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,20.

स्वर्णशिख m. = स्वर्णचूल Ratnâk. 65,18.

स्वर्णशृङ्गिन् m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,18.

स्वर्णशोफालिका f. *Cassia fistula* Çabdam. im ÇKDa. स्वर्णासे° gedr.

स्वर्णष्ठीविन् m. N. pr. = सुवर्णष्ठीविन् R. Gorr. 1,48,17.

स्वर्णसू adj. *Gold erzeugend:* गिरि Râǵa-Tar. 4,604.

स्वर्णस्थ adj. *in Gold gefasst* Pañkar. 4,5,38.

स्वर्णाकर (स्वर्ण + आकर) m. *Goldmine* Râǵa-Tar. 4,603.

स्वर्णाङ्ग (स्वर्ण + 3. अङ्ग) m. *Cassia fistula* Râǵân. im ÇKDa.

स्वर्णारि (स्वर्ण + अरि *Feind*) n. *Blei* H. 1041. *Schwefel* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

स्वर्णाह्वा (स्वर्ण + आह्वा) f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरी Râǵân. 5,52. — Vgl. सुवर्णाह्वा.

स्वर्णेति (स्वर् + नीत) adj. *in den Himmel geführt* Pañkar. 4,3,117.

स्वर्णेली s. स्वर्णाली.

स्वर्णेतर् (स्वर् + नेतर्) nom. ag. *Beförderer zum Himmel*, unter den Namen für राजन् MBh. 3,12705.

स्वर्त्, स्वर्तयति v. l. für अर्त् (गत्याम्) Dhâtup. 32,79.

स्वर्थ (d. सु + अर्थ) adj. *das richtige Ziel verfolgend* RV. 1,95,1. 141,11.

स्वर्द्, स्वर्दते (आस्वादने, संघाते, प्रीतिलिप्सोः) Dhâtup. 2,18. — Vgl. स्वद्.

स्वर्दृश् adj. *die Sonne —, das Licht schauend:* विश्वो वो यामन्भयते स्वर्दृक् *jeder Lebende* RV. 7,38,2. 83,2. 9,48,4. 76,4. 2,24,4. Götter, *die das himmlische Licht schauen*, 1,44,9. 155,5. 5,26,2. 63,2. 7,32, 22. 37,2. Soma 9,13,9. 65,11.

स्वर्देव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 53,4.

(स्वर्धामन्) सुव° adj. *im Licht heimisch* TS. 1,3,8,1.

स्वर्धिन् m. *ein guter Parteigenosse* AV. 5,20,7.

स्वर्धुनी f. *der Fluss des Himmels, die* Gaṅgâ Râǵân. 14,16. Bhâg. P. 1,1,18. 13,49. 3,8,5. 8,21,4. 9,9,14.

स्वर्नगरी f. *die Himmelsstadt* d. i. Amarâvatî: °कृता *zur H. gemacht* Ratnâk. 54,76.

स्वर्नदी f. = स्वर्णदी Râǵân. 14,16.

स्वर्पति m. *Herr des Lichts* RV. 8,44,18. 86,11. युवं हि स्थः स्वर्पती इन्द्रश्च सोम गोपती 8,19,2. *Herr des Himmels:* Indra Bhâg. P. 3,6,31.

स्वर्भाणु s. स्वर्भानु.

स्वर्भानव 1) m. *eine Art Edelstein*, = गोमेदक Râǵân. im ÇKDa. — 2) f. ई *eine Tochter des* Svarbhânu (vgl. Harîv. 1475) MBh. 1,3150.

स्वर्भानु (सुव°) m. N. eines die Sonne (und den Mond) verfinsternden Dämons, später = Râhu Uçânas. zu Unâdis. 3,33. AK. 1,1,2,28. H. 121 (स्वर्भाणु; vgl. jedoch Randglosse). Halâj. 1,49. Hit. 38. यत्ता सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः RV. 5,40,5. 6. 8. 9. Çat. Br. 5,3,2,2. TS. 2, 1,2,2. Pañkav. Br. 4,5,2. 6,13. 6,6,3. Ind. St. 3,164. fg. MBh. 1,2332. 2648. 3,437. 5,3811. 7239. 6,482. 7,7874. 7936. 13,7292. Harîv. 201.

1475. 2441. 2632. 4263. 9297. R. 3,30,44. Spr. (II) 2385. 3567. Verz. d. Oxf. H. 49,b,2 v. u. VP. 147. Mâns. P. 109,64. Bhâg. P. 5,24,1. 6, 6,31. 10,61,10 (ein Sohn Kṛshṇa's). °सूदन die Sonne MBh. 3,16996.

स्वर्मेळिन् 1) adj. *wobei es den Kampf um Sonne oder Licht gilt* (vgl. unter स्वर् 2): यामि ṚV. 1,63,6. 130,8. प्रधन 169,2. — 2) m. *Kampf um Licht* ṚV. 1,56,5. 4,16,15. 8,57,5.

स्वर्मोघ्र s. Wasan, Nax. 2,349. Gjor. 114.

स्वर्य (von 1. स्वर् und स्वर्) adj. (f. या, ved. स्वर्यी) 1) *lärmend, schallend; brüllende Kuhe* ṚV. 1,121,4. 10,68,7. *wohlklingend:* योतमानां स्वर्यं (von स्वर्यी) मनोयाम् 177,2. *lärmend, tosend:* (इन्द्र) स्वरेणाद्रिं स्वर्योर्ं नवग्वैः (दस्युः) 1,62,4. य ईं ब्रह्माणं स्वर्यं सुवज्रम् 4,17,4. *schwirrend:* Donnerkeil 1,32,2. 61,6. Schleuderstein 5,30,8. 61,6. उत्तिष्ठतं स्वर्यः पर्वतेभ्यः 7,104,4. — 2) *der Stimme zuträglich* Suçr. 1,185,13. 190,2. 195,12. 213,10. स्व° 210,1.

स्वर्यत् VS. 17,68 fehlerhaft für स्वर् यत्; vgl. Çat. Br. 9,2,3,27. TS. 4,6,8,2.

स्वर्यात adj. *in den Himmel eingegangen* Bhâg. P. 3,9,13. so v. a. *gestorben* Çâṅkha in Mitâksharâ 208,10. Jâén. 2,126. MBh. 1,6804. R. 1, 71,15 (73,14 Gorr.). 3,17,31. Mâns. P. 130,21.

स्वर्याति MBh. 7,2991 fehlerhaft für शर्याति (so ed. Bomb.).

स्वर्यान n. *das Eingehen in den Himmel* so v. a. *Sterben, Tod* Verz. d. Oxf. H. 147,a,27.

स्वर्यु (von 3. स्वर्) adj. *nach Licht u. s. w. verlangend* ṚV. 3,30,20.

स्वर्लोमि N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 44,a,6 v. u.

1. स्वर्लोक m. *die Himmelswelt*, auch *eine best. Himmelswelt* (neben भुवर्लोक, भूलोक u. s. w.) Taitt. 1,1,4. Çândân. im ÇKDa. Ind. St. 2,178. 9,119. R. 1,44,37 (45,32 Gorr.). P. 3,3,6, Schol. Spr. (II) 7332. VP. 2, 7,18. Mâns. P. 42,11. 46,39. Bhâg. P. 2,5,38. 42. 6,42. 4,12,31. 8,21, 31. Pañkâr. 2,2,58. — Vgl. 1. स्वर्गलोक.

2. स्वर्लोक adj. *der Himmelswelt theilhaftig, ein Gott, — Seliger;* davon nom. abstr. °ता f. Bhâg. P. 10,10,22. — Vgl. 2. स्वर्गलोक.

स्वर्वधू f. *ein himmlisches Weib, eine Apsaras* H. 183. Kathâs. 17, 16. 19. 27,69. 52,9. 121,130.

स्वर्वत्, सुवर्वत् (von 3. स्वर्) adj. 1) *licht, himmlisch:* साति ṚV. 1, 168,7. दात्रमदितेः 185,3. युग्न 5,19,9. 35,2. राय: 22,3. ऊति 1,119,8. ज्योतिस् 6,47,8. 10,36,3. Wasser 1,10,8. 5,2,11. 8,40,10. घृष्वु वृजने स्वर्वति 10,63,15. सामन् 1,173,1. 5,34,1. कीरि 6,37,1. Götter 1,59,4. 136,3. 8,50,2. 8,86,1. 10,11,3. TS. 3,4,8,2. — 2) *das Wort* स्वर् *enthaltend:* स्वर्वन्नधिनं सोकविषम् N. eines Sâman Ind. St. 3,246,b. Pañkav. Br. 11,10,13. fg. Lâṭy. 7,7,25.

स्वर्वापी f. *der himmlische Teich* d. i. *die Gaṅgâ* H. 1082.

स्वर्विद्, सुवर्विद् adj. *Licht —, Sonne —, Himmel verschaffend, — gewinnend, — besitzend:* Agni ṚV. 1,96,4. 3,3,5. 10. 26,1. 10,88,1. Kauç. 4. Indra ṚV. 1,52,1. 3,51,2. die Açvin 8,8,7. Soma (vgl. 9, 39,4) 9,48,5. 9,8,9. 21,1. 86,3. 94,2. 101,10. घर्क 10,107,4. Wagen der Götter 2,23,3. 6,39,4. 7,67,3. द्युम्न 9,106,4. पितर: 97,39. मतय: 10,43,1. सूर्य: TS. 5,7,4,3. रयि *himmlisch* ṚV. 8,13,5. — 5,44,1. VS. 11,31. 17,12. TS. 4,4,12,1.

स्वर्वीथि f. N. pr. der Gattin Vatsara's Bhâg. P. 4,13,12.

स्वर्वेश्या f. *eine himmlische Buhldirne, eine* Apsaras AK. 1,1,2,47. H. 183. Spr. (II) 2203. Kâmaṅdak. 75.

स्वर्वैद्य m. du. *die beiden himmlischen Aerzte, die* Açvin AK. 1,1, 4,46. H. 181. Hariv. 607. °प्रतिम Gîr. 4,19.

स्वर्षा (स्वर् + 2. सा) VS. Pâṛ. 3,40. AV. Pâṛ. 2,69. adj. = स्वर्विद्. घाडूध ṚV. 1,61,3. Donnerkeil 100,13. Wagen der Açvin 2, 18,1. Indra 3,34,4. — 1,91,21. 7,97,7. 8,96,18. 10,8,6. 47,5. 120,8.

स्वर्षाति (स्वर् + 1. साति) f. *Gewinnung des Lichts* u. s. w. (vgl. unter स्वर् 2) und ṚV. 3,31,19): स्वर्षाता loc. ṚV. 1,131,6. 4,16,9. देवा: स्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्रे 6,17,8. स्वर्षाता यदङ्गिरसो नवा 33,4. 8, 88,2. 10,99,3.

स्वर्हण (6. सु + ह°) n. *eine grosse Verehrung* Bhâg. P. 2,16,23.

स्वर्हत् (6. सु + ह°) adj. *überaus ehrwürdig:* स्वर्हतम Bhâg. P. 3,15,21.

स्वलक्षण adj. *seine besondern specifischen Merkmale habend, mit nichts Anderem zu vergleichen, etwas für sich Besonderes* Sarvadarç. 9,8. 14,1. fgg. (2 एतेन st. नेतेन zu lesen). — Vgl. स्वालक्षण्य.

स्वलंकृत adj. *schön geschmückt* MBh. 1,6967. 3,2114. 4,2190. 5,3813. 7521. Bhâg. P. 10,46,11. — Vgl. स्वरंकृत.

स्वलता f. N. pr. einer Tochter Raudrâçva's Hariv. 1661. स्वलायला च st. स्वलदा चैव die neuere Ausg.

स्वलिङ्ग adj. *sein grammatisches Geschlecht bewahrend* AK. 2,4,2,19.

स्वलोन m. N. pr. eines Dânava Vâṛṇi-P., Gaṅgâvatarana nach ÇKDa.

स्वल्प (6. सु + अल्प) adj. (f. या) = तुच्छ AK. 3,4,10. *sehr klein, von geringem Umfange:* क्षेत्र Wasan, Nax. 1,310. अस्थि Spr. (II) 7322. Vaṭân. Bhn. S. 67,10. 69,21. 82. Werk Bhn. 1,2. H. 258. स्वल्पाङ्गुल्योर्मूलम् *der beiden kleinen Finger* AK. 2,7,30. *sehr wenig:* धनम् Suçr. 1,206,16. Spr. (II) 3899. 7272. Vaṭân. Bhn. S. 8,25. 103,4. फल 95,25. Kinder Bhn. 20,3. Kleider Kathâs. 21,114. Tage 20,88. Mâns. P. 93, 13. °गम्भीरविकृत adj. Vaṭân. Bhn. S. 86,3. *sehr kurz* von der Zeit R. 5,95,10. ad Spr. (II) 245. आयुस् Vaṭân. Bhn. S. 70,14. Râja-Tar. 4, 109. स्थिति 3,132. स्वल्पेन *in kurzer Zeit* M. 2,134. *sehr, gering, unbedeutend:* अर्घ 8,111. धर्म Bhag. 2,40. असत्य Spr. (II) 440. दान 4033. भोज्य 6314. गुण: 7324. Vaṭân. Bhn. S. 82,11. रुचिभङ्ग ad Çiç. 19. आपद् Kathâs. 18,309. आशा Râja-Tar. 4,239. बल Hit. 27,18. स्वल्पमप्यपकुर्वन्ति ये पापा: पृथिवीपतो Spr. (II) 7323. अ° *gross, geräumig:* तल्प 4019. compar. स्वल्पतर *ganz unbedeutend:* कार्य 439. स्वल्पोपायम् *sehr wenig:* द्रव्य M. 11,8.

स्वल्पर्क adj. (f. स्वल्पर्की) *sehr klein* AV. 20,136,3. *sehr schmal:* मध्य Spr. (II) 3733. *sehr wenig, — gering:* अर्थ 3715. कापुरुष: स्वल्पकेनापि तुष्यति 7109. *sehr kurz:* काल Mâns. P. 23,113.

स्वल्पकेशिन् m. *eine best. Pflanze,* = भूतकेश Çândân. im ÇKDa.

स्वल्पकेसरिन् m. *Bauhinia variegata Lin.* Râjân. im ÇKDa. (°केशरिन् gedr.).

स्वल्पज्ञातक n. *das kleine —, kürzere Gâtaka,* Titel eines Werkes des Varâhamihira (auch लघुज्ञातक und सूक्ष्मज्ञातक genannt) Uppala zu Vaṭân. Bhn. 8,3. 19,4 u. s. w.

स्वल्पतस् (von स्वल्प) adv. *ganz nach und nach, — allmählich* Spr.

(II) 3715, v. l.

स्वल्पदृश् adj. *sehr kurzsichtig* (in übertragener Bed.) Râǵa-Tar. 1,271.

स्वल्पपत्रक m. *eine best. Pflanze*, = गोरक्षक Rathn. im ÇKDa.

स्वल्पफला f. *Amoora Rohituka* (रोहितक) Râǵân. im ÇKDa. *eine Art Hapushâ* (könnte aber auch adj. sein) Râǵân. 4,116.

स्वल्पशरीर adj. *einen kleinen Körper —, eine Zwerggestalt habend* Hariv. 2,486.

स्वल्पशिलाप् (von स्वल्प + शिला), °पते *zu einem kleinen Felsen werden:* मेरुः °पते Spr. (II) 6014.

स्वल्पीभू (स्वल्प + 1. भू) *gering werden, einschmelzen:* °भूते सुचरितफले Mucc. 31.

स्वल्पेच्छ (स्वल्प + इच्छा) adj. *anspruchlos;* davon nom. abstr. °ता f. Kâraka 1,29.

स्ववग्रह (6. स + ग्रह°) adj. *leicht zurückzuhalten, — im Zaum zu halten, — zu lenken* Kâm. Nîtis. 4,15 (nach der Lesart des Comm.). 28.

स्ववत् (von स्व) adj. P. 5,2,115, Vârtt. 2, Schol. *vermögend, wohlhabend:* यो वा घर्घर्यः स्वं वेद स्ववानेव भवति TS. 3,1,8,3. ein anderes स्ववान् s. u. स्ववस्. — Vgl. स्वमत्.

स्ववर्गीय (von स्व + वर्ग) adj. *zu der eigenen* (Consonanten-) *Gruppe gehörig* VS. Pâṛ. 4,118.

स्ववश adj. (f. शा) *frei über sich verfügend, selbstständig, frei* MBh. 1,5986. 2,2411. 13,49. 14,41. R. 5,68,37. 90,26. Vikr. 37. AK. 2,6,4, 18. Sarvadarçanas. 30,22. — Vgl. स्वावश्य.

स्ववशता (von स्ववश) f. *Selbstständigkeit, Freiheit* Spr. (II) 6587.

स्ववशिनी f. *ein best. Metrum* ṚV. Pâṛ. 17,1. Ind. St. 8,107.

स्ववश्य adj. *ihm selbst* (d. i. dem Subject des Satzes) *folgsam:* यान्रोहद् रथं स्ववश्यैर्वाजिभिर्युक्तम् R. 6,19,18.

स्ववस् (6. सु + अवस्) adj. nom. स्ववान् (vgl. स्वतवस्; daher स्वज्वान् Padap.) P. 7,1,88. स्ववाँ auch vor य VS. Pâṛ. 3,135. स्ववद्धिस् P. 7,4,48, Vârtt. 2 nebst Siddh. K. zu d. St. *guten Schutz habend, — gewährend, hilfreich:* इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः ṚV. 6,47,12. fg. 10, 47,2. 131,6. सुशर्माणः स्ववसः 6,51,11. 10,92,9. स इत्सुदानुः स्ववाँ ऋतावा 6,68,8. Tvashṭar 3,54,12. Ṛbhu 4,33,8. Agni 5,8,2. 60,1. Savitar 1,35,10. Wagen der Açvin 1,118,1.

स्ववस्यु adj. *der seine Güter hütet:* यस्माकं शर्म वनवत्स्वावसुः (स्ववसुः Padap.) ṚV. 5,44,7. Agni AV. 7,50,2, wo übrigens ṚV. स्ववसम् hat.

स्ववासिन् 1) adj.: ब्रह्मद्विषः स्ववासि N. eines Sâman Ind. St. 3,217,a. — 2) f. °नी *ein halb erwachsenes, noch im Hause des Vaters weilendes verheirathetes oder unverheirathetes Frauenzimmer* AK. 2,6,4,9 (nach der Lesart von ÇKDa.). H. 512, Schol. Spr. (II) 4438; vgl. सुवासिनी.

स्वविकत्थन adj. *sich selbst lobend, prahlend* R. 3,4,28.

स्वविग्रह m. *der eigene Leib:* रामदेवो ज्वधीत्यापः स्वयमेव स्वविग्रहम् so v. a. *sich* Râǵa-Tar. 5,240.

स्वविज्ञप्त् adj. *von selbst bittend:* अग्निः ṚV. 5,87,3.

स्वविधि m. instr. °ना *auf seine (ihre) Weise* Bhâg. P. 5,9,16. *auf die geeignete Weise* Vaiju. Bṛh. S. 103,8.

स्वविषय m. 1) *das eigene Land, Heimath* MBh. 4,133. को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशः स्मृतः Spr. (II) 1947. 2521. — 2) *der eigene Bereich, — Wirkungskreis:* ते वागादयो देवाः स्वविषयप्रोतनाहेवाः Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 101.

स्वविवृक्ति f. *Ansignung:* अग्निं न स्वविवृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे so v. a. *ausschliesslich für uns* ṚV. 10,21,1.

स्ववृक्त् adj. *sich ansignend, für sich nehmend:* स्ववृक्तं हि त्वामकुर्मिन्द्र प्रभ्वं ṚV. 10,38,5. — Vgl. स्वावृक्त्.

स्ववृत्ति f. 1) *der eigene Lebensunterhalt, die eigene Existenz* MBh. 2,1951. कथं चैतान्संतातान्स्ववृत्त्या (so ed. Bomb.) क्लेशविक्लवा so v. a. *auf Kosten, — mit Hintansetzung des eigenen Lebens* 1,6350. Kâm. Nîtis. 13,50 (pl.). — 2) *Selbstständigkeit, Unabhängigkeit:* स्ववृत्तिर्भूषणं पुंसाम् Spr. (II) 2921.

स्ववृष्टि adj. *den Regen für sich behaltend* ṚV. 1,52,5. 14.

स्वश m. pl. N. pr. eines Volkes Bunsen, Intr. 302. wohl fehlerhaft für खश, wie schon B. vermuthet.

स्वशिरस् Hariv. 7429 fehlerhaft für स्वःशिरस्.

स्वशोचिस् adj. *von selbst strahlend* ṚV. 6,66,6.

स्वशन्द (स्व + शन्द) adj. *von selbst schimmernd* ṚV. 1,52,9.

स्वशूडामणि m. *das Diadem des Himmels* Bhâg. P. 3,15,39.

स्वश्राघा f. *Selbstlob;* अस्वश्राघ adj. *kein Selbstlob enthaltend:* अस्वश्राघान्यनिन्दता aufzulösen in अस्वश्राघता und अनन्यनिन्दता H. 68.

स्वश्व adj. P. 6,2,119, Schol. *gute Rosse habend, wohlberitten, wohlbespannt* ṚV. 1,84,6. 125,2. 4,2,4. 4,8. 29,2. 42,5. Wagen 1,117,2. 4,45,7. सोवश्यं यो वनवत्स्वर्यः *der mit guten Rossen das Rennen gewinnt* 6,33,1. die Marut 7,56,1. Açvin 68,1. 69,2. Sindhu 10,75,8. — Vgl. सोवश्य fgg.

स्वश्वयु (von स्वश्व) adj. *sich als Renner zu zeigen begierig* ṚV. 8,45,7.

स्वश्विय s. स्वश्व्य.

स्वश्व्य (von स्वश्व) n. *gute Rosszucht, Besitz trefflicher Rosse; Reitkunst, Fahrkunst* ṚV. 1,93,2. 162,22. 180,9. 2,1,5. 3,26,8. 35,8. 8,65, 17. 10,113,10. Âçv. Ça. 10,8,4. वहेस्वा सु स्वश्व्यम् so v. a. *zeige deine Kunst als Rosselenker* ṚV. 8,26,23. स्वैश्विय TS. 3,5,8,3. — Vgl. सोवश्य.

स्वःशिरस् adj. *dessen Haupt der Himmel ist* Hariv. 7429 nach der Lesart der neueren Ausg.

स्वष्ट्र adj. *mit gutem Stachel bewaffnet* ṚV. 10,42,5.

स्वसंयुक्त adj. *mit ihm selbst verbunden* Siṃh. D. 11,2.

1. स्वसंविद् f. *die Erkenntniss des eigenen d. i. wahren Wesens* Bhâg. P. 1,13,33.

2. स्वसंविद् adj. *der sich nur selbst erkennt* Bhâg. P. 10,16,46. = अगोचर Comm.

स्वसंवृत adj. *auf seiner Hut seiend* M. 7,104. vielleicht fehlerhaft für सुसंवृत.

स्वसंवेदन n. *eine aus sich selbst geschöpfte Erkenntniss* Hem. Joṇaç. 1,4. Wassiljew 295. 310. fg. 323. 332.

स्वसंवेद्य adj. *nur der eigenen Person verständlich* Râǵa-Tar. 5,356. Daçak. 65,2. Pañcân. 4,4,5.

स्वसंस्थिता f. *das Verbundensein mit sich* so v. a. *das Fürsichstehen, Alleinsein* Ind. St. 4,137.

स्वसदृश adj. (f. शा) *der eigenen Person ähnlich, — entsprechend:* स-

दृशाभ्यां स्वसदृशे (स्व auf सदृशाभ्याम् zu beziehen) मुते सं दातुमर्हसि R. Gorr. 1,72,24. पौराणां नृपस्त्रीणामेतत्स्वसदृशं वचः 2,121,4. स्वसदृशमुवाच 5,68,33. Rāja-Tar. 3,433.

स्वसमान adj. dass.: धर्षितेन स्वयं त्रातुं विक्रमादित्यभूभुजा। निर्दिष्टः स्वसमानत्वं (स्व auf विक्रमादित्य zu beziehen) शाधि नः पृथिवीमिमाम् Rāja-Tar. 3,243.

स्वसमुत्थ adj. 1) *im Selbst entstehend, — entstanden:* यद्येषः स्वसमुत्थेन (स्व auf एषः zu beziehen) वह्निना नाशमृच्छति Spr. (II) 3164. — 2) *durch sich selbst entstanden, — seiend* so v. a. *natürlich:* चतुर्णामपि दुर्गाणां स्वसमुत्थानि त्रीणि तु। चतुर्थं कृत्रिमं दुर्गम् Mahāv. P. 49,41.

स्वसंभव adj. *aus dem Selbst* (auf das grammatische Subject zu beziehen) *entstanden* Bhāg. P. 3,28,40.

स्वसंभूत adj. *aus sich selbst entstanden* Kathās. 53,167.

स्वसंमुख adj. *zu sich selbst gekehrt:* कर्तो Verz. d. Oxf. H. 202,b,30.

स्वसृ Unādis. 2,97. Çiksh. 2,9. f. Declination P. 6,4,11. Vop. 3,66. *Schwester* AK. 2,6,4,29. H. 853. 9. Hall. 2,353. bildlich von *zusammengehörigen (weiblich benannten) Sachen.* ṚV. 1,62,10. 64,7. 71,1. देवानाम् 2,32,6. आदित्यानाम् 3,90,15. स्वसुर्नारः 6,55,4: 5. 10,108,9. AV. 1,28,4. 3,30,3. VS. 3,37. Çat. Br. 1,7,4,2. 2,6,2,9. Ait. Br. 3,37. sieben ṚV. 1,191,14. 10,5,3. Vāsāh. 11,4. dreissig (die Tage) TS. 4,3,44,2. fünf (die Jahreszeiten) ebend. zehn (die Finger) Naish. 2,5. ṚV. 3,1,3. 11. 29,13. 4,6,5. 9,1,7. 65,1. 71,5. 91,1. Morgen und Nacht 1,113,3. 124,8. 185,5. 4,52,1. 10,127,3. Gewässer 3,33,9. 4,22,7. 6,61,9. 9,82,3. Sonnenrosse 1,164,3. 7,66,15. von Thieren Çiksh. Ça. 15,17,17. — M. 2,50.133. MBh. 1,5905.6201. R. 1,54,9. Spr. (II) 4809. 7341. Kathās. 39,103. Bhāg. P. 1,14,27. 4,3,10. स्वसृघ्न Weber, Rāmat. Up. 356. — Vgl. पितुःष्वसृ, पितृ°, मातुः°, मातृ°, यम°, शमन°, मत्त°, श्वत्त°.

स्वैसर् (स्व + सर्, im Padap. ohne Avagraha) n. 1) *Hürde, Stall;* = गृह Naish. 3,4. ṚV. 1,3,6. वत्सं न स्वसरेषु धेनवः 2,2,2. 34,8. 5,62,2. 8,77,1. SV. 1,5,2,8,2; vgl. AV. 7,22,2. — 2) *gewöhnter Ort, Wohnplatz, Wohnung:* इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे ṚV. 3,60,6. °रस्य पत्नी *Hausherrin* 61,4. पतिः Çat. Br. 4,3,4,20. पुवो रथः प्रति स्वसरमुप याति पीतये ṚV. 1,66,10. 8,88,1. 1,34,7. *Nistplatz der Vögel* 2,19,2. 31,5. — 3) angeblich *Tag* Naish. 1,2. 4,2. Nir. 3,4.

स्वसर्व n. = सर्वस्व *die ganze Habe* Verz. d. Oxf. H. 128,b,19. 22.

स्वसा f. = स्वसृ *Schwester:* शक्तिं मृत्योर्घोरामिव स्वसाम् MBh. 6,3280. R. 7,12,2.

स्वसिच् adj. von *selbst ausgiessend* VS. 10,19; vgl. jedoch AV. 12,2,41.

स्वसित (√सि + स°) adj. *ganz schwarz:* स्वसितापतलोचना MBh. 1,6524.

स्वसिद्ध adj. 1) von *selbst* zu *Stande gekommen, — kommend* Bhāg. P. 7,6,25. — 2) von *Natur eigen:* बालो स्वसिद्धे रुपबर्हणीः किम् Spr. (II) 6738.

स्वसृत् adj. *den eigenen Weg gehend* ṚV. 1,61,11. 87,4.

स्वसृत्व (von स्वसृ) n. *Schwesterschaft* ṚV. 10,108,10.

स्वसेतु adj. *seinen eigenen Damm* oder *Brücke bildend:* सुपस्तरति स्वसेतुः ṚV. 10,61,16. त्वामापः परिस्रुतः परि यन्ति स्वसेतवः 8,39,10.

स्वस्तर्क (√सु + स°) adj. *ein gutes Heimweben habend* AV. 14,1,22. 2,64.

स्वस्तर m. *eine selbstbereitete Streu* (zum Sitzen oder Liegen) Āçv. Gṛhj. 2,3,7. Gobh. 3,9,11. 13. 4,2,17. 4,7. — Vgl. स्वास्तर्.

स्वस्ति (√सु + √अस्ति) Unādis. 4,180. 1) f. instr. स्वस्तिं, später auch स्वस्त्यै VS. 13,12. *Wohlsein, Glück, Gelingen* ṚV. 1,33,1. (यज्ञे) वरुणानी स्वस्तये 2,32,8. 3,10,8. 4,31,11. यामन्नहोतिरेत्रं स्वस्तौ 2,38,1. दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम् 3,38,9. Çat. Br. 1,9,4,27. ṚV. 6,22,10. 56,6. 57,6. उरुशंसा स्वस्तये 8,31,11. पथ्या 10,59,7. Çat. Br. 3,2,2,8. 4,5,4,3. AV. 12,2,11. 18,4,30. VS. 11,69. Çat. Br. 1,8,3,21. 6,6,3,1. मं नौ मेधि गोभिः सं सूरिभिः सं स्वस्ति ṚV. 5,42,4. पुण्यायां समिषा सं स्वस्ति 6,20,6. स्वस्तिभिस् als adv. so v. a. *glücklich* 1,189,2. 5,53,14. 7,1,20. — गच्छेयं स्वस्तिम् R. 4,10,32. सात्मविद्भुर्यस्वस्तये स्वस्तिरास्तु मे Bhāg. P. 4,24,33. सकललोकस्वस्तये 5,20,40. 22,3. शान्तिस्वस्तिपरायणा MBh. 1,1334. am Ende eines adj. comp.: कृतस्वस्तिरकिंचना 14,2016. Personificirt als Göttin ṚV. 4,55,3. °देवी Verz. d. Oxf. H. 23,b,4. als Kalā Wilson, Sel. Works 1,246. — 2) स्वस्ति adv. (instr.) गण स्वरादि zu P. 1,1,37. *wohl, glücklich, mit Erfolg:* पाहि तुर्वशं स्वस्ति ṚV. 1,174,9. यष्टा देवान्स्वस्ति 2,9,6. तमिदं स्वस्ति जुवे 38,9. 3,33,20. ऋषिं मंशते स्वस्ति 5,4,11. AV. 1,30,2. 4,14,5. 13,2,5. VS. 4,33. न हैनं ते स्वस्ति समश्नुवते TBr. 1,2,2,5. स्वस्ति व्रतानामिषम् TS. 2,3,4,2. Ait. Br. 2,7. 4,14. स्वस्ति प्रबुध्यामहे Çat. Br. 3,2,3,22. गच्छ MBh. 3,13789. आगमत् 5,711. व्रतत 14,710. स्वस्ति प्राप्नुहि कौन्तेय काम्यकं पुनराश्रमम् 3,11930. स्वस्ति देवि तरामि त्वाम् R. 2,55,19. स्वस्ति (so trennen wir) कृतं जुतं च 109,34. न स्वस्ति पास्यसि Bhāg. P. 3,18,3. कच्चित्स्वस्त्यास्ते 1,14,26. 33. 3,1,22. समासीनः 28,3. चरति 1,33. — 3) hieraus entspringt ein scheinbares indecl. neutrum, das als nom. und acc. gefasst werden kann. *Wohlergehen, Heil, Glück* AK. 3,4,22 (23),2. Taik. 3,4,3. H. an. 7,26. Med. avj 27. Hall. 3,101. mit dat. (gen.) P. 2,3,16. Vop. 5,16. स्वस्ति न इन्द्रः ṚV. 1,89,6. स्वस्ति भूमि नो भव AV. 12,1,22 (ähnlich aber auch वेदः स्वस्तिः 7,28,1. TS. 3,2,8,1). स्वस्ति नो धर्मं च नः 11,2,31. ज्योतिरभयं स्वस्ति ṚV. 6,47,8. कच्चिन्मधवने स्वस्ति R. 3,63,2. स्यात्स्वस्ति किं कोपयतः Bhāg. P. 4,5,11. कथं स्यात्स्वस्ति देहिनाम् 14,9. स्वस्ति वास्मासु दैवतः so v. a. *wir sind wohl auf* Mālav. 144,15. स्वस्ति पित्रे नो अस्तु *bene sit* AV. 1,31,4. स्वस्ति नः पथि स्यात् Çiksh. Ça. 6,13,2. Gobh. 3,8,8. स्वस्ति ते अस्तु Kāṭhaka. 1,9. MBh. 5,7232. R. 1,17,21. 28,13. R. Gorr. 1,4,28. 3,51,37. 64,4. 7,10,39. Rāgat. 5,17. Spr. (II) 7330. Vasish. Bhāṣ. S. 43,18. Kathās. 22,33. Bhāg. P. 3,13,9. 5,8,11. 18,9. स्वस्त्यस्तु सर्वभूतेषु Mahābh. P. 118,13. यदि स्वस्ति भवेत्तात सर्वेषां भुवि रक्षसाम् R. 3,11,4. स्वस्ति भूतेभ्यः MBh. 3,12228. R. 3,41,7. Mālav. 65,12. 144,22. Çiç. 28,3. 64,11, v. l. Vikr. 87,19. Vasish. Bhāṣ. S. 43,17. Bilh. 160,3. Rāja-Tar. 1,166. 4,77. Bhāg. P. 6,14,17. स्वस्ति केवलतावदम् *Glück auf!* R. 1,4,21. Bhāṭṭ. 11,21. स्वस्ति स्वस्ति Spr. (II) 1631. am Anfange eines Briefes Prab. 33,4. ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् AV. Paric. in Ind. St. 9,19. ब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्य Gobh. 3,9,4. Çiksh. Gaṇ. 1,25. Sharv. Bh. 5,10. MBh. 15,31. R. 6,31,25. वाचार्य स्व° Çiksh. Gaṇ. 2,3. 4,5. द्विजातीन्वाच्य पुण्याहं स्वस्ति चैव MBh. 5,7100. स्वस्तिवाचित (ब्राह्मण) 3,13313. स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः ṚV. 5,51,12. 10,7,1. स्वस्ति दिवास्मा अनमीवं च धेहि 14,11. स्वस्ति सविता नः कृणोतु AV. 5,40,2. 8,2,11. MBh. 3,2519. R. 2,25,3. 9 (21. fg. Gorr.). Mālav. 114,4. 129,16.

Mlkr. P. 128, 22. भद्रं वः स्वस्ति प्राप्नुत मा चिरम् R. 1,17,4. 44,62. 65, 19. स्वस्त्यापृच्छि R. Gorr. 1,67,11. स्वस्ति गविमैश्वर्यमाप्नुयात् Bhâg. P. 4,31,21. स्वस्ति पुत्र दिशतु ते R. Gorr. 2,25,22. — Vgl. सोवस्तिक.

स्वस्तिक (von स्वस्ति) 1) m. *eine best. Glück bringende Figur* (abgebildet bei Colebr. Misc. Ess. 2,209 und Burnouf, Lot. de la b. l. 625), überh. *Kreuzfigur* P. 6, 3, 118. स्वस्तिकार्धविभूषिता: Schlangen Harîv. 3934. 4433. 4440. भास्वत्स्वस्तिकेनेन्दुवर्चसा 5185. °विद्येया Schiff R. 2,80,12. fg. st. dessen स्वस्तिकचिह्नाङ्का 97,17. fg. Gorr. पद्मस्वस्तिकसंस्थितै: (गृह्मेषै:) 5,10,4. Mṛicch. 47,12. Varâh. Bṛn. S. 33,10. 50,2. 56,15. 68,46. 71. 70,10. 71,5. 88,22. Mlkr. P. 23,24. Lalit. ed. Calc. 122, 20. 402,19. Z. f. d. K. d. M. 5,450. H. 47. 1309. auf einem Globus zur Bezeichnung best. Punkte oder Stellen Golâdhy. Golar. 56. Comm. zu Âryabh. 4, 22. 30 u. s. w. — 2) m. *eine Schüssel von best. Form* MBh. 4, 2188. 7, 2930. 12, 1449. R. 6, 112, 27. Pañcar. 2, 4, 21. *ein Glück bringender Gegenstand* überh. H. an. 3, 105. Med. k. 166. — 3) m. *eine best. Stellung der Hände* (*auf der Brust gekreuzt*) Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 28. 202, *a*, 18. 25. fg. *b*, 27 (wohl स्वस्तिको कृत्व: st. स्वस्तिकाकृत्व: zu lesen). कृत्व° dass.: °दान *das Kreuzen der Hände* Bâlar. 75, 16. स्वकृत्वस्वस्तिकस्तनौ so v. a. *mit gekreuzten Händen die Brüste bedeckend* Kathâs. 108, 69. स्तनविनिहितकृत्वस्वस्तिकाभिर्वधूभि: Mâlatîm. 73, 16. बाहु° so v. a. *gekreuzte Arme* (= अंस *Schulter* Nîlak.): °विन्यस्तपीनकृत्वांशिरोधर MBh. 3, 11146. — 4) n. (sc. आसन) *eine best. Art zu sitzen* (*mit gekreuzten Beinen*) Amṛtânanda. in Ind. St. 9,30. Mlkr. P. 39,28. Pañcar. 3, 1, 17. Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, N. 1. 94, *a*, N. 2. 102, *b*, 12. 16. 234, *a*, 16. Vedântas. (Allah.) No. 130. Kull. zu M. 6, 49. स्वस्तिकासन Sarvadarçanas. 174, 5. — 5) *Kreuzverband* (an *Brust*, *Brauen*, *Ohren*, *Gelenken*) Suçr. 1, 65, 17. 21. 2, 29, 6. — 6) m. n. *ein Gebäude in Kreuzform* Ak. 2, 2, 10. H. an. 3, 105. Med. k. 166. Hall. 2, 180. Varâh. Bṛn. S. 53, 24 (vgl. die Uebersetzung). 26. चापताशतुरस्रा वृताश्च स्वस्तिकास्तथा । प्रासादा: Harîv. 8358 (wohl als adj. zu fassen). — 7) m. *ein viereckiger Platz* (चतुष्क) H. an. Med. — 8) m. *eine Art Gebäck mit vier Zipfeln* (Kârakr. zu Suçr. 1, 23) Viçva im ÇKDr. Suçr. 1, 107, 6. 2, 535, 9. — 9) m. *eine Art Knoblauch* Taitt. 2, 4, 35. m. n. *eine best. Gemüsepflanze*, *Marsilea quadrifolia* Râjân. 4, 50. Mad. 7, 55. — 10) m. *Hahn* H. ç. 191. — 11) m. *ein Wollüstling* Viçva im ÇKDr. — 12) m. N. pr. a) eines Schlangendämons MBh. 2, 806. — b) eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2567. — c) eines Dânava Harîv. 12937. — d) eines Mannes Lalit. ed. Calc. 357, 10. fgg.

स्वस्तिककर्ण adj. *mit der Figur Svastika am Ohr gezeichnet* P. 6, 3, 118.

स्वस्तिकयन्त्र n. *ein gebogenes, hakenförmiges chirurgisches Instrument* Suçr. 1, 23, 18. 24, 6. मसूरकपर्यन्ते: कण्ठे बद्धानि कीलकै: । विद्यात्स्वस्तिकयन्त्राणि मूले ऽङ्गुशनतानि च ॥ Vasiṣ. 1, 25, 6.

स्वस्तिकर m. N. pr. eines Mannes Pravarâkhy. in Verz. d. B. H. 57, 27.

स्वस्तिकर्मन् n. *das Heilbringen*, *Wohlergehenlassen*, *Segnen*, *Lohnen*: देवर्षय: सर्वे °कर्मसु तत्परा: R. 3, 35, 99.

स्वस्तिकार 1) nom. sg. „*Heil!*“ *Rufer* R. Gorr. 2, 90, 25. — 2) nom. act. a) *das Heilbringen*, *Wohlergehenlassen*: °कारे रता MBh. 1, 1334. — b) *der Ausruf* स्वस्ति *Heil*: °कारं विधाय Kathâs. 4, 103. कृत° adj. 25, 52.

स्वस्तिकाकृत्त s. u. स्वस्तिक 3).

स्वस्तिकोकृ (स्वस्तिक + 1. कृ) *kreuzen*: °कृतौ करौ Verz. d. Oxf. H. 202, *b*, 20.

स्वस्तिकृत् adj. *Glück bereitend*, *Heil bringend*: Çiva Çiv.

स्वस्तिगव्यूति adj. *glückliche Fluren habend*: Pûshan VS. 11, 18.

स्वस्तिगौ adj. *zum Glück führend*: Weg ṚV. 6, 51, 16. Ross oder Wagen 8, 56, 16.

स्वस्तिता (von स्वस्ति) f. *Zustand des Wohlseins* Ait. Br. 4, 20. 29. 6, 15.

स्वस्तिद् adj. *Wohlsein gebend*: Çiva Çiv.

स्वस्तिदा adj. dass. ṚV. 10, 17, 5. 116, 2. 152, 2.

स्वस्तिदेवी f. s. u. स्वस्ति 1) am Ende.

स्वस्तिपुर n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 7045.

स्वस्तिमत् (von स्वस्ति) 1) adj. a) *sich wohlbefindend*, *wohlbehalten*, *glücklich* ṚV. 1, 90, 5. MBh. 2, 2582. 3, 15032. 4, 1135. 5, 646. 13, 7138. 14, 2218. R. 2, 25, 19. 84, 9 (91, 11 Gorr.). R. Gorr. 2, 24, 21. 38, 44. Râgat. 2, 18. Bhâg. P. 6, 10, 27. 7, 7, 50. 9, 5, 13. 10, 7, 30. — b) *Glück bringend*: शरण ṚV. 6, 46, 9. 8, 84, 1. — c) *das Wort* स्वस्ति *enthaltend* Ait. Br. 1, 10. Çâṅkh. Br. 7, 8. — 2) f. °मती N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2630.

स्वस्तिमुख 1) adj. *das Wort „Heil“ im Munde führend*, *Glück wünschend* Med. kh. 18. — 2) m. a) *ein Brahmane* Med. — b) *Brief* (*mit* स्वस्ति *beginnend*) Taitt. 2, 8, 22. Med. Hir. 54.

स्वस्तिर्वक् adj. (acc. °वाहम्) *glücklich führend*: Wagen ṚV. 10, 101, 7. Nir. 5, 26.

स्वस्तिवाच् f. *Segensspruch*, *Glückwunsch* Spr. (II) 2749.

स्वस्तिवाचक m. dass. Bhâg. P. 9, 16, 37.

स्वस्तिवाचन 1) n. a) *eine an Brahmanen gerichtete Aufforderung ihren Segenswunsch für Unternehmungen u. s. w. auszusprechen*; diese Cerimonie beschrieben z. B. Sâṅkh. K. 21. Prâjogân. 2, *a*. — Âçv. Gṛhy. Pariç. 1, 12. MBh. 3, 13212. ब्राह्मणस्य °जीविन: Kathâs. 64, 6. Bhâg. P. 10, 8, 10. कृतबलिमङ्गल° adj. Suçr. 1, 15, 6. °मन्त्रा: Verz. d. Oxf. H. 398, *a*, No. 144. — b) Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1043. Verz. d. Tüb. H. 21. — 2) adj. = स्वस्तिवाचनं प्रयोजनमस्य gaṇa पुण्याहवाचन zu P. 5, 1, 111, Vârtt. 3.

स्वस्तिवाच्य 1) adj. *aufzufordern den Segenswunsch für Unternehmungen u. s. w. auszusprechen* Jîm. 1, 277. — 2) n. = स्वस्तिवाचन 1) a): °वाच्यं कुर्यात् Jîm. 1, 342. — 3) absol. s. u. स्वस्ति 3).

स्वस्तिवाह्न adj. = स्वस्तिवक्. Weg AV. 14, 2, 8.

स्वस्ती (von स्वस्ति) adv. in Verbindung mit यस् so v. a. स्वस्ति Sinon. K. zu P. 7, 4, 26.

स्वस्त्ययन (स्वस्ति + अयन) 1) n. sg. und pl. *glücklicher Fortgang*, *Glück*, *Gelingen*; *Glückwunsch*, *Segenswunsch*: तेभ्य: कृतं स्वस्त्ययनम् AV. 19, 9, 12. Çat. Br. 3, 3, 3, 16. करोति 13, 4, 4, 14. R. 2, 21, 15. 61. 55, 2, 4, 15, 13. Mlkr. P. 128, 30. चक्रु: देवा रामस्य तत: °क्रियाम् R. Gorr. 2, 25, 17. कृत° adj. (f. या) MBh. 5, 7100. 13, 639. R. 1, 24, 2. 6, 75, 3. Bhâg. P. 4, 3, 4. 27, 2. तं देवा: सर्वेण स्वस्त्ययनेनान्वमन्यन्त Ait. Br. 3, 26. 4, 29. Çâṅkh. Br. 3, 9. 4, 2. रुद्रं गवा यन्ते °नाय Çâṅkh. Ça. 4, 17, 1. Kauç.

8. °काम 59. Gobh. 4,5,15. 8,3. °नानि ब्रुवित्वा Âçv. Gṛhj. 2,3,13. 4,6, 18. ऊचुः स्वस्त्ययनान्यस्य R. 1,17,24 (19 Gorr.). वाचयीत *er lasse sich Glück wünschen, erbitte sich den Segen* (*mit dem Worte* स्वस्ति u. s. w.) Âçv. Gṛhj. 1,8,14. वाचयामास रामस्य वने स्वस्त्ययनक्रियाम् R. 2,25, 28. प्रास्थानिकं °नं कर्तुम् R. Gorr. 2,25,16. प्रयुज्य Ragh. 2,70. रामस्वस्त्ययनार्थम् R. Gorr. 2,25,20. — M. 5,132. R. 2,24,36. 25,44 (42 Gorr.). Mâlav. P. 128,25. — 2) adj. (f. ई) *Glück bringend, — verheissend:* पावमानीः TBr. 1,4,8,6. Âçv. Gṛhj. 2,7,12. इष्टि Çâ. 2,10,3. यज्ञ Gobh. 1,4,28. M. 1,106. MBh. 1,5127. 13,5111. Harîv. 12605. R. Gorr. 1,4, 4. Verz. d. Oxf. H. 74, a, 13. Bhâg. P. 1,3,40. 15,51. 2,6,35. 4,12,44. 23,34. 5,14,45. 6,2,7. 13,22. 8,1,32. 10,34,37. दृक् ° 3,2,13. superl. Çâṅkh. Gṛhj. 1,2.

स्वस्त्यात्रेय (स्वस्ति + घा°) m. 1) N. pr. eines alten Weisen, Liedverfassers von RV. 5,50. fg. — MBh. 1,961. 12,7594. 13,7112. Harîv. 9571. R. Gorr. 2,116,47. Verz. d. Oxf. H. 345,a,21. pl. *sein Geschlecht* Harîv. 1668. VP. 447, N. 8. — 2) *das von ihm verfasste Lied* Âçv. Çr. 6,9,6. Gṛhj. 3,11,2. — 3) *Spiegel* Lîlâv. 3,3,6.

स्वस्त्यास्तरण R. ed. Bomb. 2,81,11 nach dem Comm. = स्वस्तिकाकारमण्डलवदास्तरण; wohl nur fehlerhaft für स्पर्ध्यास्तरण.

स्वस्थ adj. (f. घा) 1) *in seinem natürlichen Zustande sich befindend, — verharrend; wohl auf, gesund* (am Körper oder an der Seele), *guter Dinge* Maitrâyaṇ. 2,7. Bhâg. 14,24. Bhâg. P. 2,7,10. 4,11,31. 28,64. 6, 16,31. 8,17,9. 11,18,27. 31,13. M. 1,53, v. l. 8,216. fg., v. l. न स्वस्था नलं प्रति बभूव सा MBh. 3,2164. सङ्गानि 16329. 16336. स्वस्थो भव 4, 1396. 13,24. 14,316. 318. Harîv. 684 (nach der Lesart der neueren Ausg.). 5187. 8024. 8281. R. 2,53,23 (स्वस्थ gedr.). 69,19. 105,36. 7, 18,17. 22,13. 29,33. 47,8. 106,11. Suçr. 1,3,6. 11,19. 54,7. 107,1. 114,11. 255,10. 2,548,6. Verz. d. Oxf. H. 357,b,7. Kâm. Nîtis. 7,33. 12, 49. Ragh. 4,14. Çâk. 191, v. l. Mâlatîm. 63,13. Uttarar. 12,7 (सुस्थ ed. Cow. 16,13). Spr. (II) 1178. 1323. 2286. 2982. 4040. 4528. 4706, v. l. 4955. 5437, v. l. 5480. Vaṛâh. Bṛh. S. 8,18. 88,34. Kathâs. 10,197. 18, 210. 22,248. 36,40. 39,192. 51,203. 60,150. 62,128. 63,173. Mâlav. P. 22,27 (gegen das Metrum सुस्थ). 39,37. Prasâd. 14,14. 20,13. Pañcat. 56,2. 106,21. 128,19. °वृत्त adj. (so der Comm., सुस्थ° der Text) *natürlich, regelrecht, normal* Kâm. Nîtis. 5,48. °क्रिय (कुञ्जर) 15,8. स्वस्थावेश Kathâs. 70,86. यथा त्रपाकुसुमेन स्फटिकमणौ रक्ते ऽस्वस्थो भवति तन्निवृत्तौ च रागशून्यः स्वस्थो भवति Comm. zu Kap. 2,23. तीर्थ *so v. a. unverletzt* Râjat. 1,40. स्थिति *so v. a. unbehelligt* Bâlar. 196,2. compar. °तर *sehr guter Dinge* R. 7,25,1. घ° *unwohl, krank, sich unbehaglich fühlend* M. 7,226. MBh. 3,2103. fg. 16750. °हृदय R. 1,9,42. °चेतस् 63,35. 7,28,16. Kâm. Nîtis. 13,60. Çâk. 31,3. 9. 33,11. Kathâs. 24,147. 33,151. 37,221. 60,150. 63,116. Bhâg. P. 3,16,10. नाति° MBh. 3,2110. अस्वस्थः संसारः *nicht natürlich, nicht in seinen Fugen* Spr. (II) 2334. — 2) *im eigenen Ich —, im Subject befindlich:* केवलं संविदं स्वस्थां मन्यन्ते Sarvadarçanas. 24,11. — Wechselt oft mit सुस्थ. प्रथितास्वस्थ Râjat. 4,31 fehlerhaft für प्रथितास्वास्थ्य.

स्वस्थता (von स्वस्थ) f. *das Wohlsein, Gesundsein, Wohlbehagen:* अल्पपानेन स्वस्थता व्रजति Pañcat. 159,17. Hem. Jocaç. 4,122.

1. स्वस्थान n. *der eigene Platz, — Ort, Heimath* Kâç. Çr. 3,5,16. 8,3,5. Gobh. 4,7,16. स्वस्थानात्र विकम्पेत MBh. 4,109. Çik. 28, v. l. Spr. (II) 4852. 5009. 7223. 7331. Mâlav. P. 18,46. Pañcat. 133,5. Hit. 25,16. Taik. 3,1,5.

2. स्वस्थान adj. *an seinem Orte befindlich* Lîlâv. 8,9,1. 3. 10,15,2. 3.

स्वस्थित adj. *selbstständig* Nal. 14,6.

स्वस्थीभू (स्वस्थ + 1. भू) *in seinen natürlichen Zustand kommen* so v. a. *nüchtern werden* Prasâd. 62,6.

स्वस्रीय (von स्वसृ) 1) m. *Schwestersohn* P. 4,1,143. AK. 2,6,1,31. H. 543. Hâlây. 2,252. TS. 2,5,4,1. M. 3,149. Jâjñ. 1,220. 3,4. MBh. 1,2449. 2765. 2,1567. 4,2343. 5,199. 6,1755. 3688. 7,2527. 2530. 7607. 12,1091. 14,1851. 16,180. R. 1,73,4 (75,5 Gorr.). Mâlav. P. 31,24. Râjat. 4,684. fg. 702. 5,213. Verz. d. Oxf. H. 16,b, N. 4. — 2) f. घा *Schwestertochter* M. 11,171.

स्वस्वध m. pl. Bez. *best. Manen* Verz. d. Oxf. H. 49,a,2. संस्वध im Index.

स्वःसरित् f. *der Himmelsfluss* d. i. *die Gaṅgâ* Bhâg. P. 3,4,26.

स्वःसामन् n. N. eines Sâman Ind. St. 3,246,a.

स्वःसिन्धु f. = स्वःसरित् Spr. (II) 127.

स्वःसुन्दरी f. *eine himmlische Schöne* d. i. *eine Apsaras* Kathâs. 85,6.

स्वःस्त्री f. dass. R. 7,31,17. Kathâs. 34,220. 77,90. 110,84. 121,224. Bhâg. P. 4,15,7. 9,5,21.

स्वःस्पन्दन m. *der himmlische* — d. i. Indra's *Wagen* Bhâg. P. 3,10,31.

स्वःस्रवन्ती f. = स्वःसरित् Verz. d. Oxf. H. 253,a,17.

स्वकृत्तिका f. *Haue, Hacke* Pañcat. 122,10. 123,15.

स्वकृत 1) adj. a) *der eigenen Person frommend* R. 5,88,20. Spr. (II) 6922. 7225. — b) *der eigenen Person* (d. i. dem Subject des Satzes) *gewogen:* गुरवः Spr. (II) 5014. — 2) n. *das eigene Wohl* Spr. (II) 6639.

स्वकेतस् m. *selbst* Hotar AV. 7,37,5; vgl. Âçv. Çr. 4,7,4. Çâṅkh. Çr. 5,10,18. Die Stelle scheint verdorben zu sein.

स्वक्ष (6. सु + यक्ष) m. *schöner Tag*, N. pr. eines Sohnes des Vishṇu von der Dakshiṇâ Bhâg. P. ed. Bomb. 4,1,7. स्वाक्ष Buan.

स्वाकार (स्व + घा°) m. *das eigene —, natürliche Wesen* Spr. (II) 3219.

स्वाकृति (6. सु + घा°) m. N. eines zu den Gaja gezählten göttlichen Wesens Verz. d. Oxf. H. 56,b,30.

स्वाकृति (6. सु + घा°) adj. *von schönem Aeussern, schön, hübsch:* Personen Spr. (II) 4263. Kathâs. 30,74. 53,59.

स्वाक्त (6. सु + यक्त) n. *gute Salbung* (der Augen) AV. 7,30,1.

स्वाक्तपाद m. = स्वाक्तपाद Gaṇîkâ. im ÇKDr.

स्वाक्षर (स्व + घ°) m. *Autographon* ÇKDr.

स्वाख्यात adj. *selbstverkündet* Vishṇ. 39. Hem. Jocaç. 4,91. °ता f. nom. abstr. 55.

स्वागत (6. सु + घा°) Bildung von Ableitungen P. 7,3,7. Vop. 7,1. 1) adj. a) *willkommen* R. ed. Schl. II, 147, Z. 3 v. u. Ind. St. 8,376,1. — b) *auf rechtlichem Wege eingegangen, — erworben:* धनानि M. 4,216. — 2) m. N. pr. a) eines Buddha Lalit. ed. Calc. 2,3. Lot. de la b. l. 126. — b) eines Kaufmanns Burnouf, Intr. 198. fg. — 3) f. घा *ein best. Metrum: 4 Mal* — ⏑ — ⏑ — ⏑ — ⏑ — — Colebr. Misc. Ess. 2,160 (VI,9. Çrut. 26. Ind. St. 8,375. fg. Kṣandom. 35. — 4) n. *die Begrüssung „will-*

kommen", *Bewillkommnung* Hit. 133. Verz. d. Oxf. H. 103, b, 23. विप्राणां स्वागतं धर्मः MBh. 13, 6444. स्वागते ऽपि कुशलं न पृच्छति Vaitân. Bau. S. 104, 19. स्वागतेनाग्रयस्तृप्ताः Spr. (II) 7334. स्वागतं ते ऽस्तु *ich rufe dir „willkommen" zu* MBh. 3, 2874. R. 1, 63, 7. 65, 18. स्वागतं ते MBh. 3, 2985. R. 1, 52, 2. 2, 50, 24. 3, 75, 14. Suçr. 1, 1, 14. Kumâras. 2, 18. Vikr. 11, 13 (मुकुन्दे). Prasn. 25, 5. Bhâg. P. 4, 7, 36. 22, 12. स्वागतं तु इति प्रोक्ता तैः MBh. 3, 2468. मर्षे स्वागतम् R. 1, 63, 19. Mudrâr. 7, 1. Çiç. 94, 20. तस्मै स्वागतं व्याहृत्य Mucch. 4. Râja-Tar. 1, 224. करु Kathâs. 7, 29. 59, 91. वि-धा 43, 16. विकित° adj. 26, 212. 63, 74. रचित° adj. 43, 79. सस्नेहकुतुकमानेन स्वागतेनाभ्यनन्दत (तया) 18, 214. 24, 122. Bhâg. P. 3, 18, 27. °प्रश्न *Erkundigung nach dem Wohlergehen* Çuk. in LA. (III) 34, 18. सुस्वागतं ते ऽस्तु MBh. 1, 3203. R. Gorr. 1, 76, 26. am Ende eines adj. comp.: सुस्वागतां वाचमुदीरयन् R. 5, 27, 35.

स्वागतिक (von स्वागत) adj. *der Jmd willkommen heisst* P. 7, 3, 7, Schol.

स्वागतीकर् (स्वागत + 1. कर्) zum *Gruss „willkommen" machen:* °कृत्य केका: Mucch. 23.

स्वागम m. = स्वागत 4): °मैः सुस्वरैः MBh. 14, 2819.

स्वाग्रयण adj. *einen guten* Âgrajaṇa (Graha) *bildend* VS. 7, 20.

स्वाङ्किक m. *Trommelschläger* Çabdar. im ÇKDa.

स्वाङ्ग (स्व + 3. अङ्ग) n. *ein Theil des eigenen Körpers, der eigene Körper* d. i. *Körpertheil, Körper in eig., nicht übertragener Bed.* VS. Prât. 2, 31. P. 4, 1, 53. fg. Çânt. 1, 9. 2, 6. 3, 2. Kâr. zu P. 4, 1, 54 (definirt; vgl. Vop. 4, 17). Jogas. 2, 40. Mucch. 55. Raghuv. 6, 2. Mâlav. 7, 4. 14, 9. 26. Spr. (II) 3710. Hem. Jogaç. 1, 30. 2, 34. Bhâg. P. 3, 31, 8. 33, 29. 5, 8, 4. 26.

स्वाङ्गि m. patron. von स्वङ्ग gaṇa स्वागतादि zu P. 7, 3, 7. Vop. 7, 9. 4.

1. स्वाचार (6. सु + आ°) m. *guter Wandel, gute Sitten* Spr. (II) 6110 (pl.). °स्थिरता 6387.

2. स्वाचार (wie oben) adj. (f. आ) *wohlgesittet* Spr. (II) 3889.

स्वाच्छन्द्य (von स्वच्छन्द) n. *Freiheit, Unabhängigkeit* Taitt. 3, 2, 27. Hall. 4, 89. Asuriy. 18, 92. abl. *freiwillig, aus eigenem Antriebe* M. 3, 31.

स्वाजीव (6. सु + आ°) adj. *guten Lebensunterhalt gewährend* nach R. 2, 56, 13.

स्वाजीव्य adj. dass. M. 7, 69. Kâm. Nitis. 4, 54.

स्वाञ्जल्यक (von स्व + अञ्जलि) n. *das Zusammenlegen seiner Hände* so v. a. *Bitten, gute Worte* MBh. 9, 2119.

स्वाढ्यंकर (6. सु + आ°) adj. *leicht reich zu machen* P. 3, 3, 127, Schol.

स्वाढ्यंकरण adj. *leicht reich machend* P. 1, 1, 72, Vârtt. 6, Schol.

स्वाढ्यंभव n. impers. *leicht reich zu werden* P. 3, 3, 127, Schol.

स्वातत (6. सु + आ°) adj. 1) *wohl gespannt:* स्वक्म ṚV. 9, 74, 3. — 2) *wohl gezielt* ṚV. 8, 66, 6.

स्वातत्त्व n. = स्वातन्त्र्य. instr. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 103. Sarvadarçanas. 89, 9. vielleicht nur fehlerhaft.

स्वातन्त्र्य (von 2. स्वतन्त्र) n. *freier Wille, Selbstständigkeit, Unabhängigkeit* Lit. 16, 3, 5. Maitrâyaṇ. 4, 2 (द्य°). 6, 22. Jâtâ. 3, 62. 190. MBh. 1, 4741. 13, 1498. Suçr. 1, 249, 10. Colebr. Misc. Ess. 1, 376. Spr. (II) 1373. 4067. 5698. 7169. 7336. Çiç. 70, 14. Kathâs. 24, 38. 45, 80. 86, 113. Verz. d. Oxf. H. 85, b, 33. Mâlav. P. 33, 4. Bhâg. P. 1, 6, 28. Nilak. 39. Sarvadarçanas. 69, 1. 2. 81, 14. 82, 7. fgg. abl. *eigenmächtig, aus freien Stücken, sponte* Kap. 3, 12. Spr. (II) 668. 2233. instr. dass. 1956. 4433. Kathâs. 40, 76. 45, 60. Schol. zu P. 1, 4, 54. Sarvadarçanas. 4, 16. 72, 8. Kull. zu M. 2, 235.

स्वातिं m. f. AK. 3, 6, 5, 38. Taitt. 3, 5, 16. 1) f. °तिं und °ती N. *des 15ten* (oder *13ten*) Nakshatra H. 112. Journ. of the Am. Or. S. 5, 335. AV. 19, 7, 3. TS. 4, 4, 10, 2. Çâṅkh. Gṛhj. 1, 26. Pân. Gaṇ. 1, 4. — स्वाति P. 4, 3, 34. MBh. 5, 3635. Harîv. 4257. R. 3, 55, 2. Vaitân. Bau. S. 21, 29. 102, 1. 105, 1. °योग 25, 5. 6. VP. 226, N. 21. Mârk. P. 33, 12. Schol. zu Kâty. Ça. 21, 3, 3. स्वात्याम् MBh. 13, 3269. Spr. (II) 6781 (v. l. स्वातौ). स्वातौ Vaitân. Bau. S. 9, 31. 10, 10. 13, 13. 25, 1. 2. स्वातेस् 4. स्वाती Matsja-P. 251, 7 (nach Aufrecht). °योग MBh. 13, 4261. चित्रास्वात्यत्तरे 6, 85. स्वात्याम् Vaitân. Bau. S. 9, 16. 23. 14, 19. 22, 2. pl.: स्वात्यो विशाखा मैत्रं च Mârk. P. 58, 33. — 2) adj. *unter diesem* Nakshatra *geboren* P. 4, 3, 34. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Ûru von der Âgnêjî Harîv. 73 (ष्याति die neuere Ausg.). VP. 98 (ष्याति der gedr. Text 4, 13, 7). — 4) f. N. pr. einer Gemahlin des Sonnengottes Taitt. 1, 1, 101. — 5) *Schwert* Dhan. im ÇKDa. — Vgl. उमा°, मेघ°, शिव°, सौवात.

स्वातिंकारी f. N. einer Genie des Ackerbaues Pân. Gaṇ. 2, 13. vielleicht स्फातिं° zu lesen.

स्वात्त s. u. स्वद् und अग्निष्वात्त. °काम Mârk. P. 657, Z. 5 v. u. fehlerhaft für स्वात्त°.

स्वात्मता f. nom. abstr. von स्वात्मन् Bhâg. P. 3, 14, 37.

स्वात्मन् (स्व + आ°) m. *das eigene Selbst* (als pron. reflex. fungirend) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 106. fg. 133. 137. 163 R. 2, 72, 22. 7, 51, 16. Spr. (II) 767. 1097. 1721. 2026. 2827, v. l. 3093. 3463. 5579. 7273. Kathâs. 13, 52. 27, 127. 74, 58. 92, 65. Râja-Tar. 1, 312. 2, 23. 5, 324. Bhâg. P. 2, 2, 35. 3, 4, 3. 16. 18. 8, 10. 14, 27. 28, 36. 6, 9, 29. 18, 74. 7, 6, 26. 13, 45. 8, 3, 4. 11, 9, 24. Pâṇ. 1, 1, 53. 3, 71. 9, 35. 2, 2, 16. Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 30. Siṃh. D. 40. 184, 10. यदि शिंशपा वृक्षत्वमतिपतेत् स्वात्मानमपि ब्रूयात् *sein eigenes Wesen* Sarvadarçanas. 8, 2. 3. Vgl. स्वमात्मानम् Mârk. P. 48, 4. Bhâg. P. 12, 11, 50.

स्वात्मनिरूपण n. oder °प्रकरण n. Titel einer Schrift Hall 104.

स्वात्मवध m. *Selbstmord* Kathâs. 5, 74.

स्वात्मसंवित्त्युपदेश m. Titel einer Schrift Hall 124.

स्वात्मानन्दप्रकरण n. = स्वात्मनिरूपण Hall 104.

स्वात्माराम 1) adj. *am eigenen Selbst Vergnügen findend, sich mit dem e. S. begnügend* Pâṇ. 1, 2, 12. — 2) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 233, b, No. 566. — Vgl. आत्माराम.

स्वात्मीभाव m. v. l. für आत्मीभाव Spr. (II) 1450.

स्वाद (von 1. स्वद्) m. *Geschmack, Wohlgeschmack* Taitt. 3, 3, 255. 448. अमृतस्वादसदृश Harîv. 1133. 7440. °द् Spr. (II) 2210. 4498. Kathâs. 65, 141. Râja-Tar. 1, 126. 3, 47. Pañcat. 253, 18. *der Reiz* eines Kunstwerks Siṃh. D. 23, 21. 39. — Vgl. महा°, सु°.

स्वादन (wie oben) 1) adj. *derjenige, welcher schmackhaft zubereitet, Koch* u. dgl. ṚV. 5, 7, 6. liesse sich auch als n. fassen. — 2) *das Schmecken* so v. a. *das Empfinden eines Kunstwerks* Siṃh. D. 24, 11. fg.

स्वादनीय (wie oben) adj. *wohlschmeckend* MBh. 11, 141. अमृत° Inscr. 1, 27 (अमृता° MBh. 3, 1740).

स्वादृ (d. सु + घा°) adj. *rücksichtsvoll* MBh. 12,8463.

स्वादुर्व (von स्वादु) n. *Wohlgeschmack, Süsse* gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122.

स्वादुस् (von 1. स्वद्) s. प्र°.

स्वादित्य 1) adj. *dem die Âditja hold sind:* °त्या घदितये स्याम Cat. Br. 1,5,4,17 (vgl. Çâṅkh. Çr. 1,6,2). — 2) n. *Huld der Âditja* Pañcav. Br. 21,10,19. Kâty. Çr. 23,3,1.

स्वादिन् (von 1. स्वद्) adj. *kostend, geniessend:* उत्सवासव° Nalod. 3,4.

स्वादिमन् (von स्वादु) m. *Wohlgeschmack, Süsse* gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122. Schol. zu Kâty. Çr. 260,7.

स्वादिष्ठ und स्वादीयस् s. u. स्वादु.

स्वादु (von 1. स्वद्) Uṇâdis. 1,1. 1) adj. (f. स्वादुी) *wohlschmeckend, gut mundend; süss* (häufig neben मधु) AK. 3,4,16,97. H. an. 2,237. Med. d. 16. ṚV. 1,84,10. पिप्पल 164, 20. फल 10, 146, 5. स्वादो पितो मधो पितो 1,187,2. रस 6,44,21. TS. 6,6,9,11. Soma ṚV. 6,47,1. 2. गोभि: स्वादुमंकर्म 8,2,3. 28. 17,6. 48, 1. 9,85,6. यव AV. 5,18,7. येन स्वादु घास्वादु च विजानाति Âit. Br. 5, 29. VS. 19, 1. MBh. 2, 1861. 3, 2835. Harîv. 11143 (pl. *Süsses*). R. 1,4,18. 9,35. 2,80,15. 97,2. 3,63,18. Suçr. 1,173,11. 190,9. Spr. (II) 1391. 1649. 1705. 4047. 6314. 7339. Varâh. Bṛh. S. 45,7. 51,2. 54, 9. 14. 34. 67. Gorâdhj. Bhuvanak. 23. Kathâs. 20,200. 21,51. 61, 40. Râja-Tar. 1,203. 217 (vom Folgenden zu trennen). Bhâg. P. 3,4,24. Hit. 35,11. *süss* als *Geschmack* (रस; gewöhnlich मधुर) R. 1,53,4. Vishṇ. 1,10,2. H. 1388. Uebertragen (= इष्ट, सुन्दर, मनोज्ञ) AK. H. an. Med. वच: स्वादो: स्वादीय: ṚV. 1,114,6. स्वादु सद्यं स्वाद्वी प्रणीति: 8,57,11. Çiç. 108,15. Spr. (II) 1537. Bhâg. P. 1,1, 19. compar. *a)* स्वादीयस् ṚV. 1,114,6. 10,120,3. घृतात्स्वादीयो मधुनश्च 8,24,30. AV. 9,6,39. TS. 3,5,10,1. Spr. (II) 1537. — *b)* स्वादुतर Kathâs. 42,11. — superl. स्वादिष्ठ *süssest, lieblichst, angenehmst:* धारा ṚV. 9,1,1. संदृष्टि 4,10,5. धीति 1,110,1. मति 136,1. गिर् 3,53,2. सुमति 8,75,4. Çat. Br. 3,9,3,25. Pañcav. Br. 8,4,5. Pâr. Gṛhj. 2,9. Daçâtas. 79,16. स्वादिष्ठं मधुन: *süsser als* Spr. (II) 7337. — 2) m. *a) Melasse* Taitt. 2,9,12. — *b) ein best. wohlriechender Stoff* (घगुरुसार) Râjân. 12,89. — *c) eine best. Pflanze,* = जीवक, मधुर u. s. w. Gaṇiṅ. im ÇKDr. — 3) f. स्वादी *Weintraube* AK. 2,4,2,26. auch स्वादु f. Bhâvapr. nach ÇKDr. — 4) n. Sidḍh. K. 248,b,12. *Wohlgeschmack, Süsse:* °गुण so v. a. *wohlschmeckend* Mahân. 25. कवि: करोति काव्यानि स्वादु जानाति पण्डित: so v. a. *Reiz* Spr. (II) 1584. — Maitrâyaṇ. 6, 10 wohl fehlerhaft für स्वाद्.

स्वादुकण्ट m. *Asteracantha longifolia Ness.* Râjân. 4,42.

स्वादुकण्टक m. *Flacourtia sapida* AK. 2,4,2,17. Râjân. 9,161. Ratnam. 205. Dhanv. 5,27. *Asteracantha longifolia Ness.* AK. 2,4,2,17.

स्वादुकन्द 1) n. *eine Arum-Art* (मुखालु) Râjân. 7,67. — 2) f. घा *Batatas paniculata* Râjân. 7,99.

स्वादुकन्दक m. *eine best. Gemüsepflanze* (केलूट) Mad. 7,79.

स्वादुकार adj. *wohlschmeckende Speisen bereitend;* m. *eine best. Mischlingskaste* MBh. 13,2384.

स्वादुका (von स्वादु) f. *Tiaridium indicum Lehm.* Râjân. 5,85.

स्वादुकाम adj. *Wohlschmeckendes —, Süsses mögend* R. 2,32,19. davon nom. abstr. °त्व n. 207,2. — 2) f. घा *Solanum indicum L.* Râjân. 4,126.

स्वादुपाकिन् adj. = स्वादुपाक Suçr. 1,215,2.

स्वादुपिण्डा f. *eine Dattelpalmenart* Râjân. 11,61.

स्वादुपुष्प 1) m. *eine best. Pflanze,* = कटभी Râjân. im ÇKDr. — 2) f. ई *Grislea tomentosa* Râjân. 6,217.

स्वादुपुष्पिका f. *eine best. Pflanze,* = डुण्डिका Mad. 1,166.

स्वादुफल 1) n. *Brustbeere* Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. घा *Judendorn* Taitt. 2,4,11. Çabdar. im ÇKDr.

स्वादुमज्जन् m. *eine auf Bergen wachsende Pflanze-Art* Gaṇiṅ. im ÇKDr.

स्वादुमांसी f. *eine best. Arzneipflanze,* = काकोली Râjân. 3,13.

स्वादुमूल n. *Möhre, Daucus Carota L.* Râjân. 7,24.

स्वादुमृदु adj. *süss und zart;* s. सौवादुमृदव.

स्वादुरस 1) adj. (f. घा) *angenehm —, süss schmeckend* Suçr. 1,175, 19. 213,5. — 2) f. घा *a) ein berauschendes Getränk* H. 902. Halâj. 2, 174. — *b) eine best. Arzneipflanze,* = वायसोली (काकोली) AK. 2,4, 8,9. *Asparagus racemosus* Râjân. 4,119. — *c) die Wurzel von Spondias mangifera* Çabdar. im ÇKDr. — *d) Weintraube* Çabdârthak. bei Wilson.

स्वादुरातिं adj. *angenehme Gaben bringend* ṚV. 8,57,14.

स्वादुलता f. *Batatas paniculata* Râjân. 7,100.

स्वादुलुङ्गी f. *eine best. Pflanze,* = मधुकर्कोटिका Mad. 6,77.

स्वादुवारि m. (sc. समुद्र) *das Süsswassermeer* H. 1075.

स्वादुमुद्ग m. *Steinsalz* Çabdârthak. bei Wilson.

स्वादुषंसद् (स्वादु + संसद्) adj. *eine erfreuliche Schaar bildend* ṚV. 6,75,9.

स्वादुसंमुद् adj. *an Leckerem sich freuend* AV. 7,60,4. 13,1,8.

स्वादूदक (स्वादु + उदक) adj. *süsses Wasser habend:* समुद्र Bhâg. P. 5,20,30.

1. स्वादमन् (von 1. स्वद्) m. *Süssigkeit, Lieblichkeit:* रसानाम् ṚV. 1,187, 5 (pl.). der Stimme 2,21,6.

2. स्वादमन् (wie oben) n. *Wohlgeschmack; leckerer Bissen oder Trank:* पितूनाम् ṚV. 1,69,2. मधु स्वाद्म दुदुक्षे धेन्वा गौ: 3,31,11. विश्वं स्वाद्म संभृतमुस्रियायाम् 30,14. स्वाद्मन्वस्तु पीतये मधूनि *sie mögen wohl schmecken* 10,29,6.

स्वाद्य (wie oben) adj. *was geschmeckt —, gekostet wird* MBh. 7,9166.

Spr. (II) 2999.

स्वादम 1) adj. *süsssauer.* — 2) m. *Granatbaum* Trik. 2,4,19.

स्वाधिष्ठान (स्व + ध°) n. 1) *der eigene Sitz, — Stätte* Comm. zu VP. 6,4,22. — 2) *Bez. eines best. mystischen Kreises* (चक्र) *am Geschlechtsglied* Verz. d. Oxf. H. 88,*b*,1 v. u. 89,*a*,34. fg. 149,*b*,29. Paṇ. 1,3,70. Ânandal. 9.

स्वाधी (6. सु + धा) adj. *sinnend, achtsam; sorgsam; verlangend:* स्तवाम त्वा स्वाध्यः RV. 1,16,9. 70,4. 71,8. 72,8. 151,1. तवं व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यः 2,28,2. 3,8,4. (यो) सत्यस्य वेध्यृतचित्स्वाधीः 4,3,4. स्तोम 5,14,6. Savitar 82,8. 6,16,7. स्वाधीभिर्ऋक्वभिर्वावशानः 32,2. 8,19,7. 43,30. Soma 48,1. 9,31,1. 101,10. 65,4. विप्रासः 86,24. 18,78,1. इन्धान एनं व्रते स्वाधीः 45,1. 61,7. 7,2,8.

स्वाधीन (स्व + ध°) adj. (f. धा) 1) *der nur von sich abhängt, frei, unabhängig* Hariv. 11298. ध° Spr. (II) 554. — 2) *worüber oder über wen man selbst verfügen kann, in der Gewalt oder im Besitz der eigenen Person stehend* MBh. 5,1432. fg. 6,5806. 12,2640. 2656. R. 2,30,33. °यौवना Daśar. 90,15. Mṛicch. 18,19. स्वाधीना वचनीयतापि किं वरं बढो न सेवाञ्जलिः 46,23. °कुशलाः सिद्धिमत्तः Çik. 64,22. Spr. (II) 538, v. l. 5572. 6052. 6789. 6808. 7338. Kathâs. 12,193. 22,75. 31,91. 37,94. 54,22. 74,60. 91,24. 103,71. 104,61. 118,121. Hit. ed. Jouns. 2588. fg. °पतिका Pratâpar. 5,*b*,2. Verz. d. Oxf. H. 129,*b*,20. °भर्तृका Sâh. D. 112. fg. ध° R. 2,30,33. Spr. (II) 3720. — Vgl. स्वायत्त.

स्वाधीनता (von स्वाधीन) f. *Freiheit, Unabhängigkeit* R. 5,81,24. Spr. (II) 1011.

स्वाध्यार्य (स्व + ध°) m. Accent im Satze gaṇa गोत्रादि zu P. 8,1,27. 57. in Ableitungen gesteigert zu सैवा° gaṇa द्वारादि zu P. 7,3,4. Vop. 7,4. *das Lesen —, Repetiren für sich, Studium* (des Veda) AK. 2,7,46. Trik. 3,2,38. H. 842. Çat. Br. 3,4,2,6. 4,6,9,5. °यो वै ब्रह्मयज्ञः 11,5,9,3. 2,1. 4. 7. °प्रयोग Âçv. Çr. 2,12,11. 13,8,6. Gaut. 1,1,4. 3,1,3. 2,1. 2. 3,1. Kâty. Çr. 26,7,58. Lâṭy. 1,5,1. 8,9. RV. Pâr. 15,4. °यमुहत्राह्म Kaṭha-Up. 1,12,1. °यमधीयानः 3,15. Kauṣ. Up. 1,1. M. 2,28. 105. 107. 167. 3,75. 81. 134. 4,17. 35. 58. 6,3. 11,1. 39. Jâṭ. 1,102. पठेत्स्वाध्यायम् 229. Bhâg. 4,28. 16,1. MBh. 1,7673. 12,4257. R. 1,1,1. 2,32,18. 64,42. Spr. (II) 6284. 7566. Varâh. Bṛ. 8,16. Brahma-P. in LA. (III) 54,7. Râjat.-Tar. 6,9. Prab. 20,13. Bhâg. P. 3,28,4. Sarvadarçanas. 55,17. fgg. 58,10. 122,22. 124,8. fgg. 154,6. 7. 169,12. 16. 173,19. °यज्ञ Spr. (II) 6717. °समय R. 4,27,10. °काल und स्वाध्यायाध्ययनकाल Kiç. zu P. 1,2,26. स्वाध्यायारम्भ Comm. zu TS. Pâr. 18,1. °भूमि M. 4,127. ध° adj. *dem Studium des Veda nicht obliegend* AK. 2,7,33. Trik. 3,3,162. Hit. 221. Hâlâs. 2,250. auch vom *lauten Lesen:* °यं भावयेत् M. 3,232. Aus Verbindungen wie diese und aus denen mit अधि-इ und पठ् hat man die Bed. *Veda* gefolgert H. 249. Hâlâs. 1,9. — Vgl. निःस्वाध्यायवषट्कार und सैवाध्यापिक.

स्वाध्यायन m. N. pr. eines Mannes, pl. *sein Geschlecht* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,6.

स्वाध्यायब्राह्मण n. Titel eines Abschnitts im Kâṭhaka Ind. St. 3, 386. fg. 391. 395. Müller, SL. 224.

स्वाध्यायवत् (von स्वाध्याय) adj. *dem Veda-Studium obliegend* Jâṭ. 1,48. 3,48. MBh. 1,1662. 6936. 13,3515. Hariv. 7223.

स्वाध्यायिन् (wie oben) 1) adj. dass. MBh. 3,922. 5,874. 14,1264. नित्य° 5,1557. 13,2036. 6425. davon nom. abstr. नित्यस्वाध्यायिता f. 6458. — 2) m. *ein in einer Stadt handelnder Kaufmann, Krämer* Trik. 2,9,27.

स्वाधरिक adj. von स्वधर gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3,7.

स्वार्न (von 1. स्वन्) 1) adj. *schallend, tönend, rauschend, rasselnd* u. s. w.: घर्वन् RV. 1,104,1. Wagen 5,70,3. 9,10,1. — 2) m. *a) Schall* u. s. w. P. 3,3,62. AK. 1,1,6,1. H. 1399. Hâlâs. 1,138. उत स्वानासो दिवि षन्त्वेषास्तिग्मायुधाः RV. 5,2,10. 25,3. उद्वे स्वानेभिरीरते 8,7,17. धनुषः AK. 2,8,3,76. वल्लकीगुण° Çiç. 4,57. — *b*) N. pr. eines der sieben Soma-Wächter VS. 4,27. — Vgl. स्वन.

स्वानन्द (स्व + धा°) m. *die Wonne über das eigene Selbst:* °पदप्राप्ति Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,27.

स्वानन्दपूर्ण m. N. pr. eines Autors, = धानन्दपूर्ण Hall 204. Verz. d. B. H. No. 613.

स्वानम (6. सु + धा°) adj. (f. धा) *leicht heranzuziehen:* ein Weib Çiç. 4,57.

स्वानि adj. von स्वन gaṇa सुतंगमादि zu P. 4,2,80.

स्वानिन् (von 1. स्वन्) adj. *schallend* RV. 3,26,5.

स्वानुभवादर्श m. Titel einer Schrift Hall 103. Notices of Skt Mss. 2,96. fg.

स्वानुभाव (स्व + ध°) m. *Genuss an —, Sinn für Besitz* Kathâs. 3, 87. man streiche demnach unter धनुभाव Bedeutung und Stelle.

स्वानुभूतिप्रकाश m. Titel einer Schrift Hall 97. °विवृति ebend.

स्वानुरूप (स्व + ध°) adj. *dem eigenen Selbst entsprechend, — ähnlich:* तस्य च स्वानुरूपौ (स्व auf तस्य zu beziehen) द्वावुत्पन्नौ तनयौ Kathâs. 21,107.

स्वान्त (स्व + धन्त) 1) *das eigene Ende* Bhâg. P. 2,6,35. — 2) *das eigene Gebiet, — Reich:* °प्रकोप Kâm. Nîtis. 12,18. — 3) n. (*das Gebiet des Ich*) *das Herz als Sitz der Gefühle* AK. 1,1,4,9. H. 1369. Med. f. 69. Hâlâs. 2,379. Gît. 10,10. Spr. (II) 1409. 1956. 4019. 5801. Kaurâp. 44. Kathâs. 37,27. Mâlav. P. 657,5 v. u. (स्वात gedr.). Râja-Tar. 3,127 (शान्त ed. Calc., स्वत्त Tr.). Prab. 1,11. Hem. Jogaç. 4,46. fg. Kuvalay. 166,*a*. Bhatṭ. 6,22. am Ende eines adj. comp. (f. धा) Spr. (II) 6983. Kathâs. 37,27. 69,161. Vedântas. (Allah.) No. 6. nach Einigen = विषयेषनाकुलं मनः H. 1369, Schol. — 4) n. = गह्वर *Höhle* Med. — Nach P. 7,2,18 und Vop. 26, 111 partic. von स्वन्.

स्वान्तज्ञ m. = मनोज्ञ *Geschlechtsliebe* Gît. 5,18.

स्वान्तवत् (von स्वान्त) adj. *ein Herz habend* Kathâs. 37,25.

स्वान्तस्थ adj. *im Herzen befindlich* oder स्वान्तःस्थ *im eigenen Innern befindlich* Bhâg. P. 1,13,9.

स्वाप (von स्वप्) m. 1) *Schlaf* AK. 1,1,2,36. Trik. 3,3,280. H. 313. an. 2,301. Med. p. 12. Suçr. 1,316,3. Uttarar. 17,17 (24,7). Kathâs. 32,21. 33,178. 73,259. 105,52. Râja-Tar. 3,507. Kull. zu M. 1,66. Bhâg. P. 7,15,61. स्वापं यातः *eingeschlafen* 10,51,22. — 2) *Traum* Trik. H. an. Med. Prar. 90,14. Bhâg. P. 3,26,30. 6,16,33. — 3) *das Eingeschlafensein —, Taubheit der Glieder* u. s. w. H. an. Med. Suçr. 1,252,3. 253,10. 350,12. — 4) *Unwissenheit* H. an. Med. — Wohl fehlerhaft Râja-Tar. 4,195. Vgl. इन्द्रिय°, दिवा° (*Schlaf am Tage* auch

MBn. 13,6063), सु°, सुख°.

स्वापक (vom caus. von स्वप्) adj. *schlafen machend, einschläfernd* P. 7,4,67, Vârtt. 2, Schol.

स्वापकीय्, °यति = स्वापकमिच्छति ebend. Davon desid. सिषापकीयिषति ebend.

स्वापतेय (von स्वपति) P. 4,4,104. gaṇa स्वाम्यादि zu 7,3,7. n. *eigener Besitz, Vermögen, Reichthum* AK. 2,9,90. H. 191. Hall. 1,80. MBn. 1,1781. Çiç. 14,9. Spr. (II) 298. Pâñcaviṅç. 1,33 (nach Aufrecht).

स्वापद् m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,50. vielleicht fehlerhaft für श्वापद्.

स्वापन (vom caus. von स्वप्) 1) adj. *schlafen machend, einschläfernd:* Vishṇu MBn. 13,6999. eine mythische Waffe 5,7396. R. 1,56,7 (57,6 Gorr.). — 2) m. *ein Mittel zum Einschläfern* Kauç. 36.

स्वापय् 1) caus. von स्वप्, s. das. — 2) denom. von स्व Vop. 21,16.

स्वार्पि m. *ein guter Verwandter, Vertrauter* ṚV. 4,41,7. Vârâh. 5, 5. VS. 9,30. Âit. Br. 3,16.

स्वापिक n. N. pr. einer Feste Râja-Tar. 7,597.

स्वापिमत् adj. *das Wort* स्वापि *enthaltend* Âit. Br. 3,16.

स्वापिशि m. patron. von स्वापिम् gaṇa रैवतिकादि zu P. 4,3,131. davon adj. स्वापिशेय ebend.

स्वाप्त (6. सु + आप्त) adj. 1) *sehr reichlich:* °दक्षिण MBn. 13,3175. — 2) *sehr geschickt, — zuverlässig:* Personen Kâm. Nîtis. 16,7. 8. °वचन zur Erklärung von स्वपिवात Nir. 10,7.

स्वाप्र (von स्वप्र) adj. *somnialis* Bhâg. P. 3,28,38. 4,12,4. 10,77,29. 86,45. 11,13,37.

स्वाप्यय (स्व + अप्य°) m. *Einkehr in sich selbst*, zur Erklärung von स्वप्र Çat. Br. 10,5,2,14. Bîdar. 1,1,9.

स्वाभाव (स्व + भ°) m. *eigene Nichtexistenz* Nilak. 14.

स्वाभाविक (von स्वभाव) 1) adj. (f. ई) *dem eigenen Wesen angehörig, — entsprungen, von Natur eigen, ursprünglich, natürlich, angeboren, inhärent* Âpast. 1,30,11. Maitrâjp. 5,1. Çvetâçv. Up. 6,8. शक्तु: स्त्रीणाम् 3,46. MBn. 1,267. Ragh. 5,69. 10,80. Kumâras. 6,71. Spr. (II) 5896. 6522. 7290, v. l. Çâṅk. zu Kâṭh. Up. S. 6. 26. zu Bṛh. Âr. Up. S. 11. 31. Windischmann, Sancara 98. Nilak. 66. 259. Mârk. P. 49,14. 53,31. 56, 23. fg. Bhâg. P. 3,25,32. 5,16,14. 6,1,53. Verz. d. Oxf. H. 80,b,39 (wohl स्वाभाविकै zu lesen). H. 508. Pañcat. 66,10. 110,21. Sarvadarçanas. 57,18. 89,9. 96,6. 130,16. fgg. Schol. zu Kap. 1,5. Wilson, Sânkhjas. S. 142. Kull. zu M. 1,64. Kusum. 13,19. 21. Sidd. K. zu P. 7,4,71. angeboren von Krankheiten Kâraka 1,30. 3,4. Suçr. 1,1,9. 4,7. 11. Çârṅg. Saṅh. 1,1,5. स्वाभाविकेतर Sîm. D. 11,16. स्वाभाविकत्व n. nom. abstr. Kusum. 17,20. fg. Nilak. 66. — 2) m. pl. Bez. einer buddhistischen Schule, die keinen Gott annimmt, sondern *Alles aus sich selbst entstehen lässt*, Burnouf, Intr. 118. 441. fg. Wilson, Sel. Works 2,12. fg. 21. fg. 24. fgg. 363. — 3) adj. von 2): समाधि Gvâlâvalîr. 28.

स्वाभाव्य (von स्वभाव) 1) adj. *dem eigenen Wesen entsprungen:* Vishṇu MBn. 13,7005. — 2) n. *Eigenartigkeit, Natürlichkeit* Çiṅg. 34. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 19. 137. 222. Kusum. 13,19.

स्वाभिचारिन् adj. Kathâs. 32,58 wohl fehlerhaft für व्यभिचारिन्; vgl. Spr. (II) 3832.

स्वाभील (6. सु + भा°) adj. *gar schrecklich:* निशीथ MBn. 3,288.

स्वाभीष्ट (स्व + भ°) adj. *von der eigenen Person geliebt:* तस्मात् कर्तव्यं स्वाभीष्टम् *so v. a. er gedachte seines geliebten* Kṛ. Pañcar. 1,12,11.

स्वार्भू (6. सु + आभू) adj. *richtig —, reichlich vorhanden, bereit; dienstfertig:* रयि ṚV. 2,12,9. 10,122,3. vielleicht auch 5,6,3, falls रयिं st. रायें anzunehmen wäre. इन्दव: 4,50,10. त्वामु ते स्वाभुव: शुम्नायवो गीर्भि: 10,21,2. 1,151,2. स्वाभुवो ब्रह्मणामभवत् 7,30,4.

स्वामिक am Ende eines adj. comp. von स्वामिन् *Besitzer, Herr, Gebieter:* प्रनष्ट° M. 8,30. भ° MBn. 13,2633. Mârk. P. S. 657, Z. 1. बुद्धि° MBn. 14,988. — Vgl. नि:°.

स्वामिकुमार m. = स्वामिन् = कुमार ein N. Skanda's Kathâs. 2, 44. 60. 6,122. 49,239. 55,152.

स्वामिकृद्भिन् m. ein N. Paraçurâma's Çaṅkar. im ÇKDr.

स्वामिजनक m. *der Vater des Gatten, Schwäher* Hit. 201.

स्वामिता (von स्वामिन्) f. *das Besitzer —, Gebieter —, Herrsein:* स्वामितां याति भूमे: Vaṭîn. Bṛh. S. 12,17. व्रजति शबरदस्युस्वामिताम् Bṛh. 11,20.

स्वामित्व (wie eben) n. dass. MBn. 13,2633. Verz. d. Oxf. H. 76,a,23. Pañcat. 163,14. H. 3.

स्वामिन् (von स्व) P. 5,2,126. Vop. 7,32. fg. 1) m. a) *Eigenthümer, Herr, Gebieter* (Gegens. *Untergebener, Unterthan, Diener, Knecht, Gatte*) AK. 2,6,1,22. 8,1,17. 3,1,10. Taitt. 3,3,272. H. 359. 714. an. 2, 291. Mân. n. 151. Hall. 2,188. 3,39. Lâṭ. 10,17,17. Kâtj. Çr. 1,6,2. 7,20. 8,31. 12,1,8. M. 7,167. 8,4. 5. 30. fg. 150. 173. 197. 199. 238. 241. 244. 293. 414. 9,294. MBn. 3,2364. R. 1,8,2. 4,25,7. 5,38,39. Spr. (II) 344. 1710. 2013. 2839. 5775. 7150. 7160. 7341. fgg. Çiç. 23,5. 11. Vaṭîn. Bṛh. S. 46,55. 50,8. 61,18. Râja-Tar. 4,333. Bhâg. P. 5,14,32. 7, 10,4. 5. Daçak. 61,13. Sîm. D. 431. Hit. 4,5. 40,11. 41,1. ed. Jonas. 1412. 1531. Vet. in LA. (III) 18,7. 27,3. Sarvadarçanas. 179,12. mit gen. oder loc. P. 2,3,39. Vop. 5,29. गवाम् oder गोषु P., Schol. वैन्यस्य R. 5,1,69. लोकस्य 6,102,9. अस्माकम् Kathâs. 18,144. Vaṭîn. Bṛh. S. 16,8. पशुषु M. 8,229. 234. भुवि Spr. (II) 5005. स्वामी कृतस्य (so trennen wir) विषये बकबकायन्ति Kathâs. 6,166. in comp. mit der Ergänzung, die ihren Accent behält, P. 6,2,17. गौ°, धेनु° Schol. M. 8,231. यान° 290. दिक्° Vaṭîn. Bṛh. S. 35,4. चोर° 69,27. क्षेत्र° Bṛh. 1,19. Kathâs. 25,46. 36,44. सन्नधन° Pañcat. 24,17. तन्नगर° Z. d. d. m. G. 14,571, 21. सेनेव मुस्वामिना *ein guter Anführer* Spr. (II) 2617. — b) ein N. Kârttikeja's Taitt. 1,1,56. 3,3,272. H. 208. H. an. Med. Hall. 1,19. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191,a,27. Jâṭâ. 1,293. Vishṇu's und Çiva's Çaṅkar. im ÇKDr. Garuḍa's Çabdârṇav. bei Wilson. — c) *Standbild eines Gottes*, insbes. Çiva's Râja-Tar. 5,23. häufig in dieser Bed. am Ende eines comp. — d) N. pr. verschiedener Männer: der 11te Arhant der vergangenen Utsarpiṇî H. 31. = वात्स्यायन Taitt. 2,7,23. ein Lexicograph Colebr. Misc. Ess. 2,20. 49. = तीर्थस्वामिन् Verz. d. Oxf. H. 113,a,38. 183,a,3. — 2) f. °नी *Herrin, Gebieterin* MBn. 4,193. Kathâs. 12,85. गृहे 29,72. प्राणेषु, धनेषु 32,315. युष्मत्° 28,42. 81,36. — Vgl. अभिमन्यु°, अवन्ति°, कु°, क्षीर°, गो°, गोविन्द°, जगत्°, ज्ञ°,

दुर्लभ°, धर्म°, धूर्त°, नरेन्द्र°, पत्ति°, पशूपक°, प्रभाकर°, ब्रह्म°, भट्ट°, भद्रबाहु°, भारत°, भर्तृ°, भव°, भीम°, भूमि°, भोग°, मख°, मालिक°, मार्तण्डतिलक°, मुक्त°, यज्ञ°, रण°, रत्न°, राम°, रुद्र°, वह्नि°, वामन°, विलास°, विष्णु°, वीर°, शंकर°, शिव°, श्री°, संगम°, समर°, सिंह°, हर°, हरि°.

स्वामिनीस्तोत्र n. *Lob der Gebieterin* d. i. *der* Rádhá, Titel eines Gedichts Hall 152.

स्वामिन्यष्टक n. desgl. Hall 146.

स्वामिभाव m. = स्वाम्य R. 5,1,69.

स्वामीय् (von स्वामिन्), °यति *für den Herrn halten:* स्वम् *sich* Hem. Jogaç. 3,10.

स्वाम्नाय (6. सु + म्ना°) adj. *richtig überliefert:* ब्रह्मन् Çikshâ 18 in Ind. St. 4,268.

स्वाम्य (von स्वामिन्) n. *Eigenthumsrecht, Herrschaft, dominium* M. 5,152. 9,93. Jâán. 2,121. Spr. (II) 4333 (pl.). 5214. 6041. 6135. Vasish. Bpu. S. 15,30. Katuís. 18,140. 106,166. 174. Mârk. P. 134,31. Bhâg. P. 7,10,5. 8,22,19. Hit. 84,8. कृत° adj. Mârk. P. 81,8.

स्वाम्युपकारक m. *Pferd (einem Herrn zu Gebote stehend)* Çabdârthak. bei Wilson.

स्वाय् (von स्व), स्वायते = स्व इवाचरति Vop. 21,7.

स्वायत्त (स्वा + या°) adj. *in der Gewalt der eigenen Person stehend, worüber man selbst verfügen kann* Spr. (II) 4383. 7332. Katuís. 15,58. 60,158. Daçak. 2,40. Râgá-Tar. 4,258. Davon nom. abstr. °त्व n. Kull. zu M. 8,406. — Vgl. स्वाधीन.

स्वायंभुव (von स्वयंभू) Siddh. K. zu P. 5,1,146. 1) adj. *zu dem durch sich selbst entstandenen Wesen —, zu* Brahman *in Beziehung stehend, ihm gehörig:* स्थान MBh. 13,1809. महास्थान 3366. धामन् Kumâras. 2,1. Bhâg. P. 6,16,26. 8,21,2. क्रतु MBh. 13,677. यज्ञ Verz. d. Oxf. H. 7,b, 9 v. u. योग Hariv. 3974. — 2) m. patron. eines Manu Nir. 3,4. M. 1, 61. 63. 102. 6,54. 8,124. 9,158. MBh. 13,873. Hariv. 57. 367. 409. Gaitâons. Kâlam. 29. VP. 3,1,6. Mârk. P. 50,12. fg. 53,6. Bhâg. P. 2,7, 2. 3,12,52. Verz. d. B. H. No. 1017. Verz. d. Oxf. H. 39,a,6. Aruṇa's Taitt. Âr. 1,26,1. der Mariki (pl.) 27,2. des Mariki Çâk. 168. Atri's MBh. 13,4329. Nârada's Bhâg. P. 1,6,3. 5,25,8. 10,87,9. — 3) adj. *zu* Manu Svâyambhuva *in Beziehung stehend, von ihm herrührend u. s. w.:* धर्मा: MBh. 12,12741. मन्वन्तर, मन्वन्तर 12658. Hariv. 414. VP. 3,1,8. Mârk. P. 50,18 (°भुवे zu lesen). 53,1. 43 (°भुवे zu lesen). Bhâg. P. 1,3, 12. 6,1,3. 4,1. Verz. d. Oxf. H. 48,b,1 v. u. 85,a,2. सर्ग Mârk. P. 53, 43. — 4) f. ई = ब्राह्मी *Ruta graveolens* Râgân. 5,62.

स्वायव m. patron. von स्वायु Pâṇ. Gaṇ. zu P. 8,6,8.

स्वायस (6. सु + या°) adj. *aus gutem Erz gemacht:* Beil RV. 10,53,9. Messer AV. 10,1,20.

स्वायु (6. सु + यायु) adj. *gute Leute (Unterthanen) habend oder den Leuten günstig* VS. 27,5.

स्वायुध (6. सु + या°) adj. *sich gut in das Geschirr fügend* RV. 1,92,2.

स्वायुध (6. सु + या°) adj. *gut bewaffnet:* die Marut RV. 5,57,5. 7, 56,11. Indra 8,17,13. 10,47,2. Soma 9,4,7. 15,8. 31,6. 86,12. 87,2. 96,16. स्वायुधः सोमपान्सोम शत्रून् 110,12. Rudra VS. 16,36.

स्वायुस् (6. सु + या°) n. *gute Lebenskraft, gutes Leben* VS. 4,28.

स्वायोग (स्व + यो°) m. *das Nichtenthaltensein in ihm selbst* Comm. zu TS. Prât. 2,28.

स्वार् 1) m. (von 1. स्वर्) a) *Laut:* des schnaubenden Rosses: हरी स्वारमस्वार्ष्टाम् RV. 2,11,7. — b) *Betonung, Accent* RV. Prât. 3,4. Weber, Prâtiçâkh. 77. — c) *der* Svarita-*Accent* TS. Prât. 17,6. 20,8. 23, 20. Comm. zu 17. Ind. St. 4,139. 174. Weber, Prâtiçâkh. 107. — 2) (von स्वर्) adj. *mit* Svara d. i. Svarita *versehen* (स्वरनिधन), *ein Finale im* Sâman-*Gesang*, n. *ein so schliessendes* Sâman VS. 13,55. Pañcav. Bn. 7,2,5. 3,24. 5,3,11. 10,12,3. 11,5,26. Liṭ. 4,6,16. 6,9,6. 7. 11,3. 12,14. स्वारा ऽरणि (so trennen wir, da घा-ऽरू nicht zu belegen ist) Âçv. Gṛhj. 2,4,14. स्वार् वाष्टीसाम Ind. St. 3,246,5. स्वारे ऽऽरण्यारन्धम्, °काव n., °कौत्स° n., °सेन्धुलित n. und °सोपर्ण n. Namen von Sâman obend. — Vgl. सर्व°.

स्वारक्ष्य (6. सु + या°) adj. *leicht zu schützen, — vertheidigen:* देश MBh. 1,2241.

स्वारब्ध (स्व + या°) adj. *selbstunternommen:* कर्मन् Bhâg. P. 5,19,19.

स्वारम्भक adj. dass.: कर्मन् Bhâg. P. 3,28,38 = 11,13,37.

स्वारसामिक adj. von स्वर-सामन् Liṭ. 4,6,16.

स्वाराज् 1) adj. = स्वराज् Pân. 99,14. fg. — 2) m. (स्वर् + राज्) *König des Himmels*, ein N. Indra's AK. 1,1,8,39. Halâj. 1,53.

स्वाराज्य (von स्वराज्) 1) n. *selbstständige Herrschaft, unbeschränktes Regiment* TS. 5,3,8,4. TBr. 1,3,2,2. 2,7,6,1. fgg. 44,2. Ait. Br. 7,32. 8,6. 12. Çat. Br. 5,3,4,21. 8,4,4,23. 13,7,2,1. °काम Çâṅkh. Ça. 14, 26,1. Kâṭh. Up. 2,6,4. Taitt. Up. 1,6,2. Maitrâjup. 6,36. Kaush. Up. 4,20. M. 12,91. Spr. (II) 9. Bhâg. P. 3,2,31. 9,33. 4,9,35. 24,54. 7,15, 45. 10,83,41. Pân. 52,2. Pañcân. 4,3,79. इन्द्रस्य स्वाराज्यम् N. eines Sâman Ind. St. 3,209,a. °सिद्धि f. Titel einer Schrift Hall 103. 204. Von den Commentatoren wie स्वराज् auf mannichfache Weise gedeutet. — 2) adj. *dieses verschaffend:* यज्ञ Pañcav. Br. 19,13,1. 22,18,1.

स्वाराम (स्व + या°) adj. *am eigenen Selbst sich erfreuend* Bhâg. P. 11,4,9.

स्वारायण m. patron. von स्वर gaṇa यस्कादि zu P. 4,1,110.

स्वारूढ (स्वारूढ Padap.; vielleicht स्व + या°) adj. *aus der eigenen Wurzel wachsend, festgewurzelt* TS. 1,6,12,2. 5,2,10,4. प: स्वारूढं वृणीते Kâṭh. 26,3; vgl. TS. 5,3,3,5.

स्वारूढ (6. सु + या°) adj. *gut geritten:* रूपा रूपसादिभि: MBh. 6, 3535 nach der Lesart der ed. Bomb.

स्वारूपा f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,b,37. — Vgl. स्वरूपा.

स्वारोचिष 1) m. (von स्वरोचिस्) patron. des zweiten Manu M. 1,62. MBh. 12,13382. fg. Hariv. 409. Gaitâons. Kâlam. 29. VP. 3,1,6. 9. Mârk. P. 53,6. 66,29. Bhâg. P. 8,1,19. Verz. d. Oxf. H. 39,a, N. 1. 85, a,3. — 2) adj. *zu* Manu Svârokisha *in Beziehung stehend:* मन्वन्तर, मन्वन्तर Hariv. 236. 418. VP. 3,1,10. Mârk. P. 61,4 (स्वरो° fälschlich) und in der Unterschr. 81,3. 100,35. Bhâg. P. 4,1,35.

स्वारोचिस् m. = स्वारोचिष Verz. d. Oxf. H. 85,a,3.

स्वार्जित (स्व + अ) adj. *selbsterworben* Spr. (II) 7477. R. 1,43,11. 60,12. 14. 63,3.

1. स्वार्थ (स्व + अर्थ) m. 1) *die eigene Sache, eine persönliche Angelegenheit, persönlicher Vortheil, das von Einem selbst verfolgte Ziel, das der Sache selbst zu Grunde liegende Ziel* Maitrâyaṇ. 3,1. °पण्डित MBh. 1, 5568.3,2175. fg. स्वार्थे प्रयतमाना R. 2,39,7. 23,9. स्वार्थे भवान्प्रभुः R. Gorr. 2,50,8. Kâm. Nîtis. 5,30. Siddhânta. 56. Verz. d. Oxf. H. 231, *a*, 8. 16. Nilak. 63. 112. Vikr. 94. Spr. (II) 1310. 1460. 1709. 2032. 2401. 3379(pl). 3954. स्वार्थमेव गवास्य 4017. 4790, v. l. 4855. 5022. 5581. 5642. 6320. 7353. Kathâs. 22,206. 33,50. 34,195. Hem. Jogaç. 4,53. Râga-Tar. 3,143. 5, 292. 6,282. Prab. 104,18. Daçak. 66,7. Mârk. P. 76,9. 10. 15. Bhâg. P. 5,7, 38. 16,63. 18,24. 7,5,21. 7,46. 55. 11,28,2. Pâṇ. Gaṇ. 4,3,46. Ind. St. 1,15, 21. Sarvadarçanas. 92,1. 95,5. 121,1. 129,18. Comm. zu AV. Prât. 1,103. स्वार्थेन योक्ष्यं (सङ्केतं) *mit seinem Object* Varâh. Bṛh. S. 75,3. स्वार्थे *für sich:* पाकक्रिया Spr. (II) 7441. स्वार्थम् dass.: प्रार्थना 4343. Kap. 2,1. Nilak. 62. परान्देवयति Kull. zu M. 3,159. am Ende eines adj. comp.: गत° *nutzlos* Bhâg. P. 1,13,24. अ° dass. 6,10,10. — 2) *die eigene* d. i. *die ursprüngliche Bedeutung* Sin. D. 9,3. 11,2. H. an. 2,447. स्वार्थे णिच् *so v. a. das Suffix des Causativum ohne Aenderung der Bedeutung* Comm. zu TS. Prât. 2,17. — Vgl. यज्ञकृत्°.

2. स्वार्थ (wie oben) adj. (f. आ) *der eigenen Person geltend, egoistisch:* स्वार्था न मे काचित्प्रवृत्तयः Kumâras. 6,26. Tarkas. 31. Sarvadarçanas. 120,17. Nilak. 62. Davon °ता f. nom. abstr. 63.

स्वार्थसाधक adj. *seine eigene Sache fördernd* Spr. (II) 3916. Bhâg. P. 10,64,18. 86,4. *dem eigenen Zwecke dienend* Nîl. 1,18.

स्वार्थसाधन n. *das Fördern der eigenen Sache* Spr. (II) 230. Râga-Tar. 3,393.

स्वार्थिक (von 1. स्वार्थ 2) adj. *die ursprüngliche Bedeutung bewahrend, pleonastisch:* ein Suffix Schol. zu P. 3,2,21. 5,3,1. 4,5.

स्वार्मोघ्र s. Weber, Gjot. 114.

स्वालक्षण (6. सु + आ°) adj. *leicht wahrzunehmen* MBh. 5,1825. स्वीपानामपि अलक्षणो नास्ति लक्षणं सम्यगवलोकनं यस्य सः। स्वैरपि दुर्दर्श इत्यर्थः Nilak.

स्वालक्षण्य (von स्वलक्षण) n. *specifische Unterschiedenheit* M. 9,19. Kap. 2,20. Siddhânta. 29.

स्वालक्ष्य (सु + आ°) adj. *leicht wahrzunehmen, — zu erkennen* Harîv. 6424.

स्वावमानन (स्व + अव°) n. *Selbstverachtung, Verzweiflung an sich selbst, Kleinmuth* H. 321. f. आ dass. Sin. D. 170.

स्वावश्य (von स्ववश) n. *Selbstbestimmung* Âit. Br. 8,17.

स्वावसु s. स्ववसु.

स्वावृक् (6. सु + आ°, Padap. ohne Avagraha) adj. *leicht anzusegnen:* स्वावृग्देवस्यामृतं पदी गोः ṚV. 10,12,3. — Vgl. स्ववृक्.

स्वावेश (6. सु + आ°) adj. (f. आ) *leicht zugänglich, möglich zu begehen* Nîl. 11,46. ṚV. 7,54,1. 97,7. 10,63,16. VS. 6,2. 14,2.

स्वाशित (6. सु + आ°) adj. *wohl gesättigt* ṚV. 10,28,1. B. ed. Bomb. 2,84,18 (स्वासिता falschlich Scheil).

स्वाशिर् (6. सु + आ°) adj. *gut gemischt* (vgl. दुराशिर्): स्वाशिरा-मर्का N. verschiedener Sâman Ind. St. 2,246,*b*. Pañcav. Br. 14,11,9. 9. Âçvâjanîna Tüb. Hdschr.

स्वाशिषात्मन् (स्व-आशिषा [instr. von आशिस् + आत्मन्) adj. *nur für die eigenen Wünsche Sinn habend* Spr. (II) 3511.

स्वाशिस् (6. सु + आ°) adj. *schön lobpreisend* ṚV. 10,44,5.

स्वाशुं (6. सु + आशु) adj. *sehr schnell* AV. 19,50,2. 20,128,11.

स्वास्य (स्व + आ°) adj. *das Selbst (in Rede Stehende) betreffend* P. 3,1,87, Schol.

स्वास्य् (6. सु + 3. आस्) adj. *einen schönen —, scharfen Mund habend:* Agni ṚV. 10,3,4. *schneidig:* Bell 4,6,8.

स्वासद् (6. सु + आ°) adj. *glücklich beisitzend* AV. 16,4,2.

स्वासद् zur Erklärung von स्वासस्थ Çat. Br. 1,3,3,11. 4,11.

स्वासस्थ (6. सु-3. आस + स्थ) adj. 1) *auf gutem Sitz sitzend* ṚV. 10, 13,2. TS. 3,7,3,2. — 2) *einen guten Sitz darbietend:* वेदि VS. 2,1. Streu 28,21. Âçv. Çr. 1,4,7. Çat. Br. 1,3,3,11. Kauç. 2. 3. 137.

स्वासीन (6. सु + आ°) adj. *bequem sitzend* Harîv. 4440.

स्वास्तर (स्व + आ°) m. *eine schöne Streu* R. 2,87,20. fg. 94,22. — Vgl. स्वस्तर.

स्वास्तीर्ण (6. सु + आ°) adj. *gut gebettet, — überzogen:* स्वस्तर Âçv. Gṛhj. 2,3,7. शयन, शय्या, आसन Harîv. 5188. R. Gorr. 2,8,7. 100,33. Suçr. 1,60,7. Varâh. Bṛh. S. 60,14. यान MBh. 3,16911.

स्वास्थ्य (von स्वस्थ) n. *Wohlbefinden, Wohlbehagen* (des Körpers oder der Seele) H. 308. 474. Çârîr. im ÇKDr. MBh. 13,4077. R. Gorr. 2, 16,19. Kâm. Nîtis. 13,44. Ragh. ed. Calc. 4,14. Çik. 58,3. Spr. (II) 884 (Conj.). 3800. 4532. 6030. Kathâs. 73,388. Mârk. P. 9,22. 120,18. Sin. D. 99,12. Râga-Tar. 3,411. °वार्तोपलम्भाय 7,344. Prab. 97,17. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*, N. Pañcar. 4,3,34. Pañcav. 183,22. ed. orn. 64,16. नेति स्वास्थ्यम् Hem. Jogaç. 2,70. अ° *Unwohlsein* Kathâs. 17,74. 37,214. 63, 103. Râga-Tar. 4,81 (wir lesen प्रथितास्वास्थ्यम्).

स्वाहृत (स्व + आ°) adj. *selbstgeprägt* Râga-Tar. 3,103.

स्वाहा 1) indecl. Çânt. 4,12, Comm. गण चादि zu P. 1,4,57. altes Wunschwort: *glücklich, günstig;* als Zuruf *Heil! Segen!* (vgl. das nachgebildete दुराहा) Naigh. 1,11. Nir. 8,23. AK. 3,5,8 देवकृविर्दाने. H. 1538. पितॄन्ह स्वाहा ṚV. 2,36,1. स्वाहा देवा मादयन्ताम् 3,4,11. 7,39, 6. 8,32,15. 35,1. 50,1. यद्वो वः स्वाहाग्ने दाशेम 7,3,7. 8,8,5. 34,10. 52,3. AV. 7,82,2. VS. 4,6. इमं देव यज्ञं स्वाहा वाते धाः 8,21. स्वाहा घर्मो अप्येतु देवान् 61. स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति *so v. a. an dem mit* स्वाहा *Geopferten* ṚV. 10,14,3. — Mârk. P. 93,5. Bhâg. P. 2,7,38. mit dat. P. 2,3,16. Vop. 5,16. स्वाहाग्नये ṚV. 5,5,11. AV. 3,26,1. 6,10,1. तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा 8,1,14. 8,24. VS. 2,2. 6,11. Kâty. Çr. 4,14,33. 9,8,16. 25,7,33. Kauç. 5. 45. Âçv. Gṛhj. 1,10,12. 2,1,4. 9. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,91. Bhâg. P. 6,19,8. Schliesst Anrufungen wie *Amen* AV. 2,16,1. 4,38,7. 6,48,1. 14,2,52. 19,52,5. VS. 2,9. 3,45. Kâty. Çr. 2,2,23. 3,6,12. यो स्वाहा Bhâg. P. 5,18,8. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*, 1 nebst Note. स्वाहावसानसमये Varâh. Bṛh. S. 43,32. Mit कृ (gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61) *den Ruf* स्वाहा *aussprechen über* (acc.): कृण्वम् ṚV. 1,142,12. कृवीथि 10,2,2. Çat. Br. 3,8,3,9. यत्कारः स्वाहा कुर्यात् 11,5,6,2. °कारम् absol. 9,5,1,44. यस्वाकृत्य Kâty. Çr. 25,10,16. partic. स्वाहाकृत *durch* स्वाहा *den Göttern geweiht, mit* स्वाहा *dargebracht:* कृण्व ṚV. 2,3,11. 1,110,1. 142,13. 8,35,24. कृविन् 10,110,

11. यज्ञ AV. 7,73,3. VS. 4,13. 6,16. 10,29. Ait. Br. 1,22. 2,13. TS. 2, 6,4,1. 3,1,4,4. 10,2. Çat. Br. 1,5,2,23. 3,8,2,21. सौ° 4,6,2,17. — 2) f. a) personificirt als Tochter Daksha's, Gattin Agni's (des Agni Abhimânin) AK. 2,7,21. Taik. 1,1,71. H. 1100. Hall. 1, 66. MBh. 1,7351. 3,14295. fgg. 14314. fgg. 5, 3967. Hariv. 3288. 7738. R. 5,25, 25. Ragh. 1,36. Varâh. Bṛh. S. 48,36. Kathâs. 96,5. VP. 54. 59. Mârk. P. 50,23. 52,27. Verz. d. Oxf. H. 23, *b*, 3. 24, *b*, 17. fgg. 39, *b*, 20. 48, *a*, 28. Bhâg. P. 4,1,59. Pañcat. 1,10,93. 11,37. 2,5,46. — *b*) N. pr. einer buddhistischen Gottheit Taik. 1,1,17.

स्वाकाकार m. = स्वाकाकृति Comm. zu AV. Pair. 4,103.

स्वाकाकार m. *der Wunsch und Zuruf* स्वाहा, *Besprechung mit demselben* TBr. 2,1,2,3. Çat. Br. 1,5,2,12. 23. 2,2,4,3. 5,3,2,18. als sog. *Gottheit eines* Prajâpati TS. 2,6,4,1. Çat. Br. 4,1,4,22. Kâty. Çr. 15, 4,44. 19,3,16. °प्रदाना तूकोतयः 1,2,7. Kauç. 1. Liṭ. 1,2,6. — MBh. 3,11127. R. 1,53,14 (54,16 Gorr.). 5,12,23. Suçr. 1,7,1. Lalit. ed. Calc. 313,6.

स्वाकाकृत् adj. *bespreshend* —, *weihend mit* Svâhâ, *Opferer* Hariv. 1969.

स्वाकाकृति f. *Besprechung* —, *Weihung mit* स्वाहा ṚV. 1, 188, 11. विश्वे देवाः स्वाकाकृतिं पवमानस्य गातम् 1,5,11. Çat. Br. 3,6,4,16. 13,2,44,2. TS. 3,1,3,2. 6,3,9,3 (TS. Prât. 3,7). als sog. Prajâpa-*Gottheit* Naigh. 3,2. Nir. 8,20. VS. 28,34. Ait. Br. 2,13. Çat. Br. 13, 3,3,11. Liṭ. 2,10,3. Âçv. Çr. 10,8,14. Schol. zu Kâty. Çr. 5,6,24.

स्वाकापति m. *der Gatte der* Svâhâ d. i. Agni Dhan. im ÇKDa. Hariv. 13955. Bâlar. 236,14.

स्वाकाप्रिय m. dergl. Hall. 1,62.

स्वाकाभुज् adj. Svâhâ *geniessend*, — *empfangend*; m. *ein Gott* Taik. 1,1,3. H. 88.

स्वाकार (6. सु + घा°) adj. *leicht herbeizuschaffen* R. 2,31,26. स्वाकार्ह ed. Bomb.

स्वाकार्ह (स्वाकार + अर्ह) adj. *der Besprechung* —, *Weihung mit* Svâhâ *würdig, opferwürdig* R. ed. Bomb. 2,31,26.

स्वाकावन n. N. pr. eines *Waldes* Pañcat. 1,10,44.

स्वाकावल्लभ m. = स्वाकापति Bâlar. 280,3.

स्वाकाशन (स्वाहा + 2. अ°) m. = स्वाकाभुज् H. 88, Schol.

स्वाकि m. N. pr. eines Sohnes des Vṛṣâkapivant Hariv. 1969. fg. VP. 4,12,1.

स्वाकृत (6. सु + घा°) adj. *dem man wohl* —, *richtig geopfert hat:* Agni ṚV. 1,44,4. 6. 3,27,5. 7,12,1. 16,2. 8,39,6.

स्वाकेय (von स्वाहा) m. metron. Kârttikeja's MBh. 3,14633.

स्वाङ्ग s. स्वङ्ग.

स्वाङ्य adj. *dem das* Svâhâ *gebührt:* Götter AV. 2,3,25.

स्विका s. u. स्वक.

स्विर्ते für सुवित. स्विते मा धाः VS. 5,5.

1. स्विद्, स्वेदते (क्लेदनमोचनयोः, auch मोक्षन st. मोचन) Dhâtup. 18, 4. *schwitzen* Kâṭh. Up. 6,2,3. स्विद्यति (गात्रप्रतरणे) Dhâtup. 26,79. dass. Kâty. Çr. 25,11,28. Apast. Bh. in Ind. St. 1,41. MBh. 6,60. Râmây. 1,14. Gir. 10,16. 11,10. Bhâg. P. 1,14,19. घस्विदन् Bhaṭṭ. 15,50. स्विद्यते Jâṭ. 2,13. स्विद्यमान Suçr. 2,184,3. सिषिदानं *schwitzend:* यस्ते इध्मं जभरत्सिषिदानः ṚV. 4,2,6. 5,42,10. 7,103,8. स्विन्न P. 1,2, 19. 7,2,16. 1) *in Schweiss gekommen* oder *gebracht, mit Schwitzmitteln behandelt:* स्विन्नः स्नातो मलादिव VS. 20,20. MBh. 7,773 (स्विन्न ed. Bomb.). R. 5,1,27. 7,23,8,71. Kumâras. 7,77. Çiç. 142. Spr. (II) 1315. Kathâs. 18,78. Brahma-P. in LA. (III) 57,20. Suçr. 1,37,15. 2,183,16. 184,6. घृति° Râmây. 1,14. — 2) *gedämpft, gesotten* Hariv. 8446. सु° (s. auch bes.) 8440. घृ° Mârk. P. 50,45. हिः° Brahmavaiv. P. im ÇKDa. unter d. W. — Erhält keinen Bindevocal nach Kâr. 3. 8 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. der Anlaut geht in ष über nach Vop. 8,42.

— caus. स्वेदयति *schwitzen lassen, mit Schweiss treibenden Mitteln* (स्वेद) *behandeln* Suçr. 2,56,20. 182,8. 9. स्वेदित (= स्विन्न P. 1,2, 19. Vop. 26,104) von einem Hundeschwanze so v. a. *erweicht* Spr. (II) 7353.

— desid. vom caus. सिस्वेदयिषति P. 8,3,62. Vop. 19,17.

— घा, partic. घर्मसिषिदान *schwitzend* ṚV. 10,106,10.

— उप s. उपस्वेद. caus. *schwitzen lassen, mit Schweissmitteln behandeln* Suçr. 2,182,8.

— परि caus. dass. Suçr. 2,193,11.

— प्र *in Schweiss gerathen:* प्रसिषिदे (so ed. Bomb.) MBh. 7,773. partic. प्रस्विन्न *schwitzend* 1582. R. 2,26,8. 40,19. 100,35 (108,35 Gorr.). प्रस्वेदित und °वत् P. 1,2,19, Schol. — Vgl. प्रस्वेद fg.

— सम् caus. *schwitzen lassen, mit Schweissmitteln behandeln* Suçr. 2,336,10. — Vgl. संस्वेद fgg.

2. स्विद् (wohl 6. सु + इद्; vgl. कुविद्) enklitische Partikel VS. Prât. 2,16. *wohl, wirklich; etwa, irgend, denn* (in Fragen) AK. 3,4,22 (23),3. H. an. 7,13 (स्वित् gedr.). Med. avj. 27. Hall. 5,94. 1) namentlich nach dem Fragepronomen क und seinen Derivaten; daher auch verallgemeinernd (wie घपि, चन u. s. w.), z. B. कः स्वित् *wer wohl* und *wer immer.* कं स्विद्घर्म परागात् ṚV. 1,164,17. कः स्विदेना निष्टितः 1,182, 7. 8,9,2. इन्द्रं क उ स्विदा वके 8,53,3. 64,7. AV. 10,4,18. VS. 23,9. Çat. Br. 14,6,2,1. Pañcav. Br. 8,6,3. किं स्वित् ṚV. 1,161,10. किं स्विन्नो रात्री जगृहे *ergriff denn?* 10,12,5. किं स्विदेव चक्रुषे दतिणा नोपयते *irgend Etwas* Ait. Br. 3,34. 7,13. Çat. Br. 14,8,15,2. VS. 23, 9. 47. Liṭ. 2,10,11. किमु स्वित् ṚV. 4,18,7. किमपि स्वित् 1,164,6. मा गृधः कस्य स्विद्धनम् Îçop. 1 (= Bhâg. P. 8,1,10). nach कतम AV. 10, 7,1. कति ṚV. 10,86,20. कियत् 4,17,12. क्व 1,161,12. 164,4. 17. 168, 6. क्व स्विदस्याः परमं जगाम 3,39,10. *irgend wohin* 10,34,10. AV. 10, 2,2. Çat. Br. 3,8,2,25. कर्हि ṚV. 6,35,2. 3. 10,89,11. कुह 40,2. कथमिव Çat. Br. 4,6,2,1. 11,3,1,5. 12,3,1,1. — किं स्वित्स्वप्नङ् निमिषति, कस्य स्विद्धृदयं नास्ति MBh. 3,10648. 13,295. R. 2,65,11. Çiç. 110. Râjat. 3,177. किमिदं स्वित् Bhâg. P. 1,7,26. 3,15,19. क उ स्वित् 7,37. किं नु स्विदेतत्पतति MBh. 1,3871. किं स्विदग्नेव नपतिर्न मा प्रत्यभिनन्दति *weshalb wohl?* R. 2,18,8. घरेः शृङ्गं वहति पवनः किं स्वित् *führt etwa?* Mahân. 14. किं ब्राह्मणाः स्विच्छ्रोत्रियो दितिजाः स्वित् MBh. 5,1188. दतिणानाय वामेन कतरेण स्वित् 4,1969. कथं स्वित् 1, 3634. 3636. 2,2422. 3,1352. fg. R. 2,21,60. Bhâg. P. 6,1,39. कार्यं स्यात्स्वित् MBh. 3,1088. कथं कर्ता स्यादीश्वरः 12614. — 2) nach andern Wörtern: घस्ति स्विन्नु वीर्ये तत्त इन्द्र न स्विदस्ति *ist wirklich — oder*

ist nicht? RV. 6,18,3. तव 1,150,1. त्वम् Çat. Br. 11,6,2,2. 3. तुरीयँ स्विज्जनयत् RV. 10,67,1. अधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत् 129,5 (P. 8,2,103). अकृत्वाहो स्विदेव क्रता (d. i. क्रते) इति *soll er Lohn haben ohne irgend Etwas gethan zu haben?* Ait. Br. 5,34. सो (सा उ) स्वित् Çat. Br. 2,2,2,4. नो स्वित् 4,2,4,7. तद् Kâṭh. 36,12. मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृकणः Çat. Br. 14,6,9,33. न स्विदेते ऽप्युच्छिष्टाः Kâṭhân. Up. 1,10,4. — अपि (Fragepartikel) स्वित् Bhâg. P. 1,8,37. 14,43. 3,1,34. fg. 13,22. 5,8,17. 10,21. 10,70,35. 82,42. उत स्वित् 1,16,21. Pâraṇ. 41,1. स्विद्उत Bhâg. P. 5,19,21. आहो स्वित् (s. auch unter आहो) MBh. 7,443. Bhâg. P. 1,18,31. 3,20,11. 5,26,4. 6,1,39. उताहो स्वित् s. u. 2. उत 3). कैश्चिन्निर्वासितो मा स्विन्मद्दोषैरिति शङ्कितः *doch nicht etwa* Râǵa-Tar. 3,288. द्यौः स्वित्पतति किं भूमिर्दीर्यते पर्वतो नु किम् MBh. 3,10974. तमा स्विच्छ्रेयसी तात उताहो तेज: 1031. नु — स्विद् Kir. 8,35. स्विद् — नु ebend. स्विद् — उत 12,15. स्विद् — वा 13,8. 16,18. स्विद् — किमु 14,60.

स्विध्म adj. *aus gutem —, brennbarem Holze bestehend* RV. 1,121,7. *blank* Sây.

स्विन् (von स्व) adj. *sein nennend, in Besitz habend* in शत° und श्रोत्र°.

स्विन्न s. u. 1. स्विद्. Davon °ता f. *das Gesottensein* (einer Speise): श्र° Kâm. Nîtis. 7,17.

स्विषु adj. *gute Pfeile habend* RV. 5,42,11.

1. स्विष्ट (6. सु + 1. इष्ट) adj. *sehr geliebt:* Personen R. Gorr. 1,15,14. 55,4. 2,120,19.

2. स्विष्ट (6. सु + 2. इष्ट) adj. 1) *richtig geopfert, wohl dargebracht; n. ein richtiges Opfer* (Gegens. दुरिष्ट): यज्ञ RV. 1,162,5. क्रोत्रा VS. 7,15. सर्वं स्विष्टं सुकृतं करोतु Âçv. Gṛhj. 1,10,23. VS. 2,19. 28,22. TS. 2,6,9,3. 6,6,2,3. TBr. 1,2,6,3. Ait. Br. 3,38. Çat. Br. 4,5,4,6. MBh. 3,14150. 14193. 7,2463. Kathâs. 50,52. Bhâg. P. 1,5,22. 4,19,32. 5,19,23. 8,18,20. — 2) *durch Opfer richtig verehrt, hochgeehrt* überh. VS. 21,58. Bhâg. P. 4,7,41. 14,22. 20,1. 10,75,8.

स्विष्टकृत् adj. 1) *richtiges Opfer zu Stande bringend* VS. 2,9. देवाः MBh. 5,1614. Bein. Agni's als *des die Opferhandlung glücklich abschliessenden Gottes* Ind. St. 10,332. VS. 21,47. 58. 28,22. TS. 1,6,2,4. 2,6,9,5. °कृद्यजन Ait. Br. 1,22. 2,10. °कृद्याग 3,5. Kauç. 25. Çat. Br. 1,6,4,14. 7,2,10. 2,4,2,9. Âçv. Çr. 1,6,2. 5,13,7. Gṛhj. 1,10,23. 12,1. Çâṅkh. Çr. 14,10,5. M. 3,86. MBh. 3,14150. 14193. 12,1510. Bhâg. P. 11,27,41. superl. °कृत्तम MBh. 2,1128. — 2) *dem* Svishṭakṛt *gegeben, — gehörig* u. s. w.: कृषिम् Ait. Br. 1,10. Âçv. Çr. 3,5,5. Gṛhj. 2,8. Kâṭy. Çr. 1,6,4. 9,9. 3,4,6. 5,5,11. स याग: स्विष्टकृत् 9,10. 11,21. पाकयज्ञानेकस्विष्टकृतः कुर्यात् *mit einer gemeinsamen Schlussgabe an* Sv. *versehen* Âçv. Gṛhj. 1,3,10. Kauç. 6. — Vgl. सोविष्टकृत.

स्विष्टकृत adj. *mit dem* Svishṭakṛt *abgeschlossen:* क्रोम Gṛhjas. 2,81. 85.

1. स्विष्टि f. *Gelingen des Opfers, ein gelungenes Opfer* (Gegens. दुरिष्टि) AV. 2,35,1. 6,47,3. TS. 3,1,9,2. VS. 27,18. Kâṭh. 32,4. Kauç. 5.

2. स्विष्टि adj. *richtig opfernd* MBh. 12,2744.

स्वीकृ (स्व + 1. कृ) act. med. 1) *Etwas* (acc.) *sich aneignen, in den Besitz von Etwas gelangen:* स्व्यकुर्वत Çat. Br. 1,5,2,5. 3,2,2,23. स्वो रू वै तमर्धं कुरुते 1,5,4,5. 4,2,4,6. Spr. (II) 4952, v. l. देयं यः स्वीकरोति स कारी P. 6,2,65, Schol. Kathâs. 10,188. 18,42. 19,40. 45. 22,195. 39,89. 42,88. 53,42. मत्तः 56,297. 57,15. 59,138. 69,184. 113, 105. Râǵa-Tar. 3,114. 5,169. Daçak. 70,2. Bhâg. P. 3,4,6. कं स्वीकृता न विषया: परिपीडयन्ति Spr. (II) 2874. — 2) *Jmd zu sich nehmen, aufnehmen* (insbes. ein Weib) R. 4,55,4. देवकुले ताम् Kathâs. 15,76. 18, 79. 22,187. 25,261. 31,58. 32,87. 58,77. 77,21. 91,17. 26. भार्यार्थे 98, 33. सुधावेन Râǵa-Tar. 8,162. — 3) *Jmd für sich gewinnen, in seine Gewalt bekommen* Kathâs. 5,40. 11,24. 13,8. 19,78. 20,2. 49,116. 51, 62. 60,39. 65,35. fg. 108,25. Râǵa-Tar. 4,493. 5,436. 6,224. 334. Daçak. 61,13. हृदयम् Kathâs. 32,188. 45,236. स्वात्मम् 37,27. मन: Bhâg. P. 5,6,5. — 4) med. *Etwas annehmen, zugestehen* Hit. ed. Jonks. 2831. Sarvadarçanas. 8,17. 34,3. 71,11. 132,2. 155,18. Kull. zu 6,58. Comm. zu Kap. 1,21. 50. zu TS. Prât. 1,19. 4,32. 13,14. Bhâg. P. 4,28,17. Kusum. 22,4. Schol. zu Çik. 47. मया हि गो: पालनीया सा यदा स्वीकृता भवेत् Mârk. P. 114,10. स्वीकृत = अङ्गीकृत H. 1488, Schol. — caus. *Jmd veranlassen Etwas in Besitz zu nehmen, Jmd Etwas schenken;* mit doppeltem acc. Kull. zu M. 11,4. Râǵa-Tar. 2,160. गोपायकाराकृतिना येन स्वीकारिता द्विजा: 1,242. 7,396.

स्वीकरण n. 1) *das Sichaneignen, Annehmen einer Sache, in den Besitz-Gelangen von Etwas* Nir. 14,12. Jiǵñ. 2,60. Râǵa-Tar. 4,233. वेद° Kull. zu M. 2,2. — 2) *das zur-Ehe-Nehmen* (eines Weibes): यज्ञवत्या: Çiç. 66,17. भुव: Ragh. 12,16. — 3) *das Annehmen, Zugestehen* Mârk. P. 114,9. Bhâg. P. 5,11,10.

स्वीकर्तर् nom. adj. *der Jmd gewinnt, gewinnen will* Râǵa-Tar. 3,110.

स्वीकर्तव्य adj. 1) *aufzunehmen, heranzuziehen:* कन्यार्थ: स नरेन्द्रेण स्वीकर्तव्यो त्रयेषिणा Vaitân. Dhn. S. 2,21. — 2) *anzunehmen, zuzugestehen* Comm. zu TS. Prât. 1,25 (°कर्तव्यं zu lesen). 4,23. 11,3. Sarvadarçanas. 152,9.

स्वीकार m. 1) *Aneignung, Inbesitznahme* Sidd. K. zu P. 1,4,77. पाणिग्रहणविशिष्ट° Schol. zu 3,56. Bhâg. P. 12,2,4. — 2) *Aufnahme* (einer Person) Kathâs. 31,89. 66,87. Verz. d. Oxf. H. 93,a,8. 9. — 3) *Annahme, Zugeständniss* Nilak. 47. 60. Sarvadarçanas. 50,14. 70,11. 118,12. Schol. zu P. 8,4,64. Kull. zu M. 6,58. Schol. zu Kap. 1,82. zu TS. Prât. 1,21. 4,22. 10,12. 14,3.

स्वीकार्य adj. 1) *in dessen Besitz man gelangen muss* Râǵa-Tar. 3,1. — 2) *aufzunehmen, heranzuziehen* Kathâs. 60,42. — 3) *zu gewinnen, in seine Gewalt zu bekommen:* eine Person Kathâs. 11,30. 32,174. — 4) *anzunehmen, zuzugestehen* P. 3,1,124, Vârtt. 3, Schol. Kusum. 9,21. fg. 12,3. 14,2. 5.

स्वीकृति m. *Aneignung, Inbesitznahme* Taik. 3,3,125.

स्वीय (von स्व *die eigene Person*) adj. (f. या) *eigen;* m. pl. *die Eigenen, Angehörigen* Spr. (II) 2561. 3927. 3987, v. l. 6393. 7354. 7483. Gorâkhs. Taipraçn. 31. Mârk. P. 27,16. Bhâg. P. 3,20,30. 24,29. 4,24,52. 7,2,60. 6,16. 9,18,10. 10,70,11. 87,11. Pâraṇ. 130,20. Verz. d. Oxf. H. 18,a,20. 128,b,30. Çatr. 10,89. Muir, ST. 4,130, N. 128. Müller, SL. 337. Sarvadarçanas. 38,16. 55,7. 56,8. f. स्वीया *eine Frau, die man im wahren Sinne des Wortes „sein" nennen kann,* Sâm. D. 97.

स्वीयीकृ (स्वीय + 1. कृ) *sich aneignen, in Besitz nehmen* Spr. (II) 4952, v. l.

स्वूर्ड् (स्वु°), स्वूर्कति = स्यूर्ड् Dhātup. 7,24.

स्वृत (6. सु + ऋत) zur Erklärung von स्वर् Nir. 2,14.

स्वैतीक n. angeblich so v. a. उदक Naigh. 1,12.

स्वृद्ध (6. सु + ऋद्ध) adj. *in sehr blühendem Zustande sich befindend, sehr gesegnet, — reich:* जनपदा: Bhāg. P. 1,8,40. 11,1. 3,15,11. श्री 36.

स्वेक्, स्वेकते v. l. für म्लेक् Dhātup. 4,3.

स्वेक zur Erklärung von सुमेक Çat. Br. 1,7,3,26.

स्वेच्छम् (von स्व + इच्छा) adv. *nach eigenem Wunsche, — Belieben, nach Herzenslust, aus freiem Antrieb, willig* Spr. (II) 483 (Kathās.). Kathās. 4,14. 116. 13,132. 16,41. 20,177. 24,189. 228. 32,150. 33, 185. 34,24. 56,49. 72,127. Kādambarī. 114.

स्वेच्छा (स्व + इ°) f. *eigener Wunsch, — Wille, freier Wille* H. 356. Vop. 21,1. Spr. (II) 6826. स्वेच्छानुसारेण Rāja-Tar. 5,102. स्वेच्छाधीन Pañcat. 2,8,11. स्वेच्छया *nach eigenem Wunsche, — Belieben, nach Herzenslust, aus freiem Antriebe* (vgl. स्वयमिच्छया M. 9,175. Spr. (II) 4736) Spr. (II) 1078. 3662. 3798. Vārāh. Bṛh. S. 94,13. Kathās. 25,48. 33,184. 60,36. Mārk. P. 123,21. Rāja-Tar. 2,100. Pārāś. 100,16. Pañcat. 87,10. fg. Hit. 17,18. 38,13. 64,1. 91,14. 130,4. Sarvadarçanas. 76,14. 154,14. स्वेच्छातस् dass. Kathās. 69,91. Hit. 69,19. स्वेच्छा am Anfange eines comp. in ders. Bed.: °दान Spr. (II) 1335. °लभ्य 4368. °परिवर्तित Vārāh. Bṛh. S. 77,14. °विहारिन् Kathās. 35,74. °चार 34,7. °चारिन् 68,27. Spr. (II) 6947. Sarvadarçanas. 79,19. °निर्मित 83,12. °वृत्ति Çuk. in L.A. (III) 33,8. स्वेच्छावतार Bhāg. P. 4,8,57. 8,5,46. स्वेच्छाकारविकारं कुर्वाणा: Hit. 38,3. 21. 47,13. 40,18. Verz. d. Oxf. H. 28,a, No. 71.

स्वेच्छामय (von स्वेच्छा) adj. *mit Willensfreiheit ausgestattet* Verz. d. Oxf. H. 23,a,10. 24,b,47. fg. Bhāg. P. 10,14,2. Pañcat. 1,1,6. 3,45. 8,11. 12,26. 2,1,3. 3,25.

स्वेच्छामृत्यु adj. *den Tod in seiner Gewalt habend;* m. Bein. Bhishma's Trik. 2,8,12. Pañcat. 2,5,53.

स्वैतव्य (6. सु + ए° adj.) n. impers. *leicht zu gehen:* यस्माल्लोकात् TS. 6,1,8,1.

स्वेद (von 1. स्विद्) m. 1) *Schweiss* AK. 1,1,3,33. Trik. 1,1,128. 3, 3,213. H. 305. an. 2,238. Med. d. 17. Hir. 154. ṚV. 1,86,6. स्वेदं पृथिव्यां द्रुहति 5,7,5. 38,7. 10,106,10. TS. 7,2,20,1. Kāṭh. 34,12. °जनन Kaṭṭ. 47. M. 5,135. MBh. 3,2215. 16748. R. 2,85,18. °नुद् 91,24. Suçr. 1,48,9. 13. 49,11. 116,10. 118,4. °नाश Çārṅg. Saṃh. 1,7,70. °स्राव 71. Ṛt. 1,7. गण° Megh. 27. ग्रन्थि° Vish. 27,2. गात्र° Spr. (II) 2811. 4880. 7199. Vārāh. Bṛh. S. 40,8. 78,6. 17. 93,5. 97,6. Kathās. 18,370. Bhāg. P. 5,16,26. Ved. in L.A. (III) 13,19. वपुर्ललाटम: स्वेदो रतिघर्मसमादिभि: Sāh. D. 167 = Pratāpar. 51,a,1. pl. *Schweisstropfen* ṚV. 10,134,3. Verz. d. Oxf. H. 51,b,26. am Ende eines adj. comp. (f. या) Siddh. K. zu P. 4,1,54. Vop. 4,17. सं° *schwitzend* MBh. 4,466. Kathās. 111,4. Rāja-Tar. 5,343. — 2) in der Medicin *Schweissmittel, Schweissmittel.* Kāraka handelt darüber 1,14 und zählt dreizehn Arten auf: पिण्ड°, नाडी°, प्रस्तर°, ज्ञेताक°, यन्त्रमुख°, कर्षू° u. s. w. Suçruta begreift dieselben unter vier Arten: ताप°, ऊष्म°, उपनाह°, द्रव° *Schwitzen durch Hitze, Dampf, warme Umschläge* und *Warmbad* 2,181,3. fgg.: vgl. Çārṅg. Saṃh. 3,2,1. Vishṇ. in Verz. d. Oxf. H. 304,b,22. fgg. Suçr. 1,97,20. 2,56,20. 366,7. Verz. d. B. H. No. 938. Verz. d. Oxf. H. 337, b,4. — 3) *Gluth, Wärme* Trik. 3,3,213. H. an. Med. — Nach Çārṅgadh. bei Wilson auch adj. *schwitzend.* Vgl. घर्म°, पुष्प°, शिला°.

स्वेदचूषक m. *ein kühler Wind* Çārṅgadh. bei Wilson.

स्वेदज adj. *aus Schweiss, feuchter Hitze entstanden* (Ungeziefer aller Art) AK. 3,1,51. H. 1336. Ait. Up. 3,3. दंशमशकं यूकामत्कुणम् M. 1,45. MBh. 14,1136. 2543. Suçr. 1,4,4. 19. fg. Veḍāntas. (Allah.) No. 71. Bhāg. P. 3,7,27. पर्यङ्के °दूषिते *besudelt durch Ungeziefer* 31,26.

स्वेदजल n. *Schweisstropfen* Mārk. P. 112,7. am Ende eines adj. comp. f. या Brahma-P. in L.A. (III) 57,19.

स्वेदन (von 1. स्विद् simpl. und caus.) 1) adj. *a) zu Schweiss geneigt* Suçr. 1,333,9. य° *nicht schwitzend:* चरणौ Vārāh. Bṛh. S. 68,2. 70,2. कत 68,33. — *b) Schweiss treibend:* °द्रव्य Kāraka 1,14. Suçr. 1,205, 6. — 2) f. ई *eine eiserne Pfanne* AK. 2,9,30. — 3) n. *a) das Schwitzen* Trik. 3,3,213. H. an. 2,238. Med. d. 17. — *b) Erzeugung von Schweiss, Schwitzkur:* प्रस्तर° Kāraka 1,14. Çārṅg. Saṃh. 3,2,19. Suçr. 2,5,17. 182,2. स्वेदनाभ्यञ्जनोपायै: शयपद्मिव नामितम् Spr. (II) 2851. — *c) eine best. mit dem Quecksilber vorgenommene Operation* Sarvadarçanas. 100, 4. st. dessen fehlerhaft स्वदन Verz. d. Oxf. H. 320,a,8. — Vgl. पाद°.

स्वेदनत्व (von स्वेदन) n. *Geneigtheit zu Schweiss* Suçr. 1,270,8.

स्वेदनिका f. = स्वेदनी *eine eiserne Pfanne* H. 921. Hālā. 2,158.

स्वेदमलोक्षित adj. *frei von Schweiss und Schmutz:* देहो जिनानाम् H. 57. °देह m. = जिन ÇKDa. und Wilson angeblich nach ders. Aut.

स्वैदाञ्जि (स्वेद + य°) adj. *von Schweiss schlüpfrig* d. h. *triefend* ṚV. 10,67,6.

स्वेदाम्बु (स्वेद + अम्बु) n. = स्वेदजल Kathās. 9,1.

स्वैदायन (स्वेद + य°) n. *Weg des Schweisses, Schweissporo* Çat. Br. 12,3,3,5. Jāim. 3,103.

स्वेदिन् (von 1. स्विद् oder स्वेद) adj. *schwitzend:* यस्वेदिनौ राजपुत्रस्य हस्तौ MBh. 8,4050.

स्वैदुकव्य (स्व३इदु° Padap.) adj. vielleicht *den Schweiss* (स्वेदु = स्वेद) *als Opfergabe bringend* d. h. *sich abmühend:* इन्दुर्येभिराष्ट स्वेदुकव्यै: (= स्वभूतसमृद्धकविष्क Sāy.) ṚV. 1,121,6. सर्वहृषा वृषभि: स्वेदुकव्यै: (= स्वायत्तेद्धकविष्क, स्वयंप्राप्तेन्धकं कव्यं येषाम् Sāy.) 173,2. — Vgl. 5,7,3.

स्वेद्य (vom caus. von 1. स्विद्) adj. *mit Schwitzmitteln zu behandeln* Spr. (II) 2229.

स्वेष्ट (स्व + 1. इष्ट) adj. *der eigenen Person lieb, Einem am Nächsten stehend:* °देवता Kathās. 72,251. Ved. in L.A. (III) 36,6; vgl. यमीष्टदेवता Pañcat. 55,18.

स्वैतु (स्व + एतु) adj. etwa *den eigenen Gang gehend:* स्वैतवो ये वसवो न वीरा: ṚV. 5,41,9. = शोभनगमन Sāy. Das Metrum zeigt, dass die Stelle verdorben ist.

स्वैदायनं (von स्वेद) m. patron. eines Çaunaka Çat. Br. 11,4,3,2. 3. Gop. Br. 3,6.

स्वैर (स्व + ईर von ईर्) adj. = स्वच्छन्द (स्वतन्त्र) und मन्द AK. 3,4, 35,194. H. an. 2,470. Med. r. 100 (स्वैरः st. स्वरः zu lesen). Halây. 5, 47. Zu belegen 1) स्वैरम् adv. P. 6,1,89, Vârtt. 4. Vop. 2,10. *aus eigenem Antriebe, nach eigenem Belieben, von selbst, ungehemmt, frei, ohne Weiteres, gerade heraus* (sprechen, fragen): लघुः स्वैरं गमिष्यसि MBu. 3,8449. संकृष्टो नगरं स्वैरमागतः 4,2212. गच्छ 13,4486. ब्रूहि 14, 1639. तिष्ठ स्वैरमिह (तिष्ठस्व त्वमिह die neuere Ausg.) so v. a. *ruhig* Mârk. 4610. यदत्र नः समं कृष्ण तत्स्वैरं संविधीयताम् 5270. R. 4,9,69. Mṛicch. 142,22. सार्थाः स्वैरं स्वकीयेषु चेरुर्वेश्मस्विवाद्रिषु Ragu. 17,64. सीतायाः शिरः स्वैरमुन्नमय्य Uttarar. 22,2 (29,6). Gît. 8,11. स्वैरं (von *selbst*) दविष्ठान्येका — यान्ति घटना कार्याणि निर्यत्नानाम् Spr. (II) 543. 1622. 2247. 2687. स्वैरमास्यताम् Kâd. 2,296. Kathâs. 4,40. 5,38. 7, 98. 10,148. 13,21. 24. 139. 15,109. 16,12. 17,114. 119. 18,346. 20, 206. 22,99. 188. 23,40. 24,112. 25,157. 239. 26,186. 27,153. 181. 191. 28,142. 29,30. 30,131. 32,26. 168. 33,81. 96. 206. 34,6. 25. 35,40. 37, 105. 152. 39,54. 40,76. 41,41. 45,247. 307. 315. 344. 46,60. 174. 51, 66. 53,27. 36. 55,74. 56,138. 364. 58,13. 59,104. 132. 60,64. 138. 216. 61,257. 63,166. 64,45. 119. 66,70. 69,48. 57. 71,130. 72,352. 75,112. 162. 76,25. 89,99. 103,223. 106,111. 123,183. Râga-Tar. 5,411. 6,212. Śiś. D. 115,8. 153,19. Bhâg. P. 1,1,18. 4,26,20. 5,4,4. 9,18. 17,12. 24,16. 8,12,38. 17,9. 10,33,25. 34,25. 42,23. = विस्रब्धम् Schol. zu Çiç. 9,18. = सविस्रम्भम् Comm. zu Kâd. 2,296. = नीचैस् H. an. 7,51. Med. avj. 81. — 2) स्वैरेण dass. R. 7,59,2,29. Bhâg. P. 5,14,31. — 3) स्वैरेषु *in Fällen, wo man sich frei gehen lassen kann; bei gleichgültigen Sachen* नाहं मृषा ब्रवीम्येव स्वैरेष्वपि कुतः शपन् MBu. 1,1726. 1921. 3086. 2343. 4499. 3,1918. 2865. 13573. 16845. 12,1740. 13,2684. 14,1671. 2027. 17,66. R. Gorr. 2,15,30. — 4) am Anfange eines comp. in der Bed. von स्वैरम्. °विहारिन् *nach eigenem Belieben* Jâtâ. 1,328. Râga-Tar. 4,339. स्वैरमुक्ताः शराः so v. a. *auf's Gerathewohl* MBu. 3,1949. °ज्ञातगति *von selbst, ohne Weiteres* Bhâg. P. 1,13,26. °संगता Kathâs. 60,4. अव्याकृतस्वैरगतेः Ragu. 2,8. स्वैराचार adj. *zwanglosen Benehmens* MBu. 3,13053. स्वैरालापाः Spr. (II) 4218. °कथाः 3956. 6761. Bhâg. P. 10,47,43. स्वैराहार *nach Belieben* Spr. (II) 7356. स्वैरोत्थानथम Kathâs. 39,171. °साहस 27,202. °प्रचार Pañkat. 31,3 (ed. orn. 27,12). स्वैरावतार Bhâg. P. 10,69,17. °संयुग 36,25. °सृष्ट् wohl fehlerhaft für स्वैरि° Spr. (II) 785, v. l. — Vgl. यथास्वैरम्.

स्वैरकम् (von स्वैरम्) adv. *gerade heraus, ohne Umschweife* Mṛicch. 165,3.

स्वैरगति adj. *frei einhergehend* (Gegens. बद्ध) Çiç. 108.

स्वैरचारिन् adj. *sich frei bewegend* eig. und übertragen so v. a. *nach freiem Willen verfahrend, seinem Willen fröhnend, frei* MBu. 5,3832. Harîv. 4946. R. 1,34,29 (35,27 Gorr.). 3,52,27. 5,12,3. Bhâg. P. 6,1,67.

स्वैरता f. = स्वैरिता Rîgân. zu AK. 3,3,2 nach ÇKDa. Vgl. in LA. (III) 19,18.

स्वैरवर्तिन् adj. *sich frei benehmend, nach seinem Willen verfahrend* Bhâg. P. 10,74,38.

स्वैरवृत्त adj. (f. आ) dass. MBu. 3,2974. R. 3,37,2. 4,17,34.

1. स्वैरवृत्ति f. *Freiheit, Ungebundenheit* (als Tadel) H. an. 3,420.

2. स्वैरवृत्ति adj. *sich frei benehmend, ungebunden* (als Tadel) Spr. (II) 5689. 7198.

स्वैरस्थ adj. *ruhig —, unbesorgt dastehend* Kathâs. 21,35.

स्वैरिता (von स्वैरिन्) f. *Freiheit, Ungebundenheit* AK. 3,3,2 (स्वरता ed. Lois.). H. 356.

स्वैरिन् (स्व + ईरिन् von ईर्) adj. P. 6,1,89, Vârtt. 4. *frei, unabhängig* AK. 3,1,15. H. 355. MBu. 13,6526. fg. Spr. (II) 7231. Vâsishṭhaçikshâ 320. *in geschlechtlicher Beziehung sich frei benehmend* Kâmand. Up. 5,11,5. in dieser Bed. insbes. vom Weibe ebend. AK. 2,6,2,11. H. 529. Halây. 2,341. Nârada in Mit. zu Jâgñ. 2,51 (52). Jâgñ. 1,67. MBu. 1, 4672. 4834. 2,1142. 12,3394. 13,5795. Harîv. 6271. Spr. (II) 1810. 2800. Râga-Tar. 3,496. Bhâg. P. 5,24,16. 6,1,65. 5,14. 8,9,10. 10,47,43. Pañkat. 129,1. LA. (III) 19,20. 20,12. 35,17. fg. Sarvadarçanas. 153,16.

स्वैरिन्धी f. = सैरिन्धी Çabdar. im ÇKDa.

स्वैर्ष (स्व + ऋष) s. u. 2. ऋष.

स्वोचित (स्व + उ°) adj. *dem Selbst angemessen, — entsprechend* Spr. (II) 6239. Kathâs. 9,20. 20,56. 21,138. 25,295. 29,49. 32,147. Râga-Tar. 2,84.

स्वौजस् (6. सु + ओ°) adj. *sehr kräftig:* Indra RV. 6,22,6. 7,20,3. 10,29,8.

स्वोत्थ (स्व + उत्थ) adj. *im Selbst entstanden, angeboren* Çaṃk. zu Kâṭhaka Up. S. 29.

स्वोत्थित (स्व + उ°) adj. *im Selbst entstanden, selbstverschuldet:* दोष Kathâs. 32,36.

स्वोदरपूरक adj. (nur) *seinen Bauch füllend, nur an's Essen denkend* H. 427.

स्वोपार्जित (स्व + उ°) adj. *selbsterworben* Dâsat. im ÇKDa.

स्वोरस m. *Trester* Çabdar. im ÇKDa.

स्वौजस् (स्व + ओ°) m. N. pr. eines Rathgebers des Vainja Verz. d. Oxf. H. 264,*a*,6.

स्वौपर्श (6. स + ओ° = ओ°) adj. (f. आ) *mit schöner Locke oder dgl. versehen:* Sinîvâlî VS. 11,56.

ह

1. क् enklitische Partikel VS. Pair. 2,16. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. leicht hervorhebend und versichernd. पादपूरणे AK. 3,3,5. Mnn. 8vj. 84. क्रियायाम् (vgl. P. 3,1,60), कृत्यायाम्, नियोगे, विनियुक्ते, संबोधने Mnn. mit imperf. und perf. P. 3,2,115 nebst Vârtt. zu 122. dabei die orthotonirten Formen des pron. pers. P. 8, 1, 24. Vop. 3,143. Einfluss auf die Betonung des verbi finiti 8,1,58. häufig in relativen Sätzen: यद् वा-त्तिं मरुतः मं कं ब्रुवते ṚV. 1,37,12. 63,1. 103, 4. 3,32,10. परा क् पत् 1,39,3. 9,88,1. यो कं 1,63,1. 151,7. nach कद् 38,1. 8,36,5. कम् 1,39,1. क उग्रा के कं भणिवरे 8,66,1. 10,40,1. कयम् AV. 7,76,5. गुवम् ṚV. 1,157, 5. 6. यूयम् 7,37,2. ते 18,1. त्वम् 19,2. 8,64,3. त्वया 21,11. यूयम् 7,68,4. 86, 3. AV. 7,38,5. तस्य 4,20,3. 6,21,1. 13,1,38. Ait. Bn. 3,44. Çat. Bn. 14,4,2, 26. fgg. ते क् स्म Ait. Bn. 4,26. 6,1. nach praepp. ṚV. 1,57,2. 8,9,18. 10, 31,9. Ait. Bn. 2,2. Kauç. 127. यद s. u. d. W. यादिद् ṚV. 10,23,3. एवम् AV. 12,4,22. ततम् 31. एवा 34. शश्वत् Ait. Bn. 3,48. क्षिप्रं क्षेव 8,24. उ ṚV. 1,157,6. उपो 7,93,3. TBn. 2,3,10,2. Ait. Bn. 2, 22. Çat. Bn. 11,5,2,3. यथ 14,4,1,4. fgg. यदो AV. 5,21,3. 12,4,39. न क् वे Ait. Bn. 8,24. इति Çâṅkh. Çr. 15,7,6. Gaut. 4,12. Gobh. 1,9,2. इति तं क्षेवाच Maitrâjp. 3,1. अग्निर्क् दाति रत्नं पृथिव्याः ṚV. 1,65,3. 10,80,3. यमो क् ज्ञातो यमो जनित्वम् 1,66,3. 116,3. 117,24. 152,1. वसिष्ठं क् वरुणो नाव्याधात् 7,88,4. AV. 2,27,3. 3,10,1. 4,34,4. 8,9,5. 18. Çat. Bn. 1, 1,2,5. 7. 16. 21. 2,5. तस्य केतस्य मामहे यः स्वं वेद । भवति क्रस्य स्वम् 14,4,2,27. Belege aus der späteren Sprache: इति क्षेवाच M. 2,151. Bhâg. P. 5,1,10. 2,6. 24,33. इति क्षेच्यते R. 2,63,6. इति क् am Ende eines Verses Spr. (II) 1454. MBn. 3,2189. इति स्म क् 2448. इति क् वाव Bhâg. P. 5,1,33. यथ क् 7. या क्षेव स नक्षत्रेभ्यः परमं तप्यते तपः M. 2, 167. यज्ञ क् Bhâg. P. 1,18,13. यमामनन्ति स्म क् 3,1,34. यदि क् 16,33. ये वा उ क् 5,1,31. यदु क् वाव 3,15. पद्म क् पत् 10,82,38. मा क् Kauṭ. 44. तदु क् Bhâg. P. 8, 12, 26. तस्मिन्नु क् वे 5,1,27. 2,19. तस्यामु क् वाव 1,24. तत्र क् 26,15. तत्र क् वे 1,9. तस्य क् यः 5,33. कयमु क् 7,9,34. तावत्कृत्वो क् M. 5,38. न क् 9,270. मा क्षेव Sarvad. P. 4,10,5. 12,2. प्रपत्स्येते क् Bhâg. P. 3,19,29. 4,21,41. überaus häufig am Ende eines Verses: nach einer 3. sg. perf. (⏑—⏑) MBn. 1,526. 582. 1878. 3387. 3396. 6009. 7644. 3,1751. 2126. 2164. 2279. fg. 2386. 2513. 2642. 2724. 2807. 2829. 2947. 2995. 5,7394. 7397. 7410. 7503. R. 1,1,25. 29. 40. 53. 84. 9,51. 51,23. 52,2. 19. 54,28. 59,7. 61,6. 11. 62,2. 4. 8. 21. 63,14. 2,64,28. R. Gorr. 2,9,35. 3,48,12. 52,22. 53. 4,11,7. 51,21. 5,36,25. Bhâg. P. 1,16,1. 2, 10,48. 3,14,30. 20,28. 4,20,18. 8,4,9. 9,2,5. 20,33. 10,77,33. धनुशा-स्ति क् MBn. 3,2449. 5,6054. वायस्व क् 3,2140. अभिप्रपद्य क् 1,1182. 3,2307. नलस्य क् 2773. वानरेण क् R. 1,1,57. 60. Bhâg. P. 3,4,4. 4, 20,2. नलद्य क् MBn. 3,2005. M. 9,28. स्वपुत्रमेव क् MBn. 3,2028. क्षेव क् 5,7111. तत्र तत्र क् 8,2007. Als Beispiel in der Bed. क्रियायाम् (*Verstoss gegen die Sitte*) führt der Schol. zu P. 8,1,60 an: स्वयं क् रथेन यातोऽे उपाध्यायं पदातिं गमयति. — Vgl. इतिक्रम.

2. क् (von 1. कृ) adj. (f. घा) am Ende eines comp. *tödtend, Tödter; vernichtend, zerstörend* P. 3,2,49 (आशिषि). Vop. 26,33. — Vgl. अरा-ति°, आयुविष°, कृमि°, मल°, विष°, वृत्र°, अण°, शत्रु°, श्लेष्म°, सत्रा°, सप्त°, सकृत्म°.

3. क् (von का *verlassen, meiden*) 1) adj. *verlassend, meidend* in अनेक° und वापी°. — 2) f. घा *das Verlassen, Meiden* Çabdârthak. bei Wilson.

4. क् 1) m. = शिव, सलिल, शून्य, धारण, मङ्गल, गगन, नकुलीश, रक्त und नाक Mnn. h. 1. = पापकरण und चन्द्र Çabdar. im ÇKDn. = मोक्षोपचारण und शुष्क Ekâkṣharak. im ÇKDn. *dying; fear; knowledge* Wilson nach ders. Aut. Vishṇu; *war, battle; horripilation; a horse; pride; a physician; cause, motive.* — 2) f. घा *cotton; a lute.* — 3) n. *God, the supreme soul; pleasure, delight; calling, calling to; a weapon; the sparkling of gem; the sound of a lute.* — 4) m. f. (घा) und n. *laughter.* — 5) adj. *mad, drunk* Wilson nach Çabdârthak. — 6) indecl. (!) = घकम् (!) Ind. St. 2, 86, N. 3.

कंर्म Uṇâdis. 3,62. Kâr. aus Sidd. K. zu P. 6,3,109. 1) m. a) *Gans (ein Zugvogel), Gänserich;* auch wohl *Schwan* und *andere verwandte Wasservögel* AK. 2, 8, 23. 25. 3, 4, 30, 228. Taik. 2, 5, 31. 3, 3, 454. H. 1325. an. 2, 594. fg. Mnn. s. 11. Halâj. 2, 96. 98. Viçva bei Uṇâdis. ṚV. 1, 65, 5. in Reihen fliegend 163, 10. 3, 8, 9. 8, 34, 5. 4, 40, 5. 5, 78, 1. 8, 35, 5. 9, 97, 5. 10, 124, 9. ihr Schnattern 3, 53, 10. 9, 32, 2. 10,

67,3. AV. 8,7,24. 11,2,24. 12,1,51. TS. 5,5,21,1. als Gespann der Açvin RV. 4,45,4. als ein in der Nacht waches Thier (vgl. den Kranich) AV. 5,12,1. von der Sonne (vgl. *b*) gesagt 13,3,17. fg. (vgl. Taitt. Ân. 2,15,3). 11,4,21. 13,3,14. हिरण्मय TBr. 3,10,9,11. सोमम्वो व्यपिबद्धंसा हंसः (wie später Milch und Wasser) प्रुचिषत् VS. 19,74. °मुख Kâty. Çr. 1,3,37. Kaush. Up. 4,7,1.2 (= *Sonne* Çañk.). Çikshâ in Ind. St. 4,108. °वाहनगामिनी M. 3,10. 5,12. 11,135. 12,62. MBh. 3,2090. fgg. 2446. मत्त° R. 2,112,15. 5,55,2. Suçr. 1,205,12. 19. 334, 4. Mṛicch. 120,17. Megh. 24. 38. 74. Ṛt. 1,5. Ragh. 17,25. Vish. 95. धृतिं न लभते हंसो ऽपि कूपोदके Spr. (II) 1613. 1787. हंसा यथा मानसं स्मरन्ति 3716. न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा 4800. 5078. येन श्रुलोकृता हंसाः 5537. 7357. fgg. Varâh. Bṛh. S. 12,4. 8. 33,10. 44,24. 48,9. 68,115. 81,3. Kathâs. 69,131. LA. (III) 5,3. 49,9. Buddh. P. 1,5, 10. 3,10,23. 15,38. 5,13,17. 11,4,17. °जातीय Pañkat. 76,7. 8. Verz. d. Oxf. H. 93,*a*,1. 123,*a*,30. 281,*b*,37. हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः Çik. 155. Kap. 4,23. Spr. (II) 544. Brahman's Gespann 4771. Buddh. P. 4,1,24. हंसो भूत्वाथ सोवर्णस्त्वन्नो नित्यः प्रजापतिः । स वै पर्येति लोकांस्त्रीन् MBh. 12,10993. fgg. हंसा धार्तराष्ट्रा देवलोकनिवासिनः Harîv. 8585. fgg. Çâkjamuni als *Gans* Vâju beim Schol. zu H. 233. am Ende eines adj. comp. f. घा MBh. 7,2110. 4086. 9,442. Ragh. 16,56. — *b*) Bez. *der Sonne* (vgl. unter *a*) AK. 1,1,2,23. 3,4,20,228. Taik. 3, 3,454. H. 96. H. an. Med. Hall. 1,37. Viçva a. a. O. MBh. 3,191. — *c*) (*die wie die Gans reine und wandernde*) *Seele*, auch *die Weltseele* (du. *die individuelle und die Weltseele*) Çvetâçv. Up. 1,6. 3,18. 6,15. हिरण्यवर्णः शकुनो रुग्यादित्ये प्रतिष्ठितः । मद्गुर्हंसस्तेजोवृषः Maitrâjan. 6, 34. 35 (= Kâlikop. in Ind. St. 2,10). Ind. St. 2,63. 3,14. Buddh. P. 4, 24,7. 28,61. 64. 29,80. 5,5,10. 7,13. 6,16,47 (परम°). 11,17,10. Verz. d. Oxf. H. 149,*b*,23. 150,*a*,5. mit Nârâjaṇa, Vishṇu, Kṛishṇa identificirt Taik. H. an. Med. Viçva a. a. O. MBh. 1,2431. 12,12864. 13, 6970. Harîv. 11389. 14114. Pañkat. 4,3,26. 8,88. = विराज् Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,326. = Çiva Anekârthas. im ÇKDa. = Kâma Wilson ohne Angabe einer Aut. — *d*) *ein best. Wind im Körper* H. an. Med. Viçva a. a. O. Ind. St. 1,385. — *e*) Bez. *einer Art von Asketen* H. an. Med. MBh. 13,6478. Harîv. 15469. 15472. Verz. d. Oxf. H. 269, *a*, 12. fgg. 42. fgg. Weber, Râmat. Up. 362. Buddh. P. 3,12,43. 7,9,18. 11,17,9. 29,3. — *f*) Bez. *eines unter bestimmten Constellationen geborenen Wundermenschen* (महापुरुष) Varâh. Bṛh. S. 69,2. 7. 24. 26. 33. — *g*) pl. Bez. *der Brahmanen in* Plakshadvîpa Buddh. P. 5,20,4. — *h*) *ein genügsamer Fürst* Taik. H. an. Med. Viçva a. a. O. — *i*) *Pferd* Naigh. 1,14 (wohl weil die *Gans* das *Reitthier* der Açvin ist). H. ç. 177. *ein best. Pferd* H. an. Med. Viçva a. a. O. des Mondgottes Vâju beim Schol. zu H. 104. — *k*) Bez. *eines vorzüglichen Zugochsen* Varâh. Bṛh. S. 61,17. *Büffel* schlechte v. l. H. 1283; vgl. हंसकालीतनय. — *l*) Bez. *einer best. Tempelform* Varâh. Bṛh. S. 56,18. हंसो हंसाकारः 26. — *m*) *Neid, Missgunst* H. an. Med. — *n*) *ein best. Zauberspruch* dess. Verz. d. Oxf. H. 236,*b*,16. — *o*) = श्रेष्ठ und यमतः स्थितः H. an. — *p*) Bez. zweier Metra: *α*) *4 Mal* – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2,158 (V,1). — *β*) *4 Mal* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ –, ⏑ – ⏑ – – – ⏑ – – obend. 162 (X,18). — *q*) mystische Bez. *des Buchstabens* क्ष Verz. d. Oxf. H. 97,*a*, No. 151. — *r*) N. pr. *α*) eines Devagandharva Harîv. 14139. eines Dânava 9141. eines Sohnes des Brahman Buddh. P. 4,8,1. des Vasudeva 9, 24,30. der Arishṭâ MBh. 1,2718. Kâd. in Z. d. d. m. G. 7,384. des Kîtragupta Verz. d. Oxf. H. 341,*b*, No. 799. des Brahmadatta und Heerführers des Garâsaṁdha MBh. 2,576. 601. fgg. Harîv. 15404. des Arthapati Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. — Pravarâkhj. in Verz. d. B. H. 89,20. Verz. d. Oxf. H. 259,*a*, No. 713. Hall 165. — *β*) eines Berges VP. 169. Buddh. P. 5,16,27. *Berg* überh. Çabdar. im ÇKDa. — 2) f. ई *a*) *eine weibliche Gans* Vop. 4,15. H. 1327. Megh. 120,17. Kathâs. 43,155. 69,131. fg. Khandom. 114. — *b*) Bez. verschiedener Metra: *α*) *4 Mal* – – – –, ⏑ – ⏑ – ⏑ – – Çrut. 16. Colebr. Misc. Ess. 2,159 (V,12; hier fehlerhaft). — *β*) *a. c.* – – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – –; *b. d.* ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – – Journ. of the Am. Or. S. 6,514. — *γ*) *4 Mal* – – – – – – – –, ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2,163 (XVII,3). Khandom. 114. — *c*) N. pr. einer Tochter Bhagiratha's und Gattin Kautsa's MBh. 13,6270. einer Sängerin Râga-Tar. 5,359. 396. — Vgl. एक°, पर°, परम°, भक्ति°, महा°, राज°, राज°.

हंसक (von हंस) gaṇa पत्यादि zu P. 4,2,80. 1) m. *a*) *eine arme Gans* Spr. (II) 6035. *Gans* überh. Buddh. P. 18,12,8. *Flamingo* Çabdar. im ÇKDa. — *b*) *ein best. Tact* Saṁgîtadâm. im ÇKDa. — *c*) N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. = हंस ein Sohn Brahmadatta's und Heerführer des Garâsaṁdha Harîv. 16072. — 2) m. (AK. und Hâs.) und n. (H. und Hall.) *Fussring* AK. 2,6,8,11. H. 666. Hâs. 173. Hall. 2,406. °भूषण Çic. 7,23. — 3) f. हंसिका Uṇâdis. 4,153. *a*) *eine weibliche Gans* Çabdar. im ÇKDa. Uddîpan. Kathâs. 69,154. Nalod. 2. 40. — *b*) N. pr. einer mythischen Kuh MBh. 5,3609. — Vgl. हंसकायन.

हंसकवती (von हंसक) f. N. pr. v. l. im gaṇa घञिरादि zu P. 6,3,119.

हंसकाकीय (von हंस + काक) adj. *die Gans und die Krähe betreffend:* आख्यान MBh. 1,543.

हंसकाला f. *eine weibliche Gans* Hall. 2,96.

हंसकायन m. pl. N pr. einer Völkerschaft MBh. 2,1870. — Vgl. हांसकायन.

हंसकालीतनय m. *Büffel* H. 1283 (v. l. हंस und काली°).

हंसकोलक m. *quidam coeundi modus* Sharadîpikâ im ÇKDa. हंसनीलक Suçruta 21.

हंसकूट m. 1) *der Buckel des indischen Ochsen* Çaṁkarâkârjan. bei Wilson. — 2) N. pr. eines Berges MBh. 1,4639. Harîv. 8993.

हंसकोड N. pr. einer Oertlichkeit Tîrân. 135.

हंसग adj. *auf einer Gans reitend;* m. ein N. Brahman's H. 212.

हंसगद्गदा f. *ein lieblich redendes Weib* Taik. 2,6,2.

हंसगामिनी adj. f. *den Gang einer Gans habend, gravitätisch einherschreitend* M. 3,10.

हंसगुह्य n. *das Mysterium der Weltseele*, Bez. eines best. Loboliedes Buddh. P. 5,4,22.

हंसचूड m. N. pr. eines Jaksha MBh. 2,398.

हंसत्र m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2570.

हंसत्रिरुह m. N. pr. eines Mannes; pl. *sein Geschlecht* Saṁgîtak. K. 185,*b*,4.3.

हंसता f. nom. abstr. von हंस *Gans* Kathās. 114,133.

हंसतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,31. fg. 71,*b*,8. 73,*b*,13.

हंसतूल *Gänsefiaum* Daçak. 90,8.

हंसत्व n. nom. abstr. von हंस *Gans* Kathās. 43,193. Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,326,14.

हंसदाक्न n. *Agallochum* Çabdak. im ÇKDa.

हंसदूत m. *die Gans als Bote*, Titel eines Gedichts von Rûpagosvâmin Hall. Anth. 374. fgg. Ind. St. 1,473. Verz. d. Oxf. H. 175,*a*,37.

हंसद्वीप m. n. N. pr. einer *Insel* Kathās. 73,329. 372. 101,61.

हंसधज m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. B. H. 114,3.

हंसनादिन् adj. *wie eine Gans redend; f.* °नी Bez. *einer best. Art von Frauen:* गजेन्द्रगमना तन्वी कोकिलानां कृतान्विता। नितम्बगुर्विणी या सा कथ्यते हंसनादिनी॥ Çabdam. im ÇKDa.

हंसनादोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Ind. St. 1,385. fgg.

हंसनाभ m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,12.

हंसनीलक s. हंसकीलक.

हंसपक्ष m. Bez. *einer best. Stellung der Hand* Verz. d. Oxf. H. 86,*a*, 29. 202,*a*,9. 10. 46.

हंसपथ m. *Gänseweg* in eig. und übertr. Bed. gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100. pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 7,798 nach der Lesart der ed. Bomb. (°पद् ed. Calc.); vgl. हंसमार्ग.

1. हंसपद् n. 1) *Gänsefuss* (als Marke) Z. d. d. m. G. 9,670. Monatsberr. d. K. Pr. Ak. d. Ww. 1873, S. 711. — 2) *ein best. Gewicht*, = कर्ष Çârîr. Sâṃ. 1,1,17.

2. हंसपद् 1) m. pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 7,798. °पद्य ed. Bomb. — 2) f. घा Bez. *einer* Svarabhakti Comm. zu TS. Prât. 21, 15. Weber, Prâtiçâkh. 109. °पाद्या v. l.

हंसपदिका f. N. pr. der ersten Gemahlin Dushjanta's Çik. 59,15. — Vgl. हंसवती.

हंसपदी f. 1) *eine Mimosenart* Ratnam. 247. 250. Dhanv. 4,86. Mad. 1,249. *Cissus pedata Lam.* Râǵân. im ÇKDa. — Karaka 8,31. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* – – – – ⏑ ⏑ – Colebr. Misc. Ess. 2,159 (III,10).

हंसपरमेश्वर Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,28.

हंसपाद 1) n. *Zinnober* H. 1061. Hall. 2,466. — 2) f. घा schlechte v. l. für °पदी Comm. zu TS. Prât. 21,15. — 2) f. ई *a*) *eine Mimosenart* Râǵân. 5,112. Ratnam. 250. Dhanv. 4,86. Karaka 3,8. Suçr. 1,137, 6. 2,172,10. — *b*) N. pr. einer Apsaras Vâyu beim Schol. zu H. 183.

हंसपादिका f. = हंसपादी *a*) Râǵân. 5,109.

हंसपाल m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 503, Çl. 17.

हंसपुर n. N. pr. einer *Stadt* Reinaud, Mém. sur l'Inde 98.

हंसप्रपतन n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8229.

हंसबीज n. *Gänsei* Râǵân. im ÇKDa.

हंसभण्डूरक n. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 997.

हंसमार्ग m. pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 6,377 (कन्यमान ed. Bomb.). Mârk. P. 57,41. 56.

हंसमाला f. 1) *eine Reihe von (fliegenden) Gänsen* Kumâras. 1,30. — 2) *eine Gansart mit dunkelgrauen Flügeln* (काद्म्ब) Çabdak. im ÇKDa. — 3) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ ⏑ – – – ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2, 159 (II,3). Ind. St. 8,366.

हंसमाषा f. = माषपर्णी *Glycine debilis Lin.* Râǵân. 3,19.

हंसमाहेश्वर Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,28. fg.

हंसमीन n. desgl. Hall 132.

1. हंसयान n. *eine Gans als Vehikel* oder *ein von Gänsen gezogener Wagen* Kathās. 115,101. Bhâg. P. 3,1,9.

2. हंसयान adj. (f. घा) *auf einer Gans reitend:* सरस्वती Verz. d. Oxf. H. 157,*b*, No. 339.

हंसरथ 1) adj. *Gänse zum Gespann habend.* — 2) m. *a*) ein N. Brahman's Taitt. 1,1,25. — *b*) N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,252. 253. 445.

हंसराज m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6,330.

हंसरुत n. 1) *Gänsegeschnatter* Suçr. 1,107,11. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* – – – ⏑ ⏑ ⏑ – – Colebr. Misc. Ess. 2,159 (III,4). Ind. St. 8,367. fgg.

हंसलोमश n. *Eisenvitriol* Râǵân. 3,80.

हंसलोहक n. = पित्तल ÇKDa. angeblich nach H.

हंसवक्त्र m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2577.

हंसवत् 1) adj. *das Wort* हंस *enthaltend* Ait. Br. 4,20. — 2) f. °वती gaṇa घृतादि zu P. 6,3,119. Schol. zu 8,1,220. *a*) *Cissus pedata Lam.* Gaṭṭou. im ÇKDa. — *b*) N. pr. *a*) der ersten Gemahlin Dushjanta's Çik. Cn. 94,4. 8 (vgl. हंसपदिका). der Mörderin Vîrasena's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. — *b*) einer Stadt, = Pegu LIA. 4,355. Târan. 262.

हंसवाक् adj. *auf einer Gans reitend:* देवं हंसवाहम् d. i. Brahman Bhâg. P. 7,3,24.

हंसवाहन adj. dass.; m. ein N. Brahman's Gaṭṭou. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,8. Bhâg. P. 7,3,16.

हंसविवेक m. Titel einer Schrift Hall 141.

हंसवेग m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 52.

हंससंघाराम m. N. eines *Klosters* Hiouen-thsang 2,60. Vie de Hiouen-thsang 162.

हंससोचि m. *ein best. Vogel* TS. 5,5,20,1.

हंसाद्रि (हंस + अद्रि) 1) m. *Mennig* Çabdâmrtan. bei Wilson. — 2) f. ई = हंसपादी *eine Mimosenart* Râǵân. 5,112.

हंसाधिरूढ adj. *auf einer Gans reitend; f.* घा Bez. der Sarasvatî Tantrasâra im ÇKDa.

हंसाभिख्य (हंस + अभिख्या) n. *Silber* H. 1043.

हंसाय् (von हंस), °यते *eine Gans darstellen* P. 3,1,11, Schol. °यते चारुगतेन कान्ता Spr. (II) 2248. °यितुम् Verz. d. Oxf. H. 120,*b*,11.

हंसारूढ (हंस + आ°) adj. *auf einer Gans reitend:* Brahman und Sarasvatî ÇKDa. Varuṇa Vaitân. Bṛh. S. 58,57.

हंसावती f. N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. 118,4. — Vgl. हंसवती.

हंसावली (हंस + आ°) f. 1) *eine Reihe von (fliegenden) Gänsen* Kathās. 71,70. — 2) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Kathās. 71,74.

fgg. 74,215. 93,33.

कंसास्य (कंस + आस्य) m. Bez. *einer best. Stellung der Hand* Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,26. 202,*a*,3. 44.

कंसाह्वया (कंस + आह्वय) f. = कंसपाटी *eine Mimosenart* Suçr. 2,110,1.

कंसिन् (von कंस) adj. etwa *die Weltseele in sich enthaltend:* Kṛshṇa Paṅkar. 4,8,88.

कंसिर m. *eine Mausart* Suçr. 2,278,1. कंसिर Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,18.

कंसीय adj. von कंस gaṇa गर्गादि zu P. 4,2,138.

कंसेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 67,*b*,16.

कंसोदक (कंस + उ°) n. Bez. *eines auf best. Weise behandelten Flusswassers* Râǵan. 14,47.

कंसोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Colebr. Misc. Ess. 1,97. Verz. d. Oxf. H. 394,*b*,24. Notices of Skt Mss. 1,23. °दीपिका 90. — Vgl. परम°.

कंको interj. *des Anrufens* H. 1537. Halâs. 5,97. Sin. D. 171,2 v. u. MBu. 12,9604. Mṛkkh. 144,22. Spr. (II) 1442. Vikr. 61,12. 69,3. 70,15. Kathâs. 110,69. Kâçikh. 13,82 (nach Aufrecht). Kâdab. 22. Prab. 27, 11. Pañkat. 192,12.

कक्क 1) m. *das Herbeirufen eines Elephanten* Gaṇîkh. im ÇKDa. — 2) f. आ *Knie* Varâh. Bṛh. S. 88,4.

कक्कार m. *das Anrufen* H. ç. 81. Çabdârthak. bei Wilson.

कचि s. सुन्दर°. °पुर n. N. pr. einer *Stadt* Târan. 199.

कच्चदेश m. N. pr. einer *Oertlichkeit* Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,15.

कच्चान desgl. ebend. 340,*a*,14. कच्चानि 339,*a*,13.

कच्चा s. कार°.

कच्चि (onomatop.) m. *das Niesen* Gaṇîkh. im ÇKDa.

कच्चिका f. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Bhâvapr. im ÇKDa.

कच्चे indecl. *Anruf einer Dienerin* u. s. w. im Drama AK. 1,1,9,15. H. 334. Daçar. 2,65. Sin. D. 172,13. häufig im Prâkrit.

कट्, कैटति (दीप्ति) Dhâtup. 9,25.

कट Soçr. 1,170,19 und Râǵa-Tar. 1,303 fehlerhaft für कठ; कटक R. 1,14,28 fehlerhaft für काटक.

कटपर्णि n. Çabdar. im ÇKDa. fehlerhaft für कठपर्णी.

कटृ 1) m. AK. 3,6,2,18. *Markt* Trik. 2,1,20. 3,3,312. H. 1002. Hân. 70. Pañkat. 262,15. Vet. in LA. (III) 10,15. Vop. 26,16. — 2) f. ई *Marktflecken* Hân. 164. — Vgl. कमला°, वसु°, श्री°, हेरम्ब°.

कटृक s. वसु° unter वसुकटृ.

कटृचन्द्र m. N. pr. eines Commentators des Amarakoça Udâyan. Einl. 3. zu 1,19. 42. 4,101. 155. 5,3. Verz. d. Cambr. H. 14. — Vgl. कडुचन्द्र.

कटृचौरक m. *Marktdieb* Çabdar. im ÇKDa.

कटृविलासिनी f. *ein best. Parfum* AK. 2,4,4,18. Trik. 3,3,272.

कटृध्यक्ष m. *Marktaufseher* H. 725.

कठ्, कैठति (प्रतिशब्दयोः, क्लात्कारे, कौलबन्धे क्लात्कृतौ प्रतौ, शठत्व s. शङ्कुल) Dhâtup. 9,50.

कठ 1) m. *a) Gewalt* AK. 2,8,2,77. 3,5,10. Trik. 3,3,110. H. 804. 1539. an. 2,110. Med. kh. 10. Halâs. 4,74. कठेन *mit Gewalt, gewaltsam:* वानराम्बारणमास कठेन मधुरेण च R. 5,61,17. Spr. (II) 6448. यावन्न दूरं क्षिप्यते कठेन Kathâs. 48,126. Râǵa-Tar. 1,256. 302 (कठेन gedr.). कठात् dass. Spr. (II) 3650. Kathâs. 4,82. 5,98. 30,9. 34,15. 45,226. 52,53. 78. 249. 64,105. 65,78. नृपं रतिसुखाभिज्ञं तं कठात्ते प्रचक्रतुः Râǵa-Tar. 5,383. कठवृत्त्या dass. Spr. (II) 7480. कठाभेष *eine gewaltsame Umarmung* 3869. कठोन्मूलन Râǵa-Tar. 2,93. °निर्वासन 155. °प्रविष्टतोयोघ 3,527. — *b) das Bestehen auf seinem Kopfe:* °प्रवृत्त *auf seinem Kopfe bestehend* Kathâs. 30,234. वेधा वक्रिकणास्य शक्तिमतुलामाधातुकामो कठात् so v. a. wenn *er darauf besteht erzeugen zu wollen* Spr. (II) 2685. (तम्) कठाद्वव्रे Kathâs. 7,57. कलिङ्गसेना तु कठादुपायता गृहं मम 33,89. 63,58. कठादर्पितो ऽयम् 36. Pañkat. 138,1. कठात्-कृ *auf seinem Kopfe bestehen* Kathâs. 45,148. 62,171. कठागता 33,90. — *c) absolute Nothwendigkeit,* als Ursache alles Seins und Werdens: कठो वा वर्तते लोके कर्मणो वा फलं स्मृतम् MBu. 12,1146. शुद्धं हि दैवमेवेदं कठे नैवास्ति पौरुषम् 6597. सर्वमेव कठेनेके दैवेनेके वदन्त्युत 3,1233. अस्ति सर्वमदृश्यं तु दिष्टं चैव तथा कठः 1235. 1221. यश्च दिष्टपरो लोके यश्चापि कठवादिकः Spr. (II) 5323. 7. °दुर्बुद्धि MBu. 3,1216. शिक्षते कठादकामापि दृष्टिविभ्रमम् *nothgedrungen* Çik. 23. कठायात दण्ड एव प्रयोक्ष्यते so v. a. *absolut nothwendig geworden, unumgänglich* Kathâs. 102,127. कठायतिता लक्ष्मीः Râǵa-Tar. 3,332. — *d) eine gesteigerte mit grossen Selbstquälungen verbundene Form des Joga* Verz. d. Oxf. H. 235,*a*,1. °विद्या 233,*b*, No. 366. °योग 89,*b*,1 v. u. 123,*a*,2 v. u. 224,*b*, 10. 233,*b*, No. 366. 236,*a*, No. 367. Hall 17. °योगविद्या Verz. d. B. H. No. 647. °योगिन् Wilson, Sel. Works 1,216. Titel von Werken, die über diesen Joga handeln: °योगप्रदीपिका Verz. d. Oxf. H. 70,*a*,28. 72,*b*,14. °तत्त्वकौमुदी Verz. d. B. H. No. 648. °प्रदीपिका 647. Verz. d. Oxf. H. 233,*b*, No. 366. Notices of Skt Mss. 2,173. Hall 15. fgg. °प्रदीप Wilson, Sel. Works 1,209. 214. 216. °दीपिका Verz. d. B. H. No. 648. Notices of Skt Mss. 1,132. 2,173. Hall 17. °रत्नावली und °संकेतचन्द्रिका ebend. — *e) Pistia Stratiotes, eine schwimmende Wasserpflanze* Trik. H. an. 2,110. 3,226. Med. Soçr. 1,170,19 (कट). 2,78,4. 169,4. — 2) f. ई = कठ 1) *c)* Dharan. im ÇKDa.

कठपर्णी f. *Bixa octandra, eine Wasserpflanze* Trik. 1,2,35.

कठशर्मन् m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 52,35. fgg.

कठालु = कठ 1) *e)* Çabdar., m. nach Wilson, f. nach ÇKDa.

कठिकाकर्णन n. Daçar. 4,1 nach dem Schol. so v. a. प्रमूषामत्ता पदाकर्णनम् oder मल्लाबादसमुदायसंघातः Calc. ed.

कडि m. 1) *Knebel* Çabdam. im ÇKDa. — 2) Bez. *einer best. verachteten Mischlingskaste* Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,3. 3 (उकडि). 15 (कडि).

कडिक m. = कडि 2) Çabdam. im ÇKDa.

कडु n. *Knochen* Schol. zu H. 626. Çabdar. im ÇKDa.

कडुक m. = कडि 2) Çabdam. im ÇKDa.

कडुचन्द्र m. = कटृचन्द्र Colebr. Misc. Ess. 2,54.

कडुत्त n. *Mark* Çabdar. im ÇKDa.

कडुइ und कडुइक m. = कडि 2) ÇKDa. nach dem Brahmavaiv. P.

कडुप m. dass. ÇKDa. angeblich nach Vop.

कण्डक s. कूल°.

कण्डकामुत m. *eine Art Topf* Trik. 2,9,7.

कण्डे indecl. *Anruf einer niedrigen Person im Drama* Sin. D. 171,2

v. u. AK. 1,1,2,15. H. 334. im Prâkrit Çiç. Ca. 110,4.

कृत s. u. 1. कृन्.

कृतक (von कृत) adj. (f. कृतिका) *geschlagen, getroffen:* दैव° *vom Schicksal getroffen* so v. a. *unglückselig* Z. d. d. m. G. 27,58. von Personen so v. a. *nichtsnutzig, verwünscht, verflucht* Trik. 3,1,25. Hariv. 2,223. Verz. d. Oxf. H. 259,*a*,19. am Ende eines comp. nach dem verwünschten Personennamen Ganaratnam. zu P. 2,1,52. चारुदत्त° (so ist zu schreiben) Mṛicch. 63,12. राम° Uttarar. 22,15 (30,7. 8). Milatin. 87,4. Sin. D. 162,10. 181,3. Prab. 67,15. 69,9. 70,12. 85,17. दैव° *das verwünschte Schicksal* 89,17. — Vgl. मतङ्ग°.

कृतपुत्र adj. *dessen Sohn (Söhne) getödtet ist (sind)* TS. 2,4,12,1. 7,4,2,1. Çat. Br. 12,7,1,1. Vgl. पुत्रकृत Pârâçar. Bh. 3,2,4. 11,3,5.

कृतपितृ ved. adj. *dessen Vater getödtet ist* P. 5,4,158, Schol.

कृतभ्रातृ adj. *dessen Bruder getödtet ist* AV. 2,32,4.

कृतमनस् adj. *muthlos* TS. 2,2,9,3.

कृतमातृ adj. *dessen Mutter getödtet ist* P. 5,4,158, Schol. AV. 2,32,4.

कृतमूर्ख m. *ein grosser Dummkopf* Kosalpurân. im ÇKDa.

कृतवर्चस् adj. *entwürdigt, entstellt, herabgekommen* AV. 1,17,1. 12,2,37.

कृतवृत्त adj. *metrisch nichtsnutzig* Sin. D. 575; vgl. 220,15. fgg.

कृतवृत्नी adj. f. *deren Mann (Herr) getödtet ist* RV. 4,17,3.

कृतशेष s. u. शेष 2).

कृतस्वर adj. *stimmlos* Suçr. 1,118,13. 120,4.

कृतस्वसृ adj. *dessen Schwester getödtet ist* AV. 2,32,4.

कृतोघशंस adj. *dessen Hasser vernichtet sind* VS. 28,17.

कृताधिमन्थ m. *Ophthalmie* Suçr. 2,305,2. 314,14. Vishn. Uttar. 15,4. Çâṅkh. Çr. 1,7,97.

कृताश (कृत + 2. आशा) adj. (f. आ) 1) *der Nichts mehr zu erwarten hat, an Allem verzweifelnd, verzweifelt* Mân. ç. 30. Spr. (II) 4142. Prab. 11,1. — 2) *von dem Nichts zu erwarten ist* so v. a. *unbarmherzig, grausam* H. an. 3,726. Mân. Z. d. d. m. G. 27,58. Prab. 63,9. = खल H. an. = पिशुन Mân. = वन्ध्या Çabdar. im ÇKDa.

कृति (von 1. कृन्) f. 1) *Schlag:* पार्ष्णि° *mit* Spr. (II) 6359 (pl.). कूल° Gît. 1,12. — 2) *Tödtung:* भ्रूण° MBh. 12,12372. वृश्चिकसर्प° Bhâg. P. 7,9,14. — 3) *Vernichtung, Zerstörung, Vertreibung; Schwund:* मतिमल° Spr. (II) 606. क्लेश° 4143. दुःख° Bhâg. P. 11,3,18. मुख्यार्थ° Kâvjapr. 66,4 v. u. = अपकर्ष 2 v. u. — 4) *Multiplication* Journ. of the Am. Or. S. 6,558. Comm. zu Âryabh. 2,3. 27 u. s. w. — Vgl. अ°, षड्कृति.

कृतोद्यम् (कृत + उद्यो°) adj. 1) *dessen Kraft gebrochen ist* MBh. 3,15696. R. 1,48,29. Suçr. 2,402,21. — 2) m. Bez. *einer Art Fieber* Suçr. 2,402,19.

कृत्नु (von 1. कृन्) Uṇâdis. 3,30. *verderblich, tödtlich* RV. 1,25,2. m. = व्याधि und शस्त्र Uṇâdis.

कृत्या (wie eben) f. *Tödtung:* तस्य Spr. (II) 6197. Pañkar. 2,7,11. in comp. mit dem obj. P. 3,4,108. Vop. 26,23. कृमिकीटवयो° M. 11,70. भ्रूण° 131. 140. Jâñ. 3,269. बाल° Bhâg. P. 1,7,56 (mit dem Folgenden zu verbinden). 6,16,14. द्विष° 7,8,20. Pañkar. 2,8,27. In der älteren Sprache auch कृत्य n. — Vgl. अनागो°, अवैर°, असि°, अहि°, आत्म°, गो°, दस्यु°, ब्रह्म°, भूत°, भ्रूण°, मुष्टि°, रक्षो°, वीर°, वृत्र°, शम्बर°, सुरा°, सर्व°, स्त्री° (auch Pañkat. 216,17).

कृत्य (wie eben) Uṇâdis. 2,2. m. *Schlag, Wurf* u. s. w. Nir. 6,27. RV. 4,30,21. 8,56,5. 59,10. 10,49, 3. 7. = विषघ्न (diese Bed. kommt कृत zu) Uggval. — Vgl. वज्र°.

कृत्रिमावरयाम m. N. pr. eines *Dorfes* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,27,2.

कृद्, कृदति und °ते *scheissen* Dhâtup. 23,8. erhält keinen Bindevocal Kâr. 3 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10. कृदति Bhâg. P. 5,5,32. partic. कृन्न *gescheissen* AK. 3,2,46. H. 1495. Vgl. गोकृन्न.

— उप *bescheissen;* s. उपकृदन.

कृदन (von कृद्) n. *das Scheissen* Daçakoṭi im ÇKDa. Suppl.

कृद् (arab.) $^1/_{30}$ *eines Zodiakalbildes, ein Grad* Verz. d. B. H. No. 872. Ind. St. 2,264. कृदेश ebend. कृदाशका: Verz. d. B. H. No. 874. कृद्दा f. ÇKDa.

1. कृन्, कृनति Dhâtup. 24,2 (किंसागत्योः). कर्त्तुम्, कर्त्तोस्, कृन्ति P. 7,3, 54. Vop. 9,1. कृनति 3. sg. Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). P. 3, 4, 73, Schol. RV. 6,29,6. 8,78,3. अवकृन्ति P. 6,4,36. Vop. 9,8. कर्त्ते, कृत्ता TS. Pâit. 3,10. AV. 7,77,2. घ्नत्तु P. 7,3,54. partic. घ्नत्, घ्नतो; अकृन्, कृन्, अकृनत् Ait. Br. 4,2. कृनम्, अकृतम्, अकृताम् Bhaṭṭ. 4,11. अघ्नन् P. 7,3,54. Çat. Br. 2,3,2,1. 4,1,4,8. अघ्नान P. 7,3,55. अघ्नन्ध, अघ्नतुस्, अघ्नुस् 6,4, 98. Vop. 9,10. अघ्नत् RV. 9,23,7. अघ्नन्वंस् und अघ्निवंस् (Çat. Br. 1,6,4,21) P. 6,2,68. Vop. 26,134. कृनिष्यति P. 7,2,70. Vop. 8,30. 9,10. कृत्ता ebend. Bhaṭṭ. 6,51. कृत्तुम्, कृत्तवे (auch Bhâg. P. 4,19,18), कृत्तवै RV. 5,2,10. 31,4. कृत्वी, कृत्वे, कृत्वाय, °कृत्य; absol. घातम् P. 7,3,32. 54. पाणिघातम्, पद्घातं कृत्ति भूमिम् 3,4,37, Schol. med. कृते, घ्रते 3. pl. कृनीत TS. 3,2, 9,4. अकृत, अघ्नत 3. pl. AV. 8,10,8. घ्रताम् 3. pl. कृनत्त RV. 7,56,22. त्रिघ्रते, त्रिघ्रमाण RV. 3,30,4. अघ्रे, अघ्रिरे, कृनिष्यते. pass. कृन्यते, घघानि, अघानिषाताम् und अकृसाताम्, घानिता und कृत्ता, घानिष्यते und कृनिष्यते, अघानिष्यत und अकृनिष्यत P. 6,4,62. Vop. 24,3. 5. Bhaṭṭ. 1, 22. 5, 40. 15, 17. 66. 16, 9. घानिषीष्ट 19, 29. partic. कृत. Ausfall des Wurzelvocals P. 6,4,37. fg. Vop. 3,158. Verwandlung des न in ण 8, 22. Fehlen des Bindevocals इ Kâr. 4 aus Sidd. K. zu P. 7,2,10. Ueber die Verbindung mit कर्ण und मनस् s. u. मनस्. 1) *schlagen, treffen; niederschlagen; tödtlich treffen, erschlagen, erlegen:* वज्रेण कृत्वा निरपः ससर्ज RV. 1,103,2. अहिं रुरोज 6,16,29. अहिम् 30,4. भेदम् 7,33,3. वृत्रम् 58,4. कर्म्मणा कृतम् 94,12. कं कृनः कं वसौ दधः 1,81,3. वज्रेण 2, 17,6. शर्वा 12,10. दिव्येवाशनिर्न्नहि 1,176,3. अशन्येव वृतम् 2,14,2. न कृन्यते न शीयते नेतोः 3,59,2. 5,54,7. AV. 8,5,12. 7,70,3. न वै स्त्रियं घ्नन्ति Çat. Br. 11,1,2,2. दण्डेन 5,4,1. Kâtj. Çr. 20,1,40. Kauç. 47. 49. Âçv. Gṛhj. 1,6,8. अघास्यदुः कर्तृभिरन्यमानः so v. a. *gehämmert* Maitrâjan. 3,3. कशया MBh. 1,6706. प्रपदेन 3,15645. पद्भ्यां कृनम् (kann auch अकृनम् sein) 4,701. Bhâg. P. 1,16,5. अघान यत्र पादेन भ्रातरम् R. Gorr. 1,4,90. उरः शिरश्च बाहूनि घ्नन्नः करतलैर्मुहुः 2,68,51 (66,17 Schl.). उरसि कृत्तं कृत्वा Çiç. Ca. 98,2. भुजम् Kathâs. 25,124. बुधैर्घ्नत्यो घातलम् Bhâg. P. 3,17,11. करतलेन पतत्पतंगम् *Spielball* 20,36. कर्णा कर्णमूले अकृन् 19,25. अकृनन् मूलैः प्रकृतं सर्वमर्मसु 7,5,40. घ्नन्नो उग्रमनोदरम् 9,9,39. क्रुद्धो दत्ताभ्यां मो (नागः) अकृनत्तितिम् 10,43,11. मां चक्षुभिः Hit. 81,21. पयोधरेणोरसि प्रियम् Sin. D. 58,21. कालमम्बुरुहेण चक्षुषा च Çiç. 7,56. मालतीपुष्पमश्नता so v. a. *abschlagen* Kathâs. 18,173. घ्नत्यन्योऽन्यम् Böcke Spr. (II) 7350. एष वो शार्दूलः पशुमिव कृन्ति Çiç.

155. तीक्ष्णेण दण्डेन R. 2,106,8. कृंसि Kathâs. 14,33. Bhâg. P. 7,9,38. कृत्ति Kathâs. 18,279. घ्रत्ति R. 3,49,39. Ṛv. 1,16. ऋक्ति MBh. 1,6039. 4,686. 5,7024. R. 1,14,31. 2,64,50. R. Gorr. 1,27,28. Bhâg. P. 1,7, 23. कृत Bhatt. 8,99. घ्रत Bhâg. P. 9,16,5. न कूटेरायुधैर्कृन्याद्रिपून् M. 7,90. fg. यो प्रसह्य वृको कृन्यात् 8,235. fg. 330. MBh. 5,3942. Spr. (II) 3171. R. 1,2,33. 2,78,22. 2,55,9. घकृन् Bhâg. P. 1,15,9. 4,10,8. 7, 8, 31. घकृनत् MBh. 1,6698. 3,14604. 12,4276. Bhâg. P. 8,10,55. घ्रक्षिपून् M. 7,98. 8,349. MBh. 3,12270. R. 2,25,32. Râjat.-Tar. 1,293 (घ्रतः zu lesen). घ्रघान MBh. 3,11909. (तम्) कुम्भे विशिखेन Raghu. 5,50. शस्त्रेण विदूरथं स्वा मक्षिषी *erdolchte* Vaitân. Bhp. S. 78,1. वराकनिवकान् शरैः *erlegte* Kathâs. 21,12. 46,232. Râjat.-Tar. 5,208. घ्रघ्रम् 3,86. घ्रघ्रिवान् Bhâg. P. 4,24,5. कृत्ता MBh. 2,2539. कृनिष्यति u. s. w. ebend. und 1,5968. 3980. 5,5943. यो (इषुः) कृनिष्यति वध्यं त्वाम् Çiç. 155. Mârk. P. 18,21. 127,36. Râjat.-Tar. 5,309. घकृनिष्यत् Bhâg. P. 4,17,19. med.: तमघ्नत शरैः MBh. 16,25. घ्रघ्ने 3,15732. कृनिष्ये Bhag. 16,14. MBh. 1,5579. 3, 13180. 13,24. Harîv. 15064. R. 2,21,19. 3,72,13. Mâns. P. 135,16. Bhâg. P. 7,4,28. कृन्तुम् M. 5,37. MBh. 1,5570. R. 2,97,18. Kathâs. 28, 128. Spr. (II) 2399. Râjat.-Tar. 6,170. fg. Vet. in LA. (III) 29,4. कृत्वा M. 3,33. 11,133. MBh. 1,5937. R. 1,1,40. 2,52,99. 3,49,14. 51,22. Spr. (II) 7364. pass.: कृन्यते M. 7,94. Kathâs. 18,166. कृन्यमान Râjat.-Tar. 1,291. 4,338. कामशरैः Pañcat. 43,7. Bhâg. P. 3,17,28. कृन्यत् MBh. 13,5634 (nach der Lesart der ed. Bomb.). घ्रघ्ने Kathâs. 46,224. कृनिष्यते 48,128. — गदां गदया — घकृनत् *so v. a. zurückschlagen, abwehren* Bhâg. P. 3,18,17. यथा श्वा भषितुं चैव कृन्तुं चैवावसज्जते *so v. a. beissen* MBh. 13,2198. *tödten* *so v. a. mit dem Tode bestrafen, hinrichten lassen* M. 8, 330. 9, 232. 248. 269. 278. 280. घप्सु घ्रुद्वधेन वा 279. Spr. (II) 3216. — In der Astr. *so v. a. berühren:* दिवसकरमुल्काशनिविप्लुतो यदा कृन्तु: Vaitân. Bhp. S. 3,23. मनः *das Herz verletzen* Spr. (II) 1277 = 1282. — 2) *zu Fall —, in's Verderben bringen, schädigen, zu Grunde richten, vernichten* überh., *zerstören:* ऋक्ति वृक्ष्यानि RV. 6,25,3. पुरः 31,4. मायाः 7,99,4. क्षत्रम् 1,40,8. तमांसि 8,43,22. 9,100,8. घव्रतानि 4,17,19. घभिशस्तिम् 5,3,7. ज्योतिषा तमः 14,4. कृन्तते पक्षः TS. 5,1,9,3. 6,1,8,3. पाप्मानम् Çat. Br. 14,8,6,4. कामान् 9,2,2. यावतो बान्धवान्यस्मिन्कृत्ति सादये ऽनृतं वदन् M. 8,97. कथं साक्षेन दानेन भेदैर्दण्डेन वा पुनः। समित्रः शक्यते कृन्तुम् MBh. 1,5566. घात्मानमात्मना 3,2230. घरक्षितारं राजानं दोषाः R. 1,61,7. लोकान् R. Gorr. 1,38,16. 77,41. (घाननम्) घलिनीलालकलतं कं न कृत्ति Spr. (II) 644. महाभाणि पुराणयपि 1368. 1572. 3089. 3856. 7366. क्रमेण शत्रुः कपटेन कृन्यते 7508. Vaitân. Bhp. S. 3, 21. 33. 4,31. fgg. य इदं मन्त्रवर्णवति कृत्ति Bhâg. P. 1,8,16. दशम् Kathâs. 62,67. पतशब्दैः मतिम् Râjat.-Tar. 3,400. तत्कीर्तिं कृत्ति त्वचमिवामयः Bhâg. P. 3,16,5. सर्वं गदम् Spr. (II) 1992. Vaitân. Bhp. S. 104,6. चन्द्रस्तमः Spr. (II) 3971. Râjat.-Tar. 4,197. Bhâg. P. 9,11,6. रसो रोगभयम् सुधाबिन्दुर्विषावेगम् धर्मः पापभरम् Spr. (II) 2817. मलम् M. 2,102. तपसा कल्मषम् 12,104. घरूः Bhâg. P. 9,15,41. घपो दौर्भाग्यम् Jâin. 1, 282. विघ्नभयम् Raghu. 14,23. त्यागो सर्वव्यसनानि Spr. (II) 7531. धर्मम् M. 9,64. कार्याणि कार्यिणाम् 231. सत्क्रियां देशकालौ च शौचं ब्राह्मणसंपदः 3,126. 241. 4,114. 156. इन्द्रियाणि यशः सर्वमायुः u. s. w. 11,40. परक्षितम् Spr. (II) 1460. गुणान्परस्य 2892. धर्मो कृत्ति कृतः श्रियम् 7424. Râjat.-Tar. 6,167. यत्र धर्मो घधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन। कृन्यते Spr. (II) 5060. कृतं दैवेन कृन्यते R. 6,94,24. 2,22,20. नार्कृसि मे कृतुं गतिं दिव्याम् R. Gorr. 1,77,48. घशाम् MBh. 3,16701. Spr. (II) 612. सम्मोहिनीवनवासविलाममेव कृसस्य 544. *so v. a. hindern, verhindern* Râjat.-Tar. 5,253. विघ्नैः सहस्रगुणितैरपि कृन्यमानाः Spr. (II) 4342, v. l. — 3) (die Trommel) *schlagen* AV. 20,132,9. Çat. Br. 14,5,4,7. Kathâs. 116,11. Bhâg. P. 7,8,36 (pass.). Pañcat. 21,2. 10; vgl. भेरीघ्रत्. (eine Flüssigkeit) *schlagen, klopfen:* कृन्याम्बावहनत्वं समुपागतम् Vaitân. Bhp. S. 55,25. — 4) *ein Geschoss werfen auf* (gen.): ऋक्ति वर्धर्वनुषो मर्त्यस्य RV. 4,22,9. 7,25,3; vgl. unter निस्. — 5) *an sich unterdrücken, aufgeben, fahren lassen:* व्यथां ऋक्ति MBh. 1,6145. ऋक्ति संतापमात्मनः 3,16826. मा धर्मं ऋक्ति — क्रोधं ऋक्ति 4,648. घधर्मम् R. Gorr. 1,28,17. शोकं च मोकं च R. Schl. 2,44,19. मन्युम् Spr. (II) 2597. वैक्लव्यम् Bhâg. P. 1,13,42. घासुरं भावम् 7,8,10. die Vermuthung liegt nahe, dass dieses ऋक्ति für ऋक्तिक् (von क्रा) steht. — 6) partic. कृत्त *a) geschlagen; getroffen, erschlagen, vernichtet* RV. 1, 104,3. 10,86,18. 113,7. AV. 10,4,12. 11,9,7. vom Blitz 7,59,1. *los, verloren* u. s. w. RV. 1,129,8. — *geschlagen* MBh. 4,802. Spr. (II) 6170. घूढपदा कृत्तः (könnte auch घाकृत्तः sein) Bhâg. P. 1,17,3. 3,19,16. 7,8, 8. सायकैः *getroffen* R. 3,54,28. धन्विना मकरकेतुना Spr. (II) 5654. Hit. 34,21. दुःखाशनि° Kathâs. 19,27. घुद्धबाण° R. 2,96,24. दिग्घ° R. Gorr. 2,114,33. घक्षो घक्षेण in astr. Sinne *so v. a. berührt* AV. Paric. in Ind. St. 10,317. Vaitân. Bhp. S. 8,53. 13,7. 15,21. 16,40. 17,7. 8. नयन *ausgeschlagen* R. 2,96,56. शिरम् *abgeschlagen* 2,33,28. छिन्नाकृत्त° *getödtet* M. 5,93. शस्त्रैः तत्रधर्मकृत्तः 93. ग्रभिः 131. ग्र° 8,332. परावृत्त° 7,95. Bhag. 16,14. MBh. 3,2543. 5,5727. R. 1,55,10. 2,21,31. 61,22. 63,31. 64,27. 53. 65,24. 4,1,15. Spr. (II) 106. 6437. 7363. Kathâs. 18,177. Râjat.-Tar. 1,292. 4,703. Bhâg. P. 3,14,2. पशु AK. 2,7, 23. *getroffen* von *so v. a. heimgesucht —, gequält —, mitgenommen* von, *zu kämpfen habend mit* (instr. oder im comp. vorangehend): मायया कृतात्मा Bhâg. P. 4,6,49. कामैरकृत्तचेताः 10,80,30. मटचीकृत्तेषु कुपु Kâmas. Up. 1,10,1. दीर्घव्याधि° Râjat.-Tar. 6,112. तिमिरदोषकृतं चक्षुः Spr. (II) 2029. गुरुशाप° R. 1,60,17. कृत्याकृत्तानि गेकानि Spr. (II) 2407. काम° 3054. Bhâg. P. 6,3,23. कामलोभ° 1,6,36. घकाम° Çat. Br. 14,7, 1,23. पश्चात्ताप° Spr. (II) 599. शोक° 3405. घात्मदोष° 4835. मरणभय° 6312. घसंताप° Râjat.-Tar. 1,41. दस्युगणापात° Vaitân. Bhp. S. 19,7. सुखदुःखकृत्तात्मन् Bhâg. P. 4,8,25. सम्बोधयः घासकृताः 7,8,32. घमुकृत्तं मुखम् R. Gorr. 2,123,11. वायुवेगकृत्ता नौः 52,24. MBh. 7,28. कूलं तोयकृत्तम् R. 5,26,13. *vernichtet, verloren, an Allem verzweifelnd* von Personen: = मनोकृत्त AK. 3,1,41. H. 439. का कृतास्मि MBh. 3,2364. 10492. 5,7190. R. 2,57,12. 72,17. 90,15. R. Gorr. 2,16,21. Bhâg. P. 5,26,15. 7,2,31. Pañcat. 135,1. Hit. 18,12. कृता सेकु पत्र च Spr. (II) 2946. 5060. 5671. 5850. R. 2,52,18. 61,25. 62,12. 73,2. Çiç. 22 (Gegens. कृतिन्). Sarvadarçanas. 33,6. Râjat.-Tar. 1,224. °चेतस् adj. R. 2, 47,1. °मानस adj. Spr. (II) 4754. *zu Grunde gerichtet, vernichtet, dahin von Leblosem und Unkörperlichem:* देशं MBh. 12,12001. स्थानं R. 3, 35,65. 37,10. 60,20. मधुवन 5,61,7. घस्त्रैरस्त्रेषु बहुधा कृतेषु MBh. 5, 7264. R. 1,56,23. रथ Harîv. 13671. घसमवर्षं 12776. यापि ते पृथ्वी हृता रामेण सापि ते R. 3,27,14. वीर्यं 4,26,16. धर्म Spr. (II) 3089. 7024.

तृष्णा 3579. क्रौ 7024. यज्ञ Bhâg. P. 4,6,50. कुशलाकुशलाश्च कर्माशयाः समूलघातं कृता भवन्ति Sarvadarçanas. 155,13. मानसावज्ञया कृतः Bhâg. P. 3,22,13. मत्पौरुषकृतं दैवम् R. 2,23,20 (20,22 Gorr.). सुरक्षितं दैवकृतं विनश्यति Spr. (II) 567; vgl. 3902. शरज्योत्स्नाकृते तमसि 6413. Vaṇîn. Bṛh. S. 43,33. insbes. am Anfange eines adj. comp.: °कण्टक MBh. 3, 3049. °किल्बिष M. 4, 243. °क्रप Bhâg. P. 1, 6, 27. 3, 31, 36. °क्रिय् Raghu. 3,15. °धी Bhâg. P. 3,9,7. कृतघ्न इक्ष्वाकवः R. 3, 68,27. °घात Bhâg. P. 3,8,23. °चमार्य Spr. (II) 1147. °प्रभ MBh. 3,16754. R. 3,1,35. Sûçr. 2,402,17. Bhâg. P. 1,7,55. 14,17. °प्रमाद् Kir. 5,49. °भग Bhâg. P. 3,15,23. °मान 19,12. °युद्धदर्प 6,10,29. °लक्षण Mânn. P. 50, 95. °विक्रमोत्थम् Ṛt. 1,14. °वीर्य Kumâras. 2,21. °वेग R. 5,56,93. °व्रत Bhâg. P. 6,2,43. °व्रीड Z. d. d. m. G. 27,92. Spr. (II) 1513. °सत्क्रिय 6117. °स्मि Mâlav. 82. कृतांक्रम् Bhâg. P. 10, 83, 2. कृतानिष्ट Vaṇîn. Bṛh. S. 48,49. कृतार्थ Bhâg. P. 5, 12, 14. कृतालोक 3, 15, 2. अकृताभ्रम 10, 51, 8. कृतेनम् 1, 5, 29. कृतोद्यम 4, 13, 49. शोककृतकर्ष R. 2, 62, 17. मकोषधिकृतव्यय Raghu. 12,75. सर्वैर्यकृतप्रकर्ष Spr. (II) 6270. verloren so v. a. von keinem Nutzen, werthlos M. 4,225. गङ्गाकूलेनो देशः, विन्ध्याकूलेन कुलम्, अप्रसूता नारी, अदन्तिणो गजः Spr. (II) 2035. 3754. अल्पबीजं क्षेत्रम् 4234. 6749. 7301. fg. 7441. fg. वृत्त Metrum Sâh. D. 220,15. तनु Kathâs. 124,172. °जल्पितानि Spr. (II) 2500. °जीवित 4554. मौर्ख्यकृतजीवित 5932. मोर्वेर्वलक्षणयकृतेः Rîâ-Tar. 4, 635. तृष्णे कृते nichtsnutzige —, verwünschte Gier Spr. (II) 4087. °कृदय 2674. Çiç. 134. °विधि m. das verwünschte Schicksal Spr. (II) 3367. 3701. 6193. Çiç. 11, 64. Vaṇîs. 36, 4. Mânîn. 352. adj. so v. a. unglücklich Spr. (II) 3866. कृतोदर 4896. am Ende eines comp. nach der verwünschten Person; ein Femininum auf ई und ऊ kann davor verkürzt werden P. 6,3,43. fgg. ब्राह्मणिकृता eine nichtsnutzige Brahmanin Schol. — *b) angeschlagen* von einer Trommel Kathâs. 18, 43. — *c) geschlagen beim Waschen, अ°* (s. auch bes.) *ungewaschen, neu* von Gewändern Kaṭh. Up. 2,15. R. 2,3,10. 91,62. Bhâg. P. 3,9.16. 8,9,15. — *d) f. so v. a. futura:* के कृते के कृतेत्येवं स्वामिभर्तृकृतेति च MBh. 8, 2037. — *e) aufgewirbelt, erregt:* तुरगखुरकृतो रेणुः Çiç. 31. — *f) gekommen um:* वृत्ततः Spr. (II) 6250. *entzogen:* दृष्टि° *dem Anblick* R. 5,19,35. Vgl. पूय°. — *g) multiplicirt* Taik. 3,1,25. Ânanda. 2,7. 19. Journ. of the Am. Or. S. 6, 558. Vaṇîn. Bṛh. S. 8, 20. Bṛh. 7, 4. 26 (24), 8. Ganit. Madhjam. 4. — Vgl. अकृत, अयो°, पुत्र°, मनो°, यूय°, वात°, सभो°, सु° und वधू.

— caus. घातयति (denom. von घात) P. 7,3,33. 54. Vop. 18,25. 1) *tödten lassen; tödten, umbringen; züchtigen, bestrafen* überh.: कं घातयति कस्मि कम् Bhâg. 2, 21. Bhâg. P. 5, 18, 41. 10, 73, 31. तावत्तेभेन घातयेत् M. 8,34. 9,224. 370. fg. विविधैर्दण्डैः 275. Jâjñ. 1,337. 338. 2, 270. MBh. 2, 975. fg. 5, 6095. 7023. 7442. R. 4, 53, 12. 14. 5, 62, 5. 6. Mṛicch. 123,19. Spr. (II) 1305, v. l. 5696. 6196. Kathâs. 18,273. Rîâ-Tar. 1, 27. 6, 322. Bhâg. P. 1,8,5. 3, 3, 11. 5, 26, 12. 23. Daçak. 89,11. LA. (III) 7,19. 91,10. अघातयन् MBh. 7, 5786. Bhâg. P. 3,3,10. मा ज्ञातीन्घनः प्रजाः सर्वाः पुत्रान्भ्रातॄंस्तथैव च MBh. 5,4199. med.: घातयामास Bhâg. P. 10,50,19. घातयान MBh. 13,3603. अघातयिष्याम् 1,3335. partic. घातित Jâjñ. 2, 271. 3, 246. Mârk. P. 112,31. fg. Kathâs. 5,67. Bhâg. P. 6,18,36. Pañcat. 1,444 = 457. *Jmd tödten lassen* so v. a. *über Jmdes Ermordung berichten* P. 3,1,26, Vârtt. 2, Schol. — 2) *Etwas zu Grunde richten:* पृथिवीम् MBh. 3, 1917. परकार्यम् Spr. (II) 3660, v. l. — Vgl. घातक u. s. w.

— desid. जिघांसति P. 6,4,16. 7,3,55. Vop. 19,3. *treffen —, niederschlagen —, tödten —, vernichten wollen:* अरिम् ṚV. 1,80,13. 2,23, 12. 4,18,12. 23,7. 7,59,3. 86,4. 8,56,11. VS. 16,21. TS. 5,1,4,5. AV. 4,18, 3. Çat. Br. 2,5,2,10. यज्ञम् TS. 2,6,4,5. मृत्युर्विप्रान् M. 5,3. 4. MBh. 1,5069. 5655. 7072. 3,314. 2339. 14909. 4,1873. 9,3332. Harîv. 4284. 9249. R. 1,29,24 (29,13 Gorr.). Kathâs. 14, 33. 22, 69. 52, 33. 94, 124. 114, 122. Bhâg. P. 4,14,10. 39. 17,31. 19,30. 5,18,62. 7,10,29. जिघांसन्तं जिघांसीयात् MBh. 12, 1224 = Spr. (II) 7469. med. MBh. 1, 7075. 3, 14908. 14, 324. Bhâg. P. 4, 17, 19. जिघांसितुम् MBh. 1, 6013. Harîv. 9281. जिघांसित Kathâs. 36,91. Daçak. 172,13. — Vgl. जिघांसक fgg.

— intens. जङ्घन्यानि, °नत्, °नाव, जङ्घनत्त, जङ्घन्त् und जङ्घनत् partic. (आ) जङ्घन्तिः घनिघ्नत्. *schlagen* so v. a. *treten auf:* पृथिव्याः सानौ जङ्घनत्त पाणिभिः ṚV. 2,31,2. पद्भ्या रथस्य 1,88,2. पृथिवीम् 10, 119, 10. *treffen, erschlagen:* वृत्रम् 3,33,11. 6,16,34. पवमानस्य जङ्घ्नतो (ज्रिघ्नतो SV.) हरेश्चन्द्रा घनघ्नतः 9,66,25. *vernichten:* तमांसि 24. घनिघ्नदुरिता 90,6. — जङ्घनीति und जङ्घन्ति, जङ्घनत्, जङ्घन्ति und जङ्घनति Vop. 20, 17. जेघ्नीयते 9. (क्रिमीणाम्) P. 7,4,30, Vârtt. जङ्घन्यते P. 7,3,55, Schol. Vop. 20,8. जङ्घन्यमान mit pass. Bed. *geplagt, gequält* Mupp. Up. 1,2,8.

— घनि, partic. °कृत 1) *angesteckt, befestigt:* तस्य कृदये पादावतिकृतौ Çat. Br. 10,5,2,13. — 2) *zu Grunde gerichtet:* व्यायामातिकृत Kâraka 10, 9. — desid. *entkommen wollen* Ait. Up. 3,3. vielleicht ist अत्यजिघांसत् st. अत्यजिघांसत् zu lesen.

— व्यति act. P. 1,3,18, Schol. Vop. 23,55. fg. *zurückschlagen, einen Gegenschlag führen gegen Jmd* (acc.): व्यतिघ्नती घ्नन्तम् Bhatt. 8,5. *sich gegenseitig schlagen, feindlich einander gegenüberstehen:* अन्योऽन्यस्य व्यतिघ्नतां मतानाम् Naish. 17,79. *sich wehren:* व्यत्यघ्नन्त्रिरुत्तिताः MBh. 13,7301 (व्यघ्नन्त्रिमुरुत्तिताः ed. Bomb.).

— घनु pass. *hinterdrein zu Nichte werden:* कृतमेवानुकृन्यते so v. a. *was zu Nichte wird war schon zu Nichte geworden* MBh. 12, 8107.

— घत्तर्, घत्तर्कृत्य (= मध्ये कृत्वा Siddh. K.) P. 1,4,65, Schol. घत्तर्कायते 8,4,24, Schol. — Vgl. घत्तर्घण fgg. und घत्तर्कृण fg.

— अप 1) *wegschlagen, wegstossen; abtreiben, abwehren, verscheuchen, vertreiben:* अपघ्नन्हि परिघम् Kâṭh. Up. 2,24,6. 10. 15. कृनूं ṚV. 4,18, 9. अपां स्म तं पथो जहि 1,42,2. 94,9. 132,6. वृत्रम् 3,33,6. 8,60,6. शत्रून् 9,96,22. 10,40,12. मृत्युम् AV. 11,5,19. तमः 10,7,40. VS. 11,47. Ait. Br. 2,11. 26. अप पाप्मानं कृते 4,4.25. पदिः 5,1. द्वेषांस्तनूः TS. 1,5, 4,1. 2, 2, 8,1. TBr. 1, 2, 1, 1. 5, 9, 5. Çat. Br. 1,1,2,3. 15. 2,3. 6,4,9. 14,4,4,11. fg. अपकृते पापकृत्याम् Kâṭh. Up. 4,11,2. Kenop. 34. शत्रून् Vaṇîn. Bṛh. S. 85,6. Harîv. 6754. घत्तम् R. 7,21,36. एनः M. 6,96. 11, 256. कृतं पापं कल्याणेनापकृन्यते MBh. 12,192. दुधाम् 13,3013. दुरितम् Çiç. 83. तमस्तीव्रम् Spr. (II) 412. 544, v. l. शक्ति कोत्पपकृत्ति वा 6066. परितापं गात्रेभ्यः Mânn. P. 15,49. 51,33. 108. Çâṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 95. — अपघ्नतः Uttarân. 90,19 schlechte Lesart für अभिघ्नतः. partic. अपकृत Ait. Br. 3,50. 4,25. Çat. Br. 1,1,2,15. 4,21. 2,1,3,4. 5,2,3, 19. 7,4,4,1. 14,7,4,33. Nir. 12,12. Kâṭh. Up. 7,11,2. 8,7,1. Maitrjup. 2,3.

Prab. 89,17. 104,11. Mārk. P. 15,55. Sarvadarçanas. 54, 22. Bhāg. P. 4,31,20. 5,13,22. प्रयास so v. a. *vereitelt* 7,5,42. कृत्तपदापकृतशीर्षकः *abgehauen* Bhāg. P. 10,44,27. काष्ठकूटापकृतचेतनम् *ausgestochen* Pañcat. 81,25. °चेतन Kathās. 84,8 wohl nur fehlerhaft für अपकृत°. — 2) *ausschlagen, auskülsen* (Beis) Kaug. 2. अनपकृत 19. 25. — 3) *ausschiessen* (als werthlos): अपकृता von einer Kuh (*krank* Comm.) Kāty. Ça. 15,3,24. — Vgl. अपघन fgg. und अपक् fgg. — desid. s. अपनिघांसु.

— व्यप *wehren, verhindern:* न समासोक्तिबुद्धिं व्यपकृन्तुमीशः Sāh. D. 308,5.

— अपि *abtreiben, vertreiben:* मूतुंम् TS. 2,1,8,3.

— अभि 1) *treffen mit Schlag oder Wurf:* वृत्रम् ṚV. 2,30,6. तमस्मै प्राकृन्तमभ्यकृन्तसो ऽभिकृतो व्यनदत् Ait. Br. 4,3. पर्वतेन ṚV. 7,104, 19. VS. 16,46. वेद्युतः शरणमभिकृत्ति *schlägt ein in* Nir. 7,22. मर्माण्यभिघ्नन्ति Kām. Nītis. 5,20. लोष्टं लोष्टेन Suçr. 1,118,18. मुष्टिनाभिकृन्यात् 101,21. यवान्यमुद्खलं मुसलेन 377,5. कुठारिकां मध्यमाङ्गुल्या *einstossen* 27,6. वृतं कुठारकेण Varāh. Bṛh. S. 59,13. अभ्यकृन् शरैः MBh. 7, 1378. अभ्यकृन्दक्षेण 5,7223. शिरोधराम् 3,11517. शिरः 13,4794. गदया Bhāg. P. 3,18,14. 7,8,25. अभ्यकृनम् MBh. 3,11973. तानकं बाणैरभ्यघ्नम् 12108. अभ्यघ्नन् 1,2727. 3,12114. भानवैः 16,88. रोधांस्यभिघ्नन् Ragh. 16,78. लोष्टैः Uttarar. ed. Cow. 117,3. तलेनाभिघ्नता तम् R. 4,48,21. प्रकोष्ठैरभिजघ्नतुः MBh. 1,7110. 2,916. 1,7736. Mārk. P. 124,3. Bhāg. P. 3,18, 18. अभिजघ्ने गदया (महोमणिम्) 17,26. अभिकृत्य M. 11,206. मकाद्रयः परस्परं द्रुतमभिकृत्य MBh. 1,1183. केनापि पुंसा सो ऽमेनांसे ऽभ्यकृन्यत Kathās. 71,24. Verz. d. Oxf. H. 51,b, 23. Daçak. 83,17. मुहुरैः Spr. (II) 6696. तलानामभिकृन्यताम् (= अभिकृन्यमानानाम्) MBh. 6,2514. अभ्यकृन्मृगान् *erlegte* 3,14036. — 2) *anschlagen* eine Trommel u. s. w.: शङ्खाश्च भेर्यश्च u. s. w. अभ्यकृन्यत Bhag. 1,13. MBh. 6,1535. R. Gorr. 2, 82,2. — 3) *treffen* so v. a. *befallen, heimsuchen:* अतीर्णैरभिकृन्यन्ते ते देवाः MBh. 13,4275. दुष्टैर्भूतैः Mārk. P. 43,22. Wilson, Sānkhyak. S. 89. — 4) partic. a) अभिकृत α) *getroffen, geschlagen, gestossen* AV. 11, 10,22. Ait. Br. 4,3. Suçr. 1,182,7. MBh. 1,663. 4,754. ललाटे 5,7275. 13,4794. वाक्यप्रतोदाभिकृत 1,824. पतप्रकाराभिकृत Harīv. 10507. R. 2,63,37. 49. 64,14. 18. R. Gorr. 2,9,36. 4,48,22. Ragh. 6,13. धाराभिः सेहानम् Mālav. 78. Spr. (II) 2018. Varāh. Bṛh. 25,1. 5. Kathās. 10,116. 20,92. 47,63. Mārk. P. 21,7. Pañcat. ed. orn. 4,12. बहूर्मिवेगाभिकृता नौः R. 2,82,75 (18 Gorr.). Spr. (II) 4442. वाताभिकृताः पादपाः R. 3,58,27. पवनः पवनाभिकृतः Varāh. Bṛh. S. 39,1. *getroffen* in der Astr. so v. a. *berührt* 13,9. 17,18. *sich stossend an* (loc.) Çiçup. 11. *angegriffen* R. 1,34,30. सिंहाभिकृत इव द्विपः 5,4,8. — β) *angeschlagen:* Trommel u. s. w. R. 2,81,2. Varāh. Bṛh. S. 46,61. — γ) *getroffen* so v. a. *heimgesucht, behaftet mit:* °रोगशोकार्तैः शरीरम् Maitrāyaṇ. 1, 3. शापेन MBh. 3,2968. दुःखेन R. Gorr. 2,9,35. नृत्तऽभ्याम् Bhāg. P. 3, 26,32. तापत्रयेण 3,5,39. 11,19,9. 1,14,40. कामाभिकृतचेतसम् MBh. 1, 6361. दुःखाभिकृतचेतन R. 3,68,17. Spr. (II) 4606, v. l. शोकाभिकृत R. 5,65,1. शोकवेगाभिकृत Spr. (II) 6885. = अभिभूत Colebr. und Lois. zu AK. 3,1,40. — b) अभिघात *beschädigt:* मनुष्येष्वभिघातेषु, गोष्वभिघातासु Sāmavidh. Bṛ. 1,8,12. — Vgl. अभिघात fgg. und सर्वाङ्गाभिकृत. — caus. partic. °घातित *getroffen:* शराभि° MBh. 8,4319. — desid. *treffen* —, *niederschlagen wollen* ṚV. 7,59,8.

— अव 1) *herab* —, *niederschlagen, stürzen:* पर्वतादधि ṚV. 4,30,14. दानवम् 5,32,1. 40,8. कृत्नुना 10,48,6. den Wagen der Ushas 73,6. AV. 13,1,30. 6,134,2 (partic. अवकृत). मानुं वज्रेण *von oben herab treffen* ṚV. 1,80,5. *schlagen auf, gegen:* परस्परं मानुभिश्चावजघ्नुः MBh. 2, 918. शुष्कद्रुमास्थिश्मशानानि मूध्नावकृत्य (मा) Varāh. Bṛh. S. 89,1. पशा शैलस्य मरुतः शैलेनैवावजघ्नतः (= अवकृन्यमानस्य Nīlak., man könnte अवकृन्यतः vermuthen; vgl. 6,3514) MBh. 4,1424. — 2) *zurückschlagen, — stossen; verscheuchen, abwehren:* शर्धः ṚV. 1,133,2. ब्रह्महिषः 8,33,1. 9,85,2. AV. 5,14,1. 21,1. 10,4,3. 11,1,9. 12,1,55. Çat. Br. 3,5,3,15. 5,2,4,7. तुधम् Kaug. 70. Âçv. Gṛhy. 2,4,14. दुरितम् Çiç. 83, v. l. — 3) *ausschlagen, dreschen* ṚV. 1,191,2. Körner TS. 1,6,9,2. Çat. Br. 2,4,2,9. 6,3,3. Kāty. Çr. 1,10,13 (partic. अवकृत). 2,4,14. 4, 1,3. Gobh. 1,7,4. 2,7,5. Kaug. 2. 61. 87. Âçv. Çr. 2,6,7. 8. Bhāg. P. 11,9,6. 8. Manus. in Ind. St. 1,15,1. — Vgl. अवघात, अवकृनन, अवकर्त्तर् *der niederschlägt, abwehrt* ṚV. 4,25,6. — caus. *dreschen lassen:* (ताम्) व्रीहीनवघातयेत् Çat. Br. 14,9,4,12. — intens. *zurückschlagen:* अव जङ्घनीहि AV. 5,20,8.

— अध्यव *auf Etwas dreschen:* कृष्णाजिने रुचिः TBr. 3,2,8,6. — Vgl. अध्यवकृनन.

— अन्वव *treffen* Çat. Br. 3,3,4,16.

— प्रत्यव *zurückschlagen:* प्रतिं शुसन्तमवं (besser wohl प्रतिशुसन्तमव) दानवं कृन् ṚV. 5,29,4.

— आ 1) *schlagen* —, *stossen auf* (loc. acc.): आस्य वज्रमधि सानौ जघान ṚV. 1,32,7. AV. 11,9,14. पाणिनोरसि 12,5,48. 19,32,2. ऊरुः पादिः TS. 3,1,4,3. ऊरून् Âçv. Gṛhy. 4,6,3. दृषदुपले Kāty. Çr. 2,4,15. 21,3,20. 25,7,24. Spr. (II) 5217. (वराहः) आकृत्य स्यन्दनं रात्तः Kathās. 11,45. 32,81. कोणेन 18,164. 19,96. Çiç. 173, v. l. पादेन Kathās. 18,249. 20,86. चक्षुषा 22,223. Bhāg. P. 5,26,23. मूर्ध्नि Z. d. d. m. G. 27,70. गदया Harīv. 5067. Bhāg. P. 8,10,36. नाराचैः, बाणेन, शरैः MBh. 3,15750. Mārk. P. 21,6. 89,27. खड्गेन Kathās. 44,145 (kann auch कृन् simpl. sein). नृसिंहया 42,47. सर्षपैः 68,53. *treffen* 39,62. fg. *angreifen, überfallen:* शत्रुम् Vop. 23,19. R. 7,8,17. सिंहो निपत्याकृत्ति देहिनः Rāga-Tar. 4,444. दुर्वान्कारिणः सिंहवमासिक्तैर्मकागतैः। आकृन्यात् Kām. Nītis. 19, 60. med. *schlagen auf:* आजघ्रे विषमविलोचनस्य वक्षः Bhāmāvī in Sidd. K. 164,a,13. आकृधे मा रघूत्तमम् Bhaṭṭ. ebend. गदयातिं दक्षिणस्यां भुवि — आजघ्रे Bhāg. P. 3,18,17. intrans. oder wenn das Object ein Theil des eigenen Leibes ist P. 1,3,28 nebst Vārtt. Vop. 23,17. आकृते शिरः *er schlägt sich auf den Kopf* Schol. आघ्रीय Pat. zu P. 1,1,62. आकृत und अघानिष्ट, आकृमताम्, आकृमत Schol. zu P. 1,2,15. 2,4,44. Vop. 23,18. 24,12. आघ्रान *um sich schlagend* (ein Vogel) Bhaṭṭ. 3,102. आघ्रान इव संदीं तैरलातैः 8,15. ततो ऽस्मेवाघ्रीय (das folgende इति ist zu streichen) *dann würde ich mir ein Leid anthun* Daçak. 91,15. — आघ्रते दस्युकृत्याय ved. P. 3,1,108, Vārtt., Schol. — 2) *befestigen:* स्तेनं दृषदे AV. 19,47,2. राष्ट्रे विशि Çat. Br. 13,2,9,6. — 3) *schlagen* die Trommel u. s. w. TS. 7,5,9,3. Çat. Br. 3,1,3,7. 17. Kaug. 16. Kathās. 47,44. Bhaṭṭ. 1,27. 17,7. घण्टाम् Kull. zu M. 10,33. — दाक्षण्याकृत्य Kathās. 119,176 fehlerhaft für दाक्षण्याकृत्यः एतान्याकृत्ति Verz. d.

Oxf. H. 25, a, N. 2 für एतान्यो कृत्ति. — 4) partic. घाकृत *a) geschlagen, gestossen, getroffen* Taik. 3,3,149. H. an. 3,245. fg. Med. t. 90. घस्त्रं ब्रह्मद्रुडात्राकृतम् R. Gorr. 1,57,5. गजदन्ताकृता वृता: 2,105,10. शराकृत 3,50,20. 66,26. 69,24. पादपै: 4,18,2. वज्राकृत 48,22. 5,28,4. ज्ञानुभि: 63,19. 6,82,98. Ragh. 4,23. 12,77. Kumāras. 4,25. Spr. (II) 1625. 4041. 5206. 5855. 6018. Varāh. Bṛn. S. 54,55. Bṛn. 25 (23),6. Kathās. 24,180. 54,204. Rāja-Tar. 4,639. Bhāg. P. 3,13,27. 19,16. 26. 6,2,15. 11,11. 8,11,10. fg. 9,15,27. Pañcat. 48,18. सन्योऽन्योकृता ऊर्मय: R. 5,74,36. धारा परशो: *angeschlagen, angeprallt* Spr. (II) 5540. फालाकृतं लेत्रम् *vom Pfluge angerissen* so v. a. *gepflügt* Jāṭ. 2,158. घनिलाकृत *vom Winde getroffen, — bewegt* R. 5,21,1. Kumāras. 4,30. Spr. (II) 4228. Kathās. 18,121. 22,221. Mārk. P. 32,36. 99,8. Bhāg. P. 1,5,14. 8,10, 48. Pārs. 23,2. ज्योतिष्कणाकृतश्रमम् *von Funken getroffen* so v. a. *angebrannt* (घाकृत = दग्ध H. an.) Ragh. 15,52. *getroffen* so v. a. *zum Schaden berührt* (in der Astr.); überhaupt so v. a. *heimgesucht, geschädigt:* भृङ्गे (des Mondes) कुक्षेनाकृते Varāh. Bṛn. S. 4,21. तितितनयत्रिविधादुताकृते मे 23,10. हृदि शोकेन MBh. 5,7446. पक्ष्माकृत 13,1584. दृष्टिविषाकृत Kathās. 33,65. वृत्त *angerissen* Çat. Br. 14,6,9,21. घाकाकृत श्रो: *verwundet* Bhāg. P. 3,18,6. — *b) befestigt:* घत RV. 10,85,12. AV. 1,11,4. शङ्कवं: 10,8,4. — *c) angeschlagen, in Bewegung gesetzt:* घनाकृता कम्पति मे धनुर्ज्या MBh. 5,1309. eine Trommel u. s. w.: घनाकृता डुन्दुभयो विनेदु: 7241. 14,2395. Harīv. 3322. 8056. 10296. R. 5,74,37. Megh. 67. Ragh. 17,11. Spr. (II) 1316. Pañcat. ed. orn. 57,14. घनाकृतो नदति देवदत्त: (eine Muschel) Sidd. K. zu P. 6,2,45. m. = घानक *Trommel* Med. — *d) gehämmert:* घनाकृतं सुवर्णम् Spr. (II) 4074. MBh. 2, 2091 (घकृत Nīlak.). *geprägt* oder *gestempelt* AK. 2,9,92. Taik. 3,3,319. H. 1046. P. 5,2,120. Rāja-Tar. 3,103. — *e) zu Nichte gemacht, vereitelt:* ज्योत्स्नाभिरन्धकार: Bhāg. P. 3,28,21. राज्याभिषेचनं दैवात् (= दैवेन) R. 2,23,20. शान्तिभि: Varāh. Bṛn. S. 46,5. दैवाकृतार्थरचन Bhāg. P. 3,9,10. घग्निधूमाकृतवर्चस् 8,7,14. — *f) multiplicirt* AK. 3,2,38. Taik. 3,3,149. H. 1483. H. an. Med. Varāh. Bṛn. S. 8,23. 81,9. Āśvāsa. 4,28. 30. — *g) ungereimt* (vgl. व्याकृत) AK. 1,1,5,21. Taik. H. an. Med. — *h) getroffen* heisst ein Visarga, wenn er mit einem vorangehenden स zu सो *geworden ist,* Sid. D. 219,4.17. — कृलाकृत Kathās. 49,102 fehlerhaft für कृलाहृत. — Vgl. घनाकृत (in der Bed. 2. auch Pañcat. 1,3,70), घाघात fg., घाकृत fgg., स्वाकृत. — intens. *schlagen auf:* घा शंकुत्ति सार्व्वेषाम् RV. 8,75,13. Nir. 9,30.

— घपा *zurückschlagen:* घमुरान् Śāṅkh. Br. 4,5.

— घभ्या *treffen:* शत्रून् RV. 9,85,2. मुशर्माणं शरैरभ्याकृन्त् MBh. 4, 1102. घभ्याघ्ने 3,11936. वृक्षस्य यो मूले ऽभ्याकृन्यात् *einen Schlag mit der Axt thun* Kāṭh. Up. 5,11,1. घना घन्योऽन्यमभ्याकृन्तितुं प्रवृत्ता वनेषु नागा इव *auf einander stossen* Harīv. 8783. — partic. घभ्याकृत 1) *getroffen:* शरै: MBh. 1,8223. 3,745. 5,7315. शस्त्रै: Kathās. 69,126. मालया *geschlagen* 60,24. सलिलेन सलिलम् R. 1,44,26. *beschädigt:* Auge Suçr. 2,357,17. *getroffen* so v. a. *unangenehm berührt, heimgesucht:* मृत्युना MBh. 12,6330. Spr. (II) 4953. हृदयं कीर्तिविपर्ययेण Ragh. 14,33. तिमिराभ्याकृता निशा so v. a. *stockfinster* R. 2,114,2 (125, 2 Gorr.). — 2) *gehemmt, gehindert:* °कर्मवृत्ति Bhaṭṭ. 1,17. सदानभ्याकृतेभपर्ष: (so zu lesen st. सदा घभ्या°) Mālav. P. 122,5. घनभ्याकृतमाघावयन्निव *ungehindert* Āçv. Çr. 4,15,11. — Vgl. घभ्याघात fg.

— उदा *anschlagen, spielen* (auf der Leier): वीणागाथी दृतिणात उत्तरमन्द्रामुदाघ्नन् Çat. Br. 13,4,2,5. 3,5.

— उपा *schlagen auf:* ऊन्नत् Çat. Br. 2,6,2,12. 15.

— प्रत्या *abwehren, sich erwehren einer Sache* (acc.) AV. 8,10,30. fgg. med.: प्रत्याघ्ने तदस्त्रं गुरुणास्त्रेण MBh. 5,7173. प्रत्याकृतास्त्र Ragh. 2, 41. शमन *von sich gewiesen, zurückgewiesen* Harīv. 3899.

— व्या 1) *schlagen:* मौर्व्या व्याकृत्य Bhāg. P. 10,76,26. — 2) *treffen* so v. a. *heimsuchen:* नैवं विरुद्धःखेन वयं व्याघातिता स्मके Bhaṭṭ. 22, 20. — 3) *hemmen, hindern:* घभिप्रायं व्याकृत्तुम् R. 2,10,32. रात्रस्य रात्रत्वम् Sin. D. 3,19. व्याकृ्यमान Suçr. 2,513,4. Ragh. 9,58. — 4) partic. व्याकृत *a) getroffen, gestossen:* पदा Spr. (II) 3231. — *b) zurückgeschlagen:* मकास्त्र Kathās. 115,39. *abgewiesen, zurückgewiesen* Nirṇās. 6, 12 in Ind. St. 10,143. पाष्टीकव्याकृतो कृरि: Bhaṭṭ. 5,24. *gehemmt, gehindert:* घभिषेक R. 2,22,25 (19,20 Gorr.). घ° MBh. 12,6863. R. 7, 36,23. Ragh. 2,5. 10,57. ed. Calc. 1,19. Pārs. 30,3. 33,6. Mārk. P. 116, 5. Bhāg. P. 4,9,22. 15,16. 5,1,28. 6,17,3. 9,15,18. fg. 18,46. 23,25. 10,8,36. 11,2,23. Pañcat. 16,1 (ed. orn. 13,7). Sarvadarçanas. 79,17. — *c) im Widerspruch stehend:* धर्मस्य विविधा गति: MBh. 14,1348. कर्मन् R. 2,106,17 (113,12 Gorr.). Sarvadarçanas. 78,14. Comm. zu Nyāyas. 1,1,32. Sin. D. 576. घ° Nīlak. 21. व्याकृतत्व Sin. D. 227,3. — MBh. 1,3687 fehlerhaft für व्याकृत (so ed. Bomb.). Vgl. व्याघात, व्याकृति, व्याकृत्तव्य. — *caus. hemmen, hindern, vereiteln:* क्रतुश्रद्धो व्याघातयितुम् MBh. 1,8109.

— प्रतिव्या scheinbar MBh. 12,3724, da mit der ed. Bomb. प्रतिगाकृत्ति st. प्रतिव्याकृत्ति zu lesen ist.

— समा 1) *anschlagen, zusammenschlagen:* दृषदौ TS. 1,6,9,3. दृषदुपले Comm. 1,111,3. Çat. Br. 1,1,4,13. 18. उच्चै: समाकृत्ते TBr. 3,2, 5,9. *treffen, schlagen an, auf:* शङ्कं वज्रदेशे समाकृनत् MBh. 6,1705. नागान्समाकृत्य बाणा: 9,1329. कृस्तम् 3, 15655. पदा 13644. रथम् Harīv. 15331. ज्ञानुभ्यां समाजघ्ने MBh. 1, 6291. स्खलिताश्च मकोल्का वै समाकृत्य (°कृत्य ed. Calc.) दिवाकरम्। निपेतु: 6,4527. कांश्चिदेणान्समाजघ्ने शक्त्या *erlegen* 1,2835. *einhauen in:* सैन्यं समाकृन्यात् Spr. (II) 675. Kām. Nītis. 17, 40. 19,55. समाकृत्य रणे ऽन्योऽन्यम् MBh. 6,4169. *zusammenstossen mit:* रथा रथै: समाजग्मु: (besser समाजग्मु: ed. Bomb.) 4,1044. — 2) *anschlagen* (eine Trommel) TBr. 1,3,6,2. MBh. 7,8346. Harīv. 2668 (mit der neueren Ausg. समाजघ्नुस् st. समाकृन्युम् zu lesen). सुसमाजघ्ने MBh. 1,7941. — 3) partic. समाकृत *a) zusammengeschlagen:* तलै: समाकृते: Anūç. 3,40 (समागते: MBh. 3, 11974). *zusammengefügt, verbunden* Nir. 1,1. — *b) getroffen, geschlagen:* पुष्काशनि° Harīv. 4263. 9867. घस्त्रेण R. 1, 32, 17 (33,17 Gorr.). 2,9,51. R. Gorr. 2,20,39. 7,21,30. Pañcat. 120,10. दृढ़प्रहा° Spr. (II) 4041. गजकर्णा° 4749. क्षुरनेमि° R. 2,103,39. स्तोबल° MBh. 4,463. घघोराक्ष्वनीयस्य प्रभया Harīv. 10448. वातवेग° R. 7,37, 5,23. Mārk. P. 122,17. नीतिमस्यपवनै: Hit. III, 147. प्रवर्षघनधारानिपात° Pañcat. 93,2. व्याधिभि: MBh. 1,3726. तीव्रशोक° 3,10493. 12264. 14,1814. R. 2,44,16. 57,6. — *c) angeschlagen:* eine Trommel Spr. (II) 1316. Kathās. 20,226 (fälschlich °कृत). — Vgl. समाघात.

— उद् 1) *hinauf —, hinaustreiben, — drängen, — heben:* उद्ध ऊर्मि:

शम्यो कृत्वापः RV. 3,33,12. प्रधिम् 10,102,7. पविभिरुज्जिघ्नत आपथ्योऽ न पर्वतान् *schleudern bei Seite wie an der Strasse liegende* (Steine u. s. w.) 1,64,11. उत्पणीर्हतम् 184,2. प्रतिष्ठायाः *verdrängen* Çat. Br. 1,8, 2,14. अकान् 4,2,4,19. so v. a. *ausrotten:* उद्धत्यसाववनिकाएके सप्तकृत्व उरुधारपाद्यघेन Bhâg. P. 2,7,22. — 2) *ausschlagen* (einen Graben u. s. w.), *aufwerfen, aufschütten:* der Eber Çat. Br. 14,1,2,11. वेदिम् TS. 2,2,10,3. 5,2,2,2. 6,6,4,1. TBr. 1,2,1,1. 3,2,9,9. अधिदेवनम् Comm. 1,66,19. Âpast. 2,25,12 (उद्धत्य st. उद्धृत्य zu lesen). — 3) med. *sich erhängen:* उद्धनिष्ये R. 3,51,40 (आबन्धिष्ये ed. Bomb. 45,36). आत्मानमुद्धत्य (so ist vielleicht zu lesen) Pañcat. 135,3. — उद्धत्य Harîv. 4408 fehlerhaft für उद्धृत्य. — 4) partic. उद्धत *a) aufgewirbelt* (vgl. उद्धुत, उद्धूत): Staub R. 5,73,63. Ṛt. 1,10. Çiç. 8. Kathâs. 14,13. — *b) erhöht, hervorragend über* (abl.) Çat. Br. 6,4,4,12. 10,2,2, 1. Kâty. Çr. 5,4,19. 7,9,3. TBr. 2,7,6,2 (अनुद्धत). सिरा Suçr. 1,279,3. *ausgegraben* Kâty. Çr. 7,1,19. *angeschwollen:* सिन्धु Spr. (II) 2721, v. l. für उन्नत. *hoch in der Luft schwebend:* Wolken Spr. (II) 5563. *auf —, in die Höhe gehoben* (richtiger उद्धृत): °योध Harîv. 4290 (उन्नत° die neuere Ausg.). °तृणा (क्ष्मा) Kathâs. 69,136. घनपटैर्मरुता नमितोद्धते: 114,18. शस्त्र Spr. (II) 1240, v. l. für उद्धृत. घनुद्धतपाद् Pañcat. 260,18. 18. लाङ्गूल Bhaṭṭ. 9,7. *herausgezogen, — gehoben:* शलान्मत्स्यो R. 2,53, 22 (richtig उद्धृत ed. Bomb.). गरुडेनेव क्रुद्धिन्युद्धतपन्नगा 47,17 (उद्धृत° ed. Bomb.). — *c) angeschlagen:* वीणा Kâty. Çr. 21,3,7. — *d) gesteigert, heftig, intensiv* Hall. 4,59. मन्यु R. 4,36,21. घनि Ṛt. 2,1. कृमित Spr. (II) 800. नृत्य Daçar. 1,10. युद्ध Kathâs. 74,82. Bhâg. P. 4,25,42. Kuṭṭan. 27,12. Pañcat. 93,2 (Lesart unsicher). — *e) hochfahrend, stolz, übermüthig* H. 431. R. Gorr. 1,14,42. Nîtiç. 16,75. Spr. (II) 1239. Kathâs. 44,58. 48,73. Mârk. P. 17,8. दृप्तनोवाग्भि: 14. दोर्भ्यो ब्रह्मवरेण च *pochend auf* Bhâg. P. 3,17,19. वीर्यशौर्यश्रिया 11,6,39. घतवधोद्धत Raṅg. 12,63. घीरोद्धत (d. i. घोर und zugleich उद्धत) Bhar. Nîtiç. 34,4. 8. Daçar. 2,2. 5. Sin. D. 65. उद्धतं वाक्यम् Spr. (II) 5248. 5903. वेष 5617. घीरोद्धता गति: Uttarar. 111,18 (151,2). घनुद्धत *nicht stolz, bescheiden, anspruchlos* Kâm. Nîtis. 18,33. समृद्धिभि: Spr. (II) 4536. Varâh. Bṛh. S. 75,7. °मनस् R. 2,6,22. वेष Suçr. 1,30,2. उद्धतत्व n. *hochfahrendes Wesen* (*Verwegenheit* Comm.) Maitrâjan. 3,3. — *f) strotzend —, voll von* (instr. oder im comp. vorangehend): क्रोधविषोद्धत MBh. 4,753. मदोद्धत R. 4,9,10 (मदो° gedr.). Kumâras. 3,31. Spr. (II) 4671. Pañcat. 224,8. 254,8. घनमदोद्धत Kathâs. 18,129. यौवनमदोद्धत 277. बलोद्धत Spr. (II) 815. — *g) in Bewegung versetzt, erregt* (die v. l. oft richtigor उद्धुत): das Meer MBh. 1,5469. 6,1644. मरुन्मेघ: घसनेन R. 6,108,1. °सट Raṅg. 9,60. Ṛt. 2,8. वातोद्धताम्बुधर Varâh. Bṛh. S. 19,20. वेणवो ऽनिलोद्धता: Âk. 2,4,8,27. Pañcat. 21,2. कृत्तबाणाग्निरुद्धतो (उद्धतो die neuere Ausg.) विवृद्धिं परमां गत: Harîv. 10575. वातोद्धतो वह्नि: Varâh. Bṛh. S. 19,7. so v. a. zum *Vorschein gekommen:* रिष्टानि Suçr. 1,102,18. — *h) gehemmt, gehindert* (= घत्यन्तं रुत: Comm.) R. 2,45,30. — *i)* m. N. pr. eines Esels Pañcat. 247,23. — Vgl. उद्ध, उद्धन, उद्धात fg., उद्धति, मदोद्धत, रयोद्धता, सिंहोद्धता.

— उपोद्ध s. उपोद्धात. — caus. उपोद्धातयति *durch ein Beispiel erläutern* Sîs. zu Çat. Br. Up. 11,7,8,8. — desid. उपोद्धित्सति *durch ein Beispiel erläutern wollen* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 195.

— समुद्, partic. समुद्धत = समुद्भीर्ण H. an. 4,138. 1) *aufgewirbelt:* Staub Harîv. 13068 (समुत्थित die neuere Ausg.). R. 5,19,13. — 2) *aufgehoben:* °पताक Harîv. 16253 (समुच्छ्रित° die neuere Ausg.). °लाङ्गूल Hit. ed. Jones. 1614 (समुन्नत° Scul. 76,6). *hoch gehend:* °तरंगिणी गङ्गा MBh. 5,3757. उन्नतमानुसमुद्धता ज्ञाह्नवी *hoch auf — fliessend* Kir. 5,15. — 3) *gesteigert, heftig, intensiv:* तेजस् R. 1,38,16. रयघोष MBh. 13,1978. लवणाम्बुसमुद्धतस्वन *wie das Meer heftig tosend* 8,1212. — — 4) *hochfahrend, stolz, übermüthig* Âk. 3,1,22. H. an. 4,128. — 5) *strotzend, voll von:* लोमकूर्प° R. 5,17,35. सकलचापलदोष° Çiç. 2,117 (= दुष्ट Mallin.). — 6) *herausgenommen:* पुष्कां क्रूरादगस्त्येन (richtiger समुद्धृतम् ed. Bomb.) MBh. 13,4564. °निधान R. 2,33,18 (richtiger समुद्धृत° ed. Bomb. und Gorr.). — 7) *in Bewegung versetzt, erregt* (richtiger समुद्धुत): ऊरुभुजवेगेन समुद्र: R. 5,3,27. पतद्वातसमुद्धतां पुष्पवृष्टय: 10,13. °मरुत् Uttarar. 98,11 (124,10). — Vgl. विमतिसमुद्धातिन्.

— उप 1) *schlagen —, stossen auf; berühren:* ज्ञघनान् Ṛv. 6,75,13. Çat. Br. 6,1,2,3. पद्या 14,9,4,7. 12. यूपम् Âçv. Gṛhj. 3,6,8. घतम् Liṭ. 1,9,22. 12,2. दण्डेनोपघातं oder दण्डोपघातं गा: कालयति P. 2,4, 48, Schol. vom *Stossen* d. h. *Auftreffen* eines Vogels: कपोतमेदागारमुपरुन्ध्यात् Âçv. Gṛhj. 3,7,7. मार्जारवत्पोषकं चोपरुन्धि so v. a. *drosseln* MBh. 2,2123. — 2) *anstecken, an die Spitze eines Stabes* u. s. w. *fassen, antupfen* TBr. 1,1,2,6. कुम्भ्यै दर्व्या Çat. Br. 2,5,2,17. 3,2,2,20. सुवेणाज्यम् 4,4,25. दधिहव्यम् 9,2,2,10. इषीकया 10,1,5,4. घङ्गुष्ठेन Çâṅkh. Çr. 4,21,5. घाज्यमेव संस्कृत्योपघातं जुहुयात् *stückweise herausstechend* Gobh. 1,9,24. Çat. Br. 5,2,2,4. 4,4. 14,9,4,18. 23. — 3) *einstecken, befestigen:* मणूंस्तान् TS. 2,3,4,3. — 4) *störend treffen, hemmen; beeinträchtigen, beschädigen:* प्रजननम् Ait. Br. 3,11. घलाणी वागनुपोपन्निर्ग्रमान: TBr. 3,7,12,3; vgl. AV. 6,118,1. उपरुन्धामिमा: प्रजा: Bhâg. 3,24. घनुपघ्नन्पितृद्रव्यम् M. 9,208 (= MBh. 13,5123). MBh. 5,699. घन्नाविकम् Varâh. Bṛh. S. 39,3. सस्यर्द्धिम् Mârk. P. 51,23. Bhaṭṭ. 5,12. लङ्घा चोपरुणद्धि (pass.) 16,12. धर्माधोवुपरुन्धि Spr. (II) 4851. सर्वं तस्योपरुन्यते MBh. 13,407. मति: Suçr. 1,38,16. स्वभाव: Bhâg. P. 2,10,41. मम प्रतिज्ञामुपरुन्धुम् *zu Schanden machen* Harîv. 7209. — 5) *anstossen, stecken bleiben im Recitiren* u. s. w., *fehlen:* घधीयन्नुपरुन्ध्यात् Ait. Br. 3,35. Çâṅkh. Br. 26,3. 27,1. med. TS. 7,3,4,1. 2. — 6) partic. उपरुद्ध *a) belegt, bestreut:* घासनानि छिदर्भोपरुद्धानि Devalā bei Koll. zu M. 3,208. — *b) erschlagen* Uttarar. 133,11 (176,8). घनुपरुद्धकुष्ठ *der nicht weiss, was Schlagen und Schmähen heisst* (उपरुद्ध und कुष्ठ wohl als nomm. act. zu fassen) Lot. de la b. l. 603. — *c) behaftet* (mit einem Uebel), *heimgesucht, hart mitgenommen, beschädigt, verdorben, besudelt:* रत्नानि देवै: Çat. Br. 7,3,2,6. ग्रामयोगै: Spr. (II) 3466. वस्त्र Mârk. P. 34,55. 35,26. 97,27. fg. Varâh. Bṛh. S. 15,32. स्वर Suçr. 1,239,11. घनुम् Milaṭîm. 160,18. °पादेन्द्रिय Sarvadarçanas. 78,11. घनुपरुद्धकर्णेन्द्रियता Lot. de la b. l. 603. गुरुशापेन क्रिया MBh. 1,4665. Harîv. 5594. दैवोपरुद्धकर्मन् R. 1,58,23 (60,26 Gorr.). छाया मम 2,69,30. इन्दुर्यत्रोपरुद्धद्युति: R. Gorr. 2,39,27. 40,11. 81,3. मलोपरुद्धप्रमादे दर्पणतले Çiç. 191. Kir. 5,48. Spr. (II) 2103, v. l. पुंस्त्व Varâh. Bṛh. S. 16,33. Bhâg. P. 5,6,11. 8,24,46. तन्नोन्मेषोपरुद्धतमम् Prasannar. 118,4. भूतोपरुद्ध-

चिता R. 2,58,30. R. Gorr. 2,9,9. गुरुशापात् 1,62,18. मधुशर्कराप्रम°-सिक्ताभिरुपकृता भूमिः Suçr. 1,134,19. घृणोपकृत 29,5. उच्छिष्टोपकृत Maitrâjup. 6,9. मधाङ्गोपकृता पङ्क्तिः M. 3,183. निःश्वासोपकृत 19. दर्पणः सबाष्पनिःश्वासमारुतोपकृतः Varâh. Bṛh. S. 5,50. 19,9. 39,3. 60,6. मूषिकोपकृतवस्त्र Verz. d. Oxf. H. 86,b,15. Kuhn zu M. 5,115. स्तनौ प्रुचा durch Thränen Bhâg. P. 4,26,25. 10,60,27. रुदितोपकृत MBu. 9,2435. यमूपकृत Vikr. 127. कश्मलोपकृत R. 1,65,9. तिमिराम्बुपकृतचक्षुस् Sarvadarçanas. 17,3. बाष्पोपकृता वाक् R. 2,39,19. 60,5. 4,8,18. यस्थैर्येण विभूतयः Spr. (II) 855. कामेन तपः Sarvadarçanas. 172,3. शोकेन R. 5, 21,7. यविक्षया Bhâg. P. 3,9,20. यबोधोपकृत Spr. (II) 4488. यशोपकृतात्मवृत्ति Kumâras. 5,76. कामोपकृत M. 9,67. MBu. 1,5953. Nîlak. 22. तृष्णोपकृत Bṛ. 1,15. दर्पोपकृत MBu. 3,8496. दारिद्र्योपकृत Pañcat. 95, 13. 119,5. दुःखोपकृत R. 2,47,19. 3,79,30. Spr. (II) 4606. दुर्भिक्षोपकृत Râjat. 4,330. 5,89. मदनोपकृत MBu. 1,931. मदाबलेपोपकृत Mârk. P. 21,3. रोगरागोपकृत MBu. 3,15639. लोभोपकृत Bhâg. 1,38. वैक्लव्योपकृत Spr. (II) 4341. शाठ्योपकृत 367. शोकोपकृत MBu. 3,2267. R. 2,33, 5. 47,1. 52,23. 63,1. R. Gorr. 2,101,23. Prab. 108,11. 109,7. Pañcar. 4,3,186. प्रमोदोपकृत überwältigt —, hingerissen von Bhâg. P. 18,71, 40. विप्रलब्धैः सौणीभुत्रः verdorben, verführt Spr. (II) 1889. यपायोपकृतात्मन् so v. a. entmuthigt 3485. दैवेन vom Schicksal geschlagen, — verfolgt R. 2,47,14. 5,80,9. ohne दैवेन dass. MBu. 5,1277. Varâh. Bṛh. S. 16,37. उपकृतात्मन् niedergeschlagen, traurig Kathâs. 114,160. सनुपकृतात्मक wohlgemuth 27,130. — d) unbestritten: विधि Spr. (II) 4310. — Vgl. उपघात fgg., उपघ्न, उपकल्प fgg., दैवोपकृतक, घूमोपकृत, निरुपकृत.

— समुप, partic. °कृत beschädigt, getrübt: °मति Spr. (II) 4753.

— नि 1) einschlagen, stossen in, auf (loc.), schleudern auf: यधि मानो वज्रेण ṚV. 1,80,6. 3,30,16. 7,18,18. वज्रं दस्यवि 8,6,13. वृत्रस्य रुन्धोस्तन्यतुम् 1,52,6. ब्राह्मणाय नार्यं गुरोत् न नि कृन्यात् losschlagen auf TS. 2,6,10,2. मेधोम् 6,2,9,4. Âit. Br. 1,29. मयूखम् 5,15. शङ्कुम् Çat. Br. 3,5,4,1. दण्डम् Kâṭy. 10. 16. पदो निघ्नतीः niederstossend d. i. stampfend TS. 7,5,10,1. निघ्नन्प्रोथेन पृथिवीम् MBu. 3,11953. शिरश्चोरस्य पाणिभ्यां निघ्नतो schlagend auf R. 4,18,20. निकृत्य तत् Kathâs. 25,102. 33,136. स्तनैः स्तनाभिकृत्य so v. a. berührend Bhâg. P. 10,82, 15. अन्योऽन्यं निघ्नतुः losschlagen auf MBu. 1,7729. Râgat. 7,41. कृतमपि निकृत्येव मदनः Spr. (II) 1895. विराटपुत्रं च करे निघ्नन्तं traf MBu. 4,1680. शिरांसि विशिखैर्यत्कृत्तम् 3,12220. निघ्नन्द्विषतां मनांसि 15652. — 3) anschlagen die Trommel: कोणैर्भेर्यो निघ्नघ्रिरे (pass.) Bhaṭṭ. 14,2. — 4) fällen, niederschlagen, erschlagen, tödten ṚV. 2,13,8. वज्रेण प्रुष्णम् 5, 32,4. 6,17,9. 29,6. 51,14. 8,12,1. das Opferthier Âit. Br. 2,11. Kâty. Çr. 6,5,16. इदं शरीरम् Çat. Br. 14,7,2,4. निकृत्ति त्वं कुवेम्यः Suçr. 1, 12,19. Spr. (II) 2573. 2874. 6437. 6631. 7322. निकृन्मि MBu. 1,5997. 5,7443. R. 3,43,10. 49,13. Kathâs. 18,332. 32,33. यात्मानमात्मना 5,70. Prab. 73,13. निकृन्मम् Bhaṭṭ. 2,24. निकृन्म MBu. 3,1273. निघ्नत्ति R. 1,40,26. 4,17,16. Spr. (II) 3304. Râja-Tar. 1,68 (zu lesen निघ्नति स्म पतिंवराम्). Bhâg. P. 1,15,24. 5,20,24. निघ्नत् R. 3,36,6. प्राणान् Spr. (II) 3121. Varâh. Bṛh. S. 7,5 (ein Planet den andern im Planetenkampf). मुष्टिभिः Bhâg. P. 1,15,32. निघ्नमान MBu. 7,1529. निकृत 2. pl. imper. 6,2805. न्यकृन् 7,6226. न्यकृनत् Harîv. 6646. Bhâg. P. 4,26,5. 7,1,44. निघ्नघान R. 1,1,46. 67. Kâm. Nîtis. 7,52. निघ्नघ्नतुम् MBu. 1, 7672. निघ्नघ्नुम् Kathâs. 18,102 (°घ्नक्रुः gedr.). Râja-Tar. 5,498. Bhâg. P. 8,10,6. निघ्नाघ्निरे R. 1,45,49. वृत्तनिघ्नघ्नुषम् MBu. 8,4088. निकृसासि Bhaṭṭ. 6,101. निकृनिष्यामि s. u. w. MBu. 4,24. Çiç. 155, v. l. Kathâs. 60,81. निकृनिष्ये MBu. 3,560. निकृस्यावम् 7,2779. निकृत्तुम् R. 3,32,8. 4,35,18. Spr. (II) 3624. Kathâs. 9,18. 18,172. Râja-Tar. 6,61. निकृत्य Maitrâjup. 6,28. Jâtâ. 3,262 (निकृन्य der Text, निकृत्य v. l.). MBu. 3,2401. 13682. 5,7272. Râgat. 11,71. Spr. (II) 7610 (so v. a. züchtigen). Mârk. P. 21, 87. दण्डेनैव निकृन्यते M. 7,27. Spr. (II) 3792. H. 829. mit gen. P. 2,3,66. चौरस्य निकृत्ति Schol. निघ्नान niederzuschlagen im Stande 3,2,129, Schol. शत्रुम् Vop. 26,140. Bhaṭṭ. 5,81. स्तम्बो येन निकृन्यते niedergehauen —, gemäht wird Âk. 3,3,35. दैवं निकृत्य so v. a. überwindend Spr. (II) 1255. — 5) zerstören, zu Grunde richten, in's Verderben bringen, vernichten, vertreiben: शरवर्षम् MBu. 7,2345. यस्त्रमन्त्रेण Râgat. 12,92. मर्म Suçr. 1,352,1. Varâh. Bṛh. S. 4,37. यस्त्रम् 5,38. 70. 79. 9,41. 10,15. 30,17. भानुर्घासम् Râja-Tar. 6,68. रोगान् Suçr. 1,35,7. 88,8. 185,19. 2,326. 10. Varâh. Bṛh. S. 77,35. यघानि Vop. 5,148. Çi. 1. गतिं दिव्यां तपसार्जितां R. Gorr. 1,77,41. परिक्लिष्टम् Spr. 1460, v. l. (für वि°). स्वामिनो ऽर्थम् Kathâs. 63,174. भितिशङ्काम् Kir. 5,36. मनोरथम् Daçak. 91, 15. बलम् Bhaṭṭ. 8,20. वयं भृशं तत्र मरुन्निलाम्बुभिर्निकृत्यमानाः heimgesucht werdend Bhâg. P. 10,80,38. — 6) herfallen über: प्रजासु निकृत्येव सरुमाममत्स्यतः Kir. Ça. 4,15,16. mit gen.: प्रुद्धकस्तो ब्राह्मणस्यानिकृत्यैतं स्वर्गं सुकृतापेतम् mit reinen Händen als solcher, die am Brahmanen sich nicht vergriffen haben, AV. 12,3,44. — 7) heften an (loc.): यथा पुंसः स्त्रियां निकृन्यते मनः haftet an AV. 6,70,1. — 8) senken: पतौ भूम्याम् AV. 5,8,2. (कस्तम्) तिर्यङ्निकृत्य VS. Prât. 1,123. सबुम् 124. — 9) mit gesenktem Tone d. i. mit dem Anudâtta sprechen ṚV. Prât. 11,27. Ind. St. 4,174. 330. Âçv. Çr. 7,11,5. P. 8, 1,35, Schol. — 10) multiplicirren Comm. zu Âryabh. 4,25 u. s. w. — 11) partic. निकृत a) geschleudert: वज्र ṚV. 6,27,4. niedergeschlagen: युगान्ताग्नि° (मेरु) Spr. (II) 5197. गदा R. 3,35,31. यनिलो ऽनिलेन Varâh. Bṛh. S. 32,2. ein Planet von einem andern im Planetenkampfe 17,25. Bṛh. 15,2. getroffen: लक्ष्य MBu. 1,7173. uneig.: यवलोक° Bhâg. P. 1,11,37. शोक° Spr. (II) 2781, v. l. erschlagen, niedergemacht, geschlachtet MBu. 1,1172. 5992. 6028. 3,1748. 2544. 16964. 5,7086. 7225. R. 1,1,52. 2,63,31. 37. 64,39. 44. 51. 97,30. Spr. (II) 499. 3792. 4004. 4657, v. l. Kathâs. 25,197. Râja-Tar. 2,94. 4,329. 5,325. 414. 434. Bhâg. P. 1,15,7. 5,14,22. 7,10,23. — b) zerstört, zu Grunde gerichtet, vernichtet: त्रिपुर MBu. 3,1703. देश Varâh. Bṛh. S. 11,62. जगत् Prab. 70,12. यानन्द R. 2,47,15. यशा 5,56,93. माया प्रतिमायया Kathâs. 50,60. योग्यता Spr. (II) 6310. प्रदोषे पन्याः dahin so v. a. nicht mehr zu sehen 4234. — c) mit dem Anudâtta gesprochen Ind. St. 4, 366. Kâr. 1 aus Sinhn. K. zu P. 7,2,10. Comm. zu TS. Prât. 19,2. °वत् n. sg. — d) fehlerhaft für निक्त R. 2,82,16 (निक्त ed. Bomb.). Varâh. Bṛh. S. 4,2 (निक्त die Hdschrr.). dagegen निक्त Kir. 14,14 fehlerhaft für निकृत्त. Vgl. निघात fgg., निकृन् fgg. und निकृत्तार्थ in den Nachträgen. — caus. erschlagen, tödten: स्पर्शैर्निघातयेत्सर्वान् (so zu

शर्म्या कृत्तार्पः RV. 3,33,13. प्रधिम् 10,102,7. पविभिरुद्धिन्नन्न आपध्योऽ न पर्वतान् *schleudern bei Seite wie an der Strasse liegende* (Steine u. s. w.) 1,64,11. उत्पणीर्वृतम् 184,2. प्रतिष्ठायाः *verdrängen* Çat. Br. 1,8, 3,14. अरून् 4,2,4,19. so v. a. *ausrotten:* उद्धत्यमाववनिकणकं मत-कृत्व उरुधारयर्षभेण Bhâg. P. 2,7,22. — 2) *ausschlagen* (einen Graben u. s. w.), *aufwerfen, aufschütten:* der Eber Çat. Br. 14,1,2,11. वेदिम् TS. 2,2,10,3. 5,2,2,3. 6,6,4,1. TBr. 1,2,1,1. 3,2,9,2. अधिदेवनम् Comm. 1,66,19. Âpast. 2,25,12 (उद्धत्य st. उद्धत्य zu lesen). — 3) med. *sich erhängen:* उद्धनिष्ये R. 3,51,40 (आबन्धिष्ये ed. Bomb. 45,26). आत्मानमुद्धत्य (so ist vielleicht zu lesen) Pañcat. 135,3. — उद्धत्य Harîv. 4408 fehlerhaft für उद्धत्य. — 4) partic. उद्धत *a) aufgewirbelt* (vgl. उद्धुत, उद्धूत): Staub R. 5,73,62. Ṛt. 1,10. Çiç. 8. Kathâs. 14,13. — *b) erhöht, hervorragend über* (abl.) Çat. Br. 6,4,4,18. 10,2,3, 1. Kâtj. Ça. 5,4,19. 7,9,5. TBr. 2,7,6,2 (धनुद्धत). सिरा Suça. 1,279,3. *ausgegraben* Kâtj. Ça. 7,1,19. *angeschwollen:* सिन्धु Spr. (II) 2721, v. l. für उद्यत. *hoch in der Luft schwebend:* Wolken Spr. (II) 5563. *auf —, in die Höhe gehoben* (richtiger उद्धत): °योध Harîv. 4290 (उद्यत° die neuere Ausg.). °तृणा (क्रमौ) Kathâs. 69, 136. घनपटैर्मरुता नमितोद्धतैः 114,18. शस्त्र Spr. (II) 1240, v. l. für उद्धत. घनुद्धतपाद Pañcat. 260,18. 19. लाङ्गूल Bhatṭ. 9,7. *herausgesogen, — geholt:* ज्वलान्मत्स्यौ R. 2,53, 32 (richtig उद्धत ed. Bomb.). गरुडेनेव क्रुद्धिन्युद्धतपन्नगा 47,17 (उद्धत° ed. Bomb.). — *c) angeschlagen:* वीणा Kâtj. Ça. 21,3,7. — *d) gesteigert, heftig, intensiv* Hall. 4,59. मन्यु R. 4,36,21. ध्वनि Ṛt. 2,1. कूजित Spr. (II) 800. नृत्य Daçar. 1,10. युद्ध Kathâs. 74,83. Bhâg. P. 4,25,42. Kathâs. 27,12. Pañcat. 93,3 (Lesart unsicher). — *e) hochfahrend, stolz, übermüthig* H. 431. R. Gorr. 1,14,43. Nîtiç. 18,73. Spr. (II) 1239. Kathâs. 44,52. 48,73. Mâlav. P. 17,8. दृष्ट्वनोद्वाग्भिः 14. दोर्भ्यां ब्रह्मवरेण च *pochend auf* Bhâg. P. 3,17,19. वीर्यशौर्याभ्यां 11,6,29. मत्तवधोद्धत Raghu. 12,63. धीरोद्धत (d. i. धीर und zugleich उद्धत) Bhar. Nâṭjaç. 34,4. 5. Daçar. 2,2. 3. Sâh. D. 65. उद्धतं वाक्यम् Spr. (II) 5248. 5903. वेष 5617. धीरोद्धता गतिः Uttarar. 111,18 (151,2). घनुद्धत *nicht stolz, bescheiden, anspruchlos* Kâm. Nîtis. 18,32. समृद्धिभिः Spr. (II) 4556. Varâh. Bṛh. S. 73,7. °मनस् R. 2,6,22. वेष Suça. 1,30,2. उद्धतत्व n. *hochfahrendes Wesen* (*Verwegenheit* Comm.) Maitrâyaṇ. 3,5. — *f) strotzend —, voll von* (instr. oder im comp. vorangehend): क्रोधविषोद्धत MBh. 4,788. मदोद्धत R. 4,9,10 (मदो° gedr.). Kumâras. 3,31. Spr. (II) 4671. Pañcat. 224,8. 234,8. घनमदोद्धत Kathâs. 18,129. यौवनमदोद्धत 277. बलोद्धत Spr. (II) 815. — *g) in Bewegung versetzt, erregt* (die v. l. oft richtiger उद्धुत): das Meer MBh. 1,5469. 6,1644. मरुन्मेघः श्रमेण R. 6,108,1. °मरु Raghu. 9,60. Ṛt. 2,3. वातोद्धताम्बुधर Varâh. Bṛh. S. 19,20. वेणवो ऽनिलोद्धताः AK. 2,4,2,17. Pañcat. 21,2. कृत्तबाणाग्निरुद्धतो (उद्धतो die neuere Ausg.) विवृद्धिं परमां गतः Harîv. 10575. वातोद्धतो वह्निः Varâh. Bṛh. S. 19,7. so v. a. zum *Vorschein gekommen:* रिष्टानि Suça. 1,102,18. — *h) gehemmt, gehindert* (= यत्यर्थं कृतः Comm.) R. 2,45,30. — *i)* m. N. pr. eines Esels Pañcat. 247,25. — Vgl. उद्ध, उद्धन, उद्धात fg., उद्धति, मदोद्धत, रथोद्धता, सिंहोद्धता.

— उपोद्ध s. उपोद्धात. — caus. उपोद्धातयति *durch ein Beispiel erläutern* Sîs. zu Çat. Br. Up. 11,7,2,8. — desid. उपोद्धित्सति *durch ein Beispiel erläutern wollen* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 195.

— समुद्, partic. समुद्धत = समुद्भीर्ण H. an. 4,128. 1) *aufgewirbelt:* Staub Harîv. 13668 (समुत्थित die neuere Ausg.). R. 6,19,12. — 2) *aufgehoben:* °पताक Harîv. 16253 (समुच्छ्रित° die neuere Ausg.). °लाङ्गूल Hit. ed. Johns. 1614 (समुन्नत° Schl. 76,6). *hoch gehend:* °तरंगिणी गङ्गा MBh. 5,5757. उन्नतसानुसमुद्धता ग्राव्णवी *hoch auf — fliessend* Kir. 5,15. — 3) *gesteigert, heftig, intensiv:* तेजस् R. 1,38,16. रवघोष MBh. 13,1975. लवणाम्बुसमुद्धतस्वन *wie das Meer heftig tosend* 8,1212. — — 4) *hochfahrend, stolz, übermüthig* AK. 3,1,33. H. an. 4,128. — 5) *strotzend, voll von:* लोमकूर्प° R. 5,17,25. मक्षिकाघाक्लदोष° Çiç. 2,117 (= दुष्ट Mallin.). — 6) *herausgenommen:* पुष्करं क्रुद्दादगस्त्येन (richtiger समुद्धृतम् ed. Bomb.) MBh. 13,4544. °निधान R. 2,33,18 (richtiger समुद्धृत° ed. Bomb. und Gorr.). — 7) *in Bewegung versetzt, erregt* (richtiger समुद्धुत): ऊरुभ्रुवेगेन समुद्रः R. 5,3,37. पतद्वातसमुद्धतां पुष्पवृष्टिम् 10,12. °मरुत् Uttarar. 95,11 (124,10). — Vgl. विमतिसमुद्धातिन्.

— उप 1) *schlagen —, stossen auf; berühren:* घनान् Ṛv. 6,75,13. Çat. Br. 6,1,2,3. पष्ठा 14,9,4,7. 12. यूपम् Âçv. Grhj. 3,6,3. घटम् Lâṭj. 1,9,32. 12,2. दण्डेनोपघातं oder दण्डोपघातं गाः कालयति P. 3,4, 48, Schol. vom *Stossen* d. h. *Auftreffen* eines Vogels: कपोतघोटगाम्-मुपकृन्यात् Âçv. Grhj. 3,7,7. मार्जारवत्पोषकं घोषकेसि so v. a. *kratzen* MBh. 2,2123. — 2) *anstecken, an die Spitze eines Stabes u. s. w. fassen, antupfen* TBr. 1,1,3,6. कुम्भ्यै दर्व्या Çat. Br. 2,5,2,17. 3,2,2,20. सुवेणाज्यम् 4,1,25. दधिद्रप्सम् 9,2,2,10. इषीकया 10,1,5,4. घडुम्बेन Çâṅkh. Ça. 4,21,8. घाज्यमेव संस्कृत्योपघातं जुह्वयात् *stückweise herausstechend* Gobh. 1,9,24. Çat. Br. 5,2,2,4. 4,4. 14,9,4,18. 28. — 3) *einstecken, befestigen:* मयूखान् TS. 2,3,4,5. — 4) *störend treffen, hemmen; beeinträchtigen, beschädigen:* प्रजननम् Ait. Br. 3,11. घलाभी यज्ञमुपोद्ग्रमानः TBr. 3,7,12,3; vgl. AV. 5,118,1. उपकृन्यामिमाः प्रजाः Bhâg. 3,24. घनुपघ्नन्पितृद्रव्यम् M. 9,208 (= MBh. 13,5123). MBh. 3,699. घजाविकम् Varâh. Bṛh. S. 39,2. मस्यर्द्धिम् Mâlav. P. 31,22. Bhatṭ. 5,12. लङ्का घोपकृनिष्यते (pass.) 16,12. धर्मार्थावुपकृन्ति Spr. (II) 4851. सर्वं तस्योपकृन्यते MBh. 13,407. मृतिः Suça. 1,38,16. स्वभावः Bhâg. P. 2,10,11. मम प्रतिज्ञामुपकृन्तुम् *zu Schanden machen* Harîv. 7209. — 5) *anstossen, stecken bleiben im Recitiren u. s. w., fehlen:* घधीयन्नुपकृन्यात् Ait. Br. 3,35. Çâṅkh. Br. 26,3. 27,1. med. TS. 7,3,1,1. 2. — 6) partic. उपकृत *a) belegt, bestreut:* घासनानि हिर्भोपकृतानि Devala bei Kull. zu M. 3,208. — *b) erschlagen* Uttarar. 133,11 (176,3). घनुपकृतकुष्ट *der nicht weiss, was Schlagen und Schmähen heisst* (उपकृत und कुष्ट wohl als nomm. act. zu fassen) Lot. de la b. l. 603. — *c) behaftet* (mit einem Uebel), *heimgesucht, hart mitgenommen, beschädigt, verdorben, beeudelt:* रक्तानि देवैः Çat. Br. 7,3,2,6. श्यामशोणैः Spr. (II) 5466. वस्त्र Mâlav. P. 34,35. 35,26. 97,27. fg. Varâh. Bṛh. S. 15,32. स्वर Suça. 1,239,11. घनम् Mâlatîm. 160,18. °पाटेन्द्रिय Sarvadarçanas. 78,11. घनुपकृतकर्णेन्द्रियता Lot. de la b. l. 603. गुरुशापेन क्रिया MBh. 1,4665. Harîv. 5504. दैवोपकृतकर्मन् R. 1,58,23 (60,26 Gorr.). छाया मम 2,69,20. इन्दुर्मदेणोपकृताङ्गुतिः R. Gorr. 2,39,37. 40,11. 81,6. मलोपकृतप्रमादे दर्पणतले Çiç. 191. Kir. 5,18. Spr. (II) 2103, v. l. पुंस्त्व Varâh. Bṛh. S. 16,32. Bhâg. P. 5,6,11. 8,24,46. तन्नोन्मेषोपकृततमम् Prab. 118,4. भूतोपकृत-

चिता R. 2,58,30. R. Gorr. 2,9,9. गुरुशापात् 1,62,18. सुधर्शकराश्म°मिश्रताभिरनुपकृता भूमिः Suça. 1,134,19. घृणोपकृत 29,8. उच्छिष्टोपकृत Maitrâyaṇ. 6,9. यपाङ्क्तोपकृता पङ्क्तिः M. 3,183. निःश्वासोपकृत 19. दर्पणः सबाष्पनिःश्वासमारुतोपकृतः Varâh. Bṛh. S. 5,50. 19,9. 59,2. 60,6. मृषिकोपकृतवस्त्र Verz. d. Oxf. H. 86,5,15. Kull. zu M. 5,113. स्तनौ प्रुचा durch Thränen Bhâg. P. 4,26,25. 10,60,27. कृदितोपकृत MBh. 9,2428. यमूपकृत Vikr. 127. कश्मलोपकृत R. 1,65,9. तिमिराम्बुपकृतवस्तु Sarvadarçanas. 17,3. बाष्पोपकृता वाक् R. 2,59,19. 60,4. 4,8,18. यस्यैर्येण विभूतयः Spr. (II) 855. कामेन तपः Sarvadarçanas. 172,3. शोकेन R. 5, 21,7. यविग्धया Bhâg. P. 3,9,30. यबोधोपकृत Spr. (II) 4488. यशोपकृतात्मवृत्ति Kumâras. 5,76. कामोपकृत M. 9,67. MBh. 1,5953. Nîlak. 22. तृष्णोपकृत Ṛv. 1,18. दर्पोपकृत MBh. 3,5496. दारिद्र्योपकृत Pañcat. 95, 13. 119,5. दुःखोपकृत R. 2,47,19. 3,79,30. Spr. (II) 4606. दुर्भिक्षोपकृत Râjat. 4,220. 5,89. मदनोपकृत MBh. 1,951. मदावलेपोपकृत Mâlav. P. 21,3. रोगरागोपकृत MBh. 3,15639. लोभोपकृत Bhag. 1,38. वैद्यप्योपकृत Spr. (II) 4341. शाठ्योपकृत 367. शोकोपकृत MBh. 3,2267. R. 2,33, 5. 47,1. 52,22. 63,1. R. Gorr. 2,101,22. Prab. 108,11. 109,7. Pañcar. 4,3,186. प्रमोदोपकृत *überwältigt* —, *hingerissen von* Bhâg. P. 10,71, 40. विटत्वेल्पितैः तौर्णाभुत्रः *verdorben, verführt* Spr. (II) 1880. यपापोपकृतात्तरात्मन् so v. a. *entmuthigt* 3485. दैवेन *vom Schicksal geschlagen,* — *verfolgt* R. 2,47,14. 5,80,9. ohne दैवेन dass. MBh. 5,1277. Varâh. Bṛh. S. 16,37. उपकृतात्मन् *niedergeschlagen, traurig* Kathâs. 114,160. यनुपकृतात्मक *wohlgemuth* 27,130. — *d) unbestritten:* विधि Spr. (II) 4310. — Vgl. उपघात fgg., उपघ्न, उपकृलु fgg., दैवोपकृतक, धूमोपकृत, निरुपकृत.

— समुप, partic. °कृत *beschädigt, getrübt:* °मति Spr. (II) 4753.

— नि 1) *einschlagen, stossen in, auf* (loc.), *schleudern auf:* यधि सानौ वज्रेण ṚV. 1,80,6. 3,30,16. 7,18,15. वज्रं दस्यवि 8,6,13. वृत्रस्य कन्धौस्तन्यतुम् 1,52,6. ब्राह्मणाय नार्पं गुरवे न नि कृन्यात् *losschlagen auf* TS. 2,6,10,2. मेथीम् 6,2,9,4. Âit. Br. 1,29. मयूखम् 3,15. शङ्कुम् Çat. Br. 3,5,4,1. दण्डम् Kâṭj. 10. 16. पदो निघ्नतीः *niederstossend* d. i. *stampfend* TS. 7,5,10,1. निघ्नन्प्रोक्षेन पृथिवीम् MBh. 3,11952. शिरसोरस्य पाणिभ्यां निघ्नतो *schlagend auf* R. 4,18,20. निकृत्य ततं Kathâs. 25,103. 33,136. स्तनैः स्तनानिकृत्य so v. a. *berührend* Bhâg. P. 10,82, 15. यन्योऽन्यं निघ्नतः *losschlagen auf* MBh. 1,7729. Râgat. 7,41. कृतमपि निकृन्त्येव मदनः Spr. (II) 1895. विराटपुत्रं च कङ्के निघ्नन्ते *traf* MBh. 4,1680. शिरांसि विशिखैर्न्यकृनम् 3,13230. निघ्नन्हियतां मनांसि 15653. — 3) *anschlagen* die Trommel: कोणैर्भेर्यौ निघ्नद्भिरे (pass.) Bhaṭṭ. 14,2. — 4) *fällen, niederschlagen, erschlagen, tödten* ṚV. 2,13,8. वज्रेण मुष्कम् 5, 32,4. 6,17,9. 29,6. 51,14. 8,12,1. das Opferthier Ait. Br. 2,11. Kâṭj. Çr. 6,5,16. इदं शरीरम् Çat. Br. 14,7,2,4. निकृत्ति त्वनं कुवेयः Suça. 1, 12,19. Spr. (II) 2573. 2874. 6437. 6631. 7322. निकृन्मि MBh. 1,5997. 5,7442. R. 2,43,10. 49,12. Kathâs. 18,332. 32,33. यात्मानमात्मना 5,70. Prab. 73,15. निकृन्मम् Bhaṭṭ. 2,34. निकृन्म MBh. 3,1273. निघ्नन्ति R. 1,40,26. 4,17,16. Spr. (II) 3304. Râjat. 1,68 (zu lesen निघ्नन्ति स्म पतिंवराम्). Bhâg. P. 1,15,24. 5,26,24. निघ्नत् R. 2,36,5. प्राणान् Spr. (II) 3121. Varâh. Bṛh. S. 7,5 (ein Planet den andern im Planetenkampf). मुष्टिभिः Bhâg. P. 1,15,22. निघ्नमान MBh. 7,1539. निकृत 2. pl. imper. 6,2805. न्यकृन् 7,6236. न्यकृनत् Harîv. 6646. Bhâg. P. 4,26,5. 7,1,44. निघ्नधान R. 1,1,46. 67. Kâm. Nîtis. 7,52. निघ्नयितुम् MBh. 1, 7672. निघ्नयुम् Kathâs. 15,102 (°नङ्कुः gedr.). Râja-Tar. 5,433. Bhâg. P. 3,10,6. निघ्नाघ्रे R. 1,45,19. वृत्तानिघ्नयुषम् MBh. 8,4085. निकृसामि Bhaṭṭ. 6,101. निकृनिष्यामि u. s. w. MBh. 4,24. Çiç. 155, v. l. Kathâs. 60,81. निकृनिष्ये MBh. 3,360. निकृत्यावम् 7,3779. निकृत्तुम् R. 3,32,8. 4,33,18. Spr. (II) 3624. Kathâs. 9,18. 18,172. Râja-Tar. 6,61. निकृत्य Maitrâyaṇ. 6,28. Jâḍ. 3,262 (निकृन्य der Text, निकृत्य v. l.). MBh. 3,2401. 15682. 5,7372. Ragh. 11,71. Spr. (II) 7610 (so v. a. *züchtigen*). Mâlav. P. 21, 87. दण्डेनैव निकृन्यते M. 7,27. Spr. (II) 3792. H. 829. mit gen. P. 2,3,66. चौरस्य निकृत्ति Schol. निघ्नान *niederzuschlagen im Stande* 3,2,129, Schol. शत्रुम् Vop. 26,140. Bhaṭṭ. 5,81. स्तम्बो येन निकृन्यते *niedergehauen* —, *gemäht wird* AK. 3,3,35. दैवं निकृत्य so v. a. *überwindend* Spr. (II) 1255. — 5) *zerstören, zu Grunde richten, in's Verderben bringen, vernichten, vertreiben:* शरवर्षम् MBh. 7,9345. यस्त्रमस्त्रेण Ragh. 12,92. मर्म Suça. 1,352,1. Varâh. Bṛh. S. 4,27. घस्त्रम् 5,38. 70. 79. 9,41. 10,15. 30,17. भानुर्घात्तम् Râja-Tar. 6,63. रोगान् Suça. 1,35,7. 88,8. 185,19. 2,326, 10. Varâh. Bṛh. S. 77,35. घघानि Vop. 5,143, Çl. 1. गतिं दिव्यां तपसार्जितां R. Gorr. 1,77,41. परिक्तम् Spr. 1460, v. l. (für वि°). स्वामिनो ऽर्थम् Kathâs. 63,176. भितिशङ्काम् Kir. 5,36. मनोरथम् Daçar. 91, 15. बलम् Bhaṭṭ. 8,20. वयं भृशं तत्र मरुन्निलाम्बुभिर्कृन्यमानाः *heimgesucht werdend* Bhâg. P. 10,80,38. — 6) *herfallen über:* प्रजासु निकृत्येव मरुसामप्रमत्स्यतः Kir. Ça. 4,13,16. mit gen.: ब्रह्मकृत्तो ब्राह्मणस्यानिकृत्यैतं स्वर्गं सुकृतापीतम् *mit reinen Händen als solche, die am Brahmanen sich nicht vergriffen haben,* AV. 12,3,44. — 7) *haften an* (loc.): यथा पुंसः स्त्रियां निकृन्यते मनः *haftet an* AV. 6,70,1. — 8) *senken:* पतौ भूम्याम् AV. 6,8,2. (कृस्तम्) तिर्यङ्निकृत्य VS. Pâit. 1,123. सन्तम् 124. — 9) *mit gesenktem Tone* d. i. *mit dem* Anudâtta *sprechen* ṚV. Pâit. 11,27. Ind. St. 4,174. 330. Âçv. Çr. 7,11,5. P. 8, 1,35, Schol. — 10) *multipliciren* Comm. zu Âryabh. 4,25 u. s. w. — 11) partic. निकृत *a) geschleudert:* वज्र ṚV. 6,27,4. *niedergeschlagen:* पुगासाग्नि° (मेरु) Spr. (II) 3197. गदा R. 3,35,31. यनिलो ऽनिलेन Varâh. Bṛh. S. 32,2. ein Planet von einem andern im Planetenkampfe 17,25. Bṛh. 15,2. *getroffen:* लक्ष्य MBh. 1,7173. uneig.: यवलोक° Bhâg. P. 1,11,37. शोक° Spr. (II) 2781, v. l. *erschlagen, niedergemacht, geschlachtet* MBh. 1,1172. 5993. 6028. 3,1748. 2544. 16904. 5,7084. 7225. R. 1,1,52. 2,63,31. 37. 64,39. 44. 51. 97,30. Spr. (II) 499. 3792. 4004. 4857, v. l. Kathâs. 25,197. Râja-Tar. 2,94. 4,339. 5,235. 414. 434. Bhâg. P. 1,15,7. 5,14,22. 7,10,25. — *b) zerstört, zu Grunde gerichtet, vernichtet:* त्रिपुर MBh. 3,1703. देश Varâh. Bṛh. S. 11,62. नगत् Prab. 70,12. यानन्द R. 2,47,18. यशा 5,56,93. माया प्रतिमायया Kathâs. 50,66. योगयता Spr. (II) 6310. प्रदोषे पन्थाः *dahin* so v. a. *nicht mehr zu sehen* 4234. — *c) mit dem* Anudâtta *gesprochen* Ind. St. 4, 366. Kâr. 1 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Comm. zu TS. Pâit. 19,2. °त्व n. 4. — *d)* fehlerhaft für निकृत R. 2,82,16 (निकृत ed. Bomb.). Varâh. Bṛh. S. 4,2 (निकृत die Hdschrr.). dagegen निकृत Kir. 14,14 fehlerhaft für निकृत. Vgl. निघात fgg., निकृन् fgg. und निकृत्तार्थ in den Nachträgen. — caus. *erschlagen, tödten:* स्पर्शैर्निघातयेत्सर्वान् (so zu

lesen) MBh. 1,5792. निघातविष्यन्युधि यातुधानान् Bhatt. 2,21. — intens. निर्घनिघ्नत् *schleudernd* RV. 1,53,5.

— अभिनि 1) *anstecken, anspiessen* RV. 1,162,11. — 2) *schlagen auf:* अन्योऽन्यमभिनिघ्नतां शराणाम् R. 6,81,25. दुन्दुभीन् *die Trommeln* R. ed. Bomb. 3,30,27. *einhauen auf* MBh. 1,2489. गदया 5,1828. Harıv. 13173. °घ्नन् mit passiver Bed.: प्रतोदेन *geschlagen werdend* MBh. 3, 332. यथा शैलस्य मरुतः शैलेनेवाभिनिघ्नतः 4,1424 nach einer von Nilak. erwähnten Lesart. — 3) partic. °कृत Bez. eines Svarita, der sonst °क्षित heisst, AV. Paipp. 20,4. 10. Comm. zu 8.

— उपनि *stecken an, bei:* मेथीम् Çat. Br. 3,5,3,21. Kâty. Çr. 8,4,7.

— परिणि P. 8,4,17. 1) *umstecken:* शङ्कुभिः Çat. Br. 13,8,4,1. — 2) *schlagen:* उरांसि परिनिघ्नत्यः (so beide Ausgg.) MBh. 3,12361.

— प्रणि P. 8,4,17. Vop. 8,22. 9,7. 1) *zu Grunde richten, zu Nichte machen:* कामान् MBh. 5,770. mit gen. P. 2,3,56, Schol. ब्रह्महिंसस्ते प्रणिहन्मि Bhatt. 2,35. 8,131. unbestimmt ob gen. oder acc. Spr. (II) 4680. — 2) *stärker senken:* die Hand VS. Paipp. 1,124. *tiefer als* Anudâtta *sprechen* 4,137. — 3) partic. °कृत = द्विष्ट, प्रतिस्खलित und बद्ध Med. t. 207.

— प्रतिनि *einen Streich führen gegen:* वृत्रस्य पृदाकुं नि त्वं प्रत्यानं जघन्थ RV. 1,52,15. मन्थके प्रतिनिकृते MBh. 7,6736.

— विनि 1) *schlagen* MBh. 1,4982. अकिंसकानि भूतानि दण्डेन 13, 5868. परस्परं विनिघ्नत्यः R. 1,9,16 (17 Gorr.). करेण कन्दुकम् Bhâg. P. 8,12,21. शीर्षाणि 10,44,42. *niederschlagen:* मरुत्सखानि MBh. 6,2674. uneig.: मनांसि नः 12,398. — 2) *erschlagen, erlegen, tödten* MBh. 1, 525. 2246. 2637. 3,867. 4,264. Harıv. 13629. R. Gorr. 2,28,3. 5,78,6. 5,30,28. Kâm. Nîtis. 7,2. 15,37. Spr. (II) 1421. 7092. Bhâg. P. 4,26, 19. — 3) *zerstören, zu Grunde richten, zu Nichte machen* Vaitân. Bpn. S. 4,18. 6,10. 33,22. 39,5. 104,59. तूस्तानि Vop. 21,17, v. l. मायाम्, तमः MBh. 3,12155. तृष्णाम् Spr. (II) 379. श्लेष्माणम् 1992, v. l. — 4) partic. °कृत *a) niedergeschlagen:* शक्ति MBh. 6,3678 (°क्षिता ed. Calc.). *getroffen, berührt:* उत्कया शिखिना वागस्त्यः Vaitân. Bpn. S. 12,24. — *b) erschlagen, getödtet, geschlachtet* MBh. 1, 1474. 3,2546. 4,362. 5, 7095. 15,268. Harıv. 4049. R. Gorr. 2,91,19. 3,27,12. 72,28. 4,7,23. 12,6. 27. 5,56,132. Mṛicch. 173,17. Spr. (II) 3694. 7419. Mâlav. P. 127, 25. Bhâg. P. 6,9,54. 7,2,1. — *c) zu Grunde gerichtet, zu Nichte gemacht:* °रिपुरोग Vaitân. Bpn. S. 104,42. तमस् MBh. 1,85. आशा so v. a. *nicht befolgt* R. 5,21,14.

— सनि *losschlagen auf Jmd* Harıv. 12539. *erschlagen* MBh. 6,3549. 7,5816. 8,4556. — partic. °कृत 1,3300 fehlerhaft für °क्षित, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. सनिकृती fg.

— निम् 1) *weg-, hinausschlagen; verjagen, wegschaffen; vernichten:* वृत्रमघः RV. 1,80,2. वृत्रस्य तविषीम् 10.101,1. 116,21. तेजो राष्ट्रस्य AV. 5,19,4. मज्ञावम् 12,3,70. die Augen *ausschlagen* 19,50,1. Nir. 12, 14. Zähne Çat. Br. 1,7,4,7. 1,4,17. गर्भम् 3,3,4,23. 14,9,4,22. Pâraśav. Gṛ. 19,4,10. fg. *erschlagen:* कंसं यो निर्बधान Khandog. 160. statt निर्बधुः MBh. 8,849. Bhâg. P. 4,14,34. 6,9,18 lesen die Bomb. Ausgg. richtiger निजघ्नुः. निर्कृत्य Rîga-Tar. 5,133 wohl fehlerhaft für निर्कृत्य. — 2) *loswerfen auf* (mit gen. wie auch sonst bei Verbis des Zielens): मरुतो निर्मृगस्य वधर्त्रवान RV. 5,32,3. — Vgl. उल्कानिर्कृत unter उल्का. निर्घात fgg. und घानिर्कृत. — caus. 1) निर्घातयति *herausschaffen:* शल्यम् Suçr. 1,100,12. 102,9. — 2) *umbringen:* स्पर्शैर्निर्घातयेत्सर्वान् (so ed. Bomb.) MBh. 1,3792.

— प्रतिनिस् *übermässig auseinanderziehen:* den Svarita RV. Paiṅg. 3,18.

— अधिनिस् *vertilgen von:* निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ RV. 1,80,4.

— परिनिस् *austreiben:* यदेषो क्रुदि तदेषो परि निर्ऋकि AV. 3,2,4.

— विनिस्, partic. विनिर्कृत *vernichtet* AV. 7,52,2.

— परा 1) *wegschleudern, umstürzen:* स्थिरम् RV. 1,39,3. 5,56,3. वृत्रम् 4,16,7. *abschlagen:* den Kopf 6,26,3. परालम्बैरणिवराङ्गभूषणम् MBh. 8,812. — 2) *betasten:* यदा उशंदा: परायणु: VS. 1,12. Çat. Br. 1, 1,3,12. सोमम् 3,3,3,3. 9,4,1. — 3) partic. °कृत = आविद्ध Mân. dh. 28. *a) ab-, weggeschlagen, vertrieben:* पयोदा वायुवेगपराकृताः MBh. 3, 12689. देवं मत्पौरुषपराकृतम् R. Gorr. 2,20,28. *abgewandt:* कटाक्षपराकृतं वदनपङ्कजम् Mâlatîm. 140,15. — *b) im Widerspruch stehend:* परस्पर° AK. 1,1,5,20. H. 265. — Vgl. पराकृति.

— परि, wann das न der Wurzel in ण übergeht P. 8,4,32. fg. 1) *umwinden:* भोगैः Kâṭy. 13,4. Çâṅkh. Çr. 16,18,14. — 2) *ersticken:* das Feuer Çat. Br. 10,5,3,6. — 3) pass. *einen Wandel erfahren:* प्रकृतिः सा मम परा न क्वचित्परिकृन्यते (प्रति° ed. Bomb.) MBh. 13,6339. *sich legen, vergehen:* उत्साहः परिकृन्यते Spr. (II) 3769, v. l. für परिकीर्यते. — Statt परि वाधो वृक्षी मृधः RV. 8,45,40 ist परिवाधो zu vermuthen. — 4) partic. °कृत Çiç. 69,12 (v. l. प्रतिकृत) und Gîr. 5,12 fehlerhaft für °कृत (so Gîr. bei Haas.). — Vgl. परिघातिन् und दुष्परिकृत.

— अभिपरि *rings umfassen, bewältigen:* प्रजापतिं मृत्युः Çat. Br. 10,4,4,1.

— प्र, wann das न der Wurzel in ण übergeht P. 8,4,32. fg. Vârtt. 1 zu 2. Vop. 8,22. 9,7. 10. *schlagen:* den Soma RV. 9,69,2. तुषान् Çat. Br. 1,1,4,21. उरः (eines Andern) कठोरमुष्टिना Bhâg. P. 3,19,15. mit gen. P. 2,3,66. *losschlagen auf:* अग्नेः TBr. 3,8,4,1. Çat. Br. 3,8, 4,15. 4,6,8,7. प्रजघ्निरे ohne obj. MBh. 8,1206. प्राणानियत रक्षांसि येन *getödtet wurden* Bhatt. 9,103. अप्रघ्नत्यः (आपः) etwa *nicht weiter treibend* Çat. Br. 13,8,4,1. — partic. प्रकृत = आविद्ध Taitt. 3,3,214. = व्युत्पन्न = तुष्ट H. 345. Med. t. 121. Halâj. 2,107. = वितत Mân. *geschlagen, getroffen:* °रथनागाश्वकुञ्जर MBh. 8,1210. इषुभिः 7,3226. प्रकृतस्य मया तस्य लाङ्गूलेन महागिरेः R. 5,56,42. धनेकप्रकृतं चक्रम् Harıv. 15040 (धनेकमकृतं die neuere Ausg.). *angeschlagen:* Trommel u. s. w. Mâṇ. 65. Râṇ. 19,14. Kathâs. 10,171. 107,49. 109,152. 118,29. *zerhauen, zerschlagen:* गदा Bhâg. P. 10,72,38. तुरप्रप्रकृततनुत्र Spr. (II) 6319. *angehauen* oder *abgehauen:* चन्दनतरुः परशुप्रकृतः 401. क्षेत्राग्रप्रकृतम् so v. a. *ungepflügt* H. 940. *erschlagen* Kâm. Nîtis. 13,68 (vgl. 78). Pâṇ. 4,3,117. n. *Schlag:* ब्रह्म° ganz घतमूतादि zu P. 4,4,19. — Vgl. प्रकृणत, प्रकृन्, प्रकृन्तर् fg. — desid.: एतेनास्माल्लोकात्प्रजिघांसन्यजेत Çâṅkh. Çr. 16,22,10 wohl fehlerhaft für प्रजिगांसन्.

— अभिप्र *überwältigen* RV. 6,46,10. स्वप्नेन शारीरम् Çat. Br. 14,7, 1,12. partic. °कृत *verwundet:* Baum Suçr. 1,327,4 (अभिकृत v. l.).

— निघ्र mit gen.: चौरस्य निग्रकृत्ति P. 2,3,36, Schol.

— विघ्र, partic. °कृत *geschlagen, getroffen, mitgenommen:* ein Heer MBu. 7,1581. 8,2336. घम्बुवर्षेण गावः Harıv. 3913. वारिविप्रकृतानीव पङ्कजानि 3697. MBu. 7,3236. अ° *unbetreten:* Wald R. 1,26,12. Weg 3,74, 4.

— प्रति 1) *schlagen gegen* (gen.) Pañcav. Br. 13,11,10. *losfahren auf Jmd* (acc.): भल्लैः u. s. w. प्रत्यघ्नन्माम् MBu. 3,12217. इन्द्रमसुरान्प्रतिघ्नघुषम् 7,1120. — 2) *wiederschlagen:* प्रतिकृन्याद्धतः MBu. 3,1091. Spr. (II) 151. 5611. प्रतिकृत्तुं (so zu lesen mit der ed. Bomb.) न चेच्छति कृत्ताम् MBu. 12,8437. — 3) *zerschlagen, brechen:* पर्वान् ṚV. 10,48,7. Nir. 3,10. घमिमातिम् ṚV. 8,25,13. — 4) *anspiessen:* मृके पक्षा प्रत्यकृन्देव एकः ṚV. 1,32,12. — 5) *Jmd oder Etwas zurückschlagen, abwehren, sich wehren gegen* Ragh. 9,60. Kathâs. 18,150. 114,108. 121,207. Bhâg. P. 10,77,2. शरैर्वर्षं प्रतिघ्नन्ते MBu. 1,8278. घस्राणि प्रत्यघ्नन् 3,12233. 1,1472. 4,1684. 7,2677 (°कृन्य beide Ausgg.). Kathâs. 48,78. 50,12. 65. 113,21. 62. 66. प्रतिघ्नतीव प्रभया प्रभामर्कस्य MBu. 2,81. Ind. St. 10,281. *fern halten, verscheuchen:* दुःस्वप्नम् MBu. 13,4171. Kathâs. 36, 67. धर्मः पापेन प्रतिकृन्यते स्विदुताहो धर्मः प्रतिकृत्ति पापम् MBu. 5, 1597. 1599. अद्धा प्रतिकृन्यते Kâç. zu P. 1,4,66. *hemmen, aufhalten:* वेगं समरे कृपसादिनाम् MBu. 6,4782. घग्निवेगवत्कः प्राणो गुदात्ते प्रतिकृन्यते 12,6878. Suçr. 1,117,11. हृर्दिम् 267,11. fg. विघ्नैः प्रतिकृन्यमानाः Spr. (II) 4342. प्रकृतिः सा मम परा न क्वचित्प्रतिकृन्यते (so ed. Bomb.) MBu. 13,6339. शास्त्रे बुद्धिर्न प्रतिकृन्यते P. 1,3,38, Schol. पदेषा सर्वकृत्येषु (°कामेषु Gorr.) मनो न प्रतिकृन्यते R. 2,82,24 (49,18 Gorr.). यौवराज्याभिषेचनम् *vereitelt* R. Gorr. 2, 20, 25. प्रतिकृंसि ममाज्ञाम् 7, 59,14. — 6) pass. mit abl. *fern gehalten werden von, verlustig gehen:* निःश्रेयसात् Windischmann, Sancara 94. — 7) absol. °कृत्य *in entgegengesetzter Richtung:* कृपति Kauç. 20. — 8) partic. °कृत a) *wogegen Etwas schlägt:* तीव्राघातप्रतिकृततरुस्कन्ध Çiç. 32. लोभप्रतिकृतशिलाः — घद्रिकुल्याः, Rîâ-Tar. 1,272. *anschlagend an:* शैले (v. l. शैलैः) स्रोतः Çiç. 50. घर्करांशि° (वटभी) R. 3,61,9. = प्रतिस्खलित H. an. 4,113. — b) *zurückgeschlagen, abgewehrt:* घस्त्र MBu. 3,11965. वज्र Bhâg. P. 8,11, 33. 36. 10,59,20. अक्षशाप 9,4,13. माया MBu. 3,12142. *zurückgewiesen, abgewiesen:* एते प्रतिकृता द्वारि तिष्ठन्ति तापसाः R. 7,60,3. Çiç. 191. Milatîm. 156,9. विपद्य निवृत्ता मे द्वारात्प्रतिकृता इव Kathâs. 21,121. शास्त्र MBu. 4,671. °विघ्नाः क्रियाः Çiç. 13. इदमनुमानं प्रतिज्ञाप्रमाणप्रतिकृतम् Sarvadarçanas. 128,19. इत्थमप्रतिकृतं चापलं दकृति *nicht fern gehalten, — vermieden* Çiç. 69,12, v. l. *gehemmt, aufgehalten.* वायु Suçr. 1, 261,12. मरु Harıv. 3893. मल Bhâg. P. 2,7,32. घातप 1,11,14. कृत्य Harıv. 3370. क्रिया Kumâras. 2,48. घभिषेक R. Gorr. 2,62,3. संगत Kâm. Nîtis. 13,78. रूप Mucch. 20. उग्रम Bhâg. P. 6,3,3. चौरूप 3,19,12. कोप Milatîm. 174,6. गति MBu. 3,16769. तमोवृत्ति Vikr. 20. Mucch. ed. Sr. VI. बुद्धीन्द्रियप्रसर Sarvadarçanas. 101,2. घाज्ञा R. 5,18,8. 21,11. शासन 7,67,12. बुद्धि 5,18,13. स्वन so v. a. *unterblieben* R. 2,113,24. तन्द्रोपिधा प्रतिकृते निमील्य मुनिरतिणी so v. a. *geblendet* Bhâg. P. 4,1, 25. मकृना प्रतिकृतेनणाः 8,6,2. = रुद्ध H. an. घप्रतिकृत *nicht abgewehrt, nicht gehemmt, nicht aufgehalten* Kathâs. 32,92. ईश्वराद्व्यप्रतिकृतकामाः Bhâg. P. 5,24,8. *ununterbrochen:* भक्ति 1,2,6. *ungeschwächt:* बुद्धि Spr. (II) 2533. इन्द्रियशक्ति 3479. *unverwehrt, freigestellt* Pañcat. 27,11. Kull. zu M. 4,5. भिताहार Spr. (II) 4586. *unangefochten:* मन्त्रित्व Kathâs. 60,234. Bhâg. P. 6,16,28. *unbeschränkt:* चतुम् Spr. (II) 1776. *unfehlbar:* प्रतिज्ञा Milatîm. 86,3. *unaufhaltsam, unwiderstehlich:* शक्ति (*Speer*) Harıv. 12733. चक्र 609. 10754. MBu. 1,2983. Mârk. P. 72,31. Bhâg. P. 4,15,10. 16,14. ऊर्मयः Z. d. d. m. G. 27, 85. तेजस् R. 4,26,19. प्रताप Vaitân. Bpn. S. 68,103. तपस् Mârk. P. 75,65. गति Harıv. 12737. Kathâs. 17, 4. Mârk. P. 61, 12. Tattvas. 8. शक्ति Kathâs. 123,226. Personen MBu. 13,6340. Kathâs. 42,86. 49,247. Verz. d. Oxf. H. 247, b, No. 624. — c) *abgelaufen:* तृतीये (sc. संवत्सरे) वाप्रतिकृते Pân. Gaṇ. 2,1. — d) *beschränkt, dumm:* °धी adj. Spr. (II) 2047. — e) *verhasst* Taitt. 3,3,170. H. an., wo स्यादिष्टे st. स्वाधिष्ठे zu lesen ist. — f) *in seinen Erwartungen getäuscht* AK. 3, 1, 41. H. 439. — g) = कृष्ट Taitt. 3,3,105. = कृषित von Zähnen d. i. *stumpf* (von Säuren) P. 7,2,29, Vârtt. 2, Schol. — h) schlechte Lesart für प्रकृत H. 1492. — caus. *Jmd abwehren:* कः पार्थं प्रतिघातयेत् MBu. 7,6992. — Vgl. प्रतिघ fgg., प्रतिघ्न und प्रतिकृति fgg.

— संप्रति pass. *sich stossen:* वायुः संप्रतिकृन्यते Karaka 10,7.

— वि 1) *zerschlagen, zerbrechen, zerstören; auseinander treiben* Nir. 3,9.4,5. Baume ṚV. 5,83,2. 1,36,16. मंदिरैः 51,9. देवीः 6,47,2. पुरः 1,41, 2. 7,21,4. दुरिता 9,62,2. Feinde 5,4,3. 30,7. 6,53,4. रक्षांसि 9,17,3. 10,111,6. AV. 8,5,8. मिथो विकृण्वाइ वि व्रतानि 1,28,4. 5,32,3. Pañcav. Br. 19,18,2. संस्तम्भम् TBr. 2,7,18,1. *abreissen:* कृष्णीः 1,5,10,7. Çat. Br. 14,7,1,10. तूस्तानि *die Flechten lösen* P. 3,1,21, Schol. Vop. 21,17. — 2) *auseinander schlagen* so v. a. *ausstrecken:* ein Fell ṚV. 5,83,1. शङ्कुभिः Çat. Br. 2,1,1,10. — 3) *abschlagen, abwehren, sich wehren gegen:* तलप्रकारैरन्यांश्च व्यकृनत् MBu. 3,11117. 13,73001 (nach der Lesart der ed. Bomb.). यदि प्रतीपं दैवं ते न विकृन्याम् R. Gorr. 2,20,32. — 4) *stören, hemmen, unterdrücken, aufheben:* रक्षांसि क्रतून् Bhaṭṭ. 1,19. पापम् Harıv. 8459. संततिमंकमाम् Kir. 5,17. कुलधर्मम् R. 2,110,37. राज्याभिषेचनम् 23,22. कर्माणि Spr. (II) 4. कृत्यम् 5362. 6463, v. l. मम प्राणयम् Ragh. 2,58. Spr. (II) 1158. परिक्षितम् 1460. कृतम् Bhâg. P. 5,1,12. व्रतम् 6,19,18. विक्रमम् 18,2,21. न संयोगं स्वरविभक्तिर्विकृन्ति ṚV. Prât. 6,10. pass.: न विकृन्येत मे गतिः R. 4,45,15. Ragh. 5,27. रघोः कुले न व्यकृन्यत कदाचिदर्थिता 11,2. शासनम् R. 7,108,15. कुतश्चिन्न विकृन्येत तस्य चाज्ञा Bhâg. P. 11,15,27. ऐश्वर्यम् Gaudap. zu Sâṁkhyak. 45. Wilson, ebend. S. 157. गात्रं विकृन्येत Schol. zu VS. Prât. 4,185. Sarvadarçanas. 130,20. 161,17. राज्यं कुबेराभनयाहिकेभि so v. a. *vorenthalten* MBu. 5,5033. पद्मान्यशोकपुष्पाणि दृष्ट्वा दृष्टिर्विकृन्यते *das (fernere) Sehen wird aufgehoben* so v. a. *wird unnütz, dann braucht man Nichts mehr zu sehen* R. 3,79,28. — 5) pass. *sich quälen, sich Sorge machen:* घलाभे न विकृन्येत लाभशैनं न कर्षयेत् MBu. 12,9976. किमिदं त्वं विकृन्यसे (विमुह्यसे die neuere Ausg.) Harıv. 9962. त्वं तु मिथ्या विकृन्यसे R. 2,108,12 (116,21 Gorr.). सुखानि चानुभूयन्ते मनश्च न विकृन्यते MBu. 2,151. नैव शक्यस्त्वया क्षेतुं वज्रनाभ विकृन्यसे (= विषसे Nîlak.) so v. a. *du zerbrichst dir unnütz darüber den Kopf* Harıv. 8825. मा विकृन्यत गच्छत MBu. 3,15138. — 6) partic. विकृत a) *aufgerissen, aufgewühlt:* वराहैर्विकृत *vom Eber* TBr. 1,1,3,7. 2,1,3. Çat. Br. 14,

1,2,11. Kauç. 13. Kâty. Çr. 26,1,2. वज्र° Çat. Br. 3,2,2,14. *herausgeschlagen:* गदा कराट् Bhâg. P. 3,19,3. — *b) getroffen, heimgesucht:* रम्भेव वायुविकृता Bhâg. P. 10,60,24. दैवेन 3,32,19. मायया 11,29,3. दैव° (Gegens. रक्षित) Spr. (II) 3902. चित्तमकामविकृतम् Bhâg. P. 10,80,39. — *c) abgeschlagen, abgewehrt:* वस्त्र R. 5,44,14. वर्षमवर्ष MBh. 3,12135. Harîv. 12771. *zurückgewiesen, abgewiesen:* Person Bhâg. P. 6,3,1. घ° 3,15,29. *gestört, gehemmt:* विघ्न° Spr. (II) 4342. Bhâg. P. 5,1,5. उद्यम Harîv. 12133. श्री R. 2,36,30. Bhâg. P. 9,16,17. कार्य R. 5,51,6. स्वप्न Suçr. 1,110,21. पारणा Râgat. 2,55. परिघङ्ग Milârin. 163,3. गति Mâlav. P. 20,50. संकल्प्य Bhâg. P. 4,27,23. 5,8,25. 26,17. 7,6,14. यज्ञो मयेन 10,50. 10,25,1. घ° *ungehemmt, unaufhaltsam:* चक्र Bhâg. P. 2,7,20. गति 9,7,22. Mâgh. 10. — *d)* घ° *an dem Nichts auszusetzen ist:* Weib Kathâs. 33. = स्त्रीगुणैरखण्डिता Schol. — 7) वि-कृन् fehlerhaft für नि-कृन् (wie die v. l. fast überall hat) MBh. 1, 570. Aṣṭâ. 10, 23. 86 (MBh. 3, 12220. 12253 richtig). R. 4,19,23. Spr. (II) 2781. 5624, v. l. 5861. Pañkat. 68,7 (प्रक्षि ed. Bomb.). 86,23 (मृत ed. Bomb.). — caus. 1) *schlagen:* परसैन्यं विघातयेत् (विनाशयेत् v. l.) Spr. (II) 2822. — 2) *quälen, plagen;* med. MBh. 13, 6720 nach der Lesart der ed. Bomb. — 3) *hemmen, unterbrechen:* मोतामिक्षेत्रक्षेमान् Kull. zu M. 5,84. — desid. *stören —, hemmen wollen:* कर्म विचिघांसता Bhâg. P. 4,19,21. — intens. (?) *Jmd ein Leid zufügen:* मा सन्तानि विकीर्षसि MBh. 7,2382. — Vgl. विघात fgg., विघ्न, विचिघांसु, विकृति fgg., वैकृत्य.

— अनुवि *stören, hemmen:* कार्याणि MBh. 12,2026.

— आवि (?) *hauen auf:* यो वै दर्पात् — पर्वतमाविकृत्त । तस्यैव पाणिः मनसो विदीर्यते MBh. 3,10654.

— प्रवि, partic. °कृत *zurück —, in die Flucht geschlagen:* सैन्य MBh. 8,4110.

— प्रतिवि s. प्रतिविघात.

— सम् 1) *zuklappen, zusammenlegen, schliessen:* die Augen ṚV. 7, 35,6. ऊधो रोमशम् 8,31,9. मं ते कृन्मि दृता दृतः AV. 6,50,3. Flügel Çat. Br. 14,7,1,19. 3,4,2,16. संकृत्य कुक्षी M. 2,71. भुवोर्मध्यम् MBh. 5, 4704. भ्रूकुटीम् R. 3,35,76. पदानि संकृत्यन्ते *werden verbunden, verbinden sich* Çâṅk. zu Bâdar. Âr. Up. S. 73. — 2) *zusammenballen:* संकृत्यपो दिव्या मारुतः *ballt zusammen zu Hagel* Suçr. 1,264,18. pass. *sich ballen, fest —, consistent werden:* शरः समकृन्यत Çat. Br. 13,6,2,3. कृच्छ्रायमस्येव च ते संकृत्य हृदयं कृतम् *so v. a. dein Herz ist gleichsam aus Eisen zusammengehämmert* MBh. 5,4880. — 3) *zusammensetzen, — fügen:* यामन्दोम् Çâṅku. Çr. 17,2,6. — 4) *aufeinander stossen:* मैं यद्वर्तन्त मन्युभिर्नामः ṚV. 7,56,22. — 5) *zerschlagen, brechen:* पुरा पुरं समिदं कृत्योर्नसा ṚV. 1,53,7. — 6) absol. संकृत्य *sich zusammenthuend, in Gemeinschaft, vereint, zusammen:* जीवामः MBh. 5,922. स संकृत्य निरुत्साह्यः 13,2097. कुर्वते यात्राः 14,1061. R. Gorr. 2,67,19. 3,16,18. Vaṅç. Bâd. S. 89,18. Bhâg. P. 3,20,14. द्वैधेन संकृत्य च युध्यमानाः 8, 10,34. कारिणः 11,24,9. °कारित्वात् Schol. zu Kap. 1,104. Sâm. D. 9,9. घ° Bhâg. P. 3,26,50. पापैः सकापैः संकृत्य *im Verein mit* MBh. 5,4398. संकृत्यान्योऽन्यम् Bhâg. P. 1,7,30. 2,5,33. — 7) partic. संकृत *a) an —, auf einander gelegt, zusammengefügt, geschlossen, zusammenstossend, anschliessend, eng verbunden* AK. 3, 4, 22, 47. H. an. 3, 307. Med. t. 165. संकृतौ पाणी धारयन् Âçv. Çr. 1,1,22. M. 4,82. AK. 2,6,2,36. बुकोति संकृतेन (sc. अञ्जलिना) Pân. Gaṇ. 1, 6. संकृताञ्जलि adj. Harîv. 12251. R. 3,19,10. 21,6. 4,13,23. 25. 6,111,49. Bhâg. P. 4,1,36. 12, 21. 10,86,25. Finger Kauç. 4. संकृतोरू MBh. 4,253. ऊरू सुसंकृतौ R. 5,2,18. संकृतवृत्तोरू 6,9,12. वाणौ 3,52,22. °भ्रू MBh. 5,2036. भ्रुकुटी-संकृतभ्रू 3,15702. °भ्रुकुटीमुख 11187. Vaṅç. Bâd. S. 61,10. fg. घटा रथनाभौ Munḍ. Up. 2,2,6. लेखा Gobh. 1,1,9. युगम° 7,10. त्रीन्पिण्डान्संकृतान्विदधाति *verbunden, einen Haufen bildend* Kauç. 88. उपलाः MBh. 3,1719. द्रुमवत्केः संकृतैः R. 5,44,12. M. 5,115. Jâṅ. 1,184. Miṅ. P. 35,3. संकृतान्योघयेदृत्यान् M. 7,91. मेघाः *zusammenhängend* Vaṅç. Bâd. S. 22,3. संकृतमूर्तयः पयोदाः 19,3. दीपः संकृतमूर्तिः 69,15. द्रुत एव हि संधत्ते भिनत्त्येव च संकृतान् M. 7,66. सुधयः ṚV. Anukr. 9,66. Ind. St. 18, 410. Kap. 1,87. 141. Kâm. Nîtis. 4,65. एकैकशः संकृता वा 6,9. 8,18. fg. 9,77. 17,40. 19,59. Mṛicch. 76,9. Ṛt. 1,20. Spr. (II) 1171. 1231. 3939, v. l. 4762, v. l. 6179. Vaṅç. Bâd. S. 46, 67. 95,3. AK. 2,10,3. 3,4,19, 131. संकृता नास्य सेवकाः *zusammenhaltend* Râga-Tar. 3, 140. 4, 225. 251. 566. 5,254. Bhâg. P. 3,20,11. Verz. d. Oxf. H. 190,a,29. Sin. D. 330,14. fg. नि प्र कृत्येतौ संकृतौ (d. i. निप्र) विपर्यस्तौ (d. i. प्रणि) व्यस्तौ (d. i. नि, प्र) च गृह्येते Schol. zu P. 2,3,56. Sarvadarçanas. 143,20. °वारिन् Harîv. 10675. संकृतवाक्कलौ adj. *so v. a. ein Duett singend* Miṅ. P. 23,60. सु° MBh. 4,981. Hit. IV, 51. घ° Kâm. Nîtis. 19, 41 (als m. Bez. *einer best. Truppenaufstellung*). Spr. (II) 1424. Bhâg. P. 2,5,32. संकृतस्य मित्रेण *verbunden mit* M. 7,165. करयो गोलाङ्गूलसंकृताः R. 4,23,4. Kâm. Nîtis. 13,88. Kathâs. 34,198. Miṅ. P. 102,2. Bhâg. P. 11,18,27. — *b) fest —, consistent geworden:* वायुनापस्तु संकृताः Miṅ. P. 47,12. तेजस् Harîv. 890. *fest, hart, compact;* = दृढ H. an. Med. एताभिरिष्टकाभिः संधिः क्रियतां सुसंकृतः Mṛicch. 55,22. समसुसंकृतोपचितगात्रसंधि Vaṅç. Bâd. S. 2, S. 3, Z. 10 v. u. Brüste R. 3,52,25. 35. 5,18,25. 21,10. Kathâs. 47,107. उरस् MBh. 1,5970. Wangen R. 3,52, 29. Schultern 5,14,17. घायसं हृदयं नूनं राममातुः सुसंकृतम् 2,39,22. von *festem, compactem Gliederbau;* = दृढसंधि AK. 3,2,25. H. 1472. गूढपार्ष्णिसंकृतान् MBh. 3,14653. — *c) stark, intensiv:* तुत Vaṅç. Bâd. S. 68, 63. — *d)* Bez. eines best. Geruchs MBh. 12, 6348. 14,1469. eines best. Tons 1420. wohl *so v. a. zusammengesetzt.* — Vgl. संकृत् fgg., संकृत्तर, संघ, संघात, संकृत्य, सुसंकृत, वज्र°, सु°.

— अभिसम्, absol. अभिसंकृत्य *sich zusammenthuend, in Gemeinschaft, vereint* MBh. 2, 800. 8, 2029. partic. अभिसंकृत *angegriffen, befindet* Bhâg. P. 8,11,1.

— प्रतिसम्, partic. अन्योऽन्यप्रतिसंकृतौ *mit einander verbunden* MBh. 9,249 (अन्योऽन्यमभिसंश्रितौ ed. Bomb.). statt प्रतिसंकृत 12,8275 liest ed. Bomb. °कृत.

— विसम्, partic. विसंकृत *aus der festen Verbindung gebracht, gelockert* Suçr. 1,305,12 (°क्षित v. l.).

2. कृन् (= 1. कृन्) am Ende eines comp. adj. (f. ग्री) *schlagend, tödtend, Mörder, zu Grunde richtend, vernichtend, verscheuchend u. s. w.* P. 3, 2,87. fg. Declination 6,4,12. Vop. 3,111. पितृ°, मातृ°, भ्रातृ°, स्वसृ°, आचार्य°, ब्राह्मण° Kâṅkh. Up. 7,15,2. पत्त्रीर्° MBh. 3,2260. 2917. 2964. R. 2,56,20. Bhâg. P. 1,7,29. शरणागत° MBh. 5,1346. दुःख°

Bhag. 6,17. लोकानामार्तिकृत् R. Gorr. 1,14,26. पुण्यपक्ष° 3,36,23. Varāh. Bṛh. S. 3,18. 31. 37. 4,5. 5,20. 9,26. 10,3. 20. 34,19. 37,3. 47, 12. 101,13. 104,23. 31. Bṛh. 23,1. Cuk. in LA. (III) 34,14. Bhāg. P. 1, 7,18. 38. fgg. 4,17,18. 6,11,13. fg. 18,36. 11,5,33. f. °घ्नी 3,15,23. 20,5. —Vgl. अरुष्ट°, अवोरधन्, अमित्र°, अमीव°, आरि°, आशस्ति°, आकि°, कृष्टि°, चतुरक्न्, ज्येष्ठ°, तमो°, दस्यु°, दुर्णाम°, धातु°, नृ°, पार्°, पशु°, पाप°, पारावत°, पित्°, पुनरक्न्, पुर°, पुरो°, पृश्नि°, बलि°, ब्रह्म°, भग°, भग-नेत्र°, भगाति°, भुरण्यु°, भूरि°, भातृव्य°, धूणा°, मख°, मत्स्य°, मधु°, म-नो°, मातृ°, मान°, मित्र°, मुष्टि°, मृग°, यज्ञ°, यशो°, यातु°, रतो°, व-लवृत्र°, वसरक्न्, वात°, वायु°, विकङ्क°, वीर°, वृत्ति°, वृत्र°, शत°, श-त्रु°, शर्य°, सत्रा°, सपत्न°, सप्त°, सर्प°, सस्य°, सात°, स्वर्°.

कृन 1) adj. = 2. कृन् Vop. 26,30. चक्रे रिपुकृणाम् MBh. 10,620. महा-नाग° 13,1239. तेजः परतेजोकृनम् Bhāg. P. 3,15,1. गदा वीरकृणी MBh. 9,3228. Vgl. त्रिंशयकृण, मित्र° (unter मित्रकृन्), यज्ञ°, रतोकृण. — 2) m. nom. act. s. दुष्कृण und सुकृन. — 3) f. कृना in दुष्कृणा.

कृनन (von 1. कृन्) 1) adj. (f. ई) *fällend, erschlagend, Tödter* P. 4,4, 121. शुम्भकृननौ Harīv. 9424. — 2) wohl n. *Schlägel zur Trommel:* दुन्दुभीन्सकृननान् Çāṅkh. Ça. 17,4,1. — 3) n. nom. act. *a) das Schlagen, Treffen* Nir. 1,1. 7. *das Abschlagen:* पुष्पकृननैः Milatim. 85,7. *das Tödten* Nir. 6,27. Harīv. 14705. Spr. (II) 3694. कुम्भकर्ण° 4169. शत्रु° Bhāg. P. 3,11,20. Sāj. zu ṚV. 1,114,6. *das Vernichten, Beseitigen, Aufgeben:* मायायाः Spr. (II) 2329. — *b) das Multipliciren* Comm. zu Āpast. 2,3.

कृननीय्, °यति = कृननमिच्छति P. 7,3,55, Vārtt., Schol. davon desid. चिकृननीयिषति ebend.

कृनव्य adj. (f. या) von कृनु *Kinnbacke* AV. 6,43,3.

कैनीयस् adj. compar. zu 2. कृन् *mehr —, sehr treffend, — tödtend* VS. 16,40.

कृनील m. *Pandanus odoratissimus* Ratnam. im ÇKDa. कृलीन v. l.

कैनु (von 1. कृन्) Uṇādis. 1,11. f. ई) *Kinnbacke* (nach den Lexicographen auch m.) AK. 2,6,3,41. Trik. 3,3,273. H. 583. an. 2,292. Med. n. 25. fg. Halāy. 2,367. 5,32. Varāhamihira bei Uṭṭ. ṚV. 1,52,6. 168,5. 5,36,2. तिग्मा 2,49,13. कनू विभृते सं भरते 10,79,1. 132,3. AV. 6,56, 3. 10,9,13. कन्वोर्हि त्रिक्रामदधात् 2,7. 8. कनू सञ्चिक्षे Ait. Br. 7,11. पूर्वा, अपरा Çat. Br. 3,4,4,9. वृकस्य AV. 19,47,9. VS. 11,78. 24,1. 25, 1. Çat. Br. 1,2,5,17. 13,2,9,4. Kāṭy. 25,9. कन्वोः प्रकर्षणे ṚV. Prāt. 14, 3. TS. Prāt. 2,16. Comm. zu 23,2. °चलन P. 3,1,15, Vārtt. Jāṭ. 3, 88. MBh. 3,10391. 12,8748. R. 5,3,53. 6,4,17. Varāh. Bṛh. S. 50,13. 51,34. 42. 52,3. 66,3 (eines Pferdes). 67,7 (eines Elephanten). 68,58. Bhāg. P. 3,19,2. 6,12,4. उत्तरा, अधरा 5,23,7. 6,12,27. °सन्धि Saṃh. 1, 305,12. °मूल VS. Prāt. 1,33. AV. Prāt. 1,20. Comm. zu 23. ओष्ठकनु n. *Lippen und Kinnbacken* TS. Prāt. 2,12. Auch कनू TS. Prāt. 3,7. Bharata zu AK. nach ÇKDa. कनूभ्याम् TS. 7,3,16,1. °मूल TS. Prāt. 2,23. Comm. zu 17. Am Ende eines adj. comp.: चैतुरकनु AV. 5,19,7. महा° (s. auch bes.) MBh. 3,2754. R. 1,1,11. Bhāg. P. 4,14,44. स्थूल° Varāh. Bṛh. 17,3. सु° (s. auch bes.) R. Gorr. 2,62,16. — 2) n. *Backe am Beschlag eines Speers* und dgl. Çat. Br. 11,3,3,13. — 3) *Tod* und *Waffe* H. an. Varān. *Krankheit* H. an. Med. Varān. *ein best. Parfum*, = कृ-विलासिनी AK. 2,4,3,18. Trik. Med. = व्याघ्रनख Mad. 3,68. *Gelbwurz* (कुरिण्टा) H. an. = मूला und वप्र Med. s. dessen नृत्यारम्भ Sidḍh. K. 248,b,9 nach ders. Aut. — Vgl. अधर° (AV. 9,7,2), अयो°, उत्तर°, दु-र्कण, नाग°, परि°, महा°, श्वेत°, सं°, सिंक°, सु°.

कृनुका f. = कृनु *Kinnbacke* Varāh. Bṛh. S. 38,5.

कृनुग्रह m. *Kinnbackenkrampf, Maulsperre* Suçr. 1,254,6. 256,3. 2, 377,3. कुपितो कृनुमूलस्थः संसर्पित्वानिलो कृनू। करोति विवृतास्यत्वमथ वा संवृतास्यताम्। कृनुग्रहः स तेन स्यात्कृच्छ्राच्चर्वणभाषितम् (चर्वण unsere Verbesserung für चषण) | Bhāvapr. 7.

कृनुभेद m. 1) *das Aufreissen der Kinnbacken, ein geöffneter Rachen* Bhāg. P. 7,8,21. — 2) Bez. *einer best. Form des Endes einer Eklipse* Varāh. Bṛh. S. 5,31. fgg.

कृनुमदीय adj. von कृनुमत्त (कृनुमदाचार्य) *verfasst* Hall 69.

कृनुमन् m. Nebenform von कृनुमत्त 2) *a)* in कृनुमादिभिः R. 4,9,98. 32,1.

कृनुमत्त् (von कृनु) 1) adj. *starke Kinnbacken habend* Kumārila bei Uṭṭ. zu Uṇādis. 1,11. — 2) m. N. pr. *a)* eines göttlich verehrten Affen, eines Sohnes des Windgottes von der Añjanā, des treuen Bundesgenossen Rāma's auf seinem Zuge nach Laṅkā zur Wiedererlangung der Sītā, Trik. 2,8,6. H. 705. R. 1,1,37. 16,17. 4,1,19. 33. 38. als grosser Gelehrter 7,36,44. fgg. Mahāvīrac. 114,17. Weber, Rāmat. Up. 299 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 13,b,31. Verz. d. Tub. Hdschr. 13. Wilson, Sel. Works 1,17 u. s. w. 2,21 u. s. w. °मत्स्तोत्र Z. d. d. m. G. 2,342. °मन्नाटक Verz. d. Oxf. H. 143,a, No. 292. °मन्नाटकदीपिका Hall 99. — *b)* verschiedener Manner Rāja-Tar. 4,9. Hall. 38. 69. Tārān. 310. — Vgl. कृनूमत्त्.

कृनुमोक्ष m. *Lockerung der Kinnbacken* Suçr. 1,303,13. 2,128,20.

कृनुर्ल (von कृनु) adj. *starke Kinnbacken habend* gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97.

कृनुस् s. वसिष्ठ°.

कृनुस्तम्भ m. = कृनुग्रह Wise 253.

कृनूकम्प m. *das Zittern der Kinnbacken* Varāh. Bṛh. S. 8,48.

कृनूमत्त् (von कृनु) gaṇa शरादि zu P. 6,3,120. m. = कृनुमत्त 2) *a)* Trik. 2,8,6. H. 705, Schol. MBh. 3,11193. R. 1,3,31. 4,1,5 (सनू° Druckfehler). 33. 2,13. 23 in der Unterschr. 25,3. 5. 11. 5,3,53. 6,4, 12. 17. Kām. Nītis. 11,7. Uttarān. 14,17 (20,8). Bhāg. P. 2,7,45. Sāra-vadarçanas. 73,11. Verz. d. Oxf. H. 29,a,31. 33. 35. 94,a,9. 99,b,39. 125,a,22. 129,a,23. °मत्कल्प 95,b,39. °मत्कवच 107,a, No. 164. °मत्पद्धति 163. °मयन्त्र 96,b,1. 2. °मन्नाटक 142,b, No. 291. °मत्प्रबन्ध Verz. d. B. H. No. 826.

कृनूमत्तेश्वर und °तीर्थ n. N. pr. eines Tīrtha Verz. d. Oxf. H. 66, a,45 nebst N. 3.

कैनूष Uṇādis. 4,73. m. *ein Rākshasa* Trik. 1,1,74.

कैत्त interj. Einfluss auf den Ton des verbi finiti Ind. St. 10,413. P. 8,1,30. 54. Ausruf der Aufforderung zu einer That (*wohlan, allons*), zu einer Entgegennahme (*da nimm, votiā*), zum Aufmerken: कैत्तो नु किमासिषे *auf was sitzest du müssig?* ṚV. 8,69,5. कैत्तादं पृथिवीं नि दधानि 10,119,9. 53,2. कैत्तेमं यज्ञं संभराम Ait. Br. 1,18. 24. कैत्ताग्निमयाम 2,28. 6,1. कैत्त त्वयाकृमिमं पशुं 7,14. Çat. Br. 1,2,5,2. 3,3,21. 4,6.

3,4,2. 14,4,1,2. 2,6. 3,32. 3,4,1. 6,3,1. 7,3,5. Kâṭhaka-Up. 1,8,1. 3. कृत्त त इदं प्रवक्ष्यामि Kaṭhop. 5,6. Kaṭha-Up. 1,1. कृत्त ते कथयिष्यामि Bhâg. 10,19. MBh. 13,345. R. 1,48,13. 6,3,1. जागर्तव्ये स्वपन्तीमे कृत्त जागर्म्यहं स्वयम् MBh. 1,3925. कृत्त मार्गारमेवेह अयामि Kathâs. 33,120. यद्य कृत्तेति नेति च so v. a. *da hast du, nimm hin* AV. 11.8,22. कृत्तानुयानम् Kâṭhaka-Up. 1,10,3. गौ मे देहि भोः। कृत्त ते ददामी ३ P. 8,2,99, Schol. कृत्त ते धानकाः। कृत्त ते गुडकाः 5.3,77, Schol. ददामि ते कृत्त वरम् MBh. 4,307. शृणु कृत्त 3,11943. मूयतां कृत्त R. 4,61,32. कृत्त लक्ष्मण पश्येक सुमित्रा सुप्रजास्त्वया R. Gorr. 2,97,8. कृत्त प्रसीदानय तम् Kathâs. 24,143. कृत्तार्थं विक्षितस्तस्य वधोपायो दुरात्मनः so v. a. *sieh da!* R. 1, 14,20 (21 Gorr.). कृत्तानार्थे ममानित्रे सकामा भव R. Gorr. 2,10,5 = 34,2. कृत्तेदानीं सकामास्तु कैकेयी 3,35,41. कृत्त सिद्धो ऽयमर्थः Mârk. 47,6. कृत्त संशितो ऽयकम् 105,13. कृत्त न गतः 111,15. Mahâbh. 102. Çik. 27,9. 46,8. 58,4. 104,17. Vikr. 10,9. कृत्त कृत्त व्यवसितस्य मे संवर्धनं संवृत्तम् 57,2. 11. 69,10. Spr. (II) 2425. 2935. 5777. 7022. स्मरामि कृत्त स्मरामि Uttarâbh. 10,2 (13,17). 30,15 (39,15). 105,4. Kathâs. 5,90. 135. 18,331. 63,117. Prâb. 7,7. 29,15. का कृत्त Z. d. d. m. G. 27,13. कृत्त तर्हि Uttarâbh. 28,3 (37,5). Sarvadarçanas. 27,11. 47,19. तां काशीं परिकृत्य कृत्त विबुधैरन्यत्र किं स्थीयते Spr. (II) 1253. प्रेम्णाणं च निकृत्ति कृत्त 1992. काचमूल्येन विक्रीतो कृत्त चिन्तामणिर्मया 2337. 2533. 3701. 4680. 5919. 7017. Mâlatîm. 24,6. Kathâs. 5,119. 13,131. 32,48. 48,131. Râja-Tar. 3,162. Sâh. D. 48,8. 60,16. 63,13. Bhâg. P. 1,6,22. 3,15,23. 4,4,28. 7,9,41. 8,22,27. 10,35,11. Nach den Lexicographen: कर्षे, संप्रकर्षे, प्रमोदे (so st. प्रमादे zu lesen H. an.) AK. 3,4,23 (23), 6. H. an. 7,26. Med. avj. 28. Halâj. 5,89. वाक्यारम्भे AK. H. an. Med. अनुकम्पायाम् AK. H. an. विषादे AK. H. an. Med. खेदे Med. शोचने Halâj. दाने und निश्चये H. an. संभ्रमे Med. und Çâśvat. im ÇKDa. वादे Çâśvat. ebend. अत्तवत्कल्पने Âgâśv. ebend.

कृत्तकार् m. *der Anruf* कृत्त: निवीती कृत्तकारेण मनुष्यांस्तर्पयेद्य Laghu-Vishṇu im ÇKDa. Bâlar. 42,12. unter den 4 Zitzen der Kuh वाच् Çat. Br. 14,8,8,1. Pân. Gaṇ. 1,19. Mânn. P. 29,9. 11. gedeutet *als 16 Mundvoll Almosen* 26; vgl. Schol. zu H. 813 und Kûrma-P. im ÇKDa.

कृत्तर् (von 1. कृत्) nom. ag. *der Einen schlägt:* प्रतिकृत्तुं न चेक्कति कृत्तारम् MBh. 12,8437. Spr. (II) 5011. 5023. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,34. *der Jmd erschlägt, tödtet, vernichtet, Mörder:* कृत्ता चेन्मन्यते कृत्तुम् Kaṭhop. 2,19. Bhag. 2,19. M. 8,351. Jâśn. 2,276. य एव देवा कृत्तारस्तांल्लोको ऽर्चयते भृशम् MBh. 12,139. R. 7,8,4. Râja-Tar. 4,98. अ° Bhâg. P. 4,11,18. das obj. im gen.: दस्योः RV. 2,12,10. 8,87,6. 9,88,4. AV. 4,7,1. 3,10,12. कृत्तः 4,19,3. अरातीयतः VS. 12,5. Çat. Br. 3,3, 4,3. MBh. 4,2293. R. 3,36,12. Kumâras. 2,20. Vârtt. Bṛh. S. 69, 28. Pañcat. 1,10,76. सैन्यस्य R. 3,40,16. 5,12,34. सुराणाम् Bez. *eines best.* Agni MBh. 3,14168. parox. mit acc.: वृत्रम् RV. 4,17,3. 21,10. AV. 5,18,14 ist wohl कृत्ताभिशस्तिमिन्द्रः zu lesen. सुरारीन् R. 7,8,25. 86, 16. in comp. mit dem obj.: मृग° M. 5,34. शरणागत°, स्त्री° 11,190. MBh. 12,1402. R. 1,46,2. 5. 4,1,27. प्रतिमूर्याणां माला नृपकृत्त्री Vârtt. Bṛh. S. 37,2. इत्त: प्रधाननृपकृत्त् 38,5. 104,5. Kathâs. 21,30. Râja-Tar. 3,61. Bhâg. P. 5,18,23. 7,5,35. *Etwas zu Grunde richtend, zerstörend, zu Nichte machend, vertreibend:* दृत्तपत्रस्य Mârk. 173,14. इष्टापूर्तायुषां कृत्त्री परदारगतिर्नृणाम् Mahâbh. P. 34,62. कफस्य Suçr. 1,198,14. 199,4. 219,8. मुक्तापलानि कृकवाकृत्तृणि Vârtt. Bṛh. S. 81,30. = वैर् Uṇâdiv. zu Uṇâdis. 2,93. — Vgl. यज्ञ°, कार्य°, कुल°, क्रोध°, व्रत्तु°, ज्वर°, धर्म°, नाग°, पाक°, फणि°, भूत°, मधु°, मल°, विघ्न°, विश्वास°, विष°, वृत्ति°, शत्रु°, शूल°, सस्य°, सैन्य°.

कृत्तव्य (wie eben) adj. *zu tödten, mit dem Tode zu bestrafen, aus dem Wege zu räumen* M. 8,192. MBh. 3,2091. R. Gorr. 1,22,17. 3,13,33. 4,34,26. 37,13. Kâm. Nîtis. 17,14. Çiç. 6,13. Spr. (II) 2399. 4830. 4930, v. l. 7303. Kathâs. 25,108. Mahâbh. P. 19,22. Pañcat. 48,2. ed. orn. 57,23. Hit. 18,18. ed. Jones. 1967. Bhâg. P. 1,7,53. 7,5,38. यो ऽनुमोदति कृत्तव्यम् (कृन्यत्तम् ed. Bomb.) *wer zustimmt, dass getödtet wird,* MBh. 13,5634. *zu verletzen:* धर्म Spr. (II) 3089. Râja-Tar. 4,281 wohl fehlerhaft für कृतव्य; vgl. Spr. (II) 1856.

कृत्तु (wie eben) m. *Tödtung, Vernichtung:* राजन्यकृत्तवे Bhâg. P. 11, 5,50. *Tod* und *Stier* Wilson nach Çabdâmṛtak. कृत्तवे infin. s. u. 1. कृत्. — Vgl. सु°.

कृत्तृत्व (von कृत्तृ) n. *die Rolle des Tödters, Vernichters* Mân, St. 4,392.

कृत्तीनुख m. Bez. eines best. die Kinder verfolgenden Dämons Pâr. Gṛhy. 1,16.

कृत्त्र (von 1. कृत्) adj. *zu schlagen, niederzumachen:* रिपु RV. 3,30,13.

कृत्त्रिम् (wie eben) m. *Schlag, Stoss, treffender Wurf* RV. 1,33,11. तपिष्ठेन कृत्त्रिमा कृत्तना तम् 7,59,8. 94,12. 10,48,6. 113,8. — Vgl. ईश्म°, पुरु°.

कृन्यमान 1) adj. s. u. 1. कृन्. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,377 nach der Lesart der ed. Bomb., कृन्मार्ग ed. Calc.

कृपया (auch कृवृषा) f. *eine best. Pflanze,* in zwei Arten: vulgo शेरणी (*Adelia nereifolia* nach Moleszw.), कोकवेर (Bhâvapr. 3) oder कुमि (Aufr. 102). Sie riecht nach Fisch, die Frucht der einen gleicht der des Açvattha. Râjân. 4,115. Mad. 2,65. Karaka 8,12 (v. l. कृवृषा). Suçr. 2,44,12. 506,7 (कृपया). 530,10. Çârṅg. Saṃh. 2,6,33. 36. Vgl. unter कपिप्री, घाडुनाशिनी, विगन्धिका, विप्रा und विप्रगन्धा.

कृवसोर् N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,32. 339, *b*,3 v. u.

कृम् interj. रोषभाषणे und अनुनये H. an. 7,18. रोषोक्तौ und अनुनये Med. avj. 55.

कृमीघाण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 340,*a*,14.

कृमीरपुर् adj. etwa *aus* Hamirapura *stammend* Verz. d. Oxf. H. 1,*a*,13 v. u. = Verz. d. B. H. 104.

कृम्ब m. N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,684.

कृम्बा s. कृम्भा.

कृम्भा (onomatop.) f. *das Gebrüll der Kühe (Kälber)* Taitt. 2,9,21. H. 1406. °रव MBh. 1,6630. Harîv. 3312 (कृम्बा° die ältere Ausg.). 3518. 3870. R. 1,54,18. 55,2 (55,7. 18 Gorr.). Râja-Tar. 7,1427 (कृम्बा°).

कृम्भाय् (von कृम्भा), °यते *brüllen* (von der Kuh): °यमाना MBh. 1,6670.

कृम्, कृम्मति (गतौ) Naigh. 2,14. Dhâtup. 13,24. कृम्मतिः सुराष्ट्रेषु Pat. bei Mus, St. 2,370.

कृम्मीर m. N. pr. eines Fürsten von Çâkambharî, der im 14ten

Jahrhundert nach Chr. regierte, Hall in der Einl. zu Visavad. 48. Colebr. Misc. Ess. 2,65. 91. fgg. Rāǵa-Tar. 7,58. fgg. Spr. (II) 4894. Z. d. d. m. G. 27,30. 101. Verz. d. Oxf. H. 166,*b*, No. 370. 314,*b*, No. 746.

क्रय्, क्रंयति (गतौ, ज्ञाने, भक्षिशब्दयोः) Dhātup. 15,5. अक्रयीत् Vop. 8, 71. intens. ज्ञाक्रयीति, ज्ञाक्रति u. s. w. Siddh. K. 185,*b*,9. fgg.

क्रंय (von क्रि, क्रिणाति) 1) m. gaṇa वृषादि zu P. 6,1,203. *a*) *Ross* Naigh. 1,14. AK. 1,1,2,41. 2,8,2,12. H. 1233. Halāy. 2,281. ṚV. 5, 46,1. 7,74,4. 9,107,25. VS. 7,47. 22,19. 23,14. Ait. Br. 8,22. Çat. Br. 10,6,4,1. 13,3,4,21. Āçv. Çr. 3,4,10. M. 8,236. 11,136. Bhag. 1,14. MBh. 3,2394. 2639. 2786. °संयुक्त 2796. 4,319. °विकान्त Harīv. 3109. Spr. (II) 1236. Varāh. Bṛh. S. 5,66. 9,43. 43,35. 44,17. °चेष्टित 93,15. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,7. 24. fgg. 28. Rāǵa-Tar. 4,265. Bhāg. P. 4,16,24. Ver. in LA. (III) 11,18. am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 18,21. Rāgh. 9,10. — *b*) N. pr. eines der *Rosse* des Mondgottes Vāyu beim Schol. zu H. 104. — *c*) Bez. *der Zahl sieben* (wegen der *sieben Rosse* des Sonnengottes) Çaut. 42. — *d*) *der Schütze im Thierkreise* (vgl. क्रयाङ्ग) Varāh. Bṛh. S. 102, 7. Bṛh. 11,7. 10. 23 (21),15. — *e*) *ein Fuss von vier Moren* Colebr. Misc. Ess. 2,151. — *f*) N. pr. eines Sohnes des Sahasrāda Harīv. 1844. des Çatāǵit VP. 416. pl. *das Geschlecht des* Haja MBh. 2,333. 335. — *g*) *a man of particular class; Bos grunniens* und ein N. Indra's Wilson nach Çabdārthak. — 2) f. या *a*) *Stute* Harīv. 2107. fg. Kathās. 37,167. Schol. zu Liṭ. 2,7,36. — *b*) = क्रयी *b*) Rāǵān. im ÇKDr. — 3) f. ई *a*) *Stute* Vārtt. 2 zu P. 4,1,63. gaṇa गौरादि zu 41. Gaṇān. im ÇKDr. Çāṇḍ. 14,109. Schol. zu Liṭ. 2,7,26, v. l. — *b*) = अश्वगन्धा *Physalis flexuosa* Rāǵān. 4,111. — Vgl. अश्व°, मरु°, मरुत्तु°, वेणु°, श्वेत°, हरि°.

क्रयकन्थरा und °कन्थरिका s. u. °कातरा.

क्रयकर्मन् n. *Rossekunst* MBh. 4,321.

क्रयकातरा, °कातरिका (v. l. °कन्थरा, °कन्थरिका) f. *eine best. Pflanze* Rāǵān. 5,114.

क्रयगन्ध 1) m. *eine Art Salz*, = काचलवण Rāǵān. im ÇKDr. क्रय° unsere Hdschrr. — 2) f. या = अश्वगन्धा *Physalis flexuosa* Ratnam. 56. Rāǵān. 4,112. = अतिमोदा Rāǵān. im ÇKDr. क्रय° unsere Hdschrr.

क्रयगर्दभि m. unter den Namen Çiva's MBh. 13,1149.

क्रयग्रीव 1) adj. *die Mähne eines Pferdes habend.* — 2) m. N. pr. verschiedener menschlicher und übermenschlicher Wesen: eine Form Vishṇu's Paṇḍān. 4,3,58. 8,91. °ग्रीवावतार Verz. d. B. H. 140. °मन्त्र: Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,9. °ग्रीवैकादशमन्त्र: ebend. °प्रयोग 94,*b*,22. °पञ्चरात्र Verz. d. Oxf. H. 341,*a*,1 v. u. °ग्रीवोपनिषद् Ind. St. 3,326. ein Rāǵarshi MBh. 12,720. fgg. ein sündhafter Fürst der Vidoha 5, 2731. ein Muni Verz. d. Oxf. H. 84,*a*,2 v. u. °प्रोक्त ज्ञटापटलम् Verz. d. B. H. No. 369. angeblicher Autor der Khāṇḍogjopanishad Colebr. Misc. Ess. 1,83. ein Dichter Verz. d. Oxf. H. 153,*b*,27. ein für den Diebstahl der Veda von Vishṇu erschlagener Asura H. 220. Wilson, Sel. Works 1,292. Harīv. 203. 2281. 2433. 2650. 3109. 6903. 6971. fgg. 9796. 12985. 13179. 14282. R. 4,43,34. Kathās. 45,383. Rāǵa-Tar. 3,260. Verz. d. Oxf. H. 80,*a*,28. Bhāg. P. 6,6,29. 10,19. 7, 2,4. 8,10,21. 24,8. fgg. °रिपु m. Bez. Vishṇu's H. 221, Schol. — ein Rākshasa R. 6,74,5. eine Tantra-Gottheit bei den Buddhisten Wassiljew 186. 197. Tāran. 142. Wilson, Sel. Works 2,24. — 3) f. या ein N. der Durgā ÇKDr. nach dem Durgāsahasranāmastotra.

क्रयघ्न m. *Nerium odorum* Rāǵān. 10,10.

क्रयंकष m. ein N. Mātali's, des Wagenlenkers Indra's, Taik. 1,1, 59. H. ç. 33. Gaṇān. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,41.

क्रयचर्या f. *das freie Umherstreichen des zum Opfer bestimmten Rosses* R. 7,92,9.

क्रयच्छटा f. *ein Trupp Pferde* Hār. 134.

क्रयज्ञता f. *das Vertrautsein mit der Rossekunst* MBh. 3,2796.

क्रयतन्त्र n. *Rossekunst* MBh. 3,2772. 12028.

क्रयदानव m. *der* Dānava *in der Gestalt eines Rosses*, Beiw. Keçin's Harīv. 4291.

क्रयद्विषत् m. *Büffel* (*Feind des Rosses*) Wilson.

क्रयन 1) m. *Jahr* (vgl. क्रायन) Çabdārthak. bei Wilson. — 2) n. *eine Art Sänfte* AK. 2,8,2,20. उयन v. l.

क्रंयन्तात् (क्रन्तात् v. l.) als गतिकर्मन् Naigh. 2,14. Vgl. क्रंयन्ता ṚV. 1, 116,18 und unter क्रि, क्रिणाति. तत्र क्रय गताविति तातङि नकार उपज्ञन: Devar.

क्रयप m. 1) *Rossewärter* Varāh. Bṛh. S. 9,38. — 2) N. pr. = क्रयपति Kathās. 38,7.

क्रयपति m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 38,4.

क्रयपुच्छिका f. = क्रयपुच्छी Mād. 1,89.

क्रयपुच्छी f. *Glycine debilis Lin.* AK. 2,4,5,4.

क्रयप्रिय 1) m. *Gerste* H. 1170. — 2) f. या *Physalis flexuosa* Rāǵān. 4,113. auch *Phoenix sylvestris* Rāǵān. im ÇKDr.

क्रयमार m. *Nerium odorum* H. 1137. Halāy. 2,39. Rāǵān. 10,10. °क m. dass. AK. 2,4,2,57. Suçr. 1,132,7. 2,63,4.

क्रयमारण m. *Ficus religiosa Lin.* Çabdam. in Verz. d. Oxf. H. 193, *b*,7 v. u.

क्रयमुख 1) n. *a*) *Pferdegesicht* R. 4,40,49. — *b*) N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang 1,274. fgg. — 2) f. ई N. pr. einer Rākshasī R. 5,25,34.

क्रयमेध m. = अश्वमेध *Rossopfer* M. 11,82. Jāǵ. 1,181. MBh. 1,7841. R. Gorr. 1,11,12 (8 Schl.). 13,30. 7,92,10. Bhāg. P. 1,18,46. 4,19,1.

क्रयलीलावती f. Titel eines über *das Ross* handelnden Werkes Mallin. zu Çiç. 5,10. 60.

क्रयवाहन m. ein N. Revanta's H. 103. Kubera's Çabdārthak. bei Wilson.

क्रयवाहनमंकार m. *Bauhinia variegata* Çabdam. in Verz. d. Oxf. H. 196,*a*,2. °शंकार ÇKDr. nach derselben Aut.

क्रयविद्या f. *Rossekunst* Rāǵa-Tar. 4,265.

क्रयशाला f. *Pferdestall* ÇKDr.

क्रयशास्त्र n. *Rossekunst* MBh. 5,7102. Spr. (II) 6841, N.

क्रयशिक्षा f. *Rossekunst* Mārkaṇḍ.-P. 189 nach ÇKDr. unter क्रयाध्यक्ष.

क्रयशिरस् 1) n. *a*) *Pferdekopf* MBh. 12,13093. Harīv. 11988. R. 4,44, 72. Vikr. 4. — *b*) Bez. *einer best. mythischen Waffe* Harīv. 12733. R. Gorr. 1,30,12 (29,12 Schl.). 57,11 (56,10 Schl.). — 2) adj. *einen Pferdekopf habend:* die Sonne MBh. 3,3551. Vishṇu *in einer best. Manifes-*

siation (vgl. कपग्रीव) 12,4515. 12864. 12923. Harıv. 11411. 14361. Bhāg. P. 7,9,37. — 3) f. N. pr. einer Tochter Puloman's Harıv. 207 (पतृशिरस् die neuere Ausg.). Vaiçvānara's VP. 1,21,7; vgl. °शिरा.

कपशिरा f. N. pr. einer Tochter Vaiçvānara's Bhāg. P. 6,6,32. fg.; vgl. कपशिरस् 3).

कपशिप्र m. *Füllen* Varāh. Bṛh. S. 66,5.

कपशीर्ष adj. *einen Pferdekopf habend*, m. Vishṇu *in einer best. Manifestation* Bhāg. P. 5,8,15. °शीर्षन् 2,7,11. Unbestimmt ob °शीर्ष oder °शीर्षन्: वासुदेवस्य प्रियां तनुं धर्ममयीं °शीर्षाभिधानाम् 5,18,1. °शीर्षपञ्चरात्र Verz. d. Oxf. H. 87, *b*, 36. fg. 280, *a*, 4. 5. 292, *b*, 37. Verz. d. B. H. No. 1403 (°पञ्चरात्रि:).

कपस्कन्ध m. *ein Trupp Pferde* Hit. 134.

कपाङ्ग (कप + 3. अङ्ग) adj. *einen Pferdeleib habend*; m. *der Schulze im Thierkreise* Varāh. Bṛh. 1,14.

कपाध्यक्ष (कप + ध्य°) m. *Stallmeister* ÇKDa.

कपानन्द (कप + आ°) m. *Phaseolus Mungo* (*die Freude der Pferde*) Rāǵān. 16,37.

कपारि (कप + अरि *Feind*) m. *Nerium odorum* Ratnam. 78. Rāǵān. 10,10. Pārkār. 3,6,17.

कपारोह (कप + आ°) m. *Reiter zu Pferde* AK. 3,4,28,110. MBh. 6,1776. R. Gorr. 2,125,14. Kathās. 18,93.

कपालय (कप + आ°) m. *Pferdestall:* सर्वं वाप्येवित्यं प्रविशत्तं कपालये Nāgoja bei Aufrecht, Uṇādis. S. 260, N.

कपाशना (कप + अशन *Speise*) f. *Boswellia thurifera Roxb.* Çabdam. im ÇKDa.

कपास्य (कप + आस्य) adj. *ein Pferdemaul habend*, m. Vishṇu *in einer best. Manifestation* (vgl. कपग्रीव, कपशिरस्) Bhāg. P. 11,4,17. °क dass. Pārkār. 4,8,91.

कपिन् (von कप) adj. *zu Pferde sitzend, Reiter* MBh. 8,209. Mārk. P. 21,49. S. 656, Z. 8 v. u.

कपे interj. *he! ei!* कपे देवा यूयमिदापयः स्थ RV. 2,29,4. कपे नरो मरुतो मृळता नः 5,57,8. 10,95,1. Çat. Br. 11,5,1,6. Gobh. 4,8,1.

कपेष्ट (कप + इष्ट *erwünscht*) m. *Gerste* Rāǵān. im ÇKDa. fehlt in unserem Hdschrr.

कपोत्तम (कप + उ°) m. *ein vorzügliches —, edles Ross* Taik. 2,8,43. MBh. 3,2794.

कप्यंगव Bhāg. P. 10,9,6 wohl nur fehlerhaft für कैयंगव.

1. कर् = भर् P. 8,2,32, Vārtt. करति, °ते (selten und meistens des Metrums wegen) Dhātup. 22,2 (करणे). अकार, अकर्ष Bhāg. P. 10,60,40. अक्रे; अकार्षीत्, अकार्; अकृत, अकृषाम्, अकृषाताम् Schol. zu P. 1,2,12. 3, 2,27. Vop. 8,132. करिष्यति P. und Vop. a. a. O. कृषीष्ट, कर्तवै Schol. zu P. 3,4,9. कर्तवै zu 6,1,200. कर्तुम् (ep. auch करितुम्, कृत्वा; pass. क्रियते; कृत. निष्कर्तृ Dhātup. 28,15 (प्रसत्यकरणे) nicht zu belegen. 1) *tragen, halten:* गिरो भारं कर्राविव VS. 23,26. शीर्ष्णा *auf dem Kopfe* Çat. Br. 3,3,3,17. TS. 6,1,9,4. यस्याग्निं पुरस्ताद्धरन्ति Air. Br. 2,6. उल्मुकम् 11. Âçv. Gṛhy. 1,11,6. 10. घर्घो अघः शिरो करति das Feuer TBr. 1,1,5,7. ein Gefäss TS. Pair. 17,3. स्वयं नोयानकौ करेत् M. 4, 74. भारम् P. 1,4,53, Schol. मुष्टिभिर्नखैरकाः (= अगृह्णः Comm.) Bhāg. P. 11,30,20. पशुरक्षणया पदो करति *fort d. i. bewegt* Çat. Br. 3,3,3,27. — 2) *herbeischaffen, — bringen, holen; übergeben, vorsetzen, darbringen:* यस्यं ते वासो करामः AV. 2,13,5. 14,1,30. यः कृत्यां कराद्विदुषो गृहम् 4,18,2. 5,14,3. Air. Br. 3,32. 7,1. आवसवे अन्नम् TBr. 1,4,9,4. 2,6,6. करं वैवस्वतोदकम् Kātyār. 1,7. R. 2,104,5. यः पलानि करिष्यति MBh. 3,16850. R. 2,64,33. करिष्ये जनकात्मजाम् 4,45,11. तस्मै अकार धनदो रत्नं वरासनम् *darbringen, schenken* Bhāg. P. 4,15,14. insbes. बलिम् (vgl. auch u. 1. बलि 1) 2) AV. 11,4,18. 19,35,7. Paāçar. 2,7. MBh. 13,6036. Mārk. P. 29,20. Bhāg. P. 3,2,21. 11,18. 4,14,20. 28. 16,21. 11,27,42. — 3) *weg —, hinüberschaffen; verbringen, fortführen* RV. 10,16,10; vgl. AV. 12,2,7. 9. 43. — 5,29. TBr. 2,1,2,1. मृतमरण्यम् Çat. Br. 13,2,4,3. 14,8,14,1. मृतमग्नये 9,2,16. प्राणं कर्तवे 12,4,4,6. Kāty. Çr. 2,6,26. 3,6,8. पुरोडाशम् 5,3,27. 8,7,7. उत्तरवेदिम् 15,6,36. पशुशाकानि 24,6,1. पात्राणि Lāṭy. 1,6,10. 2,7,9. 3,12,3. Âçv. Gṛhy. 4,6,2. स्तम्बयजुः (s. u. d. W.) z. B. TS. 1,6,9,4. ग्राममन्नम् Sūdra K. zu P. 1,4,51. अरण्यमाभीरीः Bhaṭṭ. 3,47. प्रियायाः संदेशं मे कर *hintragen zu, überbringen* Megh. 7. — 4) *wegnehmen, entreissen, gewaltsam —, unrechtmässiger Weise sich zueignen, rauben, gewaltsam fortführen, — mit sich ziehen, entführen, fortlocken:* सीरं कुढो अकरत् AV. 18,10,10. हरतौ हृदयः Âçv. Gṛhy. 1,6,8. den Soma Çat. Br. 3,6,1. 12. 12,7,2,1. न तं (निधिं) स्तेना न वामित्रा करन्ति M. 7,83. 8,39. fg. 193. गृहं तडागमारामं क्षेत्रं वा भीषया 264. यस्तु रज्जुं घटं कूपाद्धरेत् 319. 320. 322. सर्वहारम् 399. 9,281. 12,61. fg. 66. 66. 69. अमृतं अकार दानवेन्द्रेभ्यः MBh. 1,1159. 6159. 3,2315. कन्याः 5,5956. fg. Harıv. 3756. R. 1,1,51. 61,6. 2,82,10. R. Gorr. 1,53,1. 3,50,24. 53,43. 76,29. मस्तकौ कृत्वा करति वालिनम् 4,18,10. Megh. 42. Raghu. 3,39. 42. 4,43. 12,29. Vikr. 38. Spr. (II) 4798. गर्भस्थम् u. s. w. करति कृतान्तः 2094. 3478. Varāh. Bṛh. S. 19,8. Kathās. 8,8. 13,147. 18,386. मूलकं विना मूल्यम् 20,166. 43,127. Rāǵa-Tar. 4,393. 5,165. Prab. 21,7. H. 382. Hit. 1,32. 80,2. Bhāg. P. 4,16,24. 19,19. 7,4,7. 8,24,8. 9,14,27. 23,34. Sarvadarçanas. 33,6. med.: राज्यं न करेत MBh. 9,3263. कन्यां करमाणः Harıv. 6673. 9243. Spr. (II) 7364. स्वदत्तां परदत्तां वा यो करेत वसुंधराम् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,540, Çl. 1 = 7,28, Çl. 2. प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजो ऽत्र अक्रे Megh. ed. ST. IV. द्विजातिभ्यः तत्रिया अक्रिरे वसु MBh. 14,2669. pass.: यस्य राष्ट्राद्धियते दस्युभिः प्रजाः M. 7,143. MBh. 1,6672. 3,13066. Harıv. 3757. 3759. R. 1,54,2. 3,35. 35. क्रियते क्रियतेति (d. i. क्रियत इतिः क्रियते अति gedr.) Mārk. P. 21. 80. Sarvadarçanas. 131,20. कृयस्तेन अक्रे MBh. 1,8421. Bhaṭṭ. 2,39. तेन कृयत्वमकारि Kumāras. 2,47. पारिजातो क्रियति Harıv. 7468. क्रियेत 10039. क्रियत MBh. 3,11489. 13,4554. 4817. partic. कृतं AV. 5, 29,5. 12. प्रासका Kāty. Çr. 11,4,21. चौरैर्धनम् M. 8,40. 189. 233. °सर्वस्व MBh. 3,2274. 2276. 2297. fg. 2754. 5,5967. R. 1,1,53. 61,7. Çiç. 83,9. Spr. (II) 149, v. l. Varāh. Bṛh. S. 51,28. 104,19. Kathās. 4,57. 25,191. 29,113. Rāǵa-Tar. 3,331. 4,387. 682. Mārk. P. 18,14. 135,15. °वित् (so ed. Bomb.) Bhāg. P. 3,30,33. Pārkār. 96,19. °शिष्ट Daçak. 62,1. °सार R. 2,33,18. 61,18. कृताधिकारा Rāǵa-Tar. 5,336. कृतघ्नता तमसेव कौमुदी Raghu. 8,37. कृदये ताडितस्तत्र कृतघ्नास्मि नभस्तलात् *gewaltsam fortgezogen* R. 3,42,10. यदेः कुञ्जात् — द्विपपतिः Spr. (II) 5789

(Conj. für कृत). लावण्याम्बुनरंगिण्या कृतः (so schreiben wir) Kathâs. 27,65. यत्नेन weit fortgeführt 32,106. Bhâg. P. 3,14,35. — 3) abreissen, ablösen, abtrennen, abschiessen: कृत्ति चोरुवेगेन लतानां विविधं पुष्पम् R. 5,3,43. (वायुः) वृक्षाच्छूर्यं करोति पुष्पमनोकहानाम् Ragh. 3,69. शरेण मकाशनिघटम् 3,56. insbes. den Kopf: आदाय परशुं रामो मातुः शिरो ऽकरोत् MBh. 3,11084 (S. 572). कायात् 7,1367. 9,1091. Bhâg. P. 2,7,33. 4,5,24. 7,8,14. 8,11,6 (med.). 9,15,35. Bhatt. 15,116. तत्तदेव (खड्गं) कोत्तस्य पार्थिवः abhauen, — lassen M. 8,334. — 6) act. med. in Empfang nehmen (eine Gabe), in den Besitz von Etwas treten (insbes. als Erbe), rechtmässiger Weise sich aneignen: नाननुशिष्य करेत Çat. Br. 14,6,10,4. Âçv. Grhj. 4,8,27. fg. Liṭ. 8,2,12. 9,23 (an beiden Stellen v. l. med.). 16. Kauç. 37. Kaṭh. Up. 1,1. ऋषं करेत चार्घुः, कोता वापि करेदृणम् M. 8,209. ततो विंशं नृपो करेत् 398. दाणम् 9,77. 92. 117. 124. 130. fgg. 135. fg. 141. fg. 145. 151. 153. 179. 185. 189. 198. 216. fg. दस्युनिष्क्रियपोस्तु स्वमज्ञोवन्कर्तुमर्कति 11,18. माताप्यंशं समं करेत् Jâgñ. 2,123. यन्मयास्ति करस्व तत् Pañcat. III,191. नातिसांवत्सरं वृद्धिं करेत् M. 8,153. स करतु सुभगपताकाम् Daçak. 68,2. Kathâs. 3,48. यो करेद्लिखडागम् Spr. (II) 218. षष्ठो मासान्यदादित्यस्तोयं करति रश्मिभिः। तथा करेत्कर राष्ट्रात् Abgaben erheben 743. भिलाकृताः मजवः 7337. hervornehmen —, sich Etwas holen von (abl.) Vaṇiç. Bḍh. S. 81,34. mitnehmen von Manu. 31. कन्यामृतुमतीम् heimführen, heirathen M. 9,93. — 7) in seine Gewalt bekommen, überwältigen, Meister werden über, Jmd gewinnen: त्रिभिः क्रमेश त्रीँल्लोकाञ्जकार त्रिदिवालयम् Harîv. 4166. पुरम् Bhâg. P. 4,27,15. पूर्वाभ्यासेन तेनैव क्रियते क्यवशो ऽपि सः Bhag. 6, 44. इन्द्रियाणि प्रमाथीनि करति प्रसभं मनः 2,60. Bhâg. P. 7,12,7. क्रियमाणानि विषयैरिन्द्रियाणि M. 6,59. कथं नाम मकात्मानो क्रियते विषयारिभिः Kim. Nîtiç. 3,11. शब्दाद्यैर्क्रियते न च Mâṇ. P. 40,36. (तम्) मृगया जकार चतुरेव कामिनी Ragh. 9,69. न निद्रापि जकार तम् Kathâs. 67,22. जज्ञे भ्रातो मतश्च निद्रया 28,122. 72,181. 77,57. सप्राणं करते मृत्युः, सप्राणान्प्राणवल्लोकानकीर्तिकरते सदा Spr. (II) 6834. स्वभावेन करोन्मित्रम् 7299. R. 5,85,7. Kim. Nîtiç. 13,25. तवामात्या कृता धनैः (धनैः ed. Bomb.) gewonnen, bestochen MBh. 2,240. संज्ञोवककृतः स्वामी नावामवेतते Kathâs. 60,73. — 8) hinreissen so v. a. ganz in Beschlag nehmen, von allem Andern abwenden, entzücken (oft zugleich rauben, mit sich fortnehmen): मा तस्य दृष्टेव (so zu lesen) मनो जकार MBh. 13, 1393. R. 3,38,18 (med.). 48,17. 49,22. 5,22,29. Ṛt. 6,20. Spr. (II) 2325. 3250. Kathâs. 14,78. 45,299. Brahma-P. in LA. (III) 33,10. Bhâg. P. 3, 12,28. 4,20,37. 9,10,34. मानसम् Kathâs. 25,165. हृदयम् Spr. (II) 780. Z. d. d. m. G. 27,25. Kathâs. 11,33. चेतः Spr. (II) 5706. 7259. Mâṇ. P. 61,32. चित्तम् R. 5,31,36. Kathâs. 37,14. चक्षूंषि च मनांसि च MBh. 1,7695. ईक्षणे Kathâs. 47,109. कृतात्मन्, कृतप्राण Bhâg. P. 3,25,36. तवास्मि गीतरागेण करिणा प्रसभं कृतः। एष राजेव दुष्यन्तः मारङ्गेणातिरंकसा॥ hingerissen, fortgerissen Çâk. 5. कं कोदेष वर्ती Vikr. 85. स्वैरालापा करन्ति मृगीदृशाम् Spr. (II) 4218. 4667. करन् = मनोकर, करिन् Bhâg. P. 3,15,41. — 9) abnehmen, wegnehmen, benehmen, entfernen, verscheuchen, zu Nichte machen: प्रालेयार्कं कमलवदनान्नालिन्याः Manu. 40. भुवो भरम् Bhâg. P. 1,3,28. स्वास्त्रैः कुचकुङ्कुमानि 3,1,7. जीवितम् Harîv. 10313 (med.). प्राणान् R. 3,31,39. 62,4. आयुः Bhâg. P. 2,3,17. 4,29,54. Spr. (II) 3900. वीर्याणि MBh. 9,220 (med.). मुखस्य लक्ष्मीम् Spr. (II) 3910. 7432. Râja-Tar. 1,239. दन्तैर्यातुभिः येनाद्रिर्मकिम् Bhâg. P. 8,8,4. श्रियं श्रियः Bhatt. 5,71. मम ब्रुवकीर्तिम् Çic. 9,63. दर्पम् MBh. 2,508. गर्वम् R. 3,42,37. इच्छाम् Manu. 37. लज्जाम् Ragh. 14,16. बुद्धिम् Spr. (II) 1112 (med.). दर्शने करते (so zu lesen) चित्तं स्पर्शने करते बलम्। मैथुने करते वीर्यं नारी 2719. प्रियस्य गमनम् so v. a. hintertreiben 4291. मतिम् Bhâg. P. 6,18,29. 9,6,52. चेतः R. 2,48,18. चेतनाम् 3,49, 22. Kathâs. 13,147. 16,49. Bhâg. P. 4,22,30. चित्तम् Spr. (II) 6519. 6553. Kathâs. 39,188. विवेकम् Brahma-P. in LA. (III) 56,22. स्थैर्यम् Bhâg. P. 1,16,36. धर्मम् 3,9,13. अवकाशम् Kathâs. 32,108. सेवा मानमक्लिष्टम्, ज्योत्स्ना तमः, नरा लावण्यम्, करिकरकथा दुरितम् Spr.(II)7173. मुरतग्लानिम् Megh. 32. व्यथाम् Ragh. ed. Calc. 12,78. दुःखम् R. 2,21, 18. Spr. (II) 1138. ज्ञाड्यं धियः 2376. भयं भूतानाम् 6823. तापं देहिनाम् 7098. कम्पमाश्रमवासिनाम् Ragh. 15,24. मन्युं धारित्र्याः Varâh. Bṛh. S. 32,6. कुमतिम् Bhag. P. 1,9,36. एनः M. 4,200. किल्बिषम् R. 4,17,58. Bhâg. P. 3,9,6. 3,15,36. 4,14,46. रोगम् Kathâs. 28,168. Saṃvadaraçanas. 99,10. कुवस्त्रं करते तेजः कुभार्या करते गृहम्। कुभोज्यं करते बीजं कुपुत्रो करते कुलम्॥ Spr. (II) 1844. ज्वरा देहम् 2839. सर्वे कालेन मृज्यन्ते क्रियन्ते च पुनः पुनः MBh. 13,36. मृत्युवैतन्करान्विद्यम् Bhâg. P. 4,7,51. मृत्युमि पासि करासि 6,9,23. — 10) zurückziehen, zurückhalten: म मे ऽकरच्छरम् MBh. 5,7245. न शशाक ततो कर्तुं दृशं सग्रामिवात्र सः R. 3,52. 19. तद्भूतो ऽयं भुक्तः समाश्वास्य तावद्विश्रतां यावद्दुर्गं मज्ञोक्रियते Hit. 90,9. दत्त्वा कन्यां करन् Jâgñ. 2,146. — 11) hinziehen (von einer Zeit oder einem Ort zum andern): उदकधारां Âit. Br. 7,12. याकृतिभिरेनं पूर्वपतं करेयुः (= नयेयुः Comm.) Âçv. Çr. 3,10,18. कालम् die Zeit hinziehen, Zeit gewinnen Kathâs. 31,68. 32,28. — 12) dividiren Vaṇiç. Bḍh. S. 8,23. 33,17. Goldiog. Madhjam. 10. 12. 21. Âpast. 2,8. 15. 4, 25. fgg. भागं कृ dass. 2,4. — करिष्ये Mâṇ. P. 135,13 fehlerhaft für करिष्ये. — Vgl. श्येनकृत.

— caus. कारयति, अजोकरत् Schol. zu P. 3,1,48. 7,4,94. 1) tragen lassen: कारयति भारं देवदत्तम् oder देवदत्तेन Schol. zu P. 1,4,53. शैलूषकारपत्कीशानृतैर्वृत्तानजोकरत् Vop. 5,5. यद्वा वा (so zu trennen) कारयेदेनम् M. 8,114. — 2) bringen —, verbringen lassen: अन्नम् Liṭ. 1,1,12. कविर्धीनानि 8,9,17. कारं च केममूत्रं च भार्याये कारय R. 2,32,7. Harîv. 6434 nach der Lesart der neueren Ausg. त्रीमूतेन स्वकुशलमयीं कारयिष्यन्प्रवृत्तिम् Manu. 4. — 3) entreissen —, rauben lassen: अन्यायेन कृता भूमिरन्यायेन तु कारिता। कारतो कारयतश्च दुष्कृत्यासप्तमं कुलम्॥ Journ. of the Am. Or S. 7,43. — 4) entreissen, sich aneignen: तस्य धनोद्धरम् Kathâs. 101,242. — 5) sich entreissen lassen: खड्गं चाजोकरद्भिया Bhatt. 15,84. einbussen, verlieren (insbes. im Spiel): दारान् Mahânâṭ. 181. यूतेन धनं सर्वमकारयत् Kathâs. 19,18. 32,253. 121,73. 88. धनहीनेन देहो ऽपि कार्यते 19. 28. प्राप्तो ऽप्यर्थः तणादेव कार्यते मन्दबुद्धिभिः 64,31. — 6) partic. कारित Schol. zu P. 6,4,52. a) überbracht: हूतकारितैः कल्पद्रुमविभूषणैः Kumâras. 2,39. — b) was man hat rauben lassen; s. u. 3). — c) geraubt, entführt Kathâs. 7,99. 10,152. — d) verloren, eingebüsst (insbes. im Spiel): कण्ठकः कण्ठात् Kathâs. 54,111. यूते Mahâbh. 55,14. यूतेन Mâṇ. P. 8,149. Kathâs. 20,91. 24,59. 197. 26,195. दीनाद्दानकारितप्रार्थान् 33,156. 56,300. 303. fg. Râja-Tar. 4,364. 6,49. 54. Ver. in

LA. (III) 17,12. जीवितार्थ Spr. (II) 5184. स्वातन्त्र्यं शरीरस्य 7169. ब्राह्मण्य Kathâs. 4,119. 24,160. स्वप्नान्तर्कारिते पुत्रे प्रबुद्धो ऽयं इव स्थिते Râja-Tar. 4,319. प्राप्तामपि श्रियं मेने नृपतिर्कारितामिव 384. °चित्त verloren so v. a. hin 5,267. कर्पूरपारीपतितं मेरेरपमिव कारितम् 368. — c) geraubt so v. a. um sein Ansehen gebracht, übertroffen, verdunkelt: कुचकलशकृचा कारयष्टिः Gît. 12,15. — f) der Etwas (acc.) eingebüsst, verloren hat: यूतेन कलत्राणि Kâm. Nîtis. 14,49. — 7) कारितवत् = कारित f): राज्यम् MBh. 4,2197.

— desid. जिकीर्षति Schol. zu P. 1,2,9. 7,4,62. 1) wegnehmen wollen, Verlangen tragen nach: स्फातिम् AV. 2,25,3. मांसम् 5,29,15. तथा हि सर्वमादाय राज्यमस्य जिकीर्षति MBh. 1,7480. 3,15680. 5,19. 8,3461. यदत्तको ज्यैव न मां जिकीर्षति R. 2,20,48. Kathâs. 4,72. Bhâg. P. 10, 72,25. mod. MBh. 12,5395. — 2) कालम् Zeit gewinnen wollen MBh. 12,5015. — Vgl. जिकीर्षा fgg.

— intens. जर्कीरीति, जरिकरीति, जरीकरीति, जर्कर्ति, जरिकर्ति, जरीकर्ति P. 7,4,82, Schol.

— अति halten über; hinüberreichen, — geben über (acc.); hinausreichen —, überstehen lassen: प्रस्तरमुपर्युपर्यग्निमतिकरति Çat. Br. 3,4,3, 22. 5,1,2,17. अतिकृत्य पूर्वे उत्तमे अनूपदधाति 8,7,3,5. 1,1,2,21. पतिरशीर्नमतिकरेत् TS. 2,6,3,4. नाभिमग्निमतिकरेत् 6,3,3,5. दक्षुलं समिधो अतिकृत्य Çâṅkh. Br. 2,2. Ça. 17,16,1. fgg. आसन्दीम् Lâṭ. 3,12,1. राज्ञा येनातिकृतः स्यात् der Weg, auf welchem man den Soma gebracht hat, 5,9,4. अतिकृत (Gegens. लुप्त) hinzugefügt: व्यञ्जन Ind. St. 1,47,22.

— प्रत्यति s. u. प्रत्यभि.

— व्यति med. Vop. 23,55 (व्यतीकारे). gegenseitig versetzen: व्यतिकारम् absol. Çat. Br. 3,4,4,3. 3,2,3,7. Kâṭ. Ça. 5,3,17. Lâṭ. 3,6,24. अभिव्यतिषञ्जितो 4,6,13. 16,20,16. Gobh. 1,3,6. 4,7,25. — partic. °कृत am Ende eines comp. ohne — setzend, — los: भूत्यं प्रियव्यतिकृतं दृष्ट्वा त्रिलोकम् Bhâg. P. 10,16,20. — Vgl. व्यतिकार.

— अधि 1) hinbewegen über: समिधं मुचं वाज्यधि मार्कपत्यं कृत्वा Âçv. Ça. 2,3,15. — 2) bringen, verschaffen: किं ते कामाः — अधिक्रुर्मुदं राज्ञः Bhâg. P. 1,12,6.

— अनु 1) der Reihe nach versetzen (Speisen) Hariv. 8440 (उपनक्रुः die neuere Ausg., mit der पौरागवोक्त्या zu lesen ist). — 2) nachahmen: वपुरनुकरति तव Gît. 8,4. अन्येन क्रियमाणं यत्पश्यत्यनुकरोति ततु Kathâs. 46,75. °विलासलक्ष्मीम् Prân. 40,12. gleichen, ähnlich sein; mit acc. Prân. 48,5, v. l. Sarvadarçanas. 12,2. 64,7. 71,3. अनुकरति बेको भवांस्तद्रूपसंपदम् so v. a. erreichen Kathâs. 101,71. mit gen. der Person gleichen 229. med. nachschlagen, nach eines Andern Art einschlagen: पैतृकमशा अनुकुरते मातृकं गावः P. 1,3,21, Vârtt. 5, Schol. (vgl. Sîs. zu RV. 1,49,1). Vop. 23,7. — Vgl. अनुकार fgg.

— अप 1) wegbringen, wegreissen, wegschaffen, abnehmen: तं ऋणात् MBh. 3,719. 7,1787 nach der Lesart der ed. Bomb. अशापकृत weit weggeführt Kathâs. 18,93. तस्मादचिरापकृतः पटः P. 5,2,70. पार्श्वं कण्ठात् Kathâs. 104,143. वृत्तान्मधु MBh. 12,286. आत्मनो भारम् 14,351. वापीमपकृतोत्पलाम् R. Gorr. 2,125,15. Varâh. Bṛh. S. 12,4. Kathâs. 12,112. einen Dorn Sçs. 1,100,17. wegwenden: वदनम् Kumâras. 7,95. गात्राणि Spr. (II) 3869. — 2) entwenden, gewaltsam oder unrechtmässiger Weise sich zueignen, entführen, rauben TBr. 1,4,9,5. Âit. Br. 7,1. Çat. Br. 3,6,3,14. 19. 21. 4,5,10,1. 11,6,3,11 = 14,6,9,23. ein Weib Âçv. Gṛhj. 1,6,7. Kâṭhân. Up. 5,16,1. M. 11,88. 250. 12,60. 68. Jâán. 2,66. 126. N. 9,19. MBh. 3,15652. 15683. 4,981. 13,3606. R. 3,62,15. 5,24,21. 36,36. Spr. (II) 2955. Vikr. 11,15. Varâh. Bṛh. S. 95,13. Kathâs. 17,25. 26,178. 35,85. 42,18. 44,159. 65,77. 121,113. Râja-Tar. 1,199. 299. 2,103. Mârk. P. 18,15. 51, 106. Bhâg. P. 4,17,4. 5,14,3. 26. 26,3. 9,10,22. Sîs. zu RV. 1,6,5. Prân. 113,11. Pañcat. 75,24. 97, 23. 132,19. Hit. ed. Jonas. 1532. Vet. in LA. (III) 14,18. H. 383. सोमापकृतं dem Soma entwendet worden ist Çat. Br. 4,5,10,6. — 3) abreissen, ablösen, abtrennen, abschiessen: घ्नं लुरेण रथात् MBh. 14,2329. शिरः कायात् 3,11520. 15739. 7,7413. 14,2497. Râja-Tar. 5,231. Raghu. 15,52. Bhâg. P. 3,11,18. fällen Raghu. ed. Calc. 11,20 (v. l. अपातयत्). — 4) fortreissen so v. a. in seine Gewalt bekommen, überwältigen, ganz in Beschlag nehmen, von allem Andern abwenden: निद्रयापकृता MBh. 3, 2239. R. 1,46,16 (47,15 Gorr.). कर्मणा मनसा वाचा यदभीक्ष्णं निषेवते । तदेवापकृत्येनम् Spr. (II) 1560. बिल्वापकृतचक्षुस् MBh. 14,1711. तद्रूपापकृतेक्षणा Kathâs. 35,18. मनः R. 3,49,10. Mârk. P. 20,21. मानसम् Kathâs. 22,93. चेतः Daçar. 69,10. हृदयम् Bhâg. P. 5,14,28. गोविन्दापकृतात्मन् 10,29,3. न प्रियतमा यतमानमपाकरोत् Raghu. 9,7. — 5) wegnehmen, benehmen, entfernen, verscheuchen, zu Nichte machen: प्राणान् R. 3,35,61. 4,15,22. Spr. (II) 1923. Pañcat. 265,10. जीवितम् Kathâs. 48,58. रविर्निशातमः Spr. (II) 6189. Sin. D. 1. शलभो दीपार्चिः Spr. (II) 1167. निद्रयापकृतचेतनाः R. 2,47,4. 5,13,22. Bhâg. P. 6,18, 60. स्मरबाणौघपातापकृतचेतन (अपकृत gedr.) Kathâs. 84,3. कलिनापकृतज्ञान: MBh. 3,2337. Bhâg. P. 4,7,30. 8,12,25. कीर्तिम् Raghu. 11, 74. Spr. (II) 544. स्मृतिम् Mârk. P. 51,45. तेजः Bhâg. P. 1,15,3. प्रिया मे दत्ता वाक्ष पुनर्ममापकृता Daçar. 73,19. गतिम् R. 5,56,53. Râja-Tar. 5,231. मंत्रस्तानामपाकारि मन्त्रम् Bhaṭṭ. 15,64. एनस्वतो ऽपकारेनः Âit. Br. 5,30. विषमलक्ष्मीम् Varâh. Bṛh. S. 81,27. परितापं जगतः Z. d. d. m. G. 27,28. भ्रमम् vereiteln, unnütz machen Kathâs. 49,113. — 6) zurücknehmen: देयं प्रतिश्रुतं चैव दत्त्वा नापकरेत्पुनः Jâán. 2,176. — 7) abziehen, subtrahiren Varâh. Bṛh. S. 8,3. भागम् so v. a. भागं कृ dividiren Utpala zu 7,2. 8,4. — अपकरेत् Sçs. 1,15,9 fehlerhaft für उपकरेत्. अपकृत्य Kathâs. 49,28 für अपकृत्य. Vgl. अपकरण fg., अपकार fgg., अनपकृतपाप्मन्. — caus. partic. अपकारित geraubt R. 1,42,2 (41,28 Gorr.). Raghu. 3,50.

— व्यप 1) abreissen, ablösen, abhauen: शिरश्चक्रेण MBh. 2,1384. — 2) benehmen, zu Nichte machen: तेजः प्राणानाम् Râja-Tar. 4,705. — Vgl. — व्यपा.

— अभि, °करे °कर P. 8,2,92, Vârtt. 4. Schol. 1) überreichen, darbieten, darbringen: अशनम् Çat. Br. 1,6,3,12. 3,2,3,25. 5,5,4,6. 13,2, 3,12. 14,8,4,1. वर्म Lâṭ. 3,10,6. अन्नः Kauç. 80. MBh. 2,519. — 2) abreissen, ablösen, abhauen: शिरः MBh. 3,14610. — 3) प्रपद्याभिकृततरेण पादेन mit etwas angezogenem (nicht weit ausgreifendem) Fusse Âçv. Ça. 1,1,23. — Vgl. अभिकरण, अभिकार. — caus. 1) hinbringen lassen: कुम्भं स्वदूतेन Hariv. 6434. — 2) auftragen, vorsetzen (Speisen) MBh. 4,2364. — 3) sich anlegen: einen Panzer MBh. 4,1011. fgg. —

4) *angreifen* (einen Feind) MBu. 3,15720. 7,3123 nach der Lesart der ed. Bomb. 5795. — °कार्यते Bṛh. Âr. Up. 4,1,6 fehlerhaft für °कर्यति, wie Çat. Br. hat.

— प्रत्यभि *darreichen:* Gefässe Gobh. 4,3,29 (v. l. प्रत्यति).

— समभि s. समभिकार.

— अव 1) *hinabwerfen* (in's Wasser): उदमेधे ṚV. 1,116,3. — 2) *abwärts bewegen, einziehen* (die Arme); *herunternehmen, abstellen:* बाहू Kâṭh. Ça. 15,6,34. Lâṭ. 1,9,11. तुहूम् Kâṭh. Ça. 3,2,25. eine Trommel 14,4,9. einen Wagen 15,6,15. den Soma Lâṭ. 5,6,5. धनूंषि *ablegen, aus der Hand thun* MBu. 4,1304. — सर्वकर्मावकृतं भवति Nir. 3,20. — 3) etwa *aufnehmen, fassen* P. 5,1,32. कुडवमवकरति = उपसंकरति Schol. — 4) अवकर्तुम् Râǵa-Tar. 1,114 wohl fehlerhaft; अवकृत MBu. 7,1787 und Mâṇ. P. 66,18 fehlerhaft für अपकृत (so MBu. ed. Bomb.). — caus. *erlegen lassen:* Abgaben Âpast. 2,26,9. अवकार्यते शुल्कं शुल्कोपजीविभिः MBu. 2,349. — Vgl. अवकरण, अवकार fgg.

— अन्वव *senken:* घंसम् Çâṅkh. Gṛ. 2,3.

— अभ्यव 1) *werfen* (in's Wasser) VS. 8,59. समुद्रम् Çat. Br. 1,8,1, 3. 5. अप: 2,6,1,43. 4,4,5,1. Âçv. Ça. 3,10,22. 14,10. क्रूरम् Çat. Br. 6,1,3,13. — 2) *herbeischaffen:* Gefässe Çat. Br. 5,1,3,16. — 3) *zu sich nehmen, geniessen:* Speise Suçr. 1,149,5. 282,7. 2,133,2. मत्स्यान्यवसा सकाभ्यवकरेत् Kârâka 1,26. Schol. zu P. 3,4,5. Buǵ. P. 5,9,9. 12. 10, 13,10. 14,46. Arzenei Çârṅ. Saṃh. 1,2,1. °कृत AK. 3,2,60. — Vgl. अभ्यवकरण fgg. — caus. 1) *werfen lassen* (in's Wasser) Lâṭ. 8,8,3. — 2) *anlegen, umthun:* पाशान् Spr. (II) 2707. — 3) *angreifen* (einen Feind) MBu. 3,16369. — 4) *zu sich nehmen, geniessen* MBu. 3,15905. — 5) *geniessen lassen:* परमान्नम् Daçak. 93,1. *speisen:* विप्रान् Pârâç. 3,10,14.

— उपाव 1) *herabholen, — bringen, — nehmen:* रथम् TBr. 1,3,5,2. den Soma vom Wagen Ait. Br. 1,14. VS. 8,56. Çat. Br. 3,5,4,24. 9, 3,2. 5,1,5,10. 11,4,3,13. 5,3,3. — 2) *abwärts bewegen:* die Beine vom Sitz Çâṅkh. Ça. 17,16,5. 4,4,7. die Arme TBr. 2,7,15,6. — Vgl. उपावकरण.

— सम्युपाव 1) *herabbringen* Çat. Br. 3,9,3,2. — 2) *herabbewegen:* die Arme VS. 10,25. Çat. Br. 5,4,3,27.

— प्रत्यव s. प्रत्यवकार. — caus. *aufheben, abbrechen, ein Ende machen:* युद्धम् MBu. 5,7316.

— व्यव 1) *hinunterhergehen lassen:* शलाकाम् (= वितिपति) P. 2,3, 37, Schol. — 2) *versetzen, vertauschen* Nir. 9,22. °कारम् absol. *abwechselnd* Kâṭh. 28,2. — 3) *Handel treiben, handeln mit* (loc. und instr.) P. 2,3,37. 4,4,73. 5,2,13, Schol. Vârân. Bṛh. 14,2. Buǵ. P. 5,14,26. 33. — 4) *wetten:* शतस्य P. 2,3,57, Schol. — 5) *verkehren mit* (instr. oder loc.) Âçv. Gṛ. 1,19,9. Çâṅkh. Gṛ. 2,1. स्त्रीषु Buǵ. P. 7,12,6. °कृत n. *Verkehr:* जिह्मप्राय 1,14,4. — 6) *feindlich verkehren, mit einander kämpfen* MBu. 4,1059. 1870. मया सार्धं व्यवकृत्य सङ्गामधे 1924. तैर्व्यवाकारत् 7,5351. — 7) *handeln, zu Werke gehen, verfahren:* मूढ एव Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,163. यधर्मैर्व्यवकृयते: MBu. 3,12861. कोदृशैर्व्यवकारैस्तु केश व्यवकरेन्नृप: 12,3196. कार्यविनिमयेन मयि Mâlav. 9, 8 (nach der richtigen Lesart). यस्मिन्वनेचरे मकरन्दोचितम् Mâlatîm. 153,21. 7,7. Wilson, Sâṅkhjak. S. 139. Daçak. 77,3. Hit. 89,15. 114, 13. Sarvadarçanas. 116,18. 117,2. 3. Kull. zu M. 2,110. यथातत्त्वेन zu 7,104. Mudr. ST. 4,388. — 8) *sich ergehen:* स कदाचित्तस्मिन्कानने रम्ये तपेव सह व्यवाकरत् (व्यवकरत् ed. Calc.) MBu. 3,13161. — 9) *sich Etwas angelegen sein lassen, bedacht sein auf:* शान्तिम् MBu. 3,1462. — 10) pass. *genannt —, bezeichnet werden* Sarvadarçanas. 85,16. 92, 18. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 242. Vedântas. (Allah.) No. 23. Z. d. d. m. G. 5,3, N. 2. व्यवक्रियमाणाव Kusum. 18,12. अव्यवकृत *wofür es keine Bezeichnung giebt* Buǵ. P. 5,1,21. — Vgl. व्यवकरण fgg., °कारिन् fg., °कृति, व्यावकारी. — caus. 1) *Jmd handeln —, gewähren lassen* Kull. zu M. 8,362. — 2) *es zu thun haben mit Etwas, sich abgeben mit* (acc.): तथागतज्ञानं (so lesen wir) व्यवकारयाम: Saddh. P. 4,28,a. — 3) pass. *genannt —, bezeichnet werden* Buǵ. P. 11,28,19. — Vgl. व्यवकारयितव्य.

— संव्यव *verkehren:* वणिग्भि: Kathâs. 43,71. — Vgl. संव्यवकरण fgg.

— समव *zusammentragen, sammeln;* absol.: यथा मधुकृतो नानात्यया वैतानां रसान्समवकारमेकतो रसं गमयन्ति Kaṭhop. Up. 6,9,1. — Vgl. समवकार.

— धा, धाकाराऽ धाकार P. 8,2,92, Vârtt. 4, Schol.; vgl. Kaṭhop. Up. 1,12,3. 1) *herbeibringen, — schaffen, holen; versetzen, darbringen:* तमा धेहि निर्ऋतेरुपस्थात् ṚV. 10,161,3. 173,1. AV. 2,26,3. 8,2,2. तर्पणम् 9,6,6. इक्ष्वाकूणां राष्ट्रमाधा: 12,1,4. 5. 14,1,39. पूतम् TBr. 2,3,9,6. सन्धाकार्यम् TS. 1,7,2,1. 2,4,12,3. यथा पापीयाञ्छ्रेयंस धाकृत्य नमस्यति *mit einer Gabe* 1,3,9,4. den Soma vom Himmel 7,1,6,1. Ait. Br. 4, 20. 2,12. 7,2. Futter 8,24. Çat. Br. 1,1,4,1. 6. 7,4,1. 8,4,1. 3,3,4,31. Speise 2,3,4,17. Sitz 5,2,4,22. Brennholz 11,3,2,1. 12,7,2,2. भागम् Kâṭh. Ça. 3,4,18. यामायिम् 4,6,12. Kauç. 78. 89. Âçv. Gṛ. 1,24,14. बलिम् 2,1,9. Bṛh. Âr. Up. 6,2,4 (caus. Çat. Br.). Kâṭhop. Up. 1,12,5. M. 2,182. 186. 245. 4,248. 6,19. 28. घोषवताकृतं बीजम् 9,54. MBu. 1,1349 (med.). 3,54. 57. Harîv. 8455. R. 2,30,15. 31,26 (30 Gorr.). 32,26. 37,6. 39,16. 50,24. 56,16. 103,20. R. Gorr. 1,47,16. 2,12,5. 21,17. 3,39,26. 73,25. 4,25,22. 31. 5,78,6. यदेव वज्रे तदपश्यदाकृतम् Raghu. 3,6. 8,77. 18,7. Çiç. 50,8. Milatîm. 153,11. Kathâs. 13,159. 21,7. 24,163. 197. 25,223. 28,156. 34,175. 119,176 (दारुण्याकृत्य zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 101,a,3. Râǵa-Tar. 3,479. 4,259. Mârk. P. 51, 92. Buǵ. P. 1,12,34. 4,15,11. 5,8,9 (med.). 8,8,11. 18,26. Pañkat. 263, 22. Hit. III,6. प्रतिवाक्यम् *Antwort bringen* MBu. 3,2979. यत्त:पुरगतां वार्ताम् Kâm. Nîtis. 12,43. *Jmd herbeiholen, — schleppen* R. Gorr. 2, 75,16. fg. Kathâs. 40,60. 47,103. 61,26. Buǵ. P. 1,7,42. 15,9. mit पुनर् *wiederbringen* MBu. 3,2812. 15765. 17396. R. 3,18,40. Buǵ. P. 1,20,31. *bringen* so v. a. *verschaffen:* जनकानां कुले कीर्तिमाधास्यति मे सुता R. 1,67,22 (69,22 Gorr.). चन्द्रगुप्ताय मेदिनीम् Kâm. Nîtis. 1,5. so v. a. *geben, schenken:* यथाचिताकृत Jâṭ. 1,215. यस्मै कौस्यम् MBu. 2,1781. मम प्राणानाकरेदनाधाया: Daçak. 72,19. भक्त्या यदाकृतम् *dargebracht* Mârk. P. 32,1. बलिम् *Tribut darbringen* Buǵ. P. 5,15,9. 8, 21,5. *darbringen, veranstalten, ausführen:* ein Opfer TBr. 1,3,8,1 (med.). Ait. Br. 4,23. 5,32. Çat. Br. 13,4,4,1. M. 6,10. MBu. 1,127. 2023. 3764. 3, 3998 (यज्ञकुरु° mit der ed. Bomb. zu lesen). 13,530. 6078. 14,48. 15,931. Harîv. 1417 (med.). R. 1,38,21. 2,109,29 (118,29 Gorr.). R. Gorr. 1,36,1. 6,113,10 (med.). Raghu. 4,80 (med.). 14,87. Mârk. P. 29,18. Buǵ. P. 1,16,

3. 4,13,25. 16,24. 5,7,5. अग्निष्टोमम् Gop. Br. 1,3,17. स्तोभम् Lāṭ. 1,6,28. उद्गीथम् Kauṣ. Up. 1,2,1. तस्मै सपर्यां शिरसाऽऽहार (so ed. Bomb.) Baudh. P. 1,19,29. अर्घम् नरदेवाय 3,15,34. — 2) *herreichen:* die Hand Śāṅkh. 14, 6,2,13. — 3) *für sich holen, wegnehmen; empfangen, erhalten, nehmen* überh. AV. 3,15,2. 16,10,11. नास्य ग्राममाहरेयुः *mit in's Dorf nehmen* Āśv. Gṛhy. 4,8,32. भेदं गृहेभ्यः M. 2,183. तापसेषु यात्रकं भेदम् 6,27. राष्ट्राद्बलिम् 7,80. कुटुम्बात्तस्य तद्द्रव्यम् 11,12. fgg. कुमोदवर्हिः सकृदाहृता M. 8,151. दण्डकालाहृते ग्रावो Jāān. 1,97. 2,35. MBh. 3,3036. 14,115 (आनर्घ्य mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 4,43,24. कायादमात्मानम् Spr. (II) 2750. Vārāh. Bṛh. 27 (28), 22 (med.). काष्ठिकेभ्यः काष्ठम् Kātyāś. 6,44. धान्यार्थी सपलालानि धान्यान्याहरति Sarvadarśanas. 2,17. fg. Ind. St. 8,114. वक्त्रम् (so die neuere Ausg.) *in den Mund nehmen* Harīv. 11422. आहृत *was man in die Hand genommen hat* Vārāh. Bṛh. S. 51,1. 7. पशो दानम् *davontragen, erwerben* MBh. 1,3705. आहृत्य रक्ष्यमाणायि यत्नेन — वेश्या न योषा कस्य कदा स्थिरा *habhaft werden, gewinnen* Spr. (II) 1083. त्रीँल्लोकानाहरेयं क्रममाणस्त्रिभिः क्रमैः Harīv. 2725. R. Gorr. 1,32,13 (31,13 Sch.). 3,9,28. बलादसभाम् Baudh. P. 1, 14,28. *Jmd rauben, entführen* R. 5,80,13. 6,1,33. Harīv. 8014 (आनक्षे, अप° die neuere Ausg.). Kātyāś. 36,20 (med.). 113,27. Baudh. P. 1,10,29. 3, 3,7. गतप्राणं न चाहरेत् (मृत्युः) Spr. (II) 6834. आहृतं सुप्रभा चित्तं यस्य Kātyāś. 46,184. — 4) *empfangen* (ein Kind von einem Manne): समोत्रात्पुत्रम् M. 9,190. — 5) *heimführen* (als Gattin) R. Gorr. 2,30,8. Kumāras. 6,28. Kātyāś. 47,117. — 6) *sich anlegen, umthun:* कवचम् MBh. 4,1013. — 7) *für sich gewinnen* Kātyāś. 60,72. *bestechen* 42,91. *entzücken:* तरूपलावण्यविनयाहृतचेतन 38,20. — 8) *wegnehmen* so v. a. *ablösen, abhauen:* शिरः कायात् Harīv. 13200. Baudh. P. 1,7,38 (med.). — 9) *zurückziehen, abwenden:* इन्द्रियाणि विषयेभ्यः Sarvadarśanas. 177,6. — 10) *wegnehmen* so v. a. *verscheuchen, zu Nichte machen* Kām. Nītis. 3,11. — 11) *rauben* so v. a. *übertreffen:* आहरुस्तस्य रमणी स्थलारविन्दश्रियम् Kumāras. 1,33. नूपुरावाहृतराजहंसा Spr. (II) 1456, v. l. — 12) *zu sich nehmen, geniessen:* न परेणाहृतं भक्ष्यं व्याधिः खादितुमिच्छति Spr. (II) 3334. नाहारमाहरत् Kātyāś. 33,65. 65,6. Baudh. P. 3, 30,16. 7,12,18. 9,5,24. uneig.: गदाघापानि शक्रोऽथ नूनं परश्वधांश्च नः। पुरोधाहर्तुमिच्छति so v. a. *schmecken, kennen lernen* R. 5,81,51. — 13) *äussern, an den Tag legen:* प्रीतिम् MBh. 3,3023. संतापम् R. 3,68,39. क्रोधम् 4,33,39. 5,83,16. 7,69,1. Baudh. P. 3,18,13. मरुद्भ्राय द्वेषम् *gegen* 4,19,33. — 14) *sprechen:* वाक्यमिवाहृतम् R. 3,56,2. *nennen:* कृरित्याहृतः Baudh. P. 3,1,30. 3,6,19. अविज्ञाताहृत *genannt „der Unbekannte"* 4,29,3. — प्रमदाहृतक्रिय Kām. Nītis. 7,57 wohl fehlerhaft für प्रमदाक्षि°: आहृत Pañcat. 172,4 und आहरणीय (परिहरणीय hätte man erwartet) Dhūrtas. 70,13 ebenfalls fehlerhaft. Vgl. आहर्, आहरण, आहर्तृ, आहार fg., आहार्य, प्रहाहृत, शकुनाहृत, स्वयमाहृत. — caus. 1) *herbeischaffen —, holen lassen:* आसनम्, उदकम् Śāṅkh. Br. 14,9,4,7. *hintragen lassen nach* (acc.) Harīv. 6933. *herbeischaffen:* Feuer auf seine Stätte Ait. Br. 7,12. *verschaffen:* स्त्रियो भोगमेव कारयते TBr. 2,3,10,3. — 2) *erlangen:* आहार्यते भूतैः श्रियः Spr. (II) 7421, v. l. — 3) (*bringen lassen*) *erheben* (Tribut): धर्म्यं बलिम् M. 10,119. mit doppeltem acc.: करं राज्ञः MBh. 2,985. — 4) *zu sich nehmen, essen:* भोज्यानि MBh. 12,2035. 14,1291. आहारम् R. 5,34,12. ohne obj. Spr. (II) 1078. — 5) *äussern, an den Tag legen:* बलम् MBh. 1,6030. Harīv. 4728. शौर्यम् MBh. 3,867. 5,7497. R. 3,21,26. क्रोधम् MBh. 3,11490. 7,1961. 18,76. R. 4,13,44. 6,80,19. रोषम् Harīv. 6741 (आहारयामास mit der neueren Ausg. zu lesen). R. 1,60,19. 3,35,30. संत्रासम् R. Sch. 1,60, 20. भयम् 6,12,10. वाष्पम् MBh. 5,3130. — M. 8,114 ist हारयेत् gemeint. — desid. 1) *verschaffen wollen* Śāṅkh. Br. 12,7,3,1. — 2) *erlangen wollen*, mit पुनर् *wieder* s. w. MBh. 1,6247 (med.). — Vgl. आहिरीषु.

— अध्या *ergänzen, hinzudenken* (ein Wort): इत्यध्याहृत्य योज्यम् Nīlak. zu MBh. 3,10247 und zu Harīv. 2,3. — Vgl. अध्याहरण fg.

— अन्वा *nachholen, ergänzen:* यद्धीनं यज्ञस्यान्वाहरन्ति Śāṅkh. Br. 11, 1,3,6. Kāty. Śr. 25,5,15. विध्ये ऽन्वाहरामि ved. Citat beim Schol. zu P. 3,4,11. अन्वाहार्य *was zur Ergänzung dient*, so heisst insbes. m. (nämlich ओदन) *eine dem Ṛtvig gereichte Gabe von Reismus*, und das *Feuer, auf welchem dasselbe gekocht wird*, ist der पचन Comm. zu TBr. 1,66,12. Sāy. zu Ait. Br. 7,13. यद्वै यज्ञस्य क्रूरं यद्विलिष्टं तदन्वाहार्येणान्वाहरन्ति TS. 1,7,3,1. — Vgl. अन्वाहार्य.

— अपा *wegnehmen:* den Soma Śāṅkh. Br. 1,6,3,6 (med.).

— व्यपा *entziehen:* मार्दवं सक्तिता चैव शाल्वादस्य व्यपाहरत् MBh. 3,670.

— अध्या *mit hinzunehmen:* शर्कलम् TS. 6,3,3,3.

— अभ्या 1) *darbringen, darreichen:* अर्घ्यं तस्मै MBh. 1,2733. द्रव्याणि 12,890. गृहीत्वा फलमूलं च रामस्याभ्याहरन्वक्षु R. 7,60,9. — 2) *entführen, rauben* R. ed. Bomb. 1,61,7. — Vgl. अभ्याहार.

— उदा 1) *oben aufsetzen, — anbringen:* यत्नतीर्थे कुदेर्कविधानयोरुदाहृतेर्ते TS. 6,2,9,4. Śāṅkh. Br. 1,1,1,22. — 2) *ausheben, anführen, hersagen, aussprechen, citiren* Ait. Br. 7,12. प्रतीकान् Śāṅkh. Br. 14,9,1,3. Śikṣā Ca. 13,14,10. Gobh. 1,5,22. Āśv. Gṛhy. 4,1,2. 6,15. Nir. 11,2. TS. Prāt. 22,3. Maitrāyaṇ. 6,30. Prāt. 25,19. नोदाहरेदस्य नाम M. 2,199. स्वधाकारम् Jāān. 1,243. वैदिकम् M. 11,96. ओमिति Bhāg. 17,24. कुवाकुवेत्येवमुदाहृते Vārāh. Bṛh. S. 88,45. MBh. 12,4406. इति पौराणिको गाथां पुराणविद उदाहरन्ति Prāt. 13,5. Baudh. P. 5,18,7. भरतं वाक्यमुदाहरत् *sprechen zu* R. 2,113,15. उदाहृतं ते वचनम् MBh. 3,16791. तं प्रति न किमप्युदाहरति Pañcat. 117,15. यथादानानि *erzählen* R. 2,65,4. इतिहासम् MBh. 2,2214. 3,1029. Baudh. P. 10,88,13. 2,8,24. एतावदेव यथावृत्तमुदाहृतम् MBh. 3,2190. *aussagen* Spr. (II) 4815, v. l. पारिप्लवत्यभिज्ञानां कारणावमुदाहृतम् Naiṣadh. 14. यो ऽस्य दोषमुदाहरेत् *sprechen von* R. 2,21,5. R. Gorr. 2,28,1. गुणान् Mālatīm. 2,15. ज्ञानम् R. 2,90,7. 7,50,18. Sūçr. 2,398,19. Çiç. 15,11. Spr. (II) 493. Prāt. 5,19. 10,14. 111,10. Baudh. P. 1,4,32. वाग्भिरग्निमुदाहर *so v. a. preise* R. 1,62,19. यमुमिति द्वेष्टारमुदाहरेत् *mit Namen nennen* Āśv. Çr. 3,11. 19. पदेवगन्धर्वमुदाहरन्ति *bezeichnen als, nennen* Harīv. 8449. Rāgān. 13,69. Vikr. 88. Kātyāś. 55,36. Baudh. P. 5,14,2. यन्मत्कुलक्रममुदाहरम् Journ. of the Am. Or. S. 7,43. उदाहृतं शस्त्रधारणमत्युग्रम् MBh. 5, 7201. देवं वोत्रमुदाहृतम् Spr. (II) 2037. Bhāg. 13,6. 17,19. Harīv. 7771. Sūçr. 1,56,13. Kām. Nītis. 1,29. 8,4. Kir. 11,72. Vārāh. Bṛh. 27 (35), 21. Kātyāś. 44,88. Comm. zu TS. Prāt. 23,17. Hem. Jogaç. 1,40. Baudh. P. 1,13,24. 2,10,3. 3,12,46. 29,12. 3,14,15. 23,11. Sarvadarśanas. 87, 13. 170,17. 171,2. Naiṣadh. 67. Bhaṭṭ. 1,1. Bei den Grammatikern

als Beleg, — als Beispiel anführen Comm. zu AV. Prât. 4,76. fg. S. 261, 4, II, 7. 14. zu TS. Prât. 12,3. 13,13. 16,12. 23,4. zu P. 3,4,46. 7,3,94. Sidd. K. zu 6,1,63. AK. 3,6,6,39. — उदाकृत am Ende eines comp. nach मेणि u. s. w. gaṇa कृतादि zu P. 2,1,69. — Vgl. उदाकरण fgg.

— अभ्युदा *dazu anführen* Âpast. 1,32,23.

— उपोदा dass.: गाथाम् Pân. Gaṇ. 1,15.

— प्रत्युदा *Jmd* (acc.) *antworten* R. 1,52,10. धर्मं वः श्रोतुकामेन यूयं मे प्रत्युदाकृताः Bhâg. P. 6,10,7. in der Grammatik *ein Gegenbeispiel anführen* Schol. zu P. 8,2,104. — Vgl. प्रत्युदाकरण.

— समुदा *sprechen* Harîv. 8467. R. 4,38,25. प्रियाणि Spr. (II) 1706. Bhâg. P. 5,14,44. partic. °कृत *angesprochen, angeredet* Harîv. 3157. *gesprochen:* वाक्य R. 1,14,23. *ausgesprochen* MBh. 3,930. *worüber gesprochen worden ist, erwähnt* M. 1,50. R. Gorr. 1,4,8. *ausgesprochen* so v. a. *festgesetzt:* दाप्यो दण्डं च यो यस्मिन्कलहे समुदाकृतः Jâñ. 2, 223. *bezeichnet als, genannt* Âçv. Çr. 8,13,31 (das Metrum verlangt समुदाकृता). Sin. D. 93. तस्यां तु सर्वविद्यानामारम्भाः समुदाकृताः so v. a. *darauf beruhen, wie man sagt,* Kâm. Nîtis. 2,5.

— उपा 1) *herbeiholen, — schaffen, für Jmd herbeiholen, darreichen, darbringen, anbieten:* Futter dem Ross TBr. 3,9,4,3. Çat. Br. 4,6, 9,5. 10,5,3,2. रुचीषि 11,1,6,33. Lâṭj. 4,5,4. — Jâñ. 1,238. MBh. 14,1914. R. 1,52,2. 66,19. नावम् 2,52,5. 89,13. 52,63. R. Gorr. 1,53, 3. 2,56,20. 7,65,26. Çik. 31,6, v. l. Kathâs. 18,249. 34,128. 36,78. 38, 42. 43,171. 50,149 (med.). 56,36. Mâlav. P. 32,16. Râǵa-Tar. 5,110. 414. 6,127. Daçak. 88,9. गुर्वर्थम् MBh. 1,758. 14,1645. गुरोरर्थम् 1669. 13,445. हिताे यथालाभमुपाकृतार्थः Vasiṣ. Dh. S. 12,18. Bhâg. P. 3,22, 11. 4,19,9. बलिम् 6,19,7. 7,13,38. 10,81,3. रामे वन्यैः पशून् R. 1,51, 5. पितृपैतामहे राज्ये तव R. Gorr. 2,117,10. — 2) *mit sich nehmen* MBh. 12,5411. — 3) *Jmd in seine Gewalt bekommen, — gewinnen* Prab. 62,13. 63,7. Bhâg. P. 3,16,11 (einen Gott). 10,52,19. — 4) *vornehmen, unternehmen:* कर्माणि Nir. 2,20. कर्त्रम् AV. 10,1,19. *vollbringen, zu Stande bringen:* पयोमृत्युर्विषामश्च त्वया तुल्यमुपाकृतौ R. Gorr. 2,75,6. *anwenden:* यत्नम् MBh. 3,1353. — 5) *zurückziehen, ablenken:* ततस्ततो मनः Bhâg. P. 7,15,33. ऊर्ध्वमुपाकृतः *emporgetrieben:* Wind (med.) Kâraka 10,7. — 6) *ablösen, abhauen:* शिरांसि Bhâg. P. 1,7,14. 16 (med.). — Die augmentirten Formen können auch zu उप-कृ gehören.

— अभ्युपा (oder अभ्युप) *darbringen* MBh. 13,11.

— प्रत्युपा *Etwas aufgeben, abstehen von Etwas:* युद्धमना भव मा प्रत्युपाकृः MBh. 5,4549.

— समुपा *herbeiholen, — schaffen* MBh. 13,2770 (med.). R. Gorr. 2, 12,6. 32,34. Kathâs. 43,233. 248. Mâlav. P. 63,2. *darbringen:* यत्तं समुपाकरत् (hierher oder zu कृ mit समुप) R. 1,40,2. 7,90,15. MBh. 14,1930. Bhâg. P. 8,8,13. *sich darbringen, — opfern* Râǵa-Tar. 3,93.

— उपन्या *ein Geschenk darbringen:* वेदमधीत्योपन्याकृत्य गुरवे Gobh. 3,4,1.

— पर्या 1) *hinübergeben:* भगाय Çat. Br. 1,7,4,6. — 2) *umwenden, umdrehen, verkehren* Çat. Br. 3,4,4,26. 4,1,5,16. सुचम् 11,4,2,13. अपसलवि 13,8,2,6. ग्रामण्टीम् 14,1,2,3. Çiṅku. Ça. 7,5,5. 17,7,11. — Vgl. पर्याकार.

— प्रतिपर्या *wieder umwenden* Çiṅku. Ça. 7,5,5.

— प्रत्या 1) *an sich ziehen:* Glieder Çiṅku. Ça. 15,13,14. Nir. 14,4. कामान्कूर्मो ऽङ्गानीव MBh. 12,780 = Harîv. 1638. वस्त्रं शनैर्यसेत् । पुनः प्रत्याकरेत् *zurückziehen* Verz. d. Oxf. H. 234,b,3. *zurückhalten* 253, a, 20. die Sinne von der Sinnenwelt 236, b, 29. 31. Mârk. P. 39,42. Khândog. 108. Bhâg. P. 1,13,51. 6,2,40. — 2) *wieder an seine Stelle bringen, wieder holen, — aufnehmen, wiederbringen, — erlangen* Kâṭj. Ça. 2,8,5. Lâṭj. 5,12,15. 7,6,16. Pfeile 8,1,17. Kauç. 28. 40. MBh. 1, 488. 3,8655. 12,12969. 13,334. 4609. Harîv. 12927. R. Gorr. 1,41,18. यशः 6,100,20. Mâlav. 71,10. Kathâs. 22,192. 51,64. 113,43. Bhâg. P. 1,15,14. 8,17,15. 24,57. — 3) *wieder gutmachen:* पितुर्हि समतिक्रान्तं प्रत्याकरतु तद्भवान् R. 2,106,13 (113,8 Gorr.). — 4) *wieder aufnehmen* so v. a. — *fortsetzen:* कर्म MBh. 13,7332. अश्वमेधम् Harîv. 11122. — 5) *hinterbringen, melden* MBh. 5,7341. — 6) (*zurückziehen Entlassenes, Geschaffenes*) *zu Nichte machen* Harîv. 90. Liṅga-P. bei Muir, ST. 4, 325. — 7) Draup. 6,7. MBh. 2,2649. 3,2177 fehlerhaft für प्रव्या. — प्रत्याकरण fgg.

— व्या 1) *aussprechen, sprechen, reden* Ait. Br. 2,33. स भूरिति व्याकरत् TBr. 2,2,4,2. Çat. Br. 1,5,4,6. मानुषीं वाचम् 1,4,9. 7,4,20. वाचा 2,4,2,6. 3,2,1,38. 2,8. अव्रत्यम् 24. 14,4,2,1. Lâṭj. 4,3,20. मा मैवं (so ed. Bomb.) व्याकृ MBh. 2,776. 3,3047 (auch med.). R. 1,62,15. 65,20. 2,39,8. 100,26. मा मेति Râǵa. 15,84. Spr. (II) 2936. नाकालतो व्याकृते च बालः so v. a. zu *reden anfangen* 3540. यदा मुनयो ऽप्येवं व्याकृर्सि Vikr. 55,21. Kathâs. 24,74. 28,128. Prab. 70,4. तेषामतिव्याकृतानाम् (so ed. Bomb.) MBh. 1,5358. मुकृद्भिः सक् मार्गेषु R. Gorr. 1,79,24. *reden —, sagen zu Jmd* (acc.) MBh. 7,2150. R. 1,27,11 (28,10 Gorr.). 5,24,19. 7,59,6,6. Mṛicch. 151,11. Râǵa. 11, 83. Kumâras. 2,62. Pañcat. 4,6,8. Pañcat. 109,18. ed. orn. 21,5. तं वचसा Harîv. 4365. नामभिर्गीः so v. a. *bei Namen nennen* 3730. *Etwas sprechen, sagen, aussagen, mittheilen:* योमित्येकाक्षरं ब्रह्म Bhag. 8,13. नाम रुद्रः Bhâg. P. 6,2,7. तावत्सि पदानि Spr. (II) 7023. वचः, वाक्यम् MBh. 2,1401. 13,6649 (med.). R. 1,48,1. 2,72,38. 5,30,1. वार्तं नलम् MBh. 3,2091. न तं किं च न 2159. तस्मै स्वागतम् Mṛicch. 4. Râǵa-Tar. 1,224. कथाः R. 2,53,5. Kathâs. 24,81. स्वकर्म R. 2,72,46. यदि व्याकृते (so v. a. *beichten* sc. दुष्कृतं कर्म) विप्राणां धर्मवादिनाम् MBh. 13, 5337. हृदयान्तर्गतं भावम् R. 6,100,1. तस्य देशस्य विस्तरम् 1,34,22 (33,25 Schl.). R. Schl. 1,30,2. 2,11,2. उदाकरणानि *Beispiele geben* Comm. zu TS. Prât. 24,4, v. l. प्रभानुच्चरितान् so v. a. *lösen* MBh. 3, 12466. vom *Hervorstossen thierischer Laute* Kâṭj. Ça. 5,6,39 (अव्याकृत्य *keinen Laut von sich gebend*). P. 4,3,51. MBh. 3,15658. Harîv. 4262. 4334. कोकिलस्य वल्गु व्याकृतः R. 1,84,9 (66,10 Gorr.). 2,56,2. घोराः स्म पतिणो वाचो व्याकृर्सि 1,74,8. मधुरा वाणी कलम् 2,71,24. भैरवं रवम् (शिवा) 3,29,6. तुमुलाञ्छब्दान् die Râkshasa Bhaṭṭ. 15,2. partic. व्याकृत *a) gesprochen, gesagt, ausgesagt, mitgetheilt* VS. 8,54 Çat. Br. 1,5,4,6. Maitrâyaṇ. 6,6 (अ°). MBh. 1,3687 (व्याकृत ed. Calc.). R. 1,2,19. 8,28. 2,65,6. 3,66,13. Kumâras. 6,2. Mârk. P. 38,6. शाप 75,21. Bhâg. P. 2,10,33. 3,7,16. 6,16,50. Pañcat. 30,8. 168,12. 208,

20. — *b*) = व्याकृतवत् *Laute von sich gegeben habend:* सामानि मन्त्राणि व्याकृतानि मुक्तमुक्तः R. 7,41,18. — *c*) n. *das Reden, Rede:* अव्याकृतं व्याकृताच्छ्रेयः Spr. (II) 708. कर्मणा व्याकृतेन वा 4054. Bhāg. P. 2,10,19. 3,21,46. = संदेश *Auftrag* (Comm.) P. 5,4,35. von der *unarticulirten thierischen Sprache:* सारमासां मधुरैर्व्याकृतैः MBh. 3,9928. दर्दुर° Harīv. 3560. — 2) *sich vergnügen* (vgl. वि) Bhāg. P. 3,2,37. — 3) *ablösen, abhauen:* उत्तमाङ्गानि MBh. 6,3737 (वि° ed. Bomb.). — 4) Milav. 9,8 schlechte Lesart für व्यव°. — Vgl. व्याकरण fgg., व्याकृति, दुर्व्याकृत und सुव्याकृत (auch MBh. 5,3831). — desid. *aussprechen —, sprechen wollen* Śat. Br. 11,1,6,3.

— अनुव्या 1) *der Reihe nach aussprechen* Maitrāyaṇ. 6,6. — 2) *schmähen, verwünschen, verfluchen;* mit acc.: उप वा वदेदनु वा व्याकुर्यात् Ait. Br. 2,31. 7,18. Śat. Br. 1,4,3,11. 6,6,16. 2,1,4,19. 3,8,3,24. Pāraṇ. Gṛ. 17,4,3. 24,18,2. अनुव्याकारिणीनाम् (für °कार्यात्) Lāṭy. 2,1,10. Śāṅkh. Gṛ. 4,4. Kauç. 49. MBh. 8,3002. R. 6,80,35. हिरनुव्याकृते राज्ञः *bei zweimaliger Verfluchung* MBh. 1,6732. *Etwas als Fluch aussprechen* 16,53. — Vgl. अनुव्याकरण fgg.

— अपव्या *ungesagt sprechen* Śat. Br. 1,5,2,5. Kāṭy. Śr. 3,3,13.

— अभिव्या *aussprechen, hersagen:* इत्येव Śat. Br. 1,4,4,13. 19. गायत्रीम् TBr. 1,7,10,3. Śat. Br. 3,2,4,37. सत्यं वाचः 3,3. Ait. Up. 3,3. Kāṭh. Up. 1,3,3. 3,12,4. तदेतया वाचाभिव्याहृियते Kauṣ. Up. 1,6. अयः, यज्ञम् *besprechen* TS. 5,4,3,2. Śat. Br. 1,5,4,1. ब्रह्म 5,4,4,9. Śāṅkh. Br. 6,3. Śr. 1,14,17. 10,21,17. partic. °कृत *angesprochen* Śat. Br. 12,6,4,4. *ausgesprochen, gesagt;* n. *das Gesagte* Ait. Up. 3,11. R. 6,100,21. Bhāg. P. 2,3,13. 3,24,1. 8,9,13. mit gegenwärtiger Bedeutung Kāś. zu P. 3,2,188. Vgl. अभिव्याहार fg. — caus. 1) *aussprechen lassen* Kauç. 38. 69. — 2) *aussprechen:* ब्रह्म M. 2,172.

— समभिव्या *zusammen —, gleichzeitig aussprechen:* °कृत Kull. zu M. 3,11 (S. 178, Z. 7). Kusum. 33,14. — Vgl. समभिव्याहार.

— अनुसमभिव्या Wilkins, Gramm. 397.

— प्रव्या *sprechen:* प्रव्याहर लमये MBh. 12,1937. न स्म प्रव्याहरन्त्यपात् 10,244. बाष्पाकुलां वाचं प्रव्याहरन्तीं (प्रत्या° beide Ausgg.) 3, 2177. त्रिकूटः कन्दरमुखैः प्रव्याहरदिवाचलः R. 6,19,30. *unarticulirte thierische Laute ausstossen:* प्रव्याहरन्ति (प्रत्या° beide Ausgg.) क्रव्यादाः MBh. 2,2619. गोमायुः प्रव्याहरत् (प्रत्या° Draup. 6,7) 3,13673. partic.: एवं प्रव्याहृतं पूर्वं मम मात्रा so v. a. *vorhergesagt* MBh. 1,7210. वक्त्र *sprechend* 3,10057. Vgl. प्रव्याहार. — caus. *sprechen* MBh. 12,1928.

— समा 1) *zusammentragen, — lesen, — raffen, herbeiholen* überh. AV. 3,24,5. 5,29,12. Ait. Br. 2,9. सामान्यङ्गानि Lāṭy. 3,8,10. Nir. 1,1. मेलम् M. 2,31. MBh. 1,6951. वनात्काष्ठानि 5,7386. 6,3733. R. Gorr. 1,46,19. 6,96,2. Kathās. 22,187. 56,77. Bhāg. P. 4,15,13. Verz. d. Oxf. H. 1,a. Bhaṭṭ. 15,107. *versammeln* Siv. 3,3 (समाहृय st. समाकृत्य MBh. 3,16692). *zusammenfassen, zu einer Einheit vereinigen* Comm. zu TS. Prāt. 1,40. यत्समाकृत्य निर्वपेत् *zusammen, insgesammt* TBr. 1,7,2,1. पादान्समाकृत्य *sämmtliche Füsse* Kauç. 44. — 2) *Etwas wieder an seinen Ort* (loc.) *bringen* M. 8,319. — 3) *an sich ziehen, zurückziehen:* श्रोत्रादीनामविषये मनः पूर्वं समाकरेत् Harīv. 11922. — 4) *hinreissen, entzücken:* मनांसि Harīv. 8349. — 5) *ausziehen, ablegen:* वपुः । भूयः समाकरत्कन्थां नटो नाट्यमिवात्मनः Bhāg. P. 10,41,1. — 6) *einziehen* so v. a. *zu Nichte machen:* लोकान् Bhāg. 11,32. — 7) *ausführen, vollbringen:* क्रतुं तव R. 1,58,4. — समाकृत्य MBh. 6,4337 fehlerhaft für °कृत्य (so ed. Bomb.). — 8) partic. °कृत *a) zusammengetragen, — gelesen, herbeigeholt* MBh. 5,17. Harīv. 7183. Rāgat. 9,18. Pañcat. 171,11. H. 861. *versammelt* Harīv. 8787. स्वयंवरसमाकृतावलोक Rāgat. 5,64. Bhāg. P. 3,3,3. Bhaṭṭ. 8,63. *sämmtlich* (zugleich angezogen) Kathās. 72,25. *zu einer Einheit verbunden* AK. 3,6,2,16. — *b*) *angezogen, gespannt:* Bogensehne Kathās. 72,25 (zugleich *sämmtlich*). — *c*) *gesagt, mitgetheilt* Bhāg. P. 3,10,9. — *d*) fehlerhaft für समाकृत Kathās. 20,226. — Vgl. समाकर fgg., समाकार्य, समाकृति.

— अनुसमा *wieder zusammenfügen, — in Ordnung bringen* Kāṭh. Up. 1,5,5.

— अभिसमा *zusammenscharren:* शकृत्पिण्डम् Kauç. 54.

— उपसमा *zusammenbringen* Kauç. 87. 92. — Vgl. उपसमाकार्य.

— उद् ohne Avagraha AV. Paipp. 4, 62. उद्धरेद उद्धर P. 8,2,91. Vārtt. 4, Schol. 1) *herausnehmen, — heben, — ziehen, — fangen, — holen, — reissen, schöpfen:* बृहस्पतिरुदधरत्सर्मनो गाः RV. 10,68,4. AV. 3,2,15. 20,135,16. वक्काः Āçv. Gṛhy. 4,3,21. मेदः Kāṭy. Śr. 20,7,7. aus dem Wasser Śāṅkh. Śr. 16,16,8. अप्सु चारिणः शाकुनिकः सूत्रयत्येण Maitrāyaṇ. 6,16. Spr. (II) 1815. ग्रलान्मत्स्याविवोद्धृतौ (so ed. Bomb.). R. 2,53,33. MBh. 1,1115. 1119. कूपात् 3299. कोशवार्णवमग्नां मामुद्धरस्व 2,2293. 5,7009. 7,1441. R. 1,45,29. 2,76,4. व्यालं बिलात् Spr. (II) 6329. Vāsiṣṭh. Bhāṣ. S. 43,21. पादान्यङ्कात् 61,2. Kathās. 5,5. 10,25. 26. 127. धरागृहात् 40,68. Mārk. P. 98,5. Rāja-Tar. 5,89. 121. Verz. d. Oxf. H. 57,a,19 v. u. 160,b,9 (med.). LA. (III) 92,21. Bhāg. P. 1,3,7. 2,7,16. 4,26,16 (med.). 8,3,33. 9,11,29. 18,19. शरम् aus dem Köcher R. 2,63,22. 4,13,2. Rāgat. 2,30. 3,64. aus der Wunde R. 2,63,30. 64, 16. fg. Çiç. 107,23. उद्धताभिरद्भिः MBh. 14,1287. R. 2,22,28. निर्दाता कलम् Spr. (II) 5171. ग्रलोद्धृतमिवाम्बुजम् R. 2,30,25. 5,21,17. MBh. 3, 2666. fg. Spr. (II) 5777. गरुडेनेव क्रूरदिग्युद्धृतपन्नगा (so ed. Bomb.) R. 2. 47,17. 3,68,29 (उद्धरितुम्). तस्य वक्त्राद्भुजौ दत्तौ 5,3,18. 60,14. 6,84,1. काण्टकेन काण्टकम् Spr. (II) 1279. मणिं मकरवक्त्रादंष्ट्राङ्कुरात् 4283. कर्मणो ग्रटिः Bhāg. P. 3,24,17. भगस्य नेत्रे 4,5,20. शिरः so v. a. *ablösen vom Rumpfe* 22. पाणिम् *herausstrecken* aus dem Gewande M. 2,193. 4,39. रसोनादुद्धृतं रसम् *ausgesogen* Suçr. 2,398,18. 399,5. उद्धृतस्नेक् M. 4,62. भास्वानुद्धरिष्यन्नमान् Rāgat. 4,66. (भवनम्) विश्वकर्मणा कृतस्य त्रगतः सारं नवनीतमिवोद्धृतम् R. 5,12,27. निदानादुक्थशास्त्राद्य छन्दसां ज्ञानमुद्धृतम् Ind. St. 1,59. Kāṇ. 1. Verz. d. Oxf. H. 176,a, No. 399. Bhāg. P. 3,5,18. बिम्बादिवोद्धृतौ बिम्बौ *wie zwei von einem Bilde abgenommene Abbilder* R. 1,4,12. उद्धृत = समुद्धृत AK. 3,2,39. Namentlich *a) Speise ausschöpfen:* दर्व्या AV. 4,14,7. 12,3,21. 15,12,1. Śat. Br. 1,7, 2,12. देवेभ्यो मुद्धृत्युद्धरन्ति मनुष्येभ्यः 2,4,2,18. 14,9,4,18. Lāṭy. 4,9. 12. यन्नस्याय्यम् R. 4,61,10. उद्धृत P. 4,2,14. nach den Erklären zu P. ist *der Speiseüberrest in den Schüsseln* gemeint; vgl. auch Mān. 1. 98. nach Taṭa. 3,3,151 = मृष्ट *locker, wohlschmeckend.* — *b*) Gekochtes *herausheben* vom Feuer TS. 3,4,6,7. Kāṭy. Śr. 25,1,25. — *c*) Feuer *ausheben* aus dem Heerde: ब्राह्मण ग्रार्षेय उद्धरेत् TBr. 1,4,4,2. 1,5,4.

2,1,10,1. Ait. Br. 5,26. पत्न्याग्नावग्निमुद्धरेत् 7,6. 12. TS. 2,2,8,7. Çat. Br. 1,7,3,22. 11,8,3,1. Kâty. Çr. 4,13,1. गार्हपत्यादाहवनीयं ज्वलन्तम् Âçv. Çr. 2,2,1. die Asche Çat. Br. 2,3,3,2. — 2) *aufheben, in die Höhe halten:* den Arm Gobh. 1,2,1. M. 2,62. R. Gorr. 2,39,15. शीघ्रमुद्धिपतां पादौ त्वयार्थमिक्ष्वाकवः Spr. (II) 2470. ein Gefäss Âçv. Grhj. 4,7,18. TS. 6,5,10,3. Spr. (II) 3660 (Gegens. पातयितुम्). शय्याम् Âçv. Çr. 12,6,8. MBh. 3,11136. बाहुभ्यां शिलोच्चयम् R. 6,84,10. सिकताः Kathâs. 40,16. पिधानम् Râga-Tar. 5,75. स्तनोत्तरीयेण करोद्धृतेन Spr. (II) 6199. दंष्ट्रया गां समुद्रस्थाम् Harîv. 2135. 12284. R. Gorr. 2, 119,4. Bhâg. P. 3,13,36. 8,7,8. 9,19,4. सर्वराज्यधुराम् so v. a. *tragen* Pañkat. 26,4. लेखमुद्धृत्य शिरसा Harîv. 5971. उद्धृतपिच्छभार (so zu lesen st. उद्धत° der v. l.) 8787. उद्धृतकंधराः (उद्धत° beide Ausgg.) Râga-Tar. 3,127. उद्धृत = उत्तिष्ठ Med. — 3) *aus einer Gefahr ziehen, retten, befreien* AV. 8,7,23. Maitrâyan. 1,4. MBh. 3,140. श्वापदः प्रज्ञाः 141. 4,400. कृच्छ्रात् 5,850. Harîv. 4408 (उद्धृत्य st. उद्धृत्य der älteren und उधृत्य der neueren Ausg. zu lesen). R. 1,64,12. व्यसनात् 5,33,24. प्रुचः Vikr. 94. Spr. (II) 5327. Kathâs. 39,210 (aus der Gefangenschaft). तमसः Bhâg. P. 3,31,21 (med.). वेदान् Gît. 1,16. उद्धरित Pañkat. 144,7. 141,10. — 4) *wegschaffen, entfernen:* शिलाज्वालान्समन्ततः MBh. 12,2236. Bhâg. P. 9,19,4. *absondern* Sçuçr. 1,158,15. 164,20. वेदाश्चत्वार उद्धताः (= पृथक्कृताः Comm.) Bhâg. P. 1,4,20. स्वाहारात्किंचित् *nehmend* von Hit. 18,9, v. l. *auslassen* (Verse), *ausnehmen:* उद्धृत्य *mit Ausnahme von* Çat. Br. 13,5,1,18. Lâty. 6,2,10. 8,5, 23. Âçv. Çr. 4,13,7. 5,4,4. 12,15. 6,8,14. Kâty. Çr. 17,12,12. उद्धतोद्धार M. 10,35. — 5) *auslesen, auswählen, zum Voraus geben;* med. *sich nehmen* AV. 3,9,6. Ait. Br. 3,21. Çat. Br. 9,1,2,15. 13,3,4,2. पशोरुद्धारमुद्धरे TS. 6,3,10,6. उद्धारे ऽनुद्धृते M. 9,116. MBh. 14,1932 (उद्धरे mit der ed. Bomb. zu lesen). स्त्रियं ज्ञातो परास्यत्युत्पुमांसं रक्षति *vorziehen* TS. 6,5,10,3. *erheben* (eine Abgabe) R. 2,75,23. Spr. (II) 4409. Bhâg. P. 4,21,23. — 6) *in die Höhe bringen* so v. a. *beleben, anfachen, kräftigen:* सन्नमग्निम् Sçuçr. 2,75,4. Mân. P. 136,1. उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् Bhag. 6,5. Daçak. 76,2. वंशम्, कुलम् MBh. 1,4923. 3, 6012. Spr. (II) 4484. लोकान् MBh. 3,6014. 6015 (med.). स्वकार्यम् *fördern* Spr. (II) 400. चामरोद्धतसंपदः Spr. (II) 1790. — 7) *darbringen* Jâtâk. 1,159. Bhâg. P. 4,30,47. — 8) *vernichten, zu Grunde richten:* Personen MBh. 1,3821. 5719. ते चाप्यस्मान्समोद्धरेयुः समूलान् 3,221. 5,7432. 7449. R. 3,71,17. 6,16,82. Bhag. 4,66. 8,9. Çâk. 162. Spr. (II) 1279. 1815. Bhâg. P. 3,16,24. कुलानि Pârâç. 35,11. यथमानश्च शत्रुश्च यथा युगपदुद्धृतौ R. 6,100,3. भूतिम् Spr. (II) 2216. रागम् Daçak. 66,15. परप्रतियादितदूषणानि Comm. zu Gaim. 1,18. उद्धृत = उन्मूलित u. s. w. H. 1480. = क्षिप्त Taik. — 9) *nachweisen:* ग्रामम् Jâtâk. 2,28. *fg.* — 10) *theilen, dividiren* Golâdh. Khaṇḍ. 36. Comm. zu Âryabh. 2,37. — 11) *verkünden:* तथश उद्धरत्यः (उद्धरत्यः ed. Bomb.) Bhâg. P. 4, 16,21. — उद्धत्य Âpast. 2,25,12 fehlerhaft für उद्धृत्य. Vgl. उद्धरण, उद्धर्तृ fg., उद्धार fg., उद्धृति, घनुद्धृत fg. — caus. 1) *herausziehen lassen:* शिशोः प्रसूत्रा शल्यं निखातमुरसः Bhag. 9,78. — 2) *aufheben, in die Höhe halten* MBh. 3,10946. — 3) *für sich nehmen* MBh. 14,1928. — desid. *Jmd aus einer Noth befreien wollen* M. 4,251. MBh. 7,5810.

— अध्युद् *herausschöpfen:* पात्रैं AV. 12,3,36.

— घनुद् *nach — ausheben:* Feuer TS. 2,2,8,7.

— घपोद् s. घपोद्धार्य.

— अभ्युद् Schol. zu P. 6,2,49. 8,1,70. 1) *dazu herausnehmen,* namentlich Feuer zu einem andern, welches noch brennt, TS. 2,2,8,6. fgg. Çat. Br. 12,4,2,4. ज्ञायतमाहवनीयमभ्युद्धरेच्चेत् Kâty. Çr. 25,3,11. Çâṅkh. Çr. 3,4,1. Karç. 73. *dazu herausschöpfen* 74. — 2) *herausziehen:* निमज्जन्तम् Khaṇḍ. 122. रसातलात् Bhâg. P. 4,17,34. दुःखपङ्कार्णवे मग्नं दीनम् Spr. (II) 3277. नीलपटस्य लाङ्गूलं तोयमभ्युद्धरेद्यदि *schöpft* MBh. 13,5998. अभ्युद्धर्तवले: Jâtâk. 1,17. *herausnehmen, — holen* Kathâs. 29, 87. त्रीणि पदानि Çâṅkh. Çr. 2,14,5. — 3) *aufheben:* den Fuss Çâṅkh. Çr. 4,12,3. शक्तिम् MBh. 12,12322. — 4) *zusammenscharren:* काञ्चनं यत्नार्थमभ्युद्धृतम् Mṛicch. 61,3. *bestimmt zu* Westergaard. — 5) *wiedererlangen:* द्रव्यं हृतम् Jâtâk. 2,119. — 6) *in die Höhe bringen, aus der Noth ziehen, Jmdes Wohl fördern:* दीनान् MBh. 7,6051. आत्मानम् 12, 3311. विश्वम् Sin. D. 313,23. स्वार्थम् *seine Sache fördern* Spr. (II) 400, v. l. — caus. *aufheben:* कपालमभ्युद्धार्य भोक्तुमैच्छत् MBh. 3,13326.

— समभ्युद् *Jmd in die Höhe bringen, aus der Noth ziehen, Jmdes Wohl fördern:* ज्ञातिसंबन्धिमित्राणि व्यापन्नानि समभ्युद्धरमाणस्य MBh. 12,2459. — Vgl. समभ्युद्धरण.

— उपोद् in einer verdorbenen Stelle Kauç. 33.

— प्रोद् 1) *herausziehen:* घर्णवान्मक्षीम् Harîv. 4163. R. 2,110,4. वपुरूपं समास्थाय प्रोज्जहार रथोत्तमम् Harîv. 16309. घम्बु कूपात् Ṛ. 1, 23. — 2) *aufheben:* die Arme AK. 2,7,49. H. 845. — 3) *retten, befreien* Kathâs. 115,125. वेदे प्रोद्धृते LA. (III) 88,8.

— प्रत्युद् 1) *wieder herausziehen* Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 293. — 2) *retten, befreien:* जगतां प्रलयादुर्वीम्, मैथिलसुतां दशकण्ठकच्छ्रात् Raghu. 13,77.

— व्युद् 1) *vertheilend ausschöpfen, vertheilen:* घाणम्, घामिताम् TS. 1,6,9,4. पशु वै समोप्य व्युद्धारे (absol.) शुकुर्यात् Âçv. Grhj. 1,10,1. कुम्भीपाकात् Karç. 6. — 2) *herausziehen:* गां रसायाः, पत्नीम् Bhâg. P. 4,7,46.

— समुद् 1) *herausschöpfen:* mit dem Löffel Karç. 138. घन्नाग्रम् Mân. P. 34,103. *herausziehen, — holen:* घन्नः पुरुषम् Ait. Up. 1,3. निमग्नाञ्लोकसागरे MBh. 6,3556. रथं कूपस्य समुज्जहे पङ्गुगतौ यथा गाम् 8, 3819. 13,3456. Harîv. 10303. Verz. d. Oxf. H. 57,a, No. 103, Çl. 3. Kathâs. 36,100. aus einem Gefängniss u. s. w. 3,4. 37,90. प्रासादस्य स्तम्भम् R. 5,38,41. einen Pfeil aus dem Köcher Raghu. 11,26. aus der Wunde Spr. (II) 635. *herausnehmen:* निधानम् R. Gorr. 2,33,21. Vasiṣṭh. Bpr. S. 77,29. प्राणान् MBh. 3,16764. पद्मम् Kâty. Çr. 7,6,20. Kâraka 9,3. *ausziehen:* eine Wurzel 7. einen Baum, eine Pflanze MBh. 13,4554 (समुद्धत ed. Calc., समुद्धृत ed. Bomb.). Spr. (II) 90. Ṛ. 1,20. सारम् *das Beste* 6603. Bhâg. P. 1,1,11. 3,41. नवनीतम् Pañkat. 1,1,11. *zum Voraus für sich nehmen* (aus einer Hinterlassenschaft): समुद्धतोद्धार M. 9,116. — 2) *aufheben, in die Höhe halten:* वसुमतीम् MBh. 3, 10946. शक्राज्ञया वारिधराः सरागा गां बभ्यरुश्चैव समुद्धरन्ति Mṛicch. 84, 11. काकिनीम् *von der Erde aufheben* Spr. (II) 3001. — 3) *retten, befreien:* शापात् MBh. 13,4803. Pañkat. 1,9,24. *fg.* Pañkat. 188,1. — 4)

in die Höhe bringen, kräftigen, beleben: नष्टं वंशम् MBh. 1,4271. 3,5059. 16900. *in Ordnung bringen:* ein fliehendes Heer, ein zerbrochenes Schiff 8,2611 (समुज्जकु: ed. Bomb.). — 5) *zu Grunde richten, zu Nichte machen:* Personen MBh. 1,3821. R. 1,14,38 (38 Gorr.). Spr. (II) 90. तमः R. 6,104,4. — समुद्धृत = समुत्कीर्ण und अपनीत Mahâ. t. 222. Vgl. समुद्धरण fg. und समुद्धार. — desid. s. समुज्जिहीर्षु.

— उप 1) *bringen, darbringen, darreichen, vorsetzen* (namentlich Speisen), *zu kosten geben:* द्विरह्नो मनुष्येभ्य उप हरियते TBr. 1,4,9,2. 3,9,7. 9,4. 7,8,6. पूतमस्मा वा हरन्ति पूतमुप हरन्ति पूतमभ्यवहरन्ति 2,3,9,6. AV. 8,10,24. 9,6,20. 27. 40. 48. 12,5,35. Çat. Br. 5,1,2,5. भक्तम् Âçv. Çr. 2,1,4. बलिम् Gobh. 2,1,15. सक्तम् Kâty. Çr. 7,2,3. 21,3,13. Bhâg. 9,26. MBh. 1,133. 757. 4469. 7203. 3,8379 (हयमेधान्). Harîv. 8439. 8440 (nach der Lesart der neugren Ausg.). R. 2,82,7 (88,7 Gorr.). 87, 15. 115,25. 3,36,20. 4,51,24. 5,52,17. Suçr. 2,79,7. मातृभ्यो बलिम् Mânâ. 8,33. Mucc. 86, v. l. Ragh. 14,19. 16,36. 19,12. Çiç. 28,9. 31, 6, v. l. 113, 4. Varâh. Bṛh. S. 44, 11. 48, 23. Kathâs. 36, 28. 49, 180. Mârk. P. 18, 24. Râjat. 3, 50. Daçak. 87, 9. Bhâg. P. 1, 18, 21. 4, 9, 39. 20, 19. 8, 22, 14. 9, 18, 23. 10, 80, 20. 81, 3. 4. Hem. Jogâç. 2, 73. 3, 31. पादम् *reichen* Mâlav. 33, 11. — 2) med. *empfangen:* Speise: स्थेयानस्यैयसो नार्पयते TS. 5,2,9,2. — 3) *hinsetzen:* Gefässe Kauç. 81. — 4) *sammeln, zusammenraffen:* ein geschlagenes Heer MBh. 7,3303. *zusammentragen* Bhâg. P. 11, 29, 49 (med.). — 5) *anwenden:* सकृदेवोपहरेच्छस्त्रमाशु च Suçr. 1,50,9 (एवापहरे° gedr.). Arzneien 12,17. — 6) *Jmd vernichten* MBh. 2,861. — Die augmentirten Formen haben wir zu उपा gestellt. Vgl. उपहरण fg. und उपहार. — caus. *darreichen, vorsetzen:* Speisen MBh. 13,4738. R. 1,20,9. Suçr. 1,71,6. 240,12. — desid. *darbringen wollen:* राज्ञो रुद्राय MBh. 2,862. Vgl. उपजिहीर्षा.

— प्रत्युप s. प्रत्युपहार.

— समुप s. u. समुपा.

— नि *hingeben als Geschenk* oder *Lohn* AV. 6,117,2. निहारं (absol. oder subst.) नि हराणि ते VS. 3,50. पद्मवमत्ति प्रातःसवनाय तन्निहरति Pañcav. Br. 19,4,3. 4. — Vgl. नीहार.

— निस् 1) *heraus —, wegnehmen, hinaustragen, herausziehen, hinausschaffen:* vom Feuer weg ṚV. 1,162,12. पूर्वया द्वारा स्थूणाम् Çat. Br. 14,1,2,7. Kâty. Çr. 6,9,18. 9,13,28. 10,3,7. Lâṭy. 3,4,5. 6. 8,9,17. einen Todten Âçv. Çr. 6,10,1. M. 5,91, fg. 101. 10,55. Jâtâ. 3,15. MBh. 3,1547. 6,266. R. Gorr. 2,80,19. Bhâg. P. 5,18,3. 6,16,13. Râjat. Tar. 3,432 (निकृत्य st. निकृत्य zu lesen). पावकाज्जगतात् MBh. 1,4937. तृणं मासि चैत्रे वह्निभ्यात् 12,2642. दूरं निर्कृतमृद्धिः Râjat. Tar. 4,373. einen Pfeil u. s. w. aus der Wunde Spr. (II) 1549. Suçr. 1,26,6. 102,11. Ragh. 14,42. मुञ्जादिषीकाम्, आत्मानं देहात् MBh. 5,1690. देहाद्भूतात्मानम् R. 6,36,32. तस्यासून् MBh. 3,16485. Blut *entziehen* Suçr. 1,45,17. मुक्तं कायात् 75,17. 90,3. निर्कृतेर्पयेः so v. a. *mit dem Koth hinausgeschafft, — abgegangen* MBh. 13,3941. वस्त्राणां मलं निर्कर्तुम् 12,3404. durch eine Kur *fortschaffen:* पित्तम् Suçr. 1,23,9. विषम् Kathâs. 49,40. चन्द्रवितेशयोश्च मात्राः शाश्वतीः *entnehmen* M. 7,4. क्षितिभारम् *abnehmen* Bhâg. P. 11,1,2. — 2) *ausführen:* Waaren M. 8,398. — 3) *entfernen —, ausschliessen von:* पार्क्ष्यात् TBr. 2,3,2,1 (med.). *losmachen —, befreien von:* शल्यात् Çat. Br. 2,6,2,1 (med.). — 4) *von sich abstreifen, sich befreien von, Etwas loswerden:* स्वलोमानि MBh. 3,6033. कल्मषम् 9,902. दोषम् 12,11525. Daçak. 64,9. कर्माशयम् Bhâg. P. 10,46,32. यज्ञानर्थं शोकम् 54,49. 11,8,27. पापम् Kull. zu M. 11,169. — 5) *vertauschen, verwechseln:* वासांसि वासोभिः M. 8,396. — 6) *zu Nichte machen:* वंशं दवाग्निनिर्कृतम् Bhâg. P. 1,10,2. तत्रबन्धूनिर्कर्तुम् (besser निकृन्तुम् ed. Bomb.) MBh. 14,838. — caus. *hinaustragen lassen:* einen Todten Kull. zu M. 5,104. — Vgl. निर्हरण fgg. und निर्हार fgg. — desid. s. निर्जिहीर्षु.

— विनिस् *herausnehmen, — ziehen:* शल्यम् Suçr. 1,102,12. 347,20. *wegschaffen, entfernen:* शोलदोषान् MBh. 12,2407.

— परा *fort —, hinreissen:* बलिभिर्ये पराकृतात्मनसः Bhâg. P. 3,5,14.

— प्रतिपरा *hinüberreichen:* क्षेत्रे द्रोणकलशम् Çat. Br. 4,4,2,10. पद्मे पद्मम् 3,3,1,10.

— परि 1) *herumtragen, — geben, umherbewegen:* पर्यग्निमकृषत ṚV. 10,155,5. Liṭ. 8,8,16. सर्वतः परिहारमाग्निनं भवति Âpast. Br. 2,27. Çat. Br. 9,4,1,14. तीर्थेन TS. 2,6,9,4. भागाय Çat. Br. 1,7,4,6. 12. 2, 2,4,14. 3, 9, 2, 13. Kâty. Çr. 8, 9, 17. त्रिः तुरेण शिरः *umfahren* Pân. Gaṇ. 2,1. Gobh. 3,10,17. Kauç. 6. 44. 87. Âçv. Çr. 2,3,7. वसतीवरीः 4,12,8. — 2) *umschlingen:* दाम्ना AV. 6,103,2. पत्नी मुञ्जयोक्त्रेण Kâty. Çr. 2,7,1. Gobh. 2,10,32. यदा परिहरिष्यन्ति रेणोर्यानिव तन्तुना। यतस्त्रियानिव जले बालुभिर्मामका ऋणे॥ MBh. 5,2435. fg. यार्शाविषस्तवाङ्गेन परिकृतस्तया R. Gorr. 2,6,30. med. *sich umlegen:* मेखलाम् Çat. Br. 3,2,1,10. Kâty. Çr. 15,5,14. परिकृत n. *was man sich umgelegt hat, worin man gekleidet ist* Bhâg. P. 3,28,37. — 3) *bewahren vor* (abl.): मृत्योरात्मानं परिहराणि Kaṭh. Up. 2,22,5. — 4) *vermeiden, unterlassen; Jmd oder Etwas fern von sich halten, sich hüten vor, sich entziehen, entgehen;* mit acc.: वृथावाचम् Gorr. 3,5,11. ein Weib Kaṭh. Up. 2,13,2. प्रुल्कस्थानम् M. 8,400. MBh. 1,1798. शापम् 3813 (med.). 7761. वनं दूरात् 3,289. दोषम् 4,710. 6, 3221. Harîv. 578 (= Mârk. P. 106, 28). 11107. 11111. R. 2,73,5. Suçr. 1,15,8. 36,15. 52,20. 351,21. Mahân. 55,23. 121,7. Kâm. Nîtis. 7,54. Kumâras. 3,43. 71. Çiç. 40,16. 69,12 (परिकृतं st. परिकृतं zu lesen). 90,12. Çiç. Cr. 33,3. Milav. 54,11. Spr. (II) 1253. 1363. 2474. 2772. 3154. 3885. 4534. 4816. 6572. 6599. रागं परिकृत्य so v. a. *eine Ira et studio* Varâh. Bṛh. S. 106,5. Gîv. 5,3 (परिकृत st. परिकृत mit Harr. zu lesen). 9,4. 10,10. Kathâs. 23,48. 26, 11. 29, 194. 35, 57. 48, 120. 50, 163. 71, 204. Râjat. Tar. 1, 356. 4, 423. 670. तेन भृत्याः पार्श्वात्र परिजिहिरे (so ist zu lesen) 6,69. Prân. 103,11. Bhâg. P. 3,1,29. 5,14,29. 20,35. 7,6,18. 11,5,41. Pañcar. 3,9,12. Daçak. 80,3. Kâdap. 11. Pañcat. 261,5. ed. orn. 42,6. Hit. ed. Jones. 2666. Hem. Jogâç. 3,80. Schol. zu P. 1,3,69. Bhaṭṭ. 8,27. 13,5 (med.). *verschonen:* यया पुत्रश्च भर्ता च त्यक्तावेश्यार्थकारणात्। कं सा परिहरेदन्यम् R. 2,48,20. Spr. (II) 3968. Ragh. 10,42. परिहृत्येदम् *mit Ausnahme von diesem* R. Gorr. 2,9,22. परिहृत्य पञ्च क्रोशान् so v. a. *in einer Entfernung von* Varâh. Bṛh. S. 54,35. — 5) *als unhaltbar beseitigen —, abweisen* Pat. bei Goldst. Mân. 173,a. Mucc. 14. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 92. Verz. d. Oxf. H. 231,a,4. Muir, ST. 4,43,3 v. u. Madhus. in Ind. St. 1,19,2 v. u. Comm. zu Gaut. 1,11. zu Kap. 1,25. zu TS. Prât.

1,39. 3,1. zu Golâdh. Bhuvanak. 5. Halâs. 4,18. — 6) in der Gramm. *doppelt setzen, wiederholen* im Krama Comm. zu AV. Prât. 4,122. — Vgl. परिकर fgg., °कार, °कारिन् fg., °कृति. — desid. *Etwas fern von sich halten —, bemänteln wollen:* स्वार्थम् R. 2,23,9. Vgl. परिचिकीर्षा.

— अनुपरि *umkreisen:* अनुपरिकारं साद्यति *ringsum* TS. 5,3,4,3. 10,1.

— अभिपरि *im Kreise umherbewegen* Çat. Ba. 3, 8, 4, 6. वसतीवरी: 4,6,9,23. अनभिपरिकरन्नात्मानम् *ohne sich selbst zu umfahren* (mit dem Feuerbrand) Kauç. 44. — caus. med. *um sich her bewegen:* दीक्षिता अभिपरिकारयेरन् Âçv. Ça. 4,12,8.

— विपरि *versetzen, verwechseln* Çat. Ba. 2,5,2,36. शिमू ज्ञातौ Pañcat. Ba. 11,8,3. Ait. Ba. 3,11. Âçv. Ça. 3,13,8. सूके 8,2,12. 9,3.

— संपरि *Jmd umkehren lassen* MBu. 4,2130.

— प्र 1) *darbringen:* प्र तवसे प्रयो न हर्मि स्तोमम् ṚV. 1,61,1. — 2) *vorwärts bewegen, vorstrecken:* पादाविव प्रकरन्यमन्यम् ṚV. 6,47,15. अद्भ्या पशवो ऽङ्गानि प्र किरन्ति TS. 5,2,8,5. Çat. Ba. 6,7,2,13. यस्यामुशन्तः प्रकरां शेपम् *hineinstecken* ṚV. 10,85,37. — 3) *werfen, schleudern:* den Donnerkeil AV. 10,5,30. Ait. Ba. 2,1. 3. 31. TBa. 2,1,5,11. 3,2,4,2. मा मे प्रकाः (TS. Prât. 8,5) TS. 2,4,12,3. MBu. 3,10385 (प्राकरहम् mit der ed. Bomb. zu lesen). दुर्बले 14,247. Spr. (II) 4266. कुलिशं तस्मै Bhâg. P. 8,11,12. शरान् MBu. 3,1534 (med.). शम्याम् Âçv. Ça. 12,6,7. उदश्मानम् Kauç. 49. einen Stein 36. 46. fg. स्रुवम् Kâty. Ça. 2,6,12. तृणम् 4, 4,11. 5,3,26. Liṭ. 2,11,13. 3,8,6. Daçak. 87,14 (उपरि). *hinauswerfen:* पूर्वया द्वारा सदः Çâṅkh. Ça. 17,7,11. partic. प्रकीर्त AV. 4,12,7. Çat. Ba. 1,2,4,1. दण्ड *mit welchem ein Schlag geführt wird* 3,7,3,2. — 4) speciell *in's Feuer werfen* z. B. neuerzeugtes Feuer in den Âhavanîja Ait. Ba. 1,16. Çat. Ba. 3,4,4,23. 5,2,3,1. 11,8,3,1. Kâty. Ça. 5,2,4. 4,7. 8,7,2. 17,3,21. उपस्थितानि 26,6,19. — 5) *stossen, treffen, einen Schlag führen, losschlagen, einen Angriff machen* AV. 11,46,3. M. 8,300. प्रकृतो वः: MBu. 1,5082. 4,723. 5,7218. 7552. 6,2515 (med.). 13,1877. R. Gorr. 1,77,21. Kumâras. 3,70. Raghu. 5,58. विधिः 8,44. मामधिकृत्य ad Çiç. 84. 135. Milav. 28,6 (प्रकरसि zu lesen). Spr. (II) 4292. fg. Z. d. d. m. G. 27,32. Vasiṣṭh. Dhn. S. 46,77 (med. *sich schlagen, mit einander kämpfen*). Kathâs. 13,29. 49,27. Râja-Tar. 3, 401 (Bienen). 810. परस्परः Bhâg. P. 3,15,31. Pañcat. 149,1. Bhaṭṭ. 9,7. य उभाभ्यां प्रकरसि (eine Schlange) पुच्छेन चास्येन च AV. 7,56,3. परशुना Çat. Ba. 3,6,4,10. पादाभ्याम् 14,3,2,22. पादेन M. 8,280. दण्डैः Vop. 6,33. ललाटपट्टाभ्याम् Pañcat. 35,2. दशनैः Kathâs. 48,110. निशितेन चेतसा Spr. (II) 7124. der oder das Getroffene u. s. w. c) im acc. MBu. 4,1107. 6,4180. 13,1968. Harîv. 2577. 5621 (med.). 9309 (med.). R. 2, 69,14 (71,14 Gorr.). 3,34,27. 4,10,17. 38,18. Kâm. Nîtis. 9,68. Râja-Tar. 3,40. Bhâg. P. 1,17,6. Vop. 25,1. बाणः Sarvadarçanas. 18, 11. ततः प्रकृते गङ्गा गिरिकाननसंचयान् R. 4,44,68. हृदयम् Raja-Tar. 2,121. शतधा ते शिरो वज्री वज्रेण प्रकरिष्यति MBu. 2,2319. उत्तमाङ्गानि भल्लैः 14,2500. गदामुष्टितलादिभिः R. 6,83,15. पदा सव्येन गदाम् Bhâg. P. 3,19,9. कशया 5,26,15. तीक्ष्णाग्रङ्गाभ्याम् Pañcat. 74,3. चक्षुष्प्रकारैः 172,4. — *b*) im loc. MBu. 1,5988. Harîv. 3206 (med.). 5119 (med.). R. 4,1,26. 30,3. Mahân. 62,1. Bhâg. 2,62. 7,56. 11,84. 15,3. Çiç. 11. Spr. (II) 1064. रोगाः शत्रव इव देहे 6322. Kathâs. 14,74. 18,333. 26, 173. 41,45. 49,26. 147. Bhâg. P. 4,17,20. Prasn. 35,12. शरैः MBu. 3, 853. पदा मूर्ध्नि 15780. मुष्टिभिः Kathâs. 18,149. खड्गेन 28,31. कुक्किकोरसि Daçak. 94,14. — *c*) im dat. MBu. 5,7147. 7161. 7,6328. Bhâg. P. 6,11,17. — *d*) im gen. MBu. 11,690. 14,247 (med.). Spr. (II) 6207. Mârk. P. 132,28. कङ्कपत्त्रिभिः MBu. 5,7143. — partic. प्रकृत *getroffen* u. s. w. Harîv. 10926. उत्तमाङ्ग MBu. 10,572. impers.: पादेन प्रकृतं तया Sîtâ. D. 34,3. प्रकृतं तयास्याम् Raghu. 2,54. 14,46. Harîv. 4805. प्रकृते मति *wenn ein Schlag erfolgt* M. 8,286. सिंह° n. *ein Kampf mit* Raghu. 16,16. खड्ग°, ज्ञानु° *ganz* घटकर्णादि zu P. 6,4,19. — Vgl. प्रकर, प्रकरण, प्रकरणीय, प्रकर्तर् fg., प्रकार fg. und प्रकारिन् fgg. — desid. 1) *rauben wollen:* पाण्डुपुत्राणां तेजः MBu. 5,2483. — 2) *werfen wollen* Çat. Ba. 5,5,3,1. — 3) *einen Schlag führen —, einen Angriff machen wollen* MBu. 5,4624. 8,4406. अन्योन्यम् 7,3484. कृपाणेन प्रान्निकीर्ष्ये Daçak. 117,3. — Vgl. प्रनिकीर्षु.

— अनुप्र 1) *in's Feuer werfen:* den Jûpa Ait. Ba. 2,3. Streu TBa. 2,1,4,2. TS. 2,6,3,6. Kauç. 6. प्रस्तरम् Çat. Ba. 1,8,2,16. fg. 22. 2,5,2,44. तृणम् Kâty. Ça. 3,6,3. die Aranî Çâṅkh. Ça. 16,16,1. Âçv. Gṛhj. 4,2,22. Ça. 1,12,36. neues Feuer Çat. Ba. 2,5,2,19. 3,4,1,23. 4,6,2,10. Liṭ. 2,3,2. — 2) *einstecken:* das Glied (vgl. u. प्र 2) Saṅgîta-K. 32,a,10. — 3) absol. अनुप्रकारम् *mit einem Schlage:* खड्गमाकृष्य धर्मरमनुप्रकारं पातितवान् Pañcat. in Ind. St. 3,371. — Vgl. अनुप्रकरण.

— प्रतिप्र s. प्रतिप्रकार.

— संप्र 1) *schleudern:* वज्रं तस्मै MBu. 14,242. तस्य 250. — 2) *einen Schlag führen gegen, einen Angriff machen auf;* mit acc. MBu. 3,15167. mit loc. 4,1512. med. *auf einander losschlagen, mit einander kämpfen* P. 1,3,15, Vârtt. 2, Schol. MBu. 7,562. 1927. 8,441. act. dass. R. 3, 30,29. — Vgl. संप्रकार fgg.

— प्रति 1) *zurückwerfen, — drängen* AV. 2,19,2. चक्रुर्यै कृत्याम् 4, 18,4. 5,31,1. — 2) *stossen, tupfen auf:* प्रतीकारम् absol. त्रिः Kauç. 29. प्रलिम्पति 58. अ° 28. — 3) *zurückhalten, zuhalten:* das Ende Pañcat. Ba. 24,1,11. partic. °कृत *zurückgehalten:* अश्वो रश्मिना Çat. Ba. 13, 2,2,9. Kâṭh. Up. 2,9,7. लस्पूत्रनि° *befestigt mit* Kâty. Ça. 3,4,18. — 4) *zurückbringen* Liṭ. 2,7,9. — 5) *darbringen, übergeben:* मात्रे Bhâg. P. 10,7,30. *verschaffen* 3,5,47. — 6) med. *zu sich nehmen, geniessen:* सर्वाणि रू वा इमानि भूतान्यन्नं प्रतिकरमाणानि जीवन्ति Kâṭh. Up. 1, 11,9. — 7) *als* Pratihartar *hemmend einfallen in der* Sâman-*Litanei:* पञ्चात्तोत्रेण Pañcat. Ba. 7,7,3. AV. 9,6,45. TBa. 3,12,9,3. Ait. Ba. 5,23. Çat. Ba. 4,3,4,22. Kâṭh. Up. 1,10,1. प्रतिकृत आकृपते Çâṅkh. Ça. 17,17,13. Liṭ. 7,6,3. 7,30. — Vgl. प्रतिकरण fg. und °कार fg. — caus. *zurücknehmen lassen* Liṭ. 4,11,16. — desid. *erwiedern —, vergelten wollen:* वैरं प्रतिचिकीर्षता MBu. 11,852. wohl nur fehlerhaft für प्रतिचिकीर्षता.

— वि 1) *auseinandernehmen, trennen, öffnen; vertheilen:* ऊधः ṚV. 10,162,4. पदे Ait. Ba. 2,38. कीर्तिं बकुर्यो वि रं हिरण्ये *theile aus* AV. 5,20,9. Opfer Ait. Ba. 1,18. die Feuer: विकुरुत्यग्नीदग्नीन् Çat. Ba. 4,2,5,11. Vaitân. 17. fg. Ait. Ba. 1,28. आग्नीध्रात्सदस्यानग्नीन् 2,36. Âçv. Ça. 5,19,7. TS. 6,3,8,1. Çat. Ba. 12,9,3,13. P. 8,2,22, Vârtt. 1, Schol. Verz. d. Oxf. H. 32,b,41. Verse und Vortheile *zerlegen und*

versetzen: मूत्रानि Ait. Br. 6, 24. Âçv. Çr. 6, 3, 1. 2. 8, 2, 3. कृन्दांसि Çâṅkh. Br. 17, 2. Çr. 7, 13, 9. 12, 11, 6. यत्तौ रश्मी *gesondert halten* Ait. Br. 2, 37. यत्संन्युप्य विकरति TS. 5, 2, 6, 1. संभरकार मरुत्वतीयाणि विभरकार च कानिचित् *zusammenballen* und *vertheilen* Harîv. 6961. चापं विकरन्वै तलात्तलम् *aus einer Hand in die andere gehen lassend* MBh. 3, 695. — 2) *eintheilen* (nach dem Maass) Kâty. Çr. 21, 3, 30. — 3) *theilen, dividiren* Goldstücker, Jaimînîya. 36. — 4) *zupfen, zausen:* ये पाकशंसं विकरन्त एवैः ṚV. 7, 104, 9. — 5) *herausziehen:* (तम्) गर्भाद्विनकृतुः (so ed. Bomb.) MBh. 7, 2275. *ablösen, abhauen:* तुरैः — व्यकरवृत्तमाङ्गानि (so ed. Bomb.) 6, 2757. — 6) *entreissen, rauben* AV. 5, 29, 5 (विकृत). Spr. (II) 3478. Râja-Tar. 1, 370. — 7) *sich fortbewegen, gehen:* समे देशे Âçv. Çr. 12, 6, 8. — 8) *durchstreichen:* लोकान् MBh. 13, 1858. — 9) *sich vertreiben, zubringen* (die Zeit): रात्रिम् Gobh. 1, 6, 7 (med.). वनेषु तृतीयं भागमायुषः M. 6, 33. MBh. 3, 1375. 4, 17. R. 1, 77, 25. 2, 24, 15 (3 Gorr.). 34, 29. 54, 30 (32 Gorr.). 94, 26 (विचक्रिवान्). 5, 14, 69. क्व चायं विकृतस्त्वया कालः MBh. 1, 7. 3, 13595. — 10) *die Zeit verbringen,* insbes. *auf angenehme Weise, sich vergnügen, lustwandeln* (von Menschen und Thieren): स्थानासनाभ्यां M. 6, 22. 11, 224. स्त्रीभिरुत्तःपुरे सक्तः 7, 221. MBh. 3, 2236. 2238. 15571. 4, 27. 5, 7427. R. 2, 35, 24. 55, 33. 108, 9. R. Gorr. 1, 78, 15. 2, 27, 12. 42, 2. 3, 10, 15. 40, 32. 77, 33. 4, 43, 7. 6, 95, 21. Kâm. Nîtis. 7, 25. Mrcch. 61. Raghu. 6, 35. 57. 8, 39. 16, 54. Spr. (II) 2247. 2418. 3637. Z. d. d. m. G. 27, 96. Kathâs. 20, 102. 149. 22, 13. 26, 30. 28, 27. fg. 29, 20. 43, 129. Mârk. P. 51, 93. Râja-Tar. 1, 246. 3, 16. Bhâg. P. 1, 9, 32. 15, 13. 18, 32. 2, 7, 12. 28. 4, 6, 11. 29, 54. 5, 9, 18. fg. 16, 16. 24, 29. 8, 6, 17. 24, 31. 54. 9, 18, 8. किमग्र यथापूर्वमाकारार्थं न विकरसि Pañkat. 197, 22 (vgl. 24). von Buddha's *Aufenthalt an einem Orte* Burnouf, Intr. 286. — med. MBh. 1, 5576. 5702. 7713. 6, 456. Harîv. 8350. R. Gorr. 2, 65, 14. 3, 28, 11. 61, 42. Bhâg. P. 10, 37, 13. Pañkat. 197, 24. विकृतं (impers.) च वनान्तरे Mârk. P. 100, 21. यानि चापि त्वया सार्धं वनेषु च मृगन्धिषु। विकृतानि सुभृशं R. 4, 19, 13. — 11) *vergessen:* जाप्यम् Çiç. 49, 19. 53, 21. 80, 8. nicht in der beng. Recension. — Vgl. विकर fgg., विकार, विकारण, विकारिन् und विकृत fg. — desid. s. विचिकीर्षु.

— अभि वि *abtheilen:* ये धिष्ण्यवतां प्राचमङ्गारैरभिविकरेयुः Âçv. Çr. 5, 13, 6.

— परि वि s. परिविकार.

— संप्र वि *durchstreichen:* दिशः MBh. 3, 15667.

— सं वि *sich vergnügen, spielen* Bhâg. P. 5, 14, 36.

— सम् 1) *zusammentragen, — lesen:* ते यज्ञं संजकुस्ते यज्ञं संभृत्येत्युः Çat. Br. 3, 5, 4, 15. *herbeiholen:* नदीनदेभ्यो जलम् R. 4, 25, 30. *zusammenwerfen, vermischen* Kâty. Çr. 2, 5, 15. Feuer 4, 8, 15. पर्यायान् Lâṭy. 6, 5, 22. 6, 9. Nâg. Tîp. Up. in Ind. St. 9, 125. 140. — 2) *zusammenlegen, — stehen:* पदः Çat. Br. 3, 8, 2, 6 (vgl. संतरां पादको हरेत् ṚV. 1, 33, 19). चरणावुभौ Mârk. P. 39, 19. कूर्मो ऽङ्गानि Bhâg. 2, 35. MBh. 14, 1151. Mârk. P. 68, 22. उष्णीषम् Çat. Br. 5, 3, 5, 23. वेणिम् Sin. D. 162, 6. *zusammenballen:* संकृत्य (vielleicht संकृत्य zu lesen) मुष्टिम् MBh. 3, 11517. संभरकार मरुत्वतीयाणि विभरकार च कानिचित् Harîv. 6961. संकृत्यैकार्णवं सर्वं त्वं शोषयसि रश्मिभिः MBh. 3, 189. संकरस्व स्वयमात्मानमतमना *ziehe dich zusammen, schrumpfe ein* 11277. मनः संकृत्य विषये so v. a. *concentriren* 13, 4324. — 3) *zurückziehen, einziehen:* eine gezückte Waffe MBh. 3, 772 (med.). 10, 687. Harîv. 10727. R. 5, 82, 16 (med.). Çiç. 131. 94, 20, v. l. Uttarâ. 109, 16 (148, 12). Mâlav. 37. Kathâs. 45, 294. 50, 58. Bhâg. P. 1, 7, 22. वार्षिकं संनकारेन्द्रो धनुः Raghu. 4, 16. संकृतकार्मुकज्य 12, 102. Truppen Sin. D. 158, 13. einen Vorhang Mâlav. 22. इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः Bhag. 2, 58. Verz. d. Oxf. H. 257, a, 2. die Augen, den Blick so v. a. *nicht mehr hinsehen* MBh. 14, 1338. R. 2, 42, 1 (41, 1 Gorr.). 5, 2, 36 (med.). Kumâras. 7, 75 (vgl. Raghu. 7, 20). Çiç. 44. रूपम् *eine angenommene Gestalt wieder ablegen* MBh. 14, 1695 (med.). Harîv. 3326. 3328. संकृत्येव शशी ज्योत्स्नाम् R. 3, 69, 1. नहि संकृते ज्योत्स्ना चन्द्रशाण्डालवेश्मनि Spr. (II) 3755. — 4) *hemmen, einstellen, unterdrücken:* संभारान् R. 2, 21, 49. घभिषेकविधानम् 22, 11. उत्सवो मस्तौ बुद्धिं मरणे 4, 61, 22. मन्त्रपाठादि Kathâs. 37, 75. अमृतसाधनम् 41, 19. अमृतक्रियाम् 25. पुद्गम् 47, 92. 48, 119. स्वमायाम् 92, 6. तपः 40, 31. वृत्तीः Pañkat. 98, 1. तेजः MBh. 1, 1263 (med.). Bhâg. P. 7, 8, 31. कामान् MBh. 14, 339 (med.). 1151. बलमात्मनः Harîv. 3783. वचः Raghu. 10, 33. कोपम् MBh. 3, 2252. क्रोधम् Kumâras. 3, 72. बाष्पम् R. 3, 28, 4. भयम् Mâlatîm. 125, 1. दुःखम् Kathâs. 73, 216. असंकृत ununterbrochen Uttarâ. 1, 16. fg. (2, 9. 10). — 5) *absorbiren,* zu *Nichts machen* (häufig im Gegensatz zu सृज् *entlassen, schaffen*) Çvetâçv. Up. 5, 3. Nâg. Tîp. Up. in Ind. St. 9, 98. कालमर्जुनबूयेण संकरसमिव प्रजाः MBh. 4, 1726. 7, 2041. 2051. 2112. 12, 9219. 13, 859. 6014. Raghu. 13, 6. Spr. (II) 7495. Kathâs. 28, 171. Mârk. P. 46, 17. Bhâg. P. 1, 15, 26. 3, 4, 29. 11, 1, 10. Verz. d. Oxf. H. 23, b, N. 3. 80, a, 27. Muir, ST. 4, 299, 22. Kusum. 24, 17. med. MBh. 3, 1644. 5, 5025. 7, 2020. 2115. 12, 9222. Spr. (II) 1696. Bhâg. P. 11, 1, 5. Pañkat. 1, 14, 13. संकृत Harîv. 4420. R. 2, 114, 7 (125, 8 Gorr.). Varâh. Bṛh. S. 48, 43. Râja-Tar. 4, 456. 602. Bhâg. P. 9, 5, 7. Pañkat. ed. orn. 56, 15. — 6) *wegraffen, rauben:* पत्तस्यायुः Ait. Br. 3, 11. धर्मम् Spr. (II) 5297. — 7) *an sich ziehen:* गुणान् *Faden* und *Tugend* Spr. (II) 7307. नृपद्वीपा घनस्येव प्रजाभ्यः संकरत्वपि 3809. वर्तूंषि सर्वलोकस्य MBh. 6, 2398. सर्वाः प्रकृतयः (= प्रकृतीः) — सर्वमानप्रदानाभ्याम् 1, 5696. *für sich nehmen* M. 8, 188. fg. 9, 113. 123 (med.). Harîv. 6797. पैतामहं मरुत्वतं तथा त्रैलोक्यसंकृतम् (v. l. in der neueren Ausg.) 12730. — Vgl. संकर fgg., संकार fg., संकारिन् fg., संकृति, संक्रियमाणबुसम् und °यवम. — caus. *schneiden* (Haare, Nägel), med. *sich schneiden:* षड्लोमानि Gobh. 3, 1, 4. रोमनखानि Kauç. 80. Kâraka 1, 8. — desid. *zusammentragen wollen:* यज्ञं संभरति सं च विकीर्षति Çat. Br. 3, 8, 4, 2. — intens. *oft zu Nichts machen:* यो ऽखिलं जगत्। चरोकर्ति चरीभर्ति सं जरीकर्ति लीलया Verz. d. Oxf. H. 160, b, 4. 5.

— अनुसम् 1) *nachziehen:* क्रमते दक्षिणेन पादेनानुसंकरति सव्यम् Kauç. 6. — 2) *zusammenfassen* Lâṭy. 2, 5, 15. 7, 6, 16.

— उपसम् 1) *zusammentragen, herbeiholen* MBh. 1, 7206. 12, 8418. — 2) *zusammenziehen, an sich ziehen:* तृणगुल्मलतापुंका तृणस्यास्य गवात्मानमुपसंकरति Çat. Br. 14, 7, 2, 4. Kauç. 22. कूर्मो ऽङ्गानि MBh. 14, 1302. उपसंकृतदिव्याङ्ग Pañkat. 3, 14, 3. उपसंक्रियतामात्मा so v. a. *nimm dich zusammen* Mârk. P. 66, 31. *zusammenziehen* so v. a. *annähern, in Berührung bringen:* विकृष्य वर्त्सेषु TS. Prât. 2, 18. पदुपसंकरति त-

त्कारणम् 32. उपसंकृततर 14. 16. 18. नात्युपसंकृत 12. — 3) *kurz zusammenfassen, resumiren* Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 15. 82. 90. 115. 144. 283. Kull. zu M. 1,57. 12,116. Comm. zu Bhâg. P. 12,2,44. — 4) *zurückziehen, einziehen:* eine gezückte Waffe Çiç. 94,20. Mârk. P. 131, 24 (med.). 132,3. 11. 14 (med.). केतुमप्यागते क्षयी नोपसंकृते द्रुम: Spr. (II) 573. इन्द्रियाणि MBh. 14,1302. रूपम् *eine angenommene Gestalt wieder ablegen* Bhâg. P. 10,3,20. — 5) *hemmen, einstellen, unterdrücken* MBh. 7,2064. fg. कृपयेवोपसंकृत्य भासमस्तं पयो रवि: Kathâs. 73,241. Mârk. P. 103,18. गिर: Bhâg. P. 1,9,30. उपसंकृतामर्षरोषवेग 5,25,6. 11,13,33. प्रेक्षणम् Kathâs. 45,229. उपसंकृतगान्धर्वा (so ist zu lesen) *den Gesang eingestellt habend* 120,122. वनवासनिर्बन्धम् Mârk. P. 109, 46 (med.). उपसंकृतदेहमनोव्यापार Kull. zu M. 1,53. सत्त्वमतरम् *unterdrücken* so v. a. *nicht aussprechen* Pat. zu P. 3,2,89. द्वादशवार्षिकस्योपसंकृतत्वात् so v. a. *weil davon nicht mehr die Rede ist* Kull. zu M. 11,32. — 6) *absorbiren, zu Nichte machen* MBh. 1,1236. Mârk. P. 46,15. °कृत Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,91. MBh. 16,133. Mârk. P. 45,14. 46,2. 48,2. Muîr, ST. 1,172, N. 25. fg. Bhâg. P. 5,9,6. 14,20. 7,8,49. 9,23,27. Sarvadarçanas. 76,15. — 7) wohl *in sich enthalten* Schol. zu P. 5,1,52. — Vgl. उपसंहार fg. — desid. zu *Nichte machen wollen* Bhâg. P. 5,25,3.

— समुपसम् *kommen, einstellen:* °कृतसंप्रहार Uttarar. 106,6 (144,4).

— प्रतिसम् 1) *zusammenziehen*, zum Meere wird gesagt: प्रतिसंक्षिप्तमात्मा Harîv. 6529. — 2) *zurückhalten:* यस्त्वया पातालमुखे पतत्तं पाणौ गृहीत्वा प्रतिसंकृत MBh. 3,15642. *zurückziehen, einziehen:* eine gezückte Waffe 5,7296. 14,2024 (प्रत्यसंकृत्). 2033. Ragh. 3,64. 9,57. 16,80. Çiç. 11. 7,3. Prab. 55,12. eine abgeschossene Waffe MBh. 10, 706. चनु: so v. a. *nicht mehr hinsehen* Ragh. 15,78. — 3) *hemmen, einstellen, unterdrücken:* प्रणयम् MBh. 3,14668. कोपम् 6,2612. सैरम्भम् 12,8301. गिरम् Çiç. 2,15. कर्मणयप्रतिसंकृते R. 2,22,10. — 4) *absorbiren, zu Nichte machen* MBh. 12,8275. Mârk. P. 46,4. Sin. D. 326,16. — 5) *sich zusammennehmen* MBh. 5,4500. — Vgl. प्रतिसंहार. — caus. *einstellen lassen:* याभिषेचनिकीं क्रियाम् R. 2,22,26. — desid. s. प्रतिसंनिक्षीर्षु.

2. कृ, कृणीर्ते *grollen, böse sein Jmd* (dat.): कृणानस्य मन्यु: RV. 1, 25,2. 2,33,15. Varuṇa 7,86,5. 104,14. 8,92,12; vgl. अकृणान. In der Stelle तमकृणादसुरमायया (Comm. स्ववशे कृतवती) Çâṅkh. Br. 23,4 scheint etwa अकृणात् *brachte zu Fall* gelesen werden zu müssen. — Vgl. कृणीय्.

— अभि *Groll hegen, eifersüchtig sein auf* (acc.) RV. 8,2,19.

3. कृ, कीर्पति s. कृप्.

कृ (von 1. कृ) 1) adj. (f. या, seltener ई) am Ende eines comp. P. 3,2,9. 10. *a) tragend; s.* कवच°. — *b) treibend, führend:* ऊर्ध्वभाग° *aufsteigend* Suçr. 1,144,14. अधोभाग° 19. यथयकरा इन्द्रियाणा: *auf Abwege* Kir. 5,30. — *c) hinbringend, befördernd:* दुष्प्रवृत्ति° *eine schlechte Nachricht zu* (प्रति) Ragh. 12,51. — *d) entführend, raubend, Entwender:* क्ष्म° R. Gorr. 1,42,25. दाराहार्य° R. 4,17,38. Varâh. Bṛh. S. 15, 26. Spr. (II) 2584. Kathâs. 32,72. Bhâg. P. 3,18,11. 9,8,9. uneig.: मनङ्गाङ्ग° MBh. 14,211. प्रज्ञा°, शक्ति° Spr. (II) 6773. ओजित° Kathâs. 39,30. प्रतापायु:श्री° Râjat.-Tar. 6,257. *entziehend* so v. a. *übertreffend:* वज्रोद्यविभकुम्भविध्मकरो Spr. (II) 5896. — *e) entfernend, verscheuchend, vertreibend* (ein Uebel), zu *Nichte machend?* अघ° Kathâs. 32, 51. आर्ति° 42,82. Râjat.-Tar. 3,37. Bhâg. P. 1,8,42. 3,4,4. 8,27. 4,10, 30. आमृत्यु° 8,9,21. Pañcat. 1,4,15. मद्दर्प° Spr. (II) 2454. रतिखेद° Sin. D. 19,18. शोक° MBh. 13,903. श्रम° Kathâs. 84,2. सङ्क्लेश° Bhâg. P. 3,25,24. सर्वपाप° Jâtâ. 3,209. MBh. 3,13414. पङ्क° MBh. 12, 10465. R. 1,40,26. अरि° MBh. 1,2659. पृथु° (so ed. Bomb.) 14,210. त्रिपुर° Harîv. 10565. Spr. (II) 1525. सर्वभूत° Suçr. 1,181,20. Pañcat. 4,3,59. = नाशक H. an. 2,170. — *f) für sich nehmend, erhaltend:* ब्रह्मदाय° M. 3,3. शरीरार्धकरा रुद्रस्य Kumâras. 1,51. — *g) hinreissend, entzückend:* मनोदृष्टि° R. 2,96,4. — 2) m. *a) Divisor* Colebr. Alg. 8. 13. 85. Journ. of the Am. Or. S. 4,358. Comm. zu Âryabh. 2,27. — *b) Hengst* (!) Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1,442. *Esel* Çabdârthak. bei Wilson. — *c) Feuer* ebend. und H. an. — *d) der Zerstörer* als ein N. Çiva's AK. 1,1,4,29. 3,4,2,32. 19,122. 22,208. H. 198. H. an. Hall. 1,11. Âçv. Gṛhy. 4, 8,19. Çvetâçv. Up. 1,10. M. 12,121. MBh. 1,4371. 7970. Harîv. 7198. 7455. 10365. 10632. fg. 10637. R. 1,44,9. 45,27. Mṛcch. 7. 45. Ragh. 4,32. Kumâras. 1,51. 7,44. zu Çik. 32,5. Vikr. 48. Mâlav. 46. Spr. (II) 203. 986. 2303. 6859. 7173. 7369. Sin. D. 54,2. Varâh. Bṛh. S. 43,52. Kathâs. 1,45. 18,213. 27,142. Prab. 54,12. Râjat.-Tar. 1,1. 72. 90. 2, 71. 134. 3,1. 451. 482. 4,38. Bhâg. P. 1,2,23. 2,6,31. 7,39. 7,10,66. Verz. d. Oxf. H. 27,*a*,4. 38. 46,*a*,2. 80,*a*,22. 276,*b*,14. Sarvadarçanas. 98,13. Pañcat. 63,7. Vop. 3,7. Hall 126. unter den 11 Rudra Gaṇas. in Verz. d. Oxf. H. 82,*a*,25. 190,*a*,38. MBh. 12,7585. Harîv. 166. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,25. — *e)* N. pr. *α)* eines Dânava MBh. 1,2659. Harîv. 203. 2283. 12939. 14284. — *β)* eines Affen R. 5,13,5. 7,5,42. — *γ)* eines Autors Verz. d. Tüb. H. 13. eines Lexicographen Med. Anh. 1. eines Sohnes des Kubera Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. — कृ Râjat.-Tar. 1,90 fehlerhaft für कार्; vgl. Bhâg. P. 10, 35, 4. — Vgl. अंश°, अश्मरी°, कवच°, क्षत°, ख°, गो°, ग्रन्थि°, तमो°, ताप°, घन°, घी°, पश्यतो°, पाप° (auch Bhâg. P. 4,1,46), पित्त°, पूयदन्त°, पृथ्वी°, प्राय°, प्राण° (auch MBh. 7,2123), बीज°, भगनेत्र°, भाग°, भार°, भूत°, भ्रान्ति°, मदन°, मनो°, मूल°, यशो°, रजो°, राक्षमूर्ध°, रिक्थ°, रोग°, वात°, वार्ता°, विष° (als adj. auch Suçr. 1,180,13. °करी विद्या MBh. 1,1206), शक्ति°, शासन°, शील°, शून्य°, श्री°, सत्र°, संदेश°, सर्व° (vom Tode Buâg. 10,24), सर्व°, सु°, सुधा°, स्मर°, स्मृति°.

कृक m. *a rogue, a cheat; a person of reflection;* ein N. Çiva's Wilson nach Çabdârthak. *Divisor* und *Division* ohne Angabe einer Aut.

कृकुमारठाकुर m. N. pr. eines Autors Notices of Skt Mss. 1,136.

कृकेश m. schlechte v. l. für कृकिकेश VP. 2te Aufl. 2,207.

कृक्षेत्र n. N. pr. eines dem Çiva geheiligten *Gebietes* LIA. 1,187, N. 1.

कृगोविन्द m. N. pr. eines Autors: °तन्त्रवागीश Notices of Skt Mss. 1,161. °वाचस्पति 117.

कृचापारोपण n. Titel eines Schauspiels Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, No. 289.

कृचूडामणि m. Çiva's *Diadem* d. i. *der Mond* Buṭṭaprakâça im ÇKDn.

कृन्नित् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 127, *b*, No. 228.

कॢप्त (von 1. कॢप्) 1) adj. (f. आ und ई) zur Erklärung von कृति् Nir. 4,11. von कृषि 7,24. von वधु 9,28. von धर्म 11,42. a) *führend, enthaltend:* दुग्धकॢप्तिणी (lies °कॢप्णी) °नाडी Suçr. 2,105,12. बलिकॢप्णी दर्वी Âçv. Gṛhj. 2,1,2. — b) *entführend:* तत्प्राण° R. Gorr. 2, 68,4. *vertreibend, wegnehmend:* ज्ञो° Kauç. 13. तृड्° Suçr. 1,199,1. कॢप्णो (voc. f.) दुरितान्धकारवृन्दानाम् Kathâs. 78,91. — 2) n. = कृति Taitt. 3,3,142. H. an. 3,232. Med. p. 87. a) *das Bringen, Holen:* पानीय° MBh. 3,17264. Râjá-Tar. 4,717. *das Darbringen:* भक्त° Kâtj. Çr. 2,5,29. प्रवृत्ति° *das Einziehen von Nachrichten* Hariv. 10026. — — b) *das Verbringen:* des Feuers Kâtj. Çr. 5,4,5. Kauç. 80. पात्र° Kâtj. Çr. 10,6,24. सावसथ्य° 18,6,3. 25,8,10. — c) *das Entziehen, Entwenden, Rauben, Entführen:* रसस्य AV. 1,28,3. प्रसह्य कन्याकॢप्णम् M. 3,33. रत्नानाम् 222. fgg. 227. 11,163. Jâjñ. 2,155. 3,220. MBh. 1, 316. 362. 3,6012. R. 1,3,20. 3,7,31. 40,32. 52,52. 6,8,28. Ragh. 11, 74. Spr. (II) 466. 747. 2099. 4310. 5784. 5991, v. l. 6940. 7325. 7367. Vaitân. Bhp. S. 15,7. 90,8. Weber, Rîmây. Up. 356,1. Kathâs. 64,84. fg. 121,241. Mârk. P. 15,40. Râjá-Tar. 4,72. 638. 6,197. Sarvadarçanas. 9,7. Hariv. 5,57. ममासूनाम् Spr. (II) 3375. मत्प्राण° Kathâs. 34, 22. Bâlar. P. 2,7,27. am Ende eines adj. comp.: कृतसर्व° MBh. 13,1629. — d) *das Erhalten, Bekommen:* क्षेमाप्तिकॢप्णैषिन् Kathâs. 25,235. — e) *das Entfernen, zu-Nichte-Machen:* नासार्बुद° Suçr. 1,23,6. सम्बु° Vaitân. Bhp. S. 12,2. भूभार° Bâlar. P. 10,50,9. आत्मीयदोष° Spr. (II) 2776. दुर्जनचित्तवृत्ति° 4189. वर्ण° Râjá-Tar. 5,180. — f) *das Dividiren, Division* Colebr. Alg. 8. Comm. zu Âryabh. 2,32. fg. — g) *Hochzeitsgeschenk* AK. 2,8,2,23. Taitt. H. 320. H. an. Med. MBh. 1,401. 7093. 8004 (कॢप्णी ed. Bomb.). — h) *das einem Beschäler gereichte Futter* (Comm.) P. 6,2,85. — i) *Arm* H. an. Med. — Vgl. उद्°, काल°, प्रसह्य°, प्राशित्र°, बलि°, वाउव°, प्रक्र°, सर्व°.

कॢप्णभाग adj. *berechtigt zu nehmen:* die Manen TBr. 1,3,10,7.

कॢप्णाकॢप्तिका f. *das Herbeibringen der Hochzeitsgeschenke* (Titel des 221ten Adhjâja im 11ten Buche des MBh.) MBh. 1,216. °कॢप्तिक n. ed. Calc.

कॢप्णाकॢप्ण (कॢप्ण + आ°) n. dass. MBh. 1,363.

कॢप्णीय partic. fut. pass. von 1. कॢप्. P. 6,1,217, Schol.

कृतेजस् n. Çiva's *Same* so v. a. *Quecksilber* Râgân. im ÇKDr. — Vgl. कृबीज.

कृदग्धमूर्ति adj. *dessen Körper von Çiva verbrannt worden ist;* m. *der Liebesgott; die Geschlechtsliebe* Vaitân. Bhp. S. 78,14.

कृदत्त m. N. pr. verschiedener Männer Mâlav. 10,18. fgg. Prasannar. 1,9. Siddh. K. zu P. 3,1,15. 7,2,19. Ind. St. 1,467. 3,176. Verz. d. B. H. No. 750. 757. Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, No. 255. 154,*a*,3. 161,*b*,10. 162,*b*,30. 163,*a*,7. 183,*a*,4. 256,*a*,36. °मिश्र Colebr. Misc. Ess. 2,10. 38. 40. °दत्ताचार्य Sarvadarçanas. 74,17.

कृदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 148,*b*,9. eines Autors Z. d. d. m. G. 2,338.

कृनर्तक n. *ein best. Metrum,* = कृणाप्लुत Ind. St. 8,397.

कृनेत्र n. Çiva's *Augen* als Bez. *der Zahl drei* ÇKDr. nach dem Gîrvâṇatilaka.

कृपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 24,70.

कृप्रदीपिका f. Titel eines über *Quecksilber* (vgl. कृतेजस्, °बीज) handelnden Werkes Mack. Coll. 1,135.

कृप्रिय m. *Nerium odorum* Râgân. 10,11. — Vgl. कृप्रिय.

कृबल m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 43,98.

कृबीज n. Çiva's *Same* d. i. *Quecksilber* Taitt. 2,9,24. H. 1050. — Vgl. कृतेजस्.

कृमुख N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,8.

कॢप्याण m. N. pr. eines Mannes ṚV. 8,25,22. Naigh. 4,3. Nir. 5,15.

कृरूप m. = कृर ein N. Çiva's Çabdar. im ÇKDr.

कृविलास m. Titel eines Werkes Udâjîvat. zu Uṇâdis. 2,28.

कृवे N. pr. = Horâ Verz. d. Oxf. H. 340,*a*,28.

कृशेखरा f. ein N. der Gaṅgâ (Çiva's *Diadem*) H. 1082.

1. कॢप्स् (von 1. कॢप्) n. 1) *Griff, Schlag:* दण्ड, इषु, कृस् AV. 5,5,1. यामुं देवे कॢप्सा दैव्येन *mit göttlichem Griff halte ich* 2,12,4. — 2) *Zug* (beim Trinken), *Schluck:* पस्यै ते कॢप्: शतं सवाँ अर्कैति ṚV. 10,158,3. वज्रो कॢप्से 2,10,6. मनसा कॢप्सेकॢप्सा घृतेन *Schluck* so v. a. *Getränk* AV. 6,93,3. प्राण, अपान, कृस् 19,27,6. — 3) *die packende, verzehrende Kraft des Feuers, Blitzes* u. s. w. (सर्ववीर्यापकारकमग्नेर्ज्योति: Mahîdh. zu VS. 13,41) Naigh. 1,17. Nir. 4,19. नित्वो घृष्णुर्कॢप्सा दधक्पर्यङ्ङुर्वाते ṚV. 10,16,7. किंस्वाशनिर्कॢप्सा कक्ष्येषम् 87,3. पृष्टीकॢप्सा प्रणीदि 10,16. 25. तेजस्वत् AV. 18,3,71. 2,19,3. 19,65,1. 66,1. मुख्य, कृस् jenes *die mässige,* dieses *die verderbliche Wirkung* 18,2,36. VS. 12,16. 17,11. तेजस्, वर्चस्, कृस् TS. 3,5,8,2. der Sonne TBr. 2,2,10,1. der Asura Çat. Br. 4,3,3,4. घोरकॢप्: N. eines Sâman Ind. St. 3,201,*b*. मृत्योर्कॢप्: desgl. 229,*b*. — 4) überh. *energische Wirksamkeit: Schärfe, Feuer* u. s. w.: des Auges TS. 3,1,8,2. श्री, कृस् Pâraskar. Gṛhj. 2,6,16. 13,5. 7. क्षेपो कॢप्सा तार्ष्वी VS. 19,88. des Rosses TBr. 3,8,9,2. 1,5,10,3. कृस्काम Pâraskar. Gṛhj. 14,9,34. — Vgl. वीकु°.

2. कॢप्स् (vgl. 3. कॢप्, कर्प्) n. *Groll* Naigh. 2,13. dazu liesse sich ziehen: घृवयाता कॢप्सो दैव्यस्य ṚV. 8,48,3. AV. 2,2,2 (vgl. übrigens 19. 4); aber eben so gut ist 1. कृस् möglich.

कृसिंह m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 296,*a*, No. 718.

कृसिद्धिप्रदा f. N. pr. einer Familiengottheit Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,7.

कृसूनु m. Çiva's *Sohn* d. i. Skanda Ragh. 11,38.

कॢप्स्वत् (von 1. कृस्) adj. *packend:* स्वा ते मर्मर्तु दुच्छुना कॢप्स्वती ṚV. 2,23,6. vermuthet zu AV. 19,40,1. pl. f. = नद्य: Naigh. 1,13 *die alles mit sich Reissenden.*

कृस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 24,205.

कृस्विन् (von 1. कृस्) adj. *energisch, scharf, feurig* TS. 3,5,8,3. Ross TBr. 3,8,9,3. Pâraskar. Gṛhj. 14,9,34. Âçv. Gṛhj. 1,21,4.

कृह्रा f. = कृह्रा *Weintraube* Çabdâmrtak. bei Wilson.

कृाक N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,7.

कृाद्रि m. Çiva's *Berg* (श्रेष्ठ) d. i. der Kailâsa H. ç. 157. Wilson nach Çabdâmrtak. Kathâs. 113,99.

कृायतन n. *ein Tempel* (आयतन) Çiva's Râja-Tar. 2,124.

कृावती (von कृा) f. N. pr. eines Landes LIA. 1,117.

कृावास (कृा + आ°) m. Çiva's *Wohnstätte* Râja-Tar. 2,14. 5,37.

हरास्पद (हर + स्था°) n. Çiva's *Wohnstätte* so v. a. der Kailâsa Kathâs. 109,43.

हरादर m. N. pr. eines Dânava MBh. 1,2333 nach der Lesart der ed. Bomb.; an anderen Stellen हरादेव als N. zweier Dânava.

1. हरि Uṇâdis. 4,118. 1) adj. *fahl, blassgelb, gelblich* (namentlich als Farbe des Rosses); *grünlich* AK. 3,4,28,177. H. 1396. an. 2,470. fg. Mân. r. 100. fg. Hall. 4,50. ṚV. 4,15,7. 8. 5,27,2. Agni heisst वृषा हरि: 7,10,1. 8,25,23. VS. 13,42. insbes. der Rosse des Indra Naigh. 1,15. du. ṚV. 1,20,2. 35,2. 55,7 u. s. w. 2,18,4. TS. 5,5,9,2. pl. ṚV. 3,44,1. 50,2. 4,16,1 u. s. w. 6,47,18. des Vâju 4,48,5. हरीणां पति: 8,24,14. als Farbe des Soma 1,121,8. 8,58,5. 9,30,5. 32,2. 50,2. दिवो हरिर्दर्शते नक्तमुग्र: 97,9. 10,96,2. 6. VS. 8,11. der Soma-Steine ṚV. 3,44,1. 5. des Indra-Keils 4. Indra's selbst (nach Comm.) 8. des Feuers 8,43,4. des सुपर्ण AV. 19,65,1. der Sonne ṚV. 10,96,1. 1,95,1. des हंस AV. 10,8,15. वृषा हरि: VS. 38,22; vgl. Çat. Br. 14,3,5,26 und वार्षाहर. Haare Çat. Br. 1,1,4,2. 3,2,3,3. पिता हरि: heisst Varuṇa AV. 5,11,1. — Rosse (subst. s. bes.) MBh. 3,1720. R. 3,9,5. 10. 5,12,34. Ragh. 3,43. 12,34. °स्रग्वितानधर MBh. 13,2660. °लोचन R. 4, 16,9. चन्दन (vgl. हरिचन्दन) MBh. 7,2922. °मध्या (zugleich Vishṇu) Râjat. Tar. 3,416. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 34,2. शष्प Bhâg. P. 10,20,11. °धूम-केश Harîv. 12949. °पिङ्ग MBh. 1,8080. °पिङ्गल 13,7414. R. Gorr. 1, 60,12. 4,20,21. 7,23,4,22. — 2) m. a) *Ross*, insbes. Indra's (s. auch unter 1) AK. H. 1233. Taik. 2,8,41 (हरि: क्रास: zu lesen). H. an. Med. Hall. 2,231. 5,70. MBh. 3,11993. 11921. 12002. 13,4896. Harîv. 4943. Ragh. 12,103. Kathâs. 19,108. हरितो हरीश्च *die Rosse des Sonnengottes* und Indra's Çiç. 6,5. 166. Bhâg. P. 8,11,16. — b) *Löwe* AK. 2,5,1. 3,4,28,177. H. 1283. H. an. Med. Hall. 2,59. 5,70. MBh. 3, 15645. 7,7634. R. 2,97,5. Ragh. 2,59. Viṣṇ. 16. Z. d. d. m. G. 27,96. Sin. D. 237,16. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 11,47. Spr. (II) 3366. Bhâg. P. 3,21,44. 5,2,6. 10,9. 10,53,56. — c) *der Löwe im Thierkreise* Vasiṣṭh. Bṛh. 18, 16. 19,2. 24,14. — d) *Affe* AK. 2,4,28,177. H. 1292. H. an. Med. Hall. 2,76. 5,70. MBh. 1,2624. 2628. 3,16275. R. 1,16,6. 2,96,23. 3,20, 26. 78,19. 4,28,28. 38,26. 39. 7,91,19. Uttarar. 65,14 (84,9). Ragh. 12,57. 13,99. Weber, Rimây. Up. 299. — e) *Schakal* (भीरु) Nirukta-samuccaya in Verz. d. Oxf. H. 194,a, No. 445. — f) *Papagei* AK. H. an. Med. *Pfau, der indische Kuckuck* und *Gans* Çabdar. im ÇKDr. — g) *Frosch* AK. H. 1354. H. an. Med. Hall. 3,40. 5,70. *Schlange* AK. H. an. Med. — h) *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) H. 1172. — i) *die Sonne* AK. Taik. 1,1,99. H. an. Med. Hir. 11. Hall. 1,35. 5,70. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 24,18. — k) *Lichtstrahl* AK. Taik. 1,1,86. H. an. Med. — l) *der Mond* AK. H. an. Med. Hir. 13. Hall. 5,70. — m) *Wind* AK. H. an. Med. Hall. 1,76. 5,70. *der Gott des Windes* R. ed. Bomb. 1,32,23. वायु v. l. im Comm. — n) ein Name a) Indra's AK. Taik. 1,1,57. H. 171. H. an. Med. Hall. 1,52. 5,70. Gaṇar. in Verz. d. Oxf. H. 191,a,29. Spr. (II) 207. R. 1,15,26. Ragh. 3,43. 55. 68. 9,57. 12,103. Çiç. 95,1. 156. 162. Brahma-P. in LA. (III) 53,19. Sin. D. 237,16. — β) Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. Taik. 1,1,28. H. 214. H. an. Hall. 1,28. 5,70. Ind. St. 1,79. 2,7. 92. 9,81. Bhag. 11,9. 18,77. MBh. 1,1167. 3,13558. 6,301. Harîv. 10. 2382. 7447. R. 1,31,13. 45,23. Ragh. 3,49. Kumâras. 7,44. Çiç. 165. Weber, Rimây. Up. 286. Kâṣmaîr. 222 u. s. w. Spr. (II) 671. 3452. 6408. 6839. 7173. 7369. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 98,5. 99,1. Râja-Tar. 3,126. 416 (zugleich adj.). 451. Prasân. 54,12. Bhâg. P. 1,2,23. 4, 30,24. 7,10,24. 8,1,30. Pañcât. Pr. 1. Vet. in LA. (III) 1,14. Verz. d. Oxf. H. 45,b,31. Sin. D. 237,16. Hall 126. Sarvadarçanas. 46,3. 57, 16. 66,15. 67,3. 69,13. 17. 72,4. Burnouf, Intr. 131. — γ) Jama's AK. H. 184. H. an. Med. Hall. 1,72. 5,70. — δ) Brahman's und Çiva's Med. हरि (= Brahman Comm.) हरन्तमनुयन्ति देवा: Taitt. Âr. 10,49. — ε) Çukra's und Suparṇa's (vgl. unter 1) Nirukta-samuccaya a. a. O. — ζ) *des Feuers* Çabdar. im ÇKDr. Kâtj. 1,15. — o) *ein best. Metrum:* 4 *Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑–, – – – –, ⏑–⏑–⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,162 (XII,8). — p) elliptisch für °नक्षत्र *das Nakshatra Çravaṇa* Vasiṣṭh. Bṛh. S. 60, 21. 98,17; vgl. हरिदेव. — q) pl. = अपत्य Naigh. 2,2. — r) *eine best. Ache Zahl* bei den Buddhisten Vyutp. 182. Mél. asiat. 4,638, N. — s) N. pr. α) pl. einer Klasse von Göttern unter Manu Tâmasa VP. 262. Mâns. P. 74,37. Bhâg. P. 8,1,28. = ऋषि: in einer früheren Geburt Verz. d. Oxf. H. 56,b,33. — β) eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3598. — γ) eines Râkshasa MBh. 3,16365. — δ) eines Dânava Harîv. 2283. 14284. — ε) verschiedener Männer: ein Sohn Akampana's (Anukampaka's) MBh. 7,2039. fgg. 12,9151. fgg. Târakâkshe's 8,1417. fgg. Parâgît's Harîv. 1980. Parâvṛt's VP. 421, N. 12. ein Verehrer Vishṇu's Bhâg. P. 5,4,11. = भर्तृ° Taik. 2,7,26. Z. d. d. m. G. 7,164. Verz. d. Oxf. H. 161,b,9. 162,b,30. 247,b,12. Verz. d. Tüb. H. 13. Sarvadarçanas. 140,1. 144,5. 146,5. — Verz. d. B. H. No. 969. Verz. d. Oxf. H. 320,b, No. 760. 335,a, No. 787. 352,b,7 (sein Geschlecht). Râja-Tar. 6,166. Hall 31. 50. 75. — ζ) einer Welt H. an. Med.; vgl. हरिवर्ष. — 3) f. हरी N. *der Urmutter der Affen* MBh. 1,2624. 2628. R. 3,20,26. — Vgl. नर°, नृ°, भर्तृ°, वन°, शो°, सर्व°.

2. हरि (von 1. हृ) adj. *tragend* u. s. w. in हृति° und नाध° P. 3,2,35.

1. हरिक (von 1. हरि) 1) m. *ein gelbliches Ross* H. 1242. — 2) am Ende eines adj. comp. (f. या) in स° *nicht das Wort* हरि *enthaltend* (Gegens. हरिवत्) Lâṭj. 2,1,18.

2. हरिक (von 1. हृ) m. *Dieb* und *Würfelspieler* Çabdaratn. bei Wilson.

हरिकर्ण m. N. pr. s. हरिकर्ण.

हरिकारिका f. Bhartṛhari's Kârikâ, = वाक्यपदीय Colebr. Misc. Ess. 2,21. 42.

हरिकालदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Colebr. Misc. Ess. 2,246,6.

हरिकालव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. B. H. 134,b. — Vgl. das folgende Wort.

हरिकालोतृतीया f. Bez. *eines best. Tages:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,a,27.

हरिकुत्स m. N. pr. eines Mannes, pl. *sein Geschlecht* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 62,19.

हरिकृष्ण m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 1,272. °समुद्धार Kshîrîç. 10,2.

हरिकेलीय m. pl. N. pr. eines Volkes, = वङ्ग H. 957.

हरिकेश Çiky. 4,8 (in der klassischen Sprache der Ton auf beliebiger Silbe). 1) adj. *blondhaarig:* Agni ṚV. 3,2,13. die Sonne 10,37,9. Savitar 139,1; vgl. VS. 15,12. Indra ṚV. 10,96,5. s. Vishṇu MBu. 6,2949. Çiva 13,1158. 14,194. Baum VS. 16,17. — 2) m. a) Bez. *eines best. Sonnenstrahles* VP. 2te Aufl. 2,297, N. — b) N. pr. α) eines Jakscha Verz. d. Oxf. H. 42,a,7. 69,b,46. — β) eines Sohnes des Çâmaka Bhâg. P. 9,24,41.

हरिकिणका adj. f. demin. von हरिकिणी und dieses f. zu हरित (wie ग्रसिक्नी zu ग्रसित) AV. 20,129,3. 4. 130,11.

हरिकान्ता f. = विद्रुकान्ता *Clitoria ternatea Lin.* Râǵân. 5,87. — हरिकान्तः Taik. 2,8,41 fehlerhaft für हरिः कान्तः.

हरिक्षेत्र n. N. pr. eines *Gebietes* Verz. d. B. H. 144, 12. Verz. d. Oxf. H. 149,a,40.

हरिगण m. 1) *eine Schaar von Rossen* Râǵa-Tar. 5,142. — 2) N. pr. eines Mannes ebend. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 123,a,23; vgl. Spr. (II) 6219.

हरिगन्ध m. *gelber Sandel* Râǵân. 12,28.

हरिगिरि m. N. pr. eines *Berges* MBu. 6,452.

हरिगीता f. *ein best. Metrum: 4 Mal 2N Moren* Colebr. Misc. Ess. 2,157 (IV,36).

हरिगृह n. N. pr. einer Stadt, = एकचक्र Taik. 2,1,12.

हरिघोष m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 65,65.

हरिचन्दन 1) m. n. N. *eines der fünf Bäume in* Indra's *Himmel* AK. 1, 1,1,46. H. 179. Med. n. 250. Halâj. 1,135. Paṇḍân. 3,7,89. Paṇḍat. 263, 23. *eine Art Sandelbaum* Çiç. 5, 45. Bhâg. P. 4,6,30. Çârṅ. 1, 40. *gelber Sandel* (vgl. हरिणा चन्दनेन MBu. 7,2922) AK. 2,6,3,33. H. 641. Med. Rathân. 141. Râǵân. 12,28. R. 2,65,8. Ragh. 3,59. 6,60. Kumâras. 5,69. Çiç. 161. Z. d. d. m. G. 27,11. Nigh. 40. °चूर्ण Kathâs. 56, 223. in der letzten Bed. wohl nur n. — 2) n. *der Blüthenstaub einer Lotusblume* Hit. 243. *die Staubfäden einer Lotusblume* ÇKDa. und Wilson angeblich nach Halâj. *Saffran* Hit. Med. — 3) n. *Mondschein* Med. Hit. — 4) n. *der Leib der* oder *des Geliebten* (कान्ताङ्ग) Çabdar. im ÇKDa.; st. dessen रक्ताङ्ग *Saffran* Hit.

हरिचन्द्र m. N. pr. eines Mannes P. 6, 1, 152, Schol. eines Arztes Verz. d. Oxf. H. 187,b, No. 428. 337,b, No. 852. eines Fürsten Wassiljew 50. 74. Târân. 2. 68. 78. — Vgl. भट्टार° und हरिश्चन्द्र.

हरिचाप m. n. Indra's *Bogen* d. i. *Regenbogen* Vaǵas. Bhâṣ. S. 34,6.

हरिज (aus ὁρίζων) n. *Horizont* Vaǵas. Bhâṣ. 5,17. Utpala zu 2, S. 4, Z. 6 v. u. *Längenparallaxe* Sûrjas. 5,1.

हरिजात adj. wohl = हरि *gelb:* Indra ṚV. 10,96,5.

हरिजित् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 1174.

हरिजीव = हरोजीशर्मन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 335,a,17. 334,a,37.

हरिजीवनमिश्र m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 387,a,14. Notices of Skt Mss. 1,69. fg.

हरिण Uṇâdis. 3,46. 1) adj. *preparox.* Çiky. 2,10. *fahl, gelblich* (vgl. हरि, हरित्, हरित) AK. 1,1,4,22. 3,4,28,53. H. 1392. an. 3,233. Med. q. 87 (lies विहरे). Halâj. 4,47. Viçva bei Uǵǵval. die Sonne Prâçnop. 1,3 = Maitrâjup. 6,3. ein siecher Mann MBh. 2,1741. 5, 3742. 13,4828. 5886. 5889. fgg. f. ई s. u. हरित. — 2) m. a) *Gazelle* (*Antilope cervicapra* Mollsworth s. v. कृष्ण) AK. 2,5,3. 3,4,8,21. H. 1393. H. an. Med. Halâj. 2,75. Viçva s. a. O. ṚV. 1,163,1. 5,78, 3. gebörnt AV. 3,7,1. 2. 6,67,3. पर्दृणिणो पवमाति VS. 23,30. TS. 5, 5,19,1. Çat. Br. 13,2,9,3. °चर्मन् Kauç. 16. MBh. 3,11342. 13629. R. 2,34,30. Saṇ. 1,46,20. 73,6. 200,8. 15. Vishṇu. 6,44. Ragh. 9,57. Kumâras. 5,15. ad Çiç. 78. Spr. (II) 7368. Vaǵas. Bhâṣ. S. 104,28. Kathâs. 22,128. 96,26 (सर्वकृष्णा: *Reichthümer als Gazellen*). Bhâg. P. 3,21, 44. 8,2,21. Paṇḍat. 140,23. Verz. d. Oxf. H. 123,a,1 v. u. °लोलाक्षी R. 5,23,45. °लोचना 33,17. हरिणाक्ष adj. Vaǵas. Bhâṣ. S. 68,65. f. हरिणाक्षी Spr. (II) 637. 2509. 6319. Kathâs. 33,88. Prab. 40,12. हरिणेक्षणा Spr. (II) 6408. शिशुहरिणाक्ष्म् 3801. — b) *die Sonne; Gans;* ein N. Vishṇu's und Çiva's Çabdaratn. bei Wilson. — c) N. pr. α) eines Schlangendämons MBh. 1,2152. — β) eines Gaṇa Çiva's Journ. of the Am. Or. S. 6,523. — γ) eines Ichneumons (नकुल) MBh. 12,4943 nach der Lesart der ed. Bomb.; हरित ed. Calc. — 2) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. a) *Gazellenweibchen* AK. 2,4,48,53. TS. 7,4,40,2 (v. l. zu VS. 23,30). MBh. 3,2424. 11342. Hariv. 4827. R. 2,62,27. Ragh. 2,11. 9,55. 14,69. Spr. (II) 1456. 7370. Kâdab. 28. Bhâg. P. 5,8,1. 9,23,8. चकितहरिणीप्रेक्षित Megh. 102. चकितहरिणीप्रेक्षणा 80. — b) Bez. *zweier Pflanzen:* = मञ्जिष्ठा und स्वर्णयूथी Râǵân. im ÇKDa. — c) Bez. *einer best. Schönen* H. an. Med. Viçva s. a. O. शुकाभा Halâj. 4,52. — d) *eine Statue von Gold* AK. H. 1464. H. an. Med. Viçva s. a. O. Halâj. 1,121. Spr. (II) 5407. — e) *ein best. Metrum* H. an. (वृत्त st. वृत्त zu lesen). Med. Viçva s. a. O. *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–, – – – –, ⏑–⏑⏑–⏑ Colebr. Misc. Ess. 2, 162 (XII, 4). Çrut. 39. Kâvjâd. 93. Ind. St. 8, 394. fg. — f) Bez. *einer best.* Svarabhakti Comm. zu TS. Prât. 21, 15. Weber, Prâtiçâkh. 108. — g) N. pr. α) einer Apsaras Ragh. 8,91. — β) einer Jakshiṇî Schiefner, Lebensb. 297 (67). — γ) der Mutter Hari's (Vishṇu's) Bhâg. P. 8,1,30. — Vgl. मन्द्र°, वेगि°, हरिण, हरिणिक.

हरिणक m. demin. von हरिण *Gazelle* Çiç. 10. Uttarâr. 51,19 (67,5).

हरिणकलङ्क m. *der Mond* (vgl. मृगाङ्क) Wilson.

हरिणधामन् m. *die Wohnstätte der Gazelle* so v. a. *der Mond* (vgl. मृगाङ्क u. s. w.) Râǵa-Tar. 5,483.

हरिणनर्तक m. *ein* Kiṁnara Çabdar. im ÇKDa.

हरिणप्लुत 1) n. *Gazellensprung* als N. eines Metrums: *4 Mal* –⏑ – ⏑⏑–⏑–, ⏑⏑–⏑–, ⏑⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. 2, 162 (XIII, 4). Ind. St. 8,397. — 2) f. आ *ein best. Metrum:* 1. 3. ⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑–: 2. 4. ⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑– Colebr. Misc. Ess. 2,164 (VI,8). Çrut. 32. Ind. St. 8,360. fg.

हरिणलक्षण m. *der Mond* Golâdh. Grahaṇav. 7. — Vgl. हरिणकलङ्क.

हरिणहृदय adj. *das Herz einer Gazelle habend* so v. a. *furchtsam* Taik. 2,6,55. Hit. 166. Çabdar. im ÇKDa.

हरिणाक्रीडन n. Bez. *eines best. Kinderspiels* Hariv. 3743. nach der Lesart der neueren Ausg., हरिणाक्रीडित die ältere.

हरिणाक्ष 1) adj. (f. ई) *gazellenäugig* s. u. हरिण 2) a). — 2) m. der

Mond Çabdar. im ÇKDa. — 3) f. ई *ein best. Parfum*, = हरिविलासिनी Çabdaś. im ÇKDa.

हरिणाय् (von हरिण), °यते *eine Gazelle darstellen* Spr. (II) 1124.

हरिणाक्ष m. N. pr. eines Mannes MBh. 12,6193.

हरिणी s. u. हरिण und हरित.

हरिणीरूपाय् (von हरिणी + रूप), °यते *einem Gazellenweibchen gleichen* Gît. 4,10.

हरिणीगुप्तेषिन् m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Indra's Colebr. Misc. Ess. 2,214. — Vgl. नैगमेष.

हरित् Uṇâdis. 1,99. Çiñt. 2,10. 1) adj. *falb, gelblich, grünlich* (m. *gelbe u. s. w. Farbe*) AK. 1,1,4,24. 3,4,28,145. 6,2,19. Taik. 3,3,194. H. 1394. an. 2,210. Med. t. 174. Hall. 4,49. Vîçva bei Uâéval. f. *eine falbe Stute* ṚV. 10,33,5. (घ्रंसे:) पुत्वा सहस्रिणी रथे हरितो देव रोहसि: 1, 14,12. 4,6,9. 7,5,5. 42,2. der Sonne (vgl. 2) a) Naigh. 1,15. sieben ṚV. 1,50,8. 115,3. fgg. 121,13. 4,13,2. 5,45,10. 7,60,2. स्वसार: 66,13. zehn 9,63,9 (vgl. jedoch SV. II,5,1,6,2). मूर्धिदा हरितो यस्य रीरमत् 10,92,8. AV. 13,2,4. 6. 28. 3,17. TS. 2,3,6,2. Indra's du. ṚV. 3,44, 2. des Tvashṭar 5,47,19. Soma 9,69,9. seine Rosse सुपर्ण्य: 86,27. die Finger 38,3. — Pâraś. 1,7,31. °ग्रमयु MBh. 7,7894 (हरि° ed. Bomb.). R. Gorr. 1,15,4. हरिद्भूतं ग्रलम् 4,40,50. मारकत (vgl. हरिन्मणि) Bhâg. P. 8,2,4. — 2) m. a) *Sonnenross* Taik. 2,6,42. H. an. Med. Vîçva a. a. O. Kumâras. 2,43. Raçan. 3,30. Çiç. 6,5. — b) = हरिन्मणि *Smaragd* Bhâg. P. 10,41,21. — c) *Löwe; die Sonne;* ein N. Vishṇu's Çabdâtmak. bei Wilson. — d) *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) schlechte v. l. für हरि H. 1172. — 3) f. a) *Weltgegend* Naigh. 1,6. AK. 1,1,8,3. Taik. 3,3,194. H. 166. H. an. Med. Hall. 1,100. Vîçva a. a. O. पर्वमानो हरित ग्रा विवेश ṚV. 9,90,14 (vgl. v. l. AV. 19,8,3). Çat. Br. 2,5,2,3. प्रतीची R. 7,75,10. Raçan. 3,30. Spr. (II) 4758. ऐन्द्री (vom Vorhergehenden zu trennen) Kâtyâs. 103,204. घनपते: Râjâ-Tar. 1,48. उत्तर° 290. Sin. D. 79,13. 312,1. Verz. d. Oxf. H. 255,b,19. — b) pl. so v. a. नद्य: *Flüsse* Naigh. 1,13. — 4) *Gras* Med. (m. n.). Vîçva; *ein best. Gras* H. an. Dûrvâ-*Gras* Vîçva. — Vgl. हरि und हरित.

हरित Uṇâdis. 3,93. 1) adj. (f. घा und हरिणी Çiñt. 2,20. P. 4,1,39. Vop. 4,27. AK. 2,4,28,52. H. an. 3,233. Med. p. 87. Vîçva bei Uâéval. zu Uṇâdis. 2,46. हरिणी in der älteren, हरिता in der späteren Sprache) *falb, gelblich; grünlich, grün* (daher auch im Gegensatz zu शुष्क dem *verdorrten Kraut*) AK. 1,1,4,24. 3,4,28,53. H. 1395. Med. t. 175. Hall. 4,49. मृग ṚV. 10,86,3. Rosse MBh. 13,4938. Bart des Indra ṚV. 10, 23,4. Wagen u. s. w. 3,44,1. 4. 10,96,2. 9. Soma und was dazu gehört: शुक्रे शिशानो हरिणी 9,70,7. रुच् 111,1. 10,94,2. AV. 6,49,2. घाना: 13, 4,34. Frosch ṚV. 7,103,4. 6. 10. तकान् AV. 1,23,2. 5,22,2. 6,20,3. शोचञ्कृष्णासु हरिणीषु जर्भुरत् ṚV. 10,92,1. वनस्पति 9,5,10. AV. 19, 8,34. कुश Çat. Br. 4,5,10,6. Gras Lâṭy. 2,11,13. Kâṭh. 32,1. Kaush. Up. 2,8. Harîv. 3374. R. Gorr. 2,63,16. 3,73,39. Kir. 5,38. AK. 2,1, 19. 9,16. Taik. 3,3,297. H. 935. Hall. 2,4. Bhâg. P. 3,22,30. Bohne Suçr. 1,197,13. कमलिनीहरिते: सरोभि: Çiç. 86. — Çat. Br. 14,7,1,20. Çvetâçv. Up. 4,4. Varâh. Bṛh. S. 5,54. 8,17. 9,44. 30,13. fg. 54,30. 34. 67,3. 68,91. Bṛh. 2,3. Lassen. 1,6. Weber, Kṛshṇaj. 270. °पुष्प Kauç. 10. 26. 116. वैदूर्यमणिरत्नाग: प्रासादो हरितप्रभ: Harîv. 8985. °पाण्डु Suçr. 1,159,19. °कपिश Megh. 21. हरिताहण Kumâras. 4,14. °गोमय wohl *frischer Kuhmist* Kauç. 19. Gobh. 4,8,12. *gelb* als Farbe des Goldes AV. 4,37,4. 7,99,1. 10,2,33. 3,5. 11,2,12. 15,2,1. Çat. Br. 12,4,4, 6. रुक्म Kâṭy. 10,14. VS. 23,37. Ait. Br. 1,23. TS. 5,2,2,1. TBr. 1,8, 2,1. 2,2,2,5. 3,9,6,5. *gelb* (vor Schrecken), *bleich* (vgl. हरिण) TS. 5, 5,5,2. हरिणी श्यावा *gelbbraun* (ohne Röthe) als Farbe der Schwangeren TBr. 2,3,6,1. — 2) m. a) *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) H. 1172. *ein best. Gras*, = मन्थानक Râjân. im ÇKDa. — b) *Löwe* Çabdâtmak. bei Wilson. — c) pl. Bez. eines Abschnittes des AV. 19,22,5. hierher vielleicht हरिता मत्ता: (so trennen wir) Verz. d. Oxf. H. 93, a, 1 v. u. — d) N. pr. α) pl. einer Klasse von Göttern im 12ten Manvantara Mârk. P. 94,23. Bhâg. P. 8,13,29. — β) verschiedener Männer P. 4,1,100. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 86,7 (हरितकुत्स° zu lesen; vgl. Âçv. Çr. 12,12,3). Kaçjapa Çat. Br. 14,9,4,32. ein Sohn Jadu's Harîv. 4206. Rohita's 758. Bhâg. P. 9,8,1. Rohitâçva's VP. 373. Juvanâçva's 389. Parâvṛt's (vgl. हरि) 420. 421, N. 12. Vapushmant's Mârk. P. 53,27. pl. Harita's Nachkommen (vgl. हारित) P. 2,4,63, Vârtt. Âçv. Çr. 12, 12,3 (im comp.). — γ) eines Ichneumons (नकुल) MBh. 12,4942. हरिणा ed. Bomb. — 3) f. हरिता a) Dûrvâ-*Gras* Taik. 3,3,194. Med. = हरिद्रा *Gelbwurz* Dhanv. 1,17. Râjân. im ÇKDa. = जयन्ती, कपिलद्राक्षा, पाची und नीलदूर्वा Râjân. ebend. — b) *eine best.* Svarabhakti (v. l. हरिता und हरा°) Comm. zu TS. Prât. 21,15. — 4) f. हरिणी s. u. हरिण — 5) n. a) *Gold* AV. 5,28,5. 9. 11,3,8. Kâṭy. 8,5. — b) *Grünes* so v. a. *Gemüse* Kâraka 1,27. — c) *eine best. wohlriechende Pflanze*, = स्थौणेयक Râjân. im ÇKDa. — Vgl. पीत° und हारित.

हरितक (von हरित) 1) m. *Gemüse* AK. 2,9,34; vgl. हारितक. — 2) f. ई v. l. für हरीतकी im gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. *Terminalia Chebula* Verz. d. Oxf. H. 17,b, No. 63, Cl. 6.

हरितकशाक n. = हारितशाक Suçr. 1,70,5. 2,133,3.

हरितकात्य m. N. pr. eines Mannes P. 4,1,73, Vârtt. 4. — Vgl. हारितकात.

हरितचारिक adj. Bournouf, Intr. 261, N. 2.

हरितच्छद 1) adj. (f. घा) *grüne Blätter habend:* पाट्पा: MBh. 3,8389. 12010. R. 2,55,29 (5 Gorr.). 3,39,21. Mârk. P. 60,12. — 2) m. *Baum Pflanze* H. ç. 172.

हरितजम्भन् adj. P. 5,4,135.

हरितजम्भुकावलि und °ली f. Titel eines Commentars Notices of Skt Mss. 2,252. Hall 136.

हरितनेमिन् adj. *eine gelbe (goldene) Radfelge habend:* Çiva R. 7, 23,4,33.

हरितपत्रिका f. *eine best. Schlingpflanze*, = पाची Râjân. 10,168.

हरितभेषज n. *ein Mittel gegen Gelbsucht* AV. 4,9,2.

हरितयज्ञ m. N. pr. s. हारितयज्ञ.

हरितलता f. = हरितपत्रिका Râjân. 10,168.

हरितशाक m. *Moringa pterygospermum* (शिग्रु) Râjân. 7,25. Dhanv. 4,22.

हरितसेन m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 35. Târân. 286.

हरितस्रज् adj. *gelbe (grüne) Gewinde tragend (bildend):* Bäume AV.

10,8,31. *mit einer goldenen Kette geziert:* Rosa Ait. Br. 8,21. Çat. Br. 13,5,4,2.

करिताय् (von करित), °यति, °यते *gelb oder grün werden* gaṇa लोहितादि zu P. 3,1,13.

करिताल (von करित) 1) m. *eine Taubenart, Columba Hurriyala* (s. Haughton unter करियाल) Râgavallabha im ÇKDa. — 2) f. ई a) = दूर्वा *Panicum Dactylon* H. 1193. an. 4,300. Med. l. 167. Hit. 240. Halâj. 2,36. — b) *Schwertklinge* H. an. Viçva im ÇKDa. — c) Bez. *des 4ten (5ten) Tages in der lichten Hälfte des* Bhâdrapada Râgamârtaṇḍa im ÇKDa. — d) *eine best. Linie am Himmel* H. an. Med. *der Luftraum* (कायस्थ) Hit. — 3) n. AK. 2,6,2,32. *Auripigment, Arsenicum flavum* Taik. 2,9,38. H. 1058. Med. Ratnam. 287. Râgân. 13,67. धातवो करितालस्य MBu. 3,11617. करितालाद्रिपीत Harîv. 4083. °दरी R. 4,37,7. 5,5,12. Suçr. 1,132,17. 133,5. 2,66,2. 252,5. 536,16. धातु Kumâras. 7, 32. Varâh. Bṛh. S. 44,9. 54, 30. 110. 81,7. Hem. Jogaç. 3,108. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 16. Verz. d. Oxf. H. 320,b, No. 760. — Vgl. धाल und ताल.

करितालक 1) m. = करिताल 1) Gaṇîn. bei Wilson. — 2) f. °तालिका a) = करितालो a) Taik. 2,4,43. — b) vielleicht = करितालो b) Verz. d. Oxf. H. 88, a, 19. — c) = करितालो c) Verz. d. Oxf. H. 284, b, 12. Verz. d. Cambr. H. 64, 8 v. u. Verz. d. B. H. No. 1216. fg. — 3) n. = करिताल 3) AK. 2,9,104.

करितालमय (von करिताल) adj. (f. ई) *aus Auripigment gebildet* Kumâras. 7,33.

करिताश्मन् (करित + अश्मन्) n. *blauer Vitriol und Türkis* Râgân. im ÇKDa.

करिताश्व (करित + अश्व) 1) adj. *falbe Rosse habend:* die Sonne MBu. 3,193. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Sudjumna VP. 350, N. 6. — Vgl. करिदश्व.

करितीकर् (करित + 1. कर्) *grün färben:* येन मुखं °कृतं Spr. (II) 3537.

करितोयल (करित + उ°) m. *Smaragd* Bhâg. P. 3,8,24.

करित्पर्ण n. *Rettig* Râgân. 7,15. — Vgl. करिपर्ण.

करित्मत् adj. von करित् gaṇa पवादि zu P. 8,2,9. — Vgl. करिवत्.

करित्य (von करित) adj. *im Grünen befindlich* u. s. w. (Gegens. शुष्क) VS. 16,45.

करिवच् adj. *gelbhäutig* ved. Citat bei Sây. zu RV. 3,3,4.

करिवत् (von करित्) adj. *goldfarbig:* करिवता वर्चसा सूर्यस्य RV. 10, 112,8. — Vgl. करित्मत्.

करिदत्त 1) m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,14. verschiedener Männer 26,193. Pañcat. 171,3. eines Kaufmanns Çuk. in LA. (III) 32, 3. 37,2. 3. — 2) f. आ N. pr. einer Frau Çuk. in LA. (III) 32,3. 9.

करिदम्बर adj. (f. आ) *ein gelbes oder grünes Gewand tragend* Verz. d. Oxf. H. 19,b,1.

करिदर्भ m. *eine Art* Kuça-*Gras* Râgân. 8,94. — Vgl. करिद्भ.

करिदश्व 1) adj. *falbe Rosse habend.* — 2) m. *die Sonne* AK. 1,1,3,30. H. 98. Halâj. 1,36. Raghu. 3,22. 18,22. Çiç. 11,56. Kir. 2,46.

करिदास m. 1) *ein Diener* —, *Verehrer* Vishṇu's Bhâg. P. 7,1,32. 10,47,57. नृ° 1,15,16. — 2) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. B. H. No. 827. Hall 136. 149. fg. Verz. d. Tüb. H. 13. Wilson, Sel. Works 1,159. 161. Var. in LA. (III) 20, 12. Verz. d. Oxf. H. 341, b, No. 799. °सर्काचार्य 292,b,36. °विजय 351, b, No. 831. °भट्टाचार्य Kusum. 65,b,15.

करिदिन n. *der dem* Vishṇu *geheiligte Tag* d. i. *der 11te in einem Halbmonat* ÇKDa. unter एकादशी. Vop. 26,129.

करिदिश् f. Indra's *Weltgegend* d. i. *Osten* Golâdh. Grahagaṇ. 1.

करिदीक्षित m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 177,b, No. 403. Hall 2. Z. d. d. m. G. 7, 167.

करिद्रथन् adj. (f. °द्रथी) Vop. 4,12.

करिदेव m. 1) *das unter* Vishṇu *stehende* Nakshatra Çravaṇa H. 114. — 2) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 329,a, 10.

करिद्भ m. = करिदर्भ Râgân. im ÇKDa.

करिद्रु (vgl. करि) 1) m. a) *gelber Sandelbaum:* °तरु Varâh. Bṛh. S. 54,48. 79,2. — b) N. pr. einer Gottheit Colebr. Misc. Ess. 2,284. — 2) f. आ a) *Curcuma longa Lin., Gelbwurz,* sog. *gelber Ingwer,* als Gewürz und Färbstoff gebraucht, färbt gekaut den Speichel *gelb* (Plinii, H. N. 21,70) AK. 2,9,41. Taik. 2,4,32. 9,11. H. 418. Ratnam. 58. Dhany. 1,17. Râgân. 6,198. Kâç. 28. MBu. 3, 12387. 12880. 7, 965. Suçr. 1, 139, 15. 142, 3. 145, 15. 146, 3. 2, 284, 9. 457, 4. Spr. (II) 6279. Varâh. Bṛh. S. 55, 21. Verz. d. Oxf. H. 98, a, 3. 4. 249, b, 12. Schol. zu Naish. 22,49. Med. r. 241. °द्रव ist करिद्रा und दारु° *Curcuma aromatica* Suçr. 1,142,20. 157,13. 2,398,9. करिद्रोदन *damit gewürztes Mus* Kâç. 28. मञ्जिष्ठीवद्दारुकरिद्र (collectives comp.) भूर्जघकलेन परिवेष्ट्य Kâç. 38. — b) N. pr. eines Flusses Colebr. Misc. Ess. 2, 284. — Vgl. दारु°, वन° und करिद्र.

करिद्रक m. 1) = करिद्र 1) a) Varâh. Bṛh. S. 79,16. — 2) N. pr. einer Schlangendämonin MBu. 1,1557.

करिद्रजनी (करित् + र°) f. = करिद्रा a) Râgân. 6,198.

करिद्रव (करि + द्रव) m. *ein aus der Mimusa Roxburghii bereitetes Pulver* Taik. 2,4,30.

करिद्रागणपति m. *eine Form des* Gaṇeça Verz. d. Oxf. H. 249,a,17. करिद्रगण° Wilson, Sel. Works 1,20.

करिद्रागणेश m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 93,b,3. 94,a,34. fg.

करिद्राङ्ग (करिद्रा + 3. अङ्ग) m. *ein best. Vogel,* = करिताल Çabdam. im ÇKDa.

करिद्राभ (करिद्रा + आभा) 1) adj. *gelb* AK. 1,1,4,24. — 2) m. *Curcuma Zerumbet Roxb.* und *Terminalia tomentosa W. et A.* Çabdam. im ÇKDa.

करिद्रामेक m. *eine gelbe Harnruhr* Kâraka 2,4. Suçr. 1,272,6. Çârṅg. Saṃh. 1,7,43.

करिद्रामेकिन् adj. *mit der gelben Harnruhr behaftet* Kâraka 2,4. Suçr. 2,78,7.

करिद्रारागा adj. *dessen Zuneigung nicht länger haftet als die Farbe von Gelbwurz* H. 476. Halâj. 2,220. Vgl. Spr. (II) 6279.

करिद्रिक adj. *mit* करिद्रा *Gelbwurz handelnd* gaṇa किसरादि zu P. 4,4,53.

1. करिंदु (करि + 2. दु) adj. *im Gelben (Soma) laufend:* die Soma-Steine सप्तुर्यासो करिंयाचो करिंदवः RV. 10,94,12. Richtiger wäre die

Betonung हरिद्रु: vgl. Uṇâdis. 1,35.

2. हरिद्रु (हरि + 4. द्रु) m. 1) = दारुहरिद्रा *Curcuma aromatica* AK. 2,4,3,20. Durgâv. 1,18. *ein best. Baum*, vulgo हलदीवा Râǵân. 9,125. = पीतदारु *eine Pinus-Art* Râǵân. im ÇKDa. — Çat. Br. 13,8,4,16. Kâṭj. Çr. 21,3,20. Harîv. 12674. — 2) *Baum* H. 1114.

3. हरिद्रु m. N. pr. eines Schülers des Kaṭâpin P. 4,3,104, Schol. — Vgl. हारिद्रव.

हैरिद्रुक adj. *mit* हरिद्रु *Curcuma aromatica handelnd* gaṇa किंसरादि zu P. 4,4,53.

हरिद्रुमत् (von 2. हरिद्रु) m. N. pr. eines Mannes Çâṅkh. zu Kâṭhân. Up. 4,4,2. — Vgl. हारिद्रुमत.

हरिद्वार n. Vishṇu's *Thor*, N. pr. einer heiligen Stadt LIA. 1,30. Verz. d. Oxf. H. 149,*a*, 32. fg. Rudrajâmala im ÇKDa. Wassiljew 53. Târan. 171. Wilson, Sel. Works 1,213. 239.

हरिधायस् adj. *gelbliche Ströme (Tränke) habend, — gebend:* der Himmel ṚV. 3,44,3.

हरिनदी f. N. pr. eines Flusses, °ग्राम N. pr. eines Dorfes: ग्रामे °ग्राम्ये गङ्गायाः पूर्वभागतः Notices of Skt Mss. 1,227, 5 v. u. der Herausgeber faßt हरिनदी als N. des Dorfes.

हरिनन्द् m. N. pr. eines Schülers des Devânanda Wilson, Sel. Works 1,47.

हरिनन्दन m. und °नन्दिन् m. N. pr. gaṇa तुभ्रादि zu P. 8,4,39.

हरिनाथ m. N. pr. verschiedener Männer Hall 100. Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,1. 132,*a*, No. 241. 206,*b*,9. 280,*a*,6 nebst N. 2. 292,*b*,33. °महोपाध्याय 273,*b*,48. fg. °क 132,*b*,8.

1. हरिनामन् n. Hari's *Name:* °नामामृत n. Titel einer Grammatik, in der alle Beispiele auf हरि d. i. Vishṇu anspielen, Colebr. Misc. Ess. 2,47. Notices of Skt Mss. 1,241. हरिनामोपनिषद् f. Titel einer Upanishad 2,102.

2. हरिनामन् m. *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) Trik. 2,9,2.

हरिनायक m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 201,*a*, No. 480.

हरिनारायण m. N. pr. zweier Männer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Cl. 12. Ksmrîç. 29,19.

हरिनारायणशर्मन् m. N. pr. eines Autors Notices of Skt Mss. 2,314.

1. हरिनेत्र n. 1) Hari's d. i. Vishṇu's *Auge* Mârk. P. 81,52. — 2) *eine weisse Lotusblüthe* Râǵân. im ÇKDa.

2. हरिनेत्र 1) adj. *gelbäugig:* Çiva MBh. 14,194. — 2) m. *Eule* Trik. 2,5,14. Hîn. 185.

हरिन्मणि (हरित् + म°) m. *Smaragd* AK. 2,9,92. H. 1064. Hall. 2,20. Çiç. 3,49. Bhâg. P. 3,28,25.

हरिन्मुद्ग (हरित् + मुद्ग) m. *im Herbst reifender Phaseolus Mungo* (शारदमुद्ग) Râǵân. im ÇKDa.

हरिपञ्चकव्रत n. *eine best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 10,*b*,9.

हरिपर्णा n. *Rettig* H. 1190. — Vgl. हरित्पत्र.

हरिपर्वत m. N. pr. eines *Berges* Mârk. P. 59,13.

हरिपा adj. *den Gelben* (Soma) *trinkend* ṚV. 10,96,8.

हरिपिण्डा f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2642.

हरिप्रबोध m. Titel eines Buches Vâsana 4,1,2.

हरिप्रसाद् m. N. pr. eines Mannes Colebr. Misc. Ess. 2,23.

हरिप्रिय 1) adj. *a) die Falben liebend* oder *bei den Falben beliebt:* Indra ṚV. 3,41,8. — *b)* Vishṇu oder Kṛshṇa *lieb.* — 2) m. *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Nauclea Cadamba* (कदम्ब) Roxb. Ratnam. 204. Çabdâs. im ÇKDa. = कारवीर, पीतभृङ्गराज, बन्धूक, विष्णुकन्द् Râǵân. 10. 11. 4,141. 10,120. 7,89. — *b) Muschel* Râǵân. 13,125. — *c) a fool, a blockhead; armour, mail;* ein N. Çiva's Wilson nach Çabdârthak. — 3) f. या *a) die Geliebte* Vishṇu's d. i. Lakshmi AK. 1,1,4,22. H. 226. Hall. 1,21. Ǵayâdit. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,25. — *b) Basilienkraut* Râǵân. 10,152. Çabdârthak. bei Wilson. — *c) die Erde* Çabdârthak. ebend. — *d) der 12te Tag eines Halbmonats* ebend. — 4) n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* Râǵân. 12,160. *rother Sandel* 142. *schwarzer Sandel* Çabdâs. im ÇKDa.

हरिबधु m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,111.

हरिबोल n. = हरिताल *Auripigment* Ǵayâdit. im ÇKDa.

हरिब्रह्मपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,47.

हरिभ s. हरिव.

हरिभक्त m. *ein Verehrer* Hari's d. i. Vishṇu's Brahmavaiv. P. im ÇKDa.

हरिभक्ति f. Hari's *Verehrung:* °विलास Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,167. gedruckt in Calcutta 1845.

हरिभट m. N. pr. eines Asura Kathâs. 46,36.

हरिभट्ट m. N. pr. verschiedener *Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 198,*a*, No. 466. 200,*b*, No. 476. 201,*b*, No. 479. Ind. St. 2,252. 3,206.

हरिभद्र 1) m. N. pr. verschiedener Männer Wassiljew 324. Târan. 78. 240. 325. °सूरि Hall 64. 165. — 2) n. *die wohlriechende Rinde von Feronia elephantum* Çabdâs. im ÇKDa.

हरिभास्कर m. N. pr. eines Gelehrten Ind. St. 3,206. Notices of Skt Mss. 2,126.

हरिभुज् m. *Schlange* (*Frösche essend*) Çabdar. im ÇKDa.

हरिमन् (von हरि) Uṇâdis. 4,147. m. *gelbe Farbe, Bleichheit, Gelbsucht* ṚV. 1,50,11. fg. AV. 1,22,1. 3,8,9. 19,44,2. *die Zeit* (काल) Uǵǵval.

हरिमत् adj. = हरिवत् als Beiw. und Bein. Indra's H. ç. 31. MBh. 2,147. 14,286.

हरिमत्त m. N. pr. eines Âṅgirasa, Verfassers von ṚV. 9,72.

हरिमन्थ m. 1) *Premna spinosa* Çabdar. im ÇKDa. *Kichererbse* Râǵân. 16,46. Mad. 10,36. = घर्तिमुक्तक Hîn. 179. — 2) N. pr. einer Gegend Bharata zu AK. 2,9,18 nach ÇKDa.

हरिमन्थक m. *Kichererbse* AK. 2,9,18 (nach ÇKDa. Bharata zu AK.). H. 1171.

हरिमन्थज m. dass. Comm. zu AK. 2,9,18 (nach ÇKDa. AK. selbst) *eine Varietät von Phaseolus Mungo* (मुद्ग) H. 1173. शाक °जम् (also n.). Suçr. 1,222,18.

हरिमन्दिर n. 1) Hari's *Behausung*, Vishṇu's *Welt* Weber, Kṛshṇaǵ. 307. — 2) *ein Tempel* Vishṇu's Wilson, Sel. Works 2,145.

हैरिमन्युसायक adj. etwa *den Muth der Falben stachelnd:* Indra ṚV. 10,96,3.

हरिमिक्षिन् m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 826.

हरिमित्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 125,1.

हरिमेध m. desgl. Hall 38.

हरिमेडस्तोत्र n. *ein mit* हरिमीडे *beginnender Lobgesang auf* Vishṇu Hall 135.

हरिमेध adj. = हरिमेधस्, unter den Beiwörtern Nârâjaṇa's MBh. 12,12864. = यज्ञमेध Nîlak.

हरिमेधस् 1) adj. als Beiwort und Beiname Vishṇu's oder Kṛshṇa's MBh. 12,12764. Bhâg. P. 3,10,17. 13,47. 32,18. 4,30,24. 9,13,9. 11,29,45. nach dem Comm. zu Bhâg. P. = संसारं हरति मेधा यस्य. — 2) m. N. pr. eines Mannes MBh. 1,3099. 3,3813. Vater Hari's Bhâg. P. 8,1,30.

हरिर्भर् adj. *den falben* (Donnerkeil) *tragend* ṚV. 10,96,4.

हरिय (von हरि) m. *ein falbes Ross* H. 1238.

हरियूपीया (gesprochen °यूपिया für °यूप्या *goldene Pfosten habend*) f. N. pr. einer Oertlichkeit ṚV. 8,27,5.

हरियोग adj. *mit Falben bespannt:* Wagen Indra's ṚV. 1,56,1.

हरियोजन n. *das Anschirren der Falben* ṚV. 1,62,13. — Vgl. हारियोजन.

हरियोनि adj. *aus* Hari (Vishṇu) *hervorgegangen:* ब्रह्मन् MBh. 12,13390.

हरिराज m. N. pr. eines *Fürsten* Râja-Tar. 7,127.

हरिराम m. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 245,*a*, No. 610. fg. Verz. d. B. H. No. 109. 881. Hall 52. °चक्रवर्तिन् Colebr. Misc. Ess. 2,45. °तर्कवागीश Hall 41. 50. °तर्कवागीशभट्टाचार्य 53. fg. Verz. d. B. H. No. 685. °तर्कालंकार Hall 55. °तर्कालंकारभट्टाचार्य 81. °भट्टाचार्य 31. 42.

हरिराय m. desgl. Notices of Skt Mss. 1,30. Verz. d. Oxf. H. 397,*b*, No. 135. Wilson, Sel. Works 1,272.

हरिरिपु m. *eine best. Pflanze*, = वाजिशत्रु Kâlakarṇa 4,154.

हरिरुद्र m. Hari und Rudra d. i. Vishṇu und Çiva *in einer Person* MBh. 3,1627.

हरिरोमन् adj. *blonde Haare am Körper habend* MBh. 5,3812.

हरिलीला f. Hari's *Spiel*, Titel eines Inhaltsverzeichnisses zum Bhâgavatapurâṇa von Vopadeva Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92. °विवेक ebend. °विवरणसंग्रह Notices of Skt Mss. 2,200.

हरिले ind. (voc.) Anruf an eine Dienerin im Drama Çâṇḍâlikâ bei Wilson.

हरिलोचन 1) adj. *gelbäugig.* — 2) m. *a*) *Krebs* Taitt. 1,2,21. — *b*) *Eule* Çâṇḍâlikâ bei Wilson. — *c*) N. pr. eines Krankheitsdamons Harîv. 9861.

हरिव *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Vjutp. 179. Mél. asiat. 4,638. हरिभ v. l.

हरिवंश m. 1) Hari's d. i. Vishṇu's (Kṛshṇa's) *Geschlecht* Weber, Kṛshṇâs. 270. 283. Çatr. 10,319. H. 35. — 2) Titel des bekannten Anhangs zum Mahâbhârata MBh. 1,357. 18,280. पुराण Harîv. 16358. fg. Weber, Kṛshṇâs. 304 (n.). °चतुष्क Verz. d. Oxf. H. 134,*a*, 11. °कृष्णलीला Mack. Coll. 1,60. — 3) N. pr. eines Dichters Hall in der Einl. zu Vâsavad. 7. Wilson, Sel. Works 1,177. क्षित° Verz. d. Oxf. H. 131,*b*, No. 239.

हरिवंश्य adj. *zu Hari's Geschlecht gehörig* Çatr. 9,99.

हरिवन n. N. pr. gaṇa नुभादि zu P. 8,4,39.

हरिवत्स् (von हरि) adj. voc. हरिवस् Schol. zu P. 8,2,15. 3,1. 1) *von den Falben begleitet, — gefahren, der Falbrossige:* Indra Hall. 1,31. ṚV. 1,81,4. 3,32,7. 7,20,4. 32,12. 10,96,10. VS. 20,38. Ait. Br. 2,31. — 2) *mit dem gelben* (Soma) *verbunden* u. s. w.: इन्द्राय प्रयं हरिवत्सर्चत ṚV. 10,96,2. सो अंस्य कामं हरिवत्समानशे 7. — 3) *das Wort* हरि *enthaltend* Çat. Br. 4,5,8,4. Pañcav. Br. 12,13,7. Lâṭj. 3,1,15. — Vgl. हरिमत्.

हरिवर 1) adj. *der beste unter den Affen* R. 1,1,66. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 52,196. 263. — 3) n. N. pr. einer Stadt Kathâs. 52,263.

हरिवर्ण 1) m. N. pr. eines Mannes Pañcav. Br. 8,9,4.6. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,246,*a*.

हरिवर्पस् adj. *gelbliches —, grünliches Aussehen darbietend:* die Erde ṚV. 3,44,3. Indra 10,96,1.

हरिवर्मन् m. N. pr. eines Dichters (v. l. हरिशर्मन्) Verz. d. Oxf. H. 150,*b*, 42. fg. eines buddhistischen Autors Wassiljew 108. °वर्मदेव N. pr. eines Fürsten Z. f. d. K. d. M. 3,165.

हरिवर्ष 1) n. N. pr. eines von den Gebirgen Nishadha und Hemakûṭa eingeschlossenen Varsha Taitt. 2,1,3. H. 946, Schol. MBh. 2,1044. 6,304. VP. 168. Mârk. P. 60,4. Bhâg. P. 5,16,9. 16,7. Çatr. 1,293. — 2) m. N. pr. eines Beherrschers von Harivarsha, Sohnes des Âgnidhra, VP. 162. fg. Bhâg. P. 5,2,19.

हरिवल्लभ 1) m. N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. 2, 42. Verz. d. Oxf. H. 274,*a*, No. 649. Kshitîç. 10,15. °राय 12,6. — 2) f. या Bez. zweier Pflanzen (Vishṇu *lieb*): *Basilienkraut* und = लया Râgân. im ÇKDr.

हरिवालुक n. *die wohlriechende Rinde von Feronia elephantum* AK. 2,4,4,9. Ratnam. 126.

हरिवास 1) adj. wohl *ein gelbes Gewand tragend:* Vishṇu MBh. 6. 2949. — 2) m. *Ficus religiosa* Madan. 5,4.

हरिवासर n. Vishṇu's *Tag*, Bez. *des 11ten und 12ten Tages* (oder *des 4ten Viertels dieses Tages*) *in einer Monatshälfte* Ekâdaçitattva u. s. w. im ÇKDr. Weber, Kṛshṇâs. 234. — Vgl. हरिदिन.

हरिवासुक n. = हरिवालुक Colebr. und Lois. zu AK. 2,4,4,9.

हरिवाहन 1) adj. *mit Falben fahrend;* m. Bez. *a*) Indra's Med. s. 251. MBh. 1,1296. 3,1870. 12053. 12,6743. 13,1339. 14,108. R. Gorr. 1,64,25. 6,70,33. °दिश् *Osten* Vîr. 47. — *b*) *der Sonne* Med. — 2) m. Vishṇu's *Vehikel*, Bez. Garuḍa's Hir. 10.

हरिविलासकाव्य n. Titel eines *Gedichts* Notices of Skt Mss. 1,46.

हरिवृत m. wohl = 2. हरिद्रु 1) Suçr. 2,79,1.

हरिवर्ष n. = हरिवर्ष 1) Buddhaprabhâsa im ÇKDr.

हरिव्याम m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 1,151. °मिश्र Verz. d. B. H. No. 814. °मुनि Hall 115.

हरिव्रत adj. etwa *dessen Gebiet*, d. h. *Alles was ihn umgiebt, gelb ist:* Agni ṚV. 3,3,5. nach anderer Lesung हरिवच् Sây. zu d. St.

हरिर्श (von हरि) adj. gaṇa लोमादि zu P. 5,2,100.

हरिर्शंकर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,23.

हरिर्शर्ण und हरीर्शप adj. (f. या) VS. Pair. 3,127. *in Gold ruhend*, —

befindlich: तनू VS. 3,8. f. Bez. dieses Spruches Ind. St. 10,364.

हरिशयन n. Vishṇu's Schlaf Gjotistattva im ÇKDa.

हरिशर m. ein N. Çiva's Çabdârthak. bei Wilson.

हरिशर्मन् m. N. pr. verschiedener Personen Verz. d. Oxf. H. 101,b, 20. 150,b, No. 320. 292,b,39. Kathâs. 30,92. 48,107.

हरिशिख m. desgl. Kathâs. 23,56. 34,114. 54,24. 108,189.

हरिशिप्र adj. gelbe Kinnbacken habend RV. 10,96,4. — Vgl. हिरिशिप्र.

हरिश्चन्द्र (हरि + चन्द्र) 1) adj. gelb —, golden schimmernd RV. 9, 66,26. — 2) m. N. pr. eines Fürsten mit dem patron. Vaidhasa aus dem Geschlecht des Ikshvâku Âit. Br. 7,13. Çâṅkh. Br. 15,17. Maitrjup. 1,4. ein Ṛshi (Râgarshi?) P. 6,1,158. im Epos ist Har. ein Sohn Triçaṅku's, der für seine Frömmigkeit und Freigebigkeit mit seinen Unterthanen in den Himmel erhoben, aus diesem aber wegen seines Hochmuths wieder vertrieben wird und mit seiner Stadt (vgl. सोभ) im Luftraum schweben bleibt, H. 701. MBh. 2,294. 554. 558. fgg. 12,614. 13,187. 2290. 8663. fg. 18,106. Hariv. 754. fgg. 11110. Spr. (II) 4830. VP. 372 nebst N. 2. Vasiṣṭha, Kṛshṇâç. 252. Mârk. P. 7,1. fgg. Bhâg. P. 9,7,6. 16,31. 10,72,21. Râm-Tap. 4,648. 7,798. Daçak. 8,1 v. u. Wilson, Sel. Works 1, 181. 362. Verz. d. B. H. No. 1198. als Autor No. 941. N. pr. eines historischen Fürsten Journ. of the Am. Or. S. 7,35. fg. eines Sohnes des Bharahpâla Verz. d. Oxf. H. 276,a, 8. — 3) N. pr. eines Wallfahrtsortes Verz. d. Oxf. H. 39,b,16. 42,a,11. — Vgl. हरिचन्द्र.

हरिश्चन्द्रपुर n. Hariçchandra's (in der Luft schwebende) Stadt (vgl. सोभ) Taitt. 2,1,19. so v. a. Luftspiegelung, Fata Morgana (vgl. खपुर) Varâh. Bṛh. S. 32,21.

हरिश्मशारु adj. blondbärtig RV. 10,96,4.

हरिश्मश्रु 1) adj. dass. MBh. 7,7894 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 13,6386. Hariv. 12539. 13073. 13995. R. 7,23,4. 49. — 2) m. N. pr. eines Dânava Bhâg. P. 7,2,18. — Vgl. हरिश्मश्रु.

हरिश्याम m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 337,b,25.

हरिश्रावा f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 336 (VP. 183; °श्रवा die ältere Ausg.).

हरिश्मी adj. 1) schön gelb, goldfarben: Heerde Vîkaṇ. 2,10. Pâraâv. Bh. 15,3,10. — 2) Soma-beglückt: मद् RV. 8,15,4.

हरिश्मीनिधन n. N. eines Sâman (aus dem Tṛka RV. 9,66,25. fgg.) Ind. St. 3,246. Pâraâv. Bh. 15,3,9.

हरिष m. = हर्ष Freude ÇKDa.

हरिषेच् oder °षाच् adj. um den gelben (Soma) beschäftigt (सच्, साच्): die Steine RV. 10,94,12.

हरिषेण (हरि + सेना) gaṇa सुयामादि zu P. 8,3,98. Schol. zu 99. N. pr. des 10ten Cakravartin in Bhârata H. 694. हरिसेन LIA. 2,940. — Vgl. हरिषेणि, °षेण्य.

हरिष्ठा adj. mit Falben fahrend (2. स्था,): die Sonne RV. 1,191,10. Indra 3,49,2. 6,17,2.

हरिस् MBh. 13,2119 fehlerhaft für हविस् (so ed. Bomb.).

हरिसक्थ n. संज्ञायाम् P. 8,3,99, Schol.

हरिसिंह m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 34,211.

हरिसुत m. = हरिषेण H. 694.

हरिसूक्त n. N. einer Hymne Verz. d. Oxf. H. 398,a, No. 144.

हरिसेन s. हरिषेण.

हरिसेवकमिश्र m. N. pr. eines Autors Notices of Skt Mss. 2,268.

हरिसोम m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 114,84. fgg.

हरिस्तुति f. Hari's (Vishṇu's) Preis, Titel einer Hymne Hall 135.

हरिस्तोत्र n. desgl. Verz. d. B. H. No. 452. Hall 136.

हरिस्वामिन् m. N. pr. verschiedener Personen Verz. d. Oxf. H. 70, a,8. 152,b,20. fg. 35. 42. 361,a, No. 2. fgg. Hall 192. Kathâs. 79,5. 87,4.

हरिक् SV. II, 3,1,88,1 fehlerhaft und sinnlos; vgl. AV. 2,5,1.

हरिकेशोकस m. N. pr. eines Mannes Râm-Tap. 8,1036.

1. हरिक्य m. ein Ross Indra's R. 1,6,21. 7,22,8.

2. हरिक्य adj. falbe Rosse habend, Beiw. und Bein. Indra's AK. 1, 1,1,39. Hall. 1,52. MBh. 1,2685. 5402. R. 4,43,40. uneig. von Nârâjaṇa MBh. 12,12864. °कृष्णानुज m. Indra's jüngerer Bruder d. i. Vishṇu oder Kṛshṇa (vgl. इन्द्रानुज) R. 7,7,41.

हरिहर m. 1) sg. Vishṇu und Çiva in einer Person Spr. (II) 6486. Verz. d. Oxf. H. 261,a,30. du. oder im comp. Vishṇu und Çiva Hariv. 10672. °कथा Spr. (II) 7173. Verz. d. Oxf. H. 34,b,7. °मया 93,b,10. fg. °मण्डल Verz. d. B. H. No. 920. fg. °हरद्वैतवादिन् s. 160. °तात्पर्य Mack. Coll. 1,106. — 2) N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. 1,301. 2,253. 257. fgg. Ind. St. 1,471. Verz. d. B. H. No. 266. 571. 1052. Verz. d. Oxf. H. 125,a,18. 193,b, No. 441. 197,a, No. 457. 223,a,10. 273,b,1 v. u. 280,a,7. 286,b, No. 671. Tattvas. 22. Hall 23. 29. 93. LIA. 4,171. fg. Kshitîç. 5,21. Burnouf, Bhâg. P. I, 12. °पद्धति Verz. d. Oxf. H. 292,b,39. °भाष्य 274,a, No. 649. 280,a,8. °स्नान 118, b, No. 198. °तर्कालंकारभट्टाचार्य 141,a, No. 289. °दीक्षित Notices of Skt Mss. 2,198. °देव Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Çl. 6. °पुरी Verz. d. Oxf. H. 227,b,20. °भट्ट Verz. d. Cambr. H. 66. °भट्टाचार्य Verz. d. Kop. H. 101,a. °महाराज Verz. d. Oxf. H. 244,a, No. 606. °सरस्वती Hall 141. °स्वानन्द 108. °स्वामिन् 122. — 3) N. pr. eines Flusses Pâlâçâkîrtend. 12,a,1.

हरिहरात्मक 1) adj. Vishṇu's und Çiva's Wesen umfassend, beide angehend: रूप Hariv. 10661. स्तोत्र 10694. स्तव Verz. d. Oxf. H. 85,b, 5. क्षेत्र Vâmana-P. im ÇKDa. — 2) m. ein N. Garuḍa's und Daksha's Wilson nach Çabdar. u. Daksha शिववृष Çiva's Stier ÇKDa. nach dens. Autt.

हरिहरिहरिवाक्नमाधन Titel einer Schrift im Tandjur.

हरिकेति f. 1) Indra's Waffe so v. a. Regenbogen; s. °मत्. — 2) Vishṇu's Waffe so v. a. चक्र Diskus, Rad; s. °हति.

हरिकेतिमत् (von हरिकेति) adj. mit einem Regenbogen geschmückt: ककुभ् Mâlatîm. 149,1.

हरिकेतिहति m. (nach dem Rade benannt) = चक्रवाक Anas Casarca Gm. Çiç. 9,15.

हरोब्रीशर्मन् s. हरिब्रीव.

हरीतक (von हरित्) m. f. (ई) und n. Taitt. 3,5,23. 1) m. Terminalia Chebula MBh. 3,2405. 11570. Hariv. 12881 (nach der Lesart der neue-

ren Ausg.). Brahma-P. in LA. (III) 51,20. überall des Metrums wegen. — 2) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. dass. AK. 2,4,3,40. Taik. 3,3, 193 (= गौरी, शुक्लवचा und हैमवती). H. 1146. Halâj. 2,463. Ratnam. 89. Râǵân. 11,221. fgg. (sieben Arten). Frucht (ebenfalls कृतकी P. 4,3,167. 1,2,52, Vârtt. 1. AK. 2,4,3,18) und Gallapfel des Baumes zum Gelbfärben gebraucht; unter den Früchten das beste Purgativ. Suçr. 1,142,3. 14. 144,18. 160,16. 2,174,20. 417,12. Çârṅg. Saṃh. 1, 4,3. कृतस्य भवने ज्ञाता क्रीता च स्वभावतः। कृतेत्सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता कृतीकी ॥ Madan. 1,3. Haariv. 12681 (besser कृतीका: die neuere Ausg.). Varâh. Bṛh. S. 76,11. 77,10. °चूर्ण 31. दृष्टं हि लोके कृतकीफलस्य भक्तप्रदोस्तद्रसमभिक्षेतरयोर्विरेचनम् Çârṅg. zu Kâṭhân. Up. S. 22. °गुण Verz. d. B. H. No. 957. Verz. d. Oxf. H. 311,b,9. Lalit. ed. Calc. 201, 1. — Vgl. पशु°.

कृतीश (कृति + ईश) m. *Affenfürst* R. 5,36,10. fg. — Vgl. कृतीया.

कृतीशय s. कृतिशय.

कृतीषा (v. l. °शा) f. *ein gemischtes Gericht aus Fleischstücken mit allerlei Körnern und Gewürzen in Butter und Wasser gekocht*, vulgo घास Bhâvapr. 5.

कृतुण *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Vaidyp. 179. Mél. asiat. 4,639.

कृतेउ N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,b,6 v. u.

कृतेणु Uṇâdis. 3,1. 1) m. *a) eine Erbsenart mit nicht ganz kugelförmiger Frucht* AK. 2,9,16. H. 1171. an. 3,234. Med. p. 86. Ratnam. 120. Râǵân. 16,58. Madan. 10,24. Suçr. 1,73,6. 79,21. 132,18. 197,13. 198, 3. 2,20,19. 339,1. °मात्र 353,2. — *b) die Grenzen eines Dorfes bezeichnende Schlingpflanzen* und ein N. von Lauṅkâ Çabdârthak. bei Wilson. — 2) f. *a) ein best. Arzneistoff*, = रेणुका AK. 2,4,4,5. H. an. Med. — *b) ein braves Weib* H. an. Med. beruht ursprünglich wohl auf einer Corruption von मती-न *Erbsen*. — *c) a deer of copper colour* Wilson nach Çabdârthak.

कृतेणुक m. = कृतेणु 1) *a*) Râǵân. 16,58. Lalit. ed. Calc. 331, N. 1. f. घा dass. Suçr. 1,139,3. 4 (könnte hier auch m. sein). 8. 157,11. 2, 103,18. 544,1.

कृर्त nom. ag. = कृर्तृ *Vernichter:* त्रिपुरकृर्ताय MBh. 13,906; vgl. यमकृर्त 905.

कृर्तृ (von 1. कृ) nom. ag. 1) *Träger, Bringer* Âpast. 2,15,7. Kâtj. 84. सोम° MBh. 13,682. वार्ता° Milârin. 150,10. Bhâg. P. 4, 9,38. — 2) *Entwender, Entzieher, Entführer, Dieb* Jâṭ. 2,169. MBh. 13,3464. 15,199. R. 4,48,15. Spr. (II) 7371. Kathâs. 61, 284. वधूनाम् Bhâg. P. 2,7,33. in comp. mit dem Object M. 8,192. 342. 9,280. 11,51. Jâṭ. 3,210. R. 1,40,9. 42,8. Mâlav. P. 15,29. 32. Bhâg. P. 2,7,25. 4,24,8. 7,6,5. Journ. of the Am. Or. S. 7,44,2. mit acc.: परालयम् R. 7,59,8,34. — 3) *Ablöser, Abhauer:* येन वृत्रशिरो कृर्ता (fut.) Bhâg. P. 6,9,33. 11,18. — 4) *Erheber von Abgaben (Fürst)* Spr. (II) 6580. — 5) *Entferner, Verscheucher:* भय° MBh. 3,15708. घार्ति° Kathâs. 99,66. शोक° Bhâg. P. 3,14,18. — 6) *Vernichter:* जगत: neben भर्तृ und हर्तृ (so ed. Bomb. st. कर्तृ) MBh. 3,8750. Haariv. 14480. — विश्वास° MBh. 13,3466 wohl fehlerhaft für °कृत्तृ; vgl. विश्वासघात, °घ्न u. s. w. — Vgl. मनो°, विघ्न°, सुधा°, कार्त्र, कार्त्य.

कृर्तव्य (wie eben) adj. 1) *zu entwenden, zu entziehen, mit Gewalt zu nehmen, zu rauben* M. 11,16. R. 3,44,6. Pañkat. 33,5. III,192. n. impers. M. 11,16. तस्मात्तेभ्य: प्रदातव्यं न कृर्तव्यं कदा च न Ver. d. Oxf. H. 32,a,44. — 2) *sich anzueignen, dem man sich hinzugeben hat:* भाव Spr. (II) 6837, v. l. (in der N. zu lesen 3,56,27).

कृर्मन् n. = मृन्मय Çabdar. im ÇKDa.

कृर्मित adj. = क्षिप्त und दृग्ध Med. t. 174.

कृर्मुट m. *Schildkröte; die Sonne* Çabdârthak. bei Wilson.

कृर्म्य n. *ein festes Gebäude: Burg, Schloss, Herrenhaus; Wohnhaus, Vorrathshaus* Naigh. 3,4 (= गृह). AK. 2,2,9. 3,4,24,160. H. 993. Halâj. 2,138. तेषां सं कृन्मो घृतानि यद्येदं कृर्म्यं तवो RV. 7,55,6. प्रतीच्या गादधि कृर्म्येभ्य: (उषा:) 70,2. विशो कृर्म्यस्य 1,121,1. भयस्त विश्वा भुवनानि कृर्म्या *Häuser und Menschen bebon* 166,4. कृर्म्यस्य सप्तणि: 1,71, 4. 78,3. 13,46,3. 73,10. यदा यमो भवति कृर्म्ये क्षित: 114,10. यदो यमाय कृर्म्यमबध्नन्पशुं मानवा: *eine Burg bauten* AV. 18,4,55 (vgl. Taitt. Âr. 4,5, 2). इदं तस्मै कृर्म्यं करोमि TBr. 3,7,6,3. Nir. 6,33. MBh. 1,8075. 15,441. Haariv. 8710. 9038. °प्रासादसंकुला R. 1,5,9. 2,33,3. 59,15. 91,32. R. Gorr. 2,27,10. 3,42,46. Mṛicch. 47,3. Kim. Nitis. 15,12. Megh. 33. Ṛit. 1,9. Vikr. 56. Spr. (II) 928. 1478, v. l. 1575. 2589, v. l. 3700. 3509. Varâh. Bṛh. S. 43, 4. 86,17. Kathâs. 20,138. fg. Bhâg. P. 3,11,30. Hit. 39,30. Bhatt. 8,34. स्फटिक° Kumâras. 6,42. °तल Suçr. 1,170,8. Ṛit. 1,3. Spr. (II) 5714. Pras. 7,3. °पृष्ठ Haariv. 8711. Ṛit. 1,28. Spr. (II) 7372. Bhâg. P. 3,22,17. °स्थल 4,25,15. Megh. 67. °वलभी Varâh. Bṛh. S. 57,4. कृर्म्याय Râgat. 6,47. Kathâs. 14,19. °घर Weber, Kâmpaç. 269, N. 1. am Ende eines adj. comp. f. घा Megh. 7. Kathâs. 20,141. so v. a. *Gefängniss:* युयुत्सन्तं तमसि कृर्म्ये धी: RV. 5,32,5. घर्षिरिन्नाय कृर्म्ये 8,3,23. — Vgl. तृण°, मणि°, मरु°, मार्ग°, राज्ञ°.

कृर्म्येष्ठा adj. *im Hause befindlich, im Stall gehalten* RV. 7,56,16. ebenso घर्म्येष्ठा 10,106,5.

कृर्ष्, कृर्षति Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). 14 (गति°). Dhâtup. 15,7 (ebenso). *gern wollen, haben wollen, begehren nach* (acc.) Nir. 6,17. RV. 1, 93,7. 161,3. धारा: 4,58,3. सोमम् 3,40,2. वच: 5,54,15. मन्म 10,96,11. 5. 10. mit loc.: सर्वेषु *sich's wohl sein lassen, sich behaglich finden bei* 112,7. med.: घृतधारा मादिने कृर्ष्यमाणा: 3,6,4. घर्कृर्ष्यधा उपस्तुत: 10. 96,5. partic. praes.: धनेरधि प्रवता यासि कृर्षन् *gern, mit Vorliebe* 4,3. Davon scheint कृर्षन् nicht verschieden zu sein: कृर्षन्नृषसमर्चय: सूर्यं कृर्षन्नरोचय: 3,44,2. इन्द्रो कृर्षन्मनुषो वज्रं शुक्रैरभीवृतम् (घपावृणोत्) 5, wofür wohl zu lesen ist: कृर्षन्मनुषं व्रतम्. Die belegbaren Formen gehören alle zum Präsensstamm कृर्ष्, der auch auf कृ (vgl. — प्र caus.) zurückgeführt werden könnte. Für कृर्ष् spricht कृर्षत.

— *intens.* चाकृर्षीति, चाकृर्ति, चाकृर्षति u. s. w. Siddh. K. 158, *b*, 11. fg.

— घभि 1) *lieben:* यं विश्व इळाभिकृर्षन्ति देवा: RV. 10,112,6. घन्यो घन्यमभि कृर्षत AV. 3,30,1. मनसा स्त्रियम् Çat. Br. 14,6,10,15. — 2) *herbeiwünschen:* कामं नो घ्ने घभि कृर्ष दिव्य: TS. 2,5,8,3.

— घा med. 1) *lieben:* घा रोदसी कृर्ष्यमाणो महित्वा RV. 10,96,11. — 2) etwa *gute Aufnahme finden:* कदा वसो स्तोत्रं कृर्षत घा RV. 10,105,1.

— प्र caus. *Verlangen erregen, reizen:* प्र वः सुतासो रभसा कृपन्त (von कृ) पूर्णा: RV. 4,37,2.

— प्रति 1) *gern haben wollen, — annehmen; herbeiwünschen, sich sehnen nach:* वाचम् RV. 1,40,6. 57,4. 144,6. 10,122,2. AV. 3,8,2. सूक्तानि RV. 1,93,1. 8,44,2. स्तोमम् 5,2,11. प्रति मनायोरुचथानि कृपन् 4,24,7. 8,43,2. 17. उक्था 1,165,4. घृताचीम् 10,70,1. घृतम् TBa. 2,8, 9,1. AV. 1,7,3. 8,2. 10,6,35. प्रपस्वत: प्रति कृपामसि त्वा 116,3. अग्निंत्रीव प्रति कृपासि सूनुम् AV. 12,3,22. med.: इयं वो अस्मत्प्रति कृपते मति: *sehnt herbei* RV. 5,87,1. — 2) *verschmähen, zurückweisen:* घोरांति प्रति कृपत AV. 5,7,6.

— वि *verschmähen, nicht wollen* Nir. 7,17. Vgl. अविकृपतक्रतु.

कृपर्त (कृपि + 3. अत) 1) adj. *gelbäugig* VS. 30,21. MBn. 3,17130. Gal. 10,38. — 2) m. a) *Löwe* AK. 2,8,1. H. 1284. Hali. 2,59. MBu. 9, 595. R. 1,15,6. — b) *der Löwe im Thierkreise* Verz. d. Oxf. H. 97,b,31. — c) *Affe* R. 4,28,22. 5,47,10. 53,8. 9. 60,6. — d) ein N. Kubera's Gaṇina im ÇKDa. — e) N. pr. α) eines Krankheitsdämons Pân. Gaṇ. 1,16. — b) eines Sohnes des Pṛthu Bhâg. P. 4,22,54. 24,2. — c) eines Asura Bhâg. P. 3,18,18. = किराणयात Comm. — Vgl. पिङ्गात.

कृपर्तन् adj. = कृपत MBu. 14,192.

कृपर्तङ्ग (कृपि + 3. अङ्ग) m. N. pr. eines Sohnes des Kampa Harîv. 1700. fg. VP. 445.

कृपर्तर् (von कृप्; vgl. दृपत, यजत) Uṇâdis. 3,110. 1) adj. *begehrenswerth, lieb, erwünscht:* Agni RV. 1,58,4. या कृपर्तो यजत: सान्वंस्थात् 3,5,3. 8, 44,5. VS. 3,4. Indra RV. 2,21,1. 10,28,7. seine Rosse 8,6,36. 12,23. Donnerkeil 1,57,2. मद् 130,3. 10,96,1. 9. 10. Soma 3,44,1. 8,61,18. 9,25,4. 26,5. 65,25. 86,42. 96,17. 98,7. 8. 10,94,8. ज्ञार् 11,6. ऊर्मि 123,2. सत 8,89,5. — 2) m. a) *Ross* Uṇâdis. *ein zum Opfer bestimmtes Ross* Uṇâdis. im ÇKDa. — b) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Prâgâtha, Verfassers von RV. 8,61 (aus v. 18 entnommen).

कृपर्वत s. कृपयत.

कृपर्वन m. N. pr. eines Sohnes des Kṛta Bhâg. P. 9,17,17.

1. कृपय (कृपि + अय) m. *ein falbes Ross* (Indra's): °पुरुकृत रथेन MBu. 3,16569. fg. R. 3,9,19.

2. कैपय (wie eben) 1) adj. *mit falben Rossen fahrend:* Indra RV. 2, 17,5. 3,52,7. 7,24,4. 25,5. 31,4. 12. 8,21,10. Vâlakh. 5,2. — 2) m. a) ein N. Indra's H. 172. Bhâg. P. 8,11,21. 15,5. auf Çiva übertragen MBu. 13,1169. — b) N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. eines alten Fürsten aus Ikshvâku's Geschlecht MBu. 5,3934. fgg. 13,1949 (Grossvater Divodâsa's). fgg. 3669. Harîv. 3142. fgg. ein Sohn Dṛḍhâçva's 707. VP. 362. Bhâg. P. 9,6,24. Dhṛshṭaketu's R. 1,71,8. 9 (73,7. 8 Gorr.). VP. 390. Bhâg. P. 9,13,15. Pṛshadaçva's VP. 371. Kakshus' 453. Anaraṇja's Bhâg. P. 9,7,4. pl. Bez. der Söhne Daksha's Harîv. 126. fgg. VP. 117. Bhâg. P. 6,5,1. 6. — Vgl. कार्पय.

कृपयचाप m. n. Indra's *Bogen d. i. Regenbogen* Harîv. 3577.

कृपयत m. N. pr. eines Sohnes des Kṛti Harîv. 1515 nach der Lesart der neueren Ausg., कृपवत (in c. ist wohl कृपवतसुत: zu lesen) die ältere.

कैपयप्रसूत adj. *vom Falbrossigen angewiesen:* दिश: RV. 3,30,12.

कृपात्मन् (कृपि + आ°) m. Bein. des Vjâsa Uttama VP. 3,3,16. neben Uttama Verz. d. Oxf. H. 80,a,14.

कृपानन्द (कृपि + आ°) m. N. pr. eines Schülers des Râmânanda Wilson, Sel. Works 1,59. fg.

कृप्, कैपति Dhâtup. 17,59 (अलीके. घालीक्ये). ved. कृपते, कैपस्, कैपमाण (*froh* AK. 3,1,7. H. 435). 1) *freudig —, ungeduldig bereit sein zu* (dat.); *sich freuen:* तव रार्ध: सोमपीथाय कृपते *auf den Trunk wartet so v. a. für den Trunk ist deine Gunst sich zu erweisen bereit* RV. 1,51,7. 127,6. 4,38,3. कृपते अस्य सेनी *ist ungeduldig* 9,61,1. यद्ये कृपस्व दातवे 8,19,29. कर्तवे 10,112,1. 30,3. 84,1. Später कैप्यति (तुष्टौ) Dhâtup. 26,119. *sich freuen* Pân. Gaṇ. 1,16. M. 2,54. 98. 9,309. MBu. 7,5988 (नाकृप्यट् mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,48,3. कस्त्वया सुखिना न कृप्यति न नन्दति 3,45,3. 78,31. 5,88,2. Spr. (II) 3398. 3957. 7411. Kathâs. 22,230. Daçak. 88,6. Bhâg. P. 1,18,50. 5,10,9. Auge Râga-Tar. 5,1. कृप्यत् Kathâs. 26,244. 44,80. 53,130 (अवादीदृप्यन् zu lesen). Bhâg. P. 4,25,61. अकृर्प R. 5,7,23. Kathâs. 12,9. 18,208. 33,115. 36,391. Râga-Tar. 6,262. अकृपुस् MBu. 15,914. अकृपताम् Bhaṭṭ. 15,104. med.: कृप्यसे Mâlav. P. 110,11 (ohne Noth). अकृप्त MBu. 2,1219. 2184. 3,3017. 11271. 5,7225. 6,3411. Harîv. 8139. R. 5,52,19. Mâlav. P. 110,7. अकृपिरे MBu. 2,1553. Harîv. 8317. R. 2, 63,15. — 2) *starr werden, zu Berge stehen* von den Haaren des Körpers vor Freude oder Schreck: रोमाणि मे ऽकृपन् MBu. 2,1757. कृप्यन्ति रोमकूपानि 6,3213. कृप्यत्तनूरुह Bhâg. P. 10,39,56. *starre Haare am Körper bekommen, schaudern:* यद्वि: स्पृष्टो न कृप्येत् Verz. d. Oxf. H. 51,b,7. अकृपिरे मुदा R. 5,1,8. कृप्यते नाम्बुसंस्पर्शात् Mâlav. P. 43, 11. *gell werden* Suçr. 2,155,20. *steif — starr werden* überh.: कृप्यतबाहणी यस्य 1,256,20. — 3) partic. a) कृष्ट Vop. 26,113. mit gegenwärtiger Bedeutung Kâr. zu P. 3,2,188. α) *froh, guter Dinge, munter* (von Menschen und Thieren) AK. 3,2,33. 3,4,26,34. H. an. 2,102. Med. ṭ. 31. कृष्ट पुष्ट बलम् M. 7,171. R. 1,53,5. 6. Kâm. Nîtis. 10,26. Jâtâ. 1,247. MBu. 1,5933. 3,1804. 2128. 2715. 2658. 3038. 5,7179. R. 1,1,57. 4,20. 2,50,26. 3,49,18. Ry. 6,35. Vikr. 75,1. Spr. (II) 1161. 3042. 6082. Vaâs. Bṛh. S. 5,73. 21,17. 44,28. 68,74. 93,7. Weber, Kṛshṇaj. 282. Kathâs. 18,214. 27,102. Daçak. 66,3. Râga-Tar. 6,262. Brahma-P. in LA. (III) 83,6. Çiç. ebend. 36,9. चेतस् R. 2,40,13. °चित्त ad Mucch. 113. °चेतन R. 2,26,4. °मनस् Pañcat. 87,17. °मानस H. 435. MBu. 1,5590. °रूप 5,7513. °संकल्प 3,3005. °दृष्टि Vaâs. Bṛh. S. 94, 13. धृति° Daçak. 89,12. कृष्टवत् adv. MBu. 1,7119. R. 5,64,5. कृष्ट = विस्मित P. 7,2,29, Vârtt. 2. H. an. Med. = प्रकसित (wohl nur fehlerhaft für प्रतिकृत) Med. — β) *starrend, zu Berge stehend:* लोमानि P. 7,2,29. केशा: Vârtt. 1. °रोमन् Taik. 3,1,21. Bhâg. 11,14. MBu. 4,1239. R. 1,21,1 (22,1 Gorr.). 51,1 (52,1 Gorr.). R. Gorr. 2, 9, 34. Suçr. 1,120,18. Vaâs. Bṛh. S. 92,3. Bhâg. P. 4,24,22. Vet. in LA. (III) 3,22. °तनूरुह MBu. 1,5296. R. 3,50,27. °तनु = °तनूरुह Bhâg. P. 2, 9,17. कृष्ट = रोमाञ्चसंयुत, रोमाञ्चित H. an. Med. *starr, steif:* °लाङ्गुललोचन (= उत्फालित Nîlak.) Harîv. 4112. von den Zähnen so v. a. *stumpf*, = प्रतिकृत P. 7,2,29, Vârtt. 2. Taik. 3,3,105. = ऽप्रतिकृत H. an. — b) कृषित Vop. 26,113. α) *froh, guter Dinge, munter* H. an.

Mān. 1. 176. ṚV. 1,103,7. Bhāg. 11,65. MBh. 8,4507. 4582. = विस्मित P. 7,2,29, Vārtt. 2. H. an. Med. — β) *starrend, zu Berge stehend:* लोमानि P. 7,2,29. केशा: Vārtt. रोमाणि MBh. 4,1248. 9,3403. = रोमाञ्चसंयुत H. an. = कृष्टलोमन् Med. von Blumen und Kränzen so v. a. *nicht herabhängend, frisch* MBh. 3,2215. 2238. von Zähnen so v. a. *stumpf*, = प्रतिकृत P. 7,2,29, Vārtt. 2. = उप्रतिकृत H. an. = प्रकृत Med. — γ) = प्रणत Bhāg. im ÇKDa. — δ) = वर्मित ebend.

— caus. हर्षयति 1) *ungeduldig machen, freudig erregen, erfreuen:* इन्द्रं त्रैताय हर्षय ṚV. 8,15,13. 8,111,3. 10,16,14. M. 3,233. MBh. 1,4460. 6038. 8280. 5,7132. 14,1935. Harīv. 9914. 9979. 13698. R. 2,96,17 (105,16 Gorr.). R. Gorr. 2,2,7. 3,34. 4,13,33. Çiç. 102, v. l. Kathās. 124,247. Bhāg. P. 3,13,24. 6,10,14. 8,4,26. 10,73,32. med. MBh. 7, 4875. कस्ते दक्षाय हर्षयत्त पीता: *erregen* ṚV. 4,37,2. — 2) *starren machen:* लोमानि हर्षयो चक्रे (so zu lesen) Verz. d. Oxf. H. 47,a,16 v. u. — 3) *sich freuen* M. 6,67. Spr. (II) 3846. — 4) partic. हर्षित gaṇa tārakādi zu P. 5,2,36. a) *erfreut* R. 2,82,24. 85,11. 106,22. R. Gorr. 1,14,24. 2,6,8. 5,23,11. Pañcat. 46,13. परम° Harīv. 13267. R. 1,46, 18 (47,7 Gorr.). 68,13. सुतजन्म° Rāgh. 3,20. — b) *zum Starren gebracht:* तस्य ते सर्वरोमाणि वचसा हर्षितानि (so zu lesen) यतू Verz. d. Oxf. H. 7,b,11 v. u. — c) n. *Freude:* स° adj. *erfreut* MBh. 4,847. — — 3) partic. हर्षितवत् *erfreut, sich freuend über* (gen.) R. Gorr. 1,18,6.

— intens. 1) *ungeduldig* —, *heftig erregt sein:* जर्हृषाणो धन्वसा ṚV. 1,52,2. 7,21,2. उद्दो रुद्रमपिबज्जर्हृषाण: *ungeduldig, lustig* 10,102,4. *gierig* 10,7. VS. 5,37. Āçv. Çr. 2,11,8. — 2) *heftig erregen:* मत्सरासो जर्हृषन्त प्रसार्कम् ṚV. 8,17,4.

— अनु *nach* —, *mit Jmd* (acc.) *freudig erregt* —, *begeistert werden, sich freuen mit:* इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रम् AV. 6,97,3 (vgl. ṚV. 10,103,6). Ait. Br. 3,4 (s. unter उद्). कृष्टाश्च मानुकृष्यामि R. Gorr. 2,71,20. अनुकृष्यति कृष्यन्त्याम् Bhāg. P. 4,25,61.

— अभि caus. *erfreuen* MBh. 6,1333. 12,1894.

— समभि caus. dass. MBh. 14,2159.

— अव caus. partic. °हर्षित *zum Schaudern gebracht* MBh. 9,2736.

— आ *schaudern:* नयने: अवज्वलाकृष्यन्नच: Bhāg. P. 10,82,14.

— उद् 1) *ungeduldig erregt, — bereit sein:* किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ ṚV. 4,21,9. उद्धर्षन्तो वाजिनानि AV. 3,19,6. यमिक्ष्व कृष्यति नि च (v. l. अनु st. नि च) कृष्यति so v. a. *flackert lustig auf* Ait. Br. 3,4. — 2) *sich öffnen* (von geschlossenen Kelchen): उदकृष्यन्वारिजानि सूर्योत्थाने Bhāg. P. 10,20,47. — 3) partic. उद्धर्षित *schaudernd:* शीतेन Rāja-Tar. 3,181. — caus. *freudig erregen, ungeduldig machen:* उद्धर्षयायुधानि मनांसि ṚV. 10,103,10. AV. 5,20,8. *erfreuen* ṚV. 5,27,6. in der Bed. *ermuthigen* hierher oder zu घर्ष् (s. das. und füge noch Mālav. P. 125,20 hinzu). — Vgl. उद्धर्ष fgg.

— प्रोद्, partic. प्रोद्धर्षित *schaudernd* Pañcat. 94,4 (प्रोद्° in beiden Ausgg.).

— समुद् caus. *freudig erregen* Kiṇ. 26,1. — Vgl. समुद्धर्ष.

— नि *zusammensinken:* eine Flamme Ait. Br. 3,4; s. unter उद्.

— परि, partic. °हृष्ट *hoch erfreut:* °मानसा R. 2,60,22. °कृषित dass. MBh. 8,1306. — caus. *hoch erfreuen* MBh. 3,857. Harīv. 5743. R. 6,112,29. °हर्षित partic. MBh. 7,2199. R. 1,69,18. — Vgl. परिकृर्षण.

— संपरि caus. *hoch erfreuen* MBh. 3,17470.

— प्र *sich der Freude hingeben, munter sein:* न प्रकृष्येत्प्रियं प्राप्य Bhāg. 5,20. 11,26. वाजिन: MBh. 4,1461. 14,769. R. Gorr. 2,45,6. 71, 6. 5,37,2. Spr. (II) 266. को न प्रकृष्येदुःखेन सुखवपरिवर्तिना Kathās. 22,252. प्रप्रकृष्यम् Bhāg. P. 10,44,30. प्रकृष्य absol. Kathās. 50,207. med.: प्रकृष्येत MBh. 4,118. प्राकृष्यत R. 2,60,5. प्रकृष्यमाणैरमिभि: Bhāg. P. 3,24,11. — partic. प्रकृष्ट 1) *erfreut, froh* MBh. 1,6202. 3. 2717. 11936. R. 1,1,8. 2,25,27. 26,5. 12. 54,41. 72,11. °मुदित 83,16. 88,20 (ग°). 91,48. 96,6. 3,48,3. 55,42. ऋतमो वधात् 6,92,71. Vaitān. Bṛh. S. 43,25. 92,3. Kathās. 28,170. Pañcat. 95,23. 241,23. °वदन R. 1,50,16. 4,8,32. Mālav. P. 23,2. सप्रकृष्टमुख ebend. °वृष MBh. 3,15631. सत्तरात्मन् 2221. °मनस् 2603. 2710. °मनस् adj. 2225. Pañcat. 34,19. Hit. 16,11. 43,19. प्रकृष्टात्मन् adj. MBh. 3,2882. R. 2,82,22. — 2) *starrend, zu Berge stehend:* °रोमन् adj. R. 3,65,19. Bhāg. P. 3,13,5. 10,85,38. रोमकूपानि MBh. 4,1464. — caus. *aufmuntern, in eine freudige Stimmung versetzen, erfreuen:* प्रकर्षति कैनं ब्रह्मोवाच प्रकर्षयन् Çiñkn. Br. 15,3. MBh. 4,2038. 5,2411. R. 2,94,14 (103,14 Gorr.). 106, 2. R. Gorr. 2,12,34. 16,47. 6,37,77. Spr. (II) 1858. Kathās. 106,183. — partic. प्रकर्षित 1) *in eine freudige Stimmung versetzt, erfreut* MBh. 9,688. R. 2,82,27. R. Gorr. 2,6,30. Weber, Rāmāyaṇ. 274. Kathās. 18,217. Verz. d. Oxf. H. 255,a,33. Mālav. P. 125,7. Bhāg. P. 3,22,23. 28. Pañcat. 241,16. धनुष्प्रकार° Harīv. 13831. मधुपान° R. 5,60,12. — 2) *steif gemacht:* नाल Suçr. 2,215,21. — Vgl. प्रकर्ष fgg.

— संप्र *sich der Freude hingeben:* °कृष्यामि R. 5,37,8. संप्रकृष्यत med. ohne Augment MBh. 13,444. °कृष्य absol. 6,2843. — partic. °कृष्ट 1) *erfreut, froh* MBh. 1,3107. 3,3014. R. 2,83,10. 84,15 (92,6 Gorr.). 91,59. 107,4. 17. 3,78,5. Vaitān. Bṛh. S. 44,23. VP. bei Muir, ST. 1, 63. Verz. d. Oxf. H. 256,b,23. °मुख MBh. 2,775. मनस् R. 1,64,9. °मनस् adj. 36,11. R. Gorr. 1,16,10. 4,4,14. — 2) *starrend, zu Berge stehend:* °तनूरुह adj. MBh. 1,4061. 3,3061. 12030. 4,2182. R. 5,3,6. 6, 36,25. — Vgl. संप्रकर्ष fg. — caus. *in eine freudige Stimmung versetzen, erfreuen* R. 4,25,7. 6,75,50. °हर्षित MBh. 3,11329.

— प्रति *in Erwiederung auf Etwas Freude an den Tag legen:* संहृष्यमाण: प्रतिकृष्यते य: Spr. (II) 2037. — caus. *ermuntern, erfreuen* MBh. 13,202. — Vgl. प्रतिकर्षण.

— सम् 1) *sich der Freude hingeben, sich freuen:* संकृष्येत् Spr. (II) 1212. MBh. 5,2359. Vaitān. Bṛh. S. 78,5. Bhāg. P. 5,14,38. संप्रकृषुस् 8,18,4. संकृष्य absol. MBh. 6,2589. med.: समकृष्यत 2,941. 3,2554. R. 5,64,23. संकर्षमाण (sic) Mālav. P. 49,7. — 2) *schaudern:* मुदा च संकृष्य R. 3,38,27. समकृष्यत vor Schreck 5,16,102. — 3) partic. a) संकृष्ट α) *erfreut, froh* MBh. 1,6038. 7717. 2,2183. 12,10365 (Çiva). R. 2,97,20. 100,12. 107,17. 3,49,22. 5,64,11. Vaitān. Bṛh. S. 8,30. 19,17. 47,5. Bhāg. P. 3,3,25. सप्सरोगण° R. Gorr. 2,100,25. नवसंगम° 3, 70,17. Bhāg. P. 1,2,1. °वदन R. 2,85,11. 112,8. °मनस् Pañcat. 21,14. परम° MBh. 3,2606. धृति° 12,4295. सु° R. Gorr. 2,14,5. संकृष्ट vom Feuer so v. a. *munter lodernd* 5,50,9. संकृष्टवत् adv. *froh* 2,122,2. —

β) *starrend, zu Berge stehend:* °रोमन् adj. MBh. 4,794. 13,979. R. 3, 55,5. भय° Bhatt. 9,22. प्रीति° *dem vor Freude die Haare starren* R. 2,82,72. — *b)* संहृषित etwa *erstarrt vor Schreck* Hariv. 9973 nach der Lesart der neueren Ausg. (प्रघर्षित die ältere). — Vgl. संहृष्टिन्. — caus. *in eine freudige Stimmung versetzen, erfreuen* MBh. 4,246. 5,533. 7,5945. 9238. R. Gorr. 1,37,3. Bhic. P. 4,21,19. — partic. संहर्षित *starrend, zu Berge stehend* °रोमकूपत्वात् Sarnd. P. 4,12,b.

— परिसम्, partic. परिसंहृष्ट *hoch erfreut* R. 3,49,11.

— प्रतिसम् *sich der Freude hingeben:* प्रतिसंहर्षम् MBh. 3,10017. प्रतिसंहृष्ट R. 4,61,21.

हर्ष (von हृष्) 1) m. *a) Freude* AK. 1,1,6,2. 3,4,46,94. H. 315. Hall. 1,122. = इष्टावाप्तेर्मनःप्रसादः Sin. D. 195. °शोकौ Kathâs. 2,12. MBh. 1,6203. 3,1781. °विवर्धन 2334. R. 1,9,18. °स्वनः MBh. 3,2013. 11902. °गद्गदया गिरा 13,935. युक्तः परेण हर्षेण R. 1,53,7. 2,80,4. 100,38. Sûçr. 1,18,10. 100,10. 312,21. °विषादौ Milav. 50,20. Spr. (II) 1638. 2739. 5376. °स्थानसहस्राणि 6325, v. l. °क्रोधौ 7373. वर्षाणयतिहर्षयुक्तानि Varâh. Bṛh. S. 11,49. 86,19. 95,51. हर्षं तस्याकरोत् Kathâs. 18,55. हर्षाविष्ट Pañcav. III, 188. Daçak. 66, 2. 8. Dhûrtas. 67, 1. Sarvadarçanas. 61, 8. °कारण Pañcat. 1,11,3. am Ende eines adj. comp. (f. आ): विधृष्ट° R. 2,48,29. शोकहृत° 62,17. व्यपेत° 5,28,12. उपात्त° Bṛ. 6,21. त्यक्त° Riâ-Tar. 3,304. — *b) die Freude* personif. als Sohn Dharma's u. s. w. MBh. 1,2596. fg. Hariv. 12482. VP. 55. Mârk. P. 50,28. Bhâg. P. 6, 6,14. — *c) geschlechtliche Erregung, Geilheit* Sûçr. 1,48,12. 296,20. — *d) das Starren, zu-Berge-Stehen:* गात्रहर्षेषु Bhâg. P. 2,3,24. — *e)* N. pr. eines Asura Kathâs. 47,24. eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,61, 16. verschiedener Männer, unter ihnen der berühmteste der angebliche Verfasser der Ratnâvalî und des Naishadha-Karita (auch श्रीहर्ष, हर्षदेव, श्रीहर्षदेव genannt), Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. 15. fgg. 21. 51. 54. Reinaud, Mém. sur l'Inde 136. fgg. 146. Nâgân. 1,15. fg. 2, 6. fgg. Verz. d. Oxf. H. 124,b,21. 125,a,26. 142,a,15. 118,b, No. 200. 246,a, No. 620. 340,b, No. 821. 372,b, No. 267. Verz. d. B. H. No. 941. Hall 160. fg. 206. Riâ-Tar. 2,7. 3,125. 7,320. 332. 437. 610. 687 u. s. w. Kshîrâç. 2,8. Wassiljew 52. Târân. 2. 126. 128. fg. 145. 205. LIA. 1,712. 2,409. 749. Weber, Ind. Streifen 1,356. °मित्र Verz. d. B. H. No. 823. °सूरि Wilson, Sel. Works 1,338. — 2) f. आ Bez. einer Çakti Pañcar. 3,2,2. — Vgl. दन्त°, पाद्°, रोम°, लोम°, वि°, स° (adj. auch Dhûrtas. 79,12), सिरा° (*das Steifwerden*).

हर्षक (vom caus. von हृष्) 1) adj. *a) erfreuend* H. an. 3,234. Med. p. 89. ध्वन° R. Gorr. 2,69,17. — *b) stumpf machend* (die Zähne) in दन्त°. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sohnes des Kîtragupta Verz. d. Oxf. H. 341,b, No. 799. eines Fürsten VP. 467, N. 14. — *b)* eines Berges Çârdûl. im ÇKDr.

हर्षकर adj. (f. ई) *Freude bereitend* Bhic. P. 10,50,28. — Vgl. सर्व°.

हर्षकीर्ति m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 199,a, No. 470.

हर्षकीलक m. *quidam cosundi modus:* नारी पादहयं धृत्वा कास्यो-रुयुगोपरि । कटिमालोऽयेदाशु बन्धो ज्यं हर्षकीलकः ॥ Smaradîpikâ Tüb. Hdschr.

हर्षगुप्त m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 36,37. fgg.

हर्षचरित n. Titel eines Werkes Hall in Vâsavad. 12. Journ. of the Am. Or. S. 6,529. Sin. D. 210,12.

हर्षण (von हृष् simpl. und caus.) 1) adj. *a) erfreuend* H. an. 3,234. Med. p. 88. fg. क्रव्याद° MBh. 7,1447. Hariv. 8397. 8966. 11227. Spr. (II) 3626, v. l. Kathâs. 103,3. दृष्टि° Gît. 9,11. — *b) erregend* Suçr. 1, 230,11. काम° R. 2,94,11. — *c) schaudern machend:* यस्मो हर्षणो रोमहर्षणानाम् Vîçân. 1,10,3. — 2) m. *a) eine best. Augenkrankheit* H. an. Med. — *b)* = श्राद्धदेव diess. und Çârdûl. im ÇKDr. *ein best.* Çrâddha Çârdûl. — *c) Bez. eines best. astr.* Joga H. an. Med. Çârdûl. *des 44sten im* Vishkambhâdi ÇKDr. nach Kosmolpradîpa. — 3) n. *a) das Ermuntern, Erfreuen; Freude* Dhâr. im ÇKDr. दुर्हृदामप्रहर्षाय सुहृदो हर्षणाय च MBh. 7,6276. 12,2100. श्रुतो हर्षणं भवेत् 13228. R. 1,49,9. बल° MBh. 12,4818. — *b) geschlechtliche Erregung* Suçr. 1,258,21. — *c) das Steifwerden* Suçr. 2,313,20. v. l. घर्षण. — Vgl. दन्त°, रात्र°, रोम°, लोम°, शेष°.

हर्षदेव s. unter हर्ष 1) *e*).

हर्षनाद m. *Freudengeschrei* R. 7,14,9 (pl.).

हर्षनिःस्वन m. dass. Râgân. 3,61.

हर्षपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 54,98.

हर्षमय (von हर्ष) adj. *dessen Wesen Freude ist* Çat. Bâ. 14,7,2,6. स्व° ebend.

हर्षमल्ल m. N. pr. = हर्षदेव Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12.

हर्षमित्र m. N. pr. eines Fürsten von Kampana Riâ-Tar. 8,511. 962. 972. 1000.

हर्षयितृ (vom caus. von हृष्) Uṇâdis. 3,39. 1) m. *Sohn* H. an. 4,206. Med. n. 227. — 2) *Gold*, n. Med. m. H. an. Uçanas.

हर्षवत् (von हर्ष) 1) adj. *voller Freude* Çâk. 2,2. in कोपतमाविस्मय° Kathâs. 29,187 gehört das Suffix zu allen vier Wörtern. — 2) °वती N. pr. *a)* einer Fürstin Kathâs. 59,60. — *b)* einer Stadt Kathâs. 77,48.

हर्षवर्धन m. N. pr. 1) pl. eines Volkes Mârk. P. 57,38. — 2) eines Fürsten VP. 412. Hiouen-thsang 1,247. Vie de Hiouen-thsang 111. Hall in der Einleitung zu Vâsavad. 17. 51. Reinaud, Mém. sur l'Inde 139. LIA. 2,749. Weber, Indische Streifen 1,255.

हर्षवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 54,98.

हर्षसंपुट m. *quidam cosundi modus:* नार्याश्चोरुयुगं धृत्वा कराभ्यां पीडयेत्पुनः । कामयेद्विर्णः कामी बन्धो ज्यं हर्षसंपुटः ॥ Smaradîpikâ Tüb. Hdschr.

हर्षस्वन m. *Freudenruf* Târân. 3,2,29.

हर्षिन् (von हर्ष oder हृष्) 1) adj. *a) voller Freude, erfreut* Pañcat. 4,8,78. संग्राम° *sich freuend auf* Hariv. 13698. — *b) in eine freudige Stimmung versetzend, erfreuend:* ध्वन° MBh. 7,594. — 2) f. °णी *eine best. Pflanze*, = विदारी Râgân. im ÇKDr. — Vgl. लोम°.

हर्षोका f. *ein angebliches Metrum* ṚV. Pârç. 17,12. Ind. St. 2,113.

हर्षुक adj. *erfreuend* als Erklärung von मोदक H. an. 3,84. Med. k. 141 vielleicht nur fehlerhaft für हर्षक.

हर्षुमत् adj. *aufgeregt:* मही: ṚV. 8,16,4.

हर्षुल (von हर्ष) Uṇâdis. 1,98. 1) adj. *froh, lustig, guter Laune, jovial* MBh. 12,2039. 2046. *erfreut* Riâ-Tar. 5,173. Kathâs. 122,26. धृति° 67,31. मृतवृत्तान्त° 101,273. 118,173. — 2) m. *Liebhaber* und *Gazelle*

Uṇâdi.

कैर्ण्या instr. f. *in ungeduldiger Erregung:* यद्दर्ण्या कैन्वत्रम् RV. 1,36, 5. सोमस्य 8,57,14.

कल्, कैलति (विलेखने) Dhâtup. 20,7. — कलय् s. bes.

कर्ल P. 3,1,140. 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. *Pflug* (auch als *Waffe*) AK. 2,9,12. H. 228. 891. Halâj. 2,430. 5,46. MBh. 3,809 (m.). कलस्य वोढा 12724. 13,3399. 3,15297. Harîv. 5035. 6784. R. 1,40,19. बलदेवो कलपाणिः Varâh. Bṛh. S. 58,36. 69,17. 70,2. 86,46. Hem. Jogaç. 3,108. Kâmandak. 42. Bâlar. P. 19,68,10. कलाभियोग Gorâ. 4,4,21. °कृति Gîr. 1,12. कलस्येषा Schol. zu Kâç. Ça. 22,3,48. कलेषा Anupadas. 5,2. °मुख R. 5,19,4. 7,17,37. °कर्कट Bâlar. P. 5,25,7. °दण्ड und °वंश *Deichsel eines Pfluges* Vâjtp. 133. °सीर Divjâvadâna 50. °पञ्जिका Verz. d. Oxf. H. 35,a,28. besteht aus acht Theilen: ईषा, युग, स्थाणु, निर्याल, पाशिका, यष्टिबन्ध, चील und पञ्चनी Kâçik. 9,6. 7. कलमष्टगवं धर्म्यम् 8,3. दशगव, पञ्चगव s. — 2) m. N. pr. a) pl. eines Volkes und Landes im Norden Vârâh. Bṛh. S. 14,22. 27. 16,6. 32,19. Târân. 171 (कलि Wassiljew 33). — b) eines Autors Verz. d. B. H. No. 166. — 3) f. ई *Methonica superba* (vgl. कलिनी und लाङ्गलिकी) Râgân. 4,130. — f. कला s. bes. — 4) n. a) Bez. *einer best. zu den* Âkṛtijoga *gezählten Constellation* Vârâh. Bṛh. 12,4. 13. — b) = वैरूप्य *deformitas* (zur Erklärung des Namens सकल्या) R. 7,30,22. = प्रतिषेध und विवाद (zur Erklärung von सार्धकल) Çivatâṇḍava in Verz. d. Oxf. H. 162,b,N. 8. — Vgl. सार्ध°, अकलल, वेल्ल°, सु°, काल und कालिक.

कलका f. gaṇa प्रेक्षादि zu P. 4,2,80. davon adj. कलकिन् ebend.

कलगोलक m. *ein best. Thier* MBh. 13,5498. = दीर्घपुच्छो गोलवृषो कीटविशेषः Nîlak.; vgl. गलगोलिन्.

कलटी f. = कलिका Râgân. 6,196. कलदी Râgân. im ÇKDr.

कलधर 1) adj. *einen Pflug führend, Pflüger* Gâjotishatîrtha im ÇKDr. — 2) m. a) Bein. *des mit einem Pflug bewaffneten* Baladeva, älteren Bruders des Kṛshṇa (vgl. कलायुध), Çârdar. im ÇKDr. MBh. 1, 7912. Gîr. 1,12. 7,28. — b) N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,207. fgg.

कलबन्ध gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45. — Vgl. कालबन्ध.

कलभृति s. कलभृति.

कलभृत् m. = कलधर 2) a) Taik. 1,1,26. MBh. 9,2934. Manu. 60.

कलभृति 1) f. *Ackerbau* Wilson nach Çârdar. °भूति ÇKDr. nach derselben Aut. — 2) m. Bein. Upavarsha's Taik. 2,7,22.

कलमुखी f. *ein best. Metrum:* 4 Mal —◡—, ◡◡◡— Colebr. Misc. Ess. 2,139 (IV,1). Ind. St. 9,318.

कलमुहूर्त n. Verz. d. Oxf. H. 86,b,28.

कलय्, °यति = कलिं गृह्णाति P. 3,1,21 nebst Vârtt. सञ्चकलत् ebend.

कलराव n. = सार्धकत्य Râgân. im ÇKDr.

कलकला interj. *des Beifalls:* °शब्द MBh. 1,2174. 3482. 2,2298. 5, 7290. 7,857. R. 2,40,26. 81,14 (82,13 Gorr.). R. Gorr. 2,13,27 (कल-कला° zu lesen). 3,31,41. 5,56,72.

1. कला indecl. *Anruf an eine Freundin* im Drama AK. 1,1,7,15. H. 334. Daçar. 2,65. Sâh. D. 172,13.

2. कला f. *die Erde; Wasser; ein berauschendes Getränk* Anekârthak. im ÇKDr.

कलायुध (कल + आ°) 1) adj. *einen Pflug zur Waffe habend;* m. Bein. Baladeva's (vgl. कलधर) AK. 1,1,2,18. Halâj. 1,29. MBh. 1,7011. 7953. 3,12889. 4,2386. Harîv. 4677. auf Vishṇu-Kṛshṇa übertragen MBh. 13,7069. Wilson, Kâmand. 294. 298. fg. Pañcar. 4,3,127. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. 1,149. 219. 2,47. Verz. d. B. H. No. 109. 1403. Verz. d. Oxf. H. 53,a,41. 84,b, No. 143. fg. 110,b,17. 113,b,10. 126,a,23. 154,a,12. fg. 183,a, 4. 185,b,42. 195,b, 7. 8. 273,a, No. 647. b,1 v. u. 274,a, No. 649. 280,a,8. 292,a,44. b,40. 323,a, No. 765. Verz. d. Cambr. H. 15. Ind. St. 8,184. 192. fgg. 201. fg. Mdn. Anh. 2. Hall 207. Kshitîç. 5,19. fg. Notices of Skt Mss. 2,60. 67. 79. °मिश्र 1,119. Halâjudha's Wörterbuch hat Th. Aufrecht herausgegeben.

कलार m. *ein scheckiges Ross* H. 1243.

कलाल 1) m. n. *ein best. heftiges Gift* AK. 1,2,4,10. H. 1195. Med. l. 167. Halâj. 3,25. Spr. (II) 2832. क्रोध° 3001. 4677, v. l. Hem. Jogaç. 3,28. 32. Pañcat. 105,6. Vop. 5,7. Vgl. कालकल, कालाकल. — 2) m. *eine Eidechsenart* Taik. 2,5,12. H. 1298. Med. — 3) m. *eine Schlangenart* (अहिसर्प) Taik. 1,2,2. Med. — 4) m. N. pr. eines Buddha Taik. 1,1,15. — H. an. 4,200 heisst es कलाकलस्तु कथिते कले विषे। वृथा च. कलाकला R. Gorr. 2,13,27 fehlerhaft für कलकला.

कलि Uṇâdi-Sûtra 4,117. 1) = क्षित्या P. 3,1,117 (क्षित्य nach dem Comm.). H. 890. Vop. 26,20. *ein grosser Pflug* Taik. 2,9,3. कलिं गृह्णाति = कलयति P. 3,1,21, Schol. Vop. 21,17. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,136. — Vgl. unter कल 2), सु° und कालेय.

कलिक (von कल) m. 1) *Ackerbauer* Govardhana 203 bei Wilson, Hist. 161. — 2) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1560. — Vgl. कालिक.

कलिंदणा m. nach Mahîdh. *eine Löwenart* VS. 24,31. कैलीदणा TS. 5, 5,22,1. 7,22,1 nach Comm. = तृणाग्निम (°सिक्) oder कृत्तिचक्र.

कलिन् (von कल) 1) adj. *mit einem Pflug versehen* gaṇa मुखादि zu P. 5,2,121. m. *Ackerbauer* H. 890. an. 2,292. — 2) adj. in Verbindung mit राम oder m. ohne राम Bez. Baladeva's (vgl. कलधर) AK. 1,1,2, 19. H. 224. H. an. MBh. 3,10240. 5,4425. 7,412. 13,6860. Harîv. 2099. 9469. Kâmandak. 42. कलिपत्नी Taik. 3,3,179. — 3) m. N. pr. eines Rshi R. Gorr. 1,35,36. fgg. — 4) f. °नी a) *eine Menge von Pflügen* Vop. 7. 25. — b) *Methonica superba* (vgl. लाङ्गलिकी und कली unter कल) Ratnam. im ÇKDr. Râgân. 4,130.

कलिङ्ग s. कालिङ्गव.

कलिप्रिय (कलिन् + प्रिय) 1) m. *Nauclea Cadamba* (कदम्ब) Rasik. AK. 2,4,2,22. H. 1138. Hir. 96. — 2) f. *ein berauschendes Getränk* AK. 2,10,39. H. 902.

कलिम *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Vjutp. 179. 182.

कलिमा f. N. pr. einer der sieben Mütter Skanda's MBh. 3,14396.

कलिरामशर्मन् m. N. pr. eines Autors Gild. Bibl. 502. Notices of Skt Mss. 1,231.

कैलीदण *ein best. Eingeweide* AV. 2,33,3. — Vgl. auch कलिंदणा.

कलीन m. *Tectona grandis* Çârdar. im ÇKDr. v. l. für कनील *Pandanus odoratissimus* Ratnam. im ÇKDr.

कलीमक m. 1) *eine Form der Gelbsucht* Wise 249. Karaka 8,14. Suçr.

1,162,21. 169,1. 2,418,2. 467,10. Çiñs. Saṁh. 1,7,12. Verz. d. Oxf. H. 312,b,17. 316,a, No. 751. — 2) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2146.

क्लीषा f. Accent Çikṣ. 3,17. unregelmässige Zusammenziehung von क्ल + ईषा gaṇa शकन्धादि zu P. 6,1,94, Vârtt. 2. Vop. 2,18.

क्लुधाण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,11. 340,a, 2. क्लूधाण 9.

क्लेहिपादिका (क्ले loc. von क्ल + हि°) f. Bez. *einer best. Abgabe* P. 6,2,65, Schol.

क्ल्य 1) paroxyt. = क्लस्य कर्षः P. 6,4,97. m. Schol. adj. *gepflügt* AK. 2,9,8. H. 968. Vgl. त्रि°, हि°. — 2) f. घा oxyt. *eine Menge von Pflügen* gaṇa पाशादि zu P. 4,2,49. AK. 3,3,41. — 3) n. *Verunstaltung:* क्लं नामेक् वैद्रूप्यं क्लत्यं तत्प्रभवं भवेत् ॥ यस्या न विद्यते क्लत्यं (= निन्द्यत्व Comm.) तेनाक्लत्येति विश्रुता । B. 7,30,22. fg.

क्लृप्त m. N. pr. eines Fürsten Tîrân. 82. 310.

क्लृप्तक n. *eine rothe Lotusblüthe* AK. 1,2,2,35. H. 1164. Ratnam. 150.

क्लृप्तन n. = प्रक्लृप्तित Gaṇiṅ. im ÇKDa.

क्लृप्ती 1) m. *eine Art einactiger Schauspiele, in denen ein Mann mit sieben, acht oder zehn Frauen auftritt*, Sâh. D. 555. — 2) n. क्लृप्ति und °क *ein Tanz von Frauen unter Anführung eines Mannes* Kâvjân. S. 37,9. 11. 15. fg. क्लृप्तीशक Hân. 49. क्लृप्तीष Taik. 1,1,126. क्लृप्तीषक Gaṇiṅ. im ÇKDa. क्लृप्तीसक H. 281. Harîv. 8450 nach der Lesart der neueren Ausg. (nach Nîlak. *ein Tanz*, nach dem Zusammenhange eher *ein best. musikalisches Instrument*). Davon denom. °क्लृप्तीसकायित (so ist zu lesen) Verz. d. Oxf. H. 72,a,26.

1. क्व (von कु) m. *Opfer* AK. 3,4,22,209. H. an. 2,541. Med. v. 30.

2. क्वँ (von हू = क्वा) m. P. 3,3,75. 1) adj. *rufend* RV. 10,27,8. 37, 6. — 2) m. a) *Ruf, Anrufung* AK. 3,3,8. 3,4,22,209. H. 261. an. 2,541. Med. v. 30. विप्रस्य RV. 1,17,2. 23,8. श्रोता क्वं कारोः 178,3. 183,5. बोधतं क्वस्य मे 2,36,6. 4,9,6. सुधी क्वमा कुवतो कुवानः 8,21,10. 23, 8. 7,2,7. ये ते क्वेभिर्वि पाणीरदेशन् *kraft ihrer Anrufungen* 19,9. 9, 1,27. 13,31. वाकिम् 26,16. 10,74,2. AV. 1,15,2. 2,30,3. 3,3,6. 5,8,1. Kauç. 98. u. nur pl. RV. 1,122,6. 7,62,5. 29,3. — b) *Anweisung, Befehl* AK. H. an. Med. — Vgl. इन्द्र°, पतना°, सु°.

क्वङ्ग m. *das Essen von Reis und saurer Milch aus einer messingenen Schüssel* Çabdârthak. bei Wilson.

1. क्वन (von कु) 1) m. *Feuer* H. ç. 168. — 2) n. *Opferung* Çabdar. im ÇKDa. MBh. 1,6390. Harîv. 2203. — 3) f. ई a) *Opferlöffel:* क्विणं क्वन्यामवधाय (= स्रुचं Comm.) Kâtj. Çr. 10,2,5. रोकिणाक्वन्यो सुचो Çat. Br. 14,3,2,20. Kâtj. Çr. 26,2,10. 7,18. — b) *Höhlung im Erdboden zur Aufnahme eines Opfers* Taik. 2,7,6. — Vgl. अग्निहोत्रक्वनी.

2. क्वँन (von हू = क्वा) 1) m. *der Anrufer*, N. pr. eines Rudra MBh. 13,7091. Harîv. 14170. — 2) n. *Anrufung* RV. 1,102,10. 5,56,2. 6,34,4. गोमघ 35,3. घर्मं मे गन्तं क्वनाय्यस्मे 63,2. मतीनाम् 69,4. तिरो घर्मो क्वनानि युतं नः 7,68,2. 10,61,3. 81,7. Vâlakh. 4,7. 6,4. Pâraṇ. 4,4,17. fg.

क्वनयुत् adj. *Anrufung hörend, erhörend* RV. 1,10,10. 2,33,13. 5, 75,5. 7,83,3 u. s. w. Çâṅkh. Çr. 10,17,14. Comm. zu TBr. 2,419,15.

क्वनस्यूद् adj. *dem Ruf zueilend* RV. 1,51,2.

क्वनायुम् (क्वन + घा°) m. *Feuer* Çabdar. im ÇKDa.

क्वल *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Vjutp. 182.

क्वव desgl. ebend. 180. 182.

क्ववत् adj. *das Wort* क्व *enthaltend* Ait. Br. 5,4.

क्वर्वम् (von हू = क्वा) n. *Anrufung* RV. 1,64,12. 8,66,11.

क्विक्त्रो f. = 1. क्वन 3) b) H. 833.

क्विध m. N. pr. eines Fürsten MBh. 13,7683. eines Sohnes des Manu Svârokiṣha Harîv. 419.

क्विन् adj. *anrufend* AV. 3,4,3. *Hilfe suchend* Ait. Br. 3,31. *zu opfern geschickt* (von कु) nach Sây.

क्विरेद् adj. *Opferspeise geniessend* RV. 10,15,10.

क्विरेद् adj. dass.: Gandharva AV. 4,37,8.

क्विर्वाण n. *Opfergenuss* RV. 1,163,3. 5,1,11. 4,4. 7,11,3. 10,94,2. TBr. 2,8,8,2.

क्विरुत्तरण n. *das Uebergehen einer Oblation* Kâtj. Çr. 25,5,15.

क्विराशन adj. *Opferspeise geniessend; m. Feuer* H. 1097.

क्विराहुति f. *Opferung von* Havis Gobh. 1,9,33. 3,8,10.

क्विरुच्छिष्ट n. *Opferrest* Çat. Br. 2,5,2,16. 6,2,48. 6,6,2,17. Âçv. Gṛhj. 1,10,27. Kauç. 6. Kâtj. Çr. 5,6,20. 9,34.

क्विर्गन्धा f. *eine best. Fabacee*, = शमी Râgân. 8,33.

क्विर्गृह् n. *das für die Opfergaben bestimmte Gemach* H. 996.

क्विर्गेह् n. dass. AK. 2,7,15. H. 996.

क्विर्यज्ञणी f. *Opferschaufel, — löffel* Kâtj. Çr. 2,3,33.

क्विर्दा adj. (dat. °दे) *Opfergabe bringend* RV. 1,133,3. 4,3,7. 7,68,6.

क्विर्दान n. *Darbringung einer Opfergabe* M. 3,211. R. 2,36,21. देव° AK. 3,5,8.

क्विर्धान 1) m. N. pr. des angeblichen Verfassers von RV. 10,11—15. eines Sohnes des Antardhâna VP. 106. Bhâg. P. 4,24,5. 8. Vgl. क्विर्धामन्. — 2) f. ई a) Bez. der mythischen Kuh Surabhi oder Kâmadhenu Bhâg. P. 2,8,1. 9,15,26. 11,16,14. — b) N. pr. der Gattin Havirdhâna's Bhâg. P. 4,24,8. — 3) n. a) *der Wagen, auf welchem die zur Pressung bestimmten* Soma-*Pflanzen geladen sind* (in der Regel zwei), Naigh. 3,3. Nir. 9,26. AV. 9,3,7. VS. 1,9. 19,18. TS. 3,1, 2,1. 6,2,2,1. 4. Çat. Br. 3,3,2,7. 12. 6,2,18. 4,6,2,10. fgg. — b) *die leichte Ueberdachung, unter welcher die Wagen aufgestellt werden*, Mahîdh. zu VS. 5,21. VS. 38,18. TS. 6,2,11,1. 4. Çat. Br. 1,1,2,9. उभयतोह्नार 3,3,2,7. 4,3,4,22. 12,6,1,17. Kâtj. Çr. 6,10,14. 8,4,21. 10,2,27. 4,2. Lâṭj. 2,2,15. 7,6. सदोक्विर्धाने AV. 12,1,38. Kâtj. Çr. 8,4,23. प्रजापतेः सदोक्विर्धानम् N. eines Sâman Ind. St. 3,224,b. — c) *Opferplatz* MBh. 1,2103. Harîv. 2457. *die Erde als Niederlage des Opfers:* क्विर्धानमत्तरा सूर्यं च AV. 7,109,2. 14,2,34. — Vgl. क्वाविर्धान fg.

क्विर्धानिन् adj. *der ein* Havirdhâna *besitzt* TS. 2,5,6,3.

क्विर्धामन् m. N. pr. eines Sohnes des Antardhâman MBh. 13,6329. — Vgl. क्विर्धान 1).

क्विर्भाग m. *Antheil am* Havis Çat. Br. 11,4,2,4. 10.

क्विर्भाज् adj. *am Opfer Theil habend* Nir. 7,13. 10,43.

क्विर्भुज् 1) adj. *die Opfergabe verspeisend.* — 2) m. a) *Feuer, der Gott des Feuers* Kumâras. 5,20. Raghu. 1,56. 10,80. 13,41. Çiç. 1,2. Kirâṭ.

2,165. auf Çiva übertragen Harıv. 7427. — *b*) *ein Gott* Bhâg. P. 4,21, 32. — *c*) pl. Bez. *der Manen der* Kshatrija M. 3,197.

कविर्भू f. *Opferplatz*, personificirt als Tochter Kardama's und Gattin Pulastja's Bhâg. P. 3,24,22. 4,1,36.

कविर्मघ adj. P. 3,2,27, Schol. *Opfer zerstörend, — verwirrend* ṚV. 7,104,21.

कविर्मन्थ m. = घर्मिमन्थ *Premna spinosa* Râtnâm. 5.

कविर्यज्ञ m. *Darbringung des* Havis, so heisst *eine Gattung von Opfern, die einfachen Opfer* (neben Paçujâgña und Soma); nach Gautama: Agnjâdheja, Agnihotra, Darça und Paurṇamâsa, die Kâturmâsja, Âgrajaṇeshṭi, Nirûḍhapaçubandha und Sautrâmaṇi Z. d. d. m. G. IX, LXXIII. Ind. St. 10, 323. *fgg.* Gor. Bh. 1, 5, 23. तुषैर्वे फलीकरणैर्देवा कविर्यज्ञेभ्यो रक्षांसि निरभजन् Âit. Br. 2, 7. 5, 32. 34. Çat. Br. 1, 1, 4, 7. 2, 4, 10. 5, 2, 11. 6, 3, 36. यद्येषाम्याकृतिर्यद्दविर्यज्ञः 7, 2, 10. 23. 12, 4, 2, 5. °विध 11, 7, 2, 1. Kâtj. Çr. 5, 2, 4. कविर्यज्ञिवत्: (Brahman, Hotar, Adhvarju, Maitrâvaruṇa, Âgnidhra) 2, 12, 16. °संस्था Lâṭj. 5, 4, 22. fg. Pârâçar. 1. Verz. d. Oxf. H. 30, *b*, 9. 266, *b*, 25. °काण्ड Bez. des 1ten (2ten) Buches im Çatapathabrâhmaṇa. — Vgl. कविर्यज्ञिक fg.

कविर्वर्ष m. N. pr. eines Sohnes des Agnidhra (Âgnidhra) und des von ihm beherrschten Varsha Mârk. P. 53, 34. — Vgl. करिवर्ष.

कविर्वह् adj. (nom. °वाट्) *das Opfer führend* ṚV. 1, 72, 7.

कविर्वृति f. *Darbringung einer Opfergabe:* देवं° H. 1538.

कविःश्रवस् m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 3748.

कविष्कर् Havis *bereiten*, zu Havis *machen* (vgl. ṚV. 5, 28, 2) Çat. Br. 1, 8, 1, 33. *fgg.* कविष्कृतमेनं सुवर्गं गमयति TS. 2, 6, 5, 3. 5, 7, 6, 5. 6, 4, 9, 4. 8, 3. न प्रदाय मतिं दद्याद्विच्छिष्टे न कविष्कृतम् M. 4, 80.

कविष्करण n. *das Bereiten des* Havis TS. 2, 6, 9, 5. TBr. 3, 5, 9, 3. Çat. Br. 1, 8, 1, 32. 9, 1, 14.

कविष्कृत् 1) adj. *Opfergabe zubereitend, das* Havis *herstellend* ṚV. 1, 166, 2. 5, 66, 6. 8, 49, 13. 91, 13. AV. 7, 28, 1. 9, 6, 13. सवितृ: 19, 42, 3. Narâçaṁsa ṚV. 1, 13, 3. nach der Sitte des Rituals das Weib des Opferers oder der Âgnidhra Schol. zu Kâtj. Çr. 2, 4, 13 (nicht gedruckt). ज्ञाया Çat. Br. 1, 1, 4, 13. Kâtj. Çr. 2, 4, 13. 6, 7, 13. 8, 2, 13. Kauç. 2. — 2) m. *a*) *der Ausruf* कविष्कृदेहि (VS. 1, 15) Çat. Br. 1, 2, 2, 1. Kâtj. Çr. 2, 4, 9. या कविष्कृत उद्दादनात् Âçv. Çr. 1, 12, 16. Çâṅkh. Çr. 4, 7, 2. Lâṭj. 4, 11, 21. — *b*) N. pr. eines Âṅgirasa TS. 7, 1, 6, 1. — Vgl. कविष्कृत.

कविष्कृति f. *Bereitung des* Havis ṚV. 1, 18, 18. यो वां दाशद्धविष्कृतिम् 93, 3. 10, 91, 11.

कविष्टम् abl. von कविस् Çâṅkh. Çr. 1, 16, 16. fg.

कविष्ठ m. N. pr. eines Dânava Harıv. 14289.

कविष्यङ्ग 1) f. *eine Fünfzahl von Opfergegenständen:* धाना:, करम्भ, परिवाप, पुरोडाश und पयस्या Âit. Br. 2, 24 (vgl. TBr. 1, 5, 1, 11). oder दधि, धाना:, सक्तव:, पुरोडाश und पयस्या Comm. zu Pâraṡav. Br. 13, 2. Çat. Br. 4, 2, 5, 21. fg. Pâraṡav. Br. 13, 2. 15, 1. 16, 1. — 2) adj. *daraus bestehend:* यज्ञ Kâtj. 29, 1. Âit. Br. 2, 24.

कविष्पति m. *Herr der Opferspende* ṚV. 1, 12, 6. VS. 20, 70. Sharv. Br. 5, 7.

कविष्पन्द s. कविष्यन्द्.

कविष्पा adj. *das* Havis *trinkend* ṚV. 10, 15, 10.

कविष्पात्र n. *ein Gefäss für das* Havis Çat. Br. 11, 2, 7, 1. Kâtj. Çr. 1, 8, 31.

कविष्पात्तीय adj. *mit* कविष्पात्तम् (ṚV. 10, 88) *beginnend* Nir. 7, 12. fehlerhaft कविष्यत्तीय M. 11, 251.

कविष्मत् (von कविस्) 1) adj. *a*) *der das* Havis *bereit hat, ein Darbringender* ṚV. 1, 12, 9. 13, 1. 14, 3. 36, 2. 57, 2. 114, 3. 127, 10. यज्ञस्य राध्यो कविष्मताम् 136, 1. घनुं व्रतानि वर्तते कविष्मान् 183, 3. 5, 2, 12. यज्ञं यं नुक्षते कविष्मान् 6, 10, 6. 73, 1. मन्म 10, 122, 4. AV. 6, 39, 1. 84, 2. Kauṡ. 4, 8. मनस् *opferbereit* ṚV. 7, 67, 1. — *b*) *von Opfergaben begleitet, Havis enthaltend:* das Opferross ṚV. 1, 162, 22. घर्म 167, 6. यज्ञ 7, 70, 6. घृताची 3, 19, 2. 7, 1, 6. VS. 3, 4. सुच् 8, 23, 22. 49, 1. — 2) m. N. pr. eines Âṅgirasa TS. 7, 1, 6, 1. eines Devarshi MBh. 2, 294. eines der sieben Ṛshi im 6ten Manvantara Mârk. P. 78, 34. Bhâg. P. 8, 5, 5. im 10ten Harıv. 472. Mârk. P. 94, 14. Bhâg. P. 8, 13, 21. *fg.* im 11ten Mârk. P. 94, 19. zweier Ṛshi im 11ten, eines Kâçjapa und eines Bhârgava, Harıv. 477. pl. Bez. *bestimmter Manen*, Söhne des Aṅgiras, M. 3, 198. VP. 321, N. 1. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 1 v. u. — 3) f. °ष्मती *a*) Bez. *der Wunderkuh* Kâmadhenu Bhâg. P. 9, 15, 24. — *b*) N. pr. einer Tochter des Aṅgiras MBh. 3, 14127. — Vgl. कविष्मत.

कविष्य 1) adj. (von कविस्) gaṇa गवादि zu P. 5, 1, 2. *a*) *zur Opfergabe geeignet, — bestimmt, — bereit:* Rose ṚV. 1, 162, 4. ऊर्मि TS. 1, 2, 2, 3. Namentlich *Reis, Gerste* und *andere Körner;* in dieser Bed. auch substantivisch m. und n. Kâtj. Çr. 2, 3, 16. 4, 3, 3. 7, 2, 2. °यज्ञ 15, 1, 10. 17, 1, 28. कविष्येषु चेदाक्रियमाणेषु मरणम् 25, 7, 8. Gobh. 1, 4, 2. °सिद्धस्य कविष्यस्य नुक्षपात् Âçv. Gṛh. 1, 2, 1. °भक्त Çâṅkh. Çr. 4, 15, 10. Kauç. 67. 82. कविष्यापिर्वपति 87. M. 3, 256. 11, 106. 220. Jâṡ. 1, 239. 303. MBh. 2, 93. 15, 1105. R. 7, 68, 23. Suçr. 1, 316, 10. Verz. d. Oxf. H. 286, *a*, No. 670. °भुज् M. 11, 77. कविष्याशिन् 213. कविष्याहार Verz. d. Oxf. H. 30, *b*, 38. कविष्यान्न Jâṡ. 1, 257. Mârk. P. 32, 2. Wenna, Kâmaṡâ. 200. कविष्य n. = कविस्, घृत u. s. w. Taitt. 2, 7, 3. H. 407. — *b*) *dem das* Havis *gebührt:* Çiva MBh. 7, 2277. — 2) adj. von कविष्या P. 4, 4, 122. — 3) f. या P. 4, 4, 122.

कविष्यत्तीय s. कविष्यात्तीय.

कविष्यन्द् (कविस् + स्यन्द्) m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra R. 1, 57, 2. कविष्यन्द् od. Bomb. कविस्यन्द् od. Gorr. 58, 5.

कविंस् (von कु) Uṇâdis. 2, 109. 1) n. *Opfergabe, jeder Gegenstand, welcher als Gabe für die Götter ganz oder theilweise in das Feuer geworfen wird*, gewöhnlich *Fruchtkörner* (geröstet, gekocht, als Mus oder in Kuchen gebacken), *Soma, Milch in verschiedener Gestalt, Schmalz* u. s. w. Ind. St. 10, 324. M. 3, 257. Naigh. 1, 12 (= उदक). AK. 2, 7, 26. 9, 52. Taitt. 2, 7, 7. 3, 3, 464. H. 407. 831. an. 2, 396. Med. s. 46. Halâj. 2, 261. ṚV. 1, 24, 11. 26, 6. प्राशान ऋतुथा कवीषि 170, 6. ते देवा कविरदन्त्याकृतम् 2, 1, 12. प्र ते कवीषि नुक्रो समिद्धे 2, 9, 3. 16, 1. कविधा पक्ति देवान् 3, 17, 2. 26, 7. स्वाहा देवेभ्यो कवि: 5, 5, 11. 28, 2. 37, 2. इन्द्रस्य वज्रं कविषा रथे यज 6, 47, 27. विशे देवा कविधिं मादयध्वम् 52, 17. 75, 3. भरे कविर्न वह्निधिं 7, 13, 1. कविधो वीतये 68, 2. der Soma

ist die höchste *Opfergabe* 3,107,1. 10,94,2. कविष्टा सतं कविषो यजाम 124,6. कर् AV. Paipp. 2,63. RV. 5,28,2. AV. 3,10,5. 6,3,3. 97,1. 7, 66,2. 70,4. तुभ्यमाज्यं कविभिर्दं नुकोमि 3,5,35. 13,3,63. fg. 4,3. VS. 2, 9. सं बर्हिरङ्क्ते कविषा घृतेन 2,22.17,76. प्रिय RV.4,49,1. कृत 7,11,4. घृतवत् 10,14,14. TS. 7,5,25,2. Ait. Br. 1,1. घातिव्य 15.25. वार्त्रघ्न 2,3. 23. यस्यायमृषभो कविरिन्द्राय परिणीयते TBr. 2,4,3,3. न वा एतत्कस्यै चन देवतायै कविर्गृह्णात्यादिशति यदाज्यम् Çat. Br. 1,8,3,24. 11,4,3,3. fgg. Kâty. Çr. 1,9,1. उभयत आज्यं कविषः सरु वा 20. 10,5. 3,3,9. 12. छागस्य 5,8,14. यावद्धविः 3,3,26. कविभिर्ध्यायन्ति 5,5,10. 21. पयो यवागूर्ध्याज्यमित्यग्निहोत्रकवीषि Çâṅkh. Çr. 2,7,9. यामावास्य Gobh. 1,5,6. पौर्णमास Çâṅkh. Çr. 1,3,1. Lâṭy. 10,16,6. Kauç. 2. 3. 6. 7. Âçv. Gṛhj. 1, 7,10. 10,17. 22. 2,5,2. एक° Çâṅkh. Çr. 2,3,14. द्वि° 3. त्रि° Çat. Br. 13,2,2,6. Çâṅkh. Çr. 3,16,1. Âçv. Çr. 2,14,6. पञ्च° Çâṅkh. Çr. 2,4,7. 9,34,6. TBr. 1,5,11,3. — M. 3,87. 132. 139. 142. 144. 169. 266. 4,206. 5,7. 6,12. 11,95. 12,68. Jâṭ. 1,303 (= घृतौदन Mit.). MBh. 1,667. 6636. 3,14127. 13, 2119 (कविषा mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 1,5,15. 8. 27. 2,61,17. 114,8. 3,63,7. Hariv. 1,62. 80. Çiç. 1. Spr. (II) 2959. 4673. 5214. Varâh. Bṛh. S. 50,23. Bhâg. P. 3,16,6. 4,13,26. 8,15,3. कविःशेष Kâty. 8,7,24. 24,7,8. M. 3,218. 5,11. कविर्गुणाः 3,236. fg. कविःसंस्था Çâṅkh. Gṛhj. 1,1. — 2) wohl m. *Feuer* H. ç. 169. Kâlikâkhaṇḍa 2,33. — 3) m. N. pr. eines Marutvant Hariv. 11545. möglich, dass कविर्ज्योतिस् als ein N. zu fassen wäre. — Vgl. तनू°, देव°, पवमान°, पुनर्कविस्, मरुत्°, रत्न°, राज्ञ°, सत्य°, सु°.

कविस्पन्द s. कविष्यन्द.

कवीतु s. सुकवीतुनामन्.

कवीमन् (von कु = कवृ) n. *Anrufung* RV. 1,12,3. 131,1. 139,2. कवीमभिर्कवते यो कविभिः 2,33,5. 7,56,15. 83,4. 10,64,4. 92,12.

कवुषा f. = कपुषा Suçr. 2,222,5. 226,19. 452,20. 506,7 (an den beiden letzten Stellen v. l. कपुषा). Bhâvapr. 5.

कवे interj. Çat. Br. 13,4,3,2. 6. Kâty. Çr. 23,3,2.

1. कव्य (von कु) n. *das zu Opfernde, Opfergabe* AK. 2,7,24. H. 832. RV. 1,45,6. प्रति कव्या गृभाय 91,4. 127,6. 2,3,10. घृतवत् 26,4. घाकृत 32,6. जुहोमि कव्यम् 3,18,3. 9,6. मानुषाणाम् 5,7,2. घृतस्नु 6,52,3. सुपूत 7,4,1. प्रुषि 56,12. प्रतिभृत 68,1. उभयानि कव्या 7,2,2. AV. 7,109,2. प्रत 14,1,25. 4,23,2. 8,9,21. 11,4,1. 58,6. VS. 1,11. 5,4. 6,7. Çat. Br. 1,3,3,13. 2,4,4,16. Ait. Br. 3,47. कव्या नो यस्य कविषः कृणोतु Çâṅkh. Çr. 12,16,4. Gobh. 1,9,11. Kauç. 2. 6. 81. In der späteren Literatur überaus häufig in Verbindung mit काव्य M. 1,94. 3,97. 128. 130. 133. 135. 147. 150. 152. 168. 175. 181. 190. 256. 4,28. 31. 249. 5,16. MBh. 1,7661. 3,12730. 13,3531. R. 1,53,13. 2,25,27. 5,7,62. 7,30,12. Kumâras. 1,32. 2,46. Çiç. 83. Kir. 1,22. Spr. (II) 4980. कुकाव्यकव्याद्भुतयः 5194. 5416. Bhâg. P. 2,6,1. 10,25. 4,7,41. कव्यकव्यवट् MBh. 12, 8561. कव्यकव्याश Pâṇ. 4,2,27. काव्यकव्यभुज् Bez. Agni's Kaṭuṣ. 18,315. — Vgl. देव°, रात°, वीत°, सत्य°, सु°.

2. कव्य (von कु = कवृ) 1) adj. *zu rufen, anzurufen:* स्तोतृभ्यः RV. 1,33,2. 116,6. 144,3. नृभिः 7,22,7. 38,1. नृभ्यः 10,39,10. कूत 2,39,1. 3,5,3. वृत्रस्त्यै 4,24,4. भरे भरे 7,32,24. 5,17,4. 33,5. इमा उ वां काशा-कव्यं कव्या कवसे । धियः 6,21,1. 7,30,2. कव्यास्विष्टिषु (oder oxyt.) 10,147,2. AV. 6,98,3. कव्या नो यस्य कविषो जुषेत 7,47,2. VS. 8,42. Hierher gehört श्येनो कव्यं नयता परस्मात् den zu rufenden Indra AV. 3,3,4. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Svâjambhuva Hariv. 415. des Atri VP. 83, N. 4.

कव्यंतुष्टि f. *Gefallen am Opfer, wohlgefälliger Genuss des Opfers* RV. 1,152,7. 7,65,4. Ait. Br. 2,12.

कव्यंदाति 1) adj. *die Opfergabe besorgend:* Agni RV. 3,2,8. SV. 1,2, 1,8,8 (RV. v. l.). Çat. Br. 1,4,4,24. — 2) f. *das Geben des Opfers, Opfergabe* RV. 4,7,8. या गंकि देवेभिर्कव्यदातये 5,51,1. 3. 55,10. 6,1,9. 47,28. 48,2. °तिं सूदय 7,16,9. 8,19,13. 35,9. 90,1. TBr. 2,8,2,2. AV. 7,109,2.

कव्यप m. N. pr. eines der sieben Ṛshi im 13ten Manvantara Hariv. 486.

कव्यपाक m. = यम AK. 2,7,22. H. 833. Halâj. 2,361.

कव्यभुज् adj. *die Opfergabe verzehrend;* m. *Feuer*, Agni H. 1097, Schol. Varâh. Bṛh. S. 43,48.

कव्यलेलिह् adj. *an der Opfergabe leckend;* m. *Feuer* Bâlar. 282,18.

कव्यवंवट् adj. (nom. °वाट्) P. 3,2,64. 66. *das Opfer* (zu den Göttern) *bringend:* Agni RV. 1,12,2. 44,5. 67,1. 3,2,2. 43,1. यमग्निं देवा दधिरे कव्यवाहनम् 7,11,4. MBh. 5,122. त्रिकामग्ने चकृषे कव्यवाहनम् P. 8,2, 90, Schol. pl. RV. 3,43,1, wo es mit Sây. von den Ṛtvig verstanden werden kann. सं° Çat. Br. 1,4,5,12. m. *Feuer*, Agni Halâj. 1,62. Ind. St. 3, 390. MBh. 3, 10390. 4, 30. पितृणां °वाडसि 13,916. R. 2,79,11 (°वाहम् hierher oder zu °वाह). Bhâg. P. 5,20,17. 8,13,9.

कव्यवट् m. *Feuer* R. 5,89,19. — Vgl. क्रुत°.

कव्यवाहँ adj. = कव्यवट्. Agni MBh. 5,486. घर्वाड्व्येषितो देव्यवाहः (°वाहः Hdschrr.) AV. 18,4,1. देवानां भिषजौ TBr. 3,1,2,11. der Açvattha, weil er die Araṇi liefert, 1,2,6,8. m. *Feuer*, Agni H. 1099. Ratnam. im ÇKDr. MBh. 1,2113. 3,15897. 14,245. Spr. (II) 7350, v. l. Mârk. P. 62,4. 99,61.

कव्यवाहन 1) adj. (f. ई) P. 3,2,66. = कव्यवट्. Agni हूत RV. 1, 44,2. 2,41,19. 5,8,6. 25,4. 8,16,23 u. s. w. रुचो ज्ञातवेदसो देवत्रा कव्यवाहनीः 10,188,3. Kauç. 3. Çâṅkh. Çr. 6,12,16. als Bein. Agni's im Ritual TS. 2,5,2,6. TBr. Comm. 1,138,6. Çat. Br. 2,6,2,20. 3,2, 28. Gṛhjas. 1,9. VP. 84, N. 3. m. *Feuer* überh., Agni AK. 1,1,2,51. Vaiç. bei Mallin. zu Çiç. 2,107. Muṇḍ. Up. 1,2,3. MBh. 1,2142. 3,2934. 14,157. R. 3,22,5. 51,29. 4,11,13. Spr. (II) 1482. — 2) m. N. pr. eines der sieben Ṛshi unter Manu Rohita Hariv. 468. Sâvarṇa Mârk. P. 94,8. — 3) m. Bez. des 9ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 51,b,1 v. u.

कव्यवाहिनी f. N. pr. der Familiengottheit im Geschlecht Kapila's Verz. d. Oxf. H. 19,a,16.

कव्यशोधन adj. *die Opfergabe reinigend:* पवित्र TBr. 3,7,2,11.

कव्यसूक्ति f. *Opferspruch* VS. 28,11. TBr. 3,6,2,2.

कव्यसूद् adj. *die Opfergabe bereitend, — liefernd:* उम्रियाः RV. 1,93, 12. 4,30,5.

कव्यसूदन adj. dass. VS. 5,32. Pâraṇ. Br. 1,4,2.

कव्यौद् (कव्य + 2. षद्) adj. *Opfer essend* RV. 7,34,14.

कव्याद 1) adj. dass.: कव्यादाय सुराघटे काव्यादाय पितृनपि Hariv.

2159. 14136. — 2) m. N. pr. eines Ṛṣi Verz. d. Oxf. H. 18,b,7. 19,a,17.

कव्याश (कव्य + आश) adj. *das Opfer verspeisend;* m. *Feuer* Çabdar. im ÇKDa. Rāǵa-Tar. 5,416.

कव्याशन (कव्य + 2. अशन) m. dass. H. 1097.

1. कस् interj. *der Lustigkeit, des lauten Lachens;* s. कस्कर्तृ u. s. w. Als bedeutungslose Silbe in Sâman verwendet Pañcav. Br. 7,6,11. 12,3,21.

2. कस्, कंसति (कसने) Dhātup. 17,72. 1) *lachen, auflachen* Gobh. 1,2, 16. Kauç. 93. 105. देवतप्रतिमा कसन्ति Suapv. Br. 5,10. MBh. 6,60. Spr. (II) 1438. Çiç. 103,3. Bhāg. P. 4,25,58. उद्दामम् Siç. D. 40,10. 86,3. अकसत् R. 2,35,18. Brahma-P. in LA. (III) 53,6. Daçar. 70,4. कसम् Spr. (II) 7375 (in der Note 13,2238 zu lesen). R. 2,69,9. 91,60. Suçr. 1,125,9. 255,16. Kathās. 3,48. Rāǵa-Tar. 6,33. Bhāg. P. 1,7,32. 3,20,24. कसद्दन 4,1,23. Pañcar. 3,10,20. Bhaṭṭ. 2,42. कसन्ती (s. auch bes.) Suçr. 1,109,21. Rāǵa-Tar. 4,477. Bhāg. P. 4,25,32. 58. Bhaṭṭ. 7, 62. कसती MBh. 16,57. Mārk. P. 26,8. प्रकास R. 1,46,17. Spr. (II) 9. तेन *darüber* Kathās. 20,42. 124,109. Mārk. P. 25,10. 76,4. Bhāg. P. 3,18,2. प्रकसुम् R. 1,9,24 (23 Gorr.). R. Gorr. 2,71,4. Bhāg. P. 3,9,11. अकसीत् P. 7,2,5. कसिष्यन्ति MBh. 3,2003. कसिष्यतितराम् Kathās. 66, 92. कसितुम् R. 5,81,54. कसित्वा Kathās. 63,162. med.: देवतापतनस्था देवना कसते MBh. 6,5208. 13,747. 749. चतुर्थ्यां कसते विद्वान्दत्तोढाटेन मध्यमाः। अधमा अट्टकासेन न कसन्ति मुनीश्वराः॥ Spr. (II) 2221. 7374. Mārk. P. 51,100. कसमान MBh. 7,8648. Harīv. 11072 (S. 702). R. Gorr. 2,71,12. Mārk. P. 43,17. pass. impers.: प्रकसे योद्धृभिः Bhaṭṭ. 14,93. mit acc. seines eigenen nom. act.: प्रकास मस्वनं कासम् MBh. 14,2164. म-काससकसत् Harīv. 1276. कसन्विकासांश्च प्रकास कर्षात् Harīv. 8409 nach der Lesart der neueren Ausg. — 2) *über Jmd oder Etwas lachen, verlachen, verspotten;* mit acc. Harīv. 8785. R. Gorr. 2,105,39. 3,67,8. Çiç. 1,71. Spr. (II) 963. 4936 (vgl. Z. d. d. m. G. 27,53). (नगरी) कस-न्तीव सुधाधौतैः प्रासादैरमरावतीम् Kathās. 11,31. 46,75. 61,9. 31. 65, 176. Rāǵa-Tar. 4,666. Bhāg. P. 3,14,27. 5,6,41. Pañcad. 1,12,44. pass. Spr. (II) 1324. प्रकसे Kathās. 61,38. 62,207. Verz. d. Oxf. H. 156,a,39. Hem. Joḍaç. 4,37. Pañcar. 246,3. — 3) *sich öffnen* (von einer Knospe): कसिष्यति पद्मतालम् Spr. (II) 5777. कसद्बन्धुजीवप्रसून Pañcad. 3,10,20. — 4) partic. कसित *a) lachend* Kathās. 66,98 (das Komma nach कसितं zu streichen). अमात्याश्च सर्वे ऽपि कसिताः *lachten auf* Vet. in LA. (III) 24,1. — *b) verlacht, verspottet* Z. d. d. m. G. 27,26. so v. a. *in Schat-ten gestellt, übertroffen* Citat bei Vimala 4,3,22. — *c) aufgeblüht* H. 1129. Halāy. 2,32. — *d)* n. impers.: कसितं मया *ich lachte* Kathās. 59,159. Spr. (II) 2047. — *e)* n. *das Lachen, Gelächter* P. 3,3,114, Schol. H. 297. Halāy. 2,412. Suçr. 1,363,18. R. 3,67,5. 4,19,12. 44,106. 5, 10,3. 4. Spr. (II) 1043. कोपप्रसादकसितानि 3149. 5360. Çiç. 44. Kir. 13,47. Vaṇîn. Bṛh. S. 68,74. 105,4. अच्छिन्न *ununterbrochen* Kathās. 61,47. Rāǵa-Tar. 1,60. Mārk. P. 109,21. Bhāg. P. 2,2,12. fg. 3,23,9. 4,26,23. 8,20,38. Sarvadarçanas. 77,22. 78,1. Prasiddh. 56,b,8. किं-चिल्लक्ष्यार्थाद्यत्र तु कसितं स्यात् Daçar. 4,70. Sāh. D. 86,10. कसितं तु वृ-थाकासो यौवनोद्भेदसंभवः 151. 140. Vgl. अट्टकसित.

— caus. कासयति *Jmd* (acc.) *zum Lachen bringen* Harīv. 8408. Ku-māras. 7,95. Kathās. 40,3. स मूढो ऽत्र पाषाणानप्यकासयत् 61,246. Bhāg. P. 10,13,10. 15,11. — partic. कासित 1) *lächerlich* Kathās. 13, 189. — 2) *zum Lachen gebracht* so v. a. *weiss gefärbt* (vgl. काम): कु-सितं कुरुते पुष्पैः कदम्बैर्वासितं वनम् Harīv. 3555.

— desid. vgl. 2. शत्.

— intens. *anhaltend lachen:* प्रकास्यमान MBh. 3,14650.

— अति, °कसित n. *heftiges Lachen:* वितितातङ्कं भवत्यतिकसितम् Da-çar. 4,71. Sāh. D. 86,12.

— व्यति, °कसन्ति *über einander lachen* P. 1,3,15, Vārtt. 1. Pat. 23,58. fg.

— अप *über Jmd* (acc.) *lachen* R. 2,35,21 (प्र° ed. Bomb.). अपकसित n. *ein Lachen, bei dem Einen die Thränen in die Augen kommen,* Da-çar. 4,71. Sāh. D. 86,12. — caus. *verlachen, verspotten* R. 1,34,17. — Vgl. अपकास्य.

— अभि s. अभिकस्य und अभिकास.

— व्यभि s. व्यभिकास.

— अव *verlachen, verspotten* MBh. 3,11181. 8,1738. 9,1551. 16,12. R. 2,96,40. Spr. (II) 3317. Pañcar. 191,3. 200,7. Bhaṭṭ. 1,6. — partic. अवकसित 1) *verlacht, verspottet* MBh. 1,134. 7,1455. Harīv. 1278. R. 5,36,38. Mārk. P. 63,16. fg. — 2) n. *ein Lachen, bei dem Kopf und Schulter in Bewegung gerathen,* Sāh. D. 86,11. — Vgl. अवकसन (in den Nachtragen) und अवकास fg.

— व्यव s. व्यावकासी.

— समव s. समवकास्य.

— उद् *auflachen* vom Blitz so v. a. *zucken* Bhāg. P. 3,17,6. — Vgl. कस्कार.

— उप 1) *verlachen, verspotten* MBh. 8,1245. 13,474. R. Gorr. 1,56, 12. Mṛicch. 49,10. Ṛt. 6,30 bei Hall. Spr. (II) 2000. 2570. Weber, Kṛshṇaǵ. 301. Kathās. 61,281. 108,22. Prab. 20,4. Pañcar. 94,9. 220,5. pass. Ghaṭ. 17. partic. °कसित Kathās. 58,106. 61,229. 62,169 (°कसित fehlerhaft). 64,27. 119,200. — 2) euphemistisch für *sich begatten mit* (acc.): घृतातलोभ्रो नोपकसेत् Pāṇ. Gaṇ. 2,7. — 3) *lächeln* Çiç. 73, 16, v. l. उपकसित n. *ein Lachen, bei dem der Kopf sich schüttelt,* Da-çar. 4,71. — Vgl. उपकसित, उपकस्वन् und उपकास fg. — caus. *ver-lachen, verspotten:* उपकासित (durch das Metrum gesichert) Bhāg. P. 10,61,36. Kathās. 62,169 (das Metrum verlangt °कसित). statt उपका-स्यमान 56,290 (उपकस्य° v. l.) und उपकास्यते Spr. (II) 767 ist wohl उपकस्य° zu lesen).

— परि *scherzen* Kathās. 87,11. *mit Jmd* (acc.) MBh. 5,2120. *ver-lachen, verspotten* Bhāg. P. 10,61,34. pass. Spr. (II) 5426. 7423. तस्यो-पदेशो भूमत्रा पर्यकास्यमकृद्रुः Rāǵa-Tar. 6,169. — Vgl. परिकास.

— प्र 1) *auflachen:* प्रकसति R. 5,60,15. प्रकसन् MBh. 1,5933. 6022. 6201. 2,1491. 3,2298. 3049. 5,3962. 7092. 8,500 (प्रकसन् zu lesen). Harīv. 6738. R. 1,2,33. 46,21. 52,12. 2,91,3. 3,34,21. 5,60,17. Kathās. 46,76. Mārk. P. 21,53. Bhāg. P. 3,7,42. 18,9. 5,12,18. Pañcar. 216, 18. प्रकसन्ती R. 1,9,53 (52 Gorr.). 2,69,16. 5,27,21. प्राकसन् MBh. 3, 523. 2003. 15791. प्रजकास 14,2149. Harīv. 3876. 6739. R. 2,96,21 (105,24 Gorr.). प्रजक्सुम् MBh. 8,1909. med. प्रकसते R. 7,37,8,22. प्र-

कस्य MBh. 3,2160. 2242. 11975. R. 5,25,2. Rāgh. 3,51. Çiç. 73,16, v. l. Bhāg. P. 3,15,11. 19,1. Brahma-P. in LA. (III) 53,17. प्रकसित्वा MBh. 2,1819. प्रजकास कासम् MBh. 12,12581. मकाकासम् 7,5582. — — 2) *lachen mit Jmd* (acc.): कसन्तं प्रकसत्येता रुदन्तं प्ररुदन्ति च Spr. (II) 7375. — 3) *verlachen, verspotten* MBh. 2,1814. 3,2316. 4,1252. 1336. 8,4784. 12,8283. 9586. 13,490 (auch med. प्रकसे). 14,2253. R. ed. Bomb. 2,35,22. Bhāg. P. 10,34,18. *Etwas belachen* Kathās. 46,52. — 4) partic. प्रकसित *a) lachend* Harīv. 12265 (st. des verbi finiti). R. 3,65,9. 5,9, 33. 27,26 (Ango). Çiç. 105,4, v. l. Kathās. 124,146. Bhāg. P. 4,24,47. प्रकसितानन Harīv. 4094. Bhāg. P. 10,23,24. 31,17. °वदन Paṇḍat. 36, 2. 46,8. कंसैः प्रकसितानीव ब्रलानि Harīv. 3825 nach der Lesart der neueren Ausg. — 2) n. *das Auflachen* Bhāg. P. 3,28,33. उत्कट° Vasiṅh. Bḥn. S. 78,4. — Vgl. प्रकस fgg., प्रकास, प्रकासिन्. — caus. *zum Lachen bringen:* प्रकासित Daçak. 87,15. Vgl. प्रकासक.

— संप्र *auflachen:* °कस्य MBh. 1,3421. 8,4535. 13,6015. Harīv. 9916. 13714. R. 7,20,18. Bhāg. P. 10,66,37. — Vgl. संप्रकास.

— प्रति s. प्रतिकास.

— वि 1) *auflachen:* विकसत् MBh. 7,5219. 5735. 8,2672. Harīv. 3445. 7481. Kathās. 17,142. 37,72. 46,168. कृदि 98,61. Spr. (II) 3360. Riçā-Tar. 3,342. 4,194. 252. 651. विकसती MBh. 1,4225. Harīv. 7051. Kathās. 117,37. व्यकसत् R. 6,68,18. विजकास Bhāg. P. 10,66,18. विजकसुस् 67,12. Kathās. 50,20. विकस्य MBh. 1,4762. Rāgh. 2,46. Çiç. 17, 8. 25,11. 73,16. Vikr. 12,20. Prab. 20,16. Daçak. 73,9. 80,1. 92,10. Kathās. 5,135. 11,64. 18,389. 24,28. 34,221. 42,9. 44,60. 45,268. 65, 218. Mārk. P. 109,17. Riçā-Tar. 3,290. 4,292. 417. 649. Verz. d. Oxf. H. 117,b,5. Bhāg. P. 5,10,30. Paṇḍat. 48,9. 78,6. Hit. 17,8. 41,16. 57, 17. — 2) *auslachen, verlachen, verspotten* Mṛicch. 51. Verz. d. Oxf. H. 117,a,39. Bhāg. P. 3,15,30. pass. विकस्यमाना Paṇḍat. 75,14. mit gen. der Person Gīt. 9,8. — 3) partic. विकसित *a) lachend* Kādab. 23. कंसैर्विकसितानीव ब्रलानि Harīv. 3825. — *b) ausgelacht, verlacht, verspottet* Kathās. 61,250. — *c)* n. *das Lachen:* सवज्ञा° *spöttisches Lachen* Spr. (II) 1851. *lautes Lachen* AK. 1,1,7,38. H. 297. *wohlklingendes Lachen* Daçak. 4,70. Sin. D. 86,11. — Vgl. विकास.

— सं वि *auflachen, lachen:* °कसति Mṛicch. 85,14.

कैस (von 2. कस्) m. P. 3,3,62. *laute Fröhlichkeit, Lachen* AK. 1,1, 7,18. H. 296. ṚV. 10,18,8. AV. 15,2,3. VS. 30,6. 20. oxyt. AV. 11,8, 24; vgl. VS. Prāt. 2,64. कसाराव Padma-P. 16,89 schwerlich richtig. — Vgl. निशा° und कास.

कसन (wie eben) 1) adj. (f. घा) *lachend* Nir. 3,8. *scherzend mit* (gen.) Paṇḍar. 3,13,16. — 2) m. *der Lacher*, N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2569. — 3) f. घा *ermunternder Zuruf des Fuhrmanns an das Zugthier* ṚV. 9,112,4. — 4) f. ई *Kohlenpfanne, — becken* (vgl. कसती) AK. 2,9,30. H. 1020. Med. n. 158. — 5) n. proparox. *das Lachen* P. 3,3,115, Schol. H. 296. Med. Suçr. 1,98,11. 316,4. Vasiṅh. Bḥn. S. 46,25. *mit zitternden Lippen* H. 298.

कसनीमणि m. *das Juwel des Kohlenbeckens* d. i. *Feuer* Trik. 1,1,67.

कसनीय (von 2. कस्) adj. *zu verlachen, dem Gelächter ausgesetzt:* पौराम् Spr. (II) 3978. 6134.

कसन्तिका (von कसन्ती) f. *Kohlenbecken* H. 1020. Halāj. 2,159. अङ्गारपूर्णा Kāraṇḍ. 1,14. am Ende eines adj. comp. Riçā-Tar. 3,171.

कसन्ती 1) adj. f. s. u. 2. कस्. — 2) f. *a) Kohlenbecken* AK. 2,9,29. H. an. 3,315. Med. t. 175 (कसती gedr.). Halāj. 2,159. — *b) Jasminum Zambac* (मल्लिका) H. an. Med. — *c) ein best. weiblicher Unhold* diess.

कसवज्र m. N. pr. eines Mannes Tāran. 235.

कसामुद् (कस् + मुद्) adj. *fröhlich lachend* AV. 7,60,6. 14,2,43.

कसिका f. *Gelächter* Wilson nach Çāṇḍārthak. *Spassmacherei* ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut.

कसिर् m. *eine Mausart* Verz. d. Oxf. H. 309,a,18. fg. — Vgl. कैसिर्.

कसुराज m. N. pr. eines Mannes Tāran. 280.

कस्कर्तर् (l. कस् + कर्तर्) nom. ag. *Aufmunterer:* यथृणाम् ṚV. 4,7,5.

कस्कार् m. *das Lachen des Himmels* d. i. *Wetterleuchten:* कस्कारा-हिश्रुतस्पर्यतो ज्ञाताः (मरुतः) ṚV. 1,23,12. Vgl. 1,168,8. 2,4,6 und 2. कस् mit उद्.

कैस्कति f. *laute Fröhlichkeit, Lachen:* यज्ञ, यर्क, क° ṚV. 8,78,6.

कैस्त Uṇādis. 3,86. m. n. गण अर्घर्चादि zu P. 2,4,31. m. Siddh. K. 249,b,2 v. u. 1) m. *a) Hand* Nir. 1,7 (von कस्). AK. 3,4,14,61. Trik. 2,6,26. H. 391. an. 2,209. Med. t. 75. Halāj. 2,386. ṚV. 1,37,3. 2,33, 7. 4,2,14. घिष वज्रं दक्षिण इन्द्र कस्ते 6,22,9. 29,2. 7,45,1. 8,23,8. गृह्णामि कस्तम् AV. 12,3,17. 14,1,48. fgg. 18,4,56. VS. 4,27. 11,11. Çat. Br. 2,1,2,12. 6,3,1,41. कस्ते कृत्वा 14,6,8,2. TS. 5,3,2,4. Kāṭh. Çr. 3, 6,9. 5,3,27. Āçv. Gṛhj. 1,7,8. 4,3,2. Kauç. 80. fg. Ait. Br. 5,21. sieben ṚV. 4,58,3. — M. 3,214. 216. नित्यं शुद्धः कारुकस्तः Spr. (II) 967. कस्तस्य भूषणं दानम् 7377. °चरणौ क्षेदयेत् M. 9,277. MBh. 3,15655. Suçr. 1,23,13. चतुर्विंशत्यङ्गुल 126,2. Vasiṅh. Bḥn. S. 51,10. स्वकस्तेन च यद्दत्तं लभ्यते नात्र संशयः । परकस्तेन यद्दत्तं लभ्यते वा न लभ्यते ॥ Spr. (II) 7334. कस्तदत्त *mit der Hand gereicht* Verz. d. Oxf. H. 281,b, 48. कस्तं प्रसार्य Hit. 10,17. अधिकरणिकमस्तके कस्तं दत्त्वा Mṛicch. 139, 18. कस्तो यदा रत्ने दत्तः Hit. 65,12. कथं पाखण्डकस्तं गता *gerathen in* Prab. 43,8. सभाधनीम् । चण्डालकस्तादादाय M. 10,108. R. 1,2,10. यो ऽदत्तादायिनो कस्ताच्छिनत्ति ब्राह्मणो दण्डम् M. 8,340. वस्त्राञ्चलात् — ब्रयाद् सर्षपान्कस्ते Kathās. 18,181. मद्धस्ते किंचिदप्यस्या नास्ति 4,73. धार्यतामयं स्वकस्ते निक्षेपः प्रियायाः Vikr. 27,3. तेषां दत्ता तु कस्तेषु सपवित्रं तिलोदकम् M. 3,223. यो यद्या नितिपेद्धस्ते यमर्थं यस्य 8,180. तैं च कस्ते क्षेमशं कुरु Kathās. 39,161. कस्ते न्यस्तं मुखम् Mṛicch. 82. तस्य कस्ते लोकद्वयं स्थितम् *so v. a. sind ihm so sicher, als wenn er sie in der Hand hätte*, Kām. Nītis. 7,53. — du. ṚV. 1,24,4. 162,9. 2,39,5. भद्रा ते कस्ता सुकृतोत पाणी 4,21,9. ममो चिद्धस्तो न मम विविष्टः 10, 117,9. AV. 5,81,1. घा ते कस्तौ रुमामके 8,1,8. VS. 11,55. fg. Çat. Br. 3,4,2,10. 14,5,2,11. संकस्य M. 2,71. 3,225. 264. 8,125. क्षेदयेत् 283. 9,276. दानविधिर्जितौ Spr. (II) 7382. Ver. in LA. (III) 5,9. — कस्तच्छेदन M. 8,322. कस्ताभिघात Suçr. 1,296,21. °संघात्न Mṛicch. 94. Am Ende eines adj. comp. (f. घा): शत°, सहस्र° AV. 3,24,5. Mṛicch. 36. 51. 61. Kādab. 14. कुसुमावचयव्यग्र° Mālav. 50,3. धनुर्व्यग्र° Vikr. 77,4. फल° *Früchte in der Hand haltend* Kathās. Up. 1,4. M. 5,143. MBh. 3, 12201. 14365. 14697. 6, 4959. R. 1,45,42. 2,64,12. 3,32,17. 54,9. 10. Rāgh. 2,21. 10,63. Çiç. 5,1. 40,22. 49,1. 85,17. Spr. (II) 6202. Vasiṅh.

Bṛh. S. 58,40. Bṛh. 27 (25), 3. Kathâs. 18, 116. Weber, Kṛishṇaj. 300. Bhâg. P. 8,20,25. 9,4,47. Hit. 10,8. 23,6. Vet. in LA. (III) 2,3. निर्मीसवाल° on der Hand führend Varâh. Bṛh. S. 3,13. सासि° = यमि° R. 5,87,3. — b) der Rüssel eines Elephanten H. 1224. H. an. Med. Att. Bṛh. 5,31. हस्ति° MBh. 1,5970. 3,2669. 6,4383. R. 4,9,106. 5,21,15. Kumâras. 1,36. Varâh. Bṛh. S. 24, 17. 30, 24. 67, 3. 94, 12. AK. 3, 4, 8, 16. यथहस्तं विधुन्वंस्तु हस्ती हस्तमिवात्मनः R. 2,23,4. यच्छ° adj. eine Lotusblüthe im Rüssel haltend Bhâg. P. 2, 7, 15. — c) die Hand als Längenmaass (= 18 Zoll ungefähr) AK. 2, 6, 2, 37. 3, 4, 8, 7. Taik. 2,2,3. H. 399. 887. H. an. Med. Z. d. d. m. G. 9, 665. Colebr. Alg. 2. Journ. of the Am. Or. S. 6,182. fg. Mit. 2, 41, b, 8. 10. Ind. St. 9,432. Mâlav. P. 49,39. Hiouen-thsang 1,60. Varâh. Bṛh. S. 23,2. 33,6. 7. 44, 3. 48,47. 53,4. 92. 54,6. fgg. Spr. (II) 7381. Râga-Tar. 4,199. Bhâg. P. 3,24,19. H. 134. — d) so v. a. °विन्यास Handstellung VS. Prât. 1,121. Çikshâ 55 in Ind. St. 4,369. Weber, Prâtiçâkh. 107. 111. Verz. d. Oxf. H. 86,a,20. fgg. 202,b,19. 24. 27. °क्रोनम् Çikshâ 54 in Ind. St. 4,368. दृष्टिं हस्तानुगां कृत्वा Weber, Prâtiçâkh. 111. — e) Handschrift Jâtakam. 1,319. Vikr. 38. — f) Bez. des 13ten (15ten) Nakshatra AK. 3,4,2, 17. H. 112. H. an. Med. Journ. of the Am. Or. S. 6,334. AV. 19,7,3. TS. 4, 4, 10, 2. TBr. 1,5,2,2. 3,1,1,9. Çat. Br. 2,1,2,12. Kâtj. Çr. 4, 7,3. Çâṅkh. Gṛhj. 1,26. Âçv. Gṛhj. 3,3,2. P. 4, 3, 34. gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100. Jâtakam. 1,142. MBh. 13, 3267. 4260. R. 5,73,15. Varâh. Bṛh. S. 6,12. 7,4. 9,3. 30. 10,1. 9. 12,21. 15,11. 29. 23,6. 53, 52. 54, 123. 98,9. 15. 102,3. यस्मिनीहस्तम् 55,31. Mârk. P. 33,11. Lalit. ed. Calc. 138,11. — g) ein best. Baum H. an. — h) Anapaest Colebr. Misc. Ess. 2,15. — i) am Ende eines comp. als प्रशंसावचन Gaṇaratnam. zu P. 2,1,66. Fülle, Menge nach Wörtern in der Bed. von Haar AK. 2, 6,2,49. H. 568. H. an. Med. Halâj. 2,276. धम्मिल्ल° Ind. St. 9,401,5. Vgl. केश°. — k) N. pr. eines Soma-Wächters Sây. zu Ait. Br. 3,26. VS. 4,27. eines Sohnes des Vasudeva Bhâg. P. 9,24,48. — Râga-Tar. 8,630. Vgl. 4). — 2) f. या a) Hand: यदितेर्हस्तौ सुचमेतां द्वितीयामकृणवन् AV. 11,1,24. — b) das Nakshatra Hasta Utpal. Mârk. P. 58,39. VP. 226, N. 21. Koshṭhaka im ÇKDr. — 3) n. Blasebalg Çabdârthak. bei Wilson. — 4) adj. unter dem Nakshatra Hasta geboren P. 4,3,34; vgl. 1) k). — Vgl. य°, यंयु°, यक्रवि°, यप्र°, यत्तर्कस्तम्, यप°, यमुक्त°, यार्द्र°, ग्रयु°, सतु°, कपोत°, कृत°, केश°, खादि°, गन्धर्व°, गल°, ग्राव°, घृत°, ज्योतिर्हस्ता, निक्त°, निर्हस्त, पञ्च°, परि°, पात्र°, पिनाक°, प्र°, प्रति°, भद्र°, महा°, मुक्त°, लघु°, वम्र°, वाल°, वि°, वीणा°, शक्ति°, शुद्ध°, शूल°, स°, सक्थ°, सु°, मुख°, स्थूल°, हिरण्य°, हास्त, हास्तायन.

हस्तक (von हस्त, gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. m. 1) Hand: प्रवात्य हस्तकम् Pâṇâr. 2,4,11. दृष्ट्वा शिरसि हस्तकम् 1,4,6. सर्वगात्रेषु विन्यस्ते रक्तचन्दनहस्तके: so v. a. Handspuren Mṛicch. 157,18. त्यक्त्वा ऽन्यद्वा हस्तकः die Hand als Stütze Gît. 4,19. Am Ende eines adj. comp. Pâṇâr. 1,11,4. कान्दुकहस्तिका einen Ball in der Hand haltend MBh. 5,3192. — 2) Hand als Längenmaass: द्विहस्तिका adj. Çâṅkh. Çr. 3,2,15. — 3) Handstellung Verz. d. Oxf. H. 86,a,21. 202,b,19. — Vgl. कपोत°, गन्धर्व°, प्र°, स्वहस्तिका.

हस्तकार्य adj. mit der Hand zu verrichten Pâraṇ. Gṛhj. 3,6,12. fg.

हस्तकित adj. von हस्तक gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36.

हस्तकृत adj. (f. या) mit der Hand gemacht AV. 19,1,1.

हस्तग adj. in der Hand befindlich, was oder wen man in der Hand hat eig. und übertr. so v. a. was oder wen man sein nennen kann, was Einem gewiss ist Kathâs. 26,259. 30,121. Pâraṇ. ed. orn. 29,16.

हस्तगत adj. dass.: ज्ञप Harîv. 16228. Ragh. 7,64. लक्ष्मी Spr. (II) 4690. Kathâs. 16,122. 26,145. Verz. d. Oxf. H. 216,b,1. 337,b,21. Gegensatz परागत 216,a,40. परहस्तगत Spr. (II) 7603.

हस्तगामिन् adj. dass. Ragh. 8,1.

हस्तगिरि m. N. pr. eines Berges bei Kâñkî Verz. d. Oxf. H. 253,a, 24. °माहात्म्य 30,a,17. Mack. Coll. 1,90. — Vgl. हस्तिगिरि.

हस्तगृह्य gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72. absol. an der Hand fassend RV. 10,85,26. 109,2. AV. 5,14,4. 20,5. — Vgl. हस्तेगृह्य.

हस्तग्रह m. 1) das Ergreifen der Hand Bhâg. P. 10, 65, 5. सख्यमबध्यत । ताभ्यामुभाभ्यामन्योऽन्यं हस्तग्रहपुरःसरम् Kathâs. 28, 100. — 2) Vermählung: पाणिहस्तग्रहयोर्यो दृष्टम् Kathâs. 16,60.

हस्तग्राह adj. 1) der Einen bei der Hand fasst so v. a. in unmittelbarer Nähe befindlich R. 7,34,20. — 2) der die Hand des Mädchens ergreift d. h. sich verlobt, — trauen lässt, Gatte Nal. 3,6. Bhâg. P. 9,18, 21. fg. 10,62,15. — Vgl. हस्तग्राह्य.

हस्तग्राहक adj. der die Leute bei der Hand fasst so v. a. zudringlich Râga-Tar. 7,299.

हस्तग्राह्य absol. in Verbindung mit ग्रह् Jmd bei der Hand fassen P. 3,4,39.

हस्तग्राह्य adj. mit der Hand zu fassen, in unmittelbarer Nähe befindlich R. 7,34,20, v. l.

हस्तघ्न m. Handschutz (gegen den Anprall der Bogensehne) Nalod. 5,3. Nir. 9,14. RV. 8,75,14. — Vgl. हस्तत्र.

हस्तचाप s. हस्तवाप.

हस्तच्युत adj. von der Hand bewegt, — geschwungen: Steine RV. 9,11,3.

हस्तच्युति f. Bewegung der Hände RV. 7,1,1.

हस्तज्योडि m. eine best. Pflanze, = काज्योडि Râgân. im ÇKDr.

हस्ततल m. Händeklatsch: सहस्ततलम् Harîv. 8389. Dhûrtas. 73,3.

हस्तत्र n. Handschutz: °त्रं बध्नीष Lâṭj. 3,10,7. — Vgl. हस्तघ्न.

हस्तदक्षिण adj. rechter Hand gelegen: Weg Pat. in Mahâbh. lith. Ausg. 1,121,a. so v. a. recht, richtig MBh. 12,6750.

हस्तदीप m. Handlaterne Kathâs. 21,88.

हस्तधात्री f. Titel einer Schrift, = हस्तामलक Verz. d. Oxf. H. 253,a,25.

हस्तधारण n. das bei der Hand Halten so v. a. unter die Arme Greifen, Stützen, Helfen; = परित्राण Râjân. zu AK. 3,3,5 nach ÇKDr. H. 1302. f. या dass.: रोदयमाणे च मयि क्रियतां क° MBh. 1,7752. das Ergreifen der Hand so v. a. das Heirathen (eines Mädchens) Harîv. 10068. Spr. (II) 5342.

हस्तपाद n. sg. Hände und Füsse M. 2,90. Jâtakam. 2,216. Kâraṇ. 4,6.

हस्तपुच्छ n. die Hand unterhalb des Handgelenks Taik. 2,6,16. Hir. 165.

हस्तपृष्ठ n. der Rücken der Hand H. 393. Vâyup. 100.

हस्तप्रद adj. die Hand reichend so v. a. unterstützend, helfend: धार्त° MBh. 12,4231. 13,6441. 6601.

हस्तप्राप्त adj. = हस्तगत MBu. 7,4707. वीर् Spr. (II) 5338. युद्धानि Harıv. 4340. स्वर्ग R. 1,59,5 (61,5 Gorr.).

हस्तप्राप्य adj. *mit der Hand zu erlangen, — greifen* R. 3,16,6. Mṛcch. 73.

हस्तबन्ध m. = हस्तेबन्ध P. 6,3,12, Schol.

हस्तविम्ब n. *das Einsalben des Körpers mit wohlriechenden Stoffen* H. 649. Hall. 2,385.

हस्तमुक्तावलि f. Titel einer Schrift: °कृत् Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483.

हैस्तयत adj. von *der Hand geschwungen:* Stein RV. 5,45,7. 10,76,2.

हस्तयोग m. *Anwendung —, Uebung der Hand:* कृत° adj. MBu. 8,1986.

हस्तरत्नावली f. Titel eines über die *Handstellungen* (beim Tanze u. s. w.) handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483.

हस्तलाघव n. s. u. लाघव 2). Unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,*a*, 7.

हैस्तवत् (von हस्त) adj. 1) *eine Hand habend* P. 5,2,133, Schol. RV. 10,34,9. वाग्घस्तवत् *Sprache und Hände habend* Spr. (II) 2706. — 2) *eine geschickte Hand habend:* Bogenschütze MBu. 4,1166. 1510. 7,498. 8,1794. 2183. Rāgn. 7,42. Dieb Daçak. 89,1.

हस्तवर्तम् absol. in Verbindung mit वर्तय् *mit der Hand drehen* P. 3,4,39.

हस्तवाप m. *Aussaat mit der Hand* so v. a. *das Ausstreuen —, Abschiessen von Pfeilen mit einem Male:* यस्यैकयाष्टिर्निशितास्तीक्ष्णधाराः सुवाससः संयतो हस्तवापः (so ed. Bomb., हस्तचापः ed. Calc.) MBu. 5,706.

हस्तवाम adj. *linker Hand gelegen:* Weg Pat. in Mahâbh. lith. Ausg. 1,121,*a*; vgl. u. हस्तावाप 2).

हस्तवारण n. = हस्तधारण AK. 3,3,5.

हस्तविन्यास m. *Handstellung* (zur Bezeichnung der Accente) Comm. zu TS. Prât. 23,17.

हस्तसिद्धि f. *Erwerb durch Handarbeit* VP. 1,6,20.

हस्तसूत्र n. *eine vor der Hochzeit dem Mädchen um das Handgelenk geschlungene Schnur* AK. 3,4,25,176. Taik. 3,3,124. H. 663. Hall. 2, 403. कौतुक° Kumâras. 7,25.

हस्तस्थ adj. *in der Hand befindlich, was man in seiner Hand hat* Spr. (II) 3812. Kathâs. 13,81.

हस्तहोम m. *ein Opfer mit der Hand* Kauç. 138.

हस्तादर्श (हस्त + आ°) adj. *handschriftlich* (Gegens. मुद्राङ्कित *gedruckt*): °मेदिनी ÇKDa. unter सुधाभृति und सुरसा.

हस्तादित्य (हस्त + आदित्य) m. N. pr. eines Mannes; pl. *sein Geschlecht* Saṁsk. K. 184,*a*, 1.

हस्तादुलि (हस्त + अ°) f. *Finger der Hand* Gârgya-P. 55 im ÇKDa. °ली f. dass. (neben पादाङ्गुली) Harıv. 14268.

हैस्तादान (हस्त + आ°) adj. *mit der Hand fassend:* Menschen, Affen, Elephanten TS. 6,4,5,7.

हस्तादाभरण (हस्त + आ°) 1) n. *Handschmuck* Vjutp. 139. अहस्तादाभरणोपेत R. 1,6,9 (12 Gorr.). — 2) m. *eine Schlangenart* Suçr. 2,205,14.

हस्तादामलक (हस्त + आ°) 1) n. *eine Myrobalane in der Hand:* त्वया दृष्टं जगत्सर्वं °त्तदा so v. a. *so deutlich wie eine M. auf der Hand* R. 7,37,8,12. °त्सर्वं तस्मात् Verz. d. B. H. 124,15. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Prabhâkara und Schülers des Çaṁkarâkârja Verz. d. Oxf. H. 227,*b*, 14. 248,*a*, 1. 251,*b*, 43. 255,*a*, 10. Hall 106. 167. Wilson, Sel. Works 1, 28. 201. fg. °वेदान्तप्रकरण Verz. d. Pet. H. No. 93. — 3) n. Titel eines von Hastâmalaka verfassten Werkchens Hall 107. °टीका 108. °भाष्य 107.

हस्तालिङ्गन (हस्त + आ°) n. *Umarmung* Harıv. 6212 nach der Lesart der neueren Ausg., °क n. die ältere.

हस्तावनेजन (हस्त + अव°) n. *Handwasser* AV. 11,3,18.

हस्तावलम्ब (हस्त + अव°) m. *woran sich die Hand klammern kann, Rettungsmittel, Rettungsanker:* न खलु निपतितामस्ति °म्बः Spr. (II) 2847. °म्बो भवति सुहृत्सचिवचेष्टितम् 3727.

हस्तावलम्बन n. dass. Hem. Joḍaç. 1,13.

हस्तावाप m. 1) *Handschutz* (gegen das Anprallen der Bogensehne) MBu. 4,1941. 7,749. 4793. 11,663. R. 6,92,15. im Prâkrit Çiç. 93,17. — 2) हस्तावापेन गच्छन्ति नास्तिकाः MBu. 12,6749. हस्तौ धवाप्येते प्रवेश्येते यस्मिन्निति हस्तावापो हस्तनिगडस्तेन निगडिताः सन्तः Nîlak. wir vermuthen हस्तवामेन (sc. मार्गेण) *linksab* d. i. *falsch;* vgl. हस्तदक्षिण im nächsten Verse.

हस्ताहस्ति adv. *im Handgemenge* MBu. 9,982. Zur Bildung des Wortes vgl. P. 2,2,27. 5,4,127. 6,3,137. Vop. 6,33.

हस्तिक (von हस्तिन्) n. *eine Menge von Elephanten* Çabdar. im ÇKDa. in dieser Bed. oder *Elephant* MBu. 9,2339 nach der Lesart der ed. Bomb. — Vgl. हास्तिक.

हस्तिकक्ष m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,289,14.

हस्तिकक्ष्य m. *Tiger; Löwe* Çabdârthak. bei Wilson.

हस्तिकक्ष्क m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 83.

हस्तिकन्द m. *ein best. Knollengewächs* Râgân. 7,80.

हस्तिकाञ्ज m. = मकाञ्ज Râgân. im ÇKDa. °क unsere Hdschrr. 9,66.

हस्तिकर्ण m. *Elephantenohr:* 1) Bez. verschiedener Pflanzen: *Ricinus communis* Taik. 2,4,26. H. an. 4,91. Med. p. 112. *rother Ricinus* Râgân. 8,57. *Butea frondosa* H. an. Med. Ratnam. 44. *ein best. Knollengewächs* (हस्तिकन्द) Râgân. 7,80. — Suçr. 1,146,4. 182,15. fg. Varâh. Bṛh. S. 29,7. — 2) N. pr. *a*) eines Wesens im Gefolge Çiva's H. an. Med. Vâlp. beim Schol. zu H. 210. — *b*) eines Râkshasa R. 6,74,8. — *c*) eines Schlangendämons Vjutp. 86. — *d*) einer Oertlichkeit Râgat. 5,23. 7,1662.

हस्तिकर्णक m. *eine Art Butea* Çabdar. im ÇKDa.

हस्तिकर्णदल m. desgl. Anarabâlâ im ÇKDa.

हस्तिकर्णपलाश m. = हस्तिकर्ण *Butea frondosa* Suçr. 2,171,17.

हस्तिकर्णिक n. Bez. *einer Art zu sitzen bei den Jogin* Verz. d. Oxf. H. 11,*a*, N. 1.

हस्तिकर्ण gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116. — Vgl. हास्तिकर्णक.

हस्तिकाश्यप m. N. pr. eines Mannes MBu. 13,6298. 7672.

हस्तिकुम्भ m. N. pr. einer Felsenhöhle LIA. 2,1168.

हस्तिकोलि m. oder f. *eine Art Judendorn* Ratnam. 253.

हस्तिकोशातकी f. *eine grosse Cucurbitacee* Râgân. 7,171.

हस्तिगर्ता f. *Elephantengrube*, N. pr. einer Vertiefung in der Erde Lalit. ed. Calc. 165,12. Hiouen-thsang 1,314.

हस्तिगिरि m. = काञ्ची Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. हस्तगिरि.

हस्तिघट m. Titel des 7ten Buches im Çatapathabrâhmaṇa.

हस्तिघात adj. *Elephanten tödtend* P. 3,2,54, Schol.

हस्तिघोषा f. = हस्तिकोशातकी Madan. 7,21.

हस्तिघोषातकी f. dass. Ratnam. 63.

हस्तिघ्न adj. *Elephanten zu tödten vermögend* P. 3,2,54. मनुष्य Schol.

हस्तिचर्म (für °चर्मन्) ved. *Elephantenhaut:* °चर्मे ङुकोति P. 5,4,103.

हस्तिचारिणी f. = महाकरञ्ज Râéan. 9,66.

हस्तिजिह्वा f. *Elephantenzunge*, Bez. *einer best. Ader* Verz. d. Oxf. H. 236,*a*,1 v. u.

हस्तिजीविन् m. = हस्त्याजीविन् Harîv. 4552.

हस्तिदत्त 1) m. *Elephantenzahn;* s. हास्तिदत्त. — 2) *Rettig*, m. Çabdar. im ÇKDr. n. Râéan. 7,14. f. ई dass. Suçr. 2,432,12.

हस्तिदत्तक *Rettig*, m. Hîn. 101. n. H. 1190.

हस्तिदत्तफला f. *eine Gurkenart* (पूर्वार्) Râéan. 7,204.

हस्तिदाय m. N. pr.; s. हास्तिदायि.

हस्तिन् (von हस्त) 1) adj. *a*) *mit Händen versehen, geschickt mit der Hand, hantirend:* मुमुं डुहस्ति हस्तिनः ṚV. 3,36,7. 5,64,7. 9,80,3. AV. 9,3,17. — *b*) in Verbindung mit मृग *das Thier mit der Hand* d. i. *Rüssel*, älteste Bez. *des Elephanten* ṚV. 1,64,7. 4,16,14. AV. 12,1,25. दन्त° *mit Fangzähnen und Rüssel versehen* R. 1,6,24. — *c*) (von 2) *a*) *mit einem Elephanten versehen, auf einem E. sitzend:* रथी च रथिना नागी हस्तिना क्षणिना क्षणी । अयुध्यत्त Mâhâ. P. S. 656, Z. 8 v. u. — 2) m. *a*) *Elephant* P. 5,2,133. AK. 2,8,2,2. Trik. 2,8,33. H. 1217. AV. 3,22,3. 4,36,9. 6,38,3. 70,3. 9,1,32. VS. 24,29. Âit. Br. 4,1. 5,31. 6, 27. Çat. Br. 3,1,2,4. 14,7,1,20. 8,33,11. TS. 5,5,11,1. 6,4,5,7. हिरण्यकक्ष्य Âçv. Çr. 9,9,14. Kâty. Çr. 14,2,31. 22,2,24. Kauç. 15. 106. Pâraṇ. Br. 6,8,3. 23,13,2. हस्तिनमारुह्य M. 4,120. 7,96. 12,43. MBh. 3,2114. 2510. 2546. दुष्ट° 8,2579. 12,4281. R. 1,5,16. हस्तिभिर्गीताः श्लोकाः 5,88,6. Spr. (II 1306. काञ्चनमय 5094. 7378. fgg. Varâh. Bṛh. S. 16,23. 19,3. 45,5. 51,19. L.A. (III) 92,17. Verz. d. B. H. No. 897. 945. Çâkjamuni als *El.* Vâlpi beim Schol. zu H. 233. हस्तिकाय Hiouen-thsang 1,82. 2,81. °स्कन्ध Suçr. 1,98,9. °दन्त MBh. 1,5970. 3,2669. 6,4382. R. 4,9,106. 5,21,15. °कपोल s. u. पलाप. °बल Verz. d. Oxf. H. 230,*b*,27. °यूथ MBh. 3,2537. °कर्मन् Kâm. Nîtis. 19,3. °त्रसन Kauç. 4. °स्नान Spr. (II) 667. हस्तोद्धित Varâh. Bṛh. S. 94 in der Unterschr. हस्त्यारोहण Pân. Gaṇ. 3,15. °दमक M. 3,162. °कर्तृ 9,280. °हिरण्यम् Kâṭhân. Up. 7,24,2. Kâṭhop. 1,23. °रथम् MBh. 13,3267. हस्त्यश्वम् Varâh. Bṛh. S. 48,37. सर्वेण हस्त्यश्वेन समावृताः R. 6,73,3. °रथदान, हस्त्यश्वदीना Verz. d. B. H. No. 365. — *b*) *Elephant* am Ende eines comp. als Bez. *des Besten in seiner Art* gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. — *c*) *eine best. Pflanze*, = वज्रमोदा Râéan. 6,110. — *d*) N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,3747. des Suhotra und Gründers von Hastinâpura 3787. Harîv. 1053. fg. VP. 451. des Bṛhatkshatra Bhâg. P. 3,21,30. fg. des Kuru Çatr. 10,400. — 3) f. °नी *a*) *Elephantenkuh* Med. n. 157. Hallâs. 2,70. 5,13. 47. AV. 6,70,3. पदा मज्जति क्° Snâpr. Bh. in Ind. St. 1,40. Suçr. 1,176,8. Kâm. Nîtis. 14,34. Varâh. Bṛh. S. 46,53. 67,10. Ratnâs. 13,18. — *b*) *ein best. Parfum*, = रुद्रविलासिनी Çabdâs. im ÇKDr. *eine Art Heliotropium* ebend. unter हस्तिशुण्डा. — *c*) in der Erotik Bez. *einer Gattung von Frauen* (neben चित्रिणी, पद्मिनी und शङ्खिनी) Med. Sharadâtan. Tüb. Hdschr. Verz. d. Oxf. H. 218,*b*,18. स्थूलाधरा स्थूलनितम्बभागा स्थूलाङ्गुली स्थूलकुचा सुशीला । कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च नितम्बखर्वा खलु हस्तिनी स्यात् ॥ Ratîm. im ÇKDr. — Vgl. गन्ध°, ज्ञल°, प्रति°, फल्गुहस्तिनी, मद्दहस्तिनी, मङ्का°, राज्ञ°, स्त्रीहस्तिनी, श्वेत°, सु°, हास्तिन, हास्तिमायन.

हस्तिनख m. *eine Art Schutzwehr an einem Stadtthor* AK. 2,2,16. H. 982. Hallâs. 2,122. Çiç. 3,68.

हस्तिनापुर n. N. pr. einer angeblich von Hastin gegründeten *Stadt* an der Gaṅgâ, des Sitzes der Kuru, LIA. 1,127. fg. Trik. 2,1,13. H. 978. Harîv. 1054. Ratnâs. 18,63. 74,154. VP. 451. fg. 461. Bhâg. P. 1, 21,20. Verz. d. Oxf. H. 30,*a*,35. 149,*a*,37. 231,*b*,16. Verz. d. B. H. 112,6 v. u. Hit. ed. Johns. 1704. Çâṅk. 10,400. Lalit. ed. Calc. 24,4. — Vgl. हास्तिनपुर, गजपुर u. s. w.

हस्तिनायक m. N. pr. eines Mannes Schiefner, Lebensb. 233(3).

हस्तिनासा f. *Rüssel des Elephanten* H. 1224.

हस्तिनीपुर n. = हस्तिनापुर H. 978.

हस्तिपं (हस्तिन् + 2. प) m. *Elephantenwärter, — führer*, Cornac VS. 30,11. MBh. 8,2579. 12,7925. Harîv. 4639. Mâlav. P. 39,18. Bhâg. P. 10,43,3.

हस्तिपक m. dass. AK. 2,8,2,27. 3,4,24,62. Trik. 2,8,49. H. 762. Hîn. 140. Hallâs. 2,70. Çiç. 5,49. Spr. (II) 4658. Ratnâs. 13,19. 21. 69, 82. P. 1,3,67, Schol.

हस्तिपत्त्र m. *ein best. Knollengewächs*, = हस्तिकन्द Râéan. 7,80.

1. हस्तिपद् n. *die Fusspur eines Elephanten:* यथा °पदे पदानि संलीयन्ते सर्वमन्वोद्वयानि MBh. 12,2350.

2. हस्तिपद् adj. *elephantenfüssig;* m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1554. — Vgl. हास्तिपद्.

हस्तिपर्णिका f. *eine Gurkenart*, = गजकोशातकी Râéan. im ÇKDr.

हस्तिपर्णिनी f. desgl. Madan. 7,13.

हस्तिपर्णी f. desgl., = कर्कटी Râéan. 7,199. = मोरट Ratnam. 238.

हस्तिपाद् adj. *elephantenfüssig* P. 5,4,138. Vop. 6,21.

हस्तिपाल m. 1) = हस्तिप *Elephantenwärter, — führer, Cornac* Ratnâs. 69,56. 59. — 2) N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. 2,215. Wassiljew 55. Târan. 2. 248. 250.

हस्तिपालक m. = हस्तिपाल 1) Ratnâs. 69,64.

हस्तिपिण्ड m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1559.

हस्तिपिप्पली f. = गजपिप्पली *Scindapsus officinalis* Suçr. 1,369, 14. 2,284,3.

हस्तिपृष्ठक n. N. pr. einer Oertlichkeit (eines Dorfes Comm.) H. 2,71,15.

हस्तिभद्र m. N. pr. eines Schlangendämons Citat beim Schol. zu H. 1311. MBh. 5,3629. Harîv. 9502.

हस्तिमद् m. *der Brunstsaft des Elephanten* Dhanv. 6,26. Râéan. 6,230.

हस्तिमल्ल m. 1) Bez. *des Elephanten* Indra's Trik. 1,1,61. H. 177. an. 4,299. Med. l. 166. Gaṇiṅa. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,41. *eines andern mythischen Elephanten* (शङ्खनाग) Med. Wilson fasst शङ्खनाग als N. *eines Schlangendämons.* — 2) ein N. Gaṇeça's Trik. 3,3,110.

H. ç. 61. H. an. Med. Gaṭṭon. in Verz. d. Oxf. H. 191, a, 23. — 3) a *heap of ashes; a shower of dust; frost, cold* Wilson nach Çabdârthak.

कस्तिमाया f. Bez. *eines best. Zaubers* Hariv. 9879.

कस्तिमुख m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,14.

कस्तिमृदिता f. संज्ञायाम् P. 8,2,146, Schol.

कस्तियशस n. *die Pracht eines Elephanten* Pân. Gaṇ. 3,15.

कस्तिरोधक m. = कस्तिलोधक Râǵan. 6,211, v. l.

कस्तिरोहणक m. *eine Art* Karañǵa (महाकरञ्ज) Râǵan. 9,66.

कस्तिलोधक m. = लोध *Symplocos racemosa Roxb.* Râǵan. 6,211.

कस्तिवर्चस् n. P. 5,4,78. Vop. 6,78. *die Kraft eines Elephanten* AV. 3,22,1.

कस्तिवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten LIA. 2,955.

कस्तिवानर adj. *wobei Elephanten und Affen betheiligt sind (waren):* संग्राम R. 6,3,44.

कस्तिवार m. *ein Haken zum Antreiben des Elephanten* Çabdar. im ÇKDa.

कस्तिविषाणी f. *Musa sapientum, Pisang* Râǵan. 11,36.

कस्तिवैद्यक n. *Heilkunde des Elephanten:* °कार Verz. d. Oxf. H. 329, *a*, No. 780.

कस्तिशाला f. 1) *Elephantenstall* H. 998. MBu. 3,13323. Kathâs. 69, 67. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit: °शालाध्यमधक्षारम् (könnte auch °शाल sein) Râǵa-Tar. 1,96.

कस्तिशिक्षा f. *die Kunst mit Elephanten umzugehen* R. Gorr. 1,80, 28 (pl.). Mahâv. 1,13.

कस्तिशिरस् m. N. pr. s. कास्तिशीर्षि.

कस्तिशुण्डी f. *eine Art Heliotropium* Bhâv. 95. Çabdar. im ÇKDa. (auch °शुण्डा). Râǵan. 5,75. = इन्द्रवारुणी Nigh. Pa.

कस्तिश्यामाक m. *eine Hirsenart* Karaka 1,27. Râǵavallabha im ÇKDa.

कस्तिसूत्र n. *ein über Elephanten handelndes Sûtra* MBu. 2,255.

कस्तिसेन m. N. pr. eines Fürsten Çiva. 14,97.

कस्तिसोमा f. N. pr. eines Flusses MBu. 6,327 (VP. 182).

कस्तीन s. यत्तकस्तीन.

कस्तेकर् (कस्ते loc. von कस्त + 1. कर्) *an die Hand nehmen* (ein Mädchen) so v. a. *heirathen* P. 1,4,77. Vop. 15,5.

कस्तेकरण n. *das Heirathen* Çabdârthak. bei Wilson.

कस्तेगृह्य absol. = कस्तगृह्य *an der Hand fassend* v. l. im gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72. R. 7,37,5,30.

कस्तेबन्ध m. = कस्तबन्ध P. 6,3,19, Schol.

कस्तोदक (कस्त + उ°) n. *in der Hand gehaltenes Wasser* Kathâs. 113,75.

कास्त्य (von कस्त) adj. P. 5,1,98. 1) *an der Hand befindlich:* दश कास्त्या अङ्गुलयः TS. 6,1,4,5. Kâṭh. 33,5. Ait. Br. 1,19. Çat. Br. 6,2,2,23. — 2) *was man unter der Hand hat, mit d. H. bearbeitet:* तृणाणां कास्त्यमभि वावशे वः nämlich Soma RV. 2,14,2 — 3) *was die Hand fasst:* इडा TBr. 3,3,6,1. 5. — Vgl. अधि°, उभय°, मधु°, सु°.

कस्त्याध्रीव (कस्तिन् + धा°) m. *Elephantenwächter, — führer, Cornac* MBu. 3,207. — Vgl. कस्तिध्रीविन्.

कस्त्यारोह (कस्तिन् + धा°) m. *Reiter auf einem Elephanten, Elephantenlenker* AK. 2,8,2,27. H. 762. Hall. 2,70. MBu. 4,674. 5,653. Varâh. Bṛh. S. 87,42. Kathâs. 13,8. 14. 52,248. fgg. Çâk. zu Kumâr. Up. S. 81.

कस्त्यालुक (कस्तिन् + धा°) n. *ein best. grosses Knollengewächs* Madan. 7,76. Suçr. 1,225,3.

कस्त्यृषभ Çat. Br. 14,6,10,4 nach Çâk. und Dvivedagaṅga *nebst einem elephantenähnlichen Stiere:* सकस्त sc. *Kühe.*

कस्र (von 2. कस्) Uṇâdis. 2,13. adj. (f. धा) *lachend* Nir. 3,5. RV. 1, 126,7. = मूर्ख Uṇâval. — Vgl. रावण°.

कस्रनशाक् m. *Schah* Hassan Verz. d. Oxf. H. 147, *a*, 23.

कस्रल n. *ein best. Gift* = कस्राकस्र Çabdar. im ÇKDa.

कस्रव N. *einer Hölle* Burnouf, Intr. 201. Vishṇ. 119. — Vgl. कस्रव.

1. कस्रा interj. *wehe!* Hem. Jogaç. 2,14. कस्राका Sin. D. 16,8.

2. कस्रा m. = कास्रा N. pr. eines Gandharva: कस्रा कस्रः am Ende eines Çloka MBu. 13,3887. 7639. so ist auch zu lesen 3,1769 (vgl. Indral. 2,14). R. 6,83,13. 92,70. विश्वावसुरस्रास्रस्रान् R. Schl. 2,91,16. Wo es das Metrum gestattet, steht überall कास्रा.

कस्रे interj. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. का, क्रीकीते Dhâtup. 25,7 (गतौ). P. 7,4,76. 8,1,190. Vop. 10,4.12. क्रिकते 3. pl., अक्रिकत 3. pl. P. 6,4,112. fg. क्रीकीत, अकासत 3. pl., कासते, अकास्त, कास्यते, कातुम्, कात्वा P. 7,4,43, Schol.; partic. pass. °कान. 1) *aufspringen, wegspringen vor, weichen;* mit dat.: धर्माय वो मरुतो यातवे धौ-र्क्रीकीत RV. 3,20,6. 5,32,9. परातरं सु निर्ऋतिर्क्रीकीताम् 10,59,1. अत्यो न वाजी सुधुरो क्रिकानः *den Anlauf nehmend* 3, 38,1. क्रिकान *fliegend* von einem Pfeile Kir. 13,23. — 2) *losspringen auf* (acc.): यन्माक्रिकीत वपुनो चन RV. 10,49,5. *sich hingegeben zu:* अकास्त ताम् Naiṣ. 1,28. — अति *überspringen:* अतिकाय RV. 1,162,20. TS. 2,6,6,6. पूर्वामाक्रीतिम् TBr. 2,1,4,4. Pâraṇ. Br. 12,11,19. कोषोतकोनां न कश्चनातीव क्रिकीते *sich hervorthun* 17,4,8. — (नदी) गिरिशिखराद्गिरिशिखरमतिकाय *von einem Berggipfel auf einen andern stürzend* Bhâg. P. 5,17,8. अतिकाय मद्रचः *übertretend* 4,3,25. *mit Uebergehung von* 5,24,24. अतिकान *übersprungen* Çat. Br. 4,2,2,4.

— अनु 1) *nachellen, erhaschen, einfangen:* in's Wasser Gefallenes Ait. Br. 5,11. अमितम् Çat. Br. 3,3,2,5. ein Ross 4,4,17. तमनुकाय दाम्नापी-म्नम् Kâṭh. 11,1. 23,4. संदंशेन Śrâuty. Br. 3,10. AV. 5,18,9. TS. 3,2, 2,2. 7,1,4,2. Pâraṇ. Br. 6,1,4. — 2) *Jmd folgen, sich anschliessen, sich fügen* RV. 3,31,17. अनु तत्त ओजो ऽमर्त्या क्रिकत इन्द्र देवाः 6,18, 15. अन्वापो अक्रिकत त्रायमाणम् 10,89,12.

— अप *entteilen, sich davonmachen:* अप स्वमूरुषसो नक्रिकीते RV. 7, 71,1. अप बधिरा धकासत 9,73,6. अपेडु कासते तमः 10,127,3.

— अभि *erwischen:* एत्याकाले ऽभिकाय मुखमप्यगृह्णात् *kam, fasste ihn unversehens und hielt ihm den Mund zu* Ait. Br. 6,33. पादमगृह्णात् Kâṭh. 13,2.

— उद् 1) *auffahren, sich aufrichten, sich erheben:* der Wolf RV. 1, 105,8. Kräuter nach Regen 5,83,4. AV. 8,7,21. VS. 11,38. उद्यापो क्रिकतो ज्योतिषा बृहत् RV. 10,35,6. 142,6. TBr. 2,5,8,5. *auffahren* so v. a. *sich aufthun:* Thüren RV. 2,5,5. शिरसा यूपमुक्रिकीते *hebt sich mit dem Kopfe über den Jûpa hinaus* Kâṭh. Ça. 14,5,10. — भूमेरुक्रि-

क्रीते oder भूमिम् उ° *erhebt sich von der Erde* P. 5,4,46, Schol. उज्जिक्रीषे त्वं न किं पुनः Bhatt. 18,27. पुरस्तात्यतो रज्ज्वः पार्थिवमुज्जिक्रीते Raghu. 13,64. उज्जिक्राने सूर्यमण्डले Bhâg. P. 5,7,12. उज्जिक्रानमिवोडुपम् 10,31,1. Naish. 22,45. 88. कोलाक्लो लोकस्योदज्जिक्रीत Daçak. 66,3. उज्जिक्रानजीविता *deren Leben hinausfahren —; entweichen will* Mâlatîm. 163,11. — 2) *in die Höhe richten:* धनिषुवमुज्जिक्रानः Bhatt. 3,47. — Vgl. उज्जिक्रान.

— घत्युद् *sich erheben über:* शीर्ष्णा यूपम् Çat. Br. 14,2,2,14.

— घनूद् *sich aufmachen nach* TBr. 1,7,2,2.

— घभ्युद् *mit Jmd sich erheben:* सर्वाणि क वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति प्राणमभ्युज्जिक्रते Kaush. Up. 1,11,5.

— प्रोद् *hinauffahren, — schlagen* (Flammen): यक्षा इव प्र वयामुज्जिक्रानाः प्र भानवः सिस्रते RV. 5,1,1.

— प्रत्युद् *auffahren zu* (acc.): गिरः प्रति त्वामुदक्रासत RV. 1,9,4.

— समुद् *sich erheben so v. a. zum Vorschein kommen, erscheinen:* उज्जिक्रान Bhâg. P. 4,20,19. 8,6,13.

— उप *hinabfahren —, herabsteigen auf* (acc.): उपाजिक्रीषा न मक्षीतलं यदि Çic. 1,37.

— नि *hinunterfahren, sich ducken:* नि जिक्रीत पर्वतो गिरिः RV. 1, 37,7. 8,7,3. 34. 18,3. Bâume 5,37,3. 60,3. देवी स्वधितिः 32,10. नि वो ग्रामयो विक्तो न्यग्रामयो नि सपत्नाः (so zu lesen) Âçv. Çr. 5,7,3. Çânku. Br. 28,5. — desid. *sich ducken wollen:* वर्ष्मा रथस्य नि जिक्रीषते दिवः AV. 20,127,2.

— निस् *herausfahren, emporsteigen:* निर्जिक्रानं ददर्श सः । धूपधूमं वनप्रष्टात्कालागुरुवनात् Râm-Tar. 4,171.

— धनुनिस् dass.: (सत्त्वम्) स्तम्भस्य मध्यादनुनिर्जिक्रानम् Bhâg. P. 7,8,19.

— परा *ausweichen in* (acc.): घत्ता पर्णा परोजिक्रीत TS. 5,4,2,3.

— प्र *davon —, wegfahren:* रथीयन्तीव प्र जिक्रीत ओषधिः RV. 1, 166,5. *losspringen:* तिर्यक्प्रजिक्रीत Çat. Br. 1,7,4,12. = प्रगच्छेत् Comm., es ist aber vielleicht प्रयच्छेत् zu lesen, nämlich प्राशित्रम्, also *darreichen;* vgl. घतिप्र. — Vgl. प्रक्रा.

— घतिप्र *hinüberreichen:* प्रतिप्रस्थात्रे ऽतिप्रजिक्रीते (प्राशित्रम्) Çat. Br. 2,5,2,40. उत्तरां वेदिमतिक्रमय्य तदिडापात्रं प्रगमयेत् Comm. Die Bedeutung hier wie unter प्र fügt sich nicht zur Grundbedeutung unserer Wurzel.

— घभिप्र *hinauffahren:* घभीव स्वः प्रजिक्रीते Çânku. Çr. 12,17,4.

— वि *auseinanderweichen, sich auftun, klaffen:* पर्वतः RV. 2,23,18. 5,45,3. वि जिक्रोष वनस्पते योनिः सूर्यस्येव 5,78,5. AV. 5,25,9. 6, 121,4. वि जिक्राथां मा मा सं तेषम् TS. 1,1,13,1. °क्रीथाम् Çat. Br. 14,9,4,20. 8,13,1. Vgl. विक्र und 2. विक्रायम्. — caus. *öffnen, klaffen machen:* योनिम् AV. 1,11,3. Âit. Br. 5,15. ऊह्र Çat. Br. 14,9,4,20. शीर्षकपालम् 7,5,2,25.

— सम् 1) *sich aufrichten, — aufraffen, aufstehen:* उत्संक्रायास्यात् RV. 2,38,4. सं सर्क्से पुरुमायो जिक्रोते 3,51,4. ततः पुनर्न संक्रास्यते Çat. Br. 1,2,4,11. *fgg.* विप्रस्तेः पर्वभिर्न शशाक संक्रातुम् 6,2,2,26. 4,2,2,11. 6,4,2. TS. 7,1,10,2. Âit. Br. 7,15. Âçv. Grihy. 2,3,11. 18. Kauç. 10. 19. Nir. 3,15. प्रातः संजिक्रान: Kaush. Up. 1,10,6. 5,11,5. 4,1,5. partic. सैक्रान VS. 22,7. — 2) *sich umherbewegen:* यदा शले संजिक्रते शलोकाः Bhâg. P. 10,40,15. — 3) *theilhaftig werden* (wie alle Verba *der Bewegung* nach Comm.): समक्रास्त मुदम् Nalod. 1,34. — Vgl. संक्राय्यम्. — caus. संक्रापयति *sich aufrichten machen* Kauç. 80.

— परिसम् *auffahren aus* (abl.): विद्युतो ज्योतिः परि संजिक्रानम् RV. 7,33,10.

— प्रतिसम् *vor Jmd aufstehen* Gop. Br. 1,2,4.

2. क्रा, क्रीनाति Dhâtup. 25,8 (त्यागे). Vop. 10,5. क्रिक्सम् (TBr. 1,4, 8,5) und क्रक्षीतम्, क्रक्षिषम् und क्रक्षीषम् P. 6,4,116. Vop. 9,21. 10,5. क्रिक्समम् AV. 8,26,2. क्रक्षति Vop. 10,5. partic. क्रेक्ष्त्, क्रेक्ष्तीः क्रक्षि (nicht zu belegen), क्रक्षिक्षि und क्रक्षीक्षि P. 6,4,117. Vop. 10,7. क्रक्षात् P. 6,4,118. Vop. 10,6. क्रक्षीतात् AV. 11,1,12. घक्रक्षिताम् Âit. Br. 2, 26. घक्रक्षातम् RV. 8,7,31. घक्रक्षुः क्रेक्षः क्रक्षिम Bhâg. P. 10,65,11. क्रक्षेम्: घक्षासीत्, घक्षाम् 2. und 3. sg: AV. Pair. 2,46 (die Beispiele des Comm. gehören zu 1. क्रू). क्षाम्; घक्षात् Bhâg. P. 7,5,26. क्षासिष्ट, क्षासिषुः क्षास्यति, *cp. auch* क्रक्ष्यिति; घक्षास्यत्; क्षेयात् P. 6,4,67. 118. Vop. 8,35. 10,7. क्षातुम्; क्षित्वा P. 7,4,43. Vop. 26,211. *auch* क्षीत्वा *ved.* P. 7,4,44. क्षित्वी RV. 9,69,2. क्षित्वाय 10,14,3. °क्षाय P. 6,4,69. Vop. 26,212. 1) *lassen* und zwar a) *verlassen, im Stich lassen, dahinten —;* b) *von sich entfernen, verstossen;* c) *überlassen:* die Arbeit RV. 2,38,6. वर्सना 1,93,7. वज्रिम् 9,69,9. 71,2. सत्कम् 10,95,3. रूपम् AV. 5,29,13. भोजनानि RV. 7,5,3. 18,13. यदा न पूर्वमर्यो क्रक्षति 10,18, 5. die Götter *lassen* Indra *im Stich* 8,7,31. 85,7. 4,18,11. Âit. Br. 2, 16. 20. घयमस्मान्वनस्पतिर्मा क्षीः RV. 3,53,20. घरातीः 4,27,2. AV. 2, 10,7. घप्रचेतसः RV. 3,64,20. 10,53,3. 124,3. कृशम् 8,64,3. क्षीणा त्वचम् Âit. Br. 6,1. शर्याणि RV. 3,14,4. 10,17,2. सेदिम् VS. 12,105. सोमं क्षीषेणाक्रान्मृत्युम् von sich wegbringen 19,72. शरीरम् AV. 4,11,6. 6,26,2. 41,3. 47,2. 8,4,24. 10,1,32. 2,30. 11,3,28. पुरैनं ज्रसः प्राणो क्रक्षति 36. 13,1,12. हेयांसि 18,2,47. TS. 3,2,8,4. Çat. Br. 6,1,2,12. 6,2,2. 3,1,2,12. नैनं वाग्जक्षाति 10,3,2,1. बन्धनम् 13,1,6,2. — (einen Ort) *verlassen* MBh. 3,12889. R. 1,1,39. 2,21,46. Ragh. 15,59. 12,24. क्रक्षति न पदवीं मृगस्ते Çik. 89. 115. तं दूरमपि गच्छन्तो हृदयं न क्रक्षसि मे Çik. Cu. 59,6. शलं क्रक्षद्भिः शिशिरं पाठीनैः Râm-Tar. 5,65. Bhâg. P. 4,28,10. 7,5,5. घासनम् MBh. 1,7722. R. 7,62,10. शय्याम् Ragh. 5,72. नावम् R. 2,52,87. यानानि 92,14. *Jmd verlassen, im Stich lassen:* पतिम् M. 5,162. MBh. 2,2604. 3,2364. 16895. 6,265. 12,4261. R. 2,40,24. 52,53. 66,20. R. Gorr. 2,30,35. 38,40. Mṛicch. 102,13. Ragh. 8,51. 14,61. 87. Çik. 113. Spr. (II) 178. 3752. 4060. Kathâs. 17, 136. Brahma-P. in LA. (III) 55,10. Râm-Tar. 2,164. Bhâg. P. 10,65,11. Bhatt. 5,91. von einem unpersönlichen Subject: तेनापुर्न क्रक्षति माम् MBh. 2,2605. घपि वो विपुला लक्ष्मीर्न क्रक्षात् R. 3,41,7. तस्य देहम् — क्रक्षो न लक्ष्मीर्न प्राणो न तेजो न पराक्रमः 4,16,4. R. ed. Bomb. 5,46, 89 (med. क्रास्यते des Metrums wegen). तं प्राणाः काङ्क्षितापगमा क्रक्षुः (so mit der ed. Calc. zu lesen) Râm-Tar. 4,654. किमात्मनानेन क्रक्षति यो ऽन्ततः Bhâg. P. 8,22,9. सा मां स्मृतिर्नो क्रक्षति 5,12,15. 7,7,6. (den Leib) *verlassen so v. a. sterben* Maitrâyaṇ. 4,1. Çvetâçv. Up. 5,14. Spr. (II) 1167. Râm-Tar. 1,317. 3,430. 6,49. Bhâg. P. 1,12,26. 13,24. 34. 15,25. 7,10,36. जीवितम् MBh. 4,649. 14,357. Râm-Tar. 4,224. प्राणान् MBh. 5,7221 (घक्रक्षात् mit der ed. Bomb. zu lesen). 7,274. R. 2, 63,50. घक्षून् Sucr. 1,255,3. Kathâs. 33,15. Râm-Tar. 6,84. Bhâg. P.

4,4,28. fg. आत्मानम् 1,65. *Etwas fahren lassen, aufgeben, entsagen:* प्रियाप्रिये M. 8,173. मा क्षासीः सोपाये त्वं बुद्धिं तामृषिपूजिताम् MBh. 2,2376. कामान्सर्वान् 4,665. स्वार्थान् 5,4389. निद्रां सक्षाम् Harıv. 2857. राज्यं च कोशं च R. 2,61,11. शशी श्वेतक्षाम् 82,5 (लक्ष्मी शीतांशुमान् 88, 8 Gorr.). कीर्तिम् R. Gorr. 2, 30,35. 38,40. आदित्यो दीप्तिम् 3,62,13. प्रकृतिम् 70,4. क्षात्राम् Mrcch. 50. यत्पथ्यस्य क्षेतोर्बलं Rāgh. 2,47. Spr. (II) 1653. घनागमतृषाम् 4908. 5466. कोपम् 7102. स्वभावम् 7291. विश्वास्तृणवत् Kathās. 18,377. विफलमायासम् 21,30. निर्बन्धम् 25,246. तपः 27, 67. Mārk. P. 37,24. Rāśa-Tar. 3,284. Bhāg. P. 5,14,44. 6,2,38. 7,5, 36. 8,20,6. Sarvadarçanas. 8,3. शङ्काम् Bhatt. 3,53. शोकम् 10,71. 20, 10. तं (सर्गं) तन्नतो ज्ञातं क्षास्यामि वेयादास्ये वा Comm. zu Nyāyas. 1,1, 32. 5,2,2. *Etwas aufgeben so v. a. nicht beobachten, verletzen:* विधिम् M. 5,90. 9,63. नाक्षास्म समयम् MBh. 5,3495. प्रतिज्ञाम् R. 1,23,2. स्वधर्मम् Bhag. 2,33. MBh. 5,7060. R. 1,23,6. Hem. Jogaç. 2,40. पितुरादेशाम् R. 2,32,5 (33,5 Gorr.). गुरोर्वचः 109,24. *Hintansetzen, nicht beachten* Spr. (II) 4812. क्षिप्त्वा *mit Hintansetzung — mit Uebergehung von:* आत्मनः प्रियसुखे 4989. भर्तुः प्रियाप्रिये 5603. 5839. कथमात्ममुतान्क्षिप्त्वा त्रायसे ऽन्यसुतान् R. 1,62,14. Kathās. 46,213. 56, 283. Bhāg. P. 1,18, 20. *abgesehen von, mit Ausnahme von* Varāh. Bṛh. S. 8,10. 11,53. Bṛh. 7,2. 7. Vop. 3,145. *aufgeben so v. a. vermeiden* (Personen und Sachen), *sich fernhalten von:* भुक्तपूर्वां सक्षम् Harıv. 2857. Spr. (II) 6608. परस्त्रियम् Hem. Jogaç. 2,99. सुतामपि रक्षेा ज्ञक्षात् Bhāg. P. 7,12,9. वास्तव्यानां कृतां भूमिं न तु निःशेषतो ज्ञक्षेा *versichtete nicht ganz* Rāśa-Tar. 4,688. *so v. a. nicht anwenden, nicht gebrauchen* Bhāg. P. 2,7,48. *so v. a. verlieren, um Jmd oder Etwas kommen* R. 2,12,84. 35,2. Spr. (II) 1950. 5676. *so v. a. abnehmen, eine Abnahme erleiden* Ind. St. 8,230. 441. *Etwas los werden, sich befreien von, entgehen:* शरीरे पाप्मनः Taitt. Up. 2,5. कृर्पशोको Kaṭhop. 2,12. सुकृतदुष्कृते Bhag. 2,50. भूणहत्याकृतं पापम् MBh. 1,2301. Verz. d. Oxf. H. 62,*a*,21 (ज्ञक्ष्यसि). Bhāg. P. 3,9,15. 7,10,38. निद्राम्, तन्द्राम्, परिश्रमम् R. 2,56,2. दुःखम् 33. Spr. (II) 7120. Bhāg. P. 7,15,24. Schol. zu Kap. 1,4. विपदम् Kathās. 26,200. प्रुचः Bhāg. P. 1,13,57. स्तम्भम् 9,6,47. *ablegen, abthun:* भुक्तावलेपम् Mcch. 61. शिखादाम 89. कौपीनम् Daçak. 68,12. मत्स्यादिरूपाणि यथा नटः Bhāg. P. 1,15,35. *aus der Hand fahren lassen:* चापम् 11,37. *liegen lassen:* दन्तकाष्ठं प्रुचिप्रदेशे Varāh. Bṛh. S. 93,3. Spr. (II) 7038. — 2) *entlassen, emittere:* Samen ṚV. 10,61,6. अश्मवर्ष ग्रामेषु Rāśa-Tar. 1,264. पुष्पाञ्जलीन् 373. कृतास्त्रमः स्वस्मादेव कणान्धनस्य ज्ञक्तः Spr. (II) 7017. यत्रिं स्वपृष्ठतः Kathās. 39,146. शर्धं ज्ञक्राति मापः *bewirkt, dass man entlässt,* Vop. 26, 61. — 3) hierher wäre ज्ञक्रा zu stellen: ज्ञक्रा को यस्मर्दीषते ṚV. 8,45,37, wenn es, wie Nir. 4,3 (und darnach Sāy.) annimmt, eine Verbalform wäre (= ज्ञघान 1. sg. von क्रन्). Wir halten es aber für eine Interjection: *bah! wer flieht denn vor uns?* Nach dem Comm. zu Taitt. Ār. 1,3,1 soll ईक्षाक als ein Wort adj. = क्षानशील sein. — 4) pass. क्षीयते P. 8,4,66. TS., क्षीर्यते Çat. Br. ज्ञक्षापि, ज्ञक्षासि, क्षास्त, क्षास्मकि, ज्ञक्षे, क्षास्यामहे. *verlassen —, dahintengelassen werden; zurückbleiben hinter* (abl.), *nicht zum Ziele kommen, zu kurz kommen bei Etwas* (abl.): मा क्षास्मकि प्रजया ṚV. 10,128,5. Çat. Br. 1,7,2,1. fgg. त्रीर्णिः कृत्यावृषो ज्ञक्षे *kam nicht mit* 4,1,5,1. क्षास्यामहे *wir würden zu kurz kommen* 3,5,4,18. मा ते क्षास्त तन्वः किं चनेह *bleibe hier zurück* AV. 18,2,24. TS. 2,6,8,2. AV. 18,3,18. TS. 7,1,4,1. 3,1,8,1. यस्यास्तिा क्षीर्यते (क्षीयते unsere Hdschr.) ●,6. आसः 6,2, 4,1. 7,3,2,1. धावद्भ्यः 3,2,●,5. सुवर्गाल्लोकात् *nicht hingelangen* 5,6, 8,1. Çāṅkh. Br. 8,9. Ait. Br. 2,36. बहूनि तथान्नराणि क्षीयेरन् *würden verloren gehen* 6,2. यस्य गोपनायामपरुक्ति क्षीयते सः *so v. a. wird vom Genuss ausgeschlossen* Çat. Br. 3,6,2,14. Pāraṅkar. Br. 12,11,11. सामः *kommt um das S.* 5,4,5. 16,12,1. भूतेभ्यः Çat. Br. 11,5,6,9. ज्ञक्षापि 1, 7,2,18. — *aufgegeben —, vermieden werden:* क्षीयन्तेसि क्षीयताम् Spr. (II) 3328, v. l. *abnehmen, geringer werden, hinschwinden, vergehen, zu Ende gehen, zu Schanden —, zu Nichts werden* Kaṭhop. Up. 4,16,3. Praçnop. 3,11. नाकालतो वर्धते क्षीयते च चन्द्रः समुद्रो ऽपि Spr. (II) 3539. रात्रिः R. 6,82,58. आयुः Spr. (II) 913. (पक्षः) संवत्सरमथो सार्धं वर्तते न च क्षीयते R. 7,92,19. धर्मः M. 9,188. भूमप्यनुपन्यस्तं क्षीयते व्यवहारतः Jiṅ. 2,19. पूजा पूजार्हेषु MBh. 1,6424. प्राणाः 3,11961. भर्तुरर्घः R. 5,9,43. बुद्धिः Spr. (II) 4473. 6318. 6836. मतिः 7403. धैर्यम् 458. Çiç. 194, v. l. Mālav. 79. Kathās. 65,52. Mārk. P. 16,51. 44,20. Sarvadarçanas. 166,3. *abgehen, abgezogen werden:* स्वत्रिभागः Varāh. Bṛh. S. 7, 2. *den Kürzern ziehen, unterliegen, zu Schaden kommen* (von Personen) M. 6,42. MBh. 1,6291. 4,768. क्षीयन्ति संयुगे 6,2917. R. 2,21,36. Spr. (II) 3133. नरो क्षीयते वर्धते च 4125. 5556. 7517. Kathās. 50,44 (beim Kampfe). beim Gottesurtheil mit der Wagschale *so v. a. weniger wiegen* Mit. 143,12. fg. यो धावता न क्षातव्यस्तिष्ठन्नपि न क्षीयते *so v. a. wird nicht ermüdet* MBh. 12,8138. क्षीयमान, सम, वर्धमान *ein Schwächerer* Spr. (II) 7406. fg. mit abl. *kommen um, verlustig gehen* P. 5,4,45. घर्घात् Kāṭhop. 2,1. ब्राह्मण्यात् M. 3,17. पतितोलोकात् 5,161. तस्मादर्थात् 8,66. धर्मार्थाभ्याम् 74. स्वर्गात् 75. बलात् MBh. 4,767. तपसः 13,997. Spr. (II) 1936. 1978. 5088. Kathās. 46,118. Mārk. P. 113,33. mit °तस् dass. P. 5,4,47 (vgl. jedoch 45). यशःप्रदानतस् M. 9,211. mit instr. dass. P. 5,4,47. वृत्तेन Schol. यद्धनसर्वस्वैः, सर्वेण M. 8,374. गुणैः सर्वैः Varāh. Bṛh. S. 53,67. ज्ञक्षे प्राणैः Bhatt. 14,35. *sich ablösen von, ausfallen:* ये ऽक्षीयन्तामुतः केशाः Bhāg. P. 3,20,45. — 3) partic. praet. pass. *a)* क्षात *aufgegeben, fahren gelassen:* °लज्ज Bhāg. P. 8,7,38. क्षातवत् *gekommen um* (acc.): कलत्राणि Kām. Nītis. 14,49, v. l. — *b)* क्षीन s. bes. — *c)* ज्ञक्षित *verstossen, verlassen:* प्रातिरतं ज्ञक्षितस्यायुः ṚV. 1,116,10. यन्नु द्वा ज्ञक्षिता मंयो ऽन्धं शोणं च 4,30,19. तौग्र्यः समुद्रे ज्ञक्षितः 8,5,32. — Vgl. प्रज्ञक्षित u. — प्र.

— caus. क्षापयति 1) *versäumen, vernachlässigen:* पञ्चैतान्यो महायज्ञान्न क्षापयति शक्तितः M. 3,71. 4,21. 5,169. Jiṅ. 1,121. Mārk. P. 28, 21. धर्मार्थकामान्स्वे काले यथाशक्ति न क्षापयेत् Jiṅ. 1,115. ज्ञक्षापयित्वा पाण्डवार्थम् MBh. 5,856. 3326. ज्ञक्षापयन्कालम् *keine Zeit verlierend, nicht säumend* Kām. Nītis. 5,64. लोकवादान्न क्षापयेत् Mārk. P. 58,67. — 2) *es fehlen lassen an:* शक्तिं न क्षापयिष्यसि MBh. 3,1463. Spr. (II) 5265. स्वयोरुपमक्षापयन् 1003. — 3) *fahren lassen, aufgeben:* धमूनशीज्ञक्षत् Harıv. 1138. *einbüssen, verlieren:* पडुपातं पशः पित्रा धनं वीर्यमथापि वा । तत्र क्षापयते यस्तु Spr. (II) 5250. — 4) partic. क्षापित *a) beschädigt, mitgenommen:* ein Pfand Jiṅ. 2,59. — *b) gebracht um* (instr.). यमुभिरिन्द्रेण Bhāg. P. 8,15,3. त्रपया 10,22,32.

— desid. चिक्रासति *verlassen —, aufgeben wollen:* देशमिमम् Daçak. 74,8. मर्त्यलोकम् Bhâg. P. 3,4,26. स्वदेहम् 4,4,26. 10,60,37. 11,8,38. सुहृद: 1,8,37. यश: 8,20,13. *verschmähen u.:* स्त्रीरत्नम् Spr. (II) 2635. *entgehen u.:* दु:खम् Sarvadarçanas. 103,16. Wilson, Sânkhyak. S. 10. दु:खं चिक्रासितम् 8. — Vgl. चिक्रासा fg.

— intens. क्रेक्रीयते P. 6,4,66. 116. Vop. 20,4. क्रेक्राति, क्रेक्रेति 20,18.

— अप med. *zurückbleiben* so v. a. *das Ziel nicht erreichen* AV. 18, 3,72. अपक्राय *verlassend:* मधुराम् Harîv. 6403. Jmd MBh. 1, 3339. 3, 2961. Vikr. 33,13. Bhâg. P. 5,1,39. 2,19. *meidend* Spr. (II) 3612. *ablegend:* स्त्रीरूपम् Harîv. 11835. *sich befreiend von:* ऋणानि MBh. 12,173. *mit Hintansetzung* von Çik. 143. Spr. (II) 7279. Bhâg. P. 1,9,37. *abgesehen von* Kusum. 16,18. fg. *mit Uebergehung —, mit Ausnahme von* Rasik. 9,19. — pass. *abnehmen:* बलम् Sucr. 1,19,16. — Vgl. अपक्रान, अपक्रानि (dieses gehört mit Sicherheit hierher, das erstere vielleicht zu 1. क्रा).

— व्यप *verlassen, aufgeben:* प्रज्ञा धर्मं च कामं च व्यपक्राय Harîv. 900 nach der Lesart der neueren Ausg.

— अव *verlassen, zurücklassen:* ऋषिं न कक्षिन्ममृवाँ अवक्रा: ṚV. 1, 116,3. मा सो अस्माँ अवक्राय परागात् TS. 5,7,2,1. *aufgeben, fahren lassen:* अदत्तकर्म तु य: कुर्यादवक्राय स्वकर्म च MBh. 13, 6208. — pass. *zurückbleiben:* अगच्छन्मक्षिकास्तत्र न कक्षिदवक्रीयते MBh. 3, 11558. *nicht zum Ziele kommen:* विद्वेषस्ते पक्षौ Avakrâsyete Kâm. 20,9. *im Stich gelassen werden von* (abl.): अवक्रीये सखिभ्य: ṚV. 10,34,5. *bei Seite gelassen —, so v. a. übertroffen werden:* विक्रमश्चैव वेगश्च ते न तेनावक्रीयते। बलं बुद्धिश्च तेजश्च सत्त्वं च R. 5,2,11. — caus. *zurückbleiben machen:* मा गार्मादस्मादघं क्रीक्रिपो न: so v. a. *lass uns in diesem Lauf nicht dahinten bleiben* ṚV. 3,53,19.

— व्यव *verlassen, aufgeben:* ब्राह्मणं व्यवक्राय तम् MBh. 3, 13661. प्रज्ञा धर्मं च कामं च Harîv. 900.

— समव *verlassen, meiden:* समवक्राय गुरोश्चरणम् Bhâg. P. 10,87,33.

— आ scheinbar Râjâ-Tar. 4,654, da mit der ed. Calc. काङ्क्षितापमा क्रक्ष: zu lesen ist.

— अपा, absol. °क्राय *Jmd verlassend* MBh. 1,4946. *mit Hintansetzung* von 3, 2963. Harîv. 370. *mit Ausnahme* von MBh. 3, 11932. 4, 1484. 14, 2832. eine durch das Metrum bedingte Verlängerung von अप, nicht अप + आ.

— समुद्, समुत्क्रक्ष: MBh. 8, 2611 fehlerhaft für समुत्क्रक्ष:, wie ed. Bomb. liest.

— उप pass. *abnehmen, sich verringern:* येषां त्रिवर्ग: (so ed. Bomb.) कृत्येषु वर्तते (wohl वर्धते zu lesen) नोपक्रीयते MBh. 13, 2028.

— नि pass. *den Kürzern ziehen, unterliegen:* नि क्रीयतामतिथान्नस्य पुष्टा ṚV. 6,52,1. नि क्रीयतां तन्वाई तनां च 7,104,10. — partic. निक्रीन s. bes. und füge Spr. (II) 4888 hinzu. MBh. 3, 578 liest ed. Bomb. विक्रीन.

— निम्, partic. निक्रीण in घनिक्रीणार्घ adj. = संपूर्णपाठ्यपाठोपेत *wobei an der Recitation der* (Jâgñ.-) *Verse Nichts fehlt* Ait. Br. 3,7.

— परि 1) *Jmd verlassen:* वैदेहीं परिक्राय R. Gorr. 2,16,31. तं परिक्रातुम् Bhâg. P. 11,29,46. *Etwas aufgeben:* परिक्रातुकाम (परिक्रा° ed. Bomb.) sc. die Herrschaft MBh. 4,203 (204). *unterlassen:* पद्योक्तान्यपि कर्माणि परिक्राय M. 12,93. so v. a. *nicht beachten:* मा च शक्रस्य वचनं पर्यक्रासी: (प्रतिक्रासी: die neuere Ausg.) Harîv. 14317. — 2) fehlerhaft oder ungenau für pass. in der Bed. *eine Einbusse erleiden, Schaden nehmen, zu Schanden werden:* यदि तान्योधयिष्याम: किं वै न: परिक्रास्यति (= नङ्क्षति Nîlak.) MBh. 2, 2460. व्यात्रेण सदृशिर्विक्रिो धर्मस्ते परिक्रास्यति 12,5436. *kommen um* (abl.), *verlustig gehen:* न राज्यात्परिक्रास्यद: R. 7,93,8. — 3) pass. a) *gemieden —, unterlassen werden:* कैरक्षीणभयाद्भक्तभोजनं परिक्रीयते Spr. (II) 2984. भवद्भिर्न यथा यत्ते परिक्रीयेत किं च न R. 1.12,20. *unterbleiben, ausbleiben, mangeln, fehlen:* सर्वाश्चैव क्रियास्तस्य पर्यक्रीयन्त MBh. 13,4753. परिक्रीयमाणात्मकाम् Spr. (II) 762. पत्किंचिदस्मद्गृहे परिक्रीयते तदिच्छाम्यरुमपरिक्रीयमानं (so beide Ausgg.) भवता क्रियमाणम् MBh. 1,748. यथा सर्वं सुविहितं न किंचित्परिक्रीयते R. 1,12,16. fg. मेत्स्यते वीर कार्यार्थी न किंचित्परिक्रास्यते Harîv. 3979 = 4054 = R. 5,1,91. न काल: कालमत्येति न काल: परिक्रीयते *bleibt nicht aus* Spr. (II) 3193. — b) *schwinden, sich legen, nachlassen, aufhören:* वर्धते क्रेक्र: क्रोधश्च परिक्रीयते Spr. (II) 5298. वर्धते क्रोध: क्रेक्रश्च p. 5299. उत्साक्: 3769. *sein Ende erreichen:* राज्ञवंशास्तु भर्तुर्मे परिक्रास्यते R. 7,48,8. Tag, Nacht, Wache (प्रक्र) Kathâs. 5,80. 6,128. 13,31. 26,23. 74,107. 124,185. — c) *den Kürzern ziehen, unterliegen, Schlimmes erfahren:* धर्मिष्ठा: परिक्रीयन्ते पापीयान्वर्धते जन: MBh. 3, 12838. 5, 5446. Harîv. 3090. Spr. (II) 678. 5344. न परिक्रीयते (पराक्रीयते ed. Bomb.) प्रतिवादिना गणदास: *besiegt werden, nachstehen* Milav. 12,14. — d) mit abl. *ablassen —, abstehen von, untreu werden:* स्वधर्मात् MBh. 3, 16780. *kommen um:* स्वर्गात् M. 9, 254. राज्ञवंशात् R. 2, 8, 22 (7,17 Gorr.). धर्मात् Spr. (II) 1973. शरीरधर्मकोशेभ्य: 6290. so v. a. *Nichts wissen von:* न तर्हि प्रागवस्थाया: परिक्रीयसे Mâlatîm. 69,18. — e) partic. परिक्रीण (häufig °क्रीन geschrieben) Kîç. zu P. 8,4,29. α) *unterblieben, fehlend:* °क्रिय MBh. 13,4753. *geschwunden:* वर्धमानपरिक्रीनतेजसो Rasik. 11,52. °भगवदनुग्रह Bhâg. P. 5,24,26. — β) *sich enthaltend, es fehlen lassend an:* बलिकर्मत: MBh. 13,4784. *ermangelnd, ohne — seiend:* प्रमाणात् 3,2803. साक्षात् Spr. (II) 706. पुत्रैरपत्यैरीश्च R. 3,73,32. घर्षेन Spr. (II) 617, v. l. किरणै: Vaitân. Bhn. S. 4,29. in compn mit der Ergänzung: घर्ष° 16,33. 54,21. 47. 90. 68,8. 19. 26. Baitân. 14. — Vgl. परिक्राण fg. — caus. 1) *unterbrechen, nicht zu Ende führen:* स्वकर्म M. 8,206. fg. — 2) *Jmd um Etwas* (instr.) *bringen:* वृत्त्या परिक्रापित: Bhâg. P. 11,22,37.

— प्र 1) *verlassen:* ऋणम् Mârk. P. 124,8. लोकम् Vaitân. Bhn. S. 69, 36. प्रक्रक्त्यशीन् Çat. Br. 4,6,9,6. जीवितम् MBh. 1,4620. प्राणान्प्रक्रासिषम् 4,432. धनं पुरुष: Spr. (II) 3039. Jmd: मा त्वा दीर्णा: प्रक्रासिषु: MBh. 2,2846. 6,2789. 8,4844. R. 2,42,30. Spr. (II) 1471. mit einem unpersönlichen Subject: मा माघ: प्रक्रासीत् TBr. 1,2,6,27. TS. 7,3,12,1. प्राणा हि प्रक्रक्त्ति (des Metrums wegen st. प्रक्रकति) माम् MBh. 1,6366. तम् तमा लक्ष्मीश्च धर्मश्च नचिरात्प्रक्रक्ष्यतः 3,8492. पुरुषं धनम् (nom.) Spr. (II) 3039. तमात्मवन्तं प्रक्रक्त्यनर्था: 4849. *Etwas fahren lassen, aufgeben, entsagen:* घनैश्वर्यं देवलोकं वा R. 2,32,49. कर्मबन्धम् Bhag. 2,39. कामान्सर्वान् 55. पाप्मानम् 3,41. स्वधर्मम् Siv. 5,21. धर्मकामौ MBh. 5, 782. काममन्यू Spr. (II) 5002. रागद्वेषौ 6823. भयम् R. 4,4,9. शोकम् 5, 69,28. न विद्यां प्रक्रक्ष्ये (des Metrums wegen st. प्रक्रक्ष्यात्) Spr. (II) 5118. प्रतिज्ञाम् so v. a. *nicht halten* MBh. 13,6907. med. des Metrums we-

gen: मोक्षमेतौ प्रक्रास्येते *fahren lassen* R. 6,21,29. — 2) *entlassen, schleudern:* प्रक्रुः प्रूलपट्टिशान् Bhaṭṭ. 14,23. — 3) ungenau für pass. *weichen, schwinden:* सौहार्दं वापि मे त्वत्तो न कदाचित्प्रक्रास्यति (प्रक्रास्यते wäre nicht gegen das Metrum) MBu. 3,3034. बलं मे प्रक्रान्तोव 12,1869. — 4) pass. *a) aufgegeben werden, weichen* von (instr.): प्रक्रीयतामत्र नृपेण मानिता Kir. 14,13. *unterbleiben, versäumt werden* Bhaṭṭ. 6,65. *schwinden, zu Nichte werden:* धर्माचाराः MBu. 3,29. प्रज्ञा तेजो बलं चतुरायुषोव M. 4,41. — *b) den Kürzern ziehen, unterliegen:* im Wettflugo MBu. 8,1917. — 5) partic. *a)* प्रक्रीण Kāç. zu P. 3,4,29. *α) gelassen* so v. a. *liegen geblieben:* धनमुदीच्यां दिशि Bhāg. P. 1,12,34. — *β) nicht zu Stande kommend mit Etwas* (instr.): सर्वकर्मभिः Spr. (II) 6622. — *γ) ermangelnd, ohne — seiend:* ज्योतिः° MBu. 1,6817. — *b)* प्रक्रान्ति *verlassen, aufgegeben:* वर्तानि ṚV. 2,1,13. Bez. *eines Feuers, das aufgegeben ist,* weil aus demselben ein anderes entnommen wurde, Liṭ. 2,2,22. Schol. zu Pāṇ. Bh. 1,4,11. zu Çāṅkh. Çr. 2,2,8. — Vgl. प्राक्रान्ति und प्रक्रीण fg. — caus. *verscheuchen, entfernen:* लोकभयम् Bhāg. P. 5,8,22.

— विप्र *verlassen, aufgeben, entsagen:* धर्मम् MBu. 5,4137. — partic. °क्रीण (gewöhnlich °क्रीन) *geschwunden, dahin:* °रव MBu. 8,4868. *ermangelnd, ohne — seiend:* ब्राह्मणैः तत्रम् 3,978. बन्धुभिः 5,6002. R. 2, 31,17. तेजसा MBu. 1,6142. *ausgeschlossen von:* गगनात् 3681. — Vgl. विप्रक्रीण.

— संप्र *verlassen:* संप्रक्राय शयनम् MBu. 4,517.

— प्रति 1) *verlassen* so v. a. *unbeachtet lassen:* मा च शक्रस्य वचनं प्रतिक्रामीः (so die neuere Ausg.) कथं च न Harīv. 14317. — 2) pass. *den Kürzern ziehen, Jmd* (abl.) *weichen:* im Wettflugo MBu. 8,1916.

— वि 1) *zurücklassen, verlassen, aufgeben:* यत्रार्के वि न शक्वर्येभिः *hinter sich lassen* ṚV. 10,71,8. रेतो मूत्रं वि क्रान्ति VS. 19,76. पाप्मानम् TBr. 1,4,6,7. पाप्मनः Çat. Br. 14,7,2,8. विक्रान्तिद्विषो भूतानि TBr. 3,10,9,13. (पक्षाः) यानिमान्विक्रान्तो ऽगाम *die wir verliessen,* — *verschmähten* Çat. Br. 9,5,1,28. घोरा व्यक्रान्तमः 11,5,5,12. दैष्क्रत्यम् Pāṇ. Bh. 1,1,3. Liṭ. 1,1,22. नामरूपे Mund. Up. 3,2,8. पुण्यपापे Maitrāyaṇ. 6,18 (विधूय st. विक्राय Mund. Up. 3,1,3). — (einen Ort) *verlassen:* संग्रामशिरः MBu. 4,2086. Mṛcch. 42. Rāgh. 12,102. Vikr. 41. Spr. (II) 1161. 5009, v. l. Çiç. 140. Rāja-Tar. 1,58. Bhāg. P. 1,5, 19. 3,14,47. 4,24,67. रथम् R. 2,52,13. *Jmd verlassen* MBu. 2,2604 (विक्रास्ये des Metrums wegen). 3,2228. 4,268. 7,301 (कश्चिच्चैनं mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,21,22. 51. 30,29. 35,30. 66,4 (68,30 Gorr.). 18. R. Gorr. 2,83,42. 3,64,18. Rāgh. 14,61. Kathās. 18,289. Rāja-Tar. 3,126. Bhāg. P. 3,16,7. 4,4,3. 7,9,44. 9,3,20. Pañcat. 44,22. *Jmd verlassen* Mārk. P. 127,17. (den Leib) *verlassen* so v. a. *sterben* Bhāg. P. 6,10,33. 7,13,45. प्राणान् 11,31,19. यमून् Soṃ. 1,113,4. *Etwas fahren lassen, aufgeben, entsagen:* सत्रम् MBu. 3,12394. कुलवंशम् R. Gorr. 2,119,34. श्रियं विपुलाम् 3,54,28. 4,21,7. दृढभावम् Ṛt. 1,27. लज्जाम् Rāgh. 2,40. निद्राम् 5,72. 14,69. Spr. (II) 362. 4779. 5904. 6823, v. l. Vārāh. Bṛh. S. 75,6. Kathās. 45,190. 60,112. Mārk. P. 16,4. Bhāg. P. 5,26,10. कल्पद्रुमताम् Rāgh. 14,46. Çiç. 167. Sin. D. 25,11. *kommen um, verlieren* Rāgh. 5,67. Sarvadarçanas. 99,13. उत्कण्ठां विक्रक्ष्यसि *loswerden, sich befreien von* MBu. 3,8406. 14,357. R. 3,76,13. Rāgh. 12,75. कर्म शमलं च Bhāg. P. 3,9,22. 5,10,24. 9,24,48. 9,10,46. *ablegen, abthun:* स्त्रीरूपम् MBu. 1,1167. R. 1,27,13. वामांसि त्रीणानि Bhāg. 2,22. R. 2,37,8. 39,6. Ṛt. 6,13. मौलिमणिम् Rāgh. 13,59. धनुष्क्रक्षम् MBu. 6,2270. *liegen lassen:* पथि Bhāg. P. 3,6,34. विक्राय so v. a. *mit Hintansetzung —, mit Uebergehung von, ohne zu beachten* Rāgh. 6,7. Kumāras. 3,1. पद्मत्रराशीनपि विक्रायाभिनन्द्यम् so v. a. *mehr als* Çik. 27,6. Spr. (II) 2468. 5346. Kathās. 49,133. Çaṅk. zu Bṛh. Ār. Up. S. 251. Sarvadarçanas. 118,12. Kāśyap. 27. Hit. 35,11. 65,5. Dhūrtas. 76, 1. पुत्रशोकमपि so v. a. *trotz* Pañcat. 175,25. *mit Ausnahme von* Harīv. 15473. R. 4,51,14. Vārāh. Bṛh. S. 53,32. Bṛh. 4,12. 12,16. Sarvadarçanas. 102,5. Taik. 3,3,1. विक्राय क्रस्तत्रयम् so v. a. *in einer Entfernung von* Vārāh. Bṛh. S. 54,13. — 2) *abstehen von* (abl.): क्रीडारसात्प्रस्तुतात् Spr. (II) 991. ohne Ergänzung *eine Thätigkeit einstellen* Vārāh. Bṛh. S. 77,3. — 3) pass. *a) eine Einbusse erleiden, verloren gehen:* मा ते गात्रा वि क्रायि AV. 18,3,9. प्रेम तयोः परस्परस्योपरि न व्यक्रीयत Rāgh. ed. Calc. 3,24. — *b) zurückbleiben* Çat. Br. 2,3,2,16. *Jmd* (abl.) *nachstehen:* आचार्यपुत्रात्तस्मातु विशेषोपचये पृथक् । न व्यक्रीयत MBu. 1,5229. — *c)* partic. विक्रीन *α) mangelnd, fehlend:* °तिलकेव स्त्री R. 3,22,5. °सत्त्व Vārāh. Bṛh. S. 16,33. — *β) niedrig stehend, gemein:* Personen MBu. 3,578 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 15649. °योनि 15674. — *γ) ermangelnd, ohne — seiend, beraubt —, frei von;* die Ergänzung im instr.: दर्शनेन M. 6,74. त्वया MBu. 1,6163. 6192. 3,2713. श्रिया 15634. R. 2,24,5. 27,20. 38,15. 66,18. R. Gorr. 1,23,5. धनैर्व्यसनैः Rāgh. 18,13. Spr. (II) 6302. 6882. Vārāh. Bṛh. S. 15,27. 68,7. 33. im abl.: पतिलोकात् MBu. 5,7372. राज्यात् R. 3,68,35. धर्मात् 2,111, 1 (102,1 Schl.). im comp. vorangehend: द्रुपदव्य° M. 4,141. मातापित्° 9,177. MBu. 1,6151. 3,2343. R. 2,52,37. Çaut. 17. देशकालविक्रीनानि कर्माणि Spr. (II) 2959. 6026. 6089. क्रोश° 6320. 6721, v. l. 7037. Vārāh. Bṛh. S. 48,4. षष्टिशतुर्विक्रीना weniger vier 53,6. 81,16. 38,18. 68,30. Kathās. 24,25. Rāja-Tar. 6,328. Mārk. P. 34,6. Bhāg. P. 3,24, 47. Sarvadarçanas. 90,10. — caus. partic. विक्रापित n. *Gabe, Geschenk* AK. 2,7,28. H. 386. an. 5,23. Hālā. 2,264. Pārçvanāthak. 4,1 (nach Aufrecht).

— प्रवि *Jmd verlassen* Z. d. d. m. G. 27,79. *Etwas fahren lassen, aufgeben:* कर्षम् R. 2,100,39. प्रविक्राय *mit Hintansetzung —, mit Uebergehung von* Spr. (II) 7610.

— प्रतिवि *Etwas fahren lassen, aufgeben* MBu. 12,3818.

— सम् *aufgeben, entsagen:* धर्मं न संक्रात् MBu. 7,3045.

3. क्रा interj. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. *des Schmerzes und des Staunens;* विषादप्रमुगार्तिषु AK. 4,4,33(28),18. विस्मये प्रमोदे च Taik. 3,3, 465. सुखदुःखविषादेषु H. an. 7,17. विषादे च शोके च Med. avj. 85. vor einem voc.: क्रा कृष्ण किं क्रासि माम् MBu. 2,2604. 3,2264. 2284. 2419. R. 2,40,37. 42,39. 57,11. 64,70. fg. 66,18. R. Gorr. 2,10,20. fg. 83, 42. 3,50,22. 51,25. 55,33. 79,46. 4,5,15. 5,23,2. Mṛcch. 130,22. Rāgh. 9,75. Mālatīm. 153,21. Kathās. 18,170. 244. 20,211. Prab. 90,12. nach einem voc.: केकेयि क्रा नृशंसासि R. Gorr. 2,10,19. mit acc.: क्रा कृष्णाभक्तम् Sinn. K. zu P. 2,3,2. Vop. 5,7. क्रा कर्णामिति (कर्ण इति ed. Bomb.)

चाक्रन्दन् MBh. 7,44. का शस्त्र नृपयोषितम् Spr. (II) 6826. का कृतास्मि MBh. 3, 2364. Bhāg. P. 5,26,18. Pañcat. 135,1. Hit. 18,12. का गतिं की गमिष्यामि Harīv. 7116. किं शेषे का कृतो भुवि R. 6,93,11. कान्येषा तेन का गतिः Kathās. 52,262. का न कश्चिन्मां वृद्धमनाथं संभावयति Prasāda. 89,18. का कृत्त कृत्त Spr. (II) 5777. का धिक् 7383. Milāvīra. 82,5. Rāja-Tar. 1,213. का कष्टम् Suçr. 1,108,17. Spr. (II) 7316. Hem. Jonaç. 2,49. काकष्टशब्द Kathās. 56,122. का धिक्कष्टम् Vikr. 61,7. कुं (d. i. die neuere Ausg.) का Harīv. 9709. का का gaṇa चादि zu P. 1,4,57. का केति रुदती MBh. 3,2107. 2219. R. 2,63,23. Spr. (II) 1089. का का तथापि विषयान्न व्रजति चेतः 4384. का का नश्यति Mṛicch. 130,23. Vaṛāh. Bṛih. S. 19,7. Mārk. P. 62,5. Bhāg. P. 4,4,28. 8,11,2. का का कृत्वा Z. d. d. m. G. 27,19. का केति चक्रे 14,573,25. काकाशब्द ebend. °रव Kathās. 56,127. vor einem voc. MBh. 3,2280. R. 2,34,19. Mṛicch. 130,21. Spr. (II) 7389. का का मुष्टा ऽस्मि Pañcat. 35,10. का काहं पतितास्मि Kathās. 12,182. Mṛicch. 84,2. का का धिक् MBh. 14,2365. का का कष्टम् Kathās. 15,33. को को (का का die neuere Ausg.) का केति वादिनी als Ausdruck *des Behagens* Harīv. 14378.

काउथवादारसूत् m. N. eines Sāman Ind. St. 3,247,a.

काउकुवेवासामन् n. desgl. ebend. 236,a.

कांसकायनि (von कांसक) adj. gaṇa पत्तादि zu P. 4,2,80. m. patron. gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

काकालि *ein Metrum von 4 × 14 Moren* Colebr. Misc. Ess. 2,156(III,28).

काङ्कर् m. *ein best. Wasserthier* Çabdar. im ÇKDr. *Haifisch* Wilson.

काण्यखान m. N. pr. eines *Chans* Verz. d. Oxf. H. 147,a.

काट s. कार्°.

काटक 1) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1042. sg. N. des von ihm bewohnten Landes 1040. — 2) n. (aus Hāṭaka *gewonnenes*) *Gold* AK. 2,9,94. H. 1043. Hall. 2,18. Ratnam. 87. MBh. 6,781. 12,6398. R. 1, 14,25 (एटक gedr.). 45,42. 3,49,8. 50,2. 79,8. 4,2,18. 6,19,44. 7,23, 8,37. Çiç. 13,63. Vaṛāh. Bṛih. 27(25),27. Rāja-Tar. 1,110. 3,529. Bhāg. P. 4,22,6. 5,24,17 (mythische Erklärung). Pañcad. 2,15,6. Pañcat. 184, 16. 236,6. Verz. d. Oxf. H. 82,a, No. 138, Çl. 2. 234,b, 22. — 3) adj. oxyt. *golden* P. 4,3,153, Schol. — 4) m. *ein best. Zaubertrank* Bhāg. P. 5,24,16. — 5) f. ई N. pr. eines mythischen Flusses in der Unterwelt Bhāg. P. 5,24,17. — Vgl. कार्°, पारि°.

काटकर्मन्य (von काटक) adj. (f. ई) *golden* P. 4,3,153, Schol.

काटकेश (काटक + ईश) m. *eine Form* Çiva's Kathās. 118,191.

काटकेशान m. desgl. Kathās. 73,104.

काटकेश्वर m. 1) desgl. Kathās. 73,124. 118,154. fg. Bhāg. P. 5,24, 17. Vāmana-P. 62 nach ÇKDr. — 2) Bez. *eines best. Zauberspruches* Rāja-Tar. 3,465.

काटि m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 6,81.

काटिग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Rāja-Tar. 1,343. 8,1888. 2197.

कातव्य (von 2. का) adj. 1) *zu verlassen, aufzugeben:* पन्थानः Spr. (II) 1858 (Conj.). प्रभुणा तु न कातव्यो भर्ता कस्यांचिदापदि MBh. 12, 2303. विरक्तभावा स्त्री Spr. (II) 7216. संसार 4464. षट्तोयाः 6615. सप्त दोषा राज्ञा 6827. यज्ञान Kathās. 72,204. न यत्नः Spr. (II) 5789. षड्गुणाः 6614. पौरुषम् Mālav. P. 123,20. धर्म Kull. zu M. 8,17. — 2) *hinter sich zu lassen* so v. a. *einnehmen, zu erobern:* यो धावता न कातव्यस्तिष्ठन्नपि न कीयते MBh. 12,8138.

कौत्र n. = भरण Up. 4,161. = मरण, प्रमथन, राक्षस Uṇādis. in Saṃkshiptas. nach ÇKDr. — Vgl. कात्र.

कान (von 2. का) n. *das Verlassen, Fahrenlassen, Aufgeben* (Gegens. उपादान), *Befreiung von; das Aufhören* Spr. (II) 4585, v. l. Kap. 1,35. 76. 109. 134. Jogas. 2,25. Çaṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 193 (st. °कानः ist °कानं zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 237,b, No. 569. Sarvadarçanas. 42,5. 9. 103, 16. 180,14. Comm. zu Taitt. Up. S. 81. zu Nyāyas. 1,1,32. Hem. Jonaç. 4,83. — Vgl. सा°.

कानव्य (von कनु) adj. *im Kinnbacken befindlich:* Zahn Suçr. 1,304,14.

कानि (von 2. का) f. Uṇādis. 4,81 (paroxyt.). P. 3,3,95, Vārtt. 2 (oxyt.). Vop. 26,184. 1) *das Fahrenlassen, Aufgeben:* केशानाम् Spr. (II) 2655. रत्नमणीनां भूषणकानिः *das Ablegen* 673. प्रतिज्ञा° Comm. zu Nyāyas. 5,2,1. — 2) *Unvollständigkeit, Abmangel* (zu einer best. Zahl u. s. w.): मूलस्य Âçv. Çr. 9,1,16. 10,1,18. बलं बलवतो ऽपीक् प्रणश्यत्यल्पकानितः MBh. 13,3231. — 3) *Abnahme, Verminderung:* सोमस्य कानिरेव वृद्धिरेव दृश्यते MBh. 5,3550. सोमेन सार्धं तव (d. i. समुद्रस्य) कानिवृद्धी भविष्यतः 9,2725. अपाम् Vaṛāh. Bṛih. S. 46,21. zu Zahl, Werth u. s. w. Ind. St. 3,235. सर्वार्धकानितम् um Jāṭ. 2,207. एककान्या Vaṛāh. Bṛih. S. 21, 35. 58,30. Kull. zu M. 1,70. Sarvadarçanas. 176,9. Jāṭ. 2,244. Sūryas. 12,56. fg. Vaṛāh. Bṛih. S. 80,16. 81,10. यथा कानिः क्रमप्राप्ता तथा वृद्धिः क्रमागता Harīv. 11216. fg. घायुष्कानि 11174. धर्मस्य बलकानिः MBh. 3, 12859. Suçr. 1,49,21. 52,3. 97,7. वृद्धिर्यावत् संपूर्णता कानिः 129,5. सत्य° MBh. 3,13023. *Verlust, Schaden, Einbusse:* न कानिः परिदृश्यते Kathās. 6,129. का कानिः Spr. (II) 1943. का नो कानिः Sarvadarçanas. 126,9. Spr. (II) 5078. 5281. Vaṛāh. Bṛih. S. 41,10. Verz. d. Oxf. H. 103, b,10. fg. Kull. zu M. 8,348. भूमेः Jāṭ. 2,24. धर्म° MBh. 3,1047. 5,1723. Vaṛāh. Bṛih. S. 5,46. 50,16. fgg. 53, 60. 67. मृत° 53, 119. Spr. (II) 769. Rāja-Tar. 2,109. 5,179. तेजो° MBh. 3,99 in der Unterschr. Spr. (II) 1539. 2759. प्रताप° Rāja-Tar. 5,178. प्रज्ञा° Mārk. P. 58,68. स्वार्थकानिं कोपि किम् Kathās. 60,94. इष्ट° Kuṭṭan. 34,2. राजप्रसाद° Pañcat. 26,25 (23,19 ed. orn.). धर्म° VP. bei Muir, ST. 4,193. काल° *Zeitverlust* R. 4,61,57. Rāgat. 13,16. श्रान्तिपरिहारात् — न कानिमुपगच्छति *kommt nicht um* Mārk. P. 113,31. *Ruin* Spr. (II) 5286. मर्त्यानाम् Mārk. P. 16,48. 25,13. Vaṛāh. Bṛih. S. 4,22. नृप° 8,46. तद्देश° Pañcad. 2,6,9. bei den Juristen *das Verlieren, Unterliegen im Process.* — 4) *das Aufhören, Unterbleiben, Schwinden:* कार्य° Uttarar. 67,10 (86,10). कर्म° s. u. दीर्घसूत्र in den Nachträgen. पस्य चानुदिनं कानिर्गृहे नित्यस्य कर्मणः Mārk. P. 35,38. 61,29. 48. fg. 81. 109,30. 126,14. न यमकवत्कानिः Siṃh. D. 261,12. fg. सर्वदुःखानाम् Buddh. 2,65. दुःख° Spr. (II) 5827. Bhāg. P. 4,25,4. भारक्लेश° VP. bei Muir, ST. 4,218. प्रभा° Mārk. P. 58,62. उद्योग° Spr. (II) 5286. दैर्घत्य° Kathās. 2,64. एतद्व्यसनं कानिमेष्यति 86,17. Kap. 1,21. 3,74. Sarvadarçanas. 75,11. fg. Kuṭṭan. 58,6. Nilak. 165. — Vgl. काम°, वयो°, स्पर्धा°.

कानिकर adj. *Schaden —, Nachtheil bringend* Spr. (II) 274. बल° Mārk. P. 92,18.

कानिकृत् adj. dass.: कृणा° Kathās. 19,111.

कानु m. *Zahn* Taik. 2,6,29. कालु Wilson und ÇKDa. nach ders. Aut. — Vgl. कानव्य.

कानुक adj. = घातुक ÇKDa.

कौल Uṇâdi. 4,139. n. = मरण Uôôvaṭ. — Vgl. कात्र.

कान्दण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,4.

कापन (vom caus. von 2. कृ) n. *das Vermindern* Suçr. 2,221,18.

कापुत्री f. *ein best. Wasservogel* Hin. 84.

कापिका f. *das Gähnen* Hin. 139.

कामिग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Râja-Tar. 8,679.

कायक (von 2. का) adj. *fahren lassend, aufgebend:* पूर्वोपचित° MBu. 14,538.

कायति m. N. pr. eines Mannes Saṁh. K. 184,b,1.

कायर्न 1) m. n. *Jahr* P. 3,1,148 (parox., = त्रिक्रीते भावान् Comm.). Vop. 26,40 (= भावं त्रिक्राति). AK. 1,1,2,20. 3,4,28,111. H. 159. an. 3,437. Med. n. 158. Hall. 1,116. 5,15. AV. 8,2,21. Spr. (II) 3509. 7384. Verz. d. Oxf. H. 121,b, No. 213, Çl. 4. Râja-Tar. 6,114. Bhâg. P. 2,1,12. 8,19,20. मासवर्षनक्षायनम् Brahma-P. in LA. (III) 54,11. am Ende eines adj. comp. (f. ई P. 4,1,27. Vop. 4,14): पञ्च° Bhâg. P. 1,6,8. 3,2,2. 7,5,36. सप्तति° Varâh. Bṛh. S. 69,23. शत° AV. 8,2,8. 7,22. nach Pat. zu P. 4,1,27 f. या, wenn nicht das Lebensalter gemeint ist, z. B. द्विक्षायना शाला; in dieser Verbindung soll auch न nicht in ण übergehen. — 2) m. *eine Art rothen Reises* P. 3,1,148 (= क्षत्युद्-कम् Comm.). Vop. 26,40 (= सम्भु क्षराति). AK. 2,4,28,111. H. an. Med. Çat. Br. 5,3,3,6. Kâṭy. 15,5. Kâtj. Ça. 15,4,10. Viṣṇu. 1,6,5. — 3) m. *Strahl, Flamme* AK. H. an. Med. — 4) f. ई *Jahr* AV. 12,1, 36. die Stelle ist verdorben. — 5) adj. (f. ई) *auf das Jahr bezüglich, jährig, jährlich* AV. 3,10,9. 6,14,3. 11,6,17. Krankheit 19,39,10. — Vgl. सम्°, एक° (adj. auch MBu. 3,13036), त्रि° (auch Jâtâ. 3,271. MBu. 4,512. 7,1546), द्वि°, पृष्ठ°, षष्टि°.

कायनक m. = कायन 2) Suçr. 1,80,12. 195,7.

कायनरत्न n. Titel eines Werkes Ind. St. 2,245.

कायनसिन्धु desgl. ebend. 252. 272.

कायनसुन्दर desgl. ebend. 252.

कायनोत्तम desgl. ebend.

कायस् s. 1. विक्रायस्, सर्व°.

कारि ein Ausruf der Sâman-Sänger: कारि कारि क्रुवा केरि (कारि ed. Bomb.) क्रुवा केरि (कारि ed. Bomb.) तथासकृत् । गायन्ति त्वा सुरम्येषु सामगा ब्रह्मवादिनः ॥ MBu. 12,10399. °कार Lâṭy. 6,12,12. Schol. zu Pañcav. Br. 7,3,24.

कार् (von कार), कारति *einer Perlenschnur gleichen* Dhâtup. 67,16.

कार (von 1. कृ) 1) adj. am Ende eines comp. (f. ई) *tragend, herbeischaffend; forttragend; entwendend:* नीर° Mân. P. 51,25. *für sich nehmend, erhebend:* कर° *Abgaben* Spr. (II) 6380. selbständig so v. a. *hinreissend, entzückend* Bhâg. P. 10,7,2. oder auch nach dem Comm. *auf Hari bezüglich, H. betreffend.* — 2) m. a) *Divisor* Colebr. Alg. 10. Journ. of the Am. Or. S. 6,358. — b) *eine prosodisch lange Silbe* Colebr. Misc. Ess. 2,151. — c) *Perlenschnur, — schmuck* (am Ende eines adj. comp. f. या) AK. 2,6,2,4. 5. 3,4,6,31. 44,52. H. 658. 661. an. 2, 473. Med. r. 101. Hall. 2,409. 5,5. MBh. 1,7921. 7023. 2,2056. 3, 1824. कारालंकारयोग्यौ ते स्तनौ 4,393. 5,4223. 6,3967. 8,4918. 13,765. Harîv. 3970. 4371. R. 2,32,7. 3,58,26. 4,44,20. 5,13,34. 6,112,91. Mṛcch. 68. Ṛt. 1,4. 6. 2,18. 3,20. Ragh. 3,52. 6,16. Kumâras. 5,8. Gît. 7,14. Spr. (II) 844. 1316. 1787. 1910. 2147. 3885. 6173. 7247. 7385. fg. Varâh. Bṛh. S. 4,21. 11,10. 43,32. Khaṇḍ. 112. Kathâs. 18,17. 26, 232. 28,124. 136. fg. 33,211. Paṇḍ. 81,16. 95,1. Sin. D. 42,21. Râja-Tar. 3,414. 4,69. 5,13. 256. 353. 379. Mârk. P. 23,102. Bhâg. P. 1,16, 10. 3,6,26. 15,41. 23,19. 32. 28,15. 35. 4,9,38. 10,19. 15,16. 24,48. Pañcâr. 1,7,49. 11,34. Pañcât. 52,22. मौक्तिक° Kâdamb. 16. रत्न° Verz. d. Oxf. H. 258,b,2. नाग° Pañcâr. 1,11,21. — d) *ein Perlenschmuck von 108 Schnüren* Varâh. Bṛh. S. 81,32. H. 659. *aus 64 Schnüren* 661, Schol. Zahl unbestimmt Hall. 2,407. — e) nom. act. α) *Raub:* सर्वस्व° M. 9,242. परस्व° MBh. 3,17447. राज्य° Kathâs. 30,87. — β) *Wegnahme, Entfernung:* भारकाराय भूमेः Bhâg. P. 10,63,27. — γ) *Kampf* H. an. Med. — 3) f. या nom. act. P. 3,3,104. Vop. 26,191. — 4) f. ई a) *Perle* Çabdar. im ÇKDa. — b) *ein best. Metrum: 4 Mal* — ⏑ — — Colebr. Misc. Ess. 2,138 (V,2). — Vgl. सप्त°; सघ°, सङ्घ° (Kumâras. 7, 91). सर्ग°, उद्°, उद्क°, काल° (*Zeitgewinn* Kathâs. 31,75. 77. 32,10), कुरु°, जल°, इति°, नगर°, प्राग्°, प्रेत°, फल°, बलि°, भाग°, भार°, मनोहारी, मुक्ता° (auch Pañcât. 53,1), मृत°, राज्ञ°, रिक्थ°, लेख°, सं-देश°, समिहार, सर्व°, सर्वसम्प्रेक्षाहारी, स्वयंहारकरी und स्वयंहारी.

कारक (wie oben) 1) adj. am Ende eines comp. (f. कारिका) *tragend, herbeischaffend; forttragend; entwendend, raubend:* सस्य° M. 11,51. लव-ण° Jâtâ. 3,215. सर्व° Müller, SL. 409. मनुकारिका N. einer bösen Fee Mârk. P. 51,42. *auf sich nehmend:* सर्वलोकस्य समयमलकारकः Spr. (II) 568. *hinreissend, entzückend:* गोपीनयन° Pañcâr. 4,8,115. — 2) m. a) *Dieb, Räuber* H. an. 3,110. Med. k. 171. — b) *Spieler* (कितव) diess. Râja-Tar. 3,451. — c) *Divisor* Comm. zu Âryabh. 2,27. — d) *Perlenschnur* Pañcât. 176,3. — e) *Trophis aspera* Çabdar. im ÇKDa. — f) *Prosa* Taik. 3,3,48. H. an. Med. — g) *eine Art Kenntniss,* = वि-ज्ञानभेद H. an. Med. — 3) f. कारिका *ein best. Metrum: 4 Mal* — ⏑ — Colebr. Misc. Ess. 2,138 (IV,2). — Vgl. कङ्काणकारिका, कुट°, गन्ध°, नक्र°, बाद्°, प्राण°, भय°, मण्ड°, मल°, लेख°, वाडव°, वाचिक°, व्य-ञ्जन°, शासन°, संदेश°, संधि°, स्मृति°, स्वर्ण°, क्षण°.

कारण 1) adj. Hem. Joc. 2,43 fehlerhaft für कारिण. — 2) f. का-र्णा nom. act. vom caus. von 1. कृ P. 3,3,107, Schol.

कारफल n. *ein Perlenschmuck von 8 Schnüren* H. 660. °क n. Va-râh. Bṛh. S. 81,34.

कारभूषिक m. pl. N. pr. eines Volkes (*mit Perlenschnüren sich schmückend*) Mârk. P. 57,37.

कारम् absol. von 1. कृ *vernichtend;* wiederholt Kusum. 24,18. — Vgl. सर्व°.

कारयष्टि f. *Perlenschnur* Harîv. 8783. Ṛt. 2,26. Gît. 12,15. Kathâs. 75,60. am Ende eines adj. comp. Ṛt. 1,8. f. ई Kathâs. 39,113. ई Suçr. 2,486,4.

कारयु N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,b,20.

कारलता f. 1) dass. Med. t. 25. Kathâs. 39,104. 107. 104,99. — 2)

N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 122,68. — 3) Titel eines Buches Notices of Skt Mss. 2,372. Verz. d. Oxf. H. 280,a,9. 292,b,41.

कारव m. N. pr. eines Höllenbewohners H. 1362, Schol.

कारकारा f. *eine Art Trauben* Râgân. im ÇKDr. — Vgl. कारुकारा.

कारकूण m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1194. 1844. 3,1991. — Vgl. कूण, कारकोर und कारुकूण.

कारकूर 1) n. *Branntwein* oder *ein anderes berauschendes Getränk* H. 903. — 2) f. आ *Weintraube* H. 1156. Halâj. 2,38.

कारकूरिका f. *Weintraube* H. an. 3,272.

कारकोर m. Bez. *der Fürsten eines best. Volkes* Vaijn. Bṛh. S. 14, 33. Jogân. 3,18. — Vgl. कारकूण und कारकूर.

कारायण n. N. verschiedener Sâman Lâṭj. 4,6,2. 7,2,1. 13. Pañkav. Br. 14,9,23. Ind. St. 3,247,a. इन्द्रस्य 209,a.

कारावली (कार + आ°) f. 1) *Perlenschnur* Gît. 11,13. Pañkân. 3,5, 11. am Ende eines adj. comp. °लि Spr. (II) 6332. — 2) Titel eines von Purushottama verfassten und in Calcutta gedruckten Wörterbuchs Hir. 275. Mkh. Anh. 3. Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,17. Verz. d. Oxf. H. 183, a,4. 183,b,43. 192,a,20. 194,a,13. 195,b,8. 196,a, No. 434. — Vgl. वृक्षकारावली.

कारि (von 1. कृ) f. 1) = कार in सङ्ग°. — 2) *Karavane* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,134. Taik. 2,8,29. Hir. 138. H. 493. Mkh. r. 102. — 3) *Verlust im Spiel* u. s. w. Mkh.

कारिक 1) adj. oxyt. = कारिव gaṇa बह्वादि zu P. 5,3,103. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,18. — Vgl. भार°.

कारिकण्ठ (कारिन् + कण्ठ) 1) adj. a) *eine reizende Kehle habend; vgl. 2).* — b) *eine Perlenschnur um den Hals habend* H. an. 4,70. Mkh. 7h. 21. — 2) m. *der indische Kuckuck* diess.

कारिकर्ण m. patron. von कारिकर्ण Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55, 32. कारिकर्णिपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,20.

कारिण adj. *von der* कारिण *genannten Gazelle kommend:* Fell Kâṭj. 37. मांस M. 3,268 (Hem. Jogâç. 2,43 darnach zu verbessern). Jâgñ. 1, 257. MBh. 2,97. Mârk. P. 32,3. वस्ति Karaka 10,3. — Hem. Jogâç. 4, 32 fehlerhaft für कारिण.

कारिणिक adj. Hariṇa *genannte Gazellen jagend* P. 4,4,35 Schol.

कारित 1) adj. partic. praet. pass. vom caus. von 1. कृ; s. das. — 2) m. a) = कारीत *eine Taubenart* Gaṭâdh. im ÇKDr. Brahma-P. in LA. (III) 52,1. — b) patron. von Harita gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. 2,4,67. Vârtt. MBh. 12,9988. Hariv. 738. 1463 (unter den Söhnen Viçvâmitra's). pl. *seine Nachkommen* (sonst कारीता:) VP. 369 nebst N. 8. — 3) f. आ = कारिता Bez. *einer* Svarabhakti Comm. zu TS. Prâr. 21,15. Weber, Prâtiçâkh. 108. — Vgl. कुमार°.

कारितक n. = कारीतक *Gemüse* Çabdar. im ÇKDr.

कारितकात m. pl. *die Nachkommen des* Haritakâtja P. 4,1,73, Vârtt. 4.

कारितायन adj. zu Haritajâgña *in Beziehung stehend* Weber, Nax. 2,392.

कारितायनि m. patron. von कारित P. 4,1,100.

कारितास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 133,a,4 v. u.

कारिद्रु 1) adj. *mit* Haridrâ (*Gelbwurz*) *gefärbt, gelb* überh. P. 4,2,2, Vârtt. 5 (proparox.). H. 1394. Halâj. 4,50. Mkh. r. 241. Kleid Âçv. Gṛhj. 1,19,11. Kâtj. Çr. 25,8,3. Çat. Br. 13,4,4,3. Suçr. 1,111,7. Vaijn. Bṛh. S. 5,38. Taittar. 12. वर्ण MBh. 4, 1331. 12, 10038. 10065. मेरु Karaka 8,4. मूत्र Suçr. 2,525,19. सन्निपात Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 738. — 2) m. a) *Nauclea Cadamba* (कदम्ब) Roxb. Hir. 96. Mat. — b) *ein best. vegetabilisches Gift:* कारिद्रातुल्यमूलो यो कारिद्र: स उदाहृत: Bhâvapr. im ÇKDr.

कारिद्रक 1) adj. = कारिद्र *gelb:* °सन्निकाश Vaijn. Bṛh. S. 57,3. — 2) m. a) *ein best. Baum* Madan. 5,62. — b) N. pr. eines Schlangendämons Hariv. 9304. fälschlich कारिन्द्रक Citat beim Schol. zu H. 1311.

कारिद्रव (von कारिद्र) n. *Gelbheit* Karaka 2,1.

कारिद्रवि (von कारिद्रु) 1) m. *ein best. gelber Vogel* RV. 1,50,12. 8,35, 7. — 2) m. pl. *die Schule des* Haridru, n. Bez. *eines Werkes derselben* Ind. St. 3,259. Rotu, Nir. XXIII (m. sg.).

कारिद्रविक n. *ein Werk der* Hâridravin Nir. 10,5.

कारिद्रविन् m. pl. *die Schule des* Haridru P. 4,3,104, Schol.

कारिद्रवीय m. pl. desgl. Ind. St. 3,259. Verz. d. Oxf. H. 56,a,13. fg.

कारिद्रवेय m. pl. desgl. Rotu, Nir. XXIII.

कारिद्रुमत m. patron. von करिद्रुमत् Kâṭhâ. Up. 4,4,3.

1. कारिन् (von 1. कृ) adj. *tragend, bringend; überbringend; einbringend, stehlend, raubend:* वाजिकुञ्जराणाम् Jâgñ. 2, 272. स्वर्ण° 3, 264. दस्यवो लोमकारिण: MBh. 1,4308. घर्म° Kathâs. 30,119. मार्जारो ग्रन्थकारिणी Mârk. P. 76,6. 9. 11. 16. Râga-Tar. 4,628. 5,166. Pañkân. 1, 10,73. 4,8,73. uneig.: ओषित° Spr. (II) 1127. 3780. मातुर्यौवनकारी 1752. 3543. 6076. सौन्दर्य° Kathâs. 40,44. *benehmend, entfernend:* काम° Suçr. 2, 198,12. पित्त°, श्लेष्म° Râgân. oft. पाप° Spr. (II) 1040. ताप° Kathâs. 35,12. शोक° Verz. d. Oxf. H. 72,a,21. *sich aneignend, für sich nehmend* P. 5,2,69. 6,2,65. प्रियतमादेकार्घ° Spr. (II) 1436. सामान्य° Râga-Tar. 3,488. बलिपञ्चभाग° *erhebend* Spr. (II) 568. *raubend* so v. a. *übertreffend:* शशाङ्कद्युतिकारिभिरम्बुधौ: Vaijn. Bṛh. S. 24,16. 70,7. तरंगकारित्रिवली Kathâs. 59,5. *die Sinne —, das Herz hinreissend, entzückend, prächtig* H. 1444. Halâj. 4,4. रज: — सततं कारि देहिनाम् M. 12,28. क्रियते बध्यमानो (so ed. Bomb.) ऽपि नरो कारिभिरिन्द्रियै: MBh. 3,113. गुणा: 12,11582. Gosang Çâk. 5. Çiç. 10,69. Spr. (II) 2529. 4961 (धृति°). 5896, v. l. 6729. Nigân. 3. Kathâs. 18,12. 22,103 (wir trennen कारि च्य°). 44,46. 47,111. 101,78. Hem. Jogaç. 1,31. 4,33. Râga-Tar. 1,209. ते कारा: कस्य कारिण: 5,13. Mârk. P. 23,99. 102. Bhâg. P. 4,19,36. Pañkân. 4,8,35. in comp. mit dem, was *hingerissen wird:* ज्ञनलोचन° Kathâs. 4,29. मुति° Ṛt. 2,14. मैत्र° Mârk. P. 61, 21. चित्त° Daçak. 87,9. विष्टप° Spr. (II) 7160. mit dem, wodurch man *hingerissen wird:* कान्ति° 4280. Kathâs. 33,166. 124,72. स्वच्छन्द° *nach Belieben entzückend* Pañkân. 4,8,78. — Vgl. ज्ञल°, पङ्कुल°, प्राण°, फल°, बीज°, भग°, भाग°, भार°, भूत°, मनो° (ज्ञन° H. 1390), मूत°, रिक्थ°, रोग°, लेख°, लेखसंदेश°, लोम°, विघ्न°, वीर्य°, शासन°, श्रवण°, संदेश°, सर्व°, स्त्रीचित° (adj. Vaijn. Bṛh. S. 105,9), हृदय°.

2. कारिन् (von कार) adj. *mit einer Perlenschnur (-schmuck) versehen* Spr. (II) 1040. Bhâg. P. 10,13,47. Nârâjanabalikâ im ÇKDr.

कारियोजनं (von कारियोजन) adj. *das Anschirren der Falben begleitend,* — *bewirkend:* पात्र RV. 1,82,4. ब्रह्मणि (wir nehmen an, dass °ज्ञना zu betonen sei) 61,16. Bez. *eines best.* Somagraha Ind. St. 10, 39,2. VS. 18,20. Çat. Br. 4,2,2,5. 4,3,2. TS. 5,5,9,1. Âçv. Çr. 5,3,8. 6,11,8. 12,2. Lâṭ. 2,11,8. 9. Pañcav. Br. 1,6,9.

कारिवर्ण n. N. eines Sâman Pañcav. Br. 8,9,1. 12,6,7. Lâṭ. 6,8,12.

कारिवास m. N. pr. einer Gottheit Wilson, Sel. Works 2,193.

कारिषेणि m. patron. von कारिषेण P. 4,1,152, Schol.

कारिषेणायि m. desgl. P. 4,1,152, Schol.

कारिस *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Vjutp. 179. Mél. asiat. 4,638.

कारीत 1) m. *a) eine Taubenart, Columba Hariola* Buch. AK. 2,5,34. H. 1341. an. 3,315. Halâj. 2,99. Med. t. 176. MBu. 3,11876. 13,5500. Suçr. 1,201,20. Vîsn. 1,6,48. Varâh. Bṛh. S. 48,6. 86,21. 88,1. 15. Z. d. d. m. G. 27,28. Mârk. P. 15,26. 32. Verz. d. B. H. No. 897. am Ende eines adj. comp. f. आ Ragh. 4,46. — *b) Betrug* H. an. Med. — *c)* N. pr. verschiedener Männer (eines Gesetzgebers, Arztes, Grammatikers) H. an. Med. Âpast. 1,13,10. TS. Prât. 14,18. Comm. zu 19. fgg. Jiân. 1,4. MBu. 3,986. 12,1894. Bâlar. P. 12,7,5. Ind. St. 1,30. 58. 232. fg. 391 (wohl richtiger कारित). 467. Verz. d. B. H. No. 140. 322. 327. 941. 947. 952. 958. 975. 1017. 1028. Verz. d. Oxf. H. 14,*a*, N. 113,*b*,49. 150,*b*,43. 266,*b*,1. 34. fg. 268,*a*,24. 269,*a*,10. 271,*a*,14. 280,*a*,10. 291,*b*, No. 707. 310,*a*,14. 24. 311,*b*,41. 341,*b*, No. 799. 358,*a*,1. Verz. d. Cambr. H. 23. 65. 68. Weber, Prâtiçâkh. 74. Wilson, Sel. Works 1,13. 299. Hall 203. ein Sohn Ambarîsha's Bâlar. P. 8,7,1. Viçvâmitra's 16,26. Gâbâli's Kâd. in Z. d. d. m. G. 7,583. — *d)* pl. *das Geschlecht des* Hârîta Verz. d. B. H. 60,26. VP. 369, N. 3. N. pr. eines Volkes R. 1,55,3. — 3) f. ई *a)* N. pr. einer buddhistischen Göttin Wilson, Sel. Works 2,21. 33. — *b)* कारीतीपुत्र pl. N. pr. eines Geschlechts Ind. St. 3,485. — Vgl. कु°, बकदारीत, लघु°, वृद्ध°.

कारीतक m. = कारीत 1) *a)* Râgân. im ÇKDn. Pañcav. 138,21.

कारीतबन्ध m. *ein best. Metrum: 4 Mal* ——⏑—— Colebr. Misc. Ess. 2,158 (V,3).

कारीति m. patron. von कारीत; pl. Pravarabes. in Verz. d. B. H. 57,30.

कौरुक (von 1. कृ) adj. *wegnehmend, verzehrend:* घासो अग्निं कारुकः TS. 5,6,4,5.

कौर्त्र n. nom. abstr. von कर्तृ gaṇa उडुत्रादि zu P. 5,1,129.

कार्त्य m. patron. von कर्तृ gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

कार्द = हृद *Herz* in दुष्कार्द und सु°.

कार्दि (von हृद) 1) adj. *im Herzen befindlich:* तमस् Bhadrak. SV. X (तमो कार्दं zu trennen). ब्रह्मन् Çaṅk. zu Kaṭhop. Up. 8,13. Bâlar. P. 11, 13,28. — 2) n. gaṇa गुवादि zu P. 5,1,130; vgl. 6,3,50. *a) Zuneigung, Liebe* AK. 1,1,7,27 H. 1377. MBu. 9,3358 (pl.). R. 1,9,27. Vîkr. 148. Mârk. P. 37,12. 76,3. पाण्डवेषु MBu. 5,3420. सौहृद R. 4,4,15. कार्दं चैवाकरोत्तस्य 7,59,2,55. यस्तज्ज्ञानन्न गवां कार्दमेति MBu. 13,3536. पुत्र° *zu* 1,1330. 2,2479. Mârk. P. 81,24. घृति° 72,18. त्वयि मे 100,24. am Ende eines adj. comp. (f. आ): मयि संज्ञातकार्दानाम् MBu. 3,12418. उदितं प्रियं प्रति सकार्दम् Çiç. 9,69. सकार्दा *Zuneigung empfindend* Mârk. P. 76,7. — *b) Absicht, Vorhaben* Bâlar. P. 1,7,55. 3,4,19. 18,74,26.

कार्दवत् (von कार्द) adj. *Zuneigung empfindend:* सुषुप्तेऽपि कार्दवती भृशम् Mârk. P. 123,12.

कार्दविद्या f. Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. 1,326.

कार्दि (von हृद) 1) m. *a) Herz:* कार्दिं ते शोचयामसि AV. 6,89,1. 2. 18,4,58. — *b) Zufriedenheit, ein Gefühl des Behagens* Varâh. Bṛh. S. 5,57. 6,13. 8,6. 18,3. 19,12. 32,29. — 2) m. *Herz,* überh. *das innere des Menschen:* घा वो कार्दि भयमानो व्ययेयम् RV. 2,29,6. 5,44,9. मा नो कार्दि त्विषा वधीः Soma 8,68,8. इन्द्रस्य कार्दि चोदय 9,8,3. 60,3. 70, 9. 84,4. 86,19. 108,16. मनो मे कार्दि पच्छ VS. 6,21.

कार्दिका s. यम°.

कार्दिक्य 1) m. (von कृदिक) patron. des Kṛtavarman MBu. 1,2651. 6998. 7916. 3,781. 4,2857. 5,75. 4372. 16,74. fgg. 18,159. Hariv. 2103. 14439. R. 7,6,35. — 2) n. *Freundschaft:* कार्दिक्यं चापि दर्शितम् R. 5,7,52.

कार्दिन् (von कार्द) adj. *Zuneigung empfindend:* तेषु Mârk. P. 81,24. 31.

कार्दिवत् (von कार्दि) adj. *beherzt* oder *herzlich* Taitt. Âr. 4,7,5. v. l. für कार्हन् *herzstärkend* 9,2.

कार्हन् (von कार्द) adj. *herzstärkend:* घर्म VS. 38,12. कार्दिवत् Taitt. Âr. 4,9,2.

कार्म्य v. l. für कर्म्य Taitt. Âr. 6,6,2.

कार्य (von 1. कृ) 1) adj. Schol. zu P. 3,1,124. 6,1,185. = कर्तव्य H. an. 2,390. Med. j. 64. *a) zu tragen:* हस्त° Hariv. 7682. घर्मकार्य-शस्त्र adj. Ragh. 7,64. वारणराज° Kumâras. 5,70. गुरुविष्टिमकल्म° Kathâs. 110,142. — *b) fortzutragen* Çat. Br. 2,6,4,12. निःग्रामकार्याभुक Ragh. 16,43. घोषकार्याभिः सिकताभिः Kathâs. 40,19. — *c) wegzunehmen, zu rauben, was man sich anzueignen kann:* भर्तृकार्यधनो हि सः (शूद्रः) M. 8,417. चौर्°, राज्ञ° Spr. (II) 3240. ब्रह्मकार्यं ब्राह्मणादव्यं राज्ञा M. 9,189. — *d) zu benehmen,* घ° so v. a. *unabänderlich, unerschütterlich:* °निश्चय adj. Kumâras. 5,8. Daçak. 62,18. °बुद्धि Kâm. Nîtis. 13,30. °व्रत MBu. 5,953. — *e) gewinnbar, bestechbar:* धन° Mṛicch. 13,15. 78,22. गुण° 23. Hariv. 3058. सद्रूप° Kumâras. 5,33. घ° *unbestechlich* M. 7, 217. MBu. 12,3144. Spr. (II) 791. — *f) aufzuführen:* वीथी स्यादेकाङ्का द्विपात्रकार्या तथैककार्या वा Bhar. Nâṭyaç. 18,102. — *g) zu dividiren* Comm. zu Âryabh. 2,27. — *h)* = कारिन् *hinreissend, reizend:* कार्यो ऽयं (कार्यय?) विषयः MBu. 13,1429. — Unklar ist uns die Bed. von एक-कार्य als Beiw. von युग *Zeitalter* MBu. 3,13049. एकाकार्य ed. Bomb., was Nîlak. sehr künstlich erklärt, indem er darin आकार *Speise* sucht. — 2) m. *Terminalia Bellerica* Roxb. H. an. Med. — Vgl. बाडव°, शौर्य°.

कार्यम्य m. patron. von कर्यम gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

कार्ष्टिय m. wohl metron. von कृष्टि gaṇa गृष्ट्यादि zu P. 4,1,136.

कार्ल = कल P. 3,1,140. 1) m. *a)* = कल *Pflug* Med. l. 36. — *b)* Bein. *a)* Balarâma's, *des Pflugträgers,* Trik. 1,1,26. — *β)* Sâtavâhana's H. 712. an. 2,316 (सीत° gedr.). °भूभुज् Verz. d. Oxf. H. 195,*b*,16. — *c)* N. pr. eines Fürsten, Sohnes des Arishṭakarman VP. 4,24,12; vgl. कालेय. — 2) f. आ *Branntwein* AK. 2,10,39. H. 903. H. an. Med. Halâj. 2,174. Hit. 63. Megh. 50. Çiç. 10,21. Spr. (II) 2992. Hem. Jogaç. 3,15 (pl.). — 3) f. ई *der Frau jüngere Schwester* H. 535.

कालक m. *ein Pferd von bestimmter Farbe* (पीतकरीतच्छाय), = क-

रिक H. 1242. — Vgl. उप°, अवकालिका.

कालबन्ध n. Sammelname von कलबन्ध gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45.

कालकूल n. = कालाकूल *ein best. Gift* Trik. 1,2,4. Çabdar. im ÇKDa. Spr. (II) 2992, v. l.

कालकाल n. desgl. Çabdar. im ÇKDa.

कालास्य N. pr. einer dem Çiva geheiligten Oertlichkeit: °माहात्म्य Verz. d. Kop. H. 5,*b*. fgg. Mack. Coll. 1, 91. Verz. d. Oxf. H. 84,*b*,11.

कालाक् m. = कलाक् *ein scheckiges Pferd* Çabdaratnam. bei Wilson.

कालाकूल 1) m. *a*) *eine best. Giftpflanze*, welche im Himâlaja in Kishkindhâ und am Meere in Koṅkaṇa wachsen soll; ihre Früchte gleichen den Zitzen einer Kuh Bhâvapr. 5. — *b*) *eine Eidechsenart* Halâj. 2,102. — *c*) = 4) H. 1195, Schol. Spr. (II) 7388. — 2) f. आ *eine kleine Mousart* Gaṇiom. im ÇKDa. — 3) f. ई *Branntwein* Rigân. im ÇKDa. — 4) n. *ein best. starkes Gift*, das aus den Knollen des Hâlâhala bereitet wird; nach R. und Bhâg. P. *das bei der Quirlung des Oceans gewonnene Gift.* Trik. 1,2,4. Rigân. 6,224. R. 1,45,21. Suçr. 2,252,7. Spr. (II) 814. 2992. 4677. 5499. 5957. 7124. 7387. Hem. Jogaç. 3,18. Bhâg. P. 8,7,18. 42. — Vgl. कलाकूल, कालकूल, कालकाल.

कालाकूलधर m. *Schlange* Çabdar. im ÇKDa.

कालिक (von कल) adj. *zum Pflug gehörig* P. 4,3,124. m. *Pflüger* 4,81. AK. 2,9,64. Rigâ-Tar. 4,226. Paṇḍar. 225,22. als Erklärung von गोविकर्त *Schlächter* Schol. zu Kâç. Ça. 15,3,12. — Vgl. कलिक.

कालिङ्कव m. patron. von कलिङ्कु Çat. Br. 10,4,8,1.

कालिनी f. *eine Eidechsenart* H. 1298.

कालुं m. *Zahn* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,1. Wilson und ÇKDa. nach Trik.; कानु die gedr. Ausg.

कालेय m. patron. von कलि gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,126. Kâç. Ça. 10,2,21. Prayâgâbhis. in Verz. d. B. H. 59,6. N. pr. eines Sohnes des Anishṭakarman (vgl. काल) Bhâg. P. 12,1,23.

काव (von हू = वा) m. *Herbeiruf* Gaṇiom. im ÇKDa. Bez. *verschiedener Lockkünste verliebter Weiber* AK. 1,1,2,33. Trik. 3,3,203. H. 509. Halâj. 1,89. Bharata beim Schol. zu Nalod. 2,55. Daçar. 2,21. Sâh. D. 125. 127. 509. Prataparudrîjan. 55,*a*. Sarvâbh. 296,27. MBh. 1,3905. 3,1787. 5,237. 242. Harîv. 12006 (die neuere Ausg. देवकन्याप्रकारै: st. देवकन्याङ्कावै:). Spr. (II) 7028. Mâlav. P. 106,60. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*, 39. Vop. 24,18. सकावम् Bhaṭṭ. 3,43. — काव Mâlav. P. 33,18 wohl fehlerhaft für कार.

कावनी f. N. pr. einer Tochter des Ṛshi Ṛgu Verz. d. Oxf. H. 32,*b*,40.

कावित् in एक° Çiç. Ça. 2,12,91 = एकस्वनसाधुकारिन् Comm.

कावियानै adj. *das Wort* कविर्धान *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61.

कावियानि m. patron. von कविर्धान Bhâg. P. 4,24,9.

कावियंसिक adj. von कवियंस. मास Lâṭ. 10,10,6.

कावियंसिय adj. desgl. Kâç. Ça. 25,2,7.

काविष्कृत (von कविष्कृत्) n. Bez. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 247,*a*. Paṇḍav. Br. 15,3,17. Nidânas. 8,4.

काविष्मत (von कविष्मत्) n. desgl. Ind. St. 3,247,*a*. Paṇḍav. Br. 11, 10,9. Nidânas. 8,4.

काश्वु interj. *Ausruf der Freude* in einem Sâman Taitt. Âr. 3,10,5. fgg.

कास्, कासते *wettlaufen* Nir. 9,39. यत्रे कासमाने RV. 3,33,1. 1,100, 2. वृष सूर्येण कासते 9,27,5. AV. 4,36,5. — Vgl. 1. कस्, कसना.

— caus. *wettlaufen lassen:* नार्वाञ्चिनं वाजिनो कासयन्ति RV. 3,53,21.

कास und कासं (von 2. कस्) 1) m. P. 3,3,62. 6,1,216. am Ende eines adj. comp. f. घा. *a*) *das Lachen, Gelächter, laute Heiterkeit;* häufig pl. AK. 1,1,2,19. मोदप्रास 34. H. 72. 296. Halâs. 1,91. MBh. 7,1357. प्रहास महाकासम् 3552. कासम् 12,13581. सकास सस्वनं कासम् 14,2164. Harîv. 1276. MBh. 13, 3782. Harîv. 3740. 13073. 13740. कासं मुमुचु: 13741. R. Gorr. 1,35,15. R. Schl. 2,35,19. Mṛicch. 131,14. Râgat. 12, 36. Spr. (II) 1028. 2912. लज्जिता: 4646. 6182. नित्यकासैर्कृता: स्त्रिय: 7442. Vâsiṣ. Bhg. S. 86, 22. 104, 63. Bhg. 3, 2. Kathâs. 7, 46. 18, 67. विलासकासादि चक्रे 49, 48. हृदं स्राघत (so lesen wir) लोकस्य कासम् 61, 28. °शील 114, 65. fg. स्रात° adj. Rigâ-Tar. 5, 437. Daçar. 4, 69. Sâh. D. 52, 12. 207. Mâlav. P. 25, 17. ईषद्धासा 26, 8. 63, 44. fg. 76, 5. Bhâg. P. 1, 9, 24. 40. 11, 10. 37. 2, 1, 31. 2, 11. 7, 25. 9, 15. 3, 2, 14. 4, 10. 20, 30. 25, 26. 27, 20. 28, 32. 4, 7, 21. 5, 1, 10. 5, 31. 8, 8, 17. 24. 9, 24, 64. Paṇḍar. 3, 11, 4. Nalod. 1, 31. कासास्पद Mâlav. P. 65, 24. अट्टकास Paṇḍav. 197, 1. महा° adj. *laut lachend* R. 5, 21, 19. स° adj. von *Lachen begleitet* Bhâg. P. 5, 2, 6. *lachend* Vâsiṣ. Bhg. S. 12, 8. 13, 1. Kathâs. 61, 13. Dhûrtas. 66, 3. Sâh. D. 34, 3. सकासम् adv. Çiç. Ça. 10, 4. Uttarar. 101, 19 (136, 1). Kathâs. 24, 74. — *b*) *das Verlachen, Verspotten Jmdes* (gen.) R. 1, 3, 19 (13 Gorr.). — *c*) *worüber man lacht, Scherz, Spass:* आख्यान° *eine komische Geschichte* Kathâs. 57, 49. खर्जूर° 61, 36. मुग्धकासकथा: 56. — *d*) *das hellweisse Aussehen* eines Dinges wird als *ein Lachen* (wobei *die weissen* Zähne zum Vorschein kommen) desselben angesehen: शारदमेघाभं कासं मुक्ता R. 7, 20, 22. कुमुदरुचिरकासा Ṛt. 3, 28. मुक्तादरधरकुन्द° Bhâg. P. 3, 15, 44. मुखाब्ज° 10, 23, 22. धन्यदिग्जयसमानन्दकोवेरी° Kathâs. 120, 16. कैलास° 19, 107. चन्द्र° Sâh. D. 130, 11. यतिरुचिरमन्दहासचन्द्रातप Paṇḍar. 3, 5, 25. चामरकासै: °कारै: schlecht die neuere Ausg.) Harîv. 4649. कन्दल° 3558. फेनकासैर्कसिष्यन्ति 5788. फेनविलासप्रोज्ज्वलकासा Khaṇḍ. 119. कारकावृष्टि° Mâlav. 55. कंसकासा निम्नगा: Vâsiṣ. Bhg. S. 56, 7. हार° Rigâ-Tar. 1, 90 (beide Ausgg. कर°). Bhâg. P. 10, 35, 4. स्थलपद्म° (blüht anfänglich *weiss*) Bhaṭṭ. 2, 3 (= विकास Comm.). — *e*) *Hochmuth* (vgl. स्मय) Bhâg. P. 6, 8, 14. — 2) f. घा ein N. der Durgâ (oder ist etwa कासभीमा zu lesen?) H. ç. 32. — Vgl. गण°, ग्रीष्म°, चन्द्र°, जल°, पुष्प°, भीम°, महा°, मास°, यम°, रजनी°, रात्रि° वन°, सु°.

कासक 1) m. (vom caus. von 2. कस्) *Spassmacher* MBh. 12, 1339. R. Gorr. 2, 32, 21. — 2) f. कासिका (von 2. कस्) *das Lachen, Gelächter* H. 296. — Vgl. ग्राम°, ग्राम्य°, वन°, क्ष्म°.

कासन (vom caus. von 2. कस्) adj. *Jmd zum Lachen bringend, komisch* Kathâs. 20, 119. 49, 12. 60, 147. लोक° 39, 192.

कासवती f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Vâcasp. 105.

कासस् vod. Uṇâdis. 4, 220. m. = चन्द्र Uṇâdis.

कासिन् (von 2. कस्) 1) adj. *a*) *lachend* Paṇḍar. 4, 8, 39. मोघ° *in den Tag hinein* Kâç. 25, 6. घनर्म° MBh. 3, 2022. चारुकासिनी (s. auch bes.) 1, 906. 4, 418. Harîv. 9179 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R.

Gobr. 2,10,25. Brahma-P. in LA. (III) 33,9. VP. bei Mun, ST. 4,179, N. 61. पार्थिवात्पर्थनिर्विवेकत्व° *lachend über* Kathis. 5,25. विनीतवनिता° 95,28. — *b)* am Ende eines comp. *lachend mit so v. a. hell, weiss erscheinend durch; überh. prangend von, geschmückt mit:* मेघैर्वलाकापङ्क्तिकासिभिः MBh. 1,5401. कंसकासिनी क्रोदनी Hariv. 3626. 3826. दिशा कैलासकासिन्या Rāja-Tar. 1,87. सौधकासिनी पुरी 4,70. Kathis. 18,10. छत्रचामरकासिनी राजश्रीः Rāja-Tar. 5,449. 6,88. चतुरोदारकासिनी पुरी Hariv. 3099. चत्वरेषु गगनोदारकासिषु 3844. वज्रवैडूर्य° 6126. प्रकटनत्रकासिनी (°दामिनी die neuere Ausg.) देवमकाचमूः 2602. रथेन नेमिनिर्घोषकासिना 5634. ज्ञाल° 9179 (चारु° die neuere Ausg.). — 2) f. कासिनी N. pr. einer Apsaras MBh. 13,1435. — Vgl. चारु°, भाउ°, सु°.

कास्त (von कस्त) adj. *mit den Händen gebildet:* मुकुल so v. a. अञ्जलि Nalod. 1,38.

कास्तायनि adj. von कस्त gaṇa पतादि zu P. 4,2,80.

कास्तिकि (von कस्तिन्) 1) adj. = तेन चरति P. 4,4,8, Schol. *aus Elephanten bestehend:* °प्रायं सैन्यम् Rājat. 86,13. 87,5. — 2) m. *eine Menge von Elephanten* P. 4,2,47. AK. 2,8,2,4. H. 1418. MBh. 9,2339 (कस्तिक ed. Bomb.). *eine Menge von Elephantenkühen* P. 6,3,35, Vārtt. 3, Schol.

कास्तिकर्पूक adj. (f. घा und ई) von कस्तिकर्पू gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

कास्तिदन्त (von कस्तिदन्त) adj. *elfenbeinern* Kauç. 13.

कास्तिदापि s. कास्तिदापि.

कास्तिदापि m. patron. von कस्तिदाप Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 88,22. °दापि 56,8.

कास्तिन (von कस्तिन्) 1) adj. *a)* proparox. *dem Elephanten gehörig:* पसम् AV. 5,72,3. — *b)* oxyt. *eines Elephanten Höhe (Tiefe) habend* P. 5,2,38. सप्तसस्तलम् Daçak. 177,9. — 2) n. = कास्तिनपुर Trik. 2,1,13.

कास्तिनपुर n. = कस्तिनापुर P. 6,2,101. H. 978. MBh. 1,3787. 3978. 5,5964. Hariv. 11234. R. 2,68,13 (70,11 Gorr.). Bhāg. P. 1,10,7. Verz. d. Oxf. H. 77,*a*,28. Davon nom. abstr. °त्व n. MBh. 1,3787.

कास्तिनायनि (von कस्तिन्) P. 6,4,174. adj. gaṇa पतादि zu 4,2,80. m. patron. gaṇa नडादि zu 1,99.

कास्तिपद (von कस्तिपद्) m. N. pr. eines Mannes P. 4,3,132. Davon adj. कास्तिपदि ebend.

कास्तिशीर्षि m. patron. von कस्तिशिरस् P. 6,1,61, Schol.

कास्तिशीर्ष्या f. ved. P. 6,1,61, Vārtt. 3, Schol.

कास्य (von 2. कस्) 1) adj. *über den oder worüber man lacht, lächerlich, komisch:* सर्वेषु Hariv. 3201. Spr. (II) 4812. Rāja-Tar. 6,68. Pārāç. 1,356. °वस्तु MBh. 4,118. वचस् Rāgh. 2,43. नामन् Kathis. 66,86. °कथा Bhāg. P. 10,69,29. °कार्य Pārāç. 169,16. Verz. d. Oxf. H. 175, *a*,31. रस AK. 1,1,2,17. H. 294. Halāj. 1,92. Daçak. 4,69. Sin. D. 542. Verz. d. Oxf. H. 123,*b*,1. R. 1,4,7 (3,46 Gorr.). लोक° Kathis. 61,193. सर्व° Spr. (II) 3592. कास्यतर 163. — 2) n. *a) das Lachen, Gelächter* AK. 1,1,2,19. H. 296. Jāān. 1,84. MBh. 13,493. कास्यं तेषां भविष्यति R. Gorr. 2,10,7. Sūçr. 2,406,9. Rt. 3,37. Spr. (II) 4434. 6100. Hem. Jogaç. 1,27 = Sarvadarçanas. 33,14. Kathis. 22,200. Rāja-Tar. 5,299. Mālav. P. 26,9. Sin. D. 525. घति° Sūçr. 1,244,6. लोक° Kathis. 63, 187. ईषद्धास्यप्रसन्नास्य Pārāç. 1,12,24. 14,59. कास्याास्यद् Spr. (II) 6117. कास्याास्यदत्त 51. °पदवीं याति Pārāç. 252,5. am Ende eines adj. comp.: ज्ञात° Kathis. 12,186. ईषद्धास्या Pārāç. 1,10,90. — *b) Spass; eine komische Handlung, — Streich, etwas Komisches:* द्यूतं न सेवेत कास्यार्थमपि बुद्धिमान् M. 9,227 (= MBh. 5,1352). कास्येनेदमभिहितम् Pārāç. 209,16. नृत्यवादित्रगीतेषु कास्येषु विविधेष्वपि । रमयति स्म देवराजम् MBh. 2,305.7,2860. Hariv. 15072. 15737. 15739. R. 2,69,4.5 (71,4.5 Gorr.). कुर्वन्ति कास्यम् 5,60,12. कास्यं न मन्यते (so Comm.) Kām. Nītis. 5,43. 16,15. सततकास्यरुचि Vaitān. Bṛh. 2,9. कास्योपासनकौशल 8,15. कास्योद्भितद्यूतविद् 17,2. °ज्ञ 19,3. 7. Bṛh. S. 16,19. 19,12. °दिदृक्षु Kathis. 6,58. °वैचित्र्य 12,77. 43,103. 58,79. Verz. d. Oxf. H. 139,*a*,1. °प्रौढि Bhāg. P. 10,60,25. 28. °स्थायिभाव Sāh. D. 228. 413. 535. Gaupa beim Schol. zu H. 294.

कास्यकार adj. *Lachen bewirkend:* कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः Sāh. D. 79. पर° Spr. (II) 4913.

कास्यकार adj. dass. R. 7,43,1.

कास्यकृत् adj. dass. Daçak. 2,8.

कास्यता (von कास्य) f. *das Lächerlichsein:* °तां या *lächerlich werden* Spr. (II) 435. Rāja-Tar. 6,180. लोके MBh. 1,1996. भूतले Hariv. 13816. ग्रने Spr. (II) 5629. °तामुपसंप्राप्तः MBh. 1,5188. नो Rāja-Tar. 5,144. न सह्यिष्ये तु °ताम् Kathis. 92,5. यथो लोकस्यतां 61,6. 277. 63,194.

कास्यत्व (wie oben) n. dass.: ममैवैकस्य कास्यत्वं मा भूत् Kathis. 13, 151. °त्वं गतः 15,54. 62,116.

कास्यभाव m. 1) dass.: °भावं या Kathis. 61,329. — 2) = कास्य *Spass*, pl. Hariv. 8348.

कास्यार्णव (कास्य + अ°) m. Titel eines Lustspiels Verz. d. Oxf. H. 146,*b*,No. 311. fg.

कास्कम् m. = कास्का Bharata zu AK. 1,1,2,18.

1. कास्का interj. s. u. 3. का.

2. कास्का (onomatop.) m. Trik. 3,3,2. Declination Vop. 3,43. N. eines Gandharva AK. 1,1,1,45. H. 183. कास्काङ्कृभ्यां त्वा गन्धर्वाभ्यां परिदद्मि Kauç. 56. Çikṣh. Ça. 4,10,1. Hariv. 7225. 9259. 14159. R. 6, 82,30. Kathis. 45,230. 116,87. Mālav. P. 106,57. häufig ist des Metrums wegen कस्का zu lesen, z. B. MBh. 1,2559. 4815 (कस्का ed. Bomb.). 2,406 (कस्का ed. Bomb.). R. Gorr. 2,100,14. 83,13. 92,70.

कास्काकार m. *der Ausruf* का का MBh. 1,1173. 5437. 3,2542. Z. d. d. m. G. 27,19. Bhāg. P. 3,16,33. 19,5. 4,10,14. 8,21,27. °कृत का का *ausrufend* R. 2,59,18.

कास्काकृत adj. का का *ausrufend* MBh. 3,711. 718. 5,7137. 7,7429. Hariv. 3335.

कास्कामूत adj. dass. MBh. 1,7674. 3,2724. 13,2795. R. 6,93,4.

1. कि, किनोति Dhātup. 27,11 (गतौ वृद्धौ). (प्र) किणसि AV. अकेतन, अकेम, अकाम्, अकान्, (प्र) अकेत्, (प्र) अकेषीत्, (प्र) किघाय P. 7,3,36. Vop. 12,4. किष्युन्, (प्र) केष्यामि. med. किन्वे, किन्वते, किन्विरे, (प्र) किषे, अकेषत 3. pl., किन्वानै; partic. कित s. bes. 1) *in Bewegung setzen, antreiben, anfeuern, reizen; veranlassen zu* (dat.): das Ross RV. 3,53,24. 5,36,2. Wagen 6,45,14. अग्निं गीर्भिः किनुहि 1,143,4. 144,5. 8,44, 19. 10,88,5. Indra 2,14,4. उचथम् 19,7 (unter 1. अक् zu streichen).

स्तोमम् 1,184,4. यज्ञम् 7,34,6. 56,12. den Soma 9,26,3. 4. 3,31,5. प्रातर्यावमधमश्विना क्रिनोत *beeilt es* 5,77,3. 7,34,3. अध्वरम्यज्ञाय 8,43,19. नैनं क्रिन्वन्त्यपि वाजिनेषु *herausfordern zu* 10,71,5. यातुरम् *reizen* AV. 6,101,2. Çat. Ba. 14,1,2,12. med. *sich in Bewegung setzen, angefeuert werden u. s. w., sich beeifern:* तुभ्यं क्रिन्वानो वसिष्ठ गा यवः RV. 2,36, 1. न क्रिन्वानास्तितिरुस्त इन्द्रम् *eifig, heftig* 1,33,3. क्रिन्वे धर्वा 4,7, 11. क्रिन्वानं न वाजयुम् 8,1,19. 9,44,2. 73,2. 86,25. रथीः 10,2. 10,63, 2. med. in activer Bed.: धियो क्रिन्वाना उशिजो मनीषिणः RV. 2,21,3. 7,10,1. उद्गावमीरयति (°यंत्ति) क्रिन्वते मतो (मतीः) 9,72,1. पयो क्रिन्वानाः 1,104,4. partic. praes.: संदृष्टिरस्य क्रियानस्य दत्तोः RV. 2,4,4. यत्या क्रियाना न रंहिभिः *concitatus* 1,13,6. इन्दुं क्रियानः सोतृभिः 30,2. 98,2. Abgeleitete Form imperat. क्रिन्व in der Formel क्रिन्व मे गात्रा TS. 3,2,8,2. Kâty. Çr. 9,12,4. क्रिन्व्, क्रिन्वति Dhâtup. 15,82 (प्रीणनार्थः; vgl. इन्, इन्व्. — 2) *schleudern:* वज्रं क्रिन्वन्ति सार्वकम् RV. 1,84,11. कस्मान्न क्रिनोषि वज्रम् Bhâg. P. 6,11,19. शूलमक्रिनोत् 3,10,55. pass.: गदा शक्रजिता क्रिध्ये Bhaṭṭ. 14,36. med.: क्रिन्वानो वाचम् *die Stimme hinauslassend* RV. 9,84,4. — 3) *fördern, unterstützen, verhelfen zu* (dat.) RV. 1,18,4. धिये 27,11. अस्माव्राये मरुत क्रिनु 6,45,30. धनाय 8, 60,5. क्रतवे 10,27,16. 9,36,3. न वा उ सोमो वृजिनं क्रिनोति 7,104,13. 8,4,16. 47,6. AV. 4,8,7. — 4) *her —, hinbefördern, herbeischaffen:* सोमम् RV. 3,46,5. घासिमत्तवे 8,43,29. देवेभ्यः Çat. Ba. 3,5,4,25. — 5) = 2. क्रा *verlassen, aufgeben:* पदवीं न क्रिन्वन्ति Bhâg. P. 5,1,5. यावदिदं (कलेवरं) क्रिनोम्यक्षम् 1,9,24. कर्म क्रिन्वन् 7,10,11. *loswerden, sich befreien von* 10,77,22. — 6) als ungewöhnliche Form könnte hierher gehören क्रियत्ता du. *concitantes* sc. *equos* RV. 1,116,18 und यवो नपातमश्विना क्रियत्तम् (क्रियतम्, wie unsre Hdschr. liest, wäre *treibet an*) TS. 1,6,12,4. der Text ist aber unsicher, wie AV. 19,42,4 zeigt. = ईर्ष्यसंगमयितारम् Comm.

— caus. aor. अक्रीक्रियत् P. 7,3,36, Schol. Vop. 16,1.

— desid. क्रिघीषति P. 7,3,56, Schol.

— intens. क्रेघ्रीयते ebend.

— अप *abwerfen, sich befreien von:* रुद्रागम् Bhâg. P. 10,33,40.

— आ med. *herbeischaffen* RV. 9,74,3.

— परि *hinbefördern, verbringen:* यो वो दोत्रो परिक्रिनोमि (AV. Paipp. 3,33) मेधयो RV. 7,104,6.

— प्र, प्रक्रिणामि u. s. w. VS. Paipp. 3,37. AV. Paipp. 4,25. TS. Paipp. 13,12. P. 3,4,15. Vop. 8,22. 12,3. 1) *antreiben, erregen:* प्र वो देवमवसे न वाजिनं क्रिये RV. 7,7,1. क्रिन्वद्वृतस्य दीधितिं प्राध्वरे 9,102,3. — 2) *schleudern:* वज्रं तस्मै प्राक्रिणवम् MBh. 3,880. 12139. 5,7309. प्राक्रिणवम् 7278. 7305. Harîv. 11087 (S. 792). तस्मै मरोपलम् Raghu. 15,21. Bhâg. P. 8,12,24. 8,11,30. चक्रं विक्रममेने Pâṇâv. ed. orn. 58,9. प्रादेषीत् Bhaṭṭ. 15,121. Pâṇâv. 40,18. यशोकाय पाटम् Milav. 38,11. — 3) *herbei —, hinschaffen, liefern, Jmd Etwas zustellen, zukommen lassen:* पितृभ्यः RV. 10,16,1. ऊर्मिं देवमादनम् 30,7. 8. प्र देव 9. प्र तत्ते क्रिन्वा यत्ते यस्मै 98,12. यो वै वेदाग्र प्रक्रिणाति तस्मै Çvetâçv. Up. 6, 18. रथं तस्मै प्रतिधाय Raghu. 12,84. तस्मै सुवर्णादि Kathâs. 10,100. 21, 89. वस्याभः 25,122. 43,92. प्राभृतं प्रक्ष्यामि 121,224. Râja-Tar. 3, 230. 321. Bhâg. P. 9,4,34. — 4) *absenden* (einen Boten), *wegschicken, vertreiben, verjagen zu Jmd* (dat.), *zu — in Etwas* (acc.): क्रव्यादम् RV. 10,16,9. AV. 5,22,4. 31,10. 6,130,1. 7,115,3. समुद्रम् 10,5,23. कृत्याः कर्त्रे 1,30. 10,87,3. न दूतायं प्रहैं (infin.) तस्य इषा RV. 10,109,3. Çat. Ba. 3,2,4,2. TS. 2,2,6,5. TBa. 3,10,9,3. Ait. Ba. 6,34. 36. Kaug. 73. Kaush. Up. 2,3. तस्मात्प्रक्ष्याम्यथ वो (पृथे) क्रीनः प्रजननात्स्वयम् । मदृशाच्क्रेपसो वा तं विद्यपत्यम् *senden (zu einem andern Manne)* Bhâg. 1,4676. दूतान् 2,1244. 4,281. कुशलार्थं तव *Jmd absenden um sich nach deinem Wohlbefinden zu erkundigen* R. 1,17,38 (26 Gorr.). वाम् Kathâs. 16,57. 17,58. 61. 41,20. 44,172. 48,102. 57,125. 120,98. प्रक्ष्याम्यर्चितामिमाम् *entlassen* 122,50. Râja-Tar. 5,56. 202. प्राक्षेषाम् Bhaṭṭ. 15,104. तस्मै स्वां भार्याम् MBh. 1,4211. Raghu. 8,78. 11,49. Kathâs. 37, 101. 75,114. Daçak. 68,3. दूतान् — अमुरयोस्तयोः *zu* Kathâs. 10,195. वाराणसीं प्रति ब्रह्मदत्तस्य 19,61. मां वां प्रति 67,28. यत्तिकं तस्य 8,11. पार्श्वं तस्य Râja-Tar. 3,467. निजं गृहम् Kathâs. 22,69. Râja-Tar. 3, 405. 6,35. तान्प्राक्षिपत् यमसादनम् MBh. 3,12160. 4,821. तान्बाणाः प्राक्षिपन्यमसादनम् 3,12178. पातव्याय दूतम् Kâm. Nîtis. 12,1. यात्रायै Kathâs. 42,83. सोमदत्तस्य बन्धाय 20,16. 29,35. विप्राय तस्य 45,89. विन्ध्याकान्तारं काणभूतिमवेक्षितुम् 2,3. 27,110. 43,111. योद्धुम् Bhaṭṭ. 14,1. pass. प्रक्षीयताम् Kathâs. 101,112. — 5) so v. a. प्रेषयति *auffordern, anweisen* Liṭ. 1,1,13. 3,3,2. पुत्रं चेतकेतुं प्रतिधाय याजयेति Kaush. Up. 1,1. — 6) med. *dahinfahren:* रथो इव प्र सर्गो धक्षेषत RV. 9,22,1. — 7) hierher die Form प्रक्षिध्यतु *davonlaufen:* यत एव पराङ्प्रक्षि° (= गच्छतु Sây.) Ait. Ba. 8,28. — 8) = 2. क्रा mit प्र *verlassen, im Stich lassen:* तमपक्षिप्तम् । ते ऽकृतार्थं प्रक्षिण्वन्ति प्राणा रायः सुतादय: Spr. (II) 4151 (Bhâg. P.). — 9) partic. प्रक्षित a) *angetrieben, angefeuert:* पार्थ° Bhâg. P. 3,1,3. काल° 7,2,56. दैव° 8,20,14. 8,6,29. 22,16. — b) *geschleudert* AK. 2,8, 2,56. H. 779. चक्रं मत्कारप्रक्षितम् Harîv. 15746. R. 5,80,22. प्रक्षितास्त्रवृष्टि Raghu. 3,58. Mâlav. P. 134,45. Bhâg. P. 3,19,18. साधुषु प्रक्षितं तेजः प्रकर्तुः कुरुते ऽशिवम् 3,4,70. वेगेन प्रक्षितं बाणम् *so v. a. mit Gewalt ausgestreckt* MBh. 1,6000. प्रक्षितनखरेघङ्कोषु *so v. a. eingegraben* Sîs. D. 71,1. *geworfen, gerichtet* von Augen, Blicken Manu. 72. Raghu. 2,27. 13,42. 15,84. Bhâg. P. 3,3,7. विचारमार्गप्रक्षितेन चेतसा Kumâras. 5,42. — c) *hingeschafft, zugestellt, zugesandt* (von Sachen) Kathâs. 12, 192. 21,91. लेख 42,109. 124,198. माला 50,126. Daçak. 87,3. Pâṇâv. ed. orn. 55,7. कुशल ad Manu. 112. — d) *ausgesandt* H. 1492. Botsch u. s. w. RV. 10,165,4. AV. 2,29,4. 6,29,2. 8,2,11. 18,4,65. Çat. Ba. 3,2,4,15. यद्यानं प्रक्षित इति 5,3,4,11. Kâty. Çr. 14,5,30. 15,7,24. Jâin. 2,190. 8,283. MBh. 3,1801. 12,2666. 14,226. R. 2,91,42 (100,43 Gorr.). 3,66,17. 5,39,3. 6,1,23. Kathâs. 14,67. 17,12. 20,205. Râja-Tar. 4, 222. 338. 340. दैत्येन Prab. 85,3. 97,10. Hit. 92,20. Vet. in LA. (III) 29,16. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Cl. 24. तव पार्श्वे Pâṇâv. 161,12. कर्णाय *gegen* (in einer Schlacht) MBh. 7,8292. जयाय R. 6, 77,27. *fortgeschickt, fortgejagt:* वनवासाय R. 2,46,3. Kathâs. 27,54. Mâlav. P. 114,6. — e) *hingeschickt zu* (loc.) *so v. a. mit der Sorge um — beauftragt:* यदे कि सततं गोषु भवता प्रक्षितः पुरा MBh. 4,69. — 10) partic. प्रक्षित्वस् *der ausgesandt hat*, st. des verbi finiti R. 4,32, 12. Kathâs. 45,10. 48,102. — caus. aor. प्राक्षीक्रियत् Pat. in Mahâbh. lith. Ausg. 7,116,5. — desid. vom caus. प्रक्षिघायियिषति ebend. 113,a. प्र-

क्षिपा° P. ed. Calc. 7,3,36. — Vgl. प्रक्षाय्य, प्रक्षितंगम, प्रक्षेत्तृ flg.

— अनुप्र, partic. °क्षित *nachgesandt* Uttarar. 30,2. 3 (39,13).

— अभिप्र, partic. °क्षित *hergeschickt* AV. 10,1,13.

— उपप्र *hinsenden zu* (acc.) AV. 18,4,40. Çat. Ba. 11,5,8,11.

— प्रतिप्र *zurücksenden, — jagen* Çat. Ba. 3,5,2,16. AV. 10,1,5. 15.

— संप्र, partic. °क्षित *geschleudert:* शरा: MBh. 8,4074.

— सम् 1) *absenden* Bhâg. P. 8,10,13. — 2) *zusammenbringen, — setzen, verfertigen:* सं वां कर्मणा क्षिनोमि *so v. a. zuwege —, zurechtbringen* RV. 6,69,1. स्तोमं सं क्षिनोमि रथं न तष्टा 1,61,4. समी रथं न भुरिजोरनेषत 9,71,5. तमु ते गावो नर आपो अद्रिरिन्दुं समक्षन् 8,40,2. hierher auch 1,94,1, wo समक्षेम st. सं मक्षेम zu lesen ist, und eben so wohl auch 111,3. Darnach unter 1. अक्षु zu berichtigen.

2. क्षिं indecl. Einfluss auf ein folgendes स VS. Prât. 3,66. AV. Paipp. 2,101. TS. Prât. 3,5. 6,2. wann pluta P. 6,1,130. 8,2,93. das verbum finitum orthotonirt VS. Prât. 6,15. fg. Ind. St. 10,413. 420. P. 8,1,24. fg. 66. gewöhnlich auf das erste Wort des Satzes folgend, aber auch an andern Stellen bei dem Worte, auf welchem der Nachdruck liegt. क्षेतो AK. 3,4,32 (98), 13. H. an. 7,17. Halâj. 5,95. Med. avj. 86. क्षेत्यपदेशे Med. अवधारणे AK. H. an. Med. विशेषे H. an. Med. विशेषणे Halâj. पादपूरणे (°पूर्तौ) AK. 3,5,5. H. an. Med. प्रश्ने, संभ्रमे, असूयायाम् Med. विस्मये Mallin. zu Çiç. 11,64 mit Berufung auf AK. 3,5,9, wo aber unsere Ausgg. ऽक्षो की st. क्षि क्षो lesen. शोके Çabdar. im ÇKDa. Nie am Anfange eines Satzes. 1) begründend und bestätigend: *denn, ja, nämlich:* इन्द्रेवो वामुशन्ति क्षि RV. 1,2,4. 15,2. 3. 24,4. वधीर्हि दस्युम् 33,4. क्रुदं न क्षि u. s. w. 52,7. स क्षि 55,6. 77,2. 93,7. यथा यतं ददर्श क्षि 105,18. नूनं देवेभ्यो वि क्षि धाति रत्नम् 2,38,1. स यज्ञानामधं क्षि यः 3,13,2. 7,21,5. ते चिद्धि 7,48,2. 99,3. AV. 3,22,6. 8,9,24. 12,2, 55. Çat. Ba. 14,7,2,20. Lâṭj. 5,5,13. 7,11,6. 17. 21 (überhaupt besonders oft in diesem Buche). Âçv. Gṛhj. 1,21,3. Auch im ersten Satze eines Liedes u. s. w. RV. 1,25,1. 109,1. 6,1,1. 2,1. AV. 4,14,1. 5,13, 1. कथं हि करिष्यसि Çat. Ba. 12,9,2,7. स्वङ्ग AV. 5,11,5. 7. हि कम् gewöhnlich am Pâda-Ende Naigh. 3,12. RV. 1,47,10. 2,28,5. 37,5. 6,51,14. 8,11,10. 44,24. 9,49,4. AV. 3,13,3. in der Mitte RV. 1,98,1. nach इत् 15,5. 40,2. एव 8,5. fgg. यथा 5,66,4. 6,2,7. 8,87,7. AV. 5, 22,2. इति Lâṭj. 1,6,37. 2,10,18 und oft. नैं हि (sonst नहि; s. d.) TS. 5,1,2,1. Çat. Ba. 2,4,2,6. bezeichnet in VS. Prât. den Schluss eines Abschnitts 3,4. 4,10. 123. — M. 1,3. 99. 101. 2,7. 55. एतद्विज्ञाय्यकं श्रोतुं पां कौतूहलं हि मे R. 1,1,7. Manu. 5. 10. 20. Ragh. 1,10. 13. 69. 72. Çik. 5,14. 8,3. Spr. (II) 1249. 1440. 3804. सत्यं सत्यं हि नारद 7135. Kathâs. 4,13. 28. 18,136. Hit. 19,19. nach verschiedenen Demonstrativis: स हि M. 1,93. 7,93. 186. 10,31. 122. R. 1,9,66. Ragh. 4,5. तं हि M. 1,94. 4,147. तद्धि 14. 8,104. 9,307. 12,35. तस्य हि 7,12. तेन हि Çik. 5,15. तो हि M. 8,418. तयोर्हि 9,133. ते हि 313. एतद्धि 1,59. 9,306. 308. 12,93. Kathâs. 18,236. एतेभ्यो हि M. 11,3. एषां हि 7,71. इमं हि 9,6. इमौ हि R. 1,4,21. तथा हि Çik. 31. Pañkat. 221,6. Hit. 7, 5. 12,11. Sarvadarçanas. 9,21. 163,11. 174,18. इति हि Spr. (II) 3053. nach Relativis: यो हि M. 3,212. 4,31. 5,75. Spr. (II) 5656 — 5678. यद्धि यत् 370. यच्चद्धि M. 2,4. यं यं हि MBh. 3,2202. यथा हि Sarvadarçanas. 10,5. यथा यथा हि M. 4,20. 10,128. MBh. 3,2285. यदि हि M. 3,61. nach oder mit Interrogativis: को हि MBh. 1,3957. 5978. R. Gorr. 1,1,2. Kathâs. 18,246. किं हि MBh. 12,8972. किमर्थं हि R. 1,73,15. कथं हि MBh. 3,2175. 2203. किं कुपितो ब्रूषे R. 2,64,29. Spr. (II) 371. 5610. nach अपि M. 2,112. 3,14. 9,100. 129. 236. 10,129. MBh. 1,3246. R. 1,4,16. 24. Spr. (II) 3594. 3990. 7395. Vaitân. Bhp. S. 69,18. nach एव M. 2,230. 7,66. 8,413. 11,84. Bhâg. 1,11. R. 1,52,18. 53,23. Spr. (II) 3703. 5276. Sarvadarçanas. 7,16. nach चैव M. 2,105. 3,116. 207. 212. 222. 4,25. 5,9. 7,120. 11,184. MBh. 3,2179. Sarvadarçanas. 75,3. 14 (im Verse). nach इव Spr. (II) 706. 6896. nach einem verbum finitum am Ende eines Verses M. 6,89. MBh. 2,808. 3,1273. Sarvadarçanas. 99,5. 14. in zwei auf einander folgenden Sätzen: गत्वा हि यापि-ष्ये त्वां मनो हि मम तां गतम् MBh. 3,2241. R. 1,64,19. — 2) *aufmunternd beim Imperativ oder Potentialis doch:* युक्ष्वा हि केशिना हरी RV. 1,10,3. 14,12. वसिष्ठा हि वर्त्तवाणि 26,1. 48,11. स मन्दस्वा ह्यन्धसः 3,41,6. तद्धि दर्शय R. 1,56,3. मय्येव प्रहरेर्हि MBh. 1,5985. 3,2891. Spr. (II) 2513. पश्यामो हि *wir wollen doch sehen* Kathâs. 18,266. — 3) *allerdings, ja wohl, in der That:* पुत्रं हि पर्षदो यति द्विषः RV. 8,26, 5. तार्क्ष्यवरीदस्तु मे ऽत्रापीत्यस्तु कौरव्यव्रताम् TS. 7,1,6,11. Çat. Ba. 3, 8,3,4. 14,5,2,14. P. 8,2,93. देवी वाचमुपासते हि वस्वः सारं तु u. s. w. *wohl — aber* Spr. (II) 2954. — 4) häufig blosser Versfüller, z. B. MBh. 5,6033. Ragh. 1,69. insbesondere zwischen Vocalen zur Entfernung eines Hiatus M. 1,23. 2,52. 12,66. MBh. 3,2894. R. 1,1,37. am Ende eines Pâda: पश्याम्यस्मिन्वने रामनुष्यनिषेविते MBh. 3,2838. 2716 (ed. Bomb. सु st. क्षि). Vaitân. Bhp. S. 105,6. H. 131. zur Gewinnung einer Länge H. 57. erscheint im selben Satze sogar doppelt: आत्मा श्लोको हि MBh. 1,6124. योगक्षेमो हि राज्ञो हि 12,2308. अन्यो हि नाम्नाति कृतं हि कर्म मनुष्यलोके मनुष्यस्य कथञ्चित् Spr. (II) 388. भार्या हि परमो सख्यः 4577. गुरुगुरुतरस्त्वं हि श्लोकमाकृ पितामकृः R. 7,37,5,47. स्वल्पं हि नहि नः सुखम् 73,14.

1. क्षिंस्, क्षिंसति (क्षिंसायाम्) Dhâtup. 29,19. Vop. 14,3. क्षिंसति und क्षिंसेति P. 6,1,188. अक्षिंसत्, क्षिंसावस् Çat. Ba. 1,2,4,15. क्षिंसातस् 1,4,5. क्षिंसेतन् 7,4,16: क्षिंक्षिंस, क्षिंक्षिंसिम, क्षिंक्षिंसीस् AV. 12, 3,18. क्षिंसीत्, क्षिंसीष्ट, क्षिंसिष्यति, med. क्षिंसते AV. 12,4,12. क्षिंसित्वा. *verletzen* (auch *tödtlich*), *ein Leid anthun; schädigen, stören:* न यं क्षिंसन्ति धीतयः RV. 6,34,3. 10,15,6. 121,9. VS. 4,1. 2. 5,3. 34. पदा Âit. Br. 5,1. न हि स्वः स्वं क्षिंसिषुः TS. 5,1,2,1. TBr. 2,3,2,5. मनः AV. 2,12,2. 5,17, 7. मेममन्ये मृत्यवो क्षिंसिषुः 2,28,1. 5,18,12. 19,1. 6,120,1. 12,1,34. Çat. Br. 1,6,2,7. 4,6,9,1. 7,1,1,38. 4,1,18. 10,2,2,18. Kâṭj. Çr. 4,12,24. Âçv. Gṛhj. 1,17,9. 2,1,10. Ait. Up. 4,2,3. यासप्तमास्तस्य लोकान् Mund. Up. 1,2,3. — क्षिंसन्ति u. s. w. M. 4,162. 5,42. 45. 6,69. 7,73. 8,279. 345. 9,316. Bhâg. 13,23. MBh. 1,2915. 3911. 3,1091. 4,446. R. 2,35,13. R. Gorr. 1,41,29 (सर्वत्र क्षिं° zu lesen). 3,5,20. 4,8,9. 17,27. 5,29,25. Suçr. 1, 94,16. असून् 2,494,14. Vikr. 16. Spr. (II) 3232. 3510. 5269. 5504. 7275. 7392. Bhâg. P. 6,9,34. 18,46. 7,10,19. द्रव्याणि M. 8,288. वृतानुदकम् u. s. w. R. 2,91,9 (100,8 Gorr.). व्रतम् M. 2,180. Vaitân. Bhp. S. 42, 14. 58,31. 79,17. Bhp. 4,20. 8,22. Sarvadarçanas. 37,1. इन्द्रस्य विक्र-मम् Bhatt. 6,88. अपि क्षिंस्याज्ञागन्नाथो मत्पापातकपञ्चकम् *so v. a. in Nichts*

machen Vop. 23,17. — हिंसि st. हिनस्मि MBh. 3,13369. हिंसे (so ed. Bomb.) 1. praes. med. 4,728. हिंसामि st. हिनस्मि R. 5,2,22. हिंसति st. हिनस्ति Sâmavidh. Br. 2,4,11. Spr. (II) 393. 3877. 4737, v. l. 5609. हिंससे Mânav. P. 132,15. कालो हिंसते धर्मबीर्यम् MBh. 13,4556. हिंसेत 3,13668. निहिंसिद्य Bhatt. 14,57. यदिंसीत् 15,78. मा हिंसीः MBh. 3,13269. मा हिंसिषुः R. 2,25,18. हिंसिष्ये MBh. 1,5997. 12,6628. Bhâg. P. 8,20, 12. हिंसितुम् MBh. 1,7864. 12,4800. सद्य वा मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवाभ्यते प्रज्ञासक: Raghu. 8,45. Spr. (II) 3304. pass. हिंस्यते wird geschlachtet 4004. partic. हिंसित AV. 5,28,6. MBh. 1,566. 3,1091. 10799. 13685. R. 2,39,4. 3,35,14. 4,16,40. 17,28. 7,17,41. Spr. (II) 393. 3877. 4737. Mânav. P. 112,10. n. nom. act.: हिंसिते प्रतिहिंसितम् Spr. (II) 1874. हिंसितवत् R. 3,35,18. — Verkürztes desid. von 1. हन्.

— caus. हिंसयति dass. Dhâtup. 34,38. MBh. 3,8553. 13030. 12,6549. 13,1676.

— desid. जिहिंसिषति verletzen u. s. w. wollen Çat. Br. 9,1,2, 35. 2,4,2.

— ष्यति act. sich gegenseitig ein Leid anthun P. 1,3,15, Schol.

— घा Jmd ein Leid zufügen: ज्ञले मत्स्यानिवाहिंस्युर्दुर्बलान्बलवत्तरा: Spr. (II) 5213, v. l. med. sich befehden: ज्ञक्रुवृचीवत्तो राष्ट्र घाहिंसत्त Pañcav. Br. 21,12,2.

— उप = simpl.: यथा दुर्गाश्रितानेतान्नोपहिंसन्ति शत्रव: M. 7,73. देवत्वं ब्राह्मणात्वं वा लोभेन 11,26. रामार्थम् R. 2,9,4. med. उपहिंसेत MBh. 13,4726.

— नि s. निहिंसन.

— प्रति, partic. °हिंसित n. das Vergelten eines zugefügten Leides Spr. (II) 1874. — Vgl. प्रतिहिंसा.

— वि = simpl.: यबुधा बुधान् Spr. (II) 857. 1496, v. l. R. 1,14,15 (16 Gorr.). यविहिंस्यान्यान् MBh. 3,8598. धान्यम् M. 8,238. partic. विहिंसित MBh. 12,6628. R. 2,72,44 (74,49 Gorr.). R. Gorr. 2,74,53. Bhâg. P. 5,26,19. 10,7,32. 85,28. Vgl. विहिंसक fgg. — caus. dass.: तस्माद्न वर्धयेद्न्यं न चात्मानं विहिंसयेत् MBh. 12,11016.

2. हिंस् (= 1. हिंस्) adj. verletzend, ein Leid zufügend in सु°.

हिंस (von 1. हिंस्) 1) adj. verletzend, schädigend: घोरे हिंसानामपे दिंगुमा कृधि RV. 10,142,1. — 2) f. घा a) Leidzufügung am Leibe oder Gute, Schädigung AK. 3,4,28,113. 30,231. H. 371. 830. an. 2,596. Med. s. 13. Hall. 2,222. 5,24. im Gegensatz zu विद्या Nir. 14,5. 9. — Maitrâyp. 3,5. सकला प्राणिनां हिंसाम् M. 4,48. समा-चर् 5,43. fg. 8, 285. 293. 297. °प्राया कृषि: 10,63. 83. 11,68. 141. 145. 12,7. Jâtâk. 3, 240. Bhâg. 18,25. Kâm. 6,1,7. Nîlak. 23 (pl.). R. 3,1,22. °विहार 51, 20. Suçr. 1,71,1. °शील 323,8. °रुचित्व R. 5,29,28. °रत Spr. (II) 225. 3437, v. l. 6943 (= MBh. 13,1664). 7391. Râga-Tar. 2,33. 3,27. Verz. d. Oxf. H. 80,b,6. fgg. 103,b,16. Bhâg. P. 2,6,8. 3,29,8. 5,9,13. Pañcat. 60,6. Sarvadarçanas. 43,10. 115,14. हिंसोपकारिन् Hem. Jogaç. 3,72. लोक° R. 3,28,19. भूत° Verz. d. Oxf. H. 103,b,16. पशु° 17. Bhâg. P. 7,15,7. प्राणि° Râga-Tar. 1,325. 3,79. सङ्घहिंसा (so mit der ed. Calc. zu lesen) 1,133. घरि° vom Feinde kommend Raghu. 5,37. घ° M. 5,44. 10,63. 11,238. Jâtâk. 3,313. MBh. 3,13885. °रुचि R. 5,30,3. Spr. (II) 819. fgg. 1426. 6638. 6715. Verz. d. Oxf. H. 80,b,9. 12. 103,b,16. Personificirt ist die Himsâ die Gattin Adharma's Mânav. P. 50,29. eine Tochter Lobha's von der Nishkṛti Bhâg. P. 4,8,3. — b) Asteracantha longifolia Ratnam. 54 wohl fehlerhaft für हिंसा.

हिंसक (wie eben) adj. Andern Leid zufügend, schädigend P. 3,2, 146. Jâtâk. 3,136. MBh. 14,2334. Spr. (II) 4737, v. l. 7390. H. 1348. Hem. Jogaç. 2,49. भर्तृ° Jâtâk. 3,298. fg. प्राणि° Spr. (II) 3305. मृग° Verz. d. Oxf. H. 22,a,14. कुल° Mânav. P. 32,20. घ° M. 5,45. MBh. 3,13885. 7,6049. 12,12715. R. 2,100,35 (118,31 Gorr.). सद्य 7,33,18. हिंसक m. = हिंस्रपशु, सर्ववविद्वाल्मण und शत्रु Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. हैंसकायन.

हिंसन (wie eben) n. das Leidzufügen, Verletzen, Schädigen Vop. 11, 3. प्राणिनाम् M. 2,177. Jâtâk. 2,299. MBh. 1,1013. Hem. Jogaç. 3,35. Bhâg. P. 1,15,37. घारण्यपशु° M. 10,48. प्राणि° Jâtâk. 1,33. ब्रह्म° MBh. 3,10799. Harîv. 14773.

हिंसनीय (wie eben) adj. dem Leid angethan werden darf MBh. 12, 10693. पशव: so v. a. zu schlachten Kull. zu M. 5,41.

हिंसाकर्मन् n. eine auf Jmdes Schädigung gerichtete Zauberhandlung AK. 3,3,19.

हिंसाह (von हिंसा) m. Tiger Taik. 2,5,4.

हिंसालुक (wie eben) m. ein bissiger —, boshafter Hund Hâla. 223.

हिंसावाद m. Titel einer Schrift Hall 191.

हिंसीर oder हिंसीर Uṇâdis. 5,18. adj. boshaft; m. Tiger Ujjval.

हिंस्य (von हिंस्) adj. dem man Leid anthun darf: पशव: Çiksh. Gaṇ. 2,16. M. 5,41. MBh. 1,6398. 14,1664. 15,238. घ° 12,13081. Raghu. 2,57.

हिंस्र (wie eben) 1) adj. (f. घा) Leid anthuend, verletzend, wehthuend, schädigend; m. ein Mann, der Andere verletzt, der ein grausames Handwerk treibt P. 3,2,167. Vop. 26,158. AK. 3,1,38. 3,4,24,226. H. 368. an. 2,472. Mudr. r. 102. Hall. 2,217. RV. 10,87,3. 5. 9. M. 3,164. 9, 80. 12,56. fg. 59. MBh. 13,5485. Spr. (II) 3096. 6217. वेश्याङ्गना, नृपनीति 6739. Vaitâl. Pañc. S. 15,23. 16,5. 36. 86,21. Bhâg. 12,15. 21,6. Lalitav. 2,15. Pañcat. 1,6,49. पशु H. 1216. °पक्ष Jâtâk. 3,240. Hem. Jogaç. 3,76. वाच् Bhâg. P. 3,19,21. यग्निहोत्रादि 7,15,48. °कर्मन् adj. Vaitâl. Pañc. 19,7. m. Raubthier Raghu. 2,27. 62. 14,28. am Ende eines comp. strong verfahrend mit: दुष्टसामन्त° M. 9,310. घ° Kâd. Ç. 2,2, 12. Spr. (II) 825. Mânav. P. 50,72. Bhâg. P. 8,16,49. Pañcat. 4,3,36. वाच् MBh. 5,857. — 2) m. a) Bein. Çiva's und Bhîmasena's Uṇâdis. im ÇKDr. — b) N. pr. eines grausamen Brahmanen Harîv. 1189. — 3) f. घा a) Nardostachys Jatamansi (जटामांसी) H. an. Med. Râgân. 12, 97. = काकादनी H. an. = एलावली (?) Med. Coix barbata Roxb. Çabdar. im ÇKDr. — Suçr. 2,106,2. 498,13. — b) Fett, adeps (वसा) H. an. — c) = नाडी Ader u. s. w. Çabdar. im ÇKDr. — 4) n. Grausamkeit: हिंसाहिंसे M. 1,29. Mânav. P. 48,49. — Vgl. वि°.

हिंस्रक (von हिंस्र) m. ein verletzendes, gefährliches Thier, Raubthier Çabdar. im ÇKDr.

हिंस्रजन्तु m. dass. Spr. (II) 161. Pañcat. 1,11,23.

हिंस्रपशु m. dass. Taik. 2,5,3. Hall. 5,46. Spr. (II) 1602.

हिंकविकनिक n. प्रज्ञापते हिं° N. eines Sâman Ind. St. 3,225,a.

किक् (onomatop.), किकति und °ते Dhātup. 21,1 (घव्यके शब्दे). *schluchzen, singultire:* किकति, °ते, कणकूयति Pat. in Mahābh. lith. Ausg. 1,29,a. किकेत् Vārtt. Bṛh. S. 51, 22. किकत् Suçr. 2,495,11. किकमान 12. किकते Kāraka 8,13. किकित n. *singultus* Pat. in Mahābh. lith. Ausg. 2,313,a.

— caus. किकयति *Schluchzen bewirken* Suçr. 2,494,10. — med. °ते v. l. für किष्क् (किंसायाम्) Dhātup. 33,12.

किकाल (?) *der Rock der buddhistischen Religiosen* Hiouen-thsang 1,33.

किक्का (von किक्) f. AK. 3, 6, 2, 3. *Schluchzer, singultus* H. 468. Wise 324. Kāraka 8,13. Suçr. 1, 120, 20. 121, 9. 173, 7. 2, 494, 6. fgg. (14 Ableitung von किम्). Verz. d. B. H. No. 955. 965. fgg. 972. 975. 996. Verz. d. Oxf. H. 312, *b*, 29. fgg. 316, *a*, 6 v. u. 357, *a*, No. 849. fg. Hariv. 13844. R. Gorr. 2, 65, 46. 6, 28, 26. Vet. in LA. (III) 13, 19. महा° Kāraka 8,13. Suçr. 2,495,10. Sehr häufig किक्का und किष्का, bei Viṣṇu. auch किष्मा geschrieben.

किक्किका f. dass.: शुकानामपि सर्वेषां किक्किका प्रोच्यते ध्वनिः MBh. 12, 12068. *das Röcheln* Schol. zu Kir. Ça. 1194, 2.

किक्किन् adj. *mit dem Schluchzer behaftet* Suçr. 2,495,12. 496,21.

किङ् interj. किङ्कृ *einen gurrenden Laut ausstossen* (wie die Kuh gegen das Kalb): किङ्कृणोत् RV. 1, 164, 28. किङ्कृणवती 27. Im Ritual vom *Ausstossen* von किङ् *und ähnlichen winselnden Lauten* AV. 9,6,45. Çat. Br. 1,4,2,1. 2. 4,2,2,11. किं चकार 2,2,4,12 (wohl किङ् zu lesen; vgl. किङ्कुः Kaṭh. Up. 1,12,4). किङ्कृत्य 2,1,2,31. 14,9,2, 9. TS. 2,5,2,1. किंऽइति किङ्कृत्य Âçv. Ça. 1,2,3. 5. partic. किङ्कृत VS. 22,7. Pāraṇ. Br. 12,10,13. अभिकिंकार् *angurren, zuwinseln* Kauç. 62. जातं पुत्रं पशवोऽभिकिङ्कुर्वन्ति Pāraṇ. Br. 12,10,13. Kāṭh. 27,9. Kaush. Up. 2,11.

किङ्कर्तृ nom. ag. *der den Laut* किङ् *ausstösst* TS. 3,3,2,1.

किङ्कार् m. 1) *der Laut* किङ् VS. 22,7. Ait. Br. 3,1. 23. Çat. Br. 2, 2,4,12. 4,4,4,2. Çāṅkh. Br. 11,1. Kāṭh. Ça. 2,4,5. Lāṭ. 1,12,19. Kaṭh. Up. 2,2,1. Kaush. Up. 2,11. कुंऽइति किङ्कारः Lāṭ. 7,11,7. — 2) *Tiger* Çabdārthak. bei Wilson. — Vgl. हि°.

किङ्ग m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 58,52. — Hariv. 8443 fehlerhaft für किङ्ग.

किङ्गलाची f. N. pr. einer Jakshiṇī Tīrān. 46.

किङ्गि m. n. Trik. 3,5,9. 1) m. *Ferula asa foetida* Hariv. 12680. Bhāg. P. 4,6,17. Hiouen-thsang 2,187. °रस H. an. 3,46. Med. s. 68. — 2) n. *das aus den Wurzeln der Ferula asa foetida gewonnene Harz, Teufelsdreck.* In der Medicin und als Gewürz (vgl. सूपाङ्ग) viel gebraucht; kommt aus Persien. AK. 2,9,40. Trik. 2,9,11. 3,3,333. H. 422. Hāl. 2, 462. Uṇâdik. zu Uṇâdis. 1, 37 (m.). Rāgān. 6, 75. Bhāvapr. 3. °क्ष्वेषु MBh. 13,4363. Hariv. 8443 (mit der neueren Ausg. zu lesen °किङ्गार्द्रक°). Suçr. 1, 139, 4. 140, 13. 145, 8. °लाले निर्यासौ 13. 217, 3. 19. 314, 16. 376, 7. 2, 275, 13. 371, 2. 535, 16. Vārtt. Bṛh. S. 77, 7. — Vgl. नाडी°.

किङ्गुक m. = किङ्गु 1) MBh. 3,11574.

किङ्गुनाडिका f. = नाडीकिङ्गु Rāgān. im ÇKDr.

किङ्गुनिर्यास m. 1) *Asa foetida* H. an. 3,46. Med. s. 68. — 2) *Azadirachta indica Juss.* (निम्ब) AK. 2,4,3,42. H. an. Med. Hir. 269 (किंगु° gedr.). Ratnam. 31.

किङ्गुपत्र 1) m. *Terminalia Catappa* (इङ्गुदी) Rāgān. 8,48. — 2) f. ई = किङ्गुपर्णी Rāgān. 6,72; vgl. auch AK. 2,9,40.

किङ्गुपर्णी f. *eine best. Pflanze*, vulgo वंशपत्री (नाडीकिङ्गु, शिवाटिका) Ratnam. 218.

किङ्गुल 1) m. n. *Mennig* oder *Zinnober* Trik. 2,9,35. H. 1061. Med. l. 146. Hir. 155. Hālī. 2,466. Ratnam. 289. Rāgān. 13,59. Vārtt. Bṛh. S. 77,30. पारदकिङ्गुले Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761. Kālikāpur. 5,201. — 2) f. या N. pr. *a*) der Familiengottheit der Dadhiparṇa Verz. d. Oxf. H. 19, *b*, 1. — *b*) einer Gegend ÇKDr. nach dem Tantrakūṭapīṭhan. — 3) f. ई *Solanum Melongena* AK. 2, 4, 4, 2. Med. = वृक्षती Bhāvapr. im ÇKDr. — Vgl. केकुल.

किङ्गुलक 1) = किङ्गुल 1) MBh. 3,11617. 16279. Vārtt. Bṛh. S. 54, 110, v. l. — 2) f. °लिका *Solanum Jacquini* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. नृपकिङ्गुलिका.

किङ्गुलाक्षा f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 28.

किङ्गुलि m. = किङ्गुल 1) Gaṇâdh. im ÇKDr.

किङ्गुलु m. AK. 3,6,2,20. dass. H. 1061, Schol. °क dass. Vārtt. Bṛh. S. 54, 110.

किङ्गुशिराटिका f. angeblich = वंशपत्री ÇKDr. und Wilson nach Ratnam. Unsere Hdschr. 218 liest richtig शिवाटिका, welches auch gemeint ist, da किङ्गु mit dem vorangehenden नाडी zu verbinden ist.

किङ्गूल m. *eine best. Pflanze* Pāṇ. 1,7,24 (v. l. किञ्जल). n. *eine best. Wurzel* (मधुमूल) Çabdar. im ÇKDr.

किञ्ज m. = किञ्जल Çabdar. im ÇKDr.

किञ्जल m. *Barringtonia acutangula* H. 1145. Rāgān. 8,154. Pāṇ. 1,7,24, v. l. — Vgl. इञ्जल.

किञ्जीर m. *Fusskette eines Elephanten* Trik. 2,8,40. H. 1229. Hālī. 2,58.

किट् कैटति v. l. für चिट् (माक्रोशे) Dhātup. 9,30.

किट् s. कीट्.

किटिम्ब 1) m. N. pr. eines von Bhīmasena erschlagenen Rākshasa MBh. 1,2253. °वध 5927. fgg. °जित् Bein. Bhīmasena's Trik. 2,8,13. °निषूदन desgl. H. 708. °भिद् desgl. Buddhaprabhāsa im ÇKDr. — 2) f. या N. pr. der Schwester Hiḍimba's, mit der Bhīmasena den Ghaṭotkaca zeugte, MBh. 1,220. 2255. 2462. 5940. fgg. 3,554. fgg. Kām. Nītis. 17,57. Bhāg. P. 3,22,30. °पति m. Bez. Hanumant's Çabdar. im ÇKDr. °रमण desgl. Trik. 2,8,7. — Vgl. केटिम्ब fg.

किण्ड्, किण्डते Dhātup. 8,15 (गत्यनादरयोः).

— परि in der Stelle पर्यकिण्डत्त (so ed. Calc.) शुष्काः काकमण्डत्यः Daçak. 151,6. *the dry crow's nests were deserted* Wilson.

किण्डक und रत° m. als Bedeutungen von नाडीतरंग H. an. 3,10. Med. g. 58.

किण्डन n. = यान, क्रीडा und रत H. an. 3,436. = भ्रमण und रत Med. n. 159. = लेखन Viçva im ÇKDr.

किण्डिक m. *Astrolog* Hir. 259.

किण्डिर m. = किण्डीर Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. डिण्डिर.

किण्डी f. ein N. der Durgā Trik. 1,1,51. °प्रियतम Bez. Çiva's Çab-

sar. im ÇKDa. क्षिण्ड° Hin. 8.

क्षिण्डीर् Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4, 30. 1) m. a) *os Sepiae* (s. समुद्रफेन) AK. 2, 9, 105. Trik. 1, 2, 14. Med. r. 241. Sin. D. 287, 16. — b) *Solanum Melongena* und *Momordica Monordica* Med. — c) = रुचक Uṇâdis. im ÇKDa. — 2) n. *Granatapfel* Hin. 270. — Vgl. डिण्डीर्.

क्षिण्डुक m. unter den Beinamen Çiva's MBh. 12, 10414.

1. क्षित् (partic. von 1. धा) P. 7, 4, 42. 1) adj. = समर्थ AK. 3, 4, 28, 89. = पक्व, गत und घृत H. an. 2, 210. Med. t. 75. a) *gesetzt, gelegt, gestellt; gelegen, liegend, enthalten, befindlich in:* गुहा ṚV. 4, 5, 8. Kaṭhop. 2, 12. त्रिधा ṚV. 4, 58, 4. क्षितो क्षितेधरुणो वनेषु 5, 1, 8. 9, 113, 7. बाहोस्ते बलं क्षितम् 1, 80, 4. बाधे 6, 30, 4. एतेषु (वसुषु) क्षोदं वसु सर्वं क्षितम् Bṛh. Âr. Up. 3, 9, 3. मदे *versetzt in* ṚV. 8, 82, 4. *angespannt:* रथे (oder zu 2. क्षित्) 9, 21, 4. AV. 3, 6, 20. 10, 2, 24. 13, 4, 10. वने *befindlich* 11, 2, 24. 8, 24. रेतः एव क्षितं प्र जनयति *eingebracht* TBr. 2, 1, 9, 2. — b) *ausgesetzt* (als Preis); *angestellt* (ein Wettlauf) ṚV. 4, 41, 6. धने क्षिते 1, 40, 2. 6, 45, 2. घाति 9, 32, 5. — c) *zurechtgemacht:* नव्यं तदुक्थ्यं क्षितम् ṚV. 1, 105, 12. *geordnet, zugetheilt:* नाकं रुतेषे शुभिरुक्षभिर्क्षितम् 34, 8. याम्येषु पप्रुषु *gerechnet zu* TS. 5, 4, 4, 3. *beigelegt:* Name AV. 3, 13, 3. 11, 1, 23. *aufgestellt:* त्वमग्ने यज्ञानां होता क्षितः ṚV. 6, 16, 1. — d) *bestimmt, gehörig:* पूर्वपेयं हि वां क्षितम् ṚV. 1, 135, 4. भाग 2, 38, 7. 8, 89, 3. 5, 42, 3. — e) *genehm, zuträglich, ersprießlich, frommend; gewogen, günstig;* mit dat. (P. 5, 1, 5), seltener loc.; später auch gen. (Vop. 5, 23) ṚV. 4, 57, 1. यदि तत्र ते क्षितम् *gelegen, passend* 10, 16, 3. नर्मसे क्षिता 8, 25, 7. शुभिक्षितो जरिमा सू नो अस्तु 10, 59, 4. सखा 136, 4. AV. 4, 1, 7. यजमानाय Ait. Br. 2, 18. 32. Çat. Br. 6, 1, 2, 14. fg. श्रोत्रिभ्यः 13, 8, 4, 9. अमृते AV. 11, 7, 11. मनुष्याय क्षिततमं वरम् Kauṣ. Up. 2, 1. — शस्त्राणि M. 4, 19. इष्टे चैव क्षितं चैव तव चैव कुलस्य च MBh. 1, 6167. वचनं क्षितमात्मनः 3, 2816. 5, 5433. R. Gorr. 2, 43, 17. विश्वासस्तत्र नो क्षितः (v. l. für नोचितः) Spr. (II) 4838. 7352. 7393. Speisen u. s. w. 7394. Sṛṣṭi 1, 72, 17. fgg. 155, 11 u. s. w. ब्रह्मण्यं ब्रह्मणे क्षितम् Hall. 2, 231. यदि वो क्षितम् *wenn es euch recht ist* Kathâs. 45, 231. in comp. mit dem im dat. oder gen. gedachten Begriffe P. 2, 1, 36. आत्मक्षितं वाचयमक्षितं कौशिकस्य च R. 1, 63, 38. धर्मं जगद्धितम् Hem. Joḍaç. 2, 48. टीका शिष्यक्षिता Verz. d. B. H. No. 859. von Personen *wohlgesinnt, es gut mit Andern meinend* M. 9, 32. MBh. 3, 2275. R. 2, 81, 12. Spr. (II) 961. 4797. 6648. 7398. Vop. 3, 144. आत्मानं यो ऽभिसंधत्ते सो ऽन्यस्य स्यात्कथं क्षितः MBh. 12, 5471. सर्वभूतेषु R. 1, 1, 3. क्षिता भवत भर्तरि (werden Rosse angeredet) 2, 45, 14 (43, 16 Gorr.). in comp. mit der Ergänzung: प्रजा° 51, 21. पौर° R. Gorr. 2, 12, 28. सर्वभूत° Spr. (II) 7511. Brahma-P. in LA. (III) 48, 19. — 2) f. धा a) Bez. *best. Adern:* क्षिता नाम नाड्यो द्वासप्ततिः Çat. Br. 14, 5, 4, 21. 6, 22, 4. 7, 4, 20. Kauṣ. Up. 4, 19. 6, 19. क्षिताक्षिता नाम नाड्यः Jîv. 3, 103. Vgl. क्षिरा. — b) *Damm:* °अङ्ग M. 9, 274. — 3) n. a) *Preis:* क्षितं ज्रयाय ṚV. 10, 101, 7. — b) *Ersprießliches, Alles was frommt; Frommen, Wohl;* sg. und pl. mit dat. oder gen. P. 2, 3, 73. Vop. 5, 16. नष्टं क्षितमलसबुद्धिविज्ञाने so v. a. *ein guter Rath* Spr. (II) 3472. चित्तयेदितमात्मनः M. 4, 258. विद्ध्याक्षितमात्मनः 7, 57. गुरोर्हितं कुर्यात् 2, 105. 8, 312. 390. क्षितं तस्य समाचरेत् Spr. (II) 5395. भर्तुक्षितमाचरेत् 1448. राज्ञो वृद्धस्य सततं क्षितं चर R. 2, 24, 22. क्षितं चास्याचरेत् Jîv. 1, 27. ब्रह्मणे क्षितमात्मनः R. 2, 82, 72. क्षितं चोपदिशत्सु M. 2, 206. प्रीत्येव ब्रुवती क्षितम् Kathâs. 22, 159. परक्षितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये Spr. (II) 1460. करिष्यति यथावद्वः प्रियाणि च क्षितानि च R. 2, 45, 7. क्षिताय नः MBh. 1, 1116. R. 2, 82, 29. Varâh. Bṛh. S. 21, 22. 31, 5. Spr. (II) 6367. क्षिताय नाक्षिताय स्यान्महान् 7396. LA. (II) 86, 11. लोकक्षिताय Çik. 64, 21, v. l. 194. गोब्राह्मणक्षिताय Wessa, Kṛishṇâ. 306. Spr. (II) 4526. पितेव क्षिते निषुङ्क्ते 4807. प्रजानां च क्षिते रतः R. 4, 16, 12. प्रियक्षिते रतः M. 2, 235. R. 1, 7, 4. गोब्राह्मणक्षिते रतः M. 11, 75. R. 2, 34, 22. 58, 28. 3, 53, 12. 69, 3. Brahma-P. in LA. (III) 48, 15. मत्क्षिते निविष्टः so v. a. *ein ersprießlicher Rath* R. 1, 7, 18. कुर्याच्चलमाचार्यस्य क्षितेषु M. 2, 191. क्षितेषु चैव लोकस्य सर्वान्भृत्यान्नियोजयेत् 9, 234. 4, 35. Spr. (II) 3909. यो क्षितेषु स्यात् 6836. वक्ता क्षितानाम् 490. क्षितानामुपदेष्टा 4260. क्षितार्थं नोन्दस्य R. 1, 7, 11. Spr. (II) 7397. परलोकक्षितार्थाय R. 1, 62, 9. Wessa, Kṛishṇâ. 297. सर्वस्य क्षितप्रेप्सुः M. 5, 46. °प्राप्ति Râja-Tar. 5, 184. — Vgl. द्वि° (*Feind* auch Bhâg. 10, 9. Harîv. 4268. तदक्षितयुवति *ihm nicht gewogen* Spr. (II) 6128), सर्व°, सर्शो°, तक्षित, तिरो° (unter तिरस्), दुरक्षित, देव°, पर°, पुरो°, मनुरक्षित, लोक°, सत्य°, सर्व°, सु°, स्व°.

2. क्षित् (partic. von 1. क्षि) adj. *getrieben, gespornt, im Lauf befindlich; angewiesen, aufgefordert:* Ross ṚV. 9, 70, 10. 86, 13. धिया 25, 2. 44, 2. धरुं क्षितो भवति वाजिनाय 10, 71, 10. उत्तर्यस्मै मरुतो क्षिता इव 1, 166, 3. मर्यो न वाजिनं क्षितम् 8, 43, 25. धीतिभिः 49, 4. 9, 68, 7. AV. 13, 3, 21.

क्षितक m. *Kind* Râjân. im ÇKDa.

क्षितकर adj. *wohlthuend, nützend, Jmdes* (gen.) *Wohl befördernd, frommend* Varâh. Bṛh. S. 8, 53 (vgl. die Uebersetzung). नृणाम् Spr. (II) 5763.

क्षितकाम adj. *das Wohl Anderer wünschend, wohlwollend:* सुहृद् Spr. (II) 7146. fg.

क्षितकाम्या f. *der Wunsch Jmd* (gen.) *wohlzuthun, — zu nützen;* nur im instr. Ind. St. 2, 1. M. 12, 117. Bhâg. 10, 1. MBh. 1, 1162. 3, 12131. Harîv. 7361. Pârâç. 2, 6, 20.

क्षितकारक adj. = क्षितकर. im Gegensatz zu शत्रु Spr. (II) 3878.

क्षितकारिन् adj. dass. Spr. (II) 5366. Râja-Tar. 4, 279. 625. Hem. Joḍaç. 2, 50. Sin. D. 312, 17. fg. स्वामि° R. 1, 8, 3. 7, 1, 20. °कारित्व n. nom. abstr. Sin. D. 312, 17. अक्षितकारिन् und अक्षितकारित्र n. ebend.

क्षितकृत् adj. dass. Vâsn. 1, 6, 114. Spr. (II) 3989. 4930. Varâh. Bṛh. S. 47, 18. Kathâs. 46, 214.

क्षितनामन् m. N. pr. eines Mannes P. 6, 4, 170, Vârtt. — Vgl. क्षैतनाम und °नामन.

क्षितप्रणी m. *Späher* Çârdar. im ÇKDa. — Vgl. प्रणिधि.

क्षितंप्रयस् adj. *der die Opferspeise aufgestellt hat* (vgl. ṚV. 2, 37, 4. 3, 32, 29) so v. a. *dessen Tisch gedeckt ist* ṚV. 8, 27, 7. 49, 7. 58, 18. 10, 61, 18. अनासः 112, 7.

1. क्षितबुद्धि f. *eine gute Absicht,* instr. *in guter Absicht* R. 2, 28, 5.

2. क्षितबुद्धि adj. *wohlgesinnt* Spr. (II) 4797.

क्षितंमित्र adj. *der gute Freunde hat:* König ṚV. 1, 73, 3. 3, 55, 21.

क्षितवचन n. *ein guter Rath* Hit. 42, 11.

क्षितवत् (von 1. क्षित) adj. *Nutzen —, Vortheil bringend* Spr. (II) 3988.

क्षितक्षिरवंश m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 131, b, No. 230.

क्षितक्षित m. N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 6,394. 415.

क्षिसाधायिन् (1. क्षित + धा°) adj. = क्षितकर्. Davon °धायिता f. nom. abstr. Spr. (II) 7017.

क्षितानुबन्धिन् (1. क्षित + ब°) adj. *gute Folgen habend* Kām. Nītis. 11,42. Spr. (II) 7395.

क्षितार्थिन् (1. क्षित + ब°) adj. *dem es um sein oder Jmdes* (gen.) *Wohl zu thun ist* R. 3,48,13. Spr. (II) 6812. Suçr. 2,148,4.

क्षितावत् (von 1. क्षित) adj. *der sein Gut versteckt hat:* पणि RV. 1,180,7.

क्षितावली (1. क्षित + धा°) f. *ein best. Heilmittel* Rāǵān. im ÇKDa.

क्षिताशंसा (1. क्षित + धा°) f. *Segenswunsch* AK. 2,4,30,220.

क्षिताक्षित (1. क्षित + अक्षित) ↑ adj. *zuträglich und (oder) unzuträglich, Nutzen oder Schaden bringend* Suçr. 1,196,18. 246,2. स्त्रीविवाहा: M. 3,20. n. *Nutzen und Schaden:* एषां मुक्ताय दुःखाय क्षिताक्षिताय Bhāg. P. 8,17,28. Davon adj. °तीय *darüber handelnd* Suçr. 1,72,15.

क्षिति (von 1. क्षि) f. *Sendung, Auftrag, Anordnung* in धर्म्म° und देव°.

क्षितीषिन् (1. क्षित + ई°) adj. *Gutes beabsichtigend, auf das Wohl Anderer bedacht* Spr. (II) 299. 6347. Davon nom. abstr. क्षितीषिता f. Kathās. 17,48.

क्षितोक्ति (1. क्षित + उ°) f. *ein guter Rath* Daçakum. im ÇKDa.

क्षितोपदेश (1. क्षित + उप°) m. *eine Unterweisung in dem was frommt, nützliche Unterweisung, guter Rath* MBh. 1,378. Kathās. 60,168. 74, 74. Pañcat. 227,25. TBa. Comm. 3,761,2. als Titel der bekannten Fabelsammlung Hit. Pr. 2. zweier medicinischer Werke Verz. d. Oxf. H. 327,a, N. 404,b, No. 35.

क्षितोपदेष्टृ (1. क्षित + उ°) nom. ag. *unterweisend in dem was frommt* Spr. (II) 1944.

क्षिर्नै indecl. = 2. क्षि. स क्षिनायमस्मयु: RV. 6,48,2.

क्षिसाल m. *Phoenix paludosa* AK. 2,4,6,35. Rāǵān. 9,91. Harīv. 3309. R. 3,39,13. 6,15,4. 108,20. Verz. d. Oxf. H. 17,b,11 v. u. 72,a, 21. 257,a, N. 3. Pañcat. 1,6,18. — Vgl. ताल und वकुलाल.

क्षिन्दु m. *ein Hindu* Mahābhāshya 23 im ÇKDa.

क्षिन्दुस्थान n. *Hindustan* Verz. d. Oxf. H. 339,a, 38.

क्षिन्दोल 1) m. a) *Schaukel:* °लीला Spr. (II) 6388. °क्रीडा Verz. d. Oxf. H. 218,a, 3. Vgl. डुल्. — b) Bez. *eines musikalischen* Rāga Saṅgītadarpaṇa im ÇKDa. — 2) f. घा *Schaukel* Hit. 181.

क्षिन्दोलक m. *Schaukel* Gal. im ÇKDa.

क्षिन्दोलय् (von क्षिन्दोल), °यति *sich schaukeln* Dhātup. 35,31,A. — Vgl. धन्दोलय्.

क्षिन्व्, क्षिन्वति (प्रीणनार्थ) Dhātup. 15,52. — Vgl. इन्व् und unter 1. क्षि.

क्षिन्वे m. Indra heisst Sohn des Hinva, etwa *Treiber* (von 1. क्षि) RV. 8,40,9. = प्रीणयितृ (vgl. क्षिन्व्) Sāy.

क्षिबुक (aus ὑπόγειον) n. in der Astrologie Bez. *des 4ten Hauses* Varāh. Bṛh. S. 40,6. Bṛh. 1,16. 3,17. 6,7. 11,7. Lacôté 1,16. Verz. d. B. H. No. 861 (क्षिवुक).

क्षिम् Uṇādis. 1,146. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. a) *Kälte, Kühlung:* क्षिमेनाग्निं प्रमन्दध्वाग्येषाम् RV. 1,116,5. 119,6. 3,62,3. क्षिमेनोविध्यद्वर्षुटम् 8,32,26. क्षिमेव पर्णा मुषिता 10,68,10. श क्षिमा श धृणेन 37,10. न घर्मस्तताप न क्षिमो जघान AV. 7,18,2. 13,1,46. die Nacht heisst Mutter der *Kühle* 19,49,5. क्षिम, घृणि Çat. Br. 3,1.3,14. Agni ist क्षिमस्य भेषजम् VS. 23,10. AV. 5,106,3. क्षिमा Naigh. 1,7 so v. a. रात्रि, wofür Dev. RV. 10,37,10 anführt. धर्म° adj. (लोक) Çat. Br. 14,8, 13,1. — शीतं मे क्षिमत्राणं विधीयताम् Pañcat. III,165. क्षिमार्त ad Çiç. 69,2. Spr. (II) 6433. क्षिमानिलनिवारण AK. 2,6,3,20. °क्षिष्टकिञ्जल्कमिव पङ्कजम् Raghuv. 15,52. विमृजति क्षिमगोरग्निमिन्दुर्मयूखै: Çiç. 54. °कल्पना Çāntiç. Sāh. in Verz. d. Oxf. H. 315,a, No. 749. — b) *Winter* Raghuv. 1,46. क्षिमशिशिरवसन्तमोम्मवर्षाशरत्सु Ṛtus. im ÇKDa. धर्मवर्षाक्षिमाकर Mārk. P. 100,49. — c) *Sandelbaum* H. an. 3,243. — d) *Mond* Çabdar. im ÇKDa. — e) *Kampfer* (wie alle Wörter für *Mond*) Rāǵān. im ÇKDa. — 2) f. घा (क्षिमा s. bes.) a) Bez. verschiedener Pflanzen und Stoffe: *Kardamomen* Rāǵān. 6,87. *Cyperus rotundus* 141. *ein best. Gras*, = चणिका 8,147. *ein best. Arzneistoff*, = रेणुका 6,112. angeblich (nicht in unsern Hdschrr.) = नागरमुस्ता und पृक्का Rāǵān. im ÇKDa. — b) ein N. der Durgā H. ç. 52; vgl. क्षिमा. vielleicht ist aber क्षि मा st. क्षिमा zu lesen. — 3) n. AK. 3,6,3,22. a) *Schnee* (selten *Eis*) AK. 1,1,3,19. H. 1072. H. an. Med. m. 38. Hall. 3,28. Hit. 67. Viçva bei Uṇṇ. धत्पर्थं क्षिमं निपतति Śnāpv. Br. 6,9 in Ind. St. 1,41. Varāh. Bṛh. S. 25,5. पर्वता °दुर्गमा: MBh. 3,1107. क्षिमावदात 7,2378; °पाण्डुर R. 1,41,22 (42,20 Gorr.). °पाण्डु Kām. 5,12. °गौर 17. °प्रख्य Kathās. 30,21. Varāh. Bṛh. S. 11,14. 24,16. Harīv. 2594. 2601. 7043. तत्सर्वं नाशमायाति क्षिमं सूर्योदये यथा 16360. R. 3,85,18. °कोशाभ (क्षिमवत्) 3,22,3. 11. 16. Kāraṇa 1,27 (unterschieden von तुषार). Raghuv. 9, 28. रविर्विरलं कृतवान्क्षिमम् 28. 15,66. Kumāras. 1,3. 2,19. °सरम् Milarip. 17,9. 100,4. Spr. (II) 345. 2250. 2788. Gīt. 9,10. Mārk. P. 104,23. प्रभूतक्षिमवर्षिन् Rāǵa-Tar. 1,179. 186. 2,138. 3,133. क्षिमेनेव क्षिमं शाम्येत् 5,400. 6,125. °मर्दन Bhāg. P. 3,26,40. °निकर 4,23,18. 10,29,42. 34,33. Pañcar. 3,8,4. am Ende eines adj. comp.: नित्यक्षिमा देशा: MBh. 1,4851. Kumāras. 1,11. स° Kathās. 73,139. Rāǵa-Tar. 1, 42. — b) *Sandel* Med. Viçva n. a. O. Ratnam. 137. Suçr. 2,457,6. — c) *eine best. Heilpflanze*, = पद्मकाष्ठ Rāǵān. 13,21. *Zinn* 12,147. *Perle* 13,155. *frische Butter* Çabdar. im ÇKDa. — 3) adj. (f. घा) *kalt, kühl, kühlend* AK. 1,1,3,21. H. 1385. H. an. Med. Viçva n. a. O. रक्षं स्कन्दते क्षिमम् Suçr. 1,47,7. उष्ण° 113,14. मतु क्षिमाक्षिमौ 163,8. 185,9. 196,19. 212,21. 2,373,13. 376,11. क्षिमाभिरद्भि: 160,7. 294,7. सु° 6. घाण Kāraṇa 1,27. — Vgl. पद्मिम und 1. °क्षिम.

क्षिमक (von क्षिम) m. a) *Flacourtia sapida Roxb.* Rāǵān. im ÇKDa. — b) N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 6,213. — 2) f. क्षिमिका *Reif* Çabdārthan. bei Wilson.

क्षिमकणिन् (von क्षिम + कण) adj. von *Schneeflocken begleitet:* वात Z. d. d. m. G. 27,52.

क्षिमकर m. 1) *der Mond* (*kaltstrahlig*) Harīv. 2595. Ragh. 9,38. Vasiṅ. Bṛh. S. 24,33. Bṛh. 25,2. Gīt. 7,34. Ānandal. in Hall. Anth. 57. Rāǵa-Tar. 4,17. Dhūrtas. 92,7. Verz. d. Oxf. H. 238,b,8. — 2) *Kampfer* Rāǵān. 12,60.

क्षिमकरतनय m. *der Sohn des Mondes* d. i. *der Planet Mercur* Varāh. Bṛh. S. 7,2.

हिमकषाय m. *kühler Trank* (ein Theil gepulverte Stoffe mit sechs Theilen Wasser, über Nacht gestanden), auch शीतकषायक genannt. Suçr. 2,436,21. Çârîg. Saṁh. 2,1,1. 4,1. fgg.

1. हिमकूट n. *Schneekuppe* Bulg. P. 5,17,9.

2. हिमकूट m. *Winter* (reich an *Schnee*) Râgân. 21,68.

हिमकूटाधर m. *das Schneegebirge, der* Himâlaja Varâh. Bṛh. S. 72,1.

हिमगिरि m. dass. Çiç. Cr. 93,4. Spr. (II) 2054. 2250. Çârîg. Saṁh. 1,1,38 (ist सौम्य). Kathâs. 10,217. 37,82. Pañkân. 2,2,53. Pañkât. ed. orn. 3,9. °सुता *die Tochter des* Him., patron. der Pârvatî Ânandal. 6 in Hass. Anth. 247. Kathâs. 22,254. °सुताकान्त *der Geliebte der* Pârvatî, Bez. Çiva's 42,225.

हिमगु m. *der Mond* (*kaltstrahlig*) Varâh. Bṛh. S. 104,2. Bṛh. 2,16. 3,25. 6,4. 8,11. 9,4. 25,3. Lâgûḍ. 2,10.

हिमघ्न adj. *den Schnee abhaltend* R. 7,54,9.

हिमज्ञ 1) m. *der Berg* Maiṇâka H. an. 3,151. Med. ç. 30. — 2) f. आ *eine best. Pflanze*, = तोरिणी Râgân. 5,50. — *b*) *aus Javanâla gewonnener Zucker* Râgân. 14,102. — *c*) Bein. der Pârvatî und der Çakti Trik. 3,3,39. H. an. Med.

हिमज्योतिस् adj. *kaltstrahlig:* der Mond Hariv. 2589.

हिमटकटि f. = कुटकटि *Nebel* ÇKDa. nach Hîn. mit Erwähnung der v. l. हिमकणिट, wie die gedr. Ausg. 68 hat.

हिमतल N. pr. eines Reichs Hiouen-thsang 1,27. fg. 178. 2,197. fg. 423. Vie de Hiouen-thsang 248. 269.

हिमतैल n. *Kampferoel* Râgân. 13,121.

हिमत्विष् m. *der Mond* (*kaltstrahlig*) Kathâs. 38,23. 85,16.

हिमदीधिति m. dass. Varâh. Bṛh. S. 28,11. Bṛh. 6,1. Çiç. 9,29. Kathâs. 84,42. 104,27. Med. ç. 20.

हिमदुग्धा f. *eine best. Pflanze*, = तोरिणी Râgân. 5,50.

हिमदुर्दिन n. *Schneetag* Trik. 1,1,55.

हिमद्युति m. *der Mond* (*kaltstrahlig*) H. 105. Çabdam. im ÇKDa. Çiç. 9,12.

हिमद्रु m. *Melia Bukayun Royle* Râgân. 9,11.

हिमधर adj. *Schnee* (auf seinem Haupte) *tragend:* der Himâlaja R. 4,9,46. m. *der* Himâlaja Verz. d. Oxf. H. 78,*a*, No. 132.

हिमधातु m. *der* Himâlaja ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut.

हिमपात m. *Schneefall* Bṛ. 4,10. Spr. (II) 6385. Varâh. Bṛh. S. 21, 19. 46,94. Pañkât. 169,14.

हिमप्रस्थ m. *der* Himâlaja H. 1027.

हिमभूभृत् m. desgl. Mâk. P. 61,20.

हिममयूख m. *der Mond* (*kaltstrahlig*) Varâh. Bṛh. S. 21,14.

हिममित्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 255,*a*, 16.

हिममरीचि m. *der Mond* (*kaltstrahlig*): °सि *der Sohn des Mondes* d. i. *der Planet Mercur* Varâh. Bṛh. 2,16. Lâgûḍ. 2,10.

हिममल्ल m. N. pr. eines *Fürsten* Râga-Tar. 8,1447.

हिममरुचि m. *der Mond* (*kaltstrahlig*) Spr. (II) 3123. Gorâbhm. Gaṇaṇâv. 2.

हिममर्तु (हिम + ऋतु) m. *Winter* Trik. 3,3,445. Râga-Tar. 8,1447.

हिमवर्त (?) am Ende eines adv. comp. = हिमवत् gaṇa शरत्प्रभृति zu P. 5,4,107. Vop. 6,62.

हिमवत्पुर n. *die Stadt auf dem* Himâlaja Kumâras. 6,33.

हिमवत्सुत 1) m. *der Sohn des* Himâlaja, Bez. des Berges Maiṇâka Trik. 2,3,2. — 2) f. आ *die Tochter des* Himâlaja, Bez. der Gaṅgâ Dhanañgaja im ÇKDa.

हिमवत् (von हिम) gaṇa मधादि zu P. 4,2,86. 1) adj. *kalt, eisig, schneereich:* Berge AV. 12,1,11. R. 3,22,9. — 2) m. *a*) *Eisberg, Schneeberg* ṚV. 10,121,4. AV. 5,93,8; vgl. 5,25,7. — *b*) *der best. Eisberg im Norden, der* Himâlaja AK. 2,3,3. H. 951. 1027. 947. Schol. Hâ. 26. AV. 4,9,9. 5,4,3. 8. हिमवतः प्र स्रवन्ति die Flüsse 5,24,1. 19,39,1. °वतः शिरः 8. ये के च परेण हिमवन्तं जनपदा उत्तरकुरव उत्तरमद्रा इति Âit. Br. 8,14. TS. 5,5,24,1. Verz. d. B. H. 93 (56). Weber, Prâtiçâkh. 102. M. 2,21. MBu. 3,13794. Hariv. 263. 300. 941. 9499. 11447. 12002. 12420. 12649. R. 1,1,18. 55,12. 2,85,18. 112,18. 20. 3,22,9. 13. 4,9, 41. 63,21. Suçr. 1,172,8. Raghu. 4,79. Lalit. ed. Calc. 44,11. 87,6. 115, 11. Çiç. 61, 6. Vikr. 160. Varâh. Bṛh. S. 14,24. 16,17. 43,35. 80,7. VP. 153, N. 1. 167. Mârk. P. 54,9. 55,8. 61,16. 18. Râga-Tar. 5,151. Çiv. in LA. (III) 32,17. Schol. zu P. 1,4,31. 4,3,113 (हिमवर्तम्). m Kirât. Çr. 627,3. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*, 1. 48,*a*, 20. 54,*a*, 7. 71,*b*, 2. °वत्खण्ड Titel eines *Abschnitts* im Skandapurâṇa 84,*b*, 35. — *c*) ein N. des Kailâsa H. ç. 157. — 3) f. हिमवती *eine best. Pflanze*, = स्वर्णजीवन्तिका Râgân. 3,30. — Vgl. महा° und हैमवत.

हिमवल n. *Perle;* s. u. हैमवल.

हिमवारि n. *kaltes Wasser* Mârk. P. 61,38. 45.

हिमवालुका f. *Kampfer* AK. 2,6,2,21. H. 643. Râgân. 12,60. auch °क m. ÇKDa. nach Râgân.

हिमवृष्टि f. *Schneefall* Hariv. 2595.

हिमशर्करा f. *aus Javanâla gewonnener Zucker* Râgân. 14,103.

हिमशैल m. *der* Himâlaja Verz. d. Oxf. H. 133,*a*, No. 244.

हिमशैलज 1) adj. *auf dem* Himâlaja *gewachsen* Jâṭ. 2,111. — 2) f. आ *die Tochter des* Him. d. i. Pârvatî Çabdar. im ÇKDa.

हिमशैलसुता f. *die Tochter des* Himâlaja d. i. Pârvatî Prab. 40,13.

हिमशय m. *das Schmelzen des Schnees* P. 6,4,29. Vop. 26,174. °स्नान n. dass. ebend.

हिमसंकृति f. *tiefer Schnee* AK. 1,1,2,20.

हिमसंघात m. dass. Halâj. 3,28. Râga-Tar. 2,28 (°संघात ed. Ta.).

हिमसारक m. *Phoenix paludosa* Çabdar. im ÇKDa.

हिमा (vgl. हिम) f. *die kalte Zeit, Winter*, शतहिमाः *hundert Winter* (nur in dieser Verbindung) ṚV. 1,64,14. 2,33,2. 5,54,15. 6,48,8. VS. 2,27. AV. 2,28,4. 12,2,28. — Vgl. शतहिम und unter हिम.

हिमांशु (हिम + अंशु) m. *der Mond* (*kaltstrahlig*) AK. 1,1,2,15. Mucc. 87. Ragh. 5,16. 6,47. 14,60. Spr. (II) 6896. Varâh. Bṛh. S. 33,12. 34, 9. Naish. 22,54.

हिमांशुमालिन् m. dass. Spr. (II) 7399.

हिमांशुभिख्य n. *Silber* (*den Glanz des Mondes habend*) H. 1043.

हिमाग (हिम + अग) m. *der* Himâlaja H. 948.

हिमागम (हिम + आ°) m. *Eintritt von Kälte, Anfang des Winters* H. ç. 23. Râgân. 21,67. MBu. 5,3926. R. 5,66,13. Spr. (II) 5388. Varâh. Bṛh. S. 55,6. Râga-Tar. 3,168.

हिमाचल (हिम + अचल) m. *der Himâlaja* Z. d. d. m. G. 27, 25. Kathâs. 4, 27. 7, 109. 19, 111. 22, 76. 140. 52, 9. 59, 9. Mân. P. 61, 24. Râǵa-Tar. 3, 225. 4, 314. Pańkat. 241, 7.

हिमाचलेन्द्र m. dass. Kathâs. 28, 169.

हिमात्यय (हिम + अ°) m. *Ende der kalten Jahreszeit* R. 2, 24, 8 (25, 7 Gorr.).

हिमाद्रि (हिम + अद्रि) m. *der Himâlaja* Bṛihaspatisaṃa im ÇKDn. Kumâras. 1, 55. Ragh. 4, 79. 14, 3. Spr. (II) 5828. Kathâs. 37, 180. 52, 69. 59, 75. 65, 246. Râǵa-Tar. 1, 25. 3, 138. 4, 146. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 27. Verz. d. B. H. No. 1242. Trik. 2, 1, 6.

हिमाद्रिजा f. *eine best. Pflanze*, = तोरिणी Râǵân. 5, 30.

हिमाद्रितनया f. *die Tochter des* Himâlaja d. i. Pârvatî: °पति *der Gatte der* Pârvatî d. i. Çiva Kavikalpalatâ im ÇKDn.

हिमाद्रीय् (von हिमाद्रि) *den* Himâlaja *darstellen:* येन हिमाद्रीयितम् (impers.) Verz. d. Oxf. H. 283, *a*, 4 v. u.

हिमानद्ध (हिम + आ°) adj. von *Kälte gebunden* so v. a. *gefroren* Suçr. 1, 22, 2.

हिमानी (von हिम) f. 1) *viel* —, *tiefer Schnee* P. 4, 1, 49. Vop. 4, 26. AK. 1, 1, 2, 20. H. 1072. Hâlâs. 3, 23. हिमान्यां पतन्त्यां प्रतिवत्सरम् Râǵa-Tar. 1, 180. चक्रेरस्य हिषच्चक्रे नयमानादितं नृणात्। मार्तण्डकिरणैस्तीव्रैर्हिमानीपटलं यथा ॥ Pańkatantra. 4, 158 (nach Aufrecht). — 2) *aus* Javanâla *gewonnener Zucker* Râǵân. 14, 102.

हिमान्त (हिम + अन्त) m. *Ende der kalten Jahreszeit* MBh. 14, 223.

हिमाब्ज (हिम + अब्ज) n. *eine blaue Lotusblüthe* Râǵân. 10, 198.

हिमाम्ब m. *Kampfer* Madan. 3, 1.

हिमाम्भस् (हिम + अ°) n. *kaltes Wasser* Ragh. 5, 70. Bhâg. P. 5, 12, 2.

हिमारति (हिम + अ°) m. *der Feind der Kälte*, Bez. *der Sonne* und *des Feuers* Med. t. 229.

हिमाल m. = हिमालय 1) *a*) AK. 2, 1, 2.

हिमालय, °यति *dem* Himâlaja *gleichen* Daçâvat. 67, 16.

हिमालय (हिम + आ°) m. 1) *a*) *die Stätte des Schnees*, Bez. *des Gebirges* Himâlaja Trik. 2, 3, 1. H. 1027. Bhag. 10, 25. Kumâras. 6, 94. Spr. (II) 4978. Kathâs. 4, 21. Pâǵaçittabhedç. 2, *b*, 1. Bhâg. P. 1, 13, 28. 5, 16, 9. Verz. d. Oxf. H. 338, *b*, 21. 339, *b*, 12. 340, *a*, 18. — *b*) *weiss blühender* Khadira Çârṅâs. im ÇKDn. — 2) f. आ *Flacourtia cataphracta* Râǵân. 5, 91. — Vgl. रुद्र°.

हिमालयसुता f. *die Tochter des* Himâlaja d. i. Pârvatî Kavikalpalatâ im ÇKDn.

हिमावती (von हिम) f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरी AK. 2, 4, 8, 9. Râǵân. 5, 30. — Vgl. हैमवती.

हिमाह्वया (हिम + आह्वय) f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरिका Râǵân. 3, 30.

हिमाकृति (हिम + आ°) f. *Schneefall* Kathâs. 29, 55.

हिमाह्व (हिम + आह्वा) 1) m. *Kampfer* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) m. n. N. pr. eines Varsha in Gambudvîpa VP. 2, 1, 19. 27. Mân. P. 53, 40.

हिमाह्वय (हिम + आ°) 1) m. *Kampfer* Trik. 2, 6, 39. — 2) m. n. = हिमाह्व 2) Mân. P. 53, 36.

हिमेतु (von हिम) adj. *frostig, keine Kälte vertragend* P. 5, 2, 122, Vârtt. 8.

हिमोत्तरा (हिम + उत्तर) f. *eine Traubenart* (कपिलद्राक्षा) Râǵân. 11, 104.

हिमोत्पन्ना (हिम + उ°) f. *aus* Javanâla *gewonnener Zucker* Râǵân. 14, 102.

हिमोदक (हिम + उ°) m. N. pr. eines Mannes Pârvaṇâbhas. in Verz. d. B. H. 59, 20. fg. हिमोदकि 23.

हिमोदवा (हिम + उदव) f. Bez. zweier Pflanzen: = तोरिणी Râǵân. 5, 31. *Curcuma Zedoaria* 6, 220.

हिमोम (हिम + 2. उम) m. *der Mond* (*kaltstrahlig*) Bhatt. 9, 2.

हिम्म Verz. d. B. H. 254, 2 v. u. v. l. für हेम.

हिम्पतिवर्मन् oder हिम्मति° m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 463.

हिम्मक m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6, 218. 238. 248. 250.

हिम्मतिवर्मन् s. हिम्पति°.

हैम्य (von हिम) adj. *schneeig, mit Schnee bedeckt:* पर्वता: P. 5, 2, 130, Vârtt., Schol.

हिर्म्यौ (wie eben) adv. *bei Kälte:* पुवोर्हि पक्वं हिर्म्येव वासम: ṚV. 1, 34, 1.

हिर 1) m. *Band, Streifen:* हिरा वै राज्ञा Çat. Br. 1, 3, 4, 15. = मेखला Comm. — 2) f. हिरी *a*) *Ader* AV. 1, 17, 1. 7, 35, 2. VS. 25, 8. Vgl. क्लिता und सिरा. — *b*) *Gmelina arborea* Râǵân. 9, 35. क्षीरा v. l. — Vgl. पालिंहिर.

हिरकुत् adv. von हिरुक् P. 5, 3, 72, Schol.

हिरङ्गु m. Bez. Râhu's Çabdârthak. bei Wilson.

हिरण n. *Gold; der männliche Same; Otterköpfchen* H. an. 3, 235. Med. p. 89. — Vgl. हिरण्य.

हिरणिन् (für हिरण्यिन् von हिरण्य) adj. *goldreich, goldgeschmückt:* त्रसदस्योर्हिरणिनो ररणा: ṚV. 5, 33, 8. शाण्डो हैरण्यिनः स्मर्दिष्टीन् 6, 63, 9.

हिरण्मय (für हिरण्यमय) 1) adj. (f. ई) *golden* TS. Pâit. 13, 3. P. 6, 4, 174. H. an. 4, 232. Med. j. 131. दामन् TS. 2, 4, 12, 1. Ait. Br. 1, 30. पुरुष TS. 5, 2, 2, 2. Çat. Br. 7, 4, 2, 17. 10, 5, 2, 6. 4, 2, 6. 6, 2, 2. Maitrâyaṇ. 6, 1. Nṛis. Tâp. Up. in Ind. St. 3, 81. कुशी Çat. Br. 3, 6, 2, 9. 10, 1, 4, 9. मनु 5, 4, 5, 22. प्राकाश ebend. यधि 6, 3, 4, 11. 7, 4, 2. षाण्ड 11, 1, 6, 1. शाम 13, 2, 2, 16. कूर्च Lâṭj. 9, 9, 11. Gefäss Kâty. Ça. 14, 2, 9. Sitz 20, 2, 18. — Kâṭh. Up. 3, 5, 3. Ind. St. 2, 13. 308. fg. MBh. 3, 1779. 12146. 7, 2266. R. Gorr. 2, 8, 45. 3, 39, 19. 4, 44, 17. Ragh. 15, 61. 17, 26. Uttarar. 29, 17 (39, 6). H. 1464. Hâlâs. 1, 131. Bhâg. P. 2, 2, 9. 10, 18. 5, 3, 3. 20, 2. 8, 2, 3. — 2) m. n. N. eines Varsha in Bhârata Trik. 2, 1, 3. H. 947, Schol. H. an. MBh. 6, 290. VP. 168. Mân. P. 60, 14. Bhâg. P. 5, 2, 20. 16, 8. 18, 29. — 3) m. *a*) Bez. Brahman's Med. — *b*) N. pr. eines Ṛshi MBh. 2, 399. eines Sohnes des Âgnîdhra und Beherrschers des gleichnamigen Varsha Bhâg. P. 5, 2, 19; vgl. हिरण्वत्.

हिरण्य Unâdis. 5, 44. Çiṅ. 3, 18. 1) n. *a*) *Gold*, überh. *edles Metall;* später auch so v. a. *Geld* AK. 2, 9, 91. 94. Trik. 3, 3, 228. H. 192. 1043. 1045. an. 3, 235. Med. j. 113. Hâlâs. 1, 80. 2, 19. चन्द्र ṚV. 10, 107, 7. शुचि 4, 10, 6. हिरण्यमिव रोचते 1, 43, 5. 3, 34, 9. 4, 17, 11. AV. 1, 9, 2. 2, 36, 7. 5, 28, 6. 6, 38, 2. 9, 5, 14. अमृत 5, 28, 11. 11, 1, 28. 19, 26, 1. हिरण्यं

सूर्येण सुवर्णाम् 2. Ait. Br. 7,9. 12. TBr. 1,1,3,2. हिरण्यादूतं निर्व्यवर्तति TS. 2,3,44,4. यद्यो हिरण्यं पुनसि *Gold wird ausgewaschen* 6,1,2,1. Çat. Br. 3,1,3,5. Same des Feuers 2,2,28. 12,4,3,1. अग्नेर्वा एषो यन्मत्स्यपसो हिरण्यं तस्माद्यो बकुध्यातं हिरण्यसंकाशमिवैव भवति 6,1,2, 5. Pañcav. Br. 17,6,4. Kâtj. Ça. 7,6,3. 12,5,9. 6,1. Lâṭj. 3,1,9. 5,6,5. 8,8,12. सर्पिर्मधुनी हिरण्यनिकाषं हिरण्येन प्राशयेत् so v. a. *mit einem goldenen Werkzeug* Âçv. Gṛhj. 1,15,1 (vgl. प्राशनं चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम् M. 2,29). 2,9,7. Kauç. 40. 45. 62. 64. 80. व्रत TS. 1,5,2,2. Çat. Br. 12,4,4,7. 13,4,2,10. कृत्ति 12,4,4,6. Kâtj. 10,4. Sâṅkh. Br. 2,9. °मय MBh. 3, 2208. हिरण्यं ववृषे मघवा 12,918. हिरण्यमवरुन्ध्यः 919. Verz. d. Oxf. H. 35,*b*,17. fg. 43,*a*,16. fg. क्षेत्रं हिरण्यं गामश्वं वस्त्रोपानदमासनम्। धान्यं शाकं च वासांसि गुरवे प्रीतिमावहेत् ॥ M. 2, 246. 4,188. fgg. 7,130. 206. 208. 8,135. 183. 184. 10,114. गोहिरण्यम् MBh. 2,1923. हिरण्यमेवार्जय Spr. (II) 4484. 4614. 7368. 7400. fg. Vasiṣṭh. Bṛh. S. 5,74. 10,17. 29,10. 48,48. Weber, Rámatáp. 278. 279 (स° adj.). neben काञ्चन 306. सुवर्ण R. 1,74,5. 2,76,15. — *b*) *Goldschmuck, Goldsachen;* pl. RV. 1,122,2. 162,18. 2,33,3. 5,60,4. AV. 4,10,6. VS. 15,50. 20,37. Kauç. 106. sg. AV. 1,35,1. fgg. 18,4,56. ललाटे हिरण्यं संस्तभ्य Kauç. 76. — *c*) *Goldstück* (auch als *Münze* dienend), in den Brâhmaṇa gewöhnlich in Verbindung mit सुवर्ण zur Unterscheidung von andern Metallen. सुवर्णं हिरण्यं द्वेधा विच्छिद्य TBr. 1,4,3,4. चत्वारि हिरण्यानि ददाति 3,8,2,2. Çat. Br. 13,4,4,6. 12,7,1,7. शतमान 5,5,3,16. 13,1,1,4. 2,3,2. 14,3,1,32. TS. 2,3,44,3. = मानभेद Taitt. Mṛch. — Der Natur der Sache nach lässt sich die dreifache Modification der Bedeutung nicht reinlich scheiden, s. B. in हिरण्यं पदे निधाय जुहोति Çat. Br. 3,3,1,2 sind sämmtliche zulässig. — *d*) *Otterköpfchen* Taitt. 2,9,28. 3,3,333. H. 1206. H. an. Mṛch. — *e*) *der männliche Same* Taitt. H. an. Mṛch. — *f*) *Unvergängliches* (यशस्) Mṛch. — 2) adj. *golden, von Gold:* पात्र M. 8,393. मत्स्या: MBh. 12,920. — 3) m. *a*) *eine Art Bdellium;* s. u. गुग्गुलु 1). — *b*) N. pr. α) eines Daitja MBh. 12,12942. Paṭcar. 1,13,5. — β) eines Sohnes des Âgnîdhra und als m. c. N. des von ihm beherrschten Varsha Mârk. P. 53,24; vgl. हिरण्मय. — γ) eines Fürsten von Kâçmîra Râja-Tar. 3,102. 124. — 4) f. आ Bez. einer *der sieben Zungen des Feuers* H. 1099, Schol. Halâj. 1,68. — Vgl. बक°, स°, सु°, हेरण्य.

हिरण्यक (von हिरण्य) m. 1) *Goldgier* P. 5,2,65. — 2) N. pr. eines Mäusekönigs Hit. 14,16.

हिरण्यकक्ष adj. *mit einem Goldgurt versehen:* भीष्म MBh. 4,2108. °प्रेक्षा: Elephanten R. 1,53,17; हैरण्य° ed. Bomb.

हिरण्यकक्ष्य adj. dass.: Elephanten Âçv. Ça. 9,9,14.

हिरण्यकर्ण adj. *Gold im Ohre tragend* RV. 1,122,14.

हिरण्यकर्तृ m. *Goldarbeiter* MBh. 12,10035.

हिरण्यकवच adj. *einen goldenen Panzer habend:* Çiva MBh. 12,10362.

1. हिरण्यकशिपु m. *Goldteppich, ein goldverzierter Sitz* TBr. 3,9, 20,1. Ait. Br. 7,18. Lâṭj. 3,9,12. 24.

2. हिरण्यकशिपु 1) adj. *einen goldenen Teppich habend* AV. 5,7,10. — 2) m. N. pr. eines von Vishṇu (in seiner Erscheinung als Narasiṃha) erschlagenen Daitja H. 221. MBh. 1,2535. 2641. 7620. 12, 6146. 6368. 12942. 13,661. Harîv. 184. fg. 204. 2248. fgg. 2571. fg. 3863. 7367. 12194. fgg. 12458. 12501. 12609. fgg. R. 5,24,9. Spr. (II) 4139. VP. 123. fg. 126. fgg. Bhâg. P. 3,17,18. fg. 6,18,10. fg. 7,1,33. fgg. Verz. d. B. H. No. 325. 539. Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, 9. 42, *a*, 3. 64, *b*, 3. Comm. zu Taitt. Br. 1,237,16. °च्छेदिन् Beiw. Vishṇu's Paṭcar. 4,3, 65. °दारण desgl. H. 221, Schol.

हिरण्यकामधेनु *f. eine die* Kâmadhenu *darstellende Figur aus Gold* Verz. d. Oxf. H. 43,*a*,16.

हिरण्यकार m. *Goldarbeiter* VS. 30,17. R. Gorr. 2,99,17.

हिरण्यकुक्षि adj. *goldbauchig* Kauç. 102.

हिरण्यकुल m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra Râja-Tar. 1,338.

हिरण्यकृत् adj. *Gold machend (zum Vorschein bringend):* Agni MBh. 2,1148.

हिरण्यकृतचूड adj. *dessen Haarbüschel von Gold ist:* Çiva MBh. 12,10362.

हिरण्यकेश 1) adj. (f. ई) *goldhaarig, —mähnig* RV. 1,79,1. AV. 5,7, 9. Bhâg. P. 3,18,7. Verz. d. Oxf. H. 249,*a*,2. — 2) m. *a*) ein N. Vishṇu's H. ç. 65. — *b*) pl. N. einer Schule Ind. St. 3,271. — 3) f. ई (sc. शाखा) desgl. ebend.

हिरण्यकेशिन् m. N. pr. eines Verfassers von Gṛhjasûtra Ind. St. 1,82. 471. 9,176. Verz. d. Oxf. H. 280,*a*,10. fg. 364,*b*, No. 68. Notices of Skt Mss. 1,86.

हिरण्यकेश्य adj. *goldmähnig:* कृपी RV. 2,32,29. 32,24.

हिरण्यकोश im ÇK. Da. beruht auf einer falschen Auffassung von H. 1045.

हिरण्यखादि adj. *goldene Spangen tragend:* die Marut Çiñs. Ça. 2, 5,12. 8,23,6.

हिरण्यगर्भ 1) m. *a*) *Goldschoos* (vgl. AV. 4,2,3), *ein Fötus von Gold:* °दान Verz. d. Oxf. H. 35,*b*,4. Bez. *einer kosmogonischen Potenz,* namentlich *des persönlichen* Brahman, AK. 1,1,4,11. H. 213. Halâj. 1, 6. 5,32. °र्भ: समवर्तताग्रे RV. 10,121,1. AV. 10,7,19. 7,28. प्रजापतिर्वै हि° TS. 5,5,6,2. Çat. Br. 6,2,2,5. Taitt. Âr. 10,1,6. Çvetâçv. Up. 3, 4. 4,12. Maitrâjan. 6,8. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. 133. 162. MBh. 1,59. 12,10362 (Çiva so genannt). 11231. Harîv. 38. 997. 1334. 12429. 14151. Sûrjas. 12,15. Weber, Râmat. Up. 351. VP. 7. Mârk. P. 99,50. Bhâg. P. 3,1,9. 20,44. Verz. d. Oxf. H. 43, *a*, 15. 248, *b*, 6. 8. Sarvadarçanas. 177,19. Schol. zu Kap. 1,64. 99. = समष्ट्युपाधिश्चैतन्यम् Vedântas. (Allah.) No. 62. = कपिल MBh. 12,12983. 13703. als योगस्य वक्ता Sarvadarçanas. 158,16. — *b*) N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 56,23. mit dem patron. Prâjâpatja Liedverfasser von RV. 10,121. ein Vedânta-Lehrer Tattvas. 22. हरिहरहिरण्यगर्भप्रभाकराणामभियोगशतम् Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,9. 8. — *c*) N. pr. eines Flamingo Hit. ed. Jones. 1662. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,1. — 3) wohl n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 44,*a*, No. 101. — 4) adj. Hiraṇjagarbha 1)*a*) *betreffend:* स्थानक Ind. St. 1,69. — Vgl. हैरण्यगर्भ.

हिरण्यगुप्त m. N. pr. eines Sohnes des Joganânda Kathâs. 5,79. ein Kaufmannsname 4,43. 52,299. fgg.

हिरण्यचक्र adj. *goldene Wagen habend* RV. 1,88,5.

हिरण्यर्ण adj. *goldentsprungen, goldig* AV. 4,10,1.

हिरण्यजित् adj. *Gold gewinnend* RV. 9,78,4. AV. 7,50,8.

हिरण्यद्रिक् adj. *goldsüngig* RV. 8,71,2.

1. हिरण्यज्योतिस् n. *Goldglanz* Çat. Br. 13,2,2,16.

2. हिरण्यज्योतिस् adj. *goldglänzend* AV. 10,9,6. रूप TS. 5,4,2,4; vgl. übrigens TBr. 3,8,22,2. — Kâṭh. 20,6. 28,4.

हिरण्यतेजस् n. *Goldglanz* AV. 19,26,3.

हिरण्यत्वच् adj. *einen goldenen Überzug* (oder *Decke*) *habend* RV. 5,77,3; vgl. 9,1,22.

हिरण्यत्वचस् adj. *Goldfell* oder *eine goldene Schabrake habend:* die Rosse der Sonne AV. 13,2,3.

हिरण्यद 1) adj. *Gold schenkend* M. 4,230. °दे oder °दा RV. 2,33,10. 10,107,2. — 2) m. *das Meer* Çabdârthak. bei Wilson. — 3) f. धा *a) die Erde* ebend. — *b*) N. pr. eines Flusses Hariv. 9507.

हिरण्यदंष्ट्र adj. *goldene Schneidezähne habend* Kaṭhân. Up. 4,3,7.

हिरण्यदत्त m. N. pr. zweier Männer Kathâs. 4,26. 22,154.

हिरण्यदत्त 1) adj. *goldzähnig* RV. 5,1,3. — 2) m. N. pr. eines Vaida Ait. Br. 3.6.

हिरण्यद्यु adj. *um Gold* oder *Gold spielend* Pat. in Mahâbh. Ith. Ausg. 1,268,a.

हिरण्यद्रापि adj. *einen goldenen Umwurf tragend* AV. 5,7,10; vgl. RV. 1,25,13.

हिरण्यधनुस् adj. *einen goldenen Bogen habend;* m. N. pr. eines Fürsten der Nishâda MBh. 1,5241.

हिरण्यनाभ 1) m. *a*) Bez. Vishṇu's H. ç. 66. — *b*) N. pr. verschiedener Kauçalja Prâçnop. 6,1. Hariv. 1081. VP. 282. Verz. d. Oxf. H. 53,*a*,28 (°नामन् die Hdschr.). 55,*b*,2. 3. 19. Bhâg. P. 8,15,18. 12,6,77. auch wohl 9,21,28. Râma (Sohn einer Kauçaljâ) R. 2,75,13. ein Sohn Sṛâjaja's MBh. 12,1042. Viçvasaha's Rasa. 18,24. VP. 386. Vidhṛti's Bhâg. P. 9,12,3. 5. — *c*) m. ein N. des Berges Mainâka (vgl. सुनाभ) Taitt. 2,3,2. H. 1028. R. 5,7,5. 47. 6,108,19. — 2) n. Bez. *eines Gebäudes mit drei Hallen, nämlich nach Osten, Westen und Süden,* Varâh. Bṛh. S. 53,37. — Vgl. हैरण्यनाभ.

हिरण्यनिर्णिज् adj. *goldgeschmückt* RV. 1,167,3. 5,62,7.

हिरण्यनेमि adj. *goldene Felgen habend* RV. 1,105,1.

हिरण्यपक्ष adj. *goldene Flügel habend* RV. 10,123,6. VS. 18,52. TBr. 3,7,6,2. Ind. St. 3,459.

हिरण्यपति m. *Goldherr* Taitt. Âr. 10,22. Çiva MBh. 12,10262.

हिरण्यपर्ण adj. 1) *goldgefiedert* RV. 4,45,4. Pâṇ. Gaṇ. 3,15. — 2) *goldblätterig* Nir. 8,19. TBr. 3,6,11,2. VS. 21,56. 28,20. 33.

हिरण्यपर्वत m. N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang 2,65. fgg. 385. Vie de Hiouen-thsang 171. 174. 177.

हिरण्यपाणि 1) adj. *a) goldhändig:* Savitar RV. 1,22,5. 35,9. 3,54, 11. 6,50,8. 71,4. 7,38,2. सवितृपुत्र Ind. St. 2,459. — *b) goldhufig* RV. 8,7,27. — 2) m. N. pr. eines Vaiçravaṇa Saṅgh. Br. 5,6. eines andern Mannes Burnouf, Intr. 424, N.

हिरण्यपात्र n. *Goldgefäss* TS. 5,7,2,2. TBr. 1,3,2,7. Çat. Br. 5,1, 2,19. 5,28.

हिरण्यपार्व m. RV. 9,86,43 nach Sây. = हिरण्ययेन पुनन्.

हिरण्यपिण्ड m. *Goldklümpchen* RV. 8,47,22.

हिरण्यपुर n. *Goldstadt,* N. pr. 1) einer in der Luft schwebenden oder jenseits des Meeres gelegenen Stadt der Asura MBh. 3,13269. 5,1932. 3567. °वासिन् 4,1977. Hariv. 209. Kâm. Nîtis. 11,11. Bhâg. P. 5,24,30. — 2) einer Stadt in Kâçmîra Kathâs. 65,215. Râja-Tar. 7,1298. 8,737.

हिरण्यपुरुष m. *eine männliche Figur aus Gold* Kâty. Ça. 17,4,3. Ind. St. 13,248.

हिरण्यपुष्पि m. N. pr. eines Mannes Pravarabhn. in Verz. d. B.H. 39,3.

हिरण्यपुष्पी f. *eine best. Pflanze* Sûçr. 1,368,20. = कलिकारिका Comm.

हिरण्यप्रेषस् adj. *goldgeschmückt* RV. 8,7,2. 31,8.

हिरण्यप्रउग adj. *mit einem goldenen Deichselkopf versehen* RV. 1,35,8.

हिरण्यबन्धन adj. (f. धा) *goldene Bänder* (*Tauwerk*) *führend:* Schiff AV. 5,4,4. 19,39,7.

हिरण्यबाकु 1) adj. *goldarmig* VS. 16,17. Taitt. Âr. 10,23. Çiva Ind. St. 2,21. MBh. 14,198. — 2) m. *a*) ein N. des Flusses Çona AK. 1,2,3,23. H. 1090. Hall. 3,82. — *b*) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2147. — *c*) N. pr. eines Mannes Pravarabhn. in Verz. d. B. H. 58, 85. — Vgl. हैरण्यबाकव्य.

हिरण्यबिन्दु m. N. pr. eines Berges MBh. 3,8317. eines geheiligten Badeplatzes 13,1697. °बिन्दोस्तीर्थम् 1,7815.

हिरण्यमय (von हिरण्य) adj. (f. ई) *aus Gold gemacht:* Nadel Çat. Br. 13,2,2,2. — Vgl. हिरण्मय.

हिरण्यमूर्धन् adj. (f. °मूर्धी) *goldköpfig* TS. 5,5,2,3.

हिरण्यय (von हिरण्य) ved. adj. (f. ई) *golden* P. 6,4,175. यज्ञि RV. 8,29,1. Wagen der Götter 1,35,2. 4,44,4. 5. 8,36,3. पवय: 1,180,1. द्रापि 23,2. यत्क 5,55,6. (आदित्या:) हिरण्यया: शुचय: पावकास्ता: 2,27,9. योनि 5,67,2. VS. 8,29. धमति RV. 3,38,8. उत्स 8,50,6. गृह AV. 7, 83,1. वम्र RV. 8,57,3. घरणी 10,184,3. कोश AV. 10,2,31. fgg. मणि-कर्णिनो हिरण्यय: 10,3,8. 7,99,1. 11,2,12. पुर: 10,6,10. धधि VS. 11, 11. Çat. Br. 14,9,4,21. Arme des Savitar RV. 5,71,1. 7,45,2. एनी 1,144,6. शिप्रा: 5,54,1. 8,7,25. Schiffe des Pûshan 6,58,3. AV. 4,37, 9. 5,4,4. 5. सक् लचा हिरण्यया (offenbar um den üblen Klang zu vermeiden) RV. 8,1,32. सचा मना हिरण्यया 67,2. Sindhu 10,78,8. पशु etwa so v. a. *Goldes werth* RV. 10,48,4. — Vgl. हिरण्मय, हिरण्मय.

हिरण्ययी (wie oben; हिरण्मयी Padap.) f. *Lust nach Gold* RV. 7,66,3.

हिरण्ययु (wie oben) adj. *Gold begehrend* RV. 7,31,3. काम 8,67,9. 9,27,4.

1. हिरण्ययर्थ m. *ein Wagen voll Gold* RV. 1,30,16. Ait. Br. 7,16. *ein Wagen von Gold* (im Kleinen): °दान Verz. d. B. H. 137 (182).

2. हिरण्ययर्थ adj. *mit einem goldenen Wagen fahrend* RV. 5,57,1.

हिरण्ययशन adj. *einen goldenen Gürtel habend* Bhâg. P. 4,7,20.

हिरण्ययरूप adj. *wie Gold aussehend, goldähnlich* RV. 2,35,10. Agni 4,3,1. 5,62,3. 10,20,9.

हिरण्ययरेतस् Uṇâdis. zu Unâdis. 4,226. 1) adj. *dessen Same Gold ist.* — 2) m. *a*) Bez. *des Feuers* AK. 1,1,4,51. H. 1097. an. 5,48. Med. s. 68. Hall. 1,64. MBh. 1,2106. 3408. 14,118. R. Gorr. 2,83,41. Rasa.

18,24. Bâlar. 282,7. Mârk. P. 99,49. Daçak. 63,7. Bhâg. P. 6,9,41. — *b*) Bez. *der Sonne* H. an. Med. N. pr. eines der 12 Âditja Weber, Rimay. Up. 304. — *c*) Bez. Çiva's H. 197. Çabdar. im ÇKDa. — *d*) N. pr. eines Mannes Pravarâdhjâ. in Verz. d. B. H. 57,15. daneben auch °रेतस (auch im pl.) ebend. eines Sohnes des Prijavrata (als N. des *Feuers*) Bhâg. P. 5,1,26. 34. 20,14. — Vgl. सुवर्णरेतस्, °रेतस.

हिरण्यरोमन् m. Bein. Bhîshmaka's MBh. 5,3330. N. pr. eines Ṛshi Harîv. 14153. im 5ten Manvantara 431. Bhâg. P. 8,5,3. eines Sohnes des Parǵanja Harîv. 276. VP. 83,N. 3. 133. 226.

हिरण्यलोमन् m. N. pr. eines der 7 Ṛshi im 5ten Manvantara Mârk. P. 75,73.

हिरण्यर्वं (von हिरण्य) P. 5,2,109, Vârtt. 1 (मत्वर्थे). m. *das einem Gotte (einem Tempel) gehörige Gut* ÇKDa. und Wilson ohne Angabe einer Aut. — Vgl. मु°.

हिरण्यवक्षस् adj. *goldbrüstig, die Gold in sich bergende* Erde AV. 12,1,6. 26.

हिरण्यवत् (von हिरण्य) 1) adj. *a) Gold besitzend:* उत नो गोमतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः Ṛ. 8,32,9. — *b) aus Gold bestehend:* वसु Ṛ. 7,94,9. — *c) von Gold begleitet, damit versehen* u. s. w.: Opfer Kâty. Ça. 11,1,3. Wasser 25,12,13. Hand Çâṅkh. Gṛ. 6,2. — 2) f. °वती N. pr. *a)* eines Flusses Burnouf, Intr. 86. Hiouen-thsang 1,334.344. Schiefner, Lebensb. 290 (60). — *b)* zweier Frauenzimmer Kathâs. 93, 10. Verz. d. Oxf. H. 133,*a*,2. — *c)* ein N. der Stadt Uǵǵajinî im 3ten Zeitalter Kathâs. 83,6. — 3) n. *Besitz an Gold* Ṛ. 1,30,17. 92,16. 8, 22,17. Vâlakh. 1,10. आ पवस्व मकोमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् Ṛ. 9, 41,4. 61,3. 63,18. 69,8.

हिरण्यवन्धुर adj. *einen goldenen Sitz* oder dgl. *habend:* der Wagen Indra-Vâju's Ṛ. 4,46,4. der Açvin 8,5,28.

हिरण्यवर्ण 1) adj. (f. आ) *a) goldfarben, goldähnlich:* Ushas Ṛ. 2, 61,3. 7,77,2. Indra 5,38,2. TBr. 2,8,4,1. Bṛhaspati Ṛ. 5,43,12. Gewässer Ṛ. 2,35,9. fgg. Naigh. 1,13. AV. 1,33,1. 3,13,6. Âçv. Gṛ. 4,7,15. — Ṛ. 2,34,11. 10,85,20. AV. 5,5,6. 7,10. 9,1,4. 19,28,8. Taitt. Âr. 10,22. शकुनयः Ind. St. 2,459. षण्ढ Harîv. 37. — *b) das Wort* हिरण्यवर्ण *enthaltend* (Vers) Kâtj. 90. — 2) f. आ *Fluss* H. 1079.

हिरण्यवर्णीय adj. *mit* हिरण्यवर्ण *beginnend* TS. Prât. 9,20. 11,3.

हिरण्यवर्तनि adj. *eine goldene Bahn habend, goldspurig* Ṛ. 1,92, 18. 5,75,2. 8,5,11. 8,1. 76,8. VS. 20,74. Sarasvatî 6,61,7. Sindhu 8,26,18.

हिरण्यवर्मन् m. = काञ्चनवर्मन् N. pr. eines Fürsten der Daçârṇa MBh. 5,7419. 7511.

हिरण्यवर्ष m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 55,172. 232.

हिरण्यवाशी adj. *ein goldenes Messer* (oder *Beil*) *führend:* Bṛhaspati Ṛ. 7,97,7 (TBr. 2,8,4,1). die Marut 8,7,32.

हिरण्यवाशीमत्तम adj. dass., superl. °मत्तम als Beiw. Pûshan's Ṛ. 1,42,6.

हिरण्यवाक् m. ein N. des Flusses Çona, sonst हिरण्यवाह, Çabdar. im ÇKDa. und Bharata zu AK. 1,2,3,33 nach ÇKDa.

हिरण्यविद् adj. *Gold verschaffend, — besitzend* Ṛ. 9,86,39.

हिरण्यवी adj. *mit Gold bedeckt:* पृथ्वी Ṛ. 8,34,10.

हिरण्यवीर्य adj. *dessen Same Gold ist,* Bez. *des Feuers* Bhâg. P. 4,24, 37. — Vgl. हिरण्यरेतस्.

हिरण्यशकल s. u. शकल.

हिरण्यशम्य adj. *mit goldenen Zapfen versehen:* Wagen Ṛ. 1,35,4.

हिरण्यशरीर adj. *einen goldenen Leib habend* Ait. Br. 2,3. 14.

हिरण्यशल्क s. u. शल्क.

हिरण्यशिप्र adj. *einen goldenen Helm tragend:* die Marut Ṛ. 2,34,3.

हिरण्यशीर्षन् adj. (f. °शीर्षी) *goldköpfig* Kâṭh. 20,6. v. l. zu °मूर्धन् der TS.

हिरण्यशृङ्ग 1) adj. *goldhörnig* Ṛ. 1,163,9. AV. 19,36,8. — 2) m. N. pr. eines Berges MBh. 6,337.

हिरण्यश्मश्रु adj. *goldbärtig* Verz. d. Oxf. H. 249,*a*,1. 2.

हिरण्यष्ठीव m. N. pr. eines Berges (*Gold spuend*) Bhâg. P. 5,20,4.

हिरण्यसंदृश् adj. *wie Gold erscheinend, goldig* Ṛ. 2,35,10. 6,16,31. 8,5,28.

हिरण्यसरस् n. *Goldteich, — see,* N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 12,13220.

हिरण्यस्तुति f. *Lob des Goldes,* Bez. einer Hymne Ind. St. 1,109.

हिरण्यस्तूप m. N. pr. eines Mannes (*Goldschopf*) Ṛ. 10,149,5. Çat. Br. 1,6,4,2. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,10. 11. 19,*a*,27. mit dem patron. Âṅgirasa Verfasser von Ṛ. 1,31—35. 9,4. 69. — Vgl. हैरण्य°.

1. हिरण्यस्रज् f. *Goldkranz, — reif — kette* u. dgl. Kâty. Ça. 14,1, 23. 5,36. 22,3,24. Lâṭy. 9,2,9. Gobh. 3,5,9.

2. हिरण्यस्रज् adj. *mit einer Goldkette u. s. w. versehen:* मणि AV. 10,6,4. Pâraask. Br. 18,7,6. Kauç. 106. सविता: Âçv. Ça. 9,9,4.

हिरण्यहस्त 1) adj. *goldhändig:* Savitar Ṛ. 1,35,10. AV. 7,116,2. — 2) m. N. pr. eines Mannes Ṛ. 1,116,13. 117,24. MBh. 13,6268.

हिरण्यहेमन् n. *Gold* Hem. Joḍaç. 3,93.

हिरण्यार्ण (हिरण्य + 3. अर्ण) 1) adj. *goldängig:* Savitar Ṛ. 1,35, 8. Eule Taitt. Âr. 4,33,1. — 2) m. N. pr. *a)* eines von Vishṇu in seiner Erscheinung als Eber erschlagenen Daitja MBh. 12,6146. 13, 6016. Harîv. 184. 194. 5863. 7367. 12459. 12500. 12522. fgg. 12913. 14357. fg. VP. 123. Bhâg. P. 3,14,2. 17,18. 20. fgg. 6,6,33. 18,10. 12. 7,1,39. fg. Verz. d. B. H. No. 328. Verz. d. Oxf. H. 64,*b*,3. °रिपु Bez. Vishṇu's Râgân. 18,24. °क्रोड desgl. Paṅkat. 4,3,59. — *b)* eines Ṛshi MBh. 13,1050. Verz. d. Oxf. H. 310,*a*,29. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,256. Harîv. 1461. 1467 (pl. *sein Geschlecht*). 1769. eines der Unterredner bei Ḱaraka z. B. 1,26. N. pr. eines Sohnes des Çjâmaka Bhâg. P. 9,24,41. eines Fürsten von Kâçmîra, Sohnes des Utpalâksha, Râǵa-Tar. 1,287. fg. des Kanakâksha Kathâs. 65. 216. fgg. — *c)* einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,7. 8.

हिरण्याङ्ग (हिरण्य + 3. अङ्ग) m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,9. pl. *sein Geschlecht* 19,*a*,25.

हिरण्याब्ज (हिरण्य + अब्ज) n. *eine goldene Lotusblüthe* Kathâs. 34,10.

हिरण्याभीशु (हिरण्य + अ°) adj. *goldene Zügel* oder *Riemen führend:* Wagen Ṛ. 8,5,28. 22,5.

हिरण्याश्व (हिरण्य + अश्व) m. *ein Pferdchen aus Gold:* °दान Verz. d. Oxf. H. 35,*b*,17. fg. 43,*a*,16. °रथ m. *Pferdchen und Wägelchen aus Gold* ebend.

हिरण्यिन् adj. von हिरण्य gaṇa प्रेक्षादि zu P. 4,2,80. f. °नी *Goldgrube, eine goldreiche Gegend* gaṇa पुष्करादि zu 5,2,135.

हिरण्येशय adj. *im Golde ruhend* (शय): Mahâpurusha MBh. 12,13864.

हिरण्येष्टका f. *eine Ishṭakâ aus Gold* Çat. Ba. 6,1,2,30. 2,6,20. TS. 5,5,2,1. 7,6,2. 6,4.

हिरण्वत् (für हिरण्यवत्) 1) m. N. pr. eines Sohnes des Âgnidhra (Agnidhra) VP. 2,1,17. 21. Vgl. हिरण्मय. — 2) f. °वती N. pr. verschiedener Flüsse MBh. 5,5176. 6,333 (VP. 183). 13,7651. R. Gorr. 2,73,8. Mân. P. 60,14. — Vgl. क्षेरावती.

हिराधर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 166,*b*, No. 370.

हिरि adj. = हरि; s. d. folgenden Wörter.

हिरिशिप्र adj. *gelb —, goldwangig; einen goldenen Helm* (oder *Visir*) *tragend:* Agni RV. 2,2,5. Indra 6,29,6. — Vgl. हरिशिप्र, हिरण्यशिप्र.

हिरिश्मश्रु adj. = हरिश्मश्रु *goldbärtig* RV. 5,7,7. 10,46,5.

हिरीमत् (von हिरि) adj. etwa *der die Falben hat* (vgl. हरिवत्): (इन्द्रः) वज्रं यमस्मै मुकुताय दस्यवे हिरीमशो हिरीमान् RV. 10,105,7.

हिरीमशी (von हिरीमन् = हरिमन्) adj. *fahl* s. d. vorigen Art.

हिरुक् adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. *weg, fort, aus dem Gesicht:* य ईं ददर्श हिरुगिन् तस्मात् RV. 1,164,32. हिरुगिद्य यन्ति सिन्धवो हिरुदेवो वनस्पतिर्हिरुद्भमन्तु शत्रवः AV. 4,3,1. unter den निर्णीतान्तर्हितनामधेयानि Naigh. 3,25. = वर्जने (विना) und समया, मध्ये AK. 3,3,3, 7. Trik. 3,3,464 (°विलामयोः: wohl fehlerhaft für °विनार्थयोः). H. 1527. 1534. an. 7,30. Med. avj. 12. अघमार्षे Çabdar. im ÇKDa. हिरुक्कर्मणा मोक्षः so v. a. *die Erlösung tritt ein, sobald die Werke aufhören,* H. 1527, Schol. am Ende eines adv. comp. (!) हिरुक् gaṇa शरदादि zu P. 5,4,107. — Vgl. ह्रुक्.

हिल्, हिलति (भावकरणे, कावकरणे) Dhâtup. 28,69.

हिल N. pr. eines Berges Hiouen-thsang 1,135. 2,158. Vie de Hiouen-thsang. 87. einer Stadt Hiouen-thsang. 1,102.

हिलमोचि f. *Enhydra Hingcha Dec.* Çabdar. im ÇKDa. °का desgl. AK. 2,4,5,23. Trik. 2,4,21. Ratnam. 234. Madan. 1,306. °मोषी f. desgl. Hân. 180. Çabdar. im ÇKDa.

हिलोमगुप्त N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,10.

हिल्ल m. 1) *ein best. Wasservogel,* = शरारि Çabdâ. im ÇKDa. — 2) N. pr. eines Mannes Râja-Tar. 8,2158.

हिल्लाज m. N. pr. eines Astronomen Ind. St. 2,246. fgg. 268. 274. °तात्रक und °दीपिका 280.

हिल्लोलय्, °यति = हिन्दोलय् Dhâtup. 35,84,*b*.

हिल्वक s. हिल्लक.

हिष्क्, हिष्कयते = किष्क् Dhâtup. 33,12, v. l.

ही interj. *des Staunens* AK. 3,5,9. H. an. 7,17. Med. avj. 87. ही चित्रम् Bhatt. 14,39. *des Entsetzens* H. an. Med. *des Schmerzes* Med. verdoppelt *des Staunens* und *Lachens* H. an. 7,53. Med. avj. 91. *des Behagens:* ही ही (हा हा die neuere Ausg.) हा केति वादिनी Harîv. 14578.

हीक m. N. pr. eines Piçâka MBh. 8,2064. ein zur Erklärung von वाहीक gebildetes Wort.

क्षीड् (क्षिड्, क्षेड्). क्षेडति Dhâtup. 19,16 (वेष्टने). क्षेळते Naigh. 2, 12 (क्रुध्यतिकर्मन्). क्षेडते Dhâtup. 8,32 (अनादरे). निक्षीळ, निक्षीळे, निक्षीळिरे. 1) act. *ärgern, kränken:* तं वो मन्यो मक्रतुर्निक्षीळ RV. 10,83,5. यास्ला देवानक्षिडत् Gobh. Br. 1,2,21. — 2) med. *ärgerlich —, gram —, erzürnt sein* RV. 7,38,5. न मा मिमेथ न निक्षीळ एषा 10,34,2. यद्वा पितापरोक्षे निक्षीळे AV. 6,116,2. तद्देवा न निक्षीडिरे *das beunruhigte die Götter nicht, daraus machten sie sich Nichts* Çat. Ba. 1,2,5,5. निक्षीळानं RV. 1,25,1. अक्षीडमान Çat. Ba. 6, 3,2,20. partic. क्षीळित *aufgebracht* RV. 1,80,5. 7,46,4. AV. 12,4,36. 49. — 3) *leichtsinnig —, sorglos verfahren:* तीर्त्वा समुद्रं वणिजः समृद्धा मग्नाः कुनग्यामिव क्षेलमानाः MBh. 10,365. भर्तुः प्रियार्थं कुलरक्षणार्थं भर्तुश्च वंशस्य परिग्रहार्थम् । अक्षेडमानास्त्वरया स्म दूता राज्ञ्यां तु ते तत्पुरमेव याताः ॥ so v. a. *die Sache ernst nehmend* (= उपेक्षाक्षिप्ताः Comm.) R. 2,68,22. — Vgl. अक्षेळत् fgg., क्षेलन, क्षेला. Die sinnliche Grundbedeutung dürfte sein *zupfen, rupfen, vellicare;* vgl. caus.

— caus. 1) *ausrupfen:* यदस्या गोपतेः सत्या लोम घाडृक्षे अक्षीक्षिडत् AV. 12,4,8. — 2) *verhöhnen, verspotten:* ता क्षेलयामास कपिर्धृष्टैः संमुखादिभिः । दर्शयन्स्वगुदं तासाम् Bhâg. P. 10,67,13. 15.

— अव s. अवक्षेल fg.

— वि caus. *ärgern, kränken:* नोद्विजयति भूतानि न विक्षेलयते (विधातयते ed. Bomb.) तथा MBh. 13,6720.

क्षीडि, क्षीळि (von क्षीड्) m. *Zupfer* so v. a. *Mahner:* यज्ञो क्षीळिर्वो यज्ञैर् यादित्या यस्ति मूळत *ein innerer Mahner* (der euch keine Ruhe lassen soll) RV. 8,18,19. = गत्तव्य Sây.

क्षीन (partic. von 2. क्षी) 1) adj. = त्यक्त u. s. w. AK. 3,2,56. H. 1475. = गर्ह्य und ऊन AK. 3,4,26,130. Med. n. 26. = कदर्य Halây. 2,192. *a) verlassen:* ज्ञाया तप्यते कितवस्य क्षीना RV. 10,34,10. — *b) zurückbleibend hinter, zurückgesetzt, untergeordnet, niedriger stehend, nachstehend:* स क्षीन इवामन्यत *er sah, dass er sich nicht messen könne,* Pârâç. Br. 14,5,15. यो क्षीन यानुज्ञावर इव स्यात् 16,4,3. 17,1,2. 28, 11,4. der linke Fuss Çiñkh. Ça. 4,12,3. TBr. 1,5,23,3. Âit. Br. 1,11. यो वै पुण्यो क्षीनो ऽनुप्रेप्सुः स्यात् *herabgekommen* Âçv. Ça. 10,2,3. Kâty. Ça. 22,2,19. von Personen, *die dem Stande oder der Bildung nach niedriger stehen,* P. 1,4,66. Vop. 5,7. M. 3,107. 4,245. 10,21. Jâán. 2,168. 389. Spr. (II) 5629. 6544. 7402. 7405. Varâh. Bṛh. S. 53,12. Bṛh. 20,4. Mân. P. 123,12. स्थानेन R. Gorr. 2,113,16. धनक्षीनो न क्षीनः, विद्यारत्नेन यो क्षीनः स क्षीनः सर्ववस्तुषु Spr. (II) 3057. °ज्ञाति M. 3,15. Jâán. 2,43. Spr. (II) 1468. °वर्ण 3170. °बुद्धि, °गुण R. Gorr. 2,113,16. *schwächer:* शत्रु Jâán. 1,347. Spr. (II) 7613. दण्डो क्षीनेषु पात्यः R. 5, 81,39. *unterlegen im Process* Jâán. 2,16. 18. mit abl. *niedriger stehend als, Jmd untergeordnet* P. 1,4,66, Schol. *schlimmer als* Mân. P. 121, 18. *geringer als:* क्षीनाधिकं स्वमानात् Varâh. Bṛh. S. 53,15. क्षीनतर *schlechter:* लोक Mudg. Up. 1,2,10. — *c) unvollständig, mangelhaft, ungenügend, fehlend, mangelnd, unterblieben:* यद्धीनं यज्ञस्य Çat. Ba. 11,1,6,6. Sâṅkh. Br. 2,7. 8. क्षीने पादे *wenn der Pâda unvollständig angegeben ist* Âçv. Ça. 1,1,18. क्षीनातिरिक्तगात्र M. 3,242. °चक्षुस् R. 2,64,9. °व्यञ्जना 10. °रूपा, °सत्त्वा 5,13,69. °वीर्य Spr. (II) 6058. Çiç.

Saṅk. 1,1,29. °दर्शनसामर्थ्य Rāśa-Tar. 5,219. °संमार्जन R. 2,33,20. °यज्ञ M. 11,12. °कर्मन् 16. MBu. 6,3917. °क्रिय M. 3,7. प्रतिज्ञा MBu. 7,3834. Harīv. 6691. 8122. R. 2,109,8. °ज्ञासनाद् AV. Paipp. 1,43. °स्वर् *lautlos* Suçr. 2,262,1. °स्वरता 1,118,8. मन्त्रो क्षीनः स्वरतः वर्णतो वा *mangelhaft in Bezug auf* Çikṣā 52. क्षीनोद्गत *nicht ganz hervorgedrungen* Suçr. 1,301,7. °तर्पित *ungenügend* — Çāṅkh. Saṅk. 3,13,15. — *d*) überh. *unter dem normalen Maasse u. s. w. zurückbleibend, klein, gering, wenig, schlecht u. s. w.*: क्षीनाम्बवस्त्रवेष M. 2,194. °मूल्य Jāān. 2,168. लक्षणानि MBu. 3,2784. क्षीनायुस् R. 3,8,2. क्षीनं विद्मः Spr. (II) 868. °चरित 3813. Varāh. Bṛh. S. 4,32. 26,10. 47,8. 61,9. Hem. Joṣaç. 4,13. उत्तम, क्षीन, सम M. 3,107. Varāh. Bṛh. S. 68,105. क्षीन, मध्यम, उत्तम 26,7. क्षीन, मध्यम, श्रेष्ठ Çāṅkh. Saṅk. 3,1,6. क्षीनातिरिक्तकाले *zu früh oder zu spät* Varāh. Bṛh. S. 5,25. 46,52. क्षीनाधिके (sc. काले) dass. 42,8. अक्षीन *vorzüglich* 69,3. Rāgat. 18,12. — *e*) *ermangelnd, ohne — seiend, beraubt —, frei von;* die Ergänzung α) im instr. Weber, Gjot. 89. वेदयज्ञैः M. 2,183. 8,57. पुरुषकारेण 232. पेतबुद्धेः Jāān. 1,20. पितृमातृसुतभ्रातृश्वश्रूश्वशुरमातुलैः 86. विघातपेभ्याम् 202. त्वया MBu. 1, 6162. 3,2671. 2673. R. 2,64,26. 66,22. R. Gorr. 2,53,26. 3,51,40. 4, 9,7. Rāgat. 1,70. Spr. (II) 1077. 2066. 3057. 4781. 5157. 5337. 6640. 7531. षञ्जिक्षीना चतुःषष्टिः Varāh. Bṛh. S. 53,5. 10. 67. Buḍ. P. 1,14, 21. — β) im abl.: प्रज्ञानात् MBu. 1,4676. ज्ञानवरात् R. 2,103,8. सुखात्, ज्ञानवंशात् R. Gorr. 2,7,21. शौचात् Spr. (II) 1834. मनसः M. 3,65. — γ) im loc.: धर्मार्थयोः R. 2,106,11. नेत्रयोः Buḍ. P. 1,13,30. — *δ*) im acc.: तामाशाम् R. 2,64,5. — *ε*) im comp. vorangehend: बल° Mudr. Up. 3,2,4. अङ्ग° Kīrt. Ça. 1,1,5. Weber, Gjot. 89. आचार° M. 3,165. विद्या°, ज्ञाति° 4,141. 153. 7,148. 9,39. 10,35. Jāān. 1,160. MBu. 1,6154. 3,2218. 16800. R. 2,66,22. 103,15. 5,13,69. Suçr. 2,223,3. Naiṣ. 1,2,44. Spr. (II) 70. 2055. 2675. 2768. 3057. 3908. 4374. 5157. 5705. 5950. 6057. 6157. 6303. 7037. वेलाक्षीने पर्वणि so v. a. *vor der Zeit eintretend* Varāh. Bṛh. S. 5,24. 43,50. 47,4. 53,12. 27. 37. fg. 58, 27. 67,2. 68,11. 69,21. 79,2. 81,12. 19. 82,10. 90,12. Kathās. 25,10. AK. 1,1,2,8. 2,6,2,26. 3,2,2. H. 150. 535. Hit. 10,20. 17,18. हृदते चामुक्षीनम् adv. Vet. in LA. (III) 25,12. — 2) f. आ Hir. 267 fehlerhaft für क्षीना *das Weibchen einer Maus.* — 3) n. = क्षीनता *Mangel:* अङ्ग-क्षीनादि Jāān. 3,162. वेलाक्षीने so v. a. *zu ungehöriger Zeit* 2,168. — Vgl. 2. अ°, हि°, बल°, पदक्षीनात्.

क्षीनक adj. = क्षीन. Am Ende eines comp. *ermangelnd:* कार्यसंदेश-क्षीनको कार्यो Jāān. 2,274.

क्षीनकुष्ठ n. wohl = तुदकुष्ठ *kleiner Aussatz* Verz. d. Oxf. H. 281, *a*, No. 659.

क्षीनक्रम m. *abnehmende Folge* (des Verfahrens) Suçr. 2,218,15. Gegensatz अतिक्रम.

क्षीनज adj. von *einem Niedrigen erzeugt, ein Mann niedrigen Standes* MBu. 1,7170. 7200.

क्षीनतस् = क्षीनात्, क्षीनेन von *einem Niedrigen* Spr. (II) 6629, v. l. — MBu. 2,2191 und 4,236 fehlerhaft für क्षीनितस्.

क्षीनता (von क्षीन) f. *das Ermangeln, Nichtbesitzen, Armsein an;* die Ergänzung im instr.: या: काश्चिद्दक्षुपादास्तु गाएयो क्षीनता गता: । तरेर्बक्षुभि: ṚV. Paiṛ. 17,3. im comp. vorangehend: बल° H. 319.

क्षीनत्व (wie eben) n. 1) *das Nachstehen, Niedrigerstehen:* यः स्वस्यात्मनो क्षीनत्वं परस्य गुणोत्कर्षं च कथयति स स्तुत्यः Sarvadarçanas. 64,3. — 2) *das Ermangeln, Nichtbesitzen, Armsein an* Māṇ. P. 48,22. in comp. mit der Ergänzung: अङ्ग° M. 11,50. मांसशोणित° (Gegens. °बाकुल्य) Suçr. 1,282,8. उत्साहशक्ति° Spr. (II) 1223. पुत्र° 2774. बुद्धि° 4326. — 3) *Unzulänglichkeit* als ein best. Fehler der Upamā Vāmana 4,2,5.9.

क्षीनदृग्घ adj. zu *wenig geübt* Suçr. 2,47,21. Gegens. अतिदृग्घ.

क्षीनबाहु m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Viṣṇ. beim Schol. zu H. 210.

क्षीनयान n. *das kleinere Fahrzeug* (Gegens. महायान), Bez. der älteren Phase des Buddhismus Wassiljew 8 u. s. w. Vie de Hiouen-thsang 66. Vjutp. 7. 38.

क्षीनरात्र adj. (f. आ) *kürzere Nächte habend:* तिथि Ganea bei Weber, Gjot. 47.

क्षीनरोमन् adj. *unbehaart* MBu. 12,13229.

क्षीनवादिन् adj. *in einem Streite (Processe) unterliegend* H. 348. Hit. 2,209. Pañcat. 166,18.

क्षीनवृत्त adj. *schlechten Wandels* Spr. (II) 3342.

क्षीनसख्य n. *Freundschaft mit Menschen niederen Schlages* ÇKDa. und Wilson.

क्षीनाङ्ग (क्षीन + अङ्ग) 1) adj. (f. आ und ई) *a*) *dem ein Glied fehlt* Saṅgr. Bh. in Ind. 1,41. M. 4,141. Spr. (II) 7403. Varāh. Bṛh. S. 58, 30. Bṛh. 17,7. क्षीनातिरिक्ताङ्गी *die ein Glied zu wenig oder zu viel hat* Jāān. 1,222. क्षीनाधिकाङ्गी dass. Varāh. Bṛh. S. 61,4. — *b*) *unvollständig in seinen Theilen* Schol. zu Kīrt. Ça. 38,14. — 2) f. ई *eine Art Ameise* H. 1207.

क्षीनार्घ (क्षीन + अर्घ) adj. *um seinen Vortheil —, zu kurz gekommen* Spr. (II) 5334.

क्षीनित (von क्षीन) adj. 1) *um das Seinige gebracht:* न क्षीनितः (für क्षीनतः vermuthet) परमभ्याद्दीत Spr. (II) 3646. न विद्यते कश्चन (कश्चन beide Ausgg.) मत्स्य क्षीनितः (क्षीनतः beide Ausgg.) । न मे क्षितः कश्च न MBu. 4,226. am Ende eines comp. *ermangelnd, getrennt von:* प्रिय° Harīv. 8807. fg. — 2) *subtrahirt* ÇKDa. unter व्यवकलित. — Vgl. वि-क्षीनित.

क्षीनोपमा (क्षीन + उ°) f. *ein Vergleich mit Geringerem (zu Geringem)* Prāṭiśāk. 65,*b*,1. Çaṅk. zu Kuṇḍ. Up. S. 62.

क्षीनाल m. = क्षिनाल Comm. zu AK. nach ÇKDa.

क्षीर 1) m. *a*) *Diamant* H. an. 2,473. Med. r. 103. Rāgān. 13,176 (neutr.). Pāṇḍān. 1,4,65. 8,3. — *b*) *Schlange* H. an. — *c*) *Löwe* Çabdaratn. bei Wilson. — *d*) *Perlmutschnur* Gaṭiḍ. im ÇKDa. — *e*) *ein Metrum von 4×23 Moren* Colebr. Misc. Ess. 2,137 (39). könnte auch neutr. sein. — *f*) ein N. Çiva's (vgl. क्रू) Trik. 1,1,44. H. ç. 47. H. an. Med. Gaṭiḍ. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,6. — *g*) N. pr. des Vaters von Harsha Hall in der Einl. zu Vāsavān. 18. — 2) f. आ *a*) *eine Art Ameise* Trik. 2,5,25. H. an. *eine Art Schabe* Med. — *b*) *Gmelina arborea* Rāgān. 9,25. v. l. क्षिरा. — *c*) ein N. der Lakshmi H. an. Med. Gaṭiḍ. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,23. क्षीरी H. ç. 59. — *d*) N. pr. einer

Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 296,*a*, No. 718.

कीरक 1) m. s. *Diamant* AK. 3, 4, 25, 186. Trik. 2, 9, 91. H. 1065. Paśkar. 1, 1, 72. °विधि Verz. d. Oxf. H. 320,*b*, No. 760. — 2) *ein best. Metrum*, = कीर Colebr. Misc. Ess. 2, 157 (39).

कीरभृ (v. l. कीरभर) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 318,*a*, 30.

कीरराज als Bed. von संतानिका H. an. 4, 39.

कीराङ्क (कीर + अङ्क) n. Indra's *Donnerkeil* Çabdam. im ÇKDa.

कील n. *der männliche Same* Çabdaratnak. bei Wilson.

कीलुक n. *Anus* Çabdam. im ÇKDa.

कीष् Gesangsinterjection Paśkav. Br. 8, 8, 19.

कीषोस्वर n. N. eines Sâman Lâṭj. 7, 8, 5.

कीकीकार m. *der Ausruf der Freude* की की Lalit. ed. Calc. 137, 9. 279, 3.

1. कु, कुवैति Dhâtup. 25, 1 (दाने, यादाने, यहने, प्रीणने). P. 5, 1, 193. Vop. 10, 1. कुकर्मन्, कुंकृति (P. 6, 4, 87. Vop. 10, 2), कुकुर्त, कुकोत, कुकोतन, कुकव्याम, कुकव्यानि, कुकुधि und कुकोधि ved. P. 3, 4, 88, Schol. कुकुर्यात्, कुकव्यत्, कुकव्यन्, कुकव्यव, कुकव्या चकार, partic. कुंकृत्, pl. कुंकृतम्: कोषम्, यकोषीत्, यकोषुम्, कोष्यामि. med. कुरुते, कुकुर्ते, कुकुरे 3. pl., कुकव्यामके, कुरुषे 3. sg. RV. 6, 2, 3. यनुकृत, कुंकान: कोतुम्, कुकव्या: pass. कूयते, यकावि, partic. कुर्त. *in's Feuer giessen*, — *werfen* d. i. *Etwas* (acc.) oder *Jmd* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *opfern*; auch von Dingen, die nicht gerade im Feuer dargebracht werden; über die Construction im Veda s. auch P. 2, 3, 3. कृवि: RV. 1, 26, 6. घृतम् 110, 6. कृव्या कुकान यासनि 75, 1. सोमम् 7, 85, 1. गिरो कुका कुकोमि 2, 27, 1. यत्त यं ते यासानो कुकते कृविष्मान् 6, 10, 6. कृव्या कुकान: Agni 8, 23, 6. कुकानासो घृतमुच: 8, 63, 6. 7, 93, 3. यकव्यायो कृविरास्ये ते 10, 91, 15. 81, 1. 121, 10. VS. 8, 55. सुचार्यानि AV. 6, 114, 3. कृविषा 1, 15, 1. यमोणस्वा घृतेन कुकोमि 31, 3. नमसा ते कुकोमि 4, 39, 2. वैवस्वते 6, 116, 1. वैश्वानरे 18, 4, 35. यग्नो 12, 3, 54. यात्मन् 9, 6, 21. यत्किं यासो मनसा यच्च वाचा यज्ञैकुकोति कृविषा यजुषा 7, 70, 1. Ait. Br. 1, 11. 3, 26. 5, 31. 34. 7, 17. 8, 24. यमुं कृण्वं त्वा कोष्यामि TS. 5, 4, 5, 6. TBr. 2, 1, 2, 1. fgg. घृतमप्सु कुकव्या चकार Çat. Br. 1, 8, 1, 7. Çâṅkh. Ça. 16, 15, 3. गार्कपत्ये कुकव्य 11, 6, 2, 1. मायग्नो 3. भूतेष्वात्मानम् 13, 7, 1, 1. यकमकोषु: 4, 3, 5, 14. 11, 5, 3, 4. 14, 9, 4, 11. यदि कूयमान: किं चिदापद्येत 12, 6, 4, 29. दात्रिणानि कोतुमेति TS. 6, 3, 4, 6. Gobh. 1, 8, 2. Kâṭj. Ça. 2, 2, 23. 4, 10, 5. 9, 6, 30. दत्तिणं शानु प्रभुज्य कुकोति Kauç. 1. 4. 5. Śâṅkh. 15. 72. प्रजाकामाया उपस्थे 15. पृष्ठे 82. यग्नावाधस्य Kâṭhân. Up. 5, 2, 4. यग्निकोत्रं कुकव्या चक्षु: Kaush. Up. 2, 5. प्राणं वाचि, वाचं प्राणे ebend. या कोतोरप्रमत्तस्तिष्ठति ved. Citat beim Schol. zu P. 3, 4, 16. — यज्ञकुकोषि Bhag. 9, 27. Spr. (II) 5045. H. 860. भस्मनि Bhâg. P. 3, 29, 22. इन्द्रयेषेव कुकुते M. 4, 22. वाचि प्राणान्, प्राणे वाचम् 23. कृवि: 206. कुकुधि P. 6, 4, 101. Vop. 10, 3. कृवि: पावके Bhatt. 20, 11. कुकव्यानि P. 7, 3, 87, Schol. कुकुतु 6, 4, 87. कुकव्याम ते ऽरिष्टम् *deinem Feinde* Bhâg. P. 4, 19, 28. कुकुर्यात् Paśkar. 3, 9, 22. (समिद्भि:) ताभिरग्निम् M. 2, 186. 4, 145. MBh. 2, 1154. Vaṅs. Bhâs. S. 43, 30. 48, 77. 60, 12. Mârk. P. 51, 52. Paśkar. 2, 9, 1. यग्निकोत्रम् M. 4, 25. 6, 9. घृतमग्नो 8, 106. वातेन्द्रगुरुवह्नीनां सर्षिषाकुतो: 11, 119. MBh. 5, 1734 (कुकुर्यात् fehlerhaft ed. Calc.). स्थालीपाकम् Vaṅs. Bhâs. S. 46, 16. कृवि:शेषमनले द्वादशाकुतो: Bhâg. P. 5, 19, 7. विकल्पं चित्तो 7, 13, 42. मार्षपं तैलं नुवेण मूर्ध्नि स्नातस्य *sprengen* Jâṭ. 1, 383. der ungrammatische opt. कुनेत् Paśkar. 3, 14, 3. 23. 44. 46. 53. 60. 62. 71. fg. 79. 15, 74. st. dessen कुलेत् Verz. d. Oxf. H. 94, *b*, 32. 42. घनुकोत् Bhâg. P. 1, 15, 42. घनुकव्म् P. 7, 3, 87, Schol. घनुकव्यु 82, Schol. कुकून् nom. partic. MBh. 1, 3546. 4628 (ed. Calc. कुलत्). H. 861 (कुकत् und कुकून्). st. des verbi finiti P. 3, 2, 126, Vârtt. 5. कुकृत्तम् Bhâg. P. 10, 69, 24. कुकृतम् gegen das Metrum Spr. (II) 3184. कुकृतस् gen. M. 3, 100. Bhâg. P. 4, 5, 19. कुकृतो MBh. 1, 7627. कुकृतम् nom. pl. M. 11, 87. acc. pl. Bhâg. P. 4, 19, 29. कुकृताम् M. 4, 146. MBh. 3, 1966. Kathâs. 46, 107. Râga-Tar. 1, 31. महामोसाकुतो: Prab. 34, 1. कुकान Spr. (II) 3184, v. l. MBh. 9, 2334. कृवींषि 13, 48. समरे प्राणान् 6, 4452. यग्नि कृव्यै: Harîv. 14868. कुकाव P. 3, 1, 39. Vop. 10, 3. यग्नीन् MBh. 4, 137. यकामेकामयो 3, 10760. R. 1, 73, 22. स्खलने तनुम् Râga-Tar. 6, 142. वाचं मनसि Bhâg. P. 1, 15, 41. 4, 5, 26. इन्द्राय शत्रवे (= इन्द्रे कर्तुं शत्रूत्पत्तौ Comm.) 6, 9, 11. कुकवतुम् P. 6, 4, 87, Schol. कुकवुस्ते जातवेदसे मखै: MBh. 1, 1447. कुकव्या चकार P. 3, 1, 39. स्खलने वपु: Bhatt. 4, 5. कुकव्यामास Vop. 10, 3. कुकवे med. R. Gorr. 2, 56, 27. तनुमकोषीत् Raghu. 13, 45. कुताशनम् Kathâs. 46, 62. कोष्यन्ति MBh. 3, 13024. Bhâg. P. 9, 22, 25. कृविर्कुत्वा M. 3, 87. देवताभ्यो कवि: 6, 12. कृविरघाग्निषु R. 1, 8, 27. R. Gorr. 2, 56, 28. घृतम् M. 11, 256. यग्नो कोमान् 119. शतमकृतं साविच्या MBh. 3, 16624. यात्मानं कुताशने R. 3, 77, 32. Bhâg. P. 1, 15, 42. यग्नीन् Jâṭ. 1, 99. MBh. 3, 16644. 16722. R. 2, 76, 18. R. Gorr. 2, 56, 27. Bhâg. P. 8, 9, 14. शान्तिमनामयम् R. 2, 25, 27. pass.: यग्नयो कूयन्ताम् MBh. 5, 7468. 1, 4944. M. 9, 318. Bhâg. P. 9, 17, 15. 10, 24, 27. पुरा तुषाग्राविव कूयते कृवि: MBh. 3, 15686. यग्निकोत्राणि सायाह्ने 2, 2692. R. 2, 41, 9 (40, 9 Gorr.). वह्नौ मांसम् Kathâs. 13, 62. यज्ञ: MBh. 1, 6870. नहि भस्मनि कूयते M. 3, 188. नराणां यत्र कूयन्ते यौवनानि धनानि च Spr. (II) 348 = 6280. कुतं च कोष्यमाणं च काले वेदयते सदा MBh. 2, 175 = R. Gorr. 2, 109, 8. — partic. कुर्त *a*) *geopfert*, n. *das Geopferte, Opfer* Hall. 2, 262. AV. 3, 21, 1. यज्य 5, 21, 2. 6, 71, 3. 7, 97, 7. कुतमग्निर्वक्तु 9, 4, 3. यज्ञ 12, 4, 15. Ait. Br. 5, 31. 7, 26. Çat. Br. 11, 5, 3, 4. 13, 1, 2, 1. fgg. Kâṭj. Ça. 4, 2, 18. 12, 1. Kauç. 19. 65. 72. 135. Âçv. Gṛhj. 1, 1, 2. 10, 23. यग्निकोत्रमकृतम्, यविधिना कुतम् Mânn. Up. 1, 2, 3. — कृविस् M. 12, 68. Çiç. 1. भस्मनीव कुतं कव्यम् M. 3, 181. R. 2, 25, 27. यज्य Prab. 21, 12. यग्निकोत्र R. 2, 54, 11. 3, 5, 7. रुदिताश्रुकृताकृति 2, 24, 6. यज्ञ M. 3, 73. fg. 4, 205. कोम 6, 34. स्वात्मा कृशानौ Spr. (II) 2026. ब्रह्माग्नौ ब्राह्मणा कुतम् Bhag. 4, 24. AK. 2, 7, 26. भस्मन् (= भस्मनि) Bhâg. P. 1, 15, 21. यकमग्निरकं कुतम् Bhag. 9, 16. Ragh. 2, 69. कुतमग्निरादे 3, 14. विप्रमुखाग्निषु M. 3, 99. ब्राह्मणास्य मुखे Spr. (II) 3493. व्रतस्नानकुतादिना Bhâg. P. 1, 10, 28. कुतं प्रकृतमेव च 7, 15, 49. ब्रह्माकृति° M. 2, 106. n. Swapv. Br. 4, 7 nach dem Comm. = कवनस्थाने मुखम्. — *b*) *dem geopfert ist* RV. 6, 50, 15 (neben स्तुत, vielleicht कूत zu lesen; vgl. 4.). यग्नि, कुताश m. s. w. M. 7, 145. MBh. 3, 13593. 5, 7047. R. 2, 64, 32. 5, 38, 21. 41, 18. Ragh. 1, 6. 2, 71. 9, 39. Kumâras. 5, 16. Spr. (II) 4102. Çiç. 51, 17. Bhâg. P. 1, 1, 5. 13, 29. 3, 21, 45. 8, 16, 8. सावित्री MBh. 3, 16629. — Vgl. यकुत, दुष्कुत, पुरु°, ब्रह्म°, शत°, सर्व°, सु°, स्त्री°.

— caus. कावयति *opfern lassen* (das Object der Opferer, das Geopferte oder derjenige, welchem geopfert wird): ज्ञातपतम् Kauç. 73. Gobh. 1, 3, 15. Schol. zu Kâṭj. Ça. 423, 8. यस्त्याकृतिम् Bhatt. 3, 3. य-

ग्नीन् 17,1. ज्वलनं ब्राह्मणेन R. 2,25,25.

— desid. जुहूषति Vop. 19, 5. *opfern wollen:* युद्धे प्राणाञ्जुहूषताम् MBh. 8,251. मां जुहूषन्ते तदर्थे जीवितं युधि R. 6,31,19.

— intens. जोहवीति P. 7,4,82, Schol. *häufig opfern, opfern* überh. AV. 19, 1, 1. यज्ञोहूवीत् Bhāg. P. 1, 15, 41. अजुहूवीत् des Metrums wegen 42.

— अधि *opfern auf, über* (loc.): स्वधाभिर्ये अधि प्रुषावजुहूत RV. 1,51,5.

— अप, °कुत bei Mudr. ST. 1,44 fehlerhaft für °कृत, wie die gedr. Ausg. liest.

— अभि *das Opfer giessen auf, an, opfern* an oder *für* (einen Gott), *beopfern; begiessen, beschütten* überh.: पूर्वाकुतिमुत्तरया TBr. 2,1,4,2. सूर्ये गर्भं सत्तम् Śat. Br. 2,3,4,4. विष्टपम् 3,6,4,21. 8,2,21. 12,4,3,1. इध्मम् Kāty. Śr. 8,7,1. 18,3,22. मृदम् 16,2,21. Lāṭy. 3,5,11. सत्तान् 4,10,22. घाज्याकुतीः Gobh. 3,3,10. Kauç. 18. 23. 82. पुरोळाशमाशयेन Āçv. Gṛhj. 2,1,6. Maitrāyaṇ. 6,9. चत्वारिंशदृताकुतीः Jaim. 3,202. सोमैरभिजुहोतीति तव राष्ट्रम् MBh. 9,2337. सोमैरभिजुहावेष्टिम् 2347. घाज्यो वृथाभिहूयमाने 13,272. घाज्यं च रुधिरं रौद्रं तस्मिन्युद्धे ऽभिहूयते (°भूयते die neuere Ausg.) Harīv. 13226. — partic. °कुत *begossen* (mit Opfer), *beopfert, geopfert;* überh. *begossen, beschüttet* AV. 5,133,2. Ait. Br. 8,24. Śat. Br. 3,3,4,4. Lāṭy. 1,7,7. 5,5,8. Kauç. 48. मन्त्रैरभिकुतं पूर्वमग्नेरपु द्विजातिभिः । रुचिर्दानेषु यः सोमः धर्षयामास R. 3,36,21. सकृत्संपातामिकुत Suçr. 2,138,4. 159,15. 160,17. पिण्डमभिकुतं पयसालोड्य पिबेत् 162,1. 170,5.

— अव *vergiessen:* अवं स्म यस्य वेषणे स्वेदे पथिषु जुह्वति RV. 5,7,5.

— आ *opfern in* (loc.), *Jmd* (dat.), *Jmd* (acc.) *mit Opfer begiessen:* वे अग्न आकूवनान्या जुह्वयाम RV. 7,1,17. कव्यम् 23. 10,88,7. अग्निम् 5,28, 6. 8,9,8. इन्द्राय सुतम् VS. 7,15. ब्रह्मणे संभृतम् AV. 9,4,9. मित्रावरुणयोरंशे मनुराकुतिमाजुहोत् Harīv. 617. आजुह्वान *geopfert:* सर्पिस् RV. 1,127,1. *beopfert* 5,37,1. 7,16,3. pass. 1,36,6. partic. आकुत *geopfert, beopfert* s. रुचिम् 94,3. 3,52,6. घृतेभिः 2,7,4. 5,8,7. दीदायं शोचिराकुतस्य 7,3,5. अर्चिम् 8,43,10. AV. 6,5,1. 133,2. बलि 11,10,5. Çāṅkh. Çr. 1,17,13. 5,10,21. 10,10,19. *so v. a. in's Feuer gelegt:* Leichnam RV. 10,16,5. — Vgl. आकव 2), आकवन, आकाव 1), आकुत fg., घृताकवन fgg., सोमाकुत fgg. und स्वाकुत.

— उद् s. उद्धव.

— अभ्युद्, partic. उभ्युद्धुत Rāmāy. ed. Calc. 1,54 vom Comm. durch सम्याकुत erklärt, gehört zu हु; die Ausg. von Serampur hat dafür अभ्युत्थित.

— उप *hinzuopfern* Kāty. Çr. 5,13,1. Çāṅkh. Çr. 13,2,5. ब्रह्मणावपे यत्ते यत्तेनैवोपजुह्वति Bhāg. 4,25.

— निस् *zu Ende opfern:* अग्निहोत्रमनिर्कृतम् MBh. 13,4461.

— प्र (*fortwährend, in einer Folge*) *opfern, als Opfer hingeben:* ता ता पिण्डानां प्र जुह्वेऽग्नौ RV. 1,162,19. प्र वे कवीषि जुह्वे समिद्धे 2,9, 3. सोमम् 5,44,14. 8,71,5. partic. प्रकुत, सोम 2,36,1. 10,92,3. Śat. Br. 14,4,3,3. कुता अग्नौ हूयमाना घनाश्च प्रकुताः Āçv. Gṛhj. 1,1,2. चत्वारः पाकयज्ञा कुतो ऽकुतः प्रकुतः प्राशित इति Pāṇ. Gaṇ. 1, 4. M. 3, 73. = भौतिको बलिः 74. Çāṅkh. Gṛhj. 1,5. प्रकुतः पितृकर्मणा 10. कुतं प्रकुतमेव च Bhāg. P. 7,15,49. नृभिः प्रकुतं अद्धपाकृमग्नामि *das Geopferte* 5, 5,23. अप्रताप्रकुताद् 26,18. — Vgl. प्रकुति und प्रहोम.

— प्रति *zum Ersatz opfern, das Opfer ergänzen:* यदाधिगच्छेत्प्रतिजुकुयात् Gobh. 1,9,22.

— सम् *zusammen opfern:* उत्पुरोळं विप्रुषः सं जुहोमि VS. S. 88. सं यजामि st. dessen TBr. 3,7,6,21. *opfern:* संजुकावात्मनात्मानम् MBh. 13,4110.

2. कु = 1. हू, कौ in den partice. अभिकुत *angerufen* Kāty. Çr. 1, 13, 29. आकुत *angerufen:* पृथङ्नामभिः Bhāg. P. 5,19,26. *aufgefordert, eingeladen* 4,13,30. 10, 65, 24. घनाकुत 4,3,13. 16. R. Gorr. 2,67,11. समाकुत *zusammengerufen* Bhāg. P. ed. Bomb. 3,3,2. 10,42,28.

3. कु interj. कुं कु मुच Spr. (II) 7480.

कुंकुंकार m. *der Ausruf* कुं कुम् Lalit. ed. Calc. 383,3.

कुक्कार m. *der* (von einer Trommel herrührende) *Laut* कुक् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 30.

कुगलि, °ली, कुगुलि und ली f. N. pr. einer Stadt in Bengalen Kshitîç. 11,2. 10. 12,16. 27,20. fg. 28,3. 40,1. 43,14. 17. fg.

कुंकार् *brummen:* (शङ्खः) कुंकरोति यदा घ्मातः Spr. (II) 835. *Jmd* (acc.) *barsch anfahren:* गुरुं संकृत्य कुंकृत्य Jaim. 3,202. *einen Laut des Ekels ausstossen über* (acc.): न कुंकुर्याच्छ्वम् Kāraka 1, 8. partic. कुंकृत 1) adj. *a) blökend:* घचिरप्रसूतकुंकृतवत्सोत्सवे गोष्ठे Vasiṣ. Bṛh. S. 48,11. — *b) barsch angefahren* MBh. 12,4303 (कूंकृत ed. Calc.). R. 1, 25,11. — 2) n. *Ausruf des Zornes* R. 7,6,27. Bhāg. P. 4,14,34. *Gebrüll:* einer Kuh 18,13,30. des Donners Milatin. 151,2.

— caus. कुंकारयति (कूं° ed. Calc.) *seinen Zorn auslassen* MBh. 13,715.

— घनु *ein Gebrüll beantworten:* घनुकुंकुरुते घनघनि नहि गोमायुरुतानि केसरी Spr. (II) 4231.

कुंकार् m. *der Laut* कुम् (drohend und Abscheu verrathend) MBh. 1, 6769. 12,1427. Harīv. 12703. R. 1,28,13. 55,6 (56,6 Gorr.). Rāgat. 7, 55. Kumāras. 2,26. 5,54. Naish. 36. Rāja-Tar. 5,348. Verz. d. Oxf. H. 138, a, No. 271. Weber, Rāmat. Up. 308. 311. 314. vom *Gebrüll* der Elephanten Pārāç. 162,28. der Kühe Bhāg. P. 10,13,24. vom *Getöse* des Bogens Çiç. 52. कुंकारो नासिकाः Comm. zu VS. Prāt. 1,80; vgl. 8,28. — Vgl. कूंकार्.

कुंकारतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67, a, 8.

कुङ्, कुर्डति (संघाते, मद्रे) Dhātup. 28,102. कौंडति (गतौ) 9,70. — Vgl. कुण्ड्.

कुड 1) m. *Widder* H. 1276. Vaṇis. Bṛh. S. 50,25, v. l. — 2) *ein best. Kriegsgeräth:* पुरो सचक्रा सकुडा MBh. 3,640. सकुडोपला योधाः 16336; vgl. चक्रपुक्का कुला गुडाः (चक्रपुक्कास्तुलागुडाः MBh. 3,1718) Inḍ. 1,3 und कुलायका als Bez. *einer best. Waffe* H. ç. 150. — Vgl. वातकुडा.

कुडु m. *Widder* Taik. 2,9,24 (vgl. Corrigg.). H. 1276. Halāy. 2,134. Vaṇis. Bṛh. S. 50,25. Spr. (II) 2339. Pārāç. 35,1.

कुडुक् onomatop. Sarvadarçanas. 78,6. कुडुकार् m. bei den ekstatischen Pāçupata Bez. *einer Art von Schnalzen* 77,22. कुडुकारो नाम जिह्वातालुसंयोगाभिव्यज्यमानः पुण्यो वृषनादसदृशो नादः 78,5. 6.

कुडुक m. 1) *ein best. Blasinstrument* Taik. 3,3,48. H. ç. 83. an. 3, 111. Med. k. 172. — 2) *der Vogel* Dâtjûha *in der Brunstzeit* Taik. H. an. Med. — ÇKDr. und Wilson st. dessen zwei Bedeutungen: Dâtjûha

und ein Betrunkener. — 3) ein zum Verschluss eines Thores dienender Balken Çabdar. im ÇKDa.

कुडुत् = कुडुक् Kiçik. nach ÇKDa.

कुडुम्ब m. = धृष्टचिपिट, vulgo कुडुम् (d. i. Donner) Çabdam. im ÇKDa.

कुण्ड्, कुंण्डते Dhâtup. 8,18 (संघाते). 24, v. l. (वरणे, करणे). कुण्डति P. 7,1,58, Schol. — Vgl. विकुण्डन.

कुण्ड 1) m. a) Tiger; Hausschwein; Dummkopf; ein Râkshasa Çabdaratn. bei Wilson. — b) pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 6,2051. पाण्ड्र ed. Bomb. — 2) f. ई nom. act. von कुण्ड् P. 3,3,103, Schol.

कुण्डन n. etwa das Unthätig—, Gefühlloswerden: शिरोनासातिलत्रूणां मीवायाश्च Kâraka 8,26.

कुण्डिका f. Anweisung, Wechsel Râga-Tar. 5,265. 274. 301. aus dem Hindustanischen (vgl. कुण्डी bei Molesworth).

कुत् (von 1. कु) adj. opfernd in अग्नि°, अग्निक्षेत्र°, सर्व°.

कुर्तभाग adj. am Opfer betheiligt, — berechtigt (Gegens. अकुताद्): Götter AV. 1,30,4. 18,3,28. 4,16.

कुतभुग्रथ m. Agni's Standarte so v. a. Rauch Suçr. 2,320,17.

कुतभुज् m. 1) Feuer, Agni (Verzehrer des Opfers) AK. 1,1,1,21. Suçr. 2,523,3. Mṛicch. 101,20. Vikr. 8. Uttarar. 94,14 (123,1). Spr. (II) 3778. 4102. 6348. Varâh. Bṛh. S. 7,18. 43,22. Bṛh. 8,12. Râga-Tar. 1,34. Mâlav. P. 18,35. Bhâg. P. 3,16,8. 5,19,27. °भुक्प्रिया Agni's Gattin AK. 2,7,21. — 2) Plumbago zeylanica (wie alle Wörter für Feuer) Suçr. 2,453,6. 505,12. — 3) Bez. eines best. Sterns, β Tauri Sûrjas. 8, 11. — Vgl. कृतभुज.

कुतभोजन adj. das Opfer zur Speise habend oder m. Feuer Bhâg. P. 4,1,39.

कुतवक् m. Feuer, Agni (das Opfer zu den Göttern geleitend) H. 1099. Hall. 1,62. MBh. 1,8431. 3,14108. 5,3772. R. 2,52,99. Mucch. 44. Ṛt. 1,27. Çik. 107. Gît. 9,10. Varâh. Bṛh. S. 86,75. 97,11. Mârk. P. 58,75. Pâṇ. 3,7,38. Pâṇ. 182,17.

कुतशेष m. Opferrest Kâtj. Ça. 4,2,33. 18,1,25. रात्रि° 28,5,8. Çâṅkh. Gṛhj. 4,8. 5,2. °दान Raghun. (ed. Calc. 1834. 1835) 1,140.

कुतकव्यवक् m. N. pr. eines Sohnes des Dhara MBh. 1,3385.

कुतांश (कुत + अंश) m. ein Theil der Opfergabe Varâh. Bṛh. S. 5,14.

कुतांद् (कुत + 2. अद्) adj. vom Geopferten geniessend Âpast. Bh. 7,19. TS. 5,4,5,1. 5,10,5. Kauç. 73. कुतादकुतादो मखाः Ind. St. 3,459. — Vgl. अ°.

कुताश (कुत + आश) m. 1) Feuer, Agni (Verzehrer des Opfers) Çabdar. im ÇKDa. Bhâg. 11,19. MBh. 1,3426. 2,1147. 3,2168. 8,4231. 12, 13749. 13,1088. R. 2,13,12. 5,56,85. 6,16,77. Suçr. 1,233,15. Raghu. 2,71. Varâh. Bṛh. S. 3,36. 8,28. 9,41. 13,14. 24,6. 28,21. Weber, Gjot. 24. Râga-Tar. 4,374. 6,62. Spr. (II) 5497. Hem. Jogaç. 2,81. Bhâg. P. 1,12,21. 4,7,45. 5,8,21. अ° Varâh. Bṛh. S. 11,3. °वृत्ति f. ein Lebensunterhalt durch Feuer d. i. bei dem Feuer nöthig ist 5,33. adj. vom Feuer lebend (Schmied u. s. w.) 52. — 2) Plumbago zeylanica Suçr. 2, 449,11. — Vgl. कृतभुज्.

कुताशन (कुत + 2. अशन) m. Feuer, Agni H. 1097. Hall. 1,64. Gṛhjas. 1,8. Jâṭ. 1,340. MBh. 1,1179. 1186. 3,2227. 2863. R. 1,33,21. 2,43,20. 64,32. 66,12. 76,18. 5,30,20. 6,77,21. Suçr. 1,108,21. 2,400, 14. Raghu. 4,1. Kumâras. 3,21. Spr. (II) 2241. 6123. Varâh. Bṛh. S. 16, 12. 43,36. 53,68. Kathâs. 46,62. Râga-Tar. 6,190. VP. 72. Prab. 43, 13. Bhâg. P. 8,15,5. Verz. d. Oxf. H. 104,b,28. als Sohn der Çâṇḍilî MBh. 1,2584. सर्वदेव° zu zerlegen in सर्वदेवकृत + अशन das für alle Götter bestimmte Opfer verzehrend, m. = कृताशन R. 1,38,17. — Vgl. वन° und हुताशन.

कुताशनमय (von कुताशन) adj. (f. ई) aus Feuer bestehend, die Natur des Feuers habend Verz. d. Oxf. H. 110,a, Çl. 4.

कुताशनवत् (wie eben) adj. mit Feuer versehen: वेदि Çik. 73. Kathâs. 103,189. चिता Spr. (II) 5406.

कुताशवेश m. N. pr. = अग्निवेश, einer der Unterredner bei Kâraka z. B. 1,17.

कुताशशाला f. = अग्निशाला Pâṇ. 3,1,18.

कुताशसुत m. pl. Agni's Söhne, Bez. bestimmter Kotu Varâh. Bṛh. S. 11,11.

कुताशिन् (कुत + घा°) adj. (nur) von Opfern sich nährend MBh. 2,236.

कुति (von 1. कु) f. Opfer in सर्व° und हविष्कृति.

कुत्मत् s. वि°.

कुन्, potent. कुनेत् s. u. 1. कु.

कुम् interj. वितर्के, अनुमतौ, वार्तायाम्, अरुचौ Trik. 3,3,466. वितर्के, परिप्रश्ने H. an. 7,18. संप्रश्ने, वितर्के Halây. 5,90. स्मृतौ, अपाकृतौ, अर्थप्रश्ने, अभ्यनुज्ञायाम् Med. avj. 55. fg. — Uttarar. 102,10 (130,14). कुं (स्मृतौ) ज्ञातमेतत् Kathâs. 17,129. रामो नाम बभूव कुं तदबला सीतेति कुम् Z. d. d. m. G. 27,83. कुं स त्वं मुरुत्, चेत्रो कुं मैत्रो कुम् Aufrecht nach Kaiyaṭa. यो कवचाय कुम् Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,91. Weber, Râmat. Up. 303. 311. कुंफट्ता मखाः Verz. d. Oxf. H. 105,a, 9. कुं इति नासिक्यः VS. Prât. 8,28. कुं (उं die neuere Ausg.) का Hariv. 9709. कुं कु मुच Spr. (II) 7480. — Vgl. कुंकार् und कूम्.

कुम्भा, °रव = कुम्भा° R. ed. Bomb. 1,54,18 (Text und Comm.).

कुम्मा interj. in einem Sâman Pâṇ. Bh. 7,10,15.

कुरचित् (कुरम् + 2. चित्) adj. etwa im Verborgenen lauernd, = स्तेन Naigh. 3,24. RV. 1,42,3. 9,98,11.

कुरंस् adv. verborgen, heimlich: मा कस्यं पत्नं सदमिद्धुरो गाः RV. 4,3,13.

कुरुक् adv. = किरुक् abseits, auf Abwegen: मुहो धद्ब्धो वरुणो कुरुण्यते RV. 9,77,3.

कुर्क् s. हुर्क्.

कुल्, कौलति (गतौ, किंसामंवरणयोश्च) Dhâtup. 20,14. fg. कुलेत् Verz. d. Oxf. H. 94,b,32. 42 fehlerhaft für कुनेत्; s. u. 1. कु.

कुल und कुलायका s. u. कुड 2).

कुलमातृका f. ein langer Dolch H. ç. 146.

कुलकुली f. Bez. eines best. mit dem Munde hervorgebrachten Tones, = मुखघण्टा Trik. 2,7,29. Hir. 177.

कुलुकुलु interj. der Freude Lalit. ed. Calc. 383,3.

कुवन्य्, कुवन्यति rufen, schreien: मदे सोमस्यौशिजो कुवन्यति RV. 1,119,9. — Vgl. कूव = कूा.

कुवा interj. MBh. 12,10399.

कुष्क m. N. pr. eines Fürsten Râga-Tar. 1,168. °पुर n. Bez. der von

ihm gegründeten Stadt 4,188 (कुष्क° beide Ausgg.). 5,238. 6,186. Vgl. LIA. 2,411. fgg. 831. 851. fg.

कुरुव N. einer Hölle Buanow, Intr. 201. कुकुव Vsuv. 119.

कुकु (Çabdar. im ÇKDa.) und कुहू (des Metrums wegen) m. N. pr. eines Gandharva. nom. कुहूम् MBu. 13,3887. 7639. gen. कुकोम् Kathâs. 45,251. acc. pl. im comp. °कुहून् R. 2,91,16 (100,14 Gorr.). herzustellen कुहूः für हूहूः (हूहू) MBh. 1,2559. 3,1769. R. 6,83,18. 92, 70. dagegen ist Mâlav. P. 106,37 हूहूशेव st. कुकुशेव zu lesen; auch Taitt. 3,5,2 ist हूहूर्यन्धिः zu lesen.

कुकुव s. कुरुव.

1. हू *rufen* s. हा.

2. हू (= 1. हू) adj. in इन्द्र°, देव°, पितृ°, मित्र°, याम°, सु°, सुम्न°.

3. हू interj. आह्वाने, अवज्ञायाम्, धर्षणे und शोके ÇKDa. (nach Çabdârthak.). हू हू vom *Geheul* des Schakals Vâmân. Bhn. S. 90,1. 12. Vgl. हूरव.

हूहेहूंकारपार adj. unter den Beinw. Çiva's MBu. 12,10279.

हूहेहूंकारप्रिय adj. desgl. ebend.

हूंकार् s. हुंकार्.

हूंकार m. = हुंकार्. हूंकारं ब्राह्मणास्योक्ता M. 11,204. MBu. 7,1555. Harîv. 12376. 14359. R. 1,41,29. 75,17 (77,30 Gorr.). Kathâs. 4,24. 31,77. 44,152. 50,81. 85. 106,127. 112,192. Mârk. P. 86,9. Prân. 22, 2. Weber, Râmây. Up. 314. fg. कोप° Kathâs. 45,293. धनुष: Çiç. Cr. 43,7. vielleicht nur ungenau für हुंकार्, wie die v.Lan vielen Stellen hat.

हूंकृति f. *der Laut beim Schnarchen* Spr. (II) 1033. *Gesumm:* घलिस्वन° Nalod. 2,9.

हूङ्गस्थान n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 340,a, s. 9.

हूङ्गाई desgl. ebend. 339,b,22. 29.

हूड्, हूँडति Dhâtup. 9,68 (गतौ).

हूण m. pl. N. pr. eines Volkes Z. f. d. K. d. M. 2,56. 5,463. fg. LIA. 2,1159, N. 5. Hall in Journ. of the Am. Or. S. 6,528. fg. in der Einleitung zu Vâsavad. 51. VP. 177, N. 6. MBu. 1,6688 (हून ed. Calc.). 3,1991. 6,278 (ed. Calc. हून; vgl. VP. 194). R. 4,40,25, v. l. Raghu. 4, 68. Mudrâs. 112,1. VP. 2,3,17. Mârk. P. 58,45. Kathâs. 19,111. Ind. St. 8,349. fg. Prân. 87,18. Bhâg. P. 2,4,18. 7,46. 8,20,30. Verz. d. Oxf. H. 339,b,24. °लिपि Lalit. ed. Calc. 144,1. हूणा: oder हूल° Vâmân. Bhn. S. 14,27. सित° 11,61. श्वेत° 16,38. sg. *ein Fürst der* Hûṇa Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 12. N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,b,6. — Vgl. वप्र°, वम्र°, हार°, हूर°.

हूत s. u. हा.

हूतवत् adj. *das Wort* हूत *enthaltend* Âçv. Çr. 2,14,19. Çâṅkh. Çr. 14,50,10.

हूति (von 1. हू) f. *Ruf, Anruf* AK. 1,1,8,9. 3,3,9. H. 261. 334. *Benennung, Name:* द्वीप° Bhâg. P. 5,20,8. — Vgl. देव°, सुम्न°, पुरु°, पूर्व°, भर°, याम°, रुद्र°, स°, सु°, हरिकेति°.

हून s. हूण.

हूम् interj. तर्के AK. 3,3,18. वितर्के und प्रश्ने 3,4,23 (98),14. Mahâv. avj. 56. संमतौ, क्रोधे, भये, निन्दायाम्, अवज्ञायाम् Nârâjanakavartin zu AK. nach ÇKDa. Beispiele bei Bharata zu AK. nach ÇKDa.: हूं चेत्रो ऽपि पण्डितः (वितर्के), हूं को लङ्काधिपतिः (प्रश्ने), हूं कृतं हूम् (अनुमतौ), हूं न गन्तव्यम् (भये). हूंफडन्ता मन्त्राः Verz. d. Oxf. H. 97,b,N. 2. — Vgl. हूंकार् und हुम्.

हूय (von 1. हू) n. in देव° und पितृ°.

हूरव m. *Schakal (den Laut* हू *ausstossend)* Taitt. 2,5,7 (vgl. Corrigg.). H. 1290.

हूरहूण m. pl. N. pr. eines Volkes Journ. of the Am. Or. S. 6,229. Hall in der Einleitung zu Vâsavad. 52. — Vgl. हारहूण.

हूरा s. हार°, हार°.

हूर्छ् (हुर्छ्), हूर्छति (कौटिल्ये) Dhâtup. 7,31. P. 8,2,78. *schief gehen, gleiten, schwanken, fallen;* mit abl. von *Etwas abfallen:* यज्ञाद्धूर्छति नास्माद्यज्ञो हूर्छति Kâṭy. 32,6. — Vgl. कूर्.

— caus. zu *Fall bringen, abkommen lassen* von (abl.): यं द्विष्यात्तस्य हूर्छयेत्, स्वर्गादेवैनं लोकाद्धूर्छयति Kâṭy. 25,5.

— घञ् nach *Jmd zu Fall kommen* Kâṭy. 36,1.

— वि *watscheln* (von einem Fetten): विहूर्छति हि न रूपनाश च न भवति Çat. Br. 2,4,2,6. *schwanken, fehltreten:* नाधर्युर्विहूर्छति य एवं वेद Kâṭy. 27,1.

हूर्छन n. nom. act. von हूर्छ् als Bed. von कार् Dhâtup. 18,47. von घार् 22,41. von कूर् 31,21, v. l.

हूलुएट m. N. pr. eines Schlangendämons Schiefner, Lebensb. 290 (60). 309 (79).

हूष्कपुर s. u. कुष्क.

1. हूहू interj. s. u. 3. हू.

2. हूहू (onomatop.) m. Declination Vop. 3,65. N. pr. eines Gandharva AK. 1,1,4,48. H. 183, Schol. काकाहूहूभ्यां गन्धर्वाभ्याम् Kâç. 86. Harîv. 7225. 9259. 14159. R. 6,82,50. Kathâs. 116,87. Bhâg. P. 8,4,3. Vgl. कुहू, wie häufig des Metrums wegen gelesen werden muss.

हृच्छय (हृद् + शय) 1) adj. *im Herzen ruhend:* मुनिः पुराणः so v. l. *das Gewissen* Spr. (II) 1438. सर्वभूतानाम् MBh. 13,4021. साधु° so v. l. *die Gedanken Guter beschäftigend* Bhâg. P. 7,8,31. — 2) m. a) *Geschlechtstrieb* (auch *der Liebesgott*) H. 227. Hall. 1,33. MBh. 3,1560. 2033. °वर्धन 2154. Bhâg. P. 3,14,7. 6,1,61. ज्ञात° adj. 8,9,2. — b) *Wunsch, Verlangen:* सर्वान्भुनक्ति हृच्छयान् Bhâg. P. 1,6,23. — MBh. 6,4246 schlechte Lesart für धनुश्शय, wie die ed. Bomb. liest.

हृच्छूल (हृद् + शूल) m. n. *Herzweh,* viell. *Herzkrampf* Kâraka 10,1. Suçr. 2,18,12. 463,2. 489,2. Kâraḍ. 241,6.

हृच्छोक (हृद् + शोक) m. *Herzenskummer* P. 6,3,51.

हृच्छोष (हृद् + शोष) m. *Trockenheit des Innern* Suçr. 2,279,9.

हृज्ज (हृद् + ज) adj. *im Herzen entstanden,* — *befindlich* H. an. 2, 391. Med. j. 65.

हृणाय्, °यति *grollen;* partic. हृणायंत् RV. 1,132,4. — Vgl. 2. हृ, हृणीय् und दुर्हृणायु.

हृणायु s. दुर्हृणायु.

हृणिया f. = हृणीया Râjân. zu AK. 3,3,32 nach ÇKDa.

हृणीय्, °यते = हृणाय् Naigh. 2,12, v. l. (für भृणीयते). *sich schämen* (vgl. व्रीड्) गण कण्ड्वादि zu P. 3,1,27. हृणीयमान *grollend*

RV. 5,2,8. दिवो ऽपि क्रिणीयते (lies कृ°) वीरवती न भूमिः *schämt sich nicht vor so v. a. kann den Vergleich vertragen mit* Bhatt. 2,38. — Vgl. अकृणीयमान.

कृणीया (von कृणीय्) f. = वर्तन, सत्तीया, घृणा AK. 3,3,32.

कृत् (von 1. कृ) 1) adj. am Ende eines comp. *bringend* (z. B. in बलि°); *raubend, stehlend:* तेल° Jiân. 3,211. परस्व° Varâh. Bhn. S. 8, 52. 13,16. *benehmend, vertreibend:* भय° MBh. 13,4027. शोक° Sucr. 1, 189,12. संसार° Spr. (II) 6638. पाप° Râéa-Tar. 4,104. चरितेर्त्तो° Pañkân. 4,3,55. — 2) m. *Dieser* Golâdhy. Jantrâdh. 33. — Vgl. कलङ्क°, कुष्ठ°, धन°, फणि°, बलि°, भगनेत्र°, मेष°, रोग°, व्रण°, शल्य°, शूल°, सुधा°.

कृति (wie oben) f. Vop. 26,183. = करण H. an. 3,232. Med. n. 87. 1) *Wegnahme, Raub:* धन° Varâh. Bhn. S. 52,6. सीता° Verz. d. Oxf. H. 29,b,4. Râéa-Tar. 2,107. जीवित° Spr. (II) 2772. — 2) *Vernichtung* (Gegens. कृति): सृष्टिकृतिर्पेन Vop. 3,28. — 3) in der Astr. *Bruchstück, Theil,* Bez. *einer best. Linie eines best. Dreiecks auf der Himmelskugel* Gaṇitâdhy. Triprâçn. 34. पदर्कोदयास्तसूत्रयोरन्तरं सा च कृतिरुच्यते Comm. Golâdhy. Triprâçn. 47. fgg.

कृत्कम्प (कृद् + कम्प) m. *Herzklopfen* Bhadrabâhusaṃh. im ÇKDr.

कृत्तस् (von कृद्) abl. *vom Herzen* RV. 10,11,6.

कृत्ताप (कृद् + ताप) m. *Seelenschmerz* MBh. 3,17383. Bhâg. P. 1, 15,27.

कृत्पद्मन् n. *die Lotusblüthe des Herzens* so v. a. *das Innerste des Herzens* Verz. d. Oxf. H. 149,b,23.

कृत्पति m. *der Herr der Herzen* Bhâg. P. 1,3,35.

कृत्पद्म n. = कृत्पद्मन् Verz. d. Oxf. H. 149,b,25.

कृत्पीडन n. *Herzdrücken* Sucr. 1,263,21.

कृत्पीडा f. dass. Sucr. 1,156,17. 263,16. 2,185,14.

कृत्पुण्डरीक n. = कृत्पद्मन् Kaivalyop. bei Muir, ST. 4,304. Comm. zu R. 7,60,14.

कृत्पुष्कर n. dass. Maitrâyaṇ. 6,1. 2.

कृत्प्रतिष्ठ adj. *im Herzen d. i. innern wohnend:* मनस् VS. 34,6.

कृत्प्रिय adj. *dem Herzen lieb* H. an. 2,391. Med. j. 65.

कृत्स्तम्भ m. *Unthätigkeit des Herzens* Kâraka 11,1.

कृत्स्वम् (कृत्सु + स्वम् = 2. स्वम्) adj. *in's Herz treffend* RV. 1,84,16.

कृद् n. Declination P. 6,1,63. Vop. 3,39. 89. Bildung der Derivata von Wörtern, die auf कृद् ausgehen, P. 7,3,19. 1) *Herz,* namentlich als *Sitz der Empfindungen,* überh. *geistiger Vermögen und Vorgänge* AK. 1,1,4,9. 2,6,2,15. H. 603. 623. 1369. Med. d. 17. तदयं केतो हृद आ वि चष्टे RV. 1,24,12. Sitz der Furcht 32,14. 5,53,2. कृत्सु क्रतुम् 5,85,2. 10,64,2. हृदो घस्वत्तरम् 7,101,5. वोचेम शन्तमं हृदे 1,43,1. हृदा मतिं जनये 10,91,14. 119,5. हृष्टानि मनसे हृदे वं 1,73,10 4,37,2. स्तोमो हृदा तष्टः 1,171,2. 2,35,2. 3,39,1. 4,43,1. 8,16,17. यत्तर्हृदा मनसा पृयमानः 4,58,6. AV. 4,39,10. कृत्सु शोनीय मर्त्यम् RV. 8,18,15. 19, 103,12. मन्द्र 3,43,21. 1,116,17. 146,4. 3,26,3. 5,4,10. 6,28,5. 8,89,3. 9,73,8. 10,177,1. VS. 6,25. कामा वे हृदि स्थिताः Çat. Br. 14,7,2,9. TS. 2,3,9,1. अग्ने यत्ते पवं हृन्नाम 4,4,3,2. वाचस्पतेर्हृत् TBr. 2,2,8,4. Kauç. 42. Âçv. Gṛhy. 3,6,8. Kaṭhop. 6,9 (Çvetâçv. Up. 4,20). Çvetâçv. Up. 2,8. स वा एषोऽस्माद्दत्तरादकृतार्थो ऽमन्यतार्थानमानीति Maitrâyaṇ. 2,6. — अनुदात्तो हृदि (elg.) शेषः Citat im Comm. zu TS. Prât. 23,17. Weber, Prâtiçâkh. 75. fg. इषुणा हृदि विनिर्भिन्नः R. 2,64,15. Raghu. 3, 53. Spr. (II) 7409. हृदि संघातमूलवान् Sucr. 1,120,18. 2,464,20. 468, 18. स्वजातानां हृदि (*Herzgegend*) संचरतां चिरम् Spr. (II) 5849. हृदि कृत्वा तु बकुशस्तमलंकाराम् R. 4,5,16. Verz. d. Oxf. H. 105,b,25. हृद्-स्थेऽन्तरे Sucr. 2,450,18. Varâh. Bhn. S. 8,19. 51,9. 25. 42. 66,2. Ver. in LA. (III) 13,15. Bhâg. P. 3,12,11. 5,8,5. त्वया मच्छूलनिर्भिन्नदृषद्धृदा 11,14. हृत्कर्तरीसमम् Spr. (II) 4882, v. l. हृत्स्फोट s. u. स्फोट 1) a). ध्रुवमतात्म हृद्मः Vop. 5,2. हृत्कदागामी 26. यशक्रुचन्मलः कामं तदा धारयितुं हृदा MBh. 3,2089. अन्तर्गतमपि व्याख्याति हृदयं हृदा R. 1, 77,27. तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये Bhâg. P. 1,1,1. उपगुह्य 2,2,18. प्रणिधाय मनो हृदि 1,6,20. हृदि प्रियं न विन्दामि MBh. 3,2294. हृदि वीततः R. 1,2,19. सा कि मे नित्यशो हृदि MBh. 3,2045. हृच्चासीन्मे शनैर्हरिः Bhâg. P. 1,6,17. कामानां हृच्छयानाम् 7,10,6. हृच्चयेदिनः 3, 10,19. स्वेष्टदेवतां हृदि स्मृत्वा Çuk. in LA. (III) 36,6. हृदि प्रविष्टया तत्प्रत्यागमवाञ्छया Kathâs. 18,230. सर्वं चाधारयेद्धृदि 2,87. नित्यं स्थितस्ते हृच्छेष पुण्यपापेक्षिता मुनिः Spr. (II) 1439. 3311. विद्या प्रमादिनो गुरुं दुर्धियः u. s. w. न तिष्ठन्ति चिरं हृदि 6090. इदं राज्यं च सकलं जीवितं च हृदि स्थितम् R. 7,60,14. ममाप्येवं हृदि स्थितम् Kathâs. 32,4. सेवाधर्मस्य सारभूतं हृदि स्थापितम् Bhâgav. 13,7. हृदि निधाय Sarvadarçanas. 56,9. हृदि नेयं (वाचम्) त्वया कार्या R. 5,78,2. कोपस्त्वया हृदि कृतो यदि Spr. (II) 1937. 6878. Kathâs. 22,164. 32,129. 34,92. Bhâg. P. 1,13,37. हृदिकृत्य 10,32,8. हृत्कृत्वा (!) परमेष्ठिनम् Ind. St. 2,48. — 2) *Herz* so v. a. *das Innere des Körpers* überh. (*Brust* und *Magen* insbes.; vgl. *Herzstärkung, cordial*): सोमः शमस्तु ते हृदे RV. 8,17,6. 2,12. 48,12. 10,86,15. 97,15. सोमं राजन्धि नो हृदि 1,91,12. 168,3. 179,8. 8,53,6. भेषजं मयोभु नो हृदे 10,186,1. प्रियो मे हृदो ऽसि TS. 3, 2,8,1. Çat. Br. 14,5,8,1. 7,1,7. — Den Formen in den verwandten europäischen Sprachen entspräche गृद्, nicht हृद्. Vgl. दुर्हृद्, सर्व°, सु°.

हृद = हृद् in सु°. हृदः MBh. 12,4662 fehlerhaft für क्रूदः (so ed. Bomb.).

हृदंसनि adj. *Herz gebend* so v. a. — *stärkend, Muth machend:* (सोमः) य इन्द्रस्य हृदंसनिः RV. 9,61,14.

1. हृदय Uṇâdis. 4,100. Çiñt. 3,18. 1) n. Siddh. K. 249,a,16. am Ende eines adj. comp. f. आ. a) *Herz* eig. wie auch als *Sitz geistiger Vorgänge* AK. 1,1,4,9. 2,6,2,15. Trik. 3,3,224. H. 603. 623. 1369. an. 3,513. Med. j. 114. Halâj. 2,379. selten in den ältern Büchern, wo हृद् üblich ist. In's *Herz* treffen RV. 8,53,5. 7. 8. 10,87,4. AV. 5,20,3. हृदयस्य प्रकेतैः RV. 7,33,9. नैव ते मनो हृदयं चाविदाम 10,10,13. 34,9. प्रियं दधाना हृदयेषु 84,7. 85,47. सालावृकाणाम् 93,15. हृदयं तप्यते मे 17. 163,2. 191,4. AV. 3,8,6. 20,9. हृदयं शोचयामि ते 6,139,1. 10,4, 25. उद्वेपमाना हृदयेन 5,21,2. यो वः शुष्मो हृदयेषूत्तः 6,73,2. 76,1. 9, 6,2. 7,11. 8,5. 14. des Opferthiers VS. 39,5. 19,85. 21,53. Çat. Br. 3,8,3,5. fgg. यस्यां तद्धृदयं मनो दधाति 8,5,4,3. 9,1,2,40. 10,5,2,11. 14,5,2,21. 8,11. 6,10,13. TBr. 1,2,6,17. Âçv. Gṛhy. 1,8,9. °देश 13, 7. 21,7. Lâṭj. 2,5,6. Kauç. 11. 35. 45. 70. पास्य मेनिर्हृदये Ait. Br. 8, 24. Çâṅkh. 28. fg. in Ind. St. 4,302. Hauptsitz des Blutes Sucr. 1,43,5.

विप्रमुच्यमाणा° (vgl. कृच्छ्रोष) 124,14. कषायो हृदयं कर्षति 135,8. हृदयाविमुक्ति 191,3. 2,183,13. 464,11. fgg. Sitz von बुद्धि und मनस् 1,324, 9. 345,19. von सत्त्व, रजस् und तमस् 349,15. व्यदीर्यतेव हृदयम् MBh. 3,2300. नेदानीं हृदयं चेन्मे स्फुटिष्यति सहस्रधा R. Gorr. 2,81,4 (fernere Belege s. u. स्फुट् 1). द्विधेव हृदयं तस्य दुःखितस्याभवत् MBh. 3, 2359. उद्वेजते मे हृदयम् 2323. उद्विग्नहृदया R. Gorr. 2,101,26. घाणभिन्न° Rāgh. 11,19. Mārk. P. 112,4. Vet. in LA. (III) 5,20. उत्कण्ठोच्छ्वसित° Megh. 98. सुधीश हृदये Spr. (II) 3817. नियन्तमिव हृदये Vasiṅ. Bhn. S. 2,5. 8,19. 50,13. 52,4. हृदयं मनसः पदम् Bhāg. P. 2,6,10. Pañcat. 208,21. fgg. तं मणिं हृदये (Herzgegend) कृत्वा R. 5,67,1. हृदयादवतार्यते क्वाः Spr. (II) 4011. घाषाण्डुरस्तनतट 2497. Verz. d. Oxf. H. 103,a,31. 149,b,24. हृदयानि सतामेव कठिनानि Spr. (II) 7408. घोर° Rāgh. 9,9. कुसुमकोमल Vikr. 47. नवनीतं हृदयं ब्राह्मणस्य, तीक्ष्णधारम् Spr. (II) 3414. कुरु त्वं हृदयं स्थिरम् R. Gorr. 2,26,29. घार्द्र Kathās. 22,65. द्रवद्धृदय Bhāg. P. 3,28,24. घस्वस्थ° R. 1,9,42. सदय° ad Megh. 113. घभिन्न° Rāja-Tar. 4,128. (घाशाबन्धः) घङ्गनानां मनःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे कृणद्धि Megh. 10. वासवदत्ताहृत° Kathās. 11,83. शोकसंतप्त° R. 1,54,9. शोकानलदग्ध° Prān. 90,11. ist वृत्तज्ञं सर्वदेहिनाम् M. 8,86. जानाति नरस्य वृत्तम् Spr. (II) 930. त्रपमपि सदृशं येषां वचनं हृदयं समाचारः 7230. घन्तर्गतमपि व्यक्तमाख्याति हृदयं हृदा R. 1,77,27. हृदयसर्वगात्राणि मनांसि हृदयानि च 4, 30. हृदयान्यामथ्नन्धेव व्रतस्य गुणवत्तया 2,26,2. मथ्यमानेन दुःखेन हृदयेन MBh. 1,6113. स्त्रीणां गृह्णाति हृदयम् Spr. (II) 3204. दुर्ग्राह्य° 751. हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मः M. 2,1. पर्यचित्तयद्धृदयेन MBh. 3,2905. मम हृदयेन सतं संमन्त्र्य Pañcat. 25,14. भर्तं मरुन्मरुद्धृदयान्न याति वै R. 2,69, 21. घनघो नयसंकाशो हृदयान्नापसर्पति Spr. (II) 4477. Mārk. P. 16,21. यो यस्य हृदये नास्ति Spr. (II) 2906. विदुषां विदितं स्त्रीणां हृदये यो न तिष्ठति 6076. घतो ऽन्यथा न मे वासो वर्तते हृदये क्वचित् MBh. 3, 2602. इदं वचनं को हृदये कुर्यात् R. 2,21,7. घानाशो हृदये दधौ Kathās. 19,89. हृदये निधत्तम् Spr. (II) 6782. °निक्षिप्त Megh. 78. 85. 97, v. l. हृदयानन्दकर Vasiṅ. Bhn. S. 19,13. सर्वान्तःपुरवनिताव्यापारं प्रति निवृत्तहृदयस्य Mālav. 35. विपुल° (v. l. für °मति) Spr. (II) 6135. घनित्य° (स्त्री) 3204. बद्धहृदयस्तस्मिन्नर्भके Bhāg. P. 6,1,25. घकर्ण° Spr. (II) 865. घज्ञानहृदया मूर्खाः im Herzen bergend Kathās. 62,202. कृत्त° adj. Bhāg. P. 1,9,47. — *b) Herz* so v. a. *das Innere des Körpers:* स्वयं स पत्मं हृदये नि धत्ते RV. 1,122,9. AV. 2,29,6. घङ्गेभ्यो हृदयाय च 6, 90,1. विषासाग्रुष्क° MBh. 3,10431. *das Letzte was vom zerfallenden Leib übrig bleibt:* स हृदयं भूतौ ऽशयत् TBr. 2,3,6,1. *Mitte, Centrum* überh.: हृदये (चन्द्रस्य) लाञ्छनं मृगः Hall. 1,44. eines Spruchs Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,91. Weber, Rāmāt. Up. 303. — *c) Inneres, Kern einer Sache* uneigentlich für *das Beste, Liebste, Geheimste* u. s. w.: der Erde VS. 11,39. AV. 12,1,8. des Meeres VS. 13,63. der Gewässer AV. 3,13,7. des Agni VS. 18,55. TBr. 1,1,3,12. des Vishṇu TS. 3,2,6,1. der Götter VS. 16,46. पुत्रो हृदयम् TBr. 2,2,3,4. घक्षाणां हृदयं परम् *das grosse Geheimniss des Würfelspiels* MBh. 3,2886. घत° 3823. 2837. 3081. fgg. 4,339. Harīv. 815. VP. 379, N. 9. सकलास्त्राणाम् Mārk. P. 63,27. 39. यज्ञ° MBh. 3,2628. 2834. 2836. 5,1312. Bhāg. P. 11,20,21. तन्त्र° MBh. 5,4574. मीमांसा° Prān. 110,8. सूर्य° Kāśīkh.-P. und Gāyatr.-P. im ÇKDr. unter सूर्य°. — *d)* प्रज्ञापतेर्हृदयम् N. eines Sāman Ind. St. 3,225,a. — 2) m. scheinbar N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vāyu beim Schol. zu H. 210. es ist aber हृदयोद्धर्तन zu lesen. — 3) f. घा N. pr. einer Stute: विख्याता हृदया नाम Harīv. 2105. fg. विज्ञातहृदया die neuere Ausg. — Vgl. तल°, द्वि°, प्रज्ञाप°, प्रति°, ब्रह्म°, भीरु°, यम°, राम°, रुद्र°, वज्र°, वि°, स°, सु°.

2. हृदय (हृद् + घय) adj. *in's Herz dringend* (so Comm.): सर्वभूत° Bhāg. P. 1,2,3. warum nicht *alle Wesen im Herzen tragend?*

हृदयक्लम m. *Abspannung —, Schlaffheit des Herzens* Suçr. 2,461, 17. Mālav. Nid. 53,5.

हृदयग्रन्थि m. *Herzensknoten* so v. a. *Alles was das Herz beschwert:* भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः Bhāg. P. 1,2,21. Vgl. unter ग्रन्थि 1).

हृदयग्राह m. *die Entgegennahme des Geheimnisses von* (gen.): घस्त्रग्रामस्य सर्वस्य Mārk. P. 63,23.

हृदयग्राहिन् adj. *das Herz mit sich fortreissend, — entzückend:* कोकिल R. 1,64,6 (66,6 Gorr.).

हृदयंगम adj. (f. घा) *zum Herzen dringend, dem H. zusagend:* Personen, Reden, Laute, Speisen u. s. w. AK. 1,1,5,19. H. 268. Hall. 1, 146. MBh. 1,7560. 4,330. 8,2228. Harīv. 5762. R. 1,11,20. 2,39,32. 64,31. R. Gorr. 2,98,8. 3,28,8. Rāgh. 19,13. Kumāras. 2,16. 4,24. Utṭarar. 80,5 (103,5). Rāja-Tar. 1,22. 3,158. 5,79. Bhāg. P. 5,3,2. 9, 20,11. 10,62,16. Sarvadarçanas. 96,19. Pañcat. 1,14,73. कुलटा° 97. *aus dem Herzen kommend, der innersten Ueberzeugung entsprechend* Bhatt. 6,103. Davon nom. abstr. °ता f. (in der zuerst gegebenen Bed.) H. 67.

हृदयच्छिद् adj. *das Herz durchbohrend:* बाण MBh. 5,7236. बाणः R. Gorr. 2,17,20. 33. 5,37,10.

हृदयज्ञ adj. 1) *zum Innern gehörig, dem I. entsprechend* TBr. 3,11,8, 7. — 2) *aus dem Herzen geboren*, m. so v. a. *Sohn* Bhāg. P. 5,15,5.

हृदयज्ञ adj. 1) *das Herz kennend* so v. a. *dem Herzen zusagend* Kathās. Up. 7,2,1 (auch घ°). — 2) *das Geheimniss von* (geht im comp. vorauf) *kennend:* घत° MBh. 3,2833. 2837. 4,339. Harīv. 815. VP. 379, N. 9. Davon nom. abstr. °ज्ञान n. Bhāg. P. 11,20,21.

हृदयदत्त m. N. pr. eines Juristen Verz. d. B. H. No. 1403 (°दत्ती nom. die Hdschr.).

हृदयदाहिन् m. *das Herz versengend:* शल्यतुल्यो विपाकः घतिरमसकृतानां कर्मणाम् Spr. (II) 2122. परिकर 4238.

हृदयदीप m. Titel eines Wörterbuchs des Vopadeva Nigh. Pa. 3 Verz. d. B. H. No. 979.

हृदयदूत m. *Herzensbote*, Titel eines Gedichts Verz. d. B. H. No. 571.

हृदयनाथ m. N. pr. eines *Fürsten* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, Çl. 41. — Vgl. हृदयेश und हृदयेश्वर.

हृदयपीडा f. = हृत्पीडा Suçr. 2,290,2; vgl. 1,332,1.

हृदयपुण्डरीक n. = हृत्पङ्कज Sarvadarçanas. 177,19.

हृदयप्रिय adj. *herzerquickend:* Speise Suçr. 1,235,15.

हृदयरामदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Notices of Skt Mss. 2,269.

हृदयरोग m. = हृद्रोग *Herzkrankheit* P. 6,3,51.

हृदयलेख m. verschieden von हृल्लेख Sudan. K. zu P. 6,3,50 (49).

हृदयवत् adj. von हृदय, = हृदयालु u. s. w. P. 5,2,122, Vârtt. 6.

हृदयवृत्ति f. *Herzensstimmung* Spr. (II) 2810.

हृदयव्याधि m. *eine Krankheit des Herzens, — der Seele* Spr. (II) 5034.

हृदयशूल m. *ein Spiess, an welchem das Herz des Opferthiers gebraten wird*; elliptisch *die Handlung des Bratens* TS. 6,4,6,4. Çat. Br. 3,8,3,3. 6,2,3,38. 3,5,4,41. Kâtj. Çr. 6,10,1. °शूलात्ते *am Schluss dieses Vorganges* 5,11,26. °शूलाता: पशव: *die Thiere* (d. h. *ihr Opfer*) *schliessen mit* Çâṅkh. Çr. 6,1,36. उपोयमान *während er angesteckt wird* Âçv. Çr. 3,6,23. 4,12,7. Gaṇ. 1,11,15. Lâṭj. 5,4,6.

हृदयशोक m. = हृच्छोक *Herzenskummer* P. 6,3,51.

हृदयसंमित adj. *in der Höhe des Herzens* Çâṅkh. Çr. 1,10,7.

हृदयसाक्षि m. N. pr. eines *Fürsten* (ᵹ⊔) Verz. d. Oxf. H. 140,*b*, No. 283.

हृदयस्थ adj. *im Herzen ruhend*: मनोरथा: Pañkat. 46,19. *im Herzen —, im Innern des Körpers befindlich*: कृमय: Suçr. 2,466,6.

हृदयस्थान n. *Herzgegend, Brust* H. 602. Halâj. 2,372.

हृदयस्पृश् adj. *das Herz berührend* Gobh. 1,2,29. — Vgl. हृदिस्पृश्.

हृदयहारिन् adj. *das Herz raubend, — hinreissend, entzückend* Spr. (II) 4353. Râga-Tar. 4,436.

हृदयाकाश (हृदय + आ°) m. *Herzhöhlung* Ind. St. 1,258.

हृदयात्मन् (हृदय + आ°) m. *Reiher* (कङ्क) Çabdar. im ÇKDr.

हृदयानुग (हृदय + अनुग) adj. (f. आ) *dem Herzen willfahrend*: Freund Kâm. Nitis. 4,70 (= मर्मज्ञ Comm.). Rede Spr. (II) 2916.

हृदयाभरण (हृदय + आ°) m. N. pr. eines Sohnes eines Kâlidâsa Verz. d. B. H. No. 574.

हृदयामर्ष (हृदय + आ°) m. *Krankheit des Herzens, — des Innern* überh. AV. 5,30,9. 6,14,1. 127,3. = हृद्रोग Baitân. 7.

हृदयालु adj. von हृदय P. 5,2,122, Vârtt. 6. AK. 3 1,3. H. 345.

हृदयावर्तक (हृदय + आ°) adj. *Jmdes* (gen.) *Herz gewinnend* Râga-Tar. 6,330.

हृदयाविध् (हृदय + विध्) adj. VS. Pair. 3,96. P. 6,3,116. 1) *herzdurchbohrend* RV. 1,24,8. Bhatt. 6,73. — 2) *im Herzen wund* AV. 5,6,10.

हृदयाविन् ved. adj. von हृदय P. 5,2,122, Vârtt. 1.

हृदयिक adj. von हृदय P. 5,2,122, Vârtt. 6.

हृदयिल्ल adj. von Wurzel (?) हृद् Vop. 26,166.

हृदयिन् adj. von हृदय P. 5,2,122, Vârtt. 6. Gaṇar. im ÇKDr.

हृदयेश 1) m. (हृदय + ईश) *a*) *Herr des Herzens* so v. a. *Geliebter, Gatte* Tait. 2,6,10. 516. — *b*) N. pr. eines Fürsten (vgl. हृदयनरपति) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Cl. 38. — 2) f. आ (हृदय + ईशा) *Herrin des Herzens* so v. a. *Gattin, Geliebte* H. 516.

हृदयेशय adj. *im Herzen ruhend*: क्रोध R. 6,34,21.

हृदयेश्वर (हृदय + ई°) m. 1) *Herr des Herzens* so v. a. *Geliebter, Gatte* Z. d. d. m. G. 37,100. — 2) N. pr. = हृदयेश 1) *b*) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Cl. 34.

हृदयोद्दर्तन (हृदय + उ°) adj. *das Herz zersprengend*; m. N. pr. eines Dämons Harîv. 9363. so ist auch zu lesen st. हृदयो वर्तुल: im Citat aus Vâjas beim Schol. zu H. 210.

हृदयोद्वेष्टन s. u. उद्वेष्टन.

हृदयोपदेश (हृदय + उपदेश) VS. Pair. 3,40. m. *ein best. Fleischtheil am Herzen* (oder *die Aorta*) VS. 25,3. du. TS. 5,7,16,1 nach dem Comm. *Herz und Herzbeutel.*

1. हृदय्य (von हृदय) VS. Pair. 4,150. adj. (f. या) *im Herzen befindlich*: मही हृदय्या पाकत्या RV. 10,131,4. शोक AV. 6,18,1. मन्यव: Bhâg. P. 3,24,33. काम: 11,20,29. *am Herzen liegend, lieb*: Töchter 7,6,12.

2. हृदय्य adj. von हृद् VS. 16,44. richtig हृद्य्य TS. 4,5,9,1.

हृदाभय (हृद् + आ°) m. = हृद्रोग Verz. d. Oxf. H. 313,*b*,11. Kâraka 10,11.

हृदावर्त (हृद् + आ°) m. *Haarwirbel auf der Brust eines Pferdes* Tait. 2,8,14.

हृदि n. = हृद् (vgl. हार्दि neben हार्द) *Herz*: पणेरिच्छ हृदि प्रियम् RV. 6,53,6. 2,23,16. möglich auch 10,91,13.

हृदिक m. N. pr. des Vaters von Kṛtavarman MBh. 1,2434. 3,762. 779. 8,1038. 4307. Harîv. 2035. VP. 4,14,6. — Vgl. हार्दिक्य und हृदीक.

हृदिनी f. = ह्रदिनी *Fluss* H. 1080.

हृदिशय (हृदि loc. von हृद्) adj. *im Herzen steckend*: वाक्यशल्य Spr. (II) 1349.

हृदिस्थ adj. *im Herzen befindlich* Çvetâçv. Up. 4,20. Suçr. 2,463,1. चात्मन् Spr. (II) 7135. काङ्क्षित MBh. 13,2812. प्रभा: Bhâg. P. 3,10,3. Personen so v. a. *lieb* R. 7,38,30. Spr. (II) 5076. Bhâg. P. 1,9,10.

हृदिस्पृश् adj. VS. Pair. 3,80. *das Herz rührend, ergreifend, entzückend* P. 6,3,9, Vârtt. 1. 2. स्तोम RV. 1,16,7. 10,47,7. 4,10,1. 10,25,2. हृदिस्पृक्कृतुस्पृक् Âçv. Çr. 5,19,5. Bhâg. P. 3,14,42. 18,25,33. 31,10. 39,16. — Vgl. दिविस्पृश्.

हृदिस्पृश adj. dass. Bhâg. P. 1,15,18.

हृदीक m. N. pr. = हृदिक Bhâg. P. 1,14,28. 9,24,25.

हृदुत्क्लेद m. *Uebelkeit, Würgen* Suçr. 1,50,2.

हृदुत्क्लेश m. dass. Suçr. 2,464,3.

हृद्द adj. *bis zur Herzgegend reichend*: आप: M. 2,62.

हृद्गत adj. *im Herzen befindlich, am H. liegend, dem H. zusagend*: शल्य R. 7,47,4. काम MBh. 5,62. 8,2419. भाव R. 3,19,17. प्रीति 7,107,18. कोपधारण 3,41,35. दु:ख 7,58,12. Varâh. Bṛh. S. 51,22. Personen R. 7,104,19. Spr. (II) 2371. Bhâg. P. 7,13,21. आप: so v. a. *wohlschmeckend* MBh. 1,772. neutr. R. 7,37,2,12. 87,23.

हृद्ग्रह m. = हृद्रोग Râgân. 20,14.

हृद्गोल m. N. pr. eines Berges P. 4,3,91, Schol.

हृद्गोलीय m. pl. *die Anwohner des* Hṛdgola ebend.

हृद्ग्रन्थ m. = हृद्रोग Râgân. im ÇKDr.

हृद्ग्रह m. *Herzkrampf* Kâraka 10,6.

हृद्दाह m. etwa *Sodbrennen* Kâraka 9,4.

हृद्द्योत und हृद्द्योतन s. हृद्योत, हृद्योतन.

हृद्द्रव m. *schneller Herzschlag* Vâgbh. 1,11,16.

हृद्द्वार n. *der Eingang zum Herzen* Amṛtanâd. Up. in Ind. St. 9,33.

हृदात्री f. *ein best. Heilmittel*, = क्तावली Nigh. Pr.

हृदित (हृद् + 1. क्त) adj. *dem Herzen* d. i. *dem Magen zusagend* H. an. 2,391. Med. j. 65.

हृदुल adj. etwa *herzüberwältigend* d. h. *in's Herz treffend:* Bogen AV. 5,18,8. vielleicht entstellt.

हृद्य n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,6. °तन्त्र 24.

हृद्य und हृद्य (von हृद्) P. 6,3,50. 1) adj. *a) im Herzen —, im Innern befindlich;* = हृत्य H. an. 2,390. fg. Med. j. 65. एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्रात् *innerst* RV. 4,58,3. AV. 16,3,3. साकं प्रेतिष्ठा हृद्यो बन्ध RV. 10,73,6. प्रतिष्ठा। हृद्या। Padap., besser wohl हृदि। घा. — *b) was dem Herzen* d. h. *dem Innern, Magen zusagt, stomachicum, a cordial; mundend:* Speisen u. s. w. M. 3,227. Bhag. 17,8. MBh. 1,7714. Sucr. 1,117,8. 153,17. 223,20. 225,10. 2,45,19. 190,14. Vigan. 1,6,111. Vaitân. Bhp. S. 48,28. घ° Sucr. 1,191,8. 2,190,11. 14. = हृदित H. an. Med. — *c) an's Herz gewachsen, innig geliebt* P. 4,4,95. AK. 3,2, 3. H. an. Med. सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम् *Herzenskind* RV. 5,42,2. पुत्राणां हृद्यतमः TBr. 2,3,11,4. यो यस्य हृद्यः Spr. (II) 2109, v. l. धार्य Bhâg. P. 3,15,37. — *d) dem Herzen zusagend so v. a. angenehm, lieblich, reizend, hübsch* H. 1445. Hall. 1,146. 4,4. Gegenden R. Gorr. 1, 51,1. Kathâs. 26,283. Mâlav. P. 63,1. Bhâg. P. 4,6,28. Gebäude Kathâs. 18,319. Früchte 81,21 (हृद्यानि zu lesen). Schmucksachen MBh. 3, 1818. Geruch R. 1,5,15. Spr. (II) 7106. 7263. Vaitân. Bhp. S. 77,4. Farben 48,27. Reden, Erzählungen MBh. 7,2352. R. Gorr. 1,71,19. 3, 13,1. 4,54,7. Kathâs. 1,44. 86,3. रमक्रम 14,62. Bhartr. R. 2,52,25. Personen M. 7,77. 9,94. Kâm. Nitis. 4,62. Spr. (II) 1105. Gir. 4,20. Weber, Kṛshṇaj. 266. Râga-Tar. 6,165. compar. °तर MBh. 5,149. Verz. d. Oxf. H. 199,*a*,4. — 2) m. *a) Zauberspruch* P. 4,4,95. H. an. Med. — *b)* N. pr. eines Mannes MBh. 2,295. — 3) f. घा *eine best. Heilpflanze*, = वृद्धि H. an. Med. — 4) n. *weisser Kümmel* H. an. *die aromatische Rinde der Laurus Cassia* Çabdar. im ÇKDr.

हृद्यगन्ध 1) adj. *angenehm riechend* Sucr. 1,161,18. — 2) m. *Aegle Marmelos Corr.* (बिल्व) Gaṇâd. im ÇKDr. — 3) f. घा *Jasminum grandiflorum* Râgân. 10,76. — 4) n. *a) eine Art Kümmel* Ratnam. 100. Çabdar. im ÇKDr. — *b) schwarzes Salz* Râgân. 6,96.

हृद्यगन्धक n. *eine Art Salz*, = सौवर्चल Râgân. 6,93.

हृद्यगन्धि n. *eine Art Kümmel* Ratnam. im ÇKDr. गन्ध° unsere Hdschr.

हृद्यता f. nom. abstr. 1) zu हृद्य 1) *b)* Sucr. 1,218,4. — 2) zu हृद्य 1) *d)* Kâm. Nitis. 3,10.

हृद्योत (हृद्योत Padap., vielmehr हृद् + द्योत) m. *inneres Gebrechen* (vgl. RV. 1,30,11) AV. 1,22,1.

हृद्योतन (हृद् + द्यो°) adj. *das Herz brechend:* हृद्योतनो द्विषतां यो हि शीर्षम् AV. 5,20,12.

हृद्योतभेषज n. *ein Heilmittel gegen innere Krankheiten* AV. 6,24,1.

हृद्रु f. 1) = हृद्रोग *als best. Krankheit* Râgân. 20,14. — 2) *Herzeleid* Bhâg. P. 6,14,31.

1. हृद्रोग m. = हृद्यरोग P. 6,3,51. 1) *inneres Leiden* RV. 1,30,11. — 2) *Herzkrankheit* (als best. Krankheit), Wise vermuthet *angina pectoris;* = घास Râgân. 20,14. — Sucr. 1,172,8. 219,11. 226,19. 2,45 10. 186,14. 256,20. 421,6. 464,8. 13. Karaka. 239. Mâdh. Nid. 52. Bhâvpr. 7. Verz. d. B. H. No. 941. 949. 963. 967. Verz. d. Oxf. H. 308,*b*, 27. 316,*a*,1 v. u. 357,*a*, No. 849. fg. Vaitân. Bhp. S. 101,44. — 3) *Herzeleid* Spr. (II) 7481. die Liebe Bhâg. P. 10,33,40.

2. हृद्रोग (aus ὑδροχόος) m. *der Wassermann im Thierkreise* Vaitân. Bhp. 1,8.

हृद्रोगविरिन् m. *Terminalia Arjuna W. et A.* (*Feind der* हृद्रोग *genannten Krankheit*) Çabdar. im ÇKDr.

हृद्रोगिन् adj. *an der* हृद्रोग *genannten Krankheit leidend* Sucr. 1, 11,11. 2,466,2. Karaka. 242,7.

हृदयक m. *Bauch* Çabdar. im ÇKDr.

हृन्मन्त्र m. *ein best Spruch* Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,3.

हृन्मोक् m. etwa *Herzbeengung* Karaka 10,9.

हृल्लास (हृद् + लास) m. P. 6,3,50. *Hüpfen des Herzens* d. i. *Herzklopfen, Herzstösse* (wie vor dem Erbrechen) Sucr. 1,90,11. 97,8. 247, 9. 2,403,18. 458,14 (= घूत्करण Comm.). प्रवृत्त° 185,8. Mâlatîm. 57, 9. = हिक्का H. 468.

हृल्लासक m. dass. Sucr. 2,465,1. f. °सिका Karaka 10,1.

हृल्लेख (हृद् + लेख) P. 6,3,50. *Scrupel des Herzens, Zweifel:* घत्व° adj. MBh. 12,9267. व्यपेत° adj. (मनस्) 10521. सहृल्लेखेन (so zu lesen st. सकृ°) चेतसा R. 5,100,19. विचिकित्सा तु हृदये यत्र यस्मिन्प्रजायते। सहृल्लेखं तु वित्तेयं पुरीषं तु स्वभावतः॥ Prâjaçittav. im ÇKDr. unter सहृल्लेख. = तर्क Taik. 3,2,15. = उत्कलिका H. 314. Hall. 4,37. = ज्ञान Râgân. im ÇKDr. = वाङ्मुख und वासना Nilak. zu MBh.

हृल्लोचन (हृद् + लोचन) n. *das Herz als Auge* Verz. d. Oxf. H. 37, *a*, No. 90.

हृषी = घग्निसोमौ ÇKDr. angeblich nach dem MBh. wohl nur ein verlesenes ह्रषी *die beiden* Ṛshi.

हृषीक Uṇâdis. 4,17. n. *Sinnesorgan* AK. 1,1,*a*,17. Taik. 3,3,206. H. 1383. Hall. 2,280. Harîv. 14950. Bhâg. P. 1,8,38. 2,6,33. 3,26, 28. 4,24,64. 10,14,33. Pâṇ. Gaṇ. 2,7,39. Kâçikâ. 20,9 (nach Aufrecht). — Wort und Bedeutung aus हृषीकेश geschlossen. Vgl. दुर्हृषीक.

हृषीकनाथ m. ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's Pâṇ. Gaṇ. 3,2,3. nach हृषीकेश gebildet.

हृषीकाश्रम m. N. pr. eines Mannes Hall 102.

हृषीकेश m. 1) ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. 1,1,*a*,13. H. 214. Hall. 1,23. Bhag. 1,16. 21. 24. 2,9. 10. 11,36. 18,1. MBh. 1,24. हृषीकात्मन्हृषीकेशहृषीकेशनमस्कृते 5,3567. 12,893. Harîv. 10. 14114. हृषीकाणीन्द्रियाण्याहुस्तेषामीशो यतो भवान्। हृषीकेशस्ततो विद्वो व्याप्तो देवेषु केशव॥ 14950. R. 1,45,30. 6,102,12. VP. 2, N. 2. Weber, Kṛshṇaj. 294. Bhâg. P. 1,8,23. 2,4,11. 3,13,12. Râga-Tar. 5,100. ist nicht in हृषीक + ईश, sondern in हृषी (vgl. हृषीवत्) + केश zu zerlegen und bedeutet demnach *dessen Haupthaar zu Berge steht;* vgl. हृषु. — 2) Bez. *des 10ten Monats* Vaitân. Bhp. S. 103,15. — 3) N. pr. eines Tirtha, an dem Vishṇu als Hṛshîkeça verehrt wurde, Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,33. — 4) *Herr —, Gebieter der Sinne*, vom मनस् Bhâg. P. 4,24,36.

हृषीकेश्वर m. *Herr —, Gebieter der Sinne:* Kṛshṇa Bhâg. P. 5,18,19.

कृपीवत् (von कृपि = कर्प) adj. *freudig erregt, lustig* RV. 1,127,6. 2,31,1.

कृष्टरोमन् 1) adj. *dessen Haare am Körper zu Berge stehen*; s. u. कर्ष्. — 2) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 46,38.

कृष्टि (von कर्ष्) gaṇa गर्ग्यादि zu P. 4,1,136. f. 1) *Freude* Dharan. im ÇKDa. Milattu. 82,4 (कृष्टी zu lesen). — 2) = मान m. Dhan. im ÇKDa. — Vgl. कार्ष्टिय.

कृष्टियोनि adj. andere Benennung für den ईर्ष्यक (Suçr. 1,318,15) Bhâvapr. 2.

कृष्यजिक् n. *eine Art des Aussatzes* Çârîr. Sâṁh. 1,7,64 falsch für काष्य° (काष्य°).

के interj. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. चादि zu 4,57. *des Anrufs, he!* AK. 3,5,7. H. 1537. an. 7,3. 6. 16 (auch पादपूरणे). Med. avj. 87 (auch यमुपादे). Çârîr. Ça. 1,11,1. vor einem voc. Çat. Br. 3,2,1,23. Bhâg. 11,41. MBh. 8,2037. Spr. (II) 5499. 7412. 7414. fg. 7420. 7500. Varâh. Bṛh. S. 74,11. Pañkat. 37,23. Vet. in LA. (III) 7,6. 16,14. 17,15. nach einem voc. Spr. (II) 3914. 6033. statt eines voc.: पलायिता गृहं गत्वा कस्य द्रक्ष्यथ रे मुखम् Harîv. 8124. केऽ P. 8,2,85. — Vgl. के.

केक् interj. Çat. Br. 1,8,1,23.

केका f. = किका *das Schlucken, singultus* H. 468.

केङ्, कैंति v. l. für केङ् Dhâtup. 9,35.

केङ्, कैंठति und °ते (विबाधायाम्) Dhâtup. 9,35. 8,13. केण्ठाति 31,60 (भूतप्राडुर्भावे, भूति°, भूतिपूत्योद्भवे). Siddh. K. 147,a,3. Bildung des aor. im caus. zu P. 3,4,3. Vop. 19,3. — Vgl. विकेठक fgg.

केठ m. = विबाधा und विकेठा Med. th. 10.

केड् s. कीड्.

केड, केळ (von कीड्) m. *Aerger, Unmuth, Zorn* RV. 1,94,14. मा केळे भूम वरुणस्य 7,62,4. AV. 12,4,30. fg.

केडड m. dass. Çârṅgadh. bei Wilson.

केडन, केळन (von कीड्) s. देव° und केलन.

केडस्, केळस् (wie eben) n. *Aerger, Unmuth, Zorn* Naigh. 2,13. RV. 1,24,14. दैव्य 114,4. 4,1,4. pl. 6,48,10. नि केळो धत्त 1,171,1. 5,62,8. 7,84,2. AV. 19,3,4. VS. 13,45.

केडावुक m. *Rosshändler* Taitt. 2,9,27. — Vgl. केलावुक.

केडिएव (wohl so zu verbinden) m. N. pr. eines Mannes Inschr. bei Colebr. Misc. Ess. 2,242.

केड्, केण्डति Dhâtup. 31,60 (भूतप्राडुर्भावे, भूति°, भूतिपूत्योद्भवे).

केतर् und केर्तर् (von 1. कि) nom. ag. *Treiber* RV. 8,88,7. यत्या कियाना न केतृभिः 9,13,6. 62,6. 64,29.

केति (wie eben) f. Vop. 26,185. oxyt. nur im Mantra P. 3,3,97. 1) f. (in der späteren Sprache auch m.: vgl. Kaçava bei Mallin. zu Kir. 14,30) *Schuss; Geschoss, Waffe* überh. AK. 3,4,14,73. H. 773. an. 2, 211. Med. t. 76. Halâj. 2,307. Vaij. bei Mallin. zu Kir. 3,56. दस्यवे केतिमस्य RV. 1,103,3. 121,10. तपुषि 3,30,17. 6,62,9. दैव्या 10,87,19. des Rudra 2,33,14. 6,28,7. AV. 5,59,3. Çat. Br. 12,7,2,20. Ind. St. 2,34. des Vivasvant RV. 8,56,20. घोरे केतीरदेवीः 50,16. पत्तिणी 10,165,2. शतानीका Vâlakh. 2,2. RV. 10,89,12. AV. 1,13,3. 26,1. 2, 11,1. 24,1. 4,10,5. 5,6,9. 7,7. भीमा इन्द्रस्य केतवः 4,37,3. 8,2,9. 10,3, 43. 11,2,22. 12,4,32. VS. 15,10. 13. fgg. 16,1. Kauç. 128. in RV. 6, 18,10 ist st. इन्द्र । केतिः । wie Padap. will, vermuthlich इन्द्रकेतिः zu verbinden. Personificirt: केतवो नाम देवाः AV. 3,26,1. TS. 5,5,10,3. — केतिभिश्चेतनावद्भिः (आयुधैश्च° ed. Calc.) Ragh. 10,12. विसस्तर्त केतिम् Râghavap. 11,19. Kir. 3,56. 14,20. Spr. (II) 1304. Bhâg. P. 3,8, 20. 23,38. 4,5,22. 11,29,39. Pañkat. 3,8,1. 6. am Ende eines adj. comp.: मति° Spr. (II) 4349. यप्राप्त° Râja-Tar. 5,410. निर्केति *waffenlos* Jâṭ. 1,325. — 2) f. Agni's *Waffe* so v. a. *Flamme* AK. 1,1,4,52. 3,4,14,73. H. 1102. H. an. Med. Halâj. 1,65. Vaij. a. a. O. दस्यन्ति सर्वभूतानि सतो (Agni angeredet) निष्क्राम्य केतवः MBh. 1,8357 = 5,488 = Mârk. P. 99,44. यद्ग्ने ते शिवं रूपं ये च ते सप्त केतवः MBh. 1,8413 = Mârk. P. 99,70. वनवह्निना — उग्रकेतिकृत्तेन Kathâs. 56,344. *Sonnenstrahl* AK. 3,4,14,73. H. an. Med. — 3) f. *Schuss* so v. a. *pfeilschnelle Bewegung, Anprall* der Sehne RV. 8,75,14. मा तें केतिं तविषीं चुकुधाम 10,142,3. मृगाणां न केतवो यन्ति चेमा बृहस्पतेरिमायान् *Jagd* 1,190,4. — 4) *Werkzeug* Bhâg. P. 2,7,48. — 5) *ein junger Schoss* (अङ्कुर) Vaij. a. a. O. — 6) m. N. pr. eines Râkshasa R. 7,4,14. fg. VP. 233. eines Asura Bhâg. P. 6,10,20. 8,10,20. — Vgl. घसि°, तिग्म°, दूरे° (nach TS. 3,4,2,2), क्रूरि°.

केतिक am Ende eines adj. comp. = केति 1): पष्टिपाशुकेतिकी AK. 2,8,2,38. — Vgl. शक्ति°, स्यधिति°.

केतिमत् (von केति) adj. *mit einem Geschoss versehen* AV. 5.18,9.

केतिमत्त m. Bez. *eines best. Spruches* Verz. d. Oxf. H. 105,b,1.

केतु (von 1. कि) Uṇâdis. 1,73. m. 1) *wer* oder *was Etwas veranlasst, — bewirkt, Veranlassung, Ursache* AK. 1,1,4,6. Taitt. 3,2,10. H. 1513. Halâj. 2,457. RV. Prât. 11,12. 22. P. 2,3,23. 3,3,156. MBh. 1,67. 2, 564 (pl.). केवकेतुभिः 12,10311. R. 2,21,14. Siṁhâs. 1. 31. कालो केतुं विकुरुते Spr. (II) 1709. °विगम 5888. विना केतुमपि द्वंद्वम् 6360. न केतुं कंचिदीक्षते 7513. प्रणाम्य केतुमीश्वरम् Verz. d. Oxf. H. 240,a, No. 383. einer Krankheit 305,b,18. 312,a, No. 745. केतुं कृत्वा पितृवधम् Bhâg. P. 9,16,18. नियम° *eine regulirende Ursache* Sarvadarçanas. 16, 13. fg. नक्षत्रोल्काः साधको केतुः स्वल्पस्यापीह कर्मणः Spr. (II) 1685. mit gen. P. 2,3,36. न केतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च Spr. (II) 2337. न खलु वयस्तेजसो केतुः 7040. Bhâg. P. 12,7,18. mit dat. Çvetâçv. Up. 6,17. mit loc. Âçv. Ça. 12,15,12. Bhâg. 13,20. R. 2,58,25. तत्र Ragh. 1,68. यत्र Spr. (II) 3536. 7044. न ज्ञाने को केतुरिति शतधा पत्र खदयम् 2071. in comp. mit dem *was bewirkt wird:* सर्गस्वर्गापवर्ग° Maitrâyaṇ. 6,30. RV. Prât. 11,2. Manu. 3. पितरो ज्ञानकेतवः Ragh. 1,24. 2, 44. व्याधि° Çiç. 59. fg. Spr. (II) 1326. धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राणाः संश्रितिकेतवः 3121. 5709. 5875. Varâh. Bṛh. S. 28,4. 75,3. 78,10. fg. 93, 20. Kathâs. 23,93. AK. 3,4,22,212. Râja-Tar. 6,185. Hit. 38,11. कलये ऽधर्मकेतवे Bhâg. P. 1,17,38. 2,2,6. 3,17,4. 33,24. 5,20,39. Sarvadarçanas. 29,16. 35,19. 37,14. fg. 39,16. 40,6. fgg. 180,11. शाकला व्याचार्यशास्त्रापरिलोपकेतवः RV. Prât. 1,16 (26). ते शिष्टा ब्राह्मणा ज्ञेयाः श्रुतिप्रत्यक्षकेतवः M. 12,109. Ragh. 1,10. न गुणाः फलकेतवः Spr. (II) 2129. मत्स्या मम जीवनकेतवः Hit. 113,22. Bhâg. P. 3,12,21. न शराः स्तम्भकेतवः *die Pfeile sind nicht dazu da um den* (Köcher) *vollzustopfen* R. 2,23,31 (30,36 Gorr.). am Ende eines adj. comp. — *zur Ursache habend* so v. a. *bewirkt durch:* तमसा कर्मकेतुना M. 1,49. *angetrieben*

—, *angelockt durch:* क्रव्यादो मांसकेतव: MBh. 10,496. मा कर्मफलकेतुर्भू: Bhag. 2,47. 49. Alle obliquen casus in der Bed. von *einer Ursache wegen, in Veranlassung* von gebraucht Vârtt. zu P. 2,3,23. *a*) abl. oder gen.: कस्माद्धेतो: oder कस्य केतोर्वसति Pat. in Mahâbh. 11th. Ausg. 2, 385,a. घृतस्य ṚV. 10,34,2. मस्य Çat. Br. 2,5,2,2. यज्ञस्य 11,1,4,1. Kâṭhân. Up. 1,3,5. Çiv. 1,13. MBh. 1,7728. 5,7026. R. 2,52,26 (49,22 Gorr.). 98,17 (107,7 Gorr.). Râgat. 2,47. Spr. (II) 7226. Kathâs. 18,73. 26,166. Bhâg. P. 1,14,7. 4,17,4. 7,15,40. कुतो ऽपि केतो: Kathâs. 27, 59. ततो ऽपि केतो: Dhûrtas. 92,16. इति केतो: Z. d. d. m. G. 14,373, 13. in comp. mit der Ergänzung: वृत्ति° M. 4,11. MBh. 2,563. 10,496. R. 1,7,12. 16,33. 2,39,21. 101,17. 3,49,39. 69,16. 5,32,44. Kâm. Nîtis. 14,28. Mṛicch. 26. 44. 79. 105. Çâk. 50,8. Çâk. Cr. 2,9. Spr. (II) 1224. 2641. 6221. 7328. Kathâs. 18,348. 19,57. 22,88. Râga-Tar. 5,216. — *b*) instr.: दिव्येन MBh. 1,4919. यदृच्छया केतुना वा Bhâg. P. 2,8,7. यत्नेन MBh. 1,7640. fg. तेन R. 5,64,14. Sin. D. 2,16. केन M. 8,161. R. Gorr. 1,38,4. Schol. zu P. 2,3,27. Bhâg. P. 1,4,2. केनापि Râga-Tar. 4,460. पुत्र° R. Gorr. 1,24,7. मान° Spr. (II)1838. शास्त्रविज्ञान° 2574. — *c*) dat.: कस्मै केतवे वसति Pat. a. a. O. मूढैर्विधीयते हिंसा सापि दुर्गतिकेतवे Hem. Jogâç. 2,47. मुख° Bhâg. P. 3,30,3. मृत्यु° 7,1,41. नरक° 9,10,28. प्रसरणं तृणकाष्ठादि° H. 791. — *d*) loc. indecl. गण स्वरादि zu P. 1,1,37. कस्मिन्केतौ वसति Pat. a. a. O. कामार्थकेतौ च कुरु प्रयत्नम् um — *Willen* R. 4, 29,25. — *e*) acc.: कं केतुं वसति Pat. a. a. O. — Auch soll man को केतुर्वसति sagen können ebend. — 2) *Grund, Argument, Beweis* AK. 3,4,22,56. यतःशब्दो हेतुवचः Sarvadarçanas. 56,14. 71,11. यतो हेतौ Hall. 5,93. हि desgl. 98. इति desgl. 101. देशदृष्टैश्च शास्त्रदृष्टैश्च केतुभि: M. 8,3. केतुभिर्मोनदर्शिभि: MBh. 1,522. 583. 3,2013. वाक्यमर्थवत्केतुभूषितम् 13, 298. वाक्यं केतुवर्यसंस्तुतम् R. 2,85,1. 3,36,21. 71,4. 5,33,13. 6,79,28. 7,94,8. तिष्ठेत्तु मतिमानागमे न तु केतुषु Suçr. 1,130,20. Spr. (II) 7413. Râga-Tar. 3,332. Hit. 15,22. Sarvadarçanas. 9,11. 12,4. 18,9. 119,11. 17. प्रतिषेध° 114,8. Kuval. 196,b. in der Logik (auch Bez. *des 2ten Theiles im Syllogismus*) Colebr. Misc. Ess. 1,292. Kap. 10,1,2. Nyâyas. 1,1,32. 34. Tarkas. 32. 41. 45. Sarvadarçanas. 113,20. Bhâshâp. 68. — 3) *Mittel:* केतुमात्रं तु रामो वै वधमूलं विभीषण: R. 6,95,55. 7,38,22. Hit. 55,5 (केतुना mit den Hdschrr. zu lesen). पादज्ञानस्य ṚV. Pârç. 17, 16. दश जीवनकेतव: M. 10,116. विद्या जीवनकेतु: Spr. (II) 6089, v. l. तिस्रो विद्यास्तिकेतव: 6637, v. l. को मोक्षकेतु: 6638. रक्षा° Hit. 114,7. जयलाभाय केतू द्वौ Spr. (II) 7436. दीव्यतां दशशती पञ्चाशत्यधिकाभवत्। धान्यव्यतीकरे केतु: so v. a. *Preis* Râga-Tar. 5,71. जीवो नित्यो केतुरस्य त्वनित्य: so v. a. *der Körper* Spr. (II) 3718. instr. am Ende eines comp. so v. a. *vermittelst, durch:* यो न हिंसति सत्त्वानि मनोवाक्कर्मकेतुभि: Spr. (II) 5609. Jâtâ. 2,92. — 4) *Bedingung:* जीवितुं चेच्छसे मूढ केतुं मे गदत: शृणु MBh. 3,13786. — 5) *Art und Weise:* वध्यतां केन केतुना MBh. 13,19. द्वावाकरणकेतू भवत: प्रतिलोमो ऽनुलोमश्च Suçr. 1, 100,11. — 6) in der Grammatik *der Agens des causativen Verbums* P. 1,4,55. 3,68. 7,3,40. — 7) bei den Buddhisten *Grundursache, Hauptursache* (im Gegensatz zu den प्रत्यया: *den hinzukommenden Ursachen*) Sarvadarçanas. 7,19. 14,19. 19,12. 20,22. fgg. — 8) bei den Pâçupata *dasjenige was das Gebundensein der Seele bewirkt, die Natur, die Sinnenwelt* Sarvadarçanas. 74,20. 94,17; vgl. 95,1. — 9) bei den Rhetorikern ein वर्थालंकार Verz. d. Oxf. H. 208, *b*, 8. — 10) im Drama *eine kurze Rede, welche die zur Erreichung eines Ziels erforderlichen Bedingungen angiebt,* Sâh. D. 439. 434. — Vgl. निमित्त°, निर्हेतु, मद्°, पक्षहेतोस्, विश्व°.

हेतुक (von हेतु) 1) adj. am Ende eines comp. *a*) *verursachend, bewirkend:* धर्मस्तस्य तपश्चैव व्रजत: सिद्धिहेतुकौ (könnte auch subst. m. sein) R. 7,23,8,17. सुखदु:खे समे स्यातां वस्तूनां क्रोशहेतुके Spr. (II) 7076. तप° Suçr. 1,233,5. भय° Hit. 39,7. पुष्टि° Mârk. P. 22,11. 97,36. सं बीजं सस्यहेतुकम् 99,47. f. ई Verz. d. Oxf. H. 23,*a*, N. 2. — *b*) *bewirkt —, bedingt durch:* इदं स मुने लोक: स्वधर्मफलहेतुक: MBh. 3,13153. Suçr. 1,133,10. मरणं स्त्रीहेतुकम्, Varâh. Bṛih. 25 (23),4. Kull. zu M. 1,49. Schol. zu P. 5,2,8. Vop. 25,17. f. या Siddh. 31. Kathâs. 20, 67. ई Mârk. P. 69,39. Çaṅk. zu Bṛih. Âr. Up. S. 257. ह° *unbegründet* Bhag. 18,22, v. l. — *c*) *bestimmt für:* दत्त्वा शरीरं क्रव्याद्भ्यो ऋणान्मो द्विजहेतुकम् MBh. 13,4340. Siddh. 42. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's und eines Buddha H. an. 3,111 (fehlerhaft für केरुक). eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,27. — M. 12,111 fehlerhaft für केतुक, Hit. 55,5 für केतु. Vgl. स° und केतुक.

केतुता (wie eben) f. 1) *das Ursachesein:* सापदामापतन्तीनां हिंसो ऽप्यापाति केतुताम् Spr. (II) 961. यदकं केतुतां प्राप्ता लोचनोत्पाटने तव Kathâs. 28,24. Râga-Tar. 6,113. am Ende eines comp.: प्रयुक्तस्योत्पाटनकेतुताम् 5,293. 388. Kap. 1,75. Sarvadarçanas. 156,17. — 2) *das Sein eines Beweisgrundes* Kusum. 16,10.

केतुत्व n. 1) = केतुता 1) Kap. 1,2,4. Jogas. 2,14. Mârk. P. 119,11. Bhâg. P. 3,18,36. Sin. D. 37. Sarvadarçanas. 18,17. 36,9. Schol. zu Kap. 1,75. Bhâshâp. 146. fg. Kusum. 18,22. — 2) = केतुता 2) Sarvadarçanas. 114,6. 133,18. Kusum. 16,12. — 3) bei den Buddhisten *das Hauptursache-Sein:* बीजादेरेतुत्वमापतेत् Sarvadarçanas. 11,11. — Vgl. निमित्त° unter निमित्तहेतु.

केतुमत् (von केतु) adj. 1) *eine Ursache habend, verursacht, bewirkt* P. 3,1,26. 3,156. Verz. d. Oxf. H. 163,*a*, No. 358. Kap. 1,126 = Siddh. 10. Sin. D. 712. — 2) *mit Gründen —, Argumenten —, Beweisen versehen* Bhag. 13,4. Reden R. 2,52,60. R. Gorr. 2,23,1. 3,53,20. 4,20. 1. 38,18. 6,78,36. Bhâshâp. 68. — 3) *zugänglich für Argumente, auf Vernunftgründe hörend* MBh. 12,897.

केतुमात्रता f. *das Sein eines blossen Mittels* Kathâs. 120,55.

केतुमात्रमय (von केतु + मात्र) adj. *nur als Mittel dienend* Kathâs. 117,148.

केतुरूपक n. *eine begründete Metapher* Kâvjâd. 2,86. Beispiel Spr. (II) 2103.

केतुवचन n. *eine von Argumenten begleitete Rede* R. Gorr. 2,16,11.

केतुवाद m. *eine Unterredung —, Disputation über das Warum* MBh. 3,13034. fg. 5,1983. 13,789. 2196. 14,1024. 2536. R. 1,13,21 (17 Gorr.). Verz. d. Oxf. H. 40,*a*, N. 2.

केतुवादिक adj. *der über das Warum streitet, Skeptiker* MBh. 13,2196. ह° nach Nîlak.

केतुवादिन् adj. dass. MBh. 14,2536.

हेतुविद्या f. *Logik, Dialektik* Vjutp. 30. Daçak. 60,13. dieses und °शास्त्र Hiouen-thsang 1,73. 174. 2,106. Vie de Hiouen-thsang 93. 95. 152. 164.

हेतुशास्त्र n. dass. M. 2,11.

हेतुशून्य adj. *grundlos, unbegründet* AK. 3,3,2. Prasannap. 65,*b*,1. 66,*b*,6.

हेतुसिद्ध n. bei den Buddhisten Bez. *einer best. hohen Zahl* Lalit. ed. Calc. 168,19. fg.

हेतूकृ (हेतु + 1. कृ) *zur Ursache machen, als U. annehmen* Sarvadarçanas. 30,9.

हेतूत्प्रेक्षा (हेतु + उ°) f. *ein begründetes Gleichniss* Sin. D. 292,4.

हेतूपमा (हेतु + उ°) f. dass. Kâvjâd. 2,80.

हेत्त (von 1. हि) adj. *ansutreiben:* Ross RV. 7,43,2.

हेत्वन्तर (हेतु + अ°) n. *ein anderer Beweis* unter den 22 निग्रहस्थान Njâjas. 5,2,6. Sarvadarçanas. 114,14.

हेत्वपदेश (हेतु + अप°) m. *Angabe des Grundes* Nir. 1,4. 5 (darnach unter अपदेश zu berichtigen). Mnn. avj. 86.

हेत्वाभास (हेतु + आ°) m. *Scheingrund, Scheinbeweis* Njâjas. 1,2,4. Tarkas. 40. Ind. St. 1,18,4 v. u. Verz. d. Oxf. H. 240,*b*, No. 586. Verz. d. B. H. No. 671 (°रूप्य). unter den 22 निग्रहस्थान Njâjas. 5,2,3. Sarvadarçanas. 114,17.

हेत्विन्द्रिय (हेतु + इ°) n. bei den Buddhisten *eine best. hohe Zahl* Lalit. ed. Calc. 168,20.

हेम 1) m. *a*) *ein best. Gewicht* (*Goldwerth*), = माषक Vaidjakapari-bhâshâ im ÇKDa.; vgl. हेमधान्यक. — *b*) *ein dunkelfarbiges Pferd* Hâlâj. 2,283. Çabdârthak. bei Wilson. — *c*) ein N. Buddha's ÇKDa. ohne Angabe einer best. Aut.; vgl. हेम. — *d*) N. pr. eines Sohnes des Ruçadratha VP. 444. Bhâg. P. 9,23,4. = हेमचन्द्र Verz. d. Oxf. H. 352,*a*,20. — 2) f. आ *a*) *eine best. Pflanze,* = स्वर्णक्षीरिवल्लिका Râgân. 3,30. — *b*) *ein schönes Weib* Çabdârthak. bei Wilson. — *c*) N. pr. α) einer Apsaras ebend. Vâlm. beim Schol. zu H. 183. Harîv. 7226. 8452. R. 2,91,17. 4, 51,15. fgg. 7,12,6. fgg. — β) eines Flusses MBh. 6,331 (VP. 193). — 3) n. = हेमन् *Gold* H. 1043, Schol. Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. भर्तृ° und 2. हैम.

हेमक (von हेमन्) n. 1) *Gold* R. 3,49,20. स° adj. *nebst den Goldstücken* Kathâs. 93,51. — 2) N. pr. eines Waldes Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,22.

हेमकक्ष adj. (f. आ) *mit einer goldenen Ringmauer umgeben* R. 3,54,15.

हेमकक्ष्य adj. *mit einem goldenen Leibgurt versehen* R. ed. Bomb. 2, 92,34. हैम° Scul. 32.

हेमकण्ठ N. pr. Verz. d. Oxf. H. 79,*a*,21.

हेमकन्दल m. *Koralle* H. 1066.

हेमकमल n. *eine Lotusblüthe von Gold* Kathâs. 54,19. — Vgl. हेमपुष्कर, हेमाम्बुज.

हेमकम्पन m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,6851 nach der Lesart der ed. Bomb., हेमपुञ्जक ed. Calc.

हेमकार adj. *Gold machend:* Çiva MBh. 13,1178.

हेमकर्तर् m. *Goldschmied* M. 12,61.

हेमकान्ति 1) adj. *wie Gold glänzend* Varâh. Bṛh. S. 7,26. — 2) f. = दारुहरिद्रा Râgân. im ÇKDa. nicht in unsern Hdschrr.

हेमकार m. *Goldschmied* M. 9,292. MBh. 12,1799. Z. d. d. m. G. 27, 22. Kathâs. 25,174. Bhâg. P. 7,7,21. °क m. dass. Jâgñ. 3,147.

हेमकिञ्जल्क n. *die Blüthe von Mesua Roxburghii Wight.* Râgân. 6,179.

हेमकुड्य, °कुण्ड्य (wohl am richtigsten) und °कूट्य N. pr. einer Oertlichkeit Varâh. Bṛh. S. 14,9.

हेमकूट m. N. pr. 1) eines Berges im Norden des Himâlaja AK. 2, 3,2. Hir. 26. MBh. 3,9969. 6,236. Harîv. 9499. Çiç. 99,17. Viks. 11. Kathâs. 46,86. VP. 167. Mârk. P. 54,9. Bhâg. P. 5,16,9. 17,9. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,22. 48,*a*,39. — 2) eines Affen R. 6,6,26. — Vgl. हेमकूट.

हेमकूट्य s. हेमकुड्य.

हेमकेतकी f. *Pandanus odoratissimus* Râgân. 10,70.

हेमकेलि m. ein N. Agni's Çârdûn. im ÇKDa.

हेमकेश m. ein N. Çiva's (*goldhaarig*) Çabdârthak. bei Wilson.

हेमक्षीरी f. *eine best. Pflanze,* = स्वर्णक्षीरी Râgân. 5,53. Ratnam. 80. Sucr. 2,66,11.

हेमगन्धिनी f. *ein best. Parfum,* = रेणुका Ratnam. 129.

हेमगर्भ adj. *Gold in seinem Innern bergend* MBh. 13,4135. R. 4,44,28.

हेमगिरि m. *Goldberg,* Bez. des Meru Spr. (II) 1734. N. pr. eines *Berges* Varâh. Bṛh. S. 14,19. — Vgl. हेमगिरिक.

हेमगुरु m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1554.

हेमगौर 1) *goldgelb:* °गौराङ्ग Skânda-P. im ÇKDa. — 2) m. *ein best. Baum,* = किंकिरात Râgân. im ÇKDa.

हेमघ्नी f. *Goldwurz* Ratnam. 58. मेदघ्नी ÇKDa.

हेमचन्द्र m. N. pr. 1) eines Fürsten, eines Sohnes des Viçâla, H. 1,47,13 (48,13 Gorâ.). VP. 354. Bhâg. P. 9,2,34. — 2) eines gelehrten Gaina, der wahrscheinlich im 12ten Jahrh. n. Chr. lebte und eine Menge von Werken verfasste, unter andern auch zwei Wörterbücher. Colebr. Misc. Ess. 2,44 u. s. w. Wilson, Sel. Works 1,223 u. s. w. Sarvadarçanas. 39,2. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,10. 162,*b*,32. 170,*a*, No. 378. fg. *b*, No. 380. 179,*a*, No. 410. 183,*a*,4. 184. fgg., No. 422. fgg. 196,*a*, No. 434. *b*, No. 436. 211,*a*,9. 10. sein Jogaçâstra herausgegeben von Ernst Windisch in Z. d. d. m. G. 28,485. fgg. — Vgl. हेमचन्द्रि.

हेमचूर्ण n. *Goldstaub* Sucr. 1,378,18; vgl. 13. 14.

हेमजट m. pl. Bez. gewisser Kirâta Kâd. in Z. d. d. m. G. 7,584.

हेमजालालंकृत adj. *mit einem goldenen Netze geschmückt;* m. N. pr. eines Bodhisattva Lalit. ed. Calc. 367,13. fgg.; vgl. 12.

हेमज्वाल m. ein N. Agni's (*goldflammig*) Çârdûn. im ÇKDa.

हेमतार n. *eine Art Vitriol* H. 1052.

हेमतारक m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,46.

हेमताल N. pr. einer Berggegend im Norden Varâh. Bṛh. S. 14,28.

हेमतिलकसूरि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 397,*a*,20.

हेमदत्ता f. N. pr. einer Apsaras (*goldschenkig*) Harîv. 7226.

हेमदीनार m. *Gold-Denar* Kathâs. 33,136.

हेमदुग्ध 1) m. *Ficus glomerata* Rîgân. 11,139. Karaka 9,12. — 2) f. धा *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरी Ratnam. 193. — 3) f. ई dass. Rîgân. 5,58.

हेमदुग्धक m. = हेमदुग्ध 1) AK. 2,4,2,2. H. 1132.

हेमदुग्धिन् m. = यज्ञोडुम्बर Çabdar. im ÇKDr.

हेमधन्वन् m. N. pr. eines Sohnes des 11ten Manu Mârk. P. 94,21.

हेमधर्म oder °न् m. N. pr. eines Mannes Mârk. P. 123,16.

हेमधान्य s. हेमधान्य.

हेमधान्यक m. *ein best. Gewicht*, = 3 Raktikâ = ½ Mâshaka Çârîr. Saṃh. 1,1,15. — Vgl. हेम 1) *a*).

1. हेमन् (von 1. हि) m. *Antrieb:* अस्य प्रेषा हेमना पूयमानः RV. 9, 97,1. nach Sây. *Gold;* aus dieser Stelle vielleicht die Bed. *Wasser* geschlossen Naigh. 1,12. — Vgl. घृत°.

2. हेमन् n. AK. 3,6,2,22. 1) *Gold* Naigh. 1,2. AK. 2,9,94. H. 1043. Halây. 2,18. 1,31. M. 5,113. तप्तहेमविभूषित MBh. 3,1722. 15719 (हेम ed. Calc.). सहेमकवच 3,7484. हेम्नो विमुद्रि: Râgân. 1,10. Rt. 1,6. हेममृग Spr. (II) 5784. 7416. 7418. fg. Weber, Kṛishṇaj. 278. 307. Naish. 22,52. Bhâg. P. 3,14,45. Varâh. Bṛih. S. 26,3. 45,6. हेमवृष 11,10. हेमद्युति 84,2. हेमधातुदान Verz. d. Oxf. H. 45,*a*,25. हेमहस्तिरथदान 35, *b*,19. fg. 43,*a*,17. — 2) *Goldschmuck*, pl. Spr. (II) 2635. कुमार्यो हेमभूषिता: 3617. — 3) *Goldstück* (vgl. हेमदीनार): हेमशत Kathâs. 2,64. हेमसप्त 93,49. — 4) = केसर Râgân. im ÇKDr. — Vgl. हिरण्य° und 3. हेम.

3. हेमन् = हेमन्त Uṇâdis. 3,129. nur loc. हेमन् *Winters* TS. 2,6,1,1. TBr. 1,4,10,10. Kâṭh. 36,6. Çat. Br. 1,3,4,5. 11,2,3, 32. — Vgl. हेमन.

4. हेमन् m. = हेम *der Planet Mercur* Taik. 1,1,93.

हेमनी adj. von (wohl 2.) हेमन् gaṇa पामादि zu P. 5,2,100.

हेमनाभि m. *Goldnabe:* रथनेमिमणि हेमनाभिं वा वघ्नाति Kauç. 16.

हेमनेत्र m. N. pr. eines Yaksha (*goldäugig*) MBh. 2,293.

हेमन्त (zu हिम) Uṇâdis. 3,129. m. *Winter* AK. 1,1,3,16. H. 156. Halây. 1,113. RV. 10,161,4. AV. 5,55,2. 8,2,22. 12,1,36. VS. 13,58. यत्त ऋतूनाम् Çat. Br. 1,5,3,13. fg. 2,2,3,5. Pâraṇ. Br. 21,15,2. निधन des Jahres Sâṅkh. Br. 3,1. Kâṭhân. Up. 2,5,1. TBr. 1,4,10,10. ग्रीष्म:, वर्षा:, हेमन्त: TS. 5,7,2,4. Çat. Br. 8,5,2,10. ग्रीष्महेमन्तौ 1,5,3, 12. हेमन्तशिशिरौ P. 2,4,28 (m. angeblich nur ved.). पञ्चर्तवो हेमन्तशिशिरयो: समासेन Ait. Br. 1,1. TS. 1,6,2,3. Çat. Br. 10,4,3,2. Âçv. Gṛihy. 2,4,1. Râgân. 4,101. Wilson, Sel. Works 2,181. सर:सरस्यो हेमन्त: Suçr. 1,19,10. 135,12. Maitrâyaṇ. 6,23. M. 3,231. 6,23. MBh. 12, 9291. R. 1,43,14 (44,11 Gorr.). 3,22,1. Spr. (II) 6383. 7417. Varâh. Bṛih. S. 3,24. 26. 46,69. 93. 86,28. Brahma-P. in LA. (III) 49,16. Kathâs. 30,31. Râgân. 6,293. Bhâg. P. 7,14,21. Verz. d. Oxf. H. 97, *b*,29. 123,*b*,1. Burnouf, Intr. 569. हेमन्तान्ते MBh. 5,7154. °समये Pâraṇ. 93,1. °मेघ 94,2. हेमन्तानिल Râgân.-Tan. 3,172. — f. हेमन्ती Uṇâdis. Vgl. सु° und हेमन्त fg.

हेमन्तलीन adj. vom *Winter verschlungen* d. h. *im Winter verborgen*, — *verkrochen* AV. 12,1,46.

हेमन्तनाथ m. *Feronia elephantum* Corr. Çabdar. in Verz. d. Oxf. H. 195,*b*,4 v. u.

हेमपर्वत m. 1) *ein* (künstlicher) *Berg von Gold* (im Kleinen) °दान Verz. d. Oxf. H. 41,*a*,22. — 2) ein N. des Meru Halây. 1,136.

हेमपिङ्गल adj. *goldgelb* R. 1,1,66.

हेमपुङ्खक m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,6351. हेमकम्पन ed. Bomb.

हेमपुष्कर n. *eine Lotusblüthe von Gold* Hariv. 12852. — Vgl. हेमकमल u. s. w.

हेमपुष्प 1) m. *Michelia Champaka* (चम्पक) *Lin.* Çabdar. im ÇKDr. Râgân. 10,59. *Jonesia Asoka* (अशोक) Roxb. Ratnam. 216. = नागकेसर Halây. 2,51. — 2) f. ई Bez. verschiedener Pflanzen: = मञ्जिष्ठा Çabdar. im ÇKDr. = स्वर्णक्षीरवल्लिका Râgân. 3,31. = स्वर्णाली 4,165. = मुसली 7,117. = इन्द्रवारुणी 3,57. = काण्टकारी Râgân. im ÇKDr. — 3) n. *die Blüthe der Jonesia Asoka* (nach H. an. *der Baum* selbst) und *die chinesische Rose* H. an. 4,211. Med. p. 31. *die Blüthe von Michelia Champaka* H. an.

हेमपुष्पक 1) m. *Michelia Champaka Lin.* AK. 2,4,2,44. H. 1146. an. 5,8. Med. k. 233. *Symplocos racemosa* Râgân. 6,212. — 2) f. °पुष्पिका *gelber Jasmin* AK. 2,4,2,52. H. 1148. H. an. Med. *Linum usitatissimum* Râgân. 16,74.

हेमप्रभ 1) m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 35,23. 43,130. eines Fürsten der Papageien 72,227. — 2) f. धा N. pr. einer Vidjâdhari Kathâs. 59,11. 87. 66,137. fgg.

हेमफला f. *eine Art Musa* Râgân. 11,44.

हेममय (von 2. हेमन्) adj. (f. ई) *von Gold, golden* MBh. 2,285. R. 1, 49,6. 7. 4,40,55. 5,16,48. Kathâs. 3,24. 12,146. Râga-Tar. 4,211. 217.

हेममाला f. N. pr. der Gattin Jama's Çabdârthak. bei Wilson.

हेममालिन् adj. *mit einem goldenen Kranz geschmückt:* Elephanten R. Gorr. 2,72,23. ein Râkshasa 3,50,20.

हेमयूथिका f. *gelber Jasmin* Râgân. 10,99.

हेमरत्नमय (von 2. हेमन् + रत्न) adj. (f. ई) *aus Gold und Juwelen bestehend* Kathâs. 73,133. 94,94. 114,134. 115,114. 121,238.

हेमरत्नवत् (wie eben) adj. *Gold und Juwelen enthaltend, daraus bestehend* Kathâs. 94,101.

हेमरागिणी f. *Gelbwurz* Taik. 2,9,11.

हेमराज m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 132,*a*,14.

हेमरेणु m. f. = सुरेणु Uṇâdis. zu Uṇâdis. 3,38.

हेमल (von 2. हेमन्) m. 1) *Goldschmied.* — 2) *Probirstein.* — 3) *eine Art Eidechse* H. an. 3,692. fg. Med. l. 146.

हेमलता f. 1) *eine Liane von Gold* oder *eine best. Liane* Bhâg. P. 3, 8,16. = स्वर्णक्षीरवल्लिका Râgân. 3,31. — 2) N. pr. einer Fürstin Kathâs. 51,120.

हेमलम्ब m. Bez. *des 57sten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛih. S. 8,39. °क m. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*,1 v. u.

हेमवत् (von 2. हेमन्) adj. *mit Gold geschmückt:* वपि हेमवत्सरम् R. 3,50,2. मद्रा° *reich mit G. g.* Çâṅkh. Gṛihy. 1,22. — °वती Med. l. 229 fehlerhaft für हेमवती.

हेमवर्चस् m. N. pr. s. हेमवर्चि.

हेमवर्ण 1) adj. *goldfarbig.* — 2) m. N. pr. *a*) eines Sohnes des Ga-

ruḍa MBu. 5,3599. — *b*) eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,12.

हेमवल्ल n. *Perle* Rigân. im ÇKDn. die richtige Lesart soll हिम° sein; unsere Hdschrr. हेमवत.

हेमवल्ली f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीवल्लिका Rigân. 3,31.

हेमव्याकरण n. Hema's d. i. Hemakândra's *Grammatik* Verz. d. Oxf. H. 175,*b*,1 v. u.

हेमशङ्ख m. ein N. Vishṇu's (*eine goldene Muschel habend*) Trik. 1,1,32.

हेमशिंशपा s. das folgende Wort.

हेमशिंशपा f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरी Çabdar. im ÇKDn. °शिंपा Ratnam. 80.

हेमशीत n. dass. Ratnam. 80.

हेमशृङ्ग m. N. pr. eines Berges Harîv. 12850.

हेमसार n. *eine Art Vitriol* Rasakândalâ im ÇKDn.

हेमसावर्णि m. N. pr. eines Mannes R. 4,51,17.

हेमसिंह *ein Thron von Gold* Buâs. P. 12,13,12.

हेमसूत्र n. *Goldfaden* (als Schmuck) R. 2,32,5. 7. 5,13,38. Vîr. 140.

हेमसूत्रक n. *eine Art von Perlenschmuck* Dharan. im ÇKDn.

हेमसूरि m. N. pr. = हेमचन्द्र 2) Colebr. Misc. Ess. 2,44. Verz. d. Oxf. H. 161,*b*,10. 175,*b*,1 v. u. Verz. d. Cambr. H. 14.

हेमाङ्ग (2. हेमन् + 3. अङ्ग) 1) adj. *dessen Glieder (Theile) aus Gold bestehen:* Wagen R. 3,55,32. — 2) m. *a*) *Michelia Champaka* (चम्पक) Çabdar. im ÇKDn. vielleicht Sûçr. 2,152,20 (°त्वच्). — *b*) ein N. Garuḍa's und Brahman's Med. g. 51. Vishṇu's unter den 1000 Namen desselben nach ÇKDn. — *c*) *Löwe* und ein N. des Meru ÇKDn. und Wilson angeblich nach Med. der Meru kann gemeint sein Rigâ-Tar. 1, 110. — 2) f. आ (?) *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरी Nigh. Pr. nach Dhanv., wo jedoch 1,90 हेमाह्वा gelesen wird. Madan. 1,119.

हेमाङ्गद (2. हेमन् + अङ्गद) m. N. pr. 1) eines Fürsten der Kaliṅga Ragu. 6,53. — 2) eines Sohnes des Vasudeva Buâs. P. 9,24,48. — 3) eines Gandharva Verz. d. Oxf. H. 139,*b*,15.

हेमाचल (2. हेमन् + अचल) m. 1) *ein* (künstlicher) *Berg aus Gold* (im Kleinen): °दान Verz. d. Oxf. H. 35,*b*,27. fg. — 2) ein N. des Meru Spr. (II) 928. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 20.

हेमाण्ड (2. हेमन् + अण्ड) n. *das goldene Weltei* Rigâ-Tar. 1,110 nach der Lesart der ed. Calc. st. हेमाङ्ग bei Troyer.

हेमात्र *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,639.

हेमाद्रि (2. हेमन् + अद्रि) m. 1) *der Goldberg*, Bez. des Meru AK. 1, 1,*a*,45. Hall. 1,186. Verz. d. Oxf. H. 139,*b*, No. 279. — 2) N. pr. eines Autors Weber, Kṛshṇaj. 236 u. s. w. Ind. St. 3,247. Verz. d. B. H. No. 1025. 1170. 1176. 1178. 1403. Verz. d. Oxf. H. 37,*b*,2 v. u. 38,*a*,8. *b*,15. 164,*a*,9. 274,*a*,1. 275,*a*,36. 280,*a*,12. 281,*a*, No. 659. 287,*b*, No. 679. 309,*a*,37. 341,*a*,1 v. u. Hall 18. 174. 176. 183. Burnouf in Buâs. P. 1,LX. °व्रतविधि und °श्राद्ध Mack. Coll. 1,34. — Vgl. दान° und वृक्षहेमाद्रि.

हेमाद्रिका f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरी Ratnam. 80.

हेमाद्रिव्रत्रण m. dass. ÇKDn. nach ders. Aut.

हेमाभ (2. हेमन् + आभा) 1) adj. *wie Gold aussehend* Weber, Râmat. Up. 295. Kâlakarṇa 4,15. नव° (so ed. Bomb.) MBu. 1,6013. — 2) m. N. des Palastes der Rukmiṇî Harîv. 8976. könnte auch als adj. gefasst werden.

हेमाम्बुज (2. हेमन् + अम्बुज) n. *eine Lotusblüthe von Gold* Kathâs. 54,12. — Vgl. हेमकमल u. s. w.

हेमाम्भोज (2. हेमन् + अम्भोज) n. dass. Mucn. 63.

हेमाह्व (2. हेमन् + आह्वा) 1) m. *Michelia Champaka* (चम्पक) Rigân. 10,60. — 2) f. आ *eine best. Pflanze*, = स्वर्णक्षीरी Dhanv. 1,90. = स्वर्णक्षीवल्लिका Rigân. im ÇKDn.

हेमेश्वरमाहात्म्य n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,91.

हेम्र (aus Ἑρμῆς) m. *der Planet Mercur* Varâh. Bṛ. 2,2. हेमा ÇKDn. nach dem Gjotishattva.

हेम्मतिसिंह m. N. pr. eines *Fürsten* Ksurîç. 46,21. fgg.

हेर्म्यावत् (हेर्म्याऽवान् Padap.) adj. nach Sây. *goldgeschmückt* oder *Goldes werth:* यज्ञो न स्वे दम आ हेर्म्यावान् ṚV. 4,2,8. das wäre ein müssiges Beiwort; wir vermuthen हर्म्यावान् *im Haus —, im Stall gehalten*, also *wohl gepflegt*.

हेय (von 2. हा) adj. 1) zu *lassen, aufzugeben, zu meiden, — verwerfen, verwerflich* (Gegens. आदेय, उपादेय) Kap. 1,4. 3,52. Jogas. 2,10. Spr. (II) 1653. 1716. 4161. 4326. 6241. Kathâs. 60,42. 72,316. Mârk. P. 37,24. Buâs. P. 3,32,25. 5,11,3. H. 739. Hem. Jogaç. 3,88. Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 569. Sân. D. 3,13. Sarvadarçanas. 31,1 (आस्तु हेया: zu lesen). 33,22. 42,5. 8. 52,15. fg. 60,9. 74,21. 164,3. 180,13. Nilak. 161. अति° Mârk. P. 16,1. — 2) *abzuziehen* (von einer Zahl) Weber, Gjot. 93. Kâlakarṇa 1,21. fg. 42.

हेयत्व (von हेय) n. *das zu-meiden-Sein, Verwerflichkeit* Sarvadarçanas. 116,2. 156,19. 164,3. 4. Nilak. 27.

हेर n. *eine Art Diadem; Gelbwurz; dämonischer Zauber* Çabdârthak. bei Wilson.

हेरक m. 1) *Späher* Hall. 2,270. Vgl. हेरिक, हैरिक. — 2) N. pr. eines bösen Dämons im Gefolge Çiva's Vâyu beim Schol. zu H. 210.

हेरम्ब m. 1) ein N. Ganeça's AK. 1,1,1,34. H. 207. an. 3,480. Med. b. 15. Hall. 1,18. MBh. 1,75. Kathâs. 20,100. 24,1. 30,176. 55, 138. fg. (fehlerhaft हेरम्भ). 57,1. Pañcar. 1,7,86. Sarvadarçanas. 44, 14. Verz. d. Oxf. H. 195,*b*, No. 483. °मन्त्र: 93,*b*,4. 5. — 2) *Büffel* Trik. 3,3,282. H. ç. 182. H. an. Med. Hâl. 80. Mâlatîm. 144,21 (Ganeça nach Wilson). — 3) *ein auf seinen Heldenmuth pochender Mann* H. an. Med. — 4) N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,23. — Vgl. हेरम्ब.

हेरम्बक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1118.

हेरम्बकसेन m. N. pr. eines Autors Notices of Skt Mss. 1,110.

हेरम्बजननी f. Ganeça's *Mutter* d. i. Durgâ Çabdar. im ÇKDn.

हेरम्बटङ्क m. N. pr. einer Oertlichkeit im Süden Çabdar. im ÇKDn.

हेरम्भ Kathâs. 55,138. fg. fehlerhaft für हेरम्ब.

हेरिक m. *Späher* H. 733 schlechte Lesart für हैरिक.

हेरुक m. N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,23. Med. k. 172. eines Wesens im Gefolge Çiva's Med. (केतुक in beiden Bedd. H. an. 3,111). als N. pr. eines göttlichen und menschlichen Wesens Burnouf, Intr. 538. Schiefner, Lebensb. 275 (45). Kâlakarṇa 5,13. Târan. 176. 221. 228. डोम्भि° und डोम्बि° 170. 192. 278. 322. als N. Ganeça's und eines Liṅga Kâlikâ-P. im ÇKDn.

हेल् s. u. हील्.

केलञ्जी f. = किलमोचिका Çabdak. im ÇKDr.

केलन (von केल्) n. = अवकेला Çabdan. im ÇKDr. (sg. und pl.) *Verhöhnung, Verspottung, an den Tag gelegte Geringachtung* MBh. 12,2043 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Bhâg. P. 1,19,2. 3,15,36. 16,3. 20. 24,29. 4,11,33. 13,28. 14,22. 5,3,15. 6,11. 6,2,14. 7,10. 9,4. 7,15,72. 10,22,19. 23,52. 25,4. 57,12. 11,1,2. अति° 3,14,37.

केलनीय (wie eben) adj. *zu verhöhnen, zu verspotten* Nilak. zu MBh.

केला (wie eben) f. 1) *ein best. ungebundenes Gebahren eines verliebten Weibes* AK. 1,1,3,32. Trik. 3,3,410. H. 509. an. 2,516. Med. l. 36. Hall. 1,89. Daçar. 2,32. Prabôdhâc. 53,a. Sin. D. 125. केलात्यर्त्त समालक्ष्यविकारः स्यात्स (d. i. क्रावः) एव च 128. 509. Harîv. 8348 (pl.). Çâk. 34. Milatîm. 157,19. am Ende eines adj. comp.: नूपुरोत्कृष्टकेला (नूपुरोत्कृष्टलीला ed. Bomb.) R. 2,60,19. — 2) *Leichtsinn, Sorglosigkeit;* = अवज्ञा Trik. H. an. Med. Hall. 4,30. केला स्यात्कार्यनाशाय Kân. 91 bei Hem. केलया *leichtsinniger Weise; mit Leichtigkeit, ohne sich irgend einen Zwang anzuthun, ohne Weiteres, mir nichts dir nichts:* केलया किंचिन्मा गृहाण मुञ्च वा Verz. d. Oxf. H. 228, *a*, N. Spr. (II) 1264. 3798. 6395. Çiç. 2,52. Kathâs. 30,124. 48,74. 50,28. 57,121. 61,208. 65,157. 102,47. Mâlav. P. 14,29. Nâgân. 36,2. Kâçikh. 2,13 (s. u. केलिक). Râga-Tar. 3,43. 4,218. 364. 450. 716. 5,84. 113. Parâç. 106,1. 2. 134,13. 186,6. 256, 24 (येनैव के° zu lesen). तृणकेलया *mit Leichtigkeit, als wenn man es mit einem Strohhalm zu thun hätte,* Kathâs. 46,68. अकेलया *nicht ohne Weiteres* so v. a. *alles Ernstes* Spr. (II) 5135. केलाभिम् = केलया Bhâg. P. 3,14,19. सकेलम् desgl. Kathâs. 6,110. 55,40 (am Anf. eines comp.). केला am Anfange eines comp. in der Bed. von केलया Mahân. 44,15. Ratnâv. (neuere Ausg.) 17,11. Spr. (II) 7421. fg. Z. d. d. m. G. 27,55. 66. Kathâs. 35,96. 82,47. 107,22. — 3) = प्रस्ताव Hall. 5,19. — 4) *Mondschein* Çabdârthan. bei Wilson. — Vgl. अवकेला und प्रकेला.

केलाचक्र m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,97.

केलातल n. N. pr. eines Autors Râga-Tar. 1,17. Sarvadarçanas. 140, 9. Colebr. Misc. Ess. 2,21. 49. Verz. d. Oxf. H. 178, *a*, 33. Hall 164.

केलावत् (von केला) adj. etwa *sich gehen lassend, sorglos* Parâç. 3,7,36.

केलावुक m. *Rosshändler* Hîn. 201. — Vgl. केडावुक.

केलि Uṇâdik. zu Uṇâdis. 4,117. 1) m. (aus हिल्) *die Sonne* Trik. 1, 1,99. H. 96. an. 2,317. Hîn. 11. Happa bei Buhr. zu AK. nach ÇKDr. Varâh. Bhp. 2,2. häufig im Bhavishja-P. nach Aufrecht, Uṇâdis. Ind. — 2) f. या *a*) = केला Happa a. a. O. — *b*) *Umarmung* H. an.

केलिक m. = केलि *die Sonne:* क्रमतः सर्वमर्वत्तो केलया केलिकस्य खम् Kâçikh. 2,13 nach Aufrecht, Uṇâdis. Ind.

केलितव्य (von केल्) n. impers. *leichtsinnig zu verfahren:* ब्राह्मणं वज्रभिरवाप्यते तपोभिस्तप्तव्या न क्षतियेण केलितव्यम् MBh. 12,12067.

केलुग *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,638.

केलुयान m. N. pr. eines *Dorfes* Râga-Tar. 3,396. केलु दिणोति (provinciell) न लिख्यते *es ist kein Document darüber ausgestellt worden, dass Helu geschenkt worden ist,* 397.

केलुव (so zu lesen) *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,640. केलुवु v. l.

केवड्ड m. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Wilson Sel. Works 2,24. Târan. 233. °माण्डल ebend. °तन्त्र 192. fg. 237. 275.

केवर *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,638.

केवाक्स adj. etwa *heftig, intensiv:* भृङ्गार Daçar. 2,31. — Vgl. केवाकिन्.

केवाकिन् adj. am Ende eines comp. etwa *heftig verlangend* Râga-Tar. 4,371. Vgl. केवा *heftiges Verlangen* im Mahrattischen.

केव्, केवति *wiehern:* प्र या वाजं न केवती यमस्यसि ṚV. 5,84,2. क्वानी केवताम् MBh. 13,1009. Harîv. 3473. Vârâh. Bhp. S. 93,3. केवति 11. med. केवते Dhâtup. 16,20 (अव्यक्ते शब्दे). Pâṇ. 223,12. Spr. (II) 3200. केवमाण Harîv. 4290. R. Gorr. 2,59,6. शिकेविरे Çiç. 17,31. Bhaṭṭ. 14,5. — partic. केवित n. (sg. und pl.) *Gewieher* MBh. 1,2320. 4,1494. 6,137 (केवितैर्वा mit der ed. Bomb. zu lesen). 7,6666. 8,423. Harîv. 3110. 3716. R. 5,9,21. 6,9,27. Varâh. Bhp. S. 93,7. Kathâs. 42, 43. Bhâg. P. 10,37,1. Vgl. क्रेव्.

— अभि *anwiehern:* तथ्यमभिकेवते पियासते तिप्रं प्रयच्छेत् Ait. Br. 6, 8. क्वया क्वानभ्यकेवन् MBh. 8,4471.

— प्रति dass.: धन्यतुरगं प्रतिकेवते (könnte auch प्रति केवते sein) Varâh. Bhp. S. 93,13.

केवयत्नु adj. *zu brüllen verlangend, gern brüllend:* Löwen und die Marut ṚV. 3,26,3.

केवम् (von केव्, das sich zu कीड् verhalten könnte wie पिय् zu पीड्) n. *Verwundung, Wunde:* घर्णेव विध्य तपिष्टेन केवसा द्रोघमित्रान् ṚV. 10,89,12. — Vgl. आशु° ṚV. 8,10,2, das sich dieser Bedeutung nicht fügt; es könnte dort आशुकेमना gestanden haben.

केवस्वत् (von केवम्) adj. *verwundet:* केवस्वतः प्रुरुषो नायमक्तोः *wie Balsam für den Wunden* ṚV. 8,3,3. nach Sây. ist केवम् = केति oder शब्द.

केवा (von केव्) f. *Gewieher* AK. 2,8,2,15. H. 1403. Hall. 1,151. Kim. Nîtis. 13,45. Kir. 16,8. Mâlav. P. 22,20. Pârçvanâthak. 4,133 (nach Aufrecht). 4te Râga-Tar. 134.

केवाय् (von केवा), °यते *wiehern* Parâç. 254,23.

केविन् (von केव्) m. *Pferd* Trik. 2,8,41. H. ç. 176.

केके interj. v. l. im gaṇa चादि zu P. 1,4,57. संबोधने und हूतौ Med. avj. 92.

कें interj. *hei!* gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37 und gaṇa चादि zu 4,57. AK. 3,5,7. H. 1537. an. 7,5. 6. Med. avj. 88. AV. 6,50,2. घृतौ क्वा इव ते मनः 18,4,66. TBr. 2,3,6,1. wann pluta P. 8,2,85.

केसकायनि adj. von किंसक gaṇa पलादि zu P. 4,2,80.

केसुल adj. von किंसुला N. pr. einer Gegend Vimâna-P. 67 im ÇKDr.

केडिम्ब MBh. 7,4128. 6822 fehlerhaft für केडिम्बि.

केडिम्ब 1) adj. *über Hiḍimba handelnd:* पर्वन् MBh. 1,212. — 2) metron. Ghaṭotkaka's MBh. 3,11009. 11017. 5,5926. 6,2476. 4221. 7,4101. 4117. 4120. 12,1489.

केडिम्बि m. = केडिम्ब 2) MBh. 7,4097. 4123. 6822. an den beiden letzten Stellen in der ed. Calc. fehlerhaft केडम्बि.

केतनामन् und °नामन् m. patron. von केतनामन् P. 6,4,170, Vârtt.

केतुक (von केतु) adj. (f. ई) 1) am Ende eines comp. *bewirkt durch, abhängig von:* पुरुष° MBh. 3,1227. काल° 12,8823. काम° Bhag. 16,8. अ° *keine Ursache habend, unbegründet* Bhag. 18,22. *auf keine Ursache*

zurückzuführen so v. a. *unerwartet erscheinen:* समृद्धि Bhāg. P. 10,81, 32. so v. a. *unnützig:* भक्ति 1,2,6. 7,10. 3,29,12. 10,23,26. Pāṇ. Gaṇ. 1,9,17. मति Bhāg. P. 5,18,9. — 2) *nach dem Grunde fragend, skeptisch;* m. *Skeptiker:* ज्ञान Bhāg. P. 1,2,7. Personen M. 4,30. 12, 111 (हेतुक Lois. Deut.). Jiñān. 1,130. MBh. 12,6736. 13,7536. R. 5,90, 8. 7,94,8. VP. 345. Bhāg. P. 11,18,30. — 3) अहेतुकम् adv. *ohne Anwendung eines Mittels* so v. a. *durch seine eigene Kraft* Bhāg. P. 2,5,22.

हेदरशाह m. حیدر شاه Verz. d. Oxf. H. 147,*a*,27. हेदर° Verz. d. B. H. 166,3.

1. हेम (von हिम) 1) adj. *a) von Schnee oder Eis herrührend:* उपराग Rāgān. 16,7. Wasser Rāgān. 14,68. Madan. 8,19. *mit Schnee bedeckt:* हिमवतः पादः MBh. 7,2172. — 2) vom Himālaja *kommend:* Perlen Varāh. Bṛh. S. 81,2. 5. zum H. *in Beziehung stehend:* Çiva MBh. 13, 1178. — 3) m. N. pr. eines Berges MBh. 13,1434.

2. हेम (von हेमन्) adj. von Hema d. i. Hemakandra *verfasst;* m. *ein von ihm verfasstes Wörterbuch* (कोश) Verz. d. Oxf. H. 183,*a*,5. 185, *b*,32. 44. 191,*a*,2. 195,*b*,2. 211,*a*,9. Schol. zu Viśvap. S. 15.

3. हेम (von हेमन् = 2. हेमन्) 1) adj. (f. ई) von *Gold, golden* Vop. 7,19. M. 1,9. MBh. 3,10207. 15719 (हेमन् ed. Bomb.). 16654. 13,4437. R. 2,92, 32. 3,48,11. 4,33,28. 5,45,3. Kāraṇḍ. 10,3. Mṛcch. ed. St. 73. IV. Rāgān. 6, 15. Vikr. 157. Varāh. Bṛh. S. 1,6. 26,9. 73,2. Kathās. 59,9. AK. 2,8, 1,32. H. 717. Hālās. 2,268. Vop. 6,14. Weber, Kṛshṇaj. 277. fg. Prab. 71,3. Bhāg. P. 3,33,16. 6,2,44. 7,10,58. 10,50,53. Pañcat. 3,11,7. Bhaṭṭ. 5,89. — 2) m. *Gentiana Cherayta Roxb.* Rāgān. 9,15. — 3) f. या *gelber Jasmin* Çabdar. im ÇKDr. — 4) f. ई dass. ebend. *Pandanus odoratissimus* Rāgān. 10,70. = तीरिणी 5,5.

हेमकूट m. pl. *die Bewohner des* Hemakūṭa Mārk. P. 58,18.

हेमगिरिक m. pl. *die Bewohner des* Hemagiri Mārk. P. 58,32.

हेमचन्द्र m. patron. von हेमचन्द्र R. Gorr. 1,48,15.

हेमन्त (von 3. हेमन्) 1) adj. (f. ई) *winterlich* P. 4,3,22. 43. Monat AV. 13,4,3. Sonne Kir. 17,12. Wind Spr. (II) 3801. 6472. तालच्छाया MBh. 2,2669. वृतच्छाया 3,1227. ज्ञाड्य Hem. Joḍaç. 4,24. Kleider Rāgān. 19, 41. P. 4,3,22, Schol. योगधर्म: Uṇṇ. zu Uṇādis. 3,139. — 2) m. *a) Winterreis* Rāgavallabha im ÇKDr. — *b)* Bez. *eines Wintermonats* (Pausha oder Sahasja) Rāgān. 21,60. m. n. *Winter* Çabdar. im ÇKDr.

हेमन्त (von हेमन्त) adj. (f. ई) *winterlich* VS. 13,58. Suçr. 1,21,6. Kleid Schol. zu P. 4,3,22. यवा: (= हेमन्त उत्था:) zu 44.

हैमन्तिक (wie oben) adj. dass.: ऋतु VS. 14,27. P. 4,3,21. Monat Ait. Br. 4,26. TS. 5,6,12,1. 7,5,14,1. Çat. Br. 4,3,4,18. 8,3,3,14. Âçv. Çr. 4,12,1. सस्य Kull. zu M. 7,182. यावाम Vāgṭ. 132. = हेमन्ते दीयते कार्ये वा Schol. zu P. 5,1,96. oxyt. = हेमन्तमधीते वेद वा gaṇa वसन्तादि zu 4,2,62.

हेमल m. n. fehlerhafte v. l. für हेमन Çabdar. nach ÇKDr.

हैमवत 1) adj. (f. ई) vom Himavant *kommend, dort gelegen,* — *wachsend* u. s. w. P. 4,4,112. धान्य: AV. 19,2,1. Suçr. 2,36,4. Elephanten MBh. 1,7006. 4,1675. R. 1,6,22 (25 Gorr.). 3,32,20. गिरि MBh. 1, 4864. उपत्यका 3,13042. पाद R. 1,38,17. वन 2,96,29. कुक्षि Raghu. 2, 67. स्थाणवाश्रम Kumāras. 3,23. Stadt 6,47. हिमद्युति Raghu. 10,44. दिश् so v. a. *Norden* (vgl. P. 4,3,112) R. Gorr. 1,42,20. 66,20 (65,1 Schl.). — 2) m. *a) ein best. vegetabilisches Gift* H. 1197. — *b)* pl. N. pr. eines Volkes, *die Bewohner des* H. MBh. 2,1844. Harīv. 6441. Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,27. — *c)* pl. N. einer buddhistischen Schule Burnouf, Intr. 446. Lot. de la b. l. 357. Hiouen-thsang 1,311. Wassiljew 230. 233. fg. 252. Tāran. 175. 271. fg. — 3) f. ॰वती *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: = वचा AK. 2,4,2,40. H. an. 4,131. Med. t. 229 (hier fehlerhaft हेमवती). Rāgān. 11,221. = स्वर्णक्षीरी AK. 2,4,3,3. H. an. Med. = तीरिणी Rāgān. 5,50. = स्वर्णक्षीरवल्लिका 3,30. = घृतमयी 16,74. *eine gelbe Weintraubenart* 11,101. = रेणुका *ein best. Arzneistoff* 6,114. *eine weiss blühende* वचा AK. 2,4,3,21. H. an. Med. Ratnam. 24. Rāgān. 6,34. Karaka 9,7. Suçr. 2,276,21. 410,5. vollständig हेमवती वचा 1,142,3. 2, 161,21; vgl. 1,163,21 (fehlerhaft in der Ausg.). — *b)* patron. α) *der* Gaṅgā Schol. zu P. 4,3,93. Trik. 1,2,30. H. 1082. H. an. Med. MBh. 1,6752. 3,9935. — β) der Umā (vgl. पार्वती), der Gattin Çiva's, AK. 1,1,2,32. H. ç. 60. Hālās. 1,15. Kṣemēndra 25. — γ) der Gattin Kauçika's MBh. 5,3972. — δ) einer Gattin Saṁhatâçva's Harīv. 709. — 4) n. *a) Perle* Rāgān. 13,155; vgl. Varāh. Bṛh. S. 81,2. 5. — *b)* N. pr. eines Varsha Trik. 2,1,2. Schol. zu H. 946. MBh. 6,301. Çatr. 1,292.

हैमवतिक m. pl. *die Bewohner des* Himavant MBh. 3,15262.

हैमवत् m. Bez. *des 8ten Monats* Ind. St. 10,298. wohl fehlerhaft für हिमवत् oder हैमवत.

हेमवर्चि (हैमचर्चि die Hdschr.) m. patron. wohl von हेमवर्चस् Pravarāḍhjas. in Verz. d. B. H. 59,21.

हेमक interj Kāṭy. Çr. 13,3,20. Lāṭy. 4,3,18. Çāṅkh. Çr. 17,14,11.

हैमाचल (1. हैम + अ°) m. *der Schneeberg* d. i. *der* Himālaja Spr. (II) 6838. Vgl. हेमाचल, wie vielleicht zu lesen ist.

हैमिनी f. N. pr. eines Frauenzimmers Mārk. P. 76,24. 28. fg.

हेमीभू (3. हैम + भू) *golden* —, zu *Gold werden:* ॰भूतमायसम् Kumāras. 6,55.

हैयंगव n. = हैयंगवीन Bhāg. P. 10,9,6 (क्ष्यंगव wohl nur fehlerhaft). s. 26,7.

हैयंगवीन (von ह्यस् *gestern* + गो *Kuh*) n. *Butter von Rahm des vorhergehenden Tages* d. i. *frische Butter* P. 5,2,28. AK. 2,9,52. H. 407. Hālās. 2,119. Hāṃs. 60. Ratnam. 325. Harīv. 16118. Raghu. 1,45. Pañcat. 3,10,20. 22 (pl.). 4,8,26. Bhaṭṭ. 5,12.

हैरण्य (von हिरण्य) adj. *goldig, golden* AV. 13,2,11. Daṇḍ. 2,9,11. वर्ण R. 7,18,33. Wagen 1,54,20 (33,18 Schl.). R. ed. Bomb. 1,53,17. MBh. 12,985. *Gold führend:* Flüsse 7,2139. *Gold spendend:* वाहु 3,1384.

हैरण्यक 1) m. *a) Goldschmied* Varāh. Bṛh. S. 87,32. Bṛh. 18,3. — *b) ein Oberaufseher über das Gold* H. 723, Schol. — 2) n. N. eines Varsha MBh. 6,232. Vgl. हिरण्मय.

हैरण्यगर्भ 1) adj. *dem* Hiraṇjagarbha *eigen* u. s. w. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 112. — 2) m. patron. Manu's M. 3,194. Kull. zu 9,158. Vasishṭha's MBh. 12,13209. — *b) ein Verehrer des* Hiraṇjagarbha Verz. d. Oxf. H. 248,*a*,10. fg.

हैरण्यनाभ m. patron. von हिरण्यनाभ Çat. Br. 13,3,4,1.

हैरण्यवाक्य m. patron. von हिरण्यवाक् Par. in Mahābh. lith. Ausg. 4,53,*b*.

हैरण्यवासस् adj. *mit goldenen Federn geschmückt:* Pfeile MBh. 4,2071.

हैरण्यस्तूप 1) adj. (f. ई) von Hiraṇjastûpa *verfasst* Nir. 10,32. Çâṅkh. Gṛhj. 2,7. — 2) m. patron. des Arkant, Verfassers von ṚV. 10,149.

हैरण्यस्तूपीय adj. = हैरण्यस्तूप Çâṅkh. Çr. 10,13,13. 13,19,2.

हैरण्यिक adj. (f. या und ई) von हिरण्य gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

हैरण्वती f. N. pr. eines Flusses MBh. 6,290. — Vgl. हिरण्वती.

हैरम्ब adj. zu Heramba (Gaṇeça) *in Beziehung stehend, ein Verehrer des* H. Verz. d. Oxf. H. 249,b,28. Wilson, Sel. Works 1,20. 263.

हैरिक m. *Späher* H. 733. *Dieb* (Verwechselung von चार् und चौर्) Durgâṇi im ÇKDr.

हैलिकिल s. मद्रा°.

हैलय m. N. pr. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. pl. N. pr. eines Volksstammes MBh. 1,4172. 3,8332. 5,7212. 12,1750. 13,1951. Harîv. 763. 768. fg. 775. 1894. 1898. R. 1,70,28. 2,110,16 (119,16 Gorr.). 7,31,9. Varâh. Bṛh. S. 14,20. VP. 373. fg. 418, N. 20. Mârk. P. 17,8. 58,34. Bhâg. P. 2,7,4. 3,8,9. 15,14. 17. sg. *ein Fürst der* Haihaja (insbes. Bez. von Arǵuna Kârtavirja) Taik. 2,8,9. 3,3,228. H. 702. MBh. 12,1756. 13,1946. 7188. Harîv. 1884. Raǵa. 11,74. Mârk. P. 17,9. ein Sohn Sahasrada's Harîv. 1844. fg. Çatagît's VP. 416. Bhâg. P. 9,23, 21. ein Autor Verz. d. B. H. No. 941.

हैलेय m. = हैलय = अर्जुनः कार्तवीर्यः Çabdar. im ÇKDr.

हौ interj. *des Anrufens* gaṇa चादि zu P. 1,4,57. H. an. 7,6. Med. avj. 88. TS. 2,6,2,3. Çat. Br. 14,8,15,11. Lâṭj. 1,11,25. हौ होतः Âçv. Çr. 3,13,5. हौ होपि Kâṭh. Up. 4,1,2. ज्ञाये हौ तिष्ठ Harîv. 1398. ननु हौ Kir. 15,20. हौ हौ Med. avj. 92.

हौड्, हौडते Dhâtup. 8,33 (धनादरे, गतौ). denom. von हौड P. 3,1,11, Vârtt. 3.

हौड P. 3,1,11, Vârtt. 3. gaṇa पृष्ठ्यादि zu P. 5,1,122. 1) m. *a) Boot* Taik. 1,2,13. — *b)* am Ende von Personennamen bestimmter Kâjastha und Brahmanen ÇKDr. Suppl. — 2) f. या gaṇa गौरादि zu P. 4,1,4. — Vgl. धनु° und हौड.

हौडृ (!) nom. ag. *Räuber, Wegelagerer* Çabdâmṛtak. bei Wilson. — Vgl. हौढ.

हौडिमन् m. nom. abstr. von हौड gaṇa पृष्ठ्यादि zu P. 5,1,122.

हौड्, हौडते und हौडायते = हौड इव आचरति Vop. 21,7. fehlerhaft für हौड्, हौड.

हौढ Vop. 21,7 fehlerhaft für हौड. Das n. soll M. 9,270 nach Benfey und Monier Williams *gestohlenes Gut* bedeuten; हौढेन ist aber = क ऊढेन (s. u. 1. वह् 9) am Ende). Nach Wilson auch adj. *gestohlen.* — Vgl. हौडृ.

हौतृ nom. ag. Uṇâdis. 2,96. P. 3,2,135, Vârtt. 1. Declination P. 6,4,11. Vop. 3,65. 1) *Priester, der Hauptpriester*, neben welchem in der frühesten Zeit nur der Adhvarju thätig ist. यजति ṚV. 1,14,11. 139,10. 7,7,5. 39,1. पत्नीषेम् 3,17,5. पत्निष्ठ 4,2,1. sitzt auf der Streu 1,26,2. 58,3. 6,16,10. 7,11,1. 30,3. मनुषः 73,2. घर्मः 4,6,2. होता विवासते वाम् 1,117,1. होतेव नः प्रथमः पाह्यस्मान् 7,18,22. या वो होता ऋत्वियो मतः 50,18. अध्वर्यो वा प्रयति दस्तादेतुर्वा यत्त कविर्यो नुपस्व 3,35,10. 9,92,6. 97,1. AV. 1,11,1. der vornehmste aller Hotar ist Agni: होतारमग्निं मनुषो नि षेदुः ṚV. 5,3,6. 5. मनुर्हित 1,13,4. मन्द्र 26,7. क्रत्वयक्षु 67,1. 76,2. त्वमध्वर्युरुत होतासि 94,6. अधारयः 7,14,2. 16,12. विश्वभरसम् 4,1,19. सत्ययज् 3,1. 6,5. 8,16,1. 10,2,1. AV. 2,23,3. अग्निस्तोता मुहुरतं कृणोतु 5,17,1. 18,4,15. — शतचित् ṚV. 7,83,4. मन्मसाधन 151,7. वेदिषद् 4,40,5. विश्ववेदस् 1,36,8. वसुविद् 45,7. रत्नधा 1,1,1. दैव्या होतारा in den Âprî-Liedern nach den Comm. *dieser und jener* Agni Nir. 8,11. ṚV. 1,13,8. 188,7. 5,5,7. सुवाचो 10,110,7. Ait. Br. 2,4. sieben Hotar ṚV. 3,10,4. 8,49,16. 10,63,7. — Âçv. Çr. 1, 7,7. Maitrâjaṇ. 6,16. R. Gorr. 1,13,19. Spr. (II) 3184. Raǵa. 1,62. 82. ed. Calc. 2,71. Varâh. Bṛh. S. 60,13. Bhâg. P. 9,1,14. Çiva MBh. 12, 10364. *Opferer* von mit gen. gaṇa यात्रकादि zu P. 2,2,9. न वै कन्या न पुवतिः u. s. w. होता स्यादग्निहोत्रस्य M. 11,36. fg. mit dem im gen. gedachten Worte componirt gaṇa यात्रकादि zu P. 6,2,151. होत्र° Harîv. 1417. या (तनूरोशस्य) होत्री Çiç. 1. दश होतॄणि MBh. 14,625. fgg. In die Stelle विशामु पूत्सु होतृषु ṚV. 8,20,20 ist das Wort durch Verderbniss gekommen. Erklärt durch स्तोतव्य Nir. 4,26 oder क्षातृ 7,15, während Aurṇavâbha ebend. das Wort auf 1. हु *opfern* zurückführt, was vermuthlich richtig ist. Die Anknüpfung an हू = स्था ist aus der Function des Hotar im Ritual genommen, während das Wort natürlich älter ist. Die Incongruenz von Wort und Beruf tritt schon in den Brâhmaṇa auf, z. B. यदन्यो ब्रुवाति (nämlich der Adhvarju) अथ को ऽनु चाक् यजति च कस्मात् होतेत्याचक्षते Ait. Br. 1,3. — 2) im ausgebildeten Ritual *a)* Bez. des ersten unter den vier Hauptpriestern und *b)* seiner Gehilfen — Maitrâvaruṇa, Akkhâvâka, Grâvastut —, dazu endlich auch *c)* der nächsten Gehilfen des Brahman — Brâhmaṇâkkhaṃsin, Âgnîdhra, Potar nebst dem Neshṭar —; oder es werden *d)* der Hotar mit den genannten, unter Ausschluss des Grâvastut, als die sieben Hotar bezeichnet (vgl. Comm. zu Pâraṇ. Br. 12,13,5. 8). *c)* im weitesten Sinne können die vier Hauptpriester — Hotar, Adhvarju, Udgâtar, Brahman — so heissen mit ihren sämmtlichen Gehilfen, den Hotṛka. Die Texte des Hotar sind die ṚKas, als sein Buch gilt also der Ṛgveda und die dazu gehörigen Rituale. Ind. St. 9,373. 10,139. fgg. AK. 2,7,16. H. 819. Ait. Br. 2,5. 15. 20. 27. 3,14. 7,1. 16. 18. Âçv. Çr. 4,1,6. 6,4,1. Kâṭj. Çr. 7,1,6. TS. 2,5,11,3. Çat. Br. 1,5,2,8. fgg. 3,4. 2,5,2,30. गृणाति वा एतद्धोता यच्छंसति 4,3, 2,1. 5,6,12. अग्नो ऽन्वाक् 9,2,2,11. 12,1,1,5. होता च ब्रह्मा च ब्रह्मोद्यं वदतः 13,2,6,9. होतरभिष्टुहि 5,4,16. होतरेतत्त्वम् Kâṭj. Çr. 9,13,16. Lâṭj. 7,13,12. सविद् Vaitân. 11. 22. 25. होत्रे ऽनुगृणाति, होत्रे प्रतिगृणाति, होता प्रथमं शंसति तमध्वर्युः प्रोत्साहयति P. 1,4,41, Schol. M. 8, 309. Harîv. 1334. 11360 (11362 in der älteren Ausg. fehlerhaft für पोतृ). VP. 276. Bhâg. P. 9,11,2. होतापोतारौ Schol. zu P. 6,3,25. Vop. 6,5. होतृधिष्ण्य Kâṭj. Çr. 5,9,9. 10,14. 8,6,21. °प्रत्यय 12,3,15 °प्रेष 3,3,15. 18. °भक्त 9,13,24. °यामन् Lâṭj. 3,4,7. 6,2,14. 18. — 3) पञ्च° adj. *dem fünf Priester dienen*, vermuthlich Varuṇa ṚV. 5,42,1 (vielleicht die fünf Âditja ausser Mitra-Varuṇa). Die fünf Hotar 2, 34,14 haben hierher keine Beziehung. Nach einem Citat bei Sây. zu d. St. wäre Vâju gemeint. m. nämlich मरुत्, *in welchem fünf Gottheit-*

ten als Hotar, Adhvarju u. s. w. *genannt sind*, TBa. 3,12,8,1. 3. Schol. zu Kâts. Ça. 288, Anm. 541,7. Pañcav. Br. 25,4,2. Çâṅkh. Ça. 10,16,1. Die Formel steht Taitt. Âr. 3,3. — Vgl. अग्नि°, चतुर्होतृ (die Formel steht Taitt. Âr. 3,2; vgl. auch TBa. 3,12,8,1. 3), दृश°, पञ्च°, षड्होतृ (die Formel steht Taitt. Âr. 3,4), सप्त° (die Formel steht Taitt. Âr. 3,5. 6), सु°, स्वयं°, होतृक, होत्र.

होतव्य (von 1. हु) adj. *zu opfern:* आहुति Ait. Br. 7,31. Gṛhyas. 1, 16. समिध: Jâim. 1,302. सर्पिषाप्लुतम् Pañcar. 3,14,39. *dem zu opfern ist:* अग्नि Vaitân. Bṛh. S. 46,24. n. impers. Haitop. 297. fg. Bhâg. P. 4,14,6.

होतुरन्तेवासिन् (comp.) m. *der Schüler eines* Hotar P. 6,3,22, Schol.

हौतृक (von होतृ) m. so v. a. होत्रक Çat. Br. 13,5,4,24. 6,2,16. 7,1,12. Schol. zu Kâts. Ça. 627,15. 772,5. °पुत्र Lâṭy. 2,9,4. °सामन् 4,5,12. 6,2,26.

होतृकर्मन् n. *das Werk des* Hotar Âçv. Ça. 3,13,20.

होतृचमस m. *Schüssel des oder der* Hotar Ait. Br. 2,30. TS. 6,5, 8,3. Çat. Br. 3,9,3,16. 3,24. 4,2,1,29. Âçv. Ça. 5,6,3. 9. 14. Kâts. Ça. 9,3,15. 4,20. 25. 12,5. 10,7,1. 24,3,41.

होतृजप m. *die murmelnde Recitation des* Hotar (gemeint ist die Formel Âçv. Ça. 5,9,1) Ait. Br. 2,36. Nir. 7,31.

होतृत्व (von होतृ) n. *das Amt des* Hotar Çat. Br. 1,4,2,1. Ait. Br. 1,2. Verz. d. Oxf. H. 54,b,11.

हौतृमत् (wie eben) adj. *mit einem* Hotar *versehen:* यज्ञ ṚV. 10,41,2.

होतृवर्य n. = होतृवूर्य Çat. Br. 1,5,2,20.

होतृवूर्य n. Hotar-*Wahl* ṚV. 1,31,3. 6,70,4. Âçv. Ça. 1,3,27.

होतृवेद m. *der* Veda d. h. *das Ritual des* Hotar Sây. zu Ait. Br. 6,1. Schol. zu Kâts. Ça. 12,3,13.

होतृषदन n. *der Sitz des* Hotar (vgl. Comm. zu Kâts. Ça. 3,1,1. वेदिश्रोणी बर्हिर्वेदि Comm. zu Âçv. Ça. 3,1,20): नि होता होतृषदने यसदत् ṚV. 2,9,1. AV. 7,99,1; vgl. TBa. 3,7,5,13. Âçv. Ça. 1,3,30. 3, 1,20. Çat. Br. 1,5,1,23. fg. 2,5,2,20. Kâts. Ça. 3,1,1. 5,4,23. Kauṣh. Up. 1,5,5.

होतृसंस्थाजप m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 396,*a*, No. 127.

होत्र (von 1. हु) Uṇâdis. 4,167 (paroxyt.). n. 1) *Opfer (die Handlung und die Gabe)* Taitt. 2,7,8. H. 821. ṚV. 2,1,2. मन्दस्व होत्रादन्धसः (= होतृयाग Sây.) 37,1. पिबा होत्रात् 36,1. यज्ञ होत्राणि मनसा वणानाः 3,4,5. या नो मित्रावरुणा होत्रार्य वक्त्या: 6,11,1. Pañcav. Br. 21,10, 11. Çâṅkh. Ça. 7,8,2. MBu. 12,10412. — 2) *das Opfern, das Geschäft des* Hotar: यज्ञ इना मम होत्रं नृषत्सामं so v. a. *meine Besorgung des Amtes* ṚV. 10,53,5. यथायजो होत्रमग्ने पृथिव्याः 3,17,2. होत्राद्के विभ्यदायम् 10,51,1. नि यमेद होत्रम् 98,4. 5. AV. 9,2,5. वृणते अग्निं होत्राय Nir. 7,31. Çat. Br. 1,2,3,1. 4,3,17. 9,4,10. ऋग्वेदेनैव होत्रमकुर्वत 11,5,8,4. Kâts. 28,7. अग्ने वेर्होत्रं वेर्हूत्यम् VS. 2,9; vgl. ṚV. 1,76,4. Verz. d. Oxf. H. 54,b,9. — Vgl. अग्नि°, चतुर्होत्र (चा°), देव°, पुरु°, वीति°, वीर°, वेणु°, शालि°, सं°, सु°.

होत्रक (von होत्र) m. 1) *Gehilfe des* Hotar, im weitern Sinne Bez. *sämmtlicher Hauptpriester.* Nach dem Comm. zu Âçv. Ça. 1,2,26 heissen so in den Sûtra die zwölf Ṛtvig nach Abrechnung der vier Hauptpriester (मुख्य), nicht aber eine Sieben- oder Dreizahl (s. unter होतृ). Ait. Br. 2,36. प्रणेता होत्रकाणां मैत्रावरुणः 6,6. die drei (nach Comm.) s. 12. fg. मुख्यान्पृथग्होत्रकाः Âçv. Ça. 5,6,17. शस्त्रिणः heissen Praçâstar, Brâhmaṇâkkhaṃsin und Akkhâvâka (vgl. Sây. zu Ait. Br. 2,36) 10,10. 15,12. 16,1. 6,1,1. 4,1. 7,4,1. 8,2,1. 9,3,5. 10,4. 16,10,10. Gaṇ. 1,23,12. die drei Çâṅkh. Ça. 7,7,6. 14,1. 25,12. 13,10,5. — 2) N. pr. eines Sohnes des Kâṅkâna Bhâg. P. 9,15,3. — Vgl. चतुर्होत्रक.

होत्रग m. (in der Stelle: बभ्रुर्वोत्रगाः सर्वे वेदवेदाङ्गपारगाः MBu. 2, 1240 fehlerhaft für होत्रक. सप्तसंख्याः Nîlak.

होत्रप्रयोगवृत्ति f. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,230.

होत्रर्वत् adj. *Opfer führend* ṚV. 3,26,7.

होत्रवाहन m. N. pr. eines Brahmanen MBu. 3,987. eines Râjarshi 5,6037. fgg.

1. हौत्र (von 1. हु) f. *Priesteramt,* insbes. *die Function der sog.* Hotraka; übertr. *die Personen dieser Priester selbst:* होत्राणामाप्तीनामच्छावाकीयाहोयत Ait. Br. 2,36. यक्ता 6,1. प्रज्ञाप्तेर्वा एषा होत्रा यद्धावस्तोत्रीया 2. 18. fg. 21. प्रतिष्ठिता होत्रा यदैकाहिकाः 8,4. Âçv. Ça. 3,2,5. होत्राः संयजन्ति Çâṅkh. Br. 13,6. 15,1. 23,4. 29,8. सदस्या Çat. Br. 14,2,2,29. fgg. 3,6,2,9. 3,6,2,11. Pañcav. Br. 7,2,2. 18,9,16. sieben 12,13,5. होत्रामसास उक्तो ब्राह्मणेन Lâṭy. 10,12,14. fg. TS. 5,2,7, 2. Kâts. Ça. 9, 11,3. °चमस 12,14. Çat. Br. 4,2,2,31. P. 5,1,135 (= सवित्र Comm.).

2. हौत्रा (von हू = हवा) f. *Anrufung,* = वाच् Naigh. 1,11. = यज्ञ 3,17. = स्तुति ÇKDr. ohne Angabe einer best. Aut. होत्रा देवेषु गच्छति ṚV. 1,18,8. होत्राभिरग्ने मनुषः समिन्धते 36,7. का राधद्धोत्रा 120, 1. 122,9. 129,7. प्र होत्रया शिम्या वीवो अध्वरम् 151,3. 2,2,6. 4,2,10. 48,1. 7,60,9. यो वो होत्रां परिकिनोमि 104,6. 8,12,20. इष्टा होत्रा असृक्षत 8,82,13. 90,8. होत्रामृतुथा यजते व्रतेन 10,40,4. येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः 63,7. होत्राभिरुत देवहूतिभिः Vâlakh. 5,7. sieben: इडस्पतिं होत्र्यमु यज्ञ होत्राः ṚV. 10,17,11; vgl. TBa. 3,5,8,1. TS. 2,6,7,2. नाध्वमेन न होत्राभिः सर्वाः स्वीकृते प्रजाः so v. a. durch *gute Worte* MBu. 3,1332. Personificirt neben Bhâratî, Idâ, Sarasvatî ṚV. 1, 22,10. 2,1,11. 3,62,3 und in den Âprî-Liedern 1,142,9 u. s. w.

होत्रावित् adj. *die Anrufung kennend* ṚV. 5,8,5. 10,15,9.

होत्राशंसिन् m. (*die Rolle eines* Hotraka *recitirend:* होतृत्वे समुत्पन्नाः क्रिया होत्रास्ताः शंसति Sây. zu Ait. Br. 6,21. होत्रा so v. a. होमः, तमाशंसति zu 14) Bez. *der Gehilfen des* Hotar, Hotraka: कस्मादहोतृभ्यः सद्यो होत्राशंसिभ्यो होता पतदिति प्रेष्यति Ait. Br. 6, 14. 21. Âçv. Gṛhy. 1,23,12. Çâṅkh. Br. 29,8. Śraḍdh. Br. 2,4. fgg. Çâṅkh. Ça. 5,1,9. Schol. zu Kâts. Ça. 627,14.

होत्रिन् s. अग्नि°.

हौत्रिय (von होतृ) adj. *den Opferer betreffend,* n. *das Amt des Priesters:* आपो न देवीरुप यन्ति होत्रियम् ṚV. 1,83,2. nach Sây. *die Schüssel des* Hotar.

हौत्रीय (wie eben) adj. *dem* Hotar oder *den* Hotraka *gehörig* u. s. w.: आग्निम् TS. 3,2,4,2. घिष्ण्य Çat. Br. 3,4,3,7. Kâts. Ça. 18,6,11. n. = हविर्धान H. 996.

होम (von 1. हु) Uṇâdis. 1,139. m. und n.(?) Sidd. K. 249,*a*,14. *das*

Giessen in's Feuer, Spenden; Opfer (für das ältere आकुति): fehlt im RV. AK. 2,7,13. H. 821. Z. d. d. m. G. 9, XLVIII. LIX. sieben AV. 9,9, 18. Muṇḍ Up. 2,1,3. होमायोर्मृत: सोम: VS. 8,58. 23,57. होमानादिष्टानुमन्त्रयते ब्रह्मा Vaitân. 1. Çat. Br. 3,1,4,6. 4,2,4,7. वपानाम् 13,3, 8,1. Kâtj. Çr. 13,4,6. 15,7,27. वसा° Çâṅkh. Çr. 5,19,16. Kâtj. Çr. 6, 8,3. Comm. zu TS. 1,538,10. Âçv. Çr. 1,12,6. तिष्ठद्धोमा यज्ञतय:, उपविष्टहोमा जुहोतय: Kâtj. Çr. 1,2,6.7. 3,7,6. des Âgja 3,27. 4,1,3. 8, 9,14. विप्रुषां होमं जुहोति 9,6,30. 11,1,18. उद्गातुर्होमा होम: 12,3,10. मनसा 4,16. अयामार्ग° 15,2,1. परिमुहोमो दक्षिणे ग्रौ 15,10,17. तूष्णीहोमं TS. 6,3,7,2. नक्तंहोमं TBr. 3,8,18,1. यज्ञ° 2. यज्ञ° 18,4. आज्य° Âçv. Gṛhj. 1,3,4. वात° Kâtj. Çr. 18,6,1. पृष्ट° Liṭj. 2,2,15. सक्तु° 5, 4,10. शबलो° 9,8,1. स्रुव° 10,8,2. — 9,12,3. 5. Kauç. 4 u. s. w. सोष्यन्ती° Gobh. 2,7,13. — M. 2,28. 3,70. 74. 81. 240. 11,236. Jâṇ. 1,102. तिले: 3,310. Hariv. 2778. R. 1,51,27. 53,13. 2,33,20. Spr. (II) 4360. 7419. यदीताग्नौ कृतो होम: 7441. Varâh. Bṛh. S. 24,8. Kâtjâs. 13,65. Mârk. P. 92,30 (होमै: zu lesen). Brahma-P. in LA. (III) 54,7. Bhâg. P. 7,14,25. Verz. d. Oxf. H. 94,a,22. 95,a,12. 102,a, No. 159. काम्य 94, a,23. गार्भ M. 2,27. पैतृयज्ञिय 3,282. शाकल 11,200. जुह्वाग्नौ होमम् 119. जुत° adj. 6,34. होमं कर् 3,84. 11,222. Varâh. Bṛh. S. 46,65.72. Kâtjâs. 13,66. घृताम्बुते: 46,90. 70,67. समिद्धे विभावसौ Mârk. P. 15, 28. 34,20. Bhâg. P. 8,16,47. विल्वैर्होमं विदधतं ब्राह्मणम् Kâtjâs. 33, 56. °विधि Verz. d. Oxf. H. 267,b,31. 286,a, No. 670. °प्रवृत्त Kâtjâs. 46,55. °मन्त्र Çâṅkh. Çr. 1,2,22. M. 2,105. Spr. (II) 4216. होमार्थं Kauç. 16. Kâtj. Çr. 4,14,3. Ragh. 2,66. °द्रव्य Schol. zu Kâtj. Çr. 422,9.15. Verz. d. Oxf. H. 94,a,25. 105,b,5. °द्रव्यपरिणामपरिशिष्ट 383,b, No. 466. षडङ्ग° Varâh. Bṛh. S. 46,31. एवं सहोमं (!) वरद इमपत्ति Hariv. 9904 (die neuere Ausg. hat eine andere Lesart). आरण्यके सहोमं (!) च एतद्वायत्ति सामगा: Verz. d. Oxf. H. 56,a,10. — Vgl. कोटि° (auch Varâh. Bṛh. S. 46,6) unter कोटि 4), त्रय° (du. *stilles Gebet* und *Opfer* Verz. d. Oxf. H. 103,a,10), दर्वि°, दर्वी°, पुरस्ताद्धोम, पूर्ण°, पूर्व°, प्रवृत्त°, प्रातर्होम, वसु°, विवाक्°, वैश्वदेव°, शान्ति°, श्रौत°, संस्थित°, सर्व°, सायंप्रातर्होम, स्वयं°, हुत°.

होमक m. = होत्रक; acht an der Zahl Mârkaṇḍ.-P. 78 im ÇKDa.

होमकर्मन् n. *Opferhandlung* Kâtjâs. 11,37. 45,42. 121,7. Pârâṇ. 3,10,11.

होमकाल m. *Opferzeit:* प्रदोषासो होमकाल: (des सायंहोम) Âçv. Çr. 3,12,1. Gṛhj. 1,9,6. MBh. 13,3740. R. Gorr. 3,1,26.

होमकुण्ड n. *die für die Aufnahme des Opferfeuers bestimmte Vertiefung im Erdboden* Taitt. 2,7,6. H. 833. Man. 1. 88.

होमतुरंग m. *ein zum Opfer bestimmtes Ross* Ragh. 3,38.

होमदुघ् adj. *die zum Opfer bestimmte Milch hergebend:* Kuh Hariv. 3294.

होमधान्य n. *Sesamkörner* Râgân. 16,69. v. l. होम° und होम्य° (ÇKDa.).

होमधूम m. *Opferrauch* Taitt. 2,7,7 (s. Corrigg.). H. 837.

होमधेनु f. *eine Kuh, deren Milch zu Opfern bestimmt ist,* MBh. 1, 2928. 3,10049. Ragh. 2,6. 26. Mârk. P. 112,3.

1. होमन् (von 1. हु) n. *Opfer, Spende* Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,150. कस्मै देवा घा वंहनाय्वा होमं RV. 1,84,18. घृधस्य 3,60,7.

2. होमन् (von हू = हा) n. *das Rufen:* घर्कस्य RV. 8,32,4.

होमभस्मन् n. *Opferasche* Taitt. 2,7,7. H. 837.

होमभाण्ड n. *Opfergeräthe* Kâtjâs. 70,70.

होमय् (von होम), °पति *zum Opfer gebrauchen:* अग्निम् Gṛhjâs. 1,16. *opfern lassen:* अघर्युणा Schol. zu Kâtj. Çr. 422,19. *opfern* Verz. d. Oxf. H. 103,a, N. 1. तिलान् Mârk. P. 51,48.

होमवत् (wie eben) adj. *Opfer vollbringend* Bhaṭṭ. 4,9.

होमविधान n. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,159.

होमवेला f. *Opferzeit* Bhâg. P. 3,16,3.

होमस्वरोत्तर Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 292,b,41.

होमाग्नि (होम + अग्नि) m. *Opferfeuer* H. 836. Spr. (II) 6055.

होमि m. *Feuer* und *Opferschmalz* H. an. 2,342. Med. m. 38. *Wasser* Çabdar. im ÇKDa.

होमिन् (von होम) Uṇâdis. 3,84. 1) adj. = यजमान Ujjval. am Ende eines comp. *opfernd, spendend:* तीव्र° Kâtj. Çr. 4,10,16. घनुदित° An. Bh. 3,29. तिल° s. u. पट्टिलिन्. — 2) f. होमिनी संज्ञायाम् P. 5,2,127, Schol. — Vgl. उदित°, स्वयं°.

होमीय (wie eben) adj. *was zum Opfer —, zur Spende gehört, dazu bestimmt ist* Kâṭh. Up. 5,19,1. अग्निपर्युक्षन्होमीयम् Gobh. 1,3,5. अग्नि Kull. zu M. 8,339. द्रव्य zu 9,86.

होम्य adj. dass. Kauç. 72. fg. MBh. 12,10412. 13,3594. °होतर् Hariv. 14117. n. = घृत Râgân. im ÇKDa. — Vgl. घप्सु° und होम्य.

होयि interj. Kâṭh. Up. 4,1,2. MBh. 12,10399.

होरा (aus ὥρα) f. AK. 3,6,4,10. 1) *Stunde, der 24te Theil eines Ahorâtra,* Varâh. Bṛh. 1,12. दिनं लग्नं च होराश्च (होराश्च?) न विदु: Mârk. P. 109,39. — 2) *die Hälfte eines Zodiakalzeichens* H. an. 2,473. Med. r. 103. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 8, Z. 8 v. u. Bṛh. 1,3. 9. 11. Lagadh. 1,3. 23. Jogajâtrâ 1,5. — 3) *Horoskop;* = लग्न und रेखागणित H. an. Med. Sarva. 1,119,1. Varâh. Bṛh. S. 96,1. Bṛh. 1,9. 15. 3,6. 5,24. 8,8. 10,1. 11, 18. Verz. d. Oxf. H. 336,b, No. 792. °पाल Varâh. Bṛh. 1,3. 8,19. होराधिप *Herr des Horoskops* (ein Planet) Bṛh. S. 34,11. होराधिपति desgl. 2, S. 4. °य desgl. Bṛh. 2,21. °स्वामिन् desgl. 1,19. होरेश desgl. 19,4. Ârjabh. 3,16. Sûrjas. 12,79. — 4) *Horoskopie* H. an. Med. Utpala zu Varâh. Bṛh. 1,3. Kîm. Nîtis. 4,33. Varâh. Bṛh. S. 1,9. 10. 2,3. 7 (aus Garga). 21 (gleichfalls). Verz. d. B. H. No. 939. Verz. d. Cambr. H. 27. Weber, Ind. St. 4. °पटु Varâh. Bṛh. 26(24),4. 28(26),9. स्कन्ध Utpala zu 1,1.

होरामकरन्द m. Titel eines astrol. Werkes Verz. d. Oxf. H. 338,a, 24. fg. °मकरन्दोदाहरण Mack. Coll. 1,123.

होराशास्त्र n. *Horoskopie* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 5, Z. 8 v. u. Verz. d. B. H. No. 858. Verz. d. Oxf. H. 329,a, No. 780. °सुधानिधि 333,a,39.

होरासार Titel eines Abschnittes in Varâh. Bṛh. S. Mack. Coll. 1,123.

होरिलमिश्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 1025.

होरिलसिंह m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 148,a,11.

होर्ल (von हुल्) P. 3,1,140. 1) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8, 2698. — 2) f. घा N. pr. einer Stadt Râga-Tar. 1,306.

होलक m. *halbreife Hülsenfrucht über leichtem Feuer geröstet* Bhâvapr. 5. Madan. 11,99.

होलड N. pr. einer Oertlichkeit Râga-Tar. 8,1432.

कोलरा desgl. ebend. 2909. 3216.

कोलसिंह m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 148,*a*,9.

कोलाक 1) m. eig. °स्वेद *eine besondere Art des Schwitzens über heisser Asche von Kuhdünger* Kâraka 1, 14; vgl. ÇKDa. s. v. — 2) f. आ (vulgo कोली) *ein best. Frühlingsfest* Dissen. 68. fg. 174. fg. Wilson, Sel. Works 2,222. fgg.

कोलिका f. = कोलाका und zugleich N. pr. einer dabei verehrten Râkshasî Wilson, Sel. Works 2,231. fgg. Verz. d. B. H. No. 1303. fgg. Verz. d. Oxf. H. 218,*a*,4.

कोविन् s. पद्म°.

कोको interj. *Rufen* und *Anreden* H. an. 7,6. Med. avj. 92. — Vgl. को und कौ.

कौ desgl. H. an. 7,6. Med. avj. 88.

कोड्, कोडति (गतौ) Dhâtup. 9,71. nach Vop. auch अनादरे und med.

कोर्ड n. nom. abstr. von कोड gaṇa पृष्ठादि zu P. 5,1,122.

कोणिकी f. patron. P. 4,1,79, Schol.

कोणिटन m. Bez. *gewisser Versetzungen* (विकार) von *Versen u. s. w. in der Liturgie* Âçv. Çr. 3,2,17.

कोतभुज (von कृतभुज्) adj. Agni *gehörig, unter ihm stehend* Varâh. Bṛh. S. 32, 12. 27. 80, 9. n. *das unter* Agni *stehende* Nakshatra Kṛittikâ 7,5. 98,11.

कोताशन (von कृताशन) adj. dass.: कोणा *Südost* Varâh. Bṛh. S. 53,48.

कौतृक 1) adj. vom Hotar *kommend* P. 4,3,78, Schol. — 2) n. *das Amt des* Hotar Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,11.

कोर्त्र adj. = पत्नमान Uṇâdis. zu Uṇâdis. 4,105; vgl. Notes.

कौत्र und कौत्रे 1) adj. *was den* Hotar *angeht* gaṇa मल्क्यादि zu P. 4, 4, 48. Schol. zu 49. Kâç. Çr. 1, 8, 3. — 2) n. *die Function —, Rolle des* Hotar gaṇa उद्गात्रादि zu P. 5,1,129. पुरोडादि zu 130. सचैव कौत्रमकुर्वन् Ait. Br. 5,32. Pañcav. Br. 24,13,5. Gobh. 1,6,19. कौत्रामर्श *Dinge, die das Gebiet des* Hotar *berühren,* Âçv. Çr. 2,13,22. कौत्रमित्यृग्वेदस्य समाख्या *Vorschrift für den* H. Comm. zu Âçv. Çr. 1,1,4. Kâç. Çr. 3,3,25. Schol. 957,1. Lâṭ. 4,10,16. R. 7, 55,14. Ind. St. 1, 16. fg. 27. 73. 83. 3,385. fg. 388. 390. Verz. d. B. H. No. 120. fg. Çâṅkh. zu Kâuṣ. Up. S. 57. Koll. zu M. 3,1. सः (= सह कौत्रादिभिः Comm.) Çâṅkh. Çr. 14,1,2.

कौत्रक (von कौत्र) n. Titel eines Pariçishṭa zum weissen Jagus Ind. St. 3,269. Verz. d. B. H. No. 262.

कौत्रकल्पद्रुम m. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 2,244.

कौत्रसूत्र n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 382,*a*, No. 450.

कौत्रिक adj. *in den Kreis des* Hotar (*in den* Ṛgveda) *gehörig* Kâç. Çr. 25,1,3. — n. Ind. St. 1, 81 wohl nur fehlerhaft für कौत्रक.

कौम्य adj. = कौम्य *zum Opfer —, zur Spende gehörig* (Stoffe): °शोर्ष दक्षिणा Sâṅkh. Br. 4,1. Âçv. Gṛhj. 1,9,5. Kâç. Çr. 25,2,3. 7,11. MBh. 13,3355. fg. 3519. 3740. n. = घृत Râgân. 15,2.

कौम्यधान्य n. = कौमधान्य Râgân. im ÇKDa.

क्रवाव्य (von क्रु) adj. in स°.

क्रु, क्रुते (अपनयने) Dhâtup. 24,73. P. 8,1,186. क्रुवे, क्रुवते 3. pl., क्रवे, क्रवते und क्रवत्ते 3. pl. (अपि) कृतम् du.; act. s. auch unter नि. mit dat. P. 1,4,34. *sich vor Jmd verstecken* Vop. 3,15. *vertreiben* (अपनयने): यमस्याक्रोष्टु विक्रमम् Bhaṭṭ. 15,88.

— अप Comm. zu AV. Paipp. 1,59. P. 8,4,46, Schol. 1) *sich Etwas verbitten, ablehnen:* न ते सख्यमप क्रुवे ṚV. 1,138,4. — 2) *von sich abweisen* so v. a. *in Abrede stellen, läugnen:* यत्त्वेनं यातुधान इति ब्रूयुर्नापक्रुवीत Kâṭh. 37,14. Kâṭhân. Up. 7, 15, 4. M. 8, 53. Kâtyâs. 58, 134. Kivjâd. 2,304. पारलौकिकमर्थम् Sarvadarçanas. 2,8. *verschweigen, verhehlen:* गुणांश्चापक्रुषे ऽस्माकम् Bhaṭṭ. 5,44. vor (dat.): अपक्रुवानस्य त्रिनाय निह्नामधीरताम् Naish. 1,49. — 3) *Jmd Genugthuung leisten, sich entschuldigen:* अपेवास्मै तद्ब्रुवते TBr. 3,9,8,1. सुकन्यया ते ऽपक्रुवे Çat. Br. 4,1,5,7. 13,2,8,4. — Vgl. अपक्रव fg.

— अपि *ablehnen:* न देवानामपि क्रुतः सुमतिम् ṚV. 8,31,7.

— नि 1) *Jmd* (dat.) *Busse leisten für Etwas* (acc.), *Etwas abbitten:* न्येवास्मै क्रुवते dem Todten TBr. 1,4,8,7. 6,9,8. 2,7,5,2. 3,9,8,2. तदस्मै निक्रुवे (निक्रुवे Çâṅkh. Çr.) तुभ्यं प्रतियतु शता गवाम् Ait. Br. 7, 17. यज्ञभ्यः TS. 6,1,10,3. गार्हपत्याय 1,5,8,3. देवेभ्यः Çat. Br. 2,4,2, 11. 6,4,37. यज्ञाय 3,2,4,8. 1,1,4,10. 3,10. 3,4,17. 4,3,4. 5,4,25. act. निक्रुयात् Maitrâjan. 4,6. Im Ritual eine symbolische Handlung der *Abbitte* (नमस्कार Comm.), indem die Ṛtvig auf den Prastara die Hände legen — beide nach oben oder die rechte nach oben, die linke nach unten gekehrt — und dazu den Spruch VS. 5,7 sprechen. Ait. Br. 1,26. Çat. Br. 3,4,3,19. 21. 4,2,4,15. 14,1,3,24. Kâṭy. Çr. 3,2,9. Vaitân. 3. Âçv. Çr. 4,5,7. Lâṭy. 5,6,9. Gobh. 4,3,18. — 2) *ablehnen, weigern:* निक्रुवानं क्रन्दः Pañcav. Br. 8, 6, 12. — 3) *in Abrede stellen, läugnen, verschweigen, verhehlen* M. 8,59. Jâgn. 2,20. 82. Kâtyâs. 60, 45. 63,105. Bhâg. P. 11,18,41. Bhaṭṭ. 8,74 (mit dat. der Person). मानसाप्यं सरोवरम् मुखानि दिव्यनारीणां क्रोडस्तीनां व्रजत्तरे । निक्रुवानं मरुद्भूतेरुत्फुल्लैः कनकाम्बुजैः ॥ so v. a. *verbergend* Kâtyâs. 46,88. act.: निक्रोति (वै निह्नोति ed. Calc., विनिक्रोति ed. Bomb.) MBh. 13, 5521. निक्रुवत्ति 12,8436. partic. निक्रुत *verschwiegen, verhohlen, verheimlicht* Kâtyâs. 43,107. 57,14. Râga-Tar. 6,368. Bhaṭṭ. 10,36. so v. a. *anders dargestellt, für etwas Anderes ausgegeben* Kâtyâs. 17,77. Spr. (II) 1214. — Vgl. निक्रव fgg.

— अतिनि *hartnäckig läugnen:* °क्रुत्य Daçak. 82,1.

— अपनि *in Abrede stellen, verhehlen* Kâṭhân. Up. 4,14,2. पारिप्लवमात्मनो ऽपनिक्रोतुकामः Milavim. 16,13. fg.

— अभिनि s. अभिनिक्रव.

— विनि *in Abrede stellen, läugnen; verhehlen:* °क्रोति (d. i. °क्रौति) MBh. 13,5521 nach der Lesart der ed. Bomb. °क्रुत *versteckt:* अर्क Kâtyâs. 106,132.

— परि, partic. °क्रुत etwa *verläugnet, abgeläugnet* AV. 12,5,40.

— वि Comm. zu AV. Paipp. 1,100.

स्खल्, स्खलति Dhâtup. 19,45 (चलने). 20,14, v. l. (गतौ). अस्खालीत् P. 7,2,2, Schol. — caus. स्खलयति und स्खालयति Dhâtup. 19,45. 67. Vop. 18,23. अपस्खलयति Comm. zu AV. Paipp. 1,58. विस्खलयति zu 100. — Vgl. क्षल्.

स्खर्ल und स्खार्ल (von स्खल्) P. 3,1,140 nach v. l. im Dhâtup. 20,14.

स्वेस् adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. *gestern* AK. 3,5,22. H. 1341.

RV. 2,33,7. 88,1. 10,33,3. Pañkav. Br. 11,9,3. Kathâs. 30,105. Râga-Tar. 6,40. Spr. (II) 7423.

क्षास्तन (von क्षास्) 1) adj. (f. ई) *gestrig* P. 4,2,105. Vop. 7,10. Çabdam. im ÇKDa. MBu. 5,7270. °दिन Hall. 3,23. — 2) f. ई (sc. विभक्ति) *die Personalendungen des Imperfects* Kâtantra 3,1,23. 27.

क्षास्त्य adj. dass. P. 4,2,105. Çabdam. im ÇKDa.

क्षोगोदोह् m. *Kuhmelkung vom vorangehenden Tage; Milch, die den Tag zuvor gemolken ist*, AK. 2,9,52. H. 407.

क्रुग्, क्रौंगति (संवरणे) Dhâtup. 19,25. — Vgl. क्रुग्.

क्रुणाया f. = कृणाया Bharata zu AK. 3,3,32 nach ÇKDa. क्रुणाया Colebr. und Lois.

1. क्रुद् (vgl. 1. क्रुद्) m. 1) *Getön u. s. w.* in शत°. *Strahl* Râmâçrama zu AK. nach ÇKDa. wohl wegen शतक्रुदा *Blitz*. — 2) N. pr. eines Sohnes des Hrâda Hariv. 188. = क्रुद् 12460.

2. क्रुदं (vgl. क्रुद् = क्रुद्) 1) m. Sidd. K. 250,a,2. a) *Teich, See* AK. 1,2,3,23. H. 1091. Hall. 3,48. RV. 1,32,7. क्रुदा इव कुल्याः सोमधानाः 3,36,3. 45,3. कुल्या इव क्रुदम् 10,43,7. स्राव 71,7. उद्रा क्रुदमपिबत् 102,1. 142,3. AV. 4,15,14. 6,37,2. Çat. Br. 4,1,5,12. स्थावर् 4,5,10. 11,5,5,3. Pañkav. Br. 25,10,13. Çâṅkh. Çr. 16,18,10. Âçv. Gṛhj. 1,5, 5. 2,6,9. Kâṭh. Up. 1,4. Jâṭ. 1,159. सगाधो विपुलः MBu. 3,2231. 12262. 9,1626. fg. सर्पिःपङ्क 14,2683. Hariv. 10238. R. 2,25,7. 81,16. 91,71. 4,44,60. Rāgh. 1,73. Spr. (II) 3299. Varâh. Bṛh. S. 46,47. Bhâg. P. 4,22,30. 5,16,14. Pañkat. 77,11. 159,14. तमोमय MBu. 3,16900. वैकाशस 12,4662 (क्रुद् ed. Calc.). गोमय R. 2,69,8. 9. घृत° Çiç. 100, 17. भुजग° Kathâs. 46,120. सघाम् MBu. 3,10698. क्रुदानामुदधिः श्रेष्ठः 4,43. *das Meer* so genannt 9,2409. *Wassermasse:* गाङ्ग *das Wasser der Gaṅgâ* Spr. (II) 3529. गोदावरी° Uttarar. 30,12 (53,9). नदी सोक्रुदौ तीर्त्वा MBu. 14,1164; vgl. क्रुदिन् 1). Unsicher: व्यञ्जनानाम् *Seen von Brühe* R. 1,13,15. नाभि° *der Nabel als Teich* Bhâg. P. 3,28,25. Çiç. 10,60, v. l. (vgl. Ipd. St. 3,226). Çaṅk. 41. neutr. Hariv. 3640 (die neuere Ausg. m., aber mit verdorbener Lesart). Accent eines auf क्रुद् ausgehenden comp. gaṇa चोपादि zu P. 6,2,85. — 2) f. आ *Weihrauchbaum* Râgân. 11,197. — 3) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. — Vgl. गङ्गा°, घृत°, तनु°, तीर्थमहा°, नाग°, बिन्दु°, ब्रह्म°, मर्कट°, महा° (in Bed. 1) auch MBu. 16,140. R. 2,42,25. Sucr. 1,206,16), राम°, शङ्ख°, शारद, शीत°, षष्टि°.

क्रौदक adj. = क्रुदे कुशलः gaṇa शाकार्यादि zu P. 5,2,64.

क्रुदमह् m. *Delphinus gangeticus* Taik. 1,2,22.

क्रुदय्य (von क्रुद्) ved. adj. *im Teiche befindlich* P. 6,1,83, Vârtt. 1. आपः Schol. TS. 4,5,9,1. — Vgl. 2. क्रुदय्य.

क्रुदय्य adj. dass. P. 6,1,83, Vârtt. 2.

क्रुदिन् (von 2. क्रुद्) 1) adj. *wasserreich* (vgl. गाङ्गो क्रुदः u. s. w. unter 2. क्रुद् 1): Flüsse MBu. 3,2311. 8362. 8374. 11,800. Hariv. 9632. R. 2,47,17. R. Gorr. 2,73,5. — 2) f. °नी *Fluss* AK. 1,2,3,29. H. 1060, v. l. Hall. 3,43. Râgân. 14,10. Varâh. Bṛh. S. 48,3. Bhâg. P. 2,7,28. 4,23,22. 23,44. 6,4,41. 10,21,9. — Vgl. वि° und क्रुदिनी.

क्रुदेचतुस् adj. *im Teich sich spiegelnd* RV. 10,93,6.

क्रुदोदर (2. क्रुद् + उ°) m. N. pr. eines Daitja (*dessen Bauch einem Teiche gleicht*) MBu. 9,2693.

क्रुद्य (von 2. क्रुद्) adj. (f. या) *im Teich befindlich* TS. 7,4,12,1.

क्रुप्, क्रापयति (व्यक्तायां वाचि, v. l. अव्य°) Dhâtup. 32,113, v. l. — Vgl. क्रुप्.

क्रुम्, क्रौंसति (शब्दे) Dhâtup. 17,61. *abnehmen, sich mindern, weniger u. s. w. werden* Nir. 3,13. आयुर्क्रुमति पादशः M. 1,83. आयुर्वीर्यमवो बुद्धिर्बलं तेजश्च MBu. 3,13020. fg. मनुष्याणां स्वरवर्णमनांसि 12,3530. वेदवादाः 8503. धातवः (Gegens. आप्याय्यन्ते) Karaka 4,6. Varâh. Bṛh. 7, 2. 3. दैर्घ्ये Bhâg. P. 5,16,8. क्रुसति च मासि मास्येकैका घटिका रात्रिषु so v. a. *die Nächte werden um — kürzer* 21,4. med.: धर्मो न क्रुमते MBu. 1,2478. 3,11247. 12,6799. वयः 8502. क्रुन्दः Ind. St. 3,120. Spr. (II) 2103, v. l. Bhâg. P. 10,74,4. क्रुसमान Kâçik. 23,19. स्थानेभ्यः *herabkommend* von MBu. 12,7860 (घंसमानाः ed. Bomb.). partic. क्रुसित *weniger geworden, verkürzt* Bhatt. 10,6. आयुस् Bhâg. P. 1,4,17.

— caus. क्रामयति *weniger werden lassen, mindern:* एकैकं क्रामयेत्पिण्डं कृष्णे शुक्ले च वर्धयेत् M. 11,216. Jâṭ. 3,224. न्यूनान्यातून्पूरणाः। व्यतिरिक्तान्क्रामयामः Karaka 1,10.

— अप s. अपक्रास.

— निस् *kurz werden:* निर्क्रुसते du. RV. Prât. 4,39. partic. निर्क्रुस्त *verkürzt:* ein Vocal Nir. 2,17. 6,11. स्तोमनिर्क्रुस्त *gemindert in Bezug auf die Zahl der* Stoma, — um St. Âçv. Çr. 8,6,4. — Vgl. निर्क्राम.

— प्र s. प्रक्रास.

— प्रति s. प्रतिक्रास.

क्रुसिमन् m. nom. abstr. zu क्रुस्व gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122. P. 6,4,156.

क्रुसिष्ठ und क्रुसीयस् s. u. क्रुस्व.

क्रुस्व (von क्रुस्) Uṇâdis. zu Uṇâdis. 1,153 (paroxyt.). 1) adj. (f. या) a) *minder, kurz, klein* (Gegens. दीर्घ, बर्षीयस्, महत्, प्रांशु) Naigh. 3,2. AK. 2, 6,1,46. 3,2,30. H. 1427. 1429. H. ç. 104. H. an. 2,520. Med. v. 30. Hall. 4,3. Buâlâp. 109. Sarvadarçanas. 62,17. कुब्जवामना यन्मात्रा क्रुस्वास *klein von Statur* Suçr. Bd. 4,3. Çârîr. Çr. 17,10,11. VS. 16, 30. माणवकेय (könnte auch N. pr. sein) Ind. St. 1,391. MBu. 1,5367. 2,2178. 14,1688. R. 5,17,28. Sucr. 1,117,18. 124,11. 125,6. 343,3. °बालक MBu. 8,2749. 2890. Varâh. Bṛh. S. 11,3. 13,7. 30,9. (so v. a. *eingeschrumpft*). 47,9. 24. 50,4. 61,2. 10. क्रुस्वानि चत्वारि च लिङ्गपृष्ठं ग्रीवा च त्रीणि च क्षितिप्रदानि 68,86. चतुर्क्रुस्व adj. *bei dem diese vier Theile des Körpers kurz sind* 84. — Varâh. Laghuj. 2,15. °शाखाशिफः तुपः AK. 2,4,4,8. Hall. 2,28. उरु Râga-Tar. 4,600. संवार *ein niedriger Durchgang* MBu. 3,2229. पलाशाद्रस्वानि मूलानि पञ्च *um einen Pala weniger von den fünf Wurzeln* Karaka 10,2. काल Bhâg. P. 4, 20,15. पक्षोरात्राणि दीर्घक्रुस्वसमानानि 5,21,2. महद्रस्वं कर्म *nahedeutend* MBu. 1,7046. स्वर *schwach* Spr. (II) 7313. यति° *zu klein* (von Statur) MBu. 1,2702. यतिक्रुस्वाङ्ग Bhâg. P. 4,14,44. यज्ञ Sucr. 1,23, 21. — comp. क्रौंसीयस् P. 6,4,156. Vop. 7,86. Çat. Br. 1,4,4,7. 3,7,2, 7. 6,2,4,19. वर्ष्मं पुरस्ताद्वर्षीयः पश्चाद्भूमीयः TS. 2,6,11,5. 5,6,4,2. Pañkav. Br. 21,1,7. Âçv. Çr. 2,14,21. RV. Prât. 17,31. Ind. St. 8,162. — superl. क्रौंसिष्ठ P. 6,4,156. Vop. 7,86. AK. 3,2,62. Çat. Br. 3,3,4, 20. 12,2,4,2. — b) in der Grammatik *kurz* von Vocalen, m. *ein kurzer*

Vocal Uśśvaḷ. a. a. O. Çikṣh. Ça. 1,2,13. 10,3,23. Nṛs. Tāp. Up. in Ind. St. 9,98. ṚV. Prāt. 1,4 (14). 6 (16). 13 (23). 4,9. 14,13. 20. VS. Prāt. 1,55. 63. 4,48. 8,11. 13. TS. Prāt. 1,3 u. s. w. AV. Prāt. 1,51 u. s. w. P. 1,2,27 u. s. w Ind. St. 8,84. 467. Çaut. 3. 21 (= लघु). °अर्ध° P. 1,2,32. ह्रस्वार्धकाल TS. Prāt. 1,27. °समकाल VS. Prāt. 3,1. °पूर्व 4,104. 147. TS. Prāt. 9,18. ṚV. Prāt. 6,4. ह्रस्वोदय 5,23. ह्रस्वोपध AV. Prāt. 3,27. ह्रस्वान्त Çiṅ. 2,3. 11. ह्रस्वीयस् ṚV. Prāt. 13, 14. — 2) f. या *Phaseolus trilobus* Rāǵān. 3,22. = नागबला und भूमिजम्बू Rāǵān. im ÇKDa. — 3) n. *eine best. Gemüsepflanze* (गौरसुवर्णा) und *grüner* (*schwarzer*) *Eisenvitriol* Rāǵān. im ÇKDa. — Vgl. महा°.

ह्रस्वक (von ह्रस्व) adj. *sehr klein*, von Statur Hariv. 6486. Spr. (II) 5109. VP. bei Mcln, ST. 1,63, Çi. 18 (यति°). कृमि MBu. 1,1796. मणिकुण्डले 14,1688.

ह्रस्वकर्ण adj. *kurzohrig*; m. N. pr. eines Rākshasa R. 5,12,13.

ह्रस्वकुश m. *Kuça-Gras* Rāǵān. 8,93.

ह्रस्वगर्भ m. dass. Ratnam. im ÇKDa.

ह्रस्वगवेधुका f. *Uraria lagopodioides Dec.* AK. 2,4,8,5. Ratnam. 23. Rāǵān. 4,106.

ह्रस्वजम्बू f. *eine Gambū-Art mit kleiner schwarzer Frucht* Ratnam. 269.

ह्रस्वजात्य adj. von *kleiner Art* Suçr. 2,305,6.

ह्रस्वतण्डुल m. *eine Art Reis*, = हायन Rāǵān. im ÇKDa.

ह्रस्वता (von ह्रस्व) f. *Kleinheit*, von Statur R. 5,9,44. 49,31.

ह्रस्वत्व (wie oben) n. *Kürze* Kāç. 7,1,17. Suçr. 1,117,18. Sarvadarçanas. 44,20. eines Vocals Comm. zu TS. Prāt. 1,52.

ह्रस्वदर्भ m. = ह्रस्वकुश, ein von den Verfassern des ÇKDa. gebildetes Wort.

ह्रस्वदा f. *Weihrauchbaum* Rāǵān. im ÇKDa. द्रुदा unsere Hdschrr.

ह्रस्वपत्रक 1) m. *eine im Gebirge wachsende Bassia-Art* Gaṇḍīn. im ÇKDa. — 2) f. °पत्रिका *eine best. Pflanze*, = घण्टिका (घण्टयी ÇKDa.) Rāǵān. 11,133.

ह्रस्वपर्ण m. *Ficus infectoria* Rāǵān. 11,137.

ह्रस्वपत्र m. desgl. Rāǵān. 11,128.

ह्रस्वफल 1) m. *Dattelpalme* Rāǵān. 11,53. — 2) f. या *eine best. Pflanze*, = भूमिजम्बू Rāǵān. 11,30.

ह्रस्वबाहु adj. *kurzarmig*; m. N. pr., unter dem Nala bei Ṛtuparṇa in Dienst tritt, Kathās. 56,334. fgg.; vgl. MBu. 3,2748. fg.

ह्रस्वमूल m. *eine Art Zuckerrohr* Rāǵān. 14,86. °क m. vielleicht dass. Suçr. 2,411,1.

ह्रस्वरोमन् m. N. pr. eines Fürsten der Videha, eines Sohnes des Svarṇaroman, R. 1,71,13 (73,11 Gorr.). VP. 390. Buiǵ. P. 9,13,17.

ह्रस्वशिग्रुक m. *eine kleine Art Moringa* Suçr. 2,380,4.

ह्रस्वाग्नि (ह्रस्व + अग्नि) m. *Calotropis gigantea* Çabdar. im ÇKDa.

ह्रस्वाङ्ग (ह्रस्व + 3. अङ्ग) 1) adj. *klein von Gestalt:* यति° Buiǵ. P. 4,14,44. — 2) m. *eine best. Pflanze*, = जीवक AK. 2,4,8,8. Rāǵān. 5,12.

ह्रस्वाबह्वृचशा f. N. eines Sāman Ind. St. 3,238,a. ह्रस्वावेद्रूप n. desgl. 247,b.

1. ह्राद, ह्रादते (अव्यक्ते वन्दे) Dhātup. 2,25. *tönen* u. s. w.: ह्रादो ह्रादते: (so ist zu lesen) शब्दकर्मण: Nir. 1,9. अह्रादे (pass. impers.) पटैर्भेरीम् Bhaṭṭ. 14,4.

— घनु s. घनुह्राद.

— नि, partic. निह्रादित (निर्ह्रादित?) *Gebrüll* Buiǵ. P. 10,36,3.

— निस् caus. *tönen lassen*, (die Trommel) *schlagen* Kāṭh. 14,7. — Vgl. निर्ह्राद fg.

— प्र s. प्रह्राद.

— सम् *klappernd auf einander treffen:* यदि यावाण: संह्रादेरन् Āçv. Ça. 5,12,21. संह्रादमानाभरण Harīv. 2678. — caus. 1) *zusammenschlagen, dass es einen Ton giebt:* एकैकमस्य्यसंह्रादयन्तो ऽवदध्यु: Āçv. Gṛhj. 4,5,5. — 2) *laut ertönen:* संह्रादयन्तश्च तवा निर्घाताश्चापतन्भुवि MBu. 9,2689. — Vgl. संह्राद fgg.

2. ह्राद = ह्राद; s. 2. ह्रद. — caus. ह्रादयसि (ह्रा°?) *ergnicken* Mārk. P. 104,39.

ह्राद (von 1. ह्राद) m. 1) *Getön* H. 1399. Halāy. 1,138. घनुर्ह्राद MBu. 6,331. गजघण्टानाम् 7,2940. दुन्दुभीनाम् Kir. 16,8. मरुद्ह्रादा: (so liest Çāṅk.) vom *Donner* Kāṭhaka Up. 7,11,1. In der Orthoëpie so v. a. *Geräusch* Pat. in Mahābh. 1ith. Ausg. 1,204,a. ह्रादशब्देन वर्णाभिव्यक्तिकेतवो नादा उच्यन्ते Kāç. ebend. 6,31,b. — 2) N. pr. *a*) eines Schlangendämons MBu. 16,130. — *b*) eines Sohnes des Hiraṇjakaçipu Harīv. 187. fg. 12914. VP. 1,13,140 (ह्लाद Wilson). Buiǵ. P. 6, 18,13. 14; vgl. 1. ह्रद 2). — Vgl. मेघ°.

ह्रादक adj. = ह्रादे कुशल: gaṇa आकर्षादि zu P. 5,2,64.

1. ह्रादिन् (von 1. ह्राद) 1) adj. *lärmend, schreiend:* Krieger MBu. 8,2492. *überaus laut:* नुत Varāh. Bṛh. S. 68,63 gute v. l. — 2) f. °नी *Blitz* AK. 1,1,9,10. 3,4,29,115. H. 1105. an. 3,437. Med. n. 159. Hār. 58. MBu. 9,553. — *b*) Indra's *Donnerkeil* AK. 1,1,4,42. 3,4,29,115. H. 180. H. an. Med. Gaṇḍīn. in Verz. d. Oxf. H. 191,a,42.

2. ह्रादिन् 1) adj. = ह्रदिन् 1) R. 2,71,2 (73,2 Gorr. N. pr. eines Flusses nach dem Comm.). 6 (ह्रदिनी Gorr.). — 2) f. °नी *a*) = ह्रदिनी *Fluss* H. 1080, Schol. Rāǵān. 14,10. — *b*) *Weihrauchbaum* v. l. für ह्लादिनी Çabdar. im ÇKDa.

ह्राडनि und °नी (von 2. ह्राद) f. *Schlossen, Hagel:* नास्मै विद्युन्न तन्यतु: सिषेध न यां मिहमकिरद्ध्राडुनिं च ṚV. 1,32,12. ह्राडुनीभ्य:, नीहाराय VS. 22,26. 26,9. TS. 7,4,42,1. ह्राडुनीर्यच्च शीयते TBr. 3,12, 2,3. Çat. Br. 11,2,2,21. fgg. 14,9,4,13. रसतो ह्राडुने रूपम् 12,8,3,11. Kāṭhaka Up. 5,5,1.

ह्राडुनीवृत् (ह्राडुनिऽवृत् Padap.) adj. *in Hagel sich hüllend* ṚV. 5,54,3.

ह्राम् interj. neben ह्रीम् und ह्रूम् Buiǵ. P. 5,18,13.

ह्रास (von ह्रस्) m. 1) *das Kürzerwerden, Minderung* (Gegens. वृद्धि und उल्लास), *Abnahme:* क्षय° Schol. zu Kāç. Ça. 22,4,11. युग° M. 1, 85. घर्षस्य Jiṅ. 2,249. पापकर्मण: MBu. 12,1195. आयुष: Harīv. 11173. Karaka 4, 6. Spr. (II) 2780. Weber, Ǵjot. 29. 55. 59. 91. Rāǵa-Tar. 1,21. Mārk. P. 118,31. Buiǵ. P. 1,4,17. 7,1,7. Mudr. ST. 4,218. Verz. d. Oxf. H. 86,b,1. 208,b,29. Sāh. D. 535. — 2) *Laut, Getön* Trik. 1,1, 119 wohl nur fehlerhaft für ह्राद.

ह्रासन (vom caus. von ह्रस्) n. *das Kürzermachen:* मेखलाया: Ǵaim.

2,50. *das Mindern:* घातूनाम् Suçr. 1,30,13.

क्षामनीय (wie eben) adj. zu *mindern* Çiñs. Sañk. 1,6,11.

क्षार्व् n. nom. abstr. von क्षुद्र gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122.

क्षिणीय्, °यते Voc. 21,13, v. l. Vgl. क्षणीय्.

क्षिणीया f. = क्षणीया Bhar. zu AK. 3,3,32 nach ÇKDa.

क्षित adj. = लज्जित, विभक्त und नीत; n. = षंढ Çabdaratn. bei Wilson (vgl. ÇKDa.). schlechte Schreibweise für क्रीत und क्षत.

क्षिति f. = क्षति Çabdaratn. bei Wilson.

क्षिवेर = क्रीवेर Bharata im Dvitîjak. und Çabdar. im ÇKDa.

1. क्षी, क्षिक्षैति (लज्जायाम्) Dhâtup. 25,3. P. 6,1,192. *sich schämen* Kathâs. 45,265. Daçak. 160,11. Bhaṭṭ. 3,53. घात्मानुजस्य 6,132. न क्षिक्षीयात् Vishn. 1,12,74. क्षिक्षाय P. 3,1,39. Voc. 10,3. Ragh. 15,44. 17,73. Bhaṭṭ. 5,102. क्षिक्षियुस् 14,41. क्षिक्षया चकार 6,3. P. 3,1,39. क्षिक्षयामास Voc. 10,3. partic. 1) क्षीत *beschämt, verlegen* P. 8,2,56. Voc. 26,98. AK. 3,2,41. H. 1484. MBh. 3,910. 2561. 7,1462. Kathâs. 34,20. 232. 48,44. 66,87. 81,24. 103,55. Riâ-Tan. 3,249. — 2) क्षीण dass. P. Voc. AK. H. Golâdh. Golapr. 4. °मुख R. 4,33,32.

— caus. क्षेपयति P. 7,3,36. 36. Voc. 18,3. *beschämen, verlegen machen* (übertragen so v. a. *übertreffen*) Ragh. 6,49. Kir. 11,64. Vaṇis. 17. Kathâs. 34,171. Bhaṭṭ. 3,65. 16,2. partic. क्षेपित Ragh. 11,40.

— intens. क्षेक्षीयते *sich sehr schämen:* क्षेक्षीयमाण (°मानगेदr.) Sarad. P. 4,24,b.

— सम्, partic. संक्षीण *beschämt* Bhaṭṭ. 4,43.

2. क्षी (= 1. क्षी) f. AK. 3,6,2,2. *Scham, Schamhaftigkeit* 1,1,3,23. H. 311. Hâlâ. 2,412. क्षीस् Voc. 3,30. Çat. Br. 14,4,2,3. Kâm. Nîtis. 13,26. Spr. (II) 1230. मन्याद्दिनष्यति 2991. घङ्गनानां मण्डनम् 3800. क्षीर्दला बाधते धर्मम् 7424. नापैति क्षीर्मे Mâlav. P. 129,22. Bhâg. P. 3,31, 33. 7,10,7. क्षियमेति Spr. (II) 2781. Ragh. 4,80. क्षिया Ind. St. 2,216. R. 1,57,7. 13. 2,26,5. Rt. 1,9. Ragh. 3,5. 5,58. Kathâs. 12,30. 32,128. 37,220. 58,134. °निषेविन् R. 3,22,30. °म्रियो Suçr. 1,114,16. °मूढ Mṛicch. 69. °पद् Kumâras. 3,57. °भय Spr. (II) 974. Vasiṣ. Bṛh. S. 78,12. Sîh. D. 40,10. Riâ-Tan. 3,498. Bhâg. P. 2,6,44. am Ende eines adj. comp.: गत° 3,18,7. 11. 6,17,7. निर्क्षी Vasiṣ. Bṛh. 18,17. Personificirt VS. 24,38. Harîv. 7740. 9498. 14035. R. 3,52,26. Weber, Râmây. Up. 310. fg. Bhâg. P. 4,1,51.

क्षीक Uṇâdis. 2,48. f. घा dass. Uṇâdis. am Ende eines adj. comp. गतक्षीक MBh. 3,8495. — Vgl. निक्षीकि und क्षीका.

क्षीकु Uṇâdis. 3,55. 1) adj. *verschämt* Uṇâdis. — 2) m. *Katze* H. 1301. = ञतुक und ञपु Uṇâdis. im ÇKDa. — Vgl. क्षीकु.

क्षीक्, क्षीक्यति (लज्जायाम्) Dhâtup. 7,30. *in Verlegenheit kommen.*

क्षीक्षित adj. *schamhaft, verlegen* Gaṇit. im ÇKDa.

क्षीण und क्षीत partic. s. u. 1. क्षी.

क्षीतमुख adj. *schamroth, verlegen, schüchtern, versagt* Pâraṇ. Br. 3, 4,15; vgl. Kaṭṭ. 70.

क्षीतमूर्द्धन् adj. dass. TS. 2,5,4,6. 5,2.

क्षीति (von 1. क्षी) f. *Scham, Schamhaftigkeit* MBh. 14,1047.

क्षीदेव m. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Lalit. ed. Calc. 220,14.

क्षीनिषेध 1) adj. *sich der Scham befleissigend, schamhaft* MBh. 12, 8367; vgl. °निषेविन् unter 2. क्षी. — 2) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 12,3263.

क्षीम् interj. Bhâg. P. 3,18,18. Verz. d. Oxf. H. 97,b,6. Ind. St. 3,465.

क्षीमत्व (von क्षीमत्) n. *Schamhaftigkeit, Verschämtheit* Kâraṇ. 8,6.

क्षीमत् (von 2. क्षी) 1) adj. *verlegen* (als vorübergehender Zustand); *schamhaft, verschämt* MBh. 2,2231. 3,15739. 4,20. 13,1539. R. 1,7,6. 4,12,34. 5,36,63. Kumâras. 7,34. Spr. (II) 2375. 2886. 3104. 7424. Mîm. P. 20,20. 129,2. Bhâg. P. 4,15,25. 5,13,11. — 2) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBh. 13,4256.

क्षीवेर n. *eine Art Andropogen* AK. 2,4,8,10. Taik. 3,3,401. H. 1158. Hâlâ. 2,467. Hit. 178. Ratnam. 121. Suçr. 1,145,21. 2,101,2. 297,21. 322,8. 387,12. 481,3.

क्षीवेल und °क n. dass. Bharata zu AK. nach ÇKDa.

क्षु (vgl. क्षद्) क्षुणाति. partic. क्षुत P. 7,2,31. *krumm* (*krank* nach Comm.) Kâç. Ça. 22,3,19. — Vgl. घक्षुत.

— घभि s. घभिक्षुत् fg.

— व्या s. व्याक्षुति.

— परि s. परिक्षुत्.

— वि zu *Fall bringen* oder *schief —, fehlgehen machen:* इन्द्रेषित त्वमा वि क्षुणाति तत् RV. 1,166,13. partic. विक्षुत *gebogen, gekrümmt:* इन्द्रर्ता विक्षुतं पुनः RV. 8,1,12. 20,26. विक्षुतस्य भेषजी: AV. 7,56,2. — Vgl. विक्षुत्, घविक्षुत (auch Lâṭy. 2,9,1. Çâṅkh. Gṛhy. 3,6) und unter 2. क्षद्.

क्षुड्, क्षौडते (गतौ) Dhâtup. 9,71, v. l.

क्षुंडु v. l. für क्षूडु Ind. St. 4,420.

क्षुत् (von क्षु) f. *Anlass zum Fehlgehen* oder *Fallen, Stein des Anstosses* und dgl. oder *Falle* (vgl. क्षुरम्): (तुर्याम) घत्यो न क्षुतः RV. 1, 4,5. न सो शतं चन क्षुतो राधो दित्संतमा मिनन् 3,61,24.

क्षुड्, क्षौडते (गतौ) Dhâtup. 9,71, v. l.

क्षूडु m. eine Bez. des तक्मन् von unbekannter Bedeutung AV. 1,25, 2. 3. einige Hdschrr. lesen क्षुंडु (vgl. Ind. St. 4,420) und vielleicht auch क्षुडु.

क्षूम् interj. Bhâg. P. 3,18,18. Verz. d. Oxf. H. 97,b,6.

क्षेप्, क्षेपते (गत्याम्) Dhâtup. 10,11, v. l. — क्षेपय् s. unter caus. von 1. क्षी.

क्षेपण (vom caus. von 1. क्षी) n. *Verlegenheit* Kathâs. 33,17.

क्षेष्, क्षेषते (घव्यक्ते शब्दे, Vop. सर्पणे) Dhâtup. 16,21. *wiehern:* क्षेषमाण MBh. 4,2000. act.: क्षेषसि 1497. Spr. (II) 5302 (Conj.). क्षेषन् MBh. 6,1782. 7,2043. partic. क्षेषित n. *Gewieher* 3,11764. 4,1497. Suçr. 1,107,10. Spr. (II) 4936. — Vgl. क्षेष्.

— caus. क्षेषयति *Jmd zum Wiehern bringen* MBh. 3,11764.

क्षेषा (von क्षेष्) f. *Gewieher* AK. 2,8,2,15. H. 1405. Hâlâ. 1,151. — Vgl. क्षेषा.

क्षेषिन् adj. *wiehernd* MBh. 7,276.

क्षेषुक m. *eine Art Schaufel* MBh. 3,8571.

क्षोड s. घा°.

क्षोड्, क्षौडते (गत्याम्) Dhâtup. 9,71, v. l.

क्षोद in घा° Ind. St. 3,237,b (unter वेनाविशाले) fehlerhaft für °क्षोड.

क्ष्माय् interj. Verz. d. Oxf. H. 97,b,6.

क्ष्रग्, क्ष्रंगते (संवरणे) Dhâtup. 19,26. — Vgl. क्ष्रग्.

क्ष्रत्त partic. s. u. क्ष्राद्.

क्ष्रप्, क्ष्रार्पयति (व्याक्षापयां oder षव्याक्षापयां वाधि) Dhâtup. 32,115. — Vgl. क्ष्रप्.

क्ष्रम्, क्ष्रंमति (शब्दे) Dhâtup. 17,62.

1. क्ष्राद्, क्ष्रादते (मुखे) Dhâtup. 2,26. *sich abkühlen, — erfrischen, — erquicken:* क्ष्रदो क्ष्रादतेः शब्दकर्मणो क्ष्रादतेर्वा स्याच्छीतीभावकर्मणः Nir. 1,9. दह्यमाना मनोदुःखैः — क्ष्रादन्ते स्वेषु दारेषु घर्मार्ताः सलिलेष्विव Spr. (II) 2736. क्ष्रादते स्वर्गं प्राप्येव पुण्यकृत् 4574. partic. क्ष्रत्त P. 6,4,93.

— caus. क्ष्रादयति *erfrischen, erquicken:* तं ग्रनं) क्ष्रादयामास घर्मार्तं सलिलेष्विव MBh. 14,1985. 1984. मनो गिरा 1,2897. 9,2672. 12,6333. Harîv. 15350. R. 1,4,30. 35,17 (36,17 Gorr.). 2,44,10. R. Gorr. 2,2, 15. 64, 12. 18. 66, 39. 7, 97, 11. Ṛv. 2, 28. Kathâs. 55, 45. अभिक्ष्रदत् Bhatt. 6, 22. 8, 67. 15, 110. med.: क्ष्रादयते ज्वलतः Taitt. Âr. 1,3,4. MBh. 13,4696. R. Gorr. 2,122,23. Mân. P. 15,48. क्ष्रादयां चक्रे R. 6, 10,1. Ragh. 12,3. pass.: षक्ष्रादयिषतेन्द्रियाणि Daçak. 130, 2. partic. क्ष्रादित MBh. 2,1336. 7,222. R. 2,112,8 (122,8 Gorr.). R. Gorr. 1,79,23.

— षा caus. *erfrischen, erquicken* MBh. 14,84. Ragh. 13,34. Spr. (II) 3260, v. l. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,25, Çl. 1. med. MBh. 3,2860. षाक्ष्रायां Râga-Tar. 4, 366. षाक्ष्रादित Spr. (II) 1416. — Vgl. षाक्ष्राद् fgg.

— प्र *sich erfrischen, — erquicken:* प्रक्ष्रादते मनः Kir. 11,8. partic. प्रक्ष्रत्त *erfrischt, erquickt* P. 6,4,93, Schol. Vop. 26,118. AK. 3,2,52. — caus. *abkühlen, erfrischen, erquicken:* क्रोधवैराभिसंतप्तं प्रक्ष्रादयितुमर्हसि MBh. 1,6377. 12,13814. Harîv. 7053 (प्रक्ष्रादयित्वा). R. 1,9,36. 7,55,7. Sûça. 1,135,1. Ṛt. 3,9, v. l. Spr. (II) 472. 1478, v. l. 3260. 3717. 4683. Mân. P. 23,4. med.: दाक्ष्मद्भिः प्रक्ष्रादयस्व मे MBh. 1, 6375. क्ष्रदयम् 7190. Vikr. 149. प्रक्ष्रादित MBh. 13,3268. R. 2,62,20. R. Gorr. 1,69, 27. — Vgl. प्रक्ष्रत्ति fgg.

— सम् s. संक्ष्रादिन्.

2. क्ष्राद्, क्ष्रादते = 1. क्ष्राद् (षव्यक्ते शब्दे) Dhâtup. 2,26. — Vgl. 2. क्ष्राद्, अनु° und प्र° = क्ष्राद् u. s. w.

1. क्ष्राद् (von 1. क्ष्राद्) m. *Erfrischung, Erquickung, Erheiterung* H. 316. पवनो क्ष्रादद्रापकः Mân. P. 15,53. मनो° R. 2,56,26. ते क्ष्रादपरितापफलाः Jogas. 2, 14. Vaṃç. Bhâg. S. 74, 4. Râga-Tar. 1, 151. 4, 294. चित्तद्रवीभावमयो क्ष्रादो माधुर्यमुच्यते Sîn. D. 606. सक्ष्रादम् *erheitert, erfreut* Prân. 116, 13.

2. क्ष्राद् (von 2. क्ष्राद्) m. = 1. क्ष्राद् N. pr. eines Sohnes des Hiraṇjakaçipu VP. 124. क्ष्राद् der gedr. Text.

क्ष्रादक (vom caus. von 1. क्ष्राद्) adj. (f. °दिका) *kühlend, erfrischend* Ṛv. 10,16,14. AV. 18,3,60. क्ष्रैदक = क्ष्रादे कुशलः gaṇa षाकर्षादि zu P. 5,2,64.

क्ष्रादन (wie eben) 1) adj. *erfrischend, erquickend* MBh. 13,1337 (क्ष्रादनीव mit der ed. Bomb. zu lesen). Harîv. 8724. R. 2,60,15. R. Gorr. 1,18,13. Sûça. 1,246,16. Viṣṇ. 1,10,2. — 2) m. *Erfrischung, Erquickung:* das शिशिर bewirkt क्ष्रादन Viṣṇ. 1,9,19.

क्ष्रादनीय (von क्ष्रादन) adj. *zur Erfrischung —, zur Erquickung gesignet:* मनसो क्ष्रादनीयानि वनानि MBh. 3,11431.

क्ष्रादिकावत् adj. *kühlungsreich* Ṛv. 10,16,14.

1. क्ष्रादिन् (von 1. क्ष्राद्) 1) adj. *erfrischend, erquickend:* शीतलं क्ष्रादि Sûça. 1,172,21. 184,19. 223,15. Wind Vaṃç. Bhâg. S. 21,14 (der Comm. nimmt ein Thema क्ष्रादि an). वाच् MBh. 5,2242. सर्वसत्त्वानाम् Kâm. Nîtis. 3,23. Ṛt. 6,29. — 2) f. °नी *a) der Weihrauchbaum* AK. 2,4,4,12. — *b)* N. pr. eines Flusses R. 1,44,14. VP. 171, N. 12. LIA. 1,843. fg. — *c) mystische Bez. des Lautes* ट् Wheeler, Rîmây. Up. 317. fg. — *d)* Bez. einer Çakti Vishṇusvâmin's im Comm. zu Bhâg. P. 1,7,6. — Vgl. मनो°.

2. क्ष्रादिन् (von 2. क्ष्राद्) 1) adj. *übertönend, laut:* दुन्दुभि Vaṃç. Bhâg. S. 68, 63. क्ष्रादिन् v. l. — 2) f. °नी *Blitz* Halâj. 1,60. dass. und Indra's *Donnerkeil* ÇKDa. angeblich nach AK. — Vgl. 1. क्ष्रादिन्.

क्ष्राडक (von 1. क्ष्राद्) adj. (f. षा) *kühl, frisch* Taitt. Âr. 5,4,1. क्ष्रादिका Ṛv.

क्ष्राडकावत् adj. *kühlungsreich* ebend.; क्ष्रादिकावत् Ṛv.

क्ष्राडनि f. als Erklärung von क्ष्राडुनि Çaṅk. zu Bhâg. Âr. Up. 5,2,10.

क्ष्रौक (für क्ष्रौक) Uṇâdis. 3,48. adj. *verschämt:* पितरः TBr. 1,3,10, 6. 6,9,7. Kâṭh. 9,5. f. षा Scham Uéâvat.

क्ष्रौकुं = क्ष्रौकु Uṇâdis. 3,35. क्ष्रौकुर्नतुत्रयुणो लातादिश्च Uéâvat.

क्ष्रेया f. = क्ष्रेया *Gewöhnlicher* Nîlak. zu AK. nach ÇKDa.

क्ष्र्, क्ष्रौरति Naigh. 2,3 (सतिकर्मन्). Dhâtup. 22,33 (कौटिल्ये). (उप) क्ष्रतेः क्षणाति (क्षर्क्ते) Dhâtup. 31,21, v. l. क्ष्रार् VS. Prâr. 1,168. TS. Prâr. 8,3. P. 2,4,80. क्ष्रार्यैत्; क्षरितुम् Vop. 8,38. क्षरिर्थ 89. क्षरिष्यति 90. partic. क्षृत und क्षरित P. 7,2,21. fgg. 1) *von der geraden Richtung abbiegen, schief gehen, krumme Wege machen.* — 2) *sich beugen, umfallen:* दैवस्व मा क्षार्मा ते यज्ञपतिर्क्षार्यैत् VS. 1,2. — 3) *niederbeugen:* क्षरति लतां वायुः Dandinâtha im ÇKDa. — Vgl. क्षु, क्षल्.

— caus. शिक्षरितम्, शुक्षरम्, शुक्षरत्त, शुक्षरार्ण stellen wir wegen Uebereinstimmung der Bedeutung ebenfalls hierher. 1) *krumm gehen machen* so v. a. *in die Irre führen:* ऊर्धं पन्थं नयतं मा शिक्षरतम् VS. 5, 17. स मा नो यत्र शुक्षरः Ṛv. 7,4,4. मो षू णो यत्र शुक्षरत्त देवाः 3,55,2. मित्रमिह्व ष्मा शुक्षराणो देवान् *kann die Götter täuschen* 10,12,3. एनम् 1,189,1 (P. 3,4,88, Schol.). — 2) med. *auf Abwege gerathen, irre gehen:* शुक्षराणश्चिन्मनसा परियन् Ṛv. 1,173,11. शुक्षराणा चिदश्विना मन्येवाम् 8,26,5.

— अभि s. अभिक्षर्.

— अव s. अवक्षर्.

— षा *irre führen*, überh. *in Noth bringen:* मा नो दमे मा वने षा शुक्षर्या: (2. imperf. conj., Ṛv. 7,1,19. übrigens liesse sich षा eben so gut dem loc. anschliessen. — Vgl. षाक्षर्य (man könnte षक्षर्य vermuthen), षाक्षर fgg. und षाक्षति.

— उप med. *Irrwege —, Umwege machen:* यदीमुप क्षरते साधति मतिः so v. a. *kommt auch auf Umwegen zum Ziel* Ṛv. 1,141,1. — Vgl. उपक्षर्.

— समुप s. समुपक्षर्.

— परि s. परिक्षत् fg. und अपरिक्षत.

— प्र s. प्रक्ष्र.

— प्रति s. प्रतिक्षर्.

— वि *straucheln, fallen:* विकरिष्यामि (°कृदि° im Text) Taitt. Ân. 10,9. Ind. St. 2,86. — Vgl. अविकरत्. — caus. *umstürzen* (trans.): इममिंद्र चमसं मा वि जिक्रर: RV. 10,16,5.

— सम् caus. partic. *gekrümmt, eingebogen:* मध्ये संकारिता: so v. a. *dünner, schlanker in der Mitte* Çat. Br. 1,2,5,16.

कर (von कृ) in धरुण°.

करक (wie oben) m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,257.

करम् (wie oben) 1) pl. *die Bögen, Bügel, eine Vorrichtung an der Soma-Seihe, etwa die in den Rahmen befestigten rund gebogenen und durchflochtenen Ruthen* (vgl. κύρτος): अति करांसि धावति RV. 9,3,2. 63,4. 106,13 und Sây. zu den St. — 2) *Krümme* so v. a. *Ränke* Naigh. 2,13 (= क्रोध). RV. 5,20,2. 6,48,10. VS. 38,20. — 3) vielleicht concret so v. a. *Falle:* यो वो अभि करो दधे *wer euch eine Falle stellt* RV. 2,23,6.

कल् (spätere Form von कृ), कलति Dhâtup. 19,44 (चलने). 20, 44, v. l. (गतौ). *schief gehen, auf Abwege gerathen; straucheln, fallen; das Ziel verfehlen, irren, verunglücken:* कलति वा एष यो यज्ञपथादेति Çat. Br. 3,1,2,6. 14. यज्ञस्य संस्थामुपैति न कलति *es misslingt ihm nicht* 13,3,2,6. स क्षिप्रं एति स कलति 6,2,2,20. यज्ञ: 11,5,6,3. धर्मदुघा *wenn sie versagt, nicht leistet was sie sollte* 4,3,2,4. वि यज्ञस्य पर्व भ्रंसति पस्कलति 12,6,1,2. न चाकालीत् *er wankte nicht* Bhatt. 9, 8. कलता व्रतेन 10,8.

— caus. कलयति und का° Dhâtup. 19,44. 67. Vop. 18,23. *erschüttern:* कलयन्भुवम् Bhatt. 6,45. mit Praepositionen nur कलयति Vop.

— परि, absol.: परिकालं वाचं वदति न मानुषीं प्रमृताम् *in die Irre* so v. a. *unsicher, stammelnd* Çat. Br. 3,2,1,27. Kâç. Ça. 7,5,6 (= मृदु, कोमल Comm.).

— प्र *zu schwanken anfangen:* प्राकलत्तितिमण्डलम् Bhatt. 17,100.

— वि *taumeln, schwanken:* विकलामीव (so mit Aufrecht zu lesen) MBh. 3,1155. विकलत् 6,2768. 7,1613. 8,609. 2477. Hariv. 10473. R. 2,13,4. R. Gorr. 2,84,2. 3. 4,59,5. nur scheinbar Kathâs. 1,57, da hier विकलं तम् zu lesen ist. मनो विकलतीव मे MBh. 1,216. 4,1958. Hariv. 4606. R. Gorr. 2,71,21. विकलमान MBh. 7,611. — partic. विकलित *taumelnd, schwankend:* °सर्वाङ्ग MBh. 7,3240. 8,2636. Hariv. 13850. R. 2,87,2 (95,2 Gorr.). 3,6,21. 6,28,39. जगत् MBh. 12,7632. Bhâg. P. 8,11,15. 11,1,18. मद् ° R. 1,9,15 (14 Gorr.). दर्प ° Bhâg. P. 1,11,30. प्रेम ° 4,7,11. स्मर ° Pañcat. 3,12,14. — Vgl. विकल.

— सवि dass.: °कलत् MBh. 8,4897.

कल 1) nom. ag. P. 3,1,140 nach v. l. im Dhâtup. 20,44. — 2) f. ई *das Irren, Verfehlen, Verunglücken* Çat. Br. 1,3,4,22. auf dem Wege 3,2,4,19. 4,6,6,20. 13,4,4,14.

1. का, कू (vgl. auch 2. कु) I) कवे, कवामहे, कवत्ते, कवत्त, कवमान *rufend* RV. 1,102,5. 3,1,23. *gerufen* Vâlakh. 2,4. — II) कुवैम, कुवतम् gen. partic. RV. 6,21,10. कुवत् 3. sg. कुवे P. 6,1,34, Schol. (के AV. 17,1,1), कूमहे, कुवैय, कुवामहे (कामहे VS. 3,58), चैकुवे RV. 2,37,2. अकुवत 8,38,9. अकूमहि 6,45,10. कुवानै mit act. Bed. 4,1,13. 7, 30,2. mit pass. 5,43,10. 6,21,10. — III) कोम RV. 1,9,9. — IV) जुकूमेति. — V) कवयति Naigh. 3,14, v. l. (चर्चतिकर्मन्). Dhâtup. 23,39 (स्पर्धायां शब्दे च). कवयते Naigh. 3,14. कवयमान. In der späteren Sprache nur diese Präsensformen. — perf. चुकाव P. 6,1,33. fg. Vop. 8,140. चुकुवुस् Çat. Br. चुकै RV. 1,32,6. चुकुवे Çat. Br. चुकूरे RV. 1,48,14. 8, 8,6. चुकुरे 5,19,2. — aor. अचकत्, अकत oder अकास्त P. 3,1,53. fg. Vop. 8,91. 139. अकै, अकृषाम्, अकृत RV. 5,29,8. अकूषत 3. pl. (मन्) अकि 1. sg. — कृषिष्यते, (उप) कास्यमान Çiñku. Ça. 1,10,1. 7,6,10. कुर्वध्ये RV. 1,122,5. 5,43,6. 45,4. कवीतवे 8,90,4. कवितुम् Çat. Br. 1,1, 4,11. कूतवा: pass. कूयते, कूयमान. *rufen, anrufen, herbeirufen:* ब्रह्माणं गां न दोहसे कुवे RV. 6,45,7. कुवे वां देवीम् 50,1. पुत्रो न पितरं कुवे 7,32,3. मतिभि: 69,6. यत्रिर्द्मा कवते उर्वसे कविष्मान् 1,183,5. इन्द्राणीमकू ऊतये 2,32,8. कवीमभिकवते यो कविभि: 33,5. आदित्यानीमकू नामं 3,56,4. विप्रं कवमानं गृणत्तम् 4,29,4. रथं कुवेम संगतिं गो: *rufen zu* 4,44,1. कोम् गन्तारमूतये 1,9,9. AV. 3,3,3. 4,27,1. 5,1,8. यज्ञेन देवता: Çat. Br. 1,9,3,26. 2,1,3,3. 3,2,1,21. 4,3,4,3. 13,2,6,3. Kâty. Ça. 15,7,10. Kauç. 16. 60. 93. कृणामि शक्रम् Varâh. Bṛh. S. 43,35. घार्यो कृणति वो राजा R. 2,34,11. कृणामके Buâc. P. 4,19,28. जुकाव (könnte auch आजुकाव sein) MBh. 1,2126. कूयमान 2127. कूत्वा Ver. d. Oxf. H. 257,*b*,28. *hinrufen zu Jmd* (acc.) Buâc. P. 7,9,16 (कृयमे). तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना बन्धुजनो जुकाव *rief beim Namen* so v. a. *nannte* Kumâras. 1,26. मा चैनां शयने कृये: *fordere sie nicht auf das Lager zu besteigen* MBh. 1,3393. तं पुढे कृयति *fordert zum Kampfe heraus* R. 7,34,2. med. MBh. 8,1800. कूत P. 6,4,2, Schol. *gerufen, geladen* RV. 4,15,7. 5,50,4. 10,107,5. Pâr. 35,6. n. *das Rufen:* कूराकूते P. 8,2,34. — Vgl. पुरुकूत.

— caus. कावयति P. 7,3,37. Vop. 18,6. अचूकवत् P. 6,1,32; vgl. zu 7,4,3. *Jmd* (acc.) *durch Jmd* (instr.) *herausfordern lassen:* रिपुमचूकवत्कपिभि: Vop. 5,3; vgl. P. 1,4,52, Vârtt. 1.

— desid. चुकूषति P. 6,1,33, Schol.

— desid. vom caus. चुकावयिषति P. 6,1,32, Schol. Vop. 19,1.

— intens. जोकूयते P. 6,1,33, Schol. जोकवीमि, अजोकवीत्, जोकुवत RV. 7,21,1. अजोकवुम् 94,10. जोकुवती 24,2. °वतम् 93,3. °वत् 9,66, 29. *rufen u. s. w.:* त्वायता मनसा जोकवीमि RV. 6,40,3. 1,116,13. 3, 33,4. 5,43,1. 78,4. 7,38,6. 41,3. AV. 2,12,3. 19,7,31. 11,1,26. अजोकवीत्कृष्णम् Buâc. P. 10,11,16. जोकुवान *rufend* RV. 5,42,7. 47,1. 7,28,3.

— अति *herüberrufen:* इकावांसमति कृये TBr. 3,4,2,2.

— अनु *wiederum rufen, nachrufen, zurückrufen* RV. 1,30,9. यत: पूर्वो इव महोरनु कृप 5,53,16. AV. 5,30,17. यमु ते ऽनु कृयामसि 8,1,15. partic.: अनुकूत: पुनरेहि 5,30,7. Vgl. अनुकव. — intens. AV. 6,73,3.

— अपि *dazu (zu Andern) rufen:* यो गोषा अपि तं कुवे RV. 10,19,4.

— अभि *herbeirufen* Çat. Br. 1,6,4,6. 5,3,5,4. — Vgl. अभिकव, °कूति und 2. कु mit अभि.

— प्राभि *anrufen* Nir. 2,25.

— अव *herabrufen, herrufen:* विशो यत्र मरुतामवं कृये दिवश्चिद्रोचनादधि RV. 5,56,1.

— आ 1) *anrufen, herbeirufen, auffordern, vorladen, einladen* RV. 1, 76,4. ऊतये 111,4. 119,1. 188,3. 4,6,9. रथं मारुतम् 5,56,5. 7,7,3. 16, 1. इन्द्रस्य रातिम् 10,178,2. गाम् 146,4. Çat. Br. 14,2,4,7. RV. 8,22,1. 44,13. 76,3. VS. 3,53. Çat. Br. 4,3,2,2. 11,2,2,6. 4,4,2. TS. 1,6,11,3.

Kaṭhop. Up. 7,12,1. Kauṣh. Up. 2,15. वाचाह्वता यायति Pañcav. Br. 10, 3,12. Kâṭy. Çr. 2,4,13. 8,2,19. याकुर्वंध्यै P. 3,4,9, Schol. Ṛ. 5,41,3. 6,60,13. धाह्वयितवै Çat. Br. 2,5,2,3. — याह्वयति u. s. w. MBh. 1, 7688. 3,1758. 8548. नानृतावाह्वयेत्स्त्रियम् sc. zum Beischlaf 12,8360. Hariv. 4354. R. 2,91,11. fg. (100,10. fg. Gorr.). R. Gorr. 1,12,3. 2, 59,6. 3,79,10. 21. Mṛicch. 141,13 (*vorladen vor Gericht*). Çiç. 9,4. दृष्टिभिः Spr. (II) 372. Kathâs. 10,189. 37,123. 62,5. Bhâg. P. 4,6,13. 6, 14,36. med. याह्वये u. s. w. R. 2,91,13. Hariv. 10380. Pañcat. 210,11. याह्वाव MBh. 3,2191. वाह्नाय 13,4785. 15,871. R. 1,52,20. 66,1. 2, 38,1. राज्ञानकाड्यया Râja-Tar. 6,261. Mârk. P. 16,77. Bhâg. P. 1,2, 2. 6,1,29. 9,24,31. याह्वयामास MBh. 1,4789. R. 7,46,32. याह्वयां चक्रिरे R. Gorr. 1,13,18. याहूय M. 3,27. MBh. 5,7326. R. 1,63,28. 2,32,13. 39,14. 52,4. Kathâs. 17,126. 25,170. 50,197. Râja-Tar. 3,250. Prab. 3,2. Daçak. 80,12. Bhâg. P. 4,14,2. Pañcat. 55,23. 77,14. Hit. 82,16. Vet. in LA. (III) 24,3. Dhûrtas. 68,4. H. 277. याह्वातुम् Daçak. 80,15. pass. याह्वयताम् Çiç. 23,1. Prab. 34,9. याहूत Jâân. 1,27. 2,16. MBh. 5,7321. 7,4977 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Ragh. 6,23. Kathâs. 33,129. Mârk. P. 99,15. Râja-Tar. 6,57. Bhâg. P. 1,6,24. 12,26. 16, 8. 4,13,25. 25,19. 7,12,3. अभिषेकाय Sin. D. 38,18. साह्याध्यकार्यम् Kathâs. 17,18. Râja-Tar. 1,59. तं वारयितुम् 247. अनाहूत MBh. 1, 3296. R. 2,115,11. Spr. (II) 287. 5013. याह्वतवत्त् Pañcat. 210,10. — 2) *anrufen* in liturgischem Sinne von *der Aufforderung, welche der Hotar durch den* Âhâva *oder das* Âhvâna *an den* Adhvarju *richtet*, Ait. Br. 2,33. अधर्यो शोंसावोमित्याह्वयते 3,12. 4,21. अधर्यो ह्त्या° 5,35. Âçv. Çr. 3,9,24. 10,2. 7. Çâṅkh. Br. 14,3. Kâṭy. Çr. 19,6,26. अनाहूय d. h. *ohne den* Âhâva Çâṅkh. Çr. 9,25,2. — 3) *herausfordern* (zum Kampf, Wettstreit, Hazardspiel), med. P. 1,3,31. Vop. 23,24. अयोद्देवं दुर्मद् या हि नुक्षे मंकावीरम् Ṛ. 1,32,6. 10,48,6. कृत्तेनं ब्रह्मोद्यमाह्वयामहे Çat. Br. 11,4,1,2. 6,2,5. MBh. 2,879. 1819. 5,39. रणे 7,712. R. 4,12,33. युधि 7,23,50. वादाय Kathâs. 4,23. रणाय 11,68. देवितुम् 121,93. याह्वयान MBh. 5,5150. युद्धे 7182. यामिवाह्वयमानम् Bhaṭṭ. 8,18. याह्वत 15,89. याह्वास्त 28. याह्वत 42. act.: सर्वमज्ञानद्याह्वयत् MBh. 4,342. 7,709. 711. युद्धाय R. 4,12,10. 14. 13,45. शशिनं वक्त्रचन्द्रेण साह्वयन्तीव (so verbinden wir) गच्छति MBh. 3,1833. Bhâg. P. 8,10,26. युद्धाय दैतेयानाह्वाव Mârk. P. 103,22. याह्वयामास MBh. 5, 7123. याहूय 3,2482. 5,5954. याह्वयमान 4,2105. याहूत M. 7,37. MBh. 7,710. fg. Hariv. 6731. रणाय तमाहूतवान् Kathâs. 42,130. — 4) *anrufen:* सुब्रह्मण्याम् Ait. Br. 6,3. Çat. Br. 3,3,4,7. 4,6,9,25. Kâṭy. Çr. 7,9,20. Âçv. Çr. 8,13,28. — यावदाहूतसंप्लवम् häufiger Fehler für यावदाभूत°. Vgl. याह्व, याह्वा, याह्व fg., याह्व fgg., याह्वा fg. und याह्वाय. — caus. *herbeirufen lassen* R. 2,89,3. Ragh. 15,75. *herausfordern lassen* Bhaṭṭ. 6,121. Vgl. याह्वापयितव्य. — desid. *herbeirufen wollen:* ब्रह्मास्त्रमाह्वुह्वयत् Bhaṭṭ. 17,19. — intens. *herbeirufen:* या वो होता व्योक्वीति Ṛ. 7,56,18.

— अन्वा *weiter herbeirufen* Kauç. 60.

— अभ्या 1) *den Anruf* (याह्वाव) *richten an* (acc.) Ait. Br. 2,33. यंहे होतार्धर्युमभ्याह्वयते TS. 3,2,9,1. Çat. Br. 1,3,2,20. — 2) *herausfordern* so v. a. *anfallen:* नमेधसं ऋभिरभ्याह्वयन् Pañcav. Br. 8,8,22.

— उपा 1) *herbeirufen, auffordern* Kauç. 88. उपाह्वये MBh. 12,8629. fg. Bhaṭṭ. 8,17. — 2) *herausfordern:* उपाह्वयस्व MBh. 2,1765. उपाह्वये (so wohl zu lesen) R. 4,48,20. — 3) *herbeischaffen:* येनैनमुपाह्वयेमहि (= संभृत्रेमहि Comm.) Çâṅkh. Çr. 14,50,6. 7.

— पर्या *den* Âhâva *vor und nach aussprechen:* धाय्यो पर्याह्वयते Ait. Br. 3,27.

— प्रत्या *auf einen Ruf antworten:* °ह्वय Bhâg. P. 7,5,35. *auf den* Âhâva *antworten:* शोंसामोदं इवेति प्रत्याह्वयते der Adhvarju TS. 3,2,9,5.

— व्या *durch den eingeschobenen* Âhâva *trennen* Ait. Br. 3,19. 6, 21. व्याह्वावं (absol.) पित्र्याः शंसेत् 3,27. Âçv. Çr. 7,5,7.

— समा 1) *zusammenrufen, versammeln:* सैनिकांश्च समाह्वय MBh. 1, 7660. 3,16692. R. 1,8,18. 59,7. Kathâs. 24,219. Râja-Tar. 1,144. Pañcat. 82,6. 7. समाहूताः MBh. 5,5951. R. Gorr. 2,127,4. Daçak. 79, 2 v. u. — 2) *herbeirufen:* समाह्वयत् MBh. 3,8349. Kathâs. 121,23. °ह्वय MBh. 4,251. R. 1,57,12 (59,9 Gorr.). 77,16. R. Gorr. 1,72,8. 2,31,1. 4,40,14. Kathâs. 5,38. 20,103. 39,118. Mârk. P. 77,33. AK. 3,3,24. Pañcat. 30,12. 81,14. °हूत Mârk. P. 18,2. Bhâg. P. 5,3,15. — 3) *herausfordern* (zum Kampf, zum Hazardspiel), med.: यूते समाह्वयत पाण्डवान् MBh. 1,414. 2,1318. Hariv. 7332. Râja-Tar. 4,450. act.: मह्यं समाह्वयत् MBh. 4,346. देवितुम् 35. 36 (समाह्वयत्तेन mit der ed. Bomb. zu lesen). 98. 114. द्यूते (so mit der ed. Bomb. zu lesen) 9, 2268. R. 4,8,38. 9,10. 12,23. 13,33. 5,18,16. °हूतो रणे MBh. 5,7031. रणाय Kathâs. 10,24. — Vgl. समाह्वय fgg.

— उद् *herausrufen, hervorlocken* AV. 10,10,20. उदेह्यमायुरायुषे 18, 2,23. यज्ञम् Ait. Br. 3,49.

— उप med. P. 1,3,30. Vop. 23,23. 1) *herbeirufen, einladen, berufen zu* (acc. dat. loc.): Götter Ṛ. 1,21,1. 23,18. ऊतये 22,3. 3,43,1. 10, 36,7. यज्ञम् *zum Opfer* 4,34,6. यज्ञे 1,13,3. 7. Ait. Br. 7,19. 8,22. इळाम् 2,30. 3,40. TS. 2,6,2,2. धेनुम् Ṛ. 1,164,26. AV. 1,1,4. 5,10,8. 9,5,30. 19,58,3. Ait. Br. 2,19. 6,3. प्रिये धामन् Çat. Br. 1,7,2,11. 4, 4,2,16. इष्टका नामभिः 9,1,2,19. सख्ये Pañcav. Br. 21,1,1. TS. 2,4,12, 1. इष्टेर्न पक्वमुपं ते कृवे 7,3,11,3. Liṭ. 1,12,14. 3,8,5. 5,7,7. शेषम् *zum Rest* Kâṭy. Çr. 4,4,19. मन्थम् 5,9,18. — सुरसैन्यान्युपाह्वयत् Kathâs. 115,55. Bhâg. P. 10,36,7. °नुरोध Bhâg. P. 3,1,15. °हूय 4,17. 19,18,19. partic. उपहूत a) *herbeigerufen* u. s. w. AV. 1,1,4. 6,122,4. 9,6,33. उपहूतः सोमस्य पिब Çâṅkh. Çr. 16,18,16. भते 6,8,14. TBr. 3,1,1,6. MBh. 12,3627. Uttarar. 94,5 (122,11). Bhâg. P. 1,16,7. 4, 1,27. 31,20. 6,13,17. 7,5,34. 15,71. 19,74,10. — b) wozu *geladen ist* TS. 1,7,1,2. Kâṭy. Çr. 3,4,22. अनुप° wozu *nicht geladen ist* Çat. Br. 1,8,1,16. — 2) *anrufen, anflehen* VS. 3,42. AV. 6,23,1. °हूत VS. 20,35. AV. 7,60,4. — 3) *ermunternd zurufen, einstimmen, beloben:* अनु मोपतिष्ठध्वमुप मा हूयध्वम् Ait. Br. 3,20. Âçv. Çr. 2,16,18. — Vgl. उपह्वय fg., उपह्वान und अनुपहूत. — desid. *herbeirufen* u. s. w. *wollen:* उपह्नुह्वयति Çâṅkh. Br. 13,8.

— पर्युप *herbeirufen:* कुवांमके परि शक्रं सुतां उप Ṛ. 10,167,3.

— प्रत्युप dass. Çat. Br. 4,4,2,16. Çâṅkh. Br. 13,8. — Vgl. प्रत्युपह्वय.

— समुप 1) *zusammenrufen,* — *einladen:* समुपहूर्य भक्षयन्ति TS. 7,5,

6,4. Çat. Br. 4,3,1,1. Çâṅkh. Br. 13,7. ऋतस्यो वेलायां समुपक्रोशेत् Liṭ. 2,3,12. समुपक्रावम् absol. Kâṭj. Çr. 10,1,25. Âçv. Çr. 6,3,19. — 2) *herausfordern* (zum Kampf): समुपाक्रोषत् MBh. 7,1221. पुक्राय R. 7, 23,6. — Vgl. समुपक्रव.

— नि med. P. 1,3,30. Vop. 23,23. *herab-, herabrufen* ṚV. 1,47,10. घर्वसे 112,24. 114,4. 5. न्युक्थानि च क्रोषसे *herbei zu* 8,71,4 (es ist aber eine andere Auffassung möglich, wenn man क्रोषसे betonte). कृविर्यो 10,40,4. 101,1. 122,8. सवनैः AV. 5,20,8. Ait. Br. 6,6. — Vgl. निक्रव.

— निस् *abrufen:* देवतां वृत्रात् TS. 2,5,8,4. AV. 6,90,2.

— परि *zusammenrufen:* °क्रोताः Kâbe Baic. P. 10,13,24. — Vgl. परिक्रव.

— प्र *anrufen* Nir. 2,25. प्र सिन्धुमच्छा मनीषाक्रे ṚV. 3,33,8. 8,17, 12. — प्रक्रोषति Uttarâr. 107,18 (146,2) ist denom. von प्रक्र. Vgl. प्रक्राय.

— प्रतिप्र *herbeirufen zu:* घघरम् ṚV. 1,19,1.

— प्रति *anrufen* ṚV. 7,65,1. 8,32,4.

— वि med. P. 1,3,30. Vop. 23,23. *dahin und dorthin —, wettstreitend zu sich rufen; sich streiten um Etwas:* देवान्यज्ञमाना विक्रोषन्ते मम यज्ञमागच्छत Ait. Br. 2,2. ṚV. 10,112,7. तमिन्नरो वि क्रोषन्ते समीके 4,24,3. उभये 39,3. विशे चिद्धि वो विक्रोषन्त मर्ताः 7,28,1. 1,36,13. 102, 6. 2,12,3. 8,5,16. 40,7. तां देवासुरा व्यक्रोषन्त प्रतीची देवाः पराचीमसुराः TS. 1,7,1,3. 2,4,2,1. तं वेदि विक्रोषावहै *wir rufen dich ab* Ait. Br. 7,17. Çat. Br. 3,2,4,4. Pârâṣ. Br. 12,13,26. — Vgl. विक्रव, विक्रोश.

— सम् med. P. 1,3,30. Vop. 23,23. 1) *zusammenrufen:* सर्वाः समक्रोषधीः AV. 4,17,2. Çat. Br. 4,1,5,4. — 2) *berichten, erzählen:* संक्रोषस्व विवक्षितम् Bhaṭṭ. 8,17. — Vgl. संक्रोति.

2. क्रा (= 1. क्रा) f. *Name, Benennung* in गिरि°.

क्रातृ (von 1. क्रा) nom. ag. zur Erklärung von क्रोतृ Nir. 7,15.

क्रातव्य (wie eben) adj. *zu rufen* Nir. 4,26.

क्रान (wie eben) n. *das Herbeirufen* MBh. 3,8620. zur Erklärung von क्रव Nir. 3,17. 10,2. von क्रवन 6,27. — Vgl. कु° und सु°.

क्राय (wie eben) s. स्वर्ग°.

क्रायक (wie eben) nom. ag.; davon denom. क्रायकीयति = क्रायकमिच्छति Pat. in Mahâbh. lith. Ausg. 6,19,a. desid. जिक्रायकीयिषति ebend.

क्रार्ं (von क्रॄ) m. *Schlange (sinuosus):* वि यदस्थाद्रातेचोदितो क्रोरो न वक्वा ब्रधना घनीकृत: *wenn das Feuer wie eine sich windende Schlange unaufhaltsam durch das dürre Gras dringt* ṚV. 1,141,7. घृतपृहनिर्वो क्रोरो न प्रुषिषत्ते कृविष्मान् *wie eine gleissende Schlange zwischen den Bäumen (das Feuer zwischen den Hölzern)* 190,3. चन्द्रमिव सुरुचं क्रारं (wohl क्रारम्) घा देधुः 2,2,4. तस्मा एतं सुरुचं क्रारमक्रम् nämlich das Feuer AV. 4,1,2.

क्रार्य (von क्रार्) adj. *colubrinus:* उत स्मा दुर्गृभीयसे पुत्रो न क्रार्याणाम् (hier auch nach Sây. so v. a. *Schlange*) ṚV. 5,9,4. घृत्यो न क्रार्यः जिघ्रुः 6,2,5. daher = घघ Naigh. 1,14.

क्रार्ल (von क्रल्) P. 3,1,140 nach v. l. im Dhâtup. 20,14. m. *das Fehlen, Versagen:* घर्मघ्रार्ले Kâṭj. Çr. 25,6,2. *das Sterben* Comm.

Verbesserungen und Nachträge zum ganzen Werke.

3. अ 6) अस्पृहयास Bhâg. P. 3,25,37.

6. अ (angeblich von 1. अत्) m. N. pr. eines Mannes Pat. in Mahâbh. lith. Ausg. 1,172,b. — Vgl. 5. इ weiter unten.

1. अंश 1) *Theil* Sûrjas. 1,6. 7. 12,1. 57. 14,24. *Grad* 1,68. 2,34. 39. 49. 53. fgg.

1. अंशक *Grad* Sûrjas. 8,13. 20. 9,8. 12. fg. 12,44.

अंशीकर् (1. अंश + 1. कर्) *theilen:* °कृत्य Spr. (II) 4952, v. l.

अंशु 2) Sûrjas. 7,19. 11,8. — Vgl. सुमदंशु.

अंशुक 1) lies *Blatt der Laurus Cassia.* Die Stellen Çâk. 104 und Megh. 63 gehören zu 2). — 2) *Band am Rührstab* Kâlikâ-P. 21.

अंशुमती 2) Suçr. 1,31,21. 2,292,4. 433,6. 434,21.

अंशुमालिन् Spr. (II) 6855.

अंसफलक s. u. फलक 2).

अंहस् 1) अंहस् für अंहसस् abl. ṚV. 6,3,1.

अंह्रि 1) Hem. Jogaç. 4,128.

अकम्पन m. N. pr. eines Fürsten MBh. 7,2029; vgl. अनुकम्पक 12,9150.

अकर्ण adj. (f. आ) *ohne Steuerruder:* Schiff R. Gorr. 2,82,6. *ohne ausspringende Unebenheit, — Zapfen* u. s. w.: अश्ममण्डल Kauç. 53.

अकर्णक adj. *ohne Steuerruder* v. l. im Comm. zu R. ed. Bomb. 2,81, 6. *ohne Steuermann* Comm.

अकर्मण्य adj. *womit Nichts zu machen ist, unrettbar* Suçr. 2,21,2. Vgl. auch u. कर्मण्य.

अकासार m. N. pr. eines Lehrers Bhâg. P. 12,6,59.

अकिंचनता Hem. Jogaç. 4,92.

अकुत्रचभय adj. = अकुतोभय Bhâg. P. 10,82,38.

अकृष्ट m. pl. Bez. einer Art von Ṛshi MBh. 12,6144 nach der Lesart der ed. Bomb., आकृष्ट ed. Calc. अकृष्टा माषाः desgl. s. u. माष 1).

अकोप (Nachträge) R. ed. Bomb. 1,7,3.

2. अक्ष 20) Sûrjas. 3,14. 16. fg. 20. 25. fg. 4,24. 5,1. 4. 10,7. 12,44.

अक्षकी f. *eine best. Schlingpflanze* (Comm.): °फल Ḱaraka 1,27.

अक्षक्षपण m. N. pr. eines Spielers Kathâs. 74,154. 182. °क 148.

अक्षमा, आवन्त्यमो मृगजवाक्षमयेव रथ्याः Çâk. 8.

अक्षमाला N. pr. der Mutter Vatsa's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12.

अक्षरमालिका f. *eine* (um die Stirn) *herumlaufende Buchstabenreihe* Spr. (II) 1504.

अक्षरसमाम्नाय m. *die Zusammenstellung der Laute, Alphabet* Pat. in Mahâbh. lith. Ausg. 1,24,a. 8,72,a. Bhâg. P. 12,6,43. — Vgl. आक्षरसमाम्नायिक.

अक्षसूत्र Spr. (II) 7218.

अक्षि wie अक्षन् auch *Sinnesorgan* Bhâg. P. 3,5,44. In der Bed. *Auge* Bez. *der Zahl zwei* Sûrjas. 1,30. fg. 34. 2,19. 12,39.

अक्षोट *Wallnussbaum* Râǵan. 11,82.

अक्षोड desgl. Ḱaraka 1,13. 27.

अक्षोन्नति f. = 2. अक्ष 20) Sûrjas. 12,43.

1. अग vgl. षडग.

2. अग in der Bed. *Berg* Bez. *der Zahl sieben* Sûrjas. 2,35. 3,44. 8,3. 7.

अगतिक adj. *ohne* गति (Bed. 14) Pat. a. a. O. 8,8,a. 19,b.

अगद 2) a) Suçr. 2,255,15. 271,18. 284,13. 18.

अगन्ध adj. *geruchlos* Çat. Br. 14,6,8,8. Gobh. 3,5,8.

अगर्भा adj. f. *nicht trächtig* TBr. 1,8,3,3.

अगस्त्य 1) am Ende, *der Stern Canopus* Sûrjas. 8,10. 9,12. 13,9. — — 3) *Agati grandiflorum Desv.* Râǵan. 10,46. Suçr. 1,223,8 (so, nicht 18, wie in den Nachträgen).

अगारिन् (von अगार) adj. *der ein eigenes Hauswesen hat;* m. bei den Ǵaina *Hausherr* so v. a. *Laie* Hem. Jogaç. 1,45.

अगु 2) s. Varâh. Bṛh. 2,3.

अगुरु 3) Râǵan. 12,89. Suçr. 1,138,5. 2,185,10. 550,14.

अगृभीत TBr. 2,5,3,3.

अगृह्यमाणकारण adj. *bei dem keine* (eigennützigen) *Motive wahrgenommen werden* Pat. a. a. O. 6,104,b.

अग्धाद् adj. TS. 3,3,8,2. = दग्धाद् Comm. ग्ध könnte nur partic. von घस् sein.

अग्नि 1) als *Feuer* Bez. der *Zahl drei* Sûrjas. 1,30. 33. — 10) Bez. der

auf इ und उ auslautenden Nominalstämme Kâtantra 2,1,36. 65.

अग्निकुण्ड Kathâs. 8,18. 20,86. P. 3,3,116, Schol. — Vgl. वह्निकुण्ड.

अग्निगर्भ 2) a) nicht N. einer Pflanze, sondern *ein best. schaumartiger Stoff auf dem Meere* (पश्चिमसमुद्रे प्रसिद्धः); vgl. Râǵân. 6,79.

अग्निगृह *ein zum Dampfbad eingerichtetes Gemach* Kâraka 1,14.

अग्नित्र 2) b) wie अग्निगर्भ 2) a) zu verbessern; vgl. Râǵân. 6,79. Am Ende ist अग्निवाल zu lesen.

अग्निजार desgl. ebend.

अग्निजिह्वा 2) (Nachträge) Râǵân. 4,131.

अग्निनिर्यास wie अग्निगर्भ 2) a) zu verbessern; vgl. Râǵân. 6,79.

अग्निपट् (Nachträge) Liṭ. 4,12,8. 9 (gedr. Ausg.). als adj. mit अग्न Vaitân. 8. 6.

अग्निपात m. *Sprung in's Feuer* Kâlakârma 4,218.

अग्निप्रभा f. (sc. शतपदी) *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,290,4.

अग्निबिन्दु, so zu lesen st. °विन्दु.

अग्निबीज, so zu lesen st. °वीज. Bez. *der Silbe* रम् Wilson, Rigv. Up. 318, N. 11.

अग्निमन् m. nom. abstr. von अग्नि Vimâna 3,2,36.

अग्निमन्थ 2) Ratnam. 8. Râǵân. 9,22.

अग्निरोगिणी *f. eine best. Krankheit*, = वह्निरोगिणी Suçr. 2,121,18.

अग्निविन्दु, richtiger °बिन्दु.

अग्निवीज, richtiger °वीज; vgl. oben.

अग्निवेला f. *die Zeit, wo man die Feuer zu entzünden pflegt, Nachmittag* Âçv. Gṛhj. 4,6,5.

अग्निसञ्ज्ञा f. v. l. für अग्निमूल Suçr. 1,32,2. nach Karradatta etwa *Stockung der Verdauung*; vgl. सञ्ज्ञा 2).

अग्निसंभव m. = अग्निगर्भ 2) a (s. oben) Râǵân. 6,79.

अग्निहोत्र n. *Brandopfer* Spr. (II) 3174.

अग्न्युत्पात m. etwa *ein aus dem Erdboden hervorloderndes Feuer* Kâraka 1,3.

1. अग्र 1) Sâmâs. 3,3. 6,6. Am Ende, über die wechselnde Stellung im comp. vgl. Vimâna 3,2,22. — 6) vgl. साग्र.

2. अग्र, f. अग्रा (sc. रेखा) *measure of amplitude* i. e. *distance from the extremity of the gnomon-shadow to the line of the equinoctial shadow* Sâmâs. 3,7. 23. 27. fg. 39.

अग्रग adj. (f. आ) am Ende eines comp. *durch das Ende von — gehend:* Linie Sâmâs. 3,6.

अग्रत्र n. etwa *Spitze:* सुरसाग्रत्र Suçr. 2,294,3. man könnte auch अग्रग *der beste* vermuthen.

अग्रज्या *f. sine of the sun's amplitude* Sâmâs. 3,28. 30.

अग्रणी, चतुर्वर्गे ऽग्रणीर्मोक्षः (so zu lesen) Hem. Joṅaç. 1,14.

अग्रपयोधर m. *Brustwarze;* am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 124,197.

अग्रबीज, so zu schreiben st. °वीज.

अग्रभुज् als Bein. der Sonne MBh. 3,10809.

अग्रयातर् nom. sg. *der vorangeht* R. 7,21,28.

अग्रसंध्या lies ad Çiç. 78.

अग्रकृण adj. *nicht ausdrücklich erwähnt, — genannt* (Gegens. अक्-णवत्) Pat. a. a. O. 4,2,a.

अग्राशन (1. अग्र + 2. अशन) adj. *vor Jmd* (abl.) *essend* Mârk. P. 32,30.

अग्रेसरीकर् (अग्रेसर + 1. कर्) *an die Spitze stellen* Prab. 87,16.

अघात m. *Nichtverletzung* TBr. 1,6,2,2.

अङ्क 9) Bez. *der Zahl neun* Sâmâs. 1,30. fg.

अङ्कन Hem. Joṅaç. 3,110. Bildlich: मरुतां मरुत्तस्य किमङ्कनम् *warum prägt man Grossen den Stempel der Grösse ein? d. i. warum bezeichnet man sie als gross?* Spr. (II) 3287.

अङ्कर 1) pl. *junges Gras:* प्रावृट्काले (so zu lesen) प्ररोक्ष्यति राजमार्गे यथाङ्कुराः Spr. (II) 3681.

अङ्कशयक MBh. 3,978.

अङ्काट Vaitân. Bhp. S. 55,27, v. l.

अङ्काल Kâraka 1,27. Suçr. 2,54,2.

अङ्काल्ल m. = अङ्काट Vaitân. Bhp. S. 55,27. 29.

3. अङ्ग 6) Sâmâs. 8,2.

अङ्गजात m. = अङ्गज *Sohn*; pl. *Kinder* Spr. (II) 3749.

अङ्गण Kathâs. 19,22.

अङ्गद 1) ein Sohn Lakshmaṇa's R. 7,102,7. 8.

अङ्गदीय adj. *dem* Aṅgada (Lakshmaṇa's Sohne) *gehörig:* पुरी R. 7,102,8.

अङ्गरुह् 2) lies *Haar am Körper. Fell* (eines Esels) Çiç. 5,8. *Feder:* मयूराङ्गरुहैः Harîv. 3832.

अङ्गलोड्य Kâraka 1,27.

अङ्गकार Kumâras. 7,91. vielleicht herzustellen Harîv. 12006.

अङ्गारक 1) b) Sâmâs. 12,24. — c) ein Asura (vgl. Nachtrage) Kathâs. 112,27. — *f) ein best. Vogel, das Männchen der* Kâlikâ Pat. a. a. O. 6,92,b.

अङ्गारव्रीविका f. *Kohlengewerbe* d. i. *ein Gewerbe, bei dem man Kohlen braucht*, Hem. Joṅaç. 3,98. 100.

अङ्गारवती f. N. pr. einer Tochter des Asura Aṅgâraka Kathâs. 112,28.

अङ्गिरस m. = अङ्गिरस् 2) R. 7,36,22. 59,2,33.

अङ्गीकर्, वाणिज्यम् so v. a. *sich dem Handel widmen* Spr. (II) 4025. अङ्गैरङ्गीकृतो नरः so v. a. *beherrscht* von Hem. Joṅaç. 2,110. — caus. *Jmd dahin bringen, dass er in Etwas einwilligt;* mit doppeltem acc. Kathâs. 94,109.

अङ्गुल 3) Sâmâs. 3,1. 2. 5. 21. 28. 40. 4,28. fg. 6,2. 17. 10,2. 13,5.

अङ्गुलियङ्ग vgl. Vimâna 3,2,90.

अङ्गुष्ठिका *f. ein best. Strauch* Comm. zu Vaitân. Bhp. S. 54,109. im Text steht भृङ्गोपमाङ्गुष्ठिकपुष्पिका, welches in भृङ्गोपमा und आ° adj. aufgelöst werden kann: *der Blüthe von — gleichend.*

अङ्गुस् Harîv. 3190.

अच्, घसित ungenau für आचित *beladen —, bespickt mit, voll von:* °मधुपासितमेघकाल Z. d. d. m. G. 27,79. — अञ्च् s. bes.

— अनु *nachgehen, folgen:* अन्वञ्चमान Bhâg. P. 10,9,10.

— आ Z. 1 lies 10,15,6 st. 9,15,16. (Nachtrage) lies Z. 2 st. Z. 12.

— उद् 1) absol. उदीचम् Çat. Br. 3,3,3,14. fgg.

— समुद्, partic. समुदक्त *in die Höhe gehoben* AK. 3,2,39. — Vgl.

अञ्चय् mit समुद्.

— नि, absol. न्यौचम् Cat. Bn. 3,3,2,14. fgg. *sich beugen:* या ते न्यञ्चति (Conj.) पादयोः कंधरा Spr. (II) 3534.

अचलपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 104,180.

अचिरभाम् 2) घनो यथा ते ऽचिरभाविनद्धः (so verbessern wir mit Annahme einer unregelmässigen Zusammenziehung) MBh. 6,2599. तडितावनद्धः ed. Bomb.

अच्छुक m. *ein best. Baum;* s. u. रञ्जनद्रु.

अच्छूरिका f. Bhâg. P. 10,50,27 nach dem Comm. entweder = चर्मन् oder = चक्र.

1. अज्ञ 1) d) Sûrjas. 2,45. 13,11. — f) Simavidh. Bn. 1,1,17; vgl. RV. Anukr.

2. अज्ञ 3) b) = अविद्या (Comm.) Bhâg. P. 3,7,5.

अज्ञकर्ण 1) Comm. zu Kâç. Ça. 1039,7.

अज्ञगलस्तन, in beiden Sprüchen ist अज्ञा° des Metrums wegen zu lesen.

1. अज्ञन 3) m. ein N. Nârâjaṇa's Bhâg. P. 10,3,1; vgl. अज्ञनयोनि. — Vgl. मन्द्राज्ञनी.

अज्ञनवि Hem. Joâç. 1,14 wie im Pâṇḍar.

अज्ञनयोनि m. ein N. Brahman's (vgl. oben अज्ञन) Bhâg. P. 4,30,43.

अज्ञनाभ Bez. Bhâratavarsha's (Comm.) Bhâg. P. 11,2,24.

अज्ञाङ्गी, कृज्ञाज्ञाङ्गी *schwarzer Kümmel* MBh. 13,4365. Z. 3 lies 453 st. 553.

अज्ञातोत्त्वलि = अज्ञापण्यस्तोत्त्वलिः Pat.'s. s. O. 2,346,b.

अज्ञानुसम adj. *höher oder niedriger als das Knie* Kâraka 1,3.

अज्ञिनावती (von अज्ञिन) f. N. pr. einer Vidjâdharî Kathâs. 106, 28. fgg. 107,29. fgg.

अज्ञीर्ण MBh. 13,4375 (pl.). Spr. (II) 104. तपसः, ज्ञानाज्ञीर्ण, क्रियाज्ञीर्ण, अन्नाज्ञीर्ण 103.

अज्ञीर्ति f. *Unverdaulichkeit* TS. Comm. 1,410.

अज्ञ adj. Bhâg. P. 10,78,6 = न विद्यते ज्ञो यस्मात् = सर्वज्ञ nach dem Comm.

अज्ञाम्, lies *ohne Verwandtschaft.*

अञ्च्, अञ्चितं गच्छति = प्रकाशय्यात्मानं ग° oder समाक्षिप्तो भूत्वा ग° Pat. a. a. O. 8,38,b.

— समुद् *äussern, an den Tag legen:* समुदञ्चितमन्मथ Kâdab. in Journ. asiat. IVe série, T. XI. S. 540.

अञ्चल *Seitenblick* Spr. (II) 3502. लोचनाञ्चल dass. 2545.

2. अज्ञन 3) Z. 5 lies 6452 st. 6453.

अञ्जना f. *eine Art Eidechse* Man. I. 167; vgl. 1. अज्ञन 4).

अञ्जस् adv. = अज्ञसा *ohne Weiteres, alsbald* Bhâg. P. 10,26,19. 33, 18. 80,33.

अञ्जामा f. *eine kleine Traubenart* Râgân. 11,106.

अञ्जयेतं (अञ्जि + एत) adj. *schwarzweiss gefleckt* TS. 7,3,19,1; vgl. TBr. Comm. 3,503.

अट् mit परि Sûrjas. 12,19.

अटन *das Hinumhergehen:* अटनेन मलारण्ये सुपन्था ज्ञायते शनैः Spr. (II) 7434.

अटमान m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12,1,22.

अट् 1) a) °शूला जनपदाः (भविष्यन्ति युगक्षये) *Vertheidigungsthürme werden die Plagen der Länder sein* MBh. 3,12846. अटज्ञम् तदेव शूलं दुःखदं येषां ते तुद्याधियस्ता इत्यर्थः Nîlak. अटशूल n. heisst *eine best. Waffe der* Durgâ MBh. 6,799. अट् = अत्युत्कट Nîlak.

अटकसित, कर्षाट° Râga-Tar. 4,213.

अटकास 1) अधमा अटकासेन (कसति) Spr. (II) 2221.

अटकासा f. Bein. der Durgâ MBh. 6,800.

अड *Stachel, Spitze;* s. साड weiter unten.

अणुव्रत n. bei den Gaina *eine kleinere Pflicht* oder — *Gelübde;* deren fünf Hem. Joâç. 2,1. 18.

अणुव्रतिन् m. *ein Mann, der dieses Gelübde hält,* Spr. (II) 4869 (Conj.). — Vgl. महाव्रतिन्.

अणड 1) Sûrjas. 12,14. 21. 33.

अतच्छेषत्व n. *das Nicht-Ergänzungsein davon, Selbstständigkeit* TBr. Comm. 1,128,11.

अति 2) a) अति सर्वान्यनीकानि पिता ते ऽतिव्यरोचत MBh. 6, 1669.

अतिकृच्छ्र Simavidh. Bn. 1,2,6.

अतिकोप adj. *dessen Zorn vergangen ist* MBh. 7,9554.

अतिगर्ज्जिन् Kathâs. 60,105 nach Kuan fehlerhaft für अभिगर्ज्जिन्.

अतिगुण Spr. (II) 2847.

अतिचार 3) *Uebertretung* Hem. Joâç. 3,88.

1. अतिज्ञव Sûrjas. 1,25.

अतितितीर्षु (vom desid. von तॄ mit अति) adj. *der über Etwas hinwegzukommen wünscht* Bhâg. P. 11,13,17.

1. अतितेजस् n. *Blitzfeuer* (Comm.) Suçr. 1,39,10.

2. अतितेजस् adj. *überaus glanzvoll:* die Sonne Spr. (II) 1433.

अतिथिसंविभाग m. *Gastfreundschaft:* °व्रत Hem. Joâç. 3,86.

अतिदत्त (Nachträge), lies विदात्त st. अविदात्त.

अतिदार्ढ्य TS. 5,2,10,2.

अतिदूर 1) *zu weit wohnend* Spr. (II) 3534.

अतिधृति Bez. *der Zahl neunzehn* Sûrjas. 2,18.

अतिनीला f. N. pr. einer Göttin Kâlâkâra 3,133. 4,39. 78. 89.

अतिपात vgl. गुणातिपात.

अतिपार (अति + पार) adj. *zu breit:* das Meer Spr. (II) 7569 (Conj.).

अतिप्रस्ताव m. *eine recht passende, Gelegenheit* Sâh. D. 469.

अतिबल m. N. pr. einer Gottheit Kâlâkâra 4,20. 79. 103.

अतिबहु adj. *zu viel* Pat. a. a. O. 1,296,a. 6,57,b.

अतिभानु m. N. pr. eines Sohnes des Krshṇa Bhâg. P. 10,61,10.

अतिमुक्ति TS. 5,6,9,2.

अतिमृदुगमना f. N. pr. einer Göttin Kâlâkâra 4,152.

अतिमोक्षिन् adj. *glücklich durchkommend, sich rettend* TS. 5,6,9,2.

अतियम m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's (neben Jama) MBh. 9,2547.

अतिरिक्तता f. *Uebermaass:* उपभोगाति° Hem. Joâç. 3,113.

अतिरेकत्व n. nom. abstr. zu अतिरेक 2): गुणाति° Vâmana 4,3,22.

अतिरोप्य s. u. रोप्य.

अतिवक्र adj. *stark rückläufig* (vom Gange eines Planeten) MBh. 8, 711. Varâh. Jogajâtrâ 3,16. Vgl. Ind. St. 10,205. fgg.

अतिवर्तव्य (Nachträge), genauer अतिवर्त्तव्य.

अतिवर्तिन्, ऋतुकालातिवर्तिनी *die Regeln überschlagend, — aussetzend* so v. a. *schwanger* R. 7,48,19.

अतिवीर्या f. N. pr. einer Göttin Kiraṇākara 4,30. 5,109.

अतिवेलम् MBh. 5,952. अनतिवेलम् *in ganz kurzer Zeit* Bhāg. P. 4,21,29.

अतिशयोक्ति f. *Hyperbel* Sāh. D. 286,4. 5. 10.

अतिशायन adj. mit gen. Bhāg. P. 4,4,11.

अतिशीघ्र adj. *überaus rasch, — schnell* Śāṅkhār. 2,13.

अतिसंक्षेप m. *zu grosse Kürze:* der Nächte Kāraka 1,31.

अतिसर्व Kāmās. 84,31.

अतेजस् adj. *glanzlos* AV. 2,19,5.

अत्यङ्ग adj. *der das Land* Aṅga *passirt hat* Pat. a. a. O. 2,406,a.

अत्यत्तम् entspricht häufig unserem *durch und durch*.

अत्यत्ताय *für immer, stets* Pat. a. a. O. 1,7,a. 283,b. 284,a. 2,313,a.

अत्यर्ध adj. *mehr als halb:* °योजन R. ed. Bomb. 1,24,29.

अत्यल्प *zu wenig* Pat. a. a. O. 6,99,a.

अत्याश m. *übermässiges Essen* Spr. (II) 145, v. l.

अत्युक्ति, pl. *vieles Reden* Z. d. d. m. G. 27,93.

अत्युच्चगामिन् die richtige Lesart für अभ्यु° Lalit. ed. Calc. 5,12. 202,3.

अत्रिभारद्वात्रिका (so) *eine eheliche Verbindung zwischen den Nachkommen Atri's und Bharadvāja's* Pat. a. a. O. 2,408,a. 4,41,b.

अत्सरुक. lies 24,4,40 und अवत्तक.

अद 3) ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा। कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तेन माङ्गलिकावुभौ ॥ Cit. bei Çaṅk. zu Kāṇ. 1,1,1.

अदर्वाङ्गिरस 1) छन्दोगसंहिता Bhāg. P. 12,6,38.

अदर्वी Z. 2 lies 1,112,10 und vgl. रुद्रवी.

1. अद् Sp. 120, Z. 3 v. u. स्वदित gehört zu 1. स्वद्.

अदन vgl. auch वृतादन.

अदि 2) als Bez. *der Zahl sieben* (vgl. Nachträge) Sūryas. 1,24. 31. 34. 2,20.

अधरहनु f. *der untere Kinnbacken* AV. 9,7,3.

अधःशीर्ष adj. = अधःशिरस् 1) MBh. 13,3478.

अधिक 1) *d*) compar. mit gen. Spr. (II) 2316.

अधिकत्व n. *das Zweite* Vāmana 4,2,3. 11.

अधिप astrol. *Regent:* मासानाम् Sūryas. 12,79. दिवसाधिप 78.

अधिमखम् adv. *bei Gelegenheit eines Opfers* Bhāg. P. 1,15,10.

अधिमास Sūryas. 1,49. 49.

अधिमासक (Nachträge) Sūryas. 1,38. 38. 49.

अधिरथ 1) *b*) N. pr. eines Sohnes des Satkarman Bhāg. P. 9,23,12.

अधिरोढव्य (von 1. रुह् mit अधि) n. impers. *zu steigen auf* (loc.): अतस्त्वया नाधिरोढव्यं तस्मिन् (सिंहासने) Kathās. 74,266.

अधिवर्त्तन n. *das an's Feuer Rücken* Sāy. zu Çat. Br. 1,2,2,3.

अधिवाह् m. *Aufseher über das Gespann* Kuvalay. 103,b,4.

अधिश्रयण (Nachträge), die vermeintliche Verbesserung zu streichen.

अधिश्रोत्रम् adv. *über den Ohren* Rāja-Tar. 1,3.

अधिष्ठ n. scheinbar Kathās. 120,25, da स्वधिष्ठ्यानि st. स्वाधिष्ठानि zu lesen ist.

अधिहस्त्य n. *ein in der Hand gehaltenes Geschenk, mit dem man vor seinem Lehrer u. s. w. erscheint,* Āpast. 1,8,22.

अधोवचस् und °वर्चस् s. u. 2. वचस्.

अध्यण्डा Sāmavidh. Br. 2,6,10.

अध्यवसाय *fester Vorsatz* Sāh. D. 471. °क m. dass., = प्रतिज्ञा 484.

अध्यश्व adj. *zu Pferde sitzend* Kāṭ. in Manūs. lith. Ausg. 7,110,b.

अध्यर्ध n. *die Oberfläche eines Knochens* TS. 2,1,2,2.

अध्यात्मम् *zu sich hin* Bhāg. P. 10,42,7.

अध्यारोह् m. *das Aufsteigen:* अङ्काम् Gop. Br. 1,4,21.

अध्येतृ, °त्री f. Pat. a. a. O. 4,16,b.

अधान m. = अधन् *Weg, Reise* in गताधानश्रम Bhāg. P. 10,15,45.

2. अन् mit अभ्यय Ait. Br. 2,21.

— अभिप्र *einathmen* Ait. Br. 2,21.

अनङ्गपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathās. 84,4.

अनङ्गमञ्जरी f. N. pr. einer Tochter Anaṅgodaja's Kathās. 73,330. 100.

अनङ्गसेन m. N. pr. eines Sohnes der Anaṅgamañjarī Kathās. 73,100.

अनङ्गोदय m. N. pr. eines Fürsten Kathās. 73,320.

अनडुह्, °त्ते = अनड्वानिवाचरति Pat. a. a. O. 6,31,a.

अनतिशयनीय s. u. 2. शी mit अति.

अनघम् adv. *nicht unten* TBr. 3,2,4,5.

अननुबन्धक adj. *ohne* Anubandha (Bed. 1) *d*) Pat. a. a. O. 1,82,a. 230,a.

अनन्तकाय (?) Hem. Jogaç. 3,6. 46.

अनन्तदेव Verfasser des Saṁskārakaustubha.

अनन्तपुर n. N. pr. einer *Stadt,* = फाल्गुन Comm. zu Bhāg. P. 10,79,18.

अनन्तवीर्या f. N. pr. einer Göttin Kiraṇākara 4,38.

अनन्यकार्य adj. *dem es um nichts Anderes zu thun ist als um* (loc.). कर्मदर्शने Kāraka 3,8.

अनन्यपूर्व MBh. 5,5993.

अनन्वय Sāh. D. 666.

अनपत्रपणीय adj. *vor dem man sich nicht scheut, — genirt, — zu geniren braucht:* Freund Kāraka 1 15.

अनपावृत् Z. 2 lies 1,32,5.

अनभिगमनीय adj. *unzugänglich für* (gen.): घूमजलरात्रिणाम् Kāraka 1,15.

अनमुत्र adj. *für den es kein dort giebt:* अनिहो ऽनमुत्रयरेत् so v. a. *nirgends verweile er längere Zeit* Āpast. 2,21,10.

2. अनय (Nachträge) Vaṇīs. Bṛh. S. 9,13. 31. Bei einem best. Spiele mit Figuren *der Gang zur Linken* Pat. a. a. O. 5,33,a. Ind. St. 13,473.

अनरक n. N. pr. eines Tīrtha MBh. 3,7039 nach der Lesart der ed. Bomb., नरक ed. Calc. — Vgl. अनरकेश्वरतीर्थ.

अनर्घदण्ड und °क m. nicht klar Hem. Jogaç. 3,73. 113.

अनर्घात्त्र adj. *in der Bedeutung nicht verschieden, gleichbedeutend* Kāraka 2,1. Kāṇ. 3,1,9. 2,4. Pat. a. a. O. 3,16,b.

अनला f. N. pr. einer Tochter Mālyavant's R. 7,5,36.

अनर्वाण adj. = अनर्वन् Bez. eines Gottes (des Pūshan nach Comm.). RV. 5,51,4. 10,92,14.

अनवस्थ Kathās. 80,10 fehlerhaft für अनवस्थित *unruhig, aufgeregt.*

अनशन vgl. साशनानशन.

अनागमक adj. *ohne* Āgama (Bed. 2) *k*) Pat. a. a. O. 1,85,a.

अनागस् auch oxyt. *unschädlich* RV. 10,163,2. 1. अनागा demnach zu streichen.

अनादर Hem. Jogaç. 3,114. 116.

अनादरण n. *das Nichtachten* Spr. (II) 6820.

अनानुजा adj. f. *keine jüngere Schwester seiend* so v. a. *geschwisterlos* TS. 4,3,4,2. = अनुष्टानरक्षिता Comm.

अनारम्भण TS. 2,6,8,6.

अनार्त्त Taitt. Âr 6,3,2.

अनाशोर्दा, lies *den Wunsch —, die Erwartung nicht erfüllend.*

अनाकृत 2) Pâṇ. 1,3,70.

अनाकृति 1) Z. 2 lies 18,37,4.

अनित्यता Hem. Jogaç. 4,54. 56. fgg.

अनिन्द्रक adj. *ohne* Indra: लोक R. ed. Bomb. 1,60,22.

2. अनिमिष 2) b) *sg. die Fische im Thierkreise* Sûrjas. 14,5.

अनिरुद्ध 2) a) Bez. des ersten aus dem goldenen Weltei entstandenen Wesens Sûrjas. 12,14.

अनिषव्य (Nachträge) lies (3. अ + इषव्य).

अनिष्टकर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12,1,23. अरिष्टकर्मन् VP.

अनिह्न s. u. निह्न.

अनिक् adj. *für den es kein hier giebt;* s. u. अनमित्र.

अनीक्षा f. *Genügsamkeit, Zufriedenheit* Hem. Jogaç. 4,51. Vgl. auch u. ईक्षा.

अनुकम्पक m. N. pr. eines Fürsten MBh. 12,9151; vgl. अकम्पन 7,2020.

अनुकम्पिन् Bhâg. P. 10,26,25.

अनुकर्ष 2) *Vorrathsstück zu einem Wagen* (Nîlak.) MBh. 5,5245. Hariv. 2021.

अनुकर्षिन् *an sich ziehend:* दोषानु° Kâraka 1,13.

अनुकार am Ende eines comp. adj. *gleichend:* पद्मानुकारी करौ Spr. (II) 6468.

अनुकारिन् मोक्षमार्गानु° *den Weg der Erlösung einschlagend* (!) Spr. (II) 2903.

अनुकीर्त्य adj. *auf —, herzuzählen:* नानुकीर्त्या गुणास्तस्य R. 7,2,5.

अनुकूलज m. *ein am Ufer wachsender Baum* MBh. 5,3433.

अनुकूलम् adv. *am Ufer* Spr. (II) 6634.

अनुकूलय्, partic. अनुकूलित *freundlich empfangen* R. 7,74,6.

अनुकृति f. = लक्षण *Eigenthümlichkeit* (Comm.) Kâç. 2,1,22.

अनुकृतिसिद्ध f. *ein feines und verstecktes Compliment bei guter Gelegenheit* Sin. D. 469. 434.

अनुगङ्गम् adv. *an der* Gaṅgâ Pat. a. a. O. 2,336,b.

अनुगान (Nachträge), °गम् adv. Sâmavidh. Br. 2,8,4.

अनुगामिन् 1) *folgsam,* mit acc.: भर्तारम् Spr. (II) 5446.

अनुगोप्तर् nom. ag. *Schützer, Helfer* R. 7,23,4,13.

अनुचित्ता f. *das Gedenken:* परानु° Bhâg. P. 2,2,7.

अनुज्ञ Z. 9 lies 4) st. 3).

अनुतटम् adv. *am Ufer* Kathâs. 74,128.

अनुताप m. *Schmerz, Leiden* Spr. (II) 6875.

अनुदण्ड *Rückgrat,* am Ende eines adj. comp.: शारदण्डानुदण्डयः (क्रियाः) MBh. 7,1015.

अनुदर adj. (f. आ) *keinen (starken) Bauch habend:* कन्या Pat. a. a. O. 1,282,a.

अनुदार adj. *unedel* (अन् + उदार) und zugleich *in der Gewalt seines Weibes stehend* oder *sein Weib in der Gewalt habend* (अनु + दार) Spr. (II) 6389.

अनुदेय s. u. 1. दा mit अनु.

अनुदेशिन् adj. *zurückweisend* Vîkhân. 4,3,17.

अनुदेश्य adj. *womit man auf Jmd hinweist* Çâṅkh. in Ind. St. 16,147.

अनुध्या *das Denken an, Gedenken* Bhâg. P. 1,2,13.

अनुपत्रिका f. etwa *Brief* Kathâs. 71,111.

अनुपदस्य adj. *unerschöpflich:* Speise Çâṅkh. Ça. 4,8,9.

अनुपस्थापन s. u. उपस्थापन.

अनुपातिन्, प्रकृतीरनुपातिनीः । निवर्त्य Kathâs. 73,410.

अनुपूर्व Z. 2 lies अनुपूर्वा इतरे.

अनुप्रयन्तव्य n. impers. *zu folgen, sich anzuschliessen* Ait. Br. 2,20.

अनुप्रयोक्तव्य adj. *hinzuzufügen* Pat. a. a. O. 2,359,b. 360,a.

अनुप्रयोग auch *Hinzufügung* ebend. *Nachahmung:* दृष्टानु° 6,33,b.

अनुप्रवेशनीय s. u. विशिख 3) c).

अनुप्रशान्ति adj. *vollkommene Beruhigung im Gefolge habend* Bhâg. P. 11,3,12.

अनुप्रक्षेप्य adj. *nachzuwerfen, darauf zu werfen* TBr. 2,1,4,9.

अनुबन्ध 1) a) *das Anbinden:* यूपश्च नाम पशुबन्धार्थमुपादीयते Pat. a. a. O. 1,15,a. — b) *Fortdauer:* समानां धातूनाम् Kâraka 1,16. — g) Kâraka 8,12.

अनुबन्धन, मध्यात्मने चक्रे क्षेत्रानुबन्धनम् Bhâg. P. 1,6,6.

अनुबन्ध्य Pat. a. a. O. 1,222,a fehlerhaft für अनू°, wie z. B. 5,13,a gedruckt ist.

अनुबोध्य adj. *zu erkennen, kennen zu lernen* Spr. (II) 4479.

अनुब्राह्मणिन् Âçv. Ça. 2,8,11.

अनुभाव 3) verbessert u. स्वानुभाव.

अनुमान 1) m. Pat. a. a. O. 1,230,b. — 2) तत्प्रमाणानुमानतम् *gemäss* Sûrjas. 13,5.

अनुमार्ग (von 1. मार्ग् mit अनु) m. *das Suchen* Kathâs. 86,85. 104.

अनुमार्जन als zum Veda gehörig: मानु° adj. Gop. Br. 1,2,9.

अनुर्वा (von 2. वु mit अनु) adj. *abhängig* Çat. Br. 11,4,2,13.

अनुयोज्य und अनुयोज्य s. u. निरनुयोज्य in den Nachträgen.

अनुरणन n. *das Widerhallen* Sin. D. 102,13.

अनुराग, अनुरागो वृद्धा स्त्रीणाम् *Zuneigung* Spr. (II) 323. तदनुरागेण *zu dessen Zufriedenheit* 3665.

अनुरागवती f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 123,216. अनुरागप्रङ्गारवत्यौ für अनुरागवती und प्रङ्गारवती 336.

अनुरागवत् *verliebt* und *roth* Spr. (II) 322.

अनुरागिन् 1) विषयानु° *der Sinnenwelt zugeneigt* Spr. (II) 6220.

अनुलोम 3) f. आ (sc. विद्या) Bez. *eines best. Zauberspruches* (neben प्रतिलोमा) Kathâs. 74,132. fg.; vgl. 220.

अनुलोमिन् adj. = अनुलोमन in वातानुलोमिन्.

अनुवक्र adj. Bez. *einer best. Bewegung der Planeten* Kern in Ind. St. 10,206. fgg. MBh. 6,85. Sûrjas. 2,12. Hiernach auch अनुवक्रग (auch Sûrjas. 2,13) zu verbessern.

अनुवर्तनीय *dem man folgen muss, wonach man sich zu richten hat:* पुत्रैः पितरो लोकहये ऽपि Vasiṣ. 41,4 v. u.

अनुवर्त्य adj. 1) dass. Kathâs. 109,75. Pat. a. a. O. 8,33,b. — 2) *aus*

dem Vorangehenden zu ergänzen ebend. 1,47,b. 3,31,b.

अनुवाकीय adj. ebend. 5,48,b.

अनुवाक्य Mân. P. 18,52. wir vermuthen स्पृष्टा तु वाक्य°.

अनुवातम् vgl. u. 1. वात am Ende.

अनुवित्ति TBr. 3,12,9,a. 4,7.

अनुविध adj. *sich nach Jmd richtend, an Jmd hängend* Bhâg. P. 10,87,37.

अनुविधान n. *das Gemässsein:* तदनुविधानात् *dem gemäss* Kap. 2,1,31.

अनुविधि m. dass.: दृष्टानुविधिमृक्सि भवति *im Veda richtet man sich nach dem, was sich zeigt* d. i. *für den Veda giebt es keine feste Regel* Pat. a. a. O. 1,62,b. 63,b. 3,19,a. 6,33,b.

अनुविधेय adj. (vgl. Nachträge) *in Uebereinstimmung —, gemäss —* (instr.) *vorzuschreiben* ebend. 1,16,a.

अनुविन्द् Z. 2 lies 2,1114.

अनुवेलम् *gelegentlich* Bhâg. P. 3,16,20.

अनुव्रजम् adv. *in Schaaren* Pâṇ. 4,4,60.

अनुव्रज्य adj. *hinter dem man zu gehen hat, zu begleiten* Jâtâ. 3,1.

अनुशक्ति f. *eine untergeordnete* Çakti Kâtyâs. 46,115.

अनुशय *Mitgefühl mit* (loc.) MBh. 6,4246 nach der Lesart der ed. Bomb. = पश्चात्ताप Nîlak.

अनुशासन als zum Veda gehörig: मानु° adj. Gop. Br. 1,2,9.

अनुशासनीय Z. 1 lies त्वमिदानीमनुशा°. Auch Vaṃs. 48,3.

अनुशिशु Çat. Br. 12,7,2,5.

अनुशोचिन् adj. am Ende eines comp. *trauernd um* Kâtyâs. 64,70.

अनुशोणम् adv. *am Flusse* Çoṇa Pat. a. a. O. 2,226,b.

अनुषङ्गिन् adj.: धातु *eine im* Dhâtupâṭha *consonantisch auslautende Wurzel mit vorangehendem Nasal* Kâtantra 4,1,13.

अनुषाढ m. *der Mond* Çabdas. 1,68.

अनुसंसर्पम् absol. s. u. सर्प् mit अनुसम्.

अनुसंस्कार m. *Zurückziehung, Einziehung, Aufhebung* Pat. a. a. O. 1, 131, a. b.

अनुसमय, instr. am Ende eines comp. *gemäss* Schol. zu Kâty. Ça. 8, 8,14. fg. 17.

अनुसर adj. (f. ई) am Ende eines comp. *nachgehend* so v. a. *sich richtend nach* Spr. (II) 7452.

अनुसहायीभू *zum Gehilfen werden, Hilfe leisten, zu Etwas beitragen;* davon nom. act. °भाव Pat. a. a. O. 3,42,a.

अनुसाधिन् adj. s. सर्वानु°.

अनुसारित्व n. am Ende eines comp. *das Sichrichten nach* Vâmana 5,1,17.

अनुसारिन् 3) *sich richtend nach* (geht im comp. voran) Spr. (II) 7452.

अनुसू *Nachkommenschaft* Pat. a. a. O. 8,63,b. als Titel eines Werkes wohl *Genealogie.* — Vgl. आनुसेय.

अनुसूयक Bhâg. P. 11,18,39 fehlerhaft für अनसूयक.

अनुसैन्य n. *Hintertreffen* H. an. 3,512.

अनुस्तरणिकी f. = अनुस्तरणी v. l. im Comm. zu R. ed. Bomb. 6, 113,116. = राजगवी Comm.

अनुस्रोतम् adv. *mit der Strömung* MBh. 1,4207.

अनुस्वान m. *Widerhall* Sâm. D. 236.

अनुस्वार vgl. u. 1. स्वर् mit अनु.

अनुस्वारीभू *zum* Anusvâra *werden:* °भूत Pat. a. a. O. 7,71,b.

अनुहृद् m. N. pr. eines Bruders des Anuhrâda Hariv. 12460.

अनूक, त्रिपुरुषानूकम् *drei Generationen hinauf* Cit. bei Pat. a. a. O. 1,9,b. दशपुरुषानूकम् 4,48,a.

अनूक Sp. 228, Z. 1 lies वेद् st. वद्.

अनूचवत् adj. *reich an Männern, die nicht mit dem* Ṛgveda *vertraut sind,* Kâu. in Maulan. lith. Ausg. 6 (4),48,a. Dazu compar. अनूचीयस् Pat. ebend.

अनेकान्त adj. (f. ई) Spr. (II) 3955.

अनेकम् 2) Bilâsiu. 131,6. Bhâg. P. 10,13,40.

अन्त = अवयव und सामीप्य Pat. a. a. O. 7,81,b.

अन्तकरण n. *Vernichtung:* परेषाम् Spr. (II) 7385 (Conj.).

अन्तर 1) e) ततो ऽन्तराणि सन्धानि R. 7,62,8. दृश्यते क्वान्तरे ऋषिभ्यो मत्सधर्मिणः Pat. a. a. O. 3,30,a. — 2) n) hieran schliesst sich die Bed. *Klausel* MBh. 7,470; vgl. सान्तर. — o) वृतो ऽहं पूर्वमिन्द्रेण यन्तां प्रतिपालय *warte auf den gelegenen Augenblick* R. 7,55,10. 14.

अन्तरङ्ग adj. 3) (vgl. Nachträge 1) a) erklärt Pat. a. a. O. 6,50,b. 86,b. °तर 1,207,a. °तरक 6,86,b.

अन्तरस्थ m. *Bürge* oder *Zeuge* Kâtyâs. 65,125.

अन्तरा 1) c) न्रपत्यन्तरा साधुर्दोषं विषमिवेश्वरः Spr. (II) 3376. — 2) b) *ausser:* नान्यं पश्यामि भेषज्यमन्तरा वृषभध्वजम् R. 7,90,12.

अन्तरात्मन् unterschieden von शरीरात्मन्. द्वावात्मानौ। अन्तरात्मा शरीरात्मा च। अन्तरात्मा तत्कर्म करोति येन शरीरात्मा सुखदुःखे अनुभवति। शरीरात्मा तत्कर्म करोति येनान्तरात्मा सुखदुःखे अनुभवति। Pat. a. a. O. 1,256,a. 3,49,a. Cowell. verweist auf M. 10,12. fgg.

अन्तराधान (अन्तर् + धा°) adj. *aufgezäumt* TBr. 1,6,2,10.

अन्तराय m. *dazwischen liegende Zeit;* vgl. सान्तराय.

अन्तरित m. N. pr. eines Mannes Bhâg. P. 10,59,12.

अन्तरित 1) b) c) (Nachträge) वस्त्रान्तरित *in Tücher eingehüllt:* पिण्ड Kâraka 1,14.

अन्तरीकर् (अन्तर् + 1. कर्) *für einen Andern halten:* ततस्तावब्रुवन् विद्युमन्तरीकृत्य केशवम् Hariv. 14609.

अन्तरेण 2) e) किंचिदन्तरेण कस्यांचिद्दिश्यायाः पारं गताः so v. a. *eine irgend eine eigennützige Absicht* Pat. a. a. O. 6,104,b.

अन्तर्गडु vgl. गडु 7) in den Nachträgen.

अन्तर्दाव lies m. *die Mitte des Brandes.*

अन्तर्धि *das Dazwischentreten* Mbh. j. 102. *das Verschwinden:* कालेनान्तर्धिमागतः Râja-Tar. 2,133.

अन्तर्नख adj. *soviel man zwischen den Nägeln* (*mit den Fingerspitzen*) *fassen kann:* मुष्टि Kâraka 9,5. — Vgl. सनख weiter unten.

अन्तर्वर्तिन् adj. *drinnen befindlich, latent* Pat. a. a. O. 1,201,b. 2,218,b.

अन्तवत् adv. *einem Auslaut gleich* ebend. 1,204,a. Davon nom. abstr. अन्तवत्त्व n. und अन्तवद्भाव m. ebend.

अन्तःशल्य fehlerhaft (in der Ausg.) st. °शल्य.

अन्तःस्थ adj. am Ende eines comp. *stehend in* Çabdas. 7,15 (अन्तस्थ gedr.).

अन्तिकीभू, °भवति *nahe kommen* Pat. a. a. O. 5,78,b.

अन्तिषद् angeblich ved. adj. ebend. 6 (4) 43,b; vgl. jedoch Roth, der Atharvaveda in Kashmir, S. 24.

अन्या f. *day-measure, radius ± the sine of ascensional difference* Sûrjas. 3,34. 38. 13,14.

अन्यवृद्धि vgl. वर्धमन्.

अन्धक m. अन्धपुष्पिका f. und अन्धाक m. *eine best. Pflanze* Dhanv. 4,88.

*अन्धकार n. Kathâs. 56,28.

अन्ध, °ज्ञातीय Baiç. P. 12,1,20.

अन्नयोनि *Arack* Spr. (II) 7862.

अन्य *gewöhnlich, gemein* (vgl. इतर) auch Spr. (II) 3768.

अन्यच्छायायोनि adj. *dem Glanze eines Andern seinen Ursprung verdankend* so v. a. *entlehnt:* सर्व Vâmana 3,2,7.

अन्यजात m. so v. a. *Bastard* Spr. (II) 1110.

अन्यतम = अन्य. श्री so v. a. *eine zweite* Çrî R. 7,26,17.

अन्यता Hem. Joâç. 4,54.

अन्यत्व n. = अन्यता *Verschiedenheit* Hem. Joâç. 4,69. Vedântadarçana 1, S. 96. — Vgl. ज्ञानान्यत्व.

अन्यथाजातीयक adj. *anders geartet* Pat. a. a. O. 2,329,b. 3,48,b. 49,a.

अन्यथावादिन् adj. *für falsch erklärend* Jiân. 2,79 (getrennt gedr.).

अन्यपर्वा adj. MBu. 5,3980. 3982. 3992.

अन्वयिन् (vgl. Nachträge) *sich anschliessend* Pat. a. a. O. 1,302,b. 331,a.

अन्वर्थ, °नामन् adj. = °संज्ञ MBu. 5,4545.

अन्ववसर्ग 1) = गात्राणां शिथिलता Pat. a. a. O. 1,192,b.

अन्वाख्यान *genaue Angabe* ebend. 1,154,b. 2,211,b. 212,b.

अन्वाख्यायक adj. *genau angebend* ebend. 1,154,b.

अन्वादेश Âçv. Çr. 3,4,10. TS. Prât. 1,38 und häufig in Comm.

अन्वायात्य (vom caus. von यत् mit अन्वा) adj. *anzuhängen, abhängig zu machen, zu suppliren* Âçv. Çr. 1,5,30. 2,15,5. 3,5,6. Comm. zu 2,16,13.

अन्वारम्भ TBr. 1,3,2,3.

अन्वाकरण n. = अन्वाकार Comm. zu Lâṭj. 1,1,25.

अन्वाकार m. *Ergänzung, Nachholung* Lâṭj. 1,1,25.

अन्वाकार्य s. u. 1. कर् mit अन्वा.

अन्विति f. = अन्वय *Verbindung* Mân. g. 57.

अन्वेषणीय adj. *zu suchen* so v. a. *bedenklich, fraglich* Vâmana 5,2, 56. — Vgl. मृग्य.

अन्वेष्य adj. dass. Vâmana 5,2,1.

2. अप् acc. pl. आपस् auch AV. 13,1,45. MBu. 1,1791. Am Ende, N. eines Sternes; vgl. Sûrjas. 8,21. आप m. Comm.

अपकर्तर् Spr. (II) 5623.

अपकृति f. *Beleidigung:* भार्यांबन्धुसुकृत्सुतेष्वपकृतीर्नानाविधाश्चेष्टते Spr. (II) 4816.

अपक्रम m. *declination of any given point of the ecliptic* Sûrjas. 2,6. 28. 58. 3,18. 20. 40. 5,3. 8,6. 11. 11,6. 12,60. 63. 65. 13,6. 18.

अपक्षय m. *Abnahme* VP. 1,2,11.

अपगम, तें प्राणाः काङ्क्षितापगमा (so ed. Calc.) व्रजुः *es verliessen ihn die Lebensgeister, da sie zu scheiden verlangten,* Râjat. 4,654.

अपगुण zu Spr. (II) 2122.

अपगोरण (von गुर् mit अप) n. *das Bedrohen* Comm. zu TS. 3,796.

अपच्छाय zu streichen: vgl. Spr. (II) 98.

अपतूल adj. (f. आ) *ohne Wedel* TS. 5,1,1,6.

2. अपत्य von 1. अप् in 1. स्वपत्य.

अपदेश 1) केवलपदेश Nir. 1,4 bedeutet *Angabe des Grundes.* — 2) प्रकृत्यापदेशात् Spr. (II) 3721. — 3) Kân. 9,2,4.

अपध्यान Hem. Joâç. 3,72. 74.

अपनेय (von 1. नी mit अप) adj. *zu entfernen* Spr. (II) 399.

अपमङ्गल adj. *Unheil bringend* Spr. (II) 4781 (Conj.).

अपमित्य (Nachträge), so zu lesen Âçv. Çr. 2,18,13.

अपवशम् Vaitân. 11,2.

अपयान *Flucht, Rücksug* MBu. 12,3331.

अपर 1) *c)* किमपरम् *was Anderes?* Spr. (II) 6117. so v. a. *was thut es zur Sache? gleichviel* 18. 6004 (anders in der Uebersetzung). — 3) *c) Nachgeburt* Kâraka 4,8. Suçr. 1,328,10. 2,217,6. सवरा v.l.; vgl. समरा.

अपराक्त vgl. रञ्ज् mit अप.

अपराजयिन् adj. *niemals verlierend* (im Spiele) TBr. 1,7,10,3.

अपराभाव m. *das Nichtunterliegen, Nichtverkommen* TBr. 2,1,6,4.

1. अपरिग्रह *Besitzlosigkeit* Hem. Joâç. 1,19. 24. 3,93.

अपरिचारक adj. *der Pflege entbehrend* Kâraka 1,29.

अपरिज्ञात adj. *nicht lebensfähig zur Welt gekommen* Âçv. Gṛhj. 4,4,25.

अपवारक Kathâs. 32,60.

अपवर्ग 1) so v. a. व्याप्तनाश (Comm.) *Vergänglichkeit* Kap. 2,2,28.

अपवर्जन m. *das Beendigen, Beschliessen:* व्रतकस्य Harîv. 7789 nach der Lesart der neueren Ausg.

1. अपस् *Werk* auch so v. a. *von Menschenhand Gemachtes, bewegliche Habe,* z. B. 1,174,3. 2,17,8.

अपसारण n. *das Entfernen, Fortlassen* Vâmana 1,3,16.

अपस्मार Kâraka 2,8. 8,8.

अपक्रान kann auch auf क्रा, क्रामति zurückgehen.

अपक्रान्ति von क्रा, क्रामति.

अपकार 1) चेलापकार MBu. 8,3048. — 3) *das Entfernen, Verscheuchen:* वैरापकार Spr. (II) 4034. रोगापकार 7396.

अपकारवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Daçân. 59. fgg. — Vgl. उपकारवर्मन्.

अपक्रपण (vom caus. von 1. क्री mit अप) n. *das Beschämen* Kâraka 3,8.

अपाङ्गनेत्र (Nachträge u. अपाङ्ग) vgl. auch Vâmana 5,2,72.

अपाग्य adj. (f. आ) Bez. *gewisser Ishṭi beim Kâjana* Vaiçvasṛga TBr. Comm. 3,813. Ind. St. 3,386. 13,352. Daher अनुवित्ति TBr. 3,12,6,7.

अपायन n. = अपाय *Weggang, Entfernung.* Hem. Joâç. 3,60, wo च-ण्डरोचिरपायने zu lesen ist.

अपायिन् adj. *abgehend, mangelnd* (Gegens. उपायिन्) Pat. a. a. O. 1,223,a.

2. अपार 1) नभस् Spr. (II) 5712.

अपावृत् (अप + आ°) adj. *keine Fassung habend, ungehemmt* Baiç. P. 5,18,5. 11,29,12.

अपि 11) MBu. 2,1689.

अपिकल्प 1) Lâṭj. 1,5,6. 7.

अपिकर्ण Z. 2 lies 10,86,4 st. 10,46,4.

अपिधानी f. etwa *Teppich* Âpast. 2,4,3.

अपिपर्त्त m. *die Gegend der Seite* TS. 5,5,9,2.

अपिशस् vgl. u. 1. शस् mit अपि.

अपेक्षण adj. *hinschauend auf:* द्वारापेक्षण Spr. (II) 5543 (Conj.).

अपेक्षणीयत्व n. nom. abstr. von अपेक्षणीय Vimana 1,3,3.

अपेक्षन् adj. *vertreibend, verscheuchend* Spr. (II) 7239 (Conj.).

अप्रःस्थ Z. 3 lies क्रुधी° und *Gehorsamen* st. *Reinigungsuchenden.*

अप्रकृत adj. *nicht hingehörig, wovon nicht die Rede ist:* अप्रकृते प्रकृतान्तरे वा *ganz ohne Anlass oder an unrechter Stelle* Karaka 1,29.

अप्रकृतिक adj. *ohne Stamm, — Thema, — Wurzel* Pat. a. a. O. 3,6,a.

अप्रतिकूल adj. *willig zu* (loc.): सर्वकर्मसु Karaka 1,15.

अप्रत्ययक adj. (f. अप्रत्ययिका) *mit keinem Suffix versehen* Pat. a. a. O. 1,214,a. 3,5,b. 6,a.

अप्रमाणप्रभु, lies °प्रुभ und प्रुभ st. प्रभू.

अप्रमाद Hem. Jogaç. 4,33.

अप्रेक्ष्य adj. *unsichtbar* Hem. Jogaç. 3,53 (wir verbinden das Wort mit dem Folgenden).

अप्सस् s. सक्साप्सस्.

अबीज, °क (richtige Schreibart) s. अवीज, °क.

अब्जासन n. = 1. पद्मासन 2) Hem. Jogaç. 4,123.

अब्धि 3) Bez. *der Zahl vier* Śâṅkh. 2,17. 25. 8,2. 12,25. fg.

अब्रह्मता, füge bei RV. 5,33,3.

अब्रह्मन् m. *nicht-Brahman* TBa. 3,12,8,2.

अब्राह्मणक adj. *keine Brahmanen habend:* देश Pat. a. a. O. 1,262,b. 1. अभ 1) superl. RV. 10,17,5.

अभद् 2) VP. 4,19,1. भद् Wilson.

अभाव 3) Śâṅkh. 7,24. 11,3.

अभिध्या RV. 10,112,10 (Nachträge) scheint wegen des davon abhängigen acc. als infin. (instr.) gefasst werden zu müssen. Oder ist die Lesart verdorben?

अभिगम Hem. Jogaç. 1,17 fehlerhaft für अधिगम, wie Sarvadarçanas. 31,20 gelesen wird.

अभिगर्जिन् adj. *anbrüllend* Kavyâd. 60,105. अति° der Text, अभि° Kern's Verbesserung.

अभिगोप्तृ vgl. सेनाभि°.

अभिघात partic. s. u. 1. हन् mit अभि.

अभिजित् 3) Śâṅkh. 8,1. 9,12. 18. 13,8.

अभिजिति, so zu betonen.

अभिज्ञायम् s. यथाभिज्ञायम्.

अभिज्ञेतर (अभिज्ञ + इ°) adj. *unbekannt mit* (geht im comp. voran) Çaṅk. zu Kâṭhân. Up. S. 22.

अभिधा 1) lies *umgebend;* vgl. TBa. 3,8,8,4.

अभिध्या Karaka 1,7.

अभिनिवेशन n. = अभिनिवेश 1): तत्त्वाभि° adj. *der Wahrheit nachstrebend* Karaka 3,8.

अभिन्नतारक adj. *gar nicht verschieden* Pat. a. a. O. 2,307,a.

अभिपरिहार m. *das Umfahren:* धनभि° Âçv. Çr. 4,12,3.

अभिभवन vgl. तेजोऽभिभवन weiter unten.

अभिभू vgl. सर्वाभिभू.

अभिमनाय्, desid. अभिमिमानयिषते Pat. a. a. O. 3,15,b.

अभिमान 6) Spr. (II) 6387.

अभियान 2) Kâm. Nitis. 14,20.

अभियोग 1) auch *Anwendung, wiederholte A.* Karaka 3,8.

अभिलप्य s. निरभिलप्य.

अभिलोष्टक s. u. लोष्ट.

अभिवादिन् *Erklärer* Maitrâyaṇ. 4,5.

अभिवीस्य adj. *zu bedecken* TBa. 3,2,8,3.

अभिविधि Comm. zu Âçv. Çr. 1,5,27.

अभिशङ्किन् MBu. 2,3508 nach der Lesart der ed. Bomb.

अभिशात्त, richtiger °मात्त (अभि + मात्त).

अभिशिरस् adj. *den Kopf richtend nach* (acc.) Âçv. Gṛhy. 4,2,15 (v. l. Gobh. 2,9,12.

अभिश्रो 2) 3) vgl. 1. श्रि mit अभि.

अभिश्वस verbessert u. 1. श्वस् mit अभि.

अभिषङ्ग 3) मनसोऽभिषङ्गात् *so v. a. in Folge einer krankhaften Stimmung des Herzens* MBu. 5,867. 13,4897.

अभिषुक *ein best. Baum mit ölhaltigen Kernen* (neben Mandel und Nuss genannt) Karaka 1,13. 27.

अभिषेच्य adj. *zu weihen* (zum Fürsten) R. Gorr. 2,3,22.

अभिसंवर्धन n. *Wachsthum:* सस्याभि° Karaka 1,13.

अभिसंस्कार m. *Bildung:* बीजाभि° Karaka 1,13. *Bearbeitung, Zubereitung:* द्रव्याणाम् 3,1.

अभिसन्नन्, lies °सत्वन्.

अभिसंधिन् vgl. सर्वाभि°.

अभिसमय m. *Verabredung, Uebereinkommen:* नाभिसमयं हन्यात् Karaka 1,8.

अभिसंबन्ध 1) Pat. a. a. O. 1,46,b. *Synthese* 47,b.

अभिसर्पण n. *Annäherung:* सूच्यभि° Kâm. 5,1,15.

अभिसार *Lohn für Meldung* Divyâvad. 4. — Vgl. भक्ताभिसार weiter unten.

अभिस्कन्द zu streichen; s. u. स्कन्द् mit अभि.

अभिहर्तृ nom. ag. *Entwender, Entführer:* भार्याभि° MBu. 3,13761.

अभिहार 1) MBu. 13,2047. — 4) Karaka 1,11. — = अभिहरण *das Herbeibringen:* पुष्पाभि°, उत्पलाभि°, मालाभि°, फलाभि° Pat. a. a. O. 3, 21,b. nach dem Zusammenhange hätte man समभिहार erwartet. — Vgl. लोकाभिहार.

अभिहिंकार m. *der Laut* हिङ् *mit dem Gapa* (भूर्भुवः स्वरोम्) Âçv. Çr. 1,2,4. 24. — Vgl. हिङ्.

2. अमीक Z. 7 lies 4,24,4 st. 4,23,4.

अमीषाह् Z. 2 lies 12,1,34.

अमीषु (so beide Ausgg.) *Zeigel* MBu. 7,3180.

अम्यञ्जन 3) Z. 2 lies 8,67,2.

अम्यत्तर 1) a) (vgl. Nachträge) अम्यत्तरो हि समुदायस्यावयवः *enthalten in* Pat. a. a. O. 1,136,a. ननु च भवानप्यम्यत्तरो लोके 15,b.

अम्यत्तरीकृ *einfügen* ebend. 8,21,b.

अम्यवकारिन् s. u. सतृणम् weiter unten.

अम्याख्यान Hem. Jogaç. 3,90.

अम्याश vgl. समभ्याश.

अम्याशीभू, °भवति *nahe kommen* Pat. a. a. O. 5,78,b.

अभ्यास 2) कुत्सिताभ्यासौ *Lust und Fleiss* Spr. (II) 5790. ज्ञानाभ्यास *Studium* 4839. अनभ्यास pl. *Nichtstudium, Faulheit* 7442.

अभ्युदय 2) *c*) so v. a. *das Obenaufsein* Harîv. 2450.

अभ्युदाचारिन् adj. *hinaufsteigend zu, sich erhebend gegen:* असुरविधे देवानभ्युदाचार्यासीत् (°चार्य घासोत् die Hdschrr.) Aîr. Br. 6, 36. अभि könnte auch abgetrennt werden.

अभ्युपपत्तृ nom. ag. *Beispringer, Helfer:* दीनानाम् Kâraka 1, 8.

अभ्युपाय 2) अनभ्यु° *kein geeignetes Mittel* Pat. a. a. O. 1, 10, *b*. 11, *a*.

अभ्रमतङ्गज m. = °मातङ्ग Indra's *Elephant* H. an. 4, 198.

अभ्रातृव्य ṚV. 8, 21, 13.

1. अमत्र, ṚV. 3, 36, 4 gehört zu 2. अमत्र, das also auch m. ist; vgl. u. 1. वृजन 1).

अमत्रा 3) *b*) vgl. अपत्रा *Uterus* (richtiger *Nachgeburt*).

अमरेज्य (Nachträge) Śâṅkhâs. 7, 18. 9, 6. 12, 31.

अमानुष 1) auch ṚV. 8, 59, 11.

अमित्र (Nachträge) n. wohl fehlerhaft; vgl. Spr. (II) 522.

अमित्रसेना (paroks. AV. 3, 1, 3), lies *Feindesheer*.

अमूर्तरजस्, अमूर्तरजस ed. Bomb. 1, 32, 3. 7.

अमृत 4) *m*) Spr. (II) 2986.

अमृतस्राव m. *fliessendes Wasser* (Comm.) Śâṅkhâs. 13, 16.

अमृताम्बु Kâtyâs. 31, 2*b*.

अमृताय्, °यते *zu Nektar werden* Spr. (II) 1079.

अमोत Kauç. 62.

अम्बर 4) als *Luft* Bez. *der Null* Śâṅkhâs. 2, 18. 24.

अम्बुकुक्कुटी f. *Wasserhuhn* Kâraka 1, 27.

अम्बुकुस्तनी f. *ein best. Wasserthier* Mân. 4. 25. — Vgl. जलकुस्तिन्.

अम्बूकर (s. auch Nachträge), °कृत adj. und n. *eine best. fehlerhafte Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1, 20, *a*.

अम्भोधि Hem. Joḍaç. 4, 98. 103.

अय bei einem best. Spiele mit Figuren *der Gang zur Rechten* Pat. a. a. O. 5, 33, *a*. Ind. St. 13, 473.

अयतस् adj. *nicht in einer Reihe —, nicht Seite an Seite gehend* ṚV. 2, 24, 5.

अयन 2) *a*) *das Vorrücken (procession)* Śâṅkhâs. 3, 10. — *c*) Śâṅkhâs. 11, 1. 2. 17. 12, 51. 61. 68. 14, 9. — *d*) Śâṅkhâs. 3, 11. 13, 10. fg. 14, 8.

अयनान्त *Solstitium* Śâṅkhâs. 12, 51. 61.

अयःशङ्कु m. 1) *ein eiserner Nagel*; s. u. शङ्कु 1) am Ende. — 2) N. pr. eines Asura Mâṛk. P. 125, 36.

अयस्मय 1) ṚV. 5, 30, 15.

अयानय als Spielausdruck (auch Nachträge) vgl. अय und अनय oben.

अयामन् s. u. यामन्.

अयास् Z. 4 lies 1, 134, 6 st. 2, 154, 6.

अयुग्मशर m. *der Liebesgott* Daçak. 78, 10. — Vgl. अयुगिषु, पञ्चेषु u. s. w.

अयोग (Nachträge), füge nach 7) n. (sc. स्थान) hinzu.

अयोगवाक् vgl. योगवाक् und Weber, Prâtiśâkhya 87. fg.

अयोगिन् m. *kein Mönch* Hem. Joḍaç. 4, 114.

2. अयोनि so v. a. *originell* Vîmâna 3, 2, 7.

अर् caus. 5) परैर्वचनमर्पितम् *aufgetragen* Spr. (II) 6990.

— सम् caus. 6) *entsenden, schicken:* einen Boten Spr. (II) 6989.

अरक 1) Spr. (II) 3349.

अरत्नम् Z. 2 lies 5, 87, 9 st. 6, 87, 9.

अरघ s. रघ.

अरत्नुक MBu. 3, 6022 nach der Lesart der ed. Bomb.

अरमति, zu ṚV. 2, 38, 4 vgl. jetzt Z. d. d. m. G. 24, 306. fg.

अरवत् (von अर) adj. *mit Speichen versehen:* चक्र Pat. a. a. O. 5, 2, *a*. अनरवत् ebend.

अरश्मिक adj. *ohne Zügel* Âçv. Gṛhj. 2, 6, 4.

अराड्य adj. *langhörnig* (Comm.) TS. 5, 6, 24, 1.

2. अर्वावन् m. = अर्वन् *Ross:* निरे पर्षदावा पो युवाकुः *einer Ross zog ihn heraus* ṚV. 7, 68, 7.

अरिखदिर s. u. संदानिका.

अरित्र vgl. शतारित्र.

अरिषण्य und अरिषण्यत् lies *nicht fehlend, sicher, zuverlässig*.

अरिष्टकर्मन् vgl. अनिष्टकर्मन्.

अरुण 2) *g*) N. pr. eines Asura MBu. 16, 119 nach der Lesart der ed. Bomb., वरुण ed. Calc. — 3) *b*) MBu. 3, 7022.

अरुणाभ (अरुण + आभा) n. *eine Art Stahl* ÇKDa. u. वज्र.

अरुषित u. s. w. zu streichen.

अर्क 2) als *Sonne* Bez. *der Zahl zwölf* Śâṅkhâs. 1, 70. 3, 17. 20. 8, 7. 12, 59.

अर्कज m. *der Planet Saturn* (vgl. Nachträge) Śâṅkhâs. 1, 69. 9, 2. 6.

अर्कसाति Z. 2 lies शतेरपत्न्.

अर्गल 1) f. या Hem. Joḍaç. 4, 9.

अर्घ vgl. अनर्घ.

अर्चनस् Pat. a. a. O. 5, 30, *b* fehlerhaft für अर्चनम्.

अर्ण 2) *a*) Z. 2 lies गिरि°.

अर्णव 2) *b*) als Bez. *der Zahl vier* (vgl. Nachträge) Śâṅkhâs. 1, 29. 2, 21.

अर्थ 3) so v. a. *Lohn* Spr. (II) 3387. — 7) वरार्थी *nach einem Gatten verlangend* Bhâg. P. 3, 8, 3. — 13) (Nachträge) Śâṅkhâs. 1, 38. 42. 2, 23. 12, 86.

अर्थगति f. *das Sichergeben des Sinnes* Pat. a. a. O. 2, 330, *b*. 6, 21, *b*. 57, *b*.

अर्थचिन्तन Hem. Joḍaç. 3, 126.

अर्थपति *ein reicher Mann* Spr. (II) 594. 762.

अर्थपाल m. N. pr. eines Mannes Daçak. 114. fgg.

अर्थपुष्टि f. *Erweiterung des Sinnes, grössere Bedeutsamkeit* Vîmâna 4, 2, 19.

अर्थप्राप्ति f. *das Sichvonselbstverstehen* Kâraka 3, 8.

अर्थय् 2) यावन्नार्थयते परम् Spr. (II) 2548.

— समभि s. समभ्यर्थयितृ.

अर्थयुक्ति Spr. (II) 3678.

अर्थवत्ता f. *Bedeutsamkeit* Pat. a. a. O. 1, 40, *a*.

अर्थशालिन् adj. *reich*, m. *ein Reicher* Citat bei Vîmâna 4, 3, 20.

अर्थसाधक vgl. u. साधक 1) *a*) und स्वार्थसाधक.

अर्थसिद्धि (Nachträge) f. *Erwerbung eines Vermögens* Kâraka 3, 8. — m. N. pr. eines Sohnes des Pushja (Pushpa die neuere Ausg.) Harîv. 828.

अर्धिक (vgl. Nachträge) Pat. a. a. O. 5, 32, *b*.

अर्धिता 2) Spr. (II) 6760.

1. अर्घ 1) अर्घो घट: *ein halbvoller Krug* (Gegens. संपूर्ण) Spr. (II) 6882. — Das Wort ist m. als अवयववाचिन्, n. समप्रविभागे Pat. a. a. O. 2, 347, *a*.

घर्घक adj. und m. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

घर्बुट 2) Z. 7 lies: ihm und seinem Sohne.

घर्मण n. Kaṭaka 9,12. Sūçr. 2,420,21.

घर्वन् vgl. oben 2. घरावन्.

घर्ष् mit सम् caus. vgl. समर्क्षण.

घर्षण 4) n. *ein kostbarer Edelstein* (Comm.) Bhāg. P. 3,21,47; vgl. jedoch यथार्क्षणम्.

घर्षत्व 2, c) Hem. Jogāç. 1,1. 2,4. 3,148.

घलघ्मी (Nachträge), Spr. 3385 gehört zu घलघ्मीक; vgl. (II) 376.

घलंगीविक Pat. a. a. O. 2,399,b.

घलघस्, lies *nicht schwatzend, — irre redend* und सं वित्त्वा°.

2. घलघ, lies *rastlos*.

घलर्क 1) Z. 1 lies 3,5 st. 2,5.

घलसक Kaṭaka 3,2.

घलि, घलि oder घालि *der Scorpion im Thierkreise* Sūrjas. 12,66. — के (जलघ: Apabhraṁça für के ऽरघ: *Feinde* Pat. a. a. O. 1,6,a.

घस् 3) प्राणानवति किं नैव गृह्णीतं वदने तृणम् Spr. (II) 3176.

— यनुं, fuge bei ṚV. 4,32,6. 10,113,1.

— सम् vgl. समघन.

घसकाश 2) संप्राप्य मूढबुद्धोनामवकाशम् *Gelegenheit ihnen beizukommen* Spr. (II) 6886.

घसकघकुटी f. *Marktbude* Hem. Jogāç. 4,65.

घसगत्तर् nom. ag. *der erkennt, erräth:* परचित्ताव° Spr. (II) 6983.

घसगत्तव्य *zu erkennen, zu erschliessen aus* (abl.) Pat. a. a. O. 8,67,b. Spr. (II) 6160 (Conj.).

घसगुण्ठन 1) bildlich: उत्सृष्टसत्पुरुषोचितलज्जावगुण्ठन adj. Vaitān. 37,7.

घसगूहन *das Umfangen:* कान्तावाकुलतावगूहन Spr. (II) 3836.

घसगोर्य partic. fut. pass. Pat. a. a. O. 8,24,b.

घसघकशक (Nachträge) s. u. शकम्.

घसघाण (Nachträge) lies 11,16,36.

घसचायिका *Lese* s. पुष्पाव° in den Nachträgen.

घसच्छद् s. दुरवच्छद् in den Nachträgen.

घसच्छेद् 1) *Abschnitt* (in einem Çastra und dgl.) Āçv. Çr. 1,2,23.

घसज्वलन n. *das Anzünden* Comm. zu Āçv. Çr. 2,3,7.

घसतरण vgl. रङ्गावतरण.

घसतान 2) *b) eine einen Baum u. s. w. überdeckende Schlingpflanze:* वृक्षस्थो ऽयतानो वृते क्षिप्रे ऽपि न विनश्यति Pat. a. a. O. 1,224,b.

घसतितीर्षु adj. *herabsteigen wollend* Kathās. 42,44 (°तीर्षु zu lesen).

घसधारक und °धार्य vgl. दुरव° in den Nachträgen.

घसधि 2) वर्तमानावधिस्वरेण so v. a. *mit dem bisherigen Tone* Comm. zu Āçv. Çr. 3,13,19.

घसधूलित (von घस + धूलि) adj. *bestreut:* शशमुण्डरसः कोष्ठो मरीचैरवधूलितः Çārṅg. Saṁh. 2,1,16.

घसध्य *eher unzerstörbar*.

घसनति *Niedergang, Neigung:* दूरपत्यवनतेर्विवस्वति Cit. bei Vāmana 5,2,79. *Erniedrigung* (Gegens. उन्नति) Spr. (II) 1687.

घसनि 3) *Platz auf dem Erdboden* Sūrjas. 6,2.

घसनिरुद्ध m. *Baum* Daçak. 14,10. — Vgl. पृथिवीरुह् u. s. w.

घसत्तिसुन्दरी f. N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. 36. fgg.

घसत्ती 1) Sūrjas. 1,62.

घसपीड 2) कल्कीकृतदोषधात्वः पीडितो निःसृतो रसः । सो ऽवपीडः Bhāvapr. 5.

घसपीडक m. = घसपीड 2) Kaṭaka 1,7. 13.

घसयव von 3. यु mit घस.

घसयवयोग adj. (f. या) *in der Beziehung von „ein Theil davon" stehend* Pat. a. a. O. 6,2,a. 8,36,b. — Vgl. स्वानयोग.

घसयामर्श m. angeblich N. eines Plagegeistes in Jama's Welt TS. 1,4,44,1.

घसर् (Nachträge) 4) lies f. घसरा; vgl. oben u. घपर् 3) c) und 1. सावर्.

घसरोह् 1) *das Herabsteigen* in übertr. Bed. Vāmana 3,1,13.

घसरोहण n. dass. ebend.

घसरोहवत् adj. *mit Luftwurzeln versehen:* न्यग्रोध Pat. a. a. O. 1,136,b.

2. घसर्ण in Çvetāçv. Up. *keine Erscheinungsform habend*.

घसर्ति Z. 3 lies 4,18,13.

घसर्त्र, füge bei *ungehemmt*.

घसलिन्द् m. = उपरिकुटी Wilson, Hāla S. 160.

घसलेखन Sāmavidh. Br. 3,1,2 nach Sāj. = 3. घस + वलेखन d. i. घवलेखन; wohl fehlerhaft für घनुलेपन oder घवलेपन.

घसलेख्क adj. *ablecknd:* पात्राव°, कुस्ताव° Vishṇ. 198.

घसशम्, lies शंस् st. शम्.

घसशेष्य adj. *übrig zu lassen, zu bewahren* Kātantra 3,3,9.

घसमयण Z. 1 lies 1. मि st. मो.

घसमाय vgl. यत्रकामावसाय.

घसरुत्तर् nom. ag. *der niederschlägt, abwehrt, vertreibt* ṚV. 4,25,6.

घसस्कास्य Harīv. 7106, wo mit der neueren Ausg. °स्कास्यामि zu lesen ist.

घसस्थित्य n. *Verstellung* Cit. bei Vāmana 3,2,9.

घसहेलना f. *Geringschätzung* Spr. (II) 7043 (Conj.).

घसाङ्गामि adv. *unterhalb des Nabels* Sāmavidh. Br. 1,5,18.

घसाचीन (Nachträge), an der angeführten Stelle bedeutet das Wort *verkehrt;* vgl. Spr. (II) 3360.

घसिकोरण (vgl. Nachträge) = घसिकरे उरणो दातव्यः Pat. a. a. O. 6,88,b.

घसितर्, धर्मावितर् Bhāg. P. 4,4,17. घसित्री MBh. 12,9449 nach Nīlak.

घसिधुर् Āçv. Çr. 3,1,17.

घसिरति Hem. Jogāç. 4,77. 83.

घसिरविकन्याय s. घव्यविकन्याय.

घसी vgl. 2. und 4. वी.

घसीन, °क richtiger घवीन, °क.

घसपलक adj. *keine Çūdra habend:* देश Pat. a. a. O. 1,282,b.

घसोम् s. weiter unten u. 1. ऽम्.

2. घव्यय 3) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2157 nach der Lesart der ed. Bomb., व्यय ed. Calc.

घव्ययवत् adj. *ein Indeclinabile setzend:* शब्द् Pat. a. a. O. 3,69,b.

घव्यविकन्याय m. *die Weise von* घवि *und* घविक, *die darin besteht, dass in der Umschreibung* घवेर्मेषम्, *in der Derivation aber* घविकम्

(von अविक und nicht von अवि) gesagt wird, Pat. a. a. O. 4,10,a. 34,a. st. dessen अविर्विकन्याय 42,a. 67,a. 5,4,a. 6,76,a.

अव्रतवत् adj. *für den es keine Regel —, kein Gelübde giebt* MBh. 12,2305.

1. अश् Z. 2. आशावे und आशाते sind Perfect-Formen.

— समुप Spr. (II, 3533, v. l.

2. अश् mit वि Z. 1 lies 3,36,a.

अशरण n. *Mangel an Schutz, Schutzlosigkeit* Hem. Jogaç. 4,54. nach 63.

अशेषय् denom. von अशेष 2); vgl. निःशेषय्.

अशोच Hem. Jogaç. 4,55.

अश्मघनस्वेद् m. *künstliche Schweisserzeugung durch Liegen über einer erhitzten Steinplatte* Kâraka 1,14.

अश्मसारिन् m. N. pr. des ersten Ministers des Çântanu VP. 4,20,7.

अश्व 2) अन्न R. ed. Bomb. 3,21,6. hier oft अश्मु st. अश्व bei Schl.

अश्मु m. R. ed. Bomb. 2,103,6.

अश्वयंस् 2) न सो ऽश्वेषो (so ist zu lesen) ऽधिगच्छति MBh. 3,1195.

अश्व 1) a) sg. in collectiver Bed. Bhâg. P. 10,58,51.

अश्वतर m. auch *ein besserer Hengst*, f. आ *eine bessere Stute* Pat. a. a. O. 5,60,a.

अश्वसूत्र n. *ein Sûtra über die Rossekunst* MBh. 2,255.

अश्विन् 3) du. so v. a. अश्विपुत्रौ d. i. Nakula und Sahadeva MBh. 5,1816. Als Bez. der *Zahl zwei* (vgl. Nachträge) Sûrjas. 1,33.fg. 12,89. — 4) als Nakshatra Sûrjas. 8,16. 9,13. an beiden Stellen अश्विनि des Metrums wegen.

अष्टक adj. अष्टिका खारी Pat. a. a. O. 7,116,a.

अष्टाविंशद्धिध adj. *achtundzwanzigfach* Mârk. P. 47,20.

2. अष्टि Bez. *der Zahl sechszehn* Sûrjas. 2,62. 3,43.

1. अस् 6) Z. 11. fgg. असि nach den Erklärern so v. a. अस् Vimâna 3,2,32.

— व्यत्यनु, °षते Pat. a. a. O. 8,63,b.

— अप *weg* —, *unbetheiligt sein* ṚV. 10,83,5.

— परि 1) ṚV. 10,40,6.

— सम् 1) *Jmd* (acc.) *gleich sein* ṚV. 2,1,13. — 2) *vereinigt sein mit* (सह): सं ब्रायवो मरुद्भि: स्याम AV. 12,3,17. — 3) *sein, geben* (vgl. Nachträge): प्राप्तो ऽतिथीरद्य समस्ति को वा Spr. (II) 6313.

2. अस् mit अपि, partic. अप्यस्त *hingeworfen, daliegend:* पञ्चपदे Pârâs. Bh. 8,6,a. 9.

— अभि 3) अपूर्वं चेयमभ्यस्तं त्वया *verübt* Spr. (II) 449. — 3) (s. Nachträge) Sûrjas. 1,53. 60. 2,31. 41. 46. 3,21.

— समभि *betreiben, üben:* नर्तनकलाभ्यासं समभ्यस्यति (Conj.) Spr. (II) 5826.

— उद्युद् (I) *abwerfen, aufgeben, fahren lassen* Bhâg. P. 4,7,44. der Comm. erklärt das erste उद् durch उद्धम्.

— निस्, partic. निरस्त adj. und n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

— परि 4) तं पर्यास्यत् (वसुधातले) Kathâs. 43,122.

— विपरि, partic. विपर्यस्त Sûrjas. 2,63. 6,5. 7,15.

— संपरि caus. s. संपर्यासन.

— उपसम्, partic. उपसमस्त *mit einem andern Worte componirt* Pat. a. a. O. 7,51,b. 105,b.

3. अस् (= 2. अस्) adj. in क्षुत्स्वस्.

असंवृत n. *eine Art Hölle* M. 4,91.

असतीपोषण n. *das Ernähren einer untreuen Frau*, bei den Gaina so v. a. *das Füttern von allerhand unnützen Geschöpfen* Hem. Jogaç. 3,99.111.

असदाग्रह् adj. = असद्ग्राह् Bhâg. P. 5,9,6.

असद्ग्रह् Harîv. 13479 fehlerhaft für असद्ग्राह्.

असद्ग्राह् (Nachträge) 2) Harîv. 13479 nach der Lesart der neueren Ausg.

1. असत् 1) Z. 4 und 3) a) Z. 7 lies Taitt. st. Ait.

असभ्य (Nachträge), असभ्यार्थासत्, °स्मृतिहेतु Vimâna 2,1,15.

असीभव्यम् und °भाव्यम् vgl. u. 1. भू mit सम् caus. 1).

असर्व adj. *nicht vollständig* Çat. Br. 4,1,5,10.

असात्म्य adj. *zuwider seiend, unverträglich:* असात्म्यमिति तद्विद्यान्नत्र याति सहात्मताम् Kâraka 4,1.

असाद्, lies *nicht reitend.* In übertr. Bed. *nicht erschlaffend, — müde werdend:* शास्त्रे Râga-Tar. 1,106.

असितोद् n. (sc. सरस्) N. pr. eines mythischen Sees VP. 2,2,24.

असिशिम्बी f. *eine best. Pflanze* Râgân. 7,178.

असु 1) c) *respiration = 4 seconds of sidereal time, or 4 minute of arc* Sûrjas. 2,59. 61. 3,38. 46. 9,5. 10,2. fgg.

असुत्याग m. *das Aufgeben des Geistes* Bhâg. P. 4,4,31.

असुर 1) c) Z. 5 lies 63,7. 3 st. 83,7,3.

असुरहिष् m. ein N. Çiva's Mbh. 13. 248.

असूर्तरजस s. oben u. असूर्तरजस्. न विद्यते मूर्तं प्रमृतं रजो यत्र स: Comm.

अस्तंगमन n. *Untergang* s. सूर्यास्तंगमन.

2. अस्ति Harîv. 4955.

अस्तिमत् Pat. a. a. O. 5,48,a.

अस्तुंकार eher *zugebend, einwilligend.*

अस्मय्, °यति denom. von अस्मद् Pat. a. a. O. 7,102,a.

अस्निध् und अस्नेधत्, lies *nicht fehlgehend, — irrend.*

अस्वरक adj. *tonlos, nicht mit dem* Udâtta *versehen* Pat. a. a. O. 7, 33,b. 76,a.

1. अह् zu streichen; s. u. 1. हि.

अहस्ता Râga-Tar. 4,68.

अह्न्य, lies (von अह्न्) adj. *diurnus: mit den am Tage gebrauchten* Soma-*Steinen schneidet er auch Nachts den Strahl gegen* u. s. w. 5,48, s. *täglich:* श्रोक 1,190,a.

अह्नून (Nachträge), lies 4,3,8,2. eine allegorische Personification.

अह्नूम m. eine best. Personification Sâmavidh. Br. 1,2,5.

अह्नूमुत्तरर्ह n. nom. abstr. von अह्नूमुत्तर zu vermuthen AV. 3,8,3.

अह्रा m. N. pr. eines Asura MBh. 1,2660 nach der Lesart der ed. Bomb., मुह्रा ed. Calc.

अहिचुम्बक m. N. pr. eines Mannes; davon ऐहिचुम्बकायनि m. patron. Pat. a. a. O. 1,85,a. 4,5,a.

अहिनामन् adj. *was Schlange heisst* ṚV. 9,88,4.

अहिमरश्मि m. *die Sonne* Çiç. 11,64.

अहिर्बुध्न्य n. Sûrjas. 9,13 fehlerhaft für आ°.

अहिभुष्मसत्वन्, so zu lesen.

अहोवीर्य m. N. pr. eines Mannes MBh. 12,8960.

अङ्काय 2) Hem. Jogaç. 4,11.

अङ्कार्षु wohl *ein best. Vogel.*

आकम्पन n. *das Erzittern:* आपगानाम् als Naturerscheinung Kâraka 1,12.

आकर्ष 1) *das Schleppen:* eines Steines Kâraka 1,7.

आकर्षण n. *Anziehung* Sâmjas. 2,8. *das Spannen:* eines Bogens Kâraka 1,7.

1. आकार, नाकारमुद्दरसि so v. a. *du nimmst keine bestimmte Miene an* Spr. (II) 3536.

आकाश 3) (Nachträge): zu °भाषित vgl. noch Daçak. 1,60. Sin. D. 313.

आकाशरन्तिन् vgl. u. प्रगण्ड 2) in den Nachträgen.

आकिञ्चन्य Hem. Jogaç. 1,33.

आकृष्टव्य (von 1. कर्ष् mit आ) adj. *hinzuschleppen:* ग्रामे शाखा Pat. a. a. O. 2,395,b.

आक्तकी s. weiter unten u. आक्तिक.

आक्षरसमाम्नायिक (von अक्षरसमाम्नाय) adj. *zum Alphabet gehörig, darin enthalten; subst. Laut, Buchstab* Pat. a. a. O. 1,23,a. b. 8,66,a.

आक्तिक adj. *aus den Früchten der Terminalia Bellerica* (vgl. 1. अक्त 7) *bereitet:* सीधु Suçr. 1,190,3. f. ई *ein solches Getränk* Kâraka 1,27, v. l. (für आक्तकी) und Madan. 8,68.

आक्षेपण n. *Spott, ironische Behandlung* Kâraka 3,8.

आक्षेपृ nom. ag. *der Etwas zurückweist* Kâtjâs. 45,106.

आख्यानक und आख्यायिका von einander unterschieden Daçak. 16,19. *fg.*

आख्यापक adj. *verkündend* Spr. (II) 4034.

आगस्तीय m. pl. patron. Pat. a. a. O. 2,409,b.

आगुर् Âçv. Çr. 3,8,7.

आग्निवेशि (Nachträge), °वेशी Weber, Nax. ist adj.

आग्नेय 4) *e*) (Nachträge) Sâmjas. 8,18.

आग्ला f. von unbekannter Bedeutung Gop. Br. 1,2,21.

आघतन (!) n. = आघातन Kâraka 1,8. आयतन die Hdschrr., = वधस्थान Comm.

आघातन Suçr. 1,7,18 (so zu lesen nach Comm.).

आचर्कि (von 1. कर् mit आ) adj. *zurückführend:* यमस्य मन्युरार्चकिरिन्द्रः *das Sein vernichtend* RV. 6,24,5.

आचाम्य n. = आचमन 1) Bhatt. 6,65.

आचार, सत्याचार n. *zu feines Benehmen* und अनाचार n. *grobes Benehmen* Spr. (II) 136.

आजकरीण adj. P. 4,2,78, Schol. — Vgl. रीण.

आजक्रन्दि m. patron. Pat. a. a. O. 4,60,b.

आजगर adj. *der Boa eigen, — ähnlich:* व्रत MBu. 12,6677. *fgg.*

आजिगमिषु adj. *zu kommen beabsichtigend:* अना° Pat. a. a. O. 1,87,b.

आज्यकृविम् adj. *Schmalzspende habend* Ait. Br. 1,35.

आञ्जन 2) nach dem Comm. (2,91,77 ed. Bomb.) *ein Kästchen mit Augensalbe.*

आटोप 3) pl. Spr. (II) 2158.

आडम्बर 1) MBu. 9,2676.

आणवप्, °पति Pat. a. a. O. 1,234,b.

आतङ्क 2) अस्मदातङ्क *Furcht vor dem Tode* (das vorangehende तद् ist als Correlativ zu यद् aufzufassen) Hem. Jogaç. 4,60.

आतङ्कित (von आतङ्क) adj. *besorgt, von Besorgniss ergriffen:* शङ्कातङ्कितमानस (das Suffix gehört auch zu शङ्का) Spr. (II) 3940.

आतर् Divjâvad. 3.

2. आतामता f. nom. abstr. von आताम (s. Nachträge) Ratnâv. 68,4.

आतिदेशिक Comm. zu Âçv. Çr. 8. 75,6. Pat. a. a. O. 1,181,b.

आतिशायनिक (von अतिशायन) adj. *Steigerung ausdrückend;* m. *ein solches Suffix* Vâmana 5,2,62.

आतिशायिक (von अतिशय) dass. Pat. a. a. O. 2, 345, b. 346, a. b. 4, 32, a. 5, 62, b.

आतुच् Z. 2 lies 8,27,21.

आत्मगत adj. *auf ihm selbst* (auf गिरि *Berg* zu beziehen) *befindlich* MBu. 11,366 nach der Lesart der ed. Bomb.; आत्मरुक् ed. Calc.

आत्मघातक m. *Selbstmörder* Spr. (II) 4330.

2. आत्मभव m. *der Liebesgott* Spr. (II) 4878.

आत्ममय *sich selbst gehörig, selbstständig* Spr. (II) 4075.

आत्मरुक् adj. *auf ihm selbst* (auf गिरि *Berg* zu beziehen) *wachsend* MBu. 11,366. आत्मगत ed. Bomb.

आत्मसंपन्न adj. *mit Geist begabt:* अनात्म° *dumm* Spr. (II) 437.

आदर, बहादर adj. *grossen Werth legend auf* (geht im comp. voran) Spr. (II) 1902.

आदर्श 4) lies N. pr. eines Berges (nach Kâs.) Pat. a. a. O. 2,397,b. 6,104,b. Ind. St. 13,339. Weber, Prâtiçâkja 103,4.

1. आदान 2) *das Nehmen, Anfassen* Hem. Jogaç. 1,26. 34. °समिति 31.

आदित्य 2) *e*) n. (vgl. Nachträge) Sâmjas. 8,19.

आदिम Sâmjas. 1,21.

आदिवत् adv. *einem Anlaut gleich* Pat. a. a. O. 1,204,a. Davon nom. abstr. °वद्भ ebend.

आदीधक so, nicht आदीध्यक ebend. 7,128,a. b.

आदेशन n. *das Angeben, Bezeichnen* ebend. 2,311,b.

आदेशिन् (von आदेश) adj. *das wofür Etwas substituirt wird,* = स्थानिन् ebend. 1,135,a.

आधान 1) *das Hinzufügen* Vâmana 1,3,16. — 3) *Zahm, Gebiss;* s. निराधान weiter unten.

आधारता f. nom. abstr. zu आधार 1) Spr. (II) 6444.

1. आधि 1) अखिलसंशयाधि *Behälter* Buâs. P. 11,13,33.

आध्यशि von अध्यश Kâtj. in Manâsa. lith. Ausg. 7,110,b.

आनन्द m. N. pr. eines Çrâvaka Hem. Jogaç. 3,151.

आनन्दताण्डवपुर n. N. pr. einer *Stadt* Cara, Sanskrit Proverbs No. 206.

आनम vgl. auch स्वानम.

आनयन n. *Berechnung* Sâmjas. 1,36.

आनुदेशिक adj. zu अनुदेश 1) Pat. a. a. O. 1,124,b.

आनुरोधिणो (Nachträge) ist hier adj.

आनुवासनिक (von अनुवासन) adj. *zu einem öligen Klystier gehörig:* पिष्ट Kâraka 8,12.

आनुसेय (von अनुसू) m. *Nachkömmling* Pat. a. a. O. 8,62,b.

आत्मःपुरितक, so zu lesen in den Nachträgen.

आन्यभाव्य n. *das ein-Anderes-Sein* Pat. a. a. O. 1,36,a. b. 3,43,a.

आप् 2) Z. 6 M. 1,63 ist अपुस् von पा *schützen* gemeint. — partic. आप्त *dividirt* Sâmas. 1,52. 60. 2,38. 57. 61. 64. fg. 3,10. 22.

— अव *durch Division erhalten* Sâmas. 2,32. 3,9. 12,59.

— प्र 2) mit infin. *bekommen zu:* खादितुं प्राप्यते यावत् Spr. (II) 7315.

— partic. प्राप्त 4) तेन:त्तमापद्य:° so v. a. *versehen mit* R. ed. Bomb. 1,7,8.

— संपरिप्र desid. s. संपरिप्रेप्सु.

— सम् caus. 1) Kaush. Up. 2,15.

— परिसम् Z. 3 प्रत्येकं परिसमाप्यते so v. a. *erstreckt sich auf Jedes, gehört zu Jedem;* vgl. Pat. a. a. O. 1,48,b. षड्भूतिषु लोकशेष: परिसमाप्यते *erstreckt sich auf* 2,317,a.

2. आप m. (Comm.) *ein best. Stern, δ Virginis* Sâmas. 8,21; vgl. 2. अप् am Ende.

आपण auch *Waare;* s. u. शकट 1).

आपथी, lies *ein auf dem Wege liegender Gegenstand, Stein* und dgl.

आपात 4) आपाते *am Anfange* im Gegensatz zu पर्यन्ते Spr. (II) 6419 (Conj.).

1. आपि adj. *reichend* in सर्वत्रापि.

आपिशल, आपिशलम् (sc. शास्त्रम्) अधीते आक्षणी आपिशला आक्षणी Pat. a. a. O. 4,16,b.

आपीडन n. *das Drücken, Druck* Kâç. 5,2,6.

आपोक्लिन्नीय (Nachträge) Simavidu. Ba. 1,2,5.

आप्ताधीन adj. (f. आ) *von zuverlässigen Personen abhängig:* प्रमाणता Hem. Jogaç. 2,12.

1. आप्य n. (Nachträge) Sâmas. 8,4.

आप्र adj. von आप्री RV. Anukr. Ind. St. 7,470, N.

आप्रीतिमायु N. pr. einer Oertlichkeit; davon °मायवक adj. Pat. a. a. O. 4,74,b.

आभिगामिक Kâm. Nîtis. 4,8 wohl fehlerhaft für °कामिक. साध्याभि° ist wohl eine unregelmässige Zusammenziehung von साध्या आभि°.

आभिप्रायिक (von अभिप्राय) adj. *nach Belieben geschehend, beliebig:* कर्मन् Simavidu. Ba. 3,9,7.

आभिमुख्य 3) in den Nachträgen zu streichen, da die Stelle zu 1) gehört; vgl. Spr. (II) 3708.

आभूतसंप्लवम् (auch VP. 2,8,89) s. u. भूतसंप्लव und संप्लव 3).

आमर्श m. *Berührung, Anklang:* क्षेत्रामर्श Âçv. Çr. 8,13,22.

आमितवत्स् (Nachträge), lies 2,7,10,4.

आमिश्र adj. *vermischt, vermengt* Pat. a. a. O. 6,36,b. Davon nom. abstr. °त्व n. 4,a. 12,a. 36,b.

आमिश्रीभूत adj. *vermischt, unter einander gemengt* ebend. 1,193,b. 6,12,a. °त्व n. nom. abstr. 1,193,b.

आमिष *Geschenk, Honorar, Trinkgeld* u. s. w. (vgl. Z. 3 v. u.) Kâraka 3,8.

आमोल *ein best. wollener Stoff* Vâyup. 212.

आम्राय vgl. प्रत्याम्रायम्.

आम्ब (Nachträge), आम्बानां चारुम् TS. 1,8,10,1 soll nach Pat. a. a. O. 6,11,a = नाम्बानां चारुम् sein.

आयतिज्ञ adj. *herbeiopfernd* TBr. 3,16,12,1. 14,2. compar. °ज्ञीयस् ebend.

आयतन, कास्यायतन *ein Gegenstand des Gelüstens* Vimâna 1,3,17.

आय:प्रलिक (vgl. Nachträge) = यो मृदुनोपायेनान्वेष्टव्यानर्थाञ्चमसेनान्विच्छति Pat. a. a. O. 3,44,b.

आयस्कारि m. patron. von अयस्कार ebend. 4,57,b.

आयाम 1) = गात्राणां नियत: ebend. 1,193,b.

आयास (Nachträge) 1) Z. 2 lies 191 st. 191.

आयासन n. *das Ermüden:* कोपनमायासनेनाभिभवेत् Kâraka 3,8. आयास v. l.

आयुषय्, °यति = आयुष्यमाशंसते Kâç. in Manâm. Ith. Ausg. 6(4),47,a.

आर *Höhlung* Sâmas. 13,22.

आरड vgl. आरब्ध.

आरनाल m. pl. Harîv. 8447 nach der Lesart der neueren Ausg.

आरब्ध m. N. pr. eines Sohnes des Sotu Bâlo. P. 9,23,14.

आरम्भ 1) गृहारम्भ so v. a. *der Bau eines Hauses* Spr. (II) 2192. अनारम्भे (so v. a. *ohne ein Haus zu bauen*) ऽपि परगृहे सुखी सर्पवत् Kap. 4,12.

आरम्भक adj. *ganz hingegeben, voller Erwartung:* पदारम्भका हन्त गच्छन्ति नरस्य मोक्ष्याम इति Pat. a. a. O. 1,262,a. *in's Leben rufend, hervorbringend:* सजातीयारम्भकत्व n. nom. abstr. Kap. 1,1,9.

आरवडिण्डिम m. *eine Art Trommel* Gîr. 11,7.

आरस m. *Geschrei* u. s. w. s. 2. सारस.

आरा f. *ein best. Wasservogel* Kâraka 1,27.

आरात् N. pr. eines Dorfes der Bâhika; davon adj. आरात्क (f. आ und ई) Pat. a. a. O. 4,72,b.

आरुक n. *die Frucht der Pflanze,* auch आलुक genannt (in Kârttikojapura) Dhanv. 5,21. Râgân. 11,99. Kâraka 1,27.

आरोचक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2097 nach der Lesart der ed. Bomb.

आरोप (Nachträge) 2) 3) an beiden Stellen wird आरोक् gelesen.

आरोपण 5) richtiger *das Bestehen des Bogens mit der Sehne;* vgl. 1. रुह् mit आ caus. 3). — 8) zu streichen, da der Text आरोहण in dieser Bed. hat.

आरोह् 1) Z. 5 lies AK. st. R. — 2) *das Aufsteigen* in übertragener Bed. Vâmana 3,1,12.

आर्कि Sâmas. 1,29. 2,56. 7,13.

आर्त adj. (Nachträge) Sâmas. 14,1. 2.

आर्तपर्णि, आर्तुपर्णि die neuere Ausg.

आर्तरौद्र n. *rauhes —, grausames Benehmen gegen Unglückliche* Hem. Jogaç. 3,72. 81. 4,77. 84. an den beiden letzten Stellen lesen wir °रौद्रे st. °रौद्रे.

आर्तुपर्णि m. patron. von ऋतुपर्ण Harîv. 815 nach der Lesart der neueren Ausg.

आर्ध *auf Besitz beruhend:* संबन्धा: Pat. a. a. O. 1,122,a.

आर्द्र *Feuchtigkeit, feuchte Masse:* कृतालार्द्रपीत Harîv. 4083; vgl. Kumâras. 7,33.

आर्धधातुक adj. (f. आ) Pat. a. a. O. 2,403,b.

आर्धधातुकीय adj. von आर्धधातुक ebend. 1,136,a. 181,b. 3,37,a.

आर्धमासिक adj. *halbmonatlich* ebend. 4,72,a.

आर्धरात्रिक adj. *zur Mitternacht stattfindend* Sâmas. 1,50.

आर्बुदि (von अर्बुद) m. patron. des Ûrdhvagrâvan, Verfassers von

RV. 10,175.

आर्यशिम् Pat. a. a. O. 6(4),18,b. — Vgl. मित्रशिम्.

आर्षिक m. *ein Fürst der* Ṛshika ebend. 4,74,b.

आलतण vgl. स्वालतण.

आलक्ष्य, तेषां यत्र इवालक्ष्यः *anzusehen wie* R. Gorr. 1,19,27.

आलपन und आलपि (Nachträge) vgl. u. ग्रमक (Nachträge).

आलब्धव्य adj. *zu erfassen, — schlachten* Pat. a. a. O. 1,19,b. 111,b.

आलमर्व्य n. = अलमर्वता, अलमर्वत्व ebend. 3,95,a.

आलय Sp. 702, Z. 2 मध्यमूकालय ist adj. comp. *wohnend in.*

आलुक n. s. oben u. आरूक.

आलोकगादाधरी, so zu lesen in den Nachträgen.

आलोकवत् (von आलोक) adj. *Licht besitzend, leuchtend* Z. d. d. m. G. 27, 49.

आलोचनीय adj. *zu betrachten, in Betracht zu ziehen* Vedântas. (Allah.) No. 4.

आलोच्य adj. dass. Mârk. P. 44,23.

आलोप m. *Bissen* Vâjjr. 198.

आलोल, Mkcp. 62 gehört zu लोल.

आलोक्वत् s. u. लोक्वत्.

आलोक्ति Ṛv. 1,21.

आवरण 2) e) कण्टकावरण Spr. (II) 7491.

आवर्तक adj. *für sich gewinnend* s. कृष्यावर्तक.

आवल्गिन् (von वल्ग् mit आ) adj. *hüpfend, springend* Nigh. 2.

आवश्यक n. *Befriedigung der Nothdurft* Sâmavidh. Br. 1,5,18.

आवसति f. *Herberge, Zuflucht* TBr. 2,3,8,4.

आवस्थिक *Zeitpunkte enthaltend, — darbietend:* कालो नित्यगश्चावस्थिकश्च । तत्रावस्थिको विकारमपेतते Karaka 3,1.

आवाप *Saatfeld:* व्यसनावाप ऋतस्मिन् so v. a. *in diesem Jammerthal* Bhâg. P. 4,22,13.

आवार् m. *Hut, Schutz* Kîm. Nîtis. 16,38.

आवि s. weiter unten u. 2. आवी.

आविर्ग्रीक vgl. समृक्ष.

आविष्टत्व n. *das Behaftetsein mit* (geht im comp. voran) Vimâna 5,1,17.

2. आवी (vgl. s. वी) Suçr. 1,368,13. auch आवि, °प्रादुर्भाव, आविभिः संक्लिश्यमाना Karaka 4,8. Hierher auch: आव्यमस्मिन्दधाति *Zittern vor Bangigkeit oder Krankheit* (Comm.) TS. 3,2,9,4. Kâṭh. 30,9.

आवृत् vgl. oben अवावृत्.

आवृत m. *eine best. Mischlingskaste:* ब्राह्मणाद्दुष्टकन्यायामावृतो नाम जायते M. 10,15.

आवेणिक Kâlakârma 2,161. 5,340.

आवेवक so, nicht आवेव्यक Pat. a. a. O. 7,128,a. b.

आवेशन 5) richtiger आवेषण.

आव्याधि m. *angeritzene —, angebrochene Stelle* TBr. 3,7,8,6.

आव्रस्क (?) Kauç. 47.

आशीमन vgl. वीराशीमन.

आशंसा *Ahnung* Vaṛtt. 5,6. 8.

आशंसितृ, यावन्माशंसितावन्त्यम् Bâdh. ed. Calc. 1,87.

आशय 3) *das Beispiel* Spr. 1296 zu streichen; vgl. Spr. (II) 3062. — Vgl. मद्नाशय weiter unten.

आशितिमैन् (von आशित) m. *das Sattsein* TS. 7,1,11,1.

1. आशिस् 3) Bez. *des Charakters und der Personalendungen des Precativs* Kâtantra 3,1,15. 21.

आशीर्दा vgl. oben धनाशीर्दा.

आशुशुक्षणि m. *Feuer* Hem. Jogaç. 1,7.

आशुशुक्षयम् s. u. क्षेषम्.

आश्रपण, lies श्रा st. श्री.

आश्वास्य adj. *worüber man Beruhigung haben muss* Mudr. 99.

आश्विक m. *ein Reiter zu Pferde* Pat. a. a. O. 1,170,b.

आषाढ 2) Sâmav. 9,14. dieses oder ष° 8,16.

आष्टमिक (von अष्टमी) adj. *im achten* (Adhjâja) *gelehrt* u. s. w. Pat. a. O. 7,119,a. 8,19,a.

2. आस् mit अधि 4) विवादाध्यासित Sarvadarçanas. 19,6. 48,10. 82, 18. 108,13. fg.

— उप 9) इदं प्रायमुपासिष्ये (so ed. Bomb.) MBh. 3,10580.

आसकि 1) in eig. Bed. Râja-Tar. 3,98. in übertr. Bed. Spr. (II) 12. An beiden Stellen am Ende eines adj. comp.

आसङ्ग्य adj. *anzuhängen, anzufügen:* धनुर्बन्ध Pat. a. a. O. 3,29,b.

1. आसन 1) a) über die verschiedenen Arten *des Sitzens* Hem. Jogaç. 4,123. fgg.

आसार 2) सुधासार Kathâs. 26,32. 38,125 (hier falsch zerlegt).

आसिका *Art und Weise des Sitzens:* उष्ट्रासिका आस्यते Pat. a. a. O. 3,41,a. — Vgl. मुखासिका.

आसुतिंकरिष्ठ adj. Pat. a. a. O. 6(4),44,b.

आसेक्य n. Bez. *einer Art von geschlechtlicher Schwäche* Suçr. 1,318,a.

आस्कन्दिन् 2) सुधास्यन्दास्कन्दिन् (wegen der Cäsur besser सुधास्यन्दस्कन्दिन्) Spr. (II) 5934.

आस्तार, Durgâs. zu Nir. 5,22 erklärt देवने RV. 10,43,8 durch आस्तारे. Vgl. सभास्तार.

आस्तारक m. *Rost* oder *Dreifuss* (auf welchem die Pfanne über das Feuer gesetzt wird) Baudh. 5.

आस्था 3) *Verlass auf* (loc.) Spr. (II) 7358.

आस्थेय *anzusehen als, zu halten für* (nom.) Pat. a. a. O. 1,224,a.

आस्पद 2) Bez. *des 10ten astrologischen Hauses* Varâh. Bṛh. 9,1. 4. 10,1. 25(23),6.

आस्फारकस्थान n. *der Ort, auf welchen die Würfel geschnellt werden* (स्फर्), als Erklärung von इरिण Durga zu Nir. 9,5.

आस्फोट 2) lies आस्फोट 1) a).

आस्रव 3) (Nachträge) Hem. Jogaç. 4,53. 73. fgg. 80.

आस्व Z. 1 lies ह्व st. ह्व.

आहार 2) c) चतुर्विध Hem. Jogaç. 3,79. 86. 149.

आहारिन् s. शिलाहारिन्.

आहिण्डिक (Nachträge) im Prâkrit Mṛkkh. 73,9. *Herumstreicher* Comm.

आहुतिसंप्लवम् s. u. संप्लव 3).

आहेय, मुख Spr. (II) 7350. m. = अहेरपत्यम् Pat. a. a. O. 4,56,b.

घाक्षादक, अनाक्षादक (so zu lesen mit der ed. Calc.) Rigâ-Tan. 1,329.

घाक्षारय्, lies घाक्षारयति.

3. इ 5) इत *gelangt zu:* घङ्संप्रेषम् Mâitr. P. 24,17. — intens. ईयापते (नेयापते) = गच्छति (Comm.) Prâçnop. 4,3.

— अति 8) = अभि 8) Spr. (II) 2969, v. l.

— अभि 8) *hervorgehen, entstehen aus* (°तस्) Spr. (II) 2969.

— अव, अवेहि st. अवेहि ladelt Vimâna 3,2,71.

— समव, partic. समवेत *gelangt zu:* सर्वकल्याणासंपत्तिम् Mâitr. P. 123, 9. wenn °संपत्तिसमवेत gelesen wird, dann *versehen mit.*

— आ 1) Z. 4 lies 2,33,1. 3,55,3. 5,87,3.

— उद् 2) pass. impers.: मोघुमताप्युदीषते Spr. (II) 399. — 5) *in die Höhe kommen* bildlich ebend.

— सम्युद् 5) partic. सम्युदित *in die Höhe gekommen, im Glück sich befindend* Spr. (II) 1167.

— प्रोद्, partic. प्रोद्यत् *aufgehend* so v. a. *zukünftig* Spr. (II) 4034.

— समुद् 4) उदाहरणं प्रत्युदाहरणं वाक्याध्याहार इत्येतत्समुदितं व्याख्यानम् *alles dieses zusammengenommen* Pat. a. a. O. 1,18,a. 19,a. — 5) एवं समुदिता नारी *glücklich ausgestattet* MBh. 4,617.

— सम्युप, partic. सम्युपेत *versehen mit:* न तत्सत्यं यद्छलेनाभ्युपेतम् Spr. (II) 3483.

— अपपरा *davon gehen* ṚV. 10,83,3.

— संप्रति pass. *gemeint sein* Pat. a. a. O. 1,168,b. — partic. संप्रतीत *allgemein angenommen* Spr. (II) 7532. — caus. *bewirken, dass man Etwas unter Etwas versteht,* Pat. a. a. O. 1,168,a.

— वि 1) व्यथमान und स° *nach verschiedenen Richtungen gehend* und *unbeweglich* Maitrâyp. 2,2. व्यथमान *zu Grunde gehend* Bhâg. P. 4, 24,67. वेति Kaush. Up. 3,1 wohl nur fehlerhaft für व्येति; vgl. TS. 3,1,1,2.

5. इ m. patron. (l) von 6. घ (s. oben) Pat. a. a. O. 1,172,b.

इक्षुनेत्र, lies *Wurzel des Zuckerrohrs* Râgân. 14,38 und नेत्र st. नेत्र.

इङ्गित = अभिप्राय (Mallin.) Kir. 14,2.

इडविड् (°विड् gedr.) = इडविदा Pat. a. a. O. 4,54,b.

इडादघ (und इलादघ) m. N. eines Ishṭijajana Âçv. Çr. 2,14,11.

इतर्, इतरद् (Conj.) adv. *dagegen* Spr. (II) 2639.

इतरय् (von इतर्), °यति *absprenstig machen, auf seine Seite ziehen* Mallin. zu Kir. 1,14.

1. इदम् Z. 16, zu अयौस् scheint अवौस् eine Nebenform zu sein ṚV. 6,67,11. 7,67,4. 10,132,5.

इन् mit प्रति, lies *bekräftigen.*

इन्द्रा Spr. (II) 3088.

इन्दु 2) Bez. *der Zahl Eins* (vgl. Nachträge) Sûrjas. 1,31. 34.

इन्दुत्र 1) Sûrjas. 12,31.

इन्दुराज् fehlerhaft für उडुराज्; vgl. Spr. (II) 7033.

इन्द्र 1) a) Sp. 803, Z. 3 füge 10,73,1 nach 3,66,1. 2 hinzu. Z. 21 lies VS. 38,16. Als Bez. *der Zahl vierzehn* Sûrjas. 2,33.

इन्द्रकील (Nachträge), lies *Thürriegel, Thorriegel* st. Indra's *Banner* und füge R. Gorr. 2,87,22 hinzu.

इन्द्रय्, lies *nach* Indra *verlangen.*

इन्द्रयष्टि m. N. pr. eines Schlangendämons Vishṇ. 87.

इन्द्रशत्रु vgl. Bhâs. P. 6,9,11 in Betreff der Doppelsinnigkeit.

इन्द्राभ m. *ein best. zu den Hühnerarten gezählter Vogel* Kâraka 1,27.

इषल्, vgl. Pat. a. a. O. 6,11,a.

इषिण 4) in übertr. Bed. *die Fläche, auf welche die Würfel geworfen werden,* ṚV. 10,34,1.

इषिविद्धा, lies Wise st. White.

I. 1. इष् mit प्र caus. 2) Z. 10 st. प्रेषितम् hat die ed. Bomb. richtig प्रेषितम्.

I. 3. इष् 2) Z. 20 MBh. 3,16487 (beide Ausgg.) liest मां चेच्छीवत्तमिच्छसि st. मां च u. s. w. — Z. 4 v. u. M. 12,37 ist der infin. passivisch aufzufassen; man könnte übrigens auch ज्ञातम् st. ज्ञातुम् vermuthen (vgl. u. ज्ञा).

— आ vgl. u. 1. एष् mit आ 1).

— प्रति, streiche Bed. 1) und stelle das Citat zu der folgenden.

इषु 5) (Nachträge) Sûrjas. 1,30. 42. 8,8.

इषुपुङ्खा f. = शरपुङ्खा *die Indigopflanze* Râgân. 4,73.

इषेलक so, nicht इषेलाक Pat. a. a. O. 1,235,b.

इष्टाकोत्रीय (von इष्टा कोत्राः ṚV. 8,82,33) n. N. eines Sâman Sâmavidh. Br. 2,4,3.

इह् 2) *jetzt, im Augenblick* Spr. (II) 6339.

इहशिल्प n. *ein Kunstwerk von Menschenhand* (Gegens. दैवशिल्प) Ait. Br. 6,27.

ईह् 3) Spr. (II) 7513. *erwarten* 5253.

— परा, lies प्रेष्य st. प्रेष्य.

— सम् 3) am Ende, das Beispiel MBh. 14,2301 zu streichen, da hier mit der ed. Bomb. समीक्षत zu lesen ist.

ईड् = ईर् *in Bewegung setzen, erzeugen:* यन्मिर्वा इतो वृष्टिमीट्टे (aus ईर्ते) मरुतो ऽमुतश्च्यावयन्ति Pat. a. a. O. 1,231,b. 6,11,a.

ईदृश, नेदृशा राजसत्काराः so v. a. *eben so wenig* Spr. (II) 3221.

ईर् mit प्र caus.: कालः प्रेरितः *verbracht, verlebt* Spr. (II) 6088.

— सम् caus. 1) असमीरित *nicht erregt:* Wind Spr. (II) 3179.

ईर्या in der in den Nachträgen angegebenen Bed. Hem. Jogaç. 1,26. 31. fg.

2. ईष् vgl. यतेष्.

ईश 2) c) Sûrjas. 2,17.

ईश्वर 4) b) Bez. *der Zahl elf* Sûrjas. 2,33.

ईश्वरीकर् *Jmd zu einem reichen Herrn machen* Hem. Jogaç. 2,10.

ईक्ष् mit सम्, समीक्षित n. *Wunsch* Spr. (II) 6833.

2. उ (Nachträge) Z. 3 lies क्रचूडार्चनमणिः.

1. उत् mit सम्, med. *besprengen:* समौक्षत MBh. 14,2301 nach der Lesart der ed. Bomb.

उखच्छिद्, lies *brüchig wie eine Scherbe, morsch.*

उगण soll nach Pat. a. a. O. 6,11,a = सुगण sein.

उच् Z. 4 füge 1,103,4 nach 10,33,6 hinzu.

उञ्छ 2) Sûrjas. 1,33. 44. 55. 58. 2,1. 3. fgg. 10. 12,37.

उञ्छण्ड vgl. प्रोञ्छण्ड.

उञ्छामन्यु vgl. वोञ्छामन्यव und उञ्छैमन्यु.

उच्चारिन् adj. *Töne ausstossend, schreiend* u. s. w.: गर्दभो° *wie ein Esel* Pat. a. a. O. 6,81,b.

उच्छ्वण्ड (1. उद् + शि°) adj. *mit emporgerichtetem Schweife:* Pfau Mallin. 152,8.

उच्छ्वष्टक adj. = उच्छ्वष्ट 1) b) MBh. 13,6146, wo mit der ed. Bomb. तत उच्छ्वष्टका: सर्वे zu lesen ist.

उच्छ्वष्काना f. N. pr. einer Stadt R. 2,71,12. उर्च्छ्वष्काना Gorr.

उच्छ् mit प्र *abziehen, subtrahiren* Śāṅkh. 1,36. 45. 2,22. 33. 50. fg. 3,5. 16. 19. 6,17.

उच्छ्व s. वीरोच्छ्व.

उच्छ्वन n. *das Verlassen, Meiden* Hem. Joāç. 1,29.

उच्छ्वङ्ग m. *eine best. Körnerfrucht* Śivavidh. Bh. 2,8,5.

उत्कटिका f. und उत्कटिकासन n. Bez. *einer best. Art des Sitzens* Hem. Joāç. 4,123. 131.

उत्कर्ष 2) b) सात्मोत्कर्ष dass. Spr. (II) 6736.

उत्कर्षिन् adj. *den Vorrang habend, höher stehend* Kivalo. 2,35.

उत्कोलक m. N. pr. eines Berges Divjāvad. 167.

उत्कोच *das Abwinden, Ablösen* TBa. Comm. 1,124 unten.

उत्क्रम 4) *umgekehrte Ordnung* Śāṅkh. 2,22. 3,43. 47.

उत्क्रमज्या f. *sinus versus* Śāṅkh. 2,22. 37. 38. 60. 3,35. 39.

उत्क्रोश Kāraka 1,27.

उत्क्लोद् füge bei: d. h. *das Sichregen der Flüssigkeiten, welches Uebelkeit erzeugt.* Die gewöhnliche v. l. ist उत्क्लोश und umgekehrt. Die Stelle 2,464,3 gehört zu उत्क्लोश.

उत्तमपुरुष 2) Śivavidh. Bh. 1,2,5.

1. उत्तर् 4) d) उत्तरं दा *Jmd* (loc.) *widersprechen* Spr. (II) 584.

उत्तरक (von 1. उत्तर्) adj. *aufgegangen* (beim Kochen): दधि Pāt. s. s. O. 2,232,a.

उत्तरकालम् adv. *später, nach:* तत: Pāt. s. s. O. 1,18,b. दशम्युत्तर° 9,a. संस्कारोत्तर° 10,a.

उत्तरभक्तिक adj. *auf das Essen folgend* Kāraka 1,7.

उत्तरवादिन् adj. *antwortend, mit der Antwort nicht verlegen* Śivavidh. Bh. 2,7,13.

उत्तान, उत्तानार्ध (Gegens. गम्भीरार्थ) *flach:* काव्य Spr. (II) 2086.

उत्तारण 2) भवार्णवोत्तारणयानपात्र Spr. (II) 2751.

उत्तिष्ठामा (vom desid. von 1. स्था mit उद्) f. *das Weggehenwollen vor Vollendung einer heiligen Handlung, die Absicht eine h. H. abzubrechen* Nārāmiliv. 280,6.

उत्थापन 1) a) vgl. u. वेताल 1) a).

उत्पतव्य (von 1. पद् mit उद्) n. impers. *zum Vorschein zu kommen, zu erscheinen, aufzutreten* Pāt. s. s. O. 2,313,a. 394,a.

उत्पादक 1) *productiv:* Dichter Spr. (II) 6788; vgl. die Note.

उत्पादयितृ nom. sg. *Erzeuger* Pāt. s. s. O. 4,46,a.

उत्पाद्य (Nachträge), अनुत्पाद्यत्व n. *das Nichterzeugtwerden* Tattvas. 17.

उत्पीडन n. *das von der Stelle Gedrängtwerden:* घनोत्कलानाम् Kāraka 1,12.

उत्पुंसय् (Nachtrage) wohl fehlerhaft für उत्पीसय्; vgl. पीसन.

उत्प्रेक्षा 1) मोत्प्रेक्षम् Vaṇis. 22,9.

उत्प्रेक्षावयव m. *eine best. Form der* Upamā, *eine Species der* Samāsoktī, Vikrama 4,3,21. 33.

उत्सङ्ग 1) auch *Vertiefung:* सोत्सङ्ग *vertieft* Bhāvapr. 7.

उत्सङ्गिन् 1) fuge *vertieft* hinzu.

उत्सत्ति f. *Schwund:* वर्णोत्सत्ति Pāt. s. O. 1,42,b.

उत्सर्ग 1) *Entleerung:* °ममिति Hem. Joāç. 1,34. 39. — Vgl. कापोत्सर्ग.

उत्सादक, पत्तोत्सादक Durga zu Nir. 3,20.

उत्सेध 1) Z. 2 füge Comm. zu Lāṭ. 8,5,1 nach 5,2,21 hinzu. — 2) °विस्तारतस् *nach Höhe und Breite* Kāraka 1,14.

2. उद् mit उप, partic. उपोत TS. 4,4,9,1.

— नि TBa. 3,8,2,3.

उदधीय् (von उदधि), °यति *Etwas* (acc.) *für ein Meer halten:* स्वल्पं वारि Spr. (II) 3899.

उदय m. = °ज्या Śāṅkh. 5,3. उदयासु 13,14.

उदयज्या f. *orient-sine* i. e. *sine of the point of the ecliptic on the E. horizon* Śāṅkh. 5,3.

उदर्द Çiñc. Sah. 1,7,67. सोत्सङ्गैश्च सरागैश्च कण्डूमद्भिश्च मण्डलै: । शीर्णै: श्लेष्मबकुल उदर्द: Bhāvapr. 7.

उदवसान adj. *den Schluss bildend:* कर्मन् Baudh. P. 4,7,56.

उदमन Kāṇ. 5,1,10.

उदात्त 1) °प्रतिवचस् adj. *trotzig antwortend:* परिव्रज Spr. (II) 4258.

उदाभाषण n. *das Anrufen, Auffordern* Āpast. 1,8,15.

उदासारिन् adj. Pāt. s. s. O. 3,68,a.

उदितानुवादिन् adj. *Andern nachsprechend* Ait. Br. 2,15.

उदूखल m. *Bündel von Ruthen, Besen* TBa. 3,8,4,3. उडुक्ष im Text die Ausg.

उदृच् 2) die Ableitung des Comm. wird wohl als richtig anzusehen sein. Dadurch wird auch unsere Erklärung für 1) zweifelhaft.

उद्दारचूडक m. *ein best. zu den* Pratuda *gezählter Vogel* Kāraka 1,27.

उद्दक्षिणिका f. = उद्दाक्षिणिका Comm. zu Baudh. P. 3,11,1.

उद्दाक् 3) *Aufnahme:* प्रभवति मुचिर्बिम्बोद्दाक् मणिर्न मृदां चय: Spr. (II) 6066.

उद्दार m. *das Oeffnen* so v. a. *Offenlegen, Zeigen:* दत्तोद्दारेण दर्शनं Spr. (II) 2221.

उद्दण्डित adj. *hoch aufgerichtet:* शिखण्डिता (so zu lesen) ननु मरुत्पण्डित्यमुद्दण्डितम् Z. d. d. m. G. 27,28.

उद्दीपन adj. *anfeuernd, anregend;* davon °ना f. nom. abstr. Daçar. 16,3.

उद्देश = गुणै: प्रापणम् *Beschreibung* Pāt. s. s. O. 1,335,a. = प्रत्यक्षमाख्यानम् *das ad oculos Demonstriren* ebend.; vgl. weiter unten उपदेश.

उद्देशिन् adj. *hinweisend* Vikrama 4,3,17.

उद्देश्यक am Ende eines adj. comp. so v. a. *hinweisend auf:* इदं वेदीज्वलनं पत्तोद्देश्यकम् Comm. zu R. ed. Bomb. 1,30,9.

उद्द्योत 2) रूपोद्द्योतकर *Schönheit zu Tage treten lassend* Spr. (II) 7239.

उद्धाव N. gewisser Formeln Weber, TS. 2,234, Anm.

उद्धरण 1) *das Fortnehmen, Entfernen* Vikrama 1,3,16.

उद्धान 1) b) = लम्बोदर Mān. r. 294. घागून st. उद्धान H. an. 4,277.

उद्धार 1) b) ऋणोद्धार *Tilgung einer Schuld* Spr. (II) 7487.

उद्धुर mit तृतीय. *erpicht zu* Hem. Joāç. 4,33. उद्धर die Hdschr.

उद्धंस m. so v. a. उद्धंसन 2) Kâraka 3,3. देशोद्धंस ebend. am Ende.

उद्धंसन 1) *das Bedecktwerden, Uebergezogenwerden* (des Halses) so v. a. *Heiserkeit* Kâraka 2,6. — 2) *das Uebergezogenwerden eines Landes durch eine Seuche, Epidemie:* जनपदोद्धंसन Kâraka 3,3. das darüber handelnde Kapitel heisst जनपदोद्धंसनीय ebend.

उद्धन्धन adj. (f. ई) *zum Erhängen dienend:* रज्जु R. ed. Bomb. 2,12,30.

उद्धट vgl. धोद्धट.

उद्धस m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2084 nach der Lesart der ed. Bomb.

उद्धुर्ग wohl *eine best. Krankheit* AV. 5,22,11.

उद्ध angeblich = रुद्र in der ved. Stelle शिवा उद्धस्य भेषजी Pat. a. a. O. 6,11,a. 8,36,a. कृतस्य st. उद्धस्य VS. 16,49. Vgl. Ind. St. 13,437.

उद्धङ्ग, बृहदुद्धङ्ग s. u. संयह् am Ende und u. संयाह्.

उद्धर्ग (von वृज् mit उद्) nom. ag. *Vertilger* Kausm. Up. 2,7.

उद्धर्तन adj. s. हृद्योद्धर्तन.

उद्धर्तिन् adj. तिलोद्धर्तिन् *sich einreibend mit;* s. u. तिल 1) (Nachträge) und vgl. Wilson, Sel. Works 2,206.

उद्धर्त्मन् n. *Abweg* Maitrâyaṇ. 6,20. — Vgl. उत्पथ.

उद्धरण 4) s. u. वरण 2) c).

उद्धर्षि adj. *Feuer sprühend:* Auge Çiç. 4,28.

उद्वेष्टनीय adj. s. u. वेष्ट् mit उद् caus.

उन्नति 1) धत्युन्नति *eine hohe Stellung* Spr. (II) 6098.

उन्नस Bâlar. P. 3,15,22.

उन्नाद् m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Bâlar. P. 10,61,16.

उन्नाम (von नम् mit उद्) m. *das in der Höhe Stehen:* कृतोन्नाम adj. *obenauf stehend* Spr. (II) 6361, v. l.

उन्मीलन 2) *das Sichtbarwerden des Mondes nach einer Eklipse* Sûrjas. 1,63. 4,17. 6,22.

उन्मूलनीय adj. *mit der Wurzel auszureissen* Hem. Jogaç. 4,14.

उन्मोचन (von मुच् mit उद्) n. *das Abreissen* Spr. (II) 7500.

उपकक्ष n. (sc. लोमन्) *Achselhaare* Gop. Br. 1,3,9. — Vgl. उपपक्ष.

उपकारण 3) बनुपकारण adj. Kâraka 1,29.

उपकर्तर्, die erste Stelle zu streichen, da hier धपकर्तर् gemeint ist; vgl. Spr. (II) 5623.

उपकर्षण n. *das Herbeischleppen:* दृषोप° Pat. a. a. O. 1,279,b.

उपकल्पनीय adj. *vorzubereiten, zuzurüsten:* संभारा: Kâraka 1,15. Daher der Name dieses Kapitels.

उपगीति nach P. 6,2,80.

उपचक्र zu den Vishkira gezählt Kâraka 1,27.

उपचय 1) उपचयं कर् *Jmd* (gen.) *fördern, Jmd Hilfe leisten* Spr. (II) 4405.

उपचार m. *eine conventionelle Benennung eines Gegenstandes* Pat. a. a. O. 1,43,a; vgl. 7) (auch in den Nachträgen).

उपतल्प्य m. *Auftritt, Bank* TBr. Comm. 3,612,15.

उपदातर् nom. ag. *Gewährer, Ertheiler, Verleiher:* उपदेशोपदातर् Spr. (II) 1285, v. l.

उपदोकर् (उपदा + 1. कर्) *Jmd* (dat.) *Etwas* (acc.) *darbringen, schenken, verleihen* Z. d. d. m. G. 27,94.

उपदेश = प्रत्यक्षमाप्यानम् *das ad oculos Demonstriren* Pat. a. a. O. 1,238,a. = गुणै: प्रापणम् *Beschreibung* ebend.; vgl. oben उद्देश.

उपद्रव 1) सर्व द्रव्यमुपद्रवेण संस्तम् *Gebrechen, Uebel* Spr. (II) 2250. — 3) (Nachträge) im Ritual *eine Abtheilung einer best.* Sâman-*Formel;* Beispiele bei Haug zu Ait. Br. 3,33.

उपहार s. मूपहार.

उपधान etwa *Zapfen an der* Viṇâ; am Ende eines adj. comp. f. धा MBh. 4,1164.

उपनद्धव्य (von 1. नह् mit उप) adj. *mit einem Umschlag zu versehen* Kâraka 1,14.

उपनार्य m. nach Sây. *Führer* RV. 9,91,4.

उपनिपात m. *Hinzutritt* Sarvadarçanas. 130,3. 4.

उपनिबन्धर् nom. ag. *Abfasser, Redacteur;* davon nom. abstr. °बन्धत्व (°बन्ध्यत्व gedr.) n. Kull. zu M. 1,1.

उपनिर्गम m. *Hauptstrasse:* नगरस्य H. an. 4,91; vgl. उपनिष्क्रमण 3).

उपनिषद् 1) कल्पोप° *die Lehre vom Kalpa* (sonst Kalpasthâna Buch 9) Kâraka 1,4.

उपन्यास 5) eig. *Stipulation;* vgl. Spr. (II) 4566. — 6) nom. ag. nach dem Comm. *Gras und Anderes herbeibringend* MBh. 12,3709. fg. an der ersten Stelle liest ed. Bomb. उपन्यासातु, welches als nom. act. zu fassen wäre.

उपपत vgl. उपकत.

उपपतनीय n. = उपपातक Sâmavidh. Br. 1,5,14.

उपपत्तव्य n. *Angemessenheit,* बनुप° *Unangemessenheit* Vimâna 4,2,20.

उपपातक m. Hem. Jogaç. 4,9 wohl nur fehlerhaft.

उपभोग m. *wiederholter Genuss desselben Gegenstandes* neben भोग *einmaliger Genuss* Hem. Jogaç. 3,4. 5.

उपमानोपक n. *eine best. Form der* Upamâ, *eine Species der* Saṁsṛshṭi, Vimâna 4,3,21. fg.

उपमेयोपमा f. *eine Form der* Upamâ, *bei der ein und derselbe Gegenstand ein Mal das* उपमान, *das andere Mal das* उपमेय *ist,* Vimâna 4,3,18.

उपयोक्तर् nom. ag. *derjenige welcher anwendet, Gebrauch macht* (von einer Nahrung) Kâraka 3,1.

उपयोक्तव्य, lies zu *geniessen.*

उपरम 4) *Ruhe des Gemüths:* उपरमं प्र-या Spr. (II) 1356.

उपरिकुटी f. etwa *Bodenkammer,* = खवलिन् Weber, Hâla S. 160.

उपरियान n. *das nach oben Gehen, das in den Himmel Kommen* Spr. (II) 4459.

उपरिशायिन् adj. *auf einem erhöhten Lager ruhend* Gop. Br. 1,2,7.

उपलधिप्रिय Z. 2 lies वाल° (*seinen Schweif lieb habend*) und vgl. Spr. (II) 5825.

उपलम्भ्य *zu erfassen, wahrzunehmen* VP. 1,2,23.

उपलम्भ 1) Spr. (II) 3106.

उपलोक् (उप + लोक्) etwa *Halbmetall* Verz. d. B. H. 290,20 (लोकोपलोक° zu lesen).

उपविष्टक adj. *der sich gelagert hat,* so heisst *die Leibesfrucht, die über die Zeit bleibt,* Kâraka 4,8.

उपवेशन 3) *Stuhlgang* Kâraka 8,19.

उपशमवत् (von उपशम) adj. *im Gemüth beruhigt* Spr. (II) 4143, v. l.

उपशमायन (उपशम + घयन) adj. *auf dem Wege zur Ruhe des Gemüths seiend* Bulc. P. 5,1,19.

उपशय 2) b) (vgl. auch Nachträge) lies *das Wohlbekommen, Zuträglichkeit, begünstigender Umstand* Kâraka 3,1. स्वस्य s. 4. वातोप°, पितोप° 2,7. — c) *Vorliebe:* घास्काराणाम् Kâraka 3,8. सात्म्यार्थो सुपशयः 1,11. 3,1. शिशिरोप°, घनुप° 3,8.

उपश्लोनम् Hem. Jogaç. 2,94 fehlerhaft, उपश्रुनम् passt auch nicht und verstösst ausserdem gegen das Metrum. Wir vermuthen उपस्थूणम् *an einem Pfosten.*

उपश्राधा f. *Grossthuerei:* क्रोधोपश्राघ n. copulatives Comp. Gop. Bn. 1,2,2.

उपश्लेष *unmittelbare Berührung* Pat. a. a. O. 6,33,a.

उपसंयोग ebend. 4,62,b. = उपाधि Kâs.

उपसंस्कार m. *ergänzende Behandlung* Comm. zu TBr. 2,382.

उपसंस्थान n. *etwa eine secundäre Erscheinungsform* Harîv. 11985 nach der Lesart der neueren Ausg.

उपसंहृति (Nachträge) Daçar. 1,33.

उपसंख्येय adj. *hinzuzuzählen* zu (loc.) Pat. a. a. O. 8,45,a.

उपसरज्ञ adj. ebend. 6,81,b; vgl. P. 6,2,52.

उपसर्तव्य adj. *woran man zu gehen hat, womit man sich befassen soll* Nir. 3,2.

उपसाद् Padma-P. 8,19 fehlerhaft für उपाङ्ग.

उपसिन्धु adv. *am Indus* Rîga-Tar. 1,66.

उपसेवा *häufiger Genuss* Kâraka 1,13.

उपस्तम्भ, Nahrung, Schlaf und Keuschheit sind die drei *Stützen* des Körpers Kâraka 1,11.

उपस्तरण 3) *das blosse Auflegen des* Mantra उभावग्नी उपस्तृणुत (TBr. 3,7,6,18) Comm. zu TS. 1,598. 2,719.

उपस्तरे zu streichen und in Betreff von उपस्तिर् zu vergleichen die Verbesserungen u. 1. स्तर् mit उप.

उपस्थातर् *Pfleger, Wärter* Kâraka 1,9.

उपस्थातव्य n. impers. *aufzuwarten:* नवेन नाटकेनास्माभिः Çiç. 3,13.

उपस्थापन *das Herbeiholen* in स्मृत्यनुप° so v. a. *Vernachlässigung der Tradition* Hem. Jogaç. 3,114. 116.

उपस्थापयितव्य adj. *herbeizuholen, — schaffen* R. 2,3,18.

उपस्थिति, so zu betonen nach P. 6,2,50.

उपस्थूणम् s. oben u. उपश्रुनम्.

उपस्पश् f. *Liebkosung* RV. 10,22,13.

उपस्वेदन n. *künstliche Schweisserzeugung* Kâraka 1,14.

उपस्कर्तव्य Milavim. 75,6. 7.

उपस्कारवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Daçak. 95. fgg. — Vgl. घपस्कारवर्मन्.

उपांशु 1) a) RV. 10,83,7.

उपाक्ष (उप + घक्ष *Achse*) und °क m. = विष्कम्भ am Wagen Schol. zu Lâṭj. 1,9,23.

उपाधिन् adj. *Einem zukommend* (Gegens. घपाधिन्) Pat. a. a. O. 1,223,a.

उपाराम m. = उपरम *das Aufhören, Nachlassen* Bulc. P. 3,5,2.

उपाराम m. *das Anerkennen* Gop. Bn. 1,2,5 (wohl क्रियतामिक्षोपाराम इति zu lesen).

उपावर्तितर् nom. ag. als fut. TBr. 1,6,7,3.

उपाश्य *Lehne, Stützkissen* Kâraka 1,13.

उपासक 2) Hem. Jogaç. 2,21.

उपाह्नात n. N. pr. eines Tîrtha Pat. a. a. O. 2,366,b.

उपेक्षण vgl. u. पर्यनुयोज्य in den Nachträgen.

उपेन्ध्य adj. *anzufachen, zu entflammen* Pat. a. a. O. 2,331,a.

उपोद्धारिन् adj. *dazu* (als Ergänzung u. s. w.) *ertönend, — gesprochen werdend:* उपोद्धारि पदमुपपदम् ebend. 1,302,a. b.

उपोद्की Spr. (II) 7484.

उपोद्घात 1) n. so v. a. *ein d-Prope* Kathâs. 27,79. auch 3,65, welches u. 2) steht, gehört hierher.

उपोद्बलक Pat. a. a. O. 1,221,b. 2,367,b; vgl. auch Kâs.

उपोषय्, °यति *mit Fasten zubringen* Weber, Kṛshṇaj. 227.

उपोष्य adj. *mit Fasten zuzubringen* ebend. 227. fg.

उब्ज् mit नि, न्युब्जिताः शेरते *zusammengebogen* Pat. a. a. O. 7,119, b. — caus. न्युब्जयति ebend.

उरगपव m. *ein best. Gerstenkorn als Maass* Kâlakarna 1,13.

उरस्त्र n. = उरस्त्राण *Brustharnisch* Man. n. 221.

उरु 1) Z. 18 zu lesen 1,75,18. — Z. 21. fg. das Beispiel MBn. 14, 879 zu streichen; vgl. u. 2. वरिष्ठ 1) am Ende.

उरुक्रिय vgl. Bulc. P. 3,12,2.

उर्वरित (Nachträge), भुक्तोर्वरित Pârâçar. ed. Bomb. IV & V S. 68, Z. 2.

उल 1) Gop. Bn. 1,2,5.

उल्बण, दाहोल्बण *heftig brennend* Spr. (II) 3001.

उल्बणता, घनु° *Mässigkeit, das Nichtallzuviel* Vimâna 3,2,4.

उल्लम्फन n. = लम्फ *Sprung* ÇKDn. u. d. letzten Worte.

उल्लापक etwa *ein beruhigendes Lied, — Erzählung* Kâraka 1,13.

उल्लापन (Nachträge), lies *das Liebkosen.*

उल्लेखन n. *Reizmittel* Kâraka 1,12.

उल्लेखा f. = रेखा, लेखा *Linie, Strich* H. an. 2,24.

1. उष् mit घभि s. मुष् mit घभि weiter unten.

उषस् n. *Morgenröthe* Spr. (II) 7485.

उषिज m. N. pr. eines Sohnes des Ûru VP. 1,13,7.

उषोजल n. *Thau,* pl. Kathâs. 103,212.

उष्ट्रिका 2) Pat. a. a. O. 4,10,a. पञ्चानामुष्ट्रिकाणां पूर्णो घटः 5,10,a.

उष्ण 1) a) लज्जा so v. a. *heftig* Spr. (II) 4622 (Conj.).

उष्णता vgl. u. संतपन.

उष्णीकर्, °कर्तुं पयः Spr. (II) 7396.

उष्मन् 1) MBn. ed. Bomb. an drei Stellen ऊष्मन्. Statt उष्मा MBn. 13,4061 liest die ed. Bomb. gleichfalls ऊष्मा.

उष्य von 5. वस् in मुहोष्य.

2. उस्र 1) Z. 6 lies व्यानुङ्°.

ऊरून् zu streichen, da an den Stellen ऊरू und ऊरूः zu lesen ist.

ऊनक Sûrjas. 3,49.

ऊनय्, ऊनित Sûrjas. 1,35. 39. 2,34. 62. so ist auch in den Nachträgen st. ऊनपित zu lesen.

ऊनरात्रि = ऊनरात्र (Nachträge) Sûrjas. 1,40. 50.

ऊह 1) Z. 3 lies वसिष्ठ st. वसिष्ठ.

ऊर्णय्, विभूतय ऊर्णिता: Spr. (II) 3485.

ऊर्णस्वल m. N. pr. eines Ṛshi unter dem zweiten Manu VP. 3,1, 11. Ûrṇa and Stambha Wilson.

ऊर्धपावन् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Ârbudi, Verfassers von ṚV. 10,175.

ऊर्धसु 1) Âçv. Çr. 3,10,14. °ता f. nom. abstr. Comm. An beiden Stellen fälschlich °सु und °सुता.

ऊर्धजानु adv. *oberhalb des Knies* Sâmavidh. Br. 1,5,15.

ऊर्धस्तनी adj. f. *deren Brüste in die Höhe stehen* Suçr. 1,371,18.

ऊर्मि, die sechs *Wogen* aufgezählt Spr. (II) 6470.

ऊषण vgl. षडूषण.

ऊषर, मधुरानूषरे देशे MBh. 5,5172. 5313.

ऊषराय् (von ऊषर) *einem salzhaltigen (unfruchtbaren) Boden darstellen:* यो ब्रह्मन: स्मरोत्पत्तौ मानसेनोषरायितम् (impers.) Spr. (II) 2342.

ऊष्मा f. = ऊष्मन् 1) MBh. 13,4061 nach der Lesart der ed. Bomb., उष्मा ed. Calc.

1. ऊह् mit वि vgl. व्यूह् und weiter unten 1. वह् mit वि.

— प्रतिवि 4) त्वया देवा: प्रतिव्यूहा: ṚV. 6,39,2. — Vgl. व्यूह् mit प्रति.

— सम् 1) Z. 2 lies तप: st. तपस: und füge hinzu: यदा कृणोषि नदनुं समूहसि ṚV. 8,21,14. — Vgl. समूह und समोह.

2. ऊह् 1) वाचं हूतो यथोकिषे ṚV. 8,5,3.

— धनु *erwarten* ṚV. 10,15,3.

— धभि 2) Kâtjâs. 35,40.

— व्या *empfinden* ṚV. 2,23,16.

ऋक्ति s. सुवृक्ति.

ऋतब्रिह् n. (sc. कुष्ठ) *eine Form des Aussatzes* Kâraka 8,5.

ऋचम् s. शातर्चम्.

ऋजुता f. *gerades, offenes Wesen* Hem. Jogaç. 4,92.

ऋजुत्व n. dass. ebend. 4,81.

ऋण 2) a) ऋणं कृ von Jmd (abl.) *borgen*, ऋणे दा Jmd (loc.) *borgen* Spr. (II) 7488.

ऋणाच्छेद् m. *Tilgung einer Schuld* Spr. (II) 3115.

ऋतधन Z. 1 lies N. pr. eines Rudra; ed. Bomb. liest ऋतुधन.

ऋतपर्ण Z. 2, die neuere Ausgabe liest ऋतुपर्ण.

ऋतावन् Z. 5 lies AV. 3,13,7.

ऋतु 2) als Bez. der *Zahl* sechs Sûrjas. 1,31. 37. 12,68. — 3) die Zeit wird Baudhâjana 2 auf 16 Tage vom Erscheinen der menses an gerechnet.

ऋतुसंधि Z. 2 lies Çâṅkh.

ऋतुकारिका f. N. pr. einer bösen Fee, die den Weibern *die menses benimmt*, Mârk. P. 51,43.

ऋते 1) ऋते पत: *ausgenommen dass* MBh. 14,2882.

ऋद्धि 3) Madan. 1,74. Râgân. 5,31. eine sehr seltene *Knolle* nach Baudhâjana 5.

ऋषभक *eine auf dem Himavant wachsende Knolle* Baudhâjana 5. Madan. 1,83.

ऋषभगजविक्रीडित auch *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑–, – – – –, ⏑–⏑⏑–⏑– Ind. St. 8,395.

ऋषिदेवण m. N. pr. einer Oertlichkeit Gop. Br. 1,2,8.

ऋषु Z. 4 lies विल्वविलेव.

ऋष्यशृङ्ग Z. 2 lies 3,9999. ऋष्य° ed. Bomb.

ऋष्व Z. 5 lies 1,25,9 st. 1,29,5. — Vgl. वर्ष्मन् (wie ऋषभ neben वृषभ).

ऌतक m. ein zu grammatischen Zwecken erfundenes N. pr. Pat. a. a. O. 1,27,b.

एक. seine verschiedenen Bedd. ebend. 5,58,b.

एकगु m. N. eines Agnishṭoma Gop. Br. 1,3,17.

एकच्छत्र Spr. (II) 1338.

एकाक्ष *das Alleinsein, Alleinstehen* Hem. Jogaç. 4,84. 87. fg.

एकधारक m. N. pr. eines Berges Divjâvad. 167.

एकपतीभू *nur die eine Seite einer Sache bilden:* °भूत Pat. a. a. O. 3,43,a.

2. एकभाव *sich einfach und offen benehmend gegen* (gen.) Spr. (II) 7201.

एकभोक्तिन् adj. *nur ein Mal am Tage essend* Spr. (II) 1745.

एकवर्णक (Nachträge) lies *einsilbig*. Die Cäsur ist unstatthaft, wenn die beiden Theile des Wortes *einsilbig* sind d. i. *in einem zweisilbigen Worte*.

एकविंशक n. *21-Zahl* Jâṅ. 3,224.

एकविंशति am Anf. eines comp. wie ein adj.: °यूपा: R. ed. Bomb. 1,14,25.

एकविंशत्क n. = एकविंशक n. Kâm. Nîtis. 8,33.

एकव्यवकारिक (Nachträge), wohl °व्यावकारिक zu verbessern.

एकशिला N. pr. der Stadt des Pratâparudra Prataparâd. 103,b,4.

एकसृक m. *ein best. unhaldes Thier* Âpast. 1,10,17. 11,33.

एकादशात m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Maudgalja Gop. Br. 1,1,31. — Vgl. ऐकादशात.

एकान्त 4) *Theil, Bestandtheil* Pat. a. a. O. 1,239,a. 2,223,b. 4,62,b. 89,a. Davon nom. abstr. °ता f. und °त्व n. 2,223,b.

एकान्तशील adj. *einen einsamen Ort aufsuchend* ebend. 3,12,b.

एकारामता s. u. आराम.

एकार्णव m. *ein einziges Meer, nichts als Meer* VP. 1,3,22. 4,7. °वीकृत 2,62. 4,16.

एकार्थता f. nom. abstr. zu 2. एकार्थ 2) 3) Pat. a. a. O. 2,368,a.

एत्र् mit सम् lies *beben* st. *sich erheben*.

एणीकृत adj. und n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

2. एत vgl. व्येत.

एतक (von 2. एत) adj. f. एतिका und एनिका Pat. a. a. O. 7,114,b.

1. एतद्, एतेन — एतस्मात् *deshalb — weil* Mârk. P. 14,85.

एतप्, °पति = एनीमाचष्टे Pat. a. a. O. 6(4),44,b.

एतश 2) a) Z. 2 lies 1,108,5 st. 1,103,5.

एतु s. स्वेतु.

एलावली f. *eine best. Pflanze*, = क्षिप्रा Mad. r. 102.

एवंवाद zu streichen, da एवं वादी zu trennen ist.

एवंव्रत adj. *diese Pflichten erfüllend* Sâmavidh. Br. 1,3,6.

एवंसंज्ञक adj. *so benannt* Pat. a. a. O. 1,20,a.

एवंजातीयक adj. *derartig* ebend. 1,40,a. 4,45,a.

एवमात्मक adj. (f. एवमात्मिका) *so beschaffen* ebend. 1,224,a.

2. एष vgl. noch अवरेष, स्वेष.

एषणा 4) a) (Nachträge) als समिति bei den Gaina Hem. Joga. 1,26. 34. 37.

एषितव्य (Nachträge) Pat. a. a. O. 1,56,a.

एष्य (Nachträge) ist richtig; vgl. गम्य 8) und Sâmav. 3,46. 7,3. unbestimmt ob एष्य oder ऐष्य 4,3. 9,17.

ऐकगविक adj. nur *eine Kuh habend* Pat. a. a. O. 5,52,a.

ऐकार्थ्य nom. abstr. zu 2. एकार्थ 2) 3) ebend. 2,368,a.

ऐक्य n. *Summe* Sâmav. 2,41. 5,17.

ऐडविड (°विड gedr.) metron. von इडविड् Pat. a. a. O. 4,34,a. — Vgl. Nachträge.

ऐणीकीय adj. ebend. 4,75,b.

ऐन zu streichen, die richtige Lesart ऐल hat ed. Bomb.

ऐन्द्रियक Karaka 4,1.

ऐरावतक n. *die Frucht des* Airâvata Karaka 1,27.

ऐल 1) pl. MBh. 13,2126 nach der Lesart der ed. Bomb.

ऐलबकार, lies 11,2,20.

ऐषुमत adj. (f. ई) Pat. a. a. O. 7,53,a.

ओकास्य, °स्यते denom. ebend. 3,17,b.

ओकस् 1) sg. Bez. des Landes Spr. (II) 7562 (Verbesserung für ओक).

ओघधि leuchtet Spr. (II) 3225.

ओक् etwa *Aufmerksamkeit* so v. a. *Erweisung derselben, Gefälligkeit, officium.*

ओचित्य 2) so v. a. *Erfahrung* Spr. (II) 1492.

ओच्य (von उच्च) n. *Höhe, Entfernung:* eines Planeten Comm. zu Sâmav. 12,54.

ओज्वल्य = कान्ति Vimana 3,1,22.

ओडुलोम्या f. zu ओडुलोमि Pat. a. a. O. 4,33,a (ओड°). 34,a.

ओत्क्य n. nom. abstr. von उत्क Vop. in Dhâtup. 19,46.

ओत्तरपदिक adj. *am hintern Gliede einer Zusammensetzung erscheinend* Pat. a. a. O. 1,136,b. 154,a.

ओत्तरार्धिक adj. ebend. 4,76,b.

ओत्सुक्य so v. a. *Diensteifer* Spr. (II) 3662.

ओदमेघ u. s. w.: ओदमेघ्यापाश्कात्ता ओदमेघाः । ओदमेघ्यानां संघ ओदमेघः Pat. a. a. O. 4,33,a. ओदमेघेय ebend.

ओदारिक Hem. Joga. 1,28.

ओदार्य *Freigebigkeit* Spr. (II) 1722. Kathâs. 91,7.

ओदुम्बर 1) a) पुष्पाणि *Blüthen eines Feigenbaumes* Spr. (II) 7490.

ओद्धत्य Spr. (II) 1239.

ओद्भट m. pl. *die Schüler* Udbhaṭa's Daçan. 2,56.

ओपकार्या f. = उपकार्या R. ed. Bomb. 1,13,9. 70,12.

ओपकूल adj. *am Ufer gelegen* Pat. a. a. O. 4,30,a.

ओपगवीय m. pl. *die Schüler des* Aupagavi ebend. 4,60,a.

ओपदेशिक (Nachträge) ebend. 1,33,b. 131,b.

ओपपाडुक Karaka 4,8. ओपपादक v. l.

ओपशाल adj. *an der Halle gelegen* Pat. a. a. O. 4,30,a.

ओपश्लेषिक ebend. 5,21,a. 6,21,b.

ओपाकरण (von उपाकरण) adj. *die Vorbereitung betreffend* Âpast. 1,10,2.

ओपासनिक m. = ओपासन 1) Comm. zu Âçv. Çr. 2,1,17.

ओरभ्र 1) मांस Hem. Joga. 2,43 (उरभ्र die Hdschr.).

ओरभ्रिक m. *ein Schlächter von Schafen* Vishṇ. 96.

ओर्ध्वभक्तिक adj. *nach dem Essen geschehend* u. s. w. Karaka 1,13.

ओर्म्य m. eine best. Personification Sâmavidh. Br. 1,2,5.

ओलूकीय von ओलूक Pat. a. a. O. 4,72,b.

ओषध 1) a) माल्य Verz. d. Oxf. H. 43,a, N. 2. — 2) a) द्रुमौषधम् Mâlav. P. 109,70. — b) ओषधकृते क्षार्धं मधु *als Arznei genossen* Hem. Joga. 3,39.

कंसक m. = कंस 1) Pat. a. a. O. 2,13,a.

ककुद्रुम, ed. Bomb. richtiger ककुद्द्रुम.

कङ्काल vgl. कङ्कील.

2. कद्य, कद्यया कद्या निमातव्या sprichwörtlich Pat. a. a. O. 7,54, a; vgl. die Erklärungen von Kaiy.

कद्यप्रा, so zu lesen und 8,3,22 hinzuzufügen.

कङ्कट vgl. म°.

कङ्कण 1) a) eine Jungfrau trägt nur ein कङ्कण Comm. zu Kap. 4,10.

कङ्कोल n. *Kubebe, Stielpfeffer* (nach Nigh. Pr.) Râgân. 12,82. °क n. dass. ebend.

कचुकीय (Nachträge) Z. 1 lies कञ्चुकिन् st. कचुक und vgl. Vimana 3,2,61.

कटङ्क m. ein Mannsname Pat. a. a. O. 1,59,b.

कटभङ्ग 1) Taik. 3,3,37.

कटशर्करा 1) lies: vermuthlich *Zucker aus Saccharum Sara* (शर).

कटीरक *Hüfte* Çiç. 13,34.

कटुक 1) *beissend, boshaft* Spr. (II) 6286.

कटुत्व (von कटु) n. *scharfer, beissender Geschmack* Spr. (II) 7174.

कटुम्भरा f. *eine best. Pflanze,* = रोहिणी Med. p. 74.

कट्, कट्यति *häufen* (*Anziehen der Erde um die versetzten Pflanzen*): धान्यम् Kâsik. 17,18. Mit घा dass. 17. — Prâkritisch aus कर्ष्.

कट्टन n. *das Anhäufen* Kâsik. 13,16. 20.

कणधूम m. *eine best. Kasteiung* Mârk.-P. 47. कणाः खण्डितास्तण्डुलतुषास्तज्ज्ञो धूमः Comm. zu Kâçikâ. 16,2 nach Aufrecht und Mitr.

कणक vgl. म°.

कण्ठ 1) a) आकण्ठं पा *sich bis zum Halse satt trinken* Spr. (II) 793. म° adj. *keine Stimme habend, heiser* 4913.

कण्ठोक्ति f. *ausdrückliche Erwähnung* Comm. zu Sâmav. 3,17 (S. 191, Z. 1).

कण्डीर m. *eine best. Gemüsepflanze* Karaka 1,27. = लघुकारवी *Kurbis* und = पिचण्डमूग *Phaseolus.* — Vgl. गण्डीर.

कतिक adj. = कतिभिः क्रीतम् Pat. a. a. O. 5,10,b.

कथावशेष VP. 4,24,71.

कथाशरीर adj. *dessen Person nur in der Erzählung lebt* so v. a. कथावशेष. Davon nom. abstr. °त्व n. VP. 4,24,73.

कथाशेष adj. = कथावशेष VP. 4,24,69.

1. कदू 6) b) num und nonne zu versetzen. Vgl. noch Ragh. 3,3. 6. 6,35. Mâlav. 10,4.

कदम्ब 1) f) Gobhan. 8,42. fgg.

कदर Z. 4 lies 1,4,19 st. 7,4,19.

कदा als indefin. Spr. (II) 5931 wohl fehlerhaft.

कनकचम्पक m. *eine Art* Kampaka Kâraṇḍ. 1.

कनीनक 2) in der Stelle ṚV. 10,40,9 zu lesen °नकः; gehört demnach zu 1) a).

कन्दल 2) *b)* am Ende eines adj. comp. (f. आ) Spr. (II) 6919; zugleich in der Bed. 4) (erscheint in der Regenzeit).

कन्युष vgl. कत्मष 3).

कपर्दक 2) m. Pañcat. II,106, v. l.; vgl. Spr. (II) 5823.

कपाल *Hemisphäre* Sûrjas. 4,24. 5,15. 17. 6,12. 7,9.

कपालक n. *Gefäss* Sûrjas. 13,23.

कापेलिमन् m. nom. abstr. zu कापिल 1) Cit. bei Vâmana 3,2,2.

कपोतक adj. (f. कपोतिका) *taubenfarbig, grau* Pat. a. a. O. 1,231,a.

कपोः (Nachträge) zu streichen; vgl. Z. d. d. m. G. 27,514.

1. कमल 5) *a)* als Nom. appell. *Reichthum, Glücksgüter;* sg. Spr. (II) 3284. pl. 3928.

कम्पू mit वि, °कम्पित n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

कम्बल 2) कर्णकम्बलच्छेद Hem. Jogaç. 3,110.

कयानीय adj. von कया नः (ṚV. 5,12,3); als f. Bez. dieser ṚK Sâmavidh. Br. 1,7,7. 3,8. 2,3,3. 4,5.

कयाग्नीय (Nachträge) Pat. a. a. O. 3,42,a. TBr. 2,7,11,1. — Z. 2 lies शस्यम्.

1. कर् 1) नास्य पापं चकृषः (so lesen wir) Kaush. Up. 3,1. — 8) पादौ so v. a. *reinigen* Pat. a. a. O. 1,231, b. — 16) am Ende शतकृत्वा zu streichen, da °कृत्वो zu lesen ist. — 27) vgl. सविभागेन कृत्वा *dadurch dass man eine Theilung veranstaltet* MBh. 4,982.

— अप 2) in den Nachträgen am Ende hinzuzufügen Spr. (II) 923.

— अभि desid.: यः पश्चात्पूर्वकार्याणि कर्मीण्यभिचिकीर्षति Spr. (II) 5012.

— प्र 8) am Ende hinzuzufügen: यदत्तां कन्यां प्रकृत्य Sâmavidh. Br. 1,8,4.

— विप्र MBh. 5,1235 fehlerhaft für यधि —, wie die ed. Bomb. liest.

— वि, विकृत *unvollendet* ṚV. 2,38,6. 1) (Nachträge) am Ende ist st. *entstellt, widerlich* zu lesen: m. *ein Abtrünniger;* vgl. Spr. (II) 2478.

— सम् 2) *corrigiren* in mathem. Sinne Sûrjas. 3,10. 11,7.

2. कर् Z. 1 lies चकर्म (st. चकर्मे) ṚV. 4,39,2.

3. कर् mit व्या, प्रमोदसलिलव्याकीर्णनेत्राम्बुज *getrübt* Spr. (II) 928.

— उद् 2) घृणोत्कीर्णनुदारु Spr. (II) 4626.

— प्र 1) Z. 12. fg. in der Stelle aus Vaṇis. wohl einfach *hingestreut.*

— वि, विकीर्ण n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

करटिन् Spr. (II) 3737.

2. करण 3) *a)* *Berechnung* Sûrjas. 3,11. — *d)* Sp. 107, Z. 3 und 2 von unten. Dieses und *i)* gehören zusammen; die Bed. ist *hervorbringendes Organ;* vgl. Whitney zu AV. Paipp. 1,18. — *f)* धर्म° pl. *Urkunden des Gesetzes* (bei den Gaina) Spr. (II) 4518. — *m)* Sûrjas. 2,68. fg. 14,13.

करद Spr. (II) 2949.

करपुट m. *Koffer, ein Kasten mit einem Deckel* MBh. 14, 1928. — Vgl. auch u. पुट 1).

करभ 1) *b)* *die Mittelhand* beim Vergleich mit dem Schenkel gemeint Sin. D. 100,18. — *c)* करभी H. an. 2,337. Med. m. 30. — *d)* करि° = करभ *ein junger Elephant* Vâmana 2,2,17.

करमरी (vgl. Nachträge) vgl. कवरकी.

करवत् (von 4. कर्) adj. *Tribut zahlend* Mârk. P. 53,11.

करस्थालिन् Z. 2 lies *Topf* st. *Kessel.*

कराम m. = कारामक; s. u. वराम.

करालित (von कराल) adj. *grausenhaft gemacht* Hem. Jogaç. 4,63.

करुणामय (von करुणा) adj. *voller Mitleid:* राम R. im ÇKDa. u. विप्रप्रिय.

कर्क, कर्कात als Beiw. der Eule Spr. (II) 5899, v. l.

कर्करेटु Râja-Tar. 2,168.

कर्कश 1) °भाषण Spr. (II) 3788.

कर्कोटी f. *eine best. Pflanze mit bitterer Frucht* Kâlakârma 2,137.5,226.

1. कर्ण 1) Sp. 122, Z. 5 lies कर्णमार्गम्. — 7) *Durchmesser* Sûrjas. 1, 59. 12,54. अर्ध° *Halbmesser* 2,61. 13,5. कर्णार्ध dass. 3,41.

कर्णाकर्क (so) m. N. pr. eines Vaiçja Kâç. in Manâm. lith. Ausg. 2,405,b.

कर्णताल, °लता Bez. *der Ohrlappen des Elephanten* Hem. Jogaç. 4,30.

कर्णस्रोतस् und °स्रोतस् (Nachträge) vgl. u. स्रोतस् am Ende.

कर्णाञ्जलि, lies *gespitzte Ohren* und füge Spr. (II) 4027 hinzu.

कर्तरी 1) Suçr. 1,27,12. वक्रा छेद्याय कर्तरी Spr. (II) 6811. सुण° 7488.

कर्त्री, हृदयं °संयुक्तम् (Conj.) Spr. (II) 4882.

कर्पूर 1) दत्तपात्रः कथं न स्यादतिकर्पूरभक्षणात् Spr. (II) 6921.

कर्पूरविलास m. N. pr. eines Färbers Hit. 81,11.

कर्मन् 1) so v. a. *Berechnung* Sûrjas. 2,27. 42. fg. 43. 48. 5,9. 11,11.

कर्मान्त Spr. (II) 4238 (lies *bei der Arbeit*). In der Bed. *Ende der Handlungen* Sâmavidh. Br. 1,3,7.

कार्मिन्, राज्ञ° *ein von einem Fürsten beschäftigter Arbeiter* Pat. a. a. O. 1,287,a.

1. कर्ष् mit आ 1) अनाकृष्ट *nicht angezogen,* — *behäufelt:* धान्य Kâçmîr. 17,17.

— उप 1) *zu sich schleppen, entführen:* स्त्रियः R. ed. Bomb. 1,16,7.

— प्रति, अप्रतिकृष्ट (v. l. °कृत्त) von einem Gewande Âpast. 1,30,12.

कर्षू vgl. हस्ति°.

कर्षूस्वेद m. *Schweisserzeugung durch Anfüllung einer unter der Lagerstatt gezogenen Furche mit glühendem Kohlen* Kâraka 1,14.

2. कल् mit सम्, संकलित = सनिबद्ध *unverknüpft* Cit. bei Vâmana 1,3,30.

3. कल् mit उद् Pat. a. a. O. 1,228,a. b.

— उप *heimtreiben* (Kühe) Sâmavidh. Br. 3,3,1.

— प्र *hinaustreiben* (auf die Weide) ebend.

कल adj. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

कलङ्किन् eig. und übertr. Spr. (II) 7247.

कलञ्ज 3) *ein best. Gewicht,* = 10 Rûpaka = 30 Guñjâ Jukti-kalpataru im ÇKDa. u. रूपक.

कलत्रता f. nom. abstr. zu कलत्र 1) Ratnâv. 103,7.

कलन n. oder कलना f. *das Treiben, Antreiben:* कालः कलनात्मकः Sûrjas. 1,10; vgl. Bhâg. 10,30. Bale. P. 3,29,28.

कलम्ब n. vermuthlich *Blüthenrispe:* ताल° Kâraka 1,27. प्रलम्ब

(vgl. 2) c) v. l.

कलशि 1) *ein Gefäss zum Buttermachen* Çiç. 11,8.

कला 5) Sâhas. 1,28. 61. 67. 2,49. 4,19. 7,3. 9,10. 14,11.

कलाप 1) a) Z. 7 lies 16,65 st. 11,65. — Vgl. दृशना°.

कलापक (Nachträge) 3) b) Comm. zu Kiṣkiṇ. 1,13. fehlerhaft का° nach Hem. Joṇaç. 3,134.

कलिका 7) = कला 5) Sâhas. 2,46.

कलिकारिका f. *eine best. Pflanze*, = हिरण्यपुष्पी Comm. zu Suça. 1,368,20.

कलिङ्गक m. eg. *das Land der* Kaliṅga Spr. (II) 7562.

कल्प् mit प्र 2) *am Platze sein, seine Richtigkeit haben* Pat. a. a. O. 1,70,a. 171,b. 172,a. प्रकल्प *am Platze seiend, seine Richtigkeit habend* 189,b. — caus. *wie es sich gehört eintreten —, — an die Stelle treten lassen* von (gen.): प्रथमाया: वष्टेम् ebend. 95,a. 165,b.

कल्प 2) b) vgl. Hem. Joṇaç. 3,153.

कल्पक nom. ag. *Zurüster* in ऋ°.

कल्पन् n. = अपरिसमाप्तं कर्म Pat. a. a. O. 1,290,a.

कल्पय 3) vgl. कन्यय.

कल्याणिन् 1) *dem es wohlergeht:* कल्याणिनी भवतु मौक्तिकमुक्ति-माला Spr. (II) 7330.

कल्लोल 1) Hem. Joṇaç. 4,58.

कवच 3) genauer *ein best. Theil eines Zauberspruchs, der Panzer des als Fürsten gedachten Z.;* vgl. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,91.

कवर 6) lies *eine best. Pflanze.*

कवरको vgl. कामरी.

कवलन (von कवलय) n. *das Hinunterschlingen, Verspeisen* Kuvalay. 128,b.

कव्य 3) a) Z. 2 lies कव्यता.

कश्मल 1) *Unrath, Schmutz:* स्वदेहकश्मलं पूति Spr. (II) 1761. — 2) adj. (f. ई) Spr. (II) 5445.

कश्यपतुङ्ग m. N. pr. einer Oertlichkeit Goe. Bs. 1,2,7.

कष् Spr. (II) 5789.

कषण 2) स्कन्ध° Hem. Joṇaç. 3,142.

कषाय 2) c) bei den Ǵaina Hem. Joṇaç. 4,6. 77.

कष्ट 1) Z. 12. fg. °स्थान Hit. 128. — 2) Spr. (II) 6050. कष्टात्कष्ट-तरम् *das grösste Uebel* ebend. कष्टात्कष्टम् dass. 5694. कष्टात् *mit Mühe und Noth* 5226, v. l.

1. कस् mit वि 3) *sich verbreiten:* एकमपि सतां सुकृतं विकसति तैलं यथा जले न्यस्तम् Spr. (II) 1366.

3. कस् in der Umgangssprache = कर्ष् Pat. a. a. O. 1,234,b.

काकति lies N. pr. der Familiengottheit der Fürsten von Ekaçilâ, einer Form der Durgâ, und vgl. Pischel, de Gramm. prâcr. 38.

काकतीय lies *ein Verehrer der* Kâkati.

काकतुण्डक m. *ein best. Wasservogel* Karaka 1,27.

काकपेलव n. Pat. a. a. O. 4,69,b.

काकलक 1) n. (nach Kaiyaṭa) ebend. 1,69,a.

काकाण्डोला f. *eine dem Carpopogon pruriens ähnliche Hülsenfrucht:* काकाण्डोलात्मगुप्तानां माषवत्फलमादिशेत् Karaka 1,27. — Vgl. कोलशिम्बी.

काकुलीमृग m. *ein best. zu den भूमिशय gezählter Thier* Karaka 1,27.

काङ्कायन m. N. pr. eines alten Arztes (वाल्हीकभिषज्) Karaka 1,12.4,6.

काङ्कील n. *eine Art Stahl* ÇKDn. u. वज्र.

काङ्क्ष mit प्र vgl. प्रकाङ्क्ष.

काङ्क्षिन्, काल° so v. a. *ungeduldig wartend* Spr. (II) 1707.

कान्तनेषुधि m. N. pr. eines Fürsten Harav. 1683.

काम्बि 1) ed. Bomb. liest कांम्बिच्छ्त्रांशेव st. काम्बोच्छ्त्रांशेव.

काम्बोपुर (s. u. काम्बो), davon °क adj. Pat. a. a. O. 4,74,b.

काटव (von कटु) n. *Schärfe:* वाक्काटव Vikrama 2,1,20.

काटवेम, nach Pischel काटपवेम.

काणिकेर m. metron. Pat. a. a. O. 4,53,b.

काण्डमायन vgl. कान्दम (Nachträge).

काण्ड्यायनीय m. pl. = काण्ड्यायनस्य छात्रा: Pat. a. a. O. 4,59,b.

कात्य (Nachträge) ebend. 3,64,a.

कानिष्ठिनेर् TBa. 2,1,9,1.

कान्त 3) b) = कान्तलोह *Magnet* Kathâsaritsâgara 2,70. °पात्र Vâsuv. 228.

कापिञ्जलि m. patron. von कपिञ्जल Pat. a. a. O. 4,43,a.

कापोत 1) a) *von der Taube kommend:* रस *Taubenbrühe* ebend. 4,37,b.

कापोति m. patron. ebend. 4,43,a.

कामगवी f. = कामदुघ Hem. Joṇaç. 2,114.

कामदेव 2) Hem. Joṇaç. 3,137.

कामातुर adj. *liebeskrank;* m. N. pr. eines Mannes Pañcat. 181,3.4.

कामावसायिता s. यत्र°.

कामिन् 1) कामिनी *Weib* überh. Spr. (II) 3749.

कायोत्सर्ग m. Bez. *einer best. Art des Sitzens* Hem. Joṇaç. 1,42. 4,123. 132. Çatr. 14,31. 305.

1. कारण 1) a) am Ende eines adj. comp. f. ई Spr. (II) 511.

कारतन्त्रिका und °की Pat. a. a. O. 4,72,b. 74,a.

कारवतीर adj. von कारव-तीर ebend.

कारवी 1) lies *eine best. Pflanze*, = हिङ्गुपत्री.

कारस्कर 1) न विना मूलेन कारस्कर: Spr. (II) 3570.

कारित 2) Bez. *des Characters der 10ten Klasse, der Causativa und Denominativa* (ई) Kâtantra 3,2,9. fgg. 26.

कारु pl. als N. von Ṛshi Goe. Bs. 1,3,17.

कारुक, पञ्चकारुकी f. *ein Verein von fünf Handarbeitern* Pat. a. a. O. 1,120,b. gemeint sind nach dem Comm. कुलाल, कर्मार, वर्धकि, नापित und रजक.

कारुण्य Hem. Joṇaç. 4,115. 119.

कौरोती f. N. pr. eines Flusses oder einer Oertlichkeit Çat. Br. 3,5,2,13.

कार्णाखरकि (so) Pat. a. a. O. 2,405,b.

कार्त्तिक 3) (Nachträge) Sâhas. 14,17.

कार्त्तिककुण्ड m. N. pr. eines Arztes Comm. zu Suça.

कार्त्तिकिक adj. *im Monat* Kârttika *stattfindend:* नक्षत्रम् Vikrama 5,2,51.

कार्त्तिकीय adj. dass. ebend.

कार्त्तिकेयपुर n. N. pr. einer *Stadt* Dharm. 5,22.

कार्पण्य 1) *Armuth* Spr. (II) 1723. Geiz 6093.

कार्णण 2) Hem. Jogaç. 1,3.

कार्मुक 2) *Bogen* in der Geometrie Śûrjas. 2,62. 3,38. 4,24.

कार्यिन् 2) Pat. a. a. O. 6,70,b. 72,a. 90,a.

कार्षापण 1) पुराकल्प एतदासीत्षोडश माषाः कार्षापणं षोडश पलाश्च माषसंज्ञः ebend. 1,225,a.

2. काल 1) कालेन von *Zeit zu Zeit, dann und wann* (Gegens पदे पदे) Spr. (II) 6900. *zu spät* 6007.

कालक 2) *a*) hierher wohl das erste कालक in कालका येषां ते कालकाः Pat. a. a. O. 6,58,b. — *c*) N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,32.

कालकवन N. pr. eines Berges (nach Kâś.) Pat. a. a. O. 2,397,b.

कालखण्ड, °खण्डादिमीमांसानि Buhvapr. 5.

कालभाग m. *Zeitgrad* Śûrjas. 9,2.

कालवृतीय m. N. pr. eines Ṛshi Harîv. 9570.

कालसूकरिका f. N. pr. eines Frauenzimmers Hem. Jogaç. 2,30.

कालक्षार (Nachträge) *Zeitgewinn* Kavjâd. 31,75. 77. 32,10.

कालांश m. = कालभाग *Zeitgrad* Śûrjas. 9,3. 10.

कालायक s. oben u. कलायक.

कालायसूपिक adj. von कालाय-सूप Pat. a. a. O. 5,6,b.

1. कालिक 2) *i*) *k*) *das Weibchen vom Vogel* षड्डारक (vgl. कालका) ebend. 6,91,b.

कालिकार्य m. N. pr. eines Mannes Hem. Jogaç. 2,60.

काव्यकर्तृ m. *Dichter* Spr. (II) 2287.

काशकृत्स्न, काशकृत्स्नेन प्रोक्ता मीमांसा काशकृत्स्नी । तामधीते काशकृत्स्ना ब्राह्मणी Pat. a. a. O. 4,16,b. 49,b. 87,b.

काशिक 1) *aus Kâśi kommend:* पट ebend. 5,60,a.

काशिकोसलीय adj. von काशि + कोसल ebend. 4,29,a.

काशेरुपक्षिक adj. von कशेरु-पक्ष ebend. 5,5,b.

काश्मीरिका f. *eine Prinzessin der* Kaçmîra Râǵa-Tar. 6,234.

काष्ठशक् adj. Pat. a. a. O. 8,34,b. 35,a.

कास्तीर n. N. pr. eines Dorfes der Bâhîka; davon कास्तीरिका und °की ebend. 4,72,b.

काक्ल adj. *unanständig:* काक्लमुक्ता Sâmavidh. Br. 1,5,5. *unanständige Worte im Munde führend;* davon nom. abstr. °त्व n. Hem. Jogaç. 2,33.

किंराज m. = कस्य राज्ञा Pat. a. a. O. 5,79,a.

किंवत्त् adj. *was habend? womit versehen?* ebend. 1,149,b.

किंविभाग adj. (f. या) *wie eingetheilt?* Śûrjas. 12,2.

किंवृत्त n. *eine Form des Pronomens* क (किम्) P. 3,3,6. 144. 8,1,48. — Vgl. पदृत्त.

किंस्तुघ्न (Nachträge) n. Śûrjas. 2,67.

किंकरीय् (von किंकर), °यति *für einen Diener halten:* स्वामिनम् Hem. Jogaç. 3,16.

किंचित्कार *Etwas thuend so v. a. Etwas zu sagen habend, bedeutsam* Pat. a. a. O. 1,190,a. घ° *wobei Nichts zu machen ist:* पूतत्वमिदमकिंचित्कारं च Vaǵr. 44,16.

किंठिक n. (?): शक्ति° Pat. a. a. O. 2,412,b.

किम् 1) *c*) *i*) Z. 5 lies इव st. इति.

किमन्तर adj. (f. या) *wie weit von einander abstehend?* Śûrjas. 12,7.

किमाकार adj. (f. या) *von welcher Gestalt?* Śûrjas. 12,2.

किमाश्रय adj. (f. या) *worauf ruhend?* Śûrjas. 12,2.

किमुत्सेध adj. (f. या) *wie hoch?* Śûrjas. 12,7.

किंप्रमाण adj. (Nachträge) (f. या) Śûrjas. 12,2.

किंमात्र adj. (f. या) *von welchem Umfange?* Śûrjas. 12,7.

कियत् 2) Z. 9 lies मत्ति st. मत्तिः.

किराट m. bei Utpala oft als Umschreibung von वणिज् *Kaufmann:* in dieser Bed. wohl Râǵa-Tar. 8,132.

कीर्तय् mit समनु s. समनुकीर्तन.

3. कु 1) *die Erde* Śûrjas. 1,39. 53. 12,82. als Bez. *der Zahl Eins* 1,39.

कुक्कुट् interj. vom *Gekrähe des Hahns* Pat. a. a. O. 1,249,b.

कुगृह् m. pl. *eine schlechte Hausfrau* Spr. (II) 1784 (Conj.).

कुच् mit घा, घाकुञ्चित *geringelt:* केशाः Spr. (II) 5404 (Conj.).

— सम् 1) त्यागाय संकुचति दुर्ललितं मनो मे so v. a. *verschliesst sich nicht gegen, lässt nicht ab* von Z. d. d. m. G. 27,73. — caus. med. *verschliessen* so v. a. *vorenthalten:* कलामिन्दुः कां दाता धारो धाराधरो यदि । संकोचयिष्यते Spr. (II) 1576.

कुचर 1) *a*) lies *umherschweifend* und füge bei TBa. 3,8,2,3.

कुचकरा f. N. pr. einer bösen Fee, die den Weibern *die Brüste fortnimmt.* Mârk. P. 51,102. fg.

कुचिकर्ण m. N. pr. eines Mannes Hem. Jogaç. 2,111.

कुज 1) *b*) *Mars* Śûrjas. 1,39. fg. 69. 2,36. 42. 56. 7,13. 9,2. 12,87.

कुजन्मन् m. *Selave* Spr. (II) 6041.

कुञ्या f. = तितिञ्या (Nachträge) Golâdh. 7,1. 46.

कुञ्जर 1) (dieses hinzuzufügen) *a*) als Bez. *der Zahl acht* Śûrjas. 2, 19. 24. 12,86.

2. कुट्, Dudâtas. 93,13 ist wohl जुठति (कु° die Hdschr.) zu lesen.

कुटि 3) lies *Gemach* st. *Becken* und füge Kâdaṃb. 1,14 hinzu. — Vgl. घवक्रयकुटी oben.

कुटिलत n. *Abweichung von* (geht im comp. voran): इतिवृत्त° Vimâna 1,3,11.

कुट्ट (Nachträge), शिला° Hem. Jogaç. 3,104.

कुट्ल, स्तन° Kâdaṃb. 130 fehlerhaft für °कुडल *Knospe;* vgl. स्तनकुडल u. कुडाल 2).

कुड्य 1) Hem. Jogaç. 1,29.

कुड्यलेप n. *Tüncher* Pat. a. a. O. 3,62,b.

कुणारवाडव (so richtiger) ebend. 3,68,a.

कुण्ड 3) कुण्डे कुण्डे नवं पयः Spr. (II) 4897.

कुण्डनदी f. N. pr. eines Flusses Harîv. 9315 nach der Lesart der neueren Ausg. st. लुण्ठनदी der älteren.

कुण्डल 1) श्रवण° Vimâna 2,2,14.

कुण्डलिका f. *ein best. Backwerk* Madan. 11,88.

कुतपसोद्भुत = कुतपवासाः सोद्भुतः Pat. a. a. O. 2,346,b.

कुतस् 3) या कुतः *bis wohin?* ebend. 3,51,a. 6,86,a. Z. 2 ist कुतो गतिः zu lesen.

कुत्स 1) Z. 3 lies 6,26,3 st. 6,23,3.

कुदशा f. *eine schlimme Lage* Spr. (II) 5798 (Conj.).

कुनक्षिन् 1) vgl. Weber, Prâtiśâkhja 99. fg.

कुनरेश्वर m. *ein schlechter Fürst* Spr. (II) 2287.

कुन्थ्, कुन्थित n. als eine Bed. von स्तनन Mbh. 8. 145.

कुन्थन n. desgl. H. an. 3,436.

कुबुद्धि f. *eine falsche Ansicht* Spr. (II) 7082.

कुबेरदत्त m. N. pr. eines Bundesgenossen der Götter im Kampfe mit den Daitja Kathâs. 48,18. 24.

कुबेरहृदय oder °हृत्य Bez. *einer best. Hymne* Varâh. Bṛh. S. 48,71.

कुमत n. *eine falsche Lehre* Spr. (II) 2451.

कुमारशिरस् m. mit dem Bein. Bharadvâga N. pr. eines Arztes Karaka 4,6.

कुम्भ 2) *b*) कुम्भीधान्यन्यायेन, कुम्भीधान्यः श्रोत्रिय इत्युच्यते । यस्य कुम्भ्यामेव धान्यं स कुम्भीधान्यः । यस्य पुनः कुम्भ्यां चान्यत्र च धान्यं नासौ कुम्भीधान्यः Pat. a. a. O. 1,238,a.

कुरङ्गक 1) Spr. (II) 3367.

कुरचक, so (nicht कुरवक) die Bomb. Ausgg.

कुरवाळ m. *ein best. zu den* Vishkira *gezählter Vogel* Sṛṣṭi 1,201, 2. Vâsn. 1,6,45.

कुरीर, क्रीते सोमे कुरीरं निर्मुञ्चति Vaitân. 13.

कुरु 1) °वर्ष Sûrjas. 12,40. कुरौ = कुरुवर्षे 70.

कुरुवक, कुरबक MBh. 3,11589 in der ed. Bomb.

कुर्कुरीय, °यति denom. von कुर्कुर Pat. a. a. O. 8,42,a.

कुलगिरि Spr. (II) 2451.

कुलचित n. Bez. *einer best. Kampfart* Harîv. 15978. विकुचित die neuere Ausg.

कुलदेवता (vgl. Nachträge) Spr. (II) 4100. Pischel, de Gramm. prâcr. 38,1 v. u.

कुलप m. *ein* Râkshasa Nîlak. zu MBh. 1,6450.

कुलिङ्गक Karaka 1,27.

3. कुल्य 1) Harîv. 2098 nach Nîlak.

कुवस्त्र n. *ein schlechtes Kleid* Spr. (II) 1844.

कुवेग Spr. (II) 2287.

कुव्यापार m. *eine verpönte Beschäftigung* Hem. Jogaç. 3,84.

कुशलवाच् adj. *beredt* Spr. (II) 2542.

कुशल्य m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,347 nach der Lesart der ed. Bomb., मुकुट ed. Calc.

कुशस्तम्ब 1) lies *Büschel* st. *Haufen*.

कुशिक 1) *a*) ein Sohn des Ishiratha Sây. zu RV. 3,31.

कुष् 1) नासिकां न कुष्णीयात् Karaka 1,8. — Bei P. vielleicht *wägen*, mit घनु *nachwägen*, mit घव *abwägen*; vgl. Kern in seiner Uebersetzung von Varâh. Bṛh. S. 128, N. 2.

— घभिनिस् *drücken, kneten, zwicken*: das leblose Neugeborene Karaka 4,8.

कुषवा etwa N. eines himmlischen Stromes.

कुसुमस्तबक, so zu lesen.

कुसूल m. = कन्दु *eine eiserne Pfanne* Pat. a. a. O. 1,102,*b*. 231,*a*.

1. कुसृति Âpast. 1,31,23. Spr. (II) 3797.

कुस्थान n. *ein elender, armseliger Ort* Spr. (II) 3255.

2. कुह् (Nachträge) Z. 2, Sarvadarçanas. 31,1 ist इमास्तु देव्यः zu lesen; vgl. Âgastjasâsvanâmakâṇḍa, Bomb. 1868, S. 176.

कुहू 3) °कूजित Spr. (II) 2028.

1. कूट 9) füge *Fussangel* hinzu.

कूटतन् adj. Pat. a. a. O. 7,76,*a*.

कूटलेख्य n. *ein falsches Schriftstück* Spr. (II) 1848.

कूटसाक्ष्य (so zu lesen) n. *ein falsches Zeugniss* Hem. Jogaç. 2,54.

कूदो, lies *ein best. Geräth, der Harke, dem Rechen ähnlich*.

कूपक 2) *c*) *ein winziger Brunnen* Spr. (II) 7422.

कूर्च vgl. दीर्घ° weiter unten.

कूर्चता f. nom. abstr. von कूर्च *Bart* Spr. (II) 1161.

कूर्चल (Nachträge), streiche das Wort vielleicht.

कूर्म 1) °पति trägt die Erde Spr. (II) 5576.

कृकर 1) Sâmavidh. Br. 2,6,14.

कृच्छ्रातिकृच्छ्र 2) Sâmavidh. Br. 1,2,8.

कृत 2) *f*) als Bez. *der Zahl vier* (vgl. Nachträge) Sûrjas. 1,24. 43. 12. 33. — *g*) ebend. 1,2. 16. 18. fg. 23. 47.

कृतनाशन adj. = कृतनाशक *undankbar* Spr. (II) 7530.

कृतमालक m. = कृतमाल 1) *b*) H. an. 3,231. Med. g. 85.

कृतयुग Sûrjas. 1,17. 46. 57.

कृतवय, so zu schreiben st. °वेश.

कृतरुस्त, °वत् adv. *auf eine geschickte Weise* Mâlav. P. 124,17.

कृतान्त so v. a. *Angelegenheit, Sache, Fall*: लौकिकेषु वैदिकेषु च कृतान्तेषु Pat. a. a. O. 1,13,*a*. 45,*a*.

2. कृति 5) Bez. *der Zahl zwanzig* (vgl. Nachträge) Sûrjas. 3,9. — 6) *Quadrat* (vgl. Nachträge) ebend. 3,3. 16. 4,22. 8,5.

कृतीसुत m. *Sohn der* Kṛti, metron. Rukiparvan's MBh. 7,8177.

कृते, भेषजकृते ज्ञार्धं मधु *als Arsenei* Hem. Jogaç. 3,39.

कृत्रिम 1) मित्र, यरि, उदासीन Mit. 1,52,*b*.

कृपालुता f. *Mitleid* Spr. (II) 7265; vgl. N.

कृश 2) Sâṁkṛtjâjana, Unterredner bei Karaka 1,12.

कृशक adj. *schmächtig*: °शरीर adj.: Löwe Spr. (II) 7567.

कृषि, pl. Spr. (II) 2413.

कृषिसंग्रह m. Titel einer dem Parâçara zugeschriebenen Schrift über *den Ackerbau*, gedruckt Calcutta 1862.

कृष्णवेल्लूर zu streichen.

कृष्णशिला f. pl. *die schwarzen Felsen*, N. pr. einer Oertlichkeit Gor. Bh. 1,2,7.

कृष्णात्रेय als Arzt Karaka 8,24. 28.

केकारक adj. = केकर *schielend* Spr. (II) 6618.

केतन 6) = शरीर (Comm.) *Leib, Körper* Bhâg. P. 4,24,67.

केतवता f. N. pr. eines Dorfes Pat. a. a. O. 2,397,*a*.

केतवेदस् oder *die Absicht durchschauend* oder *der Merkzeichen kundig* (von Indra).

केतुमाल 3) Sûrjas. 12,39. 52. 70.

केदार 1) genauer *ein zum Zweck der Berieselung in erhöhten Betten (zwischen denen das Wasser läuft) angelegtes Feld*. °सेतु s. u. सेतु 2) *b*). — 7) N. pr. eines Fürsten; vgl. u. वृन्द 7) *b*) und ÇKDa. u. वृन्दावन.

केमद्रुम = χενοδρομος nach Herm. Jacobi.

केलिकदम्ब m. *eine* Kadamba-*Art*; s. u. अडभू und सत्कदम्ब.

केलित n. = क्रीडित *Spiel, Scherz:* कलिकेलितानि Spr. (II) 2743. 7053.

केलूट n. *ein best. Gemüse* Kâraka 1, 27. Madan. 7, 79.

केशकस्त *Haarmasse* und *das Haar als Hand* Çiç. 8, 27.

केशात्त 2) verhält sich in Betreff der Bedeutung zu केश wie वनात्त zu वन.

केसराल (von केसर; anders Vimâna) adj. *reich an Staubfäden:* शिलींध्र Vimâna 5, 2, 34.

केसरिन् m. *ein best. Wasservogel* Kâraka 1, 27.

कैकिरात adj. zu किकिरात 4) Ratnâv. 6, 5.

कैमर्थक्य n. = कैमर्थ्य Pat. a. a. O. 3, 39, a. 81, b. 6 (4), 23, b.

कैमर्थ्य (Nachträge) ebend. 1, 269, b.

कैमायनि m. patron. von किंमय ebend. 4, 51, a.

कैरात m. *ein best. zu den* Pramada *gezählter* Vogel Kâraka 1, 27.

कैवर्तिका Z. 2 lies रज्जिणी.

कैवल्य 1) b) *Ausschliesslichkeit* Vimâna 3, 1, 1.

कोकवक m. pl. Lesart der ed. Bomb. des MBh. st कोकारक.

कोकमुख adj. (f. आ) *ein Wolfsgesicht habend:* Durgâ MBh. 6, 800.

कोकारक s. oben कोकवक.

कोकिल 1) weiss als Wundererscheinung Hariv. 7673. 8369.

कोकिलादेवी N. pr. einer Göttin A Catal. of Skt Mss. in priv. libr. of the north-west prov. 1, 302.

कोटि 3) घनकोटिस्थ *an einem der beiden Enden des Reichthums stehend* so v. a. *über alle Maassen reich* oder *bettelarm* Spr. (II) 5700. — 4) ebend.

कोटिवेधिन् m. *eine best. Pflanze* (neben सहस्रवेधिन्) Kâlakâkra 5, 225.

कोलक vgl. कङ्कोल.

कोविदत्व n. nom. abstr. von कोविद; am Ende eines comp. Daçak. 16, 19.

कोष्ण m. = कन्दु *eine eiserne Pfanne* Pat. a. a. O. 1, 202, b. 231, a.

कोष्ठक 1) *Vorrathskammer:* खड्गार°, शस्त्र°, सलिल° Kâraka 1, 14.

कौकिल m. metron. von कोकिला Pat. a. a. O. 4, 55, a.

कौक्कुटीवर्क् n. N. pr. eines Dorfes der Bâhika; davon °क adj. ebend. 4, 74, b.

कौमुदगन्ध्या f. patron. ebend. 6, 14, a.

कौमोद m. pl. N. einer Schule: उद्गात्कौमोदपैप्पलादम् ebend. 2, 297, a. — Vgl. मोद und Ind. St. 13, 435.

कौम्भकारेय Pat. a. a. O. 4, 17, b. 26, b.

कौम्भ्य adj. *in einem Topf befindlich:* घृत Sâmavidh. Br. 2, 2, 2. 8, 4.

कौर्वत adj. von कुर्वत् Pat. a. a. O. 3, 79, b.

कौलिक 2) c) N. zu Spr. (II) 5323.

कौलीन m. pl. = कौलीनेर्यूनम्छात्रा: Pat. a. a. O. 4, 42, b.

कौलीनि m. = कुलीनस्यापत्यम् ebend.

कौवल ebend. 4, 56, a.

कौशाम्बेय 1) Gop. Br. 1, 4, 24.

1. कौशिक 3) ein N. Indra's Hem. Jogaç. 1, 2. fährt zur Hölle 2, 61.

कौशिल m. Hypokoristikon von कौशिक Vimâna 5, 2, 62.

कौसुरुविन्द m. patron. Gop. Br. 1, 4, 24. कौसुरुविन्द gedr.

क्राउन n. *das Untertauchen* Schol. zu Kâtj. Ça. 5, 5, 21. — Vgl. कुङ्, कुङ्, कुङ्.

क्रतुघ्न m. N. pr. eines Rudra Bhâg. P. ed. Bomb. 3, 12, 13. शतघ्न Burnouf.

क्रतून् RV. 10, 64, 2.

क्रम् mit अति 3) das erste Beispiel = R. ed. Bomb. 1, 10, 8. — caus. 2) *überspringen, übergehen, auslassen* Kâtantra 1, 1, 22.

— अभ्यति 2) Spr. (II) 3287.

— निस्, निष्क्रात्त *hervorgegangen* so v. a. *abstammend von* (abl.) R. ed. Bomb. 1, 6, 24.

— सम् 4) अयस्कान्तमय: संक्रामति *sich hinbewegen zu* Pat. a. a. O. 3, 13, a.

— उपसम् *übergehen in* (acc.): द्वितीयमर्थमुपसंक्रात्तम् ebend. 2, 373, b.

क्रम m. Bez. *derjenigen Form der* Upamâ, *in welcher die einzelnen Bilder sich der Reihe nach entsprechen,* Vimâna 4, 3, 17.

क्रमक्या (Nachträge) Sâmâs. 2, 33. 60.

क्रमण 2) a) RV. 8, 70, 2. *Schritt* 1, 155, 5.

क्रमयोग Z. 3 lies 164 st. 64.

क्रम्य zu streichen und सक्रम्य zu vergleichen.

क्रात्ति 3) Sâmâs. 1, 62. 2, 38. 58. 60. 62. fg.

क्रात्तिज्ञा Sâmâs. 2, 61. 3, 22. 26. fg. 40. 11, 9.

क्रियातिपत्ति f. Bez. *des Charakters und der Personalendungen des Conditionalis* Kâtantra 3, 1, 38; vgl. P. 3, 3, 139.

1. क्री mit आ *erkaufen:* आक्रीयते भुवि: श्रिय: Spr. (II) 7421.

3. क्री, सम्क्री gehört zu 2. क्री.

क्रीड् mit सम् letzte Zeile lies 3, 21 st. 1, 21 und vgl. Pat. a. a. O. 1, 248, a.

क्रुप् partic. 2) *geschmäht* Spr. (II) 6170. In अनुपक्रुतक्रुष्ट sind die partice. wohl als nomm. act. zu fassen: *der Nichts von Schlägen und Schmähungen weiss.* — In Verbindung mit स्वर् so v. a. *laut* Sâmavidh. Br. 1, 1, 14. °तम s.

क्रोड m. metron. von क्रुङ्क Pat. a. a. O. 4, 55, a.

क्रोष्ट adj. von क्रोष्टृ ebend. 109, a.

क्लिद्, क्लिद्यते योनय: स्त्रीणाम् Spr. (II) 7144. — caus.: वनगजमद-क्लेदितमम्भ: *besudelt* Spr. (II) 4644.

क्षय्, पितरं क्षयत् Spr. (II) 4092.

क्षास्थ adj. *wo befindlich?* Pat. a. a. O. 1, 39, b.

क्षत्रदेव m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Çaikhandi MBh. 7, 955.

क्षत्रभृत् m. = क्षत्रिय R. Gorr. 2, 95, 21.

क्षत् mit वि, विक्षत Aṣâ. 11, 1 nicht *verwundet,* sondern n. *Wunde,* da mit MBh. 3, 12274 संवृत्तशरविक्षतम् zu lesen ist.

क्षपण und °क s. oben व्रत°.

क्षपाचर m. *ein* Râkshasa: मन:° Hem. Jogaç. 4, 35.

क्षपारमण m. *der Gatte der Nacht* d. i. *der Mond:* °शेखर m. Bez. Çiva's Râja-Tar. 3, 269.

क्षपार्ध *Mitternacht* Sâmâs. 1, 66.

क्षर् mit अव vgl. रुद् mit अव.

क्षा f. nom. क्षाम् könnte *Gluth* bedeuten RV. 10, 22, 14.

क्षात्र 2) MBh. 3, 5097 hat die ed. Bomb. क्षत्र.

क्षारय् *fliessen machen* (caus. zu क्षर्): मूत्रपुरीषे Vaitân. 12.

3. (so ist Sp. 344, Z. 27 st. 2 zu lesen) क्षि caus. partic. क्षपित *dürf-*

dirt Śāṅkh. 1,51.

तितिक्ष 4) (Nachträge) Śāṅkh. 3,48. 12,42. fg. 47. 13,12. fgg.

1. तिप् 7) तितेोत्तरं वचः so v. a. *eine Rede, auf die man nicht zu antworten vermag*, Spr. (II) 6063. — 9) कालं तिपति पण्डितः so v. a. *wartet ruhig die Zeit ab* Spr. (II) 7496.

— प्र 2) *hinzufügen, addiren* Śāṅkh. 1,61. 11,12.

— वि 1) *trennen* Śāṅkh. 7,16. *cause to deviate in latitude* 1,68. fg. 2,6. fgg. 8,12.

तिप्रकाम adj. *der schnell zu Etwas gelangen will* Sāmavidh. Br. 1,2,4.

तीणत्व (von तीण) n. *das Hingeschwundensein:* चन्द्रः तीणत्वमालम्ब्यते Spr. (II) 4078.

तीर्विक adj. = तीर्वेण तरति Pat. a. a. O. 8,30,a.

तीराम (तीर + राम) m. *in Milch gekochter Reis* Spr. (II) 3814.

तुद्, partic. तुण्ण 3) ण्यतुण्णो विधिः *ungewohnt, ungewöhnlich* Z. d. d. m. G. 27,51. — 4) *multiplicirt* Śāṅkh. 2,49.

— वि, स्त्रीवाक्याङ्कुशविद्धुण्ण *angespornt durch* Spr. (II) 2343.

तेत्रमाधम् verbessert u. माघम्.

तेत्रांश m. Śāṅkh. 9,16; vgl. Uebersetzung nebst Note.

तेमकृत् Āpast. 2,25,13.

तेमयुक्तम्, der Comm. in der ed. Bomb. 1,14,10 erklärt तेम durch विघ्नराहित्य oder विघ्नराहित्य; युक्त wird übergangen.

तेमवृद्धि m. pl. N. pr. eines Kriegergeschlechts; ihre Weiber heissen तत्तेमस्थम् Pat. a. a. O. 6,92,b.

तेत्र n. *Grundbesitz, Feldwesen* RV. 8,60,12. — Vgl. u. साधम्.

तेत्रपत्य n. *Herrschaft, Besitz* RV. 1,112,13.

तोत्तव्य adj. *zu zerstampfen, — zertreten* Pat. a. a. O. 2,337,a.

तोभक adj. *in Bewegung versetzend* VP. 1,2,31.

तौद्रक und तौद्रव्य Pat. a. a. O. 4,60,b.

त्विट्, त्विण adj. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* ebend. 1,20,a.

2. त्व 1) *a)* fuge bei *Loch, Ausgang* und RV. 4,11,2, wo es verstanden werden kann: *öffne einen Ausgang* (den frommen Gedanken) oder *öffne den Mund* (den Lobsingenden). Am Ende 5,32,1 zu lesen. — *f)* Śāṅkh. 1,29. 31. fg.

त्वचरत्व n. nom. abstr. wohl zu त्वचर 1) Hem. Joḍaç. 3,74.

त्वटत्वटाय् überhaupt wohl *viel Lärm machen;* vgl. त्वनत्वनाय्, त्वलत्वलाय् und Spr. (II) 6882.

त्वट्टिका f. *Fleischverkäuferin* Kālakārma 3,122.

त्वट्टीय्, °यति denom. von त्वट्टा Pat. a. a. O. 1,266,b.

त्वण्ड kann im comp. vor- oder nachgehen ebend. 2,272,a. 1) *a)* vom *nicht vollen* Monde Spr. (II) 2040. — 3) *a)* Spr. (II) 2334.

त्वण्डक 1) m. *Theil* Śāṅkh. 2,16.

त्वण्डकार m. *Verfertiger von* त्वण्ड *genanntem Zucker* B. Goa. 2,90,16.

त्वण्डय् 3) भर्तुराज्ञा न त्वण्डिता *der Befehl des Herrn ward nicht verletzt* Spr. (II) 4042.

— आ *zerstückeln* Citat bei Vāmana 4,1,10.

त्वण्डर *ein best. Backwerk* Bhāvapr. 3.

त्वण्डसंस्थापक s. u. संस्थापक 2).

त्वण्डिक 2) Karaka 1,27. — 5) pl. N. pr. eines Volkes Pat. a. a. O. 3,75,b.

त्वत्योता f. N. pr. einer Göttin Kālakārma 4,94.

त्वनत्वनाय्, °यते = त्वटत्वटाय्, त्वलत्वलाय् Spr. (II) 147 (vgl. die Note).

त्वनित्र 1) auch f. या B. ed. Bomb. 1,40,27.

त्वर् 4) त्वरीवात्मत्व sprichwörtlich MBh. 5,4587.

त्वलत्वलाय् s. oben त्वटत्वटाय्.

त्वलीकर् vgl. क्विलीकर्.

त्वल्, त्वलित *welk, schlaff:* Brüste Bhāvapr. 7.

त्ववत्त् adj. von त्व Pat. a. a. O. 4,69,b.

त्वाद् uneig.: नरः सविधमस्त्रीभिः त्वाद्यमानोऽपि कृष्यति Spr. (II) 3398. — desid. चिक्वादिषति (hergestellt von Wilhelm) *essen wollen:* मांसम् Hem. Joḍaç. 3,18.

त्वान (Nachträge) Z. 1 lies सद्भावेन st. सभावेन.

त्वानिष्क n. *Fleischbrühe mit fein zerriebenem Fleisch und Gewürz* (वेसवार) *vermischt* Madan. 11,103. 123 (auch त्वानिष्ट).

त्वारिका (Nachträge) vgl. पञ्चपलीमांस Kathās. 61,286. Das Fragezeichen demnach zu streichen.

त्विङ्ग s. त्विङ्ग.

त्विट् Z. 1 streiche (TS. त्विष्ट्). स्व in unsern Hdschrr. wohl verschrieben für क्व oder ष्व.

— परि, कस्य न परित्विद्यते चेतः Spr. (II) 5281.

त्विलीकर् 1) कामाद्या यतित्विलीकृताः so v. a. *aufgegeben* Naish. 17,37.

त्विलीकार (Conj.) m. s. Spr. (II) 3064.

त्वुड्डाक adj. (f. त्वुड्डीका) *klein, minder* bei Karaka in den Kapitelüberschriften त्वुड्डाकचतुष्पाद् 1,9 (neben मक्षा°) und त्वुड्डीका (neben मक्षती) गर्भावक्रान्तिः. prākritisch aus तुण्डक.

त्वुरुत्वुराय् v. l. zu घुरघुराय् Karaka 8,6.

त्वेद 2) *schleimige Masse* (*der Embryo im ersten Monat*) Karaka 4,4.

त्वेदक 2) MBh. 6,799.

त्वेदन (?) n. Hem. Joḍaç. 3,102.

त्वेटिताल, Mān. k. 215 wird वैतालिक (aber nicht in der Bed. *Barde*) durch त्वेटिताल, H. an. 4,35 durch त्वडुताल (पडुताल?) erklärt. Es könnte *ein best. Tact* gemeint sein.

त्वेद m. *Gottheit:* त्वेदात्स्त्रीषु प्रवृत्तिर्भवति। समानश्च त्वेदविगमो गम्यायां वागम्यायां च Pat. a. a. O. 1,15,a. — 2) Z. 2 lies कोशमचु°.

त्वेल् etwa *erscheinen, vorkommen:* मक्षिका न खलु त्वेलति त्वे लतिका यथा Spr. (II) 717.

त्वेल (?), त्वे त्वेलवन्मणाप्यत्र साक्षत्वं सिद्धिमेष्यति Einl. zu Kaṇ. 3.

ख्या mit घन्वा *aufzählen, herzählen* Pat. a. a. O. 1,10,a. 154,b.

— सम् 2) *abschätzen:* न कार्षापणैः सं. स. यत्नं संख्यातुं शक्यम् Spr. (II) 3509.

ख्याति 2) m. N. pr. eines Sohnes des Ūru von der Āgneyī Hariv. 73 (Lesart der neueren Ausg.). VP. 1,13,7. स्वाति v. l.

गगनरोमन्थ (Nachträge), गगनरोमन्थायित n. genauer *das dem* गगनरोमन्थ *Aehnlichsein.*

गच्छ 2) als Bez. *der Zahl acht* Śāṅkh. 2,25. 27. 35. 8,3.

गजमद m. = कस्तिमद Rājān. 6,250.

गणनी m. = गणनायक 1) *c)* Spr. (II) 6133 (Conj.).

गणय् mit सम् vgl. संगणना.

गणउद्वर्ह H. an. 3,226. Med. p. 68.

गणडाम्भन् m. = गणडशैल 1) H. an. 4,232.

गणिडका (Nachträge) 2) Z. 8 lies करेणुर्हस्ती. Das Citat am Ende ist aus ṚV. 2,30,8.

गणडोपल m. = गणडशैल 1) Med. j. 130.

गति 13) *Auffassung, das Verstehen* Pat. a. a. O. 1,166,b. 167,a. प्रकर्ष° 136,a. 4,91,b. 6,100,a. 8,11,a. 52,b.

गत्वर *sich zu Etwas* (dat.) *anschickend* Spr. (II) 4459.

2. गद् mit प्र, °गद्य Pat. a. a. O. 6(4),14,a (vgl. Corrigg.).

गद्गदता f. *Gestammel* Ratnâv. 93,5.

गधा f. *ein best. Theil des Lastwagens* TS. Comm. 2,507.

गध्य Z. 2 lies 6,26,2 st. 6,26,1. 2 und vgl. u. वाङ्गन्ध्य.

गन्तव्य 7) *zu verstehen, aufzufassen* Pat. a. a. O. 1,71,a. 171,b.

गन्धन n. als Bed. von 2. वा *Gerüche aushauchen* Dhâtup. 24,42.

गन्धफली Z. d. d. m. G. 27,81.

गन्धयुक्ति (Nachträge), सु° im Comm. zu Bâlar. P. 10,45,36.

गन्धहस्तिन्, von einem wirksamen Antidoton wird gesagt: गन्ध इव तद्वन्विषगदानिहन्त्यगदो गन्धहस्त्येषः Kâraka 8,21. अप्रतिहतप्रभावः स्मृतो महागन्धहस्तीति ebend.

गन्धिक N. pr. einer Gegend: गौर्यगन्धिकम् (सौ°) Pat. a. a. O. 3,397,b.

गन्धोपल (so zu lesen) m. *Schwefel* Med. bh. 23.

1. गम् mit व्यति *gemeinsam passiren:* व्यतिगम्यते यामाः Pat. a. a. O. 1,247,a.

— घा; partic. घगत *durch Berechnung herausgekommen, berechnet* Sûrjas. 1,62. 2,58. 6,17. — caus. 2) lies *Etwas von Jmd* (abl.) *lernen.*

— उपा, उपागत *der sich in Jmdes Schutz begeben hat* Spr. (II) 6019, v. l.

— उद् caus. *aufgehen lassen:* उज्जयिन्याः प्रस्थितो माक्षिप्यत्यां सूर्यमुद्गमयति so v. a. *gelangt mit Sonnenaufgang nach* Mâh. Pat. a. a. O. 3,28,a.

— उप, उपगत *der sich in Jmdes Schutz begeben hat* Spr. (II) 6019.

— नि (Nachträge) 3) Z. 6 MBh. 13,2604 नियच्छति richtig; vgl. u. यम् mit नि 3). — caus. *erschliessen* (vgl. Nachträge) Pat. a. a. O. 8,40,b.

— विनि caus. s. विनिगमक.

— विनिस्, partic. विनिर्गत *herauskommend, hervortretend* Sûrjas. 3, 5. 12,34. 13,4.

— सम् 1) Z. 14. fg. Die Stelle N. 12,20 zu streichen, da hier संगत्या (von संगति) gemeint ist; auch MBh. 13,456 liest die ed. Bomb. richtig संगत्या. — desid. *zusammenkommen wollen:* संजिगंसते वत्सो मात्रा Pat. a. a. O. 6(4),8,a. *gelangen wollen:* स्वर्गं लोकं संजिगांसतू ved. ebend.

गयस्काय = °स्फायन ebend. 6,28,b.

गयिन् m. N. pr. eines Commentators des Suçruta.

1. गर् mit वि ṚV. 6,35,3. Es ist mit Aufrecht (Z. d. d. m. G. 25, 236. fg.) वृणीषे st. गृणीषे zu vermuthen.

2. गर् mit समुद्, समुद्गीर्ण als Bed. von समुद्गत H. an. 4,128.

3. गर् caus. रात्रिं जागर्यत्त घासते so v. a. zu *einer schlaflosen machend* TBr. 3,8,4,2.

गरलाय *zu Gift werden* Spr. (II) 7543.

गर्गभार्गविका f. *eine Heirath zwischen Nachkommen Garga's und Bhrigu's* Pat. a. a. O. 2,409,a. 4,41,b.

गर्ज् *stechen* von einer Schlange Spr. (II) 7525.

— परि von einem bösen Weibe und einer Hündin Spr. (II) 5388.

गर्जर nicht *Daucus*, sondern *eine Grasart* Râgân. 8,132. — Vgl. गार्जर.

गर्दभ् (nom. गर्धव्, nom. sg. von गर्दभय् Pat. a. a. O. 8,36,b.

गर्दभपुष्प so v. a. खरपुष्प Comm. zu Suçr. 1,41,10.

गर्दभय्, °यति denom. von गर्दभ Pat. a. a. O. 8,36,b.

गर्दभि, an der ersten Stelle liest ed. Bomb. गार्दभि, an der zweiten रुयगर्दभि. Z. 2 ist 1149 st. 1149 zu lesen.

गर्भ 2) इन्दीवर° *Knospe* Spr. (II) 3543.

गर्भयोषा ist mit रुक्मस्य zu verbinden: *schwanger gehend mit Gold* d. i. *Gold führend.*

गर्भिन् Z. 11. fgg. गर्भिणीव्याकरण und गर्भिणया व्याकृतिः *Auseinandersetzung —, detaillirte Beschreibung der Schwangeren.*

गर्मुत् vgl. गर्मूटी und गर्मोटिका.

गर्मूटी f. *eine best. Körnerfrucht* Kâraka 1,27. v. l. घर्मूटी.

गर्ह् mit नि, mit dat. आदाय निगर्हते Pat. a. a. O. 1,284,b.

1. गल् mit निस् caus. partic. निर्गालित *wovon man die Flüssigkeit hat abträufeln lassen* Bhâvapr. 5.

गवात 1) b) ein Bruder Çakuni's MBh. 7,6944 nach der Lesart der ed. Bomb.; vgl. u. विभु 2) d).

गवीधुमत् n. N. pr. einer Stadt: गवीधुमतः सांकाश्यं चत्वारि योजनानि Pat. a. a. O. 2,388,a.

गाङ्ग (Nachträge), zur 2ten Stelle vgl. Spr. (II) 414.

गाङ्गामालिक (so zu lesen) adj. von गङ्गा + मल् Pat. a. a. O. 3,5,b.

गाढ 4) गाढे गार्ह्यस्य वर्तनम् so v. a. *durchaus erforderlich, unumgänglich* Hem. Jogaç. 1,31.

1. गातु 3) auch f. ṚV. 1,136,2. 5,32,10.

गार्धवम् adj. *dem Gesang zustehend* ṚV. 8,2,33.

गाधप्रतिष्ठा f. bildliche Bez. *gewisser Theile des Rituals* Çat. Br. 12, 2,2,9. Gop. Br. 1,5,2.

गाहड 3) a) Spr. (II) 257.

गार्जर n. *Daucus Carota, Möhre* Râgân. 7,24. — Vgl. गर्जर.

गार्दभि (von गर्दभ) m. N. pr. s. oben u. गर्दभि.

गार्ह्य Hem. Jogaç. 1,31.

गार्ध्य Pat. a. a. O. 4,88,a.

गालन n. (?) in पृष्ठ° Hem. Jogaç. 3,110.

गावी f. eine dialektische Form für गो *Kuh* Pat. a. a. O. 1,10,b; vgl. Z. f. vgl. Spr. 21,238. fg.

गाह् mit अव *aufgehen in* (acc.) Pat. a. a. O. 1,155,a. b.

— अभ्यव caus. *schwemmen:* ein Ross TBr. Comm. 3,576.

— प्रति, अमित्रवाहिनीं वीराः प्रतिगाहन्ति MBh. 12,2724 nach der Lesart der ed. Bomb.

गिरिधातु 1) sg. R. 2,96,19. — Vgl. शैलधातु.

गिरिवर्तिका f. *eine Wachtelart* Kâraka 1,27.

गिलोड्य auch Kâraka 1,27. nach Kakkadatta *die Knolle einer kleinen Nymphaea.* Hier und Suçr. 1,131,1 die v. l. मङ्गलोड्य und घङ्ग°.

गुण 1) b) Z. 10 संभावनागुण ist *die in Ehrenerweisung bestehende löb-*

liche Eigenschaft; vgl. Spr. (II) 7050. Bei den Gaina drei गुणव्रत Hem. Jogaç. 2, 1. 3, 1. 4. 73. — Ueber die verschiedenen Bedd. des Wortes s. Pat. a. a. O. 3, 28, a.

गुणय् mit सम् *multiplicirem:* संगुणय Śāṅkh. 4, 13. 11, 14.

गुणवत्त् adj. *mit einer Schnur* — und zugleich *mit guten Eigenschaften versehen* Spr. (II) 4011. 7247.

गुणाय् *zu einem Vorzug werden* Spr. (II) 7518.

गुणिन् 1) *c*) doppelsinnig (vgl. Nachträge) auch Spr. (II) 3160. 3885. — *e*) Guṇa (*die erste Vocalsteigerung*) *erfordernd* Kâtantra 3, 5, 8 (im Comm. letzte Zeile ist सगुणान्यपि zu lesen). 6, 34. 4, 1, 9.

गुणी adv. mit यत् *sich Jmd* (gen.) *zu Willen fügen* Śāṅkhj. Br. 2, 6, 7. mit भू dass. 5, 2. 6. 3, 7, 3 (°भूत).

गुण्डक 1) Kâç. 9, 1.

गुप्ति 2) (Nachträge), °त्रय Hem. Jogaç. 1, 33. fg. 4, 83. मनो° 1, 26 (zu lesen मनोगुप्त्ये°). 40. वाग्गुप्ति 41. काय° 42.

गुरुकर् *Jmd* (acc.) *zu seinem Lehrer machen* Hem. Jogaç. 3, 25.

गुर्वर्थ (गुरु + अर्थ) m. *der für den Lehrer bestimmte Lohn* MBh. 1, 758. 14, 1645; vgl. गुरोरर्थ: 1669. गुर्वर्थम् = गुरोरिदम् Pat. a. a. O. 2, 333, a.

1. गुल् Sp. 772, Z. 9 v. u. lies सुगूढमपि st. सुगुप्तमपि.

गुल्फक als Bez. *der Zahl elf* Śāṅkh. 13, 1.

गृध 2) Z. 9 गृधा निलीयसे, wie wir vermuthet hatten, ed. Bomb.

गृधवक्त्रा f. N. pr. einer Göttin Kâlikâpur. 3, 134.

गृहचर्या (Conj.) f. *Besorgung des Hauses* Spr. (II) 7203.

गृहबधु (Nachträge) auch Mân. k. 154. — Vgl. गेहनकुल weiter unten.

गृह्याग्नया (nach गृह्यावयक्तिणो) nach गृह्याग्निम् zu stellen.

गेहनकुल m. *Moschusratte* H. an. 3, 94. — Vgl. गृहबधु.

गेहीय् (von गेह), °ति *Etwas* (acc.) *für ein Haus halten* Spr. (II) 3899.

गो 24) (Nachträge) Śāṅkh. 1, 12. 2, 36. 3, 44. wegen *der neun Erden.*

गोडिम्ब, so H. an. 3, 35 und Mân. k. 17 st. गोडुम्ब 1).

गोणिकापुत्र (Nachträge) Pat. a. a. O. 1, 220, b.

गोतम N. pr. und zugleich *der grösste Ochs* (vgl. गोतर् unten) Spr. (II) 4875. Die Stelle MBh. 13, 4490 (am Ende des Artikels) lautet in der ed. Bomb.: गोदमो दमतो ऽघमो ऽदमस्ते स° | विद्धि u. s. w. mit Weglassung von गोभिस्तमो u. s. w. Nîlak. kennt auch unsere Lesart.

गोतर् m. *ein besserer Stier,* f. त्रा *eine bessere Kuh* Pat. a. a. O. 3, 60, a. — Vgl. गोतम oben.

गोता f. eine dialektische Form für गो *Kuh* Pat. a. a. O. 1, 10, b.

गोत्र 1) *l*) lies *Wahrscheinlichen* st. *Zukünftigen.*

गोदोहिका f. Bez. *einer best. Art der Sitzens (die Stellung beim Melken)* Hem. Jogaç. 4, 123. 131.

गोध m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 349 nach der Lesart der ed. Bomb., सोध ed. Calc.

गोधावती f. *eine best. Pflanze,* = वटपत्री Bhâvapr. im ÇKDa. u. d. letzten Worte.

गोनन्द Râga-Tar. 3, 327 in beiden Ausgg. fehlerhaft für गोनर्द.

गोनर्द 2) *a*) Karaka 1, 27.

गोपति *der Mond* Spr. (II) 1662.

गोपापुत्र m. *ein best. zu den* Pratuda *gerechneter Vogel* Karaka 1, 27.

गोपोतालिका f. im Apabhraṁça so v. a. गो *Kuh* Pat. a. a. O. 1, 10, b.

गोभाज् adj. *ein Rind verdienend* ṚV. 10, 97, 5.

गोमत्य् °त्यते = गोमानिवाचरति Pat. a. a. O. 1, 369, a. 7, 71, a.

गोरस *Kuhmilch* Hem. Jogaç. 3, 7.

गोल 1) *Erdkugel* Śāṅkh. 8, 12. 12, 22. 24. 52. 55. 62. 13, 3. 17. fg. 21. *Hemisphäre* 3, 24. 31. 13, 5.

गोलिका f. *Kügelchen:* गो° Śârîrîkam. Br. 3, 4, 3.

गोवपुष, lies गौवपुस् adj. *als Kuh gestaltet.*

गोविन्द् Z. 1, bei Kâtj. schon संज्ञा, nicht adj.: vgl. Pat. a. a. O. 3, 61, b.

गोड 1) *d*) sg. Spr. (II) 7362.

गोतमवन n. N. pr. eines heiligen Ortes TBr. Comm. 3, 364.

गोतमार्धिक adj. Pat. a. a. O. 4, 76, b.

गोनर्द m. N. pr. eines Autors Mallin. zu Kumâras. 7, 93 bei Stenzler: गोनर्द (richtig) Verz. d. Oxf. H. 113, b, 20.

गोमय (von गोमय) adj. von *Kuhmist kommend:* भस्मन् Pat. a. a. O. 4, 87, a.

गोमायन Z. 1 lies 144 st. 114.

गोलालपिक Pat. a. a. O. 4, 67, a. °लालपिक gedr.

गोलिमक adj. ebend. 4, 73, b.

गुमुष्टि fehlerhaft für मु°.

1. ग्रथ् mit घनु, partic. *verknotet, fest:* वातानुग्रथितवर्चस् Karaka 8, 17. — वि, partic. 2) विग्रथितमुपवेश्यते Karaka 8, 17.

ग्रन्थिक wohl *Erzähler, Rhapsode* Pat. a. a. O. 1, 383, a. 3, 38, a.

ग्रन्थिवञ्चक m. *eine Art Stahl* ÇKDa. u. वञ्च.

ग्रभ् (ग्रक्), die monströse Form गृह्णीयामि MBh. 1, 3109 in beiden Ausgg., die v. l. hat aber गृह्णीयामिममात्मजम्. ग्रगृहीताम् 2. du. aor. II. ed. Bomb. 1, 4, 4. *bestimmen, berechnen* Śāṅkh. 14, 12. 19. so v. a. ग्रक् mit घनु *hegen, pflegen* Bhâg. P. 2, 9, 26.

— समनु vgl. समनुग्राह्य.

— उप *aufheben:* पाणिभ्याम् Spr. (II) 7038 (Conj.).

— परि 7) das letzte Beispiel zu streichen; hier bedeutet परिगृह्य so v. a. ohne. — 14) (Nachträge) Z. 3 lies Gobh. st. Schol. Dieser erklärt सत्येन durch समोघतया.

— प्रति 5) Z. 5 lies TS. 7, 2, 10, 2 st. 2, 10, 2.

— वि 5) Z. 7. fg. die Stelle Pârâśar. 1, 231 zu streichen; vgl. Spr. (II) 2249.

— समिसम् *an sich ziehen* ṚV. 10, 44, 1.

1. ग्रस् am Ende, ग्रस्त adj. und n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1, 20, a.

ग्रक् 2) *c*) ε) ebend. 7, 58, a. *b.*

ग्रक्षणावत् adj. *ausdrücklich erwähnt,* — *genannt* ebend. 4, 2, a. 12, a.

ग्रक्षीतर् 2) *empfangend* —, *erhaltend von* (abl.) Spr. (II) 7517.

ग्रामकूटक m. etwa *Dorfschulze* Spr. (II) 2287. 5762.

ग्राम्य 1) *d*) ग्रग्राम्यत्व n. = उदारता *Urbanität* Vimâna 3, 2, 12.

ग्राम 3) *amount of obscuration* Śāṅkh. 4, 20. 22. 5, 13. 6, 17. — 4) *Eklipse* Śāṅkh. 4, 11. 6, 13. *die erste Berührung mit dem verfinsterten Himmelskörper* 4, 16. 5, 14. 6, 6. 7. 20.

ग्राहक m. *der verfinsternde Himmelskörper* Śāṅkh. 4, 12. 22. 6, 2. 11. 16. fgg. 21.

ग्राह्य m. *der verfinsterte Himmelskörper* Śāṅkh. 4, 11. fg. 22. 25. 6, 3.

7. 11. 17. 19. 21.

ग्लानीय partic. fut. pass. von ग्ला Pat. a. a. O. 6,23,c.

ग्लाव Gop. Br. 1,1,31.

घट् mit सम् (Nachträge), intens. auch Mudr. ST. 3,192,21.

घटजानुक m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 2,108 nach der Lesart der ed. Bomb., वरजानुक ed. Calc.

घटन 4) *das Verfertigen:* शकटानाम् Hem. Jogaç. 3,102.

घटिका 2) *b*) Hem. Jogaç. 3,63. *der 60te Theil eines siderischen Tages* Sûrjas. 3,46. 8,8.

घट् mit परिवि s. परिविघट्टन.

— सम् caus. 1) संघट्टित so v. a. *geknetet* (घनपद) Spr. (II) 6345, v. l.

घट्टकुटीप्रभाताय् (Nachträge) Z. 2. 3 lies *sich mit aller Gewalt Eingang verschaffen* st. *mehr oder weniger wahrnehmbar sein.*

घण्ट 2) *a*) Spr. (II) 2158.

घन 1) 2) *Hammer* Spr. (II) 4074. — II) 2) *a*) und *b*) pl. von Menschen so v. a. *Pack* und zugleich *Wolken* Spr. (II) 6919. — *b*) Ind. Antiq. 1874, S. 133.

घनकपोवत्त् s. u. वनकपोवत्त्.

घनत्व = घनक *Talk* Kâlakârma 3,203.

घनीकर् (घन + 1. कर्) *dick machen* s. u. लप्सिका.

घनोदय (घन *Wolke* + उ°) m. *Beginn der Regenzeit* Spr. (II) 2214.

1. घर् mit वि, partic. विघृत *beträufelt* ṚV. 3,54,6.

घर्मूटी s. oben गर्मूटी.

घर्म्येष्ठ, lies °ष्ठा und कर्म्येष्ठा.

घर्ष्, घृष्यमाण (v. l. घर्ष्यमाण caus.) *gerieben werdend:* घसिः शाणया Spr. (II) 3398.

घातव्य, ed. Bomb. पातव्य, das nicht passt.

घुण, घुणोत्कीर्णसुदारु Spr. (II) 4626.

घुरघुराय् Kârma 8,6.

घुर्घुर 3) रणाद्घुर्घुर (Conj.) adj. Spr. (II) 991.

घूक Spr. (II) 3814.

घृणात्व n. *Missachtung, Geringschätzung* Kârma 8,6.

घृतस्तू oder °स्तो m. *Schmalztropfen* AV. 12,2,7 (°स्तावस् acc. pl.).

घृतह्रद Z. 2 lies 4,34,6.

घोर 1) *b*) घोरातिघोरं नरकं नयन्ति Spr. (II) 2993.

घोरवालुक *eine best. Hölle* MBh. 13,549 nach der Lesart der ed. Bomb.

घोष 1) *a*) घर्घो घटो घोषमुपैति सम्यक् *ein halbvoller Krug brüllert ganz gehörig* Spr. (II) 6882.

प्राणस्कन्द् (Nachträge) vgl. u. स्कन्द् 1).

1. च 10) च — न तु *obgleich — dennoch nicht* Spr. (II) 1672. च — न च dass. Pat. a. a. O. 1,49,a. न च — च *obgleich nicht — so doch* ebend.

चक्रक 4) n. *Kreislauf* Pat. a. a. O. 1,233,a. 3,52,a. 6,55,2.

चक्रवाल, °वाल die Bomb. Ausgg.

चक्रल als eine Bed. von बर्बर H. an. 3,332 (hier könnte केश° als ein Wort gefasst werden). Mân. r. 210.

चक्रात m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,332 nach der Lesart der ed. Bomb., वक्रातप ed. Calc.

चक्रिय *adj. zum Rad oder Wagen gehörig* ṚV. 10,39,4.

चञ्चु 2) 3) aus dem Text des VP. auch nicht zu ersehen, ob चञ्चु oder चञ्चुम्. — 3) Bhâg. P. 5,17,7 चञ्चुम् nach dem Comm.; citirt wird diese Stelle im ÇKDr. u. चञ्चु mit der Lesart चञ्चु.

चतुर्मुख adj. *die Augen stechend* so v. a. — *blendend* MBh. 12,12708.

चट् bedeutet wohl *bammeln;* vgl. noch Spr. (II) 6851.

चटत्कार m. *Geknister des Feuers* Mân. r. 233.

चटत्कृति f. desgl. H. an. 3,617. — Vgl. चटचटा.

चटुल n. pl. *Liebenswürdigkeiten* Spr. (II) 4145.

चणारूप्य n. N. pr. eines Dorfes Pat. a. a. O. 4,73,b.

चण्ड 1) *a*) Z. 10 streiche Milav. 55 und vgl. चण्डता weiter unten.

चण्डकापालिक (Nachträge) vgl. षण्ड°.

चण्डघोष m. N. pr. eines Mannes Daçak. 119,17. fg.

चण्डता (von चण्ड) f. *das Erzürntsein* Milav. 55, wo mit der ed. Bomb. चण्डतां st. चण्डि तां zu lesen ist.

चण्डरोचिस् m. = चण्डदीधिति, चण्डांशु *die Sonne* Hem. Jogaç. 3,60.

चतुःपञ्चन् auch Bhâg. P. 10,37,30.

चतुरग्निवत् adj. *vier Feuer habend* Pat. a. a. O. 8,32,b.

चतुरत्व n. = चतुरता; s. unten u. चरणपात्र.

चतुर्वर्ग Hem. Jogaç. 1,15.

चतुर्विंश 1) *c*) MBh. 3,14271. — *d*) um 24 *vermehrt:* पुत्रशत MBh. 1,3790.

चतुर्विंशक adj. *aus 24 bestehend:* गण (so zu lesen) MBh. 3,13918.

चतुर्विध, °कार Hem. Jogaç. 3,79. 86. 149.

चतुःशाख (so zu lesen) n. *der Körper* (*vier Extremitäten habend*) H. c. 116.

चतुष्क 4) *c*) vgl. Bühler in Pârask. ed. Bomb. IV & V, Notes S. 2.

चतुष्पाद् nämlich अध्याय *das Kapitel, welches von den vier Objecten* (Arzt, Arznei, Pfleger, Kranker) *handelt:* क्षुद्रक°, महा° Kârma 1,9.10.

चनसित, न नाम गृह्णाति विचक्षणोत्तरं ब्राह्मणस्य चनसितोत्तरं प्राजापत्यस्य Vaitân. 11. विचक्षणवतीं वाचं भाषते चनसितवतीं विचक्षयन्ति ब्राह्मणं चनसयन्ति (so v. a. *mit* चनसित *benennen*) प्राजापत्यं सत्यं वदन्ति Gop. Br. 2,2,23.

चन्द्रनाथ Spr. (II) 5441.

चन्द्रशेखर, Ballantyne's Auffassung richtig; vgl. Pischel, de Gramm. prâcr. 20. fgg.

चन्द्रापुर n. N. pr. einer *Stadt:* °पुरोद्भवं पूगम् Rigâm. 11,249. — Vgl. चन्द्रपुर.

चन्द्रावर्तसक m. N. pr. eines Mannes Hem. Jogaç. 3,82.

चपल *flüchtig:* भीति Spr. (II) 3567.

चम्प 2) चम्पायां ज्ञायते ब्रह्मा Spr. (II) 2256.

1. चय 1) इष्टकाचयनयुक्तानि अग्निस्थापनार्थं स्थानानि Nilak.; also zu 2).

2. चय, वृतंचय zu streichen; vgl. u. d. Worte.

चर् 3) परकीयां चरति रामे द्रुताम् *frohen* Spr. (II) 5281.

— आ 6) mit inan. Spr. (II) 7177.

— उद् caus. 2) पृथग्विभक्तं मोक्षीचरम् Pat. a. a. O. 7,124,a.

— उप 3) act. (vgl. Nachträge): क्रियां हि लोके कर्मेत्युपचरन्ति ebend. 1,246,b.

— सम् caus. *kredenzen:* संचार्यमाणं माद्यं प्रमदाभिः Kârma 8,23.

— विसम् s. विसंचारिन्.

चरणत Daçak. 17,1 fehlerhaft für चतुरत, wie die ed. Calc. liest.

चरणवत् (von चरण) adj. *einen geregelten Wandel führend* Gor. Bh. 1,2,5.

चरमालय (चरम + आ°) m. *die letzte Ruhestätte* Spr. (II) 812; vgl. jedoch die Verbesserungen und Nachträge.

चर्वरीक vgl. बर्बरीक in den Nachträgen.

चर्तव्य MBh. 13,6515 nach der Lesart der ed. Bomb.

चर्मप्रसेविका Hem. Joṇaç. 3,131.

1. चल् mit वि 3) *sich in Bewegung setzen*, von einem Feinde Spr. (II) 3895.

चालयितर् nom. ag. vom intens. von क्षल् Pat. a. a. O. 6(4),12,b.

चाक्षव (von चक्षुस्) n. *Berühmtheit*, am Ende eines comp.; s. चाक्ष.

चाक्षव m. Daçak. 16,1 v. u. fehlerhaft für चाक्षव, wie die ed. Calc. liest.

चाणारट्टप्य adj. von चणारट्टप्य Pat. a. a. O. 4,72,b.

चातुर्य 1) Spr. (II) 1360. 2960.

चातुर्कोत्र 2) MBh. 14,2656.

चातुःशब्द्य n. *vier Wortformen, — Ausdrucksweisen* Pat. a. a. O. 2, 394,b. 3,36,b.

चातुष्कोटिक, so zu lesen st. चातुष्काणिटक.

चान्दनगान्धिक adj. Pat. a. a. O. 4,67,b.

चान्द्रभागि m. patron. (Comm.) des Agniveça Karaka 1,13.

चामर 1) बालचामर ist adj. und mit व्यञ्जन zu verbinden; überhaupt wird चामर in Verbindung mit व्यञ्जन als adj. aufzufassen sein. Auch व्यञ्जनचामरे Bhâg. P. 4,7,21 wird im Comm. durch चामरव्यञ्जने (also Umstellung) erklärt. Vgl. noch R. Gorr. 2,12,9.

चाम्पेय 1) Z. d. d. m. G. 27,96.

चारक adj. *in Bewegung setzend:* पञ्चभूतात्म° MBh. 14,1120 nach der Lesart der ed. Bomb.

चारित्र 3) *a*) Hem. Joṇaç. 1,15. 18.

चारित्रिन् (von चारित्र) adj. *einen guten Lebenswandel führend* Spr. (II) 3442.

चारिन् 1) *a*) die richtige Lesart ist सत्यानुचारिषु.

चारु *ein* वासक s. u. 4. वासक.

चारुरूप m. N. pr. eines Adoptivsohns des Asamañgas Harîv. 2039 nach der Lesart der neueren Ausg.

चालन 1) कस्तयो: Spr. (II) 3014. — 2) Spr. (II) 394.

चाष adj. von चाष Pat. a. a. O. 4,88,a.

1. चि mit प्र 1) कर्माणि प्रचितानि भवान्तरे *angesammelt* Hem. Joṇaç. 4,67.

— वि 1) Muir, ST. (2te Ausg.) 1,88, Çl. 204. — 6) lies 9,1,2,42.

— सम् 4) चिरसंचितं व्रतम् Spr. (II) 3976.

2. चि mit अभिनिस्, partic. अभिनिश्चित 2) *genau bestimmt in Bezug auf* (acc.) Pat. a. a. O. 1,105,a.

— विनिस्, विनिश्चितम् *adv. sicher* Spr. (II) 5793.

3. चि 3) Z. 2 चयते auch in der Saṃhitâ.

चिचलिषु (vom desid. von 1. चल्) adj. *im Begriff stehend aufzubrechen:* मर्तु तीर्थम् Râja-Tar. 8,312.

चितविप्लव Hem. Joṇaç. 1,24.

चित्रगत 1) zu streichen und das Beispiel zu 2) zu stellen.

चित्रपृष्ठ adj. *einen bunten Rücken habend* Karaka 1,27.

चित्ररथ 4) f. ई *eine Form der* Durgâ Harîv. 9533 nach der Lesart der neueren Ausg.

चित्राङ्ग 2) *d*) Bein. Arguna's H. ç. 137 zu streichen, da hier चित्राङ्गसादन zu lesen ist, wie schon das Metrum zeigt.

चित्त् mit अभि R. ed. Bomb. 1,10,2.

चिमिचिमाय्, °यते *prickeln* Karaka 1,18. — Vgl. चिमिचिमा in den Nachträgen.

चिर 3) *b*) तमेवांधानं कश्चिदाप्नु गच्छति कश्चिच्चिरेण कश्चिच्चिरतरेण कश्चिच्चिरतमेन Pat. a. a. O. 1,170,b.

चिरंजीवा f. *Trigonella corniculata* Çabdar. im ÇKDr. u. रतिमञ्जरी.

चिरोटी f. *ein best. zu den* Pratuda *gezählter Vogel* Karaka 1,27.

चिलाति N. pr.: °पुत्र Hem. Joṇaç. 1,13.

चिल्लट (v. l. चिल्लक) m. *ein best. zu den* भूमिशय *gezähltes Thier* Karaka 1,27.

चिल्लिका, धम्मिल्लमुल्लासितचिल्लिकम् (?) Pañcâd. 3,11,4.

चिल्वटि m. wohl = चिल्लट Gor. Bh. 1,2,8.

चीन 1) *a*) die Kîna und Prâkja gebrauchen zu viel लार Karaka 3,1.

चीर्युहु, so wohl AV. 6,127,2 st. शीपुहु zu setzen.

चीरिणी f. N. pr. eines Flusses MBh. 3,12781. वीरिणी Matsjop. 5.

चुचुप, चूचुप ed. Bomb.

चुचुपर्णिका f. *eine best. Gemüsepflanze* Karaka 1,27.

चूचुप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 5,4731 nach der Lesart der ed. Bomb.

चूर्ण 1) Z. 4 lies 4,15,31. Jâñ. 1,308 soll das Wort nach Mit. तिलचूर्णमिश्र घोट्न: bedeuten.

चेक्रीयित n. *der Charakter des Intensivum* Kâtantra 3,2,14. 43. 3,7.

चेलक m. = चेल 2) द्विज° *ein unwürdiger Brahmane* Râja-Tar. 7,239.

चेष्ट् mit आ caus. *in Bewegung setzen:* आचेष्टयति (so zu lesen st. आवे°) TBr. 1,3,6,1.

चेत, °धारा (so zu lesen) Schol. 2 zu Prab. 50,11.

चेत्र 2) *d*) कश्चित्चेत्र: Schol. 2 zu Prab. 50,11.

चोटिका f. = चोटी *Unterrock* Med. l. 123.

1. च्यु S. 1067, Z. 1. 2 lies च्युच्यवीमहि und च्युच्यवीरत.

क्षत्मन् 2) क्षत्मस्थयोगिन् *ein* Jogin *dem Schein nach so v. a. ein angehender* Jogin Hem. Joṇaç. 4,114.

क्षुद्रक s. सर्वक्षुद्रक.

1. क्षिद् mit उद् 1) Z. 2 lies M. st. MBh.

— प्र caus. vom intens. प्रचेच्छिद्य Pat. a. a. O. 6(4),14,a.

2. क्षिद् f. nom. act. *das Zerschneiden, Zunichtemachen:* °व° Hem. Joṇaç. 3,141.

क्षिदा *das Abhauen:* शरीरावयवच्छिदा Hem. Joṇaç. 2,96.

क्षिदुर adj. mit intransitiver und transitiver Bed.: क्षिदुरातपो दिवस: *ein Tag mit abnehmender (geringerer) Sonnenhitze* und मत्सरक्षिदुरं प्रेम *die Selbstsucht vernichtend* Vimâna 5,2,10.

क्षिर 1) *zerrissen* RV. 1,162,20.

क्षेत्र 1) *b*) (Nachträge) an den angeführten Stellen nach Kern = क्षे-

ति *Bruchstück, Theil* in der Astr.; vgl. noch Goldam. Tarnaçv. 40. — Vgl. ऋणाच्छेद oben.

1. ज्ञन् Z. 8 füge bei ज्ञर्धाय ṚV. 10,146,5.

ज्ञगत् 5) *f)* ज्ञगत्यन्ना भवति कि रूचिरा Pat. a. a. O. 8,39,b.

ज्ञगत्य्, °यति denom. von ज्ञगत् ebend. 1,267,a.

ज्ञगल 2) a) Madan. 8,61. Karaka 1,27.

ज्ञगलु m. ohne Angabe der Bed. Çabdan. im ÇKDr. u. वचलु; vgl. ज्ञगनु und ज्ञगमु.

ज्ञटिन् 2) *d) ein best. zu den* Pratuda *gezählter Vogel* Karaka 1,27.

ज्ञटिल (Nachträge) Z. 6 lies ऽशुचीन्. Z. 7. 8 zu streichen die Worte: die richtige Lesart u. s. w.

ज्ञठरत्व n. घ° = सौकुमार्य *Abwesenheit von Härte, Zartheit* Vimana 3,1,19.

ज्ञड adj. *dumm* und zugleich n. *Wasser* Spr. (II) 3160.

ज्ञडाय् (von ज्ञड), °यते mit infin. *in Bezug auf Etwas sich als stumpf, unfähig erweisen:* स्वगुणं परदोषं च वक्तुम् u. s. w. सतां जिह्वा ज्ञडायते Spr. (II) 7266.

ज्ञन् mit अभि 1) *zu Etwas* (nom. des partic. fut. pass.) *da sein:* रक्तो ऽभिज्ञायते भोग्यो नारीणां शाटको यथा Spr. (II) 3695.

ज्ञनगत् adj. Pat. a. a. O. 1,267,a. Davon denom. °गत्य्, °त्यति ebend.

ज्ञननीय् (von ज्ञननी), °यति *Jmd* (acc.) *für seine Mutter halten:* प्रियाम् (so zu lesen) Hem. Joaç. 3,9.

ज्ञनयोपन, lies *störend* st. *hemmend.*

ज्ञनस्थ adj. *in der* Gaṇa (Gaṇas) *genannten Welt weilend* VP. 1,3,34.

ज्ञनि 1) Z. 4. 5 lies 2,36,3 st. 2,26,3.

ज्ञन्तु 3) n. Spr. (II) 7156. Hem. Joaç. 3,53.

ज्ञन्तुज्ञातमय adj. *eine Menge von Ungeziefer enthaltend* Hem. Joaç. 3,35.

ज्ञन्मवत् (von ज्ञन्मन्) adj. *was geboren wird, ein lebendes Wesen* Spr. (II) 4954.

ज्ञन्मवर्त्मन् Hem. Joaç. 2,80.

ज्ञम्बुक m. N. pr. eines Çûdra MBu. 12,8742 nach der Lesart der ed. Bomb., शम्बुक ed. Calc.

ज्ञम्बुमाल, पुरं बालार्कज्ञम्बुमालम् ist *der Kampf zwischen* Bâlâ-haka und Gambumâlin.

ज्ञम्भ 1) Z. 4 lies 10,87,3 st. 10. 87,3.

ज्ञम्भक 1) *b)* विद्या मन्त्रयन्त्रादिरूपा ज्ञम्भक ओषधिसाधनानि तद्वार्त्ता-प्रिया: Nilak. — ज्ञम्भिका f. N. pr. einer Gottheit Kâlikâkara 3,165. ज्ञम्भी desgl. 122.

ज्ञयस्वामिन् 1) Z. 2 zu Riâ-Tan. 5,448 vgl. विरोचन 2) a).

ज्ञयात्मज m. Gaja's d. i. Arguna's *Sohn*, patron. Abhimanju's MBu. 3,10270.

2. ज्ञर् caus. *in Bewegung setzen, lebendig machen;* dahin gehören z. B. ṚV. 1,48,5. 124,10. 7,75,5. Verwandt mit 3. गर्.

ज्ञर 2) Z. 2 lies ज्ञरताम् st. ज्ञरताम्.

2. ज्ञरणा, an der ersten Stelle wohl so v. a. *dürres* (1. ज्ञर्) *Gras.*

ज्ञराणु 3) lies *ein best. schaumartiger Stoff auf dem Meere* (अग्निगर्भ) Riâm. 6,79.

ज्ञराणुक n. = ज्ञराणु 2). गो° Simavidh. Br. 2,6,10.

ज्ञल 1) und zugleich 4) a) auch Spr. (II) 6919.

ज्ञलज्ञम्बुलता f. *eine best. Wasserpflanze* Cit. bei Vimana 8,2,74.

ज्ञलयन्त्रचक्र n. *Schöpfrad* Spr. (II) 963.

ज्ञलार्द्र 3) f. घा *ein angefeuchtetes Tuch, das zur Kühlung hinundher bewegt wird,* Çiç. 1,65.

ज्ञलोका, f. ई H. an. 2,138.

ज्ञक् s. शर्धज्ञक्.

ज्ञक्तस्वार्थ (vgl. auch Nachträge) adj. und घ° Pat. a. a. O. 2,312,b. 313,a.

ज्ञक्न s. सर्वमज्ञपाप°.

ज्ञागरितान्त m. *Zustand des Wachens* s. u. ज्ञागरित 2) und vgl. बुद्धा-न्त. स्वप्नान्त.

ज्ञातवत् *geboren* Spr. (II) 2325.

ज्ञातकारिणी f. N. einer bösen Fee, *die neugeborene Kinder fortträgt,* Mlav. P. 51,102. 107.

ज्ञातिभाज् adj. *Alles was geboren wird* Spr. (II) 6788.

ज्ञाप, an der ersten Stelle, wo das Metrum eine Länge verlangt, liest die ed. Bomb. ज्ञाप्यं, an der zweiten ज्ञप.

ज्ञामि vgl. noch मु° und सोम°.

ज्ञाम्बील *Speichel* oder *ein anderer Auswurf:* °स्कन्दन Vaitân. 12.

ज्ञाम्बेय m. metron. von ज्ञम्बू Pat. a. a. O. 4,54,a.

ज्ञारकृत adj. von ज्ञारक्त् + वृत ebend. 4,88,a.

ज्ञार्पयन्मख adj. nach Sây. *Opfer vollführend* ṚV. 10,172,2.

ज्ञाल 1) *a)* Z. 7 MBu. 3, 11967 fasst Nilak. das Wort als adj. von ज्ञल *Wasser.*

1. जि mit वि 3) *siegen* so v. a. *die Oberhand haben:* यावत्पुण्यमिदं नृणां विजयते Spr. (II) 2338.

— सम् *Jmd überwältigen:* न च समं मोदेन संजीयते Spr. (II) 858; könnte auch auf 1. या zurückgeführt werden.

जितकस्त adj. *der eine geschickte —, geübte Hand hat* Karaka 3,8.

जित्वर 2) Pat. a. a. O. 4,81,b.

जिन 2) *b)* Hem. Joaç. 2,16. 18. 3,122. 138. °धर्म 139. जिनोत्तम 4,91

जिन्व् mit घा *erfrischen* ṚV. 4,45,3.

जिह्मु m. pl. N. pr. eines Landes Pat. a. a. O. 4,74,b. — Vgl. जैह्मुक.

जीर्ति s. घ° oben.

जीवक 4) *b)* चिरजीविका (Conj. für °जीविता) *langes Leben* Spr. (II) 5770.

जीवघातिन् adj. *Lebendes tödtend:* Raubthiere Spr. (II) 1972.

जीवघात्या f. *Vernichtung des Lebendigen oder des Lebens* Kauç. 18.

जीवन 5) *a)* ṚV. 1,48,10. 10,161,1. AV. 4,9,1.

1. जू 4) Z. 6 lies 1,27,7.

1. जूर्ण vgl. मु°.

ज्ञप्ति f. so v. a. *das zu Tage Kommen, Auftreten, Erscheinen:* रोमा-ञ्चस्वेद° Spr. (II) 7199.

ज्ञेताक Karaka 1,14.

ज्ञेय्यट (Nachträge) vgl. जेयट.

जैह्मुक m. *ein Fürst der* जिह्मु Pat. a. a. O. 4,74,b.

ज्ञ, ज्ञा देवतास्य स्थालीपाकस्य ज्ञ: स्थालीपाक: ebend. 6(4),46,b.

1. ज्ञा 1) देवा: पूज्ञा न जानन्ति *die Götter erfahren nicht, was Vorsch-*

rung heisst so v. a. werden nicht verehrt Spr. (II) 2948.

ज्ञान 1) pl. MBh. 12,1660. vier bei den Gaina Spr. (II) 2461.

ज्ञौदनीय्, °यति = ज्ञौदनम् (= ज्ञाया ओदनम्) इच्छति Pat. a. a. O. 1, 366,a. Davon desid. जुज्ञौदनीयिषति ebend.

ज्याक्रोड Z. 4 lies 237 st. 273; dort übrigens °क्रोदो gedr.

ज्रम्भ् mit यव mod. *gähnen* Karaka 4,8.

ज्वर् 2) *a*) am Ende, die neuere Ausg. besser विज्वराय ज्वरां त्यक्ता.

ज्वरापक् 2) in Betreff von विज्वरपत्नी s. u. विन्धपत्नी.

ज्वल् mit अभि caus. °ज्वलयति *erleuchten, erhellen* Pat. a. a. O. 1, 121,b. 2,306,b.

— प्र caus. das partic. °ज्वलित kann auch zum simpl. gezogen werden.

झल्लरी 1) Hem. Jogaç. 4,104(?).

झाङ्कारिन् adj. *pfeifend, sausend:* Wind Vasis. 45.

झिल्लिका 7) *eine Art Fahrzeug* Hariv. 8304 nach der Lesart der neueren Ausg., शल्लिका die ältere.

टङ्क mit उद्, उट्टङ्कित *gestempelt, gekennzeichnet* Schol. zu Kiriâ. 1,10.

टङ्क 1) Spr. (II) 2469.

टल्, जिह्वा टलति धीरस्य पादश्चलति कस्तिन: Spr. (II) 7526.

टुण्टुक 2) Z. 2. 3 lies 2,131,16. 1,143,7.

टुण्टुक m. *eine der Bignonia verwandte Pflanze* Râgân. 9,38.

टुम्ब् mit वि 3) *lächerlich machen* Spr. (II) 628. — 4) Hem. Jogaç. 4, 111. Bâlar. P. 7,10,69 (विडम्बमान auffallend) gehört zu 1).

टुम्बर (Nachträge) 2) घम्बुरुडुम्बरै: Spr. (II) 4878. — 3) *Pracht, Schönheit* Uttarar. 111,4 (150,2).

डाक m. zu डाकिनी Kiratârg. 5,38. वज्र° ebend.

डामर 5) an den angeführten Stellen (vgl. auch Râgân.-Tar. 8,883) nach Kuav so v. a. *Bojar*. Davon nom. abstr. °त्व n. Mâlatîm. 74,16.

डाम्भिक m. Bez. *einer wunderlichen Person* (die ursprüngliche Bed. nicht zu ermitteln): तेन कर्तां क्रियां गुणं वा प: कश्चित्करोति स उच्यते डित्थवत् त एतत् डाम्भिकवत् त एतत् एवं डित्था: कुर्वन्ति । एवं डाम्भिका: कुर्वन्ति Pat. a. a. O. 5,28,b. — Vgl. उदित्थ.

डिण्डिमाणव m. *ein best. zu den* Pratuda *gezählter Vogel* Karaka 1,27; vgl. डिण्डिमाणक.

डित्थ von ähnlicher Bed. wie डाम्भिक; s. das.

डिम्ब 2) Âk Mâlatîm. 148,3. — 7) = कलेवर (Mallin.) *Leib, Körper* Çiç. 18,77.

डुण्डुभ. *Amphisbänen* sollen nur in der neuen Welt vorkommen; es sind *giftlose Schlangen* gemeint.

ढौकन s. स्वयमासन°.

तक्रा und तक्रभक्ता = तक्राहार (Nachträge) Râgân. 4,64.

तलण, काष्ठं मुध्यति तलणात् Spr. (II) 5703.

तज्जातीय adj. *von derselben Art*, स° und यत्तज्जातीयक Pat. a. a. O. 1,67,b.

तटस्थित adj. *gleichgiltig, indifferent:* आलाप Uttarar. 115,10 (156,6).

1. तत, voc. R. ed. Bomb. 2,103,25.

ततस् 3) तत: किम् *was kann daraus entstehen?* so v. a. *was kann es schaden?* Spr. (II) 7497.

तत्पूर्व Spr. (II) 1672.

तथाजातीयक adj. *derartig* Pat. a. a. O. 1,21,b.

तथाविधेय vgl. विधेय am Ende.

तदपत्यमय adj. *in seinen (ihren) Kindern aufgehend, nur an diese denkend* Spr. (II) 4075.

तदर्थता f. = तादर्थ्य Comm. zu Açv. Ça. 3,4,12.

तदर्थम् *daher, in Folge dessen* Spr. (II) 6562.

तदा *damals* — इदानीम् *jetzt* Spr. (II) 7457.

तद्बन्धु adj. *zu dieser Genossenschaft gehörig* RV. 10,61,18.

तद्रूप, स° *von verschiedener Beschaffenheit* Vimâna 4,3,9.

तद्वन् adj. Bez. bestimmter Ṛshi Pat. a. a. O. 1,18,a. — Vgl. तर्वन्, यद्वन्, यर्वन्.

तद्विद् Kaush. Up. 1,2 nach Çañk. *die Erkenntniss davon.*

1. तन् Sp. 214, Z. 3 v. u. lies तमौ st. ततौ.

— वि 6) वितनोति पापम् *verüben* Spr. (II) 189.

2. तन् Sp. 221, Z. 1. 2 das Beispiel RV. 8,86,3 zu streichen, da ततः gelesen wird.

तनुकेश adj. (f. ई) *feinhaarig;* f. pl. Bez. der Weiber der Kshemavṛiddhi Pat. a. a. O. 6,92,b.

तन्तु, कमल° Spr. (II) 6401.

तन्तुवाय P. 3,2,2, Schol.

तन्त्र 1) *c*) परं तन्त्रम् *die volle Gewalt* Spr. (II) 3392. — *g*) β) *Beschwörungsformel* Hem. Jogaç. 1,5.

तन्त्रिक adj. *des Namens* Pat. a. a. O. 4,54,a.

1. तप् mit संप्र caus. s. संप्रतापन.

तपोवट, lies *die Ficus indica der Asketen.*

तप्तक n. *Pfanne* Bhâvapr. 3.

तम् mit प्र caus. प्रतमय्य Pat. a. a. O. 6(4),14,a.

तमाल Sp. 254, Z. 6 ist das Beispiel Kathâs. 26,142 zu streichen; vgl. unter 1. लिक् mit यव am Ende.

1. तर् mit यव 3) Pat. a. a. O. 6(4),16,a.

— वि 1) *durchkreuzen:* कामम् RV. 10,34,6. 54,5.

तरन्तु Gop. Br. 1,2,8.

तरतमतस् (von तर् Suffix des compar. + तम S. d. superl.) adv. *mehr oder minder* Bâlar. P. 10,87,19. — Vgl. तारतम्य.

तरत्त 1) *d*) Z. 2 lies 5,61,10 st. 5,6,10.

तरिक 2, *b*) *Haut auf der Milch.*

तरुसार oder *Kernholz, der härteste Theil des Holzes.*

तर्द् mit संप्र s. संप्रतर्दन.

तर्वन् schlechte Aussprache für तद्वन् Pat. a. a. O. 1,18,a.

तलित, lies adj. *geschmort* (in Oel oder Schmalz) Bhâvapr. 3.

तवश्रवीय (vgl. RV. 10,140,1) n. N. eines Sâman Sâmavidh. Br. 2,1,8.

तात, zwei Personen mit तात angeredet R. Gorr. 2,122,3 (von मा-भार्या zu trennen).

तात्त्विक *der die* Tattva (der Gaina) *anerkennt, die wahre Lehre besitzt* Spr. (II) 4870.

तादर्थनि m. patron. von तर्द् Pat. a. a. O. 4,51,a.

तादर्थ्य füge *das die-Bedeutung-Haben* hinzu; vgl. ebend. 4,66,b.

तादृप्य n. *Gleichheit der Form, Identität* Vimâna 2,2,17. Pat. a. a. O. 6,39,b.

तानुक s. स्त्रीतानुकोग.

तापसायनि m. patron. Pat. a. a. O. 4,51,a. 57,b.

तापस्क 2) lies कृरिद्रासेयुके und °किङ्कूनि Bulvapa. 5.

तारतम्य vgl. oben तारतमतस्.

तार्णकर्णीपुत्र m. für °कर्ण्यापुत्र Pat. a. a. O. 6,14,b.

तालक 2) a) *Händegeklatsch* Spr. (II) 5163.

तालिक 1) Pañkat. II,137 ist तालिका zu lesen; vgl. Spr. (II) 5163.

तालोपत्र Vaitân. Bṛh. S. 27,3.

तिग्मरुचि m. *die Sonne* Spr. (II) 7527.

तितील m. *Fledermaus* Vjutp. 118.

तित्तिडीक Pat. a. a. O. 4,88,a.

तित्तिराङ्ग n. *eine Art Stahl* ÇKDa. u. वज्र.

तिमिरारिरिपु m. *Eule (Feind der Sonne)* Spr. (II) 3940.

तिमिष vgl. रात्र°.

तिरस् 2) a) α) कर्णं तिरस्कुरुते *übertrifft, stellt in Schatten* Spr. (II) 4001.

तिरस्कुड्य lies *durch die Wand gehend.*

तिरस्क्रिया Spr. (II) 3221.

तिरोऽङ्ग्य, so in den Nachtragen zu lesen.

तिल 1) *Sesamkörner* nehmen leicht Gerüche an Spr. (II) 7242.

तिलक 1) nach Elliot *Clerodendron phlomoides.* Râǵan. 10,62.

तिलकवती f. Vimâna 5,2,75.

तिलपर्णिका auch *eine best. Gemüsepflanze* Karaka 1,27.

तीक्ष्णशृङ्ग (Nachträge), lies *spitzhörnig.*

तीर्थकाक Z. 2 lies so v. a. *unbeständig* und vgl. Pat. a. a. O. 2,334,a.

तीर्थकृत् *ein* Arhant *bei den* Gaina Hem. Jogaç. 3,137.

तीर्थसेवा f. *Besuch der heiligen Badeplätze* Spr. (II) 2754. 3296. bei den Gaina wohl *Verehrung der geheiligten Personen* Hem. Jogaç. 2,16.

तीव्रमद् adj. *stark berauschend* Karaka 1,27.

2. तु 2) च — न तु *obgleich — dennoch nicht* Spr. (II) 1672.

तुङ्ग 1) तुङ्गात्मन् und तुङ्गतर *hochstehend* und *höher* von Personen Spr. (II) 2580. — 2) a) vgl. auch oben कश्यप°.

तुङ्गिन् 1) Pañkat. II,149 zu streichen; vgl. Spr. (II) 1860.

तुङ्गिमन् (von तुङ्ग) m. *Höhe, hoher Stand* Spr. (II) 1860.

1. तुद् mit वि *ein musikalisches Instrument spielen;* vgl. unten u. 1. नुद् mit वि 3).

तुला 1, Sp. 368, Z. 6 lies समकलां तुलयत: st. समकलाम्. — Am Ende भारतुला zu streichen.

तुलाकोश vgl. Kern in seiner Uebersetzung von Vaitân. Bṛh. S. 128, N. 2.

तुलागुड MBu. 3,1718. °गुडा: भाण्डगोलका: भाण्डानि तु नालबन्धूख इत्यादि म्लेच्छाभाषया प्रसिद्धानि धात्वौषधबलेन पाषाणगोलकादिनिक्षेपणानि Nilak. झला गुडा: st. dessen Ind. 1,5.

तुल्यजातीय adj. *gleichartig, ähnlich* Pat. a. a. O. 1,64,a. 6,29,b.

तुविद्यवान्, so zu lesen st. तुवद्यवान्.

तुवीरवत्, lies °वस् = तुवीरव und vgl. स्वतवस्.

तुरुण्ड Harîv. 201 (तुरुण्ड die neuere Ausg.). 14291.

तूबरक, so edd. Bomb. st. तूवरक.

तूरा = त्वरा (Nilak.) MBu. 2,1425 nach der Lesart der ed. Bomb.

तूल 7) a) = तूलिका *eine mit Baumwolle gestopfte Matratze* Spr. (II) 2614.

तूलनाला f. = °नालिका *Spinnrocken* Mân. n. 124.

तूवरक, तूबरक ed. Bomb.

तूष्णीगङ्ग n. N. pr. eines Tîrtha Pat. a. a. O. 2,366,b.

तृण 1) वैरिणो ऽपि हि मुच्यन्ते प्राणान्ते तृणभक्षणात् Spr. (II) 6294.

तृणयूलिक Bez. *einer best. menschlichen Missgeburt* Karaka 4,4.

तृणविन्दु und °वीन्न, richtiger °बिन्दु und °वीन्न.

तृणसिक् P. 6,2,72, Schol.

तृणाद् adj. *Gras fressend* Spr. (II) 5931.

तृष्टवन्दन, lies *rauhen Ausschlag habend, schäbig* und vgl. 2. वन्दन.

तेजस्विन् 1) *scharf (glänzend)* von einem Schwerte Spr. (II) 3398.

तेजोऽभिवन m. N. pr. eines Dorfes (Comm.) R. ed. Bomb. 2,68,17. योधिवन Schl.

तेमिष vgl. रात्र° und तिमिष.

तेरण m. *Balsamine, Impatiens balsamina* Râǵân. 4,129.

तैत्तिडीक (vgl. तेत्तिडीक) Pat. a. a. O. 4,88,a.

तोक n. = अपत्य *Nachkomme:* शकटस्य तोकम् = शाकटायन Pat. a. a. O. 3,85,b. Am Ende „und स्तोक" zu streichen.

तोयवेला zu streichen, da mit der neueren Ausg. तोयं वेला zu lesen ist.

तोयालय m. *eine best. Constellation,* = समुद्र Vaitân. Bṛh. 12,7.

तोलन 2) गुञ्जया सह तोलनम् Spr. (II) 2469.

तोषक adj. *erfreuend* in सुर°.

त्यक्तव्य, त्यक्तव्यो नैवात्मा *man darf nicht an sich selbst verzweifeln* Spr. (II) 5283.

त्रस, त्रसानां स्थावराणां च Hem. Jogaç. 1,20.

त्रामन्, Z. 2 lies 5,46,6.

त्रिपत्तक m. *Butea frondosa* H. an. 4,135.

1. त्रियुग vgl. u. युग 4).

त्रिवर्ग Hem. Jogaç. 4,12.

त्रिविष्टब्ध und °क s. u. स्तभ् mit वि partic. 2) a).

त्रिशाण, lies *wiegend* st. *werth.*

त्रिशूलाग् (von 1. त्रिशूल), °यते *dem Dreizack Çiva's gleichen* Vaitân. 6,1.

त्रिसुपर्ण Âpast. 2,17,22.

त्रीरावतीक adj. *drei* Irâvati (Flüsse dieses Namens) *besitzend:* देश Pat. a. a. O. 1,262,b.

त्रुटि (Nachträge) 2) Ind. St. 8,436 gehört zu 1); vgl. noch Lalit. ed. Calc. 169,2 v. u. Hiouen-thsang 1,60 (hier fälschlich त्रुति).

त्रैयलिन्द् adj. von त्र्यलिन्द्, पूर्व° Pat. a. a. O. 7,111,a.

त्रैरात्रिक adj. *dreitägig* ebend. 7,113,a.

त्रैशब्द्य (von त्रि-शब्द्) n. *drei Wortformen, — Ausdrucksweisen* ebend. 1,296,b. 3,38,b.

त्रैसमिक adj. *dreijährig* ebend. 7,113,a.

त्रैहायण P. 5,1,130, Schol. — Vgl. हैहायन.

त्र्यङ्ग adj. *dreigliedrig* (Heer) und n. *ein dreigliedriges Heer* d. i. *Wagen, Reiterei und Fussvolk* MBu. 8,2526 nach der Lesart der ed. Bomb. Dasselbe Wort ist herzustellen 9,1288 (द्व्यङ्ग ed. Calc., व्यङ्ग ed. Bomb.).

त्र्यलिन्द् N. pr. eines Dorfes: पूर्व° Pat. a. a. O. 7,111,a.

त्वक्त्राण n. *Schutz der Haut:* एकस्तनुस्त्वक्त्राणे ऽसमर्थः । तत्समुदायश्च कम्बलः समर्थः ebend. 1,203,a.

त्वाष्ट्रनि m. patron. ebend. 4,81,a.

त्वात्पुत्र m. pl. *die Schüler deines Sohnes* (त्वत्पुत्र) ebend. 1,177,b.

1. त्विष् 2) streiche die Stelle RV. 7,82,5.

2. त्विष् 2) füge RV. 7,82,6 bei: *für einen hohen Preis —, für Varuṇa's Ansehen setzen beide* (Indra für jenen, Varuṇa für diesen) *ihre Kraft ein.*

त्वेष्य Z. 2 lies स्त्वेष्येषा°.

त्सर् mit अव vgl. अवत्सार.

1. दंश् mit सम् 1) am Ende, संदष्ट n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

दंस्, hierher wohl die u. दंसि angeführte Stelle: *sich wunderkräftig (hilfreich) erweisen.*

दंसि s. oben दंस्.

दंत, so zu betonen.

दंति Z. 3 lies *Bahnen* (Sās.) st. *Bewohner.*

दंतिणा Sp. 485, Z. 10 lies 6,64,1.

दंतिणावर्त 1) °वर्ता नाभिः Spr. (II) 5404.

दण्ड 13) *Macht über* (gen. oder im comp. vorangehend) Spr. (II) 312.

दण्डवाहित adj. *mit einem Stocke abgewehrt* so v. a. *absolut verboten:* यज्ञेष्वीदृ Pat. a. a. O. 2,339,a.

दण्डासन n. *eine best. Art zu sitzen* (आसन) Hem. Joḍaç. 4,128. 130.

दधीच् Pat. a. a. O. 8,78,a.

दध्यालो f. *eine best. Pflanze,* = भावणा Mad. p. 81. — Vgl. दध्यानी.

दन्तपात Spr. (II) 6921.

दन्तवाणिज्य n. bei den Gaina *Handel mit Zähnen, Haaren u. s. w.* Hem. Joḍaç. 3,98. 105.

दन्तावल (°बल gedr.) m. N. pr. eines Mannes Gov. Ba. 1,2,5.

दभ 1) दभ्म् RV. 5,19,4 (nicht 14) besser als abl. gen. von दभ् zu fassen.

2. दम्, दमाम् kann gen. zu 1. दभ sein.

दमदमाय्, °यति und °यते onomatop. denom. Pat. a. a. O. 3,19,b.

दम्भोलिपाणि m. ein N. Indra's Spr. (II) 3921.

दय् mit वि 2) विदयामास Paṇḍan. 1,12,2. विदार्य (von 3. दा) च चकार v. l.

दयितामय (Nachträge) Spr. (II) 4075.

1. दर् mit अभिप्र *sprengen, öffnen:* अभि प्र दर्दुर्जनयो न गर्भम् RV. 4,19,5.

— वि, विदरे दाडिमीफलम् *barst* Z. d. d. m. G. 27,68.

2. दर् mit समा, partic. समादृत *ganz bei einer Sache seiend, eifrig beschäftigt* v. l. bei Nigan. zu Harîv. 8787.

दरद f. Pat. a. a. O. 4,84,b.

दरदार m. *eine Art Judendorn* Râǵân. im ÇKDa. u. लघुबदर. शबरादार unsere Hdschr.

दर्दर 3) f. ई N. pr. eines Flusses Mbh. 7. 223.

दर्दुर m. *eine Art Taik* Baiyâsa. im ÇKDa. u. वज्र.

दर्व Z. 3 lies विदर्व्य st. विदर्व.

दर्श् mit उप Z. 4 lies 7,67,2 st. 7,62,2.

दशत Sp. 539, Z. 4 lies 1,116,11 st. 1,161,11.

दर्ह्, चदर्ह ज्ञानम् *nicht fest haftend* Spr. (II) 6749.

दवदान n. *Anstehung eines Waldes* Hem. Joḍaç. 3,99. 112.

दशकंधर Hem. Joḍaç. 2,98.

दशन vgl. विनेमिदशन.

दशाङ्गुल n. *eine Länge von zehn Fingern* RV. 10,90,1.

दस् in der Umgangssprache = दर्भ् Pat. a. a. O. 1,334,b.

1. दक्, केनत्ते क्रिमपातेन पक्षिणी किं न दक्षते *versengt werden* Spr. (II) 6383.

1. दा Z. 7 दत्ते auch Spr. (II) 1186. 1) mit doppeltem acc.: विषं दत्तं समर्था मा स्वामिनं गुणिनां वरम् Spr. (II) 6215. सुपात्रदत्त *einem Würdigen gegeben* 5793. — 2) शनैः शनैर्दात्येष पादौ Spr. (II) 6394.

— अभ्या 1) vgl. jetzt noch Spr. (II) 3646.

— उपा *sich anschliessen an* (acc.): कश्चित्कान्तारे समुपस्थिते सार्थमुपादत्ते । यदा निष्कान्तकान्तारो भवति तदा सार्थं जहाति Pat. a. a. O. 1,173,a.

— व्या, व्यादत्ते पिपीलिकाः पतंगस्य मुखम् Pat. a. a. O. 1,248,a. व्यात्त herzustellen für यात्त Hem. Joḍaç. 3,11.

3. दा mit वि 3) *vertheilen:* विदार्य च चकार Paṇḍan. 1,12,2, v. l. विदयामास (von दय्) im Texte.

7. दा mit पर्यव, partic. °दात *durch und durch lauter:* सर्वकर्मसु ein Diener Karaka 1,15. °मुत ein Lehrer 3,8. — Vgl. पर्यवदातत्व.

दात्तिणार्धिक adj. = दत्तिणार्घ्य Pat. a. a. O. 4,76,b.

दानशाला f. *ein Gemach, in dem Almosen vertheilt werden,* Sunîsa. 127.

दापिन् adj. am Ende eines comp. zu *geben veranlassend* Naish. 17,61.

दाम, f. दामा N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9. 2633 nach der Lesart der ed. Bomb., सुदामा (wird später noch genannt) ed. Calc.

2. दामन् Z. 2 lies 8,82,5.

दारद als metron. von दारद् gefasst Pat. a. a. O. 4,54,b.

दारदिका f. ebend. 6,96,a. = दारदो ऽपत्यं स्त्री Kâç.

दारवीय adj. = दारव *hölzern* Vimâna 5,2,55.

दार्व्य m. patron. von दार्वि Pat. a. a. O. 4,60,b.

दार्ष्टिविषयिक (von दृष्टि + विषय) adj. *dem Auge zugänglich* Nir. 7,5.

दालि (Nachträge) *gespaltene Hülsenfrucht, Groupe* Râǵân. 16,103. Bhâvapr. 5.

1. दाश् 2) *weihen* so v. a. *hingeben:* वधार्य RV. 8,16,21.

दाशतय = दशतय *zehnfach:* प्रत्ययमाला Pat. a. a. O. 4,48,b.

दि s. सदंदि.

दिग्देश, धनिपतदिग्देशपूर्वकत्वात् Kân. 4,2,6.

दिग्विरति f. bei den Gaina *das Nichtüberschreiten der Grenze, nach welcher Himmelsgegend es auch sei,* Hem. Joḍaç. 3,1. 3. 95.

दिग्व्रत n. dass. ebend. 3,83.

दिक्षुख, °खण्डलानि *die nach allen Himmelsgegenden gelegenen Länder* Spr. (II) 1431.

दिश् s. unten देव°.

1. दिव् 3) Z. 4 streiche die Stelle RV. 10,34,8, wo दविषाणि gelesen wird. Z. 20 streiche (von हम्).

दिवानिद्रा f. *das Schlafen am Tage* Spr. (II) 5671.

दिव्य 3) e). N. pr. einer Göttin Kâlakarṇa 3,144.

दिव्यक्रिया f. *Anwendung eines Gottesurtheils* Râǵa-Tar. 4,31.

दिव्यदेवी f. N. pr. einer Göttin Kiraṇâkara 3,144.

1. दिश् 2) *gewähren:* प्रसरं शत्रवे Spr. (II) 3671.

दिश्य *dem Raume eigen:* लिङ्ग Kap. 2,2,10.

1. दिक् mit सम् letztes Beispiel, संदेक्ष्यमानानां (= संदिक्षानानां Comm.) ed. Bomb.

2. दिक् (= 1. दिक्) in मु°.

दीति vgl. 3. धीति weiter unten.

दीदिवि 4) सित° Pañcar. 3,9,1.

दीप् mit सव *in Flammen gerathen:* सवदीप्यमान Âçv. Çr. 3,10,9.

दीपक्षा zu streichen; vgl. Spr. (II) 98.

दीपशिखा 2) Sucr. 2,333,20.

दीपाङ्कुर (Nachträge), lies *die Flamme einer Lampe;* vgl. Spr. (II) 5714.

दीप्तरसत्व n. *das Vorherrschen der heftigen Affecte* Vimana 3,2,14.

दीर्घकूर्च adj. *langbärtig* MBu. 7,4749.

दीर्घजिह्व 4) Z. 2 lies घवालेट्.

दीर्घरोषण adj. = °रोष Spr. (II) 1849.

दीर्घमूक m. = °मूकक Sucr. 1,193,7.

3. दु = 1. दिव् *spielen* in der Form दविषाणि RV. 10,34,5; vgl. द्यु = क्षिव् weiter unten.

दुःखिता f. nom. abstr. von दुःखिन् *betrübt, niedergeschlagen* Kathâs. 46,4.

दुग्धपाषाण, lies *Kalkspath.*

दुन्दुनाभ m. *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. ed. Bomb. 1,28,6.

दुमती f. N. pr. eines Flusses Pat. a. a. O. 4,69,b.

दुरपवाद m. *üble Nachrede* Spr. (II) 7051.

दुराचर 1) विद्या दुराचरा Spr. (II) 7065.

दुराशा, कौनत्रने *Verzweiflung an* Spr. (II) 1946. *eitle Hoffnungen* 2448.

दुरितात्मन् adj. *bösgesinnt* Spr. (II) 1239.

दुरुत adj. *schlecht gewebt* Pat. a. a. O. 2,405,b.

दुरुपचार, गुरव: *schwer zu befriedigen* ebend. 1,282,b.

दुरुपदिष्ट adj. *schlecht unterwiesen* ebend. 2,351,b.

दुरुपदेश m. *eine schlechte Unterweisung* ebend.

दुरुपयाद (Nachträge) adj. (f. या) ebend. 2,269,a.

दुर्गाख्य Spr. (II) 1038, v. l.

2. दुर्जाति, v. l. दुर्जात: vgl. Spr. (II) 2353.

दुर्दूरान्त adj. *sehr lang:* °पथ zu Spr. (II) 138.

दुर्धर 1) c) *schwer aufzuhalten* so v. a. *unumgänglich, nothwendig:* ein Suffix Vimana 5,2,31.

दुर्धाव adj. *schwer zu reinigen:* मनु Pat. a. a. O. 1,8,b.

दुर्धी, शाकिन्या इव दुर्धिय: *boshaft* Hem. Jogaç. 3,27.

दुर्नय und दुर्नीति Pat. a. a. O. 1,393,b.

दुर्बन्ध adj. *schwer zu verfassen;* davon nom. abstr. °त्व n. Vimana 1,3,12.

1. दुर्बुद्धि am Ende eines adj. comp.: मूढ° *thörichter Weise an — glaubend* Spr. (II) 2480.

दुर्भेद्य, बल Spr. (II) 4626.

1. दुर्मद *falscher Stolz* Spr. (II) 6093.

दुर्मदिन् adj. *Säufer, Trunkenbold* Pat. a. a. O. 2,367,a.

दुर्मन्मन् auch RV. 1,129,7.

दुर्लक्ष्य (Nachträge), zu Ratnâv. 56,18 vgl. Spr. (II) 4686.

दुर्लभता f. = दुर्लभत्व *Seltenheit* Spr. (II) 4935.

दुर्वासना, lies *eine falsche Vorstellung.*

दुर्वासस् 1) MBh. 12,11271 nach der Lesart der ed. Bomb.

दुर्विदग्ध Spr. (II) 7415.

2. दुर्वृत्त (Nachträge), an der letzten Stelle *sich schlecht betragend;* vgl. Spr. (II) 2880.

दुलि 2) Pat. a. a. O. 1,225,b. 226,a.

2. दुवस् Z. 3. 4 दुवसे wohl Infinitiv.

दुश्चरित *Thorheit,* pl. Spr. (II) 4587.

दुश्चारिन् Spr. (II) 7420.

दुश्चेष्टित, pl. Spr. (II) 7500.

दुःशासुस्, so zu lesen st. °शासु.

दुःशील, °चित्ता Spr. (II) 3502.

1. दुष् mit प्र *Jmd* (gen.) *Schaden bringen:* यस्य विक्षितं भोज्यं न तत्तस्य प्रदुष्यति Spr. (II) 5289.

दुष्कृत m. Harîv. 1721 in der neueren Ausg. st. दुष्मत्त.

दुष्कार Z. 15 lies 10,255.

दुष्टु Z. 3 lies दुष्टु st. सुष्टु.

दुष्प्रयुक्त adj. *schlecht —, falsch angewandt, — gebraucht* Vimana 5,2,55.

दुःस्थित n. = दुःस्थिति und vielleicht nur fehlerhaft dafür Kathâs. 40,108.

दुःस्मर adj. *dessen man sich ungern erinnert* Uttarar. 116,12 (157,14).

1. दुह् mit सम् 2) Z. 2 lies प्रज्ञा: st. प्रज्ञां.

दूषन (von 1. दु) n. *Gluth, Hitze im Körper* Kâraka 1,17.

दूरय् (von दूर), °यति *fern sein* von (abl.): दूरयत्यवनतेर्विवस्वति Cit. bei Vimana 5,2,79: — Vgl. द्वय्.

दूरेकिति TS. 3,4,2,2.

दृढता, त्रिनभाषितेषु Spr. (II) 4518.

दृढप्रहारिन् m. N. pr. eines Mannes Hem. Jogaç. 1,12.

दृति 1) Z. 8 zu दृते: पादात् vgl. दृतेश्चरणात् Vaṣiṣ. Jogaçâstra 1,1.

दृश् n. *Auge* Bhâg. P. 4,4,24.

दृष्टिदान n. *das Sichzeigen, Verlassen einer Person:* यु° Spr. (II) 196.

देवक, देवका f. Hypokoristikon von देवदत्ता Pat. a. a. O. 7,115,b.

देवकर्मन् m. *Meister des heiligen Werkes* RV. 10,130,1.

देवकाम m. *Magnet* Kiraṇâkara 5,203.

देवदत्तिका f. Hypokoristikon von देवदत्ता Pat. a. a. O. 7,115,b.

देवदिण in der Umgangssprache = देवदत्त ebend. 1,28,b.

देवद्रोणी (Nachträge), °द्रोणी Râgân. 5,141 (verwandt mit द्रोणपुष्पी).

1. देवव्रत n. Bez. verschiedener Sâman Sâmavidh. Br. 2,4,3. 4.

देवर्षि als Bez. *des Scheermessers oder Scheerers* TS. 1,2,8,1.

देवावृध 1) MBh. 1,228.

देव्य vgl. मु°.

देश m. = यादेश (?) *Gebiet* Spr. (II) 7005.

देशना vgl. वर्षा°.

देशाटन देश + भटन n. *das Reisen* Spr. (II) 2960.

देशावकाशिक n. und °व्रत n. Bez. *eines best.* Vrata bei den Gaina Hem. Jogaç. 3,83. 115.

देश्य (von 1. दिश्) adj. *richtig aufzufassen* Pat. a. a. O. 5,59,a.

देह 1) so v. a. *Person* Spr. (II) 3763.

दैन्य, दैन्यं कर् *sich ernstdrigen* Spr. (II) 4640.

दैवदत्ति m. patron. von देवदत्त Pat. a. a. O. 4,58,a.

दैवयातव obend. 4,71,a. °क also die richtige Form.

दोग्धृ letzte Zeile, die Stelle MBh. 12,2738 eine Zeile höher vor subst. zu stellen.

दोर्मूल Spr. (II) 7199.

दोषमय (von 1. दोष) adj. *aus Fehlern bestehend:* तिमिर् Spr. (II) 399.

दोषिन् *mit Fehlern behaftet* Spr. (II) 122.

दोस् 1) ṚV. 5,61,5.

दोह् (Nachträge), so zu lesen st. दाह्.

दोहल 2) unsere Hdschr. 10,55 दोहदिन् m.

दौर्हृद zu streichen, da दौर्हृद gemeint ist; vgl. P. 6,3,50 und Vimana 5,2,54.

1. द्युत् mit अभिवि, die Stelle gehört zu 3. द्युत् mit der Bed. *erbrechen.*

द्यूतालय (द्यूत + शा°) m. *Spielhaus* Taik. 3,3,291.

द्यौकार, द्यौः तुल्यान्विचित्रप्रासादादीन्कुर्वन्ति ते द्यौकाराः शिल्पिनः। द्याकारेति पाठान्तरे स्पष्टो ऽर्थः Nilak.

2. द्योतन (von 3. द्युत्) in कद्द्योतन.

द्योत्मन् (von 1. द्युत्) s. सु°.

द्यौद्रुम m. *Himmelsbaum,* = कल्पद्रुम Naish. 3,11.

द्यौकामि m. künstliches patron. Pat. a. a. O. 1,265,b.

द्रप्स auch *Banner* (im Zend *drafsha*) und द्रप्सिन् *ein Banner tragend;* s. u. सत्वन्.

द्रव (Nachträge) 2) d) Buan. Nirjaç. 19,90.

द्रविणम् vgl. वाज°, सु°.

1. द्रा mit अभिप्र gehört zu 1. द्रू; s. oben.

द्राविड 2) a) sg. Bez. des Landes Spr. (II) 7563.

द्राविन् *in Fluss gerathend:* लघु° Sarvadarçanas. 99,18.

1. द्रु, द्रुत n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

— समव Gop. Br. 1,1,7.

— विप्र letzte Zeile, lies 1,55,22.

2. द्रुक्, निद्रा°, nom. °द्रुग् st. °घ्रुग् einer Alliteration wegen Vimana 5,2,55.

द्रोण 10) N. pr. eines Tirtha Pat. a. a. O. 2,366,b.

द्रोणपुष्पी *Phlomis zeylanica* Roxb. Rigan. 3,128.

द्रोणिका 1) Karaka. 3,33 (fälschlich द्रो°).

द्रोणिका Karaka. 3,33 fehlerhaft für द्रो°.

द्रोह्वय (von द्रुह्य) adj.: मान Pat. a. a. O. 4,36,a.

द्वादशांश m. *ein Zwölftel* Sarad. 6,13.

द्वारशाखा, lies *Thürpfosten.*

द्विता, Kern's Deutung in Z. d. d. m. G. 23,223.fgg. von *jeher, je immer* kommt der Bed. sehr nahe, ist aber nicht überall durchführbar. Wir werden dadurch auf folgende Fassung geführt: *sofort; fortan, fernerhin;* mit यद् *sobald als, seit.* Z. B. ṚV. 1,37,9 *sobald die Kraft da ist (fliegen die Vögel von der Mutter aus d. h. aus dem Nest).* 127,7. Vgl. auch Fälle, wo es zu यद् im Nachsatz steht, wie 8,17,9. 8,1,28. 10,49,2.

द्विदल (?) Hem. Jogaç. 3,7.

द्विमूर्धन् 2) AV. 8,10,22.

द्विरघ und °रघ्य adjj. Pat. a. a. O. 4,91,b.

द्विर्भाव m. *doppeltes Wesen* so v. a. *List und Verstellung* Spr. (II) 1878,v.l.

द्विवाचिन् adj. *Zwei bezeichnend, ein Suffix des Duals* Kâtantra 2,3,7.

द्विव्रणीय s. u. व्रण.

1. द्विष् mit वि caus. *Jmdes* (acc.) *Ekel erregen* Spr. (II) 858.

द्विष Z. 2 lies द्विषत्व n. st. द्विषता f.

द्विस्थूण m. (sc. दृढ) Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,46.

द्वीप ṚV. 8,20,4.

द्वीप zu streichen.

द्वीरावतीक adj. *zwei* Irâvatî (Flüsse dieses Namens) *besitzend:* देश Pat. a. a. O. 1,262,b.

द्वैरात्रिक adj. *zweitägig* obend. 7,113,a.

द्वैवायन *ein Zeitraum von zwei Jahren* P. 5,1,130, Schol. — Vgl. त्रैवायण.

द्व्यङ्ग MBh. 9,1288 fehlerhaft für व्यङ्ग, व्यङ्ग ed. Bomb.

धंसु (von 1. दक्) adj. *brennend* ṚV. 10,115,4. दसु 2,4,4; vgl. ṚV. Prât. 4,11.

धडि, wohl धडिएव als Name zu fassen; vgl. केडिएव.

धनकपीवत् s. u. वनकपीवत्.

धनक्र m. *eine Art* Granthiparṇa Bhâvapr. im ÇKDa. u. रोचक.

धन्य 1) Z. 6. fg. besser wohl *hundert werth.*

धम्, ध्मात adj. und n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

— अव *anfachen* so v. a. *in Thätigkeit versetzen, reizen:* मेदो मांसं मलं क्लेत्रवधमति (= विलिखति Comm.) मीधुः Kârana 1,27.

— वि caus. *löschen:* कृताशं विध्मापयितुम् Hem. Jogaç. 2,81. — Vgl. विध्मापन.

धर् 22) a) धियस्व, धीयत TS. 2,6,8,3. Pârâçar. Bh. 2,10,6. Hierher zieht Aufrecht (Z. d. d. m. G. 25,232) auch ṚV. 1,37,7, indem er नै st. नि vermuthet. Zu unserer Auffassung vgl. 8,6,4.

— आ, partic. आधृत *enthalten in* (loc.) Pat. a. a. O. 2,380,b. 5,45,b.

— नि 4) vgl. oben u. simpl.

— परि *stützen:* (माम्) स्वबाहुभिः परिधार्य MBh. 5, 7229 nach der Lesart der ed. Bomb.

— प्र 4) सर्वासां नाम प्रधारितो ऽर्थः Pat. a. a. O. 3,94,b. 95,a.

— संप्र 3) Spr. (II) 2847.

धरणीध्र Vimana 5,2,36.

धर्मकर्मन् Spr. (II) 1025.

धर्मजन्मन् adj. von Dharma *erzeugt;* m. ein N. Judhishṭhira's Rigvarp. 1,21.

धर्मयुद्ध n. = धर्मसंगर Spr. (II) 3382.

धर्मसंगर m. *ein auf redliche Weise —, mit redlichen Waffen geführter Kampf:* स° (dieses anzunehmen) adj. MBh. 12,2349.

घर्ष् mit उद् caus. besser zu कृष्.

— उप TS. 6,4,3,1.

घवल 1) °गृह् nach Bühler zu Pañcat. ed. Bomb. II & III, 27,13 the upper story of a house, called so because it is painted white.

घवलय् (Nachträge) Spr. (II) 3138.

घँवीयंस् (von घव्) adj. compar. *rennend* ṚV. 5,12,5.

1. घा mit समव vgl. समवघान.

— घञ्युप *beilegen* Kāś. in Ind. St. 3,461.

— विपरि caus. *umwenden:* das Gesicht Gop. Br. 1,2,2.

— वि 1) Z. 6 lies 138,3. — 5) *verfassen* Spr. (II) 6441. — 6) किं विधीयते तेन *was fängt man damit an?* Spr. (II) 793.

— धनुवि med. *in Uebereinstimmung mit* (instr.) *vorschreiben* Pat. a. a. O. 1,15,b. 16,a.

— प्रतिवि 1) देवदत्तस्य समाधिं शरावैरोदनेन च प्रतिविधत्ते ebend. 1, 172,a.

— सम् 1) नाम *Jmd* (gen.) *einen Namen geben.*

— उपसम् 4) उपसंक्लृप्त *ergeben:* परिषद् Kāraka 3,3.

— विसम् med. *Jmd zu Grunde richten* Mitr. ST. (2te Aufl.) 1,309,3.

4. घा (Nachträge) vgl. auch सर्व°.

घाणक vgl. मण्डूरघाणिक.

1. घातु 2) Z. 15 lies प st. स.

घात्रीश्वरी f. *Grislea tomentosa* Candaś. im ÇKDa. u. वाह्लिकश्री.

घान्य vgl. auch मु°.

घान्यश्रेष्ठ n. = राजान्न ÇKDa. u. dem letzten Worte.

घामार्गव m. patron. des Vadiça Kāraka 1,13.

घायस् 1) (vgl. Nachträge) wohl so v. a. *leckend:* Flammen ṚV. 5,3, 8. die am Ufer *leckenden* Wellen 7,95,1.

1. धारक 2) *a*) zu streichen; s. u. वस्त्र.

धारावर, वर wohl nur Suffix.

धार्तराष्ट्र 4) Vaṇis. 5,4. fgg.

1. धाव् 2) *Jmd* (loc.) *nachlaufen* Spr. (II) 7129. *schwimmen* von Fischen 2336. — caus. 1) ṚV. 10,146,3.

2. धाव्, धौत n. *das Waschen:* शत° Spr. (II) 7303.

धिष्, °षति denom. von 2. धी Pat. a. a. O. 1,267,b.

1. धी, धधाथि ṚV. 10,31,3. Z. 4 zu lesen दीधिषुम् st. दीधिषूम्.

— धनु Z. 3 lies दीधिषुर्नरः.

— प्र *sich nachsehnen, nachstreben* ṚV. 1,113,10.

3. धीति für दीति *Glanz* (vgl. 3. धी) ṚV. 8,6,7.

धीतीका f. *Schicht, Lage:* धीतीकां तु करीषाणां प्रदीपयेत् Kāraka 1, 14 (vgl. ÇKDa. u. कोलाक). दीर्घिका v. l.

2. धीर *sich auf Etwas* (nom. act. im loc.) *verstehend* Spr. (II) 6110.

धीवर m. *Fischer* und zugleich *ein kluger Mann* (3. धी) Spr. (II) 3160.

धुनेति, oder *versteckten* (zu धन्) *Gang habend, Schleicher.*

1. धू mit व्या *abschütteln* Spr. (II) 3086.

— विनिस् 2) विनिर्धूतं (so ed. Bomb.) मूलम् MBh. 12,13272.

धून्वन् (partic. von 1. धू) m. *eine best. Personification* Śivapur. Ba. 1,2,5.

धूम wohl von 1. धन् wie 1. वाम von वन्.

धूमँतास adj. *vor Rauch erstickend* TBr. 3,10,11,1.

धूमस 2) lies *Mehl von gebrannten Bohnen* und यत्ते st. पात्रे Baudh. 3.

धूमोका (v. l. धूमाका) f. *ein best. Raubvogel* Kāraka 1,27.

धूमोद्गयेनि m. = धूमयेनि *Wolke* R. Gorr. 2,102,11.

धूली *Blüthenstaub* (?) Spr. (II) 5924.

धृतव्रत adj. *die Gewohnheit habend,* mit infin. MBh. 1,2334.

धृतात्मन् adj. *die Weltseele im Herzen tragend* oder *standfest* Spr. (II) 1759.

धृतिमालिन् m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. ed. Bomb. 1,28,7.

धेनुक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2033 nach der Lesart der ed. Bomb., लडक ed. Calc.

धोपिन् Spr. (II) 7506.

धौतक adj. *aus gereinigter Seide verfertigt* Pat. a. a. O. 3,60,a.

धौम्य 1) patron. des Dantâvala Gop. Br. 1,2,8.

1. ध्या mit अभि *halten für:* यत्कल्याणमभिध्यायेत् Spr. (II) 5039.

ध्यानशीला f. N. pr. einer Göttin Kālakarṇa 3,143.

ध्रुव 2) *i*) hierher vielleicht ईक्षी च ध्रुवो कुरु ईक्षी पुत्रो कुरु Pat. a. a. O. 3,28,a.

ध्वंस् mit उप pass. *sich übersteigen:* यज्ञमानो रज्ञसापध्वस्यति (vielleicht रज्ञसो°) Gop. Br. 1,1,28.

— उद् med. *überzogen* —, *befallen werden:* कण्ठो वायुना Kāraka 2, 6. von einer Seuche 3,3. — caus. *übersteigen, befallen:* व्याधयो जनपदान् ebend.

ध्वंस 2) vielleicht fehlerhaft für वंशी, wie Baudh. und Çāṅkh. Śr. 1,1,11. 14 lesen.

ध्वज 7) es ist क्रमध्वज gemeint.

1. धन् caus. *füge schwärzen* hinzu.

ध्वस्र 1) lies *zerfallend, welk;* im zweiten Beispiel *abfallend, sich entziehend.*

नंदस् m. *ein den Verehrern zulächelnder* (freundlicher) *Gott* Nilak. nach einer werthlosen Etymologie MBh. 1,6450, v. l.

नखनिर्घात, °घातो ÇKDa. u. वृत्तनिर्घातिका.

नखंयम *karg, wirthlich:* घम्भांसि सहितां Z. d. m. G. 27,67.

नगरोवक, richtiger °वक.

नतराम् Pat. a. a. O. 1,229,a.

नति 3) नत्यतां Âçv. Çr. 1,5,10.

नन्द् mit समा caus. *Jmd erfreuen:* समानन्दयते Spr. (II) 858.

नन्द m. *Sohn* (vgl. नन्दन): गोप° Spr. (II) 1110. N. pr. eines Mannes: तृणो न नन्दः वनकोटकैः Hem. Joṇaç. 2,111.

नन्दन m. ein best. musikalischer Kunstausdruck; s. u. 4. वामक.

नन्द्यावर्त 1) Z. 3 MBh. 7,2930 nach Nilak. *eine Schüssel* oder *Gefäss in der Form eines* Nandjâvarta.

नपुंसकत्व n. nom. abstr. von नपुंसक 1) Hem. Joṇaç. 2,102.

नभोविद् adj. *im Dunst —, in der Luft befindlich* ṚV. 10,46,1.

2. नभ्य ṚV. 1,164,48. adj. *zu einer Nabe geeignet:* वृत्त, शिंशपा Pat. a. a. O. 3,2,b.

नम् 2) ṚV. 1,165,6 unter 3) zu stellen und hier beizufügen: (den

Bogen, ein Geschoss) *richten auf* (gen.). — caus. 4) zu streichen und die beiden Stellen u. 2) zu stellen; vgl. u. वधस्न.

— अप *ausbiegen, ausweichen* ṚV. 6,17,9.

— अव, शिरोऽवनतलाङ्गूल ein Löwe Spr. (II) 2347.

— परि (Nachtrage) Z. 6. 7 lies °शरच्चन्द्रिकासु तपासु *in den vom Vollmond erleuchteten Herbstnächten*, womit zu vergleichen ist परिणतशरच्चन्द्रकिरणास्त्रिपामाः Spr. (II) 6068 (Bhartṛ. 3,86).

— विपरि caus. *umändern, umwandeln* Pat. a. a. O. 1,8,a.

नमस्यु *sich beugend*, s. घ° ṚV. 10,48,6.

नमोवृध adj. *verehrend, verherrlichend* ṚV. 7,21,9. 8,13,9.

नयनास m. = नयनोपास *Augenwinkel* Spr. (II) 4258.

नयितव्य, नेतव्य die neuere Ausg.

1. नर् 1) नरि (nach Padap.) in der Verbindung नर्यपांसि ṚV. 1, 85,9. 8,85,19 lässt sich entweder als neutr. pl. eines adj. नर् *männlich* ansehen oder als eine ungenaue Aussprache für नर्यापांसि (नरियापांसि). Vgl. ṚV. 4,19,10. 8,75,21 und नर्यापस्.

नरक्रि 2) Verfasser des Nighaṇṭuśeṣa.

नर्त् intens. नरीनर्त्ति von einem Betrunkenen Hem. Jogaç. 3,14.

— प्रति intens. *tanzen:* प्रियां मयूरः प्रतिनर्तीति Pat. a. a. O. 7,123,a.

नर्तकक demin. von नर्तक: davon f. नर्तकिका ebend. 6,96,a.

नलक 1) auch m. s. u. वंश 1) d). — 2) f. नलिका *Röhre* Spr. (II) 5377. 7301.

नलदी f. = नलद 1) *Narde* AV. 4,37,3.

नलिनीका f. *eine best. Gemüsepflanze* Karaka 1,27.

नलिनाङ्ग adj. = खलिनाङ्ग *dessen Körper nicht gesalbt ist* B. ed. Bomb. 1,6,10.

नवद्वार, पुर (vom *Leibe*) MBh. 14,987.

नवीकर्, °कृत (= वीकृत gedr.) R. 3,3,9.

1. नश् mit वि, व्यनशत् mit caus. Bed. Harıv. 4167 nach der Lesart der neueren Ausg.

नशक्ति f. = अशक्ति *Unvermögen* Kiraṇakoṣa 3,3.

नस्पर्शन n. = अस्पर्शन Spr. (II) 3117.

1. नह् mit प्रति s. प्रतीनाह्.

नकुस् Z. 10 lies 1,122,3.

नाकपाली AV. 10,8,12.

1. नाग 2) a) Kiraṇakoṣa 3,212. 217. 220. *eine Art Talk* Bhāvapr. im ÇKDa. u. वङ्ग.

नागकेसर (°केशर) n. *eine Art Stahl* ÇKDa. u. वङ्ग.

नागर 4) d) (Nachtrage) N. pr. einer Stadt Rāǵan. 3,135.

नागवध adj. रस *ein Mittel gegen Aussatz, zu dessen Bereitung eine Schlange verwendet wird*, Bhāvapr. 7.

नागस्वरूपिणी zu streichen; vgl. नाग°.

नागारि, °तस्करेश Saṁsk. K. 22,b,3.

नागेश्वर m. *eine best. Pflanze* Pāṇ. 1,6,22.

नाटिन् adj. *tanzend* in संध्या°.

नाट्य Z. 13. fg. *das Costum eines Schauspielers* auch Bālar. P. 10,41,1.

नाडीस्वेद m. *Dampfbad durch Röhren* Karaka 1,14.

नातानतिक adj. von नत + अनत Pat. a. a. O. 4,73,b.

नानान्द्र Z. 2 lies नानान्द्राण.

नानरीयक = अनन्तरीयक *nicht ausserhalb sich befindend, in Etwas enthalten, inhärent* Pat. a. a. O. 1,136,a (mit Ballant. नान्तरीयको zu lesen). Cit. bei Vimada 2,1,3. °त्व n. nom. abstr. Pat. a. a. O. 1,196,a. b. 3,88,b. 103,a.

नापुंसक (von नपुंसक) adj. *neutral:* लिङ्ग Pat. a. a. O. 4,7,b.

नाभि vgl. auch शङ्ख°.

नामचोर् m. *Namensdieb, der eines Andern Namen sich zueignet;* s. u. वटावोक.

नामन् vgl. auch सुमनस्°.

नायकत्व Spr. (II) 1012.

नारसिंहचूर्ण n. N. *eines best. Aphrodisiacum* Kāśīrām. 490.

नारायण 6) am Ende, das Oel Çiraṁ. Saṁh. 2,9,19. Kāśīrām. 169. चूर्ण *ein best. Heilpulver* Karaka 8,11. Çiraṁ. Saṁh. 2,6,32.

नार्कल्पि m. patron. von नृकल्प Pat. a. a. O. 1,180,a.

नार्नमनि m. patron. von नृनमन ebend. 1,24,b.

नावन (Nachträge) auch Karaka 1,7. 8,18. 10,9.

नाश्य *zu verbannen* Āpast. 2,26,21. 27,8.

नासा vgl. प्रुक°.

नासावेध m. *das Durchbohren der Nase* (beim Vieh) Hem. Jogaç. 3,110.

निकर्तर् nom. ag. *der schlecht —, gemein verführt* MBh. 3,1335 nach der Lesart der ed. Bomb., विकर्तर् ed. Calc.

निकृतिजीवन adj. *von Unredlichkeit lebend, sich unredlich betragend* MBh. 12,2550 nach der Lesart der ed. Bomb. (°जीवन).

निकृतिमत् (von निकृति) adj. *unehrlich, unredlich:* सुहृद् Spr. (II) 3773.

निकोच m. *das Zusammenkneifen:* घट्टनिकोचैः Pat. a. a. O. 2,313,b.

निक्षेप 1) *das Niedersetzen, Hinstellen* Hem. Jogaç. 1,24.

निक्षेपिन् (von निक्षेप) adj. *im Besitz eines Depositums seiend* Spr. (II) 3700, v. l.

निगम 6) नगरं वा निगमं वा ग्रामं वा गोष्ठं वागारं वा Śāṅkhāyan. Br. 2,4,2. ग्रामनगरनिगमजनपद Karaka 2,6.

निगादिन्, श्रुत° (einmal) *Gehörtes herzusagen im Stande seiend* Śāṅkhāyan. Br. 2,7,4. fgg.

निगु vgl. लिगु.

निगद् 1) f) Spr. (II) 6997.

निघण्टुशास्त्र (Nachtrage) der richtige Titel von Narahari's *Wörterbuch*, das bei uns nach ÇKDa. als Rāǵanighaṇṭu citirt wird.

निचक्र m. N. pr. eines Mannes Pat. a. a. O. 4,60,a. — Vgl. नैचक्र.

निचक्रया instr. adv. *ohne Wagen* ṚV. 8,7,23.

निचतुम् m. N. pr. eines Mannes; s. u. विचतुम् 2).

निज 2) *in der eigenen Person befindlich, innewohnend:* °शत्रु R. 2,1,1.

नित्य definirt Pat. a. a. O. 1,14,a. — 2) यत्तदात्मनि नित्यानाम् *in dem Selbst befindlich* Spr. (II) 6617.

निदर्शयितव्य adj. *zu Gesicht zu bringen, vorzuführen, zu zeigen* Pat. a. a. O. 1,217,a.

निदा, streiche निर्दा und das Beispiel ṚV. 8,48,14, weil निदा zu lesen ist.

निद्रा 1) RV. 8,48,14.

निन्द्रा *Schimpf, Schande* Spr. (II) 1833.

निपत्योरोक्षिणी, wohl richtiger *fallend und wieder steigend.*

निपरण n. nom. act. und निपारक nom. sg. von 1. पॄ mit नि Pat. a. a. O. 7,81,a.

निपात्य, य° ebend. 7,91,a. 134,a.

निपारक s. oben u. निपरण.

निंपीति, so zu betonen nach P. 6,2,50.

निबिड, so die Bomb. Ausgg. st. निविड.

निभ 2) विशेषेच्छानिभात् Kathâs. 24,140.

निमातव्य *auszumessen, gemessen werdend* Pat. a. a. O. 7,84,a.

निंमिति (von 1. मि mit नि) *f. Ansiedlung* lässt sich RV. 5,62,7 annehmen.

निम्बूक, lies निम्बू st. निस्बू.

नियम 3) नियमेन तुल्यं भवति ज्ञानमज्ञानेन *mit Einschränkungen d. h. unter gewissen Voraussetzungen* Kâraka 1,15.

नियम्य adj. *zu beschränken* Pat. a. a. O. 6(4),6,b.

नियाम Hem. Joâç. 4,34 fehlerhaft für नियम, wie auch das Metrum zeigt.

नियुत् verbessert u. 2. यु mit नि.

नियोजक s. सर्व°.

नियोजयितव्य lies *zu versehen* —, *zu strafen mit.*

नियोज्य (Nachträge), an der ersten Stelle zu *versehen mit;* vgl. Spr. (II) 4116.

निरनुनासिक adj. *nicht nasal* Pat. a. a. O. 6,29,a.

निरनुबन्धक adj. *ohne* Anubandha (Bed. 1) *f)* ebend. 1,81,a.

निरप R. ed. Bomb. 2,28,10.

निरपवाद *keiner Ausnahme unterworfen* Pat. a. a. O. 4,79,a. °क dass. 83,b.

निरपायिन् *unvergänglich:* कीर्ति Spr. (II) 5442.

निरय, der Mutterleib mit einer *Hölle* verglichen Maitrjup. 3,4. Z. 4 R. 2,28,10 zu streichen, da hier mit der ed. Bomb. निरप zu lesen ist.

निराकृतिन्, य° *unvollendet, unfertig* Âçv. Çr. 8,14,1.

निराधान, lies *ausgeräumt.*

निरायति adj. *der keine Zukunft hat* Spr. (II) 6149.

निरालम्ब 1) so v. a. *in der Luft schwebend:* der Pfad der Sonne Spr. (II) 5712.

निराशा f. so v. a. नैराश्य *das Aufgeben aller Hoffnungen* Spr. (II) 1050.

निरुज *frei von Schmerz* MBh. 8,4893 nach der Lesart der ed. Bomb., विरुज ed. Calc.

निरुपकारिन् adj. *der Einem keinen Dienst erwiesen hat* oder *zu erweisen vermag* Spr. (II) 4314 (Conj.).

निरुपकृत Spr. (II) 7062.

निरूपक adj. *bestimmend, definirend:* परमार्थ° Comm. zu Bala. P. 11,2,20.

निरूप्य *festzustellen* so v. a. *fraglich, nicht sicher* Vimâna 8,2,31.

निर्गम *Ausgang* so v. a. *Ende* Spr. (II) 226.

निर्चक् m. *das Herausfinden, Erkennen:* रूप° Pat. a. a. O. 1,89,a. 122,b.

निर्जन्तु adj. *frei von lebenden Wesen, — Gewürm u. s. w.* Hem. Joâç. 1,39.

1. निर्डीर 2) *c)* definirt Hem. Joâç. 4,85. कर्म° 85.

निर्जलद् adj. (f. या) *wolkenlos* Spr. (II) 5773.

निर्दरण adj. (f. या) *frei von Spalten, — Löchern:* Erdboden Kâm. Nîtis. 19,12. — Vgl. विदर.

निर्दलन, सोम° Mân. n. 143. Viçva bei Mallin. zu Kum. 12,10.

निर्दैव Spr. (II) 3757 (wohl *ohne Götterstatuen*).

निर्नायक adj. *ohne Führer, — Leiter, wo Niemand das Regiment führt* Spr. (II) 3762.

निर्नाशन adj. *vertreibend, verscheuchend:* दुर्गन्ध° Spr. (II) 2536.

निर्भय 1) *a)* °म् adv.: स्वपिति Spr. (II) 1417.

निर्भीकि adj. *furchtlos* Kâraka 1,8. *sich nicht fürchtend vor* (abl.) Hem. Joâç. 3,131.

निर्मज्, vielleicht निर्मज्ञा f. *Schwemme;* nach Sây. निर्मज् = प्रुङ.

निर्मनुष्य, जगत् MBh. 5,5297.

निर्मत्सु adj. *unschuldig:* जन्तव: Hem. Joâç. 2,24.

निर्मलीकरण n. *das Reinigen* Pat. a. a. O. 1,231,b.

निर्माण 5) streiche f.

निर्माध्यस्थ n. *Interesse für Jmd* R. ed. Bomb. 2,11,11.

निर्मान Spr. (II) 3763.

निर्मीय adj. *truglos:* सुमुरा: RV. 10,124,8.

निर्माष्टि (wohl so zu lesen st. निर्माष्टि) f. N. pr. der Gattin Duḥçaha's Mân. P. 51,1.

निर्मिथ्य adj. *wahr:* वचस् Hem. Joâç. 4,75.

निर्लवण adj. *ohne Anmuth:* रूप Spr. (II) 3757.

निर्लाञ्छन (von लाञ्छ् mit निस्) n. bei den Gaina *das grausame Kennzeichnen der Hausthiere durch Durchbohrung der Nase* u. s. w. Hem. Joâç. 3,99. 110.

निर्वस्त्र adj. *unbekleidet, der Kleider beraubt:* निर्वस्त्रीक्रियते Spr. (II) 1661.

1. निर्वाण 1) दीपिका Hem. Joâç. 4,40.

2. निर्वाण 1) Z. 8. fgg. दीपिका खलु निर्वाणा निर्वाणपदर्शिनी Hem. Joâç. 4,40.

2. निर्वापण adj. *kühlend* Kâraka 1,13.

निर्वाराणसि adj. *der Vârâṇasî verlassen hat* Pat. a. a. O. 1,263,a.

निर्वाहिन् *ausführend, vollführend:* प्रारम्भ° Spr. (II) 5369.

निर्विकल्प adj. (f. या) in der in den Nachträgen angegebenen Bed. auch Spr. (II) 6873.

निर्विद् f. = निर्वेद 3) Kathâs. 39,199.

निर्वृति 1) *b)* Hem. Joâç. 1,3. 3,134.

निर्वृतिचतुस् m. N. pr. eines Ṛshi Mân. P. 74,27.

निर्वृतशत्रु, die neuere Ausg. an der ersten Stelle निवृत्त°, an der zweiten त्रिगर्त°.

निर्वृष्ट *Ende der Regenzeit* Hariv. 3828. निर्वृष्टि die neuere Ausg., निर्विष्ट = कृतविवाह Nilak.

निर्वेशन n. *das Geniessen:* गव्यूति° Âpast. 1,18,1; vgl. 13.

निर्वेश्य s. weiter unten u. निवेश्य.

निर्वेष्टव्य 2) genauer *woran man seine Freude —, Genuss haben*

kann, geniessbar.

निर्वेरिण Z. 2 bis Tattvas. st. Tarkasaṁgr.

निर्वेति adj. *waffenlos* Jiṭ. 1,335.

निलीनक adj. *zusammengefallen* (beim Kochen): दधि Pat. a. a. O. 2, 332, a.

निवरण s. सर्वनिवरणविष्कम्भिन्.

निवर्त्य adj. *rückgängig zu machen, für ungültig zu erklären* Pat. a. a. O. 3,67,b.

निवारिन् adj. *abwehrend, zurückhaltend:* वैरिवारनिवारिणे (so lesen wir) Hem. Joḍaç. 1,1.

निवाक् vgl. नीवाक् weiter unten.

निविड, निविड die Bomb. Ausgg.

निवेदयिषु, विवेदयिषु ed. Bomb.

निवेशन 3) *e)* Z. 2 RV. 7,19,5 gehört zu c): *am Abend die hundertste* (zu den 99 am Tage).

निवेश्य 3) ed. Bomb. निर्वेश्य, wie wir vermuthet hatten.

निवेष्टव्य *hineinzustechen:* घम्भसि Spr. (II) 3007, v. l.

निशाचर 1) *g) eine Art* Granthiparṇa Baiṭara. im ÇKDa. u. रोचक.

निशिति, lies *das Versetzen von Speisen u. s. w., Bewirthung;* vgl. 1. शा mit नि.

निशुम्भ 2) Z. 2. 3 lies 9398. 9424. st. 6398. 6424.

निशतवारिंश lies *über viersig* und vgl. Pat. a. a. O. 5,79,a und निशिंश.

निषेवितृ, घृति° *zu sehr hingegeben,* mit acc. Suça. 1,69,21.

निष्कम्पत्व n. *Unbeweglichkeit, Unerschütterlichkeit* Vimâna 3,1,24.

निष्कलि m. *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. ed. Bomb. 1,28,7.

2. निष्कारण *nicht mit eigennützigen Zwecken verbunden:* ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मो ऽध्येय: Pat. a. a. O. 1,5,a.

निष्कुट 4) Z. 1 lies *Bettstelle.*

निष्ठा 2) *e)* शास्त्रेषु *vollständige Vertrautheit mit* Spr. (II) 6451.

निष्ठीविका f. *Speichel* u. dgl. Kâraka 1,8.

निष्ठुर, °वाग्पात Spr. (II) 2542.

निष्पुरीषीभाव m. *Befreiung von Schmutz, Reinigung* Sâmavidh. Br. 1,5,13.

निसर्ग 5) ब्राह्मणे तन्निसर्गेण *von selbst* Hem. Joḍaç. 1,17.

निमूदक und °मूदन, richtiger °धूदक und °धूदन.

निस्तासत्र adj. *kein gewebtes Gewand tragend* Sâmavidh. Br. 2,4,9.

निस्पृक् adj. *begehrend nach, nachstellend* RV. 10,93,2.

निःसचिव adj. *ohne Minister:* राज्य Spr. (II) 5773.

निःसंचार vgl. u. संचार am Ende.

निःस्नेह adj. *frei von Liebe* und *kein Oel enthaltend* Spr. (II) 2296.

2. निःस्वन (Nachträge), मेघ Spr. (II) 2089.

निःस्वभाव (Nachträge) lies m. *Besitzlosigkeit, Armuth* und vgl. Spr. (II) 7029.

1. नी mit अभि, partic. °नीत *erreichbar* und अनभिनीत *unerreichbar* Pat. a. a. O. 3,95,a.

— परि *entführen* RV. 6,4,6.

— प्रतिप्र Âçv. Ça. 2,6,2. 10,1.

— सम् 2) zu streichen und die Beispiele mit 1) zu vereinigen.

नीचगामिन् adj. *dem Niedrigen nachgehend* (eig. und übertr.): Fürst und Weiber Spr. (II) 1662.

नीचजाति adj. *von geringer Herkunft* Spr. (II) 2036.

नीरशन, so zu schreiben st. नीरसन.

नील, नास्य पापं चकुषो (so lesen wir) मुखान्नीलं द्योति (wohl so zu lesen) Kauṣ. Up. 3,1; vgl. TS. 3,1,4,2.

नीलपिण्ड n. *eine Art Stahl* ÇKDa. u. वप्र.

नीलाचल (Nachträge) vgl. लीलाचल.

नीलाभ m. N. pr. eines Berges Kiraṇâvalî 1,16.

नीलायुध s. लीलायुध.

नीवाक् m. = निवाक्, यक्ष्मात् Gop. Br. 1,4,22.

नीव्या f. von unbekannter Bed. RV. 6,32,4. möglich wäre *Gewand* (vgl. नीवि); = नव्य Sây.

2. नु mit संप्र *mit Jubel Jmd empfangen:* °णूपते MBh. 13,3850 nach der Lesart der ed. Bomb.

— प्रति *Etwas* (acc.) *gutheissen* Pat. a. a. O. 3,41,b.

1. नुद् vgl. auch अनुत्त.

— वि 3) ed. Bomb. an beiden Stellen वि-सुद्.

नृकल्प m. N. pr.; s. oben नार्कल्प्य.

नृनमन ist nom. ag. *Männer beugend;* auch N. pr. (vgl. oben नार्नमनि).

नृपप्रिय 1) *f) eine Papageienart* Râǵân. im ÇKDa. u. राजप्रिय.

नृपशु *ein Vieh von einem Menschen* Z. d. d. m. G. 27,79. Vṛṣṭi. 199. Hem. Joḍaç. 1,14. 4,35 (zu lesen नृपशङ्क).

2. नृशंस, °वादिन् vgl. Spr. (II) 3646.

नृषद्वर adj. = नृषद्वन् Âit. Br. 7,15. Sây. trennt नृषद् und वर.

नृसिंहक m. = नृसिंह 2) Spr. (II) 2527.

नेय *zu stehen* (eine Figur im Spiel) Pat. a. a. O. 3,33,a.

नेष्टु m. = लेष्टु *Erdklass, Erdscholle:* सीता° MBh. 13,2135 nach der Lesart der ed. Bomb.

नैगुर्त adj. *Besieger der* Nigut RV. 1,97,53.

नैगेय vgl. Monatsberr. d. K. Pr. Ak. d. Ww. 1868, S. 228.

नैचक्य m. patron. von निचक Pat. a. a. O. 4,60,b.

नैपथ्य (von नेपथ्य) adj. *im Costum eines Schauspielers aufgeführt* Milav. ed. Bomb. 27,7, v. l.

नैप्य m. patron. von नीप Pat. a. a. O. 4,60,b. नैप्य und नीप gadr.

नैबद्धकं adj. von निबद्ध gaṇa वारकादि zu P. 4,2,30.

नैर्देशिक adj. (f. ई) zu निर्देश 2) Pat. a. a. O. 1,163,b. 8,38,b.

नैवासिक *den Wohnort bezeichnend* (Suffix) ebend. 4,71,b.

नैषधक m. *eine best. Körnerfrucht* Kâraka 1,27. Vigân. 1,6,5. — Vgl. नैषध 2).

नोदन n. *Anstoss, Impuls* Kap. 5,1,8. fgg.

नोनुव (vom intens. von 2. नु) adj. *tönend, schallend* u. s. w.: मरुतां Nin. 6,20.

न्यास *der ursprüngliche, richtige Wortlaut* Pat. a. a. O. 1,241,b. 295,a. b. 2,316,a. 3,7,b. 8,a. 48,b. 48,a. 53,a. 83,a. 90,a. 118,b. 113,b. 4,37,a. 76,b. 5,8,a. 54,a. 6,47,b. 6(4),28,b. — Vgl. पदान्यास् und सान्यासिक.

पत vgl. उप°.

पतयात 2) गुणेषु Hem. Joaç. 1,52. 4,118.

पत्र 2) am Ende, RV. 8,6,47. 4,17 gehören zu 1); vgl. u. 1. सामन्.

पत्रकोल = पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक und नागर Bhâvapr. 5.

पत्रगङ्ग Kâraka 8,2.

पत्रभङ्ग 3) (Nachträge) an der angeführten Stelle: पर्पटाब्दामृताविश्वाकेरातैः साधितं तलम्। पत्रभङ्गमिदं तैलम् Çârṅg. Saṃh. 2,2,17.

पत्रम 3) *b*) auch *eine Personalendung des Imperativs* Kâtantra 3, 1,18. 26.

पत्रविंशक 1) MBh. 12,11252. — 2) *25 Jahre alt* MBh. 3,13899.

पत्रविंशतिक 1) adj. *aus 25* (Pañca) *bestehend:* दम Jiân. 2,308. — 2) n. *25-Zahl* MBh. 12,11361.

पत्राशत् m. pl. Harîv. 602 nach der Lesart der neueren Ausg.

पत्राशत n. = पत्राशत् *fünfzig* Spr. (II) 3939.

पत्वासक m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2139 nach der Lesart der ed. Bomb., पठ° ed. Calc.

पत्स् 1) n. Spr. (II) 2451.

पत्नीर्, शाटीपत्नीर् n. sg. copul. comp. gaṇa गवाश्वादि zu P. 2,4,11.

पत्नु 1) °मति adj. Spr. (II) 2542.

पत्नृ vgl. सुरभी°.

पठ्, intens. पापठीति Spr. (II) 4053.

पठ्वासक s. oben पत्वासक.

पठितव्य *herzusagen, zu erwähnen* Pat. a. a. O. 1,243,b.

1. पत् mit अव, अनवपतितशब्द् adj. wohl *dessen Stimme nicht belegt ist* Kâraka 3,8.

— विपर् *umhergehen* Pat. a. a. O. 3,48,a.

पतग m. = पतंग *die Sonne* R. 5,5,27.

पतंगक m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,6; vgl. पतंग 2) *l*).

पतिमती (Nachträge), प्रथते त्वया पतिमती पृथिवी *dich zum Herrn (Gatten) habend* Pat. a. a. O. 4,21,b.

पतिरिष्, lies *den Gatten täuschend;* vgl. 2. रिष् 1).

पत्कायिन् (Nachträge) vgl. Pat. a. a. O. 3,40,a.

पत्त्र st. पद् in ललाट° Spr. (II) 3539.

पत्त्रज्ञ und पत्त्रविद् adj. *blattkundig* so v. a. *Botaniker* Vîmâna 2,2,24.

पत्त्रदेवी f. N. pr. einer Göttin Kâlakarṇa 4,20.

पत्त्रल adj. *laubreich:* वन Vîmâna 5,2,35.

पत्त्रशाक Z. 1 lies 12,65 st. 4,49.

पत्त्राङ्ग 1) an der zweiten Stelle im AK. *Cassalpina Sappan.*

पत्नीय् (von पत्नी), °यति *Jmd* (acc.) *für die Gattin halten:* मातरम् Spr. (II) 3899.

पत्मन् gehört zu पथ् und bedeutet *Pfad, Bahn* (vgl. im Zend *pathman, pathmainja*). Füge bei TS. 5,5,4,2 und lies 8,8,23 st. 8,6,2. 8,23.

पद्य Z. 4 vgl. Rorn's Programm über den AV. in Kashmir S. 26.

1. पद् mit अभि 3) Z. 12. fg. MBh. 12,8202 gehört zu 6), wo *hängen an Etwas* hinzuzufügen ist; vgl. Spr. (II) 3330.

— समभि 1) so v. a. *des Lohnes theilhaftig werden* Spr. (II) 7572.

— पर्यव, partic. °पन्न *zusammengestürzt, zu Nichte geworden:* कार्याणि Pat. a. a. O. 1,186,a. 2,348,a. 3,12,b. 8,40,a. — Vgl. पर्यवपाद् fg. weiter unten.

— प्रोद् caus. *entstehen lassen, hervorbringen, bewirken:* कश्चिच्छोको न मन्युर्वा त्वया प्रोत्पाद्यते MBh. 2,335 nach der Lesart der ed. Bomb.

— समुप (Nachträge) lies *erleben* und vgl. Spr. (II) 7073.

— विनिस् vgl. विनिष्पाद्य.

— प्रति 1) *heimkehren* Spr. (II) 4230. — 5) (Nachträge) füge *halten für* hinzu.

— विप्रति, °पन्नबुद्धि adj. *eine verkehrte Ansicht habend* Pat. a. a. O. 1,10,a.

— वि 1) (Nachträge) in Spr. 3498 v. l. mit प्र: vgl. Spr. (II) 364.

— उपसम्, partic. उपसंपन्न = निरुत und सुसंस्कृत Mân. n. 231.

पद् 1) m. R. ed. Bomb. 1,29,20. — 2) m. सर्वे पदा हस्तिपदे प्रविष्टाः Spr. (II) 2563. — 8) Z. 3 die Stelle AV. 8,70,2 gehört zu 1); vgl. u. 4. पुन् mit उद्.

पदनी, lies *der Spur nachfolgend;* vgl. u. व्यध् 1).

पदपोपन, lies *die Fusspur verwischend* (wie es durch etwas am Fuss Nachgeschlepptes geschieht); n. *eine solche Vorrichtung* (durch einen angebundenen Bengel, Büschel oder dgl.); etwa auch *Koppel, pedica* AV. 5,19,12 (so zu lesen).

पदरचना f. *Zusammenfügung von Worten, eine litterärische Composition* Vîmâna 1,2,7.

पदार्घ 1) पदार्घानामनित्यता Hem. Joaç. 4,56.

1. पद्मासन 2) Hem. Joaç. 4,128.

पन्थान m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. ed. Bomb. 1,28,9. संधान Schol.

पन्नग 1) Hem. Joaç. 1,2.

पन्नट्रूप adj. (f. घा) *entfärbt:* कुमारिका Kâraka 8,7. Daher heisst das Kapitel पन्नट्रूपीय.

पयःपूर *Wassermenge* Spr. (II) 6762.

पयस्तम und पयिष्ठ superl. zu पयस्विन् Pat. a. a. O. 6(4),47,a.

पयोद् adj. *Wasser spendend* und zugleich m. *Wolke* Spr. (II) 2209.

पयोधि *Wasserbehälter* und zugleich *Meer* Spr. (II) 2209.

1. पर् mit घा intens. पापोपूर्यते Pat. a. a. O. 1,266,b.

— नि, निपूर्ताः पिण्डाः ebend. 6,13,a. *b.* intens. निपोपूर्यते ebend.

3. पर् mit घा Z. 7, पापृणोति erklärt der Comm. wie wir durch व्याप्रियते.

— व्या, व्यापृण्वान = व्याप्रियमाण (Comm.) Bâlar. P. ed. Bomb. 1,11,27.

पर् 3) *c*) Bez. *des Lautes in dem ersten seiner vier Stadien.* — *d*) *ein best. Zeitmaass* Sây. zu RV. 1,123,8. पर् bei Weber, Kâlakâñ. 374=24[III].

परभाव m. *das Nachstehen* (eines Wortes im Comp.) Pat. a. a. O. 2,371,b.

परम् 1) नहि प्रमादात्परमस्ति (= पहो ऽस्ति) कश्चिद्वधो नराणामिह जीवलोके Spr. (II) 3518. — 5) न परम् — अपि *nicht nur — sondern auch* Kathâs. 2, 82. 33, 138. न परम् — यावत् *nicht nur — sondern sogar auch* s. u. यावत् 2) *g*).

परमद् m. *die äusserste Stufe des Rausches* (bei welcher alle drei Humores betheiligt sind) Çârṅg. Saṃh. 1,7,27.

परमर्षि auch die *Weltseele;* s. u. ऋषि 1) *c*).

परसवर्णीभू *mit dem nachfolgenden Laute homogen werden:* °भूत Pat.

a. a. O. 8,67,a.

पराङ्ना (Nachträge) fehlerhaft für वाराङ्ना; vgl. Spr. (II) 4915.

पराचीन 1) c) *vorzeitig* Z. d. d. m. G. 27,97.

परायण 2) Z. 6. 7 ed. Bomb. तस्य कालः परायणम्; vgl. Spr. (II) 3182.

पराराक m. oder °का f. (पला° v. l.) *eine best. Pflanze* Âpast. 1,17,26.

परार्धक *die eine Hälfte von Etwas* Spr. (II) 7321.

परिकृश Pat. a. a. O. 8,39,b.

परिक्रिया 2) राज्य° *Ausübung der Herrscherwürde* Spr. (II) 3489.

परिक्षेप 3) *Umfang:* षोडशाङ्गुलिपरिक्षेपे जानुनी Kâraka 3,8.

परिगन्तव्य adj. *zu erlangen, zu erreichen:* परिगत° (so lesen wir mit der ed. Bomb.) Vaṛis. 41,11.

परिग्रह 3) परिग्रहः (im Gegens. zu सर्वग्रह) पुनः प्रमाणग्रहणमेकैकस्येन Kâraka 3,1. — 7) *Besitz* Hem. Joḍaç. 2,105. fgg.

परिग्रहीतृ 3) *Beherrscher* Pat. a. a. O. 2,380,a.

परिग्रहीतव्य adj. *was beherrscht wird* ebend.

परिघुर्घरम् (Nachträge), °घर्घरम् unsere Ausg. des VP.

परिचिन्तनीय (Nachträge) Spr. (II) 7317.

परिभ्रमन् 1) füge bei *rings befindlich, überall gegenwärtig* (in mehreren der angeführten Stellen; auch परिभ्रेव स्वधा गयः *überall hast du Heimath und Wohnung* ṚV. 6,2,8).

परिणति 1) (Nachträge) वाचो परिणतिषु *so v. a. im Wechsel der Rede, des Redeausdrucks;* der Spruch steht Râǵataṛ. 1,47.

परिणामिक adj. *gut verdaulich* Spr. (II) 7394 wohl nur fehlerhaft für पारि°.

परिणेय adj. *ausfindig zu machen, auszuspüren* Pat. a. a. O. 4,5,b.

परितकय 2) *a*) wohl *Gefahr;* würde auch für mehrere der unter *b*) angeführten Stellen passen.

परित्यागिन् *der da entsagt* Spr. (II) 1765.

परिदृढ; davon denom. परिदृढयति Pat. a. a. O. 7,90,a.

परिनिन्दा *Tadelsucht* Spr. (II) 103.

परिपन्थीभू *Jmdes* (gen.) *Widersacher werden* Vaṛis. 44,4 v. u.

परिपीडन 1) 2) Spr. (II) 6858.

परिपृच्छक nom. ag. *Frager* Gor. Br. 1,1,27.

परिप्रापण n. *das Eintreten, Erfolgen* Pat. a. a. O. 7,85,a. 97,b.

परिभाण्ड n. wohl *Geräthe, Mobilien* Âpast. 2,14,8.

परिभाषण 2) *a*) Spr. (II) 289.

परिभाषा 2) परिभाषाश्च न नो भविष्यन्ति *und es wird uns kein Vorwurf treffen* Pat. a. a. O. 3,25,a. — 3) परिभाषा पुनरेकदेशस्था सती कृत्स्नं शास्त्रमभिव्याप्नोति प्रदीपवत् ebend. 2,306,b.

परिभाष्य adj. *zu lehren, ausdrücklich zu sagen:* अ° ebend. 1,169,a.

परिमङ्कन n. ebend. 8,70,b (s. Corrigg.).

परिमार्गितव्य Suçr. 2,174,3.

परिलिखन n. *das Glattmachen, Poliren* Mâlav. P. 106,66.

परिवर्त 3) Z. 3. 4 lies समुद्र° *Vertauschung einer Dose.*

परिवर्तुल adj. *ganz rund:* मुख Spr. (II) 5404.

परिवापण Comm. zu Âçv. Çr. 12,8,25.

परिवृढ; davon denom. परिव्रढयति Pat. a. a. O. 7,90,a.

परिवेत्तृ Sâmavidh. Br. 1,7,10.

2. परिवेदन, st. dessen पदवेदन ed. Bomb.

परिवेषण 2) mit श auch ed. Bomb.

परिश्रित 2) Z. 4 auch ed. Bomb. परिश्रुते, = सावृतदेशे Nîlak.

परिषद्या (Nachträge), परीषद्या Hem. Joḍaç. 3,151.

परिषेण m. N. pr. eines Mannes; s. पारिषेणय.

परिषेणय s. सेनय् mit परि.

2. परिसंवत्सर, °रो भव *werde um ein Jahr älter* d. h. *warte noch ein Jahr* Kâraka 3,8.

परिसप्य, dafür परिसत्य Âçv. Çr. 8,12,12 (auch unsere Hdschrr.).

परिसमाप्ति, प्रत्येकं वाक्यपरिसमाप्तिः *das Sicherstrecken —, Sichherziehen auf jedes Einzelne* Pat. a. a. O. 1,65,b. 2,317,a. समुदाये वाक्य° 48,b.

परिसाधन Z. 3 füge bei *das Eintreiben, Zurückfordern* (einer ausgeliehenen Schuld u. s. w.).

परिसावकीय् = परिसावक्रमिष्यति (so Pat.).

परिस्तरण 1) füge *Stroh* hinzu und streiche 2) *Decke* (?).

परिस्तरणिका (Nachträge) ist = अनुस्तरणी.

परिस्फूर्ति f. *das Erhellen, Deutlichwerden, Hervorleuchten* Kuval. 61,b.

परिस्रष्टृ nom. ag. = संस्रष्टृ MBh. 12,9019.

परिष्कारक ist im MBh. (vgl. noch 4,296. 301) adj. *ganz von Gold.*

परिष्कार 2) Z. 9 lies क्षितप्राप्तिपरिष्कार°.

परीचित्तिषु (vom desid. von ईक्ष् mit परि) adj. *zu prüfen —, zu untersuchen beabsichtigend;* mit acc. Çaṅk. zu Kaṇ. 4,2,1.

परीवाक् s. परिवाक्.

परीषद्या = परिषद्या (Nachträge) Hem. Joḍaç. 3,151.

पर्जन्य 2) *b*) lies °धन्वानः.

पर्पय Pat. a. a. O. 1,295,a. 6,44,a.

पर्पात 3) *f.* (sc. विभक्ति) *eine Personalendung des Perfects* ebend. 1, 186,b. Kâtantra 3,4,18. 29.

पर्व् mit सम् 1) स्तनसंपर्कं रक्तम् *das in den Brüsten enthaltene Blut* Spr. (II) 2986.

पर्ण 2) *a*) Z. 7 lies °वत्क st. °कत्क.

पर्णाय, °य्य besser adj. *dem P. verderblich.*

पर्णाश 1) Harîv. 8443 पर्णाश die neuere Ausg.

पर्णिन् 1) *c*) *aus dem Holze der Butea frondosa gemacht* R. ed. Bomb. 1,14,22.

पर्पट 1) *b*) *ein in Schmalz gebratener bröckelicher Kuchen aus Reis- oder Erbsenmehl mit Gewürzen* Molesw. Shakesp. (चापड, پاپر) Madan. 11,26. Bhâvapr. 5. — 2) *b*) Z. 3 lies रज्जनी st. रज्जलो.

पर्यङ्क Bez. *einer best. Art des Sitzens* Hem. Joḍaç. 4,128. fg.

पर्यटक nom. ag. *Herumstreicher* Comm. zu Mṛicch. 37,9 nach Stenzler's Verbesserung.

पर्यन्त, °म् adv. *so v. a. summa summarum* Spr. (II) 4813.

पर्यवदातत्व n. *vollkommene Lauterkeit:* श्रुतेः Kâraka 1,9.

पर्यवपाद् m. = द्रुपात्तरायति Kâç. in Maṇiḍh. lith. Ausg. 3,111,c.

पर्यवपाद्य adj. Pat. ebend. 3,111,a. b. = पर्यवपादे साधुः Kâç.

पर्यसन n. *das Hinunterhergeworfenwerden:* eines Wagens Kâraka 3,8.

पर्याय *so v. a. Wahrscheinlichkeit:* न पर्यायो ऽस्ति यत्साध्यं त्वयि कुर्युः

MBu. 5,3681. = उपाय Nilak.

पर्यायवाचक Z. 12 lies 12926 st. 12927.

पर्युदसितव्य adj. *auszuschliessen*, zu *negiren* Pat. a. a. O. 4,50,a.

पर्वण 2) c) *eine best. Gemüsepflanze* (= पर्वशाक Comm.) Kâraka 1,27.

पर्वन् Sp. 587, Z. 3, चतुर्विंश haben wir oben als *aus 24 bestehend* erklärt. पर्वन् ist hier als coll. zu fassen.

पर्वपुष्पी f. *eine best. Gemüsepflanze* Kâraka 1,27.

पर्वशाक n. s. oben u. पर्वण 2) c).

पल 2) a) m. पुराकल्प एतदासीत् । षोडश माषाः कार्षापणं षोडश पलाश माषसंवर्गः Pat. a. a. O. 1,225,a.

पलाण्डु Âpast. 1,17,26.

पलाश 2) घकर्निशं वर्षति वारिदेऽपि पत्त्रित्रितयं पलाशे Spr. (II) 4568.

पल्य 2) पल्य und पल्योपम Wilson, Sel. Works 1,308.

पल्लव 6) Z. d. d. m. G. 27,34.

पल्लवित 2) आशा° *hoffnungsreich* Spr. (II) 928.

पवन n. *das Blasen:* वायोस्तिर्यक्पवनम् Kâv. 2,2,13.

पवनतनय patron. des Bhîmasena Venis. 52,6 v. u.

पवनात्मज 2) in Rîâ-Tar. ist wohl Bhîmasena gemeint.

पवित्रय्, पवित्रित (पवित्रत die Hdschr.) Hem. Joga. 3,129.

1. पश् mit प्रति *erleben, erfahren:* नाप्रियं प्रतिपश्येयुः Spr. (II) 3380.

1. पशु auch *Fleisch* RV. 1,166,6.

पश्चाद्दिवम् adv. *am Nachmittag* MBu. 5,3802.

पश्चवाक् vgl. पश्ववाक् H. 1260.

पस्पशा f. Titel der Einleitung Patañgali's zum Mahâbhâshja Kaiy. in Mahâbh. lith. Ausg. 1,193,b. Ind. St. 13,334.

1. पा mit प्र, absolut. °पाय und °पीय Vimâna 5,2,78.

6. पा mit उद् (Nachträge), vgl. die unter 1. पा mit उद् angeführte Stelle.

2. पाक so v. a. *Umstimmung:* सहृदयहृदयानाम् Cit. bei Vimâna 1,2,18. *Reife, Vollkommenheit:* शब्द° Cit. ebend. 1,3,13. काव्य° Cit. ebend. 3,2,14.

पाकक्रिया f. *das Kochen* Spr. (II) 7441.

पाकयज्ञ 1) Gop. Br. 1,5,23.

पाकशास्त्र n. *Kochkunst* Bhâvapr. 5.

पाकात्यय m. *Verdunkelung der Cornea nach einer Entzündung* Wise 294. Suçr. 2,317,7.

पाडि und पाडु (Nachträge) zu streichen; die richtige Form (aber nicht Sanskrit) ist पाडी; vgl. Pischel, de Gramm. prâcr. 25.

पात्त adj. von पत्त्र Pat. a. a. O. 3,79,b.

पात्रकलापिक adj. ebend. 5,12,a.

पात्ररात्रिक adj. *fünftägig* Sâmavidh. Br. 1,3,3.

पात्रिक N. pr. auch Hariv. 1217.

पाट्ल adj. von पाट्ली *Bignonia suaveolens:* मूलानि Pat. a. a. O. 4,89,a.

पाटलिका vgl. लवण°.

पाटीर m. *Sandelbaum* Spr. (II) 5461.

पाठ vgl. सह°.

पाठन (vom caus. von पठ्) n. *das Unterrichten* Spr. (II) 6799.

पाणविक (von पणव) m. 1) *Trommelschläger* Pat. a. a. O. 4,90,b. — 2) *ein best. zu den* Pratuda *gezählter Vogel* Kâraka 1,27.

पाण्डर 4) f. आ N. pr. einer Göttin Kâlakâraka 3,140. 4,37. 3,97.

पात 9) gehört zu 8). Mit Râhu ist eben der चन्द्रपात gemeint. Das angeführte comp. bedeutet *Knoten des Mondes*. Eigentlich ist पात *der Punkt, in welchem Mond- und Sonnenbahn (Ekliptik) zusammenfallen* d. i. *sich schneiden*.

पातालप्रस्थ n. N. pr. eines Dorfes der Bâhîka; davon °प्रस्थिक adj. Pat. a. a. O. 4,74,b.

पातिन् 1) Z. 3 शब्द° Rasika 9,73 bedeutet *nach dem blossen Schalle treffend*.

पात्र 5) Rîâ-Tar. 5,304 gehört zu 3) *Meister in* (gen.); vgl. Spr. (II) 2573.

पात्रता 1) शीतोष्णयोः so v. a. *das Ertragen* —, *Erduldem* von Spr. (II) 1687.

पात्रसंचार, lies *das Herumgehen der Schüsseln* und vgl. संचार am Ende.

पाद् 9) gemeint ist *ein Fuss einer als Schlauch dienenden Thierhaut;* vgl. दृतेर्हरणात् Vârtt. Jogaśâstra 1,1.

पादवन्दनिक adj. von पादवन्दन; s. u. लावण्यार्द्रित.

2. पादविघट्, lies *einflüssig* und vgl. u. 1. विघट् 6).

पादांशिक adj. *um einen Theil grösser oder kleiner:* क्रम Kâraka 1,7.

पादिक in Verbindung mit घकर् so v. a. *Tagelohn:* कर्मकराः कुर्वन्ति पादिकमकर्ल्लप्स्यामकर् इति Pat. a. a. O. 1,256,b. m. ohne घकर् 257,a.

पादुकिन् adj. *beschuht* Âpast. 1,8,1.

पापकृत्य्, °त्यति denom. von पापकृत् Pat. a. a. O. 1,267,b.

पार् adj. *hinüberbringend, übersetzend* RV. 5,31,8. m. *eine best. Personification* Sâmavidh. Br. 1,2,5.

पार m. = पाल *Hüter* in ब्रह्मचार° Maitrâjan. 6,28.

पारद m. *eine best. Personification* Sâmavidh. Br. 1,2,5.

पारमगोपुच्छिक adj. = परमगोपुच्छेन क्रीतम् Pat. a. a. O. 5,9,b.

पारंपर्य 2) a) *Tradition* Spr. (II) 7363. instr. *nach und nach* 3046.

पारवश्य Verz. d. Oxf. H. 120,a,28.

पारविन्द् m. *eine best. Personification* Sâmavidh. Br. 1,2,5.

पारितेपक *Einwurf* Kâraka 3,8.

पारिणामिक (Nachträge) vgl. oben परि°.

पारिदृढि m. patron. von परिदृढ; f. °ढी Pat. a. a. O. 7,90,a.

पारिपात्र, richtiger °यात्र, wie die Bomb. Ausgg. haben.

पारिप्लव 2) b) nach Nilak. N. einer Gruppe von Göttern.

पारिभाषिक (auch Nachträge) überall *technisch, der Kunstsprache angehörig;* vgl. noch Pat. a. a. O. 1,194,b. 216,b.

पारिवृढि m. patron. von परिवृढ; f. °ढी ebend. 7,90,a.

पारिषेण्य m. patron. von परिषेण ebend. 4,54,a.

पारिहारिक adj. *privilegirt:* चौर Spr. (II) 4063.

पारुष्य 2) a) शिरोरुहेषु *Struppigkeit* Spr. (II) 1687.

पारेधन्व N. pr. einer Oertlichkeit; davon °क adj. Pat. a. a. O. 4,74,b.

पारेवत *eine best. Pflanze;* vgl. रेवतक 2) und रैवतक 2). *eine Dattelart* (auch पालेवत) Rîâm. 11,38. Kâraka 1,27. — Vgl. पालीवत.

2. पार्श्व auf पृथ् = पृथा zurückgeführt Pat. a. a. O. 4,84,b.

पालकाव्य n. = पालकाव्य Aufrecht, Halâ. Index u. स्थूलोन्नय.

पालय् mit संपरि s. संपरिपालन.

पालि 3) पालीयं चम्पकानाम् Ratnâv. 61,1.

पालीवत und पालेवत s. oben u. पारेवत.

पाव्यमान 2) RV. 3,67,31. fg.

पिङ्गलकाण्व m. N. pr. eines Lehrers Pat. a. a. O. 1,177,b.

पिङ्गलिमन् m. nom. abstr. von पिङ्गल adj. Vimâna 5,2,20.

पिच्छ 2) d) सम्यक्प्रमुतस्वेद° adj. Kâraka 1,14. — e) hierher wohl Kâraka 1,28.

पिञ्जरत्व n. *Fahlheit:* der Haare im Alter Kâraka 1,5.

पिण्डक 7) c) *Bank, Erhöhung* und dgl. zum Liegen Kâraka 1,14.

पिण्डय्, पिण्डित *vereinigt* Spr. (II) 7554.

पितर्, Sp. 715, Z. 8 lies 5,73,1 st. 5,71,1.

पितृमातृमय adj. (aus) *an Vater und Mutter denkend* Spr. (II) 4075.

पिनाक n. *eine Art Talk* Buâvapr. im ÇKDa. u. वज्र.

पिपतिषु 1) Rîâ-Tar. 8,1297, wo nach Kern zu lesen ist पुण्यक्षये पिपतिषुर्वे.

पिपासु, मधु° Vimâna 5,2,14.

पिप्पलक 1) Kâraka 4,8. — 3) द्वौ तीक्ष्णौ सूचीपिप्पलकौ सौवर्णव्रतौ ebend.

पिष्टक n. *Mehl:* सूक्ष्म° Spr. (II) 394.

पिप्पल Hem. Joaç. 3,42 fehlerhaft für पिप्पल 1) a).

पीठ 1) क्षतनिवपन° *Spieltisch* Durga zu Nir. 3,5. — 3) so v. a. *District, Provinz:* धारा° (so nach Kern zu lesen) Pañkat. ed. Bomb. IV & V 20,2. सवत्तो° 2.

पीड् vgl. पिष्.

पीडा 1) (Nachträge) अपीडया *nicht wagern, gern* auch MBh. 12,8250.

पीतदोषा f. N. pr. einer Göttin Kâlakarna 4,54. 93.

पीतमारुत m. *eine Art Schlange* Kâraka 1,29.

पीतिमन् m. nom. abstr. von पीत *gelb* Vimâna 5,2,20.

पीनत्व n. = पीनता Ratnâv. 60,8.

पुञ्जय् mit अव, संमार्जन्यवपुञ्जित *auf einen Haufen gebracht, zusammengekehrt* Mân. v. 233.

पुट Z. 3 streiche कर° MBh. 14,1038 und vgl. oben करपुट.

पुटक 1) ईक्षो च घुवो (*Nasenspitze?*) कुरु ईक्षो पुटको (*Nasenloch?*) कुरु Pat. a. a. O. 3,28,a.

पुण्डरीकात 3) *ein best. zu den* सम्बुचारिन् *gezähnter Vogel* Kâraka 1,27.

पुण्य 1) n. auch = धर्म *moralisches, religiöses Verdienst.*

2. पुण्यफल, lies लक्ष्याराम.

पुत्रपौत्रक n. = पुत्रपौत्र Spr. (II) 696.

पुत्र्य R. ed. Bomb. 1,44,21.

पुरुल 2) a) (Nachträge) Hem. Joaç. 3,113.

पुनरिज्या f. *wiederholtes Opfer* Âçv. Ça. 3,10,19.

पुनर्गव m. Pat. a. a. O. 2,333,b.

पुनर्भार्या f. *eine zweite Gattin* so v. a. *Wiederverheirathung* Spr. (II) 7588.

पुनर्मार m. *ein abermaliger Tod:* य° adj. VP. 2,8,96.

पुनर्वसु 1) Z. 3 RV. 10,19,1 nach Delbrück wohl adj. *Güter wiederbringend.* Zugleich scheint aber auch eine Beziehung auf das *Sternbild* darin zu liegen, wie aus dem vorangehenden रेवती: zu vermuthen ist. — 4) Hauptunterredner bei Kâraka mit dem patron. Âtreja.

पुनाराव्र m. *zum andern Mal König* Pat. a. a. O. 2,333,b.

पुरा Sp. 784, Z. 2 Ait. Br. 2,6 gehört zu 2) b).

पुरु Sp. 790, Z. 7. 8 Bhâg. P. 9,24,52 ist पुरुविभुत eher als ein N. aufzufassen.

पुरुनिःषिध्, lies *Vieles abwehrend* und vgl. 1. सिध् mit निस्.

पुरुविभुत s. oben u. पुरु.

पुरुशाक, lies *Allfreich.*

पुरुषकार *Hochmuth, Dünkel* Pat. a. a. O. 6,27,b.

पुरुषसिंह auch so v. a. *der Beste unter den Menschen;* s. u. सिंह 1) c).

पुरुषार्ष 1) Hem. Joaç. 4,57.

पुरोडाशीय und °डाश्य Pat. a. a. O. 5,2,b.

पुरोभाविन् adj. *bevorstehend* Spr. (II) 4756.

पुरोरुविस्, lies *das Opfer vorn (im Osten) habend;* vgl. TS. Comm. 1,403.

पुलक 1) a) *eine best. Körnerfrucht* Kâraka 1,14.

पुलाक 1) *eine best. Körnerfrucht;* vgl. Comm. zu Âçv. Ça. 1,13,5.

1. पुष्, partic. 1) Z. 14. fgg. अपुष्टार्थत्व n. *Inhaltslosigkeit, Leerheit, Trivialität* Vimâna 4,2,19.

— सम् zu streichen, da सौ पुष्णाति zu lesen ist; vgl. Spr. (II) 7371.

पुष्कर 25) °वन Comm. zu TBr. 3,304,15.

पुष्करावर्तक Vaṇis. 57.

पुष्टि 1) füge *Pflege* hinzu.

पुष्यक, पुष्यका येषां (so lesen wir) ते पुष्यकाः Pat. a. a. O. 6,38,b. 63, b. पुष्यका इति त्रयो बिन्दव उच्यन्ते तयोर्गाद्विडालाः पुष्यका इत्याकुः Kâç. Könnte auch पुष्यक sein.

पुष्यनेत्र *eine Art von Katheter* Kâraka 10,9.

पुष्यवत् 2) a) das Thema ist nach Auufrecht पुष्यवस्; vgl. Kâçîkâ 23, 11. 59,31 in Z. d. d. m. G. 25,456.

पुष्पित 1) a) मरणलक्षणैः so v. a. *versehen mit* Kâraka 5,2.

पुष्पितक m. N. pr. eines Berges Hariv. 12841.

पुस्तक (Nachträge), schalte Verz. d. Oxf. H. vor 217,a,10 ein.

1. पू 1) *büssen* RV. 7,28,4.

2. पू vgl. auch स्व°.

पूग 1) n. वर्षपूगान्यनेकानि R. ed. Bomb. 1,48,16.

पूज् mit प्रति *eine Ehre erwiedern* MBh. 13,6852.

— संप्रति Z. 2 lies सांप्रतिपूजितः st. प्रति° und vgl. संप्रतिपूजा.

पूपलिका *Kuchen* überh. Kâraka 3,7. 8,22.

पूय Spr. (II) 401 (Conj.).

पूयमान (partic. praes. pass. von 1. पू) m. N. pr. s. पोयमानि weiter unten.

पूर्णकोम Vaitân. 10.

पूर्वक 2) सकिंसापूर्वको धर्मः vor *Allem in der Schonung alles Lebenden bestehend* Spr. (II) 821.

पूर्वभूभृत् m. *der Berg des Ostens* (hinter dem die Sonne aufgeht) und zugleich *ein früherer Fürst* Spr. (II) 5073.

पूर्वरूप 1) so v. a. *Vorläufer:* die Blüthe ist पू° der Frucht Kâraka 5,1.

पूल, धान्य° Comm. zu Âçv. Ça. 2,7,18. विलिप्तेषु पूलेषु गोषु चत्तीषु Pat. a. a. O. 2,335,a. पञ्चपूली (vgl. Corrigg.) ebend. und 336,b.

पृथ् f. = पृथा ebend. 4,54,b.

पृथक्पद adj. *aus für sich* (nicht in Zusammensetzungen) *stehenden*

Worten bestehend und davon nom. abstr. °त्व n. Vimâna 3,1,15.

पृथिवीमत् adj. von पृथिवी Pat. a. a. O. 3,93,b.

पृथुशिरस् f. N. pr. einer Tochter Pulomán's Hariv. 207 nach der Lesart der neueren Ausg., कृपशिरस् die ältere.

पृश्निबाकु 1) Z. 2 lies 4,15,12.

पृषत und पृषत्, damit विप्रुष् zu vergleichen.

पृष्ठगालन (?) Hem. Jogaç. 3,116.

पेषक m. *Stösser:* ओषध° Kâraka 1,15.

पैङ्गलकाण्व m. patron. von पिङ्गलकाण्व Pat. a. a. O. 1,177,b.

पैङ्गल्य 2) Kâraka 4,8.

पैठरिक (von पिठर) m. wohl *ein Musikant auf dem Kochtopfe* Pat. a. a. O. 4,90,b.

पैलीय m. pl. *die Schüler des* Paila ebend. 4,60,a.

पैलुशीर्षि m. patron. ebend. 6,26,a.

पोटलिका (s. u. पोट्टलक), ओषधीनाम् Kâraka 4,8.

पोतक, f. पोतिका *Gewand, Kleid* Pâraśar. ed. Bomb. IV & V 25,22. 26,3. 6.

पोतास Râja-Tar. 7,1127.

पोनक s. शत°.

पोषण 1) P. 3,1,116, Schol. — 2) इन्द्रिय° *das Pflegen der Sinne* Spr. (II) 2535. — Vgl. oben यसतो°.

पोषध bei den Gaina Hem. Jogaç. 3,34. fg. fehlerhaft पौ° 116.

पोषम् absol. am Ende eines comp.: स्वपोषं पुष्यति, रै°, धन°, यश°, गो° Pat. a. a. O. 1,167,a.

पौणिकेर m. metron. ebend. 4,52,b.

पौतन्य n. nom. abstr. zu पूतना 1) ebend. 4,10,a.

पौदन्य, पौदन्य Nilak.

पौनर्वाचिक adj. *pleonastisch, überflüssig* Comm. zu Âçv. Gṛhj. 1,2,4.

पौयमानि m. patron. von पूयमान Pat. a. a. O. 1,62,a.

पौरि m. patron. von पूरु ebend. 1,266,b.

पौर्वक (von पूर्व) adj. von *den Vorgängern stammend, ererbt:* क्षत्रिय: R. ed. Bomb. 1,7,6.

पौर्वकाल्य n. *Priorität* Pat. a. a. O. 3,102,b. 103,a.

पौर्वभक्तिक adj. (f. ई) *vor dem Essen zu sich genommen* Kâraka 8, 12. पूर्व° v. l.

पौषध s. oben u. पोषध.

प्रकल्पक adj. (f. °कल्पिका) *am Platze seiend* Pat. a. a. O. 1,98,a. 163,b.

प्रकाङ्क्ष f. *Appetit* Kâraka 1,13.

प्रकृति 1) °स्थ *in normalen d. i. guten Verhältnissen sich befindend* (Gegensatz विषमस्थ) Spr. (II) 3296. — 4) Z. 17 द्रव्यप्रकृति erklärt der Comm. zu Kâm. Nîtis. 5,2 durch कोषप्रकृति.

प्रकृतिपाठ m. so v. a. धातुपाठ *Wurzelverzeichniss* Pat. a. a. O. 1,46,a.

1. प्रकृतिभाव Âçv. Çr. 12,15,12.

प्रकर्त्त (v. l. zu विकृत्त VS. 16,21) TS. 4,5,8,1. Ind. St. 2,28.

प्रकृति f. *das am Platze Sein* Pat. a. a. O. 1,165,b. 268,a.

प्रक्रमितर् nom. ag. und प्रक्रमितव्य partic. fut. pass. ebend. 7,93,a.

प्रक्षेप 1) *das Zulegen, Mehren (Vergrösserung der Dosis)* Kâraka 1,7. — 2) TBa. Comm. 1,127.

प्रज्ञा f. Pat. a. a. O. 1,231,a. = बुद्धि *Wahrnehmung* Kâç.

प्रगट Hem. Jogaç. 2,38 fehlerhaft für प्रकट.

प्रगुण, स्त्र° *störrisch, widerspänstig:* कलत्र Cit. bei Vimâna 4,2,7.

प्रगुणीभूत adj. *in die richtige Lage gekommen* Kâraka 1,7.

प्रचर्या f. *Handlung* Âçv. Çr. 3,10,28.

प्रचार 1) तस्यैव नामगुणयो: सुचिरं प्रचार: so v. a. *dessen Name und Vorzüge leben gar lange* Spr. (II) 7242.

प्रणमन (Nachträge), गुरुपाद° Spr. (II) 1843.

प्रणयन, अद्धा° *das Auftreten von Gelüsten:* उच्चावचेषु भावेषु Kâraka 4,4.

प्रणिधान 1) कायवाङ्मनसां दुष्टं प्रणिधानम् *Anwendung* Hem. Jogaç. 3,114.

1. प्रति 8) mit gen. Hariv. 10907. — 9) Z. 3 मे प्रति nach *meiner Meinung, in meinen Augen* auch Spr. (II) 7211.

प्रतिकर्मन् 4) *Kur, Behandlung* (des Arztes) Kâraka 1,29.

प्रतिकाय 3) *Gegner* Kir. 14,17.

प्रतिकील m. *ein entgegenstehender Pflock:* कीलप्रतिकीलवत् तथा। कील आक्रम्यमाण: प्रतिकीलं निर्कृन्ति Pat. a. a. O. 2,350,b.

प्रतिमत्र 8) *Napf und Topf für die verschiedenen Bedürfnisse eines Kranken* Kâraka 1,15.

प्रतिवलस्, lies °वत्.

प्रतिच्छाया *entstelltes Schatten- oder Spiegelbild* (eines Kranken als Vorzeichen des Todes) Kâraka 5,7. 8.

प्रतिजूतिवर्पस् bedeutet *je nach Antrieb* oder *Anlass eine Gestalt annehmend.*

प्रतितद्विद् f. *die Erkenntniss des Gegentheils davon* Kaṭh. Up. 1,3.

प्रतिदत्त adj. Pat. a. a. O. 6,103,b fehlerhaft für प्रतिमदत्त; vgl. VS. 17,84.

प्रतिधावन, ed. Bomb. प्रतिबाधन.

प्रतिनिष्ठ adj. *auf der Gegenseite stehend* Kâraka 3,8.

प्रतिपत्ति 7) Hem. Jogaç. 3,123. 125.

प्रतिपृष्ठा f. *jede Seite eines Blattes* Notices of Skt Mss. 1,1—16. Richtig wäre °पृष्ठम् adv.

प्रतिबन्ध 3) Gegens. अभिव्यक्ति Çâṅk. zu Bâdar. 1,3,30 (S. 300,7. 9).

प्रतिबाधन MBh. 8,3393 nach der Lesart der ed. Bomb.

प्रतिभय 2) *Gefahr* Spr. (II) 4602.

प्रतिभानवत् Z. 4, zu प्रतिभानवत्त्व s. Spr. (II) 6451.

प्रतिभू, दर्शन° Spr. (II) 3088.

प्रतिम m. = प्रतिमा 2) d) Hir. 204.

प्रतिमङ्गलवार wohl oder *jeder Dienstag.*

प्रतिमान 2) Z. 3 lies त्रैलोकानति°.

प्रतियोगम् adv. *Regel für Regel* Pat. a. a. O. 1,263,b.

प्रतिराजम् adv. ebend. 5,73,b.

प्रतिविधेय *zurückzuweisen, zu verwerfen* Vimâna 8,2,69. n. impers. *inhibendum* Pat. a. a. O. 1,242,a.

प्रतिशरण n. *das Abstossen* (der Spitze) Comm. zu TS. 2,738.

प्रतिशरीरम् adv. *in Bezug auf die eigene Person* Pat. a. a. O. 1,143,b.

प्रतिश्रुति *Antwort* Kir. 36,9.

प्रतिषेध्य adj. *zu verhindern, zurückzuweisen, zu verbieten* Pat. a. a. O. 1,33,a. 111,a. 119,a.

प्रतिष्ठ 4) n. so v. a. प्रतिष्ठा in der hier u. 14) angeführten Stelle RV. 10,73,6: *du trafst die innersten Halt-, Stützpunkte* so v. a. *du trafst in's Herz.*

प्रतिष्ठा 6) *Vorzüglichkeit* überh.: काव्यबन्धस्य Cit. bei Vimada 1,1, 5. — 14) s. oben u. प्रतिष्ठ.

प्रतिसंख्यान n. *ein abermaliges Erwägen des pro und contra* MBh. 13,6472.

प्रतिसरण n. *das Zurücktreten:* सप्तसाम् als portentum Kâraka 1,12.

प्रतिसूर्यमत्स्य m. *eine best. Erscheinung an der Sonne* Âpast. 1,11,31.

प्रतिस्वम् (Nachträge) Comm. zu RV. Prât. 11,11.

प्रतिहारतर m. *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. ed. Bomb. 1,28,4.

प्रतीक 1) c) *Abbild* so v. a. *Copie, Exemplar:* नाममाला° Vimada 1,3,6.

प्रतीत्य (von 3. इ mit प्रति) n. *Bestätigung, Erfahrung* RV. 7,68,6. *Verheissung, Vertröstung* 4,3,14.

प्रतीवाक् *Lohn* Gop. Br. 1,1,23. diese Bed. wohl auch Kauç.

प्रतूर्ति s. सु°.

प्रत्यङ्गम् 1) प्रत्यङ्गवर्ती लोकः so v. a. *mit der eigenen Person sich beschäftigend* Pat. a. a. O. 1,142,b.

प्रत्यञ् 1) a) Z. 5. 6 Çvetâçv. Up. 3,2 liest, wie wir vermuthet hatten. — b) प्रत्यक्पदेरपमरन् *rückwärts* Spr. (II) 6032.

प्रत्यनुयोग m. *Gegenfrage* Kâraka 3,8.

प्रत्यभिज्ञान 3) *Wechselbezeichnung* Comm. zu Âçv. Ça. 3,4,12.

प्रत्ययधातु m. *Denominativstamm* Pat. a. a. O. 6,62,a.

प्रत्ययन, lies enklitisch.

प्रत्यर्थिक Pat. a. a. O. 5,52,a.

प्रत्याख्यान 1) *das Begegnen, Bekämpfen:* कामलोभभयक्रोध° Hem. Jogaç. 1,27 (pl.). ohne Object vielleicht so v. a. *das Abweisen alles dessen, was die Seelenruhe stören könnte,* 3,121. 122. — यप्रत्याख्यानक und प्रत्याख्यात 4,7.

प्रत्यात्मम् *singulatim* Pat. a. a. O. 1,124,b.

प्रत्याम्नायम् adv. zu *dem einzelnen Textbuch* Comm. zu Âçv. Ça. 1,1,1.

2. प्रत्यायन 3) f. घा *das Beruhigen, Trösten* Ratnâv. 59,12.

प्रत्यारम्भ 2) *Aufhebung, das Rückgängigmachen* Pat. a. a. O. 7,55,a.

प्रत्यासत्ति f. = प्रसाद *Heiterkeit des Gemüths, gute Laune* Ratnâv. 82,8.

प्रत्यासारिन् adj. Pat. a. a. O. 3,68,a.

प्रत्युदाहार्य adj. *als Gegenbeispiel anzuführen* ebend. 1,249,a.

प्रथय् caus. von 1. प्रथ् und auch = पृथुमाचष्टे ebend. 6(4),44,b.

प्रथस्नु (Accent der Ausg. fehlerhaft; vgl. वधस्नु) TBr. 3,7,8,2. = प्रथनशील Comm.

प्रदक्षिण 1) b) तस्य सर्वं प्रदक्षिणम् *dem geht Alles gut von Statten* Spr. (II) 5408.

प्रदर vgl. रक्त°.

प्रदातर् 1) गण° *der einer Gesellschaft Etwas giebt* Spr. (II) 7317.

प्रयुभ (neben युभ) = काम *das Angenehme* Spr. (II) 3106 (Conj.).

प्रयन 1) a) streiche am Ende सङ्ग°.

प्रवर्ण und प्रवलाश adj. *dessen Blätter (Laub) abgefallen sind* Pat. a. a. O. 2,361,b. °क dass. 1,262,b.

प्रपालक nom. ag. *Behüter, Beschützer* Spr. (II) 7180, v. l.

प्रबोधक nom. ag. *erweckend, zum Aufblühen bringend* Spr. (II) 2905.

प्रभावना etwa *Pflege* (einer Lehre) Hem. Jogaç. 2,16.

प्रमङ्कन (nicht प्रमङ्कन) Pat. a. a. O. 8,70,b.

प्रमति 2) Daçak. 129. fgg.

प्रमथन 1) zu *Nichts machend:* मल्ल° Spr. (II) 7239.

प्रमाण 1) चतुरङ्गुलप्रमाणे *in einer Entfernung von vier Fingerbreiten* Spr. (II) 2907.

प्रमाणीकरण n. *das als Autorität Anführen* Pat. a. a. O. 1,45,b.

प्रमुद्, प्रमुदे भू *grosse Freude gewähren* Spr. (II) 7012.

प्रमोदक m. N. pr. eines Berges Divjâvad. 167. 169.

प्रमोद bei den Gaina *die Freude Verklärter an der Tugend* Hem. Jogaç. 4,116. 118. °पति 3,138.

प्रयतन n. als Erklärung von प्रयत्न Pat. a. a. O. 1,70,a. b.

प्रयुत् s. u. 2. यु mit प्र.

प्रयुवन्, lies von यु mit प्र st. wie eben.

प्रयोगदर्पण m. Titel eines Werkes Ind. Antiq. 1874, S. 133,a.

प्रयोगसार Z. 2 lies क्षेत्राधि°.

प्रयोजक 1) *einen Auftrag ertheilend* Z. d. d. m. G. 7,168, N. 1.

प्रयोज्य 4) (Nachträge) ebend.

प्रर्कक (प्र + सर्कक) adj. comp. Pat. a. a. O. 1,295,a.

प्रर्षभ (प्र + सर्षभ) desgl. ebend. und 6,42,a.

प्रलय 4) *Untergang* (von Sternen) Spr. (II) 1662 (Conj.).

प्रलयंकर adj. (f. ई) *Verderben bringend* Spr. (II) 7472.

प्रवय्या von 1. वी mit प्र, Bed. zu *belegen, zu befruchten.*

1. प्रवर् 4) f. ई Pat. a. a. O. 4,24,a. b. — Vgl. प्रावर्.

प्रवर्जन, lies *das Setzen an oder in das Feuer* st. *das Eingiessen der Milch.*

प्रवर्त *Ohrring* Comm. zu TS. 2,453. fg.

प्रवर्तयितर् 1) Pat. a. a. O. 1,280,b.

प्रवरण n. *das Ziehenlassen, Verheirathen:* कन्या° Simavidh. Bh. 2,6,12.

प्रवात adj. *erschöpft, müde:* बालवृद्धाः प्रवाताश्च वर्त्तयेयुर्व्यायामम् Kâraka 1,7.

प्रवाद 1) a) Z. 2 यप्रमादेन ed. Bomb. — c) Z. 8 lies व्याघ्रो st. व्याघो. *böses Gerede über* (gen.), *Verleumdung;* pl. Z. d. d. m. G. 27,21.

प्रवाहिन् vgl. लोम°.

प्रविचार s. सुख° weiter unten.

प्रविचारणा f. *Unterscheidung* so v. a. *Art* Kâraka 1,12.

प्रविलसेन, प्रविल्लसेन der gedr. Text 4,24,12.

प्रवृञ्जन, lies *das Anrücken an's Feuer.*

प्रवृत्तिमत् adj. *einer Sache hingegeben* Kâd. in Mahâbh. Bib. Ang. 1,283,a.

प्रवेतर् ebend. 2,405,a. b.

प्रवेश 3) lies *Anwendung von Etwas, Benutzung, das Geschäftsmachen mit* und vgl. 1. विश् mit प्र partic. b) β).

प्रशंसक, शिष्टाचार° Hem. Jogaç. 1,46.

प्रशर्ध, lies *keck, trotzig.*

प्रशाम् vgl. 2. शम् mit प्र am Ende vor caus.

प्रप्रुचि adj. *vollkommen rein* R. ed. Bomb. 1,29,22.

प्रष्ठ 1) f. प्रष्ठी Pat. a. a. O. 4,24,a. b. — Vgl. प्राष्ठ.

प्रसङ्क्ष्य adj. *eintreten —, Statt finden zu lassen* ebend. 2,392,b. 6(4),41,a.

प्रसङ्ग 2) pl. *Alles was mit etwas Andern in Verbindung steht, daraus folgt* Spr. (II) 4933.

प्रसङ्गिन् 2) कृताकृत° ist कृते ऽकृते च प्र° *eintretend;* vgl. Pat. a. a. O. 6(4),28,a.

प्रसज्य in Verbindung mit प्रतिषेध ist *eine Negation der Aussage selbst,* die eigentlich stets durch das selbständige न, nicht durch das अ privativum ausgedrückt werden müsste. So wird in dem ersten der in den Nachträgen angeführten Beispiele अमुक्ता als fehlerhaft für न मुक्ता a. a. O. getadelt. Die Regel सनिदशोर्कल्यमकिति P. 6,1,58 ist nur dann genau, wenn अकिति als eine solche Negation d. i. als किति न gefasst wird. Schliesslich ist zu bemerken, dass प्रसज्य in dieser Verbindung absolut. ist, da bei Pat. a. a. O. 1,130,b. 132,a. 203,b प्रसज्यायं प्रतिषेधः gesagt wird.

प्रसन्न 3) ebend. 5,67,a.

प्रसर्पक R. ed. Bomb. 1,14,53.

प्रसवन *das Gebären, Geburt* Spr. (II) 3836 (Conj.).

2. प्रसवितर्, कुरुवंश° Spr. (II) 6004.

प्रसक्तृ 2) die richtige Lesart ist wohl प्रसक्षापकृत्य.

2. प्रसक्ष mit inn. = शक्य Spr. (II) 4761.

प्रसारण 1) b) Pat. a. a. O. 1,57,b. 4,15,b.

प्रसिति 4) Z. 4 lies दीधिपुर्नृः. — 5) Z. 3 lies 7,104,13. — Vgl. auch u. 1. und 2. सि mit प्र.

प्रसूतिका 1) गावः प्रसूतिकाः *Kühe, die vor Kurzem gekalbt haben,* Spr. (II) 7460.

प्रस्कन्दन 2) b) *Mittel zur Beförderung des Stuhlganges* Karaka 1,13.

प्रस्कन्दिन् adj. *springend:* अग्नि° *in's Feuer* Gop. Ba. 1,2,4.

प्रस्तरस्वेदन n. Bez. *einer Art des Schwitzentreibens beim Liegen auf einer Streu* Karaka 1,14.

प्रस्थिति, so zu betonen nach P. 6,2,50.

प्रस्रवितृ nom. ag. und प्रस्रवितव्य partic. fut. pass. Pat. a. a. O. 7,93,a.

प्रस्रवित्रीयु, °यति = प्रस्रवितेवाचरति ebend. 7,93,b.

प्रस्थिन् adj. ebend. 1,295,a. 6,85,a.

प्रहास 1) d) (Nachträge), lies Ministers st. Sohnes.

प्रहेणक (Nachträge), lies वापनकमिति.

प्रह्लाद Apast. 1,32,24.

प्रह्वय् (von प्रह्व), °यति *Jmd* (acc.) *demüthig machen* Uttarar. 107, 18 (146,2).

प्राग्रुक (so zu lesen) adj. *gross* (Gegens. सूक्ष्म): ऊनूनि Hem. Joaç. 3,53.

प्राकट्य (von प्रकट) n. *das Offenbarsein, — werden* Nilak. zu MBh. 1,2254.

प्राकार Z. 9 streiche adj.

प्राकृत 1) मित्र, धनि, उदासीन (Gegens. कृत्रिम) Mit. 1,52,b.

प्रागङ्गम् adv. wohl *zunächst,* vor *Allem* Pat. a. a. O. 6,7,b.

प्रागुण्य (von प्रगुण) n. *richtige Lage, — Richtung* Karaka 1,18.

1. प्राग्द्वार, °वेदि Ragu. 5,68.

प्राघूर्ण m. = प्राघुण *Gast* Spr. (II) 488.

प्राचार्य *der Lehrer des Lehrers oder ein ehemaliger Lehrer* Apast. 1. 8,19 = प्रगत आचार्यः Pat. a. a. O. 3,355,a.

प्राचीन 1) a) *östlich, im Osten lebend* R. ed. Bomb. 1,13,23.

प्राज्ञाक्षित s. प्रज्ञाक्षित u. 2. क्ष mit प्र.

प्राणतोषणी (Nachträge), die gedr. Ausg. (Calcutta 1857. 2te Aufl.) °तोषिणी.

प्राणवल्लभा f. *Geliebte des Herzens* Pañcat. IV,8.

प्राणाभिसर् m. *Lebensretter* Karaka 1,9.

प्राणित scheinbar Hem. Joaç. 2,32, da प्राणातिलोभेन zu lesen ist.

प्रातरध्येय adj. *am frühen Morgen herzusagen:* अनुवाक Pat. a. a. O. 2,334,a.

प्रातर्कृत = प्रातर्होम *Frühopfer* Bhâg. P. 1,1,3.

प्रातिपदिक 1) Gop. Ba. 1,1,24.

प्रातिरूपिक adj. *nachgemacht, falsch, unächt* Karaka 1,11. 29.

प्रातिवेश्मक, सु° *einen guten Nachbar habend:* स्थान Hem. Joaç. 1,48.

प्राथमकल्पिक adj. *vor Allem —, im strengsten Sinne des Wortes Etwas seiend* Pat. a. a. O. 1,100,a. 198,a. 2,369,a. 5,28,b.

प्रादक्षिण्य *ehrerbietiges Betragen* Karaka 3,8.

प्रादुस्, प्रादुःषत्ति Hem. Joaç. 2,58. 107. प्रादुष्यत्ति die Hdschr.

प्रापक 2) Pat. a. a. O. 3,113,b. 114,a.

प्रापण 3) *das Vorführen, Klarmachen* ebend. 1,235,a.

प्रापय्, °यति 1) caus. von आप् mit प्र. — 2) künstliches Denominativ von प्रिय (= प्रियमाचष्टे) ebend. 6(4),23,b. 44,b.

प्रायशस् *aller Wahrscheinlichkeit nach* (vgl. Nachtrage) Spr. (II) 928.

प्रायेण 1) Z. 4 Spr. 3825 gehört zu 2); vgl. Spr. (II) 1363.

प्रायोक्त adj. (f. ई) von प्रयोक्तृ *Anwender, Gebraucher* Pat. a. a. O. 5,7,a.

प्रायोपयोगिक adj. *gebräuchlichst, gewöhnlichst* Karaka 1,27.

प्रार्ध्क (प्र + सध्क) adj. Pat. a. a. O. 1,267,a.

प्रावन् vgl. वर्ष°.

प्रावर (von 1. प्रवर), f. ई Pat. a. a. O. 4,24,b.

प्रावर्ग vgl. सु°.

प्रावृषीण wohl s. *Regenzeit* oder *Anbruch derselben.*

प्रावृषेण्य, °घनावली Hem. Joaç. 2,51.

प्रावेप, lies m. (*ein bammelnder Körper*) *die hängende, sich schaukelnde Baumfrucht.*

प्राश्रुक Hem. Joaç. 3,53 fehlerhaft für प्रोश्रुक.

प्राष्ठ (von प्रष्ठ), f. ई Pat. a. a. O. 4,24,b.

प्रिय 1) c) राज्ञा दुःसचिवप्रियः *ein Freund* von Spr. (II) 6117.

प्रियङ्गुका f. = प्रियङ्गु *Fenchel* Simâvidy. Ba. 2,6,10. fg.

प्रियपत्र 2) नीचपात्र° Spr. (II) 3758.

प्रियात्मक m. *ein best. zu den* Pratuda *gezählter Vogel* Karaka 1, 27. v. l. प्रियात्मज्ञ; vgl. प्रियपुत्र in den Nachträgen.

प्रियीय् (von प्रिया), °यति *Jmd* (acc.) *für die Geliebte halten:* ज्ञमनो रा प्रियीयत्ति (so lesen wir und am Ende प्रियाम्) Hem. Joaç. 3,9.

1. प्री 1) a) लोकं प्रीणेत्र (Conj.) निर्धनः Spr. (II) 2112.

2. प्री, वामनेन कविप्रिया *an den Dichtern seine Freude habend* Einl.

zu Vimana.

प्रुष् caus. etwa *Gewalt anthun* Âpast. 2,12,2.

प्रेता 3) °पूर्वकारिन् *mit Bedacht zu Werke gehend* Pat. a. a.O. 1,282,b.

प्रेङ्ख 2) प्रेङ्खावत्तरेण न घातीयात् Âpast. 1,31,16.

प्रेङ्खोलन 1) पादयोः Âpast. 2,20,12.

प्रेदि m. N. pr. eines Mannes Gov. Bn. 1,4,24. प्रेति Çat. Br.

प्रेप (प्र + अप् *Wasser*) adj. Pat. a. a. O. 1,293,a. 6,44,a.

प्रेमवत् adj.: पत्नी प्रेमवती Spr. (II) 3898.

प्रेषङ्घ Pat. a. a. O. 1,268,b.

प्रेषङ्घिक adj. *die Geschichte von* Prijañgu *kennend* ebend. 4,67,a.

प्रोक्षणा (Nachträge) Z. 2 lies 2) st. b).

प्रोथ 7) घोदकान्तं प्रियं प्रोथमनुव्रजेत् Çiç. ed. Parm. 86, 1 v. u. Könnte ein verlesenes प्रोष्य sein.

प्रोदर (प्र + उदर) adj. comp. Pat. a. a. O. 1,293,a. 6,65,a.

प्रोष्ठ vgl. ग्र°.

प्रोष्य vgl. oben प्रोथ 7).

प्रौढ 1) बाला, तरुणी, प्रौढा, वृद्धा स्त्री Spr. (II) 3000.

प्रौढिमन् m. nom. abstr. von प्रौढ Vimana 5,2,56.

प्लु mit अभिसम् *überströmen:* मातृहृदयं खस्य तामपरामभिसंप्लवते सिराभिः संस्यन्दमानाभिः *das Herz der Mutter überströmt diese Nachgeburt durch Adern, welche von jenem zu dieser laufen,* Kârana 4,6.

प्लारस् vgl. auch प्लु°.

फट् Z. 2 lies 4,18,3.

फणिन् 2) Kâlakarna 1,66. — 5) (wohl n.) *Zinn* oder *Blei* ebend. 5,231.

2. फल् Z. 12 lies फलत्यात्मनि.

फलग्रन्थ m. *ein Buch, welches die Folgen* (der Himmelserscheinungen) *beschreibt* d. i. *die Himmelserscheinungen in Bezug zum Geschick der Menschen bringt* (im Gegensatz zu *der reinen theoretischen Himmelskunde*) Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 22. fg. Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 2.

फाण्ट 2) Kârana 1,4.

बंह् mit सम्, partic. संबाळ्ह Taitt. Âr. 1,17. = संबद्ध, दृढ Comm.

बंहीयस् *weitläufig, ausführlich:* बंहीयसी लघिष्ठा वा गिरं निर्मातिं वाग्मिनः Kull. zu M. 5,64.

बक 1) a) (Nachträge) Sp. 1640, Z. 4 v. u. बकपञ्चक n. nach dem Kṛtyatattva im ÇKDa. Suppl. Bez. von *best. fünf heiligen Tagen, an denen sogar der Reiher keine Fische verzehrt.* — Vgl. नगरीबक (°बक).

बकबकाय्, °यते v. l. für मकमकाय् und भकभकाय् *quaken* zu Spr. (II) 2808.

बकवृत्ति (Nachträge) Hem. Joiaç. 4,16.

बटु (Nachträge) 1) Varâh. Bṛh. S. 87, 15. Nigh. 6, 10. 14. Verz. d. Oxf. H. 225,a,24. 26. Kathâs. 33,81. 65,166. Bâlar. P. 7,15,38. मायावटुवामन 6,8,11. ब्राह्मणो बटुः Kathâs. 35, 80. — 3) °वर्गं प्रपूजयेत् Pâraçar. 2,4,65.

बटूकरण (Nachträge) Taitt. 2,7,1.

बण्ड vgl. बण्ठ.

बध्योग gaṇa घनुगतिकादि zu P. 7,3,20.

बन्दि (Nachträge) 2) बन्दीकृत Kathâs. 43,316.

बन्दिता f. nom. abstr. von बन्दिन् *Lobsänger:* यथो तदुणास्तुतिबन्दिताम् Râga-Tar. 4,144.

बन्धु 3) रागी बध्नाति कर्माणि (कार्याणि vermuthet) so v. a. *unterlässt* Spr. (II) 5732.

— घनु pass. *erfolgen* Pat. a. a. O. 1,222,a.

— उद् 1) बध्वोत्तं घात्मानमुद्बध्य *sich erhängen* Pañkat. 135,3, v. l.

— नि 2) partic. निबद्ध *aus vielen Sätzen oder Strophen bestehend.* घ° *nur aus einem Satze oder einer Strophe bestehend* Vimana 1,3,23. 38.

बन्धुत्व n. *Verwandtschaft, Angehörigkeit* Spr. (II) 3195.

बन्धुर (Nachträge) 1) a) दृश् Kâmandak. 30. वक्षस् Kathâs. 109,42. घ्रति° MBu. 7,333. — b) बाबन्धुरोदर Pañkat. 3,5,12.

बप्स् s. भस्.

बधि Z. 2 (auch Nachträge) *fahrend, sich hinbewegend* ṚV. 3,1,12.

बधु als Synonym von राजन् MBu. 3,12706.

बर्बटी = व्रीहिभिद् und हेय्य Taik. 3,3,100.

बर्बर 2) d) (Nachträge) *Cleome pentaphylla Roxb.* (*eine stark behaarte Pflanze*) Sinon. in Nigh. Pr. *ein best. Parfum,* = व्याघ्रनख Dhany. und Ratnâk. ebend.

बर्बरक m. *Cleome pentaphylla Roxb.* Hav. in Nigh. Pr.

बर्बरीगन्ध m. *eine best. Pflanze,* = घजमोदा Açva. 319

2. बर्ब्, partic. बृढ gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

— वि *sich an —, in einander drücken* (vgl. — उप intens.) ṚV. 10, 10, 7. 8.

बर्हकेतु m. N. pr. eines der Söhne Sagara's Harîv. 790.

बर्हणाचक्र N. pr. eines Gebirgsdorfes Râga-Tar. 8,238.

बर्हिचूडा f. (*Pfauenkamm*) *Celosia cristata, Hahnenkamm* Râgân. 3,45.

बलीपस्त्व n. fügo *das Verwiegen* und Vimana 1,3,11 hinzu. घ° ebend.

बल्लव 4) pl. बल्लवाः und घघरबल्लवाः als Volksnamen MBu. 6,370 nach der Lesart der ed. Bomb., मल्लव und घघरवल्लभ ed. Calc.

बल्वल (Nachträge) Bâlar. P. ed. Bomb. 2,7,24. 3,3,11.

बस्त, बस्तश्च मैत्रियश्च स्त्रीकामतमौ Âpast. 2,14,13.

बकुय्, °यति denom. von बकु Kâç. in Mahâbh. lith. Ausg. 6(5),44,A.

बकुल vgl. बाकुल्य weiter unten.

बर्हिरङ्ग am Ende, घन्तरङ्गतर ist an und für sich richtig, ist aber nicht = बर्हिरङ्ग: vgl. oben u. घन्तरङ्ग.

बर्हिष्ट n. nom. abstr. von बर्हिस् Pat. a. a. O. 1,268,a.

बर्हिस्तपस् n. *äussere Askese* Hem. Joiaç. 1,83.

बकुकर m. *eine Art Judendorn* Râgân. im ÇKDa. u. लघुबदर.

बकुर्ण adj. *rinderreich* TBa. 3,8,8,3.

बकुचर्मक adj. (f. °चर्मिका) Pat. a. a. O. 7,114,a.

बकुतरक (von बकुतर, compar. von बकु) adj. *recht viel, — zahlreich* ebend. 1,163,b. 7,75,a.

बकुदोष m. *grosser Schaden* Spr. (II) 3289.

बकुल 3) h) MBu. 13,3670. 6042.

बकुविद्, so zu lesen.

बकुव्रीहियव adj. (f. घा) *reich an Reis und Gerste* TBa. 3,8,8,3.

बकुभुभाष् (von बकु + भुभ), °यते *zu einem grossen Segen werden* Çaṅk. 14,113 (getrennt gedr.).

वकुसाक्षम, इष्टका °मी (so Comm.) *viele tausend Ziegelsteine* R. ed. Bomb. 1,13,9. richtiger verbinde man wohl इष्टकावकुसाक्षमी.

वकुस्तिक adj. (f. घा) *reich an Elephanten* TBr. 3,8,3,3.

वकुहिरण्य adj. (f. घा) *reich an Gold* ebend.

वकूजाविक adj. (f. घा) *reich an Ziegen und Schafen* ebend.

वकूर्म adj. (f. घा) *reich an Rossen* ebend.

वार्क (von वक) n. *eine Menge von Reihern* P. 4,2,37, Schol.

वाकरूका f. *eine Art Kranich* H. 1333, Schol. — Vgl. वक.

वाकायनि m. patron. von वक gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. pl. Saṁsk. K. 183,b,11.

वाकुल (Nachträge) n. *die Frucht von M. E.* Rāǵān. im ÇKDa.

वाक, so die Bomb. Ausgg.

वाण 5) Halāy. 2,50. Vaǵin. Bṛn. S. 10,21. n. *die Blüthe* Çiç. 12,37. — 6) vgl. 1. वाण.

वाणभट्ट, lies 9) d).

वाणयोजन n. *Köcher* Paṇḍat. Berl. Hdschr. 139,6 nach Benfey, Glossar u. योजन.

वाणवार् m. *eine Menge von Pfeilen:* चापाच्चिर्याती वाणवार्: Pârçvanâthar. 4,151 nach Aufrecht, Halāy. Ind. u. वार्.

वाणासन, lies 1. ध° und vgl. इषासन.

1. वाध् mit सम् 3) सो ऽपि संवाध्यते लोके तृष्णया Spr. (II) 1398.

वाधकमय adj. (f. ई) *aus dem* Bâdhaka *genannten Baume gemacht* u. s. w.: समिध: Siṁavidh. Bṛ. 3,6,8.

वाधन 3) c) *Hinderniss*, mit dat. Spr. (II) 749 (Conj.).

वाध्योगायन, nach gaṇa यनुशतिकादि zu P. 7,3,20 könnte man वाध्यो° erwarten.

वार्क Z. 2 lies °चामर्, da beide Wörter adjj. zu व्यञ्जन sind.

वार्कलक m. N. pr. eines Mannes Mālav. 8,13 nach der richtigen Lesart.

वार्ल n. nom. abstr. von वाल gaṇa पृष्ठ्यादि zu P. 5,1,122.

वालक्रीडनक 2) lies कृत्रिमाक्रीडितं.

वालस्थान zu streichen, da mit der ed. Bomb. वाल: स्थानेन zu lesen ist.

वालेयार्धिक adj. Pat. a. a. O. 4,76,b.

वाष्कल adj. von Bâshkala *herrührend:* वाष्काय Comm. zu Âçv. Çr. 1,1,1.

वाष्पक (Nachträge) am Ende eines adj. comp.: सवाष्पका (wohl सवाष्पिका) स्थली *dampfend* Suçr. 2,61,17.

वाष्पाय् (Nachträge) 1) वाष्पायमाणा Kathās. 103,179. वाष्पायितेक्षण 82, 66.

वास्तल्य (von वत्सल) n. *Dicke, Umfänglichkeit;* so zu lesen Suçr. 1, 270,12.

वास्तोक 2) °भियत् heisst Kâṅkâǵana Karaka 1,12. 3,1. 4,6. वाङ्कोक° v. l.

वास्य 1) am Ende eines comp.: सहास्य so v.-a. *schlecht* Hem. Joǵaç. 3,119. — m. *Leichnam* nach Bühler; s. Spr. (II) 2533, N. diese Bed. könnte eher वास्य haben.

विडाल्क m. = विडाल *Katze* Çabdar. im ÇKDa.

विडालक, f. विडालिका *Kätzchen, Katze* Spr. (II) 3504. क्रीडा° Rāǵa-Tar. 8,2413.

विडालपुत्र m. N. pr. eines Mannes Rāǵa-Tar. 8,1037.

विडालवणिज् m. *Katzenhändler*, Spitzname eines Mannes Rāǵa-Tar. 7,230. fg.

विम्बाव adj. *reich an* Bimba Pat. a. a. O. 3,51,b.

विल्वपर्णी f. *eine best. Gemüsepflanze* Karaka 1,27.

विसलता f. wohl = विसिनी *Nelumbium speciosum* Spr. (II) 4329.

वृद्ध 2) eine Incarnation Vishṇu's Mârkaṇḍ.-P. bei Muir, ST. (2te Aufl.) 4,136.

वृद्धि 4) pl. Spr. (II) 2286.

1. वृध् 2) streiche ṚV. 1,24,11. 31,9. 7,75,2 und s. 1. भू. — 3) c) *aufgeblüht* Siṁavidh. Bṛ. 2,6,11. — intens. बोबुधीति *eine Einsicht in — ein Verständniss von Etwas* (acc.) *haben* Spr. (II) 4053.

— प्र 1) Z. 12 lies सूर्योदये.

— सम् caus. 2) Spr. (II) 6672. füge *belehren* hinzu.

वृन्न Z. 5 lies 2,2,3 st. 22,3.

वृभुता pl. Spr. (II) 6327.

वृस vgl. यव°, वारणवृसा.

वृक्तपुष्पी, lies घण्टारवा.

वृक्तबर्हिस् m. pl. = वृक्तबर्हिस् Taik. 2,1,10.

वेञ्चवापि Pravarâdhy. in Verz. d. B. H. 59,1.

वेडाल (Nachträge) Suçr. 2,421,21.

वेडालिकर्णककन्द und वेडालिकर्णिकन्द n. wohl N. pr. von Städten gaṇa चिरुणादि zu P. 6,2,125.

वेल्वकीय adj. von वेल्वक Pat. a. a. O. 6(4),44,a.

वेधमय (von वेध) adj. *aus lichter Erkenntniss bestehend* Spr. (II) 4946.

वेधि 1) Hem. Joǵaç. 4,55. 108.

वेह so v. a. *im Sinne behalten, nicht ausgesprochen* Vâmana 5,2,62.

ब्रह्मचर्य *Keuschheit* Hem. Joǵaç. 1,19. 20.

ब्रह्मचोदन *das oder den* Brahman *treibend*, f. ई ṚV. 6,53,8.

ब्रह्मदत्त 2) fährt zur Hölle Hem. Joǵaç. 2,27.

1. ब्रह्मन् 3) (Nachträge) Hem. Joǵaç. 1,23. 3,92. 4,92.

ब्रह्मसाष्टिता, lies *Gleichheit der Würde mit* Brahman st. dess.

ब्रह्मीयस् compar. zu ब्रह्मवत् Pat. a. a. O. 6(4),46,b.

ब्राह्म, मुहूर्त Hem. Joǵaç. 3,120. °र्धी (vgl. Jâǵ. 1,19) Mit.P. 49,39.

भकभकाय्, °यते *quaken* Spr. (II) 2808. — Vgl. बकबकाय्, मकमकाय्.

भक्तकार m. *Speisebereiter, Koch* Pat. a. a. O. 1,256,b.

भक्ताभिसार m. *Speisesaal* Divyâvad. 18.

भक्ति, instr. भक्त्या so v. a. *uneigentlich* Vâmana 1,1,1. wohl nur fehlerhaft für भङ्ग्या.

भक्तिक s. उत्तर°, पौर्व° oben.

भक्तिभाज्, त्रिन° Hem. Joǵaç. 3,151.

भगिन् vgl. auch यशो°. भगिनी f. N. pr. einer Gottheit Kâlakarṇa 3,113.

भङ्ग = भङ्गि *toilet, fashion* Kern, Uebersetzung von Vaǵin. Bṛ. S. 242, N. 1. Die Lesart ist aber verdächtig.

भङ्गि 3) unter विन्यास ist wohl *toilet, fashion* gemeint, welche Bed. Kern in seiner Uebersetzung von Vaǵin. Bṛ. S. 242, N. 1 durch Rāǵa-Tar. 7,922 festgestellt hat.

भङ्गुर 1) a) घभङ्गुरा (dieses wohl anzunehmen) वागुरा *unzerreissbar*

Spr. (II) 3567.

भङ्गुरीकर् (भङ्गुर + 1. कर्) *zerbrechlich machen;* davon nom. act. °करण n. Śiv. D. 314,21.

1. भञ्ज् *krümmen:* घट्टं भनक्ति Spr. (II) 7199.

— वि *zerbrechen, sprengen, vertheilen:* तिमिरमविभज्य — घर्मभुमान् Spr. (II) 399.

भण्डत्व n. nom. abstr. von भण्ड *Possenreisser* Spr. (II) 5826.

भण्डी Kâraka 1,27.

भद्रंया adj., davon भद्रंयिका adj. f. P. a. a. O. 7,116,a.

भद्रकाप्य m. N. pr. eines Unterredners bei Kâraka 1,26. 4,6.

भद्रशिखा f. angeblich ein älterer Name von Takshaçilâ Divjâv.

भद्रशौनक desgl. ebend.

भद्रासन 2) Hem. Jogaç. 4,123. 129.

भम्भसार wohl = बिम्बिसार.

भयद् 2) घभयद् der Text 4,19,1.

1. भर् mit घव 1) Z. 5 füge bei: oder *hinaberfen auf* (acc.).

— नि *abwärts bewegen, niederstossen* RV. 7,21,2.

— प्र 1) med. *vorbringen* (ein Lied u. s. w.), *loben, preisen* RV. 8, 72,5. — 3) lies 2,30,3 st. 2,20,3. — 5) *sich Jmdes* (acc.) *bemeistern* RV. 10,46,5. — 6) partic. प्रभृत *erfüllt von:* भयेन R. ed. Bomb. 6,95,24.

भरत 7) 8) भरतो भरताधिप: Hem. Jogaç. 1,10.

भरम् Z. 2 lies ऊर्धभरमं लोर्धभरा दृशेयम्.

1. भरित *voll, gefüllt* (Gegens. रिक्त): Krug Spr. (II) 963.

भर्तृहा, so die richtige Lesart im gaṇa घटादित्यादि; vgl. Pat. a. a. O. 1,118,b.

भरेषुर्ण oder °णी adj. *in Kämpfen vorhanden* so v. a. *dienlich.*

भर्मन् vgl. वाज्र°.

भर्व vgl. सू°.

भव 1) d) Hem. Jogaç. 2,51. 4,54. = संसार nach 66. भवाम्बुधि 2,106. — Z. 3 ist 3229 zu streichen und zu *e*) zu stellen; vgl. Spr. (II) 7029.

भवत् 2) vgl. वीर°. — 3) घस्तिर्भवती Pat. a. a. O. 2,339,b.

भवितव्य n. = भवितव्यता Spr. (II) 2354.

भविन् so v. a. *Mensch* Spr. (II) 4563.

भविष्यत्पुराण n. wohl = भविष्यपुराण Âpast. 2,24,6.

भस् vgl. 2. भासम् weiter unten.

भस्मशर्करा f. etwa *Pottasche* Suçr. 1,32,14. 33,2.

1. भा mit न so v. a. *eine traurige Erscheinung sein* Spr. (II) 3389.

— प्र 1) प्रभाते विमले *bei klarem Tagesanbruch* MBh. 5,7602.

भाक्त n. nom. abstr. zu भाक्त 1) a): गुणवचनस्य विशेषभाक्तात् Pat. a. a. O. 2,339,b.

भागद n. oder °दा f. N. pr. einer Stadt: मल्लविषये भागदादो नगर्याम् Kâlakâcârya 1,153.

भागलि Vaṭṭâk. 1. 22.

भागिनेयक m. = भागिनेय *Schwestersohn* Spr. (II) 2408.

भागुरी f. Titel eines das Lokâjata schildernden Werkes Pat. a. a. O. 7,116,a.

भाज् 1) mit gen.: श्रियो भाज: *reiche —, vornehme Männer* Varâh. Bṛh. S. 68,64.

भाजन 4) in übertr. Bed.: पुण्य° (richtig) Hem. Jogaç. 3,63.

भाटकजीविका f. *ein Lebensunterhalt durch Fracht* Hem. Jogaç. 3,98.103.

भाण्डार m. Spr. (II) 705.

भाद्रवाकेय (vgl. Corrigg.) m. patron. oder metron. Pat. a. a. O. 1,337,a. 6(4),42,b.

भानुमत्, °मती f. heisst die Ṭîkâ des Çakradatta zu Suçruta.

भारत 4) lies N. eines der zehn auf Schüler Çaṁkarâkârja's zurückgeführten Bettelorden, dessen Mitglieder das Wort भारती ihrem Namen beifügen.

भारद्वाजिका f. *ein best. Vogel* Sâmavidh. Br. 2,7,3.

भारिक 1) Verdauung Kâraka 1,7. Kopf 17.

भार्ग 2) *b*) wohl fehlerhaft für भार्ङ्गी.

भार्ङ्गी (von भृङ्ग) f. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Varâh. Bṛh. S 54, 48; vgl. भार्ग 2) *b*).

भाव 4) am Anfange eines comp. = वस्तु (d. i. वस्तुतम्) *in Wirklichkeit* Spr. (II) 5875. Am Ende des Artikels ist साक्षाद्भाव zu streichen.

भावन 2) *e*) भावनां बन्ध् mit loc. *seine Phantasie beschäftigen mit, seine Gedanken richten auf* Spr. (II) 4481. Bei den Gaina scheint das Wort *richtige Vorstellung, richtiger Begriff* zu bedeuten; vgl. Hem. Jogaç. 1,19. 23. 4,54. 109. 121. स्तेय° 1,28. nach 4,62. 66. 68. 70. 72. 77. 84. 90. 105. 108.

भावय् caus. von 1. भू und denom. von बहु = बहून्याचष्टे Kâç. zu Mahâbh. Ujjv. Ausg. 6(4),44,b.

भावाकूत, genauer *die ersten im Herzen sich regenden Liebesgefühle.*

भाविन् *fördernd* in लोक°.

भाव्य so v. a. *was gut geheissen —, für gut befunden wird:* सद्भिर्भाव्ये स्थिते काव्ये Z. d. d. m. G. 27, 46. *leicht zu fassen —, errathen* Vâmana 3,2,9.

1. भाष् mit घप *falsch sprechen:* ब्राह्मणेन नापभाषितवै Pat. a. a. O. 1,6,a. °भाषते 18,a. तैरपभाषितम् (impers.) ebend.

— घभि, स्वकर्मणाभिभाषेत so v. a. *er bekenne seine That* (*Sünde*) Sâmavidh. Br. 1,5,15.

— वि 2) स्मात्स्मिन्नो विभाष्येते Kâtantra 2,1,25.

भाषिक, °सूत्र Ind. St. 15,405.

भाषिन्, भाषिपक्षिन् (Conj.) *ein Vogel, der redet,* Spr. (II) 3907.

भास adj. von भास 2) Pat. a. a. O. 4,38,a.

2. भासम् (von भस्) n. *Futter, Frass;* hierher (von 1. भासम्) RV. 4, 33,4 und wohl auch 6,12,5.

भिक्षु Z. 4 lies 61,6 st. 61,1.

भिक्षण Âpast. 2,10,1.

भिक्षाचार wohl nur fehlerhaft für भिक्षाकार; vgl. Spr. (II) 4489.

भिक्षाकार adj. von *Almosen lebend* Spr. (II) 4489.

1. भिद् mit परा Çat. Br. 5,3,5,29.

— प्र caus. vom intens. प्रबेभिद्य Pat. a. a. O. 6(4),14,a.

— वि 7) श्रुतयो विभिन्ना: *sich widersprechend* Spr. (II) 2303.

भिदुर adj. über die transitive und intransitive Bed. des Wortes s. Vâmana 5,2,40. Beispiele: तिमिर°, काष्ठ, तमस्.

1. भी Sp. 293, Z. 14 lies intens.

1. भुज् mit नि *beugen, senken:* निभुञ्जति बाहुशिरसी Pat. a. a. O. 1,334,a.

— प्र *falten, zusammenlegen:* प्रभुञ्जति वाससी ebend.

3. भुज् 1) भुञ्जतीय Pañcav. Br. 1,1,1. — Z. 4 lies भुक्त्वा st. भुञ्जत्वा. — intens. बोभुज्यते *geniessen* Spr. (II) 4033.

4. भुज् 1) füge bei *das Haben, die Habe.* Z. 5 lies 5,48,4.

भुजग 3) (wohl n.) = भुजंग 3) *Zinn* oder *Blei* Kâlakârma 5,135.

भुव 2) MBh. 13,802.

1. भू 2) *es zu Etwas bringen, sein Ziel erreichen* Spr. (II) 291. — 3) पशौ भवति Çat. Br. 1,1,4,3. 4,2,4,9. — caus. 1) so v. a. *üben, ausüben:* व्रतम् Hem. Jogaç. 1,28. fgg.

— पर्या Pat. a. a. O. 3,97,b.

— प्र 4) Sp. 327, Z. 6. fgg. भवच्छिदि Hem. Jogaç. 3,141.

— घनुप्र auch ṚV. 7,77,3.

— संवि caus. s. संविभाव्य.

— सम् 8) mit dem loc. eines nom. act. Spr. (II) 1669. — caus. 1) उज्जयिन्याः प्रस्थितो माक्षिप्मत्यां सूर्योद्गमनं संभावयते so v. a. *erreicht mit Sonnenaufgang* Mâh. Pat. a. a. O. 3,28,a.

भृगुरु 1) zum Schwitzbad Karaka 1,14.

भूत 1) *e) seiend* so v. a. *gegenwärtig* Kap. 2,2,14. — *f)* füge 3,4,44, so nach AK. hinzu.

भूतकरणावती f. (sc. विभक्ति) Bez. *des Charakters und der Personalendungen der augmentirten Verbalformen* (Imperf. Aor. Condit.) Kâtantra 3,1,14.

भूति 1) *h)* vgl. Benfey zu Megh. 19.

भूतुम्बी f. *eine Gurkenart* Râgân. 7,165.

भूमिपाशका f. *eine best. Pflanze* Sinavion. Br. 2,6,10.

भूमिवासिन् adj. *zu ebener Erde wohnend* (Gegens. प्रासादवासिन्) Pat. a. a. O. 1,63,b.

भूयःसंनिवृत्ति f. *Wiederkehr:* घटभूयःसंनिवृत्तये Raçik. 10,28.

भूरिगुण adj. *vielfältig, vielfache Früchte tragend* Spr. (II) 7189.

भूरिशृङ्ग auch *grosshörnig.*

भृशाय m. Karaka 1,27.

1. भूष् mit उप auch 7,74,3.

2. भूष् mit वि *obliegen* (dem Dienste), mit acc. ṚV. 6,15,9.

भृगुनन्दन Spr. (II) 928.

भृग्वङ्गिरसिका f. *eine eheliche Verbindung zwischen den Nachkommen Bhrgu's und Aṅgiras'* Pat. a. a. O. 2,408,a. 4,41,b.

भृङ्गार 1) *goldener* ist trotz der Lexicographen zu streichen. Karaka 1,15 hinzuzufügen.

भृङ्गिरिटि Z. 3 lies भृङ्गिरिटी.

भृश, भृशमागता so v. a. *ohne Zaudern, ohne irgend ein Bedenken* MBh. 5,5988. यदत्र ते भृशं कार्यम् 6086.

1. भृष्टि, शत° TS. 2,6,4,1.

भेक 2) *a)* भेकीयति *Froschmännchen* Spr. (II) 1921.

भेद 9) Spr. 2302 gehört zu 8); vgl. Spr. (II) 5530.

भेदक 2) f. *das Spalten:* देवदत्तस्य काष्ठानाम् Pat. a. a. O. 2,294,a.

भेल 1) als eine Bed. von लाघिष्ठ Mbh. Ih. 16.

भेलक adj. desgl. H. an. 3,177.

1. भोग 1) घल्किव भोगैः पर्येति । घल्किव शरीरैरिति गम्यते Pat. a. a. O. 5,5,a.

2. भोग 1) *einmaliger Genuss einer Sache* (neben उपभोग *häufiger Genuss derselben Sache*) Hem. Jogaç. 3,4. s. 96.

भोगीन, भैक्षो°, भैमणि°, सैनानि° Pat. a. a. O. 5,4,b.

भोज 2) *c)* regiert 55 Jahre, 7 Monate und 3 Tage über Dakshiṇâpatha und Gauḍa Sunaiss. 174.

भोजनकुतूहल n. Titel einer dem Raghunâtha zugeschriebenen Schrift über *die Kochkunst* (in unserem Besitz).

भोज्यम्, lies सु° st. स°.

भ्रमर 4) *c) eine Art Rundspiel* Z. d. d. m. G. 27,22.

भ्रमि *das Umherschweifen —, Umherirren in:* भ्रम° Hem. Jogaç. 2,51. *Schwindel* 78 (भ्रमिर्लोनि° zu lesen).

भ्राष्ट्रक m. N. pr. eines Mannes und भ्राष्ट्रकि m. patron. davon Pat. a. a. O. 2,409,a.

मंक्षम m. *eine best. Personification* Sinavion. Br. 1,2,5.

मकन्दिका f. ein Frauenname Pat. a. a. O. 4,58,b. — Vgl. माकन्दिक.

मकमकाय् vgl. घकघकाय् und भकभकाय्.

मकुति, st. dessen मकुत Hir.

मघोनवस् adj. superl. *allerreichst* ṚV. 8,45,14.

2. मक्ष *die Stadt Mekka* Kâlakârma 1,153. 2,80. °विषय ebend.

मगध 1) *a)* sg. das Land Spr. (II) 7862.

मङ्गल Sp. 426, Z. 8 lies कर्मसंधिषु.

मज्ज् adj. *untertauchend* in उद्मक° Pat. a. a. O. 7,108,a.

मज्ज्, परियत्मरुज्जादि (so zu lesen) मज्जत्येव भवाम्बुधौ Hem. Jogaç. 2,106. मज्जते (des Metrums wegen) Spr. (II) 2930 (मज्जते die Hdschr.).

मज्जन् Z. 3 lies 10,68,2.

मण्डिपत्र n. *eine best. Pflanze,* = मुरपर्णी Râgân. 10,175.

मणिकार 1) f. ई Kâlakârma 3,131.

मणितुण्डक m. *ein best. auf dem Wasser lebender Vogel* Karaka 1,27.

मणिधनु 1) Âpast. 1,31,18, Anm.

मणिवर m. N. pr. eines Sohnes des Rajatanâbha (Vatsanâbha) Harîv. 382.

मण्डल 2) *a)* सूर्यस्य मण्डलं भित्त्वा Spr. (II) 2098. — *g)* zum letzten Beispiel vgl. Spr. (II) 4496.

मण्डूक 1) *a)* °गतयो ऽधिकाराः Pat. a. a. O. 7,109,a.

मत्सर 2) *d)* N. pr. eines Sâdhja Harîv. 11537 nach der Lesart der neueren Ausg., वत्सर die ältere.

मत्सरिन् 2) गुणी गुणिषु मत्सरी Spr. (II) 3544.

1. मद् 1) स्तोतृभ्यः सुवीर्यं मघोनो न शवसा *reiche aus, schüttle heraus* so v. a. *ersinne* ṚV. 1,127,11.

— परि *abrupfen:* घर्मादन्यं परि श्येनो घरेः ṚV. 1,93,6.

मद्य, einzelne Hdschrr. lesen मद्या, was vielleicht richtiger ist als die von Sây. angenommene Lesart.

मद्य nach मध्य zu stellen.

1. मद्द् 1) माद्यति यस्तेन (ज्ञानेन) *wer sich berauschen lässt durch* Spr. (II) 2434.

मदनमाला f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 28,19. fgg.

मदनाशय m. *Geschlechtstrieb* Spr. (II) 3460.

मध्भाण्ड Spr. (II) 2285.

मधुच्छत्त als eine Bed. von वृक्षादन H. an. 4,192. Med. n. 211.

मधुपर्क 1) Âpast. 2,8,8.

मधुफला f. *Wassermelone* Rigân. im ÇKDn. u. षड्ऋता.

मधुमति (so zu lesen st. मधुपति) m. N. pr. = *Mahomed* Kâlakâkra 1,153.

मधुरपटोली s. u. राजपटोल 2).

मधुलिक् adj. am Ende eines comp. *der den Honig von — geleckt hat* Baic. P. 6,3,33.

मधुषुत्, lies *auspressend* st. *erzeugend*.

मधुष्यन्द s. मधुस्यन्द.

मधुसखाय, lies *den Lenz zum Gefährten habend*.

मधूय्, °यति denom. von मधु Pat. a. a. O. 8,72,a.

मध्यम 3) Z. 4 lies 3,2051 st. 1,2051. — 4) a) TBa. 3,11,9,6 bedeutet das Wort *Uterus* (Comm.), welche Bed. mit der Stelle als c) aufzuführen ist.

मध्यमन्दिर n. *die weibliche Scham* und *der After* Spr. (II) 3111.

मध्यमपद, °लोपिन् Vimâna 5,2,16.

मध्यमपुरुष m. *eine best. Personification* Sâmavidh. Br. 1,2,5.

मध्यमभाव m. = मध्यभाव Spr. (II) 176.

मध्यमात्रेय, *richtiger der zwischen dem jüngern und ältern* Âtreja *liegende* Â.

मध्यान्तरविस्तरलिपि und मध्या umzustellen.

मध्यान्तविभागशास्त्र, मध्यान्तविभङ्ग° die richtigere Form.

मध्येपद्मम् adv. *in einer Lotusblüthe* Cit. bei Vimâna 5,2,66.

मध्येमम् R. ed. Bomb. 1,4,15.

मन = मनस् in परत्रनमनरञ्जनी Spr. (II) 1598.

मनःशिला Hem. Joâç. 3,106.

मनस् 1) a) मनसेव विनिर्मितम् so v. a. *in einem Nu geschaffen* R. ed. Bomb. 1,13,39.

मनस्क 2) निर्विशेष° Hem. Joâç. 1,2. घनिरुद्ध° 4,38.

मनःसंताप, lies 95,14.

मनीषिन् Sp. 526, Z. 4. 5 मनीषिणा ist trotz der absonderlichen Form der Name des Metrums, das auch बुद्धि heisst. Man könnte मनीषिका vermuthen.

मनुष्य 2) b) *Gatte* Varâh. Bṛh. S. 78,15.

मनोरथ *der Wagen Herr, das als Wagen gedachte Herz:* संकल्पकल्पसंयुक्तैर्यात्तोमिव मनोरथैः R. 5,21,5.

मनु 4) यत° adj. Cit. bei Vimâna 4,1,3. — Vgl. निर्मनु oben.

मन्त्र 3) n. Spr. (II) 1498.

मन्त्रमूल 2) Spr. (II) 4359. Vgl. समूलमन्त्रतन्त्र Hem. Joâç. 1,5.

मन्त्रय् mit उद्ग s. oben उद्गामन्त्रण.

मन्त्रवाद m. *das Hersagen von Zaubersprüchen, Zauberkunst* Spr. (II) 1187.

मन्त्रसाधक (Nachträge), genauer *Zurechtmacher eines Zauberspruchs*.

मन्त्रसाधन, genauer *das Zurechtmachen eines Zauberspruchs*.

मन्थक adj. *reibend:* मध्यमन्थकमन्थानसंयोगादग्निसंभवः Kârana 1,7.8.

मन्थान m. *ein best. Werkzeug zum Reiben des Feuers;* s. oben u. मन्थक.

मन्दक adj. *spärlich:* दृधि Pat. a. a. O. 2,332,a.

मन्दार 1) c) N. pr. eines Berges Kâlakâkra 1,16.

मन्दुरज्ञ adj. Pat. a. a. O. 6,81,b. 6(4),41,a; vgl. P. 6,2,83.

मन्मनत्व (von मन्मन) n. Bez. *eines best. Gebrechens der Sprachorgane* Hem. Joâç. 2,53.

मन्यु vgl. noch वृष°, सत्त्व°.

मन्द् Verz. d. Oxf. H. 130,b,16.

मरालिका s. u. पराालिका.

मरु 2) Z. 2 lies संसाध्य.

मरुत्त soll = मरुद्दत्त sein Pat. a. a. O. 1,294,b. 5,52,b.

मरुद्देव 2) Hem. Joâç. 1,11.

1. मर्ज् 2) *abstreichen:* तस्य दत्ता श्रीरपि मार्ज्यते Spr. (II) 3429.

— प्र Sp. 580, Z. 10 lies प्रमृष्टो.

— वि 1) *sich putzen, — rüsten* RV. 7,95,3.

मर्द् mit उद्, पादावुन्मृदान *reinige deine Füsse* Pat. a. a. O. 1,221,b.

— संवि s. संविमर्द्. — Vgl. मृद्.

मर्मग, वाणीः सुमर्मगीः Spr. (II) 3256.

मर्ष् mit आ vgl. आमर्श oben.

मर्ष् 2) mit gen. der Person *Jmd Etwas nachsehen* Spr. (II) 2640 (act.). 4054 (med.).

— सम् s. संमर्ष.

मलद 1) R. ed. Bomb. 1,24,18. 23. 25. 29.

मलायन (मल + अयन) n. *Weg der Excretionen*, z.B. *After* Kârana 1,7.8.

मलिन Sp. 600, Z. 3 lies क्षल.

मसीर m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,360 nach der Lesart der ed. Bomb., समीर ed. Calc.

मसृणत्व n. nom. abstr. von मसृण 1) Vimâna 3,1,10.

मस्करिन् 1) मा कृत कर्माणि शान्तिर्वः श्रेयसोत्याब्रुतो मस्करी परिव्राब्रुकः Pat. a. a. O. 6,58,a.

3. मक् 2) a) मक्षीयु Spr. (II) 1509.

मक्षन (von 1. मक्ष्) n. *das Preisen:* त्रिनेश° Spr. (II) 2329.

मक्षनीय, °कर्मन् MBh. 4,2088 nach der Lesart der ed. Bomb.

मक्षत्, मक्षात्तं वैरम् st. मक्षद्वैरम् MBh. 1,1155. मक्षान्तः संक्षोभो येन तन्मक्षान्तम् Nîlak.

मक्षर्द्विन् adj. = 2. मक्षर्द्धि MBh. 8,4802.

मक्षल्लक 2) H. an. 3,100.

महाकाश ist N. pr. eines Varsha. Die zweite Zeile zu streichen.

महाजटा ist N. *einer Pflanze:* s. रुद्रजटा.

महाजन m. 1) Z. 2. 3 die aus MBh. citirte Stelle ist Spr. (II) 2505.

2. महाजन adj. *von vielen Menschen besetzt:* Haus MBh. 4,282 nach der Lesart der ed. Bomb.

महानिम्ब n. als Synonym von कोशाम्र 1) Kârana 1,11.

महानील 5) n. *ein best. Augenmittel* Kârana 8,24.

महात्त st. महारत्त *mit Maher endigend* MBh. 13,802. — Vgl. auch oben u. मक्षत्.

महापार m. *eine best. Personification* Sâmavidh. Br. 1,2,5.

महापुत्रीय्, °यति denom. von महापुत्र, wenn dieses so v. a. महान्पुत्रे ist, Pat. a. a. O. 3,14,b.

महापेशाचिक adj.: घृत *eine best. Salbe* Kârapa 8,7.

महाब्ज m. N. pr. eines Schlangendämons Kâlakârma 4,131.

महाभांसी f. *ein best. kleiner Strauch*, = रुद्रन्ती Râgân. 5,88.

महाभाषूर n. *ein best. Heilmittel* Kârapa 8,24.

महामेरु N. pr. eines Varsha MBh. 8,425.

महारम्भ m. *eine grosse Unternehmung* Spr. (II) 4872.

महाराजचूत m. *eine Mangoart* Râgân. im ÇKDa. u. राजपुत्र.

महारोमश adj. *stark behaart* Suçr. 1,124,12.

महावालभिद्, so zu lesen.

महावीर 1) *l)* N. pr. des letzten Arhant's Hem. Jogaç. 1,1.

महावीराङ्गी f. *eine best. Begehung* (इष्टि) Âçv. Çr. 8,11,1.

महाविलस्थ adj. RV. 1,133,3.

1. महाव्रत 1) Hem. Jogaç. 1,25.

महाव्रतिन् 1) *die fünf Grundpflichten der Gaina ausübend* Spr. (II) 4869. fg. — Vgl. अणुव्रतिन्.

महाशाल m. *ein grosser Çâla-Baum:* सु° R. 1,5,12.

महाश्रावक bei den Gaina Hem. Jogaç. 3,118.

महाश्रोतस् n. als Synonym von कोष्ठ 1) Kârapa 1,11.

महिष 2) *c)* von Skanda erschlagen MBh. 7,7412.

महीये besser als dat. von महीया zu fassen wie स्वपत्ये von स्वपत्या.

महोत्साह, füge *eine grosse Macht besitzend* hinzu.

महोधस् adj. *ein grosses Euter habend* so v. a. *reich an Wolken*, — *Wasser:* पर्जन्य Pat. a. a. O. 4,20,b. 5,80,b.

महा eher adj. (von 1. मह) *hoch in Ehren stehend;* = महत्त् Nilak.

1. मा 1) मा भूद्गतः so v. a. *sollte er nicht vielleicht gekommen sein?* Spr. (II) 937. — 3) Z. 8 lies 7,59,12. — 4) MBh. 3,15688.

3. मा mit घन्, partic. घनुमित n. *Schlussfolgerung* Pat. a. a. O. 3,78,b. — मम्, die Stelle RV. 3,54,22 u. 2. भवम् 2) richtiger erklärt.

3. मा mit घय *durch Tausch vergüten, heimgeben:* °र्मित्य AV. 6,117,2.

मांसकील (सोस° die Hdschr.) *Warze* Vjutp. 101. — Vgl. चर्मकील.

मांसवर्षिन् adj. *Fleisch (Heuschrecken?) regnend* MBh. 6,64 nach der Lesart der ed. Bomb.

माकन्दिक m. metron. von मकन्दिका Pat. a. a. O. 4,53,b.

मातिक 2) Râgân. 13,56. Suçr. 2,84,7.

माङ्गलिक *dem es um den guten Erfolg einer Sache zu thun ist:* चाचार्य Pat. a. a. O. 1,67,b.

माठर 1) *a)* Vaitân. 1. Kauç. 138. Ind. St. 13,387. fg. 425. — *b)* MBh. 8,3652 nach der Lesart der ed. Bomb., रामठ ed. Calc.

माणिक (von मणि) m. wohl *Juwelenhändler;* s. u. सुवर्णमाणिक.

माणव्य 1) घसतां मङ्क्षदोषेण शूलमानवान् Spr. (II) 7461.

1. मातर् Sp. 700, Z. 11 lies Siddhi.

मातरिश्वन् 2) die richtige Lesart ist °भूरीः = मातरि भवन्त्यः Sây.

मातृकल्पिक adj. von मातृ + कल्प Pat. a. a. O. 4,67,a.

मात्पुत्र m. pl. *die Schüler meines Sohnes* (मत्पुत्र) ebend. 1,177,b.

मात्रीय् *Jmd* (acc.) *für seine Mutter halten* Spr. (II) 3899.

माथिक adj. *mit* मथित *handelnd* Pat. a. a. O. 6,36,b.

माद् und माद् s. मद्°.

माद्रवाल्य m. metron. Pat. a. a. O. 4,53,b.

माधव 3) *e)* zu streichen. — माधवी als Bez. *der Erde* (vgl. Nachträge) VP. 1,4,20.

माधवचन्द्रकर m. vollständig für माधवकर Calc. Ausg. des Nidâna.

माधुकर (Nachträge), °री वृत्तिः *der Biene eigen* auch Hem. Jogaç. 3,140.

माधुतैलिक adj. *aus Honig* (मधु) *und Oel* (तैल) *bestehend:* Klystier Suçr. 2,198,3. 228,19.

माध्यम, त्रयः प्राच्याः। त्रय औदीच्याः। त्रयो माध्यमाः *die Mitte des Landes bewohnend* Pat. a. a. O. 4,75,b.

माध्यमिक adj. Bez. *eines best. Zeuges* (पट) ebend. 5,60,a.

माध्यमिकीय adj. ebend. 6,93,a. = मध्यमिकायां भवः Kâç.

माध्यस्थ 2) Hem. Jogaç. 4,116. 120. — 3) *das Maasshalten* (so Fritze) Spr. (II) 6921. — Vgl. निर्माध्यस्थ oben.

माधुरि m. Pat. a. a. O. 7,111,a.

1. मान 2) Hem. Jogaç. 4,6. 13. °द्रु 14.

4. मान Z. 2 lies °मानेनाश्विना.

मामक 3) Kâlakârma 3,130. 4,87. 127. 5,13.

माय 3) *a)* *Betrug* Hem. Jogaç. 4,6. 15. fgg.

मायूरि m. patron. von मयूर Pat. a. a. O. 4,43,a.

मारक adj. *calcinirend* s. लोक°.

मारचिता f. N. pr. einer Göttin Kâlakârma 3,146.

2. मार्ग 2) *f)* नृप° *fürstliches Verfahren* Spr. (II) 5928.

मार्गवशागत adj. = मार्गवशानुग, वन Kathâs. 37,35.

मार्गार m. metron. von मृगी Pat. a. a. O. 4,55,a.

मालय् *bekränzen:* माल्यते Gopâlatâp. 2,71.

माष 2) पुराकल्प एतदासीत्। षोडश माषाः कार्षापणं षोडश पलाश मा वसंवग्वः Pat. a. a. O. 1,225,a.

मासर् Vaitân. 30. Sp. 759, Z. 3 lies 20,66.

मासवर्तिका, so besser.

मासोकर् (मास + 1. कर्) *in Monate verwandeln* Sâmav. 1,48.

माहेन्द्र 3) *c)* *eine best.* Ishti Âçv. Çr. 2,18,17.

1. मि 1) Z. 3 lies Jama st. Indra.

2. मि mit घा 2) Z. 6 lies 96,5 st. 196,5.

— प्र 3) vgl. वातप्रमी.

मिघ् Z. 3 lies 2,34,13.

मितसु könnte in Stellen wie RV. 7,82,4 nach dem Comm. auch bedeuten: *der das Knie aufgestemmt hat* (मित von 2. मि), *kniend.*

मित्र 1) *a)* मायाविनं मित्रम् Spr. (II) 699.

मित्रविन्द 3) *a)* Âçv. Çr. 2,11,1.

मित्रीय् (von मित्र), °यति *Jmd* (acc.) *für seinen Freund halten* Spr. (II) 3899.

मिथ्यात्व 1) Hem. Jogaç. 4,77. Spr. (II) 4868.

मिथ्यादृष्टि Spr. (II) 4869.

1. मिथ्यावाद् Spr. (II) 1187.

मिश्रभाव Verfasser des Bhâvaprakâça.

1. मिष् mit समुद् *ergänzen, aufstrahlen:* बोधिदीपः समुन्मिषेत् Hem. Jogaç. 4,110.

— नि, निमिषित n. nom. act. Pat. a. a. O. 8,25,b.

मोढ 3) f. या N. pr. eines Frauenzimmers Spr. (II) 2476. — Vgl. auch

सङ्गमोढ (°मोल्ह्).

मोढुंभस्त् adj. = मोढुंस् RV. 5,56,8. 8,50,12.

मोनधन m. *der Liebesgott* Hem. Joaç. 2,101 (त्रुपे zu lesen). — Vgl. मीनकेतन.

मुक्तिपूर्स्यु m. *ein Räuber an der Burg der Erlösung* Spr. (II) 4265.

मुक्ते mit vorangehendem instr. *ausser* Pat. a. a. O. 5,33,b. 33,a. 50,a. 7,120,a.

मुख 5) die letzte Stelle zu 9) zu stellen; vgl. Spr. (II) 6456.

मुखगत adj. *im Munde befindlich* und *im Angesicht seiend* Spr. (II) 838.

मुखभङ्ग m. *ein krankhaft verzogenes Gesicht* Spr. (II) 4880.

मुखलेप 1) vgl. Spr. (II) 1930.

मुखसेचक m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2156 nach der Lesart der ed. Bomb., मुख° ed. Calc.

मुखालु *ein best. Knollengewächs* (खालु), *eine Arum-Art* Râgân. 7,67.

मुख्य 1) *b*) am Ende eines adj. comp.: वस्त्रमुख्यस्त्वलंकारः *beim Schmuck ist die Hauptsache das Kleid* Spr. (II) 6009.

मुग्धिमन् m. nom. abstr. von मुग्ध Vimâna 5,2,36, v. l.

1. मुच् Sp. 810, Z. 8 v. u. das Beispiel Spr. 4186 zu streichen, da hier भुक्तम् zu lesen ist; vgl. Spr. (II) 2722.

— अभि von *sich geben, ausströmen:* तापम् Spr. (II) 6770.

मुच adj. = 2. मुच् in रश्मि°.

मुट् mit उद् vgl. उन्मोटन oben.

मुण्ड 1) *a*) *kahl:* शिरस् Spr. (II) 4896. — Vgl. यवमुण्डरस.

मुण्डरिका f. *eine best. Pflanze* = मुण्डीरी Ratnam. 39.

मुद्रा bei den Buddhisten *Handreichungen* Schiefner in Bull. de l'Acad. Imp. des sc. de St. P. 20,383.

मुर्मुर Pat. a. a. O. 8,42,a.

मुर्मुरीय्, °यति denom. von मुर्मुर ebend.

1. मुष् mit अभि *Jmd* (acc.) *um Etwas* (acc.) *bestehlen:* येन स्वर्विदो अभि गा अदृंहन् RV. 8,37,39, wo अदृंह (für अदृंहि) मुष्णन्, nicht अदृंहम् उक्षन् (so Padap.) zu verstehen ist. Vgl. 9,82,4.

— सम् *rauben, benehmen:* संमुष्णन्दाम्नां (so die neuere Ausg.) तेजः समरे स्वेन तेजसा Harîv. 2751.

1. मुह् mit संप्र, संप्रमुग्धत्व n. *Verwirrung* Pat. a. a. O. 6,4,a. *b*.

मुहूर्तमार्तण्ड lithogr. Bombay 1861.

मूत्रय्, (मत्स्यस्य) मूत्रयति मुखे सानो व्याप्ते (so zu lesen) Hem. Joaç. 3,11.

मूत्रवृद्धि, an der ersten Stelle *Anschwellung des scrotum* (vermeintlich durch *Harn*), *Hodensackbruch;* füge Wise 271 hinzu und vgl. मूत्रवर्ति u. वर्ति.

मूत्रसात् adv. mit सम् *zu Urin werden* Hem. Joaç. 3,24.

मूर्छ् mit सम् 1) सद्यःसंमूर्छितानन्तसत्त्वसु *in grosser Menge entstanden, wimmelnd* Hem. Joaç. 3,33.

मूर्छा 1) (Nachträge) Hem. Joaç. 1,24 (an der zweiten Stelle मूर्छ्या zu lesen).

मूर्ति 1) *a*) एक° so v. a. *eine Person* Spr. (II) 4203. पूर्व° (Conj. für पूर्ण°) *die erste Erscheinungsform* 4479.

मूर्धन् Sp. 857, Z. 1 v. u. füge bei: oder *einem Ausgangspunkt habend.*

मूर्धाभिषिक्त adj. *geweiht* so v. a. *von Allen anerkannt:* उदाहरण Pat. a. a. O. 1,141,b.

मूर्धावसिक्त Bhar. Nâṭyaç. 34,18.

मूलमस्त्, धमूलमस्तत्व Hem. Joaç. 1,8. — Vgl. मस्तमूल.

मूलवाप, lies *Stecker, Pflanzer* st. *Stecker.*

मृग 1) *d*) Bâlar. P. 8,20,28.

मृगनाभिज adj. vom *Bisamthier kommend:* कस्तूरी Spr. (II) 2208.

मृगपतिगमना f. N. pr. einer Göttin Kâlasaṅkara 4,31.

मृगमातृका Kâraṇa 1,15. 27.

मृग्य *zu untersuchen* so v. a. *fraglich* Vimâna 5,2,36.

मृणालकण्ठ m. *ein best. Wasservogel* Kâraṇa 1,27.

मृणाललतिका f. *Lotusranke, — stengel* Z. d. d. m. G. 27,16.

मृतधवा adj. f. *deren Gatte todt ist:* नारी Uṇâdis. zu Uṇâs. 1,113.

मृतप्रिया f. *Wittwe* H. an. 2,127.

मृत्कर्मन् n. *Lehmarbeit:* °कर्मसेपन *so v. a. mit Lehm verstreichen* Kâraṇa 1,14.

मृदङ्ग 1) *a*) auch Spr. (II) 838. 1930. Vgl. Z. d. d. m. G. 27,411.

मृदुकोष्ठ Kâraṇa 1,13.

मृदुभाव m. *Milde* Hem. Joaç. 4,81.

मेदस् 1) m. Bâlar. P. 4,10,24.

मेधिर Z. 6 streiche (इ).

मेम्यत् s. u. 2. मा.

मेरु 1) *c*) vgl. करतले विन्ध्याटवी सेविता Subhâṣ. 71.

मेलन Z. 3 lies सुरासुरसैन्य°.

मेष 1) *c*) vgl. Vâlpi beim Schol. zu H. 210, Z. 4.

मैत्र 1) *b*) मति Hem. Joaç. 4,117. — 2) *a*) Hem. Joaç. 4,118 मैत्रो zu lesen).

मैनिक Hem. Joaç. 4,29.

1. यज् Z. 3 hinzuzufügen: (या) येजे Kâç. zu P. 6,4,120.

— यजुष्प्र med. *verehren* RV. 8,36,2.

यजुःस्वामिन् m. N. pr. eines Purohita Kathâs. 74,42.

यज्ञकुण्डल = होमकुण्ड H. an. 3,647.

यत् am Ende hinzuzufügen: vgl. यथायत्.

— यन्त्रा vgl. यन्त्रायात्य oben.

2. यति 2) Hem. Joaç. 4,8. °धर्म 1,45. यतीन्द्र ebend. — 4) *eine Ordner:* यतीनाम् RV. 7,13,1. Geber Sik.

यत्र 2) wenn mit potent. Spr. (II) 4054.

यद्यक्षिप्रम् adv. *so schnell als möglich* R. ed. Bomb. 1,13,30. Comm. trennt यद्या क्षिप्रम् und erklärt यद्या durch यद्यपेक्ष्यद्भूतप्रेषणेन.

यद्यज्ञातीयक adj. *welcher Art* Pat. a. a. O. 1,21,b.

यद्यातथम्, am Schluss zu lesen यावातथ्य.

यद्यान्यायम् adv. *dem ursprünglichen, richtigen Wortlaut gemäss, wie geschrieben steht* Pat. a. a. O. 1,30,b. 236,a. 250,b. 252,b. 2,316,a.

यद्यापरम् MBh. 6,28 vielleicht fehlerhaft für °पुरम्. यद्या येन प्रकारेण यपरमनुत्कृष्टमन्याय्यमित्यर्थः Nîlak.

यद्याप्रत्यक्षदर्शनम् adv. *als wenn es vor Augen geschähe, als wenn man es mit eigenen Augen sähe* MBh. 5,5878. यद्या °र्शनात् ed. Bomb.

यद्याप्रधानम् MBh. 5,3934.

यद्याप्राणम् MBh. 3,445.

यद्यापलम् adv. *je nach dem Ertrage* Spr. (II) 6396.

यद्याभिवृष्टम्, lies *so weit als es geregnet hat.*

यद्यायोगम् wohl so v. a. *nach Brauch, wie es bisher üblich war* MBu. 5,33.

यद्यार्क 2) °मानार्थकर MBu. 5,650.

यद्यावचनकारिन् adj. *Jmdes Befehle vollziehend, gehorsam* R. ed. Bomb. 1,7,7.

यद्यावास m. N. pr. eines Mannes MBu. 12,8900.

यद्यास्थूलम् s. u. स्थूल.

यद्येष्टत्व n. nom. abstr. von यद्येष्ट Pat. a. a. O. 1,173,b.

यद्वाग्वद्दार्वर्यम् f. pl. (so zu lesen); am Ende zu verbessern: vgl. u. वाग्वद्दावन्.

यदि 1) f) α) Milav. 39,17. Z. 2. 3 das Beispiel Çik. 35,21 gehört zu α) ζ). — 1) f) β) Çik. Cu. 6,17.

यद्वन् adj. Bez. bestimmter Ṛshi Pat. a. a. O. 1,18,a. — Vgl. तद्वन्.

यन्त्रण 2) Z. 7 Spr. 5146 in die folgende Zeile vor निबिड° (so zu lesen) zu stellen.

यन्त्रपीडा f. *das Pressen* (von Körnern u. s. w.) *mittels einer künstlichen Vorrichtung* Hem. Jogaç. 3,99. 109.

यम् mit उद् 1) Z. 21. fgg. vgl. Pat. a. a. O. 2,371,b. — 6) e) Sp. 69, Z. 1. fgg. उद्यत so v. a. *auf Etwas wartend* Spr. (II) 6007.

— समुद्, समुद्यत *was man zur Hand hat, worüber man im Augenblick verfügen kann* R. ed. Bomb. 1,14,49.

— सम् 4) vgl. संयत्त u. यत् mit सम् 5).

ययाति, °ख्या f. metron. der Mâdhavî MBu. 5,4031.

यर्वन् schlechte Aussprache für यद्वन् Pat. a. a. O. 1,18,a.

1. यवन 1) शयाना भुञ्जते यवनाः P. 3,2,126, Schol.

यवमत्य्, °त्यते = यवमानिवाचरति Pat. a. a. O. 1,369,a.

यवासक, यवासको न किं प्रुष्येढारि व्यथति धारिदे Spr. (II) 3936.

यव्या Z. 1 fuge 1,13 nach Naigh. hinzu.

यष्टिनिवास genauer wiedergegeben u. वासयष्टि.

यष्टिमौद्गल्य m. N. pr. Maudgalja *mit dem Stabe*, = यष्टिप्रधानो मौ° Pat. a. a. O. 2,346,b.

यस् 2) mit instr. धनुषा Kâraka 8,9.

— संप्र vgl. संप्रयास.

यक्ष्म Z. 5 lies Indra st. Rudra.

1. या 10) किं यातमेतद्भवति। सुष्ठु यातम्। साधु च यातम् Pat. a. a. O. 6(4),42,a. = गत, ज्ञात, सिद्ध Kâç.

— समा 3) *theilhaftig werden:* वस्तु Spr. (II) 2492.

— निस् 1) चापान्निर्यातो बाणवारः Pârçvanâthak. 4,141 nach Aufrecht, Halâs. Ind. u. वार्.

— वि 2) Z. 4 lies 3,31,19 st. 3,31,9.

याच्य *worum man bittet* Raçu. ed. Calc. 1,87.

याज्ञ, कर्मन् Pat. a. a. O. 1,17,b. 2,397,b.

याज्ञिकक n. *ein schlechtes Jâgñika* ebend. 5,72,b.

याज्य 1) Z. 8 Raçu. 1,86 zu streichen, da mit der ed. Calc. (87) याच्य zu lesen ist.

यात्र 4) genauer *Thun und Treiben.*

यादायनि m. patron. von यद्द Pat. a. a. O. 4,51,a.

यापयितव्य adj. = याप्य 2) ebend. 5,58,a.

2. याम 1) *etwas für Jama Bestimmtes* AV. 5,118,1.

1. यामन् vgl. auch शत°.

यायातिक adj. *die Geschichte des Jajâti kennend* Pat. a. a. O. 4,67,a.

1. यावक, गवां निर्द्दारनिर्मुक्ताद्यावकात् so v. a. *das Geniessen von Gerstenkörnern, die mit dem Unrath der Kühe abgehen,* MBu. 13,1796. °व्रतिन् *der solches als Gelübde thut* Nîlak. zu d. St.

यावत्सबन्धु Z. 2 lies AV. st. ṚV.

यावत् 2) g) Kâtjâs. 47,31. — 3) *sofern, da* Pat. a. a. O. 1,12,b. 13, a. 55,a. 232,b.

2. यु mit अनु vgl. अनुयु oben.

— सम् 3) यद्दिः संयुय Sinavjak. Ba. 2,6,10. 7,8.

3. यु mit अव, गोत्रादवयुतः Pat. a. a. O. 4,35,b. — Vgl. अवयव.

— वि vgl. वियवन, वियोतर्.

युक्तक n. *Pürchen:* गोयुक्तकानि Pat. a. a. O. 1,125,a.

युक्ततरक adj. s. weiter unten u. वार्त्ततरक.

युक्ति Sp. 143, Z. 2 v. u. lies वाचोयुक्ति° und vgl. वाचेयुक्ति.

युग 4) füge *Lebensperiode* hinzu und stelle ṚV. 1,115,2 von 1) hierher.

1. युगमात्र, °दृश् Kâraka 1,3.

1. युज्, (प्र) युञ्जीयात् R. ed. Bomb. 1,4,3. — 5) Sp. 152, Z. 32. fg. vgl. एवंयुक्त *so beschaffen* Pat. a. a. O. 3,57,b.

— अभि 8) °युक्त so v. a. *bloss berührt* Spr. (II) 2846.

— आ, partic. आयुक्त = युक्त *behaftet mit:* श्रमायुक्त *ermüdet* R. Gorr. 2,11,11.

— व्या vgl. व्यापेग.

— पर्युप *verbrauchen:* तत्र चास्यागमकालेनैवायुः कृत्स्नं पर्युपयुक्तं स्यात् Pat. a. a. O. 1,11,a.

— संनि, partic. °युक्त *verbunden mit:* प्रत्यय° ebend. 4,77,a.

— प्र desid. *anwenden —, gebrauchen wollen* so v. a. *nöthig haben:* शब्दान्प्रयुयुक्षमाणः ebend. 1,14,a.

युवन् (von युव) n. *Jünglingsalter* ebend. 4,38,2.

युष्मद्, °यति denom. von युष्मद् ebend. 7,102,a.

यूक, यूकाभयेन परिधानविमोक्षणं स्यात् Spr. (II) 7497.

यूथ्य, füge bei f. आ *Heerde.*

योक्तव्य 1) n. impers.: योक्तव्यं भूतिकर्मसु *man soll sich rüsten zu* Spr. (II) 1194.

योग 1) e) Z. 6 das Beispiel R. 2,69,30 zu streichen; vgl. स्वरयोग.

योगंधर 1) यो° R. ed. Bomb.

योगराज 1) Kâmandaka 93.

योगवर्तिका (so richtiger), die Bed. ist *Zauberdocht.*

योगवह, कर्म° Brâhmaṇadharma 3,9 in Kâmân.

योगयत्न Spr. (II) 7478.

योग्य 2) मन्त्रानसे, गुरुकार्येषु Spr. (II) 4798.

योनिसंवृति fehlerhaft für °संवृति.

योनिसंबन्ध adj. *blutsverwandt,* m. *ein Blutsverwandter* Pat. a. a. O. 3,61,a.

यौगंधर = योगंधर 1) R. ed. Bomb. 1,28,7.

यौत्र n. = यौत्र Pat. a. a. O. 7,108,b.

यौवनिका f. = यूनो भाव: ebend. 6(4),47,b.

रक्तवर्त्मक s. u. वर्त्मक.

रक्तसंकोच vgl. रक्त und संकोच.

1. रज् Sp. 215, Z. 2 v. u. lies Spr. 208 (567 der 2ten Aufl.) st. 208.

— caus. *schützen vor* (abl.) Spr. (II) 5221.

— समभि *Jmd bewahren, behüten, beschützen* R. ed. Bomb. 2,12,19.

— घा, घात्मानमारञ्जति सिन्धुवेगात् Spr. (II) 6634.

2. रञ्जस् Z. 1 nach n. hinzuzufügen 1).

रङ्क Spr. (II) 4840.

रङ्गिन् 1) a) मुख° Spr. (II) 4902.

रङ्गेश zu streichen; vgl. श्रीरङ्ग.

रज्जनिपुरंध्री f. *eine best. Form der* Upamâ, *ein Species der* Samâsṛshṭi, Vimana 4,3,32.

रज्जमय्, °यति = रज्जस्विनमाचष्टे Kâs. in Mahâbh. Uebh. Ausg. 6(4),47,a.

रज्जनद्रुम m. *Shorea* (*Vatica*) *robusta* Ratnâk. in Nigh. Pa.

रट् mit परि intens. °राटीमि *laut schreien, — rufen* Spr. (II) 6782. Hem. Jogaç. 3,14.

रण्ड 1) a) रण्डा Spr. (II) 2042.

रतू vgl. वतू.

रत्नवल्ल m. als Bed. (aber nicht *Korallo*) von विद्रुम Med. m. 53.

रत्नसमुद्गल, vielleicht fehlerhaft für °समुद्गक.

1. रध 1) b) c) können zusammengefasst werden.

रथतुर्, so zu lesen und RV. 4,38,3 hinzuzufügen.

रध् mit नि caus.: मनस्तस्मान्निरन्धयेत् (निरु° die Hdschr.) *in seine Gewalt bringen* Spr. (II) 4700.

1. रन् = रम्; davon die Form रन्त *standen still* RV. 1,61,11. 7,36, 3. 39,3. Vgl. Z. f. vgl. Spr. 28,69. fgg.

रन्ध vgl. noch शिति°, म°.

रभ् mit घा 4) द्रव्याणि द्रव्यान्तरमारभते गुणाश्च गुणान्तरम् so v. a. erzeugen Kaṇ. 1,1,10. — Sp. 271, Z. 27 lies प्रतिसम् st. प्रति.

रम् 4) c) *sich begatten* (vom Löwen) Spr. (II) 7044.

रमण n. *Vergnügen* überh.: बाल: प्रायो रमणासक्त: Spr. (II) 4432.

रमण्य vgl. मु°.

ररावन् vermuthlich nur auf Irrthum des Padap. beruhend. Es ist wohl mit Dhanañgay ररावन् anzunehmen.

रश्मन्, füge bei: vgl. स्वा° und im Zend areçman in areçmoshûta.

रश्मि 1) füge *Peitsche* hinzu.

रसवाद् m. = रसशास्त्र Spr. (II) 1187.

रह्, रहति *trennen* Spr. (II) 3478, v. l. — caus. *verlassen, im Stich lassen*: रहयत्यापदुपेतमापति: Spr. (II) 6149.

1. रा Z. 2 lies 5,83,6 st. 5,83,7. — Sp. 303, Z. 4 v. u. lies 18,49,3.

राजकीर m. *eine Papageienart*; s. u. शतपत्र 2) a).

राजकोशातक *Gurke oder Kürbis*. f. ई *eine best. Pflanze* Râéan. im ÇKDn. u. सपीतक.

राजगृह 2) auch °गृही f. hier ist Çiva geboren Spr. (II) 2256.

राजतरणी so, nicht °तरुणी Râéan. 10,130.

1. राजन् 1) *die Soma-Pflanze* R. ed. Bomb. 1,14,6.

राजन्यर्षि m. *ein Ṛshi von fürstlicher Herkunft* Tândya-Br. 12,12,6.

राजशास्त्र R. ed. Bomb. 1,7,12.

राजसभा überh. *der Hof eines Fürsten* Spr. (II) 2960.

2. राजि, von Bogen 21° bis 26 ist die Pagination überall um 16 vorzurücken.

राज्यश्री *fürstliche Würde, — Stellung* R. 2,21,2. Raghu. 17,25.

राणि, hier und in पैलादि ist der Haken über dem ि abgebrochen.

राति vgl. auch भोनु°.

रामपूजासरणि, so zu lesen.

रामसमुद्धार m. N. pr. eines Mannes Ksarîç. 10,13. fg.

रायस्पोष 2) scheinbar Vaitân. Bpn. S. 46,74; hier ist aber mit der v. l. रायस्पोषादिसर्भि° zu lesen; vgl. VS. 34,50.

रावण 2) b) Verfasser eines Kumâratantra Kakkadatta 472.

रासमुन्दर Titel eines Mahâkâvja Notices of Skt Mss. 1,102.

रिक्त m. ein Mannsname Pat. a. a. O. 6,72,b.

रिप्, °यति denom. von रे ebend. 1,267,b.

रिष् mit वि Z. 1. lies *ausrenken* st. *ausrecken*.

1. रु mit प्र *laut brüllen* u. s. w. RV. 10,94,2.

1. रुच् 1) Z. 4 lies 7,3,6. — 4) Z. 11. fg. ect. auch Spr. (II) 6939.

— प्रति med. *gefallen* RV. 1,165,12.

रुचक 7) a) Mâlav. P. 55,6.

1. रुज् Sp. 366, Z. 3 v. u. नास्य किंचिद्रुजति *es schmerzt —, fehlt ihm Nichts* Pat. a. a. O. 1,246,a.

रुणा zu streichen, da अरुणा gemeint ist.

1. रुद् mit सम् s. संरोदन.

रुदन्तिका, lies रुदन्ती st. रुदन्ती.

2. रुध् Sp. 379, Z. 3 lies तनुरुह:.

— वि caus. 3) Z. 5 lies *mit Ort und Zeit in Widerspruch gebracht*; also besser zu 1).

रुधा am Ende eines adj. comp. Spr. (II) 2187.

1. रुद्र 6) द्रुह pl. Bez. *der Namen von Kriegerstämmen, die zugleich das von ihnen bewohnte Land bezeichnen*, Kâtantra 2,4,5.

— घा 1) शनैर्विंध्या: शनै: कन्या: शनै: पर्वतमारुहेत् (sic) Spr. (II) 6391. fg.

रूपतर्क m. etwa *Münzwardein* Pat. a. a. O. 1,291,b.

रूपवद्या f. N. pr. einer Göttin Kâlaçakra 3,130. 145. 5,13.

रूपसनातन m. N. pr. eines Autors Spr. (II) 3249, N.; vgl. auch u. संदर्भ.

रूपिन् adj. *eine Farbe habend* Kaṇ. 4,1,11. घ° 12.

रेचकित adj. = धमित (Comm.) Cit. bei Vimana 4,1,2.

रेफाय् (v. l.) und रेभाय्, °यति (?): स्नातस्य मुखम् Âpast. 2,14,12.

रेवत्य n. N. eines Sâman Sâmavidh. Br. 1,4,6. — Vgl. रैवत्य.

रेवत् 2) c) Z. 2. RV. 10,19,1 zugleich *Kuhe*.

रोगपालक m. *Krankenpfleger* Spr. (II) 6980.

रोचकिन्, घ° *keinen Appetit habend* so v. a. *wählerisch, feinsinnig*: Dichter Vimana 1,2,1.

रोणी f. P. 4,2,78. — Vgl. रोण.

रोदर adj. *ein* र *im Innern habend*, m. Bez. des चक्रवाक Vimana 1,15. v. l. Comm.

रोषयितु (vom caus. von 3. रुष्) adj. *zerfleischend*: दंष्ट्रा Varâh. 10.

रोमश adj. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

रोहिणी f. *eine Art Stahl* ÇKDa. u. वज्र.

रोडि m. patron. Pat. a. a. O. 4,35,b.

रोण adj. von रोणी P. 4,2,78.

रौद्र 13) a) मेघान्तरित° so v. a. *Ungewitter* Spr. (II) 5946. — Vgl. oben घार्त°.

रौद्रनेत्रा f. N. pr. einer Göttin Kiraṇâkara 4,79.

रौहिण 1) *mit dem Nakshatra Rohiṇi in Verbindung stehend:* पौर्णमासी Sâmavidh. Br. 2,4,9. — 3) b) राज्ञनरौहिणाभ्याम् Sâmavidh. Br. 1,4,7. राज्ञनरौहिणाके 2,1,6.

लकुट Kâraka 1,7. लकुटाकृति Spr. (II) 3886.

लक्, लक्षेत् in der Bed. *erkennen* MBh. 12,4813.

लक्षण 3) a) अलक्षणं काव्यम् *ein sich durch Nichts auszeichnendes —, unbedeutendes Gedicht* Spr. (II) 2093.

लक्ष्य 3) लक्षित *nicht an und für sich, sondern erst in übertragener Bedeutung unanständig* Vîmâna 2,1,18.

लक्ष्मण 2) b) Hem. Joḍaç. 3,68. — 3) c) c) einer Göttin Kiraṇâkara 4,33.

लक्ष्मन् 1) *ein gutes Merkmal, Vorzug* Spr. (II) 6502.

लग् Sp. 477, Z. 1 lies कानिचिद्दासराणि.

लघय् so v. a. *leicht erscheinen lassen* Spr. (II) 6838.

लघीयस्त्व (von लघीयंस्) n. *geringes Ansehen, das Geringgeschätztwerden* Hem. Joḍaç. 2,56.

लङ्कास्थायिन् m. *eine best. Pflanze* Çabdaṛ. im ÇKDa.

लज्ज्, act. लज्जसि *sich Jmdes* (gen.) *schämen* Spr. (II) 7420.

लज्जा 1) °कर Vaṇis. 11,6.

लञ्छना nach लक्ष zu stellen.

1. लप् mit उद् caus. Z. d. d. m. G. 27,92.

— संप्र vgl. संप्रलाप.

लभ् mit समा 3) *erlangen, gewinnen* Spr. (II) 4839, v. l.

1. लम्ब् mit व्यव s. व्यवलम्बिन्.

— वि, वविलम्बित n. Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,a.

— प्रवि, °लम्बित n. *langes Zögern* Z. d. d. m. G. 27,73.

लम्ब Sp. 510, Z. 15, die richtige Lesart ist वम्बाविसवयसौ.

लम्बक 2) Kiraṇâkara 5,139.

लल् mit धनु caus. *Jmd in gute Laune versetzen:* कुशिकसुतवचोऽनुलालित R. ed. Bomb. 1,22,21.

ललाम 1) ṚV. 1,100,16.

ललित 4) a) *Scherz* Spr. (II) 2349. 4913. — b) *Anmuth, Schönheit, Pracht* überh. Spr. (II) 7360.

लवण vgl. oben निर्लवण.

लवणाम्बु m. *das Meer* MBh. 8,1312.

लवणीकर् *salzen* Pat. a. a. O. 1,296,b.

1. ला mit आ *an sich ziehen, in sich aufnehmen* Gopâlatâpan. 2,48 in einer etymologischen Spielerei.

लाक्षावाणिज्य n. *Handel mit Lack und ähnlichen Artikeln* Hem. Joḍaç. 3,98. 106.

लाङ्गल 1) a) Z. 8 lies सौवर्णलाङ्ग°.

लाञ्छ् mit निस् s. oben निर्लाञ्छन.

लाञ्छनता f. *das Geflecktsein, Befleckktsein* Spr. (II) 2230.

लालन 3) लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः Pat. a. a. O. 8,9,b.

लिख् mit विपरि, प्रादेशं विपरिलिखति = प्रादेशं विमाय परिलिखति ebend. 1,297,b. 298,a.

लिप् Sp. 543, Z. 13 v. u. MBh. 8,2039 ist zu सुवलिप्त zu stellen.

1. लो mit वि 4) Z. 7. 8 Spr. 2840 gehört zu 5); vgl. Spr. (II) 6184.

3. लो Z. 1 lies Ganaratnam. st. Siddh. K.

लीनता (?) Hem. Joḍaç. 4,88. vielleicht दीनता zu lesen.

लीला 3) विधिवत्सत्कृत्य न तु लीलया so v. a. *nicht zum blossen Schein* R. ed. Bomb. 1,13,14.

लीलाय्, लीलायित n. impers. Z. d. d. m. G. 27,47.

लुठ्, intens. लोलुठीति *sich wälzen*, von einem Betrunkenen Hem. Joḍaç. 3,14.

— निस्, गर्भो निर्लुठितः *aus dem Mutterleibe herausgetreten* Pat. a. a. O. 1,220,b.

लुभ् Z. 7 lies ला, लोभिता.

लुल्, लोलमान Vîmâna 5,2,9.

1. लू mit व्यति act. *gemeinsam hauen, — schneiden:* देवदत्तस्य धान्यं व्यतिलुनाति Pat. a. a. O. 1,246,b.

लेख्य 2) c) ग्रहगणनालेख्यमासाद्य so v. a. *auf das Verzeichniss der Götter gelangt seiend* Raghu. 8,94.

लेलाय्, lies 3. ली.

लैङ्ग adj. *das grammatische Geschlecht betreffend:* विधि Pat. a. a. O. 2,360,b.

लोक् mit ग्रव 1) vgl. Spr. (II) 6835.

लोकवर्तन vgl. u. वर्तन 4) *f*).

लोकविद् *die Welten kennend* MBh. 6,4450.

लोकस्थिति, an den beiden ersten Stellen bedeutet das Wort *Bestand der Welt.*

लोच् mit वि s. 1. विलोचन.

लोचन 3) Kiraṇâkara 3,140. 4,110. 143. 5,16. 91.

लोठिका f. N. pr. einer Prinzessin Râga-Tar. 7,11. 120.

लोडन *das Belästigen:* परकलत्रकुचहृप° Spr. (II) 7247.

लोपतिलक n. *eine best. Form der* Upamâ, *eine Species der* Saṁsṛshṭi, Vîmâna 4,3,32.

लोप्ती f. *ein Klumpen Teig* Bhâvapr. 5.

लोमधि, vielleicht सलोमधि gemeint; vgl. सुलोमधि.

लोकुण्डिका n. *Borax* Râgân. 6,244.

लोहितपादक adj. (f. °पादिका) *dessen Fusssohlen noch roth sind* (in der ersten Kindheit) Pat. a. a. O. 4,20,a.

2. लौम, लौमन ist die richtige Form. Am Schluss 167 st. 144 zu lesen.

लौयमानि m. patron. von लूयमान Pat. a. a. O. 1,62,a.

लौकिकारि m. patron. von लौकिकार् ebend. 4,57,b.

वंश 3) c) = त्रसरेणु Bhâvapr. und Çiâbh. Saṁh. 1,1,11. 14. — Vgl. धंसो.

वंशमय Sâmavidh. Br. 3,4,6.

वक्तव्य 1) n. impers. mit सक् Spr. (II) 6735.

वक्र m. N. pr. v. l. für वक्र MBu. 1,7031. 7019 ed. Bomb.

वक्रावयु, füge Taik. nach *Zahn* hinzu.

वक्र 2) *b*) MBu. 1,7019 (वक्र ed. Bomb.).

वक्रता 1) vom *schielen* Blick der Augen Spr. (II) 3133.

वक्रत्व doppelsinnig auch Spr. (II) 6811.

वक्रीभू, °भूत so v. a. *widerwärtig* (Schicksal) Spr. (II) 7518.

2. वत्सम् vgl. किरण°.

वच 3) *b*) Simavidu. Ba. 2,7,10. fgg. Mbh. 13,6149 nach der Lesart der ed. Bomb., वाचा ed. Calc.

1. वचस् Z. 9 füge hinzu: so wohl auch (in der Mitte des Pâda) RV. 1,93,2.

वज्रक m. N. pr. eines Berges Divjâvad. 167.

वज्रदेवी f. N. pr. einer Göttin Kâlakârma 5,155.

वज्रासन 2) Hem. Joâç. 4,123. 126.

वञ्चिन्, वृक° *betrügend wie* Pat. a. a. O. 6,81,a.

वट 10) *Bauer im Schachspiel* Monatsber. d. K. Pr. Ak. d. Ww. 1872, S. 63.

वटक 3) ebend.

वटर vgl. वाटर.

वटाकु m. N. pr. eines Mannes gaṇa वाकादि zu P. 4,1,96.

वट्, वट्टति und वट्टयति (s. Corrigg.) Pat. a. a. O. 1,234,*b*.

वडभीकार m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

वडवाग्निमल m. *ein best. schaumartiger Stoff auf dem Meere* Râjân. 6,79. — Vgl. oben वाडवाग्नि 2) *a*).

वडिश m. N. pr. eines der Unterredner bei Kâraka, mit dem patron. Dhâmârgava, Kâraka 1,12. 4,6.

वण्टन (von वण्ट) n. *Theilung* (des Vermögens) zu Spr. (II) 2445.

वत्सपालक m. = वत्सपाल Hem. Joâç. 3,87.

वत्सकनु m. N. pr. eines Sohnes des Senagit VP. 4,19,11. वसकनु Wilson.

वत्साङ्क zu streichen; vgl. श्रीवत्स.

वत्सोद्धरण s. वा°.

वद् caus. 2) गुणैर्विरोना वक्त्र वादपत्ति *machen viel Lärm von sich* Spr. (II) 6882.

— प्र 1) so v. a. *anbieten, anbieten zum Verkauf* Spr. (II) 3969, v. l.

वदन् (von वद्) adj. *redend, das Wort führend:* Agni RV. 6,4,4. 12,6.

वध्, वधति (!) zu *Nichts machen* Kâç. 1,1,12.

वध 1) Râjâ-Tar. 8,1508.

1. वन् Z. 7 und वनेम° zu streichen und st. dessen in der vorangehenden Zeile nach वनोति einzuschalten वनाव. Sp. 666, Z. 1 zu lesen वनाव st. वनेम.

वनाश्त, so zu lesen st. वनकत.

वनकोशाम्बी (richtige Lesart) f. N. pr. einer Stadt gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97.

वनकत fehlerhaft für वनाश्त.

वनजीविका f. *ein im Walde* (durch Einsammeln von Blättern u. s. w.) *gewonnener Lebensunterhalt* Hem. Joâç. 3,98. 101.

वनमाला f. wohl N. pr. eines Frauenzimmers Hem. Joâç. 3,68.

वनवासिन् 2) *b*) lies Pflanzen und Wurzeln.

वनेजा, वनान्युपुत्ते वनेजाः *er hat die hölzernen Rosse geschirrt* RV. 10,79,7 würde besser passen als die Fassung des Wortes mit Sây. als nom. sg. Jedoch kennen wir kein weiteres Beispiel für diese Form des acc. pl.

2. वप् mit नि 3) partic. न्युप्त *geworfen:* Würfel RV. 10,27,17. 34,5. 9.

वपुषा 2) lies = कुवुषा (d. i. कुयुषा) Bhâvapr. 5.

वम् caus.: वमयति मक्षिका हि भोक्तारम् Spr. (II) 2620.

वयस्यक Z. 2 lies 119,147.

वयोवृद्ध MBu. 5,5887. 6,4200.

1. वर् Sp. 696, Z. 1 v. u. lies 7,32,16. — partic. व्राण *eingesperrt* RV. 1,61,10. — caus. mit infin. *Jmd stören* im Spr. (II) 1622. Sp. 696, Z. 18 वारितवाम bedeutet nach *Verbotenem strebend.*

— घा Sp. 699, Z. 21 streiche die Worte *erfüllen* bis 1,143,6.

— सपा Z. 2 die schliessende Klammer nach 9,2 zu setzen.

— प्रा Sp. 701, Z. 1 lies प्रावृत्य कृष्णवासांसि.

— सम् 1) Z. 18 streiche 80,19. संवृत *versteckt* so v. a. *an und für sich anstössig, aber nicht verpönt* Vâmana 2,1,19. *geschlossen als Bez. einer best. fehlerhaften Aussprache der Vocale* Pat. a. a. O. 1,20,*a*.

2. वर् Sp. 706, Z. 3 v. u. lies देव्यै.

वरट 2) *c*) Pat. a. a. O. 1,236,*a*.

वरद 1) पादे Spr. (II) 5554.

वरपोत m. *ein best. auf dem Trockenen lebendes Thier* Kâraka 1,27.

वराकहादशी vgl. वाराक°.

1. वरिमन्, hierher gehört auch instr. वरिमेता RV. 1,108,2.

वरुड P. 3,4,26, Vârtt. 1. Pat. zu P. 4,1,97. gaṇa कुलालादि zu 4, 3,118. — Vgl. वारुड fgg.

वरेण्यक्रतु Z. 2 lies Einschaltung nach 10,9 st. 10,9,12.

वर्कर 1) *Zicklein* Pat. a. a. O. 1,235,*a*. वर्कर nach den Corrigg.

वर्चल vgl. वार्चलीय.

वर्चस् 1) *b*) Hem. Joâç. 4,71 (°प्रकाशवर्चसाम् zu lesen).

वर्चःस्थान n. *Abtritt* Kâraka 1,15.

वर्ज् mit व्यप, partic. °वृक्त *getrennt, gesondert* Pat. a. a. O. 1,33,*b*. 34,*a*. *b*. 8,66,*a*.

वर्जिन्, परदार° Spr. (II) 5598.

वर्ज्य vgl. वार्ज्यक.

वर्णक 1) Z. 6 कृष्ण° u. s. w. zu streichen, da an der angeführten Stelle mit den Calc. Ausgg. कृष्णवर्ण कमपि zu lesen ist; die Bed. ist *Gesichtsfarbe.* — adj. (f. वर्णिका) *schildernd* (mit gen.) Pat. a. a. O. 7,116,*a*.

वर्णपाठ m. *das Alphabet* ebend. 1,168,*b*.

वर्णय् mit वि vgl. u. वर्ण्.

वर्णवत् 1) प्रशंसायाम्, also *schön gefärbt* Pat. a. a. O. 5,19,*b*.

वर्णसंस्कार Z. 2 füge 61. nach 19, hinzu.

वर्तृ 7) Z. 9 stelle R. 2,104,19 zu 14). — 10) वर्तमाना f. (sc. विभक्ति) Bez. *der Personalendungen des Präsens* Kâtantra 3,1,11. 24. — 14) स्वान्यवर्तस so v. a. *kümmerten sich um sich selbst* Râjâ-Tar. 4,111.

— अति 1) Z. 24 R. Gorr. 2,30,20. 6,103,18 bedeutet das Verbum *überschreiten* (वेलाम् *das Ufer*, an der ersten Stelle zugleich धर्मम्).

— उपनि caus.: मात्स्यं क्रमेणोपनिवर्त्यमानम् Kâraka 3,1.

— अभिनिस् *sich herausstellen, — ergeben* Pat. a. a. O. 1,78,b.

— प्र 10) Z. 4 lies प्रवर्तमानम् st. वर्तमानम्.

वर्तक 4) Z. 3 lies 1,112,a. Z. 4 lies 1,116,14.

वर्तिन् m. Pat. a. a. O. 5,38,b. = प्रत्ययार्थ Kâs.

वर्तुल 3) *b*) zu streichen, da daselbst कृदुद्वर्तन zu lesen ist.

1. वर्ध् caus. Sp. 786, Z. 6 lies कृत्वा.

— उद् caus. *grösser —, freudiger —, begeisterter machen:* गिरः ṚV. 9,114,2.

— संवि desid. vom caus. s. संविवर्धयिषु.

1. वर्धन 4) a) Z. 3 Spr. 2735 in caus. Bed. *das Erheben, Befördern:* क्षत्तानाम्: vgl. Spr. (II) 5991.

वर्धमानपुर ist *Burdwan* in Bengalen.

वर्धित 2) वर्धितक n. dass.: एकश्च तण्डुलः तुल्प्रतिघाते ऽसमर्थः। तत्समुदायश्च वर्धितकं समर्थम् Pat. a. a. O. 1,202,a.

वर्धितव्य n. impers. *crescendum* ebend. 4,9,a.

वर्ष्मन्, उदग्रशेफ° Vers. d. B. H. No. 975.

वर्मती f. N. pr. einer Oertlichkeit P. 4,3,94. gaṇa काश्यादि zu 2,93.

वर्मिक gaṇa पुरोडित्यादि zu P. 5,1,128.

वर्ष् mit प्र Sp. 798, Z. 6 v. u. lies प्रवृष्टे st. प्रवृष्टे-.

2. वर्ष् in वर्षिष्ठ, वर्षीयस्, वर्ष्मन्, वृषन्.

वर्ष 3) a) sg. Spr. (II) 4337.

वलन 3) n. *das Zutagetreten, Sichzeigen* Vimâna 4,1,5.

वलिक gaṇa पताद्यादि zu P. 4,2,80.

वलीक 2) Pat. a. a. O. 3,50,a.

वल्गूय् Sp. 813, Z. 2 lies वर्न्दते st. वर्न्दने.

वव्रय् (von वव्र), वर्व्रयते *sich zurückziehen* von oder vor ṚV. 8,40,2.

वश्र् mit धनु *zustreben auf* (acc.) ṚV. 1,127,1.

— धा med. hierher wohl वेशानें (धा-उशान) *der begehrt wird* ṚV. 10,30,9.

1. वश Z. 9 streiche „und Verkürzung des Vocals".

वशंकृत adj. *in Jmds Gewalt gebracht:* कैकेय्या स्ववशंकृतः B. ed. Bomb. 2,11,22.

वश्य 1) ein Zauberspruch Spr. (II) 2451.

2. वस् mit धधि vgl. 5. वस् mit धधि und u. समया.

— अप 1) auch ṚV. 8,47,18.

— वि caus. vgl. unten u. 5. वस् mit वि caus. 2).

3. वस् Z. 2 füge वसिष्ट ṚV. 2,36,1 hinzu.

5. वस् 1) क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे *beruht auf* Spr. (II) 5712 = 6145.

— धधि caus. 2) zu streichen; vgl. वासय् mit धधि.

— नि 1) तदपि मुखानां चेतसि निवसितमिव पारिव्राज्येन *hat seinen Sitz aufgeschlagen* Z. d. d. m. G. 27,62.

— वि caus. 2) gehört zu 2. वस्: *die Nacht hell werden lassen* so v. a. *bis Tagesanbruch erzählen.*

वसन्तक 2) zu streichen, da a. a. O. वासन्तिका zu lesen ist.

वसन्तसख als Beiw. von मलयानिल Vikr. 31,19.

वसिष्ठ 1) Z. 3. 4 zu streichen Indra 2,36,1. — 2) Z. 12 nach Varuṇa's einzuschalten MBh. 1,3934.

वसिष्ठकश्यपिका f. *eine eheliche Verbindung zwischen den Nachkommen Vasishṭha's und Kaçjapa's* Pat. a. a. O. 2,408,a. 4, 41,b.

वसिष्ठशिला f. N. pr. einer Oertlichkeit Gop. Br. 1,2,8.

2. वसु (von 5. वस्) in संवसु.

वसुराज m. *König* Vasu (vgl. वसु 2) *l*) Hem. Joṇaç. 2,60.

वसुराचिस् m. pl. N. eines Ṛshi-Geschlechts Sâmavidh. Br. 1,1,17.

वस्त्राय् (von वस्त्र), °यते *ein Kleid darstellen, als Kleid erscheinen* Cit. bei Vimâna 4,1,9.

1. वह्, intens. वावहीति *tragen:* रत्नभारम् Spr. (II) 4053.

— धति caus. 1) vgl. Hem. Joṇaç. 1,85.

— उद् 4) भर्तारमुद्वहन्तीम् so v. a. *auf sich liegen habend* Bhoǵaprab. 90,6. Sp. 866, Z. 6 lies 864 st. 846.

— सम्प्र s. संप्रवाह्.

— वि 1) *wegführen:* येषेन व्युह्यमानानां (Conj. für व्यू°) प्रवानां स्रोतसो (so zu lesen) यथा Spr. (II) 3820.

— संवि med. *mit Andern* (instr.) *eine Ehe eingehen:* संविवहते गर्गैः Pat. a. a. O. 1,247,a.

वह्य 1) Z. 6 साम्न bedeutet *zum Reiten tauglich*, वह्य *zum Fahren tauglich.*

4. वा desid. med. विवासते *herbeischaffen, gewinnen* ṚV. 8,19,24. Hierher etwa auch act. विवासम् oder विवासम् (वि। वसम् Padap.) ṚV. 7,8,3.

5. वा, अस्य सूत्रस्य शाटकं वय Pat. a. a. O. 1,116,b. 244,b.

— उप, उपोयमान *eingestickt werdend:* मूल Âçv. Çr. 3,6,28.

— सम् *zusammenheften:* सं यदहं पवसोदो यवादः ṚV. 10,27,9.

वाकोवाक्य Gop. Br. 1,1,21. 30. Pat. a. a. O. 1,16,b.

वाग्योग m. *richtiger Gebrauch der Worte* Pat. a. a. O. 1,6,b. 7,a.

वाङ्मय 3) *Schriftwerk, literarisches Product* Spr. (II) 4053.

वाचनिक, f. ई Pat. a. a. O. 1,220,a.

वाचायन m. N. pr. eines Autors Hem. Joṇaç. nach 2,79.

वाचालसख्य m. *ein gesprächiger Kamerad, Unterhalter* Spr. (II) 6980.

वाचोयुक्ति f. Pat. a. a. O. 1,200,b. 232,a.

वाज्र 11) Z. 4 lies 4,34,4.

वाज्रप्यायन vgl. Pat. a. a. O. 1,221,a.

वाज्रय् Z. 1 lies (von वाज्र).

वैत्रसात n. = वात्रसाति AV. 4,27,1.

वातवक् N. pr. eines Dorfes; davon °क adj. Pat. a. a. O. 4,74,b.

वातव्य (von 5. वा) adj. *zu wehen* ebend. 1,116,b. 244,b.

2. वातायन 3) übertr. *ein Ort im Hause, an dem man frische Luft geniesst.*

वात्सप्रेय m. patron. Pat. a. a. O. 6(4),42,b.

वानीय partic. fut. pass. von 3. वा ebend. 6,23,a.

वात्साद् 2) scheint Kâsaka 1,27 *ein best. Vogel* zu sein.

2. वाप, füge am Ende noch कृस्त° hinzu.

2. वाम vgl. कृस्त°.

4. वाम adj. von वामी *Stute* Pat. a. a. O. 4,74,a.

वामंजात adj. von *Natur werth, — lieb* ṚV. 10,140,3.

वामनता f. nom. abstr. von वामन *Zwerg* Spr. (II) 2316.

वायोविद् (*des Vogels Sohn*) m. N. pr. eines Unterredners bei Kâsaka

1,12. वायोर्विद् und वार्योविद् die Hdschrr.

3. वार् 1) वैरि° Hem. Joach. 1,1.

वारणी Hem. Joach. 3,113 fehlerhaft für वारुणी *Branntwein*.

वाराकीपुत्र m. für वाराक्यापुत्र Pat. a. a. O. 6,14,b.

वारिचारिन् adj. *auf dem Wasser lebend* Karaka 1,27.

वारिज्य adj. *im Wasser lebend* ebend.

वारिषेण्य m. patron. von वारिषेण Pat. a. a. O. 4,54,a.

वार्त 1) a) वार्ती शाखा *Baumast* ebend. 5,3,a.

वार्ण adj. von वर्ण *Laut, Buchstab* ebend. 3,53,b. 64,a. 6,13,b.

वार्त adj. *in Ordnung, richtig* ebend. 1,219,b. 2,363,a. 410,a. 4,3,b.

वार्ततरक (von वार्ततर und dieses compar. von वार्त) adj. *ganz in Ordnung, — richtig* ebend. 1,168,b. = पुकतरक Kaiy.

वार्त्तिकसूत्रिक adj. *der die* Vârttika *und* Sûtra *studirt* ebend. 4,67,a.

वार्धुषि *eine Schuld mit den aufgelaufenen Zinsen* Sâmavidh. Br. 1,7,8.

वार्ध्र (von वृद्ध) n. *Greisenalter* Spr. (II) 4075 (Conj. für वार्ध्य).

वार्षशतिक Kauç. 10. Pat. a. a. O. 1,16,a.

वालव्यजनीभू *zu einem Fliegenwedel werden:* °चमूर्वुर्सा: Raghu. 16,33.

वालि 2) Spr. (II) 4169 (Conj. für वानि).

वालुका. धिर् जीवति निःस्नेहा: पृथिव्यां वालुकादय: Spr. (II) 2296.

वालुकाम्भस् N. pr. eines Meeres oder Sees Kâlakarna 1,15.

वावल m. *eine best. Pflanze;* s. u. सूत्मपत्र 1).

वाष् mit सम् Z. 3 lies Liṭ.

2. वास Z. 1 Kern führt in einer Note zu seiner Uebersetzung von Varâh. Bṛh. S. 88,11 für das n. eine Stelle aus Kâçyapa an. Wir lesen aber hier ohne Bedenken वासस st. वासस.

4. वासक Z. 2 zu lesen कन्दर्पशारुर्नन्दन nach H. Brockhaus.

वासनीय (wohl vom caus. von 5. वस्) adj. *nur durch angestrengtes Nachdenken verständlich* Vimana 3,2,8.

वासस्त Hem. Joach. 4,110 fehlerhaft für वासित (von वासय्).

वासय् 2) मैत्रादिवासितं चेत: Hem. Joach. 4,74. साम्यवासितचेतसाम् (so zu lesen) 110.

वासिल m. Hypokoristikon von वासिष्ठ Vimana 5,2,63.

2. वास्य vgl. वन°.

विंशति MBh. 7,1551 (nach der Lesart der ed. Bomb.) = व्यूह nach Nilak.

विकट am Schluss zu lesen घविकट st. घति°.

विकत्थनत्व n. *Lobhudelei* Spr. (II) 4935.

विकल 1) चरण° *lahm* Spr. (II) 5712.

विकलङ्क adj. *fleckenlos:* शशिन् Cit. bei Vimana 4,1,2.

विकाङ्क्षिन् adj. *kein Verlangen habend* Hariv. 11913. विशेषेण काङ्क्षा इच्छा तदस्त: Nilak.

विकारण adj. *grundlos* Spr. (II) 2320, v. l.

विकासन Uttarar. 17,10 (23,12) = Mâlatîm. 93,6.

विकिर 1) Z. 3 यम° Min. P. a. a. O.

विकुचित n. *eine best. Art zu kämpfen* (neben संकोचित) Hariv. 15078 nach der Lesart der neueren Ausg.

विकृत 3) *b*) vgl. Bharata 4. 9 im Comm. zu Nalod. 2,55.

विकृति 2) Bale. P. 3,24,4.

विक्लाव्, °वति denom. von विक्लाव Vimana 5,2,2.

विक्लाव, südindische Hdschrr. sollen nach Pischel विक्लाव schreiben.

विक्लिति (von क्लिद् mit वि) f. *das Weich —, Garwerden* Pat. a. a. O. 1,231,a. 279,b. तण्डुलानाम् 3,35,a.

विगीति f. *Mission, Disharmonie* Karaka 3,6.

विघटिका f. *ein best. Zeitmaass,* = 1/23 Ghaṭikâ Râjân. 21,33.

विघातन 2) Bale. P. 12,8,18.

विघ्न 2) am Ende, घविघ्नतस् auch R. ed. Bomb. 1,62,13.

विघ्नवत्ता f. nom. abstr. von विघ्नवत् *auf Hindernisse stossend* Spr. (II) 7478.

विचक्षणावत् vgl. Vaitân. 11.

विचारणा f. = प्रविचारणा *Unterscheidung, Art* Karaka 1,13.

विचारिन् m. N. pr. eines Sohnes des Kabandha Goo. Br. 1,2,2.

विचित्य *bedenklich, fraglich* Vimana 5,2,45.

विचित् Z. 2 lies 8,110,2. 121,3.

विचेष्टितृ nom. ag. *der sich bewegt* Pat. a. a. O. 3,78,a.

विच्छिक zu streichen (चिच्छिक zu lesen).

विच्छिति 3) Z. 2 lies 3. 5 st. 3,5.

विच्छेद् 1) *Durchbohrung:* कर्णकम्बल° Hem. Joach. 3,110.

1. विज् mit समुद्, mit gen. Spr. (II) 6944 (Conj.).

विजयप्रशस्ति Naish. 3,138.

विजर् 1) (dieses hinzuzufügen) Hariv. 10918 nach der Lesart der neueren Ausg.

विजिगीर्षणीय, so zu lesen.

विज्ञल 1) Karaka 3,8.

विज्ञाति 2) ist m.

विटङ्क 1) wohl auch *Krone, Zinne, Giebel.*

विडम्बक, शाक° so v. a. *dem Namen Gemüse Schande bereitend* Spr. (II) 7484.

विडोजस्, so die südindischen Hdschrr. nach Pischel.

वितण्ड 2) vgl. वेदण्ड weiter unten.

वितरण nom. ag. s. u. वैतरण 1) a).

1. वित्त 2) Hem. Joach. 2,13.

1. विद् caus. Z. 2 am Ende zu lesen 123 st. 1,23.

— नि caus. दोषम् *eine Schuld wälzen auf* (dat.) Spr. (II) 2985.

3. विद् 7) विन्देद्विद्वषा *eine Hässliche bekommt einen Mann* Bhâg. P. 6,19,26.

— घधि Z. 5 ein तस्य zu streichen.

— प्र intens. *theilhaftig werden,* mit acc.: सुमतिम् RV. 7,24,6.

विदश, lies दृशा st. दृशा°.

विदात्त m. N. pr. eines Sohnes des Çatadhanvan Hariv. 2037 nach der Lesart der neueren Ausg.

विदाह vgl. सम्°.

विदिशा 3) in der 2ten Aufl. 5798 कुदशा vermuthet.

विद्रूषक 1) घक्लिते वापि पुरुषं न क्लिस्युर्विद्रूषकम् (= घनपराधिनम् Comm.) R. ed. Bomb. 1,7,11.

विदेश, °स्थ *an einem besonderen Orte —, von andern getrennt stehend* Pat. a. a. O. 1,254,a.

विच्छागम Spr. (II) 3070.

विदृष्टृ, विदृष्टा चतुर्णां विचतुरः Pat. a. a. O. 5,79,b.

विद्रुमवन n. *Korallenstock* Spr. (II) 7330.

विधा (?) Pāṇ. 3,12,15.

विधा Z. 1 streiche 1). Z. 3 v. u. vgl. कुस्ति° *Elephantenfutter* Pat. a. a. O. 2,332,b. गो° *Rindviehfutter* 5,57,b.

विनय्, विनयति denom. von वि *Vogel* + नय् *Mann;* mit वि absolut. विविनय्य Pat. a. a. O. 1,261,a.

विनय 2) b) pl. Spr. (II) 4518.

विनिलेप m. *Sonderung:* गुणाविनिलेपतस् *in Beziehung auf die einzelnen Eigenschaften* (Gegens. कात्स्न्र्येन) Kāraka 3,8.

विनियम्य adj. *zu beschränken* Pat. a. a. O. 6(4),6,b.

विनेत्र adj. *augenlos, blind* Spr. (II) 5773.

2. विन्दु, तन्मञ्जरीरसागोद° Z. d. d. m. G. 27,28.

1. विप् Sp. 1098, Z. 1 v. u. lies मरुतः.

विपरिणमयितव्य adj. *umzuwändern, umzuwandeln* Pat. a. a. O. 1,5,a.

विपरिधावक adj. *überall umherlaufend* Spr. (II) 4278.

विपर्यङ् oder °ञ्च् adj. *gelenklos* AV. 7,56,4.

विपर्यय Sp. 1104, Z. 2. 1 v. u. °घन° = घर्व° Spr. (II) 6030.

विपर्यास 7) Z. 2 Spr. 5242 gehört zu 4); vgl. 2te Aufl. 7073.

विपाक 2) b) Z. 3 lies °विसदृक्फलम्. Sp. 1107 im Columnentitel विपाक zu lesen.

विप्रतिषेध 2) vgl. Pat. a. a. O. 1,264,a.

विप्रतीप *umgekehrt* Spr. (II) 4429.

विभक्तव्य n. *Verschiedenheit, Mannichfaltigkeit* Cit. bei Vātsyāna 4,1,7.

विभाया Sp. 1126, Z. 1 v. u. शाकारो zu lesen.

विभिन्नोकृ (विभिन्न + 1. कृ), °कुरुते *trennen, scheiden* Hem. Joc. 4,31.

विभूवसु s. वैभूवस.

विरंश, मन्द्° adj. *leicht ablösend, abführend* Kāraka 1,18.

विरूप 1) g) füge *täuschendes Aussehen* und Spr. (II) 4439 hinzu. °भाषितानि *was den Anschein von Sprache hat* 7415.

विराण्डव्य m. pl. N. pr. eines Volkes Mārk. P. 58,6.

1. विमान 3) b) Z. 3 streiche «*und Gewicht.*» So heisst bei Kāraka das dritte Sthāna, welches von dem *Maasse* d. h. dem *Verhalten der Humores, der Arzneimittel, Ort und Zeit, Constitution u. s. w. handelt:* दोषभेषजदेशकालबलशरीराहारसात्म्यसत्त्वप्रकृतिवयसां मानम् 3,1.

विमोक्षण 2) d) *das Fahrenlassen, Aufgeben:* परिधान° Spr. (II) 7497.

विरलविरलीभूत adj. *ganz selten geworden, an Zahl stark abgenommen* Spr. (II) 6174.

विरलाय्, °यमान Vātsyāna 3,2,31.

विरूच m. *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. ed. Bomb. 1,28,7.

विरूद, विरूदावली Verz. d. B. H. No. 1222.

विरुद्र adj. *wobei* Rudra *oder die* Rudra *nicht betheiligt sind* ṚV. 1,180,8.

विरेचक (वि + रे°) adj. *etwa von keinem Ausstossen des Athems begleitet:* नृत्य Cit. bei Vātsyāna 2,2,8. Der Gebrauch des Wortes getadelt wegen der anderen Bed. *lautrend.*

विरोध 2) am Ende Vātsyāna 4,3,12 hinzuzufügen. Es ist *die scheinbare Ungereimtheit* als *eine Form der* Upamā gemeint.

विल्, विर्लेति (संवरणे) Dhātup. 28,66. वेर्लयति (लेपे) 32,65, v. l.

विलम्ब 2) a) विलम्बाध्यायिन् *langsam* Pat. a. a. O. 6,81,b.

विलास 1) c) Z. 6 Spr. 5149 gehört zu b); vgl. 2te Aufl. 6790.

विलिङ्ग adj. *verschiedenen Geschlechts* Pat. a. a. O. 1,110,a.

विलोकन, अनेकशास्त्रस्य विलोकनानि so v. a. *Studium* Spr. (II) 2960.

विवर्त *Wirbel* (des Wassers) SV. I,1,2,3,5. v. l. ṚV.

विवाद n. Spr. (II) 4434.

विविभक्तिक adj. *ohne Casusendung;* davon °त्व n. nom. abst. Pat. a. a. O. 6(4),2,a.

विवृत्ति 3) Taik. 3,3,163.

1. विश् mit उप euphem. für *cacare* Kāraka 3,5.

— अभिनि 1) *eintreten* so v. a. *zur Geltung kommen:* पूर्वं सापवादा अभिनिविशन्ते पश्चादुत्सर्गाः Pat. a. a. O. 2,390,a. — 3) b) सदानभिनिविष्टः *niemals auf seinen Kopf bestehend* Hem. Joc. 1,53.

— निस् desid. *eine gemeinsame Wohnung bestehen wollen:* योगिनां प्रावृषि निर्विविक्षताम् Bhāg. P. 1,5,23.

— समिध्र, partic. °विष्ट *hereingetreten* im Gegens. zu अभिनिःसृत Pat. a. a. O. 4,81,b.

— सम् 1) mit instr. ṚV. 10,86,1. — 2) ṚV. 10,55,2.

विशदता (von विशद) f. *Klarheit:* स्वर° (wohl so zu lesen) Spr. (II) 5827, v. l.

विशाखवत् m. N. pr. eines Berges Mārk. P. 55,6.

विश्पला auch 10,39,3.

विश्मि vgl. विश्मि.

विश्मुत 2) N. pr. eines Sohnes des Vasudeva Bhāg. P. 9,24,52. es könnte aber auch पुरु° als ein N. gefasst werden.

विश्रमभृ, so zu lesen.

विश्राधार Hem. Joc. 4,97 (विश्राधारो zu lesen).

विश्राण 1) auch VS. 38,30. Sonst halten wir unsere Erklärung auch nach M. Müller's (V, Prof. XIII) Bemerkungen in der Hauptsache aufrecht.

विश्रास, वैरिणा सक् विश्रासं यो नरः कर्तुमिच्छति Spr. (II) 6293.

1. विष् mit सम् 1) lies संवेविषो.

विषता Spr. (II) 4094.

विषमविलोचन m. ein N. Çiva's Bhāvapr. in Sidhh. K. 164,a,13. — Vgl. विषमनयन.

विषमाय् (von विषम), °यते *uneben werden, — erscheinen:* मार्ग: Spr. (II) 7463.

विषशालूक wohl fehlerhaft für विस°.

1. विषाण, lies *das Ablassen* (einer Flüssigkeit) st. vielleicht = ग्रवसान.

विष्टिकर 1) Z. 2 कर könnte hier auch *Tribut* sein, Nīlak. erklärt aber भृतिमद्द्या कार्यन्ति ते.

विष्टीमिन् vgl. u. स्तीम.

विस्रासात् adv. mit सस् zu *Koth werden* Hem. Joc. 3,24.

विसंवादिता 1) य° auch Kin. Nitis. 4,6 mit dem Comm. zu lesen.

विसंस्थुल Hem. Jogaç. 2,7.

विसर्पणी f. *eine best. Pflanze*, = श्वेतवुङ्गा Rathnam. 51.

विसेचक adj. comp. (= विगतः सेचको यस्मात्) Pat. a. a. O. 1,295, a. 8,61,b.

विस्तारण n. *das Ausstrecken:* पाद° Spr. (II) 7456.

विस्फोर्य partic. fut. pass. Pat. a. a. O. 8,24,b.

विस्रि vgl. विस्रि.

विस्वप्र und विस्वप्रस् Pat. a. a. O. 8,64,a.

2. वी *appetens* RV. 1,143,6.

3. वी mit या, streiche am Ende: Vgl. 2. यावी.

— प्र. स्यात्प्रवीतात्यतितः *in Gang gesetzt* Pat. a. a. O. 1,281,b. 282,a.

5. वी mit सा vgl. यावी.

वीज्य s. सुख°.

वीड्, lies वीळयते.

वीकुरस्, lies *fest packend* (mit der Flamme).

वीथीमार्ग m. Bez. *einer best. Gangart des Elephanten* Aufrecht, Ha. Ind. u. स्थूलोज्ञप.

वीध्र n. *heiterer Himmel* Spr. (II) 7358 (Conj.).

वीन्द्र (2. वि + इन्द्र) adj. wovon Indra *ausgeschlossen ist:* सोम TS. 2,4,12,1. 5,2,1. — Vgl. यवेन्द्र.

वीप (वि + यप् *Wasser*) adj. Pat. a. a. O. 6,45,a.

वीप्स adj. = यो वोप्सति ebend. 8,7,a.

वीर् 1) *b*) α) °ज्ञिन Hem. Jogaç. 1,3.

वीरचिन्तामणि m. Titel eines Abschnitts in Çârngadhara's Paddhati Notices of Skt Mss. 1,204; vgl. Aufrecht in Z. d. d. m. G. 27,2, N. 2.

वीरपुरुषक adj. *dessen Männer Helden sind:* ग्राम Pat. a. a. O. 1,262,b.

वीरभाव m. *Heldenmuth* Vaṇis. 47,18.

वीरासन 1) Hem. Jogaç. 4,123. 126. fg.

वुड् vgl. noch Weber, Hâla 32. 68.

वृकप्रस्थ N. pr. eines Dorfes Vaṇis. 16.

वृकाय् (von वृक), °यते *den Wolf machen* Karaka 1,30.

वृत 1) वृतं वनिनः *den Stamm des Baumes* RV. 1,130,4.

1. वृत्रन s. सु°.

वृत्तास = प्रपाठक Kâtj. in Manâsa. lith. Ausg. 1,10,a. °शस् adv. Pat. ebend.

वृत्ति 10) Sp. 1321, Z. 2 v. u. lies सात्वती. — 13) vgl. Comm. zu Âçv. Çr. 5,20,2.

वृत्रहाय्, °यते = वृत्रहेवाचरति Pat. a. a. O. 6(4),6,a.

वृध्, fuge in der letzten Zeile noch सध्यो° hinzu.

वृध vgl. auch oben नगो°.

वृषन् 9) Z. 2 lies *extreme*.

वृषधि (vgl. पुरंधि) adj. etwa *mannesmuthig, kühn* RV. 4,22,2. *Regen machend* Sây.

वृषभर् adj. *stark zugreifend* so v. a. *kampfend* u. s. w. oder *gewaltigen Ruf erhebend* RV. 10,63,3.

वृष्टिरेव्य m. N. pr. eines Mannes RV. 10,115,9.

वेणिका *ein geflochtener Streifen* Pat. a. a. O. 3,71,b.

2. वेद vgl. सु°.

वेदण्ड m. *Elephant* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. वितण्ड 2).

वेदम्, streiche am Ende समस्त°.

वेदान्त 2) könnte auch erklärt werden als *der Inbegriff des Veda.*

वेणा Z. 4 füge 7,21,5 vor 8,9,1 hinzu.

वेध vgl. oben नासा°.

वेध्यता f. nom. abstr. von वेध्य. पाति व्याधस्य वेध्यताम् (so zu lesen) *wird vom Jäger durchbohrt* Hem. Jogaç. 4,33.

वेमन्य (von वेमन्) adj. *im Weben geschickt* Pat. a. a. O. 4,73,b.

वेला 4) का वेला तत्रभवत्याः प्रातायाः *wie lange ist sie, schon da?* Vaṇis. 11,11. घटिकवेलायाम् so v. a. wenn *es sich um den Sinn handelt* Weber, Prâtiçâkh. 86.

वेल्ल्, वेल्लमान Vâsana 5,2,9.

1. वेश 3) Daçak. 86,3. वेश्यामवेशसदृशप्रणयोपचाराम् Mâlav. 123,11. शितिताशेषवेशयोषित् (शितिताशेषवेश adj.) Kathâs. 12,91. Füge das *Gebahren einer Buhldirne* hinzu. Vgl. auch u. शकट 1).

वेशयोषित्, streiche Kathâs. 12,91 und vgl. oben u. 1. वेश 3).

वेशस्या f. Sâmavidh. Br. 2,6,11 = वेश्या *Hure* nach dem Comm., es ist aber wohl वशस्याः adj. gemeint.

वेष्मक m. pl. N. pr. eines Volkes: शात्मवेष्मकाः (wohl शात्व° zu lesen) Mârk. P. 58,35.

वैतमाणि m. patron. von वीतमाण Pat. a. a. O. 1,266,b. 266,b. 3,80,a.

वैदर्भ 3) *b*) Vâsana 1,2,19.

वैदेहि m. patron. von विदेह (ein Brahmane) Pat. a. a. O. 5,60,b.

वैनायक 1) वैनायिकी संहिता Sâmavidh. Br. 1,4,18.

वैत्र n. nom. abstr. von वि *Vogel* + नद् *Mann* Pat. a. a. O. 1,261,a.

वैपुल्य 1) ebend. 1,277,a.

वैभक्त (von विभक्ति) adj. *zu einer Casusendung gehörend* ebend. 6,37,b.

वैभीषण adj. *zu* Vibhîshaṇa *in Beziehung stehend*, von ihm *kommend:* वचस् Spr. (II) 5946.

वैभूवस von विभूवस् nach Sây.

वैयापद adj. von व्यापद् Kâtj. in Manâsa. lith. Ausg. 7,109,b.

वैयावृत्ति (?) Hem. Jogaç. 4,69.

वैयासव n. nom. abstr. von व्यासु Kâtj. in Manâsa. lith. Ausg. 7,109,b.

वैरपुरुष MBu. 5,5844.

वैराटि MBu. 5,5879.

वैलस्थान, davon adj. °क ebend.

वैशल्य (von विशल्य) n. *Befreiung von dem Dorn* (der Leibesfrucht) Karaka 4,8.

वैशाख 1) *b*) Hem. Jogaç. 4,102.

वैशिष्ट्य 2) füge *Ueberlegenheit* hinzu.

वैषम्य 2) य° *Ebenmaass* Vâsana 3,2,5.

वैषयिक 1) *ein Reich bezeichnend* (Suffix) Pat. a. a. O. 4,71,a. — 2) ebend. 5,39,a.

वैस्रसिक (von विस्रसा) adj. zum *Vergnügen dienend* MBu. 13,4719.

वैदन्य n. N. pr. einer Stadt MBu. 1,6791, v. l. bei Nilak.

व्यक्त 2) घनातिव्यक्ते गुप्ते च स्याने Hem. Jogaç. 1,48.

व्यङ्गट m. N. pr. eines Berges A Catal. of Skt Mss. in priv. libr. of

the north-west provinces 1,484.

व्यवम् 2) Z. 1 lies 10,92,4.

व्यतिकर् 3) डुष्पूरोदरपूरणव्यतिकरे Spr. (II) 5826.

व्यतिपाक m. nom. act. recipr. Pat. a. a. O. 3,90,b.

व्यतीता f. desgl. ebend. 3,90,a. 91,a.

व्यतीका f. desgl. ebend. 91,a.

व्यत्यय letzte Zeile, व्यत्ययम् ist adv. acc., der absol. wäre व्यत्याय्य.

व्यधिम् 2) Z. 3 und 6 zu lesen 6,28,3.

व्यध् 3) Z. 4 lies रुरुधुः.

— घञ् 1) यदा हि गर्गाणां वाङ्मनसविद्धं तिष्ठति *leer, nicht beladen, — besetzt* Pat. a. a. O. 8,68,a.

— घा, partic. घाविद्ध *lange Composita enthaltend* Vimana 1,3,26. घनाविद्ध 25.

— उद् Z. 1 lies उद्विद्ध.

— सम्, partic. संविद्ध wohl so v. a. *zusammenstossend, — fallend:* द्वापर° (युगान्त) Harîv. 11128 nach der Lesart der neueren Ausg. — Vgl. संव्याध.

व्यपकर्ष m. = अपवाद *Ausnahme* Pat. a. a. O. 7,134,a.

व्यपदेशवत् adj. *eine Bezeichnung —, einen Namen führend, bezeichnet:* पितृतः *der mit dem Namen des Vaters bezeichnet wird* ebend. 4,38,a.

व्यपदेशिन् dass. ebend. 1,70,a. 174,a. 3,52,b. 73,b. 112,a. 6,1,b. 2, a. 21,b. 8,60,a.

व्यपरोपण 3) *das Vernichten:* जीवित° Hem. Jogaç. 1,20 = Sarvadarçanas. 33,1.

व्यपवर्ग *Verschiedenheit* Pat. a. a. O. 1,221,a.

व्यभिचरण s. u. सव्यभिचार.

व्यवधायक 1) Pat. a. a. O. 1,67,b. 4,27,b (f. °यिका).

व्यवसेय (von 3. सो mit व्यव) n. impers. *constituendum, decernendum* ebend. 1,339,b.

व्यवकृत् adj. *handelnd mit:* उद्विकारव्र° Kavyâd. 67,42.

1. व्यसन 4) Z. 13 Spr. 4777 gehört zu 5); vgl. 2te Aufl. 5067.

व्यसनिन् 2) Z. 3 Spr. 2001 (6287) würde nach Spr. (II) 6765 zu 3) gehören.

1. व्या mit सम्, लोकसंवीतम् = लोकेनानुज्ञातम् Vimana 2,1,19.

व्याकरणक n. *eine schlechte Grammatik* Pat. a. a. O. 5,73,b.

व्यामोह, निजकुल° *der Wahn, dass es die eigenen Genossen seien,* Z. d. d. m. G. 27,5.

व्यावधर्वी f. nom. abstr. recipr. Pat. a. a. O. 3,90,a. 91,a.

व्यावधारी f. desgl. ebend.

व्यावहासी Bhatt. 7,42.

व्यावृत्य adj. *an etwas Verschiedenes sich anlehnend* (Gegensatz zu समानाश्रय) Pat. a. a. O. 3,38,a. 6(4),20,a. 32,a.

व्यास *Trennung* Sarvadarçanas. 140,22.

व्यासेध, स्वर्गापवर्ग° VP. 1,1,23.

व्युत्थान 2) zu streichen; die Stellen gehören zu 1).

व्युत्सर्ग (?) Hem. Jogaç. 4,39.

व्रीनी, so zu betonen.

1. व्रत Z. 2 M. 2,3 könnte man, wie ein Schol. thut, auch व्रतानि यम° trennen. — 1) *g)* भार्यां चिरसंचितं व्रतम् Spr. (II) 5976.

व्रीड्, व्रीडसि (व्रीड्यसि?) Spr. (II) 7420, v. l.

व्री mit वि pass. *aufspringen, sich öffnen:* द्वाराणि चास्य विव्रीयन्ते (so) Sâmavidh. Br. 3,9,1.

शंस् 1) Z. 2 vom Ende lies शंसत्ति.

— अभि 1) Z. 10 मिथ्याभिशस्त auch Spr. (II) 5460.

1. शक् mit सम्प्र *überwinden, ertragen:* कथं दुःखमिदं तीव्रं गान्धारी संप्रशक्ष्यति MBh. 9,3515 nach der Lesart der ed. Bomb.

शकट 1) °जीविका Hem. Jogaç. 3, 98. 102. — 6) शकटस्य तोकम् = शाकटायन Pat. a. a. O. 3,85,b.

शकन्धु gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

शकल, सकल = खण्ड und वल्कल Trik. 3,3,408.

शकाङ्कु adj. Pat. a. a. O. 6,40,a. b.

शकाङ्कुप zu streichen.

शक्य 3) द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान्न च नास्तिकः R. ed. Bomb. 1,6, 8. 16. 9,15. Vgl. Vimana 5,2,25.

शक्याङ्कुप adj. mit infin. *der wahrscheinlich nicht zu (infin.) ist* Spr. (II) 5618.

शंगरा f. = शंकरा Kumâravîpâla in Manâsn. lith. Ausg. 3,68,a.

शण्ड, षण्डामर्को Kâm. Nîtis. 17,39.

शतदोवन् adj. *hundert gebend* RV. 5,27,6.

शतंपद्, so zu betonen.

शतंव्रज adj. (f. घा) *hundert Hürden u. s. w. habend* RV. 4,38,5.

शतसंघशस् MBh. 5,7617.

शतसाङ्गमिक, lies *aus hunderttausend bestehend.*

शनपर्णी vgl. सन°, शशन°, षसन°.

शनैर्भाव m. *Allmählichkeit;* am Anf. eines comp. vor einem partic. praes. so v. a. *allmählich* Kathâs. 27,95 (getrennt gedr.).

शनोत्साङ् s. स्वनोत्साङ्.

शनोदेवीय adj. *mit den Worten* शं नो देवीः *beginnend* Pat. a. a. O. 1, 305,b. °क 335,a; vgl. Ind. St. 13,433.

शबराकार m. *die Speise der* Çabara, Bez. *einer Art von Judendorn* Râgân. 11,147. — Vgl. oben द्राक्षाकार.

शबल 1) a) सबल MBh. 13,3766 (ed. Bomb. richtig). — b) सबल MBh. 7,827 (ed. Bomb. richtig.) Pârâçar. 188,11. fg.

शब्द *ein richtiges Wort* im Gegens. zu अपशब्द Pat. a. a. O. 1,7,a.

शब्दपातिन् *nach dem Geräusch fallend, — treffend:* इषु Raçân. 9,73.

2. शम्, intens. absol. शंशमम् und शंशामम् Pat. a. a. O. 6(4),32,b.

4. शम् mit नि, absol. निशम्य und निशमय्य Vimana 5,2,76.

— अनुनि Pat. a. a. O. 1,16,b.

शंभ adj. *gesäumt, domesticus* RV. 1,32,15. — 1) यत्तं विवादेन समो विधीयताम् *Frieden* R. 5,1,45. — 5) ein Fürst der Nandivega MBh. 5,2733 nach der Lesart der neueren Ausg., सम ed. Calc.

शमाक्क, समाक्क H. ç. 77.

शमितृ *Schlächter* MBh. 10,257 (समितृ ed. Calc.).

शमीर, समीरवन gaṇa तुभादि zu P. 8,4,39.

शम्बर vgl. संवर.

शम्बाकर्, स° Vop. 7,89.

शम्य m. *eine best. Personification* Śāmavidh. Br. 1,2,5.

शम्याघाक् m. etwa *der den Tactstock hält, Tactschläger* R. ed. Bomb. 2,91,49. साम्य° Scht.

शय 2) *e*) MBh. 7,2280, v. l. bei Nilak.

1. शॄ mit संप्र *auseinanderbersten:* संप्राशिर्यत (lies संप्राशीर्यत) Harıv. 3654 nach der Lesart der neueren Ausg.

— प्रवि, °शीर्ण Pat. a. a. O. 5,80,*b*.

— सम् desid. vgl. संशिशरिषु.

1. शरण 3) n. = विशरण *das Auseinanderfallen, Bersten, Zusammenstürzen* Vop. 8,126.

शरणार्यक, शरणायम ĆKDs. u. संघारञ्जीविन् nach ders. Aut.

शरद् 2) Z. 2 lies 86,6 st. 89,6.

शरदण्डा, सर° R. Gorr. 2,70,14.

शरभ Sp. 94, Z. 1 v. u. lies Vaijp.

शरलोम m. pl. *die Nachkommen des* Çaraloman Pat. a. a. O. 4,38, *a* शार° gedr.).

शरारि nach Kaśkad. zu Suça. 1,26 giebt es zwei Arten, eine mit rothem Kopf und eine mit weissen Schultern.

शराक् Nir. 6,31. RV. 10,86,9.

शरीराकृति f. *Geberde, Miene:* तौ शरीराकृतिं कुर्वति या कुपितस्य भवति Pat. a. a. O. 8,9,*b*.

शरीरात्मन् s. oben u. धत्तरात्मन्.

शर्कराल (von शर्करा) adj. von (fliegendem) *Gries begleitet:* Wind Vaitân. 45.

शर्व Sp. 103, Z. 6 lies *b*) st. *c*).

शर्ववर्मन् Grammatiker in Kathâs.

शलाक 4) अविद्धकर्णी यो योग इत्यत्रशलाकया (so zu lesen) Hem. Jogaç. 1,14. 4,51 (°शलाकया zu lesen).

शशकर्ण vgl. शाशकर्णि.

2. शस्य vgl. 2. सस्य 2).

शस्यक vgl. सस्यक.

शाकपार्थिव = शाकभोजी पार्थिवः Pat. a. a. O. 2,346,*b*.

2. शाकिनी Hem. Jogaç. 3,27.

शाकल 3) *c*) ein Dorf der Bâhika ebend. 4,72,*b*.

शाकुन्तेय (von शकुन्त) m. N. pr. eines Unterredners bei Kaśaka, z. B. 1,26.

शाकुलिक n. *eine Menge von* Çakula H. 1418, Schol. (सा°).

शातपत्त m. du. in dem mit verzerrten oder seltsamen Wörtern, wie es scheint, absichtlich ausgestatteten Liede RV. 10,106,5. = सुख Naigh. 3,6. शातेन दुःखानां तनूकरणेन पन्यते स्तूयते Devarâǵas. = शत्तम Bhâskaramiçra.

शानीय partic. fut. pass. von 2. शा Pat. a. a. O. 6,22,*a*.

1. शान्त *a*) *c*) Z. 6 streiche 106, da शान्तावसादः = शान्तो यसादः ist.

शान्तमोक् n. Bez. *der 11 unter den 14 Stufen, die nach dem Glauben der Gaina zur Erlösung führen,* Verz. d. Oxf. H. 397,*a*,14.

शाबर Z. 10 lies *c*) st. 3).

शामित्र 3) *a*) Vaitân. 37.

शाम्य (auch vom caus. von 1. शम्) *zur Ruhe zu bringen:* चित्ते शर्कराशाम्ये Spr. (II) 7011. घ° (विषय) Harıv. 2711 nach der Lesart der neueren Ausg.

शायक 2) *Art und Weise zu liegen:* कृतशायिकाः शय्यन्ते Pat. a. a. O. 3,41,*a*.

शारणिक MBh. 12,3438, v. l. bei Nilak.

शारलोम्या f. patron. von शारलोमन् Pat. a. a. O. 4,38,*a*. शारलोमाः 38,*b* fehlerhaft für शार°.

शार्ङ्ग m. patron. verschiedener Männer RV. Anukr.

शार्ङ्गधन्वी P. 2,2,36, Vârtt. 1, Schol. so auch in der lith. Ausg. des Mahâbh.

शार्वर und शार्वरिक (besser) adj. *nächtlich:* तमस् Vimâna 5,2,31.

शालगुप्त m. N. pr. eines Mannes; davon °गुप्तायनि patron. Pat. a. a. O. 1,44,*a*.

शालङ्क m. pl. = शालङ्केर्यूनश्छात्राः ebend. 4,59,*b*.

शालिस्तम्बक wohl fehlerhaft für °स्तम्बक.

शालु n. *eine best. aus dem Norden kommende Frucht* Kaśkad. zu Suça. 1,144.

शालूकिका f. = शालूकिनी Kâś. in Mahâbh. lith. Ausg. 6,95,*a*. Davon adj. शालूकिकीय Pat. ebend.

1. शाव, शाव in den südindischen Hdschrr. nach Pischel.

शाशकर्णि s. सासकर्णि.

शासितव्य adj. *zu lehren, vorzuschreiben* Pat. a. a. O. 1,210,*a*. 3,77,*a*.

2. शास्त्रचतुस् MBh. 6,163.

शिंशुमार R. ed. Bomb. 2,30,25. = जलकपि Comm. nach Vaij.

शितापद्, deren vier Hem. Jogaç. 2,1.

शितेएय adj. *lehrhaft:* शितेएयीं वदसि वाचम् Vaitân. 37.

शिखरिन् 1) Zähne Spr. (II) 6542.

शिखरी f. *eine best. mythische Keule* R. ed. Bomb. 1,27,7.

शिखा Sp. 179, Z. 4 v. u. lies मूल् st. मुञ्च.

शिञ्जिन् 2) *a*) सिञ्जिनी MBh. 6,1886 nach der Lesart der ed. Bomb.

शिएडाकी vgl. सि°.

शितान्न und शितावर् vgl. सि°.

शिमी Naigh. 2,1. RV. 1,151,1. 3.

शिवभागवत Pat. a. a. O. 3,44,*b*. भगवान्भक्तिरस्य भागवतः। शिवस्य भागवत इति षष्ठीसमासः Kâś.

1. शिष्ट 1) *c*) *ausgezeichnet, vorzüglich:* क्रिया Milav. 13 nach der Lesart der ed. Bomb.

(1.) शिष्टि 3) *Unterweisung* Pat. a. a. O. 6,104,*b*.

2. शिष्टि (von 2. शिष्) f. *Hilfe* in सु°.

2. शी 2) mit dat. *sich hinlegen zu:* पत्ये शेते Pat. a. a. O. 1,331,*b*.

— यति caus. यतिशाययतीत्यतिशायनम् ebend. 5,62,*a*.

शीपाल vgl. सीपाल.

शीर्ष m. *ein best. Gras* Pat. a. a. O. 2,398,*a*.

शीलन n. *das Kruchzen:* आचार्यदेश° Pat. a. a. O. 1,111,*a*.

शीष्ट von unbekannter Bed.: शीष्टेषु चित्ते मदिरालो यंशवः Vilâs. 5,4.

शुक्ली (von शुक्ल) adv. mit भस् *weiss werden* Pat. a. a. O. 1,77,*a*.

शुचिमुखी (wohl richtig) f. N. pr. einer Hamît; füge noch 3648 hinzu.

1. शुचिस्मित braucht nicht als comp. gefasst zu werden.

शुभस्त Spr. (II) 6794.

प्रभूषितव्य n. impers. zu gehorchen: पितार् Pat. a. a. O. 1,71,a.

1. प्रभू mit संपरि s. संपरिशोषण.

प्रभ्मायण m. patron. eines Soma VP. 3,3,17. प्रामुष्यायण Vers. d. Oxf. H. 80,a,15.

3. भू (= 2. भू) adj. in सुभू°.

भूर्ष 1) भूर्षे च सर्षपो यथा Pariśiṣṭa 2,2,99. विंशे सर्षपवत्सर्षपस्यैकदेशे (so gedr.) 33.

भूलवत n. eine best. mythische Waffe R. ed. Bomb. 1,27,6. भूलवर् v. l.

भृङ्गगिरि Z. 1 lies 247 st. 274.

शेखर् 1) c) शिर:° Vāmana 2,2,14.

शेषतम् adv. andernfalls, sonst R. ed. Bomb. 1,60,6.

शैत (v. l.) und शैत्य 1) Gop. Br. 1,1,27.

शैफालिक adj. aus Vitex Negundo verfertigt: पट Pat. a. a. O. 5,60,a.

शैली ebend. 2,333,a.

शोकम् = 2. शोक in सकल°.

शोण 2) d) am Ende, शोणा f. auch R. ed. Bomb. 1,31,20. 35,1.

शोभिक m. N. pr. eines Mannes Rāja-Tar. 8,1031.

शोल्लीय, so zu lesen.

शौनहोत्रि s. सौन°.

शौभिक m. Bez. bestimmter Schauspieler Pat. a. a. O. 3,28,a.

शौरसेन. भाषा Kirāt. 1,35.

शौल्किक adj. Pat. a. a. O. 4,73,b.

शौवाविध adj. von श्वाविध् ebend. 4,55,b.

1. श्चुत् Z. 3 lies 4,50,2 st. 50,3.

श्येनय्, °यति = श्येनीमाचष्टे Pat. a. a. O. 6(4),44,b.

श्येनभृत adj. = श्येनाभृत ṚV. 9,87,6.

श्येनाभृत, streiche ṚV. 9,87,6.

श्यैन (so zu lesen) adj. vom Falken (श्येन) kommend: मांस Weber, Kṛṣṇaj. 221.

1. श्रय् Sp. 335, Z. 9 c) st. b), Z. 11 d) st. c) und Z. 24 e) st. d) zu lesen. — f) Bez. der Feminina auf घा Kāśikā 2,1,37. 71.

1. श्रम् mit वि 1) विश्रममाण R. ed. Bomb. 1,62,3.

श्रमण 1) Buddhist: °ब्राह्मणम् leben in Feindschaft Pat. a. a. O. 2,398,a.

2. श्रवस्य्, partic. श्रवस्यैत् = 1. श्रवस्यु ṚV. 1,128,1.

श्रवस्यौ f. eiliger Lauf ṚV. 1,128,6.

श्रा mit घा, hierher wohl श्रार्शिरम् als infin. ṚV. 10,40,10.

श्राद्ध 2) a) Hem. Joc. 4,8.

श्रावकत्व n. nom. abstr. zu श्रावक 2) Hem. Joc. 3,138.

1. श्रावण 4) Z. 4 lies 2,170,3.

श्राविन् (?) Pat. a. a. O. 5,26,b.

1. श्रि 1) letzte Zeile lies 1,69,1.

3. श्री 1) d) Z. 7 lies 3036 st. 2664.

श्रीघ्र Vāmana 5,2,26.

श्रीय adj. von 3. श्री, = श्रियै हित: Pat. a. a. O. 6(4),46,b.

1. श्रु mit अभि caus. Jmd Etwas hören lassen, über Jmd Etwas sprechen, besprechen; mit doppeltem acc. Śāmavidh. Br. 2,3,2. mit instr. und acc. 4,7.

श्रुतसोमा f. N. pr. einer Gattin Kṛśva's Harīv. 9196 nach der Lesart der neueren Ausg., सुतसोमा die ältere.

श्रुष्टीवन् Z. 3 lies 7,73,3.

श्रेयस् 1) a) lies 3,8,4 st. 1,8,4.

श्लाघ् mit उप s. उपश्लाघ.

2. श्लिष् mit उप, °श्लिष्ट in unmittelbarer Berührung stehend Pat. a. a. O. 6,33,b. एकादश कार्षापणा उपश्लिष्टा यस्मिञ्छते so v. a. hinzugetreten 5,39,a.

श्लेष्मन् 1) mit einem Bösewicht verglichen Spr. (II) 7467.

श्लोकस्थान n. so v. a. सूत्रस्थान Kāśaka.

श्वकर्ण m. Hundeohr Comm. zu Kir. Ça. 1039,7.

श्वदंष्ट्रिन् m. ein best. auf dem Trockenen lebendes Thier Kāśaka 1,27.

श्वध 2) Hem. Joc. 3,39.

श्वस्तन, f. ई (sc. विभक्ति) Bez. des Charakters des als Fut. fungirenden Nom. ag. (तृ) Kātantra 3,1,15. 30.

श्वा mit उद् vgl. उच्छ्वाध.

श्वाविद्गर्त m. die Höhle eines Stachelschweins; davon °र्तिन् adj. Pat. a. a. O. 4,75,b.

श्वाशुर m. pl. = श्वाशुरेर्यूनश्छात्रा: ebend. 4,42,b.

श्वाशुरि m. = श्वशुर्यस्यापत्यम् ebend.

श्वेत 2) g) β) श्वेतहूणा: besser als ein Name aufzufassen.

श्वेतहूण m. pl. die weissen Hunnen Varāh. Bṛh. S. 16,38. — Vgl. सितहूण.

श्वेतोदर 2) c) N. pr. eines Berges Mārk. P. 55,7.

षट्पाद adj. sechsfüssig Gop. Br. 1,2,8.

षडिक von षडङ्गुलि N. pr. Pat. a. a. O. 1,275,b.

षडोतर्, die Sprüche stehen Taitt. Ār. 3,4.

षण्डीय्, षण्ढीय् Pat. a. a. O. 6,27,a.

षण्ढत्व n. = षण्ढता Hem. Joc. 2,76.

षण्ढय्, °यति castriren Hem. Joc. 3,75 (षण्डय्).

षाढ्य adj. von षष् + कुल Pat. a. a. O. 4,39,a. b.

षाष्टिक adj. = षाष्ट im sechsten (Adhjâja) gelehrt ebend. 3,8,a. 6,31,a. 60,a.

षोडीय्, °यति = षोडशमाचष्टे Kāç. in Mahâbh. lith. Ausg. 6,27,a.

ष्ठिव् desid. तुष्ठूषति und तुष्ठूषति, intens. टेष्ठीव्यते und तेष्ठीव्यते (vgl. Corrigg.) Pat. a. a. O. 6,27,a.

— नि, निष्ठित (so) bespuckt Bhâg. P. 11,22,58.

— निस्, निरष्ठविषम् (von ष्णु; vgl. 3. ठु oben) Vaitân. 12. Gop. Br. 1,2,7.

ष्णु vgl. oben u. ष्ठिव् mit निस्.

2. स Z. 2 mit instr.: सोमया = सह उमया Bhâg. P. 8,12,3.

संगठनु vgl. संघठनु.

संवग्य adj. übereinstimmend, gleichkommend: पुराकल्प एतदासीत् । षोडश माषा: कार्षापणो षोडश पलाश माषसंवग्या: (sg.!) Pat. a. a. O. 1,225,a.

1. संवर् 2) b) Hem. Joc. 4,35. 78. fg.

संवाक् 2) a) neben ग्राम, घोष und नगर् Pat. a. a. O. 2,397,b. = वणिक्प्रधानो निवास: Marktflecken Kāç.

संविति = संबन्ध Taitt. 3,3,191.

1. संविद् 1) Z. 6 lies 10,16. 46. — 3) = संकेतक Taitt. 3,3,212.

संवृति f. Hemmung: वाग्वृते: Hem. Joc. 1,11.

संवेग (?) Hem. Jogaç. 2,15.

संव्रय am Ende lies सुव्रत.

संव्रेय 4) *Gelenk* Sâmavidh. 3,1,7.

संसमक Vaitân. 37.

संसक्त adj. *von tausend begleitet:* वचस् ṚV. 7,8,6.

संस्त्यान n. *das Gerinnen, Verdichtung* (der Leibesfrucht u. s. w.) Pat. a. a. O. 1,224,a. 4,5,b. — adj. s. u. स्त्या mit सम्.

संस्त्याय 2) füge hinzu: *Wohnort* und Pat. a. a. O. 2,397,b. 7,113,b.

संस्थान 3) *f)* Z. 3 lies वोढुभार्यासंस्थानम् st. वोढुं भार्यासंस्थानम् ed. u. s. w.

संस्थावन् zu streichen.

संस्थिति 4) लोक° MBu. 6,473 nach der Lesart der ed. Bomb.

संस्थाय adj. = संस्थायन Pat. a. a. O. 6,38,b.

संस्कृताङ्ग *zusammenstossend:* पर्वता: MBu. 2,800.

संस्ननीय adj. *gedrungen, fest:* कायात्संस्ननीयमध्यात् MBu. 9,890 nach der Lesart der ed. Bomb.

सगतिक adj. *mit einer* Gati (Bed. 14) *versehen* Pat. a. a. O. 1,274, a. 8,8,a.

संकल्प 1) *a)* Sp. 518, Z. 10 hinzuzufügen ṚV. 10,164,3. — *b)* Sohn der Saṁkalpâ Bhâg. P. 6,6,10. — 2) Mutter des Saṁkalpa ebend.

संकूटन, lies lith. Ausg. st. ed. Bomb.

संखादक m. *Zahn* Kâd. in Manâsa. lith. Ausg. 5,49,b. Davon adj. (निन्दायाम्) °किन् Pat. ebend.

संगत letzte Zeile lies 2212.

संगमक m. N. pr. eines Mannes Hem. Jogaç. 3,87.

संगीतसिन्धु Titel einer Schrift ÇKDa. u. सिन्धु.

संगीति, so zu betonen und so st. 139 zu lesen.

संग्रहीतव्य adj. *beizubehalten* (Gegens. त्याज्य) Pat. a. a. O. 3,56,b.

संघातन n. *das Zusammenfügen, Sammeln* Hem. Jogaç. 3,36.

संघुष्टक adj. *zu einander passend, an einander gewöhnt:* गोयुक्तकानि Pat. a. a. O. 1,125,a.

1. सच् mit आ auch 10,75,5.

सचाङ्गाचपुष्पी f. *eine best. Pflanze* Sâmavidh. Br. 2,6,10.

सचि Z. 2 lies सचिविद्.

सज्ञ vgl. अग्निसज्ञा oben.

संचर्वण n. *das Kauen:* पोतास° Râjâ-Tar. 7,1127.

संचिन्तन n. *Sorge* Bhâvapr. 7.

सञ् mit व्यति Sp. 539, Z. 2 lies 13,7339.

— उद्, उत्सक MBu. 1,3545 Lesart der ed. Bomb. st. उत्सिक्त der Calc. = उत्कर्षेण सर्वत्र व्याप्त: Nîlak. vielleicht *sich in alle Angelegenheiten mischend.*

— प्र 3) यो ऽनागसि प्रसज्यति (so ed. Bomb.) *anbinden mit, sich reiben an* MBu. 2,856. — 4) mit act. Bed. *eintreten —, stattfinden lassen:* न ज्ञायते केनाभिप्रायेण प्रसज्यति केन निवृत्तिं करोतीति Pat. a. a. O. 1, 229,a. 2,252,a.

— सम्, संसज्जन्तु रथे *anschirren* MBu. 9,819 nach der Lesart der ed. Bomb.

संज्ञातर् nom. ag. *der mit Wehmuth Jmdes* (gen.) *gedenkt* Pat. a. a. O. 2,284,b.

संज्ञान 3) *a)* Z. 2 lies 10,19,4.

संज्ञिन् n. nom. abstr. zu संज्ञिन् 2) Pat. a. a. O. 1,209,a.

संज्ञीभूतक adj. *zu einem Namen geworden* ebend. 4,81,a. 5,20,b.

संज्ञोपसर्जनीभूत adj. *zu einem Nomen proprium* (*appellativum*) *oder zu einem untergeordneten Gliede eines Compositums geworden* ebend. 1,95,b.

सततक adj. *zweimal am Tage sich einstellend:* Fieber Kâraka 8,1. Suçr. 2,405,12.

सतस्, सतो मघवान: ṚV. 10,27,4. oder als comp. zu fassen.

सतृणम्, सतृणाभ्यवहारिन् *der Alles isst, sogar Gras,* in übertr. Bed. so v. a. *geschmacklos:* Dichter Vimâna 1,2,1.

सत्ववत् Z. 1 adj. nach 1) zu stellen.

सत्यताति adj. etwa *richtig machend* ṚV. 4,4,14. L. loc. सत्यतातौ in *Richtigkeit, in Wirklichkeit* 10,111,4.

सत्यनाम R. ed. Bomb. 1,6,28.

सत्याङ्ग 2) lies Plaksha st. Gambu.

सत्रासाहु, so zu betonen.

सद् Sp. 591, Z. 6 v. vor सद् hinzuzufügen.

— उद् caus. 3) Sâmavidh. Br. 2,1,7.

— समुद् caus. समुत्साद्य (so ed. Bomb.) MBu. 14,2352.

सदृश, भोजन°, अध्ययन° *gleichkommend in Bezug auf* Pat. a. a. O. 6,76,b.

सधमित्र, am Ende साधमित्रिक zu lesen.

1. सन् mit आ Vîtarâg. 5,4.

सनख adj. मुष्टि *eine Handvoll, wie man sie mit den Nägeln fasst,* Kâraka 9,7. 9. — Vgl. अग्रनख oben.

सनाय् könnte auch heissen *lange machen, zögern* (so v. a. चिराय्).

2. सनेमि, so zu betonen.

संतनि m. N. pr. संतनीनां वसिष्ठपुत्राणाम् Ind. St. 3,460.

संद्राव m. *Zusammenlauf, Ort des Zusammenlaufens:* गुणसंद्रावो द्रव्यम् Pat. a. a. O. 3,27,b.

संधिवेला Z. 2 lies 4,3,16.

संधेय adj. *dem* Saṁdhi *zu unterwerfen* Kâtantra 1,2,13.

1. संध्याराग Z. d. d. m. G. 27,62.

सप्तम 2) *c) Bez. des Charakters und der Personalendungen des Potentialis* Kâtantra 3,1,20. 25.

सप्तरात्रक adj. (f. °त्रिका) *siebentägig* Hariv. 3976 nach der Lesart der neueren Ausg.

सप्तर्षिमत् adj. von सप्तर्षि Pat. a. a. O. 8,32,b.

सप्रकृतिक adj. *nebst Stamm, — Thema, — Wurzel* ebend. 1,231,a. 5,15,a.

सप्रत्ययक adj. *nebst Suffix* ebend. 1,202,a. 231,a. 5,15,a.

सब्रह्मचारिन्, am Ende साब्रह्मचार् zu lesen.

समा Z. 3 am Ende lies 1. 2 st. 12.

समज्या 1) *Versammlung* Siç. D. 229,8.

समज्ञ 2) *Gleichmuth* Hem. Jogaç. 1,40. 4,49. 109. 111.

समनग, lies °गा.

समनस् Z. 1 nach adj. 1) hinzuzufügen.

समत्तपञ्चक vgl. स्यमत्त°.

समन्धकार *dichte Finsternis* Pat. a. a. O. 2,331,a.

समभिहरण n. und °हार m. *das Herbeischaffen vieler Sachen* ebend. 3,21,b.

समभ्याशीकरण n. *das in die Nähe Bringen* ebend. 2,335,a.

समवधान ebend. 8,49,b.

समवर्ण auch *gleichfarbig;* vgl. सामवर्ण्य.

समवस्थान 1) füge *das Bestehen* und Pat. a. a. O. 6(4),14,a hinzu.

समवस्थास्य, streiche vom caus.

समसर्नीढ् adj. *das Zusammengebrachte (Gesammeltes) essend* (षद्) TS. 3,3,8,2.

समाधि 9) = घारोक्षवरोत्क्रम Vimana 3,1,12. = घर्यदृष्टि 2,6.

समानजन्मन्, so zu lesen.

समाश *Mahlzeit:* देवदत्तस्य समाशं शरदि रोदनेन च प्रतिविधते Pat. a. a. O. 1,172,a. *ein gemeinschaftliches Mahl* 128,a.

समासादन n. *das Gelangen zu, Erreichen* ebend. 3,96,a.

समाख्ति n. *eine best. Form der* Upamâ Vimana 4,3,39.

समिति 5) Hem. Jogaç. 1,26. 33. fgg.

समुच्चयन n. *das Sammeln, Zusammenstellen* Pat. a. a. O. 3,85,a.

समुत्थान 4) Z. 2 lies 2,378,13.

समुद्र 1) b) समुद्रतँस् RV. 5,55,5. Z. 9 lies 5,16. 3,39. — 4) R. ed. Bomb. 4,38,31.

संपचंकारम् absol. *vorher wohlschmeckend machend:* भुङ्क्ते P. 3,4,36, Schol.

संपाठ m. *ein gesammelter Text:* सगित्युक्ते संपाठमात्रं गम्यते Pat. a. a. O. 1,168,b. 4,66,b.

संपातिन् 1) a) AV. 7,70,3.

संपूर्ति, so zu lesen.

संपृक्तत्व n. *das Verbundensein* Vimana 3,1,14.

संप्रत्यायक adj. (f. °प्रत्यायिका) *bewirkend, dass man Etwas* (gen.) *darunter versteht* Pat. a. a. O. 1,168,a. °त्व n. nom. abstr. b.

संभरण 3) *Sammlung, Menge:* वसूनाम् RV. 7,23,3.

2. संमातर् nom. sg. = संमिमीते Pat. a. a. O. 4,54,b.

संमुखीन Z. 1 lies संमुख.

सम्यक्चारित्र Hem. Jogaç. 1,33.

सम्यक्त ebend. 2,1. 15.

सम्यक्श्रद्धान ebend. 1,17.

सम्यग्ज्ञान ebend. 1,16.

सम्यग्दृष्टि adj. = सम्यग्दर्शन; davon nom. abstr. °त्व (dieses gehört auch zu den vorangehenden adjj.) n. ebend. 4,3.

सर् mit प्र caus. 5) *einen Halbvocal in einen Vocal übergehen lassen* Pat. a. a. O. 4,34,b.

1. सरङ्ग 2) vgl. सारङ्ग 2) *f).*

सरजस 1) *mit Blüthenstaub versehen* Vimana 5,2,66.

1. सरण 4) a) Z. 3 MBu. 1,8368 *das Nachlaufen, Folgen.*

सरस् 2) सरःशोष Hem. Jogaç. 3,99. 112.

सर्ग 2) Z. 2 lies 10,25,4. Diese Stelle gehört zu 6).

सर्पनेत्रा f. *eine Ichneumonpflanze (Knolle)* Riâgn. 22. Nigh. Pr.

सर्पसुगन्धा f. *eine best. Pflanze* Sâmavidh. Br. 2,3,3.

सर्वदमन, am Ende zu streichen — Vgl. सार्वदमन.

सर्वलिङ्ग adj. *alle Geschlechter habend, adjectivisch gebraucht;* davon nom. abstr. °ता f. Pat. a. a. O. 2,382,b.

सर्वविषय adj. *auf Alles sich beziehend, allgemein* Vimana 8,2,22. स्व-सर्वविषयत्व n. 27.

सर्वसेन N. pr. einer Oertlichkeit gaṇa शण्डिकादि zu P. 4,3,92.

सर्वात्मन् 2) Bez. Çiva's Hem. Jogaç. 1,45.

सलिलकुक्कुट m. *ein best. Wasservogel* Bhâg. P. 5,2,4.

सलोमधि m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12,1,25 (man könnte auch स लो° trennen). — Vgl. सुलोमधि.

सविभक्तिक adj. *mit einer Casusendung versehen* Pat. a. a. O. 1,7,b. 160,a. b.

सवृध् *zusammen fröhlich* RV. 10,30,10.

सशल्य Hem. Jogaç. 2,70 (nicht N. pr.).

सशेष *unvollständig* Pat. a. a. O. 3,85,a.

संस्थावन् adj. *was sich zusammen befindet* RV. 5,37,4.

1. सक् mit निस् med. *bewältigen* RV. 1,127,3.

— प्रति, °सक्ष्यति ed. Bomb. 36,3.

2. सक् 3) *b)* Sâmavidh. Br. 2,6,10.

सक्चरण adj. = सक्चर 1) *b)* Gop. Br. 2,6,9.

सक्देव 3) *a)* Sâmavidh. Br. 2,6,10.

सक्निर्वाप m. *gemeinsame Spendung* Pat. a. a. O. 6,90,a.

सक्भूत adj. *vereinigt, verbunden* ebend. 1,48,b. 2,324,a.

सक्विवक्षा f. *die Absicht Etwas zusammen —, mit einem Male auszudrücken* ebend. 1,217,a. 301,b.

सक्सहस्र adj. *tausendäugig,* m. Bez. Indra's Cit. bei Vimana 2,1,14.

सक्सहस्रपद्, so zu betonen.

सक्सहस्रवर्त्मन् adj. *tausendpfadig:* सामवेद Pat. a. a. O. 1,16,b.

सक्षोदर vgl. सोदर.

सक्षोभरि adj. *Kraft nährend* RV. 5,44,2.

3. सा mit निरव, घार्यावर्ताद् निरवसितानाम् *nicht ausgeschlossen von* Pat. a. a. O. 2,397,b. पाञ्चात्कर्मणः ebend.

— व्यव 6) zu streichen und die Stelle u. 3) zu stellen.

साङ्कृतिक 1) Pat. a. a. O. 4,89,b.

सागमक adj. *mit einem* Âgama (Bed. 2) *k) versehen* ebend. 1,85,a.

साकाङ्क्ष 2) गवीधुमतः साकाङ्क्षं चत्वारि पेत्रनानि ebend. 2,288,a.

साङ्ख्य adj. *den grammatischen Numerus betreffend:* विधि ebend. 2, 360,b. Z. 1 ist m. nach 1) einzuschalten.

साड adj. *mit einem Stachel oder Spitze versehen:* दण्ड, वृश्चिक Pat. a. a. 8,88,b.

साडि auch patron. von साड ebend.

सादृश्य, st. सादृश्ये (दर्शने ed. Bomb.) MBu. 5,1747 ist wie Çvetâçv. Up. 4,20 (Kaṭhop. 6,9) संदृशे zu lesen.

साधीयस् 4) *besser, entsprechender, in höherem Grade* Pat. a. a. O. 1,249,b.

सानुकम्प, so zu lesen.

सानुबन्धक adj. *mit einem* Anubandha (Bed. 1) *f) versehen* Pat. a. a. O. 1,81,a.

सान्यासिक (von 2. स + °न्यास) adj. *den ursprünglichen, richtigen Wortlaut bildend* ebend. 3,71,b. 6,10,b. 7,75,a. 101,a.

सापवादक adj. *einer Ausnahme unterworfen* ebend. 4,85,b.

सप्तमिक 3) *im siebenten* (Adhjâja) *gelehrt* ebend. 6,21,a.

सप्तरात्रिक Śâṅkhâyana-Br. 1,4,1.

सप्तवत्सचार adj. Pat. a. a. O. 6(4),41,b.

सभासंनयन adj. von सभा-संनयन ebend. 1,177,a.

सामान्देशिक adj. von समान-देश ebend. 4,80,a.

सामायिक so v. a. साम्य *Gleichmuth* Hem. Joḍaç. 3,81. fg. 114. 4,51. fg. hier und da सामायक.

सामासिक adj. (f. ई) 2) *zu einem Compositum gehörig* Pat. a. a. O. 7,49,a.

सामूल्कि m. *ein Collectiva bildendes Suffix* ebend. 4,68,a. *der über die Collectiva handelnde Abschnitt* 66,a.

सामृत (2. स + मृ°) adj. *mit Nektar versehen:* सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः ebend. 8,9,b.

सांप्रतिक (f. ई) 2) ebend. 6,66,b. 6(4),14,b. — Lies Kâś.

सांमात्र m. patron. von 2. संमातृ ebend. 4,54,b.

सांमितिकायनि m. patron. ebend. 4,51,a. 57,b.

साम्य 1) c) *Gleichmuth* Hem. Joḍaç. 4,80. 83. fg.

1. साय 2) सायतरे Pat. a. a. O. 4,77,b. सायं साये ebend.

2. सार 1) i) नेतत्सारम् ebend. 8,21,b.

सार्चिमालिन् m. *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. ed. Bomb. 1,28,7.

सार्पविद्यिक adj. *mit der Schlangenkunde* (सर्पविद्या) *vertraut* Pat. a. a. O. 4,67,a.

सार्वनामिक (von सर्वनामन्) adj. *zum Pronomen in Beziehung stehend* Kâtantra 2,1,33.

सालिका, सालेयिका und सालेयी f. *Flöte* Çârṅḍ. im ÇKDa. u. सुरलासिका.

सावग्य Hem. Joḍaç. 1,18. 3,81. 4,33.

सिंक्, undeutlich der Anusvâra.

सिंक्तावलोकित Sp. 976, oben und unten सिंक्तावलोकन zu lesen.

सिंक्तिका 2) R. 3,20,23.

1. सिच् mit परि *übergiessen* so v. a. *reichlich ausstatten, — beschenken* MBu. 13,3087 nach der Lesart der ed. Bomb.

सिधकावत् und °वती vgl. सेधकावत.

सिसन्सि adj. vom desid. von 1. सन् Pat. a. a. O. 8,65,a.

सीरा gaṇa सप्त्यादि zu P. 4,2,50. — Vgl. सैरेय.

सुकर्मकर adj. *zur Verfertigung von Matten wohl geeignet:* वीरणानि Pat. a. a. O. 1,297,a.

सुकरतरक adj. *ganz leicht auszuführen* ebend. 1,212,b.

सुकृत्य, °त्यति denom. von सुकृत् ebend. 1,267,b.

सुकृत्या Z. 3 lies 1,83,4 st. 7,83,4.

सुक्षेत्रता f. *Besitz guten Feldes* AV. 7,20,2.

सुज्ञान adj. *leicht zu erkennen* Vâsana 2,1,3.

सुज्योतिस् oxyt. 10,89,15.

सुदंशस् Z. 2 lies 2,2,2.

सुदण्डिका lies 7,41.

सुदर्शन 1) b) Hem. Joḍaç. 2,100. — 2) b) α) ebend.

2. सुदेव 1) a) Z. 2 lies 5,53,15.

सुदेविका f. Pat. a. a. O. 7,110,a.

सुद्रष्टर्, सुद्रष्टा चतुर्णां सुचतुरः ebend. 5,79,b.

सुधावत् m. pl. Bez. *bestimmter Manen* MBu. 2,341 nach der Lesart der ed. Bomb., स्वधावत् ed. Calc.

सुनत् (सु + नत् von नम्) Pat. a. a. O. 6(4),19,a.

सुनन्द 2) c) α) Z. 2 lies 3,2664. 2661. fgg.

सुनयक m. und सुनयिका f. zu lesen für सुना°.

सुयार m. *eine best. Personification* Śâṅkhâyana-Br. 1,2,5.

सुपुरुष m. desgl. ebend.

सुप्तब्रन, °ब्ने रात्रौ R. 4,8,27.

सुप्तप्रलपित n. pl. Kâm. Nîtis. 11,65.

सुफाल, lies 3,17,5.

सुब्रह्मण्य 4) n. *gute Brahmanschaft* RV. 10,62,4. = ब्रह्मवर्चस Sây.

सुभित ved. adj. = सुक्षित Pat. a. a. O. 1,271,b. st. dessen richtig सुभित = शुभित 3,48,a; vgl. TS. 4,4,48,2.

सुभूम Hem. Joḍaç. 2,27.

सुभोजस् *reichlich:* रयि RV. 7,92,2.

सुमनाय्, absol. सुमनाय्य Pat. a. a. O. 3,18,b.

सुमतु m. pl. *freundliche Gesinnung oder gütlicher Zuruf* RV. 1,129,7.

सुम्न könnte auch RV. 10,5,3. 7 als adj. gefasst werden.

सुरलासिका aus स्वरलासिका.

सुरोप und सुर्प adjj. von सुरा Pat. a. a. O. 5,2,b.

सुलस m. N. pr. eines Mannes Hem. Joḍaç. 2,30.

1. सुवर्ष 2) zu streichen.

सुवाच् 1) a) Z. 1 lies 7,103,3.

सुवीर, so zu betonen.

सुवृध्, streiche RV. 10,30,10.

सुशर्पिका f. Pat. a. a. O. 7,116,a.

सुशिप्र parox. 2,35,3. 3,30,3.

सुसुत् 1) Z. 1 lies 15,2,4.

सुष्ठु, सुष्टु R. ed. Bomb. 1,4,18.

सूकरिका vgl. काल°.

सूर्कवाच् so im RV.

सूनृत 3) b) Hem. Joḍaç. 1,19. 21. 27. 4,92. घ° 2,55.

सूर्यावर्त 1) d) *ein Kopfschmerz, der mit dem Sonnenlauf zu- und abnimmt,* Kâraka 10,9.

सृक vgl. सक.

सेगव vgl. स्यगवि.

सेच् (von 1. सिच्) adj. am Ende eines comp. *ausgiessend* u. s. w. Pat. a. a. O. 1,139,b. 160,a. Man hatte सिच् erwartet.

सेपुर n. N. pr. eines Dorfes der Bâhika Kâś. in Manâm. lih. Aug. 1,178,a. — Vgl. सैपुरिक.

सैक्तिकरीण adj. Pat. a. a. O. 1,174,a. — Vgl. रीण.

सैधिकमय adj. (f. ई) = सैधक Śâṅkhâyana-Br. 3,6,9.

सैपुरिक adj. (f. या und ई) von सेपुर Pat. a. a. O. 1,178,a.

सैमालिका f. *ein best. Gericht* (vulgo मुकारी) Madan. 11,34.

सैठामित्रि m. patron. von सैठ-मित्र Pat. a. a. O. 7,81,b.

सैत्थिति m. patron. von सु-उत्थित ebend. 1,265,b. 266,b.

सैत्र adj. (f. ई) ebend. 1,165,b.

सैदेविक adj. von सुदेविका ebend. 7,110,a.

सौन adj. in Verbindung mit सौस so v. a. 2) Śāṅkhāyan. Br. 3,3,4.

सौमन n. *eine best. mythische Waffe* R. ed. Bomb. 1,27,18.

सौमनसायन 2) Kāraka 9,4.

सौमनोत्तरिक adj. *die Geschichte der* Sumanottarā *kennend* Pat. a. a. O. 4,67,a.

सौराधि m. patron. von सुराध; f. ई ebend. 1,153,b.

सौर्य 3) b) शौर्य ebend. 2,397,a.

सौहृदय zu streichen, da सौहृद gemeint ist; vgl. P. 6,3,50 und Vāmana 5,2,84.

स्कन्द् Z. 4 lies शाम्बवे.

— घा 2) Pat. a. a. O. 1,121,b.

स्कोनगर n. N. pr. eines Dorfes der Bāhika Kāś. a. a. O. 1,178,a.

स्कोनगरिक adj. (f. घा und ई) von स्कोनगर Pat. ebend.

स्खल् mit प्रति, °स्खलित = प्रतिकृत H. an. 4,12. = प्रणिकृत Med. l. 207.

स्तम्भ m. und स्तम्भीय adj. Bez. eines best. Adbjāja Pat. a. a. O. 5,42,b.

1. स्तर् mit घा intens. घातेस्तीर्यते ebend. 1,266,b. 6,13,b.

स्तरी 1) Z. 4. In ṚV. 1,122,2 ist स्तरी: wohl Vjūha für स्त्री. Das म् ist in Folge des Missverständnisses angetreten.

स्ता, partic. स्तागत् auch Gop. Br. 1,2,5.

2. स्तुभ् वृथस्तुभ् adj. *gewaltig jauchzend* ṚV. 10,66,6.

स्तेय, घ° (weit gefasst) Hem. Joṣaç. 1,19. 22. 28. 3,91.

स्तैर्णि m. patron. von स्तैर्ण Pat. a. a. O. 1,266,b.

स्त्यान 1) मस्तिष्क Kāraka 10,9.

स्थण्डिल 1) गृहे ऽग्नये स्थण्डिले जानुवर्त्रिते Hem. Joṣaç. 3,148.

1. स्था mit समधि *seiner Sache obliegen:* सर्वे समधितिष्ठत R. ed. Bomb. 1,60,8.

— घनु 11) a) δ) राजशास्त्रमनुष्ठिता: R. ed. Bomb. 1,7,13.

— घभि 7) *sich rüsten zu* (dat.): गमनाय R. ed. Bomb. 1,23,4.

— समव, °स्थित 3) *bereit —, zu Gebote stehend* Pat. a. a. O. 1,80,b.

— प्रत्युद् caus. *wieder zum Leben bringen, — erwecken:* पर्यवसमानि कार्याणि ebend. 1,156,a.

स्थायि f. und स्थायिका f. nom. act. von 1. स्था ebend. 3,92,a.

स्थावर 1) a) त्रसानां स्थावराणां च Hem. Joṣaç. 1,20.

स्थिरीभाव m. *Steifwerdung, Unbeweglichkeit:* शरीरस्य ebend. 1,42.

स्थूल 1) b) °स्तेय ebend. 2,65.

स्थूलपयस, vgl. Pat. a. a. O. 1,3,b.

स्थूलभद्र Hem. Joṣaç. 3,130.

स्थूलसिक्त n. N. pr. eines Tīrtha Pat. a. a. O. 2,366,b.

स्थेमन् 3) स्थेमा so v. a. *bekarrlich* Hem. Joṣaç. 3,136.

स्थैर्य 2) मन:° ebend. 4,114. प्रभस्थैर्येण चेतस: 84.

1. स्नु mit व्यतिप्र Pat. a. a. O. 7,93,a.

स्पर्ध् 1) Z. 2 füge ṚV. 1,41,9 hinzu.

— नि vgl. निस्पर्ध्.

स्फर् simpl. vielleicht so v. a. स्फुर् 3): मैत्रेणाग्नेन (so lesen wir) स्फरित्वा Bulletin de l'Acad. Imp. des sc. de St.-Pét. 28,385.

स्फाय्, गाव: स्फीयन्ते Śāṅkhāyan. Br. 2,3,1.

स्फेयकृत m. patron. von स्फयकृत् Nāgeśa in Manāsu. ed. Ballant. 215.

स्फोटक m. = स्फोट 1) d) oder adj. *platzend* u. s. w.: पूर्वाह्णे°, अपराह्णे° Pat. a. a. O. 6,80,b.

स्फोटजीविका f. *ein Gewerbe, bei dem man mit Sprengen u. s. w. zu thun hat,* Hem. Joṣaç. 3,98. 104.

स्फयकृत् (nicht °कृत) Nāgeśa in Manāsu. ed. Ballant. 215.

स्मार *Erinnerung* Taitt. Ār. 10,63 (S. 894).

स्युम्र Z. 2 lies सुम्र.

स्यौकामि m. künstliches patron. Pat. a. a. O. 1,268,b.

2. स्राम Z. 2. 3 lies Kāṭj. Çr. 20,3,13.

स्रुचायनि m. patron. Pat. a. a. O. 5,31,a.

स्रुचिष्ठ superl. und स्रुचीयस् compar. zu स्रुच्वस् ebend. 6(4),46,b.

स्रौव (von स्रुव) adj. *auf dem Opferlöffel beruhend* so v. a. *auf Opfern b.:* संबन्धा: ebend. 1,122,a. Vgl. Haṭṭ. 6977, wo vielleicht स्रौवै: st. श्रौतै: zu lesen ist.

1. स्वधा 2) Z. 5 lies *das Streben* st. *die Gabe.*

1. स्वन् mit घा, घास्वनित und घास्वास्त auch von einer Muschel Pat. a. a. O. 7,91,b.

स्वनाभक m. *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. ed. Bomb. 1,28,6.

स्वपंवक् (auch adj.) Comm. zu Sāṅkhāyan. 13,16. 22.

स्वयंदोक्षिन् adj. *selbst melkend* Śrāpt. Br. 4,1.

स्वयमागत adj. *ungerufen kommend* so v. a. *zudringlich:* Arzt Bālāvat. 5.

स्वरयितव्य n. impers. *mit dem* Svaritam *sprechen* Pat. a. a. O. 2,396,b.

स्वरशस् adv. *je nach den Accenten* ebend. 1,7,b.

स्वर्नयन adj. *zum Himmel führend* R. ed. Bomb. 1,14,63.

स्वाभाव्य 2) Pat. a. a. O. 1,220,b.

स्वासक adj. von स्वसृ ebend. 4,73,b.

स्वाम्नीय m. pl. = स्वाम्नीपेर्यूनम्ह्रात्रा: ebend. 4,43,a.

स्वाम्नीयि m. = स्वाम्नीयस्यापत्यम् ebend.

1. स्विद् simpl. und caus.: पिष्टस्वेदे (absol.) स्वेदयित्वा *siedend bis das Mehl gesotten ist* Śāṅkhāyan. Br. 2,5,4. 3,6,11.

स्वेदापन Z. 3 lies 1,3,6.

1. हन् Z. 6 füge P. vor 8,1,58 hinzu.

1. हन् mit व्यति *gemeinsam tödten:* °हन्यते दस्यव: Pat. a. a. O. 1,247,a.

— घनु *nachher —, darauf tödten* ebend. 1,29,a.

— घसद्, घसर्हणादेभ्यो गा: ebend. 1,296,a.

— घा 3) *ertönen lassen, aussprechen* ebend. 7,78,b. 79,a.

— उपोद् caus. *zur Sprache bringen, einleiten* Nīlak. zu MBh. 1,6.

हननीयक adj. von हननीय Pat. a. a. O. 7,113,a.

1. हर् mit घध्या, कुतश्चिदेव किंचित्पदमध्याहृत्य ebend. 2,359,a.

— व्युद् Z. 1 lies घामित्ताम्.

हलमुखी Z. 2 lies 1,368. Hier zugleich adj.: vgl. हल 4) b).

हस्तप्रार्ग m. so v. a. हस्तप्राक् 2) ṚV. 10,18,8.

हस्तिमत्त् adj. *mit Elephanten versehen:* उपत्यका Pat. a. a. O. 5,48,b.

हारिकेयी f. ebend. 4,17,b.

हेवाकिन् Vikramāṅkadevacarita 7,63.

Digitized by Google

Verbesserungen:

Sp. 40, Art. यथातथम् am Schluss lies यावातथ्य.

Sp. 55, Art. यदावाजदावर्य; lies यदावाजदावर्यम् nom. pl. f. und am Ende: vgl. unter वाजदावन्.

Sp. 95, Art. यष्टिनियाम; genauer übersetzt unter वासयष्टि.

Sp. 111, Art. या mit वि 2) Z. 4 lies 3,31,19 st. 3,31,9.

Sp. 143, Art. युक्ति Z. 2 v. u. lies वाचोयुक्तिपटु und vgl. वाचोयुक्ति.

Sp. 189, Art. योगवर्तिका; lies °वर्तिका und *Zauberdocht* st. *Zauberlaterne*.

Sp. 219, Art. 2. रत्स्; nach n. hinzuzufugen 1).

Sp. 248, Art. रतू; vgl. वतू.

Sp. 264. 1. रन्; vgl. Roth in Z. f. vgl. Spr. 20,69. fgg.

Sp. 313. fgg. Von Bogen 21* bis 26 ist die Pagination überall um 16 vorzurücken.

Sp. 317 (auf Bogen 21*), Z. 1; in राणि und वैलादि ist der Haken über dem ि abgebrochen.

Sp. 350, Art. रिप् mit वि Z. 1 lies *ausrenken* st. *ausrecken*.

Sp. 379, Z. 3 lies तनुरुहः.

Sp. 385, Art. रुध् mit वि caus. 3) Z. 4 und 5. देशकालविरोधिता: bedeutet *mit Ort und Zeit in Widerspruch gebracht*.

Sp. 461, Art. लद्; लत्तेत् in der Bed. *erkennen* MBh. 12,4813.

Sp. 477, Z. 1 lies कानिचिद्दामराणि.

Sp. 491. लक्षा ist vor लक्ष्ण zu stellen.

Sp. 493 im Columnentitel ist लता st. लत zu lesen.

Sp. 510, Z. 15. Die richtige Lesart ist वम्वाविद्यवपसो.

Sp. 533, Art. 3. ली Z. 1 lies Gaṇaratnam. st. Sidd. K.

Sp. 564, Art. लुभ् Z. 7 lies वा. लोभित्वा.

Sp. 573, Art. लेलाय्; lies 3. st. 2.

Sp. 583, Art. लोकवर्तन; vgl. u. वर्तन 4) *f*).

Sp. 585, Art. लोकस्थिति. An den beiden ersten Stellen bedeutet das Wort *Bestand der Welt*.

Sp. 603, Art. 2. लोम; statt dessen zu lesen लोमन und am Schlus 167 st. 144.

Sp. 665, Art. 1. वन् Z. 7 ist «und वनैम» zu streichen und statt desse in der vorangehenden Zeile nach वनोति einzuschalten वनाव.

Sp. 666, Z. 1 lies वनाव st. वनैम.

Sp. 672, Art. वनवासिन् 2) *b*) lies: Pflanzen und Wurzeln.

Sp. 694, Art. वयस्क Z. 2 lies 119,147.

Sp. 698, Z. 18. वारितवाम bedeutet *nach Verbotenem strebend*.

Sp. 700, Art. 1. वर् mit अप Z. 2. Die Klammer ist nach 9,2 zu setzn.

Sp. 701, Z. 1 lies प्रावृत्य कृष्णवासांसि.

Sp. 705, Art. 1. वर् mit सम् 1) Z. 18 streiche 80,19.

Sp. 706, Z. 3 v. u. lies देव्यै.

Sp. 728, Art. वैरोणकेतु Z. 2 lies: Einschaltung nach 10,9 st. 10,9,12.

Sp. 741, Art. वर्णक 1) Z. 6. कृपण° u. s. w. zu streichen, da an der angeführten Stelle mit den Calc. Ausgg. कृपणवर्णं कमपि zu lesen ist; die Bed. ist *Gesichtsfarbe*.

Sp. 748, Art. वर्तृ 7) Z. 9. 104,19 gehört zu 14).

Sp. 751, Art. वर्तृ mit अति 1) Z. 24. R. Gorr. 2,30,30. 6,103,13 bedeutet das Wort *überschreiten* वेलाम् *das Ufer*, und an der ersten Stelle zugleich धर्मम्.

Sp. 772, Art. वर्तृ mit प्र 10) Z. 4 lies प्रवर्तमानम् st. वर्तमानम्.

Sp. 798, Z. 6 v. u. lies प्रवृष्ट st. प्रवृष्ट-.

Sp. 813, Z. 2 lies वन्दते st. वन्दने.

Sp 817. Hinzuzufugen: वव्रप् (von वव्र), वव्रंयते *sich zurückstehen* RV. 8,40,2.

Sp. 826, Art. 3. वस् Z. 2 füge bei वसिष्ट RV. 2,36,1.

Sp. 831, Art. 5. वस् mit अधि caus. Die zweite Bedeutung ist zu streichen; vgl. वासय् mit अधि 2).

Sp. 840, Art. वसन्तक. Die zweite Bed. ist zu streichen, da s. a. O. वासन्तिका zu lesen ist.

Sp. 843, Art. वसिष्ठ 1) Z. 4. Indra 2,36,1 zu streichen.

Sp. 866, Z. 6 lies 864 st. 846.

Sp. 1016, Art. विच्छित्ति 3) Z. 2. Lies 3. 5 st. 3,5.

Sp. 1024, Art. विज्ञगीर्षीय (so zu lesen).

Sp. 1044, Art. 1. विद् caus. Z. 2 vom Ende zu lesen 123 st. 1,23.

Sp. 1050, Art. 3. विद् mit अधि Z. 5 ist ein तस्य zu streichen.

Sp. 1098, Z. 1 v. u. lies मरुतः.

Sp. 1106, Z. 2 v. u. ist ऽविसदृक्फलम् zu lesen.

Sp. 1107 im Columnentitel विपाक zu lesen.

Sp. 1261, Art. विष्टिकार 1) Z. 2. कर konnte hier auch *Tribut* sein; Nilak. erklärt aber भृतिमदत्ता कारयित्ते.

Sp. 1307, Art. वृङ्. Vgl. वृङ् und Weber, Hall 32. 68. 259.

Sp. 1339, Art. वृषन् 9) Z. 2 lies *extreme*.

Sp. 1435, Art. व्यत्यय Z. 11; व्यत्ययम् ist adv. acc.; der absol. wäre व्यत्याय.

Sp. 1439, Z. 10 v. u. lies शमुराः.

Sp. 1442, Art. व्यध् mit उद्; lies उद्विद्ध.

Theil II.

Sp. 815. Statt गौवपुष् u. s. w. ist zu lesen: गौवपुस् *die Gestalt von Kühen habend*.

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google